Fatawa Rizvia With research and translation of Arabic phrases Imam Ahmad Raza Bareilvi (May his secret be sanctified) 3 Raza Foundation Jamia Nizamia Razvia Inside Lohari Gate Lahore, 8 Pakistan (54000)

फ़तावा रज़विया अरबी वाक्यांशों के शोध और अनुवाद के साथ इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (अल्लाह उन पर अपनी रहमत बरसाए) 3 रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा लाहौर, 8 पाकिस्तान (54000)

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات امام احمد رضا بریلوی قدس سرہٗ ۳ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ لاہور، ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

Volume Three Fatawa Razvia

Contents Summary Index 4
Fatawa Razvia Volume 3 ..... 7 Index of Volume 3 ..... 9 Chapters and Issues ..... 9 Index of Supplementary Issues ..... 20 Supplementary Treatise ..... 41 1332 AH: Al-Diqqatu wal Tabyan li-Ilm al-Riqati wal Sailan ..... 41 A clear explanation of the thinness and flow (of water) (T) ..... 41 Chapter on the Well ..... 263 Chapter on Tayammum ..... 299 Treatise 'Husn al-Ta'ammum li-Bayan Hadd al-Tayammum': The best explanation of the nature and definition of Tayammum (T) ..... 313 1335 AH: Samaj al-Nazri fi Ma Yurith al-'Ajz 'an al-Ma' ..... 413 Supplementary Treatise 'Al-Zafar li Qawl-e-Zafar' (1335 AH): Explanation of the strengthening of Imam Zufar's view regarding the permissibility of Tayammum due to scarcity of time (T) ..... 443 Supplementary Treatise 'Al-Matar al-Sa'id 'ala Nabt Jins al-Sa'id' (1335 AH): Blessed rain upon the vegetation of the earth's genus (T) ..... 581 Supplementary Treatise 'Al-Jadd al-Sadid fi Nafy al-Isti'mal 'an al-Sa'id' (1335 AH): A very excellent explanation of the non-usage of the earth's genus (T) ..... 719 Sources and References 745

जिल्द तीन फ़तावा रज़विया

विषय-सूची (Contents) सारांश

सूची ..... 4 फ़तावा रज़विया जिल्द तीन ..... 7 जिल्द तीन की सूची ..... 9 अध्याय और मसले ..... 9 पूरक मसलों की सूची ..... 20 पूरक शोधपत्र ..... 41 1332 हिजरी: अल-दिक्क़तु वत-तब्यान ली इल्म अर-रिक्क़ती वस-सयलान ..... 41 (पानी की) तरलता और प्रवाह का स्पष्ट विवरण (त) ..... 41 कुएँ का अध्याय ..... 263 तयम्मुम का अध्याय ..... 299 शोधपत्र 'हुस्न अल-तअम्मुम ली बयान हद्द अत-तयम्मुम': तयम्मुम की प्रकृति और परिभाषा का सर्वोत्तम विवरण (त) ..... 313 1335 हिजरी: समज अल-नज़री फ़ी मा यूरिस अल-अजज़ अन अल-मा ..... 413 पूरक शोधपत्र 'अज़-ज़फ़र ली क़ौल-ए-ज़फ़र' (1335 हिजरी): समय की कमी के कारण तयम्मुम की अनुमति के बारे में इमाम ज़फ़र के कथन के समर्थन का विवरण (त) ..... 443 पूरक शोधपत्र 'अल-मतर अस-सईद अला नबत जिन्स अस-सईद' (1335 हिजरी): पृथ्वी की प्रजातियों की वनस्पतियों पर शुभ वर्षा (त) ..... 581 पूरक शोधपत्र 'अल-जद्द अस-सदीद फ़ी नफ़ी अल-इस्तिमाल अन अस-सईद' (1335 हिजरी): पृथ्वी की प्रजातियों के उपयोग न होने का एक बहुत ही उत्कृष्ट विवरण (त) ..... 719 स्रोत और संदर्भ 745

पृष्ठ 1/757

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

Contents اجمالی

فہرست ..... 4 فتاویٰ رضویہ

جلد سوم ..... 7 فہرست جلد

سوم ..... 9 ابواب و

مسائل ..... 9 فہرست

ضمنی مسائل ..... 20 رسالہ

ضمنیہ 41 ۱۳۳۲ھ

الدقۃ والتبیان لعلم الرقۃ والسیلان ..... 41 (پانی

کی) رقت و سیلان کا واضح بیان (ت) 41

فصل فی البئر ..... 263 باب

التیمم ..... 299 رسالہ حسن

التعمم لبیان حد التیمم تیمم کی ماہیت و تعریف کا بہترین بیان (ت) .....

313 ۱۳۳۵ھ سمج النذری فیما یورث العجز عن الماء .....

413 رسالہ ضمنیہ الظفر لقول زفر ۱۳۳۵ھ وقت کی تنگی کے باعث جواز تیمم کے بارے میں امام

زفر کے قول کی تقویت کا بیان (ت) ..... 443 رسالہ ضمنیہ المطر السعید علی نبت جنس

الصعید ۱۳۳۵ھ جنس صعید کی نبات پر بارانِ مسعود (ت) ..... 581 رسالہ

ضمنیہ الجد السدید في نفی الاستعمال عن الصعید ۱۳۳۵ھ جنس زمین کے مستعمل نہ ہونے میں بہت

عمده بیان (ت) ..... 719 مآخذ

ومراجع 745

Volume Three Fatawa Rizvia

Fatawa Rizvia With Citations and Translation of Arabic Passages

Imam Ahmad Raza Barelvi (May his secret be sanctified) Raza Foundation Jamia Nizamia Rizvia

www.dawateislami.net Inside Lohari Gate, Lahore Number 8 Pakistan (54000) **** I.T. Majlis of Dawateislami ****

Page 1 of 756

तीसरी जिल्द फ़तावा रिज़विया

फ़तावा रिज़विया अरबी इबारतों के तख़रीज (संदर्भ) और तर्जुमे के साथ

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (क़ुद्दिस सिर्रहु) रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रिज़विया

www.dawateislami.net अन्दरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर नम्बर 8 पाकिस्तान (54000) * **आई.टी. मज्लिस, दावत-ए-इस्लामी** *

756 का पृष्ठ 1

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ

www.dawateislami.net اندرون لوہاری دروازہ لاہور نمبر ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰) * ***I.T.***

* ***Majlis of Dawateislami***

Page 1 of 756

Fatawa Razawiyya Volume Three

"Whomever Allah intends good for, He grants him understanding of the religion." (Hadith) AL-ATAYA AL-NABAWIYYA FIL FATAWA AL-RAZAWIYYA With referencing and translation of Arabic texts

Volume Three

A magnificent 14th-century jurisprudential encyclopedia consisting of rare research.

Imam Ahmad Raza Barelvi (May Allah sanctify his secret) 1272 AH --- 1340 AH 1856 AD --- 1921 AD

Raza Foundation, Jamia Nizamia Razawiyya Inside Lohari Gate, Lahore No. 8, Pakistan (54000) Phone Number 7657314

Page 2 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरी

"अल्लाह जिसके साथ भलाई का इरादा करता है, उसे धर्म की समझ प्रदान करता है।" (हदीस) अल-अताया अल-नबविया फिल-फ़तावा अल-रज़विया अरबी इबारतों के तख़रीज और अनुवाद के साथ

जिल्द तीसरी

दुर्लभ शोधों पर आधारित चौदहवीं शताब्दी का एक शानदार न्यायशास्त्रीय विश्वकोश।

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (अल्लाह उनकी रूह को मुक़द्दस करे) १२७२ हिजरी --- १३४० हिजरी १८५६ ईस्वी --- १९२१ ईस्वी

रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया अंदरूनी लोहारी गेट, लाहौर नंबर ८, पाकिस्तान (५४०००) फोन नंबर ७६५७३१४

७५६ का पृष्ठ २

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

مَنْ یُرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیْرًا یُفَقِّھْہُ فِي الدِّینِ (الحدیث) اَلْعَطَایَا النَّبَوِیَّۃُ فِي الْفَتَاوَی الرَّضَوِیَّۃِ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

جلد سوم

تحقیقاتِ نادرہ پر مشتمل چودہویں صدی کا عظیم الشان فقہی انسائیکلوپیڈیا

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ العزیز ۱۲۷۲ھ --- ۱۳۴۰ھ ۱۸۵۶ء --- ۱۹۲۱ء

رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ لاہور نمبر ۸، پاکستان (۵۴۰۰۰) فون نمبر 7657314

Page 2 of 756

Volume Three Fatawa Rizvia In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. (All rights reserved by the publisher) Book: Fatawa Rizvia Volume Three Author: Sheikh-ul-Islam Imam Ahmad Raza Qadri Barelvi (may Allah sanctify his secret) Translation of Arabic passages: Great Researcher Allama Muhammad Ahmad Misbahi (Bhairvi) India Foreword: Maulana Muhammad Siddiq Hazarvi, Jamia Nizamia Rizvia, Lahore Takhrij (Verification) and Correction: 1. Maulana Nazir Ahmad Saeedi 2. Maulana Muhammad Umar Hazarvi Under the management and patronage of: Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Qadri Hazarvi (May his shadow be extended) Compilation of Table of Contents: Hafiz Muhammad Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia Rizvia Lahore Calligraphy: Muhammad Sharif Gul, Karial Kalan (Gujranwala) Proofreading: Maulana Sardar Ahmad Hassan Saeedi First Edition: Rabi-ul-Thani 1412 AH / November 1992 AD Quantity: One thousand Pages: 756 Press: ..... Publisher: Raza Foundation, Jamia Nizamia Rizvia, Inside Lohari Gate, Lahore Price: .....

Available at: * Maktaba Ahle Sunnat, Jamia Nizamia Rizvia, Inside Lohari Gate, Lahore * Shabbir Brothers, 40 Urdu Bazar, Lahore. Phone: 726006 * Zia-ul-Quran Publications, Ganj Bakhsh Road, Lahore

भाग तीन फ़तावा रज़विया अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपाण है। (सभी अधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं) पुस्तक: फ़तावा रज़विया भाग तीन लेखक: शैख-उल-इस्लाम इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी (अल्लाह उन पर अपनी कृपा बरसाए) अरबी अंशों का अनुवाद: महान शोधकर्ता अल्लामा मुहम्मद अहमद मिसबाही (भैरवी) भारत प्रस्तावना: मौलाना मुहम्मद सिद्दीक़ हज़ारवी, जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर तख़रीज और सुधार: १. मौलाना नज़ीर अहमद सईदी २. मौलाना मुहम्मद उमर हज़ारवी प्रबंधन और संरक्षण में: मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम क़ादरी हज़ारवी (अल्लाह उनकी आयु लंबी करे) अनुक्रमणिका का संकलन: हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुल सत्तार सईदी, शिक्षा निदेशक, जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर लेखन (कॅलिग्राफी): मुहम्मद शरीफ़ गुल, करियाल कलां (गुजरांवाला) प्रूफरीडिंग: मौलाना सरदार अहमद हसन सईदी प्रथम संस्करण: रबी-उल-थानी १४१२ हिजरी / नवंबर १९९२ ईस्वी संख्या: एक हज़ार पृष्ठ: ७५६
प्रेस: ..... प्रकाशक: रज़ा फाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर मूल्य: .....

मिलने के पते: * मकतबा अहल-ए-सुन्नत, जामिया निज़ामिया रज़विया, लोहारी गेट के अंदर, लाहौर * शब्बीर ब्रदर्स, ४० उर्दू बाज़ार, लाहौर। फ़ोन: ७२६००६ * ज़िया-उल-क़ुरान पब्लिकेशन्स, गंज बख्श रोड, लाहौर

جلد سوم فتاویٰ رضویہ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ (جملہ حقوق بحق ناشر محفوظ ہیں) کتاب: فتاویٰ رضویہ جلد سوم تصنیف: شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری بریلوی قدس سرہ العزیز ترجمہ عربی عبارات: محقق عظیم علامہ محمد احمد مصباحی (بھیروی) ہندوستان پیش لفظ: مولانا محمد صدیق ہزاروی جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور تخریج و تصحیح: ۱۔ مولانا نظیر احمد سعیدی ۲۔ مولانا محمد عمر ہزاروی با اہتمام و سرپرستی: مولانا مفتی محمد عبدالقیوم قادری ہزاروی مدظلہٗ ترتیب فہرست: حافظ محمد عبدالستار سعیدی ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور کتابت: محمد شریف گل، کڑیال کلاں (گوجرانوالا) پروف ریڈنگ: مولانا سردار احمد حسن سعیدی اشاعتِ اول: ربیع الثانی ۱۴۱۲ھ/ نومبر ۱۹۹۲ء تعداد: ایک ہزار صفحات: ۷۵۶ مطبع: ..... ناشر: رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور

قیمت: .....

ملنے کے پتے: * مکتبہ اہلسنت جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور * شبیر برادرز، ۴۰ اردو بازار، لاہور۔ فون: ۷۲۶۰۰۶ * ضیاء القرآن پبلیکیشنز، گنج بخش روڈ، لاہور

Volume Three Fatawa Razawiya

Brief Table of Contents

o Preface ____ *5 o Chapter of Waters* ____ ***41 o Chapter of Tayammum*** ___ 297 o Sources and References ____ 697

List of Treatises

o Al-Noor wal-Nooraq _ ***From 451 Vol. 2 to 249 Vol. 3 o Al-Diqqah wat-Tibyan*** ___ 41 to 88 o Husn al-Ta'ammum _ ***311 (This treatise will end in Vol. 4) o Samh al-Nadari*** ____ **411 to 523 o Al-Zafar li Qawl al-Zufar** ___ **441 to 463 o Al-Matar al-Sa'eed** __ ***579 to 707 o Al-Jadd al-Sadeed*** _____ 717 to 738

Page 4 of 756

जिल्द तीन फ़तावा-ए-रज़विया

संक्षिप्त विषय सूची

o प्रस्तावना _____ *5 o* जलों का अध्याय *(*बाब-अल-मियाह*)* ___ *41 o* तयम्मुम का अध्याय *(*बाब-अत-तयम्मुम*)* __ ***297 o* स्रोत और संदर्भ** ___ 697

पत्रिकाओं की सूची

o अन-नूर वल-नूरक ___ जिल्द 2 के451 से जिल्द 3 के249 तक o अद-दिक्कत वत-तिब्यान ___ ***41* से *88 o* हुस्न अल-ताअम्मुम __ 311 (यह पत्रिका जिल्द 4 में समाप्त होगी) o सम्ह अल-नदारी** ___ 411 से 523 o अज़-ज़फ़र ली क़ौल अज़-ज़ुफ़र ___ 441 से 463 o अल-मतर अस-सईद ___ 579 से 707 o अल-जद्द अस-सदीद _____ 717 से 738

पृष्ठ 4 / 756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

اجمالی فہرست

o پیش لفظ _____ ۵ o باب المیاہ _____ ۴۱ o باب التیمم _____ ۲۹۷ o مآخذ و مراجع _____ ۶۹۷

فہرست رسائل

o النور والنورق ___ **از ۴۵۱ جلد دوم تا ۲۴۹ جلد سوم o الدقة والتبیان** ____ ۴۱ تا ۸۸ o حسن التعمم ___ ۳۱۱ (یہ رسالہ جلد چہارم میں ختم ہوگا) o سمح الندارى _____ **۴۱۱ تا ۵۲۳ o الظفر لقول الزفر** ____ **۴۴۱ تا ۴۶۳ o المطر السعید** ____ ۵۷۹ تا ۷۰۷ o الجد السدید _____ ۷۱۷ تا ۷۳۸

صفحہ ۴ از ۷۵۶

Fatawa Razawiyya Volume Three

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Preface

Every sensible, knowledge-loving, and truth-recognizing individual is not only acquainted with Imam Ahmed Raza Barelvi (may his secret be sanctified) — the midday sun of knowledge and excellence, the full moon of asceticism and piety, the priceless pearl of research and scrutiny, the rare gem of honest politics, and the leader of the caravan of the movement of love for the Messenger — but also acknowledges and benefits from the religious, national, spiritual, and political services of this man who was cognizant of the Truth.

Primarily, two factors can be at work in obscuring the religious, national, and communal services of any great personality and depriving the Muslim Ummah of its scholarly gems: 1. False propaganda by opponents. 2. Poor planning by one's own people.

Hazrat Imam Ahmed Raza Barelvi (may Allah have mercy on him), through whose scholarly and research masterpieces the Muslims of Arab and non-Arab lands lit the candle of knowledge, and the residents of Africa and Europe were honored to acquire grace from him—his scholarly and research treasury had remained buried under the thick layers of the clever maneuvers of the British and Hindus, the false propaganda of so-called Muslims who were allies of the Congress, and the poor planning of those who claimed his name, his devotees, and those professing love for him.

All praise is due to Allah! Now, through the efforts of compassionate and sensitive Muslims, these thick layers of opposition, prejudice, and unconsciousness have begun to lift. The terrifying clouds of false propaganda that overshadowed the sky of Razawi knowledge and excellence...

Page 5 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरा खंड)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

प्रस्तावना

इल्म-ओ-फ़ज़्ल के आफ़ताब-ए-नीमरोज़, ज़ुहद-ओ-तक़वा के बदर-ए-मुनीर, तहक़ीक़-ओ-तदक़ीक़ के दुर्र-ए-बेबहा, सियासत-ए-सादिक़ा के गौहर-ए-नायाब और तहरीक-ए-इश्क़-ए-रिसालत के क़ाफ़िला सालार इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (क़ुद्दसा सिर्रहु) से हर समझदार, ज्ञान प्रेमी और सत्य को पहचानने वाला व्यक्ति न केवल परिचित है, बल्कि इस हक़-आगाह व्यक्ति की धार्मिक, राष्ट्रीय, आध्यात्मिक और राजनीतिक सेवाओं को स्वीकार भी करता है और उनसे लाभ भी उठाता है।

किसी भी महान व्यक्तित्व की धार्मिक, राष्ट्रीय और कौमी सेवाओं को ओझल करने और मिल्लत-ए-इस्लामिया को उसके ज्ञान के रत्नों से वंचित रखने के लिए बुनियादी तौर पर दो बातें काम कर सकती हैं: १. विरोधियों का झूठा दुष्प्रचार। २. अपनों की कमज़ोर योजना।

हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (रहमतुल्लाहि अलैहि), जिनके इल्मी और तहक़ीक़ी शाहकारों से अरब और अजम के मुसलमानों ने इल्म की शमा रोशन की और अफ्रीका और यूरोप के निवासियों को आपसे फ़ैज़ हासिल करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनका इल्मी और तहक़ीक़ी खज़ाना अंग्रेज़ों और हिंदुओं की शातिर चालों, कांग्रेस के हमनवा तथाकथित मुसलमानों के झूठे दुष्प्रचार और नामलेवाओं, अक़ीदतमंदों और मुहब्बत का दम भरने वालों की कमज़ोर योजना की मोटी परतों के नीचे दब कर रह गया था।

अलहम्दुलिल्लाह! अब दर्द-ए-दिल रखने वाले और संवेदनशील मुसलमानों की कोशिशों से विरोध, पक्षपात और नासमझी की ये मोटी परतें हटने लगी हैं, रज़वी इल्म-ओ-फ़ज़्ल के आसमान पर छा जाने वाले झूठे दुष्प्रचार के भयानक बादल...

पृष्ठ 5 / 756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

بسم اللہ الرحمن الرحیم

پیش لفظ

علم و فضل کے آفتابِ نیم روز، زُہد و تقویٰ کے بدرِ منیر، تحقیق و تدقیق کے دُرّ بے بہا، سیاستِ صادقہ کے گوہرِ نایاب اور تحریکِ عشقِ رسالت کے قافلہ سالار امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ سے ہر ذی شعور، علم دوست اور حق شناس فرد متعارف ہی نہیں، اس مردِ حق آگاہ کی دینی، ملی، روحانی اور سیاسی خدمات کا معترف بھی ہے اور خوشہ چین بھی۔

کسی بھی عظیم شخصیت کی دینی، ملی اور قومی خدمات کو پسِ پردہ لے جانے اور ملتِ اسلامیہ کو اس کے علمی جواہر پاروں سے محروم رکھنے کے لیے بنیادی طور پر دو باتیں کارفرما ہوسکتی ہیں: ۱۔ مخالفین کا جھوٹا پروپیگنڈا۔ ۲۔ اپنوں کی ناقص منصوبہ بندی۔

حضرت امام احمد رضا بریلوی رحمۃ اللہ علیہ جن کے علمی تحقیقی شہ پاروں سے عرب و عجم کے مسلمانوں نے شمعِ علم روشن کی اور افریقہ و یورپ کے باسیوں کو آپ سے اکتسابِ فیض کا شرف حاصل ہوا، کا علمی اور تحقیقی خزانہ انگریز اور ہندو کی شاطرانہ چال، کانگریس کے ہمنوا نام نہاد مسلمانوں کے جھوٹے پروپیگنڈے اور نام لیواؤں، عقیدت مندوں اور محبت کا دم بھرنے والوں کی ناقص منصوبہ بندی کی دبیز تہوں کے نیچے دب کر رہ گیا تھا۔

الحمد للہ! اب دردمند اور حساس مسلمانوں کی کوشش سے مخالفت، تعصب اور لاشعوری کی یہ دبیز تہیں ہٹنے لگیں، رضوی علم و فضل کے آسمان پر چھا جانے والے جھوٹے پروپیگنڈے کے مہیب بادل

Fatawa Razawiya Volume Three ...started clearing, and thus the bright and sparkling real face of this great academic and spiritual personality of Arabia and non-Arabia emerged clearly. Consequently, at this time, extremely valuable articles are being written on the academic research of Imam Ahmad Raza Barelvi (Quddas Sirruhu) in various universities around the world.[1]

Raza Foundation Lahore is also a link in the same chain. Who is not acquainted with the knowledge-loving, duty-conscious, and compassionate personality of the founder of this foundation, Makhdoom-ul-Millat, Ustadh-ul-Ulama, Mufti-e-Azam Hazrat Allama Mufti Muhammad Abdul Qayyum Hazarvi (Damat Barakatuhumul Aaliya). The silent preaching and movement of Hazrat Mufti Sahib (Madazillah) have blossomed many flowers in the garden of Sunnat, whose fragrant scent has perfumed the East and West, North and South. May Allah Almighty bless the efforts of Hazrat Mufti Sahib and adorn his important academic and religious projects with the jewel of completion, Ameen!

The important flower that Raza Foundation has selected from the garden of Raza has received appreciation from both friends and strangers alike. The truth is that from a research perspective, finding a parallel to Fatawa Razawiya is difficult, if not impossible. Heaping up piles of arguments on every single issue is undoubtedly the distinction of Hazrat Imam Ahmad Raza Barelvi (Rehmatullah Alaih).

As a small sample of a vast quantity, just a glimpse of the jurisprudential insight and research capability of Hazrat Fazil-e-Barelvi is presented here. In the case of inability to obtain or use water, permission for Tayammum is given. In general books of jurisprudence (Fiqh) and Fatwas, a few cases of this inability are described, but Imam Ahmad Raza (Rahimahullah) has described one hundred and seventy-five (175) cases of inability from water. Yet despite this, instead of expressing self-conceit and greatness, he appears as an embodiment of humility and lowliness. He himself says:

"Praise be to Allah! These nearly two hundred, 175 cases of inability from water are from the specialties of this treatise, which will not be found elsewhere, although whatever exists is the grace of the honorable scholars."[2]

It was an important need of the time to convey Fatawa Razawiya to the readers in a simple and attractive style according to modern requirements. Therefore, Raza Foundation, trusting in the Being of Allah Almighty, took up the burden of this important responsibility and stepped into the field of action with firm determination.

In no time, the first half of the first volume of Fatawa Razawiya, with translation of Arabic phrases and tracing of references...

---

1 For details, see "Hayat Imam Ahl-e-Sunnat" by Dr. Muhammad Masood Ahmad (Madazillahul Aali), Markazi Majlis-e-Raza Lahore. 2 For reference, see pages 411 to 546 of the volume under consideration.

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन ...छंटने लगे और इस प्रकार अरब और अज़म की इस महान शैक्षणिक और आध्यात्मिक हस्ती का उज्ज्वल और चमकता हुआ वास्तविक चेहरा निखर कर सामने आ गया। परिणामस्वरूप, इस समय दुनिया भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दस सिर्रहु) के शैक्षणिक शोध पर अत्यंत मूल्यवान लेख लिखे जा रहे हैं।[1]

रज़ा फाउंडेशन लाहौर भी इसी श्रृंखला की एक कड़ी है। इस फाउंडेशन के संस्थापक मख़दूम-ए-मिल्लत, उस्ताद-उल-उलमा, मुफ्ती-ए-आज़म हज़रत अल्लामा मुफ्ती मुहम्मद अब्दुल कय्यूम हज़ारवी (दामत बरकातुहुमुल आलिया) के ज्ञान-प्रेमी, कर्तव्यनिष्ठ और संवेदनशील व्यक्तित्व से कौन परिचित नहीं है। हज़रत मुफ्ती साहब (मदज़िल्लह) के मूक प्रचार और आंदोलन ने सुन्नत के बगीचे में जितने फूल खिलाए हैं, उनकी सुगंधित महक ने पूरब और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण को सुवासित कर रखा है। अल्लाह तआला हज़रत मुफ्ती साहब के प्रयासों में बरकत दे और उनके महत्वपूर्ण शैक्षणिक और धार्मिक प्रोजेक्ट्स को पूर्णता के आभूषण से सुशोभित करे, आमीन!

रज़ा फाउंडेशन ने ख़याबान-ए-रज़ा (रज़ा के उपवन) से जिस महत्वपूर्ण फूल का चयन किया है, उसने अपनों और परायों, सभी से प्रशंसा प्राप्त की है। सच तो यह है कि शोध की दृष्टि से फ़तावा रज़विया का कोई उदाहरण मिलना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है। हर एक मसले पर दलीलों के अंबार लगा देना निस्संदेह हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (रहमतुल्लाह अलैहि) का ही हिस्सा है।

"मुश्त नमूना अज़ ख़रवारे" (ढेर में से एक मुट्ठी नमूने) के अनुसार हज़रत फाज़िल-ए-बरेलवी की फिक़्ही अंतर्दृष्टि और शोध क्षमता की बस एक झलक यहाँ प्रस्तुत है। पानी प्राप्त करने या उसके उपयोग में असमर्थता की स्थिति में तयम्मुम की अनुमति है। फिक़्ह और फ़तावा की सामान्य पुस्तकों में इस असमर्थता के कुछ मामले बताए गए हैं, लेकिन इमाम अहमद रज़ा (रहमतुल्लाह अलैहि) ने पानी से असमर्थता के एक सौ पचहत्तर (175) मामले बताए हैं। इसके बावजूद वह अहंकार और बड़प्पन दिखाने के बजाय विनम्रता और सादगी की प्रतिमूर्ति नजर आते हैं। वे स्वयं फ़रमाते हैं:

"अल्हम्दुलिल्लाह! पानी से असमर्थता के ये पौने दो सौ (175) मामले इस रिसाले (लेख) की विशेषताओं में से हैं जो इसके अलावा कहीं और नहीं मिलेंगे, हालांकि जो कुछ भी है वह विद्वानों का ही फ़ैज़ (अनुग्रह) है।"[2]

आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुसार फ़तावा रज़विया को सरल और आकर्षक शैली में पाठकों तक पहुँचाना समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता थी। इसलिए, रज़ा फाउंडेशन ने अल्लाह

तआला की ज़ात पर भरोसा करते हुए इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का बीड़ा उठाया और दृढ़ संकल्प के साथ कर्म के क्षेत्र में कदम रखा।

देखते ही देखते फ़तावा रज़विया की पहली जिल्द का पहला आधा हिस्सा, अरबी इबारतों के अनुवाद, संदर्भों की खोज...

---

1 विवरण के लिए देखें "हयात इमाम अहले सुन्नत" द्वारा डॉ. मुहम्मद मसूद अहमद (मदज़िल्लहुल आली), मरकज़ी मजलिस-ए-रज़ा लाहौर। 2 संदर्भ के लिए विचाराधीन जिल्द के पृष्ठ 411 से 546 देखें।

पृष्ठ 756 का 6

فتاویٰ رضویہ جلد سوم چھٹنے لگے اور یوں عرب و عجم کی اس عظیم علمی و روحانی شخصیت کا روشن اور جگمگاتا ہوا حقیقی چہرہ نکھر کر سامنے آگیا۔ چنانچہ اس وقت دنیا بھر کے مختلف جامعات میں امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ کی علمی تحقیقات پر نہایت وقیع مقالات لکھے جارہے ہیں۔[1]

رضا فاؤنڈیشن لاہور بھی اسی سلسلے کی ایک کڑی ہے۔ اس فاؤنڈیشن کے بانی مخدوم ملت، استاذ العلماء، مفتی اعظم حضرت علامہ مفتی محمد عبد القیوم ہزاروی دامت برکاتہم العالیہ کی علم دوست، فرض شناس اور دردمند شخصیت سے کون واقف نہیں۔ حضرت مفتی صاحب مدظلہ کی خاموش تبلیغ و تحریک نے گلستانِ سنیت میں جتنے پھول کھلائے ہیں ان کی عطر بیز مہک نے شرق و غرب اور شمال و جنوب کو معطر کر رکھا ہے۔ اللہ تعالیٰ حضرت مفتی صاحب کی مساعی کو برکات سے اور ان کے اہم علمی دینی منصوبوں کو تکمیل کے زیور سے آراستہ فرمائے، آمین!

رضا فاؤنڈیشن نے خیابانِ رضا سے جس اہم پھول کا انتخاب کیا ہے وہ اپنوں اور بیگانوں سب سے دادِ تحسین وصول کر چکا ہے۔ حقیقت تو یہ ہے کہ تحقیقی اعتبار سے فتاویٰ رضویہ کی نظیر ملنا ناممکن نہیں تو مشکل ضرور ہے۔ ایک ایک مسئلے پر دلائل کے انبار لگا دینا بلاشبہ حضرت امام احمد رضا بریلوی رحمۃ اللہ ہی کا حصہ ہے۔

"مشت نمونہ از خروارے" کے مطابق حضرت فاضل بریلوی کی فقہی بصیرت اور تحقیقی صلاحیت کی صرف ایک جھلک پیش خدمت ہے۔ پانی کے حصول یا اس کے استعمال سے عجز کی صورت میں تیمم کی اجازت ہے عام کتب فقہ اور فتاویٰ میں اس عجز کی چند صورتیں بیان کی جاتی ہیں لیکن امام احمد رضا رحمہ اللہ نے پانی سے عجز کی ایک سو پچھتر ۱۷۵ صورتیں بیان

کی ہیں لیکن اس کے باوجود خود پسندی اور بڑائی کے اظہار کی بجائے عجز اور فروتنی کا مجسمہ بنے نظر آتے ہیں۔ خود فرماتے ہیں:

"الحمد للہ! یہ پانی سے عجز کی پونے دوسو ۱۷۵ صورتیں اس رسالہ کے خواص سے ہیں کہ اس کے غیر میں نہ ملیں گی اگرچہ جو کچھ ہے علماء کرام ہی کا فیض ہے۔"[2]

دورِ جدید کے تقاضوں کے مطابق فتاویٰ رضویہ کو آسان اور دلکش پیرائے میں قارئین تک پہنچانا وقت کی اہم ضرورت تھی، چنانچہ رضا فاؤنڈیشن نے اللہ تعالیٰ کی ذات پر بھروسا کرتے ہوئے اس اہم ذمہ داری کا بیڑا اٹھایا اور عزمِ صمیم کے ساتھ میدانِ عمل میں قدم رکھ دیا۔

دیکھتے ہی دیکھتے فتاویٰ رضویہ کی پہلی جلد کا نصف اول، عربی عبارات کے ترجمہ، حوالہ جات کی تخریج

---

1 تفصیل کے لیے دیکھیے "حیات امام اہلسنت" از ڈاکٹر محمد مسعود احمد مدظلہ العالی مرکزی مجلس رضا لاہور 2 حوالہ کے لیے پیش نظر جلد کے صفحات ۴۱۱ تا ۵۴۶ ملاحظہ کیجئے

Fatawa Rizvia Volume 3

After being presented in two beautiful volumes with excellent printing, it received accolades from the scholarly community. Now, half of the latter portion is in your hands as the third volume, with the same splendor.

Fatawa Rizvia Volume 3 Initially, it was planned to publish the discussion on purification from the first (complete) and second volumes of Fatawa Rizvia in three volumes. However, from the printing of the first two volumes, it was realized that a complete discussion of the 'Book of Purification' (Kitab al-Taharah) requires four volumes. Therefore, this entire discussion will be completed in four thick volumes.

The current volume contains subjects from pages 484 to 735 of the old edition. This volume includes answers to fifty-nine (59) questions (fatwas), 1321 scholarly benefits under the title of 'Aqul' (I say), and 501 'Talattafat' (polite remarks) and 'Ma'ruzat' (petitions).

This volume primarily discusses three topics related to purification: (1) The nature of water, i.e., its thinness and flow. (2) Issues concerning wells. (3) All necessary discussions regarding Tayammum (dry ablution).

The current volume also includes the following six treatises: (1) Al-Diqqah wa al-Tibyan li-'Ilm al-Riqqa wa al-Sayalan (1334 AH): A clear explanation of the thinness and flow (of water). (2) Husn al-Ta'ammum li-Bayan Hadd al-Tayammum (1335 AH): An excellent explanation of the essence and definition of Tayammum. (3) Samh al-Nadi fima Yurith al-'Ajz min al-Ma' (1335 AH): An explanation of nearly one hundred and seventy-five (175) situations causing inability to use water. (4) Al-Zafar li-Qawl Zufar (1335 AH): Strengthening Imam Zufar's (may Allah have mercy on him) opinion regarding the permissibility of Tayammum due to lack of time. (5) Al-Matar al-Sa'id 'ala Nabt Jins al-Sa'id (1335 AH): What is meant by 'the genus of earth' (a research-based explanation).

[Footnote] 1: Hazrat Imam Ahmad Raza Brelvi (may Allah have mercy on him) has scholarly jurisprudential differences with predecessor jurists in some places, but he has respectfully termed them as 'Talattuf' (gentle remark) and 'Ma'ruza' (humble petition). 'Talattuf' means to consider oneself small; it's as if from Imam Ahmad Raza Brelvi (may his secret be sanctified), it's not an objection against those elders, but rather a submission and request in their service.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 3

और बेहतरीन छपाई के साथ दो खूबसूरत जिल्दों में पेश होकर विद्वानों से प्रशंसा प्राप्त करने के बाद, अब उत्तरार्ध का आधा हिस्सा तीसरी जिल्द के रूप में उसी भव्यता के साथ आपके हाथों में है।

फ़तावा रिज़विया जिल्द 3 शुरू में सोचा गया था कि फ़तावा रिज़विया की पहली (पूर्ण) और दूसरी जिल्द से शुद्धि (तहारत) की बहस को तीन जिल्दों में प्रकाशित किया जाए, लेकिन पहली दो जिल्दों की छपाई से यह महसूस हुआ कि 'किताब-ुत-तहारत' की पूरी बहस के लिए चार जिल्दों की ज़रूरत है। इसलिए यह पूरी बहस चार मोटी जिल्दों में मुकम्मल होगी।

वर्तमान जिल्द पुरानी जिल्द के पृष्ठ 484 से 735 तक के विषयों पर आधारित है। इस जिल्द में उनसठ (59) सवालों के जवाब (फ़तावे), 'अकुल' (मैं कहता हूँ) के शीर्षक से 1321 शैक्षिक लाभ और 501 'तलत्तुफ़ात' (विनम्र टिप्पणियाँ) और 'मआरुज़ात' (प्रस्तुतियाँ) दर्ज हैं।

इस जिल्द में मुख्य रूप से शुद्धि (तहारत) से संबंधित तीन विषयों पर चर्चा की गई है: (1) पानी की प्रकृति यानी तरलता और बहाव। (2) कुओं के मसले। (3) तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) से संबंधित सभी ज़रूरी बहसें।

वर्तमान जिल्द में निम्नलिखित छह लेख (रिसाले) भी शामिल हैं: (१) अद-दिक्क़ा वल-तिब्यान लि-इल्मिल रिक्क़ा वल-सयलान (१३३४ हिजरी): (पानी की) तरलता और बहाव का स्पष्ट वर्णन। (२) हुस्नुल-तअम्मुम लि-बयान हद्दित-तयम्मुम (१३३५ हिजरी): तयम्मुम के स्वरूप और परिभाषा का बेहतरीन वर्णन। (३) समहुल-नदी फ़ीमा यूरिसुल-अज्ज़ा मिनल-मा (१३३५ हिजरी): पानी के उपयोग में असमर्थता की पौने दो सौ (१७५) स्थितियों का वर्णन। (४) अज़-ज़फ़र लि-क़ौल ज़फ़र (१३३५ हिजरी): समय की कमी के कारण तयम्मुम की अनुमति के बारे में इमाम ज़फ़र (रहमतुल्लाह अलैह) के विचार की पुष्टि। (५) अल-मतरुस-सईद अला नब्ते जिन्सिस-सईद (१३३५ हिजरी): 'जमीन की किस्म' से क्या मुराद है (एक शोधपूर्ण वर्णन)।

[पाद टिप्पणी] १: हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (रहमतुल्लाह अलैह) ने कुछ स्थानों पर पूर्ववर्ती फ़ुक़हा-ए-किराम से शैक्षिक मतभेद व्यक्त किया है, लेकिन उन्होंने इसे शिष्टाचारवश 'तलत्तुफ़' और 'मआरुज़ा' कहा है। 'तलत्तुफ़' का अर्थ है स्वयं को छोटा समझना, मानो इमाम अहमद रज़ा बरेलवी की ओर से उन बुजुर्गों पर कोई आपत्ति नहीं है, बल्कि उनकी सेवा में एक निवेदन और गुज़ारिश है।

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

اور عمدہ طباعت کے ساتھ دو خوب صورت جلدوں میں جلوہ گر ہو کر اہلِ علم سے خراجِ تحسین وصول کر گیا اور اب اسی آب وتاب کے ساتھ نصف آخر کا آدھا حصہ تیسری جلد کی صورت میں آپ کے ہاتھوں میں ہے۔

فتاویٰ رضویہ جلد سوم شروع شروع میں خیال تھا کہ فتاویٰ رضویہ کی پہلی جلد (مکمل) اور دوسری جلد سے طہارت کی بحث کو تین جلدوں میں شائع کیا جائے لیکن پہلی دو جلدوں کی طباعت سے اندازہ ہوا کہ کتاب الطہارت کی مکمل بحث چار جلدوں کی متقاضی ہے، لہٰذا یہ تمام بحث چار ضخیم جلدوں میں مکمل ہو گی۔

پیشِ نظر جلد، پرانی جلد کے صفحہ ۴۸۴ سے ۷۳۵ تک کے مضامین پر مشتمل ہے۔ اس جلد میں انسٹھ ۵۹ سوالات کے جوابات (فتاویٰ) ، اقول کے عنوان سے ۱۳۲۱ علمی فوائد اور ۵۰۱ تلطفات و معروضات مندرج ہیں ۔

اس جلد میں بنیادی طور پر طہارت سے متعلق تین موضوعات پر گفتگو کی گئی ہے: (۱) پانی کی طبع یعنی رقت وسیلان۔ (۲) کنوئیں کے مسائل۔ (۳) تیمّم سے متعلق تمام ضروری ابحاث۔

پیشِ نظر جلد میں درج ذیل چھ رسائل بھی شامل ہیں: (۱) الدقۃ والتبیان لعلم الرقۃ والسیلان ۱۳۳۴ھ (پانی کی) رقت و سیلان کا واضح بیان (۲) حسن التعمم لبیان حد التیمّم ۱۳۳۵ھ تیمّم کی ماہیت و تعریف کا بہترین بیان (۳) سمح الندی فیما یورث العجز من الماء ۱۳۳۵ھ پانی سے عجز کی پونے دوسو ۱۷۵ صورتوں کا بیان (۴) الظفر لقول زفر ۱۳۳۵ھ وقت کی تنگی کے باعث جوازِ تیمّم کے

بارے میں امام زفر رحمہ اللہ کے قول کی تقویت۔ (۵) المطر السعید علی نبت جنس الصعید ۱۳۳۵ھ جنسِ زمین سے کیا مراد ہے۔ (تحقیقی بیان)

[حاشیہ] ۱ حضرت امام احمد رضا بریلوی رحمہ اللہ نے بعض مقامات پر اسلاف فقہاء کرام سے فقہی علمی اختلاف کیا ہے لیکن اسے ادبًا تلطف و معروضہ سے تعبیر کیا ہے۔ تلطف کا مطلب اپنے آپ کو چھوٹا سمجھنا ہے گویا امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ کی طرف سے ان بزرگوں پر اعتراض نہیں بلکہ ان کی خدمت میں عرض و گزارش ہے۔

(6) Al-Jadd al-Sadid fi Nafi al-Isti'mal 'an al-Sa'id 1335 AH

The substance of the earth is not considered "used" (musta'mal) at all.

The extensive benefits noted on the margins of Fatawa Rizvia Volume One (old edition) have been compiled under the title "Fawa'id-e-Jalila" and are being included at the end of the fourth volume. The task of arranging and categorizing these benefits was performed by the noble scholar Maulana Muhammad Abdul Sattar Sa'idi, Director of Education at Jamia Nizamia Razvia, Lahore.

The members of the Raza Foundation are immensely grateful to the great Indian researcher Allama Muhammad Ahmad Misbahi (Bhairwi), may his blessings continue, who, despite his diverse scholarly engagements, provided a very smooth and refined translation of the Arabic passages from the chapter of Tayammum (dry ablution) to the end in a short time.

Allama Muhammad Ahmad Misbahi (Bhairwi) is a proud student of Hazrat Hafiz-e-Millat Allama Abdul Aziz, the Muhaddith of Muradabad (may Allah have mercy on him), and is the Shaykh al-Adab of the renowned educational institution of the subcontinent, "Al-Jamiat-ul-Ashrafia," Mubarakpur (India). You are an expert in both ancient and modern sciences, an author and translator of several scholarly and investigative books. You have made many treatises and fatwas of Imam Ahmed Raza Barelvi (may Allah have mercy on him) accessible to common Urdu readers after translation, research, and annotation. Currently, you are writing an extensive and weighty book on the art of lexicography.

Allama Misbahi is the soul of the institution Al-Majma' al-Islami, Mubarakpur, which has played a prominent role in introducing the scholarly personality of Imam Ahmed Raza Barelvi (may his secret be sanctified) and his glorious researches to the world of knowledge and wisdom. According to Allama Badr al-Qadri (Holland), Allama Muhammad Ahmad Misbahi is the choice of Hazrat Hafiz-e-Millat's (upon whom be mercy) transformative gaze and the fruit of his pure prayers. May Allah Almighty grant acceptance to Allama Muhammad Ahmad Misbahi's religious and national services and grant the Muslim Ummah the opportunity to benefit from his scholarly gems. Amen!

Dear readers! Raza Foundation has handed over a scholarly treasure to you. Continue to provide your valuable suggestions for its improvement and your sincere prayers

for the completion of this important project. May Allah Almighty be our helper and supporter. Amen, for the sake of His Noble Prophet, upon him be greetings and peace!

4 Shaban al-Mu'azzam 1412 AH * Muhammad Siddiq Hazarvi 9 February 1992 Jamia Nizamia Razvia, Lahore

फ़तावा रिज़विया | खंड ३

(६) अल-जद्द अल-सदीद फ़ी नफ़ी अल-इस्तिमाल 'अन अल-सईद १३३५ हिजरी

पृथ्वी की वस्तु (मिट्टी आदि) बिल्कुल भी 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) नहीं होती है।

फ़तावा रिज़विया खंड एक (पुरानी) के हाशिये पर दर्ज विस्तृत लाभों को "फ़वाइद-ए-जलीला" के नाम से एक जगह जमा करके चौथी जिल्द (खंड) के अंत में लाया जा रहा है। इन लाभों को व्यवस्थित और श्रेणीबद्ध करने का कार्य जामिया निज़ामिया रिज़विया, लाहौर के शिक्षा निदेशक फ़ाज़िल-ए-जलील मौलाना मुहम्मद अब्दुल सत्तार सईदी ने संपन्न किया है।

रज़ा फाउंडेशन के सदस्य, भारत के महान शोधकर्ता अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही (भैरवी) दामत बरकातुहुमुल आलिया के अत्यंत आभारी हैं, जिन्होंने अपनी विभिन्न शैक्षणिक व्यस्तताओं के बावजूद थोड़े समय में बाब-ए-तयम्मुम (सूखे वूज़ू का अध्याय) से लेकर अंत तक के अरबी अंशों का बहुत ही सरल और सुसंस्कृत अनुवाद किया।

अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही (भैरवी) हज़रत हाफ़िज़-ए-मिल्लत अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस मुरादाबादी (रहमतुल्लाह अलैहि) के गौरवशाली शिष्य हैं और उपमहाद्वीप के प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्थान "अल-जामियत-उल-अशरफिया", मुबारकपुर (भारत) के शैख़ अल-अदब हैं। आप प्राचीन और आधुनिक विज्ञानों के विशेषज्ञ, कई शैक्षणिक और शोध पुस्तकों के लेखक और अनुवादक हैं। आपने अनुवाद, शोध और टीका के बाद हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (रहमतुल्लाह अलैहि) के कई शोध पत्रों और फ़तवों को आम उर्दू पाठकों के लिए सुलभ बना दिया है। वर्तमान में आप भाषा विज्ञान की कला पर एक विस्तृत और महत्वपूर्ण पुस्तक लिख रहे हैं।

अल्लामा मिस्बाही अल-मजमा-अल-इस्लामी, मुबारकपुर के मुख्य आधार हैं, जिसने इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दिस सिर्रहु) के विद्वतापूर्ण व्यक्तित्व और उनके गौरवशाली शोधों को ज्ञान और बुद्धि की दुनिया में पेश करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। और अल्लामा बद्र अल-क़ादरी (हॉलैंड) के अनुसार, अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही हज़रत हाफ़िज़-ए-मिल्लत (अलैहिर्रहमा) की कीमियाई दृष्टि का चयन और उनकी पवित्र प्रार्थनाओं का फल हैं। अल्लाह तआला अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही (मद ज़िल्लहु) की धार्मिक और राष्ट्रीय सेवाओं को स्वीकार करे और उम्मत-ए-मुस्लिमा को उनके विद्वतापूर्ण मोतियों से लाभ उठाने की तौफीक दे। आमीन!

प्रिय पाठकों! रज़ा फाउंडेशन ने एक विद्वतापूर्ण खजाना आपके हवाले कर दिया है, इसे बेहतर से बेहतरीन बनाने के लिए अपने बहुमूल्य सुझाव और इस महत्वपूर्ण परियोजना को पूरा करने के लिए अपनी ईमानदार प्रार्थनाएँ देते रहें। अल्लाह तआला हम सब का सहायक और रक्षक हो। आमीन, अपने सम्मानित पैगंबर के वसीले से, जिन पर सलाम और अभिवादन हो!

४ शाबान अल-मुअज़्ज़म १४१२ हिजरी * मुहम्मद सिद्दीक़ हज़ारवी ९ फरवरी १९९२ ई. जामिया निज़ामिया रिज़विया, लाहौर

पृष्ठ 8 का 756

(۶) الجد السدید فی نفی الاستعمال عن الصعید ۱۳۳۵ھ

جنس زمین بالکل مستعمل نہیں ہوتی۔

فتاویٰ رضویہ جلد اول (قدیم) کے حاشیہ پر مبسوط فوائد کو یکجا کر کے "فوائد جلیلہ" کے نام سے چوتھی جلد کے آخر میں لایا جا رہا ہے۔ ان فوائد کی ترتیب و تبویب کا فریضہ فاضل جلیل مولانا محمد عبد الستار سعیدی ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور نے انجام دیا ہے۔

رضا فاؤنڈیشن کے ارکان، ہندوستان کے عظیم محقق علامہ محمد احمد مصباحی (بھیروی) دامت برکاتہم العالیہ کے بے حد ممنون ہیں جنہوں نے اپنی گونا گوں علمی مصروفیات کے باوجود مختصر وقت میں باب التیمم سے آخر تک کی عربی عبارات کا نہایت سلیس اور شستہ ترجمہ فرمایا۔

علامہ محمد احمد مصباحی (بھیروی) حضرت حافظ ملت علامہ عبدالعزیز محدث مراد آبادی رحمہ اللہ تعالیٰ کے قابل فخر شاگرد اور برصغیر پاک و ہند کی مایہ ناز مادر علمی "الجامعۃ الاشرفیہ" مبارک پور (ہندوستان) کے شیخ الادب ہیں۔ آپ قدیم وجدید علوم کے ماہر، کئی علمی تحقیقی کتب کے مصنف اور مترجم ہیں۔ حضرت امام احمد رضا بریلوی رحمہ اللہ کے متعدد رسائل اور فتاویٰ کو ترجمہ، تحقیق اور تحشیہ کے بعد عام اردو خوان حضرات کے لیے آسان بنا چکے ہیں۔ اس وقت فن لغت پر ایک مبسوط اور وقیع کتاب تحریر کر رہے ہیں۔

علامہ مصباحی، امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ کی علمی شخصیت اور آپ کی تحقیقات جلیلہ کو علم و دانش کی دنیا میں متعارف کرانے میں نمایاں کردار ادا کرنے والے ادارے المجمع الاسلامی

مبارک پور کے روح رواں ہیں۔ اور بقول علامہ بدرالقادری (ہالینڈ) علامہ محمد احمد مصباحی، حضرت حافظ ملت علیہ الرحمہ کی نگاہ کیمیا کا انتخاب اور ان کی پاکیزہ دعاؤں کا ثمرہ ہیں۔ اللہ تعالیٰ علامہ محمد احمد مصباحی مدظلہ کی دینی و ملی خدمات کو شرف قبولیت اور اُمت مسلمہ کو ان کے علمی جواہر پاروں سے استفادہ کی توفیق عطا فرمائے۔ آمین!

قارئین کرام! رضا فاؤنڈیشن نے ایک علمی ذخیرہ آپ کے حوالے کر دیا ہے، اس کو بہتر سے بہترین کی طرف لے جانے کے لیے اپنے قیمتی مشوروں اور اس اہم منصوبے کی تکمیل کے لیے اپنی پرخلوص دعاؤں سے نوازتے رہے۔ اللہ تعالیٰ ہم سب کا حامی و ناصر ہو۔ آمین بجاہ نبیہ الکریم علیہ التحیہ والتسلیم !

۴ شعبان المعظم ۱۴۱۲ھ * محمد صدیق ہزاروی ۹ فروری ۱۹۹۲ء جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور

Fatawa Razawiya Volume 3

Index Volume Three Chapters and Issues

Chapter of Waters		**Situations of cooking by putting something in water and their rulings.**	**122**
Three situations of mixing something in water and their rulings.	85	Description of 43 waters besides those 730, from which wudu is possible or not.	214
Until when wudu is permissible if something like barley flour (sattu) is mixed in water.	86	Fatwa 56: If drops of wudu fall into a lota (water pot), the water will remain suitable for wudu.	250
Mixing some flowing things also takes away the thinness of water.	88	Fatwa 57: Ruling on water that is square, triangular, circular, or long without width.	250
At what point water will no longer remain 'absolute water' (Aab-e-Mutlaq) due to cooking something in it.	105	Fatwa 59: Non-prayerful water-carriers (bahishtis) put their hands in the bucket to fill water in the mashak (water-skin), and while pouring into pitchers, their hand is on the mouth of the mashak; is this water suitable for wudu or not?	252
Situations of cooking and their results.	121	While filling the mashak, the water falling from the bucket into the mashak is considered 'flowing' (jaari) until it enters the mouth of the mashak.	252
If a 'chattank' (approx 58g) of meat is cooked in a pot full of water, the water will remain suitable for wudu.	122	Fatwa 60: There is heavy vegetation in a pond; if a small area is cleared to wash an impure cloth, will it become pure or not?	253

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरी)

फेहरिस्त जिल्द सोम अवाब ओ मसाइल (अध्याय और समस्याएँ)

बाबुल मियाह (पानी का अध्याय)		**पानी में कोई चीज़ डालकर पकाने की सूरतें और उनके अहकाम।**	**१२२**
पानी में किसी चीज़ के मिलने की तीन सूरतें और उनके अहकाम।	८५	उन ७३० के अलावा और ४३ पानियों का बयान जिनसे वुज़ू हो सकता है या नहीं।	२१४
पानी में सत्तू वग़ैरह कुछ मिल जाए तो उससे किस वक़्त तक वुज़ू जाइज़ है।	८६	फ़तवा ५६: वुज़ू के क़तरे लोटे में गिरें तो पानी क़ाबिले वुज़ू रहेगा।	२५०
बाज़ बहती चीज़ों का मिलना भी पानी की रक़्क़त (पतलापन) खो देता है।	८८	फ़तवा ५७: पानी मुरब्बा (चौकोर), मुसल्लस (तिकोना), मुदव्वर (गोल) या तवील (लंबा) बिला अर्ज़ (बिना चौड़ाई) का हुक्म।	२५०
पानी में कोई चीज़ पकाने से किस वक़्त आबे मुतलक़ (शुद्ध पानी) न रहेगा।	१०५	फ़तवा ५९: बे-नमाज़ी बहिश्ती डोल में हाथ डालकर पानी मश्क में भरते हैं और घड़ों में डालते वक़्त मश्क के दहाने (मुँह) पर उनका हाथ होता है, यह पानी क़ाबिले वुज़ू है या नहीं।	२५२
पकाने की सूरतें और उनके नताइज (परिणाम)।	१२१	मश्क भरते वक़्त पानी जो डोल से निकलकर मश्क में जा रहा है, जब तक दहाने मश्क में दाख़िल न हो, 'जारी' है।	२५२
देगचा भर पानी में छटांक भर गोश्त पकाया तो पानी क़ाबिले वुज़ू रहेगा।	१२२	फ़तवा ६०: तालाब में ज़राअत (खेती/वनस्पति) कसीर (अधिक) है, उसमें थोड़ी जगह ख़ाली करके नजिस कपड़ा धोएँ तो पाक होगा या नहीं।	२५३

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

فہرست جلد سوم ابواب و مسائل

باب المیاہ ۱۲۱

پانی میں کسی شے کے ملنے کی تین صورتیں اور ان کے احکام۔ ۸۵

پانی میں ستو وغیرہ کچھ مل جائے تو اس سے کس وقت تک وضو جائز ہے۔ ۸۶

بعض بہتی چیزوں کا ملنا بھی پانی کی رقت کھو دیتا ہے۔ ۸۸

پانی میں کوئی چیز پکانے سے کس وقت آبِ مطلق نہ رہے گا۔ ۱۰۵

پانی میں کوئی چیز ڈال کر پکانے کی صورتیں اور ان کے احکام۔ ۱۲۲

ان ۷۳۰ کے علاوہ اور ۴۳ پانیوں کا بیان جن سے وضو ہوسکتا ہے یا نہیں۔ ۲۱۴

فتویٰ ۵۶۔ وضو کے قطرے لوٹے میں گرے تو پانی قابل وضو رہے گا۔ ۲۵۰

فتویٰ ۵۷۔ پانی مربع، مثلث، مدوّر یا طویل بلا عرض کا حکم۔ ۲۵۰

فتویٰ ۵۹۔ بے نمازی بہشتی ڈول میں ہاتھ ڈال کر پانی مشک میں بھرتے ہیں اور گھڑوں میں ڈالتے وقت مشک کے دہانے پر اُن کا ہاتھ ہوتا ہے یہ پانی قابلِ وضو ہے یا نہیں۔ ۲۵۲

باب المیاہ	**پانی میں کوئی چیز ڈال کر پکانے کی صورتیں اور ان کے احکام۔**	۱۲۲
پکانے کی صورتیں اور ان کے نتائج۔	مشک بھرتے وقت پانی کہ ڈول سے نکل کر مشک میں جا رہا ہے جب تک دہانہ مشک میں داخل نہ ہو جاری ہے۔	
دیگچہ بھر پانی میں چھٹانک بھر گوشت پکایا تو پانی قابلِ وضو رہے گا۔	فتویٰ ۶۰۔ تالاب میں زراعت کثیر ہے اس میں تھوڑی جگہ خالی کرکے نجس کپڑا دھوئیں تو پاک ہوگا یا نہیں۔	۱۲۲ ۲۵۳

Volume 3 Fatawa Rizwia

Fatwa 61: What is the ruling if the hand of a person in a state of major ritual impurity (Junub) or menstruation (Haiz) is submerged in water? 254 Fatwa 71: A shoe fell in, and a Hindu entered the well without bathing; what is the ruling? 269 Fatwa 62: People bathe standing on the well, and water goes inside; what is the ruling? 254 Fatwa 72: A calf or kid was born and, while still soiled with birth fluids, fell into the well; the well is pure. 262 Fatwa 63: A person in a state of Junub filled a bucket; he bathed with the water touched by his hands; was the bath valid or not? 254 Fatwa 72: No harm comes to the well by women filling water. 271 Fatwa 64: Bathing and ablution (Wudu) with water filled by a Hindu is correct. 255 Filling by a woman wearing a lehenga also causes no harm. 271 Fatwa 65: Regarding the skin of a slaughtered animal in relation to impurities. 256 Fatwa 73: There is a small basin (chah bacha) near the well; water from ablution, bath of impurity, etc., goes into it, and it keeps flowing out through a hole; a smallpox crust/scab fell into it and then into the well; what is the ruling for the well? 271 The leftover water of a mule whose mother is a mare is pure. 503 Fatwa 74: Pure and impure water of all kinds comes into the basin (chah bacha), and there is a hole half a yard high; water flows out when it gets higher than that, otherwise it stays, and it also smells; if a crust that fell into it falls into the well, what is the ruling? 272

Section on the Well

Fatwa 75: A chicken coop was put into the well to take out a chicken; how many buckets should be drawn, and is the wage for taking them out on the owner of the chicken or not? 275 Fatwa 66: Ruling on a chameleon falling into the well. 261 Fatwa 76: Ruling on a lizard falling into the well. 275 Fatwa 67: Quantity of an average bucket. 261 Fatwa 77: If a Muslim went into the well after bathing, will some buckets be drawn or not? 278 Fatwa 68: What is the ruling if a cow or buffalo's tendon was taken out of the well? 266 Fatwa 78: Splashes from Hindus bathing and their dhotis go into the well; is the well pure or impure? 278 Fatwa 69: A child's umbilical cord fell into the well, and water was drunk for two days unknowingly. 266 Fatwa 79: A platform (pirhi) on which a child's urine is suspected, or a leg of a bed on which chicken droppings were stuck, if it falls into the well, what is the ruling? 279 Fatwa 70: A swelling (phalna) fell into the well, what is the ruling? 267

जिल्द सोम (तीसरा खंड) फ़तावा रिज़विया

फ़तवा 61: जुनुब (अशुद्ध अवस्था) या माहवारी वाली स्त्री का हाथ पानी में डूब जाए तो क्या हुक्म है? 254 फ़तवा 71: जूता गिर गया और बिना नहाया हिंदू कुएं में घुस गया, क्या हुक्म है? 269 फ़तवा 62: लोग कुएं पर खड़े होकर नहाते हैं, पानी अंदर जाता है, क्या हुक्म है? 254 फ़तवा 72: गाय या बकरी का बच्चा पैदा होते ही अपने जन्म के तरल पदार्थों से सना हुआ कुएं में गिर गया, कुआं पाक (शुद्ध) है। 262 फ़तवा 63: जुनुब ने डोल भरवाया, उसके हाथों से छुए हुए पानी से नहाया, ग़ुस्ल (स्नान) हुआ या नहीं? 254 फ़तवा 72: औरतों के पानी भरने से कुएं में कोई खलल नहीं आता। 271 फ़तवा 64: हिंदू के भरे हुए पानी से ग़ुस्ल और वज़ू दुरुस्त है। 255 लहंगा पहनने वाली औरत के भरने से भी कुछ खलल नहीं आता। 271 फ़तवा 65: ज़बह किए हुए जानवर की खाल के बारे में नजासत के संदर्भ में। 256 फ़तवा 73: कुएं के पास एक चह-बच्चा (छोटा हौज) है, उसमें वज़ू, जनाबत का ग़ुस्ल और हर तरह का पानी जाता है और एक छेद से निकलता रहता है; उसमें चेचक का खुरंड गिरकर कुएं में गिर गया, कुएं का क्या हुक्म है? 271 जिस खच्चर की माँ घोड़ी है, उसका जूठा पाक है। 503 फ़तवा 74: चह-बच्चे में पाक और नापाक हर तरह का पानी आता है, उसमें आधा गज़ ऊँचा छेद है, पानी उससे ऊँचा होकर निकलता है वरना ठहरा रहता है और उसमें बदबू भी आती है; उसमें गिरा हुआ खुरंड कुएं में गिर जाए तो क्या हुक्म है? 272

फ़स्ल फ़िल-बइर (कुएं के बारे में अध्याय)

फ़तवा 75: मुर्गी निकालने के लिए उसका पिंजरा कुएं में डाला गया, कितने डोल निकाले जाएं और उनके निकालने की मज़दूरी मुर्गी के मालिक पर है या नहीं? 275 फ़तवा 66: कुएं में गिरगिट गिरने का हुक्म। 261 फ़तवा 76: छिपकली गिरने का हुक्म। 275 फ़तवा 67: औसत डोल की मात्रा। 261 फ़तवा 77: मुसलमान नहाकर कुएं में गया तो क्या कुछ डोल निकलेंगे या नहीं? 278 फ़तवा 68: गाय या भैंस का पट्ठा (स्नायु) कुएं से निकला तो क्या हुक्म है? 266 फ़तवा 78: हिंदुओं के नहाने और धोतियों की छींटें कुएं में जाती हैं, कुआं पाक है या नापाक? 278 फ़तवा 69: बच्चे की गर्भनाल कुएं में गिर गई और दो दिन तक अनजाने में पानी पिया। 266 फ़तवा 79: पीढ़ी जिस पर बच्चे के पेशाब का संदेह है, या पावा जिस पर मुर्गी की बीट लगी हो, अगर वह कुएं में गिर जाए तो क्या हुक्म है? 279 फ़तवा 70: फलना (सूजन) कुएं में गिर गया तो क्या हुक्म है? 267

पेज 10 ऑफ 756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

فتویٰ ۶۱۔ جنب یا حیض والی کا ہاتھ پانی میں ڈوبے تو کیا حکم ہے۔ ۲۵۴ فتویٰ ۷۱۔ جوتا گرا اور ہندو بے نہائے گھسا کنویں کا کیا حکم ہے۔ ۲۶۹ فتویٰ ۶۲۔ کنویں پر کھڑے ہو کر لوگ نہاتے ہیں پانی اندر جاتا ہے کیا حکم ہے۔ ۲۵۴ فتویٰ ۷۲۔ گائے بکری کا بچہ پیدا ہوتے ہی اپنی رطوبتوں میں آلودہ کنویں میں گر گیا کنواں پاک ہے۔ ۲۶۲ فتویٰ ۶۳۔ جنب نے ڈول بھرایا اس کے ہاتھ پڑے ہوئے پانی سے نہایا غسل ہوا یا نہیں۔ ۲۵۴ فتویٰ ۷۲۔ عورتوں کے بھرنے سے کنویں میں کچھ خلل نہیں آتا۔ ۲۷۱ فتویٰ ۶۴۔ ہندو کے بھرے پانی سے غسل و وضو درست ہے۔ ۲۵۵ لینگے والی عورت کے بھرنے سے بھی کچھ خلل نہیں ۲۷۱ فتویٰ ۶۵۔ درباره جلد مذبوح در باب انجاس۔ ۲۵۶ فتویٰ ۷۳۔ کنویں کے پاس چہ بچہ ہے اس میں وضو و غسل جنابت ہر طرح کا پانی جاتا ہے اور ایک سوراخ سے نکلتا رہتا ہے پیچک اس میں گر کر کنویں میں گری کنویں کا کیا حکم ہے۔ ۲۷۱ جس خچر کی ماں گھوڑی ہے اس کا جوٹھا پاک ہے۔ ۵۰۳ فتویٰ ۷۴۔ چہ بچہ میں پاک و ناپاک پانی سب طرح کے آتے ہیں اور اس میں آدھ گز اونچا سوراخ ہے پانی اس سے اونچا ہو کر نکلتا ہے ورنہ ٹھہرا رہتا ہے اور اس میں بو بھی آتی ہے اس میں گری ہوئی پیچک کنویں میں گری تو کیا حکم ہے۔ ۲۷۲

فصل فی البئر

فتویٰ ۷۵۔ مرغی نکالنے کو اس کا کھانچا کنویں میں ڈالا کتنے ڈول نکالے جائیں اور ان کے نکالنے کی اجرت مرغی کے مالک پر ہے یا نہیں۔ ۲۷۵ فتویٰ ۶۶۔ کنویں میں گرگٹ گرنے کا حکم۔ ۲۶۱ فتویٰ ۷۶۔ چھپکلی گرنے کا حکم۔ ۲۷۵ فتویٰ ۶۷۔ دلو وسط کی مقدار۔ ۲۶۱ فتویٰ ۷۷۔ مسلمان

نہا کر کنویں میں گیا تو کچھ ڈول نکلیں گے یا نہیں۔ ۲۷۸ فتویٰ ۶۸۔ گائے بھینس کا پٹھا کنویں سے نکلا تو کیا حکم۔ ۲۶۶ فتویٰ ۷۸۔ ہندوؤں کے نہانے اور دھوتیوں کی چھینٹیں کنویں میں جاتی ہیں کنواں پاک ہے یا ناپاک۔ ۲۷۸ فتویٰ ۶۹۔ بچہ کانال کنویں میں گر گیا اور دو روز تک بے خبری میں پانی پیا۔ ۲۶۶ فتویٰ ۷۹۔ پیڑھی جس پر بچہ کے پیشاب کا گمان ہے یا پائے میں مرغی کی بیٹ لگنے کا دہ اگر کنویں میں گر جائے تو کیا حکم ہے۔ ۲۷۹ فتویٰ ۷۰۔ پھلنا کنویں میں گر گیا تو کیا حکم ہے۔ ۲۶۷

Fatawa Razawiya Volume 3

Fatwa 80: Does the packet [disinfectant] put in by the government keep the water suitable for ablution and drinking or not? (Page 280) Ruling: It is commanded to extract all the water that was in the well at the time the impurity was discovered, even if it amounts to thousands of buckets; the 'three hundred bucket' rule does not apply here. (Page 286)

Fatwa 81: Someone told a boy that a lizard fell into the well, but neither was it found nor could that person be located. What is the ruling in this case? (Page 280) Meaning of "Paani Torna" (breaking water). (Page 286)

Fatwa 82: Does Hindu men and women drawing water from a well cause any harm? Muslims should endeavor to ensure Hindus do not draw from mosque wells; what is the status of a person who prevents such efforts? (Page 281) Meaning of extracting "all water". (Page 286)

Fatwa 83: A dead dog was taken out of a well whose water had been in use until yesterday; what is the ruling regarding bodies and clothes? (Page 281) Fatwa 88: A pump is installed in a well. If impurity falls into the pump, will the well water become impure? And if it falls into the well, will the pump water become impure or not? (Page 286)

Fatwa 84: What is the ruling if a used shoe falls into a well? (Page 282) Will a small amount of animal droppings, manure, or dung make the well impure or not? (Page 285 - Margin)

Fatwa 85: People draw a full bucket, take what they need, and pour the rest back into the well; what is the ruling on this? (Page 283) A small amount of these things is excused due to necessity. (Page 285 - Margin)

Fatwa 86: How much water should be removed if a pitcher full of dung is thrown into a well? Is the word of an untrustworthy Muslim reliable in this matter? Water was drawn with a bucket twice the size of the well's regular bucket until it was less than half-submerged; is it purified or not? The person drawing was a Hindu; is his report of it being less than half-submerged reliable or not? The well has refilled; how much should be drawn now, and which bucket's volume should be trusted? (Page 284) If someone intentionally throws even a single piece of dung, the well will become impure. Ruling on public wells where ignorant Hindus draw water and dip dung-smeared pitchers. (Page 285 - Margin)

Fatwa 87: A well has a diameter of 3 cubits and 14 feet of water; if the ruling is to extract all, what should be done? What is meant by extracting "all water" or "breaking water"? Is drawing two to three hundred buckets from a large well sufficient or not? (Page 286) If there is a pile of impurity some distance from the well and its effect appears in the well, the water will be impure. (Page 285 - Margin)

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

फ़तवा 80: सरकार की ओर से जो पुड़िया डाली जाती है, उससे पानी वज़ू और पीने के काबिल रहता है या नहीं? (पृष्ठ 280) हुक्म: नजासत (गंदगी) निकलने के समय कुएँ में जितना पानी था, वह सब निकालने का हुक्म है, भले ही वह हज़ारों बाल्टियाँ ही क्यों न हों; यहाँ तीन सौ बाल्टियों वाला मसला लागू नहीं होता। (पृष्ठ 286)

फ़तवा 81: किसी व्यक्ति ने एक लड़के से कहा कि कुएँ में छिपकली गिरी है, लेकिन न वह मिली और न उस व्यक्ति का पता चला। इसमें क्या हुक्म है? (पृष्ठ 280) 'पानी तोड़ने' का अर्थ। (पृष्ठ 286)

फ़तवा 82: हिंदू पुरुष और महिला द्वारा पानी भरने से कुएँ में कोई नुकसान होता है या नहीं? मुसलमानों को कोशिश करनी चाहिए कि हिंदू मस्जिद के कुएँ से पानी न भरें; वह व्यक्ति कैसा है जो इस कोशिश को रोकता है? (पृष्ठ 281) 'कुल पानी' निकालने का अर्थ। (पृष्ठ 286)

फ़तवा 83: कुएँ से एक मरा हुआ कुत्ता निकला, जिसका पानी कल तक इस्तेमाल किया गया था; शरीर और कपड़ों के बारे में क्या हुक्म है? (पृष्ठ 281) फ़तवा 88: कुएँ में नल लगा है। यदि नल में गंदगी गिरे तो कुआँ, और यदि कुएँ में गंदगी गिरे तो नल का पानी नापाक होगा या नहीं? (पृष्ठ 286)

फ़तवा 84: कुएँ में इस्तेमाल किया हुआ जूता गिर जाए तो क्या हुक्म है? (पृष्ठ 282) क्या थोड़ी सी लेंडी, लीद या गोबर से कुआँ नापाक हो जाएगा या नहीं? (पृष्ठ 285 - हाशिए में)

फ़तवा 85: लोग पूरी बाल्टी भरते हैं, अपनी ज़रूरत का पानी लेकर बाकी कुएँ में वापस डाल देते हैं; इसका क्या हुक्म है? (पृष्ठ 283) ज़रूरत के कारण इन चीज़ों की थोड़ी मात्रा माफ है। (पृष्ठ 285 - हाशिए में)

फ़तवा 86: यदि गोबर से भरा घड़ा कुएँ में गिर जाए तो कितना पानी निकाला जाना चाहिए? क्या इस बारे में किसी अविश्वसनीय मुसलमान की खबर मान्य है? कुएँ की बाल्टी से दुगुनी बड़ी बाल्टी से पानी तब तक निकाला गया जब तक वह आधे से कम नहीं डूबने लगा; क्या वह पाक हो गया या नहीं? पानी निकालने वाला हिंदू था; क्या उसका यह कहना मान्य है कि पानी आधे से कम रह गया है? कुआँ फिर से भर गया है; अब कितना पानी निकालें और किस बाल्टी का भरोसा किया जाए? (पृष्ठ 284) यदि कोई स्वयं गोबर का एक कण भी कुएँ में डाल दे तो कुआँ नापाक हो जाएगा। उस

सार्वजनिक कुएँ का हुक्म जिसमें हिंदू गँवार पानी भरते हैं और गोबर से सने घड़े डालते हैं। (पृष्ठ 285 - हाशिए में)

फ़तवा 87: कुएँ का व्यास तीन हाथ और पानी 14 फीट है; यदि सारा पानी निकालने का हुक्म हो तो क्या किया जाए? 'कुल पानी निकालने' या 'पानी तोड़ने' का क्या अर्थ है? क्या किसी बड़े कुएँ से दो-तीन सौ बाल्टियाँ निकालना काफी है या नहीं? (पृष्ठ 286) यदि कुएँ से कुछ दूरी पर नजासत के ढेर हों और उसका प्रभाव कुएँ में दिखाई दे, तो पानी नापाक होगा। (पृष्ठ 285 - हाशिए में)

पृष्ठ 11 का 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

فتوی ۸۰۔ گورنمنٹ کی طرف سے جو پڑیا ڈالی جاتی ہے پانی وضو اور پینے کے قابل رہتا ہے یا نہیں۔ (صفحہ ۲۸۰) حکم: نجاست نکلنے کے وقت کنویں میں جتنا پانی تھا سب نکالنے کا حکم ہے اگر چہ ہزاروں ڈول ہو و تین سو کا مسئلہ یہاں جاری نہیں۔ (صفحہ ۲۸۶)

فتوی ۸۱۔ کوئی شخص ایک لڑکے سے کہہ گیا ہے کہ کنویں میں چھپکلی گری ہے مگر نہ وہ ملی نہ اس شخص کا پتا چلا اس میں کیا حکم ہے۔ (صفحہ ۲۸۰) پانی توڑنے کے معنی۔ (صفحہ ۲۸۶)

فتوی ۸۲۔ ہندو مرد و عورت کے بھرنے سے کنویں میں نقصان آتا ہے یا نہیں۔ مسلمان کوشش کریں کہ ہندو مسجد کے کنویں سے نہ بھریں اور ایک شخص اس کوشش سے باز رکھے وہ کیسا ہے۔ (صفحہ ۲۸۱) کل پانی نکالنے کے معنی۔ (صفحہ ۲۸۶)

فتوی ۸۳۔ کنویں سے مردہ کتا نکلا کل تک اس کا پانی استعمال ہوتا رہا، بدن اور کپڑوں کا کیا حکم ہے۔ (صفحہ ۲۸۱) فتوی ۸۸۔ کنویں میں نل لگایا ہے نل میں نجاست گرے تو کنواں اور کنویں میں گرے تو نل کا پانی ناپاک ہو گا یا نہیں (صفحہ ۲۸۶)

فتوی ۸۴۔ کنویں میں استعمال جوتا گر جائے تو کیا حکم ہے۔ (صفحہ ۲۸۲) قلیل مینگنی، لید، گوبر سے کنواں ناپاک ہو گا یا نہیں۔ (صفحہ ۲۸۵ - حاشیہ)

فتوی ۸۵۔ لوگ ڈول بھر اپنے صرف کے لائق لے کر باقی کنویں میں لوٹ دیتے ہیں اس کا کیا حکم ہے۔ (صفحہ ۲۸۳) ان چیزوں کا قلیل ضرورت کے لیے معاف ہے (صفحہ ۲۸۵ - حاشیہ)

فتوی ۸۶۔ گوبر کا بھرا گھڑا کنویں میں ڈالنے سے کتنا پانی نکالا جائے اور غیر ثقہ مسلمان کی خبر اس باب میں معتبر ہے یا نہیں۔ کنویں کے ڈول سے ایک ڈول دو چند ہے اس سے پانی نکالا

یہاں تک کہ وہ نصف سے کم ڈوبنے لگا پاک ہوا یا نہیں۔ نکالنے والا ہندو تھا نصف سے کم ڈوبنے کی خبر اس نے دی یہ معتبر ہے یا نہیں۔ کنواں پھر بھر گیا ہے اب نکالیں تو کتنا، کون سے ڈول کا اعتبار ہے۔ (صفحہ ۲۸۴) خود اگر کوئی ایک ریزہ گوبر کا کنویں میں ڈال دے گا کنواں ناپاک ہو جائے گا اور اس عام کنویں کا حکم جس میں ہندو گنوار بھرتے اور گوبر کے سنے گھڑے ڈالتے ہیں۔ (صفحہ ۲۸۵ - حاشیہ)

فتوی ۸۷۔ کنویں کا قطر تین ہاتھ اور ۱۴ چودہ فٹ پانی ہے کل نکالنے کا حکم ہو تو کیا کیا جائے۔ کل پانی نکالنے یا پانی توڑنے کے کیا معنی، بڑے کنویں سے دو تین سو ڈول نکال دینا کافی ہے یا نہیں۔ (صفحہ ۲۸۶) کنویں سے کچھ فاصلہ پر نجاست کا بچہ بچہ ہے اور اس کا اثر کنویں میں ظاہر ہوا پانی ناپاک ہوگا۔ (صفحہ ۲۸۵ - حاشیہ)

صفحہ ۱۱ از ۷۵۶

Fatawa Razawiyya - Volume 3

Page	Fatwa / Subject
288	Fatwa 89: What is the ruling if a decomposed animal is taken out of a well?
288	Fatwa 90: What is the ruling if a Rafidi prayer-performer enters a well?
288	Fatwa 91: A live pig came out of a well and there is twelve yards of water in it, what is the ruling?
289	It is not necessary to draw out the prescribed amount of water all at once.
288	Fatwa 92: Why does a well remain pure if a cow or goat comes out of it alive, even though their feet are daily soiled with urine?
293	Fatwa 93: What is the ruling if one unknowingly bathed, washed clothes, or cooked food with water from an impure well?
293	Fatwa 94: A spring-fed well whose water is difficult to exhaust; if ordered to empty it completely, what should be done, are three hundred buckets enough, and what if taken out in small amounts?
294	Fatwa 95: A decomposed sparrow was found, or a person without Wudu/ Ghusl or a prayer-performer fell in and came out alive, what is the ruling?

Page	Fatwa / Subject
288	**Chapter of Tayammum**
297	Fatwa 98: For which prayer is it permissible to skip Wudu due to fear of missing it?
297	Fatwa 99: There is no need to remove socks during Tayammum.
300	Fatwa 100: Meanings of Market Price, Slight Deception, Gross Deception, and Valuation by Experts.
302	Fatwa 101: For substances not from the earth category, enough dust is required for Tayammum so that finger marks are visible after wiping.
304	Fatwa 102: Tayammum is not permissible without harm when water is available.
305	Fatwa 103: Regarding Wudu.
305	If Tayammum was done for fear of missing a funeral prayer while water was available, one can

Page	Fatwa / Subject
294	Fatwa 96: A bloated mouse was found and water cannot be exhausted, what is the ruling and how many prayers should be repeated?
295	Fatwa 97: The order was to empty all water, but only 360 buckets were drawn and Wudu/prayer resumed for several days; what is the ruling for them?
306	neither pray regular prayers nor touch the Quran with it.
306	A person unable to use water performed Tayammum for funeral prayer; they can perform every prayer with it.
306	Fatwa 104: If water is harmful during a state of heat and sweat from exercise, one should perform Tayammum.
306	Fatwa 105: Hookah water is pure, and if no other water is found during travel, Tayammum is not valid in its presence.

फ़तावा रज़विया - भाग 3

पृष्ठ	फ़तवा / विषय
288	फ़तवा 89: कुएं से सड़ा हुआ जानवर निकले तो क्या हुक्म है।
288	फ़तवा 90: राफ़ज़ी नमाज़ी कुएं में घुसे तो क्या हुक्म है।
288	फ़तवा 91: कुएं से ज़िंदा सुअर निकल आया और उसमें बारह गज़ पानी है तो क्या हुक्म है।
289	जितना पानी निकालने का हुक्म हुआ, एक साथ निकालना ज़रूरी नहीं।
288	फ़तवा 92: गाय या बकरी कुएं से ज़िंदा निकल आए तो कुआं किस वजह से पाक रहता है, जबकि उनके पैर रोज़ाना पेशाब में सने होते हैं।
293	फ़तवा 93: नापाक कुएं से अनजाने में नहाया, कपड़े धोए या खाना पकाया तो क्या हुक्म है।
293	फ़तवा 94: चश्मे वाला कुआं जिसका पानी खत्म करना मुश्किल हो, अगर पूरा निकालने का हुक्म हो तो क्या करें, और क्या तीन सौ डोल काफी हैं या नहीं, और थोड़ा-थोड़ा करके निकालें तो क्या हुक्म है।
294	फ़तवा 95: सड़ी हुई चिड़िया निकली और बे-वज़ू या बे-गुस्ल या नमाज़ी कुएं में गिरकर ज़िंदा निकल आए तो क्या हुक्म है।
288	**तयम्मुम का अध्याय**
297	फ़तवा 98: किस नमाज़ के छूट जाने के डर से वज़ू छोड़ने की इजाज़त है।
297	फ़तवा 99: तयम्मुम में मोज़े उतारने की ज़रूरत नहीं।
300	फ़तवा 100: मिस्ल-ए-क़ीमत, ग़बन-ए-यसीर, ग़बन-ए-फ़ाहिश और तक़वीम-ए-मुक़व्विमीन के अर्थ।
302	फ़तवा 101: जो चीज़ ज़मीन की श्रेणी से न हो, उस पर तयम्मुम के लिए उतनी धूल चाहिए कि हाथ फेरने से उंगलियों का निशान बन जाए।
304	फ़तवा 102: पानी होते हुए बिना किसी नुकसान के तयम्मुम जायज़ नहीं।
305	फ़तवा 103: वज़ू के बारे में।
305	पानी मौजूद होने पर जनाज़े की नमाज़ छूटने के डर से तयम्मुम किया, तो

पृष्ठ	फ़तवा / विषय
294	फ़तवा 96: फूला हुआ चूहा निकला और पानी खत्म नहीं हो सकता तो क्या हुक्म है और कितनी नमाज़ें दोहराए।
295	फ़तवा 97: सारा पानी निकालने का हुक्म था, सिर्फ360 डोल निकालकर कई दिन से वज़ू और नमाज़ शुरू कर दी, उनके लिए क्या हुक्म है।
306	पानी से लाचार व्यक्ति ने जनाज़े की नमाज़ के लिए तयम्मुम किया, तो उससे हर नमाज़ पढ़ सकता है।
306	फ़तवा 104: कसरत की गर्मी और पसीने की हालत में अगर पानी नुकसानदेह हो, तो तयम्मुम करे।
306	फ़तवा 105: हुक्के का पानी पाक है और सफर में अगर और पानी न मिले तो उसके होते हुए तयम्मुम नहीं हो सकता।

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

صفحہ	فتویٰ / موضوع
۲۸۸	فتویٰ ۸۹۔ سڑا ہوا جانور کنویں سے نکلے تو کیا حکم ہے۔
۲۸۸	فتویٰ ۹۰۔ رافضی نمازی کنویں میں گھسے تو کیا حکم ہے۔
۲۸۸	فتویٰ ۹۱۔ کنویں سے زندہ خنزیر نکل آیا اور اس میں بارہ گز پانی ہے تو کیا حکم ہے۔
۲۸۹	جتنا پانی نکالنے کا حکم ہوا ایک ساتھ نکالنا ضرور نہیں۔
۲۸۸	فتویٰ ۹۲۔ گائے بکری کنویں سے زندہ نکل آئے تو کنواں کس وجہ سے پاک رہتا ہے حالانکہ اس کے پاؤں وغیرہ روز پیشاب میں بھرتے ہیں۔
۲۹۳	فتویٰ ۹۳۔ ناپاک کنویں سے انجانی میں نہایا، کپڑے دھوئے، کھانا پکایا تو کیا حکم ہے۔
۲۸۸	**باب التیمم**
۲۹۷	فتویٰ ۹۸۔ کس نماز کے جانے کے خوف سے ترک وضو کی اجازت ہے۔
۲۹۷	فتویٰ ۹۹۔ تیمم میں موزہ اتارنے کی حاجت نہیں۔
۳۰۰	فتویٰ ۱۰۰۔ مثل قیمت و غبن یسیر و غبن فاحش و تقویم مقومین کے معنی۔
۳۰۲	فتویٰ ۱۰۱۔ جو چیز جنس ارض سے نہ ہو اس پر تیمم کے لیے اتنا غبار درکار کہ ہاتھ پھیرنے سے انگلیوں کا نشان بن جائے۔
۳۰۴	فتویٰ ۱۰۲۔ پانی ہوتے ہوئے بغیر ضرر کے تیمم جائز نہیں۔

صفحہ	فتویٰ / موضوع
۲۹۳	فتویٰ ۹۴۔ چشمہ دار کنواں جس کا پانی توڑنا دشوار ہے اگر کل نکالنے کا حکم ہو کیا کرے اور تین سو ڈول کافی ہیں یا نہیں اور تھوڑے تھوڑے کر کے نکالیں تو کیا حکم ہے۔
۲۹۴	فتویٰ ۹۵۔ چڑیا گلی ہوئی نکلی اور بے وضو یا بے غسل یابے نمازی کنویں میں گر کر زندہ نکل آئے تو کیا حکم ہے۔
۲۹۴	فتویٰ ۹۶۔ پھولا ہوا چوہا نکلا اور پانی ٹوٹ نہیں سکتا تو کیا حکم ہے اور کتنی نمازیں پھیرے۔
۲۹۵	فتویٰ ۹۷۔ کل پانی کے نکالنے کا حکم تھا صرف تین سو ساٹھ ڈول نکال کر کئی دن سے وضو و نماز شروع کر دی، ان کا کیا حکم ہے۔
۳۰۵	فتویٰ ۱۰۳۔ در باب الوضو۔
۳۰۵	پانی پاتے ہوئے خوف فوت نماز جنازہ کے لیے تیمم کیا اس تیمم سے نہ نماز پڑھ سکتا ہے نہ قرآن مجید چھو سکتا ہے۔
۳۰۶	پانی سے عاجز نے نماز جنازہ کے لیے تیمم کیا اس سے ہر نماز پڑھ سکتا ہے۔
۳۰۶	فتویٰ ۱۰۴۔ ورزش کی گرمی اور پسینے کی حالت میں اگر پانی مضر ہو تیمم کرے۔
۳۰۶	فتویٰ ۱۰۵۔ حقہ کا پانی پاک ہے اور سفر میں اگر اور پانی نہ ملے تو اس کے ہوتے ہوئے تیمم نہیں ہو سکتا۔

Fatawa Razviya, Volume Three

Fatwa/Topic	Page	Topic	Page
Fatwa 106: Performed intercourse, woke up late in the morning with little time left; can he pray after just washing the private parts or not?	307	Standing in front of approaching dust with the intention of Tayammum; until hands are wiped, Tayammum is not done.	341
Fatwa 107: Pain in joints and injury on the elbow; is Tayammum permissible or not?	308	Sweeping or weighing wheat; the dust from these has the same ruling.	341
Fatwa 108: Due to elephantiasis, should one do Tayammum or wipe (Masah) over that foot?	308	Head and hands entered into a place of dust with the intention of Tayammum; if dust reached everywhere, Tayammum is done.	342
Fatwa 109: Is Tayammum permissible instead of Ghusl for someone with elephantiasis?	309	Moved head and hands in flying dust with the intention of Tayammum; Tayammum is done.	342
Fatwa 110: At a field outside the village, time for morning prayer arrived and there's no water; should one do Tayammum or what?	309	Sprinkling sand or soil all over the face and hands does not result in Tayammum until hands are wiped.	342
Fatwa 111: Performed Tayammum instead of Ghusl due to lack of time and prayed, then took a bath; should the prayer be repeated?	310	Blew dust onto face and hands with intention of Tayammum; Tayammum not done. However, if head and hands were moved in that flying dust with intention, it is done.	343
Fatwa 112: Definition and Shariah nature of Tayammum.	311	Walking on a path and dust surrounds; if head and hands are moved with	343

Fatwa/Topic	Page	Topic	Page
		intention of Tayammum, it is done, otherwise not.	
The author's research that every pure earth is a purifier.	315	What kind of action is a condition in Tayammum?	344
Hands struck upon the earth with the intention of Tayammum themselves become like the earth in ruling.	328	Method of Tayammum from dust by shaking a cloth.	347
There is no need for dust to stick to the hands in Tayammum; rather, the Sunnah is to shake it off if it sticks.	328	Dust fell on a wet impure thing and dried; Tayammum is not permissible with it. But if dust fell on dry impure thing, it is permissible.	347
Wiping dust-covered hands over the face is prohibited.	329	Method of Tayammum for someone whose hands are paralyzed.	348
Rubbing hands on the earth in Tayammum is Sunnah.	335	The author's research that Tayammum is of four types.	366
It is permissible to ask another to perform Tayammum on you; in that case, the intention of the one receiving it is a condition, not the one performing it.	340	Entered flying dust with intention; dust reached all limbs, Tayammum done. If not this, but dust came on limbs, then Tayammum occurs by moving head and hands with intention. If dust settled on limbs, Tayammum won't occur without wiping hands.	371
Dust fell on the face and hands from a storm; did Tayammum occur or not?	341		

फ़तावा रज़विया, जिल्द तीसरी

फ़तवा/विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
फ़तवा १०६: संभोग किया, सुबह देर से आँख खुली और वक़्त कम है; क्या केवल गुप्तांग धोकर नमाज़ पढ़ सकता है या नहीं?	३०७	तयम्मुम की नीयत से आती हुई धूल के सामने खड़ा हुआ, जब तक हाथ न फेरे तयम्मुम नहीं हुआ।	३४१
फ़तवा १०७: जोड़ों में दर्द और कोहनी में चोट है; तो तयम्मुम जायज़ है या नहीं?	३०८	झाड़ू दी या गेंहूँ तौले, उनके गर्द का भी वही हुक्म है।	३४१
फ़तवा १०८: फील-पा (हाथी-पांव) की बीमारी के कारण तयम्मुम करे या उस पैर पर मसह?	३०८	धूल वाली जगह पर तयम्मुम की नीयत से सिर और हाथ दाखिल किए, अगर सब जगह धूल पहुँच गई तो तयम्मुम हो गया।	३४२
फ़तवा १०९: फील-पा की बीमारी में गुस्ल की जगह तयम्मुम जायज़ है या नहीं?	३०९	उड़ती हुई धूल में तयम्मुम की नीयत से सिर और हाथों को हरकत दी, तयम्मुम हो गया।	३४२
फ़तवा ११०: गाँव से बाहर खेत में है, फज्र की नमाज़ का वक़्त हो गया और पानी नहीं है; तयम्मुम करे या क्या करे?	३०९	चेहरे और हाथों पर रेता या मिट्टी सब जगह छिड़कने से तयम्मुम नहीं होता जब तक हाथ न फेरे।	३४२
फ़तवा १११: वक़्त की तंगी के कारण गुस्ल की जगह तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ी, फिर नहाकर नमाज़ दोहराए या नहीं?	३१०	मुँह और हाथों पर तयम्मुम की नीयत से गर्द उड़ाई तो तयम्मुम नहीं हुआ, हाँ उस उड़ती गर्द में सर और हाथों को तयम्मुम की नीयत से हरकत दी तो हो गया।	३४३
	३११		३४३

फ़तवा/विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
फ़तवा ११२: तयम्मुम की परिभाषा और शरीअत की नज़र में उसकी वास्तविकता।		राह चल रहा है और गर्द आकर घेर रही है, अगर तयम्मुम की नीयत से सर और हाथों को हरकत देगा तो तयम्मुम हो जाएगा वरना नहीं।	
मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़ कि हर पाक ज़मीन पाक करने वाली है।	३१५	तयम्मुम में किस तरह का अमल शर्त है?	३४४
तयम्मुम की नीयत से जो हाथ ज़मीन की किसी चीज़ पर मारे गए, वे स्वयं ज़मीन के हुक्म में हो जाते हैं।	३२८	कपड़ा झाड़कर गर्द से तयम्मुम का तरीक़ा।	३४७
तयम्मुम में हाथों पर धूल लगने की कोई ज़रूरत नहीं, बल्कि सुन्नत यह है कि अगर लग जाए तो झाड़ दे।	३२८	गीली नापाक चीज़ पर गर्द पड़कर सूख गई, उससे तयम्मुम जायज़ नहीं और खुश्क नापाक चीज़ पर गर्द पड़ी, उससे जायज़ है।	३४७
गर्द-आलूद हाथ चेहरे पर फेरना मना है।	३२९	जिसके हाथ सुन्न (पंगु) हों उसके तयम्मुम का तरीक़ा।	३४८
तयम्मुम में ज़मीन की जिन्स पर हाथ मलना सुन्नत है।	३३५	मुसन्निफ़ की तहक़ीक़ कि तयम्मुम चार तरह का होता है।	३६६
यह जायज़ है कि दूसरे से कहे ؎ मुझे तयम्मुम करा दे, और इस वक़्त नीयत इसी की शर्त होगी न कि उस दूसरे की।	३४०	उड़ती हुई धूल में तयम्मुम की नीयत से गया, गर्द सब अंगों तक पहुँच गई तो तयम्मुम हो गया। और अगर यह न किया बल्कि गर्द अंगों पर आई तो तयम्मुम की नीयत से सिर और हाथों की हरकत से तयम्मुम होगा। और अगर गर्द अंगों पर बैठ गई तो बिना हाथ फेरे तयम्मुम न होगा।	३७१
आँधी से चेहरे और हाथों पर धूल पड़ी, तयम्मुम हुआ या नहीं?	३४१		

فتاویٰ رضویہ، جلد سوم

فتویٰ/عنوان صفحہ		عنوان صفحہ	
فتویٰ ۱۰۶۔ جماع کیا صبح تنگ وقت آنکھ کھلی فقط ستر دھو کر نماز پڑھ سکتا ہے یا نہیں۔	۳۰۷	تیمم کی نیت سے آتے ہوئے غبار کے سامنے کھڑا ہوا جب تک ہاتھ نہ پھیرے تیمم نہ ہوا۔	۳۴۱
فتویٰ ۱۰۷۔ جوڑوں میں درد کہنی میں چوٹ ہے تو تیمم جائز یا نہیں۔	۳۰۸	جھاڑو دی یا گیہوں تولے ان کے غبار کا بھی وہی حکم ہے۔	۳۴۱
فتویٰ ۱۰۸۔ عارضہ فیل پا کے سبب تیمم کرے یا اس پاؤں پر مسح۔	۳۰۸	غبار کی جگہ بہ نیت تیمم سر اور ہاتھ داخل کیے اگر سب جگہ غبار پہنچ گیا تیمم ہو گیا۔	۳۴۲
فتویٰ ۱۰۹۔ عارضہ فیل پا میں غسل کی جگہ تیمم جائز ہے یا نہیں۔	۳۰۹	اڑتے ہوئے غبار میں تیمم کی نیت سے سر اور ہاتھوں کو جنبش دی تیمم ہو گیا۔	۳۴۲
فتویٰ ۱۱۰۔ گاؤں سے باہر کھیت ہے نماز صبح کا وقت	۳۰۹	چہرے اور ہاتھوں پر ریتا یا خاک سب جگہ چھڑکنے سے تیمم نہیں ہوتا جب تک ہاتھ نہ پھیرے۔	۳۴۲

فتویٰ/عنوان صفحہ		عنوان صفحہ	
ہوا اور پانی نہیں تیمم کرے یا کیا۔			
فتویٰ ۱۱۱۔ تنگی وقت کے سبب غسل کی جگہ تیمم کر کے پڑھے پھر نہا کر اعادہ کرے۔	۳۱۰	منہ اور ہاتھوں پر تیمم کی نیت سے گرد اڑائی تیمم نہ ہوا ہاں اس اڑتی گرد میں سر و دست کو بہ نیت تیمم جنبش دی تو ہو گیا۔	۳۴۳
فتویٰ ۱۱۲۔ تیمم کی تعریف و ماہیت شرعیہ۔	۳۱۱	راہ چل رہا ہے اور گرد آکر محیط ہو رہی ہے اگر بہ نیت تیمم سر و دست کو جنبش دے گا تیمم ہو جائے گا ورنہ نہیں۔	۳۴۳
مصنف کی تحقیق کہ ہر پاک زمین پاک کنندہ ہے۔	۳۱۵	تیمم میں کس طرح کا فعل شرط ہے۔	۳۴۴
ہاتھ کہ بہ نیت تیمم جنس ارض پر مارے گئے خود ہی جنس ارض کے حکم میں ہو جاتے ہیں۔	۳۲۸	کپڑا جھاڑ کر غبار سے تیمم کا طریقہ	۳۴۷
تیمم میں ہاتھوں پر غبار لگنے کی کوئی ضرورت نہیں بلکہ سنّت یہ ہے کہ لگا ہو تو جھاڑ دے۔	۳۲۸	تر چیز ناپاک پر غبار پڑ کر سوکھ گیا اس سے تیمم جائز نہیں اور خشک ناپاک پر غبار پڑا اس سے جائز ہے۔	۳۴۷

فتویٰ/عنوان صفحہ		عنوان صفحہ	
گرد آلودہ ہاتھ چہرے پر پھیرنا منع ہے۔	۳۲۹	جس کے ہاتھ شل ہوں اس کے تیمم کا طریقہ۔	۳۴۸
تیمم میں جنس ارض پر ہاتھ ملنا سنّت ہے۔	۳۳۵	مصنف کی تحقیق کہ تیمم چار طرح ہوتا ہے۔	۳۶۶
جائز ہے کہ دوسرے سے کہے مجھے تیمم کرا دے اور اس وقت نیت اسی کی شرط ہو گی نہ اس دوسرے کی۔	۳۴۰	اڑتے ہوئے غبار میں بہ نیت تیمم گیا غبار سب اعضا کو پہنچ گیا تیمم ہو گیا اور اگر یہ نہ کیا بلکہ غبار اعضا پر آیا تو بہ نیت تیمم سر و دست کی جنبش سے تیمم ہو گا اور اگر غبار اعضا پر بیٹھ گیا تو بے ہاتھ پھیرے تیمم نہ ہو گا۔	۳۷۱
آندھی سے چہرے اور ہاتھوں پر غبار پڑا تیمم ہوا یا نہیں۔	۳۴۱		

Fatawa Razawiyya Volume 3

Research of the author: Intention is a condition while striking hands on the type of earth. **373**

Repetition of wiping (mash) in Tayammum is not Sunnah. 374

By striking the hands on the type of earth with the intention of Tayammum, the wiping of palms is done; do not wipe them again. 374

Striking with the palms is Sunnah, not just with the back of the hand. 375

If the back of the hand is also struck on the type of earth, their wiping will also be done as long as every part of them touches the soil. 376

Research of the author: When palms are placed on the type of earth for Tayammum, it is now disliked (Makruh) to wipe over them again. 376

Striking the hands and dusting off is Sunnah as many times as the hands become clean. **383**

Hands were placed on the ground without the intention of Tayammum and dust got on them, now after making the intention, one can wipe those hands over a limb. 384

Research of the author: If ritual impurity (hadath) occurs after striking the hands, then striking again is mandatory. 385

Zaid asked Amr to help him perform Tayammum, Amr struck hands on the type of earth, then Zaid experienced ritual impurity; in the author's research, this strike did not become useless. But if Amr experienced ritual impurity, then in the author's research, it became useless. 392

Description of common (ma'hood) and uncommon (ghair ma'hood) Tayammum from the author's researches. 394

Simply placing hands on the type of earth is sufficient in Tayammum; striking forcefully is not necessary, although it is better. 397

Research of the author: Intention is a condition while striking hands on the type of earth.	**373**	**Striking the hands and dusting off is Sunnah as many times as the hands become clean.**	**383**
Performing Tayammum again while already having Tayammum is disliked.	377	One hundred and seventy-five (175) situations of inability to find water.	411
Rulings for wiping again over a single limb in Tayammum.	377	To be in a place in one's city where water is a mile away from everywhere, one can perform Tayammum.	411
The better method of wiping hands in Tayammum.	377	If a traveler hopes that water will be reached within the recommended time, waiting is recommended; and if they wish, they can perform prayer with Tayammum now.	411
The second method for it.	378	If water is available at that place at the usual rate of that time, even if a waterskin costs one rupee and they can buy it, then buying it is obligatory (Fard) and Tayammum is invalid.	414
The Sunnah is that first the palms should be placed on the type of earth then their backs.	(Footnote) 375	If money is not available but the seller agrees to give on credit, then too, buying is obligatory.	414

फतावा रज़विया जिल्द सोम (तृतीय)

लेखक का शोध कि मिट्टी के प्रकार पर हाथ मारते समय नियत (इरादा) शर्त है। ३७३

तयम्मुम में मसह (पोंछने) को दोहराना सुन्नत नहीं है। ३७४

तयम्मुम की नियत से मिट्टी के प्रकार पर हाथ मारने से ही हथेलियों का मसह हो जाता है, उनका दोबारा मसह न करे। ३७४

हथेलियों से मारना सुन्नत है, न कि सिर्फ़ हाथ के पिछले हिस्से से। ३७५

हाथ का पिछला हिस्सा भी मिट्टी के प्रकार पर मारें तो उनका मसह भी हो जाएगा बशर्ते कि उनका हर हिस्सा मिट्टी को छुए। ३७६

लेखक का शोध कि जब हथेलियाँ तयम्मुम के लिए मिट्टी के प्रकार पर रखें तो अब दोबारा उन पर हाथ फेरना मकरूह (नापसंदीदा) है। ३७६

३७७

हाथ मार कर धूल झाड़ना सुन्नत है जितनी बार में हाथ साफ़ हो जाएँ। ३८३

बिना नियत के तयम्मुम के लिए ज़मीन पर हाथ रखे थे, उनमें धूल लग गई है, अब नियत करके उन हाथों को एक अंग पर फेर सकता है। ३८४

लेखक का शोध कि हाथ मारने के बाद हदस (अशुद्धि) हो गया, तो दोबारा मारना अनिवार्य है। ३८५

ज़ैद ने उम्र से कहा कि मुझे तयम्मुम करा दे, उम्र ने मिट्टी के प्रकार पर हाथ मारे, उसके बाद ज़ैद को हदस हो गया; लेखक के शोध में यह मारना बेकार नहीं हुआ। और अगर उम्र को हदस हो गया तो लेखक के शोध में यह बेकार हो गया। ३९२

लेखक के शोध से परिचित (महूद) और अपरिचित (ग़ैर महूद) तयम्मुम का वर्णन। ३९४

तयम्मुम में मिट्टी के प्रकार पर हाथ रखना ही काफ़ी है, ज़ोर से मारना ज़रूरी नहीं, हाँ बेहतर है। ३९७

४११

लेखक का शोध कि मिट्टी के प्रकार पर हाथ मारते समय नियत (इरादा) शर्त है। ३७३

तयम्मुम रहते हुए दोबारा तयम्मुम करना मकरूह है।

तयम्मुम में एक अंग पर दोबारा मसह करने के नियम। ३७७

तयम्मुम में हाथों के मसह का बेहतर तरीका। ३७७

इसका दूसरा तरीका। ३७८

सुन्नत यह है कि मिट्टी के प्रकार पर पहले हथेलियाँ रखे फिर उनकी पीठ। (हाशिया) ३७५

हाथ मार कर धूल झाड़ना सुन्नत है जितनी बार में हाथ साफ़ हो जाएँ। ३८३

पानी की कमी/असमर्थता की पौने दो सौ १७५ स्थितियाँ।

अपने शहर में ऐसी जगह हो जहाँ से हर जगह पानी एक मील दूर हो, तो तयम्मुम कर सकता है। ४११

अगर यात्री को आशा हो कि मुस्तहब (पसंदीदा) समय के भीतर पानी तक पहुँच जाएगा, तो इंतज़ार करना मुस्तहब है; और चाहे तो अभी तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ले। ४११

पानी अगर उस जगह उस समय के सामान्य भाव पर मिलता है, चाहे एक मश्कीज़ा (मशक) एक रुपया हो और वह इसे खरीद सके तो खरीदना फ़र्ज़ है और तयम्मुम अवैध है। ४१४

पैसे पास नहीं और देने वाला उधार देने पर राज़ी हो, तब भी खरीदना वाजिब है। ४१४

पृष्ठ १४/७५६

مصنف کی تحقیق کہ جنس ارض پر ہاتھ مارتے وقت نیت شرط ہے۔	۳۷۳	**ہاتھ مار کر گرد جھاڑنا سنت ہے جتنی بار میں ہاتھ صاف ہوں۔**	۳۸۳
تیمم میں تکرار مسح سنت نہیں۔	۳۷۴	بے نیت تیمم زمین پر ہاتھ رکھے تھے ان میں گرد لگی ہوئی ہے اب نیت کرکے ان ہاتھوں کو ایک عضو پر پھیر سکتا ہے۔	۳۸۴
جنس ارض پر بہ نیت تیمم ہاتھ مارنے سے ہی ہتھیلیوں کا مسح ہوجاتا ہے ان کا دوبارہ مسح نہ کرے۔	۳۷۴	مصنف کی تحقیق کہ ہاتھ مارنے کے بعد حدث ہوگیا دوبارہ پھر ضرب لازم ہے۔	۳۸۵
ضرب ہتھیلیوں سے سنت ہے نہ صرف پشت دست سے۔	۳۷۵	زید نے عمرو سے کہا مجھے تیمم کرادے، عمرو نے جنس ارض پر ہاتھ مارے اس کے بعد زید کو حدث ہوگیا مصنف کی تحقیق میں یہ ضرب بے کار نہ ہوئی، اور اگر عمرو کو حدث ہو گیا تو مصنف کی تحقیق میں بے کار ہوگئی۔	۳۹۲
پشت دست بھی جنس ارض پر مارے ان کا مسح بھی ہو	۳۷۶	تیمم معہود وغیرہ معہود کا بیان تحقیقات مصنف سے۔	۳۹۴

مصنف کی تحقیق کہ جنس ارض پر ہاتھ مارتے وقت نیت شرط ہے۔ ۳۷۳

جائے گا جبکہ ان کا ہر جز مٹی سے چھو جائے۔

مصنف کی تحقیق کہ جب ہتھیلیاں تیمم کے لیے جنس ارض پر رکھیں اب دوبارہ ان پر ہاتھ پھیرنا مکروہ ہے۔ ۳۷۶

تیمم ہوتے ہوئے دوبارہ تیمم مکروہ ہے۔ ۳۷۷

تیمم میں ایک عضو پر دوبارہ مسح کے احکام۔ ۳۷۷

تیمم میں ہاتھوں کے مسح کا بہتر طریقہ۔ ۳۷۷

اس کا دوسرا طریقہ۔ ۳۷۸

ہاتھ مار کر گرد جھاڑنا سنت ہے جتنی بار میں ہاتھ صاف ہوں۔ ۳۸۳

تیمم میں جنس ارض پر ہاتھ رکھنا ہی کافی ہے، بقوت مارنا ضرور نہیں ہاں بہتر ہے۔ ۳۹۷

پانی سے عجز کی پونے دو سو ۱۷۵ صورتیں۔ ۴۱۱

اپنے شہر میں ایسی جگہ ہو جہاں سے ہر جگہ پانی میل بھر دور ہو تیمم کر سکتا ہے۔ ۴۱۱

اگر مسافر کو امید ہو کہ وقت مستحب میں پانی تک پہنچ جائے گا انتظار مستحب ہے اور چاہے تو ابھی تیمم سے پڑھ لے۔ ۴۱۱

پانی اگر اس جگہ اس وقت کے معمولی بھاؤ پر ملتا ہے اگرچہ ایک مشکیزہ ایک روپیہ کو اور یہ خرید سکے تو خریدنا فرض اور تیمم ناجائز۔ ۴۱۴

۴۱۴

مصنف کی تحقیق کہ جنس ارض پر ہاتھ مارتے وقت نیت شرط ہے۔ ۳۷۳

سنت یہ ہے کہ جنس ارض پر پہلے ہتھیلیاں رکھے پھر ان کی پیٹھ ۳۷۵

ہاتھ مار کر گرد جھاڑنا سنت ہے جتنی بار میں ہاتھ صاف ہوں۔ ۳۸۳

(حاشیہ) قیمت پاس نہیں اور دینے والا ادھار دینے پر راضی، جب بھی خریدنا واجب۔

Fatawa Razawiya, Volume 3

Page Index	Ruling Text	Page Index	Ruling Text
412	Borrowing money for the price of water is not mandatory.	460	It is not mandatory to wait for an enemy, thief, fire, predator, or snake to leave; one can perform Tayammum and pray without repeating the prayer, though waiting is better if there is scope.
414	Mere fear of harm during Wudu or Ghusl is not sufficient, nor is the statement of any doctor, sinner, or deficient physician.	464	Simply being allowed to use water makes it accessible, even if it is not gifted.
415	Tayammum is not permissible solely due to fear of cold, unless there is a genuine apprehension of harm.	464	Water is considered accessible just by a promise.
417	Types of women according to their habit of veiling (purdah) and rulings regarding their Tayammum.	465	Someone promised to give water; when the person saw time running out, they started praying with Tayammum. Now the water is brought; what is the ruling in this case?
419	Tayammum is permitted due to an enemy at the water source, and in one scenario, repeating the prayer is not necessary.	465	If someone performed Tayammum due to lack of water and then fell so ill that Wudu would be harmful, and then found water, he must perform Tayammum again for the illness because the previous Tayammum for lack of water is now invalid.
420	If someone needs to bathe and people are present, or a woman needs Wudu in the presence of non-mahram men, what is the	466	Someone performed Tayammum due to lack of water. Now water is found but there is an enemy or predator

Page Index	Ruling Text
	ruling for Tayammum and repeating the prayer?
425	The Tayammum performed due to time constraints cannot be used for other acts of worship that require ritual purity.
429	The author's research states that if the time for a recommended (mustahab) prayer is passing, Tayammum for it is not permissible.
438	If climbing up/down is possible and water is less than a mile away, Tayammum is not permissible.
439	Details of Tayammum for five daily prayers, Jumu'ah, and due to lack of time.
449	If after purifying with water, one can only pray the obligatory (fard) part within the time, then Tayammum is not permitted.
449	The difference between short and long journeys in three issues.

Page Index	Ruling Text
	etc. near it, preventing access. The original Tayammum will not break.
467	The meaning of water being "unavailable" for Tayammum.
468	Water is present but unreachable, so it is considered unavailable.
468	If the reason for inability to use water remains but the underlying cause changes, the Tayammum remains valid; and its example.
474	If warm water is available for bathing, even by paying a fee in a public bath, then Tayammum due to fear of cold is not permitted.
480	The Tayammum performed by a person in a state of ritual impurity to exit a mosque does not permit the recitation of the Holy Quran.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

पृष्ठ संख्या	मसला
412	पानी की कीमत के लिए कर्ज लेना वाजिब (अनिवार्य) नहीं है।
414	वज़ू या गुस्ल में नुकसान की मात्र आशंका पर्याप्त नहीं है, और न ही किसी डॉक्टर, पापी या अयोग्य हकीम का कहना।
415	ठंड के डर से तयम्मुम जायज़ नहीं है, सिवाय इसके कि जब नुकसान की सही आशंका हो।
417	परदे की आदत वाली महिलाओं के प्रकार और तयम्मुम के बारे में उनके अहकाम (नियम)।
419	पानी के स्थान पर दुश्मन होने के कारण तयम्मुम की अनुमति है और एक स्थिति में नमाज़ दोहराना भी ज़रूरी नहीं है।
420	यदि किसी को नहाना है और वहाँ कुछ लोग मौजूद हैं या महिला को
460	दुश्मन, चोर, आग, दरिंदा या सांप के चले जाने का इंतज़ार करना वाजिब नहीं है; तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ी जा सकती है और उसे दोहराने की ज़रूरत नहीं है, हाँ यदि गुंजाइश हो तो इंतज़ार करना बेहतर है।
464	केवल इस्तेमाल की इजाज़त देने से पानी पर कुदरत (पहुँच) हो जाती है, चाहे वह हिबा (उपहार) न करे।
464	केवल वादे से ही पानी पर कुदरत समझी जाती है।
465	किसी ने पानी देने का वादा किया; जब उसने नमाज़ का वक्त जाते देखा तो तयम्मुम से नमाज़ शुरू कर दी। अब वह पानी ले आया, इस सूरत में क्या हुक्म है?
465	पानी न होने के कारण तयम्मुम किया था, फिर वह इतना बीमार हो गया कि वज़ू नुकसानदेह हो, अब उसे पानी मिल गया तो बीमारी के लिए दोबारा तयम्मुम करे क्योंकि पानी की कमी वाला पुराना तयम्मुम खत्म हो गया।
466	पानी न होने के कारण तयम्मुम किया था। अब पानी तो मिल गया मगर उस पर दुश्मन या

पृष्ठ संख्या	मसला
	वज़ू करना है और वहाँ गैर-मेहरम मर्द हैं, तो इस सूरत में तयम्मुम और नमाज़ दोहराने का क्या हुक्म है?
425	जो तयम्मुम वक्त की तंगी के कारण किया गया था, उससे दूसरी इबादत जिसके लिए पाकी ज़रूरी है, जायज़ नहीं है।
429	मुसन्निफ़ (लेखक) की तहकीक (शोध) कि यदि मुस्तहब नमाज़ का वक्त जा रहा हो, तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं है।
438	चढ़ना-उतरना मुमकिन हो और पानी एक मील से कम दूरी पर हो, तो तयम्मुम जायज़ नहीं है।
439	पाँचों नमाज़ों, जुमा और वक्त की तंगी के कारण तयम्मुम का विवरण।
449	यदि पानी से पाकी हासिल करके वक्त के अंदर केवल फर्ज़ नमाज़ पढ़ी जा सकती है, तो तयम्मुम की इजाज़त नहीं है।
449	कम और लंबी यात्राओं के बीच का अंतर तीन मसलों में है।
	दरिंदा आदि है जिसकी वजह से पानी नहीं लिया जा सकता, तो पहला तयम्मुम नहीं टूटेगा।
467	तयम्मुम के लिए पानी 'मादूम' (अनुपलब्ध) होने का अर्थ।
468	पानी सामने है मगर उस तक पहुँचा नहीं जा सकता, तो वह 'मादूम' (अनुपलब्ध) है।
468	यदि पानी के इस्तेमाल से लाचारी का कारण न बदले, लेकिन कारण की वजह बदल जाए, तो तयम्मुम नहीं टूटेगा; और इसका उदाहरण।
474	यदि नहाने के लिए गर्म पानी मिल सके, चाहे हम्माम में पैसे देकर ही सही, तो ठंड के डर से तयम्मुम की इजाज़त नहीं है।
480	जो तयम्मुम एहतलाम वाले ने मस्जिद से निकलने के लिए किया, उससे कुरान मजीद की तिलावत हलाल नहीं है।

صفحہ	مسئلہ	صفحہ	مسئلہ
۴۱۲	پانی کی قیمت قرض لینا واجب نہیں۔	۴۶۰	دشمن یا چور یا آگ یا درندہ یا سانپ کے چلے جانے کا انتظار واجب نہیں تیمم کر کے پڑھ سکتا ہے اور اعادہ نہیں ہاں گنجائش ہو تو انتظار بہتر ہے۔
۴۱۴	وضو یا غسل میں نقصان کا نرا اندیشہ کافی نہیں نہ کسی ڈاکٹر یا فاسق یا ناقص طبیب کا کہنا۔	۴۶۴	فقط مباح کرنے سے پانی پر قدرت ہو جاتی ہے اگرچہ ہبہ نہ کرے۔
۴۱۵	سردی کے خوف سے تیمم جائز نہیں مگر جبکہ صحیح اندیشہ ہو۔	۴۶۴	فقط وعدہ سے پانی پر قدرت سمجھی جاتی ہے۔
۴۱۷	عادت پردہ میں عورت کے اقسام اور دربارہ تیمم اُن کے احکام۔	۴۶۵	کسی نے پانی دینے کا وعدہ کیا جب اس نے وقت جاتا دیکھا تیمم سے نماز شروع کر دی اب وہ پانی لے آیا اس صورت میں کیا حکم ہے۔
۴۱۹	پانی پر دشمن ہونے کے سبب تیمم کی اجازت ہے اور ایک صورت میں پھر نماز پھیرنا بھی نہیں۔	۴۶۵	پانی نہ ہونے کے سبب تیمم کیا تھا پھر ایسا بیمار ہو گیا کہ وضو نقصان کرے گا

صفحہ	مسئلہ	صفحہ	مسئلہ
			اب پانی پایا تو دوبارہ بیماری کا تیمم کرے کہ وہ تیمم کہ پانی نہ ہونے کا تھا جاتا رہا۔
۴۲۰	اگر کسی کو نہانا ہے اور وہاں کچھ لوگ موجود ہیں یا عورت کو وضو کرنا ہے اور وہاں نا محرم لوگ ہیں تو اس صورت میں تیمم واعادہ نماز کا کیا حکم ہے۔	۴۶۶	پانی نہ ہونے کے سبب تیمم کیا تھا اب پانی تو ملا مگر اس پر دشمن یا درندہ وغیرہ ہے جس کے سبب پانی لے نہیں سکتا پہلا تیمم نہ ٹوٹے گا۔
۴۲۵	جو تیمم تنگی وقت کے سبب کیا تھا اس سے دوسری عبادت کہ بے طہارت جائز نہیں جائز نہیں۔	۴۶۷	تیمم کے لیے پانی معدوم ہونے کے معنی۔
۴۲۹	مصنف کی تحقیق کہ نماز مستحب کا وقت جاتا ہو تو اس کے لئے تیمم روا نہیں۔	۴۶۸	پانی سامنے ہے مگر اس تک پہنچ نہیں سکتا تو معدوم ہے۔
۴۳۸	چڑھنا اترنا ممکن اور پانی میل بھر سے کم دور ہو تو تیمم جائز نہیں۔	۴۶۸	اگر پانی سے عجز کا سبب نہ بدلے اور سبب کا سبب بدل جائے تو تیمم نہ ٹوٹے گا اور اس کی مثال۔
۴۳۹	نماز پنجگانہ و جمعہ و تنگی وقت سے تیمم کی تفصیل۔	۴۷۴	گرم پانی نہانے کو مل سکے اگرچہ حمام میں اجرت دے کر تو سردی کے خوف سے تیمم کی اجازت نہیں۔

صفحہ	مسئلہ
۴۴۹	اگر پانی سے طہارت کر کے وقت میں فقط فرض پڑھ سکتا ہے تو تیمم کی اجازت نہیں۔
۴۴۹	سفر قلیل و کثیر کا فرق تین مسئلوں میں ہے۔
۴۸۰	جو تیمم محتلم نے مسجد سے نکلنے کے لیے کیا اس سے تلاوتِ قرآن مجید حلال نہیں۔

Fatawa Razawiyyah, Volume 3

Page	No.	Content	Content
512	481	If a wet dream occurs in a mosque and one cannot go out, one performed Tayammum to stay; one cannot pray with this Tayammum. If water is not found, perform Tayammum again for prayer.	If bathing even from the neck down is proven harmful due to a head ailment, then perform Tayammum.
521	492	If a pool is less than ten by ten and hands cannot reach the water, in what situation is there an order to bathe inside it and in what situation should Tayammum be performed?	Water was known to be available but it was thought to be consumed, and prayer was performed with Tayammum; it is obligatory to repeat it even if the time has passed.
530	495 (Note)	If there is a need for a bath and water is inside the mosque and someone is present to bring it, it is mandatory to ask them; one cannot go themselves after performing Tayammum. Yes, if they refuse, one can perform Tayammum and bring it themselves.	Water belongs to the son; before reaching there, if the father said "I will take it," then if he had performed Tayammum, it will not break upon arrival. If the father did not say so, the Tayammum broke upon arrival. Then if the father took it, the son should perform Tayammum again.
530	500	Legal prohibition of using water is also a cause of inability.	In a jungle, there are a person in state of ritual impurity (Junub), a menstruating woman (Haiz), a person needing ablution (Muhdith), and a deceased person. Only enough water is available for one person. It is better for the Junub to bathe with it; others should perform Tayammum.
530	503	If the water is leftover by a donkey or it is Nabidh (date water) about	If everyone has a share in it, then it is appropriate to bathe the

Page No.		Content	Content
		which there is doubt whether it is Nabidh, then it is necessary to perform both Wudu and Tayammum with it. It is better to perform Wudu first, and Wudu with these waters cannot be done without intention.	deceased; you should perform Tayammum, provided there is no share for a minor in it.
531	506	If the wounded limbs are more in number during Wudu, perform Tayammum. If the healthy limbs are more, perform Wudu and wipe (Masah) over the wounds. The head will also be counted in this number when more than three-quarters of it is wounded.	The Junub, menstruating woman, and the one needing ablution had performed Tayammum. Permissible (Mubah) water was found sufficient for only one. Everyone's Tayammum broke. Then, when the Junub bathed due to priority, the others should perform Tayammum again.
531	509	Detail of the rulings if wiping the head during Wudu or washing the head during a bath is harmful, and that Tayammum is not permissible for this reason.	Even if permissible water is only enough for one person so that whoever wants can purify themselves with it, and it is not enough for two, and there are a thousand people, then everyone's Tayammum broke.
531			If the father wants to take water, the son cannot resist him. And for the son, this situation is a state of inability.

फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 3

पृष्ठ	संख्या	विषय	विषय
512	481	मस्जिद में एहतलाम (स्वप्नदोष) हुआ और बाहर नहीं जा सकता, वहाँ रुकने के लिए तयम्मुम किया; इस तयम्मुम से नमाज़ नहीं पढ़ सकता। यदि पानी न मिले तो नमाज़ के लिए दोबारा तयम्मुम करे।	सिर की बीमारी के कारण यदि गर्दन से नीचे नहाना भी हानिकारक सिद्ध हो, तो तयम्मुम करे।
521	492	हौज़ दस-दर-दस (10x10 हाथ) से कम है और पानी तक हाथ नहीं पहुँचता, तो उसके अंदर नहाने का किस स्थिति में हुक्म है और किस स्थिति में तयम्मुम करे?	पानी का ज्ञान था और समझा कि खर्च हो गया, तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली, तो उसे दोहराना फ़र्ज़ है चाहे समय बीत चुका हो।
530	495 (हाशिया)	नहाने की ज़रूरत है और पानी मस्जिद के अंदर है और लाने वाला मौजूद है, तो वाजिब है कि उससे कहे; तयम्मुम करके खुद नहीं जा सकता। हाँ, अगर वह मना कर दे, तो तयम्मुम करके खुद लाए।	पानी बेटे के स्वामित्व में है, वहाँ पहुँचने से पहले पिता ने कह दिया कि "मैं लूँगा", तो यदि उसका तयम्मुम था, तो पहुँचने पर नहीं टूटेगा। और अगर पिता ने ऐसा नहीं कहा, तो पहुँचने पर तयम्मुम टूट गया। फिर अगर पिता ने ले लिया, तो बेटा दोबारा तयम्मुम करे।
530	500	पानी के उपयोग की शरीअत द्वारा मनाही भी असमर्थता का एक कारण है।	जंगल में जुनुब (अशुद्ध पुरुष), ह़ायज़ (मासिक धर्म वाली स्त्री), मुह़दिस (बिना वज़ू वाला) और मय्यत (शव) हैं। इतना पानी मिला जो एक के लिए पर्याप्त है। बेहतर यह है कि जुनुब उससे नहाए; बाकियों के लिए तयम्मुम है।

पृष्ठ	संख्या	विषय	विषय
530	503	गधे का जूठा पानी है या वह नबीज़ (खजूर का पानी) जिसके नबीज़ होने में संदेह है, तो अनिवार्य है कि उससे वज़ू भी करे और तयम्मुम भी। वज़ू पहले कर लेना बेहतर है और इन पानियों से वज़ू बिना नीयत के नहीं हो सकता।	यदि उसमें सबका हिस्सा है, तो उचित यह है कि मय्यत को नहला दें; आप तयम्मुम करें, यदि उसमें किसी नाबालिग का हिस्सा न हो।
531	506	वज़ू के अंगों में यदि घायल अंग संख्या में अधिक हैं तो तयम्मुम करे। यदि स्वस्थ अंग अधिक हों तो वज़ू करे और घायल अंगों पर मसह करे। इस गिनती में सिर को भी गिना जाएगा जब वह तीन-चौथाई से अधिक घायल हो।	जुनुब, ह़ायज़ और मुह़दिस तयम्मुम से थे। मुबाह़ (वैध) पानी इतना मिला जो एक के लिए पर्याप्त है। सबका तयम्मुम टूट गया। फिर जब प्राथमिकता के कारण जुनुब नहा लिया, तो बाकी फिर से तयम्मुम करें।
531	509	वज़ू में सिर का मसह या ग़ुस्ल में सिर धोना हानिकारक हो तो उसके अह़काम (नियमों) का विवरण और यह कि इस कारण तयम्मुम जायज़ नहीं।	मुबाह़ पानी चाहे एक ही के योग्य हो कि जो चाहे उससे पाकी हासिल कर सके और दो के लिए पर्याप्त न हो, और एक हज़ार लोग हों, तो सबका तयम्मुम टूट गया।
531			पिता पानी लेना चाहे तो बेटा उसे रोक नहीं सकता। और बेटे के लिए यह स्थिति असमर्थता है।

صفحہ نمبر		مضمون	مضمون
		مسجد میں احتلام ہوا اور باہر جا نہیں	
۵۱۲	۴۸۱	سکتا ٹھہرنے کے لیے تیمم کیا اس تیمم سے نماز نہیں پڑھ سکتا پانی نہ پائے تو نماز کے لیے دوبارہ تیمم کرے۔	سر کے مرض کے سبب اگر گلے سے بھی نہانا مضر ثابت ہو تو تیمم کرے۔
۵۲۱	۴۹۲	حوض دہ در دہ سے کم ہے اور پانی تک ہاتھ نہیں پہنچتا تو اس کے اندر نہانے کا کس صورت میں حکم ہے اور کس صورت میں تیمم کرے۔	پانی معلوم تھا اور سمجھا کہ خرچ ہو گیا تیمم سے پڑھ لی اس کا پھیرنا فرض ہے اگر چہ وقت جاتا رہا ہو۔
۵۳۰	۴۹۵ (حاشیہ)	نہانے کی حاجت ہے اور پانی مسجد کے اندر ہے اور لانے والا موجود ہے تو واجب ہے کہ اس سے کہے تیمم کر کے خود نہیں جاسکتا ، ہاں وہ انکار کر دے تو تیمم کر کے خود لائے۔	پانی بیٹے کی ملک پر ہے وہاں تک پہنچنے سے پہلے باپ نے کہہ دیا میں لوں گا تو اگر اس کا تیمم تھا پہنچنے پر نہ ٹوٹے گا اور باپ نے ایسا نہ کہا تو پہنچنے پر تیمم ٹوٹ گیا پھر اگر باپ نے لے لیا تو بیٹا دوبارہ تیمم کرے۔
۵۳۰	۵۰۰	پانی سے استعمال کی ممانعت شرعی بھی وجہ عجز ہے۔	جنگل میں جنب و حائض و محدث و میت ہیں اتنا پانی ملا کہ ایک کو کافی ہے بہتر

صفحہ نمبر		مضمون	مضمون
			یہ ہے کہ جنب اُس سے نہائے باقیوں کے لیے تیمم۔
۵۳۰	۵۰۳	گدھے کا جوٹھا پانی ہے یا وہ نبیذ جس کے نبیذ ہونے میں شبہ ہے تو لازم ہے کہ اس سے وضو بھی کرے اور تیمم بھی اور وضو پہلے کر لینا بہتر ہے اور ان پانیوں سے وضو بے نیت نہیں ہو سکتا۔	اگر اس میں سب کی شرکت ہے تو مناسب یہ ہے کہ میت کو نہلا دیں آپ تیمم کریں اگر اس میں نابالغ کا حصہ نہ ہو۔
۵۳۱	۵۰۶	اعضائے وضو میں اگر مجروح گنتی میں زیادہ ہیں تیمم کرے اور صحیح اعضا زیادہ ہوں تو وضو کرے اور مجروح پر مسح اور اس گنتی میں سر بھی شمار کیا جائے گا جبکہ تین چوتھائی سے زیادہ مجروح ہو۔	جنب و حائض و محدث تیمم سے تھے مباح پانی اتنا ملا کہ ایک کو کافی ہے سب کا تیمم ٹوٹ گیا پھر جب مثلاً بوجہ اولویت جنب نہا لیا باقی پھر تیمم کریں۔
۵۳۱	۵۰۹	وضو میں اگر سر کا مسح یا غسل میں سردھونا مضر ہو تو اس کے احکام کی تفصیل اور یہ کہ اس وجہ سے تیمم جائز نہیں۔	مباح پانی اگرچہ ایک ہی کے لائق ہو کہ جو چاہے اس سے طہارت کر سکے اور دو کو کافی نہ ہو اور ہیں ہزار تو سب کا تیمم ٹوٹ گیا۔
۵۳۱			

صفحہ نمبر	مضمون

باپ پانی لینا چاہے تو بیٹے کو اس کی
مزاحمت نہیں پہنچتی۔ اور بیٹے کے لیے
یہ صورت عجز ہے۔

Fatawa-e-Razvia, Volume 3

- If water belongs to several people with flawed ownership (milk fasid), and they grant permission to one among them, his Tayammum will not be valid. (531) - If Tayammum was performed for visiting graves (Ziyarat-e-Quboor) or visiting the sick (Iyaadat-e-Mareez), prayer will not be valid with it. (Footnote) (555)
- Why is a Junub (person in major ritual impurity) more prioritized among Junub, Muhdith (minor impurity), Haiz (menstruating woman), and the deceased? (532) - In the state of water scarcity, one of two intentions is a prerequisite for the permissibility of Tayammum. (556)
- Tayammum is not permissible for any act of worship while water is available without a valid excuse. (544) - While water is available, Tayammum is only permissible for that emphasized worship which would be missed without replacement if purification was done with water. (557)
- In which situation during a journey is searching for water obligatory such that Tayammum without searching is void, and in which situation is it not necessary? (545) - Tayammum is better for sitting in a mosque without wudu or for the remembrance of Allah, but prayer will not be valid with it. (557)
- In which situation during a journey is searching for water recommended (Mustahabb)? Water was with someone, and prayer was performed without asking; what is the ruling on the prayer? (551) - Tayammum for the purpose of sleeping in a mosque is purely futile. (557)
- What is the limit for searching for water during a journey? (553) - While water is available, Tayammum for touching the Quran (Mass-e-Mushaf) or recitation is futile; one cannot touch the Quran with it, nor can a Junub recite with it. (558)
- An unbeliever performed Tayammum and became Muslim; he cannot perform prayer with that Tayammum. If water is unavailable, he should perform Tayammum again. (554) - While water is available, Tayammum for Tahajjud, Chasht, or lunar eclipse prayers due to lack of time is futile. (558)
- What intention is required in Tayammum? (555) - While water is available, Tayammum for visiting graves, visiting the sick, or sleeping is void. (558)
- What intention in Tayammum allows for performing prayer and everything else? (555) - Merely intending "I am performing Tayammum" is not sufficient for the validity of Tayammum. (559)
- With the intention of which act of worship should Tayammum be performed so that prayer becomes permissible with it? (555) - Distinguishing between minor

impurity (hadath) and major impurity (janabat) in the intention of Tayammum is not necessary. (559)

- Water is unavailable and a person without wudu wants to touch the Holy Quran or a Junub wants to enter a mosque; they should perform Tayammum, but prayer will not be permissible with this Tayammum. (556) - Tayammum for Ghusl can be done with the intention of Wudu, and Tayammum for Wudu can be done with the intention of Ghusl. (561)
- A person without wudu or a Junub performs Tayammum out of respect for recitation or for reciting Kalima Tayyiba and Durood Sharif; it is permissible, but prayer will not be valid with it. (556) - As long as the impurity (hadath) is not discontinued, a person who is not excused cannot perform Tayammum. (570)

फतावा-ए-रज़विया, खंड 3

- पानी कई लोगों के दोषपूर्ण स्वामित्व (मलिक फासिद) में है, उन्होंने अपने में से एक को अनुमति दी, तो उसका तैयम्मुम मान्य नहीं होगा। (531) - कब्रों की ज़ियारत या बीमार की इयादत के लिए तैयम्मुम किया तो उससे नमाज़ नहीं होगी। (फुटनोट) (555)
- जुनुब, मुहदिस, हाइज़ और मैय्यत में जुनुब क्यों अधिक प्राथमिकता वाला है? (532) - पानी न होने की स्थिति में तैयम्मुम की अनुमति के लिए दो में से एक नियत (इरादा) शर्त है। (556)
- बिना किसी वैध कारण के पानी मौजूद होने पर किसी भी इबादत के लिए तैयम्मुम जायज़ नहीं है। (544) - पानी मौजूद होने पर, तैयम्मुम केवल उस ताकीदी इबादत के लिए जायज़ है जो पानी से शुद्धता प्राप्त करने में बिना किसी विकल्प के छूट जाती हो। (557)
- सफर के दौरान किस स्थिति में पानी की तलाश करना फर्ज़ है कि बिना तलाश के तैयम्मुम बातिल (अमान्य) हो, और किस स्थिति में ज़रूरी नहीं है? (545) - बिना वज़ू के मस्जिद में बैठने या अल्लाह के ज़िक्र के लिए तैयम्मुम बेहतर है, लेकिन इससे नमाज़ नहीं होगी। (557)
- सफर में किस स्थिति में पानी की तलाश मुस्तहब (पसंदीदा) है? पानी किसी के पास था और बिना मांगे नमाज़ पढ़ ली, तो नमाज़ का क्या हुक्म है? (551) - मस्जिद में सोने के लिए तैयम्मुम करना बिल्कुल निरर्थक (लग़्व) है। (557)
- सफर में पानी की तलाश की सीमा क्या है? (553) - पानी होते हुए कुरान छूने (मस-ए-मुसहफ) या तिलावत के लिए तैयम्मुम निरर्थक है; इससे न तो कुरान छुआ जा सकता है और न ही जुनुब तिलावत कर सकता है। (558)
- एक काफिर ने तैयम्मुम किया और मुसलमान हो गया, वह उस तैयम्मुम से नमाज़ नहीं पढ़ सकता; अगर पानी न हो तो दोबारा तैयम्मुम करे। (554) - पानी होते हुए समय की कमी के कारण तहज्जुद, चाश्त या चंद्र ग्रहण की नमाज़ के लिए तैयम्मुम करना निरर्थक है। (558)
- तैयम्मुम में क्या नियत (इरादा) होनी चाहिए? (555) - पानी होते हुए कब्रों की ज़ियारत, बीमार की इयादत या सोने के लिए तैयम्मुम बातिल है। (558)
- तैयम्मुम की वह नियत जिससे नमाज़ आदि सब अदा की जा सकें। (555) - सिर्फ इतनी नियत कि "मैं तैयम्मुम करता हूँ" तैयम्मुम की शुद्धता के लिए काफी नहीं है। (559)

- किस इबादत की नियत से तैयम्मुम करें कि उससे नमाज़ जायज़ हो? (555) - तैयम्मुम की नियत में हदस (छोटा नापाकी) और जनाबत (बड़ी नापाकी) के बीच अंतर करना ज़रूरी नहीं है। (559)
- पानी मौजूद नहीं है और बिना वज़ू वाला व्यक्ति कुरान मजीद छूना चाहता है या जुनुब मस्जिद में जाना चाहता है, तो वे तैयम्मुम करें, लेकिन इस तैयम्मुम से नमाज़ जायज़ नहीं होगी। (556) - गुस्ल का तैयम्मुम वज़ू की नियत से और वज़ू का तैयम्मुम गुस्ल की नियत से हो सकता है। (561)
- बिना वज़ू या जुनुब व्यक्ति तिलावत या कलिमा तैयबा और दरूद शरीफ पढ़ने के लिए अदब के तौर पर तैयम्मुम करे तो यह जायज़ है, लेकिन इससे नमाज़ नहीं होगी। (556) - जब तक नापाकी (हदस) समाप्त न हो जाए, गैर-मज़ूर (जो मजबूर न हो) व्यक्ति तैयम्मुम नहीं कर सकता। (570)

- پانی چند شخصوں کی ملک فاسد ہے انہوں نے اپنے میں سے ایک کو اجازت دے دی اس کا تیمم نہ جائے گا۔ (۵۳۱) - زیارتِ قبور یا عیادت مریض کیلئے تیمم کیا اس سے نماز نہ ہوگی۔ (حاشیہ) (۵۵۵)
- جنب و محدث و حائض و میت میں جنب کیوں اولیٰ ہے۔ (۵۳۲) - پانی نہ ہونے کی حالت میں جوازِ تیمم کے لیے دو میں سے ایک نیت شرط ہے۔ (۵۵۶)
- پانی موجود ہوتے ہوئے بلا عذر کسی عبادت کے لیے تیمم جائز نہیں۔ (۵۴۴) - پانی ہوتے ہوئے صرف اس عبادتِ مؤکدہ کے لیے تیمم جائز ہے جو پانی سے طہارت کرنے میں بلابدل فوت ہوتی ہو۔ (۵۵۷)
- سفر میں کس حالت میں پانی تلاش کرنا فرض ہے کہ بے تلاش تیمم باطل اور کس حالت میں ضروری نہیں۔ (۵۴۵) - بے وضو مسجد میں بیٹھنے یا ذکر الہیٰ کے لیے تیمم بہتر ہے مگر اس سے نماز نہ ہوگی۔ (۵۵۷)
- سفر میں کس حالت میں پانی کی تلاش مستحب ہے پانی کسی کے پاس تھا اور بے مانگے نماز پڑھ لی نماز کا کیا حکم ہے۔ (۵۵۱) - مسجد میں سونے کے لیے تیمم محض لغو ہے۔ (۵۵۷)
- سفر میں پانی کی تلاش کی کیا حد ہے۔ (۵۵۳) - پانی ہوتے ہوئے مسِ مصحف یا تلاوت کے لیے تیمم لغو ہے اس سے نہ مصحف چھو سکتا ہے نہ جنب تلاوت کر سکتا ہے۔ (۵۵۸)
- کافر تیمم کرکے مسلمان ہوا اس تیمم سے نماز نہیں پڑھ سکتا، پانی نہ ہو تو دوبارہ تیمم کرے۔ (۵۵۴) - پانی ہوتے ہوئے تنگی وقت کے باعث تہجد یا چاشت یا چاند گہن کی نماز کے لیے تیمم لغو ہے۔ (۵۵۸)

- تیمم میں کیا نیت چاہیے۔ (۵۵۵) - پانی ہوتے ہوئے زیارتِ قبور یا عیادتِ مریض یا سونے کے لیے تیمم باطل ہے۔ (۵۵۸)
- تیمم کی وہ نیت جس سے نماز وغیرہ سب ادا کر سکے۔ (۵۵۵) - صرف اتنی نیت کہ تیمم کرتا ہوں صحتِ تیمم کیلئے کافی نہیں۔ (۵۵۹)
- کس عبادت کی نیت سے تیمم کریں کہ اس سے نماز جائز ہو۔ (۵۵۵) - حدث و جنابت میں تمیز کی نیت تیمم میں ضرور نہیں۔ (۵۵۹)
- پانی موجود نہیں اور بے وضو شخص قرآن مجید چھونا یا جنب مسجد میں جانا چاہتا ہے تیمم کریں مگر اس تیمم سے نماز روانہ ہوگی۔ (۵۵۶) - غسل کا تیمم بہ نیت وضو اور وضو کا بہ نیت غسل ہو سکتا ہے۔ (۵۶۱)
- بے وضو یا جنب تلاوت یا جنب کلمہ طیبہ و درود شریف پڑھنے کے لیے براہِ ادب تیمم کریں روا ہے مگر اس سے نماز نہ ہوگی۔ (۵۵۶) - حدث جب تک منقطع نہ ہو جائے غیر معذور تیمم نہیں کر سکتا۔ (۵۷۰)

Fatawa Razawiya, Volume 3

- Ten intentions for Tayammum and their rulings. (570) | If there is no time, perform Tayammum with wet soil. (668)
- The author's research that the original intention in Tayammum is purification, and that is all. (573) | How to perform Tayammum from mud if required. (668)
- Description of those things whose intention for Tayammum only provides purity for them, not absolutely. (574) | To what extent burning dung-mixed soil makes Tayammum on it permissible. (674)
- A substance mixed with earthy and non-earthy elements; if earthy elements predominate, it is of the earth's genus, otherwise not. (611) | Why Tayammum with ash is impermissible. (677)
- Description of those 180 things from which Tayammum is permissible. (628) | Research on whether coral is a stone. (686)
- 170 items that the author added. (632) | Even if there is a thin dry layer of soil on something such that rubbing hands on it leaves no mark, Tayammum on it is still permissible. (695)
- Tayammum with powdered antimony without necessity is prohibited, though it will be valid. (630) | The final word on Tayammum on gold and silver metals. (695)
- When Tayammum is permissible on ground, roads, and pavements. (633) | The issue of non-earth elements mixed within the earth genus. (695)
- What is the condition for Tayammum on an uneven stone or wall? (647) | If a non-earth substance is mixed with the earth genus, what is the ruling after cooking or burning? (700)
- What to do if all parts of the palms do not touch the ground. (647) | The condition for Tayammum is that the thing one performs Tayammum on must not be known to be impure at that time, nor proven so later. (707)
- Counting of those 132 things from which Tayammum cannot be performed. (650) | A place or thing suspected of impurity cannot be used for Tayammum, even if impurity is not apparent at that time. (707)
- Seventy-three items that the author added. (655) | What is the ruling if Tayammum was performed on something and later someone informed it was impure? (707)
- Chalk is not a stone; Tayammum cannot be performed on it. (656) | If Tayammum was performed on something that was not a suspected source of

impurity nor was its impurity proven later, the Tayammum is valid even if it was actually impure. (707)

- Sang-e-Basri is not a stone; Tayammum cannot be performed on it. (658) | It is permissible to have someone else perform Tayammum for you under future conditions. (708)
- If nothing but mud is found for Tayammum, and if there is plenty of time, one should smear it on clothes or feet and perform Tayammum when dry. (667) |

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

- तयम्मुम की दस नीयतें और उनके अहकाम। (570) | समय कम हो तो गीली मिट्टी से ही तयम्मुम कर ले। (668)
- लेखक का शोध कि तयम्मुम में मूल नियत केवल शुद्धि है। (573) | कीचड़ से तयम्मुम की ज़रूरत हो तो किस तरह करे। (668)
- उन चीजों का विवरण जिनकी नियत से तयम्मुम केवल उनके लिए पवित्रता है, पूर्णतः नहीं। (574) | गोबर मिली मिट्टी को कहाँ तक जलाने से उस पर तयम्मुम जायज़ होगा। (674)
- जिस चीज़ में ज़मीनी और गैर-ज़मीनी तत्वों का मिश्रण हो; यदि ज़मीनी तत्व अधिक हैं तो वह ज़मीन की श्रेणी में है, अन्यथा नहीं। (611) | राख से तयम्मुम क्यों नाजायज़ है। (677)
- उन 180 चीजों का विवरण जिनसे तयम्मुम जायज़ है। (628) | यह शोध कि मूँगा पत्थर है। (686)
- 170 चीज़ें जो लेखक ने जोड़ीं। (632) | यदि किसी चीज़ पर मिट्टी की पतली सूखी परत हो कि उस पर हाथ फेरने से निशान न बने, तब भी उस पर तयम्मुम जायज़ है। (695)
- बिना ज़रूरत पिसे हुए सुरमे से तयम्मुम मना है, हालांकि यह हो जाएगा। (630) | सोने और चाँदी की धातुओं पर तयम्मुम के बारे में अंतिम निर्णय। (695)
- ज़मीन, सड़क और खड़ंजे पर तयम्मुम कब जायज़ है। (633) | ज़मीन की श्रेणी में गैर-ज़मीनी तत्व मिले होने का मामला। (695)
- असमान पत्थर या दीवार पर तयम्मुम में क्या शर्त है। (647) | यदि ज़मीन की श्रेणी में कुछ और मिला हो, तो पकाने या जलाने के बाद क्या नियम है। (700)
- यदि पूरी हथेलियां ज़मीन को न छुएं तो क्या करें। (647) | तयम्मुम की शर्त यह है कि जिस चीज़ पर तयम्मुम करे, न उस समय उसकी अशुद्धता पता हो और न ही बाद में प्रमाणित हो। (707)
- उन 132 चीजों की गिनती जिनसे तयम्मुम नहीं हो सकता। (650) | जो जगह या चीज़ अशुद्ध होने का संदेह हो, उस पर तयम्मुम नहीं हो सकता, भले ही उस समय अशुद्धता का पता न हो। (707)
- तिहत्तर (73) चीज़ें जो लेखक ने जोड़ीं। (655) | किसी चीज़ पर तयम्मुम किया फिर किसी ने बताया कि यह अशुद्ध थी, तो क्या नियम है। (707)

- खड़िया पत्थर नहीं है, इस पर तयम्मुम नहीं हो सकता। (656) | जिस चीज़ पर तयम्मुम किया, यदि वह न तो अशुद्धता की संदिग्ध थी और न ही बाद में उसका अशुद्ध होना प्रमाणित हुआ, तो तयम्मुम सही हो गया, भले ही वास्तव में वह अशुद्ध थी। (707)
- संग-ए-बसरी पत्थर नहीं है, इस पर तयम्मुम नहीं हो सकता। (658) | जायज़ है कि भविष्य की शर्तों के तहत किसी और से तयम्मुम कराए। (708)
- कीचड़ के अलावा तयम्मुम के लिए कुछ न मिले, तो समय होने पर कपड़े या पैरों में मल ले और सूखने पर तयम्मुम करे। (667) |

فتاوی رضویہ، جلد سوم

- تیمم کی دس نیتیں اور ان کے احکام۔ (۵۷۰) | وقت میں گنجائش نہ ہو تو گیلی ہی مٹی سے تیمم کرے۔ (۶۶۸)
- مصنف کی تحقیق کہ تیمم میں اصل نیت تطہیر ہے وبس۔ (۵۷۳) | کیچڑ سے تیمم کی ضرورت ہو تو کس طرح کرے۔ (۶۶۸)
- ان اشیاء کا بیان جن کی نیت سے تیمم کرنا صرف ان کے حق میں طہارت ہوتا ہے مطلقاً نہیں۔ (۵۷۴) | گوبر ملی ہوئی مٹی کہاں تک جلانے سے اس پر تیمم جائز ہوگا۔ (۶۷۴)
- جس چیز میں اجزائے ارضیہ و غیر ارضیہ کا خلط ہے اگر اجزائے ارضیہ غالب ہیں جنس ارض سے ہے ورنہ نہیں۔ (۶۱۱) | راکھ سے تیمم کیوں ناجائز ہے۔ (۶۷۷)
- ان ایک سو اسی ۱۸۰ چیزوں کا بیان جن سے تیمم جائز ہے۔ (۶۲۸) | اس کی تحقیق کہ مونگا پتھر ہے۔ (۶۸۶)
- ایک سو ساتھ ۱۷۰ چیزیں کہ مصنف نے زائد کیں۔ (۶۳۲) | کسی چیز پر اگر مٹی کا باریک خشک لیس ہے کہ اس پر ہاتھ پھیرنے سے نشان نہ بنے گاجب بھی اس پر تیمم جائز ہے۔ (۶۹۵)
- پسے ہوئے سُرمہ سے بے ضرورت تیمم منع ہے اگرچہ ہو جائے گا۔ (۶۳۰) | سونے چاندی دھاتوں پر تیمم میں قول فیصل۔ (۶۹۵)
- زمین اور سڑک اور کھر نجہ پر تیمم کس وقت جائز ہے۔ (۶۳۳) | جنس ارض میں غیر جنس ملی ہونے کا مسئلہ۔ (۶۹۵)

- ناہموار پتھر یا دیوار پر تیمم میں کیا شرط ہے۔ (۶۴۷) | جنس ارض میں اس کا غیر ملا ہو تو پکانے جلانے کے بعد کیا حکم ہے۔ (۷۰۰)
- اگر ساری ہتھیلیاں زمین کو نہ لگیں تو کیا کرے۔ (۶۴۷) | تیمم کی شرط یہ ہے کہ جس چیز پر تیمم کرے نہ اس وقت اس کی ناپاکی معلوم ہو نہ بعد کو ثابت ہو۔ (۷۰۷)
- ان ایک سو بتیس ۱۳۲ چیزوں کا شمار جن سے تیمم نہیں ہو سکتا۔ (۶۵۰) | جو جگہ یا چیز مظنہ نجاست ہو اس پر تیمم نہیں ہو سکتا اگرچہ اس وقت اس پر نجاست نہ معلوم ہو۔ (۷۰۷)
- تہتر چیزیں کہ مصنف نے زائد کیں۔ (۶۵۵) | کسی چیز پر تیمم کیا پھر کسی نے خبر دی کہ یہ ناپاک تھی تو کیا حکم ہے۔ (۷۰۷)
- کھڑ یا پتھر نہیں اس پر تیمم نہیں ہو سکتا۔ (۶۵۶) | جس چیز پر تیمم کیا نہ وہ مظنہ نجاست تھی نہ بعد کو اس کا نجس ہونا ثابت ہوا تیمم صحیح ہو گیا اگرچہ واقع میں وہ نجس تھی۔ (۷۰۷)
- سنگ بصری پتھر نہیں اس پر تیمم نہیں ہو سکتا۔ (۶۵۸) | روا ہے کہ دوسرے سے بشرائط آئندہ تیمم کرائے۔ (۷۰۸)
- کیچڑ کے سوا تیمم کو کچھ نہ ملے اگر وقت میں وسعت ہو تو کپڑے یا پاؤں میں سان لے خشک ہونے پر تیمم کرے۔ (۶۶۷) |

It is Makruh (disliked) to have someone else perform one's Tayammum without necessity. 708

It is necessary that the other person's performing of Tayammum be by his command, even if implicitly. 708

When the other person strikes (the earth), it is necessary for the one giving the command to make the intention at that time. 708

Details regarding the command explicitly and implicitly and the time of intention in this matter are from the author's research. 709

In standard Tayammum, it is necessary to apply specific hands on the surface of the earth; rubbing wood, paper, cloth etc. on soil and then passing it over the face and hands is not sufficient. 712

If cloth etc. is placed on soil and it gets so much soil in it that by passing it over the face and hands, soil reaches everywhere, then Tayammum is done. 712

If Tayammum is done by striking on the surface of the earth while wearing gloves, it should be valid. 712

Order is not a condition in Tayammum; however, it is Sunnah to wipe the face first, then the right hand, then the left. 714

Standard Tayammum can be done in twelve (12) ways, of which one is Sunnah and the others are also permissible. 714

It is mandatory to remove rings, bands, finger or wrist ornaments and shift them to wipe under them, otherwise Tayammum will not be valid. 715

Places of hardship are excluded. 715

Fatwa 113. Soil does not become 'used' (musta'mal) by Tayammum. 717

A thousand people can perform Tayammum from one place, and one person can perform Tayammum a thousand times from it. 718

The soil that falls from the faces and hands of those performing Tayammum can be collected and Tayammum can be performed on it as well. 720

729

If there is a dry coating on the palms and removing it is harmful, then perform Tayammum as it is. 713

A single strike of one palm is not sufficient for two limbs. 713

If while performing Tayammum for another living or deceased person, both palms are used to wipe one of their hands, then a third strike will be required for the other hand. 714

Multiple strikes for a single limb are disliked (Makruh) by consensus. 729

Fatwa 114. Tayammum from a mosque wall is permissible, and a refutation of Gangohi. 738 738

Performing Tayammum on any wall is not considered tampering with the wall. 740 740

बिना ज़रूरत किसी दूसरे से अपना तयम्मुम कराना मकरूह है। ७०८

ज़रूरी है कि दूसरे का उसे तयम्मुम कराना उसके हुक्म से हो, चाहे वह इशारे (दलालातन) से ही क्यों न हो। ७०८

जिस समय वह दूसरा व्यक्ति (ज़मीन पर) ज़र्ब (हाथ) मारे, ज़रूरी है कि हुक्म देने वाला उस समय नियत करे। ७०८

इस मसअले में हुक्म सराहतन और दलालातन, नियत के समय का विवरण मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़ात से। ७०९

म'हूदा तयम्मुम में जिन्स-ए-अर्ज़ (मिट्टी की श्रेणी) पर विशेष रूप से हाथ लगाना ज़रूरी है; लकड़ी, काग़ज़, कपड़ा आदि मिट्टी पर लगाकर मुँह और हाथों पर फेरना काफ़ी नहीं। ७१२

कपड़ा आदि मिट्टी पर लगाने से यदि उसमें मिट्टी इतनी भर गई कि उसे मुँह और हाथों पर फेरने से सब जगह मिट्टी पहुँच गई तो तयम्मुम हो गया। ७१२

दस्ताने पहने हुए जिन्स-ए-अर्ज़ पर मारकर तयम्मुम किया तो हो जाना चाहिए। ७१२

हथेलियों पर खुश्क लेप है और उसे छुड़ाना नुक़सानदेह हो तो उसी तरह तयम्मुम करे। ७१३

तयम्मुम में तरतीब (क्रम) शर्त नहीं है, हाँ सुन्नत है कि पहले मुँह का मसह करे, फिर दायाँ हाथ फिर बायाँ। ७१४ — ७१४

म'हूदा (प्रचलित) तयम्मुम बारह (१२) तरह से हो सकता है, जिनमें एक सुन्नत है और बाक़ी भी जाइज़ हैं। ७१४ — ७१४

लाज़िम है कि अंगूठी, छल्ले, उँगली या कलाई का हर गहना उतार कर या उन्हें हटा-हटा कर मसह करें वरना तयम्मुम नहीं होगा। ७१५ — ७१५

हरज (कठिनाई) वाले स्थान मुस्तस्ना (अपवाद) हैं। ७१५ — ७१५

फ़तवा ११३. तयम्मुम से मिट्टी 'मुस्त'मल' (उपयोग की हुई) नहीं होती। ७१७ — ७१७

एक जगह से हज़ार व्यक्ति और एक व्यक्ति हज़ार बार तयम्मुम कर सकता है। ७१८ — ७१८

तयम्मुम करने वालों के मुँह और हाथों से जो मिट्टी झड़ी उसे जमा करके उस पर भी तयम्मुम हो सकता है। ७२० — ७२०

एक अज़ू (अंग) के लिए कई ज़र्ब (प्रहार) बिल-इत्तेफ़ाक़ मकरूह हैं। ७२९ — ७२९

दो अंगों के लिए एक हथेली की ज़र्ब वाहिद काफ़ी नहीं। ७१३

यदि दूसरे ज़िंदा या मुर्दा को तयम्मुम कराने में दोनों हथेलियों से उसके एक हाथ का मसह किया तो दूसरे हाथ के लिए तीसरी ज़र्ब की ज़रूरत होगी। ७१४

पृष्ठ ७५६ का १९

फ़तवा ११४. मस्जिद की दीवार से तयम्मुम जाइज़ है और गंगोही का रद (खंडन)। ७३८ ७३८

किसी दीवार पर तयम्मुम करना दीवार में तसर्रुफ़ (अधिकार जमाना) नहीं है। ७४० ७४०

بلا ضرورت دوسرے سے اپنا تیمّم کرانا مکروہ ہے۔ ۷۰۸

ضرور ہے کہ دوسرے کا اسے تیمّم کرانا اس کے حکم سے ہوا گرچہ دلالۃً۔ ۷۰۸

جس وقت وہ دوسرا ضرب کرے ضرور ہے کہ یہ حکم دینے والا اس وقت نیت کرے۔ ۷۰۸

اس مسئلہ میں حکم صراحۃً ودلالۃً وقت نیت کی تفصیل تحقیقاتِ مصنف سے۔ ۷۰۹

تیمّم معہود میں جنس ارض پر خاص ہاتھوں کا لگانا ضروری ہے لکڑی، کاغذ، کپڑا وغیرہ مٹی پر لگا کر منہ اور ہاتھوں پر پھیرنا کافی نہیں۔ ۷۱۲

کپڑا وغیرہ مٹی پر لگانے سے اگر اس میں مٹی اتنی بھر گئی کہ اسے منہ اور ہاتھوں پر پھیرنے سے سب جگہ مٹی پہنچ گئی تیمّم ہو گیا۔ ۷۱۲

تیمّم میں ترتیب شرط نہیں ہاں سنت ہے کہ پہلے منہ کا مسح کرے پھر دہنا ہاتھ ۷۱۴

پھر بایاں۔ ۷۱۴

تیمّم معہودہ بارہ ۱۲ طرح ہو سکتا ہے جن میں ایک سنت ہے اور باقی بھی ۷۱۴

جائز۔ ۷۱۴

لازم ہے کہ انگوٹھی، چھلے انگلی کلائی کا ہر گہنا اتار کر انہیں ہٹا ہٹا کر ۷۱۵

مسح کریں ورنہ تیمّم نہ ہوگا۔ ۷۱۵

مواضع حرج مستثنیٰ ہیں۔ ۷۱۵ ۷۱۵

فتویٰ ۱۱۳۔ تیمّم سے مٹی مستعمل نہیں ۷۱۷

ہوتی۔ ۷۱۷

ایک جگہ سے ہزار شخص اور ایک ۷۱۸

شخص ہزار بار تیمّم کر سکتا ہے۔ ۷۱۸

دستانے پہنے ہوئے جنس ارض پر مار کر تیمّم کیا تو ہو جانا چاہئے۔ ۷۱۲

ہتھیلیوں پر خشک لیپ ہے اور چھڑانا مضر تو اسی طرح تیمّم کرے۔ ۷۱۳

دو عضووں کو ایک ہتھیلی کی ضرب واحد کافی نہیں۔ ۷۱۳

اگر دوسرے زندہ یا مردہ کو تیمّم کرانے میں دونوں ہتھیلیوں سے اس کے ایک ہاتھ کو مسح کیا تو دوسرے ہاتھ کے لیے تیسری ضرب درکار ہوگی۔ ۷۱۴

تیمّم کرنے والوں کے منہ اور ہاتھوں سے جو مٹی جھڑی اسے جمع کر کے اس پر بھی تیمّم ہو سکتا ہے۔ ۷۲۰ ۷۲۰

ایک عضو کے لیے کئی ضربیں بالاجماع مکروہ ہیں۔ ۷۲۹ ۷۲۹

فتویٰ ۱۱۴۔ مسجد کی دیوار سے تیمّم جائز ہے اور گنگوہی کا رد۔ ۷۳۸ ۷۳۸

کسی دیوار پر تیمّم دیوار میں تصرف نہیں۔ ۷۴۰ ۷۴۰

صفحہ 756 کا 19

Volume Three | Fatawa Razawiyya Index of Subsidiary Issues

Chapter of Ablution (Bab al-Wudu) - If medicine is applied to the body and its removal is harmful, pour water over it. If that also causes harm, perform Masah (wiping). If that too is harmful, it is excused. (516) - The ablution (Wudu) performed for a funeral prayer can be used for any other prayer. (306, 519) - Wasting or throwing away water is forbidden (Haram). (519) - If someone sat down for Wudu, took water in a handful, and then became ritually impure (Hadath), that handful of water can be used for washing hands. (486, 554) - If a non-believer performs Wudu or Ghusl (ritual bath) and then embraces Islam, and remains in a state of ritual purity (Hadath does not occur), they can offer prayer with that same Wudu. (554) - If one washed their face, then took water in a handful to wash their hands and Hadath occurred, they can pour this water on their hands. (386, 711) - Masah of the head or leather socks with only one or two fingers is not permissible. However, it is permissible if the fingers are repeatedly moistened and placed in different spots until the required area is covered. (711) - If water is taken in the hollow of the palm to wash the face and then Hadath occurs, that water should not be considered sufficient for washing the face. (388, 730) - The superior method of head Masah during Wudu. (730) - During Wudu or Ghusl, if washing a limb is harmful, then perform Masah on it. (512, 732) - Likewise, the second method. (732) - Washing and performing Masah can be combined; perform Masah on parts where washing is harmful and wash the remainder. (513, 731) - If moisture on the fingers is depleted during head Masah, use fresh moisture for wiping the ears. (731) - Washing and wiping a bandage can be combined. (513)

Nullifiers of Wudu (Nawaqid-e-Wudu) - Details regarding washing or wiping when limbs are cracked/chapped. (516, 172) - If impure fluid flows out by its own force, it nullifies Wudu, even if more pure moisture is mixed with it. (172)

जिल्द सोम (खंड तीन) | फ़तावा रज़विया फ़ेहरिस्त ज़िमनी मसाइल (गौण समस्याओं की सूची)

बाब अल-वुज़ू (वुज़ू का अध्याय) - बदन पर दवा लगी है और छुड़ाना हानिकारक हो तो उस पर पानी बहाए और उससे भी नुक्सान हो तो मसह कर ले, और उससे भी नुक्सान हो तो माफ़ है। (५१६) - जनाज़ा के लिए जो वुज़ू किया उससे हर नमाज़ पढ़ सकता है। (३०६, ५१९) - पानी बेकार ख़र्च करना या फेंक देना हराम है। (५१९) - वुज़ू करने बैठा अंजुली में पानी लिया और 'हदस' (अशुद्धि) हो गया, यह अंजुली का पानी हाथ धोने में ख़र्च कर सकता है। (४८६, ५५४) - काफ़िर वुज़ू या ग़ुस्ल करके इस्लाम लाया और उसके बाद 'हदस' न हुआ, उसी वुज़ू से नमाज़ पढ़ सकता है। (५५४) - मुंह धोया फिर हाथ धोने के लिए अंजुली में पानी लिया कि 'हदस' हो गया, यह पानी हाथों पर डाल सकता है। (३८६, ७११) - एक दो उंगली से सिर और मोज़े का मसह जाइज़ नहीं, हाँ अगर बार-बार उंगली तर करके विभिन्न जगहों पर रखे कि निर्धारित हिस्से तक पहुँच जाए तो जाइज़ है। (७११) - मुंह धोने को पानी लुप (अंजुली) में लिया फिर 'हदस' हो गया, वह पानी मुंह धोने को काफ़ी नहीं होना चाहिए। (३८८, ७३०) - वुज़ू में मसह-ए-सर का बेहतर तरीक़ा। (७३०) - वुज़ू व ग़ुस्ल में जिस अंग का धोना हानिकारक हो तो मसह कर ले। (५१२, ७३२) - इसी तरह दूसरा तरीक़ा। (७३२) - धोना और मसह करना एक साथ हो सकते हैं; जितने हिस्से का धोना हानिकारक है मसह करे बाक़ी को धोए। (५१३, ७३१) - सर के मसह में उंगलियों की तरी (नमी) ख़त्म हो गई तो कानों के मसह के लिए नई तरी लें। (७३१) - धोना और पट्टी का मसह करना एक साथ हो सकते हैं। (५१३)

नवाक़िज़-ए-वुज़ू (वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें) - अंग फट गए हों तो उनके धोने या मसह करने की तफ़सील (विवरण)। (५१६, १७२) - नजासत (अशुद्धि) का पानी अपनी शक्ति से बहकर निकलना नाक़िज़-ए-वुज़ू है चाहे उसके साथ और पाक नमी उससे ज़्यादा मिली हुई हो। (१७२)

पृष्ठ २० का ७५६

باب الوضوء - بدن پر دوا لگی ہے اور چھڑانا مضر تو اس پر پانی بہائے اور اس سے بھی ضرر ہو تو مسح کر لے اور اس سے بھی ضرر ہو تو معاف۔ (۵۱۶) - جنازہ کے لیے جو وضو کیا اس سے ہر نماز پڑھ سکتا ہے۔ (۳۰۶، ۵۱۹) - پانی بیکار صرف کرنا یا پھینک دینا حرام ہے۔ (۵۱۹) - وضو کرنے بیٹھا چلو میں پانی لیا حدث ہو گیا یہ چلو ہاتھ دھونے میں صرف کر سکتا ہے۔ (۴۸۶، ۵۵۴) - کافر وضو یا غسل کر کے اسلام لایا اور اس کے بعد حدث نہ ہوا اسی وضو سے نماز پڑھ سکتا ہے۔ (۵۵۴) - منہ دھویا پھر ہاتھ دھونے کے لیے چلو میں پانی لیا کہ حدث ہو گیا یہ پانی ہاتھوں پر ڈال سکتا ہے۔ (۳۸۶، ۷۱۱) - ایک دو انگلی سے سر اور موزہ کا مسح جائز نہیں ہاں اگر بار بار انگلی تر کر کے مختلف جگہ پر رکھے کہ قدر مطلوب کو پہنچ جائے تو جائز ہے۔ (۷۱۱) - منہ دھونے کو پانی لُپ میں لیا پھر حدث ہو گیا وہ پانی منہ دھونے کو کافی نہ ہونا چاہئے۔ (۳۸۸، ۷۳۰) - وضو میں مسح سر کا بہتر طریقہ۔ (۷۳۰) - وضو و غسل میں جس عضو کا دھونا مضر ہو تو مسح کر لے۔ (۵۱۲، ۷۳۲) - ایضاً دوسرا طریقہ۔ (۷۳۲) - دھونا اور مسح کرنا جمع ہو سکتے ہیں جتنے ٹکڑے کا دھونا مضر ہے مسح کرے باقی کو دھوئے۔ (۵۱۳، ۷۳۱) - سر کے مسح میں انگلیوں کی تری ختم ہو گئی تو کانوں کے مسح کے لیے نئی تری لیں۔ (۷۳۱) - دھونا اور پٹی کا مسح کرنا جمع ہو سکتے ہیں۔ (۵۱۳)

نواقض وضو - اعضا پھٹ گئے ہوں تو ان کے دھونے یا مسح کرنے کی تفصیل۔ (۵۱۶، ۱۷۲) - نجاست کا پانی اپنی قوت سے بہہ کر نکلنا ناقض وضو ہے اگرچہ اس کے ساتھ اور پاک رطوبت اس سے زائد مخلوط ہو۔ (۱۷۲)

Fatawa Razawiyya | Volume Three

[Section: Impurities] - (176) Thin blood coming from the head or the cavity, no matter how little, breaks wudu. - (173) Clotted blood in vomit coming from the cavity, if it is a mouthful, breaks wudu; otherwise, it does not. - (173) Blood coming from the cavity in vomit is absolutely a wudu-breaker; its color is not considered. - Exercise does not break wudu. - (406) Committing sins and disliked acts is also a type of legal impurity (najasat-e-hukmiya), even though wudu is not lost through them. - (409/203) The author's research that a Muslim's death is a state of ritual impurity (hadath), not physical impurity (najasat). - (512) Legal impurity is stricter than physical impurity; a portion of the latter can be pardoned, but not a single atom of the former is pardoned here.

- (50) Washing with milk, ghee, oil, or olive oil does not purify an impurity.
- (51) Vinegar or water from chickpeas or beans, provided it has not become thick, will purify the impurity, but it is not permissible without necessity.
- (53) Quantities and rulings regarding thin and solid impurities.
- (54) As long as oil does not cover an area larger than a rupee coin, prayer will be valid in that garment; if it spreads and becomes more than that, it will no longer be valid.
- (54) Shoes and leather socks become pure if solid impurity is rubbed off until it is gone.
- (54) Shoes will not become pure without washing if the impurity is not solid. Definition of impurity with and without substance.
- Noble research by the author on the fact that 'visible' and 'non-visible' have two meanings and their application to different contexts.
- (252) Doubt and conjecture regarding impurity are not considered, along with useful examples.
- (256) The skins of animals that are taken to shrines and slaughtered there are pure.
- (257) The skin of an animal slaughtered by an apostate or polytheist should be considered impure; there is more caution in this.
- (268) Vaginal discharge is pure.

[Chapter on Ghusl (Bathing)] - (512) If washing the head is harmful, bathe from the neck down and wipe (mash) over the head.

[Section: Wiping over Leather Socks (Masah Khuffayn)] - (298) Wiping over leather socks is not permissible during ghusl; it is obligatory to take off the socks and wash the feet. - (513) It is not permissible to wash one foot and wipe over a leather sock on the other.

फ़तावा रज़विया | जिल्द सोम (भाग तीन)

[अनुभाग: अशुद्धियाँ (अंजास)] - (176) पतला खून सिर से आए या शरीर के अंदरूनी हिस्से से, चाहे कितना ही कम हो, वज़ू तोड़ देता है। - (173) उल्टी में जमा हुआ खून अगर अंदरूनी हिस्से से आए और मुँह भर कर हो, तो वज़ू तोड़ देता है; अन्यथा नहीं। - (173) अंदरूनी हिस्से से उल्टी में आने वाला खून पूर्णतः वज़ू तोड़ने वाला है; इसमें रंग का कोई महत्व नहीं है। - कसरत (व्यायाम) से वज़ू नहीं जाता। - (406) गुनाहों और नापसंदीदा कामों को करना भी एक प्रकार की कानूनी अशुद्धि (नजासत-ए-हुक्मिया) है, हालाँकि उनसे वज़ू नहीं टूटता। - (409/203) लेखक का शोध यह है कि मुसलमान की मृत्यु अनुष्ठानिक अशुद्धि (हदस) है, शारीरिक अशुद्धि (नजासत) नहीं। - (512) कानूनी अशुद्धि, वास्तविक शारीरिक अशुद्धि से अधिक सख्त है; बाद वाले का एक हिस्सा माफ किया जा सकता है, लेकिन पहले वाले का एक कण भी यहाँ माफ नहीं है।

- (50) दूध, घी, तेल या जैतून के तेल से धोना अशुद्धि को शुद्ध नहीं करता।
- (51) सिरका या चने या फलियों का पानी जब तक गाढ़ा न हुआ हो, अशुद्धि को शुद्ध कर देगा, लेकिन बिना आवश्यकता के यह जायज़ नहीं है।
- (53) पतली और ठोस अशुद्धियों की मात्रा और उनके नियम।
- (54) जब तक तेल एक रुपये के सिक्के से ज़्यादा जगह पर न हो, उस कपड़े में नमाज़ हो जाएगी; फिर अगर वह फैलकर उससे ज़्यादा हो गया, तो अब नहीं होगी।
- (54) ठोस अशुद्धि को रगड़कर झाड़ देने से जूता और मोज़ा पाक (शुद्ध) हो जाता है।
- (54) जो अशुद्धि ठोस नहीं है, उसे बिना धोए जूता पाक नहीं होगा। ठोस और गैर-ठोस अशुद्धि की परिभाषा।
- 'दृश्य' (मरई) और 'अदृश्य' के दो अर्थों और विभिन्न स्थितियों में उनके प्रयोग पर लेखक का महत्वपूर्ण शोध।
- (252) अशुद्धि के बारे में शक और अनुमान का कोई महत्व नहीं है, और इसके उपयोगी उदाहरण।
- (256) जो जानवर मज़ारों पर ले जाकर ज़िबह किए जाते हैं, उनकी खाल पाक है।
- (257) धर्मत्यागी या बहुदेववादी द्वारा ज़िबह किए गए जानवर की खाल को नापाक माना जाना चाहिए, इसी में अधिक सावधानी है।
- (268) गर्भाशय की नमी पाक है।

[बाबुल् ग़ुस्ल (स्नान का अध्याय)] - (512) यदि सिर धोना नुकसान पहुँचाए, तो गर्दन से नीचे नहाएं और सिर का मसह (गीला हाथ फेरना) करें।

[अनुभाग: चमड़े के मोज़ों पर मसह करना (मसह-ए-ख़ुफ़फ़ैन)] - (298) ग़ुस्ल में मोज़ों पर मसह करना जायज़ नहीं है, मोज़े उतारकर पैर धोना फ़र्ज़ है। - (513) यह जायज़ नहीं है कि एक पैर धोया जाए और दूसरे पैर के मोज़े पर मसह किया जाए।

[انجاس] - (۱۷۶) رقیق خون سر سے آئے یا جوف سے کتنا ہی قلیل ہو ناقضِ وضو ہے۔ - (۱۷۳) قے میں بستہ خون جوف سے آیا اگر منہ بھر کر ہو، ناقضِ وضو ہے ورنہ نہیں۔ - (۱۷۳) خون کہ جوف سے قے میں آئے مطلقاً ناقضِ وضو ہے رنگت کا اس میں اعتبار نہیں۔ - ورزش سے وضو نہیں جاتا۔ - (۴۰۶) معاصی و مکروہات کا ارتکاب بھی ایک طرح کی نجاستِ حکمیہ ہے اگرچہ ان سے وضو نہیں جاتا۔ - (۴۰۹/۲۰۳) مصنف کی تحقیق کہ مسلمان کی موت حدث ہے نجاست نہیں۔ - (۵۱۲) نجاستِ حکمیہ نجاستِ حقیقیہ سے سخت تر ہے اس کا ایک حصہ معاف ہوتا ہے یہاں کوئی ذرہ معاف نہیں۔

- (۵۰) دودھ، گھی، تیل، روغنِ زیتون سے دھونا نجاست کو پاک نہیں کرتا۔
- (۵۱) سرکہ یا چنے یا باقلا کا پانی جبکہ گاڑھا نہ ہو گیا ہو نجاست کو پاک کردے گا مگر بلا ضرورت جائز نہیں۔
- (۵۳) رقیق اور دلدار نجاستوں کی مقداریں اور احکام۔
- (۵۴) تیل روپے بھر سے زیادہ جگہ پر نہ ہو اس وقت تک اس کپڑے سے نماز ہو جائے گی پھر پھیل کر زیادہ ہو گیا تو اب نہ ہوگی۔
- (۵۴) جرم دار نجاست رگڑ کر جھڑ جانے سے جوتا اور موزہ پاک ہو جاتا ہے۔
- (۵۴) جو نجاست دلدار نہیں اسے بے دھوئے جوتا پاک نہ ہوگا۔ ذی جرم و بے جرم کی تعریف۔
- تحقیق شریف للمصنف فی ان المرئی وغیرہ لہ معنیان وتوزیع ارادتہما علی المقامات۔
- (۲۵۲) نجاست کے بارے میں شک و ظن کا اعتبار نہیں اور اس کی مفید مثالیں۔
- (۲۵۶) جانور کہ مزارات پر لے جا کر ذبح کرتے ہیں ان کی کھال پاک ہے۔

- (۲۵۷) مرتد یا مشرک کے ذبیحہ کی کھال ناپاک سمجھی جائے، زیادہ احتیاط اسی میں ہے۔
- (۲۶۸) رحم کی رطوبت پاک ہے۔

[باب الغسل] - (۵۱۲) سر دھونا نقصان کرے گلے سے نہائے سر کا مسح کرے۔

[مسح خفین] - (۲۹۸) غسل میں موزوں کا مسح جائز نہیں، موزہ اتار کر پاؤں دھونا فرض ہے۔ - (۵۱۳) یہ جائز نہیں کہ ایک پاؤں دھوئے ایک موزہ پر مسح کرے۔

Fatawa Rizvia Volume 3

Page Header: Fatawa Rizvia Volume 3

[Column 1] - As long as the martyr's blood is on their body, it is pure. 268 - Soil becomes pure for prayer when it dries, but not for Tayammum until it is washed and purified. 291 - If a horse is bathed and splashes fall on the body or clothes, there is no harm as long as impurity is not certain. 291 - Horse sweat is pure. 291 - A horse was taken into water and its tail splashed; there's no harm. 291 - When the ground dries, a slight impurity remains which is excused in prayer. 316 - The meaning of something being pure or impure in relation to a person or object. 317 - A case where a cloth is pure for one person and impure for another. 317 - Mention of things ruled pure without washing, and that subsequent contact with water will not make them impure. 320 - In those ruled pure without washing, slight traces of impurity remain which are also pardoned regarding water. 320 - Is death a real (physical) impurity or a legal one? 402 - (Footnote) If a part of the deceased's body falls into a small amount of water before bathing, as a precaution, the water will be called non-pure. 407 - (Footnote) A disbeliever's corpse is inherently impure like a pig; it does not become pure even if washed a million times. 407

[Column 2] - What kind of trace remaining after washing impurity is excused? 471 - If dung or other impurities are completely burnt into ash, that ash is pure. As long as any part of it remains, it is impure. 476 - Istinja - Is the water used for Istinja pure or not? Does Istinja with a clod (dheela) provide purity or not? 477 - Matters of Prayer - Common people's carelessness in Wudu (ablution), Ghusl (bathing), and Sajda (prostration) which invalidates prayers. 252 - Carelessness of not only the common people but also the elites here in the recitation of the Holy Quran. 253 - What is the ruling if prayer is performed while carrying a martyr? 268 - What is the ruling if prayer is performed after doing Istinja only with a clod? 472 - A kid (goat's offspring) was born and was wet with uterine fluid; if held in the lap and prayer was performed, it is valid. 292 - Combining two prayers in one time period is forbidden and a major sin. 304 - If one knows that sleeping will cause missing a prayer, sleeping is not permissible, unless one relies on someone to wake them up. 307 - If one slept at a time when they usually wake up but accidentally did not, they are not a sinner. 307

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (भाग 3)

पेज हेडर: फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (भाग 3)

[स्तंभ 1] - शहीद का खून जब तक उसके बदन पर है, वह पाक (पवित्र) है। २६८ - जमीन सूख कर नमाज के लिए पाक हो जाती है, मगर तयम्मुम के लिए नहीं, जब तक कि उसे धोकर पाक न कर लें। २९१ - घोड़े को नहलाया, उसके छींटे बदन या कपड़ों पर पड़ें तो कोई हर्ज नहीं जब तक कि नजासत (अशुद्धि) का पक्का यकीन न हो। २९१ - घोड़े का पसीना पाक है। २९१ - घोड़ा पानी में उतारा, उसकी पूंछ की छींटें आईं, कोई हर्ज नहीं। २९१ - जमीन सूख कर हल्की नजासत रह जाती है जो नमाज में माफ है। ३१६ - किसी व्यक्ति या वस्तु के संबंध में किसी चीज के पाक या नापाक होने का अर्थ। ३१७ - इसकी सूरत कि कपड़ा एक के लिए पाक है, दूसरे के लिए नापाक। ३१७ - उन चीजों का बयान जिन्हें बिना धोए पाक होने का हुक्म दिया गया और यह कि इसके बाद उन्हें पानी पहुंचना भी नापाक नहीं करेगा। ३२० - जिनमें बिना धोए तहारत (पवित्रता) का हुक्म दिया गया, उनमें नजासत के हल्के अंश बाकी रहते हैं जो पानी के मामले में भी माफ हैं। ३२० - मौत नजासत-ए-हकीकिया (वास्तविक अशुद्धि) है या हुक्मिया (कानूनी)। ४०२ - (हाशिया/फुटनोट) गुस्ल से पहले अगर मैयत (शव) का कोई अंग थोड़े पानी (आब-ए-कलील) में पड़ जाए, तो एहतियातन पानी को गैर-ताहिर (अपवित्र) कहा जाएगा। ४०७ - (हाशिया/फुटनोट) काफिर का मुर्दा सुअर की तरह नजिस-उल-ऐन (स्वयं अशुद्ध) है, लाख बार नहलाने से भी पाक नहीं होता। ४०७

[स्तंभ 2] - नजासत धोने में कैसा असर बाकी रहना माफ है। ४७१ - गोबर आदि नजासत जलकर बिल्कुल राख हो जाएं तो वह राख पाक है, जब तक जरा भी जान (मूल अंश) बाकी है, नापाक है। ४७६ - इस्तंजा - इस्तंजा का पानी पाक है या नहीं? क्या ढेले से इस्तंजा तहारत (पवित्रता) प्रदान करता है या नहीं। ४७७ - मसाइल-ए-नमाज़ (नमाज़ के नियम) - वज़ू, गुस्ल और सजदे में आम लोगों की लापरवाही जिनसे नमाजें बातिल (अमान्य) हो जाती हैं। २५२ - कुरआन मजीद की क़िरात (पाठ) में आम तो क्या, यहाँ के खास लोगों की भी लापरवाहियाँ। २५३ - शहीद को उठाए हुए नमाज पढ़ी तो क्या हुक्म है। २६८ - सिर्फ ढेले से इस्तंजा करके नमाज पढ़ी तो क्या हुक्म है। ४७२ - बकरी का बच्चा उसी वक्त पैदा हुआ कि रहम की नमी से गीला था, गोद में उठाकर नमाज पढ़ी, हो गई। २९२ - दो नमाजों को एक वक्त में मिलाकर पढ़ना हराम और गुनाह-ए-कबीरा (बड़ा पाप) है। ३०४ - जब जाने कि सोने से नमाज नहीं मिलेगी तो सोना जायज नहीं, मगर जबकि किसी जगा देने वाले पर भरोसा

हो। ३०७ - ऐसे वक्त सोया कि आमतौर पर आंख खुल जाती है मगर इत्तेफाक से न खुली तो गुनहगार नहीं। ३०७

पृष्ठ ७५६ का २२

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

ہیڈر: فتاویٰ رضویہ جلد سوم

[کالم 1] - شہید کا خون جب تک اس کے بدن پر ہے پاک ہے۔ ۲۶۸ - زمین خشک ہو کر نماز کے لیے پاک ہو جاتی ہے نہ تیمم کے لیے جب تک دھو کر پاک نہ کر لیں۔ ۲۹۱ - گھوڑے کو نہلایا اس کی چھینٹیں بدن یا کپڑے پر پڑیں کچھ حرج نہیں جب تک نجاست تحقیق نہ ہو۔ ۲۹۱ - گھوڑے کا پسینہ پاک ہے۔ ۲۹۱ - گھوڑا پانی میں اتارا اس کی دم کی چھینٹیں آئیں حرج نہیں۔ ۲۹۱ - زمین خشک ہو کر خفیف نجاست رہ جاتی ہے جو نماز میں عفو ہے۔ ۳۱۶ - کسی شخص یا شے کے حق میں کسی چیز کے پاک یا ناپاک ہونے کے معنی۔ ۳۱۷ - اس کی صورت کہ کپڑا ایک کے لیے پاک ہے دوسرے کے لیے ناپاک۔ ۳۱۷ - ان چیزوں کا بیان جن کو بے دھوئے پاک ہونے کا حکم دیا گیا اور یہ کہ اس کے بعد انہیں پانی پہنچنا بھی ناپاک نہ کرے گا۔ ۳۲۰ - جن میں بے دھوئے حکمِ طہارت دیا گیا ان میں خفیف اجزائے نجاست باقی رہتے ہیں کہ پانی کے حق میں بھی معاف ہیں۔ ۳۲۰ - موت نجاستِ حقیقیہ ہے یا حکمیہ۔ ۴۰۲ - (حاشیہ) غسل سے پہلے اگر میت کا عضو آبِ قلیل میں پڑ جائے تو احتیاطاً پانی غیر طاہر کہا جائے گا۔ ۴۰۷ - (حاشیہ) کافر کا مردہ مثل خنزیر نجس العین ہے لاکھ بار نہلانے سے بھی پاک نہیں ہوتا۔ ۴۰۷

[کالم 2] - نجاست دھونے میں کیسا اثر باقی رہنا معاف ہے۔ ۴۷۱ - گوبر وغیرہ نجاست جل کر بالکل راکھ ہو جائیں تو وہ راکھ پاک ہے جب تک ذرا بھی جان باقی ہے ناپاک ہے۔ ۴۷۶ - استنجا - استنجا کا پانی پاک ہے یا نہیں ڈھیلے سے استنجا طہارت کر دیتا ہے یا نہیں۔ ۴۷۷ - مسائلِ نماز - وضو و غسل و سجدہ میں عوام کی بے احتیاطیاں جن سے نمازیں باطل ہوتی ہیں۔ ۲۵۲ - قراتِ قرآن مجید میں عوام درکنار یہاں کے خواص کی بے احتیاطیاں۔ ۲۵۳ - شہید کو اٹھائے ہوئے نماز

پڑھی تو کیا حکم ہے۔ ۲۶۸ - صرف ڈھیلے سے استنجا کر کے نماز پڑھی تو کیا حکم ہے۔ ۴۷۲ - بکری کا بچہ اسی وقت کا پیدا ہوا کہ رطوبتِ رحم سے گیلا تھا گود میں اٹھا کر نماز پڑھی ہو گئی۔ ۲۹۲ - دو نمازیں ایک وقت میں ملا کر پڑھنا حرام و گناہِ کبیرہ ہے۔ ۳۰۴ - جب جانے کہ سویا تو نماز نہ ملے گی تو سونا جائز نہیں مگر جبکہ کسی جگا دینے والے پر اعتماد ہو۔ ۳۰۷ - ایسے وقت سویا کہ عادۃً آنکھ کھل جاتی ہے مگر اتفاقاً نہ کھلی تو گنہگار نہیں۔ ۳۰۷

Volume Three Fatawa Razawiyya

- If someone performs a funeral prayer while lifting a deceased person before the ritual bath (ghusl), they should repeat the prayer. (Footnote) 407 | If the Sunnah prayers of Zuhr or Friday (Jumu'ah) are missed due to joining the congregation, it is necessary to perform them within the prayer time; they cannot be offered after the time has expired. 427
- Friday and congregational prayers are waived for someone hiding out of fear of the police. 413 | Tahajjud prayer is recommended (Mustahabb). 429
- If one cannot dismount from a ride, one should pray on it. 422 | If the morning Sunnah prayers are missed, it is recommended to make them up after sunrise until the time of Dhuha al-Kubra. 429
- If a woman has no Mahram or husband to help her dismount or mount, she should pray on the ride. 423 | Lunar eclipse prayer is recommended (Mustahabb), and solar eclipse prayer is a confirmed Sunnah (Sunnat-e-Mu'akkadah). 432
- If a horse is restless during travel and won't let one dismount to pray, one should pray on it. 423 | It is better to perform the solar eclipse prayer in an Eidgah or a central congregational mosque (Masjid Jame). 435
- If dismounting or mounting exacerbates an illness, one should pray on the ride. 424 | Performing optional (Nafl) prayers during terrifying events like strong winds, earthquakes, thunder, etc., is recommended. 437
- If standing causes a wound to bleed or a drop to leak, it is mandatory to pray while sitting. 425 | It is permissible to perform optional prayers by gesture on a ride outside the city, even if one is not a traveler. 438
- Praying behind an openly sinful person (fasiq mu'lin) is prohibitively disliked (Makruh Tahrimi); it is a sin to pray behind them, and repeating the prayer is obligatory. 425 | What should a traveler do if all the ground in their location is impure and wet? 443
- Eid prayers cannot be performed behind anyone except the Imam of the Friday prayer. 426 | If several men are naked and there is only one cloth suitable for covering the private parts ('awrah) for them to take turns praying, anyone who realizes their turn will come after the prayer time has passed should pray as they are and then repeat it. 453

- In a solar eclipse, only the Imam of the Friday prayer can lead the congregation. 426 | If someone cannot pray standing in a boat, train, or cramped space, they should pray sitting and then repeat it. 453
- Congregation is not necessary for the solar eclipse prayer. 426 | If the cloth suitable for covering the 'awrah is impure and there is no other cloth, and cleaning it would waste the remaining prayer time, one should pray as is and then repeat it. 453
- The eclipse prayer cannot be started after the eclipse has ended. 426 | A patient who is currently unable to stand but knows they will be able to after the time has passed should pray sitting, and no repetition is required. 453

जिल्द सोम (भाग तीन) फ़तावा रज़विया

- यदि कोई मुर्दे को ग़ुस्ल से पहले उठाकर जनाज़े की नमाज़ पढ़े, तो उसे नमाज़ दोहरानी चाहिए। (हाशिया) 407 | यदि जमात में शामिल होने के कारण ज़ुहर या जुमे की सुन्नतें छूट जाएँ तो उन्हें नमाज़ के बाद समय के भीतर पढ़ना अनिवार्य है; समय समाप्त होने के बाद वे नहीं पढ़ी जा सकेंगी। 427
- जो व्यक्ति पुलिस के डर से छिपा हो, उसके लिए जुमा और जमात की नमाज़ अनिवार्य नहीं है। 413 | तहज्जुद की नमाज़ मुस्तहब (पसंदीदा) है। 429
- यदि कोई सवारी से उतर नहीं सकता, तो वह उसी पर नमाज़ पढ़ ले। 422 | यदि सुबह की सुन्नतें कज़ा हो जाएँ तो सूर्योदय के बाद से लेकर ज़ुहा-ए-कुबरा के समय तक उनकी कज़ा करना मुस्तहब है। 429
- यदि किसी महिला के पास सवारी से उतारने-चढ़ाने के लिए कोई महरम या पति न हो, तो वह सवारी पर ही नमाज़ पढ़ ले। 423 | चंद्र ग्रहण की नमाज़ मुस्तहब है और सूर्य ग्रहण की नमाज़ सुन्नत-ए-मुअक्कदा है। 432
- यात्रा में यदि घोड़ा इतना बेचैन है कि उतरकर नमाज़ नहीं पढ़ने देगा, तो उसी पर नमाज़ पढ़ ले। 423 | सूर्य ग्रहण की नमाज़ ईदगाह या जामा मस्जिद में पढ़ना बेहतर है। 435
- यदि उतरने-चढ़ने से बीमारी बढ़ने का डर हो, तो सवारी पर ही नमाज़ पढ़े। 424 | तेज़ आँधी, भूकंप, बिजली की गड़गड़ाहट जैसी डरावनी चीज़ों के समय नफ़्ल नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है। 437
- यदि खड़े होने से घाव बहने लगे या कोई बूंद टपके तो बैठकर नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है। 425 | शहर के बाहर सवारी पर नफ़्ल नमाज़ इशारे से पढ़ना जायज़ है, भले ही वह मुसाफ़िर न हो। 438
- खुलेआम गुनाह करने वाले (फ़ासिक़-ए-मुअ्लिन) के पीछे नमाज़ पढ़ना मकरूह-ए-तहरीमी है; ऐसी नमाज़ पढ़ना गुनाह है और उसे दोहराना वाजिब है। 425 | यदि कोई मुसाफ़िर ऐसी जगह हो जहाँ पूरी ज़मीन नापाक और गीली हो, तो वह क्या करे? 443
- ईद की नमाज़ जुमे के इमाम के अलावा किसी और के पीछे नहीं हो सकती। 426 | यदि कुछ लोग नग्न हों और स़त्र ढकने के लिए केवल एक कपड़ा हो जिसे वे बारी-बारी से पहनकर नमाज़

पढ़ें, तो उनमें से जिसे यह लगे कि मेरी बारी वक़्त के बाद आएगी, वह वैसे ही नमाज़ पढ़ ले और फिर दोहराए। 453

- सूर्य ग्रहण में भी केवल जुमे का इमाम ही इमामत कर सकता है। 426 | यदि कोई नाव, रेलगाड़ी या तंग जगह में खड़ा होकर नमाज़ नहीं पढ़ सकता, तो बैठकर पढ़े और फिर उसे दोहराए। 453
- सूर्य ग्रहण की नमाज़ में जमात अनिवार्य नहीं है। 426 | यदि स़त्र ढकने लायक कपड़ा नापाक हो और दूसरा कपड़ा उपलब्ध न हो, और उसे साफ करने में वक़्त निकल जाएगा, तो वैसे ही पढ़ ले और फिर दोहराए। 453
- ग्रहण समाप्त होने के बाद ग्रहण की नमाज़ शुरू नहीं की जा सकती। 426 | एक मरीज़ जो इस समय खड़े होने में सक्षम नहीं है लेकिन जानता है कि वक़्त के बाद सक्षम हो जाएगा, वह बैठकर पढ़ ले और उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। 453

पृष्ठ 23/756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

- پیش از غسل کسی مُردے کو اٹھا کر نماز پڑھی اعادہ کرے۔ (حاشیہ) ۴۰۷ | ظہر یا جمعہ کی سنتیں شرکتِ جماعت کے سبب نہ ملیں تو بعدِ نماز وقت کے اندر پڑھنا ضروری ہے بعدِ وقت نہ ہو سکیں گی۔ ۴۲۷
- جو پولیس کے خوف سے چھپا بیٹھا ہو اس پر سے جمعہ و جماعت ساقط ہیں۔ ۴۱۳ | نمازِ تہجد مستحب ہے۔ ۴۲۹
- سواری سے اتر نہیں سکتا تو اسی پر نماز پڑھے۔ ۴۲۲ | صبح کی سنتیں قضا ہو جائیں تو بلندی آفتاب کے بعد ضحوہِ کبریٰ تک ان کی قضا مستحب ہے۔ ۴۲۹
- عورت کے لیے سواری سے اتارنے چڑھانے کو نہ کوئی محرم ساتھ نہ شوہر تو سواری ہی پر نماز پڑھے۔ ۴۲۳ | چاند گہن کی نماز مستحب ہے اور سورج گہن کی سنتِ مؤکدہ۔ ۴۳۲
- سفر میں گھوڑا بد رکاب ہے کہ اتر کر پڑھنے نہ دے گا اُسی پر نماز پڑھے۔ ۴۲۳ | سورج گہن کی نماز عیدگاہ یا مسجد جامع میں پڑھنا بہتر۔ ۴۳۵
- اترنے چڑھنے میں مرض بڑھے گا سواری پر نماز پڑھے۔ ۴۲۴ | سخت آندھی، زلزلہ، کڑک وغیرہ ہولناک باتوں کے وقت نفل پڑھنا مستحب ہے۔ ۴۳۷
- کھڑا ہو تو زخم بہے یا قطرہ آئے بیٹھ کر نماز پڑھنی لازم۔ ۴۲۵ | شہر سے باہر سواری پر نمازِ نفل اشارہ سے پڑھنا جائز ہے اگرچہ مسافر نہ ہو۔ ۴۳۸
- فاسق معلن کے پیچھے نماز مکروہِ تحریمی ہے کہ پڑھنی گناہ اور پھیرنی واجب۔ ۴۲۵ | مسافر ایسی جگہ ہو کہ ساری زمین ناپاک اور بھیگی ہوئی ہو تو کیا کرے۔ ۴۴۳

- نماز عیدین امامِ جمعہ کے سوا کسی کے پیچھے نہیں ہو سکتی۔ ۴۲۶ | چند آدمی برہنہ ہیں ستر عورت کے لائق صرف ایک کپڑا ہے کہ باری باری سے اسے باندھ کر نماز پڑھتے ہیں تو ان میں جو یہ جانے کہ مجھ پر باری وقت کے بعد پہنچے گی وہ یوں ہی پڑھ لے پھر پھیرے۔ ۴۵۳
- سورج گہن میں بھی صرف امامِ جمعہ امامت کر سکتا ہے۔ ۴۲۶ | کشتی یا ریل یا تنگ مکان میں کھڑے ہو کر نہیں پڑھ سکتا تو بیٹھ کر پڑھے پھر اعادہ کرے۔ ۴۵۳
- سورج گہن میں جماعت ضروری نہیں۔ ۴۲۶ | ستر کے قابل کپڑا نا پاک ہے اور دوسرا کپڑا نہیں اور پاک کرنے میں وقت جاتا رہے گا یوں ہی پڑھ لے پھر پھیرے۔ ۴۵۳
- گہن چھوٹنے کے بعد گہن کی نماز شروع نہیں کر سکتا۔ ۴۲۶ | مریض اس وقت قیام پر قادر نہیں اور جانتا ہے کہ بعد وقت قادر ہو جائے گا بیٹھ کر پڑھ لے اور اعادہ نہیں۔ ۴۵۳

Fatawa-e-Razvia (Volume 3)

Index No.	Subject / Ruling	Page No.
453	If a patient is harmed by water at the current time but the harm will cease after the time, they should pray with Tayammum and no repetition is required.	532
454	If a person with clothes promised a garment to a naked person, wait until the end of the time, then pray; no repetition is required.	552
456	If eye surgery was done and the doctor forbade movement, pray by gestures and no repetition is required.	552
459	In Fajr, Jummah, and Eid prayers, if there's no time for Tasbih or Sunnahs, only perform Wajibs. If there's no time for Wajibs, limit to Faraid then repeat.	659
460	A person is commanded to pray in whatever capacity they currently have; however, if they know their condition will improve within the time, waiting is better.	
	Rulings of the Mosque	
470	Such darkness that the path is not visible waives the obligation of Friday and congregational prayer.	479
471	If standing worsens illness, delays recovery, or causes unbearable severe pain, then sitting is allowed, otherwise not.	479
472	No matter how dark it is, it is not an excuse for skipping congregation if one is able to have light.	480
472	In what situation can darkness be an excuse for skipping congregation?	480
472	Virtues of going to the mosque in darkness.	485
473	Hadiths with strong emphasis on congregation.	486
475	Intense sun etc., things due to which attendance for Friday and congregational prayers is excused.	486
478	Account of those excused people on whom Friday and congregational prayers are not obligatory.	487

Index No.	Subject / Ruling	Page No.
	One who performs purification with water can pray behind one who did Tayammum, but the opposite is superior.	532
	What should one do if the direction of Qibla is not known in a forest?	552
	In that state, if one prayed in a direction contrary to where their heart was settled, the prayer is void.	552
	How to pray where there is neither water nor soil?	659
	Sleeping in the mosque is forbidden for a non-Mu'takif.	479
	If someone was sleeping in the mosque and had a wet dream, what should they do now?	479
	Walking or passing through the mosque in a state of impurity is also forbidden.	480
	If a person in a state of Janaba accidentally steps into the mosque, they should immediately pull back without Tayammum.	480
	If someone's house path goes through the mosque and they are unable to change it, they still cannot pass through the mosque in a state of Janaba. If they don't find water, they should do Tayammum.	485
	Wudu and Ghusl are forbidden in the mosque except in three situations.	486
	Wudu broke while listening to the sermon; jumping over people's necks to leave is not allowed. What to do now?	486
	The author's research on the ruling of performing Wudu in a vessel inside the mosque.	487

फ़तावा-ए-रिज़विया (जिल्द तीसरी)

इंडेक्स नं.	विषय / हुक्म	पृष्ठ संख्या
453	मरीज़ को इस वक्त पानी से नुक़सान है और वक्त के बाद नुक़सान नहीं रहेगा, वह तयम्मुम से नमाज़ पढ़े और दोबारा पढ़ने की ज़रूरत नहीं।	532
454	कपड़े वाले ने नंगे शख्स को कपड़ा देने का वादा किया, आख़िरी वक्त तक इंतज़ार करके नमाज़ पढ़ ले और दोबारा पढ़ने की ज़रूरत नहीं।	552
456	आँख का ऑपरेशन हुआ और डॉक्टर ने हिलने-डुलने से मना किया, तो इशारे से नमाज़ पढ़े और दोबारा पढ़ने की ज़रूरत नहीं।	552
459	नमाज़-ए-फ़ज्र, जुमा और ईदैन में तस्बीह वगैरह सुन्नतों का वक्त न हो तो सिर्फ़ वाजिबात अदा करे, वाजिबात का वक्त न हो तो सिर्फ़ फ़राइज़ पर इक्तिफ़ा (बस) करे फिर फेरे।	659
460	आदमी इस वक्त जिस तरह नमाज़ पर क़ादिर (सक्षम) है उसी क़दर का हुक्म है, हाँ अगर जाने कि वक्त के अंदर इससे बेहतर हालत हो जाएगी तो इंतज़ार बेहतर है।	
	मस्जिद के अहकाम	
470	ऐसा अंधेरा कि रास्ता नज़र न आए, जुमा और जमाअत की फर्ज़ियत (अनिवार्यता) को साक़ित (ख़त्म) कर देती है।	479
471	खड़े होने से मर्ज़ बढ़े या देर से ठीक हो या शदीद (सख्त) दर्द हो जो बर्दाश्त न हो सके तो बैठकर नमाज़ पढ़ने की इजाज़त है वरना नहीं।	479
472	कैसा ही अंधेरा हो, जमाअत छोड़ने के लिए उज़्र (बहाना) नहीं है जबकि रौशनी का बंदोबस्त कर सके।	480
472	किस हाल में अंधेरा जमाअत छोड़ने के लिए उज़्र हो सकता है।	480
472	अंधेरे में मस्जिद जाने की फ़ज़ीलतें।	485
473	जमाअत की सख़्त ताकीद वाली हदीसें।	486

इंडेक्स नं.	विषय / हुक्म	पृष्ठ संख्या
475	सख़्त धूप वगैरह वे चीज़ें जिनके सबब जुमा और जमाअत की हाज़िरी माफ़ है।	486
478	उन माज़ूरों (मजबूरों) का बयान जिन पर जुमा और जमाअत वाजिब नहीं।	487

इंडेक्स नं.	विषय / हुक्म	पृष्ठ संख्या

	तयम्मुम करने वाले के पीछे पानी से तहारत (पवित्रता) वाला नमाज़ पढ़ सकता है, मगर इसका उल्टा बेहतर है।	532
	जंगल में अगर क़िबला की दिशा मालूम न हो तो क्या करे।	552
	उस हालत में जिस तरफ दिल जमता था उसके ख़िलाफ़ नमाज़ पढ़ी तो बातिल (अमान्य) हुई।	552
	जहाँ न पानी हो न मिट्टी वहाँ नमाज़ किस तरह पढ़े।	659
	ग़ैर-मोतकिफ़ के लिए मस्जिद में सोना मना है।	479
	मस्जिद में सो रहा था और एहतलाम (स्वप्नदोष) हो गया, अब क्या करे।	479
	नापाकी की हालत में मस्जिद में से गुज़रना या चलना भी हराम है।	480
	जुनूबी (नापाक शख़्स) ने भूल से मस्जिद में एक क़दम रखा, तो फ़ौरन बिना तयम्मुम किए वह क़दम बाहर निकाल ले।	480
	जिसके घर का रास्ता मस्जिद में से होकर जाता है और वह रास्ता बदलने पर क़ादिर नहीं है, वह भी जनाबत की हालत में मस्जिद से नहीं गुज़र सकता; पानी न मिले तो तयम्मुम करे।	485
	मस्जिद में वज़ू और ग़ुस्ल हराम है सिवाय तीन सूरतों के।	486
	खुत्बा सुन रहा था और वज़ू टूट गया, लोगों की गर्दनों को फलाँग कर निकलने की इजाज़त नहीं है, अब क्या करे।	486
	मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़ (अनुसंधान) कि मस्जिद में किसी बर्तन में वज़ू करने का क्या हुक्म है।	487

اشاریہ نمبر	عنوان / مسئلہ	صفحہ نمبر
۴۵۳	مریض کو اس وقت پانی سے ضرر ہے اور بعد وقت ضرر نہ رہے گا تیمم سے پڑھے اور اعادہ نہیں۔	۵۳۲
۴۵۴	کپڑے والے نے برہنہ سے کپڑا دینے کا وعدہ کیا آخر وقت تک انتظار کر کے پڑھ لے اور اعادہ نہیں۔	۵۵۲
۴۵۶	آنکھ بنوائی طبیب نے جنبش سے منع کیا اشارہ سے نماز پڑھے اور اعادہ نہیں۔	۵۵۲
۴۵۹	نماز صبح و جمعہ و عیدین میں تسبیح وغیرہ سنتوں کا وقت نہ ہو تو فقط واجبات ادا کرے، واجبات کا وقت نہ ہو تو صرف فرائض پر اقتصار کرے پھر پھیرے۔	۶۵۹
۴۶۰	آدمی اس وقت جس طرح نماز پر قادر ہے اسی قدر کا حکم ہے، ہاں اگر جانے کہ وقت کے اندر اس سے بہتر حالت ہو جائے گی تو انتظار بہتر۔	
	احکام مسجد	
۴۷۰	ایسی اندھیری کہ راہ نظر نہ آئے جمعہ و جماعت کا وجوب ساقط کرتی ہے۔	۴۷۹
۴۷۱	کھڑے ہونے سے مرض بڑھے یا دیر میں اچھا ہو یا درد شدید ناقابل تحمل ہو تو بیٹھ کر اجازت ہے ورنہ نہیں۔	۴۷۹
۴۷۲	کیسی ہی اندھیری ہو ترک جماعت کے لیے عذر نہیں جبکہ روشنی پر قادر ہو۔	۴۸۰

اشاریہ نمبر	عنوان / مسئلہ	صفحہ نمبر
۴۷۲	کس حال میں اندھیری ترک جماعت کے لیے عذر ہو سکتی ہے۔	۴۸۰
۴۷۲	اندھیری میں مسجد کو جانے کی فضیلتیں۔	۴۸۵
۴۷۳	سخت تاکید جماعت کی حدیثیں۔	۴۸۶
۴۷۵	سخت دھوپ وغیرہ وہ چیزیں جن کے سبب جمعہ و جماعت کی حاضری معاف ہے۔	۴۸۶
۴۷۸	اُن معذوروں کا بیان جن پر جمعہ و جماعت واجب نہیں۔	۴۸۷

اشاریہ نمبر	عنوان / مسئلہ	صفحہ نمبر
	تیمم والے کے پیچھے پانی سے طہارت والا نماز پڑھ سکتا ہے مگر افضل عکس ہے۔	۵۳۲
	جنگل میں اگر سمت قبلہ معلوم نہ ہو تو کیا کرے۔	۵۵۲
	اُس حالت میں جدھر دل جمتا تھا اس کے خلاف نماز پڑھی باطل ہوئی۔	۵۵۲
	جہاں نہ پانی ہو نہ مٹی نماز کس طرح پڑھے۔	۶۵۹
	غیر معتکف کو مسجد میں سونا منع ہے۔	۴۷۹
	مسجد میں سوتا تھا احتلام ہو گیا اب کیا کرے۔	۴۷۹
	ناپاکی کی حالت میں مسجد میں گزرنا چلنا بھی حرام ہے۔	۴۸۰
		۴۸۰

اشاریہ نمبر	عنوان / مسئلہ	صفحہ نمبر
	جنب نے بھولے سے مسجد میں ایک قدم رکھا فوراً بلا تیمم وہ قدم باہر نکال لے۔	
۴۸۵	جس کے مکان کا راستہ مسجد میں ہو کر ہے اور اسے بدلنے پر قادر نہیں وہ بھی بحالِ جنابت مسجد میں نہیں گزر سکتا پانی نہ پائے تو تیمم کرے۔	
۴۸۶	مسجد میں وضو و غسل حرام ہے مگر تین صورتوں میں۔	
۴۸۶	خطبہ سنتا تھا وضو جاتا رہا لوگوں کی گردنیں پھلانگ کر نکلنے کی اجازت نہیں اب کیا کرے۔	
۴۸۷	مصنف کی تحقیق کہ مسجد میں کسی برتن میں وضو کرنے کا کیا حکم ہے۔	

Fatawa Rizvia, Volume 3

- It is mandatory to protect the mosque from every loathsome thing. Some people, after performing ablution, wipe the water from their faces and hands and shake it off in the mosque; this is strictly forbidden. [739] | As long as a child has not started speaking, both men and women can bathe them. [537]
- Dust and dirt brought in from outside by the wind are not parts of the mosque; there is an order to clean them. [739] | Those ten situations in which it is not permissible for a wife to touch any part of her deceased husband's body. [540]
- It is not allowed to wipe muddy feet even on the ground, walls, pillars of the mosque, or the dust spread there. [739] | A concubine who is 'Umm-ul-Walad' cannot touch the hand of her master after his death. [542]
- If dust has been swept and collected in a corner, there is no harm in wiping mud-stained feet with it. [739] | If the deceased left no wealth, their shroud and burial are mandatory for the person who was responsible for their maintenance (nafaqah) during their lifetime. [542]
- Under what circumstances can one read a book or study by the mosque's lamp? [740] | A woman's shroud is mandatory for her husband, even if the woman was wealthy. [542]

Funerals: - Who is responsible for the shroud and burial of an heirless deceased person? [542] - If water is unavailable or no one is present who can legally (Shariah-wise) bathe the deceased, perform Tayammum (dry ablution) for them. [402] | Quran recitation should not be done near the deceased before bathing until their entire body is covered. [555] - Intention (niyyah) is a condition for performing Tayammum on the deceased. [410] | Visiting graves and visiting the sick are acts of worship to Allah. [563] - Bathing the deceased once is obligatory (Fard), and three times is Sunnah. (Footnote) [408] | The burial of a Muslim is also an act of worship to Allah; one should be in a state of ablution (Wudu), and if water is not available, one should perform Tayammum. [563] - Funeral prayer concludes with the Takbirs; after the fourth Takbir, a new person cannot join, even if the Salaam hasn't been said yet. [425] | If Tayammum was performed for a funeral prayer due to lack of time, another funeral prayer cannot be performed with the same Tayammum if there is time to perform Wudu; otherwise, it can be performed. [570] - If the guardian (Wali) has performed the funeral prayer, it cannot be repeated. [426]

फ़तावा रज़विया, जिल्द सोम

- मस्जिद को हर घिनौनी चीज़ से बचाना वाजिब है। कुछ लोग वज़ू के बाद चेहरे और हाथों से पानी पोंछकर मस्जिद में झाड़ते हैं, यह सरासर हराम है। [७३९] | जब तक बच्चे ने बोलना शुरू न किया हो, उसे मर्द और औरत दोनों नहला सकते हैं। [५३७]
- ग़ुबार और धूल जो बाहर से हवा लाई है, मस्जिद का हिस्सा नहीं है, इसे साफ़ करने का हुक्म है। [७३९] | वे दस सूरतें जिनमें बीवी को जायज़ नहीं कि अपने मरहूम शौहर के बदन के किसी हिस्से को हाथ लगाए। [५४०]
- मस्जिद की ज़मीन, दीवार, खम्भे या वहाँ फैली धूल से कीचड़ भरे पैर पोंछने की भी इजाज़त नहीं। [७३९] | वह दासी जो 'उम्मुल-वलद' हो, मालिक की मौत के बाद उसका हाथ नहीं छू सकती। [५४२]
- धूल झाड़कर किसी कोने में जमा कर दी गई है, उससे कीचड़ सने पाँव पोंछने में कोई हर्ज नहीं। [७३९] | अगर मरने वाले ने कोई माल नहीं छोड़ा, तो उसका कफ़न-दफ़न उस पर वाजिब है जिसके ज़िम्मे उसकी ज़िंदगी में उसका नफ़क़ा (खर्च) था। [५४२]
- मस्जिद के चिराग़ से किस हालत में किताब पढ़ना या दर्स देना जायज़ है? [७४०] | औरत का कफ़न उसके शौहर पर वाजिब है, चाहे औरत मालदार ही क्यों न हो। [५४२]

जनाज़े (अंत्येष्टि): - लावारिस मय्यत (मृतक) का कफ़न-दफ़न किस पर वाजिब है? [५४२] - अगर पानी न हो या कोई ऐसा शख़्स न हो जिसका मय्यत को नहलाना शरीयत के मुताबिक़ जायज़ हो, तो उसे तयम्मुम कराएं। [४०२] | ग़ुस्ल (स्नान) से पहले मय्यत के पास क़ुरआन की तिलावत तब तक न की जाए जब तक कि उसका सारा बदन ढक न दिया जाए। [५५५] - मय्यत को तयम्मुम कराने में नियत शर्त है। [४१०] | क़ब्रों की ज़ियारत और बीमार की अयादत अल्लाह की इबादत है। [५६३] - मय्यत का ग़ुस्ल एक बार फ़र्ज़ है और तीन बार सुन्नत। (हाशिया) [४०८] | मुसलमान का दफ़न भी अल्लाह की इबादत है, बा-वज़ू होना चाहिए, पानी न हो तो तयम्मुम करे। [५६३] - नमाज़-ए-जनाज़ा तकबीरों पर ख़त्म हो जाती है, चौथी तकबीर के बाद नया आदमी शरीक नहीं हो सकता, चाहे अभी सलाम न फेरा गया हो। [४२५] | वक़्त की तंगी की वजह से जनाज़े की नमाज़ के लिए तयम्मुम किया तो उससे दूसरा जनाज़ा नहीं पढ़ सकता अगर वज़ू करने की मोहलत मिले, वरना पढ़ सकता है। [५७०] - नमाज़-ए-जनाज़ा अगर वली (अभिभावक) ने पढ़ा ली हो तो दोबारा नहीं हो सकती। [४२६]

فتاوی رضویہ، جلد سوم

- مسجد کو ہر گھن کی چیز سے بچانا واجب ہے بعض لوگ کہ وضو کے بعد منہ اور ہاتھوں سے پانی پونچھ کر مسجد میں جھاڑتے ہیں محض حرام ہے۔ [۷۳۹] | بچے نے جب تک بات نہ کی ہو اسے مرد و عورت دونوں نہلا سکتے ہیں۔ [۵۳۷]
- گرد و غبار کہ ہوا باہر سے لائی اجزائے مسجد سے نہیں اس کے صاف کرنے کا حکم ہے۔ [۷۳۹] | وہ دس صورتیں جن میں زوجہ کو جائز نہیں کہ اپنے مردہ شوہر کے کسی حصہ بدن کو ہاتھ لگائے۔ [۵۴۰]
- مسجد کی زمین یا دیوار یا ستون یا اس گرد سے جو پھیلی ہوئی ہے پاک کیچڑ پونچھنے کی بھی اجازت نہیں۔ [۷۳۹] | کنیز کہ ام ولد ہو موت مولی کے بعد اس کا ہاتھ نہیں چھو سکتی۔ [۵۴۲]
- گرد جھاڑ کر کسی گوشہ میں جمع کر دی ہے اس سے کیچڑ سنے پاؤں پونچھنے میں حرج نہیں۔ [۷۳۹] | میت نے کچھ مال نہ چھوڑا تو اس کا کفن دفن اس پر واجب ہے جس کے ذمہ زندگی میں اس کا نفقہ تھا۔ [۵۴۲]
- مسجد کے چراغ سے کس حال میں کتاب بینی یا درس وغیرہ کر سکتا ہے۔ [۷۴۰] | عورت کا کفن اس کے شوہر پر واجب ہے۔ اگر چہ عورت غنی ہو۔ [۵۴۲]

جنائز: - لاوارث میت کا کفن دفن کس پر واجب ہے۔ [۵۴۲] - پانی نہ ہو یا کوئی ایسا نہ ہو جسے میت کا نہلانا شرعاً جائز ہو تو اسے تیمم کرائیں۔ [۴۰۲] | میت کے پاس قبل غسل تلاوت قرآن نہ کی جائے جب تک اس کا سارا بدن ڈھانک نہ لیں۔ [۵۵۵] - میت کو تیمم کرانے میں نیت شرط ہے۔ [۴۱۰] | زیارت قبور و عیادت مریض عبادت الہی ہیں۔ [۵۶۳] - میت کا غسل ایک بار فرض ہے

اور تین بار سنت۔ حاشیہ [۴۰۸] | دفن مسلم بھی عبادت الہی ہے باوضو ہونا چاہئے پانی نہ ہو تو تیمم کرے۔ [۵۶۳] - نماز جنازہ تکبیروں پر ختم ہو جاتی ہے چوتھی تکبیر کے بعد نیا آدمی نہیں مل سکتا اگر چہ ابھی سلام نہ ہوا ہو۔ [۴۲۵] | تنگی مہلت کے سبب نماز جنازہ کے لیے تیمم کیا تو اس سے دوسرا جنازہ بھی نہیں پڑھ سکتا جبکہ اس کے لیے وضو کی مہلت پائے ورنہ پڑھ سکتا ہے۔ [۵۷۰] - نماز جنازہ ولی پڑھ لے تو دوبارہ نہیں ہو سکتی۔ [۴۲۶]

Fatawa Rizwia Volume 3

Issues of Fasting 169 - If blood comes out of the teeth while fasting and is swallowed, if the taste is felt in the throat, the fast is broken; otherwise, not. 173 - In which situation will the moisture remaining in the mouth after rinsing (Kulli) not break the fast if swallowed? 173 - If traces of food or betel leaf (pan) remain in the mouth such that they cannot slide down the throat on their own, but if they go down with saliva, the fast will not be broken. 173 - How will swallowing something left in the mouth not break the fast? 173 - Difference between a small and large amount of something stuck in the mouth. 176 - Ruling on chewing or swallowing a single sesame seed while fasting. 490 - If one forgets and engages in sexual intercourse while fasting, then remembers he was engaged since night and in the meantime dawn breaks, what is the ruling?

Issues of Hajj 183 - What is the ruling on bathing in water mixed with saffron while in the state of Ihram? 184 - Rulings on eating food mixed with fragrance while in the state of Ihram. 184 - Ruling on using any fragrance on the body while in the state of Ihram. 184 - What is the ruling on drinking something mixed with fragrance while in Ihram? 462 - If someone does not gift enough money to a needy person but makes it permissible for them to use it so they can perform Hajj, Hajj will not become obligatory, and accepting it is not necessary. 496 - Measures to save Zamzam water from being used for ablution (Wudu) during the Hajj journey.

Issues of Marriage 169 - If two women mix their milk and give it to a child, will prohibition (Hurmat) be established or not? 170 - If a woman's milk reaches a child's stomach through the mouth or nose, it will establish the prohibition of fosterage (Hurmat-e-Raza'at). 174 - Mixing a woman's milk in food and feeding it to a child will not establish the prohibition of fosterage at all. 307 - If there is so little time for prayer that after intercourse one won't have time to bathe and catch the prayer, then intercourse is not permissible. 307 - In many situations, intercourse with the wife is forbidden. 502 - If a condition is placed in the marriage contract that, for example, the marriage is for a hundred years, the marriage will not be valid. However, if there is an intention in the heart to leave after a short while, it will be valid. 709 - After childhood, the paternal cousin is the guardian (Wali) of a woman. In this state, if he said to the woman, "I want to marry you," and she remained silent, and he declared in front of two witnesses by identifying the woman that "I have taken her into my marriage," the marriage is valid provided they are compatible (Kufu). And the

meaning of Kufu. 710 - Amr performed Zaid's marriage on his own. The marriage was valid but remained dependent on Zaid's permission, and the forms of permission.

फ़तावा रज़विया खंड 3

रोज़े के मसाइल 169 - रोज़े के दौरान दांतों से खून निकला और निगल लिया गया, यदि हलक़ में स्वाद महसूस हुआ तो रोज़ा टूट गया, अन्यथा नहीं। 173 - कुल्ली करने के बाद मुँह में रहने वाली नमी किस स्थिति में निगलने से रोज़ा नहीं टूटेगा? 173 - यदि मुँह में खाने या पान का ऐसा असर रह जाए कि वह स्वयं हलक़ में उतरने के योग्य न हो, लेकिन लार के साथ उतर जाए, तो रोज़ा नहीं टूटेगा। 173 - मुँह में बची हुई चीज़ को निगलने से रोज़ा किस प्रकार नहीं टूटेगा? 173 - मुँह में चिपकी हुई चीज़ की थोड़ी और ज़्यादा मात्रा में अंतर। 176 - रोज़े में तिल का एक दाना चबाने या निगलने का हुक्म। 490 - रोज़े में भूलकर संभोग में व्यस्त हुआ फिर याद आया कि रात से व्यस्त था और इसी दौरान सुबह हो गई तो क्या हुक्म है?

हज के मसाइल 183 - एहराम की स्थिति में ज़ाफ़रान मिले हुए पानी से नहाने का क्या हुक्म है? 184 - एहराम में खुशबू मिला हुआ खाना खाने के अहकाम। 184 - एहराम की हालत में शरीर पर किसी खुशबू के इस्तेमाल का हुक्म। 184 - एहराम में खुशबू मिली हुई चीज़ पीने का क्या हुक्म है? 462 - यदि किसी ज़रूरतमंद को कोई इतना धन दान न करे लेकिन उसे इस्तेमाल करने की अनुमति दे जिससे वह हज कर सके, तो हज वाजिब नहीं होगा और उसे स्वीकार करना ज़रूरी नहीं है। 496 - हज की यात्रा में आबे-ज़मज़म शरीफ़ को वज़ू में इस्तेमाल से बचाने के उपाय।

निकाह के मसाइल 169 - दो औरतों का दूध मिलाकर बच्चे को पिलाया तो हुरमत (निकाह की मनाही) साबित होगी या नहीं? 170 - मुँह या नाक के ज़रिए से औरत का दूध जो बच्चे के पेट में पहुँचेगा, हुरमते-रज़ाअत (दूध का रिश्ता) लाएगा। 174 - खाने में औरत का दूध मिलाकर बच्चे को खिलाने से हुरमते-रज़ाअत बिलकुल साबित नहीं होगी। 307 - नमाज़ का इतना कम समय है कि संभोग के बाद नहाकर नमाज़ नहीं मिल पाएगी तो संभोग जायज़ नहीं। 307 - बहुत सी स्थितियों में पत्नी से सहवास हराम होता है। 502 - निकाह के अनुबंध में यह शर्त लगाई कि उदाहरण के तौर पर सौ साल के लिए निकाह किया तो निकाह नहीं होगा, और यदि दिल में नियत है कि कुछ समय बाद छोड़ दूँगा तो हो जाएगा। 709 - बचपन के बाद चचेरा भाई औरत का वली (संरक्षक) है। इस स्थिति में यदि उसने औरत से कहा कि मैं तुमसे निकाह करना चाहता हूँ और वह चुप रही, और उसने दो गवाहों के सामने औरत को निर्दिष्ट करके कह दिया कि "मैं इसे अपने निकाह में लाया", तो निकाह हो गया बशर्ते कि कुफ़ू (बराबरी) हो, और कुफ़ू के मायने। 710 - अम्र ने अपनी ओर से ज़ैद का निकाह कर दिया। निकाह सही हो गया लेकिन अनुमति ज़ैद पर निर्भर रही, और अनुमति के रूप।

पृष्ठ 26/756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

مسائل روزہ ۱۶۹ - دانتوں سے خون نکلا روزہ میں نگل لیا اگر حلق میں مزہ معلوم ہوا روزہ جاتا رہا ورنہ نہیں۔ ۱۷۳ - کلی کے بعد تری کہ منہ میں رہ جاتی ہے کس صورت میں اس کے نگلنے سے روزہ نہ جائے گا۔ ۱۷۳ - منہ میں کھانے یا پان کا ایسا اثر رہ جائے کہ آپ حلق میں اترنے کے قابل نہ ہو اگر لعاب دہن کے ساتھ اتر جائے گا روزہ نہ جائے گا۔ ۱۷۳ - جو چیز منہ میں رہ گئی اس کے نگلنے سے روزہ کس طرح نہ جائے گا۔ ۱۷۳ - جو چیز منہ میں لگی رہ گئی اس کے قلیل و کثیر کا فرق۔ ۱۷۶ - روزہ میں تل کے ایک دانہ کے چبانے یا نگلنے کا حکم۔ ۴۹۰ - روزے میں بھول کر جماع میں مشغول ہوا پھر یاد آیا رات سے مشغول تھا اور اسی اثنا میں صبح چمکی تو کیا حکم ہے۔

مسائل حج ۱۸۳ - زعفران ملے ہوئے پانی سے احرام میں نہایا تو کیا حکم ہے۔ ۱۸۴ - خوشبو ملا ہوا کھانا احرام میں کھانے کے احکام۔ ۱۸۴ - بحالتِ احرام بدن میں کسی خوشبو کے استعمال کا حکم۔ ۱۸۴ - خوشبو ملی ہوئی چیز کا احرام میں پینا کیا حکم رکھتا ہے۔ ۴۶۲ - اگر محتاج کو کوئی اتنا مال ہبہ تو نہ کرے لیکن مباح کرے جس سے وہ حج کر سکے تو حج واجب نہ ہوگا اور اس کا قبول ضرور نہیں۔ ۴۹۶ - سفر حج میں آبِ زمزم شریف استعمال وضو سے بچانے کی تدبیریں۔

مسائل نکاح ۱۶۹ - دوا ملا کر عورت کا دودھ بچہ کو پلایا تو حرمت ثابت ہوگی یا نہیں۔ ۱۷۰ - منہ یا ناک کے ذریعہ سے عورت کا دودھ جو بچہ کے جوف میں پہنچے گا حرمت رضاعت لائے گا۔ ۱۷۴ - کھانے میں عورت کا دودھ ملا کر بچہ کو کھلانے سے حرمت رضاعت مطلقاً ثابت نہ ہوگی۔ ۳۰۷ - نماز کا اتنا وقت ہے کہ بعد جماع نہا کر نماز نہ ملے گی تو جماع جائز نہیں۔ ۳۰۷ - بہت صورتوں میں زوجہ سے صحبت حرام ہوتی ہے۔ ۵۰۲ - عقدِ نکاح میں یہ قید لگائی کہ مثلاً سو

برس کے لیے نکاح کیا تو نکاح نہ ہوگا اور دل میں نیت ہے کہ گھڑی بھر بعد چھوڑ دوں گا تو ہو جائے گا۔ ۷۰۹ - بچپنے کے بعد چچا زاد بھائی عورت کا ولی ہے اس حالت میں اگر اس نے عورت سے کہا میں تجھ سے نکاح کرنا چاہتا ہوں وہ چپ رہی اس نے دو گواہوں کے سامنے عورت کی تعیین کر کے کہہ دیا کہ میں اسے اپنے نکاح میں لایا نکاح ہو گیا جبکہ کفو ہو اور کفو کے معنی۔ ۷۱۰ - عمرو نے بطورِ خود زید کا نکاح کر دیا نکاح صحیح ہو گیا مگر اجازت زید پر موقوف رہا اور اجازت کی صورتیں۔

Fatawa Razwiya, Volume Three

Problems of Manumission (Itq) - A female slave who has children from her master, and the master acknowledges that they are his offspring, is called 'Umm-ul-Walad'. She becomes free immediately upon the death of the master. (54/2)

Problems of Oath (Qasam) - A person had four wives and ten or more slaves. He swore an oath that if he divorces one wife, one slave is free; if two, then two; if three, then three; and if four, then four. In this case, if he divorces all four, whether simultaneously or with intervals, then ten slaves become free. (13/7) - If one swore an oath to drink water but drank water mixed with saffron, what is the ruling? (18/4)

Problems of Limits/Punishments (Hudood) - A single drop of wine makes water impure and forbidden, but the prescribed punishment (Hadd) will not be applied to water mixed with wine as long as it does not cause intoxication. (17/4)

Problems of Siyar (Biography/State Conduct) - Disrespecting a Sunni scholar of sound belief is an act of disbelief (Kufr). (281)

Problems of Sale (Bay') - Sale by 'Ta'ati' (mutual delivery), i.e., through giving and taking, is also valid even if nothing is said verbally. For example, if the general price of bread is one paisa, and a person places four paise and takes four loaves in front of the seller, the sale is completed. (710) - Amr purchasing something with the intention for Zaid will not make Zaid the owner until Amr gives it to him. However, if the contract of sale was made in Zaid's name, it will depend on Zaid's authorization. If he permits it, Zaid becomes the owner; if he rejects it, it is rejected. (710)

Problems of Agency (Wikalat) - If someone was appointed as an agent to get water and he bought colored water (mixed with something), what is the ruling? (183)

Problems of Gift (Hiba) - Taking back a given thing (a gift) is a sin, even if the recipient returns it happily. (502)

Problems of Hunting, Slaughter, and Sacrifice - Animals slaughtered for the 'Niyaz' (offering) of the saints (Awliya) are lawful (Halal). (256) - Even if the owner had some other intention, if the slaughterer slaughtered it in the name of Allah by saying 'Takbir', the animal is Halal. (256)

फ़तावा रज़विया, जिल्द तीसरी

ग़ुलामी से मुक्ति के मसाइल (मसाइल-ए-इतक़) - जिस दासी (कनीज़) के अपने स्वामी से बच्चे हों और स्वामी स्वीकार करे कि वे उसकी संतान हैं, वह 'उम्म-उल-वलद' कहलाती है। स्वामी की मृत्यु होते ही वह स्वतंत्र हो जाएगी। (54/2)

शपथ के मसाइल (मसाइल-ए-क़सम) - एक व्यक्ति की चार पत्नियाँ थीं और उसके पास दस या अधिक ग़ुलाम थे। उसने शपथ ली कि यदि वह एक पत्नी को तलाक़ दे तो एक ग़ुलाम स्वतंत्र है, यदि दो को दे तो दो, यदि तीन को दे तो तीन और यदि चार को दे तो चार। इस स्थिति में यदि उसने चारों को तलाक़ दे दिया, चाहे एक साथ या अंतराल के बाद, तो दस ग़ुलाम स्वतंत्र हो जाएंगे। (13/7) - पानी पीने की कसम खाई और ज़ाफ़रान मिला हुआ पानी पिया तो क्या हुक्म है? (18/4)

दंड के मसाइल (मसाइल-ए-हुदूद) - शराब की एक बूंद पानी को अशुद्ध और हराम कर देगी, लेकिन शराब मिले हुए पानी से 'हद' (निश्चित दंड) तब तक नहीं आएगा जब तक कि नशा न हो। (17/4)

सियर (जीवन वृत्तांत/राज्य आचरण) के मसाइल - शुद्ध विचारधारा वाले सुन्नी विद्वान (आलिम-ए-दीन) का अपमान करना कुफ़्र (अविश्वास) है। (281)

क्रय-विक्रय के मसाइल (मसाइल-ए-बैअ) - 'बैअ-ए-तआती' अर्थात लेन-देन से भी व्यापार हो जाता है, चाहे ज़बान से कुछ न कहा जाए। उदाहरण के तौर पर, यदि रोटी का सामान्य भाव एक पैसा है, किसी ने चार पैसे रखे और चार रोटियाँ उसके सामने से उठा लीं, तो सौदा (बैअ) हो गया। (710) - ज़ैद की नीयत से अम्र का कुछ खरीदना ज़ैद को मालिक नहीं बना देगा जब तक कि अम्र उसे वह चीज़ दे न दे। हाँ, यदि क्रय अनुबंध (अक़्द-ए-बैअ) ज़ैद के नाम पर हुआ हो, तो यह ज़ैद की अनुमति पर निर्भर रहेगा। यदि उसने अनुमति दे दी तो ज़ैद ही मालिक हुआ, और यदि अस्वीकार कर दिया तो रद्द हो गया। (710)

वकालत (एजेंसी) के मसाइल - पानी लेने के लिए वकील बनाया गया, उसने रंग मिला हुआ पानी खरीदा, तो क्या हुक्म है? (183)

उपहार (हिबा) के मसाइल - दी हुई चीज़ वापस लेना पाप है, चाहे उपहार प्राप्त करने वाला (मौहब लहू) खुशी से वापस करे। (502)

शिकार, ज़बीहा और क़ुर्बानी के मसाइल - जो जानवर औलिया (संतों) की 'नियाज़' के लिए ज़बह किए जाते हैं, वे हलाल हैं। (256) - मालिक ने कोई भी नीयत की हो, यदि ज़बह करने वाले ने 'तकबीर' कहकर अल्लाह के लिए ज़बह किया, तो जानवर हलाल है। (256)

पृष्ठ 27 / 756

فتاویٰ رضویہ، جلد سوم

مسائل عتق - جس کنیز کی مولیٰ سے اولاد ہو اور مولیٰ اقرار کرے کہ وہ میری اولاد ہے وہ اُم ولد کہلاتی ہے مولیٰ کے مرتے ہی آزاد ہوجائے گی۔ (۵۴/۲)

مسائل قسم - ایک شخص کی چار عورتیں تھیں اور دس یا زیادہ غلام اس نے قسم کھائی کہ ایک عورت کو طلاق دے تو ایک غلام آزاد ہے اور دو کو تو دو اور تین کو تو تین اور چار کو تو چار اس صورت میں اگر چاروں کو طلاق دی معاً خواہ فاصلہ سے تو دس غلام آزاد ہوئے۔ (۱۳/۷) - پانی پینے کی قسم کھائی اور زعفران ملا پانی پیا تو کیا حکم ہے۔ (۱۸/۴)

مسائل حدود - شراب کی ایک بوند پانی کو نجس و حرام کردے گی مگر شراب ملے پانی سے حد نہ آئے گی جب تک نشہ نہ ہو۔ (۱۷/۴)

مسائل سیر - عالم دین سُنّی صحیح العقیدہ کی توہین کفر ہے۔ (۲۸۱)

مسائل بیع - بیع تعاطی یعنی لینے دینے سے بھی ہو جاتی ہے اگر چہ زبان سے کچھ نہ کہیں مثلاً روٹی کا عام بھاؤ ایک پیسہ ہے اس نے چار پیسے رکھے اور چار روٹیاں اس کے سامنے اٹھالیں بیع ہوگئی۔ (۷۱۰) - زید کی نیت سے عمرو کا خریدنا زید کو مالک نہ کردے گا جب تک عمرو اسے دے نہ دے ہاں اگر عقد بیع زید کے نام پر ہوا تو زید کی اجازت پر موقوف رہے گا جائز کیا تو زید ہی مالک ہوا اور رَد کیا تو رد ہوگئی۔ (۷۱۰)

مسائل وکالت - پانی لینے کو وکیل کیا اس نے رنگت ملا پانی خرید تو کیا حکم ہے۔ (۱۸۳)

مسائل ہبہ - دی ہوئی چیز پھیر لینا گناہ ہے اگر چہ موہب لہ خوشی سے پھیرے۔ (۵۰۲)

مسائل شکار و ذبیحہ وقربانی - جو جانور نیاز اولیا کے لیے ذبح کرتے ہیں حلال ہے۔ (۲۵۶) -

مالک نے کوئی نیت کی ہو ذابح نے تکبیر کہہ کر اللہ کے لیے ذبح کیا جانور حلال ہے۔ (۲۵۶)

Fatawa Razawiyya Volume 3

- The mule whose mother is a horse, eating its meat is not forbidden (haram) but disliked (makruh). [Page 503]
- In animals, the mother's status is considered; if the mother is halal, then the offspring is too, and if the mother is a sacrificial animal, then the offspring is too, even if the father is haram. [Page 503]
- Scorpion ash fed for kidney stones is haram, and such treatment is impermissible. [Page 600]

Issues of Restriction and Permission - One should never eat or drink anything at a Rafidi's (a certain sect) place. [Page 288] - Delaying a response to a greeting (Salam) is not permissible. [Page 447] - Salam should be given at the start of a meeting; doing so after a delay or after some conversation is against the Sunnah. [Page 447] - To what extent is it permissible to see and touch another person's slave-girl, and under what conditions? [Page 541] - Touching the body of a free non-mahram woman is absolutely haram. It is not permissible for a Sheikh to take bait (pledge of allegiance) by holding her hand. Details on the ruling of looking are provided. [Page 541] - What is the ruling on massaging the hands and feet of another person's legal slave-girl, applying oil to her head, or rubbing her stomach and back? [Page 541]

- Reciting (the Quran) where there is impurity is disliked (makruh). [Page 555]
- There is no harm in reciting near a woman in a state of major ritual impurity (Janaba), menstruation (Hayz), or post-natal bleeding (Nifas). In fact, one can recite while resting his head in the lap of his menstruating wife. [Page 555]
- If only the warp is silk, it is permissible, but if the weft is silk, it is impermissible for men. [Page 602]
- Lime made from sea shells is haram; eating betel leaf (paan) with it applied is haram. [Page 657]
- It is impermissible to apply anything to the face as medicine without necessity that would disfigure the appearance. [Page 667]
- Cutting off the noses and ears of enemy combatants (Harbi Kafirs) even after they are killed is haram. [Page 667]
- Some youth who play with mud, smearing it on each other's faces or jokingly applying black soot on someone's face while they are asleep; all of this is haram. [Page 667]

Issues of Reviving Dead Lands - Whoever digs a well in government land with the sultan's permission, no one else will be allowed to dig another well within forty to seventy cubits around it. [Page 286]

[Page 28 of 756] [I.T. Majlis of Dawat-e-Islami]

फ़तावा रज़विय्या जिल्द ३

- जिस खच्चर की माँ घोड़ी है, उसका गोश्त खाना हराम नहीं, बल्कि मकरूह है। [पृष्ठ ५०३]
- जानवरों में माँ का एतबार (विचार) किया जाता है; अगर माँ हलाल है तो बच्चा भी हलाल है, और अगर माँ कुर्बानी का जानवर है तो बच्चा भी, चाहे बाप हराम हो। [पृष्ठ ५०३]
- बिच्छू की राख जो गुर्दे की पथरी के लिए खिलाई जाती है, हराम है और ऐसा इलाज नाजायज़ है। [पृष्ठ ६००]

पाबंदी और अनुमति के मसले (हज़्र-ओ-इबाहत) - राफ़ज़ी के यहाँ कुछ भी खाना-पीना कतई नहीं चाहिए। [पृष्ठ २८८] - सलाम का जवाब देने में देरी करना जायज़ नहीं है। [पृष्ठ ४४७] - सलाम मुलाक़ात की शुरुआत में है; देरी के बाद या कुछ बातचीत करने के बाद सलाम करना सुन्नत के खिलाफ है। [पृष्ठ ४४७] - दूसरे की लौंडी (दासी) का कितना बदन देखना जायज़ है और किस हालत में उसे छूना? [पृष्ठ ५४१] - किसी अजनबी स्वतंत्र महिला के शरीर को छूना पूरी तरह हराम है। पीर (शेख) के लिए भी जायज़ नहीं कि वह हाथ पकड़कर बैअत ले। देखने के हुक्म का विवरण दिया गया है। [पृष्ठ ५४१] - दूसरे की शरी'ई लौंडी के हाथ-पांव दबाना, सर में तेल डालना या पेट-पीठ मलना कैसा है? [पृष्ठ ५४१]

- जहाँ नजासत (अशुद्धि) पड़ी हो, वहाँ तिलावत (क़ुरआन पढ़ना) मकरूह है। [पृष्ठ ५५५]
- जुनुब (अपवित्र), हैज़ (मासिक धर्म) और निफ़ास वाली औरत के पास तिलावत करने में कोई हर्ज नहीं, बल्कि अपनी हैज़ वाली पत्नी की गोद में सर रखकर तिलावत की जा सकती है। [पृष्ठ ५५५]
- अगर केवल ताना (लंबा धागा) रेशम हो तो जायज़ है, और अगर बाना (चौड़ा धागा) रेशम हो तो पुरुषों के लिए नाजायज़ है। [पृष्ठ ६०२]
- सीप का चूना हराम है, जिस पान पर यह लगा हो उसे खाना हराम है। [पृष्ठ ६५७]
- बिना ज़रूरत दवा के तौर पर चेहरे पर कोई ऐसी चीज़ मलना जिससे सूरत बिगड़ जाए, नाजायज़ है। [पृष्ठ ६६७]
- युद्धरत काफ़िरों (हर्बी) के मारे जाने के बाद भी उनके नाक-कान काटना हराम है। [पृष्ठ ६६७]
- कुछ नौजवान जो आपस में कीचड़ से खेलते हैं, एक-दूसरे के चेहरे पर कीचड़ मलते हैं या मज़ाक में सोते हुए किसी के चेहरे पर कालिख पोत देते हैं, यह सब हराम है। [पृष्ठ ६६७]

बंजर भूमि को जीवित करने के मसले (अहया-ए-मवात) - जो सरकारी ज़मीन में सुल्तान की अनुमति से कुआँ खोदे, उसके चारों ओर चालीस से सत्तर हाथ तक किसी दूसरे को कुआँ खोदने की अनुमति नहीं होगी। [पृष्ठ २८६]

[पृष्ठ ७५६ का २८] [आई.टी. मज्लिस दावत-ए-इस्लामी]

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

۔ جس خچر کی ماں گھوڑی ہے اس کا کھانا حرام نہیں مکروہ ہے۔ ۵۰۳ ۔ جانوروں میں ماں کا اعتبار ہے ماں اگر حلال ہے تو بچہ بھی اور ماں اگر قربانی کا جانور ہے تو بچہ بھی اگرچہ باپ حرام ہے۔ ۵۰۳ ۔ بچھو کی خاک کہ سنگ گردہ میں کھلاتے ہیں حرام ہے اور ایسا علاج ناجائز۔ ۶۰۰

مسائل حظر واباحت ۔ رافضی کے یہاں کچھ کھانا پینا ہر گز نہ چاہیے۔ ۲۸۸ ۔ جواب سلام میں دیر جائز نہیں۔ ۴۴۷ ۔ سلام شروع ملاقات کے وقت ہے دیر کے بعد یا کچھ کلام کرکے خلاف سنت ہے۔ ۴۴۷ ۔ دوسرے کی کنیز کا کتنا بدن دیکھنا جائز ہے اور کس حالت میں چھونا۔ ۵۴۱ ۔ اجنبی آزاد عورت کا بدن چھونا مطلقا حرام ہے شیخ کو جائز نہیں کہ اس کا ہاتھ پکڑ کر بیعت لے اور دیکھنے کے حکم کی تفصیل۔ ۵۴۱ ۔ دوسرے کی کنیز شرعی کا اس کے ہاتھ پاؤں دبانا یا سر میں تیل ڈالنا یا پیٹ پیٹھ ملنا کیسا ہے۔ ۵۴۱

۔ جہاں کوئی نجاست پڑی ہو وہاں تلاوت مکروہ ہے۔ ۵۵۵ ۔ جنب و حیض و نفاس والی عورت کے پاس تلاوت میں حرج نہیں بلکہ اپنی عورت حائضہ کی گود میں سر رکھ کر تلاوت کر سکتا ہے۔ ۵۵۵ ۔ صرف تانا ریشم ہو تو جائز اور بانا ریشم ہو تو مرد کو ناجائز۔ ۶۰۲ ۔ سیپ کا چونا حرام ہے جس پان پر لگا ہو اس کا کھانا حرام۔ ۶۵۷ ۔ بلا ضرورت دوا منہ پر کوئی ایسی چیز سائننا جس سے صورت بگڑے ناجائز ہے۔ ۶۶۷ ۔ حربی کافروں کے بھی بعد قتل ناک کان کاٹنا حرام ہے۔ ۶۶۷ ۔ بعض نوجوان جو آپس میں کیچڑ سے کھیلتے ہیں ایک دوسرے کو منہ پر کیچڑ ملتے ہیں یا ہنسی سے کسی کے سوتے میں اس کے منہ پر کالک لگاتے ہیں یہ سب حرام ہے۔ ۶۶۷

مسائل احیائے موات ۔ جو سرکاری زمین میں باذن سلطان کنواں کھودے اس کے گرد چالیس ۷۰ ہاتھ تک دوسرے کو کنواں کھودنے کی اجازت نہ ہوگی۔ ۲۸۶

[صفحہ ۷۵۶ کا ۲۸] [آئی ٹی مجلس دعوتِ اسلامی]

Fatawa Rizvia, Volume 3

Civil Issues - Difference in reasons for concessions prevents assessment a fortiori. (Page 465) - If a decree is passed against a debtor, his assets beyond necessary wearing apparel shall be taken to pay the debt. (Page 522) - Slight hardship is no excuse for not fulfilling divine commands. (Page 471)

Inheritance Issues - A contract made for the purpose of a legal stratagem should not be merely for show, but should be intended genuinely. (Page 501) - The need for bathing and shrouding the deceased takes precedence over all other claims on his estate; heirs come after creditors are paid. (Page 522) - In matters of reward, one should not desire to give preference to another over oneself, except in places of etiquette. (Page 536)

Juridical Benefits - The four types of worship: intended and unintended, each either conditional on purity or unconditional, with examples. (Page 556) - Mixing is only attributed to the overcome. (Page 49) - Dates of compilation of Dur-o-Zakheera al-Uqba. (Page 591) - Astar is one Tola, 8 Mashas, and 2 Ratis; and Ratl is 33 Tolas and 9 Mashas. (Page 263) - **The Methodology of the Jurisconsult (Rasm al-Mufti)** - The amount of the Shariah Dirham. (Page 412) - Sometimes they use a restricted term even in commentaries, and this is one of the greatest causes of difficulty in understanding jurisprudence. (Page 123) - Worships that are missed have no substitute. (Page 425) - The absolute in the speech of the jurists is understood as the restricted. (Page 161) - Between the obligatory and the symbol of Islam, there is a general-particular relationship. (Page 436) - If a reliable Imam mentions a restriction that others do not, there are four scenarios. (Page 302) - Al-Layth bin Sa'ad was a Hanafi. (Page 44) - The restriction placed by commentators on the absolute nature of original texts is not a contradiction but an explanation of intent. (Page 303) - The concessions granted by the pure Shariah apply to both the obedient and the disobedient. (Page 450) - Every narration in a matter is a narration in its equivalent which does not differ from it in meaning; so whatever was the Imam's saying in that is his saying in this, even if a contradiction is established from him in this, he has two sayings in it. (Page 443)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

नागरिक मामले (मसाइल मदनीयत) - रियायत के कारणों में मतभेद प्राथमिकता के आधार पर जवाबदेही को रोकता है। (पृष्ठ 465) - कर्जदार पर डिक्री होने पर उसके पहनने के आवश्यक कपड़ों के अलावा उसकी संपत्ति ऋण अदायगी के लिए ली जाएगी। (पृष्ठ 522) - ईश्वरीय आदेशों के पालन में थोड़ी सी कठिनाई कोई बहाना नहीं है। (पृष्ठ 471)

विरासत के मामले (मसाइल फ़राइज़) - कानूनी युक्ति (हीला) के उद्देश्य से किया गया अनुबंध केवल कहने के लिए नहीं होना चाहिए बल्कि वास्तव में इसकी नियत होनी चाहिए। (पृष्ठ 501) - मृतक के स्नान और कफ़न की आवश्यकता उसकी संपत्ति में सर्वोपरि है; वारिसों का हक लेनदारों के बाद आता है। (पृष्ठ 522) - सवाब के मामले में, मनुष्य को यह नहीं चाहना चाहिए कि वह दूसरे को अपने ऊपर प्राथमिकता दे, सिवाय अदब के स्थानों के। (पृष्ठ 536)

न्यायशास्त्र के लाभ (फ़वाइदे फ़िक़हिया) - इबादत (उपासना) के चार प्रकार: मकसूदा और गैर-मकसूदा, और प्रत्येक या तो शुद्धता (तहारत) की शर्त के साथ या बिना शर्त, और उनके उदाहरण। (पृष्ठ 556) - मिश्रण केवल पराजित को ही माना जाता है। (पृष्ठ 49) - 'दुर्र-ओ-ज़खीरा अल-उकबा' के संकलन की तिथियां। (पृष्ठ 591) - अस्तार एक तोला 8 माशे और 2 रती; और रतल 33 तोले 9 माशे। (पृष्ठ 263) - **मुफ्ती की रस्म (रस्म अल-मुफ्ती)** - शरीयत के दिरहम की मात्रा। (पृष्ठ 412) - कभी-कभी वे व्याख्याओं (शराहों) में भी प्रतिबंधित शब्द का उपयोग करते हैं, और यह फ़िक़ह (न्यायशास्त्र) को समझने में कठिनाई के सबसे बड़े कारणों में से एक है। (पृष्ठ 123) - वे इबादतें जो छूट जाएं उनका कोई मुआवज़ा (बदला) नहीं है। (पृष्ठ 425) - फ़ुक़हा (न्यायविदों) की बातों में 'मुतलक़' (पूर्ण) को 'मुक़य्यद' (प्रतिबंधित) पर ही समझा जाता है। (पृष्ठ 161) - वाजिब और इस्लाम के प्रतीक के बीच एक सामान्य-विशेष संबंध है। (पृष्ठ 436) - यदि कोई विश्वसनीय इमाम ऐसी शर्त का उल्लेख करता है जो दूसरों के पास नहीं है, तो चार स्थितियाँ बनती हैं। (पृष्ठ 302) - अल-लैथ बिन साद हनफ़ी थे। (पृष्ठ 44) - टीकाकारों द्वारा मूल पाठ की पूर्णता पर लगाया गया प्रतिबंध विरोधाभास नहीं बल्कि मंशा का स्पष्टीकरण है। (पृष्ठ 303) - पाक शरीयत जो रियायतें देती है, उसमें आज्ञाकारी और पापी दोनों शामिल हैं। (पृष्ठ 450) - किसी मसले में हर रिवायत उसके समान मसले में भी रिवायत है जो अर्थ में उससे अलग नहीं है; तो जो उदाहरण के लिए उस मसले में इमाम का कथन था वही इस मसले में उनका कथन है, और यदि इसमें उनके विपरीत कुछ सिद्ध हो जाए, तो उनके इस मसले में दो कथन होंगे। (पृष्ठ 443)

فتاوی رضویہ جلد سوم

مسائل مدنیات - اختلاف اسباب الرخصة یمنع الاحتساب بالاولیٰ۔ (صفحہ ۴۶۵) - مدیون پر ڈگری ہوئی پہننے کے ضروری کپڑے کے علاوہ اس کا مال ادائے دین میں لیا جائے گا۔ (صفحہ ۵۲۲) - احکام الہیہ بجالانے میں قلیل مشقت عذر نہیں۔ (صفحہ ۴۷۱)

مسائل فرائض - جو عقد حیلہ شرعیہ کی غرض سے کیا جائے محض برائے گفتن نہ ہو بلکہ حقیقی طور پر اس کی نیت کرے۔ (صفحہ ۵۰۱) - میت کے غسل و کفن کی حاجت اس کے مال میں سب پر مقدم ہے جب تک یہ نہ ہولے قرض خواہ کو بھی نہ دیں گے وارث تو بعد کو ہے۔ (صفحہ ۵۲۲) - ثواب کی بات میں یہ نہ چاہے کہ وہ دوسرے کو اپنے پر ترجیح دے مگر محل ادب میں۔ (صفحہ ۵۳۶)

فوائد فقہیہ - عبادت کی چار قسمیں مقصودہ و غیر مقصودہ اور ہر ایک مشروط بطہارت و غیر مشروط اور ان کی مثالیں۔ (صفحہ ۵۵۶) - الخلط لایضاف الا الی المغلوب۔ (صفحہ ۴۹) - تواریخ تصنیف در رو ذخیرۃ العقبیٰ۔ (صفحہ ۵۹۱) - استار ایک تولہ ۸ ماشے سے ۲ رتی اور رطل ۳۳ تولے ۹ ماشے۔ (صفحہ ۲۶۳) - **رسم المفتی** - درم شرعی کی مقدار۔ (صفحہ ۴۱۲) - ربما یطلقون مقید احتی في الشروح وھذا من اعظم وجوہ العسر في ادراک الفقہ۔ (صفحہ ۱۲۳) - وہ عبادتیں کہ فوت ہو جائیں تو ان کا کوئی عوض نہیں۔ (صفحہ ۴۲۵) - المطلق في کلام الفقہاء یحمل علی المقید۔ (صفحہ ۱۶۱) - بین الواجب و شعار الاسلام عموم من وجہ۔ (صفحہ ۴۳۶) - کوئی امام معتمد ایک قید ذکر فرمائے کہ اوروں کے یہاں نہیں تو چار صورتیں ہیں۔ (صفحہ ۳۰۲) - اللیث بن سعد کان حنفیاً۔ (صفحہ ۴۴) - تقیید شراح اطلاق متون کی مخالفت نہیں بلکہ بیان مراد ہے۔ (صفحہ ۳۰۳) - شرع مطہر جو رخصتیں عطا فرماتی ہے اس میں مطیع و عاصی سب شریک ہیں۔ (صفحہ ۴۵۰) -

كل رواية في مسألة رواية في نظيرتها التي لا تفارقها في المعنى فما كان مثلا قول الامام فى تلک فهو قولہ فى ہذه وان ثبت عنہ خلافہ فى ہذه فلہ فيہا قولان۔ (صفحہ ۴۴۳)

صفحہ ۲۹ از ۷۵۶

Fatawa Ridawiyya - Volume 3

Page	Hadith Benefits	Page
677	An-Nisab and Al-Khulasah are both by Imam Tahir bin Abdul Rashid al-Bukhari.	
737	What is mentioned as a ruling takes precedence over what is mentioned in the reasoning.	353
	Praising a narrator is not necessarily praising their narration.	
739	In some books, quoting an unknown source is not sufficient.	428
	What Abu Dawud remained silent about is considered an authority/ proof.	

Page	Beliefs	Page
232	There is essentially no light in Hell, and a refutation of Gangohi.	208

Page	Virtues and Merits	Page
	Everything, every blessing, every goal, every wealth—in religion, in this world, in the hereafter—from the first day until today, and from today until eternity, whoever received or receives it, it is through the blessed hand of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his family). The real Giver is Allah Almighty, and the distributor of all His blessings is only Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family). No one has ever received or will receive any blessing or desire from anyone else.	
203	The Prophets (peace and blessings be upon them) are truly alive after death, just as they were during their physical life; their death was only for a momentary period.	223
	Allahu Akbar! In the house of Prophethood, for two months at a time, no fire was lit (for cooking); the Household (Ahl al-Bayt) subsisted only on dates and water.	
554	All disbelievers, even if they recite the Kalima, are completely ignorant of Allah.	225
	Which is superior, Kauthar or Zamzam?	

Page	Theological Matters	Page
		227

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) did not attain honor from anything; rather, whatever was attributed to him gained honor.

246 The word 'superior' (Afzal) has two meanings.

फतावा रज़विया - खंड 3

पृष्ठ	हदीस के लाभ	पृष्ठ
677	अन्-निसाब और अल-खुलासा दोनों इमाम ताहिर बिन अब्दुल रशीद अल-बुखारी की रचनाएँ हैं।	
737	नियम के रूप में जो उल्लेख किया गया है, उसे तर्क में बताए गए पर प्राथमिकता दी जाती है।	353
	एक रावी (वर्णनकर्ता) की प्रशंसा उसकी रिवायत (कथन) की प्रशंसा नहीं है।	
739	कुछ किताबों में अज्ञात स्रोत का उद्धरण देना पर्याप्त नहीं है।	428
	जिस पर अबू दाऊद खामोश रहे, वह प्रमाण है।	

पृष्ठ	अक़ायद (विश्वास)	पृष्ठ
232	जहन्नुम में असल में कोई रोशनी नहीं है, और गंगोही का खंडन।	208

पृष्ठ	फ़ज़ाइल व मनाक़िब (गुण और प्रशंसा)	पृष्ठ
	हर चीज़, हर नेमत, हर मुराद, हर दौलत—दीन में, दुनिया में, आख़िरत में—पहले दिन से आज तक और आज से अनंत काल तक, जिसे भी मिली या मिलती है, वह हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुकद्दस हाथों से मिली और मिलती है। वास्तविक देने वाला अल्लाह तआला है और उसकी सभी नेमतों को बाँटने वाले केवल मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हैं। किसी और से कभी कोई नेमत या मुराद किसी को न मिली और न मिलेगी।	
203	अंबिया अलैहिमुस्सलाम वफ़ात के बाद भी वास्तव में वैसे ही जीवित हैं जैसे वे अपने ज़ाहिरी जीवन में थे, उनकी मृत्यु केवल एक क्षण के लिए थी।	223
	अल्लाहू अकबर! नबूवत के घर में दो-दो महीने आग नहीं जली, अहले-बैत का गुज़ारा केवल खजूर और पानी पर हो रहा था।	
554	सभी काफ़िर, चाहे वे कलमा पढ़ने वाले ही क्यों न हों, अल्लाह से पूरी तरह अनजान हैं।	225
	कौसर श्रेष्ठ है या ज़मज़म?	

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने किसी चीज़ से सम्मान प्राप्त नहीं किया, बल्कि जो चीज़ हुज़ूर की ओर जुड़ी उसे सम्मान मिल गया। 227

246 'अफ़ज़ल' (श्रेष्ठ) के दो अर्थ हैं।

पृष्ठ 756 का 30

صفحہ فوائد حدیثیہ **صفحہ**

۶۷۷ النصاب والخلاصة كلاهما للامام طاهر بن عبدالرشيد البخارى۔

۷۳۷ ماذكر حكما مقدما على ماذكر فى التعليل۔ ۳۵۳

الثناء على الراوى ليس ثناء على روايته۔

۷۳۹ في بعض الكتب نقل مجهول لا يكفي۔ ۴۲۸

سكت عليه ابوداؤد فهو حجة۔

صفحہ عقائد **صفحہ**

۲۳۲ جہنم میں اصلا روشنی نہیں اور گنگوہی کا رد۔ ۲۰۸

صفحہ فضائل و مناقب **صفحہ**

ہر چیز ہر نعمت ہر مراد ہر دولت دین میں دنیا میں آخرت میں روز اول سے آج تک آج سے ابدالآباد تک جسے ملی یا ملتی ہے حضور اقدس صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے دست اقدس سے ملی اور ملتی ہے معطی حقیقی اللہ تعالیٰ ہے اور اس کی تمام نعمتوں کے بانٹنے والے صرف محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم دوسرے سے کوئی نعمت کوئی مراد کسی کو کبھی ملی نہ ملے۔

انبیاء علیہم الصلوۃ والسلام بعد وفات بھی حقیقۃ ویسے ہی زندہ ہیں جیسے حالِ حیات ظاہری میں تھے ان کی موت صرف ایک آن کے لیے تھی۔ ۲۰۳ ۲۲۳

صفحہ فضائل و مناقب **صفحہ**

اللہ اکبر کاشانہ نبوت میں دو دو مہینے آگ روشن نہ ہوئی صرف خرمے اور پانی پر اہل بیت کی گزر رہی تھی۔

۵۵۴ تمام کافر اگرچہ کلمہ گو ہوں اللہ سے محض جاہل ہیں۔ ۲۲۵

کوثر افضل ہے یا زمزم۔

صفحہ مسائل کلامیہ **صفحہ**

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے کسی چیز سے شرف نہ پایا بلکہ جو چیز حضور کی طرف منسوب ہو گئی اسے شرف مل گیا۔ ۲۲۷

۲۴۶ للافضل معنیان

صفحہ 30 از 756

Fatawa Razawiyya - Volume Three

Topic / Subject	Page	Topic / Subject	Page
The wisdom that the holy birth did not occur on Friday, in Ramadan, or in the Holy Kaaba, but rather on Monday, in Rabi' al-Awwal, and at the house of birth.	247	When a matter is based on facts and this factual knowledge can be attained, then acting upon conjecture and opinion at that time is not permissible.	552
Arguments for the excellence of Kauthar.	243	The principle regarding Sharia names is to consider their linguistic realities within them.	572
Prophets (peace and blessings be upon them) are always pure and clean, both in life and after death.	203	It is permissible to conjoin the specific to the general using the conjunctions 'wa' (and), 'hatta' (until/even), 'bal' (but/rather), 'bi-aw' (or), and 'thumma' (then).	618

Fundamental Principles

Topic / Subject	Page
The primary metaphor is better than the secondary one.	115
The word 'ahad' (one) or 'wahid' (single) does not necessarily imply the attribute of unity.	137
The author's research on whether the attribute of unity is considered in the words 'ahad' and 'wahid' or not.	138
Sometimes restriction is used to preserve generality, not to negate others.	202
Dominance (Taghlib) is a type of metaphor.	244
Dominance (Taghlib) occurs in nouns, not in two contradictory attributes.	244
The phrase "Tayammum is two strikes" is not explicit regarding the status of a pillar for the predicate of the subject.	355
Explanation of pillar (Rukn), condition (Shart), and Sharia condition resembling a pillar.	392
Number negates addition.	429
Sometimes an attribute is intended for its own sake.	458
	536

Topic / Subject	Page
Individual obligation (Fard 'Ayn) is stronger than communal obligation (Fard Kifayah).	

Natural Sciences (Physics)

Topic / Subject	Page
Does water have any color or not?	235
Is the color of water white or black?	238
What is the reason that pearls, glass, and crystals become very white after grinding?	239
Why do the foams of rivers, and even colored urine, appear white?	239
If a crack occurs in a mirror, why does whiteness appear there?	240
Why does dew, which freezes after falling from the sky, look white?	240
How do your face and things behind your back appear in a mirror?	240
Why does the right side appear as left and the left as right in a mirror?	240
Why does an object appear to be at the same distance in a mirror as it actually is?	240
Another reason for snow appearing white. The reason for the appearance of a mirage.	240

फ़तावा रज़विया - जिल्द तीन

विषय / प्रसंग	पृष्ठ
इसकी हिकमत कि मुकद्दस विलादत (जन्म) जुमा, रमज़ान और काबा मुअज़्ज़मा में नहीं हुई, बल्कि सोमवार और रबी-उल-अव्वल में और विलादत के मकान में हुई।	247
कौसर की श्रेष्ठता के प्रमाण।	243
अंबिया अलैहिमुस्सलाम जीवन और मृत्यु दोनों स्थितियों में हमेशा हर समय पवित्र और पावन हैं।	203
जो बात हकीकत पर आधारित हो और यह हकीकती ज्ञान प्राप्त किया जा सके उस समय अनुमान और राय पर अमल करना जायज़ नहीं है।	552
शरीयत के नामों में मूल सिद्धांत उनकी भाषाई वास्तविकताओं पर विचार करना है।	572
'वा', 'हत्ता', 'बल', 'बि-अव' और 'थुम्मा' के माध्यम से विशिष्ट को सामान्य पर जोड़ना जायज़ है।	618

मौलिक सिद्धांत (फ़वाइद-ए-उसूलीय)

विषय / प्रसंग	पृष्ठ
प्रथम लाक्षणिक अर्थ (मजाज़) द्वितीय से बेहतर है।	115
शब्द 'अहद' (एक) या 'वाहिद' (एकल) में एकता के गुण का होना आवश्यक नहीं है।	137
शब्द 'अहद' और 'वाहिद' में एकता के गुण के विचार पर लेखक का शोध।	138
कभी-कभी प्रतिबंध (तकीद) सामान्यता बनाए रखने के लिए होता है, न कि दूसरों को नकारने के लिए।	202
प्रबलता (तग़लीब) एक प्रकार का रूपक (मजाज़) है।	244
प्रबलता (तग़लीब) संज्ञाओं में होती है, न कि दो विरोधाभासी गुणों में।	244
"तयम्मुम दो प्रहार है" यह कथन विषय के विधेय के लिए स्तंभ होने के बारे में स्पष्ट नहीं है।	355
स्तंभ (रुकन), शर्त और स्तंभ के समान शरीयत शर्त का वर्णन।	392
संख्या वृद्धि को नकारती है।	429
कभी-कभी कोई गुण स्वयं में अभीष्ट (मकसूद-ए-बिज़्ज़ात) होता है।	458

विषय / प्रसंग	पृष्ठ
फर्ज़-ए-ऐन (व्यक्तिगत कर्तव्य) फर्ज़-ए-किफ़ाया (सामूहिक कर्तव्य) से अधिक मजबूत है।	536

भौतिक विज्ञान (तबइयात)

विषय / प्रसंग	पृष्ठ
पानी में कोई रंग है या नहीं?	235
पानी का रंग सफेद है या काला?	238
क्या कारण है कि मोती, कांच और स्फटिक पीसने से बहुत सफेद हो जाते हैं?	239
नदियों, बल्कि रंगीन पेशाब के झाग भी सफेद क्यों दिखाई देते हैं?	239
यदि आईने में दरार पड़ जाए, तो वहाँ सफेदी क्यों दिखाई देती है?	240
ओस जो आसमान से गिरकर जम जाती है, सफेद क्यों दिखाई देती है?	240
आईने में अपना चेहरा और वह चीजें जो पीठ के पीछे हैं, किस तरह दिखाई देती हैं?	240
आईने में दाहिनी ओर बायीं और बायीं ओर दाहिनी क्यों दिखाई देती है?	240
जो चीज़ जितने फासले पर हो, आईने में उतनी ही दूरी पर किस लिए नज़र आती है?	240
बर्फ के सफेद दिखने का दूसरा कारण। मृगतृष्णा (सरब) दिखने का कारण।	240

पृष्ठ 756 का 31

موضوع / عنوان صفحہ		موضوع / عنوان صفحہ	
اس کی حکمت کہ ولادت اقدس جمعہ و رمضان و کعبہ معظمہ میں نہ ہوئی بلکہ دوشنبہ و ربیع الاول و مکان ولادت میں ہوئی۔	۲۴۷	جو بات واقع پر مبنی ہو اور یہ علم واقع حاصل کر سکتا ہو اس وقت گمان و ظن پر عمل کرنا جائز نہیں۔	۵۵۲
دلائل افضلیت کوثر۔	۲۴۳	الاصل فی الاسماء الشرعیہ اعتبار حقائقھا اللغویہ فیھا۔	۵۷۲
انبیا علیہم الصلوۃ والسلام حال حیات وحال وفات میں ہمیشہ ہر وقت طیب وطاہر ہیں۔	۲۰۳	یجوز عطف الخاص علی العام بالواو وحتی بل وباو وثم۔	۶۱۸

فوائد اصولیہ

موضوع / عنوان صفحہ	
مجاز الاول اولی من التجوز بما کان۔	۱۱۵
لا یلزم فی لفظ احد او واحد اعتبار صفۃ الواحدۃ۔	۱۳۷
تحقیق المصنف فی اعتبار وصف الوحدۃ فی لفظۃ احد وواحد وعدمہ	۱۳۸
رب تقیید لحفظ العموم دون نفی ما عداہ۔	۲۰۲
التغلیب من المجاز۔	۲۴۴
التغلیب فی الاسماء لا وصفین متضادین۔	۲۴۴

موضوع / عنوان صفحہ

مثل التیمم ضربتان لیس صریحاً فی رکنیۃ المحمول للموضوع۔ ۳۵۵

رکن و شرط و شرط شرعی شبیہ برکن کا بیان۔ ۳۹۲

العدد ینفی الزیادۃ۔ ۴۲۹

قدیکون الوصف مقصودا بالذات۔ ۴۵۸

فرض عین فرض کفایہ سے قوی تر ہے۔ ۵۳۶

طبعیات

موضوع / عنوان صفحہ

پانی میں کچھ رنگ ہے یا نہیں۔ ۲۳۵

پانی کا رنگ سفید ہے یا سیاہ۔ ۲۳۸

کیا سبب ہے کہ موتی شیشہ بلور پینے سے خوب سفید ہو جاتے ہیں۔ ۲۳۹

دریا بلکہ رنگین پیشاب کے بھی جھاگ کیوں سفید معلوم ہوتے ہیں۔ ۲۳۹

آئینہ میں درز پڑ جائے تو وہاں سپیدی کیوں معلوم ہوتی ہے۔ ۲۴۰

اوس کہ آسمان سے گر کر جم جاتی ہے کیوں سپید معلوم ہوتی ہے۔ ۲۴۰

آئینہ میں اپنی صورت اور وہ چیزیں جو پیٹھ کے پیچھے ہیں کس طرح نظر آتی ہیں۔ ۲۴۰

آئینہ میں دہنی جانب بائیں اور بائیں دہنی کیوں معلوم ہوتی ہے۔ ۲۴۰

جو چیز جتنے فاصلے پر ہو آئینہ میں اتنی ہی دور پر کس لیے نظر آتی ہے۔ ۲۴۰

برف کے سپید نظر آنے کا دوسرا سبب۔ سراب نظر آنے کا سبب۔ ۲۴۰

Fatawa Rizvia, Volume 3

- Movement of a ray. | 239 - Twelve ways of mutual transformation of one of the four elements into another. | 612
- Rays return at the same angles they travel at. | 239 - Earthly components can also become fire directly (without a medium). | 612
- Colors remain present in the dark. | 241 - Everything in a mine is the progeny of sulfur and mercury; sulfur is male, mercury is female. | 623
- Four forms of combustion. | 580 - Miscellaneous. | 56
- The reality of coincidence (congruence) and singular research into what cause should be established for it in things. | 601 - Difference between liquid/thin and fine/subtle. | 56
- What effects are produced in bodies by fire. | 603 - The difference in meaning between sharib (drinker) and mashroob (beverage). | 104
- How stone is formed. | 603 - Even for a child, those are worthy of sin; the pain that reaches them is a recompense for them. | 409
- A body of weak composition cannot be imprinted by fire. | 603 - No animal is slaughtered, no tree is cut, no leaf falls except when it neglects the glorification of Allah. | 409
- Why mercury does not stay on fire. | 603 - The three divorces of 'Ramad' (ashes). | 599
- The meaning of malleability and the cause of the 'seven bodies' being malleable. | 603 - [Arabic] The people of language, when they define something, they leave it indefinite, and when they make it indefinite, they define it. | 331
- Only malleable bodies are imprintable by fire. | 604 - Description of 'Gul-e-Makhtum' (Sealed Earth). | 332
- The cause of melting and revolving of gold and silver. | 604 - Discussion that emerald is not peridot. | 639 (Margin)
- What primary and secondary effects fire has. | 604 - Mica is a type of stone; limestone is also a type of mica. | 637
- Softening and melting are of a kind, and what is the primary effect of fire in them. | 605 - Research into the application of 'rassas' (lead/tin) and specific names for tin and lead. | 251
- Reason for fire being a separator of heterogeneous things. | 606 - Research into the meaning of 'Sufr' and that its translation as brass is incorrect. | 252

- Reason for fire being a unifier of homogeneous things. | 606 - Description of the seven bodies, i.e., the seven metals, and that brass is not among them as it is a synthetic thing. | 252
- There are four types of minerals with imperfect structure. | 610 |

फतावी रज़विया, जिल्द 3

- किरण की हलचल। | 239 - चारों तत्वों में एक की दूसरे से परिवर्तन की बारह सूरतें। | 612
- किरणें जितने कोणों पर जाती हैं, उतने ही पर वापस लौटती हैं। | 239 - ज़मीनी घटक बिना किसी माध्यम के भी आग बन जाते हैं। | 612
- रंग अंधेरे में भी मौजूद रहते हैं। | 241 - खान की हर चीज़ गंधक और पारे की संतान है; गंधक नर है और पारा मादा। | 623
- दहन की चार सूरतें। | 580 - विविध। | 56
- 'इनतिबाक' (अनुरूपता) की हकीकत और उसमें यह शोध कि चीजों में इसका कारण किसे माना जाए। | 601 - तरल (रक़ीक़) और सूक्ष्म (दक़ीक़) में अंतर। | 56
- आग से शरीरों (पिंडों) में क्या-क्या प्रभाव पैदा होते हैं। | 603 - शारीब (पीने वाला) और मशरूब (पेय) के अर्थ में अंतर। | 104
- पत्थर किस तरह बनता है। | 603 - बच्चे के लिए भी वे गुनाह के योग्य हैं; उसे जो कष्ट पहुँचता है वह उन्हीं का बदला है। | 409
- कमज़ोर संरचना वाला शरीर आग से मुद्रित (इनप्रिंट) नहीं हो सकता। | 603 - कोई जानवर ज़बह नहीं किया जाता, कोई पेड़ काटा नहीं जाता, कोई पत्ता नहीं गिरता, मगर तब जब वह अल्लाह की तस्बीह (महिमा) से गफ़लत करता है। | 409
- पारा आग पर क्यों नहीं रुकता। | 603 - 'रमाद' (राख) के तीन तलाक़। | 599
- 'इनतिराक़' (आघातवर्धनीयता) के अर्थ और सातों धातुओं (अजसाद-ए-सबआ) के फैलने का कारण। | 603 - [अरबी] भाषाविद् जब किसी को परिभाषित करते हैं तो उसे अनिश्चित छोड़ देते हैं, और जब अनिश्चित छोड़ते हैं तो परिभाषित करते हैं। | 331
- आग से केवल फैलने वाली धातुएं ही मुद्रित होती हैं। | 604 - 'गुल-ए-मख़्तूम' (मुहरबंद मिट्टी) का वर्णन। | 332
- सोने और चाँदी के पिघलने और घूमने का कारण। | 604 - शोध कि पन्ना (ज़मर्रुद) पेरिडॉट (ज़बरजद) से अलग है। | 639 (हाशिया)
- आग का प्राथमिक और द्वितीयक प्रभाव क्या-क्या है। | 604 - अभ्रक एक प्रकार का पत्थर है; चूना पत्थर भी एक प्रकार का अभ्रक है। | 637

- कोमल होना और पिघलना एक समान हैं और उनमें आग का प्राथमिक प्रभाव क्या है। | 605 - 'रसास' के प्रयोग का शोध और राँगा और सीसे के विशेष नाम। | 251
- आग के अलग-अलग (विजातीय) चीज़ों को पृथक करने का कारण। | 606 - 'सुफ़्र' के अर्थ का शोध और यह कि इसका पीतल अनुवाद सही नहीं है। | 252
- आग के समान (सजातीय) चीज़ों को जोड़ने का कारण। | 606 - सातों धातुओं का वर्णन और यह कि पीतल उनमें नहीं है क्योंकि वह एक कृत्रिम वस्तु है। | 252
- खनिजों में चार प्रकार कमज़ोर संरचना वाले हैं। | 610 |

فتاوی رضویہ، جلد سوم

- شعاع کی جنبش۔ | ۲۳۹ - چاروں عنصروں میں ایک کی دوسرے سے تبدیلی کی بارہ صورتیں۔ | ۶۱۲
- شعاعیں جتنے زاویوں پر جاتی ہیں اتنوں ہی پر پلٹتی ہیں۔ | ۲۳۹ - اجزائے ارضیہ بلا واسطہ بھی آگ ہو جاتے ہیں۔ | ۶۱۲
- رنگتیں تاریکی میں موجود رہتی ہیں۔ | ۲۴۱ - کان کی ہر چیز گندھک پارے کی اولاد ہے گندھک نر ہے پارہ مادہ۔ | ۶۲۳
- احتراق کی چار صورتیں۔ | ۵۸۰ - متفرقات | ۵۶
- انطباق کی حقیقت اور اس میں یہ تحقیق مفرد کہ اشیا میں اس کا سبب کیا قرار دیا جائے گا۔ | ۶۰۱ - رقیق و دقیق میں فرق۔ | ۵۶
- اجسام میں آگ سے کیا کیا اثر پیدا ہوتے ہیں۔ | ۶۰۳ - شریب و مشروب میں فرق معنی۔ | ۱۰۴
- پتھر کس طرح بنتا ہے۔ | ۶۰۳ - بچے کے لیے بھی اس کے قابل گناہ ہیں اسے جو تکلیف پہنچتی ہے انہیں کا عوض ہے۔ | ۴۰۹
- ضعیف الترکیب جسم منطبع بالنار نہیں ہو سکتا۔ | ۶۰۳ - کوئی جانور ذبح نہیں کیا جاتا، کوئی پیڑ کاٹا نہیں جاتا، کوئی پتا نہیں گرتا مگر جبکہ تسبیح الہی میں غفلت کرتا ہے۔ | ۴۰۹
- پارا آگ پر کیوں نہیں ٹھہرتا۔ | ۶۰۳ - رماد کے تین طلاق۔ | ۵۹۹
- انطراق کے معنی اور اجساد سبعہ کے منطرق ہونے کا سبب۔ | ۶۰۳ - اھل اللغة اذا عرفوا نکروا واذا نکروا عرفوا۔ | ۳۳۱

• مطبع بالنار صرف اجسام منطرقہ ہوتے ہیں۔ | ۶۰۴ - گل مختوم کا بیان۔ | ۳۳۲
• سونے چاندی کے پگھلنے اور چرخ کھانے کا سبب۔ | ۶۰۴ - بحث ان الزمرد غیر الزبرجد۔ | ۶۳۹ (حاشیہ)
• نار کا کیا کیا اثر اصلی ہے کیا کیا تابع۔ | ۶۰۴ - ابرک ایک قسم کا پتھر ہے چونے کا پتھر بھی ایک قسم کی ابرک ہے۔ | ۶۳۷
• لین و ذوبان کے طرح ہیں اور ان میں نار کا اثر اصلی کیا ہے۔ | ۶۰۵ - اطلاق رصاص کی تحقیق اور رانگ اور سیسے کے خاص نام۔ | ۲۵۱
• سبب کون النار مفرقة للمتخالفات۔ | ۶۰۶ - معنی صفر کی تحقیق اور یہ کہ اس کا ترجمہ پیتل صحیح نہیں۔ | ۲۵۲
• سبب کون النار جامعة للمتشاکلات۔ | ۶۰۶ - اجساد سبعہ یعنی ساتوں دھاتوں کا بیان اور یہ کہ پیتل ان میں نہیں کہ مصنوعی چیز ہے۔ | ۲۵۲
• معدنیات میں چار قسمیں ناقص الترکیب ہیں۔ | ۶۱۰ |

- Zaj is not alum. | 654 | The date palm tree possesses a degree of animality, just as coral possesses a degree of plant-like nature. | 687
- An excellent recipe for Gil-e-Hikmat. | (Footnote) 656 | |

- ज़ज फिटकरी नहीं है। | ६५४ | खजूर का पेड़ पशुता का एक अंश रखता है जिस प्रकार मूंगा वृक्षत्व का। | ६८७
- गिल-ए-हिकमत का एक उत्कृष्ट नुस्खा। | (हाशिया) ६५६ | |

- زاج پھٹکری نہیں۔ | ۶۵۴ | کھجور کا درخت ایک حصہ حیوانیت کا رکھتا ہے جس طرح مونگا شجریت کا۔ | ۶۸۷
- گل حکمت کا عمدہ نسخہ۔ | (حاشیہ) ۶۵۶ | |

Fatawa Rizvia, Volume 3

Summary List of Contents of Treatises

Subject	Page	Detailed Points	Page
Three reasons for water no longer remaining absolute	41	Author's unique research on the true nature of liquidity, fluidity, and solidity, which will not be found anywhere else.	55
First reason: Loss of natural state, including four discussions	41	Applications and terminologies of liquidity.	55
Implicit Treatise - "Al-Diqqah wa al-Tabyan li 'Ilm al-Raqqah wa al-Saylan" (Precision and Clarification for the Science of Liquidity and Fluidity) - regarding the meaning of liquidity and fluidity.	41	Author's research that liquidity is of two types: actual and potential. In the discussion of water, potential liquidity is meant.	56
Discussion 1: The meaning of 'nature' and discourse with the two great scholars [Tahtawi and Shurunbulali].	41	Discussion 2: To what extent is liquidity considered valid here? Expressions are presented in three ways, with the author's research and establishment of proof through three premises.	57
Discussion 2: The nature of water is liquidity and fluidity; discourse with Al-Khadimi, Al-Birjandi, and Imam Al-Ayni.	42	Premise 1: Thin liquid is without mass, while thick liquid has mass.	63
Discussion 3: The meaning of liquidity and fluidity, and discourse with Allama Al-Shurunbulali.	50	Premise 2: Meaning of "without mass" and discourse with Majma' al-Anhur, al-Durr, ash-Shami, Miskeen, al-Hamawi, Abu al-Su'ud, al-Ghunya, al-'Inaya, Chalapi, al-Quhistani, al-Birjandi, al-Bahr, al-Tahtawi, 'Abd al-Halim, al-Hilya, ash-Shami, al-Jawhara al-Nayyira, and a rebuttal to al-Lakhnawi.	69

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 3

ग्रंथों की संक्षिप्त विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विस्तृत विवरण	पृष्ठ
पानी के 'आबे मुतलक़' (पूर्णतः शुद्ध) न रहने के तीन कारण।	41	तरलता (liquidity), प्रवाह (flow) और जमने की वास्तविक हकीकत पर लेखक का शोध, जो कहीं और नहीं मिलेगा।	55
पहला कारण: स्वभाव का ह्रास और उसमें चार चर्चाएँ।	41	तरलता के अनुप्रयोग और प्रयोग।	55
एक प्रासंगिक ग्रंथ - "अल-दिक्क़ह व अल-त बयान ली इल्म अर-रक़्क़ह व अस-सैलान" - तरलता और प्रवाह के अर्थ के शोध में।	41	लेखक का शोध कि तरलता दो प्रकार की होती है: वास्तविक और संभावित। पानी की चर्चा में संभावित तरलता अभिप्रेत है।	56
चर्चा 1 - स्वभाव (Nature) का अर्थ और अल्लामा तह्तावी व शुरुनबुलाली के साथ विमर्श।	41	चर्चा 2 - यहाँ किस स्तर की तरलता मान्य है? यहाँ तीन प्रकार के कथन आए हैं और लेखक के शोध व तीन प्रस्तावनाओं के साथ प्रमाण प्रस्तुत करना।	57
चर्चा 2 - पानी का स्वभाव तरलता और प्रवाह है; खादिमी, बिरजंदी और इमाम ऐनी के साथ विमर्श।	42	प्रस्तावना 1 - पतला (रक़ीक़) वह है जिसमें द्रव्यमान (mass) न हो और गाढ़ा (कसीफ़) वह है जिसमें द्रव्यमान हो।	63
चर्चा 3 - तरलता और प्रवाह का अर्थ और अल्लामा शुरुनबुलाली के साथ विमर्श।	50	प्रस्तावना 2 - "बिना द्रव्यमान" से क्या अभिप्राय है और मजमा अल-अन्हुर, दुर, शामी, मिस्कीन, हमवी, अबु सऊद, ग़ुन्या, इनाया, चलपी, कुहिस्तानी, बिरजंदी, बहर, तह्तावी, अब्दुल हलीम, हिलया, शामी, जौहरा नय्यिरा के साथ विमर्श और लखनवी का खंडन।	69

[फ़ूटर लोगो: आई.टी. मजलिस, दावत-ए-इस्लामी] पृष्ठ 34/756

فتاوٰی رضویہ ، جلد سوم

مجمل فہرست مضامین رسائل

عنوان صفحہ		تفصیل صفحہ	
آب مطلق نہ رہنے کے تین سبب	۴۱	رقت اور سیلان اور جامد ہونے کی اصل حقیقت میں مصنف کی تحقیق کہ اور کہیں نہ ملے گی۔	۵۵
سبب اوّل زوالِ طبع اور اس میں چار ابحاث	۴۱	رقت کے اطلاقات۔	۵۵
رسالہ ا ضمنیہ - الدقة والتبیان لعلم الرقة والسیلان - تحقیق معنی رقت و سیلان میں۔	۴۱	مصنف کی تحقیق کہ رقت دو قسم ہے بالفعل اور بالقوہ پانی کی بحث میں بالقوہ مراد ہے۔	۵۶
بحث ۱ - معنی طبیعت والکلام مع العلا متین ط وش۔	۴۱	بحث ۲ - یہاں کس حد کی رقت معتبر ہے، عبارات یہاں تین طرح آئیں اور مصنف کی تحقیق اور اس پر تین مقدمات سے اقامتِ دلیل۔	۵۷
بحث ۲ - پانی کی طبیعت رقت و سیلان ہے والکلام مع الخادمی البرجندی ولا مام العینی۔	۴۲	مقدمہ ۱ - رقیق بے جرم ہے اور کثیف ذی جرم۔	۶۳

عنوان صفحہ		تفصیل صفحہ
		مقدمہ ۲ - بے جرم سے مراد والکلام مع مجمع الانہر
بحث ۳ - معنی رقت و سیلان والکلام مع العلامۃ الشرنبلالی۔	۵۰	والدر والشامی و مسکین والحموی وابی السعود والغنیۃ والعنایۃ و چلپی والقہستانی والبرجندی و البحر ذو الطحطاوی و عبد الحلیم و الحلیۃ والشامی والجوہرۃ النیرۃ والرد علی الکھنوی۔	۶۹

Fatawa-e-Razviya, Volume 3

- Serial 84: Introduction 3 - Investigation of the meaning of 'Raiq'. Solving the problem by the grace of the Almighty and discussion with the two Sayyids, Abi al-Sa'ud and others. (Page 115)
- Serial 86: Verse defining 'Riqat' (thinness). Regarding 'tabkh' (cooking), the author's singular investigation and discussion with Al-Bahr, Al-Nahr, Al-Quhistani, and Al-Khulasa. (Page 120)
- Serial 87: Twenty (20) benefits. Result of the author's refinement (Tanqih al-Musannif). (Page 122)
- Serial 88: Second cause: dominance of others and three discussions therein. Observations on the core texts (mutun) and a comparison of the author. (Page 123)
- Serial 88: Discussion 1: In what matter is dominance intended? Discussion with all people of the rule, general commentators, Al-Shami, Al-'Inaya, Al-Binaya, Ghayat al-Bayan, Multaqa al-Abhur, Al-Fara'id, Majma' al-Anhur, and Al-Qara Baghi. Rule 5: Change of attributes and the texts therein from core works, explaining the intent, and the differences between commentaries. (Page 126)
- Serial 94: Discussion 2: What is meant by dominance of parts and discussion with Al-Shami and Al-Bahr. Discussion on one of the attributes and discussion with Majma' al-Anhur, Al-Khadimi, Al-Tabyin, Al-Fath, Al-Nihaya, Al-'Inaya, Al-Binaya, Al-Diraya, Al-Kifaya, Al-Ghaya, Sa'di, Al-Jawhara, Al-Hilya, Abi al-Sa'ud, Miskeen, and others. (Page 128)
- Serial 101: Discussion 3: Which meaning is preferred among them? Discussion with Al-Jawhara, Al-Ghunia, Majma' al-Anhur, Al-Manba', and others. Rule 6: The saying of Imam Muhammad (may Allah be pleased with him). (Page 140)
- Serial 101: Third cause: Cooking with others. There are two discussions in it: Discussion 1: Expressions of scholars in the school (madhhab) of Muhammad and discussion with Bahr al-'Ulum. (Page 141)
- Serial 101: Discussion 1: Investigation of the author into the reality of cooking and discussion with Al-Shami, Al-'Inaya, Al-Binaya, and Al-Hamawi. Refinement of the author regarding the school of Muhammad and discussion with Al-Jawhara. (Page 151)
- Serial 104: Discussion 2: Why is cooking prohibited and the grand investigation of the author therein, and discussion with Al-Quhistani, Al-Nahr, Al-Hamawi, Abi al-Sa'ud, and Ibn Kamal Pasha. Discussion 2: The effort of the author in

orienting the rulings of Imam Muhammad by citing issues of occurrence of impurity, ablution (wudhu), fasting, and breastfeeding; and discussion with Majma' al-Anhur. (Page 164)

- Serial 112: A strong objection by the author against the wording of 'Al-Hidaya' which commentators did not approach; and discussion with Al-Kifaya, Al-Diraya, Al-Binaya, Ibn al-Shalabi, Al-Duruh, Ta, Sha, and Abdul Halim. The author's answer to the proofs of Muhammad from the side of Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with them both). (Page 171)

फतावा-ए-रज़विया, खंड 3

- क्रम 84: प्रस्तावना 3 - 'रैइक' (Raiq) के अर्थ की तहकीक। अल्लाह की कृपा से कठिनाई का समाधान और दो सैय्यदों, अबी अल-सऊद आदि के साथ चर्चा। (पृष्ठ 115)
- क्रम 86: 'रिकत' (पतलापन) की परिभाषा वाली कविता। 'तब्ख' (पकाना) के बारे में लेखक की एकल तहकीक और अल-बहर, अल-नहर, अल-कुहिस्तानी और अल-खुलासा के साथ चर्चा। (पृष्ठ 120)
- क्रम 87: बीस (20) लाभ। लेखक के शोध का परिणाम (तनक़ीह अल-मुसन्निफ़)। (पृष्ठ 122)
- क्रम 88: दूसरा कारण: दूसरों का प्रभुत्व और इसमें तीन चर्चाएँ। मूल पाठों (मूतून) पर विचार और लेखक की तुलना। (पृष्ठ 123)
- क्रम 88: चर्चा 1: किस मामले में प्रभुत्व अभीष्ट है? नियम के सभी लोगों, सामान्य टीकाकारों, अल-शामी, अल-इनाया, अल-बिनाया, ग़ायत अल-बयान, मुल्ताक़ा अल-अब्हुर, अल-फ़राइद, मजमा अल-अन्हुर और अल-क़रा बाग़ी के साथ चर्चा। नियम 5: गुणों का परिवर्तन और इसमें मूल पाठों के उद्धरण, मंशा का वर्णन और टीकाओं (शुरूवात) के बीच मतभेद। (पृष्ठ 126)
- क्रम 94: चर्चा 2: भागों के प्रभुत्व से क्या अभिप्राय है और अल-शामी और अल-बहर के साथ चर्चा। किसी एक गुण पर चर्चा और मजमा अल-अन्हुर, अल-खादिमी, अत-तबयीन, अल-फतह, अन-निहाया, अल-इनाया, अल-बिनाया, अद-दिराया, अल-किफ़ाया, अल-ग़ाया, सादी, अल-जौहरा, अल-हिलिया, अबी अल-सऊद, मिस्कीन और अन्य के साथ चर्चा। (पृष्ठ 128)
- क्रम 101: चर्चा 3: इनमें से किस अर्थ को प्राथमिकता दी जाती है? अल-जौहरा, अल-गुनिया, मजमा अल-अन्हुर, अल-मनबा आदि के साथ चर्चा। नियम 6: इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन। (पृष्ठ 140)
- क्रम 101: तीसरा कारण: दूसरों के साथ पकाना। इसमें दो चर्चाएँ हैं: चर्चा 1: मुहम्मद के मत (मज़हब) में विद्वानों के कथन और बहर अल-उलूम के साथ चर्चा। (पृष्ठ 141)
- क्रम 101: चर्चा 1: पकाने की वास्तविकता में लेखक की तहकीक और अल-शामी, अल-इनाया, अल-बिनाया और अल-हमवी के साथ चर्चा। मुहम्मद के मत के बारे में लेखक का शोध और अल-जौहरा के साथ चर्चा। (पृष्ठ 151)
- क्रम 104: चर्चा 2: पकाने में निषेध किस कारण से है और इसमें लेखक की महान तहकीक, और अल-कुहिस्तानी, अल-नहर, अल-हमवी, अबी अल-सऊद और इब्न कमाल पाशा के साथ

चर्चा। चर्चा 2: इमाम मुहम्मद के आदेशों को स्पष्ट करने में लेखक का प्रयास, अशुद्धता (नजासत) के होने, वज़ू, रोज़ा और स्तनपान के मुद्दों से प्रमाण देना; और मजमा अल-अन्हुर के साथ चर्चा। (पृष्ठ 164)

- क्रम 112: 'अल-हिदाया' के शब्दों पर लेखक की ओर से एक मजबूत आपत्ति जिसके पास टीकाकार नहीं फटके और अल-किफ़ाया, अद-दिराया, अल-बिनाया, इब्न अल-शलबी, अल-दुरुह, ता, शा और अब्दुल हलीम के साथ चर्चा। इमाम अबू यूसुफ (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की ओर से मुहम्मद के प्रमाणों पर लेखक का उत्तर। (पृष्ठ 171)

पृष्ठ 756 का 35

فتاویٰ رضویہ ، جلد سوم

- ۸۴ : مقدمہ ۳۔ تحقیق معنی ریق۔ حل الاشکال بفضل المتعال والکلام مع السیدین ابی السعود وط۔ (صفحہ ۱۱۵)
- ۸۶ : شعر تعریف رقت۔ درباره طبخ مصنف کی تحقیق مفرد والکلام مع البحر والنهر والقهستاني والخلاصة۔ (صفحہ ۱۲۰)
- ۸۷ : بیس ۲۰ فوائد۔ حاصل تنقیح المصنف (صفحہ ۱۲۲)
- ۸۸ : سبب دوم۔ غلبہ غیر اور اس میں تین ابحاث۔ ارشادات متون پر نظر اور مصنف کا موازنہ۔ (صفحہ ۱۲۳)
- ۸۸ : بحث ۱۔ کس امر میں غلبہ مراد ہے والکلام مع جمیع اهل الضابطة وعامة الشراح والشامی والعنایة والبنایة وغایة البیان وملتقی الابحر والفرائد ومجمع الانهر والقره باغی۔ ضابطہ ۵ تغیر اوصاف اور اس میں عبارات متون اور بیان مراد میں شروح کا اختلاف۔ (صفحہ ۱۲۶)
- ۹۴ : بحث ۲۔ غلبہ اجزا سے مراد والکلام مع الشامی والبحر۔ بحث احد الاوصاف والکلام مع مجمع الانهر والخادمی و التبیین والفتح والنهایة والعنایة والبنایة والدرایة والکفایة والغایة وسعدی والجوهرة والحلیۃ و ابی السعود ومسکین وآخرین۔ (صفحہ ۱۲۸)
- ۱۰۱ : بحث ۳۔ ان میں کس معنی کو ترجیح ہے والکلام مع الجوهرة والغنیة ومجمع الانهر والمنبع وغیرهم۔ ضابطہ ۶۔ قول امام محمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ (صفحہ ۱۴۰)
- ۱۰۱ : سبب سوم۔ طبخ با غیر۔ اس میں دو بحثیں : بحث ۱۔ مذہب محمد میں عبارات علماء والکلام مع بحرالعلوم۔ (صفحہ ۱۴۱)

- ۱۰۱ : بحث ۱۔ طبخ کی حقیقت میں تحقیق مصنف والکلام مع الشامی والعنایة والبنایة والحموی۔ تنقیح المصنف مذہب محمد والکلام مع الجوہرة۔ (صفحہ ۱۵۱)
- ۱۰۴ : بحث ۲۔ طبخ میں منع کس وجہ سے ہے اور اس میں مصنف کی تحقیق جلیل والکلام مع القهستاني والنهر والحموی وابی السعود وابن کمال باشا۔ بحث ۲۔ سعی المصنف فی توجیه احکام الامام محمد الاستشهادله بمسائل وقوع النجاسة والوضوء والصوم والرضاع والکلام مع مجمع الانهر۔ (صفحہ ۱۶۴)
- ۱۱۲ : اشکال قوی للمصنف علی عبارة الهدایة لم یحم حوله الشراح والکلام مع الکفایة والدرایة والبنایة وابن الشلبی والدروح و ط و ش و عبد الحلیم۔ جواب المصنف عن دلائل محمد من قبل الامام ابی یوسف رضی الله تعالیٰ عنهما۔ (صفحہ ۱۷۱)

Fatawa-e-Razvia Volume 3

Chapter Four: Universal Rules

Page 175: Scattered Benefits: Seven precious benefits and discussion with Al-Barjandi, Ibn Turki al-Maliki, Al-Sayyid al-Sharif, and with the virtuous Al-Safati al-Maliki and his teachers in fourteen ways, and with the Shafi'i Imams, Al-Bulqini, Ibn Hajar, and Al-Ramli in six ways, and rebuttal of Gangohi. Page 223: [Reference for Chapter Four]

Page 175: Treatise 2: Husn al-Ta'ammum li-Bayan Hadd al-Tayammum - A book containing peerless, great, and illustrious research on the nature of Tayammum, full of knowledge. Page 311: (1) Rule of Imam Abu Yusuf

Page 176: Six definitions of Tayammum from the words of scholars. Page 312: (2) Rule of Imam Muhammad

Page 176: Definition 1: From Sharh Hidaya and discussion with Allama Shami, Al-Quhistani, Al-Bahr, and Abdul Halim. Page 312: (3) Rule of Allama Barjandi and the author's discussion on it for 19 reasons.

Page 180: Investigation that purity (at-Tuhoor) means cleanser (al-Mutahhir) in Sharia convention by consensus, and discussion with Al-Bahr. Page 318: (Footnote) (4) Rule of Imam Zayla'i and the author's discussion on it for 26 reasons, also discussion with Al-Fath and Al-Tahtawi.

Page 192: Definition 2: From Imam Malik al-Ulama and discussion with the virtuous Abdul Halim, An-Nahr, Ta[hawi], and Sh[ami]. Page 324: Discussion on Bahr al-Ra'iq following the Zayla'i rule and the author's discussion on it for 26 reasons.

Page 203: Investigation of the author and division of 'Sa'id' into literal and figurative. Page 328: Discussion on Allama Shami in this same chapter and author's discussion on it for 12 reasons.

Page 210: Definition 3: From Tanwir al-Absar and discussion with Sh[ami]. Page 331: (5) Rule of Imam Nasafi and the author's endorsement, and that its outcome is the rule of Imam Abu Yusuf, and discussion with Al-Kafi and Al-Kifayah.

Page 212: Definition 4: From Muhaqqiq 'ala al-Itlaq and discussion with Al-Bahr and Ash-Shami. Page 332: (6) Razvi Rule: Author's universal rule which is a comprehensive detail of Imam Abu Yusuf's rule and all correct partial rules.

Page 214: Definition 5: From Allama Ibn Kamal Pasha and discussion on it and with Majma' al-Anhur and Al-Barjandi. Page 333: Chapter Five: New particulars and discussion with Imam Ibn Hajar al-Makki and Allama Shami.

Page 36 of 756

फतावा-ए-रज़विया जिल्द 3

चौथा अध्याय: सार्वभौमिक नियम

पृष्ठ 175: बिखरे हुए लाभ: सात बहुमूल्य लाभ और अल-बर्ज़ंदी, इब्न तुर्की अल-मालिकी, अस-सैय्यद अल-शरीफ़, और गुणी अल-सफ़ाती अल-मालिकी और उनके शिक्षकों के साथ चौदह तरीकों से चर्चा, और शाफ़ई इमामों, अल-बुलकिनी, इब्न हजर, और अल-रमलानी के साथ छह तरीकों से चर्चा, और गंगोही का खंडन। पृष्ठ 223: [चौथे अध्याय के लिए संदर्भ]

पृष्ठ 175: रिसाला 2: हुस्न अल-तअम्मम लि-बयान हद्द अल-तयम्मुम - तयम्मुम की वास्तविकता पर बेमिसाल, महान और शानदार शोध वाली ज्ञान से भरपूर पुस्तक। पृष्ठ 311: (1) इमाम अबू यूसुफ का नियम

पृष्ठ 176: विद्वानों के शब्दों से तयम्मुम की 6 परिभाषाएँ। पृष्ठ 312: (2) इमाम मुहम्मद का नियम

पृष्ठ 176: परिभाषा 1: शरह हिदाया से और अल्लामा शामी, अल-कुहिस्तानी, अल-बहर और अब्दुल हलीम के साथ चर्चा। पृष्ठ 312: (3) अल्लामा बर्ज़ंदी का नियम और उस पर लेखक की 19 कारणों से चर्चा।

पृष्ठ 180: शोध कि शरई परंपरा में पवित्रता (अत-तूहूर) का अर्थ शोधक (अल-मुतहिर) है, और अल-बहर के साथ चर्चा। पृष्ठ 318: (हाशिया) (4) इमाम ज़ैलाई का नियम और उस पर लेखक की 26 कारणों से चर्चा, और अल-फ़तह और अत-तहतावी के साथ भी चर्चा।

पृष्ठ 192: परिभाषा 2: इमाम मलिक अल-उलमा से और गुणी अब्दुल हलीम, अन-नहर, त[हावी] और श[ामी] के साथ चर्चा। पृष्ठ 324: ज़ैलाई नियम के अनुसरण में बहर अल-रायिक पर चर्चा और उस पर लेखक की 26 कारणों से चर्चा।

पृष्ठ 203: लेखक का शोध और 'सईद' का वास्तविक और प्रतीकात्मक विभाजन। पृष्ठ 328: इसी अध्याय में अल्लामा शामी पर चर्चा और लेखक की 12 कारणों से चर्चा।

पृष्ठ 210: परिभाषा 3: तनवीर अल-अबसार से और श[ामी] के साथ चर्चा। पृष्ठ 331: (5) इमाम नसफी का नियम और लेखक का समर्थन, और यह कि इसका परिणाम इमाम अबू यूसुफ का नियम है, और अल-काफी और अल-किफाया के साथ चर्चा।

पृष्ठ 212: परिभाषा 4: मुहक़्क़िक अला अल-इतलाक़ से और अल-बहर और अश-शामी के साथ चर्चा। पृष्ठ 332: (6) रज़वी नियम: लेखक का सार्वभौमिक नियम जो इमाम अबू यूसुफ के नियम और सभी सही आंशिक नियमों का व्यापक विवरण है।

पृष्ठ 214: परिभाषा 5: अल्लामा इब्न कमाल पाशा से और उस पर तथा मजमा अल-अन्हुर और अल-बर्ज़ंदी के साथ चर्चा। पृष्ठ 333: पाँचवाँ अध्याय: नए विवरण और इमाम इब्न हजर अल-मक्की और अल्लामा शामी के साथ चर्चा।

पृष्ठ 36 / 756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

فصل چہارم ضوابط کلیہ

۱۷۵: فوائد منثورہ سات نفیس فائدے والکلام مع البرجندی وابن ترکی المالکی والسید الشریف ومع الفاضل السفطی المالکی وشیوخہ باربعة عشر وجها و مع الائمة الشافعیة والبلقینی وابن حجر والرملی بستة وجوہ والرد علی الکنکوہی۔ ۲۲۳: [فصل چہارم کے لیے حوالہ]

۱۷۵: رسالہ ۲۔ حسن التعمم لبیان حد التیمم بیانِ ماہیت تیمم میں بے مثل عظیم تحقیقات جلیلہ پر مشتمل کتاب کامل النصاب۔ ۳۱۱: (۱) ضابطہ امام ابو یوسف

۱۷۶: کلام علما سے تیمم کی ۶ تعریفیں۔ ۳۱۲: (۲) ضابطہ امام محمد۔

۱۷۶: تعریف ۱۔ از شرح ہدایہ والکلام مع العلامة الشامی والقہستانی والبحر وعبد الحلیم۔ ۳۱۲: (۳) ضابطہ علامہ بر جندی اور انیس ۱۹ وجہ سے اس پر کلام مصنّف۔

۱۸۰: تحقیق ان الطہور بمعنی المطہر فی عرف الشرع بالاجماع والکلام مع البحر۔ ۳۱۸: (حاشیہ) (۴) ضابطہ امام زیلعی اور چھبیس ۲۶ وجہ سے اس پر کلام مصنّف وایضا الکلام مع الفتح والطحطاوی۔

۱۹۲: تعریف ۲۔ از امام ملک العلماء والکلام مع الفاضل عبد الحلیم والنہر وط وش۔ ۳۲۴: ضابطہ زیلعیہ کی تبعیت میں کلام بحر الرائق اور چھبیس ۲۶ وجہ سے اس پر کلام مصنّف۔

۲۰۳: تحقیق المصنّف وتقسیم الصعید الی حقیقی وحکمی۔ ۳۲۸: اسی باب میں کلام علامہ شامی اور بارہ ۱۲ وجہ سے اس پر کلام مصنّف۔

۲۱۰: تعریف ۳۔ از تنویر الابصار والکلام مع ش۔ ۳۳۱: (۵) ضابطہ امام نسفی اور تائید مصنّف اور یہ کہ اس کا مآل ضابطہ امام ابو یوسف ہے والکلام مع الکافی والکفایۃ۔

۲۱۲: تعریف ۴۔ از محقق علی الاطلاق والکلام مع البحر و الشامی۔ ۳۳۲: (۶) ضابطہ رضویہ مصنف کا ضابطہ کلیہ کہ تفصیل ضابطہ امام ابو یوسف اور جمیع ضوابط صحیحہ جزئیہ کا جامع ہے۔

۲۱۴: تعریف ۵۔ از علامہ ابن کمال پاشا والکلام علیہ ومع مجمع الانہر والبر جندی۔ ۳۳۳: فصل پنجم جزئیات جدیدہ والکلام مع الامام ابن حجر المکی والعلامۃ الشامی۔

صفحہ ۳۶ از ۷۵۶

Fatawa Razawiyya, Volume 3

- Page 332: Definition 6 - From texts and discussions on Fazil Yahya, Ibn al-Shalabi, Al-Hilyah, Abdul Halim, and works like Tahtawi (ط) and Shami (ش).
- Page 411: Sub-Treatise 3 - 'Samh al-Nadari fima Yurith al-'Ajz 'an al-Ma' - Nearly 175 scenarios causing inability to use water, with discussions involving Shami, Al-Rahmati, Al-Hilyah, Tahtawi, Al-Inayah, Malik al-Ulama, Al-Bahr, Al-Nahrawani, Al-Su'ud, Al-Dhakhirah, Khizanat al-Muftin, Tatarkhaniyah, Al-Hindiyyah, Al-Khayriyyah, Al-Siraj, Al-Azhari, Al-Maqdisi, Al-Fayd, Al-Durr, Al-Tabyin, Al-Hamawi, and Al-Khaniyah.
- Page 337: A majestic discussion: Are the two strikes the pillars (Arkan) of Tayammum?
- Page 441: Sub-Treatise 4 - 'Al-Zafar li-Qawl Zufar' - Strengthening Imam Zufar's opinion that Tayammum is permissible due to time constraints, with discussions involving Shami, Al-Fath, Al-Hilyah, and Al-Bahr from sixteen perspectives.
- Page 352: 15 Discussions by the Author: Discussions involving Al-Itqani, Al-Bahr, Al-Hilyah, Al-Munawi, Imam Al-Suyuti, the noble Imam Ibn Shuja', Al-Fath, and Al-Khadimi with Imam Al-Asbijabi and those with him from seven aspects; and with Al-Shurunbulali, Al-Azhari, Al-Tah-tawi, Al-Inayah, Al-Jawharah, Al-Halabi, Al-Shami, and Al-Ghunyah.
- Page 441: Section 1 - The agreement of the three Imams with him.
- Page 423: Investigation by the Author: On the meaning of wiping (Mash) and discussions involving Ibn al-Athir, Al-Durr al-Nathir, Majma' al-Bihar, and Al-Qamus.
- Page 444: Section 2 - Jurisprudential branches testifying for him and the choice of the elders for his statement.
- Page 369: Ten benefits for the author's explanation.
- Page 447: Section 3 - Strengthening his proof through an abundance of evidence.
- Page 394: Investigation by the Author: Settlement of an individual case and a thousand-year-old dispute.
- Page 523: Remainder of the explanation of 'Al-Ta'rif al-Razawi' and discussions involving Al-Durr, Shami, and Al-Hilyah.
- Page 394: Investigation by the Author: Dividing Tayammum into 'ma'hud' (known) and 'ghayr ma'hud' (unknown).

- Page 555: Discussions on the intention (niyyah) of Tayammum and discussions involving Shami, Al-Durr, Al-Bahr, Al-Hilyah, Imam Al-Nawawi, and the researcher who left it general.
- Page 410: Seventh Razawi Definition and its explanation based on seven parts.
- Page 579: Sub-Treatise 5 - 'Al-Matar al-Sa'id 'ala Nabt Jins al-Sa'id' - What is meant by 'species of earth' (jins al-ard) and the rare, sublime investigations in it, which by Allah's praise are the author's specialty, consisting of four sections.
- Page 405 (Margin): Investigation by the Author: That a Muslim does not become impure (najis) by death, with discussions involving Al-Fath, Al-Ghunyah, and Al-Shami.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

- पृष्ठ 332: परिभाषा 6 - मूल ग्रंथों से और फाज़िल यह्या, इब्न अल-शल्बी, अल-हिल्या, अब्दुल हलीम, और ततावी (ط) व शामी (ش) जैसे ग्रंथों पर चर्चा।
- पृष्ठ 411: उप-ग्रंथ 3 - 'सम्ह अल-नदारी फ़ीमा यूरिथ अल-अजज़ अन अल-मा' - पानी के उपयोग में असमर्थता पैदा करने वाली लगभग 175 स्थितियां, और शामी, रहमती, हिल्या, तहतावी, इनाया, मलिक अल-उलेमा, बहर, अज़हरी आदि के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 337: एक महान चर्चा: क्या (मिट्टी पर) दो बार हाथ मारना तयम्मुम के स्तंभ (अरकान) हैं?
- पृष्ठ 441: उप-ग्रंथ 4 - 'अल-ज़फर ली-क़ौल ज़ुफ़र' - इमाम ज़ुफ़र के इस कथन को पुख्ता करना कि समय की कमी के कारण तयम्मुम जायज़ है; शामी, फ़तह, हिल्या और बहर के साथ सोलह पहलुओं से चर्चा।
- पृष्ठ 352: लेखक द्वारा 15 चर्चाएँ इतक़ानी, बहर, हिल्या, मुनावी, इमाम सुयूती, महान इमाम इब्न शुजा, फ़तह और खादिमी के साथ इमाम अस्बिजाबी आदि से सात पहलुओं पर चर्चा; और शूरुनबुलाली, अज़हरी, तहतावी, इनाया, जौहरा, हलबी, शामी और गुन्या के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 441: अनुभाग 1 - तीनों इमामों की उनसे सहमति।
- पृष्ठ 423: लेखक द्वारा शोध: 'मसह' (पोंछने) के अर्थ पर, इब्न अल-असीर, दुर्र अल-नसीर, मज्मअ अल-बिहार और अल-क़ामूस के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 444: अनुभाग 2 - इसके पक्ष में गवाही देने वाली फ़िक़्ही शाखाएं और बुज़ुर्गों द्वारा उनके कथन का चुनाव।
- पृष्ठ 369: लेखक के स्पष्टीकरण के लिए दस लाभ।
- पृष्ठ 447: अनुभाग 3 - व्यापक प्रमाणों के साथ उनके साक्ष्य को पुख्ता करना।
- पृष्ठ 394: लेखक का शोध: एक व्यक्तिगत मामले का शोध और हज़ार साल पुराने विवाद का फ़ैसला।
- पृष्ठ 523: 'अत-तारीफ़ अल-रज़वी' की व्याख्या का शेष भाग और दुर्र, शामी व हिल्या के साथ चर्चा।
- पृष्ठ 394: लेखक का शोध: तयम्मुम को 'मअहूद' (ज्ञात) और 'ग़ैर मअहूद' (अज्ञात) में विभाजित करने पर।

- पृष्ठ 555: तयम्मुम की नीयत (इरादे) पर चर्चा और शामी, दुर्र, बहर, हिल्या, इमाम नववी और उस शोधकर्ता के साथ जिसने इसे सामान्य रखा है।
- पृष्ठ 410: सातवीं रज़वी परिभाषा और सात अंशों पर आधारित इसकी व्याख्या।
- पृष्ठ 579: उप-ग्रंथ 5 - 'अल-मतर अल-सईद अला नब्त जिंस अल-सईद' - 'जिंस-ए-अर्द' (पृथ्वी की प्रजाति) किसे कहते हैं और इसमें वे दुर्लभ, उच्च शोध जो अल्लाह की कृपा से लेखक की विशेषता हैं, चार भागों में।
- पृष्ठ 405 (हाशिया): लेखक का शोध: कि मुसलमान मृत्यु से नापाक नहीं होता, फ़तह, गुन्या और शामी के साथ चर्चा।

فتاویٰ رضویہ، جلد سوم

- صفحہ ۳۳۲: تعریف ۶- از متون والکلام علی الفاضل یحیی وابن الشلبی والحلیة وعبدالحلیم و ط وش۔
- صفحہ ۴۱۱: رسالہ ۳ ضمنیہ- سمح النداری فیما یورث العجز عن الماء، پانی سے عجز کی پونے دوسو ۱۷۵ صورتیں والکلام مع ش والرحمتی والحلیة وط والعنایة وملك العلماء والبحر والنهروانی السعودو الذخیرة وخزانة المفتین و التتارخانیة والهندیة والخیریة و السراج و الازهری و المقدسی والفیض والدروالتبیین و الحموی و الخانیة۔
- صفحہ ۳۳۷: مبحث جلیل: هل الضربتان ارکان التیمم (کیا دو ضربیں تیمم کے ارکان ہیں؟)
- صفحہ ۴۴۱: رسالہ ۴ ضمنیہ- الظفر لقول زفر، تقویت قول امام زفر میں کہ تنگی وقت کے سبب تیمم روا ہے والکلام مع ش و الفتح والحلیة ومع البحر بستة عشر وجها۔
- صفحہ ۳۵۲: ۱۵ بحثاً من المصنف: والکلام مع الاتقانی والبحر والحلیة و المناوی والامام السیوطی والامام الاجل ابن شجاع و الفتح والخادمی مع الامام الاسبیجابی و من معه بسبعة وجوه ومع الشرنبلالی والازهری والطحطاوی والعنایة والجوهرة والحلبی والشامی والغنیة۔
- صفحہ ۴۴۱: الجملة ۱- موافقة الائمة الثلثة لہ (تینوں اماموں کی ان سے موافقت)
- صفحہ ۴۲۳: تحقیق المصنف: معنی المسح والکلام مع ابن الاثیر والدرالنثیر و مجمع البحار و القاموس۔
- صفحہ ۴۴۴: الجملة ۲- فروع تشهدلہ و اختیار الکبراء قولہ۔
- صفحہ ۳۶۹: عشر فوائد لتقریر المصنف۔ (مصنف کی تقریر کے دس فوائد)
- صفحہ ۴۴۷: الجملة ۳- تقویت دلیلہ بسعة دلائل (دلائل کی وسعت سے ان کی دلیل کی تقویت)

- صفحہ ۳۹۴: مصنف کی تحقیق: مفرد اور نزاع ہزار سالہ کا فیصلہ۔
- صفحہ ۵۲۳: بقیة شرح التعریف الرضوی: والکلام مع الدر وش والحلیة۔
- صفحہ ۳۹۴: مصنف کی تحقیق: تیمّم کی معہود و غیر معہود کی طرف تقسیم۔
- صفحہ ۵۵۵: مباحث نیة التیمم: والکلام مع ش والدر والبحر والحلیة والامام النووی و المحقق اطلق۔
- صفحہ ۴۱۰: تعریف ہفتم رضوی اور سات جز پر اس کی شرح۔
- صفحہ ۵۷۹: رسالہ ۵ ضمنیہ- المطر السعید علی نبت جنس الصعید، جنس ارض کسے کہتے ہیں اور اس میں وہ نادر تحقیقات رفیعہ کہ بحمدہ تعالیٰ خاص حصہ مصنف ہیں چار مقام پر مشتمل۔
- صفحہ ۴۰۵ (حاشیہ): تحقیق المصنف: ان المسلم لا ینجس بالموت والکلام مع الفتح والغنیة والشامی۔

Volume Three Fatawa Razawiya

579 | First position: Definition of the genus of earth. | 649 | Third position: Those that are not of the genus of earth, and rebuttal to al-Antaki and many physicians. 582 | Meaning of combustion, incineration, softening, melting, impression. Description of their mutual relations. | 658 | Fourth position: Those in which there is disagreement. Discussion on adornment and discussion with al-Birjandi and al-Hilya. 585 | Fourteen different statements of scholars in their explanation and objections in them. Discussion with al-Nafi', al-'Inaya, Akhi Chalapi, al-Bahr, al-Durar, al-Shurunbulali, and al-Azhari. | 664 | Discussion on mud and discussion with al-Birjandi, al-Idah of Imam al-Kirmani, al-Hilya, al-Nahr, al-Ramli, Sh [Sharh], and al-Bahr. 599 | Research and reconciliation from the author. | 674 | Discussion on burnt earth and soil and discussion with al-Bahr. 601 | Four beneficial points from the author. | 676 | Discussion on ashes. 601 | Point 1: The reality and cause of impression/stamping. | 678 | Discussion on baked brick. 602 | Point 2: Detail and research on the effects of fire in bodies. | 681 | Discussion on salty earth and discussion with al-Hilya. 604 | Point 3: Among these effects, what is the original effect of fire and what is subordinate? Discussion with al-Qadi al-Baydawi, and with Sharh al-Maqasid in seven aspects, al-Mawaqif and its commentary in eight aspects, and with Sharh al-Tajrid and Matali' al-Anzar. | 681 | Discussion on salt and discussion with al-Ghaniyya. 611 | Point 4: Among these effects, what is contrary to the nature of earth? Rebuttal to the philosophers. | 683 | Discussion on glass and discussion with 'Ta' [Tahtawi]. 614 | Solution to objections and reconciliation of statements. | 684 | Discussion on litharge (massicot). 616 | The Razawiya statement regarding the definition of the genus of earth. | 684 | Discussion on coral and discussion with al-Fadil Abdul Halim and al-Minah. 617 | A strong doubt and discussion on it. | 688 | Discussion on gold and silver and discussion with al-Quhistani, al-Shami, al-Bahr, al-Tahtawi, al-Fath, al-Durr, and al-Hilya. 628 | Second position: Those things that are from the genus of earth. Rebuttal to al-Antaki, al-Tankabni, some mineralogists, al-Mutarrizi, al-Makhzan, and discussion with al-Hilya, al-Nawazil, Sh, and al-Birjandi. | 695 | The issue of mixed clay and earthenware and discussion with al-Azhari, al-Tahtawi, al-Jawhara, al-Hilya, and with al-Ghaniyya in five aspects.

खंड तीन फ़तावा रज़विया

५७९ | प्रथम स्थिति: पृथ्वी के वर्ग (जीनस) की परिभाषा। | ६४९ | तीसरी स्थिति: वे जो पृथ्वी के वर्ग से नहीं हैं, और अल-अंताकी और कई चिकित्सकों का खंडन। ५८२ | दहन, भस्मीकरण, कोमल होना, पिघलना, छाप के अर्थ। उनके आपसी संबंधों का वर्णन। | ६५८ | चौथी स्थिति: वे जिनमें मतभेद है। श्रृंगार पर चर्चा और अल-बिरजंदी और अल-हिलिया के साथ चर्चा। ५८५ | विद्वानों के स्पष्टीकरण में उनके १४ विभिन्न कथन और उनमें आपत्तियां। अल-नाफी, अल-इनाया, अख़ी चल्पी, अल-बहर, अल-दुरर, अल-शुरुनबुलाली और अल-अज़हरी के साथ चर्चा। | ६६४ | कीचड़ पर चर्चा और अल-बिरजंदी, इमाम अल-किरमानी की अल-ईदाह, अल-हिलिया, अल-नहर, अल-रमली, श [शरह] और अल-बहर के साथ चर्चा। ५९९ | लेखक द्वारा शोध और समाधान। | ६७४ | जली हुई मिट्टी और धूल पर चर्चा और अल-बहर के साथ चर्चा। ६०१ | लेखक द्वारा चार लाभदायक बिंदु। | ६७६ | राख पर चर्चा। ६०१ | बिंदु १: छाप/मुहर लगाने की वास्तविकता और कारण। | ६७८ | पकी हुई ईंट पर चर्चा। ६०२ | बिंदु २: निकायों में अग्नि के प्रभावों का विवरण और शोध। | ६८१ | खारी मिट्टी पर चर्चा और अल-हिलिया के साथ चर्चा। ६०४ | बिंदु ३: इन प्रभावों में क्या अग्नि का मूल प्रभाव है और क्या अधीन है? अल-कादी अल-बैदावी के साथ चर्चा, और सात पहलुओं में शरह अल-मक़ासिद के साथ, आठ पहलुओं में अल-मवाकिफ़ और उसकी व्याख्या के साथ, और शरह अल-तजरीद और मताली अल-अंज़ार के साथ। | ६८१ | नमक पर चर्चा और अल-ग़निय्या के साथ चर्चा। ६११ | बिंदु ४: इन प्रभावों में क्या पृथ्वी की प्रकृति के विपरीत है? दार्शनिकों का खंडन। | ६८३ | कांच पर चर्चा और 'ता' [तहतावी] के साथ चर्चा। ६१४ | आपत्तियों का समाधान और बयानों का सामंजस्य। | ६८४ | मुर्दार संग (लिथार्ज) पर चर्चा। ६१६ | पृथ्वी के वर्ग की परिभाषा के संबंध में रज़विया कथन। | ६८४ | मूंगा पर चर्चा और अल-फाजिल अब्दुल हलीम और अल-मिनह के साथ चर्चा। ६१७ | एक प्रबल संदेह और उस पर चर्चा। | ६८८ | सोने और चांदी पर चर्चा और अल-कुहिस्तानी, अल-शामी, अल-बहर, अल-तहतावी, अल-फतह, अल-दुर्र और अल-हिलिया के साथ चर्चा। ६२८ | दूसरी स्थिति: वे वस्तुएं जो पृथ्वी के वर्ग से हैं। अल-अंताकी, अल-तनकाबनी, कुछ खनिज विज्ञानियों, अल-मुतरीजी, अल-मखजन के साथ खंडन, और अल-हिलिया, अल-नवाज़िल, श और अल-बिरजंदी के साथ चर्चा। | ६९५ | मिश्रित मिट्टी और मिट्टी के पात्र का मुद्दा और अल-अज़हरी, अल-तहतावी, अल-जौहरा, अल-हिलिया और पांच पहलुओं के साथ अल-ग़निय्या के साथ चर्चा।

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

۵۷۹ | مقام اول جنس ارض کی تعریف۔ | ۶۴۹ | مقام سوم۔ وہ کہ جنس ارض سے نہیں والرد علی الانطاکی و کثیر من المتطببین۔ ۵۸۲ | احتراق، ترمد، لین، ذوبان، انطباع کے معنی۔ ان کی باہمی نسبتوں کا بیان۔ | ۶۵۸ | مقام چہارم۔ جن میں اختلاف ہے۔ تز مین کی بحث والکلام مع البر جندی والحلیۃ۔ ۵۸۵ | ان کے بیان میں علماء کی ۱۴ عبارتیں مختلف اور ان میں اشکالات والکلام مع النافع والعنایۃ واخی چلپی والبحر والدرر والشرنبلالی والازھری۔ | ۶۶۴ | کیچڑ کی بحث والکلام مع البر جندی والایضاح الامام الکرمانی والحلیۃ والنھر والر ملی وش والبحر۔ ۵۹۹ | تحقیق و توفیق مصنف سے | ۶۷۴ | زمین و خاک سوختہ کی بحث والکلام مع البحر۔ ۶۰۱ | چار نکتہ افادات مصنف سے | ۶۷۶ | خاکستر کی بحث۔ ۶۰۱ | نکتہ ۱۔ انطباع کی حقیقت و سبب۔ | ۶۷۸ | پکی اینٹ کی بحث۔ ۶۰۲ | نکتہ ۲۔ اجسام میں آثار نار کی تفصیل و تحقیق۔ | ۶۸۱ | زمین شور کی بحث والکلام مع الحلیۃ۔ ۶۰۴ | نکتہ ۳۔ ان آثار میں کیا کیا نار کا اثر اصلی ہے اور کیا کیا تابع والکلام مع القاضی البیضاوی ومع شرح المقاصد بسبعۃ وجوہ والمواقف وشرحھا بثمانیۃ وجوہ ومع شرح التجرید ومطالع الانظار۔ | ۶۸۱ | نمک کی بحث والکلام مع الغنیۃ۔ ۶۱۱ | نکتہ ۴۔ ان آثار میں کیا کیا طبیعت زمین کے مخالف ہے والرد علی الفلاسفۃ۔ | ۶۸۳ | شیشے کی بحث والکلام مع ط ۶۱۴ | حل اشکالات و توفیق عبارات۔ | ۶۸۴ | مردار سنگ کی بحث۔ ۶۱۶ | تعریف جنس ارض میں عبارتِ رضویہ۔ | ۶۸۴ | مرجان کی بحث والکلام مع الفاضل عبدالحلیم والمنح۔ ۶۱۷ | ایک قوی شبہ اور اس پر کلام۔ | ۶۸۸ | سونے چاندی کی بحث والکلام مع القہستانی والشامی والبحر والطحطاوی والفتح والدر والحلیۃ۔ ۶۲۸ | مقام دوم۔ وہ اشیا کہ جنس ارض سے ہیں والرد علی الانطاکی والتنکابنی وبعض الحجریین والمطرزی والمخزن والکلام مع الحلیۃ والنوازل وش

والبرجندى. | ٦٩٥ | مسئله خلط وخزف والكلام مع الازهرى والطحطاوى والجوهرة والحلية ومع الغنية بخمسة وجوه.

Fatawa Rizvia - Volume 3

(Right Main Column) 579: First Station: Definition of the genus 'Earth' (Jins-e-Arz). 584: Meanings of burning (ihtiraq), turning to ashes (tarmud), softness (leen), melting (zuban), and impression (intiba'). Statement of their mutual relations. 585: Fourteen different statements from scholars in their explanation and objections within them. Discussion with Al-Nafi', Al-Inaya, Akhi Chalapi, Al-Bahr, Al-Durar, Al-Shurunbulali, and Al-Azhari. - Investigation and reconciliation by the author. - Four points of benefit from the author: - Point 1: Reality and cause of intiba' (impression). - Point 2: Detail and research on the effects of fire in bodies. - Point 3: In these traces, what is the primary effect of fire and what is secondary? Discussion with Qadi al-Baydawi and Sharh al-Maqasid through seven aspects and Al-Mawaqif and its commentary through eight aspects and with Sharh al-Tajrid and Matali' al-Anzar. - Point 4: In these traces, what is contrary to the nature of earth? Refutation of the philosophers. - Resolution of objections and reconciliation of statements. - Rizvi statement in the definition of the genus earth. - A strong doubt and discussion on it. - Second Station: Those things that are of the genus earth. Refutation of Al-Antaki, Al-Tankabani, and some of Al-Hajriyin, Al-Mutarrizi, and Al-Makhzan. Discussion with Al-Hilya, Al-Nawazil, Sh., and Al-Birjandi.

(Left Main Column) 649 [Page 639]: Third Station: That which is not of the genus earth. Refutation of Al-Antaki and many practitioners of medicine. 582 [Page 658]: Fourth Station: Matters of disagreement. Discussion on 'tazmin' and discussion with Al-Birjandi and Al-Hilya. 585 [Page 662]: Discussion on mud and discussion with Al-Birjandi and clarification of Imam Al-Kirmani and Al-Hilya and Al-Nahr and Al-Ramli, Sh. and Al-Bahr. 599 [Page 674]: Discussion on scorched earth and dust and discussion with Al-Bahr. 601 [Page 676]: Discussion on ashes. 601 [Page 678]: Discussion on baked brick. 602 [Page 681]: Discussion on saline land and discussion with Al-Hilya. 604 [Page 681]: Discussion on salt and discussion with Al-Ghunya. 611 [Page 683]: Discussion on glass and discussion with Ta'. 614 [Page 684]: Discussion on litharge (murdar sang). 616 [Page 684]: Discussion on coral and discussion with Al-Fadil Abdul Halim and Al-Minah. 617 [Page 688]: Discussion on gold and silver and discussion with Al-Quhistani, Al-Shami, Al-Bahr, Al-Tahtawi, Al-Fath, Al-Durr, and Al-Hilya. 628 [Page 695]: Issue of mixing and ceramic (khazaf) and discussion with Al-Azhari, Al-Tahtawi, Al-Jawhara, Al-Hilya, and with Al-Ghunya through five aspects.

फ़तावा रज़विया - जिल्द ३

(दायाँ मुख्य स्तंभ) ५७९: मकाम-ए-अव्वल: 'जिन्स-ए-अर्ज़' (पृथ्वी की श्रेणी) की परिभाषा। ५८४: जलने (एहतेराक), राख बनने (तरमुद), कोमलता (लेन), पिघलने (ज़ोबान) और छाप (इनतेबा) के अर्थ। उनके आपसी संबंधों का वर्णन। ५८५: उनके वर्णन में विद्वानों के १४ विभिन्न कथन और उनमें आपत्तियाँ। अल-नाफ़ी, अल-इनाया, अख़ी चलपी, अल-बहर, अद-दुरर, अश्-शुरुनबुलाली और अल-अज़हरी के साथ चर्चा। - लेखक द्वारा शोध और सामंजस्य। - लेखक की ओर से चार लाभप्रद बिंदु: - नुक्ता १: 'इनतेबा' की वास्तविकता और कारण। - नुक्ता २: पिण्डों में अग्नि के प्रभावों का विवरण और शोध। - नुक्ता ३: इन अवशेषों में अग्नि का मूल प्रभाव क्या है और गौण क्या है? काजी अल-बैदावी के साथ, और शर्ह अल-मकासिद के साथ सात पहलुओं से, और अल-मवाकिफ़ और उसकी व्याख्या के साथ आठ पहलुओं से, और शर्ह अत-तज्रिद और मताली अल-अन्ज़ार के साथ चर्चा। - नुक्ता ४: इन अवशेषों में मिट्टी की प्रकृति के विरुद्ध क्या है? दार्शनिकों का खंडन। - आपत्तियों का समाधान और कथनों का सामंजस्य। - जिन्स-ए-अर्ज़ की परिभाषा में रज़वी कथन। - एक प्रबल शंका और उस पर चर्चा। - मकाम-ए-दुव्वम: वे चीज़ें जो जिन्स-ए-अर्ज़ से हैं। अल-अंताकी, अत-तनकाबनी और कुछ अल-हजरियीन, अल-मुतर्रिज़ी और अल-मख़ज़न का खंडन। अल-हिल्या, अन-नवाज़िल, श., और अल-बिरजंदी के साथ चर्चा।

(बायाँ मुख्य स्तंभ) ६४१ [पृष्ठ ६३१]: मकाम-ए-सुव्वम: वह जो जिन्स-ए-अर्ज़ से नहीं है। अल-अंताकी और कई चिकित्सकों का खंडन। ५८२ [पृष्ठ ६५८]: मकाम-ए-चहारुम: जिनमें मतभेद है। 'तज़मीन' की चर्चा और अल-बिरजंदी और अल-हिल्या के साथ चर्चा। ५८५ [पृष्ठ ६६२]: कीचड़ की चर्चा और अल-बिरजंदी के साथ चर्चा। इमाम अल-किरमानी, अल-हिल्या, अन-नह्र, अर-रम्ली, श. और अल-बहर का स्पष्टीकरण। ५९१ [पृष्ठ ६७१]: झुलसी हुई ज़मीन और धूल की चर्चा और अल-बहर के साथ चर्चा। ६०१ [पृष्ठ ६७६]: राख (खाकस्तर) की चर्चा। ६०१ [पृष्ठ ६७८]: पकी ईंट की चर्चा। ६०२ [पृष्ठ ६८१]: खारी ज़मीन की चर्चा और अल-हिल्या के साथ चर्चा। ६०४ [पृष्ठ ६८१]: नमक की चर्चा और अल-गुनिया के साथ चर्चा। ६११ [पृष्ठ ६८३]: शीशे की चर्चा और ता (ط) के साथ चर्चा। ६१४ [पृष्ठ ६८४]: मुर्दार संग (लिथार्ज) की चर्चा। ६१६ [पृष्ठ ६८४]: मूँगा (मरजान) की चर्चा और अल-फ़ाज़िल अब्दुल हलीम और अल-मिनह के साथ चर्चा। ६१७ [पृष्ठ ६८८]: सोने और चाँदी की चर्चा और अल-कुहिस्तानी, अश्-शामी, अल-बرهان, अत-तहतावी, अल-फ़तह, अद-दुर्र और अल-हिल्या के साथ

चर्चा। ६२८ [पृष्ठ ६९५]: मिश्रण और मिट्टी के पात्रों (ख़ज़फ़) का मसला और अल-अज़हरी, अत-तहतावी, अल-जौहरा, अल-हिल्या और अल-ग़ुनिया के साथ पाँच पहलुओं से चर्चा।

فتاوی رضویہ - جلد سوم

(دایاں کالم) ۵۷۹: مقام اوّل جنس ارض کی تعریف۔ ۵۸۴: احتراق، ترمد، لین، ذوبان، انطباع کے معنی۔ ان کی باہمی نسبتوں کا بیان۔ ۵۸۵: ان کے بیان میں علماء کی ۱۴ عبارتیں مختلف اور ان میں اشکالات والکلام مع النافع والعنایۃ واخی چلپی والبحر والدرر والشرنبلالی والازھری۔ - تحقیق و توفیق مصنف سے۔ - چار نکتہ افادات مصنف سے: - نکتہ ۱۔ انطباع کی حقیقت و سبب۔ - نکتہ ۲۔ اجسام میں آثار نار کی تفصیل و تحقیق۔ - نکتہ ۳۔ ان آثار میں کیا کیا نار کا اثر اصلی ہے اور کیا کیا تابع والکلام مع القاضی البیضاوی ومع شرح المقاصد بسبعۃ وجوہ والمواقف وشرحھا بثمانیۃ وجوہ ومع شرح التجرید ومطالع الانظار۔ - نکتہ ۴۔ ان آثار میں کیا کیا طبیعت زمین کے مخالف ہے والرد علی الفلاسفۃ۔ - حل اشکالات و توفیق عبارات۔ - تعریف جنس ارض میں عبارت رضویہ۔ - ایک قوی شبہ اور اس پر کلام۔ - مقام دوم۔ وہ اشیا کہ جنس ارض سے ہیں والرد علی الانطاکی والتنکابنی وبعض الحجریین والمطرزي والمخزن والکلام مع الحلیۃ والنوازل وش والبرجندي۔

(بایاں کالم) ۶۴۹ [صفحہ ۶۳۹]: مقام سوم۔ وہ کہ جنس ارض سے نہیں والرد علی الانطاکی و کثیر من المتطببین۔ ۵۸۲ [صفحہ ۶۵۸]: مقام چہارم۔ جن میں اختلاف ہے۔ تزمین کی بحث والکلام مع البرجندی والحلیۃ۔ ۵۸۵ [صفحہ ۶۶۲]: کیچڑ کی بحث والکلام مع البرجندی و ایضاح الامام الکرمانی والحلیۃ والنھر والرملي وش والبحر۔ ۵۹۹ [صفحہ ۶۷۴]: زمین و خاک سوختہ کی بحث والکلام مع البحر۔ ۶۰۱ [صفحہ ۶۷۶]: خاکستر کی بحث۔ ۶۰۱ [صفحہ ۶۷۸]: پکی اینٹ کی بحث۔ ۶۰۲ [صفحہ ۶۸۱]: زمین شور کی بحث والکلام مع الحلیۃ۔ ۶۰۴ [صفحہ ۶۸۱]: نمک کی بحث والکلام مع الغنیۃ۔ ۶۱۱ [صفحہ ۶۸۳]: شیشے کی بحث والکلام مع ط۔ ۶۱۴ [صفحہ ۶۸۴]: مردار سنگ کی بحث۔ ۶۱۶ [صفحہ ۶۸۴]: مرجان کی بحث والکلام مع الفاضل عبدالحلیم والمنح۔ ۶۱۷

[صفحہ ۶۸۸]: سونے چاندی کی بحث والکلام مع القہستانی والشامی والبحر والطحطاوی والفتح والدر والحلیۃ۔ ۶۲۸ [صفحہ ۶۹۵]: مسئلہ خلط و خزف والکلام مع الازہری والطحطاوی والجوہرۃ والحلیۃ ومع الغنیۃ بخمسۃ وجوہ۔

Fatawa Ridawiyya Volume Three

| 707 | Remainder of the explanation of Al-Ta'rif al-Ridawi. | 707 | The genus of earth (soil) is never fundamentally used up. | | 708 | Discussion: Tayammum for another and the author's research on it. | 718 | The author's establishment of proofs for this, along with discussions from Al-Burhan, Al-Shurunbulali, Al-Ghunyah, and Al-Bahr. | | 712 | Discussion on the condition of Tayammum being with most of the palm, and discussions from Al-Shami and Al-Hulyah. | 726 | Resolution of doubts and discussion with Al-Shami and the Imams, the Faqih of the Soul (Faqih an-Nafs), Al-Zayla'i, Al-Fath, Al-Hulyah, and Al-Nahr. | | 717 | Supplementary Treatise: Al-Jadd al-Sadid fi Nafi al-Isti'mal 'an al-Sa'id (The Strong Effort in Denying the Use of Earth for multiple Tayammums). | 738 | Discussion on Tayammum using the mosque wall and seven strikes against Gangohi. |

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (खंड तीन)

| ७०७ | बक़िय्या शरह अल-तारीफ़ अल-रज़वी। | ७०७ | जिंस-ए-अर्श (मिट्टी की श्रेणी) अस्लन मुस्तमल (उपयोग किया हुआ) नहीं होती। | | ७०८ | बहस: तयम्मुमुल ग़ैर और इसमें मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़। | ७१८ | मुसन्निफ़ का इस पर दलीलें क़ायम करना और अल-बुरहान, अल-शुरुनबुलाली, अल-गुनिया और अल-बह्र के साथ बहस। | | ७१२ | बहस: तयम्मुम के लिए हथेली के अक्सर हिस्से की शर्त और अल-शामी और अल-हुलिया के साथ कलाम (बहस)। | ७२६ | शुबहात (संदेह) का समाधान और अल-शामी, आइम्मा-ए-फ़क़ीह अन-नफ़्स, अल-ज़ैलाई, अल-फ़तह, अल-हुलिया और अन-नहर के साथ बहस। | | ७१७ | रिसाला ज़िमनिया: अल-जद्द अल-सदीद फ़ी नफ़ील इस्तिमाल अनिल सईद (मिट्टी के इस्तेमाल की नफ़ी में मज़बूत कोशिश)। | ७३८ | मस्जिद की दीवार से तयम्मुम की बहस और गंगोही पर सात ज़र्बे (आघात/प्रहार)। |

فتاوی رضویہ جلد سوم

| ۷۰۷ | بقیہ شرح التعریف الرضوی۔ | ۷۰۷ | جنس ارض اصلا مستعمل نہیں ہوتی۔ | | ۷۰۸ | بحث۔تیمم الغیر وتحقیق المصنف فیہ۔ | ۷۱۸ | مصنف کا اس پر دلیلیں قائم کرنا والکلام مع البرھان والشرنبلالی والغنیۃ والبحر۔ | | ۷۱۲ | بحث اشتراط التیمم بأکثر الکف والکلام مع الشامی والحلیۃ۔ | ۷۲۶ | حل شبہات والکلام مع الشامی والائمۃ فقیہ النفس والزیلعی والفتح والحلیۃ والنھر۔ | | ۷۱۷ | رسالہ ضمنیہ۔الجدّ السدید فی نفی الاستعمال عن الصعید | ۷۳۸ | بحث تیمم بدیوار مسجد اور گنگوہی پر سات ضربیں۔ |

Fatawa Razvia Volume Three

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful.

Supplementary Treatise 1334 AH Al-Diqqah wa al-Tibyan li-Ilm al-Riqqah wa al-Saylan (A Clear Explanation of the Thinness and Fluidity of Water (T))

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful. We praise Him and invoke blessings upon His Noble Messenger.

Now, by the grace of the Almighty Sovereign, Whose glory is exalted, this humble servant shall discuss the three causes and mention the important inquiries related to each. Loss of Nature: There are several inquiries in this regard: First Inquiry: The meaning of 'nature' (tabiyat). I say: By the 'nature of water' is meant that attribute which is essential to its essence and a requirement of its reality, which from the essence...

Page 41 of 756

फ़तावा रिज़विया भाग तीन

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

अनुपूरक ग्रंथ (रिसाला ज़मनिया) 1334 हिजरी अद-दिक्क़त वत-तिबयान लि-इल्म अर-रिक्क़त वस-सयलान (पानी की तरलता और बहाव का स्पष्ट विवरण (त))

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम हम उनकी प्रशंसा करते हैं और उनके महान रसूल पर आशीर्वाद भेजते हैं।

अब यह तुच्छ व्यक्ति, सर्वशक्तिमान सम्राट की कृपा से, जिसकी महिमा बुलंद है, तीन कारणों पर चर्चा करेगा और प्रत्येक से संबंधित महत्वपूर्ण शोधों का उल्लेख करेगा। स्वभाव का ह्रास: इसमें कई शोध हैं: पहला शोध: स्वभाव (तबीयत) का अर्थ। मैं कहता हूँ: पानी के स्वभाव से तात्पर्य उसके उस गुण से है जो अस्तित्व के लिए अनिवार्य है और वास्तविकता की माँग है, जिसका अस्तित्व से...

पेज 756 का 41

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم ط

رسالہ ضمنیہ ۱۳۳۴ھ الدقة والتبیان لعلم الرقة والسیلان (پانی کی رقت و سیلان کا واضح بیان (ت))

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

اب فقیر بتوفیق الملک القدیر عز جلالہ اسبابِ ثلاثہ پر کلام اور ہر ایک کے متعلق ابحاثِ مہمہ ذکر کرے۔ زوالِ طبع اس میں چند ابحاث ہیں : بحثِ اول معنی طبیعت۔ اقول : طبعِ آب سے مراد اس کا وہ وصف ہے کہ لازمِ ذات و مقتضائے ماہیت ہو جس کا ذات سے

صفحہ 41 از 756

Volume Three FATAWA RAZVIYA

Deviation is impossible. Both the Sayyids (Tahawi and Shami) said: Its nature means that characteristic upon which Allah Almighty created it. ^1 (The Sayyids, Tahawi and Shami, said that the nature of water means the characteristic with which Allah Almighty created it. -T)

I say: (1) This includes color, taste, and smell. (I say that this definition includes color, taste, and smell). (2) No one has counted these among the 'nature' (of water). (Although no one has counted these things in the nature of water). And it would follow that (if this definition were correct) it would not be permissible to perform ablution with water that has become stinky or whose color or taste has changed due to long standing, for example, as it would then have left its 'nature'. (From this, it would follow that it is not permissible to perform ablution with such water which has become foul-smelling or whose color and taste have changed due to staying for a long time, because because of this it has departed from its nature).

(3) And this is against the consensus of those whose opinion is reliable. (While this matter is against the credible consensus). Similarly, it is rejected by the consensus of our companions (Hanafis) mentioned in research 116. (And likewise, this point is rejected by the consensus of our companions (Hanafis), as mentioned in discussion 116). From such [premises], many absurdities would follow. (Many such absurdities would necessarily follow. -T)

Second Research: Defining the nature of water. The majority of scholars have interpreted it as (1) thinness and fluidity, and this is correct. [Al-Idhah] and [Al-Arf]. One of these absurdities is that it would follow that performing ablution with hot or cold water is not permissible, even if it became cold by the effect of wind, because it no longer remains on the characteristic upon which it was created. (Among these impossibilities is one that it would follow that hot or cold water, even if it became cold by the air, performing ablution with it would not be permissible because in such a case it can be said that this water has departed from its original nature because it no longer remained on that characteristic upon which it was created. Or we can say that the creation of water was hot, or cold, or moderate. Whichever is determined, performing ablution in the other two cases would not be permissible).

Unless it is said that the intended 'characteristics' are only three, for they are the ones commonly understood among them when describing water. (Unless it is said that the nature of water consists only of three characteristics: color, smell, and taste, and no

other characteristics like hot, cold, etc., are credible because these three characteristics of water are well-known. The reason for this is that whenever characteristics of water are mentioned, it is these three characteristics that are commonly understood. 12 From him, may he be forgiven. (T))

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi, Egypt 1/125. Page 42 of 756

खंड तीन फ़तावा रज़विया

विचलन असंभव है। दोनों सैयदों (तहावी और शामी) ने कहा: इसकी प्रकृति का अर्थ वह विशेषता है जिस पर अल्लाह सर्वशक्तिमान ने इसे बनाया है। ^1 (सैयद तहावी और सैयद शामी ने कहा कि पानी की प्रकृति का अर्थ है वह विशेषता जिसके साथ अल्लाह सर्वशक्तिमान ने पानी को बनाया है। -त)

मैं कहता हूँ: (1) इसमें रंग, स्वाद और गंध शामिल है। (मैं कहता हूँ कि यह परिभाषा रंग, स्वाद और गंध पर आधारित है)। (2) किसी ने भी इन्हें प्रकृति में नहीं गिना है। (हालाँकि किसी ने भी इन चीज़ों को पानी की प्रकृति में नहीं गिना है)। और इससे यह आवश्यक होगा कि (यदि यह परिभाषा सही होती) ऐसे पानी से वज़ू करना जायज़ न हो जो बदबूदार हो गया हो या जिसका रंग या स्वाद लंबे समय तक रखे रहने के कारण बदल गया हो, क्योंकि तब वह अपनी प्रकृति से बाहर हो गया होगा। (इससे तो यह लाज़िम आता है कि ऐसे पानी से वज़ू जायज़ न हो जो बदबूदार हो चुका हो या ज़्यादा देर पड़े रहने की वजह से जिसका रंग और स्वाद बदल चुका हो क्योंकि इस वजह से वह पानी अपनी प्रकृति से बाहर हो चुका है)।

(3) और यह उन लोगों के आम सहमति (इज्मा) के खिलाफ है जिनकी राय विश्वसनीय है। (हालाँकि यह बात विश्वसनीय इज्मा के खिलाफ है)। इसी तरह, यह हमारे साथियों (हनफियों) की उस इज्मा से भी खारिज है जिसका उल्लेख शोध 116 में किया गया है। (और इसी तरह यह बात हमारे असहाब (हनफियों) के इज्मा जिसका ज़िक्र बहस 116 में हो चुका है, से मरदूद (अस्वीकृत) है)। ऐसी [धारणाओं] से कई असंगतियाँ पैदा होंगी। (इस तरह के बहुत से इस्तहालात (असंगतियाँ) लाज़िम आएँगे। -त)

दूसरा शोध: पानी की प्रकृति का निर्धारण। अधिकांश विद्वानों ने इसकी व्याख्या (1) तरलता और प्रवाह के रूप में की है और यही सही है। [अल-इज़ाह] और [अल-अर्फ़]। इन असंगतियों में से एक यह है कि यह आवश्यक होगा कि गर्म या ठंडे पानी से वज़ू करना जायज़ न हो, चाहे वह हवा के प्रभाव से ठंडा हो गया हो, क्योंकि वह अब उस विशेषता पर नहीं रहा जिस पर उसे बनाया गया था। (इन मुहालात (असंभव बातों) में से एक यह कि लाज़िम आएगा कि गर्म या ठंडा पानी, चाहे हवा से ठंडा हो, से वज़ू जायज़ न हो क्योंकि ऐसी सूरत में यह कहा जा सकता है कि यह पानी अपनी असली प्रकृति से बाहर हो चुका है क्योंकि उस वस्फ़ (विशेषता) पर बाकी न रहा जिस पर इसको पैदा किया

गया था। या हम यों कह सकते हैं कि पानी की पैदाइश गर्म थी या सर्द थी या मोतदिल (मध्यम) थी। जो भी करार दी जाए तो दूसरी दो सूरतों में वज़ू जायज़ न होगा।)

जब तक कि यह न कहा जाए कि 'विशेषताओं' से तात्पर्य केवल तीन हैं, क्योंकि पानी के गुणों का उल्लेख करते समय आमतौर पर उन्हीं को समझा जाता है। (ताकि यह यों कहा जाए कि पानी की प्रकृति सिर्फ़ तीन वस्फ़ रंग, बू और ज़ायका हैं और कोई वस्फ़ गर्म, सर्द वगैरह मोतबर नहीं है क्योंकि पानी के यही तीन वस्फ़ मुतारफ़ (प्रचलित) हैं। इसकी वजह यह है कि पानी के जो औसाफ़ (गुणों) का जब ज़िक्र होता है तो यही तीनों औसाफ़ मुतारफ़ होते हैं। 12 मिन्हु गफ़र-लहु (त))

---

1. रद अल-मुह्तार, पानी का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र 1/125। पृष्ठ 42/756

جلد سوم فتاوی رضویہ تخلف ممتنع ہو وقال السیدان ط و ش طبعه ای وصفه الذی خلق الله تعالیٰ علیہ ۱۸ (سید طحطاوی اور سید شامی نے فرمایا پانی کی طبیعت یعنی اس کا وہ وصف جس پر اللہ تعالیٰ نے پانی کو پیدا کیا ہے۔ت

اقول: (۱) هذا یشمل اللون والطعم والریح (میں کہتا ہوں کہ یہ تعریف رنگ، ذائقہ اور بو پر مشتمل ہے) ولم یعدها احد من الطبع (۲) ویلزمه ان (حالانکہ کسی نے ان چیزوں کو پانی کی طبیعت میں شمار نہیں کیا) لایجوز الوضوء بما انتن اوتغیر لونه او طعمه (کیا اس سے تو یہ لازم آتا ہے کہ ایسے پانی سے وضو جائز نہ ہو) بطول المکث مثلا لخروجه اذن عن طبع الماء (جو بدبودار ہو چکا ہو یا زیادہ دیر پڑے رہنے کی وجہ سے اس کا) رنگ اور ذائقہ تبدیل ہو چکا ہو کیونکہ اس وجہ سے وہ پانی اپنی وھو خلاف اجماع من یعتدبه (۳) وکذا یرده (طبیعت سے خارج ہو چکا ہے حالانکہ یہ بات معتبر اجماع کے خلاف ہے) اجماع اصحابنا المذکور فی الی غیر ذلك من (اور یوں ہی یہ بات ہمارے اصحاب (احناف) کے اجماع جس کا ذکر بحث ۱۱۶ میں ہو چکا ہے، سے مردود ہے،) الاستحالات۔ (اس قسم کے بہت سے استحالات لازم آئیں گے۔ت)

بحث دوم: طبع آب کی تعیین، عامہ علماء نے اسے رقت(۱) وسیلان سے تفسیر کیا اور یہی صحیح ہے الایضاح و عه منهما ان لایجوز الوضوء بماء حار ولابارد ولو (ان محالات میں سے ایک یہ کہ لازم آئے گا کہ گرم یا ٹھنڈا پانی،) باثر ریح لانه لم یبق علی وصفه الذی خلق علیه (خواہ ہوا سے سرد ہو، سے وضو جائز نہ ہو کیونکہ ایسی صورت میں) ونقول لایخلوان الماء بدو خلقه حارا او باردا (یہ کہا جاسکتا ہے کہ یہ پانی اپنی اصلی طبیعت سے خارج ہو چکا ہے) او معتدلا و ایا ما کان لم یجز الوضوء بالباقیین الا (کیونکہ اس وصف پر باقی نہ رہا جس پر اس کو پیدا کیا گیا تھا یا ہم یوں کہہ سکتے ہیں کہ پانی کی پیدائش گرم تھی یا سرد تھی یا معتدل تھی) ان یقال ان المراد

بالوصف الثلثة لاغير فانها هی (جو بھی قرار دی جائے تو دوسری دو صورتوں میں وضو جائز نہ ہوگا تا) المتعارف فیما بینهم عند اطلاق اوصاف الماء ۱۲ (یہ کہ یوں کہا جائے کہ پانی کی طبیعت صرف تین وصف رنگ،) منه غفرلہ۔ (م) (بو اور ذائقہ ہیں اور کوئی وصف گرم، سرد وغیرہ معتبر نہیں ہے کیونکہ پانی کے یہی تین وصف متعارف ہیں اس کی وجہ یہ ہے کہ پانی کے جو اوصاف کا جب ذکر ہوتا ہے تو یہی تینوں اوصاف متعارف ہوتے ہیں ۱۲ منہ غفرلہ (ت))

---

[1]^8 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۲۵ Page 42 of 756

Fatawa Rizvia - Volume 3

It is stated in Bahr, Sadr al-Shari'ah, Shalabi, Majma' al-Anhur, Imdad al-Fattah, and many other books: "It is thinness and flowing"[1] (The nature of water is thinness and flowing. - Translator). Similarly, the benefit of many words in these branches is gained from Fath etc.

[Table Content] (Arabic side): As it appears from reviewing what preceded, Al-Qahistani and Abd al-Halim restricted themselves to thinness, and Al-Ghunyah followed this when mentioning the rule as mentioned earlier. You can see it is the gist of the majority's speech in the branches if you remember what passed. I say: This is good and sound because of our premise that thinness necessitates flowing. Some restricted themselves to flowing, such as Az-Zaylai, Al-Hilyah, and Al-Durar when mentioning the rule. I say: This can be interpreted as the known flowing of water, which necessitates thinness. This is supported by Al-Ghunyah's statement "its nature is speed"[2] etc. So these paths lead to a single outcome, but there are those that differ. In Al-Durr and Al-Durar, "its nature is flowing, quenching, and growth"[3] etc. Similarly, in Chalabi on Sadr al-Shari'ah. Al-Wani restricted himself to growth in the commentary on Al-Durar from the latter two. Nuh Effendi said, then Al-Sayyid al-Azhari, then 'Ta' (Tahtawi), then 'Shin' (Shami) restricted themselves to it because it necessitates quenching, not vice versa. For...

(Urdu side): As it appears in view of the previous discussions, Qahistani and Abd al-Halim have considered only thinness to be the nature of water. Al-Ghunyah has also adopted this while mentioning the rule, as passed in discussion 278. And when you remember the previous discussions, you will know that the gist of the speech of most scholars is this. I say that this is a beautiful reasoning because we have mentioned earlier that thinness necessitates flowing. And some scholars have only considered flowing as the nature of water, as Az-Zaylai and Al-Hilyah have said, and Ad-Durar has mentioned it in the rule. (Translator) I say that this statement can be interpreted as the specific flowing of water because this flowing necessitates thinness. Al-Ghunyah's statement points to this, in which they said that the nature of water is to flow quickly. All these paths refer to the same thing, but here there is also a contrary opinion, as in Al-Durr and Al-Durar, that the nature of water is flowing, quenching, and growth. And it is similar in Chalabi's commentary on Sadr al-Shari'ah. And in the commentary of Al-Durar, Al-Wani has only taken "inbat" (causing growth). Nuh Effendi, then Sayyid al-Azhari, and then Tahtawi [followed this].

[Footnotes]: 1. Shalabi on Al-Tabyin, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/19 2. Ghunyah al-Mustamli, Ahkam al-Miyah, Sohail Academy, Lahore, p. 90 3. Durr-e-Mukhtar, Bab al-Miyah, Mujtabai, Delhi, 1/7

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

बहर, सदरुश्शरिया, शलबी, मजमउल अनहुर, इमदादुल फ़त्ताह और कई अन्य किताबों में है: "यह तरलता और प्रवाह है"[1] (पानी की प्रकृति तरलता और प्रवाह है। - अनु.)। इसी तरह फ़तह आदि से इन उपशाखाओं में बहुत से शब्दों का लाभ प्राप्त होता है।

[तालिका सामग्री] (अरबी पक्ष): जैसा कि जो कुछ पहले बीत चुका है उसकी समीक्षा करने से स्पष्ट होता है, कहिस्तानी और अब्दुल हलीम ने स्वयं को तरलता तक सीमित रखा है, और गुन्या ने नियम का उल्लेख करते समय इसी का अनुसरण किया जैसा कि पहले बताया गया है। यदि आप बीते हुए को याद रखें तो आप देखेंगे कि शाखाओं में बहुसंख्यक विद्वानों के कथन का सारांश यही है। मैं कहता हूँ: यह हमारे इस आधार के कारण अच्छा और तर्कसंगत है कि तरलता प्रवाह को आवश्यक बनाती है। कुछ ने स्वयं को प्रवाह तक सीमित रखा, जैसे कि ज़ैलई, हिलया, और नियम का उल्लेख करते समय दुरर। मैं कहता हूँ: इसे पानी के ज्ञात प्रवाह के रूप में समझा जा सकता है, जो तरलता को आवश्यक बनाता है। गुन्या का कथन "इसकी प्रकृति गति है"[2] आदि इसका समर्थन करता है। अतः ये मार्ग एक ही परिणाम की ओर ले जाते हैं, लेकिन कुछ भिन्न मत भी हैं। अल-दुर और अल-दुरर में, "इसकी प्रकृति प्रवाह, तृप्ति और विकास है"[3] आदि। इसी तरह सदरुश्शरिया पर चलपी में। अल-वानी ने बाद के दो में से अल-दुरर की व्याख्या में स्वयं को केवल विकास (उगाना) तक सीमित रखा। नूह अफ़ंदी ने कहा, फिर सैय्यद अज़हरी, फिर 'त' (तहतावी), फिर 'श' (शामी) ने स्वयं को इसी तक सीमित रखा क्योंकि यह तृप्ति को आवश्यक बनाता है, न कि इसके विपरीत। क्योंकि...

(उर्दू पक्ष): जैसा कि पिछली चर्चाओं के आलोक में स्पष्ट होता है, कहिस्तानी और अब्दुल हलीम ने केवल तरलता को पानी की प्रकृति माना है। गुन्या ने भी नियम का उल्लेख करते हुए इसे ही अपनाया है, जैसा कि चर्चा 278 में गुजरा। और जब आप पिछली चर्चाओं को याद करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि अधिकांश विद्वानों के कथन का सारांश यही है। मैं कहता हूँ कि यही सुंदर तर्क है क्योंकि हमने पहले उल्लेख किया है कि तरलता प्रवाह को आवश्यक बनाती है। और कुछ विद्वानों ने केवल प्रवाह को पानी की प्रकृति माना है, जैसा कि ज़ैलई और हिलया ने कहा है, और दुरर ने नियम में इसका उल्लेख किया है। (अनु.) मैं कहता हूँ कि इस कथन को पानी के विशिष्ट प्रवाह पर लागू किया जा सकता है क्योंकि यह प्रवाह तरलता को आवश्यक बनाता है। गुन्या का यह कथन इस ओर संकेत करता है जिसमें उन्होंने कहा है कि पानी की प्रकृति जल्दी बहना है। ये सभी मार्ग एक ही चीज़ की

ओर ले जाते हैं, लेकिन यहाँ उनके विपरीत मत भी हैं जैसा कि दुर और दुरर में है कि पानी की प्रकृति प्रवाह, तृप्ति और उगाना है। और सदरुश्शरिया के हाशिए पर चलपी में भी इसी तरह है। और दुरर के हाशिए में अल-वानी ने केवल 'इन्बात' (उगाना) को लिया है। नूह अफ़ंदी, फिर सैय्यद अज़हरी और फिर तहतावी [ने ऐसा ही किया]।

[पादलेख]: 1. शलबी अलत-तबीन, किताबुल तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक़, मिस्र, 1/19 2. गुन्या अल-मुस्तमली, अहकामुल मियाह, सोहैल एकेडमी, लाहौर, पृष्ठ 90 3. दुर्रे मुख्तार, बाबुल मियाह, मुजतबाई, दिल्ली, 1/7

فتاوٰی رضویہ جلد سوم بحر و صدرالشریعۃ و شلبیہ و مجمع الانہر و امداد الفتاح و غیر ہا کتب کثیرہ میں ہے ھو الرقۃ والسیلان[1] (طبع آب رقت و سیلان ہے۔ ت) اسی طرح فتح وغیرہ سے مستفاد یہی فروع میں بہت کلمات کا مفاد،

کما یظھر بمراجعۃ ما تقدم واقتصر القھستانی و عبدالحلیم علی الرقۃ وعلیہ مشی فی الغنیۃ عند ذکر الضابطۃ کمامر فی وتراہ مفاد کلام الاکثرین فی الفروع اذا تذکرت ماسلف اقول: وھو حسن وجیہ لمقدمنا ان الرقۃ تستلزم السیلان ومنھم من اقتصر علی السیلان کالزیلعی والحلیۃ جوالدرر في ذکر الضابطۃ۔ اقول: یحمل علی السیلان المعھود من الماء فیستلزم الرقۃ یدل علیہ قول الغنیۃ طبعہ سرعۃ[2] آہ فھذہ مسالك تؤول الی شيء واحد لکن ثمہ ما یخالفھا ففی الدر والدرر طبعہ السیلان والارواء والانبات[3] اھ۔ ومثلہ فی چلپی علی صدرالشریعۃ واقتصر علیہ الوانی في حاشیۃ الدرر من الاخیرین علی الانبات قال نوح افندی ثم السید الازھری ثم ط ثم ش اقتصر علیہ لاستلزمہ الارواء دون العکس فان

جیسا کہ گزشتہ بحثوں کے پیش نظر ظاہر ہوتا ہے قہستانی اور عبدالحلیم نے صرف رقت کو پانی کی طبیعت قرار دیا ہے ، غنیہ نے بھی ضابطہ کو ذکر کرتے ہوئے اسی کو اپنایا ہے جیسا کہ بحث ۲۷۸ میں گزرا، اور جب گزشتہ ابحاث کو تو یاد کرے تو تجھے معلوم ہوگا کہ اکثر حضرات کے کلام کا ماحصل یہی ہے۔ میں کہتا ہوں کہ یہی خوبصورت وجہ ہے کیونکہ ہم نے پہلے ذکر کیا ہے کہ رقت سیلان کو مستلزم ہے ، اور بعض حضرات نے صرف سیلان کو پانی کی طبیعت قرار دیا ہے جیسا کہ زیلعی اور حلیہ نے کہا ہے اور درر نے اس کو ضابطہ میں ذکر کیا ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں کہ اس قول کو پانی کے معینہ سیلان پر محمول کیا جاسکتا ہے کیونکہ یہ سیلان رقت کو مستلزم ہے اس پر غنیہ کا یہ قول دلالت کرتا ہے جس میں انہوں نے کہا ہے کہ پانی کی طبیعت جلد

بہنا ہے اھ یہ تمام مسالک ایک ہی چیز کی طرف راجع ہیں مگر یہاں ان کے مخالف بھی قول ہے جیسا کہ دُر اور دُرر میں ہے کہ پانی کی طبیعت سیلان ، سیرابی ، اور اگانا ہے۔ اور صدر الشریعہ کے حاشیہ پر چلپی میں بھی اسی طرح ہے اور دُرر کے حاشیہ میں الوانٰی نے صرف انبات (اگانے) کو ہی لیا ہے ، نوح آفندی پھر سید ازہری اور پھر طحطاوی

1 شلبیہ علی التبیین کتاب الطہارۃ الامیر یہ بولاق مصر ۱۹/۱ 2 غنیہ مستملی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۰ 3 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۷/۱ Page 43 of 756

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

[Table Content] Arabic Text (Left Column): Drinks quench thirst but do not cause growth.1 (End of quote). In Al-Jawhara, it is stated that its nature is thinness and flow, and it calms thirst.2 (End of quote). In Khizanat al-Muftin, from Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar: The nature of water is being liquid, moistening, and calming thirst.3 (End of quote). In Maraqi al-Falah, its nature is thinness, flow, quenching thirst, and growth.4 (End of quote). As-Sayyid At-Tahtawi said in his marginalia: Thinness and flow - he restricted it to these two in the commentary 'عه', and this is the apparent view because the latter two do not occur [consistently].

Urdu Translation/Commentary (Right Column): And Shami has said that Alwani only took 'growth' because growth necessitates quenching thirst, but quenching thirst does not necessitate growth, for syrups quench thirst but do not cause growth. (End of quote). And in Jawhara it is stated that the nature of water is thinness, flow, and quenching thirst. (End of quote). And in Khizanat al-Muftin, it is narrated from Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar that the nature of water is being liquid, moistening, and quenching thirst. (End of quote). And in Maraqi al-Falah it is [stated]...

[Commentary Section] Arabic (Left Column): عه I say: (1) It is strange that Al-Binaya restricted itself to quenching thirst, as it said: The nature of water is its being thirst-quenching because it cuts off thirst. It was also said: the power of its penetration.5 (End of quote). I say: This is the result of its thinness and flow. (2) So it is strange to weaken this and choose a nature that has no connection here. It was said: its being colorless.6 (End of quote). I say: This is contrary to what is observed and well-known. (3) And the mention of water's color appears in books (4) and it has come...

Urdu (Right Column): I say: It is surprising that Binaya only relied on quenching thirst where they said that the nature of water is to quench thirst because thirst is quenched by it, and they said some have said it's the power of water's penetration. (End of quote). I say that this is a matter of water's thinness and flow; making it weak and stating such a thing as its nature which has no connection here is surprising. They also said some stated the nature of water is being colorless (without color). (End of quote). I say that this is contrary to both observation and fame, and the color of water is mentioned repeatedly in books. (Continued on next page).

Footnotes: 1 Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/125 2 Al-Jawhara al-Nayyira, Book of Purification, Imdadia Multan, 1/13 3 Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar, On the Permissibility of Purification with Water, Mustafa al-Bani Egypt, 1/13 4 Maraqi

al-Falah, Book of Purification, Al-Amiriyya Egypt, p. 15 5 Al-Binaya, Chapter on Water with which Wudu is Permissible, Al-Maktaba al-Imdadia Makkah al-Mukarramah, 1/188 6 Al-Binaya, Chapter on Water with which Wudu is Permissible, Al-Maktaba al-Imdadia Makkah al-Mukarramah, 1/188

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ (बायां कॉलम): पेय प्यास बुझाते हैं लेकिन वृद्धि (वनस्पति की) नहीं करते।1 (उद्धरण समाप्त)। और अल-जौहरा में है कि इसकी प्रकृति पतलापन और प्रवाह है, और यह प्यास को शांत करता है।2 (उद्धरण समाप्त)। ख़िज़ानतुल मुफ़्तीन में अल-इख़्तियार शरह अल-मुख़्तार से उद्धृत है: पानी की प्रकृति तरल होना, नम करना और प्यास शांत करना है।3 (उद्धरण समाप्त)। मराक़ी अल-फ़लाह में है कि इसकी प्रकृति पतलापन, प्रवाह, प्यास बुझाना और वृद्धि करना है।4 (उद्धरण समाप्त)। अस-सैय्यद अत-तहतवी ने अपने हाशिए में कहा: पतलापन और प्रवाह - उन्होंने भाष्य 'عه' में इन दो तक ही सीमित रखा, और यही स्पष्ट दृष्टिकोण है क्योंकि बाद वाले दो (हमेशा) नहीं होते।

उर्दू अनुवाद/भाष्य (दायां कॉलम): और शामी ने कहा है कि अलवानी ने इसलिए केवल वृद्धि (इनबात) को लिया है और प्यास बुझाने (सैरबी) का विचार नहीं किया क्योंकि वृद्धि के लिए प्यास बुझना आवश्यक है, लेकिन प्यास बुझने के लिए वृद्धि आवश्यक नहीं है, क्योंकि शरबत प्यास तो बुझाते हैं लेकिन वृद्धि नहीं करते। (उद्धरण समाप्त)। और जौहरा में है कि पानी की प्रकृति पतलापन, प्रवाह और प्यास बुझाना है। (उद्धरण समाप्त)। और ख़िज़ानतुल मुफ़्तीन में अल-इख़्तियार शरह अल-मुख़्तार से मन्क़ूल है कि पानी की प्रकृति तरल, नम करना और प्यास बुझाना है। (उद्धरण समाप्त)। और मराक़ी अल-फ़लाह में है...

[भाष्य अनुभाग] अरबी (बायां कॉलम): عه मैं कहता हूँ: (1) यह आश्चर्य की बात है कि अल-बिनाया ने खुद को केवल प्यास बुझाने तक सीमित रखा, जहाँ उसने कहा: पानी की प्रकृति इसका प्यास बुझाने वाला होना है क्योंकि यह प्यास को खत्म करता है। यह भी कहा गया: इसकी पैठ (मर्मज्ञता) की शक्ति।5 (उद्धरण समाप्त)। मैं कहता हूँ: यह इसके पतलेपन और प्रवाह का परिणाम है। (2) इसलिए इसे कमज़ोर बताना और ऐसी प्रकृति चुनना जिसका यहाँ कोई संबंध नहीं है, आश्चर्यजनक है। कहा गया: इसका रंगहीन होना।6 (उद्धरण समाप्त)। मैं कहता हूँ: यह जो देखा गया है और जो प्रसिद्ध है, उसके विरुद्ध है। (3) और किताबों में पानी के रंग का उल्लेख मिलता है (4) और यह आया है...

उर्दू (दायां कॉलम): मैं कहता हूँ: ताज्जुब है कि बिनाया ने सिर्फ सैराबी (प्यास बुझाने) पर इक्तिफ़ा किया है जहाँ उन्होंने कहा है कि पानी की तबियत सैराब करना है क्योंकि इससे प्यास बुझती है और उन्होंने कहा कि बाज़ ने पानी की कुव्वत-ए-सरायत (पैठ की शक्ति) को कहा है। (उद्धरण समाप्त)।

मैं कहता हूँ कि यह तो पानी की रिक़्क़त (पतलापन) और सैलान (प्रवाह) का मामला है, इसको कमज़ोर बनाना और ऐसी चीज़ को तबियत बताना जिसका यहाँ कोई ताल्लुक़ नहीं है, ताज्जुब अंगेज़ बात है। उन्होंने यह भी कहा है कि बाज़ ने पानी की तबियत ग़ैर-मुतलोव्वन (बेरंग) होना बताया है। (उद्धरण समाप्त)। मैं कहता हूँ कि यह बात मुशाहिदे (अवलोकन) और शोहरत दोनों के खिलाफ है, और कुतुब (किताबों) में पानी के रंग का बार-बार ज़िक्र है। (बाकी अगले पृष्ठ पर)।

पादलेख (Footnotes): 1 रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुज्तबाई दिल्ली, 1/125 2 अल-जौहरा अन-नैय्यिरा, किताबुत तहारत, इमदादिया मुल्तान, 1/13 3 इख़्तियार शरह मुख़्तार, बजवाज़ुत तहारत फिल मा, मुस्तफ़ा अल-बानी मिस्र, 1/13 4 मराक़ी अल-फ़लाह, किताबुत तहारत, अल-अमीरिया मिस्र, पृ. 15 5 अल-बिनाया, बाब अल-मा अल्लज़ी यज़ूज़ु बिहिल वुज़ू, अल-मक़्तबतुल इमदादिया मक्का अल-मुकर्रमा, 1/188 6 अल-बिनाया, बाब अल-मा अल्लज़ी यज़ूज़ु बिहिल वुज़ू, अल-मक़्तबतुल इमदादिया मक्का अल-मुकर्रमा, 1/188

पृष्ठ 44 / 756

[ٹیبل کا مواد] عربی عبارت (بایاں کالم): الاشربة تروی ولاتنبت 1 اه وفي الجوهرة طبعه الرقة والسيلان وت سكن العطش 2 اه وفي خزانة المفتين عن الاختيار شرح المختار طبع الماء كونه سيالا مرطبا مسكنا للعطش 3 اه وفي مراقى الفلاح طبعه هو الرقة والسيلان والارواء والانبات 4 اه قال السيد ط في حاشيته الرقة والسيلان اقتصر عليهما في الشرح عه وهو الظاهر لان الاخيرين لايكونان

اردو ترجمہ و تشریح (دایاں کالم): اور شامی نے کہا ہے کہ الوانی نے اس لئے صرف انبات کو لیا ہے اور سیرابی کا اعتبار نہیں کیا کیونکہ انبات کو سیرابی لازم ہے اور سیرابی کو انبات لازم نہیں ہے کیونکہ شربت سیراب تو کرتے ہیں لیکن انبات نہیں کرتے اه اور جوہرہ میں ہے کہ پانی کی طبیعت رقت، سیلان اور پیاس بجھانا ہے اه اور خزانہ المفتین میں الاختیار شرح المختار سے منقول ہے کہ پانی کی طبیعت سیال تر کرنا اور پیاس بجھانا ہے اه اور مراقی الفلاح میں ہے

[تشریح کا حصہ] عربی (بایاں کالم): عه اقول: (۱) ومن العجب اقتصار البناية على الارواء اذ قال طبع الماء كونه مروياً لانه يقطع العطش قال وقيل قوة نفوذه 5 اه اقول: هذا هو قضية رقته وسيلانه (۲) فالعجب تزييف هذا واختيار طبع لاتعلق له بمأهنا قال وقيل كونه غير متلون 6 اه اقول: هذا خلاف المشهود والمشهور (۳) ودوار فى الكتب ذكر لون الماء (۴) وقد جاء

اردو (دایاں کالم): اقول: تعجب ہے کہ بنایہ نے صرف سیرابی پر اکتفا کیا ہے جہاں انہوں نے کہا ہے کہ پانی کی طبیعت سیراب کرنا ہے کیونکہ اس سے پیاس بجھتی ہے اور انہوں نے کہا کہ بعض نے پانی کی قوت سرایت کو کہا ہے اه میں کہتا ہوں کہ یہ تو پانی کی رقت اور سیلان کا معاملہ ہے، اس کو کمزور بنانا اور ایسی چیز کو طبیعت بتانا جس کا یہاں کوئی تعلق نہیں ہے

تعجب انگیز بات ہے انہوں نے یہ بھی کہا ہے کہ بعض نے پانی کی طبیعت غیر متلون (بے رنگ) ہونا بتایا ہے اہ میں کہتا ہوں کہ یہ بات مشاہدہ اور شہرت دونوں کے خلاف ہے اور کتب میں پانی کے رنگ کا بار بار ذکر ہے (باقی بر صفحہ آئندہ)

حواشی: 1 ردالمحتار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/ ۱۲۵ 2 الجوہرۃ النیرہ کتاب الطہارۃ امدادیہ ملتان ۱/ ۱۳ 3 اختیار شرح مختار بجوز الطہارۃ فی الماء مصطفیٰ البانی مصر ۱/ ۱۳ 4 مراقی الفلاح کتاب الطہارۃ الامیریہ مصر ص ۱۵ 5 البنایۃ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء المکتبۃ الامدادیہ مکہ المکرمہ ۱/ ۱۸۸ 6 البنایۃ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء المکتبۃ الامدادیہ مکہ المکرمہ ۱/ ۱۸۸

Fatawa Rizvia Volume 3

Regarding saltwater sea water [1]... and this was used to comment upon "Al-Durar". Al-Wani, then the leaders Abu Saud, Ta-Sha, replied that in its nature there is growth, but the lack of growth is due to external factors like hot water [2]. Al-Khadim refuted it by saying that sea water deviates from its nature due to external factors like hot water, rather when it is left alone...

...that the nature of water is fluidity, flow, quenching thirst, and causing growth. Sayyid Tahtawi mentioned in his marginalia that they mentioned only fluidity and flow in the commentary because this is apparent, as the last two, namely quenching thirst and growth, are not found in the salty water of the sea, because these last two attributes...

(Remaining footnote from the previous page) In a Sahih Mursal (tradition) narrated by Imam Al-Tahawi from Rashid ibn Sa'd, from the Master of the Messengers (peace and blessings of Allah be upon him): "Nothing makes water impure except what overcomes its smell, taste, or color" [3]. And it is in Ibn Majah as a connected (Musul) tradition from Rashid ibn Sa'd from Abu Umamah (may Allah be pleased with him) who said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Verily water is pure, and nothing makes it impure except what overcomes its smell, taste, and color" [4]. And [it was said] taking it out of its nature means that no effect of boiling remains in it [5]. This is how it is in a very weak manuscript, and perhaps it is what is accepted, meaning its nature is that it rises and falls during boiling. I say: and this is also from the effect of fluidity and flow, and Allah knows best. May he be forgiven. (M)

Imam Tahawi narrated as a Sahih Mursal from Rashid ibn Sa'd that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said that nothing makes water impure except that which overcomes its taste, smell, and color. And this Hadith is in Ibn Majah narrated in a connected chain by Rashid ibn Sa'd from Abu Umamah (may Allah be pleased with him) that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said water is pure, and the only case where it becomes impure is when something overcomes its smell, taste, and color. They also said that some have said the nature of water is such that it retains the capacity to be boiled, and to remove it from its nature, it is necessary that no effect of boiling remains in it. It is thus in the weakest manuscript; perhaps it means that the nature of water is such that it can rise

and fall during boiling. I say that this is also an effect of fluidity and flow, and Allah knows best. (T)

1. Tahtawi on Maraqi al-Falah, Kitab al-Taharah, Nur Muhammad Karkhana-e-Tijarat Karachi, p. 15.
2. Radd al-Muhtar, Bab al-Miyah, Mustafa al-Babi Egypt, 1/125.
3. Sharh Ma'ani al-Athar, Kitab al-Taharah 19/1.
4. Sunan Ibn Majah, Abwab al-Taharah, p. 40.
5. Al-Binayah 188/1.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

खारे समुद्री पानी के बारे में [1]... और इसके माध्यम से 'अल-दुरर' पर टिप्पणी की गई। अल-वानी, फिर सआदत अबू सऊद, ता-शा ने उत्तर दिया कि इसकी प्रकृति में विकास (अगना) है, लेकिन विकास का न होना गर्म पानी जैसे बाहरी कारणों से है [2]। अल-ख़ादिम ने इसका खंडन करते हुए कहा कि समुद्र का पानी गर्म पानी जैसे बाहरी कारणों से अपनी प्रकृति से हट जाता है, बल्कि जब इसे छोड़ दिया जाए...

...कि पानी की प्रकृति तरलता, बहाव, प्यास बुझाना और उगाना है। सैयद तहतावी ने इसके हाशिये में फरमाया कि उन्होंने शरह में केवल तरलता और बहाव का ही उल्लेख किया है क्योंकि यही ज़ाहिर है, इसलिए कि अंतिम दो यानी प्यास बुझाना और उगाना (इनबात) समुद्र के नमकीन पानी में नहीं पाए जाते, क्योंकि अंतिम दो गुण...

(पिछले पृष्ठ का शेष फुटनोट) इमाम अल-तहतावी द्वारा राशिद इब्न साद से रिवायत एक सहीह मुरसल में, रसूलों के सरदार (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से: "कोई भी चीज़ पानी को अशुद्ध नहीं करती सिवाय उसके जो उसकी गंध, स्वाद या रंग पर हावी हो जाए" [3]। और यह इब्न माजह में राशिद इब्न साद से अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के माध्यम से एक मुत्तसिल रिवायत के रूप में है, जिन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: "बेशक पानी पवित्र है, और कोई चीज़ उसे अशुद्ध नहीं करती सिवाय उसके जो उसकी गंध, स्वाद और रंग पर हावी हो जाए" [4]। और [कहा गया कि] इसे इसकी प्रकृति से बाहर निकालने का अर्थ यह है कि इसमें उबालने का कोई प्रभाव न रहे [5]। बहुत कमज़ोर पांडुलिपि में ऐसा ही है, और शायद यही स्वीकार्य है, यानी इसकी प्रकृति यह है कि यह उबालने के दौरान ऊपर और नीचे हो सके। मैं कहता हूँ: और यह भी तरलता और बहाव का ही एक प्रभाव है, और अल्लाह बेहतर जानता है। (म)

इमाम तहतावी ने सहीह मुरसल के रूप में राशिद बिन साद से रिवायत किया कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि पानी को नापाक करने वाली कोई चीज़ नहीं है सिवाय उसके जो उसके स्वाद, गंध और रंग पर हावी हो जाए। और यह हदीस इब्न माजह में मौसूला राशिद बिन साद ने अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि पानी पाक करता है, उसे नापाक करने वाली केवल यही सूरत है कि जब कोई चीज़ उसकी गंध, स्वाद और रंग पर हावी हो जाए। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ ने कहा कि पानी की

प्रकृति यह है कि उसमें उबालने की क्षमता बनी रहे और उसे प्रकृति से बाहर करने के लिए ज़रूरी है कि उसमें उबालने का प्रभाव बाकी न रहे। सबसे कमज़ोर पांडुलिपि में ऐसा ही है, हो सकता है कि इसका मतलब यह हो कि पानी की प्रकृति यह है कि उबालने में वह ऊपर-नीचे हो सके। मैं कहता हूँ कि यह भी तरलता और बहाव का असर है, और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

1. तहतावी अली मराक़ी अल-फ़लाह, किताब अल-तहारत, नूर मुहम्मद कारख़ाना-ए-तिजारत कराची, पृ. 15.
2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/125.
3. शरह मआनी अल-आसार, किताब अल-तहारत 19/1.
4. सुनन इब्न माजह, अबवाब अल-तहारत, पृ. 40.
5. अल-बिनाया 188/1.

पृष्ठ 45 का 756

فی ماء البحر الملح 1 اھ و بہ تُعقب علی الدرر فاجاب الوانی ثم السادۃ ابو سعود و ط وش ان فی طبعہ انباتاً الا ان عدم انباتہ لعوارض کالماء الحار 2 اھ ورده الخادم بان ماء البحر میزل عن طبعہ بعارض کالماء الحار بل عند تخلیتہ علی کہ پانی کی طبیعت رقت، سیلان، سیراب کرنا اور اگانا ہے اھ سید طحطاوی نے اس کے حاشیہ میں فرمایا کہ انہوں نے شرح میں صرف رقت اور سیلان کو ہی ذکر کیا ہے کیونکہ ظاہر یہی ہے اس لئے کہ آخری دونوں یعنی سیراب کرنا اور انبات (اگانا) سمندر کے نمکین پانی میں نہیں پائے جاتے اھ کیونکہ آخری دو وصف

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) **فی مرسل صحیح رواہ الامام الطحاوی عن راشد ابن سعد عن سید المرسلین صلی اللہ علیہ وسلم الماء لا ینجسہ شیئ الا ما غلب علی ریحہ او طعمہ اولونہ 3 وھو فی ابن ماجۃ موصولا من حدیث راشد بن سعد عن ابی امامۃ رضی اللہ تعالی عنہ قال قال رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ان الماء طھور ولا ینجسہ الا ما غلب علی ریحہ وطعمہ ولونہ 4 والاخراج علی طبعہ ان لا یبقی لہ اثر الغلیان 5 اھ کذا وھو فی نسخۃ سقیمۃ جدا ولعلہ ما یقبل ای طبعہ ان یرتفع وینخفض عند الاغلاء اقول: وھو ایضا من اثر الرقۃ والسیلان واللہ تعالی اعلم ۱۲ منہ غفر لہ۔ (م)**

امام طحاوی نے صحیح مرسل کے طور پر راشد بن سعد سے روایت کیا کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا کہ پانی کو ناپاک کرنے والی کوئی چیز نہیں ماسوائے اس کے جو اس کے ذائقہ، بُو اور رنگ پر غالب ہو جائے اور یہ حدیث ابن ماجہ میں موصولاً راشد بن سعد نے ابی امامہ رضی اللہ عنہ سے روایت کی ہے کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا کہ پانی پاک کرتا ہے اس کو ناپاک کرنے والی صرف یہی صورت ہے کہ جب کوئی چیز اس کی بُو، ذائقہ اور رنگ پر غلبہ پالے۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ بعض نے کہا کہ پانی کی طبیعت یہ ہے کہ اس میں اُبلانے کی

صلاحیت باقی ہو اور اس کو طبیعت سے خارج کرنے کیلئے ضروری ہے کہ اس میں ابلانے کا اثر باقی نہ رہے اھ کمزور ترین نسخے میں ایسے ہی ہے، ہو سکتا ہے کہ اس کا مطلب یہ ہو کہ پانی کی طبیعت یہ ہے کہ اُبلانے میں وہ بلند و پست ہو سکے۔ میں کہتا ہوں کہ یہ بھی رقت و سیلان کا اثر ہے واللہ اعلم ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

1 طحطاوی علی مراقی الفلاح کتاب الطہارت نور محمد کارخانہ تجارت کراچی ص ۱۵ 2 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۲۵ 3 شرح معانی الآثار، کتاب الطہارۃ ۱۹/۱ 4 سنن ابن ماجہ ابواب الطہارۃ ص ۴۰ 5 البنایہ ۱۸۸/۱

Fatawa Razawiyya, Volume Three

[Arabic Text]: Its nature is such that it does not cause growth. [End quote] I say: This is sound, for the original state is the absence of any accidental factor, even though the evidence for it from the statement of Allah Almighty is not complete: "And it is He who released the two seas, one fresh and sweet and one salty and bitter, and placed between them a barrier and prohibiting partition." (Qur'an 25:53). For 'marj' is mixing and releasing, and it is not necessary that this was at the beginning of their creation, but rather after one of them changed due to an accidental factor. And Allah knows best. If Khadimi had contented himself with this, it would have been a rebuttal to the claim that these three are part of the nature of water. But before that, he intended to contest the rule of the text regarding the prohibition of ablution (wudu), so the matter turned against him when he hesitated and then dispersed. He said: If the collective group is intended, then it is refuted by seawater because it does not provide irrigation or growth. And if one of them is intended, then by something like melon water, because it provides irrigation but ablution with it is not permissible.

[Urdu Text]: ...do not occur in seawater. [End quote] And this has been followed up by Durr. The answer to this was given by Alwani, Abu Sa'ud, Ta, and Sha that its nature has the potential for growth, but its lack of growth is due to an accidental factor, just as it happens in hot water. Khadimi rejected this, saying that unlike hot water, seawater has not departed from its nature due to an accidental factor; rather, if it is left to its nature, there is still a lack of growth in it. [End quote] (T) I say, this point is reasoned that the original state is the absence of an accidental factor, although the reasoning from Allah Almighty's statement "And it is He who released the two seas, one fresh and sweet and one salty and bitter, and placed between them a barrier and prohibiting partition" is not perfect for this. This is because 'marj' means mixing and releasing, and it is not necessary that this situation was at the beginning of their creation; rather, it could be due to one of them being changed by an accidental factor. And Allah knows best. So if Khadimi had stopped at this, it would have refuted the claim that these three things are the nature of water. But before this, he intended to contest the rule of the text about the impermissibility of wudu, but the matter reversed. Because he denied and differentiated, saying that if all three are intended collectively, then seawater refutes it because it has neither growth nor fertility.

Footnotes: 1. Durar Sharh Ghurar lil-Hamidi, Kitab al-Taharah, Maktabah Uthmaniyyah, Egypt, 1/21. 2. Al-Qur'an, 25/53. 3. Durar Sharh Ghurar lil-Hamidi, Kitab al-Taharah, Maktabah Uthmaniyyah, Egypt, 1/21.

फ़तावा रज़विया, जिल्द तीसरी

[अरबी पाठ]: उसकी प्रकृति ऐसी है कि वह उपज (उगाना) पैदा नहीं करती। [इति] मैं कहता हूँ: यह तर्कसंगत है क्योंकि मूल स्थिति किसी आकस्मिक कारक (आरिज़) का अभाव है, हालांकि इस पर अल्लाह तआला के इस कथन से प्रमाण पूर्ण नहीं होता: "वही है जिसने दो समुद्रों को छोड़ दिया, एक मीठा और प्यास बुझाने वाला है और दूसरा खारा और कड़वा है और उसने उन दोनों के बीच एक पर्दा और एक मज़बूत रुकावट डाल दी।" (क़ुरान २५:५३)। क्योंकि 'मर्ज' का अर्थ मिलाना और छोड़ना है, और यह आवश्यक नहीं है कि यह उनकी रचना के आरम्भ में हो, बल्कि उनमें से किसी एक के आकस्मिक कारक से परिवर्तित होने के कारण हो सकता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। यदि खादिमी इसी पर संतोष कर लेते, तो यह इस दावे का खंडन होता कि ये तीनों पानी की प्रकृति हैं। लेकिन उन्होंने इससे पहले वज़ू के निषेध के बारे में मूल पाठ के नियम को चुनौती देने का इरादा किया, तो मामला उनके विरुद्ध हो गया जब उन्होंने संकोच किया और फिर भ्रमित हो गए। उन्होंने कहा: यदि सामूहिक रूप से इरादा किया जाए, तो समुद्री पानी इसका खंडन करता है क्योंकि इसमें न तो सिंचाई है और न ही उपज। और यदि उनमें से किसी एक का इरादा हो, तो तरबूज के पानी जैसा कुछ, क्योंकि वह सिंचाई तो देता है लेकिन उससे वज़ू जायज़ नहीं है।

[उर्दू पाठ]: ...समुद्री पानी में नहीं होते। [इति] और दुर्र में इसका अनुसरण किया गया है। इसका उत्तर अलवानी, अबू सऊद, ता और शा ने यह दिया कि उसकी प्रकृति में उपज की क्षमता है, लेकिन उसका न उगना किसी आकस्मिक कारण की वजह से है, जैसा कि गर्म पानी में होता है। [इति] खादिमी ने इसका खंडन किया कि गर्म पानी की तरह समुद्री पानी अपनी प्रकृति से किसी आकस्मिक कारण की वजह से अलग नहीं हुआ है; बल्कि, यदि उसे उसकी प्रकृति पर छोड़ दिया जाए, तब भी उसमें उपज का अभाव है। [इति] (त) मैं कहता हूँ, यह बात प्रमाणिक है कि मूल अवस्था आकस्मिक कारण का न होना है, यद्यपि अल्लाह तआला के इस कथन 'और वही है जिसने दो समुद्रों को छोड़ दिया...' से इस पर प्रमाण पूर्ण नहीं होता। इसका कारण यह है कि 'मर्ज' का अर्थ मिलाना और छोड़ना है, और यह आवश्यक नहीं है कि यह स्थिति उनकी सृष्टि के आरम्भ में हो; बल्कि, यह उनमें से किसी एक के आकस्मिक कारक द्वारा परिवर्तित होने के कारण हो सकती है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। अतः यदि खादिमी यहीं रुक जाते, तो यह इस दावे का खंडन होता कि ये तीनों चीजें पानी की प्रकृति हैं। लेकिन इससे पहले, उन्होंने वज़ू की अमान्यता के बारे में पाठ के नियम को चुनौती देने का इरादा किया, लेकिन मामला उल्टा हो गया। क्योंकि उन्होंने खंडन

किया और अंतर किया, यह कहते हुए कि यदि तीनों का सामूहिक रूप से इरादा किया जाए, तो समुद्री पानी इसका खंडन करता है क्योंकि इसमें न तो उपज है और न ही उर्वरता।

पादलेख: 1. दुरर शरह ग़ुरर लिल-हामिदी, किताब अल-तहारत, मकतबा उस्मानिया, मिस्र, 1/21। 2. अल-क़ुरान, 25/53। 3. दुरर शरह ग़ुरर लिल-हामिदी, किताब अल-तहारत, मकतबा उस्मानिया, मिस्र, 1/21।

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

[عربی عبارت]: طبعه شأنه عدم الانبات ۱ اھ اقول: وھذا وجیه فان الاصل عدم العارض وان کان لا یتم الاستدلال علیه بقوله عزوجل وھو الذی مرج البحرین ھذا عذب فرات وھذا ملح اجاج وجعل بینھما برزخا وحجرا محجورا ۲ ، فان المرج ھو الخلط والارسال ولا یلزم ان یکون فی بدء خلقھما بل بعد تغیر احدھما بعارض واللہ تعالی اعلم فلواکتفی الخادمی بھذا کان ردا علی دعوی ان الثلثة من طبع الماء لکنه اراد قبله النقض علی قاعدة المتن فی منع الوضوء فانعکس علیه الامر اذ ردد فبدد فقال ان ارید المجموع من حیث ھو مجموع فیرد بماء البحر اذ لیس فیه ارواء وانبات وان ارید واحد منھا فبنحو ماء البطیخ اذ فیه ارواء ولم یجز به الوضوء ۳ اھ

[اردو عبارت]: سمندری پانی میں نہیں ہوتے اھ اور اس سے درر پر تعقیب کی گئی ہے، تو اس کا جواب الوان، ابو السعود، ط اور ش نے یہ دیا کہ اس کی طبیعت میں انبات ہے مگر اس کا عدم انبات کسی عارض کی وجہ سے ہے، جیسے گرم پانی میں ہوتا ہے اھ اور اس کو خادمی نے رد کیا کہ گرم پانی کی طرح سمندری پانی اپنی طبیعت سے زائل نہیں ہوا ہے کسی عارض کی وجہ سے، بلکہ اگر اس کو اس کی طبیعت پر چھوڑ دیا جائے تب بھی اس میں عدم انبات ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں یہ بات مدلل ہے کہ اصل عارض کا نہ ہونا ہے اگرچہ اس پر استدلال اللہ تعالٰی کے قول وَھُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ ھَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَھَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَ جَعَلَ بَيْنَھُمَا بَرْزَخًا وَ حِجْرًا مَّحْجُورًا ﴿۵۳﴾ سے تام نہیں ہوتا، کیونکہ مرج کے معنی ملانے اور چھوڑنے کے ہیں، اور یہ لازم نہیں کہ یہ صورت ان کی ابتداءِ تخلیق میں ہو، بلکہ ان میں سے کسی ایک کو عارض کی وجہ سے متغیر ہونے کے باعث ہو واللہ تعالٰی اعلم، تو اگر خادمی اسی پر اکتفا کر لیتے تو یہ اس دعوٰی کا رد ہو جاتا کہ یہ تینوں چیزیں پانی کی طبیعت ہیں، لیکن انہوں نے اس سے قبل نقض کا ارادہ کیا وضو

کے ناجائز ہونے کے بارہ میں متن کے قاعدہ پر، لیکن معاملہ الٹ ہوگیا، اس لئے کہ انہوں نے تردید کی اور تفریق کی، پس فرمایا اگر تینوں کا من حیث المجموع کا ارادہ کیا جائے تو اس کا رد سمندر کی پانی سے کیا جائے گا، کہ اس میں نہ اگانا ہے اور نہ زرخیزی،

حواشی: 1. درر شرح غرر للحامدی کتاب الطہارت مکتبہ عثمانیہ مصر ۱/۲۱ 2. القرآن ۲۵/۵۳ 3. درر شرح غرر للحامدی کتاب الطہارت مکتبہ عثمانیہ مصر ۱/۲۱

Fatawa-e-Razvia Volume 3

I say: (1) The principle of the text is what was previously cited from his saying: "Not with water whose nature has departed, etc." If the whole (of properties) is intended, seawater would not be excluded because not all its properties have departed as liquidity remains. And if one of them is intended, watermelon water would not be excluded because its property of growth has departed. This is if what is mixed with it is intended. If what is extracted from it was intended, it would be excluded altogether by his saying "water". Thus, he should have reversed it and said: if the whole is intended, watermelon water is excluded because two properties remain - liquidity and quenching thirst. And if one of them is intended, seawater is excluded due to the departure of two - growth and quenching thirst. Yes, if the wording of the text was "It is permissible with water that remains in its nature," then the contradiction would be as mentioned.

If it is asked: Why is it not said that he shifted the speech from the explicit meaning (mantuq) to the implied meaning (mafhum), and there is no doubt that the implied meaning is this, i.e., permissibility with what remains in its nature.

I say: This is not its implied meaning, but its implied meaning is the permissibility with what whose nature has not departed. Thus, the reversal remains as it was, because if by "nature" the collection (of properties) is intended...

(Although wudu is permissible with it). And if one of them is intended, then it will be rejected from watermelon water etc., because it quenches thirst but wudu is not permissible with it. (T) I say the principle of the text is what has been quoted, in their saying "not with water whose nature has departed, etc." If the whole is intended, there will be no objection to seawater because all its qualities have not vanished since liquidity remains in it. And if one of them is intended, there will be no objection from watermelon water because one quality, growth, has vanished from it. This argument is in the case when the mixed substance of watermelon is intended. And if the water extracted from it is intended, then the argument will be the opposite and it will be said that if the combination of all three matters is intended, then an objection will arise from watermelon water because all three have not vanished from it, rather liquidity and quenching thirst remain in it. And if any one of the three is established as nature, then an objection will arise from seawater that two of its qualities have vanished, growth and quenching thirst. Yes, if the wording of the text was that wudu

is permissible with water that remains in its own nature, then the contradiction would be what was mentioned. (T)

If it is asked why it cannot be said that they have turned the speech from the explicit to the implicit, and there is no doubt that its meaning is this, i.e., wudu is permissible from the water which remains in its own nature. (T)

I say this is not its meaning, rather its meaning is the permissibility of wudu from water whose nature has not ended, then the reversal will remain so, because when...

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3

मैं कहता हूँ: (1) पाठ का सिद्धांत वह है जो उनके कथन "उस पानी से नहीं जिसका स्वभाव समाप्त हो गया हो, इत्यादि" से पहले उद्धृत किया गया है। यदि (गुणों के) समुच्चय का इरादा है, तो समुद्र का पानी बाहर नहीं होगा क्योंकि तरलता शेष रहने के कारण उसके सभी गुण समाप्त नहीं हुए हैं। और यदि उनमें से किसी एक का इरादा है, तो तरबूज का पानी बाहर नहीं होगा क्योंकि उससे उगने का गुण समाप्त हो गया है। यह तब है जब उसमें मिश्रित वस्तु का इरादा हो। यदि उससे निकाला गया पानी अभिप्रेत होता, तो वह "पानी" कहने मात्र से ही बाहर हो जाता। अत; उन्हें इसे उलट देना चाहिए था और कहना चाहिए था कि यदि समुच्चय का इरादा है, तो तरबूज का पानी बाहर हो जाता है क्योंकि दो गुण - तरलता और प्यास बुझाना - शेष रहते हैं। और यदि उनमें से एक का इरादा है, तो समुद्र का पानी बाहर हो जाता है क्योंकि दो गुण - उगना और प्यास बुझाना - समाप्त हो गए हैं। हाँ, यदि पाठ की शब्दावली ऐसी होती कि "उस पानी से वज़ू जायज़ है जो अपने स्वभाव पर शेष हो", तो विरोधाभास वैसा ही होता जैसा उल्लेख किया गया।

यदि यह कहा जाए: यह क्यों नहीं कहा जाता कि उन्होंने कथन को प्रत्यक्ष अर्थ (मंतुक) से निहित अर्थ (मफ़हूम) की ओर मोड़ दिया है, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसका निहित अर्थ यही है, अर्थात् उस पानी से जायज़ होना जो अपने स्वभाव पर शेष है।

मैं कहता हूँ: यह इसका निहित अर्थ नहीं है, बल्कि इसका निहित अर्थ उस पानी से वज़ू की अनुमति है जिसका स्वभाव समाप्त न हुआ हो। अत; व्युत्क्रम (उलटफेर) वैसा ही रहेगा जैसा कि था, क्योंकि यदि स्वभाव से समुच्चय का इरादा है...

(हालाँकि इससे वज़ू जायज़ है)। और यदि उनमें से एक का इरादा किया जाए, तो तरबूज के पानी आदि से अस्वीकृति होगी क्योंकि वह प्यास बुझाता है लेकिन उससे वज़ू जायज़ नहीं है। (त) मैं कहता हूँ कि पाठ का सिद्धांत वही है जो उद्धृत किया गया है, उनके कथन "उस पानी से नहीं जिसका स्वभाव समाप्त हो गया हो, इत्यादि" में। और यदि समुच्चय का इरादा किया जाए, तो समुद्री पानी से कोई आपत्ति नहीं होगी क्योंकि इसके सभी गुण समाप्त नहीं हुए हैं क्योंकि इसमें तरलता शेष है। और यदि उनमें से एक का इरादा किया जाए, तो तरबूज के पानी से कोई आपत्ति नहीं होगी क्योंकि इसमें एक गुण 'उगना' समाप्त हो गया है। यह तर्क उस स्थिति में है जब तरबूज का मिश्रित पदार्थ अभिप्रेत हो। और यदि उससे निकाला गया पानी अभिप्रेत हो, तो तर्क इसके विपरीत होगा और इस तरह कहा

जाएगा कि यदि तीनों बातों का समुच्चय अभिप्रेत हो, तो तरबूज के पानी से आपत्ति उठेगी क्योंकि उससे तीनों का लोप नहीं हुआ है, बल्कि इसमें तरलता और प्यास बुझाना शेष है। और यदि तीनों में से किसी एक को स्वभाव मान लिया जाए, तो समुद्री पानी से आपत्ति होगी कि उसके दो गुण समाप्त हो गए हैं, उगना और प्यास बुझाना। हाँ, यदि पाठ की शब्दावली ऐसी होती कि वज़ू उस पानी से जायज़ है जो अपने स्वभाव पर शेष हो, तो विरोधाभास वह होता जिसका उल्लेख किया गया। (त)

यदि यह कहा जाए कि यह क्यों नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने कथन को प्रत्यक्ष से निहित की ओर मोड़ दिया है और इसमें कोई संदेह नहीं कि इसका अर्थ यही है, अर्थात् जो पानी अपने स्वभाव पर शेष हो उससे वज़ू जायज़ है। (त)

मैं कहता हूँ कि यह इसका अर्थ नहीं है, बल्कि इसका अर्थ उस पानी से वज़ू की अनुमति है जिसका स्वभाव समाप्त न हुआ हो, तो उलटफेर ऐसा ही रहेगा, क्योंकि जब...

पृष्ठ 47/756

اقول: (۱) انما قاعدة المتن ماتقدم نقله من قوله لابماء زال طبعه الخ فان ارید المجموع لم یرد ماء البحر اذلم یزل منه الکل لبقاء السیلان وان ارید واحد منهالم یرد ماء البطیخ لانه قدزال منه الانبات هذا ان ارید به ماخالطه ولو اراد مایستخرج منه خرج رأسا بقوله ماء فکان علیه ان یعکس فیقول ان ارید الکل یرد ماء البطیخ لبقاء اثنین السیلان والارواء وان ارید واحد منها یرد ماء البحر لزوال اثنین الانبات والارواء نعم لو کانت عبارة المتن یجوز بماء بقی علی طبعه کان النقض کما ذکر۔

فان قلت لم لایقال انه صرف الکلام من المنطوق الی المفهوم ولاشك ان المفهوم منه هو هذا ای الجواز بما بقی علی طبعه۔

اقول: لیس هذا مفهومه بل مفهومه الجواز بمالم یزل طبعه فیبقی التعکیس کما کان لانه اذا ارید بالطبع المجموع

(حالانکہ اس سے وضو جائز ہے) اور اگر ان میں سے ایک کا ارادہ کیا جائے تو تربوز کے پانی وغیرہ سے رد ہوگا کہ اس میں سیراب کرنا ہے لیکن اس سے وضو جائز نہیں اھ (ت) میں کہتا ہوں متن کا قاعدہ وہ ہے جو منقول ہوا ، ان کے قول لابماء زال طبعہ الخ میں ، اور اگر مجموع کا ارادہ کیا جائے تو سمندری پانی سے اعتراض نہ ہوگا کہ اس کے تمام اوصاف زائل نہیں ہوئے ہیں کیونکہ اس میں سیلان باقی ہے ، اور اگر ان میں سے ایک کا ارادہ کیا جائے تو تربوز کے پانی سے اعتراض نہ ہو گا کیونکہ اس میں ایک وصف انبات زائل ہوا ہے یہ تقریر اس صورت میں کہ جب تربوز کا مخلوط مادہ مراد لیا جائے اور اگر اس سے خارج کیا ہوا پانی مراد لیا جائے تو پھر تقریر اس کے بر عکس ہوگی اور یوں کہا جائے گا کہ اگر تینوں امور کا مجموعہ مراد ہو تو پھر

تربوز کے پانی سے اعتراض وارد ہوگا کیونکہ اس سے تینوں کا زوال نہیں ہے بلکہ اس میں سیلان اور سیرابی باقی ہے اور اگر تینوں میں سے کسی ایک کو طبیعت قرار دیا جائے تو سمندری پانی سے اعتراض ہوگا کہ اس کے دو وصف زائل ہوئے ہیں ، اگانا اور سیراب کرنا ، ہاں اگر متن کی عبارت یوں ہوتی کہ وضو جائز ہے اس پانی سے جو اپنی طبیعت پر باقی ہو تو نقض وہ ہوتا جو ذکر کیا۔ (ت)

اگر یہ کہا جائے کہ یہ کیوں نہیں کہا جا سکتا ہے کہ انہوں نے کلام کو منطوق سے مفہوم کی طرف پھیر دیا ہے اور کچھ شک نہیں کہ اس کا مفہوم یہی ہے، یعنی جو پانی اپنی طبیعت پر باقی ہو اس سے وضو جائز ہے۔ (ت)

میں کہتا ہوں یہ اس کا مفہوم نہیں ، بلکہ اس کا مفہوم اس پانی سے وضو کا جواز ہے جس کی طبیعت ختم نہ ہوئی ہو ، تو تعکیس ایسی ہی رہے گی ، کیونکہ جب

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Column 1 - Arabic text, Column 2 - Urdu translation] If the meaning of 'nature' is taken as a collective whole, then the meaning would be: Wudu is permissible with water from which the whole (nature) has not departed. In this case, no objection would arise regarding seawater because the quality of flow (liquidity) remains in it. And if 'nature' refers to even one single characteristic, the meaning would be: Wudu is permissible with water from which nothing at all has departed. Then an objection regarding watermelon water would not arise because one property, germination, has departed from it. This is contrary to your statement: "Wudu is permissible with water that remains on its original nature," because if the 'whole' is intended, then permissibility depends on the permanence of the whole nature, and an objection would arise regarding seawater. If a 'part' is intended, an objection would arise regarding watermelon water. Keep this in mind.

Allama al-Birjandi said: What is intended is the nature of the genus of water, which is thinness (fluidity) and flow. Thus it is said. And in Al-Khazanah, it is stated: The nature of water is its being flowing, moistening, and thirst-quenching. It is not hidden that the juice of some fruits is also like this. If such juice is mixed with water and becomes dominant, it should follow that wudu from it is permissible, though it is not. (End quote).

I say: If the objection is specifically towards the text of Al-Khazanah, as is apparent from the context, then there is no reason for it, because it applies equally to the first case as well. This is because the thinness is not stripped from the juice of some fruits, just as thirst-quenching is not stripped from it. If it is general to both, there is still no reason for it, because the consideration of thinness is a matter of consensus, and he himself follows it in his own principle.

---

1 Sharh al-Niqayah by al-Birjandi, Research on Water, Naval Kishore, Lucknow, 1/31.
Page 48 of 756

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 3

[कॉलम 1 - अरबी पाठ, कॉलम 2 - उर्दू अनुवाद] यदि 'प्रकृति' से संपूर्णता का आशय लिया जाए, तो इसका अर्थ होगा: वज़ू उस पानी से जायज़ है जिससे सब कुछ लुप्त न हुआ हो। तब समुद्र के पानी पर कोई आपत्ति नहीं होगी क्योंकि उसमें प्रवाह (तरलता) का गुण शेष है। और जब एक (अंश) का आशय लिया जाए, तो अर्थ यह होगा: वज़ू उस पानी से जायज़ है जिससे कुछ भी लुप्त न हुआ हो। तब तरबूज के पानी पर आपत्ति नहीं होगी क्योंकि उससे अंकुरण का एक गुण लुप्त हो गया है। यह आपके इस कथन के विपरीत है कि "वज़ू उस पानी से जायज़ है जो अपनी प्रकृति पर बना रहे", क्योंकि यदि संपूर्णता का आशय लिया जाए, तो जायज़ होने का आधार संपूर्णता के बने रहने पर होगा, तो समुद्र के पानी पर आपत्ति होगी। यदि किसी अंश का आशय लिया जाए, तो तरबूज के पानी पर आपत्ति होगी। इसे याद रखें।

अल्लामा अल-बिरजंदी ने कहा: इसका अर्थ जल की जाति की प्रकृति है, और वह तरलता और प्रवाह है। ऐसा कहा गया है। और 'खज़ाना' (अल-खज़ाना) में है: पानी की प्रकृति उसका तरल होना, तर करना और प्यास बुझाना है। यह छिपा नहीं है कि कुछ फलों का रस भी ऐसा ही होता है। तो यदि वह पानी में मिल जाए और प्रबल हो जाए, तो उससे वज़ू जायज़ होना चाहिए, जबकि ऐसा नहीं है। (समाप्त)।

मैं कहता हूँ: यदि आपत्ति विशेष रूप से 'खज़ाना' के पाठ पर है, जैसा कि संदर्भ से स्पष्ट है, तो इसका कोई कारण नहीं है क्योंकि यह पहले वाले पर भी समान रूप से लागू होती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कुछ फलों के रस से तरलता समाप्त नहीं होती, जैसे कि उससे प्यास बुझाना समाप्त नहीं होता। और यदि यह दोनों के लिए सामान्य है, तो इसका कोई कारण नहीं है क्योंकि तरलता का विचार सर्वसम्मत है, और वह स्वयं अपने सिद्धांत में इसी पर चलता है।

---

1 शरह अल-निकाया अल-बिरजंदी, पानी पर शोध, नवल किशोर, लखनऊ, 1/31. पेज 48 / 756

كان المعنى يجوز بمأ لم يزل عنه الكل فلا يرد ماء | طبیعت سے مجموعہ کا ارادہ کیا جائے تو اس کے معنی ہوں گے وضو البحر لبقاء السيلان فيه واذا اريد واحد كان | جائز ہے اس پانی سے جس سے کل زائل نہ ہوں، تو سمندری پانی المعنی یجوز بمأ لم یزل عنه شیئ اصلا فلا یرد ماء | سے اس پر اعتراض وارد نہ ہوگا کیونکہ اس میں سیلان کا وصف البطیخ لزوال الانبات بخلاف قولك يجوز بمأبقى | باقی ہے اور جب ایک کا ارادہ کیا جائے تو معنی یہ ہوں گی وضو جائز علی طبعه فانه لو اريد الكل كان الجواز منوطاً ببقاء | ہے اُس پانی سے جس سے کچھ زائل نہ ہوا ہو، تو بطیخ کے پانی الکل فیرد ماء البحر او البعض فماء البطيخ هذا | سے اعتراض وارد نہ ہوگا کہ اس سے ایک انبات کا وصف زائل ہے وقال العلامة البرجندی المراد طبع جنس الماء | بخلاف آپ کے اس قول کے "وضو جائز ہے اس پانی سے جو اپنی وهو الرقة والسيلان كذا قيل وفی الخزانة طبع | طبیعت پر باقی ہو" کیونکہ اگر کل کا ارادہ کیا جائے تو جواز کا الماء کونه سيالا مرطباً مسكناً للعطش ولايخفى ان | دار و مدار کل کے باقی رہنے پر ہو گا تو سمندری پانی پر اعتراض وارد ماء بعض من الفواكه كذلك فلو اختلط بالماء | ہو گا اگر بعض کا ارادہ کیا جائے تو بطیخ کے پانی سے اعتراض ہوگا۔ وغلبه ينبغى ان يجوز التوضى منه وليس كذلك 1 - | اس کو یاد رکھو۔ علامہ بر جندی نے فرمایا مراد جنس پانی کی طبیعت اقول: ان خص الايراد بعبارة الخزانة | ہے اور وہ رقت و سیلان ہے، اسی طرح کہا گیا ہے، اور خزانہ میں کما هو ظاهر سياقه فلاوجه له لوروده على الاول | ہے پانی کی طبیعت اس کا سیال ہونا، تر کرنے والا ہونا، پیاس کے ایضا سواء بسواء فان ماء بعض الفواكه لا يسلب | لئے تسکین بخش ہونا ہے اور مخفی نہ رہے کہ بعض پھلوں کا الرقة ایضا كما لا يسلبه الارواء وان عمهما | پانی ایسا ہی ہوتا ہے تو اگر وہ پانی میں مل جائے اور غالب ہو

جائے فلا وجه له فان اعتبار الرقة مجمع عليه وقد مشى | تو چاہئے کہ اُس سے وضو جائز ہو، حالانکہ ایسا نہیں ہے اھ (ت) هو ایضا علیه في ضابطته | میں کہتا ہوں اگر اعتراض بطور خاص خزانہ کی عبارت پر ہے جیسا | کہ سیاق سے ظاہر ہے تو اس کی کوئی وجہ نہیں کیونکہ وہ اول پر بھی | برابر سے وارد ہے کیونکہ بعض پھلوں کے پانی سے رقت سلب | نہیں ہوتی جیسے اس سے سیرابی سلب نہیں ہوتی اور اگر وہ دونوں | کو عام ہے تو اس کی کوئی وجہ نہیں کیونکہ رقت کا اعتبار اجماعی ہے | اور وہ بھی اپنے ضابطہ میں اسی پر

---

1 شرح النقایة للبر جندی ابحاث الماء نولکشور لکھنؤ 31/1 Page 48 of 756

Fatawa Razawiyyah Volume Three

[Left Column - Arabic] ...which he has placed, as will come in the next chapter, God Willing. Therefore, it would have been appropriate to critique the original text (matn), because it did not exclude anything in the mixing of pure substances except what removes the water from its natural state or changes it by cooking, and there is nothing of that in the mixing of this water. So if he intended to refute the text, there is no basis for it, for he said, "If a pure substance is mixed with it," and custom dictates that this is only said when the water is predominant (1), because mixing is only attributed to the subordinate part. In the mixing of water and milk, if the milk is more, it is said "milk with water in it," or if the water is more, it is "water mixed with milk." This has been pointed out in 'Majma' al-Anhur', stating: For example, if vinegar is mixed with water and the water is subordinate, it is said "vinegar mixed with water," not "water mixed with vinegar." End quote. Therefore, it does not include cases where fruit juice predominates over water. In short, I see no place or justification for this objection, and Allah Almighty knows best. Then I say: What appears to me is that those who add two things to thinness and fluidity only intended to describe the nature of water in itself, not the nature without which ablution (Wudu) would not be permissible. How can it be, when they, overall, when discussing branches of jurisprudence, do not build upon...

[Right Column - Urdu Translation] ...proceeded, as will come in the future section, God willing. In this case, the objection should have been made on the original text (matn), because they excluded from the permissibility of ablution only those pure substances which remove water from its nature or change it due to cooking. In the mixing of fruit juice, none of these things exist. So, if the intention was to refute the text, there is no reason for it, because he stated, "And if a pure substance is mixed with it," and custom (urf) is the decider that this will be said only when the water is more, because mixing is attributed only to the subordinate part. Therefore, in the mixing of water and milk, if milk is more, it is said "This is milk with water in it," or if water is more, it will be said "This is water mixed with milk." This has been cautioned in 'Majma' al-Anhur' and stated that, for example, when vinegar is mixed with water and water is subordinate, it is said "Water is mixed in vinegar," not "Vinegar is mixed in water." End quote. So this does not include the situation when water predominates over fruit juice. In summary, I find neither a place nor a basis for this objection, and Allah Almighty knows best. (T) Then I say that those people who speak of the addition of two things to the nature of water, thinness and fluidity, they intend the nature of

water in itself, not that nature which, if absent, would make ablution impermissible. And how can it be that when they...

[Footnote] 1 Majma' al-Anhur, Tahara is permissible with absolute water, Matba' 'Amirah Egypt, 1/28.

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

[बायां कॉलम - अरबी] ...जिसे उन्होंने रखा है, जैसा कि इंशाअल्लाह अगले अध्याय में आएगा। इसलिए, मूल पाठ (मतन) पर आपत्ति करना उचित होता, क्योंकि उन्होंने शुद्ध पदार्थों के मिश्रण में केवल उसी चीज़ को बाहर रखा है जो पानी को उसकी प्रकृति से बाहर कर दे या पकने के कारण उसे बदल दे, और इस पानी के मिश्रण में ऐसी कोई बात नहीं है। यदि उन्होंने पाठ का खंडन करने का इरादा किया है, तो इसका कोई आधार नहीं है, क्योंकि उन्होंने कहा, "और यदि इसमें कोई शुद्ध वस्तु मिल जाए," और लोक-परंपरा (उर्फ़) यह तय करने वाली है कि यह बात तभी कही जाएगी जब पानी अधिक हो (1), क्योंकि मिश्रण केवल अधीनस्थ भाग की ओर जोड़ा जाता है। पानी और दूध के मिश्रण में, यदि दूध अधिक हो, तो कहा जाता है "दूध जिसमें पानी है," या यदि पानी अधिक हो, तो वह "दूध मिला हुआ पानी" है। 'मजमअ उल-अन्हुर' में इस ओर संकेत किया गया है, जहाँ कहा गया है: उदाहरण के लिए, यदि सिरका पानी में मिल जाए और पानी कम हो, तो उसे "पानी मिला हुआ सिरका" कहा जाता है, न कि "सिरका मिला हुआ पानी"। अंत। अत; इसमें वे मामले शामिल नहीं हैं जहाँ पानी पर फलों का रस हावी हो जाता है। संक्षेप में, मुझे इस आपत्ति का कोई स्थान या औचित्य नहीं दिखता, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। फिर मैं कहता हूँ: मुझे जो प्रतीत होता है वह यह है कि जो लोग पानी की प्रकृति में तरलता और प्रवाह में दो चीजों की वृद्धि की बात करते हैं, उनका इरादा स्वयं पानी की प्रकृति का वर्णन करना है, न कि उस प्रकृति का जिसके बिना वज़ू (शुद्धि) जायज़ नहीं होगा। यह कैसे हो सकता है, जबकि वे समग्र रूप से जब उप-शाखाओं की चर्चा करते हैं, तो वे उस पर निर्माण नहीं करते...

[दायां कॉलम - उर्दू] ...चले हैं जैसा कि इंशाअल्लाह आगामी अनुभाग में आएगा, तो इस स्थिति में मतन (मूल पाठ) पर आपत्ति करनी चाहिए थी, क्योंकि उन्होंने पाक चीज़ों के मिलने में केवल उसी के वज़ू के जायज़ होने से अपवाद (इस्तस्ना) किया है जो पानी को उसकी तबीयत (प्रकृति) से निकाल दे, या पकने की वजह से उसे तब्दील कर दे और इस फल के पानी की मिलावट में इनमें से कोई चीज़ नहीं है, तो अगर मतन पर रद (खंडन) का इरादा किया है तो इसकी कोई वजह नहीं है, क्योंकि उन्होंने फ़रमाया है "और अगर इसके साथ कोई ताहिर (शुद्ध) चीज़ मिल जाए" और उर्फ़(परंपरा) फ़ैसला करने वाला है कि यह बात उसी वक़्त कही जाएगी जबकि पानी ज़ायद (अधिक) हो क्योंकि ख़ल्त (मिश्रण) मग़लूब (कम) ही की तरफ़ मुज़ाफ़ (सम्बन्धित) होती है, तो पानी और दूध के मिलाने में अगर दूध ज़ायद हो तो कहा जाता है यह दूध है जिसमें पानी है, या पानी ज़ायद है तो कहा जाएगा यह

पानी है जिसमें दूध मिला हुआ है, इस पर मजमअ उल-अन्हुर में तंबीह (चेतावनी) की है और फ़रमाया कि मसलन सिरका जब पानी में मिल जाए और पानी मग़लूब हो तो कहा जाता है सिरका में पानी मख़लूत (मिश्रित) है यह नहीं कहते कि पानी में सिरका मिला हुआ है अंत, तो यह इस सूरत को शामिल नहीं जबकि फलों के पानी पर पानी का ग़लबा हो जाए, और खुलासा यह कि मैं इस एतराज़ (आपत्ति) का न महल पाता हूँ और न महमल, वल्लाह तआला आलम। (त) फिर मैं कहता हूँ कि जो लोग पानी की तबीयत में रिक़्क़त (पतलापन) और सैलान (प्रवाह) पर दो चीज़ों की ज़्यादती का क़ौल करते हैं वे फ़ी नफ़्सिही (स्वयं) पानी की तबीयत का इरादा करते हैं न कि उस तबीयत का कि अगर वह न हो तो वज़ू जायज़ न हो, और यह कैसे हो सकता है कि जब वे फ़ुरूअ (शाखाओं) के..

[पाद टिप्पणी] 1 मजमअ उल-अन्हुर, तजूज़ु अत-तहारतु बिल-मइ अल-मुतलक़, मत़बा आमिराह मिस्र, 1/28

التی وضعها کما سیأتی فی الفصل الآتی ان شاء الله تعالی فاذن کان ینبغی الاخذ علی المتن فانه لم یستثن فی خلط الطاهر الاما اخرج الماء عن طبعه او غیره طبخا ولیس فی خلط هذا الماء شیء من ذلك فان اراد الرد علی المتن فلا وجه له فانه قال وان اختلط به طاهر والعرف قاض انه لایقال الا اذا کان الماء اکثر (۱) لان الخلط لایضاف الا الی المغلوب ففي مزج الماء والحلیب ان کان اللبن اکثر یقال لبن فیه ماء او الماء فماء خالطه لبن وقد نبه علیه في مجمع الانهر اذ قال الخل مثلا اذا اختلط بالماء والماء مغلوب یقال خل مخلوط بالماء لاما مخلوط بالخل ۱ اهـ فلا یشمل ما اذا غلب علی الماء ماء الفاکهة وبالجملة لاری لهذا الایراد محلا ومحملا والله تعالی اعلم۔ ثم اقول: الذی یظهر لی ان الزائدین علی الرقة والسیلان انما ارادوا بیان طبع الماء فی نفسه لا طبع لولاه لم یجز الوضوء کیف وهم قاطبة اذا اتوا علی الفروع لا یبنون

چلے ہیں جیسا کہ ان شاء اللہ تعالیٰ آئندہ فصل میں آئے گا، تو اس صورت میں متن پر اعتراض کرنا چاہئے تھا، کیونکہ انہوں نے پاک کے ملنے میں صرف اُس کا وضو کے جواز سے استثناء کیا ہے جو پانی کو اس کی طبیعت سے خارج کر دے، یا پکنے کی وجہ سے اس کو تبدیل کر دے اور اس پھل کے پانی کی ملاوٹ میں ان میں سے کوئی چیز نہیں ہے، تو اگر متن پر رد کا ارادہ کیا ہے تو اس کی کوئی وجہ نہیں ہے، کیونکہ انہوں نے فرمایا ہے "اور اگر اس کے ساتھ کوئی طاہر چیز مل جائے" اور عرف فیصلہ کرنے والا ہے کہ یہ بات اُسی وقت کہی جائے گی جبکہ پانی زائد ہو کیونکہ خلط مغلوب ہی کی طرف مضاف ہوتی ہے، تو پانی اور دودھ کے ملانے میں اگر دودھ زائد ہو تو کہا جاتا ہے یہ دودھ ہے جس میں پانی ہے، یا پانی زائد ہے تو کہا جائے گا یہ پانی ہے جس میں دودھ ملا ہوا ہے، اس پر مجمع الانہر میں تنبیہ کی ہے اور فرمایا کہ مثلاً سرکہ جب پانی میں

مل جائے اور پانی مغلوب ہو تو کہا جاتا ہے سرکہ میں پانی مخلوط ہے یہ نہیں کہتے کہ پانی میں سرکہ ملا ہوا ہے اھ، تو یہ اس صورت کو شامل نہیں جبکہ پھلوں کے پانی پر پانی کا غلبہ ہو جائے، اور خلاصہ یہ کہ میں اس اعتراض کا نہ محل پاتا ہوں اور نہ محمل، واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

پھر میں کہتا ہوں کہ جو لوگ پانی کی طبیعت میں رقت اور سیلان پر دو چیزوں کی زیادتی کا قول کرتے ہیں وہ فی نفسہ پانی کی طبیعت کا ارادہ کرتے ہیں نہ کہ اس طبیعت کا کہ اگر وہ نہ ہو تو وضو جائز نہ ہو، اور یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ جب وہ فروع کے

۱ مجمع الانہر تجوز الطھارۃ بالماء المطلق مطبع عامرہ مصر ۱/ ۲۸

Fatawa Rizvia, Volume 3

...the matter is based only on thinness (riqqat) and flowing (sayalan). You will not see any of them saying that if its ability to make things grow or quench thirst is gone, then wudu (ablution) with it is not permissible. Thus, the matter has become clear and the veil has been lifted, and praise be to Allah. When they come to the explanation, they base the matter only on thinness and flowing. None of them says that if water loses its ability to grow crops and quench thirst, then wudu with it will not be valid. Through this, the matter has become clear, praise be to Allah. (T)

Third discussion: Investigation of the meaning of thinness (riqqat) and flowing (sayalan), and the difference between them.

Allamah al-Shurunbulali (may Allah have mercy on him) said in Nur al-Idah and its commentary Maraqi al-Falah: "(Dominance in a solid occurs by taking the water out of its thinness/fluidity state)" so that it cannot be squeezed out of a cloth, "(and out of its flowing state)" so that it does not flow over the limbs like the flowing of water. [End quote] Allamah al-Shurunbulali (may Allah have mercy on him) said in Nur al-Idah and its commentary Maraqi al-Falah: "The realization of dominance in a solid is based on removing water from its state of thinness/fluidity." Consequently, it cannot be squeezed out from a cloth. "And its removal from flowing" means it cannot flow over the limbs like water flows. (T)

I say: Firstly, (1) it is not hidden from you that being squeezable out of a cloth is more specific in its realization than flowing. Thus, only what flows can be squeezed out, but it is not necessary for every flowing thing to be squeezable, like oil, ghee, milk, and honey. All of these flow because they are liquids (ma'i'). And 'ma'i' (liquid) means a flowing thing, or 'ma'i' is more specific than 'sayalan' (flowing). It is stated in Al-Qamus: "Ma'a ash-shai' yamī'u" means it flowed on the surface of the earth, spreading out in a certain form. (2) It is stated in Taj al-Arus: "Like water and blood." And in Al-Qamus it is stated: "Sala yasīlu" [it flowed].

---

1. Maraqi al-Falah, Book of Purity, Al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt, p. 15.
2. Al-Qamus al-Muhit, Section Mim and Nun, Chapter 'Ain, Mustafa al-Babi, Egypt, 89/3.

फ़तावा रज़विया, खण्ड 3

...मामला केवल तरलता (रक़त) और प्रवाह (सैलान) पर आधारित है। आप उनमें से किसी को भी यह कहते हुए नहीं देखेंगे कि यदि इसकी पौधे उगाने या प्यास बुझाने की क्षमता समाप्त हो जाए, तो इससे वज़ू करना उचित नहीं होगा। इस प्रकार, मामला स्पष्ट हो गया और पर्दा हट गया, और अल्लाह का शुक्र है। जब वे स्पष्टीकरण पर आते हैं, तो वे मामले को केवल तरलता और प्रवाह पर आधारित करते हैं। उनमें से कोई भी यह नहीं कहता कि यदि पानी में फसल उगाने और प्यास बुझाने की क्षमता खत्म हो जाए, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं होगा। इससे मामला साफ़ हो गया, अल्लाह का शुक्र है। (त)

तीसरी चर्चा: तरलता (रक़त) और प्रवाह (सैलान) के अर्थ की जाँच और उनके बीच का अंतर।

अल्लामा शुरुनबुलाली (अल्लाह उन पर दया करे) ने नूर अल-ईदाह और इसकी व्याख्या मराक़ी अल-फ़लाह में कहा है: "(ठोस में प्रभुत्व पानी को उसकी तरलता की स्थिति से बाहर निकालने से होता है)" ताकि उसे कपड़े से निचोड़ा न जा सके "(और उसकी प्रवाह की स्थिति से बाहर)" ताकि वह अंगों पर पानी के प्रवाह की तरह न बहे। [उद्धरण समाप्त] अल्लामा शुरुनबुलाली (अल्लाह उन पर दया करे) ने नूर अल-ईदाह और इसकी व्याख्या मराक़ी अल-फ़लाह में कहा: "ठोस में प्रभुत्व की प्राप्ति पानी को उसकी तरलता से बाहर निकालने पर आधारित है।" फलस्वरूप, उसे कपड़े से निचोड़ा नहीं जा सकेगा। "और इसके प्रवाह से बाहर होने" का अर्थ है कि वह अंगों पर पानी की तरह नहीं बह सकेगा। (त)

मैं कहता हूँ: पहली बात, (1) आपसे यह छिपा नहीं है कि कपड़े से निचोड़ा जाना, प्रवाह की तुलना में अपनी प्राप्ति में अधिक विशिष्ट है। इस प्रकार, केवल वही निचोड़ा जा सकता है जो बहता हो, लेकिन हर बहने वाली चीज़ का निचोड़ा जाना ज़रूरी नहीं है, जैसे तेल, घी, दूध और शहद। ये सब बहने वाली चीज़ें हैं क्योंकि ये 'माए' (तरल) हैं। और 'माए' (तरल) का अर्थ ही बहने वाली चीज़ है, या 'माए' 'सैलान' (प्रवाह) से अधिक विशिष्ट है। अल-क़ामूस में कहा गया है: "मा-अश-शई' यमीउ" का अर्थ है कि वह पृथ्वी की सतह पर एक विशेष रूप में फैल कर बहा। (2) ताज अल-अरूस में कहा गया है: "जैसे पानी और खून।" और अल-क़ामूस में कहा गया है: "सा-ला यसीलू" [वह बहा]।

---

1. मराक़ी अल-फ़लाह, किताब अत-तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, पृ. 15।

2. अल-क़ामूस अल-मुहीत, खंड मीम और नून, अध्याय ऐन, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 89/3।

पेज 50/756

الا مرالا علی الرقة والسیلان ولن تری احدا منهم یقول ان لم ینبت اویرو لم یجذبه الوضوء فانجلی الامروانقشع الستروالله الحمد۔ بیان پر آتے ہیں تو معاملہ کو رقت وسیلان پر ہی مبنی کرتے ہیں، اور ان میں سے کوئی یہ نہیں کہتا ہے کہ اگر پانی میں اُگانی اور سیراب کرنے کی صلاحیت ختم ہوجائے تو اس سے وضو جائز نہ ہوگا، اس سے معاملہ صاف ہو گیا وللہ الحمد (ت)

بحث سوم معنی رقت وسیلان کی تحقیق اور ان کا فرق۔

قال العلامة الشرنبلالی رحمه الله تعالی فی نورالایضاح وشرحه مراقی الفلاح (الغلبة فی الجامد باخراج الماء عن رقته) فلایعصرمن الثوب (وسیلانه) فلا یسیل علی الاعضاء سیلان الماء ۱ اھ علامہ شرنبلالی رحمہ اللہ تعالٰی نے نور الایضاح اور اس کی شرح مراقی الفلاح میں کہا (جامد میں غلبہ کا تحقق پانی کو اُس کی رقت سے خارج کرنے پر ہے) پس وہ کپڑے میں سے نچوڑا نہ جاسکے گا (اور اس کا سیلان) سے اخراج یہ کہ وہ اعضاء پر پانی کی طرح بہہ نہ سکے گا اھ (ت)

اقول: اولاً (۱) لایخفی علیك ان الانحصار من الثوب اخص تحققاً من السیلان فلا ینحصر الا مایسیل ولایجب انحصار کل سائل کالدهن والزیت والسمن واللبن والعسل کل ذلك یسیل لانها من المائعات وما المیع الا السیلان اواخص قال في القاموس ماع الشیئ یمیع جری علی وجه الارض منبسطاً في هیئة ۲ قال فی تاج العروس کالماء میں اولاً کہتا ہوں کہ سیلان کی نسبت کپڑے سے نچوڑا جانا تحقق کے اعتبار سے اخص ہے تو وہی نچوڑا جاسکتا ہے جو بہتا ہو، اور ہر بہنے والی چیز کا نچوڑا جانا لازم نہیں، جیسے تیل، گھی، دودھ اور شہد، یہ سب بہنے والی چیزیں ہیں کیونکہ یہ مائع ہیں اور مائع کا مطلب ہی بہنی والی چیز ہے یا مائع سیلان سے اخص ہے، قاموس میں ہے ماع الشیئ یمیع

زمین پر کسی چیز کا پھیل کر بہنا۔ تاج العروس میں ہے جیسے پانی اور خون۔ اور قاموس میں ہے سال یسیل

---

1. مراقی الفلاح کتاب الطہارۃ الامیریہ بولاق مصر ص ۱۵
2. قاموس المحیط فصل المیم والنون، باب العین مصطفی البابی مصر ۸۹/۳

Fatawa-e-Razvia - Volume 3

[Main Text Body - Left Column (Arabic Source)] And the blood [dam] flowed and streamed... none of these things can be squeezed. Therefore, it is not permissible to purify real impurity with them. It is stated in Al-Hidayah: It is permissible to purify it with water and with every pure liquid through which its removal is possible, such as vinegar, rose water, and the like, which, when squeezed, get squeezed out. The researcher said in Al-Fath: His saying 'when squeezed, it gets squeezed out' excludes grease, oil, milk, and clarified butter (ghee), unlike vinegar and bean water which has not thickened. In Al-Munyah: If washed with honey, ghee, or oil, it is not permissible because they do not get squeezed out by squeezing. It is said in Al-Hilyah: Because these things have a stickiness to the place, and also in honey there is a thickness of consistency that prevents it from entering into the garment. In Maraqi al-Falah: It is not purified with oil due to it not coming out by itself. 'Ta' [Tahtawi] said in his commentary: i.e., then how would the impurity come out? And it has been mentioned before in...

[Main Text Body - Right Column (Urdu Translation)] Flowed and streamed, it flowed. None of these things are squeezed, and for this reason, it is not permissible to purify real impurity with them. It is mentioned in Hidayah: Its purification is permissible with water and every liquid that is pure in itself, and its removal of impurity through it is also possible, like vinegar, rose water, etc., i.e., those things which, when squeezed, can be squeezed out. The researcher in Fath said, "His statement 'when squeezed, it gets squeezed out', oil, olive oil, milk and ghee are excluded, unlike vinegar and bean water which has not thickened." And it is in Munyah that if it is washed with honey or ghee or oil, then it is not permissible, because they do not get squeezed when squeezed. In Hilyah it is stated that because these things stick to their place, and the thickness of the consistency of honey prevents it from entering the cloth. And in Maraqi al-Falah it is: it will not be purified with oil because it does not come out by itself. "Ta" has...

[Footnotes] 1. Taj al-Arus, Section Mim from Chapter 'Ain, published by Ihya al-Turath al-Arabi, Egypt, 5/516 2. Qamus al-Muhit, Section Sin, Shin, and Lam, Mustafa al-Babi, Egypt, 2/410 3. Hidayah, Chapter on Impurities and their Purification, Maktabah Arabiyah, Karachi, 1/52 4. Fath al-Qadir, Chapter on Impurities and their Purification, Maktabah Nuriyah Rizwiyah, Sukkur, 1/170 5. Munyah al-Musalli, Chapter on Waters, Maktabah Aziziyah, Kashmiri Bazar, Lahore, p. 18 6. Hilyah 7. Maraqi al-Falah, Chapter

on Impurities and Purification, Azhariyah Press, Egypt, p. 93 8. Tahtawi on Maraqi al-Falah, Chapter on Impurities and Purification, Azhariyah Press, Egypt, p. 93

फतावा-ए-रज़विया - जिल्द 3

[मुख्य भाग - बायाँ कॉलम (अरबी स्रोत)] और रक्त [दम] बहा और प्रवाहित हुआ... इनमें से किसी भी चीज़ को निचोड़ा नहीं जाता। इसलिए, इनके साथ वास्तविक अशुद्धता को शुद्ध करना जायज़ नहीं है। अल-हिदाया में कहा गया है: इसे पानी और हर उस शुद्ध तरल से शुद्ध करना जायज़ है जिसके माध्यम से इसे हटाना संभव हो, जैसे सिरका, गुलाब जल और इसी तरह की चीजें, जिन्हें निचोड़ने पर निचोड़ा जा सके। शोधकर्ता ने अल-फतह में कहा है: उनका यह कहना 'जब निचोड़ा जाए तो निचोड़ जाए' चर्बी, तेल, दूध और घी को बाहर कर देता है, सिरका और फलियों के पानी के विपरीत जो गाढ़ा न हुआ हो। अल-मुन्या में है: यदि शहद, घी या तेल से धोया जाए, तो यह जायज़ नहीं है क्योंकि निचोड़ने से वे नहीं निचोड़े जाते। अल-हिल्या में कहा गया है: क्योंकि ये चीजें उस स्थान पर चिपक जाती हैं, और शहद में स्थिरता का गाढ़ापन होता है जो इसे कपड़े में प्रवेश करने से रोकता है। मराकी अल-फलाह में है: तेल से शुद्ध नहीं होता क्योंकि वह स्वयं बाहर नहीं निकलता। 'ता' [तहतावी] ने अपनी टिप्पणी में कहा: यानी, फिर अशुद्धता कैसे निकलेगी? और यह पहले उल्लेख किया जा चुका है...

[मुख्य भाग - दायां कॉलम (उर्दू अनुवाद)] सैलान और सयालाना, यह बह गया। इनमें से किसी भी चीज़ को निचोड़ा नहीं जाता है, और इसी कारण से, उनके साथ वास्तविक अशुद्धता को शुद्ध करना जायज़ नहीं है। हिदाया में उल्लेख है: इसकी शुद्धि पानी और हर उस तरल पदार्थ से जायज़ है जो अपने आप में शुद्ध हो, और उसके माध्यम से अशुद्धता को दूर करना भी संभव हो, जैसे सिरका, गुलाब जल आदि, यानी वे चीजें जिन्हें निचोड़ने पर निचोड़ा जा सके। फतह में शोधकर्ता ने कहा, "उनका कथन 'जब निचोड़ा जाए, तो निचोड़ जाए', तेल, जैतून का तेल, दूध और घी को बाहर कर देता है, सिरका और फलियों के पानी के विपरीत जो गाढ़ा न हुआ हो।" और मुन्या में है कि यदि इसे शहद या घी या तेल से धोया जाए, तो यह जायज़ नहीं है, क्योंकि निचोड़ने पर वे नहीं निचोड़े जाते। हिल्या में कहा गया है कि क्योंकि ये चीजें अपने स्थान पर चिपक जाती हैं, और शहद की स्थिरता का गाढ़ापन उसे कपड़े में प्रवेश करने से रोकता है। और मराकी अल-फलाह में है: तेल से शुद्ध नहीं होगा क्योंकि वह स्वयं बाहर नहीं निकलता। "ता" ने...

[फुटनोट्स] 1. ताज अल-अरूस, अध्याय मीम, अध्याय 'ऐन' से, इहया अल-तुराथ अल-अरबी द्वारा प्रकाशित, मिस्र, 5/516 2. कामूस अल-मुहीत, अध्याय सीन, शीन और लाम, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 2/410 3. हिदाया, अशुद्धियों और उनकी शुद्धि पर अध्याय, मकतबा अरबिया, कराची, 1/52

4. फतह अल-कादिर, अशुद्धियों और उनकी शुद्धि पर अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/170 5. मुन्या अल-मुसल्ली, जल पर अध्याय, मकतबा अज़ीज़िया, कश्मीरी बाज़ार, लाहौर, पृष्ठ 18 6. हिल्या 7. मराकी अल-फलाह, अशुद्धियों और शुद्धि पर अध्याय, अज़हरिया प्रेस, मिस्र, पृष्ठ 93 8. तहतावी अल-मराकी अल-फलाह, अशुद्धियों और शुद्धि पर अध्याय, अज़हरिया प्रेस, मिस्र, पृष्ठ 93

فتاوی رضویہ - جلد سوم

[Main Text Body - Left Column (Arabic)] والدم [1] سیلا وسیلانا جری [2] اھ ولیس شیئ منھا ینعصر (1) ولذا لم یجز تطھیر النجاسة الحقیقیة بھا قال في الھدایة یجوز تطھیرھا بالماء وبکل مائع طاھر یمکن ازالته به کالخل وماء الورد ونحوه مما اذا عصر انعصر [3] قال المحقق في الفتح قوله اذا عصر انعصر یخرج الدھن والزیت واللبن والسمن (2) بخلاف الخل وماء الباقلاء الذی لم یثخن [4] اھ وفی المنیة ان غسل بالعسل او السمن او الدھن لا یجوز لانھا لا تنعصر بالعصر [5] قال في الحلیة لان لھذه الاشیاء لصوقا بالمحل وایضا في العسل من غلظ القوام ما یمنع من المداخلة في الثوب [6] اھ وفی مراقی الفلاح لاتطھر بدھن لعدم خروجه بنفسه [7] قال ط فی حاشیته ای فکیف یخرج النجاسة [8] وقد تقدم في

[Main Text Body - Right Column (Urdu)] سیلا و سیلانا، جاری ہوا اھ اور ان میں سے کسی چیز کو نچوڑا نہیں جاتا ہے اور اسی لئے نجاست حقیقیہ کو ان سے پاک کرنا جائز نہیں۔ ہدایہ میں فرمایا اس کا پاک کرنا پانی اور ہر مائع سے جائز ہے جو خود پاک ہو، اور نجاست کا اس سے زائل کرنا بھی ممکن ہو، جیسے سرکہ گلاب کا پانی وغیرہ، یعنی وہ چیزیں جو نچوڑے جانے سے نچڑی جاسکیں۔ محقق نے فتح میں فرمایا "ان کا قول جب نچوڑا جائے تو نچڑ جائے، سے تیل، روغن زیتون، دودھ اور گھی خارج ہو جاتے ہیں بخلاف سرکہ اور باقلاء کے پانی کے جو گاڑھا نہ ہواھ اور منیہ میں ہے کہ اگر شہد سے دھویا جائے یا گھی سے یا تیل سے تو جائز نہیں، کیونکہ یہ نچوڑے جانے سے نہیں نچڑتے ہیں، حلیہ میں فرمایا اس لئے کہ یہ چیزیں اپنے محل سے چپکی ہوئی ہوتی ہیں اور شہد کی قوام کی سختی اس کو کپڑے میں داخل ہونے سے منع کرتی ہے اھ اور مراقی الفلاح میں ہے تیل سے پاک نہ ہوگا کیونکہ وہ خود نہیں نکلتا ہے "ط" نے

[Footnotes] [1] تاج العروس فصل الميم من باب العين مطبوعہ احیاء التراث العربی مصر ۵۱۶/۵ [2] قاموس المحیط فصل السین والشین واللام مصطفی البابی مصر ۴۱۰/۲ [3] ہدایۃ باب الانجاس و تطہیر ہا مکتبہ عربیہ کراچی ۵۲/۱ [4] فتح القدیر باب الانجاس و تطہیر ہا مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۷۰/۱ [5] منیۃ المصلی فصل فی المیاہ مکتبہ عزیزیہ کشمیری بازار لاہور ص ۱۸ [6] حلیۃ [7] مراقی الفلاح باب الانجاس والطہارۃ مطبعۃ از ہریۃ مصر ص ۹۳ [8] طحطاوی علی مراقی الفلاح باب الانجاس والطہارۃ مطبعۃ از ہریۃ مصر ص ۹۳

Fatawa Razawiyya, Volume 3

[Main Text Body] [Arabic Text Section]: This suggests the persistence of the absolute status (of water) despite the absence of thinness (riqqat), as long as flow (saylan) is not lost, whereas it is not so. If you say that he (may Allah have mercy on him) addressed this in the commentary by restricting 'flow' to a flow like that of water, it is clear that what is meant is pure water that has not been mixed with anything and has not changed from its original attribute. Those liquids do not flow like it because water is thinner. As for that which flows like its flow, it must be squeezable like it is squeezable. If everything that is squeezable flows like water, then thinness and this flow would be equal. Otherwise, thinness would be more general. In any case, no prohibition follows, for whenever thinness is absent, its ultimate goal (flow) is absent. The mention of flow remains redundant upon the estimation of its specificity; however, upon equality, there is no harm in combining two equals for emphasis. I say regarding this note (haashiya): there is a point of view with respect to some.

[Urdu Text Section]: He said in its marginalia: How then will he remove the impurity? And it was mentioned in 286 that this creates an illusion of the persistence of the absolute status of water while thinness is absent and flow remains, whereas it is not so. (T) If the objection is raised that he addressed it in the commentary in such a way that he restricted flow to that flow which is like water, and it is clear that this refers to pure water which has nothing mixed in it and has not changed from its original quality, and these liquids do not flow like it because water is thinner. In any case, that thing which flows like water must be squeezable like water. So, if every squeezable thing flows like water, then thinness and this flow will become equal, otherwise, thinness will be more general. In any case, no problem will arise, because when thinness is absent, flow will also be absent. The result is that the mention of flow will be redundant on the basis of its being specific. And in the case of equality, there is no harm in the gathering of two equals for emphasis. (T) I say, with respect to some types of milk.

[Footnote Section] [Arabic Footnote]: Note: If you say, isn't this exactly what you presented just now in the first discussion while explaining the text of Al-Tabyin and others, or that they restricted it to flow? So I said it is carried over to the known flow of water which necessitates thinness. I say: Yes, how different they are! For flow like the flow of water necessitates thinness in the sense that I have established, not being squeezable like milk. 12 [From the author, may he be forgiven] (M)

[Urdu Footnote]: If you object that is this statement not exactly according to your statement which you just gave while explaining the words of Tabyin etc. in the first discussion that "they have declared only flow as sufficient", in response to this I say that this flow will be carried over to the flow of water for which thinness (riqqat) is necessary. I say both are different, the thinness of floodwater does not have that ability to be squeezed which is in the thinness of pure water. The thinness of floodwater is like the thinness of milk. 12 [From the author, may he be forgiven] (T)

फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 3

[मुख्य पाठ] [अरबी पाठ अनुभाग]: यह पतलेपन (रिक़्क़त) की अनुपस्थिति के बावजूद (पानी की) पूर्णता के बने रहने का भ्रम पैदा करता है, जब तक कि बहाव (सैलान) समाप्त न हो जाए, जबकि ऐसा नहीं है। यदि आप कहें कि उन्होंने (रहमतुल्लाह अलैहि) शरह में इसका समाधान बहाव को पानी जैसे बहाव तक सीमित करके किया है, और यह स्पष्ट है कि इससे तात्पर्य उस शुद्ध पानी से है जिसमें कुछ भी मिला न हो और वह अपने मूल गुण से न बदला हो। वे तरल पदार्थ उसकी तरह नहीं बहते क्योंकि पानी अधिक पतला होता है। जहाँ तक उसकी तरह बहने वाली चीज़ का सवाल है, उसे उसकी तरह निचोड़ा जाना चाहिए। अतः यदि निचोड़ी जाने वाली प्रत्येक वस्तु पानी की तरह बहती है, तो पतलापन और यह बहाव समान होंगे। अन्यथा पतलापन अधिक व्यापक होगा। किसी भी स्थिति में कोई वर्जित चीज़ लागू नहीं होगी, क्योंकि जब भी पतलापन अनुपस्थित होता है, तो उसका अंतिम लक्ष्य (बहाव) अनुपस्थित हो जाता है। बहाव का उल्लेख इसकी विशिष्टता के अनुमान पर निरर्थक रहता है; हालाँकि, समानता पर, ज़ोर देने के लिए दो समान चीज़ों को एकत्रित करने में कोई आश्चर्य नहीं है। मैं इस नोट (हाशिया) के बारे में कहता हूँ: कुछ के संबंध में एक दृष्टिकोण है।

[उर्दू पाठ अनुभाग]: इसके हाशिये में फरमाया: तो वह नापाकी (अशुद्धता) कैसे निकालेगा? और 286 में गुज़रा कि यह पानी के पूर्णता के बने रहने का भ्रम पैदा करता है जबकि पतलापन समाप्त हो चुका हो और बहाव बाकी हो, जबकि ऐसा नहीं है। (त) अगर यह आपत्ति की जाए कि उन्होंने शरह में इसका समाधान इस तरह किया है कि बहाव को उस बहाव से सीमित किया है जो पानी की तरह हो, और ज़ाहिर है कि इससे तात्पर्य साफ़ पानी है जिसमें कोई चीज़ मिली न हो और वह अपनी असली सिफ़त (गुण) से बदला न हो, और ये तरल पदार्थ उसकी तरह नहीं बहते क्योंकि पानी ज़्यादा पतला है। बहरहाल वह चीज़ जो पानी की तरह बहे तो ज़रूरी है कि वह पानी की तरह निचोड़ी जाए। तो अगर हर निचोड़ने वाली चीज़ पानी की तरह बहती हो, तो पतलापन और यह बहाव बराबर हो जाएंगे, वरना पतलापन ज़्यादा व्यापक होगा। हर सूरत में कोई समस्या नहीं आएगी, क्योंकि जब पतलापन नहीं होगा तो बहाव भी नहीं होगा। नतीजा यह कि बहाव का ज़िक्र इसके विशिष्ट होने के आधार पर निरर्थक होगा। और बराबर होने की स्थिति में दो बराबर चीज़ों के जमा होने में कोई हर्ज नहीं है, ताकीद (ज़ोर देने) के लिए। (त) मैं कहता हूँ, दूध की कुछ किस्मों के एतबार से।

[फ़ुटनोट अनुभाग] [अरबी फ़ुटनोट]: नोट: अगर आप कहें, क्या यह वही नहीं है जो आपने अभी तब्यीन वगैरह के पाठ को स्पष्ट करते हुए पहली बहस में पेश किया था, या कि उन्होंने इसे सिर्फ

बहाव तक सीमित रखा था? तो मैंने कहा कि इसे पानी के ज्ञात बहाव पर महमूल किया जाएगा जिसके लिए पतलापन आवश्यक है। मैं कहता हूँ: हाँ, दोनों में कितना अंतर है! क्योंकि पानी के बहाव जैसा बहाव उस अर्थ में पतलापन आवश्यक बनाता है जो मैंने स्थापित किया है, न कि दूध की तरह निचोड़ा जाना। 12 [लेखक की ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे] (म)

[उर्दू फुटनोट]: अगर आप ऐतराज़ करें कि क्या यह बयान आपके उस बयान के ऐन मुताबिक नहीं है जो अभी आपने तब्यीन वगैरह के कलाम की वज़ाहत करते हुए पहली बहस में फरमाया कि "उन्होंने सिर्फ बहाव को काफ़ी करार दिया है", इसके जवाब में मैं कहता हूँ कि इस बहाव को पानी वाले बहाव पर महमूल किया जाएगा जिसके लिए रिक़्क़त (पतलापन) लाज़िम है। मैं कहता हूँ दोनों मुख्तलिफ़ (अलग) हैं, सैलाब के पानी की रिक़्क़त में निचोड़ने की वह सलाहियत नहीं जो खालिस पानी की रिक़्क़त में है। सैलाब के पानी की रिक़्क़त दूध की रिक़्क़त जैसी है। 12 [लेखक की ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे] (त)

पृष्ठ 52 / 756

ان هذا یوهم بقاء الاطلاق مع انتفاء الرقة اذالم یسلب السیلان ولیس کذلك۔ فان قلت انه رحمه الله تعالی تدارکه فی الشرح بتقیید السیلان بسیلان کالماء وظاهر ان المراد به الماء الصافی الذی لم یخالطه شیئ ولم یتغیر عن صفته الاصلیة ولا تسیل تلك المائعات مثله لکونه ارق اما الذی یسیل کسیلانه فلابد ان ینعصر کانحصاره فان کان کل منعصر یسیل کالماء تساوی الرقة وهذا السیلان والا کانت الرقة اعم وعلی کل لا یلزم المحذور فانه کلما انتفت انتفی غایته ان یبقی ذکر السیلان مستدرکا علی تقدیر خصوصه اما علی التساوی فلا غرو فی جمع المتساویین تأکیدا اقول فیه عه نظر بالنسبة الی بعض

اس کے حاشیہ میں فرمایا تو نجاست کیسے نکالے گا۔ اور ۲۸۶ میں گزرا کہ یہ پانی کے اطلاق کو باقی رہنے کا وہم پیدا کرتا ہے جبکہ رقت منتفی ہو اور سیلان باقی ہو حالانکہ ایسا نہیں۔(ت) اگر یہ اعتراض کیا جائے کہ انہوں نے شرح میں اس کا تدارک اس طرح کیا ہے کہ سیلان کو مقید کیا ہے اُس سیلان سے جو پانی کی طرح ہو اور ظاہر ہے کہ اس سے مراد صاف پانی ہے جس میں کوئی چیز ملی نہ ہو اور وہ اپنی اصلی صفت سے متغیر نہ ہوا ہو اور یہ مائعات اس کی طرح نہیں بہتے کیونکہ پانی زیادہ پتلا ہے، بہر حال وہ چیز جو پانی کی طرح بہے تو ضروری ہے کہ وہ پانی کی طرح نچوڑے تو اگر ہر نچوڑنے والی چیز پانی کی طرح بہتی ہو تو رقت اور یہ سیلان مساوی ہوجائیں گی ورنہ تو رقت اعم ہوگی اور ہر صورت میں کوئی محذور لازم نہ آئے گا، کیونکہ جب رقت منتفی ہوگی تو سیلان منتفی ہوگا، نتیجہ یہ کہ سیلان کا ذکر مستدرک ہوگا۔ بر تقدیر اُس کے خاص ہونے کے اور تساوی کی شکل میں تو متساویین کے جمع ہونے میں کوئی حرج نہیں تاکیدا۔ (ت) میں کہتا ہوں دودھ کے بعض اقسام کے اعتبار

عه فان قلت الیس هذا عین ما قدمت انفا في البحث الاول في تبیین کلام التبیین وغیره اواقتصروا علی السیلان فقلت یحمل علی السیلان المعهود من الماء فیستلزم الرقة اقول: نعم شتان ماهما فالسیل لمکسیل الماء یستلزم الرقة بالمعنی الذی حققت لا الانعصار کالالبان ۱۲ منه غفرله(م)

اگر آپ اعتراض کریں کہ کیا یہ بیان آپ کے اس بیان کے عین مطابق نہیں ہے جو ابھی آپ نے تبیین وغیرہ کے کلام کی وضاحت کرتے ہوئے پہلی بحث میں فرمایا کہ "انہوں نے صرف سیلان کو کافی قرار دیا ہے" اس کے جواب میں میں کہتا ہوں کہ اس سیلان کو پانی والے سیلان پر محمول کیا جائے گا جس کو رقت لازم ہے۔ میں کہتا ہوں دونوں مختلف ہیں، سیلاب کے پانی کی رقت میں نچوڑنے کی وہ صلاحیت نہیں جو خالص پانی کی رقت میں ہے سیلاب کے پانی کی رقت دودھ کی رقت جیسی ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

...milk, rather goat's milk can be thinner than some types of water. Even if it is accepted, we do not concede that everything that flows like water is squeezable (absorbable into fabric so it can be squeezed out), because it is possible that there is something in it that prevents squeezing but not flowing, like fat. If every squeezable thing is also a liquid, then 'thinness' (riqqat) becomes more specific in an absolute sense, otherwise it is specific from one aspect. In any case, the problematic point returns.

Secondly: (1) He (may Allah have mercy on him) stated that everything that is not squeezable is not thin (rafeeq). Its converse would be that every thin thing is squeezable. There is an obvious flaw in this; for oil is thin but it is not squeezable. The case of milk is even more evident. As for the thinness of oil, as the jurists (fuqaha) have explicitly stated, the valid quantity that prevents (is excused for) heavy impurity (najasat ghaleeza) is the weight of one dirham in thick substances and its area measurement in thin substances. The books of the school (madhhab) are full of this. In 'Al-Bahr', agreeing with Al-Hinduwanī, it is mentioned that the narration of area measurement is for thin substances and weight is for thick ones. This reconciliation was chosen by many scholars. In 'Al-Badai', it is the chosen view among the scholars of Transoxiana (Mawarannahr), and it was authenticated by Az-Zayla'ī and the author of 'Al-Mujtaba', and upheld in 'Fath al-Qadir'. In 'Al-Ghunya', it is said: Jurist Abu Ja'far said that for impurities having a physical body, estimation is by weight...

---

1 Al-Bahr al-Raiq, Chapter on Impurities, Sa'id Company, Karachi, 1/228. Page 53 of 756

फतावा रज़विया | जिल्द 3

...दूध, बल्कि बकरी का दूध कुछ प्रकार के पानी की तुलना में अधिक पतला (रक़ीक़) हो सकता है। यदि मान भी लिया जाए, तो हम यह स्वीकार नहीं करते कि पानी की तरह बहने वाली हर चीज़ निचोड़ने योग्य (कपड़े में जज़्ब होकर निचोड़ी जा सके) होती है, क्योंकि यह संभव है कि उसमें कुछ ऐसा हो जो उसे निचोड़ने से रोके लेकिन बहने से नहीं, जैसे कि चिकनाई। यदि हर निचोड़ने योग्य वस्तु तरल है, तो 'पतलापन' (रक़्क़त) पूर्ण अर्थ में अधिक विशिष्ट हो जाता है, अन्यथा यह एक पहलू से विशिष्ट है। किसी भी मामले में, आपत्तिजनक बिंदु वापस आ जाता है।

दूसरा: (1) उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम करे) कहा कि जो कुछ भी निचोड़ने योग्य नहीं है वह पतला नहीं है। इसका विपरीत यह होगा कि हर पतली चीज़ निचोड़ने योग्य है। इसमें एक स्पष्ट त्रुटि है; क्योंकि तेल पतला है लेकिन निचोड़ने योग्य नहीं है। दूध का मामला और भी स्पष्ट है। जहाँ तक तेल के पतलेपन की बात है, जैसा कि फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने स्पष्ट रूप से कहा है कि भारी अशुद्धि (नजासत ग़लीज़ा) के लिए जो मात्रा मान्य है, वह गाढ़े पदार्थों में एक दिरहम का वजन है और पतले पदार्थों में उसका क्षेत्रफल माप है। मज़हब (विचारधारा) की किताबें इससे भरी हुई हैं। 'अल-बहर' में, अल-हिंदुवानी के साथ सहमति जताते हुए उल्लेख किया गया है कि क्षेत्रफल माप की रिवायत पतले पदार्थों के लिए है और वजन गाढ़े पदार्थों के लिए। इस समाधान को कई विद्वानों ने पसंद किया है। 'अल-बदई' में, यह मावराउन्नहर (पार-ऑक्सियाना) के विद्वानों के बीच चुना हुआ विचार है, और इसे अज़-ज़ैलई और 'अल-मुजतबा' के लेखक द्वारा प्रमाणित किया गया था, और 'फतह अल-कादिर' में बरकरार रखा गया था। 'अल-गुनिया' में कहा गया है: फक़ीह अबू जाफ़र ने कहा कि जिन अशुद्धियों का भौतिक शरीर होता है, उनमें वजन से अंदाज़ा लगाया जाता है...

---

1 अल-बहर अल-रैक़, नजासतों का अध्याय, सईद कंपनी कराची, 1/228. पृष्ठ 756 का 53

الالبان بل لبن المعزبمایکون ارق من بعض المیاہ وعلی التسلیم لانلم ان کل ماسال کالماء ینعصر لجواز ان یکون فیہ ما یمنعہ من الانعصار دون السیل کالدسم فان کان کل منعصر سائلا مثلا عادت الرقة اخص مطلقا والا فمن وجہ وعلی کل عاد المحذور۔ سے اس میں اعتراض ہے، بلکہ بکری کا دودھ بعض پانیوں کے اعتبار سے زائد رقیق ہوتا ہے اگر مان بھی لیا جائے تو ہم یہ نہیں مانتے کہ ہر وہ چیز جو پانی کی طرح بہتی ہو وہ نچڑتی بھی ہو کیونکہ یہ جائز ہے کہ اس میں کوئی ایسی چیز ہو جو اس کے نچڑنے سے مانع ہو نہ کہ بہنے سے جیسے چکناہٹ، تواگر ہر نچڑنے والی چیز اس کی طرح بہنے والی ہو تو رقت اخص مطلق ہو جائے گی ورنہ من وجہ ہوگی اور بہر صورت محذور لوٹ آئے گا۔

وثانیاً: (۱) افاد رحمہ اللہ تعالی ان کل مالا ینعصر لیس برقیق فعکسہ کل رقیق ینعصر * وفیہ نظر لا یستتر * فان الدھن رقیق ولا ینعصر * والامر فی اللبن اظھر اما رقة الدھن فلما صرحوا ان المعتبر في المقدار المانع من (۲) النجاسة الغليظة وزن الدرهم في الشيئ الغليظ ومساحته في الرقيق كتب المذهب طافحة بذلك وفی البحر وفق الھندوانی بان روایة المساحة في الرقيق والوزن في الثخين واختار هذا التوفيق كثير من المشائخ وفي البدائع هو المختار عند مشائخ ماوراء النهر وصححه الزيلعی وصاحب المجتبی واقره في فتح القدير اه وفي الغنية قال الفقيه ابو جعفر يقدر اور ثانیاً علامہ شرنبلالی رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا کہ ہر وہ چیز جو نچڑتی نہیں وہ رقیق نہیں ہے، تو اس کا عکس یہ ہوگا کہ ہر رقیق چیز نچڑتی ہے، اور اس میں ظاہری نظر ہے کہ تیل رقیق ہے مگر نچڑتا نہیں اور دودھ کا معاملہ زیادہ ظاہر ہے اور تیل کی رقت تو جیسا کہ فقہاء نے تصریح کی ہے کہ معتبر وہ مقدار جو نجاست غلیظ کے مانع ہے، گاڑھی چیز میں ایک درہم کا وزن ہے، اور رقیق میں ایک

درہم کی پیمائش معتبر ہے، کتب مذہب اس سے پُر ہیں اور بحر اور ہندوانی میں ہے کہ مساحت کی روایت رقیق میں اور گاڑھی میں وزن کی ہے، اور اس توفیق کو بہت سے مشائخ نے پسند کیا ہے اور بدائع میں ہے کہ ماوراء النہر کے مشائخ کے نزدیک یہی مختار ہے اور اس کو زیلعی اور صاحبِ مجتبیٰ نے صحیح قرار دیا ہے اور اس کو فتح القدیر میں برقرار رکھا ہے اھ اور غنیہ میں ہے فقیہ ابو جعفر نے کہا ہے جو نجاستیں جسم والی ہیں ان میں وزن سے اندازہ

---

1 بحر الرائق باب الانجاس سعید کمپنی کراچی ۱/۲۲۸ Page 53 of 756

Volume Three Fatawa Ridawiyya

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] Weight will be considered for solidified impurities, and for liquid impurities, the spread will be considered, such as flowing blood. Those who came after him agreed with this and said it is the correct view. Then the jurists differed regarding impure oil that gets on a garment in an amount less than a dirham and then spreads and increases. Most said it prevents prayer because it is now more than the limit. It is stated in Al-Munyah that this view should be adopted. A group said that the time of initial contact should be considered. This issue is commonly found in books like Al-Fath, Al-Bahr, Al-Durr, etc., and it is a clear proof that oil is a liquid substance; otherwise, the difference of opinion would not be conceivable, because spreading does not increase its weight. It is stated in Al-Ghunyah that if impure oil less than a dirham in amount stains a cloth and then spreads, prayer will not be valid because the area of impurity at the time of prayer has exceeded the amount of a dirham. The verification of this is that in liquid impurities, it is not the essence of the impurity itself that is considered, but the essence of the object that became impure; this is the opposite of solid (thick) impurity. Thus, it is proven that some liquid things are those that cannot be squeezed out. (T)

[Left Column - Original Arabic Text] By weight for the solidified ones with a physical body, and by spread for the liquid ones like flowing blood. Those who came after him agreed with him on that and said it is the correct view. Then (1) they differed regarding impure oil that afflicted a garment in an amount less than a dirham and then spread and increased. The majority said it prevents prayer because it is now more. It is said in Al-Munyah that this view should be taken. A group said that the consideration is only for the time of affliction. The issue is recurring (2) in books like Al-Fath, Al-Bahr, Al-Durr, and others, and it is clear evidence that oil is among the liquids, otherwise the disagreement would not be conceivable because spreading does not increase its weight. It is said in Al-Ghunyah: if impure oil less than the size of a dirham afflicts it and then spreads, it prevents prayer because the area of impurity at the time of prayer is more than the size of a dirham. The verification of it is that what is considered in the amount of liquid impurity is not the essence of the impurity, but the essence of the thing that became impure, the opposite of the thick impurity. So it is established that among the liquids are those that cannot be squeezed.

[Main Body Text] And I say: (2) And success is through Allah, and through Him is the attainment of the heights of verification (I say, and by the grace of Allah Almighty, the depths of research can be reached. T). According to the Ahl al-Sunnah (3) - may Allah Almighty protect them - although the composition of bodies is from individual, adjacent, non-contiguous atoms (jawahir fardah), and this is the truth, praise be to Allah Almighty, in my theological (Kalami) fatwas I have...

[Footnotes] 1. Ghunyatul Mustamli, Chapter on Al-Asar, Suhail Academy Lahore, p. 177 2. Munyatul Musalli, Chapter on Al-Asar, Maktaba Qadriah Jami'ah Nizamia Lahore, p. 136 3. Ghunyatul Mustamli, Chapter on Al-Asar, Suhail Academy Lahore, p. 177

जिल्द 3 फ़तावा रज़विया

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ठोस अशुद्धियों (नजासत) के मामले में वजन पर विचार किया जाएगा, और तरल अशुद्धियों के मामले में उसके फैलाव पर विचार किया जाएगा, जैसे बहते खून के मामले में। बाद में आने वालों ने भी इस पर सहमति जताई और कहा कि यही सही मत है। फिर फुकहा (धर्मशास्त्रियों) के बीच एक नापाक तेल के बारे में मतभेद हुआ जो कपड़े पर एक दिरहम से कम मात्रा में लग जाए और फिर फैलकर बढ़ जाए। अधिकांश ने कहा कि यह नमाज़ के लिए वर्जित है क्योंकि अब यह मात्रा बढ़ गई है। 'मुनियतुल मुसल्ली' में कहा गया है कि इसी मत को अपनाया जाए। एक समूह ने कहा कि उस समय का विचार किया जाएगा जब वह लगा था। यह मसला आम तौर पर किताबों में मौजूद है, जैसे फतह, बहर और दुर्र वगैरह, और यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि तेल तरल है, अन्यथा मतभेद की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी, क्योंकि फैलने से उसका वजन नहीं बढ़ेगा। और 'गुनिया' में कहा गया है कि अगर नजासत वाला तेल एक दिरहम से कम लगा और फिर फैल गया, तो नमाज़ नहीं होगी, क्योंकि नमाज़ के समय नजासत का क्षेत्रफल दिरहम की मात्रा से अधिक हो गया है। और इसकी तहकीक (शोध) यह है कि तरल नजासत में नजासत का तत्व मान्य नहीं है बल्कि नजासत लगने वाली चीज़ का तत्व मान्य है, यह ठोस नजासत के विपरीत है। तो यह साबित हुआ कि कुछ तरल चीज़ें वे हैं जिन्हें निचोड़ा नहीं जा सकता। (त)

[बायां कॉलम - मूल अरबी पाठ] ठोस अशुद्धियों में वजन के द्वारा और तरल अशुद्धियों जैसे बहते हुए खून में फैलाव के द्वारा। उसके बाद आने वालों ने इस पर उससे सहमति जताई और कहा कि यही सही है। फिर (1) वे उस अपवित्र तेल के बारे में असहमत हुए जो कपड़े पर एक दिरहम से कम लगा और फिर फैल कर बढ़ गया। अधिकांश ने कहा कि यह नमाज़ को रोकता है क्योंकि यह अब अधिक है। 'मुनिया' में कहा गया है कि इसे लिया जाए। एक समूह ने कहा कि विचार केवल लगने के समय का है। यह मसला किताबों में घूमता रहता है (2) जैसे 'फतह', 'बहर', 'दुर्र' और अन्य में, और यह एक स्पष्ट प्रमाण है कि तेल तरल पदार्थों में से है, अन्यथा असहमति की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी क्योंकि फैलाव इसके वजन को नहीं बढ़ाता है। और 'ग़ुनिया' में कहा गया है: यदि एक दिरहम से कम मात्रा में नापाक तेल लग जाए और फिर फैल जाए, तो यह नमाज़ को रोकता है क्योंकि नमाज़ के समय अशुद्धता का क्षेत्रफल एक दिरहम से अधिक होता है। इसकी तहकीक यह है कि तरल अशुद्धता की मात्रा में जो मान्य है वह अशुद्धता का तत्व नहीं है, बल्कि उस वस्तु का तत्व

है जो अशुद्ध हो गई है, यह ठोस अशुद्धता के विपरीत है। तो यह सिद्ध हो गया कि तरल पदार्थों में कुछ ऐसे हैं जिन्हें निचोड़ा नहीं जा सकता।

[मुख्य भाग पाठ] और मैं कहता हूँ: (2) और सफलता अल्लाह की ओर से है और उसी के द्वारा तहकीक की ऊंचाइयों तक पहुंचा जा सकता है। सुन्नत वाले (3) - अल्लाह तआला उनकी रक्षा करे - के अनुसार शरीरों की रचना हालांकि अलग-अलग, पास-पास स्थित लेकिन न जुड़े हुए परमाणुओं (जवाहर फ़ुरदा) से है और खुदा के शुक्र से यही सच है, मैंने अपने कलामी फ़तावा में इसे...

[पादलेख] 1. ग़ुनियतुल मुस्तमली, फसल फिल आसार, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 177 2. मुनियतुल मुसल्ली, फसल फिल आसार, मकतबा कादरिया जामिया निजामिया लाहौर, पृष्ठ 136 3. ग़ुनियतुल मुस्तमली, फसल फिल आसार, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 177

पेज 54/756

[دایاں کالم] لگایا جائے گا، اور رقیق میں پھیلاؤ کا اعتبار کیا جائے گا، جیسے مائع خون اور ان کی موافقت کی ان کے بعد والوں نے، اور کہا کہ وہی صحیح ہے اھ پھر فقہاء کا اختلاف ہے ناپاک تیل میں جو کسی کپڑے کو ایک درہم سے کم مقدار میں لگ جائے پھر پھیل جائے اور زائد ہو جائے اکثر نے فرمایا یہ مانع صلٰوۃ ہے کیونکہ یہ اب زائد ہے، منیہ میں فرمایا اسے کو لیا جائے گا، اور ایک جماعت نے فرمایا اس وقت کا اعتبار ہوگا جبکہ یہ لگا ہو، یہ مسئلہ عام طور پر کتب میں موجود ہے، جیسے فتح، بحر اور درِ وغیرہ اور یہ صریح دلیل ہے اس امر کی کہ تیل رقیق ہے ورنہ تو اختلاف ہی متصور نہ تھا، کیونکہ پھیلنے سے اس کا وزن زائد نہ ہوگا، اور غنیہ میں فرمایا اگر اس کو نجس تیل لگا ایک درہم سے کم پھر پھیل گیا تو نماز نہ ہوگی، کیونکہ نجاست کی پیمائش نماز کے وقت درہم کی مقدار سے زائد ہو گئی ہے اور اس کی تحقیق یہ ہے کہ رقیق نجاست میں معتبر جوہر نجاست نہیں بلکہ نجس ہونے والی چیز کا جوہر ہے یہ کثیف نجاست کا عکس ہے اھ تو ثابت ہوا کہ بعض رقیق چیزیں وہ ہیں جو نچڑتی نہیں۔ (ت)

[بایاں کالم] بالوزن فی المستجسدة ذات الجرم وبالبسط في الرقيقة كالدم المائع ووافقه على ذلك من بعده وقالو اهوالصحيح اھ ثم (۱) اختلفوا فی دهن متنجس اصاب الثوب اقل من درهم ثم انبسط فزاد قال الاكثرون يمنع الصلاة لانه الأن اكثر قال فی المنية به يؤخذ وقال جمع انما العبرة بوقت الاصابة المسألة دوارة ۲ فی الكتب كالفتح والبحر والدر وغيرها وهو صريح دليل على ان الدهن من الرقيق والا لم يتصور الاختلاف لان البسط لايزيده وزنا وقال في الغنية اصابه دهن نجس اقل من قدر الدرهم ثم انبسط يمنع الصلاة لان مساحة النجاسة وقت الصلوة اكثر من قدر الدرهم وتحقيقه ان المعتبر فی المقدار من النجاسة الرقيقة ليس جوهر النجاسة بل جوهر المتنجس عكس الكثيفة اھ فثبت ان من الرقيق مالا ينعصر۔

[وسطی عبارت] وانا اقول: (۲) وباللہ التوفیق وبہ الوصول الی ذری التحقیق (میں کہتا ہوں اور اللہ تعالیٰ کی توفیق سے تحقیق کی گہرائی تک پہنچا جاسکتا ہے۔ ت) اہل سنت (۳) حفظہم اللہ تعالیٰ کے نزدیک ترکیب اجسام اگرچہ جواہر فردہ متجاورہ غیر متلاصقہ سے ہے اور یہی حق ہے بجد للہ تعالیٰ اپنے فتاوی کلامیہ میں اسے

[حواشی] ۱ غنیۃ المستملی فصل فی الاسار سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۷۷ ۲ منیۃ المصلی فصل فی الاسار مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۱۳۶ ۳ غنیۃ المستملی فصل فی الاسار سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۷۷

Fatawa Razawiyya Volume Three It has been proven from the Great Quran—a point towards which the attention of the theologians had not been directed until now, as far as I know, and Allah knows best, for I have not found it in their speech (meaning I am not aware of it in their discourse, and Allah knows more. T)—that physical connection (attisal-e-hissi) is necessary, as we explained in our treatise "Al-Numaiqa al-Anqa" (as we have stated it in our treatise Al-Numaiqa al-Anqa. T). All rulings of religion and the world are based on this visible connection. This connection is of two types: strong and weak. Strong is that which does not separate until an external cause arises; such a thing is named a solid (Jamid). This strength and weakness varies, from a crisp wafer to a granite rock and steel, but it will not happen that its parts scatter or flow away by themselves. Weak is that where there is no general cohesion or grip among the parts except for mere proximity. The accumulation that creates pressure, because parts cannot find space above one another, as soon as space is found, the parts begin to descend and spread; such a thing is named a liquid or fluid (Ma'e or Sayil). And since there is no cohesion in the parts like the grip in solids, and the natural inclination of every heavy object is downwards, upon finding a slope, the movement that arises in heavy objects when there is no obstacle moves the entire body of a solid simultaneously because the parts from beginning to end are holding onto each other. Here, this will not happen; instead, the leading parts towards the slope will move without waiting for those behind. As soon as they advance, the parts connected to them will find space and will move without waiting for those behind them. Thus, this sequence will reach the final parts, and the movement of this body will not be a single movement but numerous successive movements. And because the advancement of the front parts and the arrival of the rear ones after them is continuous, no separation will be felt among the parts of a single body. This sequential, successive movement is called flow (sayalan). Furthermore, just as solids differed in strength and weakness to this extent, similarly, in these liquids, there is a difference that where they need a sensory obstacle for separation, some can be divided into very fine particles and some into parts of larger volume, for they are not devoid of a kind of cohesion, although not the general cohesion of solids. This is the reason for the difference in liquids when straining. It is obvious that whatever cloth or strainer you use for straining will have some openings and pores to provide a way out for the liquid parts, and some threads of cloth or iron etc., which will block the parts opposite them. Inevitably, the liquid will need to separate its parts. Then, whatever can be divided into finer parts will penetrate through even narrower openings, and others will not be capable of it. This is why

some liquids penetrate through thick cloth in a strainer because they can disperse into particles even finer than the fine pores of that cloth, and some will only be able to emerge from thin cloth that is not very densely woven; some will require the wide openings of a sieve. And similarly, the basis of this difference is called the thinness (riqqat) and thickness (ghilzat) of a liquid; otherwise, solids (1) are also thin and thick —a thin cloth is called 'thob raqiq', thin bread 'khubz raqaq', and the bones of old age 'azm raqiq', from the Hadith of the Commander of the Faithful, Uthman Ghani, may Allah Almighty be pleased with him.

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन क़ुरान-ए-अज़ीम से साबित किया है जिसकी तरफ़ उलमा मुतकल्लिमीन (धर्माचार्यों) की नज़र अब तक नहीं गई थी, फ़ीमा आलमु वल्लाहु आलम इजलम अक़िफ़ अलइहि फ़ी कलामिहिम (इसमें जो मैं जानता हूँ और अल्लाह ज़्यादा जानता है कि इस मामले में उनके कलाम में वाक़िफ़ियत हासिल न कर सका। त) मगर इत्तसाल-ए-हिस्सी (इंद्रिय संबध) ज़रूर है कमा बय्यनाहु फ़ी रिसालतिना अन-नुमैक़तुल अनक़ा (जैसा कि हमने इसे अपने रिसाला अन-नुमैक़तुल अनक़ा में बयान किया है। त)। तमाम अहकाम-ए-दीन व दुनिया इसी इत्तसाल-ए-मरई (दृश्य संबध) पर मबनी (आधारित) हैं, यह इत्तसाल दो क़िस्म का है: क़वी (मजबूत) और ज़ईफ़ (कमज़ोर)। क़वी यह कि जब तक बाहर से कोई सबब न पैदा हो अलगाव (इन्फ़िकाक) नहीं होता, ऐसी ही चीज़ का नाम जामिद (ठोस) है। फिर यह ख़ुद क़ुव्वत व ज़ुअफ़ (शक्ति और कमजोरी) में कुरकुरे पापड़ से लेकर संग-ए-खारा (ग्रेनाइट) की चट्टान और फ़ौलाद तक मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) है, मगर यह न होगा कि ख़ुद-ब-ख़ुद इसके अजज़ा (अंश) बिखर जाएँ या बह कर उड़ जाएँ। ज़ईफ़ यह कि महज़ क़रीब होने (मुजावरत) के सिवा अजज़ा में आम पकड़ (बस्तगी व गिरफ़्तगी) न हो, दबाव (तराकुम) की वजह से कि अजज़ा एक-दूसरे के ऊपर जगह न पाने के कारण, जैसे ही गुंजाइश मिलती है अजज़ा उतर कर फैलने लगते हैं, ऐसी ही चीज़ का नाम माए व साइल (द्रव) है। और चूँकि अजज़ा में ठोस पदार्थों की तरह पकड़ नहीं है और हर भारी चीज़ का स्वाभाविक झुकाव नीचे की ओर होता है, तो ढलान पाते ही जो गति भारी चीज़ों में पैदा होती है, जबकि कोई बाधा न हो, ठोस में पूरे जिस्म को एक साथ गतिशील करती थी क्योंकि पहले से आख़िरी तक के अजज़ा एक-दूसरे को पकड़े हुए हैं। यहाँ ऐसा न होगा बल्कि ढलान की ओर के पहले अजज़ा गति में पिछलों का इंतज़ार करेंगे, उनके आगे बढ़ते ही उनके साथ वाले अजज़ा जगह पाएँगे और वे अपने पिछलों का इंतज़ार किए बिना हरकत करेंगे। यूँ ही यह सिलसिला आख़िरी अजज़ा तक पहुँचेगा तो इस जिस्म की हरकत एक हरकत नहीं होगी बल्कि अनेक निरंतर गतियाँ होंगी और चूँकि अगलों का बढ़ना और पिछलों का उनके पीछे आना मुसलसल (लगातार) है, कहीं अलगाव महसूस न होगा, एक जिस्म के अजज़ा में इसी क्रमबद्ध निरंतर गति का नाम सैलान (प्रवाह) है। फिर जिस तरह ठोस पदार्थ शक्ति और कमजोरी में इस हद तक मुख़्तलिफ़ थे, यूँ ही इन द्रवों में यह अंतर है कि जहाँ इंद्रिय अलगाव की बाधा के कारण मोहताज हों, कुछ बहुत बारीक कणों में विभाजित हो सकेंगे और कुछ ज़्यादा आयतन के अजज़ा पर, क्योंकि वे एक प्रकार की पकड़ (तमासुक) से खाली नहीं हैं, हालांकि ठोस पदार्थों की तरह आम पकड़ नहीं है। छानने में द्रवों का यही अंतर ज़ाहिर है कि कपड़ा या छलनी जिस चीज़ में छानें, उसमें कुछ तो छेद और रोमछिद्र (मनाफ़िज़ व मसाम) होंगे जो द्रव के अजज़ा को निकलने की जगह देंगे, और कुछ कपड़े या

लोहे आदि के तार होंगे जो अपने सामने वाले अजज़ा को रोकेंगे। विवश होकर द्रव को अपने अजज़ा के अलगाव की ज़रूरत होगी, फिर जो जितने बारीक अजज़ा में विभाजित हो सकेगा उतने ही तंग छेद से गुज़र जाएगा और दूसरा इस पर सक्षम न होगा। यही कारण है कि कुछ द्रव छलनी में भारी कपड़े से भी पार हो जाते हैं क्योंकि वे उस कपड़े के बारीक छेदों से भी ज़्यादा बारीक अजज़ा में बट सकते हैं, और कुछ बारीक कपड़े से निकल सकेंगे जो ज़्यादा घना न बना हो, कुछ छलनी के चौड़े छेद चाहेंगे। और इसी तरह, इस अंतर के आधार का नाम द्रव की रक़्क़त (पतलापन) और ग़िलज़त (गाढ़ापन) है, वर्ना ठोस पदार्थों (1) में भी रक़ीक़ व ग़लीज़ होते हैं—पतले कपड़े को 'सोब-ए-रक़ीक़' कहते हैं, पतली चपाती को 'ख़ुब्ज़-ए-रक़ाक़', बुढ़ापे की हड्डी को 'अज़्म-ए-रक़ीक़', अमीरुल मोमिनीन उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस के अनुसार।

पेज 55 ऑफ़ 756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم قرآن عظیم سے ثابت کیا ہے جس کی طرف علماء متکلمین کی نظر اب تک نہ گئی تھی فیما اعلم واللہ اعلم اذلم اقف علیہ فی کلامھم (اس میں جو میں جانتا ہوں اور اللہ زیادہ جانتا ہے کہ اس معاملہ میں ان کے کلام میں واقفیت حاصل نہ کرسکا۔ت) مگر اتصال حسی ضرور ہے کما بیناہ فی رسالتنا النمیقۃ الانقی (جیسا کہ ہم نے اسے اپنے رسالہ النمیقۃ الانقی میں بیان کیا ہے۔ت) تمام احکام دین و دنیا اسی اتصال مرئی پر مبنی ہیں، یہ اتصال دو قسم ہے: قوی وضعیف۔ قوی یہ کہ جب تک خارج سے کوئی سبب نہ پیدا ہو انفکاک نہیں ہوتا، ایسی ہی شی کا نام جامد ہے۔ پھر یہ خود قوت وضعف میں بریان پاپڑ سے لے کر سنگ خارا کی چٹان اور فولاد تک مختلف ہے مگر یہ نہ ہوگا کہ خود بخود اس کے اجزا بکھر جائیں یا بہ کر اڑ جائیں۔ ضعیف یہ کہ محض مجاورت کے سوا اجزا میں عام بستگی و گرفتگی نہ ہو دل پیدا کرنے والا تراکم کہ اجزای کے بالائے دیگرے ہمیں جگہ نہ پانے کی باعث ہو گنجائش ملتی ہی اجزا اتر کر پھیلنے لگیں ایسی ہی شی کا نام مائع وسائل ہے اور ازاں جاکہ اجزاء میں تماسک یعنی جامدات کی مانند بستگی و گرفتگی نہیں اور میل طبعی ہر ثقیل کا جانب تحت ہے تو نشیب پاتے ہی جو حرکت ثقیل اشیاء میں پیدا ہوتی ہے جبکہ کوئی مانع نہ ہو جامد میں سارے جسم کو معاً متحرک کرتی تھی کہ اجزا اول سے آخر تک ایک دوسرے کو پکڑے ہوئے ہیں یہاں ایسا نہ ہوگا بلکہ جانب نشیب کے پہلے اجزاء حرکت میں پچھلوں کا انتظار کریں گے ان کے آگے بڑھتے ہی ان کے متصل جو اجزاء تھے جگہ پائیں گے اور وہ اپنے پچھلوں کے منتظر نہ رہ کر جنبش کریں گے یوں ہی یہ سلسلہ اخیر اجزاء تک پہنچے گا تو اس جسم کی حرکت حرکتِ واحدہ نہ ہوگی بلکہ حرکات عدیدہ متوالیہ اور ازاں جا کہ اگلوں کا بڑھنا اور پچھلوں کا ان سے آمدنا مسلسل ہے کہیں انفکاک محسوس نہ ہوگا جسم واحد کے اجزا میں اسی سلسلہ وار حرکتِ متوالی کا نام سیلان ہے پھر جس طرح جامدات قوت و ضعف

میں اس درجہ مختلف تھے یوں ہی ان مائعات میں یہ اختلاف ہے کہ جہاں بوجہ مانع انفکاک حسی کے محتاج ہوں بعض بہت باریک ذروں پر منقسم ہو سکیں گے اور بعض زیادہ حجم کے اجزاء پر کہ ایک نوع تماسک سے خالی نہیں اگر چہ جامدات کی طرح عام تماسک نہیں چھاننے میں اختلافِ مائعات کی یہی وجہ ہی ظاہر ہے کہ کپڑا یا چھلنی جس چیز میں چھانیئے اس میں کچھ تو منافذ و مسام ہوں گے کہ اجزائے مائع کو نکلنے کی جگہ دیں گے اور کچھ کپڑے یا لوہے وغیرہ کی تار ہوں گے کہ اپنے محاذی اجزاء کو روکیں گے ناچار مائع اپنے اجزاء کی تفریق کا محتاج ہوگا پھر جو جس قدر باریک اجزا پر منقسم ہو سکے گا اتنے ہی تنگ منفذ سے نفوذ کر جائے گا اور دوسرا اس پر قادر نہ ہوگا یہی سبب ہے کہ بعض مائعات چھاننی میں سنگین کپڑے سے نفوذ کر جاتے ہیں کہ اس کپڑے کی باریک مسام سے بھی زیادہ باریک اجزاء پر متفرق ہو سکتے ہیں اور بعض باریک کپڑے سے نکل سکیں گے جو زیادہ گھنانہ بنا ہو بعض چھلنی کی وسیع منفذ چاہیں گے وعلی ھٰذا القیاس اسی منشاء اختلاف کا نام مائع کی رقت و غلظت ہے ورنہ جامدات (1) میں بھی رقیق و غلیظ ہوتے ہیں پتلے کپڑے کو ثوب رقیق کہتے ہیں تپلی چپاتی کو خبرِ رقاق، استخوان زمان پیری کو عظم رقیق، حدیث امیر المومنین عثمان غنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ

Fatawa-e-Razawiyyah Volume 3

It is stated:

[Arabic]: O Allah, my age has increased and my bones have become fragile, so take me to You without being incapacitated or blamed.

[Urdu]: O Allah, my age has increased and my bones have become thin, so take me to Your presence without making me helpless or ashamed. (T)

Glass that has a thin core is called 'Zujaj-e-Raqiq'. Their poet said:

[Arabic]: The glass became thin and the wine became thin, so they resembled each other.

(Translation: The glass became thin (fine), and the wine became thin (dilute), thus they both resembled each other. T)

In short, (1) 'Riqqat' (thinness) and 'Diqqat' (fineness) are near-synonyms; 'Raqiq' means thin and 'Daqiq' means fine/narrow.

I say: However, in 'Diqqat', the reduction in width is considered, which is why a line is called 'Daqiq'. In 'Riqqat', the reduction in depth is considered, so the surface [of liquid] is 'Raqiq'. This is an idea that occurred to me during conversation, and then I found its clarification in 'Taj al-Urus'.

[Arabic Citation]: Wherein Al-Munawi said in 'Al-Tawqif': Riqqat is like Diqqat, but Diqqat is said regarding the consideration of the sides of a thing, while Riqqat is regarding the consideration of its depth.

Urdu Translation: He said that Munawi stated in 'Al-Tawqif' that Riqqat is like Diqqat, but in Diqqat the sides of a thing are considered, whereas in Riqqat its depth is considered. (T)

This is why when a shallow layer of water remains in a pond or stream, it is called 'Ruq' or 'Ruqariq'. It is stated in Al-Qamus:

[Arabic Citation]: 'Al-Ruqariq' (with damma) is thin water in the sea or valley that is not deep. (End) A similar point was mentioned earlier under 'Al-Ruq', except for his statement 'not deep', which the commentator added.

Also in it:

[Arabic]: 'Istaraqqa al-maa' means the water receded except for a little.

Urdu Translation: Also in it: the water became 'Raqiq', meaning it reached a shallow depth. (T)

I say: This 'Riqqat' (2) is actual, and it is the ability of a liquid to be divided into fine parts during filtering.

---

1. Taj al-Urus, Section: Ra, Chapter: Qaf, Ihya al-Turath al-Arabi, Egypt, 6/358
2. Qamus al-Muhit, Section: Ra, Chapter: Qaf, Mustafa al-Babi, Egypt, 3/225
3. Qamus al-Muhit, Section: Ra, Chapter: Qaf, Mustafa al-Babi, Egypt, 3/225

फ़तावा-ए-रज़विया खंड 3

लिखा है:

[अरबी]: ऐ अल्लाह, मेरी उम्र बड़ी हो गई है और मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं, इसलिए मुझे बेबस और शर्मिंदा किए बिना अपने पास बुला ले।

[उर्दू]: ऐ अल्लाह, मेरी उम्र बड़ी हो गई है और मेरी हड्डियाँ पतली हो गई हैं, इसलिए मुझे बेबस और शर्मिंदा किए बिना अपने दरबार में हाज़िर कर ले। (त)

शीशा जो बारीक दिल का हो उसे 'जुजाज-ए-रक़ीक़' कहते हैं। कहने वाले ने कहा:

[अरबी]: शीशा पतला हुआ और शराब भी पतली हुई, तो दोनों एक-दूसरे के समान हो गए।

(अनुवाद: शीशा पतला (बारीक) हुआ, और शराब पतली हुई, यों दोनों आपस में समान हुए। त)

संक्षेप में (1) 'रक़्क़त' और 'दक़्क़त' लगभग समान हैं; रक़ीक़ का अर्थ पतला है और दक़ीक़ का अर्थ बारीक।

लेखक का कथन: लेकिन दक़्क़त में चौड़ाई (अर्ज़) की कमी का ध्यान रखा जाता है, इसीलिए रेखा को दक़ीक़ कहेंगे, और रक़्क़त में गहराई (उम्क़) की कमी का, तो सतह रक़ीक़ है। यह विचार चर्चा के दौरान मेरे मन में आया, फिर 'ताजुल उरूस' में इसकी स्पष्ट व्याख्या मिली।

[अरबी]: मुनावी ने 'अत-तौक़ीफ़' में फ़रमाया कि रक़्क़त, दक़्क़त की तरह है, लेकिन दक़्क़त में चीज़ के किनारों का विचार होता है और रक़्क़त में उसकी गहराई का।

[उर्दू अनुवाद]: फ़रमाया कि मुनावी ने तौक़ीफ़ में फ़रमाया रक़्क़त मिस्ल दक़्क़त है लेकिन दक़्क़त में किसी चीज़ के किनारों का एतबार होता है और रक़्क़त में उसकी गहराई का। (त)

इसीलिए तालाब या नाले में जब पानी की थोड़ी परत रह जाए तो उसे 'रुक़' या 'रुक़ारिक़' कहते हैं। क़ामूस में है:

[अरबी]: 'अर-रुक़ारिक़' (ज़म्म के साथ) समंदर या वादी में वह पतला पानी है जो गहरा न हो। (समाप्त) और ऐसी ही बात 'अर-रुक़' में गुज़री, बस 'ला ग़ुज़्र लह' (गहरा न होना) का ज़िक्र नहीं था, जिसका इज़ाफ़ा टीकाकार (शारिह) ने किया है।

[उर्दू अनुवाद]: रुक़ारिक़ ब-ज़म्म पतला पानी दरिया या वादी में जो गहरा न हो (समाप्त) और इसकी मिस्ल 'अर-रुक़' में गुज़री, उसके क़ौल 'ला ग़ुज़्र लह' का ज़िक्र नहीं, इसका इज़ाफ़ा शारिह ने किया है। (त)

तथा उसी में है:

[अरबी]: 'इस्त-रक़्क़ल मा' यानी पानी कम हो गया सिवाय थोड़े के।

[उर्दू अनुवाद]: नीज़ इसमें है: पानी रक़ीक़ हुआ यानी कम गहराई वाला हो। (त)

लेखक का कथन: यह रक़्क़त (2) वास्तव में है, और तरल पदार्थ का इस योग्य होना है कि वह छानने पर बारीक अंशों में विभाजित हो सके।

---

1. ताजुल उरूस, फ़स्ल अर-रा, बाब अल-क़ाफ़, इहया अत-तुराथ अल-अरबी, मिस्र, 6/358
2. क़ामूस अल-मुहीत, फ़स्ल अर-रा, बाब अल-क़ाफ़, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 3/225
3. क़ामूस अल-मुहीत, फ़स्ल अर-रा, बाब अल-क़ाफ़, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 3/225

पृष्ठ 56 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

میں ہے:

اللھم کبر سنی و رق عظمی فاقبضنی الیك غیر عاجز ولا ملوم۔ اے اللہ میری عمر بڑی ہوگئی اور میری ہڈی پتلی ہوگئی پس مجھے عاجز اور شرمسار کئے بغیر اپنے دربار میں حاضر کرلے۔(ت)

شیشہ کہ باریک دل کا ہو زجاجِ رقیق۔ قال قائلھم ع: رق الزجاج ورق الخمر فاشتبھا (ترجمہ : شیشہ پتلا (باریک) ہوا، اور شراب پتلی ہوئی ، یوں دونوں آپس میں مشابہ ہوئے۔ ت) بالجملہ (۱) رقت و دقت متقارب ہیں رقیق پتلا دقیق باریک۔ اقول: مگر دقت میں کمی عرض کی طرف لحاظ ہے ولذا خط کو دقیق کہیں گے اور رقت میں کمی عمق کی جانب تو سطح رقیق ہے یہ وہ ہے جو نظر بمحاورت خیال فقیر میں آیا پھر تاج العروس میں اس کی تصریح پائی۔

حیث قال قال المناوی فی التوقیف الرقۃ کالدقۃ لکن الدقۃ یقال اعتبار المراعاۃ جوانب الشیئ والرقۃ اعتبارابعھقہ[1]۔ فرمایا کہ مناوی نے توقیف میں فرمایا رقت مثل دقت ہے لیکن دقت میں کسی چیز کے کناروں کا اعتبار ہوتا ہے اور رقت میں اس کی گہرائی کا۔ (ت)

اسی لئے تالاب یا نالے میں جب پانی تھوڑی دل کا رہ جائے اُسے رُق و رُقارق کہتے ہیں قاموس میں ہے: الرقارق بالضم الماء الرقیق فی البحر او الوادی لا غزر لہ [2] اھ وقدم مثلہ فی الرق الا قولہ لا غزر لہ فزادہ الشارح۔ رقارق بالضم پتلا پانی دریا یا وادی میں جو گہرا نہ ہو اھ اور اس کی مثل الرق میں گزرا اس کے قول لا غزر کا ذکر نہیں ، اس کا اضافہ شارح نے کیا ہے۔ (ت) نیز اسی میں ہے: استرق الماء نضب الا یسیرا[3]۔ نیز اس میں ہے پانی رقیق ہوا یعنی قلیل گہرائی والا ہو۔ (ت)

اقول: یہ رقت (۲) بالفعل ہے اور مائع کا اس قابل ہونا کہ چھانٹی میں باریک اجزاء پر منقسم ہو سکے

---

1 تاج العروس فصل الراء من باب القاف احیاء التراث العربی مصر ۳۵۸/۶ 2 قاموس المحیط فصل الراء باب القاف مصطفیٰ البانی مصر ۲۲۵/۳ 3 قاموس المحیط فصل الراء باب القاف مصطفیٰ البانی مصر ۲۲۵/۳

Volume Three Fatawa Rizvia Potential fluidity (riqqat bil-quwwah) is what is considered and discussed in these matters. Furthermore, I say: Regarding the side of increasing extreme fluidity, it depends on individual atoms (jawahir-e-fardah), as further refinement beyond them is impossible. Aside from that, one liquid is relatively fluid compared to another. Cow's milk is fluid compared to buffalo milk in all circumstances, but if the cow grazes on monsoon grass, oil cakes, and grain, its own milk in its first state is more fluid than the second. Similarly, this difference varies from goat's milk to uncurdled syrup. On the side of decreasing fluidity, its limit is the end of flowing capability (saylan). When a thing is no longer flowing, it becomes clear from here that 'potential fluidity' and 'flowing' are equivalent in their own right. Every potentially fluid thing is flowing, and every flowing thing is potentially fluid, whether it can be squeezed out of a cloth like water or not, like oil, ghee, milk, honey, etc. Now, as for the fact that when the discussed fluidity is spread from indivisible parts (atoms) to the last limit of a liquid with intense variation, then what is the definition of the limit at which the natural state of water is said to be lost? Up to what degree of fluidity will water be called unchanged, and what form will it take to be called devoid of its natural state? This is the actual purpose of the discussion. Its revelation, with the help of the Almighty, will be done in the upcoming discussion. And with Allah is success, and to Him belongs praise for guiding the path. And may Allah Almighty's peace and blessings be upon our master and leader Muhammad, and upon his family and companions, the masters of research.

Fourth Discussion: Limiting the extent of fluidness considered valid in its place.

I say: I have seen the statements regarding this in three ways.

First: It is stated in Al-Ghunyah that [purification] is not permissible with restricted [water], like saffron water when it is thick. However, if it is fluid according to its original flow, it is permissible, like floodwater and the like. Then he said: As long as it is fluid and flows rapidly as it flows when there is no mixture, its ruling is the ruling of absolute water. Then he said: The rule for it is the remains of the speed of flow as is the nature of water before mixing. Then he said: (If bread is soaked in water, if its fluidity remains as it was, it is permissible, and if it becomes thick, then no).

1. Ghunyat al-Mustamli, Chapter explaining the rulings of waters, Suhail Academy Lahore, p. 88-91. Page 57 of 756

खंड तीन फ़तावा रज़विया संभावित तरलता (रक़त बिल-क़ुव्वह) ही इन मसलों में विचारणीय और चर्चित विषय है। इसके अलावा, मैं कहता हूँ: तरलता की अधिकता की चरम सीमा व्यक्तिगत परमाणुओं (जवाहिरे फ़र्दा) पर है, क्योंकि उनसे अधिक सूक्ष्मता असंभव है। इसके अलावा, एक तरल पदार्थ दूसरे की तुलना में सापेक्षिक रूप से पतला होता है। गाय का दूध हर हाल में भैंस के दूध से पतला है, लेकिन अगर वह मानसून की घास, खली और दाना खाए, तो उसकी अपनी पहली स्थिति का दूध दूसरी स्थिति से अधिक पतला होता है। इसी तरह यह अंतर बकरी के दूध से लेकर न जमी हुई राब (शीरा) तक अलग-अलग होता है। और तरलता की कमी की ओर इसकी सीमा बहाव (सैलान) के अंत पर है। जब कोई वस्तु बहने वाली नहीं रहेगी, तो यहाँ से स्पष्ट हुआ कि 'संभावित तरल' और 'बहने वाला' अपने आप में बराबर हैं। हर संभावित तरल वस्तु बहने वाली है, और हर बहने वाली वस्तु संभावित तरल है, चाहे वह कपड़े से निचोड़ी जा सके जैसे पानी, या नहीं जैसे तेल, घी, दूध, शहद आदि। अब रही यह बात कि जब चर्चित तरलता अविभाज्य कणों से लेकर तरल की अंतिम सीमा तक अत्यधिक भिन्नता के साथ फैली हुई है, तो यहाँ उस मात्रा की सीमा क्या है जिस पर पानी की प्राकृतिक अवस्था का लोप होना कहा जाता है? पानी को किस सीमा तक की तरलता तक अपरिवर्तित कहा जाएगा और कैसा होकर उसे प्रकृति-रहित (ज़ाइल-उत-तबअ) कहा जाएगा? यही चर्चा का वास्तविक उद्देश्य है। इसका खुलासा, अल्लाह तआला की सहायता से, आगामी चर्चा में होगा। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है, और उसी के लिए प्रशंसा है मार्ग दिखाने पर। और अल्लाह तआला की कृपा और शांति हो हमारे स्वामी और मार्गदर्शक मुहम्मद पर, और उनकी आल और उनके साथियों पर, जो शोध के विशेषज्ञ हैं।

चौथी चर्चा: उस स्थान की मान्य तरलता की सीमा निर्धारित करना।

मैं कहता हूँ: मैंने इस संबंध में तीन प्रकार के कथन देखे हैं।

पहला: ग़ुनिया में कहा गया है कि प्रतिबंधित (पानी) से जायज़ नहीं है, जैसे केसर का पानी जब वह गाढ़ा हो। लेकिन जब वह गाढ़ा न हो और अपने मूल बहाव पर हो, तो जायज़ है, जैसे बाढ़ आदि का पानी। फिर फरमाया जब तक वह पतला हो और जल्दी बहता हो जैसे बिना मिलावट के बहता है, तो उसका हुक्म मुतलक़ (शुद्ध) पानी जैसा है। फिर फरमाया और इसका नियम यह है कि बहाव की गति वैसी ही बनी रहे जैसी मिलावट से पहले पानी की प्रकृति होती है। फिर फरमाया (अगर रोटी

पानी में भीग गई, तो अगर उसकी तरलता वैसी ही बनी रहे, तो जायज़ है और अगर गाढ़ा हो जाए तो नहीं)।

1. ग़ुनियतुल मुस्तमली, पानी के अहकाम के बयान का अध्याय, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 88-91। पृष्ठ 756 में से 57

جلد سوم فتاویٰ رضویہ رقت بالقوہ یہی ان مسائل میں ملحوظ و مبحوث عنہ ہے۔ ثم اقول: جانب زیادت انتہائے رقت تو جواہر فردہ پر ہے کہ ان سے زیادہ باریکی محال ہے باقی ایک مائع دوسرے کے اعتبار سے رقیق اضافی ہے گائے کا دودھ ہر حال میں بھینس کے دودھ سے رقیق ہے مگر برسات کی گھاس چرے اور کھلی اور دانہ کھائے تو خود اس کی پہلی صورت کا دودھ دوسری سے رقیق تر ہے یوں ہی یہ اختلاف بکری کے دودھ سے نہ جمی ہوئی راب تک متفاوت ہے اور جانب کمی اس کی انتہا اختتام سیلان پر ہے۔ جب شئی سائل نہ رہے گی یہاں سے ظاہر ہوا کہ رقیق بالقوہ وسائل بجائے خود متساوی ہیں ہر رقیق بالقوہ سائل ہے اور ہر سائل رقیق بالقوہ عام ازیں کہ کپڑے سے نچڑ سکے جیسے پانی یا نہیں جیسے تیل، گھی، شیر، شہد وغیرہ۔ اب رہا یہ کہ جب رقت مبحوث عنہا اجزائے لایتجزٰی سے اخیر حد مائع تک بتفاوت شدید پھیلی ہوئی ہے تو یہاں جس مقدار کی انتہا پر زوالِ طبع آب کہتے ہیں اس کی تحدید کیا ہے۔ پانی کس حد کی رقت تک نامتغیر کہا جائے گا اور کیسا ہو کر زائل الطبع کہلائے گا یہی اصل مقصدِ بحث ہے اس کا انکشاف بعونہ تعالٰی بحث آئندہ کرتی ہے وباللہ التوفیق * و لہ الحمد علی ھدایۃ الطریق * وصلی اللہ تعالٰی سیدنا و مولانا محمد و آلہ و صحبہ اولی التحقیق۔

بحثِ چہارم: رقتِ معتبرہ مقام کی حد بست۔

اقول: رأیت العبارات فیه علی ثلثة مناهج۔ میں کہتا ہوں میں نے اس سلسلہ میں تین قسم کی عبارات دیکھیں۔ الاول: قال في الغنية لاتجوز بالمقيد كماء الزردج اذا كان ثخينا اما اذا كان رقيقا على اصل سيلانه فتجوز كماء المد ونحوه ثم قال مادام رقيقا يسيل سريعا كسيلانه عند عدم المخالطة فحكمه حكم الماء المطلق ثم قال وضابطه بقاء سرعة السيلان كماهو طبع الماء قبل المخالطة ثم قال (لو بل الخبز فی الماء ان بقيت رقته كما كانت (جاز وان صار ثخينا لا اه)۱ پہلی: غنیہ میں فرمایا مقید سے جائز

نہیں، جیسے زردج کا پانی جبکہ گاڑھا ہو، اور جب گاڑھا نہ ہو اور اصلی سیلان پر ہو تو جائز ہے، جیسے سیلاب وغیرہ کا پانی۔ پھر فرمایا جب تک رقیق ہو جلدی بہتا ہو جیسے مخالطت کے نہ ہونے کے وقت بہتا ہے، تو اس کا حکم مطلق پانی جیسا ہے پھر فرمایا اور اس کا ضابطہ یہ ہے کہ تیزی سے سیلان کا باقی رہنا، جیسا کہ وہ پانی کی طبیعت ہے مخالطت سے پہلے، پھر فرمایا (اگر روٹی پانی میں تر ہو گئی تو اگر اس کی رقت باقی ہے) جاز (جائز ہے) وان صار ثخینا لا (اور اگر گاڑھا ہو گیا تو نہیں) اھ

۱ غنیۃ المستملی، فصل فی بیان احکام المیاہ، سہیل اکیڈمی لاہور، ص ۸۸-۹۱ Page 57 of 756

Fatawa Rizvia Volume 3

In Al-Inayah and Al-Binayah, regarding the permissibility of wudu with water into which leaves have fallen, the condition is that it remains thin (fluid). As for when it becomes thick, then it is not permissible. [Footnote 1] (And it is in Al-Inayah and Al-Binayah that for the permissibility of wudu with water in which leaves have fallen, the condition is that its thinness remains as it was before, and when it becomes thick, wudu is not permissible.)

The pronoun in 'riqqatihi' (its thinness) might refer to what was inclined towards in Al-Ghunya, and it might be countered by the contrast with its becoming thick. However, both authors said afterwards regarding saffron water and similar things that the dominance of components is considered. If the water components are dominant—and this is known by its remaining thin—then wudu is permissible. If the mixed components are dominant, such that it becomes thick and its original thinness is lost, then it is not permissible. (The pronoun in 'riqqatihi' sometimes refers to that towards which they leaned in Al-Ghunya, and its counter can be the comparison with 'becoming thick'. But both of them said after this regarding saffron etc. water that the dominance of components will be considered. So if the water components are dominant, and this is known by its thinness, then wudu is permissible. And if the mixing components are dominant in a way that it becomes thick and its original thinness is lost, then it is not permissible.)

Second: It is also stated in Al-Inayah regarding water cooked with Ushnan (potash/ soapwort) and the like that it is permissible to perform wudu with it, unless it becomes so thick that it cannot be made to flow over the limb. [Footnote 2] (Second, it is also in Al-Inayah that wudu is permissible with water in which Ushnan etc. are cooked, except if it becomes so thick that it cannot be poured over the limbs.)

The wording in Al-Hilyah, from Al-Badai', Al-Tuhfah, Al-Muheet Al-Radawi, Al-Khaniyah and others is: 'When it becomes so thick that it does not flow over the limb.' [Footnote 3] (And in Al-Hilyah, it is from Al-Badai', Al-Tuhfah, Muheet Radawi and Khaniyah etc. that when it becomes so thick that it cannot flow on the limbs. And Tabyin, Hilyah and Durar.)

Footnotes: 1. Al-Inayah with Fath al-Qadir, Chapter of Water with which Wudu is permissible etc., Nooria Rizvia Sukkur 1/63; and Al-Binayah Sharh Hidaya, Chapter of Water with which Wudu is permissible etc., Imdadiya Press, Makkah Mukarramah

1/189. 2. Al-Inayah with Al-Fath, Chapter of Water with which Wudu is permissible etc., Nooria Rizvia Sukkur 1/63. 3. Hilyah.

Page 58 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

अल-इनाया और अल-बिनाया में पत्तों के गिरे हुए पानी से वज़ू के जायज़ होने के बारे में यह शर्त है कि वह अपनी तरलता (पतलेपन) पर बरकरार रहे। लेकिन अगर वह गाढ़ा हो जाए तो जायज़ नहीं है। [हाशिया 1] (और इनाया और बिनाया में है कि जिस पानी में पत्ते गिर गए हों, उससे वज़ू के जायज़ होने की शर्त यह है कि उसकी तरलता बाकी हो जैसे पहले थी, और जब गाढ़ा हो जाए तो वज़ू जायज़ नहीं है।)

'रक़्क़तिही' (उसकी तरलता) में ज़मीर (सर्वनाम) शायद उस ओर इशारा करती है जिसकी ओर अल-गुनिया में झुकाव था, और इसका मुकाबला उसके गाढ़े होने से किया जा सकता है। लेकिन उन दोनों (लेखकों) ने इसके बाद जाफ़रान आदि के पानी के बारे में कहा कि इसमें हिस्सों के ग़लबे (प्रधानता) का एतबार होगा। अगर पानी के हिस्से ग़ालिब (प्रधान) हों—और यह उसकी तरलता से पता चलेगा—तो वज़ू जायज़ है। और अगर मिलने वाली चीज़ के हिस्से ग़ालिब हों, यानी वह इतना गाढ़ा हो जाए कि उसकी असल तरलता खत्म हो जाए, तो जायज़ नहीं है। (तो रक़्क़तिही की ज़मीर अक्सर उस ओर इशारा करती है जिसकी ओर वे गुनिया में झुके और उसका मुक़ाबला 'बसीरूरतिही थख़ीना' के साथ हो सकता है, लेकिन उन दोनों ने इसके बाद जाफ़रान आदि के पानी के बारे में कहा कि इसमें हिस्सों के ग़लबे का एतबार होगा। तो अगर पानी के हिस्से ग़ालिब हों, और इसका इल्म उसकी रक़त (तरलता) से होगा, तो उससे वज़ू जायज़ है और अगर मिलाने वाली चीज़ के हिस्से ग़ालिब हों इस तरह कि वह गाढ़ा हो जाए और उसकी असल तरलता ख़त्म हो जाए, तो जायज़ नहीं है।)

दूसरा: अल-इनाया में यह भी कहा गया है कि उशनान आदि के साथ पकाए गए पानी से वज़ू जायज़ है, सिवाय इसके कि वह इतना गाढ़ा हो जाए कि उसे अंगों पर बहाया न जा सके। [हाशिया 2] (दूसरा यह कि इनाया में यह भी है कि जिस पानी में उशनान आदि पकाए जाएं उससे वज़ू जायज़ है सिवाय इसके कि वह इतना गाढ़ा हो जाए कि उसे अंगों पर बहाया न जा सके।)

अल-हिलया में अल-बदाइ, अल-तुहफ़ा, अल-मुहीत अल-रज़वी, अल-खानिया और अन्य से शब्द ये हैं: 'जब वह इतना गाढ़ा हो जाए कि अंगों पर न बह सके।' [हाशिया 3] (और हिलया में बदाइ, तुहफ़ा, मुहीत रज़वी और खानिया आदि से है कि जब वह इतना गाढ़ा हो जाए कि अंगों पर न बह सके। और तबीन, हिलया और दुरर।)

हाशिया: 1. अल-इनाया मअ फ़त्हुल क़दीर, बाब अल-माउल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ूउ अख़, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/63; और अल-बिनाया शरह हिदाया, बाब अल-माउल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ूउ अख़, मतबा इल्मिया मक्का मुकर्रमा 1/189. 2. अल-इनाया मअ अल-फ़त्ह, बाब अल-माउल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ूउ अख़, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/63. 3. हिलया

पेज 58 / 756

وفی العنایة والبنایة فی جواز الوضوء بماء تقع فیه الاوراق شرطه ان یکون باقیا علی رقته اما اذا صار ثخینا فلا ۱ اھ (جیسے کہ پہلے تھی (تو جائز ہے اور اگر گاڑھا ہو گیا تو جائز نہیں) اھ اور عنایہ اور بنایہ میں ہے کہ جس پانی میں پتے گر گئے ہوں اُس سے وضو کے جواز میں شرط یہ ہے کہ اُس کی رقت باقی ہو اور جب گاڑھا ہو جائے تو وضو جائز نہیں اھ)

فالضمیر فی رقته ربما یشیر الی ما مال الیه فی الغنیة وقد یعارضه المقابلة بـ صیرورته ثخینا لکن قالا بعده فی ماء الزعفران وغیره یعتبر فیه الغلبة بالاجزاء فان کانت اجزاء الماء غالبة ویعلم ذلک ببقائه علی رقته جاز الوضوء وان کانت اجزاء المخالط غالبة بان صار ثخینا زالت عنه رقته الاصلیة لم یجز اھ (تو رقتہ کی ضمیر بسا اوقات اس کی طرف اشارہ کرتی ہے جس کی طرف وہ غنیہ میں مائل ہوئے، اور اس کا معارضہ "بصیر ورتہ ثخینا" کے تقابل سے ہو سکتا ہے، لیکن اُن دونوں نے اس کے بعد فرمایا زعفران وغیرہ کے پانی میں کہ اس میں اجزاء کے غلبہ کا اعتبار ہوگا، تو اگر پانی کے اجزاء غالب ہوں، اور اس کا علم اس کی رقت سے ہوگا، تو اس سے وضو جائز ہے اور اگر مخالط کے اجزاء غالب ہوں بایں طور کہ وہ گاڑھا ہو اس سے اس کی اصلی رقت زائل ہو گئی تو جائز نہیں اھ (ت))

الثانی: قال فی العنایة ایضا فی المطبوخ مع الاشنان ونحوه یجوز التوضی به الا اذا صار غلیظا بحیث لا یمکن تسییله علی العضو ۲ اھ (دوسرے یہ کہ عنایہ میں بھی ہے کہ جس پانی میں اُشنان وغیرہ پکائی جائے تو اس سے وضو جائز ہے سوائے اس کے کہ وہ اتنا گاڑھا ہو جائے کہ اس کو اعضاء پر بہایا نہ جاسکے اھ)

ولفظ الحلیة عن البدائع والتحفة والمحیط الرضوی والخانیة وغیرھا اذا صار غلیظا بحیث لا یجری علی العضو ۳ اھ (اور حلیہ میں بدائع، تحفہ، محیط رضوی اور خانیہ وغیرہ سے ہے کہ جب وہ اتنا گاڑھا ہو جائے کہ اعضاء پر نہ بہہ سکے اھ اور تبیین، حلیہ اور درر)

حواشی: 1 العنایة مع فتح القدیر باب الماء الذی یجوز به الوضوء الخ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۳، والبنایة شرح ہدایة باب الماء الذی یجوز به الوضوء الخ مطبع امدادیہ مکہ مکرمہ ۱/ ۱۸۹ 2 العنایة مع الفتح باب الماء الذی یجوز به الوضوء الخ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۳ 3 حلیہ

Fatawa Razawiyya - Volume Three

In 'Al-Tabyin', 'Al-Hilya', and 'Al-Durar', it is stated that if it flows over the limbs such that the water is dominant, it is permissible. (t) Thirdly, the researcher stated in 'Al-Fath' regarding water mixed with mud: if it flows on the limbs, there is no harm in performing wudu with it, and if the mud is dominant, then wudu is not permissible. (ah) In the works of 'An-Natfi' and 'Al-Muniya', it is mentioned that if the thinness of the water is not dominant, wudu is not permissible. (ah) In 'Al-Dhakhira', 'Al-Tatma', and 'Al-Hilya', it is noted that dominance is determined by the parts, such that the quality of thinness is lost from the water and replaced by its opposite, i.e., thickness develops in it. (ah) In 'Al-Khaniya', concerning saffron and turmeric water, it is stated that if it becomes thick, wudu is not permissible. (ah) In 'Al-Khulasa', it is said that if it is thin enough that water appears distinct from it, wudu is permissible, and if it has become like starch, it is not permissible. (ah) In the Fatawa of 'Imam Faqih al-Nafs' (Qadi Khan), it states that wudu with flood water is permissible, but if it is thick like mud, it is not permissible. (ah) In 'Al-Hidayah' and 'Al-Kafi', concerning cooked potash (ushnan), it is said that it is not permissible unless it overwhelms the water such that it becomes like a thick drink (al-sawiq).

Footnotes: 1. Tabyin al-Haqa'iq, Book of Purification, Al-Amiriyya Bulaq Egypt, 21/1 2. Fath al-Qadir, Water with which Wudu is Permitted, Nuriya Razawiyya Sukkur, 65/1 3. Ghunya al-Mustamli, Rulings of Water, Suhail Academy Lahore, p. 90 4. Fatawa Dhakhira 5. Qadi Khan, Concerning what wudu is not permitted with, Lucknow, 9/1 6. Khulasa al-Fatawa, Restricted Water, Nawal Kishore Lucknow, 8/1 7. Qadi Khan, Concerning what wudu is not permitted with, Nawal Kishore Lucknow, 9/1

फ़तावा रज़विया - जिल्द तीसरा

'अल-तब्बीन', 'अल-हिल्या' और 'अल-दुरर' में है कि यदि अंगों पर इस प्रकार बहे कि पानी की प्रधानता हो, तो जायज़ है। (त) तीसरा यह कि शोधकर्ता ने 'अल-फ़तह' में फ़रमाया कि वह पानी जिसमें कीचड़ मिला हो, यदि अंगों पर बहता हो तो उससे वज़ू में कोई हर्ज नहीं, और यदि मिट्टी की प्रधानता हो तो वज़ू जायज़ नहीं। (अह) 'अन्-नातफ़ी' की 'अजनास' और 'मुनिया' में है कि यदि पानी का पतलापन प्रधान न हो तो वज़ू जायज़ नहीं। (अह) 'ज़खीरा', 'तत्मा' और 'हिल्या' में है कि प्रधानता अंशों के आधार पर इस तरह हो कि पानी का पतलापन समाप्त हो जाए और उसका विपरीत यानी गाढ़ापन उसमें पैदा हो जाए। (अह) 'ख़ानिया' में ज़ाफ़रान और हल्दी के पानी के बारे में है कि यदि वह गाढ़ा हो जाए तो वज़ू जायज़ नहीं। (अह) 'ख़ुलासा' में है कि यदि इतना पतला हो कि पानी उससे अलग दिखाई देता हो, तो वज़ू जायज़ है और यदि वह माड़ (निशास्ता) बन गया हो तो जायज़ नहीं। (अह) 'इमाम फ़क़ीह अल-नफ़्स' (क़ाज़ी ख़ान) के फ़तवों में है कि बाढ़ के पानी से वज़ू जायज़ है लेकिन यदि गाढ़ा हो जैसे कीचड़, तो जायज़ नहीं। (अह) 'हिदाया' और 'काफ़ी' में साजी (उशनान) के पके हुए पानी के बारे में है कि जब तक कि वह पानी पर हावी न हो जाए और सत्तू (सवीक़) जैसा न बन जाए।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. तब्बीन अल-हक़ाएक़, किताब अल-तहारत, अल-अमीरिया बुलाक मिस्र, 21/1 2. फ़तह अल-क़दीर, अल-माउल्लज़ी यजोज़ु बिही अल-वज़ू, नूरिया रज़विया सक्खर, 65/1 3. ग़ुनिया अल-मुस्तमली, अहकाम अल-मियाह, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 90 4. फ़तावा ज़खीरा 5. क़ाज़ी ख़ान, फ़ीमा ला यजोज़ु बिही अल-वज़ू, लखनऊ, 9/1 6. ख़ुलासा अल-फ़तावा, अल-मा अल-मुक़य्यद, नवल किशोर लखनऊ, 8/1 7. क़ाज़ी ख़ान, फ़ीہ ला यजोज़ु बिही अल-वज़ू, नवल किशोर लखनऊ, 9/1

पृष्ठ 59 का 756

وفی التبیین والحلیۃ والدرران جری علی الاعضاء بحیث یکون الماء غالبا جری کما ھو الغالب الماء اھ

(ت) تیسرے یہ کہ محقق نے فتح میں فرمایا وہ پانی جس میں کیچڑ ملی ہوئی ہو، اگر وہ اعضاء پر بہتا ہو تو اس سے وضو میں حرج نہیں، اور اگر اس میں مٹی غالب ہو تو وضو جائز نہیں اھ اور ناطفی کی اجناس میں اور منیہ میں ہے اگر پانی کی رقت غالب نہ ہو تو وضو جائز نہیں اھ اور ذخیرہ ، تتمہ ، حلیہ میں ہے کہ اجزاء کے اعتبار سے غلبہ اس انداز میں کہ پانی کی رقت ختم ہو جائے اور اس کی ضد یعنی گاڑھا پن اس میں پیدا ہو جائے اھ اور خانیہ میں ہے زعفران اور زردج کا پانی اگر گاڑھا ہو تو وضو جائز نہیں اھ اور خلاصہ میں ہے کہ اگر اتنا رقیق ہو کہ پانی اس سے الگ ظاہر ہوتا ہو تو وضو جائز ہے اور اگر نشاستہ بن گیا ہو تو جائز نہیں اھ اور فقیہ النفس کے فتاوٰی (قاضیخان) میں ہے سیلاب کے پانی سے وضو جائز لیکن اگر گاڑھا ہو تو جائز نہیں جیسے کیچڑ اھ اور ہدایہ اور کافی میں ہے مطبوخ الاشنان الا ان یغلب ذلک علی الماء فیصیر کالسویق۔

الثالث: قال المحقق فی الفتح لاباس بالوضوء بماء السیل مختلطا بالطین ان کانت رقۃ الماء غالبۃ فان کان الطین غالبا فلا اھ وفی اجناس الناطفی والمنیۃ ان لم تکن رقۃ الماء غالبۃ لا یجوز اھ وفی الذخیرۃ والتتمۃ والحلیۃ الغلبۃ من حیث الاجزاء بحیث تسلب صفۃ الرقۃ من الماء ویبدلھا بضدھا وھی الثخونۃ اھ وفی الخانیۃ فی ماء الزعفران والزردج ان صار متماسکا لایجوزاھ وفی الخلاصۃ ان کان رقیقا یستبین الماء منہ یجوز وان صار نشاستج لایجوز اھ وفي فتاوی الامام فقیہ النفس توضأ بماء السیل یجوز وان کان ثخینا کالطین لا اھ وفی الھدایۃ والکافی فی مطبوخ الاشنان الا ان یغلب ذلک علی الماء فیصیر کالسویق۔

حواشی: 1 تبیین الحقائق کتاب الطھارۃ الامیریۃ ببولاق مصر ۲۱/۱ 2 فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء نوریہ رضویہ سکھر ۶۵/۱ 3 غنیۃ المستملی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۰ 4 فتاوی ذخیرہ 5 قاضیخان فیما لا یجوز بہ الوضوء ولکشور لکھنؤ ۹/۱ 6 خلاصۃ الفتاوی الماء المقید نولکشور لکھنؤ ۸/۱ 7 قاضیخان فیما لا یجوز بہ الوضوء نولکشور لکھنؤ ۹/۱

Fatawa Razawiya, Volume 3

[Left Column - Arabic with Urdu references] Mixed, due to the loss of the name (1) "water" from it. 1 [Intended]. And in Al-Khaniyyah: And if it becomes thick like barley drink (sawiq), then no. 2 [Intended]. And in Al-Bada'i: Except if it becomes thick like mixed barley drink, because then the name of water and its meaning also cease to apply to it. 3 [Intended]. In Al-Kafi, then Al-Hindiyyah: If the date-water (nabidh) is thick like molasses (dibs), ablution with it is not permissible. 4 [Intended]. In Al-Khulasah: This (referring to the difference of opinion regarding the permissibility of ablution) is when it is sweet and thin, flowing over the limbs. If it is thick like fruit syrup (rubb), it is not permissible by consensus. 5 [Intended]. And in Al-Bada'i: If it is thick like fruit syrup, it is not permissible without any disagreement. 6 [Intended]. The apparent meaning of the first is that the change should not at all affect the thinness of the water and the speed of its flow.

[Right Column - Urdu Translation] That water in which Ushnan (alkali plant) is cooked, unless it dominates the water so much that it becomes like barley drink (sawiq), because then the name of water will no longer be applied to it. And in Al-Khaniyyah it is stated: If it becomes thick like barley drink, then ablution is not permissible. And in Al-Bada'i it is stated: If it becomes thick like barley drink, because in this situation the name of water will not be applied to it nor will it remain water in its essence. And in Al-Kafi and Al-Hindiyyah it is stated: When date-water (nabidh) becomes thick like syrup, then ablution with it is not permissible. And in Al-Khulasah it is stated: This (referring to the disagreement in the permissibility of wudu) is when it is sweet and thin and flows over the limbs. If it is thick like syrup, then by consensus it is not permissible. And in Al-Bada'i it is stated: When it becomes thick like syrup, then it is not permissible without disagreement. So, the apparent meaning of the first statement is that the change should not affect the thinness of water and its speed of flow. (T)

[Middle Note] Note: His statement in Al-Bada'i; rather it has preceded in 710 in the citation from Al-Hilyah, and from it and from Al-Tuhfah, Al-Muhit al-Radawi, and Al-Khaniyyah etc. that when it becomes so thick that it does not flow over the limb, etc. 12 From him, may he be forgiven. (T) 12 From him, may he be forgiven. (M)

[Footnotes] 1. Al-Hidaya, Al-Ma' al-Ladhi Yajuzuhu al-Wudu, Arabia, Karachi, 1/18 2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on what wudu is not permissible with, Nawal Kishore, Lucknow, 1/9 3. Bada'i al-Sana'i, Section on restricted water, H.M. Saeed Company,

Karachi, 1/15 4. Fatawa Hindiyyah, Chapter on what wudu is not permissible with, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/22 5. Khulasat al-Fatawa, Section on restricted water, Nawal Kishore, Lucknow, 1/9 6. Bada'i al-Sana'i, Section on restricted water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/17

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[बायां कॉलम - अरबी के साथ उर्दू संदर्भ] मिश्रित, क्योंकि इससे 'पानी' (1) नाम समाप्त हो जाता है। 1 अ. और अल-ख़ानिया में है: और यदि वह जौ के शरबत (सवीक़) की तरह गाढ़ा हो जाए, तो नहीं। 2 अ. और अल-बदाए में है: सिवाय इसके कि जब वह मिश्रित सवीक़ की तरह गाढ़ा हो जाए, क्योंकि उस समय उससे पानी का नाम और उसका अर्थ भी समाप्त हो जाता है। 3 अ। अल-काफ़ी और फिर अल-हिंदिया में है: यदि नबीज़ (खजूर का पानी) शीरे (दिब्स) की तरह गाढ़ा हो, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है। 4 अ। अल-ख़ुलासा में है: यह (वज़ू की अनुमति में मतभेद के संदर्भ में) तब है जब वह मीठा और पतला हो और अंगों पर बहता हो। यदि वह फलों के गाढ़े रस (रुब्ब) की तरह हो, तो आम सहमति (इज्मा) से जायज़ नहीं है। 5 अ। और अल-बदाए में है: यदि वह शीरे की तरह गाढ़ा हो, तो बिना किसी मतभेद के जायज़ नहीं है। 6 अ। पहले का ज़ाहिरी अर्थ यह है कि परिवर्तन से पानी के पतलेपन और उसके बहाव की गति में बिल्कुल भी फर्क नहीं पड़ना चाहिए।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] वह पानी जिसमें उशनान (एक क्षार पौधा) पकाया गया हो, जब तक कि वह पानी पर इतना हावी न हो जाए कि वह सवीक़ बन जाए, क्योंकि अब उस पर पानी का नाम नहीं बोला जाएगा। और ख़ानिया में है: यदि वह सवीक़ की तरह गाढ़ा हो जाए, तो वज़ू जायज़ नहीं है। और बदाए में है: कि यदि वह सवीक़ की तरह गाढ़ा हो जाए, क्योंकि इस स्थिति में उस पर पानी का नाम नहीं बोला जाएगा और न ही वह वास्तव में पानी रहेगा। और काफ़ी, हिंदिया में है: कि जब नबीज़ शीरे की तरह गाढ़ा हो जाए तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है। और ख़ुलासा में है: यह (वज़ू की अनुमति में मतभेद मुराद है) जब मीठा और पतला हो और अंगों पर बहता हो, और अगर शीरे की तरह गाढ़ा हो तो बिल-इज्मा (आम सहमति से) जायज़ नहीं है। और बदाए में है: कि जब शीरे की तरह गाढ़ा हो जाए तो बिला-ख़िलाफ़ (बिना मतभेद) जायज़ नहीं है। तो पहले का ज़ाहिर यह है कि परिवर्तन पानी के पतलेपन और उसके बहाव की तेज़ी को प्रभावित न करे। (त)

[मध्य नोट] नोट: बदाए में उनकी बात; बल्कि 710 में हिल्या के हवाले से गुज़र चुकी है, उनसे और तुहफ़ा, मुहीत रज़वी और ख़ानिया वग़ैरह से भी है कि जब इतना गाढ़ा हो जाए कि अंगों पर न बहे आदि। 12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त) 12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

[पाद लेख] 1. अल-हिदाया, अल-मा अल-लज़ी यजुज़ुहु अल-वज़ू, अरबिया, कराची, 1/18 2. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, वज़ू के लिए निषिद्ध पानी का अध्याय, नवल किशोर, लखनऊ, 1/9 3. बदाए अस-सनाए, मुक़ैयद पानी का विवरण, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/15 4. फ़तावा हिंदिया, वज़ू के लिए निषिद्ध पानी का अध्याय, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 1/22 5. ख़ुलासत अल-फ़तावा, मुक़ैयद पानी का विवरण, नवल किशोर, लखनऊ, 1/9 6. बदाए अस-सनाए, मुक़ैयद पानी का विवरण, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/17

पृष्ठ 60 का 756

[بایاں کالم - عربی مع اردو حوالے] المخلوط لزوال اسم (۱) الماء عنه ۱ اه وفي الخانية وان صار ثخينا مثل السويق لا ۲ اه وفي البدائع الا اذا صار غليظا كالسويق المخلوط لانه حينئذ يزول عنه اسم الماء ومعناه ايضا ۳ اه وفی الكافی ثم الهندية اذا كان النبيذ غليظا كالدبس لم يجز الوضوء به ۴ اه وفي الخلاصة هذا (يريد الاختلاف في جواز الوضوء) اذا كان حلوا رقيقا يسيل على الاعضاء فان كان ثخينا كالرب لا يجوز بالاجماع ۵ اهـ وفي البدائع عه ان كان غليظا كالرب لا يجوز بلاخلاف ۶ اه فظاهر الاول ان لا يسري التغير اصلا الى رقة الماء وسرعة سيلانه -

[دایاں کالم - اردو ترجمہ] کہ وہ پانی جس میں اُشنان پکائی جائے، مگر یہ کہ وہ پانی پر ایسی غالب ہو جائے کہ وہ ستو بن جائے، کیونکہ اب اس پر پانی کا نام نہیں بولا جائے گا اہ اور خانیہ میں ہے اگر ستوؤں کی طرح گاڑھا ہو جائے تو وضو جائز نہیں اہ اور بدائع میں ہے کہ اگر ستوؤں کی طرح گاڑھا ہو جائے، کیونکہ اس صورت میں اس پر پانی کا نام نہیں بولا جائے گا اور نہ ہی معناً وہ پانی رہے گا اہ اور کافی، ہندیہ میں ہے کہ جب نبیذ گاڑھا ہو جیسا شیرہ تو اس سے وضو جائز نہیں اہ اور خلاصہ میں ہے یہ (جوازِ وضو میں اختلاف مراد ہے) جبکہ میٹھا رقیق ہو اور اعضاء پر بہتا ہو اور اگر شیرہ کی طرح گاڑھا ہو تو بالاجماع جائز نہیں اہ اور بدائع میں ہے کہ جب شیرہ کی طرح گاڑھا ہو جائے تو بلاخلاف جائز نہیں اہ تو اوّل کا ظاہر یہ ہے کہ تغیر پانی کی رقت کی طرف اور اس کی سرعتِ سیلان کی طرف سرایت نہ کرے۔(ت)

[درمیانی نوٹ] عه قوله في البدائع بل تقدم في عن الحلية | ان کا قول بدائع میں ہے بلکہ ۷۱۰ میں حلیہ کی نقل اُن عنها وعن التحفة والمحيط الرضوي والخانية | سے گزری نیز تحفہ، محیط رضوی

اور خانیہ وغیرہا سے ہے کہ جب وغیرھا اذا صار غلیظا بحیث لایجری علی العضو الخ | اتنا گاڑھا ہو جائے کہ اعضاء پر نہ بہے الخ ۱۲ منہ غفرلہ (ت) ۱۲ منہ غفر لہ (م)

[حواشی] 1 الهداية الماء الذی يجوزبه الوضوء عربيه كراچی ۱۸/۱ 2 فتاوی قاضی خان فصل فيما لا يجوز به التوضی نولكشور لكهنؤ ۹/۱ 3 بدائع الصنائع مطلب الماء المقيد ايچ ايم سعيد كمپنی كراچی ۱۵/۱ 4 فتاوی ہنديہ فصل فيما لا يجوز به التوضی نورانی كتب خانہ پشاور ۲۲/۱ 5 خلاصة الفتاوی الماء المقيد نولكشور لكهنؤ ۹/۱ 6 بدائع الصنائع الماء المقيد ايچ ايم سعيد كمپنی كراچی ۱۷/۱

Fatawa Rizvia (Volume 3)

I say: This is certainly not what is meant, because flood water, which carries mud, dust, sand, and scum, is impossible to remain with the thinness of clear water. He has admitted that it remains in its thinness and original flow. The apparent meaning of the second is to suffice with the flow itself, and it has been emphasized in 'Al-Inayah' with the addition of possibility. So, nothing is excluded except what reaches the extent of solids, until it is completely removed from the capability of flowing. Thus, it is on opposite extremes with the first. (T)

I say: This is certainly not what is meant, because mud, starch (mortar), mixed parched grain flour (sattu), syrup, and thick juice are among the fluids that can be made to flow. When water reaches this state, no one will doubt the change and decline that has occurred in its nature. Does anyone call parched grain flour or mud 'water'? So, the correct view is the third one, which is explicitly stated in the words of the great Imams. The second view reverts to it with the closest interpretation, as mentioned in the beginning of the discussion. (T)

As for the first, I say: The wording of 'Al-Inayah' in it is close, not far, because they did not explain it like the explanation of 'Al-Ghunyah' by adding 'before mixing'. Otherwise, his words would be contradictory in the second part. He is unique in this, as far as I know. Then he makes flood water...

[Footnote]: Those who came after him agreed with him.

Page 61 of 756

फ़तावा रज़विया (जिल्द 3)

मैं कहता हूँ: यह निश्चित रूप से अभिप्रेत नहीं है, क्योंकि बाढ़ का पानी जिसमें कीचड़, मिट्टी, रेत और कूड़ा-करकट मिला होता है, उसका साफ़ पानी की तरह पतला रहना असंभव है। उन्होंने स्वीकार किया है कि वह अपनी तरलता और मूल प्रवाह पर बना हुआ है। दूसरे का स्पष्ट अर्थ स्वयं प्रवाह पर निर्भर करना है, और इसे 'अल-इनाया' में संभावना की वृद्धि के साथ पुष्ट किया गया है। इसलिए, केवल वही चीज़ें बाहर हैं जो ठोस होने की सीमा तक पहुँच गई हैं, यहाँ तक कि वे बहने की क्षमता से पूरी तरह बाहर हो गई हैं। इस प्रकार, यह पहले के साथ विरोधाभास के दो छोरों पर है। (त)

मैं कहता हूँ: वह निश्चित रूप से अभिप्रेत नहीं है क्योंकि कीचड़, मांड (गारा), मिश्रित सत्तू, शीरा और राब ऐसे तरल पदार्थों में से हैं जिन्हें बहाया जा सकता है। जब पानी इस स्थिति में पहुँच जाता है, तो कोई भी उसकी प्रकृति में उत्पन्न होने वाले परिवर्तन और ह्रास पर संदेह नहीं करेगा। क्या कोई सत्तू और कीचड़ को पानी कहता है? तो सही तीसरा विचार है, जो बड़े-बड़े इमामों के शब्दों में स्पष्ट रूप से वर्णित है। दूसरा विचार निकटतम व्याख्या के साथ उसी की ओर लौटता है, जैसा कि चर्चा की शुरुआत में संकेत दिया गया है। (त)

पहला शेष रहा। मैं कहता हूँ: 'अल-इनाया' के शब्द इसमें निकट हैं, दूर नहीं, क्योंकि उन्होंने इसकी व्याख्या 'अल-ग़ुनिया' की व्याख्या की तरह 'मिश्रण से पहले' जोड़कर नहीं की। अन्यथा, दूसरे भाग में उनके शब्द विरोधाभासी होते। जहाँ तक मैं जानता हूँ, वे इसमें अद्वितीय हैं। फिर वे बाढ़ के पानी को...

[पाद टिप्पणी]: उनकी सहमति उन लोगों ने की जो उनके बाद आए।

पृष्ठ 756 में से 61

اقول: ولیس مراداً قطعاً فان ماء المد الحامل للطین والتراب والرمل والغثاء یستحیل ان یبقی علی رقة الصافی وقد اعترف انه باق علی رقته واصل سیلانه وظاهر الثانی الاکتفاء بنفس السیلان وقد اکده فی العنایة بزیادة الامکان فلم یخرج الا ما بلغ مبلغ الجامدات حتی خرج عن صلاحیة الاسالة اصلاً فهو مع الاول علی طرفی نقیض۔ میں کہتا ہوں یہ قطعاً مراد نہیں، کیونکہ سیلاب کے پانی میں کیچڑ، مٹی، ریت اور کوڑا کرکٹ ملا ہوا ہوتا ہے اور محال ہے کہ صاف پانی کی سے رقت پر باقی رہے اور وہ اعتراف کر چکے ہیں کہ وہ اپنی رقت اور اصل سیلان پر باقی ہے اور دوسرے کا ظاہر نفس سیلان پر اکتفاء کرنا ہے اور اس کو عنایہ میں زیادہ امکان سے مؤکد کیا ہے تو وہ اُسی حد تک پہنچا جس حد تک جامدات پہنچتی ہیں، یہاں تک کہ وہ اسالت کی صلاحیت سے بالکل خارج ہو گیا تو وہ اول کے ساتھ نقیض کی دو طرفوں پر ہے۔ (ت)

اقول: ولیس مراداً قطعاً فان الطین والنشا والسویق المخلوط والدبس والرب من المائعات الممکن تسییلها واذا بلغ الماء الی هذه الحال لا یشك احد فی ماحدث لطبعه من التغیر والزوال وهل تری احداً یسمی الطین والسویق ماءً فالصواب هو الثالث المنصوص علیه صریحاً فی کلام کبار الائمة والثانی یرجع الیه باقرب تاویل کما تقدمت الاشارة الیه فی صدر الکلام۔ میں کہتا ہوں وہ قطعاً مراد نہیں کیونکہ کیچڑ اور نشا (گارا) اور مخلوط ستو، شیرہ اور راب ایسے مائعات میں سے ہے جن کا بہانا ممکن ہے اور جب پانی اس حال پر پہنچ جائے تو کوئی بھی اس کی طبیعت میں پیدا ہونے والے تغیر پر اور زوال پر شک نہیں کرے گا، کیا کوئی ستوؤں اور کیچڑ کو پانی کہتا ہے؟ تو صحیح تیسرا ہے جس کی صراحت بڑے بڑے ائمہ کے کلام میں موجود ہے، اور دوسرا اس کی طرف قریب ترین تاویل سے رجوع کرتا ہے جیسا کہ اس کی طرف صدر کلام میں اشارہ گزرا ہے۔ (ت)

بقی الاول فاقول: کلام العنایة فیه قریب غیر بعید فانه لم یفسره تفسیر الغنیة بزیادة ما قبل المخالطة والانا قض کلامه فی الثانی وکلام الغنیة یفسره هکذا وقد تفرد عه به فیما اعلم ثم یجعل ماء المد پہلا باقی رہا تو میں کہتا ہوں عنایہ کا کلام اس میں قریب ہے دور نہیں کیونکہ انہوں نے اس کی تفسیر غنیہ کی طرح نہ کی، اور اس میں مخالطہ سے ماقبل کا اضافہ نہیں کیا ورنہ ان کا کلام دوسرے میں متناقض ہوتا ہے، اور وہ اس میں منفرد ہیں ! جیسا کہ میں جانتا ہوں، پھر سیلاب کے

عه انما وافقه ممن اتی بعده کلام ان کی موافقت ان لوگوں نے کی ہے جو ان کے بعد

Fatawa Razawiyya, Volume Three

| Like the one which is not mixed, so at the very least there is agitation. Therefore, what is taken is that which the companions have explicitly mentioned. And Allah knows best the truth. | They treat water like water that is not mixed; so at the very least there is agitation. Therefore, what is taken is that which the companions have clearly stated. And Allah knows best the truth. (t) |

Then I say: And with Allah's guidance, it is clear from our previous discourse that liquids are of two types. One, those whose particles have no inherent cohesion, like clear water. Second, those which have a type of cohesion, like honey. From here, just as the difference between their thinness and thickness arises, the former can be divided into very fine parts through physical connection. Unlike the second, there will also be a difference in their flow. When the first finds a place, it will become completely spread out. At first, it will not remain at all because the particles, which were piled up high and low due to lack of space, will spread out upon finding space. Every part seeks the center; if the upper particles remain above relative to the lower ones, they will be farther from the center. Staying away without hindrance after finding space is a departure from nature, which is habitually impossible, contrary to the ignorant philosophers who consider it intellectually impossible because the cause, in their view, is necessary, while according to us (1) the Almighty is the Volitional Choice-Maker. High above is Allah from what the wrongdoers say, a great height, and Glory be to Allah, Lord of the Throne, above what they describe. (In this, ignorant philosophers disagree, declaring it intellectually impossible because according to them the cause is necessitated, while according to us he is the Volitional Choice-Maker, Exalted is Allah far above what the wrongdoers say, a great height, and Glory be to Allah, Lord of the Great Throne. - t). Unlike the second, where due to a kind of cohesion among the particles, they will not all be able to spread. Even at the end of the flow, a raised mass will be seen from the source to the end, as is visible and observed. If you pour honey on solid ground, a plank, a tray, or an iron sheet, even after the flow stops, a thick layer of honey will remain raised from that surface from here to there, which can be peeled off after drying without any part of the ground being peeled. But if you pour water, and there's nothing to stop it from flowing completely over, at the end of the flow, there will be nothing on that surface from start to finish except a dampness. Our Imams call this first type 'thin' (Raqiq) and the second type 'thick' (Kathif). This humble person will clarify it with a clear

proof. So I say, and with Allah's guidance, this proof is a compound syllogism consisting of three premises:

| (Continued from previous page's footnote) Mawla Bahr al-Ulum said in 'Arkan al-Arba'a' that dominance by parts is when the thinness of the water disappears from what it was. (1) Ended. 12 from him, may Allah forgive him. (m) | They have come; Bahr al-Ulum stated in 'Arkan-e-Arba'a' that dominance with parts means the thinness of water comes to an end. In such a way that the parts of the water are dominant over the parts of the mixture. (t) |

| But by the grace of Allah, the 'Shining Success' (at-Tawfiq al-Bazigh) will come, so wait for it, may He forgive him. (m) | Wait, with Allah's help, His bright guidance comes. (t) |

---

1. Rasail al-Arkan, Chapter on Waters, Maktaba Islamia Quetta, p. 24.

फ़तावा रज़विया, जिल्द तीन

| उस पानी की तरह जो मिश्रित न हो, तो कम से कम हलचल (इज़तिराब) तो है ही, तो ग्रहण किया गया वही है जिस पर साथियों (असहब) ने स्पष्ट उल्लेख किया है। और अल्लाह बेहतर जानता है। | पानी को उस पानी की तरह मानते हैं जो मिश्रित न हो, तो कम से कम हलचल तो है ही, तो ग्रहण किया गया वही है जिस पर साथियों ने स्पष्ट रूप से कहा है। और अल्लाह ही सत्य को बेहतर जानता है। (त) |

फिर मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से, हमारे पिछले प्रवचन से यह स्पष्ट हुआ कि तरल पदार्थ दो प्रकार के होते हैं। एक वे जिनके कणों में मूल रूप से कोई संसंजन (cohesion) नहीं होता जैसे साफ़ पानी, दूसरे वे जिनमें एक प्रकार का संसंजन होता है जैसे शहद। यहाँ से जिस प्रकार उनकी तरलता (रक़्क़त) और गाढ़ेपन (ग़लज़त) का अंतर उत्पन्न होता है कि पहला अपने भौतिक जुड़ाव के कारण बहुत सूक्ष्म भागों में विभाजित हो सकता है। इसके विपरीत दूसरे के मामले में, उनके प्रवाह में भी अंतर आएगा। जब पहला जगह पाएगा तो पूरी तरह फैल जाएगा। पहले वह बिल्कुल नहीं रहेगा क्योंकि जो कण जगह की कमी के कारण ऊपर-नीचे ढेर थे, जगह पाकर सब फैल जाएँगे क्योंकि हर हिस्सा केंद्र की तलाश में रहता है। यदि ऊपर के कण निचले कणों की तुलना में ऊपर ही रहें, तो वे केंद्र से दूर होंगे। जगह मिलने पर बिना किसी बाधा के दूर रहना प्रकृति के विरुद्ध है, जो आदतन असंभव है। यह उन अज्ञानी दार्शनिकों के विपरीत है जो इसे बौद्धिक रूप से असंभव मानते हैं क्योंकि उनके अनुसार कारक (फ़ाइल) अनिवार्य (मौजिव) है, जबकि हमारे अनुसार (१) अल्लाह स्वेच्छाचारी (मुख़्तार) है। अल्लाह उन बातों से बहुत ऊँचा और महान है जो ज़ालिम कहते हैं, और अर्श का रब अल्लाह उन गुणों से पवित्र है जो वे बयान करते हैं। (इसमें अज्ञानी दार्शनिकों का मतभेद है, जो इसे बौद्धिक रूप से असंभव करार देते हैं क्योंकि उनके निकट कारक अनिवार्य है और हमारे निकट वह स्वेच्छाचारी है। अल्लाह उन बातों से बहुत ऊँचा है जो ज़ालिम कहते हैं, और महान अर्श का रब अल्लाह पवित्र है। - त)। इसके विपरीत दूसरे में, कणों के बीच एक प्रकार के संसंजन के कारण वे सभी नहीं फैल सकेंगे। प्रवाह के अंत में भी स्रोत से अंत तक एक उभरा हुआ पिंड दिखाई देगा जैसा कि देखा और महसूस किया जाता है। यदि आप पक्की ज़मीन, तख्ते, थाली या लोहे की चादर पर शहद बहाएँ तो बहाव रुकने पर भी यहाँ से वहाँ तक उस सतह से ऊँचा शहद का एक पिंड (दिल) बना रहेगा जिसे सूखने के बाद बिना ज़मीन का कोई हिस्सा छीले, छीला जा सकता है। लेकिन अगर पानी बहाएँ और उसे पूरी तरह बह जाने से रोकने वाला कोई न हो,

तो प्रवाह के अंत में उस सतह पर आदि से अंत तक नमी के सिवा पानी का कोई पिंड नहीं रहेगा। हमारे इमाम इसी पहली किस्म का नाम 'रक़ीक़' (पतला) और दूसरी का 'कथीफ़' (गाढ़ा) रखते हैं। यह फ़कीर इसे स्पष्ट प्रमाण से स्पष्ट करेगा। तो मैं कहता हूँ, और अल्लाह की सहायता से, यह प्रमाण तीन प्रस्तावनाओं (मुकद्दमात) से बना एक मिश्रित अनुमान (क़यास) है:

| (पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष) मौला बहरुल उलूम ने 'अरकान अल-अर्बा' में कहा कि अंगों द्वारा प्रभुत्व यह है कि पानी की तरलता वैसी न रहे जैसी वह थी। (१) समाप्त। १२ उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म) | आए हैं, बहरुल उलूम ने 'अरकान-ए-अर्बा' में फ़रमाया कि अंगों के साथ प्रभुत्व यह है कि पानी की तरलता समाप्त हो जाए। इस प्रकार कि पानी के अंग मिश्रित वस्तु के अंगों पर हावी हों। (त) |

| लेकिन अल्लाह की तौफीक से 'अत-तौफीक अल-बाज़िग़' (चमकती सफलता) जल्द ही आएगी, तो उसकी प्रतीक्षा करें, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म) | प्रतीक्षा करें, अल्लाह की सहायता से उसकी उज्ज्वल सफलता आती है। (त) |

---

1. रसायल अल-अरकान, जल अध्याय, मकतबा इस्लामिया क्वेटा, पृष्ठ २४.

| کاللامخالط فادنی عه احواله الاضطراب فالماخوذ مانص علیه الاصحاب* واللہ تعالی اعلم بالصواب

| پانی کو اس پانی کی طرح کرتے ہیں جو مخلوط نہ ہو، تو کم از کم اضطراب تو ہے ہی، تو ماخوذ وہی ہے جس پر اصحاب نے نص کی ہے، واللہ تعالٰی اعلم بالصواب۔ (ت) |

ثم اقول: وباللہ التوفیق ہماری تقریر سابق سے واضح ہوا کہ مائعات دو قسم ہیں، ایک وہ جن کے اجزا میں اصلاً تماسک نہیں جیسے نتھرا پانی، دوسری جن میں نوع تماسک ہے جیسے شہد۔ یہاں سے جس طرح ان کی رقت و غلظت کا فرق پیدا ہوتا ہے کہ اول اپنے اتصال حسی کہ بہت باریک اجزاء پر تقسیم کر سکتا ہے، بخلاف ثانی یوں ہی ان کے سیلان میں بھی تفاوت آئے گا اول جب جگہ پائے گا بالکل منبسط ہو جائے گا اول اصلا نہ رہے گا کہ اجزاء جو عدم وسعت کے سبب زیر و بالا متراکم تھے وسعت پاکر سب پھیل جائیں گے کہ ہر جز طالب مرکز ہے اگر اجزائے بالا بالا ہی رہیں بہ نسبت اجزائے زیریں مرکز سے دُور ہوں گے جگہ پاکر بلا مانع دور رہنا مقتضائے طبیعت سے خروج ہے کہ عادتاً ممکن نہیں خلافاً لجلة الفلاسفة الذین یحیلونه عقلا لان الفاعل عندهم موجب وعندنا (۱) مختار تعالٰی اللہ عما یقول الظلمون علوا کبیرا وسبحن اللہ رب العرش عما یصفون (اس میں جاہل فلاسفہ کا اختلاف ہے، جو اس کو عقلاً محال قرار دیتے ہیں کیونکہ ان کے نزدیک فاعل موجب ہے اور ہمارے نزدیک مختار ہے تعالٰی اللہ عما یقول الظلمون علوا کبیرا وسبحن اللہ رب العرش العظیم ۔ت)، بخلاف ثانی کہ اجزا میں ایک نوع تماسک کے سبب سب نہ پھیل سکیں گے ختم سیلان پر بھی مبدء سے منتہی تک ایک ابھرا ہوا جرم نظر آئے گا جیسا کہ مرئی و مشاہد ہے کہ اگر پختہ زمین یا تخت یا سینی یا لوہے کی چادر پر شہد بہائیے بہاؤ رکنے پر بھی یہاں سے وہاں تک اُس سطح سے اونچا شہد کا ایک دل قائم رہے گا جسے خشک ہونے کے بعد چھیل سکتے

ہیں بے اس کے کہ زمین کا کچھ حصہ چھلے لیکن اگر پانی بہائیے اوپر پورا بہہ جانے سے کوئی روک نہ ہو تو ختم سیلان کے وقت اُس سطح پر اول تا آخر ایک تری کے سوا پانی کا کوئی دَل نہ رہے گا ہمارے ائمہ اسی قسم اول کا نام رقیق اور ثانی کا کثیف رکھتے ہیں فقیر اسے روشن دلیل سے واضح کرے فاقول وباللہ التوفیق یہ دلیل ایک قیاس مرکب ہے تین مقدمات پر مشتمل:

| (بقیہ حاشیہ صفحہ گذشتہ) المولی بحر العلوم قال في الارکان الاربعة الغلبة بالاجزاء بان تذهب رقة الماء علی ما کان الماء علیها 1 اه ۱۲ منه غفر له (م) | آئے ہیں، بحر العلوم نے ارکانِ اربعہ میں فرمایا اجزاء کے ساتھ غلبہ یہ ہے کہ پانی کی رقت ختم ہو جائے۔ اس طور پر کہ پانی کے اجزاء مخالط کے اجزاء پر غالب ہوں (ت) |

| عه لکن سیأتی بتوفیق الله تعالی التوفیق البازغ فانتظر منه غفر له۔ (م) | انتظار کرو، اللہ تعالی کی مدد سے اس کی روشن توفیق آتی ہے۔ (ت) |

---

1 رسائل الارکان فصل فی المیاہ مکتبہ اسلامیہ کوئٹہ ص ۲۴

Fatawa Rizvia - Volume 3

First Preface: Our Imams (1) have classified impurities into two types in the chapter on impurities: those with substance (corporeal) and those without substance. Examples of the first type include dung etc., and examples of the second type include urine, wine, etc. Imam Burhan-ud-Din Farghani states in Al-Hidaya:

- Impurity that has substance like dung, and that which has no substance like wine. (1) | Any impurity that has a substance (body) like dung, and that which does not have a substance like wine. (T)

It is stated in Al-Inaya: - Impurity either has a substance like dung, or it does not have a substance like urine. (2) | Impurity will either have a substance like dung or not, like urine. (T)

Imam Malik-ul-Ulama states in Badai-us-Sanai: - That which falls into a well is either corporeal or non-corporeal. If it is non-corporeal like urine, blood, and wine, all the water of the well shall be removed, etc. (3) | That which falls into a well will either be a substance-based thing or non-substance-based. If it is non-substance-based like urine, blood, and wine, all the water of the well will be taken out. (T)

In the issue of shoes and leather socks (2), texts, commentaries, and general fatwa books of the school of thought have made this same division into 'possessing substance' and 'without substance' and have given such examples. Among them, Imam Faqih-un-Nafs states in Al-Khaniya: - If impurity falls on a leather sock, if it is corporeal like dung and semen, it becomes pure by scraping. If it is not corporeal like wine and urine, it does not become pure except by washing. It is narrated from Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) that if one puts dust on it and wipes it, it becomes pure because it now takes on the meaning of being corporeal, and this is the opinion we adopt. (4) | If impurity gets on a leather sock, if it is of a corporeal nature like dung and semen, it will become pure by scraping. If it is not corporeal like wine and urine, it will not be pure without washing. And there is a narration from Abu Yusuf that if one throws soil on it and rubs it, it will become pure because now it will effectively become corporeal, and we follow this. (T)

1. Al-Hidaya, Chapter on Impurities and Purification, Arabia Press, Karachi, 1/56.
2. Al-Inaya with Fath al-Qadir, Chapter on Impurities and Purification, Nooriya Rizvia Press, Sukkur, 1/111.

3. Badai al-Sanai, regarding the description of the quantity by which a place becomes impure, HM Saeed Company Press, Karachi, 1/67.
4. Fatawa Khaniya, known as Qazi Khan, Section on Impurities that affect clothing, leather socks, or the body, 1/113.

फतवा रिज़विया - खंड 3

प्रथम प्रस्तावना: हमारे इमामों (1) ने अशुद्धियों के अध्याय में दो श्रेणियाँ बताई हैं: पदार्थयुक्त (कायिक) और पदार्थहीन। पहले प्रकार का उदाहरण वे गोबर आदि से देते हैं और दूसरे का मूत्र और मदिरा आदि से। इमाम बुर्हान-उद-दीन फर्घानी हिदाया में फरमाते हैं:

- अशुद्धि जिसका पदार्थ हो जैसे गोबर, और जिसका कोई पदार्थ न हो जैसे मदिरा। (1) | कोई अशुद्धि ऐसी हो कि उसका पिंड (शरीर) हो जैसे गोबर, और वह जिसका पिंड न हो जैसे मदिरा। (त)

इनाया में है: - अशुद्धि या तो पदार्थयुक्त होगी जैसे गोबर, या पदार्थहीन होगी जैसे मूत्र। (2) | अशुद्धि का या तो पिंड होगा जैसे गोबर, या नहीं होगा जैसे पेशाब। (त)

इमाम मलिक-उल-उलेमा बदैअ-अस-सनाइ में फरमाते हैं: - कुएँ में गिरने वाली वस्तु या तो पिंडयुक्त होगी या बिना पिंड वाली, यदि वह बिना पिंड वाली हो जैसे मूत्र, रक्त और मदिरा, तो कुएँ का सारा पानी निकाला जाएगा आदि। (3) | कुएँ में गिरने वाली चीज़ या तो शरीर (ठोस) वाली होगी या बिना शरीर वाली, यदि बिना शरीर वाली हो जैसे पेशाब, खून और मदिरा, तो कुएँ का पूरा पानी निकाला जाएगा। (त)

जूते और मोज़े (2) के मसले में, धर्मशास्त्र की मूल पुस्तकों, टीकाओं और सामान्य फतवा पुस्तकों ने पदार्थयुक्त और पदार्थहीन का यही विभाजन किया है और ऐसे उदाहरण दिए हैं। उनमें से इमाम फकीह-उन-नफ़्स खानिया में फरमाते हैं: - मोज़े पर यदि अशुद्धि लग जाए, यदि वह ठोस हो जैसे गोबर और वीर्य, तो वह खुरचने से शुद्ध हो जाता है। यदि वह ठोस न हो जैसे मदिरा और मूत्र, तो वह धोने के बिना शुद्ध नहीं होता। और अबू यूसुफ (रहमतुल्लाह अलैह) से एक रिवायत है कि यदि उस पर मिट्टी डालकर पोंछ दिया जाए, तो वह शुद्ध हो जाता है क्योंकि अब वह ठोस के अर्थ में हो जाएगी, और हम इसी को अपनाते हैं। (4) | मोज़े पर यदि अशुद्धि लग जाए, तो यदि वह ठोस प्रकृति की हो जैसे लीद और वीर्य, तो वह रगड़ देने से पाक हो जाएगा। और यदि ठोस न हो जैसे मदिरा और पेशाब, तो बिना धोए पाक नहीं होगा। और अबू यूसुफ से एक रिवायत यह है कि यदि उस पर मिट्टी

डालकर रगड़ दी जाए तो पाक हो जाएगा क्योंकि अब यह ठोस के अर्थ में हो जाएगी, और हम इसी को लेते हैं। (त)

1. हिदाया, बाब अल-अन्जास व ततहीरहा, मतबा अरबिया, कराची, 1/56।
2. अल-इनाया मअ फतह अल-कादिर, बाब अल-अन्जास व ततहीरहा, मतबा नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 1/111।
3. बदैअ अस-सनाइ, नजिस होने वाली मात्रा के वर्णन के संबंध में, मतबा एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/67।
4. फतवा खानिया, जिसे काजी खान के नाम से जाना जाता है, कपड़ों, मोज़ों या शरीर पर लगने वाली अशुद्धियों का खंड, 1/113।

فتاوٰی رضویہ جلد سوم مقدمہ اولٰی: ہمارے ائمہ (۱) نے باب نجاسات میں دو قسمیں فرمائی ہیں جرم دار و بے جرم، اول کی مثال لید وغیرہ سے دیتے ہیں اور دوم کی بول و خمر و غیرہما سے امام برہان الدین فرغانی ہدایہ میں فرماتے ہیں:

نجاسة لها جرم كالروث وما لا جرم له كالخمر ۱- | کوئی نجاست ایسی ہو کہ اُس کا جرم (جسم) ہو جیسے لید اور وہ جس کا جرم نہ ہو جیسے شراب۔ (ت)

عنایہ میں ہے: النجاسة اما ان يكون لها جرم كالروث اولا يكون لها جرم كالبول ۲- | نجاست کا یا جرم ہوگا جیسے لید یا نہ ہو جیسے پیشاب۔ (ت)

امام ملک العلماء بدائع میں فرماتے ہیں: الواقع في البئر اما ان يكون مستجسدا اوغير مستجسد فان كان غير مستجسد كالبول والدم والخمر ينزح ماء البئر الخ ۳- | کنویں میں گرنے والی چیز یا تو جسم والی ہوگی یا غیر جسم والی، اگر غیر جسم والی ہو جیسے پیشاب، خون اور شراب، تو کنویں کا تمام پانی نکالا جائے گا۔ (ت)

مسئلہ کفش و موزہ (۲) میں متون و شروح و فتاوٰی عامہ کتب مذہب نے یہی ذی جرم و بے جرم کی تقسیم فرمائی اور ایسی مثالیں دی ہیں ازاں جملہ امام فقیہ النفس خانیہ میں فرماتے ہیں: الخف اذا اصابته نجاسة ان كانت مستجسدة كالروث والمنى يطهر بالحك وان لم تكن مستجسدة كالخمر والبول لا يطهر الا بالغسل وعن ابي يوسف رحمه الله تعالى اذا القى عليها ترابا فمسحها يطهر لانها تصير في معنى المستجسدة وبه ناخذ ۴- | موزے پر اگر نجاست لگ جائے تو اگر وہ جسد والی ہو جیسے لید اور منی، تو وہ رگڑ دینے سے پاک ہوجائے گی اور اگر جسد والی نہ ہو جیسے شراب اور پیشاب،

تو دھوئے بغیر پاک نہ ہوگی اور ابو یوسف سے ایک روایت یہ ہے کہ اگر اس پر مٹی ڈال کر رگڑ دے تو پاک ہوجائے گی کیونکہ اب یہ معنیٰ جسد والی ہوجائے گی، اور ہم اسی کو لیتے ہیں۔ (ت)

۱- ہدایہ باب الانجاس و تطہیر ہا مطبع عربیہ کراچی ۱/۵۶ ۲- العنایۃ مع فتح القدیر باب الانجاس و تطہیر ہا مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۱۱ ۳- بدائع الصنائع اما بیان المقدار الذی یصیر بہ المحل نجسا مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۶۷ ۴- فتاویٰ خانیہ المعروف قاضیخان فصل فی النجاسۃ التی تصیب الثوب والحف اوالبدن ۱/۱۱۳

Volume 3 Fatawa Razawiyya Now we show that for them, on one hand, 'Dhi Jarm' (having substance), 'Katheef' (thick), 'Thakheen' (sturdy/thick), and 'Ghaleez' (heavy/gross) which are opposite to 'Raqeeq' (liquid/thin), and on the other hand, 'without substance' and 'Raqeeq' carry the same meaning. First, from the books, the difference in expression from one source: (1) Imam Tahir Bukhari, in 'Khulasa', expressed the final ruling of 'Khaniyah' in these words: **"Other than semen, if impurities are liquid like wine and urine, they can only be purified with water. And from Abu Yusuf, there is a narration that when soil is thrown on leather socks (khuff) and they are wiped, they become pure because it becomes essentially solidified."** (T)

(2) In heavy impurity (Najasat Ghaleeza), the consideration is of area and weight of a Dirham, which is divided into liquid and solid. Some statements regarding this passed in the third discussion. And in 'Hidayah' it is stated: **"It was said in reconciling between them that the first is regarding liquid and the second is regarding solid."** (T)

In 'Kafi' it is stated: **"Faqih Abu Ja'far said: The first is regarding liquid and the second is regarding solid, and that is what is correct."** (T)

Similarly, in 'Wiqayah', 'Niqayah', 'Islah', 'Multaqa', 'Khulasa', 'Bazzaziyah', 'Jauharah' etc., and 'Jawahir al-Akhlati' and many other books, it is stated: **"In 'al-Jauharah', 'Katheef' (thick) is expressed as 'Thakheen' (sturdy), and in 'al-Jawahir' as 'Ghaleez' (gross/heavy), and it added that this is the correct position of the school (Madhab)."** (T)

^1 Khulasa al-Fatawa, chapter on bathing, clothes, oil, etc., Naval Kishore Lucknow, 1/42 ^2 Al-Hidayah, chapter on impurities, printed in Arabic Karachi, 1/57 ^3 Kafi ^4 Al-Jauharat al-Nayyirah, chapter on impurities, Imdadiyya Multan, 1/45

खंड 3 फ़तावा रज़विया अब हम दिखाते हैं कि उनके नज़दीक एक ओर तो 'ज़ी जर्म' (पदार्थयुक्त), 'कसीफ़' (गाढ़ा), 'सख़ीन' और 'ग़लीज़' जो 'रक़ीक़' (पतला/तरल) के विपरीत हैं, दूसरी ओर ख़ुद 'बे जर्म' (पदार्थहीन) और 'रक़ीक़' एक ही अर्थ रखते हैं। सबसे पहले, किताबों में एक ही स्रोत से अभिव्यक्ति में अंतर: (१) इमाम ताहिर बुखारी ने 'ख़ुलासा' में 'ख़ानिया' के इसी अंतिम हुक्म को इन शब्दों में व्यक्त किया है: **"वीर्य के अलावा यदि अशुद्धियाँ तरल हों जैसे शराब और पेशाब, तो वे केवल पानी से ही शुद्ध होंगे। और अबू यूसुफ से एक रिवायत है कि जब मोज़े (ख़ुफ़) पर मिट्टी डाली गई और उसे पोंछ दिया गया, तो वह शुद्ध हो जाएगा क्योंकि वह स्वभाव से ठोस हो गया।"** (त)

(२) भारी अशुद्धि (नजासते ग़लीज़ा) में दिरहम के क्षेत्रफल और वज़न का विचार है, जो तरल और ठोस में विभाजित है, जिसकी कुछ इबारतें तीसरी बहस में गुज़र चुकी हैं। और 'हिदाया' में है: **"दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए कहा गया कि पहली तरल के बारे में है और दूसरी ठोस के बारे में है।"** (त)

'काफ़ी' में है: **"फ़क़ीह अबू जाफ़र ने फरमाया: पहली तरल के बारे में है और दूसरी ठोस के बारे में है, और वही सही है।"** (त)

इसी प्रकार 'विक़ाया', 'निक़ाया', 'इसलाह', 'मुल्तक़ा', 'ख़ुलासा', 'बज़्ज़ाज़िया', 'जौहरा' आदि और 'जवाहिरुल अख़लाती' और अन्य कई किताबों में है: **"और 'जौहरा' में 'कसीफ़' (गाढ़ा) को 'सख़ीन' से व्यक्त किया गया है और 'जवाहिर' में 'ग़लीज़' से, और यह जोड़ा गया कि यही मज़हब का सही रुख है।"** (त)

^1 ख़ुलासतुल फ़तावा, फ़स्ल गुस्ल, कपड़े और तेल आदि में, नवल किशोर लखनऊ, 1/42 ^2 अल-हिदाया, बाब अल-अंजस, अरबी प्रेस कराची, 1/57 ^3 काफ़ी ^4 अल-जौहरतुल नय्यिरा, बाब अल-अंजस, इमदादिया मुल्तान, 1/45

पृष्ठ 64 / 756

جلد سوم فتاوٰی رضویہ اب ہم دکھاتے ہیں کہ ان کی نزدیک ادھر تو ذی جرم اور کثیف و ثخین و غلیظ کہ مقابل رقیق ہیں ادھر خود بے جرم و رقیق ایک معنی رکھتے ہیں، اولاً کتابوں میں واحد سے اختلاف تعبیر، (۱) امام طاہر بخاری نے خلاصہ میں اسی حکم اخیر خانیہ کو ان لفظوں سے ادا فرمایا: **غیر المنی من النجاسات ان کانت رقیقۃ کالخمر والبول لایطھر الا بالماء وعن ابی یوسف اذا القی التراب علی الخف فمسحھا یطھر لانہ یصیر في معنی المستجسدۃ ۸1 ۔** | نجاستوں میں منی کے علاوہ اگر رقیق ہو جیسے شراب اور پیشاب، تو صرف پانی سے ہی پاک ہوگا، اور ابویوسف سے ایک روایت ہے کہ جب موزے پر مٹی ڈالی گئی اور اس کو پونچھ دیا گیا تو وہ پاک ہو جائے گا کیونکہ وہ معنیً متجمد ہو گئی۔ (ت)

(۲) نجاست غلیظ میں اعتبار مساحت و وزن درہم کہ رقیق و کثیف پر منقسم جس کی بعض عبارات بحث سوم میں گزریں، اور ہدایہ میں ہے: **قیل فی التوفیق بینھما ان الاولی فی الرقیق والثانیۃ فی الکثیف۸2 ۔** | ان دونوں میں تطبیق اس طرح دی گئی ہے کہ پہلی رقیق میں ہے اور دوسری کثیف میں ہے (ت)

کافی میں ہے: **قال الفقیہ ابو جعفر الاولی فی الرقیق والثانیۃ فی الکثیف وھو الصحیح۸3 ۔** | فقیہ ابو جعفر نے فرمایا: پہلی رقیق میں ہے اور دوسری کثیف میں ہے اور وہی صحیح ہے۔ (ت)

اسی طرح وقایہ و نقایہ و اصلاح و ملتقی و خلاصہ و بزازیہ و جوہرہ وغیرہ و جواہر اخلاطی و غیرہا کتب کثیرہ میں ہے: **وعبر في الجوھرۃ الکثیف بالثخین وفی الجواھر بالغلیظ وزاد ھو الصحیح من المذھب۸4 ۔** | اور جوہرہ میں کثیف کو ثخین سے تعبیر کیا ہے اور جواہر میں غلیظ سے، اور یہ زیادہ کیا کہ یہی صحیح مذہب ہے (ت)

1۸ خلاصۃ الفتاوی فصل فی الغسل و الثوب والدہن الخ نولکشور لکھنو ۱/ ۴۲ 2۸ الہدایۃ باب الانجاس مطبوعہ عربیہ کراچی ۱/ ۵۷ 3۸ کافی 4۸ الجوہرۃ النیرہ، باب الانجاس، امدادیہ ملتان، ۱/ ۴۵

Fatawa Rizvia, Volume 3

Imam Malik al-Ulama expressed it thus:

[Table] Arabic: The jurist Abu Ja'far al-Hindwani said: "When the statements of [Imam] Muhammad differ on this, we reconcile them and say that by mentioning 'width' (area) he intended the measure of liquids like urine and wine, and by mentioning 'weight' he intended the measure of solidified substances." (1) Urdu: Faqih Abu Ja'far Hindwani said: "When the statements of [Imam] Muhammad differ, we will reconcile them and say that by mentioning 'width' (breadth) he meant the estimation of liquids like urine and wine, and by mentioning 'weight' he meant the estimation of substances with body (solidified)." (T) [/Table]

(3) Exactly in the same manner, Imam Zaila'i described the first as liquid and the second as solidified and stated, "And this is the correct view." (2) (And this is correct. T) (4) Similarly, it is stated in Maraqi al-Falah:

[Table] Arabic: The amount of a dirham is excused by weight in solidified substances and by area in liquids. (3) Urdu: In Maraqi al-Falah, the amount of one dirham weight is excused in solidified impurity and the area of one dirham in liquid. (T) [/Table]

(5) The same is in Fatawa Imam Qazi Khan as follows:

[Table] Arabic: In solidified [impurity] like dung, weight is considered; and in non-solidified [impurity] like urine, wine, and blood, spreading (area) is considered. (4) Urdu: And in solidified impurity like dung, weight will be considered; and in non-solidified, spreading [area] like urine, wine, and blood. (T) [/Table]

Secondly, variation in expression in citations from books: (6) In [Fatawa] Hindiyyah, it is:

[Table] Arabic: The correct [view] is that weight is considered in solidified [impurity] and area in others; thus it is in al-Tabyin. Urdu: The correct [view] is that solidified impurity will be considered by weight and in its other [form] by area. [/Table]

Footnotes: 1. Badai' al-Sanai', the amount by which a place becomes impure, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/80. 2. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Impurities, al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/73. 3. Maraqi al-Falah, Chapter of Impurities and Purity, al-Azhariyyah, Egypt, p. 89. 4. Qazi Khan, Section on Impurity that affects cloth, etc., Naval Kishore, Lucknow, 1/10.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

इमाम मलिक अल-उलमा ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया:

[तालिका] अरबी: फकीह अबू जाफ़र अल-हिंदवानी ने कहा: "जब इस विषय में [इमाम] मुहम्मद के कथन भिन्न हों, तो हम उनमें सामंजस्य बिठाते हैं और कहते हैं कि 'चौड़ाई' (क्षेत्रफल) के उल्लेख से उनका तात्पर्य मूत्र और शराब जैसे तरल पदार्थों की माप से था, और 'वजन' के उल्लेख से उनका तात्पर्य ठोस पदार्थों की माप से था।" (1) उर्दू: फकीह अबू जाफ़र हिंदवानी ने फरमाया: "जब [इमाम] मुहम्मद के बयान अलग-अलग हों, तो हम उनमें मेल मिलाप करेंगे और कहेंगे कि उन्होंने 'चौड़ाई' के जिक्र से तरल का अंदाजा मुराद लिया जैसे पेशाब और शराब, और 'वजन' से जिस्म वाली चीज़ (ठोस) की मात्रा का इरादा किया।" (त) [/तालिका]

(3) ठीक इसी तरह इमाम ज़ैलाई ने पहले को तरल और दूसरे को ठोस बताकर फरमाया: "और यही सही दृष्टिकोण है।" (2) (और यही सही है। त) (4) इसी प्रकार मराकी अल-फलाह में है:

[तालिका] अरबी: ठोस पदार्थों में वजन के हिसाब से एक दिरहम की मात्रा और तरल पदार्थों में क्षेत्रफल के हिसाब से माफ़ है। (3) उर्दू: मराकी अल-फलाह में ठोस गंदगी में एक दिरहम वजन की मात्रा माफ है और तरल में एक दिरहम का क्षेत्रफल। (त) [/तालिका]

(5) यही इमाम काज़ी ख़ान के फतावा में इस प्रकार है:

[तालिका] अरबी: ठोस [गंदगी] जैसे गोबर में वजन का विचार किया जाता है; और गैर-ठोस [गंदगी] जैसे पेशाब, शराब और खून में फैलाव (क्षेत्रफल) का विचार किया जाता है। (4) उर्दू: और ठोस गंदगी जैसे लीद में वजन का एतबार किया जाएगा और गैर-ठोस में फैलाव का जैसे पेशाब, शराब और खून। (त) [/तालिका]

दूसरा, किताबों से उद्धरणों में अभिव्यक्ति का परिवर्तन: (6) हिंदिया में है:

[तालिका] अरबी: सही बात यह है कि ठोस [गंदगी] में वजन का एतबार किया जाए और दूसरों में क्षेत्रफल का; अल-तबीन में ऐसा ही है। उर्दू: सही यह है कि ठोस गंदगी में वजन से एतबार किया जाएगा और उसकी गैर में क्षेत्रफल से। [/तालिका]

फुटनोट्स: 1. बदाइ अल-सलाई', वह मात्रा जिससे जगह नापाक हो जाती है, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/80। 2. तबीन अल-हकाइक, अशुद्धियों का अध्याय, अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 1/73।

3. मराकी अल-फलाह, अशुद्धियों और पवित्रता का अध्याय, अल-अज़हरिया, मिस्र, पृ. 89। 4. काज़ी ख़ान, कपड़े पर लगने वाली गंदगी का खंड, आदि, नवल किशोर, लखनऊ, 1/10।

पेज 65 of 756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

امام ملک العلماء نے اسے یوں تعبیر فرمایا:

[جدول] عربی: قال الفقیہ ابو جعفر الھندوانی اذا اختلفت عبارات محمد فی ھذا فنوفق ونقول اراد بذکر العرض تقدیر المائع کالبول والخمر وبذکر الوزن تقدیر المستجسد -1 اردو: فقیہ ابو جعفر ہندوانی نے فرمایا جب محمد کی عبارات مختلف ہو جائیں تو ہم تطبیق دیں گے اور کہیں گے کہ انہوں نے عرض (چوڑائی) کے ذکر سے مائع کا اندازہ مراد لیا جیسے پیشاب اور شراب اور وزن سے جسم والی کی مقدار کا اراد کیا۔ (ت) [/جدول]

(۳) بعینہ اسی طرح امام زیلعی نے اول کو مائع دوم کو مستجسد سے تعبیر کر کے فرمایا وھذا ھو الصحیح 2 (اور یہی صحیح ہے۔ت) (۴) اسی طرح مراقی الفلاح میں ہے:

[جدول] عربی: عفی قدر الدرھم وزنا في المستجسدة ومساحة في المائع 3- اردو: مراقی الفلاح میں ایک درہم وزن کی مقدار نجاست متجسدہ میں معاف ہے اور ایک درہم کی مساحت مائع میں۔ (ت) [/جدول]

(۵) یہی فتاوی امام قاضی خان میں یوں ہے:

[جدول] عربی: فی المستجسدة کالروث یعتبر وزنا وفی غیر المستجسدة کالبول والخمر والدم بسطا 4 اردو: اور نجاست متجمدہ میں جیسے لید وزن کا اعتبار کیا جائے گا اور غیر متجمدہ میں پھیلاؤ کا جیسے پیشاب، شراب اور خون۔ (ت) [/جدول]

ثانیا کتابوں سے نقل میں تغیر تعبیر۔ (۶) ہندیہ میں ہے:

[جدول] عربی: الصحيح ان يعتبر بالوزن في المستجسدة وبالمساحة في غيرها هكذا في التبيين اردو: صحیح یہ ہے کہ متجمد نجاست میں وزن سے اعتبار کیا جائے گا اور اس کی غیر میں مساحت سے [/جدول]

حواشی: 1۔ بدائع الصنائع المقدار الذی یصیر المحل بہ نجسا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۸۰ 2۔ تبیین الحقائق باب الانجاس الامیریہ ببولاق مصر ۱/۷۳ 3۔ مراقی الفلاح باب الانجاس والطہارۃ الازھریہ مصر ص ۸۹ 4۔ قاضی خان فصل فی النجاسۃ التي تصیب الثوب الخ نولکشور لکھنو ۱/۱۰

Volume Three Fatawa-e-Razvia

Al-Kafi and Akthar al-Fatawa 1-	**Similarly, it is mentioned in Tabyin, Al-Kafi, and Akthar al-Fatawa. (T)**

Although in Al-Kafi for liquids (raqiq) and in Tabyin 2, the word "maani" (impediment) was used, as you know.

Thirdly: The scholars' stylistic variation in their own words.

(7) It is in Al-Bahr:

(1) Stipulating 'jurm' (physical mass) is the opinion of everyone because if urine gets on something and dries, it is not sufficient unless it is washed, because the parts (of urine) are absorbed into it. So everyone agreed that the absolute (meaning the impurity that hits the leather sock) is restricted. So Abu Yusuf restricted it to non-liquids, and both of them restricted it with 'jurm' and dryness. 3	**Stipulating 'jurm' is the saying of everyone because if urine gets on someone and it dries, it will not work without washing because the components of urine get absorbed into it. So everyone is in agreement on this matter that absolute (meaning the filth that has stuck to the leather sock) is restricted. So Abu Yusuf restricted it to non-liquid and both of them restricted it to having 'jurm' and being dry. (T)**

In 'Minhat al-Khaliq', it is said:

The gist is that they agreed on the restriction of 'jurm', and Abu Hanifa and Muhammad were unique in adding the restriction of dryness 4-	**The summary is that they all agree on imposing the restriction of 'jurm' (physical substance), and Abu Hanifa and Muhammad are unique in imposing the restriction of dryness. (T)**

(8) In the same:

No exemption is given for absorption in liquids due to lack of necessity, since they have permitted that 'jurm' be from something else, like walking with it on sand or dust so that it acquires a 'jurm' 5-	**It is not forgiven due to penetration in liquid because there is no necessity there, as they have declared it permissible for 'jurm' to be from something else, such that one walks on sand or soil and a 'jurm' is obtained. (T)**

1 Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Impurities, Amiriyyah, Bulaq Egypt 1/37; and Fatawa Hindiyyah, Second Chapter on Entities, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/45. 2 Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Impurities, Amiriyyah Egypt, 1/37. 3 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Impurities, H.M. Saeed Company Karachi 1/223. 4 Minhat al-Khaliq with Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Impurities, H.M. Saeed Company Karachi 1/223. 5 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Impurities, H.M. Saeed Company Karachi 1/223.

जिल्द सोम (खंड तीन) फ़तावा-ए-रज़विया

अल-काफ़ी और अक्सर अल-फ़तावा 1-

इसी तरह तबयीन, काफ़ी और अक्सर फ़तावा में है। (त)

हालांकि काफ़ी में रक़ीक़ (तरल) के लिए और तबयीन 2 में 'मानी' (बाधक) शब्द था जैसा कि आप जानते हैं।

तीसरा: विद्वानों का अपने ही शब्दों में अभिव्यक्ति का वैविध्य।

(७) अल-बहर में है:

(१) जुर्म (भौतिक पदार्थ) की शर्त लगाना सभी का मत है क्योंकि यदि किसी को पेशाब लग जाए और वह सूख जाए, तो बिना धोए काम नहीं चलेगा क्योंकि पेशाब के अंश उसमें समा जाते हैं। अतः सभी इस बात पर सहमत हुए कि मुतलक़ (अर्थात वह गंदगी जो चमड़े के मोजे पर लगी है) प्रतिबंधित है। अतः अबू यूसुफ ने इसे गैर-रक़ीक़ (गैर-तरल) तक सीमित किया और उन दोनों ने इसे जुर्म और सूखेपन के साथ प्रतिबंधित किया। 3

जुर्म की शर्त लगाना सभी का कहना है क्योंकि अगर किसी को पेशाब लग गया और सूख गया तो बिना धोए काम नहीं चलेगा क्योंकि पेशाब के अंश उसमें जज़्ब (समा) हो जाते हैं। तो कुल का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि मुतलक़ (यानी वह गंदगी जो मोजे को लगी है वह मुक़य्यद (सीमित) है, तो अबू यूसुफ़ ने उसे गैर-रक़ीक़ से सीमित किया और उन दोनों ने उसे जुर्म और खुश्क होने से मुक़य्यद किया। (त)

इस पर 'मिन्हतुल ख़ालिक़' में फ़रमाया:

निष्कर्ष यह है कि वे जुर्म की शर्त पर सहमत थे और अबू हनीफ़ा और मुहम्मद खुश्की (सूखने) की अतिरिक्त शर्त में अकेले थे 4-

हासिल यह है कि वे सब जुर्म की क़ैद (शर्त) लगाने पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) हैं और अबू हनीफ़ा और मुहम्मद खुश्क होने की क़ैद लगाने में मुनफ़रिद (अकेले) हैं। (त)

(८) इसी में है:

रक़ीक़ (तरल) में समा जाने की स्थिति में ज़रूरत न होने के कारण माफ़ नहीं किया गया, क्योंकि उन्होंने इस बात को जायज़ ठहराया है कि जुर्म किसी और चीज़ से हो, जैसे कि उस पर रेत या मिट्टी पर चलना ताकि उसे जुर्म प्राप्त हो जाए 5-

रक़ीक़ में सरायत (समा) करने की वजह से माफ़ नहीं कि वहां ज़रूरत नहीं, इसलिए कि उन्होंने इस बात को जायज़ क़रार दिया है कि जुर्म उसके गैर से हो, इस तरह कि रेत या मिट्टी पर चले और जुर्म हासिल हो जाए। (त)

1 तबयीन अल-हक़ाइक़, बाब अल-अंजस, अमीरिय्या, बुलाक मिस्र 1/37; और फ़तावा हिंदिया, दूसरा अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/45। 2 तबयीन अल-हक़ाइक़, बाब अल-अंजस, अमीरिय्या मिस्र, 1/37। 3 अल-बहर अल-राइक़, बाब अल-अंजस, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/223। 4 मिन्हतुल ख़ालिक़ अल-बहर अल-राइक़ के साथ, बाब अल-अंजस, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/223। 5 अल-बहर अल-राइक़, बाब अल-अंजस, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/223।

جلد سوم فتاوٰی رضویہ

والكافي واكثر الفتاوٰی 1- اسی طرح تبیین، کافی اور اکثر فتاوٰی میں ہے۔ (ت)

حالانکہ کافی میں رقیق اور تبیین میں 2 میں مانع کا لفظ تھا کما علمت۔

ثالثاً: علماء کا اپنے ہی کلام میں تفنن تعبیر۔

(۷) بحر میں ہے:

(ا) اشتراط الجرم قول الکل لانه لو اصابه بول فیبس لم یجزه حتی یغسله لان الاجزاء تتشرب فیه فاتفق الکل علی ان المطلق (ای الاذی الذی یصیب الخف مقید فقیده ابو یوسف بغیر الرقیق وقیده بالجروم والجفاف 3

جرم کی شرط لگانا تمام کا قول ہے کیونکہ اگر کسی کو پیشاب لگ گیا اور خشک ہو گیا تو بلا دھوئے کام نہیں چلے گا کیونکہ پیشاب کے اجزاء اس میں جذب ہو جاتے ہیں تو کل کا اس امر پر اتفاق ہے کہ مطلق (یعنی وہ گندگی جو موزے کو لگی ہے وہ مقید ہے تو ابو یوسف نے اس کو غیر رقیق سے مقید کیا اور ان دونوں نے اس کو جرم اور خشک ہونے سے مقید کیا۔ (ت)

اس پر منحة الخالق میں فرمایا:

الحاصل انهم اتفقوا علی التقیید بالجرم وانفرد ابو حنیفة ومحمد بزیادة الجفاف -4

حاصل یہ ہے کہ وہ سب جرم کی قید لگانے پر متفق ہیں اور ابو حنیفہ اور محمد خشک ہونے کی قید لگانے میں منفرد ہیں۔ (ت)

(۸) اسی میں ہے:

لم يعف عن التشرب في الرقيق لعدم الضرورة اذ قد جوزوا كون الجرم من غيرها بان يمشی به علی رمل او تراب فيصير لها جرم 5-

رقیق میں سرایت کرنے کی وجہ سے معاف نہیں کہ وہاں ضرورت نہیں اس لئے کہ انہوں نے اس امر کو جائز قرار دیا ہے کہ جرم اس کے غیر سے ہو بدیں طور کہ ریت یا مٹی پر چلے اور جرم حاصل ہو جائے۔ (ت)

1 تبیین الحقائق باب الانجاس الامیریه ببولاق مصر ۱/۳۷، و فتاوٰی ہندیہ الفصل الثانی فی الاعیان نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۴۵ 2 تبیین الحقائق، باب الانجاس، الامیریه مصر، ۱/۳۷ 3 بحر الرائق باب الانجاس ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۲۳ 4 منحة الخالق مع البحر الرائق باب الانجاس ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۲۳ 5 بحر الرائق باب الانجاس ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۲۳

Volume 3 Fatawa Razawiyya (9) In Fath al-Qadir: [Table] Arabic: Al-hasilu ba'da izalatil jurmi kal-hasili qabla dhalika fir-raquiq. 1 English: The result after removing the solid body (of impurity) is the same as what is obtained in liquid impurity without removing a solid body. (T)

(10) In Ghunya: [Table] Arabic: 'Amila Abu Yusuf bi-itlaqihi illa annahu istathnar-raquiqa kama qalal-musannifu (wa in lam yakun laha jurmun kal-bauli wal-khamri falabudda minal-ghusli) bil-ittifaq. 2 English: Abu Yusuf acted upon its general application, but he made an exception for liquid impurity as the author stated (and if it has no solid body like urine and wine, then washing is necessary) by consensus. (T)

(11) In the same, after citing an absolute Hadith, it says regarding the reasoning for the condition "it having a body": [Table] Arabic: Qala fil-Kifayati wa ghairiha kharajatun-najasatur-raquiqu minal-itlaqil-hadithi bit-ta'leeli 3 ilkh. English: It is stated in Al-Kifayah etc. that liquid impurity was excluded from the absolute general meaning of the Hadith due to reasoning etc. (T)

(12) In the same: [Table] Arabic: Man asaba na'lahun-najasatur-raquiqu idha istajsada bit-turabi awir-ramli lau masahahu yathur. 4 English: He whose shoe is stained with liquid impurity, which then solidifies due to soil or sand, if he rubs it, it becomes pure. (T)

(13) In the same: [Table] Arabic: Al-mukhtaru lil-fatwa at-taharatu bid-dalki fil-khuffi wa nahwihi sawa'un kanat dhati jurmin min nafsiha au bi-ghairiha kar-raquiquil-mustajsadati bit-turabi ratbatan kanat au yabisa. 5 English: The preferred view for fatwa regarding the purity of leather socks (Khuff) and the like is that they are purified by rubbing, whether the impurity has a body of its own or through something else, like liquid impurity that has solidified by mixing with soil, whether it is wet or dry. (T)

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, Chapter of Impurities, Nooriya Razawiyya, Sukkur, 1/171
2. Ghuniyat al-Mustamli, The Second Condition: Purity, Suhail Academy Lahore, p. 178
3. Ghuniyat al-Mustamli, The Second Condition: Purity, Suhail Academy Lahore, p. 178
4. Ghuniyat al-Mustamli, The Second Condition: Purity, Suhail Academy Lahore, p. 178
5. Ghuniyat al-Mustamli, The Second Condition: Purity, Suhail Academy Lahore, p. 179

जिल्द सोम फ़तावा रज़विया (9) फ़त्हुल क़दीर में है: [तालिका] अरबी: अल-हासिलु बा'दा इज़ालतिल जुर्मि कल-हासिलि क़बला ज़ालिका फ़िर-रक़ीक़। 1 हिंदी: जुर्म (ठोस पदार्थ) को दूर करने के बाद वही चीज़ प्राप्त होगी जो रक़ीक़ (तरल अशुद्धि) में जुर्म को दूर किए बिना प्राप्त होती है। (त)

(10) गुनिया में है: [तालिका] अरबी: 'अमिला अबू यूसुफ़ बि-इतलाक़िही इल्ला अन्नाहु इस्तस्नर-रक़ीक़ा कमा क़ालल-मुसन्निफ़ु (वा इन लम यकुन लहा जुर्मुन कल-बौलि वल-ख़मरि फ़ला बुद्दा मिनल-ग़ुस्लि) बिल-इत्तिफ़ाक़। 2 हिंदी: अबू यूसुफ़ ने इसके इतलाक़ (बिना शर्त प्रयोग) पर अमल किया, अलबत्ता उन्होंने रक़ीक़ का इस्तिस्ना (अपवाद) किया जैसा कि मुसन्निफ़ (लेखक) ने फ़रमाया (और अगर उसका जुर्म न हो जैसे पेशाब और शराब, तो उसका धोना लाज़िम है) बिल-इत्तेफ़ाक़। (त)

(11) उसी में हदीस-ए-मुतलक़ नक़्ल करके क़ैद-ए-लहा जुर्म की ता'लील में फ़रमाया: [तालिका] अरबी: क़ाला फ़िल-किफ़ायती व ग़ैरिहा ख़रजातुन-नजासतुर-रक़ीक़ु मिनल-इतलाक़िल-हदीषि बिता'लीलि 3 इलख। हिंदी: किफ़ाया वग़ैरा में है कि रक़ीक़ नजासत हदीस के इतलाक़ से ता'लील (तर्क) की वजह से निकल गई वग़ैरा। (त)

(12) उसी में है: [तालिका] अरबी: मन असाबा ना'लहुन-नजासतुर-रक़ीक़ु इज़ा इस्तजसदा बित-तुराबि अविर-रमली लौ मसहाहु यथुरु। 4 हिंदी: जिसके जूते को रक़ीक़ नजासत लगी, फिर मिट्टी या रेत की वजह से मुंजमिद (जम) गई, अब अगर वह उसको रगड़े तो पाक (पवित्र) हो जाएगी। (त)

(13) उसी में है: [तालिका] अरबी: अल-मुख्तारु लिल-फ़तवा अत-तहारतु बिद-दल्कि फ़िल-ख़ुफ़्फ़ि व नहविही सवा'उन कानात ज़ाति जुर्मिन मिन नफ़्सिहा औ बि-ग़ैरिहा कर-रक़ीक़ुल-मुस्तजसदति बित-तुराबि रतबातन कानात औ याबिसा। 5 हिंदी: फ़तवा के लिए मुख़्तार मोज़ा वग़ैरा की तहारत (पवित्रता) में यह है कि उसको रगड़ लिया जाए, चाहे ख़ुद उसका अपना जुर्म हो या किसी और की वजह से जैसे वह जो मिट्टी में मिल जाने की वजह से जिस्म वाली हो जाए, ख़्वाह तर हो या ख़ुश्क। (त)

पाद टिप्पणियाँ: 1. फ़त्हुल क़दीर, बाबुल अन्जास, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/171 2. गुनियातुल मुस्तमली, अश-शर्तुस सानी अत-तहारत, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 178 3. गुनियातुल मुस्तमली, अश-शर्तुस सानी अत-तहारत, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 178 4. गुनियातुल मुस्तमली, अश-शर्तुस सानी अत-तहारत, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 178 5. गुनियातुल मुस्तमली, अश-शर्तुस सानी अत-तहारत, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 179

पृष्ठ 67/756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ (۹) فتح القدیر میں ہے : [جدول] عربی: الحاصل بعد ازالة الجرم کالحاصل قبل ذلك فی الرقیق ۱۔ اردو: جرم کو زائل کرنے کے بعد وہی چیز حاصل ہوگی جو رقیق میں جرم کو زائل کئے بغیر ہوتی ہے۔ (ت)

(۱۰) غنیہ میں ہے : [جدول] عربی: عمل ابو یوسف باطلاقہ الا انه استثنی الرقیق کما قال المصنف (وان لم یکن لها جرم کالبول والخمر فلابد من الغسل) بالاتفاق ۲۔ اردو: ابو یوسف نے اس کے اطلاق پر عمل کیا البتہ انہوں نے رقیق کا استثناء کیا جیسا کہ مصنف نے فرمایا (اور اگر اس کا جرم نہ ہو جیسے پیشاب اور شراب تو اس کا دھونا لازم ہے) بالاتفاق۔ (ت)

(۱۱) اُسی میں حدیث مطلق نقل کر کے قیدِ لہا جرم کی تعلیل میں فرمایا : [جدول] عربی: قال فی الکفایة وغیرها خرجت النجاسة الرقیقة من اطلاق الحدیث بالتعلیل ۳ الخ اردو: کفایہ وغیرہ میں ہے رقیق نجاست حدیث کے اطلاق سے تعلیل کی وجہ سے نکل گئی الخ (ت)

(۱۲) اُسی میں ہے : [جدول] عربی: من اصاب نعله النجاسة الرقیقة اذا استجسد بالتراب او الرمل لو مسحه یطهر ۴۔ اردو: جس کے جوتے کو رقیق نجاست لگی پھر مٹی یا ریت کی وجہ سے منجمد ہوگئی اب اگر وہ اس کو رگڑے تو پاک ہو جائے گی۔ (ت)

(۱۳) اُسی میں ہے : [جدول] عربی: المختار للفتوی الطهارة بالدلك فی الخف ونحوه سواء کانت ذات جرم من نفسها اوبغیرها کالرقیقة المستجسدة بالتراب رطبة کانت او یابسة ۵۔ اردو: فتویٰ کے لئے مختار موزہ وغیرہ کی طہارت میں یہ ہے کہ اس کو رگڑ لیا جائے چاہے خود اس کا اپنا جرم ہو یا کسی اور کی وجہ سے جیسے وہ جو مٹی میں مل جانے کی وجہ سے جسم والی ہو جائے خواہ تر ہو یا خشک۔ (ت)

حواشی: ۱ فتح القدیر باب الانجاس نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۱۷۱ ۲ غنیة المستملی الشرط الثانی الطهارة سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۷۸ ۳ غنیة المستملی الشرط الثانی الطهارة سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۷۸ ۴ غنیة المستملی الشرط الثانی الطهارة سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۷۸ ۵ غنیة المستملی الشرط الثانی الطهارة سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۷۹

Fatawa Rizvia Volume Three (14) In Hilya, reasoning from the problem of impurity hitting something that has substance (jirm) based on hadith, it was stated: Hādhā al-iṭlāq ḥujjatun li-Abī Yūsuf fī musāwātihi bayna al-raṭb wa al-yābis naʿam ʿalā Abī Yūsuf an yaqūla bi-al-ṭahārati fī al-raqīq ayḍan li-anna al-iṭlāqa yatanāwaluhu kamā yatanāwalu al-kathīf muṭlaqan. [1] This absolute statement is an argument for Abu Yusuf; he does not differentiate between wet and dry. Moreover, it is incumbent upon Abu Yusuf to also state purity in thin substances because the absolute statement includes them just as it absolutely includes thick substances. (t) (15) In the same [book], quoting the response and discussion on it, it was stated: ʿalā anna fī al-Badāʾiʿ anna Abā Yūsuf fī riwāyatin ʿanhu sawwā fī ṭahāratihi bayna an takūna mustajsidatan aw māʾiʿatan. [2] Additionally, it is in Bada'i that in one narration from Abu Yusuf, he maintained equality in its purity between it being solidified or liquid. (t) Fourthly: Explicit Interpretation. (16) In Tanwir it was: ʿufiya ʿan qadri dirhamin fī kathīf. [3] (Pardon is given for the amount of a dirham in a thick substance. - t) In Durr al-Mukhtar, its interpretation is: lahu jirm. [4] (That which has substance. - t) In Radd al-Muhtar it says: qawluhu lahu jirm tafsīr al-kathīf. [5] (His statement "it has substance" is an interpretation of "thick". - t) (17) In Jami' al-Rumuz it is: al-kathīf mā lahu jirm wa al-raqīq mā lā jirm lahu. [6] (Thick is that which has substance and thin is that which has no substance. - t) In Shami, from Hilya, it is: ʿudda minhu (ay mimmā lahu jirm) fī al-Hidāyah al-dam wa ʿaddahu Qāḍīkhān mimmā laysa lahu jirm wa waffaq fī al-Ḥilya bi-ḥaml al-awwal ʿalā... Blood is counted among it (i.e., among that which has substance) in al-Hidaya, and Qadīkhān counted it among that which has no substance. And in Hilya, reconciliation was made by taking the first to mean...

[Footnotes] 1 Hilya 2 Hilya 3 Durr al-Mukhtar, Bab al-Anjas, Mujtabai Delhi, 1/53 4 Durr al-Mukhtar, Bab al-Anjas, Mujtabai Delhi, 1/53 5 Radd al-Muhtar, Bab al-Anjas, Mustafa al-Babi Egypt, 1/233 6 Jami' al-Rumuz, Fasl Yatharu al-Shay', Islamiya Gunbad Iran, 1/152 Page 68 of 756

फ़तावा रिज़विया जिल्द सोम (१४) हिलिया में इसे मसला असाबत-ए नजासत लहा जुर्म पर हदीस से इस्तिदलाल करके फ़रमाया: हाज़ा अल-इतलाक़ हुज्जतुल लि-अबी यूसुफ़ फ़ी मुसावातिही बैनर रतब वल याबिस नअम अला अबी यूसुफ़ अन यक़ूल बित तहारति फ़िर रक़ीक़ अयज़न लअन्नल इतलाक़ यतनावलुहू कमा यतनावलुल कसीफ़ मुतलक़न। [१] यह इतलाक़ अबू यूसुफ़ की हुज्जत है, वह रतब व याबिस में फ़र्क़ नहीं करते हैं, इसके इलावा अबू यूसुफ़ पर लाज़िम है कि वह रक़ीक़ में भी तहारत का क़ौल करें क्योंकि इतलाक़ कसीफ़ की तरह इसको भी शामिल है। (त) (१५) इसी में इस जवाब और इस पर बहस नक़ल करके फ़रमाया: अला अन्ना फ़िल बदाइ'अ अन्ना अबा यूसुफ़ फ़ी रिवायतिन अन्हु सव्वा फ़ी तहारतिही बैन अन तकून मुस्तजसिदतन औ माइ'अतन। [२] इलावा अज़ीं बदाइ'अ में है कि अबू यूसुफ़ की एक रिवायत में है कि उन्होंने जिस्म वाली और माए' में मसावात रखी है। (त) राबेअन्: सरीह तफ़्सीर। (१६) तनवीर में था: उफ़िया अन क़दरे दिरहम फ़ी कसीफ़। [३] (एक दिरहम की मिक़दार कसीफ़ में मुआफ़ है। - त) दुर्रे मुख्तार में इसकी तफ़्सीर की: लहू जुर्म। [४] (जिसके लिए जुर्म हो। - त) रद्दुल मुहतार में है: क़ौलुहू लहू जुर्म तफ़्सीरुल कसीफ़। [५] (उनका क़ौल 'लहू जुर्म' कसीफ़ की तफ़्सीर है। - त) (१७) जामेउर रुमूज़ में है: अल-कसीफ़ मा लहू जुर्म वर रक़ीक़ मा ला जुर्म लहू। [६] (कसीफ़ वह है जिसका जुर्म हो और रक़ीक़ वह है जिसका जुर्म न हो। - त) शामी में हिलिया से है: अद्द मिनहु (अय मिम्मा लहू जुर्म) फ़िल हिदाया अद-दम व अददहु क़ाज़ीख़ान मिम्मा लैसा लहू जुर्म व वफ़्फ़क़ फ़िल हिलिया बि-हम्लिल अव्वल अला... शुमार किया गया है इससे (यानी उससे जिसका जुर्म हो) हिदाया में है ख़ून को, और इसको क़ाज़ीख़ान ने इसमें शुमार किया जिसका जुर्म न हो। और हिलिया में इसी तरह तौफ़ीक़...

[पाद टिप्पणियाँ] १ हिलिया २ हिलिया ३ दुर्रे मुख्तार, बाब अल-अंजस, मुज्तबाई दिल्ली, १/५३ ४ दुर्रे मुख्तार, बाब अल-अंजस, मुज्तबाई दिल्ली, १/५३ ५ रद्दुल मुहतार, बाब अल-अंजस, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/२३३ ६ जामेउर रुमूज़, फ़स्ल यतहरू अल-शय, इस्लामिया गुम्बद ईरान, १/१५२ पेज ६८ / ७५९

فتاوی رضویہ جلد سوم (۱۴) حلیہ میں اسے مسئلہ اصابتہ نجاسۃ لھا جرم پر حدیث سے استدلال کر کے فرمایا: ھذا الاطلاق حجۃ لابی یوسف فی مساواتہ بین الرطب والیابس نعم علی ابی یوسف ان یقول بالطھارۃ في الرقیق ایضا لان الاطلاق یتناولہ کما یتناول الکثیف مطلقا ۱۔ یہ اطلاق ابو یوسف کی حجت ہے وہ رطب و یابس میں فرق نہیں کرتے ہیں، اس کے علاوہ ابو یوسف پر لازم ہے کہ وہ رقیق میں بھی طہارت کا قول کریں کیونکہ اطلاق کثیف کی طرح اس کو بھی شامل ہے۔ (ت) (۱۵) اسی میں اس جواب اور اس پر بحث نقل کر کے فرمایا: علی ان في البدائع ان ابایوسف في روایۃ عنہ سوی في طھارتہ بین ان تکون مستجسدۃ اومائعۃ ۲۔ علاوہ ازیں بدائع میں ہے کہ ابو یوسف کی ایک روایت میں ہے کہ انہوں نے جسم والی اور مائع میں مساوات رکھی ہے۔ (ت) رابعا صریح تفسیر۔ (۱۶) تنویر میں تھا: عفی عن قدر درھم فی کثیف ۳ (ایک درہم کی مقدار کثیف میں معاف ہے۔ ت) در مختار میں اس کی تفسیر کی لہ جرم ۴ (جس کیلئے جرم ہو۔ ت) ردالمحتار میں ہے: قولہ لہ جرم تفسیر الکثیف ۵ (ان کا قول لہ جرم کثیف کی تفسیر ہے۔ ت) (۱۷) جامع الرموز میں ہے: الکثیف مالہ جرم والرقیق مالا جرم لہ ۶ (کثیف وہ ہے جس کا جرم ہو اور رقیق وہ ہے جس کا جرم نہ ہو۔ ت) شامی میں حلیہ سے ہے: عدمنہ (ای ممالہ جرم) فی الھدایۃ الدم وعدہ قاضیخان ممالیس لہ جرم ووفق في الحلیۃ بحمل الاول علی شمار کیا گیا ہے اس سے (یعنی اس سے جس کا جرم ہو) ہدایہ میں ہے خون کو ، اور اس کو قاضیخان نے اس میں شمار کیا جس کا جرم نہ ہو۔ اور حلیہ میں اسی طرح توفیق

۱ حلیہ ۲ حلیہ ۳ در مختار ، باب الانجاس، مجتبائی دہلی ، ۱/ ۵۳ ۴ در مختار باب الانجاس مجتبائی دہلی ۱/ ۵۳ ۵ ردالمحتار باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۳۳ ۶ جامع الرموز فصل یطہر الشئی اسلامیہ گنبد ایران ۱/ ۱۵۲ صفحہ ۶۸ از ۷۵۶

Fatawa Razawiyya Volume Three

...on what is thick and the second on what is thin.

...has been made that the first be taken as thick and the second as thin. This provides the benefit of explanation, even if its context is not for that. (T)

This provides the benefit of explanation, even if its context is not for that. 1

In summary, in the terminology of the honorable jurists, 'thin' (raqiq) and 'without mass' (be-jurm) are the same thing. **Second preface:** Whether a dense body (1) is thin, how can its being without mass be imagined, since mass and body are one thing? And if mass is taken to mean thickness, i.e., depth which is called 'dul', then a body cannot be without it because it must have three dimensions. Therefore, the scholars themselves have explained that 'without mass' means that after drying, for example, no protruding 'dul' (thickness) of it is felt from the surface of the body or cloth, even if color is visible. In these discussions, this is also called 'invisible', i.e., invisible in terms of mass, not in terms of color. In 'Tabyeen al-Haqa'iq', 'Bahr al-Ra'iq', 'Majma' al-Anhur', 'Fath Allah al-Mu'een', 'Tahawi ala al-Maraqi', 'Radd al-Muhtar' etc., it is stated:

The distinction between them is that whatever remains after drying on the outer surface of the leather sock (khuff) has mass, and whatever is not seen after drying does not have mass. 2

The thing that distinguishes between the two is that what is seen on the exterior of the sock after drying is something with mass, and what is not seen after drying is not something with mass. (T)

I say: By its 'exterior' he did not mean its back (top), because the ruling is not exclusive to it, rather the inner part (sole) is more often affected. He only meant the external surface of both the back and the sole. This restriction was made to exclude what is absorbed into the interior of the sock, as absorption is not exclusive to

I say: By 'exterior' he did not mean its back, because the ruling is not exclusive to it, rather the inner part of the back is more affected. Rather, their intention is its external surface, whether it be the back or the interior, and this condition was applied so that what

The distinction between them is that whatever remains after drying on the outer surface of the leather sock (khuff) has mass, and whatever is not seen after drying does not have mass. 2

The thing that distinguishes between the two is that what is seen on the exterior of the sock after drying is something with mass, and what is not seen after drying is not something with mass. (T)

substances with mass, but rather absorption from thin substances is greater. He needed this because he said 'remains' (yabqa); if he had said 'seen' (yura), he would have been independent of it, as in its opposite, for sight only perceives what is on the surface. Therefore, the two masters, al-Azhari and Tahtawi (T), omitted it, saying 'what remains' must be 'seen' (2). Whoever neglects this, replaces and retains as...

the internal part of the sock absorbs can be avoided, because this is not exclusive to substances with mass, but rather absorption is greater in thin substances. This was necessary because he said 'remains' (yabqa); if he had said 'seen' (yura), there would have been no need for it, as it is in its opposite...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/233.
2. Tabyeen al-Haqa'iq, Chapter of Impurities, Amiriyya Press, Bulaq, Egypt, 1/51.

फ़तावा रज़विया खंड तीन

...जो गाढ़ा है और दूसरा जो पतला है।

...गई है कि पहले को गाढ़े पर और दूसरे को पतले पर महमूल (लागू) किया जाए। यह व्याख्या का लाभ देता है, भले ही इसका संदर्भ उसके लिए न हो। (त)

यह व्याख्या का लाभ देता है, भले ही इसका संदर्भ उसके लिए न हो। १

संक्षेप में, माननीय न्यायविदों (फ़ुक़हा) की शब्दावली में 'पतला' (रक़ीक़) और 'द्रव्यमान रहित' (बे-जर्म) एक ही बात है। **दूसरी प्रस्तावना:** चाहे एक सघन शरीर (१) पतला हो, उसके द्रव्यमान रहित होने की कल्पना कैसे की जा सकती है, क्योंकि द्रव्यमान और शरीर एक ही वस्तु हैं? और यदि द्रव्यमान का अर्थ मोटाई लिया जाए, यानी गहराई जिसे 'दुल' कहा जाता है, तो शरीर इससे रहित नहीं हो सकता क्योंकि इसमें तीन आयाम अवश्य होते हैं। इसलिए, स्वयं विद्वानों ने इसकी व्याख्या की है कि 'द्रव्यमान रहित' से तात्पर्य है कि सूखने के बाद, उदाहरण के लिए, शरीर या कपड़े की सतह से उभरा हुआ उसका कोई 'दुल' (मोटाई) महसूस न हो, भले ही रंग दिखाई दे। इन चर्चाओं में इसे 'अदृश्य' भी कहा जाता है, यानी द्रव्यमान की दृष्टि से अदृश्य, न कि रंग की दृष्टि से। 'तब्बीन अल-हक़ा'इक़', 'बहर अल-राईक़', 'मजमा अल-अन्हुर', 'फ़तह अल्लाह अल-मुईन', 'तहावी अला अल-मराक़ी', 'रद अल-मुह्तार' आदि में है:

दोनों के बीच अंतर यह है कि जो सूखने के बाद मोज़े (ख़ुफ़) की बाहरी सतह पर बचा रहे, वह द्रव्यमान वाला है, और जो सूखने के बाद दिखाई न दे, वह द्रव्यमान वाला नहीं है। २

दोनों के बीच अंतर करने वाली चीज़ यह है कि जो सूखने के बाद मोज़े के बाहरी हिस्से पर दिखाई दे, वह द्रव्यमान वाला है, और जो सूखने के बाद दिखाई न दे, वह द्रव्यमान वाला नहीं है। (त)

मैं कहता हूँ: उन्होंने इसके'ज़ाहिर' (बाहरी हिस्से) से उसकी पीठ (ऊपरी भाग) का इरादा नहीं किया है, क्योंकि नियम केवल उसी के साथ विशिष्ट नहीं है,

मैं कहता हूँ कि उन्होंने इसके बाहरी हिस्से से उसकी पीठ का इरादा नहीं किया है, क्योंकि नियम केवल उसी के

दोनों के बीच अंतर यह है कि जो सूखने के बाद मोज़े (ख़ुफ़) की बाहरी सतह पर बचा रहे, वह द्रव्यमान वाला है, और जो सूखने के बाद दिखाई न दे, वह द्रव्यमान वाला नहीं है। २

दोनों के बीच अंतर करने वाली चीज़ यह है कि जो सूखने के बाद मोज़े के बाहरी हिस्से पर दिखाई दे, वह द्रव्यमान वाला है, और जो सूखने के बाद दिखाई न दे, वह द्रव्यमान वाला नहीं है। (त)

बल्कि तलवा (अंदरूनी हिस्सा) अधिक प्रभावित होता है। उन्होंने केवल पीठ और तलवे दोनों की बाहरी सतह का इरादा किया है। यह प्रतिबंध इसलिए लगाया गया ताकि मोज़े के अंदरूनी हिस्से द्वारा सोखी गई चीज़ों से बचा जा सके क्योंकि सोखना केवल द्रव्यमान वाली चीज़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि पतली चीज़ों में सोखना अधिक होता है। उन्हें इसकी आवश्यकता इसलिए हुई क्योंकि उन्होंने 'यबक़ा' (बाकी रहता है) कहा है; यदि वे 'युरा' (दिखाई देता है) कहते तो उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं होती, जैसा कि इसके विपरीत में है, क्योंकि दृष्टि केवल सतह पर मौजूद चीज़ों को ही देख पाती है। इसलिए, दो स्वामियों, अल-अज़हरी और तहतावी (त) ने इसे हटा दिया, यह कहते हुए कि 'जो बाकी रहे' उसका 'दिखाई देना' (२) आवश्यक है। जो कोई इसे नज़रअंदाज़ करता है, वह बदल देता है और वैसे ही रखता है जैसा...

साथ विशिष्ट नहीं है, बल्कि पीठ के अंदरूनी हिस्से तक अधिक पहुँचता है। बल्कि उनका इरादा उसकी बाहरी सतह से है, चाहे वह पीठ हो या आंतरिक हिस्सा, और यह शर्त इसलिए लगाई गई ताकि उससे बचा जा सके जिसे मोज़े का आंतरिक हिस्सा सोख लेता है, क्योंकि यह द्रव्यमान वाली वस्तु के साथ विशिष्ट नहीं है, बल्कि पतले पदार्थों में सोखना अधिक होता है। इसकी आवश्यकता इसलिए हुई क्योंकि उन्होंने 'यबक़ा' कहा है; यदि वे 'युरा' कहते तो इसकी आवश्यकता नहीं होती, जैसा कि इसके विपरीत में है...

---

1. रद अल-मुह्तार, अशुद्धियों का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, १/२३३।
2. तब्बीन अल-हक़ा'इक़, अशुद्धियों का अध्याय, अमीरिया प्रेस, बुलाक, मिस्र, १/५१।

पृष्ठ ६९/७५६

مَا إِذَا كَانَ غَلِيظاً وَالثَّانِی عَلَی مَا إِذَا كَانَ رَقِيقاً اھ

کی گئی ہے کہ اول کو غلیظ پر محمول کیا جائے اور دوسری کو رقیق پر یہ تفسیر کا فائدہ دیتا ہے اگرچہ اس کا اس کیلئے سیاق نہیں ہے۔ ت)

وَهَذَا يُؤَدِّی مُؤَدَّی التَّفْسِيرِ وَإِن لَم يَكُن سَوقُهُ لَهُ ۱۔

بالجملہ اصطلاح فقہائے کرام میں رقیق و بے جرم ایک چیز ہیں۔ مقدمہ ثانیہ : جسم کثیف (۱) ہو خواہ رقیق اس کا بے جرم ہونا کیونکر متصور کہ جرم و جسم ایک شئی ہیں اور اگر جرم بمعنی ثخن لیجئے یعنی عمق جسے دُل کہتے ہیں تو جسم کو اس سے بھی چارہ نہیں کہ اُس میں ابعادِ ثلاثہ ضرور ہیں لہٰذا خود علماء نے اس کی تفسیر فرمائی کہ بے جرم سے یہ مراد کہ خشک ہونے کے بعد مثلاً بدن یا کپڑے کی سطح سے اُبھر ہوا اس کا کوئی دُل محسوس نہ ہو اگر چہ رنگ نظر آئے۔ ان مباحث میں اسی کو غیر مرئی بھی کہتے ہیں یعنی بنظرِ جرم نہ بنظرِ لون۔ تبیین الحقائق و بحر الرائق و مجمع الانہر و فتح اللہ المعین و طحاوی علی المراقی و رد المحتار وغیرہا میں ہے:

الفاصل بینهماان کل مایبقی بعدالجفاف علی ظاهرالخف فهو جرم ومالایری بعد الجفاف فلیس بجرم ۲ اهـ

دونوں میں فصل کرنے والی چیز یہ ہے کہ جو خشک ہونے کے بعد موزے کے ظاہر پر نظر آئے تو وہ ذی جرم ہے اور جو خشک ہونے کے بعد نظر نہ آئے وہ ذی جرم نہیں ہے۔(ت)

اقول: لم یرد بظاهره ظهره لعدم اختصاص الحکم به بل بطنه هو الاکثر اصابة انما اراد السطح الظاهر من ظهره وبطنه وقید به تحرزاً عما یتشربه داخل الخف فأنه لا یختص بذی الجرم بل التشرب من الرقیق اکثر وانما احتاج الیه لقوله یبقی ولو قال یری لاستغنی عنه کما فی مقابله فأن البصر لا یدرك الا ما علی الظاهر ولذا اسقطه السیدان الازهری وط لابد الهما الباقی بالمرئی (۲) ومن اغفل هذا ابدل وابقی کما

میں کہتا ہوں انہوں نے اس کے ظاہر سے اس کی پشت کا ارادہ نہیں کیا ہے کیونکہ حکم اس کے ساتھ ہی مختص نہیں بلکہ پشت کے اندرونی حصہ کو زیادہ پہنچتا ہے بلکہ ان کا ارادہ اس کی ظاہری سطح ہے خواہ پشت ہو یا باطن، اور یہ قید اس لئے لگائی تاکہ اس سے احتراز ہو سکے جس کو موزہ کا داخلی حصہ جذب کر لیتا ہے کیونکہ یہ جرم دار شئی کے ساتھ مختص نہیں ہے، بلکہ رقیق میں جذب زیادہ ہوتا ہے اور اس کی ضرورت اس لئے ہوئی کہ انہوں نے "یبقی" فرمایا ہے اگر وہ "یری" فرماتے تو اس کی ضرورت نہ ہوتی جیسا کہ اس کے مقابل میں ہے

---

1 ردالمحتار باب الانجاس مطبعۃ مصطفی البابی مصر ۱ / ۲۳۳ 2 تبیین الحقائق باب الانجاس مطبعۃ امیریہ بیولاق مصر ۱ / ۵۱

Volume Three Fatawa Razawiyya

It is stated in *Majma' al-Anhur*: "Everything that is seen on the exterior of the khuff (leather sock) after drying is considered to have substance (dhu jurm), etc." (1) And even more surprising than that is the action of Allamah 'Sh' [Ibn Abidin ash-Shami] when he said in *al-Durr* regarding 'everything that is seen after drying': "meaning, on the exterior of the khuff." It is as if this was a restriction that was omitted from *al-Durr*, so he added it.

Because the eye only perceives what is directly in front of it, Azhari and 'T' [at-Tahtawi] omitted this restriction because they substituted 'the rest' with 'visible'. Whoever neglected this, kept it unchanged, as found in *Majma' al-Anhur*: "Every thing that appears on the exterior of the khuff after drying is substantial (has jurm), etc." And even more strange is what Allamah 'Sh' did; when the author of *al-Durr* stated, "It is that which appears after drying," 'Sh' commented, "meaning on the 'exterior' of the khuff," as if the restriction had been dropped from *al-Durr*, so he added it back. (T)

In *Fatawa Zakhirah*, and then in *Hulyah*, *al-Bahr*, and *Abdul Haleem*, it is stated: "The visible (mar'iyyah) is that which has substance (jurm), and the non-visible (ghayr mar'iyyah) is that which has no substance." *Mar'iyyah* refers to that which has physical substance, and *non-mar'iyyah* refers to that which has no body/physicality. (T)

In the commentaries of Tahawi, *Fatawa Sughra*, *Tatimmah*, and *Manba'*, then respectively through Abd al-A'la al-Barjandi, Shams al-Quhistani, Ibn Amir al-Hajj al-Halabi, and Abd al-Haleem al-Rumi, it was added regarding non-visible: "whether it has color or not."

In *Zakhirat al-Uqba* it is stated: "A substance-possessing thing (dhu jurm) is everything that remains after drying on the exterior of the khuff, whether its substance is from its own essence, like well-known impurities, blood, semen, and dung, or from something else, like urine and wine which become substantial through mixing with sand, dust, or ash, for example by walking on it and it sticking to the khuff, or by something of it being placed upon it." Substantial impurity is that which appears on the exterior of the khuff after drying, whether its substance is intrinsic, like common impurities, blood, semen, and animal dung, or it is from something else, like urine or wine which has become substantial due to being mixed with sand or clay or ash; for

example, if one walked on it and it stuck to the khuff, or if it was applied directly to the khuff. (T)

1. *Majma' al-Anhur*, Chapter of Impurities, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/58.
2. *Radd al-Muhtar*, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/22 (Note: source may indicate page 72, transcribed as 22 based on visual).
3. *al-Bahr al-Ra'iq*, Chapter of Impurities, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/236.
4. *Jami' al-Rumuz*, Section: Purification of things, Islamic Press, Gonbad, Iran, 1/95.
5. *Zakhirat al-Uqba*, Chapter of Impurities, al-Amiriyyah, Egypt, 1/241.

Page 70 of 756

जिल्द तीन फ़तावा रज़विया

'मज्म' अल-अन्हूर' में कहा गया है: "हर वह चीज़ जो सूखने के बाद मोज़े (ख़ुफ़) की ऊपरी सतह पर दिखाई दे, वह पदार्थ (जुर्म) वाली है, इत्यादि।" (१) और इससे भी अधिक आश्चर्यजनक अल्लामा 'श' [शामी] का कार्य है जब उन्होंने 'अल-दुर्र' में कहा: "जो कुछ भी सूखने के बाद दिखाई देता है" पर उन्होंने टिप्पणी की: "यानी मोज़े की ऊपरी सतह पर।" ऐसा लगता है जैसे यह प्रतिबंध 'अल-दुर्र' से छूट गया था, इसलिए उन्होंने इसे जोड़ दिया।

चूँकि आँख केवल सामने आने वाली चीज़ का ही बोध करती है, इसलिए अज़हरी और 'त' [तहतावी] ने इस प्रतिबंध को हटा दिया, क्योंकि उन्होंने शेष को 'दृश्य' (मईं) से बदल दिया। और जिसने इस पर ध्यान नहीं दिया, उसने इसे वैसा ही रखा जैसा कि 'मज्म' अल-अन्हूर' में है: "हर वह चीज़ जो सूखने के बाद मोज़े की ऊपरी सतह पर नज़र आए, वह पदार्थ (जुर्म) वाली है, इत्यादि।" और इससे भी ज़्यादा अजीब वह है जो अल्लामा "श" ने किया; जब मुसन्निफ़ (लेखक) ने 'दुर्र' में यह फ़रमाया कि "वह ऐसी चीज़ है जो सूखने के बाद नज़र आती है," तो इस पर "श" ने फ़रमाया "यानी मोज़े की 'ज़ाहिर' (ऊपरी सतह) पर," गोया यह प्रतिबंध 'दुर्र' से साक़ित (लुप्त) हो गया था, तो उन्होंने इसे बढ़ा दिया। (त)

'फ़तावा ज़ख़ीरा', फिर 'हुल्या', 'बह्र' और 'अब्दुल हलीम' में है: "मईंया (दृश्य) वह है जिसका पदार्थ (जुर्म) हो और ग़ैर-मईंया (अदृश्य) वह है जिसका कोई पदार्थ न हो।" मईंया पदार्थ वाली चीज़ को कहते हैं और ग़ैर-मईंया उसे जिसका शरीर या पिंड न हो। (त)

'शरह तहावी', 'फ़तावा सुग़रा', 'ततिम्मा' और 'मन्ब' में, फिर क्रमशः उनके हवाले से अब्दुल आला बरजंदी, शम्स क़ुहिस्तानी, इब्न अमीर अल-हाज्ज हलबी और अब्दुल हलीम रूमी ने ग़ैर-मईंया में यह जोड़ा: "चाहे उसका रंग हो या न हो।"

'ज़ख़ीरत अल-उक़्बा' में है: "पदार्थ वाली चीज़ (ज़ी जुर्म) वह सब कुछ है जो सूखने के बाद मोज़े की ऊपरी सतह पर शेष रहे, चाहे उसका पदार्थ स्वयं उसका हो जैसे ज्ञात अशुद्धियाँ (नजासतें), रक्त, वीर्य और गोबर, या वह किसी और चीज़ से हो जैसे मूत्र और मदिरा जो रेत, धूल या राख में मिलने के कारण पदार्थ वाली बन गई हों, उदाहरण के लिए उस पर चलने से वह मोज़े में चिपक गई हो या स्वयं मोज़े पर डाल ली गई हो।" पदार्थ वाली वह नजासत है जो सूखने के बाद मोज़े की ऊपरी सतह पर नज़र आए, चाहे उसका पदार्थ उसका अपना ही हो जैसे प्रसिद्ध नजासतें, और ख़ून, मनी (वीर्य) और

लीद (गोबर), या वह इसके अलावा किसी और से हो जैसे पेशाब और शराब जो मिट्टी या राख में मिलने की वजह से पदार्थ वाली हो गई हो, मसलन उस पर चला और वह मोज़े में लग गया या ख़ुद मोज़े पर डाल लिया। (त)

1. मज्म अल-अन्हूर, बाबुल अन्जास, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, १/५८
2. रद अल-मुह्तार, बाबुल अन्जास, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, १/२२
3. अल-बह्र अल-रैक, बाबुल अन्जास, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/२३६
4. जामि अल-रुमूज़, फ़स्ल यतहूरुश शय, मतब' इस्लामिया, गोन्बद, ईरान, १/९५
5. ज़ख़ीरत अल-उक़्बा, बाबुल अन्जास, अल-अमीरिया, मिस्र, १/२४१

पृष्ठ ७० / ७५६

جلد سوم فتاوی رضویه

قال في مجمع الانهرکل مایری بعد الجفاف علی ظاهر الخف فهو ذوجرم الخ و (۱) اعجب منه صنیع العلامة ش اذقال في الدر هو کل مایری بعد الجفاف فقال ای علی ظاهر الخف کأنه قید سقط عن الدر فزاده۔ کیونکہ آنکھ تو صرف مقابل آنے والی چیز کا ادراک کرتی ہے اس لئے ازہری اور ط نے اس قید کو ساقط کر دیا، کیونکہ انہوں نے باقی کو مرئی سے بدل دیا ہے اور جس نے اس سے غفلت کی اُسے بدلا اور باقی رکھا، جیسا کہ مجمع الانہر میں ہے ہر وہ چیز جو خشک ہونے کے بعد موزہ کے ظاہر پر نظر آئے وہ جرم دار ہے الخ اور اس سے زیادہ عجیب وہ ہے جو علامہ "ش" نے کیا جب مصنف نے دُر میں یہ فرمایا "وہ ایسی چیز ہے جو خشک ہونے کے بعد نظر آتی ہے اس پر "ش" نے فرمایا یعنی موزہ کے "ظاہر" پر، گویا قید دُر سے ساقط ہو گئی ہے، تو انہوں نے اس کو زائد کردیا۔ (ت)

فتاوی ذخیرہ پھر حلیہ وبحر وعبدالحلیم میں ہے : المرئیة هي التي لهاجرم وغیرالمرئیة هي التی لاجرم لها ۔ مرئیہ جرم دار کو کہتے ہیں اور غیر مرئیہ اس کو جس کا جسم نہ ہو۔ (ت)

شرح طحاوی وفتاوی صغری و تتمہ و منبع پھر بترتیب ان کے حوالہ سے عبدالاعلیٰ بر جندی و شمس قہستانی و ابن امیر الحاج حلبی و عبدالحلیم رومی نے غیر مرئیہ میں زائد فرمایا: سواء کان لها لون اولم یکن۔

ذخیرة العقمی میں ہے: ذی جرم هو کل مابقی بعد الجفاف علی ظاهر الخف سواء کان جرمه من نفسه کالنجس المتعارف والدم والمنی والروث اومن غیره کالبول والخمر المتجسد بالرمل والتراب اوالرما دبان مشی علیهافالتصق بالخف اوجعل علیه شیئ منها ۔ جرم دار وہ نجاست ہے جو خشک ہونے کے

بعد موزے کے ظاہر پر نظر آئے خواہ اس کا جرم اسی کا ہو جیسے معروف نجاستیں، اور خون، منی اور لید یا اس کے غیر سے ہو جیسے پیشاب اور شراب جو ریت یا مٹی یا راکھ میں ملنے کی وجہ سے جرم دار ہو گیا ہو، مثلاً اس پر چلا اور وہ موزے میں لگ گیا یا خود موزے پر ڈال لیا۔ (ت)

1 مجمع الانہر باب الانجاس دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/۵۸ 2 ردالمحتار باب الانجاس مصطفیٰ البابی مصر ۱/۲۲ 3 بحر الرائق باب الانجاس ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۳۶ 4 جامع الرموز فصل یطھر الشئ مطبع اسلامیہ گنبد ایران ۱/۹۵ 5 ذخیرۃ العقمی باب الانجاس الامیریہ مصر ۱/۲۴۱

Fatawa Razvia Volume Three

Durr-ul-Mukhtar has conveyed this entire subject matter with additional fatwa insights in these few words:

(Dhi Jirm [Possessing body]) is everything that is seen after drying, even if it is from something else, like wine and urine that hit dust. This is the fatwa. [End of citation 1] 'Jirm-dar' is that impurity which is visible after drying, whether it is from its own self or something else, like wine and urine mixed with dust; this is the ruling. (T)

I say: If he (the author) had omitted "every liquid", it would have been more concise and clearer. I say: If he had omitted "every liquid", this would have become shorter and more evident. (T)

Tahtawi added to this:

And what is not seen after drying is not Dhi Jirm. [End of citation 2] And that which is not visible after drying is not Jirm-dar. (T)

I say: And the author of Durr relied on its implied meaning. I say: The author of Durr has relied on its implied meaning. (T)

Shami said:

Its benefit is that wine and urine are not Dhi Jirm even though their traces may be seen after drying; so what is meant by Dhi Jirm is that whose essence is observed by sense. From this it is known that urine and wine are not Jirm-dar, even though their trace is sometimes visible even after drying. So by Jirm-dar is meant that whose...

(Side Note) As for its being more concise, it is evident. As for its being clearer, better, and more brilliant, it is because seeing a thing includes seeing its color. Rather, visibility here is only in this way, giving the impression that it includes a colored thing whose body does not remain after drying, elevated above the affected area. This is in contrast to if it were omitted, because then it would become an attribute of the substance, making it a clear text on the intended meaning. 12 (T) May Allah forgive him.

Its being more concise is evident, and its being clearer and better is also evident because seeing a thing includes seeing its color; rather, its visibility here is in this manner, so it gives the impression that it includes a colored thing whose substance does not remain after drying, meaning its elevated body does not remain. Contrary

to if it were omitted, because then it would become an attribute of the body/ substance, so it would be a clear text for the objective. 12 May Allah forgive him. (T)

1 Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Impurities, Mujtabai Delhi 1/54 2 Tahtawi on Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Impurities, Beirut 1/175

फ़तावा रज़विया खंड ३

'दुर्र-ए-मुख़्तार' ने इन चंद अल्फ़ाज़ में इस पूरे मज़मून को मआ ज़ियादत-ए-इफ़ादात-ए-फ़तवा बयान किया है:

(ज़ी जुर्म) वो हर चीज़ है जो खुश्क होने के बाद नज़र आए, चाहे वो किसी और चीज़ की वजह से हो जैसे शराब और पेशाब जो मिट्टी पर गिरे। इसी पर फ़तवा है। [१] 'जुर्म-दार' वो नजासत है जो खुश्क होने के बाद नज़र आए चाहे वो उसके गैर से हो जैसे शराब और पेशाब जिसमें मिट्टी मिल गई हो, इसी पर फ़तवा है। (त)

मैं कहता हूँ: अगर वो 'कुल मा' को साक़ित कर देते तो ये मुख़्तसर और अज़हर होता। मैं कहता हूँ अगर वो "कुल मा" को साक़ित (हटा) कर देता तो ये मुख़्तसर हो जाता और ज़्यादा अज़हर होता। (त)

इस पर तह़तावी ने ज़ियादती की:

और जो खुश्क होने के बाद नज़र न आए वो 'ज़ी जुर्म' नहीं। [२] और जो खुश्क होने के बाद नज़र न आए वो 'जुर्म-दार' नहीं। (त)

मैं कहता हूँ: और दुर्र के लेखक ने इसके मफ़हूम पर इक्तिफ़ा किया। मैं कहता हूँ साहिब-ए-दुर्र ने इसके मफ़हूम पर इक्तिफ़ा किया है। (त)

शामी ने कहा:

इसका फ़ायदा ये है कि शराब और पेशाब 'ज़ी जुर्म' नहीं हैं हालांकि कभी-कभी खुश्क होने के बाद उनका असर देखा जा सकता है; लिहाज़ा 'ज़ी जुर्म' से मुराद वो है जिसकी ज़ात का मुशाहिदा ह़िस से हो। इससे मालूम होता है कि पेशाब और शराब 'जुर्म-दार' नहीं हैं हालांकि उनका असर कभी खुश्क होने के बाद भी नज़र आता है तो 'जुर्म-दार' से मुराद वो है जिसकी...

(हाशिया) इसका मुख़्तसर होना तो ज़ाहिर है और इसका अज़हर व अह़सन होना ये भी ज़ाहिर है क्योंकि किसी चीज़ का देखना उसके रंग के देखने को भी शामिल है, बल्कि उसकी रुय्यत यहाँ इसी तरह है, तो इससे वहम होता है कि ये उस रंगीन को शामिल है जो खुश्क होने के बाद बाक़ी नहीं रहता है यानी उसका उभरा हुआ जुर्म नहीं रहता है। बरख़िलाफ़ इसके कि अगर इसको साक़ित कर दिया जाए क्योंकि ये जुर्म की सिफ़त हो जाएगा तो ये मक़सूद में नस होगा। १२ मिन्हु गुफ़िरलहु (त)

इसका मुख़्तसर होना तो ज़ाहिर है और इसका अज़हर व अह़सन होना ये भी ज़ाहिर है क्योंकि किसी चीज़ का देखना उसके रंग के देखने को भी शामिल है, बल्कि उसकी रुय्यत यहाँ इसी तरह है, तो इससे वहम होता है कि ये उस रंगीन को शामिल है जो खुश्क होने के बाद बाक़ी नहीं रहता है यानी उसका उभरा हुआ जुर्म नहीं रहता है। बरख़िलाफ़ इसके कि अगर इसको साक़ित कर दिया जाए क्योंकि ये जुर्म की सिफ़त हो जाएगा तो ये मक़सूद में नस होगा। १२ मिन्हु गुफ़िरलहु (त)

१ दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल अन्जास, मुज्तबाई देहली १/५४ २ तह़तावी अलद दुर्रिल मुख़्तार, बाबुल अन्जास, बैरूत १/१७५

पेज ७१/७५६

فتاوی رضویہ جلد سوم

اس تمام مضمون کو مع زیادت افادات فتوٰی در مختار نے ان معدود لفظوں میں افادہ کیا:

(ذی جرم) ھو کل مایری بعد الجفاف ولومن غیرھا کخمر وبول اصاب تراب بہ یفتی اہ 1 جرم دار وہ نجاست ہے جو خشک ہونے کے بعد نظر آئے خواہ اس کے غیر سے ہو جیسے شراب اور پیشاب جس میں مٹی مل گئی ہو، اسی پر فتوٰی ہے۔ (ت)

اقول: ولو (۱) اسقط ھو کل ماء لکان عہ اخصر واظھر۔ میں کہتا ہوں اگر وہ "کل ماء" کو ساقط کردیتا تو یہ مختصر ہوجاتا اور زیادہ اظہر ہوتا۔ (ت)

اس پر طحطاوی نے زائد کیا:

وما لایری بعد الجفاف فلیس بذی جرم 2 اہ اور جو خشک ہونے کے بعد نظر نہ آئے وہ جرم دار نہیں۔ (ت)

اقول: واکتفی الدر عنہ بالمفھوم میں کہتا ہوں صاحب در نے اس کے مفہوم پر اکتفاء کیا ہے۔ (ت)

شامی نے کہا:

مفادہ ان الخمر والبول لیس بذی جرم مع انہ قدیری اثرہ بعد الجفاف فالمراد بذی الجرم ماتکون ذاتہ مشاھدۃ بحس اس سے معلوم ہوتا ہے کہ پیشاب اور شراب جرم دار نہیں حالانکہ ان کا اثر کبھی خشک ہونے کے بعد بھی نظر آتا ہے تو جرم دار سے مراد وہ ہے جس کی

عہ اما کونه اخصر فظاهر و اما کونه اظهر واحسن وازهر فلان رؤية الشيء تعم رؤيته بلالونه بل لارؤية ههنا الا هكذا فيوهم تناول ملون لايبقى له بعد الجفاف جرم شاخص فوق المصاب بخلاف ما اذا اسقط لانه يصير صفة لجرم فيصير نصا في المقصود ۱۲ منه غفرله (م)

اس کا مختصر ہونا تو ظاہر ہے اور اس کا اظہر واحسن ہونا یہ بھی ظاہر ہے کیونکہ کسی چیز کا دیکھنا اس کے رنگ کے دیکھنے کو بھی شامل ہے، بلکہ اس کی رؤیت یہاں اسی طرح ہے، تو سے وہم ہوتا ہے کہ یہ اُس رنگین کو شامل ہے جو خشک ہونے کے بعد باقی نہیں رہتا ہے یعنی اس کا ابھرا ہوا جرم نہیں رہتا ہے۔ بخلاف اس کے کہ اگر اس کو ساقط کردیا جائے کیونکہ یہ جرم کی صفت ہوجائے گا تو یہ مقصود میں نص ہوگا ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 در مختار باب الانجاس مجتبائی دہلی ۱/۵۴ 2 طحطاوی علی الدر المختار باب الانجاس بیروت ۱/۱۷۵

Fatawa Razawiya Volume Three

[Right Box]: ...sight and others which are not like that, as we will mention along with the discussion therein. [Left Box]: (Something whose) essence can be observed with the eye, and non-substantial (ghayr jarm dar) is what is not like this, as we will mention it with the discussion. (T)

In Durr-e-Mukhtar, statement number 6 mentioned above, it is written in Shami:

[Right Box]: "By 'possessing substance' (Dhi-al-Jarm) is meant that whose essence is observed by sight, not its effect, as passed and will come." [Left Box]: By 'possessing substance' is meant that whose essence appears to the eye, not its effect, as passed. (T)

Similarly, it is in 'Huliyah', as will come.

Noble research *opened by the Kind One* to His weak slave *by His lofty grace* Know that this station *is where the steps of pens have slipped*

[Right Box]: First: Imam Akmal al-Din al-Babarti (may Allah have mercy on him) said in Al-'Inaya regarding the statement of Al-Hidaya on the issue of purifying impurity by removing the substance and washing until the predominance of opinion of purity is achieved: Impurity is of two types, visible and invisible, etc. His text is: 'Limitation is necessary because of its revolving around negation and...' [Left Box]: This is the research that Allah Almighty, by His grace, revealed to His weak servant. Know that this is the place where the feet of pens slip. (T) First, Imam Akmal al-Din al-Babarti said in 'Inaya, where it is mentioned in 'Hidaya' that for the purification of impurity, removing the impurity and washing is necessary so that a predominance of opinion of purity is formed; here Babarti said that impurity has two types, visible (mar'iyyah) and invisible (ghayr mar'iyyah), etc. Their text is that limitation is necessary because it is negation and...

[Right Box]: Note: I say, meaning [the phrase] "that whose effect is observed" includes what is not observed of it except the effect. So it is conjoined with "that which is observed" with its related part omitted, not with "its essence" as might be imagined. Otherwise, not seeing the effect would be a condition in a substantial thing, whereas that is not the case. 12 [From him (the author), may he be forgiven]. (M) [Left Box]: I say: Meaning just as its effect is seen so that it also includes that which is not observed but only its effect is observed. So its conjunction is on 'ma tushahad' (that which is seen), its related part is omitted. It is not conjoined to

'dhatihi' (its essence) as was imagined, so not seeing the effect would be a condition in a substantial thing although it is not so. 12 [From him, may he be forgiven]. (T)

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa Al-Babi, Egypt, 1/227.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa Al-Babi, Egypt, 1/233.

फ़तावा रज़विया खंड तीन

[दायां बॉक्स]: ...दृष्टि और अन्य जो वैसे नहीं हैं, जैसा कि हम इसमें चर्चा के साथ उल्लेख करेंगे। बायां बॉक्स: (वह चीज़) जिसकी सत्ता को आँख से देखा जा सके और 'ग़ैर जुर्म दार' (अद्रव्य) वह है जो ऐसा न हो जैसा कि हम इसके बारे में चर्चा के साथ उल्लेख करेंगे। (त)

दुर-ए-मुख़्तार के उपरोक्त कथन संख्या 6 पर शामी में है:

[दायां बॉक्स]: "'ज़ी-अल-जर्म' (पिंडधारी) से तात्पर्य वह है जिसकी सत्ता दृष्टि से देखी जाए, न कि उसका प्रभाव, जैसा कि बीत चुका और आगे आएगा।" बायां बॉक्स: पिंडधारी से तात्पर्य वह है जिसकी सत्ता आँख से दिखाई दे, न कि उसका प्रभाव, जैसा कि गुज़रा। (त)

इसी तरह 'हिलिया' में है जैसा कि आगे आएगा।

पवित्र शोध जो कृपालु ने खोला अपने कमज़ोर दास पर अपनी ऊँची कृपा से जान लें कि यह वह स्थान है जहाँ कलमों के कदम फिसल गए हैं

[दायां बॉक्स]: प्रथम: इमाम अकमल उद्दीन अल-बाबरती (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने 'अल-इनाया' में 'हिदाया' के उस कथन पर कहा है जहाँ अशुद्धता की शुद्धि के लिए अशुद्धता को दूर करने और धोने का उल्लेख है यहाँ तक कि शुद्धता की प्रबल धारणा बन जाए: अशुद्धता दो प्रकार की होती है, दृश्य और अदृश्य, आदि। उनका पाठ है: 'सीमांकन आवश्यक है क्योंकि यह नफ़ी और...' बायां बॉक्स: यह वह शोध है जो अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से अपने कमज़ोर बंदे पर प्रकट किया। जान लें कि यह वह स्थान है जहाँ कलमों के कदम फिसल जाते हैं। (त) प्रथम, इमाम अकमल उद्दीन बाबरती ने इनाया में कहा, हिदाया में जहाँ यह उल्लेख है कि नजासत (अशुद्धता) की शुद्धि के लिए नजासत को दूर करना और धोना आवश्यक है, ताकि तहारत (शुद्धता) का ग़लबा-ए-ज़न्न (प्रबल धारणा) हो जाए; यहाँ बाबरती ने कहा कि नजासत की दो किस्में हैं मरईय्या (दृश्य) और ग़ैर मरईय्या (अदृश्य) आदि। उनकी नक़्ल (पाठ) यह है कि हसर (सीमांकन) ज़रूरी है इसलिए कि यह नफ़ी और...

[दायां बॉक्स]: नोट: मैं कहता हूँ, यानी जिस तरह उसका प्रभाव देखा जाता है ताकि यह उसे भी शामिल करे जिसका अवलोकन नहीं किया जाता सिवाय उसके प्रभाव के। तो इसका मेल 'मा तुशाहद' (जो देखा जाता है) पर है और उससे संबंधित हिस्सा लुप्त है, 'ज़ातुहू' (उसकी सत्ता) पर मेल

नहीं है जैसा कि भ्रम हुआ। अन्यथा प्रभाव का न दिखना पिंडधारी में शर्त होता जबकि ऐसा नहीं है। 12 [लेखक की ओर से, उनके लिए क्षमा हो]। (म)

---

1. रद-उल-मुहतार, नजासत का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/227.
2. रद-उल-मुहतार, नजासत का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/233.

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

البصر وغیرہ مالایکون کذلك کما سنذکرہ مع مافیہ من البحث1- | ذات کا آنکھ سے مشاہدہ ہو سکے اور غیر جرم دار وہ ہے جو ایسے نہ ہو جیسا کہ ہم اس کو مع بحث کے ذکر کریں گے۔ (ت)

درمختار کی عبارت مذکورہ نمبر ۶ اپر شامی میں ہے :

المراد بذي الجرم مأ تشاهد بالبصر ذاته لااثرہ2 کما مرو یأتی۔ | ذی جرم سے مراد وہ ہے جس کی ذات آنکھ سے نظر آئے، نہ کہ اس کا اثر، جیسا کہ گزرا۔ (ت)

اسی طرح حلیہ میں ہے کما سیاتی۔ تحقیق شریف فتح به اللطیف علی عبده الضعیف بفضله المنیف اعلم ان هذا المقام زلت فیہ اقدام اقلام

فالاول: قال الامام اکمل الدین البابرتی رحمہ اللہ تعالٰی فی العنایة عند قول الهدایة فی مسألة تطهیر النجاسة بازالة العین والغسل الی غلبة الظن بالطهارة النجاسة ضربان مرئیة وغیر مرئیة الخ مانصه الحصر ضروری لدورانه | یہ تحقیق ہے جو اللہ تعالٰی نے اپنے فضل سے اپنے کمزور بندے پر ظاہر فرمائی جان لے کہ یہ وہ مقام ہے جہاں قلموں کے قدم پھسل جاتے ہیں۔ (ت) اول، امام اکمل الدین بابرتی نے عنایہ میں فرمایا، ہدایہ میں جہاں یہ ذکر ہے کہ نجاست کی تطہیر کیلئے نجاست کا دور کرنا اور دھونا ضروری ہے، کہ طہارت کا غلبہ ظن ہوجائے، یہاں بابرتی نے کہا کہ نجاست کی دو قسمیں ہیں مرئیہ اور غیر مرئیہ الخ ان کی نص یہ ہے کہ حصر ضروری ہے اس لئے کہ یہ نفی اور

عه اقول ای مایشاهد اثره یعم مالایشاهد منه الا الاثر فهو عطف علی ماتشاهد بحذف متعلقه لاعلی ذاته کما یتوهم فیکون عدم رؤیة الاثر شرطا فی ذی الجرم ولیس کذلك ۱۲ منه غفرله (م) | اقول : یعنی

جس طرح اس کا اثر دیکھا جاتا ہے تا کہ اس کو بھی عام ہو جس کا مشاہدہ نہیں کیا جاتا ہے صرف اس کے اثر کا مشاہدہ ہوتا ہے تو اس کا عطف ماتشاہد پر ہے اس کا متعلق محذوف ہے "ذاتہ" پر عطف نہیں جیسا کہ وہم کیا گیا ہے، تو اثر کا نہ دیکھا جانا جرم دار میں شرط ہوگا حالانکہ ایسا نہیں ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

---

1 ردالمحتار باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۲۷ 2 ردالمحتار باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۳۳

Fatawa Razviya, Volume 3

[Left Column: Arabic] It is between negation and affirmation, and that is because impurity, after drying, is either solidified like feces and blood, or others like urine and its likes. [1] (End of quote). Halabi followed him on Sadr al-Shariah. Second: In that issue, Al-Quhistani quoted the aforementioned passage from 'Al-Sughra' that what is without a body is not visible, even if it has a color. [2] Third: In it, Al-Birjandi quoted a similar passage from the 'Commentary of Al-Tahawi', then said: "And this contradicts what is in some commentaries, that the invisible is that whose trace is not seen after drying, and the visible is in its opposite." [3] (End of quote). Fourth: In it, Al-Bahr quoted the passage from 'Al-Dhakhira' and made it the meaning of what was said here in 'Ghayat al-Bayan', that what is meant by visible is what is visible after drying, and what is not visible is what is not visible after drying, like urine. [4] (End of quote). And 'Ta' (Tahtawi) followed him. Fifth: In it, he quoted Abdul Hakim al-Rumi...

[Right Column: Urdu] It revolves between negation and affirmation. This is because impurity, after drying, will either be possessed of a body like feces, blood, etc., or it will be without a body like urine, etc. (End of quote). Halabi followed Sadr al-Shariah in this. (T) Second: In this issue, Quhistani quoted the passage from 'Sughra' which has passed, that an impurity whose body is not present will not be visible, even if it has color. Third: Birjandi quoted a similar passage from 'Sharh-e-Tahawi' in it, then said: "This differs from other commentaries in which it is stated that invisible is that whose effect is not seen after drying, and visible is its opposite." (End of quote). Fourth: Bahr quoted the passage from 'Dhakhira' in this issue and considered it to have the same meaning as what was said here in 'Ghayat al-Bayan', that visible refers to what is seen after drying, and invisible refers to what is not seen after drying, like urine. (End of quote). And 'Ta' (Tahtawi) has followed this. Fifth: In it, the quote of Abdul Hakim Rumi...

[Footnotes] 1. Al-'Inaya with al-Fath, Chapter of Impurities, Nuriya Razviya Sukkur, 1/182. 2. Jami' al-Rumuz, Section on Purifying Things, Islamiya Gunbad Iran, 96/1. 3. Nuqaya by al-Birjandi, Section on Purification from Impurities, Nawal Kishore Lucknow, 1/63. 4. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Impurities, H.M. Saeed Company Karachi, 236/1. Page 73 of 756

फतवा-ए-रज़विया, खंड 3

[बायाँ कॉलम: अरबी] निषेध और पुष्टि के बीच, और वह इसलिए क्योंकि सुखाने के बाद अशुद्धता या तो मल और रक्त की तरह जम जाती है, या मूत्र और उसके जैसे अन्य। [1] (उद्धरण समाप्त)। हलबी ने सद्र अल-शरिया पर उनका अनुसरण किया। दूसरा: उस मसले में, अल-कुहिस्तानी ने 'अल-सुगरा' के उपर्युक्त अंश को उद्धृत किया कि जिसका पिंड नहीं है वह दिखाई नहीं देता, भले ही उसका रंग हो। [2] तीसरा: इसमें, अल-बिरजन्दी ने 'अल-तहावी की व्याख्या' से एक समान अंश उद्धृत किया, फिर कहा: "और यह कुछ व्याख्याओं में जो है उसका खंडन करता है, कि अदृश्य वह है जिसका निशान सूखने के बाद नहीं देखा जाता है, और दृश्य इसके विपरीत है।" [3] (उद्धरण समाप्त)। चौथा: इसमें, अल-बहर ने 'अल-ज़खीरा' से अंश उद्धृत किया और इसे वही अर्थ दिया जो यहाँ 'ग़ायत अल-बयान' में कहा गया था, कि दृश्य से तात्पर्य वह है जो सूखने के बाद दिखाई देता है, और जो दिखाई नहीं देता है वह वह है जो सूखने के बाद दिखाई नहीं देता, जैसे मूत्र। [4] (उद्धरण समाप्त)। और 'ता' (तहतावी) ने उनका अनुसरण किया। पांचवां: इसमें, उन्होंने अब्दुल हकीम अल-रूमी को उद्धृत किया...

[दायाँ कॉलम: उर्दू] यह नफी (निषेध) और इसबात (पुष्टि) के बीच स्थित है। और यह इसलिए है कि अशुद्धता खुश्की (सूखने) के बाद या तो पिंड वाली होगी जैसे मल और खून आदि, या बिना पिंड वाली होगी जैसे पेशाब आदि। (उद्धरण समाप्त)। इसकी पैरवी हलबी ने सद्र अल-शरिया पर की। (त) दूसरा, इस मसले में कुहिस्तानी ने 'सुगरा' की इबारत (अंश) नकल की जो गुजर चुकी कि वह नजासत (अशुद्धता) कि जिसका पिंड न हो मरई (दृश्य) न होगी, चाहे उसका रंग ही क्यों न हो। तीसरा, बिरजन्दी ने इसमें 'शरह तहावी' से ऐसी ही इबारत नकल की, फिर फरमाया: "यह दूसरी शरुह (व्याख्याओं) से अलग है जिनमें है कि गैर-मरई (अदृश्य) वह है जिसका असर खुश्की के बाद न देखा जाए, और मरई इसके मुकाबले (विपरीत) है।" (उद्धरण समाप्त)। चौथा, बहर ने इस मसले में 'ज़खीरा' की इबारत नकल की और इसे उसके हम-معانی (समानार्थी) करार दिया जो यहाँ 'ग़ायत अल-बयान' में कहा गया कि मरई से मुराद (तात्पर्य) वह है जो खुश्की के बाद नज़र आए और जो गैर-मरई है उससे मुराद वह है जो खुश्क होने के बाद नज़र न आए, जैसा कि पेशाब। (उद्धरण समाप्त)। और 'ता' (तहतावी) ने इसकी पैरवी की है। पांचवां, इसमें अब्दुल हकीम रूमी की नकल...

[पादलेख] 1. अल-इनाया मा अल-फ़तह, बाबु अन-नजास, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/182. 2. जामी अर-रुमूज़, फ़स्ल युतहिरु अश्-शई, इस्लामिया गुंबद ईरान 96/1. 3. नुक़ाया लिल-बिरजन्दी, फ़स्ल

ततहीर अल-अन्जास, नवल किशोर लखनऊ 1/63. 4. अल-बहर अर-रैक़, बाबु अल-अन्जास, एच.एम. सईद कंपनी कराची 236/1. पृष्ठ 73 का 756

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

[صفحہ کا بایاں حصہ - عربی] بین النفی والاثبات وذلك لان النجاسة بعد الجفاف اما ان تكون مستجسدة كالغائط والدم اوغیرھا كالبول وغیرہ 1 اھ وتبعه حلبی علی صدر الشریعة۔ الثانی: في تلك المسألة نقل القهستانی عبارة الصغری المارة ان غیر ذات جرم غیر مرئیة وان كان لها لون 2۔ الثالث: فیها نقل البرجندی عبارة شرح الطحاوی مثله ثم قال وھذا یخالف مافی بعض الشروح من ان غیر المرئی مالایری اثرہ بعد الجفاف والمرئی فی مقابله 3 اھ الرابع: فیها نقل في البحر عبارة الذخیرة وجعلها معنی ماقال ھهنا في غایة البیان ان المراد بالمرئی مایكون مرئیا بعد الجفاف ومالیس بمرئی ھو مالایكون مرئیا بعد الجفاف كالبول 4 اھ وتبعه ط۔ الخامس : فیها نقل عبد الحلیم الرومی

[صفحہ کا دایاں حصہ - اردو] اثبات کے درمیان دائر ہے اور یہ اس لئے کہ نجاست خشکی کے بعد یا تو جرم دار ہوگی جیسے پاخانہ اور خون وغیرہ، یا غیر جرم دار ہوگی جیسے پیشاب وغیرہ اھ اس کی پیروی حلبی علی صدرالشریعہ نے کی۔ (ت) دوسرے اس مسئلہ میں قہستانی نے صغریٰ کی عبارت نقل کی جو گزری کہ وہ نجاست کہ جس کا جرم نہ ہو مرئی نہ ہوگی اور اگر چہ اس کا رنگ ہو تیسرے برجندی نے اس میں شرح طحاوی سے ایسے ہی عبارت نقل کی پھر فرمایا یہ دوسری شروح سے مختلف ہے جن میں ہے کہ غیر مرئی وہ ہے جس کا اثر خشکی کے بعد نہ دیکھا جائے، اور مرئی اس کے مقابل ہے اھ چوتھے، بحر نے اس مسئلہ میں ذخیرہ کی عبارت نقل کی اور اس کو اس کے ہم معنی قرار دیا جو یہاں غایۃ البیان میں کہا کہ مرئی سے مراد وہ ہے جو خشکی کے بعد نظر آئے اور جو غیر مرئی ہے اس سے مراد وہ ہے جو خشک ہونے کے بعد نظر نہ آئے جیسا کہ پیشاب اھ اور ط نے اس کی متابعت کی ہے۔ پانچواں، اس میں عبدالحلیم رومی کی نقل

[حواشی] 1 العنایۃ مع الفتح باب الانجاس نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۸۲ 2 جامع الرموز فصل یطہر الشیئ اسلامیہ گنبد ایران ۹۶/۱ 3 نقایہ للبرجندی فصل تطہیر الانجاس نولکشور لکھنؤ ۱/ ۶۳ 4 بحر الرائق باب الانجاس ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۳۶/۱ صفحہ 73 از 756

Fatawa Rizvia Volume 3

[Left column - Arabic text] From Sharh al-Tahawi, al-Manba, and al-Dhakhira, what has preceded. Then he quoted the words of al-Barjandi that it contradicts some commentaries. Then he quoted the words of al-Bahr and equated it with the first [meaning]. Then he refuted him, saying: "You know that there is a difference between the two, because perhaps many a thing has no physical substance (jirm) but has an effect (athar), such as color whose effect remains after drying. So, according to the first [definition], it is non-visible (ghayr mar'i), and according to the second, it is visible (mar'i), and the preferred view is the first, as is not hidden." End.

Sixthly: In it, al-Hilya contains a citation from al-Dhakhira and al-Tatimma, and the aforementioned passage from Ghayat al-Bayan was directed towards it. It says that what is meant by it is that whose essence is visible to the eye after drying. And what is not like that is not visible (mar'i). Thus, there is no contradiction between this and what is in common books in their interpretation. The evidence for what we mentioned is the aforementioned example, for some urine has a color that is seen after drying. End.

Seventhly: In it, it says in al-Shami: his statement "after drying" is an adverb of place/time (zarf) for 'visible' (mar'iyya). This restriction was made because all impurities can be seen before drying. It was previously mentioned that what has substance (jirm) is that which is seen after drying, so it is equivalent to 'visible' (mar'iyya) and...

[Right column - Urdu translation/explanation] It is from Sharh al-Tahawi, al-Manba, and al-Dhakhira that has passed. Then he quoted the words of al-Barjandi that it is contrary to some commentaries. Then he quoted the words of al-Bahr and made it synonymous with the first. Then, refuting them, he said that you know there is a contradiction between them because there are many things that do not have physical substance (jirm) but have an effect (athar), like color whose effect remains even after drying. Thus, according to the first case, it is non-visible, and according to the second, it is visible, and the preferred one is the first, as is not hidden. End (T)

Sixthly, in this matter, there is a quote from al-Dhakhira and al-Tatimma in al-Hilya, and the aforementioned text of Ghayat al-Bayan has been made compatible with it. It says that it refers to that whose essence is observed by sight after drying. And what is not so is not visible (mar'i). Therefore, there is no contradiction between this and what is in general books. The evidence for our statement is what appeared in the

previous example, because some urine is such that its color appears after drying. End (T)

Seventhly, in this discussion, it was stated in al-Shami that the text's statement "after drying" is the adverb for 'visible' (mar'iyya), and this restriction has been placed because all impurities can be seen before drying. And it has passed before that what has substance (jirm-dar) is what is seen after drying, it was mentioned earlier that it has physical substance...

[Footnotes] 1. Hashiya al-Durar by Mawla Abdul Halim, Chapter on Purification of Impurities, Maktaba Uthmaniyya, Egypt 1/40. 2. Hilya.

फ़तवा-ए-रज़विया जिल्द 3

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] शर्ह अल-तहावी, अल-मनबा और अल-ज़ख़ीरा से वह है जो पहले गुज़रा। फिर उन्होंने अल-बरजंदी का कलाम उद्धृत किया कि वह कुछ व्याख्याओं के विरुद्ध है। फिर उन्होंने अल-बह्र का कलाम उद्धृत किया और इसे पहले के समान अर्थ वाला बताया। फिर उन पर खंडन करते हुए फ़रमाया कि तुम्हें मालूम है कि इन दोनों में विरोध है क्योंकि शायद बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जिनका ठोस वजूद (जर्म) तो नहीं है मगर उनका प्रभाव (असर) है, जैसे रंग कि उसका प्रभाव सूखने के बाद भी बाक़ी रहता है। तो यह पहली सूरत के अनुसार ग़ैर-मई (अदृश्य) है और दूसरी के अनुसार मई (दृश्य) है और सही बात पहली ही है जैसा कि छिपा नहीं है। अंत।

छठा: इसमें 'हिलिया' में 'ज़ख़ीरा' और 'ततिम्मा' से एक उद्धरण है, और 'ग़ायतुल बयान' के उक्त कथन को इसी के अनुकूल किया गया है। इसमें कहा गया है कि इससे मुराद वह है जिसकी ज़ात (अस्तित्व) सूखने के बाद आँखों से देखी जा सके। और जो ऐसा न हो वह मई (दृश्य) नहीं है। तो इसमें और जो आम किताबों में है कोई विरोध नहीं है। हमारे द्वारा बताई गई बात का प्रमाण वह उदाहरण है जो पहले गुज़रा, क्योंकि कुछ पेशाब ऐसा होता है जिसका रंग सूखने के बाद नज़र आता है। अंत।

सातवाँ: इसमें 'शामी' में फ़रमाया कि लेखक का कथन "सूखने के बाद" 'मई' का विशेषण (ज़र्फ़) है और यह शर्त इसलिए लगाई गई है क्योंकि तमाम नजासतें सूखने से पहले देखी जा सकती हैं। और यह पहले गुज़रा कि 'जर्म' (ठोस पदार्थ) वाली नजासत वह है जो सूखने के बाद देखी जाए, तो यह 'मई' (दृश्य) के बराबर ही है...

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] यह शर्ह अल-तहावी, अल-मनबा और अल-ज़ख़ीरा से है जो गुज़री। फिर उन्होंने अल-बरजंदी का कलाम नक़्ल किया कि वह कुछ शर्हों के मुख़ालिफ़ (विरुद्ध) है, फिर बह्र का कलाम नक़्ल किया है और उसने उसे पहले के हम-मानी (समान अर्थ वाला) कहा है। फिर उन पर रद्द करते हुए फ़रमाया कि तुम्हें मालूम है कि उन दोनों में मुख़ालफ़त (विरोध) है क्योंकि कई चीज़ें ऐसी हैं कि उनका जर्म (पदार्थ) तो नहीं है मगर उनका असर है, जैसे रंग कि उसका असर सूखने के बाद भी बाक़ी रहता है। तो यह पहली सूरत के लिहाज़ से ग़ैर-मई (अदृश्य) है और दूसरी के लिहाज़ से मई (दृश्य) है और राजिह (प्राथमिक/सही) पहला ही है जैसा कि मख़्फ़ी (छिपा हुआ) नहीं है। अंत (त)

छठा, इस मसले में 'हिलिया' में एक नक़्ल 'ज़ख़ीरा' और 'ततिम्मा' से है और उसी की तरफ़ 'ग़ायतुल बयान' की मज़कूरा इबारत (उल्लिखित कथन) को मुवाफ़िक़ (अनुकूल) किया है, और कहा है इससे मुराद वह है जिसकी ज़ात सूखने के बाद मुशाहदा (अवलोकन) में आए, और जो ऐसा न हो वह मईं नहीं। तो इसमें और जो आम कुतुब (सामान्य पुस्तकों) में है कोई मुख़ालफ़त नहीं है, और हमारे क़ौल पर दलील वह है जो मिसाल-ए-गुज़श्ता (पिछली उदाहरण) में गुज़रा, क्योंकि बाज़ पेशाब ऐसा होता है जिसका रंग सूखने के बाद नज़र आता है। अंत (त)

सातवाँ, इस बहस में 'शामी' में फ़रमाया कि मतन (मूल पाठ) का क़ौल "सूखने के बाद" यह 'मईया' का ज़र्फ़ है और यह क़ैद (प्रतिबंध/शर्त) इसलिए लगाई है कि तमाम नजासतें सूखने से क़ब्ल (पहले) देखी जा सकती हैं। और यह पहले गुज़रा कि 'जर्म-दार' (पदार्थ वाली) वह है जो सूखने के बाद नज़र आए, पहले गुज़रा कि जर्म दार वह है...

[पादलेख] 1. हाशियह अल-दुरर अल-मुल्ला अब्दुल हलीम, नजासतों की शुद्धि का अध्याय, मकतबा उस्मानिया, मिस्र 1/40. 2. हिलिया.

पृष्ठ 74/756

[عربی متن] عن شرح الطحاوی والمنبع والذخیرة مأمر ثم نقل کلام البرجندی انه یخالف بعض الشروح ثم کلام البحر وجعله ایاه بمعنی الاول ثم قال ردا علیه انت خبیر بأن بینهما مخالفة اذرب شیئ لیس له جرم و له اثر کاللون یبقی اثره بعد الجفاف فعلی الاول غیر مرئی وعلی الثاني مرئی والمنصور هو الاول کمالا یخفی اھ السادس: فیها نقل في الحلیة کلام الذخیرة والتتمة والیه رد عبارة غایة البیان المذکورة فقال مراد به ماتکون ذاته مشاهدة بالبصر بعد الجفاف و مالا فلیس بینهما وبین مافي عامة الکتب مخالفة في تفسیرهما ومما یرشد الی ماذکرنا التمثیل المذکور فأن بعض الابوال قدیری له لون بعد الجفاف اھ۔ السابع: فیها قال في الشامي قوله بعد جفاف ظرف لمرئیة وقید به لان جمیع النجاسات تری قبله و تقدم ان مالہ جرم هو ما یری بعد الجفاف فهو مساو للمرئیة و

[اردو ترجمہ و تشریح] شرح طحاوی، منبع اور ذخیرہ سے ہے جو گزری، پھر انہوں نے برجندی کا کلام نقل کیا کہ وہ بعض شروح کے مخالف ہے، پھر بحر کا کلام نقل کیا ہے اور اس نے اس کو اول کے ہم معنی کہا پھر ان پر رد کرتے ہوئے فرمایا کہ تمہیں معلوم ہے کہ ان دونوں میں مخالفت ہے کیونکہ کئی چیزیں ایسی ہیں کہ ان کا جرم تو نہیں ہے مگر ان کا اثر ہے، جیسے رنگ کہ اس کا اثر خشک ہونے کے بعد بھی باقی رہتا ہے تو یہ پہلی صورت کے لحاظ سے غیر مرئی ہے اور دوسری کی لحاظ سے مرئی ہے اور راجح پہلا ہی ہے جیسا کہ مخفی نہیں اھ (ت)

چھٹا، اس مسئلہ میں حلیہ میں ایک نقل ذخیرہ اور تتمہ سے ہے اور اسی کی طرف غایۃ البیان کی مذکورہ عبارت کو موافق کیا ہے، اور کہا ہے اس سے مراد وہ ہے جس کی ذات خشک ہونے کے بعد مشاہدہ میں آئے، اور جو ایسا نہ ہو وہ مرئی نہیں تو اس میں اور جو عام کتب میں ہے کوئی

مخالفت نہیں، اور ہمارے قول پر دلیل وہ ہے جو مثال گزشتہ میں گزرا، کیونکہ بعض پیشاب ایسا ہوتا ہے جس کا رنگ خشک ہونے کے بعد نظر آتا ہے اھ (ت)

ساتواں، اس بحث میں، شامی میں فرمایا کہ متن کا قول "بعد جفاف" یہ مرئیہ کا ظرف ہے اور یہ قید اس لئے لگائی ہے کہ تمام نجاستیں خشک ہونے سے قبل دیکھی جا سکتی ہیں اور یہ پہلے گزرا کہ جرم دار وہ ہے پہلے گزرا کہ جرم دار وہ ہے

[حواشی] 1 حاشیہ الدرر للمولی عبداللطیم باب تطہیر الانجاس مکتبہ عثمانیہ مصر ۱/ ۴۰ 2 حلیہ

Fatawa Razawiyya Volume Three

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] If it is seen after drying, it is equal to 'mar'iyyah' (visible impurity). In Al-Hidayah, blood has been counted among them, and Qazi Khan has counted blood among those things that do not have a physical substance (body). We have cited the reconciliation from Hilyah that the first should be applied to thick (blood) and the second to thin (blood). Then they cited the statement of Ghayat-ul-Bayan and after that, the statement of Tatimmah. Then they mentioned the previous interpretation of Hilyah, but there is a point to consider because it implies that thin blood and urine whose color is visible would be non-visible impurities and that washing three times would suffice, and the condition of removing the trace would not be kept. However, it is understood from their discourse that non-visible is that of which no trace is visible because they suffice only with washing in it. Unlike visible (impurities) where removing the trace is also a condition, so what is in Ghayat-ul-Bayan is more appropriate, and their intention with urine is that which has no color, otherwise it would also be a visible impurity. Eighth: The statement of Kanz is correct, that the rule for visible impurity is that it becomes pure after the removal of its physical substance (ayn), and what is besides that becomes pure merely by washing. Miskeen added to this (that visible impurity) meaning whose physical body is visible, then said (and besides that).

[Left Column - Arabic Original Text] In Al-Hidayah, blood is counted as one of them, and Qadikhan counted it among those things which have no physical substance. We have previously mentioned the reconciliation from Al-Hulyah by interpreting the first as being when it is thick and the second as being when it is thin. Then he quoted the text of Ghayat al-Bayan and followed it with the text of At-Tatimmah. Then he mentioned the aforementioned interpretation of Al-Hulyah, saying: "The mentioned reconciliation agrees with it, but there is a point of contention in it because it would imply that thin blood and urine, whose color is visible, are among the non-visible impurities (an-najasah al-ghayr al-mar'iyyah) and that washing three times is sufficient without the condition of removing the trace. However, what is understood from their words is that non-visible (impurities) are those for which no trace is seen at all, as they are satisfied with mere washing. This is unlike visible (impurities) where removing the trace is a condition. Therefore, what is in Ghayat al-Bayan is more appropriate, and that his intention with urine was that which has no color, otherwise it would be among the visible (impurities)." Eighth: The correct text of Al-Kanz is: "Visible impurity (An-Najis al-Mar'i) is purified by the removal of its substance, and

others by washing." Miskeen added to it what corrupts it when he said: "(Visible impurity) its substance..." then he said "(and others)" i.e., other than the substance of visible impurity, but he corrected it by joining his statement "and it is that which its trace is not seen."

[Footnote] 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/240.
Page 75 of 756

फतवा रज़विया जिल्द तीन

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] जो सूखने के बाद देखा जाए तो यह मरईया (दृश्य अशुद्धि) के समान है। और हिदाया में इनमें से खून को गिना गया है और काजी खान ने खून को उन चीजों में शुमार किया है जो जिस्म-दार (पदार्थ युक्त) न हों। और हमने हिलाया से सुलह नकल की है कि पहले को गाढ़े पर महमूल किया जाए और दूसरे को रकीक (पतले) पर। फिर उन्होंने ग़ायत-उल-बयान की इबारत को नकल किया और इसके बाद ततिम्मा की इबारत लाए। फिर हिलाया की पिछली तावील का जिक्र किया लेकिन इसमें नज़र (विचार) है क्योंकि इससे लाज़िम आता है कि रकीक खून और पेशाब जिसका रंग नज़र आता है, नजासत-ए-ग़ैर मरईया से हो और यह कि तीन मर्तबा धोने पर इक्तिफा किया जाए और इसमें असर (निशान) के ज़वाल की शर्त न रखी जाए। हालांकि उनके कलाम से मफहूम यह है कि ग़ैर मरईया वह है जिसका कोई असर नज़र न आए, क्योंकि वह इसमें सिर्फ धोने पर इक्तिफा करते हैं। बर-खिलाफ मरईया के जिसमें असर का ज़ाइल होना भी शर्त है तो मुनासिब वही है जो ग़ायत-उल-बयान में है और यह कि उनकी मुराद पेशाब से वह है जिसका रंग न हो वरना वह भी नजासत-ए-मरईया होता। आठवां, कंज़ की इबारत है जो सही है कि नजासत-ए-मरईया का हुक्म यह है कि उसके ऐन (पदार्थ) के ज़वाल के बाद वह ताहिर हो जाता है और जो इसके अलावा हो वह सिर्फ धोने से पाक होता है। मिस्कीन ने इसमें यह इजाफा किया (कि देखी जाने वाली नजासत) यानी जिसका जुर्म नज़र आए, फिर कहा (और इसके अलावा)।

[बायां कॉलम - अरबी मूल पाठ] हिदाया में खून को उनमें से एक गिना गया है, और काजी खान ने इसे उन चीजों में गिना है जिनका कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होता। हमने पहले 'अल-हुलिया' से सुलह का उल्लेख किया है कि पहले को तब माना जाए जब वह गाढ़ा हो और दूसरे को तब जब वह पतला हो। फिर उन्होंने 'ग़ायत अल-बयान' के पाठ को उद्धृत किया और उसके बाद 'अत-ततिम्मा' का पाठ दिया। फिर उन्होंने 'अल-हुलिया' की पूर्वोक्त व्याख्या का उल्लेख किया और कहा: "उल्लिखित सुलह इसके साथ सहमत है, लेकिन इसमें एक विचारणीय बिंदु है क्योंकि इससे यह अर्थ निकलता है कि पतला खून और पेशाब, जिसका रंग दिखाई देता है, गैर-दृश्य अशुद्धियों (अन-नजासाह अल-ग़ैर अल-मरय्याह) में से हैं और केवल तीन बार धोना पर्याप्त है, निशान हटाने की शर्त के बिना। हालांकि, उनके शब्दों से जो समझा जाता है वह यह है कि गैर-दृश्य (अशुद्धियां) वे हैं जिनका कोई निशान बिल्कुल भी नहीं देखा जाता है, क्योंकि वे केवल धोने से संतुष्ट हैं। यह दृश्य (अशुद्धियों) के विपरीत है जहाँ निशान हटाना एक शर्त है। इसलिए, 'ग़ायत अल-बयान' में जो है वह अधिक उचित है, और

पेशाब से उनका इरादा वह था जिसका कोई रंग नहीं है, अन्यथा यह दृश्य (अशुद्धियों) में से होता।" आठवां: अल-कंज का सही पाठ है: "दृश्य अशुद्धि (अन-नजिस अल-मरई) उसके पदार्थ को हटाने से शुद्ध हो जाती है, और अन्य धोने से।" मिस्कीन ने इसमें वह जोड़ दिया जो इसे बिगाड़ता है जब उन्होंने कहा: "(दृश्य अशुद्धि) उसका पदार्थ..." फिर उन्होंने कहा "(और अन्य)" यानी दृश्य अशुद्धि के पदार्थ के अलावा, लेकिन उन्होंने अपने कथन "और वह है जिसका निशान नहीं देखा जाता" को जोड़कर इसे सुधार लिया।

[पाद-टिप्पणी] 1. रद अल-मुह्तार, नजासतों का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/240. पेज 75 of 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

[دایاں کالم] جو خشک ہونے کے بعد دیکھا جائے تو یہ مرئیہ کے مساوی ہے اور ہدایہ میں اس میں سے خون کو شمار کیا ہے اور قاضی خان نے خون کو اُن چیزوں میں شمار کیا ہے جو جرم دار نہ ہوں۔ اور ہم نے حلیہ سے تطبیق نقل کی ہے کہ پہلے کو گاڑھے پر محمول کیا جائے اور دوسرے کو رقیق پر اھ پھر انہوں نے غایۃ البیان کی عبارت کو نقل کیا اور اس کے بعد تتمہ کی عبارت لائے پھر حلیہ کی گزشتہ تاویل کو ذکر کیا لیکن اس میں نظر ہے کیونکہ اس سے لازم آتا ہے کہ رقیق خون اور پیشاب جس کا رنگ نظر آتا ہے کہ نجاست غیر مرئیہ سے ہو اور یہ کہ تین مرتبہ دھونے پر اکتفاء کیا جائے اور اس میں اثر کے زوال کی شرط نہ رکھی جائے حالانکہ اُن کے کلام سے مفہوم یہ ہے کہ غیر مرئیہ وہ ہے جس کا کوئی اثر نظر نہ آئے، کیونکہ وہ اس میں صرف دھونے پر اکتفاء کرتے ہیں۔ بخلاف مرئیہ کے جس میں اثر کا زائل ہونا بھی شرط ہے تو مناسب وہی ہے جو غایۃ البیان میں ہے اور یہ کہ ان کی مراد پیشاب سے وہ ہے جس کا رنگ نہ ہو ورنہ وہ بھی نجاست مرئیہ ہوتا اھ (ت) آٹھواں، کنز کی عبارت ہے جو صحیح ہے کہ نجاست مرئیہ کا حکم یہ ہے کہ اس کے عین کے زوال کے بعد وہ طاہر ہو جاتا ہے اور جو اس کے علاوہ ہو وہ صرف دھونے سے پاک ہوتا ہے مسکین نے اس میں یہ اضافہ کیا (کہ دیکھی جانے والی نجاست) یعنی جس کا جرم نظر آئے، پھر کہا (اور اس کے علاوہ)

[بایاں کالم] قد عدّ منه في الهداية الدم وعده قاضيخان مما لا جرم له وقدمنا عن الحلية التوفيق بحمل الاول على ما اذا كان غليظاً والثاني على ما اذا كان رقيقاً اهـ ثم نقل عبارة غاية البيان وعقبها بعبارة التتمة ثم ذكر تأويل الحلية المار آنفاً قال ويوافقه التوفيق المار لكن فيه نظر لانه يلزم منه ان الدم الرقيق والبول الذي يرى لونه من النجاسة الغير المرئية وانه يكتفي بالغسل ثلاثاً بلا اشتراط زوال الاثر مع ان

المفهوم من كلامهم ان غير المرئية مالايرى له اثر اصلاً لاكتفائهم فيها بمجرد الغسل بخلاف المرئية المشروط فيها زوال الاثر فالمناسب ما في غاية البيان وان مراده بالبول مالالون له والاكان من المرئية اهـ[1]. الثامن: عبارة الكنز الصحيحة النجس المرئي يطهر بزوال عينه وغيره بالغسل زاد فيها مسكين مايفسدها اذ قال (النجس المرئي) عينه ثم قال (و غيره) اى غير المرئي عينه لكنه تداركه بوصل قوله وهو الذي لايرى اثره

[حاشيه] 1 رد المحتار باب الانجاس مصطفىٰ البابى مصر ٢٤٠/١ Page 75 of 756

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

...after drying. Thus, nothing remains of the wasted part by adding its substance in both places; rather, making them ambiguous is contrary to the intended meaning. Then, by rectification, the discourse returns to the lack of distinction between the substance ('ayn) and the trace (athar). It is as if he took it from the statement of Imam al-Quduri: "As for impurity, if it has a visible substance, its purification consists in the removal of its substance, unless a trace remains that is difficult to remove. And that which does not have a visible substance, its purification is that it be washed..." etc. Thus, the intended meaning is a visible substance even if visible by its color. Do you not see his exception of the trace from the substance? Indeed, it is established that human sight in this world perceives nothing but color and light. In short, the discourse was rectified by the addition, but Sayyid Abu Sa'ud, quoting Sayyid al-Hamawi, intended to return it to its opposite. So he said regarding his statement: "and it is that whose trace is not seen," it was narrated in al-Sughra as "it was said," after starting with his statement: "The visible is that which has a physical mass, whether it has a color or not."

Commentary (Aqul): Just as the 'visible' was explained in al-Sughra this way, the 'non-visible' was explained by his statement: "that which has no physical mass, whether it has a color or not," as in Jami' al-Rumuz. So it was more appropriate to quote it because the discussion here is about the 'non-visible'. (12 from him, may he be forgiven)

Footnotes: 1. Fath Allah al-Mu'in, Chapter of Impurities, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/130 2. Quduri, Chapter of Impurities, Mujtabai Delhi, p. 18 3. Fath Allah al-Mu'in, Chapter of Impurities, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/131

Page 76 of 756

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

...सूखने के बाद। इस प्रकार, दोनों स्थानों में उसके पदार्थ को जोड़ने से व्यर्थ का कुछ भी शेष नहीं रहता; बल्कि उन्हें संदिग्ध बनाना अभीष्ट अर्थ के विपरीत है। फिर, सुधार के द्वारा, विमर्श पदार्थ ('ऐन) और निशान (असर) के बीच अंतर की कमी की ओर लौटता है। ऐसा लगता है जैसे उन्होंने इसे इमाम अल-कुदुरी के कथन से लिया है: "जहाँ तक अशुद्धि का प्रश्न है, यदि उसका कोई दृश्य पदार्थ है, तो उसकी शुद्धि उसके पदार्थ के हटने से होती है, जब तक कि उसका कोई ऐसा निशान न रह जाए जिसे हटाना कठिन हो। और जिसका कोई दृश्य पदार्थ नहीं है, उसकी शुद्धि उसे धोने से होती है..." आदि। अतः, अभीष्ट अर्थ एक दृश्य पदार्थ है, भले ही वह अपने रंग के कारण दिखाई दे। क्या आप पदार्थ से निशान के उसके अपवाद को नहीं देखते? वास्तव में, यह स्थापित है कि इस दुनिया में मानवीय दृष्टि रंग और प्रकाश के अलावा कुछ भी नहीं देखती है। संक्षेप में, सुधार के द्वारा विमर्श को ठीक किया गया, लेकिन सैय्यद अबू सऊद ने सैय्यद अल-हमवी का हवाला देते हुए इसे इसके विपरीत करने का इरादा किया। तो उन्होंने उनके कथन के बारे में कहा: "और वह वह है जिसका निशान नहीं देखा जाता," इसे 'अल-सुग़रा' में "कहा गया" के रूप में वर्णित किया गया था, उनके इस कथन के साथ शुरू करने के बाद: "दृश्य वह है जिसका भौतिक द्रव्य हो, चाहे उसका रंग हो या न हो।"

कथन (अकुल): जिस तरह 'अल-सुग़रा' में 'दृश्य' की इस तरह व्याख्या की गई है, 'अदृश्य' की व्याख्या उनके इस कथन से की गई है: "जिसका कोई भौतिक द्रव्य न हो, चाहे उसका रंग हो या न हो," जैसा कि 'जामि अल-रुमुज़' में है। इसलिए इसे उद्धृत करना अधिक उचित था क्योंकि यहाँ चर्चा 'अदृश्य' के बारे में है। (12 उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. फ़तह अल्लाह अल-मुईन, बाबुन्-नजास, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/130 2. कुदुरी, बाबुन्-नजास, मुस्तबाई दिल्ली, पृ. 18 3. फ़तह अल्लाह अल-मुईन, बाबुन्-नजास, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/131

पृष्ठ 76/756

بعد الجفاف ۱ اه فلم (۱) یبق علیه الاضیاع زیادة عینه فی الموضعین بل ایهامهما خلاف المراد ثم بالتدارك رجوع الکلام الی عدم التفرقة بین العین والاثر وکأنه اخذه من عبارة الامام القدوری النجاسة ان کان لها عین مرئیة فطهارتها زوال عینها الا ان یبقی من اثرها مایشق ازالتها ومالیس لها عین مرئیة فطهارتها ان تغسل (۲) الخ فالمراد العین المرئیة ولو برؤیة لونها الا تری الی استثنائه الاثر من العین بل المقرر ان بصر البشر فی الدنیا لا یدرك الا اللون والضوء وبالجملة استقام الکلام بالتدارك لکن السید ابا السعود نقلا عن السید الحموی اراد رده الی خلافه فقال علی قوله وهو الذی لایری اثره حکاه فی الصغری بقیل بعد ان صدر بقوله المرئی عه ماله جرم سواء کان له لون ام لا اهـ (۳)

یعنی جس کا جرم نظر نہ آئے، پھر اس کا تدارک اپنے اس قول سے کیا کہ جس کا اثر خشک ہونے کے بعد نظر نہ آئے اھ تو ان کے ذمہ صرف یہ اعتراض رہا کہ دونوں جگہ لفظ عین کا لانا فضول ہوا، بلکہ یہ خلاف مراد کا وہم پیدا کرتا ہے پھر تدارک کے ساتھ کلام کا ماحصل یہ نکلتا ہے کہ عین واثر میں فرق نہیں رہتا اور غالباً انہوں نے یہ قید قدوری کے کلام سے اخذ کی ہے، وہ یہ ہے کہ ایسی نجاست کہ اگر اس کا جرم نظر آتا ہے تو اس کی پاکی اس طرح ہوگی کہ اس کا جرم ختم ہو جائے ، اگر اس کا کوئی ایسا نشان باقی رہ جائے کہ اس کا ازالہ دشوار ہو تو حرج نہیں اور جس نجاست کا جرم نظر نہیں آتا تو اس کی طہارت یہ ہے کہ اسے دھویا جائے الخ تو مراد وہ جرم ہے جو نظر آتا ہے خواہ اس کا رنگ ہی نظر آئے، جیسا کہ اُن کے استثناء سے مفہوم ہوتا ہے جو عین سے ہے بلکہ یہ طے شدہ امر ہے کہ انسانی آنکھ دنیا میں سوائے رنگ اور روشنی کے کچھ اور نہیں دیکھتی ہے

عه اقول كما فسر في الصغرى المرئى بهذا فسر غير المرئى بقوله مالا جرم له سواء كان له لون اولا كما في جامع الرموز فكان اولى نقله لان الكلام ههنا فى غير المرئى ۱۲ منه غفر له (م)

اقول: مرئی کی صغریٰ میں جس طرح تفسیر اس کے ساتھ کی ہے اس طرح غیر مرئی کی تفسیر یوں کی ہے کہ جس کا جرم نہ ہو خواہ اس کا رنگ ہو یا نہ ہو جیسا کہ جامع الرموز میں ہے تو اولیٰ اس کا نقل کرنا ہے کیونکہ کلام یہاں غیر مرئی میں ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 فتح الله المعين باب الانجاس ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ۱/۱۳۰ 2 قدورى باب الانجاس مجتبائى دہلى ص ۱۸ 3 فتح الله المعين باب الانجاس ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ۱/۱۳۱

Fatawa Razawiyya Volume 3

And the summary is that the statement became correct with the rectification, but Abu al-Sa'ud, quoting from Hamawi, intended to take its opposite meaning. So regarding his statement 'it is that whose trace is not seen', it was said in Sughra that he mentioned it with 'it is said' (qila) and started it such that 'visible' is that which has mass whether it has color or not. (T)

Ninth: The scholar 'Sh' explained both of them in the issue of the leather socks (khuff) in the correct manner, then deviated from it and said: we will mention what research is in it as before, and the research is what you know in the seventh. (T)

Tenth: It is stated in al-Jawhara: (If an impurity having mass hits the leather sock) meaning whose color and trace remains after drying like dung, blood, and semen etc. So from the correct, they extracted a clearly wrong meaning. (T)

I say: And what is in all of these researches can be known by a single word, so know that there are four issues here: the issue of purification by removing the essence of impurity or the prevalence of thought of its removal, the issue of falling of impurity in a large pool, the issue of the leather sock, and the issue of estimation by the weight of a dirham or its area. And in al-Bada'i, another issue was added: the issue of falling into a well. So the issue of purification and the large pool are one group, and the rest are another group. What is meant by 'visible' in the other group is the corporeal, i.e., that which has a mass seen protruding over the surface of the affected area even after drying, and mere color is not sufficient, and by 'invisible' is meant something else.

Footnote: 1 Al-Jawharatun Nayyirah, Chapter of Impurities, Imdadiya Multan, 1/42.
Page 77 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

और सारांश यह है कि सुधार के साथ कथन सही हो गया, लेकिन अबू अल-सऊद ने हमवी से उद्धृत करते हुए इसका विपरीत अर्थ लेने का इरादा किया। तो उनके इस कथन पर कि 'वह वह है जिसका निशान नहीं दिखता', सुग़रा में कहा गया कि उन्होंने इसे 'कहा गया' (क़ील) के साथ उल्लेख किया और इसे इस तरह शुरू किया कि 'दृश्य' वह है जिसका द्रव्यमान हो चाहे उसका रंग हो या न हो। (त)

नौवां: विद्वान 'श' ने मोज़े (ख़ुफ़) के मसले में उन दोनों की व्याख्या सही तरीके से की है, फिर उससे विचलन किया, और कहा कि इसमें जो चर्चा है हम उसका उल्लेख करेंगे जैसा कि बीत चुका है, यह चर्चा आप सातवीं जांच में जान चुके हैं। (त)

दसवां: अल-जौहरा में कहा गया है: (जब मोज़े को द्रव्यमान वाली गंदगी लग जाए) यानी जिसका सूखने के बाद रंग और निशान हो जैसे लीद, खून और वीर्य आदि। तो सही से उन्होंने स्पष्ट रूप से गलत अर्थ निकाला। (त)

मैं कहता हूँ: और इन सब शोधों में जो कुछ है वह सिर्फ एक अक्षर से जाना जा सकता है, तो जान लें कि वास्तव में यहाँ चार मसले हैं: पवित्र करने के लिए गंदगी के सार को हटा देना या उसके हटने की प्रबल संभावना प्राप्त होना, बड़े हौज में गंदगी गिरने का मसला, मोज़े का मसला, और दिरहम के वजन या उसके क्षेत्रफल से अनुमान लगाने का मसला। और बदई में एक और मसला बढ़ाया गया: कुएं में गिरने का मसला। तो पवित्रता और बड़े हौज का मसला एक पक्ष है और बाकी दूसरा पक्ष है, और दूसरे पक्ष में 'दृश्य' (मरई) से तात्पर्य शरीर वाला है, यानी जिसका द्रव्यमान सूखने के बाद भी प्रभावित क्षेत्र की सतह पर उभरा हुआ दिखाई दे, और केवल रंग पर्याप्त नहीं है, और 'अदृश्य' से तात्पर्य कुछ और है।

पाद-टिप्पणी: 1 अल-जौहरातुन नय्यिरा, बाबु अन-नजासत, इमदादिया मुल्तान, 1/42 पेज 77 / 756

اور خلاصہ یہ کہ کلامِ تدارک کے ساتھ درست ہوگیا لیکن ابو السعود نے حموی سے نقل کرتے ہوئے اس کے مخالف معنی لینے کا ارادہ کیا ہے تو ان کے قول ھوالذی لایری اثرہ پر فرمایا کہ صغرٰی میں اس کو "قیل" سے ذکر کیا ہے اور ابتدا اس طرح کی ہے کہ مرئی وہ ہے جس کا جرم ہو خواہ رنگ ہو یا نہ ہو اھ (ت)

نواں، ان دونوں کی تفسیر علامہ "ش" نے موزے کے مسئلے میں صحیح طریقے پر کی ہے، پھر اُس سے انحراف کیا، اور فرمایا اس میں جو بحث ہے ہم اس کو ذکر کریں گے جیسا کہ گزرا، یہ بحث ساتویں تحقیق میں آپ جان چکے ہیں۔ (ت)

دسواں، جوہرہ میں کہا (جب موزے کو جرم دار نجاست لگ جائے) یعنی جس کا خشک ہونے کے بعد رنگ اور اثر ہو جیسے لید، خون اور منی اھ تو صحیح سے انہوں نے صریحاً غلط مطلب نکالا۔ (ت)

میں کہتا ہوں جو کچھ مذکورہ ابحاث میں ہے وہ صرف ایک حرف سے معلوم کیا جاسکتا ہے کہ دراصل یہاں چار مسائل ہیں، پاک کرنے کیلئے نجاست کے عین کو زائل کردینا یا اس کے زوال کا غلبہ ظن حاصل ہونا، بڑے حوض میں نجاست کے گرنے کا مسئلہ، موزے کا مسئلہ، وزن درہم سے اندازہ یا اس کی پیمائش کا لحاظ اور بدائع میں ایک اور مسئلہ کا اضافہ کیا، کنویں میں گرنے کا مسئلہ، تو پاکی، اور بڑے حوض کا مسئلہ ایک فریق ہے اور باقی دوسرا فریق ہے اور مرئی سے دوسرے فریق میں جسم والا مراد ہے، یعنی جس کا جرم خشک ہونے کے بعد بھی ابھرا ہوا نظر آئے، اور محض رنگ کافی نہیں ہے، اور غیر مرئی سے مراد کچھ اور ہے۔

حاشیہ: 1 الجوھرة النیرة باب الانجاس امدادیہ ملتان ۴۲/۱ صفحہ 77 از 756

Volume 3 | Fatawa Razawiyya The incarnate (al-mutajassid), i.e., that whose distinct body cannot be seen after drying even if the color remains. This is what is in Al-Sughra, Al-Tatimma, Sharh al-Tahawi, Al-Dhakhira, and Al-Manba'. What is meant by 'visible' (al-mar'i) in the issue of purification and the large pond is what the eyesight perceives, even if it dries by its color alone without an elevated body over the affected part. By 'invisible' (ghayr al-mar'i) is meant that for which neither body nor trace can be perceived by the sight after drying or in the water. This is what is in Ghayat al-Bayan and others. The evidence for this distribution is: (T) First: What they argued for regarding the rulings for both groups, as is not hidden from whoever has perused the books that explain the legal reasoning (al-mu'allala), such as Al-Bada'i, Al-Hidayah, Al-Tabyin, Al-Kafi, Al-Fath, Al-Ghaniyya, Al-Hilya, Al-Bahr, and others. Among those is the statement of Al-Hidayah: "If an impurity having a body (jirm) reaches the leather sock (khuff) and it dries, then rubbing it is permissible because the leather, due to its hardness, does not allow the parts of the impurity to penetrate it except a little. Then the body attracts it when it dries, so when it is removed, what remained with it is removed. If urine reaches it, it is not permissible. Likewise, everything that has no body, such as wine, because its parts are absorbed into it and there is no attractor to pull them out." End quote. And in Al-Hilya: "Because it is mere moisture, so it enters the parts of the leather sock and there is no attractor for it." End quote.

1 Al-Hidayah, Chapter on Impurities, Arabiyya Press Karachi, 1/56 2 Hilya

भाग 3 | फतावा रजविया 'अल-मुतजस्सिद' यानी जिसका सुस्पष्ट शरीर सूखने के बाद दिखाई न दे, भले ही रंग रह जाए। यही अल-सुगरा, अल-ततिम्मा, शरह अल-तहावी, अल-दखीरा और अल-मनबा में है। शुद्धिकरण और बड़े तालाब के मसले में 'दृश्य' (मराई) से तात्पर्य वह है जिसे आँखों से देखा जा सके, भले ही वह केवल अपने रंग के साथ सूख जाए और प्रभावित क्षेत्र के ऊपर कोई उभरा हुआ शरीर न हो। और 'अदृश्य' (गैर-मराई) से तात्पर्य वह है जिसके लिए सूखने के बाद या पानी में न तो शरीर और न ही कोई निशान आँखों से महसूस किया जा सके। यह गायत अल-बयान और अन्य में है। इस वर्गीकरण का प्रमाण यह है: (त) पहला: वह जो उन्होंने दोनों पक्षों के आदेशों के लिए तर्क दिया है, जैसा कि उन पर छिपा नहीं है जिन्होंने उन पुस्तकों का अध्ययन किया है जो आदेशों के कारणों को स्पष्ट करती हैं (मुअल्लला), जैसे अल-बदाई, अल-हिदाया, अल-तब्बीन, अल-काफी, अल-फतह, अल-ग़ानिया, अल-हिल्या, अल-बह्र और अन्य। उनमें से अल-हिदाया का कथन है: "यदि मोज़े (खुफ़) पर कोई ठोस शरीर वाली अशुद्धि लग जाए और वह सूख जाए, तो उसे रगड़ना जायज़ है क्योंकि खाल अपनी कठोरता के कारण अशुद्धि के हिस्सों को अपने अंदर प्रवेश करने नहीं देती सिवाय थोड़े से हिस्सों के। फिर वह ठोस शरीर (जिर्म) सूखने पर उन्हें अपनी ओर खींच लेता है, अतः जब वह हट जाता है, तो उसके साथ जो लगा था वह भी हट जाता है। यदि उस पर पेशाब लग जाए तो जायज़ नहीं है। इसी तरह, वह सब जिसका कोई शरीर नहीं है, जैसे शराब, क्योंकि उसके हिस्से उसमें समा जाते हैं और उन्हें बाहर खींचने वाला कोई आकर्षक नहीं होता।" (समाप्त)। और अल-हिल्या में है: "क्योंकि यह केवल नमी है, इसलिए यह मोज़े के हिस्सों में प्रवेश कर जाती है और इसके लिए कोई खींचने वाला नहीं है।" (समाप्त)।

1 अल-हिदाया, अशुद्धियों का अध्याय, अरबिया प्रेस करा2 1/56 ,چی हिल्या

पृष्ठ 78 का 756

جلد سوم | فتاویٰ رضویہ المتجسد ای مالا یری بعد الجفاف جرم شاخص وان بقی اللون وھذا ما فی الصغری والتتمة وشرح الطحاوی والذخیرة والمنبع والمراد بالمرئی فی مسألة التطھیر والحوض الکبیر ما یدرکه البصر وان جف ولو بمجرد لونه من دون جرم مرتفع فوق المصاب وبغیر المرئی مالا یحس له بالبصر بعد الجفاف اوفی الماء عین ولا اثر وھذا ما في غایة البیان وغیرھا، والدلیل علی ھذا

التوزیع: اور اس میں صرف رنگ نظر آنا کافی نہیں ہے، اور غیر مرئی سے مراد غیر متجسد ہے، یعنی خشک ہو جانے کے بعد اس کا ابھرا ہوا جرم نظر نہ آئے اگرچہ اس کا رنگ باقی ہو ، یہ وہ ہے جو صغریٰ، تتمہ، شرح طحاوی، ذخیرہ اور منبع میں ہے، اور مسئلہ تطہیر، اور بڑے حوض میں مرئی سے مراد وہ ہے جو نظر میں آئے اگرچہ خشک ہو جائے ، اگرچہ صرف رنگ نظر آئے جرم نظر نہ آئے ، اور غیر مرئی سے مراد جو خشک ہونے کے بعد نظر نہ آئے یا پانی میں کوئی جرم ہو اور نشان نہ ہو یہ غایۃ البیان وغیرہ میں ہے اور اس توزیع کی دلیل یہ ہے: (ت) اولاً : وہ جو انہوں نے استدلال کیا ہے مسائل کے فریقین کے احکام پر ، جیسا کہ مخفی نہیں اس پر جس نے ان کتب کا مطالعہ کیا ہے جو احکام کی علتیں بیان کرتی ہیں، جیسے بدائع، ہدایہ، تبیین، کافی، فتح، غنیہ، حلیہ اور بحر وغیرہ۔ چنانچہ ہدایہ میں ہے کہ اگر موزے کو کوئی جرم دار نجاست لگ جائے اور خشک ہو جائے تو وہ رگڑنے سے پاک ہو جاتا ہے، کیونکہ کھال کی سختی کی وجہ سے اس میں نجاست کے اجزاء داخل نہیں ہو سکتے سوائے معمولی اجزاء کے اور جب موزہ خشک ہوگا تو اُن اجزاء کو جرم جذب کر لے گا اور جب وہ جرم زائل ہوگا تو جو اُس کے ساتھ ہو گا وہ بھی زائل ہو جائے گا اور اگر موزے پر پیشاب لگ جائے تو جائز نہیں وکذا کل مالا جرم له کالخمر لان الاجزاء تتشرب فیه ولا جاذب یجذبھا اھ وفی الحلیة لانھا مجرد بلة فتدخل فی اجزاء الخف ولا جاذب لھا اھ

1 الہدایہ باب الانجاس مطبع عربیہ کراچی ۵۶/۱ 2 حلیہ

صفحہ 78 از 756

Fatawa Razawiya - Volume III

[Arabic Section] And you know that there is no effect in this for the trace remaining at first, unlike the issue of purification, for the intent there is the removal of the affecting agent, and that is by certainty in the visible and by the predominance of opinion in others. Because if it is not sensed, there remains no path to certainty of its removal, so one relied on the greatest opinion, which is attached in jurisprudential matters to certainty. As for what a substance or trace is seen for, we know its removal by its removal and its remaining by its remaining, because the trace does not subsist except through the substance, and the accident does not transfer from substance to substance. It is said in al-Badā'i': If the impurity is visible like blood and the like, its purification is the removal of its substance, and there is no consideration for number in it, because the impurity is in the substance. So if it is gone, it is gone, and if it remains, it remains. Even if the substance is gone but the trace remains, if it is from what its trace can be removed, it is not ruled as pure as long as the trace has not been removed, because the trace is the color of its substance, not the color of the garment. So its remaining indicates the remaining of its substance. And if it is from what its trace cannot be removed, the remaining of its trace does not harm because the hardship is removed. End. Summarized. And by this, they differ in the basin, so other than...

[Urdu Section] ...is not permissible, and similarly is the case for every such impurity that has no substance, like wine, because the components of wine are absorbed into it and there is no absorber for them. End. And in al-Hilyah: because it is mere moisture, it will enter the components of the leather sock and there is no absorber for it. End. And you know that there is no role for the trace in this, whether it remains or not, unlike the issue of purification, because there the objective is the removal of the stuck thing, and this will only happen when there is certainty of removal in visible things and predominance of opinion in non-visible things, because when it is not sensed, no means exists to be certain of its removal, so reliance was placed on the predominant opinion, which has been considered a substitute for certainty in jurisprudential issues. And those impurities whose substance or trace exists, the state of their removal is known by their removal, and their persistence is known by their remaining, for the trace exists through the substance, and an accident does not transfer from one substance to another. It is said in al-Badā'i': If the impurity is visible like blood and its like...

[Footnote Section] Note: I say: He (may Allah the Exalted have mercy on him) argued for this in four ways. This is the best of them, so I limited myself to it following al-Hidayah. If I had mentioned the other ways with their pros and cons, the discourse would have been long. (12) From him, may he be forgiven. (M) I say: Now the author of al-Badā'i' has established the proof for this in four ways. Following al-Hidayah, I have only described this one. If I had mentioned all the aspects comprehensively, the talk would have been long. (12) From him, may he be forgiven. (T)

1 Bada'i al-Sana'i, Conditions of Purification, H.M. Saeed Company Karachi, 1/88

फ़तावा रज़विया - भाग तीन

[अरबी खंड] और आप जानते हैं कि इसमें पहले से बचे हुए निशान का कोई प्रभाव नहीं है, शुद्धिकरण के मसले के विपरीत, क्योंकि वहां उद्देश्य लगी हुई चीज़ को हटाना है, और वह दृश्य चीज़ों में निश्चितता (यक़ीन) के द्वारा और अन्य में प्रबल धारणा (ग़लबा-ए-ज़न) के द्वारा होता है। क्योंकि जब वह महसूस नहीं होता, तो उसके हटने की निश्चितता का कोई रास्ता नहीं बचता, इसलिए प्रबलतम राय पर भरोसा किया गया, जिसे न्यायशास्त्रीय मामलों में निश्चितता के समान माना जाता है। जहाँ तक उस चीज़ का सवाल है जिसका तत्व (ऐन) या निशान (असर) देखा जा सकता है, तो हम उसके हटने को उसके गायब होने से और उसके बने रहने को उसकी उपस्थिति से जानते हैं, क्योंकि निशान तत्व के बिना नहीं टिकता, और गुण एक तत्व से दूसरे में स्थानांतरित नहीं होता। 'अल-बदाए' में कहा गया है: यदि नजासत दृश्य हो जैसे रक्त और उसके जैसा, तो उसकी शुद्धता उसके तत्व को हटाना है, और इसमें संख्या का कोई विचार नहीं है, क्योंकि नजासत तत्व में है। तो अगर वह चला गया, तो चला गया, और अगर वह रह गया, तो रह गया। भले ही तत्व चला जाए लेकिन निशान बना रहे, यदि वह ऐसी चीज़ों में से है जिसका निशान हटाया जा सकता है, तो उसे तब तक शुद्ध नहीं माना जाएगा जब तक कि निशान न हटा दिया जाए, क्योंकि निशान उसके तत्व का रंग है, कपड़े का रंग नहीं। अतः उसका बना रहना उसके तत्व के बचे रहने का संकेत देता है। और यदि वह ऐसी चीज़ों में से है जिसका निशान हटाया नहीं जा सकता, तो उसके निशान के बने रहने से कोई हानि नहीं है क्योंकि कठिनाई दूर कर दी गई है। (इति)। संक्षिप्त। और इसी के द्वारा, वे हौज़ के मामले में भिन्न होते हैं, अतः अन्य...

[उर्दू खंड] ...जायज़ नहीं है, और इसी तरह हर उस नजासत का हाल है जिसका कोई ठोस रूप (जर्म) न हो जैसे शराब, क्योंकि शराब के घटक उसमें समा जाते हैं और उनका कोई सोखने वाला नहीं है। (इति)। और 'हिलिया' में है: क्योंकि वह केवल नमी है, तो वह मोज़े के घटकों में प्रवेश कर जाएगी और उसका कोई सोखने वाला नहीं है। (इति)। और आप जानते हैं कि इसमें निशान (असर) का कोई दखल नहीं है चाहे वह रहे या न रहे, शुद्धिकरण के मसले के विपरीत, क्योंकि वहां उद्देश्य लगी हुई चीज़ को हटाना है, और यह तभी होगा जब दृश्य चीज़ों में हटने का यक़ीन हो और अदृश्य में प्रबल धारणा हो, क्योंकि जब वह महसूस न हो, तो उसके हटने का यक़ीन करने का कोई ज़रिया मौजूद नहीं है, इसलिए प्रबल धारणा पर भरोसा किया गया, जिसे फ़िक़्ही मसलों में यक़ीन का विकल्प माना गया है। और वे नजासतें जिनका ठोस रूप या निशान मौजूद हो, उनके हटने का हाल

उनके हटने से मालूम होता है और उनके बने रहने का पता उनके मौजूद रहने से चलता है, क्योंकि निशान तत्व (ऐन) से कायम होता है और गुण एक तत्व से दूसरे तत्व की ओर स्थानांतरित नहीं होता। 'अल-बदाए' में फ़रमाया: यदि नजासत दृश्य हो जैसे रक्त और इसी तरह के अन्य...

[पादलेख खंड] नोट: मैं कहता हूँ: उन्होंने (अल्लाह उन पर दया करे) इस पर चार तरह से तर्क दिया है। यह उनमें सबसे अच्छा है, इसलिए मैंने 'अल-हिदाया' का अनुसरण करते हुए इसी तक सीमित रखा। यदि मैं अन्य सभी पक्षों को उनके पक्ष और विपक्ष के साथ उल्लेख करता, तो बात लंबी हो जाती। (१२) उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (म) मैं कहता हूँ: अब 'अल-बदाए' के लेखक ने इस पर चार तरह से दलील दी है। मैंने 'अल-हिदाया' का अनुसरण करते हुए केवल इसी का वर्णन किया है। यदि मैं सभी पहलुओं को व्यापक रूप से उल्लेख करता, तो बात लंबी हो जाती। (१२) उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (त)

1 बदाइ-उस-सनाइ, शुद्धिकरण की शर्तें, एच.एम. सईद कंपनी कराची, १/८८

पृष्ठ ७९/७५६

فتاوی رضویہ - جلد سوم

[Arabic Section] اه وانت تعلم انه لا اثر في هذا للاثر بقى اولا بخلاف مسألة التطهير فان المقصود فيها ازالة المصيب وذلك باليقين في المرئي وبغلبة الظن في غيره لانه اذالم يحس لم يبق سبيل الى اليقين بزواله فاكتفى باكبر الرأى الملتحق في الفقهيات باليقين اما مايرى له عين او اثر فنعلم زواله بزواله وبقاءه ببقاءه لان الاثر لايقوم الا بالعين والعرض لاينتقل من عين الى عين قال في البدائع ان كانت النجاسة مرئية كالدم ونحوه فطهارته زوال عينها ولاعبرة فيه بالعدد لان النجاسة في العين فان زالت زالت وان بقيت بقيت ولو زالت العين مابقى الاثر فان كان مما يزول اثره لا يحكم بطهارته مالم يزل الاثر لان الاثر لون عينه لالون الثوب فبقاؤه يدل على بقاء عينه وانكانت مما لا يزول اثره لايضر بقاء اثره لان الحرج عہ مدفوع ١ھ ملتقطاً وبهذا يفترقان في الحوض فغير

[Urdu Section] جائز نہیں، اور اسی طرح ہر اس نجاست کا حال ہے جس کا جرم نہ ہو جیسے شراب، کیونکہ شراب کے اجزاء اس میں جذب ہوتے ہیں اور ان کا کوئی جاذب نہیں ہے اھ اور حلیہ میں ہے کیونکہ وہ محض تری ہے تو وہ موزے کے اجزاء میں داخل ہو گی اور اس کا کوئی جاذب نہیں اھ اور تم جانتے ہو کہ اس میں اثر کا کوئی دخل نہیں جو باقی رہا یا نہ رہا، بخلاف مسئلہ تطہیر کے، کیونکہ وہاں مقصود لگی ہوئی چیز کا ازالہ ہے، اور یہ اسی وقت ہو گا جبکہ مرئی میں ازالہ کا یقین ہو اور غیر مرئی میں غلبہ ظن ہو کیونکہ جب وہ محسوس نہ ہو تو اس کے زوال کا یقین کرنے کا کوئی ذریعہ موجود نہیں، تو ظن غالب پر اکتفاء کر لیا گیا، جس کو فقہی مسائل میں یقین کا قائم مقام سمجھا گیا ہے، اور وہ نجاستیں جن کا جرم یا اثر ہو تو ان کے زوال کا حال ان کے زوال سے معلوم ہو جاتا ہے اور اس کی بقاء ان کے باقی رہنے سے معلوم ہو

جاتی ہے کہ اثر تو عین سے قائم ہوتا ہے اور عرض ایک عین سے دوسرے عین کی طرف منتقل نہیں ہوتا ہے، بدائع میں فرمایا اگر نجاست مرئیہ ہو جیسے خون اور اسی کی مثل

[Footnote Section] عہ اقول استدل رحمه الله تعالى على هذا باربعة اوجه هذا احسنها فاقتصرت عليه تبعاً للهداية ولو ذكرت سائر الوجوه بمالها وعليها طال الكلام ١٢ منه غفر له (م) اقول: احب بدائع نے اس پر چار طرح سے دلیل قائم کی ہے میں نے ہدایہ کی اتباع میں صرف اس کو بیان کیا ہے اور اگر میں تمام وجوہ کو ہمہ پہلو ذکر کرتا تو بات طویل ہو جاتی ١٢منہ غفر له (ت)

1 بدائع الصنائع شرائط التطہیر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۸۸/۱

Fatawa Razawiyya, Volume Three

[Arabic]: The visible [impurity] ceases to exist, but the visible remains and does not affect until the area of water decreases, then it affects. [Urdu]: So its purification will depend on the removal of its physical substance (ayn), and there is no consideration of number in this, because the impurity is in the substance itself. Thus, if it (the substance) is removed, the impurity is removed, and if it remains, the impurity remains. And if the substance is removed, no trace will remain. If it is of such a type that its trace disappears, its purification will not be ruled until the trace disappears, because the trace is the color of the substance itself, not of the cloth. Therefore, its persistence indicates the persistence of its substance. And if it is such that its trace does not disappear, then its remaining trace is not harmful because hardship is excused. [Extracted]. Thus, these two will be distinct in the pool; the invisible will vanish, and the visible will remain and will not be influential until the measurement of water becomes low, then it will be influential. (T)

[Arabic]: Secondly: Malik al-Ulama counted blood among the visible [impurities] as you saw just now, whereas two pages before this, he counted it among those without physical mass (jirm). He said: If it is not solidified, like urine, blood, and wine, all the water of the well should be drawn out. Likewise is the statement of al-Hidayah: that which has no mass, like wine. It is known that blood and wine are colored things, so it is known that there is no consideration for it (color) in the issue of leather socks (khuff) and wells. Similarly, in the issue of estimation (of quantity), color has no effect on thickness or thinness. That is why it is said in al-Khaniyyah regarding non-solidified [impurities] like urine, wine, and blood, the quantity is considered in terms of spread (basit), contrary to the issue of purification where the removal of the trace is a condition. [Urdu]: And secondly, Malik al-Ulama counted blood among the visible impurities as you just saw, although two pages earlier he had counted it among impurities without physical mass. He said: if they are not solidified, like urine, blood, and wine, the entire water of the well should be drawn out. The statement of Hidayah is also similar, that what has no mass, like wine. And it is known that wine and blood are colored things, so it became known that in the issue of leather socks (moza) and wells, color is not considered. Similarly, quantity is not considered in it because color has no effect on thickness and thinness. That is why it is said in Khaniyyah that in non-bodied impurities like urine, wine, and blood, the spread [is considered].

[Arabic Note]: As we have researched in the sixth and tenth principles of the fifth answer in our treatise "Rahb al-Sahah". 12 From the author, may he be forgiven. (M)

[Urdu Note]: As we have researched in our treatise "Rahb al-Sahah" under the sixth and tenth rules of the fifth answer. 12 From the author, may he be forgiven. (T)

1. Bada'i al-Sana'i, the amount by which a place becomes impure, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/67.
2. Qazi Khan, Chapter on Impurities etc., Naval Kishore, Lucknow, 1/10.

फ़तावा रज़विया, खंड तीन

[अरबी]: दृश्यमान [अशुद्धि] समाप्त हो जाती है, लेकिन दृश्यमान बनी रहती है और तब तक प्रभावित नहीं करती जब तक कि पानी का क्षेत्र कम न हो जाए, फिर वह प्रभावित करती है। [उर्दू]: तो इसकी शुद्धि उसके मूल पदार्थ (ऐन) के हटने पर निर्भर होगी, और इसमें संख्या का कोई विचार नहीं है, क्योंकि अशुद्धि पदार्थ में ही है। अत; यदि वह (पदार्थ) हट जाता है, तो अशुद्धि हट जाती है, और यदि वह रहता है, तो अशुद्धि बनी रहती है। और यदि पदार्थ हट जाता है, तो कोई निशान बाकी नहीं रहेगा। यदि वह इस प्रकार का है जिसका निशान मिट जाता है, तो उसकी शुद्धि का निर्णय तब तक नहीं किया जाएगा जब तक कि निशान मिट न जाए क्योंकि निशान पदार्थ का रंग है, कपड़े का नहीं। इसलिए, उसका बने रहना उसके मूल पदार्थ के बने रहने का संकेत देता है। और यदि वह ऐसा है कि उसका निशान नहीं मिटता, तो उसका निशान बाकी रहना हानिकारक नहीं है क्योंकि कठिनाई क्षम्य है। [संक्षिप्त]। इस प्रकार, ये दोनों हौज में अलग-अलग हो जाएंगे; अदृश्य समाप्त हो जाएगी और दृश्यमान बनी रहेगी और प्रभावी नहीं होगी जब तक कि पानी की मात्रा कम न हो जाए, तब वह प्रभावी होगी। (त)

[अरबी]: दूसरा: मलिक उल-उलेमा ने खून को दृश्यमान [अशुद्धियों] में गिना है जैसा कि आपने अभी देखा, जबकि इससे दो पृष्ठ पहले, उन्होंने इसे बिना द्रव्यमान (जर्म) वाली अशुद्धियों में गिना था। उन्होंने कहा: यदि वह जमा हुआ न हो, जैसे पेशाब, खून और शराब, तो कुएं का सारा पानी निकाल दिया जाना चाहिए। इसी तरह अल-हिदाया का कथन है: वह जिसका कोई द्रव्यमान नहीं है, जैसे शराब। यह ज्ञात है कि रक्त और शराब रंगीन चीजें हैं, इसलिए यह ज्ञात हुआ कि चमड़े के मोजों (खुफ़) और कुओं के मामले में रंग का कोई विचार नहीं है। इसी तरह, अनुमान (मात्रा) के मामले में, रंग का मोटाई या पतलेपन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसीलिए अल-खानिया में गैर-ठोस [अशुद्धियों] जैसे पेशाब, शराब और खून के बारे में कहा गया है कि मात्रा को फैलाव (बसित) के संदर्भ में माना जाता है, इसके विपरीत शुद्धिकरण के मामले में जहां निशान का हटना शर्त है। [उर्दू]: और दूसरा, मलिक उल-उलेमा ने खून को दृश्यमान अशुद्धियों में गिना है जैसा कि आपने अभी देखा, हालांकि दो पृष्ठ पहले उन्होंने इसे बिना द्रव्यमान वाली अशुद्धियों में गिना था। उन्होंने कहा: यदि वे ठोस नहीं हैं, जैसे पेशाब, खून और शराब, तो कुएं का सारा पानी निकाल दिया जाना चाहिए। हिदाया का कथन भी इसी प्रकार है, कि जिसका कोई द्रव्यमान नहीं है जैसे शराब। और यह ज्ञात है कि शराब और खून रंगीन चीजें हैं, अतः यह ज्ञात हुआ कि मोजे और कुएं के मसले में रंग का विचार नहीं

किया जाता है। इसी प्रकार इसमें मात्रा का विचार नहीं किया जाता क्योंकि रंग से मोटाई और पतलेपन पर प्रभाव नहीं पड़ता है। इसीलिए खानिया में कहा गया है कि बिना शरीर वाली अशुद्धियों जैसे पेशाब, शराब और खून में फैलाव [देखा जाता है]।

[अरबी नोट]: जैसा कि हमने अपने शोध प्रबंध "रहब अल-साहा" में पांचवें उत्तर के छठे और दसवें सिद्धांतों में शोध किया है। 12 लेखक की ओर से, उसे क्षमा किया जाए। (एम) [उर्दू नोट]: जैसा कि हमने अपने शोध प्रबंध "रहब अल-साहा" में पांचवें उत्तर के छठे और दसवें नियम के तहत शोध किया है। 12 लेखक की ओर से, उसे क्षमा किया जाए। (त)

1. बदाइ अल-सनाइ, वह मात्रा जिससे स्थान अशुद्ध हो जाता है, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/67।
2. काज़ी खान, अशुद्धियों पर अध्याय आदि, नवल किशोर, लखनऊ, 1/10।

पृष्ठ 756 का 80

المرئیۃ عہ تنعدم والمرئیۃ تبقی ولاتؤثر حتی ان قلت مساحۃ الماء اثرت۔ تو اس کی طہارت اس کے عین کے زوال پر موقوف ہوگی، اور اس میں عدد کا اعتبار نہیں، کیونکہ نجاست عین میں ہے تو اگر وہ زائل ہوگا تو وہ زائل ہوگی اور وہ باقی رہے گا تو وہ باقی رہے گی، اور اگر عین زائل ہو گیا تو اثر باقی نہ رہیگا، اور اگر وہ اس قسم کا ہے کہ اس کا اثر زائل ہو جاتا ہے تو اس کی طہارت کا حکم اس وقت تک نہیں لگایا جائے گا جب تک کہ اثر زائل نہ ہو کیونکہ اثر اس کے عین کا رنگ ہے نہ کہ کپڑے کا، تو اس کی بقاء اس کے عین کی بقاء پر دلالت کرتی ہے اور اگر وہ ایسا ہے کہ اس کا اثر زائل نہیں ہوتا تو اس کے اثر کا باقی رہنا مضر نہیں کیونکہ حرج مدفوع ہے اہ ملتقطاً، تو اس طرح یہ دونوں حوض میں جدا ہو جائیں گے تو غیر مرئیہ معدوم ہو جائے گی اور مرئیہ باقی رہے گی اور اثر انداز نہ ہوگی یہاں تک کہ جب پانی کی پیمائش کم ہوگی تو پھر اثر انداز ہوگی۔ (ت)

وثانیاً: عد ملک العلماء الدم من المرئی کما رأیت آنفا وقد عدہ قبل ہذا بورقتین من غیر ذوات الجرم فقال ان کان غیر مستجسد کالبول والدم والخمر ینزح ماء البئر کلہ ۱اہ وکذلك قول الھدایۃ مالا جرم لہ کالخمر و معلوم ان الدم والخمر من ذوات اللون فعلم ان لاعبرۃ بہ في مسألۃ الخف والبئر وکذا مسألۃ التقدیر لان اللون لااثر لہ فی الکثافۃ والرقۃ ولذا قال فی الخانیۃ في غیر المستجسدۃ کالبول والخمر والدم یعتبر القدر بسطا ۲اہ بخلاف مسألۃ التطھیر المشروط فیھا زوال الاثر اور ثانیاً ملک العلماء نے خون کو مرئیہ میں سے شمار کیا ہے جیسے کہ آپ نے ابھی دیکھا، حالانکہ دو ورق پہلے انہوں نے اس کو غیر جرم والی نجاستوں میں شمار کیا تھا، فرمایا اگر وہ جرم دار نہ ہو جیسے پیشاب، خون اور شراب، تو کنویں کا سار ا پانی نکالا جائے اہ اور ہدایہ کا قول بھی ایسے ہے کہ جس کا جرم نہ ہو

جیسے شراب، اور یہ بات معلوم ہے کہ شراب اور خون رنگ والی چیزیں ہیں پس معلوم ہوا کہ موزہ اور کنویں کے مسئلہ میں رنگ کا اعتبار نہیں ہے اسی طرح اس میں مقدار کا اعتبار نہیں کیونکہ رنگ میں کثافت اور رقت کا اثر نہیں ہوتا، اسی لئے خانیہ میں کہا کہ غیر جسم والی نجاستوں جیسے پیشاب، شراب اور خون میں پھیلاؤ۔

عہ کما حققناہ فی الاصل السادس والعاشر من الجواب الخامس في رسالتنا رحب الساحة ۱۲ منہ غفرلہ (م) جیسا کہ ہم نے اپنے رسالہ "رحب الساحة" میں پانچویں جواب کے تحت چھٹے اور دسویں قاعدہ میں اس کی تحقیق کی ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 بدائع الصنائع مقدار الذی یصیر المحل نجسا ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۶۷ 2 قاضی خان فصل فی النجاسة الخ نولکشور لکھنو ۱/۱۰

[Right Column - Urdu]: ...judgment will be made based on it [Ah]. As opposed to the issue of purification where the removal of the trace is a condition as long as it is not difficult; therefore, Malik al-Ulama has categorized it as visible (Mar'i) in this case. (T) [Left Column - Arabic]: ...as long as it is not difficult, so for that reason, Malik al-Ulama categorized it therein among the visible.

[Right Column - Urdu]: Secondly: In the issues of the final group, Malik al-Ulama expressed them as 'solid-bodied' and 'non-solid-bodied', or 'solid-bodied' and 'liquid'. Then he stated that in the first group, a visible impurity is never removed in one go, thus it will be the same for an invisible one; and there is no difference except that the visible is seen by the senses and the invisible is known by the intellect [Ah]. This is a very clear text [stating] that a colored impurity in the matter of purification is among the visible ones. (T) [Left Column - Arabic]: Thirdly: Malik al-Ulama, in the issues of the last group, used the terms 'solidified' and 'non-solidified', or 'solidified' and 'liquid'. Then he said: 'In the first group, visible impurity is never removed in a single instance, and likewise for the invisible. There is no difference except that the former is seen with the senses and the latter is known by the intellect' [Ah]. This is one of the clearest texts [stating] that visible [impurity] by its color is considered visible in the issue of purification.

[Right Column - Urdu]: And fourthly: Similarly, Imam Taj al-Shari'ah used 'thick' and 'thin' in the issue of quantity, and 'possessing substance' or 'not possessing substance' in the issue of footwear. In the matter of purification, he said: 'that impurity whose trace is invisible...' [Left Column - Arabic]: Fourthly: Similarly, Imam Taj al-Shari'ah expressed 'thick' and 'thin' in the issue of estimation, and 'having substance' or 'having no substance' in the issue of footwear. Regarding the issue of purification, he said: 'It becomes pure when [its trace is not seen...']

[Left Column - Arabic]: But praise be to the intellect that sees this clear, flowing explanation *and then proceeds to interpret a contradiction with a contradiction!* He is the contemporary scholar from Lucknow who said in 'Umdat al-Ri'ayah': 'It is that which has no substance and is not felt after drying, whether it has a color or not; thus it is in Khazanat al-Fatawa(2) [Ah].' Glory be to Allah! Taj says 'its trace is not seen,' and this person interprets it as 'whether its trace is seen or not seen.' There is no power or strength except with Allah, the All-High, the All-Great. (12) From him, may he be forgiven. (M) [Right Column - Urdu]: But praise the mind of one who, seeing this clear

explanation, interprets it with its opposite! And this is the contemporary from Lucknow who stated in 'Umdat al-Ri'ayah': 'It is that impurity which has no substance and is not felt after drying, whether it has a color or not; thus it is in Khazanat al-Fatawa [Ah].' Subhan Allah! While Taj al-Shari'ah says, 'that whose trace is not seen,' this gentleman interprets it as 'whether its trace is seen or not seen.' There is no power or strength except with Allah, the All-High, the All-Great. (12) From him, may he be forgiven. (T)

Footnotes: 1. Badai al-Sanai, Conditions of Purification, Saeed Company Karachi, 88/1. 2. Umdat al-Ri'ayah, Annotation on Sharh al-Wiqayah, Chapter on Impurities, Maktaba Rashidiyah Delhi, 1/173.

फतावा रज़विया | खंड 3

[दायां स्तंभ - उर्दू]: ...उसके आधार पर अनुमान होगा [अह]। शुद्धिकरण के मसले के विपरीत जिसमें प्रभाव का मिटाना तब तक शर्त है जब तक कि कठिन न हो, इसीलिए मलिकुल उलेमा ने इसे इस मामले में 'दृश्य' (मर्ई) माना है। (त) [बायां स्तंभ - अरबी]: ...जब तक कि कठिन न हो, इसलिए मलिकुल उलेमा ने इसे दृश्य श्रेणी में रखा है।

[दायां स्तंभ - उर्दू]: दूसरा: अंतिम समूह के मसलों में मलिकुल उलेमा ने 'ठोस' और 'गैर-ठोस', या 'ठोस' और 'तरल' के रूप में व्यक्त किया। फिर उन्होंने कहा कि पहले समूह में दृश्य अशुद्धि कभी भी एक बार में समाप्त नहीं होती है, इसलिए अदृश्य के साथ भी ऐसा ही होगा; और इसके अलावा कोई अंतर नहीं है कि दृश्य इंद्रियों से देखा जाता है और अदृश्य बुद्धि से ज्ञात होता है [अह]। और यह शुद्धिकरण के मसले में रंग वाली अशुद्धि के दृश्य होने पर एक बहुत ही स्पष्ट पाठ है। (त) [बायां स्तंभ - अरबी]: तीसरा: मलिकुल उलेमा ने अंतिम समूह के मसलों में 'ठोस' और 'गैर-ठोस' या 'ठोस' और 'तरल' शब्दों का उपयोग किया। फिर कहा: 'पहले समूह में दृश्य अशुद्धि एक बार में नहीं मिटती, अदृश्य का भी यही हाल है। अंतर केवल इतना है कि दृश्य इंद्रियों से दिखता है और अदृश्य बुद्धि से पता चलता है' [अह]। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि रंग के आधार पर अशुद्धि शुद्धिकरण के मामले में दृश्य मानी जाती है।

[दायां स्तंभ - उर्दू]: और चौथा: इसी तरह इमाम ताजुल शरीअत ने मात्रा के मसले में 'गाढ़े' और 'पतले' से व्यक्त किया, और मोजों के मसले में 'पदार्थ युक्त' और 'पदार्थ रहित' से, और शुद्धिकरण के मसले में कहा कि वह नजासत जिसका प्रभाव अदृश्य हो... [बायां स्तंभ - अरबी]: चौथा: इसी प्रकार इमाम ताजुल शरीअत ने अनुमान के मसले में 'गाढ़े' और 'पतले' का प्रयोग किया, और मोजों के मामले में 'पदार्थ वाले' और 'बिना पदार्थ वाले' का। शुद्धिकरण के बारे में कहा: 'वह शुद्ध हो जाता है जब [उसका प्रभाव न दिखे...]'

[बायां स्तंभ - अरबी]: किंतु उस बुद्धि की प्रशंसा करें जो इस स्पष्ट व्याख्या को देखती है और फिर विरोधाभास की व्याख्या विरोधाभास से करती है! वह लखनऊ के समकालीन विद्वान हैं जिन्होंने 'उम्दतुल रियाया' में कहा: 'यह वह है जिसका कोई पदार्थ नहीं है और सूखने के बाद महसूस नहीं होती, चाहे उसका रंग हो या न हो; 'ख़ज़ानतुल फतावा'(2) में भी ऐसा ही है [अह]।' सुब्हानअल्लाह! ताज कहते हैं 'उसका प्रभाव नहीं देखा गया', और ये साहब व्याख्या करते हैं कि 'चाहे प्रभाव देखा

गया हो या नहीं।' अल्लाह के सिवा न कोई शक्ति है न सामर्थ्य, जो महान और सर्वोच्च है। (12) उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। (म) [दायां स्तंभ - उर्दू]: लेकिन आप उसकी बुद्धि की दाद दें जिसने यह स्पष्टीकरण देखकर इसकी व्याख्या इसके विपरीत कर दी! और ये लखनऊ के वे समकालीन विद्वान हैं जिन्होंने 'उम्दतुल रियाया' में कहा: 'यह वह अशुद्धि है जिसका कोई पदार्थ नहीं होता और सूखने के बाद महसूस नहीं होती, चाहे उसका रंग हो या न हो; 'ख़ज़ानतुल फतावा' में ऐसा ही है [अह]।' सुब्हानअल्लाह! ताजुल शरीअत फरमाते हैं 'वह जिसका प्रभाव दिखाई न दे', और ये साहब इसकी व्याख्या करते हैं कि 'चाहे प्रभाव देखा जाए या न देखा जाए।' अल्लाह के सिवा न कोई शक्ति है न सामर्थ्य, जो महान और सर्वोच्च है। (12) उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. बदै अल-सनाई, शुद्धिकरण की शर्तें, सईद कंपनी कराची, 88/1। 2. उम्दतुल रियाया, शरह अल-विकाया पर हाशिये, अशुद्धियों का अध्याय, मकतबा रशीदिया दिल्ली, 1/173।

[دایاں کالم - اردو]: کے اعتبار سے اندازہ ہوگا اھ بخلاف مسئلہ تطہیر کے کہ اس میں زوال اثر مشروط ہے جب تک کہ دشوار نہ ہو، اس لئے اس کو اس میں ملک العلماء نے مرئی قرار دیا ہے۔

(ت) [بایاں کالم - عربی]: مالم یشق فلذا جعله ملك العلماء فیها من المرئي۔

[دایاں کالم - اردو]: ثانیاً: آخری فریق کے مسائل میں ملک العلماء نے جسم والی اور غیر جسم والی، یا جسم والی اور مائع سے تعبیر کیا، پھر فرمایا کہ فریق اول میں نجاست مرئیہ کبھی ایک مرتبہ میں زائل نہیں ہوتی ہے تو اسی طرح غیر مرئیہ ہوگی اور کوئی فرق نہیں سوائے اس کے کہ مرئیہ حس سے نظر آتی ہے اور غیر مرئیہ عقل سے معلوم ہوتی ہے اھ اور یہ بڑی واضح نص ہے مسئلہ تطہیر میں رنگ والی مرئیہ میں سے ہے۔(ت) [بایاں کالم - عربی]: وثالثا: لك العلماء عبر فی مسائل الفریق الاخیر بالمستجسد وغیر المستجسد او المستجسد و المائع ثم قال فی الفریق الاول النجاسة المرئیة قط لا تزول بالمرة الواحدة فکذا غیر المرئیة ولا فرق سوی ان ذلك یری بالحس وهذا یعلم بالعقل اھ وهذا من اجلی نص علی ان المرئی بلونه من المرئی فی مسئلة التطهیر۔

[دایاں کالم - اردو]: اور چوتھا، اسی طرح امام تاج الشریعہ نے مقدار کے مسئلہ میں کثیف اور رقیق سے تعبیر فرمایا، اور موزے کے مسئلہ میں جرم دار یا غیر جرم دار سے تعبیر کیا، اور مسئلہ تطہیر میں فرمایا کہ جس نجاست کا اثر غیر مرئی ہو [بایاں کالم - عربی]: و رابعاً: کذلك الامام تاج الشریعة عبر في مسألة التقدیر بالکثیف والرقیق وفي مسألة الخف بذی جرم وما لا جرم له وقال في مسألة التطهیر یطهر عما لم عه یراثره

[بایاں کالم - عربی]: عه ولکن اکرم بعقل الذی یری هذا التصریح المفیض ثم یقوم یفسر النقیض بالنقیض وهو العصری اللکنوی اذ قال فی عمدة الرعایة وهی التی لا جرم لها ولاتحس بعد الجفاف سواء کان له لون ام لا کذا فی خزانة الفتاوی 2 اھ فسبحن الله یقول التاج لم یراثره وهذا یفسره بما یری اثره اولا ولاحول ولاقوة الا بالله العلی العظیم ۱۲ منه غفرله (م) [دایاں کالم - اردو]: لیکن آپ اس کی عقل کو داد دیں جس نے یہ تصریح دیکھ کر اس کی تفسیر اس کی نقیض کے ساتھ کر دی اور یہ معاصر لکھنوی ہیں جنہوں نے عمدة الرعایة میں کہا کہ یہ وہ نجاست ہے جس کا جرم نہ ہو اور وہ خشک ہونے کے بعد محسوس بھی نہ ہو خواہ اس کا رنگ ہو یا نہ ہو خزانہ الفتاویٰ میں ایسے ہے اھ پس سبحان اللہ تاج الشریعہ تو یہ فرمائیں کہ "وہ جس کا اثر نظر نہ آئے" اور یہ صاحب اس کی تفسیر کرتے ہیں کہ اس کا اثر دیکھا جائے یا نہ دیکھا جائے لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

حواشی: 1 بدائع الصنائع شرائط التطہیر سعید کمپنی کراچی ۱/۸۸ 2 عمدة الرعایہ حاشیہ شرح الوقایہ باب الانجاس المکتبة الرشیدیہ دہلی ۱/ ۱۷۳

(Arabic Text with its Urdu Translation/Explanation): (By washing it three times, it became pure. They clarified that whatever trace is seen, that is visible impurity (Najasa Mar'iya). I do not say what was stated in (1) Al-Ghunya under the saying 'if the impurity is not visible,' meaning if its color is not different from the color of the garment. For that limits visibility to seeing the color and excludes what has a prominent physical substance (jirm) visible on the surface of the affected area, even if its color matches the garment. Furthermore, their statement removes the distinction between visible and non-visible, as in this way, anything that hits something of a different color would be visible, and if it hits something of a matching color, it would be non-visible.)

Fifthly, the core texts (mutun) and earlier scholars agree on expressing the issues of leather socks (khuff) and estimation in terms of having physical substance (jirm) or not, and being thick (kathif) or thin (rafeeq). In the issues of purification (tathir) and large water tanks (haudh-e-kabeer), they agree on the terms 'visible' and 'non-visible'. There is no doubt that 'visible' means its color is seen; in fact, nothing of it is seen except the color, whether it is thick or thin. That which has no prominent physical substance after drying is considered 'thin' (rafeeq). Since color itself is not a physical substance (jirm), it becomes clear that color is considered in this group (purification and tanks) but not in the other group. If the commentaries had used the definition for both cases that is derived from the words themselves, no confusion would have occurred. However, as they explained in the issue of purification based on what is seen after drying and what is not seen...

---

[1] Ghunyatul Mustamli, Second Condition: Purity, Sohail Academy Lahore, p. 183. Page 82 of 756

(अरबी पाठ और उसका उर्दू अनुवाद/व्याख्या): (तीन बार धोने से वह पाक हो गया, तो उन्होंने स्पष्ट किया कि जिसका अंश दिखाई दे वह 'नजासते मरईया' (दृश्य अशुद्धि) है। मैं वह नहीं कहता जो (१) 'गुनिया' में 'इन लम तकुनिन नजासतु मरईयतन' के तहत कहा गया है, अर्थात यदि उसका रंग कपड़े के रंग से अलग न हो। क्योंकि यह दृश्यता को केवल रंग देखने तक सीमित कर देता है और उससे वह वस्तु बाहर हो जाएगी जिसका उभरा हुआ पिंड (जिर्म) प्रभावित सतह पर दिखाई देता है, भले ही उसका रंग कपड़े के रंग के समान हो। इसके अलावा, उनका यह कथन दृश्य और अदृश्य के बीच के अंतर को समाप्त कर देता है, क्योंकि इस तरह हर वह चीज़ जो अपने से भिन्न रंग वाली वस्तु पर लगे तो वह दृश्य होगी, और यदि समान रंग वाली वस्तु पर लगे तो वह अदृश्य होगी।)

पाँचवाँ, मूल ग्रंथों (मुतून) और प्राचीन विद्वानों ने मोजों (खुफ़) और मात्रा के मसले में पिंड वाले (ज़ी-जिर्म) और बिना पिंड वाले, तथा सघन (कसीफ़) और सूक्ष्म (रफ़ीक़) शब्दों के प्रयोग पर सहमति जताई है। जबकि शुद्धि (ततहीर) और बड़े हौज के मसलों में 'दृश्य' (मरई) और 'अदृश्य' (ग़ैर-मरई) शब्दों के प्रयोग पर सहमति है। इसमें कोई संदेह नहीं कि दृश्य वही है जिसका रंग दिखाई दे, बल्कि रंग के अलावा उसका कुछ भी दिखाई नहीं देता, चाहे वह सघन हो या सूक्ष्म। और वह जिसका पिंड सूखने के बाद उभरा हुआ दिखाई न दे, वह सूक्ष्म है। चूंकि रंग कोई पिंड नहीं है, इसलिए यह स्पष्ट हो गया कि रंग इस वर्ग (शुद्धि और हौज) में मान्य है, न कि दूसरे वर्ग में। और यदि व्याख्याओं में दोनों स्थानों पर वही परिभाषा होती जो स्वयं शब्दों से प्राप्त होती है, तो कोई भ्रम उत्पन्न नहीं होता। लेकिन उन्होंने शुद्धि के मसले में जैसा कि व्याख्या की कि जो सूखने के बाद दिखाई दे और जो न दिखाई दे...

---

[1] गुनियतुल मुस्तमली, दूसरी शर्त: पवित्रता, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ १८३। पृष्ठ ८२ का ७५६

بغسلہ ثلثاً فابأن ان مائری اثرہ من المرئی | وہ تین مرتبہ دھونے سے پاک ہوگئی تو انہوں نے واضح ولا اقول کما قال فی (۱) الغنیۃ تحت قولہ ان لم | کردیا کہ جس کا اثر نظر آئے وہ نجاست مرئیہ ہے، اور میں وہ تکن النجاسۃ مرئیۃ ای ان لم یکن لہالون | نہیں کہتا جو غنیہ میں ان لم تکن النجاسۃ مرئیۃ کے تحت فرمایا، مخالف اللون الثوب[1] اہ فانہ یحصر المرئی فی | یعنی اگر اس کا رنگ کپڑے کے رنگ سے مختلف نہ ہو اھ، الرؤیۃ باللون ویخرج مائری لہ جرم شاخص | کیونکہ یہ مرئی کو رؤیۃ باللون میں منحصر کرتا ہے اور اس فوق سطح المصاب مع موافقتہ لہ فی اللون علی | سے وہ خارج ہوجائے گا جس کا ابھرا ہوا جرم نظر آتا ہو حالانکہ انہ (۲) یرفع الامتیاز بین المرئی وغیرہ فکل | وہ رنگ میں کپڑے کے رنگ کے موافق ہوتا ہے علاوہ ازیں شیئ اصاب ما یخالفہ فی اللون کان مرئیًا واذا | ان کا بیان مرئی اور غیر مرئی کے درمیان امتیاز کو ختم کردیتا اصاب مایوافقہ فیہ کان غیر مرئی۔ | ہے کیونکہ اس طرح ہر وہ چیز جو ایسی چیز کو لگ جائے جو اس کے رنگ میں مخالف ہو تو وہ مرئی ہوگی اور جب وہ ایسی چیز کو وخامسا: اتفقت المتون والاقدمون علی | لگی جو رنگ میں اس کے موافق ہو تو غیر مرئی ہوگی۔ (ت) التعبیر فی مسألتی الخف والتقدیر بذی جرم | پانچواں، متون اور متقدمین علماء کا موزے اور مقدار کے وغیر ذی جرم والکثیف والرقیق وفی مسألتی | مسئلہ میں جرم والی اور غیر جرم والی اور کثیف و رقیق کی تعبیر التطھیر والحوض الکبیر بالمرئی وغیر المرئی | میں متفق ہیں اور تطہیر اور حوض کبیر کے مسائل میں مرئی لاشک ان المرئی لونہ مرئی بل لامرئی منہ الا | اور غیر مرئی کی تعبیر میں اتفاق ہے اور کچھ نہیں کہ مرئی وہ اللون سواء کان کثیفا او رقیقا والذی لاجرم لہ | ہے جس کا رنگ نظر آئے بلکہ مرئی کا رنگ ہی نظر آتا ہے شاخصا بعد الجفاف رقیق و لیس اللون جرماً |

خواہ کثیف ہو یا رقیق ہو اور وہ کہ جس کا جرم خشک ہوجانے کی بعد ابھرا ہوا نظر نہ آئے وہ رقیق ہے، اور رنگ کوئی جرم فتبین ان اللون معتبر فی هذا الفریق دون | نہیں تو ظاہر ہوگیا کہ رنگ معتبر ہے اس تطہیر اور حوض کے الآخر ولومشت الشروح علی التفسیر فی | فریق میں نہ کہ دوسرے فریق میں، اور اگر شروح میں الموضعین بماهو مؤدی نفس الالفاظ لم یقع | دونوں مقامات پر وہی تفسیر ہوتی جو نفس الفاظ سے مستفاد الاشتباہ لکنهم کما فسروا فی مسألة التطهیر بما | ہوتی ہے تو کوئی اشتباہ واقع نہ ہوتا لیکن انہوں نے تطہیر کے مسئلہ میں یری بعد الجفاف ومالایری

---

[1] غنیۃ المستملی الشرط الثانی الطهارة سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۸۳ Page 82 of 756

Fatawa Razawiyya Volume Three

[Arabic Column] After it, as mentioned from 'Ghayat al-Bayan', and from it in 'Al-Bahr', 'Ash-Shurunbulaliyah', and 'At-Tahawi' on 'Al-Maraqi', and similarly in 'Ad-Durr' and others. Likewise, they interpreted both as 'possessing body' (jurm) and 'not possessing body' in the issue of leather socks (khuff), as previously mentioned. Thus, the mind mistakenly thought that the intended meaning in both places is the same, but it is not so. Rather, it is according to its apparent meaning in the issue of purification, and it is interpreted by the visibility or non-visibility of the body in the other group. So this is the elegant research which, if their attention had turned towards it: (1) 'Al-Inayah' and 'Chalpi' would not have interpreted them in the first group by 'embodied' and others. (2) Nor would 'Al-Quhistani' have quoted the text of 'As-Sughra' in it. (3) Nor 'Al-Birjandi' the text of the commentary of 'At-Tahawi'. (4) Nor would they have established a contradiction between it and what is in some other commentaries. (5) Nor would 'Al-Bahr' and 'T' [Tahawi] have made the meaning of the two statements one. (6) Nor would 'Abdul Halim' have quoted a single instance in it. (7) Nor proven the contradiction between two occurrences in multiple places. (8) Nor made 'Al-Mansur' here the first. (9) Nor would 'Al-Hilyah' have diverted the words of 'Al-Ghayah' to something other than the intended meaning. As for some urines, color may be seen in them, so it does not undermine the example, and the meaning of the speech would not be confined to it. (10) Nor would the words of 'Ash-Shami' have been inconsistent regarding it, for he was certain in the issue of estimation by carrying the visible onto 'the visible body', then he denied it. (11) Nor would he have needed to prefer what is in 'Al-Ghayah' over what does not contradict it at all. (12) Nor hold onto reconciliation, for the words of 'Al-Hidayah' in the issue of leather socks...

[Urdu Column] It has been interpreted in this way: that which becomes visible after drying and that which does not become visible after drying, as mentioned from 'Ghayat al-Bayan', and from it is in 'Bahr', 'Shurunbulaliyah', 'Tahawi on Maraqi al-Falah' and like it in 'Durr' etc. Similarly, they interpreted both in the issue of socks as 'possessing body' and 'not possessing body' as passed. So the misconception moves in this direction that the intended meaning in both places is one, whereas this is not the case. Rather, this issue is apparent in purification, and it is interpreted with seeing or not seeing the body in the other group. So this is the elegant research. If their attention had turned towards this, then 'Inayah' and 'Chalpi' would not have interpreted 'embodied' and 'non-embodied' in the first group as 'visible' and 'invisible'. Nor would 'Quhistani' have quoted the text of 'Sughra' in it, nor would

'Birjandi' have quoted the text of the commentary of 'Tahawi', and nor would they have established a contradiction between it and the texts of some commentaries, and nor would 'Bahr' and 'T' [Tahawi] have stated one meaning for both statements, and nor regarding this would 'Abdul Halim' have quoted what he quoted, and nor would they have proven the contradiction of both instances in multiple places, and nor would they have declared the first one here as firm, and nor would 'Hilyah' have turned the speech of 'Ghayah' to something other than the intended sense. However, some urine-colored ones appear; there is no harm in mentioning this as an example, and they would not have confined the intention of the speech to it. And nor would the speech of 'Shami' be inconsistent in it, that in the explanation of quantity, he declared the visible as 'the visible body' then he denied it, and nor would they have given preference without reason to what is described in 'Ghayah' over such a thing which was not at all contradictory and...

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरा

[अरबी कॉलम] इसके बाद, जैसा कि 'ग़ायत अल-बयान' से गुज़रा, और उससे 'अल-बहर', 'अश-शरुनबुलालीय' और 'मराक़ी' पर 'तहावी' में, और 'अद-दुर्र' आदि में इसी तरह है। उसी तरह उन्होंने मोज़ों (ख़ुफ़) के मसले में 'पिंड वाले' (जर्म) और 'बिना पिंड वाले' से व्याख्या की जैसा कि पहले गुज़रा। तो भ्रम इस ओर गया कि दोनों स्थानों पर अर्थ एक ही है, जबकि ऐसा नहीं है। बल्कि शुद्धिकरण के मसले में यह अपने ज़ाहिर पर है और दूसरे समूह में पिंड के दिखने या न दिखने पर आधारित है। तो यही वह परिष्कृत शोध है, जिसकी ओर यदि उनका ध्यान जाता: (1) तो 'अल-इनाया' और 'चल्पी' पहले समूह में दोनों की व्याख्या 'साकार' आदि से न करते। (2) न ही 'अल-क़ुहिस्तानी' इसमें 'सुग़रा' की इबारत नक़ल करते। (3) न ही 'अल-बिरजंदी' 'तहावी' की शरह की इबारत नक़ल करते। (4) न ही वे इसके और कुछ अन्य व्याख्याओं के बीच विरोध स्थापित करते। (5) न ही 'अल-बहर' और 'त' [तहावी] दोनों इबारतों का एक ही अर्थ बताते। (6) न ही इसमें 'अब्दुल हलीम' एक भी उदाहरण नक़ल करते। (7) न ही उन्होंने दो प्रविष्टियों के बीच विरोध को कई जगहों पर सिद्ध किया होता। (8) न ही 'अल-मंसूर' ने यहाँ पहले वाले को बनाया होता। (9) न ही 'अल-हिलिया', 'ग़ायत' के कलाम को उसके मूल अर्थ के अलावा किसी और ओर मोड़ते। जहाँ तक कुछ पेशाब का सवाल है, उनमें रंग देखा जा सकता है, इसलिए यह उदाहरण को दोषपूर्ण नहीं बनाता, और कलाम के अर्थ को इसमें सीमित नहीं किया जाता। (10) न ही 'अश-शामी' का कलाम इसमें अस्थिर होता, क्योंकि उन्होंने मात्रा के मसले में दृश्य को 'दृश्य पिंड' पर आधारित मानकर निश्चित किया, फिर उसका इनकार किया। (11) न ही उन्हें 'ग़ायत' में वर्णित बात को ऐसी चीज़ पर बिना वजह प्राथमिकता देने की आवश्यकता होती जो बिल्कुल भी विरोधी नहीं थी। (12) न ही वे समझौते का सहारा लेते, क्योंकि मोज़ों के मसले में 'हिदाया' का कलाम...

[उर्दू कॉलम] इस तरह व्याख्या की गई है कि वह जो सूख जाने के बाद दिखाई दे और वह जो सूखने के बाद दिखाई न दे जैसा कि ग़ायतुल् बयान से गुज़रा, और इसी से बहर, शरुनबुलालीय, तहावी अली मराक़ी अल-फ़लाह और इसी की मिसाल दुर्र वग़ैरह में है, इसी तरह उन्होंने मोज़े के मसले में दोनों की तफ़सीर जर्मदार और ग़ैर जर्मदार से की जैसा कि गुज़रा तो वह्ल इस तरफ़ मुंतक़िल होता है कि दोनों जगह मुराद वाहिद है हालांकि यह बात नहीं है बल्कि यह मसला ततहीर में ज़ाहिर है और जर्म के देखने न देखने के साथ फ़रीक़-ए-आख़िर में यह मुव्वल है तो यही तहक़ीक़-ए-अनीक़ है अगर उनकी तवज्जो इस तरफ़ हो जाती तो इनाया और चल्पी फ़रीक़-ए-अव्वल में जिस्म वाली और ग़ैर

जिस्म वाली से मरई और ग़ैर मरई की तफ़सीर न करते और न क़ुहिस्तानी इसमें सुग़रा की इबारत नक़ल करते और न बिरजंदी तहावी की शरह की इबारत नक़ल करते, और न वह इसमें और बाज़ शरुह की इबारतों में ख़िलाफ़ क़ायम करते और न बहर और त [तहावी] दोनों इबारतों का एक मा'नी बताते और न इस बारे में अब्दुल हलीम वह नक़ल करते जो उन्होंने नक़ल किया, और न वह दोनों मवाक़े का ख़िलाफ़ मुतअद्दद जगह साबित करते और न वह यहाँ पहले को मज़बूत क़ऱार देते, और न हिलिया, ग़ायत के कलाम को ग़ैर मुहम्मल पर फेरते ताहम बाज़ पेशाब रंग वाले नज़र आते हैं इसको मिसाल के तौर पर ज़िक्र करने में कोई मुज़ाइक़ा नहीं और वह कलाम की मुराद को इसमें मुनहसिर न करते, और न शामी का कलाम इसमें मुज़तरिब होता कि मिक़दार के बयान में उन्होंने मरई को मरई अल-जर्म क़रार देकर फिर उन्होंने इंकार कर दिया, और न वह ग़ायत के बयान कर्दा को बिलावजह तरजीह देते ऐसी चीज़ पर जो बिल्कुल मुख़ालिफ़ न थी और

पृष्ठ 83/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[عربی کالم] بعده كما مر عن غاية البيان وعنها فى البحر والشرنبلالية والطهطاوى على المراقى ومثله فى الدر وغيره كذلك فسروا بهما ذا الجرم وغير ذي الجرم في مسألة الخف كما تقدم فذهب الوهل الى ان المراد واحد في الموضعين وليس كذلك بل هو على ظاهره في مسألة التطهير ومؤول برؤية الجرم وعدمها في الفريق الأخر فهذا هو التحقيق الانيق الذى لو حانت منهم التفاتة اليه (١)لما فسرهما العناية وچلپی في الفريق الاول بالمستجسدة وغيرها (٢) ولا نقل فيها القهستانى عبارة الصغرى (٣) ولا البرجندى عبارة شرح الطحاوى (۴) ولا نصب الخلاف بينهما وبين ما فى بعض الشروح (۵) ولا جعل البحر وط معنى العبارتين واحدا ولا نقل فيها عبدالحليم مورد واحد (٦)ولا اثبت الخلاف بين واردين غير مورد واحد (٧)ولا جعل المنصور ههنا الاول (٨)ولا صرف الحلية كلام الغاية الى غير المحمل اما كون بعض الابوال قد يرى له لون فلا يقدح في المثال ولا يحصر فيه مراد المقال (٩) ولا اضطرب كلام الشامى فيه فجزم فى مسألة التقدير بحمل المرئى على مرئى الجرم ثم انكره (١٠) ولا احتاج الى ترجيح ما فى الغاية على مالا يخالفه اصلا (١١) ولا تمسك بالتوفيق فان كلام الهداية فى مسئلة الخف

[اردو کالم] اس طرح تفسیر کی ہے کہ وہ جو خشک ہو جانے کے بعد نظر آئے اور وہ جو خشک ہونے کے بعد نظر نہ آئے جیسا کہ غایۃ البیان سے گزرا، اور اسی سے بحر، شرنبلالیہ، طحطاوی علی مراقی الفلاح اور اسی کی مثل دُر وغیرہ میں ہے، اسی طرح انہوں نے موزے کے مسئلہ میں دونوں کی تفسیر جرم دار اور غیر جرم دار سے کی جیسا کہ گزرا تو وہل اس طرف منتقل ہوتا ہے کہ دونوں جگہ مراد واحد ہے حالانکہ یہ بات نہیں ہے بلکہ یہ مسئلہ تطہیر میں ظاہر ہے اور جرم کے دیکھنے نہ دیکھنے کے ساتھ فریقِ آخر میں یہ موول ہے تو یہی تحقیق انیق ہے اگر ان کی توجہ اس طرف ہو جاتی تو عنایہ اور چلپی فریقِ اول میں جسم والی اور غیر جسم والی سے مرئی

اور غیر مرئی کی تفسیر نہ کرتے اور نہ قہستانی اس میں صغریٰ کی عبارت نقل کرتے اور نہ برجندی طحاوی کی شرح کی عبارت نقل کرتے، اور نہ وہ اس میں اور بعض شروح کی عبارات میں خلاف قائم کرتے اور نہ بحر اور ط دونوں عبارتوں کا ایک معنی بتاتے اور نہ اس بارے میں عبدالحلیم وہ نقل کرتے جو انہوں نے نقل کیا، اور نہ وہ دونوں مواقع کا خلاف متعدد جگہ ثابت کرتے اور نہ وہ یہاں پہلے کو مضبوط قرار دیتے، اور نہ حلیہ، غایۃ کے کلام کو غیر محمل پر پھیرتے تاہم بعض پیشاب رنگ والے نظر آتے ہیں اس کو مثال کے طور پر ذکر کرنے میں کوئی مضائقہ نہیں اور وہ کلام کی مراد کو اس میں منحصر نہ کرتے، اور نہ شامی کا کلام اس میں مضطرب ہوتا کہ مقدار کے بیان میں انہوں نے مرئی کو مرئی الجرم قرار دے کر پھر انہوں نے انکار کردیا، اور نہ وہ غایۃ کے بیان کردہ کو بلاوجہ ترجیح دیتے ایسی چیز پر جو بالکل مخالف نہ تھی اور

Fatawa Razawiyya Volume Three

(Arabic text) "He said: If a impurity having mass, like dung, blood, or semen etc., gets on the leather sock (Khuff)... and similarly the statement of Al-Khaniyah regarding the issue of estimation as mentioned before. Both are from another category. Thus, the thin blood being non-visible in it does not contradict it being visible in the issue of purification. (1) Neither did the two masters raise an objection against Miskeen's statement based on the phrase from Al-Sughra (2), nor did Al-Jawharah interpret 'mass' as 'color' in the issue of the leather sock. Where is mass and where is color? Where is the essence (Ay'n) and where is the trace (Asar)? All this arose from failing to distinguish between the two situations. This is a common slip; I have not seen anyone who noticed it or pointed it out. And Allah is the Granter of success, there is no Lord besides Him. And may Allah's peace and blessings be upon His chosen one (Mustafa), his family, companions, and those who follow him."

Neither would they make the reconciliation of texts a proof, because in the issue of the leather sock where Al-Hidayah said: "When such impurity gets on the leather sock which has mass, like dung, blood, and semen etc.", similarly the statement of Al-Khaniyah regarding the issue of quantity which just passed, both these statements are about another group. Therefore, thin blood being non-visible in the issue of the leather sock is not contrary to it being visible in the issue of purification. Neither would the two leaders object to Allama Miskeen's statement based on the phrase of Al-Sughra, nor would Al-Jawhara interpret 'mass' (Jurm) as 'color' in the issue of the leather sock. Where is color and where is mass? Where is color and where is essence, and where is trace? All these matters mentioned arose because a distinction was not made between the two positions (groups). This is a very obvious carelessness. I have not seen anyone paying attention to or drawing attention to this carelessness. Allah is the Giver of success and there is no Lord but He. And may Allah Almighty's peace and blessings be upon Mustafa, his family, companions, and followers. (T)

Third Premise: It has been proven that 'thin' (Raqeeq) is that which, when it falls on the ground etc., its core (body) cannot be felt after drying. It is self-evident that this will happen with that thing which completely spreads out while flowing; otherwise, if there are parts one above the other, then the core will certainly be felt. So it is clear by definitive proof that 'thin' here is the name for that first hindering type. This is the researched meaning of 'thin' which will not be found except in these lines. And with Allah is success, and all praise is for Him for guidance to the path.

(Annotation) i.e., the reconciliation is in its place. The leather sock is purified from thick blood by scraping, and thin blood that gets on a garment is estimated by area. But it is not correct to transfer this to the issue of purification mentioned by Al-Shami, for it is not correct to make thin blood non-visible in that. 12 From him, may he be forgiven (M).

Meaning, the reconciliation is in its place: on being smeared with thick blood, the leather sock can be purified by rubbing. And for that thin blood which gets on a cloth, the extent of its spread will be estimated. However, this ruling will not be transferred to the issue of purification stated by Allama Shami. Therefore, in this issue, it is not correct to declare thin blood as non-visible. (T)

1- Al-Hidayah, Chapter on Impurities, Arabiyah Press, Karachi, 1/56. Page 84 of 756

फ़तावा रज़विया खंड तीन

(अरबी पाठ) "उन्होंने कहा: यदि खफ़ (चमड़े के मोज़े) पर ऐसी गंदगी लग जाए जिसका द्रव्यमान (जर्म) हो, जैसे गोबर, रक्त और वीर्य आदि... और इसी तरह अल-खनिया का कथन मात्रा के मसले में जैसा कि पहले गुज़रा। वे दोनों दूसरे समूह से हैं। अतः इसमें पतले रक्त का गैर-दृश्य (अनदेखा) होना, शुद्धिकरण (ततहीर) के मसले में इसके दृश्य होने के विपरीत नहीं है। (१) न ही दोनों आकाओं ने अल्लामा मिस्कीन के कथन पर अल-सुगरा के वाक्यांश से आपत्ति की (२), और न ही अल-जौहरा ने खफ़ के मसले में 'जर्म' की व्याख्या रंग से की। कहाँ द्रव्यमान (जर्म) और कहाँ रंग? कहाँ दृश्य (ऐन) और कहाँ प्रभाव (असर)? यह सब दोनों स्थितियों के बीच अंतर न करने के कारण उत्पन्न हुआ। यह एक आम चूक है; मैंने किसी को नहीं देखा जिसने इस पर ध्यान दिया हो या ध्यान दिलाया हो। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है, उसके अलावा कोई रब नहीं। और अल्लाह तआला का दरूद हो उसके चुने हुए (मुस्तफ़ा) पर, और उनकी आल, असहाब और उनके अनुयायियों पर।"

न ही वे इबारतों के मेल (तौफ़ीक) को प्रमाण बनाते क्योंकि खफ़ के मसले में जहाँ हिदाया ने कहा, "जब मोज़े को ऐसी नजासत (गंदगी) लग जाए जिसका जर्म (द्रव्यमान) होता है जैसे गोबर, खून और मनी (वीर्य) आदि", इसी तरह मात्रा (मिक़दार) के मसले में खानिया का कलाम जो अभी गुज़रा, ये दोनों कलाम दूसरे पक्ष के बारे में हैं। अतः रक़ीक़ (पतले) खून का खफ़ के मसले में गैर-मई (अदृश्य) होना, ततहीर (शुद्धिकरण) के मसले में मई (दृश्य) होने के विरुद्ध नहीं है। और न ही दोनों रहनुमा, अल्लामा मिस्कीन के कलाम पर सुग़रा की इबारत से एतराज़ (आपत्ति) करते और न जौहरा मोज़े के मसले में जर्म की तफ़सीर रंग से करते। कहाँ रंग और कहाँ जर्म, कहाँ रंग और कहाँ ऐन और कहाँ असर। उक्त तमाम मामले इसलिए पैदा हुए कि दोनों मक़ामों (पक्षों) में फ़र्क़ नहीं किया गया, और यह बहुत स्पष्ट बे-एहतियाती है। इस बे-एहतियाती की ओर तवज्जो (ध्यान) करने वाला या दिलाने वाला मुझे कोई नज़र नहीं आया। वल्लाहुल् मुवफ़्फ़िक़ वला रब्बा सिवाह व सल्लल्लाहु तआला अला मुस्तफ़ाह व आलिही व सहबिही वमन वालाह। (त)

मुक़द्दमा सालिसा (तीसरी प्रस्तावना): साबित हुआ कि रक़ीक़ (पतला) वह है कि ज़मीन आदि जिस चीज़ पर पड़े, सूखने के बाद उसका दिल (पिंड) महसूस न रहे। और साफ़ ज़ाहिर है कि यह उसी चीज़ में होगा जो बहने में पूरी तरह फैल जाए, वरना अगर भाग ऊपर-नीचे हों तो ज़रूर दिल महसूस होगा। तो पक्के सबूत से साफ़ हुआ कि यहाँ रक़ीक़ उस पहली बाधा देने वाली क़िस्म का नाम है।

यही रक़ीक़ के अर्थ का शोध है जो इन पंक्तियों के अलावा कहीं नहीं मिलेगा। वबिल्लाहित् तौफ़ीक वलहुल हम्दु अला हिदायतित् तरीक़।

(अरबी हाशिये का अनुवाद) यानी तौफ़ीक अपनी जगह पर है। गाढ़ा खून लगने पर मोज़े को रगड़ कर पाक किया जा सकता है, और वह पतला खून जो कपड़े पर लगे तो उसके फैलाव की मात्रा का अंदाज़ा किया जाएगा। लेकिन इस हुक्म को अल्लामा शामी द्वारा बताए गए ततहीर के मसले में स्थानांतरित (नक़ल) नहीं किया जाएगा, इसलिए उस मसले में पतले खून को गैर-मईं (अदृश्य) क़रार देना सही नहीं है। (त)

१- अल-हिदाया, बाबुल अनजास, मतबा अरबिया, कराची, १/५६ पृष्ठ ८४/७५६

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

قال اذا اصاب الخف نجاسة لها جرم كالروث والدم والمنى الخ وكذا كلام الخانية فى مسألة التقدير كما تقدم انفا وهما من الفريق عه الآخر فكون الدم الرقيق من غير المرئى فيه لا ينافي كونه مرئياً فى مسئلة التطهير (۱) ولا اورد السيدان على كلام مسكين عبارة الصغرى (۲) ولا فسر الجوهرة فى مسألة الخف الجرم باللون و اين الجرم و اين اللون و اين العين و اين الاثر فانما نشأ كل ذلك من عدم الفرق بين المقامين وهذه زلة فاشية لم ار من تنبه لها او نبه عليها والله الموفق لار ب سواه وصلى الله تعالى على مصطفاه وآله وصحبه ومن والاه*

نہ وہ عبارتوں کی توفیق کو دلیل بناتے کیونکہ خف کے مسئلہ میں جہاں ہدایہ نے کہا، جب موزے کو ایسی نجاست لگ جائے جس کا جرم ہوتا ہے جیسے گوبر ، خون اور منی الخ اسی طرح مقدار کے مسئلہ میں خانیہ کا کلام جو ابھی گزرا، یہ دونوں کلام دوسرے فریق کے بارے میں ہیں پس رقیق خون کا خف کے مسئلہ میں غیر مرئی ہونا تطہیر کے مسئلہ میں مرئی ہونے کے مخالف نہیں ، اور نہ دونوں رہنما، علامہ مسکین کے کلام پر صغری کی عبارت سے اعتراض کرتے اور نہ جوہرہ موزے کے مسئلہ میں جرم کی تفسیر رنگ سے کرتے ، کہاں رنگ اور کہاں جرم، کہاں رنگ اور کہاں عین اور کہاں اثر ، مذکورہ تمام امور اس لئے پیدا ہوئے کہ دونوں مقاموں (فریقوں) میں فرق نہ کیا گیا، اور یہ بہت واضح بے احتیاطی ہے اس بے احتیاطی کی توجہ کرنے والا یا توجہ دلانے والا مجھے کوئی نظر نہیں آیا والله الموفق ولارب سواہ وصلی اللہ تعالیٰ مصطفاہ و آلہ و صحبہ ومن والاہ۔ (ت)

مقدمہ ثالثہ: ثابت ہوا کہ رقیق وہ ہے کہ زمین وغیرہ جس شئی پر پڑے خشک ہونے کی بعد اس کا دل محسوس نہ رہے اور بالبداہۃ ظاہر کہ یہ اُسی شئی میں ہوگا جو بہنے میں تمام و کمال پھیل

جائے ورنہ اجزاء زیر و بالاتر ہے تو ضرور دل محسوس ہوگا تو دلیل قطعی سے روشن ہوا کہ یہاں رقیق اس مانع قسم اول کا نام ہے یہ ہی وہ تحقیق معنی رقیق کہ ان سطور کے سوا نہ ملے گی وباللہ التوفیق و لہ الحمد علی ھدایۃ الطریق۔

عه ای فالتوفیق فی محله فیطهر الخف من دم غلیظ بالحت ویقدر رقیق اصاب ثوباً بالمساحة لکن لا یصح نقله الی مسألة التطهیر التی فیها کلام الشامي فالدم الرقیق لا یصح جعله فیها غیر مرئی ۱۲ منه غفرله (م)

یعنی توفیق اپنی جگہ پر ہے غلیظ خون لگنے پر موزے کو رگڑ کر پاک کیا جا سکتا ہے اور وہ رقیق خون جو کپڑے کو لگے تو اس کے پھیلاؤ کی مقدار کا اندازہ کیا جائے گا لیکن اس حکم کو علامہ شامی کے بیان کردہ تطہیر کے مسئلہ میں منتقل نہیں کیا جائے گا لہٰذا اس مسئلہ میں رقیق خون کو غیر مرئی قرار دینا صحیح نہیں ہے۔ (ت)

۱- الہدایۃ باب الانجاس مطبع عربیہ کراچی ۱/۵۶ Page 84 of 756

Fatawa Rizvia, Volume 3

Then I say: (1) It is evident that water in its essence is such that it has been described as 'without substance' (be-jurm). Now, there are three ways in which another substance (jurm-dar) can mix with it: (1) Istihlak (Consumption/Dissolution) (2) Ikhtilat (Mixture) (3) Imtizaj (Union/Blending)

Istihlak: This is when that substance gets lost in it and its substance is not visible from the water, like strained syrup, in which sugar particles are certainly present but their substance is not felt at all. If poured, all its parts will spread like pure water, nowhere will any mass (dul) remain. Thus, the liquidity (riqqat) remains in its state, although there will surely be a difference in relative liquidity as mixed and unmixed cannot be identical.

Ikhtilat: This is when its substance remains entirely or partially, but does not make the water 'substantive'. When poured, its parts remain separate and the water spreads by leaving them behind, like unstrained syrup in which some pieces of sugar or candy are left; those pieces were in 'Ikhtilat', and those that dissolved were in 'Istihlak', but in them nothing prevented the water particles from spreading.

Imtizaj: This is when the water and that substance become one essence, so that the water cannot flow leaving it behind, but rather it remains mixed with it everywhere. It is evident that this combined mixture cannot spread completely and perfectly, and like a substantive thing, it will certainly retain some mass (dul) upon the cessation of flow. In the first two cases, water remains at its liquidity. In the first, it's clear as no substance is felt there, and in the second, the substance is separate and water is separate, so water remains liquid as usual, like pond water on pebbly or rocky ground, or if pieces of stone or iron are put in a vessel. No sane person would say that because of this, the water itself is no longer liquid. This is unlike the third case where undoubtedly the liquidity is gone and the nature has changed. This is what is meant by 'decline of nature' (zawal-e-tab'), and all praise be to Allah.

I say: Now, by the grace of Allah Almighty, all sayings have become consistent and the meanings of the scholars' indications clear:

Firstly: Relative liquidity differs greatly in weakness, strength, scarcity, and abundance, the description of which passed above. Its limit is upon the substance becoming solid; as long as any flow remains, liquidity remains, however slight. There is no doubt that in all three cases, flow is present, so liquidity is also present, albeit to

varying degrees. Therefore, in the first two cases, the Researcher (Muhaqqiq) absolutely declared the water's liquidity dominant, and in the third case, Imam Natifi declared it overwhelmed.

Secondly: Liquidity in the sense established by the Researcher, i.e., being 'without substance' and the absence of mass after the cessation of flow, does not have differences among individuals. If any mass (dul) occurs, this liquidity will disappear, it will not exist at all, it will remain in its original state. Therefore, regarding the first two cases, in Ghunyah:

(Note: It is stated in Kafi, Kifayah, and Binayah: Imtizaj is the mixing between two things until differentiation is impossible. End. [From the author, may he be forgiven]) | Imtizaj is when two things mix in such a way that no distinction can be made between them. End. (Translator)

May he be forgiven (M)

Page 85 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

फिर मैं कहता हूँ: (१) यह स्पष्ट है कि पानी अपने आप में ऐसा ही है जिसे 'बिना द्रव्य' (बे-जुर्म) के रूप में वर्णित किया गया है। अब इसमें किसी अन्य द्रव्ययुक्त वस्तु के मिलने की तीन स्थितियाँ हैं: (१) इस्तेहलाक (विलीन होना) (२) इख़्तिलात (मिश्रण) (३) इम्तिज़ाज (एकीकरण)

इस्तेहलाक: यह कि वह वस्तु उसमें मिलकर खो जाए और पानी से उसका द्रव्य प्रकट न हो, जैसे छना हुआ शरबत कि उसमें चीनी के कण निश्चित रूप से हैं लेकिन उनका द्रव्य बिल्कुल महसूस नहीं होता। यदि बहाया जाए तो शुद्ध पानी की तरह उसके सभी कण फैल जाएँगे, कहीं भी कोई पिण्ड (दुल) शेष नहीं रहेगा। अतः तरलता (रिक़्क़त) अपनी स्थिति में बनी रहती है, यद्यपि सापेक्ष तरलता में निश्चित रूप से अंतर आएगा क्योंकि मिश्रित और अमिश्रित एक समान नहीं हो सकते।

इख़्तिलात: यह कि उसका द्रव्य पूरा या आंशिक रूप से बना रहे लेकिन पानी को द्रव्ययुक्त न बनाए। बहाने पर उसके कण अलग रह जाएँ और पानी उन्हें छोड़कर स्वयं फैल जाए, जैसे बिना छना शरबत जिसमें चीनी या बताशे के कुछ टुकड़े रह गए हों; उन टुकड़ों का 'इख़्तिलात' था और जितने घुल गए उनका 'इस्तेहलाक', लेकिन उनमें कोई भी पानी के कणों को फैलने से रोकने वाला न हुआ।

इम्तिज़ाज: यह कि पानी और वह वस्तु मिलकर एक अस्तित्व (ज़ात) हो गए हों, कि पानी उसे छोड़कर न बह सके बल्कि हर जगह वह उसके साथ घुला-मिला रहे। यह स्पष्ट है कि यह संयुक्त मिश्रण पूर्ण रूप से नहीं फैल सकेगा और द्रव्ययुक्त वस्तु की तरह प्रवाह रुकने पर निश्चित रूप से कुछ पिण्ड (दुल) रखेगा। पहली दो स्थितियों में पानी अपनी तरलता पर है। पहली में तो स्पष्ट है कि वहाँ कोई द्रव्य महसूस ही नहीं होता, और दूसरी में द्रव्य अलग है और पानी अलग, तो पानी पूर्ववत तरल ही रहा जैसे कंकरीली या पथरीली ज़मीन में तालाब का पानी या जिस लोटे में पत्थर या लोहे के टुकड़े डाल दिए जाएँ। कोई बुद्धिमान यह नहीं कहेगा कि इससे पानी ही तरल नहीं रहा। इसके विपरीत तीसरी स्थिति है जहाँ निस्संदेह तरलता समाप्त हो गई और प्रकृति बदल गई। प्रकृति के ह्रास (ज़वाल-ए-तब) से यही अभिप्राय है, और अल्लाह की प्रशंसा है।

मैं कहता हूँ: अब अल्लाह तआला की कृपा से सभी कथन एकमत हो गए और विद्वानों के संकेतों के अर्थ स्पष्ट हो गए:

प्रथम: सापेक्ष तरलता कमजोरी, शक्ति, अल्पता और प्रचुरता में अत्यधिक भिन्न होती है, जिसका वर्णन ऊपर बीत चुका है। इसकी चरम सीमा वस्तु के ठोस हो जाने पर है; जब तक प्रवाह कुछ भी शेष है, तरलता बनी रहती है, चाहे वह कितनी ही सूक्ष्म क्यों न हो। इसमें कोई संदेह नहीं कि तीनों स्थितियों में प्रवाह मौजूद है, इसलिए तरलता भी मौजूद है यद्यपि अलग-अलग मात्रा में। अतः पहली दो स्थितियों में शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) ने पूर्णतः पानी की तरलता को प्रभावी बताया और तीसरी स्थिति में इमाम नातिफ़ी ने इसे दबा हुआ (मगलूब)।

द्वितीय: तरलता जिस अर्थ में शोधकर्ता द्वारा सिद्ध हुई, अर्थात द्रव्यहीन होना और प्रवाह रुकने के बाद पिण्ड (दुल) का न रहना, इसमें व्यक्तियों के बीच अंतर नहीं है। यदि थोड़ा भी पिण्ड हो गया तो यह तरलता लुप्त हो जाएगी, बिल्कुल नहीं रहेगी, वह अपनी मूल स्थिति में बनी रहेगी। इसलिए पहली दो स्थितियों के बारे में ग़ुनया में:

(टिप्पणी: काफ़ी, किफ़ाया और बिनाया में कहा गया है: इम्तिज़ाज दो चीज़ों के बीच का ऐसा मिश्रण है कि अंतर करना असंभव हो जाए। समाप्त। [लेखक की ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए]) | इम्तिज़ाज यह है कि दो चीज़ें आपस में इस तरह मिल जाएँ कि उनके बीच अंतर न किया जा सके। समाप्त। (अनुवादक)

उन्हें क्षमा किया जाए (म)

पृष्ठ 85/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

ثم اقول: (۱) ظاہر ہے کہ پانی فی نفسہ ایسا ہی ہے جسے بے جرم سے تعبیر کیا گیا اب اُس میں دوسری شی جرم دار ملنے کی تین صورتیں ہیں: (۱) استہلاک (۲) اختلاط (۳) امتزاج

استہلاک: یہ کہ وہ شی اس میں مل کر گم ہو جائے پانی سے اُس کا جرم ظاہر نہ ہو جیسے چھنا ہوا شربت کہ اُس میں شکر کے اجزاء ضرور ہیں مگر ان کا جرم اصلاً محسوس نہ رہا اسی بہائے تو خالص پانی کی طرح اس کے سب اجزاء پھیل جائیں گے کہیں دُل نہ ر ہے گا تورقت بحال خود باقی ہے اگرچہ رقت اضافہ میں ضرور فرق آئے گا کہ مخلوط و نامخلوط یکساں نہیں ہو سکتے۔

اختلاط : یہ کہ اُس کا جرم لگا یا بعضاً باقی رہے مگر پانی کو جرم دار نہ کرے بہانے میں اس کے اجزاء الگ رہ جائیں اور پانی انہیں چھوڑ کر خود پھیل جائے جیسے بے چھنا شربت جس میں شکر یا بتاشوں کے کچھ ریزے رہ گئے ہوں ان ریزوں کو اختلاط تھا اور جس قدر کھل گئے اُن کا استہلاک مگر ان میں کوئی پانی کے اجزاء پھیلنے کو مانع نہ ہوا۔

امتزاج : عہ یہ کہ پانی اور وہ شی مل کر ایک ذات ہو گئے ہوں پانی اُسے چھوڑ کر نہ بہہ سکے بلکلہ ہر جگہ وہ اس کے ساتھ گھال میل رہے ظاہر ہے کہ یہ مجموع مرکب تمام و کمال نہ پھیل سکے گا اور ضرور جرم دار شی کی طرح ختم سیلان پر بھی دُل رکھے گا۔ پہلی دو صورتوں میں پانی اپنی رقت پر ہے اول پر تو ظاہر کہ وہاں کوئی جرم محسوس ہی نہ ہو اور دوم پر جرم جدا ہے اور پانی جدا تو پانی بدستور رقیق ہی رہا جیسے کنکریلی یا سنگلاخ زمین میں تالاب کا پانی یا جس لوٹے میں پتھر لوہے کے ٹکڑے ڈال دیے جائیں کوئی عاقل نہ کہے گا کہ اس سے پانی ہی رقیق نہ

رہا بخلاف صورت سوم کہ بلاشبہ رقت زائل اور طبیعت متبدل ہوئی زوال طبع سے یہی مراد ہے واللہ الحمد۔

اقول: اب بتوفیقہ تعالیٰ سب اقوال متوافق ہو گئے اور اشارات علماء کے معنی واضح،

اولاً: رقت اضافیہ ضعف وقوت وقلت و کثرت میں بشدت متفاوت ہوتی ہے جس کا بیان اوپر گزرا اس کی انتہا توشی کے جامد ہو جانے پر ہے جب تک سیلان کچھ بھی باقی ہے رقت باقی ہے اگرچہ کیسی ہی خفیف اور شک نہیں کہ تینو ں صورتوں میں سیلان موجود تورقت بھی موجود اگرچہ بتفاوت لہٰذا دو صورت اولیٰ میں محقق علی الاطلاق نے رقت آب کو غالب بتایا اور صورت ثالثہ میں امام ناطفی نے مغلوب۔

ثانیاً: رقت جس معنی پر محقق ہوئی یعنی بے جرم ہونا ختم سیلان کے بعد دُل نہ رہنا اس میں تفاوت افراد نہیں دُل اگر کچھ بھی ہو گیا یہ رقت معدوم ہو جائے گی اصلاً نہ ہو گا بحال خود باقی رہے گی لہٰذا دو صورت اولیٰ کو غنیہ میں

عہ) کافی وکفایہ وبنایہ میں فرمایا:الامتزاج | امتزاج یہ ہے کہ دو چیزیں آپس میں اس طرح مل جائیں کہ الاختلاط بین شیئین حتی یمتنع التمییز اھ ۱۲ منہ | ان کے درمیان تمیز نہ ہو سکے اھ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

غفرلہ (م)

It was explained in this way that the water remains on its thinness as it was before the mixing, and in the third case, 'Zakheera', 'Tatammah', and 'Hulyah' have stated that the thinness is completely lost.

Thirdly: The statement of 'Khulasa' towards the first two cases that water is evident in them indicates that until there is a mixture, the appearance of water is clear and luminous.

Fourthly: The statement of 'Khaniyah' that if it becomes cohesive, wudu (ablution) is not permissible, is a description of the third case, because the remaining of the 'Dull' (thickness) is due to the cohesion of parts, and in the state of cohesion, 'Dull' necessarily remains.

Fifthly: The noble scholars have given examples of 'Rub' (concentrated fruit juice), 'Dabs' (date syrup), 'Nashastaj' (starch), 'Teen' (clay/mud), and 'Sawiq' (parched barley flour) to explain that even though these substances are liquid and relatively thin, their parts are not devoid of cohesion. Therefore, upon the cessation of flow, 'Dull' necessarily remains in them. 'Rub' (with a damma on the first letter) is fruit juice that has been boiled to a consistency and has become thick and bound. 'Dabs' is 'Dushab' (syrup), and by it absolutely, date syrup is meant, which is extracted according to the method and boiled so much that if lifted with a finger, it clings to the finger. 'Nashastaj' (with a fatha on the first letter) is called 'Nisha' in Arabic and 'Nashastah' in Persian. 'Nashastaj' is its Arabized form; it is when wheat is soaked in water for so long that it starts to ferment and the skins come off. The inner part is finely crushed and strained through a cloth until the wheat parts settle at the bottom and the water stays on top. The water is thrown away, and the settled part is dried. It is obvious that as long as the parts do not settle, they remain mixed with the water. 'Teen' means mud, 'Sawiq' means 'Sattu' (roasted flour). These examples are to be remembered so that the form of thickness remains in mind. We collect them in one verse:

Rub and Dabs and Nasha, Teen and Sawiq, whatever becomes like these, does not remain thin (Raqiq). (Rab, syrup, starch, mud, and sattu; whichever among these becomes thick will not remain thin. - Translator)

Sixthly: Restricting 'Sawiq' to being 'mixed' in 'Hidayah', 'Badai', etc., points towards the difference between the second and third cases. If sattu is put into water and it settles at the bottom, and clear water or a slightly mixed part remains on top which

does not make it grainy, then wudu will not be permissible. Therefore, it was said 'like mixed Sawiq', meaning dissolved sattu that becomes blended with water. Alhamdulillah, the definition of the required thinness (Raqat) was established on such a sublime basis that it will not be found outside this treatise. Add one verse from the verses defining 'Ma-e-Mutlaq' (pure water) for its explanation (1).

Know thinness (Raqat) to be that which becomes one level upon flowing, if free from body, provided no hindrance comes forward. (Thinness is that upon flowing the surface becomes even and it does not form a mass, provided there is no hindrance. - Translator)

Or say it like this:

फतावा रजविया जिल्द 3

इस तरह बताया कि पानी वैसा ही अपनी तरलता (रक़त) पर रहे जैसा कि मिश्रण से पहले था और तीसरी सूरत को ज़खीरा, तत्म्मा और हुल्या ने इस तरह बताया कि तरलता पूरी तरह खत्म हो गई।

तीसरा: 'खुलासा' का बयान पहली दो सूरतों की ओर इशारा है कि उनमें पानी स्पष्ट है, जिससे संकेत मिलता है कि जब तक पूरी तरह मेल न हो जाए, पानी का स्वरूप स्पष्ट और प्रकाशित रहता है।

चौथा: 'खनियाह' का आदेश कि यदि वह जम जाए (कोहेसिव हो जाए) तो वज़ू जायज़ नहीं है, यह तीसरी सूरत का वर्णन है, क्योंकि 'दुल' (गाढ़ापन) का बाकी रहना हिस्सों के जुड़ाव (तमासुक) से ही होता है और जुड़ाव की स्थिति में 'दुल' अवश्य रहता है।

पाँचवाँ: इसी को विद्वानों ने रब, दबस, नशास्तज, तीन और सवीक़ के उदाहरण देकर बताया कि ये सब चीज़ें यद्यपि बहने वाली और तुलनात्मक रूप से तरल हैं, लेकिन इनके हिस्से जुड़ाव से खाली नहीं हैं और इसलिए बहाव खत्म होने पर उनमें 'दुल' अवश्य रहता है। रब (दम्मा के साथ) फलों का अर्क है जिसे उबालकर गाढ़ा किया गया हो, दबस 'दूशाब' है और इससे पूर्ण रूप से खजूर का शीरा मुराद है जिसे इस तरह उबालें कि उंगली से उठाने पर वह उंगली से चिपक जाए। नशास्तज (फतह के साथ) जिसे अरबी में 'नशा' और फारसी में 'नशास्तह' कहते हैं। नशास्तज इसका अरबीकृत रूप है; यह वह गेहूँ है जिसे पानी में इतनी देर भिगोया जाए कि वह सड़ जाए और छिलका छोड़ दे। अंदर के हिस्से को बारीक पीसकर कपड़े से छान लें यहाँ तक कि गेहूँ के कण नीचे बैठ जाएँ और पानी ऊपर रह जाए, उसे फेंक दें और नीचे बैठे हिस्से को सुखा लें। ज़ाहिर है कि जब तक कण नीचे नहीं बैठेंगे, वे पानी के साथ मिले रहेंगे। 'तीन' यानी कीचड़, 'सवीक़' यानी सत्तू। ये उदाहरण याद रखने योग्य हैं ताकि गाढ़ेपन की सूरत ज़हन में रहे। हम इन्हें एक मिसरे (काव्य पंक्ति) में जमा करते हैं:

रब और दबस और नशास्तज, तीन और सवीक़, जो भी इस तरह का हो गया वह रक़ीक़ (पतला) नहीं रहा। (राब, शीरा, नशास्तह, कीचड़ और सत्तू; इनमें से जो भी गाढ़ा हो जाए वह रक़ीक़ नहीं रहेगा। - अनुवादक)

छठा: 'हिदाया' और 'बदाए' आदि में सवीक़ को 'मिश्रित' के साथ सीमित करना दूसरी और तीसरी सूरत के अंतर की ओर इशारा करता है। पानी में अगर सत्तू डाल दिए कि वे नीचे बैठ गए और निथरा हुआ पानी या हल्का मिश्रण ऊपर रह गया जो उसे दानेदार न बना दे, तो वज़ू जायज़ न होगा। इसलिए 'कल-सवीक़िल मख़लूत' कहा गया यानी घुले हुए सत्तू जो पानी में मिल जाएँ।

अलहम्दुलिल्लाह कि अपेक्षित तरलता (रक़त) की सीमा उस महान आधार पर तय हुई जो इस रिसाले के अलावा कहीं और नहीं मिलेगी। इसके बयान (1) का भी एक शेर 'मा-ए-मुतलक़' (शुद्ध जल) की परिभाषा के शेरों में जोड़ें।

रक़त उसे जानो कि बहने पर सब एक सतह हो जाए, अगर जिस्म से खाली हो और कोई रुकावट सामने न आए। (रक़त यह है कि बहने पर सतह बराबर हो और उसका आयतन न बने बशर्ते कि कोई रुकावट न हो। - अनुवादक)

या यूँ कहिए:

पृष्ठ ८६ / ७५६

یوں بتایا کہ پانی ویساہی اپنی رقت پر رہے جیسا کہ قبل اختلاط تھا اور صورت ثالثہ کو ذخیرہ و تتمہ وحلیہ نے یوں کہ رقت یکسر مسلوب۔

ثالثاً: دو صورت اولیٰ ہی کی طرف خلاصہ کا ارشاد کہ پانی اُس میں آشکار ہو مشیر کہ جب تک امتزاج نہ ہو پانی کا ظہور ظاہر ومستنیر۔

رابعاً: خانیہ کا ارشاد کہ اگر متماسک ہو جائے وضو جائز نہیں صورت ثالثہ ہی کا بیان ہے کہ دُل باقی رہنا تماسک اجزاء ہی سے ہوتا ہے اور بحال تماسک دُل ضرور رہتا ہے۔

خامساً: اسی کو علماء کرام نے رُب ودبس ونشاستج وطین وسویق کی مثالیں دے کر بتایا کہ یہ سب اشیا اگرچہ سائل ورقیق اضافی ہیں مگر ان کے اجزا تماسک سے خالی نہیں ولذا ختم سیلان پر ان میں ضرور دُل رہتا ہے۔ رُب بالضم میووں کا عرق کہ جوش دے کر قوام پر لایا گیا اور غلیظ وبستہ ہو گیا، دبس دوشاب اور اس کے مطلق سے دوشاب خرما مراد کہ عرق خرما بدستور نکال کر اتنا جوش دیں کہ انگلی سے اٹھائیں تو انگلی میں لپٹ آئے، نشاستج بالفتح جسے عربی میں نشا اور فارسی میں نشاستہ کہتے ہیں۔ نشاستج اس کا معرب ہے یہ کہ گیہوں پانی میں اتنی مدت تک بھگوئے جائیں کہ عفونت لے آئیں اور پوست چھوڑ دیں مغز باریک کوٹ کر صافی میں چھان کر رکھیں یہاں تک کہ گیہوں کے اجزا تہ نشین ہو جائیں پانی اوپر رہ جائے اُسے پھینک کر تہ نشین کو سکھا لیں ظاہر ہے کہ جب تک اجزاء تہ نشین نہ ہوں گے پانی سے ممتزج رہیں گے طین، کیچڑ، سویق، ستو یہ مثالیں یاد رکھنے کی ہیں کہ غلظت کی صورت ذہن میں رہے ان کو ہم ایک مصرع میں جمع کریں۔

رُب ودبس ونشاطین وسویق ہر چہ زینگونہ شدنہ ماند رقیق (راب، شیرہ، نشاستہ، کیچڑ اور ستو ان میں سے جو بھی گاڑھا ہو جائے رقیق نہ رہے گا۔ ت)

سادساً: ہدایہ وبدائع وغیر ہما میں سویق کو مخلوط سے مقید فرمانا صورت ثانیہ وثالثہ کے فرق کی طرف اشارہ فرماتا ہے پانی میں اگر ستو ڈال دیے کہ تہہ نشین ہو گئے نتھرا پانی یا خفیف آمیزش کا اوپر رہ گیا جو اُسے جرم دار نہ کر دے تو وضو جائز نہ ہوگا ولہٰذا کالسویق المخلوط فرمایا یعنی گھلے ہوئے ستو کہ پانی سے ممتزج ہو جائیں، الحمد للہ کہ رقت مطلوبہ کی حد بندی اُس وجہ رفیع پر ہوئی کہ اس رسالہ کے غیر میں نہ ملے گی۔ اُس کے بیان (۱) کا بھی ایک شعر اشعار تعریف مائے مطلق میں اضافہ کریں۔

رقت آن دان کہ بہ سیلان ہمہ یک سطح شود خالی از جرم اگر مانع اوناید پیش (رقت یہ ہے کہ بہنے پر سطح برابر ہو اور اس کا حجم نہ بنے بشرطیکہ کوئی مانع نہ ہو۔ ت)

یا یوں کہیے:

Fatawa Rizvia Volume 3

That is thin (rafeeq) whose parts, upon the ending of flow, do not form a mass, except for their precedence and delay in flowing. (A thin thing is that which, after its flow stops, its parts do not form a volume, rather they only have precedence and delay in flowing.)

Alhamdulillah, many benefits were obtained from this illuminating discourse:

Benefit 1: Explanation of nature and its permanence and decline.

Benefit 2: The reality of flow (saylaan) and its philosophy, and the difference between solids and liquids. For example, if grains of wheat, a plank of wood, and water are dropped from above into a hollow, they will all move downwards following their natural motion. However, only the movement of water will be called 'flow' (saylaan), not the other two. The reason is that the first consists of numerous movements of separate bodies, the second is a single movement of a single body, and the third (liquid) consists of continuous natural movements of adjacent parts of a single perceptually connected body, occurring consecutively such that perceptual separation is not allowed. This is what 'flow' is named.

Benefit 3: The meaning of absolute thinness (riqqat) and its areas of application. Benefit 4: It is a relative matter and subject to gradation (tashkeek).

Benefit 5: In terms of its own meaning, it is equal to flow, rather its meaning including solids is absolutely more general than it. And at the time of addition, it is general in one respect (aam min wajh), as camel's milk is not thin compared to goat's milk but it is a liquid, and a rose-water bottle is thin compared to a glass mirror but not a liquid. Benefit 6: The meaning of substance (jurm) and non-substance in the issues of leather socks (khuff) etc.

Benefit 7: Visible (mar'ee) and invisible (ghair mar'ee) meanings in them. Benefit 8: Their difference from the visible and invisible meanings considered in the issue of purification and the issue of a large pond.

Benefit 9: Various types of slips by experts in these matters.

Benefit 10: The required and technical meanings of 'thinness' (riqqat) according to the Imams also became clearly evident.

Benefit 11: How weightlessness (be-jurmi) occurs in a substance (jurm). Benefit 12: Also, here the speech of the Imams is in the sense of cohesion (tamasuk).

Benefit 13: That required thinness and weightlessness are one thing, and thickness is that which retains a core (dil) after the flow ends.

Benefit 14: Whether thinness of water is dominant or dominated, or present or absent, it means they have the same utility.

Benefit 15: That this thinness is specific to flow, and after it, there is no need to mention 'flow' in the context of affirmation. For instance, saying that if thinness and flow remain in a certain case, then wudu is permissible. Yes, there is no harm in saying 'flow and thinness remain', as mentioning 'flow' does not make mentioning 'thinness' redundant, though mentioning 'thinness' alone is sufficient; thus it is prolixity (itnab), not neglect (ihmal).

Benefit 16: In the context of negation, mentioning flow with the conjunction 'and' (wa) is harmful and misleading against the intended meaning, and with 'or' (ya) which is for alternative, it is useless.

Benefit 17: Not being able to be wrung out from clothes is specific to this thinness; milk is thin and cannot be wrung out.

Benefit 18: This thinness is neither a relative meaning nor is there gradation in it.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

वह पतला (रक़ीक़) है जिसके हिस्से बहाव के अंत में कोई पिंड न बनाएं सिवाय इसके कि बहने में उनका आगे-पीछे होना हो। (पतली चीज़ वह है जिसके बहाव के ख़त्म होने पर उसके अंगों का आयतन न बने, बल्कि बहने में सिर्फ उनका आगे-पीछे होना हो।)

अल्हम्दुलिल्लाह, इस रौशन तक़रीर से बहुत से लाभ प्राप्त हुए:

फ़ायदा 1: स्वभाव (तबीयत) और उसके बने रहने और ख़त्म होने का वर्णन।

फ़ायदा 2: प्रवाह (सैलान) की हक़ीक़त और उसका दर्शन, और ठोस तथा तरल के बीच का अंतर। उदाहरण के लिए, यदि ऊपर से किसी ढलान में गेहूँ के दाने, एक तख़्ता और पानी गिराया जाए, तो वे सभी अपनी स्वाभाविक गति से नीचे उतरेंगे, लेकिन केवल पानी की गति को ही 'प्रवाह' (सैलान) कहा जाएगा, अन्य दो को नहीं। इसका कारण यह है कि पहले में अलग-अलग पिंडों की अनेक गतियाँ हैं, दूसरे में एक पिंड की एक ही गति है, और तीसरा (तरल) एक ही प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए पिंड के निकटवर्ती अंगों की निरंतर स्वाभाविक गतियाँ हैं जो लगातार होती रहती हैं ताकि प्रत्यक्ष अलगाव न हो। इसी का नाम 'प्रवाह' (सैलान) है।

फ़ायदा 3: पूर्ण पतलेपन (रक़्क़त) का अर्थ और उसके उपयोग के स्थान। फ़ायदा 4: यह एक सापेक्ष मामला है और इसमें श्रेणीकरण (तशकीक) संभव है।

फ़ायदा 5: अपने स्वयं के अर्थ के लिहाज़ से यह प्रवाह के बराबर है, बल्कि इसका अर्थ ठोस वस्तुओं को शामिल करते हुए उससे पूर्णतः अधिक व्यापक है। और तुलना के समय यह एक पक्ष से सामान्य (आम मिन वज्ह) है, जैसे ऊँटनी का दूध बकरी के दूध की तुलना में पतला नहीं है लेकिन वह तरल है, और गुलाब जल की बोतल कांच के आईने के लिहाज़ से पतली है लेकिन तरल नहीं। फ़ायदा 6: चमड़े के मोज़ों (ख़ुफ़) आदि के मसलों में 'जर्म' (पिंड) और 'अदम-ए-जर्म' (पिंड का अभाव) का अर्थ।

फ़ायदा 7: उनमें दृश्य (मर्ई) और अदृश्य (ग़ैर-मर्ई) अर्थ। फ़ायदा 8: शुद्धि के मसले और बड़े तालाब के मसले में माने जाने वाले दृश्य और अदृश्य अर्थों से उनका अंतर।

फ़ायदा 9: इन मामलों में विशेषज्ञों की विभिन्न प्रकार की चूकें।

फ़ायदा 10: इमामों के अनुसार वांछित और तकनीकी 'पतलेपन' (रक़्क़त) के अर्थ भी पूरी तरह स्पष्ट हो गए।

फ़ायदा 11: पिंड (जर्म) में पिंडहीनता (बे-जर्मी) कैसे होती है। फ़ायदा 12: साथ ही यहाँ इमामों के कलाम में 'तमासुक' (पकड़/सामंजस्य) के अर्थ में।

फ़ायदा 13: कि वांछित पतलापन और पिंडहीनता एक ही चीज़ हैं, और गाढ़ापन वह है जो प्रवाह समाप्त होने के बाद भी एक केंद्र (दिल) शेष रखे।

फ़ायदा 14: पानी के पतलेपन का प्रभावी या अप्रभावी होना, या मौजूद या अनुपस्थित होना, इसका अर्थ यह है कि उन सबका एक ही लाभ है।

फ़ायदा 15: कि यह पतलापन प्रवाह के साथ विशिष्ट है, और इसके बाद पुष्टि के स्थान पर प्रवाह का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिए, यह कहना कि यदि अमुक स्थिति में पतलापन और प्रवाह शेष रहे तो वज़ू जायज़ है। हाँ, ऐसा कहने में कोई हर्ज नहीं कि 'प्रवाह और पतलापन शेष रहे' क्योंकि प्रवाह का उल्लेख पतलेपन के उल्लेख को अनावश्यक नहीं बनाता, हालाँकि अकेले पतलेपन का उल्लेख पर्याप्त है; तो यह विस्तार (इतनाब) हुआ, उपेक्षा (इहमाल) नहीं।

फ़ायदा 16: निषेध के स्थान पर 'और' (व) शब्द के साथ प्रवाह का उल्लेख करना हानिकारक है और उद्देश्य के विपरीत भ्रम पैदा करने वाला है, और 'या' शब्द के साथ जो कि विकल्प के लिए है, बेकार है।

फ़ायदा 17: कपड़े से निचोड़ा न जा सकना इस पतलेपन के साथ विशिष्ट है; दूध पतला है और निचोड़ा नहीं जा सकता।

फ़ायदा 18: यह पतलापन न तो कोई सापेक्ष अर्थ है और न ही इसमें श्रेणीकरण (तशकीक) है।

पृष्ठ 87 का 756

آں رقیق ست کہ اجزائش بخفتم سیلان زیر و بالا نبود بیچ سوائے پس و پیش (رقیق وہ چیز ہے کہ بہاؤ کے ختم ہونے پر اس کے اجزاء کا حجم نہ بنے بلالکہ بہنے میں صرف ان کا تقدم و تاخر ہو۔ ت)

الحمد للہ اس تقریر منیر سے فوائد کثیر حاصل ہوئے:

فائدہ ۱: طبیعت اور اس کی بقاو زوال کا بیان۔

فائدہ ۲: حقیقت سیلان اور اس کا فلسفہ اور جامد و سائل کا فرق اور یہ کہ اگر اوپر سے نشیب میں مثلاً گیہوں کے دانے اور کوئی تختہ اور پانی گرائیں سب اپنی حرکت بالتبع سے متحرک ہو کر نیچے اتر جائیں گے مگر ان میں پانی ہی کی حرکت کو سیلان کہیں گے نہ ان دو کی اس کی وجہ کہ اول اجسام منفصلہ کی حرکات عدیدہ ہیں اور دوم جسم واحد کی حرکت واحدہ اور سوم جسم واحد متصل حسی کے اجزائے متجاورہ کی متوالی حرکات طبیعہ پے در پے کہ انکاک حسی نہ ہونے دیں اسی کا نام سیلان ہے۔

فائدہ ۳: رقت مطلق کے معنی اور اس کے مواضع اطلاق۔ فائدہ ۴: وہ امر اضافی و مقول بالتشکیک ہے۔

فائدہ ۵: وہ اپنے نفس معنی کے لحاظ سے سیلان کے ساتھ مساوی بلکہ معنی شامل جامدات پر اُس سے عام مطلقاً ہے اور ہنگام اضافت عام من وجہ کہ شیر شتر بہ اضافت شیر بز رقیق نہیں اور سائل ہے اور گلاب کا شیشہ حلبی آئینہ کے اعتبار سے رقیق ہے اور سائل نہیں۔ فائدہ ۶: مسائل خف وغیرہ میں معنی جرم و عدم جرم۔

فائدہ ۷: اُن میں معنی مرئی و غیر مرئی۔ فائدہ ۸: مرئی و غیر مرئی معتبر مسئلہ تطہیر و مسئلہ حوض کبیر سے اُن کا فرق۔

فائدہ ۹: انظار ماہرین کی ان میں انواع انواع لغزش۔

فائدہ ۱۰: رقت مطلوبہ و مصطلحہ ائمہ کے معنی یہ سب بھی روشن طور پر واضح ہو گئے۔

فائدہ ۱۱: جرم میں بے جرمی کیونکر ہوتی ہے۔ فائدہ ۱۲: نیز یہاں کلام ائمہ میں بمعنی تماسک۔

فائدہ ۱۳: کہ رقت مطلوبہ و بے جرمی ایک شے ہیں اور غلظت یہ کہ بعد ختم سیلان دل باقی رکھے۔

فائدہ ۱۴: رقت آب غالب و مغلوب یا موجود و مسلوب ہونے سے مراد یہ کہ اُن کا ایک ہی مفاد۔

فائدہ ۱۵: کہ یہ رقت سیلان سے خاص ہے اور اس کے بعد محل اثبات میں ذکر سیلان کی حاجت نہیں مثلاً یوں کہنا کہ فلاں صورت میں رقت و سیلان باقی رہیں تو وضو جائز ہے، ہاں یوں کہنے میں حرج نہیں کہ سیلان و رقت باقی رہیں کہ ذکر سیلان ذکر رقت سے مغنی نہیں اگرچہ تنہا ذکر رقت بس ہے تو اطناب ہوا نہ اہمال۔

فائدہ ۱۶: محل نفی میں ذکر سیلان بحرف واو مضر و موہم خلاف مقصود ہے اور بحرف یا کہ تردید کیلئے ہے بیکار۔

فائدہ ۱۷: کپڑے سے نہ نچڑ سکنا اس رقت سے خاص ہے دُودھ رقیق ہے اور نچڑ نہیں سکتا۔

فائدہ ۱۸: یہ رقت نہ معنی اضافی ہے نہ اس میں تشکیک۔

Fatawa Rizwia, Volume Three Benefit 19: Scenarios of solid substances mixing in water and their rulings. Benefit 20 (Noble) (1): The loss of water's liquidity is not dependent solely on the mixing of solids (2) contrary to what is gathered from the words of the commentators and rule-formulators. (Note: This is against what the discourse of the commentators and rule-formulators has been. T). Rather, liquid substances with body like honey, syrups, extracts, and thick juices, when they mix with it in such a way that they give it body as mentioned, then surely the liquidity will be lost and the nature will be changed. This benefit is very important to remember as it will be useful in the next section, God willing. This is the decisive research that, by the ultimate grace of the Lord (Mighty and Majestic), was dawned upon the heart of the poor servant. And all praise is due to Allah, much, pure, and blessed praise as our Lord loves and is pleased with. And may Allah Almighty shower blessings, peace, and benedictions upon the Beloved, Generous, Kind, Merciful, Most Pleasing [Prophet], and upon his family, his companions, his son, and his party, as long as the sky covers the earth. And all praise is due to Allah, Lord of the worlds. Predominance of others (Ghalba Ghair): There are three discussions in it: First Discussion: In what matter is predominance intended? I say: There are four things here: nature, attributes, parts, purposes. And predominance is considered in all of these. Predominance according to attributes is the opinion of Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him), the explanation of which will come later by Allah's help. In the remaining three, the consideration of predominance is a matter of consensus. Predominance according to nature is that very loss of liquidity; on its consideration, consensus is evident. And predominance according to parts is said to be the specific school of thought of Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him), and Imam Burhan al-Din (Note: a), author of al-Hidayah, and Imam...

(a): In Hidayah, under the issue of saffron-colored water, it is stated: 'Huwa as-Sahih' (This is the correct one. T). In al-Binayah, it says: 'The narration from Abu Yusuf is the correct one.' (What is narrated from Imam Abu Yusuf is correct. T). In an-Nihayah, it says: 'His saying 'Huwa as-Sahih' is to avoid Imam Muhammad's opinion.' (The phrase 'Huwa as-Sahih' is an avoidance of the opinion of Imam Muhammad. T). Also, in al-Hidayah, it says: 'Predominance is based on parts, not on the change of color.' (Predominance is in terms of parts, not by change in color. T). In al-Binayah, it says: 'He also pointed with this towards the negation of Imam Muhammad's opinion.' (This also hints at the rejection of Imam Muhammad's opinion. T). In al-Inayah, it says: 'It is a negation of Imam Muhammad's opinion because he considers predominance by

change in color and taste.' (Negation of Imam Muhammad's opinion because he means predominance in terms of change of color and taste. T). In al-Kanz, it was: 'or predominance of others [by way of] parts.' (or that others predominate over it as parts. T). On this, the commentator al-Harawi said: 'To avoid the opinion of Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him).' (This is an avoidance of the opinion of Imam Muhammad. T). 12. From him, may He forgive him. (M)

फ़तावा रज़विया, खंड तीन फ़ायदा १९: पानी में ठोस पदार्थों के मिलने की स्थितियाँ और उनके नियम। फ़ायदा २० (महान) (१): पानी का पतलापन समाप्त होना केवल कुछ ठोस पदार्थों के मिलने पर निर्भर नहीं है (२) उन बातों के विपरीत जो भाष्यकारों और नियम बनाने वालों के शब्दों से संकलित हुई हैं। (यह उसके विरुद्ध है जिस पर भाष्यकारों और नियम बनाने वालों की चर्चा बीत चुकी है। टी)। बल्कि, शरीरयुक्त तरल पदार्थ जैसे शहद, शरबत, अर्क और गाढ़ा रस जब इसमें इस प्रकार मिल जाते हैं कि वे इसे शरीरयुक्त बना देते हैं, जैसा कि उल्लेख किया गया है, तो निश्चित रूप से तरलता समाप्त हो जाएगी और प्रकृति बदल जाएगी। यह फ़ायदा याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह अगले भाग में काम आएगा, इंशाअल्लाह। यह वह निर्णायक शोध है जो परमेश्वर (महान और प्रतापी) की पूर्ण कृपा से इस दीन सेवक के हृदय पर उतरा है। और अल्लाह के लिए बहुत, पवित्र और धन्य प्रशंसा है जैसा कि हमारा रब पसंद करता है और जिससे वह प्रसन्न होता है। और अल्लाह तआला अपने प्रिय, उदार, दयालु, करुणामयी, सबसे प्रिय [पैगंबर] पर और उनके परिवार, उनके साथियों, उनके पुत्र और उनके दल पर आशीर्वाद, शांति और कृपा बरसाए, जब तक कि आकाश पृथ्वी को ढके हुए है। और सारी प्रशंसा अल्लाह, ब्रह्मांड के रब के लिए है। ग़लबा ग़ैर (दूसरों की प्रधानता): इसमें तीन चर्चाएँ हैं: पहली चर्चा: किस मामले में प्रधानता अभीष्ट है। मैं कहता हूँ: यहाँ चार चीज़ें हैं: प्रकृति, गुण, अंग (भाग), उद्देश्य। और इन सभी के संबंध में प्रधानता को लिया गया है। गुणों के आधार पर प्रधानता इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर कृपा करे) का कथन है, जिसका विवरण अल्लाह की मदद से आगे आएगा। शेष तीन में प्रधानता का विचार सर्वसम्मत है। प्रकृति के आधार पर प्रधानता वही तरलता का लोप होना है; इसके विचार पर सर्वसम्मति स्पष्ट है। और अंगों के आधार पर प्रधानता इमाम अबू यूसुफ़ (अल्लाह उन पर कृपा करे) का विशिष्ट मत कहा गया है, और इमाम बुरहानुद्दीन (नोट: अ) हिदाया के लेखक और इमाम...

(अ): हिदाया में ज़फ़रान के पानी के मसले के तहत कहा गया है: 'हुवा अस्-सहीह' (यही सही है। टी)। बिनाया में है: 'जो इमाम अबू यूसुफ़ से वर्णित है वही सही है।' (जो इमाम अबू यूसुफ़ से रिवायत है वह सही है। टी)। निहाया में है: 'उनका कहना 'हुवा अस्-सहीह' इमाम मुहम्मद के कथन से बचने के लिए है।' (उनका शब्द 'हुवा अस्-सहीह' इमाम मुहम्मद के मत से बचने के लिए है। टी)। इसके अलावा, हिदाया में कहा गया है: 'प्रधानता अंगों के कारण है, न कि रंग बदलने के कारण।' (प्रधानता अंगों के संदर्भ में है, रंग के परिवर्तन से नहीं। टी)। बिनाया में है: 'उन्होंने इसके माध्यम से इमाम मुहम्मद के मत के खंडन की ओर भी संकेत किया है।' (इससे इमाम मुहम्मद के मत को नकारने का

भी संकेत है। टी)। इनाया में है: 'यह इमाम मुहम्मद के मत का खंडन है क्योंकि वे रंग और स्वाद के परिवर्तन को प्रधानता मानते हैं।' (इमाम मुहम्मद के मत का खंडन है क्योंकि उनका अर्थ रंग और स्वाद के परिवर्तन के आधार पर प्रधानता है। टी)। कंज़ में था: 'या अंगों के रूप में दूसरों की प्रधानता।' (या यह कि अंगों के तौर पर दूसरों का उस पर प्रभुत्व हो। टी)। इस पर भाष्यकार हरवी ने कहा: 'मुहम्मद (अल्लाह उन पर कृपा करे) के मत से बचने के लिए।' (यह इमाम मुहम्मद के मत से परहेज़ है। टी)। १२। उनकी ओर से, [अल्लाह] उन्हें क्षमा करे। (म)

पृष्ठ ८८ का ७५६

جلد سوم فتاوی رضویہ فائدہ ۱۹: پانی میں جرم دار اشیا ملنے کی صورتیں اور ان کے احکام۔ فائدہ ۲۰ جلیلہ (۱): پانی کی رقت زائل ہونا کچھ جامدات ہی کے خلط پر موقوف نہیں (۲) خلافاً لما تظافرت علیہ کلمات الشراح واھل الضابطۃ (یہ اس کے خلاف ہے جس پر شراح حضرات اور اہل ضابطہ کا کلام گزر چکا ہے۔ ت) بلالکہ جرم دار مائعات مثل شہد و شیرہ و رب و دبس جب اس سے ایسے ممتزج ہو جائیں کہ بمعنی مذکور جرم دار کر دیں ضرور رقت زائل اور طبیعت متبدل ہو جائے گی یہ فائدہ بہت ضروری یاد رکھنے کا ہے کہ فصل آئندہ میں کام دے گا ان شاء اللہ تعالیٰ یہ ہے وہ تحقیق بازع کہ مولی عز و جل کے فضل بالغ سے قلب فقیر پر فائض ہوئی وللہ الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیہ کما یحب ربنا و رضی وصلی اللہ تعالیٰ وبارک وسلم علی الحبیب الکریم الرؤف الرحیم الارضی وآلہ وصحبہ وابنہ وحزبہ ماعلت سماء ارضاً* والحمد للہ رب العلمین۔ غلبہ غیر اس میں تین بحثیں ہیں: بحث اول: کسی امر میں غلبہ مراد ہے۔ اقول: یہاں چار چیزیں ہیں: طبیعت، اوصاف، اجزاء، مقاصد۔ اور ان سب کے اعتبار سے غلبہ لیا گیا ہے غلبہ بحسب اوصاف تو قول امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ ہے جس کا بیان بعونہ تعالیٰ آگے آتا ہے باقی تین میں اعتبار غلبہ مجمع علیہ ہے غلبہ بحسب طبع وہی زوال رقت ہے اس کے اعتبار پر اجماع ظاہر اور غلبہ بحسب اجزا کہ خاص مذہب امام ابویوسف رحمہ اللہ تعالیٰ کہا گیا اور امام برہان الدین عہ صاحب ہدایہ وامام

عہ: ہدایہ میں زیر مسئلہ آب زرد ج فرمایا ھوا لصیح (یہی صحیح ہے۔ ت) بنایہ میں ہے المروی عن ابی یوسف ھو الصحیح (جو امام ابو یوسف سے مروی ہے وہ صحیح ہے۔ ت) نہایہ میں ہے قولہ ھو الصحیح احتراز عن قول محمد (اس کے قول ھو الصحیح سے امام محمد کے قول سے احتراز ہے۔ ت) نیز ہدایہ میں فرمایا الغلبۃ بالاجزاء لابتغیر اللون (غلبہ اجزاء کے اعتبار سے تغیر لون سے نہیں ہے۔ ت) بنایہ میں ہے اشار بہ ایضا الی نفی قول محمد (اس سے امام محمد کے قول کی نفی کا

اشارہ بھی ہے۔ ت) عنایہ میں ہے نفی لقول محمد فانہ یعتبر الغلبۃ بتغیر اللون والطعم (امام محمد کے قول کی نفی ہے کیونکہ وہ غلبہ باعتبار تغیر لون و طعم مراد لیتے ہیں۔ ت) کنز میں تھا او غلبہ غیر اجزاء (یا اس پر غیر کا غلبہ بطور اجزاء ہو۔ ت) اس پر شارح ہروی نے فرمایا احتراز عن قول محمد رحمہ اللہ تعالٰی اھ (یہ امام محمد رحمہ اللہ کے قول سے احتراز ہے۔ ت) ۱۲ منہ غفرلہ (م)

Fatawa Ridawiyya Volume 3

Qazi Khan, Imam Shams al-A'imma al-Kardari, Imam Hafiz al-Din al-Nasafi, and other great scholars have authenticated this. In 'Durr al-Mukhtar', it is called 'Asah' (most correct), in 'Manj' it's called 'Sahih' (correct), and in 'Siraj', 'Wahaj', 'Jawhara al-Nayyira', 'Fatawa Aghzi', and 'Fatawa Alamgiriyya', it is cited as the opinion of the majority. In 'Nihaya', 'Inaya', 'Hulya', 'Ghunya', 'Bahr', 'Nahr', etc., it is reported and transmitted from eminent teachers, as previously mentioned in numbers 122, 101, and 97. (As it has passed in numbers 101, 122, and 97. - Translator). In 'Jami' al-Rumuz' it is stated: "Consideration is given to the predominance in terms of parts, and that is the correct view because a part takes precedence over an attribute in consideration, as in the margin of Al-Hidayah." (Predominance will be based on the parts, and this is correct because in consideration, a part precedes an attribute, as stated in the margin of Al-Hidayah. - Translator). In 'Jami' al-Rumuz', chapter 'Jawhara al-Nayyira', it is said: "The most correct view is that the consideration is based on parts." (The most correct view is that the parts will be considered. - Translator). Also, from 'Inaya' it appears that the correct view is that of Abu Yusuf. In 'Ghaya al-Bayan', our Imams have stated this to be the 'Zahir al-Riwaya' (manifest report). 'Ghaya', 'Inaya', and 'Binaya' in the commentary of Tahawi cited Imam Isbijabi in support of this. Against this, i.e., considering attributes, Imam Karkhi and other greats have stated it to be contrary to the correct view. In 'Binaya' it is written: "The correct narration is contrary to it." (The correct narration is against it. - Translator). It also says: "The correctness of the narration is against it, as reported from al-Karkhi." (The correctness of the report is against it, similarly from al-Karkhi. - Translator).

I say (The author's note): These attributions, corrections, and preferences do not mean that Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) does not hold this view. Rather, it means that Imam Abu Yusuf considers only this, while Imam Muhammad also considers the predominance of attributes; otherwise, predominance in terms of parts, in the sense it is taken, the details of which will follow by Allah's power, is undoubtedly accepted by all.

Arabic Text	**Urdu Translation**
Do not let the comparison occurring in the statement of 'Al-Fath' deceive you,	Let not the comparison of the statements of Imam Muhammad and Imam Abu Yusuf in the discourse of 'Fath' mislead you,

Arabic Text	Urdu Translation
that Muhammad considers it by color and Abu Yusuf by parts.	that Imam Muhammad considers color and Imam Abu Yusuf considers parts,
And the statement of 'Al-Ajnās' in number [10]: "Muhammad considers the color of the water,	and similarly the statement of 'Al-Ajnās' mentioned in number 10, that Imam Muhammad considers the color of water,
and Abu Yusuf the predominance of parts." Have you not seen the statement of	and Imam Abu Yusuf observes the predominance of parts, because
'Al-Ināya': "Muhammad considers predominance by color, then taste,	you saw that 'Ināya' [says]: "Muhammad considers predominance by color, then taste,
then parts, and the correct view is the statement [of Abu Yusuf]..."	then parts, and the correct view is the statement..."

1. Jami' al-Rumuz, Chapter of Waters, Islami Press, Gonbad, Iran, 1/46.
2. Al-Jawhara al-Nayyira, Book of Purity, Imdadia Press, Multan, 1/12.
3. Al-Binaya Sharh al-Hidayah, Chapter on Water with which Wudu is Permissible, Al-Imdadia, Makkah al-Mukarramah, 1/189.
4. Fath al-Qadir, Chapter on Water with which Wudu is Permissible, Nooria Razvia, Sukkur, 1/65.

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरी

काज़ी ख़ान, इमाम शम्सुल अइम्मा करदरी, इमाम हाफ़िज़ुद्दीन नसफ़ी और अन्य बड़े विद्वानों ने इसकी पुष्टि की है। 'दुर्रे मुख़्तार' में इसे 'असह' (सबसे सही), 'मंज' में 'सही', और 'सिराज', 'वहाज', 'जौहरा नय्यिरा', 'फ़तावा अ़ग़ज़ी', 'फ़तावा आ़लमगीरिया' में इसे बहुमत का मत बताया गया है। 'निहाया', 'इनाया', 'हुलिया', 'ग़ुनिया', 'बह्र', 'नह्र' आदि में इसे प्रतिष्ठित शिक्षकों से उद्धृत और मसनून बताया गया है, जैसा कि नंबर 122, 101 और 97 में पहले बताया जा चुका है। (जैसा कि नंबर 101, 122 और 97 में गुज़र चुका है। - त) 'जामेउर रुमूज़' में है: 'बहुलता (ग़लबा) का श्रेय अंगों (अज्ज़ा) को दिया जाता है और यही सही है क्योंकि विचार में अंग को गुण (वस्फ़) पर प्राथमिकता दी जाती है जैसा कि हिदाया के हाशिये में है।' (ग़लबा अंगों के आधार पर होगा और यही सही है क्योंकि विचार में अंग गुण पर प्राथमिकता रखता है जैसा कि हिदाया के हाशिये में है। - त) 'जामेउर रुमूज़' बाब 'जौहरा नय्यिरा' में है: 'असह यह है कि अंगों का ही विचार होगा।' (सबसे सही यही है कि अंगों का विचार होगा। - त) साथ ही 'इनाया' से पता चलता है कि सही मत इमाम अबू यूसुफ़ का है। 'ग़ायतुल बयान' में हमारे इमामों ने इसे 'ज़ाहिरुल रिवाया' बताया है। 'ग़ाया', 'इनाया' और 'बिनाया' ने 'शरह-ए-तहावी' में इमाम अस्बीजाबी के हवाले से इसका समर्थन किया है। इसके विपरीत, यानी गुणों पर विचार करने को इमाम करखी और अन्य दिग्गजों ने 'सही' के विरुद्ध बताया है। 'बिनाया' में है: 'सही रिवायत इसके ख़िलाफ़ है।' (सही रिवायत इसके ख़िलाफ़ है। - त) उसी में है: 'रिवायत की सत्यता इसके विरुद्ध है, जैसा कि करखी से है।' (रिवायत की सत्यता इसके ख़िलाफ़ है, वैसा ही करखी से है। - त)

लेखक का कथन: इन संदर्भों और सुधारों का अर्थ यह नहीं है कि इमाम मुहम्मद (अल्लाह तआ़ला उन पर रहम करे) इसके कायल नहीं हैं, बल्कि यह कि इमाम अबू यूसुफ़ केवल इसी पर विचार करते हैं और इमाम मुहम्मद इसके साथ गुणों की बहुलता पर भी विचार करते हैं, अन्यथा अंगों के आधार पर बहुलता जिस अर्थ में ली गई है, जिसका विवरण अल्लाह की मदद से आगे आएगा, वह निसंदेह सबको स्वीकार है।

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
'फ़तह' के कथन में जो तुलना आई है वह आपको धोखे में न डाले	'फ़तह' के कलाम में इमाम मुहम्मद और इमाम अबू यूसुफ़ के मतों की तुलना आपको इस धोखे में न डाले

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
कि मुहम्मद रंग को और अबू यूसुफ़ अंगों को प्रधान मानते हैं।	कि इमाम मुहम्मद रंग का और इमाम अबू यूसुफ़ अंगों का विचार करते हैं,
और 'अल-अजनास' का कथन नंबर 10 में: "मुहम्मद पानी के रंग पर ध्यान देते हैं,	और इसी तरह 'अल-अजनास' का कथन जैसा कि नंबर 10 में उल्लेख हुआ है कि इमाम मुहम्मद पानी के रंग का
और अबू यूसुफ़ अंगों की बहुलता पर।" क्या आपने देखा कि	और इमाम अबू यूसुफ़ अंगों की बहुलता का ध्यान रखते हैं क्योंकि
'अल-इनाया' का कथन: "मुहम्मद रंग द्वारा बहुलता पर विचार करते हैं, फिर स्वाद,	आपने देखा कि 'इनाया' [कहता है]: "मुहम्मद रंग द्वारा बहुलता पर विचार करते हैं, फिर स्वाद,
फिर अंगों पर, और सही मत [अबू यूसुफ़ का] है..."	फिर अंगों पर, और सही मत..."

1. जामेउर रुमूज़, बाबुल मियाह, मतबा अल-इस्लामिया, गुंबद, ईरान, 1/46.
2. अल-जौहरा अल-नय्यिरा, किताबुत तहारत, मतबा इमदादिया, मुल्तान, 1/12.
3. अल-बिनाया शरहुल हिदाया, बाबुल माअल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू, अल-इमदादिया, मक्का अल-मुकर्रमा, 1/189.
4. फ़तहुल क़दीर, बाबुल माअल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू, नूरिया रज़विया, सक्खर, 1/65.

पृष्ठ 89/756

قاضی خان وامام شمس الائمہ کردری وامام حافظ الدین نسفی وغیرہ ہم اکابر نے اس کی تصحیح کی اسی کو در مختار میں اصح اور منج میں صحیح اور سراج و وہاج وجوہرہ نیرہ وفتاوی اغزی وفتاوی عالمگیریہ میں قول جمہور اور نہایہ و عنایہ و حلیہ و غنیہ و بحر و نہر وغیرہا میں اساتذہ کرام سے منقول و ماثور بتایا کما تقدم کل ذلک فی نمرہ ۱۲۲ و ۱۰۱ و ۹۷ (جیسا کہ نمبر ۱۰۱، ۱۲۲ اور ۹۷ میں گزر چکا ہے۔ ت) جامع الرموز میں ہے اعتبر الغلبہ من حیث الاجزاء وھو الصحیح لتقدم الجزء علی الوصف فی الاعتبار کما فی حاشیۃ الھدایۃ (غلبہ اجزاء کے اعتبار سے ہوگا اور یہی صحیح ہے کیونکہ اعتبار میں جزو وصف پر مقدم ہوتا ہے جیسے کہ ہدایہ کے حاشیہ میں ہے۔ ت) جامع الرموز باب جوہرہ نیرہ میں ہے الاصح ان المعتبر بالاجزاء (اصح یہی ہے کہ اجزاء کا اعتبار ہوگا۔ ت) نیز عنایہ سے آتا ہے کہ صحیح قول ابویوسف ہے غایۃ البیان میں اسی کو ہمارے ائمہ نے ظاہر الروایۃ بتایا غایہ وعنایہ وبنایہ نے شرح طحاوی امام اسبیجابی سے اس کی تائید کی اس کے خلاف یعنی اعتبار اوصاف کو امام کرخی وغیرہ اکابر نے خلاف صحیح بتایا۔ بنایہ میں ہے الروایۃ الصحیحۃ بخلافھا (روایت صحیحہ اس کے خلاف ہے۔ ت) اسی میں ہے صحۃ الروایۃ بخلافہ کذا عن الکرخی اہ (صحت روایت اس کے خلاف ہے ایسا ہی کرخی سے ہے۔ ت)

اقول: اس نسبت و تصحیحات و ترجیحات کے یہ معنی نہیں کہ امام محمد رحمہ اللہ تعالی اس کے قائل نہیں بلکہ یہ کہ امام ابو یوسف صرف اسی کو اعتبار فرماتے ہیں اور امام محمد اس کے ساتھ غلبہ اوصاف کو بھی ورنہ غلبہ بحسب اجزاء جس معنی پر لیا گیا جن کی تفصیل بحولہ تعالی آتی ہے وہ سب بلا شبہ سب کو تسلیم ہیں۔

| فلا تغرنك المقابلة الواقعة في قول الفتح ان | فتح کے کلام میں امام محمد اور امام ابویوسف کے اقوال کا | | محمدا یعتبره باللون و ابا یوسف بالاجزاء | مقابلہ اسے تجھے دھوکا میں مبتلا نہ کرے کہ امام محمد رنگ کا اور | | وقول الاجناس في نمرة محمد یراعی لون الماء | امام ابویوسف اجزاء کا اعتبار کرتے ہیں، اور اسی طرح الاجناس | | وابو یوسف غلبة الاجزاء الاتری الی قول | کا قول کہ نمبر ۱۰ میں مذکور ہوا کہ امام محمد پانی کے رنگ کا | | العنایة محمد یعتبر الغلبة باللون ثم الطعم | اور امام ابویوسف اجزاء کے غلبہ کی رعایت کرتے ہیں کیونکہ | | ثم الاجزاء والصحیح قول | آپ نے دیکھا کہ عنایہ |

1 جامع الرموز باب المیاہ، مطبع الاسلامیه گنبد ایران ۴۶/۱ 2 الجوهرة النیرة کتاب الطهارة مطبع امدادیه ملتان ۱۲/۱ 3 البنایة شرح الهدایة باب الماء الذی یجوز به الوضوء الامدادیہ مکہ المکرمہ ۱۸۹/۱ 4 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز به الوضوء نوریه رضویه سکهر ۶۵/۱

Fatawa Razawiyya - Volume 3

[Arabic Box - Top Left]: Abu Yusuf says that predominance based on parts is actual predominance because the existence of a compound is due to its parts, thus taking this into consideration is more primary. This is the rule followed by Malik al-Ulama and Imam al-Isbijabi (may Allah have mercy on them both), as previously mentioned, and its details will follow, Allah willing. Understand and be steadfast.

[Urdu Box - Top Right]: It is the saying that Imam Muhammad considers predominance in terms of color, then taste, and then parts. The correct view is that of Imam Yusuf because predominance is based on parts, as the existence of a compound is derived from its parts; hence, this predominance is more primary. This is the same principle adopted by Malik al-Ulama and Imam al-Isbijabi (may Allah have mercy on them), as mentioned earlier, and its detail will, God willing, follow in the future. Understand and remain firm. (T)

[Arabic Box - Middle Left]: As for predominance according to purposes, which is expressed by its general necessity—the loss of the name—consensus on it is also clear. This has been mentioned several times, such as in point 28. Imam al-Zaylai explicitly stated it, even if he overlooked it in his general rule. The disagreement regarding date nabidh (syrup) was only due to a specific text (nass) contrary to analogy, which then ended with the Imam’s retraction. The statement from al-Hilya will follow.

[Urdu Box - Middle Right]: As mentioned multiple times in number 28, Imam al-Zaylai has stated it as a decree, even though he was negligent in the general rule. Indeed, there was a disagreement in date-nabidh because a decree contrary to analogy was issued on this matter, and this disagreement also ended due to Imam Abu Hanifa's retraction. The quote from Hilya will follow. (T)

[Main Body Text]: In summary, there is no doubt about the consensus on these three points, and here they are interpreted in all three ways. 'Predominance of nature' appeared in Quduri and Hidaya: "Predominance over it by something else which takes it out of the nature of water."[2] (Water was removed from its nature by the dominance of another substance. T) In Multaqa al-Abhur: "Not with water that has left its nature due to the dominance of another."[3] (Not with such water which, due to the dominance of another, has left its own nature. T) From Ghurar and Nur al-Idah: "Not with water whose nature has ceased due to the dominance of another."[4] (Wudu is not permissible with such water whose nature has ended due to the dominance of

another substance. T) From Hidaya at number 70: "Except that it overcomes the water, making it like mixed Sawiq (flour drink)."[5] (Unless it mixes with the water and becomes dominant...)

[Footnotes]: 1. Al-Inayah with Al-Fath al-Qadir, Chapter on Water with which Wudu is Permitted, Nuriya Razawiyya Press, Sukkur, 1/63. 2. Al-Hidayah, Chapter on Water with which Wudu is Permitted, Arabiya Press, Karachi, 1/18. 3. Multaqa al-Abhur, Section on Permissibility of Purification with Plain Water, Amira Press, Egypt, 1/28. 4. Nur al-Idah, Book of Purification, Ilmiya Press, Lahore, p. 3. 5. Al-Hidayah, Chapter on Water with which Wudu is Permitted, Arabiya Press, Karachi, 1/18.

फ़तावा रज़विया - भाग 3

[अरबी बॉक्स - ऊपर बाईं ओर]: अबू यूसुफ कहते हैं कि भागों के आधार पर प्रबलता ही वास्तविक प्रबलता है क्योंकि एक यौगिक का अस्तित्व उसके भागों के कारण होता है, इसलिए इसे विचार में लेना अधिक प्राथमिक है। यही वह नियम है जिसका पालन मलिक अल-उलेमा और इमाम अल-इस्बीजाबी (अल्लाह उन दोनों पर दया करे) ने किया है, जैसा कि पहले बताया गया है, और इसका विवरण अल्लाह ने चाहा तो आगे आएगा। इसे समझें और दृढ़ रहें।

[उर्दू बॉक्स - ऊपर दाईं ओर]: यह कहना है कि इमाम मुहम्मद रंग, फिर स्वाद और फिर भागों के संदर्भ में प्रबलता को महत्व देते हैं। सही विचार इमाम यूसुफ का है क्योंकि प्रबलता भागों के आधार पर होती है, क्योंकि एक यौगिक का अस्तित्व उसके भागों से प्राप्त होता है; इसलिए, यह प्रबलता अधिक प्राथमिक है। यह वही सिद्धांत है जिसे मलिक अल-उलेमा और इमाम अल-इस्बीजाबी (अल्लाह उन पर दया करे) ने अपनाया है, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, और इसका विवरण, ईश्वर ने चाहा तो भविष्य में भी आएगा। समझें और दृढ़ रहें। (त)

[अरबी बॉक्स - मध्य बाईं ओर]: जहाँ तक उद्देश्यों के अनुसार प्रबलता का प्रश्न है, जिसे उसकी सामान्य आवश्यकता—नाम के विलोप—द्वारा व्यक्त किया जाता है, उस पर आम सहमति भी स्पष्ट है। जैसा कि बिंदु 28 में कई बार बताया गया है। इमाम अल-ज़ैलाई ने स्पष्ट रूप से इसे प्रतिपादित किया है, भले ही उन्होंने अपने सामान्य नियम में इसकी अनदेखी की हो। खजूर के नबीज़ (शरबत) के संबंध में असहमति केवल सादृश्य (क़यास) के विपरीत एक विशिष्ट पाठ (नस्स) के कारण थी, जो बाद में इमाम के पीछे हटने के साथ समाप्त हो गई। अल-हिल्या का कथन आगे आएगा।

[उर्दू बॉक्स - मध्य दाईं ओर]: जैसा कि नंबर 28 में कई बार बताया गया है, इमाम ज़ैलाई ने इस पर स्पष्ट आदेश दिया है, भले ही उन्होंने नियम में असावधानी बरती हो। वास्तव में, खजूर के नबीज़ के बारे में असहमति थी क्योंकि इस मामले में सादृश्य के विपरीत आदेश आया था, और यह असहमति इमाम अबू हनीफा के पीछे हटने के कारण भी समाप्त हो गई। हिल्या का उद्धरण आगे आएगा। (त)

[मुख्य पाठ]: संक्षेप में, इन तीनों पर आम सहमति में कोई संदेह नहीं है और यहाँ तीनों तरह से इसकी व्याख्या की गई है। 'प्रकृति की प्रबलता' कुदुरी और हिदाया में आई है: "किसी अन्य चीज़ द्वारा उस पर प्रबलता जो उसे पानी की प्रकृति से बाहर निकाल देती है।"[2] (पानी को किसी अन्य पदार्थ की प्रबलता ने उसकी प्रकृति से हटा दिया। त) मुल्तका अल-अबहर में: "ऐसे पानी से नहीं जो

दूसरे की प्रबलता के कारण अपनी प्रकृति छोड़ चुका हो।"[3] (ऐसे पानी से नहीं जो किसी अन्य की प्रबलता के कारण अपनी प्रकृति से बाहर हो गया हो। त) ग़ुरर और नूर अल-इदह से: "ऐसे पानी से नहीं जिसकी प्रकृति दूसरे की प्रबलता के कारण समाप्त हो गई हो।"[4] (ऐसे पानी से वज़ू जायज़ नहीं है जिसकी प्रकृति किसी अन्य पदार्थ की प्रबलता के कारण समाप्त हो गई हो। त) हिदाया से नंबर 70 में: "सिवाय इसके कि वह पानी पर हावी हो जाए, जिससे वह मिश्रित सवीक़ (जौ का शरबत) की तरह हो जाए।"[5] (मगर वह पानी में मिलकर प्रबल हो जाए...)

[पाद लेख]: 1. अल-इनायाह मा अल-फतह अल-क़दीर, वज़ू के लिए अनुमत पानी का अध्याय, नूरिया रज़विया प्रेस, सुक्कुर, 1/63। 2. अल-हिदायाह, वज़ू के लिए अनुमत पानी का अध्याय, अरबिया प्रेस, कराची, 1/18। 3. मुल्तका अल-अबहर, शुद्ध जल से पवित्रता की अनुमति पर अनुभाग, अमीरा प्रेस, मिस्र, 1/28। 4. नूर अल-इदह, पवित्रता की पुस्तक, इल्मिया प्रेस, लाहौर, पृष्ठ 3। 5. अल-हिदायाह, वज़ू के लिए अनुमत पानी का अध्याय, अरबिया प्रेस, कराची, 1/18।

[عربی عبارت - اوپر بائیں جانب]: ابی یوسف لان الغلبة بالاجزاء غلبة حقیقیة اذ وجود المرکب باجزائه فکان اعتباره اولیٰ اھ وھی الضابطة التی مشی علیھا ملك العلماء والامام الاسبیجابی رحمھما اللہ تعالی کما مرو یأتی تفصیله ان شاء اللہ تبارک و تعالی فافھم وتثبت۔

[اردو عبارت - اوپر دائیں جانب]: کا قول ہے کہ امام محمد رنگ پھر ذائقہ اور پھر اجزاء کے غلبہ کا اعتبار کرتے ہیں اور صحیح امام یوسف کا قول ہے کیونکہ غلبہ اجزاء کے اعتبار سے ہوتا ہے کیونکہ مرکب کا وجود اجزاء سے حاصل ہوتا ہے لہٰذا اس غلبہ کا اعتبار اولٰی ہے، اور یہی وہ ضابطہ ہے جس کو ملک العلماء اور امام اسبیجابی رحمہما اللہ نے اپنایا ہے جیسا کہ پہلے گزر چکا ہے اور اس کی تفصیل ان شاء اللہ تبارک وتعالیٰ آئندہ بھی آرہی ہے سمجھو اور قائم رہو۔ (ت)

[عربی عبارت - درمیان بائیں جانب]: رہا غلبہ بحسب مقاصد جسے اس کے لازم اعم زوال اسم سے تعبیر کرتے ہیں اس پر اجماع بھی ظاہر کما ممرارا منھا فی نمرة وان الامام الزیلعي قد نص علیه وان اغفله فی ضابطته وان الخلاف انما کان فی نبیذ التمر لاجل النص علی خلاف القیاس ثم انقطع برجوع الامام ویأتی قول الحلیة۔

[اردو عبارت - درمیان دائیں جانب]: جیسا کہ متعدد بار نمبر ۲۸ میں گزرا، اور امام زیلعی نے اس پر نص کی ہے اگرچہ انہوں نے ضابطہ میں غفلت سے کام لیا ہے اور بیشک نبیز تمر میں اس کا خلاف ہے تو اس لئے کہ اس بارے میں مخالف قیاس نص وارد ہوئی ہے اور یہ خلاف بھی امام ابو حنیفہ کی رجوع کی وجہ سے ختم ہو گیا، اور حلیہ کا قول آئے گا۔ (ت)

[اصل متن]: بالجملہ ان تین پر اجماع میں شک نہیں اور یہاں تینوں طور پر اس کی تفسیر کی گئی۔ غلبہ طبع قدوری و ہدایہ سے گزرا غلبہ علیہ غیرہ فاخرجہ عن طبع الماء[2] (پانی کو غیر کے غلبہ نے اس کی طبیعت سے خارج کر دیا۔ ت) ملتقٰی الابحر سے لایبماء خرج عن طبعہ بغلبۃ غیرہ[3] (نہ ایسے پانی سے جو غیر کے غلبہ کی وجہ سے اپنی طبیعت سے خارج ہو چکا ہو۔ ت) غرر ونورالایضاح سے لایبماء زال طبعہ بغلبۃ غیرہ[4] (ایسے پانی سے وضو جائز نہیں جس کی طبیعت غیر کے غلبہ کے وجہ سے ختم ہو چکی ہو۔ ت) ہدایہ سے نمبر ۷۰ میں الا ان یغلب علی الماء فیصیر کالسویق المخلوط 5 (مگر وہ پانی میں مل کر غالب ہو جائے۔

[حواشی]: 1 العنایۃ مع الفتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء۔ مطبعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۳ 2 الھدایۃ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء مطبع عربیہ کراچی ۱/ ۱۸ 3 ملتقٰی الابحر فصل تجوز الطھارۃ بالماء المطلق مطبعہ عامر مصر ۱/ ۲۸ 4 نورالایضاح کتاب الطہارت مطبعہ علمیہ لاہور ص ۳ 5 الھدایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضوء مطبع عربیہ کراچی ۱/ ۱۸

Fatawa Razawiya, Volume 3

In 'Fara'id' it is mentioned: The author cited 'ashriba' (drinks/syrups) and 'khal' (vinegar) as two examples of water being overcome by something else, so the meaning would be...

[Arabic Column 1]: "...with water that has been overcome by something else, removing it from the nature of water. Honey and molasses, when mixed in drinks, do not remove water from its thinness (fluidity) [1]. Even if this were assumed, how would it be correct regarding vinegar? The correct view is what was stated in 'al-Ghayah' at the end, and in 'al-Inayah' and 'al-Binayah' at the beginning: that if he meant 'ashriba' as those extracts obtained from trees, such as pomegranate or lemon juice, and by 'khal' he meant pure vinegar, then they are similar to what is squeezed from trees and fruits..."

[Urdu Column 2]: It is that water upon which something else becomes dominant and removes the water from its natural state. When honey and syrup are mixed with water, the water does not lose its fluidity due to their mixing. Even if this were assumed for the sake of argument, how would this be correct in the case of vinegar? (Because vinegar itself is fluid and does not end the fluidity of water). Therefore, what was concluded in 'Ghayah' at the end and in 'Inayah' and 'Binayah' at the beginning is correct: that if by syrup is meant pomegranate or lemon juice etc., and by vinegar pure vinegar is meant... (continued on the next page).

[Arabic Column 1]: I say: (2) It is surprising that Fadhil Qara Baghi, in his commentary on Sadr al-Sharia, favored what is incorrect and ignored the correct text of Sadr al-Sharia. It seems he intended to refute him, saying: "It is apparent that the author's words 'like drinks' refer to those syrups made by mixing molasses, honey, and sugar with water. In that case, these drinks would be examples of water whose nature has ended due to the dominance of foreign parts. And his words 'bean water and broth' would be examples of water whose nature has ended due to cooking." There are objections to this Fadhil's speech from other perspectives as well, but we will not prolong the discussion by mentioning them. 12 May Allah forgive him.

[Urdu Column 2]: I say: It is surprising that Fadhil Qara Baghi, in his commentary on Sadr al-Sharia, highlighted the incorrect and turned away from the correct text of Sadr al-Sharia. By doing so, intending to object to the author, he said that it is apparent that the author's words 'like drinks' refer to those syrups made by mixing honey, molasses, and sugar with water. In this case, these syrups would become the

example of that water whose nature has ended due to the dominance of a foreign substance, and the author's words 'bean water and broth' would be the example of that water which has lost its nature due to cooking. There are objections to this Fadhil's discourse from other aspects as well, which we do not prolong the discussion by stating. 12 May he be forgiven (T).

Footnotes: 1. Al-Hidayah, Chapter: Water with which Wudu is permissible, 1/18. 2. Al-Inayah with Fath al-Qadir, Chapter: Water with which Wudu is permissible, 1/62.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सोम (भाग 3)

'फ़राइद' में है: मुसन्निफ़ (लेखक) ने 'अशरबा' (पेय पदार्थ) और 'ख़ल' (सिरका) को उन उदाहरणों के रूप में रखा है जहाँ पानी पर कोई और चीज़ प्रभावी हो जाए, तो इसका अर्थ होगा...

[अरबी कॉलम 1]: "...उस पानी के साथ जिस पर किसी और चीज़ का ग़लबा हो गया हो, जिससे वह पानी की प्रकृति से बाहर निकल गया हो। शहद और शीरा शरबतों में इस तरह नहीं मिलाए जाते कि वे पानी को उसकी तरलता से बाहर निकाल दें[1]। और यदि ऐसा मान भी लिया जाए, तो सिरके के मामले में यह कैसे सही होगा? सही वही है जो 'अल-ग़ाया' में अंत में और 'अल-इनाया' और 'अल-बिनाया' में शुरुआत में बताया गया कि यदि शरबत से मुराद पेड़ों से प्राप्त होने वाले रस हों जैसे अनार या नींबू का रस, और सिरके से मुराद शुद्ध सिरका हो, तो वे पेड़ों और फलों से निचोड़े गए रस के समान होंगे..."

[उर्दू कॉलम 2]: वह पानी है जिस पर कोई और चीज़ हावी हो जाए और वह पानी को उसकी प्राकृतिक स्थिति से निकाल दे। जबकि शहद और शीरा को जब पानी में मिलाते हैं, तो उनके मिलने से पानी अपनी तरलता (रक़त) से बाहर नहीं निकलता। और यदि बिल-फ़र्ज़ (मान लें) यह मान लिया जाए, तो सिरके में यह बात कैसे सही होगी? (क्योंकि सिरका स्वयं तरल है, पानी की तरलता को समाप्त नहीं करता)। इसलिए 'ग़ाया' में अंतिम और 'इनाया' व 'बिनाया' में प्रारंभिक निष्कर्ष सही है कि यदि शरबत से अनार या नींबू आदि का रस मुराद हो और सिरके से शुद्ध सिरका... (अगले पृष्ठ पर जारी)।

[अरबी कॉलम 1]: मैं कहता हूँ: (2) फ़ाज़िल क़रह बाग़ी पर आश्चर्य है कि उन्होंने सद्रुश-शरिया के हाशिया (टीका) में ग़लत बात का समर्थन किया और सद्रुश-शरिया के सही पाठ की अनदेखी की। ऐसा लगता है कि वे उन पर आपत्ति करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने कहा: "स्पष्ट है कि लेखक के शब्द 'शरबत की तरह' उन शरबतों की ओर इशारा करते हैं जो शहद, शीरा और चीनी को पानी में मिलाकर बनाए जाते हैं। ऐसी स्थिति में ये शरबत उस पानी का उदाहरण होंगे जिसकी प्रकृति बाहरी तत्वों के प्रभाव के कारण समाप्त हो गई हो। और उनके शब्द 'सेम का पानी और शोरबा' उस पानी का उदाहरण होंगे जिसकी प्रकृति पकाने के कारण समाप्त हो गई हो।" इस फ़ाज़िल के कथन पर अन्य दृष्टिकोणों से भी आपत्तियाँ हैं, लेकिन हम उनका वर्णन करके बात को लंबा नहीं करना चाहते। 12 अल्लाह उन्हें क्षमा करे।

[उर्दू कॉलम 2]: मैं कहता हूँ: फ़ाज़िल क़रह बाग़ी पर आश्चर्य है कि उन्होंने सद्रुश-शरिया के हाशिये में ग़लत को प्रकट किया और सद्रुश-शरिया के सही पाठ से मुँह मोड़ा, जिससे उन्होंने लेखक पर आपत्ति करने का इरादा करते हुए कहा कि ज़ाहिर यह है कि लेखक के शब्द 'कल-अशरबा' (शरबत की तरह) से मुराद वे शरबत हैं जो शहद, शीरा और चीनी मिलाकर पानी बनाया गया हो। तो ऐसी स्थिति में ये शरबत उस पानी का उदाहरण बन जाएँगे जिसकी प्रकृति बाहरी चीज़ के हावी होने के कारण समाप्त हो चुकी हो, और लेखक का कथन 'सेम का पानी और शोरबा' उस पानी का उदाहरण होगा जो पकने के कारण अपनी प्रकृति खो चुका हो। इस फ़ाज़िल के कलाम में अन्य वजहों से भी आपत्तियाँ हैं, जिनका ज़िक्र करके हम कलाम को लंबा नहीं करते। 12 उन्हें क्षमा किया जाए (टी)।

फुटनोट्स: 1. अल-हिदाया, बाब: वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, 1/18. 2. अल-इनाया मअ फ़तह अल-क़दीर, बाब: वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, 1/62.

पेज 92/756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

میں فرائد سے ہے جعل المصنف الاشربة والخل مثالین لما غلب علیہ غیرہ فیکون المراد من

[عربی کالم 1]: بماء غلب علیه غیره فاخرجه عن طبع الماء اھ والشهد والدبس لا یخلطان فی الاشربة بحیث یخرجآن الماء عن رقته (۱) وان فرض فکیف یستقیم هذا فی الخل فالصواب ما افاد فی الغایة اخرا وفی العنایة والبنایة اولا انه وان ارادبهاء الاشربة المتخذة من الشجر کشراب الرمان والحماض وبالخل الخل الخالص کانا من نظیر المعتصر من الشجر والثمر اھ وقد نص علی عهـ

[اردو کالم 2]: یوں ہے وہ پانی جس پر غیر غالب ہو جائے اور وہ پانی کو اس کی طبیعت سے نکال دے اھ جبکہ شہد اور شیرہ کو پانی میں ملائیں تو ان کے ملنے میں پانی اپنی رقت سے خارج نہیں ہوتا اور بالفرض یہ مان لیا جائے تو سرکہ میں یہ بات کیسے درست ہوگی (کیونکہ سرکہ خود رقیق ہے پانی کی رقت کو ختم نہیں کرتا) لہٰذا غایہ میں آخری اور عنایہ اور بنایہ میں اول جو مفاد حاصل ہوا وہ درست ہے کہ اگر شربت سے انار کا یا لیموں وغیرہ کا جوس مراد ہو اور سرکہ سے خالص سرکہ (باقی بر صفحہ آئندہ)۔

[عربی کالم 1]: عه اقول: (۲) والعجب من الفاضل قره باغی فی حاشیة صدر الشریعة استظهر مالایصح واعرض عن نص صدر الشریعة الصحیح کانه یرید الرد علیه فقال الظاهران المراد من قول المصنف کالاشربة التی تتخذ من الدبس والشهد والسکر یخلطها مع الماء فحینئذ یکون قوله کلاشربة نظیر ما زال طبعه بغلبة غیره اجزاء وقوله ماء الباقلاء والمرق نظیر ما زال طبعه بالطبخ اھ وفیه کلام من وجوه اخر لا نطیل بها ۱۲ منه غفر له (م)۔

[اردو کالم 2]: اقول: فاضل قرہ باغی پر تعجب ہے کہ انہوں نے صدر الشریعہ کے حاشیہ میں غلط کو ظاہر کیا اور صدر الشریعہ کی صحیح نص سے اعراض کیا جس سے انہوں نے مصنف پر اعتراض کا ارادہ کرتے ہوئے کہا کہ ظاہر یہ ہے کہ مصنف کے قول کالاشربہ سے مراد وہ شربت ہیں جو شہد، شیرہ اور شکر ملا کر پانی بنایا گیا ہو تو اس صورت میں یہ شربت اس پانی کی نظیر بن جائیں گے جس پر غیر کے غلبے کی وجہ سے اس کی طبع ختم ہو چکی ہو اور مصنف کا قول ماء الباقلاء والمرق اس پانی کی نظیر ہوگی جو پکانے کی وجہ سے طبع ختم کر چکا ہو، اس فاضل کے کلام میں دوسری وجوہ سے اعتراض ہیں جن کے بیان سے ہم کلام کو طویل نہیں کرتے ۱۲ امنہ غفرلہ (ت)۔

حاشیہ: ۱۔ الہدایہ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ۱/۱۸ ۲۔ العنایہ مع فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ۱/۶۲

Fatawa Razawiyya Volume 3

Sweet drinks mixed with water such as molasses and honey, and of vinegar, vinegar mixed with water...

(Remainder of the footnote from the previous page) ...is intended, then these two are parallels of juices from trees and fruits (Sharah).

That is mentioned in the commentary of Al-Wiqaya and others. Yes (1), this escaped Allama Ibrahim al-Halabi in his text Al-Multaqa, so he omitted what was in his original sources Al-Quduri and Al-Wiqaya regarding the mention of what is squeezed from trees or fruits. He kept drinks and vinegar in the examples and determined predominance based on cooking, stating: "Ablution is not permissible with water that has departed from its nature due to the predominance of another substance or through cooking, such as drinks, vinegar, rose water, beans, and broth, etc." Thus, he faced the same difficulty encountered in Al-'Inaya regarding vinegar and drinks, with one additional point (2) which is rose water. Rose water is definitely not water that has departed from its nature due to the predominance of another or by cooking (3). Similarly, this objection applies to Al-Fara'id. As for the response given in Majma' al-Anhur, it stated: "There is no reason for vinegar to be an example for something dominated by another, even if it is mixed with water, for it is not true to say of it that it is water over which something else has predominated. When vinegar is mixed with water and the water is in the minority, it is called 'vinegar mixed with water', not 'water mixed with vinegar'. Reflect." I say: this is (4) nothing, for the discussion here is not about the persistence of applying the name 'water', but rather an explanation of the reality that if water is mixed with vinegar and the vinegar is in greater quantity, then it is not permissible to perform ablution with it.

(To be continued on the next page)

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

मीठे पेय जो पानी के साथ मिश्रित होते हैं जैसे शीरा और शहद, और सिरका, सिरका पानी के साथ मिश्रित...

(पिछले पृष्ठ का शेष फुटनोट) ...इरादा हो, तो ये दोनों पेड़ों और फलों के रस की मिसालें हैं (अह शरह)।

यह वकाया और अन्य की व्याख्या में उल्लिखित है। हाँ (1), यह बात अल्लामा इब्राहिम हलबी से उनके ग्रंथ मुल्तक़ी में छूट गई, इसलिए उन्होंने अपने मूल स्रोतों क़ुदूरी और वक़ाया में पेड़ों या फलों से निचोड़े गए रस के ज़िक्र को हटा दिया। उन्होंने उदाहरणों में पेय पदार्थों और सिरके को रखा और पकाने के आधार पर प्रबलता (ग़लबा) को निर्धारित किया, यह कहते हुए: "उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं जो किसी अन्य चीज़ की प्रबलता या पकाने के कारण अपने स्वभाव से बाहर हो गया हो, जैसे पेय पदार्थ, सिरका, गुलाब जल, लोबिया और शोरबा आदि।" इस प्रकार, उन्हें वही कठिनाई हुई जो इनाया में सिरके और पेय पदार्थों के संबंध में हुई थी, एक अतिरिक्त बिंदु (2) के साथ जो गुलाब जल है। गुलाब जल निश्चित रूप से वह पानी नहीं है जो किसी अन्य की प्रबलता या पकाने के कारण अपने स्वभाव (यानी तरलता) से बाहर निकल गया हो (3)। यही आपत्ति फ़राइद पर भी लागू होती है। जहाँ तक मज्मउल अनहुर में दी गई प्रतिक्रिया का सवाल है, वहां कहा गया: "सिरके को किसी दूसरी चीज़ के प्रभुत्व का उदाहरण मानने का कोई कारण नहीं है, भले ही वह पानी के साथ मिश्रित हो। यह सच नहीं कहा जा सकता कि यह वह पानी है जिस पर किसी और का प्रभुत्व है। जब सिरका पानी में मिलाया जाता है और पानी की मात्रा कम होती है, तो इसे 'पानी मिश्रित सिरका' कहा जाता है, न कि 'सिरका मिश्रित पानी'। विचार करें।" मैं कहता हूँ: यह (4) कुछ भी नहीं है, क्योंकि यहाँ चर्चा इस बात पर नहीं है कि "पानी" नाम बना रहता है या नहीं, बल्कि वास्तविकता का वर्णन है कि यदि पानी को सिरके में मिलाया जाता है और सिरका अधिक है, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है।

(अगले पृष्ठ पर जारी)

पृष्ठ 93/756

الاشربة الحلو المخلوط بالماء كالدبس والشهد و من الخل الخل المخلوط بالماء على (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) مراد ہو، تو پھر یہ دونوں شجر و ثمر کے جوس کی نظیر ہیں اہ شرح ذلك في شرح الوقاية وغیرہ نعم (۱) ذهب هذا عن وقایه وغیرہ میں یہ منصوص ہے، ہاں علامہ ابراہیم حلبی سے یہ العلامة ابراهيم الحلبي في متنه الملتقى فاسقط بات چھوٹ گئی ہے اور انہوں نے اپنے متن ملتقی میں اس کے ماكان في اصوله القدوری والوقاية من ذكر اصول قدوری اور وقایہ کی عبارت میں ما اعتصر من شجر ماعتصر من شجر اوثمر و ابقی فی الامثلة الاشربة اوثمر کے ذکر کو ساقط کردیا اور شربت اور سرکہ کی مثالوں کو والخل وجعل الغلبة باعتبار المطبع حیث قال باقی رکھا اور غلبہ کو طبخ کے اعتبار سے قرار دیا، اور یوں کہا جو پانی لا بماء خرج عن طبعه بغلبة غیرہ اوبالطبخ اپنی طبخ سے غیر کے غلبہ یا پکانے کی وجہ سے خارج ہو چکا ہو تو اس کالا شربة والخل وماء الورد والباقلاء والمرق اہ سے وضو جائز نہیں، جیسے شربت اور سرکہ، عرق گلاب و باقلاء فلزمه مالزم العناية فی العناية الاخری بالخل اور شوربا اہ تو ان کو عنایہ والی آخری دشواری لازم آئی جس کی والاشربة و شیئ (۲) زائد وهو ماء الورد فليس قطعاً وجہ سرکہ، شربت اور مزید عرق گلاب کا ذکر ہے اور یہ قطعاً ایسے ماء خرج عن طبعه بغلبة غیرہ اوبالطبخ (۳) پانی نہیں ہیں جو غیر کے غلبہ یا پکانے کی وجہ سے اپنی طبیعت سے وكذلك يرد هذا على الفرائد اما مارد به عليه في یعنی رقت سے خارج ہوئے ہوں اور یہی اعتراض فرائد پر بھی مجمع الانهر اذقال لا وجه لان يكون الخل مثالاً لازم آتا ہے لیکن فرائد پر مجمع الانہر میں جو اعتراض کیا، جہاں یہ کہا لما غلب عليه غیرہ وان كان مخلوطاً بالماء فانه کہ اس کی کوئی وجہ نہیں کہ سرکہ کو غیر کے غلبہ کی مثال قرار دیا لايصدق عليه انه ماء غلب عليه غیرہ فان الخل اذا جائے اگرچہ وہ پانی سے مخلوط ہو، کیونکہ جب

سرکہ میں پانی ملایا اختلط بالماء والماء مغلوب یقال خل مخلوط جائے اور پانی مغلوب ہو تو اس کو یہ نہیں کہہ سکتے کہ یہ ایسا پانی بالماء لاما مخلوط بالخل تدبر اہ فاقول : لیس ہے جس پر غیر کا غلبہ ہے کیونکہ سرکہ جب پانی میں ملے اور پانی (۴) بشیئ اذ لیس الکلام ھھنا في بقاء اطلاق اسم مغلوب ہو تو کہا جاتا ہے یہ سرکہ ہے جس میں پانی ملایا گیا نہ کہ یہ الماء بل بیان للواقع ان ماء خلط بالخل والخل پانی ہے جس میں سرکہ ملایا گیا تدبّر اھ پس اس بارے میں اکثر لایجوز الوضوء بہ (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Rizvia Volume 3

What was indicated in 'An-Nihaya' and 'Al-Inaya'[1] (The author gave examples of the dominance of 'other' using syrup and vinegar. By syrup is meant water mixed with sweetness like nectar or honey, and by vinegar is meant vinegar mixed in water, as mentioned in 'Nihaya' and 'Inaya'). Regarding the dominance of parts, from 'Kanz': 'Water over which other parts have dominated'[2] (Water where 'other' has become dominant in terms of parts, performing wudu with it is not permissible). From 'Hidaya' (p. 122): 'Dominance by parts is what is correct'[3] (In dominance, parts are considered, and this is correct). Also from 'Khania': 'It is considered from the perspective of parts, and that is correct'[4]. From 'Munya' (p. 71): 'Dominance is from the perspective of parts'[5]. From 'Jawahir al-Fatawa' (p. 85): 'If its parts dominate over the water, it prevents ablution'[6] (If the parts of the mixed substance dominate over the water, then wudu with it is not allowed).

Second Discussion: What is meant by dominance of parts? I say, this correct and reliable saying has been explained by these three consensus points: it clearly means the plurality of parts, i.e., the substance mixed in water is greater in quantity than the water. In number 262, it was passed that the ruling for equal is like the ruling for greater.

I say: And what is strange is the saying of the Allama | I say, and I [find strange] this saying of Allama Shami

(Remainder of the footnote from previous page) | I say that this is not correct because here it is not about the remains of the application of the name 'water', but rather it is a statement of fact that when water is mixed in vinegar and vinegar is dominant, then wudu with it is not permissible. And indeed it is water, you yourself mentioned water in it that this water is dominated, but as for the issue of the name 'water', the text pointed to it by describing it as vinegar, not as water. (T) "There is no doubt it is water, and you have said the water is overcome; as for the name, the text pointed to it when it expressed it as vinegar, not water." - From him, may he be forgiven (M)

1 Majma' al-Anhur, Tajuz al-Tahara al-Ma al-Mutlaq, 'Amira Egypt, 1/28. 2 Kanz al-Daqaiq, Bab al-Miyah, HM Saeed Company Karachi, 1/11. 3 Al-Hidaya, Al-Ma al-ladhi yajuzu bihi al-Wudu, Arabiya Karachi, 1/18. 4 Qadi Khan, Fima la yajuzu bihi al-Tawaddi, Naval Kishore Lucknow, 1/9. 5 Munya al-Musalli, Fasl fil-Miyah, Aziziya Kashmiri Bazar Lahore, p. 18. 6 Jawahir al-Fatawa.

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरी)

'अन्-निहाया' और 'अल-इनाया'[1] में जिसकी ओर इशारा किया गया (मुसन्निफ़ ने शरबत और सिरका को 'ग़ैर' के ग़लबा (प्रधानता) की मिसालें करार दिया है। शरबत से मुराद पानी से मिश्रित मीठा होगा जैसे शीरा और शहद, और सिरके से मुराद पानी में मिला हुआ सिरका होगा जैसा कि निहाया और इनाया में है।) अज्ज़ा (अंशों) का ग़लबा 'कन्ज़' से: 'वह पानी जिस पर अन्य अंश ग़ालिब (प्रभावी) हो जाएं[2] (जिस पानी पर अंशों के लिहाज़ से ग़ैर का ग़लबा हो जाए तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है।) 'हिदाया' से पृष्ठ १२२ में: 'अंशों के आधार पर ग़लबा ही सही है'[3] (ग़लबा में अंशों का एतबार है और यही सही है।) तथा 'खनिया' से: 'अंशों की दृष्टि से विचार किया जाता है और यही सही है'[4]। 'मुन्या' से पृष्ठ ७१ में: 'ग़लबा अंशों की दृष्टि से होता है'[5]। पृष्ठ ८५ में 'जवाहरुल फ़तावा' से: 'यदि उसके अंश पानी पर ग़ालिब आ जाएं तो वह वज़ू से रोकता है'[6] (अगर मिलने वाली चीज़ के अज्ज़ा पानी पर ग़ालिब हो जाएं तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है।)

दूसरी बहस: अज्ज़ा के ग़लबा से क्या मुराद है? मैं कहता हूँ (अक़ूल): यह सही और मोतमिद (विश्वसनीय) क़ौल भी इन तीनों इज्माई (सर्वसम्मत) बातों से स्पष्ट किया गया है। इससे ज़ाहिर तो अज्ज़ा की अधिकता है, यानी पानी में जो चीज़ मिले वह मात्रा में पानी से अधिक हो। और नंबर २६२ में गुज़रा कि बराबरी का हुक्म भी अधिकता जैसा ही है।

मैं कहता हूँ: और अल्लामा का यह कथन आश्चर्यजनक है | मैं कहता हूँ और मुझे अल्लामा शामी के इस क़ौल से

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग) | मैं कहता हूँ कि यह दुरुस्त नहीं है क्योंकि यहाँ पानी के नाम के प्रयोग के बने रहने का वर्णन नहीं है, बल्कि यह तो वास्तविक स्थिति का वर्णन है कि जब पानी सिरके में मिले और सिरका ग़ालिब हो तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है। और बेशक यह पानी है, आपने स्वयं इसमें पानी का उल्लेख किया कि यह पानी मगलूब (दबा हुआ) है, लेकिन पानी के नाम का मसला तो उसकी ओर मत्न (मूल पाठ) ने इशारा करते हुए उसे सिरके से व्यक्त किया है, पानी से व्यक्त नहीं किया। (त) "और इसमें कोई संदेह नहीं कि वह पानी है, और आपने कहा कि पानी अभिभूत है; जहाँ तक नाम की बात है, मूल पाठ ने उसकी ओर इशारा किया जब उसने इसे सिरके के रूप में व्यक्त किया, न कि पानी के रूप में।" - उससे, ईश्वर उसे क्षमा करे (म)

1. मजम' अल-अनहुर, तजूज़ु अत-तहारत अल-मा अल-मुतलक़, आमिरा मिस्र, १/२८।

2. कन्ज़ुद दक़ाईक़, बाब अल-मियाह, एच.एम. सईद कंपनी कराची, १/११।

3. अल-हिदाया, अल-मा अल-लज़ी यजूज़ु बिहिल वज़ू, अरबिया कराची, १/१८।

4. क़ाज़ी ख़ान, फ़ीमा ला यजूज़ु बिहित तवद्दी, नवल किशोर लखनऊ, १/९।

5. मुनियतुल मुसल्ली, फ़स्ल फ़िल मियाह, अज़ीज़िया कश्मीरी बाज़ार लाहौर, पृष्ठ १८।

6. जवाहरुल फ़तावा।

पेज ९४ ऑफ ७५६

ما اشیر الیه في النهایة والعنایة۸1 (مصنف نے شربت اور سرکہ کو غیر کے غلبہ کی مثالیں قرار دیا ہے تو شربت سے مراد پانی سے مخلوط میٹھا ہوگا جیسے شیرہ اور ہد، اور سرکہ سے پانی میں مخلوط سرکہ مراد ہوگا جیسا کہ نہایہ اور عنایہ میں ہے۔ ت) غلبہ اجزاء کنز سے گزر االماء غلب علیه غیره اجزاء۸2 (جس پانی پر اجزاء کے لحاظ سے غیر کا غلبہ ہو جائے تو اس سے وضو جائز نہیں ہے۔ ت) ہدایہ سے ۱۲۲ میں الغلبة بالاجزاء هو الصحیح۸3 (غلبہ میں اجزاء کا اعتبار ہے اور یہی صحیح ہے۔ ت) نیز خانیہ سے تعتبر من حیث الاجزاء هو الصحیح۸4 (غلبہ میں اجزاء کا اعتبار ہے اور یہی صحیح ہے۔ ت) ۷۱ میں منیہ سے الغلبة من حیث الاجزاء۸5 (غلبہ اجزاء کے اعتبار سے ہوتا ہے۔ ت) ۸۵ میں جواہر الفتاوی سے ان غلب اجزاؤها علی الماء یمنع التوضی۸6 (اگر ملنے والی چیز کے اجزاء پانی پر غالب ہو جائیں تو اس سے وضو جائز نہیں ہے۔ ت)

بحث دوم : غلبہ اجزاء سے کیا مراد ہے اقول یہ صحیح معتمد قول بھی ان تینوں اجماعی باتوں سے تفسیر کیا گیا اس سے ظاہر تو کثرت اجزاء ہے یعنی پانی میں جو چیز ملے پانی سے مقدار میں زائد ہو اور نمبر ۲۶۲ میں گزرا کہ مساوی کا حکم بھی مثل زائد ہے۔

اقول: ومن العجب قول العلامة | میں کہتا ہوں اور مجھے علامہ شامی کے اس قول سے

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) | میں کہتا ہوں کہ یہ درست نہیں ہے کیونکہ یہاں پانی کے نام کے ولاشك انه ماء وقد قلتم والماء مغلوب اما الاسم | اطلاق کی بقاء کا بیان نہیں ہے بلکہ یہ تو بیان واقع ہے کہ جب پانی وقد اشار الیه المتن اذ عبر عنه بالخل لابالماء ۱۲ | سرکہ میں ملے اور سرکہ غالب ہو تو اس سے وضو جائز نہیں منه غفر له (م) | ہے ، اور بیشک یہ پانی ہے تم نے خود اس میں

پانی کا ذکر کیا کہ یہ پانی مغلوب ہے لیکن پانی کے نام کا مسئلہ تو اس کی طرف متن نے اشارہ کرتے ہوئے اس کو سرکہ سے تعبیر کیا ہے پانی سے تعبیر نہیں کیا۔ (ت)

1 مجمع الانہر تجوز الطھارۃ الماء المطلق عامرہ مصر ۱/ ۲۸ 2 کنز الدقائق باب المیاہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۱ 3 الھدایۃ الماء الذي یجوز بہ الوضوء عربیہ کراچی ۱/ ۱۸ 4 قاضی خان فیما لایجوز بہ التوضی نولکشور لکھنو ۱/ ۹ 5 منیۃ المصلی فصل فی المیاہ عزیزیہ کشمیری بازار لاہور ص ۱۸ 6 جواہر الفتاوی

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Section 1] Arabic text: Regarding the restriction of being 'overcome' based on prevalence, and if not, it prevents equality in some cases as will follow... etc. And what is the case where equality is not prevented? Urdu text: It was surprising that they, while discussing the restriction of water being overcome, said that being overcome was stated based on common occurrences, otherwise in some cases, wudhu (ablution) is invalid even when the water and the substance mixed in it are equal, as will follow. (T: The reason for surprise is that the scholar declared equality as a preventative in some cases, whereas whether the additive is dominant in terms of parts or equal, the ruling for both is the same; therefore, equality of the other's parts is a preventative in its entirety. If in Allama Shami's view some equality does not become a preventative, then which case is that? (T))

[Section 2] In Ghunyah, it is stated: Arabic text: (Predominance for water in terms of parts) is when the parts of water are more than the parts of the mixing substance. Urdu text: Water will be dominant when the parts of water are more than the parts of the substance mixed in it (meaning if the parts are equal, the water will be considered overcome). (T)

[Section 3] In Khizanat al-Muftin, it is stated: Arabic text: The consideration in it is the abundance of parts. If the parts of water are more, ablution with it is permissible; otherwise, no. This is a part of the Shaybani rule and will come [later], God willing. Urdu text: Predominance considers the abundance of the parts of water compared to the parts of the substance mixed in it. If the water is predominant, wudhu is permissible; otherwise, it is not. This is a part of the Shaybani principle, and it will be presented shortly, God willing. (T)

[Section 4] In Majma' al-Anhur, it is stated: Arabic text: Predominance of something else is that the parts of the additive are more than the parts of water. This is the saying of Abu Yusuf, because real predominance relates to the essence (dhat), whereas predominance by color relates to the attribute (wasf). Urdu text: The predominance of something else means that the substance mixed in the water exceeds the water. This is the opinion of Imam Abu Yusuf. The reason for this is that true predominance is that which relates to the essence, while contrary to that, the predominance of color relates to the attribute.

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Book of Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/133 2. Ghunyat al-Mustamli, Book of Rules of Waters, Sohail Academy Lahore, p. 90 3. Khizanat al-Muftin

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[अनुभाग 1] अरबी पाठ: ग़ालिब होने के आधार पर 'मग़लूब' (दबा हुआ) होने की पाबंदी के संबंध में, और यदि ऐसा नहीं है, तो यह कुछ स्थितियों में समानता को रोकता है जैसा कि आगे आएगा... आदि। और वह कौन सी स्थिति है जहाँ समानता वर्जित नहीं है? उर्दू पाठ: यह आश्चर्यजनक था कि उन्होंने पानी के मग़लूब होने की पाबंदी पर चर्चा करते हुए कहा कि मग़लूब होना अक्सर स्थितियों के आधार पर कहा गया है, अन्यथा कुछ स्थितियों में पानी और उसमें मिलने वाली चीज़ के बराबर होने पर भी वज़ू (शुद्धि) नाजायज़ होता है, जैसा कि आगे आएगा। (त: आश्चर्य का कारण यह है कि अल्लामा ने कुछ स्थितियों में समानता को रुकावट माना है, जबकि हिस्सों के लिहाज़ से मिलने वाली चीज़ का ग़लबा हो या समानता हो, दोनों का हुक्म एक ही है; इसलिए दूसरे के हिस्सों की समानता पूरी तरह से रुकावट है। अगर अल्लामा शामी की नज़र में कोई समानता रुकावट नहीं बनती है, तो वह कौन सी सूरत है? (त))

[अनुभाग 2] ग़ुनिया में है: अरबी पाठ: (हिस्सों के संदर्भ में पानी का ग़लबा) यह है कि पानी के हिस्से मिलाने वाले पदार्थ के हिस्सों से अधिक हों। उर्दू पाठ: पानी के हिस्सों का ग़लबा तब होगा जब पानी के हिस्से उसमें मिलने वाली चीज़ के हिस्सों से ज़्यादा हों (यानी अगर पानी के हिस्से बराबर हों तो फिर पानी मग़लूब माना जाएगा)। (त)

[अनुभाग 3] ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन में है: अरबी पाठ: इसमें हिस्सों की प्रचुरता का विचार किया जाता है। यदि पानी के हिस्से अधिक हों, तो उससे वज़ू करना जायज़ है; अन्यथा नहीं। यह शैबानी नियम का एक हिस्सा है और इंशा अल्लाह [बाद में] आएगा। उर्दू पाठ: ग़लबा में पानी के हिस्सों की प्रचुरता का लिहाज़ है जो उसमें मिलने वाली चीज़ के हिस्सों के मुक़ाबले में हो। अगर पानी ग़ालिब है तो वज़ू जायज़ है वरना नाजायज़। यह ज़ाबिता-ए-शैबानी का एक हिस्सा है, इंशा अल्लाह जल्द ही पेश किया जाएगा। (त)

[अनुभाग 4] मजमा-उल-अन्हुर में है: अरबी पाठ: किसी और चीज़ के ग़लबा का अर्थ है कि मिलाने वाले पदार्थ के हिस्से पानी के हिस्सों से अधिक हों। यह अबू यूसुफ़ का कथन है, क्योंकि वास्तविक ग़लबा वह है जो ज़ात (अस्तित्व) से संबंधित हो, जबकि इसके विपरीत रंग का ग़लबा वस्फ़ (गुण) से संबंधित होता है। उर्दू पाठ: ग़ैर के ग़लबा का मतलब यह है कि पानी में मिलने वाली चीज़ पानी से

ज़्यादा हो। यह इमाम अबू यूसुफ़ का कौल है। इसकी वजह यह है कि असल ग़लबा वही है जिसका ताल्लुक़ ज़ात से हो, और इसके बर-ख़िलाफ़ रंग के ग़लबा का ताल्लुक़ वस्फ़ से है।

[पाद लेख] 1. रद-उल-मुहतार, बाब अल-मियाह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/133 2. ग़ुनियत-उल-मुस्तमली, बाब अहकाम अल-मियाह, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 90 3. ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन

فتاوی رضویہ جلد سوم

[سیکشن 1] عربی متن: ش التقیید بالمغلوب بناء علی الغالب والافقد یمنع التساوی في بعض الصور کما یأتی ' اه وای صورۃ لا یمنع فیه التساوی۔ اردو متن: تعجب ہوا، جس میں انہوں نے پانی کے مغلوب ہونے کی قید پر بحث کرتے ہوئے کہا کہ مغلوب ہونا اکثر حالات کی بنا پر کہا گیا ورنہ بعض صورتوں میں پانی اور اس میں ملنے والی چیز کے مساوی ہونے پر بھی وضو ناجائز ہوتا ہے، جیسے آئندہ آئے گا اھ (تعجب کی وجہ یہ ہے کہ علامہ نے مساوی کو بعض صورتوں میں مانع قرار دیا حالانکہ اجزاء کے لحاظ سے ملنے والی کا غلبہ ہو یا مساوات ہو دونوں کا حکم ایک ہے لہذا غیر کے اجزاء کی مساوات کلی طور پر مانع ہے) اگر علامہ شامی کی نظر میں کوئی مساوات والی مانع نہ بنتی ہو تو وہ کون سی صورت ہے (ت)

[سیکشن 2] غنیہ میں ہے: عربی متن: (الغلبة للماء من حیث الاجزاء) بأن تکون اجزاء الماء اکثر من اجزاء المخالط [2]۔ اردو متن: پانی کے اجزاء کا غلبہ تب ہوگا جب پانی کے اجزاء اس میں ملنے والی چیز کے اجزاء سے زیادہ ہوں (یعنی اگر پانی کے اجزاء مساوی ہوں تو پھر پانی مغلوب رہے گا)۔ (ت)

[سیکشن 3] خزانتہ المفتین میں ہے: عربی متن: العبرۃ فیه بکثرۃ الاجزاء انکان اجزاء الماء اکثر یجوز التوضی به والافلا 3 اه وھو قطعة من الضابطة الشیبانیة وستأتی ان شاء اللہ تعالیٰ۔ اردو متن: غلبہ میں پانی کے اجزاء اس میں ملنے والی چیز کے اجزاء کی کثرت کا لحاظ ہے اگر پانی کثیر ہو تو وضو جائز ورنہ ناجائز ہے اھ یہ ضابطہ شیبانی کا ایک حصہ ہے عنقریب آئے گا ان شاء اللہ تعالیٰ (ت)

[سیکشن 4] مجمع الانہر میں ہے: عربی متن: غلبة غیره بأن تکون اجزاء المخالط ازید من اجزاء الماء وهو قول ابی یوسف لانه غلبة حقیقة لرجوعها الی الذات بخلاف الغلبة باللون فانها راجعة الی

اردو متن: غیر کے غلبہ کا مطلب یہ ہے کہ پانی میں ملنے والی چیز پانی سے زائد ہو، یہ امام ابویوسف کا قول ہے اس کی وجہ یہ ہے کہ اصل غلبہ وہی ہے جس کا تعلق ذات سے ہو اور اس کے خلاف رنگ کے غلبہ کا تعلق وصف سے

[فٹ نوٹ] 1 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۳۳ 2 غنیۃ المستملی باب احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۰ 3 خزانتہ المفتین

Fatawa Razawiyya Volume Three

Description: And [Imam] Muhammad considered predominance by color as the correct view from him because color is observable. (1)	It happens; Imam Muhammad considered it for this reason because it is visible. (T)

This same subject just passed from 'Inayah'; in 'Hilyah' referencing 'Zahidi Zad al-Fuqaha' and also in 'Binayah':

Predominance is considered in parts; if the water components are more, it is permissible [to perform ablution], otherwise not. (2)	In predominance, parts are considered; if the parts of water are dominant, then ablution is permissible, otherwise not. (T)

In Jawhara Nayyirah it is stated:

The most correct view is that predominance is considered by parts. If the mixing substance is liquid, it is permissible if it's less than half. If it's half or more, it is not permissible. (3)	The most correct view is that in predominance, parts are considered. If the substance mixing in water is a liquid, then if it is less than half, ablution is permissible with that water. And if that mixing substance is equal or more than the water, then ablution is not permissible. (T)
I say: By 'mixing' he meant 'blending'. You will soon know that the term 'liquid' is not limited to the ruling, although the ruling is found only in liquids.	I say: By a substance mixed in water, he means a situation where its parts and the water's parts are not distinct from each other. And you will soon know that this ruling does not apply to every liquid thing, although this ruling is found only in liquid things. (T)

In number 262, it passed from Bada'i:

Predominance is considered by parts. If they are equal in parts, they (the jurists) said its ruling is the ruling of overpowered water. (4)	In the predominance of water, the abundance of its parts is considered. If the parts of water are equal to the mixing substance, then the jurists have stated that in such a case, the water will be considered overpowered. (T)

And generally, the masters of Zayla'i's principles intend this abundance of parts. In number 115, it passed from Maraqi al-Falah, Abu al-Sa'ud, and Minhat al-Khaliq: "Predominance is by weight" (5) (Predominance will be according to weight. T).

1. Majma' al-Anhur, Chapter: Permissibility of Purification with absolute water, Matba' 'Amirah, Egypt, 1/18
2. Binayah, Chapter: Water with which ablution is permissible, etc., Matba' Imdadiyyah, Makkah al-Mukarramah, 1/192
3. Jawharat al-Nayyirah, Book of Purification, Maktabah Imdadiyyah, Multan, 1/13
4. Bada'i' al-Sana'i', Restricted Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/15
5. Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Purification, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/29

फ़तावा रज़विय्या जिल्द सोम (तीसरा खंड)

वर्णन: और [इमाम] मुहम्मद ने रंग के आधार पर प्रबलता को सही माना है क्योंकि रंग दिखाई देता है। (1)

होता है, इमाम मुहम्मद ने इसका विचार इसलिए किया क्योंकि वह नज़र आता है। (त)

यही विषय अभी 'इनाया' से गुज़रा, 'हिलिया' में 'ज़ादी ज़ाद अल-फ़ुक़हा' के हवाले से और 'बिनाया' में भी है:

प्रबलता में अंगों (भागों) का विचार है; यदि पानी के अंग अधिक हों तो [वज़ू] जायज़ है, अन्यथा नहीं। (2)

प्रबलता में हिस्सों का विचार है, यदि पानी के हिस्से ज़्यादा हों तो वज़ू जायज़ है अन्यथा नहीं। (त)

जौहरा निय्यिरा में है:

सबसे सही यह है कि प्रबलता में हिस्सों का विचार किया जाए। यदि मिलने वाली चीज़ तरल हो और आधे से कम हो तो जायज़ है, यदि आधा या उससे अधिक हो तो जायज़ नहीं। (3)

सही तरीन यह है कि ग़लबा (प्रबलता) में हिस्सों का एतबार (विचार) है। अगर पानी में मिलने वाली चीज़ बहने वाली हो तो अगर वह आधे से कम हो तो उस पानी से वज़ू जायज़ है और अगर वह मिलने वाली चीज़ बराबर हो या पानी से ज़्यादा हो तो फिर वज़ू जायज़ नहीं। (त)

मैं कहता हूँ: 'मुलता' से उनका तात्पर्य 'घुलने-मिलने वाली' से था। आप जल्द ही जानेंगे कि 'तरल' शब्द केवल इस हुक्म (आदेश) तक सीमित नहीं है, यद्यपि यह हुक्म केवल तरल पदार्थों में पाया जाता है।

मैं कहता हूँ पानी में मखलूत (मिश्रित) चीज़ से मुराद (तात्पर्य) वह सूरत है जब उसके और पानी के अजज़ा (हिस्से) आपस में अलग न रहें, और आपको अनक़रीब (शीघ्र) मालूम होगा कि हर बहने वाली चीज़ का यह हुक्म नहीं है अगरचे (यद्यपि) यह हुक्म सिर्फ बहने वाली चीज़ में पाया जाता है। (त)

नंबर 262 में 'बदा'ई' से गुज़रा:

प्रबलता में हिस्सों का विचार है। यदि वे हिस्सों में बराबर हों, तो उन्होंने (फ़ुक़हा

पानी के ग़ालिब होने में उसके हिस्सों की कसरत (अधिकता) का एतबार है। अगर पानी के हिस्से मिलने

ने) कहा कि उसका हुक्म उस पानी का हुक्म है जो दब गया हो। (4) वाली चीज़ के बराबर हों तो उस पर फ़ुक़हा ने फ़रमाया कि ऐसी सूरत में पानी मगलूब (दबा हुआ) होगा। (त)

और ज़ैली के नियमों के जानकार आमतौर पर यही हिस्सों की अधिकता मुराद लेते हैं। नंबर 115 में 'मराक़ी अल-फ़लाह', 'अबू अल-सऊद' और 'मिन्हात अल-खालिक़' से गुज़रा: "प्रबलता वज़न के अनुसार है" (5) (ग़लबा वज़न के एतबार से होगा। त)

1. मजमा अल-अन्हुर, अध्याय: शुद्ध पानी से पवित्रता की अनुमति, मतबा आमिराह, मिस्र, 1/18
2. बिनाया, अध्याय: वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, आदि, मतबा इमदादिय्या, मक्का मुकर्रमा, 1/192
3. जौहरा अल-निय्यिरा, किताब अल-तहारत, मकतबा इमदादिय्या, मुल्तान, 1/13
4. बदा'ई अल-सना'ई, मुक़य्यद पानी, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/15
5. मिन्हात अल-खालिक़ अला अल-बहर, तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/29

الوصف و محمد اعتبر الغلبة باللون في الصحیح ہوتا ہے، امام محمد نے اس کا اعتبار اس لئے کیا

عنه لان اللون مشاهد ۱۸ کہ وہ نظر آتا ہے۔ (ت)

یہی مضمون ابھی عنایہ سے گزرا، حلیہ میں بحوالہ زاہدی زادالفقہا سے نیز بنایہ میں ہے :

تعتبر الغلبة فی الاجزاء فان کان اجزاء غلبہ میں اجزا کا اعتبار ہے اگر پانی کے اجزا غالب

الماء اکثر یجوز والالا ۲۸۔ ہوں تو وضو جائز ورنہ نہیں۔ (ت)

جوہرہ نیرہ میں ہے :

الاصح ان المعتبر بالاجزاء وھو صحیح ترین یہ ہے کہ غلبہ میں اجزاء کا اعتبار ہے اگر پانی

ان المخالط اذا کان مائعا فما دون میں ملنے والی چیز بہنے والی ہو تو اگر وہ نصف سے کم ہو تو

النصف جائز فان کان النصف اس پانی سے وضو جائز ہے اور اگر وہ ملنے والی چیز برابر

اواکثر لا یجوز ۳۸ اھـ ہو یا پانی سے زیادہ ہو تو پھر وضو جائز نہیں۔ (ت)

اقول: اراد بالمخالط الممازج میں کہتا ہوں پانی میں مخلوط چیز سے مراد وہ صورت ہے

وستعرف ان المائع غیر مقصور جب اس کے اور پانی کے اجزاء آپس میں ممتاز نہ رہیں، اور

علی الحکم وان کان الحکم مقصور آپ کو عنقریب معلوم ہوگا کہ ہر بہنے والی چیز کا یہ حکم نہیں

علی المائع۔ ہے اگرچہ یہ حکم صرف بہنے والی چیز میں پایا جاتا ہے۔ (ت)

نمبر ۲۶۲ میں بدائع سے گزرا :

تعتبر الغلبة في الاجزاء فان پانی کے غالب ہونے میں اس کے اجزاء کی کثرت کا اعتبار ہے استویا في الاجزاء قالوا حکمه اگر پانی کے اجزاء ملنے والی چیز کے مساوی ہوں تو اس پر فقہا حکم الماء المغلوب ۸4۔ نے فرمایا کہ ایسی صورت میں پانی مغلوب ہوگا۔ (ت)

اور اہل ضابطہ زیلعیہ عموماً یہی کثرت اجزا مراد لیتے ہیں نمبر ۱۱۵ میں مراقی الفلاح وابو السعود و منحۃ الخالق سے گزرا: الغلبة بالوزن ۸5 (غلبہ وزن کے اعتبار سے ہوگا ت)

1 مجمع الانہر فصل تجوز الطهارة بالماء المطلق مطبع عامره مصر ۱۸/۱ 2 بنایۃ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء الخ مطبع امدادیہ مکہ المکرمہ ۱۹۲/۱ 3 جوہرۃ النیرۃ کتاب الطهارة مکتبہ امدادیہ ملتان ۱۳/۱ 4 بدائع الصنائع الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۵/۱ 5 منحة الخالق على البحر الطمارت، ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۹/۱

Volume 3

Fatawa Razawiyya

In Ghunyah: [Arabic]: The consideration is that its parts are more than the parts of the water. (1) [Urdu]: The reliable view is that the parts of the substance mixed in should be more than the parts of the water. (T)

In Bahr and Tahtawi: [Arabic]: The consideration is for the parts; if the water is more, it is permissible, and if it is overcome, no. (2) [Urdu]: The consideration is for the parts; if the parts of the water are more, wudu with it is permissible, and if the parts of water are overcome, wudu is not permissible. (T)

In Durr-e-Mukhtar: [Arabic]: By the parts, if the pure (Mutlaq) water is more than half, it is permissible, otherwise no. (3) [Urdu]: If the parts of pure water are more than half, wudu is permissible, otherwise not. (T)

Interpretation by the loss of fluidity: [Arabic]: I say: Fluidity is the nature of water, and nature is inherent to the parts. The dominance of the inherent necessitates the dominance of the requirement. Thus, the overcoming of nature indicates the overcoming of the parts. This is what appeared to me in justifying this interpretation, so understand it, for it is not without debate. Therefore, it is better to say it is a restriction, not an interpretation. That is, what is meant is the dominance of parts, not in terms of their essence, but in terms of their nature and what their essence requires. If you ask: "Why did you attribute it to the parts instead of the whole?" I say: "Because as we informed you, thickness is due to the cohesion of parts, and fluidity is due to its absence." [Urdu]: I say that fluidity is the nature of water, and nature is inherent to the parts. So the dominance of the inherent implies the dominance of the requirement. Thus, the overcoming of nature (fluidity) will signify the overcoming of parts. This is what I have understood in this interpretation. Reflect, for there is an objection here. Therefore, it is better to consider it a restriction rather than an interpretation. That is, it should be said that in dominance, the consideration will be of the parts, but not considering the essence of the parts, rather the dominance will be reliable according to their nature. If you object, "Why did you mention the nature of the parts and attribute it to the nature and parts, and why not to the whole?" then I reply that because being thick and viscous is attributed to the parts, therefore its opposite (being fluid) is also attributed to the parts.

---

1. Ghunyat al-Mustamli, Ahkam al-Miyah, Suhail Academy Lahore, p. 91

2. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Saeed Company Karachi, 1/29
3. Durr-e-Mukhtar, Bab al-Miyah, Mujtabai Delhi, 1/34

Page 97 of 756

खंड तीन

फ़तावा रज़विया

ग़ुनिया में है: [अरबी]: यह विश्वसनीय है कि इसके अंग पानी के अंगों से अधिक हों। (1) [उर्दू]: विश्वसनीय यह है कि मिलने वाली चीज़ के अंग पानी के अंगों से अधिक हों। (त)

बहर व तहतावी में: [अरबी]: अंगों का विचार है; यदि पानी अधिक है तो अनुमति है, और यदि वह पराजित है तो नहीं। (2) [उर्दू]: अंगों का विचार है; यदि पानी के अंग अधिक हों तो उससे वज़ू जायज़ है और यदि पानी के अंग पराजित हों तो वज़ू जायज़ नहीं। (त)

दुर्र-ए-मुख़्तार में: [अरबी]: अंगों के आधार पर, यदि शुद्ध (मुतलक़) पानी आधे से अधिक है तो अनुमति है, अन्यथा नहीं। (3) [उर्दू]: शुद्ध पानी के अंग यदि आधे से अधिक हों तो वज़ू जायज़ है अन्यथा नहीं। (त)

तरलता (रक़्त) के समाप्त होने से इसकी व्याख्या: [अरबी]: मैं कहता हूँ: तरलता पानी का स्वभाव है और स्वभाव अंगों के लिए अनिवार्य है। अनिवार्य का प्रभुत्व आवश्यकता के प्रभुत्व को अनिवार्य बनाता है। अतः स्वभाव का पराभव अंगों के पराभव को दर्शाता है। इस व्याख्या को न्यायसंगत ठहराने में मुझे यही प्रतीत हुआ है, अतः इसे समझें, क्योंकि यह विवाद से मुक्त नहीं है। इसलिए बेहतर यह है कि इसे व्याख्या के बजाय एक प्रतिबंध (तक़यीद) माना जाए। अर्थात, अंगों के प्रभुत्व से अभिप्राय उनके स्वरूप से नहीं बल्कि उनके स्वभाव और उनके स्वरूप की आवश्यकता के आधार पर होगा। यदि आप पूछें: "आपने अंगों की ओर क्यों संकेत किया, पूर्ण की ओर क्यों नहीं?" तो मैं कहता हूँ: "क्योंकि जैसा कि हमने आपको बताया है कि गाढ़ापन अंगों के जुड़ाव के कारण होता है और तरलता उसके अभाव के कारण।" [उर्दू]: मैं कहता हूँ कि तरलता पानी की प्रकृति है और प्रकृति अंगों के लिए अनिवार्य है। तो अनिवार्य का प्रभुत्व आवश्यकता के प्रभुत्व को दर्शाता है। अतः प्रकृति (तरलता) का पराभव अंगों के पराभव को सूचित करेगा। इस व्याख्या में मुझे यही समझ आया है। विचार करें क्योंकि इसमें एक आपत्ति है। इसलिए बेहतर यह है कि इसे व्याख्या के स्थान पर प्रतिबंध (तक़यीद) माना जाए। यानी ऐसा कहा जाए कि प्रभुत्व में अंगों का विचार होगा, लेकिन अंगों के स्वरूप का ध्यान नहीं रखा जाएगा, बल्कि उनके स्वभाव के अनुसार प्रभुत्व विश्वसनीय होगा। यदि आप आपत्ति करें कि "आपने अंगों का स्वभाव कहकर उसे स्वभाव और अंगों की ओर क्यों संकेत

किया, पूर्ण की ओर क्यों नहीं?" तो मैं उत्तर देता हूँ कि चूँकि गाढ़ा और विस्कस होना अंगों की ओर संकेत करता है, इसलिए उसका विपरीत (तरल होना) भी अंगों की ओर ही संकेत करता है।

---

1. ग़ुनियातुल मुस्तमली, अहकामुल मियाह, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 91
2. बहरुर रैक, किताबुत तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/29
3. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/34

جلد سوم

فتاویٰ رضویہ غنیہ میں ہے: المعتبر کون اجزاءہ اکثر من اجزاء الماء 1 - معتبر یہ ہے کہ ملنے والی چیز کے اجزاء پانی کے اجزاء سے زیادہ ہوں۔ (ت)

بحر و طحطاوی میں: العبرۃ للاجزاء فان کان الماء اکثر جاز وان مغلوبا لا 2- اعتبار اجزاء کا ہے اگر پانی کے اجزاء زیادہ ہوں تو اس سے وضو جائز ہے اور اگر پانی کے اجزاء مغلوب ہوں تو وضو جائز نہیں۔ (ت)

در مختار میں: بالاجزاء فان المطلق اکثر من النصف جاز والالا 3- مطلق پانی کے اجزاء اگر نصف سے زیادہ ہوں تو وضو جائز ہے ورنہ نہیں۔ (ت)

زوالِ رقت سے اس کی تفسیر، اقول: الرقة طبع الماء والطبع لازم الاجزاء وغلبة الملزوم تلزمها غلبة اللازم فمغلوبية الطبع تدل على مغلوبية الاجزاء هذا ماظهر لی فی توجيه هذا التفسير فافهم فلا يخلو عن مقال فالاولی ان يقال تقييد لا تفسيرای المراد غلبة الاجزاء لامن حيث ذواتها بل من حيث طبعها ومقتضی ذاتها فأن قلت لم نسبت للاجزاء دون الكل اقول: لما اعلمناک ان الثخن لتماسک فی الاجزاء والرقة لعدمہ۔ میں کہتا ہوں رقت پانی کی طبیعت ہے اور طبع اجزاء کو لازم ہے تو ملزوم کا غلبہ لازم کے غلبہ کو مستلزم ہے تو طبع (رقت) کی مغلوبیت، اجزاء کی مغلوبیت پر دلالت کرے گی، اس تفسیر میں مجھے یہ سمجھ آئی ہے، غور کرو اس میں اعتراض ہے، لہٰذا بہتر یہ ہے کہ اس کو تفسیر کی بجائے تقیید قرار دیا جائے، یعنی یوں کہا جائے کہ غلبہ میں اعتبار تو اجزاء کا ہوگا مگر اجزاء کی ذات کا لحاظ نہیں بلکہ ان کی طبیعت کے لحاظ سے غلبہ معتبر ہوگا۔ اگر تو اعتراض کرے کہ تم نے اجزاء کی طبیعت کہہ کر طبیعت و اجزاء کی طرف منسوب کیا، کل کی طرف کیوں

منسوب نہیں کیا؟ تو میں جواب دیتا ہوں کہ چونکہ گاڑھا اور غلیظ ہونا اجزاء کی طرف منسوب ہے لہٰذا اس کی ضد (رقیق ہونا) بھی اجزاء بھی اجزاء۔

---

1 غنیۃ المستملی احکام المیاہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۱ 2 بحر الرائق کتاب الطہارۃ سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۹ 3 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/ ۳۴

Fatawa-e-Razviya, Volume 3

...will be attributed to it (while fluidity itself is the nature of water). (T)

From Waqaya and Islah: "Ablution is not permissible with water whose nature has been lost due to the predominance of other ingredients." 1 - Due to the predominance of other ingredients, the nature of the water is lost, making it impermissible for wudu (ablution). (T)

From both commentaries: "It is fluidity and flowing." 2 (The nature is fluidity and flow. T)

In 7, from Hilya and Tatimma etc.: "Predominance in terms of ingredients such that it strips away the fluidity of water." 3 (A predominance of others in terms of ingredients such that fluidity is terminated. T) In Shulbiya, from Manba: "Predominance of ingredients means it takes it out of its original quality by becoming thick, not predominance in terms of weight." 4 - Predominance in terms of ingredients means that it removes the water from its original quality so that it becomes thick, not that it overcomes in weight. (T)

In Arkan-e-Arba'a: "Predominance by ingredients such that the fluidity of water disappears." 5 - Predominance of ingredients is such that the fluidity of water is terminated because of it. (T)

In 'Inaya and Binaya: "In mixing, the predominance of ingredients is considered. If the ingredients of water are predominant, and this is known by its remaining in its fluid state, then ablution with it is permissible. If the ingredients of the mixture are predominant, such that it becomes thick and its original fluidity disappears, then it is not permissible." 6 - The predominance of the mixed substance in water means that its ingredients are predominant. If the ingredients of water are predominant, which is known by the fluidity of water, then wudu is permissible. Otherwise, if the ingredients of the added substance are predominant, which is known by the thickening of water, while the original fluidity of water is terminated, then wudu is impermissible. (T)

1 Sharh al-Wiqaya, Concerning what is permissible for Wudu, Rashidiyya Delhi, 1/85 2 Sharh al-Wiqaya, Concerning what is permissible for Wudu, Rashidiyya Delhi, 1/85 3 Hilya 4 Shulbiya 'ala al-Tabyin, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyya Egypt, 1/20 5 Rasa'il al-Arkan, Fast al-Miyah, Yusuf Farangi Mahli Lucknow, p. 24 6 Al-'Inaya Ma' al-Fath, Water with which Wudu is Permissible, Nooriyya Razviyya Sukkur, 1/64

फ़तावा रज़विया, भाग 3

...की तरफ़ मंसूब होगा (जबकि तरलता ही पानी का स्वभाव है)। (त)

वक़ाया और इस्लाह से गुज़रा: "उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं है जिसका स्वभाव दूसरे घटकों के प्रबल होने के कारण समाप्त हो गया है।" 1 - दूसरे घटकों की प्रबलता के कारण पानी का स्वभाव समाप्त हो गया है, जिससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। (त)

दोनों शरहों (व्याख्याओं) से गुज़रा: "वह तरलता और बहाव है।" 2 (स्वभाव तरलता और बहाव है। त)

7 में हिलिया और ततिम्मा आदि से गुज़रा: "घटकों के मामले में प्रबलता इस तरह कि पानी की तरलता छीन ले।" 3 (दूसरे घटकों के लिहाज़ से ऐसी प्रबलता जिससे तरलता समाप्त हो जाए। त) शुल्बिया में मंबा से है: "घटकों की प्रबलता का अर्थ यह है कि वह उसे उसके मूल गुण से बाहर निकाल दे कि वह गाढ़ा हो जाए, न कि वज़न के लिहाज़ से प्रबलता।" 4 - घटकों के लिहाज़ से प्रबलता का अर्थ यह है कि वह पानी को उसके मूल गुण से निकाल दे ताकि वह गाढ़ा हो जाए, न कि वज़न में प्रबल हो जाए। (त)

अरकान-ए-अरबा में है: "घटकों द्वारा प्रबलता इस प्रकार कि पानी की तरलता चली जाए।" 5 - घटकों की प्रबलता यह है कि इसकी वजह से पानी की तरलता समाप्त हो जाए। (त)

इनाया और बिनाया में है: "मिश्रण में घटकों की प्रबलता मानी जाती है। यदि पानी के घटक प्रबल हों, और यह उसकी तरलता के बने रहने से ज्ञात हो, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। और यदि मिश्रित चीज़ के घटक प्रबल हों, इस तरह कि वह गाढ़ा हो जाए और उसकी मूल तरलता समाप्त हो जाए, तो वह जायज़ नहीं है।" 6 - पानी में मिली हुई चीज़ की प्रबलता यह है कि उसके घटक प्रबल हों। यदि पानी के घटक प्रबल हों, जो पानी की तरलता से पता चलता है, तो वज़ू जायज़ है। अन्यथा यदि मिलाई गई चीज़ के घटक प्रबल हों, जो पानी के गाढ़ा होने से पता चलता है, जबकि पानी की मूल तरलता समाप्त हो जाए, तो वज़ू नाजायज़ है। (त)

1 शरह अल-वक़ाया, वज़ू के लिए जायज़ चीज़ों के बारे में, रशीदिया दिल्ली, 1/85 2 शरह अल-वक़ाया, वज़ू के लिए जायज़ चीज़ों के बारे में, रशीदिया दिल्ली, 1/85 3 हिलिया 4 शुल्बिया अल-तबीन, किताब अल-तहारत, अल-अमीरिया मिस्र, 1/20 5 रसाईल अल-अरकान, फ़स्ल अल-मियाह,

यूसुफ़ फ़रंगी महली लखनऊ, पृष्ठ 24 6 अल-इनाया मअल फ़तह, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/64

पृष्ठ 98/756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

کی طرف منسوب ہوگا (جبکہ رقت ہی پانی کی طبیعت ہے)۔ (ت)

وقایہ واصلاح سے گزرا: لایبماء زال طبعه بغلبة غیره اجزاء 1 - غیر کے اجزاء کے غلبہ کی وجہ سے جس پانی کی طبع زائل ہو چکی ہے اس سے وضو جائز نہیں (ت)

دونوں شرحوں سے گزرا: ھو الرقة والسیلان 2 (طبع رقت وسیلان ہے۔ ت)

7 میں حلیہ و تتمہ وغیرہ سے گزرا: الغلبة من حیث الاجزاء بحیث تسلب رقت الماء 3 (غیر کا اجزاء کے لحاظ سے ایسا غلبہ جس سے رقت ختم ہو جائے۔ ت) شلبیہ میں منبع سے ہے: المراد بغلبة الاجزاء ان تخرجه عن صفة الاصلیة بان یثخن لا الغلبة باعتبار الوزن 4 - اجزاء کے اعتبار سے غلبہ کا مطلب یہ ہے کہ وہ پانی کو صفت اصلیہ سے نکال دے کہ وہ گاڑھا ہو جائے نہ کہ وزن میں غلبہ ہو جائے۔ (ت)

ارکانِ اربعہ میں ہے: الغلبة بالاجزاء بان تذھب رقة الماء 5 - اجزاء کا غلبہ یہ ہے کہ اس کی وجہ سے پانی کی رقت ختم ہو جائے۔ (ت)

عنایہ وبنایہ میں ہے: الخلط یعتبر فیه الغلبة بالاجزاء فان کانت اجزاء الماء غالبة ویعلم ذلك ببقائه علی رقته جاز الوضوء به وان کانت اجزاء المخلوط غالبة بان صار ثخینا زال عنه رقته الاصلیة لم یجز اھ 6 - پانی میں مخلوط چیز کا غلبہ یہ ہے کہ اس کے اجزاء غالب ہوں اگر پانی کے اجزاء کا غلبہ ہو جو پانی کی رقت سے معلوم ہوتا ہے تو وضو جائز ہے ورنہ اگر ملنے والی چیز کے اجزاء کا غلبہ ہو جو پانی کے گاڑھا ہونے سے معلوم ہوتا ہے جبکہ پانی کی رقت اصلیہ ختم ہو جائے تو وضو ناجائز ہے اھ (ت)

1 شرح وقایہ فیما یجوز بہ الوضو رشیدیہ دہلی ۸۵/۱ 2 شرح وقایہ فیما یجوز بہ الوضو رشیدیہ دہلی ۸۵/۱ 3 حلیہ 4 شلبیہ علی التبیین کتاب الطھارۃ الامیر یہ مصر ۱ / ۲۰ 5 رسائل الارکان فصل المیاہ یوسف فرنگی محلی لکھنؤ ص ۲۴ 6 العنایہ مع الفتح الماء الذي یجوز بہ الوضوء نور یہ رضویہ سکھر ۱ / ۶۴

Fatawa Razawiyya Volume 3

I say: However, Al-Akmal mentioned after him in the correction of the second opinion what has already passed in the first discussion—that the existence of a compound is obtained through its parts. Therefore, considering the parts for dominance (ghalaba) is better. This suggests a tendency toward considering the abundance of parts for dominance, as explained in Majma' al-Anhur. This is because composition results from parts, not from nature (taba'). Nature is an essential quality. If dominance were considered based on attributes, the refutation of the third Imam's [Imam Muhammad's] opinion (who considers dominance based on qualities like color, smell, and taste) would not be complete. If a distinction is made between nature and other attributes—that nature is an essential quality for water, while color etc. are accidental attributes—then this becomes a new discussion separate from preference: that the nature of water is a true essential reality while other attributes are metaphorical and accidental. Keep this in mind.

And it is mentioned in Al-Bahr that Al-Haddadi said: the dominance of parts in solids occurs at one-third, and in liquids at one-half (equality) [End of quote]. Upon this, Abdul Halim said: it is possible that he experimented and found that water becomes overwhelmed (maghlub) at the mentioned quantity; hence he [Haddadi] specified that one-third, as stated in the commentary of Al-Maqdisi [End of quote]. (T)

I say: The observation on what was reconciled in Al-Bahr between these two opinions is that if the mixing substance is a solid, then the dominance of parts in it is by its thickness; and if it is a liquid compatible with water, then the dominance of parts in it...

I say: The summary of this is what was said in Al-Bahr while creating harmony between these two opinions: if the substance mixed into the water is solid, then the meaning of dominance of its parts is the thickening of the water, and that substance...

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharat, Saeed Company Karachi, 7/111
2. Hashiya al-Durar by Mulla Abdul Halim, Fard al-Wudu, Maktaba Uthmaniyya Egypt, 1/18 Page 99 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

मैं कहता हूँ: हालाँकि अल-अकमल ने उसके बाद दूसरे विचार की पुष्टि में वह उल्लेख किया है जो पहली चर्चा में आ चुका है—कि मिश्रण का अस्तित्व उसके अंगों (अज्ज़ा) से प्राप्त होता है। इसलिए प्रधानता (ग़लबा) में अंगों का विचार करना बेहतर है। इससे प्रधानता में अंगों की अधिकता की ओर झुकाव पाया जाता है, जैसा कि 'मजमा अल-अन्हुर' में स्पष्ट किया गया है। इसका कारण यह है कि गठन अंगों से प्राप्त होता है न कि प्रकृति (तबअ) से। प्रकृति तो एक अनिवार्य गुण है। यदि गुणों के आधार पर प्रधानता का विचार किया जाए, तो तीसरे इमाम [इमाम मुहम्मद] के विचार का खंडन पूर्ण नहीं होगा (जो रंग, गंध और स्वाद जैसे गुणों से प्रधानता का विचार करते हैं)। यदि प्रकृति और अन्य गुणों के बीच यह अंतर किया जाए कि प्रकृति पानी के लिए एक अनिवार्य गुण है जबकि रंग आदि आकस्मिक गुण हैं, तो यह वरीयता से हटकर एक नई चर्चा होगी: कि पानी की प्रकृति एक वास्तविक मौलिक वास्तविकता है जबकि अन्य गुण आलंकारिक और आकस्मिक हैं। इसे सुरक्षित रखें।

और 'अल-बहर' में उल्लेख है कि अल-हद्दादी ने कहा: ठोस पदार्थों में अंगों की प्रधानता एक तिहाई से होती है, और तरल पदार्थों में आधे (बराबरी) से। (उद्धरण समाप्त)। इस पर अब्दुल हलीम ने कहा: संभव है कि उन्होंने प्रयोग किया हो और पाया हो कि उल्लेखित मात्रा पर पानी अभिभूत (मगलूब) हो जाता है; इसलिए उन्होंने [हद्दादी ने] उस एक तिहाई को निर्धारित किया, जैसा कि अल-मक़दसी की व्याख्या में है। (त)

मैं कहता हूँ: इन दो विचारों के बीच 'अल-बहर' में जो तालमेल बिठाया गया है, उस पर ध्यान यह है कि यदि मिलने वाला पदार्थ ठोस है, तो उसमें अंगों की प्रधानता उसके गाढ़ेपन से है; और यदि वह पानी के अनुकूल तरल है, तो उसमें अंगों की प्रधानता...

मैं कहता हूँ: इसका सारांश वह है जो 'अल-बहर' में इन दोनों विचारों के बीच सामंजस्य बिठाते हुए कहा गया: यदि पानी में मिलने वाला पदार्थ ठोस हो, तो उसके अंगों की प्रधानता का अर्थ पानी का गाढ़ा होना है, और वह पदार्थ...

---

1. अल-बहर अल-राइक, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची, 7/111
2. हाशिया अल-दुरर मुल्ला अब्दुल हलीम, फ़र्ज़ अल-वुज़ू, मकतबा उस्मानिया मिस्र, 1/18 पृष्ठ 99/756

اقول: لکن الاکمل ذکر بعدہ فی تصحیح قول الثانی ماتقدم فی البحث الاول ان وجود المرکب باجزائہ فاعتبارھا اولی فھذا یمیل الی ان المراد کثرۃ الاجزاء کما افصح بہ فی مجمع الانھرلان الترکب منھا لامن طبائعھا وانما الطبع وصف لازم فان اعتبرت من حیث اوصافھا لم یتم نفی قول الامام الثالث فان فرق باللازم والعارض فعلی تمامیتہ ھو بحث آخر غیر الترجیح بان ھذہ حقیقیۃ ذاتیۃ وتلك مجازیۃ عرضیۃ ھذا۔ میں کہتا ہوں مگر اس کے بعد اکمل نے دوسرے قول کی تصحیح میں ذکر کیا ہے جو پہلے بحث اول میں گزر چکا ہے کہ مرکب کا وجود اس کے اجزاء سے حاصل ہوتا ہے لہذا غلبہ میں اجزاء کا اعتبار بہتر ہے، اس سے غلبہ میں کثرت اجزاء کا رجحان پایا جاتا ہے، جیسا کہ مجمع الانہر میں اس کو بیان کیا ہے، کیونکہ ترکیب اجزاء سے حاصل ہوتی ہے نہ کہ طبع سے طبع تو ایک وصف اس کو لازم ہے اگر اوصاف کے لحاظ سے غلبہ کا اعتبار کیا جائے تو امام محمد کے قول کی نفی تام نہ ہوگی (جو کہ رنگ، بو اور ذائقہ جیسے اوصاف سے غلبہ کا اعتبار کرتے ہیں) اگر طبع اور دیگر اوصاف میں یہ فرق کیا جائے کہ طبع پانی کیلئے وصف لازم اور رنگ وغیرہ وصف عارض ہیں تو یہ ترجیح سے ہٹ کر ایک نئی بحث ہو جائے گی کہ طبیعت پانی کی حقیقیۃ ذاتیہ ہے اور دوسرے اوصاف مجازی اور عرضی ہیں، اس کو محفوظ کرو۔

وقال فی البحر ذکر الحدادی ان غلبۃ الاجزاء فی الجامد تکون بالثلث وفی المائع بالنصف ۱ اھ قال عبدالحلیم لعلہ امتحنہ فوجدہ یصیر مغلوبا بالقدر المذکور فعینہ کما شرح المقدسی ۲ اھ اور بحر میں یہ ذکر ہے کہ حدادی نے کہا ہے کہ جامد میں اجزاء کا غلبہ ایک تہائی سے ہو جاتا ہے اور بہنے والی چیز کا پانی میں غلبہ نصف (مساوی) سے ہو جاتا ہے اھ اس پر عبدالحلیم نے کہا ہو سکتا ہے

کہ شاید انہوں نے تجربہ کیا ہو اور جامد کی مذکورہ مقدار کے ملنے پر پانی مغلوب ہوا ہو اس لئے انہوں (حدادی) نے اس ایک تہائی کو مقرر کردیا جیسا کہ مقدسی کی شرح میں ہے اھ(ت)

اقول: ملحظہ الی ما وفق بہ فی البحر بین ھذین القولین بانہ ان کان المخالط جامدا فغلبۃ الاجزاء فیہ بثخونتہ وان کان مائعا موافقاً للماء فغلبۃ الاجزاء فیہ۔ میں کہتا ہوں اس کا خلاصہ یہ ہے جو بحر میں ان دونوں قولوں میں موافقت پیدا کرتے ہوئے کہا کہ پانی میں ملنے والی چیز جامد ہو تو پھر اس کے اجزاء کے غلبہ کا مطلب پانی کا گاڑھا ہونا ہے اور وہ چیز---

---

1 بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۷/۷۱۱ 2 حاشیۃ الدرر للمولی عبدالحلیم فرض الوضو مکتبہ عثمانیہ مصر ۱/۱۸ Page 99 of 756

Fatawa Razawiyya - Volume 3

[Top Right Column - Urdu Translation] ...is consistent with flowing water, the meaning of its dominance is the dominance of its quantity. It is as if Al-Haddadi understood that when water becomes completely thickened when the solid is half, then it must become dominant at one-third. And Allah Almighty knows best. (T) I say that the statement of 'al-Bahr' that a flowing thing is consistent with water is merely for the sake of the rule. Do not forget that we have already mentioned that sometimes the thinness of water is removed by a liquid (flowing substance) that has physical substance. Therefore, the mentioned division by 'al-Bahr' is unacceptable. From this, what we mentioned under the statement of 'al-Jawharah' becomes clear. (T)

[Top Left Column - Arabic Text] ...by quantity. (1) It seems he perceived that thickness is not achieved unless the solid matter is half the water, so he estimated it at one-third. And Allah Almighty knows best. I say: His restriction to 'matching' is to follow the rule. And do not forget what we have presented, that thinness may disappear through the mixing of a liquid as well if it has physical substance. Thus, the distribution is not accepted, and through it, what we presented under the statement of 'al-Jawharah' became clear.

[Middle Heading] Interpretation through the removal of the name, mentioned in 122 from Fath and Hilya:

[Bottom Left Column - Arabic Text] It is stated in 'at-Tajnis' that one of the derivatives of 'dominance of parts' is the saying of al-Jurjani: when vitriol is thrown into water, ablution is permissible if marks do not appear when written with. Otherwise, the water is the dominated one (makhloob). (2) If you say: What consideration is there here for parts such that it is called dominance by way of parts? I say: 'Bilali', for the suitability of marks or dyeing, it is necessary to have a certain amount of vitriol, gallnut, saffron, or safflower against a specific amount of water. If less than that amount is thrown in, or if this amount is thrown in more than that [water], it does not leave marks and nor...

[Bottom Right Column - Urdu Translation] In 'at-Tajnis', it is clearly stated that one of the derivatives of 'dominance of parts' is the saying of al-Jurjani: when vitriol (ink) is put into water, ablution is permissible if marks do not appear when written with. Otherwise, the water will be dominated. If you object: How are 'parts' considered here, based on which it is said that this is dominance in terms of parts? (Then in response, I say) I say that the ability for characters or marks to appear in writing or

dyeing is achieved by mixing a specific quantity of vitriol, gallnut, saffron, or safflower in water. If an amount less than that is mixed in water, or if that specific amount is mixed in a larger quantity of water, then the colors and marks in writing...

[Footnotes] 1. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 29/1. 2. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 29/1.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

[ऊपर दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] ...बहने वाले पानी के अनुकूल हो, तो उसके प्रभुत्व (ग़लबा) का अर्थ उसकी मात्रा का प्रभुत्व है। मानो हद्दादी ने यह समझा कि जब पानी में ठोस आधा होने पर पानी पूरी तरह गाढ़ा हो जाता है, तो एक तिहाई से अवश्य प्रभुत्व हो जाता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) मैं कहता हूँ कि 'बहर' का यह कहना कि बहने वाली चीज़ पानी के अनुकूल है, केवल नियम (ज़ाबता) के कारण है। यह न भूलें कि हम पहले ज़िक्र कर चुके हैं कि कभी पानी का पतलापन ऐसे तरल (बहने वाली वस्तु) से समाप्त हो जाता है जिसमें पदार्थ (जर्म) हो। इसलिए 'बहर' का उक्त विभाजन स्वीकार्य नहीं है। इससे वह बात स्पष्ट हो गई जो हमने 'जौहरा' के कथन के अंतर्गत कही थी। (त)

[ऊपर बायां कॉलम - अरबी पाठ] ...मात्रा द्वारा। (1) मानो उन्होंने देखा कि गाढ़ापन तब तक प्राप्त नहीं होता जब तक कि ठोस पानी का आधा न हो, इसलिए उन्होंने इसे एक तिहाई अनुमानित किया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मैं कहता हूँ: नियम का पालन करने के लिए 'अनुकूलता' के साथ उनका प्रतिबंध है। और जो हमने पेश किया है उसे न भूलें कि पतलापन तरल के मिश्रण से भी समाप्त हो सकता है यदि उसमें पदार्थ हो। अत; वितरण स्वीकार्य नहीं है, और इसके माध्यम से वह स्पष्ट हो गया जो हमने 'अल-जौहरा' के कथन के अंतर्गत प्रस्तुत किया था।

[मध्य शीर्षक] नाम हटने से व्याख्या, 122 में 'फ़तह' और 'हिलिया' से गुज़रा:

[नीचे बायां कॉलम - अरबी पाठ] 'तजनीस' में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि अंगों के प्रभुत्व के डेरिवेटिव्स में से अल-जुर्जानी का कथन है: जब पानी में ज़ाज (नीला थोथा/कसीस) डाला जाता है, तो वज़ू जायज़ है यदि वह लिखते समय निशान नहीं छोड़ता है, अन्यथा पानी पराजित (मगलूब) है। (2) यदि आप कहें: यहाँ अंगों के लिए क्या विचार है कि इसे अंगों के माध्यम से प्रभुत्व कहा जाए? मैं कहता हूँ: 'बिलाली', निशान या रंगाई की उपयुक्तता के लिए, पानी की एक विशिष्ट मात्रा के विरुद्ध ज़ाज, अफ़स, ज़ाफ़रान या असफ़र की एक निश्चित मात्रा होना आवश्यक है। यदि उस मात्रा से कम डाली जाती है, या यदि यह मात्रा उससे अधिक [पानी] में डाली जाती है, तो वह निशान नहीं छोड़ती है और न ही...

[नीचे दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] 'तजनीस' में स्पष्ट है कि 'अंगों के प्रभुत्व' की एक शाखा अल-जुर्जानी का यह कथन है कि जब पानी में ज़ाज (स्याही) डाली जाए, तो वज़ू जायज़ है यदि लिखते

समय उससे निशान प्रकट न हों, अन्यथा पानी 'मगलूब' (प्रभावित) होगा। यदि आप आपत्ति करें: यहाँ अंगों (अजज़ा) का विचार कैसे हुआ जिसके आधार पर यह कहा जाए कि यह अंगों के लिहाज़ से प्रभुत्व है? (तो जवाब में मैं कहता हूँ) मैं कहता हूँ कि लेखन में निशान या रंग प्रकट होने की क्षमता पानी में ज़ाज, अफ़स, ज़ाफ़रान और असफ़र की एक विशेष मात्रा मिलाने से प्राप्त होती है। यदि उस मात्रा से कम पानी में मिलाया जाए या उतनी ही मात्रा अधिक पानी में मिला दी जाए, तो लेखन में रंग और निशान...

[पाद लेख] 1. बहर अल-रायिक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 29/1। 2. बहर अल-रायिक, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 29/1।

पृष्ठ 100/756

[اوپر دائیں کالم] بہنے والی پانی کے موافق ہو تو اس کے غلبہ کا مطلب اس کی مقدار کا غلبہ ہے اھ گویا کہ حدادی نے یہ سمجھا کہ جب پانی میں جامد نصف برابر ہونے پر پانی مکمل گاڑھا ہو جاتا ہے تو ایک تہائی سے ضرور غلبہ ہو جاتا ہے ، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت) میں کہتا ہوں کہ بحر کا یہ کہنا بہنے والی چیز پانی کے موافق ہو محض ضابطہ کے لحاظ سے ہے، یہ بات نہ بھولنا کہ ہم پہلے ذکر کر چکے ہیں کہ کبھی پانی کی رقت ایسے مائع (بہنے والی) سے زائل ہو جاتی ہے جو جرم والی ہو، لہذا بحر کی مذکورہ تقسیم غیر مسلم ہے اسی سے وہ بات واضح ہوگئی جو ہم نے جوہرہ کے قول کے تحت کہی تھی۔ (ت)

[اوپر بائیں کالم - متنِ عربی] بالقدر ۱ اھ وکانہ رأی ان الثخن لا یحصل مالم یکن الجامد نصف الماء فقدرہ بالثلث واللہ تعالی اعلم۔ اقول: تقییدہ بالموافقۃ لاتباع الضابطۃ (۱) ولاتنس ماقد منا ان الرقۃ ربما تزول بأمتزاج مائع ایضاً اذا کان ذا جرم فالتوزیع غیر مسلم وبہ ظھر ما قدمنا تحت قول الجوھرۃ۔

[درمیانی سرخی] زوال اسم سے تفسیر ، ۱۲۲ میں فتح و حلیہ سے گزرا :

[نیچے بائیں کالم - متنِ عربی] صرح في التجنیس ان من التفریع علی غلبۃ الاجزاء قول الجرجانی اذا طرح الزاج فی الماء جاز الوضوء ان کان لاینقش اذا کتب والا فالماء ھو المغلوب ۲ اھ فان قلت ای نظر ھھنا الی الاجزاء حتی یسمی غلبۃ من حیث الاجزاء اقول بلالی لابد لصلاحیۃ النقش او الصبغ بازاء قدر معلوم من الزاج والعفص او الزعفران والعصفر قدر مخصوص من الماء حتی لو طرح فیہ اقل من القدر او ھذا القدر فی اکثر منہ لم ینقش ولم

[نیچے دائیں کالم] تجنیس میں تصریح کی ہے کہ غلبہ اجزاء کی ایک تفریع جرجانی صاحب کا یہ قول ہے کہ جب پانی میں زاج (سیاہی) ڈالی جائے تو اگر لکھائی میں اس سے نقوش ظاہر نہ ہوں تو وضو جائز ہے ورنہ پانی مغلوب ہوگا اھ اگر تو اعتراض کرے یہاں اجزاء کا اعتبار کیسے ہوا جس کی بنا پر یہ کہا جائے کہ یہ اجزاء کے لحاظ سے غلبہ ہے، (تو میں اس کے جواب میں) کہتا ہوں کہ کتابت میں نقوش ظاہر ہونے کی صلاحیت زاج، عفص، زعفران اور عصفر کی ایک خاص مقدار پانی میں ملانے سے حاصل ہوتی ہے اگر اس مقدار سے کم پانی میں ملائی جائے یا اتنی مقدار زیادہ پانی میں ملا دی جائے تو کتابت میں رنگ و نقوش

[حواشی] ۱۔ بحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۹/۱ ۲۔ بحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۹/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 3

[Box Section] Arabic Text: یصیغ فکانت اجزاؤھا مغلوبة بالماء اذ لم تعمل فیه بخلاف ما اذا صلح فقد غلبته اذ غیرته۔ Urdu Translation: They will not be apparent, therefore water will be dominant. And if by mixing these mentioned things, the act of writing becomes correct, then it will be known that the water is dominated and the components of these mentioned things have become dominant. (T)

Third Discussion: Regarding which meaning among them is preferred. I say: There is no conflict between them. Date juice (dushab) mixed in water more than equally; there, the abundance of components, loss of nature, and loss of name are all present. Then, the loss of name including both of them and others besides them is apparent; if fluidity does not remain, it will not be called water. No one calls mud 'water'. And if another genus is mixed equally or more, then the removal of the name is most manifest, as preceded shortly before the discussion of additions and in number 262 (as it passed just before the discussion of additions and in number 262. T). So its consideration (Ah) makes both unnecessary, and it is most appropriate and suitable to intend the same in the saying of Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with him) so that it encompasses all forms and universal rules. In the general definition where four reasons for prevention were mentioned, they all come under it. Therefore, Imam Zaila'i said: "The loss of name is what is considered in this chapter" (The cessation of the name is what is reliable in this regard. T). It comes from Hilya that this is the point of reference for all sayings. Praise be to Allah, and peace and blessings of Allah be upon our master Muhammad and his family and companions.

Regarding cooking with other than it, there are two discussions here: First Discussion: The reality of cooking and what is required for its validity. I say: and success is by Allah. Several matters must be considered in this:

[Margin Section] Arabic Text: عہ اقول : وبہ (۱) ظہران قصر التفسیر علی کثرة الاجزاء کما توھمه عبارة الغنیة ومجمع الانھر والجوھرة (۲) و غیرھا او علی زوال الطبع کما توھمه عبارة المنبع و غیرھا لیس کما ینبغی علی ھذا یحمل ما فعل فی العنایة والبنایة و غیرھما من التفسیر مرة بھذا و مرة بذاک ۱۲ منه غفر لہ ۔ (م)

Urdu Translation: I say that in the explanation of dominance, mentioning only the abundance of components, as might be understood from the phrases of Ghunyah, Majma' al-Anhur, and Jawharah, etc., or understanding it only as the loss of nature, as might be understood from the phrase of Manba', etc., is not correct. In Binayah and Inayah, the explanation of dominance has been given sometimes this way and

sometimes that way (that the interpretations of dominance vary according to the context). This is the reason for it. 12 [from the author], may Allah forgive him. (T)

Page 101 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[बॉक्स अनुभाग] अरबी पाठ: يصبغ فكانت اجزاؤها مغلوبة بالماء اذ لم تعمل فيه بخلاف ما اذا صلح فقد غلبته اذ غيرته۔ उर्दू अनुवाद: वे स्पष्ट नहीं होंगे, इसलिए पानी प्रभावी होगा। और यदि इन उल्लेखित चीजों को मिलाने से लिखने की क्रिया सही हो जाती है, तो यह ज्ञात होगा कि पानी दब गया है और इन उल्लेखित चीजों के घटक प्रभावी हो गए हैं। (त)

तीसरी चर्चा: इनमें से किस अर्थ को प्राथमिकता दी जाए। मैं कहता हूँ: इनमें कोई विरोध नहीं है। खजूर का रस (दूशाब) जो पानी में बराबर से अधिक मिला हो, वहाँ अंगों की प्रचुरता, स्वभाव का नष्ट होना और नाम का नष्ट होना, सब कुछ मौजूद है। फिर नाम का नष्ट होना इन दोनों और उनके अलावा अन्य को भी शामिल करना स्पष्ट है; यदि तरलता न रहे तो उसे पानी नहीं कहा जाएगा। कीचड़ को कोई पानी नहीं कहता। और यदि कोई अन्य विजातीय वस्तु बराबर या अधिक मिल जाए, तो नाम का हटना अत्यंत स्पष्ट है, जैसा कि 'इज़ाफ़ात' (परिशिष्टों) की चर्चा से ठीक पहले और नंबर 262 में गुज़रा (त)। तो इसका विचार (अ) दोनों से बेनवाज़ कर देता है और सभी स्थितियों को समेटने के लिए इमाम अबू यूसुफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) के कथन में इसी का इरादा अधिक उपयुक्त और उचित है कि यह स्थितियों और सार्वभौमिक नियमों को समाहित कर ले। सामान्य परिभाषा में जहाँ रुकने के चार कारण बताए गए थे, वे सब इसमें आ गए। इसीलिए इमाम ज़ैली ने फ़रमाया: "नाम का समाप्त हो जाना ही इस विषय में विश्वसनीय है" (त)। हिल्या से ज्ञात होता है कि यही तमाम कथनों का केंद्र है। अल्लाह के लिए प्रशंसा है, और हमारे आका मुहम्मद और उनके परिवार और साथियों पर अल्लाह की दया और शांति हो।

अन्य वस्तुओं के साथ पकाने (तब्ख़) के संबंध में यहाँ दो चर्चाएँ हैं: पहली चर्चा: पकाने की वास्तविकता और इसकी प्रमाणिकता के लिए क्या आवश्यक है। मैं कहता हूँ: और सफलता अल्लाह की ओर से है। इसमें कुछ बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है:

[हाशिया अनुभाग] अरबी पाठ: عہ اقول : وبہ (١) ظہران قصر التفسير على كثرة الاجزاء كما توهمه عبارة الغنية ومجمع الانهر والجوهرة (٢) و غيرها او على زوال الطبع كما توهمه عبارة المنبع و غيرها ليس كما ينبغى على هذا يحمل ما فعل فى العناية والبناية و غيرهما من التفسير مرة بهذا و مرة بذاک ١ ـ ٢ منه غفر لہ (م)

उर्दू अनुवाद: मैं कहता हूँ कि प्रभुत्व (ग़ल्बा) की व्याख्या में केवल अंगों की प्रचुरता का उल्लेख करना जैसा कि ग़ुनिया, मजमा अल-अन्हुर और जौहरा आदि के वाक्यांशों से वहम होता है, या केवल स्वभाव के नष्ट होने (ज़वाल-ए-तबा) को समझना जैसा कि मन्बा आदि के वाक्यांश से वहम हो सकता है, सही नहीं है। बिनाया और इनाया में प्रभुत्व की व्याख्या कभी इस तरह और कभी उस तरह की गई है (कि प्रभुत्व की व्याख्या संदर्भ के अनुसार अलग-अलग होती है), यही इसकी वजह है। 12 [लेखक की ओर से], अल्लाह उसे क्षमा करे। (त)

पृष्ठ 756 में से 101

[اوپر والا خانہ] عربی عبارت: یصیغ فکانت اجزاؤھا مغلوبۃ بالماء اذ لم تعمل فیہ بخلاف ما اذا صلح فقد غلبتہ اذ غیرتہ۔ اردو ترجمہ: ظاہر نہ ہوں گے لہٰذا پانی غالب ہوگا اور اگر ان مذکورہ چیزوں کے ملانے سے کتابت کا عمل درست ہو جائے تو معلوم ہوگا کہ پانی مغلوب ہے اور ان مذکورہ چیزوں کے اجزا غالب ہوگئے۔ (ت)

بحث سوم : ان میں کس معنی کو ترجیح ہے اقول ان میں تنافی نہیں دوشاب خرما کہ پانی میں برابر سے زیادہ ممتزج ہو وہاں کثرت اجزا اور زوال طبع و زوال اسم سب کچھ ہے پھر زوال اسم ان دونوں اور ان کے غیر کو بھی شامل ظاہر ہے کہ رقت نہ رہے تو پانی نہ کہلائے گا کیچڑ کو کوئی پانی نہیں کہتا اور اگر جنس دیگر برابر یا زائد مل جائے تو ارتفاع نام اظہر ہے کما تقدم قبیل الاضافات و فی نمرہ ۲۶۲ (جیسا کہ اضافات کی بحث سے ذرا پہلے اور نمبر ۲۶۲ میں گزرا۔ ت) تو اس کا اعتبار عہ دونوں سے مغنی اور سب صورتوں کو جامع تو قول امام ابویوسف رضی اللہ تعالٰی عنہ میں اسی کا ارادہ الیق و انسب کہ محیط صور وضوابط کلیہ ہو تعریف مطلق میں کہ چار سبب منع بیان ہوئے تھے سب اس میں آگئے ولہٰذا امام زیلعی نے فرمایا زوال الاسم ھو المعتبر فی الباب (نام کا ختم ہوجانا ہی اس بارے میں معتبر ہے۔ ت) حلیہ سے آتا ہے کہ یہی تمام اقوال کا مرجع ہے واللہ الحمد وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا محمد وآلہ وصحبہ وسلم۔

طبخ باغیر یہاں دو بحثیں ہیں : بحث اول : طبخ کی حقیقت اور یہ کہ اُس کے صدق کو کیا کیا درکار اقول : وباللہ التوفیق اسی میں چند امور کا لحاظ ضرور :

[حاشیے والا حصہ] عربی عبارت: عہ اقول : وبہ (۱) ظہران قصر التفسیر علی کثرة الاجزاء کما توهمه عبارة الغنية ومجمع الانهر والجوهرة (۲) و غیرها او علی زوال الطبع کما توهمه عبارة المنبع و غیرها لیس کما ینبغی علی هذا یحمل ما فعل فی العنایة والبنایة و غیرهما من التفسیر مرة بهذا و مرة بذاک ۱۲ منه غفر لہ ۔ (م)

اردو ترجمہ: میں کہتا ہوں کہ غلبہ کی تفسیر میں صرف کثرت اجزا کو ذکر کرنا جیسا کہ غنیہ، مجمع الانہر اور جوہرہ وغیرہ کی عبارات سے وہم ہوتا ہے یا صرف زوالِ طبع کو سمجھنا جیسا کہ منبع وغیرہ کی عبارت سے وہم ہوسکتا ہے، درست نہیں ہے بنایہ اور عنایہ میں غلبہ کی تفسیر کبھی یوں اور کبھی یوں کی گئی ہے (کہ غلبہ کی مواقع کے لحاظ سے تفاسیر مختلف ہیں) اس کی یہی وجہ ہے ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

Fatawa Razvia Volume Three

(1) Merely boiling water is not called cooking until something else is added to it. This is mentioned in Sadat-e-Thalatha Abu Saud, Azhari, and Ali Miskeen, then in Tahawi, and then in Shami:

Cooking implies mixing; otherwise, merely heating water without mixing is not called cooking. (1) Shami added: Because cooking means ripening or maturing (Istawa). (2) Lexicon (3). And it is known that water does not 'ripen'. I say: Based on this,

That cooking consists of mixing; if only water is heated and nothing is mixed in it, it will not be called cooking. Shami added this and said: "Cooking refers to becoming fully cooked and prepared by roasting." Lexicon.

I say: (1) He [Allama Shami], may Allah have mercy on him, understood it with the plain 'sin' (s) and thus limited it. The correct version is with the dotted 'shin' (sh), and its full form is 'ishtawa' and 'iqtidar' as in the Lexicon. 'Ishtiwa al-shay' and from it comes 'al-shiwa' (roast), which is roasting something without water. 'Al-iqtidar' is from 'al-qidr' (pot) with a kasra, meaning cooking in a pot. It is stated in the Lexicon: 'al-qaddar' is the one who cooks in a pot, similar to 'al-muqtadir'. It is stated in Taj al-Arus: it is said 'iqtadara' and 'qaddara' like 'tabakha' and 'it-tabakha'. From this is their saying: 'At-taqtadiruna am tashtawuna' meaning 'Will you cook in a pot or roast?' The meaning of 'nadj' is 'to be ready/ripe' as in the Lexicon. 'Al-istiwa' (with a plain 'sin') also gives this meaning, which is why Allama Shami's mind went towards 'al-istiwa' and he did not pay attention to the subsequent word 'iqtidaran'. May Allah forgive him. (T)

1. Fath al-Mu'in, Eating altered food, HM Saeed Company Karachi, 1/63
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/125
3. Al-Qamus al-Muhit, Chapter on Ribwa, Section Qaf, Mustafa al-Bani Egypt, 1/118
4. Taj al-Arus, Beirut 3/483

फ़तावा रज़विया खंड तीन

(1) केवल पानी को उबालना तब तक पकाना नहीं कहलाता जब तक कि उसमें कोई और चीज़ न डाली जाए। यह सादात-ए-थलाथा अबू सऊद, अज़हरी, और अली मिस्कीन, फिर तहवी, फिर शामी में है:

पकाना मिश्रण को दर्शाता है; अन्यथा, बिना मिश्रण के केवल पानी गर्म करना पकाना नहीं कहलाता। (1) शामी ने जोड़ा: क्योंकि पकाना का अर्थ है पूरी तरह से पकना या तैयार होना (इस्तिवा)। (2) शब्दकोश (3)। और यह ज्ञात है कि पानी 'पकता' नहीं है। मैं कहता हूँ: इस आधार पर,

कि पकाना, मिश्रण करने से बना है; यदि केवल पानी गर्म किया जाए और उसमें किसी चीज़ का मिश्रण न हो, तो उसे पकाना नहीं कहेंगे। इस पर शामी ने यह जोड़ा और कहा: "पकाना पूरी तरह से पककर और भूनकर तैयार होने को कहते हैं।" शब्दकोश।

मैं कहता हूँ: (1) उन्होंने [अल्लामा शामी], अल्लाह उन पर दया करे, इसे 'सीन' (स) के साथ समझा और इसलिए इसे सीमित कर दिया। सही संस्करण बिंदु वाले 'शीन' (श) के साथ है, और इसका पूर्ण रूप 'इश्तिवा' और 'इक्तिदार' है जैसा कि शब्दकोश में है। 'इश्तिवा अल-शय' और उसी से 'अल-शिवा' (रोस्ट) आता है, जो बिना पानी के किसी चीज़ को भूनना है। 'अल-इक्तिदार', 'अल-किद्र' (बर्तन) से है जिसका अर्थ बर्तन में पकाना है। शब्दकोश में कहा गया है: 'अल-क़द्दार' वह है जो बर्तन में पकाता है, जैसे कि 'अल-मुक्तिदिर'। ताज अल-अरूस में है: 'इक्तदरा' और 'क़दरा' कहा जाता है जैसे 'तबाख़ा' और 'इत-तबाख़ा'। इसी से उनकी कहावत है: 'अत-तक्तदिरूना अम तश्तवूना' अर्थात 'क्या तुम बर्तन में पकाओगे या भूनोगे?' 'नद्ज' का अर्थ है 'तैयार होना' जैसा कि शब्दकोश में है। 'अल-इस्तिवा' (बिना बिंदु वाले 'सीन' के साथ) भी यही अर्थ देता है, इसीलिए अल्लामा शामी का ध्यान 'अल-इस्तिवा' की ओर गया और उन्होंने बाद वाले शब्द 'इक्तिदारन' पर ध्यान नहीं दिया। अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (टी)

1. फ़तह अल-मुईन, बिगड़ा हुआ भोजन खाना, एचएम सईद कंपनी कराची, 1/63
2. रद अल-मुह्तार, पानी का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/125
3. अल-क़ामूस अल-मुहीत, रिबवा का अध्याय, खंड क़ाफ़, मुस्तफ़ा अल-बानी मिस्र, 1/118
4. ताज अल-अरूस, बेरुत 3/483

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

(۱) تنہا پانی کا جوش دینا پکانا نہیں کہا جاتا جب تک اس میں کوئی اور چیز نہ ڈالی جائے ساداتِ ثلثہ ابو السعود وازہری علی مسکین پھر طحاوی پھر شامی میں ہے :

الطبخ یشعر بالخلط والا فمجرد تسخین الماء بدون خلط لا یسمی طبخاً ۱ اه زاد الشامي ای لان الطبخ هو الانضاج استواء ۲ اه قاموس ۳ اه ای و معلوم ان الماء لا ینضج اقول : و علیه

کہ پکنا ، خلط کرنے سے عبارت ہے اگر صرف پانی گرم کیا جائے اور اس میں کسی چیز کا خلط نہ ہو تو اس کو پکنا نہیں کہیں گے اھ اس پر شامی نے یہ زیادہ کیا اور کہا " پکنا مکمل طور پر پکا کر اور بھن کر تیار ہونے کو کہتے ہیں " قاموس

عہ اقول : (۱) فهمه رحمه الله تعالی بالسین المهملة فاقتصر علیه وصوابه بالمعجمة و تمامه واقتدارا کما فی القاموس فالاشتواء الشئ ومنه الشواء ویکون بلا ماء والاقتدار من القدر بالکسر ای الطبخ فی القدر قال فی القاموس القدار الطابخ فی القدر کالمقتدر ۳ قال في تاج العروس یقال اقتدر وقدر مثل طبخ واطبخ ومنه قولهم اتقتدرون ام تشتوون ٤ اه ومعنی النضج هو الادراک کما في القاموس ویؤدی مؤداه الاستواء بالمهملة فلذا ذهب الیه وهله رحمه الله تعالی ولم یعد نظره الی قوله واقتدارا منه غفر له ۔ (م)

میں کہتا ہوں کہ علامہ شامی نے "استواء" کو "س" مہملہ سے سمجھا لہذا یوں بیان کردیا اور صحیح یہ ہے کہ یہ ش معجمہ کے ساتھ "اشتواء" ہے اور قاموس میں مکمل یوں ہے "اشتواء" و اقتدار ہے ، الاشتواء ، الشئ اور اسی سے الشواء ہے بغیر پانی بھنی ہوئی چیز کو کہتے ہیں۔ الاقتدار ، قدر کسرہ کی ساتھ ہے جس کا معنی ہانڈی میں پکانا ہے ، قاموس میں بیان ہے القدار ہانڈی میں پکانے والا ، جیسے کہ المقتدر کا یہی معنی ہے۔ تاج العروس میں ہے اقتدر اور قدّر ،

طبخ اور اطبخ کی طرح ہے۔ اسی لفظ سے عرب کہتے ہیں اتقتدرون ام تشتوون یعنی ہانڈی میں پکاؤ گے یا خشک بھونو گے اھ اور النضج کا معنی " تیار ہونا " ہے جیسا کہ قاموس میں ہے الاستواء (س مہملہ) بھی یہی معنی دیتا ہے اس لئے علامہ شامی رحمہ اللہ کا خیال "الاستواء" کی طرف گیا اور انہوں نے بعد والے لفظ اقتدارًا کی طرف توجہ نہ فرمائی ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 فتح المعین اکل الطعام المتغیر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۶۳ 2 ردالمختار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۲۵ 3 القاموس المحیط باب الربو فصل القاف مصطفی البانی مصر ۱/ ۱۱۸ 4 تاج العروس بیروت ۳/ ۴۸۳

Fatawa Razawiyyah - Volume 3

(Arabic Text/Column Translation): The authors of Al-Wiqayah, Al-Nuqayah, Al-Wafi, Al-Kanz, Al-Multaqi, Al-Ghurar, Al-Tanwir, Nur al-Idah, and countless others restricted themselves to mentioning 'cooking' (tabkh) without specifying it being with something else, because this is understood from the word itself. Therefore, the statements in Al-Islah, "or changed by cooking with it," and in Al-Hidayah, "if it changes by cooking after something else was mixed with it," are for the sake of clarification through abstraction (tajrid). Based on this, what is in Al-'Inayah and Al-Binayah is considered weak, where they restricted it to mixing (khalt), claiming that if water is cooked alone and its properties change, Wudu with it is still permissible. Similarly, Al-Hamawi's commentary on Miskin's statement (i.e., change due to cooking with a pure substance mixture, etc.) is considered weak, where he suggested this addition was to rectify the author's words because pure cooking without mixing does not prevent Wudu. Sayyid al-Azhari challenged this and corrected it. And Allah Almighty knows best.

(Urdu Text/Column Translation): Ah, meaning it is known that water is not prepared by roasting. I say: on this basis, [the authors of] Wiqayah, Nuqayah, Wafi, Kanz, Multaqi, Ghurar, Tanwir, Nur al-Idah, and countless others only mentioned 'cooking' (tabkh) and meant this [mixture] by it, even if they didn't mention cooking with something else, because the word itself implies this. The statement in 'Al-Islah' regarding 'change by cooking with it' and in 'Hidayah' regarding 'being cooked and changing after mixing with something else' (where despite mentioning cooking, mixing was also mentioned) will be considered as abstraction for clarification (meaning, mentioning mixing after removing it from the inherent meaning of cooking). Based on this same meaning, the statement in 'Inayah' and 'Binayah' is declared weak, wherein they made mixing with cooking a condition (qaid) and said that the purpose of conditioning cooking with mixing is that if water is boiled alone and changes, then Wudu is permissible. (This declaration of weakness is because mixing is part of the meaning of cooking; making it a separate condition is incorrect). On this same basis, Hamawi's statement on Miskin's statement—"change in water due to cooking with some pure thing etc."—is declared weak. Hamawi had said that Miskin rectified the author's words by mentioning mixing with cooking because cooking without mixing does not hinder Wudu. Sayyid Azhari raised the same objection to this statement of Hamawi and corrected it. And Allah Almighty knows best. (T)

(2) Whatever is placed on fire should naturally become soft so it can quickly accept the effect of the fire, causing its parts to become porous and lose their previous hardness, so that its rawness disappears and it becomes ready for the desired use—be it iron, stone, or pebbles, alone or in water.

1. Al-'Inayah with Fath al-Qadir, The water with which Wudu is permissible, Nuriyah Razawiyyah Sukkur, 1/24.
2. Fath al-Mu'in, Eating changed food, H.M. Saeed Company Karachi, 2/23.

फ़तावा रज़विया - भाग 3

(अरबी कॉलम का अनुवाद): अल-विक़ाया, अल-नुक़ाया, अल-वाफ़ी, अल-कन्ज़, अल-मुल्तकी, अल-ग़ुरर, अल-तन्वीर, नूर अल-इज़ाह और अनगिनत अन्य लेखकों ने 'पकाने' (तबख) का उल्लेख करने तक ही सीमित रखा और इसे किसी और चीज़ के साथ होने का उल्लेख नहीं किया, क्योंकि यह शब्द के स्वयं के अर्थ से समझा जाता है। इसलिए, अल-इसलाह के"या इसके साथ पकने से बदल जाए" और अल-हिदाया के"यदि कुछ और मिलाने के बाद पकने से बदल जाए" जैसे कथन स्पष्टीकरण के लिए 'तजरीद' (अमूर्तीकरण) हैं। इसी आधार पर, अल-इनाया और अल-बिनाया में जो कुछ है उसे कमज़ोर माना जाता है, जहाँ उन्होंने इसे 'खलत' (मिश्रण) तक सीमित कर दिया और दावा किया कि यदि पानी अकेले पकाया जाता है और इसके गुण बदल जाते हैं, तो इसके साथ वुज़ू अभी भी जायज़ है। इसी तरह, मिस्कीन के कथन पर अल-हमवी की टिप्पणी (यानी, एक शुद्ध पदार्थ के मिश्रण के साथ पकने के कारण परिवर्तन आदि) को कमज़ोर माना जाता है, जहाँ उन्होंने सुझाव दिया कि यह वृद्धि लेखक के शब्दों को सुधारने के लिए थी क्योंकि बिना मिश्रण के केवल पकाना वुज़ू को नहीं रोकता है। सैय्यद अल-अज़हरी ने इस पर आपत्ति जताई और इसे सुधारा। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

(उर्दू कॉलम का अनुवाद): अह, यानी यह ज्ञात है कि पानी भूनकर तैयार नहीं होता। मैं कहता हूँ: इसी आधार पर विक़ाया, नुक़ाया, वाफ़ी, कन्ज़, मुल्तकी, ग़ुरर, तन्वीर, नूर अल-इज़ाह और अनगिनत लोगों ने केवल 'तबख' (पकने) का ज़िक्र करके यही अर्थ मुराद लिया है, जबकि इसके साथ किसी दूसरी चीज़ के पकने का ज़िक्र नहीं किया, क्योंकि स्वयं शब्द से यह अर्थ समझ आता है। 'अल-इसलाह' के कथन "इसके साथ पकने से परिवर्तन" और 'हिदाया' के कथन "किसी अन्य चीज़ के साथ मिलकर पकने और परिवर्तित होने" (जहाँ पकने का ज़िक्र होने के बावजूद मिश्रण का ज़िक्र किया गया) को स्पष्टीकरण के लिए 'तजरीद' माना जाएगा (यानी पकने को मिश्रण के अर्थ से अलग करने के बाद मिश्रण का ज़िक्र किया गया है)। इसी अर्थ के आधार पर 'इनाया' और 'बिनाया' के इस कथन को कमज़ोर करार दिया गया है जिसमें उन्होंने पकने के साथ मिश्रण का ज़िक्र करने को एक शर्त (क़ैद) माना और कहा कि पकने को मिश्रण के साथ जोड़ने का अर्थ यह है कि यदि पानी अकेले पकाया जाए और बदल जाए तो उससे वुज़ू जायज़ है। (यह कमज़ोर इसलिए है क्योंकि मिश्रण पकने के अर्थ का हिस्सा है, इसे अलग शर्त बनाना सही नहीं है)। इसी आधार पर मिस्कीन के कथन "किसी पाक चीज़ के साथ पकने से पानी में बदलाव आदि" पर हमवी के उस कथन को कमज़ोर माना गया है

जिसमें उन्होंने कहा कि मिस्कीन ने पकने के साथ मिश्रण का ज़िक्र करके लेखक के कलाम को दुरुस्त किया है क्योंकि मिश्रण के बिना पकना वुज़ू से नहीं रोकता। हमवी के इस कथन पर सैय्यद अज़हरी ने यही आपत्ति जताई और इसे दुरुस्त किया। वल्लाह तआला आलम बिस्सावाब (त)।

(2) जो चीज़ आग पर रखी जाए वह स्वभावतः नरम हो जाए ताकि वह आग के प्रभाव को जल्दी स्वीकार कर सके, जिससे उसके अवयव छिद्रपूर्ण हो जाएँ और पुरानी कठोरता समाप्त हो जाए, ताकि कच्चापन दूर हो जाए और वह वांछित उपयोग के लिए तैयार हो सके—चाहे वह लोहा हो या पत्थर या कंकड़, अकेले या पानी में।

1. अल-इनाया मा फ़त अल-क़दीर, वह पानी जिससे वुज़ू जायज़ है, नूरया रज़विया सुक्कुर, 1/24।
2. फ़त अल-मुईन, परिवर्तित भोजन खाना, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/23।

पृष्ठ 103 / 756

(دایاں کالم): اھ یعنی یہ بات معلوم ہے کہ پانی بھن کر تیار نہیں ہوتا، میں کہتا ہوں اسی بنیاد پر وقایہ، نقایہ، وافی، کنز، ملتقی، غرر، تنویر، نورالایضاح اور بے شمار لوگوں نے صرف طبخ کو ذکر کر کے یہی معنی مراد لیا ہے جبکہ اس کے ساتھ کسی دوسری چیز کے پکنے کا ذکر نہ کیا، کیونکہ خود لفظ سے یہ معنی سمجھ آتا ہے، اور اصلاح کے قول تغیر بالطبخ معہ (دوسری چیز کے ساتھ پک کر متغیر ہو جائے) اور ہدایہ کے قول، غیر کے ساتھ مل کر پکے اور متغیر ہو جائے (جہاں طبخ ذکر کرنے کے باوجود اس کے ساتھ خلط کا ذکر کیا گیا) کو وضاحت کیلئے تجرید قرار دیں گے (یعنی طبخ کو خلط کے معنی سے خالی کرنے کے بعد خلط کو ذکر کیا ہے) اور اسی معنی کی بنا پر عنایہ اور بنایہ کے اس قول کو ضعیف قرار دیا گیا ہے جس میں انہوں نے طبخ کو خلط کے ساتھ ذکر کرنے کو قید قرار دیا اور کہا کہ طبخ کو خلط کے ساتھ مقید کرنے کا مطلب یہ ہے کہ اگر پانی اکیلا پکایا جائے اور متغیر ہو جائے تو اس سے وضو جائز ہے اھ (یہ تضعیف اس لئے کہ خلط، طبخ کے معنی کا جز ہے اس کو قید بنانا درست نہیں) اور اسی بنا پر مسکین کے قول "کسی پاک چیز کے ساتھ پکنے سے پانی میں تغیر الخ" پر حموی کے اس قول کو ضعیف قرار دیا گیا ہے جس میں انہوں نے کہا کہ مسکین نے طبخ کے ساتھ غیر کے خلط کا ذکر کر کے مصنف کے کلام کو درست کیا ہے کیونکہ خلط کے بغیر طبخ، وضو سے مانع نہیں ہے، حموی کے اس قول پر سید ازہری نے یہی اعتراض کیا اور درست کیا واللہ تعالٰی اعلم بالصواب (ت)

(بایاں کالم): قول الوقایۃ والنقایۃ والوافی والکنز والملتقی والغرر والتنویر ونور الایضاح وکثیرین لایحصون اذاقتصروا علی ذکر الطبخ ولم یفیدوا بکونہ مع غیرہ لانہ قد افھم من نفس اللفظ فمن التجرید

لاجل التوضیح قول الاصلاح اوتغیر بالطبخ معه والهدایة فان تغیر بالطبخ بعد ماخلط به غیره (۱) وبه یضعف مافی العنایة والبنایة انما قید به ای بالخلط لان الماء اذاطبخ وحده وتغیر جاز الوضوء به ۱ اھ ومافی الحموی علی قول مسکین ای تغیر بسبب الطبخ بخلط طاھر الخ انه اشاربهذه الزیادة الی اصلاح کلام المصنف لان مجرد الطبخ دون الخلط لایکون مانعا ۲ اھ وقد تعقبه السید الازہری بما مرفعاصاب واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب۔

(نیچے کی عبارت): (۲) جو چیز آگ پر رکھی جائے بالطبع نرم ہو کہ آگ کا اثر جلد قبول کر سکے جس سے اس کے اجزا متخلل ہو جائیں پہلے جو صلابت تھی باقی نہ رہے خامی جا کر استعمال مطلوب کے لئے مہیا ہو سکے لو ہے یا پتھر کنکر کو تنہا یا پانی میں

1 العنایة مع فتح القدیر الماء الذي یجوز به الوضوء نوریه رضویہ سکھر ۲۴/۱ 2 فتح المعین اکل الطعام المتغیر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۱/ ۲۳

Fatawa Ridawiyyah, Volume 3

...putting it on the fire will not be called cooking. "And this is achieved by the very meaning of 'inzhaj' (ripening/cooking) as is not hidden." (And this is the result of being fully cooked, as is not hidden. - T)

(3) Merely having the potential for a thing to be put on the fire so that these matters are actually achieved is not enough; if it is removed before then, it will not be called cooking, but rather leaving it raw.

(4) After achievement (of being cooked), it should not remain so long that the qualities vanish. If the effect of the fire increases such that it moves away from its suitability for intended use, it will not be called cooking but burning. "And this moderation is the 'inzhaj' (ripening)." (This middle state is being ready. - T)

(5) For it to be called cooking, the object itself must be intended. If the purpose of boiling something in water is only for the water, for example, to refine it or remove harmful effects by taking only the essence of another thing and then throwing it away, then it will not be called cooking that thing. Putting Neem leaves in water to boil for washing a wound will not be called cooking the Neem leaves.

Note: In cooking with water, sometimes the water is also intended, like meat broth. However, this is not mandatory for 'tabkh' (cooking), as when cinnabar is cooked in water, or wheat for starch, or barley for soup, where the water is thrown away and changed six times. As for what is mentioned in 'Al-Maghrib', Al-Karkhi said: 'Al-Tabikh' is that which has broth and contains meat or fat. As for dry fried meat (Qaliyya) and the like, it is not. (In 'Al-Maghrib' it is written: Al-Karkhi said 'tabkh' is that which has soup along with meat and fat, but purely roasted items etc. will not be considered 'tabkh'. - T)

| I say: Regarding the specific term, not the general meaning of cooking (1). Like 'al-shareeb' for water that is not sweet and might be drunk despite its state, and 'al-shuroob' is even less than that and is only drunk out of necessity, as in 'Al-Taj' from 'Al-Tahdhib' from Abu Zaid. He said similar things were narrated by the author of 'Kitab al-Ma'alim' and Ibn Sida in 'Al-Mukhasas' and 'Al-Muhkam' (2). So it is regarding these two specific words, not for 'shurb', 'sharab', and its other derivatives. | So I say: This saying is regarding the specific word 'tabkh', otherwise in general 'tabkh' this characteristic does not exist. Just as 'shareeb' is specifically applied to a drink that is not sweet, even though a sweet thing is also a drink. And the word 'shuroob' is of an

even lower grade, which is only drunk at the time of necessity. This was cited in 'Taj al-Urus' with reference to 'Tahdhib' from Abu Zaid, and he said that the author of 'Kitab al-Ma'alim' and Ibn Sida have described it in 'Mukhasas' and 'Muhkam'. Therefore, these specific meanings are for the words 'shareeb' and 'shuroob'; these characteristics do not apply to other derivatives of this root like 'shurb', 'sharab' etc. (T) |

Second Discussion: What is the reason for prohibition in cooking? The discussion passed in 721 (2) and that various statements appeared in it.

1 Al-Maghrib 2 Taj al-Urus, Chapter Ba, Section Shin, Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut 1/312

फ़तावा रज़विया, खंड 3

...डालकर आग पर रखने को पकाना न कहेंगे। "यह पकने (Inzhaj) के अर्थ का ही सार है जैसा कि गुप्त नहीं है।" (और यही पूर्ण रूप से पकने का परिणाम है, जैसा कि छिपा नहीं है। - त)

(3) केवल उस वस्तु का यह क्षमता रखना पर्याप्त नहीं है कि उसे आग पर रखा जाए ताकि ये बातें वास्तव में प्राप्त हो जाएं। यदि उसे पहले ही अलग कर लिया गया तो उसे पकाना नहीं कहेंगे बल्कि कच्चा रखना कहेंगे।

(4) प्राप्ति के बाद इतनी देर न हो कि वह नष्ट हो जाए। यदि आग का प्रभाव और बढ़ गया कि वह इच्छित उपयोग की योग्यता से दूर हो गई, तो उसे पकाना नहीं कहेंगे बल्कि जलाना कहेंगे। "यह मध्यमता ही पकना (Inzhaj) है।" (यह बीच की स्थिति तैयार होना है। - त)

(5) पकाने के लिए आवश्यक है कि वह वस्तु ही उद्देश्य हो। यदि पानी में उबालने का उद्देश्य केवल पानी है, उदाहरण के लिए उसे सुधारने या हानिकारक प्रभाव दूर करने के लिए किसी दूसरी चीज़ का केवल प्रभाव लेकर उसे फेंक देना, तो उसे उस चीज़ का पकाना नहीं कहेंगे। ज़ख्म धोने के लिए पानी में नीम डालकर उबालने को नीम की पत्तियों का पकाना नहीं कहा जाएगा।

चेतावनी: पानी में पकाने से कभी पानी भी उद्देश्य होता है जैसे गोश्त का शोरबा। लेकिन यह 'तब्ख़' (पकाने) के लिए अनिवार्य नहीं है जैसे पानी में शिंगरफ़ पकाना, स्टार्च के लिए गेहूँ या सूप के लिए जौ, जहाँ पानी फेंक दिया जाता है और उसे छह-छह बार बदला जाता है। जैसा कि 'अल-मग़रिब' में है, अल-करख़ी ने कहा: 'तबीख़' वह है जिसमें शोरबा हो और उसमें मांस या चर्बी हो। जहाँ तक सूखी तली हुई चीज़ (क़लिया) आदि का प्रश्न है, वह 'तबीख़' नहीं है। (अल-मग़रिब में है कि करख़ी ने कहा: तब्ख़ वह है जिसमें गोश्त और चर्बी के साथ शोरबा हो, लेकिन शुद्ध भुनी हुई चीज़ आदि को तब्ख़ नहीं कहा जाएगा। - त)

| मैं कहता हूँ: यह विशेष शब्द (तब्ख़) के बारे में है, सामान्य पकाने के बारे में नहीं। (1) जैसे 'शुरैब' उस पानी के लिए है जो मीठा न हो और उसे उसकी स्थिति के बावजूद पिया जा सकता है, और 'शुरुब' उससे भी निम्न स्तर का है जिसे केवल आवश्यकता पड़ने पर ही पिया जाता है, जैसा कि 'अत-ताज' में 'अत-तहरीब' से अबू ज़ैद के हवाले से है। उन्होंने कहा कि इसी तरह की बात 'किताब अल-मआलिम' के लेखक और इब्न सिदा ने 'अल-मुख़स्सस' और 'अल-मुहकम' में वर्णित की है। अतः यह इन दो विशेष शब्दों के बारे में है, न कि 'शुर्ब', 'शराब' या अन्य व्युत्पन्नों के बारे में। | इसलिए मैं

कहता हूँ कि यह कथन विशेष रूप से शब्द 'तब्ख़' के बारे में है, अन्यथा सामान्य 'तब्ख़' में यह विशेषता नहीं है। जैसे 'शुरैब' विशेष रूप से ऐसे पेय को कहा जाता है जो मीठा न हो, हालाँकि मीठी चीज़ भी पेय होती है। और शब्द 'शुरुब' उससे भी निचले दर्जे का है, जिसे केवल आवश्यकता के समय ही पिया जाता है। इसे 'ताज-उल-उरूस' में 'तहरीब' के हवाले से अबू ज़ैद से उद्धृत किया गया है, और उन्होंने कहा कि 'किताब अल-मआलिम' और इब्न सिदा ने इसे 'मुख़स्सस' और 'मुहकम' में बयान किया है। अतः ये विशेष अर्थ शब्द 'शुरैब' और 'शुरुब' के बारे में हैं। इस धातु (root) से बने अन्य शब्दों जैसे 'शुर्ब' (पीना), 'शराब' (पेय) आदि के लिए ये विशेषताएँ नहीं हैं। (त) |

दूसरी चर्चा: पकाने में निषेध किस कारण से है? चर्चा 721 (2) में गुज़री और यह कि इसमें कथन भिन्न आए हैं।

1 अल-मग़रिब 2 ताज अल-उरूस, अध्याय बा, अनुभाग शीन, इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत 1/312

ڈال کر آگ پر رکھنے کو پکانا نہ کہیں گے وھذا حاصل بنفس مدلول الانضاج کمالایخفی (اور یہی حاصل ہے مکمل طور پر پکنے کا، جیسا کہ مخفی نہیں۔ ت)

(۳) صرف اس شے کا یہ قابلیت رکھنا کافی نہیں یہاں کہ آگ پر رکھی جائے کہ یہ امور بالفعل حاصل ہوجائیں اگر پہلے ہی جدا کر لی گئی پکانا نہ کہیں گے بلکہ کچارکھنا۔

(۴) بعد حصول اتنی دیر نہ ہو کہ زائل ہو جائیں اگر اثر نار اور بڑھا کہ استعمال مطلوب کی صلاحیت سے نقل گئے تو پکانا نہ کہیں گے بلکہ جلانا وھذا التوسط ھو الانضاج (یہ واسطہ وہ تیار ہونا ہے۔ت)

(۵) پکانے کو ضرور ہے کہ وہ شے مقصود ہو اگر پانی میں جوش دینے سے مقصود صرف پانی ہے مثلاً اس کی اصلاح و رفع غائلہ وغیرہ کے لئے دوسری شے کا صرف اثر لے کر پھینک دینا تو اسے اس چیز کا پکانا نہ کہیں گے زخم دھونے کیلئے پانی میں نیم ڈال کر جوش دینے کو نہ کہا جائے گا کہ نیم کی پتی باریک رہے ہیں۔

تنبیہ: پانی میں پکانے سے کبھی پانی بھی مقصود ہوتا ہے جیسے شور بادر گوشت مگر یہ طبخ کیلئے لازم نہیں جیسے پانی میں شنجرف پکاتے نشاستہ کیلئے گیہوں آش کیلئے جو اور وہ پانی پھینکے اور یہ چھ چھ بدلے جاتے ہیں اما مافی المغرب قال الکرخی الطبیخ مالہ مرق وفیہ لحم او شحم فاما القلیۃ الیابسۃ ونحوھا فلا ۱ھ (مغرب میں ہے کہ کرخی نے فرمایا طبخ وہ ہے جس میں شور با اور اس کے ساتھ گوشت اور چربی ہو لیکن خالص مشک بھونی ہوئی چیز وغیرہ کو طبخ نہیں کیا جائے گا۔ت)

| فأقول: فی خصوص اللفظ لاعموم الطبخ (۱) کالشریب لماء لیس فی عذوبتہ وقد یشرب علی ما فیہ والشرب ادون منہ ولا یشرب الا ضرورۃ کما فی التاج عن التہذیب عن ابی زید قال ومثلہ حکاہ صاحب کتاب المعالم وابن سیدہ فی المخصص والمحکم ۲ اھ فھو فی خصوص اللفظین لافی الشرب والشراب وسائر مشتقاتہ۔ | پس میں کہتا ہوں خاص طبخ لفظ کے بارے میں یہ قول ہے ورنہ عام طبخ میں یہ خصوصیت نہیں، جیسا کہ شریب خاص ایسے مشروب کو کہا جاتا ہے جس میں میٹھا نہ ہو حالانکہ میٹھا بھی مشروب ہوتا ہے اور لفظ شروب اس سے بھی کم درجہ ہوتا ہے جس کو صرف ضرورت کے وقت پیا جاتا ہے اس کو تاج العروس میں تہذیب کے حوالہ سے ابو زید سے نقل کیا اور اس نے کہا کہ اس کو کتاب المعالم اور ابن سیدہ نے مخصص اور محکم میں بیان کیا ہے اھ لہٰذا یہ خاص معانی لفظ "شریب" اور "شروب" کے بارے میں ہیں اس مادہ سے دوسرے مشتقات شرب، شراب وغیرہ کیلئے یہ خصوصیات نہیں ہیں۔ (ت) |

بحث دوم: طبخ میں منع کس وجہ سے ہے ۴۷۱ (۲) میں بحث گزری اور یہ کہ اس میں عبارات مختلف آئیں

1 المغرب 2 تاج العروس باب الباء فصل الشین احیاء دار التراث العربی بیروت ۳۱۲/۱

Volume Three Fatawa Razawiyya And that cooking causes complete mixing; the complete mixing of a substantial physical substance with water will surely cause a difference in its liquidity (thinness), and this is the gist of all the aforementioned texts. And that Imam al-Natifi and the generality of books like Jami' al-Kabir, Munyah, Yanabi', Tabyin, Fath al-Qadir, and Tajnis of Imam Sahib-al-Hidayah, Tajnis al-Multaqat, Hulyah, Zahiriyyah, Ghunyah, and Maraqi al-Falah have based the ruling on this loss of water's liquidity due to cooking. This was narrated by Ghunyah from Jami' al-Saghir of Imam Qazi Khan. On this, the basic texts (mutun) like Wiqayah, Multaqa, Ghurar, Tanwir, and Anwar have definitively stated: "La bima'in zala tab'uhu bil-tabkh" (Ablution is not permissible with water whose nature has been removed by cooking. - T). Imam Sadr al-Shariah stated in the commentary: "Al-muradu bihi an yukhurijahu 'an al-riqqah" (What is meant by it is that which takes it out of its liquidity. - T).

I say: This is what is benefited from Mukhtasar of Imam Abu al-Hasan and Hidayah of Imam Burhan al-Din because both based the matter on taking the water out of its nature, and mentioned broth (soup) in the examples (Both base the matter on the fact that cooking removes it from being water; in its example, they mentioned soup. - T). Furthermore, both of them, in the example of the loss of nature, mentioned bean water; Hidayah interpreted it as being cooked; Kafi indicated this; Binayah, Kifayah, 'Inayah, Ghayat al-Bayan, and Fath maintained it. In number 89, the text from Jawharah etc. passed: "Al-muradu al-matbukhu bi-haythu idha barada thakhuna" (What is meant is the cooked [liquid] such that when it cools down, it becomes thick. - T). This same subject comes from Kifayah, Binayah, Ghayah, and also Mi'raj al-Dirayah then Shilbi 'ala al-Zayla'i. Also, in number 21, it passed that they determined this to be the benefit of Khaniyah, and Hulyah stated this is the meaning of Khaniyah; Dirayah is also a partner in this from Kifayah as will come (as will be seen soon. - T). In short, the texts are concordant and successive on this, and after this degree of succession, it is very clear and easy to take the expression "change of nature" from Hidayah, Wiqayah, Wafi, Kanz, and Islah as the intended meaning.

I say: Rather, that is the benefit of the word itself, that they took the change of water, and water is an essence (dhat), not an attribute (wasf), and the change of an incidental attribute is not a change of essence. Attributes keep changing while the essence remains as it is; if the essence does not remain, on what would the attributes change? Contrary to an essential attribute, the negation of the necessitated is the negation of the necessitating. In original speech, the literal meaning is taken as long as it is possible; metaphorical is not possible, just as it was said in 'Inayah: "Al-

ghalabatu bil-ajza'i ghalabatun haqiqiyyah" (Dominance by parts is real dominance. - T).

1. Sharh al-Wiqayah, Section on what is not permissible for wudu and what is permissible, Rashidiya Delhi 1/85
2. Sharh al-Wiqayah, Section on what is not permissible for wudu and what is permissible, Rashidiya Delhi 1/85
3. Al-Hidayah, Water with which wudu is permissible, Arabiyah Karachi 1/18
4. Al-Hidayah, Book of Purification, Imdadiya Multan 1/12
5. 'Inayah with Fath al-Qadir, Chapter on water with which wudu is permissible, Nooriya Razawiyya Sukkur 1/63 Page 105 of 756

खण्ड तीन फ़तावा रज़विया और यह कि पकाना पूर्ण मिश्रण का कारण है; एक ठोस पदार्थ का पानी के साथ पूर्ण मिश्रण निश्चित रूप से इसकी तरलता (पतलेपन) में अंतर लाएगा, और यही उपरोक्त सभी इबारतों का सारांश है। और यह कि इमाम नातिफ़ी और आम तौर पर किताबें जैसे जामे कबीर, मुनिया, यनाबीअ, तबीन, फ़तह अल-क़दीर, और इमाम साहिब-ए-हिदाया की तजनीस, तजनीस अल-मुल्तक़त, हुलिया, ज़हीरिया, ग़ुनिया और मराक़ी अल-फ़लाह ने पकाने के कारण पानी की तरलता के इस समाप्त होने पर ही हुक्म (आदेश) का आधार रखा है। ग़ुनिया ने इसे इमाम क़ाज़ी ख़ान की जामे सग़ीर से नक़ल किया है। इसी पर मुतून (मूल ग्रंथों) जैसे विक़ाया, मुल्तक़ा, ग़ुरर, तनवीर और अनवार ने दृढ़ता से कहा है: "ला बिमाइन ज़ाला तब्ऊहु बिल-तब्ख़" (उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं है जिसकी प्रकृति पकाने से समाप्त हो जाए। - त)। इमाम सद्र अल-शरिया ने शरह (व्याख्या) में फ़रमाया: "अल-मुरादु बिही अन युखरिज़हु अनिर-रिक्क़ह" (इससे मुराद वह पानी है जिसे वह तरलता से निकाल दे। - त)।

मैं कहता हूँ: यही इमाम अबुल हसन की मुख़्तसर और इमाम बुरहानुद्दीन की हिदाया से प्राप्त होता है क्योंकि उन दोनों ने मामले का आधार पानी को उसकी प्रकृति से निकालने पर रखा और उदाहरणों में शोरबा (सूप) का ज़िक्र किया (वे दोनों मामले का आधार इस पर रखते हैं कि पकाना उसे पानी होने से निकाल दे; इसके उदाहरण में उन्होंने शोरबा ज़िक्र किया। - त)। इसके अलावा, उन दोनों ने प्रकृति के समाप्त होने के उदाहरण में बाकला (सेम) के पानी का उल्लेख किया; हिदाया ने इसे पकाए हुए पर आधारित किया; काफ़ी ने इसकी ओर संकेत किया; बिनाया, किफ़ाया, इनाया, ग़ायत अल-बयान और फ़तह ने इसे बरकरार रखा। नंबर 89 में जोहरा आदि की इबारत गुज़री: "अल-मुरादु अल-मत्बूख़ु बि-हैसु इज़ा बरदा सखुना" (ऐसा पका हुआ [द्रव] मुराद है जो ठंडा होने पर गाढ़ा हो जाए। - त)। यही विषय किफ़ाया, बिनाया, ग़ाया और मेराज़ अद-दराया फिर शल्बी अल-ज़ैलाई से आता है। साथ ही, नंबर 21 में गुज़रा कि उन्होंने इसे खानिया का सार माना और हुलिया ने बताया कि खानिया का यही अर्थ है; किफ़ाया से दराया भी इसमें शामिल है जैसा कि आगे आएगा (जैसा कि शीघ्र ही देखा जाएगा। - त)। संक्षेप में, इबारतें इस पर एकमत और निरंतर हैं, और निरंतरता के इस स्तर के बाद हिदाया, विक़ाया, वाफ़ी, कंज़ और इस्लाह की "प्रकृति के परिवर्तन" की अभिव्यक्ति का अर्थ लेना बहुत स्पष्ट और आसान है।

मैं कहता हूँ: बल्कि वह शब्द का अपना ही सार है कि उन्होंने पानी का परिवर्तन लिया और पानी एक तत्व (ज़ात) है, न कि विशेषता (वस्फ़), और एक आकस्मिक विशेषता का परिवर्तन तत्व का परिवर्तन

नहीं है। विशेषताएं बदलती रहती हैं जबकि तत्व यथावत रहता है; यदि तत्व न रहे, तो विशेषताएं किस पर बदलेंगी? इसके विपरीत एक अनिवार्य विशेषता के कि अनिवार्य का अभाव होना अनिवार्य करने वाले का अभाव होना है। मूल भाषण में शाब्दिक अर्थ लिया जाता है जब तक वह संभव हो; लाक्षणिक संभव नहीं है, जैसा कि इनाया में कहा गया: "अल-ग़लबतु बिल-अज्ज़ा-इ ग़लबतुन हक़ीक़िया" (अंशों के आधार पर प्रधानता वास्तविक प्रधानता है। - त)।

1. शरह अल-विक़ाया, खंड उन चीजों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं है और जिनसे जायज़ है, रशीदिया दिल्ली 1/85
2. शरह अल-विक़ाया, खंड उन चीजों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं है और जिनसे जायज़ है, रशीदिया दिल्ली 1/85
3. अल-हिदाया, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, अरबी कराची 1/18
4. अल-हिदाया, पवित्रता की पुस्तक, इमदादिया मुल्तान 1/12
5. इनाया साथ में फ़तह अल-क़दीर, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है अध्याय, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/63 पृष्ठ 756 का 105

جلد سوم فتاویٰ رضویہ اور یہ کہ طبخ موجبِ کمالِ امتزاج ہے ذی جرم شے معتدبہ کا پانی سے کامل امتزاج ضرور اس کی رقت میں فرق لائے گا، اور یہ کہ یہی مآلِ جملہ عبارات مذکورہ ہے اور یہ کہ امام ناطفی وعامہ کتب جامع کبیر و منیہ و ینابیع و تبیین و فتح القدیر و تجنیس امام صاحب ہدایہ و تجنیس ملتقط و حلیہ و ظہیریہ و غنیہ و مراقی الفلاح نے پکانے سے اسی زوالِ رقت آب پر مدارِ حکم رکھا اسی کو غنیہ نے جامع صغیر امام قاضی خان سے نقل کیا اسی پر متون سے وقایہ و ملتقی و غرر و تنویر و انوار نے جزم فرمایا کہ لا بماء زال طبعہ بالطبخ (جس پانی کی طبیعت پکانے سے زائل ہو جائے اس سے وضو جائز نہیں۔ ت) امام صدر الشریعہ نے شرح میں فرمایا: المراد بہ ان یخرجہ عن الرقۃ (اس سے مراد وہ پانی ہے جس کو رقت سے خارج کر دے۔ ت)

اقول: یہی مختصر امام ابوالحسن و ہدایہ امام برہان الدین سے مستفاد لانھما احلا الامر علی اخراج الماء عن طبعہ و ذکرا فی الامثلۃ المرق (وہ دونوں معاملہ کا مدار اس پر رکھتے ہیں کہ پانی کو اس کی طبخ سے نکال دے، اس کی مثال میں شوربہ ذکر کیا۔ت) نیز ان دونوں نے زوالِ طبخ کی مثال میں آبِ باقلا کا کہنا ہدایہ نے اسے مطبوخ پر حمل کیا اسی طرف کافی نے اشارہ فرمایا بنایہ و کفایہ و عنایہ و غایۃ البیان و فتح نے اسے مقرر رکھا نمبر ۸۹ میں جوہرہ وغیرہ کی عبارت گزری المراد المطبوخ بحیث اذا برد ثخن (ایسا مطبوخ مراد ہے جو ٹھنڈا ہونے پر گاڑھا ہو جائے۔ ت) یہی مضمون کفایہ و بنایہ و غایہ نیز معراج الدرایہ پھر شلبیہ علی الزیلعی سے آتا ہے نیز ان دوسرے نمبر ۲۱ میں گزرا اور یہ کہ انہوں نے یہی مفادِ خانیہ ٹھہرایا اور یہی مطلب خانیہ حلیہ نے بتایا کفایہ نے بھی اس میں شریک درایہ ہے کماسیأتی (جیسا کہ آئے گا۔ت) بالجملہ عبارات اس پر

متظافر و متواتر ہیں اور اس درجہ تواتر کے بعد ہدایہ و وقایہ و وانی و کنز و اصلاح کی تعبیرِ تغییرِ طبع مراد لینا بہت واضح و آسان ہے۔

اقول: بلکہ وہ نفسِ لفظ کا مفاد ہے کہ انہوں نے پانی کا تغیر لیا اور پانی ذات ہے نہ کہ وصف و وصف عارض کا تغیر ذات کا تغیر نہیں عوارض بدلتے رہتے ہیں اور ذات بدستور رہتی ہے ذات نہ رہے تو عوارض بدلیں کس پر، بخلاف وصفِ لازم کہ انتفائے لازم انتفائے ملزوم ہے اور اصلِ کلام میں حقیقت ہے جب تک وہ ممکن ہو مجاز ممکن نہیں جس طرح عنایہ میں فرمایا کہ الغلبة بالاجزاء غلبة حقیقیة (اجزاء کے لحاظ سے غلبہ حقیقی ہے۔ ت)

1. شرح الوقایۃ فصل فیما لا یجوز الوضوء وما لا یجوز رشیدیہ دہلی ۸۵/۱
2. شرح الوقایۃ فصل فیما لا یجوز الوضوء وما لا یجوز رشیدیہ دہلی ۸۵/۱
3. الہدایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضوء عربیہ کراچی ۱۸/۱
4. الہدایۃ کتاب الطہارۃ امدادیہ ملتان ۱۲/۱
5. عنایہ مع فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء نوریہ رضویہ سکھر ۶۳/۱ Page 105 of 756

Fatawa Ridawiyya - Volume Three

Majma' al-Anhur added: Contrary to dominance by color, for it returns to the description [1]. And we have already presented this discussion under the statement of al-Kanz in 77 (Dominance in terms of color is contrary to this because it refers to the description; we mentioned this discussion in number 77 under the statement of al-Kanz. - T)

I say: And with this, what is in Jami' al-Rumuz under his saying 'or other things by cooking' is weakened. In it is an indication that dominance is prohibitive in what is cooked of this genre, whether it be by parts or by color [2]. Another rebuttal will follow. [Urdu Explanation]: I say, and from this, the weakness of this passage of Jami' al-Rumuz is understood under the author's statement "or other things by cooking," in which there is an indication that dominance will be achieved by cooking in this genre, whether this dominance is in terms of components or in terms of color. Ahead there will be another objection. (T)

Certainly, Imam Qawam al-Din Kaki then Allama Ahmad ibn al-Shalabi said:

By 'change through cooking,' he meant thickening and density [3]. And its full discussion has preceded in... [Urdu Explanation]: By change due to cooking, they meant becoming thick and dense. Its full discussion has already passed in 217. (T)

It is in al-Kifayah:

He meant by 'change,' thickening, so that if it was cooked and did not yet thicken, rather the thinness of the water remained, wudu with it is permissible. Al-Natifiyy mentioned it, and so it is in Fatawa Qadi Khan [4]. [Urdu Explanation]: By change due to cooking, they meant becoming thick, even if it was cooked and did not become thick and its thinness remained, then wudu from it would be permissible. Al-Natifiyy has mentioned this, and it is similarly mentioned in Fatawa Qadi Khan. (T)

It is in al-Binayah:

Change by cooking means it becomes thick until it becomes like broth, so that if it is cooked and does not thicken... [Urdu Explanation]: On the phrase 'change by cooking' in the text, the commentator said that it should become thick until it becomes like soup, but if it was cooked and did not become thick...

[Footnotes]: 1. Majma' al-Anhur, Chapter: Purity is permissible with absolute water, Dar al-Tiba'ah al-'Amirah, Egypt, 1/28. 2. Jami' al-Rumuz, Chapter of Purifications,

Maktabah Islamiyyah, Gonbad, Iran, 1/77. 3. Shalabiyyah 'ala al-Tabyin, Chapter of Purifications, al-Matba'ah al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/19. 4. Al-Kifayah with al-Fath, The water with which wudu is permissible, Matba' Nouriyah Ridawiyyah, Sukkur, 1/62.

फ़तावा रज़विया - जिल्द तीसरा

मजमा अल-अनहुर में जोड़ा गया: रंग के माध्यम से प्रबलता के विपरीत, क्योंकि यह वर्णन (सिफ़त) की ओर लौटता है [1]। और हमने अल-कंज़ के कथन में 77 के तहत इस चर्चा को पहले ही प्रस्तुत कर दिया है (रंग के मामले में प्रबलता इसके विपरीत है क्योंकि यह वर्णन की ओर लौटती है; हमने इस चर्चा को नंबर 77 में कंज़ के कथन के तहत उल्लेख किया है। - टी)

मैं कहता हूँ: और इससे, जामिउर रुमूज़ में उनके कथन 'या पकाने से अन्य चीजें' के तहत जो कुछ है, वह कमज़ोर हो जाता है। इसमें संकेत है कि इस प्रकार की पकी हुई चीज़ों में प्रबलता निषेधात्मक है, चाहे वह घटकों के आधार पर हो या रंग के आधार पर [2]। एक और खंडन आगे आएगा। [उर्दू विवरण]: मैं कहता हूँ, और इसी से जामिउर रुमूज़ के इस अंश की कमज़ोरी समझी गई, जो लेखक के कथन "या पकाने से अन्य" के तहत है, जिसमें यह संकेत है कि इस श्रेणी में पकाने से प्रबलता प्राप्त होगी, चाहे यह प्रबलता अवयवों के संदर्भ में हो या रंग के संदर्भ में। आगे एक और आपत्ति होगी। (टी)

निश्चित रूप से, इमाम क़वाम अल-दीन काकी और फिर अल्लामा अहमद इब्न अल-शलबी ने कहा:

'पकाने के माध्यम से परिवर्तन' से उनका तात्पर्य गाढ़ेपन और सघनता से था [3]। और इसकी पूरी चर्चा पहले हो चुकी है... [उर्दू विवरण]: पकाने के कारण परिवर्तन से उनका तात्पर्य गाढ़ा और सघन होना था। इसकी पूरी चर्चा 217 में पहले ही गुजर चुकी है। (टी)

किफ़ाया में है:

परिवर्तन से उनका तात्पर्य गाढ़ा होने से था, ताकि यदि उसे पकाया जाए और वह अभी गाढ़ा न हुआ हो, बल्कि पानी का पतलापन बना रहे, तो उससे वज़ू जायज़ है। अल-नातिफ़ी ने इसका उल्लेख किया है, और फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में भी ऐसा ही है [4] । [उर्दू विवरण]: पकाने के कारण परिवर्तन से उनका तात्पर्य गाढ़ा होना था, यहाँ तक कि यदि उसे पकाया गया और वह गाढ़ा नहीं हुआ और उसमें पतलापन बाकी रहा, तो उससे वज़ू जायज़ होगा। अल-नातिफ़ी ने इसका उल्लेख किया है; फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में भी ऐसा ही है। (टी)

बिनाया में है:

पकाने से परिवर्तन का अर्थ है कि वह गाढ़ा हो जाए यहाँ तक कि वह शोरबे जैसा हो जाए, ताकि यदि उसे पकाया जाए और वह गाढ़ा न हो... [उर्दू विवरण]: मूल पाठ में 'पकाने से परिवर्तन' पर टिप्पणीकार ने कहा कि उसे तब तक गाढ़ा होना चाहिए जब तक कि वह सूप जैसा न हो जाए, लेकिन यदि उसे पकाया गया और वह गाढ़ा नहीं हुआ...

[पाद लेख]: 1. मजमा अल-अनहुर, अध्याय: शुद्ध जल से पवित्रता जायज़ है, दार अल-तिबा'ह अल-अमीराह, मिस्र, 1/28। 2. जामिउर रुमूज़, पवित्रता का अध्याय, मकतबा इस्लामिया, गोनबाद, ईरान, 1/77। 3. अल-तबीन पर शलबिया, पवित्रता का अध्याय, अल-मतबा'ह अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 1/19। 4. अल-फ़तह के साथ अल-किफ़ाया, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, मतबा' नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/62।

पृष्ठ 106/756

مجمع الانہر میں بڑھایا: بخلاف الغلبة باللون فانها راجعة الی الوصف ۱ اه وقد قد منا هذا البحث في قول الکنز فی ۷۷ (رنگ کے اعتبار سے غلبہ اس کے خلاف ہے کہ وہ وصف کی طرف راجع ہے اس بحث کو ہم نے نمبر ۷۷ میں کنز کے قول میں ذکر کیا ہے۔ ت)

اقول: و به یضعف مانی جامع الرموز تحت قوله او غیره طبخا فیه اشارة الی ان الغلبة مانعة فیما طبخ من هذا الجنس سواء کانت بالاجزاء او باللون ۲ اه و یأتی دفع آخر۔ میں کہتا ہوں اور اسی سے جامع الرموز کی اس عبارت کی کمزوری سمجھی گئی ماتن کے قول "اوغیرہ طبخاً" کے تحت ہے کہ اس میں اس طرف اشارہ ہے کہ اس جنس میں پکانے سے غلبہ حاصل ہوگا یہ غلبہ اجزاء کے لحاظ سے ہو خواہ رنگ کے اعتبار سے ہو اھ آگے ایک اور اعتراض ہوگا۔ (ت)

لا جرم امام قوام الدین کاکی پھر علامہ احمد ابن الشلبی نے فرمایا:

عنی بالتغییر بالطبخ الثخانة والغلظ ۳ اه وقد تقدم تمامه فی۔ پکانے کی بناء پر تغیر سے انہوں نے گاڑھا اور غلیظ مراد لیا ہے اھ اس کی پوری بحث ۲۱۷ میں گزر چکی ہے۔ (ت)

کفایہ میں ہے:

عنی بالتغییر الثخونة حتی اذا طبخ ولم یثخن بعد بل رقة الماء باقیة جاز الوضوء به ذکره الناطفی کذا في فتاوی قاضی خان ٤۔ پکانے کے سبب تغیر سے انہوں نے گاڑھا ہونا مراد لیا ہے حتی کہ اگر پکایا اور گاڑھا نہ ہوا اور اس میں رقت باقی تھی تو اس سے وضو جائز ہوگا اس کو ناطفی نے ذکر کیا ہے فتاوٰی قاضیخان میں ایسے ہی ہے (ت)

بنایہ میں ہے:

مر تغیر بالطبخ ش بان صار ثخیناً حتی صار کالمرق حتی اذا طبخ ولم یثخن متن میں تغیر بالطبخ پر شارح نے کہا کہ وہ گاڑھا ہو جائے حتی کہ شوربے جیسا ہو جائے لیکن اگر پکایا اور گاڑھا

حواشی: 1 مجمع الانہر فصل یجوز الطھارۃ بالماء المطلق دار الطباعۃ العامرۃ مصر ۲۸/۱ 2 جامع الرموز باب الطھارات مکتبہ اسلامیہ گنبد ایران ۱/۷۷ 3 شلبیۃ علی التبیین باب الطھارات المطبعۃ الامیریہ ببولاق مصر ۱۹/۱ 4 الکفایۃ مع الفتح الماء الذی یجوز بہ الوضوء مطبعہ نوریہ رضویہ سکھر ۶۲/۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

| [Arabic] "The leaf in the water remains; ablution with it is permissible." | [Urdu] "It did not [change nature] and thinness remains in it, then ablution with it is permissible. (T)" |

Similarly, Imam Akmal quoted and established it in *Inaya*.

[Arabic] "Even if with the word 'it was said' (qila), since he said regarding the text's statement 'change by cooking,' it was said that by change is meant thickening because it becomes broth." [Urdu] "Although it is with the word 'it was said' while they commented on the text's statement 'change by cooking,' some said that this change means thickening because it becomes soup/broth. (T)"

Further, it is stated in *Ghayat al-Bayan*. This was the general discussion; now, a specific look at each book:

(1) *Hidaya*: I say, in the text, there was a loss of nature (zawal al-tab'). The commentary established that and took it to mean cooked water of broad beans etc., then regarding [Arabic] 'change by cooking, ablution is not permissible with it' ([Urdu] if it changes by cooking, wudu is not allowed. T), it stated: naturally, that is the well-known and intended change. [Arabic] "This is what the agreement of the commentary with its original text requires, but there is a strong problem in it, which we will return to explain at the end of this discussion, by the help of Allah Almighty." ([Urdu] the requirement of agreement between the commentary and the explained text is this, but there is a strong problem in it which we will explain at the end of the discussion, Insha'Allah. T).

(2) *Nuqaya*: I say, its origin in *Wiqaya* is the loss of nature, and the author of *Nuqaya* himself explicitly stated the consideration of thinness in the commentary. If it is said, it is possible that his opinion changed in *Nuqaya* towards 'change,' I say, the compilation of the commentary of *Nuqaya* is later [than the text], [Arabic] "as is not hidden from one who has studied it." ([Urdu] it is not hidden from one who has studied it. T) If it is said, then why did he express 'change' from 'change'? I say, it is the same subtle indication we mentioned on page 217, that in cooking, the actual appearance of the loss of thinness is not necessary, but rather becoming such that upon cooling, it does not remain thin, [Arabic] "as the explicit statements from the great Imams have preceded. By this, the objection in Al-Birjandi's commentary on *Nuqaya*, which uses the distinction between 'change' and 'loss of nature' as evidence,

is refuted" ([Urdu] as the explicit statements of the great Imams have passed, and through this, the objection of using 'change' as a counterpart to 'loss of nature' for 'change' in Allama Birjandi's commentary on *Nuqaya* as evidence is removed, which we had mentioned there. T).

---

1 *Al-Binaya*, [Arabic] "The water with which wudu is permissible etc.", Malik Sons, Faisalabad, 1/189. 2 *Al-Inaya* with *Al-Fath*, [Arabic] "The water with which wudu is permissible etc.", Nuriya Ridawiyya Press, Sukkur, 1/62. 3 *Al-Hidaya*, [Arabic] "The water with which wudu is permissible etc.", Arabiya Press, Karachi, 1/18.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

| [अरबी] "पानी में पत्ता शेष है; इससे वज़ू जायज़ है।" | [उर्दू] "यह [प्रकृति में] नहीं बदला और इसमें पतलापन बाकी है, तो इससे वज़ू जायज़ है। (त)" |

इसी तरह इमाम अकमल ने 'इनाया' में उद्धृत करके इसे स्थापित रखा है।

[अरबी] "भले ही 'कहा गया' (क़ील) शब्द के साथ हो, क्योंकि उन्होंने पाठ के कथन 'पकाने से परिवर्तन' पर कहा, कहा गया कि परिवर्तन से तात्पर्य गाढ़ा होना है क्योंकि वह शोरबा बन जाता है।" [उर्दू] "हालाँकि यह 'कहा गया' शब्द के साथ है जबकि उन्होंने पाठ के कथन 'पकाने से परिवर्तन' पर कहा, कुछ ने कहा कि इस परिवर्तन से तात्पर्य गाढ़ा होना है क्योंकि वह शोरबा बन जाता है। (त)"

इसी तरह 'ग़ायत अल-बयान' में है। यह सामान्य चर्चा थी; अब प्रत्येक पुस्तक पर विशेष नज़र:

(1) 'हिदाया': मैं कहता हूँ, पाठ में स्वभाव का समाप्त होना (ज़वाल-ए-तबअ) था। व्याख्या ने उसे स्थापित रखा और उससे सेम आदि का पका हुआ पानी मुराद लिया, फिर [अरबी] 'पकाने से परिवर्तन के कारण इससे वज़ू जायज़ नहीं' ([उर्दू] अगर पकाने से बदल जाए तो इससे वज़ू जायज़ नहीं। त) पर फ़रमाया: निस्संदेह यही प्रसिद्ध और इच्छित परिवर्तन है। [अरबी] "यही व्याख्या और मूल पाठ के बीच सहमति का तकाज़ा है, लेकिन इसमें एक बड़ी समस्या है जिसे हम इस चर्चा के अंत में अल्लाह तआला की सहायता से स्पष्ट करेंगे।" ([उर्दू] व्याख्या और मूल पाठ की सहमति का यही तकाज़ा है, लेकिन इसमें एक बड़ी समस्या है जिसे हम चर्चा के अंत में इंशाअल्लाह बयान करेंगे। त)।

(2) 'नुकाया': मैं कहता हूँ, 'विकाया' में इसका मूल स्वभाव का समाप्त होना है, और स्वयं नुकाया के लेखक ने व्याख्या में पतलेपन के विचार को स्पष्ट किया है। यदि कहा जाए कि संभव है कि नुकाया में उनकी राय 'परिवर्तन' की ओर बदल गई हो, तो मैं कहता हूँ कि नुकाया की व्याख्या का संकलन [मूल पाठ से] बाद का है, [अरबी] "जैसा कि उस पर स्पष्ट है जिसने इसका अध्ययन किया है।" ([उर्दू] इस पर छिपा नहीं जिसने इसका अध्ययन किया है। त) यदि कहा जाए कि फिर 'परिवर्तन' को 'परिवर्तन' से क्यों व्यक्त किया? मैं कहता हूँ, यह वही सूक्ष्म संकेत है जिसे हमने पृष्ठ 217 पर उल्लेख किया था कि पकाने में पतलेपन के समाप्त होने का वास्तव में प्रकट होना अनिवार्य नहीं है, बल्कि इस योग्य हो जाना है कि ठंडा होने पर वह पतला न रहे, [अरबी] "जैसा कि महान इमामों के स्पष्ट कथन पहले आ चुके हैं। इससे 'नुकाया' की अल-बिरजंदी की व्याख्या में उस आपत्ति का खंडन हो

जाता है जो 'परिवर्तन' को 'स्वभाव के समाप्त होने' के विपरीत आधार बनाकर साक्ष्य के रूप में दी गई थी।" ([उर्दू] जैसा कि महान इमामों के स्पष्ट कथन बीत चुके हैं और इससे अल्लामा बिरजंदी की नुकाया की व्याख्या में 'परिवर्तन' के लिए 'स्वभाव के समाप्त होने' के विपरीत दलील बनाने की आपत्ति समाप्त हो गई, जिसका उल्लेख हमने वहां किया था। त)।

---

1 अल-बिनाया, [अरबी] "वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है इत्यादि", मलिक संस, फैसलाबाद, 1/189। 2 अल-इनाया के साथ अल-फ़तह, [अरबी] "वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है इत्यादि", नूरिया रज़विया प्रेस, सुक्कुर, 1/62। 3 अल-हिदाया, [अरबी] "वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है इत्यादि", अरबिया प्रेस, कराची, 1/18।

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

| ورقة الماء فیه باقیة یجوز الوضوء به | نہ ہوا اور اس میں رقت باقی ہو تو اس سے وضو جائز ہے۔ (ت) |

اسی طرح امام اکمل نے عنایہ میں نقل کرکے مقرر رکھا۔

ولو بلفظة قیل اذقال قوله تغیر بالطبخ قیل المراد بالتغیر الثخونة فانه یصیر مرقاً۔ اگر چہ قیل کے لفظ کے ساتھ ہے جبکہ انہوں نے متن کے قول تغیر بالطبخ پر کہا، بعض نے کہا کہ اس تغیر سے مراد گاڑھا ہونا ہے کیونکہ وہ شوربا بن جاتا ہے۔ (ت)

اسی طرح غایة البیان میں ہے یہ تو عام بحث تھی رہی ان میں ہر کتاب پر خاص نظر۔

(۱) ہدا یہ اقول متن میں زوال طبع تھا شرح نے اُسے مقرر رکھ کر آب باقلاء وغیرہ سے مطبوخ مراد لیا پھر ان تغیر بالطبخ لا یجوز التوضی به (اگر پکانے سے متغیر ہو جائے تو اس سے وضو جائز نہیں۔ ت) فرمایا لا جرم وہی تغیر معهود و مقصود هذا ما یقتضی به موافقة الشرح لمشروحه لکن فیه اشکال قوی سنعود الی بیانه اخر هذا البحث بعونه تعالٰی (شرح اور مشروح کی موافقت کا یہی تقاضا ہے لیکن اس میں ایک قوی اشکال ہے اس کو بیان کریں گے بحث کے آخر میں ان شاء اللہ تعالٰی۔ت)

(۲) نقایہ اقول اس کی اصل وقایہ میں زوال طبع ہے اور خود امام صاحب نقایہ نے شرح میں اعتبار رقت کی تصریح فرمائی اگر کہیے ممکن کہ نقایہ میں رائے کو تغیر ہوا کہ جانب تغیر گئی اقول تالیف شرح نقایہ سے متاخر ہے کما لا یخفی علی من طالعه (اس پر مخفی نہیں جس نے اس کا مطالعہ کیا ہے۔ ت) اگر کہیے پھر تغیر سے تغیر کیوں فرمائی اقول وہی اشارہ غامضہ کہ ہم نے

۲۱۷ میں بیان کیا کہ طبخ میں زوال رقت کا بالفعل ظہور ضرور نہیں بلالکہ اس قابل ہو جانا کہ ٹھنڈا ہو کر رقیق نہ رہے کما تقدم التنصیص علیه من الائمة الجلة و به اندفع ما في شرح نقایة البرجندی من الاستشهاد علی التغایر بجعل التغیر قسیم زوال الطبع کما قدمناه ثمه (جیسا کہ اس پر جلیل القدر ائمہ کرام کی تصریح گزر چکی ہے اور اسی سے علامہ بر جندی کی شرح نقایہ میں تغیر کیلئے تغیر کو زوال طبع کے مقابل قرار دینے کو دلیل بنانے کا اعتراض ختم ہو گیا، جس کو ہم نے وہاں ذکر کردیا تھا۔ت)

---

1 البنایة الماء الذی یجوز به الوضوء الخ ملک سنز فیصل آباد ۱۸۹/۱ 2 العنایة مع الفتح الماء الذی یجوز به الوضوء الخ مطبعہ نوریہ رضویہ سکھر ۶۲/۱ 3 الہدایۃ الماء الذی یجوز به الوضوء الخ مطبعۃ عربیہ کراچی ۱۸/۱

Fatawa Razawiyya, Volume III

(43) In *Kanz* and *Wafi*, I say that "bit-tabkh" (by cooking) is conjoined with "bi-kathrat-il-awraq" (by abundance of leaves), and there the change is due to cooking; therefore, "bit-tabkh" is included under it. The interpretation of *Al-Bahr* has been made clear in what was previously stated, as recognized in *An-Nahr*.

Note: Remember what was previously mentioned regarding the interpretation by the author of *Al-Bahr*, who took "change" to mean change in the nature (unrestrictedness) of water, which appeared in number 217. And remember my statement that this point would not be correct in the texts of *An-Nuqayah* and *Al-Islah*.

If you say: Why did you not mention this regarding the *Kanz* itself, since meanings (implications) are considered in the books of Fiqh? If change is interpreted as a change in the water's nature (absolute state), the meaning would be that wudu is not permissible with water whose nature was changed by cooking. However, if that change occurred without cooking, it would be permissible, which is false.

I say: (1) Although the text of *Kanz* carries the possibility of a concept (implied meaning), it also carries the possibility that cooking is absolutely the effective cause for the change of the water's nature and the cause for restricting absolute water, even if no change occurs with cooking, as claimed by *Al-Bahr*. Thus, no separate implied meaning will arise because an effect cannot be separated from its cause. It is like saying wudu is not permissible when the parts of an additive mixed in water are abundant. Here, a counter-implication does not arise—one cannot say that if abundance is found without dominance, wudu would be permissible—because the abundance of parts is the effective cause for dominance, and its separation is impossible. (Continued on next page)

फतावा रज़विया, जिल्द ३

(४३) कन्ज़ और वाफ़ी में, मैं कहता हूँ कि "बित-तब्ख़" (पकाने से) का अन्वय "बिकसरतिल-औराक़" (पत्तों की अधिकता) पर है, और वहाँ पकाने के कारण परिवर्तन है; इसलिए "बित-तब्ख़" इसके अंतर्गत आता है। अल-बह्र की व्याख्या पूर्व में स्पष्ट की जा चुकी है, जैसा कि अन-नहर में स्वीकार किया गया है।

नोट: याद रखें कि अल-बह्र के लेखक की व्याख्या के संबंध में पहले क्या उल्लेख किया गया था, जिन्होंने "परिवर्तन" का अर्थ पानी की प्रकृति (पूर्णता) में परिवर्तन लिया था, जो संख्या २१७ में आया था। और मेरे उस कथन को याद करें कि यह बात अन-नुक़ाया और अल-इसलाह की इबारत में सही नहीं होगी।

यदि आप कहें: आपने स्वयं कन्ज़ के बारे में इसका उल्लेख क्यों नहीं किया, जबकि फ़िक़्ह की किताबों में अवधारणाओं (निहितार्थों) को माना जाता है? यदि परिवर्तन की व्याख्या पानी की प्रकृति में परिवर्तन के रूप में की जाती है, तो अर्थ यह होगा कि उस पानी से वज़ू करना जायज़ नहीं है जिसकी प्रकृति पकाने के कारण बदल गई है। हालाँकि, यदि वह परिवर्तन बिना पकाए हुआ हो, तो यह जायज़ होगा, जो कि गलत है।

मैं कहता हूँ: (१) हालाँकि कन्ज़ के पाठ में एक अवधारणा (निहित अर्थ) की संभावना है, इसमें यह संभावना भी है कि पकाना पूरी तरह से पानी की प्रकृति के परिवर्तन और पूर्ण पानी को प्रतिबंधित करने का प्रभावी कारण माना जाए, भले ही पकाने के साथ कोई परिवर्तन न हो, जैसा कि अल-बह्र ने दावा किया है। इस प्रकार, कोई अलग निहित अर्थ उत्पन्न नहीं होगा क्योंकि कोई भी कार्य अपने कारण से अलग नहीं हो सकता। यह वैसा ही है जैसे आप कहें कि पानी में मिलाए गए किसी पदार्थ के अंशों की अधिकता होने पर वज़ू जायज़ नहीं है। यहाँ, विपरीत अर्थ पैदा नहीं होता—कि ऐसा कहा जा सके कि यदि प्रभुत्व के बिना अधिकता पाई जाए, तो वज़ू जायज़ होगा—क्योंकि अंशों की अधिकता प्रभुत्व के लिए प्रभावी कारण है, और इसका अलग होना असंभव है। (अगले पृष्ठ पर जारी)

पृष्ठ १०८/७५६

(۴۳) کنزو وافی اقول ان میں بالطبخ کا عطف بکثرۃ الاوراق پر ہے اور وہاں تغیر طبخ ہے مراد تو بالطبخ اس کے نیچے داخل وتاویل عہ البحر قد علمت ما فیہ اعترف بھذا في النھرو عہ: تذکر ماتقدم في من حمل البحر التغیر علی تغیر الاطلاق وقو لی انه لایتمشی في عبارۃ النقایۃ والاصلاح۔ بحر کے اس قول جس میں انہوں نے "تغیر" سے اطلاق کا تغیر مراد لیا ہے جو نمبر ۲۱۷ میں گزرا، اور میرے اس قول کو جس میں کہا تھا کہ یہ بات نقایہ اور اصلاح کی عبارت میں درست نہیں ہوگی، کو یاد کرو۔ فان قلت ھلا قلت وفی نفس الکنز فان المفاھیم معتبرۃ فالکتب فاذا حمل التغیر علی تغیر الاطلاق کان المعنی لایجوز الوضوء بماتغیر عن اطلاقه بالطبخ اما لو تغیر عنه بغیر الطبخ جاز وھو باطل۔ اگر تو اعتراض کرے کہ تم نے اس بارے کنز کا ذکر کیوں نہیں کیا، حالانکہ کتب فقہ میں مفہومات کا اعتبار ہوتا ہے پس جب طبخ والے تغیر سے مراد، اطلاق کا تغیر ہے تو پھر معنی یوں ہوگا کہ پکانے کی وجہ سے جو تغیر پانی کے اطلاق میں پیدا ہوا ہے اس سے وضو جائز نہ ہوگا، اور اگر یہ اطلاق کا تغیر بغیر پکائے حاصل ہو تو اس سے وضو جائز ہوگا حالانکہ یہ باطل ہے۔ اقول: (۱) عبارۃ الکنز وان احتملت المفھوم احتملت ان یکون الطبخ مطلقاًعلۃ موجبۃ لتغیر الاطلاق وحصول التقیید وان لم یتغیر الشیء ادعی البحر والمعلول لا یتخلف عن علتہ فلا یکون لھا مفھوم من ھذہ الجھۃ کأن تقول لا یتوضؤ بماء غلب بکثرۃ اجزاء الممازج فلا یحتمل انه وجدت کثرۃ ولم یغلب بھا جاز به الوضوء لاستحالۃ انفکاک الغلبۃ عنھا۔ میں کہتا ہوں کہ کنز کی عبارت میں اگر مفہوم کا احتمال ہے تو اس میں یہ احتمال بھی ہے کہ طبخ علی الاطلاق تغیر اطلاق کی علت مؤثرہ قرار پائے اور مطلق پانی کو مقید کرنے کی علت بن جائے، اگرچہ طبخ کے ساتھ کوئی تغیر پیدا نہ ہو، جیسا کہ بحر نے دعوٰی کیا ہے تو اب کوئی مفہوم پیدا نہ ہوگا کیونکہ کوئی معلول اپنی علت سے

جُدا نہیں ہوسکتا ہے، یہ یوں ہوا جیسے تم کہو کہ پانی میں ملنے والی چیز کے اجزاء کی کثرت ہونے پر وضو جائز نہیں، تو یہاں مفہوم مخالف پیدا نہیں ہوتا، کہ یوں کہا جاسکے کہ کثرت بغیر غلبہ اگر پائی جائے تو وضو جائز ہوگا، کیونکہ کثرت اجزاء غلبہ کیلئے علت مؤثرہ ہے جس کا جدا ہونا محال ہے۔ (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Razviya, Volume 3

He raised an objection based on the premise of adopting what is in *Al-Khaniya* regarding building upon the presence of the smell of beans. As Abu al-Saud reported from him: On this basis, there is an objection in conjoining cooking (*tabkh*) with that which is changed by the abundance of leaves, because as you know, change by the abundance of leaves is through thickening (*thukhn*), and this is the same as cooking itself, whether it thickens or not. (The weakness of the interpretation of *Bahr* has become known to you and it has been acknowledged in *Nahr*. They raised an objection to that statement of *Khaniya* in which they made the smell of beans a proof for change due to cooking, saying that conjoining cooking with "that which is changed by abundance of leaves" will create an objection. Because change occurs due to thickening because of the abundance of leaves, and this is change by mere cooking, whether it becomes thick or not. Abu Saud has quoted him like this. - T)

I say: And the objection is repelled (1) firstly, by what you have known from the recurring texts regarding the consideration of thickness.

I say: This objection is repelled. Firstly, because in cooking as well, thickness is considered, upon which...

(Remaining footnote from the previous page) If you say: Did not *Bahr* interpret the change mentioned in the text as the loss of the name due to thickness, as preceded? And there is no doubt that his statement "by cooking" falls under this change. So the meaning becomes "or thickened by cooking". Then why did you not argue against *Bahr* with his own statement?

I say: If he were to say: The meaning of change is restriction (*taqyid*), but in the case of leaves, it is through thickness, so I interpreted it as such there, while in cooking it is by itself. As for the speech of this poor one (the author) here, it is based on investigation, to which I alluded by saying "And the interpretation of *Bahr*, you have known what is in it." So understand it, may he be forgiven. (M)

If you object: Did *Bahr* not mean the change in the interpretation of the text as the change in the name of the water due to thickness? As passed in number 77, and there is no doubt that his saying "by cooking" also comes under it. So now the meaning is: Or it becomes thick by cooking. Then why do you not reject *Bahr* with his own saying?

Then I reply that *Bahr* can say: By change I mean restriction, i.e., restricting the water, but in leaves (foliage) this restriction happens through thickness, that's why I interpreted the change there through thickness. But this speech of mine, the poor one, is purely based on research, towards which I had hinted by saying (Interpretation of *Bahr*, you know the objection in it). So understand. 12, from him, may he be forgiven.

---

1. Fath-ul-Allah al-Mueen, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/23.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

उसने खानीया में जो कुछ है उसे अपनाने के आधार पर आपत्ति जताई, यानी फलियों की गंध की उपस्थिति पर निर्माण के बारे में। जैसा कि अबू अल-सऊद ने उनसे उद्धृत किया: इस आधार पर, 'तब्ख' (पकाने) को 'पत्तों की अधिकता से जो बदल जाए' के साथ जोड़ने में आपत्ति है, क्योंकि जैसा कि आप जानते हैं, पत्तों की अधिकता से बदलाव गाढ़ेपन (थुख़्न) के कारण होता है, और यह पकाने के ही समान है, चाहे वह गाढ़ा हो या न हो। (बहर की व्याख्या की कमजोरी आपको ज्ञात हो चुकी है और 'नहर' में इसका स्वीकार किया जा चुका है। उन्होंने खानिया के उस बयान पर आपत्ति की है जिसमें उन्होंने पकाने के बदलाव पर फलियों की गंध को दलील बनाया है, और कहा है कि 'पत्तों की अधिकता से बदलाव' पर पकाने को जोड़ने से आपत्ति पैदा होगी। क्योंकि पत्तों की अधिकता से गाढ़ा होने के कारण बदलाव होता है और यह केवल पकाने से बदलाव होगा, चाहे गाढ़ा हो या न हो। अबू सऊद ने उनसे इसी तरह उद्धृत किया है। - त)

मैं कहता हूँ: और आपत्ति दूर हो गई है (१) पहली बात तो यह है कि जैसा कि आप जानते हैं कि गाढ़ेपन पर विचार करने के संबंध में ग्रंथों का निरंतरता है।

मैं कहता हूँ: यह आपत्ति दूर हो गई है। पहली बात तो यह है कि पकाने में भी गाढ़ेपन का ही विचार किया जाता है जिस पर...

(पिछले पृष्ठ का शेष फुटनोट) यदि आप कहें: क्या 'बहर' ने मूल पाठ में वर्णित बदलाव का अर्थ गाढ़ेपन के कारण नाम का खत्म हो जाना नहीं लिया है, जैसा कि पहले बताया गया? और इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनका कथन "पकाने से" इस बदलाव के अंतर्गत आता है। तो अर्थ यह हुआ कि 'पकाने से गाढ़ा हो जाए'। फिर आपने 'बहर' के विरुद्ध उनके अपने ही कथन से तर्क क्यों नहीं दिया?

मैं कहता हूँ: यदि वे कहें: बदलाव का अर्थ प्रतिबंध (तक़यीद) है, लेकिन पत्तों के मामले में यह प्रतिबंध गाढ़ेपन के माध्यम से होता है, इसलिए मैंने वहां इसका अर्थ गाढ़ापन किया है, जबकि पकाने में यह स्वयं है। जहाँ तक इस फकीर (लेखक) के यहाँ के शब्दों की बात है, वे शोध पर आधारित हैं, जिसकी ओर मैंने यह कहकर संकेत किया है कि "और बहर की व्याख्या, आप जान चुके हैं कि उसमें क्या है।" तो इसे समझें, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। (म)

यदि आप आपत्ति करें कि क्या बहर ने पाठ की व्याख्या में बदलाव से मुराद पानी के नाम की तब्दीली गाढ़ेपन की वजह से नहीं ली? जैसा कि नंबर ७७ में गुज़रा, और इसमें शक नहीं कि उसका

कहना "पकाने से" भी इसके तहत है तो अब अर्थ यह हुआ: या पकाने से गाढ़ा हो जाए तो आप बहर का रद खुद उसके अपने कॉल (कथन) से क्यों नहीं करते?

तो मैं जवाब देता हूँ कि बहर यह कह सकते हैं कि बदलाव से मेरी मुराद तक़यीद यानी पानी को मुक़य्यद करना है मगर पत्तों में यह तक़यीद गाढ़ेपन से होती है इसलिए मैंने वहां बदलाव की व्याख्या गाढ़ेपन से की है, लेकिन मुझ फकीर का यह कलाम महज़ तहक़ीक़ (शोध) पर मबनी (आधारित) है जिसकी तरफ मैंने (बहर की व्याख्या, आपको उसमें आपत्ति ज्ञात है) कहकर इशारा किया था, तो समझ लें। १२ उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे।

---

1. फ़तह-उल्लाह अल-मुईन, किताब अल-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, १/२३। पेज १०९ ऑफ ७५६

فتاوی رضویہ جلد سوم استشکلہ علی تقدیر الاخذ بما فی الخانیۃ من البناء علی وجود ریح الباقلاء فقال کما نقل عنہ ابو السعود علی ھذا یشکل عطف الطبخ علی ماتغیرہ بکثرۃ الاوراق لما علمت ان التغیر بکثرۃ الاوراق بالثخن وھذا بنفس الطبخ سواء ثخن اولا ۱ ھ (بحر کی تاویل کی کمزوری تمہیں معلوم ہو چکی ہے اور نہر میں اس کا اعتراف ہو چکا ہے اور انہوں نے خانیہ کے اُس بیان کو جس میں انہوں نے طبخ کے تغیر پر باقلا کی بُو کو دلیل بنایا ہے پر اشکال وارد کیا ہے اور یوں کہا کہ مّاتغیرہ بکثرۃ الاوراق پر طبخ کے عطف کرنے سے اعتراض پیدا ہوگا، کیونکہ کثرتِ اوراق (پتوں کی کثرت) سے گاڑھا ہونے کی وجہ سے تغیر ہوتا ہے اور یہ محض پکانے سے تغیر ہوگا، گاڑھا ہو یا نہ ہو ابو سعود نے ان سے یوں ہی نقل کیا ہے اھت)

اقول: والاشکال مدفوع (۱) اولاً بماعلمت من تواتر النصوص علی اعتبار الثخن

میں کہتا ہوں یہ اشکال مدفوع ہے اولاً اس لئے کہ طبخ میں بھی گاڑھے پن کا اعتبار ہے جس پر

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) فأن قلت الیس ان البحر حمل التغیر المذکور فی المتن علی زوال الاسم بالثخونۃ کما تقدم فی ولاشك ان قولہ بالطبخ داخل تحت ھذا التغیر فیکون المعنی اوثخن بالطبخ فلم لم تحتج علی البحر یقول نفسہ۔

اقول: لو ان یقول معنی التغیر ھو التقیید غیرانہ فی الاوراق بالثخن ففسرتہ بہ ھناك وفی الطبخ بنفسہ اماکلام الفقیر ھھنا فمبنی علی التحقیق والیہ اشرت بقولی وتأویل البحر قد علمت مافیہ فافھم منہ غفرلہ۔ (م)

اگر تو اعتراض کرے کہ کیا بحر نے متن کی تفسیر میں تغیر سے مراد پانی کے نام کی تبدیلی گاڑھے پن کی وجہ سے نہیں لی؟ جیسا کہ نمبر ۷۷ میں گزرا، اور اس میں شک نہیں کہ اس کا

قول "بالطبخ" بھی اس کے تحت ہے تو اب معنی یہ ہوا اوثخن بالطبخ یا پکانے سے گاڑھا ہو جائے تو آپ بحر کا رد خود اس کے اپنے قول سے کیوں نہیں کرتے؟

تو میں جواب دیتا ہوں کہ بحر یہ کہہ سکتے ہیں کہ تغیر سے میری مراد تقیید یعنی پانی کو مقید کرنا ہے مگر اوراق (پتوں) میں یہ تقیید گاڑھے پن سے ہوتی ہے اس لئے میں نے وہاں تغیر کی تفسیر گاڑھے پن سے کی ہے، لیکن مجھ فقیر کا یہ کلام محض تحقیق پر مبنی ہے جس کی طرف میں نے (تاویل البحر قد علمت مافیہ) بحر کی تاویل میں اعتراض تمہیں معلوم ہے، کہہ کر اشارہ کیا تھا، فافہم ۱۲ امنہ غفرلہ۔

---

1 فتح اللہ المعین کتاب الطہارت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۳ Page 109 of 756

Fatawa Razawiyya Volume Three

In cooking also (1). Secondly, as you have heard, thickness is customarily necessary in cooking (2). Thirdly, we informed you of the gist of the statement of al-Khaniyah here. Al-Hamwi and then Abu al-Sa'ud answered the difficulty of al-Nahr that it would be problematic if the author's preferred view was that change due to many leaves was by becoming thick, whereas it is not so as passed before, because the apparent meaning of his statement (and if a pure thing changes one of its qualities) is that if it changes all its qualities, it is not permissible even if it does not become thick. Ah.

[Urdu commentary:] The recurrence of the texts (Nusus) is known to you. Secondly, because you have heard that thickness is customarily necessary for cooking. Thirdly, because we told you the gist of al-Khaniyah's words on page 217. Al-Hamwi and then Abu al-Sa'ud answered the difficulty of al-Nahr that the objection would arise if the author considered change due to many leaves to be by thickness, whereas it is not so, as mentioned before, that the apparent meaning of their statement (and if a pure thing changes one of its qualities) is that if it changes all the qualities of water, then Wudu is not permissible, even if it has not become thick. Ah (T).

I say: Firstly (1), it is not appropriate for us to interpret the words of the Imams upon a weak and abandoned meaning when a correct meaning consistent with the majority is possible. Regarding the Hadith about the change of one of the qualities, what is in it will come [in discussion] by the help of Allah Almighty.

[Urdu translation:] I say: Firstly, it is not appropriate for us to interpret the words of the noble Imams upon some weak and discarded meaning while its correct and majority-conforming meaning can be valid. The Hadith mentioning the change of one quality of water will be discussed next with Allah's help.

Secondly: (2) Imam al-Nasafi, Hafiz al-Din, author of al-Kanz, is the one who said in his Mustasfa that considering one quality is contrary to the correct narration, as passed in 101. (3) Correction: I say it was better for him to interpret it in accordance with the recurrent (Mutawatir) texts.

[Urdu translation:] And secondly, the author of al-Kanz, Imam Hafiz al-Din Nasafi, said in his Mustasfa that the narration involving the change of one quality is against the correct narration, as passed on page 101. Correction: I say it is better to interpret it in accordance with the recurrent texts, but the Allama...

1 Fath al-Mu'in, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi 1/63 2 Mustasfa

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

पकाने में भी (१)। और दूसरे, जैसा कि आपने सुना है कि गाढ़ापन आमतौर पर पकाने के लिए आवश्यक है (२)। और तीसरे, हमने आपको यहाँ खानिया के कलाम का सार बताया था। हमवी और फिर अबू अल-सऊद ने नहर की मुश्किल का यह जवाब दिया कि समस्या तब होती जब लेखक का पसंदीदा विचार यह होता कि बहुत सारे पत्तों के कारण परिवर्तन गाढ़ा होने से होता है, जबकि ऐसा नहीं है जैसा कि पहले गुजर चुका है, क्योंकि उनके कथन (और यदि एक शुद्ध चीज़ उसके गुणों में से एक को बदल देती है) का स्पष्ट अर्थ यह है कि यदि वह उसके सभी गुणों को बदल दे, तो वज़ू जायज़ नहीं है चाहे वह गाढ़ा न हुआ हो। आह।

[उर्दू व्याख्या:] नसूस (मूल ग्रंथों) का मुतवातिर होना आपको मालूम है। और दूसरे इसलिए कि आप सुन चुके हैं कि गाढ़ापन आमतौर पर पकाने के लिए ज़रूरी है। और तीसरे इसलिए कि हमने आपको सफ़ा २१७ पर खानिया के इस कलाम का सार बताया था। हमवी और फिर अबू सऊद ने नहर की आपत्ति का यह जवाब दिया कि आपत्ति तब होती जब लेखक पत्तों की अधिकता से होने वाले बदलाव को गाढ़ा होने की वजह से करार देते, हालांकि ऐसा नहीं है जैसा कि गुज़र चुका है कि उनके कथन "अगर कोई पाक चीज़ उसके किसी एक गुण को बदल दे" का प्रत्यक्ष अर्थ यह है कि अगर वह पानी के सभी गुणों को बदल दे तो वज़ू जायज़ नहीं है चाहे वह गाढ़ा न हुआ हो। (त)

मैं कहता हूँ: पहले (१), हमारे लिए यह उचित नहीं है कि हम इमामों के कलाम को किसी कमज़ोर और छोड़े गए अर्थ पर आधारित करें, जबकि उसका सही और बहुमत के अनुकूल अर्थ संभव हो। जिस हदीस में पानी के किसी एक गुण के बदलने का ज़िक्र है, उसके बारे में अल्लाह की मदद से आगे चर्चा आएगी।

[उर्दू अनुवाद:] मैं कहता हूँ कि पहले हमारे लिए यह मुनासिब नहीं कि आइम्मा-ए-किराम के कलाम को किसी कमज़ोर और छोड़े गए अर्थ पर महमूल (आधारित) करें, जबकि उसका सही और जमहूर (बहुमत) के मुवाफ़िक़ मानी दुरुस्त हो सकता हो। जिस हदीस में पानी के किसी एक वस्फ़ (गुण) की तब्दीली का ज़िक्र है, उसके बारे में अल्लाह की मदद से आइंदा बहस आएगी।

और दूसरे: (२) कंज़ के लेखक इमाम हाफ़िज़ुद्दीन नसफ़ी ने अपनी मुस्तसफ़ा में कहा है कि किसी एक गुण को बदलना सही रिवायत के खिलाफ है जैसा कि १०१ में गुज़र चुका है। (३) सुधार: मैं कहता हूँ कि इसे मुतवातिर (लगातार) ग्रंथों के अनुकूल अर्थ पर आधारित करना बेहतर था।

[उर्दू अनुवाद:] और दूसरे, कंज़ के मुसन्निफ़ इमाम हाफ़िज़ुद्दीन नसफ़ी ने अपनी मुस्तसफ़ा में कहा है कि किसी एक वस्फ़ की तब्दीली वाली रिवायत सही रिवायत के ख़िलाफ़ है जैसा कि १०१ में गुज़रा। इस्लाह (सुधार): मैं कहता हूँ कि इसे नसूस-ए-मुतवातिरा के मुवाफ़िक़ मानी पर महमूल करना बेहतर है, लेकिन अल्लामा...

१ फ़तहु अल-मुईन, किताबुत तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची १/६३ २ मुस्तसफ़ा

पेज ११० का ७५६

فتاوی رضویہ جلد سوم

فی الطبخ ایضاً (۱) وثانیاً بما سمعت ان الثخن لازم الطبخ عادة (۲) وثالثا اعلمناك فی مال کلام الخانیة ہذا واجاب الحموی ثم ابو السعود عن اشکال النہر انہ یشکل ان لوکان مختار المصنف ان التغیر بکثرة الاوراق بالثخن ولیس کذلک لمامر من ان ظاہر قولہ وان غیر طاہر احد اوصافہ انہ لوغیر اوصافہ الجمیع لایجوز وان لم یصر ثخینا 1 اھ

نصوص کا تواتر تمہیں معلوم ہے اور ثانیا اس لئے کہ تم سن چکے ہو کہ گاڑھا پن، طبخ کو عادتاً لازم ہے اور ثالثا اس لیے کہ ہم نے خانیہ کے اس کلام کا حاصل ۲۱۷ میں آپ کو بتایا تھا اور حموی اور پھر ابوسعود نے نہر کے اشکال کا یہ جواب دیا کہ اشکال تب ہوتا جب مصنف کثرت اوراق میں تغیر کی وجہ سے گاڑھا ہونے کو قرار دیتے حالانکہ ایسا نہیں جیسا کہ گزرا کہ ان کے قول (وان غیر طاہر احد اوصافہ) کا ظاہری مفہوم یہ ہے کہ اگر کوئی پاک چیز پانی کے تمام اوصاف کو متغیر کر دے تو وضو جائز نہیں اگرچہ وہ گاڑھا نہ ہواھ (ت)

اقول: اولا (۱) لیس الاولی بنا ان نحمل کلام الائمة علی الضعیف المہجور مع صحة المعنی الصحیح الموافق للجمہور وحدیث احد الاوصاف یأتی ما فیہ بعون اللہ تعالی۔

میں کہتا ہوں اولاً، ہمارے لئے مناسب نہیں کہ ائمہ کرام کے کلام کو کسی ضعیف اور متروک پر محمول کریں جبکہ اس کا صحیح اور جمہور کے موافق معنی درست ہو سکتا ہو ، جس حدیث میں پانی کے کسی ایک وصف کی تبدیلی کا ذکر ہے اس کے بارے میں اللہ کی مدد سے آئندہ بحث آئے گی۔

وثانیاً: (۲) الامام النسفی حافظ الدین صاحب الکنز هو القائل فی مستصفاه ان اعتبار احد الاوصاف خلاف الروایة الصحیحة کما تقدم فی ۱۰۱۔ (۳) اصلاح اقول کان الاولی به الحمل علی ما یوافق النصوص المتواترة

اور ثانیاً کنز کے مصنف امام حافظ الدین نسفی نے اپنی مستصفیٰ میں کہا ہے کہ کسی ایک وصف کی تبدیلی والی روایت صحیح روایت کے خلاف ہے جیسا کہ ۱۰۱ میں گزرا۔ اصلاح، میں کہتا ہوں کہ اس کو نصوص متواترہ کے موافق معنی پر محمول کرنا بہتر ہے، لیکن علامہ

۱ فتح المعین کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۶۳ ۲ مستصفی

Fatawa Razawiyya Volume 3

But Al-Allamah al-Wazir (may Allah have mercy on him) said in his 'Manhiyāt': "From here it is known that what is considered in the case of cooking is the change of water by it, not its departing from its natural state, as is understood from the statement of Taj al-Shari'ah: 'or by cooking, no matter how it is', for wudu is not permissible with broth, even though the only change found in it is due to cooking, and not to the extent that it leaves the limits of thinness and fluidity." اھـ (T)

I say: (1) Firstly, what is understood from the words of Taj al-Shari'ah, rather what he stated explicitly, is in accordance with mutawatir (widely reported) texts. Secondly, (3) regarding what he based on broth, Al-Quduri, Al-Hidayah, Al-Wiqayah, Al-Multaqa, Al-Ghurar, Al-Tanwir, and others have included it among things where the other [ingredient] prevails, thus taking it out of the natural state of water. The statement from Al-Binayah was mentioned earlier, and it was said in Al-'Inayah that it becomes broth due to thickness. Thirdly, (4) you have known that thickness normally accompanies cooking. Fourthly, (5) you have known the meaning of thinness, and there is no doubt that when broth flows, it does not spread completely, for it has solidified. (T)

---

1. Al-Islah by Al-Allamah Wazir ibn Kamal Pasha.
2. Al-Hidayah, "The water with which wudu is permissible", etc. Arabiyyah, Karachi, 1/18.
3. Al-'Inayah with Al-Fath, "The water with which wudu is permissible", etc. Nuriyyah Razawiyyah, Sukkur, 1/62.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

लेकिन अल्लामा वज़ीर (अल्लाह उन पर रहम करे) ने अपनी 'मन्हियात' में फ़रमाया: "यहाँ से यह ज्ञात होता है कि पकाने की स्थिति में पानी का बदलाव ही मान्य है, उसका अपनी प्राकृतिक स्थिति से बाहर निकलना उद्देश्य नहीं है, जैसा कि ताज-उश-शरीया के इस कथन से समझा जाता है: 'या पकाने से, चाहे वह किसी भी तरह हो', क्योंकि शोरबे से वज़ू जायज़ नहीं है, जबकि इसमें पकाने के कारण ही परिवर्तन पाया जाता है, वह परिवर्तन ऐसा नहीं है जिससे पानी तरलता और प्रवाह की सीमा से बाहर निकल जाए।" ہ। (त)

मैं कहता हूँ: (1) पहली बात यह कि ताज-उश-शरीया के कलाम से यह नहीं समझा जाता, बल्कि जो उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा वह तो मुतवातिर (निरंतर) ग्रंथों के अनुकूल है। दूसरी बात (3) यह कि शोरबे के बारे में उन्होंने ताज-उश-शरीया की ओर जो मंसूब किया है, उसे कुदूरी, हिदाया, विक़ाया, मुल्तक़ा, ग़ुरर और तनवीर आदि ने उस स्थिति में रखा है जिसमें दूसरे तत्व की प्रबलता के कारण पानी अपनी प्राकृतिक स्थिति से निकल जाता है। अभी बिनाया का कथन और इनाया का यह मत गुज़रा है कि गाढ़ेपन के कारण वह शोरबा बनता है। तीसरी बात (4) यह कि आपको ज्ञात हो चुका है कि सामान्य तौर पर गाढ़ापन पकने के लिए आवश्यक है। चौथी बात (5) यह कि आपको तरलता का अर्थ पता चल चुका है, और इसमें कोई संदेह नहीं कि जब शोरबा बहता है, तो वह पूरी तरह नहीं फैलता, क्योंकि वह गाढ़ा हो गया है। (त)

---

1. अल्लामा वज़ीर इब्न कमाल पाशा द्वारा अल-इस्लाह।
2. अल-हिदाया, "वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है", आदि। अरबिया, कराची, 1/18।
3. अल-इनाया मा अल-फ़त, "वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है", आदि। नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/62।

पृष्ठ 111 का 756

لکن العلامة الوزیر رحمه الله تعالی قال في منهواته من ههنا علم ان المعتبر في صورة الطبخ تغیر الماء به لاخروجه عن طبعه کما یفهم من قول تاج الشریعة او بطبخ کیف والمرق لا یجوز به الوضوء مع انه انما وجد فیه تغیر الماء بالطبخ لاخروجه عن حد الرقة والسیلان اهـ وزیر رحمہ اللہ نے اپنی منہیات میں فرمایا کہ "یہاں سے معلوم ہوا کہ پکانے کی صورت میں پانی کا تغیر معتبر ہے پانی کا اپنی طبع سے نکلنا مراد نہیں جیسا کہ تاج الشریعہ کے اس قول سے مفہوم ہے جس میں انہوں نے فرمایا کہ یا پکانے سے متغیر ہو ، تو اس سے وضو کیسے جائز ہو، حالانکہ شوربے سے وضو جائز نہیں باوجودیکہ اس میں پکانے کی وجہ سے تغیر پایا جاتا ہے وہ تغیر ایسا نہیں کہ جس کی وجہ سے پانی رقت وسیلان کی حد سے نکل جائے اھـ (ت)

اقول: (1) اولا ما یفهم من تاج الشریعة(2) بل الذي هو نصه هو الموافق لمتواترات النصوص وثانیاً (3) ما استند الیه من المرق قد جعله القدوري والهدایة والوقایة والملتقی والغرر والتنویر وغیرها مما غلب علیه غیره فاخرجه عن طبع الماء وتقدم آنفاً قول البنایة وقیل العنایة بالثخونة یصیر مرقاً وثالثاً (4) قد علمت ان الثخن لازم الطبخ عادة (5) و رابعاً قد عرفت معنی الرقة ولا شك ان المرق اذا سال لا ینبسط کلا فقد تجسد۔ میں کہتا ہوں اولاً تاج الشریعہ کے کلام سے یہ نہیں سمجھا جاتا بلکہ انہوں نے جو نص کے طور پر بیان کیا وہ تو نصوص متواترہ کے موافق ہے اور ثانیاً یہ کہ شوربے کے بارے میں انہوں نے تاج الشریعہ کی طرف جو منسوب کیا اس کو قدوری، ہدایت، وقایہ، ملتقی ، غرر اور تنویر وغیرہا نے اس صورت میں سے بنایا جس میں غیر کے غلبہ کی بنا پر پانی اپنی طبع سے نکل جاتا ہے ، اور ابھی بنا یہ کا قول اور عنایہ کا قیل گزرا کہ گاڑھے پن کی وجہ سے شوربا بنتا ہے ، ثالثاً یہ کہ آپ کو معلوم ہو چکا ہے کہ عادی طور پر گاڑھا پن، طبخ کو لازم ہے ،

اور رابعاً آپ کو رقت کا معنی معلوم ہو چکا ہے اور اس میں شک نہیں کہ شوربا جب بہتا ہے تو وہ پوری طرح پھیلتا نہیں ۔ (ت)

---

1 اصلاح للعلامہ وزیر ابن کمال پاشا 2 الھدایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضوء الخ عربیہ کراچی ۱۸/۱

3 العنایۃ مع الفتح الماء الذی یجوز بہ الوضوء الخ نوریہ رضویہ سکھر ۶۲/۱

Fatawa Razawiya Volume Three

(1) Completion in explaining the problem and its solution by the grace of Allah, the Munificent King. * It is in the text of Al-Hidayah: It is not permissible to perform ablution (Wudu) with water that has been dominated by something else such that it has removed it from the nature of water, like bean (Baqila) water, broth, and safflower (Zardaj) water. Thus, it was said in Al-Hidayah: What is meant by bean water and the like is water that has changed due to cooking. If it changes without cooking, Wudu with it is permissible. Then he said, making an exception from what changed by cooking: except if something is cooked in it whose purpose is extreme cleanliness, like alkali (Ushnan), unless it dominates the water and makes it like mixed barley flour (Sawiq) (i.e., thickens it), then Wudu would not be permissible because in this case the name 'water' no longer applies to it. End quote (T).

I say: In my view, there is a strong problem in the wording of Al-Hidayah, because what is meant by 'change due to cooking'? Is it a change in nature (Tab'a) or a change in attributes (Awsaf)? The second, i.e., change in attributes, cannot be what is meant.

Firstly, because the author is speaking about the loss of the water's nature, and the loss of nature is a barrier to Wudu in every way, and there is consensus on this. Therefore, in this situation, the restriction of cooking the water is meaningless. And I have mentioned this before in point 89.

Secondly, because from 'departure from its nature', 'change...

---

1 Al-Hidayah, The Water with Which Wudu is Permissible etc., Arabiya Karachi 18/1 2 Al-Hidayah, The Water with Which Wudu is Permissible etc., Arabiya Karachi 18/1

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (भाग 3)

(1) कठिनाई और उसके समाधान के स्पष्टीकरण की पूर्णता अल्लाह तआला के फ़ज़ल से। * हिदाया के मूल पाठ में है कि ऐसे पानी से वज़ू जाइज़ नहीं है जिस पर किसी और चीज़ का वर्चस्व हो गया हो और उसने उसे पानी की प्रकृति (तब्अ) से बाहर निकाल दिया हो, जैसे शोरबा, ज़र्दज और सेम (बकीला) का पानी। हिदाया में कहा गया है कि 'मा-उल-बकीला' (सेम के पानी) आदि से तात्पर्य उस पानी से है जो पकाने के कारण बदल गया हो। यदि वह पकाने के बिना बदल जाता है, तो उससे वज़ू जाइज़ है। फिर उन्होंने पकाने से बदलने वाले पानी से अपवाद करते हुए फ़रमाया: सिवाय इसके कि उसमें ऐसी चीज़ पकाई जाए जिसका उद्देश्य अत्यधिक स्वच्छता हो, जैसे उश्नान (एक क्षार), सिवाय इसके कि वह पानी पर हावी होकर उसे मिश्रित सत्तू की तरह बना दे (अर्थात उसे गाढ़ा कर दे), तो वज़ू जाइज़ नहीं होगा क्योंकि ऐसी स्थिति में उसका नाम पानी नहीं रहता। (त)

मैं कहता हूँ: मेरे नज़दीक हिदाया की इबारत (शब्दावली) में एक बड़ी समस्या है, क्योंकि 'तग़य्युर बिल-तब्ख़' (पकाने से परिवर्तन) से क्या तात्पर्य है - प्रकृति में परिवर्तन या गुणों में परिवर्तन? दूसरा, अर्थात गुणों में परिवर्तन, अभिप्रेत नहीं हो सकता।

प्रथम, इसलिए क्योंकि लेखक पानी की प्रकृति के नष्ट होने के बारे में बात कर रहे हैं और प्रकृति का ह्रास हर तरह से वज़ू के लिए बाधक है और इस पर इज्मा (सर्वसम्मति) है। अतः ऐसी स्थिति में पानी के पकाने की क़ैद (शर्त) बेमानी है। और यह बात मैं पहले 89 में कह चुका हूँ।

द्वितीय, इसलिए कि 'ख़ुरूज अन तब्अ' (प्रकृति से बाहर निकलना) से 'तग़य्युर...

---

1 अल-हिदाया, अल-माउल्लज़ी यजूज़ु बिहिल-वज़ू-अ इलख़, अरबी कराची 18/1 2 अल-हिदाया, अल-माउल्लज़ी यजूज़ु बिहिल-वज़ू-अ इलख़, अरबी कराची 18/1

पृष्ठ 756 का 112

فتاوی رضویہ جلد سوم

(۱) اکمال فی بیان الاشکال وحلہ بفضل الملك المفضل* کان فی متن الهداية لاتجوز بماء غلب عليه غيره فأخرجه عن طبع الماء كماء الباقلاء والمرق وماء الزردج فقال فی الهداية المراد بماء الباقلاء وغيره ماتغير بالطبخ فان تغير بدون الطبخ يجوز التوضی به ثم قال مستثنيا عما تغير بالطبخ الا اذا طبخ فيه مايقصد به المبالغة في النظافة كالاشنان الا ان يغلب على الماء فيصير كالسويق المخلوط لزوال اسم الماء عنه اھ۔

اشکال اور اس کے حل کا بیان اللہ تعالیٰ کے فضل سے، ہدایت کے متن میں ہے کہ ایسے پانی سے وضو جائز نہیں جس پر غیر کا غلبہ ہوا ہو اور پانی کو اپنی طبع سے خارج کر دیا ہو، جیسا کہ شوربا، زردج اور باقلاء کا پانی، اس پر ہدایہ میں کہا کہ ماء الباقلاء وغیرہ سے مراد، پکانے سے متغیر ہونے والا پانی ہے اور اگر پکائے بغیر پانی متغیر ہو جائے تو اس سے وضو جائز ہے، پھر انہوں نے پکانے کی وجہ سے متغیر ہونے والے پانی میں سے استثناء کرتے ہوئے فرمایا، مگر وہ پانی جس میں ایسی چیز پکائی گئی ہو جس سے صفائی میں مبالغہ مقصود ہو جیسے اشنان، الا یہ کہ اس پر اشنان غالب ہو کر مخلوط ستو کی طرح بنا دے (یعنی گاڑھا کر دے) تو وضو جائز نہ ہوگا کیونکہ اس صورت میں اس کا نام پانی نہیں رہتا اھ (ت)

اقول: وفيه عندی اشكال قوی وذلك لان المراد بالتغير بالطبخ اما تغير الطبع او تغير الاوصاف لا سبيل الی الثانی۔

میں کہتا ہوں، میرے نزدیک ہدایہ کی عبارت میں قوی اشکال ہے، اس لئے کہ تغیر بالطبخ سے کیا مراد ہے تغیر الطبع ہے یا تغیر الاوصاف، دوسرا یعنی تغیر الاوصاف مراد نہیں ہو سکتا۔

اولا لان كلام المتن في زوال الطبع وهو مانع مطلقا بالاجماع ففيم التقييد بالمطبوخ وهذا ما قدمته في۔

اولا اس لئے کہ مصنف، پانی کی طبع کے زوال کے بارے میں کلام فرمارہے ہیں اور زوال طبع ہر طرح وضو سے مانع ہے اس پر اجماع ہے لہذا اس صورت میں پانی کے پکانے کی قید بے معنی ہے اور یہ بات میں پہلے ۸۹ میں کہہ چکا ہوں۔

ثانيا: كيف يراد بخروجه عن طبعه

ثانیا اس لئے کہ "خروج عن طبع" سے "تغیر

---

1 الهداية، الماء الذى يجوز به الوضوء الخ، عربیہ کراچی، ۱۸/۱ 2 الهداية، الماء الذى يجوز به الوضوء الخ، عربیہ کراچی، ۱۸/۱

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Arabic Column Text]: Change of its attribute by cooking. Thirdly: There is a difference between cooking that which is already changed and a change caused by cooking. What is established regarding the water of beans, chickpeas, safflower, and the like is the first case; because merely mixing some of them with water and letting them soak in it for a while changes its attributes. Mixing and soaking occur prior to the attainment of cooking, which is ripening (softening), as is known and observed. Thus, the change did not occur due to cooking, but rather cooking was applied to what was already changed, and how great is the difference between the two! Similarly, regarding the path to the first case: firstly, the meaning would be that if its nature were removed without cooking, it would be permissible to perform ablution with it, which is obviously false. Secondly, the exception of a cleaning agent from what is cooked would be invalidated, as there would be no secondary removal of nature in it. Thirdly, the ruling and the exception would contradict each other. For the statement, "unless there is cooked in it what is intended for cleaning..." indicates the permissibility of ablution with what has lost its nature due to its cooking with a cleaning agent. This is what was invalidated by the final exception, "unless it overcomes, etc." Thus, in each of the two aspects, there are three types of issues. I have not seen anyone who addressed any of this or even approached it, let alone someone who intended to resolve it. And indeed, he was followed in the first aspect in Al-Dirayah, Al-Shalabiyyah, Al-Kifayah, Al-Binayah, and Al-Durr. The first two said: by 'change', he meant 'thickness' (up to their saying). This applies when it is not...

[Urdu Column Text]: How can "in attributes by cooking" be intended? And thirdly, because there is a major difference between "cooking something already changed" and "change by cooking." Here, in the case of water from beans, chickpeas, safflower, etc., the first scenario, i.e., "cooking of the changed," is found because the water becomes changed just by mixing some of them and letting them stay in the water for a while. The stage of cooking them, which is called the preparation stage (ripening), comes later; this is known from observation. So, here the change was not due to cooking, but rather cooking occurred on a changed substance, and the difference between the two is clear. Similarly, the first scenario (meaning change of nature) cannot be intended: firstly, because in this case, the meaning would be that if the nature of water is lost without cooking, then ablution is permissible, whereas this is obviously incorrect (because after the loss of nature, ablution is not permissible in any case). Secondly, the exception for something cooked for cleaning purposes

would not be correct in this case, because the loss of nature, without exception, regardless of the cause, means ablution is not permissible. Thirdly, in this case, the ruling and the exception would be opposite to each other because in 'Hidaya', first water changed by cooking is declared impermissible for ablution, and then something cooked in water for the purpose of cleanliness is excepted, which means something cooked in water for the sake of cleanliness by which the water's nature...

[Footnote]: 1. Shalabiyyah on Al-Tabyin, Book of Purification, Al-Islamiyyah, Bulaq, Egypt, 1/19.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[अरबी कॉलम पाठ]: पकाने के कारण इसके गुण में परिवर्तन। तीसरा: "परिवर्तित वस्तु को पकाने" और "पकाने के कारण हुए परिवर्तन" के बीच अंतर है। और फलियों, चने, जरदज आदि के पानी के संबंध में जो सिद्ध है वह पहली स्थिति है; क्योंकि उनमें से कुछ को पानी में मिलाने और कुछ देर पानी में रहने मात्र से ही इसके गुण बदल जाते हैं। मिश्रण और भिगोना पकने की उपलब्धि से पहले होता है, जो कि पकना (मुलायम होना) है, जैसा कि ज्ञात और देखा गया है। अत; परिवर्तन पकाने के कारण नहीं हुआ, बल्कि पकाना उस पर लागू हुआ जो पहले से ही परिवर्तित था, और दोनों में कितना बड़ा अंतर है! इसी प्रकार, पहली स्थिति के मार्ग के संबंध में: पहला, अर्थ यह होगा कि यदि पकाने के बिना इसका स्वभाव समाप्त हो जाए, तो इससे वज़ू करना जायज़ होगा, जो स्पष्ट रूप से गलत है। दूसरा, पकी हुई चीज़ों में से सफ़ाई कारक का अपवाद अमान्य हो जाएगा, क्योंकि उसमें स्वभाव के हटने का कोई द्वितीयक अपवाद नहीं होगा। तीसरा, नियम और अपवाद एक-दूसरे के विपरीत होंगे। क्योंकि यह कथन, "जब तक कि उसमें वह न पकाया जाए जो सफ़ाई के लिए अभिप्रेत है..." सफ़ाई कारक के साथ पकाने के कारण अपना स्वभाव खो देने वाली चीज़ के साथ वज़ू की अनुमति को इंगित करता है। यही वह चीज़ है जो अंतिम अपवाद, "जब तक कि वह हावी न हो जाए, आदि" द्वारा अमान्य कर दी गई थी। इस प्रकार, दो पहलुओं में से प्रत्येक में तीन प्रकार की समस्याएँ हैं। मैंने किसी को नहीं देखा जिसने इनमें से किसी को संबोधित किया हो या उसके करीब भी गया हो, उस व्यक्ति की तो बात ही छोड़ दें जिसने इसे सुलझाने का इरादा किया हो। और वास्तव में, अल-दिरायत, अल-शल्बिया, अल-किफ़ाया, अल-बिनाया और अल-दुर्र में पहले पहलू में उनका अनुसरण किया गया था। पहले दो ने कहा: 'परिवर्तन' से उनका तात्पर्य 'गाढ़ेपन' से था (उनके कहने तक)। यह तब है जब यह न हो...

[उर्दू कॉलम पाठ]: "पकाने के गुणों में" से क्या तात्पर्य हो सकता है? और तीसरा, क्योंकि "परिवर्तित वस्तु को पकाने" और "पकाने से परिवर्तन" के बीच एक बड़ा अंतर है। यहाँ, फलियों, चने, जरदज आदि के पानी के मामले में, पहला परिदृश्य, यानी "परिवर्तित का पकाना" पाया जाता है क्योंकि उनमें से कुछ को मिलाने और पानी में कुछ देर रहने मात्र से ही पानी बदल जाता है। उन्हें पकाने का चरण, जिसे तैयारी का चरण (पकना) कहा जाता है, बाद में आता है; यह अवलोकन से ज्ञात है। इसलिए, यहाँ परिवर्तन पकाने के कारण नहीं था, बल्कि पकाना एक परिवर्तित पदार्थ पर हुआ, और दोनों के बीच का अंतर स्पष्ट है। इसी प्रकार, पहला परिदृश्य (अर्थात स्वभाव का परिवर्तन) अभिप्रेत नहीं हो

सकता: पहला, क्योंकि इस मामले में, अर्थ यह होगा कि यदि पकाने के बिना पानी का स्वभाव समाप्त हो जाता है, तो वज़ू जायज़ है, जबकि यह स्पष्ट रूप से गलत है (क्योंकि स्वभाव के समाप्त होने के बाद, किसी भी मामले में वज़ू जायज़ नहीं है)। दूसरा, सफ़ाई के उद्देश्यों के लिए पकाई गई चीज़ का अपवाद इस मामले में सही नहीं होगा, क्योंकि स्वभाव की हानि, बिना अपवाद के, चाहे कारण कुछ भी हो, इसका मतलब है कि वज़ू जायज़ नहीं है। तीसरा, इस मामले में, आदेश और अपवाद एक-दूसरे के विपरीत होंगे क्योंकि 'हिदाया' में पहले पकाने से परिवर्तित पानी को वज़ू के लिए नाजायज़ घोषित किया गया है, और फिर सफ़ाई के उद्देश्य से पानी में पकाई गई चीज़ को अपवाद माना गया है, जिसका अर्थ है कि सफ़ाई के लिए पानी में पकाई गई चीज़ जिससे पानी का स्वभाव...

[पाद लेख]: 1. अल-तबीन पर शल्बिया, शुद्धि की पुस्तक, अल-इस्लामिया, बुलाक, मिस्र, 1/19।

جلد سوم فتاویٰ رضویہ تغیر وصفہ بالطبخ۔ فی الاوصاف بالطبخ "کیسے مراد لیا جا سکتا ہے؟

وثالثاً: فرق بین بین طبخ المتغیر والتغیر بالطبخ اور ثالثاً، اس لئے کہ "متغیر کو پکانے" اور "پکانے سے تغیر" والمتحقق فی ماء الباقلاء والحمص والزردج میں بڑا فرق ہے، اور یہاں باقلی، چنوں، زردج وغیرہ کے وامثالھا ھو الاول لان مجرد خلط بعضھا بالماء پانی میں پہلی یعنی "متغیر کا پکانا" صورت پائی جاتی ہے کیونکہ ومکث بعضھا فیہ مغیر لوصفہ والخلط والمکث ان میں سے بعض کے ملنے اور بعض کے پانی میں کچھ دیر متقدمان علی حصول الطبخ وھو الانضاج پڑے رہنے سے ہی پانی متغیر ہو جاتا ہے اور اس کو پکانے کا کما ھو معلوم مشھود فلم یحصل التغیر بالطبخ بل مرحلہ بعد میں ہوتا ہے جس کو تیاری کا مرحلہ کہتے ہیں یہ ورد الطبخ علی المتغیر وشتان ما ھما وکذا السبیل بات مشاہدہ سے معلوم ہے پس یہاں طبخ سے تغیر نہ ہوا الی الاول اولاً یکون المعنی فان زال طبعہ بدون بلکہ متغیر شدہ چیز پر طبخ واقع ہوا ہے، اور ان دونوں میں الطبخ یجوز التوضی بہ وھو بدیھی البطلان وثانیاً فرق واضح ہے اسی طرح پہلی شق (یعنی تغیر الطبع، مراد نہیں یبطل استثناء المنظف من المطبوخ فان زوال ہو سکتی) اولاً اس لئے کہ اس صورت میں معنی یوں ہوگا کہ اگر الطبع لاثنیا فیہ وثالثاً یتناقض الحکم پکائے بغیر پانی کی طبع زائل ہو جائے تو وضو جائز ہے، حالانکہ والثنیا فان قولہ الا اذا طبخ فیہ ما یقصد بہ دل علی یہ بدیہی طور پر غلط ہے (کیونکہ زوال طبع کے بعد کسی جواز التوضی بما زال طبعہ بطبخہ مع المنظف وھذا صورت میں وضو جائز نہیں ہے) اور ثانیاً، اس لئے کہ صفائی ھو الذی ابطلہ بالثنیا الاخیرۃ الا ان یغلب الخ کی خاطر پکائی ہوئی چیز کا استثناء، اس صورت میں درست نہ فعلی کل من الوجھین ثلثۃ وجوہ من الاشکال ولم ہوگا کیونکہ زوال طبع بلا استثناء جس چیز سے بھی ہو تو وضو جائز ار من تعرض لشیئ من ھذا او حام حولہ فضلا عمن نہیں ہے، اور ثالثاً اس لئے کہ اس صورت میں حکم اور

استثناء رام حله وقد (١) تبعه على الوجه الاول فى الدراية دونوں ایک دوسرے کے مخالف ہو نگے کیونکہ ہدایہ میں پہلے والشلبية والكفاية والبناية والدر فقال الاولان متغير بالطبخ کے ساتھ وضو کو ناجائز قرار دے کر اس سے نظافت عنى بالتغير الثخانة (الى قولهما) ١ هذا اذالم کے مقصد کیلئے پانی میں پکائی ہوئی چیز کو مستثنیٰ کیا ہے جس کا مطلب یہ ہے کہ نظافت کی خاطر پانی میں پکائی ہوئی چیز جس سے پانی کی طبع

حاشیہ: ١ شلبیہ على التبيين كتاب الطہارة الاسلامیہ بولاق مصر ١٩/١

Fatawa Rizwia Volume Three

[Left Column] ...the purpose of cooking is excessive cleaning. If it is like potash and soap, it is permissible [for Wudu] unless it becomes like mixed barley-gruel (sawiq) because of the removal of the name of 'water' from it (1) end. A similar statement is in Al-Tabyin. Al-Durr said: Wudu is not permissible with water whose nature—which is fluidity—has been lost through cooking, except if the intent was cleaning, then it is permissible if its thinness remains (2) end. And it is a wonder (1) that the master commentators (2) did not take note of it until Al-Tahtawi took objection on Al-Maraqi with what is coming (3). The noble Abdul Halim was also misled when he said: There is no disagreement regarding the non-permissibility of performing Wudu with water whose nature has been lost by cooking, unlike that whose nature has been lost by mixing without cooking (3) end. O Glory be to Allah! Who is it that permitted Wudu with water whose nature has been lost? This is supported neither by reason nor by tradition. It has already passed in the fourth discussion on 'The Loss of Nature' that it is impermissible by consensus, without any disagreement (4) end.

[Right Column] ...has ended, Wudu from it is permissible, whereas this is the very situation which was invalidated again by the exception, saying "unless it overcomes, etc." (meaning Wudu with something cooked in water for the sake of cleanliness is permissible on the condition that the cleaning substance does not overcome the water, i.e., that substance does not eliminate the nature of the water). Thus, both possibilities in the text of Al-Hidayah carry complications from three perspectives each. In my view, no one has stated or even approached any of these complications, let alone offered a solution. The first of the two possibilities for 'change due to cooking' in the text of Al-Hidayah is mentioned in Dirayah, Shalabiya, Kifayah, Binayah, and Durr. The first two books, i.e., Dirayah and Shalabiya, said that Al-Hidayah meant 'thickness' by 'change' and explained it till the end thus: This is in the case when excessive cleaning is not the goal in cooking. But if this is the goal, then Wudu is permissible, as with potash and soap, etc., provided that the water does not become like mixed barley-gruel due to the potash and soap, because when it becomes so, it is no longer called water. End. A similar explanation is in the other two books, Kifayah and Binayah. Durr stated thus: Wudu is impermissible with water whose nature has been lost by cooking, and that nature is the fluidity of water. However, when the purpose of cooking in water is cleanliness, Wudu will be permissible provided the thinness of the water remains. End. It is surprising that the masters of commentary also did not pay attention to this complication until...

[Footnotes] 1. Al-Hidayah, Chapter: Water with which Wudu is permissible etc., Arabic Press Karachi 1/18 2. Durr-e-Mukhtar, Chapter: Waters, Mujtabai Press Delhi 1/72 3. Hashiya al-Durar by Mulla Abdul Haleem, Book of Purity, Usmania Beirut 1/18, and Khulasa al-Fatawa, Restricted Water, Naval Kishore Lucknow 1/9 4. Bada'i al-Sana'i, Restricted Water, Saeed Company Karachi 1/17

फतावा रिज़विया जिल्द सोम (तीसरा)

[बायाँ कॉलम] ...पकाने का उद्देश्य अत्यधिक सफाई हो। यदि वह अश्नान (क्षार) और साबुन जैसा हो, तो वह जायज़ है जब तक कि वह सत्तू के मिश्रण (सवीक़) जैसा न हो जाए, क्योंकि उससे 'पानी' का नाम समाप्त हो जाता है (१) अंत। यही बात अल-तबीन में भी है। अल-दुर ने कहा: उस पानी से वुज़ू जायज़ नहीं है जिसकी प्रकृति (जो कि उसका बहाव है) पकाने के कारण समाप्त हो गई हो, सिवाय इसके कि सफाई का इरादा हो, तो जायज़ है यदि उसका पतलापन (रक़्क़त) बाकी रहे (२) अंत। और आश्चर्य है (१) कि सम्मानित व्याख्याकारों (२) ने इस पर ध्यान नहीं दिया, यहाँ तक कि तहतावी ने मराकी पर आने वाली बातों के साथ आपत्ति की (३)। आदरणीय अब्दुल हलीम भी भ्रमित हो गए जब उन्होंने कहा: पकाने के कारण जिसकी प्रकृति समाप्त हो गई हो उससे वुज़ू के नाजायज़ होने में कोई मतभेद नहीं है, उस पानी के विपरीत जिसकी प्रकृति बिना पकाए मिश्रण से समाप्त हो गई हो (३) अंत। सुभान अल्लाह! वह कौन है जिसने उस पानी से वुज़ू की अनुमति दी जिसकी प्रकृति समाप्त हो गई हो? यह न तो तर्क से सिद्ध है और न ही उल्लेखों से। 'प्रकृति की समाप्ति' की चौथी चर्चा में यह बात बीत चुकी है कि यह सर्वसम्मति (इज्मा) से नाजायज़ है, बिना किसी मतभेद के(४) अंत।

[दायाँ कॉलम] ...समाप्त हो चुकी हो, उससे वुज़ू जायज़ हो, हालाँकि यही वह स्थिति है जिसे अपवाद द्वारा फिर से अमान्य कर दिया गया है, और यह कहा गया "सिवाय इसके कि वह गालिब आ जाए आदि" (अर्थात सफाई के लिए पानी में पकाई गई चीज़ से वुज़ू इस शर्त के साथ जायज़ है कि वह सफाई वाली चीज़ पानी पर हावी न हो, यानी उस चीज़ ने पानी की प्रकृति को समाप्त न किया हो)। अतः, हिदाया की इबारत में दोनों संभावनाएँ तीन-तीन पहलुओं से जटिलताएँ(इश्काल) रखती हैं। मेरी नज़र में, इनमें से किसी भी जटिलता को बताने या उनके करीब फटकने वाला कोई नहीं है, समाधान पेश करना तो दूर की बात है। हिदाया की इबारत में 'पकाने से परिवर्तन' की दो संभावनाओं में से पहली संभावना का उल्लेख दिराया, शल्बिया, किफ़ाया, बिनाया और दुर में किया गया है। पहली दो पुस्तकों, अर्थात् दिराया और शल्बिया ने कहा कि हिदाया का अर्थ परिवर्तन से 'गाढ़ापन' है और इसे अंत तक इस प्रकार समझाया: यह उस स्थिति में है जब पकाने में अत्यधिक सफाई का उद्देश्य न हो। और यदि यह उद्देश्य हो, तो वुज़ू जायज़ है जैसे अश्नान और साबुन आदि से, बशर्ते कि उस स्थिति में अश्नान और साबुन के कारण पानी मिश्रित सत्तू की तरह न बन जाए, क्योंकि ऐसा होने पर उसे पानी नहीं कहा जाता। अंत। और इसी तरह का विवरण अन्य दो पुस्तकों यानी किफ़ाया और बिनाया में है। और दुर ने इस प्रकार कहा: ऐसे पानी से वुज़ू नाजायज़ है जिसकी प्रकृति पकाने से

समाप्त हो चुकी हो, और वह प्रकृति पानी का बहाव (सैलान) है। लेकिन जब पानी में पकाने का उद्देश्य सफाई हो, तो वुज़ू जायज़ होगा बशर्ते पानी का पतलापन शेष रहे। अंत। और आश्चर्य है कि व्याख्याकार हज़रात भी इस जटिलता की ओर आकर्षित नहीं हुए यहाँ तक कि...

[पाद लेख] १. अल-हिदाया, बाबुल मा-अल्लजी यजोजो बे-हिल वुज़ू इलख, मत्तबा अरबिया कराची १८/१ २. दुर्रे मुख्तार, बाबुल मियाह, मत्तबा मुज्तबाई दिल्ली ७२/१ ३. हाशिया अद-दुरर लिल-मौला अब्दुल हलीम, किताबुत्तहारह, उस्मानिया बेरूत १८/१, और खुलासा-अल-फतावा, मा-ए-मुकय्यद, नवल किशोर लखनऊ ९/१ ४. बदाइ-अस-सनाइ, मा-ए-मुकय्यद, सईद कंपनी कराची १७/१

पृष्ठ ११४ / ७५६

[Left Column] یکن المقصود بالطبخ المبالغة فی التنظیف فان کان کالا شنان والصابون یجوز الا ان یصیر کالسویق المخلوط لزوال اسم الماء عنه (۱) اھ ونحوه فی التبیین، وقال الدر لایجوز بماء زال طبعه وھو السیلان بطبخ الا بما قصد به التنظیف فیجوز ان بقی رقته (۲) اھ والعجب (۱) أن لم یتنبه له الشراح السادة (۲) حتی ط الاخذ علی المراقی بما یأتی (۳) وقد اغتربه الفاضل عبد الحلیم اذ قال لا اختلاف فی عدم جواز التوضی بماء زال طبعه بالطبخ بخلاف ما زال طبعه بالخلط من غیر طبخ (۳) اھ و یا سبحن الله من ذا الذی أجاز الوضوء بماء زال طبعه هذا لایساعده عقل ولا نقل و قد مر فی رابع ابحاث زوال الطبع انه لایجوز بالاجماع بلا خلاف (۴) اھ

[Right Column] ختم ہوچکی ہو، سے وضو جائز ہو حالانکہ یہی وہ صورت ہے جس کو دوبارہ استثناء سے باطل کیا ہے اور یوں کہا الا ان یغلب الخ (یعنی نظافت کی خاطر پانی میں پکائی ہوئی چیز سے وضو اس شرط کے ساتھ جائز ہے کہ وہ نظافت والی چیز پانی پر غالب نہ ہو یعنی اس چیز نے پانی کی طبع کو زائل نہ کیا ہو) پس ہدایہ کی عبارت میں دونوں احتمال تین تین وجوہ سے اشکال کے حامل ہیں، میری نظر میں ان اشکال میں سے کسی ایک کو بیان کرنے یا ان کے قریب پھٹکنے والا کوئی نہیں چہ جائیکہ وہ ان کا حل پیش کرے، ہدایہ کی عبارت، تغیر بالطبخ کے دو احتمالوں میں سے پہلے احتمال کو درایہ، شلبیہ، کفایہ، بنایہ، اور ڈر میں ذکر کیا گیا ہے، پہلی دونوں کتب یعنی درایہ اور شلبیہ نے کہا کہ ہدایہ نے تغیر سے گاڑھا پن مراد لیا ہے اور اس کو آخر تک یوں بیان کیا، یہ اس صورت میں ہے جب پکانے میں نظافت کا مبالغہ مقصود نہ ہو اور اگر یہ مقصد ہو تو پھر وضو جائز ہے جیسے اشنان اور صابون وغیرہ سے، بشرطیکہ اس صورت میں اشنان وصابون کی وجہ سے پانی مخلوط ستوؤں کی طرح نہ بن جائے کیونکہ ایسا ہو جانے پر

اس کو پانی نہیں کہا جاتا اھ، اور اسی طرح کا بیان دوسری دونوں کتب یعنی کفایہ اور بنایہ میں ہے، اور ڈر نے یوں کہا ایسے پانی سے وضو ناجائز ہے پکانے سے جس کی طبع زائل ہوچکی ہو اور وہ طبع، پانی کا سیلان ہے، مگر جب پانی میں پکانے سے مقصد صفائی مقصود ہو تو وضو جائز ہوگا بشرطیکہ پانی کی رقت باقی ہو اھ اور تعجب ہے کہ سید شارح حضرات بھی اس اشکال کی طرف متوجہ نہ ہوئے حتی کہ

[Footnotes] 1 الہداية باب الماء الذي يجوز به الوضوء الخ مطبع عربیہ کراچی ۱۸/۱ 2 در مختار باب المیاہ مطبع مجتبائی دہلی ۷۲/۱ 3 حاشية الدرر للمولى عبدالكليم كتاب الطهارة عثمانیہ بیروت ۱۸/۱، و خلاصة الفتاوى ماء المقيد نولكشور لكهنو ۹/۱ 4 بدائع الصنائع ماء المقيد سعيد كمپنی کراچی ۱۷/۱

Fatawa Razawiyya Volume III

And I say (1), and success is from Allah, and the effort of the destitute is his tears. Unveiling the distress, by the help of Allah Almighty, is built upon presenting some premises, so know:

Firstly: Indeed, the statement in the text "water which another thing has overcome and removed from the nature of water" must contain a metaphor. This is because it is made outside the nature of water, and then called water. Water that has actually left its nature does not remain water, because as previously mentioned, nature is essential to the essence; hence it ceases to exist when the nature ceases. The Absolute Researcher (Al-Muhaqqiq al-Mutlaq) has stated in Al-Fath that anything whose fluidity is stripped away is not water at all, as indicated by the author's statement regarding the mixture with potash (ashnan), making it like thick soup (sawiq) due to the removal of the name "water" from it.

(1) Therefore, a metaphor is necessary, either in the word "water," calling it water by considering what it was, or in "removal," calling the approach to removal "removal." The second (2) is more common and closer, because what is coming and near is more deserving of consideration than what is past and dropped. Also, the subject...

Al-Tahtawi also took issue with Maraqi al-Falah, which will be mentioned later. Here, the learned Abdul Haleem fell into a misunderstanding where he said that if the nature of water is lost due to cooking, there is no disagreement that wudu (ablution) with it is impermissible, contrary to when the nature is lost due to mixing with something without cooking, then wudu is permissible. SubhanAllah! Who is it that permits wudu with water even after its nature has been lost? This is something contrary to reason and tradition (naql). It has already been discussed in the fourth debate on the loss of nature that wudu is not permissible after the loss of nature, a point agreed upon by everyone. (Translator's note)

I say, success is from Allah alone, and this is an effort to reduce the anxiety caused by this difficulty. The solution to this difficulty is based on several points.

Firstly, understand that in the text of Hidayah, this statement: "water which another thing has overcome and removed from the nature of water"—in which something mixes and overcomes the water, removing it from its nature—must contain a metaphor. This is because it is called water despite the nature of water being extinguished. In reality, once the nature of water is lost, it no longer remains water.

As previously mentioned, nature is essential to the essence of water, so the end of the essential implies the end of the essence itself. Al-Muhaqqiq al-Mutlaq has clarified in Fath al-Qadir that once fluidity is lost, it is no longer water. As the author stated regarding water thickened with potash to the consistency of sawiq, he said it would no longer be called water. Therefore, accepting a metaphor here is necessary; this metaphor is in the word "water".

Footnote 1: Fath al-Qadir, the water with which wudu is permissible etc., Nooria Razawiyya Sukkur 1/65

फ़तावा रज़विया जिल्द III

और मैं कहता हूँ (१), और अल्लाह से ही तौफ़ीक़ है, और दरिद्र का प्रयत्न उसके आँसू हैं। अल्लाह तआला की सहायता से परेशानी को दूर करना कुछ प्रस्तावों को प्रस्तुत करने पर आधारित है, अतः जान लें:

प्रथम: वास्तव में पाठ (मतन) का यह कथन "वह पानी जिस पर दूसरी चीज़ हावी हो गई और उसने उसे पानी की प्रकृति (तब्अ) से बाहर निकाल दिया" में रूपक (मजाज़) का होना आवश्यक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इसे पानी की प्रकृति से बाहर बताया गया है और फिर भी इसे पानी कहा गया है। जो पानी वास्तव में अपनी प्रकृति छोड़ चुका हो, वह पानी नहीं रहता, क्योंकि जैसा कि पहले बताया गया है, प्रकृति तत्व के लिए अनिवार्य है; अतः प्रकृति के नष्ट होने से वह तत्व भी नष्ट हो जाता है। मोहक़्क़िक़ मुतलक़ ने 'अल-फ़तह' में स्पष्ट किया है कि जिसकी तरलता (रक़त) समाप्त हो जाए, वह बिल्कुल पानी नहीं है, जैसा कि लेखक का कथन सज्जी (अश्नान) मिश्रित पानी के बारे में संकेत करता है कि वह सत्तू (सवीक़) की तरह गाढ़ा हो जाता है क्योंकि उससे पानी का नाम समाप्त हो जाता है।

(१) अतः, रूपक का होना अनिवार्य है, या तो "पानी" शब्द में, उसे पहले के आधार पर पानी कहना, या "निकलने" (खुरूज) में, निकलने के निकट होने को निकलना कहना। दूसरा (२) अधिक प्रचलित और निकट है, क्योंकि जो आने वाला और निकट है, वह बीत जाने वाले और छूट जाने वाले की तुलना में विचार के अधिक योग्य है। और यह भी विषय...

तहतवी ने भी 'मराक़ी अल-फ़लाह' पर जो आपत्ति की है वह आगे आएगी, और यहाँ फ़ाज़िल अब्दुल हलीम को ग़लतफ़हमी हुई जहाँ उन्होंने कहा कि पकाने के कारण जिस पानी की प्रकृति नष्ट हो जाए, उससे वज़ू के नाजायज़ होने में कोई मतभेद नहीं है, इसके विपरीत बिना पकाए किसी चीज़ के मिलाने से यदि पानी की प्रकृति नष्ट हो जाए तो वज़ू जायज़ है। सुभानअल्लाह! वह कौन है जो प्रकृति नष्ट होने के बाद भी पानी से वज़ू को जायज़ करार देता हो? यह ऐसी बात है जो बुद्धि (अक़्ल) और परंपरा (नक़्ल) के विरुद्ध है। प्रकृति के नष्ट होने की चौथी चर्चा में यह बात आ चुकी है कि प्रकृति नष्ट होने के बाद वज़ू जायज़ नहीं है, यह बात सभी को मान्य है। (अनुवादक)

मैं कहता हूँ कि अल्लाह तआला से ही तौफ़ीक़ है, और यह इस शंका की परेशानी को कम करने का एक प्रयास है। इस शंका के समाधान की बुनियाद कुछ बिंदुओं पर है।

प्रथम, यह समझें कि 'हिदाया' के पाठ में यह कथन "वह पानी जिस पर दूसरी चीज़ हावी हो गई और उसने उसे पानी की प्रकृति से बाहर कर दिया" - जिस पानी में कोई चीज़ मिलकर उस पर हावी हो जाए और उसे प्रकृति से बाहर कर दे, इस कथन में रूपक (मजाज़) अनिवार्य है। क्योंकि यहाँ पानी की प्रकृति समाप्त होने के बावजूद उसे पानी कहा गया है, जबकि पानी की प्रकृति समाप्त होने के बाद वह पानी नहीं रहता। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि प्रकृति पानी के तत्व (ज़ात) के लिए अनिवार्य है, तो अनिवार्य के समाप्त होने पर तत्व का अंत होना निश्चित है। मोहक़्क़िक़ मुतलक़ ने 'फ़तह अल-क़दीर' में स्पष्ट किया है कि जब तरलता समाप्त हो जाए तो वह पानी नहीं रहता। जैसा कि लेखक ने कहा कि सत्तू की तरह गाढ़ा होने वाले उस पानी को जिसमें सब्जी मिली हो, उसके बारे में कहा कि उसका नाम पानी नहीं होगा, अतः यहाँ मजाज़ मानना आवश्यक है, यह मजाज़ "ھ" (पानी) शब्द में है।

पाद टिप्पणी १: फ़तह अल-क़दीर, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है आदि, नूरिया रज़विया सुक्कुर १/६५

पृष्ठ ११५/७०६

وانا اقول (۱) وباللہ التوفیق وجھد المقل دموعہ یبتنی کشف الغمہ بعونہ تعالٰی علی تقدیم مقدمات فاعلم۔ اولاً: ان قول المتن ماء غلب علیہ غیرہ فاخرجہ عن طبع الماء لابد فیہ من التجوز ذلک لانہ جعلہ خارجاً عن طبع الماء ثم سماہ ماء وماء خرج عن طبعہ حقیقۃ لایبقی ماء لما تقدم ان الطبع لازم الذات فتنتفی بانتفائہ وقد افاد المحقق علی الاطلاق فی الفتح ان ماسلب رقتہ لیس ماء اصلاً کما یشیر الیہ قول المصنف فی المختلط بالاشنان فیصیر کالسویق لزوال اسم الماء عنہ۔ ۱۔ اھ فلابد من التجوز اما فی الماء سماہ ماء باعتبار ما کان واما فی الخروج سمی قرب الخروج خروجاً و الثانی (۲) اکثر واقرب لان الآتی قریباً احق بالاعتبار من الفائت الساقط وایضاً موضوع

طحطاوی بھی جنہوں نے مراقی الفلاح پر گرفت کی جو آئندہ آئے گی، اور یہاں فاضل عبدالکلیم کو غلط فہمی ہوئی جہاں انہوں نے کہا کہ پکانے کی وجہ سے جس پانی کی طبع زائل ہو جائے تو اس سے وضو کے ناجائز ہونے میں کوئی اختلاف نہیں ہے اس کے برخلاف جبکہ بغیر پکائے کسی چیز کے خلط سے پانی کی طبع زائل ہو جائے تو وضو جائز ہے اھ یا سبحان اللہ وہ کون ہے جو زوالِ طبع کے بعد بھی پانی سے وضو کو جائز قرار دیتا ہو، یہ ایسی بات ہے جو عقل و نقل کے مخالف ہے، اور زوالِ طبع کی چوتھی بحث میں یہ بات گزر چکی ہے کہ زوالِ طبع کے بعد وضو جائز نہیں ہے بلا اختلاف یہ بات سب کو مسلم ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں اللہ تعالٰی سے ہی توفیق، اور اس اشکال کی پریشانی کو کم کرنے والی کوشش ہے۔ اس اشکال کے حل کی بنیاد چند مقامات پر ہے۔ اولاً یہ سمجھو کہ ہدایہ کے متن میں یہ قول "ماء غلب علیہ غیرہ فاخرجہ عن طبع الماء" جس پانی میں کوئی چیز مل کر اس پر غالب ہو کر اسے طبع سے خارج کر دے، اس قول میں مجاز لازمی ہے کیونکہ یہاں پانی کی طبع ختم ہو جانے کے باوجود اس کو پانی کہا گیا ہے حالانکہ

پانی کی طبیعت ختم ہو جانے کے بعد وہ پانی نہیں رہتا ہے اس لئے کہ وہ بات پہلے کہی جاچکی ہے کہ طبع پانی کی ذات کو لازم ہے تو لازم کے ختم ہونے پر ذات کا خاتمہ ضروری ہے محقق مطلق نے فتح القدیر میں یہ واضح کیا ہے کہ جب رقت ختم ہو جائے تو وہ پانی نہیں رہتا، جیسا کہ مصنف نے کہا ستوؤں کی طرح گاڑھا ہونے والے اس پانی کو جس میں اشنان ملا ہو، کے بارے میں کہا کہ اس کا نام پانی نہیں ہوگا اھ، لہذا یہاں مجاز ماننا ضروری ہے یہ مجاز لفظ ماء

۱۔ فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء الخ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۵ صفحہ 115 از 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

The chapter regarding "Water with which Wudu is permissible and with which it is not" is also more beneficial because informing about water with which Wudu is not permissible is more important than prohibiting Wudu with something that is not water. (Water) will be such that previously it was water (therefore, metaphorically after the loss of its nature, it is called water) or this metaphor should be accepted in the word "exit" (khurooj) meaning that its nature is soon to exit from the current water (therefore, it is considered excluded from the nature; in the first case it is a metaphor in terms of what it was (Ma Kan) and in the second case in terms of what it will be (Ma Yakun)). While the use of the second type (Ma Yakun) of metaphor is more common and it is also closer to understanding because something that is about to occur is more reliable than something that has already ended after occurring. Furthermore, the consideration of the second type of metaphor is also necessary here because the discussion here is about water from which Wudu is valid or invalid (i.e., the existence of water is necessary). Also, because there is more benefit in the second type of metaphor here, this is because when water is present, telling that Wudu is not permissible with it is more useful than saying that Wudu is prohibited with what is not water. (T)

Secondly, the reason here is the perfection of mixture (Kamaal-e-Imtizaaj) as stated in Al-Kafi, Al-Kifayah, Al-Binayah, and others, and it will be mentioned soon, if Allah Almighty wills. The effect of perfect mixture in a thing mixed without cooking is the actual removal of the water's thinness. In a cooked mixture, it makes it ready to exit (its nature) by a close potentiality. This is because the mixed substance tends towards thickening, while the fire refines and thins it. Thus, its effect does not appear as it should unless the opposing factor (heat) is removed and it cools down, as specified previously from numerous books in. Secondly, the reason for the nature being lost or exiting from this water is that something becomes completely mixed in the water, as Al-Kafi, Kifayah, Binayah etc. have clearly explained, and its mention will come soon, God willing. Whereas, if perfect mixture (complete mixing) occurs without cooking, its immediate effect is that the thinness of the water ends (i.e., it ends in actuality). If this perfect mixture is due to cooking, then its effect is that the thinness of the water is about to end (i.e., it does not end in actuality yet). This is because the requirement of mixing is for the water to become thick, and the heat of the fire keeps it thin. Due to this, the effect of perfect mixture does not manifest immediately. However, when

the obstacle is removed and this mixture cools down, it becomes thick, as has already been mentioned in the clarifications of several books in 471. (T)

Thirdly: Mere perfection of mixture with Thirdly, mere perfection of mixture while there is no actual thickness in the cleaner.

अध्याय "वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है और जिससे नहीं" अधिक लाभदायक है क्योंकि ऐसे पानी के बारे में सूचित करना जिससे वज़ू जायज़ नहीं है, उस चीज़ से वज़ू को रोकने से अधिक महत्वपूर्ण है जो पानी नहीं है। (पानी) में होगा कि पहले यह पानी था (इसलिए लाक्षणिक रूप से प्रकृति के नष्ट होने के बाद इसे पानी कहा गया है) या यह रूपक "निकास" (ख़रुज) शब्द में मानना होगा कि वर्तमान पानी से जल्द ही इसकी प्रकृति बाहर निकलने वाली है (इसलिए प्रकृति से इसे बाहर माना गया; पहली स्थिति में जो था (मा कान) और दूसरी स्थिति में जो होगा (मा यकून) के संदर्भ में रूपक है)। जबकि दूसरे प्रकार (मा यकून) के रूपक का उपयोग अधिक है और यह समझ के भी अधिक निकट है क्योंकि जो चीज़ जल्द ही होने वाली है वह उस चीज़ से अधिक विश्वसनीय है जो होने के बाद समाप्त हो चुकी है। इसके अलावा, दूसरे प्रकार के रूपक का विचार यहाँ इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि यहाँ उस पानी की चर्चा है जिससे वज़ू जायज़ या नाजायज़ है (यानी पानी का अस्तित्व होना आवश्यक है)। साथ ही इसलिए भी कि दूसरे प्रकार के रूपक में यहाँ अधिक लाभ है, यह इसलिए क्योंकि पानी होने पर यह बताना कि इससे वज़ू जायज़ नहीं है, इस कथन की तुलना में अधिक उपयोगी है कि जो पानी नहीं है उससे वज़ू मना है। (त)

दूसरा कारण यहाँ "कमाल-ए-इम्तिज़ाज" (मिश्रण की पूर्णता) है जैसा कि अल-काफ़ी, अल-किफ़ाया, अल-बिनाया और अन्य में कहा गया है, और जल्द ही इसका उल्लेख होगा, यदि अल्लाह तआला ने चाहा। बिना पकाए मिश्रित वस्तु में पूर्ण मिश्रण का प्रभाव पानी के पतलेपन को वास्तव में समाप्त करना है। पकाए गए मिश्रण में, यह इसे निकट क्षमता द्वारा (प्रकृति से) बाहर निकलने के लिए तैयार करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि मिश्रित पदार्थ गाढ़ा होना चाहता है, जबकि आग उसे परिष्कृत और पतला रखती है। इस प्रकार, इसका प्रभाव प्रकट नहीं होता जैसा कि होना चाहिए जब तक कि विरोधी कारक (गर्मी) दूर न हो जाए और वह ठंडा न हो जाए, जैसा कि पहले कई पुस्तकों से निर्दिष्ट किया गया है। दूसरा, इस पानी से प्रकृति के नष्ट होने या बाहर निकलने का कारण यह है कि पानी में कोई चीज़ पूरी तरह से मिल जाए, जैसा कि काफ़ी, किफ़ाया, बिनाया आदि ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है, और जल्द ही इसका उल्लेख आएगा, इंशा अल्लाह तआला। जबकि, यदि पूर्ण मिश्रण (पूरी मिलावट) बिना पकाए हो तो इसका तत्काल प्रभाव यह होता है कि पानी का पतलापन समाप्त हो जाता है (अर्थात वास्तव में समाप्त हो जाता है)। यदि यह पूर्ण मिश्रण पकाने के कारण हो तो इसका प्रभाव यह होता है कि पानी का पतलापन जल्द ही समाप्त होने वाला होता है (अर्थात वास्तव में अभी

समाप्त नहीं होता)। ऐसा इसलिए है क्योंकि मिलावट की माँग यह होती है कि पानी गाढ़ा हो जाए, और आग की गर्मी उसे पतला रखती है। इस कारण पूर्ण मिश्रण का प्रभाव तुरंत प्रकट नहीं होता, लेकिन जब बाधा दूर हो जाती है और यह मिश्रण ठंडा हो जाता है, तो वह गाढ़ा हो जाता है जैसा कि 471 में कई पुस्तकों के स्पष्टीकरण में बीत चुका है। (त)

तीसरा: केवल मिश्रण की पूर्णता के साथ तीसरा, केवल मिश्रण की पूर्णता जबकि क्लीनर (साफ़ करने वाली चीज़) में वास्तव में गाढ़ापन न हो।

पृष्ठ 116 / 756

الباب الماء الذی یجوز بہ الوضوء ومالا ایضا ھو اکثر فائدۃ لان الاعلام بماء لا یجوز الوضوء بہ اھم من منع الوضوء بما لیس بماء۔ (پانی) میں ہوگا کہ قبل ازیں وہ پانی تھا (اس لئے مجازاً زوالِ طبع کے بعد اسے پانی کہا گیا ہے) یا یہ مجاز لفظ "خروج" میں ماننا ہوگا کہ موجودہ پانی سے عنقریب اس کی طبع خارج ہونے والی ہے (اس لئے طبع سے اس کو خارج قرار دیا، پہلی صورت میں ماکان اور دوسری میں مایکون کے اعتبار سے مجاز ہے) جبکہ مجاز کی دوسری (مایکون والی) قسم کا استعمال زیادہ ہے اور یہ اقرب الی الفہم بھی ہے کیونکہ عنقریب پائے جانے والی چیز اس چیز سے زیادہ معتبر ہے جو پائے جانے کی بعد ختم ہوچکی ہے نیز مجاز کی دوسری قسم کا یہاں اعتبار اس لئے بھی ضروری ہے کہ یہاں اس پانی کی بحث ہے جس سے وضو جائز یا ناجائز ہے (یعنی پانی کا وجود ہونا ضروری ہے) نیز اس لئے بھی کہ دوسری قسم کے مجاز میں یہاں زیادہ فائدہ ہے یہ اس لئے کہ پانی موجود ہونے پر یہ بتانا کہ اس سے وضو جائز نہیں، زیادہ مفید ہے اس قول کے مقابلہ میں کہ یوں کہا جائے جو پانی نہیں اس سے وضو منع ہے۔ (ت)

وثانیاً السبب ھھنا کمال الامتزاج کمانص علیہ فی الکافی والکفایۃ والبنایۃ وغیرھا وسیأتی ان شاء اللہ تعالٰی وکمال الامتزاج اثرہ فی الشئ المخالط بغیر طبخ اخراج الماء عن الرقۃ بالفعل و فی المخالط طبخاً جعلہ متھیئاً للخروج بالقوۃ القریبۃ وذلک لان المخالط یرید اثخانۃ والنار تلطفہ وترققہ فلایظھر اثرہ کما ھوالا اذا زال المعارض وبرد کما تقدم التنصیص علیہ عن الکتب الکثیرہ فی۔ ثانیاً اس پانی سے طبع کے زائل و خارج ہونے کا سبب یہ ہے کہ پانی میں کوئی چیز مکمل طور پر مخلوط ہو جائے جیسا کہ اس کو کافی، کفایہ، بنایہ وغیرہما نے واضح طور پر بیان کیا ہے اور عنقریب اس کا ذکر آئے گا ان شاء اللہ تعالٰی، جبکہ کمالِ امتزاج (مکمل ملاوٹ) اگر بغیر پکائے ہو تو اس کا فوری

اثر یہ ہوتا ہے کہ پانی کی رقت ختم ہو جاتی ہے (یعنی بالفعل ختم ہو جاتی ہے) اگر یہ کمالِ امتزاج پکانے کی وجہ سے ہو تو پھر اس کا اثر یہ ہوتا ہے پانی کی رقت عنقریب ختم ہونے والی ہوتی ہے (یعنی بالفعل ختم نہیں ہوتی) کیونکہ ملاوٹ کا تقاضا یہ ہوتا ہے کہ پانی گاڑھا ہو جائے اور آگ کی حرارت اس کو پتلا رکھتی ہے جس کی وجہ سے کمالِ امتزاج کا اثر فوری طور پر ظاہر نہیں ہوتا، لیکن جب رکاوٹ دور ہو جاتی ہے اور یہ مخلوط ٹھنڈا ہو جاتا ہے تو وہ گاڑھا ہو جاتا ہے جیسا کہ ۴۷۱ میں متعدد کتب کی تصریحات گزر چکی ہیں۔ (ت)

وثالثاً: مجرد کمال الامتزاج مع ثالثاً، محض کمالِ امتزاج جبکہ منظف میں بالفعل گاڑھا پن نہ ہو

The absence of actual thickening is not a hindrance in a cleaning agent... the reason (secret) for this will soon be explained with the help of God, the Glorious. It was stated in 'Al-Kafi' that complete mixing through cooking only prevents wudu if the mixing is not for the purpose of cleanliness, which is the desired goal of wudu—such as alkali (ushnan) and soap—unless they predominate to the point that the water becomes thick like a mixture of parched grain flour (sawiq), causing it to lose the name 'water'. When you know these three premises, the Imam (the author of Al-Hidayah, may Allah have mercy on him) interpreted the text in its second metaphorical sense based on the previously mentioned preferences. Thus, all complications are resolved. The ruling in the text pertains to water that is still water, even if it eventually loses its natural state. Therefore, it is necessary to restrict the change in water (loss of thinness and natural state) to 'cooking'. This is because, without cooking, there is no evidence of the cause that prevents wudu (complete mixing); rather, there is evidence of its absence. If complete mixing were present, the water would be entirely thick. The case of cooking is contrary to this, as mentioned. Praise be to Allah. This refutes the objections raised by Sayyid Abu al-Sa'ud and then Sayyid at-Tahtawi against Al-Shurunbulali, who stated in 'Maraqi al-Falah' that wudu is not permissible with water whose nature has been altered by cooking something like chickpeas or lentils, because when it cools [it thickens].

---

1 Fath al-Qadir, Chapter: Water with which wudu is permissible, etc., Nooriya Razawiyya, Sukkur, 1/63 Page 117 of 756

सफ़ाई करने वाले पदार्थ में वास्तविक गाढ़ेपन की अनुपस्थिति वूज़ू (वज़ू) के लिए बाधा नहीं है... इसका कारण (रहस्य) ईश्वर की सहायता से शीघ्र ही स्पष्ट किया जाएगा। 'अल-काफी' में कहा गया है कि पकाने के माध्यम से पूर्ण मिश्रण वूज़ू को तभी रोकता है जब वह मिश्रण स्वच्छता के उद्देश्य से न हो, जो वूज़ू का वांछित लक्ष्य है—जैसे कि क्षार (उश्नान) और साबुन—जब तक कि वे इतने प्रबल न हो जाएँ कि पानी भुने हुए अनाज के आटे (सवीक) के मिश्रण की तरह गाढ़ा हो जाए, जिससे उसे 'पानी' कहना बंद कर दिया जाए। जब आप इन तीन प्रस्तावों को जान लेते हैं, तो इमाम (हिदाया के लेखक, अल्लाह उन पर रहम करे) ने पहले उल्लेखित प्राथमिकताओं के आधार पर पाठ की व्याख्या उसके दूसरे आलंकारिक अर्थ में की। इस प्रकार, सभी जटिलताएँ हल हो जाती हैं। पाठ में दिया गया नियम उस पानी के बारे में है जो अभी भी पानी है, भले ही वह अंततः अपनी प्राकृतिक अवस्था खो दे। इसलिए, पानी में परिवर्तन (तरलता और प्राकृतिक अवस्था का ह्रास) को 'पकाने' तक सीमित करना आवश्यक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पकाने के बिना, वूज़ू को रोकने वाले कारण (पूर्ण मिश्रण) का कोई प्रमाण नहीं मिलता है; बल्कि, इसकी अनुपस्थिति का प्रमाण मिलता है। यदि पूर्ण मिश्रण मौजूद होता, तो पानी पूरी तरह से गाढ़ा होता। पकाने का मामला इसके विपरीत है, जैसा कि उल्लेख किया गया है। अल्लाह की स्तुति हो। यह सैयद अबू अल-सऊद और फिर सैयद अत-तहतावी द्वारा अल-शुरुनबुलाली के खिलाफ उठाए गए आपत्तियों का खंडन करता है, जिन्होंने 'मराकी अल-फलाह' में कहा था कि उस पानी से वूज़ू जायज़ नहीं है जिसकी प्रकृति चने या मसूर जैसी चीजों को पकाने से बदल गई हो, क्योंकि ठंडा होने पर [वह गाढ़ा हो जाता है]।

---

1 फ़तह अल-क़दीर, बाब: अल-मा अल-लज़ी यजोज़ु बिहिल वज़ू इलख, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/63 पृष्ठ 117 का 756

عدم الثخن بالفعل غير مانع في المنظف ..... وضو کیلئے مانع نہیں ہے اس کی وجہ (راز) کا لسریأتیك بیانه بعونه جل شانه وقد قال فی الکافي ان شاء الله و بعونه عنقریب بیان ہوگا۔ جبکہ کافی میں ومن معها فی الامتزاج بالطبخ انما یمنع الوضوء ان کہا کہ پانی میں کسی چیز کو پکانے سے کمال امتزاج، وضو سے لم یکن مقصود اللغرض المطلوب من الوضوء وهو مانع تب ہوگا جب کہ یہ امتزاج نظافت کیلئے جو کہ وضو کی التنظیف کالاشنان والصابون الا اذا غلب فیصیر غرض مطلوب ہے، نہ ہو، جیسا کہ اشنان وصابون، جب تک کالسویق المخلوط لزوال اسم الماء عنه 1 اه ان کا ایسا غلبہ نہ ہوجائے جو پانی کو ستوؤں کی طرح گاڑھا اذا علمت هذا فالشیخ الامام رحمه الله تعالیٰ کردے تو اس صورت میں وضو جائز نہیں کیونکہ اتنا گاڑھا ورحمنا به حمل المتن علی المجاز الثاني لماتقدم ہونے پر اس کا نام پانی نہیں رہتا اھ جب یہ تین مقدمات من ترجیحاته واياه اراد بالتغییر وقد انحلت آپ کو معلوم ہوگئے تو شیخ (صاحبِ ہدایہ) نے متن میں الاشکالات جمیعا فان حکم المتن علی ما یتهیؤ مذکور تغییر کو مجاز کی مذکورہ قسم ثانی قرار دیا ان ترجیحات کی بنا لزوال الطبع مع بقائه بعد علیه بعدم جواز پر جن کا ذکر پہلے ہو چکا ہے۔ اس سے تمام اشکالات ختم ہوگئے التوضی به لابد من تقییده بالمطبوخ لانه فی غیره کیونکہ متن کا حکم اس پانی کے بارے میں ہے جو ابھی تک لا یدل علی سبب المنع وهو کمال الامتزاج بل یدل پانی ہے اگر چہ کچھ دیر بعد وہ اپنی طبیعت کھو بیٹھے گا، اس پانی علی عدمه اذلو کمل لثخن بخلاف المطبوخ فانه کے بارے میں کہا کہ اس سے وضو جائز نہیں ہے تو اس فیه دلیل علیه کما علمت غیر انه لا یمنع فی المنظف صورت میں اس پانی کے تغیر (زوال رقت وطبع) کو طبخ الا اذا حصل الثخن بالفعل فاستقام الاستثناء ان (پکانے) سے مقید کرنا ضروری ہے کیونکہ پکائے بغیر دوسری ولله الحمد، وبه اندفع مارد به السید ابو

السعود کسی صورت میں وضو سے مانع سبب (کمال امتزاج) پر ثم السید ط علی العلامة الشرنبلالی اذ قال فی مراقی دلیل نہیں پائی جاتی، بلکہ وہاں عدم سبب پر دلیل پائی جاتی الفلاح لا یجوز بماء زال طبعه بالطبخ بنحو حمص ہے، کیونکہ اگر وہ سبب (کمال امتزاج) پایا جاتا تو پانی مکمل وعدس لانه اذا برد طور پر گاڑھا ہوتا، پکانے کی صورت اس کے خلاف ہے جیسا کہ مذکور ہوا

---

1 فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء الخ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۳ Page 117 of 756

Fatawa Razawiyyah - Volume 3

[Arabic Text]: It becomes thick, as when it is cooked with something intended for cleaning, like lote-tree leaves (sidr), and becomes thick. [End of quote from source].

[Urdu Text]: (The reason mentioned for this is that in the case of cooling, immediate thickness arises due to perfect mixing, whereas in the case of cooking, heat prevents thickness). Yes, in the case of cooking, without thickness, perfect mixing will not prevent wudu (ablution) at that time if something was cooked in water for the purpose of cleaning, provided that actual thickness does not arise from it. Thus, both exceptions in the text of Al-Hidayah have become correct. By the statement of this answer, the objection of Sayyid Abu Saud and Sayyid Tahtawi against Allama Shurunbulali has also been resolved, which they made on Allama's statement in Maraqi al-Falah as follows: 'By cooking things like chickpeas and lentils in water, when the natural properties of water are lost such that it would become thick upon cooling, wudu is not permissible, just as a thing cooked in water for the purpose of cleaning (like lote-tree leaves etc.) which becomes thick while cooking, wudu is not permissible.' [End of quote]. On this, both gentlemen objected that it is not appropriate for the author (Allama Shurunbulali) to say this because when such a thing is cooked in water from which cleaning is not intended, then purification from it is not permissible, even if thinness and flowability remain in it, because perfect mixing is found here. But for something intended for cleaning, purification is permissible as long as thinness and flowability do not end; this difference is clear and the author's (Shurunbulali) equating of both cases is not correct. [End of quote]. (I say) first, when did Allama Shurunbulali equate both cases? While regarding the cleaning agent he said 'and it becomes thick', considering the actual presence of thickness here; and in the non-cleaning agent he said 'when it cools and becomes thick', so here he considered the potential for thickness.

[Arabic Text]: They both said: This from the author is not as it should be, for whenever it is cooked with something not intended for cleaning, it does not remove the ritual impurity (hadath), even if it remains thin and flowing, due to perfect mixing; unlike what is intended for cleaning, for it is not prevented from removing [impurity] except when its thinness and flowability depart from it. So the difference between them is established, and the author's equating of them is disallowed. [End of quote].

[Arabic Text]: I say first (1): When did he equate [them]? While he said regarding the cleaning agent 'and it becomes thick,' considering the thickness in actuality; and he

said regarding others 'when it cools it thickens,' considering the potentiality for thickening.

---

1. Maraqi al-Falah, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt, p. 16.
2. Hashiyah al-Tahtawi, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt, p. 16. 3.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

[अरबी पाठ]: वह गाढ़ा हो जाता है, जैसे कि जब उसे सफाई के उद्देश्य से किसी चीज़ के साथ पकाया जाता है, जैसे कि बेर के पत्ते (सिद्र), और वह गाढ़ा हो जाता है। [स्रोत से उद्धरण समाप्त]।

[उर्दू पाठ]: (इसका कारण यह बताया गया है कि ठंडा होने की स्थिति में पूर्ण मिश्रण के कारण तुरंत गाढ़ापन उत्पन्न हो जाता है, जबकि पकाने की स्थिति में गर्मी गाढ़ेपन को रोकती है)। हाँ, पकाने की स्थिति में, गाढ़ेपन के बिना, पूर्ण मिश्रण उस समय वज़ू (शुद्धि) में बाधक नहीं होगा यदि सफाई के उद्देश्य से पानी में कुछ पकाया गया हो, बशर्ते कि उससे वास्तव में गाढ़ापन उत्पन्न न हो। इस प्रकार, अल-हिदाया के पाठ में दोनों अपवाद सही हो गए हैं। इस उत्तर के बयान से, अल्लामा शरनबुलाली पर सैय्यद अबू सऊद और सैय्यद तहतावी की आपत्ति भी समाप्त हो गई है, जो उन्होंने मराकी अल-फलाह में अल्लामा के बयान पर इस प्रकार की थी: 'पानी में चने और मसूर जैसी चीज़ों को पकाने से, जब पानी के प्राकृतिक गुण समाप्त हो जाते हैं कि ठंडा होने पर वह गाढ़ा हो जाएगा, तो वज़ू जायज़ नहीं है, जैसे कि सफाई के उद्देश्य से पानी में पकाई गई चीज़ (जैसे बेर के पत्ते आदि) जो पकाने के दौरान गाढ़ी हो जाती है, वज़ू जायज़ नहीं है।' [उद्धरण समाप्त]। इस पर, दोनों सज्जनों ने आपत्ति जताई कि लेखक (अल्लामा शरनबुलाली) के लिए यह कहना उचित नहीं है क्योंकि जब ऐसी चीज़ पानी में पकाई जाती है जिससे सफाई का इरादा न हो, तो उससे शुद्धि जायज़ नहीं है, भले ही उसमें पतलापन और प्रवाह बना रहे, क्योंकि यहाँ पूर्ण मिश्रण पाया जाता है। लेकिन सफाई के उद्देश्य वाली चीज़ के लिए, शुद्धि तब तक जायज़ है जब तक पतलापन और प्रवाह समाप्त नहीं हो जाता; यह अंतर स्पष्ट है और लेखक (शरनबुलाली) द्वारा दोनों स्थितियों को बराबर ठहराना सही नहीं है। [उद्धरण समाप्त]। (मैं कहता हूँ) पहले, अल्लामा शरनबुलाली ने दोनों स्थितियों को कब बराबर माना? जबकि सफाई एजेंट के बारे में उन्होंने कहा 'और वह गाढ़ा हो जाता है', यहाँ गाढ़ेपन की वास्तविक उपस्थिति पर विचार किया; और गैर-सफाई एजेंट में उन्होंने कहा 'जब वह ठंडा होकर गाढ़ा हो जाए', तो यहाँ उन्होंने गाढ़ेपन की क्षमता पर विचार किया।

[अरबी पाठ]: उन दोनों ने कहा: लेखक का यह कहना वैसा नहीं है जैसा होना चाहिए, क्योंकि जब भी इसे ऐसी चीज़ के साथ पकाया जाता है जो सफाई के लिए नहीं है, तो यह आनुष्ठानिक अशुद्धि (हदथ) को दूर नहीं करता है, भले ही पूर्ण मिश्रण के कारण यह पतला और बहता हुआ बना रहे; सफाई के लिए इच्छित चीज़ के विपरीत, क्योंकि इसे [अशुद्धि] हटाने से तब तक नहीं रोका जाता जब तक कि

उसका पतलापन और प्रवाह उससे अलग न हो जाए। इसलिए उनके बीच का अंतर स्थापित है, और लेखक द्वारा उन्हें बराबर मानना वर्जित है। [उद्धरण समाप्त]।

[अरबी पाठ]: मैं पहले कहता हूँ (1): उन्होंने कब बराबरी की? जबकि उन्होंने सफाई एजेंट के संबंध में कहा 'और वह गाढ़ा हो गया,' वास्तविकता में गाढ़ेपन पर विचार करते हुए; और उन्होंने दूसरों के संबंध में कहा 'जब वह ठंडा होता है तो गाढ़ा हो जाता है,' गाढ़ेपन की संभावना पर विचार करते हुए।

---

1. मराकी अल-फलाह, किताब अत-तहारह, अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, पृ. 16
2. हाशियत अत-तहतावी, किताब अत-तहारह, अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, पृ. 16 3.

ثخن کما اذا طبخ بما یقصد بہ النظافۃ کالسدر وصار ثخیناً اہ،

(اس کی وجہ یہ مذکور ہوئی کہ ٹھنڈا ہونے کی صورت میں کمالِ امتزاج سے گاڑھا پن فوراً پیدا ہو جاتا ہے جبکہ پکانے کی صورت میں حرارت گاڑھے پن سے مانع ہوتی ہے) ہاں پکانے کی صورت میں گاڑھے پن کے بغیر کمالِ امتزاج وضو کیلئے اس وقت مانع نہ ہوگا جب پانی میں نظافت کی غرض سے کوئی چیز پکائی گئی ہو بشرطیکہ اس سے بالفعل گاڑھا پن پیدا نہ ہو، پس اب ہدایہ کی عبارت میں دونوں استثناء درست ہو گئے۔ اس جواب کی تقریر سے سید ابوسعود اور سید طحطاوی کا علامہ شرنبلالی پر اعتراض بھی ختم ہو گیا جو انہوں نے علامہ کی اس عبارت پر کیا جو علامہ نے مراقی الفلاح میں یوں کہی ہے "چنے اور مسور جیسی چیزوں کو پانی میں پکانے سے جب پانی کی طبع زائل ہو جائے کہ ٹھنڈا ہونے پر گاڑھا ہو جائے تو وضو جائز نہیں ہے جس طرح نظافت کے مقصد سے پانی میں پکائی ہوئی چیز (جیسی بیری کے پتے وغیرہ) جو کہ پکنے میں گاڑھا ہو جائے تو وضو جائز نہیں ہے اھ ، اس پر دونوں حضرات نے یہ اعتراض کیا کہ مصنف (علامہ شرنبلالی) کا یہ کہنا مناسب نہیں ہے کیونکہ جب ایسی چیز پانی میں پکائی جائے جس سے نظافت مقصود نہ ہو تو اس سے طہارت جائز نہیں، اگرچہ اس میں رقت و سیلان باقی ہو اس لئے کہ یہاں کمالِ امتزاج پایا جاتا ہے۔ لیکن جس چیز سے نظافت مقصود ہو تو وہاں جب تک رقت و سیلان ختم نہیں ہوتا اس وقت تک اس سے طہارت جائز ہے یہ فرق واضح ہے اور مصنف (شرنبلالی) کا دونوں صورتوں کو برابر قرار دینا درست نہیں ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں اولا کہ علامہ شرنبلالی نے کب دونوں صورتوں کو برابر قرار دیا ہے؟ حالانکہ انہوں نے نظافت والی

چیز کے بارے میں کہا کہ گاڑھا پن پایا جائے تو انہوں نے یہاں گاڑھے پن کا بالفعل پایا جانا معتبر قرار دیا اور غیر منظف میں انہوں نے کہا جب ٹھنڈا ہو کر گاڑھا ہو تو یہاں انہوں نے

فقالا هذا من المصنف ليس على ما ينبغي فإنه متى طبخ بما لا يقصد به النظافة لا يرفع الحدث وان بقى رقيقاً سائلا لكمال الامتزاج بخلاف ما يقصد به النظافة فانه لا يمتنع به رفعه الا اذا خرج عنه رقته وسيلانه فالفرق بينهما ثابت وتسوية المصنف بينهما ممنوعة اهـ

اقول اولا (١) متى سوى وقد قال في المنظف وصار ثخيناً فاعتبر الثخونة بالفعل وقال في غيره اذا برد ثخن فاعتبر التهيؤ للثخن

---

1 مراقی الفلاح کتاب الطہارۃ الامیریہ ببولاق مصر ص ١٦ 2 حاشیہ طحطاوی کتاب الطہارۃ الامیریہ ببولاق مصر ص ١٦ 3

Fatawa Razviya Volume 3

Secondly: (1) Their statement "even if it remains thin"—if they meant by it the state of the cooked item before it cools down, then the author did not deny it. Rather, he explicitly mentioned it when he considered it thin after [cooling] and prohibited performing Wudu with it. If they meant that it remains thin even after cooling down as well, then prohibiting Wudu with it is disallowed, and the claim of complete mixing is refuted; because if it were complete, it would have thickened even after some time.

Actual thickening was not considered; rather, the potential for it was considered. (T) And secondly, regarding their statement that Wudu is not permissible with a non-cleaning liquid even if its thinness remains: if by the preservation of this thinness they mean before it cools down, then the author has not denied this. Instead, he explicitly stated that it is thin before cooling and thickens after cooling, because they considered it thin after cooling and based on that, they declared Wudu to be impermissible. And if their intention was that it remains thin even after cooling, then for these two gentlemen to prohibit Wudu with it is not correct. And it is not correct to assume complete mixing here, because if there were complete mixing at that time, it would have thickened after some time. (T)

Thirdly: (2) Even if it is accepted, what is reported from the two Imams of the school, Abu Yusuf and Muhammad (may Allah Almighty have mercy on them), is the equality between a cleaning liquid and others according to the famous report from Abu Yusuf and both reports from Muhammad. Recall what we mentioned previously... from Al-Hilyah, from At-Tatimmah and Adh-Dhakhirah, that Abu Yusuf considers the loss of thinness in a cleaning liquid according to a single report. However, reports from him regarding other than that differ. In some, he considered the loss of thinness, which is the famous report from him. In others, he did not stipulate it and settled for the change of attributes, which is the weak, less preferred report. Imam Muhammad considered the predominance of color, which is the famous report from him, and in some reports, the loss of thinness.

And thirdly, even if it is accepted that Allama Shurunbulali declared both cleaning and non-cleaning cooked liquids to be equal and equivalent, then it is also correct because according to both Imams, Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad, cleaning and non-cleaning are both equal. This is as famously reported from Imam Abu Yusuf and reported from Imam Muhammad in both famous and non-famous ways. Recall what we stated in number 107 with reference to Al-Hilyah, At-Tatimmah, and Adh-

Dhakhirah, which is that Imam Abu Yusuf considers the end of thinness in a cleaning liquid; this is a single report from him. Whereas regarding non-cleaning liquids, the reports from him differ; in some reports, he considers the end of thinness here, and this is the famous report. In some reports, he does not set this condition and only considers the change in attributes; this report is weak. And Imam Muhammad, in both cases, considers the change of color for predominance; this is the famous report from him. And in some reports he [considers loss of thinness].

फतावा रज़विया, खंड 3

दूसरा: (1) उनका यह कथन कि "भले ही वह पतला रहे" - यदि उनका अर्थ पकने वाली वस्तु की उस अवस्था से है जो ठंडा होने से पहले होती है, तो लेखक ने इसका खंडन नहीं किया। बल्कि उन्होंने स्पष्ट रूप से इसका उल्लेख तब किया जब उन्होंने इसे [ठंडा होने के] बाद पतला माना और इससे वज़ू करने से मना किया। यदि उनका अर्थ यह है कि ठंडा होने के बाद भी वह पतला बना रहता है, तो इससे वज़ू को मना करना गलत है और पूर्ण मिश्रण का दावा खारिज कर दिया जाता है; क्योंकि यदि मिश्रण पूर्ण होता, तो वह कुछ समय बाद गाढ़ा हो जाता।

वास्तविक गाढ़ेपन को नहीं बल्कि इसकी क्षमता को माना गया है। (त) और दूसरा, उन दोनों का यह कहना कि गैर-सफाई वाले तरल पदार्थ से वज़ू जायज़ नहीं है भले ही उसका पतलापन बना रहे: यदि इस पतलेपन के बने रहने से उनका तात्पर्य ठंडा होने से पहले की स्थिति से है, तो लेखक ने इसका खंडन नहीं किया है। बल्कि उन्होंने इस पतलेपन पर यह स्पष्ट कर दिया कि ठंडा होने से पहले पतला हो और ठंडा होने के बाद गाढ़ा हो जाए, क्योंकि उन्होंने ठंडा होने के बाद के पतलेपन पर विचार किया और उसी आधार पर वज़ू को नाजायज़ कहा। और यदि उनका इरादा यह था कि ठंडा होने के बाद भी वह पतला रहे, तो इन दोनों महानुभावों के लिए इससे वज़ू को मना करना सही नहीं है। और यहाँ पूर्ण मिश्रण मानना सही नहीं है क्योंकि यदि उस समय पूर्ण मिश्रण होता, तो वह कुछ देर बाद गाढ़ा हो जाता। (त)

तीसरा: (2) यदि इसे मान भी लिया जाए, तो संप्रदाय के दो इमामों, अबू यूसुफ और मुहम्मद (अल्लाह उन पर दया करे) से जो वर्णित है, वह इमाम अबू यूसुफ से प्रसिद्ध विवरण और इमाम मुहम्मद से दोनों विवरणों के अनुसार सफाई वाले और अन्य तरल पदार्थों के बीच समानता है। याद करें जो हमने पहले ... अल-हिल्या, अत-ततिम्माह और अद-ज़खिराह के हवाले से उल्लेख किया था कि इमाम अबू यूसुफ सफाई वाले तरल पदार्थ में पतलेपन के खत्म होने पर विचार करते हैं, यह उनसे एकमात्र विवरण है। जबकि इसके अलावा अन्य के बारे में उनसे प्राप्त विवरण अलग-अलग हैं। कुछ में उन्होंने पतलेपन के खत्म होने पर विचार किया, जो उनसे प्रसिद्ध विवरण है। कुछ अन्य में उन्होंने इसे अनिवार्य नहीं माना और केवल गुणों के बदलने को पर्याप्त माना, जो कि कमजोर और कम तरजीह वाला विवरण है। इमाम मुहम्मद ने रंग की प्रधानता पर विचार किया, जो उनसे प्रसिद्ध विवरण है, और कुछ विवरणों में पतलेपन के खत्म होने पर।

और तीसरा, यदि यह मान भी लिया जाए कि अल्लामा शुरुनबुलाली ने सफाई करने वाले और गैर-सफाई करने वाले दोनों पकाए गए तरल पदार्थों को बराबर और समान घोषित किया है, तो यह भी सही है क्योंकि दोनों इमामों, इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद के यहाँ सफाई करने वाले और गैर-सफाई करने वाले दोनों बराबर हैं। जैसा कि इमाम अबू यूसुफ से प्रसिद्ध है और इमाम मुहम्मद से प्रसिद्ध और गैर-प्रसिद्ध दोनों तरह से वर्णित है। नंबर 107 में हिल्या, ततिम्मा और ज़खिरा के हवाले से हमने जो बयान किया था उसे याद करो, वह यह कि इमाम अबू यूसुफ सफाई करने वाले में पतलापन खत्म होने का विचार करते हैं; उनसे यह एक ही विवरण है। जबकि गैर-सफाई करने वालों के बारे में उनसे वर्णित बातें अलग-अलग हैं; कुछ विवरणों में वे यहाँ पतलापन खत्म होने का विचार करते हैं, और यही विवरण प्रसिद्ध है। और कुछ विवरणों में यह है कि वे यह शर्त नहीं लगाते और केवल गुणों के बदलाव का विचार करते हैं; यह विवरण कमजोर है। और इमाम मुहम्मद दोनों स्थितियों में प्रभुत्व के लिए रंग के बदलाव का विचार करते हैं; उनसे यही प्रसिद्ध विवरण है। और कुछ विवरणों में वे [पतलापन खत्म होने का विचार करते हैं]।

पृष्ठ 119 का 756

وثانیاً: (۱) قولھما وان بقی رقیقاً ان اراد بہ ماعلیہ المطبوخ قبل ان یبرد فلم ینکرہ المصنف بل قد نص علیہ اذا عتبرہ رقیقاً بعد ومنع الوضوء بہ وان اراد بہ مایبقی رقیقاً بعد مایبرد ایضاً فمنع الوضوء بہ ممنوع وکمال الامتزاج مدفوع اذلو کمل لثخن ولو بعد حین۔

بالفعل گاڑھے ہونے کا اعتبار نہیں کیا بلکہ اس کے قابل ہونے کا اعتبار کیا ہے۔ (ت) اور ثانیا ان دونوں کا یہ قول، کہ غیر منظف سے وضو جائز نہیں اگرچہ اس کی رقت باقی ہو، تو اس رقت کی بقا سے مراد اگر ٹھنڈا ہونے سے قبل ایسا ہو، تو مصنف نے اس کا انکار نہیں کیا بلکہ انہوں نے اس رقت پر یہ کہہ کر نص کردی کہ ٹھنڈا ہونے سے قبل رقیق ہو اور ٹھنڈا ہونے کے بعد گاڑھا ہو، کیونکہ انہوں نے ٹھنڈا ہونے کے بعد رقیق کا اعتبار کیا ہے اور یہ کہ اس سے انہوں نے وضو کو ناجائز کہا اور اگر ان کی مراد یہ ہو کہ ٹھنڈا ہونے کے بعد بھی رقیق رہے تو پھر ان دونوں حضرات کا اس سے وضو کو منع کرنا درست نہیں ہے اور یہاں کمال امتزاج ماننا درست نہیں ہے کیونکہ اگر اس وقت کمال امتزاج ہوتا تو پھر کچھ دیر بعد گاڑھا ہو جاتا۔ (ت)

وثالثاً: (۲) لئن سلم فالمنقول عن امامی المذھب ابویوسف ومحمد رحمھما اللہ تعالٰی ھو التسویۃ بین المنظف وغیرہ علی الروایۃ المشھورۃ عن ابی یوسف وعلی کلتا الروایتین عن محمد تذکر ما اسلفنا فی . عن الحلیۃ عن التتمۃ والذخیرۃ ان ابا یوسف یعتبر فی المنظف سلب الرقۃ روایۃ واحدۃ واختلف الروایۃ عنہ فی غیرہ ففی بعضھا اعتبر سلب الرقۃ ای وھی المشھورۃ عنہ وفی بعضھا لم یشترطہ ای واکتفی بتغیر الاوصاف وھی الروایۃ الضعیفۃ المرجوحۃ وان محمدا اعتبر الغلبۃ باللون ای وھی الروایۃ المشھورۃ عنہ وفی بعضھا سلب الرقۃ

اور ثالثا اور اگر یہ تسلیم کر بھی لیا جائے کہ علامہ شرنبلالی نے منظف اور غیر منظف پکنے والے دونوں کو برابر و مساوی قرار دیا ہے تو بھی یہ درست ہے کیونکہ امام ابویوسف اور امام محمد دونوں اماموں کے ہاں منظف اور غیر منظف دونوں برابر ہیں، جیسا کہ امام ابویوسف سے مشہور اور امام محمد سے مشہور اور غیر مشہور دونوں طرح منقول ہے نمبر ۱۰۷ میں حلیہ، تتمہ اور ذخیرہ کے حوالے سے ہم نے جو بیان کیا تھا اس کو یاد کرو، وہ یہ کہ امام ابویوسف منظف میں رقت ختم ہونے کا اعتبار کرتے ہیں ان سے یہ ایک ہی روایت ہے جبکہ غیر منظف کے بارے میں ان سے مروی روایات مختلف ہیں، بعض روایات میں وہ یہاں رقت کے خاتمہ کا اعتبار کرتے ہیں یہی روایت مشہور ہے۔ اور بعض روایات میں یہ ہے کہ وہ یہ شرط نہیں لگاتے اور صرف اوصاف کی تبدیلی کا اعتبار کرتے ہیں یہ روایت ضعیف ہے اور امام محمد دونوں صورتوں میں غلبہ کیلئے رنگ کی تبدیلی کا اعتبار کرتے ہیں، ان سے یہی مشہور روایت ہے۔ اور بعض روایات میں وہ

Fatawa Razawiyya Volume Three

[Table Top] Left (Arabic): Both [opinions] are absolute concerning the distinction between a cleanser and a non-cleanser. So what blame is there on one who equates them in following the two Imams of his school, for they are the two leaders to be followed after the Great Imam (Abu Hanifa), may Allah be pleased with all of them. And Allah knows best. Right (Urdu): In dominance, they consider the cessation of thinness, and they did not say anything about the difference between a cleanser and a non-cleanser. Therefore, if, according to both objecting gentlemen, Allama Shurunbulali considers both situations equal in following Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad (may Allah have mercy on them), what is the harm, whereas after Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him), these two Imams are worthy of following. And Allah knows best. (T)

In summary, the famous opinion and the path of the majority is that the reason for prohibition in cooking is the loss of thinness; this is what we investigated in [page] 217, and now I say: (And now I say. -T) And with Allah is success (1) (And with Allah's success. -T). It was learned above that there are four things here: (1) Parts (2) Qualities (3) Nature (4) Name. And the consideration of parts is on three grounds: quantity, nature, name. Taking the cause of prohibition in cooking to be the abundance of parts is not probable, because if there is abundance, it would be from the beginning and not due to cooking. Similarly, change in color, taste, and smell. Firstly, it will likely occur before the completion of cooking and ripening, so it cannot be considered 'change by cooking' either. And in some instances where it happened after complete cooking, making it the cause would mean common cooked items would fall out of the category of 'change by cooking' because the change in quality was not due to cooking.

Secondly: Setting all this aside, considering qualities is against the correct and reliable school of thought. Khania itself has corrected what is against it, as previously explained in detail in [page] 22101. This is a new refutation (2) of what is in al-Bahr and al-Nahr (3), relying on the statement of Khania that the ruling is based on the existence of the smell of broad beans, and Jami' (4) al-Rumuz considers the change of color (as clearly passed before in 101 and 122. So this is a new refutation of that statement in Bahr and Nahr which is attributed to the text of Khania where the ruling is based on the smell of beans; also it is a refutation of Jami' al-Rumuz which considered the change of color). (T)

[Table Bottom] Left (Arabic): Then, considering the smell is questionable, for Muhammad, who considered the qualities, did not consider it in the famous reports from him; he only considered the color and then the taste. Right (Urdu): Then, in the change of qualities, the consideration of smell is questionable because Imam Muhammad, who took qualities into account, does not consider smell; the famous narration from him is this.

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

[शीर्ष तालिका] बायां (अरबी): दोनों [राय] सफाई करने वाले और गैर-सफाई करने वाले के बीच अंतर के बारे में निरपेक्ष हैं। तो उस व्यक्ति पर क्या दोष है जो अपने मज़हब के दो इमामों के अनुसरण में उन दोनों को समान मानता है, क्योंकि वे महान इमाम (अबू हनीफ़ा) के बाद अनुसरण किए जाने वाले दो नेता हैं, अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो। और अल्लाह ही बेहतर जानता है। दायां (उर्दू): प्रधानता में वे पतलापन खत्म होने का विचार करते हैं, और उन्होंने सफाई करने वाले और गैर-सफाई करने वाले के बीच के अंतर के बारे में कुछ नहीं कहा। लिहाज़ा, अगर दोनों आपत्ति करने वाले सज्जनों के अनुसार, अल्लामा शुरुनबुलाली इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) के अनुसरण में दोनों स्थितियों को समान करार दें, तो इसमें क्या बुराई है, जबकि इमाम-ए-आज़म (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के बाद ये दो इमाम ही अनुसरण के योग्य हैं। और अल्लाह ही बेहतर जानता है। (त)

[मुख्य पाठ] कुल मिलाकर, मशहूर बात और जम्हूर (बहुमत) का रास्ता यही है कि खाना पकाने में रोक की वजह पतलापन का खत्म होना है; यही वह बात है जिसकी हमने २१७ में तहकीक की, और अब मैं कहता हूँ: (और अब मैं कहता हूँ। -त) और अल्लाह की तौफीक से (१) (और अल्लाह की तौफीक से। -त) ऊपर मालूम हुआ कि यहाँ चार चीजें हैं: (१) अजज़ा (अंग) (२) औसाफ़ (विशेषताएं) (३) तबीयत (प्रकृति) (४) इस्म (नाम)। और अंगों का विचार तीन आधारों पर है: मात्रा, प्रकृति, नाम। खाना पकाने में रोक की वजह अंगों की अधिकता को मानना मुमकिन नहीं है क्योंकि अगर अधिकता होगी तो वह शुरुआत से होगी न कि पकने की वजह से। इसी तरह रंग, स्वाद और गंध का बदलाव। अव्वल तो यह शायद पकने और पककर तैयार होने से पहले ही हो जाएगा, तो उसे 'पकने से बदलाव' नहीं माना जा सकता। और कुछ स्थानों पर जहाँ पूरी तरह पकने के बाद हुआ, उसे कारण मानने पर आम पका हुआ भोजन 'पकने से बदलाव' की श्रेणी से बाहर हो जाएगा क्योंकि उनमें गुणों में बदलाव पकने की वजह से नहीं हुआ।

दूसरा: इस सब को नज़रअंदाज़ करते हुए, गुणों का विचार करना सही और विश्वसनीय मज़हब के खिलाफ है। खुद खानिया में इसके खिलाफ की तस्हीह (सुधार) फरमाई गई है, जैसा कि पहले २२१०१ में विस्तार से बताया गया है। तो यह अल-बह्र और अन-नह्र (३) में जो कुछ है उस पर एक नई रद (खंडन) (२) है, खानिया के उस बयान पर भरोसा करते हुए कि फैसला सेम (बीन्स) की गंध की मौजूदगी पर है, और जामिअ (४) अर-रुमूज़ रंग के बदलाव को मानता है (जैसा कि पहले १०१ और

१२२ में स्पष्ट रूप से गुज़रा। तो यह बह्र और नह्र के उस बयान का नया खंडन है जो खानिया की इबारत की तरफ मंसूब है जिसमें हुक्म की बुनियाद बाकली की बू पर है; साथ ही यह जामिअ अर-रुमूज़ का खंडन है जिसने रंग की तब्दीली का एतबार किया है)। (त)

[निचली तालिका] बायां (अरबी): फिर गंध का विचार करना विचारणीय है, क्योंकि मुहम्मद जिन्होंने गुणों को देखा, उन्होंने उनके बारे में मशहूर रिवायतों में इसका विचार नहीं किया; उन्होंने केवल रंग और फिर स्वाद का विचार किया। दायां (उर्दू): फिर गुणों के बदलाव में बू (गंध) का विचार करना महल-ए-नज़र (विचारणीय) है क्योंकि इमाम मुहम्मद जिन्होंने गुणों का लिहाज़ किया है, बू का एतबार नहीं करते, उनसे मशहूर रिवायत यही है।

पृष्ठ १२०/७५६

فتاوی رضویہ جلد سوم

[اوپر والا جدول] بایاں (عربی): وکلتاهما مطلقة عن التفصیل بین المنظف وغیرہ فای عتب علی من سوی بینهما تبعاً لامامی مذهبه وهما الأمران یقتدی بهما بعد الامام الاعظم رضی الله تعالی عنهم اجمعین والله تعالی اعلم۔ دایاں (اردو): غلبہ میں رقت کے خاتمہ کا اعتبار کرتے ہیں اور انہوں نے منظف و غیر منظف کے فرق کے بارے میں کچھ نہیں فرمایا، لہذا، اگر بقول دونوں معترضین حضرات، علامہ شرنبلالی، دونوں صورتوں کو امام ابو یوسف اور امام محمد رحمہما اللہ تعالیٰ کی اتباع میں مساوی قرار دیں تو کیا قباحت ہے جبکہ امام اعظم رضی اللہ عنہ کے بعد یہ دونوں امام ہی قابلِ اتباع ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت)

[اہم پیراگراف] بالجملہ قول مشہور و مسلکِ جمہور یہی ہے کہ طبخ میں وجہ منع زوالِ رقت ہے یہی ہے وہ کہ ہم نے ۲۱۷ میں تحقیق کیا والآن اقول: (اور اب میں کہتا ہوں ۔ ت) وباللہ التوفیق (۱) (اور اللہ کی توفیق سے۔ ت) اوپر معلوم ہوا کہ یہاں چار چیزیں ہیں: (۱) اجزاء (۲) اوصاف (۳) طبیعت (۴) اسم۔ اور اعتبارِ اجزاء تین وجہ پر ہے: مقدار، طبیعت، اسم۔ طبخ میں علت منع کثرتِ اجزا لینا تو محتمل نہیں کہ یہ کثرت ہوگی تو ابتدا سے نہ کہ بوجہ طبخ۔ یوں ہی تغیر لون و طعم و ریح۔ اوّلاً غالباً قبل حصول طبخ و نضج ہو جائے گا تو اسے بھی تغیر بالطبخ نہیں لے سکتے اور بعض جگہ کہ بعد تمامی طبخ ہوا اسے علت قرار دینے پر عام مطبوخات تغیر بالطبخ سے نکل جائیں گے کہ ان میں تغیر وصف طبخ سے نہ ہوا۔

ثانیاً: اس سب سے قطع نظر ہو تو اعتبارِ اوصاف مذہبِ صحیح معتمد کے خلاف ہے خود خانیہ میں اس کے خلاف کی تصحیح فرمائی، کما تقدم مشروحاً فی ۲۲۱۰۱ فهذا رد جدید (۲) علی ما فی البحر والنهر (۳) مستندین الی عبارة الخانیة الحکم علی وجود ریح الباقلاء و جامع (۴) الرموز المعتبر تغیر

اللون (جیسا کہ واضح طور پر پہلے ۱۰۱ اور ۱۲۲ میں گزرا۔ پس یہ بحر اور نہر کے اُس بیان کی نئی تردید ہے جو خانیہ کی عبارت کی طرف منسوب ہے جس میں حکم کی بنیاد باقلی کی بُو پر ہے نیز یہ جامع الرموز کی تردید ہے جس نے رنگ کی تبدیلی کا اعتبار کیا ہے۔ (ت)

[نیچے والا جدول] بایاں (عربی): ثم اعتبار (۵) الریح فیه نظر فان محمدا الناظر الی الاوصاف لم یعتبرها في المشهور عنه انما اعتبر اللون ثم الطعم دایاں (اردو): پھر تغیرِ اوصاف میں بُو کا اعتبار محل نظر ہے کیونکہ امام محمد جنہوں نے اوصاف کا لحاظ کیا ہے، بُو کا اعتبار نہیں کرتے ان سے مشہور روایت یہی ہے

Fatawa-e-Razvia, Volume 3

Then the parts [of the properties], as will be mentioned hereafter, God willing (1). Even if accepted, why limit it to them? They consider only color and then the taste of the components, as will come later, God willing. Even if the consideration of smell is accepted, why only that? (T)

Regarding the two: nature and name. Consideration of 'nature' is the aforementioned majority opinion, while Imam Zaila'i and Itqani mentioned the consideration of 'name'.

In *Al-Tabyin*: Wudu is not permissible with water changed by cooking because the name 'water' is removed from it, which is the standard in this chapter. And as stated in *Al-Hidayah*: If changed by cooking, it is not permissible because it no longer remains in the sense of 'revealed from the heavens' since the fire changed it. In *Ghayat al-Bayan*, the reason for the impermissibility of Wudu was stated as the removal of the 'name'. (T)

I say (Aqool): That consideration is not contrary to 'nature' because change by cooking definitely leads to the removal of the 'name'. However, there is a fine point here. I say (and from Him we seek help): It was mentioned above that in cooking (2), sometimes the water itself is not the objective; here, the removal of the 'name' will not occur without a change in nature, because it has not become something else for another purpose (because the thing did not become something else for another purpose. T). And sometimes it is the objective itself, in which there are three cases: First, the usual case where the water is in an appropriate amount or less; after cooking, it will change in both nature and name.

Note: Rather, in *Al-Hidayah* itself and also in *Al-Kafi* regarding cooking a cleaning agent: If it predominates, it is due to the removal of the 'name' of water from it. 12 [Extract from source] May He forgive him. (M)

Indeed, in *Hidayah* and *Kafi* it is also stated that the water in which a thing useful for cleanliness is cooked, and that thing becomes dominant, the name of the water will change. 12 [Extract from source] May He forgive him. (T)

---

1. Tabyin al-Haqa'iq, Book of Purification, Al-Amiriyah Press, Bulaq, Egypt, 1/19.
2. Al-Hidayah, Chapter on Water Permissible for Wudu etc., Arabic Press, Bulaq, Egypt, 1/18.

फ़तवा-ए-रज़विया, खंड 3

फिर घटक, जैसा कि इंशाअल्लाह आगे आएगा (1)। यदि स्वीकार कर भी लिया जाए, तो केवल उन्हीं तक सीमित क्यों? वे केवल रंग और फिर घटकों के स्वाद पर विचार करते हैं, जैसा कि इंशाअल्लाह आगे आएगा। और यदि गंध के विचार को भी स्वीकार कर लिया जाए, तो केवल उसी का विचार क्यों? (T)

बाकी रहे दो: प्रकृति और नाम। प्रकृति का विचार ही बहुमत का उक्त मत है, और इमाम ज़ैलई और इत्कानी ने नाम के विचार का उल्लेख किया है।

ततबीइन में है: पकाने से पानी में जो परिवर्तन आता है, उससे वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि ऐसी स्थिति में पानी का नाम समाप्त हो जाता है और पानी के परिवर्तन में उसके नाम का परिवर्तन ही मान्य है। और इसी प्रकार हिदाया के कथन के आधार पर जिसमें है कि यदि पकाने के कारण पानी में परिवर्तन आता है तो उससे वज़ू जायज़ नहीं होगा क्योंकि अब वह आसमानी पानी की गुणवत्ता पर नहीं रहा बल्कि आग ने उसे परिवर्तित कर दिया है। गायतुल बयान में वज़ू जायज़ न होने का कारण 'नाम का लुप्त होना' (ज़वाल-ए-इस्म) बताया गया है। (T)

मैं कहता हूँ (अकूल): वह प्रकृति के विचार के विपरीत नहीं है क्योंकि पकाने से होने वाला परिवर्तन निश्चित रूप से नाम के लुप्त होने का कारण बनता है। लेकिन यहाँ एक सूक्ष्म बिंदु और है। मैं कहता हूँ (और उसी से सहायता माँगता हूँ): ऊपर बताया गया कि पकाने (2) में कभी पानी उद्देश्य नहीं होता, तो यहाँ नाम का लुप्त होना प्रकृति के लुप्त हुए बिना नहीं होगा क्योंकि चीज़ किसी अन्य उद्देश्य के लिए दूसरी चीज़ नहीं बनी (क्योंकि चीज़ किसी अन्य उद्देश्य के लिए दूसरी चीज़ नहीं बनी। T)। और कभी वह स्वयं ही उद्देश्य होता है, इसमें तीन स्थितियाँ हैं: पहली: सामान्य स्थिति कि पानी उचित मात्रा में या उससे कम हो, यह पकाने के बाद प्रकृति और नाम दोनों में परिवर्तित हो जाएगा।

नोट: बल्कि स्वयं हिदाया और काफ़ी में भी है कि सफाई के लिए उपयोगी वस्तु के पकाने के मामले में: यदि वह प्रबल हो जाए, तो ऐसा पानी से 'नाम' के लुप्त होने के कारण है। 12 [स्रोत से] अल्लाह उसे क्षमा करे। (M)

वास्तव में स्वयं हिदाया और काफ़ी में भी है कि वह पानी जिसमें सफाई के लिए उपयोगी वस्तु पकाई गई हो और वह वस्तु प्रबल हो जाए, तो पानी का नाम बदल जाएगा। 12 [स्रोत से] अल्लाह उसे क्षमा करे। (T)

---

1. ततबीइनुल हक़ाइक, किताबुत तहारत, अल-अमीरिया प्रेस, बुलाक, मिस्र, 1/19।
2. अल-हिदाया, बाबुल माअल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू... अरबी प्रेस, बुलाक, मिस्र, 1/18।

ثم الاجزاء کما سیأتی ان شاء اللہ تعالی (۱) ولو سلم فلم القصر علیھا۔ کہ وہ صرف رنگ اور پھر ذائقہ اجزاء کا اعتبار کرتے ہیں جیسا کہ ان شاء اللہ آئندہ آئے گا، اور اگر بو کے اعتبار کو تسلیم بھی کرلیا جائے تو بھی صرف اسی کا اعتبار کیوں۔ (ت)

باقی رہے دو طبیعت واسم۔ اعتبار طبیعت تو وہی قول مذکور جمہور ہے اور امام زیلعی واتقانی نے اعتبار اسم ذکر فرمایا۔

ففی التبیین ماتغیر بالطبخ لایجوز الوضوء بہ لزوال اسم الماء عنہ وھو المعتبر فی الباب اھ ولما قال فی الھدایۃ ان تغیر بالطبخ لا یجوز لانہ لم یبق فی معنی المنزل من السماء اذا النار غیرتہ اھ علللہ فی غایۃ البیان بہ بزوال الاسم۔ تبیین میں ہے پکانے سے جو تغیر پانی میں پیدا ہوا اس سے وضو جائز نہیں ہے کیونکہ ایسی صورت میں پانی کا نام ختم ہوجاتا ہے اور پانی کی تبدیلی میں اس کے نام کی تبدیلی ہی معتبر ہے اھ اور یوں ہی ہدایہ کے قول کی بنیاد پر جس میں ہے کہ اگر پکانے کی وجہ سے پانی میں تغیر پیدا ہوا تو اس سے وضو جائز نہ ہوگا کیونکہ اب وہ آسمانی پانی کی کیفیت پر نہیں رہا بلکہ آگ نے اس کو متغیر کردیا ہے اھ غایۃ البیان میں وضو جائز نہ ہونے کی علت زوالِ اسم کو قرار دیا ہے۔ (ت)

اقول: وہ اعتبار طبیعت کے منافی نہیں کہ تغیر طبخ قطعاً موجب زوالِ اسم ہے مگر یہاں ایک دقیقہ اور ہے۔ فاقول: وبہ نستعین اوپر گزرا کہ طبخ (۲) میں کبھی پانی مقصود نہیں ہوتا تو یہاں زوالِ اسم بے زوالِ طبخ نہ ہوگا لعدم صیرورتہ شیئا اخر لمقصود آخر (کیونکہ چیز دیگر مقصد دیگر

کیلئے نہیں ہوئی۔ت) اور کبھی خود بھی مقصود ہوتا ہے اس میں تین صورتیں ہیں: ایک: معہود کہ پانی قدر مناسب یا اس سے کم ہو یہ بعد طبخ طبع واسم دونوں میں متغیر ہوجائے گا۔

عه بل فی نفس الهداية وايضا الكافي فيما طبخ المنظف فغلب عليه لزوال اسم الماء عنه ۱۲ منه غفر له۔ (م) بلکہ خود ہدایہ اور کافی میں بھی ہے کہ وہ پانی جس میں ایسی چیز جو نظافت کیلئے مفید ہو، کو پکایا اور وہ چیز غالب ہوجائے تو پانی کا نام تبدیل ہوجائے گا ۱۲منہ غفرلہ۔ (ت)

۱۔ تبیین الحقائق کتاب الطہارۃ الامیریہ ببولاق مصر ۱/۱۹ ۲۔ الهداية باب الماء الذی یجوز به الوضوء الخ مطبع عربیہ ببولاق مصر ۱/۱۸

Fatawa Razawiyya Volume Three Second: It should be so abundant that the mixed substance cannot act within it; thus neither its cooked state nor its name will change, because due to the excess, the ultimate desired purpose will not be achieved. Third: It should be extra but not to an excessive degree, such that it is possible that the cooking effect doesn't vanish but the name changes. For example, it might be said, "How much extra soup has been added," unlike the case where, for instance, a 'chhatank' (approx. 58 grams) of meat is cooked in a cauldron (1) full of water; no one would call it soup. The majority, considering the customary (habitual) loss, restricted it to the loss of cooked state. Some, to include non-customary cases, used the term 'change' (taghayyur), by which change of name is intended, not change of quality, which doesn't depend solely on cooking. We have already pointed this out on page 417 when reconciling their statement "when it cools, it thickens" and the statement of Al-Ghunya "mostly," and Allah Almighty knows best. (We have already alluded to this in 417 where the reconciliation between their statement "when it cools it thickens" and the statement of Ghunyah "mostly" was explained, and Allah Almighty knows best - Ed).

[Box Start] Arabic: I say: And through this, the difference between a cleaning agent and others becomes clear. For when the name (of water) ceases, prohibition (of its use for purification) occurs, but the name does not cease in a cleaning agent except by the actual loss of its cooked state, because nothing is intended by it except what is intended from water, which is cleaning. This is the ultimate investigation, and Allah, Glorified be He, is the Giver of success.

Urdu: I say that from this, the difference between a cleaning agent (i.e., cooking something meant for cleaning) and a non-cleaning agent became clear. Because when the name of water changes, Wudu (ablution) becomes prohibited, whereas in a cleaning agent, the name changes only when the cooking effect of water is actually lost. This is because both pure water and cleaning agents aim at achieving cleanliness. This is the complete investigation, and Allah Almighty is the Owner of guidance (success). (Ed) [Box End]

In summary, the result of critique and refinement is that if the discourse (2) is specific to customary cooking, then the basis is on the loss of cooked state, and this is what general reliable books have adopted. In that case, the difference in a cleaning agent will be that in a non-cleaning agent, potential loss is sufficient, meaning it becomes thick/solid upon cooling. In a cleaning agent like soap and alkali saltwort (ushnan), actual loss is required. If we include both customary and non-customary, then the

basis is on the loss of name, whether it is found within the loss of cooked state when water is not intended, or solely because the thing has become for another purpose, as in non-customary cooking when the excess is not extreme, or within both where customary cooking and water are intended; at that time, instead of loss of cooked state, they will use the term 'change' (taghayyur). The keen-sighted Imam Hafiz-ud-Din Nasafi adopted this view in 'Al-Wafi' and 'Al-Kanz', and 'Nuqaya', 'Islah', 'Tabyin', and 'Ghaya-ul-Bayan' followed him. Now, the difference between a cleaning agent and a non-cleaning agent will be that in a non-cleaning agent, sometimes the name is lost despite the persistence of thinness (liquidity), unlike a cleaning agent. Its examples in non-cooked items are many, such as date-wine (nabidh), dye, ink, and other numerous issues. This is what, by the grace of Allah Almighty, has reconciled all the words of the Imams. Praise be to Allah eternally, and upon His Prophet and his household.

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन दूसरा: यह इतनी अधिक और प्रचुर मात्रा में हो कि मिश्रित वस्तु उसमें अपना प्रभाव न डाल सके जिससे न तो उसका पका हुआ गुण बदले और न ही उसका नाम, क्योंकि अत्यधिकता के कारण अंततः वांछित उद्देश्य सफल नहीं होगा। तीसरा: अतिरिक्त हो लेकिन इतनी अधिक मात्रा में नहीं, जिसमें यह संभव हो कि पके हुए गुण का लोप न हो और नाम बदल जाए। उदाहरण के लिए, कहा जाए, "कितना अधिक शोरबा डाल दिया गया है," इसके विपरीत उस स्थिति में जहाँ, उदाहरण के लिए, एक देगची (1) भर पानी में एक छटांक मांस पकाया जाए; उसे कोई शोरबा नहीं कहेगा। बहुसंख्यकों ने प्रथागत लोप को ध्यान में रखते हुए इसे पकाए जाने के गुण के लोप तक सीमित रखा, और उनमें से कुछ ने गैर-प्रथागत को शामिल करने के लिए 'परिवर्तन' (तग़य्युर) शब्द का उपयोग किया, जिससे नाम का परिवर्तन उद्देश्य है, न कि गुण का परिवर्तन जो केवल पकाने पर निर्भर नहीं है। हमने पृष्ठ 417 में इस ओर इशारा किया है जहाँ उनके कथन "जब ठंडा होता है तो गाढ़ा हो जाता है" और 'अल-ग़ुनिया' के कथन "अक्सर" के बीच सामंजस्य बिठाया गया है, और अल्लाह बेहतर जानता है। (हमने 417 में इस ओर संकेत किया है जहाँ उनके कथन "जब ठंडा होता है तो गाढ़ा हो जाता है" और ग़ुनिया के कथन "अक्सर" में सामंजस्य वर्णित किया गया है, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है - सं)।

[बॉक्स प्रारंभ] अरबी: मैं कहता हूँ: और इससे सफाई करने वाले कारक (क्लीनिंग एजेंट) और अन्य के बीच का अंतर स्पष्ट हो गया। क्योंकि जब नाम (पानी का) समाप्त हो जाता है, तो निषेध (पवित्रता के लिए उपयोग पर) उत्पन्न होता है, लेकिन सफाई एजेंट में नाम तब तक समाप्त नहीं होता जब तक कि पका हुआ गुण वास्तव में समाप्त न हो जाए, क्योंकि इससे सफाई के अलावा कुछ और उद्देश्य नहीं है जो पानी से होता है। यह परम शोध है, और अल्लाह, जो पवित्र है, सफलता देने वाला है।

उर्दू: मैं कहता हूँ कि इसी से मुनज़्ज़िफ़ (यानी सफाई वाली चीज़ को पकाना) और गैर-मुनज़्ज़िफ़ के बीच का अंतर स्पष्ट हो गया, क्योंकि पानी का नाम बदल जाने पर वज़ू वर्जित हो जाता है, जबकि मुनज़्ज़िफ़ में नाम का परिवर्तन उसी स्थिति में होता है जब वास्तव में पानी का पका हुआ गुण समाप्त हो जाए, क्योंकि शुद्ध पानी और मुनज़्ज़िफ़ दोनों का उद्देश्य स्वच्छता प्राप्त करना है। यह पूर्ण शोध है, अल्लाह ही सफलता का स्वामी है (सं)। [बॉक्स अंत]

संक्षेप में, आलोचना और शोध का परिणाम यह है कि यदि प्रवचन (2) प्रथागत पकाने से विशिष्ट है, तो आधार पके हुए गुण के लोप पर है, और यही वह है जिसे सामान्य विश्वसनीय पुस्तकों ने अपनाया है। उस स्थिति में, मुनज़्ज़िफ़ में अंतर यह होगा कि गैर-मुनज़्ज़िफ़ में संभावित लोप पर्याप्त है, यानी ठंडा

होने पर वह जम जाए, और मुनज़्ज़िफ़ जैसे साबुन और उशनान (एक प्रकार का क्षार) में वास्तविक लोप आवश्यक है। और यदि प्रथागत और गैर-प्रथागत दोनों को शामिल करें, तो आधार नाम के लोप पर है, चाहे वह केवल पके हुए गुण के लोप के अंतर्गत पाया जाए जब पानी उद्देश्य न हो, या केवल इसलिए कि वस्तु किसी अन्य उद्देश्य के लिए हो गई हो, जैसा कि गैर-प्रथागत पकाने में जब अधिकता अत्यधिक न हो, या दोनों के अंतर्गत जहाँ प्रथागत पकाना और पानी उद्देश्य हो; उस समय पके हुए गुण के लोप के बजाय 'परिवर्तन' (तग़य्युर) कहेंगे। सूक्ष्मदर्शी इमाम हाफ़िज़ुद्दीन नसफ़ी ने 'अल-वाफ़ी' और 'अल-कंज़' में यही मत अपनाया, और 'नुक़ाया', 'इस्लाह', 'तबीन' और 'ग़ायत-उल-बयान' ने उनका अनुसरण किया। अब मुनज़्ज़िफ़ और गैर-मुनज़्ज़िफ़ में अंतर यह होगा कि गैर-मुनज़्ज़िफ़ में कभी-कभी तरलता बने रहने के बावजूद नाम का लोप हो जाता है, मुनज़्ज़िफ़ के विपरीत। पके हुए न होने वाली वस्तुओं में इसके उदाहरण प्रचुर हैं जैसे नबीज़ (खजूर का शरबत), रंग, स्याही और अन्य कई मुद्दे। यह वही है जिससे अल्लाह के अनुग्रह से इमामों के सभी शब्द परस्पर मिल गए हैं। अल्लाह की सदैव स्तुति हो, और उसके नबी और उनके परिजनों पर।

पृष्ठ 122 का 756

فتاوی رضویہ جلد سوم دوم: اس درجہ کثیر و وافر ہو کہ شئے مخلوط اس میں عمل نہ کر سکے اس سے نہ طبخ بدلے گی نہ اسم کہ بوجہ افراط صالح مقصود آخر نہ ہوگا۔ سوم: زائد ہو مگر نہ اس درجہ مفرط اس میں محتمل کہ زوال طبخ نہ ہو اور نام بدل جائے مثلاً کہا جائے شور با کس قدر زائد کردیا ہے بخلاف اس صورت کے کہ مثلاً دیگچہ (۱) بھر پانی میں چھٹانک بھر گوشت پکائیں اسے کوئی شور با نہ کہے گا جمہور نے بلحاظ معہود زوال طبخ پر اقتصار فرمایا اور ان بعض نے شمول غیر معہود کیلئے بلظ تغیر تعبیر فرمایا جس سے تغیر اسم مقصود ہے نہ تغیر وصف کہ طبخ پر موقوف نہیں وقد اشرنا الی ھذا فی ۴۱۷ عند التوفیق بین قولھم اذا برد ثخن و قول الغنیۃ غالباً واللہ تعالٰی اعلم (ہم نے ۴۱۷ میں اس کی طرف اشارہ کرچکے ہیں جہاں پر ان کے قول "اذا برد ثخن" اور غنیہ کے قول "غالباً" میں توفیق بیان کی، واللہ تعالٰی اعلم-ت)

[Box Start] اقول: و بہ ظھر الفرق بین المنظف وغیرہ فانہ اذا زال الاسم حصل المنع ولا یزول الاسم فی المنظف الابزوال الطبخ بالفعل لانہ لا یقصد بہ الا ما یقصد من الماء وھو التنظیف فھذا غایۃ التحقیق واللہ سبحانہ ولی التوفیق۔

میں کہتا ہوں اسی سے منظف (یعنی نظافت والی چیز کو پکانے) اور غیر منظف کا فرق واضح ہوا، کیونکہ پانی کا نام بدل جانے پر وضو منع ہو جاتا ہے جبکہ منظف میں نام کی تبدیلی اسی صورت میں ہوتی ہے جب بالفعل پانی کی طبخ ختم ہو جائے، کیونکہ خالص پانی اور منظف دونوں کا مقصد نظافت کا حصول ہے، یہ کامل تحقیق ہے اللہ تعالی ہی توفیق کا مالک ہے (ت) [Box End]

بالجملہ حاصل تنقید و تنقیح یہ ہے کہ اگر کلام (۲) طبخ معہود سے خاص ہو تو مدار زوال طبخ پر ہے اور یہی ہے وہ جسے عامہ کتب معتمدہ نے اختیار کیا اور اس وقت منظف میں فرق یہ ہوگا کہ

غیر منظف میں زوال بالقوۃ کافی ہے یعنی ٹھنڈی ہونے پر جرم دار ہو جائے اور منظف مثل صابون واشنان میں زوال بالفعل درکار اور اگر معھود و غیر معھود سب کو شامل کریں تو مدار زوال اسم پر ہے خواہ صرف زوال طبخ کے ضمن میں پایا جائے جبکہ پانی مقصود نہ ہو یا صرف چیز دیگر مقصد دیگر کیلئے ہو جانے کے ضمن میں جیسے طبخ غیر معھود میں جبکہ زیادت مفرط نہ ہو خواہ دونوں کے ضمن میں جہاں طبخ معھود اور پانی مقصود اس وقت بجائے زوال طبخ تغیر کہیں گے امام دقیق النظر حافظ الدین نسفی نے وافی و کنز میں یہی مسلک لیا اور نقایہ و اصلاح و تبیین و غایہ البیان نے ان کا اتباع کیا اب منظف و غیر منظف میں فرق یہ ہوگا کہ غیر منظف میں کبھی باوصف بقائے رقت زوال اسم ہو جاتا ہے بخلاف منظف۔ اس کی نظیریں غیر مطبوخ میں کثیر ہیں جیسے نبیذ و صبغ و مداد و غیر ہا مسائل کثیرہ۔ یہ ہے وہ جس سے بتوفیقہ تعالیٰ تمام کلمات ائمہ ملتئم ہو گئے واللہ الحمد علی الدوام * وعلی نبیہ وذویہ

Salutations and peace. Up to here nine discussions have taken place, add one more that 'these are ten complete' (tilka 'asharatun kamilah).

Tenth discussion: A primary look at the statements of the foundational texts (mutūn). We have already established in Section Two that there are only four, or rather three, reasons why pure, unused water becomes inherently unsuitable for ablution (wudu): (1) Abundance of mixing components, which legally includes the second case of equality. (2) Loss of fluidity, such that it becomes substantial. (3) Loss of name, by which is meant its specific form here such that it becomes something else for another purpose. Furthermore, in the second discussion of the current section regarding preponderance, it was mentioned that the preponderance of components, which is the school of Imam Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him), applies to all three of these situations. In short, the definition of absolute water (mā' al-mutlaq) that we have researched and refined, and the school of Imam Abu Yusuf which is the authentic, correct, and reliable one, match word for word, praise be to Allah.

Now, if you look at the foundational texts (mutūn), they also do not go beyond these three reasons; they establish them as the cause for prohibition even if they do not encompass all of them. And this is nothing new; not only the 'mutūn', which are formulated for brevity, but even the commentaries (shurūh), whose very purpose is detail and completion, often do not cover all scenarios in hundreds of places. Some are explicit, some are allusive—understood through indication, connotation, requirement, or context—and sometimes some are entirely omitted, as is not hidden from those who serve their words. And this is one of the greatest aspects of difficulty in understanding jurisprudence (fiqh), and Allah is the Facilitator of every difficulty, and there is no power nor might except with Allah, the Most High, the Magnificent. (As this matter is not hidden from those who work on the writings of authors; this is a difficult stage in understanding fiqh, and Allah Almighty makes every difficulty easy, there is no power nor might except with Allah, the Most High, the Magnificent. - Translator). Here, most foundational texts only mentioned the second reason, i.e., the loss of original state through cooking. Quduri and Hidaya did not provide details in their text, though they hinted at the scenario of cooking through examples. Wiqayah, Ghurar, and Nur al-Idah detailed it into two reasons: cooking and the preponderance of another substance. Multaqa added a third specific reason: abundance of leaves. Then they all kept the 'preponderance of another substance' absolute, except for the

first who restricted it with components. I say, and this intention should be in Multaqa, otherwise an abundance of leaves is also just a preponderance of another substance. In any case, abundance of components and loss of name, in which the loss is not due to cooking, were not mentioned in those six (2). Hidaya hinted at them in its commentary; at the first with these words: 'A small mixture is not considered, only the dominant is considered, and dominance is by components'^1 (A small mixture is not taken into account, only the dominant one is, and in dominance, the components are considered. - T). The second is subtly hinted at with the phrase 'if it changes by cooking'.

---

^1 Al-Hidayah, Chapter: Water with which Wudu is permissible, Matba' Arabiyya, Karachi, 1/18. Page 123 of 756

दरूद ओ सलाम। यहाँ तक नौ बहसें हुईं, एक और जोड़ें कि 'ये दस पूर्ण हैं' (तिल्का अशरतुल कामिलाह)।

दसवीं बहस: मूल ग्रंथों (मुतून) के कथनों पर एक प्राथमिक नज़र। हम अध्याय दो में यह साबित कर चुके हैं कि शुद्ध, अप्रयुक्त जल के स्वयं वुज़ू के लिए अनुपयुक्त हो जाने के केवल चार, बल्कि तीन ही कारण हैं: (1) मिश्रित घटकों की अधिकता, जिसमें कानूनी रूप से समानता की दूसरी स्थिति भी शामिल है। (2) तरलता की समाप्ति, कि वह ठोस/गाढ़ा हो जाए। (3) नाम की समाप्ति, जिससे यहाँ उसका वह विशेष स्वरूप अभिप्रेत है कि किसी अन्य उद्देश्य के लिए वह कुछ और बन जाए। इसके अलावा, वर्तमान अध्याय की दूसरी बहस में प्रबलता के विषयों में यह गुज़रा कि घटकों की प्रबलता, जो कि इमाम यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) का मत है, इन तीनों स्थितियों पर लागू होता है। संक्षेप में, 'मुतलक़ पानी' (पूर्ण जल) की जो परिभाषा हमने शोध और परिष्कृत की है और इमाम अबू यूसुफ़ का मत जो कि सही, प्रमाणित और विश्वसनीय है, शब्द-दर-शब्द मेल खाते हैं, अल्लाह का शुक्र है।

अब यदि आप मूल ग्रंथों (मुतून) को देखें, तो वे भी इन तीन कारणों से बाहर नहीं हैं; वे ही इन्हें निषेध का कारण ठहराते हैं, भले ही वे सबका समावेश न करते हों। और यह कोई नई बात नहीं है; न केवल 'मुतून', जिनकी रचना संक्षिप्तता पर आधारित है, बल्कि टीकाओं (शुरूह) में भी जिनका काम ही विस्तार और पूर्णता है, सैकड़ों स्थानों पर सभी स्थितियों का घेराव नहीं होता। कुछ का स्पष्ट उल्लेख है, कुछ का संकेत है कि वे संकेत, अर्थ, आवश्यकता या संदर्भ से समझ में आ जाएँ और कभी-कभी कुछ पूरी तरह से छोड़ दिए जाते हैं जैसा कि उन लोगों से छिपा नहीं है जो उनके शब्दों की सेवा करते हैं। और यह फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) को समझने में कठिनाई के सबसे बड़े पहलुओं में से एक है, और अल्लाह हर कठिन काम को आसान करने वाला है, और अल्लाह के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है जो सर्वोच्च और महान है। (जैसा कि यह बात उन लोगों से छिपी नहीं है जो लेखकों की इबारतों पर काम करते हैं; फ़िक़्ह को समझने में यह एक कठिन चरण है, और अल्लाह तआला हर मुश्किल को आसान कर देता है, अल्लाह के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है जो सर्वोच्च और महान है। - अनुवादक)। यहाँ अधिकांश मुतून ने केवल दूसरे कारण यानी पकाने से होने वाले बदलाव का ज़िक्र किया है। क़ुदूरी और हिदाया ने इबारत में इसका कुछ विस्तार नहीं बताया, हाँ उदाहरणों से पकाने आदि की स्थिति की ओर इशारा किया। विक़ाया, ग़ुरर और नूरुल ईज़ाह ने इसे दो कारणों में विस्तार से बताया: पकाना और अन्य पदार्थ की प्रबलता। मुल्तका ने तीसरा आंशिक कारण और

जोड़ा: पत्तों की अधिकता। फिर 'अन्य पदार्थ की प्रबलता' को उन सभी ने मुतलक़ (निरपेक्ष) रखा, सिवाय पहले के जिन्होंने इसे घटकों के साथ सीमित किया। मैं कहता हूँ, और मुल्तका में भी यही इरादा होना चाहिए, अन्यथा पत्तों की अधिकता भी अन्य पदार्थ की प्रबलता ही है। बहरहाल, घटकों की अधिकता और नाम की समाप्ति जिनमें बदलाव पकाने के कारण न हो, उन छह (2) में वर्णित नहीं हुए। हिदाया ने व्याख्या में उनकी ओर संकेत किया; पहले की ओर इन शब्दों के साथ: 'थोड़ी मिलावट मान्य नहीं है, केवल प्रबल का विचार होता है और प्रबलता घटकों के आधार पर होती है'^1 (थोड़ी मिलावट का एतबार नहीं, केवल ग़ालिब का एतबार होता है और ग़लबे में अज्ज़ा का लिहाज़ होता है। - अनु.)। दूसरे का इशारा गुप्त रूप से इस इबारत से है 'यदि पकाने से बदल जाए'।

---

^1 अल-हिदाया, अध्याय: वह पानी जिससे वुज़ू जायज़ है, मतबा अरबिया, कराची, 1/18। पृष्ठ 123/756

الصلاۃ والسلام۔ یہاں تک نو بحثیں ہوئیں، ایک اور اضافہ کریں کہ تلک عشرۃ کاملۃ ہوں۔ بحث دہم ارشادات متون پر نظر اول ہم فصل دوم میں ثابت کر آئے کہ مائے طاہر غیر مستعمل کے فی نفسہ نا قابل وضو ہو جانے کے چار بلا بلکہ تین ہی سبب ہیں: (۱) کثرت اجزائے مخالط جس میں حکماً دوسری صورت مساوات بھی داخل۔ (۲) زوال رقت کہ جرم دار ہوجائے۔ (۳) زوال اسم جس سے یہاں اُس کی وہ خاص صورت مراد کہ مقصد دیگر کیلئے چیز دیگر ہو جائے۔ نیز فصل حاضر کی بحث دوم ابحاث غلبہ میں گزرا کہ غلبہ اجزاء کہ مذہب امام یوسف رحمہ اللہ تعالٰی ہے ان تینوں صورتوں پر بولا جاتا ہے بالجملہ مائے مطلق کی تعریف جو ہم نے محقق و منقح کی اور امام ابو یوسف کا مذہب کہ وہی صحیح صحیح و معتمد ہے حرف بحرف مطابق ہیں وللہ الحمد۔

اب متون کو دیکھئے تو وہ بھی ان تین سبب سے باہر نہیں انہیں کو وجہ منع ٹھہراتے ہیں اگر سب کا استیعاب نہیں فرماتے اور یہ کچھ نئی بات نہیں متون (۱) نہ متون جن کی وضع اختصار پر ہے بلا بلکہ شروح میں بھی جن کا کام ہی تفصیل و تکمیل ہے صدہا جگہ احاطہ صور نہیں ہوتا۔ بعض کی تصریح بعض کی تلویح کہ اشارت دلالت اقتضاء فحوی سے مفہوم ہوں اور کبھی بعض یکسر مطوی کما لا یخفی علی من خدم کلماتھم وھذا من اعظم وجوہ العسر في ادراك الفقه والله الميسر لكل عسير ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم (جیسا کہ یہ بات ان لوگوں پر مخفی نہیں جو مصنفین کی عبارات پر کام کرتے ہیں، فقہ کے ادراک میں یہ مشکل مرحلہ ہے، اور اللہ تعالٰی ہر مشکل کو آسان فرماتا ہے لا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ ت) یہاں اکثر متون نے صرف سبب دوم یعنی زوال طبخ کا ذکر فرمایا قدوری و ہدایہ نے عبارت میں اس کی کچھ تفصیل نہ فرمائی ہاں مثالوں سے صورت طبخ وغیرہ کی طرف اشارہ کیا وقایہ و غرر و نور الایضاح نے اُسے دو سببوں کی

طرف مفصل کیا طبخ و غلبہ غیر اور ملتقی نے تیسرا سبب جزئی اور اضافہ کیا کثرت اوراق۔ پھر غلبہ غیر کو ان سب نے مطلق رکھا مگر اول نے کہ اجزا سے مقید کیا۔ اقول اور اس کا ارادہ ملتقی میں چاہئے ورنہ کثرت اوراق بھی غلبہ غیر ہی ہے بہر حال کثرت اجزاء و زوال اسم جن میں زوال طبخ نہ ہو ان چھ (۲) میں مذکور نہ ہوئے ہدایہ نے شرح میں ان کا اشعار فرمایا اول کا ان لفظوں سے الخلط القلیل لا معتبر به فیتعبر الغالب والغلبة بالاجزاء [۱۸] (قلیل ملاوٹ کا اعتبار نہیں صرف غالب کا اعتبار ہوتا ہے اور غلبہ میں اجزاء کا لحاظ ہوتا ہے۔ ت) دوم کا اشارہ خفیہ اس عبارت سے ان تغیر بالطبخ

---

[۱۸] الهداية باب الماء الذی یجوز به الوضوء مطبع عربیہ کراچی ۱/۱۸ Page 123 of 756

Volume 3 Fatawa-e-Razvia

It is not permissible if the fire has changed it, except if something intended for cleaning is cooked in it.[1] (If the change occurred due to cooking, then ablution [wudu] will not be valid because change was produced by fire. However, if the water is cooked by mixing something with the intention of cleaning, then it is permissible. – Translator) This is an indication towards the purpose, as its explanation has just passed. – Translator. So the discourse of Al-Hidayah encompasses the three causes. Wafi and Kanz mentioned two causes: abundance of ingredients and loss of nature.

I say: And by explaining it in detail through the abundance of leaves and cooking, he hinted that the loss of nature occurs through cooking whether without cooking or with it. And if we take 'change' generally for both change of nature and change of purpose, and place only the first in the abundance of leaves and both in cooking, then some forms will also hint towards the third cause, i.e., the loss of name. Islah took the last two causes: loss of nature and loss of name. I say: but both of them restricted themselves to only some forms, in that they restricted the first with predominance of parts and the second with cooking. In Niqayah, if change is in the meaning of loss of nature, then it is like its original Wiqayah. And if they take the meaning of loss of name, and this is more appropriate, then like Islah, two causes were mentioned. I say: and in any case, regarding the first cause, it is more correct than Wiqayah and Islah that he did not restrict it with predominance of parts.

(Arabic) I say: (1) But there is a strong objection in this, because through the general ruling and exception, the cause for prohibition is confined to what he mentioned. (2) And it is surprising that the two learned commentators did not notice this.

(Arabic) I say: And a response to the first cause is possible in that his words indicate that the mixed substance is of fewer parts, as we have already mentioned in the second discussion of the loss of nature that mixing is attributed to the smaller of the two

(Urdu) I say: But there is an objection in this because, due to the general ruling and exception, the cause for prohibition will only be what he mentioned. And it is surprising that the attention of both learned commentators did not go towards this. (Translator)

(Urdu) I say: And a response to the first cause is possible in that his words indicate that the mixed substance in the water has fewer parts, as we have already mentioned in the second discussion from the discussions on the loss of nature that mixing is attributed to the substance with

(Arabic) I say: (1) But there is a strong objection in this, because through the general ruling and exception, the cause for prohibition is confined to what he mentioned. (2) And it is surprising that the two learned commentators did not notice this.

mixtures. So it is as if he said: ablution is done with it even if something with fewer parts than it is mixed with it, unless it removes it from its thinness (original state).

(Urdu) I say: But there is an objection in this because, due to the general ruling and exception, the cause for prohibition will only be what he mentioned. And it is surprising that the attention of both learned commentators did not go towards this. (Translator)

fewer parts. So, now his discourse means that ablution will be performed with that water in which a substance with fewer parts is mixed, unless it removes it from its thinness (original consistency).

[1] Al-Hidayah, Chapter on Water Permissible for Ablution, Arabic Press Karachi, 1/18

जिल्द 3 फ़तावा-ए-रज़विया

यह जायज़ नहीं है यदि आग ने इसे बदल दिया है, सिवाय इसके कि सफाई के उद्देश्य से इसमें कुछ पकाया गया हो।[1] (यदि परिवर्तन पकाने के कारण हुआ है, तो वज़ू जायज़ नहीं होगा क्योंकि आग से परिवर्तन उत्पन्न हो गया है। लेकिन अगर पानी को सफाई के इरादे से किसी चीज़ को मिलाकर पकाया जाए, तो यह जायज़ है। – अनुवादक) यह उद्देश्य की ओर इशारा है जैसा कि अभी इसकी व्याख्या गुज़री है। – अनुवादक। तो अल-हिदाया का कलाम तीनों कारणों को शामिल करता है। वाफी और कंज़ ने दो कारण बताए: भागों की अधिकता और स्वभाव का बदलना (ज़वाल-ए-तबा)।

मैं कहता हूँ: और इसे पत्तियों की अधिकता और पकाने के माध्यम से विस्तार से समझाकर उन्होंने संकेत दिया कि स्वभाव का बदलना पकाने से होता है, चाहे बिना पकाए हो या पकाकर। और यदि हम 'परिवर्तन' को स्वभाव के परिवर्तन और उद्देश्यों के परिवर्तन दोनों के लिए सामान्य रूप से लें, और पत्तियों की अधिकता में केवल पहले को और पकाने में दोनों को रखें, तो कुछ स्थितियाँ तीसरे कारण की ओर भी इशारा करेंगी, अर्थात नाम का मिट जाना। इस्लाह ने अंतिम दो कारणों को लिया: स्वभाव का बदलना और नाम का मिटना। मैं कहता हूँ: लेकिन दोनों ने केवल कुछ स्थितियों तक ही सीमित रखा कि उन्होंने पहले को भागों की प्रधानता और दूसरे को पकाने के साथ प्रतिबंधित कर दिया। नक़ाया में यदि परिवर्तन स्वभाव के बदलने के अर्थ में है, तो यह अपनी मूल वक़ाया की तरह है। और यदि वे नाम के मिटने का अर्थ लेते हैं, और यही अधिक उपयुक्त है, तो इस्लाह की तरह दो कारणों का उल्लेख किया गया। मैं कहता हूँ: और किसी भी स्थिति में, पहले कारण के बारे में वक़ाया और इस्लाह से अधिक सही यह है कि उन्होंने इसे भागों की प्रधानता के साथ प्रतिबंधित नहीं किया।

(अरबी) मैं कहता हूँ: (1) लेकिन इसमें एक मजबूत आपत्ति है क्योंकि सामान्य नियम और अपवाद के कारण निषेध का कारण केवल वही होगा जिसका उन्होंने उल्लेख किया है। (2) और आश्चर्य है कि दोनों विद्वान व्याख्याकारों का ध्यान इस ओर नहीं गया।

(अरबी) मैं कहता हूँ: और पहले कारण का उत्तर इस तरह संभव है कि उनके शब्दों से यह संकेत

(उर्दू) मैं कहता हूँ: लेकिन इसमें एक आपत्ति है क्योंकि सामान्य नियम और अपवाद के कारण निषेध का कारण केवल वही होगा जिसका उन्होंने उल्लेख किया है। और आश्चर्य है कि दोनों विद्वान व्याख्याकारों का ध्यान इस ओर नहीं गया। (अनुवादक)

(उर्दू) मैं कहता हूँ: और पहले कारण का उत्तर इस तरह संभव है कि उनके शब्दों से यह संकेत

(अरबी) मैं कहता हूँ: (1) लेकिन इसमें एक मजबूत आपत्ति है क्योंकि सामान्य नियम और अपवाद के कारण निषेध का कारण केवल वही होगा जिसका उन्होंने उल्लेख किया है। (2) और आश्चर्य है कि दोनों विद्वान व्याख्याकारों का ध्यान इस ओर नहीं गया।

मिलता है कि मिश्रित वस्तु के भाग कम हैं, जैसा कि हम स्वभाव के बदलने की चर्चाओं में से दूसरी चर्चा में उल्लेख कर चुके हैं कि मिश्रण को दो मिश्रणों में से कम वाले की ओर श्रेय दिया जाता है। तो ऐसा है जैसे उन्होंने कहा: उससे वज़ू किया जाएगा भले ही उसमें उससे कम भागों वाली कोई चीज़ मिली हो, जब तक कि वह उसे उसके पतलेपन (मूल स्थिति) से न निकाल दे।

(उर्दू) मैं कहता हूँ: लेकिन इसमें एक आपत्ति है क्योंकि सामान्य नियम और अपवाद के कारण निषेध का कारण केवल वही होगा जिसका उन्होंने उल्लेख किया है। और आश्चर्य है कि दोनों विद्वान व्याख्याकारों का ध्यान इस ओर नहीं गया। (अनुवादक)

मिलता है कि पानी में मिश्रित वस्तु के भाग कम हैं, जैसा कि हम स्वभाव के बदलने की चर्चाओं में से दूसरी चर्चा में उल्लेख कर चुके हैं कि मिश्रण को कम भागों वाली वस्तु की ओर श्रेय दिया जाता है। तो, अब उनका कथन ऐसा है कि उस पानी से वज़ू किया जाएगा जिसमें कम भागों वाली वस्तु मिली हो, सिवाय इसके कि वह उसे उसके पतलेपन (तरलता) से निकाल दे।

[1] अल-हिदाया, वज़ू के लिए जायज़ पानी का अध्याय, अरबी प्रेस कराची, 1/18 पेज 124 / 756

لا یجوز اذ النار غیرتہ الا اذا طبخ فیہ مایکصد بہ النظافۃ 1 (اگر تغیر پکانے کی وجہ سے ہوا تو وضو جائز نہ ہوگا کیونکہ آگ سے تغیر پیدا ہو گیا ہے لیکن اگر ایسی چیز ملا کر پانی کو پکایا جائے جس سے نظافت مقصود ہو تو پھر جائز ہے۔ ت) یہ اعتبار مقصد کی طرف ایما ہے کما تقدم الآن تقریرہ (جیسا کہ اس کی تقریر اب گزری ہے۔ ت) تو کلام ہدایہ جامع اسباب ثلثہ ہوا وانی وکنز نے دو سبب ذکر فرمائے کثرتِ اجزاء و زوالِ طبع۔

اقول: اور اسے کثرتِ اوراق و طبخ سے مفصل فرما کر اشارہ کیا کہ زوالِ طبع طبخ سے ہو خواہ بلا طبخ، اور اگر تغیر کو تغیرِ طبع و مقاصد دونوں کو عام لے کر کثرتِ اوراق میں صرف اول اور طبخ میں دونوں رکھیں تو بعض صور سبب سوم یعنی زوال اسم کی طرف بھی اشارہ ہو گا اصلاح نے دو سبب اخیر لیے زوالِ طبع و اسم اقول مگر دونوں کی صرف بعض صور پر اقتصار کیا کہ اول کو غلبہ اجزاء اور دوم کو طبخ سے مقید کر دیا، نقایہ میں اگر تغیر بمعنی زوالِ طبع ہو تو اپنی اصل وقایہ کی طرح ہے اور بمعنی زوال اسم لیں اور یہی انسب ہے تو مثل اصلاح دو سببوں کا ذکر ہوا اقول اور بہر حال سبب اول میں وقایہ و اصلاح سے اصح کہ غلبہ اجزاء سے مقید نہ فرمایا۔

اقول: (۱) لکن فیہ اشکال قوی فان استثناء کی وجہ سے منع کا سبب صرف اس کا ذکر کردہ ہی سبب المنع فیما ذکر (۲) والعجب ان ہوگا، اور تعجب ہے کہ دونوں فاضل شارح حضرات کی توجہ لم یتنبہ لہ الشارحان الفاضلان۔ اس طرف نہ ہوئی۔ (ت)

اقول: ویمکن الجواب عن السبب الاول بان کلامہ مشعر بکون المخالط اقل اجزاء لما قدمنا فی ثانی ابحاث زوال الطبع ان الاختلاط ینسب الی اقل الخلیطین فکانہ قال یتوضؤ بہ وان خالطہ ماھو اقل اجزاء منہ الا اذا اخرجہ عن رقتہ

میں کہتا ہوں، اور پہلے سبب کا جواب یوں ممکن ہے کہ اس کے کلام سے یہ اشارہ ملتا ہے کہ پانی میں ملائی ہوئی چیز کے اجزاء کم ہوں، جیسا کہ ہم زوال طبع کی ابحاث میں سے دوسری بحث میں ذکر کر چکے ہیں کہ اختلاط کو کم اجزاء والی چیز کی طرف منسوب کیا جاتا ہے، گویا اب اس کا کلام یوں ہوا کہ اس پانی سے وضو کیا جائے گا جس میں کم اجزاء والی چیز ملی ہو سوائے اس کے کہ وہ اسے اس کی رقت (پتلے پن) سے نکال دے۔

1 الہدایہ باب الماء الذی یجوز بہ الوضو مطبع عربیہ کراچی ۱/۱۸ صفحہ 124 از 756

...or [it] changed its name by cooking, yet it remains [valid for wudu]. This was restricted to the third case in the form of cooking, unless it is said that he pointed towards other [cases] by implication. Indeed, that which changes its name without the aid of fire is stronger than that which is only removed by the treatment of fire. Thus, it is as if he said, '...or its name changes even by cooking,' let alone what changes by itself. Through this explanation, it comes to point towards all three causes, making it one of the best expressions. This is the ultimate justification that appeared to me regarding its explanation, and Allah Almighty knows best. (T)

It is permissible to perform ablution with this water even if the parts of the substance mixed in it are few. However, when this substance finishes the fluidity of the water or changes its name through cooking, then ablution will be impermissible. But an objection remained from this answer: that the third cause (change of name) was specified only for the case of cooking. Yes, if it is said that they have pointed towards the second form by implication, because when the name changes without fire, this form will be more powerful than the form where change can only come from fire. It is as if they said: whether it changes the name of the water due to cooking, or let alone a case arises where the name changes automatically without cooking. By this explanation, its purification will point towards all three causes, so now this will be considered the best phrasing. This is the extreme justification of this phrase. And Allah Almighty knows best. (T)

In 'Tanwir', although the loss of nature (zawal-e-tab'a) was restricted by cooking, the dominance of 'the other' was kept absolute, from which it is clear that dominance is by the abundance of parts. Thus, the first cause and some forms of the second cause were mentioned. If dominance, by virtue of its absolute nature, is taken generally to include dominance in cooking, name, and parts, then it will become general to all three causes, and the mention of 'loss of nature by cooking' will be of the kind of 'specification after generalization'.

Nay, I say: It is as if he, may Allah Almighty have mercy on him, observed that the loss of nature by cooking was not due to the mixture itself dominating, but rather the fire changed it. Thus, the conjunction remains in its literal sense, and then these would be the best of expressions, ascending from partial rules to universal ones.

Rather, I say that they have seemingly considered that the loss of nature due to cooking is not because of the dominance of the thing mixed in water, but rather fire

has changed it. So this conjunction remains in its literal form. Now it has been declared the best among all phrases and will be counted among universal rules instead of a partial rule. (T)

This is a profound discourse on the rules of prohibition in original texts. All praise is for Allah as He is pleased with, and blessings and peace be upon His Chosen One and his family, companions, and those who follow him.

...या उसका नाम पकने से बदल गया, फिर भी वह [वुज़ू के लिए] बाकी रहता है। यह तीसरे कारण तक सीमित था पकने की सूरत में, सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि उन्होंने दलालत के तौर पर दूसरों की तरफ इशारा किया है। वास्तव में, वह जो आग की सहायता के बिना नाम बदल देता है, उस चीज़ से ज़्यादा मज़बूत है जो केवल आग के उपचार से बदलती है। तो मानो उन्होंने कहा, '...या उसका नाम बदल जाए चाहे पकने से,' फिर उसका तो कहना ही क्या जो खुद-ब-खुद बदल जाए। इस स्पष्टीकरण के साथ, यह तीनों कारणों की ओर संकेत करता है, जिससे यह बेहतरीन इबारतों में से एक बन जाता है। इसके स्पष्टीकरण में जो मुझे सबसे बेहतर लगा वह यही है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

इस पानी से वुज़ू जायज़ है चाहे इसमें मिलने वाली चीज़ के हिस्से (अजज़ा) कम हों, लेकिन जब यह चीज़ पानी के पतलेपन को खत्म कर दे या पकने की सूरत में उसके नाम को बदल दे तो वुज़ू नाजायज़ होगा। लेकिन इस जवाब से एक आपत्ति बाकी रही, वह यह कि तीसरे कारण (नाम की तब्दीली) को सिर्फ पकने की सूरत से खास कर दिया गया है। हाँ, अगर यों कहा जाए कि दूसरी सूरत की तरफ दलालतन इशारा उन्होंने कर दिया है क्योंकि नाम की तब्दीली जब आग के बिना होगी तो यह सूरत उस सूरत से ज़्यादा मज़बूत होगी जिसमें सिर्फ आग से ही तब्दीली आ सकती है। गोया यों कहा कि या पानी के नाम को बदल दे चाहे पकने की वजह से हो, या फिर पकने के बिना खुद-ब-खुद नाम बदलने वाली सूरत पैदा हो जाए। इस तक़रीर से इसकी तहारत (शुद्धता) तीनों कारणों की तरफ इशारा करेगी, तो अब यह बेहतरीन इबारत करार पाएगी। यह इस इबारत की अंतिम तौजीह (व्याख्या) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

'तन्वीर' में अगरचे ज़वाल-ए-तबा (प्रकृति के लोप) को पकाने से जोड़ दिया गया है, मगर दूसरों के वर्चस्व को मुतलक़ (निरपेक्ष) रखा गया है जिससे ज़ाहिर है कि वर्चस्व हिस्सों की बहुतायत से है। तो पहले कारण और दूसरे कारण की कुछ सूरतों का ज़िक्र हुआ। और अगर वर्चस्व को उसके मुतलक़ होने की वजह से पकाने, नाम और हिस्सों के वर्चस्व के लिए आम (सामान्य) लिया जाए, तो यह तीनों कारणों के लिए आम हो जाएगा और 'पकाने से प्रकृति के लोप' का ज़िक्र 'तामीम (सामान्यीकरण) के बाद तख़सीस (विशिष्टीकरण)' के तौर पर होगा।

बल्कि मैं कहता हूँ: मानो उन्होंने, अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए, इस बात पर गौर किया कि पकाने से प्रकृति का लोप मिश्रण के स्वयं हावी होने के कारण नहीं था, बल्कि आग ने उसे बदल दिया। इस प्रकार, संयोजन अपने शाब्दिक अर्थ में बना रहता है, और फिर ये बेहतरीन शब्द होंगे, जो आंशिक नियमों से सार्वभौमिक नियमों की ओर बढ़ेंगे।

बल्कि मैं कहता हूँ कि उन्होंने गोया यह लिहाज़ किया कि पकाने की वजह से प्रकृति का लोप पानी में मिलने वाली चीज़ के ग़लवे (वर्चस्व) से नहीं है, बल्कि आग ने उसे बदला है। इसलिए यह अतफ़ (संयोजन) अपने ज़ाहिर पर रहा। अब यह तमाम इबारतों में सबसे अच्छी करार पाई और जुज़ई (आंशिक) नियम के बजाय कुल्ली (सार्वभौमिक) नियमों में गिनी जाएगी। (त)

मूल ग्रंथों के निषेध के नियमों पर यह अत्यंत महत्वपूर्ण चर्चा है। तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जैसा कि वह पसंद करता है, और दुरूद व सलाम हो उसके मुस्तफा (चुने हुए) पर और उनकी आल, असहाब और उनके अनुयायियों पर।

पेज 125/756

اوغیرہ اسمہ طبخالکن یبقی واردا قصر الثالث | کہ اس پانی سے وضو جائز ہے اگرچہ اس میں ملنے والی چیز کے علی صورۃ الطبخ الا ان یقال اشار الی غیرہ دلالۃ | اجزاء کم ہوں، مگر جب یہ چیز پانی کی رقت کو ختم کردے یا فان الذی یغیر اسمہ بدون الاستعانۃ | پکنے کی صورت میں اس کے نام کو تبدیل کردے تو وضو بالنار اقوی ممالا یزیلہ الا بمعالجۃ النار فکانہ | ناجائز ہوگا لیکن اس سے ایک اعتراض باقی رہا، وہ یہ کہ قال اوغیرہ اسمہ ولو بطبخای فضلا عما یغیرہ | تیسرے سبب (نام کی تبدیلی) کو صرف پکانے کی صورت بنفسہ وبھذا التقریر تصیر تشیر الی الاسباب | سے مختص کردیا ہے۔ ہاں اگر یوں کہا جائے کہ دوسری الثلثۃ فتکون من احسن العبارات ھذا غایۃ | صورت کی طرف دلالۃً اشارہ انہوں نے کردیا ہے کیونکہ نام ماظھر لی فی توجیھہ واللہ تعالٰی اعلم۔ | کی تبدیلی جب آگ کے بغیر ہوگی تو یہ صورت زیادہ قوی ہوگی اس صورت سے جس میں صرف آگ سے ہی تبدیلی آسکتی ہے گویا یوں کہا کہ یا پانی کے نام کو تبدیل کردے خواہ پکانے کی وجہ سے ہو چہ جائیکہ پکائے بغیر خود بخود نام کی تبدیلی والی صورت پیدا ہوجائے اس تقریر سے اس کی طہارت تینوں اسباب کی طرف اشارہ کرے گی تو اب یہ بہترین عبارت قرار پائے گی، یہ اس عبارت کی انتہائی توجیہ ہے واللہ تعالٰی اعلم (ت)

تنویر میں اگرچہ زوالِ طبع کو طبخ سے مقید کیا گیا مگر غلبہ غیر کو مطلق رکھا جس سے ظاہر غلبہ بکثرت اجزاء ہے تو سبب اول اور بعض صور سبب دوم کا ذکر ہوا اور اگر غلبہ کو بوجہ اطلاق غلبہ طبخاً و اسماً و اجزاءً کو عام لیا جائے تو اسی قدر اسباب ثلاثہ کو عام ہو جائے گا اور ذکر زوال طبع بطبخ از قبیل تخصیص بعد تعمیم ہوگا۔

بل اقول: کانه رحمه الله تعالی لاحظ ان زائل الطبع بالطبخ لم یغلبه المخالط نفسه بل النار غیرته فیکون العطف علی ظاهره واذن تکون هذه احسن العبارات وترتقی من الضوابط الجزئیة الی الکلیات۔

بلکہ میں کہتا ہوں کہ انہوں نے گویا یہ لحاظ کیا کہ پکانے کی وجہ سے طبع کا زوال پانی میں ملنے والی چیز کے غلبہ سے نہیں ہے بلکہ آگ نے اس کو متغیر کیا ہے پس یہ عطف اپنے ظاہر پر رہا۔ اب یہ تمام عبارات میں احسن قرار پائی اور جزئی ضابطہ کی بجائے کلی ضابطوں میں شمار ہوگی۔ (ت)

متون کے ضوابطِ منع پر یہ نہایت کلام ہے وللہ الحمد کما یرضاہ والصلوۃ والسلام علی مصطفاہ وآلہ وصحبہ ومن والاہ۔

Fatawa Rizvia, Volume 3

(Principle 5) Now the primary texts present a general rule regarding the permissibility [of using water for ablution], stating that an alteration in only the qualities of water due to mixing with a pure substance does not prevent ablution. Qualities refer to color, taste, and smell. There are three types of statements in this regard: (1) One of its qualities, meaning a change in any one quality.

In Al-Quduri it is stated: | Arabic Text | Urdu Translation | | :--- | :--- | | It is permissible with water that a pure substance has mixed with and changed one of its qualities, like floodwater and water mixed with saffron, soap, and alkali[1]. | Ablution is permissible with water in which a pure substance has mixed and changed one of its qualities, such as floodwater and water mixed with saffron, soap, and alkali (ushnan). (T) |

Similarly, it is mentioned in Al-Hidayah, Al-Wafi, and Al-Munyah: | Arabic Text | Urdu Translation | | :--- | :--- | | Except that these added the condition that the water must be predominant in terms of parts, etc., and they added to the examples: water mixed with milk[2]. | However, they added an additional point that in the change of quality, the components of water should be predominant, etc. And Al-Wafi and Al-Munyah mentioned one additional example: water mixed with milk. (T) |

And in Al-Wiqayah, Al-Kanz, Al-Islah, and Al-Mukhtar, etc.: | Arabic Text | Urdu Translation | | :--- | :--- | | Even if it changed one of its qualities, it is pure[3]; Al-Wiqayah illustrated this with examples from Al-Quduri, and Al-Islah with soil and saffron. | Even if a pure substance has changed one quality of the water. Al-Wiqayah mentioned the examples from Al-Quduri, and Al-Islah gave the examples of soil and saffron. (T) |

(2) Some of its qualities, which includes two. It is stated in Al-Bahr from Majma' al-Bahrayn: | Arabic Text | Urdu Translation | | :--- | :--- | | We permit it with that which is predominant over a pure substance like saffron, which changes some of its qualities[4]. | We consider ablution permissible with that water which is predominant over the pure thing mixed with it, and some of its qualities are changed, such as saffron. (T) |

1. Al-Quduri, Kitab al-Taharah, Matba' Majeedi Kanpur, p. 6.
2. Munyat al-Musalli, Bab al-Miyah, Matba' Aziziyyah Kashmiri Bazar Lahore, p. 18.
3. Kanz al-Daqaiq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company Karachi, 1/11.

4. Al-Bahr al-Raiq, Kitab al-Taharah, H.M. Saeed Company Karachi, 29/1.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

(नियम 5) अब मूल ग्रंथ वज़ू की अनुमति के संबंध में एक सामान्य नियम बताते हैं कि शुद्ध वस्तु के मिलने से पानी के केवल गुणों में परिवर्तन वज़ू को नहीं रोकता। गुणों से तात्पर्य रंग, स्वाद और गंध है। इस संबंध में तीन प्रकार के कथन आए हैं: (1) इसके गुणों में से एक, अर्थात किसी एक गुण में परिवर्तन।

अल-कुदूरी में है: | अरबी पाठ | उर्दू अनुवाद | | :--- | :--- | | उस पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें किसी शुद्ध चीज़ ने मिलकर उसके एक गुण को बदल दिया हो जैसे बाढ़ का पानी और वह पानी जिसमें केसर, साबुन और उशनान (क्षार) मिला हो[1]। | ऐसे पानी से वज़ू जायज़ है जिसमें किसी पाक चीज़ ने मिलकर उसके एक गुण को बदल दिया हो जैसे बाढ़ का पानी और वह पानी जिसमें ज़ाफ़रान, साबुन और उशनान मिला हो। (त) |

इसी तरह हिदाया, वाफी और मुन्या में है: | अरबी पाठ | उर्दू अनुवाद | | :--- | :--- | | लेकिन उन्होंने यह शर्त जोड़ी कि पानी के अंशों की प्रधानता होनी चाहिए इत्यादि। और उन्होंने उदाहरणों में दूध मिले पानी को भी जोड़ा[2]। | लेकिन उन्होंने एक अतिरिक्त बात कही कि गुण के परिवर्तन में पानी के अंशों की प्रधानता होनी चाहिए इत्यादि। और वाफी और मुन्या ने एक अतिरिक्त उदाहरण भी दिया है कि वह पानी जिसमें दूध मिला हो। (त) |

विकाया, कन्ज़, इसलाह और मुख्तार आदि में: | अरबी पाठ | उर्दू अनुवाद | | :--- | :--- | | भले ही किसी शुद्ध चीज़ ने इसके गुणों में से एक को बदल दिया हो[3]। विकाया ने कुदूरी वाले उदाहरण दिए हैं और इसलाह ने मिट्टी और केसर का उदाहरण दिया है। | अगर किसी पाक चीज़ ने पानी का एक गुण बदल दिया हो। विकाया ने कुदूरी वाली मिसालें ज़िक्र की हैं और इसलाह ने मिट्टी और ज़ाफ़रान की मिसाल दी है। (त) |

(2) इसके कुछ गुण, जिसमें दो भी शामिल हैं। बह्र में मजमा अल-बहरैन से है: | अरबी पाठ | उर्दू अनुवाद | | :--- | :--- | | हम उस पानी से वज़ू की अनुमति देते हैं जो मिलने वाली शुद्ध वस्तु (जैसे केसर) पर प्रधान हो और उसके कुछ गुण बदल गए हों[4]। | हम उस पानी से वज़ू को जायज़ करार

देते हैं जो मिलने वाली पाक चीज़ पर प्रधान हो और उसके कुछ गुण बदल जाएँ, जैसे ज़ाफ़रान। (त)
|

1. कुदूरी किताब अत-तहारत, मतबा मजीदी कानपुर, पृष्ठ 6.
2. मुनियत अल-मुसल्ली, बाब अल-मियाह, मतबा अज़ीज़िया कश्मीरी बाज़ार लाहौर, पृष्ठ 18.
3. कन्ज़ अद-दक़ाइक़, किताब अत-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/11.
4. अल-बह्र अर-राईक़, किताब अत-तहारत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 29/1.

(ضابطہ ۵) اب متون ایک کلیہ درباره جواز افاده فرماتے ہیں کہ اختلاط طاہر سے پانی کے صرف وصف میں تغیر مانع وضو نہیں۔ وصف سے مراد رنگ، مزہ، بو۔ عبارات اس میں تین طرح آئیں:

(۱) احد اوصافہ یعنی کسی ایک وصف میں تغیر۔

قدوری میں ہے: | عربی عبارت | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | تجوز بمائ خالطه طاهر فغير احد اوصافه كماء المد والماء الذى اختلط به الزعفران والصابون والاشنان۔ 1 | ایسے پانی سے وضو جائز ہے جس میں کسی پاک چیز نے مل کر اس کے ایک وصف کو تبدیل کردیا ہو جیسے سیلاب کا پانی اور وہ پانی جس میں زعفران، صابون اور اُشنان ملا ہو۔ (ت) |

بعینہ اسی طرح ہدایہ و وافی و منیہ میں ہے: | عربی عبارت | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | غير ان هذه زادت بشرط ان يكون الغلبة للماء من حيث الاجزاء الخ و زادا فى الامثلة الماء الذى اختلط به اللبن 2 ۔ | مگر انہوں نے ایک زائد بات کی کہ وصف کی تبدیلی میں پانی کے اجزاء کا غلبہ ہو الخ اور وافی اور منیہ نے ایک مثال زائد بھی بیان کی ہے کہ وہ پانی جس میں دودھ ملا ہو۔ (ت) |

و وقایہ، کنز، اصلاح اور مختار وغیرہا: | عربی عبارت | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | وان غير احد اوصافه طاهر 3 اه ومثلت الوقاية بامثلة القدورى والاصلاح بالتراب والزعفران۔ | اگرچہ کسی پاک چیز نے پانی کا ایک وصف تبدیل کردیا ہو اھ وقایہ نے قدوری والی مثالیں ذکر کی ہیں اور اصلاح نے مٹی اور زعفران کی مثال دی ہے۔ (ت) |

(۲) بعض اوصافہ کہ دو کو بھی شامل۔ بحر میں مجمع البحرین سے ہے: | عربی عبارت | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | نجيزه بغالب على طاهر كزعفران تغير به بعض اوصافه 4 ۔ | ہم وضو

کو جائز قرار دیتے ہیں اس پانی سے جو ملنے والی پاک چیز پر غالب ہو اور اس کے بعض اوصاف متغیر ہوجائیں جیسے زعفران (ت) |

1. قدوری کتاب الطہارت مطبع مجیدی کانپور ص ۶
2. منیۃ المصلی باب المیاہ مطبع عزیزیہ کشمیری بازار لاہور ص ۱۸
3. کنز الدقائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۱
4. بحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۹/۱

Fatawa Razawiyya Volume 3

In Multaqa, it is written: Arabic: And if a pure substance changes some of its qualities, such as earth, saffron, and soap. Urdu: Even if some qualities of water have been changed by a pure thing like soil, saffron and soap. (T)

(3) All qualities. In Ghurar, it is written: Arabic: And if its qualities are changed by a pure solid substance like potash, saffron, fruit, and leaves, then according to the most correct opinion, [it is still valid for purification] if its fluidity remains. Urdu: Even if the qualities of water have been changed by some pure solid substance like Ushnan (alkali plant), saffron, fruit, and leaves, as long as the fluidity of the water remains, this is the most correct view. (T)

This is the implication of Tanwir: Arabic: Because he mentioned its like following him as per his habit, may Allah Almighty have mercy on them both, and if he omitted his statement 'changed its qualities', then he indicated it by basing the ruling on the permanence of fluidity absolutely. Urdu: Because he also said the like of it according to his habit while following them, although he left out the phrase "changed its qualities" from Ghurar, but to indicate it, he kept the ruling absolutely on the preservation of the fluidity of the water. (T)

In Durr al-Mukhtar it is said: And if it changes all of its qualities (Even if it changes all its qualities. T)

The three Masters Halabi, Tahtawi, Shami have established it. In Nur al-Idah it is written: Changing all its qualities with a solid substance is not harmful. (If all the qualities of water are changed due to a solid substance, there is no issue. T)

Added in the commentary on this: Arabic: ...without cooking, then he said, citing as evidence what is in Sahih al-Bukhari and Muslim that the Prophet, may Allah Almighty bless him... Urdu: Without cooking (without boiling) then presenting evidence for it, he mentioned that narration which Bukhari and Muslim [recorded]...

1. Multaqa al-Abhur, Permissibility of Purification with Absolute Water, Amirah Egypt, 1/72.
2. Ghurar with Sharh al-Durar, Obligation of Bathing, Uthmaniyah Egypt, 21/1.
3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/35.
4. Nur al-Idah, Book of Purification, Ilmiyah Lahore, p. 3.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

मुल्तक़ा में है: अरबी: और यदि कोई शुद्ध पदार्थ उसके कुछ गुणों को बदल देता है, जैसे मिट्टी, केसर और साबुन। उर्दू: भले ही पानी के कुछ गुणों को किसी पाक (शुद्ध) चीज़ जैसे मिट्टी, केसर और साबुन ने बदल दिया हो। (त)

(3) सभी गुण। ग़ुरर में है: अरबी: और यदि उसके गुण किसी शुद्ध ठोस पदार्थ जैसे पोटाश, केसर, फल और पत्तों द्वारा बदल दिए जाते हैं, तो सबसे सही राय के अनुसार, [यह अभी भी शुद्धिकरण के लिए मान्य है] यदि इसकी तरलता बनी रहती है। उर्दू: भले ही पानी के गुणों को किसी पाक ठोस चीज़ जैसे उशनान (पोटाश का पौधा), केसर, फल और पत्तों ने बदल दिया हो, जब तक पानी का पतलापन (तरलता) बना रहे, यही सबसे सही कथन है। (त)

यही तन्वीर का अभिप्राय है: अरबी: क्योंकि उन्होंने अपनी आदत के अनुसार उनका अनुसरण करते हुए वैसा ही कहा, अल्लाह सर्वशक्तिमान उन दोनों पर दया करे, और यदि उन्होंने अपने कथन 'उसके गुणों को बदल दिया' को छोड़ दिया, तो उन्होंने नियम को पूरी तरह से तरलता की स्थिरता पर आधारित करके इसकी ओर संकेत किया। उर्दू: क्योंकि उन्होंने भी अपनी आदत के अनुसार उनका अनुसरण करते हुए वैसा ही कहा, हालाँकि उन्होंने ग़ुरर के वाक्यांश "उसके गुणों को बदल दिया" को छोड़ दिया है, लेकिन इस पर संकेत देने के लिए उन्होंने नियम को पानी की तरलता के बने रहने पर पूरी तरह आधारित रखा। (त)

दुर्र-ए-मुख़्तार में कहा गया है: और भले ही वह उसके सभी गुणों को बदल दे (भले ही वह इसके सभी गुणों को बदल दे। त)

तीनों स्वामियों हलबी, तहतावी, शामी ने इसे स्थिर रखा है। नूर अल-इज़ाह में है: ठोस पदार्थ के साथ इसके सभी गुणों को बदलना हानिकारक नहीं है। (यदि किसी ठोस वस्तु के कारण पानी के सभी गुण बदल जाएँ तो कोई हर्ज नहीं है। त)

इस पर व्याख्या में जोड़ा गया: अरबी: ...बिना पकाए, फिर उन्होंने दलील पेश करते हुए कहा जो सहीह अल-बुख़ारी और मुस्लिम में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने... उर्दू: बिना पकाए

(बिना उबाले) फिर इस पर प्रमाण देते हुए उन्होंने वह रिवायत ज़िक्र की जिसे बुख़ारी और मुस्लिम ने [दर्ज किया है]...

1. मुल्तक़ा अल-अब्हुर, साधारण पानी से शुद्धिकरण की अनुमति, आमिरा मिस्र, 1/72.
2. ग़ुरर मअ शरह अल-दुरर, ग़ुस्ल का फ़र्ज़, उस्मानिया मिस्र, 21/1.
3. दुर्र-ए-मुख़्तार, पानी का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/35.
4. नूर अल-इज़ाह, शुद्धिकरण की पुस्तक, इल्मिया लाहौर, पृ. 3.

पृष्ठ 127 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

ملتقی میں ہے: عربی: وان غیر طاہر بعض اوصافه کالتراب والزعفران والصابون۔ اردو: اگرچہ پانی کے بعض اوصاف کو پاک چیز نے متغیر کردیا ہو جیسے مٹی، زعفران اور صابون۔ (ت)

(۳) کل اوصاف۔ غرر میں ہے : عربی: وان غیر اوصافه طاہر جامد کاشنان و زعفران و فاکهة و ورق فی الاصح ان بقی رقته۔ اردو: اگرچہ پانی کے اوصاف کو کسی پاک جامد چیز نے تبدیل کردیا ہو جیسے اشنان، زعفران، پھل اور پتے جبکہ پانی کی رقت باقی رہے یہی اصح قول ہے (ت)

یہی مفاد تنویر ہے: عربی: فانه ذکر مثله تبعاً له کعادته رحمهما الله تعالی وان ترك قوله غیر اوصافه فقد دل علیه بادارة الحکم علی بقاء الرقة مطلقا۔ اردو: کیونکہ انہوں نے بھی اس کی مثل کہا اپنی عادت کے مطابق ان کی اتباع کرتے ہوئے، اگرچہ انہوں نے غرر کا قول "غیر اوصافہ" کو چھوڑ دیا ہے لیکن اس پر دلالت کیلئے انہوں نے حکم کو پانی کی رقت کی بقاء پر مطلقاً قائم رکھا۔ (ت)

وللدر مختار میں فرمایا:وان غیرکل اوصافه (اگرچہ اس کے تمام اوصاف کو بدل دے۔ ت)

سادات ثلثہ حلبی طحطاوی شامی نے اسے مقرر رکھا نور الایضاح میں ہے: ولا یضر تغیر اوصافه کلها بجامد (کسی جامد کی وجہ سے اگر پانی کے تمام اوصاف بدل جائیں تو کوئی مضائقہ نہیں ہے۔ ت)

اس پر شرح میں بڑھایا: عربی: بدون طبخ ثم قال مستدلا لمانی صحیح البخاری و مسلم ان النبی صلی اللہ تعالیٰ اردو: بدون طبخ (پکائے بغیر) پھر اس پر دلیل پیش کرتے ہوئے وہ روایت ذکر کی جس کو بخاری اور مسلم نے [روایت کیا]...

1 ملتقی الابحر تجوز الطہارۃ بالماء المطلق عامرہ مصر ۱/۷۲ 2 غرر مع شرح الدرر فرض الغسل عثمانیہ مصر ۲۱/۱ 3 در مختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/۳۵ 4 نور الایضاح کتاب الطہارہ علمیہ لاہور ص ۳

صفحہ 127 از 756

[Left Column - Arabic Text] He (the Prophet, peace and blessings be upon him) ordered the washing of the one whose camel broke his neck while he was in a state of Ihram, using water and sidr (lote-tree leaves). He ordered Qais bin Asim, when he embraced Islam, to perform Ghusl with water and sidr. And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) performed Ghusl with water that had traces of dough in it. He (peace and blessings of Allah be upon him) used to perform Ghusl and wash his head with khatmi (marshmallow plant) while in a state of janabah (major ritual impurity), and he considered that sufficient (1) - End. Sayyid Tahtawi followed up on this, saying: It might be said that something other than sidr is not like it, because the purpose of it is cleaning, so changes in its qualities (color, taste, smell) are forgiven, whereas it is not the same for others (2) - End. I say: The critique is on the reasoning based on the first, second, and fourth Hadiths, not on the ruling itself, as he had already accepted it before. He also accepted the third Hadith from it. Then, you have known from what we have investigated that what is pardoned in a cleansing agent is its tendency towards thickness. As for the qualities, they are of no consequence at all, but it is sufficient as a rebuttal to the evidence.

[Right Column - Urdu Text] Muslim narrated that the Prophet (peace and blessings be upon him) ordered the person who fell from a camel and got injured while in the state of Ihram to wash with water containing lote-tree leaves. And he ordered Qais bin Asim, upon his conversion to Islam, to perform Ghusl with water containing lote-tree leaves. And the Prophet (peace and blessings be upon him) himself performed Ghusl with water that had traces of dough. And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) considered the use of water containing khatmi (marshmallow) sufficient for Ghusl from janabah (major ritual impurity) - End. On the text of Sharh Nur al-Idah, Sayyid Tahtawi remarked that if something like lote-tree leaves causes a change in the water, it is pardoned. Other things cannot be compared to this ruling because the purpose here is cleaning, whereas this objective is not present in other things. (End) (T) I say that Sayyid Tahtawi did not critique the ruling in Sharh Nur al-Idah, but rather critiqued the reasoning based on the first two and the fourth Hadiths. Therefore, he kept the ruling and the third Hadith intact. Furthermore, you have learned from our research that in a cleaning agent, thickness up to a certain degree is pardoned; the qualities (color, taste, smell) are not considered at all. However, this is sufficient to raise an objection against the proof. (T)

[Bottom Section] And the correct research is that the change in all three qualities is not harmful as long as none of the three mentioned obstacles are found. (1) Its explanation is that the observers split into two groups regarding the first expression and similarly the second; one group considers... | Its explanation is that between the first expression (having one quality) and ...the second expression (having two qualities)...

[Footnotes] 1. Maraqi al-Falah, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyyah Press, Bulaq, Egypt, p. 16. 2. Tahtawi on Maraqi al-Falah, Al-Amiriyyah Press, Bulaq, Egypt, p. 16. Page 128 of 756

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस व्यक्ति को धोने का आदेश दिया जिसकी ऊँटनी ने उसकी गर्दन तोड़ दी थी जब वह एहराम की स्थिति में था, पानी और सिद्र (बेर के पत्ते) का उपयोग करके। उन्होंने क़ैस बिन आसिम को, जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया, पानी और सिद्र से स्नान करने का आदेश दिया। और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस पानी से स्नान किया जिसमें आटे के निशान थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) जनावत (अपवित्रता) की स्थिति में खतमी (एक प्रकार का पौधा) के पानी से स्नान करते थे और अपना सिर धोते थे, और इसे पर्याप्त मानते थे (1) - समाप्त। सैय्यद तहतावी ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा: यह कहा जा सकता है कि सिद्र के अलावा अन्य चीजें इसके समान नहीं हैं, क्योंकि इसका उद्देश्य सफाई है, इसलिए इसके गुणों (रंग, स्वाद, गंध) में बदलाव को माफ कर दिया जाता है, जबकि दूसरों के लिए ऐसा नहीं है (2) - समाप्त। मैं कहता हूँ: आलोचना पहले, दूसरे और चौथे हदीस का उपयोग करके तर्क देने पर है, न कि स्वयं आदेश पर, क्योंकि उन्होंने इसे पहले ही स्वीकार कर लिया था। उन्होंने इससे तीसरी हदीस को भी स्वीकार किया। फिर, आप हमारी तहकीकात से जान चुके हैं कि सफाई करने वाले पदार्थ में जो क्षम्य है वह उसका गाढ़ापन है। जहाँ तक गुणों की बात है, उनका कोई महत्व नहीं है, लेकिन यह प्रमाण के विरुद्ध आपत्ति उठाने के लिए पर्याप्त है।

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ] मुस्लिम ने बयान किया कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उस व्यक्ति को जो एहराम की हालत में ऊँटनी से गिरकर ज़ख्मी हुआ, हुक्म फ़रमाया कि वह बेरी के पत्तों वाले पानी से धोएँ। और आपने क़ैस बिन आसिम को मुसलमान होने पर बेरी के पत्तों वाले पानी से गुस्ल करने का हुक्म फ़रमाया। और खुद हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने आटे के असर वाले पानी से गुस्ल फ़रमाया। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जनाबत के गुस्ल में खतमी वाले पानी के इस्तेमाल को काफ़ी समझते - समाप्त। शरह नूरुल ईज़ाह की इबारत पर सैय्यद तहतावी ने तआकुब किया और कहा कि बेरी के पत्तों जैसी चीज़ पानी में तग़य्युर पैदा करे तो माफ़ है, इस हुक्म पर दूसरी चीज़ों को क़यास नहीं किया जा सकता, क्योंकि इससे तो सफ़ाई मक़सूद है जबकि दूसरी चीज़ों में यह मक़सद नहीं होता है। (समाप्त) (त) मैं कहता हूँ कि सैय्यद तहतावी ने शरह नूरुल ईज़ाह पर तआकुब हुक्म के बारे में नहीं किया बल्कि पहली दो और चौथी हदीसों से इस्तदलाल पर तआकुब किया है लिहाज़ा हुक्म और तीसरी हदीस को उन्होंने महफ़ूज़ रखा, फिर आप को हमारी तहक़ीक़ से

मालूम हो चुका है कि सफ़ाई वाली चीज़ में गाढ़ेपन की इस्तेदाद तक माफ़ी है इसमें औसाफ़ का बिल्कुल एतबार नहीं है लेकिन दलील पर मना (एतराज़) के लिए इतना काफ़ी है। (त)

[नीचे का हिस्सा] और तहक़ीक़ यही है कि तीनों वस्फ़ों का तग़य्युर भी कुछ मुज़िर नहीं जब तक मवाने सलासा मज़्कूरा से कोई मानेअ न पाया जाए। (1) बयानुहु अन्नन्नज़्ज़ार इफ़्तरक़ू फ़िल इबारतिल ऊला... | इसका बयान यह है कि पहली इबारत (एक वस्फ़ वाली) और ...मिस्लुहा अस्सानिया फ़रीक़ैन फ़रीक़ुँ यअतबरु फ़ीहा | दूसरी इबारत (दो वस्फ़ों वाली) के

[पाद-टिप्पणी] 1. मराक़िल फ़लाह, किताबुत तहारत, अल-अमीरिय्या प्रेस, बुलाक, मिस्र, पृ. 16 2. तहतावी अला मराक़िल फ़लाह, मतिबअतुल अमीरिय्या, बुलाक, मिस्र, पृ. 16 पृष्ठ 128 / 756

[بایاں کالم - عربی] علیه وسلم امر بغسل الذی وقصته ناقته وهو محرم بماء وسدر امر قیس بن عاصم حین اسلم ان یغتسل بماء وسدر واغتسل النبي صلی الله تعالی علیه وسلم بماء فیه اثر العجین وکان صلی الله تعالی علیه وسلم یغتسل ویغسل رأسه بالخطمی وهو جنب و یجتزئ بذلك ۱ اه وتعقبه السید ط فقال قد یقال غیر نحو السدر لایقال علیه لان المقصود به التنظیف فاغتفرفیه تغیر الاوصاف ولا کذلك غیره ۲ اه اقول: تعقب علی الاستدلال بالحدیثین الاولین و الرابع لاعلی الحکم فقد سلّمه من قبل وسلّم منه الحدیث الثالث ثم قد علمت مما حققنا ان المغتفر فی المنظف تهیؤه للثخن اما الاوصاف فلاعبرة بها اصلا لکن یکفی منعا علی الدلیل۔

[دایاں کالم - اردو] مسلم نے بیان کیا کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے اس شخص کو جو کہ احرام کی حالت میں اونٹنی سے گر کر زخمی ہوا، حکم فرمایا کہ وہ بیری کے پتوں والے پانی سے دھوئیں۔ اور آپ نے قیس بن عاصم کو مسلمان ہونے پر بیری کے پتوں والے پانی سے غسل کرنے کا حکم فرمایا۔ اور خود حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے آٹے کے اثر والے پانی سے غسل فرمایا۔ اور آپ صلی اللہ علیہ وسلم جنابت کے غسل میں خطمی والے پانی کے استعمال کو کافی سمجھتے اہ شرح نور الایضاح کی عبارت پر سید طحطاوی نے تعاقب کیا اور کہا کہ بیری کے پتوں جیسی چیز پانی میں تغیر پیدا کرے تو معاف ہے، اس حکم پر دوسری چیزوں کو قیاس نہیں کیا جاسکتا، کیونکہ اس سے تو صفائی مقصود ہے جبکہ دوسری چیزوں میں یہ مقصد نہیں ہوتا ہے ۱ھ (ت) میں کہتا ہوں کہ سید طحطاوی نے شرح نور الایضاح پر تعاقب حکم کے بارے میں نہیں کیا بلکہ پہلی دو اور چوتھی حدیثوں سے استدلال پر تعاقب کیا ہے لہذا حکم اور تیسری حدیث کو انہوں نے محفوظ رکھا، پھر آپ کو ہماری تحقیق سے معلوم ہو چکا ہے کہ صفائی والی چیز میں گاڑھے پن

کی استعداد تک معافی ہے اس میں اوصاف کا بالکل اعتبار نہیں ہے لیکن دلیل پر منع (اعتراض) کیلئے اتنا کافی ہے۔ (ت)

[نیچے والا حصہ] اور تحقیق یہی ہے کہ تینوں وصفوں کا تغیر بھی کچھ مضر نہیں جب تک موانع ثلاثہ مذکورہ سے کوئی مانع نہ پایا جائے (۱) بیانہ ان النظار افتر قو ا فی العبارۃ الاولی | اس کا بیان یہ ہے کہ پہلی عبارت (ایک وصف والی) اور مثلھا الثانیۃ فرقتین فریق یعتبر فیھا | دوسری عبارت (دو وصفوں والی) کے

[حواشی] ۱ مراقی الفلاح کتاب الطھارۃ الامیریہ ببولاق مصر ص ۱۶ ۲ طحطاوی علی مراقی الفلاح مطبعۃ الامیریہ ببولاق مصر ص ۱۶ Page 128 of 756

Fatawa-e-Razawiya, Volume 3

(Text from the Arabic column translated): The context indicates a prohibition based on the change of two properties, while the second indicates permission in that case and prohibition upon the change of all properties. Then, their researchers objected that this is contrary to the correct (Sahih) opinion. The correct opinion is that it is permissible even if all properties change. Imam Al-Zayla'i stated in 'Al-Tabyin' that Al-Quduri signaled that if two properties change, ablution with it is not permissible. Similar statements are found in 'Al-Fath' and 'Al-Bahr'. This is also the case with the phrasing of 'Al-Bidayah' in 'Al-Nihayah', 'Al-'Inayah', 'Al-Binayah', 'Al-Dirayah', 'Al-Kifayah', and 'Al-Ghayah al-Itqaniyah'. The first two said: His statement "one of its properties" indicates that if two properties change, it is not permissible. However, what is narrated from the teachers is contrary to this. They mentioned what was previously cited in 'Zad al-'Inayah'. Similarly, it was pointed out in the commentary on 'Al-Tahawi', to which Sa'di Effendi agreed. The latter two said regarding his statement "one of its properties" that it signals that if two change, ablution with it is not permissible. But the narration is sound to the contrary, as reported from Al-Karkhi. 'Al-Kifayah' mentioned the signal and then transmitted from 'Al-Nihayah' what was reported from the teachers. Al-Itqani mentioned Al-Quduri's signal and then said: However, what is apparent from our companions is that it is permissible. Do you not see what is in...

(Urdu text translation): Regarding this, scholars have formed two groups. One group, considering the inverse implication (mafhum-e-mukhalif) of these phrases, says in the first phrase that wudu (ablution) is impermissible if two properties change. The other group, not considering the inverse implication, says wudu is permissible, but this group considers wudu impermissible if all properties (color, smell, taste) change. However, researchers from this group objected to this, stating that declaring it impermissible due to the change of all properties is against the correct view. The correct view is that even if all properties change, wudu remains permissible. (The texts regarding this debate are as follows): Imam Al-Zayla'i said in 'Tabyin' that Al-Quduri indicated that if two properties change, wudu will be impermissible. The same is found in the following books: Fath, Bahr, Nihayah on the text of Bidayah, Inayah, Binayah, Dirayah, Kifayah, Ghayah Itqaniyah, Sharh al-Tahawi, etc. The first two among them said that his phrase "one of its properties" signals that if two properties change, wudu would not be valid. However, the opposite is narrated from

the experts. Having said this, those two then mentioned the previous debate on page 79, and in Inayah, it is stated as such.

Footnotes: 1. Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyya Press, Bulaq, Egypt, 1/20. 2. Al-Inayah with Fath al-Qadir, "Water with which ablution is permissible," Lucknow, 1/63. 3. Al-Binayah, "Water with which ablution is permissible," Malik Sons, Faisalabad, 1/189.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 3

(अरबी स्तंभ का अनुवाद): संदर्भ दो गुणों के परिवर्तन के आधार पर निषेध का संकेत देता है, जबकि दूसरा उस स्थिति में अनुमति और सभी गुणों के परिवर्तन पर निषेध का संकेत देता है। फिर, उनके शोधकर्ताओं ने इस पर आपत्ति जताई कि यह सही (सहीह) राय के विपरीत है। सही राय यह है कि यह जायज़ है भले ही सभी गुण बदल जाएं। इमाम अल-ज़ैलाई ने 'अत-तबयीन' में कहा कि अल-कुदुरी ने संकेत दिया कि यदि दो गुण बदल जाते हैं, तो उससे वुज़ू करना जायज़ नहीं है। इसी तरह के बयान 'अल-फ़तह' और 'अल-बहर' में पाए जाते हैं। यही मामला 'अल-निहाया', 'अल-इनाया', 'अल-बिनाया', 'अल-दिराया', 'अल-किफ़ाया' और 'अल-ग़ाया अल-इत्क़ानिया' में 'अल-बिदाया' के शब्दों के साथ भी है। पहले दो ने कहा: उनका कथन "उसका एक गुण" संकेत देता है कि यदि दो गुण बदल जाते हैं, तो यह जायज़ नहीं है। हालाँकि, शिक्षकों से जो वर्णित है वह इसके विपरीत है। उन्होंने वह उल्लेख किया जो 'ज़ाद अल-इनाया' में पहले उद्धृत किया गया था। इसी तरह, 'अल-तहावी' की व्याख्या में इसकी ओर संकेत किया गया था, जिससे सादी अफ़ंदी सहमत हुए। बाद के दो ने उनके कथन "उसका एक गुण" के बारे में कहा कि यह संकेत देता है कि यदि दो बदल जाते हैं, तो उससे वुज़ू जायज़ नहीं है। लेकिन इसके विपरीत रिवायत सही है, जैसा कि अल-कर्खी से रिपोर्ट किया गया है। 'अल-किफ़ाया' ने संकेत का उल्लेख किया और फिर 'अल-निहाया' से वही प्रसारित किया जो शिक्षकों से रिपोर्ट किया गया था। अल-इत्क़ानी ने अल-कुदुरी के संकेत का उल्लेख किया और फिर कहा: हालाँकि, हमारे साथियों से जो ज़ाहिर है वह यह है कि यह जायज़ है। क्या आप नहीं देखते कि इसमें क्या है...

(उर्दू पाठ का अनुवाद): इस बारे में विद्वानों के दो समूह बन गए हैं। एक समूह, इन कथनों में विपरीत अर्थ (मफ़हूम-ए-मुखालिफ़) पर विचार करते हुए, पहले कथन में कहता है कि दो गुणों के बदलने पर वुज़ू नाजायज़ है। दूसरा समूह, विपरीत अर्थ पर विचार न करते हुए वुज़ू को जायज़ कहता है, लेकिन यह समूह सभी गुणों (रंग, गंध, स्वाद) के बदलने पर वुज़ू को नाजायज़ मानता है। हालाँकि, फिर इस समूह के शोधकर्ताओं ने इस पर आपत्ति जताई और कहा कि सभी गुणों के बदलने के कारण इसे नाजायज़ मानना सही राय के खिलाफ है। सही राय यह है कि यदि सभी गुण भी बदल जाएं, तब भी वुज़ू जायज़ है। (इस बहस के बारे में कथन नीचे दिए गए हैं): इमाम ज़ैलाई ने 'तबीन' में फ़रमाया कि कुदुरी ने इशारा किया है कि यदि दो गुण बदल जाएं तो वुज़ू नाजायज़ होगा। इसी तरह निम्नलिखित पुस्तकों में है: फ़तह, बहर, निहाया (बिदाया की इबारत पर), इनाया, बिनाया, दिराया, किफ़ाया, ग़ाया

इल्क़ानिया, शरह अल-तहावी आदि। इनमें से पहले दो ने कहा कि उनके कथन "अहद औसाफ़ुहू" (उसके गुणों में से एक) से यह इशारा मिलता है कि अगर दो गुण बदल जाएं तो वुज़ू जायज़ न होगा, लेकिन विशेषज्ञों से इसके खिलाफ़ बात वर्णित की गई है। यह कहकर फिर उन दोनों ने पेज 79 में पिछली बहस का ज़िक्र किया, और इनाया में इस पर इस प्रकार है...

पादलेख (फुटनोट): 1. तबीन अल-हक़ाएक़, किताब अल-तहारत, अल-अमीरिया प्रेस, बुलाक, मिस्र, 1/20। 2. अल-इनाया साथ में फ़तह अल-क़दीर, "वह पानी जिससे वुज़ू जायज़ है", लखनऊ, 1/63। 3. अल-बिनाया, "वह पानी जिससे वुज़ू जायज़ है", मलिक संस, फैसलाबाद, 1/189।

पृष्ठ 129 का 756

فتاوی رضویه جلد سوم

(الکالم العربی): المفهوم فتدل علی المنع بتغیر وصفین و الثانیة علی الجواز فیه والمنع بتغیر الکل ثم یعترضه محققوهم بأنه خلاف الصحیح الصحیح الجواز وان تغیر الکل قال الامام الزیلعي في التبیین اشار القدوری الی انه اذا غیر وصفین لا یجوز الوضوء به و مثله في الفتح والبحر وکذا علی عبارة البدایة في النهایة والعنایة والبنایة والدرایة والکفایة والغایة الاتقانیة، قال الاولان قوله احد اوصافه یشیر الی انه اذا غیر الاثنین لا یجوز لکن المنقول عن الاساتذة خلافه فذکرا ما تقدم في زاد في العنایة وکذا اشار في شرح الطحاوی الیه اه واقره سعدی افندی و قال التالیان في قوله احد اوصافه اشارة الی انه اذا تغیر اثنان لا یجوز التوضی به لکن صحت الروایة بخلافه کذا عن الکرخی اه والکفایة ذکرت الاشارة ثم اثرت عن النهایة ما عن الاساتذة و ذکر الاتقانی اشارة القدوری ثم قال لکن الظاهر عن اصحابنا انه یجوز الاتری الی ما في

(الکالم الاردو): بارے میں علماء کے دو فریق بن چکے ہیں، ایک فریق ان عبارات میں مفہوم مخالف کا اعتبار کرتے ہوئے پہلی عبارت میں دو وصفوں کی تبدیلی پر وضو کو ناجائز کہتا ہے اور دوسرا عبارت میں مفہوم کا اعتبار نہ کرتے ہوئے وضو کو جائز کہتا ہے اور یہ گروہ تمام اوصاف (رنگ، بو، ذائقہ) کی تبدیلی پر وضو ناجائز مانتا ہے لیکن پھر اس گروہ میں سے محقق لوگوں نے اس پر اعتراض کیا اور کہا کہ تمام اوصاف کی تبدیلی سے عدم جواز، صحیح قول کے خلاف ہے کیونکہ صحیح یہ ہے کہ اگر تمام اوصاف بھی تبدیل ہو جائیں تب بھی وضو جائز ہے (اس بحث کے بارے میں عبارات درج ذیل ہیں) امام زیلعی نے تبیین میں فرمایا کہ قدوری نے اشارہ کیا ہے کہ اگر دو وصف تبدیل ہو جائیں تو وضو ناجائز ہوگا اسی طرح ہے درج ذیل کتب میں، فتح، بحر، نہایہ میں بدایہ کی عبارت پر، عنایہ۔ بنایہ۔ درایہ۔ کفایہ۔ غایۃ اتقانیہ، شرح الطحاوی

الخ، ان میں سے پہلے دونوں نے کہا کہ ان کا "قول احد اوصافہ" اس بات کا اشارہ ہے کہ اگر دو وصف بدل جائیں تو وضو جائز نہ ہو گا لیکن ماہرین سے اس کا خلاف منقول ہے، یہ کہہ کر پھر ان دونوں نے ۷۹ میں گزشتہ بحث کو ذکر کیا، اور اس پر عنایہ میں کذا

حواشی: 1۔ تبیین الحقائق کتاب الطہارت مطبع الامیریہ بولاق مصر ۱/۲۰ 2۔ العنایۃ مع فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء لکھنو ۱/۶۳ 3۔ البنایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضوء ملک سنز فیصل آباد ۱/۱۸۹

Fatawa Rizvia, Volume 3

(Arabic Column) Explanation of al-Tahawi, etc. It is mentioned in al-Jawhara that if more than two qualities change, then according to the Shaykh's indication, it is not permissible, but the correct view is that it is permissible, as stated in al-Mustasfa (1). End. It was previously mentioned on page 101, and similarly, it was cited from al-Hilya regarding the consideration of the concept in its rejection by the correction of al-Mustasfa on page 101. Then he mentioned the words of al-Nihaya. And in Fath Allah al-Mu'in, it is understood from the restriction that use is not permissible if two qualities change, but it is not like that (2). End. More strange is what's in al-Kifaya, as after mentioning what passed, he then made an objection to it with what is in al-Tatimma on the authority of al-Faqih al-Maydani concerning the issue of leaves falling into the basin mentioned on page 76 (3). He said: The author of al-Nihaya said when the color of the water changed due to leaves, its taste must also change, so two qualities were gone, thus it became in accordance with what the book indicated (4). End.

(Urdu Column) An indication has been made in the commentary of al-Tahawi (Sharh al-Tahawi) to this effect, and Saadi Efendi has supported it. Following them, two others stated that "the statement regarding one of its qualities" implies that if two qualities change, wudu (ablution) will not be valid. However, authentic narrations are contrary to this; such is narrated from Imam Karkhi. End. Al-Kifaya mentioned this indication and then cited the statement narrated from the experts of al-Nihaya. Al-Itqani mentioned the indication from al-Quduri and then said that according to the manifest opinion of our school, wudu is permissible with it—was the statement in the commentary of al-Tahawi etc. not seen? End. In al-Jawhara, it is said that if two qualities are transformed, wudu is impermissible as indicated by the Shaykh, but the correct view is that wudu is permissible; it is so in al-Mustasfa. End. This matter has already been discussed on page 101, and similarly on page 101, it was mentioned with reference to al-Hilya regarding the conceptual meaning, then in its rebuttal, citing the correction of al-Mustasfa, it was mentioned on page 101, and then the words of al-Nihaya were quoted. In Fath Allah al-Mu'in, it is stated that from the restriction of a single quality, the impermissibility of wudu when two qualities change is understood, although it is not so. End. In al-Kifaya, after presenting the aforementioned matter in a peculiar way, an objection was raised based on a case from al-Tatimma narrated by Faqih al-Maydani concerning leaves falling into a basin mentioned on page 76. Thus, al-Kifaya said...

Footnotes: 1. Al-Jawhara al-Nayyira, Book of Purification, Imdadia Multan, 1/14. 2. Fath Allah al-Mu'in, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi, 1/62. 3. Al-Kifaya with al-Fath, Water with which wudu is permissible, Nooria Rizvia Sukkur, 1/63. 4. Al-Kifaya with al-Fath, Water with which wudu is permissible, Nooria Rizvia Sukkur, 1/63.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

(अरबी स्तंभ) शरह अल-तहावी आदि। अल-जौहरा में है कि यदि दो से अधिक गुण बदल जाएं तो शेख के संकेत के अनुसार यह अनुमेय नहीं है, लेकिन सही विचार यह है कि यह अनुमेय है, जैसा कि अल-मुस्तसफ़ा (1) में है। समाप्त। यह पहले पृष्ठ 101 में उल्लेख किया गया था, और इसी तरह अल-हिल्या से अल-मुस्तसफ़ा के सुधार द्वारा इसके खंडन में अवधारणा के विचार के संबंध में उद्धृत किया गया था। फिर उन्होंने अल-निहाया के शब्दों का उल्लेख किया। और फ़तह अल्लाह अल-मुईन में, प्रतिबंध से यह समझा जाता है कि यदि दो गुण बदल जाते हैं तो उपयोग अनुमेय नहीं है, लेकिन ऐसा नहीं है (2)। समाप्त। अल-किफ़ाया में जो है वह और भी अजीब है, क्योंकि जो बीत चुका है उसका उल्लेख करने के बाद, उन्होंने फकीह मैदानी के माध्यम से अल-ततिम्मा में जो कुछ भी है, उससे उस पर आपत्ति जताई, जो पृष्ठ 76 पर उल्लिखित हौज में पत्ते गिरने के मुद्दे के संबंध में है (3)। उन्होंने कहा: अल-निहाया के लेखक ने कहा कि जब पत्तियों के कारण पानी का रंग बदल गया, तो उसका स्वाद भी बदलना चाहिए, इसलिए दो गुण खत्म हो गए, इस प्रकार यह पुस्तक के संकेत के अनुसार हो गया (4)। समाप्त।

(उर्दू स्तंभ) तहावी की शरह (व्याख्या) में भी ऐसा ही संकेत दिया गया है, और सादी एफेंदी ने इसका समर्थन किया है। उनके बाद के दो लोगों ने कहा कि "एक गुण का कथन" का अर्थ है कि यदि दो गुण बदल जाते हैं, तो वज़ू मान्य नहीं होगा। हालाँकि, प्रामाणिक विवरण इसके विपरीत हैं; इमाम कर्खी से भी ऐसा ही वर्णित है। समाप्त। अल-किफ़ाया ने इस संकेत का उल्लेख किया और फिर अल-निहाया के विशेषज्ञों से वर्णित कथन को उद्धृत किया। अल-इतकानी ने अल-कुद्दूरी के संकेत का उल्लेख किया और फिर कहा कि हमारे साथियों के स्पष्ट मत के अनुसार वज़ू इसके साथ अनुमेय है —क्या शरह अल-तहावी आदि में मौजूद कथन नहीं देखा गया? समाप्त। अल-जौहरा में कहा गया है कि यदि दो गुण बदल जाते हैं, तो वज़ू शेख के संकेत के अनुसार वर्जित है, लेकिन सही विचार यह है कि वज़ू अनुमेय है; अल-मुस्तसफ़ा में ऐसा ही है। समाप्त। यह मामला पहले ही पृष्ठ 101 पर चर्चा किया जा चुका है, और इसी तरह पृष्ठ 101 पर वैचारिक अर्थ के संबंध में अल-हिल्या के संदर्भ में इसका उल्लेख किया गया था, फिर इसके खंडन में, अल-मुस्तसफ़ा के सुधार का हवाला देते हुए, पृष्ठ 101 पर इसका उल्लेख किया गया था, और फिर अल-निहाया के शब्दों को उद्धृत किया गया था। फ़तह अल्लाह अल-मुईन में कहा गया है कि एक गुण के प्रतिबंध से, दो गुणों के बदलने पर वज़ू की वर्जना समझी जाती है, हालांकि ऐसा नहीं है। समाप्त। अल-किफ़ाया में, अजीब तरीके से पूर्वोक्त

मामला प्रस्तुत करने के बाद, पृष्ठ 76 पर उल्लिखित हौज में पत्ते गिरने के संबंध में फकीह मैदानी द्वारा वर्णित अल-ततिम्मा के एक मामले के आधार पर आपत्ति जताई गई थी। इस प्रकार, अल-किफ़ाया ने कहा...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. अल-जौहरा अन-नय्यारा, पवित्रता की पुस्तक, इमदादिया मुल्तान, 1/14। 2. फ़तह अल्लाह अल-मुईन, पवित्रता की पुस्तक, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/62। 3. अल-किफ़ाया अल-फ़तह के साथ, वह पानी जिससे वज़ू अनुमेय है, नूरया रज़विया सुक्कुर, 1/63। 4. अल-किफ़ाया अल-फ़तह के साथ, वह पानी जिससे वज़ू अनुमेय है, नूरया रज़विया सुक्कुर, 1/63।

पृष्ठ 130 का 756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

(عربی کالم) شرح الطحاوی الخ وفي الجوهرة ان غير وصفين فعلى اشارة الشيخ لايجوز والصحيح يجوز كذا في المستصفى 1 اه وقدم في 101 وكذا مر عن الحلية اعتبار المفهوم في ورده بتصحيح المستصفى فى 101 ثم ذكر كلام النهاية وفي فتح الله المعين يفهم من التقييد عدم جواز الاستعمال اذا تغير وصفان وليس كذلك 2 اه، واغرب في الكفاية واذ ذكر مامر ثم استدرك عليه بما في التتمة عن الفقيه الميدانى من مسألة وقوع الاوراق في الحوض المارة 3 في 76 قال قال صاحب النهاية لماتغير لون الماء بالاوراق لابد ان يتغير طعمه ايضا فكان وصفان زائلين فصار موافقا لما اشار اليه الكتاب 4 اه

(اردو کالم) اشار في شرح الطحاوی الیه (طحاوی کی شرح میں ایسا ہی اشارہ کیا ہے) ہی اشارہ کیا ہے اور سعدی آفندی نے اس کی تائید کی ہے۔ اور ان کے بعد والے دونوں نے یہ کہا کہ "ان قول احد اوصافہ" میں اشارہ ہے کہ اگر دو وصف بدل جائیں تو وضو جائز نہ ہوگا۔ لیکن صحیح روایات اس کے خلاف ہیں امام کرخی سے ایسا ہی مروی ہے اھ کفایہ نے یہی اشارہ ذکر کر کے پھر نہایہ والا ماہرین سے منقول قول کا حوالہ بیان کیا۔ اتقانی نے قدوری والا اشارہ ذکر کر کے پھر کہا ہمارے اصحاب کے ظاہر قول کے مطابق اس سے وضو جائز ہے کیا طحاوی کی شرح میں موجود قول نہیں دیکھا الخ؟ اھ، اور جوہرہ میں ہے کہ اگر دو وصف تبدیل ہوجائیں تو وضو ناجائز ہے جیسا کہ شیخ نے اشارہ کیا ہے لیکن صحیح یہ ہے کہ وضو جائز ہے، مستصفیٰ میں ایسا ہے اھ یہ بات 101 میں گزر چکی ہے اور یوں ہی اے میں حلیہ کے حوالہ سے مفہوم کے اعتبار کے بارے میں گزرا، اور پھر اس کے رد میں مستصفیٰ کی تصحیح کے حوالہ سے 101 میں ذکر کر کے پھر نہایہ کے کلام کو ذکر کیا ہے فتح اللہ المعین میں ہے کہ ایک وصف کی قید سی دو وصف کی

تبدیلی میں وضو کا عدم جواز سمجھ آتا ہے حالانکہ ایسا نہیں ہے اھ، کفایہ میں عجیب انداز سے مذکورہ بات کو بیان کر کے پھر فقیہ میدانی سے تتمہ میں منقولہ مسئلہ سے اس پر استدراک کیا اور وہ مسئلہ حوض میں پتے گرنے کے بارے میں ہے جو 76 میں گزرا ہے، تو کفایہ نے کہا

حواشی: 1 الجوھرۃ النیرۃ کتاب الطھارۃ امدادیہ ملتان 1/14 2 فتح اللہ المعین کتاب الطھارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی 1/62 3 الکفایۃ مع الفتح الماء الذی یجوز بہ الوضو نوریہ رضویہ سکھر 1/63 4 الکفایۃ مع الفتح الماء الذی یجوز بہ الوضو نوریہ رضویہ سکھر 1/63

Fatawa Razawiyya, Volume 3

I say: And you know that it does not refute what was reported from the masters. For this reason, al-Nihayah and al-Binayah did not rely on it, despite them all mentioning that when water's color changes, its taste also changes. (1) This is the statement of the latter two authors. I say: What is meant in the case of leaves, as al-Nihayah clarified, is that it cannot be said that its color might change with a little milk or saffron without its taste changing. In short, the correct approach was to rectify what was stated by the jurist based on what was reported from the masters, as they did (1), and not the opposite, like al-Kifayah, which was followed by Miskeen. Thus, the deduced meaning was challenged by what was narrated in al-Nihayah from the masters. Then he recanted and said: Wudu is not performed with it, even if (2) the masters permitted it. A similar challenge and reversal occurred in Majma' al-Anhur. Then he said: However, justification is possible by saying that the narration of the author of al-Nihayah is understood as being based on necessity, so it does not contradict the statement of impermissibility when there is no necessity, as stated in al-Tuhfah. (3)

That the author of Nihayah explained that when water's color changes due to leaves, its taste will necessarily also change. So with two qualities changing, it will be in accordance with the book. (T) I say that this does not refute the position narrated from the masters (experts) which you are aware of, despite the fact that everyone mentioned that when color changes, taste must also change. Nihayah and Binayah did not consider this reliable. Ah, this was the statement of the last two (Kifayah and Ghayah). (T) I say that the situation meant is leaves falling into water, which Nihayah has mentioned. Therefore, there is no room now to say that if a little milk or saffron is added to water, although the water's color changes, its taste does not change; however, the point is that the statement narrated from the masters should have been used to amend the jurist Maidani's position, as other scholars have done. It should not have been reversed like Kifayah. Miskeen, following Kifayah and relying on the perceived meaning, challenged the statement narrated from experts in Nihayah and then said again that (when two qualities change) wudu with water is not permissible even though permission is narrated from the masters. Ah.

Footnotes: 1. Al-Binayah, the water with which wudu is permissible, Malik Sons Faisalabad 1/189. 2. Sharh li-Mulla Miskeen with Fath al-Mu'in, the water with which wudu is permissible, Saeed Company Karachi 1/62. 3. Majma' al-Anhur, purity is permissible with absolute water, Al-Amirah Press Egypt 1/72.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

मैं कहता हूँ: और आप जानते हैं कि यह उस्तादों (विशेषज्ञों) से जो वर्णित है उसका खंडन नहीं करता। इसीलिए निहाया और बिनाया ने इस पर भरोसा नहीं किया, हालांकि उन सभी ने उल्लेख किया कि जब पानी का रंग बदलता है, तो उसका स्वाद भी बदल जाता है। (१) यह बाद के दो लेखकों की उक्ति है। मैं कहता हूँ: और पत्तों की स्थिति में जैसा कि निहाया ने स्पष्ट किया है, यह नहीं कहा जा सकता कि थोड़े से दूध या केसर से इसका रंग बदल सकता है लेकिन स्वाद नहीं। संक्षेप में, सही यह था कि उस्तादों से जो प्राप्त है उसके आधार पर फ़क़ीह के कथन में सुधार किया जाता, जैसा कि उन्होंने किया (१), न कि इसके विपरीत जैसा कि किफ़ाया ने किया और मिसकीन ने उसका अनुसरण किया। अतः निहाया में उस्तादों से जो उद्धृत है उसके आधार पर अर्थ को चुनौती दी गई। फिर उन्होंने वापस कहा: इससे वज़ू नहीं किया जाएगा, भले ही (२) उस्तादों ने इसकी अनुमति दी हो। और इसी तरह मजमा-उल-अनहुर में भी चुनौती और पलटना हुआ। फिर उन्होंने कहा: लेकिन यह औचित्य संभव है कि निहाया के लेखक का विवरण आवश्यकता (ज़रूरत) पर आधारित है, इसलिए यह आवश्यकता न होने पर गैर-अनुमति के कथन के विरोधाभासी नहीं है, जैसा कि तोहफ़ा में है। (३)

कि निहाया के लेखक ने यह वर्णन किया कि जब पत्तों के कारण पानी का रंग बदलेगा तो अनिवार्य रूप से उसका स्वाद भी बदलेगा। तो दो गुणों के परिवर्तन पर यह किताब के अनुकूल हो जाएगा। (त) मैं कहता हूँ कि इससे उस्तादों (माहिरिन) से उद्धृत स्थिति का खंडन नहीं होता जिससे आप अवगत हैं, इसके बावजूद कि यह बात सब ने उल्लेख की कि जब रंग बदलेगा तो स्वाद भी अवश्य बदलेगा। निहाया और बिनाया ने इसे विश्वसनीय नहीं माना। यह आखिरी दोनों (किफ़ाया और ग़ाया) का कथन था। (त) मैं कहता हूँ कि पानी में पत्ते गिरने की वह स्थिति अभिप्रेत है जिसका उल्लेख निहाया ने किया है, इसलिए अब यह कहने की गुंजाइश नहीं कि अगर पानी में थोड़ा सा दूध या केसर डाल दिया जाए तो पानी का रंग बदलने के बावजूद उसका स्वाद नहीं बदलता, फिर भी परिणाम यह है कि फ़क़ीह मैदानी पर उस्तादों से उद्धृत कथन से सुधार करना चाहिए था, जैसा कि अन्य महानुभावों ने किया है। किफ़ाया की तरह इसका विपरीत नहीं करना चाहिए था, और मिसकीन ने किफ़ाया के अनुसरण में निहित अर्थ का विचार करते हुए, निहाया में विशेषज्ञों द्वारा उद्धृत कथन पर आपत्ति की और फिर दोबारा कहा कि (दो गुणों के बदल जाने पर) पानी से वज़ू जायज़ नहीं है हालांकि उस्तादों से अनुमति उद्धृत है।

पाद-टिप्पणियाँ: १. अल-बिनाया, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, मलिक संस फैसलाबाद १८९/१। २. शरह ले मुल्ला मिसकीन मअ फ़तह-उल-मुईन, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, सईद कंपनी कराची १/६२। ३. मजमा-उल-अनहुर, मुतलक़ पानी से पाकी जायज़ है, मतबाअ-ए-आमिरा मिस्र १/७२।

पृष्ठ १३१/७५६

فتاوی رضویہ جلد سوم

اقول: وانت تعلم انه لایدفع ماعن الاساتذة ولذالم تعتمده النهایة والبنایة مع ذکرهم جمیعاً ان الماء اذا تغیر لونہ تغیر طعمہ ایضاً ۱ اه هذه عبارة الاخیرین۔ اقول: والمراد فی صورة الاوراق کما افصح عنہ النهایة فلا یقال قد یتغیر لونہ بقلیل من اللبن والزعفران لاطعمہ وبالجملة کان الحق ان یستدرك بما عن الاساتذة علی ماعن الفقیہ کما فعلوا (۱) لا العکس کالکفایة وتبعه مسکین فتعقب المفهوم بما نقل فی النهایة عن الاساتذة ثم عاد فقال لا یتوضو وان اجازه ۲ الاساتذة اه ومثلہ تعقب ورجع فی مجمع الانهر ثم قال لکن یمکن التوجیه بأن نقل صاحب النهایة محمول علی الضرورة فلا ینافی القول بعدم الجواز عند الضرورة کما فی التحفة ۳ اه

کہ صاحبِ نہایہ نے یہ بیان کیا کہ جب پتوں کی وجہ سے پانی کا رنگ تبدیل ہوگا تو لازمی طور پر اس کا ذائقہ بھی تبدیل ہوگا۔ تو دو وصف کی تبدیلی ہونے پر یہ کتاب کے موافق ہوجائے گا۔ (ت) میں کہتا ہوں کہ اس سے اساتذہ (ماہرین) سے منقول شدہ موقف رد نہیں ہوتا جس سے آپ آگاہ ہیں اس کے باوجود کہ یہ بات سب نے ذکر کی کہ جب رنگ بدلے گا تو ذائقہ بھی ضرور بدلے گا۔ نہایہ اور بنایہ نے اس کو قابلِ اعتماد نہ سمجھا اه یہ آخری دونوں (کفایہ اور غایہ) کی عبارت تھی۔ (ت) میں کہتا ہوں کہ پانی میں پتے گرنے کی وہ صورت مراد ہے جس کو نہایہ نے ذکر کیا ہے لہٰذا اب یہ کہنے کی گنجائش نہیں کہ اگر پانی میں تھوڑا سا دودھ یا زعفران ڈال دیا جائے تو پانی کا رنگ بدلنے کے باوجود اس کا ذائقہ تبدیل نہیں ہوتا، تاہم حاصل یہ ہے کہ فقیہ میدانی پر اساتذہ سے منقول قول سے استدراک کرنا چاہیے تھا، جیسا کہ دیگر حضرات نے کیا ہے کفایہ کی طرح اس کا عکس نہیں کرنا چاہیے تھا، اور مسکین نے کفایہ کی پیروی میں مفہوم کا اعتبار کرتے

ہوئے، نہایہ میں ماہرین کے نقل کردہ قول پر، تعاقب کیا اور پھر دوبارہ کہا کہ (دو وصف تبدیل ہو جانے پر) پانی سے وضو جائز نہیں ہے اگرچہ اساتذہ سے اجازت منقول ہے اہ اسی

۱ البناية، الماء الذى يجوز به الوضوء، ملک سنز فيصل آباد ۱۸۹/۱ ۲ شرح لملا مسكين مع فتح المعين، الماء الذى يجوز به الوضوء، سعيد كمپنى كراچى ۱/۶۲ ۳ مجمع الانهر، تجوز الطهارة بالماء المطلق، مطبعته عامره مصر ۱/۷۲

Fatawa Rizvia, Volume 3

I say: (1) He followed 'Al-Hilyah' in it, and you have known its rebuttal. A group rejects it. I say: The first group took the words 'one' and 'some' with the condition of 'not-others' (exclusive), while this second group took it 'without that condition' (inclusive), thus it includes everything just as a part is included in the whole. It was previously mentioned on page 101 from Al-Zahidi in the commentary of 'Al-Quduri' that the author's statement 'one of its qualities does not signify restriction', etc., and he quoted it in 'Al-Hilyah', then said: But it appears he means from the perspective of reality, otherwise there is no doubt that the divergent implication (mafhum al-mukhalafah) signifies restriction of permissibility by that, as we mentioned. Based on this branch which will come regarding chickpeas and broad beans: if they are soaked in water and the three qualities change... (End of quote). The branch referred to is the statement in 'Al-Munyah': 'And likewise chickpeas and broad beans if soaked, even if its color, taste, and smell change.' (End of quote). And in 'Jami' al-Rumuz', what is in 'Al-Hidayah' regarding the mention of one of the qualities is not for restriction, as in 'Al-Zahidi', and this was pointed out in 'Al-Mudmarat'. (End of quote). And the scholar Ahmad bin Yunus al-Shalabi said regarding the statement of 'Al-Kanz' 'one of its qualities'...

...the same kind of critique and referral was made in 'Majma' al-Anhur', and then it was said: 'But this interpretation is possible that the opinion of the experts quoted by the author of 'Al-Nihayah' is for necessity, and this does not contradict the position mentioned in 'Al-Tuhfah' regarding the impermissibility of wudu without necessity.' (End of quote). (T) I say: 'Majma' al-Anhur' followed 'Hilyah' in this matter, and you have already known its rebuttal on page 77. The other group has denied the divergent implication. I say that the first group took the word 'one' and 'some' (regarding the change of one quality or some qualities) with the condition of 'not-others', and this second group took it 'without the condition of others'. Therefore, in this second case, all qualities will be included, just as a part is included in the whole. And on page 101, under the reference of Zahidi in the commentary of Quduri, the author's statement passed that mentioning one quality does not yield the benefit of restriction, etc., and he quoted it in 'Hilyah', then said that this lack of restriction is with respect to reality, otherwise, the linguistic divergent implication establishes permissibility by the change of that one quality, as I mentioned. And based on this truth is the statement of this sub-ruling which is coming about chickpeas and beans, that when they are put in water and soaked, all three qualities of the water change.

(End of quote). And the sub-ruling pointed out is the statement of 'Munyah' and similarly chickpeas...

---

1. Munyat al-Musalli, Chapter on Waters, Maktabah Aziziyah, Kashmiri Bazaar Lahore, p. 18
2. Jami' al-Rumuz, Book of Purity, Matba'ah Islamiyah, Gunbad Iran, 1/47

फतावा रिज़विया, खंड 3

मैं कहता हूँ: (1) उन्होंने इसमें 'अल-हिलिया' का अनुसरण किया है और आप इसके खंडन को जान चुके हैं। एक समूह इसे अस्वीकार करता है। मैं कहता हूँ: पहले समूह ने 'एक' और 'कुछ' शब्दों को 'अन्य-नहीं' (अनन्य) की शर्त के साथ लिया, जबकि इस दूसरे समूह ने इसे 'बिना उस शर्त के (समावेशी) लिया है, इसलिए इसमें सब कुछ शामिल होगा जैसे अंश पूर्ण में शामिल होता है। पृष्ठ 101 पर ज़ाहेदी के हवाले से 'अल-कुदूरी' की व्याख्या में पहले उल्लेख किया गया था कि लेखक का यह कथन कि 'उसके गुणों में से एक प्रतिबंध का संकेत नहीं देता', आदि, और उन्होंने इसे 'अल-हिलिया' में उद्धृत किया, फिर कहा: लेकिन स्पष्ट रूप से उनका मतलब वास्तविकता के दृष्टिकोण से है, अन्यथा इसमें कोई संदेह नहीं है कि विपरीत अर्थ (मफहूम-ए-मुखालिफ़त) उसी के द्वारा अनुमति के प्रतिबंध का संकेत देता है, जैसा कि हमने उल्लेख किया है। इसी शाखा के आधार पर जो चने और लोबिया के संबंध में आएगी: यदि उन्हें पानी में भिगोया जाता है और तीनों गुण बदल जाते हैं... (उद्धरण समाप्त)। जिस शाखा का उल्लेख किया गया है वह 'अल-मुनया' का कथन है: 'और इसी तरह चने और लोबिया यदि भिगोए जाएं भले ही उसका रंग, स्वाद और गंध बदल जाए।' (उद्धरण समाप्त)। और 'जामे अर-रुमूज़' में वह है जो 'अल-हिदाया' में है कि गुणों में से एक का उल्लेख प्रतिबंध के लिए नहीं है, जैसा कि 'ज़ाहेदी' में है, और इसकी ओर 'अल-मुदकरात' में इशारा किया गया है। (उद्धरण समाप्त)। और विद्वान अहमद बिन यूनुस अल-शलाबी ने 'अल-कंज' के कथन 'उसके गुणों में से एक' के बारे में कहा...

...इसी तरह की आलोचना और संदर्भ 'मजमा अल-अन्हुर' में किया गया था, और फिर कहा गया: 'लेकिन यह व्याख्या संभव है कि 'अल-निहाया' के लेखक द्वारा उद्धृत विशेषज्ञों की राय आवश्यकता के लिए हो, और यह बिना आवश्यकता के वज़ू की अनुमति न देने के बारे में 'अल-तोहफ़ा' में उल्लिखित रुख के विपरीत नहीं है।' (उद्धरण समाप्त)। (त) मैं कहता हूँ: 'मजमा अल-अन्हुर' ने इस मामले में 'हिलिया' का अनुसरण किया है, और आप पृष्ठ 77 पर इसका खंडन पहले ही जान चुके हैं। दूसरे समूह ने विपरीत अर्थ को नकार दिया है। मैं कहता हूँ कि पहले समूह ने 'एक' और 'कुछ' शब्दों को (एक गुण या कुछ गुणों के परिवर्तन के बारे में) 'अन्य-नहीं' की शर्त के साथ लिया है, और इस दूसरे समूह ने इसे 'अन्य की शर्त के बिना' लिया है। इसलिए, इस दूसरी स्थिति में सभी गुण शामिल होंगे, जैसे अंश पूर्ण में शामिल होता है। और पृष्ठ 101 पर ज़ाहेदी के संदर्भ में कुदूरी की व्याख्या में लेखक का यह कथन गुज़रा कि एक गुण का उल्लेख प्रतिबंध का लाभ नहीं देता है, आदि, और

उन्होंने इसे 'हिलिया' में उद्धृत किया, फिर कहा कि यह प्रतिबंध की कमी वास्तविकता के संबंध में है, अन्यथा, भाषाई विपरीत अर्थ उस एक गुण के परिवर्तन से अनुमति स्थापित करता है, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है। और इसी सत्य पर इस उप-नियम का वर्णन आधारित है जो चने और फलियों के बारे में आने वाला है, कि जब उन्हें पानी में डालकर भिगोया जाए, तो पानी के तीनों गुण बदल जाते हैं। (उद्धरण समाप्त)। और जिस उप-नियम की ओर इशारा किया गया है वह 'मुनया' का कथन है और इसी तरह चने...

---

1. मुनयत अल-मुसल्ली, जल अध्याय, मकतबा अजीजिया, कश्मीरी बाजार लाहौर, पृष्ठ 18
2. जामे अर-रुमूज़, शुद्धता की पुस्तक, मतबा इस्लामिया, गुंबद ईरान, 1/47

पृष्ठ 132/756

اقول: (۱) تبع فیہ الحلیۃ وقد علمت ردہ فی وفریق یاباہ اقول اخذ الاولون لفظۃ احد وبعض بشرط لا وہؤ لاء لابشرط فشمل الکل شمول الجزئیۃ للکلیۃ وتقدم فی ۱۰۱ عن الزاہدی فی شرح القدوری قول المصنف احد اوصافہ لایفید التقیید الخ وقد نقلہ فی الحلیۃ ثم قال لکن الظاہر انہ یرید من حیث الواقع والا فلا شک ان مفہوم المخالفۃ یفید تقیید الجواز بذلک کما ذکرنا وعلی ہذا الفرع الذی سیأتی فی الحمص والباقلاء اذ انقع فی الماء وتغیرت الاوصاف الثلثہ اہ والفرع المشار الیہ قول المنیۃ وکذا الحمصۃ والباقلاء اذ انقع وان تغیر لونہ وطعمہ وریحہ ۱ اہ وفی جامع الرموز ما فی الہدایۃ من ذکر احد الاوصاف لیس للتقیید کما فی الزاہدی والیہ اشیر فی المضمرات ۲ اہ وقال العلامۃ احمد بن یونس الشلبی علی قول الکنز احد اوصافہ

طرح کا تعاقب و رجوع مجمع الانہر میں کیا اور پھر کہا، لیکن یہ توجیہ ممکن ہے کہ صاحب نہایہ کی نقل کردہ ماہرین کی رائے ضرورت کیلئے ہو اور یہ بغیر ضرورت وضو ناجائز ہونے والی تحفہ میں مذکور موقف کے خلاف نہیں ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں مجمع الانہر نے اس بات میں حلیہ کی پیروی کی ہے اور آپ ص ۷۷ میں اس کا رد معلوم کر چکے ہیں۔ دوسرے فریق نے مفہوم مخالف کا انکار کیا ہے۔ میں کہتا ہوں کہ پہلے فریق نے (ایک وصف یا بعض اوصاف کی تبدیلی کے بارے میں) لفظ "ایک" اور "بعض" کو بشرطِ لا غیر لیا ہے اور اس دوسرے فریق نے لا بشرط غیر، لیا ہے پس اس دوسری صورت میں تمام اوصاف شامل ہوں گے جیسا کہ جزئی کُلّی میں شامل ہوتی ہے اور ۱۰۱ میں زاہدی کے حوالہ سے شرح قدوری میں گزرا مصنف کا یہ قول کہ ایک وصف کا ذکر تقیید کا فائدہ نہیں دیتا الخ اور اس کو حلیہ میں نقل کیا پھر کہا کہ یہ عدم تقیید واقع کے لحاظ سے ہوگی ورنہ لفظوں کا مفہوم مخالف تو اسی ایک وصف کی تبدیلی سے جواز

ثابت کرتا ہے جیسا کہ میں نے ذکر کیا ہے اور اسی حقیقت پر اس تفریع کا بیان مبنی ہے جو آئندہ چنوں اور باقلی کے بارے میں کہ ان کو جب پانی میں ڈال کر تر کیا جس سے پانی کے تینوں اوصاف تبدیل ہو جائیں اھ اور جس تفریع کی طرف اشارہ کیا وہ منیہ کا قول اور اسی طرح چنے

---

۱ منیہ المصلی فصل فی المیاہ مکتبہ عزیزیہ کشمیری بازار لاہور ص ۱۸ ۲ جامع الرموز کتاب الطہارت مطبعہ اسلامیہ گنبد ایران ۴۷/۱

Fatawa Razawiyya Volume Three

[Right Column - Urdu translation/commentary] ...or broad beans when they are placed in water and soaked, even if its color, taste, and smell change, it is so (Alif-Ha). And it is mentioned in Jami' al-Rumuz that the mention of one quality in Al-Hidayah is not for restriction, just as it is in Az-Zahidi, and in Al-Mudmarat there is an indication towards this (Alif-Ha). Regarding the statement in Kanz, 'ahada awsafihi aw jami'a awsafihi' (change in one quality or all qualities), Allama Ahmad bin Yunus Shalabi said that this is on the condition that the water remains upon its original creation. After saying this, he mentioned Alif-Ha, but he did not clarify whose text he was quoting. From the context, it appears that this is the discourse of Shaykh Yahya. In Al-Durar, Allama Mulla Khusraw said that the statement of many scholars is as follows: 'ghayr ahadan awsafahu tahir' (a pure thing changes one quality). Because of this, some commentators of Al-Hidayah fell into the misconception that the word 'one' was meant to negate more than that, although this is not the case because it is mentioned in Al-Yanabi' that if chickpeas or broad beans are soaked in water and it changes its color, taste, and smell...

[Left Column - Arabic original text] ...or all of its qualities while it remains upon its original nature (Alif-Ha). And he wrote after it his word (Alif-Ha), and he did not specify from whom it was narrated, but it is clear from the context that it is Shaykh Yahya (Ain-Ha). Allama Mawla Khusraw said in Al-Durar: The wording of many scholars occurred like this: '...tahir'. Some commentators of Al-Hidayah imagined that the word 'one' was a caution against what is beyond it, but it is not so, as mentioned in Al-Yanabi': If chickpeas or broad beans are soaked and their color, taste, and smell change, wudu (ablution) is permissible with it. And it is said in Al-Nihayah, narrated from the masters: and he narrated what preceded, then he said: and it was pointed out in the commentary of Al-Tahawi (Alif-Ha). And Al-Shurunbulali, Abdul Halim, and Mawla Hasan Al-Ujaybi agreed with him. And Al-Khadimi supported it with his saying: And the view is that what is in Al-Hidayah is not the narration of Al-Nihayah, as it was imagined, it is far-fetched [3] (Alif-Ha). And he said regarding his statement 'and it is not so', it may be answered that he (means restriction to one of the qualities) in what differs from water in the three qualities, for the substance mixed with water if it does not match it...

[Bottom Note - Arabic/Urdu] (Ain-Ha) Perhaps this Yahya is Shaykh Yahya al-Quj-Hisari, the author of Al-Idah, a commentary on Al-Kanz, and Allah the Almighty knows best [12]. Minhu Ghu-fira Lahu (M). Perhaps by this Yahya is meant Shaykh Yahya al-

Quj-Hisari, the author of Al-Idah, a commentary on Al-Kanz, and Allah the Almighty knows best [12]. Minhu Ghu-fira Lahu (T).

[Footnotes] 1. Shalabiya 'ala al-Tabyin, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyya, Bulaq Egypt, 1/191. 2. Durar wa Ghurar, Kitab al-Taharah, Dar Sa'adah Egypt, 21/1. 3. Khadimi Sharh Durar, Kitab al-Taharah, Dar Sa'adah Egypt, p. 20.

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरा

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...या बाकला (सेम की फली) जब उन्हें पानी में डालकर भिगोया जाए, भले ही उसका रंग, स्वाद और गंध बदल जाए, ऐसा ही है (अलिफ़-हा)। और जामि' अल-रुमूज़ में है कि हिदाया में एक गुण का उल्लेख प्रतिबंधित करने के लिए नहीं है, जैसा कि ज़ाहीदी में है, और मुदमेरात में इसी ओर इशारा है (अलिफ़-हा)। कंज़ के कथन 'अहदा औसाफ़िही औ जमीअ औसाफ़िही' (एक गुण या सभी गुणों का परिवर्तन) पर अल्लामा अहमद बिन युनूस शलबी ने कहा कि यह इस शर्त पर है कि पानी अपनी मूल प्रकृति पर बना रहे। यह कहकर उन्होंने अलिफ़-हा कहा, लेकिन उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि यह किसकी इबारत (लेख) उद्धृत की गई है, और संदर्भ से ऐसा प्रतीत होता है कि यह शेख़ याह्या का कलाम है। दुरर में अल्लामा मुल्ला खुसरौ ने कहा कि बहुत से मशाइख (विद्वानों) की इबारत इस प्रकार है: 'ग़ैर अहदन औसाफ़हु ताहिर' (एक पवित्र वस्तु एक गुण को बदल दे)। इससे हिदाया के कुछ टीकाकारों को भ्रम हुआ कि शब्द 'एक' से अधिक के निषेध का उद्देश्य है, हालांकि ऐसा नहीं है क्योंकि यनाबीअ में है कि यदि चने या बाकला पानी में भीगकर उसके रंग, स्वाद और गंध को बदल दें...

[बायां कॉलम - अरबी मूल पाठ] ...या उसके सभी गुण जबकि वह अपनी मूल प्रकृति पर बना रहे (अलिफ़-हा)। और उन्होंने इसके बाद अपना शब्द लिखा (अलिफ़-हा), और यह स्पष्ट नहीं किया कि इसे किससे लिया गया है, लेकिन संदर्भ से स्पष्ट है कि यह शेख़ याह्या हैं (ऐन-हा)। अल्लामा मौला खुसरौ ने दुरर में कहा: बहुत से विद्वानों की शब्दावली इस प्रकार आई: '...ताहिर'। हिदाया के कुछ टीकाकारों ने कल्पना की कि 'एक' शब्द उससे अधिक से बचाव के लिए था, लेकिन ऐसा नहीं है, जैसा कि यनाबीअ में वर्णित है: यदि चने या बाकला भिगोए जाएँ और उनका रंग, स्वाद और गंध बदल जाए, तो उससे वज़ू करना जायज़ है। और निहाया में उस्तादों से वर्णित है: और उन्होंने वह उद्धृत किया जो पहले बीत चुका है, फिर कहा: और अल-तहावी की व्याख्या में इसकी ओर संकेत किया गया है (अलिफ़-हा)। और अल-शुरुनबुलाली, अब्दुल हलीम और मौला हसन अल-उजैबी ने इससे सहमति व्यक्त की। और अल-खादिमी ने अपने इस कथन से इसका समर्थन किया: और विचार यह है कि जो हिदाया में है वह निहाया का वर्णन नहीं है जैसा कि कल्पना की गई थी, यह दूर की बात है [3] (अलिफ़-हा)। और उन्होंने उनके कथन 'और ऐसा नहीं है' पर कहा, इसका उत्तर दिया जा सकता है कि वे (तीन गुणों में से एक गुण तक सीमित करना चाहते हैं) जो पानी के तीन गुणों से भिन्न है, क्योंकि पानी में मिलने वाला पदार्थ यदि उससे मेल नहीं खाता...

[नीचे का नोट - अरबी/उर्दू] (ऐन-हा) शायद यह याह्या, शेख़ याह्या अल-कुज-हिसारी हैं, जो अल-इदाह शरह अल-कंज़ के लेखक हैं, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है [12]। मिन्हु गुफिरा लहू (म)। शायद इस याह्या से मुराद शेख़ याह्या अल-कुज-हिसारी हों, जो अल-इदाह शरह कंज़ के लेखक हैं, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है [12]। मिन्हु गुफिरा लहू (त)।

[पाद लेख] 1. शलबिया अल-तब्यीन, किताब अल-तहारत, अल-अमीरिया, बुलाक़ मिस्र, 1/191। 2. दुरर व ग़ुरर, किताब अल-तहारत, दार सआदत मिस्र, 21/1। 3. खादिमी शरह दुरर, किताब अल-तहारत, दार सआदत मिस्र, पृ. 20।

पृष्ठ 133/756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

[دایاں کالم] اور باقلی جب ان کو پانی میں ڈال کر تر کیا جائے اگرچہ اس کا رنگ، ذائقہ اور بو بدل جائے ، ہے اھ اور جامع الرموز میں ہے کہ ہدایہ میں ایک وصف کا ذکر مقید کرنے کیلئے نہیں جیسا کہ زاہدی میں ہے اور مضمرات میں اسی طرف اشارہ ہے اھ کنز کے قول احد اوصافہ او جمیع اوصافہ (ایک وصف یا تمام اوصاف کی تبدیلی) پر علامہ احمد بن یونس شلبی نے یہ کہا کہ بشرطیکہ پانی اپنی خلقت پر باقی رہے۔ اور یہ کہہ کر انہوں نے اھ کہا لیکن انہوں نے یہ واضح نہیں کیا کہ یہ کس کی عبارت نقل کی ہے، اور سیاق سے یوں ظاہر ہوتا ہے کہ یہ کلام شیخ یحییٰ کا ہے۔ دُرر میں علامہ مُلا خسرو نے کہا کہ بہت سے مشائخ کی عبارت یوں ہے غیر احدا وصافہ طاھر (پاک چیز ایک وصف کو تبدیل کر دے) تو اس سے ہدایہ کے بعض شار حین کو وہم ہوا کہ لفظ احد (ایک) سے زائد کی نفی مقصود ہے حالانکہ ایسا نہیں ہے کیونکہ ینابیع میں ہے کہ اگر چنے باقلا پانی میں تر ہو کر اس کے رنگ اور ذائقہ اور بُو کو تبدیل

[بایاں کالم] او جمیع اوصافه اذا بقی علی اصل خلقته اھ وکتب بعده لفظه اھ ولم یبین المنقول عنه والظاھر من السیاق انه الشیخ یحیی عھ وقال العلامة مولی خسرو فی الدرر وقعت عبارة کثیر من المشائخ ھکذا ھکذا طاھر فتوھم بعض شراح الھدایة ان لفظ الاحد احتراز عما فوقه ولیس کذلك لما فی الینابیع لو نقع الحمص او الباقلاء فتغیر لونه وطعمه و ریحه یجو زبه الوضوء وقال فی النھایة المنقول عن الاساتذة فنقل مامر ثم قال واشار فی شرح الطحاوی الیه اھ واقره الشرنبلالی وعبد الحلیم والمولی حسن العجیبی وایدہ الخادمی بقوله والقول ان ما فی الھدایۃ غیر روایۃ النھایۃ کما توھم بعید ۳ اہ وقال علی قوله ولیس کذلك وقد یجاب انه (یرید التقیید باحد الاوصاف) فیما یخالف الماء في الاوصاف الثلثة فان المخالط للماء اذا لم یوافقه

[نیچے کا نوٹ] عه لعل یحییٰ هذا هو الشیخ یحییٰ القوجحصاری صاحب الایضاح شرح الکنز واللہ تعالٰی اعلم ۱۲ منہ غفرلہ (م) شاید اس یحییٰ سے مراد شیخ یحییٰ القوجحصاری صاحب الایضاح شرح کنز ہوں، واللہ تعالٰی اعلم ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

[حواشی] 1 شلبیہ علی التبین کتاب الطہارۃ الامیر یہ بولاق مصر ۱/۱۹۱ 2 درر و غرر کتاب الطہارۃ دار سعادۃ مصر ۱/۲۱ 3 خادمی شرح درر کتاب الطہارۃ دار سعادۃ مصر ص ۲۰

Fatawa Rizvia, Volume Three

[Right Column - Urdu Translation/Commentary]: ...even if they change [the water's properties], wudu is still permissible. In Nihaya, it is stated that it is narrated from the teachers, and quoting their previous statement, it said that al-Tahawi's commentary alludes to this. Shurunbulali, Abd al-Halim, and Mawla Mulla Hasan Ajibi have affirmed this, and al-Khadimi supported it by saying that to claim the statement in Hidaya is against the narration of Nihaya is a far-fetched delusion. Al-Khadimi said regarding Mulla Khusraw's mentioned statement "and it is not like that": The answer to it could be that the restriction of one property will negate additional properties where the substance mixed in water is different from water in all three properties. Because if a substance different in all properties changes two or three properties of the water, wudu with that water will not be permissible; otherwise, it will be. I have stated here that this is the answer of Imam al-Zayla'i, as will follow. Then al-Khadimi himself refuted it, saying: The discussion under consideration is not about a substance different from water in properties. Al-Khadimi's meaning is that the statement "if one of its properties is changed" refers to a substance mixed in water that is different in all three properties. It is not from the category under discussion here because this is a discussion about solid substances, whereas the experts of the rule have considered properties only for flowing/liquid things, as will follow. While this is a matter of predominance, which al-Ghurar mentioned at the end of its discourse. But there, in solids, thinness is considered. So how can this be applied to that? (T) I say, but for the change in properties...

[Left Column - Arabic Text]: ...in both of them, if two or three [properties] are changed, wudu with it is not permissible, and it was permitted. [Note 1] I say: This is the answer of Imam al-Zayla'i, as will follow. Then al-Khadimi refuted it by saying: But it is not hidden that this is not of this category, but rather of the category of predominance (ghalaba). [Note 2] As will follow. They mean: What you applied their saying to—"even if one of its properties is changed"—which is the mixing of something that differs from water in the three properties, is not of the category under discussion here, which is the mixing of a solid substance (jamid). Because the consideration of properties, according to the experts of the rule, is only for liquid substances (ma'iat), as will follow. Thus, it is of the category of what is predominated by another substance, which is mentioned at the end of the discussion in al-Ghurar. However, here the consideration is for thinness (riqqat), so how can this be applied to that? I say: (1) But the specification of the discussion [note 'ah'] to the solid...

That is, Imam al-Zayla'i has applied this absolute rule to a liquid substance flowing in water that is different in all three properties. 12 [end of note], may He forgive him. (T)

[Footnotes]: 1. Khadimi, Sharh al-Durar, Book of Purification, Dar al-Sa'ada, Egypt, 21/1 2. Khadimi, Sharh al-Durar, Book of Purification, Dar al-Sa'ada, Egypt, 21/1

फ़तावा रज़विया, खंड तीन

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: ...कर दें तो भी उससे वज़ू जायज़ है और निहाया में कहा गया है कि यह उस्तादों से वर्णित है और उनके पिछले कथन को उद्धृत करते हुए कहा कि तहावी की व्याख्या में इस ओर संकेत है। शुन्नुम्बलाली, अब्दुल हलीम और मौला मुल्ला हसन अजीबी ने इसे पुष्ट किया है और अल-खादिमी ने इसका समर्थन करते हुए कहा है कि यह कहना कि हिदाया का विवरण निहाया के वर्णन के विरुद्ध है, एक दूर की कल्पना है। अल-खादिमी ने मुल्ला खुसरो के उपरोक्त कथन "और ऐसा नहीं है" के बारे में कहा कि इसका जवाब यह हो सकता है कि एक गुण का प्रतिबंध वहाँ अतिरिक्त गुणों का निषेध करेगा जहाँ पानी में मिलने वाली चीज़ तीनों गुणों में पानी के विपरीत हो। क्योंकि अगर सभी गुणों में विपरीत चीज़ पानी के दो या तीनों गुणों को बदल दे, तो उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं होगा, अन्यथा जायज़ होगा। मैंने यहाँ कहा है कि यही इमाम ज़ैलई का उत्तर है, जैसा कि आगे आएगा। फिर अल-खादिमी ने स्वयं इसका खंडन करते हुए कहा: विचाराधीन चर्चा गुणों में पानी के विपरीत चीज़ के बारे में नहीं है। अल-खादिमी का अर्थ यह है कि "यदि उसके गुणों में से कोई एक बदल जाए" यह कथन पानी में मिलने वाली उस चीज़ के बारे में है जो तीनों गुणों में पानी के विपरीत हो। यह उस श्रेणी से नहीं है जिसकी यहाँ चर्चा है क्योंकि यह तो ठोस चीज़ के बारे में बहस है, जबकि नियम वालों ने गुणों पर विचार केवल बहने वाली (तरल) चीज़ों के बारे में किया है, जो आगे आएगा। जबकि यह प्रबलता वाली बात है जिसका उल्लेख ग़ुरर ने अपने कथन के अंत में किया है। लेकिन वहाँ ठोस में पतलेपन (रक़त) पर विचार किया जाता है। तो इसे उस पर कैसे लागू किया जा सकता है? (त) मैं कहता हूँ, लेकिन गुणों के परिवर्तन के..

[बायां कॉलम - अरबी पाठ]: ...उन दोनों में, यदि दो या तीन [गुण] बदल जाएं तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है, और इसकी अनुमति दी गई थी। [नोट १] मैं कहता हूँ: यह इमाम ज़ैलई का जवाब है, जैसा कि आगे आएगा। फिर अल-खादिमी ने यह कहकर इसका खंडन किया: लेकिन यह छिपा नहीं है कि यह इस श्रेणी का नहीं है, बल्कि प्रबलता (ग़लबा) की श्रेणी का है। [नोट २] जैसा कि आगे आएगा। उनका अर्थ है: आपने उनके कथन—"चाहे उसके गुणों में से कोई एक बदल जाए"—को जिस पर लागू किया है, जो तीन गुणों में पानी से भिन्न चीज़ का मिश्रण है, वह यहाँ चर्चा के अंतर्गत आने वाली श्रेणी का नहीं है, जो ठोस (जामिद) का मिश्रण है। क्योंकि नियम के जानकारों के अनुसार, गुणों पर विचार केवल तरल पदार्थों (माआत) के लिए है, जैसा कि आगे आएगा। इस प्रकार, यह उस श्रेणी से है जिस पर किसी अन्य पदार्थ की प्रबलता हो, जिसका उल्लेख अल-ग़ुरर के अंत में किया

गया है। हालाँकि, यहाँ विचार पतलेपन (रक़त) पर है, तो इसे उस पर कैसे लागू किया जा सकता है? मैं कहता हूँ: (१) लेकिन चर्चा ['अह'] को ठोस के लिए विशिष्ट करना...

अर्थात्: इमाम ज़ैलई ने इस निरपेक्ष नियम को तीनों गुणों में पानी के विपरीत बहने वाली चीज़ पर लागू किया है। १२, अल्लाह उसे क्षमा करे। (त)

[पाद-टिप्पणियाँ]: १. खादिमी, शरह अल-दुरर, किताब अल-तहारत, दार अल-सआदत मिस्र, २१/१ २. खादिमी, शरह अल-दुरर, किताब अल-तहारत, दार अल-सआदत मिस्र, २१/१

पृष्ठ १३४/७५६

[بایاں کالم - عربی متن]: فیهما فان غیر اثنین او الثلاث لایجوز الوضوء به والاجاز ۱ اه قلت هذا هو جواب الامام الزیلعي کما یأتی ثم رده الخادمی بقوله لکن لا یخفی ان هذا لیس من هذا القبیل بل من قبیل الغلبة ۲ کما یأتی اه یریدان ما حملتم علیه قولهم وان غیر احد اوصافه وهو اختلاط ما یخالف الماء فی الاوصاف الثلاثة لیس من قبیل ما فیه الکلام هنا وهو خلط الجامد لان العبرة بالاوصاف عند اهل الضابطة انما هي فی المائعات کما سیأتی فهو من قبیل ما غلب علیه غیره وهو المذکور فی الغرر أخر الکلام اما هنا فالعبرة بالرقة فکیف یحمل هذا علی ذاك ۔ اقول: (۱) لکن تخصیص الکلام عه بالجامد

[دایاں کالم - اردو شرح]: کردیں تو بھی اس سے وضو جائز ہے اور نہایہ میں کہا کہ اساتذہ سے منقول ہے اور ان کے گزشتہ قول کو نقل کر کے کہا کہ طحاوی کی شرح میں اس طرف اشارہ ہے اه شرنبلالی، عبدالحلیم اور مولی ملاحسن عجیبی نے اس کو ثابت کیا اور خادمی نے اس کی تائید کرتے ہوئے یوں کہا کہ یہ کہنا کہ ہدایہ کا بیان نہایہ کی روایت کے خلاف ہے، یہ وہم بعید ہے اه خادمی نے ملا خسرو کے قول مذکور ولیس کذلك کے بارے میں کہا کہ اس کا جواب یوں ہو سکتا ہے کہ ایک وصف کی قید وہاں زائد اوصاف کی نفی کرے گی جہاں پانی میں ملنے والی چیز تینوں اوصاف میں پانی کے مخالف ہو کیونکہ تمام اوصاف میں مخالف چیز اگر پانی کے دو یا تینوں اوصاف کو تبدیل کردے تو اس پانی سے وضو جائز نہ ہوگا ورنہ جائز ہوگا۔ میں نے یہاں کہا کہ یہی امام زیلعی کا جواب ہے جیسا کہ آئندہ آئے گا اه پھر خادمی نے خود اس کا رد کرتے ہوئے کہا زیر بحث کلام اوصاف میں پانی کے مخالف چیز کے بارے میں نہیں ہے، خادمی کی مراد یہ ہے کہ ان غیر احد اوصافہ یہ قول، پانی میں ملنے والی اس چیز کے بارے میں ہے جو تینوں اوصاف میں پانی کے مخالف ہو، اس قبیلہ سے نہیں جس میں یہاں کلام ہے کیونکہ یہ تو جامد چیز کے

بارے میں بحث ہے جبکہ ضابطہ والوں نے اوصاف کا اعتبار صرف بہنے والی چیزوں کے بارے میں کیا ہے جو آئندہ آئے گا، جبکہ یہ غلبہ والی بات ہے جو غرر نے اپنے کلام کے آخر میں ذکر کیا ہے، لیکن وہاں جامد میں تو رقت کا اعتبار ہے۔ پس اس کو اس پر کیسے محمول کیا جاسکتا ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں، لیکن اوصاف کی تبدیلی کے

[حاشیہ نیچے]: عه ای حکم الجواز مع تغیر فی الاوصاف ۱۲ منه غفرله (م) یعنی امام زیلعی نے اس مطلق کو تینوں اوصاف میں پانی کے مخالف بہنے والی چیز پر محمول کیا ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

[فٹ نوٹ]: ۱ خادمی شرح درر کتاب الطهارة دار سعادة مصر ۲۱/۱ ۲ خادمی شرح درر کتاب الطهارة دار سعادة مصر ۲۱/۱

Indeed, the occurrence of restricting the validity of wudu (ablution) with solid substances happened after the aforementioned rule, whereas the discourse of all authorities prior to Imam Az-Zaylai was general. In summary, he interpreted this general rule to apply to a liquid that differs in all three attributes; thus, the objection against Imam Az-Zaylai is removed. In short, there are two approaches for the proponents of the rule: First, treating the mention of one attribute as a restrictive condition and applying the ruling to a liquid that differs from water in all three attributes; this is the approach of Imam Az-Zaylai. Second, treating the mention of a single attribute as an incidental condition and applying the ruling to solids; this is the approach of 'Al-Durar' and those who follow it like 'Al-Tanwir' and 'Nur al-Idah'. Both approaches are correct and conform to the rule, so there is no objection; confusion only arose from mixing these two paths.

I say: Yes, if we set aside the newly emerged rule and limit our view to the original texts of the school and the positions transmitted from the Imams of the school, then these two approaches are indeed conflicting. This is because making the mention of one attribute a cautionary restriction necessitates determining dominance based on attributes, which is the position of Imam Muhammad. On the other hand, making it incidental means discarding the consideration of attributes in determining dominance, which is the position of Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with them both). This latter view is more appropriate and fitting for several reasons to be mentioned later.

Margin Note: i.e., Imam Az-Zaylai's interpretation of that general ruling. [12, from him, may He forgive him. (M)]

वास्तव में, ठोस पदार्थों के साथ वुज़ू की वैधता को सीमित करने की बात उपरोक्त नियम के बाद की है, जबकि इमाम अल-ज़ैलई से पहले सभी विद्वानों का कथन सामान्य (मुतलक़) था। सारांश यह है कि इमाम ज़ैलई ने उस सामान्य कथन को एक ऐसे तरल पदार्थ पर लागू किया जो तीनों गुणों में (पानी के) विपरीत हो, इस प्रकार इमाम ज़ैलई पर होने वाला एतराज़ समाप्त हो गया। संक्षेप में, नियम के विशेषज्ञों के दो दृष्टिकोण हैं: पहला यह कि एक गुण के उल्लेख को प्रतिबंध मानकर उसे ऐसी बहने वाली चीज़ का हुक्म करार दिया जाए जो तीनों गुणों में पानी के विपरीत हो, यह इमाम ज़ैलई का दृष्टिकोण है। दूसरा यह कि एक गुण के उल्लेख को आकस्मिक प्रतिबंध मानकर उसे ठोस का हुक्म करार दिया जाए, यह 'दुर्र' और उसके अनुयायियों जैसे 'तन्वीर', 'नूर अल-इज़ाह' का दृष्टिकोण है। ये दोनों दृष्टिकोण सही हैं और नियम के अनुरूप हैं, इसलिए कोई आपत्ति नहीं है; भ्रम केवल दोनों दृष्टिकोणों के मिश्रण से उत्पन्न हुआ।

मैं कहता हूँ: हाँ, अगर हम नए नियम से नज़र हटा लें और केवल मज़हब के इमामों से प्राप्त ग्रंथों और विवरणों पर ध्यान दें, तो ये दोनों दृष्टिकोण परस्पर विरोधी हैं। क्योंकि एक गुण के उल्लेख को प्रतिबंधात्मक मानना गुणों के आधार पर प्रभुत्व (ग़ल्बा) के निर्णय को आवश्यक बनाता है, जो इमाम मुहम्मद का मत है। और इसे आकस्मिक मानना गुणों के आधार पर विचार को समाप्त कर देता है, जो इमाम अबू यूसुफ का मत है। निम्नलिखित कारणों से यही मत अधिक बेहतर और उचित है।

हाशिया: अर्थात्, उस सामान्य नियम की इमाम ज़ैलई की व्याख्या। [12, उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)]

انما حدث بعد الضابطة وكلام كل من قبل الزيلعي مطلق فالحاصل حمله على مائع مخالف في الاوصاف الثلاثة فالاعتراض ساقط عن الزيلعي وبالجملة هما مسلكان لاهل الضابطة الاول حمل احد على التقييد وحمل الحكم على مائع يخالف في الثلثة وهو مسلك الزيلعي والثانى جعل التقييد اتفاقيا وحمل الحكم على الجامد وهو مسلك الدرر ومن تبعها كالتنوير ونور الايضاح وكلاهما صحيح موافق للضابطة فلا ايراد وانما نشأ من خلط المسلكين۔

باوجود وضو کے جواز کو جامد چیز سے خاص کرنا ضابطہ مذکورہ کے بعد کی بات ہے، حالانکہ امام زیلعی سے پہلے تمام حضرات کا کلام مطلق ہے، حاصل یہ ہے کہ امام زیلعی نے اس مطلق کو تینوں اوصاف میں مخالف بہنے والی چیز پر محمول کیا، یوں امام زیلعی پر سے اعتراض ساقط ہو گیا۔ خلاصہ کلام یہ ہے کہ اہل ضابطہ کے دو مسلک ہیں، اوّل یہ کہ ایک وصف کے ذکر کو قید بنا کر اس کو بہنے والی ایسی چیز کا حکم قرار دیا جو تینوں اوصاف میں پانی کے مخالف ہو، یہ امام زیلعی کا مسلک ہے اور دوسرا یہ کہ وصف واحد کے ذکر کو اتفاقی قید بنایا اور اس کو جامد کا حکم قرار دیا یہ دُرر اور اس کے موافق حضرات جیسے تنویر، نور الایضاح کا مسلک ہے اور یہ دونوں مسلک درست ہیں اور ضابطہ کے موافق ہیں لہٰذا کوئی اعتراض نہیں، صرف دونوں مسلکوں کے خلط سے اشتباہ پیدا ہوا۔ (ت)

اقول: نعم اذا طوينا الكشح عن الضابطة الحادثة وقصرنا النظر على نصوص المذهب والمذاهب المنقولة عن ائمة المذهب فهما مسلكان متخالفان لان جعل احد قيدا احترازيا يقضى باعتبار الغلبة

بالاوصاف وھو مذھب محمد و جعلہ اتفاقیا یطرحہ وھو مذھب ابی یوسف رضی اللہ تعالی عنھما وھذا ھو الاولی والاحری لوجوہ تتلی۔

میں کہتا ہوں، ہاں اگر ہم نئے ضابطہ سے صرف نظر کریں اور مذہب کے ائمہ کرام سے منقول انکی نصوص کا ہی لحاظ کریں تو پھر یہ دونوں مسلک مختلف ہیں کہ واحد وصف کے ذکر کو احترازی قید قرار دے کر اوصاف کے لحاظ سے غلبہ کا فیصلہ کیا جائے تو یہ امام محمد کا مسلک ہوگا اور اس ایک وصف کو اتفاقی قرار دے کر غلبہ میں اوصاف کے اعتبار کو ساقط قرار دیا جائے تو یہ امام ابو یوسف کا مذہب ہو گا یہی زیادہ بہتر اور مناسب ہے حسبِ ذیل وجوہ کی بنا پر۔

عہ ای حمل الزیلعي ذلك المطلق ۱۲ منہ غفرلہ (م) یعنی اوصاف کی تبدیلی کے باوجود وضو کے جواز کا حکم ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Ridawiyya - Volume 3

I say: (1) Firstly, you have already known that the school (madhhab) of Abu Yusuf is the correct and reliable one; as long as we can interpret the texts according to the correct school, we shall not deviate from it.

Secondly: (2) The texts are absolute (unrestricted), encompassing both solids and liquids. May Allah elevate the ranks of the two Imams, Burhan al-Din al-Farghani and Hafiz al-Din al-Nasafi, for they added to the examples 'water mixed with milk,' thereby explicitly stating the generalization and the invalidity of specification. Imam Muhammad only considers the attributes in liquids, as its investigation will follow, God willing. Therefore, making it a restrictive condition (qayd al-ihtiraz) would place the texts outside both aforementioned schools, whereas they were established to transmit the school's views and are applied to matters that have no existence in the school.

Thirdly: (3) It is known that the implication of the context (dalalat al-mafhum) is not definitive, and many conditions appear in books that are not restrictive. Thus, interpreting the texts in this sense is better than making the condition restrictive and then facing objections.

Fourthly: (4) There is no doubt that every 'whole' is accompanied by its 'parts,' and whoever has changed the attributes has changed one of them.

फतावा रज़विया - जिल्द 3

मैं कहता हूँ: (1) अव्वल: यह कि आपको मालूम है कि इमाम अबू यूसुफ का मज़हब ही क़ाबिले एतमाद और सही है और जब तक मुमकिन होगा हम नुसूस को सही मज़हब पर महमूल करेंगे और आगे नहीं बढ़ेंगे।

दौम: यह कि इस बारे में नुसूस में इतलाक़ है जो जामिद और बहने वाली दोनों को शामिल है। इस तमीम (सामान्यीकरण) पर इमाम बुरहानुद्दीन फर्ग़ानी और इमाम हाफ़िज़ुद्दीन नसफ़ी (अल्लाह तआला इन दोनों इमामों के दरजात को बुलंद फ़रमाए) ने नस करते हुए इस मसले की मिसालों में ऐसे पानी को जिसमें दूध मिला हो, का इजाफ़ा फ़रमाया जिससे तख़्सीस (विशिष्टता) का एहतमाल बातिल हो गया। और इमाम मुहम्मद बहने वाली चीज़ों में ओसाफ़ का एतबार करते हैं जैसा कि आइंदा इसकी तहक़ीक़ आएगी इंशाअल्लाह तआला, पस अब एक वस्फ़ के ज़िक्र को क़ैदे एहतराज़ी बनाने के लिए तमाम नुसूस को दोनों मज़कूर मज़हब से ख़ारिज करना है और मुतून बावजूद इसके कि वे मज़हब की तर्जुमानी के लिए वज़अ हैं, उनको ऐसे उमूर में रवाँ करते हैं जिनका मज़हब में वजूद ही नहीं है।

और सौम: यह कि वाज़ेह तौर पर मालूम है कि मफ़हूम की दलालत क़तई नहीं होती क्योंकि कुतुब में बहुत सी क़ुयूद ग़ैर एहतराज़ी आती हैं तो अब नुसूस को इस मानी पर महमूल करना बेहतर है या क़ैद को एहतराज़ी बना कर फिर एतराज़ का सामना किया जाए?

चहारुम: यह कि इसमें शक नहीं कि हर कुल के साथ उसका बाज़ भी होता है तो जब ओसाफ़ को...

فأقول: (۱) اولاً قد علمت ان مذهب ابی یوسف هو الصحیح المعتمد ومهما قدرنا ان نحمل النصوص علی الصحیح لا نعدوه۔ میں کہتا ہوں اول: یہ کہ آپ کو معلوم ہے کہ امام ابو یوسف کا مذہب ہی قابلِ اعتماد اور صحیح ہے اور جب تک ممکن ہو گا ہم نصوص کو صحیح مذہب پر محمول کریں گے اور آگے نہیں بڑھیں گے۔

وثانیاً: (۲) النصوص مطلقة تشمل الجامد والمائع وعلی الله درجات الامامین برهان الدین الفرغانی و حافظ الدین النسفی اذ زاد في الامثلة الماء الذی خالطه اللبن فاتیاً بالتنصیص علی التعمیم وبطلان التخصیص ومحمداً انما یقول باعتبار الاوصاف في المائعات کما یأتی تحقیقه ان شاء الله تعالی فجعله للاحتراز یجعل النصوص خارجة عن المذهبین وانما کان وضعها لنقل المذهب۔ دوم: یہ کہ اس بارے میں نصوص میں اطلاق ہے جو جامد اور بہنے والی دونوں کو شامل ہے اس تعمیم پر امام برہان الدین فرغانی اور امام حافظ الدین نسفی (اللہ تعالیٰ ان دونوں اماموں کے درجات کو بلند فرمائے) نے نص کرتے ہوئے اس مسئلہ کی مثالوں میں ایسے پانی کو جس میں دودھ ملا ہو، کا اضافہ فرمایا جس سے تخصیص کا احتمال باطل ہو گیا، اور امام محمد بہنے والی چیزوں میں اوصاف کا اعتبار کرتے ہیں جیسا کہ آئندہ اس کی تحقیق آئے گی ان شاء اللہ تعالیٰ، پس اب ایک وصف کے ذکر کو قید احترازی بنانے کیلئے تمام نصوص کو دونوں مذکور مذہب سے خارج کرنا ہے اور متون باوجودیکہ وہ مذہب کی ترجمانی کیلئے وضع ہیں ان کو ایسے امور میں رواں کرتے ہیں جن کا مذہب میں وجود ہی نہیں ہے۔

وثالثاً: (۳) معلوم ان دلالة المفهوم غیر قطعیة ورب قیود تجیئ فی الکتب لا محترز لها فحمل النصوص علی هذا اولی امر جعل القید للاحتراز ثم القیام بالاعتراض۔ اور سوم، یہ کہ واضح طور پر معلوم ہے

کہ مفہوم کی دلالت قطعی نہیں ہوتی کیونکہ کتب میں بہت سے قیود غیر احترازی آتی ہیں تو اب نصوص کو اس معنی پر محمول کرنا بہتر ہے یا قید کو احترازی بنا کر پھر اعتراض کا سامنا کیا جائے؟

ورابعاً: (٤) لاشك ان كل كل معه بعضه و ما غير الاوصاف فقد غير احدها چہارم، یہ کہ اس میں شک نہیں کہ ہر کل کے ساتھ اس کا بعض بھی ہوتا ہے تو جب اوصاف کو

Fatawa Razawiyya, Volume 3

(1) Considering 'the one' (Al-Wahid) solely in its individual state is not necessary, nor is there a consistent rule for it. Do you not see what is mentioned in [Fatawa] Khairiyyah, that the attribute of oneness (Tawhid/being alone) is not derived from the word 'one' (Wahidah)? Jurists have specified (2) that if a man has four wives and several slaves, and he says: "If I divorce one of them, then one of my slaves is free; if two, then two slaves; if three, then three; and if four, then four slaves are free." Then, if he divorces them all together or separately, partially or entirely, ten of his slaves are freed: one for divorcing the first, two for the second, three for the third, and four for the fourth. The total of that is ten. If the condition of 'oneness' (being only one) was implied in the word 'one', then the manumission of a slave would not occur in the case of divorcing them all together, because at that time he did not divorce 'one' while she was alone, but rather divorced her within the group of all four of his wives.[1] I say: (3) In my view, the fair judgment is that the ruling based on the implication (Mafhum) varies according to the difference in circumstances in each context.

---

[1] Fatawa Khairiyyah, before the Chapter of Ila, Beirut, 1/57. Page 137 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

(1) 'एक' (अल-वाहिद) को केवल उसकी व्यक्तिगत स्थिति में मानना आवश्यक नहीं है, और न ही इसके लिए कोई निरंतर नियम है। क्या आपने 'खैरिया' में जो है उस पर ध्यान नहीं दिया कि 'वाहिदा' (एक) शब्द से अकेलेपन (तौहीद) का गुण प्राप्त नहीं होता? न्यायविदों ने स्पष्ट किया है (2) कि यदि किसी व्यक्ति की चार पत्नियाँ और उसके पास कई दास हों, और वह कहे: "यदि मैं उनमें से एक को तलाक दूँ, तो मेरा एक दास स्वतंत्र है; यदि दो, तो दो दास; यदि तीन, तो तीन; और यदि चार, तो चार दास स्वतंत्र हैं।" फिर, यदि वह उन्हें एक साथ या अलग-अलग, आंशिक रूप से या पूरी तरह से तलाक दे देता है, तो उसके दस दास मुक्त हो जाते हैं: पहली को तलाक देने के लिए एक, दूसरी के लिए दो, तीसरी के लिए तीन और चौथी के लिए चार। उनका कुल योग दस है। यदि 'एक' शब्द में अकेले होने (तौहीद) की शर्त शामिल होती, तो उन सभी को एक साथ तलाक देने की स्थिति में दास की मुक्ति नहीं होती, क्योंकि उस समय उसने 'एक' पत्नी को अकेले में तलाक नहीं दिया था, बल्कि अपनी चारों पत्नियों के समूह में तलाक दिया था। [1] मैं कहता हूँ: (3) मेरे विचार में निष्पक्षता यह है कि परिस्थितियों की भिन्नता के आधार पर निहितार्थ (मफ़हूम) के आधार पर निर्णय हर स्थान पर भिन्न होता है।

---

[1] फ़तावा खैरिया, बाब अल-ईला से पहले, बेरूत, 1/57. पेज 137/756

(۱) واعتبار الواحد على صفة الانفراد غير لازم وماله من اطراد الاترى الى مافي خيرية لا يستفاد من لفظ واحدة وصف التوحيد فقد نصوا على (۲) انه لو كان تحته اربع نسوة وله عبيد فقال ان طلقت واحدة منهن فعبد من عبيدي حر ا وثنتين فعبدان اوثلثاً فثلثة اواربعاً فاربعة فطلقهن معا او مفرقاً في مرتبة في الكل والبعض عتق عشرة من عبيده واحد بطلاق الاولى واثنان بطلاق الثانية وثلثة بطلاق الثالثة واربعة بطلاق الرابعة : مجموع ذلك عشرة فلو اشترط وصف التوحيد في لفظ الواحدة لما وقع العتق على الواحد في صورة طلاقهن معا لانه حينئذ لم يطلق واحدة حال كونها منفردة بل طلقها فى جملة نسائه الاربع اه

کوئی چیز تبدیل کرے گی تو ان میں سے ایک وصف کو بھی تبدیل کرے گی جبکہ ایک کو انفرادی صفت پر رکھنا لازم نہیں ہے اور نہ ہی اس کیلئے کوئی ضابطہ ہے ، کیا آپ نے فتاویٰ خیر یہ کے اس مضمون پر غور نہیں کیا جس میں انہوں نے کہا ہے کہ "واحدة" کے لفظ سے وحدت کا وصف حاصل نہیں ہوتا (اسی لئے فقہاء کرام) نے اس بات پر نص کی ہے کہ اگر کسی شخص کی چار بیویاں ہوں اور اس کے دس غلام ہوں اور وہ یہ کہے اگر میں ایک بیوی کو طلاق دوں تو ایک غلام آزاد ، اگر دو کو طلاق دوں تو دو غلام آزاد ، اگر تین کو طلاق دوں تو تین غلام آزاد ، اگر چار کو طلاق دوں تو چار غلام آزاد ، اس کے بعد اس نے چاروں بیویوں کو ایک ساتھ یا متفرق طور پر طلاق دے دی تو اس کے دس غلام آزاد ہو جائیں گے ، پہلی کے ساتھ ایک، دوسری کے ساتھ دو اور تیسری کے ساتھ تین اور چوتھی طلاق کے ساتھ چار غلام آزاد ہوں گے یوں کل دس عدد غلام آزاد ہوں گے (اس مسئلہ سے واضح ہوا) کہ اگر "واحدة" میں توحید کے وصف کا اعتبار شرط ہوتا تو سب بیویوں کو ایک ساتھ طلاق دینے کی صورت میں ایک غلام کو آزادی والی

صورت نہ بنتی کیونکہ ایک غلام کی آزادی ایک بیوی کی طلاق سے مشروط تھی جبکہ ایک ساتھ طلاق دینے میں ایک بیوی کو علیحدہ طلاق نہیں ہوئی بلکہ چاروں بیویوں کو ایک ساتھ طلاق میں ایک طلاق ہے اہ (ت)

۱ اہ اقول : (۳) والانصاف عندی ان الحکم بالمفہوم فی امثال المحال مختلف میں کہتا ہوں ، میرے نزدیک انصاف یہ ہے کہ احوال کے اختلاف کی بنا پر ہر محل میں

---

۱ فتاوی خیر یہ قبیل باب الایلاء بیروت ۵۷/۱ Page 137 of 756

Fatawa Razawiyya, Volume III

(Arabic passage) ...varies according to different circumstances. For if it is known that individuality has no bearing on the ruling, the mind does not turn to the [counter-]implied meaning. For example, a man saying to his sons: "Honour whoever honours one of you." No one understands from this that you should not honour whoever honours all of you. Similarly, a Hanafi's saying: "Whoever recites one verse of the Quran, his prayer is valid," and a Shafi'i's saying: "Whoever wipes one hair of his head, his ablution is valid." The case mentioned in Al-Khayriyya is of this category, for we see that the ruling increases with an increase [in quantity], so it is not restricted to a single instance. Of this category is also the Almighty's saying: "And if any of the polytheists seeks your protection," and "you have given one of them a heap of gold," and "one of you comes from the place of relieving oneself." For the absence of the ruling in case of plurality is not understood from this, even among the proponents of implied concepts. Rather, if similar phrasing were used in human speech, it would definitely not indicate an implied concept due to the knowledge that individuality has no bearing on the ruling. But if it is known that it [individuality] has a bearing, then the implied concept is established. For instance, the saying: "Do not honour whoever honours [only] one of you." It is known here that the ruling is for restricting to honoring one person; so whoever honours them all does not fall under the prohibition. And if it is said: "Whoever divorces twice, he has the right to take her back," it is understood from this that whoever divorces three times has no right of return, but it is not understood that whoever divorces once has no right of return. Thus, understanding [of implication] and its absence come together. When the matter is such, it is built upon the knowledge of the underlying cause (illa).

(Urdu passage) The ruling of the implied meaning (mafhum) varies. If it is certain that an individual characteristic has no influence on the ruling, then if a person says to his sons, "Whoever honours one of you, you should honour him," it should not be understood from this speech that you should not honour the person who honours all of you (even though this meaning is not understood from it). Similarly, the statement of a Hanafi that whoever recites one verse from the verses of the Quran, his prayer is valid. And the statement of a Shafi'i that whoever wipes one hair of his head, his ablution is valid. In these, the invalidity of prayer for reading more verses or invalidity of ablution for wiping more hair is not understood. The mentioned case from Fatawa Khayriyya belongs to this category because with an increase, the ruling also increases, so the ruling will not be dependent on just one. Of this type is the word of

Allah Almighty: "If one polytheist among the polytheists seeks refuge," and the saying to give one of the women abundantly, and also the saying that if any one of you finishes from the toilet, because in these sayings, the absence of the ruling is not understood upon an increase in number. Even those who believe in deriving an implied meaning from expressions do not negate the ruling due to an increase; rather, even in the common speech of people, if the number one is mentioned, an opposite implied meaning is not taken from it because individuality has no bearing on the ruling. And if individuality has a bearing on the ruling, then an opposite implied meaning is established, like if someone...

फ़तावा रज़विया, जिल्द III

(अरबी अंश) ...परिस्थितियों के अंतर के अनुसार। क्योंकि यदि यह ज्ञात हो कि वैयक्तिकता (अकेलापन) का आदेश में कोई प्रभाव नहीं है, तो मस्तिष्क [विपरीत] निहित अर्थ की ओर नहीं जाता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति का अपने पुत्रों से कहना: "तुम में से जो किसी एक का सम्मान करे, उसका सम्मान करो।" इससे कोई यह नहीं समझता कि जो तुम सबका सम्मान करे उसका सम्मान मत करो। इसी प्रकार, एक हनफ़ी का यह कहना: "जिसने कुरान की एक आयत पढ़ी, उसकी नमाज़ सही है," और एक शाफ़ई का यह कहना: "जिसने अपने सिर के एक बाल का मसह किया, उसका वज़ू सही है।" 'अल-खैरिया' में वर्णित मामला इसी श्रेणी का है, क्योंकि हम देखते हैं कि मात्रा में वृद्धि के साथ आदेश भी बढ़ता है, इसलिए यह एक ही उदाहरण तक सीमित नहीं है। इसी श्रेणी में सर्वशक्तिमान का यह कथन भी है: "और यदि मुशरिकों में से कोई एक आपसे शरण माँगे," और "आपने उनमें से एक को ढेर सारा सोना दिया हो," और "तुम में से कोई एक शौच के स्थान से आए।" क्योंकि बहुलता के मामले में आदेश की अनुपस्थिति इससे नहीं समझी जाती, यहाँ तक कि निहित अवधारणाओं के समर्थकों के बीच भी। बल्कि, यदि मानव भाषण में समान वाक्यांशों का उपयोग किया गया होता, तो यह निश्चित रूप से निहित अवधारणा का संकेत नहीं देता क्योंकि यह ज्ञान है कि वैयक्तिकता का आदेश में कोई प्रभाव नहीं है। लेकिन यदि यह ज्ञात हो कि इसका [वैयक्तिकता का] प्रभाव है, तो निहित अवधारणा स्थापित हो जाती है। उदाहरण के लिए, यह कहना: "जो तुम में से [केवल] एक का सम्मान करे उसका सम्मान मत करो।" यहाँ यह ज्ञात है कि आदेश केवल एक व्यक्ति के सम्मान तक सीमित रखने के लिए है; इसलिए जो उन सबका सम्मान करता है वह निषेध के अंतर्गत नहीं आता है। और यदि कहा जाए: "जिसने दो बार तलाक दिया, उसे वापस लेने का अधिकार है," तो इससे यह समझा जाता है कि जिसने तीन बार तलाक दिया है उसे वापस लेने का कोई अधिकार नहीं है, लेकिन यह नहीं समझा जाता है कि जिसने एक बार तलाक दिया है उसे वापस लेने का अधिकार नहीं है। इस प्रकार, [निहितार्थ की] समझ और उसका अभाव एक साथ आते हैं। जब मामला ऐसा हो, तो यह अंतर्निहित कारण (इल्लत) के ज्ञान पर आधारित होता है।

(उर्दू अंश) मफ़हूम का हुक्म मुख्तलिफ होता है क्योंकि अगर यक़ीन कर लिया जाए कि इन्फ़िरादी वस्फ़ का हुक्म में कोई दखल नहीं होता तो फिर जब कोई शख्स अपने बेटों को यह कहे कि जो तुम में से एक की इज़्ज़त करे तुम उसकी इज़्ज़त करो, तो इस कलाम से यह न समझना चाहिए कि जो तुम सब की इज़्ज़त करे तुम उसकी इज़्ज़त न करो (हालाँकि इस बात से यह मफ़हूम नहीं समझता) इसी

तरह किसी हनफ़ी का यह क़ौल कि जिस ने क़ुरआन की आयात में से एक आयत पढ़ी उस की नमाज़ दुरुस्त है। और किसी शाफ़ई का यह क़ौल कि जिस ने अपने सर के बालों में से एक बाल का मसह कर लिया उस का वज़ू दुरुस्त है। इन में ज़्यादा आयात पढ़ने में नमाज़ की और ज़्यादा बालों के मसह से वज़ू की अदम-ए-सेहत नहीं समझी जाती, फ़तावा खैरिया की मज़कूरा सूरत इसी बाब से है क्योंकि ज़्यादा करने पर हुक्म भी ज़्यादा हो जाता है इसी तरह हुक्म एक पर मौक़ूफ़ नहीं होगा। इसी क़बील से अल्लाह तआला का यह क़ौल है कि अगर मुशरिकीन में एक मुशरिक पनाह तलब करने और यह क़ौल कि औरतों में से एक को वाफ़िर दो, और यह क़ौल भी कि तुम में से कोई एक बैतुल खला से फ़ारिग़ हो, क्योंकि इन अक़वाल में अदद ज़्यादा होने पर अदम-ए-हुक्म का फ़हम नहीं होता हत्ता कि वो लोग जो इबारात में मफ़हूम अख़्ज़ करने के क़ायल हैं वो भी ज़्यादा से हुक्म की नफ़ी नहीं करते बल्कि अवामुन्नास के कलाम में भी अगर एक का अदद ज़िक्र हो तो इस से मफ़हूम-ए-मुख़ालिफ़ नहीं लिया जाता क्योंकि इन्फ़िराद का हुक्म में दखल नहीं है। और अगर इन्फ़िराद का हुक्म में दखल हो तो फिर मफ़हूम-ए-मुख़ालिफ़ साबित हो जाता है, जैसे कोई...

पृष्ठ १३८/७५६

بأختلاف الاحوال فأن علم ان الافراد لامدخل فی الحکم لا یسبق الذھن الی المفھوم کقول رجل لبنیه اکر موا من یکرم احدکم لایفھم منه احدان لاتکرموا من ا کرم کلکم وکذلك قول حنفی من قرأ احدی ایات القرآن صحت صلاته وقول شافعی من مسح احدی شعرات رأسه صح وضوؤه ومن ھذا الباب الصورة المذکورة فی الخیریة فأننا نری الحکم یزداد بالازدیاد فلا توقف له علی الانفراد، ومن ذلك قوله عزوجل وان احد من المشرکین استجارك واتیتم احدھن قنطارا وجاء احد منکم من الغائط فانه لاینفھم منه عدم الحکم عند التعدد حتی عند اصحاب المفاھیم بل لوکان مثله فی کلام الناس لم یدل علی المفھوم قطعاً للعلم بان الانفراد لادخل له فی الحکم وان علم ان له مدخلا فیه ثبت المفھوم کقوله لاتکرموا من یکرم احدکم فمن المعلوم ان الحکم للاقتصار علی اکرام واحد فمن اکرمھم جمیعالا یدخل تحت النھی واذا قیل من طلق ثنتین فله ان یراجع فھم منه ان من طلق ثلثا لارجعة له ولم یفھم منه ان من طلق واحدة لارجعة له فاجتمع فیه الانفھام وعدمه فاذا کان الامر یتلف ھکذا ویبتني علی العلم بالعلة

مفہوم کا حکم مختلف ہوتا ہے کیونکہ اگر یقین کر لیا جائے کہ انفرادی وصف کا حکم میں کوئی دخل نہیں ہوتا تو پھر جب کوئی شخص اپنے بیٹوں کو یہ کہے کہ جو تم میں سے ایک کی عزت کرے تم اس کی عزت کرو، تو اس کلام سے یہ نہ سمجھنا چاہئے کہ جو تم سب کی عزت کرے تم اس کی عزت نہ کرو (حالانکہ اس بات سے یہ مفہوم نہیں سمجھتا) اس طرح کسی حنفی کا یہ قول کہ جس نے قرآن کی آیات میں سے ایک آیت پڑھی اس کی نماز درست ہے۔ اور کسی شافعی کا یہ قول کہ جس نے اپنے سر کے بالوں میں سے ایک بال کا مسح کر لیا اس کا وضو درست ہے۔ ان میں زیادہ آیات پڑھنے میں نماز کی اور زیادہ بالوں کے مسح سے وضو کی عدم صحت نہیں سمجھی جاتی، فتاوٰی خیر یہ کی مذکورہ صورت اسی باب سے ہے کیونکہ زیادہ کرنے پر حکم

بھی زیادہ ہو جاتا ہے اسی طرح حکم ایک پر موقوف نہیں ہوگا۔ اسی قبیل سے اللہ تعالیٰ کا یہ قول ہے کہ اگر مشرکین میں ایک مشرک پناہ طلب کرنے اور یہ قول کہ عورتوں میں سے ایک کو وافر دو، اور یہ قول بھی کہ تم میں سے کوئی ایک بیت الخلاء سے فارغ ہو، کیونکہ ان اقوال میں عدد زیادہ ہونے پر عدم حکم کا فہم نہیں ہوتا حتیٰ کہ وہ لوگ جو عبارات میں مفہوم اخذ کرنے کے قائل ہیں وہ بھی زیادہ سے حکم کی نفی نہیں کرتے بلکہ عوام الناس کے کلام میں بھی اگر ایک کا عدد ذکر ہو تو اس سے مفہوم مخالف نہیں لیا جاتا کیونکہ انفراد کا حکم میں دخل نہیں ہے۔ اور اگر انفراد کا حکم میں دخل ہو تو پھر مفہوم مخالف ثابت ہو جاتا ہے، جیسے کوئی

(From an external perspective, a ruling cannot be correctly established for either side based solely on speech. Thus, here, if it is known that unity or partiality has a role in the permissibility of Wudu, then the implied meaning [mafhum] is established. If its absence is known, it is void. Therefore, ruling it as a restrictive condition [qayd ihtirazi] depends on proving the consideration of change in qualities, which has not been proven; rather, its opposite has been proven. So there is no implied meaning (1). In short, it is a possibility against which proof of invalidity has been established, so it is not considered.)

For instance, if someone says, "Do not respect the one who respects only one of you," it is clear from this sentence that the order not to respect applies only to respecting a single individual. If one respects all of them, there would be no prohibition. Similarly, if someone states, "A person who gives two divorces shall have the right of return [ruju']," this does not mean that the right of return is not established for someone who gives three divorces, whereas it is established for someone giving one divorce. In this way, both the understanding and non-understanding of the implied meaning are found in the ruling for two divorces. Therefore, if the matter is not clear and the decision of the ruling depends on knowledge of an external cause, the ruling on any aspect will not be derived from the speech itself. Consequently (regarding the mention of a single quality by a substance mixed in water), if the involvement of one or some in the permissibility of Wudu is established, then the contrary implication [mafhum mukhalif] will be established. If the lack of involvement of one or some is known, then the implication will not be established. For this reason, being a restrictive condition for "one" depends on the change in qualities being considered. Since this is not proven, but rather its opposite is proven, the implication will also not be established. In summary, evidence for the invalidity of this possibility is established, so it will not be considered valid. (T)

Fifth: The fact that these venerable jurists, after mentioning "one of the qualities," cited floodwater and soapy water as examples is a clear indication [qarina] that the restricted implied meaning is not intended here. This is because floodwater changes both in color and taste, or rather all three qualities. Similarly, when soap is mixed with water, it is never limited to a change in only one quality. Saffron may change two or even all three qualities; a change in only one quality is habitually rare. Thus, the jurists mentioned "one of the qualities" as an example without being restrictive. Although there might have been room for discussion here, floodwater and soap...

(बाहरी कारणों से, केवल शब्दों के आधार पर दोनों पक्षों में से किसी एक पर निर्णय नहीं लिया जा सकता। यहाँ, यदि यह ज्ञात हो कि वज़ू की वैधता में एकात्मकता या आंशिक रूप से प्रभाव पड़ता है, तो निहित अर्थ [मफ़हूम] सिद्ध हो जाता है। और यदि इसके अभाव का ज्ञान हो, तो वह समाप्त हो जाता है। अत; इसे एक प्रतिबंधात्मक शर्त [क़ैद एतराजिया] मानना गुणों में परिवर्तन के विचार को सिद्ध करने पर निर्भर है, और यह सिद्ध नहीं हुआ है; बल्कि इसके विपरीत सिद्ध हुआ है। इसलिए कोई निहित अर्थ नहीं है (1)। संक्षेप में, यह एक ऐसी संभावना है जिसकी अमान्यता पर प्रमाण स्थापित हो चुका है, इसलिए इसे मान्य नहीं माना जाएगा।)

यदि कोई यह कहे, "तुम में से एक का सम्मान करने वाले का सम्मान न करो," तो इस वाक्य से स्पष्ट है कि यहाँ सम्मान न करने का आदेश केवल एक व्यक्ति के सम्मान से संबंधित है। यदि कोई उन सभी का सम्मान करता है, तो सम्मान करने में कोई मनाही नहीं होगी। इसी प्रकार, यदि किसी ने कहा, "जो व्यक्ति दो तलाक़ देगा उसे रुजू [वापसी] का अधिकार होगा," तो इसका अर्थ यह नहीं है कि तीन तलाक़ देने वाले के लिए रुजू का अधिकार सिद्ध नहीं होता, जबकि एक तलाक़ देने वाले के लिए यह सिद्ध होता है। इस प्रकार, दो तलाक़ों के आदेश में मफ़हूम का समझना और न समझना दोनों पाए जाते हैं। इसलिए यदि मामला स्पष्ट न हो और आदेश का निर्णय किसी बाहरी कारण [इल्लत] के ज्ञान पर निर्भर हो, तो किसी भी पहलू पर आदेश स्वयं कलाम [भाषण] से प्राप्त नहीं होगा। इसलिए (यहाँ पानी में मिलने वाली चीज़ से एक गुण के उल्लेख में) वज़ू की वैधता में एक या कुछ का हस्तक्षेप सिद्ध हो तो मफ़हूम-ए-मुखालिफ़ सिद्ध होगा। और यदि एक या कुछ के हस्तक्षेप न होने का ज्ञान हो तो फिर मफ़हूम सिद्ध नहीं होगा। इसलिए यहाँ "एक" का प्रतिबंधात्मक होना इस बात पर निर्भर है कि गुणों में परिवर्तन का विचार किया जाए। चूँकि यह बात सिद्ध नहीं है बल्कि इसका विपरीत सिद्ध है, इसलिए मफ़हूम भी सिद्ध नहीं होगा। सारांश यह है कि इस संभावना की अमान्यता पर प्रमाण मौजूद है, अतः यह संभावना मान्य नहीं होगी। (त)

पाँचवाँ: यह कि इन प्रतिष्ठित फ़क़ीहों द्वारा "एक गुण" [अहद अल-औसाफ़] का उल्लेख करने के बाद उदाहरण में बाढ़ के पानी और साबुन वाले पानी का उल्लेख करना इस बात का स्पष्ट संकेत [क़रीना] है कि यहाँ सीमित मफ़हूम अभिप्रेत नहीं है। क्योंकि बाढ़ का पानी रंग और स्वाद दोनों में, बल्कि तीनों गुणों में बदल जाता है। इसी तरह जब पानी में साबुन मिलता है, तो कभी भी केवल एक गुण का परिवर्तन नहीं होता। केसर से दो बल्कि तीनों गुण बदल जाते हैं; केवल एक गुण का बदलना

सामान्यतः दुर्लभ है। तो फ़क़ीहों ने बिना किसी पाबंदी के"गुणों में से एक" को उदाहरण के तौर पर उल्लेख किया है। हालाँकि यहाँ चर्चा की गुंजाइश हो सकती थी, लेकिन बाढ़ और साबुन...

पेज 139 का 756

من خارج لم یصح الحکم بأحد الطرفین من مجرد الکلام فههنا ان علم ان للتوحد او البعضیة مدخلا في جواز الوضو ثبت المفهوم وان علم عدمه انعدم فالحکم بکونه قیداً احترازیاً متوقف علی اثبات اعتبار التغیر بالاوصاف ولم یثبت بل ثبت خلافه فلا مفهوم (۱) وبالجملة هو احتمال قام البرهان علی بطلانه فلا یعتبر۔

یہ کہے تم میں سے ایک کی عزت کرنے والے کی عزت نہ کرو، اس جملہ سے واضح ہے کہ یہاں عزت نہ کرنے کا حکم صرف ایک کی عزت سے متعلق ہے اور اگر وہ سب کی عزت کرے تو عزت کرنے میں ممانعت نہ ہوگی اور اگر کسی نے یہ کہا جو شخص دو طلاقیں دے گا تو اس کو رجوع کا حق ہوگا، اس سے تین طلاقیں دینے والے کیلئے رجعت کا حق ثابت نہیں ہوتا جبکہ ایک طلاق دینے والے کیلئے رجعت کا حق ثابت ہوتا ہے، اس طرح دو طلاقوں کے حکم میں مفہوم کا فہم اور عدم فہم دونوں پائے جاتے ہیں پس اگر معاملہ واضح نہ ہو اور حکم کا فیصلہ کسی خارجی علت کے علم پر موقوف ہو تو کسی پہلو پر حکم نفس کلام سے حاصل نہ ہوگا لہذا(یہاں پانی میں ملنے والی چیز سے وصف واحد کے ذکر میں) وضو کے جواز میں واحد یا بعض کا دخل ثابت ہو تو مفہوم مخالف ثابت ہوگا اور اگر واحد یا بعض کے عدم دخل کا علم ہو تو پھر مفہوم ثابت نہ ہوگا، اس لئے یہاں واحد کا قید احترازی ہونا اس بات پر موقوف ہے کہ اوصاف سے تغیر کا اعتبار کیا جائے، چونکہ یہ بات ثابت نہیں بلکہ اس کا خلاف ثابت ہے لہذا مفہوم بھی ثابت نہ ہوگا، خلاصہ یہ کہ اس احتمال کے بطلان پر دلیل قائم ہے لہذا یہ احتمال معتبر نہ ہوگا۔ (ت)

وخامسا: (۲) تمثیلهم بماء المد والماء الذی خالطه الصابون من اجلی قرینة علی عدم ارادتهم المفهوم فان ماء السیل یکون متغیراللون والطعم معابل ربما یکون متغیر الثلاثة وکذلك الماء اذا خالطه الصابون

لا یقتصر علی تغییر وصف واحد قط و الزعفران ربما یتغیر به وصفان والثالثة واقتصاره علی واحد نادر فی المعتاد وقد ارسلوه ارسالاً وجعلوه لما یغیر احد الاوصاف مثالا وهذا وان کان فیه مجال مقال فماء المد والصابون

پنجم، یہ کہ ان فقہاء کرام کا "احد الاوصاف" کے ذکر کے بعد اس کے مثال میں سیلاب کے پانی اور صابون والے پانی کا ذکر کرنا اس بات پر واضح قرینہ ہے کہ یہاں مفہوم مراد نہیں ہے کیونکہ سیلاب کا پانی رنگ اور ذائقہ دونوں میں بلکہ تینوں اوصاف میں متغیر ہوتا ہے اور یوں ہی جب پانی میں صابون ملتا ہے تو بھی صرف ایک وصف تبدیل نہیں ہوتا اور زعفران سے دو وصف بلکہ تینوں وصف متغیر ہوجاتے ہیں صرف ایک وصف کا متغیر ہونا عادۃً نادر ہے۔ تو فقہاء کرام نے پابند کیے بغیر "احد الاوصاف" کو بطور مثال ذکر کیا ہے اگر چہ یہاں بحث کی گنجائش ہوسکتی تھی لیکن سیلاب اور

Volume Three Fatawa Razawiyya

[Arabic]: Sufficient in deduction * thus the matter became clear and the ambiguity vanished and it is said praise be to Allah Lord of the worlds. [Urdu]: Deduction from the mention of soap is sufficient, thus the matter became clear and the confusion ended, Praise be to Allah, Lord of the Worlds. (T)

This is the explanation of the rules of the texts. The previous rules established the school of Imam Abu Yusuf, and this rule negated the school of the Third Imam (Imam Muhammad). The general application clarified that if any solid substance mixes with water, whether it prevents change of qualities entirely or not, and the two great Imams, the author of Hidayah and the author of Kafi, by giving the additional example of milk mixing in water, confirmed this general application. The school of Imam Abu Yusuf, which was attested by many corrections, became established and emphasized by the consensus of the texts. By the grace of Allah, this is what the Razawi definition of absolute water has benefited. All praise is due to Allah forever * and upon His Prophet and his progeny be blessings and peace * through the passage of nights and days *

Rule 6: The opinion of Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) which was adopted by Imam Isbijabi and Imam Malik al-Ulama.

[Left Column - Arabic]: And specifically in the issue of leaves in the pool, it was followed in Sharh al-Wiqayah and Munyah as well, contradicting its own previous statement in the fifth rule. Dhakhirah and Tatimmah narrated it from Imam Ahmad al-Maydani. Al-Hulyah inclined towards it in this issue despite its statements to the contrary in others. In it, Chalpi claimed in Dhakhirat al-Uqba that it is the most correct as all that preceded in 77, 79, 101 etc. Imam Malik al-Ulama mentioned regarding cooked nabidh that the closest to truth is the impermissibility of wudu due to the predominance of dates in taste and color, as will follow. So this is what I found of its preferences in specific cases, and I have not seen an explicit declaration for the absolute [application] of this, this opinion, except what occurred in al-Jawharah that the Shaykh - meaning Imam al-Quduri - chose the opinion of Muhammad where he said "so one of its qualities changed".

[Right Column - Urdu]: And especially in the case of leaves falling into a pool, the opinion of Imam Muhammad was adopted in Sharh Wiqayah, and Munyah also adopted it in the fifth rule contrary to its own mentioned opinion. Dhakhirah and Tatimmah have narrated this issue from Imam Ahmad Maydani. Hulyah gave

preference to Imam Muhammad's opinion on the explanations of this issue, while in other issues they have gone against it. And Chalpi in Dhakhirat al-Uqba has called Imam Muhammad's opinion 'asah' (most correct) in this issue, as all these sayings have already passed in 77, 79, 101 etc. Imam Malik al-Ulama has mentioned regarding cooked nabidh (date-water) that the closest to what is correct is that wudu is not permissible from it because it is dominated by the color and taste of dates over water, as will be mentioned later. Regarding Imam Muhammad's opinion, I have found these preferences in a few specific cases, and regarding the general application of this opinion, I have [not seen] an explicit declaration...

जिल्द सोम फ़तावा रज़विया

[अरबी]: प्रमाण देने में पर्याप्त * तो मामला स्पष्ट हो गया और संशय दूर हो गया और कहा गया कि सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो संसारों का पालनहार है। [उर्दू]: साबुन के उल्लेख से प्रमाण पर्याप्त है, इस प्रकार मामला स्पष्ट हो गया और भ्रम समाप्त हो गया, अलहम्दुलिल्लाह रब्बिल आलमीन। (त)

यह ग्रंथों के नियमों का वर्णन है। पिछले नियमों ने इमाम अबू यूसुफ के पंथ को सिद्ध किया और इस नियम ने तीसरे इमाम (इमाम मुहम्मद) के पंथ का खंडन किया और व्यापक अनुप्रयोग ने स्पष्ट किया कि यदि पानी में कोई ठोस पदार्थ मिल जाए, चाहे वह गुणों के परिवर्तन को पूरी तरह से रोके या न रोके और दो महान इमामों, हिदाया के लेखक और काफी के लेखक ने, पानी में दूध मिलने का अतिरिक्त उदाहरण देकर इस व्यापक अनुप्रयोग की पुष्टि की। इमाम अबू यूसुफ का पंथ, जो कई संशोधनों द्वारा प्रमाणित था, ग्रंथों की सहमति से स्थापित और पुख्ता हो गया। अल्लाह की कृपा से, यही वह है जो मुतलक़ पानी की रज़वी परिभाषा ने लाभ पहुँचाया है। समस्त प्रशंसा सदैव अल्लाह के लिए है * और उनके नबी और उनके वंश पर आशीर्वाद और शांति हो * रातों और दिनों के बीतने के साथ *

नियम ६: इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हु) का कथन जिसे इमाम इस्बीजाबी और इमाम मलिक अल-उलेमा ने अपनाया है।

[बायां स्तंभ - अरबी]: और विशेष रूप से हौज में पत्तों के गिरने के मसले में, शरह अल-विकाया और मुन्या में भी इसका अनुसरण किया गया, जो पांचवें नियम में उनके अपने पिछले कथन के विरुद्ध है। जखीरा और ततिम्मा ने इसे इमाम अहमद अल-मैदानी से उद्धृत किया है। अल-हुलिया ने इस मसले में इसकी ओर झुकाव दिखाया है बावजूद इसके कि अन्य मसलों में उनके बयान इसके विपरीत हैं। इसमें चल्पी ने जखीरत अल-उकबा में दावा किया कि यह सबसे सही है जैसा कि ७७, ७९, १०१ आदि में पहले बताया जा चुका है। इमाम मलिक अल-उलेमा ने पकी हुई नबीज़ के बारे में उल्लेख किया है कि सच्चाई के सबसे करीब यह है कि वुज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि स्वाद और रंग के मामले में खजूर पानी पर हावी है, जैसा कि आगे आएगा। तो यह वह है जो मैंने विशिष्ट मामलों में इसकी प्राथमिकताओं में पाया है, और मैंने इस कथन के व्यापक अनुप्रयोग के लिए स्पष्ट घोषणा नहीं देखी है, सिवाय इसके जो अल-जौहरा में हुआ कि शेख - यानी इमाम अल-कुदुरी - ने मुहम्मद के कथन को चुना जहाँ उन्होंने कहा "तो उसके गुणों में से एक बदल गया"।

[दायां स्तंभ - उर्दू]: और खास तौर पर हौज में पत्ते गिरने के मसले में इमाम मुहम्मद के कौल को शरह विकाया में इख्तियार किया गया और मुनिया ने भी पांचवें जाबिते में मजकूर अपने कौल के खिलाफ इसको अपनाया। इमाम अहमद मैदानी से जखीरा और ततिम्मा ने इस मसले को नकल किया है। हुलिया ने इस मसले की तसरीहात पर इमाम मुहम्मद के कौल को तरजीह दी जबकि दूसरे मसाइल में उन्होंने इसके खिलाफ किया है। और चल्पी ने जखीरतुल उकबा में इमाम मुहम्मद के कौल को इस मसले में असह (सबसे सही) कहा है जैसा कि ये तमाम अवाल ७७, ७९, १०१ वगैरह में गुजर चुके हैं। इमाम मलिक अल-उलेमा ने पकी हुई नबीज़ के बारे में जिक्र किया है कि अकरब इलल सवाब यह है कि इससे वुज़ू जायज नहीं क्योंकि इसमें पानी पर खजूर का रंग और जायके के लिहाज से गलबा है जैसा कि आइंदा जिक्र होगा। इमाम मुहम्मद के कौल के बारे में मैंने ये तरजीहात चंद खास सूरतों में पाई हैं और इस कौल के इतलाक के बारे में सरीह तसरीह मैंने...

کافیان فی الاستدلال * فظھر الامر و زوال اللبس وقیل الحمد للہ رب العلمین۔ صابون کے ذکر سے استدلال کافی ہے یوں معاملہ واضح ہوگیا اور اشتباہ ختم ہوگیا، الحمدللہ رب العلمین۔ (ت)

یہ ہے ضوابط متون کا بیان ضوابط پیشین نے مذہب امام ابو یوسف کا اثبات کیا اور اس ضابطہ نے مذہب امام ثالث کی نفی اور اطلاق نے واضح کیا کہ پانی میں کوئی شے جامد ملے خواہ مانعِ مطلقاً تغیر اوصاف غیر مانع اور دو امام اجل صاحب ہدایہ وصاحب کافی نے پانی میں دودھ ملنے کی مثال زائد فرما کر اس اطلاق کو پورا مسجل فرمادیا اور مذہب امام ابو یوسف کہ اس قدر تصحیحاتِ کثیرہ سے مشہد تھا اطباقِ متون سے اور مؤکد ہو گیا اور بحمداللہ یہی ہے وہ کہ مائے مطلق کی تعریف رضوی نے افادہ کیا وللہ الحمد علی الدوام * وعلی نبیہ والہ الصلوۃ والسلام * علی مر اللیالی والایام *

ضابطہ ۶: قول امام محمد رضی اللہ عنہ جسے امام اسبیجابی وامام ملک العلماء نے اختیار کیا،

وفی خصوص مسألة الاوراق فی الحوض مشی علیه فی شرح الوقایة والمنیة ایضاً مخالفة لنفسها فیما مر عنها فی الضابطة الخامسة ونقلها الذخیرة والتتمة عن الامام احمد المیدانی وللحلیة میل الیه فی المسألة علی تصریحاتها بخلافه فی غیرها وفیها زعم چلپی فی ذخیرة العقبی انه الاصح کما تقدم کل ذلك فی ۷۷ و ۷۹ و ۱۰۱ وغیرها وذکر الامام ملك العلماء فی النبیذ المطبوخ ان الاقرب الی الصواب عدم جواز الوضو لغلبة التمر طعماً ولونا کما یأتی فهذا ما وجدت من ترجیحاته فی صور خاصة ولم ار التصریح الصریح لمطلق هذا هذا القول الا ما وقع فی الجوهرة ان الشیخ یرید الامام القدوری اختار قول محمد حیث قال فغیر احد اوصافه

اور خاص طور پر حوض میں پتے گرنے کے مسئلہ میں امام محمد کے قول کو شرح وقایہ میں اختیار کیا اور منیہ نے بھی پانچویں ضابطہ میں مذکور اپنے قول کے خلاف اس کو اپنایا۔ امام احمد میدانی سے ذخیرہ اور تتمہ نے اس مسئلہ کو نقل کیا ہے حلیہ نے اس مسئلہ کی تصریحات پر امام محمد کے قول کو ترجیح دی جبکہ دوسرے مسائل میں انہوں نے اس کے خلاف کیا ہے اور چلپی نے ذخیرۃ العقبی میں امام محمد کے قول کو اس مسئلہ میں اصح کہا ہے جیسا کہ یہ تمام اقوال ۷۷، ۷۹، ۱۰۱ وغیرہ میں گزر چکے ہیں، امام ملک العلماء نے پکائی ہوئی نبیذ کے بارے میں ذکر کیا ہے کہ اقرب الی الصواب یہ ہے اس سے وضو جائز نہیں کیونکہ اس میں پانی پر کھجور کا رنگ اور ذائقہ کے لحاظ سے غلبہ ہے جیسا کہ آئندہ ذکر ہوگا۔ امام محمد کے قول کے بارے میں میں نے یہ ترجیحات چند خاص صورتوں میں پائی ہیں اور اس قول کے اطلاق کے بارے میں صریح

تصریح میں نے

Fatawa Razawiyya, Volume 3

[Box 1 - Arabic & Urdu Text] Arabic: اه وقال قبله اشار الشيخ الى ان المعتبر بالا وصاف والاصح ان المعتبر بالاجزاء ١ اه Urdu: I did not see anything except what I found in Al-Jawharah, in which they stated regarding Shaykh Quduri that he gave preference to the view of Imam Muhammad by saying "except for one of its attributes" (ahad awsafihi). Although before this, Al-Jawharah mentioned that the Shaykh indicated that the attributes (awsaf) are considered, whereas the correct (asah) view is that the parts (ajzaa) are considered instead of the attributes. (T)

[Middle Section] I say: It is based (1) on making 'one' (ahad) a restriction (taqyeed), and you have known what is in it. (I say that understanding the preference of Imam Muhammad's view through the Jawharah's "ahad awsafihi" depends on making the word "ahad" a restriction, while you have already learned the discussion regarding this. T). Now there are some discussions here.

First Discussion: Refinement of the Doctrine. I say: Different wordings have appeared in the transmission of this view, and the most famous is that if a flowing substance is mixed with water, Imam Muhammad first considers the color; if its color overpowers the water, it is not suitable for wudu, otherwise it is. And for that whose color is not contrary to water, he considers the taste; if its taste overpowers, wudu is impermissible, otherwise permissible. And for that whose taste is also not contrary, he considers the parts; if it is mixed in an equal or greater quantity in the water, wudu is not correct, otherwise it is.

[Box 2 - Arabic & Urdu Text] Arabic: فاوّلاً تقدم فى ١٠٧ عن الحلية عن الذخيرة و التتمة محمد اعتبر غلبة المخلوط لكن فى بعضها اشار الى الغلبة من حيث اللون وفى بعضها الى سلب الرقة ٢ اه ونقل في الفتح عن بعضهم ان Urdu: Firstly, it has passed on page 107 from Al-Hilyah via Al-Zakhiroh and Al-Tatimmah that Imam Muhammad considers the dominance (ghalaba) of the mixed substance, but in some cases he points to dominance in terms of color, and in some, in terms of the loss of fluidity (thinness). And it is narrated in Al-Fath from some of them that...

[Bottom Section] I say: This (2) is also one of the proofs that the jurists did not intend restriction (taqyeed), otherwise the view of Imam Muhammad would have been preferred, whereas the text (nass) of Al-Hidayah is expressed as "one of the attributes" and it validated the view of Imam Abu Yusuf. (T)

[Footnotes] 1. Al-Jawharah al-Nayyirah, Abhaath al-Ma'a (Discussions on Water), Maktaba Imdadia Multan, 1/14. 2. Al-Hilyah

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[बॉक्स 1 - अरबी और उर्दू टेक्स्ट] अरबी: اه وقال قبله اشار الشيخ الى ان المعتبر بالا وصاف بالاجزاء ١ اه عبروالاصح ان المعت उर्दू: मैंने इसके अलावा और कुछ नहीं देखा कि मैंने जौहरा में पाया जिसमें उन्होंने शेख कुदूरी के बारे में फरमाया कि उन्होंने इमाम मोहम्मद के कौल को तरजीह देते हुए कहा "फगैर अहद औसाफिही"। हालांकि इससे पहले जौहरा ने कहा था कि शेख ने इशारा दिया है कि गुणों (औसाफ) का ऐतबार है, जबकि सही (असः) यह है कि गुणों के बजाय अंगों (अज्ज़ा) का ऐतबार है। (त)

[मध्य अनुभाग] अकूल (मैं कहता हूँ): यह (१) 'अहद' को पाबंदी (तक़यीद) बनाने पर आधारित है और आप जान चुके हैं कि इसमें क्या है। (मैं कहता हूँ कि जौहरा के"अहद औसाफिही" के ज़रिए इमाम मोहम्मद के कौल की तरजीह समझना शब्द "अहद" को कैद बनाने पर निर्भर है, हालांकि आप इसमें चर्चा पहले ही जान चुके हैं। त) अब यहाँ कुछ शोध (अब्हास) हैं।

पहली शोध: मज़हब का शोधन (तनक़ीह-ए-मज़हब) अकूल: इस कौल की नक़ल में विभिन्न इबारतें आई हैं और सबसे प्रसिद्ध यह है कि अगर पानी में कोई बहने वाली चीज़ मिल जाए, तो इमाम मोहम्मद पहले रंग का ऐतबार करते हैं; अगर उसका रंग पानी पर हावी हो जाए, तो वह वज़ू के लिए उपयुक्त नहीं है, वरना है। और जिसका रंग पानी के विपरीत न हो, उसमें स्वाद का ध्यान रखते हैं; अगर स्वाद हावी हो जाए तो वज़ू नाजायज़ है, वरना जायज़ है। और जिसका स्वाद भी विपरीत न हो, उसमें अंगों की मात्रा देखी जाती है; अगर वह बराबर या अधिक मात्रा में पानी में मिल जाए तो वज़ू सही नहीं है, वरना सही है।

[बॉक्स 2 - अरबी और उर्दू टेक्स्ट] अरबी: فاوّلاً تقدم فى ١٠٧ عن الحلية عن الذخيرة و التتمة محمد اعتبر غلبة المخلوط لكن فى بعضها اشار الى الغلبة من حيث اللون وفى بعضها الى سلب الرقة ٢ اه ونقل في الفتح عن بعضهم ان उर्दू: पहले, १०७ में 'हिलिया' का कथन 'ज़ख़ीरा' और 'ततिम्मा' के हवाले से गुज़रा है कि इमाम मोहम्मद पानी में मिली हुई चीज़ के वर्चस्व (ग़लबा) का ऐतबार करते हैं, लेकिन कुछ स्थितियों में वे रंग के लिहाज़ से और कुछ में तरलता (रक़त) खोने के लिहाज़ से वर्चस्व तय करते हैं। और 'फ़तह अल-क़दीर' में कुछ लोगों से उद्धृत है कि...

[निचला अनुभाग] अकूल: और यह (२) भी इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने पाबंदी (तक़यीद) का इरादा नहीं किया, वरना इमाम मोहम्मद का कौल तरजीह पा जाता। और 'हिदाया' का मूल पाठ

(नस्स) यह है कि "अहद अल-औसाफ" (गुणों में से एक) कहकर इमाम यूसुफ के कौल को सही घोषित किया गया है। (त)

[पाद टिप्पणियाँ] १. अल-जौहरा अन-नैय्यिरा, पानी की शोध, मकतबा इमदादिया मुल्तान १/१४ २. हिलिया

पृष्ठ ७५६ का १४१

جلد سوم فتاوی رضویہ

اہ وقال قبلہ اشار الشیخ الی ان المعتبر بالا وصاف والاصح ان المعتبر بالاجزاء ۱ اہ نہیں دیکھی ماسوائے اس کے کہ میں نے جوہرہ میں پایا جس میں انہوں نے شیخ قدوری کے متعلق فرمایا کہ انہوں نے امام محمد کے قول کو ترجیح دیتے ہوئے کہا "فغیر احد اوصافہ" اہ حالانکہ اس سے قبل جوہرہ نے کہا کہ شیخ نے اشارہ دیا ہے کہ اوصاف کا اعتبار ہے حالانکہ اصح یہ ہے کہ اوصاف کے بجائے اجزاء کا اعتبار ہے اہ (ت)

اقول: یبنی(۱)علی جعل احد عہ للتقیید وقد علمت مافیہ (میں کہتا ہوں کہ جوہرہ کا "احد اوصافہ" کے ذریعہ امام محمد کے قول کی ترجیح سمجھنا لفظ "احد" کو قید بنانے پر موقوف ہے حالانکہ اس میں بحث تم معلوم کر چکے ہوت) اب یہاں بعض ابحاث ہیں۔ بحث اوّل تنقیح مذہب۔ اقول: اس قول کے نقل میں عبارات مختلف آئیں اور اشہر یہ ہے کہ پانی میں اگر کوئی بہتی ہوئی چیز ملے تو امام محمد اوّلًا رنگ کا اعتبار فرماتے ہیں، اگر اُس کا رنگ پانی پر غالب آجائے قابل وضو نہیں ورنہ ہے، اور جس کا رنگ پانی کے خلاف نہ ہو اس میں مزے کا لحاظ فرماتے ہیں اس کا مزہ غالب ہو تو وضو ناجائز ورنہ جائز، اور جس کا مزہ بھی مخالف نہ ہو اس میں اجزاء پر نظر فرماتے ہیں اگر برابر یا زیادہ مقدار پر پانی میں مل جائے تو وضو صحیح نہیں ورنہ صحیح۔

فاوّلاً تقدم فی ۱۰۷ عن الحلیۃ عن الذخیرۃ و التتمۃ محمد اعتبر غلبۃ المخلوط لکن فی بعضھا اشار الی الغلبۃ من حیث اللون وفی بعضھا الی سلب الرقۃ ۲ اہ ونقل في الفتح عن بعضھم ان اولاً، ۱۰۷ میں حلیہ کا قول ذخیرہ اور تتمہ کے حوالہ سے گزرا ہے کہ امام محمد کا پانی میں مخلوط چیز کے غلبہ کا اعتبار کرتے ہیں لیکن بعض صورتوں میں وہ رنگ کے لحاظ سے اور بعض میں رقت سلب ہونے کے لحاظ سے غلبہ قرار دیتے ہیں اھ اور فتح القدیر میں

عه اقول: وهذا (۲)ایضاً من دلائل انهم لم یریدوا التقیید والا لکان اختیار القول محمد وهذا نص الهدایة عبر باحد الاوصاف وصحح قول ابی یوسف ۱۲ منه غفرله (م) میں کہتا ہوں یہ بھی اس بات پر ایک دلیل ہے کہ فقہاء نے تقیید مراد نہیں لی، ورنہ امام محمد کے قول کو ترجیح ہو جائے گی اور ہدایہ کی نص یہ ہے "احد الاوصاف" سے تعبیر کر کے امام یوسف کے قول کو صحیح قرار دیا ہے۔ (ت)

۱ الجوهرة النیرة ابحاث الماء مکتبہ امدادیہ ملتان ۱/ ۱۴ ۲ حلیہ Page 141 of 756

Fatawa Razawiyya Volume Three

(Urdu Column): It is reported from some that Imam Muhammad considers color in the case of predominance, while Imam Abu Yusuf considers the components. However, in *Al-Muhit*, the opposite is stated, although the former view is more established because the author of *Al-Ajnas* has explicitly quoted Imam Muhammad's view. Subsequently, *Al-Hilyah*, quoting from *Al-Ajnas*, states that Imam Muhammad said regarding water in which basil (chamomile flowers) and alkali-weed have been cooked: as long as the water is not altered to red by the alkali-weed or black by the basil, the water remains predominant; hence, wudu (ablution) with it will be permissible. From this, it is known that Imam Muhammad considers the color of water and Imam Abu Yusuf considers the predominance of components. In the discussion on the predominance of components in *Majma' al-Anhur*, it was mentioned that the predominance of components is the view of Imam Abu Yusuf, and Imam Muhammad considers the color; this is what is authentically narrated from him. In *Al-Jawharat al-Nayyirah*, it is quoted from *Fatawa Zahiriyyah* that Imam Muhammad considers color and Imam Abu Yusuf considers components. In *Jami' al-Rumuz*, it is stated that in predominance, the components will be considered as Imam Abu Yusuf said, and in one narration, this is also the view of Imam Muhammad, but the famous view of Imam Muhammad is that he considers the color, as mentioned in the marginalia of *Al-Hidayah*. Therefore, these aforementioned personages and others besides them have attributed to Imam Muhammad...

(Arabic Column): Muhammad (Imam) considers it by color and Abu Yusuf by components. It is said that in *Al-Muhit* the opposite is stated, and the first is more established, for the author of *Al-Ajnas* quoted Muhammad's view explicitly with its meaning. Then *Al-Hilyah* quoted from *Al-Ajnas* that Muhammad said regarding water in which basil and alkali-weed are cooked: if its color does not change until it turns red from alkali-weed or black from basil, and water is the predominant part, there is no harm in performing wudu with it. Thus, Muhammad considers the color of water and Abu Yusuf the predominance of components. In the discussion of the predominance of components from *Majma' al-Anhur*, it is mentioned that it is the view of Abu Yusuf, and Muhammad considered color in the authentic report from him. In *Al-Jawharat al-Nayyirah* from *Al-Fatawa al-Zahiriyyah*, Muhammad considered color and Abu Yusuf the components. In *Jami' al-Rumuz*, predominance is considered from the perspective of components as Abu Yusuf said, and in one narration from Muhammad, while the most famous view of Muhammad is that the consideration is

for color as in the marginalia of *Al-Hidayah*. Thus, these and others restricted it to color.

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, Chapter on water with which wudu is allowed and not allowed, Maktabah Nuriyyah Razawiyyah Sukkur, 1/65. 2. Majma' al-Anhur, Section on permissibility of purification with absolute water, Matba'ah 'Amirah Egypt, 1/28. 3. Al-Jawharat al-Nayyirah, Book of Purification, Maktabah Imdadiyyah Multan, 1/13. 4. Jami' al-Rumuz, Maktabah Karimiyyah Gunbad Qamus Iran, 1/46.

फ़तावा रज़विया जिल्द (खंड) तीसरा

(उर्दू स्तंभ): कुछ से उल्लेख है कि इमाम मुहम्मद (किसी चीज़ के) प्रभुत्व में रंग का और इमाम अबू यूसुफ़ घटकों (हिस्सों) का आधार मानते हैं। और 'मुहीत' में इसका उल्टा बताया गया है जबकि पहला विचार अधिक प्रबल है क्योंकि 'साहिब-ए-अजनास' ने इमाम मुहम्मद के कथन को स्पष्ट रूप से उद्धृत किया है। फिर 'हिल्या' ने 'अजनास' से उद्धृत करते हुए कहा कि जिस पानी में रेहान (बाबूना के फूल) और उशनान की जड़ी-बूटी पकाई गई हो, तो जब तक उशनान के कारण पानी लाल और रेहान के कारण काला होकर नहीं बदल जाता, तब तक पानी ही प्रभावी रहेगा, अतः इससे वज़ू करना जायज़ होगा। इससे ज्ञात हुआ कि इमाम मुहम्मद पानी के रंग का और इमाम अबू यूसुफ़ घटकों के प्रभुत्व का विचार करते हैं। और 'मजमा-उल-अनहुर' में प्रभुत्व की चर्चा में यह आया है कि घटकों का प्रभुत्व इमाम अबू यूसुफ़ का कथन है और इमाम मुहम्मद रंग का आधार मानते हैं, उनसे यही सही रूप में वर्णित है। 'जौहरा नय्यिरा' में 'फ़तावा ज़हीरिया' से उल्लेख है कि इमाम मुहम्मद रंग और इमाम अबू यूसुफ़ घटकों का आधार मानते हैं। और 'जामे-उल-रुमूज़' में है कि प्रभुत्व में घटकों का विचार होगा जैसा कि इमाम अबू यूसुफ़ का कथन है, और एक रिवायत में यह इमाम मुहम्मद का विचार है, परन्तु इमाम मुहम्मद का प्रसिद्ध विचार यह है कि वे रंग का आधार मानते हैं जैसा कि 'हेदाया' की टिप्पणी में है। अतः इन उल्लेखित विद्वानों और उनके अतिरिक्त अन्य लोगों ने इमाम मुहम्मद के..

(अरबी स्तंभ): इमाम मुहम्मद रंग द्वारा विचार करते हैं और अबू यूसुफ़ घटकों द्वारा। कहा गया कि 'अल-मुहीत' में इसका उल्टा है, और पहला अधिक पुख्ता है क्योंकि 'साहिब-ए-अजनास' ने मुहम्मद के कथन को शब्दशः अर्थ के साथ उद्धृत किया है। फिर 'अल-हिल्या' ने 'अजनास' से उद्धृत किया कि मुहम्मद ने उस पानी के बारे में कहा जिसमें रेहान और उशनान पकाए गए हों: यदि उसका रंग नहीं बदलता जब तक कि वह उशनान से लाल या रेहान से काला न हो जाए, और पानी प्रभुत्व में रहे, तो उससे वज़ू करने में कोई हर्ज नहीं है। अतः मुहम्मद पानी के रंग का ध्यान रखते हैं और अबू यूसुफ़ घटकों के प्रभुत्व का। 'मजमा-अल-अनहुर' से घटकों के प्रभुत्व की चर्चा में यह है कि यह अबू यूसुफ़ का विचार है, और मुहम्मद ने प्रामाणिक वर्णन में रंग को आधार माना। 'अल-जौहरा अल-नय्यिरा' में 'अल-फ़तावा अल-ज़हीरिया' से, मुहम्मद ने रंग को और अबू यूसुफ़ ने घटकों को आधार माना। 'जामे-अल-रुमूज़' में प्रभुत्व को घटकों के दृष्टिकोण से माना गया जैसा कि अबू यूसुफ़ ने कहा, और मुहम्मद से एक रिवायत में, जबकि मुहम्मद का सबसे प्रसिद्ध विचार यह है कि रंग का विचार

किया जाएगा जैसा कि 'अल-हेदाया' की टिप्पणी में है। अतः इन्होंने और अन्य लोगों ने इसे रंग तक सीमित रखा।

पाद-टिप्पणियाँ (फ़ुटनोट्स): 1. फ़तह अल-क़दीर, वज़ू के लिए जायज़ और नाजायज़ पानी का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/65। 2. मजमा अल-अनहुर, मुतलक पानी से तहारत के जायज़ होने का खंड, मतबा आमिरा मिस्र, 1/28। 3. अल-जौहरा अल-नय्यिरा, तहारत की किताब, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 1/13। 4. जामे अल-रुमूज़, मकतबा करीमिया गुंबद कामूस ईरान, 1/46।

पृष्ठ संख्या 142 / 756

(دائیں کالم - اردو): بعض سے منقول ہے کہ امام محمد غلبہ میں رنگ کا اور امام ابو یوسف اجزاء کا اعتبار کرتے ہیں۔ اور محیط میں اس کا عکس بتایا ہے جبکہ اول زیادہ قوی ہے کیونکہ صاحب الاجناس نے امام محمد کے قول کو نصاً نقل کیا ہے پھر اس کو حلیہ نے اجناس سے نقل کرتے ہوئے کہا ہے کہ جس پانی میں ریحان (گل بابونہ) اور اشنان بوٹی پکائے گئے ہوں تو جب تک اشنان کی وجہ سے پانی سرخ اور ریحان کی وجہ سے سیاہ ہو کر متغیر نہیں ہوتا اس وقت تک پانی غالب رہے گا لہٰذا اس سے وضو جائز ہوگا۔ اس سے معلوم ہوا کہ امام محمد پانی کے رنگ کا اور امام ابو یوسف اجزاء کے غلبہ کا اعتبار کرتے ہیں اھ اور مجمع الانہر کے غلبہ کی بحث میں گزرا کہ اجزاء کا غلبہ امام ابو یوسف کا قول ہے اور امام محمد رنگ کا اعتبار کرتے ہیں ان سے صحیح طور یہی مروی ہے اھ، جوہرہ نیرہ میں فتاویٰ ظہیریہ سے منقول ہے کہ امام محمد رنگ اور امام ابو یوسف اجزاء کا اعتبار کرتے ہیں اور جامع الرموز میں ہے کہ غلبہ میں اجزاء کا اعتبار ہوگا جیسا کہ امام ابو یوسف کا قول ہے اور ایک روایت میں یہ قول امام محمد کا ہے لیکن مشہور قول امام محمد کا یہ ہے کہ وہ رنگ کا اعتبار کرتے ہیں جیسا کہ ہدایہ کے حاشیہ میں ہے اھ پس ان مذکور حضرات اور ان کے علاوہ دوسرے حضرات نے امام محمد کے

(بائیں کالم - عربی): محمدا یعتبرہ باللون و ابایوسف بالاجزاء قال وفی المحیط عکسہ والاول اثبت فان صاحب الاجناس نقل قول محمد نصا بمعناہ ثم نقل کالحلیۃ عن الاجناس قال محمد فی الماء الذی یطبخ فیہ الریحان والاشنان اذالم یتغیر لونہ حتی یحمر بالاشنان اویسود بالریحان وکان الغالب علیہ الماء فلابأس بالوضو بہ فمحمد یراعی لون الماء وابویوسف غلبۃ الاجزاء اھ[1] ومر فی بحث غلبۃ الاجزاء عن مجمع الانہر انہ قول ابی یوسف ومحمد اعتبر اللون فی الصحیح عنہ اھ[2] وفی الجوھرۃ النیرۃ عن

الفتاوى الظهيرية محمد اعتبر اللون وابويوسف الاجزاء اه[3] وفى جامع الرموز اعتبر الغلبة من حيث الاجزاء كما قال ابويوسف وفى رواية عن محمد واشهر قول محمد ان المعتبر اللون كما فى حاشية الهداية اه[4] فهؤلاء واخرون اقتصروا على اللون۔

حواشى: 1 فتح القدير باب الماء الذى يجوز به الوضو ومالا يجوز مكتبہ نوريہ رضويہ سكهر ۶۵/۱ 2 مجمع الانہر فصل تجوز الطهارة بالماء المطلق مطبعہ عامره مصر ۲۸/۱ 3 الجواهر النيرة كتاب الطهارت مكتبہ امداديہ ملتان ۱/۱۳ 4 جامع الرموز مكتبہ كريميہ گنبد قاموس ايران ۱/۴۶

Fatawa Razawiya Volume Three

Secondly: In Al-Hilyah, from Al-Muhit al-Radawi, it is narrated that according to Imam Muhammad, the criterion for dominance is based on the components themselves, not color or taste. According to Imam Abu Yusuf, the criterion is color or taste; if neither is present, then dominance of the components is considered [End of quote]. It was stated and attributed in Al-Muhit to rare opinions [End of quote]. In this explanation, although the proportion regarding the criterion of dominance is reversed compared to the first mentioned proportion which is stronger, nevertheless, in this explanation, there is a deliberation between color and taste, and then after these two, the consideration of components is mentioned. (T)

Thirdly: As mentioned in the aforementioned discussion from Al-Inayah, Imam Muhammad considers dominance first by color, then by taste, then by components [End of quote]. In At-Tabyin, Al-Isbijabi mentioned that dominance is considered first by color, then taste, then components [End of quote]. It is narrated in Ash-Shalbiyyah from Yahya from Imam Al-Isbijabi with the wording: "If water is mixed with something pure, if its color changes, the criterion is color, such as milk, vinegar, and saffron. If the color does not change but the taste changes, the criterion is taste, such as watermelon water, or sap from trees, fruits, and fermented drinks, even if the color does not change and..."

[1] Al-Hilyah [2] Al-Inayah: The water with which ablution is permissible, Maktabah Nooria Razawiya, Sukkur, 1/44. Page 143 of 756

दूसरा: अल-हिलया में अल-मुहीत अल-रज़वी से वर्णित है कि इमाम मुहम्मद के अनुसार प्रधानता का आधार अवयव (ingredients) हैं, न कि रंग या स्वाद। इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार रंग या स्वाद का महत्व है; यदि दोनों मौजूद न हों, तो अवयवों की प्रधानता मानी जाती है [समाप्त]। उन्होंने कहा और अल-मुहीत में इसे दुर्लभ मतों में गिना है [समाप्त]। इस विवरण में यद्यपि प्रधानता के मानक का अनुपात विपरीत है, जबकि पहला उल्लेखित अनुपात अधिक पुष्ट है, फिर भी इस विवरण में रंग और स्वाद के बीच दुविधा है और फिर इन दोनों के बाद अवयवों का उल्लेख है। (त)

तीसरा: पूर्व चर्चा में अल-इनाया से उद्धृत किया गया कि इमाम मुहम्मद प्रधानता में रंग, फिर स्वाद और फिर अवयवों पर विचार करते हैं [समाप्त]। अत-तबीन में अल-इस्बीजाबी ने उल्लेख किया है कि प्रधानता को पहले रंग, फिर स्वाद और फिर अवयवों के आधार पर माना जाएगा [समाप्त]। अश-शलबीया में यह्या के माध्यम से इमाम अल-इस्बीजाबी से इन शब्दों में वर्णित है: "यदि पानी में कोई स्वच्छ वस्तु मिल जाए, तो यदि उसका रंग बदल जाए, तो मानदंड रंग होगा, जैसे दूध, सिरका और केसर। और यदि रंग न बदले लेकिन स्वाद बदल जाए, तो मानदंड स्वाद होगा, जैसे तरबूज का पानी या पेड़ों, फलों का रस और नबीज़, भले ही उसका रंग न बदले और..."

[1] हिलया [2] अल-इनाया: अल-मा अल-लज़ी यज़ूज़ु बिही अल-वुद्ज़ मकतबा नूरियह रज़विया, सक्खर, 1/44। पृष्ठ 143 का 756

وثانیاً: فی الحلیۃ عن المحیط الرضوی العبرۃ قول میں صرف رنگ کا ذکر کیا ہے۔ (ت) عند محمد لغلبۃ الاجزاء دون اللون او الطعم ثانیاً، حلیہ میں محیط رضوی سے منقول ہے کہ امام محمد کے وعند ابی یوسف للون او الطعم فان لم یوجد کل ہاں اجزاء کے غلبہ کا اعتبار ہے رنگ اور ذائقہ کا اعتبار نہیں اور منہما فغلبۃ الاجزاء [1]اھ قال وعزاہ فی المحیط امام ابو یوسف کے ہاں رنگ یا ذائقہ کا اعتبار ہے اگر دونوں نہ الی النوادر اھ وہذا وانکان فیہ عکس النسبۃ ہوں تو پھر وہ اجزاء کے غلبہ کا اعتبار کرتے ہیں اھ اور کہا کہ اس کو محیط میں نوادر اقوال میں شمار کیا ہے اھ اس بیان میں وقد ثبت ان الاول اثبت فالنظر ھھنا الی اگر چہ غلبہ کے معیار کی نسبت بر عکس ہے جبکہ پہلی مذکورہ تردید بین اللون والطعم ثم تقدیمھما علی نسبت زیادہ قوی ہے تاہم اس بیان میں رنگ اور ذائقہ کی الاجزاء۔ تردید اور پھر ان دونوں کے بعد اجزاء کا اعتبار مذکور ہے۔

وثالثاً: مرفی البحث المذکور عن العنایۃ محمد (ت) ثالثاً، عنایہ سے منقول ہو کر گزشتہ بحث میں گزرا کہ یعتبر الغلبۃ باللون ثم الطعم ثم الاجزاء اھ امام محمد غلبہ میں رنگ پھر ذائقہ اور پھر اجزاء کا اعتبار کرتے وفی التبیین ذکر الاسبیجابی ان الغلبۃ تعتبر ہیں اھ اور تبیین میں ہے امام اسبیجابی نے ذکر کیا ہے کہ اولا من حیث اللون ثم الطعم ثم الاجزاء [2]اھ پہلے رنگ کے غلبہ پھر ذائقہ اور پھر اجزاء کا اعتبار کیا جائے گا ونقل فی الشلبیہ عن یحییٰ عن الامام اھ اور شلبیہ میں یحییٰ کے ذریعہ امام اسبیجابی سے منقول ہے کہ اگر پانی میں کوئی پاک چیز مل جائے تو اس سے اگر رنگ الاسبیجابی بلفظ ان الماء ان اختلط بہ طاھر متغیر ہوا تو رنگ کا اعتبار ہو گا جیسا کہ دودھ، سرکہ اور فان غیر لونہ فالعبرۃ للون مثل اللبن والخل زعفران ہو۔ اور اگر اس سے رنگ نہ بدلے بلاکلہ ذائقہ بدلا والزعفران یختلط بالماء وان لم یغیر لونہ بل ہو تو پھر ذائقہ کا اعتبار کیا جائے گا، جیسا کہ

تربوز کا پانی یا طعمه فالعبرة للطعم مثل ماء البطیخ والاشجار درختوں، والثمار والانبذة وان لم یغیر لونه و

[1] حلیہ [2] العنایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضو مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۴۴ Page 143 of 756

Fatawa Razawiyya Volume 3

(Arabic Text): Regarding taste, the consideration is for the parts (components). If its parts predominate over the water parts, then performing ablution (Wudu) with it is not permissible, such as water extracted from fruit. However, it is permissible like water that drips from a grapevine when it is cut.1 اھ. Similarly, it is stated in 'Khizanat al-Muftin', starting with: 'When something is mixed with water, predominance is determined by color, then taste, then parts.' Then it mentions the meaning of equality, except that in the final part, it says the consideration there is for the majority of parts; if the water parts are more, it is permissible, otherwise it is not. 2 اھ. A similar statement is in 'Jami' al-Rumuz' from al-Zahidi and others, which begins: 'If two pure substances differ from water in color, such as milk, juice, vinegar, or saffron water, then the consideration is for the color, 3 etc.' Thus, he mentioned saffron water instead of just saffron. Similarly, in 'al-Binayah' from the commentary of 'al-Quduri', the jurists added the term 'saffron water'. The same is in 'al-Hilyah', and it is also attributed to al-Zayla'i from al-Isbijabi. I say: However, the wording of al-Zayla'i regarding him is what you have already heard, and al-Quhistani said at the end of his narration as previously mentioned.

(Urdu Translation): ...be the water of fruits and extracts. And if the color and taste do not change, then the consideration will be of the parts. When the parts of the substance mixed with water predominate over the parts of the water, then Wudu will not be permissible, such as fruit juice. And if there is no predominance of color, taste, and parts, then Wudu will be permissible, such as the water that drips from a grapevine when it is cut. اھ. And similar is in 'Khizanat al-Muftin', only in the beginning they said that when something is mixed with water, the consideration will be of color, taste, and then parts. Then its meaning was mentioned as equal, except that in the last part it was said that the consideration is for the majority of parts; if the parts of water predominate, Wudu will be permissible, otherwise not. اھ. Similarly, the text of 'Jami' al-Rumuz' starts like this: if there is such a pure thing that is opposite to water in color, like milk, vinegar, juice, this saffron water, etc., then color is considered, etc. They have mentioned saffron water instead of saffron. In 'Al-Binayah' also, it is reported from the commentary of Al-Quduri's 'Zad al-Fuqaha' that the word "water" has been added with saffron. And it is the same in 'Al-Hilyah', and it is attributed to Az-Zayla'i that he quoted it from Al-Isbijabi. (T) I say that you have heard the text of Az-Zayla'i quoted from Imam Al-Isbijabi; Quhistani has... .

Footnotes: 1. Shalabiyyah 'ala al-Tabyin, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyyah, Egypt, 1/20. 2. Khizanat al-Muftin. 3. Jami' al-Rumuz, Kitab al-Taharah, Islamiyyah, Gunbad, Iran, 1/46.

फतावा रज़विया खंड 3

(अरबी पाठ का अर्थ): स्वाद के बारे में, विचार अंशों (अवयवों) के लिए है। यदि इसके अंश पानी के अंशों पर हावी हो जाते हैं, तो इसके साथ वज़ू करना जायज़ नहीं है, जैसे फलों से निकाला गया पानी। हालाँकि, यह उस पानी की तरह जायज़ है जो अंगूर की बेल को काटने पर उससे टपकता है। 1 अह। इसी तरह, '़ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' में कहा गया है, शुरुआत में: 'जब पानी में कुछ मिलाया जाता है, तो प्रबलता रंग, फिर स्वाद, फिर अंशों द्वारा निर्धारित की जाती है।' फिर इसमें समानता का अर्थ बताया गया है, सिवाय इसके कि अंतिम भाग में कहा गया है कि वहाँ विचार अंशों की बहुलता के लिए है; यदि पानी के अंश अधिक हों, तो वज़ू जायज़ है, अन्यथा नहीं। 2 अह। इसी तरह का कथन अल-ज़हीदी और अन्य लोगों द्वारा 'जामेउर रुमूज़' में है, जो शुरू होता है: 'यदि दो शुद्ध पदार्थ रंग में पानी से भिन्न होते हैं, जैसे दूध, रस, सिरका, या केसर का पानी, तो विचार रंग के लिए होता है, 3 आदि।' इस प्रकार, उन्होंने केवल केसर के स्थान पर केसर के पानी का उल्लेख किया। इसी तरह, 'अल-बिनाया' में 'अल-क़ुदूरी' की व्याख्या से, न्यायविदों ने 'केसर का पानी' शब्द जोड़ा। वही 'अल-हिलिया' में है, और इसे अल-इसबीजाबी से अल-ज़ैलई को भी जिम्मेदार ठहराया गया है। मैं कहता हूँ: हालाँकि, उनके बारे में अल-ज़ैलई के शब्द वही हैं जो आप पहले ही सुन चुके हैं, और अल-कुहिस्तानी ने अपने कथन के अंत में कहा जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है।

(उर्दू अनुवाद): ...फलों और निचोड़ों का पानी हो। और यदि रंग और स्वाद न बदले, तो फिर अंगों (अंशों) का विचार होगा। जब पानी के अंशों पर मिलने वाली चीज़ के अंश प्रबल हो जाएँ तो वज़ू जायज़ नहीं होगा, जैसे फलों का रस हो। और यदि रंग, स्वाद और अंगों की प्रबलता न हो, तो वज़ू जायज़ होगा, जैसे अंगूर की बेल काटने पर उससे टपकने वाला पानी हो। अह। और ऐसा ही '़ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' में है, केवल शुरुआत में उन्होंने कहा कि जब पानी में कोई चीज़ मिले, तो रंग, स्वाद और फिर अंगों का विचार होगा। फिर इसका अर्थ बराबर-बराबर बताया गया, सिवाय इसके कि अंतिम भाग में कहा गया कि अंगों की अधिकता का विचार है; यदि पानी के अंश अधिक हों, तो वज़ू जायज़ होगा, अन्यथा नहीं। अह। इसी तरह 'जामेउर रुमूज़' का पाठ है जो इस प्रकार शुरू होता है कि यदि कोई ऐसी पाक चीज़ हो जो रंग में पानी के विपरीत हो, जैसे दूध, सिरका, रस, यह केसर का पानी आदि, तो इसमें रंग का विचार है। उन्होंने केसर के बजाय केसर के पानी का उल्लेख किया है। 'बिनाया' में भी 'शरहे क़ुदूरी' के'ज़ादुल फ़ुक़हा' से ऐसा ही वर्णित है कि केसर के साथ 'पानी' शब्द जोड़ा गया है। और ऐसा ही 'हिलिया' में है और इसे ज़ैलई की ओर श्रेय दिया गया है कि उन्होंने

इसे इस्बीजाबी से उद्धृत किया है। (त) मैं कहता हूँ कि आप इमाम इस्बीजाबी से उद्धृत ज़ैलई का पाठ सुन चुके हैं, कुहिस्तानी ने पिछली... [जारी]।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. शल्बिया अलत-तब्यीन, किताबुत तहारत, अल-अमीरिया, मिस्र, 1/20 2. ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन 3. जामेउर रुमूज़, किताबुत तहारत, इस्लामिया, गुंबद, ईरान, 1/46

पृष्ठ 144/756

(عربی متن): طعمه فالعبرة للاجزاء فأن غلب اجزاؤه على اجزاء الماء لايجوز الوضو به كالماء المعتصر من الثمر والاجاز كالماء المتقاطر من الكرم بقطعه 1 اه و مثله فی خزانة المفتین صدر بقوله اذا اختلط شیئ بالماء تعتبر الغلبة من حیث اللون ثم الطعم ثم الاجزاء ثم ذکر معناه سواء بسواء غیر انه قال فی الشق الاخیر العبرة فیه لکثرة الاجزاء ان کان اجزاء الماء اکثر یجوز والالا 2 اه و مثله فی جامع الرموز عن الزاهدی وغیره وبدایته الطاهران خالف الماء لونا کاللبن والعصیر والخل وماء الزعفران فالعبرة للون 3 الخ فذکر ماء الزعفران مکان الزعفران ومثله فی البنایة عن شرح القدوری زاد الفقهاء بلفظ ماء الزعفران وکذلك فی الحلیة وقد عزاه ایضاً للزیلعی عن الاسبیجابی۔ اقول: لکن عبارة الزیلعی عنه مأقد سمعت و قال القهستانی اخر نقله المار

(اردو ترجمہ): پھلوں اور نچوڑوں کا پانی ہو۔ اور اگر رنگ اور ذائقہ تبدیل نہ ہو تو پھر اجزاء کا اعتبار ہوگا جب پانی کے اجزاء پر ملنے والی چیز کے اجزاء غالب ہو جائیں تو وضو جائز نہ ہوگا جیسا کہ پھلوں کا جوس ہو ، اور اگر رنگ ، ذائقہ اور اجزاء کا غلبہ نہ ہو تو پھر وضو جائز ہوگا جیسا کہ انگور کا پودا کاٹنے پر اس سے چٹکنے والا پانی ہو اہ اور ایسا ہی خزانہ المفتیین میں ہے صرف شروع میں انہوں نے کہا کہ جب پانی میں کوئی چیز ملے تو اعتبار رنگ ، ذائقہ پھر اجزاء کا ہوگا پھر اس کا معنی ذکر کیا سواء بسواء ، سوائے اس کے کہ آخری شق میں کہا کہ اعتبار کثرت اجزاء کا ہے اگر پانی کے اجزاء غالب ہوں تو وضو جائز ہوگا، ورنہ نہیں اہ اسی کے مثل جامع الرموز کی عبارت ہے جو یوں شروع ہوتی ہے کہ اگر ایسی پاک چیز ہو جو رنگ میں پانی کے مخالف ہو جیسے دودھ، سرکہ، جوس اس زعفران کا پانی وغیرہ تو اس میں رنگ کا اعتبار ہے الخ انہوں نے زعفران کے بجائے زعفران کے پانی کو ذکر کیا ہے۔ بنایہ میں بھی شرح قدوری زاد

الفقہاء سے ایسے ہی منقول ہے کہ زعفران کے ساتھ پانی کا لفظ بڑھایا ہے۔ اور یوں ہی حلیہ میں ہے اور اس کو زیلعی کی طرف منسوب کیا ہے کہ انہوں نے اسیجابی سے نقل کیا ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں کہ زیلعی کی امام اسپیجابی سے نقل کردہ عبارت آپ سن چکے ہیں، قہستانی نے گزشتہ

حواشی: 1 شلبیۃ علی التبیین کتاب الطہارۃ الامیریہ مصر 20/1 2 خزانۃ المفتیین 3 جامع الرموز کتاب الطہارۃ اسلامیہ گنبد ایران 46/1

Fatawa Razvia Volume 3

At the end of the quoted text, it was stated: therefore, first the color, then the taste, and after that, the ingredients will be considered. (Ending quote). And it is mentioned in Al-Birjandi that it is stated in Al-Hidayah that regarding dominance, first the color, then the taste, and then the ingredients will be considered. Thus, if its color is contrary to the color of water, such as milk and saffron, etc. (T)

I say: This is not mentioned in Al-Hidayah; it might be an addition or error by the scribe. All these scholars mentioned the sequence in all matters, but they kept the pure substance mixing with water absolute from the restriction of being a 'liquid' and did not restrict it. Al-Isbijabi, Al-Sam'ani, and Al-Birjandi cited saffron as an example of this pure substance, but Al-Halabi, Al-Ayni, Al-Zahidi, Zad al-Fuqaha, and others restricted the example to 'saffron water'. (T)

Fourthly: Imam Malik al-Ulama stated in Al-Bada'i' that when any pure liquid substance is mixed with absolute water—such as milk, vinegar, and syrup made from dried grapes, and other similar things due to which the name of the water changes and the water becomes overpowered—then in this case, it will no longer remain absolute water but will become restricted (muqayyad). Then it will be determined whether the substance mixed with water is something whose color differs from the color of water, such as milk, safflower water, saffron, and the like; in such a case, dominance will be considered based on color. And if it does not differ...

1. Jami' al-Rumuz, Kitab al-Taharah, Islamia Gunbad, Iran, 1/46
2. Nuqayah Birjandi, Ab'hath al-Ma', Naval Kishore, Lucknow, 1/32

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3

नकल किए गए पाठ के अंत में कहा गया है: इसलिए, पहले रंग, फिर स्वाद और उसके बाद अवयवों (अंशों) पर विचार किया जाएगा। (समाप्त)। और अल-बिरजंदी में उल्लेख है कि अल-हिदाया में कहा गया है कि प्रभुत्व (ग़ल्बा) के मामले में पहले रंग, फिर स्वाद और फिर अवयवों पर विचार किया जाएगा। अतः, यदि इसका रंग पानी के रंग के विपरीत है, जैसे दूध और केसर आदि। (त)

मैं कहता हूँ: अल-हिदाया में यह उल्लेख नहीं है; हो सकता है कि यह नकल करने वाले की ओर से कोई त्रुटि या वृद्धि हो। इन सभी विद्वानों ने सभी मामलों में क्रम का तो उल्लेख किया है, लेकिन उन्होंने पानी में मिलने वाली शुद्ध वस्तु को 'तरल' होने के प्रतिबंध से मुक्त (मुतलक़) रखा और उसे प्रतिबंधित नहीं किया। अल-इस्बिजाबी, अल-समआ़नी और अल-बिरजंदी ने इस शुद्ध वस्तु के उदाहरण के रूप में केसर का उल्लेख किया है, लेकिन अल-हलबी, अल-ऐनी, अल-ज़ाहिदी, ज़ाद अल-फ़ुक़्हा और अन्य ने उदाहरण को 'केसर के पानी' तक सीमित कर दिया। (त)

चौथा: इमाम मलिक अल-उलेमा ने अल-बदा'इ' में फ़रमाया कि जब किसी शुद्ध तरल पदार्थ को मुतलक़ (साधारण) पानी में मिलाया जाता है—जैसे दूध, सिरका और सूखे अंगूर से बना शरबत, और ऐसी ही अन्य चीज़ें जिनकी वजह से पानी का नाम बदल जाए और पानी दब जाए (म़ग़लूब हो जाए)—तो इस स्थिति में वह पानी मुतलक़ नहीं रहेगा बल्कि मुक़य्यद (सीमित) हो जाएगा। फिर यह देखा जाएगा कि यदि पानी में मिलाई गई चीज़ ऐसी है जिसका रंग पानी के रंग से अलग है, जैसे दूध, कुसुम का पानी, केसर और इसी तरह की चीज़ें; तो ऐसी स्थिति में प्रभुत्व (ग़ल्बा) के लिए रंग पर विचार किया जाएगा। और यदि यह अलग न हो...

1. जामे अल-रुमूज़, किताब अल-तहारत, इस्लामिया गुंबद, ईरान, 1/46
2. नुक़ाया बिरजंदी, अब़हाथ अल-मा, नवल किशोर, लखनऊ, 1/32

पृष्ठ 145 / 756

نقل شدہ عبارت کے آخر میں فرمایا، لہذا پہلے رنگ پھر ذائقہ اور اس کے بعد اجزاء کا اعتبار ہوگا اھ اور بر جندی میں ہے کہ ہدایہ میں مذکور ہے کہ غلبہ میں پہلے رنگ پھر ذائقہ اور پھر اجزاء کا اعتبار کیا جائے گا، پس اگر اس کا رنگ پانی کے رنگ کے مخالف ہو، جیسے دودھ اور زعفران الخ (ت) میں کہتا ہوں ہدایہ میں یہ مذکور نہیں، ہوسکتا ہے کہ لکھنے والے کی طرف سے زیادتی ہو، ان تمام حضرات نے تمام امور میں ترتیب کو تو ذکر کیا ہے لیکن پانی میں ملنے والی پاک چیز کو بہنے والی قید سے مطلق رکھا اور اس سے مقید نہ کیا، اور اسبیجابی اور سمعانی اور بر جندی نے اس پاک چیز کی مثال زعفران کو ذکر کیا لیکن حلبی، عینی، زاہدی، زاد الفقہاء وغیرہ نے مثال کو زعفران کے پانی سے مقید کیا۔ (ت) رابعاً: امام ملک العلماء نے بدائع میں فرمایا کہ مطلق پانی میں جب کوئی بہنے والی پاک چیز مل جائے جیسے دودھ، سرکہ اور خشک انگور سے بنا ہوا شربت اور ان جیسی دوسری اشیاء جن کی وجہ سے پانی کا نام بدل جائے اور پانی مغلوب ہو جائے تو اس صورت میں وہ پانی مطلق نہ رہے گا بلکہ مقید ہو جائے گا پھر اس کے بعد معلوم کیا جائے گا کہ جو چیز پانی میں ملی ہے اگر اس کا رنگ پانی کے رنگ کے مخالف ہو تو غلبہ میں رنگ کا اعتبار کیا جائے گا،

۱ جامع الرموز کتاب الطہارت اسلامیہ گنبد ایران ۱/ ۴۶ ۲ نقایہ بر جندی ابحاث الماء نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۲

Fatawa Razawiya Volume 3

[Arabic Column] Water that matches in color but differs in taste, like white grape juice and its vinegar, dominance is considered based on taste. If it does not differ in both (color and taste), then dominance is considered based on the parts. If the parts are equal, this was not mentioned in Zahir al-Riwayah, and they said its ruling is the ruling of overcome water as a precaution. This is if the substance mixed with it is not something intended for increasing cleanliness. If it is something intended for that and cooked with it or mixed with it like soap water and alkali, wudu (ablution) is permissible with it even if the color, taste, or smell of the water changes, because the name of 'water' remains and its functional meaning—purification—is enhanced. Similarly, the Sunnah is established in washing the deceased with water boiled with lote tree leaves and saltwort (alkali). So, wudu is permissible with it unless it becomes thick like mixed parched grain flour (sawīq), because then the name of water and its meaning also disappear from it. Even if absolute water changes due to mud, dust, gypsum, lime, or falling leaves or fruits into it, or long stagnation, wudu is permissible with it because the name of water has not ceased from it and its meaning remains as well, along with the apparent necessity due to the difficulty of protecting water from such things. The analogy of what we mentioned is that wudu is not permissible with date-wine (nabīdh al-tamr) because the name of water has changed and it has become dominated by the taste of dates, so it fell under the meaning of restricted water. By analogy, Abu Yusuf took this, except that Abu Hanifah left the analogy.

[Urdu Column] Like milk, safflower, and saffron water; and if it is not different in color but different in taste, then dominance in taste will be considered, such as white grape juice and its vinegar. And if that thing is not different in these two attributes, then dominance will be considered according to the parts. If the parts of both are equal, this case has not been mentioned in Zahir al-Riwayah, while the jurists have said that the ruling in this case will also be that of the 'overcome', there is precaution in this. This detail is for the case where increasing cleanliness is not the primary purpose of the substance mixed with water. If cleanliness is the purpose and for this very purpose it has been cooked in or mixed with water, such as soap or alkali water, then in this case wudu is permissible from it even if the color, smell, and taste of the water change, because it will still be called water and the spiritual status of the water, i.e., purification, has increased. That is why the method of using water cooked with lote leaves and alkali water for washing the deceased is prevalent, therefore wudu

from it will be permissible. Yes, if in this case the water becomes so thick that it becomes like parched grain mush (sattoo), then wudu from it will not be permissible because in this case it is not called water nor does the spiritual status of water remain in it. And if changes occur in absolute water due to mud, dust, gypsum, lime, falling leaves or fruits, or water staying for a long time, then...

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[अरबी स्तंभ] पानी जो रंग में मिलता है लेकिन स्वाद में अलग होता है जैसे सफेद अंगूर का रस और उसका सिरका, स्वाद में प्रबलता (ग़ल्बा) मानी जाती है। यदि दोनों (रंग और स्वाद) में अलग न हो, तो अंशों (अजज़ा) में प्रबलता मानी जाती है। यदि अंश बराबर हों, तो ज़ाहिर अल-रवायाह में इसका उल्लेख नहीं किया गया है, और उन्होंने कहा कि एहतियात के तौर पर इसका हुक्म दबे हुए (मगलूब) पानी का होगा। यह तब है जब उसमें मिलाई गई चीज़ से साफ़-सफ़ाई बढ़ाना मक़सद न हो। यदि वह ऐसी चीज़ है जिससे साफ़-सफ़ाई मक़सद है और उसे पानी में पकाया गया हो या मिलाया गया हो जैसे साबुन और अशनन (खारी घास) का पानी, तो उससे वज़ू करना जायज़ है, भले ही पानी का रंग, स्वाद या गंध बदल जाए क्योंकि पानी का नाम बना रहता है और उसका अर्थ बढ़ जाता है, जो कि पवित्रता (पाकी) है। इसी तरह, मुर्दे को बेर के पत्तों और अशनन के साथ उबले हुए पानी से नहलाने की सुन्नत चली आ रही है। इसलिए उससे वज़ू करना जायज़ है जब तक कि वह सत्तू के घोल (सवीक़) की तरह गाढ़ा न हो जाए, क्योंकि तब उससे पानी का नाम और उसका अर्थ भी समाप्त हो जाता है। भले ही मुतलक़ (शुद्ध) पानी मिट्टी, धूल, जिप्सम, चूने, या उसमें पत्ते या फल गिरने, या लंबे समय तक रुके रहने के कारण बदल जाए, उससे वज़ू करना जायज़ है क्योंकि उससे पानी का नाम नहीं गया है और उसका अर्थ भी बना हुआ है, साथ ही पानी को उससे बचाने की कठिनाई के कारण ज़ाहिर ज़रूरत भी है। हमने जो ज़िक्र किया उसका कयास (तुलना) यह है कि खजूर की नबीज़ से वज़ू करना जायज़ नहीं है क्योंकि पानी का नाम बदल गया है और वह खजूर के स्वाद से दब गया है, इसलिए वह मुक़य्यद (सीमित) पानी के अर्थ में आ गया। कयास के अनुसार, अबू यूसुफ ने इसे अपनाया, सिवाय इसके कि इमाम अबू हनीफा ने कयास को छोड़ दिया।

[उर्दू स्तंभ] जैसे दूध, कुसुंभ (अस्फर) और केसर का पानी; और अगर वह रंग में अलग न हो लेकिन स्वाद में अलग हो, तो स्वाद में प्रबलता (ग़ल्बा) मानी जाएगी, जैसे सफेद अंगूर का रस और उसका सिरका। और अगर वह चीज़ इन दोनों गुणों में अलग न हो, तो फिर अंशों (अजज़ा) के लिहाज़ से प्रबलता मानी जाएगी। और अगर दोनों के अंश बराबर हों, तो इस मामले का ज़िक्र ज़ाहिर अल-रवायाह में नहीं किया गया है, जबकि फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने कहा है कि इस मामले में हुक्म भी दबे हुए (मगलूब) का होगा, इसमें एहतियात है। यह विवरण उस मामले के लिए है जब पानी में मिलने वाली चीज़ से अधिक सफ़ाई मक़सद न हो। अगर सफ़ाई ही मक़सद हो और इसी मक़सद के लिए उसे पानी में पकाया गया हो या मिलाया गया हो जैसे साबुन और अशनन का पानी, तो इस मामले में

उससे वज़ू जायज़ होगा भले ही इस मामले में पानी का रंग, गंध और स्वाद भी बदल जाए क्योंकि अभी इसे पानी ही कहेंगे और पानी की अर्थपूर्ण स्थिति यानी पाकी (ततहीर) में इज़ाफ़ा हुआ है। इसीलिए मय्यत को ग़ुस्ल देने में बेर के पत्तों से पका हुआ पानी और अशनन वाला पानी इस्तेमाल करने का तरीका प्रचलित है, लिहाज़ा उससे वज़ू जायज़ होगा। हाँ, अगर इस मामले में पानी बहुत ज़्यादा गाढ़ा होकर सत्तू की तरह हो जाए, तो उससे वज़ू जायज़ न होगा क्योंकि इस मामले में इसे पानी नहीं कहा जाता और न ही इसमें पानी की अर्थपूर्ण स्थिति बाकी रही है। और अगर पानी में कीचड़, धूल, जिप्सम, चूना, पत्ते गिरने या फल गिरने या देर तक पानी पड़े रहने की वजह से मुतलक़ पानी में बदलाव आता है तो...

पृष्ठ 146 का 756

[عربی کالم] الماء فی اللون ویخالفه فی الطعم کعصیر العنب الابیض وخله تعتبر الغلبة فی الطعم وان کان لایخالفه فیهما تعتبر الغلبة فی الاجزاء فان استویانی الاجزاء لم یذکر هذا فی ظاهر الروایة وقالوا حکمه حکم الماء المغلوب احتیاطاً هذا اذالم یکن الذی خالطه مما یقصد منه زیادة نظافة فان کان مما یقصد منه ذلك ویطبخ به اویخالط به کماء الصابون والاشنان یجوز التوضی به وان تغیر لون الماء او طعمه او ریحه لان اسم الماء باق وازداد معناه وهو التطهیر وکذلك جرت السنة فی غسل المیت بالماء المغلی بالسدر والحرص فیجوز الوضو به الا اذا صار غلیظاً کالسویق المخلوط لانه حینئذ یزول عنه اسم الماء ومعناه ایضاً ولو تغیر الماء المطلق بالطین او بالتراب اوبالجص او بالنورة اوبوقوع الاوراق اوالثمار فیه او طول المکث یجوز التوضو به لانه لم یزل عنه اسم الماء وبقی معناه ایضاً مع ما فیه من الضرورة الظاهرة لتعذر صون الماء عن ذلك، وقیاس ما ذکرنا انه لا یجوز الوضو بنبیذ التمر لتغیر اسم الماء وصیرورته مغلوباً بطعم التمر فکان فی معنی الماء المقید وبالقیاس اخذ ابویوسف الا ان ابا حنیفة ترك القیاس۔

[اردو کالم] جیسے دودھ ، عصفر اور زعفران کا پانی اور اگر وہ رنگ میں مخالف نہ ہو اگر وہ ذائقہ میں مخالف ہو تو غلبہ میں ذائقہ کا اعتبار کیا جائے گا جیسے سفید انگور کا جوس اور اس کا سرکہ ہو، اور اگر وہ چیز ان دونوں وصفوں میں مخالف نہ ہو تو پھر اجزاء کے لحاظ سے غلبہ کا اعتبار ہوگا، اور اگر دونوں کے اجزاء برابر ہوں تو اس صورت کو ظاہر روایت میں ذکر نہیں کیا گیا جبکہ فقہاء نے کہا ہے کہ اس صورت کا حکم بھی مغلوب والا ہوگا اس میں احتیاط ہے۔ یہ تفصیل اس صورت میں ہے جبکہ پانی میں ملنے والی چیز سے زیادہ نظافت مقصود نہ ہو، اور اگر اس سے نظافت مقصود ہو اور اسی مقصد کیلئے اس کو پانی میں پکایا گیا ہو یا ملایا گیا ہو جیسے

صابون اور اشنان کا پانی تو اس صورت میں اس سے وضو جائز ہوگا اگرچہ اس صورت میں پانی کا رنگ، بو اور ذائقہ بھی تبدیل ہو جائے کیونکہ ابھی اس کو پانی کہیں گے اور پانی کی معنوی حیثیت یعنی تطہیر میں اضافہ ہوا ہے اسی لئے میت کو غسل دینے میں بیری کے پتوں سے پکایا ہوا پانی اور اشنان والا پانی استعمال کرنے کا طریقہ مروج ہے لہٰذا اس سے وضو جائز ہوگا، ہاں اگر اس صورت میں پانی زیادہ گاڑھا ہو کر ستوؤں کی طرح ہو جائے تو اس سے وضو جائز نہ ہوگا کیونکہ اس صورت میں اس کو پانی نہیں کہا جاتا اور نہ ہی اس میں پانی کی معنوی حیثیت باقی رہی ہے، اور اگر پانی میں گارا، غبار، چونا، نورہ پتے گرنے یا پھل گرنے یا دیر تک پانی پڑے رہنے کی وجہ سے مطلق پانی میں تغیر واقع ہوا تو اس

Volume Three Fatawa Rizwia By the text (Then he elaborated on the discussion of the text until he said): Then it is necessary to know the date wine (nabidh al-tamr) in which there is disagreement. It is when something of dates is thrown into water, and its sweetness comes out into the water. So as long as it is sweet, thin, and tart, one can perform ablution with it according to Abu Hanifa, and if it is thick like syrup (rabb), it is not permissible without disagreement. This is if it is raw. If it is cooked with a slight boiling, then as long as it is sweet and tart, it is subject to disagreement. If it boils, intensifies, and throws up foam, Quduri mentioned in his commentary on 'Mukhtasar al-Karkhi' the disagreement between Al-Karkhi and Abu Tahir al-Dabbas. According to Al-Karkhi, it is permissible, and according to Abu Tahir, it is not permissible. The reasoning for Al-Karkhi's view is that the name 'Nabidh' applies to the raw as it applies to the cooked, thus falling under the text. Also, because absolute water, when mixed with pure liquids, is permissible for ablution without disagreement among our companions when the water is predominant. Here, the parts of water are predominant over the parts of dates, so ablution is permissible. The reasoning for Abu Tahir's view is that permissibility is known through hadith, and the hadith came regarding the raw. As for the statement that a pure liquid, when mixed with water, does not prevent ablution, yes, that is when it does not overcome the water at all. But if it overcomes it in any way, then no. Here, it overcomes it in terms of taste and color.

...ablution is permissible from it because the name of 'water' has not changed yet, and its spiritual/conceptual reality remains. Also, there is a practical necessity because it is generally difficult to protect water from such things. On the basis of this principle, ablution with date wine is impermissible because it is no longer called 'water' and it has been overcome by the taste of dates. Therefore, it is 'restricted water'. Imam Yusuf acted upon analogy (qiyas) regarding this, but Imam Abu Hanifa abandoned analogy because of the presence of a clear text (Nass). (After this, Malik al-Ulama discussed the text). Then he said: then it is necessary to know the date wine about which there is disagreement. That is, if some dates are put into water and their sweetness transfers to the water, then as long as that water remains thin, sweet, or tart, ablution with it is permissible according to Imam Abu Hanifa. If that wine becomes thick like syrup (rab), then by consensus, ablution is not permissible. This case is for raw wine. If it is cooked slightly and its thinness remains along with sweetness or tartness, then the same disagreement applies: according to Imam Abu Hanifa, ablution is permissible. And if the wine, whether raw or cooked, boils and

produces foam, leading to intensity in it, then Quduri mentioned in the commentary of Imam Karkhi's book 'Mukhtasar' that in this case, there is a disagreement between Imam Karkhi and Abu Tahir al-Dabbas.

जिल्द सोम फ़तावा रज़विया नस्स के माध्यम से (फिर उन्होंने नस्स की चर्चा जारी रखी यहाँ तक कि कहा): फिर खजूर के नबीज़ (nabidh al-tamr) की पहचान आवश्यक है जिसमें मतभेद है, और वह यह है कि पानी में कुछ खजूर डाले जाएँ और उनकी मिठास पानी में आ जाए। तो जब तक वह मीठा, पतला और खट्टा हो, इमाम अबू हनीफ़ा के अनुसार उससे वज़ू किया जा सकता है, और यदि वह चाशनी (rabb) की तरह गाढ़ा हो तो सर्वसम्मति से वर्जित है। यह तब है जब वह कच्चा हो। यदि उसे मामूली पकाया गया हो, तो जब तक वह मीठा और खट्टा रहे, वह मतभेद के अधीन है। यदि वह उबल जाए, तीव्र हो जाए और झाग छोड़ दे, तो कुदूरी ने 'मुख्तसर अल-करख़ी' की अपनी व्याख्या में अल-करख़ी और अबू ताहिर अल-दब्बास के बीच मतभेद का उल्लेख किया है। अल-करख़ी के अनुसार यह जायज़ है, और अबू ताहिर के अनुसार जायज़ नहीं है। अल-करख़ी के मत का आधार यह है कि 'नबीज़' नाम जैसे कच्चे पर लागू होता है वैसे ही पके हुए पर भी, अतः यह नस्स के अंतर्गत आता है। साथ ही, क्योंकि शुद्ध तरल पदार्थ जब पानी में मिलते हैं, तो हमारे साथियों के बीच बिना किसी मतभेद के वज़ू जायज़ होता है जब पानी की मात्रा अधिक हो। यहाँ, पानी के अंश खजूर के अंशों पर हावी हैं, इसलिए वज़ू जायज़ है। अबू ताहिर के मत का आधार यह है कि अनुमति हदीस से जानी जाती है, और हदीस कच्चे नबीज़ के बारे में आई है। जहाँ तक इस कथन का प्रश्न है कि शुद्ध तरल जब पानी में मिल जाए तो वज़ू को नहीं रोकता, तो हाँ, यह तब है जब वह पानी पर बिल्कुल हावी न हो। लेकिन अगर वह किसी भी तरह से उस पर हावी हो जाए, तो नहीं। यहाँ, वह स्वाद और रंग के मामले में उस पर हावी है।

...से वज़ू जायज़ है क्योंकि अभी पानी का नाम बदला नहीं है और उसकी आध्यात्मिक स्थिति भी बाकी है, साथ ही इसमें व्यावहारिक ज़रूरत भी है क्योंकि आम तौर पर पानी को उक्त चीज़ों से बचाना मुश्किल होता है। इसी सिद्धांत के आधार पर खजूर के नबीज़ से वज़ू करना नाजायज़ है क्योंकि इसे अब 'पानी' नहीं कहा जाता और वह खजूर के स्वाद से दब चुका है। इसलिए वह 'मुक़य्यद पानी' है। इमाम यूसुफ़ ने इस बारे में कियास पर अमल किया, लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा ने इस बारे में नस्स की मौजूदगी के कारण कियास को छोड़ दिया। (इसके बाद मलिक अल-उलमा ने नस्स के बारे में चर्चा की)। फिर उन्होंने कहा: फिर जिस खजूर के नबीज़ में मतभेद है, उसकी पहचान ज़रूरी है। वह यह है कि पानी में कुछ खजूर डाल दिए जाएँ और खजूरों की मिठास पानी में आ जाए, तो जब तक वह पानी पतला, मीठा या खट्टा रहे, इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक उससे वज़ू जायज़ है। और अगर वह नबीज़ गाढ़ा होकर चाशनी (राब) की तरह हो जाए, तो सर्वसम्मति से वज़ू

नाजायज़ है। यह स्थिति कच्चे नबीज़ के लिए है। और अगर उसे थोड़ा पका लिया जाए और उसका पतलापन मिठास या खटास के साथ बना रहे, तो उसमें भी वही मतभेद है कि इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक वज़ू जायज़ है। और अगर वह नबीज़, चाहे कच्चा हो या पका हुआ, उबल जाए और झाग छोड़ दे जिससे उसमें तेज़ी आ जाए, तो इमाम करख़ी की किताब 'मुख्तसर' की व्याख्या में कुदूरी ने उल्लेख किया है कि इस सूरत में इमाम करख़ी और अबू ताहिर अल-दब्बास के बीच मतभेद है।

पेज 147 का 756

جلد سوم فتاوی رضویہ بالنص (ثم افاض فی بحث النص الی ان قال) ثم لابد من معرفة نبیذ التمر الذی فیه الخلاف وھو ان یلقی شیئ من التمر فی الماء فتخرج حلاوته الی الماء فمادام حلوا رقیقا وقارصا یتوضو به عند ابی حنیفة وان کان غلیظا کالرب لا یجوز بلاخلاف ھذا اذا کان نیأ فان کان مطبوخا ادنی طبخة فمادام حلوا وقارصا فھو علی الاختلاف وان غلا واشتد وقذف بالزبد ذکر القدوری فی شرحه لمختصر الکرخی الاختلاف فیه بین الکرخی و ابی طاہر الدباس علی قول الکرخی یجوز و علی قول ابی طاہر لایجوز وجه قول الکرخی ان اسم النبیذ کما یقع علی النیئ منه یقع علی المطبوخ فیدخل تحت النص ولان الماء المطلق اذا اختلط به المائعات الطاھرة یجوز التوضو به بلاخلاف بین اصحابنا اذا کان الماء غالبا وھھنا اجزاء الماء غالبة علی اجزاء التمر فیجوز التوضو به وجه قول ابی طاہر ان الجواز عرف بالحدیث والحدیث ورد فی النیئ واما قوله ان المائع الطاھر اذا اختلط بالماء لا یمنع التوضو به فنعم اذالم یغلب علی الماء اصلا فاما اذا غلب علیه بوجه من الوجوه فلاوھھنا غلب علیه من حیث الطعم واللون

سے وضو جائز ہے کیونکہ ابھی پانی کا نام تبدیل نہیں ہوا اور اس کی معنوی حیثیت بھی باقی ہے، نیز اس میں ظاہری ضرورت بھی ہے کیونکہ عام طور پر پانی کو مذکورہ چیزوں سے محفوظ کرنا مشکل ہوتا ہے۔ اسی قاعدہ کی بنا پر نبیذ تمر سے وضو ناجائز ہے کیونکہ اس پر پانی کا نام نہیں بولا جاتا اور وہ کھجور کے ذائقہ سے مغلوب ہو چکا ہے لہٰذا وہ مقید پانی ہے اس کے بارے میں امام یوسف نے قیاس پر عمل کیا ہے لیکن امام ابو حنیفہ اس بارے میں نص کے پائے جانے کی وجہ سے قیاس کو ترک فرمایا (اس کے بعد ملک العلماء نے نص کے بارے بحث فرمائی) اور اس کے بعد کہا پھر جس نبیذ تمر میں اختلاف ہے اس کی معرفت ضروری ہے اور وہ یہ ہے کہ پانی پر کچھ کھجوریں ڈال دی جائیں تو کھجوروں کی مٹھاس پانی میں منتقل ہو جائے پس جب تک وہ

پانی پتلا میٹھا یا ترش رہے تو اس سے امام ابوحنیفہ کے نزدیک وضو جائز ہے اور اگر وہ نبیذ غلیظ ہو کر چاش (راب) کی طرح ہو جائے تو اس سے بالا تفاق وضو ناجائز ہے یہ مذکورہ صورت کچے نبیذ کیلئے ہے اور اگر اس کو کچھ قدرے پکا لیا جائے تو اس کی رقت مٹھاس یا ترشی کے ساتھ باقی ہے تو اس میں بھی وہی اختلاف ہے کہ امام ابوحنیفہ کے نزدیک وضو جائز ہے اور اگر وہ نبیذ کچا یا پکا ہونے کی صورت میں ابل جائے اور جھاگ چھوڑ دے جس کی وجہ سے اس میں شدت پیدا ہو جائے تو امام کرخی کی کتاب مختصر کی شرح میں قدوری نے ذکر کیا ہے کہ اس صورت میں امام کرخی اور ابوطاہر الدباس کا اختلاف ہے

Fatawa Razvia Volume 3

If it is not dominant in terms of components, then performing ablution with it is not permissible. This is the closer of the two views to what is correct. End of his words, may Allah Almighty have mercy on him. We have quoted this, even though most of it was previously mentioned in scattered parts, to point out the benefits that you will know, if Allah Almighty wills. It is mentioned in *Rasa'il al-Arkan*: When a liquid mixes with absolute water and dominates it, performing ablution with it is not permissible; otherwise, it is permissible. Dominance is identified by observing: if the liquid differs in color, such as milk, saffron water, or safflower water, dominance is considered by color. If it matches in color but differs in taste, such as rose water or white grape juice, dominance is considered by taste. If it does not differ at all, like water [Footnote: perhaps it is "used water" which the scribe's pen missed], dominance is considered by quantity. This is stated in *Fath al-Qadir*, quoting some commentaries of *al-Kanz*. End.

Imam Karkhi considers ablution with it permissible, while according to Abu Tahir's view, it is impermissible. The reason for Imam Karkhi's view is that the term 'nabidh' (date-drink) is used for both raw and cooked types; therefore, both these cases fall under the ruling of the textual evidence (Hadith). Because when any pure flowing substance mixes with absolute water, there is no disagreement among our scholars that ablution with it is permissible as long as the water remains dominant. So here, since the water components dominate over the date components, ablution will be permissible. The reason for Abu Tahir's view is that the permissibility of ablution with nabidh is established only through Hadith, and that Hadith was narrated specifically about raw nabidh. The response to Imam Karkhi's statement that "ablution does not become impermissible by mixing a pure flowing substance with water etc." is: yes, that is correct, but only in the case where it does not overcome the water in any way. If the mixed substance overcomes the water in any way, then ablution is not permissible. Whereas in the mentioned case, the dates have overcome the water in terms of color and taste, even if not in terms of parts/components. Therefore, ablution with it will be impermissible. This view of Abu Tahir is more correct. End. We have completed this discourse of Imam Malik al-Ulama, may Allah have mercy on him, to indicate that it contains many benefits which you will learn in the future, although most of his discourse was scattered.

Footnote (eh): Perhaps it is "like used water," but it was omitted by the scribe's pen. 12 Minhu Ghafara Lahu (M). It could be that the word 'kal-ma' (like water) is 'kal-ma'

al-musta'mal' (like used water), which the scribe's pen did not complete. 12 Minhu Ghafara Lahu (T).

1. Bada'i' as-Sana'i', Restricted Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/15, 17.
2. Rasa'il al-Arkan, Section on Waters, Alawi Press Farangi Mahalli, p. 24.

अगर वह अज़ज़ा (हिस्सों) के लिहाज़ से ग़ालिब (प्रभावी) नहीं है, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। और यह दोनों कौलों (विचारों) में से सही के ज़्यादा करीब है। यह उनकी (अल्लाह उन पर रहम करे) बात ख़त्म हुई। हमने इसे यहाँ नक़्ल किया है, हालांकि इसका ज़्यादातर हिस्सा पहले भी मुतफ़र्रिक (बिखरा हुआ) आ चुका है, ताकि उन फ़वाइद (फ़ायदों) की तरफ इशारा किया जा सके जो आप इंशा अल्लाह तआला जान लेंगे। 'रसाइलुल अरकान' में है: मुतलक़ पानी में जब कोई माए (तरल) चीज़ मिल जाए और वह उस पर ग़ालिब आ जाए, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है, वरना जायज़ है। ग़लबे (प्रभुत्व) की पहचान यह है कि देखा जाए: अगर माए चीज़ रंग में मुख़ालिफ़ (अलग) है, जैसे दूध, जाफ़रान का पानी और बर्रे (कुसुम) का पानी, तो ग़लबे का एतबार रंग से होगा। और अगर वह रंग में मुवाफ़िक़ (समान) हो लेकिन ज़ायक़े(स्वाद) में मुख़ालिफ़ हो, जैसे गुलाब जल और सफ़ेद अंगूर का रस, तो ग़लबे का एतबार ज़ायक़े से होगा। और अगर वह किसी भी तरह मुख़ालिफ़ न हो, जैसे पानी (हाशिया: शायद 'मुस्तअमल पानी' हो जिसे कातिब ने न लिखा हो), तो ग़लबे का एतबार कसरत (मात्रा) से होगा। इसी तरह 'फ़तहुल क़दीर' में 'अल-कन्ज़' की बाज़ शराहों (व्याख्याओं) के हवाले से है।

इमाम करख़ी इससे वज़ू जायज़ कहते हैं और अबू ताहिर के कौल पर नाजायज़ है। इमाम करख़ी के कौल की वजह यह है कि 'नबीज़' का नाम कच्चे और पके दोनों पर बोला जाता है, लिहाज़ा ये दोनों सूरतें नस (हदीस) के हुक्म में दाख़िल हैं। क्योंकि जब मुतलक़ पानी में कोई पाक बहने वाली चीज़ मिल जाए, तो हमारे असहाब (विद्वानों) के यहाँ बिला इख़्तिलाफ़ (बिऽ किसी मतभेद के) उससे वज़ू जायज़ है, बशर्ते कि पानी ग़ालिब रहे। तो यहाँ चूँकि खजूर के अज़ज़ा पर पानी के अज़ज़ा ग़ालिब हैं, लिहाज़ा इससे वज़ू जायज़ होगा। और अबू ताहिर के कौल की वजह यह है कि नबीज़ से वज़ू का जवाज़ (वैधता) सिर्फ़ हदीस से साबित है, और वह हदीस कच्चे नबीज़ के बारे में वारिद (उल्लिखित) हुई है। इमाम करख़ी के इस कौल का जवाब कि "पानी में बहने वाली पाक चीज़ के मिलने से वज़ू नाजायज़ नहीं होता" यह है कि: हाँ, यह दुरुस्त है लेकिन उस सूरत में जब वह किसी तरह भी पानी पर ग़ालिब न आए। और अगर मिलने वाली चीज़ ने किसी तरह पानी पर ग़ालिब पा लिया तो फिर वज़ू जायज़ नहीं है। जबकि यहाँ मज़कूरा (उल्लिखित) सूरत में खजूर ने रंग और ज़ायक़े के एतबार से पानी पर ग़लबा हासिल कर लिया है, अगरचे अज़ज़ा के लिहाज़ से उसका ग़लबा नहीं हुआ, इसलिए इससे वज़ू नाजायज़ होगा। और यह अबू ताहिर का कौल ज़्यादा दुरुस्त है। इमाम मलिकुल उलमा

(अल्लाह उन पर रहम करे) के इस कलाम को हमने पूरा कर दिया है ताकि यह बताया जा सके कि इसमें बहुत से फ़वाइद हैं जो आप आगे चलकर जान लेंगे, अगरचे मुतफ़र्रिक तौर पर उनका अक्सर कलाम...

हाशिया (عہ): शायद 'कल-मा-इल मुस्तअमल' (जैसे इस्तेमाल शुदा पानी) हो जिसे कातिब के कलम ने न लिखा हो। 12 मिन्हु गुफ़िरा लहू। (म) 'कल-मा' (जैसे पानी) हो सकता है यह लफ़्ज़ 'कल-मा-इल मुस्तअमल' (जैसे इस्तेमाल शुदा पानी) हो, जिसे कातिब के क़लम ने पूरा न लिखा हो। 12 मिन्हु ग़ुफ़िरा लहू। (त)

1. बदाए-उस-सनाए, अल-मा-उल-मुक़य्यद, मतबअ एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/15, 17।
2. रसाईलुल अरकान, फ़स्ल फ़िल मियाह, मतबअ अलवी फ़रंग महल्ली, पृष्ठ 24।

पेज 148 / 756

وان لم یغلب من حیث الاجزاء فلا یجوز التوضؤ بہ وھذا اقرب القولین الی الصواب اھ کلامہ رحمہ اللہ تعالی وانما سقناہ وان تقدم اکثرہ مفرقا للتنبیہ علی فوائد ستعرفھا ان شاء اللہ تعالی وقال فی رسائل الارکان الماء المطلق اذا خالطہ مائع وغلب علیہ لایجوز التوضی بہ والایجوز وتعرف الغلبۃ بان ینظر ان کان المائع مخالفا فی اللون کاللبن وماء الزعفران وماء العصفر یعتبر الغلبۃ فی اللون وان کان موافقا لہ فی اللون ومخالفا فی الطعم کماء الورد وعصیر العنب الابیض تعتبر الغلبۃ فی الطعم وان کان لایخالفہ اصلا کالماء عہ تعتبر الغلبۃ بالکثرۃ کذا فی فتح القدیر نقلا عن بعض شروح الکنز اھ

امام کرخی اس سے وضو جائز کہتے ہیں اور ابوطاہر کے قول پر ناجائز ہے۔ امام کرخی کے قول کی وجہ یہ ہے کہ نبیذ کا نام کچے اور پکے دونوں پر بولا جاتا ہے لہذا یہ دونوں صورتیں نص (حدیث) کے حکم میں داخل ہیں، کیونکہ جب مطلق پانی میں کوئی پاک چیز بہنے والی مل جائے تو ہمارے اصحاب کے ہاں بلا اختلاف اس سے وضو جائز ہے بشرطیکہ پانی غالب رہے، تو یہاں چونکہ کھجور کے اجزاء پر پانی کے اجزاء غالب ہیں لہذا اس سے وضو جائز ہوگا۔ اور ابوطاہر کے قول کی وجہ یہ ہے کہ نبیذ سے وضو کا جواز صرف حدیث سے ثابت ہے اور وہ حدیث کچے نبیذ کے بارے میں وارد ہوئی ہے امام کرخی کے اس قول کہ پانی میں بہنے والی پاک چیز کے ملنے سے وضو ناجائز نہیں ہوتا الخ ، کا جواب یہ ہے کہ ہاں یہ درست ہے لیکن اس صورت میں جبکہ کسی طرح بھی پانی پر غلبہ نہ پائے اور اگر ملنے والی چیز نے کسی طرح پانی پر غلبہ پالیا تو پھر وضو جائز نہیں ہے جبکہ یہاں مذکورہ صورت میں کھجور نے رنگ اور ذائقہ کے اعتبار سے پانی پر غلبہ حاصل کرلیا ہے اگرچہ اجزاء کے لحاظ سے اس کا غلبہ نہیں ہوا، اس لئے اس سے وضو ناجائز ہوگا، اور یہ ابوطاہر کا قول زیادہ درست ہے اھ امام ملک العلماء رحمہ اللہ تعالیٰ

کے اس کلام کو ہم نے پورا کردیا ہے یہ بتانے کیلئے کہ اس میں بہت فوائد ہیں جو آپ کو آئندہ معلوم ہوں گے، اگرچہ متفرق طور پر ان کا اکثر کلام۔

عہ لعلہ کالماء المستعمل فسقط من قلم الناسخ ۱۲ منہ غفرلہ (م) کالماء (جیسے پانی) ہوسکتا ہے یہ لفظ کالماء المستعمل (جیسے مستعمل پانی) ہو، جس کو کاتب کے قلم نے پورا نہ لکھا ہو ۱۲منہ غفرلہ۔ (ت)

1 بدائع الصنائع الماء المقید مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵، ۱۷۔ 2 رسائل الارکان فصل فی المیاہ مطبع علوی فرنگ محلی ص ۲۴۔

Fatawa-e-Razvia Volume 3

[Right Column - Urdu Text] It has been mentioned before, and it is stated in 'Rasail al-Arkan' that when any flowing substance mixes with absolute water and becomes predominant, then Wudu (ablution) is impermissible; otherwise, Wudu is permissible. The criterion for predominance is that if the liquid mixing with the water differs in color from the water, the color shall be considered the standard for predominance, such as milk, saffron, and safflower water. If it matches in color but differs in taste, then taste shall be considered for predominance, such as rose water or white grape juice. If it does not differ from water in either of these two attributes, like plain water, then the quantity (volume) shall be considered for predominance. This is stated in 'Fath al-Qadir' from some commentaries of 'Kanz' (End). (T) I say: there is no sign of this phrasing in 'Fath al-Qadir'; it is a slip of the scribe's pen. However, this phrasing in 'Rasail al-Arkan' explicitly mentions it being a liquid, which makes the aforementioned rule specific to it. (T) Fifthly: You see that none of the jurists mentioned the attribute of smell in predominance; rather, the texts of the following books: 1. Al-Nawadir, 2. Al-Imam al-Isbijabi, 3. Al-Imam Malik al-Ulama, 4. Al-Muhit al-Radawi, 5. Zad al-Fuqaha, 6. Al-Imam al-Zayla'i, 7. Khizanat al-Muftin, 8. Al-Inaya, 9. Al-Binaya, 10. Al-Zahidi, 11. Al-Birjandi, 12. Al-Quhistani, 13. Yahya, and 14. Ibn Shalabi, etc., all testify to the exclusion of smell, where they mentioned the predominance of parts (substance) after color and taste instead of smell. That is why Bahr al-Ulum was forced to say in 'Rasail al-Arkan' that he had not seen any book considering smell for predominance. (End) (T)

[Left Column - Arabic Text] I say: It is a slip of the pen, so it has no effect in 'Al-Fath'. Thus, in this explicit mention and on the specification to liquids. Fifthly: You see them all, they did not mention the smell, rather the texts (1) Al-Nawadir, (2) Al-Imam al-Isbijabi, (3) Al-Imam Malik al-Ulama, (4) Al-Muhit al-Radawi, and added (5) Al-Fuqaha, (6) Al-Imam al-Zayla'i, (7) Khizanat al-Muftin, (8) Al-Inaya, (9) Al-Binaya, (10) Al-Zahidi, (11) Al-Birjandi, (12) Al-Quhistani, (13) Yahya, and (14) Ibn Shalabi, and others are explicit in denying its consideration where they referred the matter after color and taste to the parts (components). No wonder Bahr al-Ulum said in 'Rasail al-Arkan': "I have not seen the consideration of predominance by smell in any book." (End)

[Bottom Marginalia] (Margin Note): "Ah" - The addition is for anaphora, i.e., referring to those mentioned before. 12 from him, may Allah forgive him. (M) (Margin Note Urdu): Referring to the aforementioned books of texts; it's anaphoric addition, i.e., referring to the previous ones. 12 from him, may Allah forgive him. (T)

[Footnotes] 1. Rasail al-Arkan, Chapter on Waters, Yusuf Farangi Mahalli, Lucknow, p. 24. Page 149 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] पहले ज़िक्र हो चुका है, और 'रसाईल अल-अरकान' में फ़र्माया है कि मुतलक़ पानी में जब कोई बहने वाली चीज़ मिलकर ग़ालिब (प्रभावी) हो जाए तो वज़ू नाजायज़ है वरना वज़ू जायज़ है। ग़लबा की पहचान यह है कि पानी में मिलने वाली तरल चीज़ अगर रंग में पानी के मुख़ालिफ़ हो, तो रंग को ग़लबा का मानक माना जाएगा, जैसे दूध, ज़ाफ़रान और कुसुम का पानी। और अगर वह रंग में मुवाफ़िक़ और स्वाद (ज़ायका) में मुख़ालिफ़ हो, तो ग़लबा में स्वाद का एतबार किया जाएगा, जैसे अर्क़ए-गुलाब, सफ़ेद अंगूर का रस। और अगर इन दोनों गुणों में पानी के मुख़ालिफ़ न हो जैसे पानी, तो फिर ग़लबा में अधिकता (मात्रा) का एतबार होगा। 'कन्ज़' की कुछ शरहों से 'फ़तह अल-क़दीर' में यूँ बयान किया गया है। मैं कहता हूँ कि 'फ़तह अल-क़दीर' में इस इबारत का कोई निशान नहीं है; यह कातिब की कलम की ग़लती है। बहरहाल, 'रसाईल अल-अरकान' की इस इबारत में पानी में मिलने वाली चीज़ के तरल होने का स्पष्ट उल्लेख है जिससे यह ज़िक्र किया गया हुक्म विशेष है। (त) पाँचवाँ: आप देख रहे हैं कि फ़ुक़हा में से किसी ने भी ग़लबा में 'बू' (गंध) वाले गुण का ज़िक्र नहीं किया, बल्कि निम्नलिखित किताबों: १. अल-नवादिर, २. अल-इमाम अल-इस्बीजाबी, ३. अल-इमाम मलिक अल-उलमा, ४. अल-मुहीत अल-रज़वी, ५. ज़ाद अल-फ़ुक़हा, ६. अल-इमाम अल-ज़ैलाई, ७. ख़ज़ानत अल-मुफ़्तीन, ८. अल-इनाया, ९. अल-बिनाया, १०. अल-ज़िादी, ११. अल-बिरजन्दी, १२. अल-क़ुहिस्तानी, १३. यहया और १४. इब्न शलबी वग़ैरह की तमाम नसूस (मूल ग्रंथ) गंध के एतबार की नफ़ी (अस्वीकृति) पर स्पष्ट हैं, जहाँ उन्होंने रंग और स्वाद के बाद स्वाद की जगह तत्वों (हिस्सों) के ग़लबा का ज़िक्र किया है। इसीलिए मजबूरन 'बहरुल उलूम' को 'रसाईल अल-अरकान' में कहना पड़ा कि "मैंने किसी किताब में ग़लबा के लिए गंध का एतबार नहीं देखा।" (समाप्त) (त)

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] मैं कहता हूँ: यह कलम की चूक है, इसलिए 'अल-फ़तह' में इसका कोई असर नहीं। तो इस स्पष्ट उल्लेख और तरल तक सीमित होने पर। पाँचवाँ: आप उन सभी को देखें, उन्होंने गंध का ज़िक्र नहीं किया, बल्कि नसूस (१) अल-नवादिर, (२) अल-इमाम अल-इस्बीजाबी, (३) अल-इमाम मलिक अल-उलमा, (४) अल-मुहीत अल-रज़वी, और जोड़ा गया (५) अल-फ़ुक़हा, (६) अल-इमाम अल-ज़ैलाई, (७) ख़ज़ानत अल-मुफ़्तीन, (८) अल-इनाया, (९) अल-बिनाया, (१०) अल-ज़िादी, (११) अल-बिरजन्दी, (१२) अल-क़ुहिस्तानी, (१३) यहया, और (१४) इब्न शलबी, और अन्य इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि उन्होंने गंध के एतबार को नकारा है, जहाँ उन्होंने रंग और स्वाद के बाद

मामले को तत्वों (हिस्सों) पर छोड़ दिया है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बहरुल उलूम ने 'रसाईल अल-अरकान' में कहा: "मैंने किसी किताब में गंध द्वारा ग़लबा का एतबार नहीं देखा।" १ समाप्त।

[हाशिये के नोट्स] (हाशिए): "अह" - उल्लेख पिछले के लिए है। १२ उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म) (उर्दू हाशिए): नसूस की पूर्वोक्त पुस्तकों की ओर संकेत है। १२ मिन्हु गुफ़रा लहू (त)।

[पाद लेख] १. रसाईल अल-अरकान, पानी का अध्याय, यूसुफ़ फरंगी महली, लखनऊ, पृष्ठ २४। पेज १४९ ऑफ ७५६

[دایاں کالم - اردو متن] پہلے ذکر ہو چکا ہے، اور رسائل الارکان میں فرمایا ہے کہ مطلق پانی میں جب کوئی بہنی والی چیز مل کر غالب ہو جائے تو وضو ناجائز ہے ورنہ وضو جائز ہے اور غلبہ کی پہچان یہ ہے کہ پانی میں ملنے والی مائع چیز اگر رنگ میں پانی کے مخالف ہو تو رنگ کو غلبہ کا معیار قرار دیا جائے گا، جیسے دودھ، زعفران اور عصفر کا پانی اور اگر وہ رنگ میں موافق اور ذائقہ میں مخالف ہو تو غلبہ میں ذائقہ کا اعتبار کیا جائے گا، جیسے عرق گلاب، سفید انگور کا جوس اور اگر ان دونوں وصفوں میں پانی کے مخالف نہ ہو جیسے پانی تو پھر غلبہ میں کثرت کا اعتبار ہوگا، کنز کی بعض شروح سے فتح القدیر میں یوں بیان کیا گیا ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں کہ فتح القدیر میں اس عبارت کا کوئی نشان نہیں ہے یہ کاتب کے قلم کی غلطی ہے، تاہم رسائل الارکان کی اس عبارت میں پانی میں ملنے والی چیز کے بارے میں مائع ہونے کی نص ہے جس سے یہ مذکور حکم خاص ہے۔ (ت) خامساً، آپ دیکھ رہے ہیں کہ فقہاء میں سے کسی نے بھی غلبہ میں بُو والے وصف کو ذکر نہیں کیا بلکہ درج ذیل کتب ۱_ النوادر، ۲_الامام الاسبیجابی، ۳_الامام ملک العلماء، ۴_المحیط الرضوی، ۵_ زاد الفقہاء، ۶_الامام الزیلعي، ۷_خزانہ المفتین، ۸_العنایۃ، ۹_البنایۃ، ۱۰_الزاھڈی، ۱۱_البرجندی، ۱۲_القھستانی، ۱۳_یحییٰ اور ۱۴_ابن شلبی وغیرہا سب کی نصوص بُو کے اعتبار کی نفی پر ناطق ہیں جہاں انہوں نے رنگ اور ذائقہ کے بعد ذائقہ کی بجائے اجزاء کے غلبہ کو ذکر کیا ہے اسی لئے مجبوراً بحرالعلوم کو رسائل الارکان میں کہنا پڑا کہ میں نے کسی کتاب میں غلبہ کیلئے بُو کا اعتبار نہیں دیکھا اھ (ت)

[بایاں کالم - عربی متن] اقول: وھو سبق قلم فلا اثر منه في الفتح ففی ھذا التنصیص وعلی التخصیص بالمائع۔ خامسا: تراھم جمیعا لم یذکروا الرائحة بل نصوص عه (۱) النوادر والامام (۲) الاسبیجابي

والامام ملك (٣) العلماء والمحيط (٤) الرضوي وزاد (٥) الفقهاء والامام (٦) الزيلعي (٧) وخزانة المفتين و (٨) العناية (٩) والبناية (١٠) والزاهدي (١١) والبرجندي (١٢) والقهستاني (١٣) ويحيىٰ وابن (١٤) الشلبي وغيرهم ناطقة بنفي اعتبارها حيث احالو الامر بعد اللون والطعم على الاجزاء لاجرم ان قال بحرالعلوم في رسائل الاركان لم ار اعتبار الغلبة بالريح في كتاب ١ اهـ

[حاشیہ] عه الاضافة للعهد ای التی تقدمت ١٢ منه غفر له (م) نصوص کی کتب مذکورہ کی طرف، اضافت عہدی ہے یعنی گزشتہ ١٢منہ غفرلہ (ت)

[فٹ نوٹ] ١ رسائل الاركان فصل فی المیاہ یوسف فرنگی محلی لکھنو ص ٢٤ Page 149 of 756

Fatawa-e-Razvia Volume 3

I say: Yes (1) Imam Faqih al-Nafs said in al-Khaniyah that according to Abu Yusuf, predominance is considered in terms of parts, not in terms of color, and this is the correct view. According to the view of Muhammad, predominance is considered by the change in taste, color, and smell (1) [End]. This text from al-Khaniyah was quoted in al-Nihayah, al-Binayah, al-Hilyah, and al-Shalabi. In al-Hilyah, after quoting it, he added that in the view of Muhammad, taste and smell are also considered [End]. It was also mentioned previously from al-Khaniyah that if something is cooked and the smell of beans (baqila) is found in the water, wudu (ablution) with it is not permissible.

(T) Sixthly: A very strange point is made in al-Jawharah. After considering the views of Abu Yusuf and Muhammad as correct regarding the attributes, he opined that if all three attributes change, wudu is not permissible; if only one changes, it is permissible; and if two change, it is not permissible. Sheikh al-Quduri preferred the view of Muhammad where he said that even if one of the attributes changes (3) [End]. Thus, a difference of opinion has occurred in the criteria for predominance in water in the aforementioned texts. Now, guidance is sought from Allah Almighty for reconciliation or preference in this analysis. (T)

1. Fatawa Qazi Khan... Nawal Kishore Lucknow 1/9
2. Hilyah
3. Al-Jawharah al-Nayyarah, Book of Purification, Imdadia Press Multan 1/12 Page 150 of 756

फतावा-ए-रजविया जिल्द 3

मैं कहता हूँ: हाँ (1) इमाम फकीह अन-नफ़्स ने अल-खानिया में कहा है कि अबू यूसुफ के अनुसार, प्रबलता (ग़ल्बा) का विचार अंशों (अजज़ा) के संदर्भ में किया जाता है, न कि रंग के संदर्भ में, और यही सही है। इमाम मुहम्मद के कथन के अनुसार, प्रबलता स्वाद, रंग और गंध के परिवर्तन से मानी जाती है (1) [समाप्त]। अल-खानिया के इस उद्धरण को अल-निहाया, अल-बिनाया, अल-हिलया और अल-शलबी में उद्धृत किया गया है। अल-हिलया में इसे उद्धृत करने के बाद यह अतिरिक्त जोड़ा गया कि इमाम मुहम्मद के कथन में स्वाद और गंध का भी विचार किया जाता है [समाप्त]। अल-खानिया से पहले यह भी बताया जा चुका है कि यदि पानी में फलियाँ (बाक़िला) पकाई जाएँ और उसकी गंध पानी में पाई जाए, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है।

(त) छठा: अल-जौहरा में एक बहुत ही अजीब बात कही गई है। उन्होंने अबू यूसुफ और मुहम्मद के कथनों को गुणों के संबंध में सही ठहराने के बाद यह विचार व्यक्त किया कि यदि तीनों गुण बदल जाएं तो वज़ू जायज़ नहीं है; यदि केवल एक बदलता है, तो जायज़ है; और यदि दो बदलते हैं, तो जायज़ नहीं है। शेख अल-क़ुदूरी ने इमाम मुहम्मद के कथन को प्राथमिकता दी है जहाँ उन्होंने कहा कि यदि गुणों में से एक भी बदल जाए (3) [समाप्त]। इस प्रकार, उपरोक्त उद्धरणों में पानी पर प्रबलता के मापदंड में मतभेद उत्पन्न हुआ है। अब अल्लाह तआला से इस विश्लेषण में सामंजस्य या प्राथमिकता के लिए प्रार्थना है। (त)

1. फतावा काजी खान... नवल किशोर लखनऊ 1/9
2. हिलया
3. अल-जौहरा अल-नय्यरा, किताबुल तहारत, इमदादिया प्रेस मुल्तान 1/12 पृष्ठ 150 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

اقول: بلی (۱) قال الامام فقیہ النفس فی الخانیۃ عند ابی یوسف تعتبر الغلبۃ من حیث الاجزاء لا من حیث اللون ھو الصحیح وعلی قول محمد اعتبر الغلبۃ بتغیر الطعم واللون والریح (۱) اھ وقد نقلہ عنھا فی النھایۃ والبنایۃ والحلیۃ والشلبیۃ وقال فی الحلیۃ بعد نقلہ فزاد فی قول محمد الطعم والریح (۲) اھ وتقدم فی قول الخانیۃ ایضا لوطبخ وریح الباقلاء یوجد منہ لا یجوز۔

میں کہتا ہوں کہ ہاں امام فقیہ النفس نے خانیہ میں کہا ہے کہ امام یوسف کے نزدیک غلبہ میں رنگ کے بجائے اجزاء کا اعتبار ہے اور یہی صحیح ہے، اور امام محمد کے قول پر غلبہ میں رنگ، ذائقہ اور بو کے متغیر ہونے کا اعتبار کیا جائے گاھ خانیہ کی اس عبارت کو نہایہ، بنایہ، حلیہ اور شلبیہ میں نقل کیا گیا ہے اور حلیہ میں اس کو نقل کرنے کے بعد زائد یہ کہا کہ امام محمد کے قول میں ذائقہ اور بُو کا اعتبار ہے اھ اور نمبر ۲۱۷ میں خانیہ کا بھی قول گزرا ہے کہ اگر پانی میں باقلاء پکا یا جائے اور اس کی بُو پانی میں پائی جائے تو اس سے وضو جائز نہیں ہے۔ (ت)

وسادسا: اغرب جدا فی الجوھرۃ فزعم بعد تصحیح قول ابی یوسف ومحمد اعتبر الاوصاف ان غیر الثلاثۃ لا یجوز وان غیر واحدا جاز وان غیرا ثنین لایجوز والشیخ ای القدوری اختار قول محمد حیث قال فغیر احد اوصافہ (۳) اھ ھکذا جاء الاختلاف والمسئول من اللہ تعالی التنقیح التطبیق اوالترجیح۔

سادسا، جوہرہ میں غریب ترین بات ہے انہوں نے امام یوسف کے قول کو صحیح قرار دینے کے بعد خیال ظاہر کیا کہ امام محمد اوصاف کا اعتبار کرتے ہیں کہ اگر تینوں وصف تبدیل ہوجائیں تو وضو جائز نہیں ہے، اور اگر ایک وصف تبدیل ہوجائے تو وضو جائز ہے۔ اور شیخ قدوری نے امام محمد کے قول کو ترجیح دی ہے جہاں انہوں نے یہ کہا کہ ایک وصف متغیر ہوجائے اھ یوں

مذکورہ بالا عبارات میں پانی پر غلبہ کے معیار میں اختلاف واقع ہوا ہے اور اب اللہ تعالٰی سے تنقیح میں تطبیق یا ترجیح کا سوال ہے۔(ت)

۱ فتاوٰی قاضی خان فیما لایجو زبہ التوضی نولکشور لکھنو ۱/۹ ۲ حلیہ ۳ الجوھرۃ النیرۃ کتاب الطہارۃ مطبع امدادیہ ملتان ۱/۱۲ Page 150 of 756

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

I say, and success is from Allah: (1) What is mentioned in Al-Jawharah is contrary to the consensus of the narrators, all thirteen of them: the nine mentioned in the fifth discussion (Khamsan) and the previous nine (12) from Al-Ajnas (15), Al-Dhakhirah (16), Al-Tatimmah (17), Al-Zahiriyyah (18), Al-Muhit (19), Al-Fath (20), Al-Hilyah, and Majma' (21) Al-Anhur (2) and even (22) Al-Jawharah itself. For they have agreed that the mere dominance of color restricts the water according to Muhammad, yet this person says that more than one change is permissible. I think, and Allah Almighty knows best, that it was in his mind that Muhammad considers the qualities (of water). Then he saw Imam Abu al-Hasan restricting it to one [quality], so he took its implication, which indicates the consideration of qualities. Thus, he thought that he [Abu al-Hasan] chose the opinion of Muhammad, and he stated that the change of one [quality] is not harmful. So he assumed that this implication is from his explicit statement, and the implication is the school of Muhammad. But it is not so, nor was it the intent of al-Quduri as you have known. Furthermore, you have known that the majority have negated the consideration of smell. Therefore, mentioning it in Al-Khaniyah is not an addition by a reliable narrator; rather, it is a contradiction by a reliable narrator against all other reliable ones. Thus, it is an anomaly that negates its validity.

And you will know by the help of Allah Almighty why Muhammad did not consider smell. Then, the pioneers' limitation to color does not contradict the consideration of others, because specifying one thing does not negate what is besides it, especially since color is what is noticed first. If it is not there, then others are. Likewise, the hesitation between color and taste is not a lack of specification.

Page 151 of 756

फतावा रज़विया, खंड 3

मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह से है: (1) अल-जौहरा में जो उल्लेख किया गया है, वह सभी तेरह वर्णनकर्ताओं की सर्वसम्मति के विपरीत है: पांचवीं चर्चा (खम्साँ) में वर्णित नौ और पूर्व नौ (12) अल-अजनास (15), अल-ज़ख़ीरा (16), अल-ततिम्मा (17), अल-ज़हीरिया (18), अल-मुहीत (19), अल-फ़तह (20), अल-हिल्या, और मजमा' (21) अल-अन्हुर (2) से लेकर स्वयं अल-जौहरा (22) तक। क्योंकि उन सभी ने इस बात पर सहमति व्यक्त की है कि मुहम्मद के अनुसार केवल रंग की प्रबलता पानी को प्रतिबंधित कर देती है, फिर भी यह व्यक्ति कहता है कि एक से अधिक परिवर्तन की अनुमति है। मेरा विचार है, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है, कि उनके मन में यह था कि मुहम्मद गुणों (पानी के) पर विचार करते हैं। फिर उन्होंने इमाम अबू अल-हसन को इसे एक [गुण] तक सीमित करते हुए देखा, तो उन्होंने इसका निहितार्थ लिया, जो गुणों के विचार का संकेत देता है। इस प्रकार, उन्होंने सोचा कि उन्होंने [अबू अल-हसन] मुहम्मद की राय को चुना है, और उन्होंने कहा कि एक [गुण] का परिवर्तन हानिकारक नहीं है। तो उन्होंने मान लिया कि यह निहितार्थ उनके स्पष्ट कथन से है, और निहितार्थ मुहम्मद का संप्रदाय है। लेकिन ऐसा नहीं है, और न ही यह अल-कुदुरी का उद्देश्य था जैसा कि आप जानते हैं। इसके अलावा, आप जान चुके हैं कि बहुमत ने गंध के विचार को नकारा है। इसलिए, अल-खानिया में इसका उल्लेख किसी विश्वसनीय वर्णनकर्ता द्वारा किया गया अतिरिक्त विवरण नहीं है; बल्कि, यह अन्य सभी विश्वसनीय लोगों के खिलाफ एक विश्वसनीय वर्णनकर्ता का विरोधाभास है। इस प्रकार, यह एक विसंगति है जो इसकी वैधता को नकारती है।

और आप अल्लाह सर्वशक्तिमान की सहायता से जानेंगे कि मुहम्मद ने गंध पर विचार क्यों नहीं किया। फिर, अग्रदूतों का केवल रंग तक सीमित रहना दूसरों के विचार का खंडन नहीं करता है, क्योंकि एक चीज़ को निर्दिष्ट करना उसके अलावा बाकी चीजों को नकारता नहीं है, विशेष रूप से चूंकि रंग वह है जिस पर सबसे पहले ध्यान दिया जाता है। यदि यह नहीं है, तो अन्य हैं। इसी तरह, रंग और स्वाद के बीच दुविधा विनिर्देश की कमी नहीं है।

पृष्ठ 151 / 756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

فاقول: وباللہ التوفیق (۱) ماذکر فی الجوھرۃ مخالف لاجماع الرواۃ عن آخرھم الثلاثۃ عشر المذکورین فی الخامس و التسعۃ السابقین (۱۲) الاجناس (۱۵) والذخیرۃ (۱۶) والتتمۃ (۱۷) والظھیریۃ (۱۸) والمحیط (۱۹) والفتح (۲۰) والحلیۃ و مجمع (۲۱) الانھر (۲) حتی (۲۲) الجوھرۃ نفسھا فانھم اجمعوا ان مجرد الغلبۃ باللون یقید الماء عند محمد و ھذا یقول ان غیر واحدًا جاز و اظن واللہ تعالی اعلم انہ کان فی بالہ ان محمداً یعتبر الاوصاف ثم رأی الامام ابا الحسن قید باحد فأخذ مفھومہ فدل علی عبرۃ الاوصاف فظن انہ اختار قول محمد وقد نص ان تغیر واحد لا یضر فحسب ان ھذا المفھوم من منطوقہ والمفھوم ھو مذھب محمد و لیس کذلك ولا ھو مقصود القدوری کما علمت، ثم قد علمت ان الجمھور قد نفعوا الاعتبار بالرائحۃ فذکرھا في الخانیۃ لا یکون من زیادۃ ثقۃ بل مخالفۃ ثقۃ السائر الثقات فیکون شذوذا ینأ فی الصحۃ

پس میں اللہ تعالیٰ کی توفیق سے کہتا ہوں کہ جوہرہ میں جو مذکور ہے وہ تمام راویوں کے اجماع کے خلاف ہے تیرہ۱۳ راوی جو پانچویں بحث (خامساً) میں مذکور ہیں اور ان سے پہلے نو یہ ہیں اجناس ۱۴، ذخیرہ ۱۵، تتمہ ۱۶، ظہیریہ ۱۷، محیط ۱۸، فتح ۱۹، حلیہ ۲۰، مجمع الانہر ۲۱ حتی کہ خود جوہرہ ۲۲ ان سب نے یہ اجماع کیا ہے کہ امام محمد کے نزدیک صرف رنگ کے غلبہ سے پانی مقید ہو جاتا ہے اور یہ (جوہرہ) کہہ رہے ہیں کہ امام محمد کے نزدیک ایک وصف کی تبدیلی سے وضو جائز ہے واللہ اعلم میرا گمان ہے کہ جوہرہ کے دل میں تھا کہ امام محمد اوصاف کا اعتبار کرتے ہیں۔ پھر اس نے امام ابوالحسن کو ایک وصف کو قید بناتے ہوئے دیکھا تو اس سے مفہوم اخذ کرتے ہوئے اوصاف کے اعتبار پر دلالت پائی تو جوہرہ نے گمان کیا کہ انہوں نے امام محمد کے قول کو ترجیح دی ہے اور ایک وصف کے بارے میں نص کر دی کہ اس کی تبدیلی سے

کوئی مضائقہ نہیں ہے یوں اس کو خیال ہوا کہ امام ابوالحسن قدوری کے منطوق سے جو مفہوم اخذ کیا ہے وہ امام محمد کا قول ہے جس کو انہوں نے ترجیح دی ہے حالانکہ معاملہ یوں نہیں ہے اور نہ ہی یہ قدوری کا مقصد ہے جیسا کہ آپ معلوم کر چکے ہیں۔ پھر اس بحث سے معلوم ہو گیا ہے کہ جمہور نے غلبہ میں بُو کی تبدیلی کے اعتبار کی نفی کی ہے، خانیہ میں بُو کا ذکر کسی ثقہ شخص کی طرف سے زائد چیز کا اثبات نہیں ہے بلکہ یہ ایک ثقہ شخص کی طرف باقی تمام ثقہ لوگوں کی مخالفت ہے۔ لہٰذا یہ صحت کے منافی

و ستعلم بعون الله تعالى ان محمداً لم لم يعتبر الريح ثم اقتصار الاولين على اللون لاينافى اعتبار غيره فان التنصيص على شيئ لا ينفى ما عداه لاسيما واللون هو الملحوظ اولا فان لم يكن فغيره و كذلک الترديد في اللون والطعم عدم تنصيص

Fatawa Razawiyya Volume 3

(Right Column) There is an anomaly; you will soon know, with Allah's help, why Imam Muhammad did not consider smell. Furthermore, the mention of color alone by earlier scholars is not a denial of other qualities, because mentioning one thing does not negate another, especially when color is considered first among qualities—so if the color does not change, then the change of other qualities is taken into account. Similarly, regarding color and taste, even if the mention of one of them is not an explicit text on the order, it is also not an explicit text on the absence of order. Therefore, it is necessary to accept the order mentioned by a large group. As for the discussion whether (a substance mixed in water which changes its qualities) the ruling on dominance also includes solid objects, as appears from the absolute statement of Imam al-Asbijabi and his example of saffron, or if this ruling is specific only to liquid substances, as appears from the explicit text of Imam Malik al-Ulama.

In my opinion, there are arguments supporting both possibilities. The inclusion of both solid and liquid in the ruling—so I say on this: Firstly, because at the beginning of this research, the report quoted from al-Fath and al-Hilyah via al-Ajnas has passed, in which the text of [Imam] Muhammad regarding the consideration of colors in the boiled water of basil and potash is mentioned, even though both are only solid things. Secondly, because the report from al-Tajnīs via al-Hilyah and al-Fath has passed under number 122, that al-Jurjani’s consideration of the suitability of printing in vitriol and gallnuts (grass) is a derivation based on dominance in terms of components. What is understandable here is that in them, the consideration of qualities...

(Left Column) ...on the order between them. There is no explicit text on the absence of order. Therefore, the narration of a large group [of scholars] regarding the order is an addition from reliable sources that must be accepted. It remains to be considered whether the ruling includes solids, as is implied by the general statement of Imam al-Asbijabi and his example of saffron, or if it is specific to liquids as is the explicit text of Imam Malik al-Ulama. I see supporting evidence for both. As for inclusion...

I say, firstly: It has already been mentioned at the beginning of this research from al-Fath and al-Hilyah, from al-Ajnas, from the text of [Imam] Muhammad, that colors are considered in the decoction of basil and potash, and they are nothing but solids. Secondly: It has been mentioned from al-Hilyah and al-Fath, from al-Tajnīs, that al-Jurjani’s consideration of the suitability of printing in vitriol and gallnuts is a

derivation based on the consideration of dominance by parts. So understand that considering it by qualities is restricted to mere coloring, even if it is not suitable for printing. Thirdly: Al-Badā’i’ specified liquids, then mentioned that by analogy it is not permissible for date mead (nabīdh al-tamr) due to the dominance of its taste, so he considered it in solids. Fourthly: Similarly, those before Abu Tahir replied regarding decoctions and argued based on the dominance of color and taste. Here also, it was expressed in the words of al-Karkhi and al-Dabbās as 'liquid' although the discussion is about 'solids'.

(दायां कॉलम) एक अपवाद है; जल्द ही आपको अल्लाह की मदद से पता चल जाएगा कि इमाम मुहम्मद ने गंध पर विचार क्यों नहीं किया। इसके अलावा, पहले के विद्वानों द्वारा केवल रंग का उल्लेख करना अन्य गुणों का खंडन नहीं है, क्योंकि एक चीज़ का उल्लेख करना दूसरी चीज़ का निषेध नहीं करता, विशेष रूप से जब गुणों में रंग पर पहले विचार किया जाता है—कि यदि रंग नहीं बदलता है, तो अन्य गुणों के परिवर्तन पर ध्यान दिया जाएगा। इसी तरह, रंग और स्वाद के संबंध में, भले ही उनमें से किसी एक का उल्लेख क्रम पर स्पष्ट पाठ न हो, लेकिन यह क्रम की अनुपस्थिति पर भी स्पष्ट पाठ नहीं है। इसलिए, एक बड़े समूह द्वारा उल्लेखित क्रम को स्वीकार करना आवश्यक है। जहाँ तक इस बहस का सवाल है कि (पानी में मिलाया गया पदार्थ जिससे उसके गुण बदलते हैं) प्रभुत्व का नियम ठोस वस्तुओं को भी शामिल करता है, जैसा कि इमाम अल-असबीजाबी के सामान्य बयान और केसर के उनके उदाहरण से प्रकट होता है, या यह नियम केवल तरल पदार्थों के लिए विशिष्ट है, जैसा कि इमाम मलिक अल-उलमा के स्पष्ट पाठ से प्रकट होता है।

मेरी राय में, दोनों संभावनाओं के समर्थन में तर्क हैं। नियम में ठोस और तरल दोनों का समावेश—तो मैं इस पर कहता हूँ: पहला, क्योंकि इस शोध की शुरुआत में अल-फतह और अल-हिल्या से अल-अजनास के माध्यम से उद्धृत रिपोर्ट गुजर चुकी है, जिसमें तुलसी और पोटाश के उबले हुए पानी में रंगों पर विचार करने के संबंध में [इमाम] मुहम्मद के पाठ का उल्लेख किया गया है, भले ही वे दोनों केवल ठोस चीजें हैं। दूसरा, क्योंकि अल-हिल्या और अल-फतह के माध्यम से अल-तजनीस की रिपोर्ट नंबर 122 के तहत गुजर चुकी है, कि अल-जुरजानी का विट्रियल और गालनट्स (घास) में मुद्रण की उपयुक्तता पर विचार करना घटकों के संदर्भ में प्रभुत्व पर आधारित एक व्युत्पत्ति है। यहाँ जो समझने योग्य बात है वह यह है कि उनमें गुणों का विचार...

(बायां कॉलम) ...उनके बीच के क्रम के संबंध में। क्रम की अनुपस्थिति पर कोई स्पष्ट पाठ नहीं है। इसलिए, क्रम के संबंध में एक बड़े समूह [विद्वानों] का वर्णन विश्वसनीय स्रोतों से एक अतिरिक्त है जिसे स्वीकार किया जाना चाहिए। विचार किया जाना बाकी है कि क्या नियम में ठोस पदार्थ शामिल हैं, जैसा कि इमाम अल-असबीजाबी के सामान्य कथन और केसर के उनके उदाहरण से संकेत मिलता है, या यह तरल पदार्थों के लिए विशिष्ट है जैसा कि इमाम मलिक अल-उलमा का स्पष्ट पाठ है। मैं दोनों के लिए सहायक साक्ष्य देखता हूँ। जहाँ तक समावेश की बात है...

मैं कहता हूँ, पहला: इस शोध की शुरुआत में पहले ही अल-फतह और अल-हिल्या से, अल-अजनास से, [इमाम] मुहम्मद के पाठ से उल्लेख किया जा चुका है कि तुलसी और पोटाश के काढ़े में रंगों पर विचार किया जाता है, और वे ठोस के अलावा कुछ नहीं हैं। दूसरा: अल-हिल्या और अल-फतह से, अल-तजनीस से उल्लेख किया गया है कि विट्रियल और गालनट्स में मुद्रण की उपयुक्तता पर अल-जुरजानी का विचार भागों द्वारा प्रभुत्व के विचार पर आधारित एक व्युत्पत्ति है। तो समझें कि गुणों द्वारा इस पर विचार करना केवल रंग भरने तक ही सीमित है, भले ही वह मुद्रण के लिए उपयुक्त न हो। तीसरा: अल-बदाई ने तरल पदार्थों को निर्दिष्ट किया, फिर उल्लेख किया कि सादृश्य से खजूर की शराब (नबीद अल-तमर) के लिए इसके स्वाद के प्रभुत्व के कारण यह जायज़ नहीं है, इसलिए उन्होंने इसे ठोस पदार्थों में माना। चौथा: इसी तरह, अबू ताहिर से पहले के लोगों ने काढ़े के संबंध में उत्तर दिया और रंग और स्वाद के प्रभुत्व के आधार पर तर्क दिया। यहाँ भी, अल-करखी और अल-दब्बास के शब्दों में इसे 'तरल' के रूप में व्यक्त किया गया था, हालांकि चर्चा 'ठोस' के बारे में है।

पृष्ठ 152 का 756

(دایاں کالم) ایک شذوز ہے عنقریب آپ کو بعون اللہ یہ معلوم ہوجائے گا کہ امام محمد نے بُو کا اعتبار کیوں نہیں کیا، پھر یہ کہ پہلے حضرات کا صرف رنگ کو ذکر کرنا باقی اوصاف کی نفی نہیں ہے کیونکہ ایک چیز کا ذکر دوسری چیز کی نفی نہیں کرتا خصوصاً جبکہ اوصاف میں سے رنگ کا اعتبار پہلے کیا جاتا ہو کہ اگر رنگ تبدیل نہ ہو پھر دوسرے اوصاف کی تبدیلی کا لحاظ کیا جائے گا یوں ہی رنگ اور ذائقہ میں سے کسی ایک کا بیان اگرچہ یہ ترتیب پر نص نہیں ہے لیکن یہ عدم ترتیب پر بھی نص نہیں ہے اس لئے ان دونوں کی ترتیب جس کو ایک جم غفیر نے ذکر کیا ہے قبول کرنا ضروری ہے، رہی یہ بحث کہ (پانی میں ملنے والی چیز جس سے اوصاف تبدیل ہوتے ہیں) اس غلبہ کا حکم جامد چیز کو بھی شامل ہے جیسا کہ امام اسبیجابی کے اطلاق اور اس کی مثال میں زعفران کے ذکر سے ظاہر ہوتا ہے یا یہ حکم صرف مائع چیز کو ہی خاص ہے جیسا کہ امام ملک العلماء کی نص سے ظاہر ہے۔ میری رائے میں دونوں احتمالات کی تائید میں دلائل ہیں، جامد اور مائع دونوں کا حکم میں شامل ہونا پس اس پر میں کہتا ہوں، اولاً، اس لئے کہ اس بحث کی ابتدا میں فتح اور حلیہ کی الاجناس سے نقل کردہ روایت گزر چکی ہے جس میں ریحان اور اشنان کے پکے ہوئے پانی میں ان کے رنگوں کے اعتبار کے بارے میں محمد کی نص کو بیان کیا گیا ہے حالانکہ وہ دونوں صرف جامد چیزیں ہیں۔ ثانیاً اس لئے نمبر ۱۲۲ میں تجنیس کے حوالہ سے حلیہ اور فتح کی روایت گزر چکی ہے کہ جرجانی کا زاج اور عفص (گھاس) میں نقش کی صلاحیت کا اعتبار کرنا یہ اجزاء کے لحاظ سے غلبہ کے اعتبار پر تفریع ہے، یہاں قابل فہم یہ بات ہے کہ ان میں اوصاف کے اعتبار

(بایاں کالم) على الترتيب بينهما لاتنصيص على عدم الترتيب فرواية الجم الغفير بالترتيب زيادة ثقات واجبة القبول بقى النظر في ان الحكم هل يشمل الجامد كما هو مقتضى اطلاق الامام السبيجابى وتمثيله بالزعفران ام يختص بالمائع كما هو نص الامام ملك العلماء - وارى لكل منهما مؤيدات اما الشمول فأقول اولاً: تقدم في صدر هذا البحث عن الفتح والحلية عن الاجناس عن نص محمد اعتبار الالوان في طبيخ الريحان والاشنان و ماهما الا من الجامدات وثانياً: مرفى عن الحلية والفتح عن التجنيس ان اعتبار الجرجاني في الزاج والعفص صلوح النقش تفريع على اعتبار الغلبة بالاجزاء فافهم ان على اعتبارها بالاوصاف يتقيد بمجرد التلون وان لم يصلح النقش وثالثاً: خص البدائع بالمائع ثم ذكر ان قياسه عدم الجواز نبيذ التمر لغلبة طعمه فاعتبره في الجامد ورابعاً كذلك اجاب من قبل ابي طاهر في مطبوخه واحتج بغلبة اللون والطعم وقد عبرههنا ايضاً في كلامي الكرخي والدباس بالمائع مع ان الكلام في الجامد-

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

[Right Column Top] ...relates only to being colored; the capacity for imprinting has no role in it. Thirdly, because the [book] Bada'i' mentioned this ruling after specifying it for liquids, stating that according to this rule, wudu with date juice (nabidh al-tamr) would not be permissible because its taste predominates, while the thing giving the taste is a date, which is a solid. Fourthly, similarly, Bada'i' answered on behalf of Abu Tahir regarding cooked nabidh, and here too they made the predominance in terms of color and taste the proof. Here too, in the words of Imam Karkhi and Dabbas, it has been expressed as a liquid, although the discussion is about a solid. (Note: T)

[Left Column Middle] I say: It appears to me, and Allah knows best, that the change in taste or color only occurs through mixing (amtizaj), and a solid does not mix with a liquid unless something of it liquefies, then its parts permeate into the other parts. Do you not see that when sugar is mixed with water, nothing of it remains distinct from the water except a tiny bit? The same applies to dyes. If you were to place a black, red, green, or yellow stone in water, the water would not be colored by its color. Thus, it becomes clear that mixing in a liquid only happens with a liquid, even if its origin was solid. Perhaps this is the secret behind expressing it as a liquid while discussing solids; grasp this, for indeed, it is an exquisite discussion, if Allah wills.

[Right Column Middle] I say that the reason for expressing a solid as a liquid could be that the change in taste and color is found after mixing, whereas a solid cannot mix with a liquid (flowing substance) until flow is created in the solid, due to which parts of one fall into the parts of the other. For example, when sugar is mixed in water, its distinct mixing is complete, only a few minor parts remain separate. Similarly, the coloring matter also dissolves in water. But if you put black, red, green, or yellow stones in water, the water will not be affected by their color. So it became clear that for mixing, it is necessary for a liquid to meet a liquid, even if it is originally a solid. It is possible that the reason for referring to it as a liquid during a discussion on solids is this very secret. Remember this, it is an exquisite discussion, if Allah Wills. (Note: T).

[Left Column Bottom] As for the specific aspect, I say first that the blessed Ummah has agreed, and its consensus is an infallible proof, on the permissibility of performing wudu (ablution) with floodwater, despite the certain knowledge of its color changing. In fact, its taste and smell might also change. Thus, it is proven that mere change of qualities...

[Right Column Bottom] And the reason for specifying only liquids in the change of qualities; so I say, firstly, because there is a consensus (ijma') of this Ummah on this matter, and this consensus of the Ummah is protected from error, that wudu is permissible with floodwater, although it is definitely known that...

Page 153 of 756

फतवा रज़विया, खंड 3

[दायां कॉलम शीर्ष] ...केवल रंगीन होने से संबंधित है; इसमें मुद्रण की क्षमता का कोई योगदान नहीं है। तीसरे, क्योंकि बदाइ ने इस नियम को तरल पदार्थों के लिए निर्दिष्ट करने के बाद उल्लेख किया कि इस नियम के अनुसार, खजूर के रस (नबीज़-ए-तमर) से वज़ू जायज़ नहीं होगा क्योंकि इसके स्वाद का प्रभुत्व होता है, जबकि स्वाद देने वाली चीज़ खजूर है जो एक ठोस है। चौथे, इसी तरह बदाइ ने अबू ताहिर की ओर से पके हुए नबीज़ के बारे में उत्तर दिया और यहाँ भी उन्होंने रंग और स्वाद के आधार पर प्रभुत्व को प्रमाण बनाया। यहाँ भी, इमाम करखी और दब्बास के शब्दों में, इसे एक तरल के रूप में व्यक्त किया गया है, हालांकि चर्चा एक ठोस के बारे में हो रही है। (त)

[बायां कॉलम मध्य] मैं कहता हूँ: और मुझे प्रतीत होता है, और अल्लाह बेहतर जानता है, कि स्वाद या रंग में परिवर्तन केवल मिश्रण (इम्तिज़ाज) के माध्यम से होता है, और एक ठोस तरल के साथ तब तक नहीं मिलता जब तक कि उसका कुछ हिस्सा तरल न हो जाए, फिर उसके कण दूसरे के कणों में समा जाते हैं। क्या आप नहीं देखते कि जब चीनी को पानी में मिलाया जाता है, तो उसका थोड़ा सा हिस्सा ही पानी से अलग रहता है? यही बात रंगों (डाई) पर भी लागू होती है। यदि आप पानी में काला, लाल, हरा या पीला पत्थर रख दें, तो पानी उसके रंग से रंगीन नहीं होगा। इस प्रकार, यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी तरल में मिश्रण केवल तरल के साथ ही होता है, भले ही उसका मूल ठोस हो। शायद ठोस पदार्थों पर चर्चा करते समय इसे तरल के रूप में व्यक्त करने के पीछे यही रहस्य है; इसे समझ लें, क्योंकि वास्तव में यह एक उत्कृष्ट चर्चा है, यदि अल्लाह ने चाहा।

[दायां कॉलम मध्य] मैं कहता हूँ कि एक ठोस को तरल के रूप में व्यक्त करने का कारण यह हो सकता है कि स्वाद और रंग में परिवर्तन मिश्रण के बाद पाया जाता है, जबकि एक ठोस पदार्थ एक तरल (बहने वाले) पदार्थ के साथ तब तक मिश्रित नहीं हो सकता जब तक कि ठोस में बहाव पैदा न हो जाए, जिसके कारण एक के हिस्से दूसरे के हिस्सों में गिर जाते हैं। उदाहरण के लिए, जब चीनी को पानी में मिलाया जाता है, तो उसका मिश्रण पूरा हो जाता है, केवल कुछ मामूली हिस्से अलग रह जाते हैं। इसी तरह, रंगीन पदार्थ भी पानी में घुल जाता है। लेकिन अगर आप पानी में काले, लाल, हरे और पीले पत्थर रख दें, तो पानी उनके रंग से प्रभावित नहीं होगा। तो यह स्पष्ट हो गया कि मिश्रण के लिए एक तरल का दूसरे तरल से मिलना आवश्यक है, भले ही वह मूल रूप से ठोस ही क्यों न हो। यह संभव है कि ठोस पदार्थों पर चर्चा के दौरान इसे तरल के रूप में संदर्भित करने का कारण यही रहस्य हो। इसे याद रखें, यह एक उत्कृष्ट चर्चा है, इंशा अल्लाह। (त)।

[बायां कॉलम नीचे] जहाँ तक विशिष्ट पहलू का प्रश्न है, मैं सबसे पहले यह कहता हूँ कि धन्य उम्माह ने इस बात पर सहमति व्यक्त की है, और उसका आम सहमति एक अचूक प्रमाण है, कि बाढ़ के पानी से वज़ू (शुद्धि) करना जायज़ है, भले ही उसके रंग के बदलने का निश्चित ज्ञान हो। वास्तव में, उसका स्वाद और गंध भी बदल सकते हैं। इस प्रकार, यह सिद्ध होता है कि गुणों का मात्र परिवर्तन...

[दायां कॉलम नीचे] और गुणों के परिवर्तन में केवल तरल पदार्थों को ही विशिष्ट मानने का कारण; तो मैं कहता हूँ, सबसे पहले, क्योंकि इस मामले में इस उम्माह की आम सहमति (इज्मा) है, और उम्माह की यह आम सहमति त्रुटि से सुरक्षित है, कि बाढ़ के पानी से वज़ू जायज़ है, हालांकि यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि...

पृष्ठ 153/756

[دائیں کالم کا اوپری حصہ] کا تعلق صرف رنگ دار ہونے پر ہے نقش کی صلاحیت کا اس میں دخل نہیں ہے۔ ثالثاً، اس لئے کہ بدائع نے اس حکم کو مائع چیز کے ساتھ خاص کرنے کے بعد ذکر کیا کہ اس قاعدہ کے مطابق نبیذِ تمر سے وضو جائز نہیں ہوگا کیونکہ اس کے ذائقہ کا غلبہ ہوتا ہے جبکہ یہ ذائقہ والی چیز تمر (کھجور) ہے جو کہ جامد ہے۔ رابعاً، یوں ہی بدائع نے ابوطاہر کی طرف سے پکے ہوئے نبیذ کے بارے میں جواب دیا اور یہاں بھی انہوں نے رنگ اور ذائقہ کے لحاظ سے غلبہ کو دلیل بنایا ہے یہاں بھی امام کرخی اور دباس کے کلام میں اس کو مائع سے تعبیر کیا گیا ہے حالانکہ بات جامد میں ہو رہی ہے۔ ت)

[بائیں کالم کا درمیانی حصہ] اقول: ویظھر لی واللہ تعالٰی اعلم ان تغیر الطعم اواللون انما یکون بالامتزاج ولا یمتزج الجامد بالمائع الان ینماع شیئ منه فتسری الاجزاء في الاجزاء الا تری ان السکر اذا خلط بالماء لا یبقی منه ممتاز عنه الا شيء قلیل وکذلك الاصباغ ولو وضعت حجرا اسود احمر اخضر اصفر فی الماء لایتلون الماء بلونه فظھر ان الامتزاج لا یحصل في مائع الا لمائع وان کان اصله جامدا فلعل ھذا ھو سر التعبیر بالمائع مع الکلام في الجامدا تقنه فانه ان شاء اللہ تعالیٰ بحث نفیس۔

[دائیں کالم کا درمیانی حصہ] میں کہتا ہوں کہ جامد کو مائع سے تعبیر کرنے کی وجہ یہ ہو سکتی ہے کہ ذائقہ اور رنگ کی تبدیلی امتزاج کے بعد پائی جاتی ہے جبکہ جامد چیز کا مائع (بہنے والی) چیز کے ساتھ امتزاج نہیں ہو سکتا تاوقتیکہ جامد چیز میں بہاؤ پیدا نہ ہو جس کی وجہ سے ایک کے اجزاء دوسرے کے اجزاء میں گرتے ہیں، مثلاً شکر جب پانی میں ملائی جائے تو اس کا امتزاج ختم ہو جاتا ہے صرف کچھ معمولی اجزاء جدا رہتے ہیں، اسی طرح رنگ کا مادہ بھی پانی میں گھل جاتا ہے لیکن اگر آپ کالا، سرخ، سبز اور زرد پتھر پانی میں رکھ دیں تو اس کی رنگت

میں پانی متاثر نہ ہوگا تو واضح ہو گیا کہ امتزاج کیلئے مائع کا مائع سے ملنا ضروری ہوتا ہے اگرچہ وہ اصلاً جامد ہی ہو، ہو سکتا ہے کہ جامد میں گفتگو کے دوران اس کو مائع سے تعبیر کرنے کی وجہ یہی راز ہو، اس کو یاد رکھیں یہ نفیس بحث ہے ان شاء اللہ تعالٰی۔ (ت)

[بائیں کالم کا نچلا حصہ] واما الخصوص فاقول اولا اجمعت الامة المرحومة واجتماعها حجة معصومة علی جواز الوضوء بماء السیل مع العلم القطعی بتغیر لونه بل ربما یتغیر الطعم والریح ایضاً فثبت ان مجرد تغیر الاوصاف

[دائیں کالم کا نچلا حصہ] اور اوصاف کی تبدیلی میں صرف مائع چیز کو خاص کرنے کی وجہ، پس میں کہتا ہوں، اولاً اس لئے کہ اس امت کا اس بات پر اجماع ہے جبکہ یہ اجماع اُمت خطا سے محفوظ ہے کہ سیلابی پانی سے وضو جائز ہے حالانکہ یہ قطعی طور پر معلوم ہے کہ

Fatawa Rizwia, Volume Three

[Left Column - Arabic Content]: By consensus, a solid substance does not make water restricted (Ma-e-Muqayyad). Secondly, this is the consensus of our Imams (may Allah be pleased with them), including Imam Muhammad, that if dates, raisins, or figs, for example, are soaked in water and their sweetness transfers into the water, but it hasn't reached the stage of becoming 'Nabidh' (fermented drink), it remains unrestricted. Ablution (Wudu) with it is permissible by consensus. Imam Muhammad did not consider the change in taste as a disqualification; he ruled in favor of permissibility while acknowledging the change, including changes in color and smell. It is known and witnessed that color changes faster than taste. When taste changes, smell is also present. Thus, all three qualities changed due to the solid addition, but this did not harm the consensus as long as 'dominance of parts' in the third sense is not found—meaning it becoming a different substance for another purpose. This is the distinction between Nabidh and floodwater; it hasn't become a different substance, and the name 'water' still applies to it. This is the school of thought of Abu Yusuf. Thus, you know that his position on solids is universally agreed upon; disagreement exists only regarding liquids. I say: This provides the answer regarding the last two witnesses (examples), for the discussion there concerned Nabidhs. The intended meaning is a change in taste to the extent that it removes the name 'water' and makes it 'Nabidh'.

[Right Column - Urdu Content]: ...its color, although the taste and smell have changed. Thus, it is known that by consensus, water cannot be declared restricted solely based on the change of qualities due to a solid substance. Secondly, because if dates, raisins (dried grapes), and dried figs are put in water and their sweetness transfers into the water, and this change hasn't yet reached the level of Nabidh, then there is a consensus among all our Imams, including Imam Muhammad, on the permissibility of wudu with this drink. (So here, Imam Muhammad did not take into account the change of the three qualities despite them being changed) and declared wudu permissible collectively. Thus, Imam Muhammad did not consider taste in Nabidh and spoke of permissibility despite the change in taste; rather, he spoke of permissibility even with a change in color and smell. And it is known that the color of these things is affected sooner than the taste, and when the taste is changed, a smell will also be found. So it is known that despite all three qualities being changed by a solid, wudu is permissible with this drink by consensus, provided that the third meaning of 'dominance of parts' is not found—i.e., it becoming a new thing for

another purpose. This is the difference between Nabidh and a flood. So, like a flood, this drink did not change the name of water, nor did it become any other thing. While regarding solid things, everyone agrees according to the school of Imam Abu Yusuf; the disagreement is only in liquid things. I say, from this discussion, the answer regarding the Nabidhs of raisins and figs has become known: that when their Nabidh is formed, the taste changes and it takes its new name, about the restriction of which there is no disagreement.

फ़तावा रज़विया, जिल्द तीसरी

[बायाँ कॉलम - अरबी सामग्री]: आम सहमति (इज्मा) के अनुसार, ठोस पदार्थ पानी को 'मुक़य्यद' (प्रतिबंधित) नहीं बनाता है। दूसरा: यह हमारे इमामों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हों) की आम सहमति है, जिनमें इमाम मुहम्मद भी शामिल हैं, कि यदि उदाहरण के लिए खजूर, किशमिश या अंजीर को पानी में भिगोया जाता है और उनकी मिठास पानी में आ जाती है, लेकिन वह 'नबीज़' (किण्वित पेय) बनने के चरण तक नहीं पहुँची है, तो वह प्रतिबंधित नहीं होता है। इसके साथ वज़ू करना आम सहमति से जायज़ है। इमाम मुहम्मद ने इसमें स्वाद के बदलाव को बाधक नहीं माना; उन्होंने बदलाव को स्वीकार करते हुए, यहाँ तक कि रंग और गंध में बदलाव के बावजूद भी इसके जायज़ होने का फैसला दिया। यह ज्ञात और देखा गया है कि इनमें रंग स्वाद की तुलना में तेज़ी से बदलता है। जब स्वाद बदलता है, तो गंध भी मौजूद होती है। इस प्रकार, ठोस मिलाने के कारण तीनों गुण बदल गए, लेकिन इससे आम सहमति को कोई नुकसान नहीं पहुँचा जब तक कि तीसरे अर्थ में 'हिस्सों की प्रधानता' (ग़ल्बा-ए-अज्ज़ा) न पाई जाए—अर्थात इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए एक अलग पदार्थ बन जाना। नबीज़ और बाढ़ के पानी (सैलाब) के बीच यही अंतर है; यह कोई अलग पदार्थ नहीं बना है, और 'पानी' नाम अभी भी इस पर लागू होता है। यह अबू यूसुफ का मत है। इस प्रकार, आप जानते हैं कि ठोस पदार्थों पर उनकी स्थिति सर्वसम्मत है; मतभेद केवल तरल पदार्थों के संबंध में मौजूद है। मैं कहता हूँ: यह पिछले दो उदाहरणों के संबंध में उत्तर प्रदान करता है, क्योंकि वहाँ चर्चा नबीज़ों के बारे में थी। अभिप्रेत अर्थ स्वाद में उस सीमा तक बदलाव है जो उससे 'पानी' का नाम हटा देता है और इसे 'नबीज़' बना देता है।

[दायाँ कॉलम - उर्दू सामग्री]: ...इसका रंग हालाँकि स्वाद और गंध बदल चुके होते हैं। अतः यह ज्ञात हुआ कि आम सहमति से, किसी ठोस पदार्थ के कारण गुणों में बदलाव के आधार पर पानी को केवल प्रतिबंधित घोषित नहीं किया जा सकता है। दूसरा इसलिए क्योंकि यदि खजूर, किशमिश और सूखे अंजीर को पानी में डाला जाता है और उनकी मिठास पानी में चली जाती है, और यह बदलाव अभी तक नबीज़ के स्तर तक नहीं पहुँचा है, तो इमाम मुहम्मद सहित हमारे सभी इमामों के बीच इस पेय के साथ वज़ू की अनुमति पर आम सहमति है। (तो यहाँ, इमाम मुहम्मद ने तीनों गुणों के परिवर्तन को ध्यान में नहीं रखा, भले ही वे बदल गए हों) और सामूहिक रूप से वज़ू को जायज़ घोषित किया। इस प्रकार, इमाम मुहम्मद ने नबीज़ में स्वाद पर विचार नहीं किया और स्वाद में बदलाव के बावजूद अनुमति की बात की; बल्कि, उन्होंने रंग और गंध में बदलाव के साथ भी अनुमति की बात की। और

यह ज्ञात है कि इन चीज़ों का रंग स्वाद की तुलना में जल्दी प्रभावित होता है, और जब स्वाद बदलता है, तो गंध भी पाई जाएगी। तो यह ज्ञात हुआ कि ठोस द्वारा तीनों गुणों के बदलने के बावजूद, इस पेय के साथ आम सहमति से वज़ू जायज़ है, बशर्ते कि 'हिस्सों की प्रधानता' का तीसरा अर्थ न पाया जाए —यानी किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका नई चीज़ बन जाना। नबीज़ और बाढ़ के बीच यही अंतर है। तो, बाढ़ की तरह, इस पेय ने पानी का नाम नहीं बदला, न ही यह कोई अन्य चीज़ बनी। जबकि ठोस चीज़ों के संबंध में, इमाम अबू यूसुफ के मत के अनुसार सभी सहमत हैं; मतभेद केवल तरल चीज़ों में है। मैं कहता हूँ, इस चर्चा से किशमिश और अंजीर के नबीज़ों के संबंध में उत्तर ज्ञात हो गया है: कि जब उनका नबीज़ बनता है, तो स्वाद बदल जाता है और वह अपना नया नाम ले लेता है, जिसके प्रतिबंध के बारे में कोई मतभेद नहीं है।

पृष्ठ 154/756

فتاویٰ رضویہ ، جلد سوم

[بائیں جانب کی عبارت - عربی]: بالجامد لایفید التقیید بالاجماع، وثانیا: ھذا اجماع ائمتنا رضی اللہ تعالیٰ عنھم ومنھم محمد ان التمراوالزبیب اوالتین مثلا اذا نقع فی الماء فانتقلت حلاوۃ منھا الیہ فحلًا لم یبلغ الی ان یصیر نبیذا فانہ لایتقید ویجوز الوضو بہ اجماعاً فمحمد لم یعتبر فیہ الطعم وقال بالجواز مع الاعتراف بتغیرہ بل وتغیر اللون والریح ایضاً فمن المعلوم المشھود ان اللون اسبق تغیرا بھا من الطعم واذا تغیر یوجد لھاریح ایضاً فقد تغیرت الاوصاف الثلاثۃ بالجامدات ولم یضر بالاجماع مالم یغلب اجزاء بالمعنی الثالث اعنی صیرورتہ شیئاً آخر لمقصد آخر وھذا ھو الفارق بین النبیذ والسیل فانہ لم یصر شیئاً آخر ولا زال عنہ اسم الماء وھذا ھو مذھب ابی یوسف فتعلم ان مذھبہ مجمع علیہ فی الجامد وانما الخلف فی المائع۔ اقول: وبہ خرج الجواب عن الشاھدین الاخیرین فان الکلام فیھما فی الانبذۃ فالمراد تغیر الطعم الی حد یزیل عنہ اسم الماء ویجعلہ نبیذا

[دائیں جانب کی عبارت - اردو]: اس کا رنگ بلالکہ ذائقہ اور بو تبدیل ہوئے ہوتے ہیں، تو معلوم ہوا کہ جامد چیز کے ملنے سے صرف اوصاف کی تبدیلی کی بنا پر پانی کو مقید قرار نہیں دیا جاسکتا بالاجماع۔ ثانیاً اس لئے کہ کھجور، خشک انگور (میوہ) اور خشک انجیر کو پانی میں ڈالنے پر ان کی مٹھاس پانی میں منتقل ہو جائے اور ابھی نبیذ کی حد تک یہ تبدیلی پیدا نہ ہو تو اس شربت سے وضو کے جائز ہونے پر ہمارے تمام ائمہ کرام جن میں امام محمد بھی شامل ہیں کا اجماع ہے (تو یہاں امام محمد نے تینوں اوصاف تبدیل ہو جانے کے باوجود ان کی تبدیلی کا لحاظ نہیں کیا) اور وضو کو جائز قرار دیا ہے اجتماعی طور پر۔ پس امام محمد نے نبیذ میں طعم کا اعتبار نہیں کیا اور تغیر طعم کے باوجود جواز کا قول کیا ہے بلکہ تغیر لون اور ریح سے بھی جواز کا قول کیا ہے۔ اور یہ بات معلوم ہے کہ ان چیزوں کا رنگ ذائقہ سے جلد اثر انداز ہوتا ہے اور جب ذائقہ

متغیر ہو گا تو بو بھی پائی جائے گی، تو معلوم ہوا کہ جامد سے تینوں وصف تبدیل ہونے کے باوجود اس شربت سے بالاتفاق وضو جائز ہے بشرطیکہ غلبہ اجزاء کا تیسرا معنی نہ پایا جائے یعنی کسی دوسرے مقصد کیلئے نئی چیز بن جانا، نہ پایا جائے۔ نبیذ اور سیلاب میں یہی فرق ہے پس سیلاب کی طرح اس شربت نے پانی کا نام تبدیل نہیں کیا اور نہ ہی کوئی دوسری چیز بنا ہے جبکہ جامد چیز کے بارے میں امام ابو یوسف کے مذہب کے موافق سب کا اتفاق ہے اختلاف صرف مائع چیز میں ہے۔ میں کہتا ہوں اس بحث سے زبیب اور تین کی نبیذوں کے متعلق جواب معلوم ہو گیا کہ جب ان کا نبیذ بن جائے تو ذائقہ تبدیل ہو کر وہ اپنا نیا نام لے لیتا ہے جس کے مقید ہونے میں کوئی اختلاف

Fatawa Razawiyya Volume 3

...and there is no dispute in it.

No. (T)

Thirdly: Because it was mentioned on page 122 from "Al-Khaniya" that performing ablution with saffron (Za'fran) and yellow dye (Zardaj) water is permissible provided the water is thin and the water is predominant. However, if the redness prevails and it becomes thick/viscous, it is not permissible [1].

And from "Al-Khulasa": Performing ablution with water of Zardaj, safflower (Usfur), or soap is permissible if it is thin such that the water is visible in it. But if the redness prevails and it becomes like starch paste, it is not permissible [2]. End of quote.

From this, it is understood that the basis is thickness and viscosity, not merely the color. Therefore, if the color of the water changes due to the mixing of these things before it thickens, both sources specify that this dominance of color is not considered. But if the color changes after it has thickened, then this is evidence of it becoming thick, as we have explained. Thus, mentioning "becoming thick" and "becoming like starch" would be an explanatory conjunction (Atf-e-Tafseeri). (T)

I say: Through this, the answer to the objection against the text of "Al-Ajnas" becomes clear, in that he (the author), may Allah Almighty have mercy on him, did not limit himself to saying "its color did not change until it became red or black" but added "and the water was predominant over it". This is what "Al-Khaniya" and "Al-Khulasa" expressed when they mentioned "becoming thick" after mentioning the redness, for the purpose that the context requires...

---

[1] Al-Khaniya regarding what is not permissible for ablution, Naval Kishore Lucknow, 1/9. [2] Khulasa-ul-Fatawa, Restricted Water, Naval Kishore Lucknow, 1/8.

Page 155 of 756

फ़तावा रज़विया खंड 3

...और इसमें कोई विवाद नहीं है।

नहीं। (त)

तीसरा: क्योंकि यह पृष्ठ 122 पर "अल-खानिया" के हवाले से गुज़रा कि केसर (ज़ाफ़रान) और ज़र्दज के पानी से वज़ू करना जायज़ है, बशर्ते कि पानी पतला हो और पानी की मात्रा अधिक हो। यदि लाली प्रबल हो जाए और वह गाढ़ा हो जाए, तो वज़ू जायज़ नहीं होगा [1]।

"अल-खुलासा" से: ज़र्दज, कुसुम्भ (असफ़र) या साबुन के पानी से वज़ू करना जायज़ है यदि वह पतला हो और उसमें पानी साफ़ दिखाई दे। लेकिन अगर लाली हावी हो जाए और वह स्टार्च (निशास्ता) के लेप जैसा गाढ़ा हो जाए, तो जायज़ नहीं है [2]। इति।

इससे यह समझा गया कि मुख्य आधार गाढ़ापन और चिपचिपाहट है, न कि केवल रंग। इसलिए, यदि इन चीज़ों के मिलने से पानी का रंग गाढ़ा होने से पहले बदल जाता है, तो दोनों स्रोत स्पष्ट करते हैं कि रंग की इस प्रबलता पर विचार नहीं किया जाता है। लेकिन अगर गाढ़ा होने के बाद रंग बदलता है, तो यह उसके गाढ़ा होने का प्रमाण है, जैसा कि हमने समझाया है। अत; "गाढ़ा होना" और "निशास्ता जैसा बनना" का उल्लेख एक व्याख्यात्मक वाक्यांश (अतफ़-ए-तफ़सीरी) होगा। (त)

मैं कहता हूँ: इससे "अल-अजनास" के पाठ पर उस आपत्ति का उत्तर स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने (लेखक ने), अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर कृपा करे, केवल यह कहना पर्याप्त नहीं समझा कि "उसका रंग तब तक नहीं बदला जब तक वह लाल या काला नहीं हो गया", बल्कि उन्होंने यह भी जोड़ा कि "और पानी उस पर प्रबल था।" यही बात "अल-खानिया" और "अल-खुलासा" ने लाली का उल्लेख करने के बाद गाढ़ा होने का उल्लेख करके व्यक्त की है, जिस उद्देश्य के लिए संदर्भ की आवश्यकता है...

---

[1] खानिया, उन चीज़ों के बारे में जिनसे वज़ू जायज़ नहीं है, नवल किशोर लखनऊ, 1/9। [2] खुलासा-उल-फ़तावा, अल-मा अल-मुक़य्यद, नवल किशोर लखनऊ, 1/8।

पृष्ठ 155 (756 में से)

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

ولانزاع فیہ۔

نہیں-(ت)

وثالثاً: تقدم في ۱۲۲ عن الخانية التوضؤ بماء الزعفران والزردج يجوز ان كان رقيقاً والماء غالب فان غلبته الحمرة وصار متماسكا لا يجوز[1] ثالثاً، اس لئے کہ نمبر ۱۲۲ میں خانیہ کے حوالہ سے گزرا کہ زعفران اور زردج کے پانی سے وضو جائز ہے بشرطیکہ یہ پانی رقیق ہو اور پانی کا غلبہ ہو، اور اگر یہ گاڑھا ہوجائے اور سرخی بھی غالب ہوجائے تو وضو جائز نہیں ہوگا،

وعن الخلاصة توضأ بماء الزردج اوالعصفر اوالصابون ان كان رقيقاً يستبين الماء منه يجوز وان غلبت الحمرة وصار نشاستج لا[2] اھ اور خلاصہ کے حوالہ سے بھی گزرا کہ زردج، عصفر اور صابون والا پانی اگر پتلا ہو اور پانی اس میں غالب رہے تو وضو جائز ہے اور اگر سرخی غالب ہوجائے اور پانی گاڑھا ہو کر نشاستہ کی طرح لیپ ہوجائے تو وضو ناجائز ہے اھ

فاقاد ان المدار الثخن لا مجرد اللون فان كان غلبة اللون تحصل في هذه الاشياء قبل الثخن فقد صرح بعدم الاجتزاء بها مالم يثخن وان كانت لا تحصل الا اذا ثخن فقد بينا ان ذكر غلبة اللون لكونها ههنا دليلا على المناط وهو الثخن فكان وصار متماسكا او نشاستج عطف تفسير لہ۔ اس سے معلوم ہوا کہ دارو مدار گاڑھے و غلیظ ہونے پر ہے صرف رنگ کا اعتبار نہیں ہے لہٰذا ان چیزوں کے ملنے سے پانی کا رنگ اگر گاڑھا ہونے سے پہلے تبدیل ہو تو دونوں کی تصریح ہے کہ اس غلبہ کا اعتبار نہیں ہے اور اگر گاڑھا ہو جانے کے بعد رنگ تبدیل ہو تو یہ گاڑھا ہونے کی دلیل ہے جس

کو ہم نے بیان کردیا ہے پس گویا کہ گاڑھا ہونے اور نشاستہ بننے کا ذکر بطور عطف تفسیری ہوگا۔ (ت)

اقول: و به تبین الجواب عن نص الاجناس فلم یکتف رحمه الله تعالیٰ بقوله لم یتغیر لونه حتی یحمراویسود بل اضاف الیه وکان الغالب علیه الماء وهذا ماعبر به الخانیة والخلاصة اذ قالا بعد ذکر الحمرة وصار متماسکا بیدان المقام یحتاج میں کہتا ہوں کہ اس سے الاجناس کی عبارت پر اس اعتراض کا جواب ظاہر ہو گیا کہ اس نے اپنے بیان میں صرف سرخ اور سیاہ رنگوں کے ذکر کو کافی نہ سمجھا بلکہ اس پر پانی کے غالب ہونے کا اضافہ بھی کیا، چنانچہ خانیہ اور خلاصہ نے سرخی کو ذکر کرنے کے بعد گاڑھا ہونے کو جس مقصد کے لئے ذکر کیا ہے

---

[1] خانیہ فیما لا یجوز به التوضی نولکشور لکھنئو ۹/۱ [2] خلاصة الفتاوی الماء المقید نولکشور لکھنئو ۸/۱

Fatawa Razawiya - Volume 3

...to the refinement of the intellect and the implementation of a strong and correct vision. Nay, rather, it is towards the success granted by the Kind Lord. A superficial look quickly moves towards the difference between this phrasing and the phrasing of al-Khaniyyah and al-Khulasah, because both mentioned two things - the dominance of redness and thickness - in regards to non-permissibility [of wudu]. Understand that a change in color is not sufficient for prohibition as long as it does not become thick, because the matter is based on the combination of the two things. The transmission of al-Ajnas mentioned two things - the integrity of the color and the dominance of water - for the side of permissibility. This informs that if either of them is absent, the permissibility is absent for the same reason, meaning that permissibility is based on the combination [of both].

I say: Careful consideration clarifies the matter. This meaning necessitates that a change in color negates permissibility even if the water is dominant, which is contrary to consensus (Ijma'). Dominance is the axis around which the millstone of these rulings revolves according to all our prominent Imams. Have you not heard the statement in al-Fath that regarding the dominant as non-existent is the opposite of what is established linguistically, customarily, and legally? Since it is necessarily known that the dominance of water is the sufficient cause for permissibility and...

---

1. Fath al-Qadir, Chapter on Water with which Wudu is Permitted, Nuriya Razawiya Sukkur 1/25

फ़तावा रज़विया - भाग 3

...बुद्धि को परिष्कृत करने और एक मजबूत और सही दृष्टि को लागू करने के लिए। नहीं, बल्कि, यह कृपालु प्रभु द्वारा प्रदान की गई सफलता की ओर है। एक सतही नज़र जल्दी से इस वाक्यांश और अल-खानिय्याह और अल-खुलासा के वाक्यांश के बीच के अंतर की ओर बढ़ती है, क्योंकि दोनों ने गैर-अनुमेयता [वज़ू की] के संबंध में दो चीजों का उल्लेख किया है - लाली की प्रधानता और गाढ़ापन। समझें कि रंग में परिवर्तन निषेध के लिए पर्याप्त नहीं है जब तक कि वह गाढ़ा न हो जाए, क्योंकि मामला दो चीजों के संयोजन पर आधारित है। अल-अजनास के प्रसारण में अनुमेयता की ओर से दो चीजों का उल्लेख किया गया है - रंग की शुद्धता और पानी की प्रधानता। यह सूचित करता है कि यदि उनमें से कोई भी अनुपस्थित है, तो उसी कारण से अनुमेयता अनुपस्थित है, जिसका अर्थ है कि अनुमेयता [दोनों के] संयोजन पर आधारित है।

मैं कहता हूँ: सूक्ष्म दृष्टि मामले को स्पष्ट करती है। इस अर्थ का तात्पर्य यह है कि रंग में परिवर्तन अनुमेयता को नकारता है भले ही पानी प्रधान हो, जो आम सहमति (इज्मा) के विपरीत है। प्रधानता वह धुरी है जिसके चारों ओर हमारे सभी प्रमुख इमामों के अनुसार इन नियमों की चक्की घूमती है। क्या आपने अल-फतह में यह बयान नहीं सुना है कि प्रधान को अस्तित्वहीन मानना भाषाई, प्रथागत और कानूनी रूप से स्थापित सत्य के विपरीत है? चूंकि यह अनिवार्य रूप से ज्ञात है कि पानी की प्रधानता अनुमेयता के लिए पर्याप्त कारण है और...

---

1. फतह अल-कादिर, वज़ू के लिए अनुमत पानी का अध्याय, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/25

الی تلطیف القریحۃ واعمال رؤیۃ قویۃ صحیحۃ کلاً بل الی التوفیق من رب رفیق فالنظر الظاھر یتسارع الی الفرق بین العبارۃ وعبارۃ الخانیۃ والخلاصۃ لانھما ذکرا الشیئین غلبۃ الحمرۃ والتماسك فی عدم الجواز فافھما ان تغیر اللون لایکفی للمنع مالم یتماسك لابتناء الامر علی اجتماع الامرین ونقل الاجناس ذکر شیئین سلامۃ اللون وغلبۃ الماء فی جانب الجواز فافادان ایھما انتفی انتفی الجواز لعین الوجہ اعنی بناء الجواز علی الاجتماع -

وہی مقصد الاجناس کا ہے کہ مدار حکم کو ظاہر کیا جائے مگر یہ مقام سوچ کی باریکی اور قوی و صحیح فکر کو عمل میں لانے کا ہی نہیں بلکہ اللہ تعالٰی کی توفیق کی طرف رجوع کرنے کا مقام ہے کہ یہاں ظاہر نظر میں الاجناس اور خانیہ و خلاصہ کی عبارتوں کا فرق واضح ہو جاتا ہے، کیونکہ خانیہ اور خلاصہ نے دو چیزوں کو عدم جواز کے بارے میں ذکر کیا ہے ایک سُرخی کا غلبہ اور دوسری چیز گاڑھا پن ہے انہوں نے اس سے یہ بتایا کہ صرف رنگ کی تبدیلی کافی نہیں ہے بلکہ گاڑھا پن بھی ضروری ہے کیونکہ وضو کے ناجائز ہونے کا دار ومدار ان دونوں چیزوں پر ہے، اور اجناس کی عبارت میں وضو کے جواز کیلئے رنگ کا سالم رہنا اور پانی کا غالب رہنا دو چیزوں کو ذکر کیا ہے جس سے انہوں نے یہ ظاہر کیا ہے کہ اگر دونوں چیزوں میں سے ایک ختم ہو جائے تو وضو کا جواز بھی ختم ہو جائے گا کیونکہ جواز کے حکم کا دار ومدار دو چیزوں کے مجموعہ پر ہے۔ (ت)

اقول: و دقیق النظر یوضح الامر فان ھذا المعنی یوجب ان تغیر اللون ینفی الجواز وان کان الغالب ھو الماء وھو خلاف الاجماع فان الغلبۃ ھو القطب الذی تدور علیہ رحی ھذہ الاحکام عند جمیع ائمتنا

الاعلام اما سمعت قول الفتح ان اعتبار الغالب عد ما عکس الثابت لغة وعرفاً وشرعاً اه واذ من المعلوم ضرورة ان غلبة الماء هي العلة الكافية للجواز و

میں کہتا ہوں کہ یہاں دقیق نظر سے واضح ہوتا ہے کہ اگر دونوں چیزوں میں سے رنگ بدل جائے اور پانی کا غلبہ باقی رہے تو وضو ناجائز ہو حالانکہ یہ اجماع کے خلاف ہے کیونکہ غلبہ ہی وہ چیز ہے جو ان مسائل میں احکام کا معیار ہے جو کہ تمام ائمہ کرام کو تسلیم ہے، کیا تم نے فتح کا قول نہیں سنا جس میں انہوں نے کہا کہ غلبہ کے عدم کا اعتبار شرعاً، عرفاً اور لغۃً ثابت چیز کا عکس ہے (یعنی غلبہ کا وجود ثابت کا وجود ہے اور غلبہ کا عدم، ثبوت کا عدم ہے) اھ

---

1 فتح القدیر باب الماء الذی یجوز بہ الوضو نوریہ رضویہ سکھر ۱/۲۵

Fatawa Razawiyya (Volume 3)

(Arabic Text/Left Column): ...its absence leads to prohibition, because none of the Ummah permits ablution with water that has been overcome (makhloob), whether its qualities are intact or not, except for what was previously mentioned from an anomalous report from Imam Al-Awza'i, regarding the authenticity of which there is discussion, may Allah have mercy on him. Therefore, it is impossible for the redness itself to be a separate cause from the overcome state, or the complete cause. At that point, the matter revolves between two options: either it is the cause through which the overcome state occurs, and so his saying 'and water was predominant over it' is an explanatory conjunction for the lack of color change; or it is apart from causality and was only mentioned because here it is a sign of the water being overcome by reaching the maximum level of mixing. This is because the redness from 'ashnan' (soda ash) and the blackness from basil do not occur just by simple cooking, but by thorough and complete cooking. Do you not see that the issue was posed regarding water in which both are cooked, then it was said: 'if its color does not change and the water remains predominant, there is no problem'? Thus, he informed that they are thrown into the water, remain in it, and fire acts upon them until they are cooked, and yet with all that, the altering change does not occur such that it was possible to restrict it with its absence for permissibility. Rather, it must remain and have another process after that until complete cooking occurs, necessitating complete mixing, at which point the water undoubtedly becomes overcome. Thus, this apparent sign was mentioned because it is visible, and being overcome in cooked substances...

(Urdu Text/Right Column): ...Because it is clearly known that when water is predominant, the permissibility of ablution from it will be established because the predominance of water is the cause (illah) for this permissibility. And the lack of predominance is the cause for the lack of permissibility. This is the reason why no one in the Ummah has considered ablution permissible when water is overcome, whether its qualities remain or change, except for one saying attributed to Imam Awza'i. If proof of this saying is found from him, it would be an anomalous narration of an anomalous saying, although there is discussion regarding the proof of this saying. Therefore, in the text of 'Al-Ajnas', designating the predominance of redness (color) as an independent cause or the complete cause separate from predominance is incorrect. Therefore, two possibilities can exist here: one is that this redness itself be designated as the cause and the same be called predominance. In this case, in the statement of 'Al-Ajnas' 'kan al-ghalibu alayhi al-maa' (water was predominant over it),

by considering it an explanatory conjunction, it will be considered an explanation for the color not changing. And the second possibility is that this redness be kept separate from causality and its mention be made a sign of the water being overcome because it points to the extreme form of mixing in water. This is because redness due to 'ashnan' and blackness due to basil is not obtained in water by ordinary cooking, but rather is obtained by thorough cooking. You know that here the situation of the problem is assumed as such that 'ashnan' and basil...

फ़तावा रज़विया (जिल्द ३)

(अरबी पाठ/बायाँ कॉलम): ...उसका अभाव निषेध (मनाही) के लिए है, क्योंकि उम्मत में से कोई भी उस पानी से वज़ू की अनुमति नहीं देता जो अभिभूत (मगलूब) हो चुका हो, चाहे उसके गुण (औसाफ़) सुरक्षित हों या नहीं, सिवाय उस दुर्लभ रिवायत के जो इमाम अल-औज़ाई से वर्णित है, जिसकी प्रामाणिकता पर चर्चा है, अल्लाह उन पर दया करे। इसलिए, यह असंभव है कि लाली (सुर्खी) स्वयं ग़लबे से अलग एक स्वतंत्र कारण हो या पूर्ण कारण हो। उस समय, मामला दो विकल्पों के बीच घूमता है: या तो वही कारण है जिससे ग़लबा (प्रबलता) होता है, और उनका कहना 'और पानी उस पर प्रबल था' रंग न बदलने की व्याख्या के लिए है; या वह कारणता से अलग है और उसका उल्लेख केवल इसलिए किया गया क्योंकि यहाँ यह पानी के अभिभूत होने का संकेत है जो पूर्ण मिश्रण तक पहुँचने के कारण होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि 'अशनान' (सोडा ऐश) से लाली और तुलसी (रेहान) से कालापन केवल पकाने से नहीं होता, बल्कि पूरी तरह पकाने से होता है। क्या आप नहीं देखते कि यह मसला उस पानी के बारे में है जिसमें दोनों पकाए गए हैं, फिर कहा गया: 'यदि इसका रंग नहीं बदलता और पानी प्रबल रहता है, तो कोई हर्ज नहीं'? इस प्रकार, उन्होंने बताया कि वे पानी में डाले जाते हैं, उसमें रहते हैं, और आग उन पर तब तक काम करती है जब तक कि वे पक न जाएं, और फिर भी उस सबके साथ, वह बदलाव नहीं आता जिससे अनुमति के लिए उसे प्रतिबंधित करना संभव होता। बल्कि, इसके बाद एक और प्रक्रिया की आवश्यकता होती है जब तक कि पूर्ण पाक न हो जाए, जो पूर्ण मिश्रण के लिए आवश्यक है, जिस बिंदु पर पानी निस्संदेह अभिभूत हो जाता है। अतः, यह स्पष्ट संकेत इसलिए उल्लेख किया गया क्योंकि यह दृश्यमान है, और पके हुए पदार्थों में अभिभूत होना...

(उर्दू पाठ/दायाँ कॉलम): ...क्योंकि यह बात स्पष्ट रूप से ज्ञात है कि जब पानी प्रबल (ग़ालिब) होगा, तो उससे वज़ू की अनुमति (जवाज़) साबित होगी, क्योंकि पानी की प्रबलता इस अनुमति का कारण (इल्लत) है। और प्रबलता का अभाव, अनुमति न होने का कारण है। यही कारण है कि उम्मत में से किसी ने भी पानी के अभिभूत (मगलूब) होने पर वज़ू को जायज़ नहीं कहा है, चाहे पानी के गुण (औसाफ़) शेष रहें या बदल जाएँ, सिवाय इमाम औज़ाई के एक कथन के जो उनकी ओर माना जाता है। यदि इस कथन का प्रमाण उनसे मिल जाए, तो यह एक दुर्लभ (शाज़) कथन का दुर्लभ वर्णन होगा, हालांकि इस कथन के प्रमाण के बारे में चर्चा (कलाम) है। इसलिए 'अल-अजनास' की इबारत में सुर्खी (रंग) के ग़लबे को एक स्वतंत्र और ग़लबे से अलग कारण या पूर्ण कारण मानना गलत है। अतः यहाँ

दो संभावनाएँ हो सकती हैं: एक यह कि इस सुर्खी को ही कारण माना जाए और इसी को ग़लबा कहा जाए। इस स्थिति में 'अल-अजनास' के कथन 'कान अल-ग़ालिब अलैहिल मा' (पानी उस पर प्रबल था) को व्याख्यात्मक संयोजन (अतफ़-ए-तफ़्सीरी) मानकर रंग न बदलने का बयान माना जाएगा। और दूसरी संभावना यह हो सकती है कि इस सुर्खी को कारण से अलग रखा जाए और इसके उल्लेख को पानी के अभिभूत होने का संकेत माना जाए, क्योंकि यह पानी में मिलने की चरम स्थिति की ओर संकेत करता है। क्योंकि 'अशनान' के कारण सुर्खी और 'रेहान' के कारण स्याही पानी में मामूली पकाने से नहीं आती, बल्कि पूरी तरह पकाने से आती है। आप जानते हैं कि यहाँ मसले की यह स्थिति मानी गई है कि 'अशनान' और 'रेहान'...

पेज १५७ ऑफ ७५६

(بائیں کالم کی عربی عبارت): عدمها للمنع اذليس احد من الامة يجيز الوضو بالماء المغلوب سلمت اوصافه اولا الاما تقدم من حكاية شاذة عن الامام الاوزاعي على كلام فى ثبوتها عنه رحمه الله تعالى فامتنع ان تكون غلبة الحمرة علة برأسها منحازة عن الغلبة او تمام العلة، و حينئذ يدور الامر بين وجهين اما ان تكون هي العلة وبها الغلبة فيكون قوله وكان الغالب عليه الماء عطف تفسير لعدم تغير اللون واما ان تكون بمعزل عن العلية وانما ذكرت لانها ههنا آية مغلوبية الماء ببلوغ سيل الامتزاج رباه وذلك لان الاحمرار بالاشنان والاسوداد بالريحان لايحصلان بنفس الطبخ ايضابل بالطبخ الكامل الا ترى انه فرض المسألة في ماء يطبخان فيه ثم قال اذالم يتغير لونه وكان الغالب الماء فلابأس فافادهما يطرحان في ماء ويمكثان فيه ويعمل فيهما النار الى ان يطبخا ولا يحصل مع كل ذلك التغير المغير حتى امكن التقييد بعدمه للجواز بل لابد له من مكث وعمل آخر بعد ذلك حتى يحصل الطبخ الكامل الموجب لكمال الامتزاج وحينئذ يصير الماء مغلوبا بلاريب فذكرت هذه الامارة الظاهرة لكونها مرئية والمغلوبية في المطبوخ

(دائیں کالم کی اردو عبارت): کیونکہ یہ بات واضح طور پر معلوم ہے کہ جب پانی کا غلبہ ہوگا تو اس سے وضو کا جواز ثابت ہوگا کیونکہ پانی کا غلبہ اس جواز کی علت ہے۔ اور عدم غلبہ، عدم جواز کی علت ہے یہی وجہ ہے کہ اُمت میں سے کسی نے بھی پانی کے مغلوب ہونے پر وضو کو جائز نہیں کہا خواہ پانی کے اوصاف باقی رہیں یا تبدیل ہوجائیں، ماسوائے امام اوزاعی کے ایک قول کے جو کہ ان کی طرف منسوب ہے اگر اس قول کا ثبوت ان سے مل جائے تو ایک شاذ قول کی شاذ حکایت ہوگی، حالانکہ اس قول کے ثبوت میں کلام ہے لہذا اجناس کی عبارت میں سرخی (رنگ) کے غلبہ کو مستقل اور غلبہ سے علیحدہ علت یا تمام علت قرار دینا غلط ہے، لہذا یہاں دو

وجہیں ہو سکتی ہیں ایک یہ کہ اس سرخی کو ہی علت قرار دیا جائے اور اسی کو غلبہ کہا جائے اس صورت میں الاجناس کے قول "کان الغالب علیه الماء" کو عطف تفسیری قرار دے کر رنگ کے تبدیل نہ ہونے کا بیان قرار دیا جائے گا، اور دوسری وجہ یہ ہوسکتی ہے اس سرخی کو علیت سے الگ رکھا جائے اور اس کے ذکر کو پانی کے مغلوب ہونے کی علامت قرار دیا جائے کیونکہ یہ پانی میں ملنے کی انتہائی صورت کی نشان دہی کرتی ہے کیونکہ اشنان کی وجہ سے سرخی اور ریحان کی وجہ سے سیاہی پانی میں معمولی پکانے سے حاصل نہیں ہوتی بلکہ کامل طور پر پکانے سے حاصل ہوتی ہے آپ کو معلوم ہے کہ یہاں مسئلہ کی یہ صورت فرض کی گئی ہے کہ اشنان اور ریحان

صفحہ 157 کا 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

(Arabic text translation): ...invisible as long as it does not cool down, as previously mentioned. Then, the reality was mentioned as an alert to the true criterion. This is a refined and clear interpretation, which is exactly the essence of what is stated in 'Al-Khaniya' and 'Al-Khalasa'. Praise be to Allah. When a possibility arises, the argument fails. This is supported by the wording of both 'Al-Khaniya' and 'Al-Khalasa', as some reports explain others. Furthermore, the two consensuses are sufficient as two just witnesses.

(Urdu text translation): Regarding the issue of things cooked in water, it has been said that if the color has not changed and the water remains dominant, there is no harm in performing ablution. Thus, from this statement, it is clear that these two things will be put in water and then, after being well-cooked over fire, upon reaching a complete mixture, the water will certainly become overcome (dominated). At this point, the signs of redness or blackness were mentioned because they are visible, whereas, while observing, the dominance of water cannot be seen until it cools down, otherwise, ordinary cooking does not produce a change that would prevent ablution, so that a restriction of its negation could be applied. By mentioning complete cooking, 'Al-Ajnās' clarified the reality so that the reason for the ruling could be determined. This interpretation of the text of 'Al-Ajnās' is refined, and this is the core meaning of the texts of 'Al-Khaniya' and 'Al-Khalasa'. Praise be to Allah. Based on this mentioned possibility, the argument ceases; rather, this possibility has been given preference by the wording of 'Al-Khaniya' and 'Al-Khalasa', as some narrations provide preference and explanation for others. Also, both consensuses are sufficient as truthful witnesses. (T)

(Arabic text translation): If you say: Perhaps both of them refer to things not cooked, so they do not prevent the consideration of qualities in them, and the text of 'Al-Ajnās' is only about that.

(Urdu text translation): If your objection is that (despite the change in qualities due to floodwater and regarding the permissibility of ablution with date juice [nabidh tamr]), both of these consensuses relate to raw water; therefore, they would not negate the consideration of qualities in cooked water, while the text of 'Al-Ajnās' pertains to cooked water. (T)

(Arabic text translation): I say: Firstly, its text is specific to the change of qualities that occurs after complete cooking, as you have known. And what changes before

cooking cannot be compared to it, as that is the common and dominant case, because before that, there is no difference between it and that which consensus has been established upon not considering [qualities] in it. So the discourse returns to...

(Urdu text translation): In response, I say, firstly, that the text of 'Al-Ajnās' is specific to the case in which the change of qualities occurs after complete cooking, as you have learned above. The change before cooking cannot be measured against it, as change before cooking is common and frequent. This is because change before cooking and...

फतावा रज़विया, जिल्द 3

(अरबी पाठ अनुवाद): ...अदृश्य जब तक कि वह ठंडा न हो जाए, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। फिर हक़ीक़त का ज़िक्र किया गया ताकि असल मानदंड के प्रति सचेत किया जा सके। यह एक उत्तम और स्पष्ट व्याख्या है और यही 'अल-ख़ानिया' और 'अल-ख़ुलासा' का सार है। अल्लाह की प्रशंसा हो। जब कोई संभावना सामने आती है तो दलील समाप्त हो जाती है। यह 'अल-ख़ानिया' और 'अल-ख़ुलासा' की इबारतों से साबित है क्योंकि कुछ रिवायतें दूसरी रिवायतों की व्याख्या करती हैं। इसके बाद, दोनों इज्मा (सर्वसम्मति) दो न्यायप्रिय गवाहों के रूप में पर्याप्त हैं।

(उर्दू पाठ अनुवाद): पानी में चीज़ें पकाई गई हों, इस मसले पर यह कहा गया है कि जब रंग न बदले और पानी प्रबल रहे तो वज़ू करने में कोई हर्ज़ नहीं है। इस बयान से यह साफ़ हो रहा है कि इन दोनों चीज़ों को पानी में डाल कर आग पर खूब पकाया जाएगा और मुकम्मल तौर पर मिल जाने के बाद यकीनन पानी दब जाएगा। यहाँ सुर्खी या स्याही की निशानी बताई गई है क्योंकि यह नज़र आती है, जबकि देखने में पानी का दबना तब तक नज़र नहीं आता जब तक वह ठंडा न हो जाए, वरना मामूली पकाने से वह बदलाव पैदा नहीं होता जो वज़ू के लिए रुकावट बने ताकि उसकी मनाही की शर्त लगाई जा सके। 'अल-अजनास' ने मुकम्मल पकने का ज़िक्र करके असलियत साफ़ कर दी ताकि हुक्म की वजह तय हो सके। 'अल-अजनास' की इबारत की यह व्याख्या बहुत उम्दा है और यही 'अल-ख़ानिया' व 'अल-ख़ुलासा' का मक़सद है। अल्लाह का शुक्र है। और इस मुमकिना सूरत की वजह से दलील ख़त्म हो जाती है, बल्कि 'अल-ख़ानिया' और 'अल-ख़ुलासा' की इबारतों से इसे प्राथमिकता मिली है क्योंकि कुछ रिवायतें दूसरों की व्याख्या करती हैं। साथ ही दोनों इज्मा सच्चे गवाह के रूप में पर्याप्त हैं। (त)

(अरबी पाठ अनुवाद): यदि आप कहें: शायद वे दोनों बिना पकी चीज़ों के बारे में हैं, इसलिए वे उनमें गुणों पर विचार करने से नहीं रोकते, और 'अल-अजनास' का पाठ केवल उसी के बारे में है।

(उर्दू पाठ अनुवाद): यदि आपका ऐतराज़ (आपत्ति) यह है कि (बाढ़ के पानी के गुणों में बदलाव के बावजूद और खजूर के नबीज़ से वज़ू के जायज़ होने पर) ये दोनों इज्मा कच्चे पानी के बारे में हैं; इसलिए उनसे पके हुए पानी में गुणों के विचार की मनाही नहीं होगी, जबकि 'अल-अजनास' का पाठ पके हुए पानी से संबंधित है। (त)

(अरबी पाठ अनुवाद): मैं कहता हूँ: पहली बात यह कि इसका पाठ उस सूरत के लिए खास है जिसमें पूरी तरह पकने के बाद गुणों में बदलाव आता है, जैसा कि आप जान चुके हैं। और पकने से पहले जो बदल जाए, उसकी तुलना इससे नहीं की जा सकती, क्योंकि वह आम और अक्सर होने वाला मामला है, क्योंकि उससे पहले उसके और उस चीज़ के बीच कोई फर्क नहीं है जिस पर गुणों के विचार न करने का इज्मा हो चुका है। तो बात यहाँ पहुँचती है कि...

(उर्दू पाठ अनुवाद): इसके जवाब में मैं कहता हूँ, अव्वल (पहली बात) यह कि 'अल-अजनास' का पाठ उस सूरत के लिए खास है जिसमें मुकम्मल पकने के बाद गुणों में बदलाव आता है, जैसा कि आपने ऊपर जाना है। पकने से पहले के बदलाव को उस पर मापा नहीं जा सकता, जबकि पकने से पहले बदलाव आम और ज़्यादा होता है। क्योंकि पकने से पहले बदलाव और...

(Arabic): غیر مرئیۃ مالم یبرد کما تقدم ثم ذکر الحقیقۃ تنبیہا علی ما ھو المناط الحقیقی فھذا محمل نفیس واضح و ھذا ھو عین مفاد الخانیۃ والخلاصۃ واللہ الحمد و اذا جاء الاحتمال سقط الاستدلال ترجح ھذا بعبارتی الخانیۃ والخلاصۃ اذ الروایات یفسر بعضھا بعضا ثم کفی بالاجماعین شاہدی عدل۔

(Urdu): پانی میں پکائے گئے ہوں اس مسئلہ پر یہ کہا ہے کہ جب رنگ تبدیل نہ ہوا اور پانی غالب ہو تو وضو کرنے میں کوئی حرج نہیں ہے، تو اس بیان سے یہ واضح ہو رہا ہے کہ ان دونوں چیزوں کو پانی میں ڈال کر رکھا جائے گا اور پھر آگ پر خوب پکانے کے بعد کامل امتزاج پیدا ہو جانے پر یقیناً پانی مغلوب ہو جائے گا اس موقع پر سرخی یا سیاہی کی علامت کو ذکر کیا گیا ہے کیونکہ یہ نظر آتی ہے جبکہ دیکھنے کی حالت میں پانی کا مغلوب نظر نہیں آسکتا جب تک کہ وہ ٹھنڈا نہ ہو جائے ورنہ معمولی پکانے پر وہ تغیر پیدا نہیں ہوتا جو وضو کے لئے مانع ہو تاکہ اس کی نفی کی قید لگائی جائے اس سے الاجناس نے مکمل پکائے جانے کے ذکر پر حقیقت کو واضح کیا تاکہ حکم کی علت متعین ہو سکے، الاجناس کی عبارت کا یہ محمل نفیس ہے اور یہی خانیہ اور خلاصہ کی عبارت کا مفاد ہے واللہ الحمد، اور اس مذکورہ احتمال کی بنا پر استدلال ختم ہو جاتا ہے بلکہ خانیہ اور خلاصہ کی عبارتوں سے اس احتمال کو ترجیح مل گئی ہے کیونکہ بعض روایات سے بعض کو ترجیح و تفسیر مل جاتی ہے نیز دونوں اجماع، سچے گواہ کافی ہیں۔ (ت)

(Arabic): فان قلت: لعلھما فی غیر المطبوخ فلا یمنعان اعتبار الاوصاف فیہ و نص الاجناس انما ھو فیہ۔

(Urdu): اگر آپ کا اعتراض ہو کہ (سیلاب کے پانی سے باوجودیکہ اس میں اوصاف متغیر ہیں اور نبیذ تمر سے وضو کے جواز پر) یہ دونوں اجماع کچے پانی کے بارے میں ہیں لہذا ان سے پکے ہوئے پانی میں اوصاف کے اعتبار کی نفی نہیں ہوگی، جبکہ الاجناس کی نص پکے ہوئے پانی سے متعلق ہے۔ (ت)

(Arabic): اقول: اولا نصہ مخصوص بما یحدث فیہ تغیر الاوصاف بعد کمال الطبخ کما علمت ولا یقاس علیہ ما یتغیر قبل الطبخ و ھو الکثیر الغالب اذ قبلہ لافرق بینہ وبین التی وقد انعقد الاجماع علی عدم اعتبار فیہ فیؤل الکلام الی ان

(Urdu): اس کے جواب میں میں کہتا ہوں، اولاً، یہ کہ الاجناس کی نص اس صورت سے مخصوص ہے جس میں مکمل پکائے جانے کے بعد اوصاف کا تغیر پیدا ہو جیسا کہ آپ اوپر معلوم کر چکے ہیں، اس پر پکانے سے قبل کے تغیر کو قیاس نہیں کیا جا سکتا جبکہ پکانے سے قبل تغیر عام اور کثیر ہے۔ کیونکہ پکانے سے قبل تغیر اور

Fatawa Rizwiya Volume 3

(Arabic Text): Properties are not taken into account except in what changes after complete cooking. This does not harm us, as you know that the water becomes 'dominated' (defeated) at that point, so the reason [for the ruling] is established, whether you expressed it by the property itself or by its necessary consequence from the change of properties. Secondly, what is the difference between raw and cooked water except that cooking necessitates complete mixing as stated by all the scholars of legal rules. Imam Al-Zayla'i said: "The restriction is either by complete mixing or the dominance of the mixed substance. Complete mixing occurs through cooking, etc." He said shortly before the chapter on Tayammum: "By cooking, its mixing becomes complete, and complete mixing prevents the application of the name 'water' to it." Even before the formulation of this rule, the great Imam Al-Nasafi said in Al-Kafi: "The invalidity of calling it water is due to complete mixing, which is by cooking the water mixed with a pure substance, etc." This will be fully explained, God willing. At that point we speak according to its implication, and it is not a proof for the consideration of a mere change in properties, as is not hidden. Thus the matter is clarified, and praise be to Allah.

(Urdu Text): There is no difference in the change of completely raw water, although there is already a consensus regarding completely raw water that a change in its properties is not considered. From this, it becomes clear that the consideration of a change in properties will only be after complete cooking. This is not harmful to us because you know that after complete cooking, the water becomes 'dominated', leading to the finding of the cause for the impermissibility of ablution. This was expressed by calling it 'dominated', or by its necessity, i.e., the change in properties. Secondly, because in raw and cooked water, complete mixing occurs due to cooking, which has been mentioned by all scholars of code. Imam Al-Zayla'i said that water is restricted by complete mixing or the dominance of the substance mixed in it, and complete mixing is achieved through cooking, etc. He mentioned this shortly before the discussion on Tayammum and stated that complete mixing occurs through cooking, and due to this complete mixing, it is prohibited to call it absolute water. Furthermore, before the statement of the rule, the illustrious Imam Nasafi stated in 'Kafi' that the designation of 'water' ends with complete mixing, and complete mixing is achieved by cooking a pure substance in water, etc. All this description will follow hereafter, if Allah the Almighty wills.

---

1 Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Taharah, Al-Amiriyyah, Egypt, 20/1 2 Tabyin al-Haqa'iq, before the chapter on Tayammum, Al-Amiriyyah, Egypt, 36/1 3 Al-Kafi by Al-Nasafi

फ़तावा रिज़विया जिल्द 3

(अरबी पाठ): "गुणों का कोई विचार नहीं किया जाता सिवाय उस स्थिति के जिसमें पूर्ण रूप से पकाने के बाद परिवर्तन होता है। यह हमें हानि नहीं पहुँचाता, क्योंकि आप जानते हैं कि उस समय पानी 'मगलूब' (अभिभूत) हो जाता है, अतः कारण सिद्ध हो जाता है, चाहे आपने इसे स्वयं गुणों के माध्यम से व्यक्त किया हो या गुणों के परिवर्तन के आवश्यक परिणाम के माध्यम से। दूसरे, कच्चे और पके हुए पानी में क्या अंतर है सिवाय इसके कि पकाना पूर्ण मिश्रण (इम्तिजाज-ए-कामिल) को आवश्यक बनाता है जैसा कि सभी नियम-विदों ने स्पष्ट किया है। इमाम अल-ज़ैलई ने कहा: 'प्रतिबंध या तो पूर्ण मिश्रण द्वारा है या मिश्रित पदार्थ की प्रबलता द्वारा। पूर्ण मिश्रण पकाने आदि से होता है।' उन्होंने तयम्मुम के अध्याय से ठीक पहले कहा: 'पकाने से इसका मिश्रण पूर्ण हो जाता है, और पूर्ण मिश्रण इसे 'पानी' का नाम देने से रोकता है।' नियम बनने से पहले ही, महान इमाम अल-नसफ़ी ने 'अल-काफ़ी' में कहा था: 'इसे पानी कहना पूर्ण मिश्रण के कारण अमान्य हो जाता है, जो पानी को शुद्ध वस्तु के साथ मिलाकर पकाने से होता है, आदि।' यह पूर्ण रूप से वर्णित किया जाएगा, इंशा अल्लाह। तब हम इसके निहितार्थ के अनुसार बात करते हैं, और यह गुणों में मात्र परिवर्तन के विचार के लिए प्रमाण नहीं है, जैसा कि स्पष्ट है। इस प्रकार मामला स्पष्ट हो गया, और अल्लाह की प्रशंसा हो।"

(उर्दू पाठ): बिल्कुल कच्चे पानी के परिवर्तन में कोई अंतर नहीं है, हालाँकि बिल्कुल कच्चे पानी के बारे में पहले से ही आम सहमति (इज्मा) है कि उसके गुणों में परिवर्तन का विचार नहीं किया जाता है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गुणों के परिवर्तन का विचार केवल पूर्ण पकाने के बाद ही होगा। यह हमारे लिए हानिकारक नहीं है क्योंकि आप जानते हैं कि पूर्ण पकाने के बाद पानी 'मगलूब' (अभिभूत) हो जाता है, जिसके कारण वज़ू के अवैध होने का कारण पाया जाता है। इसे 'मगलूब' कहकर व्यक्त किया गया, या इसकी आवश्यकता यानी गुणों के परिवर्तन से व्यक्त किया गया। दूसरे, इसलिए कि कच्चे और पके हुए पानी में पकाने के कारण पूर्ण मिश्रण हो जाता है, जिसका उल्लेख सभी विद्वानों ने किया है। इमाम अल-ज़ैलई ने कहा कि पानी को पूर्ण मिश्रण या उसमें मिली हुई चीज़ की प्रबलता से प्रतिबंधित माना जाता है, और पूर्ण मिश्रण पकाने से प्राप्त होता है, आदि। उन्होंने इस बात को तयम्मुम की चर्चा से थोड़ा पहले बयान किया और कहा कि पकाने से मिश्रण पूर्ण होता है, और इस पूर्ण मिश्रण के कारण इसे 'मुतलक़ पानी' (निरपेक्ष जल) कहना वर्जित हो जाता है। इसके अलावा, नियम के वर्णन से पहले महान इमाम नसफ़ी ने 'काफ़ी' में फ़रमाया कि पानी का नाम 'पानी'

पूर्ण मिश्रण से समाप्त हो जाता है और पूर्ण मिश्रण पानी में शुद्ध चीज़ मिलाकर पकाने से प्राप्त होता है, आदि। यह सारा वर्णन आगे आएगा, यदि अल्लाह तआला ने चाहा।

---

1 तबीय्युल हक़ाएक, किताबुल तहारत, अल-अमीरिया, मिस्र, 20/1 2 तबीय्युल हक़ाएक, तयम्मुम के अध्याय से पहले, अल-अमीरिया, मिस्र, 36/1 3 नसफ़ी की 'काफ़ी'

الاوصاف لاعبرۃ بھا الافیما تتغیر فیہ بعد الکمال الطبخ وھذا الایضر نالما علمت ان المآء یصیر مغلوبا اذاک فتحقق العلۃ سواء عبرتم بھا او بلازمھا من تغیر الاوصاف و ثانیا ای فرق بین النی والمطبوخ سوی ان الطبخ یوجب کمال الامتزاج کما نص علیہ اھل الضابطۃ قاطبۃ، قال الامام الزیلعی التقییداما بکمال الامتزاج او غلبۃ الممتزج فکمال الامتزاج اما بالطبخ الخ وقال قبیل التیمم انہ بالطبخ کمل امتزاجہ وکمال الامتزاج یمنع اطلاق اسم المآء علیہ اھ وقد قال قبل حدوث الضابطۃ ایضا الامام الجلیل النسفی فی الکافی ان بطلان الاطلاق بکمال الامتزاج وھو بطبخ المآء بخلط الطاھر الخ ویأتی تمامہ ان شاء اللہ واذن نقول بموجبہ ولایکون دلیلا علی اعتبار مجرد تغیر الاوصاف کمالا یخفی فانکشف الامر وللہ الحمد۔

بالکل کچے پانی کے تغیر میں کوئی فرق نہیں ہے حالانکہ بالکل کچے پانی کے بارے میں اجماع ہوچکا ہے کہ اس میں اوصاف کے تغیر کا اعتبار نہیں ہے، تو اس سے یہ بات واضح ہو جاتی ہے کہ اوصاف کی تبدیلی و تغیر کا اعتبار صرف مکمل پکانے کے بعد ہوگا۔ یہ بات ہمارے لئے مضر نہیں ہے کیونکہ آپ کو معلوم ہے کہ مکمل پکانے کے بعد پانی مغلوب ہو جاتا ہے جس کی بنا پر وضو کے عدم جواز کی علّت پائی گئی ہے اس کو مغلوب کہہ کر تعبیر کر دیا اس کو مغلوبیت کے لازم یعنی اوصاف کی تبدیلی سے تعبیر کر دیا، ثانیاً: اس لئے کہ کچے اور پکے ہوئے پانی میں پکانے کی وجہ سے امتزاج کامل ہو جاتا ہے جس کو تمام اہل ضابطہ نے ذکر کیا ہے۔ امام زیلعی نے کہا کہ پانی کو کمال امتزاج یا اس میں ملی ہوئی چیز کے غلبہ سے مقید قرار دیا جاتا ہے اور کامل امتزاج پکانے سے حاصل ہوتا ہے الخ اور انہوں نے اس بات کو تیمم کی بحث سے تھوڑا پہلے بیان کیا اور کہا کہ پکانے سے امتزاج کامل ہوتا ہے، اور اس کامل امتزاج کی وجہ سے اس

کو مطلق پانی کہنا ممنوع ہو جاتا ہے اھ، نیز ضابطہ کے بیان سے قبل جلیل القدر امام نسفی نے کافی میں فرمایا کہ پانی کا اطلاق کمال امتزاج سے ختم ہو جاتا ہے اور کمال امتزاج پانی میں پاک چیز کو ملا کر پکانے سے حاصل ہوتا ہے الخ یہ تمام بیان آئندہ آئے گا ان شاء اللہ تعالیٰ

---

1 تبیین الحقائق کتاب الطھارۃ الامیر یہ مصر ۲۰/۱ 2 تبیین الحقائق قبیل باب التیمم الامیر یہ مصر ۳۶/۱ 3 کافی للنسفی

Fatawa Rizvia Volume 3

[Left Column - Arabic Text] The second evidence of generalities remains. I say its meaning is not what was mentioned, but it has another manifest opinion. That is because Imam Abu Abdullah al-Jurjani, when he considered the suitability for dyeing and engraving in making it restricted (water), which is only through the coloring of water, and perhaps it happens before thickening. Someone might imagine that he considered dominance by color, so Imam al-Burhan pointed out its invalidity and said: Rather, it is an offshoot of considering the dominance of parts, because their dominance, as you know, is of three types. This is the third type among them. Thus, all the evidences are gone. As for his illustration with saffron, we have spoken extensively about it now. Nothing remains but the general statement of Imam al-Sabejabi. I say: Firstly, we have room for choice in what has been established in its place (1) that the absolute in their speech is carried to (2) the restricted, and it is their habit to use general terms relying on the knowledge of the experts. They said: They do it so that those who have not sat with the masters (crowded their knees) may not claim their knowledge. All of this is mentioned in Radd al-Muhtar and others. Secondly: This is if restriction were not obligatory, so how then...

[Right Column - Urdu Text] There we will describe its causes, while this statement cannot serve as a proof based solely on the change of qualities, as is clear. Thus the matter has become clear, praise be to Allah. (T) (The criterion for the change of qualities in the dominance of a substance mixed in water, including both solid and liquid) The discussion of the second of the mentioned evidences remains. I say that its meaning is not what has been mentioned, but they have another opinion which is clear: that Imam Abu Abdullah al-Jurjani, in making water restricted, mentioned the ability for dyeing and designing upon the mixing of vitriol and gallnut, which can happen due to the water becoming colored. Since the color becomes prominent even before the water thickens, someone could have the misconception that Imam al-Jurjani had set only color as the criterion for dominance. Therefore, Imam Burhanuddin, while warning to invalidate this misconception, said that this statement of Imam al-Jurjani is a derivation based on the dominance of parts rather than the dominance of color, because dominance is of three types and this dominance of parts is the third type. Thus, the discussion of all evidences ended. (T) Regarding the example of saffron from Imam al-Sabejabi (the basis of the general application and the inclusion of both solid and liquid saffron), we have already had a comprehensive discussion which passed in number 122. Now only the discussion of

Imam al-Sabejabi's general application remains. I say, firstly, that there is wide scope in this matter, as it is a proven fact in its place that in the speech of the jurists, the absolute is carried to the restricted, and it is their habit that they mention the absolute in place of the restricted because they...

फतावा रिज़विया खंड 3

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] सामान्य साक्ष्यों का दूसरा साक्ष्य बाकी है। मैं कहता हूँ कि इसका अर्थ वह नहीं है जो कहा गया है, बल्कि इसका एक और प्रकट मत है। वह यह है कि जब इमाम अबू अब्दुल्ला अल-जुरजानी ने पानी को प्रतिबंधित (मुक़य्यद) करने में रंगाई और नक्काशी की उपयुक्तता को माना, जो केवल पानी के रंगीन होने से संभव है, और शायद यह गाढ़ा होने से पहले ही हो जाता है। ऐसे में किसी को यह वहम हो सकता था कि उन्होंने रंग की प्रधानता (ग़लबा) को माना है, अतः इमाम अल-बुरहान ने इसकी अमान्यता की ओर संकेत किया और कहा: बल्कि यह अंशों (अज्ज़ा) की प्रधानता मानने का एक परिणाम है, क्योंकि उनकी प्रधानता, जैसा कि आप जानते हैं, तीन प्रकार की होती है। यह उनमें से तीसरा प्रकार है। इस प्रकार सभी साक्ष्य समाप्त हो गए। जहाँ तक केसर के उदाहरण का प्रश्न है, हमने अब उस पर विस्तार से बात की है। अब केवल इमाम अल-सबीजाबी का सामान्य कथन शेष है। मैं कहता हूँ: सर्वप्रथम, हमारे पास उस स्थान (१) पर स्थापित नियम के अनुसार विकल्प है कि उनके शब्दों में 'मुतलक़' (निरपेक्ष) को 'मुक़य्यद' (प्रतिबंधित) पर लागू किया जाता है, और विशेषज्ञों के ज्ञान पर भरोसा करते हुए सामान्य बात कहना उनकी आदत है। उन्होंने कहा: वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि वे लोग जो उस्तादों की सोहबत में नहीं रहे, उनके ज्ञान का दावा न कर सकें। यह सब 'रद अल-मुह्तार' आदि में वर्णित है। द्वितीय: यह तब है जब प्रतिबंध अनिवार्य न हो, तो फिर कैसे...

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] वहाँ हम इसके कारणों को स्पष्ट करेंगे जबकि यह विवरण केवल गुणों के परिवर्तन के आधार पर प्रमाण नहीं बन सकेगा, जैसा कि स्पष्ट है। अतः मामला स्पष्ट हो गया, अल्लाह की स्तुति हो। (त) (पानी में मिलने वाली वस्तु की प्रधानता में गुणों के परिवर्तन का मापदंड ठोस और तरल दोनों को सम्मिलित करने पर) वर्णित साक्ष्यों में से दूसरे साक्ष्य की चर्चा शेष है। मैं कहता हूँ कि इसका वह अर्थ नहीं है जिसका उल्लेख किया गया है, बल्कि उनका दूसरा स्पष्ट मत है: वह यह कि इमाम अबू अब्दुल्ला अल-जुरजानी ने पानी को प्रतिबंधित बनाने में जाज और अफ्स (माजूफल) के मिलने पर रंगाई और नक्काशी की क्षमता का उल्लेख किया जो पानी के रंगीन होने के कारण हो सकती है, जबकि पानी के गाढ़ा होने से पहले भी उस पर रंग उभर आता है। इससे किसी को यह भ्रम हो सकता था कि इमाम जुरजानी ने प्रधानता के लिए केवल रंग को मापदंड माना है, इसलिए इमाम बुरहानुद्दीन ने इस भ्रम को दूर करने के लिए सचेत करते हुए फरमाया कि इमाम जुरजानी का यह कथन रंग की प्रधानता के बजाय अंशों की प्रधानता पर आधारित है, क्योंकि प्रधानता तीन प्रकार

की है और यह अंशों की प्रधानता तीसरा प्रकार है। इस प्रकार सभी साक्ष्यों की चर्चा समाप्त हुई। (त) इमाम अस्बीजाबी (का सामान्य उल्लेख और केसर, जो ठोस और तरल दोनों के समावेश का आधार है) में से केसर के उदाहरण के संबंध में हम विस्तृत चर्चा कर चुके हैं जो संख्या १२२ में बीत चुकी है। अब केवल इमाम अस्बीजाबी के सामान्य उल्लेख की चर्चा शेष है। मैं कहता हूँ, प्रथम यह कि इस विषय में विस्तृत गुंजाइश है जैसा कि अपने स्थान पर प्रमाणित है कि फ़ुक़हा के कथन में 'मुतलक़' को 'मुक़य्यद' माना जाता है और उनकी आदत है कि वे मुक़य्यद के स्थान पर मुतलक़ का उल्लेख कर देते हैं क्योंकि उन्हें...

पृष्ठ 160/756

[بایاں کالم - عربی عبارت] بقی الشاهد الثاني من شواهد العموم اقول ليس مفهومه ما ذكر بل له مذهب آخر غير مستتر وذلك ان الامام ابا عبد الله الجرجانی لما اعتبر في تقيده صلوحه الصبغ والنقش وما هو الا بتلون الماء و ربما يحصل قبل الثخن كان لمتوهم ان يتوهم انه اعتبر الغلبة باللون فنبه الامام البرهان على بطلانه وقال بل هو تفريع على اعتبار غلبة الاجزاء لان غلبتها كما علمت على ثلثة انحاء هذا هو النحو الثالث منها فذهبت الشواهد جميعاً۔ اما تمثيله بالزعفران فقد اشبعنا الكلام عليه في الآن لم يبق الا اطلاق الامام السبيجابي اقول اولا لنا مندوحة فيما تقرر في مقره (۱) ان المطلق في كلامهم يحمل على (۲) المقيد وان من عادتهم الاطلاق تعويلا على معرفة الحذاق قالوا ويفعلونه كيلا يدعي علمهم من لم يزاحمهم بالركب كل ذلك مذكور في رد المحتار وغيره۔ وثانياً: هذا لولم يجب التقييد فكيف و

[دایاں کالم - اردو عبارت] وہاں ہم اس کے موجبات کو بیان کریں گے جبکہ یہ بیان صرف اوصاف کے تغیر کے اعتبار پر دلیل نہ بن سکے گا جیسا کہ واضح ہے۔ پس معاملہ واضح ہو گیا وللہ الحمد۔ (ت) (پانی میں ملنے والی چیز کے غلبہ میں اوصاف کی تبدیلی کا معیار جامد اور مائع) دونوں کو شامل ہونے پر مذکور شواہد میں سے دوسرے شاہد کی بحث باقی ہے۔ میں کہتا ہوں کہ اس کا وہ مفہوم نہیں جس کو ذکر کیا گیا ہے، بلکہ ان کا دوسرا مذہب ہے جو واضح ہے وہ یہ کہ امام ابوعبداللہ الجرجانی نے پانی کو مقید بنانے میں زاج اور عفص کی ملنے پر رنگ ریزی اور نقش و نگار کی صلاحیت کا ذکر کیا جو کہ پانی کے رنگدار ہونے کی وجہ سے ہو سکتی ہے جبکہ پانی کے گاڑھا ہونے سے قبل بھی اس پر رنگ نمایاں ہو جاتا ہے تو اس سے کسی کو یہ وہم ہو سکتا تھا کہ امام جرجانی نے غلبہ کیلئے صرف رنگ کو معیار قرار دیا ہے اس لئے امام برہان الدین نے اس وہم کو باطل قرار دینے کیلئے تنبیہ کرتے ہوئے امام برہان نے فرمایا کہ امام جرجانی کا یہ قول

رنگ کے غلبہ کی بجائے اجزاء کے غلبہ پر تفریح ہے کیونکہ غلبہ تین قسم پر ہے اور یہ اجزاء کا غلبہ تیسری قسم ہے۔ یوں تمام شواہد کی بحث ختم ہوئی۔ (ت) امام اسپیجابی (کے اطلاق اور زعفران جو کہ جامد اور مائع دونوں کے شمول کی بنیاد ہے) میں سے زعفران کی مثال کے متعلق ہم سیر حاصل بحث کر چکے ہیں جو نمبر ۱۲۲ میں گزر چکی ہے اب صرف امام اسپیجابی کے اطلاق کی بحث باقی ہے۔ میں کہتا ہوں، اولاً، یہ کہ اس بارے میں وسیع گنجائش ہے جیسا کہ اپنے مقام میں ثابت شدہ بات ہے کہ فقہاء کے کلام میں مطلق کو مقید پر محمول کیا جاتا ہے اور ان کی عادت ہے کہ وہ مقید کی جگہ مطلق کو ذکر کر دیتے ہیں کیونکہ ان کو

Fatawa Razvia, Volume 3 [Heading]: Certainly, it has become obligatory by the testimony of the two consensuses.

[Text Section 1]: Relying on the knowledge and experience of experts, they will understand the absolute as restricted. Experts of the art have said that the jurists do this so that no unqualified person may claim equality in their knowledge. All this is mentioned in Radd al-Muhtar, etc. Secondly, it is necessary to restrict the statement of Imam Isbijabi because there is a consensus of the Ummah on the permissibility of wudu (ablution) with floodwater and a consensus of the Hanafi scholars on the permissibility of wudu with Nabidh-e-Tamr (date infusion).

[Arabic Passage 1]: Thirdly, you may say that for solids as well, the preponderance of qualities is considered if it leads to the preponderance of parts in one of the three senses, as you have known regarding Nabidh, Vitriol, Gallnut, Safflower, Saffron, and many of their peers. From this perspective, the general application is correct, even if the type of change considered in solids is different from that considered in liquids. In fact, one might suspect an agreement between the two manners from the previously mentioned text of Al-Bada'i, where the matter in liquids is tied to the loss of the name, and in its detail, the preponderance of color and taste is mentioned. And the loss of the name is what is considered in solids too; rather, the entire chapter revolves around it as has been mentioned repeatedly. This would result in no disagreement between the two Imams (the companions of Abu Hanifa) except in expression.

[Urdu Commentary 1]: These two consensuses have made the restriction of his statement obligatory (that the consideration of the change of qualities will only be upon the mixing of a liquid, not a solid). Thirdly, you can say about solid things that the preponderance of qualities is considered when this solid thing becomes the cause of preponderance in water according to any of the three meanings of parts, as you have already known about Nabidh, Vitriol, Gallnut, Safflower, Saffron, etc. In this regard, applying the preponderance of qualities to both solids and liquids can be correct, even if the change in solids is different from the change in liquids. Rather, from the mentioned text of Al-Bada'i in number 304, there is a suspicion of agreement in the change of both. There, they have designated the standard of change in flowing things (liquids) as the change of the name of the water, in the detail of which they explained the preponderance of color and taste. Whereas this same change of name is the standard of change in solid things too; rather, the change in it depends on the change of name, as has passed repeatedly. From this,

the result is drawn that between the Sahabain (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) there is only a difference of expression.

[Arabic Passage 2]: I say: This would have pleased me because what is narrated from the text of Muhammad is only regarding the issue of boiled Ushnan (saltwort) and Rayhan (basil), where there is a complete mixture that necessitates preponderance by parts, but...

[Urdu Commentary 2]: (T) I say: I like this point because the text narrated from Imam Muhammad pertains to water boiled with Ushnan and Rayhan, while in this issue, due to boiling, such a complete mixture is obtained...

फ़तावा रज़विया, खंड 3 [शीर्षक]: निश्चित रूप से, दो सहमतियों (इज्मा) की गवाही से यह अनिवार्य हो गया है।

[पाठ खंड 1]: विशेषज्ञों के ज्ञान और अनुभव पर भरोसा करते हुए, वे पूर्ण (मुतलक़) को प्रतिबंधित (मुक़य्यद) समझेंगे। कला के विशेषज्ञों ने कहा है कि न्यायविदों (फ़ुक़हा) ने ऐसा इसलिए किया है ताकि उनके ज्ञान में कोई अयोग्य व्यक्ति बराबरी का दावा न कर सके। यह सब रद अल-मुह्तार आदि में वर्णित है। दूसरा, इमाम इस्बीजाबी के कथन को प्रतिबंधित करना आवश्यक है क्योंकि बाढ़ के पानी से वज़ू की अनुमति पर उम्मत की सहमति है और नबीज़-ए-तमर से वज़ू की अनुमति पर हनफ़ी विद्वानों की सहमति है।

[अरबी गद्यांश 1]: तीसरा, आप कह सकते हैं कि ठोस पदार्थों के लिए भी गुणों की प्रधानता (ग़लबा-ए-औसाफ़) का विचार किया जाता है यदि वह तीन अर्थों में से किसी एक में भागों की प्रधानता (ग़लबा-ए-अजज़ा) की ओर ले जाए, जैसा कि आपने नबीज़, ज़ाज (फिटकरी), अफ़्स (माजूफल), अस्फ़र (कुसुम), ज़ाफ़रान और उनके कई साथियों के बारे में जाना है। इस दृष्टिकोण से, सामान्य अनुप्रयोग सही है, भले ही ठोस पदार्थों में माना जाने वाला परिवर्तन तरल पदार्थों में माने जाने वाले परिवर्तन से भिन्न हो। वास्तव में, अल-बदाए के पहले बताए गए पाठ से दोनों तरीकों के बीच सहमति का संदेह हो सकता है, जहाँ तरल पदार्थों में मामले को नाम के हटने से जोड़ा गया है, और इसके विस्तार में रंग और स्वाद की प्रधानता का उल्लेख है। और नाम का हटना ठोस पदार्थों में भी माना जाता है; बल्कि पूरा अध्याय इसी के इर्द-गिर्द घूमता है जैसा कि बार-बार बताया गया है। इसका परिणाम यह होगा कि दोनों इमामों (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के बीच अभिव्यक्ति (ताबीर) के अलावा कोई मतभेद नहीं है।

[उर्दू टिप्पणी 1]: हनफ़ी विद्वानों की इन दो सहमतियों ने उनके कथन के प्रतिबंध को अनिवार्य बना दिया है (कि गुणों के परिवर्तन का विचार केवल तरल पदार्थ के मिलने पर होगा, ठोस में नहीं)। तीसरा, आप ठोस वस्तु के बारे में गुणों की प्रधानता का विचार कह सकते हैं जब यह ठोस वस्तु पानी में भागों के तीनों अर्थों में से किसी भी अर्थ के अनुसार प्रधानता का कारण बन जाए, जैसा कि नबीज़, ज़ाज, अफ़्स, अस्फ़र और ज़ाफ़रान आदि के बारे में आप जान चुके हैं। इस संबंध में, ठोस और तरल दोनों में गुणों की प्रधानता का अनुप्रयोग सही हो सकता है, भले ही ठोस में परिवर्तन तरल में परिवर्तन से भिन्न हो। बल्कि, नंबर 304 में बदाए के उक्त उद्धरण से दोनों के परिवर्तन में सहमति का अनुमान होता है। वहां उन्होंने बहने वाली चीज़ों (तरल पदार्थों) में परिवर्तन का मानक पानी के नाम के बदलने

को माना है, जिसके विवरण में उन्होंने रंग और स्वाद की प्रधानता का वर्णन किया है। जबकि यही नाम का बदलना ठोस चीज़ों में भी परिवर्तन का मानक है; बल्कि इसमें परिवर्तन नाम के बदलने पर निर्भर है जैसा कि बार-बार बीत चुका है। इससे यह परिणाम निकलता है कि साहबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के बीच केवल अभिव्यक्ति का अंतर है।

[अरबी गद्यांश 2]: मैं कहता हूँ: यह मुझे पसंद आता क्योंकि इमाम मुहम्मद के पाठ से जो कुछ भी उद्धृत किया गया है वह केवल उशनान और रेहान (तुलसी) के उबले हुए पानी के मुद्दे के बारे में है, जिसमें एक पूर्ण मिश्रण होता है जो भागों द्वारा प्रधानता को आवश्यक बनाता है, लेकिन...

[उर्दू टिप्पणी 2]: (त) मैं कहता हूँ: मुझे यह बात पसंद है क्योंकि इमाम मुहम्मद से जो पाठ उद्धृत किया गया है वह उशनान और रेहान के उबले हुए पानी से संबंधित है, जबकि इस मुद्दे में उबालने के कारण ऐसा पूर्ण मिश्रण प्राप्त होता है...

पृष्ठ 161 का 756

فتاوٰی رضویہ ، جلد سوم قد وجب بشهادة الاجماعين

ماہرین کے علم و تجربہ پر اعتماد ہے کہ (وہ مطلق کو مقید سمجھیں گے) ماہرین فن نے کہا ہے کہ فقہاء کرام یہ اس لئے کرتے ہیں تاکہ ان کے علم میں کوئی نااہل شخص برابری کا دعوٰی نہ کرے، یہ سب کچھ ردالمحتار وغیرہ میں مذکور ہے، ثانیا، امام اسبیجابی کے قول کو مقید کرنا ضروری ہے (کیونکہ سیلاب کے پانی سے وضو کے جواز پر اجماع امت اور نبیز تمر سے وضو کے جواز پر علماء احناف) کا اجماع، یہ دونوں اجماع اس کے قول کی تقیید کو واجب کر چکے ہیں (کہ اوصاف کے تغیر کا اعتبار صرف مائع چیز کے ملنے پر ہوگا جامد میں نہیں)

وثالثًا لك ان تقول الجامد ایضاً تعتبر فیه غلبة الاوصاف اذا ادت الی غلبة الاجزاء بأحد المعانی الثلثة کما عرفت في النبیذ والزاج والعفص والعصفر والزعفران وکثیر من نظائرها فمن هذا الوجه یصح الاطلاق وان کان نحو التغیر المعتبر في الجامد مغایر اللمعتبر عنده فی المائع بل قد یظن اتفاق النحوین من کلام البدائع المار فی . حیث ناط الامر فی المائعات بزوال الاسم وذکر فی تفصیله غلبة اللون والطعم وزوال الاسم هو المعتبر في الجامدات ایضاً بل علیه مدار الباب کمامر مرار اوکان ینتج هذا ان لا خلف بین الامامین الصاحبین الا فی التعبیر ۔

ثالثا، آپ جامد چیز کے بارے میں اوصاف کے غلبہ کا اعتبار کہہ سکتے ہیں جبکہ یہ جامد چیز پانی میں اجزاء کے تینوں معانی میں سے کسی معنی کے لحاظ سے غلبہ کا سبب بن جائے، جیسا کہ نبیز، زاج، عفص، عصفر اور زعفران وغیرہ کے بارے میں آپ معلوم کر چکے ہیں، اس لحاظ سے جامد اور مائع دونوں میں اوصاف کے غلبہ کا اطلاق درست ہو سکتا ہے اگر چہ جامد میں تغیر مائع میں تغیر سے مختلف ہے، بلکہ نمبر ۳۰۴ میں بدائع کی مذکور عبارت سے دونوں کے تغیر میں اتفاق کا گمان ہوتا ہے، وہاں انہوں نے بہنے والی چیزوں (مائعات) میں تغیر کا معیار پانی

کے نام کی تبدیلی کو قرار دیا ہے جس کی تفصیل میں انہوں نے رنگ اور ذائقہ کے غلبہ کو بیان کیا ہے حالانکہ یہی نام کی تبدیلی جامد چیزوں میں بھی تغیر کا معیار ہے بلکہ اس میں تغیر کا دارومدار نام کی تبدیلی ہے جیسا کہ بار بار گزر چکا ہے اور اس سے یہ نتیجہ اخذ ہوتا ہے کہ صاحبین (امام ابویوسف و امام محمد) کے درمیان صرف تعبیر کا اختلاف ہے۔

اقول: وقد کان یعجبنی ھذا لان المنقول عن نص محمد انما ھی مسئلة مطبوخ الاشنان والریحان وفیھا کمال الامتزاج الموجب للغلبة بالاجزاء لکن

(ت) میں کہتا ہوں مجھے یہ بات پسند ہے کیونکہ امام محمد سے جو نص منقول ہے وہ اشنان اور ریحان کے پکائے ہوئے پانی سے متعلق ہے جبکہ اس مسئلہ میں پکانے کی وجہ سے ایسا کامل امتزاج حاصل

Fatawa Rizvia - Volume 3

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] ...becomes which causes predominance based on components. However, the apparent meaning of the expressions of the jurists (Fuqaha) prevents me from calling the disagreement between the two companions (Sahibayn) as merely a verbal disagreement. Although the researcher (Muhaqqiq) in Fath al-Qadir has expressed it thus, saying that some have narrated a disagreement between the Sahibayn in this, that Imam Muhammad considers color and Imam Abu Yusuf considers the components. But in my view, the research is that what is mentioned in al-Bada'i regarding the loss of the name (Zawal-e-Ism) in this context is not the 'loss of name' in the sense considered in non-liquids, as its explanation will come later, God willing. In short, praise be to Allah, the complete research is what the Imam, King of Scholars (Malik al-Ulama), mentioned in al-Bada'i, that Imam Muhammad's disagreement is only regarding liquids, and that in it, he considers not just color but also taste, and he believes in an order between them: first color is considered and then taste. If these two are not found, then they transfer the ruling of predominance to the components and do not consider the smell. This is the appropriate refinement. Praise be to Allah for the succession of His blessings, and the best of His prayers and peace be upon the Master of His Prophets, and his family, companions, children, and loved ones, Amen. Keep this in mind. In 'al-Jawharah', after validating the view of Imam Abu Yusuf, Allama al-Haddadi expressed the opinion and said that Imam Muhammad declared wudu (ablution) impermissible upon the change of the three qualities, and if...

[Left Column - Arabic Original Text] Their expressions converged on establishing a disagreement between them, which prevented me from that, even though the researcher in 'al-Fath' expressed it by saying: Some have narrated a disagreement between the two companions that Muhammad considers color and Abu Yusuf considers components. But the research in my view is that the mentioned loss of the name here in 'al-Bada'i' is not in the sense considered in non-liquids, as its explanation will come to you, God willing. In summary, the throne of research has settled—praise be to God—on all that Imam Malik al-Ulama stated in 'al-Bada'i' that Muhammad's disagreement is only regarding liquids, and that it is not limited to color, but taste is also considered, and he orders them, preferring color then taste, and he transfers the ruling after them to the components and does not consider the smell. Thus should the refinement be. Praise be to Allah for the succession of His blessings, and the best of His prayers and peace be upon the Master of His Prophets,

and his family, companions, his son, and his loved ones, Amen. This, and Allama al-Haddadi claimed in 'al-Jawharah' after correcting Abu Yusuf's statement: Muhammad considered the qualities, that other than the three is not permissible, and that more than one permitted, and that other than two is not permissible. He said: And reconciliation between them is that if it is a liquid of the genus of water, like squash water, then consideration is for the components as Abu Yusuf said, and if its genus is other than the genus of water, like milk, then consideration is for the qualities as Muhammad said. He said: And the Sheikh means...

[Footnote] 1- Fath al-Qadir, Chapter: Water with which Wudu is permissible, Nuria Rizvia, Sukkur, 1/25. Page 162 of 756

फतावा रिज़विया - जिल्द 3

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/टीका] ...हो जाता है जो घटकों के आधार पर प्रबलता का कारण बनता है। हालाँकि, फ़ुकहा (न्यायशास्त्रियों) के कथनों का स्पष्ट अर्थ मुझे इस बात से रोकता है कि मैं साहिबैन (दो साथियों) के बीच के मतभेद को केवल शाब्दिक मतभेद कहूँ। यद्यपि फतह अल-कदीर में मुहक़्क़िक़ (शोधकर्ता) साहब ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया है, यह कहते हुए कि कुछ लोगों ने इसमें साहिबैन का मतभेद उल्लेख किया है कि इमाम मुहम्मद रंग का और इमाम अबू यूसुफ घटकों (हिस्सों) का ऐतबार करते हैं। लेकिन मेरे अनुसार शोध यह है कि 'अल-बदाई' में इस स्थान पर पानी से 'नाम के मिटने' (ज़वाल-ए-इस्म) का जो ज़िक्र किया गया है, वह उस अर्थ में नाम का मिटना नहीं है जो गैर-तरल पदार्थों में मान्य है, जैसा कि इसका विवरण इंशा अल्लाह आगे आएगा। संक्षेप में, अल्हम्दुलिल्लाह, पूर्ण शोध वह है जिसे इमाम मलिक अल-उलेमा ने 'बदाई' में ज़िक्र किया है कि इमाम मुहम्मद का मतभेद केवल तरल पदार्थों के बारे में है और यह कि वह इसमें केवल रंग ही नहीं बल्कि स्वाद का भी ऐतबार करते हैं और इन दोनों में क्रम के कायल हैं: पहले रंग का और फिर उसके बाद स्वाद का ऐतबार करते हैं। और अगर ये दोनों न पाए जाएँ तो फिर वे प्रबलता (गलबा) के हुक्म को घटकों की ओर स्थानांतरित करते हैं और गंध (बू) का ऐतबार नहीं करते। यही शोध (तनक़ीह) उपयुक्त है। अल्लाह की अनगिनत नेमतों पर उसकी प्रशंसा है, और उसके सर्वश्रेष्ठ दरूद और सलाम नबियों के सरदार पर और उनकी आल (संतान), असहाब (साथियों), बच्चों और चहेतों पर हों, आमीन। इसे सुरक्षित रखें। 'अल-जौहरा' में इमाम अबू यूसुफ के कथन को सही करार देने के बाद अल्लामा हद्दादी ने विचार व्यक्त किया और कहा कि इमाम मुहम्मद ने तीनों गुणों के परिवर्तन पर वज़ू को नाजायज़ करार दिया, और यदि...

[बायां कॉलम - अरबी मूल पाठ] उनका वर्णन उनके बीच मतभेद स्थापित करने पर सहमत है, जिसने मुझे इससे रोका, हालांकि मुहक़्क़िक़ ने 'अल-फतह' में इसे यह कहकर व्यक्त किया: उनमें से कुछ ने साहिबैन के बीच मतभेद को इस प्रकार उल्लेख किया है कि मुहम्मद रंग को महत्व देते हैं और अबू यूसुफ घटकों को। लेकिन मेरे निकट शोध यह है कि 'अल-बदाई' में यहाँ उल्लिखित 'नाम का मिटना' उस अर्थ में नहीं है जैसा गैर-तरल पदार्थों में माना जाता है, जैसा कि इसका विवरण इंशा अल्लाह आपके पास आएगा। संक्षेप में, शोध का सिंहासन स्थापित हो चुका है—अल्लाह की प्रशंसा हो—उन सभी बातों पर जो इमाम मलिक अल-उलेमा ने 'अल-बदाई' में स्पष्ट की हैं कि मुहम्मद का मतभेद केवल तरल पदार्थों में है, और यह केवल रंग तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वाद को भी महत्व

दिया जाता है, और वह उनके बीच क्रम रखते हैं, रंग को फिर स्वाद को प्राथमिकता देते हैं, और वह उनके बाद हुक्म को घटकों की ओर स्थानांतरित करते हैं और गंध को महत्व नहीं देते। शोध इसी प्रकार होना चाहिए। अल्लाह की निरंतर नेमतों पर उसकी प्रशंसा है, और उसका सर्वश्रेष्ठ दरूद और सलाम नबियों के सरदार पर और उनके आल, असहाब, उनके पुत्र और उनके प्रियजनों पर हों, आमीन। यह, और अल्लामा हद्दादी ने 'अल-जौहरा' में अबू यूसुफ के कथन की पुष्टि के बाद दावा किया: मुहम्मद ने गुणों को महत्व दिया, कि तीन के अलावा जायज़ नहीं है, और एक से अधिक ने अनुमति दी, और दो के अलावा जायज़ नहीं है। उन्होंने कहा: और उनके बीच सामंजस्य यह है कि यदि वह पानी की श्रेणी का तरल है, जैसे कद्दू का पानी, तो महत्व घटकों को दिया जाएगा जैसा कि अबू यूसुफ ने कहा, और यदि उसकी श्रेणी पानी के अलावा है, जैसे दूध, तो गुणों को महत्व दिया जाएगा जैसा कि मुहम्मद ने कहा। उन्होंने कहा: और शेख का अर्थ है...

[पाद लेख] 1- फतह अल-कदीर, बाब अल-मा अल्लज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू, नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 1/25. पृष्ठ 162 of 756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

[دایاں کالم - اردو شرح] ہو جاتا ہے جو اجزاء کے اعتبار سے غلبہ کا موجب بنتا ہے لیکن فقہاء کرام کی عبارات کا ظاہر مفہوم میرے لئے مانع ہے کہ میں صاحبین کے اختلاف کو صرف تعبیری اختلاف کہوں اگر چہ اس کو فتح القدیر میں محقق صاحب نے تعبیر کر دیا یوں کہہ کر، کہ بعض نے اس میں صاحبین کا اختلاف نقل کیا ہے کہ امام محمد رنگ کا اور امام ابو یوسف اجزاء کا اعتبار کرتے ہیں اھ لیکن میرے نزدیک تحقیق یہ ہے کہ بدائع میں اس مقام پر پانی سے زوالِ اسم کا جو ذکر کیا ہے وہ اس معنی میں زوالِ اسم نہیں جس معنی میں غیرِ مائع میں معتبر ہے جس کا آئندہ بیان آئے گا ان شاء اللہ تعالیٰ خلاصہ کلام یہ ہے کہ الحمدللہ ، مکمل تحقیق وہ ہے جس کو امام ملک العلماء نے بدائع میں ذکر کیا ہے کہ امام محمد کا اختلاف صرف مائع چیز کے بارے میں ہے اور یہ کہ وہ اس میں صرف رنگ نہیں بلکہ ذائقہ کا بھی اعتبار کرتے ہیں اور ان دونوں میں ترتیب کے قائل ہیں پہلے رنگ کا اور پھر اس کے بعد ذائقہ کا اعتبار کرتے ہیں اور اگر یہ دونوں نہ پائے جائیں تو پھر وہ غلبہ میں اجزاء کی طرف حکم کو منتقل کرتے ہیں اور بو کا اعتبار نہیں کرتے، یہی تنقیح مناسب ہے، انعامات کے ہجوم پر اللہ تعالیٰ کی حمد ہے اور صلوۃ وسلام تمام انبیاء کے سردار پر اور ان کی آل واصحاب پر، آمین۔ اس کو محفوظ کر، جوہرہ میں امام ابو یوسف کے قول کو صحیح قرار دینے کے بعد علامہ حدادی نے خیال ظاہر کیا اور کہا کہ امام محمد نے تینوں اوصاف کی تبدیلی پر وضو کو ناجائز قرار دیا، اور اگر

[بایاں کالم - عربی متن] تعاور عبارتهم على نصب الخلاف بينهما منعنى عن ذلك وان عبره المحقق فى الفتح بقوله نقل بعضهم فيه خلافا بين الصاحبين ان محمدا يعتبره باللون واما ابو يوسف بالاجزاء اهـ لكن التحقيق عندى ان زوال الاسم المذكور ههنا فى البدائع ليس بالمعنى المعتبر فى غير المائع كما

سيأتيك بيانه ان شاء الله تعالى وبالجملة قد استقر عرش التحقيق ولله الحمد على كل مانص عليه الامام ملك العلماء فى البدائع ان خلاف محمد انما هو فى المائع وانه لا يقتصر على اللون بل يعتبر الطعم وايضا وانه يرتب بينهما فيقدم اللون ثم الطعم وانه ينقل الحكم بعدهما الى الاجزاء ولا يعتبر الريح هكذا ينبغى التنقيح والحمد لله على تواتر الآئه وافضل صلاته وسلامه على سيد انبيائه وآله وصحبه وابنه واحبائه* آمين هذا وزعم العلامة الحدادى فى الجوهرة بعد ما صحح قول ابى يوسف مانصه ومحمد اعتبر الاوصاف ان غير الثلاثة لا يجوز وان غير واحد اجاز وان غير اثنين لا يجوز قال والتوفيق بينهما ان كان مائعا جنسه الماء كماء الدباء فالعبرة للاجزاء كما قال ابويوسف وان كان جنسه غير جنس الماء كاللبن فالعبرة للاوصاف كما قال محمد قال والشيخ يعنى

[حاشيہ] 1- فتح القدير باب الماء الذى يجوز به الوضو نوريہ رضويہ سكهر ٢٥/١ Page 162 of 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3.

[Left Column - Arabic Context] Imam al-Quduri chose the view of Muhammad (al-Shaybani) where he said: "...so if one of its attributes changes..." End quote. I say: (1) This is not a reconciliation (tawfiq) but rather a conflation (talfiq). Furthermore, the texts are abundant from Muhammad that he considers color, then taste, because he does not consider only a single attribute. (2) Considering gourd water to be of the same genus as water is neither relied upon nor acceptable. (3) Whoever looks at the preceding branch issues will know that it does not agree with both views, nor with what the texts have brought according to both schools. Then (4) it is against the consensus regarding gushing water (floodwater); they agreed that as long as it remains thin, ablution with it is permissible even though it may change two attributes, or even three. This is nothing but the mixing of what is not of the genus of water, like soil, sand, and scum. Similarly, (5) their consensus on the permissibility of ablution with water in which dates have been soaked, even if it becomes sweet. There is no doubt that the change in color precedes it as long as it does not become nabidh (fermented drink), so he did not consider attributes to be sufficient, rather parts in the third sense. And Allah Almighty knows best.

[Right Column - Urdu Text] It was said that if one attribute changes and alters, then ablution is permissible, but it is impermissible upon the change of two attributes. Imam al-Haddadi said that reconciliation between the statements of Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad would be thus: if the substance mixed in water is a liquid of the same genus as water, like gourd juice, then the consideration for dominance would be based on parts, as Imam Abu Yusuf said. If the liquid mixed in water is not of the same genus as water, like milk, then the consideration for dominance would be based on attributes, as is the position of Imam Muhammad. On this, Allama al-Haddadi said: Shaykh al-Quduri, preferring Imam Muhammad's statement, said "...he changes one attribute." End (T). I say: This is not reconciliation, but rather a new point, because in all texts it has been clarified that Imam Muhammad considers the change of color first and then taste; he does not consider the change of only one attribute. Also, calling gourd juice a genus of water is unreasonable and unacceptable. Whoever knows the previous branch issues knows that there is no agreement between the statements of Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad. Furthermore, this statement of Allama al-Haddadi is also against the consensus regarding floodwater, that ablution with it is permissible as long as its thinness remains, although two or even all three attributes change in it, even though this

change is not due to a genus of water but due to mixing with soil, sand, and straws. Similarly, his statement regarding putting dates into sweet water is also against the consensus in which...

[Footnote] 1. Al-Jawhara al-Nayyira, Book of Purification, Imdadiya Press Multan, 1/14. Page 163 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3.

[बायां स्तंभ - अरबी संदर्भ] इमाम अल-कुदूरी ने इमाम मुहम्मद (अल-शयबानी) का मत चुना जहाँ उन्होंने कहा: "...तो यदि इसके गुणों में से एक बदल जाए..." उद्धरण समाप्त। मैं कहता हूँ: (1) यह सामंजस्य (तौफीक) नहीं बल्कि मिश्रण (तल्फीक) है। इसके अलावा, इमाम मुहम्मद से संबंधित ग्रंथ प्रचुर मात्रा में हैं कि वे रंग, फिर स्वाद को महत्व देते हैं, क्योंकि वे केवल एक गुण के आधार पर निर्णय नहीं लेते। (2) कद्दू के पानी को पानी की ही श्रेणी का मानना न तो विश्वसनीय है और न ही स्वीकार्य। (3) जो कोई पिछली शाखाओं के मुद्दों को देखेगा, वह जान जाएगा कि यह दोनों मतों से सहमत नहीं है, और न ही उन ग्रंथों से जो दोनों पंथों के लिए आए हैं। फिर (4) यह बाढ़ के पानी के संबंध में आम सहमति (इज्मा) के विरुद्ध है; वे इस बात पर सहमत हुए कि जब तक यह पतला रहे, इससे वज़ू करना जायज़ है, भले ही इसके दो गुण बदल जाएँ, बल्कि तीनों। यह कुछ और नहीं बल्कि पानी की श्रेणी से बाहर की चीजों, जैसे मिट्टी, रेत और कचरे का मिलना है। इसी तरह (5) खजूर भिगोए हुए पानी से वज़ू की स्वीकार्यता पर उनकी आम सहमति है, भले ही वह मीठा हो जाए। इसमें कोई संदेह नहीं है कि रंग में बदलाव तब तक पहले आता है जब तक वह नबीज़ न बन जाए, इसलिए उन्होंने गुणों को पर्याप्त नहीं माना, बल्कि तीसरे अर्थ में भागों (अजज़ा) को माना। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

[दायां स्तंभ - उर्दू पाठ] एक गुण बदल और परिवर्तित हो जाए तो वज़ू को जायज़ और दो गुणों की तब्दीली पर नाजायज़ कहा है, और इमाम हद्दादी ने कहा कि इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद के कथनों में मेल इस प्रकार होगा: यदि पानी में मिलने वाली चीज़ तरल हो जो पानी की ही श्रेणी की हो जैसे कद्दू का रस, तो प्रभुत्व के लिए अंशों (अजज़ा) का विचार होगा जैसा कि इमाम अबू यूसुफ ने कहा है। यदि पानी में मिलने वाला तरल ऐसा हो जो पानी की श्रेणी का न हो जैसे दूध, तो प्रभुत्व के लिए गुणों (औसाफ) का विचार होगा, जैसा कि इमाम मुहम्मद का मत है। इस पर अल्लामा हद्दादी ने कहा: शेख कुदूरी ने इमाम मुहम्मद के कथन को प्राथमिकता देते हुए कहा "...वह एक गुण को बदल दे।" अंत। मैं कहता हूँ: यह तो मेल नहीं हुआ बल्कि एक नई बात हुई, क्योंकि सभी ग्रंथों में यह बात स्पष्ट की गई है कि इमाम मुहम्मद पहले रंग और फिर स्वाद की तब्दीली का विचार करते हैं न कि वे एक गुण की तब्दीली का विचार नहीं करते। साथ ही, कद्दू के रस को पानी की श्रेणी का बताना तर्कहीन और अस्वीकार्य है। जो पिछले शाखा मुद्दों को जानता है, उसे पता है कि इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद के कथनों में कोई मेल नहीं है। इसके अलावा, अल्लामा हद्दादी का यह बयान

बाढ़ के पानी के बारे में आम सहमति के भी विरुद्ध है कि इससे वज़ू जायज़ है जब तक पतलापन बाकी रहे, हालाँकि इसमें दो या तीनों गुण बदल जाते हैं, इसके बावजूद कि यह तब्दीली पानी की श्रेणी की वजह से नहीं बल्कि मिट्टी, रेत और तिनके मिलने की वजह से होती है। इसी तरह, उनका यह बयान कि खजूर डालने से मीठे पानी में उस आम सहमति के भी खिलाफ है जिसमें...

[फुटनोट] 1. अल-जौहरा अल-नय्यिरा, किताबुल तहारत, इम्दादिया प्रेस मुल्तान, 1/14। पृष्ठ 163 का 756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

[بایاں کالم - عربی عبارت] الامام القدوری اختار قول محمد حیث قال فغیر احد اوصافه اھ اقول: (۱) هذا لیس بتوفیق بل تلفیق ثم النصوص متظافرة عن محمد انه یعتبر اللون ثم الطعم لانه لا یعتبر الوصف الواحد (۲) وکون ماء الدباء من جنس الماء غیر معول ولا مقبول (۳) ومن نظر الفروع المارة علم انه لا یوافق القولین وما اتت به النصوص علی المذهبین ثم (۴) هو خلاف الاجماع فی ماء المدفق اطبقو انه مادام علی رقته یجوز الوضو به مع انه ربما یغیر وصفین بل الثلاث وما هو الا الاختلاط مالیس من جنس الماء من تراب و رمل وغثاء وکذا (۵) اجماعهم علی جواز الوضو بما نقع فیه تمر وان حلا ولا شك ان تغیر اللون یسبقه مالم یصر نبیذا فلم یعتبر وافیه الاوصاف بل الاجزاء بالمعنی الثالث واللہ تعالی اعلم

[دایاں کالم - اردو عبارت] ایک وصف تبدیل اور متغیر ہو جائے تو وضو کو جائز اور دوا وصاف کی تبدیلی پر ناجائز کہا ہے، اور امام حدادی نے کہا کہ امام ابویوسف اور امام محمد کے اقوال میں موافقت یوں ہوگی، اگر پانی میں ملنے والی چیز مائع ہو جو پانی کی ہم جنس ہو جیسے کدو کا جوس ، تو اس صورت میں غلبہ کیلئے اجزاء کا اعتبار ہوگا جیسا کہ امام ابویوسف نے کہا ہے، اگر وہ پانی میں ملنے والا مائع ایسا ہو جو پانی کا ہم جنس نہ ہو جیسے دودھ تو اس صورت میں غلبہ کے لئے اوصاف کا اعتبار ہوگا، جیسے کہ امام محمد کا مسلک ہے۔ اور اس پر علامہ حدادی نے کہا شیخ قدوری نے امام محمد کے قول کو ترجیح دیتے ہوئے یوں کہا " وہ ایک وصف کو تبدیل کرے اھ (ت) میں کہتا ہوں، یہ تو موافقت نہ ہوئی بلکہ ایک نئی بات ہوئی، کیونکہ تمام نصوص میں یہ بات واضح کی گئی ہے کہ امام محمد پہلے رنگ اور پھر ذائقہ کی تبدیلی کا اعتبار کرتے ہیں نہ کہ وہ ایک وصف کی تبدیلی کا اعتبار نہیں کرتے، نیز کدو کے جوس کو پانی کا ہم جنس

بتانا غیر معقول اور غیر مقبول ہے، اور جس کو گزشتہ فروعات کا علم ہے وہ جانتا ہے کہ امام ابویوسف اور امام محمد کے اقوال میں موافقت نہیں ہے، پھر علامہ حدادی کا یہ بیان سیلابی پانی میں اجماع کے بھی خلاف ہے کہ اس سے وضو جائز ہے جب تک رقت باقی رہے حالانکہ دو بلکہ تینوں اوصاف اس میں تبدیل ہوتے ہیں باوجودیکہ یہ تبدیلی پانی کے ہم جنس کی وجہ سے نہیں بلکہ مٹی، ریت اور تنکے ملنے کی وجہ سے ہوتی ہے، اسی طرح ان کا یہ بیان کہ کھجور ڈالنے سے میٹھے پانی میں اس اجماع کے بھی خلاف ہے جس میں اس سے

[حاشیہ] 1. الجوهرة النيرة كتاب الطهارة مطبع امداديه ملتان ۱/ ۱۴ Page 163 of 756

Vol. 3 Fatawa Razawiyyah Ablution is declared permissible as long as this sweet water of dates does not become nabeez (intoxicant), even though there is no doubt that the color also changes before the sweetness. Despite the change in attributes, it is not considered here and ablution is allowed. Rather, despite the presence of the third meaning of dominance in terms of components, it is not taken into account. And Allah knows best. (T)

Second Discussion: The Justification of the Rulings of this Statement. I say: And with Allah is the guidance. In reasoned books, especially in those of differences (khilafiyah), specifically the differences between the Imam and the Sahabayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) or among the Sahabayn themselves, there is a commitment to explaining the arguments of both parties. Although they may not pay such attention to the differences of the jurists (Mashaikh). However, in this khilafiyah, the proof for the statement of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) has not come to the sight of this humble servant (may the Powerful Lord forgive him) at all in any book, except for what was mentioned in Majma' al-Anhur regarding the consideration of color: "Because the color is observed (mushahad)." (Because the color is visible. T). However, this statement has four parts, each part seeking justification. This two-word sentence is not sufficient even for one part.

Arabic Text	English Translation
Firstly: (1) Not everything observed is authoritative, so the evidence is more general than the claim.	So first, it is that not every observed thing is considered authoritative (therefore, it is not correct for Majma' al-Anhur to make the color an argument by declaring it as something observed in the context of considering color) because this evidence is general and the claim is specific. (T)
Secondly: (2) Not every authoritative thing is observable, so the evidence is more specific than the claim. In summary, it is not necessary for something observable to be authoritative, and likewise, it is not necessary for something not observable to be unauthoritative.	Secondly: That not every authoritative thing is observable, thus the evidence is specific to the claim; the summary of the speech is that being observable does not necessitate being authoritative, and similarly, another thing not being observable does not necessitate being unauthoritative. (T)

Arabic Text	English Translation
Thirdly: If (3) observation is restricted to seeing, then taste is excluded, yet Muhammad considered it. And if sensation was intended by it, then smell would enter, yet he did not consider it.	And thirdly, that if observation is restricted to seeing, then taste would not be considered, whereas Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) also considers taste. And if observation means sensation, then smell must also be considered, whereas they do not consider smell. (T)
And I say: and by my Lord, then by His Prophet, I seek help, Exalted and High is He, and may Allah's peace be upon him and his family and...	And I say, with the help of Allah Almighty and His Prophet (peace and blessings be upon him, his family, and all his companions), that...

जिल्द 3 फ़तावा रज़विया वज़ू को जायज़ करार दिया गया है जब तक कि यह खजूर का मीठा पानी नबीज़ न बन जाए, हालाँकि इसमें कोई शक नहीं कि मिठास से पहले वहां रंग भी बदलता है। गुणों के बदलाव के बावजूद यहाँ इसे नज़रअंदाज़ करते हुए वज़ू जायज़ है, बल्कि यहाँ घटकों के लिहाज़ से प्रभुत्व (ग़लबा) का तीसरा अर्थ पाए जाने के बावजूद इसे माना नहीं जाता। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)

दूसरी बहस: इस कथन के आदेशों का औचित्य। मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से। तर्कयुक्त पुस्तकों में, विशेष रूप से मतभेदों (खिलाफिया) में, विशेषकर वे मतभेद जो इमाम और सहाबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) या सहाबैन के बीच हों, दोनों पक्षों के तर्कों को स्पष्ट करने की प्रतिबद्धता होती है। हालाँकि वे मशायख (विद्वानों) के मतभेदों पर इतना ध्यान न दें। लेकिन इस खिलाफिया में, इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) के कथन का प्रमाण इस विनम्र सेवक (शक्तिशाली प्रभु उसे क्षमा करे) की दृष्टि में किसी भी पुस्तक में मूल रूप से नहीं आया, सिवाय उस बात के जो मजमा अल-अन्हेर में रंग पर विचार करने के बारे में लिखी गई है: "क्योंकि रंग देखा जाता है (मुशाहद)।" (क्योंकि रंग दिखाई देता है। त)। हालाँकि, इस कथन के चार हिस्से हैं, प्रत्येक हिस्सा स्पष्टीकरण चाहता है। यह दो शब्दों का वाक्य एक हिस्से के लिए भी पर्याप्त नहीं है।

अरबी मूल पाठ	**हिन्दी अनुवाद**
पहला: (१) हर वह चीज़ जो देखी जाती है वह प्रमाणिक नहीं होती, इसलिए प्रमाण दावे से अधिक व्यापक है।	तो पहले यह कि हर देखी जाने वाली चीज़ विश्वसनीय नहीं होती (इसलिए मजमा अल-अन्हेर का रंग के संदर्भ में रंग को देखी जाने वाली चीज़ घोषित करके उसे प्रमाण बनाना सही नहीं है) क्योंकि यह प्रमाण सामान्य है और दावा विशिष्ट है। (त)
दूसरा: (२) हर विश्वसनीय चीज़ देखी जाने योग्य नहीं होती, इसलिए प्रमाण दावे से अधिक विशिष्ट है। संक्षेप में, देखी जाने वाली चीज़ का विश्वसनीय होना ज़रूरी नहीं है, और न ही अनदेखी चीज़ का अविश्वसनीय होना।	दूसरा: यह कि हर विश्वसनीय चीज़ देखी जाने योग्य नहीं होती, इसलिए प्रमाण दावे से विशिष्ट है; संक्षेप यह है कि देखी जाने योग्य होना विश्वसनीय होने की शर्त नहीं है, और इसी तरह किसी और चीज़ का देखी जाने योग्य न होना उसके अविश्वसनीय होने की शर्त नहीं है। (त)

अरबी मूल पाठ

तीसरा: (३) यदि देखने (मुशाहदा) को केवल आँखों से देखने तक सीमित कर दिया जाए, तो स्वाद बाहर हो जाएगा, जबकि मुहम्मद ने उस पर विचार किया है। और यदि इससे इंद्रिय (हिस) अभिप्रेत है, तो गंध भी शामिल हो जाएगी, जबकि उन्होंने उस पर विचार नहीं किया है।

और मैं कहता हूँ: और मेरे रब के द्वारा, फिर उसके नबी के द्वारा मैं सहायता माँगता हूँ, वह महान और उच्च है, और अल्लाह तआला की कृपा उन पर और उनके परिवार पर हो...

पृष्ठ १६४ / ७५६

हिन्दी अनुवाद

और तीसरा यह कि यदि देखने (मुशाहदा) को केवल आंखों से देखने तक सीमित कर दिया जाए, तो स्वाद पर विचार नहीं किया जाएगा, जबकि इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हु) स्वाद पर भी विचार करते हैं। और यदि देखने से तात्पर्य इंद्रिय (हिस) है, तो गंध पर भी विचार करना होगा, जबकि वे गंध पर विचार नहीं करते हैं। (त)

और मैं कहता हूँ, अल्लाह तआला और उसके नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके परिवार और साथियों की मदद से, कि...

جلد سوم فتاویٰ رضویہ وضو کو جائز قرار دیا گیا ہے جب تک یہ کھجور کا میٹھا پانی نبیذ نہ بن جائے حالانکہ اس میں شک نہیں کہ مٹھاس سے پہلے وہاں رنگ بھی تبدیل ہوتا ہے اوصاف کی تبدیلی کے باوجود یہاں اس کا اعتبار نہ کرتے ہوئے وضو جائز ہے بلکہ یہاں اجزاء کے لحاظ سے غلبہ کا تیسرا معنی پائے جانے کے باوجود اس کا اعتبار نہیں کیا جاتا، واللہ تعالیٰ اعلم۔(ت)

بحث دوم اس قول کی توجیہ احکام اقول : وباللہ التوفیق کتب معللہ کو غالباً ہر خلافیہ میں خصوصاً وہ خلاف کہ امام وصاحبین یا باہم صاحبین میں ہو دلائل فریقین بیان کرنے کا التزام ہوتا ہے اگر چہ خلافیات مشائخ میں ایسا اعتناء نہ کریں مگر اس خلافیہ میں دلیل قول امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کسی کتاب میں نظر فقیر غفرلہ المولی القدیر سے اصلاً نہ گزری حتی کہ بدائع میں جس نے اُس پر مٹھے فرمائی سوا اس لفظ کے کہ مجمع الانہر میں اعتبار رنگ پر لکھالان اللون مشاھد (کیونکہ رنگ نظر آتا ہے۔ت) حالانکہ اس قول کے چار جز ہیں ہر جز طالب توجیہ ہے یہ دو حرفی جملہ ایک جز کیلئے بھی وافی نہیں۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فأولاً: (۱) ماکل مشاھد معتبراً فالدلیل اعم من المدعی۔	پس اولاً، یہ کہ ہر مشاہدہ کی جانے والی چیز معتبر نہیں ہوتی (لہذا مجمع الانہر کا رنگ کے اعتبار میں رنگ کو مشاہدہ والا قرار دے کر دلیل بنانا درست نہیں) کیونکہ یہ دلیل عام ہے اور دعویٰ خاص ہے۔ (ت)
وثانیاً: (۲) ماکل معتبر مشاھداً فالدلیل اخص من المدعی وبالجملۃ لا یلزم من کونہ مشاھداً اعتبارہ	ثانیاً: یہ کہ ہر معتبر چیز قابل مشاہدہ نہیں ہوتی پس یوں دلیل، دعویٰ سے خاص ہے، خلاصہ کلام یہ ہے کہ قابل مشاہدہ

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ولامن عدم مشاهدة أخر عدم اعتباره۔	ہونے کو معتبر ہونا لازم نہیں اور یوں ہی دوسری چیز کے قابل مشاہدہ ہونے کو غیر معتبر ہونا لازم نہیں۔ (ت)
وثالثاً: ان (۳) خصت المشاهدة بالرؤية خرج الطعم وقد اعتبره محمد وان أريد بها الحس دخلت الريح ولم يعتبرها۔	اور ثالثاً، یہ کہ اگر مشاہدہ کو دیکھنے سے مختص کیا جائے تو ذائقہ کا اعتبار نہ رہے گا حالانکہ امام محمد رضی اللہ عنہ ذائقہ کا اعتبار بھی کرتے ہیں اور اگر مشاہدہ سے مراد حس ہو تو پھر بو کا اعتبار بھی کرنا ہوگا حالانکہ وہ بو کا اعتبار نہیں کرتے۔ (ت)
وانا اقول: وبربي ثم بنبيه استعين جل وعلا وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ و	اور میں کہتا ہوں، اللہ تعالیٰ اور اس کے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وصحبہ اجمعین کی امداد سے، کہ

Volume Three Fatawa-e-Razvia Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) says that the removal of ritual impurity (hadath) is legally dependent on the use of absolute water. Absolute water is that which comes to mind upon the utterance of the word "water". Without doubt, this is a well-known, famous reality known to everyone. No one needs to seek knowledge from an outside source or through someone else's information to perceive it, that "this is water". Therefore, absolute water means this commonly understood reality. Thus, when the color of another liquid appears in the water, the observer certainly feels hesitation/doubt whether this is water or what. Only when another informed person informs them does that doubt resolve, otherwise not. In water, color is perceived first. If color does not overpower, then when water is taken into the mouth for rinsing (madmadah) and the taste of another liquid is felt, then the same doubt arises which arose regarding the change of color upon looking. So, it exits from being absolute water. As for the smell, it might sometimes be acquired through proximity without the mixing of anything. Therefore, if the color and taste are sound, the user does not doubt it being water merely by a change in its smell. But if there is a mixing of something else in it, equal or dominant, the user will not realize it except through external information. At that point, they know it is not water. Thus, the perception of its "watery" nature did not depend on external information, but rather its absence did. It is known that this doubt and confusion only occur with liquids. Therefore, as long as water takes the color or taste of a solid substance, it is not confused with it; confusion only occurs when it loses its nature. Page 165 of 756

खंड तीन फतावा-ए-रजविया इमाम मोहम्मद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) कहते हैं कि हदाथ (अशुद्धि) को दूर करना शरीयत के अनुसार पूर्ण जल (मुतलक पानी) के उपयोग पर निर्भर है। मुतलक पानी वह है जिसे 'पानी' शब्द बोलते ही मन में आए। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह एक ऐसी वास्तविकता है जो प्रसिद्ध और सर्वविदित है और हर किसी को ज्ञात है। इसे पहचानने के लिए किसी को बाहरी जानकारी या किसी और की सूचना की आवश्यकता नहीं होती कि "यह पानी है"। अतः, मुतलक पानी से तात्पर्य इसी सामान्य समझ वाली वास्तविकता से है। इसलिए, जब किसी अन्य तरल पदार्थ का रंग पानी में दिखाई देता है, तो देखने वाले को निश्चित रूप से संदेह होता है कि यह पानी है या कुछ और। केवल तभी जब कोई अन्य जानकार व्यक्ति उन्हें बताता है, तो वह संदेह दूर होता है, अन्यथा नहीं। पानी में सबसे पहले रंग का ज्ञान होता है। यदि रंग प्रभावी नहीं है, तो जब कुल्ला करने के लिए पानी मुँह में लिया जाता है और किसी अन्य तरल का स्वाद महसूस होता है, तो वही संदेह उत्पन्न होता है जो देखने पर रंग बदलने के संबंध में हुआ था। तो, यह मुतलक पानी की श्रेणी से बाहर हो जाता है। जहाँ तक गंध का संबंध है, तो वह कभी-कभी बिना किसी चीज़ के मिले ही आसपास की वस्तुओं से आ सकती है। इसलिए, यदि रंग और स्वाद सही है, तो केवल गंध में परिवर्तन होने पर उपयोगकर्ता को इसके पानी होने में संदेह नहीं होता। लेकिन यदि इसमें किसी अन्य चीज़ का मिश्रण बराबर या प्रभावी रूप से हो, तो उपयोगकर्ता को बाहरी जानकारी के बिना इसका पता नहीं चलेगा। उस समय उन्हें पता चलता है कि यह पानी नहीं है। इस प्रकार, इसके"जलीय" होने की धारणा बाहरी जानकारी पर निर्भर नहीं थी, बल्कि इसकी अनुपस्थिति पर थी। यह ज्ञात है कि यह संदेह और भ्रम केवल तरल पदार्थों के साथ होता है। इसलिए, जब तक पानी किसी ठोस पदार्थ का रंग या स्वाद लेता है, तब तक उसमें भ्रम नहीं होता; भ्रम केवल तभी होता है जब वह अपनी प्रकृति खो देता है। पृष्ठ १६५ / ७५६

جلد سوم فتاویٰ رضویہ امام محمد رضی اللہ عنہ گویا یوں فرماتے ہیں کہ رفع حدث کیلئے شرعاً مطلق پانی کا استعمال ضروری ہے، اور مطلق پانی وہ ہے جو پانی کا لفظ بولنے پر ذہن میں آئے، اور اس میں شک نہیں کہ یہ ایک ایسی حقیقت ہے جو مشہور و معروف اور ہر ایک کو معلوم ہے اس کو جاننے کیلئے کسی کو غیر سے سمجھنے کی ضرورت پیش نہیں آتی کہ وہ یہ بتائے کہ پانی یہ ہے۔ لہذا مطلق پانی سے مراد یہی عام فہم حقیقت ہے۔ لہذا جب کسی دوسری بہنے والی چیز کا رنگ پانی میں ظاہر ہوتا ہے تو دیکھنے والے کو ضرور تردد ہوتا ہے کہ کیا یہ پانی ہے یا کیا ہے تو جب کوئی دوسرا با خبر شخص بتائے تو اس کا تردد ہوتا ہے ورنہ نہیں، پانی میں سب سے پہلے رنگ کا علم ہوتا ہے اور اگر رنگ پانی پر غالب نہ ہو تو پھر جب کلی کرنے کیلئے پانی منہ میں ڈالا جائے تو اس وقت دوسری مائع چیز کا ذائقہ محسوس ہونے لگتا ہے پھر اس کو تردد ہوتا ہے جو کہ دیکھنے پر رنگ کی تبدیلی سے نہ ہوا تھا، پس یہ رنگ کی وجہ سے تردد اور ذائقہ کی وجہ سے تردد والا پانی، مطلق پانی سے خارج ہوگا، جہاں تک بُو کا تعلق ہے تو وہ قُرب وجوار میں پڑی ہوئی چیز کی خوشبو کا اثر ہوسکتا ہے ضروری نہیں کہ پانی میں مخلوط کسی چیز کی وجہ سے بُو آرہی ہو، رنگ اور ذائقہ اگر درست ہو تو استعمال کرنے والے کو کوئی تردد پیدا نہیں ہوتا کہ یہ خالص پانی ہے، پس اگر پانی میں ریح کے بغیر کسی دوسری شیئ کی ملاوٹ ہو برابر یا غالب طور پر ہو تو استعمال کرنے والے کو تردد ہوگا مگر جب اسے کوئی خارج سے خبر دے

Fatawa-e-Razvia Volume 3

(Arabic Text Translation): The status of the name 'water' depends on its readiness for another purpose. From here, the distinction between a solid and a liquid is established, and the school of thought of Imam Muhammad, with its four parts, becomes evident. In other words, we have a consensus that whatever transforms into something else for a different purpose cannot be used for purification, even if its fluidity (thinness) remains and the mixed substance does not reach the volume of water. Thus, the ruling is based solely on the change in its attributes; for if they remained intact while the nature persisted and the quantity was dominant, it would be impossible to strip away the name 'water' without a cause. Hence, it is known that the change in attributes here precedes the loss of natural state and the overcoming of volume. Subsequently, the issue of the loss of the name 'water' and the emergence of another name arises, and this depends on its preparation for another purpose. The prohibition is tied to the first part, even if the second part is not found, because the pure Sharia only commanded using water. So if the name 'water' is stripped from it, the commanded item is gone, even if it hasn't entered another purpose, except that the solid follows the first in the second. Thus, the name 'water' is not revoked as long as it is not prepared for another purpose, as seen in floodwater, or water into which a little sugar has been thrown, or in which chickpeas or dates have been soaked, unlike a liquid, for it...

(Urdu Text Translation): At that time, one would realize it is no longer water. Thus, it is known that the perception of pure water happens without any external aid. It is also clear that the introduction of any liquid substance plays a part in creating hesitation regarding water. Conversely, due to the change in water's color or taste because of mixing with a solid substance, the user does not experience hesitation until it is deemed to have changed its name from water by being prepared for another purpose. From this, the difference between mixing solid and liquid substances in water becomes clear, and thus the four parts of Imam Muhammad's school of thought became clear. (Note) Another presentation of Imam Muhammad's school is that we all have a consensus that if, due to a mixed substance in water, another purpose is sought and it becomes another thing, then although in this case the thinness of water remains and the quantity of water is more than the mixed thing, still wudu (ablution) with it is not permissible. Its reason can only be the change in the attributes of water because if, despite the thinness of water remaining and its quantity being dominant, there is no change in attributes, it would be impossible not

to call it water and give it another name. Upon acknowledging this fact, it became clear that in this case, the change in its attributes would occur before the loss of water's nature (end of thinness) and before the volume of water is overcome. Then here are two more things: one, the non-application of 'water', second, being called by a new name. Water is called by a new name when it is prepared for another purpose, but the prohibition of purification relates to...

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3

(अरबी पाठ का अनुवाद): 'पानी' नाम की स्थिति उसके किसी अन्य उद्देश्य के लिए तैयार होने पर निर्भर करती है। यहाँ से ठोस और तरल के बीच का अंतर स्थापित होता है, और इमाम मुहम्मद का पंथ, अपने चार भागों के साथ, स्पष्ट हो जाता है। दूसरे शब्दों में, हमारी इस पर आम सहमति है कि जो कुछ भी किसी अन्य उद्देश्य के लिए किसी अन्य वस्तु में बदल जाता है, उससे शुद्धिकरण जायज़ नहीं है, भले ही उसकी तरलता (पतलापन) बनी रहे और मिश्रित पदार्थ पानी की मात्रा तक न पहुँचे। अतः, निर्णय केवल उसके गुणों में परिवर्तन पर आधारित है; क्योंकि यदि प्रकृति बनी रहने और मात्रा प्रभावी होने के साथ गुण अक्षुण्ण रहते, तो बिना किसी कारण के उससे 'पानी' का नाम छीनना असंभव होता। इसलिए, यह ज्ञात होता है कि यहाँ गुणों में परिवर्तन प्राकृतिक स्थिति के लोप और आयतन के कम होने से पहले होता है। इसके बाद, 'पानी' नाम के लोप और दूसरे नाम के उद्भव का प्रश्न उठता है, और यह दूसरे उद्देश्य के लिए इसकी तैयारी पर निर्भर करता है। निषेध पहले भाग से जुड़ा है, भले ही दूसरा भाग न पाया जाए, क्योंकि शुद्ध शरीयत ने केवल पानी का उपयोग करने का आदेश दिया है। इसलिए यदि उससे 'पानी' का नाम छीन लिया जाता है, तो आदेशित वस्तु समाप्त हो जाती है, भले ही वह किसी अन्य उद्देश्य में प्रवेश न की हो, सिवाय इसके कि ठोस दूसरे में पहले का अनुसरण करता है। इस प्रकार, 'पानी' नाम तब तक नहीं हटाया जाता जब तक कि वह किसी अन्य उद्देश्य के लिए तैयार न हो, जैसा कि बाढ़ के पानी में देखा जाता है, या उस पानी में जिसमें थोड़ी चीनी डाली गई हो, या जिसमें चने या खजूर भिगोए गए हों, तरल के विपरीत, क्योंकि वह...

(उर्दू पाठ का अनुवाद): उस समय वह जान जाएगा कि यह पानी नहीं है। तो ज्ञात हुआ कि शुद्ध पानी का बोध बिना किसी बाहरी सहायता के होता है। और यह बात भी स्पष्ट है कि पानी के बारे में संदेह पैदा करने में किसी तरल पदार्थ का प्रवेश भूमिका निभाता है। इसके विपरीत, किसी ठोस पदार्थ के मिलने से पानी के रंग या स्वाद में बदलाव के कारण उपयोगकर्ता को तब तक संदेह नहीं होता जब तक कि उसे किसी अन्य उद्देश्य के लिए तैयार करने के कारण पानी के नाम को बदला हुआ न मान लिया जाए। इससे पानी में ठोस और तरल पदार्थों के मिलने का अंतर स्पष्ट हो जाता है, और इस प्रकार इमाम मुहम्मद के पंथ के चारों अंग स्पष्ट हो गए। (टिप्पणी) इमाम मुहम्मद के पंथ की एक अन्य व्याख्या यह है कि हम सभी का इस बात पर आम सहमति है कि यदि पानी में मिश्रित वस्तु के कारण कोई अन्य उद्देश्य वांछित हो और वह कोई और वस्तु बन गई हो, तो भले ही इस स्थिति में पानी का पतलापन बना रहे और पानी की मात्रा भी मिश्रित वस्तु से अधिक हो, फिर भी उससे वुज़ू

(शुद्धि) करना जायज़ नहीं है। इसका कारण केवल पानी के गुणों में परिवर्तन हो सकता है क्योंकि यदि पानी का पतलापन बना रहने और उसकी मात्रा प्रभावी होने पर गुणों में भी परिवर्तन न हो, तो उसे पानी न कहना और उसे कोई दूसरा नाम देना असंभव होगा। इस तथ्य को स्वीकार करने पर यह स्पष्ट हो गया कि इस स्थिति में पानी की प्रकृति के लोप (पतलापन खत्म होने) और पानी की मात्रा के कम होने से पहले उसके गुणों में परिवर्तन होगा। फिर यहाँ दो और बातें हैं, एक पानी का प्रयोग न होना, दूसरा नए नाम से पुकारा जाना। पानी को नए नाम से तब पुकारा जाता है जब उसे किसी अन्य उद्देश्य के लिए तैयार किया गया हो, लेकिन शुद्धिकरण की मनाही का संबंध...

पृष्ठ 166/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

(عربی عبارت): اسم الماء علی تھیؤہ لمقصد آخر فمن ھھنا حصل الفرق بین الجامد و المائع و ظھر مذہب محمد باجزائہ الاربعة وبعبارة اخری اجمعنا ان ما صار شیئاً اخر لمقصد آخر لا تجوز بہ الطھارة وان لم تزل رقتہ ولا بلغ الممازج الماء قدراً فاذن لیس الا لتغیر في اوصافہ اذ لو سلمت مع بقاء الطبع وغلبة القدر استحال ان یسلب عنہ اسم الماء من دون موجب فعلم ان التغیر في الاوصاف ھھنا مقدم علی زوال الطبع ومغلوبیة القدر، ثُمَّ ثَمَّ شأن زوال اسم الماء وتجدد اسم أخر وھذا یتوقف علی تھیؤہ لمقصد أخر والمنع منوط بالا ول وان لم یوجد الأخر لان الشرع المطہر انما امر بالماء فاذا انسلب عنہ اسم الماء خرج المأمور بہ وان لم یدخل فی مقصد آخر غیر ان الجامد یتبع فیہ الاول الأخر فلا ینسلب اسم الماء بہ مالم یتھیأ لمقصد أخر کما تری فی السیل وماء القی فیہ قلیل سکر او نقع فیہ حمص او تمر بخلاف المائع فانہ

(اردو عبارت): تو اس وقت وہ جانے گا یہ پانی نہیں ہے تو معلوم ہوا کہ نفیس پانی کا ادراک کسی خارجی امداد کے بغیر ہوتا ہے اور یہ بات بھی واضح کہ پانی میں تردّد پیدا کرنے میں کسی مائع چیز کا دخل ہوتا ہے اس کے برخلاف کسی جامد چیز کے ملنے سے پانی کے رنگ یا ذائقہ کی تبدیلی کی وجہ سے استعمال کرنے والے کو اس وقت تک تردّد نہیں ہوتا جب تک کسی دوسرے مقصد کیلئے تیاری سے پانی کے نام کو تبدیل نہ قرار دیا جائے۔ اس بات سے پانی میں جامد چیز اور مائع کے ملنے کا فرق واضح ہو جاتا ہے، اور یوں امام محمد کے مذہب کے چاروں اجزاء واضح ہوئے۔ (ت) اور امام محمد کے مسلک کی ایک دوسرے انداز سے تقریر، یہ ہے کہ ہم سب کا اس بات پر اجماع ہے کہ پانی میں مخلوط چیز کے سبب کوئی اور مقصد مطلوب ہو اور کوئی اور چیز بن گئی ہو تو اگرچہ اس صورت میں پانی کی رقت باقی ہو اور پانی کی مقدار بھی ملی

ہوئی چیز سے زیادہ ہو تو پھر بھی اس سے وضو جائز نہیں ہے اس کی وجہ صرف پانی کے اوصاف کی تبدیلی ہو سکتی ہے کیونکہ پانی کی رقت باقی اور اس کی مقدار غالب ہونے پر اوصاف میں بھی تبدیلی نہ ہو تو اس کو پانی نہ کہنا اور اس کو کوئی دوسرا نام دینا محال ہو گا۔ اس حقیقت کے اعتراف پر یہ امر واضح ہو گیا کہ اس صورت میں پانی کی طبع کے زوال (رقت کے ختم ہونے) اور پانی کی مقدار کے مغلوب ہونے سے قبل اس کے اوصاف کی تبدیلی ہوگی۔ پھر یہاں دو اور چیزیں ہیں، ایک پانی کے اطلاق کا نہ ہونا، دوسرا نئے نام سے موسوم ہونا، پانی کو نئے نام سے تب موسوم کیا جاتا ہے جب اس کو کسی دوسرے مقصد کیلئے تیار کیا گیا ہو، لیکن طہارت کی ممانعت کا تعلق

[Left Column - Arabic/Urdu Section] If something dominates the qualities of water, the water becomes ambiguous. Thus, the understanding that naturally comes to mind from the absolute term "water" no longer persists. Consequently, the name has vanished, even if another name has not been newly assigned to it. This is because, due to doubt and ambiguity, neither does this name remain nor is any other established. This is my interpretation of the "removal of the name" mentioned here in the discourse of the Imam Malik al-Ulama regarding the statement of Imam Muhammad, unlike what is considered in the case of solids. In solids, what matters is the subsequent emergence of another name, as previously investigated. Success is from Allah, and to Him belongs praise.

And through this, it is revealed—concerning its occurrence—that this necessitates considering the characteristics in solids as well, even if preparation for another purpose has not been achieved. By "small amount," we do not mean for you to say that a small amount is overcome and the overcome is discarded by consensus; rather, we mean the threshold that makes it considered a specific thing.

[Right Column - Urdu Section] The first case is the cessation of the absolute application of water, even if no other name was given there. This is because the Pure Shariah has commanded the use of water for purification. Whatever no longer holds the name or application of "water" falls outside the scope of the commanded substance (water), whether it is for another purpose or not, and whether it has been given a new name or not. However, in the case of mixing a solid substance, it is necessary that after the first case (negation of the application of water), the second case (a new name due to preparation for a new purpose) must follow. This can be seen in floodwater, ordinary water with a little sugar, water with chickpeas, or water with dates added (in these cases, not only does the application of "water" remain, but no new name has been assigned for a new purpose; hence, wudu with it is permissible). On the other hand, if a liquid is mixed into water and the water's qualities are changed by it, hesitation arises in calling it water or applying the term "water" to it, and its nature as water does not come to mind. Thus, the name and application of water cease to exist, yet no new name was assigned to it because, due to the hesitation, the original name ended and no new name could be established. In my view, this is what Imam Malik al-Ulama meant by the "removal of the name of water" when quoting Imam Muhammad's statement. Conversely, in the case of a

solid substance, purification will be prohibited only when a new name has been assigned to it, as investigated earlier. Success is from Allah, and for Him is praise. (T)

This investigation also reveals the reality of the objection which claimed that, like liquids, the change of qualities is also considered in solids, even if mixing the solid with water was not for another purpose. This doubt is resolved because, by consensus, we do not mean that small amount of solid...

[बायां कॉलम - अरबी/उर्दू खंड] जब पानी के गुणों पर कोई चीज़ हावी हो जाती है, तो पानी संदिग्ध हो जाता है। अतः"पानी" शब्द के पूर्ण प्रयोग से जो बात तुरंत समझ में आती थी, वह अब नहीं रहती। फलस्वरूप, नाम समाप्त हो गया है, भले ही उसे अभी तक कोई नया नाम न दिया गया हो। क्योंकि संदेह और भ्रम के माध्यम से न तो यह नाम बचता है और न ही कोई दूसरा स्थापित होता है। और "नाम के हटने" से मेरा यही अर्थ है, जिसका उल्लेख यहाँ इमाम मलिक अल-उलेमा के शब्दों में इमाम मुहम्मद के कथन के संबंध में किया गया है, उसके विपरीत जो ठोस पदार्थों में माना जाता है, क्योंकि वह वह है जिसके बाद दूसरा नाम आता है, जैसा कि इसकी जांच पहले की जा चुकी है। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है, और उसी की प्रशंसा है।

इससे वह स्पष्ट हो जाता है जो देखा जाता है—उसका घटित होना—कि यह ठोस पदार्थों में भी गुणों पर विचार करना आवश्यक बनाता है, भले ही दूसरे उद्देश्य के लिए तैयारी न हुई हो। "थोड़ा" से हमारा मतलब यह नहीं है कि आप कहें "थोड़ा हावी हो जाता है, और जो हावी हो जाता है वह सर्वसम्मति से व्यर्थ है," बल्कि वह सीमा जिसे किसी चीज़ को कुछ बनाने में माना जाता है।

[दायां कॉलम - उर्दू खंड] पहली स्थिति पानी के पूर्ण अनुप्रयोग (इतलाक़) के हटने से है, भले ही वहां कोई दूसरा नाम न दिया गया हो। इसका कारण यह है कि शरीअत-ए-मुतहरा ने शुद्धिकरण (तहारत) के लिए पानी के उपयोग का आदेश दिया है। यदि किसी चीज़ पर पानी का नाम और अनुप्रयोग नहीं रहा, तो वह आदेशित वस्तु (पानी) से बाहर हो गई, चाहे वह किसी दूसरे उद्देश्य के लिए हो या न हो, और चाहे उसे नया नाम दिया गया हो या नहीं। लेकिन, ठोस पदार्थ के मिश्रित होने पर यह आवश्यक है कि पहली स्थिति (पानी के अनुप्रयोग का निषेध) के बाद दूसरी स्थिति (नए उद्देश्य के लिए तैयारी के कारण नया नाम) अवश्य होनी चाहिए, जैसा कि आप बाढ़ के पानी, सामान्य और कम चीनी वाले पानी, चने वाले पानी या खजूर वाले पानी में देख सकते हैं (इन स्थितियों में न केवल पानी का अनुप्रयोग बना रहता है, बल्कि नए उद्देश्य के लिए नया नाम भी नहीं दिया गया है, इसलिए इससे वज़ू जायज़ है)। इसके विपरीत, यदि पानी में कोई तरल पदार्थ मिलाया गया हो और उससे पानी के गुण बदल जाएं तो उसे पानी कहने और उस पर "पानी" लागू करने में हिचकिचाहट पैदा होती है और उसका पानी होना मन में नहीं आता। तो, पानी के लिए नाम और अनुप्रयोग नहीं रहा, लेकिन उसे नया नाम भी नहीं दिया गया, क्योंकि हिचकिचाहट के कारण पहला नाम समाप्त हो गया और नया नाम स्थापित नहीं हो सका। मेरे विचार में, इमाम मलिक अल-उलेमा के कलाम में 'ज़वाल-ए-इस्म-ए-

मा' (पानी के नाम का हटना) से यही मुराद है जहाँ उन्होंने इमाम मुहम्मद के कथन का वर्णन किया है। ठोस पदार्थ के मामले में, इसके विपरीत, शुद्धिकरण वर्जित होगा जब उसे नया नाम दिया गया हो, जैसा कि पहले शोध किया जा चुका है। अल्लाह से सफलता और उसी के लिए प्रशंसा है। (त)

इस शोध से उस आपत्ति की वास्तविकता भी स्पष्ट हो गई जिसमें यह कहा गया था कि तरल की तरह ठोस में भी गुणों के परिवर्तन को माना जाता है, भले ही ठोस को पानी में मिलाकर किसी दूसरे उद्देश्य के लिए तैयार न किया गया हो। यह संदेह इसलिए समाप्त हो जाता है क्योंकि सर्वसम्मति से हम ठोस की उस कम मात्रा की बात नहीं कर रहे हैं...

اذا غلب علی اوصاف الماء اشتبه الماء به فلم یبقی مما یتبادر الیه الفهم باطلاق لفظ الماء فقد زال الاسم وان لم یتجدد له اسم اخر لان بالارتیاب والالتباس لا هذا الاسم یبقی ولا غیره یثبت وهذا هو المعنی عندی بزوال الاسم المذکور هنا في کلام الامام ملك العلماء الماش في قول محمد بخلاف المعتبر في الجامد فانه الذی یعقبه حدوث اسم اخر کما تقدم تحقیقه وبالله التوفیق وله الحمد۔

وبه انکشف ما یترا ای وروده من ان هذا یوجب اعتبار الاوصاف في الجامدات ایضاً وان لم یحصل التهیؤ لمقصد اخر ولا نعنی القلیل حتی تقولوا ان القلیل مغلوب والمغلوب هدر اجماعاً بل الحد الذي یعتبر فیما یجعله شیئاً

پہلی صورت یعنی پانی کے اطلاق کے زوال سے ہے اگرچہ وہاں دوسرا نام نہ بھی دیا گیا ہو، اس کی وجہ یہ ہے کہ شریعتِ مطہرہ نے طہارت کیلئے پانی کے استعمال کا حکم دیا ہے اور جس چیز پر پانی کا نام اور اطلاق نہ رہا تو وہ مامور بہ (پانی) سے خارج ہوگئی خواہ کسی دوسرے مقصد کیلئے ہو یا نہ ہو اور اس کو نئے نام سے موسوم کیا گیا ہو یا نہ کیا گیا ہو، لیکن جامد چیز کے مخلوط ہونے پر یہ ضروری ہے کہ پہلی صورت (پانی کے اطلاق کی نفی) کے بعد دوسری صورت (نئے مقصد کیلئے تیاری کی وجہ سے نیا نام) کو ضرور لاحق ہوگی، جیسا کہ آپ سیلابی پانی، معمولی اور قلیل شکر والا پانی، جس پانی میں چنے ڈالے ہوں یا جس پانی میں کھجور ڈال دی گئی ہو، کو دیکھ سکتے ہیں (کہ ان صورتوں میں نہ صرف یہ کہ پانی کا اطلاق باقی ہے بلکہ نئے مقصد کے لئے نیا نام بھی نہیں دیا گیا، لہٰذا اس سے وضو جائز ہے) اس کے بر خلاف وہ پانی جس میں کوئی مائع چیز ملائی گئی ہو تو اگر پانی کے اوصاف اس سے تبدیل ہو جائیں تو اس کو پانی کہنے اور اس پر پانی کا اطلاق کرنے میں تردد پیدا ہوتا ہے اور اس کا پانی ہونا ذہن میں نہیں

آتا، تو نام اور اطلاق پانی کیلئے نہ رہا، لیکن نیا نام بھی اس کو نہ دیا گیا، کیونکہ تردد کی وجہ سے پہلا نام ختم ہو گیا اور نیا نام ثابت نہ ہو سکا، میرے نزدیک امام ملک العلماء کے کلام میں زوالِ اسمِ ماء سے یہی مراد ہے جہاں انہوں نے امام محمد کے قول کو بیان کرتے ہوئے کہا ہے۔ جامد چیز میں اس کے بر خلاف طہارت ممنوع ہو گی جبکہ اس کو نیا نام دیا گیا ہو جیسا کہ پہلے تحقیق ہو چکی ہے، اللہ تعالٰی سے توفیق اور اسی کیلئے حمد ہے۔ (ت)

اس تحقیق سے اس اعتراض کی حقیقت بھی منکشف ہوگئی جس میں یہ کہا گیا تھا کہ مائع کی طرح جامد میں بھی اوصاف کی تبدیلی کا اعتبار کیا جاتا ہے اگرچہ جامد کو پانی میں ملا کر کسی دوسرے مقصد کیلئے تیار نہ کیا گیا ہو، یہ شبہ اس لئے ختم ہو جاتا ہے کہ بالاجماع ہم جامد کی وہ قلیل مقدار مراد نہیں لے رہے

Fatawa Razawiya, Volume 3

[Arabic Text Translation:] If it becomes intended for another purpose, and the change reaches that limit, why is the name 'water' not stripped away, even if another name is not renewed due to the lack of mentioned preparation? This is like yellow-dyed (zardaj) water; it is discarded and not used for dyeing, so it does not serve another purpose, unlike saffron water. But if yellow-dyed water is such that it would be suitable for dyeing if it were used for that, then it has changed. What is the difference between the two waters when they reach this limit in changing the water? One is intended for dyeing and the other is not. Regarding the degree of change, water is overcome in both equally, and upon this revolves the pivot of prohibition. You should refine your intellect, for if the name is stripped by renewal or doubt, that's it. And by this, the answer to what they mentioned in the first discussion regarding the dominance of another, from Al-Inayah and Majma' al-Anhur, becomes clear: that dominance by parts is real dominance because the existence of a compound is through its parts, so its consideration is more appropriate, unlike dominance by color, for it refers back to the attribute.

[Urdu Text Translation:] That which becomes merely overpowered and becomes as if non-existent, rather what is meant is such a quantity of solid substance added to water that it can be considered for turning the water into another thing for another purpose. So, when due to the solid substance, such a change occurs in water to this extent, the name 'water' will necessarily be stripped there, even if a new name has not been given to it for the new purpose. An example of this can be water with yellow dye (zarda); when so much yellow dye is added to water that it cannot dye anything, in this case, the second purpose is not achieved there, but it is not called water. Contrary to this is saffron water, but when there is enough quantity of yellow dye that something can be dyed, this is also a change prepared for another purpose. However, in both cases, there is such a degree of change that the name 'water' is stripped there. The only difference is that in the first case, there is no new name for the new purpose, whereas in the second case, there is a new name for the new purpose. When in both cases water is overpowered and loses its name, then in both these cases, performing ablution (wudu) with it will be impermissible, because the criterion for prohibiting wudu is the water being overpowered. If you ponder, you will realize that there are two reasons for stripping the name 'water': preparation for a new purpose and the occurrence of doubt in its being water. (Note) Through the previous research, the answer to the scholars' statement is also clarified, which they

quoted from Al-Inayah and Majma' al-Anhur in the first discussion on the dominance of an external substance, that real dominance is due to parts because the existence of a composite object is due to its parts, therefore, the dominance of parts...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[अरबी पाठ का अनुवाद:] यदि यह किसी अन्य उद्देश्य के लिए हो जाता है, और परिवर्तन उस सीमा तक पहुँच जाता है, तो 'पानी' नाम क्यों नहीं हट जाता, भले ही उल्लेखित तैयारी की कमी के कारण कोई अन्य नाम नया न हो? यह पीले रंगे हुए (ज़र्दज) पानी की तरह है; इसे फेंक दिया जाता है और रंगाई के लिए उपयोग नहीं किया जाता है, इसलिए यह केसर के पानी के विपरीत किसी अन्य उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता है। लेकिन अगर पीला पानी ऐसा है कि यदि इसका उपयोग रंगाई के लिए किया जाए तो वह उपयुक्त होगा, तो वह बदल गया है। पानी बदलने में इस सीमा तक पहुँचने पर दोनों पानियों में क्या अंतर है? एक रंगाई के लिए अभिप्रेत है और दूसरा नहीं। परिवर्तन की डिग्री के संबंध में, पानी दोनों में समान रूप से अभिभूत है, और इसी पर निषेध का आधार घूमता है। आपको अपनी बुद्धि को परिष्कृत करना चाहिए, क्योंकि यदि नाम नवीनीकरण या संदेह से हट जाता है, तो बस इतना ही। और इससे, उनके द्वारा पहली चर्चा में 'अल-इनाया' और 'मजमा अल-अन्हुर' से दूसरे के प्रभुत्व के बारे में जो उल्लेख किया गया था, उसका उत्तर स्पष्ट हो जाता है: कि भागों द्वारा प्रभुत्व वास्तविक प्रभुत्व है क्योंकि एक यौगिक का अस्तित्व उसके भागों के माध्यम से होता है, इसलिए इसका विचार अधिक उपयुक्त है, रंग द्वारा प्रभुत्व के विपरीत, क्योंकि यह गुण की ओर वापस जाता है।

[उर्दू पाठ का अनुवाद:] जो केवल अभिभूत होकर नगण्य हो जाता है, बल्कि इसका अर्थ पानी में शामिल होने वाले ठोस पदार्थ की इतनी मात्रा है जिसे पानी को किसी अन्य उद्देश्य के लिए दूसरी चीज़ बनाने के लिए विश्वसनीय माना जा सके। तो, जब ठोस पदार्थ के कारण पानी में इस हद तक परिवर्तन आ जाए, तो अनिवार्य रूप से वहाँ पानी का नाम समाप्त हो जाएगा, चाहे उसे नए उद्देश्य के लिए नया नाम न भी दिया गया हो। इसका उदाहरण ज़र्दज (ज़रदा) वाला पानी हो सकता है कि जब पानी में इतना ज़रदा डाला जाए जिससे किसी चीज़ को रंगा न जा सके, तो इस स्थिति में वहाँ दूसरा उद्देश्य तो प्राप्त नहीं होता, लेकिन इसे पानी नहीं कहा जाता। इसके विपरीत केसर वाला पानी है, लेकिन जब ज़रदा की इतनी मात्रा हो जिससे किसी चीज़ को रंगा जा सके, तो यह भी एक परिवर्तन है जो दूसरे उद्देश्य के लिए तैयार किया गया है। लेकिन दोनों स्थितियों में इस स्तर का परिवर्तन है कि वहाँ पानी का नाम समाप्त हो जाता है। फर्क सिर्फ यह है कि पहली स्थिति में नए उद्देश्य के लिए नया नाम नहीं है, जबकि दूसरी स्थिति में नए उद्देश्य के लिए नया नाम है। जब दोनों स्थितियों में पानी अभिभूत होकर अपना नाम खो देता है, तो इन दोनों स्थितियों में उससे वज़ू करना नाजायज़ होगा

क्योंकि वज़ू के मना होने के लिए पानी का अभिभूत हो जाना ही मानक है। आप विचार करें तो ज्ञात होगा कि पानी से उसके नाम को समाप्त करने वाले दो कारण हैं: एक नए उद्देश्य के लिए तैयार होना और दूसरा उसके पानी होने में संदेह पाया जाना। (सं.) पिछली शोध से विद्वानों के उस कथन का उत्तर भी स्पष्ट हो गया जिसे उन्होंने बाहरी चीज़ के प्रभुत्व की पहली चर्चा में इनाया और मजमा अल-अन्हुर से उद्धृत किया है कि वास्तविक प्रभुत्व भागों के कारण होता है क्योंकि मिश्रित चीज़ का अस्तित्व भागों के कारण होता है, इसलिए भागों के प्रभुत्व का...

पृष्ठ 168/756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

[عربی متن کا ترجمہ:] اذا صار لمقصود اخر فاذا بلغ التغیر ذلک الحد لم لا ینسلب اسم الماء وان لم یتجدد اسم اخر لعدم التھیؤ المذکور، وذلک کماء الزردج فانہ یطرح ولا یصبغ بہ فلا یصیر لمقصود اخر بخلاف ماء الزعفران لکن اذا کان ماء الزردج بحیث یصلح للصبغ لوکان یصبغ بہ فقد تغیر وای فرق بین المائین اذا بلغا ھذا الحد فی تغیر الماء وکون ھذا یقصد للصبغ لا ذاک شیئ اخر واراء التغیر فالماء مغلوب فیھما علی السواء وعلیہ تدور رحی المنع وعلیک بتلطیف القریحۃ فان الانسلب بالتجدد او الارتیاب لا غیر۔ وبہ ظھر الجواب عن قولھم المار فی البحث الاول من ابحاث غلبۃ الغیر عن العنایۃ ومجمع الانھر ان الغلبۃ بالاجزاء غلبۃ حقیقۃ اذ وجود المرکب باجزائہ فکان اعتبارہ اولی بخلاف الغلبۃ باللون فانھا راجعۃ الی الوصف۔

[اردو متن:] جو صرف مغلوب ہو کر کالعدم ہو جائے بلکہ پانی میں شامل ہونے والے جامد کی اتنی مقدار مراد ہے جو کسی دوسرے مقصد کیلئے پانی کو دوسری چیز بنانے کیلئے معتبر ہوسکے تو جب جامد کی وجہ سے پانی میں اس حد تک تغییر پیدا ہو جائے تو لازمی طور پر وہاں پانی کا نام سلب ہو جائے گا خواہ نئے مقصد کیلئے نیا نام اس کو نہ بھی دیا گیا ہو ، اس کی مثال زردج (زردہ) والا پانی ہو سکتا ہے کہ جب پانی میں اتنا زردہ ڈالا جائے جس سے کسی چیز کو رنگ نہ دیا جاسکے تو اس صورت میں وہاں دوسرا مقصد تو حاصل نہیں مگر اس کو پانی نہیں کہا جاتا، اس کے برخلاف زعفران والا پانی ہے لیکن جب زردہ کی اتنی مقدار ہو جس سے کسی چیز کو رنگا جاسکتا ہو، تو یہ بھی ایک تغییر ہے جو دوسرے مقصد کیلئے تیار کیا گیا ہے، مگر دونوں صورتوں میں اس حد کا تغیر ہے کہ وہاں پانی کا نام سلب ہو جاتا ہے فرق صرف یہ ہے پہلے میں نئے مقصد کیلئے نیا نام نہیں ہے جبکہ دوسری صورت میں نئے مقصد کیلئے نیا نام ہے ، جب

دونوں صورتوں میں پانی مغلوب ہو کر اپنا نام کھو بیٹھا ہے تو ان دونوں صورتوں میں اس سے وضو نا جائز ہوگا کیونکہ وضو کے منع ہونے کیلئے پانی کا مغلوب ہو جانا ہی معیار ہے۔ آپ غور کریں تو معلوم ہوگا کہ پانی سے اس کے نام کو سلب کرنے والے دو سبب ہیں ایک نئے مقصد کیلئے تیار ہونا اور دوسرا اس کے پانی ہونے میں تردد پایا جانا۔ (ت) گزشتہ تحقیق سے علماء کے اس قول کا بھی جواب واضح ہو گیا جس کو انہوں نے غیر چیز کے غلبہ کی پہلی بحث میں عنایہ اور مجمع الانہر سے نقل کیا ہے کہ حقیقی غلبہ اجزاء کی وجہ سے ہوتا ہے کیونکہ مرکب چیز کا وجود اجزاء کی وجہ سے ہوتا ہے لہٰذا اجزاء کے غلبہ کا

Vol. 3 Fatawa-e-Razvia

How [could it be otherwise] when we have consensus and the text of the Hadith [supports] considering dominance by qualities in a large quantity mixed with impurity.

And in (1) blood, if it comes out of the mouth, dominance between it and saliva is considered in terms of color. If it is red, it invalidates Wudu (ablution), and if it is yellow, it does not, as in 'Tabyin', 'Al-Bahr', and others. And in (2) blood that comes out of the teeth and is swallowed, if it dominates the saliva, the fast is broken. This is known by finding its taste, and most [scholars] follow this. This was affirmed in 'Al-Bazzaziya' and approved by Al-Kamal and Shaykh al-Islam al-Ghazi as in 'Ad-Durr'. This distribution is according to my school's path: in Wudu, color is considered as a priority, and in fasting, taste is considered because perceiving color is difficult. I say: You, the Second Imam (3), are specifically mentioned regarding the milk of a woman mixed with medicine, that if...

Dominance is primary. This is unlike dominance based on color because it refers back to a quality. The answer to this is clear: when many impure things mix with water, the text of the Hadith and our consensus exist there regarding dominance by qualities. Its examples are as follows: when blood comes out of the mouth, dominance is considered in terms of color. If there is redness in the saliva, the blood will be dominant, and if there is only yellowness instead of redness, the saliva will be dominant, on which the ruling of Wudu breaking or not breaking is enforced, as mentioned in 'Tabyin', 'Al-Bahr', etc. And when blood comes out from the teeth and a fasting person swallows it, then if there was a taste of blood, it will be ruled as dominant and a decree for invalidation of the fast will be given. If no taste of blood was found, the fast will not be invalidated.

Note: The phrase from 'Wajiz al-Kardari' is: "There is nothing [wrong] when blood comes out from between the teeth and the saliva is dominant, so he swallows it and does not find its taste. If the blood dominates or they are equal, it is invalidated etc." And the phrasing in 'Ad-Durr' is: "If the blood dominates or they are equal, it is invalidated, otherwise not, unless its taste is found - Bazzaziya etc." I say: The exception is in consideration of dominance by parts, and the ruling is in consideration of dominance by attribute. For the dominated thing has no ruling. May he be forgiven (M).

The text of 'Wajiz al-Kardari' is as follows: "When blood comes out from the teeth and the saliva remains dominant over it, there is no harm as long as one does not find the taste of blood while swallowing. And if the blood dominates over the saliva or is equal, the Wudu will be invalidated etc." And the text of 'Ad-Durr al-Mukhtar' is as follows: "If the blood dominates or both are equal, the Wudu will be invalidated, otherwise not, unless he finds the taste of blood - Bazzaziya etc." I say that in the text of 'Ad-Durr al-Mukhtar', dominance is described in the ruling in terms of attribute, and in the exception, dominance is described in terms of parts, because there is no ruling in consideration of the dominated thing. (T)

---

1. Fatawa Bazzaziya on the margins of Fatawa Hindiyya, Book of Fasting, 4/98.
2. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on what invalidates fasting, Delhi Press, 1/149.

कैसे [अन्यथा हो सकता है] जब हमारे पास आम सहमति है और हदीस का पाठ अशुद्धता के साथ मिश्रित बड़ी मात्रा में गुणों के माध्यम से प्रभुत्व के विचार पर आधारित है।

और (1) रक्त के मामले में, यदि वह मुँह से निकलता है, तो उसके और लार के बीच प्रभुत्व को रंग के संदर्भ में माना जाता है। यदि वह लाल है, तो वज़ू टूट जाता है, और यदि वह पीला है, तो नहीं, जैसा कि 'तबयीन', 'अल-बहर' और अन्य में उल्लेख है। और (2) रक्त जो दाँतों से निकलता है और निगल लिया जाता है, यदि वह लार पर हावी हो जाता है, तो रोज़ा टूट जाता है। यह उसके स्वाद को महसूस करने से पता चलता है, और अधिकांश विद्वान इसी को मानते हैं। इसकी पुष्टि 'अल-बज़ाज़िया' में की गई थी और अल-कमाल और शेखुल इस्लाम अल-ग़ाज़ी ने 'अद्दुर्र' में इसे सराहा था। यह वितरण मेरे मार्ग के अनुसार है: वज़ू में प्राथमिकता के आधार पर रंग को माना जाता है, और रोज़े में स्वाद को माना जाता है क्योंकि रंग को पहचानना मुश्किल होता है। मैं कहता हूँ: हे दूसरे इमाम (3), आपने विशेष रूप से दवा के साथ मिश्रित महिला के दूध के बारे में कहा कि वह...

प्रभुत्व प्राथमिक है। यह रंग-आधारित प्रभुत्व के विपरीत है क्योंकि यह गुण (सिफ़त) की ओर लौटता है। इसका उत्तर स्पष्ट है: जब बहुत सारी नापाक चीजें पानी में मिलती हैं, तो वहाँ गुणों के प्रभुत्व के संबंध में हदीस का पाठ और हमारा इज्मा (आम सहमति) मौजूद है। इसके उदाहरण इस प्रकार हैं: जब मुँह से खून निकलता है, तो वहाँ रंग के आधार पर प्रभुत्व माना जाता है। यदि लार में लाली है, तो खून को हावी माना जाएगा, और यदि लाली के बजाय केवल पीलापन है, तो लार को हावी माना जाता है, जिसके आधार पर वज़ू टूटने या न टूटने का आदेश लागू होता है, जैसा कि 'तबयीन', 'अल-बहर' आदि में है। और जब दाँतों से खून निकलता है और रोज़ेदार उसे गले से नीचे उतार लेता है, तो यदि खून का स्वाद महसूस हुआ, तो खून को हावी मानकर रोज़ा टूटने का हुक्म दिया जाएगा। और यदि खून का स्वाद नहीं पाया गया, तो रोज़ा नहीं टूटेगा।

नोट: 'वजीज़ अल-करदरी' की इबारत है: "जब दाँतों के बीच से खून निकले और लार हावी हो, तो उसे निगलने में कोई हर्ज नहीं यदि उसका स्वाद न मिले। यदि खून हावी हो या दोनों बराबर हों, तो यह अमान्य है इत्यादि।" और 'अद्दुर्र' की इबारत है: "यदि खून हावी हो या बराबर हो, तो यह अमान्य है, अन्यथा नहीं, जब तक कि उसका स्वाद न पाया जाए - बज़ाज़िया आदि।" मैं कहता हूँ:

अपवाद अंगों/हिस्सों के प्रभुत्व के विचार से है, और हुक्म (आदेश) गुण के प्रभुत्व के विचार से है। क्योंकि दबी हुई (मगलूब) चीज़ का कोई हुक्म नहीं होता। ईश्वर उन्हें क्षमा करे (म)।

'वजीज़ अल-करदरी' का पाठ इस प्रकार है: "जब दाँतों से खून निकले और उस पर लार हावी रहे, तो कोई हर्ज नहीं है बशर्ते निगलते समय खून का स्वाद न मिले। और अगर लार पर खून हावी हो जाए या बराबर हो, तो वज़ू टूट जाएगा इत्यादि।" और 'अद्दुर्र अल-मुख़्तार' का पाठ इस प्रकार है: "यदि खून हावी हो या दोनों बराबर हों, तो वज़ू टूट जाएगा, अन्यथा नहीं, सिवाय इसके कि वह खून का स्वाद पाए - बज़ाज़िया आदि।" मैं कहता हूँ कि 'अद्दुर्र अल-मुख़्तार' के पाठ में हुक्म में गुण के लिहाज़ से प्रभुत्व को बताया गया है, और अपवाद में अंगों के लिहाज़ से प्रभुत्व को बताया गया है, क्योंकि दबी हुई चीज़ के लिहाज़ से कोई हुक्म नहीं होता। (त)

---

1. फ़तावा बज़ाज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिए पर, किताबुस्-सौम (रोज़े की किताब), 4/98।
2. अद्दुर्र अल-मुख़्तार, रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों का अध्याय, दिल्ली प्रेस, 1/149। पृष्ठ 169 / 756

كيف وقد اجمعنا ونص الحديث على اعتبار الغلبة بالاوصاف في كثير يخالطه نجس، وفى (١) الدم ان خرج من الفم تعتبر الغلبة بينه وبين الريق من حيث اللون فانكان احمر نقض الوضو وان اصفر لا كما فى التبيين والبحر وغيرهما وفى (٢) الدم خرج من اسنانه فابتلعه ان غلب على الريق افطر ويعرف بوجدان طعمه وعليه الاكثر و به جزم في البزازية واستحسنه الكمال و شيخ الاسلام الغزى كما فى الدرعه وهذا التوزيع على وفق مسلكى فاعتبر وفى الوضو اللون تقديما له وفي الصوم الطعم لتعذر ادراک اللون وقلت: خاصة انت ايها الامام الثاني (٣) في لبن امرأة خلط بدواء انه ان

اعتبارِ اولیٰ ہے۔ بخلاف رنگ والے غلبہ کے کیونکہ وہ وصف کی طرف راجع ہے۔ اس کا جواب اس لئے واضح ہے کہ بہت سی نجس چیزیں جب پانی میں ملتی ہیں تو وہاں اوصاف کے غلبہ کے اعتبار سے حدیث کی نص اور ہمارا اجماع بھی ہے، اس کی مثالیں حسب ذیل ہیں، جب منہ سے خون نکلے تو وہاں رنگ کے اعتبار سے غلبہ ہوتا ہے کہ اگر تھوک میں سرخی ہو تو خون غالب ہوگا اور اگر سرخی کی بجائے صرف زردی ہو تو تھوک غالب ہوتا ہے جس پر وضو ٹوٹنے اور نہ ٹوٹنے کا حکم نافذ ہوتا ہے، جیسا کہ تبیین، بحر و غیرہما میں ہے، اور جب دانتوں سے خون نکلے اور روزہ دار اس کو حلق میں اتار لے تو اگر خون کا ذائقہ ہوا تو خون کو غالب قرار دے کر روزہ کے فساد کا حکم ہوگا اور اگر خون کا ذائقہ نہ پایا تو روزہ فاسد نہ ہوگا،

عه عبارة وجيز الكردري لاشيئ اذا خرج الدم من بين اسنانه والبزاق غالب فابتلعه ولم يجد طعمه وان غلب الدم اوتساويا فسد اهـ - ونظم الدر ان غلب الدم اوتساويا فسد، والا لا، اذا وجد طعمه بزازية الخ اقول: فالثنيا باعتبار الغلبة بالاجزاء والحكم باعتبار الغلبة بالوصف فان المغلوب لا حكم له منه غفر له۔ (م)

وجیز الکردری کی عبارت یوں ہے "جب دانتوں سے خون نکلے اور اس پر تھوک کی غالب رہے تو کوئی حرج نہیں جبکہ نگلنے میں خون کا ذائقہ نہ پائے، اور اگر تھوک پر خون غالب ہو یا برابر ہو تو وضو فاسد ہوگا اھ اور در مختار کی عبارت یوں ہے: "اگر خون غالب ہو یا دونوں مساوی ہوں تو وضو فاسد ہوگا ورنہ نہیں الا یہ کہ خون کا ذائقہ پائے بزازیہ الخ میں کہتا ہوں کہ در مختار کی عبارت میں حکم میں وصف کے لحاظ سے غلبہ کو بیان کیا گیا ہے اور استثناء میں اجزاء کے لحاظ سے غلبہ کو بیان کیا گیا ہے کیونکہ مغلوب چیز کے لحاظ سے حکم نہیں ہوتا۔ (ت)

---

1 فتاوی بزازیہ علی ھامش فتاوی ہندیہ کتاب الصوم ۹۸/۴ 2 در مختار باب مایفسد الصوم مطبع دہلی ۱/۱۴۹

Fatawa Razawiyya - Volume 3

[Arabic Section]: “Beyond its taste and color, there are signs upon which the prohibition of fosterage (Rada’) depends, otherwise it is not prohibited.” It is stated in Al-Tabyin, within Al-Muntaqa, that the explanation of 'prevalence' (Ghalbah) is narrated from Ibn Sama'ah on the authority of Abu Yusuf. He said: “If medicine is put into a woman's milk and it changes its color but not its taste, or vice versa, and a child is given it, the prohibition is established. If both the color and taste change such that no taste of milk remains and its color is gone, then it is not prohibited.” In the narration of Al-Walid from Muhammad, the interpretation of 'prevalence' is that he said: “As long as the medicine does not stop it from being milk, the prohibition is established through it.” (1) [End of quote].

[Urdu Section]: This is the position of most scholars, and Al-Bazzaziyya stated it with certainty. Kamal and Shaykh al-Islam al-Ghazzi favored it, as mentioned in Durr al-Mukhtar. The aforementioned division and order align with my established rule: regarding Wudu (ablution), the color will be considered first, and regarding fasting, the taste will be considered, because in the state of fasting, perceiving the color is difficult. And (3) specifically regarding the Second Imam (Imam Yusuf), I say that he stated concerning a woman's milk that if it is mixed with medicine, and due to that medicine the color and taste of that milk change, then the prohibition of fosterage will not be established to avoid it; otherwise, the prohibition will be established. It is stated in Tabyin that in Muntaqa, this interpretation of 'prevalence' from Imam Yusuf has been given: that when medicine is added to a woman's milk such that one of either the color or taste changes and the other does not, and then a child drinks it, the prohibition will be established. If both color and taste change due to the medicine and neither taste nor color remains, then the prohibition will not be established. And Walid described the interpretation of 'prevalence' from Imam Muhammad such that as long as the medicine has kept the status of milk intact, the prohibition will be established. [End of quote].

[Arabic Section]: If you ask: “Why did Muhammad deviate here from attributes (color, taste, smell) to components (essence)?” I say: “Because the ruling regarding purification depends on water, so the absolute (state) is required. But here, the ruling depends on fosterage (1), and suckling from the breast is not necessary by consensus. Thus, what remains is the milk reaching the stomach. As long as the milk remains milk, the 'reaching' is valid.” This is what appeared to me.

[Urdu Section]: (T) If your objection is: “Why did Imam Muhammad deviate towards components instead of attributes in considering prevalence here?” Then in response, I say that in the matter of purification, the ruling relates to water, which must be kept absolute, whereas here the ruling relates to fosterage, in which sucking from the breast is not mandatory.

---

1. Tabyin al-Haqa'iq, Kitab al-Rada', Al-Amiriyya Printing Press, Egypt, 185/2. Page 170 of 756

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

[अरबी खंड]: “इसके स्वाद और रंग के अलावा ऐसे संकेत हैं जिन पर स्तनपान (रज़ाअत) की मनाही निर्भर करती है, अन्यथा यह वर्जित नहीं है।” अल-तबीन में, अल-मुंतक़ा के भीतर, इब्न समाअह की इमाम अबू यूसुफ़ से रिवायत में 'ग़लबा' (प्रबलता) की व्याख्या की गई है। उन्होंने कहा: “यदि किसी महिला के दूध में दवा मिला दी जाए और वह उसका रंग बदल दे लेकिन स्वाद नहीं, या इसके विपरीत, और किसी बच्चे को वह पिलाया जाए, तो मनाही (हुरमत) स्थापित हो जाती है। यदि रंग और स्वाद दोनों बदल जाते हैं जिससे दूध का कोई स्वाद नहीं बचता और उसका रंग चला जाता है, तो मनाही नहीं होती।” मुहम्मद से वलीद की रिवायत में 'ग़लबा' की व्याख्या यह है कि उन्होंने कहा: “जब तक दवा इसे दूध होने से नहीं रोकती, तब तक इसके माध्यम से हुरमत स्थापित हो जाती है।” (1) [समाप्त]।

[उर्दू खंड]: यही अधिकांश विद्वानों का रुख है, और अल-बज़ाज़िया ने इसे निश्चित रूप से कहा है। कमाल और शेख अल-इस्लाम अल-ग़ज़ी ने इसे पसंद किया है, जैसा कि दुर्र अल-मुख्तार में उल्लेखित है। उक्त विभाजन और क्रम मेरे स्थापित नियम के अनुरूप है: वज़ू (शुद्धि) के संबंध में, पहले रंग पर विचार किया जाएगा, और रोज़े के संबंध में, स्वाद पर विचार किया जाएगा, क्योंकि रोज़े की स्थिति में रंग को पहचानना कठिन होता है। और (3) विशेष रूप से दूसरे इमाम (इमाम यूसुफ़) के बारे में, मैं कहता हूँ कि उन्होंने महिला के दूध के बारे में कहा है कि यदि उसे दवा में मिला दिया जाए, और उस दवा के कारण उस दूध का रंग और स्वाद बदल जाए, तो इससे बचने के लिए स्तनपान वाली हुरमत स्थापित नहीं होगी; अन्यथा, हुरमत स्थापित हो जाएगी। तबीन में कहा गया है कि मुंतक़ा में इमाम यूसुफ़ से 'ग़लबा' की यह व्याख्या दी गई है: कि जब महिला के दूध में दवा इस तरह डाली जाए कि रंग या स्वाद में से कोई एक बदल जाए और दूसरा न बदले, और फिर कोई बच्चा उसे पी ले, तो हुरमत स्थापित हो जाएगी। यदि दवा के कारण रंग और स्वाद दोनों बदल जाते हैं और न स्वाद रहता है न रंग, तो हुरमत स्थापित नहीं होगी। और वलीद ने इमाम मुहम्मद से ग़लबा की व्याख्या इस प्रकार की है कि जब तक दवा ने दूध की स्थिति को बरकरार रखा है, तब तक हुरमत स्थापित हो जाएगी। [समाप्त]।

[अरबी खंड]: यदि आप पूछें: “मुहम्मद यहाँ गुणों (रंग, स्वाद, गंध) से हटकर घटकों (तत्व) की ओर क्यों मुड़े?” मैं कहता हूँ: “क्योंकि शुद्धि के संबंध में निर्णय पानी पर निर्भर करता है, इसलिए पूर्ण (स्थिति) की आवश्यकता होती है। लेकिन यहाँ, निर्णय स्तनपान (1) पर निर्भर करता है, और स्तन से

चूसना सर्वसम्मति से आवश्यक नहीं है। इस प्रकार, जो शेष रहता है वह दूध का पेट तक पहुँचना है। जब तक दूध दूध बना रहता है, 'पहुँचना' मान्य है।" यही मुझे प्रतीत हुआ।

[उर्दू खंड]: (त) यदि आपकी आपत्ति यह है: "इमाम मुहम्मद ने यहाँ प्रबलता पर विचार करने में गुणों के बजाय घटकों की ओर क्यों रुख किया?" तो इसके उत्तर में मैं कहता हूँ कि शुद्धि के मामले में निर्णय पानी से संबंधित होता है, जिसे पूर्ण रखा जाना चाहिए, जबकि यहाँ निर्णय रज़ाअत (स्तनपान) से संबंधित है, जिसमें स्तन से चूसना अनिवार्य नहीं है।

---

1. तबीन अल-हक़ाएक़, किताब अर-रज़ा, अल-अमीरिया प्रिंटिंग प्रेस, मिस्र, 185/2। पृष्ठ 170 / 756

غیر طعمہ ولونہ معالم یتعلق بہ تحریم الرضاع والا حرم - قال فی التبیین فی المنتقی فسر الغلبۃ فی روایۃ ابن سماعۃ عن ابی یوسف فقال اذا جعل فی لبن المرأۃ دواء فغیر لونہ ولم یغیر طعمہ او علی العکس فاوجر بہ صبی حرّم وان غیر اللون والطعم ولم یوجد فیہ طعم اللبن وذہب لونہ لم یحرّم وفسر الغلبۃ فی روایۃ الولید عن محمد فقال اذالم یغیرہ الدواء من ان یکون لبناً تثبت بہ الحرمۃ ۱ اھـ

یہی اکثر علماء کا موقف ہے اور اسی پر بزازیہ نے جزم کیا ہے کمال اور شیخ الاسلام الغزی نے اس کو پسند کیا ہے ، جیسا کہ در مختار میں ہے، اور مذکور تقسیم و ترتیب میرے ضابطہ کے مطابق ہے کہ وضو کے بارے میں رنگ کا اعتبار پہلے ہوگا اور روزہ کے بارے میں ذائقہ کا اعتبار ہوگا، کیونکہ روزہ کی صورت میں رنگ کا ادراک مشکل ہوتا ہے۔ اور (۳) میں خاص طور پر امام ثانی (امام یوسف) کے بارے میں کہتا ہوں کہ انہوں نے عورت کے دودھ کے متعلق فرمایا ہے کہ اگر وہ دوائی میں مل جائے اور دوائی کی وجہ سے اس دودھ کا رنگ اور ذائقہ تبدیل ہو جائے تو اس سے بچنے کیلئے رضاعت والی حرمت ثابت نہ ہوگی ورنہ حرمت ثابت ہو جائے گی۔ تبیین میں کہا ہے کہ منتقٰی میں امام یوسف سے مروی غلبہ کی یہ تفسیر کی گئی ہے کہ جب عورت کے دودھ میں دوائی ڈالی جائے جس سے دودھ کے رنگ اور ذائقہ میں سے ایک چیز بدل جائے اور دوسری تبدیل نہ ہو تو پھر کسی بچہ نے اس کو پی لیا تو حرمت ثابت ہوگی، اور اور اگر دوائی کی وجہ سے دودھ کا رنگ اور ذائقہ دونوں تبدیل ہو جائیں اور ذائقہ اور رنگ باقی نہ رہے تو حرمت ثابت نہ ہوگی۔ اور امام محمد سے غلبہ کی تفسیر کو ولید نے یوں بیان کیا ہے کہ جب دواء نے دودھ کی حیثیت کو باقی رکھا تو اس سے حرمت ثابت ہوگی اھـ

فان قلت: لم عدل محمد ههنا عن الاوصاف الی الاجزاء قلت: لان الحکم فی الطہارۃ علی الماء فلزم المطلق وہہنا علی الرضاع (۱) والمص من الثدی غیر لازم بالاجماع فبقی وصول اللبن الی الجوف فما دام اللبن لبناً صدق الوصول ہذا ما ظہر لی

(ت) اگر آپ کا یہ اعتراض ہو کہ امام محمد نے یہاں غلبہ کے اعتبار میں اوصاف کی بجائے اجزا کی طرف کیوں عدول کیا ہے؟ تو اس کے جواب کیلئے میں کہتا ہوں کہ طہارت کے معاملہ میں حکم کا تعلق پانی سے ہوتا ہے جس کو مطلق رکھنا ضروری ہے اور یہاں حکم کا تعلق رضاع سے ہے جس میں پستان سے چوسنا لازم نہیں ہے

---

۱ تبیین الحقائق کتاب الرضاع مطبع الامیریہ مصر ۲/۱۸۵ Page 170 of 756

Fatawa Razawiyya - Volume 3

In the explanation of the school of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him): I say: Abu Yusuf (may Allah be pleased with him) used to say that doubt and ambiguity due to an incidental factor do not change the essence. A thing does not exit its manifest reality, which the intellect perceives upon hearing its name, like Zaid arriving in disguise so people do not recognize him. There is no meaning in the disappearance of the name while the reality remains in terms of its parts and purpose, as we have previously established. Confusion may sometimes occur by mixing a solid, for it only causes change when it dissolves. When its action and the action of a liquid are unified, the confusion is equal. For if you put safflower (asfar) in water and it turns yellow, becoming like safflower-dyed water (zaradaj), you cannot distinguish between it and water into which safflower water was poured. We have agreed on disregarding it as long as it is not prepared for another purpose. Impurity does not affect the change of the essence of water, as we have already established that impure and used water are considered absolute water, and it only strips it of the attribute of purity. Thus, it is permissible to build upon it based on attributes that do not change with the change of the essence, unlike what is here; for as long as the essence remains intact, it remains under the commanded absolute water. What is considered in Wudu is: (1) The flow of impurity by its own strength, and there is no consideration after that for its mixing with...

[Urdu Column Text]: Rather, by consensus, the swallowing of milk here is what is considered. So as long as the status of milk remains, its arrival in the throat will be considered. This is my opinion regarding the explanation of Imam Muhammad's school of thought. (T) I say: Imam Yusuf speaks as if saying that doubt and ambiguity in something due to an incidental factor cannot remove the essence of that thing from its reality. Its reality is that which comes to mind upon hearing its name, just as if Zaid changes his state and comes, people will not recognize him (despite that he is Zaid). The name of a thing does not end as long as the reality of the thing remains in terms of its components and purpose, as we have researched before. Similarly, confusion sometimes arises due to the mixing of a solid substance because a solid substance creates a change only by melting and dissolving in water. Therefore, since the action of both liquid and solid is somewhat equal, the situation of ambiguity and doubt from both is also equal. Surely, when you put safflower in water, the water will turn yellow in the same way that saffron-dyed water is yellow. You will not be able to clearly differentiate between the two in the change of color, while we have already

declared the slight color of saffron water as non-existent, just as our research has previously passed that impure water and used water are absolute water, only their attribute of purity is negated. Therefore, of impurity...

फ़तावा रज़विया - खंड 3

इमाम मोहम्मद (रह.) के मज़हब की व्याख्या में: मैं कहता हूँ: अबू यूसुफ़ (रज़ि.) कहते थे कि किसी आकस्मिक कारण से उत्पन्न संदेह और भ्रम सार (ज़ात) को नहीं बदलता। कोई चीज़ अपनी उस वास्तविकता से बाहर नहीं होती जो उसके नाम सुनने पर समझ में आती है, जैसे ज़ैद अपनी हालत बदलकर आए तो लोग उसे नहीं पहचानेंगे (इसके बावजूद वह ज़ैद ही है)। नाम के लुप्त होने का कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वास्तविकता उसके अंगों और उद्देश्य के लिहाज़ से बनी रहे, जैसा कि हम पहले शोध कर चुके हैं। कभी-कभी ठोस चीज़ मिलाने से भ्रम पैदा हो जाता है क्योंकि ठोस चीज़ पानी में पिघलकर और घुलकर ही परिवर्तन लाती है। अतः जब तरल और ठोस दोनों का प्रभाव समान हो, तो दोनों से उत्पन्न होने वाला संदेह भी समान है। निश्चित रूप से जब आप पानी में केसर (अस्फ़र) डालेंगे तो पानी उसी तरह पीला हो जाएगा जैसे कुसुम (ज़रदज) का पानी पीला होता है। आप रंग के बदलाव में दोनों का अंतर स्पष्ट नहीं कर पाएंगे, जबकि हम कुसुम के पानी के मामूली रंग को नगण्य मान चुके हैं, जैसा कि हमारा शोध पहले ही गुज़र चुका है कि नापाक पानी और इस्तेमाल किया हुआ पानी 'मुतलक' (शुद्ध) पानी ही होते हैं, केवल उनका पवित्रता का गुण समाप्त हो जाता है। इसलिए, नजासत के..

[उर्दू कॉलम पाठ]: बल्कि सर्वसम्मति (इजमा) से यहाँ दूध का गले से नीचे उतरना मान्य है, तो जब तक दूध की स्थिति बनी रहती है, तब तक गले में पहुँचने का विचार बाकी रहेगा। इमाम मोहम्मद के मज़हब की व्याख्या में यह मेरी राय है। (त) मैं कहता हूँ, इमाम यूसुफ़ गोया यूँ फ़रमाते हैं कि किसी आकस्मिक कारण (आरिज़ा) की वजह से किसी चीज़ में संदेह और भ्रम उस चीज़ के सार को उसकी वास्तविकता से बाहर नहीं कर सकता। उसकी वास्तविकता वही है जो उसका नाम सुनने पर समझ में आए, जैसे कि ज़ैद अपनी स्थिति बदलकर आए तो लोग उसे नहीं पहचानेंगे (इसके बावजूद वह ज़ैद ही है)। चीज़ का नाम तब तक समाप्त नहीं होता जब तक कि चीज़ की वास्तविकता घटकों और उद्देश्य के लिहाज़ से बनी रहे, जैसा कि हम पहले शोध कर चुके हैं। इसी तरह, ठोस चीज़ मिलने से कभी-कभी भ्रम पैदा हो जाता है क्योंकि ठोस चीज़ पानी में पिघलकर और घुलकर ही उसमें परिवर्तन लाती है। अत; जब तरल और ठोस दोनों का कार्य लगभग समान है, तो दोनों से भ्रम और संदेह की स्थिति भी समान है। निश्चित रूप से जब आप पानी में केसर डालेंगे, तो पानी उसी तरह पीला होगा जैसे केसरिया पानी पीला होता है। आप रंग के परिवर्तन में दोनों के बीच स्पष्ट अंतर नहीं कर पाएंगे, जबकि हम केसरिया पानी के मामूली रंग को नगण्य घोषित कर चुके हैं, जैसा कि पहले हमारा शोध

हो चुका है कि अशुद्ध पानी और प्रयुक्त (मुस्तमल) पानी शुद्ध पानी ही होते हैं, केवल उनकी पवित्रता का गुण समाप्त हो जाता है। इसलिए, नजासत के..

فی تقریر مذہب محمد رحمہ اللہ تعالی- اقول: وکان ابایوسف یقول رضی اللہ تعالی عنہ الارتیاب والالتباس لعارض لا یغیر الذات لایخرج الشیئ عن حقیقتہ المتبادر الیھا الافھام عنہ سماع اسمہ کزید جاء متنکرا فلم یعرفہ الناس ولا معنی لزوال الاسم مع بقاء الحقیقۃ اجزاء ومقصودا کما قدمنا تحقیقہ ولربما یحصل الالتباس بخلط جامد فانہ لایغیر الا اذا انماع فاذا اتحد عملہ وعمل مائع کان اللبس علی حد سواء فانك ان القیت في الماء عصفرًا فاصفر وصار کماء الزردج لا تفرق بینہ وبین ماء القي فیہ ماء الزردج وقد اجمعنا علی اھدارہ مالم یتھیأ لمقصد آخر والنجس لایؤثر في تغییر ذات الماء کما مر منا تحقیقہ ان الماء النجس والمستعمل من الماء المطلق وانما یسلبہ وصف الطھارۃ فجاز البناء فیہ علی الاوصاف التي لا تتغیر بتغیرھا الذات بخلاف ماھنا فانہ مھما تبقی الذات سالمۃ یبقی داخلا تحت المطلق المأمور بہ والمعتبر في الوضو (۱) سیلان نجس بقوتہ ولانظر بعد ذلك الی امتزاجہ مع

[اردو کالم متن]: بلکہ بالاجماع یہاں دودھ کا حلق سے اندر اترنا معتبر ہے تو جب تک دودھ کی حیثیت باقی ہے اس وقت تک حلق میں وصول کا لحاظ باقی رہے گا، امام محمد کے مذہب کی تقریر میں یہ میری رائے ہے۔(ت) میں کہتا ہوں، امام یوسف گویا یوں فرماتے ہیں کہ عارضہ کی بنا پر کسی چیز میں تردد و اشتباہ اس چیز کی ذات کو اپنی حقیقت سے خارج نہیں کر سکتا حقیقت اس کی وہی ہے جو اس کے نام سننے پر فہم میں آئے، جیسا کہ زید اپنی حالت تبدیل کرکے آئے تو لوگ اس کو نہیں پہچانیں گے (اس کے باوجود وہ زید ہے) شیئ کا نام اُس وقت تک ختم نہیں ہوتا جب تک شیئ کی حقیقت اجزاء اور مقصود کے اعتبار سے باقی ہو جیسے کہ ہم نے پہلے تحقیق کردی ہے، یوں تو جامد چیز ملنے سے کبھی اشتباہ پیدا ہو جاتا ہے کیونکہ جامد چیز پانی میں پگھل کر اور گھل کر ہی اس میں تبدیلی پیدا کرتی ہے، لہٰذا جب مائع اور جامد دونوں کا عمل قدرے

مساوی ہے تو دونوں سے اشتباہ و تردد کی صورت بھی برابر ہے یقیناً آپ جب پانی میں عصفر ڈالیں گے تو پانی اسی طرح زرد ہوگا جس طرح زردہ والا پانی زرد ہوتا ہے آپ رنگ کی تبدیلی میں دونوں کا فرق واضح نہیں کر پائیں گے جبکہ ہم زردہ کے پانی کے معمولی رنگ کو کالعدم قرار دے چکے ہیں جیسا کہ پہلے ہماری تحقیق گزر چکی ہے کہ ناپاک پانی اور مستعمل پانی مطلق پانی ہوتے ہیں صرف ان کا وصف طہارت منتفی ہوتا ہے لہٰذا نجاست کے

Fatawa Razawiya, Volume 3

[Arabic Text Section] ...pure [if it is] less or more than that. The redness of saliva indicates that blood is exiting in a large quantity by its own force, and its yellowness indicates it is a small amount accompanied by saliva. Imam az-Zayla'i said: If blood comes from the mouth itself, the dominance between it and the saliva is considered. If they are equal, wudu (ablution) is broken because saliva flows by its own force, and so does its equal, unlike what is dominated, for it flows by the force of the dominant one. This is considered in terms of color[1] etc. Then (1) he said: If one vomits blood, if it descended from the head, it breaks [wudu] whether it is a small or large amount by the consensus of our companions (scholars). If (2) it rose from the stomach, the chosen opinion is that if it is clotted, filling the mouth is considered because it is not [liquid] blood but rather burnt black bile. If it is liquid, it breaks [wudu] even if it is a small amount because it originates from a wound in the stomach and has reached what is subject to the rule of purification.[2] He then said under the quote from al-Kanz (3) "not phlegm (4) or blood dominated by saliva": its text is: "This is if it comes from the mouth itself. If it comes from the stomach, we have mentioned its details."[3] i.e., if it was clotted, filling the mouth is considered, otherwise it breaks [wudu] even if it is a small amount. Allama Shami said in Minhat al-Khaliq: What comes out of the stomach does not mix with saliva until after it reaches the mouth because...

[Urdu Text Section] A ruling can be based on such qualities whose change does not alter the essence of water. However, the ruling of change due to a pure thing mixing into water is different because here, despite the change in qualities, the essence of absolute water remains intact for use. In the invalidation of wudu, the flowing of impurity from the body by its own force is considered. After that, whether the mixing of this impurity with a pure thing is in a small or large quantity will not be considered. So, the redness of saliva will be evidence of the abundance and force of blood exiting from the mouth, and the yellowness of saliva will be evidence of the blood being small and dominated. Imam az-Zayla'i said that in the case of blood coming out of the mouth, dominance will be considered, and even if blood and saliva are equal, wudu will be invalidated because in this case, saliva and blood have exited with equal force. The case of the dominated one is contrary to this because it follows the dominant one, and dominance will be considered by color, etc. Then he said after that: if one vomits blood, it should be determined whether this blood descended from the head or rose from the stomach. If it descended from the head, wudu will be

invalidated regardless of whether the blood is small or large in quantity; there is a consensus of our companions (scholars) on this.

[Footnotes] 1. Tabyin al-Haqa'iq, Nawaqid al-Wudu, Matba'ah Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/8. 2. Tabyin al-Haqa'iq, Nawaqid al-Wudu, Matba'ah Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/9. 3. Tabyin al-Haqa'iq, Nawaqid al-Wudu, Matba'ah Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/9.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[अरबी पाठ अनुभाग] ...शुद्ध [यदि यह] उससे कम या अधिक हो। लार की लाली दर्शाती है कि रक्त अपनी शक्ति से बड़ी मात्रा में निकल रहा है, और इसका पीलापन दर्शाता है कि यह लार के साथ थोड़ी मात्रा में है। इमाम अज़-ज़ैलई ने कहा: यदि रक्त स्वयं मुँह से निकलता है, तो उसके और लार के बीच प्रबलता (ग़लबा) पर विचार किया जाता है। यदि वे बराबर हैं, तो वज़ू टूट जाता है क्योंकि लार अपनी शक्ति से बहती है, और वैसे ही उसका बराबर भी, उसके विपरीत जिसे दबा दिया जाता है (मगलूब), क्योंकि वह प्रबल की शक्ति से बहता है। इसे रंग[1] आदि के संदर्भ में माना जाता है। फिर (1) उन्होंने कहा: यदि कोई रक्त की उल्टी करता है, यदि वह सिर से उतरा है, तो हमारे विद्वानों की सर्वसम्मति से वज़ू टूट जाता है चाहे वह कम मात्रा हो या अधिक। यदि (2) वह पेट से ऊपर आया हो, तो पसंदीदा मत यह है कि यदि वह थक्का (क्लॉट) हो, तो मुँह भर होने का विचार किया जाएगा क्योंकि वह [तरल] रक्त नहीं है बल्कि जली हुई काली पित्त है। यदि वह तरल है, तो वज़ू टूट जाता है चाहे वह कम मात्रा में ही क्यों न हो क्योंकि वह पेट के एक घाव से निकलता है और उस स्थान तक पहुँच गया है जो सफ़ाई के नियम के अधीन है।[2] फिर उन्होंने अल-कन्ज़ (3) के उद्धरण के तहत कहा "कफ (4) नहीं या रक्त जिस पर लार प्रबल हो": इसका मूल पाठ है: "यह तब है जब वह स्वयं मुँह से निकलता है। यदि वह पेट से निकलता है, तो हमने उसके विवरण का उल्लेख किया है।"[3] अर्थात, यदि वह थक्का था, तो मुँह भर का विचार किया जाता है, अन्यथा वज़ू टूट जाता है भले ही वह कम मात्रा में हो। अल्लामा शामी ने मिन्हात अल-ख़ालिक में कहा: जो कुछ पेट से निकलता है वह लार के साथ तब तक नहीं मिलता जब तक कि वह मुँह तक न पहुँच जाए क्योंकि...

[उर्दू पाठ अनुभाग] नियम ऐसे गुणों पर आधारित हो सकता है जिनके परिवर्तन से पानी का मूल स्वरूप नहीं बदलता। लेकिन पानी में शुद्ध वस्तु मिलाने के कारण परिवर्तन का नियम इसके विपरीत है क्योंकि यहाँ गुणों में परिवर्तन के बावजूद, पूर्ण पानी का मूल स्वरूप उपयोग के लिए बरकरार रहता है। वज़ू के टूटने में, शरीर से अशुद्धि का अपनी शक्ति से बहना विचारणीय होता है। उसके बाद, इस अशुद्धि का किसी शुद्ध वस्तु के साथ मिलना कम या अधिक मात्रा में हो, इस पर ध्यान नहीं दिया जाएगा। अतः, लार की लाली मुँह से निकलने वाले रक्त की प्रचुरता और शक्ति का प्रमाण होगी, और लार का पीलापन रक्त के कम और मगलूब (दबा हुआ) होने का प्रमाण होगा। इमाम अज़-ज़ैलई ने कहा कि मुँह से रक्त निकलने के मामले में, प्रबलता पर विचार किया जाएगा, और यदि रक्त और लार बराबर हों, तो भी वज़ू अमान्य हो जाएगा क्योंकि इस स्थिति में, लार और रक्त समान शक्ति से

निकले हैं। मगलूब का मामला इसके विपरीत है क्योंकि वह प्रबल का अनुसरण करता है, और प्रबलता का विचार रंग आदि से किया जाएगा। फिर उन्होंने इसके बाद कहा: यदि रक्त की उल्टी हो, तो यह निर्धारित किया जाना चाहिए कि यह रक्त सिर से उतरा है या पेट से ऊपर आया है। यदि यह सिर से उतरा हो, तो वज़ू अमान्य हो जाएगा चाहे रक्त कम हो या अधिक; इस पर हमारे विद्वानों की सर्वसम्मति है।

[पादलेख] 1. तबयीन अल-हकाइक, नवाकिद अल-वज़ू, मतबा अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 1/8. 2. तबयीन अल-हकाइक, नवाकिद अल-वज़ू, मतबा अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 1/9. 3. तबयीन अल-हकाइक, नवाकिद अल-वज़ू, मतबा अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 1/9.

पृष्ठ 172/756

[عربی متن] طاهر اقل منه قدرًا اواكثر فاحمرار البزاق يدل على ان الدم كثير خارج بقوته واصفراره على انه قليل استتبعه البصاق، قال الامام الزيلعي الدم ان خرج من نفس الفم تعتبر الغلبة بينه وبين الريق وان تساويا انتقض الوضو لان البصاق سائل بقوة نفسه فكذا مساويہ بخلاف المغلوب لانه سائل بقوة الغالب ويعتبر ذلک من حيث اللون[1] الخ ثم (ا) قال لوقاء دمًا ان نزل من الرأس نقض قل او كثر باجماع اصحابنا وان (۲) صعد من الجوف فالمختار ان كان علقًا يعتبر ملئ الفم لانه ليس بدم وانما هو سوداء احترقت وانكان مائعًا نقض وان قل لانه من قرحة فی الجوف وقد وصل الی مايلحقه حكم التطهير[2] اهـ ثم قال تحت قول الكنز (۳) لابالغما (۴) اودماً غلب عليه البصاق مأنصه هذا اذاخرج من نفس الفم وان خرج من الجوف فقد ذكرنا تفاصيلہ[3] اه ای ان كان علقاً اعتبر ملء الفم والا نقض وان قل۔ قال العلامة الشامی فی منحة الخالق الخارج من الجوف لايخالطه البزاق الابعد وصوله الی الفم لان

[اردو ترجمہ] حکم کی بنیاد ایسے اوصاف پر ہوسکتی ہے جن کی تبدیلی سے پانی کی ذات تبدیل نہ ہو لیکن پانی میں پاک چیز ملنے کی وجہ سے تغیر کا حکم اس کے خلاف ہے کیونکہ یہاں اوصاف کی تبدیلی سے مطلق پانی کی ذات قابل استعمال ہونے میں سالم رہتی ہے۔ اور وضو کے فساد میں بدن سے نجاست کا اپنی قوت سے بہنا معتبر ہوتا ہے اس کے بعد اس نجاست کا پاک چیز سے امتزاج قلیل مقدار میں ہو یا کثیر مقدار میں اس کا کوئی لحاظ نہیں ہوگا تو تھوک کی سرخی سے منہ سے نکلنے والے خون کی کثرت اور قوت سے خارج کی دلیل ہوگی اور تھوک کی زردی خون کے قلیل اور مغلوب ہونے کی دلیل ہوگی۔ امام زیلعی نے فرمایا ہے کہ منہ سے نکلنے والے خون میں غلبہ کا اعتبار ہوگا اور خون اور تھوک مساوی ہوں تو بھی وضو فاسد ہوگا کیونکہ اس صورت میں تھوک اور خون مساوی قوت سے خارج ہوئے ہیں، مغلوب کا معاملہ اس کے برخلاف ہے

کیونکہ وہ غالب کے تابع ہوتا ہے اور غلبہ کا اعتبار رنگ سے کیا جائے گا الخ پھر انہوں نے اس کے بعد فرمایا اگر خون کی قے آئے تو معلوم کیا جائے کہ یہ خون سر سے اترا ہے یا پیٹ سے ابھرا ہے اگر سر سے نازل ہوا ہو تو اس سے وضو فاسد ہو جائے گا خواہ وہ خون قلیل ہو یا کثیر ہو اس پر ہمارے اصحاب کا اجماع ہے

[حواشی] [1] تبیین الحقائق نواقض الوضوء مطبعہ امیریہ بولاق مصر ۱/۸ [2] تبیین الحقائق نواقض الوضوء مطبعہ امیریہ بولاق مصر ۱/۹ [3] تبیین الحقائق نواقض الوضوء مطبعہ امیریہ بولاق مصر ۱/۹

Fatawa Rizvia - Volume 3

[Left Column - Translated from Arabic] Saliva's place is the mouth, not the interior. Thus, the difference between what comes from the [mouth] part and what comes from the interior becomes apparent. What comes from the mouth flows because of saliva, and its dominance over saliva is taken as evidence of its self-flow. This is unlike what comes from the interior, which only reaches the mouth if it is fluid enough to flow on its own. So, the difference between the two is clear. In fasting, the criterion is the entry of something from the outside into the interior, except what is unavoidable. Therefore: (1) residual moisture after rinsing the mouth is excused, (2) as is a small trace of food left in the mouth, (3) and what is tasted if it is not insignificant as established in 'al-Fath'. He stated that a small amount follows the status of the teeth, like saliva, so it does not invalidate [the fast] just as saliva does not. It is considered subordinate because it is impossible to prevent food traces from remaining around the teeth, however small. Then it flows with saliva from its place to the throat, so it is difficult to attach the breaking of the fast to the substance itself; thus, it is attached to a large quantity. Some scholars (4) defined the distinction as whether swallowing it requires assistance from saliva first; if so, it is 'small' (qalil), otherwise it is 'large' (kathir). This is a good distinction, as the hindrance to breaking the fast is after arrival [into the interior] is established.

[Right Column - Translated from Urdu] And if the blood from the stomach is clotted, then vomiting a mouthful will invalidate the wudu. This is the preferred view because, in reality, it is not blood but burnt matter of black bile. And if the blood rising from the stomach is thin/fluid, then even a small amount of vomit will invalidate wudu, because it is blood from a wound in the stomach that has reached such a stage—that is, after being expelled, it reached a place that is commanded to be kept pure. After this, he cited the statement from 'Kanz': "Neither phlegm nor blood over which saliva prevails" (meaning when phlegm or such blood is vomited where saliva is dominant, wudu will not be invalidated). Under this, he said: This ruling applies when the blood is from the mouth. If it is from the stomach, we have already explained the details. That is, if the blood is clotted, wudu is invalidated upon vomiting a mouthful, otherwise not. If the blood is thin, even a small amount of vomit will invalidate wudu. Allama Shami stated in 'Minhat al-Khaliq' that the mixing of saliva with blood from the stomach occurs in the mouth because the place of saliva is the mouth, not the stomach. This clarifies the difference between blood exiting the mouth and blood

coming from the stomach, as the cause of blood in the mouth is saliva, and its dominance over saliva is evidence of it flowing on its own. But from the stomach...

[Footnote] 1 Minhat al-Khaliq on the margins of al-Bahr al-Ra'iq, Nawaqid al-Wudu, H.M. Saeed Company Karachi, 1/361. Page 173 of 756

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

[बायां कॉलम - अरबी से अनुवादित] थूक का स्थान मुँह है, पेट (आंतरिक भाग) नहीं। इससे मुँह के हिस्से से निकलने वाले और पेट से निकलने वाले के बीच का अंतर स्पष्ट हो जाता है। मुँह से निकलने वाली चीज़ का बहाव लार के कारण होता है, और लार पर उसकी प्रबलता को उसके स्वयं बहने का प्रमाण माना गया है। इसके विपरीत, पेट से निकलने वाली चीज़ मुँह तक तभी पहुँचती है जब वह स्वयं बहने वाली (तरल) हो। अतः दोनों के बीच का अंतर स्पष्ट है। रोज़े में मापदंड बाहर से किसी चीज़ का पेट में प्रवेश करना है, सिवाय उसके जिससे बचना असंभव हो। इसीलिए: (1) कुल्ला करने के बाद बची हुई नमी को क्षम्य माना गया है, (2) और मुँह में बचे हुए भोजन के सूक्ष्म अंश को भी, (3) और जिसका स्वाद महसूस हो यदि वह नगण्य न हो जैसा कि 'अल-फ़तह' में प्रमाणित किया गया है। उन्होंने कहा कि थोड़ी मात्रा दाँतों के अधीन है जैसे कि लार, इसलिए लार की तरह इससे रोज़ा नहीं टूटता। इसे अधीन इसलिए माना गया क्योंकि दाँतों के पास भोजन के अंशों को रहने से रोकना असंभव है, चाहे वह कितना ही कम क्यों न हो। फिर वह थूक के साथ अपने स्थान से हलक की ओर बहता है, इसलिए रोज़ा टूटने के हुक्म को सीधे उस वस्तु से जोड़ना कठिन है; अतः इसे 'अधिक मात्रा' (कसीर) से जोड़ा गया है। कुछ विद्वानों ने (4) यह अंतर किया है कि क्या उसे निगलने के लिए पहले लार की सहायता की आवश्यकता है; यदि है, तो वह 'थोड़ा' (क़लील) है, अन्यथा वह 'अधिक' (कसीर) है। यह एक अच्छा अंतर है, क्योंकि रोज़ा टूटने से रोकने वाली बात [पेट तक] पहुँचने की पुष्टि होने के बाद है।

[दायां कॉलम - उर्दू से अनुवादित] और अगर वह पेट का खून जमा हुआ (थक्का) हो, तो फिर मुँह भर कर उल्टी होने पर वज़ू टूट जाएगा। यही चुनिंदा नज़रिया है क्योंकि हकीकत में वह खून नहीं है, बल्कि वह काले पित्त (सौदा) का जला हुआ पदार्थ है। और अगर पेट से उठने वाला खून पतला हो, तो फिर थोड़ी सी उल्टी से भी वज़ू टूट जाएगा क्योंकि वह पेट के किसी ज़ख्म का खून है जो ऐसे चरण में पहुँच गया है, यानी बाहर निकल कर ऐसी जगह पहुँच गया है जिसे पाक रखने का हुक्म है। इसके बाद उन्होंने 'कन्ज़' के इस कथन को उद्धृत किया: "न बलगम और न ही वह खून जिस पर लार प्रबल हो" (यानी जब बलगम या ऐसे खून की उल्टी हो जिस पर थूक हावी हो, तो वज़ू नहीं टूटेगा)। इसके तहत उन्होंने कहा: यह नियम तब है जब खून मुँह का हो। अगर वह पेट का हो, तो हम इसकी तफ़सील (विवरण) पहले ही बयान कर चुके हैं। यानी यही कि अगर खून जमा हुआ हो, तो मुँह भर उल्टी होने पर वज़ू टूटेगा वरना नहीं। और अगर खून पतला हो, तो थोड़ी सी उल्टी से भी वज़ू टूट

जाएगा। अल्लामा शामी ने 'मिन्हातुल ख़ालिक़' में फरमाया कि पेट से आने वाले खून में लार की मिलावट मुँह में होती है क्योंकि लार का स्थान मुँह है, पेट नहीं। इससे मुँह से निकलने वाले और पेट से आने वाले खून का अंतर स्पष्ट हो गया क्योंकि मुँह से निकलने वाले खून का कारण लार है, और लार पर उसका प्रबल होना उसके स्वयं बहने का प्रमाण है। लेकिन पेट से...

[पादलेख] 1 मिन्हातुल ख़ालिक़ अला हाशियतिल बहरुर राइक़, नवाक़िदुल वज़ू, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/361। पृष्ठ 173/756

[بایاں کالم - اصل عربی] البزاق محله الفم لا الجوف وبهذا یظهر الفرق بین الخارج من القسم والخارج من الجوف فان الخارج من الفم انما کان سیلانه بسبب البزاق وجعل غلبته علی البزاق دلیل سیلانه بنفسه بخلاف الخارج من الجوف فانه لا یصل الی الفم الا اذا کان سائلاً بنفسه فالفرق بینهما واضح اه والمناط فی الصوم دخول شیئ من الخارج فی الجوف الاما تعذر التحرز عنه ولذا (۱) عفی عن بلة تبقی بعد المضمضة (۲) وعن قلیل اثر یبقی فی الفم من المأکول (۳) وما وجد طعمه غیر قلیل کما حققه فی الفتح قال لنا ان القلیل تابع لأسنانہ بمنزلة ریقه فلا یفسد کالریق وانما اعتبر تابعاً لانه لا یمکن الامتناع عن بقاء اثر مأمن المأکل حوالی الاسنان وان قل ثم یجری مع الریق النابع من محله الی الحلق فامتنع تعلیق الافطار بعینه فیعلق بالکثیر ومن المشائخ من (۴) جعل الفاصل کون ذلك مما یحتاج فی ابتلاعه الی الاستعانة بالریق اولاً الاول قلیل والثانی کثیر وهو حسن لان المانع من الافطار بعد تحقق الوصول

[دایاں کالم - اصل اردو] اور اگر وہ پیٹ کا خون بستہ ہو تو پھر منہ بھر کر قے ہونے پر وضو فاسد ہوگا یہی مختار مسلک ہے کیونکہ حقیقت میں وہ خون نہیں ہے بلکہ وہ سوداء کا جلا ہوا مادہ ہے اور اگر وہ پیٹ سے ابھرا ہوا خون رقیق ہو تو پھر قلیل قے سے بھی وضو فاسد ہوجائے گا کیونکہ وہ پیٹ میں کسی زخم کا خون ہے جو ایسے مرحلہ میں پہنچ گیا یعنی خارج ہو کر ایسی جگہ پہنچ گیا جس جگہ کو پاک رکھنے کا حکم ہے اھ اس کے بعد انہوں نے کنز کے اس قول لا بلغمًا اودمًا غلب علیه البصاق (یعنی جب بلغم کی یا ایسے خون کی قے ہو جس پر تھوک غالب ہو تو وضو فاسد نہ ہوگا) کے تحت کہا یہ حکم جب ہے کہ وہ خون منہ کا ہو اور اور اگر وہ پیٹ کا ہو تو پھر اس کی تفصیل ہم بیان کر چکے ہیں اھ یعنی یہی کہ اگر خون بستہ ہو تو منہ بھر قے ہونے پر وضو فاسد ہوگا ورنہ نہیں اور اگر خون رقیق ہو تو پھر قلیل قے سے بھی وضو فاسد ہوگا، علامہ

شامی نے منحۃ الخالق میں فرمایا کہ پیٹ سے آنے والے خون میں تھوک کی ملاوٹ منہ میں ہوتی ہے کیونکہ تھوک کا مقام منہ ہے پیٹ نہیں، اس سے منہ سے نکلنے والے خون اور پیٹ سے آنے والے خون کا فرق واضح ہو گیا کیونکہ منہ سے نکلنے والے خون کا سبب تھوک ہے اور تھوک پر اس کا غلبہ اس کے خود بہہ نکلنے کی دلیل ہے لیکن پیٹ سے

[حاشیہ] 1 منحۃ الخالق علی حاشیۃ البحر الرائق، نواقض الوضوء، ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۱ / ۳۶۱ صفحہ 173 از 756

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

[Arabic Text Column] Because it is not easy to guard against it, and that is in what flows by itself with saliva into the interior, not in what is intentionally introduced, because one is not compelled in that. (1) In 'Al-Kafi' regarding the sesame seed: chewing it does not break the fast unless its taste is felt in the throat, and this is very good. Let this be the principle for every small amount chewed. So it became clear that considering color and taste in Wudu and fasting is not due to considering the dominance of qualities, but because through them the core issue (manat) is realized. They have stated (2) regarding wine that is diluted: if the water is little or equal, it is prohibited if it reaches the stomach, but if the water dominates, it is not, unless it intoxicates, as in 'Al-Bazzaziyya'. They considered dominance by components; otherwise, the foul substance dominates twofold or even many times over the water in qualities. As for the issue of breastfeeding, the relied-upon view is also to consider the components by one of the three meanings, as per the view of Muhammad, not the qualities, as I have explained in my notes on 'Radd al-Muhtar'. Furthermore, the core issue here is drinking what nourishes, grows flesh, and strengthens bones. Thus, Imam Thani (Abu Yusuf) thought that if medicine removes its color and taste, it breaks its strength (3) like a mixture.

[Urdu Text Column] The matter of blood coming up is contrary to this because its coming to the mouth is evidence of its flowing out, for it reached here by flowing. Thus, the difference became clear. And the criterion for a fast being invalidated is the entry of something from outside into the stomach from which it is difficult to guard; then it is pardoned. For this reason, the moisture remaining in the mouth after rinsing is pardoned for the fasting person. And if a small trace of something eaten remains in the mouth, that is also pardoned. However, if it is something with taste, it will not be considered "little," and the fast will be invalidated. Its research is in 'Fath al-Qadir'; they said our proof is that a small thing follows the teeth and becomes like saliva; therefore, the fast will not be invalidated. It has been declared to follow the teeth because it is difficult to avoid the trace of the eaten substance that remains around the teeth, as it mixes with saliva and moves to the throat. Therefore, the invalidation of the fast will not relate to this small trace but to a substantial trace. Regarding the invalidating and non-invalidating effects on fasting, some of the scholars have...

[Footnotes] 1. Fath al-Qadir, Chapter on what necessitates Qada and Kaffarah, Nuriyya Ridawiyya, Sukkur, 2/258 2. Fath al-Qadir, Chapter on what necessitates Qada

and Kaffarah, Nuriyya Ridawiyya, Sukkur, 2/259 3. Fatawa Bazzaziyya on the margin of Al-Fatawa al-Hindiyya, Book of Drinks, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 6/125

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

[अरबी पाठ स्तंभ] चूंकि इससे बचना आसान नहीं है, और यह उस स्थिति में है जो लार के साथ अपने आप अंदर चला जाता है, न कि उस स्थिति में जिसे जानबूझकर डाला जाता है क्योंकि वह इसमें मजबूर नहीं है। (1) और 'अल-काफी' में तिल के बीज के बारे में है: इसे चबाना रोज़े को खराब नहीं करता जब तक कि उसका स्वाद गले में महसूस न हो, और यह बहुत अच्छा है। हर छोटी चबाई गई चीज़ के लिए यही सिद्धांत होना चाहिए। तो यह स्पष्ट हो गया कि वज़ू और रोज़े में रंग और स्वाद पर विचार करना गुणों की प्रबलता के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए है क्योंकि उनसे मूल आधार (मनात) सिद्ध होता है। उन्होंने (2) शराब के बारे में उल्लेख किया है जिसे पतला किया गया हो: यदि पानी कम या बराबर है, तो पेट में पहुँचने पर सज़ा (हद) दी जाएगी, लेकिन अगर पानी अधिक है तो नहीं, जब तक कि वह नशा न करे, जैसा कि 'बज़ाज़िया' में है। उन्होंने घटकों की प्रबलता पर विचार किया; अन्यथा गंदी चीज़ गुणों के मामले में पानी से दोगुनी या कई गुना अधिक प्रबल होती है। जहाँ तक स्तनपान के मसले का सवाल है, विश्वसनीय मत यह भी है कि तीन अर्थों में से किसी एक के द्वारा घटकों पर विचार किया जाए, जैसा कि इमाम मुहम्मद का कथन है, न कि गुणों पर, जैसा कि मैंने 'रद्द अल-मुह्तार' पर अपनी टिप्पणियों में स्पष्ट किया है। इसके अलावा, यहाँ मूल आधार वह पीना है जो पोषण दे, मांस बढ़ाए और हड्डियों को मज़बूत करे। इसलिए इमाम थानी (अबू यूसुफ़) ने सोचा कि यदि दवा उसका रंग और स्वाद खत्म कर देती है, तो वह उसकी शक्ति को तोड़ देती है (3) जैसे कि मिश्रण।

[उर्दू पाठ स्तंभ] खून के आने का मामला इसके विपरीत है क्योंकि इसका मुँह तक आना ही इसके बहने का प्रमाण है, क्योंकि यह बहकर यहाँ पहुँचा। इस प्रकार अंतर स्पष्ट हो गया। और रोज़ा टूटने का पैमाना यह है कि बाहर से किसी ऐसी चीज़ का पेट में प्रवेश करना जिससे बचना मुश्किल हो, तो वह माफ़ है। इसी कारण कुल्ला करने के बाद मुँह में रहने वाली नमी रोज़ेदार के लिए माफ़ है। और अगर कुछ खाने के बाद उसका थोड़ा सा अंश मुँह में रह जाए, तो वह भी माफ़ है। लेकिन अगर वह स्वाद वाली चीज़ हो, तो उसे थोड़ा नहीं माना जाएगा और रोज़ा टूट जाएगा। इसकी तहकीकात 'फ़तह अल-क़दीर' में है, उन्होंने कहा कि हमारा तर्क यह है कि छोटी चीज़ दाँतों के अधीन होकर लार की तरह हो जाएगी; इसलिए रोज़ा नहीं टूटेगा। इसे दाँतों के अधीन इसलिए करार दिया गया है क्योंकि खाई हुई चीज़ के उस असर से बचना मुश्किल होता है जो दाँतों के आसपास रह जाता है क्योंकि वह लार के साथ मिलकर गले में चला जाता है। इसलिए रोज़े के बिगड़ने का संबंध इस थोड़े असर से नहीं

बल्कि ज़्यादा असर से होगा। रोज़े के लिए बिगाड़ने वाले और न बिगाड़ने वाले असर के बारे में, विद्वानों में से कुछ ने...

[पादलेख] 1. फ़तह अल-क़दीर, क़ज़ा और कफ़ारा का अध्याय, नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 2/258 2. फ़तह अल-क़दीर, क़ज़ा और कफ़ारा का अध्याय, नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 2/259 3. फ़तावा अल-हिंदिया के हाशिये पर फ़तावा बज़ाज़िया, पेयों की किताब, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 6/125

فتاویٰ رضویہ، جلد سوم

[عربی عبارت کا کالم] كونه لا يسهل الاحتراز عنه وذلك فيما يجرى بنفسه مع الريق الى الجوف لاما يعتمد في ادخاله لانه غير مضطر فيه، (۱) وفي الكافي في السمسسة ان مضغها لا يفسد الا ان يجد طعمه في حلقه وهذا حسن جدا فليكن الاصل فی کل قلیل مضغة اهـ فتبین ان اعتبار اللون والطعم في الوضو والصوم ليس من جهة اعتبار الغلبة بالاوصاف بل لان بهما تحقق المناط وقد نصوا (۲) في خمر قُبلت ان كان الماء قليلا اومساويا يحد اذاوصل الى جوفه وان غلب الماء لا الا ان يسكر كما فی البزازية فاعتبروا الغلبة بالاجزاء والا فالخبيثة تغلب ضعفها بل اضعافها من الماء في الاوصاف اما مسألة الرضاع فالمعتمد فيها ايضا اعتبار الاجزاء باحد المعانى الثلثة كما هو قول محمد دون الاوصاف كما بينته فيما علقته على ردالمحتار علا ان المناط ههنا شرب ما يغذى وينبت اللحم و ينشز العظم فظن الامام الثانى ان الدواء اذا اذهب لونه وطعمه كسر قوته (۳) كالمخلوط۔

[اردو عبارت کا کالم] آنے والے خون کا معاملہ اس کے خلاف ہے کیونکہ اس کا منہ تک آنا خود بہہ نکلنے کی دلیل ہے اس لئے کہ وہ بہہ کر یہاں پہنچا، یوں فرق واضح ہوا۔ اھ اور روزہ فاسد ہونے کا معیار یہ ہے کہ خارج سے کسی ایسی چیز کا پیٹ میں داخل ہونا جس سے بچاؤ مشکل ہو تو وہ معاف ہے اسی وجہ سے کلی کرنے کے بعد منہ میں باقی رہنے والی تری روزہ دار کو معاف ہے اور کوئی چیز کھانے کے بعد اگر اس کا قلیل اثر منہ میں باقی رہ جائے تو وہ بھی معاف ہے اور اگر کوئی ذائقہ والی چیز ہو تو وہ قلیل نہ ہوگی اس سے روزہ فاسد ہوگا۔ اس کی تحقیق فتح القدیر میں ہے، انہوں نے فرمایا ہماری دلیل یہ کہ قلیل چیز دانتوں کے تابع ہو کر تھوک کی طرح ہو جائے گی لہٰذا اس سے روزہ فاسد نہ ہو گا اس کو دانتوں کے تابع اس لئے قرار دیا ہے کہ کھائی ہوئی چیز کے اس اثر سے جو دانتوں کے ارد گرد باقی ہوتا ہے سے بچنا مشکل ہوتا ہے کیونکہ وہ

لعاب کے ساتھ مل کر حلق میں منتقل ہو جاتا ہے اس لئے روزہ کے فساد کا تعلق اس قلیل اثر سے نہ ہوگا بلکہ کثیر اثر سے ہوگا، روزہ کے لئے مفسد اور غیر مفسد اثر کے بارے میں مشائخ میں سے بعض نے

[حواشی] 1 فتح القدیر باب ما یوجب القضاء والکفارۃ نوریہ رضویہ سکھر ۲/ ۲۵۸ 2 فتح القدیر باب ما یوجب القضاء والکفارۃ نوریہ رضویہ سکھر ۲/ ۲۵۹ 3 فتاوی بزازیہ علی حاشیۃ الفتاوی الہندیہ کتاب الاشربہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱۲۵/٦

This distinction has been stated that if the effect is such that the help of saliva is necessary to swallow it down the throat, then it is 'little' (qaleel) and does not invalidate [the fast]. However, if it can be swallowed without the help of saliva, then it is 'much' (katheer) and invalidates [the fast]. This is an excellent distinction because the non-invalidation of the fast despite reaching the throat is on the basis that avoiding it is difficult, as that effect mixes with saliva and goes down the throat involuntarily without intention. But the effect that has to be swallowed intentionally is not pardoned because there is no compulsion in it. In 'Al-Kafi' it is mentioned that if a sesame seed is chewed, the fast will not be invalidated, but if its taste is felt in the throat, then it will be invalidated. This difference is very good. From this discussion, it has become clear that in the invalidation of fast and ablution (wudhu), the consideration of color and taste is not due to dominance, but rather because these two attributes are found to be the standard of their invalidation. This is why the jurists (Fuqaha) have said regarding wine that if the water in wine is little or equal, the drinker will be subject to the prescribed punishment (Hadd) provided the wine descends down the throat. And if the water in it was much and more, the Hadd will not be enforced provided intoxication does not occur. This has been mentioned in 'Al-Bazzaziyyah'. Here, the jurists have considered dominance in terms of parts; otherwise, vile wine remains dominant in attributes even when mixed with water several times its volume. However, in the matter of suckling (Ridha'ah), dominance is also considered in terms of parts, whether that dominance is found in any of its three meanings. Here, dominance in terms of attributes is not considered. This is the saying of Imam Muhammad, as I have mentioned it in the annotations of 'Radd al-Muhtar'. Apart from this, the standard of the ruling in suckling is to drink something that creates nourishment, flesh, and builds bone. So, the other Imam (Imam Abu Yusuf) presumed that when medicine is mixed with a woman's milk and eliminates its color and taste, it will also eliminate the strength of that milk, just as the strength of milk is lost when mixed in food. And Allah Almighty knows best.

...with food, and Allah Almighty knows best. Thus, the veil was lifted and the right path became apparent. All praise is due to Allah, the Generous, the Bestower. May Allah's blessings be upon the master of those who turn to Him in repentance, and upon his family and his companions, the best of family and companions, until the Day of Account. Amen. (T)

Fourth Chapter: Universal Principles: Praise be to Allah, our previous statements have clarified that the two schools of thought of the two Imams (may Allah be pleased with them both) are two universal principles: First, the Yusufi Principle: That when the flow of water ceases or its thinness no longer remains, even if it is mixed with something without anything being added, or something else is added to it that is equal in quantity or more than the water, or mixed with another thing...

Page 175 of 756

यह अंतर बताया गया है कि यदि वह प्रभाव ऐसा हो जिसे गले से उतारने के लिए लार की सहायता आवश्यक हो, तो वह कम (कलील) और बिगाड़ने वाला नहीं है। और यदि लार के बिना उसे गले से उतारा जा सके तो वह अधिक (कसीर) और बिगाड़ने वाला है। यह अंतर उत्कृष्ट है क्योंकि गले तक पहुँचने के बावजूद रोज़ा न बिगड़ने का कारण यह है कि इससे बचना कठिन है, क्योंकि वह प्रभाव लार के साथ मिलकर बिना इरादे के स्वतः ही गले से उतर जाता है। और जो प्रभाव जानबूझकर उतारना पड़े, वह माफ नहीं है क्योंकि उसमें कोई मजबूरी नहीं है। और 'अल-काफी' में है कि यदि तिल का दाना चबाया जाए तो रोज़ा नहीं टूटेगा, लेकिन यदि उसका स्वाद गले में महसूस हो तो टूट जाएगा। यह अंतर बहुत अच्छा है। इस चर्चा से यह स्पष्ट हुआ कि रोज़ा और वज़ू के बिगड़ने में रंग और स्वाद का महत्व प्रबलता के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए कि इन दोनों गुणों का पाया जाना उनके बिगड़ने का पैमाना है। यही कारण है कि न्यायविदों (फ़ुक़हा) ने शराब के बारे में कहा है कि यदि शराब में पानी कम या बराबर हो, तो पीने वाले पर दंड (हद) लागू होगा, बशर्ते कि वह शराब गले से नीचे उतर गई हो। और यदि उसमें पानी बहुत और अधिक था, तो हद लागू नहीं होगी, बशर्ते कि नशा न हुआ हो। इसका उल्लेख 'बज़ज़िया' में किया गया है। यहाँ फ़ुक़हा ने अंशों के लिहाज़ से प्रबलता का विचार किया है, अन्यथा अशुद्ध शराब तो अपने से कई गुना अधिक पानी में मिलकर भी गुणों में प्रबल रहती है। लेकिन स्तनपान (रिज़ाअत) के मामले में भी अंशों के आधार पर प्रबलता का विचार होता है, चाहे वह प्रबलता अपने तीन अर्थों में से किसी भी अर्थ में पाई जाए। यहाँ गुणों के आधार पर प्रबलता का विचार नहीं है। यह इमाम मुहम्मद का कथन है जैसा कि मैंने इसे 'रद्द अल-मुह्तार' की टिप्पणियों में उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त यहाँ स्तनपान में आदेश का पैमाना आहार, मांस बनाना और हड्डी बनाने वाली चीज़ पीना है। तो दूसरे इमाम (इमाम अबू यूसुफ) ने यह अनुमान लगाया कि जब दवा स्त्री के दूध में मिलकर उसके रंग और स्वाद को खत्म कर देगी, तो वह उस दूध की शक्ति को भी खत्म कर देगी, जैसे भोजन में मिलकर दूध की शक्ति खत्म हो जाती है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

...भोजन के साथ, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। फिर पर्दा उठ गया और सही बात स्पष्ट हो गई। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो उदार और अत्यंत दाता है। अल्लाह तआला की कृपा हो तौबा करने वालों के स्वामी पर, और उनकी संतान और उनके साथियों पर, जो सर्वोत्तम संतान और साथी हैं, हिसाब के दिन तक। आमीन। (त)

चौथा अध्याय: सार्वभौमिक नियम: अल्लाह का शुक्र है कि हमारे पिछले बयानों ने स्पष्ट कर दिया कि दोनों इमामों (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) के दो मज़हब दो सार्वभौमिक नियम हैं: पहला यूसुफ़ी नियम: कि जब पानी का बहाव खत्म हो जाए या उसका पतलापन न रहे, भले ही वह किसी चीज़ के मिले बिना हो या उसमें उसका गैर (दूसरी चीज़) मात्रा में बराबर या पानी से अधिक मिल जाए या दूसरी चीज़ से मिलकर...

पृष्ठ 175 का 756

یہ فرق بیان فرمایا ہے کہ اگر وہ اثر ایسا ہو جس کو حلق سے اتارنے کیلئے لعاب کی مدد ضروری ہو تو وہ قلیل اور غیر مفسد ہے اور اگر لعاب کے بغیر اس کو حلق سے اتارا جاسکے تو کثیر اور مفسد ہے، یہ فرق خوب ہے کیونکہ حلق تک وصول کے باوجود روزے کا فاسد نہ ہونا اس بنا پر ہے کہ اس سے بچنا مشکل ہے کیونکہ لعاب سے مل کر خود بخود وہ اثر حلق سے بغیر قصد اتر جاتا ہے اور جو اثر قصداً اتارنا پڑا وہ معاف نہیں ہے کیونکہ اس میں کوئی مجبوری نہیں ہے، اور کافی میں ہے کہ اگر تل کا دانہ چبایا تو روزہ فاسد نہ ہو گا لیکن اگر اس کا ذائقہ حلق میں پایا جائے تو فاسد ہوگا۔ یہ فرق بہت خوب ہے۔ اس بحث سے یہ واضح ہوا کہ روزہ اور وضو کے فساد میں رنگ اور ذائقہ کا اعتبار غلبہ کی وجہ سے نہیں بلکہ اس لئے کہ ان دونوں وصفوں کی وجہ ان کے فساد کا معیار پایا جاتا ہے، یہی وجہ ہے کہ فقہاء نے شراب کے بارے میں یہ فرمایا ہے کہ شراب میں پانی قلیل یا مساوی ہو تو پینے والے کو حد لگے گی بشرطیکہ یہ شراب اس کے حلق سے نیچے اتر گئی اور اس میں پانی کثیر اور زیادہ تھا تو حد نافذ نہ ہوگی بشرطیکہ نشہ نہ ہوا ہو، اس کو بزازیہ میں ذکر کیا ہے، یہاں فقہاء نے اجزاء کے لحاظ سے غلبہ کا اعتبار کیا ہے، ورنہ خبیث شراب تو اپنے سے کئی گنا زیادہ پانی میں مل کر بھی اوصاف میں غالب رہتی ہے لیکن رضاع کے مسئلہ میں بھی اجزاء کے لحاظ سے غلبہ کا اعتبار ہوتا ہے خواہ وہ غلبہ اپنے تین معانی میں سے کسی معنی میں پایا جائے، یہاں اوصاف کے لحاظ سے غلبہ کا اعتبار نہیں ہے یہ امام محمد کا قول ہے جیسا کہ میں نے اس کو ردالمحتار کی تعلیقات میں ذکر کیا ہے اس کے علاوہ یہاں رضاع میں حکم کا معیار، غذا، گوشت پیدا کرنا اور ہڈی بنانے والی چیز کو پینا ہے تو دوسرے امام (امام ابویوسف) نے یہ گمان فرمایا کہ جب دوا عورت کے دودھ میں مل کر اس کے رنگ اور ذائقہ کو

ختم کردے گی تو وہ دودھ کی قوت کو بھی ختم کردے گی جیسے طعام میں مل کر دودھ کی قوت ختم ہو جاتی ہے واللہ تعالٰی اعلم،

بالطعام واللہ تعالٰی اعلم فانکشف الحجاب وزھر الصواب والحمدللہ الکریم الوھاب وصلی اللہ تعالٰی علی السید الاواب و آلہ وصحبہ خیر آل واصحاب الی یوم الحساب آمین۔ (ت)

فصل رابع ضوابط کلیہ : الحمدللہ ہمارے بیانات سابقہ نے واضح کر دیا کہ دونوں مذہب امامین مذہب رضی اللہ تعالٰی عنہما دو ضابطہ کلیہ ہیں: اول ضابطہ یوسفیہ: کہ جب پانی کا سیلان زائل ہو جائے یا رقت نہ رہے اگرچہ بے کسی چیز کے ملنے یا اُس میں اس کا غیر کہ مقدار میں برابر یا پانی سے زائد ہو مل جائے یا دوسری شے سے مل کر

Fatawa Razawiyya - Volume Three

If a compound is formed for a separate ultimate purpose, even if that other substance is very small in quantity compared to the water, in these cases the water becomes 'restricted' (muqayyad) and is no longer suitable for ablution (wudu). Otherwise, it is absolutely 'pure water' (ma-e-mutlaq), even if the color, taste, and smell all change. This is the correct, reliable view, and the consensus of the authoritative texts.

Second Rule (Shaybani): If liquidity or thinness (riqqat) no longer remains, it is 'restricted' water, even if this happens without mixing anything. If by mixing something it becomes a different thing for another purpose, it is 'restricted' even if the mixed substance is solid. If these cases are not present and the mixed substance is solid, it is absolutely 'pure water' even if its qualities change. If the mixed substance is liquid, first look at the color: if its color dominates the water so much that a viewer doubts it is water and suspects it's another liquid, it becomes 'restricted'. If the color hasn't changed that much, look at the taste: if the taste has changed to the point of confusion, it's 'restricted'. If color and taste haven't changed to that extent, smell is not considered; just see if that second liquid is more than or equal to the water in quantity; if so, it's 'restricted', otherwise it's absolute.

Third Rule (Barjandi): If a pure substance mixed into water is of the nature of earth, like soil, orpiment, lime, or if the purpose is extra cleanliness like soap etc., even if mixed by cooking, in both these cases, as long as the water retains its thinness (riqqat), wudu is permissible, otherwise not. If it's neither of the nature of earth nor intended for extra cleanliness, and it was mixed during cooking and caused any change in the water, wudu is not permissible, even if thinness remains. However, Zahiriyyah also considered thinness in this. If mixed without cooking, in this case, Imam Muhammad considers color absolutely, while according to Imam Abu Yusuf, if it's a flowing substance, the quantity of parts is considered; if water is more, wudu is permissible, otherwise not. For non-liquids, the same consideration of thinness should apply: if water loses its thinness, wudu is impermissible, otherwise permissible.

[Boxed Text] Arabic: He (Allah have mercy on him) said: The detail is that the pure substance mixed in is either from the nature of the earth, like soil, orpiment, and lime, or from other than the nature of the earth. And it either was not mixed into it by cooking or was mixed into it by cooking. And at that time, either extreme cleanliness

is intended by it, like Ushnan (soda ash), or not. So these are four categories, and the ruling for the first three categories is... Urdu: (Allamah Barjandi) May Allah the Almighty have mercy on him, said that the detail of a pure thing being mixed in water is that it will be of the nature of earth like soil, orpiment, lime, or of a non-earthly nature. Then, whether it was not mixed in water by cooking or was mixed by cooking, and the purpose of mixing is exaggeration in purity like Ushnan, or not. So these are a total of four (4) cases. In the first three cases, the ruling is that if the water is dominant, then wudu...

यदि एक अलग अंतिम उद्देश्य के लिए एक यौगिक बन जाए, भले ही वह दूसरी चीज़ पानी की तुलना में मात्रा में कितनी भी कम क्यों न हो, इन स्थितियों में पानी 'मुक़य्यद' (सीमित) हो जाता है और वज़ू (अभिषेक) के योग्य नहीं रहता। अन्यथा, यह बिल्कुल 'मा-ए-मुतलक' (शुद्ध जल) है, भले ही रंग, स्वाद और गंध सब बदल जाएं। यही सही और विश्वसनीय विचार है, और प्रामाणिक ग्रंथों का सार भी यही है।

दूसरा नियम (शैबानी): यदि तरलता या पतलापन (रक़्क़त) न रहे, तो वह 'मुक़य्यद' जल है, भले ही यह बिना किसी चीज़ को मिलाए हो। यदि कुछ मिलाने से वह किसी अन्य उद्देश्य के लिए दूसरी चीज़ बन जाए, तो वह 'मुक़य्यद' है, भले ही मिश्रित पदार्थ ठोस हो। यदि ये स्थितियां नहीं हैं और मिश्रित पदार्थ ठोस है, तो वह पूरी तरह से 'मा-ए-मुतलक' है, भले ही उसके गुण बदल जाएं। यदि मिश्रित पदार्थ तरल है, तो पहले रंग देखें: यदि उसका रंग पानी पर इस हद तक हावी हो जाए कि देखने वाले को इसके पानी होने में संदेह हो और दूसरे तरल का भ्रम हो, तो वह 'मुक़य्यद' हो जाता है। यदि रंग इतना नहीं बदला है, तो स्वाद पर गौर किया जाएगा: यदि स्वाद भ्रम की सीमा तक बदल गया है, तो वह 'मुक़य्यद' है। यदि रंग और स्वाद उस सीमा तक नहीं बदले हैं, तो गंध पर विचार नहीं किया जाएगा; बस यह देखें कि क्या वह दूसरा तरल मात्रा में पानी से अधिक या बराबर है; यदि ऐसा है, तो वह 'मुक़य्यद' है, अन्यथा वह मुतलक (पूर्ण) है।

तीसरा नियम (बरजंदी): यदि पानी में मिली कोई पाक (पवित्र) चीज़ मिट्टी की प्रकृति की है, जैसे मिट्टी, हरताल, चूना या उससे अधिक स्वच्छता उद्देश्य है जैसे साबुन आदि, भले ही वे पकाते समय मिलाए जाएं इन दोनों स्थितियों में जब तक पानी अपने पतलेपन (रक़्क़त) पर कायम है, वज़ू जायज़ है, अन्यथा नहीं। और यदि वह न तो ज़मीन की प्रकृति से है और न ही स्वच्छता बढ़ाना उद्देश्य है, और उसका मिश्रण पकाते समय हुआ और उससे पानी में कुछ भी परिवर्तन आया, तो वज़ू जायज़ नहीं है, भले ही रक़्क़त बनी रहे। लेकिन ज़हीरिया ने इसमें भी रक़्क़त का एतबार किया है। और यदि मिश्रण बिना पकाए हुआ, तो इस स्थिति में इमाम मुहम्मद पूर्णतः रंग का एतबार करते हैं, और इमाम अबू यूसुफ के अनुसार यदि वह बहने वाली चीज़ है, तो हिस्सों की बहुलता का एतबार है; यदि पानी अधिक है तो वज़ू जायज़ है, अन्यथा नहीं। और गैर-तरल में वही रक़्क़त का एतबार होना चाहिए कि पानी अपने पतलेपन पर न रहे तो वज़ू नाजायज़ है, अन्यथा जायज़।

[बॉक्स वाला पाठ] अरबी: उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम करे) कहा: विवरण यह है कि मिश्रित शुद्ध पदार्थ या तो ज़मीन की प्रकृति से है, जैसे मिट्टी, हरताल और चूना, या ज़मीन की प्रकृति के अलावा अन्य है। और वह या तो पकाकर उसमें नहीं मिलाया गया या पकाकर उसमें मिलाया गया। और उस समय, या तो इससे स्वच्छता में अतिशयोक्ति का उद्देश्य होता है, जैसे उशनान, या नहीं। तो ये चार श्रेणियां हैं, और पहली तीन श्रेणियों का नियम है... उर्दू: (अल्लामा बरजंदी) रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कि पानी में पाक चीज़ मिलने का विवरण इस प्रकार है कि वह मिट्टी, हरताल, चूना जैसी ज़मीन की प्रकृति से होगी या गैर-ज़मीन की प्रकृति से, फिर चाहे वह पानी में पकाने से न मिले या पकाने से मिल गई हो, और मिलाने का उद्देश्य स्वच्छता में अतिशयोक्ति है जैसे उशनान, या नहीं। तो ये कुल चार (४) स्थितियाँ हुईं, पहली तीन स्थितियों में तो यह हुक्म है कि अगर पानी प्रबल हो तो वज़ू...

ایک مرکب جداگانہ مقصد آخر کیلئے ہو جائے اگرچہ وہ دوسری شے پانی سے مقدار میں کتنی ہی کم ہو ان صورتوں میں پانی مقید ہو گیا اور قابلِ وضو نہ رہا ورنہ مطلقاً مائے مطلق ہے اگرچہ رنگ مزہ بو سب بدل جائیں اور یہی صحیح و معتمد اور یہی مفاد متون مستند ہے۔

دوم ضابطہ شیبانیہ : کہ اگر سیلان یا رقت نہ رہے تو مقید ہے اگرچہ بے خلط چیز سے ہو اور کسی چیز کے خلط سے مقصد دیگر کیلئے چیز دیگر ہو جائے تو مقید ہے اگرچہ مخلوط جامد ہو اور اگر یہ صورتیں نہیں اور مخلوط شے جامد ہے تو مطلقاً مائے مطلق ہے اگرچہ اوصاف بدل جائیں اور اگر مخلوط شے مائع ہے تو اولاً رنگ دیکھیں گے اگر پانی پر اس کا رنگ اس درجہ غالب آیا کہ ناظر کو اس کے پانی ہونے میں اشتباہ پڑے مائعِ دیگر کا شبہ گزرے تو مقید ہو گیا اور اگر رنگ اتنا نہ بدلا تو مزے پر نظر ہو گی اگر مزہ اس حدّ التباس تک بدل گیا تو مقید ہے اور اگر رنگ و مزہ اس حد تک نہ بدلے تو بو کا لحاظ نہیں صرف یہ دیکھیں گے کہ وہ دوسرا مائع اگر مقدار میں پانی سے زائد یا برابر ہے مقید ہو گیا ورنہ مطلق ہے۔

سوم ضابطہ برجندیہ : کہ پاک چیز جو پانی میں ملے اگر جنس ارض سے ہے جیسے مٹی ہرتال چونا یا اس سے زیادہ نظافت مقصود ہوتی ہے جیسے صابون وغیرہ اگرچہ پکنے میں ملے ان دونوں صورتوں میں جب تک پانی اپنی رقت پر باقی ہے وضو جائز ہے ورنہ نہیں اور اگر نہ جنس زمین سے ہے نہ اس سے زیادت نظافت مقصود تو اس کا خلط اگر پکنے میں ہوا اور اس سے پانی میں کچھ بھی تغیر آیا وضو جائز نہیں اگرچہ رقت باقی رہے مگر ظہیریہ نے اس میں بھی اعتبارِ رقت کیا اور اگر خلط بلا طبخ ہوا تو اس صورت میں امام محمد مطلقاً اعتبارِ رنگ فرماتے ہیں اور

امام ابو یوسف کے نزدیک اگر وہ بہتی ہوئی چیز ہے تو کثرتِ اجزا کا اعتبار ہے اگر پانی زیادہ ہے وضو جائز ورنہ نہیں اور غیر مائع میں وہی اعتبارِ رقت ہونا چاہئے کہ پانی اپنی رقت پر نہ رہے تو وضو ناجائز ورنہ جائز۔

[خانہ والا متن] عربی: قال رحمه الله تعالى تفصيله ان الطاهر المخالط اما من جنس الارض كالتراب والزرنيخ والنورة او من غير جنس الارض وهو اما ان لم يختلط به بالطبخ او اختلط به بالطبخ وحينئذ اما ان يقصد به النظافة كالاشنان اولا فهذه اربعة اقسام وحكم الاقسام الثلثة الاول اردو: (علامہ برجندی) رحمہ اللہ تعالیٰ نے کہا کہ پانی میں پاک چیز ملنے کی تفصیل یوں ہے کہ وہ مٹی، ہرتال، چونا جیسی جنس زمین سے ہو گی یا غیر جنس زمین سے، پھر خواہ وہ پانی میں پکانے سے نہ ملے یا پکانے سے مل گئی اور ملانے سے مقصود طہارت میں مبالغہ ہے جیسے اشنان یا نہیں تو یہ کل چار (۴) صورتیں ہوئیں، پہلی تین صورتوں میں تو یہ حکم ہے کہ اگر پانی غالب ہو تو وضو

Fatawa-e-Razviya, Volume 3

[Arabic Text] If water prevails, wudu (ablution) is permissible, and if the additive prevails, it is not. The meaning of the prevalence of the additive in the first and third cases is the disappearance of the water's thin consistency. In the second case, according to Imam Muhammad, prevalence is when the color of the additive overcomes the color of the water; while according to Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on them), it is when the parts of the additive prevail. Since Imam Abu Yusuf considers the prevalence of parts, for non-liquid substances, it should be such that it removes the thinness of the water. There is another narration from Abu Yusuf regarding this category: if it is something not intended for cleanliness, like soap, then the water is no longer absolutely pure-purifying (tahur mutlaq), whether its parts prevail or not. This is understood from Fatawa al-Zahiriyyah and the commentaries on al-Hidayah. It is mentioned in al-Hidayah that for prevalence, color is considered first, then taste, then parts. Regarding the ruling of the fourth category, he (al-Birjandi) pointed to it by saying (or anything else cooked in it that is not intended for cleanliness). The general mention of 'change' and making it a counterpart to 'being removed from the natural state of water' suggests that any change caused by cooking prevents wudu, whether it removes the water from its natural state or not. This is understood from al-Hidayah and is supported by what is in al-Khizanah and Fatawa Qadi Khan, which states that if broad beans (baqila) are cooked in water and their smell is present, wudu is not permissible with it. This was also mentioned in Fatawa al-Zahiriyyah regarding chickpeas.

[Urdu Commentary/Translation] ...Wudu will not be valid. In the first and third scenarios, the prevalence of the additive occurs when the water's thin consistency is lost. In the second scenario, according to Imam Muhammad, prevalence occurs when the color of the additive overcomes the color of water. According to Imam Abu Yusuf, prevalence occurs when the parts of the additive become dominant. Since Imam Abu Yusuf believes in dominance by parts, for non-liquid substances, dominance should be based on the loss of water's thinness. There is another narration from Imam Abu Yusuf that if the additive is something not meant to enhance cleanliness, such as soap, then the water will not remain 'absolutely pure-purifying', whether the parts dominate or not. This is the understanding from Fatawa Zahiriyyah and the commentary on Hidayah. It is mentioned in Hidayah that first color, then taste, and then parts are considered for dominance. Regarding the fourth scenario, to which Al-Birjandi referred with the words "or if something not of the nature of earth is cooked

in it which is not intended for cleanliness," mentioning 'change' generally and setting it against 'removal from the natural state' indicates that any change caused by cooking something in water prevents its use for wudu, whether it changes the natural state of the water or not. This is the understanding from Hidayah, and it is supported by Al-Khizanah. Fatawa Qadi Khan states that if broad beans are cooked in water and their smell is felt, wudu with it...

1. Sharh al-Niqaya by al-Birjandi, Book of Purification, Munshi Naval Kishore, Lucknow, 1/32 Page 177 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 3

[अरबी पाठ] यदि पानी प्रबल है, तो वुज़ू जायज़ है, और यदि मिलाया गया पदार्थ प्रबल है, तो नहीं। पहली और तीसरी स्थिति में मिलावट की प्रबलता का अर्थ है पानी के पतलेपन का गायब हो जाना। दूसरी स्थिति में, इमाम मुहम्मद के अनुसार, प्रबलता तब होती है जब मिलावट का रंग पानी के रंग पर हावी हो जाए; जबकि इमाम अबू यूसुफ (अल्लाह उन पर रहम करे) के अनुसार, यह तब होता है जब मिलावट के भाग प्रबल हो जाते हैं। चूँकि इमाम अबू यूसुफ भागों की प्रबलता पर विचार करते हैं, इसलिए गैर-तरल पदार्थों के लिए, यह ऐसा होना चाहिए कि यह पानी के पतलेपन को हटा दे। इस श्रेणी के संबंध में अबू यूसुफ से एक और वर्णन है: यदि यह ऐसी चीज़ है जिसका उद्देश्य स्वच्छता नहीं है, जैसे साबुन, तो पानी अब पूरी तरह से शुद्ध-शोधक (तहूर मुतलक़) नहीं रहता, चाहे उसके भाग प्रबल हों या न हों। यह फ़तावा अल-ज़हीरियाह और अल-हिदाया की व्याख्याओं से समझा जाता है। अल-हिदाया में उल्लेख है कि प्रबलता के लिए सबसे पहले रंग, फिर स्वाद, फिर भागों पर विचार किया जाता है। चौथी श्रेणी के नियम के संबंध में, उन्होंने (अल-बिरजंदी) यह कहकर इसकी ओर इशारा किया (या उसमें पकाया गया कुछ और जो स्वच्छता के लिए अभिप्रेत नहीं है)। 'परिवर्तन' का सामान्य उल्लेख और इसे 'पानी की प्राकृतिक स्थिति से हटाए जाने' के समकक्ष बनाना बताता है कि खाना पकाने के कारण होने वाला कोई भी परिवर्तन वुज़ू को रोकता है, चाहे वह पानी को उसकी प्राकृतिक स्थिति से हटा दे या नहीं। यह अल-हिदाया से समझा जाता है और अल-ख़िज़ाना और फ़तावा काज़ी खान में जो कुछ भी है, उसका समर्थन करता है, जिसमें कहा गया है कि यदि पानी में सेम (बाक़िला) पकाए जाते हैं और उनकी गंध मौजूद होती है, तो इसके साथ वुज़ू जायज़ नहीं है। चने के बारे में फ़तावा अल-ज़हीरियाह में भी इसका उल्लेख किया गया था।

[उर्दू व्याख्या/अनुवाद] ...वुज़ू नहीं होगा। पहली और तीसरी स्थिति में, मिलावट की प्रबलता तब होती है जब पानी का पतलापन खत्म हो जाता है। दूसरी स्थिति में, इमाम मुहम्मद के अनुसार, प्रबलता तब होती है जब मिलावट का रंग पानी के रंग पर हावी हो जाता है। इमाम अबू यूसुफ के अनुसार, प्रबलता तब होती है जब मिलावट के हिस्से हावी हो जाते हैं। चूँकि इमाम अबू यूसुफ भागों द्वारा प्रभुत्व में विश्वास करते हैं, इसलिए गैर-तरल पदार्थों के लिए, प्रभुत्व पानी के पतलेपन के नुकसान पर आधारित होना चाहिए। इमाम अबू यूसुफ का एक और वर्णन है कि यदि मिलावट ऐसी चीज़ है जिसका उद्देश्य स्वच्छता बढ़ाना नहीं है, जैसे कि साबुन, तो पानी 'पूरी तरह से शुद्ध-शोधक' नहीं रहेगा, चाहे भाग हावी हों या न हों। यह फ़तावा ज़हीरिया और हिदाया की व्याख्या से समझ आता है।

हिदाया में उल्लेख है कि प्रभुत्व के लिए पहले रंग, फिर स्वाद और फिर भागों पर विचार किया जाता है। चौथी स्थिति के संबंध में, जिसे अल-बिरजंदी ने इन शब्दों के साथ संदर्भित किया है "या यदि उसमें पृथ्वी की प्रकृति की कोई चीज़ नहीं पकाई गई है जो स्वच्छता के लिए अभिप्रेत नहीं है," सामान्य रूप से 'परिवर्तन' का उल्लेख करना और इसे 'प्राकृतिक स्थिति से हटाने' के खिलाफ सेट करना इंगित करता है कि पानी में कुछ पकाने के कारण होने वाला कोई भी परिवर्तन वुज़ू के लिए इसके उपयोग को रोकता है, चाहे वह पानी की प्राकृतिक स्थिति को बदल दे या नहीं। यह हिदाया से समझ में आता है, और अल-ख़िज़ाना द्वारा इसका समर्थन किया जाता है। फ़तावा काज़ी खान का कहना है कि यदि पानी में सेम पकाए जाते हैं और उनकी गंध महसूस होती है, तो इसके साथ वुज़ू...

1. शराह अल-निक़ाया अल-बिरजंदी द्वारा, शुद्धिकरण की पुस्तक, मुंशी नवल किशोर, लखनऊ, 1/32 पृष्ठ 177 का 756

انہ ان غلب الماء جاز التوضی وان غلب ذلك لم یجز المخالط لا، ومعنی غلبة المخالط فی الاول والثالث ان تزول الرقة وفی الثانی ان یغلب لون المخالط علی لون الماء عند محمد والاجزاء علی الاجزاء عند ابی یوسف رحمهما الله تعالی واذا اعتبر غلبة الاجزاء ففی غیر المائعات ینبغی ان یکون بحیث یخرج الماء عن الرقة وفی روایة عن ابی یوسف فی هذا القسم ان کان مما لا یقصد به النظافة کالصابون فهو غیر طهور مطلقاً سواء غلبت الاجزاء اولا هذا هو المفهوم من الفتاوی الظهیریة وشروح الهدایة. وذکر فی الهدایة انه یعتبر في الغلبة اولا اللون ثم الطعم ثم الاجزاء ، واما حکم القسم الرابع فاشار الیه بقوله (اوغیره طبخا وهو ممّا لا یقصد به النظافة) واطلاق التغیر وجعله قسیماً للاخراج عن طبع الماء مما یتبادر منه ان مطلق التغیر بالطبخ مانع سواء اخرجه عن طبع الماء اولا، وهذا هو المفهوم من الهدایة ویؤیده ما فی الخزانة وفتاوی قاضی خان انه اذا طبخ فیه الباقلی وریح الباقلی یوجد منه لایجور به التوضی هذا وقد ذکر فی الفتاوی الظهیریة انه اذا طبخ الحمص

وضو نہ ہوگا۔ پہلی اور تیسری صورت میں ملنے والی شے کا غلبہ تب ہو گا جب پانی کا پتلا پن جاتا رہے اور دوسری صورت میں امام محمد کے ہاں جب ملنے والی شے کا رنگ پانی پر غالب آ جائے غلبہ ہو گا، اور امام ابو یوسف کے ہاں جب اس کے اجزاء غالب ہو جائیں تو غلبہ ہو گا، چونکہ امام ابو یوسف غلبہ بالاجزاء کے قائل ہیں بنابریں غیر مائع اشیاء کا غلبہ پانی کے پتلے پن کے زوال سے ہونا چاہیے۔ امام ابویوسف سے ایک اور روایت بھی ہے کہ اگر ملنے والی شے سے طہارت میں مبالغہ مقصود نہ ہو مثلاً صابون، تو پانی وضو کے قابلِ مطلق نہ رہے گا چاہے اجزاء کا غلبہ ہو یا نہ ہو فتاوٰی ظہیریہ اور شرح ہدایہ کا مفہوم یہی ہے، اور ہدایہ میں یہ مذکور ہے کہ اولاً رنگ پھر ذائقہ پھر اجزاء کے غلبہ کا اعتبار ہوگا۔ رہا چوتھی صورت کا حکم جس کی طرف

بر جندی نے "یا غیر جنس الارض پکانے سے ملے جس سے مبالغہ طہارت مقصود نہ ہو" کے الفاظ سے اشارہ کیا ہے۔ تغیر کو مطلق رکھنے اور پانی کے طبعی حالت سے اخراج کے مقابل ذکر کرنے سے معلوم ہوتا ہے کہ دوسری شے کے پانی میں پکنے سے آنے والی تبدیلی وضو سے مانع ہے چاہے پانی کو طبعی حالت سے نکالے یا نہ نکالے، یہ ہدایہ سے مفہوم ہے، جبکہ خزانہ سے اس کی تائید ہوتی ہے۔ اور فتاویٰ قاضی خان میں ہے کہ جب پانی میں لوبیا پکایا جائے اور اس کی بُو محسوس ہونے لگے تو اس سے

1 شرح النقایۃ للبرجندی کتاب الطہارۃ منشی نولکشور لکھنو ۱/ ۳۲ صفحہ 177 از 756

Fatawa Rizvia, Volume 3

...or broad beans in water, and it becomes such that if it cools down, it thickens, performing ablution (wudu) with it is not permissible. And if it does not thicken and the thinness of water remains, it is permissible. [1] 'Ah' (end of quote). We have cited it completely although its latter part was mentioned before, just to gather all statements in one place. (T)

Ablution will not be permissible. It is mentioned in Fatawa Zahiriyya that if chickpeas or beans are boiled in water and the water becomes thick upon settling, then wudu will not be permissible. If the thinness remains, it will be permissible. All statements are mentioned here just to unify them, otherwise, its latter part has already been mentioned before. (T)

I say: The summary of this is that according to Imam Abu Yusuf, it generally depends on the thinness (liquidity) of water. However, there are two cases: one, if any liquid substance is mixed in water without cooking, where the abundance of parts is considered. Second, if something from which extra cleanliness is not intended is mixed in cooking, then general change is a hindrance. According to Imam Muhammad, attributes are generally considered except in two cases: first, if the mixed substance is of the earth category; second, if extra cleanliness is intended from it. In these two, thinness is considered. One who looks at our aforementioned investigations and refinements and the cited texts and clarifications of the Imams will know the various points of discussion. For example, first: in the school of Imam Abu Yusuf, the mention of a thing becoming something else for another purpose remained; in that, neither thinness nor abundance of parts is considered.

Objection: Did Al-Birjandi not say the words 'regarding the parts' under 'it has already been mentioned to you that its third meaning is preparation for another purpose'?

Answer: I say: But his statement is detached from it. Do you not see that he specified it in solid substances by the loss of thinness? (T)

Second: Similarly, it was not mentioned in Imam Muhammad's school of thought, although it is a matter of consensus, as mentioned in the issues of Nabeez, saffron, etc. Third: In point 21 and the second discussion of the debates on cooking, it has been clarified and researched from 31 books that even in cooking, thinness is the criterion; a mere change of attribute is not sufficient.

1: Sharh al-Niqayah by Al-Birjandi, Discussions on Water from the Book of Purity, printed by Naval Kishore, Lucknow, 1/32. Page 178 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

...या पानी में लोबिया, और वह ऐसा हो गया कि अगर ठंडा हो तो गाढ़ा हो जाए, तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है। और अगर गाढ़ा न हो और पानी का पतलापन बना रहे तो जायज़ है। [1] 'अह' (उद्धरण समाप्त)। हमने इसे पूरी तरह से यहाँ उद्धृत किया है हालाँकि इसका अंतिम भाग पहले भी बताया जा चुका है, केवल सभी कथनों को एक स्थान पर एकत्र करने के लिए। (त)

वज़ू जायज़ नहीं होगा। फ़तावा ज़हीरिया में है कि चने या लोबिया पानी में उबाले गए और स्थिर होने पर पानी गाढ़ा हो गया, तो वज़ू जायज़ नहीं होगा। और अगर पतलापन बना रहे तो जायज़ होगा। यहाँ सभी उद्धरणों को केवल एक स्थान पर इकट्ठा करने के लिए ज़िक्र किया गया है, अन्यथा इसका अंतिम भाग पहले भी ज़िक्र किया जा चुका है। (त)

मैं कहता हूँ: इसका सारांश यह है कि इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार, यह सामान्य रूप से पानी के पतलेपन (रक़्क़त) पर निर्भर करता है। लेकिन दो स्थितियों में: एक यह कि कोई बहने वाली चीज़ बिना पकाए पानी में मिल जाए, जिसमें अंशों की प्रचुरता का ध्यान रखा जाता है। दूसरा यह कि जिस चीज़ से अधिक स्वच्छता अपेक्षित न हो और वह पकाने में मिल जाए, तो उसमें सामान्य परिवर्तन ही बाधक है। इमाम मुहम्मद के अनुसार सामान्यतः गुणों (औसाफ़) का विचार है, सिवाय दो स्थितियों के एक यह कि मिलने वाली चीज़ ज़मीन की श्रेणी से हो; दूसरा यह कि उससे अधिक स्वच्छता अपेक्षित हो। इन दोनों में पतलेपन पर नज़र है। हमारी उपर्युक्त खोजों और शोधों तथा इमामों के उद्धृत पाठों और स्पष्टीकरणों पर नज़र रखने वाला जानेगा कि इसमें किन-किन पहलुओं से चर्चा है। उदाहरण के लिए, पहला: इमाम अबू यूसुफ़ के मज़हब में, किसी अन्य उद्देश्य के लिए वस्तु के बदल जाने का ज़िक्र शेष रह गया; इसमें न तो पतलेपन और न ही अंशों की प्रचुरता का कोई विचार है।

आपत्ति: क्या बिरजंदी ने 'अंशों के विचार से' शब्दों को 'यह पहले ही आपको बताया जा चुका है कि इसका तीसरा अर्थ दूसरे उद्देश्य के लिए तैयार होना है' के अंतर्गत नहीं कहा?

उत्तर: मैं कहता हूँ: लेकिन उनका कथन इससे अलग है। क्या आप नहीं देखते कि उन्होंने इसे ठोस पदार्थों में पतलेपन के समाप्त हो जाने के साथ विशेष किया है? (त)

दूसरा: इसी तरह इमाम मुहम्मद के मज़हब में इसका ज़िक्र नहीं आया, हालाँकि यह सर्वसम्मत विषय है, जैसा कि नबीज़, ज़ाफ़रान आदि के मसलों में गुज़रा। तीसरा: नंबर 21 और पकाने की चर्चाओं की

दूसरी बहस में 31 किताबों से स्पष्टीकरण और शोध गुज़रा कि पकाने में भी पतलापन ही मानदंड है, केवल गुण का बदल जाना काफी नहीं है।

1: शर्ह अल-निकाया बिरजंदी द्वारा, किताबुल तहारत से पानी की चर्चाएँ नवल किशोर प्रेस लखनऊ में मुद्रित, 1/32। पृष्ठ 178 / 756

او الباقلی فی الماء و صار بحیث اذا برد ثخن لایجوز به التوضی وان لم یثخن ورقة الماء باقیة جاز 1 اھ وسقناہ تماما وان تقدم آخرہ لجمع کلامه فی محل واحد۔

وضو جائز نہ ہوگا، فتاویٰ ظہیریہ میں ہے کہ چنے یا لوبیا پانی میں ابالے گئے اور ساکن ہونے پر پانی گاڑھا ہو گیا تو وضو جائز نہ ہوگا، اور اگر پتلا پن برقرار رہا تو جائز ہوگا۔ یہاں تمام عبارات کو محض یکجا کرنے کی خاطر ذکر کر دیا گیا ورنہ اس کا آخری حصہ تو پہلے بھی ذکر ہو چکا ہے۔ (ت)

اقول: اس کا خلاصہ یہ کہ امام ابو یوسف کے نزدیک مطلقاً رقتِ آب پر مدار ہے مگر دو صورتوں میں ایک یہ کہ کوئی بہتی چیز بغیر طبخ پانی میں ملے کہ اس میں کثرت اجزاء پر لحاظ ہے دوسرے یہ کہ جس چیز سے زیادت نظافت نہ مطلوب ہو طبخ میں ملے اس میں مطلق تغیر مانع ہے اور امام محمد کے نزدیک مطلقاً اوصاف کا اعتبار ہے مگر دو صورتوں میں، ایک یہ کہ ملنے والی چیز جنس زمین سے ہو دوسری یہ کہ اُس سے زیادت نظافت مطلوب ہو ان دونوں میں رقت پر نظر ہے، ہماری تحقیقات و تنقیحات مذکورہ اور ائمہ کے نصوص و تصریحات مسطورہ پر نظر کرنے والا جانے گا جن جن وجوہ سے اس میں کلام ہے مثلاً اوّل مذہب امام ابو یوسف میں مقصد آخر کیلئے شیئ دیگر ہو جانے کا ذکر باقی رہ گیا اس میں رقت و کثرت اجزا کسی کا لحاظ نہیں۔

فان قلت الیس قال باعتبار الاجزاء علی قوله وقد تقدم لك ان معناها الثالث التهیؤ لمقصد آخر۔ اعتراض: کیا بر جندی نے باعتبار الاجزاء کے الفاظ قد تقدم لک ان معناها الثالث التهیؤ لمقصد آخر کے تحت نہیں کہے؟

اقول: لکن کلامه بمعزل عنه الاتری انه خصها فی الجامدات بانسلاب الرقة۔ جواب: برجندی کے کلام کا مقصد ہرگز وہ نہیں جو بیان کیا جارہا ہے کیونکہ اس نے اس صورت کو جامدات کے ملنے پر پانی کی رقت ختم ہو جانے کے ساتھ مخصوص قرار دیا ہے۔ (ت)

ثانی: یو ہیں مذہب امام محمد میں اس کا ذکر نہ آیا حالانکہ وہ مجمع علیہ ہے جیسا کہ مسائل نبیز و زعفران و غیرہا میں گزرا۔ ثالث: نمبر ۲۱ و بحث دوم ابحاث طبخ میں ۳۱ کتابوں سے تصریح و تحقیق گزری کہ طبخ میں بھی رقت ہی مدار ہے مجرد تغیر وصف کافی نہیں۔

---

1 شرح النقایة للبر جندی ابحاث الماء من کتاب الطهارة مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۲ Page of 756 178

Fatawa Razawiyya, Volume 3

Fourthly: It was mentioned there what the difference is between a cleaning agent and a non-cleaning agent. Fifthly: Also, that according to the school of thought narrated from the Sahiban (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), may Allah Almighty have mercy on them, the ruling for both is the same.

(3) Sixth: Truly, predominance is the pivot, thus it is not restricted to the first categories. Sixth Objection: The first types are not exclusive to predominance, whereas predominance is the basis of this issue.

(4) Seventh: Muhammad (Imam) does not limit himself to color alone. Seventh Objection: Imam Muhammad does not rely solely on color.

(5) Eighth: Mere mixing without change is something that does not prevent purity by consensus; therefore, it is necessary to qualify the absolute narration mentioned from the Second (Imam Abu Yusuf) in the second category. Eighth Objection: Mere mixing without change in the water, which unanimously does not prevent wudu, hence it is necessary to make the absolute narration of Imam Abu Yusuf in the second category restricted.

(6) Ninth: We have previously presented what is in his citing evidence for the absolute nature of change and making it a counterpart to the loss of natural state is insignificant. Ninth Objection: We mentioned earlier before number 218 the objection that arises from making the change in water absolute and making it the opposite of leaving its natural state, with reference to Imam Abu Yusuf.

(7) Tenth: We have verified the meaning of Al-Hidayah in the second discussion of cooking, and that what is understood from it regarding sufficiency with mere change of description, which was cited as evidence from the text of Al-Khazanah or Al-Khaniyah, is not intended. Tenth Objection: We have already explained the research on the concept of Hidayah in the second discussion within the discussions on cooking, and also that what is understood from it—that sufficiency will be based solely on the change of this quality for which the text of Khazanah and Khaniyah is a witness—is not what is intended.

(8) Eleventh: We mentioned the meaning of the statement of Al-Khaniyah regarding it, and that it does not support what he intends. Eleventh Objection: We have clarified the correct meaning of Khaniyah's statement on page 217, which does not support Burjandi's view.

(9) Twelfth: We mentioned in the second discussion of cooking what is in relying upon them through three aspects. Twelfth Objection: We have already objected to making the text of Khaniyah an authority in three ways in the second discussion on cooking. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

चौथा: वहीं यह गुज़रा कि साफ़ करने वाले और साफ़ न करने वाले में क्या फ़र्क है। पाँचवाँ: साथ ही यह कि साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद), अल्लाह तआला उन पर रहम करे, से नक़ल किए गए मज़हब में दोनों का एक ही हुक्म है।

(3) छठा: वास्तव में प्रबलता ही धुरी है, इसलिए यह पहले प्रकारों के साथ विशिष्ट नहीं है। छठा एतराज़: पहली किस्में प्रबलता के साथ विशिष्ट नहीं हैं जबकि प्रबलता ही इस मसले का आधार है।

(4) सातवाँ: मुहम्मद (इमाम) केवल रंग पर निर्भर नहीं करते। सातवाँ एतराज़: इमाम मुहम्मद महज़ रंग पर इक्तिफ़ा (निर्भर) नहीं करते।

(5) आठवाँ: बिना परिवर्तन के मात्र मिश्रण सर्वसम्मति से पवित्रता को नहीं रोकता; इसलिए दूसरी श्रेणी में दूसरे (इमाम अबू यूसुफ़) से वर्णित पूर्ण कथन को प्रतिबंधित करना आवश्यक है। आठवाँ एतराज़: महज़ मिलावट बिना पानी की तब्दीली के जो बिल-इज्मा (सर्वसम्मति से) वुज़ू से मानेअ (बाधक) नहीं है, लिहाज़ा दूसरी क़िस्म में इमाम अबू यूसुफ़ की मुतलक़ (निरपेक्ष) रिवायत को मुक़य्यद (प्रतिबंधित) बनाना ज़रूरी है।

(6) नवाँ: हमने पहले ही वह पेश कर दिया है जो परिवर्तन के निरपेक्ष प्रयोग के प्रमाण में है और इसे प्राकृतिक अवस्था के खोने के समकक्ष मानना कमज़ोर है। नवाँ एतराज़: हमने नम्बर 218 से थोड़ा पहले वह एतराज़ ज़िक्र किया है जो बहवाला इमाम अबू यूसुफ़ पानी में तब्दीली को मुतलक़ रखने और हालते तबीई से निकलने का मुक़ाबिल (विपरीत) बनाने पर होता है।

(7) दसवाँ: हमने पकाने की चर्चा के दूसरे भाग में 'हिदाया' की अवधारणा की पुष्टि की है, और यह कि उससे केवल गुणों के परिवर्तन के आधार पर जो पर्याप्तता समझी जा रही है, जिसका प्रमाण 'ख़ज़ाना' या 'ख़ानिया' के शब्दों से दिया गया है, वह अभिप्रेत नहीं है। दसवाँ एतराज़: हिदाया के मफ़हूम की तहक़ीक़ (शोध) पकाने की मबाहिस (चर्चाओं) में से बहस-ए-सानी। (दूसरी चर्चा) में हम बयान कर चुके हैं और यह भी कि इससे जो समझा जा रहा है कि सिर्फ़ इस वस्फ़ (गुण) के तग़य्युर (परिवर्तन) पर इक्तिफ़ा किया जाएगा जिस पर ख़ज़ाना और ख़ानिया की इबारत शाहिद (साक्षी) है, यह मुराद नहीं है।

(8) ग्यारहवाँ: हमने इसके बारे में 'ख़ानिया' के कथन का अर्थ बताया है, और यह कि वह उनके इच्छित उद्देश्य का समर्थन नहीं करता है। ग्यारहवाँ एतराज़: हम ख़ानिया के कलाम का सही मफ़हूम 217 में वाज़ेह कर चुके हैं जो बुर्ज़ंदी के ख़याल का मोअय्यद (समर्थक) नहीं है।

(9) बारहवाँ: हमने पकाने की चर्चा के दूसरे भाग में उन पर तीन पहलुओं से आधार रखने के बारे में बताया है। बारहवाँ एतराज़: ख़ानिया की इबारत को सनद बनाने पर हम पकाने की बहस-ए-सानी में तीन वुजूह (कारणों) से एतराज़ कर चुके हैं। (त)

पृष्ठ 179/756

رابعاً وہیں گزرا کہ منظف و غیر منظف میں کیا فرق ہے۔ خامساً نیز یہ کہ صاحبین رحمہم اللہ تعالیٰ سے مذہب منقول میں دونوں کا ایک حکم ہے۔

(۳) السادس انما الغلبة قطب الرحی فلا تختص بها الاقسام الاولی چھٹا اعتراض: پہلی اقسام غلبہ کے ساتھ مختص نہیں ہیں حالانکہ غلبہ ہی اس مسئلہ کا مدار ہے۔

(۴) السابع محمد لا یقتصر علی اللون ساتواں اعتراض: امام محمد محض رنگ پر اکتفا نہیں کرتے۔

(۵) الثامن مجرد الخلط بلا تغییر مالا یمنع اجماعا فلابد من تقیید اطلاق ما ذکر روایة عن الثانی فی القسم الثانی ۔ آٹھواں اعتراض: محض ملاوٹ بغیر پانی کی تبدیلی کے جو بالاجماع وضو سے مانع نہیں ہے لہذا قسم ثانی میں امام ابویوسف کی مطلق روایت کو مقید بنانا ضروری ہے۔

(۶) التاسع قدمنا ما فی استشهاده باطلاق التغیر وجعله قسیما لزوال الطبع قلیل ۔ نواں اعتراض: ہم نے نمبر ۲۱۸ سے تھوڑا پہلے وہ اعتراض ذکر کیا ہے جو بحوالہ امام ابو یوسف پانی میں تبدیلی کو مطلق رکھنے اور حالت طبعی سے نکلنے کا مقابل بنانے پر ہوتا ہے۔

(۷) العاشر حققنا مفهوم الهدایة فی ثانی ابحاث الطبخ وان ما فهم منه من الاجتزاء بمجرد تغیر الوصف الذی استشهد علیه بعبارة الخزانة او الخانیة غیر مراد۔ دسواں اعتراض: ہدایہ کے مفہوم کی تحقیق پکانے کی مباحث میں سے بحث ثانی میں ہم بیان کر چکے ہیں اور یہ بھی کہ اس سے جو سمجھا جا رہا ہے کہ صرف اس وصف کے تغیر پر اکتفاء کیا جائے گا جس پر خزانہ اور خانیہ کی عبارت شاہد ہے یہ مراد نہیں ہے۔

(۸) الحادی عشر ذکرنا معنی کلام الخانیة فی وانه لایؤید ما یرید۔ گیارھواں اعتراض: ہم خانیہ کے کلام کا صحیح مفہوم ۲۱۷ میں واضح کر چکے ہیں جو بر جندی کے خیال کا مؤید نہیں ہے۔

(۹) الثانی عشر ذکرنا فی ثانی ابحاث الطبخ ما فی الاستناد بها بثلثة وجوہ۔ بارھواں اعتراض: خانیہ کی عبارت کو سند بنانے پر ہم پکانے کی بحث ثانی میں تین وجوہ سے اعتراض کر چکے ہیں۔ (ت)

Fourth: The Rule of Zayla'i: The text of Imam Zayla'i was mentioned on page 278, and the summary of his instruction is that water which has been absorbed by trees and vegetables, or in which something other than cleaning agents like soap has been cooked and thoroughly mixed, or which has been overcome by some other substance mixed into it, is impermissible for wudu; otherwise, it is permissible. These three are the causes of restriction. The detail for the third cause, i.e., being overcome by another substance through cooking or absorption, is that if a solid substance is mixed such that the water is no longer fluid, or if a liquid substance differing in color, taste, and smell—all three qualities—from water changes two of these qualities, or if it differs in two or one quality and changing just one is sufficient, and if it doesn't differ in any quality then the abundance of quantity is considered; if the water is greater in quantity, wudu is permissible, otherwise not.

I Say (Aqool): And with Allah is the guidance and through Him is the attainment of the heights of research (By Allah's grace, I say that with His guidance one can reach the depths of research). What ability does this humble, wretched one—may the Forgiving, All-Powerful forgive him—have to speak in the presence of the great elders? But by the praise of the Master, Glory be to Him, when one holds the garment of the Imams of the school of thought (may Allah be pleased with them), the heart becomes strong. The statement of Imam Fakhr al-Zayla'i (may Allah have mercy on him) has two parts:

The first rule of restriction, i.e., by what causes water becomes restricted and ceases to be 'Absolute Water' suitable for wudu. This was in these words: "Absorption by plants," or "Full mixing by cooking with a non-cleaning agent," or "Being overcome by something else." There is discussion on only three reasons within this.

Firstly: This discourse was refined, correct, deep, and sound if he had not specified the 'overcoming by another' in the subsequent discussion with loss of fluidity, dominance of qualities, and abundance of quantity; so that it would also include the loss of name and change of purpose, as we previously established in the discussion on "Dominance of Another."

I Say (Aqool): Rather, now merely sufficing with 'dominance of another' was enough as it also includes absorption by plants and mixing through cooking. But with this specification, this unanimous cause of restriction, i.e., change of purpose, remained; and simply saying 'it is correct' would not be right. Its excellent research and

verification, and the response from the words of Al-Bahr and Abu al-Sa'ud, was mentioned on page 278. And success is from Allah; this objection is originally from Al-Bahr.

Secondly: Excluding the dripping sap of trees from 'absorption by plants', although a group of elders accepted it, research is against it. Its explanation was mentioned on page 205. This objection was raised by Imam Ibn Amir al-Hajj in 'Al-Hilyah'.

Arabic Original	Urdu Translation
He said while quoting the rule, when he reached this point, his words were: "But you have known what is in this ruling of disagreement and what is in this reasoning..."	While quoting the rule, Imam Amir al-Hajj, upon reaching here, said in his own words: "But the disagreement in this ruling and the conceptual conflict in the statement of the cause which is from this..."

फ़तावा रज़विया - जिल्द तीन

चौथा ज़ैलई नियम: इमाम ज़ैलई का कथन पृष्ठ 278 पर गुज़रा और उनके निर्देश का सारांश यह है कि जो पानी पेड़ों और वनस्पतियों ने सोख लिया हो, या जिसमें साबुन जैसे सफाई एजेंटों के अलावा कुछ और पकाया गया हो और वह पूरी तरह से घुल-मिल गया हो, या कोई दूसरी चीज़ उसमें मिलकर उस पर हावी हो गई हो, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है; अन्यथा जायज़ है। ये प्रतिबंध के तीन कारण हैं। तीसरे कारण, यानी पकने या सोखने के माध्यम से किसी अन्य चीज़ के हावी होने का विवरण यह है कि यदि कोई ठोस पदार्थ मिलाया जाए जिससे पानी तरल न रहे, या यदि कोई तरल पदार्थ रंग, स्वाद और गंध इन तीनों गुणों में पानी से भिन्न हो तो वह दो गुणों को बदल दे, और यदि वह दो या एक गुण में भिन्न हो तो एक ही का बदलना पर्याप्त है, और यदि किसी में भी भिन्न न हो तो मात्रा की अधिकता का विचार किया जाएगा - यदि पानी की मात्रा अधिक है तो वज़ू जायज़ है, अन्यथा नहीं।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): और अल्लाह के साथ ही मार्गदर्शन है और उसी के माध्यम से शोध की ऊँचाइयों तक पहुँचा जा सकता है (अल्लाह के अनुग्रह से, मैं कहता हूँ कि उसके मार्गदर्शन से शोध की गहराई तक पहुँचा जा सकता है)। मुझ जैसे दीन-हीन - जिसे क्षमाशील, सर्वशक्तिमान क्षमा करे - की क्या बिसात है कि वह महान बुजुर्गों के सामने मुँह खोले? लेकिन मालिक (सुब्हानहू व तआला) की प्रशंसा से, जब मजहब के इमामों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का दामन हाथ में हो तो दिल मज़बूत हो जाता है। इमाम फ़ख्र ज़ैलई (अल्लाह उन पर दया करे) के बयान के दो भाग हैं:

पहला प्रतिबंधात्मक नियम: यानी पानी किन-किन कारणों से प्रतिबंधित होकर वज़ू के योग्य 'आबे मुतलक़' (शुद्ध जल) नहीं रहता। यह इन शब्दों में था: 'नबात (पौधों) द्वारा सोखना', या 'गैर-सफाई एजेंट के साथ पकाकर पूर्ण मिश्रण', या 'किसी और चीज़ का हावी होना'। इसमें केवल तीन कारणों पर चर्चा है।

पहला: यह चर्चा उत्कृष्ट, सही, गहरी और परिष्कृत थी यदि वे आगे की चर्चा में 'किसी अन्य के हावी होने' को तरलता के खत्म होने, गुणों के हावी होने और मात्रा की अधिकता तक सीमित न करते; ताकि इसमें नाम का मिटना और उद्देश्य का बदलना भी शामिल रहता, जैसा कि हमने पहले "ग़लबा-ए-गैर" (दूसरे का हावी होना) की चर्चा में स्थापित किया है।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): बल्कि, अब केवल 'किसी अन्य के हावी होने' पर संतोष करना ही पर्याप्त था क्योंकि इसमें पौधों द्वारा सोखना और पकने के माध्यम से मिश्रण भी शामिल है। लेकिन इस विशिष्टता के साथ, प्रतिबंध का यह सर्वसम्मत कारण, यानी उद्देश्य का बदलना, शेष रह गया; और केवल यह कहना सही नहीं होगा कि 'यह सही है'। इसका उत्कृष्ट शोध और सत्यापन, और अल-बहर और अबू अल-सऊद के शब्दों से उत्तर पृष्ठ 278 पर गुज़रा। और सफलता अल्लाह की ओर से है; यह आपत्ति वास्तव में अल-बहर की है।

दूसरा: 'पौधों द्वारा सोखने' से पेड़ों से टपकने वाले रस को बाहर निकालना, हालांकि बुज़ुर्गों के एक समूह ने इसे स्वीकार किया है, शोध इसके खिलाफ है। इसका विवरण पृष्ठ 205 पर गुज़रा। यह आपत्ति इमाम इब्न अमीर अल-हज ने 'अल-हिलिया' में उठाई थी।

अरबी मूल	**उर्दू अनुवाद**
उन्होंने नियम उद्धृत करते हुए कहा, जब वह इस स्थान पर पहुँचे, तो उनके शब्द थे: "लेकिन आपने जान लिया है कि इस निर्णय में क्या मतभेद है और इस तर्क में क्या है..."	नियम उद्धृत करते हुए इमाम अमीर अल-हज ने यहाँ पहुँचकर अपने शब्दों में कहा: "लेकिन इस निर्णय में जो मतभेद है और कारण के बयान में जो वैचारिक विरोधाभास है, उससे..."

पृष्ठ 180 का 756

چہارم ضابطہ زیلعیہ: عبارت امام زیلعی ۲۷۸ میں گزری اور ان کا خلاصہ ارشاد کہ جو پانی درختوں سبزیوں نے پی لیا منظفات ۲ مثل صابون وغیرہ کے سوا اور کوئی چیز اس میں پکانے سے نہایت گھال میل ہو گیا یا ۳ اور طرح دوسری چیز مل کر اس پر غالب آگئی اس سے وضو ناجائز ہے ورنہ جائز۔ یہ تین اسباب تقیید ہیں اور ان میں سبب سوم یعنی بلبخ و تشرب غلبہ غیر کی یہ تفصیل کہ جامد اشے ملی تو پانی رقیق نہ رہے اور ۲ بہتی چیز اگر رنگ ، مزہ ، بو تینوں وصف میں پانی کے مخالف ہے تو دو وصف بدل دے اور ۳ دو یا ایک میں مخالف ہے تو ایک ہی بدلنا کافی ہے اور کسی ۴ میں مخالف نہیں تو کثرت مقدار کا اعتبار ہے اگر پانی مقدار میں زائد ہے وضو جائز ہے ورنہ نہیں۔

اقول: وباللہ التوفیق وبہ الوصول الی ذری التحقیق (اللہ تعالٰی کی توفیق سے میں کہتا ہوں اسی کی توفیق سے تحقیق کی گہرائی تک پہنچا جاسکتا ہے۔ ت) یہ فقیر حقیر غفرلہ الغفور القدیر اکابر کے حضور زبان کھولنے کی کیا لیاقت رکھتا ہے مگر بحمد المولٰی سبحانہ وتعالٰی جب دامنِ ائمہ مذہب رضی اللہ تعالٰی عنہم ہاتھ میں ہو تو دل قوی ہوتا ہے۔ بیان امام فخر زیلعی رحمہ اللہ تعالٰی کے دو حصے ہیں:

پہلا ضابطہ تقیید یعنی پانی کس کس سبب سے مقید ہو کر آب مطلق لائق وضو نہیں رہتا یہ ان لفظوں میں تھا کہ تشرب ' نبات یا کمال ۲ امتزاج بلبخ غیر منظف یا غلبہ ۳ غیر وبس اس میں صرف تین وجہ سے کلام ہے۔

اول: یہ کلام نفیس و صحیح و رچی و تخیح تھا اگر کلام آتی میں غلبہ غیر کو زوال رقت و غلبہ اوصاف و کثرت مقدار سے خاص نہ کرتے کہ زوال اسم و تبدل مقصود کو بھی شامل رہتا کما قدمنا فی مبحث غلبة الغیر۔

اقول: بلالکہ اب صرف غلبہ غیر پر قناعت بس تھی کہ تشرب نبات و امتزاج بالطبخ کو بھی شامل مگر اس تخصیص سے تقیید کا یہ اجماعی سبب اعنی تبدل مقصود باقی رہ گیا اور بس کہنا صحیح نہ ہوا اس کی تحقیق و تنقیح مستطاب اور کلام بحر وابوالسعود سے جواب ۲۷۸ میں گزرا وباللہ التوفیق یہ اعتراض اصل میں بحر کا ہے۔

دوم: تشرب نبات سے قاطر کرم کو کہ آپ ٹپکتا ہے خارج فرمانا اگرچہ ایک جماعت اکابر نے مانا تحقیق اس کے خلاف ہے اس کا بیان ۲۰۵ میں گزرا یہ اعتراض امام ابن امیر الحاج نے حلیہ میں کیا

عربی اصل	اردو ترجمہ
فقال في اثناء نقل الضابطة حين بلغ هذا المحل مانصه لكن عرفت مافی هذا الحكم من الخلاف وما فی هذا التعليل	ضابطہ نقل کرتے ہوئے امام امیر الحاج نے یہاں پہنچ کر اپنے لفظوں میں یوں کہا لیکن اس حکم میں اختلاف اور بیان علت میں جو معنوی تعارض ہے اس سے

Fatawa-e-Razvia, Volume 3

[Arabic Box:] "From the opposition in meaning as we have previously mentioned from 'Al-Kafi' on the authority of 'Al-Muhit', and we mentioned that the apparent view is the most correct one." [Urdu translation in box:] You have become aware, as we have just quoted from 'Kafi' with reference to 'Muhit' and also explained that in reality, this is also the strong opinion. (T)

I say[1]: Rather, there is discussion about its being water itself, its explanation passed in footnote 207. Third, I say: The ruling for cleaned cooked[2] [water] remained.

[Arabic Box:] "For he excluded it from [the category of] cooking by restriction, and from [the category of] prevalence by his saying 'and the prevalence of what is mixed by blending without cooking and without the plant absorbing [the water]' [2]." [Urdu translation in box:] Because he has excluded it from the cases of cooking and prevalence. By placing the restriction of 'cooking' (for non-cleaners), and excluding from 'prevalence' by saying that the thing mixed in water prevails without water and without the absorption by plants. (T)

The second rule regarding prevalence without absorption and without cooking starts from here: if a solid substance is mixed, etc. I say: What was said in the first part is narrated; the second is the innovation and 'Ijtihad' (independent reasoning) of the praised Imam, which the Absolute Researcher (Al-Muhaqqiq al-Mutlaq), then Imam Shurunbulali, then Allama Shami expressed with the word 'Iqtiham' (venture/ intrusion), stating: 'The commentator of Al-Kanz (may Allah Almighty have mercy on him) ventured to harmonize the words of the companions by providing a rule for that'[3] (The commentator of Kanz, may mercy be upon him, took a forceful step by giving a rule to make various juristic opinions consistent. - T). And this is the point of contention for objections and the gathering place for all kinds of disagreements. Among them, the fourth [point] is the mention of those things that restrict the water rather than making it no longer water, and if the fluidity is lost such that it is no longer water, then the first of the four cases of the third cause should be deleted. This is the objection of Imam Ibn al-Humam.

[Side Box:] [Arabic:] "This is the phrase of the Researcher where he spoke generally, and the same is for Shami, and the wording of Shurunbulali in Al-Ghunyah is as Zayla'i said, the one who ventured into this rule. 12 Minhu Ghafar Allahu Lahu (M)" [Urdu:] This is the phrase of the Absolute Researcher (author of Fath al-Qadir) and

Shami also used these words; however, Shurunbulali said in 'Al-Ghunyah' as Zayla'i said, that he is the inventor of this rule. 12 Minhu Ghafar Allahu Lahu (T)

1. Hilyah
2. Tabyin al-Haqa'iq, Research on Water, Matba' Amiriyah, Bulaq, Egypt, 1/20
3. Fath al-Qadir, Water with which Wudu is permissible, Nuriya Razvia, Sukkur, 1/65

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[अरबी बॉक्स:] "अर्थ में विरोध के बारे में जैसा कि हमने पहले 'अल-काफ़ी' से 'अल-मुहीत' के हवाले से बताया है, और हमने उल्लेख किया कि ज़ाहिर (स्पष्ट) यही है कि यह सबसे उपयुक्त पहलू है।" [बॉक्स में उर्दू अनुवाद:] आप जागरूक हो चुके हैं, जैसा कि हमने अभी 'काफ़ी' से 'मुहीत' के हवाले से उद्धृत किया है और यह भी बताया है कि वास्तव में, मज़बूत बात भी यही है। (त)

मैं कहता हूँ[1]: बल्कि इसके पानी होने में ही चर्चा है, इसका वर्णन हाशिया 207 में बीत चुका है। तीसरा, मैं कहता हूँ: साफ़ की हुई पकी हुई[2] [पानी] का हुक्म बाकी रह गया।

[अरबी बॉक्स:] "क्योंकि उसने इसे पाबन्दी के साथ पकाने से और प्रबलता से अपने इस कथन द्वारा निकाल दिया: 'और पकाने के बिना मिश्रण द्वारा मिश्रित होने की प्रबलता और पौधों द्वारा अवशोषण के बिना' [2]।" [बॉक्स में उर्दू अनुवाद:] क्योंकि उसने इसे पकाने और प्रबलता की स्थितियों से बाहर कर दिया है। पकाने से (ग़ैर-सफ़ाई करने वालों की) शर्त लगाकर, और प्रबलता से यह कहकर निकाल दिया कि पानी में मिलने वाली चीज़ का बिना पानी और बिना सब्ज़ियों के चूसने के प्रबलता हो। (त)

प्रबलता का दूसरा नियम बिना अवशोषण और बिना पकाने के यहाँ से शुरू होता है कि यदि कोई ठोस वस्तु मिली हो... आदि। मैं कहता हूँ: पहले भाग में जो कहा गया वह उद्धृत है; दूसरा प्रशंसित इमाम का ही आविष्कार और इजतिहाद है जिसे मुहाक़िक़ अल-मुतलक़ (परम शोधकर्ता), फिर अल्लामा शूरुनबलाली, फिर अल्लामा शामी ने 'इक़्तिहाम' (साहस/घुसपैठ) शब्द के साथ व्यक्त किया कि: 'अल-कन्ज़ के व्याख्याकार (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) ने उसके लिए नियम देकर साथियों की बातों के बीच सामंजस्य बिठाने का साहस किया'[3] (कन्ज़ के व्याख्याकार, उन पर रहम हो, ने विभिन्न न्यायविदों के कथनों को अनुकूल बनाने के लिए नियम देकर इसमें ज़ोर-ज़बरदस्ती से काम लिया है। - त)। और यही आपत्तियों का केंद्र और हर तरह के विरोधों का संगम स्थल है। उनमें से चौथा उन चीज़ों का उल्लेख है जो पानी को प्रतिबंधित करती हैं न कि पानी ही न रहने दें, और यदि तरलता समाप्त हो जाए और पानी ही न रहे, तो तीसरे कारण की चारों स्थितियों में से पहली को हटा दिया जाना चाहिए। यह इमाम इब्न अल-हुमाम की आपत्ति है।

[साइड बॉक्स:] [अरबी:] "यह शोधकर्ता का वाक्यांश है जहाँ उन्होंने सामान्य रूप से बात की है, और शामी के लिए भी यही है, और अल-ग़ुनिया में शूरुनबलाली के शब्द वैसे ही हैं जैसे ज़ैलाई ने कहा, जो

इस नियम में साहसी थे। 12 मिन्हु ग़फ़रल्लाहू लहू (म)" [उर्दू:] यह मुहाक़िक़ मुतलक़ (फ़तह अल-क़दीर के लेखक) का वाक्यांश है और शामी ने भी यही शब्द कहे हैं, अलबत्ता शूरुनबलाली ने 'गुनिया' में वैसा ही कहा जैसा ज़ैलाई ने कहा कि वह इस नियम का आविष्कारक है। 12 मिन्हु ग़फ़रल्लाहू लहू (त)

1. हिलया
2. तबयीन अल-हक़ाएक़, पानी पर शोध, मतबा अमीरिया, बुलाक़, मिस्र, 1/20
3. फ़तह अल-क़दीर, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, नूरया रज़विया, सुक्कुर, 1/65

पृष्ठ 181/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[عربی باکس:] من المعارضة فی المعنی کما قدمناہ آنفاً من الکافی عن المحیط وذکرنا ان الظاھر انہ الاوجہ اھ [1] [اردو ترجمہ:] تم باخبر ہو چکے ہو، جیسا کہ ہم نے کچھ ہی پہلے کافی سے بحوالہ محیط نقل کیا اور یہ بھی بتایا ہے کہ درحقیقت مضبوط بات بھی یہی ہے (ت)

اقول[1]: بلالکہ اس کے پانی ہی ہونے میں کلام ہے اس کا بیان حاشیہ ۲۰۷ میں گزرا۔ سوم اقول: مطبوخ[2] منظف کا حکم باقی رہ گیا

[عربی باکس:] فأنہ اخرجہ من الطبخ بالقید ومن الغلبة بقولہ وغلبة الممتزج بالاختلاط من غیر طبخ ولا تشرب نبات [2]۔ [اردو ترجمہ:] کیونکہ اس کو طبخ اور غلبہ کی صورتوں سے خارج کر دیا ہے۔ طبخ سے (غیر منظفات کی) قید لگا کر، اور غلبہ سے یہ کہہ کر نکال دیا کہ پانی میں ملنے والی چیز کا بغیر پانی اور بغیر سبزیوں کے چوسنے کے غلبہ ہو۔ (ت)

دوسرا ضابطہ غلبہ بے تشرب وبے طبخ وہ یہاں سے آغاز ہوا کہ اگر جامد شے ملی الی آخرہ۔

اقول: اول میں جو کچھ فرمایا منقول تھا ہے دوم ہی امام ممدوح کا ایجاد و اجتہاد ہے جسے امام محقق علی الاطلاق پھر علامہ شرنبلالی پھر علامہ شامی نے بلفظ اقتحام تعبیر فرمایا کہ اقتحم عہ شارح الکنز رحمہ اللہ تعالی التوفیق بین کلام الاصحاب باعطاء ضابط فی ذلک [3] (شارح کنز علیہ الرحمۃ نے فقہاء کے مختلف اقوال کو موافق بنانے کے لئے ضابطہ دے کر اس میں سینہ زوری سے کام لیا ہے۔ت) اور یہی معترک ایرادات و مجمع ہر گونہ مخالفات ہے۔ از انجملہ چہارم ذکر ان چیزوں کا ہے جو کہ پانی کو مقید کریں نہ کہ پانی ہی نہ رکھیں اور سلب رقت ہو کر پانی ہی نہ رہے گا تو سبب سوم کی چاروں صورتوں سے پہلی حذف ہونی چاہئے یہ اعتراض امام ابن الہمام

[سائڈ باکس:] عه هذه عبارة المحقق حیث اطلق ومثله للشامی ولفظ الشرنبلالی فی الغنیة کما قال الزیلعی المقتحم لهذا الضابط ۱۲ منہ غفرلہ ۔ (م) یہ عبارت محقق مطلق (صاحب فتح القدیر) کی ہے اور شامی نے بھی یہی الفاظ کہے ہیں البتہ شرنبلالی نے غنیہ میں یوں کہا کہ جیسے زیلعی نے کہا کہ جو اس ضابطہ کا اختراع کنندہ ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 حلیہ 2 تبیین الحقائق ابحاث الماء مطبعہ امیریہ بولاق مصر ۱ / ۲۰ 3 فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۶۵

Fatawa Razvia Volume 3

...is of,

[Arabic Section]: Where he said after citing the rule and the reasoning: The appropriate view is that there should be excluded from the categories what is mixed with a solid and thus loses its thinness, for this is not restricted water, and the discussion is regarding it, rather it is not water at all, as indicated by the author's statement: 'Unless it becomes predominant so it becomes like Sattu (barley flour drink), due to the disappearance of the name of water from it'[1]. This was cited in 'Minhat al-Khaliq' and he affirmed it.

[Urdu Section]: Ibn Humam, after quoting the rule, said that it would be better if the case of water losing its thinness due to the addition of a solid substance were removed from these scenarios, because this is not the restricted water under discussion; rather, it ceases to be water altogether. The author himself pointed this out by saying, 'unless it becomes dominant and turns into a substance like Sattu, because it is no longer called water.' This was quoted and confirmed in 'Minhat al-Khaliq'.

[Arabic Section]: I say (1): What is more appropriate is to take it literally, as it has no effect on the rulings, and such instances are not rare in Fiqh (jurisprudence).

[Urdu Section]: (T) I say, however, this is not appropriate; a literal capture does not affect the rulings, and such a thing is not rare in Fiqh. (T)

Fifth: Dates are solid, so according to the rule, ablution (Wudu) with Nabidh (date water) should be permissible as long as the water remains thin, although this is contrary to what is correct, and the Imam retracted from the narration of permissibility.

I say[2]: Why specify dates such that one must differentiate between correct, weak, and retracted views? Raisins, apricots, figs, etc., are all solid, and ablution with their Nabidh is invalid by consensus (Ijma), yet according to the rule, it should be permissible.

Sixth: Similarly, saffron is solid, so even if it changes all three qualities (color, taste, smell), according to the rule, it should remain permissible as long as thinness remains, although the explicit ruling is non-permissibility when it becomes capable of

dyeing. Both of these objections belong to the author of 'Bahr al-Raiq', mentioned on pages 278 and 295.

[Arabic Section]: Along with what 'Al-Bahr' attempted in its justification and the rebuttal of 'Al-Nahr' against it, and the thorough investigation of the rebuttal beyond which nothing can be added. We have also previously mentioned in the issue of saffron from the expressions whose outward meanings...

[Urdu Section]: Along with this, the justification of the author of 'Bahr al-Raiq' and the rebuttal of the author of 'Nahr', and such an investigation of the rebuttal that there is no room for addition, and we have also previously mentioned in issue number 144 those narrations regarding the problem of saffron...

[1] Fath al-Qadir, The water with which Wudhu is permissible, Nooriyah Razviya Sukkur 1/65 Page 182 of 756

फ़तावा रज़विया खंड 3

...का है,

[अरबी खंड]: जहाँ उन्होंने नियम और तर्क का उल्लेख करने के बाद कहा: उचित दृष्टिकोण यह है कि उन श्रेणियों में से उसे बाहर रखा जाना चाहिए जो एक ठोस के साथ मिश्रित होता है और इस प्रकार अपना पतलापन खो देता है, क्योंकि यह 'प्रतिबंधित जल' नहीं है, और चर्चा इसी के संबंध में है, बल्कि यह बिल्कुल भी जल नहीं है, जैसा कि लेखक के कथन से संकेत मिलता है: 'जब तक कि यह हावी न हो जाए और सत्तू (जौ के आटे का पेय) जैसा न बन जाए, क्योंकि इससे जल का नाम समाप्त हो जाता है'[1]। इसे 'मिन्हात अल-खालिक' में उद्धृत किया गया था और उन्होंने इसकी पुष्टि की थी।

[उर्दू खंड]: इब्न हुमाम ने नियम को उद्धृत करने के बाद कहा कि बेहतर यह होगा कि इन स्थितियों में से ठोस वस्तु के मिलने से पानी का पतलापन समाप्त होने की सूरत को निकाल दिया जाता, क्योंकि यह वह सीमित जल नहीं है जिसकी चर्चा हो रही है; बल्कि यह सिरे से पानी ही नहीं है। लेखक ने स्वयं इसकी ओर यह कहकर संकेत किया कि 'मगर यह कि हावी होकर सत्तू जैसी चीज़ बन जाए क्योंकि उसे अब पानी नहीं कहा जाता।' इसे 'मिन्हातुल-खालिक' में उद्धृत और प्रमाणित किया गया है।

[अरबी खंड]: मैं कहता हूँ (1): शाब्दिक अर्थ लेना अधिक उचित है क्योंकि इसका आदेशों (अहकाम) पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, और फ़िक़्ह (न्यायशास्त्र) में ऐसे उदाहरण दुर्लभ नहीं हैं।

[उर्दू खंड]: (त) मैं कहता हूँ, हालाँकि यह उचित नहीं है; शाब्दिक पकड़ से आदेशों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और फ़िक़्ह में ऐसी चीज़ दुर्लभ नहीं है। (त)

पाँचवाँ: खजूर ठोस है, इसलिए नियम के अनुसार नबीज़ (खजूर के पानी) से वज़ू तब तक जायज़ होना चाहिए जब तक कि पानी पतला रहे, हालाँकि यह सही मत के विपरीत है, और इमाम ने जायज़ होने के वर्णन से रुजू (वापसी) कर ली है।

मैं कहता हूँ[2]: खजूर को ही विशेष क्यों माना गया है कि सही, कमज़ोर और वापस लिए गए मतों में अंतर करना पड़े? किशमिश, खुबानी, अंजीर आदि सभी ठोस हैं और सर्वसम्मति (इज्मा) के अनुसार उनके नबीज़ से वज़ू अमान्य है, फिर भी नियम के अनुसार इसे जायज़ होना चाहिए।

छठा: इसी प्रकार केसर ठोस है, इसलिए भले ही वह तीनों गुणों (रंग, स्वाद, गंध) को बदल दे, नियम के अनुसार जब तक पतलापन बना रहे तब तक यह जायज़ रहना चाहिए, हालाँकि स्पष्ट आदेश इसके जायज़ न होने का है जब वह रंगने के योग्य हो जाए। 'बहरुर-रायिक़' के लेखक की ये दोनों आपत्तियाँ पृष्ठ 278 और 295 पर वर्णित हैं।

[अरबी खंड]: इसके साथ जो 'अल-बहर' ने अपने औचित्य में प्रयास किया और उसके विरुद्ध 'अल-नहर' का खंडन, और खंडन की ऐसी गहन जाँच जिसमें कुछ और नहीं जोड़ा जा सकता है। हमने पहले भी केसर के मुद्दे में उन अभिव्यक्तियों का उल्लेख किया है जिनके बाहरी अर्थ...

[उर्दू खंड]: इसके साथ ही साहिब-ए-'बहरुर-रायिक़' का औचित्य और साहिब-ए-'नहर' का खंडन, और खंडन की ऐसी जाँच जिसमें विस्तार की कोई गुंजाइश नहीं है, और हमने पहले भी नंबर 144 में केसर के मामले से संबंधित वे रिवायतें...

[1] फ़तहुल क़दीर, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, नूरैया रज़विया सुक्कुर 1/65 पृष्ठ 182 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

کا ہے،

[Arabic Section]: حیث قال بعد نقل الضابطۃ والوجہ ان یخرج من الاقسام ماخالط جامدا فسلب رقتہ لان ھذا لیس بماء مقید والکلام فیہ بل لیس بماء اصلاً کما یشیر الیہ قول المصنف الا ان یغلب فیصیر کالسویق لزوال اسم الماء عنہ ۱۸ اھ ونقلہ فی منحۃ الخالق واقرہ۔

[Urdu Section]: ابنِ ہمام نے ضابطہ نقل کرنے کے بعد کہا بہتر یہ ہے کہ ان صورتوں میں سے جامد شے کے ملنے سے پانی کی رقت زائل ہوجانے کی صورت نکال دی جاتی، کیونکہ یہ مقید پانی نہیں ہے جس میں کہ بات ہو رہی ہے بلکلہ یہ سرے سے پانی ہی نہیں جس کی طرف خود مصنف نے یوں اشارہ کیا کہ مگر یہ کہ غالب ہو کر ستّو جیسی شے بن جائے کیونکہ اسے پانی نہیں کہا جاتا اس کو منحۃ الخالق میں نقل کیا ہے اور ثابت کیا ہے

[Arabic Section]: اقول: (1) وما ھو الاشبہ الاخذ علی اللفظ اذلا اثر لہ علی الاحکام وما مثلہ فی الفقہ بنادر۔

[Urdu Section]: (ت) میں کہتا ہوں، حالانکہ یہ مناسب نہیں، لفظی گرفت سے احکام پر کوئی اثر نہیں پڑتا اور فقہ میں ایسی چیز نادر نہیں ہے۔ (ت)

پنجم: خرما جامد ہے تو بحکم ضابطہ نبیذ سے وضو جائز ہونا چاہئے جب تک پانی رقیق رہے حالانکہ یہ خلافِ صحیح ہے اور روایتِ جواز سے امام نے رجوع فرمائی۔

اقول: ۲۸ خرما کی کیا تخصیص ہے کہ صحیح و مرجوح و مرجوع سے فرق کرنا پڑے کشمش مشمش انجیر وغیرہ ہر سب جامد ہیں اور ان کی نبیذ سے وضو بالاجماع باطل اور بحکم ضابطہ جواز چاہئے۔

ششم: یو ہیں زعفران جامد ہے تو اگر چہ تینوں وصف بدل دے بروئے ضابطہ جواز رہے جب تک رقت باقی ہو حالانکہ حکم منصوص عدمِ جواز ہے جبکہ رنگنے کے قابل ہو جائے یہ دونوں اعتراض علامہ صاحب بحرالرائق کے ہیں ان کا ذکر ۲۷۸ و ۲۹۵ میں گزرا

[Arabic Section]: مع ماحاول البحر من توجیہہ و رد النھر علیہ وتحقیق الرد بما لا مزید علیہ وقد منا ایضا فی ماورد فی مسألة الزعفران من عبارات ظواھرھا

[Urdu Section]: اس کے ساتھ ہی صاحبِ بحرالرائق کی توجیہ اور صاحبِ نہر کے رّد اور رّد کی ایسی تحقیق کی ہے جس پر اضافہ کی گنجائش نہیں ہے اور ہم نے پہلے بھی نمبر ۱۴۴ میں مسئلہ زعفران سے متعلق وہ روایات

۱۸ فتح القدیر الماء الذی یجوز بہ الوضوء نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۶۵ Page 182 of 756

Volume Three - Fatawa Razawiyya

...which have also been mentioned, and which are apparently contradictory, and he has explained their meaning in such a way that it makes them clear of any doubt. (T)

[Arabic Column]: ...contradictory, and he returned them, by the grace of Allah Almighty, to a single pure path. I say: And by it, praise be to Allah, the context of what is in 'al-Bahr' [al-Ra'iq] has become clear, as it said following 'al-Hidayah' that saffron water is absolute water according to us and restricted according to Shafi'i (may Allah Almighty be pleased with him). Its text is: 'If it is said (1) if someone swore an oath not to drink water and then drank this changed water, he would not be perjured; (2) or if a person in the state of Ihram used water mixed with saffron, a ransom (fidyah) would be mandatory for him; (3) or if someone appointed an agent to buy water for him and he bought this water, it would not be permissible.' It is known from this that changed water is not absolute water. We say: We do not accept that. This is how Siraj al-Hindi mentioned it. I say: Even if we accept [the objection], the answer is that in the case of an oath and agency, the criterion is custom ('urf), and in custom, this water is not drunk. As for the case of the person in Ihram, the ransom became mandatory for him because he used the essence of perfume, even if it was overpowered. End of quote. So the discussion is about water with which a small amount of saffron is mixed, changing its color but not making it suitable for dyeing. Thus, this is what remains in its absolute state, suitable for purification with it. And in this, the statement of the scholar Siraj remains upright: 'We do not accept'.

[Urdu Column]: ...also mentioned, which are apparently contradictory, and their meaning has been explained in such a way that it makes them free of doubt. (T) I say, by the grace of Allah Almighty, with this discourse, that statement of 'Bahr' has also become clear which he stated following 'Hidayah', that saffron water is absolute water according to us and is restricted according to Imam Shafi'i. Their statement is that if it is objected that if someone swore an oath not to drink water then drank saffron-mixed water, the oath will not break; similarly, in the state of Ihram, if one bathes with saffron water, fidyah will be mandatory; and if someone was made an agent to buy water and he buys saffron-mixed water, it will not be permissible. So it is proven that saffron-mixed water is not absolute water (which is against your school of thought). Then we will answer that we do not accept these points as stated by Siraj al-Hindi. I say that even if we accept your objections as correct (it still does not necessarily go against our school), because in cases of oaths and agency, custom is taken into account and in custom, such water is not drunk. And in the issue of Ihram,

the reason for fidyah being mandatory is the use of perfume, even if the perfume is overpowered here; it is not because the water is restricted. Therefore, the discussion...

[1] Bahr al-Ra'iq, Al-Ma' al-ladhi yajuzu bihi al-wudu, Sa'id Company Karachi, 1/68.

जिल्द तीन - फतावा रज़विया

...भी ज़िक्र की हैं जो ज़ाहिर तौर पर मुतनाफ़ी (विरोधाभासी) हैं और उनका ऐसा मतलब भी बयान किया है जो उन्हें बे-ग़ुबार (स्पष्ट) बना देता है। (त)

[अरबी कॉलम]: ...विरोधाभासी, और उसने उन्हें अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से एक ही साफ़ रास्ते पर वापस कर दिया। मैं कहता हूँ: और इसी से, अल्लाह का शुक्र है, 'अल-बहर' [अल-राइक़] में जो है उसका संदर्भ स्पष्ट हो गया है, जैसा कि उसने 'हिदाया' का अनुसरण करते हुए कहा कि ज़ाफ़रान वाला पानी हमारे यहाँ मुतलक़ पानी है और शाफ़ई (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के यहाँ मुक़य्यद है। उसका पाठ है: 'अगर कहा जाए (1) कि यदि किसी ने पानी न पीने की क़सम खाई और फिर यह बदला हुआ पानी पी लिया, तो वह झूठा नहीं होगा; (2) या यदि एहराम की स्थिति में किसी व्यक्ति ने ज़ाफ़रान मिश्रित पानी का उपयोग किया, तो उसके लिए फ़िद्या अनिवार्य होगा; (3) या यदि किसी ने अपने लिए पानी खरीदने के लिए एक वकील नियुक्त किया और उसने यह पानी खरीदा, तो यह अनुमति योग्य नहीं होगा।' इससे यह ज्ञात होता है कि बदला हुआ पानी मुतलक़ पानी नहीं है। हम कहते हैं: हम इसे स्वीकार नहीं करते। सिराज अल-हिंदी ने इसे इसी तरह उल्लेख किया है। मैं कहता हूँ: भले ही हम [आपत्ति] स्वीकार कर लें, उत्तर यह है कि क़सम और वकालत के मामले में, मापदंड उरफ़ (प्रथा) है, और उरफ़ में यह पानी नहीं पिया जाता है। जहाँ तक एहराम वाले व्यक्ति के मामले का प्रश्न है, फ़िद्या उसके लिए अनिवार्य हो गया क्योंकि उसने ख़ुशबू के सार का उपयोग किया, भले ही वह दब गया हो। उद्धरण समाप्त। तो चर्चा उस पानी के बारे में है जिसमें ज़ाफ़रान की थोड़ी मात्रा मिलाई जाती है, जिससे उसका रंग बदल जाता है लेकिन वह रंगने के लिए उपयुक्त नहीं होता। इस प्रकार, यह वही है जो अपनी मुतलक़ स्थिति में बना रहता है, इसके साथ शुद्धिकरण के लिए उपयुक्त है। और इसमें विद्वान सिराज का कथन सही बैठता है: 'हम स्वीकार नहीं करते'।

[उर्दू कॉलम]: ...भी ज़िक्र की हैं जो बज़ाहिर मुतनाफ़ी हैं और उनका ऐसा मतलब भी बयान किया है जो उन्हें बे-ग़ुबार बना देता है। (त) मैं कहता हूँ, अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस तक़रीर से 'बहर' की वह इबारत भी वाज़ेह हो गई जो उसने हिदाया की पैरवी में कही कि ज़ाफ़रान वाला पानी हमारे नज़दीक मुतलक़ पानी है और इमाम शाफ़ई के यहाँ मुक़य्यद है। उनकी इबारत यह है कि अगर एतराज़ किया जाए कि अगर किसी ने पानी न पीने की क़सम खाई फिर ज़ाफ़रान मिला पानी पी लिया तो क़सम नहीं टूटेगी; यूँ ही हालत-ए-एहराम में ज़ाफ़रान के पानी से ग़ुस्ल कर लिया तो फ़िद्या लाज़िम आएगा; और किसी को पानी ख़रीदने के लिए वकील बनाया गया हो और वह ज़ाफ़रान मिला

पानी ख़रीदे तो यह जायज़ न होगा। तो साबित हुआ कि ज़ाफ़रान मिला पानी मुतलक़ पानी नहीं होता (जो आपके मसलक के ख़िलाफ़ है)। तो हम जवाब देंगे कि हम इन बातों को तस्लीम नहीं करते जैसा कि सिराज हिंदी ने कहा। मैं कहता हूँ कि अगर हम आपके एतराज़ात को दुरुस्त तस्लीम कर भी लें (तो भी हमारे मसलक के ख़िलाफ़ लाज़िम नहीं आता), क्योंकि क़सम और वकालत की सूरतों में तो उरफ़ का एतबार होता है और उरफ़ में है कि ऐसा पानी पिया नहीं जाता। और एहराम वाले मसले में फ़िद्या लाज़िम होने की वजह ख़ुशबू का इस्तेमाल है, अगरचे यहाँ ख़ुशबू मक़लूब (दबी हुई) है, पानी का मुक़य्यद होना नहीं है। पस कलाम इस...

[1] बहर-उर-राइक़, अल-मा' उल्लाज़ी यजूज़ु बिहिल वुज़ू, सईद कंपनी कराची, 1/68.

بھی ذکر کی ہیں جو بظاہر متنافی ہیں اور ان کا ایسا مطلب بھی بیان کیا ہے جو انہیں بے غبار بنا دیتا ہے۔(ت)

[عربی کالم]: متنافية وردها بتوفيق الله تعالى الى جادّة واحدة صافية۔ اقول: وبه ظهر ولله الحمد محمل مافي البحر اذ قال بعد ماذكر تبعاً للهداية ان ماء الزعفران ماء مطلق عندنا ومقيد عند الشافعي رضى الله تعالى عنه مانصه فان قيل (١) لو حلف لايشرب ماء فشرب هذا الماء المتغير لم يحنث (٢) ولو استعمل المحرم الماء المختلط بالزعفران لزمته الفدية (٣) ولو وكل وكيلا بان يشترى له ماء فاشترى هذا الماء لايجوز فعلم بهذا ان الماء المتغير ليس بماء مطلق قلنا لانسلم ذلك هكذا ذكر السراج الهندى اقول ولئن سلمنا فالجواب اما فى مسألة اليمين والوكالة فالعبرة فيهما للعرف وفى العرف ان هذا الماء لا يشرب واما فى مسألة المحرم فانما لزمته الفدية لكونه استعمل عين الطيب وان كان مغلوباً اهـ فالكلام فى ماء خالطه زعفران قليل فغير لونه ولم يجعله صالحاً للصبغ فهذا هو الباقى على اطلاقه الصالح للطهارة به وفيه يستقيم قول العلامة السراج لانسلم

[اردو کالم]: بھی ذکر کی ہیں جو بظاہر متنافی ہیں اور ان کا ایسا مطلب بھی بیان کیا ہے جو انہیں بے غبار بنا دیتا ہے۔(ت) میں کہتا ہوں بحمدہ تعالی اس تقریر سے بحر کی وہ عبارت بھی واضح ہوگئی جو اس نے ہدایہ کی اتباع میں کہی کہ زعفران والا پانی ہمارے نزدیک مطلق پانی ہے اور امام شافعی کے ہاں مقید ہے ان کی عبارت یہ ہے کہ اگر اعتراض کیا جائے کہ اگر کسی نے پانی نہ پینے کی قسم کھائی پھر زعفران ملا پانی پی لیا تو قسم نہیں ٹوٹے گی، یونہی حالت احرام میں زعفران کے پانی سے غسل کر لیا تو فدیہ لازم آئے گا، اور کسی کو پانی خریدنے کیلئے وکیل بنایا گیا ہو اور وہ زعفران ملا پانی خریدے تو یہ جائز نہ ہوگا تو ثابت ہوا کہ زعفران ملا پانی مطلق

پانی نہیں ہوتا (جو آپ کے مسلک کے خلاف ہے) تو ہم جواب دینگے کہ ہم ان باتوں کو تسلیم نہیں کرتے جیسا کہ سراج ہندی نے کہا، میں کہتا ہوں کہ اگر ہم آپ کے اعتراضات کو درست تسلیم کر بھی لیں (تو بھی ہمارے مسلک کے خلاف لازم نہیں آتا) کیونکہ قسم اور وکالت کی صورتوں میں تو عرف کا اعتبار ہوتا ہے اور عرف میں ہے کہ ایسا پانی پیا نہیں جاتا اور احرام والے مسئلہ میں فدیہ لازم ہونے کی وجہ خوشبو کا استعمال ہے اگرچہ یہاں خوشبو مغلوب ہے پانی کا مقید ہونا نہیں ہے، پس کلام اس

[1] بحر الرائق الماء الذی یجوز به الوضوء سعید کمپنی کراچی ۶۸/۱

...[It is mentioned that] drinking it does not violate the oath, and the Muhrim (one in the state of Ihram) must pay a ransom (fidya) for its use, and if an agent buys it, the principal is not bound by it. How can this be, when it is absolute water, and minor changes are legally and conventionally disregarded?

I say: Otherwise, an oath would not be broken by drinking turbid flood water, and an agent authorized to buy water would not be permitted to buy it from someone who collected it, and this is as you see. They (the jurists) have (1) stated that if perfume is cooked in food, its legal ruling is dropped; otherwise, the ruling follows the dominant part. If the perfume is dominant, blood (a sacrifice) is mandatory even if its scent does not appear, as mentioned in Fath al-Qadir. Otherwise, nothing is due upon him, except that if the scent is present with it, it is disliked (2). If it is mixed with something used on the body, like potash (ushnan) and the like, then in Radd al-Muhtar from al-Maslak al-Multaqist from al-Muntaqa: if people look at it and say, "this is potash," then charity (sadaqah) is due; if they say, "this is perfume," then blood (sacrifice) is due (3). Regarding what they said about a substance mixed with a drink: the ruling is absolutely for the perfume. If it dominates, blood is mandatory, otherwise charity, unless it is drunk repeatedly, then blood is due. It was discussed in al-Bahr that it is appropriate to treat both cases equally.

[Explanation in Urdu column:] This applies to water mixed with saffron, where the amount of saffron is so small that the color of the water changes but it is not capable of dyeing; such water will be considered pure water. And Allama Siraj's statement "We do not concede..." will also remain correct, meaning we do not agree that drinking water with saffron will not break the oath, or that a ransom (fidya) will become mandatory on the Muhrim for using this water. An agent authorized to buy water would not be permitted to buy water with saffron because it is absolute water, and minor changes have no consideration conventionally or legally. (T)

I say, if minor changes were considered, then the oath of one who swore [not to drink water] would not be broken by drinking turbid flood water, and an agent authorized to buy water would not be permitted to buy turbid water, whereas you are well aware of the incorrectness of this. Furthermore, scholars have clarified that if perfume is cooked in food, the ruling of perfume is dropped; otherwise, without cooking, the ruling will be based on the dominant components. As stated in Fath al-Qadir, if perfume is dominant, a sacrifice (qurbani) is mandatory even if the smell is

not apparent, otherwise nothing is mandatory. However, if the smell is felt even when it is subordinate, then using that food is disliked. If perfume is mixed in a substance used on the body like potash (ushnan), it is narrated in Radd al-Muhtar, citing Maslak al-Multaqist from al-Muntaqa, that if people see it and...

1. Fath al-Qadir, Chapter of Jinaayaat, Nooriya Razvia, Sukkur, 2/421
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Jinaayaat, Mustafa al-Babi, Egypt, 2/220 Page 184 of 756

...[यह उल्लेख है कि] इसे पीने से शपथ नहीं टूटती, और मुहरिम (एहराम की स्थिति में व्यक्ति) इसके उपयोग के लिए फ़िदिया (प्रायश्चित) देता है, और यदि कोई प्रतिनिधि इसे खरीदता है, तो मुवक्किल इसके लिए बाध्य नहीं है। यह कैसे संभव है, जबकि यह मुतलक़ (सादा) पानी है, और मामूली बदलाव को शरीयत और प्रथा में नज़रअंदाज़ किया जाता है?

मैं कहता हूँ: अन्यथा, बाढ़ का गंदा पानी पीने से भी शपथ नहीं टूटती, और पानी खरीदने का अधिकार रखने वाला प्रतिनिधि इसे जमा करने वाले से खरीदने का हकदार नहीं होता, जैसा कि आप देख रहे हैं। उन्होंने (फ़कीहों ने) (1) स्पष्ट किया है कि यदि सुगंध को भोजन में पकाया जाता है, तो उसका हुक्म (आदेश) समाप्त हो जाता है; अन्यथा, हुक्म प्रबल भाग के लिए होता है। यदि सुगंध प्रबल है, तो खून (क़ुर्बानी) अनिवार्य है, चाहे उसकी गंध न आए, जैसा कि फ़तह अल-क़दीर में है। अन्यथा, उस पर कुछ भी अनिवार्य नहीं है, सिवाय इसके कि यदि उसके साथ गंध मौजूद हो, तो यह मकरूह (नापसंद) है (2)। यदि इसे शरीर पर उपयोग की जाने वाली किसी चीज़, जैसे उशनान (पोटाश) आदि में मिलाया जाता है, तो रद अल-मुहतार में अल-मस्लक अल-मुल्तक़िस्त के हवाले से अल-मुन्तक़ा से उद्धृत है: यदि लोग इसे देखें और कहें कि "यह उशनान है", तो उस पर सदक़ा अनिवार्य है; और यदि वे कहें कि "यह सुगंध है", तो उस पर खून (क़ुर्बानी) अनिवार्य है (3)। और उन्होंने जो कुछ पीने की चीज़ में मिलाई गई चीज़ के बारे में कहा है: हुक्म पूरी तरह से सुगंध के लिए है। यदि वह प्रबल है, तो खून अनिवार्य है, अन्यथा सदक़ा, जब तक कि इसे बार-बार न पिया जाए, तब खून अनिवार्य होगा। अल-बह्र में इस पर चर्चा की गई है कि उनके बीच समानता होनी चाहिए।

[उर्दू कॉलम का स्पष्टीकरण:] यह ज़फ़रान मिले पानी में होगा जिसमें इतनी थोड़ी मात्रा में ज़फ़रान मिला हो जिससे पानी का रंग तो बदल गया मगर वह रंगने के काबिल न हो, तो ऐसा पानी खालिस पानी गिना जाएगा, और अल्लामा सिराज का कथन "ला नुसल्लिम अलख" (हम स्वीकार नहीं करते...) भी सही रहेगा कि हम नहीं मानते कि ज़फ़रान वाला पानी पीने से शपथ नहीं टूटेगी और यह कि मुहरिम पर इसके उपयोग की वजह से फ़िदिया लाज़िम आ जाएगा। और पानी खरीदने का अधिकार रखने वाला प्रतिनिधि ज़फ़रान वाला पानी खरीदने का हकदार नहीं होगा क्योंकि यह मुतलक़ पानी है और मामूली बदलाव का प्रथा और शरीयत में कोई एतबार नहीं होता। (त)

मैं कहता हूँ, और अगर मामूली बदलाव का एतबार हो तो शपथ लेने वाले की शपथ सैलाब का गंदा पानी पीने से न टूटेगी और पानी खरीदने का अधिकार रखने वाला प्रतिनिधि गंदा पानी खरीदने का हकदार न होगा जबकि इसके गलत होने पर आप अच्छी तरह वाकिफ़ हैं। फिर यह कि उलेमा ने स्पष्ट किया है कि अगर खुशबू को खाने में पकाया जाए तो खुशबू का हुक्म साक़ित हो जाता है वरना बिना पकाए हुक्म प्रबल घटकों पर लगाया जाएगा, जैसा कि फ़तह अल-क़दीर में है, अगर खुशबू प्रबल हुई तो क़ुर्बानी देना लाज़िम होगा चाहे गंध ज़ाहिर न हो, वरना उस पर कुछ भी लाज़िम नहीं आएगा। अलबत्ता अगर कम मात्रा में होने पर भी गंध महसूस होती हो तो उस खाने का इस्तेमाल मकरूह है। अगर उशनान जैसी बदन पर इस्तेमाल होने वाली चीज़ में खुशबू मिली हो तो रद अल-मुहतार में मस्लक अल-मुल्तक़िस्त के हवाले से मुन्तक़ा से नक़ल है कि अगर लोग इसे देखें और...

1. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-जिनायात, नूरिया रज़विया सुक्खर, 2/421
2. रद अल-मुहतार, बाब अल-जिनायात, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 2/220 पृष्ठ 184 / 756

ان شاربه لا یحنث وان المحرم یفدی باستعماله وان الوکیل ان شراه لا یلزم الموکل کیف وھو ماء مطلق وقلیل التغیر ھدر شرعاً وعرفاً۔ (ترجمہ: کہ اس کا پینا حانث نہیں کرتا اور محرم اس کے استعمال سے فدیہ دیتا ہے اور وکیل اگر اسے خریدے تو موکل پر لازم نہیں ہوتا۔ یہ کیسے ہو سکتا ہے جبکہ یہ پانی مطلق ہے اور معمولی تغیر شرعاً اور عرفاً کالعدم ہے۔)

اقول: والالم یحنث بشرب ماء البد ولم یجز شراء الوکیل ممن احرزہ وھو کما تری وقد (۱) صرحوا ان الطیب ان طبخ فی طعام سقط حکمہمہ والا فالحکم للغالب فان غلب الطیب وجب الدم وان لم تظھر رائحته کما فی الفتح والا فلا شیئ علیه غیر انه اذا وجدت معه الرائحة کره (۲) وان خلط بما یستعمل فی البدن کاشنان ونحوہ ففی ردالمحتار عن المسلك الملتقسط عن المنتقی ان کان اذا نظر الیه قالوا ھذا اشنان فعلیه صدقة وان قالوا ھذا طیب علیه دم (۳) اھ۔ وما قالوا فیما خلط بمشروب ان الحکم فیه للطیب مطلقاً فان غلب وجب الدم والا فالصدقة الا ان یشرب مراراً فالدم فقد بحث فیه فی البحر انه ینبغی التسویة بین

زعفران ملے پانی میں ہوگا جس میں اتنی تھوڑی مقدار میں زعفران ملا ہو جس سے پانی کا رنگ تو بدل گیا مگر وہ رنگنے کے قابل نہ ہو، تو ایسا پانی خالص پانی شمار ہوگا، اور علامہ سراج کا قول لا نسلم الخ بھی درست رہے گا کہ ہم نہیں مانتے کہ زعفران والا پانی پینے سے قسم نہیں ٹوٹے گی اور یہ کہ محرم پر فدیہ لازم آجائے گا۔ اس پانی کو استعمال کرنے کی وجہ سے اور وکیل بالشرائے زعفران والا پانی خریدنے کا مجاز نہ ہوگا کیونکہ یہ مطلق پانی ہے اور معمولی تبدیلی کا عرفاً اور شرعاً کوئی اعتبار نہیں ہوتا۔ (ت)

میں کہتا ہوں، اور اگر معمولی تغیر کا اعتبار ہو تو قسم اٹھانے والے کی قسم سیلاب کا گدلا پانی پینے سے نہ ٹوٹے گی اور وکیل بالشرائے گدلا پانی خریدنے کا مجاز نہ ہوگا حالانکہ اس کے غلط ہونے پر آپ بخوبی واقف ہیں پھر یہ کہ علماء نے تصریح کی ہے کہ اگر خوشبو کو کھانے میں پکایا جائے تو خوشبو کا حکم ساقط ہو جاتا ہے ورنہ بغیر پکائے حکم غالب اجزا پر لگایا جائے گا، جیسا کہ فتح القدیر میں ہے، اگر خوشبو غالب ہوئی تو قربانی دینا لازم ہوگا اگرچہ بو ظاہر نہ ہو، ورنہ اس پر کچھ بھی لازم نہیں آئے گا البتہ اگر مغلوب ہونے پر بھی بو محسوس ہوتی ہو تو اس کھانے کا استعمال مکروہ ہے اگر اشنان جیسی بدن پر استعمال ہونے والی شے میں خوشبو ملی ہو تو ردالمحتار میں بحوالہ مسلک الملتقسط المنتقی سے منقول ہے کہ اگر لوگ اسے...

1 فتح القدیر باب الجنایات نوریہ رضویہ سکھر ۴۲۱/۲ 2 ردالمحتار باب الجنایات مصطفی البابی مصر ۲۲۰/۲ صفحہ 184 از 756

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Right Column] ...if they designate it as 'Ushnan' (a cleansing agent), then Sadaqah (charity) will be due, and if they designate it as perfume, then giving a Qurbani (sacrifice) will be mandatory. Regarding the mixing of perfume in a drink, scholars have stated that if the perfume is dominant and a person in the state of Ihram drinks it, Qurbani will be mandatory, otherwise Sadaqah will be mandatory. However, if water with non-dominant perfume is drunk repeatedly, Qurbani will become mandatory. Discussing this, *Bahr al-Raiq* stated that when perfume is mixed in food and drink and it is not dominant, then the ruling for these items should be the same: either nothing should be mandatory in both cases, like food items, or Sadaqah should be mandatory in both, like drinkable items. The support for *Bahr al-Raiq* is also found in this statement of *Tabyin al-Haqaiq*: if a person ate food mixed with raw saffron, then Qurbani will be mandatory (if it dominates), otherwise not, and the same ruling applies to drinkable items. And in *Bahr al-Raiq*, a discussion is quoted from Imam Ibn Amir al-Hajj's *Kitab al-Manasik* that if something with dominant perfume was eaten in a large quantity, then Kaffarah (expiation) will be mandatory; otherwise, it is only Sadaqah. And if instead of perfume, the food or drink was dominant and it was consumed in a large quantity, then Sadaqah will be mandatory; otherwise, nothing. Thus, both these jurists have declared food and drink items equal in ruling. (T) I say that the obligation of Sadaqah for drinking beverages with non-dominant perfume is due to it being absolutely water...

[Left Column] ...food and drink, each mixed with non-dominant perfume, either nothing is mandatory at all, as they said regarding food, or Sadaqah is mandatory, as they said regarding drink. The discussion in *Al-Bahr* is supported by what is in *At-Tabyin* (1): If he ate saffron mixed with food and it was not touched by fire, a sacrifice (dam) is incumbent upon him, but if it was touched by fire, nothing is due from him. Based on this detail for drinks (2). End quote. And in *Al-Bahr* from the *Manasik* of Imam Ibn Amir al-Hajj, as a discussion: if the perfume is dominant and he ate or drank a lot from it, then Kaffarah is due, otherwise Sadaqah. If it is non-dominant and he ate or drank a lot from it, then Sadaqah is due, otherwise nothing is due from him (3). End quote. Thus, they have equated food and drink. I say: Moreover, the obligation of Sadaqah for a drink with non-dominant perfume does not necessitate...

---

1. *Radd al-Muhtar*, Book of Penalties, Mustafa al-Babi, Egypt, 2/219
2. *Tabyin al-Haqaiq*, Book of Penalties, Matba'ah Amiriyyah Bulaq, Egypt, 2/53

3. *Bahr al-Raiq*, Book of Penalties, Saeed Company Karachi, 3/6

फ़तावा रज़विया खंड 3

[दायां कॉलम] ...यदि वे इसे 'उश्नान' (एक सफाई एजेंट) के रूप में नामित करते हैं, तो सदक़ा (दान) देना होगा, और यदि वे इसे खुशबू (इत्र) के रूप में नामित करते हैं, तो क़ुर्बानी (बलि) देना अनिवार्य होगा। पीने वाली चीज़ में खुशबू मिलाने के बारे में विद्वानों ने कहा है कि यदि खुशबू प्रबल हो और मुहरिम (इहराम की स्थिति वाला व्यक्ति) इसे पी ले, तो क़ुर्बानी अनिवार्य होगी, अन्यथा सदक़ा अनिवार्य होगा। हालाँकि, यदि गैर-प्रबल खुशबू वाले पानी को बार-बार पिया जाए, तो क़ुर्बानी अनिवार्य हो जाएगी। इस पर चर्चा करते हुए, बहर अल-राइक़ ने कहा कि जब खाने और पीने की चीज़ों में खुशबू मिली हो और वह प्रबल न हो, तो इन चीज़ों का हुक्म (नियम) एक समान होना चाहिए: या तो दोनों ही मामलों में खाने की चीज़ों की तरह कुछ भी अनिवार्य न हो, या पीने की चीज़ों की तरह दोनों में सदक़ा अनिवार्य हो। बहर अल-राइक़ का समर्थन तबईन अल-हक़ाएक़ के इस कथन से भी होता है कि यदि किसी व्यक्ति ने कच्चे केसर मिश्रित भोजन किया, तो क़ुर्बानी अनिवार्य होगी (यदि वह प्रबल हो), अन्यथा नहीं, और यही नियम पीने की चीज़ों पर भी लागू होता है। और बहर अल-राइक़ में इमाम इब्न अमीर अल-हज की किताब अल-मनासिक से एक बहस उद्धृत है कि यदि प्रबल खुशबू वाली कोई चीज़ बड़ी मात्रा में खाई गई हो, तो कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अनिवार्य होगा; अन्यथा, यह केवल सदक़ा है। और यदि खुशबू के बजाय भोजन या पेय प्रबल था और उसका बड़ी मात्रा में सेवन किया गया, तो सदक़ा अनिवार्य होगा; अन्यथा, कुछ भी नहीं। इस प्रकार, इन दोनों न्यायविदों (फ़क़ीहों) ने खाने और पीने की चीज़ों को हुक्म में समान घोषित किया है। (त) मैं कहता हूँ कि गैर-प्रबल खुशबू वाले पेय पीने के लिए सदक़ा की अनिवार्यता इसके पूर्ण रूप से पानी होने के कारण है...

[बायां कॉलम] ...खाद्य और पेय, दोनों में गैर-प्रबल खुशबू मिश्रित हो, तो या तो कुछ भी अनिवार्य नहीं है, जैसा कि उन्होंने भोजन के बारे में कहा, या सदक़ा अनिवार्य है, जैसा कि उन्होंने पेय के बारे में कहा। अल-बहर की चर्चा का समर्थन अत-तबईन (1) की इस बात से होता है: यदि उसने भोजन में मिश्रित केसर खाया और उसे आग ने नहीं छुआ था, तो उस पर एक बलि (दम) अनिवार्य है, लेकिन यदि उसे आग ने छुआ था, तो उस पर कुछ भी देय नहीं है। इसी विवरण के आधार पर पेय पदार्थों के लिए (2)। समाप्त। और अल-बहर में इमाम इब्न अमीर अल-हज के मनासिक से एक बहस के रूप में: यदि खुशबू प्रबल है और उसने उससे बहुत अधिक खाया या पिया, तो कफ़्फ़ारा देय है, अन्यथा सदक़ा। यदि वह गैर-प्रबल है और उसने उससे बहुत अधिक खाया या पिया, तो सदक़ा देय है, अन्यथा उस पर कुछ भी देय नहीं है (3)। समाप्त। इस प्रकार, उन्होंने भोजन और पेय को समान

माना है। मैं कहता हूँ: इसके अलावा, गैर-प्रबल खुशबू वाले पेय के लिए सदक़ा की अनिवार्यता यह आवश्यक नहीं बनाती...

---

1. रद्द अल-मुह्तार, बाबू अल-जिनायात, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 2/219
2. तबईन अल-हक़ाएक़, बाबू अल-जिनायात, मतबअ अमीरिया बुलाक, मिस्र, 2/53
3. बहर अल-राइक़, बाबू अल-जिनायात, सईद कंपनी कराची, 3/6

पृष्ठ 185 / 756

[دایاں کالم] اشنان قرار دیں تو صدقہ اور اگر خوشبو قرار دیں تو قربانی دینا لازم ہوگا، پینے والی شے میں خوشبو ملنے کے بارے میں علماء نے کہا ہے کہ اگر خوشبو غالب ہو اور مُحرِم ایسی شیئ پئے تو قربانی ورنہ صدقہ لازم ہوگا، مگر مغلوب خوشبو والا پانی بار بار پئے تو قربانی لازم ہو جائے گی، تو اس پر بحر الرائق نے بحث کرتے ہوئے کہا کہ جب کھانے اور پینے والی اشیاء میں خوشبو ملے اور وہ غالب نہ ہو تو ان اشیاء کا حکم یکساں ہونا چاہئے کہ یا تو دونوں صورتوں میں کھانے کی اشیاء کی طرح کچھ بھی لازم نہ ہو یا پینے والی اشیاء کی طرح دونوں میں صدقہ لازم ہو، بحر الرائق کی تائید تبیین الحقائق کی اس عبارت سے بھی ہوتی ہے کہ اگر ایک شخص نے کچا زعفران ملا کھانا کھایا تو قربانی لازم ہوگی ورنہ نہیں اور یہی حکم پینے کی اشیاء کا بھی ہے۔ اور بحر الرائق میں امام ابن امیر الحاج کی کتاب المناسک سے ایک بحث منقول ہے کہ اگر غالب خوشبو والی کوئی شے زیادہ مقدار میں کھائی لی ہو تو کفارہ لازم ہوگا بصورتِ دیگر صرف صدقہ ہے، اور اگر خوشبو کے بجائے غلبہ کھانے پینے کی شیئ کا تھا اور زیادہ مقدار میں استعمال کر لی تو صدقہ لازم ہوگا ورنہ کچھ بھی نہیں، تو ان دونوں فقہاء نے کھانے اور پینے کی اشیاء کو حکم میں یکساں قرار دیا ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں مغلوب خوشبو والے مشروبات پینے سے صدقہ کا لزوم اس کے مطلق پانی ہونے کے

[بایاں کالم] المأكول والمشروب المخلوط كل منهما بطيب مغلوب اما عدم وجوب شيئ اصلا اى كما قالوا فى الطعام او وجوب الصدقة اى كما قالوا فى الشراب و يؤيد بحث البحر ما في التبيين (١) لو اكل زعفراناً مخلوطاً بطعام ولم تمسه النار يلزمه دم وان مسته فلا شيئ عليه وعلى هذا التفصيل في المشروب اهـ وفي البحر عن مناسك الامام ابن امير الحاج بحثاً ان كان الطيب غالباً واكل منه او شرب

كثيراً فعليہ الكفارة والا فصدقة وان كان مغلوباً واكل منه او شرب كثيرا فصدقة والا فلا شئى عليہ اهـ فقد سويا بين المأكول والمشروب۔ اقول: على ان ايجاب الصدقة في المشروب بالطيب المغلوب لا يوجب

---

1. رد المحتار باب الجنايات مصطفى البابى مصر ۲۱۹/۲
2. تبيين الحقائق باب الجنايات مطبعہ اميريہ بولاق مصر ۵۳/۲
3. بحر الرائق باب الجنايات سعيد كمپنى كراچى ۶/۳

Fatawa Razawiyya Volume Three

(Arabic Text Column): In fact, the absolute application is not stripped away. Do you not see that drops of rose water make pounds of water fragrant, and it is not correct for a sane person to say that it has ceased to be water. This is like milk mixed with a small amount of ambergris or musk; it is not permissible for anyone to say it is no longer milk. In summary, the answers are only correct in cases where it is not suitable for dyeing. This is indicated by the statement in Al-Hidayah: Our evidence is that the name 'water' remains applicable absolutely. Do you not see that no new, distinct name has been assigned to it? If it were suitable for dyeing, a specific name would be assigned to it, and it would be called 'dye' and not 'water.' So how could its drinker break an oath, and why would its buyer not be in violation? Thus, the path taken by Al-Bahr is a clear and wide one. This is the interpretation of the words of Allama Sayyid al-Azhari when he said: Know that considering the permanence of thinness and fluidity without regard for the change in qualities, in cases where the mixed substance is solid like saffron, necessitates the permissibility of use, even if the saffron changes the color of the water, because the term 'water' is still applied to it. This was prohibited on the grounds that if a Muhrim (pilgrim) used it, a fidyah (expiation) would be mandatory. He mentioned the three questions and the answers from Al-Hindiyyah and Al-Bahr. He only meant the small, excusable change, and in that case, the permissibility of use is established and correct, and he did not intend it as a settled report...

(Urdu Text Column): ...is not contradictory. Is it not observed that one or two drops of rose water make several ratls (units of weight) of water fragrant, but no sane person says that this is no longer water? Similarly, just as a small amount of amber or musk makes milk fragrant, but no person of sound mind says that this is not milk. In short, all the answers can be correct in the event that the addition of saffron does not make it suitable for dyeing. The statement in Al-Hidayah also points to this, which is as follows: our argument is that it is still called absolute water. Do you not know that it has not been given a new name? Thus, water that becomes suitable for dyeing is given a completely separate name, such that it is called 'dye' and not 'water.' So how would its drinker break an oath (if they swore not to drink water), and how would its buyer or agent be guilty of disobeying an order? Therefore, it has become clear that the path chosen by Bahr al-Ra'iq is extremely clear and correct. This is also the context of this statement by Allama Sayyid al-Azhari where he said: Know that considering the permanence of thinness and fluidity of water after mixing with a

solid substance like saffron, and not considering the change in qualities, demands the permissibility of use, even if saffron changes the color of the water, because the term 'water' is still applied to it. Upon this, Allama Azhari, after raising the objection that the use of this water is prohibited...

1. Al-Hidayah, Chapter: Water with which Wudu is Permissible, Al-Maktabah al-Arabiyyah Karachi, 1/17.
2. Fath al-Mu'in, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi, 1/62. Page 186 of 756

फ़तावा रज़विय्या जिल्द सोम (भाग 3)

(अरबी पाठ स्तंभ): वास्तव में, साधारण शब्द (पानी) का अनुप्रयोग समाप्त नहीं होता है। क्या आप नहीं देखते कि गुलाब जल की कुछ बूंदें कई रतल पानी को सुगंधित कर देती हैं, और किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए यह कहना सही नहीं है कि यह पानी नहीं रहा। यह दूध में मिलाए गए थोड़े से अंबर या कस्तूरी के समान है; किसी के लिए यह कहना जायज़ नहीं है कि वह दूध नहीं रहा। संक्षेप में, उत्तर केवल उसी स्थिति में सही हैं जहाँ यह रंगने के योग्य न हो। यह 'अल-हिदाया' के इस कथन से सूचित होता है: हमारा प्रमाण यह है कि 'पानी' नाम अभी भी पूर्ण रूप से लागू है। क्या आप नहीं देखते कि इसके लिए कोई नया, अलग नाम नहीं रखा गया है? यदि यह रंगने के योग्य होता, तो इसके लिए एक विशिष्ट नाम निर्धारित किया जाता, और इसे 'रंग' कहा जाता न कि 'पानी'। तो फिर इसका पीने वाला शपथ कैसे तोड़ेगा, और इसका खरीदार उल्लंघन में क्यों नहीं होगा? इस प्रकार, 'अल-बहर' द्वारा अपनाया गया मार्ग स्पष्ट और विस्तृत है। अल्लामा सैयद अल-अज़हरी के शब्दों की व्याख्या यही है जब उन्होंने कहा: जान लें कि केसर जैसे ठोस पदार्थ के मिश्रित होने पर गुणों में परिवर्तन की परवाह किए बिना पानी के पतलेपन और प्रवाह के बने रहने पर विचार करना, इसके उपयोग की अनुमति को आवश्यक बनाता है, भले ही केसर पानी का रंग बदल दे, क्योंकि 'पानी' शब्द अभी भी उस पर लागू होता है। इसे इस आधार पर मना किया गया था कि यदि कोई मुहरिम (तीर्थयात्री) इसका उपयोग करता है, तो उसे फ़िदया (प्रायश्चित) देना होगा। उन्होंने तीन प्रश्नों और 'अल-हिंदिया' तथा 'अल-बहर' के उत्तरों का उल्लेख किया। उनका अर्थ केवल छोटे, क्षम्य परिवर्तन से था, और उस स्थिति में, उपयोग की अनुमति स्थापित और सही है, और उन्होंने इसे एक निश्चित रिपोर्ट के रूप में नहीं लिया...

(उर्दू पाठ स्तंभ): ...विरोधाभासी नहीं है। क्या यह बात अनुभव में नहीं है कि गुलाब जल की एक-दो बूंदें कई रतल पानी को सुगंधित कर देती हैं, लेकिन कोई भी बुद्धिमान यह नहीं कहता कि यह अब पानी नहीं रहा? जैसे कि दूध में अंबर या कस्तूरी की मामूली मात्रा मिलाने से वह सुगंधित हो जाता है, लेकिन कोई होशमंद व्यक्ति यह नहीं कहता कि यह अब दूध नहीं है। निष्कर्ष यह है कि केसर मिलाने से रंगने के योग्य न होने की स्थिति में सभी उत्तर सही हो सकते हैं। 'हिदाया' का कथन भी इसी बात का प्रमाण है, जो इस प्रकार है: हमारा तर्क यह है कि इसे अभी भी साधारण पानी ही कहा जाता है। क्या आपको नहीं पता कि इसे कोई नया नाम नहीं दिया गया है? अतः, जो पानी रंगने के योग्य हो जाए, उसे एक बिल्कुल अलग नाम दिया जाता है, उसे 'रंग' कहा जाता है न कि 'पानी'। तो

फिर इसे पीने वाला अपनी शपथ कैसे तोड़ेगा (यदि उसने पानी न पीने की शपथ ली हो), और इसका खरीदार या प्रतिनिधि आदेश की अवज्ञा का दोषी कैसे होगा? इस प्रकार, यह स्पष्ट हो गया है कि 'बहर अर-राइक' द्वारा अपनाया गया मार्ग अत्यंत स्पष्ट और सही है। अल्लामा सैयद अल-अज़हरी के इस कथन का संदर्भ भी यही है जहाँ उन्होंने कहा: जान लें कि केसर जैसी ठोस वस्तु के पानी में मिलने के बाद पानी के पतलापन और प्रवाह के बने रहने को महत्व देना और गुणों में परिवर्तन को महत्व न देना, इसके उपयोग की अनुमति चाहता है। भले ही केसर पानी का रंग बदल दे, क्योंकि इस पर अभी भी 'पानी' शब्द का प्रयोग होता है। इस पर अल्लामा अज़हरी ने यह आपत्ति करने के बाद कि इस पानी का उपयोग वर्जित है...

1. अल-हिदाया, अध्याय: वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, अल-मकतबा अल-अरबिय्या कराची, 1/17।
2. फ़तह अल-मुईन, शुद्धि की पुस्तक, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/62। पृष्ठ 186/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

(عربی متن کا کالم): ان الاطلاق به مسلوب الا تری ان قطرات من ماء الورد تطیب ارطالا من الماء ولا یصح لعاقل ان یقول انه خرج من کونه ماء کلبن خلط بنزر من عنبر او مسك لا یسوغ لاحد ان یقول لم یبق لبنا، وبالجملة فالاجوبة انما تستقیم فیما لم یصلح للصبغ وعلیه یدل قول الهدایة لنا ان اسم الماء باق علی الاطلاق الاتری انه لم یتجدد له اسم علیحدة اهـ فان ماصلح للصبغ قد تجدد له اسم بحیاله فیقال له صبغ لاماء فکیف یحنث شاربه ولم لایخالف شاریه فقد بان الذی سلکه البحر مهیع واضح وهو محمل کلام العلامة السید الازهری اذقال اعلم ان اعتبار بقاء الرقة والسیلان دون تغیر الاوصاف فیما اذکان المخالط جامدا کزعفران یقتضی جواز الاستعمال و ان غیر الزعفران لون الماء لاطلاق اسم الماء علیه، ومنع بان المحرم لو استعمله لزمته الفدیة فذکر الاسئلة الثلاثة واجوبة الهندی والبحر فانما اراد التغیر القلیل المغتفر وحینئذ جواز الاستعمال صحیح مقرر ولم یرد به تقریرا یراد

(اردو متن کا کالم): منافی نہیں ہے۔ کیا یہ بات مشاہدہ میں نہیں کہ ایک دو قطرے عرق گلاب کے کئی رطل پانی کو خوشبودار بنا دیتے ہیں مگر کوئی بھی عقلمند یہ نہیں کہتا کہ یہ پانی نہیں رہا، جیسے کہ دودھ کو عنبر یا کستوری کی معمولی سی مقدار خوشبودار بنا دیتی ہے، مگر کوئی ذی ہوش نہیں کہتا کہ یہ دودھ نہیں ہے۔ حاصل کلام یہ کہ جملہ جوابات زعفران کے ملنے سے رنگنے کے قابل نہ ہونے کی صورت میں درست ہوسکتے ہیں۔ ہدایہ کا قول بھی اسی بات پر دال ہے جو یوں ہے کہ ہماری دلیل یہ ہے کہ یہ تاحال مطلق پانی ہی کہلاتا ہے۔ کیا تمہیں یہ معلوم نہیں کہ اسے نیا نام نہیں دیا گیا اھ پس جو پانی رنگنے کے قابل ہو جائے اسے بالکل علیحدہ نام دیا جاتا ہے کہ اسے رنگ کہا جاتا ہے پانی نہیں کہا جاتا ہے، تو اسے پینے والا کیونکر حانث ہو گا اور اس کا خریدار وکیل کیونکر حکم عدولی کا مرتکب نہ ہو گا تو اس سے واضح ہو گیا کہ بحر الرائق کی

اختیار کردہ راہ نہایت واضح اور درست ہے۔ علامہ سید الازہری کے اس قول کا محمل بھی یہی ہے جہاں انہوں نے کہا جان لو کہ زعفران جیسی جامد شے کے پانی میں ملنے کے بعد رقت اور سیلان کی بقاء کا اعتبار کرنا اور اوصاف میں تبدیلی کا اعتبار نہ کرنا استعمال کے جائز ہونے کو چاہتا ہے اگرچہ زعفران پانی کے رنگ کو بدل ڈالے کیونکہ اس پر ابھی پانی کا اطلاق ہوتا ہے اس پر علامہ ازہری نے یہ اعتراض کرنے کے بعد کہ اس پانی کا استعمال منع ہے

1 الهداية، باب الماء الذى يجوز به الوضوء، المكتبة العربية كراچى، 1/17 2 فتح المعين كتاب الطهارة ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى 1/62 صفحہ 186 از 756

Volume 3 Fatawa Rizvia

[Left Column - Arabic Text] Al-Bahr regarding the principle: For if it is suitable for dyeing, then at that time, the permissibility of use is false and rejected, as indicated by his statement ‘due to the absolute application of the name of water to it,’ and he has clearly expressed the intention. He said following what preceded: ‘And this is when it is in a state that it does not dye with it; for if it is possible to dye with it, it is not permissible, like nabidh of dates (nabidh tamr), reported from Al-Bahr.’ So know and be firm.

[Right Column - Urdu Translation/Commentary] Because when a Muhrim (person in the state of Ihram) uses such water, then a ransom (fidya) will be mandatory for him. All three questions and the answers of Hindi and Al-Bahr were also mentioned, so the intention of Allama Azhari regarding saffron is the forgivable minor change in which the permissibility and correctness of use is a certain matter. By this, the purpose of the Allama is not to strengthen the objection of Al-Bahr al-Ra'iq against the principle, because this objection only arises in the case of it becoming capable of dyeing, after which declaring its use permissible is baseless. His statement ‘due to the absolute application of the name of water to it’ indicates this thought of the Allama; rather, he also clearly explained his purpose when he said shortly after the previous statement that all this discussion is for the case when the water has not become capable of giving color. If it becomes possible to give color from it, then its use will not be permissible like nabidh tamr. This discussion belongs to Al-Bahr al-Ra'iq; recognize it fully and be firm in it. (T)

Seventh: Counting milk in the second type of categories of dominance is a matter of debate; rather, it is in the first type because it undoubtedly possesses a distinct fragrance which is not in water. This is the objection of Allama Khair al-Ramli.

[Bottom Left Column - Arabic Text] And it has already preceded in [page] 134 that he followed him in it in 'Sha' [Shami] and it occurred in the marginalia (hashiya) of Maraqi al-Falah by Allama Tahtawi under the text's statement: 'A liquid that has only two qualities like milk, it has color and taste but no smell.' In it [he says] that the smell of fattiness (dusuma) is smelled from some of it. I say: (1) Rather from all of it, even if it is hidden in some until it boils, as I have stated before.

[Bottom Right Column - Urdu Translation/Commentary] And it has passed in [page] 134 that Allama Shami followed Ramli in this objection, and in the marginalia of Maraqi al-Falah, which is by Allama Tahtawi, under the text's statement that "that

liquid thing which has two qualities, like milk which has taste and color but no smell," this objection is made that since the smell of fattiness is felt from some, it is not correct to say that it has no smell and it is a liquid with two qualities. (T) I say rather every milk has a fragrance, although it remains hidden in some until boiling. (T)

Footnotes: 1. Fath al-Mu'in, Book of Purification, H.M. Saeed Company Karachi 2/1 2. Tahtawi on Maraqi al-Falah, Book of Purification, Azhariya Egyptian Press, Egypt p. 16

खंड 3 फतवा रज़विया

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] सिद्धांत के संबंध में अल-बहर: क्योंकि यदि यह रंगने के लिए उपयुक्त है, तो उस समय उपयोग की अनुमति गलत और अस्वीकार्य है, जैसा कि उनके कथन 'उस पर पानी के नाम के पूर्ण अनुप्रयोग के कारण' से संकेत मिलता है, और उन्होंने स्पष्ट रूप से इरादा व्यक्त किया है। उन्होंने जो कुछ पहले बताया था उसके बाद कहा: 'और यह तब है जब यह ऐसी स्थिति में हो कि इससे रंगा न जा सके क्योंकि यदि इससे रंगना संभव है, तो यह अनुमत नहीं है, जैसे खजूर की नबीज़ (नबीज़ तम्र), जो अल-बहर से उद्धृत है।' इसलिए इसे जानें और दृढ़ रहें।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] क्योंकि जब कोई मुहरिम (एहराम की स्थिति में व्यक्ति) ऐसे पानी का उपयोग करता है, तो उस पर फ़िदिया (दंड) अनिवार्य होगा। तीनों प्रश्न और हिंदी और बहर के उत्तर भी वर्णित किए गए, तो अल्लामा अज़हरी का केसर से अभिप्राय वह क्षम्य मामूली परिवर्तन है जिसमें उपयोग का जायज़ और सही होना एक निश्चित बात है। इससे अल्लामा का उद्देश्य सिद्धांत पर अल-बहर अल-रैक की आपत्ति को बल देना नहीं है, क्योंकि यह आपत्ति केवल रंगने में सक्षम होने की स्थिति में आती है, जिसके बाद इसके उपयोग को जायज़ करार देना निराधार है। उनका कथन 'उस पर पानी के नाम के पूर्ण अनुप्रयोग के कारण' अल्लामा के इसी विचार को दर्शाता है; बल्कि उन्होंने अपना उद्देश्य तब और भी स्पष्ट कर दिया जब उन्होंने पिछले कथन के कुछ ही समय बाद कहा कि यह सारी चर्चा उस स्थिति के लिए है जब पानी रंग देने के योग्य न हुआ हो। यदि इससे रंग देना संभव हो जाए, तो खजूर की नबीज़ की तरह इसका उपयोग जायज़ नहीं होगा। यह चर्चा अल-बहर अल-रैक की है; इसे पूरी तरह पहचानें और इसमें पक्के रहें। (त)

सातवाँ: दूध को प्रबलता की श्रेणियों के दूसरे प्रकार में गिनना बहस का विषय है; बल्कि वह पहले प्रकार में है क्योंकि निःसंदेह उसकी एक अलग खुशबू होती है जो पानी में नहीं होती। यह अल्लामा खैर अल-रम्ली की आपत्ति है।

[निचला बायां कॉलम - अरबी पाठ] और यह पृष्ठ 134 में पहले ही आ चुका है कि उन्होंने 'शा' [शमी] में उनका अनुसरण किया और अल्लामा तहतावी द्वारा मराकी अल-फलाह के हाशिये में पाठ के इस कथन के तहत आया: 'एक तरल जिसके केवल दो गुण होते हैं जैसे दूध, इसमें रंग और स्वाद है लेकिन कोई गंध नहीं।' इसमें [वह कहते हैं] कि इसके कुछ हिस्से से चिकनाई (दुसूमा) की गंध आती

है। मैं कहता हूँ: (1) बल्कि इसके पूरे हिस्से से, भले ही कुछ में यह उबलने तक छिपी रहे, जैसा कि मैंने पहले बताया है।

[निचला दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] और पृष्ठ 134 में गुज़र चुका है कि अल्लामा शामी ने इस आपत्ति में रम्ली का अनुसरण किया है, और मराकी अल-फलाह के हाशिये में, जो अल्लामा तहतावी का है, पाठ के इस कथन के तहत कि "वह तरल चीज़ जिसके दो गुण हों, जैसे दूध है जिसका स्वाद और रंग तो है मगर खुशबू नहीं है," यह आपत्ति की गई है कि चूंकि कुछ से चिकनाहट की खुशबू महसूस होती है, तो यह कहना सही नहीं कि इसकी खुशबू नहीं और यह दो गुणों वाला तरल है। (त) मैं कहता हूँ बल्कि हर दूध की खुशबू होती है हालांकि कुछ में उबलने तक छिपी रहती है। (त)

पादलेख: 1. फतह अल-मुईन, शुद्धि की पुस्तक, एच.एम. सईद कंपनी कराची 2/1 2. मराकी अल-फलाह पर तहतावी, शुद्धि की पुस्तक, अज़हरिया मिस्र प्रेस, मिस्र पृष्ठ 16 पृष्ठ 187/756

[بایاں کالم - عربی متن] البحر علی الضابطة فإنه فیما صلح للصبغ وعندئذ جواز الاستعمال باطل منکر دل علیه قوله لإطلاق اسم الماء علیه وقد أفصح بالمراد قال عقیب ما مر وهذا إذا کان بحال لا یصبغ به فإن أمکن الصبغ به لم یجز کنبیذ تمر در عن البحر اهـ فاعرف وتثبت۔

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] کیونکہ محرم جب ایسا پانی استعمال کرے تو اس پر فدیہ لازم ہوگا۔ تینوں سوال اور ہندی اور بحر کے جوابات بھی ذکر کیے تو علامہ ازہری کی مراد زعفران سے ہونے والا قابل معافی معمولی تغیر ہے جس میں استعمال کا جائز اور درست ہونا یقینی امر ہے۔ اس سے علامہ کی مراد ضابطہ پر بحر الرائق کے اعتراض کو تقویت دینا نہیں ہے کیونکہ یہ اعتراض صرف رنگنے کے قابل ہو جانے کی صورت میں وارد ہوتا ہے جس کے بعد استعمال کا جائز قرار دینا بے اصل ہے علامہ کے اس خیال پر ان کا قول لاطلاق اسم الماء علیہ دلالت کرتا ہے بلکہ انہوں نے اپنا مقصد کھل کر اس وقت بھی بیان کردیا جب انہوں نے گذشتہ قول کے کچھ ہی بعد یہ کہا کہ یہ ساری بحث اس صورت میں ہے کہ جب پانی رنگ دینے کے قابل نہ ہوا ہو۔ اگر اس سے رنگ دینا ممکن ہو جائے تو نبیذ تمر کی طرح اس کا استعمال جائز نہ ہوگا۔ یہ بحث بحر الرائق کی ہے اسے پوری طرح پہچانو اور پختہ کرو۔ (ت)

ہفتم : دودھ کو اقسام غلبہ کی قسم دوم میں شمار فرمانا محل کلام ہے بلکہ وہ قسم اول میں ہے کہ بلاشبہ ایک جدا خوشبو رکھتا ہے جو پانی میں نہیں یہ اعتراض علامہ خیر رملی کا ہے،

[نیچلا بایاں کالم - عربی متن] وقد تقدم في ١٣٤ وأنه تبعه فيه ش ووقع في حاشية مراقي الفلاح للعلامة ط تحت قول المتن مائع له وصفان فقط كاللبن له اللون والطعم ولا رائحة له فيه أنه يشم من بعضه رائحة الدسومة اهـ اقول: (١) بل من کلہ وان خفی فی بعضہ الی ان یغلی کما قدمت۔

[نیچلا دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] اور ١٣٤ میں گزر چکا ہے کہ علامہ شامی نے اس اعتراض میں رملی کی اتباع کی ہے اور حاشیہ مراقی الفلاح میں جو علامہ طحطاوی کا ہے۔ متن کے اس قول کے تحت کہ "وہ مائع چیز جس کے دو وصف ہوں، جیسے دودھ ہے جس کا ذائقہ اور رنگ تو ہے مگر خوشبو نہیں ہے" یہ اعتراض کیا ہے کہ بعض سے چونکہ چکناہٹ کی خوشبو محسوس ہوتی ہے، تو یہ کہنا درست نہیں کہ اس کی خوشبو نہیں اور یہ دو صفتوں والا مائع ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں بلکہ ہر دودھ کی خوشبو ہوتی ہے اگرچہ بعض کی ابالنے تک مخفی رہتی ہے (ت)

حواشی: 1. فتح المعین کتاب الطھارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ٢/١ 2. طحطاوی علی مراقی الفلاح کتاب الطھارۃ مطبع ازہریہ مصریہ مصر ص ١۶ صفحہ 187 از 756

Volume 3 Fatawa Razawiyya Eighthly: Including watermelon water in the third category is also questionable, as its smell is certainly different from that of water. Some also have a red or yellow color. This objection is also raised by Allama Ramli.

[Arabic Section]: It was mentioned on page 279, and we indicated there that his intention was that which has no color, even though the apparent context of his speech, where he made milk differ from water in two qualities (color and taste) and said regarding watermelon juice that it differs from it in taste, so the dominance is considered by taste. (End) He meant that which does not differ from water except in taste, as Allama Shurunbulali said in his 'Maraqi' that some watermelons have only one attribute. (End) Abu al-Sa'ud followed him, then [Tahtawi], and likewise [Shami] when he said: Watermelon juice, meaning some of its types, matches water in the absence of color and smell, but differs from it in taste. (End)

I say: That is because that which does not differ from water in smell is rare, unlike what matches it in color as indicated by the words of Allama Al-Khayr. And that which does not differ in both color and smell is even rarer. The need is met by interpreting it as the commonly available type, because if it does not differ from it...

[Urdu Explanation]: And on page 279 it has passed, and there we also indicated that Allama Ramli's intention is that melon water which has no color, even though the apparent context of Allama's discussion is that he stated milk differs from water in color and taste, and regarding watermelon juice, he said it differs from water only in taste, so the dominance will be determined by taste. (End) From this, it is known that the Allama meant that type of watermelon which differs from water only in taste (not in color and smell), as Allama Shurunbulali said in his 'Maraqi al-Falah' that for some watermelons there is only one quality. (End) Abu al-Sa'ud and Tahtawi also followed Shurunbulali, and Shami also said the same thing, where he said that watermelon juice, i.e., some of its types, are similar to water in the absence of color and smell and differ in taste. (T)

I say that watermelon juice that is similar to water in smell is rare. Unlike that watermelon whose juice is similar to water in color, as Allama Ramli's words indicate. And that watermelon which is similar to water in both color and fragrance is rarer still, and the need is fulfilled by assuming the common occurrence.

1. Tahtawi on Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, printed in Beirut 1/103.

2. Maraqi al-Falah with Al-Tahtawi, Book of Purification, printed in Bulaq, Egypt, p. 16.
3. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi, Egypt 1/134.

भाग 3 फ़तावा रज़विया आठवाँ: तरबूज के रस को तीसरी श्रेणी में शामिल करना भी विचारणीय है, क्योंकि निश्चित रूप से इसकी गंध पानी से अलग होती है। और कुछ का रंग लाल या पीला भी होता है। यह आपत्ति अल्लामा रमली ने भी उठाई है।

[अरबी खंड]: पृष्ठ २७९ पर यह उल्लेख किया गया है और हमने वहाँ संकेत दिया था कि उनका अभिप्राय उस चीज़ से है जिसका कोई रंग न हो, यद्यपि उनके भाषण का प्रत्यक्ष संदर्भ, जहाँ उन्होंने दूध को रंग और स्वाद के दो गुणों में पानी से भिन्न बताया है, और तरबूज के रस के बारे में कहा है कि यह स्वाद में भिन्न होता है, इसलिए स्वाद द्वारा प्रधानता का विचार किया जाता है। (समाप्त) उनका तात्पर्य उस चीज़ से था जो स्वाद के अलावा पानी से भिन्न नहीं होती, जैसा कि अल्लामा शरुनबुलाली ने अपने 'मराक़ी' में कहा है कि कुछ तरबूजों में केवल एक ही गुण होता है। (समाप्त) अबू अल-सऊद ने उनका अनुसरण किया, फिर [तहतावी], और इसी तरह [शामी] ने जब कहा: तरबूज का रस, यानी इसकी कुछ किस्में, रंग और गंध की अनुपस्थिति में पानी के समान होती हैं, लेकिन स्वाद में इससे भिन्न होती हैं। (समाप्त)

मैं कहता हूँ: ऐसा इसलिए है क्योंकि जो पानी से गंध में भिन्न नहीं होता वह दुर्लभ है, उसके विपरीत जो रंग में मेल खाता है जैसा कि अल्लामा अल-खैर के शब्दों से संकेत मिलता है। और जो रंग और गंध दोनों में भिन्न नहीं होता वह और भी दुर्लभ है। आवश्यकता सामान्य रूप से उपलब्ध वस्तु मानकर पूरी की जाती है, क्योंकि यदि वह इससे भिन्न नहीं होती...

[उर्दू व्याख्या]: और पृष्ठ २७९ पर यह गुज़र चुका है, और वहाँ हमने यह भी संकेत दिया था कि अल्लामा रमली का तात्पर्य खरबूजे के उस पानी से है जिसका कोई रंग न हो, यद्यपि अल्लामा की इस चर्चा का प्रत्यक्ष संदर्भ यह है कि उन्होंने दूध को पानी से रंग और स्वाद में भिन्न बताया है, और तरबूज के पानी के बारे में कहा कि यह पानी से केवल स्वाद में भिन्न होता है, तो इसमें स्वाद के माध्यम से प्रबलता का श्रेय दिया जाएगा। इससे पता चलता है कि अल्लामा का तात्पर्य तरबूज की उस किस्म से था जो पानी से केवल स्वाद में भिन्न हो (रंग और गंध में नहीं), जैसा कि अल्लामा शरुनबुलाली ने अपनी 'मराक़ी अल-फ़लाह' में कहा है कि कुछ तरबूजों के लिए केवल एक गुण होता है। शरुनबुलाली का अनुसरण अबू अल-सऊद और तहतावी ने भी किया और शामी ने भी यही बात कही, जहाँ उन्होंने कहा कि तरबूज का पानी यानी इसकी कुछ किस्में रंग और गंध न होने में पानी के समान होती हैं और स्वाद में भिन्न होती हैं। (त)

मैं कहता हूँ कि तरबूज का ऐसा रस जो गंध में पानी के समान हो, दुर्लभ है। इसके विपरीत वह तरबूज जिसका रस रंग में पानी के समान हो, जैसा कि अल्लामा रमली की बात से पता चलता है। और वह तरबूज जो रंग और खुशबू दोनों में पानी के समान हो, वह और भी दुर्लभ है, और आवश्यकता को बहुतायत में पाए जाने वाले प्रकार पर आधारित करके पूरा किया जाता है।

1. तहतावी अल-दुर अल-मुख्तार, जल अध्याय, बेरुत मुद्रण १/१०३।
2. मराक़ी अल-फ़लाह मा अल-तहतावी, शुद्धिकरण की पुस्तक, बुलाक मिस्र मुद्रण, पृष्ठ १६।
3. रद अल-मुह्तार, जल अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र १/१३४।

पृष्ठ १८८/७५६

جلد سوم فتاویٰ رضویہ ہشتم: آبِ بطیخ کو قسمِ سوم میں شمار فرمانا بھی محلِ نظر ہے کہ یقیناً اس کی بُو پانی کے خلاف ہے۔ اور بعض کا رنگ بھی سُرخ یا زرد یہ اعتراض بھی علامہ رملی کا ہے،

وقد مر فی ۲۷۹ واشرنا ثم ان مراده مالالون له وان كان ظاهر سياقه حيث جعل اللبن مخالفاً لماء في وصفين اللون والطعم وقال فی ماء البطيخ يخالفه فی الطعم فتعتبر الغلبة فيه بالطعم اهـ انه اراد مالايخالف منه الماء الا فی الطعم كما قال العلامة الشرنبلالی فی مراقيه ان بعض البطيخ ليس له الاوصف واحد اهـ وتبعه ابو السعود ثم طـ وكذلك ش اذ قال ماء البطيخ ای بعض انواعه موافق للماء فی عدم اللون والرائحة مباين له فی الطعم اهـ

اقول: وذلك لان مالايخالف منه الماء فی الرائحة نادر بخلاف مايوافقه فی اللون كمادل عليه كلام العلامة الخير و مالايخالف في لون ولارائحة اندر والحاجة مندفعة بالحمل على كثير الوجود لانه اذالم يخالفه

اور ۲۷۹ پر گزرا ہے اور وہاں ہم نے اشارۃً یہ بھی بتایا تھا کہ علامہ رملی کی مراد خربوزے کا وہ پانی ہے جس کی رنگت نہ ہو، اگرچہ علامہ کی اس گفتگو کا ظاہرِ سیاق یہ ہے کہ اس نے دودھ کو پانی سے رنگ اور ذائقہ میں مخالف بتایا ہے اور تربوز کے پانی کے متعلق کہا کہ پانی سے صرف ذائقہ میں مختلف ہوتا ہے تو اس میں غلبہ کا اعتبار بذریعہ ذائقہ ہو گا۔ ۱ھ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ علامہ نے تربوز کی وہ قسم مراد لی ہے جو پانی سے صرف ذائقہ میں مختلف ہو (رنگ اور بو میں نہیں) جیسا کہ علامہ شرنبلالی نے اپنی مراقی الفلاح میں کہا کہ بعض تربوزوں کے لئے ایک ہی وصف ہوتا ہے اھ شرنبلالی کی اتباع ابوالسعود اور طحطاوی نے بھی کی اور

شامی نے بھی یہی بات کہی ہے، جہاں اس نے کہا کہ تربوز کا پانی یعنی اس کی بعض اقسام رنگ اور بُو نہ ہونے میں پانی کے موافق اور ذائقہ میں مخالف ہوتی ہیں۔ (ت)

میں کہتا ہوں تربوز کا ایسا پانی جو بُو میں پانی کے موافق ہو نادر ہوتا ہے۔ بخلاف اس تربوز کے جس کا پانی رنگ میں پانی کے موافق ہو جیسا کہ علامہ رملی کی بات اس پر دال ہے اور وہ تربوز جو رنگ اور خوشبو دونوں میں پانی کے موافق ہو نادر تر ہوتا ہے اور ضرورت کثیر الوجود پر محمول کرنے سے پوری ہو جاتی ہے

1 طحطاوی علی الدرالمختار باب المیاہ مطبوعہ بیروت ۱/ ۱۰۳ 2 مراقی الفلاح مع الطحطاوی کتاب الطہارۃ مطبوعہ ببولاق مصر ص ۱۶ 3 ردالمحتار باب المیاہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۳۴

Fatawa Ridawiyya - Volume 3

[Box Top Left - Arabic]: Except in two descriptions, the criterion of change in one of them and its taste being stronger than its smell is sufficient. So, he took it as a basis, and through it, the answer to the mentioned opposition in ... becomes clear. Take heed.

[Box Top Right - Urdu]: Because when it is opposite in only two qualities, this criterion will be sufficient that one of the two qualities has changed, while taste is stronger than smell, so the decision will be made according to it, and from this, the answer to the opposition mentioned in 302 will be obtained. (T)

These are the objections that were encountered while reviewing the discourse of scholars on the statement of the criterion.

And I say: And with Allah is the granting of success, besides those, there are places of many objections, summarily and detailed, by way of branches and principles. For example:

Ninth: Ablution is permissible with 'nabidh' (a fermented drink) other than dates as long as it remains thin, although it is against the consensus (ijma), and we have just mentioned it. (And we have already mentioned it. T)

Tenth: It is permissible with every syrup, although it is against multiple clear texts (nusoos-e-mutawatirah); see 185 and 288.

Eleventh: It is permissible with herbal infusions, although it is against the original agreed-upon principle.

Twelfth: When vitriol, gallnut, and ink make water thick enough for writing, it is still permissible if thinness is not lost; this too is against the consensus principle.

Thirteenth to Fifteenth: A small amount of kewra, rose water, or willow water is added to a pitcher of drinking water for fragrance. It certainly remains what is understood by the term 'absolute water' (pure water), but according to the criterion, it is no longer water.

Sixteenth and Seventeenth: If water in which saffron or safflower is dissolved changes only the color when mixed with water; if it makes it capable of dyeing, then by consensus it is invalid, otherwise according to Imam Muhammad, ablution with it is impermissible, but the ruling of the criterion is for permissibility against all.

Eighteenth: Similarly, water in which a scented sachet is dissolved when the smell is not dominant, such that without it, the color would change.

Nineteenth: For white grape vinegar, when only the smell changes, by agreement of the Imams it is permissible, but the ruling of the criterion is for prohibition.

Twentieth and Twenty-first: Colored vinegars whose taste or smell is the strongest property when only taste and smell change...

फतावा रज़विया - खंड 3

[शीर्ष बॉक्स बायां - अरबी]: "सिवाय दो गुणों के, एक का बदलना और उसकी गंध की तुलना में उसका स्वाद अधिक शक्तिशाली होना पर्याप्त है। इसलिए उन्होंने इसे आधार माना, और इसके माध्यम से ... में उल्लेखित विरोध का उत्तर स्पष्ट हो जाता है। ध्यान दें।"

[शीर्ष बॉक्स दायां - उर्दू]: क्योंकि जब यह केवल दो गुणों में विपरीत होता है, तो यह नियम पर्याप्त होगा कि दो गुणों में से एक बदल गया है, जबकि स्वाद गंध से अधिक शक्तिशाली है, इसलिए निर्णय उसी के अनुसार किया जाएगा, और इससे 302 में उल्लेखित विरोध का उत्तर प्राप्त होगा। (त)

ये वे आपत्तियां हैं जो विद्वानों के विमर्श में नियम के प्रतिपादन की समीक्षा करते समय सामने आईं।

और मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से ही सफलता है, इनके अलावा भी कई आपत्तियों के स्थान हैं, संक्षेप में भी और विस्तार से भी, शाखाओं के रूप में भी और सिद्धांतों के रूप में भी। उदाहरण के लिए:

नवां: खजूर के अलावा किसी अन्य फल के'नबीज़' (एक प्रकार का पेय) से भी वज़ू करना जायज़ है जब तक कि वह पतला रहे, हालांकि यह आम सहमति (इज्मा) के विरुद्ध है और हमने अभी इसका उल्लेख किया है। (त)

दसवां: हर शरबत से जायज़ है, हालांकि यह निरंतर स्पष्ट ग्रंथों (नुसूस-ए-मुतवातिरा) के विरुद्ध है; देखिए 185 और 288।

ग्यारहवां: दवाइयों के काढ़े (infusion) से जायज़ है, हालांकि यह मूल सहमति प्राप्त सिद्धांत के विरुद्ध है।

बारहवां: जब कसीस (कशीश), माज़ू और रोशनाई मिलकर पानी को लिखने के योग्य बना दें, तब भी जायज़ है यदि पतलापन समाप्त न हो; यह भी सहमति प्राप्त मूल सिद्धांत के विरुद्ध है।

तेरहवां से पंद्रहवां: पीने के पानी को खुशबूदार बनाने के लिए मटके भर पानी में थोड़ा केवड़ा, गुलाब या बेदमुश्क डालते हैं, वह निश्चित रूप से वही रहता है जिसे 'मुतलक़ आब' (शुद्ध जल) के नाम से समझा जाता है, लेकिन नियम के अनुसार वह पानी नहीं रहा।

सोलहवां और सत्रहवां: केसर या कुसुम (शहाब) का घुला हुआ पानी यदि पानी में मिलकर केवल रंग बदले; यदि उसे रंगने के योग्य बना दे तो सर्वसम्मति से, अन्यथा इमाम मुहम्मद के अनुसार उससे वज़ू करना नाजायज़ है, और नियम का आदेश सबके विरुद्ध जायज़ होने का है।

अठारहवां: इसी तरह खुशबूदार पुड़िया का घुला हुआ पानी जबकि गंध हावी न हो, कि इसके बिना रंग बदल जाए।

उन्नीसवां: सफेद अंगूर का सिरका जब केवल गंध बदले, तो इमामों की सहमति से जायज़ है, और नियम का आदेश मनाही है।

बीसवां और इक्कीसवां: रंगीन सिरके जिनका स्वाद या गंध गुणों में सबसे प्रबल हो, जब केवल स्वाद और गंध बदल जाए...

पृष्ठ 756 का 189

فتاوی رضویہ - جلد سوم

[اوپر والا خانہ - عربی]: الا فی وصفین کفی الضابطۃ تغیر احدھما و طعمہ اقوی من ریحہ فاجتزأ بہ و بہ یخرج الجواب عن المخالفۃ المذکورۃ فی ۔ فتنبہ۔

[اوپر والا خانہ - اردو]: کیونکہ وہ جب صرف دو صفتوں میں مخالف ہے تو یہ ضابطہ کافی ہوگا کہ دو اوصاف میں سے ایک بدل گیا ہو درانحالیکہ ذائقہ بُو سے زیادہ قوی ہو تو اس کے اعتبار سے فیصلہ کیا جائے گا اور اسی سے ۳۰۲ میں مذکور مخالفت سے جواب حاصل ہو جائے گا۔ (ت)

یہ ہیں وہ ایرادات کہ کلام علماء میں تقریر ضابطہ پر نظر سے گزرے۔ وانا اقول: وباللہ التوفیق ان کے سوا وہ محل ایرادات کثیرہ ہے اجمالاً بھی اور تفصیلاً بھی، تفریعاً بھی اور تا صیلاً بھی۔ مثلاً:

نہم: غیر تمر کی نبیز سے بھی وضو جائز ہو جب تک رقیق رہے حالانکہ خلافِ اجماع ہے وقد ذکرناہ آنفاً (اور اس کو ہم ابھی ذکر کر چکے ہیں۔ ت)

دہم: ہر شربت سے جائز ہو حالانکہ خلاف نصوص متواترہ ہے دیکھو ۱۸۵ و ۲۸۸۔

یازدہم: دوا خیساندہ سے جائز ہو حالانکہ خلاف اصل مجمع علیہ ہے۔

دوازدہم: کسیس ماز و روشنائی مل کر لکھنے کے قابل کر دے جب بھی جائز ہو اگر رقت نہ جائے یہ بھی اصل اجماعی کے خلاف ہے۔

سیزدہم تا پانزدہم: پینے کا پانی خوشبو کرنے کو گھڑے بھر میں قلیل کیوڑا گلاب بید مشک ڈالتے ہیں وہ یقیناً وہی رہتا ہے جو مطلق آب کے نام سے مفہوم ہوتا ہے مگر روئے ضابطہ پانی نہ رہا۔

شانزدہم و ہفدہم: زعفران یا شہاب حل کیا ہوا پانی اگر پانی میں مل کر صرف رنگ بدلے اگر رنگنے کے قابل کر دیا تو بالاجماع ورنہ امام محمد کے نزدیک اُس سے وضو ناجائز ہے اور حکم ضابطہ سب کے خلاف جواز۔

ہیجدہم: یوں ہی بُودار پڑیا کا حل کیا ہوا پانی جبکہ بُو غالب نہ ہو کہ بے اس کے بدلے رنگ بدل جائے۔

نوزدہم: سفید انگور کا سرکہ جب صرف بُو بدلے بالاتفاق ائمہ جواز ہے اور حکم ضابطہ ممانعت۔

بستم و بست ویکم: رنگین سرکے جن کا مزہ یا بو اقوی الاوصاف ہو جب صرف مزہ و بو تبدیل

Fatawa Razawiyya Volume 3 Apply the rulings stated by the Imams as permissible. Their opposing rules were mentioned from 278 to 305, and those were abandoned which only contradicted Imam Muhammad. This was a discussion on some specific details according to Bahr-ur-Raiq; now listen to the principles.

I say: And with Allah is the guidance.

Twenty-second: Shortening the rule of liquefaction of a solid is not correct, its explanation passed in 278. Twenty-third: Shortening the rule of solidifying a liquid is not correct, its explanation passed in the treatise 'Al-Diqqat wal-Tibyan'. Twenty-fourth: It passed in the first discussion on the predominance of others that the correct and reliable position, the school's view, and the apparent narration is the saying of Imam Abu Yusuf, whereas the explicit rule is against it, as in the former, qualities are disregarded while in the latter, qualities are considered. Twenty-fifth: In the sixth rule, the research and refinement of Imam Muhammad's saying passed, that first only color is considered; if there is no disagreement in it, then only taste; if there is no disagreement in that too, then components. The phrasing of the rule is against this order, so it explicitly contradicts both Imams of the school.

(Arabic)

I say: (5) It is a wonder that Imam al-Fakhr—may Allah Almighty have mercy on him and on us through him in this world and the hereafter—tried here to reconcile between what has been narrated in this chapter from the companions, which appears contradictory. He also placed this saying, the saying of Muhammad, among them. However, when he came to reconcile, he did not touch upon its core at all, and it was not possible for it to align with its explicit opposite. This is his speech—may Allah Almighty know best: Know that the statements of our companions differ in this chapter despite their agreement that absolute

(Urdu)

I say: It is a surprising matter that from here, Imam al-Fakhr—may Allah Almighty have mercy on him and on us through him in the world and the hereafter—wishes to reconcile the seemingly contradictory statements of the Hanafi companions in this chapter, and he has also counted this saying of Imam Muhammad among these contradictory statements. However, he did not go into the full depth of reconciliation, and reaching depth was not even possible in the presence of an explicit contradiction. His speech is this: Know that despite the agreement of the Hanafi companions on the permissibility of ablution with absolute water and its impermissibility with restricted water, there is a difference in the

(Arabic)

water is permissible for ablution, and that which is not absolute is not permissible. From Abu Yusuf, soap water: if it is thick such that it has overcome the water, ablution is not performed with it, and if it is thin...

Page 190 of 756

(Urdu)

phrasing in this chapter. Thus, according to Imam Abu Yusuf, when soap water becomes thick such that the soap predominates over the water, ablution will not be permissible, if it being thin...

फ़तावा रज़विया जिल्द 3 इमामों द्वारा स्पष्ट किए गए आदेशों को लागू करें क्योंकि वे जायज़ हैं। उनके विपरीत नियमों का उल्लेख 278 से 305 तक गुज़रा है, और उन्हें छोड़ दिया गया जिनमें केवल इमाम मुहम्मद से विरोध था। यह 'बहर-उर-राइक़' के अनुसार कुछ विवरणों पर चर्चा थी; अब सिद्धांतों को सुनें।

मैं कहता हूँ: और अल्लाह ही सफलता देने वाला है।

बाइसवाँ: ठोस के तरल होने पर रियायत देना सही नहीं है, इसका वर्णन 278 में गुज़रा। तेईसवाँ: तरल के ठोस होने पर रियायत देना सही नहीं है, इसका वर्णन 'अल-दिक्क़त वल-तिब्यान' शोधपत्र में गुज़रा। चौबीसवाँ: अन्य चीज़ों के प्रभुत्व पर पहली चर्चा में गुज़रा कि सही और विश्वसनीय मत, मज़हब और ज़ाहिर-उर-रिवायत इमाम अबू यूसुफ का कथन है, जबकि स्पष्ट नियम इसके विरुद्ध है क्योंकि उसमें गुणों की उपेक्षा है और इसमें गुणों का विचार है। पच्चीसवाँ: छठे नियम में इमाम मुहम्मद के कथन का शोध और स्पष्टीकरण गुज़रा कि पहले केवल रंग मान्य है; यदि उसमें विरोध न हो तो केवल स्वाद; यदि उसमें भी विरोध न हो तो अवयव। नियम के शब्द इस क्रम के विरुद्ध हैं, इसलिए यह मज़हब के दोनों इमामों से स्पष्ट विरोध है।

(अरबी)

मैं कहता हूँ: (5) आश्चर्य की बात है कि इमाम अल-फ़ख़्र—अल्लाह तआला उन पर रहम करे और उनके ज़रिये हम पर दुनिया और आख़िरत में—यहाँ इस अध्याय में साथियों से जो कुछ आया है, जिसके शब्द परेशान करने वाले हैं, उनके बीच तालमेल बिठाने की कोशिश की। उन्होंने इस कथन को, मुहम्मद के कथन को भी उनमें शामिल किया। लेकिन जब वे तालमेल बिठाने पर आए, तो उन्होंने इसके मूल को बिल्कुल नहीं छुआ, और इसके लिए अपने स्पष्ट विपरीत के साथ जुड़ना संभव नहीं था। यह उनका कलाम है—अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है: जान लो कि हमारे

(उर्दू)

मैं कहता हूँ: यह आश्चर्यजनक बात है कि यहाँ से इमाम अल-फ़ख़्र—अल्लाह तआला उन पर और उनके माध्यम से हम पर दुनिया और आख़िरत में रहम फ़रमाए—इस अध्याय में अहनाफ़ साथियों के ज़ाहिरी तौर पर परेशान करने वाले बयानों में तालमेल बिठाना चाहते हैं और इमाम मुहम्मद के इस कथन को भी इन बयानों में गिना है। हालाँकि वे तालमेल की पूरी गहराई तक नहीं गए और स्पष्ट विरोध की मौजूदगी में गहराई तक जाना संभव भी नहीं था। उनका कथन यह है: जान लो कि अहनाफ़ साथियों के मुतलक़ पानी से वज़ू के जायज़ होने और

(अरबी)

साथियों के बयान इस अध्याय में अलग-अलग हैं, इसके बावजूद कि उनका इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि मुतलक़ पानी से वज़ू करना जायज़ है और जो मुतलक़ नहीं है उससे जायज़ नहीं है। अबू यूसुफ से साबुन के पानी के बारे में: जब वह गाढ़ा हो जाए कि वह पानी पर हावी हो जाए, तो उससे वज़ू नहीं किया जाएगा, और अगर वह पतला हो...

(उर्दू)

मुक़य्यद के साथ न होने पर इत्तेफ़ाक़ के बावजूद इस अध्याय में इबारतों का अंतर है। तो इमाम अबू यूसुफ के अनुसार जब साबुन का पानी गाढ़ा हो जाए कि साबुन पानी पर हावी हो जाए, तो वज़ू जायज़ नहीं होगा, यदि पतला होने की...

فتاوی رضویہ جلد سوم کریں حکم منصوص ائمہ جواز ہے اور ضابطہ مخالف ان کا ذکر ۲۷۸ سے ۳۰۵ تک گزرا اور وہ ترک کردئے جن میں صرف امام محمد سے خلاف ہے۔ یہ بر طبق بحر الرائق بعض جزئیات سے کلام تھا اب اصول پر سنیے۔

فاقول: وباللہ التوفیق،

بست و دوم: جامد زوال رقت پر قصر صحیح نہیں اس کا بیان ۲۷۸ میں گزرا۔ بست وسوم: زوال رقت کا جامد پر قصر صحیح نہیں اس کا بیان رسالہ الدقۃ والتبیان میں گزرا بست و چھارم: اول ابحاث غلبہ غیر میں گزرا کہ قول صحیح و معتمد و مذہب و ظاہر الروایۃ قول امام ابویوسف ہے اور ضابطہ صراحۃً اس کے خلاف کہ اس میں اوصاف ساقط النظر اور اس میں اعتبار اوصاف۔ بست و پنجم: ضابطہ ششم میں تحقیق و تنقیح قول امام محمد گزری کہ اولا صرف رنگ معتبر ہے اس میں خلاف نہ ہو تو صرف مزہ، اس میں بھی خلاف نہ ہو تو اجزاء۔ ضابطہ کا حرف اس ترتیب کے خلاف ہے تو اسے دونوں امام مذہب سے صریح اختلاف ہے۔

| اقول: (۵) والعجب ان الامام الفخر رحمه الله تعالی ورحمنا به فی الدنیا والأخرة حاول ههنا التوفیق بین ماجاء فی الباب عن الاصحاب مماظاهره الاضطراب وقعد فیها هذا القول قول محمد ایضا لکن حیث اتی علی التوفیق لم یلم به اصلا وماکان له ان یلتئم مع صریح نقیضه وهذا کلامه رحمه الله تعالی اعلم ان عبارات اصحابنا مختلفة فی هذا الباب مع اتفاقهم ان الماء المطلق یجوز الوضوء به ومالیس بمطلق لایجوز، فعن ابي یوسف ماء الصابون اذا کان ثخینا قد غلب علی الماء لایتوضأبه وانکان رقیقا

| میں کہتا ہوں تعجب خیز امر یہ ہے کہ یہاں سے امام الفخر رحمہ اللہ تعالیٰ پر اور ان کے ذریعہ ہم پر دنیا و عقبیٰ میں رحم فرمائے اس باب میں اصحاب احناف کے بظاہر مضطرب اقوال میں تطبیق دینا چاہتے ہیں اور امام محمد کے اس قول کو بھی ان مضطرب اقوال میں شمار کیا ہے

حالانکہ وہ تطبیق کی پوری گہرائی تک نہیں گئے اور صراحۃً ضد کی موجودگی میں گہرائی تک جانا ممکن بھی نہیں تھا ان کا کلام یہ ہے جان لو کہ اصحاب احناف کے مطلق پانی سے وضو کے جواز اور مقید کے ساتھ عدم جواز پر اتفاق کے باوجود اس باب میں عبارات کا اختلاف ہے۔ پس امام ابویوسف کے مطابق جب صابن کا پانی سخت ہو جائے کہ صابن پانی پر غالب ہو جائے تو وضو جائز نہ ہوگا اگر پتلا ہونے کی |

Fatawa Razawiyya, Volume 3

[Arabic Section]: It is permissible, and likewise water with ushnan (soda ash), as mentioned in Al-Ghaya. It is stated therein: (2) If the mud is predominant in it, wudu (ablution) with it is not permissible. In Al-Fatawa al-Zahiriyya, it is stated: If vitriol is added to the water until it turns black, wudu with it is permissible. Likewise for oak gall (afs), as long as the water is predominant. In it [it is mentioned]: (4) That [Imam] Muhammad considered the color of the water, and [Imam] Abu Yusuf considered the parts (constituents). In Al-Muhit, it is stated conversely. In Al-Hidayah, predominance is based on the parts, not on the change of color. Al-Asbijabi mentioned that predominance is considered first by color, then by taste, then by parts. In Al-Yanabi, it is stated: If chickpeas and broad beans are soaked and the color, taste, and smell change, wudu with it is permissible. Al-Quduri indicated that if two qualities change, wudu is not permissible. Thus, the disagreement in this chapter is as you see. Therefore, there must be a rule and reconciliation between the reports (1), as you can see. Then he mentioned the rule and returned the statements to their interpretations, as we have quoted. These are eight texts and four interpretations: (First) The mixed solid, and upon it are the first three and the seventh; (Second) A liquid that differs in three [qualities], and upon it is the eighth; (Third) It differs in some, and upon it is the fourth according to what is narrated from [Imam] Muhammad; (Fourth) The corresponding [liquid], and upon it is the fifth.

[Urdu Section]: ...in this case, wudu will remain valid. The ruling for water with ushnan is the same, as mentioned in Al-Ghaya. It is also in Al-Ghaya that when mud becomes predominant over the water, wudu will not be valid. In Fatawa al-Zahiriyya, it is stated that as long as water remains predominant, even if it turns black due to adding alum, wudu will remain valid, and the same applies to oak gall (mazu). In the same book, it is mentioned that Imam Muhammad considers the color of water, while Imam Abu Yusuf considers the constituents, whereas in Al-Muhit, their views are stated conversely. In Al-Hidayah, it is stated that predominance will be based on constituents, not on the change of color. Al-Asbijabi said that for predominance, color will be considered first, then taste, and then constituents. In Al-Yanabi, it is stated that if chickpeas and beans are soaked in water and the taste, color, and smell also change, even then wudu will be valid. Al-Quduri has indicated that after two qualities have changed, wudu does not remain valid. In this chapter, as you are seeing, there is this kind of disagreement, so the need for a single reconciliation and rule cannot be denied so that a reconciliation can be reached between the reports. Then they

mentioned the rule and stated the appropriate time and place for all statements, as we have already quoted on page 278, which are eight texts and four interpretations: (1) The mixing substance is a solid, and on this interpretation, the first three and...

[Footnote]: 1 Tabyin al-Haqa'iq, discussion on water, Al-Amiriyya Printing Press, Bulaq, Egypt, 1/20. Page 191 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[अरबी अनुभाग]: यह जायज़ है, और इसी तरह उश्नान (एक प्रकार की क्षार) वाला पानी, जैसा कि 'अल-ग़ाया' में उल्लेख किया गया है। उसमें कहा गया है: (2) यदि मिट्टी उस पर हावी हो जाए, तो उससे वज़ू (शुद्धि) जायज़ नहीं है। 'अल-फ़तावा अल-ज़हीरिया' में है: यदि पानी में तूतिया (विट्रियल) डाला जाए जब तक कि वह काला न हो जाए, तो उससे वज़ू जायज़ है। इसी तरह माज़ू (बंजू फल) के लिए भी, जब तक पानी हावी रहे। उसमें [उल्लेख है]: (4) कि [इमाम] मुहम्मद ने पानी के रंग पर विचार किया, और [इमाम] अबू यूसुफ ने उसके अंशों (अवयवों) पर। 'अल-मुहीत' में इसके विपरीत कहा गया है। 'अल-हिदाया' में प्रबलता (ग़ल्बा) अंशों के आधार पर है, न कि रंग के बदलाव पर। अल-अस्बिजाबी ने उल्लेख किया कि प्रबलता पहले रंग से, फिर स्वाद से, फिर अंशों से मानी जाती है। 'अल-यनाबी' में है: यदि चने और लोबिया भिगोए जाएं और रंग, स्वाद और गंध बदल जाए, तो उससे वज़ू जायज़ है। अल-क़ुदूरी ने संकेत दिया कि यदि दो गुण बदल जाएं तो वज़ू जायज़ नहीं है। इस प्रकार, इस अध्याय में मतभेद वैसा ही है जैसा आप देखते हैं। इसलिए, रिवायतों (वर्णनों) के बीच एक नियम और सामंजस्य होना चाहिए (1), जैसा कि आप देख सकते हैं। फिर उन्होंने नियम का उल्लेख किया और कथनों को उनकी व्याख्याओं पर लौटा दिया, जैसा कि हमने उद्धृत किया है। ये आठ ग्रंथ (नस्) और चार व्याख्याएँ(महल) हैं: (पहला) मिश्रित ठोस पदार्थ, और इस पर पहले तीन और सातवें हैं; (दूसरा) एक तरल जो तीन [गुणों] में भिन्न होता है, और इस पर आठवां है; (तीसरा) यह कुछ में भिन्न होता है, और इस पर चौथा है जैसा कि [इमाम] मुहम्मद से वर्णित है; (चौथा) अनुरूप [तरल], और इस पर पांचवां है।

[उर्दू अनुभाग]: ...इस स्थिति में वज़ू जायज़ रहेगा। उश्नान के पानी का भी यही हुक्म है, इसे 'ग़ाया' में ज़िक्र किया गया है, और 'ग़ाया' में यह भी है कि जब पानी पर मिट्टी हावी (ग़ालिब) आ जाए तो वज़ू जायज़ न रहेगा। और 'फ़तावा ज़हीरिया' में है कि जब तक पानी ग़ालिब रहे, फिटकरी डालने से पानी काला हो जाए तो वज़ू जायज़ रहेगा, और यही हुक्म माज़ू का है। इसी में है कि इमाम मुहम्मद तो पानी के रंग का एतबार (विचार) करते हैं, और इमाम अबू यूसुफ अंशों (अजज़ा) का, जबकि 'मुहीत' में उनका मल्क (सिद्धांत) इसके विपरीत बयान हुआ है। 'हिदाया' में है कि ग़ल्बा अंशों के एतबार से होगा न कि रंग की तब्दीली से। अस्बिजाबी ने कहा कि ग़ल्बा में पहले रंग का एतबार होगा फिर ज़ायका (स्वाद) का फिर अंशों का। 'यनाबी' में है कि अगर चने और लोबिया पानी में भिगोए जाएं और ज़ायका, रंग और खुशबू बदल भी जाए तो भी वज़ू जायज़ रहेगा। और क़ुदूरी ने इस तरफ़ इशारा

किया है कि दो सिफ़तें (गुण) बदल जाने के बाद वज़ू जायज़ नहीं रहता। इस बाब (अध्याय) में जैसा कि तुम देख रहे हो इसी नौइयत (प्रकार) का इख्तिलाफ़ (मतभेद) है, तो किसी एक तत्बीक (सामंजस्य) और ज़ाबता (नियम) की ज़रूरत से इंकार नहीं किया जा सकता ताकि रिवायतों के दरमियान तत्बीक हो जाए। फिर उन्होंने ज़ाबता ज़िक्र किया और तमाम अक़्वाल (कथनों) का मुनासिब मौक़ा और महल बयान किया जैसा कि हम 278 में नक़्ल कर आए हैं जो आठ नस्सें और चार महल हैं: (1) मिलने वाली चीज़ ठोस (जामिद) हो और इस महल पर पहली तीन और...

[पाद-टिप्पणी]: 1 तब्यीनुल हक़ाइक़, पानी के विषय में बहस, मतबा अमीरिया बुलाक़ मिस्र 1/20। पेज 191/756

فتاویٰ رضویہ، جلد سوم

[عربی عبارت]: یجوز وکذا ماء الاشنان ذکرہ في الغایة وفیہ ۲۸ اذا کان الطین غالباً علیہ لا یجوز الوضو بہ وفي ۳۸ الفتاوی الظھیریة اذا طرح الزاج في الماء حتی اسود جاز الوضو بہ وکذا العفص اذا کان الماء غالباً وفیہ ۴۸ ان محمداً اعتبر بلون الماء وابا یوسف بالاجزاء وفی المحیط عکسہ وفي ۵۸ الھدایة الغلبة بالاجزاء لا بتغیر اللون وذکر الاسبیجابي ان الغلبة تعتبر اولا من حیث اللون ثم من حیث الطعم ثم من حیث الاجزاء وفي ٦۸ الینابیع لونقع الحمص والباقلاء وتغیر لونہ وطعمہ وریحہ یجوز الوضو بہ واشار القدوری الی انہ اذا غیر وصفین لا یجوز الوضو بہ وھکذا جاء الاختلاف فی ھذا الباب کماتری فلابد من ضابط وتوفیق بین الروایات ۱۸ اھـ ثم ذکر الضابطة ورد الاقوال الی محاملھا کما نقلنا فی وتلك ثمانیة نصوص واربعة محامل الاول المخالط الجامد وعلیہ الثلثة الاول والسابع الثانی مائع یخالف فی الثلثہ وعلیہ الثامن الثالث یخالف فی البعض وعلیہ الرابع فیما حکی عن محمد الرابع الموافق وعلیہ الخامس

[اردو عبارت]: صورت میں وضو جائز رہے گا، اشنان کے پانی کا بھی یہی حکم ہے اس کو غایہ میں ذکر کیا ہے، اور غایہ میں یہ بھی ہے کہ جب پانی پر مٹی غالب آ جائے تو وضو جائز نہ رہے گا اور فتاویٰ ظہیریہ میں ہے جب تک پانی غالب رہے پھٹکڑی ڈالنے سے پانی سیاہ ہو جائے وضو جائز رہے گا، اور یہی حکم مازو کا ہے۔ اسی میں ہے کہ امام محمد تو پانی کے رنگ کا اعتبار کرتے ہیں، اور امام ابو یوسف اجزاء کا، جبکہ محیط میں ان کا مسلک برعکس بیان ہوا ہے۔ ہدایہ میں ہے کہ غلبہ اجزاء کے اعتبار سے ہو گا نہ کہ رنگ کی تبدیلی سے، اسپیجابی نے کہا کہ غلبہ میں پہلے رنگ کا اعتبار ہو گا پھر ذائقہ پھر اجزاء کا ینابیع میں ہے کہ اگر چنے اور لوبیا پانی میں بھگویا جائے اور ذائقہ، رنگ اور خوشبو بدل بھی جائے تو بھی وضو جائز رہے گا اور قدوری نے

اس جانب اشارہ کیا ہے کہ دو صفتیں بدل جانے کے بعد وضو جائز نہیں رہتا۔ اس باب میں جیسا کہ تم دیکھ رہے ہو اسی نوعیت کا اختلاف ہے، تو کسی ایک تطبیق اور ضابطہ کی ضرورت سے انکار نہیں کیا جا سکتا تاکہ روایات کے درمیان تطبیق ہو جائے، پھر انہوں نے ضابطہ ذکر کیا اور تمام اقوال کا مناسب موقع اور محل بیان کیا جیسا کہ ہم ۲۷۸ میں نقل کر آئے ہیں جو آٹھ نصیں اور چار محمل ہیں: (۱) ملنے والی جامد شے ہو اور اس محمل پر پہلی تین اور

[حاشیہ]: ۱۸ تبیین الحقائق، ابحاث الماء، مطبعہ امیریہ بولاق مصر ۱ / ۲۰ صفحہ 191 از 756

[Main Arabic Text in Left Column]: This sixth point remains, which is entirely the saying of Muhammad, and there is no basis for it. For the rule is distributed, and the text is arranged. And where is the arrangement from distribution? Except that 'Al-Bahr' in 'Al-Bahr' [al-Ra'iq] intended to bring this source, so he brought what does not achieve this for the servant when he said: "As for the saying of the one who said the consideration is for color, then taste, then parts, his intention is that the liquid mixture, if its color is different from the color of water, the predominance is considered in terms of color. If its color is the color of water, then the consideration is for taste; if its taste overcomes the water, it is not permissible. If it does not differ in color, taste, and smell, then the consideration is for the parts."[1]

I say: Firstly (1) if the consideration is for color in what differs in it alone or with another quality, not in all qualities, and similarly for taste, then the speech of Imam Al-Isbijabi is either about what does not differ except in that quality alone or in what differs in two qualities or more. There is no way to the latter two.

[Urdu Commentary in Right Column]: The seventh text applies. (2) If the mixing substance is a liquid which is different in three qualities, the eighth text applies to it. (3) If the mixing substance is a liquid which is different in some qualities, the fourth text applies to it according to the narration of Imam Muhammad. (4) For a liquid that matches water in all qualities, the fifth text applies. As for the sixth, which is entirely the saying of Imam Muhammad, there is no basis for it, because there is distribution in the rule and arrangement in the text; so what is the link between arrangement and lack of arrangement? However, Bahr al-Ra'iq tried to bring it to such a basis which this humble person [the author] does not understand at all, in such a way that he said: "The saying of the person remains who said consideration is first for color, then taste, then parts. His meaning is that when the mixing liquid's color is different from the water's color, predominance will be according to color. And if its color is matching, then consideration will be for taste; if the mixing substance's taste prevails over water, wudu will not be permissible. And if the mixing substance's color, taste, and smell are not different from water, then consideration will be for parts (the one with more parts will have predominance)." (T)

I say firstly, when in predominance the consideration is only for color in the case where the mixing substance differs from water in only one quality (color) or in both

qualities but not all qualities, similarly is the ruling for taste. So, the speech of Allama Isbijabi will be either regarding that thing which has only that one quality (color)...

1. Bahr al-Ra'iq, Researches on Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/70.

[बाएँ कॉलम में मुख्य अरबी पाठ]: यह छठा बिंदु शेष है, जो पूरी तरह से मुहम्मद का कथन है, और इसका कोई आधार नहीं है। क्योंकि नियम विभाजित है और पाठ व्यवस्थित है। और वितरण से व्यवस्था का क्या लेना-देना? सिवाय इसके कि 'अल-बहर' ने 'अल-बहर' [अल-रैक] में इस स्रोत को लाने का इरादा किया, इसलिए उन्होंने वह लाया जो सेवक के लिए इसे प्राप्त नहीं करता जब उन्होंने कहा: "जहाँ तक उस व्यक्ति के कथन का संबंध है जिसने कहा कि विचार रंग, फिर स्वाद, फिर भागों के लिए है, तो उसका इरादा यह है कि तरल मिश्रण, यदि उसका रंग पानी के रंग से अलग है, तो प्रबलता रंग के संदर्भ में मानी जाती है। यदि उसका रंग पानी के रंग जैसा है, तो विचार स्वाद के लिए है; यदि उसका स्वाद पानी पर हावी हो जाता है, तो यह अनुमत नहीं है। यदि यह रंग, स्वाद और गंध में भिन्न नहीं है, तो विचार भागों के लिए है।"[1]

मैं कहता हूँ: पहली बात (१) यदि विचार उस चीज़ में रंग के लिए है जो केवल उसी में या किसी अन्य गुण के साथ भिन्न है, न कि सभी गुणों में, और इसी तरह स्वाद के लिए भी, तो इमाम अल-इस्बीजाबी का भाषण या तो उस चीज़ के बारे में है जो केवल उस गुण में भिन्न नहीं है या जो दो गुणों या उससे अधिक में भिन्न है। बाद वाले दो के लिए कोई रास्ता नहीं है।

[दाएँ कॉलम में उर्दू भाष्य]: सातवाँ पाठ लागू होता है। (२) यदि मिलने वाली वस्तु तरल है जो तीन गुणों में भिन्न है, तो उस पर आठवाँ पाठ लागू होता है। (३) यदि मिलने वाली वस्तु तरल है जो कुछ गुणों में भिन्न है, तो उस पर इमाम मुहम्मद के वर्णन के अनुसार चौथा पाठ लागू होता है। (४) जो तरल पानी के सभी गुणों के समान हो, उस पर पाँचवाँ पाठ लागू होता है। रही बात छठे की, जो पूरी तरह इमाम मुहम्मद का कथन है, तो उसका कोई आधार नहीं है, क्योंकि नियम में विभाजन है और पाठ में क्रम है, तो क्रम और क्रम के अभाव का क्या मेल? हालाँकि, बहर-उल-रैक ने इसे ऐसे आधार पर लाने का प्रयास किया है जिसे यह फकीर (लेखक) बिल्कुल नहीं समझ पाता, इस तरह कि उन्होंने कहा: "उस व्यक्ति का कथन शेष है जिसने कहा कि विचार पहले रंग, फिर स्वाद, फिर भागों का है। उनका तात्पर्य यह है कि जब मिलने वाली तरल वस्तु का रंग पानी के रंग से अलग हो, तो प्रबलता रंग के आधार पर होगी। और यदि उसका रंग समान हो, तो विचार स्वाद का होगा; यदि मिलने वाली वस्तु का स्वाद पानी पर हावी हो जाए, तो वज़ू जायज़ नहीं होगा। और यदि मिलने वाली वस्तु का रंग, स्वाद और गंध किसी में भी पानी से भिन्न न हो, तो विचार भागों का होगा (जिसके भाग अधिक होंगे, प्रबलता भी उसी की होगी)।" (त)

मैं कहता हूँ कि पहले, जब प्रबलता में विचार केवल रंग का है उस स्थिति में जब मिलने वाली चीज़ केवल एक गुण (रंग) के आधार पर पानी के विपरीत हो या दोनों गुणों में, न कि सभी गुणों में, वैसे ही स्वाद का नियम है। तो अल्लामा इस्बीजाबी का भाषण या तो उस चीज़ में होगा जो उसी एक गुण (रंग)...

1. बहर अल-रैक, पानी पर शोध, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/70.

पृष्ठ 192/756

[بائیں کالم میں اصل عربی متن]: بقی هذا السادس الذی هو قول محمد تماماً ولا محمل له فان الضابطة وزعت والنص رتب واین الترتیب من التوزیع غیر ان البحر فی البحر اراد ایرادهذا المورد فأورد مالایحصله هذا للعبد حیث قال واما قول من قال العبرة للون ثم الطعم ثم الاجزاء فمراده ان المخالط المائع ان کان لونه مخالفاً للون الماء فالغلبة تعتبر من حیث اللون وان کان لونه لون الماء فالعبرة للطعم ان غلب طعمه علی الماء لا یجوز وان کان لا یخالف فی اللون والطعم والریح فالعبرة للاجزاء 1 اھ

اقول: اولا (۱) اذا کان العبرة باللون فیما یخالفه فیه وحده اومع وصف اخر لافی الاوصاف جمیعا و کذا الطعم فکلام الامام الاسبیجابی اما فیما لا یخالف الا فی ذلک الوصف وحده او فیما یخالف فی وصفین اواعم لاسبیل الی الاخیرین

[دائیں کالم میں اردو شرح]: ساتویں نص منطبق ہوتی ہے۔ (۲) ملنے والی شئی مائع (سیال) ہو جو تین اوصاف میں مخالف ہو اس پر آٹھویں نص منطبق ہوتی ہے۔ (۳) ملنے والی شئی مائع (سیال) ہو جو بعض اوصاف میں مخالف ہو اس پر امام محمد کی روایت کے مطابق چوتھی نص منطبق ہوتی ہے۔ (۴) جو مائع (سیال) جملہ اوصاف میں پانی کے موافق ہو اس پر پانچویں نص کا انطباق ہوتا ہے۔ باقی رہ گئی چھٹی جو مکمل طور پر امام محمد کا قول ہے تو اس کا محمل کوئی نہیں، کیونکہ ضابطہ میں تفریق ہے اور نص میں ترتیب میں تو ترتیب اور عدم ترتیب کا کیا جوڑ؟ البتہ بحر الرائق نے اس کو ایسے محمل پر لانے کی کوشش کی ہے جس کی اس فقیر کو کچھ سمجھ نہیں آتی بایں طور کہ اس نے کہا باقی رہا قول اس آدمی کا جس نے یہ کہا کہ اعتبار پہلے رنگ پھر ذائقہ پھر اجزاء کا ہے، تو اس کی مراد یہ ہے کہ جب ملنے والی مائع چیز کا رنگ پانی کے رنگ کے مخالف ہو تو غلبہ رنگ کے اعتبار سے ہوگا، اور اگر اس کا رنگ موافق ہو تو اعتبار ذائقہ کا ہوگا،

اگر ملنے والی شئی کا ذائقہ پانی پر غالب آگیا تو وضو جائز نہ ہوگا، اور اگر ملنے والی شئی کا رنگ ذائقہ اور بو کسی میں پانی سے مختلف نہ ہو تو اعتبار اجزاء کا ہوگا (جس کے اجزاء زائد ہوں گے غلبہ بھی اسی کا ہوگا) (ت)

میں کہتا ہوں اولاً جب غلبہ میں اعتبار صرف رنگ کا ہے اس صورت میں کہ ملنے والی شے صرف ایک وصف (رنگ) کے اعتبار سے پانی کے مخالف ہو یا دونوں وصفوں میں نہ کہ جملہ اوصاف میں یونہی ذائقہ کا حکم ہے۔ تو علامہ اسبیجابی کا کلام یا تو اس شے میں ہوگا جو اسی ایک وصف (رنگ)

1. بحر الرائق ابحاث الماء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۰

Fatawa Razawiyya - Volume 3

[Arabic Column] Because if it (the substance) differs in two attributes, then whichever of them changes, it changes [the water]. So why limit it to one of them? Also, let the two attributes be color and taste. Who is it that prioritized color and deferred taste? Based on the first premise, the meaning would be: what does not differ except in color, the consideration in it is color; what does not differ except in taste, the consideration in it is taste; and what does not differ in anything, the consideration is by parts. So where did this order come from? And why was it not said: first consideration is taste, then color, then parts; or parts, then taste, then color, and so on through the permutations, as all of them are equal in being invalid and neglected? Furthermore, five out of seven cases would remain unaccounted for him, as the difference could be in color, or taste, or smell, or color and taste, or color and smell, or taste and smell, or in all of them. So how was the ruling restricted to only two? Secondly: Does he consider the smell or not? The second [denial] rejects the rule, and according to the first...

[Urdu Column] ...whether it is contrary to water in two attributes or in all attributes. In the last two cases, there can be no discussion at all because when that thing is contrary to water in two attributes, then whichever attribute causes the change, the water will be changed (and it will be considered). So how can the change be restricted to just one attribute? (T) Also, when a thing has two attributes, color and taste, on what basis will color be prioritized and taste be deferred? In the first case (when there aren't two attributes), the meaning would be that when the mixing substance's contradiction is only in color, then the consideration will also be of color. When it is contrary only in taste, then of taste; and in the case of not being contrary in any attribute, parts will be considered. So the question is, where did this order come from and why was it not arranged such that first consideration is of taste, then color, and then parts? Or like this, that parts are considered first, then taste, then color, or some other way of shuffling, while all these scenarios were equal in being void and meaningless. (T) Also, according to this rule, out of the seven possible scenarios of a substance mixing in water, the ruling for only two would be known, while the ruling for five would remain unknown. The reason for this restriction is that the contradiction can be in color alone, or taste alone, or smell alone, or color and smell, or color and taste, or taste and smell, or all three. So why, in the explanation of the ruling, was it sufficient to mention only two? (T) Secondly, is smell considered by him or not? The case of non-consideration rejects the rule...

[अरबी कॉलम] क्योंकि यदि वह (पदार्थ) दो गुणों में भिन्न है, तो उनमें से जो भी बदलता है, वह (पानी को) बदल देता है। तो फिर इसे केवल एक तक ही क्यों सीमित रखा जाए? साथ ही, मान लें कि वे दो गुण रंग और स्वाद हैं। वह कौन है जिसने रंग को प्राथमिकता दी और स्वाद को पीछे रखा? पहले (मत) के अनुसार, इसका अर्थ यह होगा: जो केवल रंग में भिन्न होता है, उसमें विचार रंग का होता है; जो केवल स्वाद में भिन्न होता है, उसमें विचार स्वाद का होता है; और जो किसी भी चीज़ में भिन्न नहीं होता, उसमें विचार भागों के आधार पर होता है। तो यह क्रम कहाँ से आया? और ऐसा क्यों नहीं कहा गया: पहले स्वाद का विचार, फिर रंग का, फिर भागों का; या पहले भागों का, फिर स्वाद का, फिर रंग का, और इसी तरह अन्य संयोजनों के लिए, क्योंकि ये सभी अमान्य और उपेक्षित होने में समान हैं? इसके अलावा, सात में से पांच मामले उसके लिए शेष रह जाएंगे, क्योंकि भिन्नता रंग में, या स्वाद में, या गंध में, या रंग और स्वाद में, या रंग और गंध में, या स्वाद और गंध में, या उन सभी में हो सकती है। तो नियम को केवल दो तक ही क्यों सीमित रखा गया? दूसरा: क्या वह गंध पर विचार करता है या नहीं? दूसरा (नकार) नियम को खारिज करता है, और पहले के अनुसार...

[उर्दू कॉलम] ...चाहे वह पानी के विपरीत दो गुणों में हो या सभी गुणों में। अंतिम दो स्थितियों में तो किसी भी तरह से चर्चा नहीं हो सकती क्योंकि जब वह वस्तु दो गुणों में पानी के विपरीत होती है, तो जो भी गुण परिवर्तन का कारण बनेगा, पानी में परिवर्तन हो जाएगा (और वह मान्य होगा)। तो फिर परिवर्तन को केवल एक गुण तक कैसे सीमित किया जा सकता है? (त) साथ ही, जब किसी वस्तु के रंग और स्वाद दो गुण हों, तो किस कारण से रंग को पहले रखा जाएगा और स्वाद को बाद में? पहली स्थिति में (जब दो गुण न हों) अर्थ यह होगा कि जब मिलने वाली वस्तु की भिन्नता केवल रंग में हो तो विचार भी रंग का होगा। जब केवल स्वाद में भिन्न हो तो स्वाद का, और किसी भी गुण में भिन्न न होने की स्थिति में भागों का विचार होगा। तो सवाल यह है कि यह क्रम कहाँ से आया और इस तरह क्रम क्यों नहीं रखा गया कि पहले स्वाद का विचार होगा फिर रंग का और फिर भागों का। या इस तरह कि पहले भागों का विचार हो फिर स्वाद फिर रंग का, या किसी और तरह से उलट-पलट हो जबकि ये सभी स्थितियाँ अमान्य और व्यर्थ होने में बराबर थीं। (त) साथ ही यह कि इस नियम के अनुसार पानी में मिलने वाली वस्तु की सात स्थितियों में से केवल दो का नियम ज्ञात होगा, पाँच का नियम बाकी रहेगा। सीमा का कारण यह है: भिन्नता केवल रंग में या केवल स्वाद में या केवल गंध में या रंग और गंध में या रंग और स्वाद में या स्वाद और गंध में या तीनों में होगी, तो नियम के वर्णन में केवल

दो पर ही क्यों संतोष किया गया? (त) दूसरी बात यह कि उसके यहाँ गंध का विचार है या नहीं? विचार न होने की स्थिति नियम को खारिज करती है...

पृष्ठ 756 का 193

[عربی کالم] لانه اذا خالف فی وصفین فایهما تغیر غیر ففیم القصر علی احدهما ۔ وایضا لیکن الوصفان اللون والطعم فمن ذا الذی قدم اللون واخر الطعم وعلی الاول کان المعنی مالا یخالف الا فی اللون کان المعتبر فیه اللون ومالا یخالف الا فی الطعم کان المعتبر فیه الطعم وما لا یخالف فی شیئ فالعبرة فیه بالاجزاء فمن این جاء الترتیب ولم لم یقل العبرة اولا بالطعم ثم اللون ثم الاجزاء او بالاجزاء ثم الطعم ثم اللون الی غیر ذلك من التقلیبات اذ کلها ح متساویة الاقدام فی البطلان والاهمال ۔ وایضا تبقی علیه خمسة من سبعة فان المخالفة فی لون او طعم او ریح او لون وطعم اولون وریح او طعم وریح اوفی الکل فکیف قصر الحکم علی اثنین ۔ وثانیا: هل (۱) هو یعتبر الریح ام لا الثانی یرد الضابطة وعلی الاول

[اردو کالم] میں پانی کے مخالف ہو یا دو اوصاف میں یا جملہ اوصاف میں، تو آخری دو صورتوں میں تو کسی طور گفتگو نہیں ہو سکتی کیونکہ جب وہ شے دو اوصاف میں پانی کے مخالف ہو تو جو وصف بھی تبدیلی کا باعث بنے گا پانی میں تغیر ہو جائے گا (اور معتبر ہوگا) تو پھر ایک وصف میں تغیر کو کیونکر منحصر کیا جاسکے گا؟ (ت) نیز یہ کہ جب ایک شے کے رنگ اور ذائقہ دو اوصاف ہوں تو رنگ کو کس داعیہ کی وجہ سے مقدم کیا جائے گا اور ذائقہ کو مؤخر کیا جائے گا؟ پہلی صورت میں (جب دو وصف نہ ہوں) معنی یہ ہوگا کہ جب ملنے والی شے کی مخالفت صرف رنگ میں ہو تو اعتبار بھی رنگ کا ہوگا۔ جب صرف ذائقہ میں مخالف ہو تو ذائقہ کا، اور کسی وصف میں مخالف نہ ہونے کی صورت میں اجزاء کا اعتبار ہوگا، تو سوال یہ ہے کہ یہ ترتیب کہاں سے آئی اور یوں ترتیب کیوں نہیں رکھی کہ پہلے اعتبار ذائقہ کا ہوگا پھر رنگ کا اور پھر اجزاء کا۔ یا یوں کہ پہلے اجزاء کا اعتبار ہو پھر ذائقہ پھر رنگ کا، یا کسی اور طرح سے

الٹ پلٹ ہو جبکہ یہ سب صورتیں باطل اور مہمل ہونے میں برابر تھیں۔ (ت) نیز یہ کہ اس ضابطہ کے مطابق پانی میں ملنے والی شے کی سات صورتوں میں سے صرف دو کا حکم معلوم ہوگا پانچ کا حکم باقی رہے گا وجہ حصر یہ ہے مخالفت صرف رنگ میں یا صرف ذائقہ میں یا صرف بُو میں یا رنگ وبُو میں یا رنگ و ذائقہ میں یا ذائقہ وبُو میں یا تینوں میں ہو گی تو حکم کے بیان میں صرف دو پر کیوں اکتفا کیا گیا؟ (ت) ثانیا یہ کہ اس کے ہاں بُو کا اعتبار ہے یا نہیں؟ عدم اعتبار کی صورت ضابطہ کو مسترد

Fatawa Rizvia Volume 3

...why did he omit it? And in the case of consideration, why was it deleted? And then how would it be correct to transfer the ruling from taste to parts (while smell is also valid for ruling parts)? (T)

Thirdly: (1) We have presented the statement of Imam al-Asbijabi along with many of its agreements at the beginning of the first discussion of the sixth rule, and it contradicts the rule in every sentence of it, and its new interpretation is devoid of parts of its rulings (which run on the old interpretation) in such a way that they say if the mixing liquid changes the color of the water, then the consideration will be for the color, like milk, although we have already stated a little while ago that milk contradicts water in all three qualities, so why did he consider the change of one quality sufficient for contradicting wudu? (T)

Fourthly: (2) Why did they specify color alone in milk? While your saying, like the Imam who made the rule, is that if the color or taste of milk predominates, then wudu will not be permissible. (T)

Fifthly: (3) He said 'and vinegar' (al-khall), and this, in terms of having three qualities, is clearer than milk, so it is definitely known that milk contradicts water in taste and smell, while you have already admitted the contradiction in terms of color, so it contradicts in all three qualities, and they did not consider two qualities but rather considered one. (T)

Sixthly: (4) He said 'and saffron' and this example of predominance of color...

Page 194 of 756

फ़तावा रिज़विया खंड 3

...करती है और विचार की स्थिति में इसे क्यों हटा दिया गया? और फिर स्वाद से भागों की ओर नियम को स्थानांतरित करना कैसे सही होगा (जबकि गंध भी नियम के भागों के लिए मान्य है)? (त)

तीसरा: (1) इमाम अल-अस्बिजाबी का कथन हमने छठे नियम की पहली चर्चा की शुरुआत में कई सहमतियों के साथ प्रस्तुत किया है, और यह इसके हर वाक्य में नियम के विपरीत है, और इसका नया अर्थ इसके आदेशों के भागों से रहित है (जो पुराने अर्थ पर चलते हैं) इस तरह से कि वे कहते हैं कि यदि मिलने वाला तरल पदार्थ पानी का रंग बदल देता है, तो विचार रंग का ही होगा, जैसे कि दूध है, जबकि हम अभी कुछ समय पहले ही बता चुके हैं कि दूध तो तीनों गुणों में पानी के विपरीत होता है, तो एक गुण के परिवर्तन को उसने वज़ू के विरोध के लिए पर्याप्त क्यों माना है? (त)

चौथा: (2) उन्होंने दूध में केवल रंग को ही क्यों निर्धारित किया है? जबकि तुम्हारा भी नियम बनाने वाले इमाम की तरह यह कहना है कि यदि दूध का रंग या स्वाद हावी हो जाए, तो वज़ू जायज़ नहीं होगा। (त)

पांचवां: (3) उसने कहा 'और सिरका' (अल-खल), और यह, तीन गुणों वाले होने के मामले में दूध से अधिक स्पष्ट है, इसलिए निश्चित रूप से ज्ञात हो गया कि दूध स्वाद और गंध में पानी के विपरीत होता है, जबकि रंग के आधार पर विरोध को आप पहले ही स्वीकार कर चुके हैं, तो वह तीनों गुणों में विपरीत है, और उन्होंने दो गुणों पर विचार नहीं किया बल्कि एक पर विचार किया है। (त)

छठा: (4) उसने 'केसर' कहा और यह रंग की प्रबलता का उदाहरण...

पृष्ठ 194 / 756

لم حذفها وکیف استقام له نقل الحکم بعد الطعم الی الاجزاء- کرتی ہے اور اعتبار کی صورت میں اسے حذف کیا تو کیوں؟ اور پھر حکم کو ذائقہ سے اجزاء کی طرف منتقل کرنا کیونکر درست ہوگا (جبکہ بُو بھی اجزائے حکم کیلئے معتبر ہے)۔ (ت)

وثالثا: (۱) عبارة الامام الاسبیجابی قدمناها مع کثیر من موافقتها صدر البحث الاول من الضابطة السادسة وهی بکل جملة منها تخالف الضابطة وتأبی حملها الموزع المبدد لاحکامها اذیقول ان غیر لونه فالعبرة للون مثل اللبن وقدمنا ان اللبن یخالف فی الثلث فکیف اجتزء بواحد- ثالثاً امام اسبیجابی کی عبارت بہت سے موافقات کے ساتھ ہم نے چھٹے ضابطہ کی بحث اول کے شروع میں ذکر کی ہے اور اس کے ہر جملہ میں سے کچھ ضابطہ کے خلاف ہے اور اس کا نیا محمل اس کے احکامات کے اجزاء سے عاری ہے (جو قدیم محمل پر جاری ہوتے ہیں) بایں طور کہ وہ کہتے ہیں اگر ملنے والی مائع چیز پانی کا رنگ تبدیل کردے تو اعتبار بھی رنگ کا ہوگا، جیسا کہ دودھ ہے حالانکہ ہم کچھ ہی پہلے بیان کرچکے ہیں کہ دُودھ تو تینوں اوصاف میں پانی کا مخالف ہوتا ہے تو ایک وصف کی تبدیلی کو اس نے وضو سے مخالفت کیلئے کیوں کافی قرار دیا ہے؟ (ت)

و رابعا: (۲) لم عین اللون وانتم القائلون کالامام الضابط ان کان لون اللبن اوطعمه هو الغالب لم یجز الوضوء- رابعاً انہوں نے دودھ میں صرف رنگ کو ہی کیوں متعین کیا ہے؟ حالانکہ تمہارا بھی ضابطہ بنانے والے امام کی طرح یہ کہنا ہے کہ اگر دودھ کا رنگ یا ذائقہ غالب ہو تو وضو جائز نہ ہوگا۔ (ت)

وخامسا: قال (۳) والخل وھذا فی کونہ ذا الثلاثۃ ابین من اللبن فمعلوم قطعاً انہ یخالف الماء طعماً وریحاً وقد اعتبر اللون مخالف فی الثلاث ولم یعتبر وصفین بل واحداً- خامساً اس نے والخل (اور سرکہ بھی) کہا ہے جس کا دودھ کی نسبت تین اوصاف والا ہونا زیادہ واضح ہے تو قطعی طور پر معلوم ہوگیا کہ دودھ پانی سے ذائقہ اور بُو میں مخالف ہوتا ہے جبکہ رنگ کے اعتبار سے مخالفت پہلے ہی تسلیم کر چکے ہو، پس وہ تینوں وصفوں میں مخالف ہے اور انہوں نے دو وصفوں کا اعتبار نہیں کیا بلا لکہ ایک کا اعتبار کیا ہے۔ (ت)

وسادسا: قال (۴) والزعفران وھذا... سادساً اس نے غلبہ رنگ کی مثال...

Fatawa Razawiyya Volume Three

[Arabic Column Content:] ...clearer than milk in gathering the three [attributes], and more manifest than vinegar in sufficing with one because its color is quicker in action. And whatever vinegar is like that, then it is so; otherwise, the focus of his consideration is the color itself because it is an indicator of the change of others before it, as it is weaker than them.

Seventhly: He said, 'And if it does not change its color but its taste [does], then the consideration is for the taste.' (1) He refuted your categorization, maintained his order, and guided that if its color differs, there is no consideration for the taste.

Eighthly: He said, similar to melon water, [water of] trees, fruits, and nabidh (date-water), this is for what is not colored (2). Doubtlessly, among them are those with scent, and perhaps their scent is dominant, yet he did not consider it and restricted the ruling to the taste.

Ninthly: He said, 'And if it does not change its color and taste, then the consideration is for the parts (volume).' (3) He discarded the scent entirely, and this is the manifest truth as we have previously stated in...

Tenthly: He said, 'So if its parts (of the substance) overpower the parts of the water, wudu (ablution) is not permissible.'

[Urdu Column Content:] ...while giving [examples] and said 'and saffron'. These three attributes gathering together is clearer than milk, and in terms of sufficing with one attribute, it is more solid than vinegar because its color performs the process of change rapidly. And whatever vinegar is like that will also fall under its ruling; otherwise, his purpose is only the consideration of color, not color in the sense that it changes another thing before [other attributes] relative to others, because it is weak anyway. (T)

Seventhly: He said that if instead of changing the color of water, the taste changes, then the consideration will be of the taste. So he both refuted your division and kept his order in mind, and also informed that if the color of the mixing substance is different from water, the taste will not be considered. (T)

Eighthly: He said that like watermelon, trees, fruit juices, and nabidh, all these are colorless things, but some of them have a scent and sometimes their scent is dominant, but he did not consider it and confined the ruling to the taste only. (T)

Ninthly: He said that if color and taste do not change, then parts (volume) will be considered; he completely ignored the scent, although this was apparently the right thing as we have already stated in [page] 298. (T)

Tenthly: He said that if its parts overpower the parts of the water, then from fruit...

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

[अरबी कॉलम की सामग्री:] ...तीनों [गुणों] को इकट्ठा करने में दूध से अधिक स्पष्ट, और एक के पर्याप्त होने में सिरके से अधिक प्रकट है क्योंकि इसका रंग क्रिया में अधिक तीव्र है। और जो सिरका वैसा हो, तो वह भी वैसा ही है; अन्यथा, उसके विचार का केंद्र स्वयं रंग ही है क्योंकि वह अपने से पहले दूसरों के परिवर्तन का संकेतक है, क्योंकि वह उनसे कमजोर है।

सातवाँ: उसने कहा, 'और यदि उसका रंग नहीं बदलता बल्कि स्वाद [बदलता है], तो विचार स्वाद का होगा।' (१) उसने आपके विभाजन का खंडन किया, अपने क्रम को बनाए रखा, और निर्देशित किया कि यदि उसका रंग भिन्न हो, तो स्वाद का कोई विचार नहीं होगा।

आठवाँ: उसने कहा, खरबूजे के पानी, पेड़ों, फलों और नबीज़ (खजूर के पानी) की तरह, यह उन चीजों के लिए है जो रंगीन नहीं हैं (२)। निस्संदेह, उनमें वे भी हैं जिनमें गंध होती है, और शायद उनकी गंध प्रबल हो, फिर भी उसने उस पर विचार नहीं किया और निर्णय को केवल स्वाद तक सीमित कर दिया।

नौवाँ: उसने कहा, 'और यदि उसका रंग और स्वाद नहीं बदलता, तो विचार भागों (मात्रा) का होगा।' (३) उसने गंध को पूरी तरह से त्याग दिया, और यही स्पष्ट सत्य है जैसा कि हमने पहले... में बताया है।

दसवाँ: उसने कहा, 'अतः यदि इसके भाग (पदार्थ के भाग) पानी के भागों पर हावी हो जाएं तो वज़ू (शुद्धि) की अनुमति नहीं है।'

[उर्दू कॉलम की सामग्री:] ...देते हुए 'व-अज़्ज़फ़रान (और केसर)' कहा है। इन तीनों गुणों का इकट्ठा होना दूध से अधिक स्पष्ट है, और एक गुण पर पर्याप्त होने के मामले में सिरके की तुलना में अधिक पुख्ता है क्योंकि इसका रंग परिवर्तन की प्रक्रिया तेजी से करता है। और जो सिरका ऐसा हो, वह भी इसी के नियम में होगा; अन्यथा, उसका उद्देश्य केवल रंग का विचार है, न कि इस विचार से रंग कि वह दूसरों की तुलना में दूसरी चीज़ को पहले बदल देता है, क्योंकि वह वैसे भी कमजोर होता है। (त)

सातवाँ: उसने कहा कि यदि पानी का रंग बदलने के बजाय स्वाद बदल गया, तो विचार स्वाद का होगा। तो उसने आपके विभाजन का भी खंडन किया और अपने क्रम का भी ध्यान रखा, और साथ ही यह भी बता दिया कि यदि मिलने वाली चीज़ का रंग पानी से भिन्न हो तो स्वाद का विचार नहीं होगा। (त)

आठवाँ: उसने कहा कि तरबूज, पेड़ों, फलों के रस और नबीज़ की तरह, ये सभी रंगहीन चीज़ें हैं लेकिन उनमें से कुछ सुगंधित भी हैं और कभी-कभी उनकी गंध प्रबल भी होती है, लेकिन उसने इसका विचार नहीं किया और नियम को केवल स्वाद पर ही निर्भर कर दिया। (त)

नौवाँ: उसने कहा कि यदि रंग और स्वाद न बदले तो विचार भागों का होगा, गंध को पूरी तरह से अनदेखा कर दिया है हालांकि यह स्पष्ट रूप से सही बात थी जैसा कि हम पहले २९८ में बयान कर चुके हैं। (त)

दसवाँ: उसने कहा कि यदि इसके भाग पानी के भागों पर हावी हो जाएं तो फल से...

पृष्ठ १९५ / ७५६

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[عربی کالم کی عبارت:] اظهر من اللبن في جمع الثلاث وازهر من الخل في الاجتزاء بواحد لكون لونه اسبق عملا والخل ماكان منه كذاك فذاك والا فمطمح نظره هو اللون نفسه لكونه دليلا على تغير غيره قبله لكونه اضعف منه۔

وسابعًا: قال وان لم يغير لونه بل طعمه فالعبرة للطعم (۱) نفی توزیعکم وراعی ترتیبہ وارشد انه ان خالف لونه فلا عبرة للطعم۔

وثامنا: قال مثل ماء البطيخ والاشجار والثمار والانبذة هذا فيما لايلون (۲) ولاشک ان فیها ذوات الرائحة ولربما كان ريحها اغلب فلم يعتبرها وقصر الحكم على الطعم۔

وتاسعا: قال وان لم يغير لونه وطعمه فالعبرة للاجزاء (۳) اسقط الريح رأسا وهو الحق الناصع كما قدمنا في۔

وعاشرًا : قال فان غلب اجزاؤه على اجزاء الماء لايجوز الوضوء

[اردو کالم کی عبارت:] دیتے ہوئے والزعفران کہا ہے اور یہ تین اوصاف جمع ہونے میں دودھ سے زیادہ واضح اور سرکہ کی نسبت ایک وصف پر کفایت کیلئے زیادہ پختہ ہے کیونکہ اس کا رنگ تبدیلی کا عمل سرعت سے انجام دیتا ہے اور جو سر کہ ایسا ہو وہ بھی اس کے حکم میں ہوگا ورنہ اس کا مقصود تو صرف رنگ کا اعتبار ہے نہ رنگ اس اعتبار سے کہ یہ دوسرے کی نسبت پہلے دوسری شے کو بدل دیتا ہے کیونکہ وہ ویسے بھی کمزور ہوتا ہے۔ (ت)

سابعاً: اس نے کہا کہ اگر پانی کا رنگ بدلنے کے بجائے ذائقہ بدلا تو اعتبار ذائقہ کا ہوگا، تو اس نے آپ کی تقسیم کی نفی بھی کردی اور اپنی ترتیب کی رعایت بھی ملحوظ رکھی اور ساتھ ہی یہ

بھی بات بھی بتادی کہ اگر ملنے والی شے کا رنگ پانی سے مخالف ہو تو ذائقہ کا اعتبار نہیں ہوگا۔ (ت)

ثامناً: اس نے کہا کہ تربوز ، درختوں، پھلوں کے پانی اور نبیزوں کی مثل یہ تمام بے رنگ اشیاء ہیں مگر ان میں کچھ اشیاء بو والی بھی ہیں اور بعض اوقات ان کی بُو غالب بھی ہوتی ہے، مگر اس کا اعتبار نہیں کیا اور حکم کو ذائقہ پر ہی منحصر کر دیا۔ (ت)

تاسعاً : اس نے یہ کہا کہ اگر رنگ اور ذائقہ نہ بدلے تو اعتبار اجزاء کا ہوگا، بُو کو بالکل ہی نظر انداز کر دیا ہے حالانکہ یہ بظاہر حق بات تھی جیسا کہ ہم پہلے ۲۹۸ میں بیان کر چکے ہیں۔ (ت)

عاشراً : اس نے یہ کہا کہ اگر اس کے اجزاء پانی کے اجزاء پر غالب آجائیں تو پھل سے

Fatawa-e-Razawiyya, Volume Three

...like the water squeezed from fruit; otherwise, it would be permissible like the water dripping from the vine after cutting it (1). He considered that which comes out from fruit by squeezing or from the vine by dripping as 'water,' and he considered the first one as having particles dominated by fruit particles, and fruit is a solid. Thus, he considered particles in this solid rather than thinness, for it is sometimes thin like the water of coconut and Indian palm (Tari). This is according to the words of Imam Al-Qadi al-Isbijabi. You said the statement of 'whoever said,' so it includes everyone who followed this order. Thus (T).

Eleventh: (2) It was considered in *Khazanat al-Muftin*, in *al-Inayah* from *Zad al-Fuqaha*, and in *Jami al-Rumuz* from *al-Zahidi* that in juice, the color is considered, even though its taste might be more prominent. (T)

Twelfth: (3) It is that which possesses three attributes, yet they considered one sufficient. (T)

Thirteenth: (4) *Al-Bada'i* considered the color in safflower water and did not consider the smell, even though sometimes the smell is more dominant. (T)

Fourteenth: (5) *Al-Bada'i* and *Hilyah* considered for white grapes...

(1) All of this is from the Hashiyah of al-Shalabi on al-Tabyin, research on water, Matba'ah Amiriyyah Bulaq Egypt 1/201.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 3

...जैसे फल से निचोड़ा हुआ पानी; अन्यथा यह उस पानी की तरह जायज़ होगा जो बेल को काटने के बाद उससे टपकता है (1)। उसने उसे पानी करार दिया जो फल को निचोड़ने से या बेल के काटने से रस के रूप में निकलता है, और पहले वाले को फल के अंशों द्वारा 'मगलूब अल-अज़ा' (अंशों से प्रभावित) करार दिया, जबकि फल एक ठोस चीज़ है। तो उसने इस ठोस में अंशों का एतबार किया न कि पतलेपन का, क्योंकि कभी-कभी फल का पानी पतला होता है जैसे नारियल या ताड़ी का पानी। यह इमाम अल-काज़ी अल-अस्बीजाबी का कलाम है। आपने 'मन काल' (जिसने कहा) का कथन कहा, तो यह उस हर व्यक्ति को शामिल हो गया जो इस तरतीब का कायल है। तो (त)।

ग्यारहवाँ: (2) खज़ानतुल मुफ़्तीन, इनाया में ज़ाद उल-फ़ुक़हा से और जामेउर रुमूज़ में ज़ाहिदी से यह माना गया है कि फलों के रस में रंग का एतबार किया गया है, हालाँकि कभी-कभी उसका स्वाद जल्दी असर दिखाता है। (त)

बारहवाँ: (3) यह तीन गुणों वाली चीज़ है, हालाँकि उन्होंने एक गुण की तब्दीली को ही काफ़ी करार दिया है। (त)

तेरहवाँ: (4) बदाए ने असफ़र (केसरिया) के पानी में रंग का एतबार किया है और गंध का लिहाज़ नहीं किया, हालाँकि कभी-कभी गंध अधिक प्रबल होती है। (त)

चौदहवाँ: (5) बदाए और हिलिया ने सफ़ेद अंगूर के..

(1) यह सब शलबी के हाशिया से है अल-तबीयीन पर, पानी पर शोध, मतबा अमीरिया बुलाक मिस्र 1/201।

पेज 756 में से 196

به کالماء المعتصر من الثمر والا جاز کالماء المتقاطر من الکرم بقطعه [1] (۱) نچوڑے ہوئے پانی کی مانند اس سے بھی وضو جائز نہ ہوگا ورنہ انگور سے کاٹنے کے بعد ٹپکنے والا پانی پانی کی طرح اس پانی سے بھی وضو جائز ہوگا، تو اس نے پھلوں سے نچوڑے ہوئے اور انگوروں سے ٹپکے ہوئے عرق کو پانی قرار دیا ہے اور پہلے کو پھل کے اجزاء کے ساتھ مغلوب الاجزاء قرار دیا ہے حالانکہ پھل ایک جامد چیز ہے، تو انہوں نے اس جامد میں اجزاء کا اعتبار کیا نہ کہ رقت میں، کیونکہ بعض اوقات پھل کا پانی رقیق ہوتا ہے مثلاً ناریل یا تاڑی کا پانی یہ تو اسبیجابی کا کلام ہے جبکہ آپ نے تو قول مَن قال کہا تو یہ ہر اُس شخص کو شامل ہو گیا جو اس ترتیب کا قائل ہے۔ (ت)

الحادی عشر: (۲) اعتبر فی خزانة المفتین وفی العنایة عن زاد الفقهاء وفی جامع الرموز عن الزاهدی فی العصیر اللون مع ان طعمه ربما کان اسبق۔ گیارہواں، خزانتہ المفتین اور عنایہ میں زاد الفقہاء سے اور جامع الرموز میں زاہدی سے ہے کہ پھلوں سے نچوڑے پانی میں رنگ کا اعتبار کیا گیا ہے حالانکہ بعض اوقات اس کا ذائقہ جلدی اثر دکھاتا ہے۔ (ت)

الثانی عشر: (۳) هو ذو الثلثة واجتزؤا بواحد۔ بارہواں، یہ تین اوصاف والی شئی ہے حالانکہ انہوں نے ایک وصف کی تبدیلی کو ہی کافی قرار دیا ہے۔ (ت)

الثالث عشر: (۴) اعتبر البدائع فی ماء العصفر اللون ولم یلاحظ الریح وربما تکون اغلب۔ تیرہواں، بدائع نے عصفر کے پانی میں رنگ کا اعتبار کیا ہے اور بُو کا لحاظ نہیں کیا حالانکہ بعض اوقات بُو زیادہ غالب ہوتی ہے۔ (ت)

الرابع عشر: (۵) اعتبر البدائع چودھواں، بدائع اور حلیہ نے انگور کے سفید

[1] كل ذلك من حاشة الشلبى على التبيين ابحاث الماء مطبعہ امیریہ بولاق مصر ۲۰۱/۱

Then it is mentioned in Al-Hilyah regarding white grape vinegar that taste is considered, although undoubtedly its smell is more prominent.

Taste has been considered in the vinegar of color, although undoubtedly its smell prevails faster.

Fifteenth: (1) In Al-Ayni from Zad al-Fuqaha and in Al-Quhistani from Al-Zahidi, it is stated that if they match in color and taste, like grape water, then the consideration is for the parts. And you know that pure water is not thinner than it, so they considered the parts in the solid substance.

Fifteenth, that is, it is in Zad al-Fuqaha from Al-Ayni and in Quhistani from Zahidi that if water and juice are the same in color and taste, like grape water, then parts will be considered. And you know that pure water is not thinner than this, so they considered the parts in solids. (T)

Sixteenth: (2) All their statements are a clear text in considering the sequence, so referring it to distribution is incorrect. All this is based on the words of those you rely upon. As for your interpretation, it is the seventeenth: your statement that its meaning is that if a liquid substance mixed with water differs in color, then the dominance is in terms of color.

Sixteenth, the discourse of all of them is clear in considering the order, so turning it towards disorder is not correct. This is the summary of the speech of those scholars who are also authoritative for you. Anyway, your interpretation and this seventeenth is your saying that its meaning is that if a liquid thing is mixed in water and its color is different from water, then the dominance of color will be considered. (T)

I say: (3) Yes, and by its generality, it includes all those things which, while differing in color, also differ in the remaining two attributes, so why limit it to just one?

I say, yes this saying, due to being absolute, also includes all those things which along with color are also contrary to water in other attributes, so why has he sufficed with only one attribute?

(4) Eighteenth: It includes what differs in color and another attribute that is more prominent than color. So why wait for the color?

Eighteenth, this includes that thing which, although different in color, its other attribute becomes effective before the color (one attribute change has occurred), so why wait for the color? (T)

1. Al-Binayah Sharh al-Hidayah, Chapter: Water with which Wudu is permissible, Malik Sons Faisalabad, 1/189.
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Researches on Water, Saeed Company Karachi, 1/70.

फिर अल-हिलिया में सफेद अंगूर के सिरके के बारे में है कि स्वाद पर विचार किया गया है, हालाँकि निस्संदेह उसकी गंध अधिक प्रबल होती है।

पंद्रहवाँ: (1) ऐनी में ज़ाद अल-फ़ुक़हा से और कुहिस्तानी में ज़ाहिदी से है कि यदि वे रंग और स्वाद में समान हों, जैसे अंगूर का पानी, तो भागों पर विचार होगा। और आप जानते हैं कि शुद्ध पानी इससे अधिक पतला नहीं होता, इसलिए उन्होंने ठोस में भागों पर विचार किया।

सोलहवाँ: (2) उन सभी की बातें क्रम (तरतीब) के विचार में स्पष्ट पाठ हैं, अतः इसे वितरण की ओर मोड़ना सही नहीं है। यह सब उन विद्वानों की बातों के आधार पर है जिन पर आप भरोसा करते हैं। जहाँ तक आपकी व्याख्या का प्रश्न है, तो यही सत्रहवाँ है: आपका यह कहना कि उसका अर्थ यह है कि यदि पानी में मिलने वाला तरल पदार्थ रंग में भिन्न हो, तो रंग के आधार पर प्रबलता होगी।

मैं कहता हूँ: (3) हाँ, और अपनी व्यापकता के कारण यह उन सभी चीजों को भी शामिल करता है जो रंग के साथ-साथ शेष दो गुणों में भी भिन्न हों, तो उसने केवल एक गुण पर ही संतोष क्यों किया है?

रंग के सिरके में स्वाद पर विचार किया गया है, हालाँकि निस्संदेह उसकी गंध अधिक प्रबल होती है।

पंद्रहवाँ, यानी ऐनी में ज़ाद अल-फ़ुक़हा से और कुहिस्तानी में ज़ाहिदी से है कि यदि पानी और जूस हम रंग और हम स्वाद हों जैसे अंगूर का पानी है, तो भागों का एतबार होगा, और तुम इस बात को जानते हो कि शुद्ध पानी इससे अधिक पतला नहीं होता, अतः उन्होंने ठोस में भागों का एतबार किया है। (त)

सोलहवाँ, उन सब की बातचीत क्रम का एतबार करने में स्पष्ट है, तो इसे अव्यवस्था की ओर फेरना सही नहीं है। यह उन विद्वानों के कलाम का सार है जो आपके यहाँ भी प्रामाणिक हैं। बहरहाल आपकी व्याख्या और यही सत्रहवाँ आपका कथन है कि उसका अर्थ यह है कि पानी में यदि तरल वस्तु मिले और उसका रंग पानी से भिन्न हो तो रंग की प्रबलता का एतबार होगा। (त)

मैं कहता हूँ, हाँ यह कथन निरपेक्ष होने के कारण उन सभी वस्तुओं को भी शामिल है जो रंग के साथ अन्य गुणों में भी पानी के विपरीत हों, तो उसने एक गुण पर ही संतोष क्यों किया है?

(4) अठारहवाँ: इसमें वह शामिल है जो रंग में भिन्न हो और कोई अन्य गुण रंग से पहले प्रभावी हो। तो रंग का इंतज़ार क्यों किया जाए?

अठारहवाँ, यह उस वस्तु को शामिल है जो रंग में यदिचे भिन्न हो मगर उसका दूसरा गुण रंग से पहले प्रभावशाली हो जाए (एक गुण का परिवर्तन तो हो गया) तो रंग का इंतज़ार क्यों किया जाएगा। (त)

1. अल-बिनाया शरह अल-हिदाया, पानी जिससे वज़ू जायज़ है, मलिक संस फैसलाबाद, 1/189।
2. अल-बहर अल-रैक, पानी पर शोध, सईद कंपनी कराची, 1/70।

पृष्ठ 756 का 197

ثم الحلیۃ فی خل العنب الابیض الطعم ولاشك ان ریحه اسبق۔

رنگ کے سرکہ میں ذائقہ کا اعتبار کیا ہے حالانکہ بلاشبہ اس کی بو جلدی غالب آتی ہے۔

الخامس عشر: (۱) فی العینی عن زاد الفقهاء والجهستانی عن الزاهدی ان توافقا لونا وطعما کماء الکرم فالعبرۃ للاجزاء اھ وانت تعلم ان الماء القراح لیس بأرق منه فاعتبروا في الجامد الاجزاء۔

پندرھواں، یعنی میں زاد الفقہاء سے اور قہستانی میں زاہدی سے ہے کہ اگر پانی اور جوس ہم رنگ و ہم ذائقہ ہوں جیسے انگور کا پانی ہے تو اعتبار اجزاء کا ہوگا، اور تم اس بات کو جانتے ہو کہ خالص پانی اس سے زیادہ پتلا نہیں ہوتا پس انہوں نے جامد میں اجزاء کا اعتبار کیا ہے۔ (ت)

السادس عشر: (۲) کلامهم جمیعاً نص مفسر فی اعتبار الترتیب فرده الی التوزیع غیر مصیب هذا کله بکلام الذین تسندون الیهم واماتأویلکم فالسابع عشر قولکم مراده ان المخالط المائع للماء انکان لونه مخالفا فالغلبۃ من حیث اللون۔

سولھواں، ان سب کی گفتگو ترتیب کا اعتبار کرنے میں واضح ہے تو اس کو بے ترتیبی کی طرف پھیرنا درست نہیں یہ ان علماء کے کلام کا خلاصہ ہے جو آپ کے ہاں بھی مستند ہیں بہر حال تمہاری تاویل اور یہی سترھواں ہے تمہارا قول ہے کہ اس کی مراد یہ ہے کہ پانی میں اگر مائع شیئ ملے اور اس کا رنگ پانی سے مختلف ہو تو غلبہ رنگ کا ہوگا۔ (ت)

اقول: (۳) نعم ویعم باطلاقه مایخالف فی اللون مع الباقیین فلم اجتزء بواحد۔

میں کہتا ہوں، ہاں یہ قول مطلق ہونے کی بنا پر ان تمام اشیاء کو بھی شامل ہے جو رنگ کے ساتھ دیگر اوصاف

میں بھی پانی کے مخالف ہوں، تو اس نے ایک وصف پر ہی اکتفاء کیوں کیا ہے؟

(۴) الثامن عشر: یشمل مایخالف في اللون و وصف اخر اسبق من اللون ففیم انتظر اللون۔

اٹھارواں، یہ اس شے کو شامل ہے جو رنگ میں اگرچہ مخالف ہو مگر اس کا دوسرا وصف رنگ سے قبل اثر انداز ہوجائے (ایک وصف کی تبدیلی تو ہوگئی) تو رنگ کا انتظار کیوں کیا جائے گا۔ (ت)

1 البنایۃ شرح الہدایۃ الماء الذی یجوز بہ الوضوء ملک سنز فیصل آباد ۱/۱۸۹ 2 البحر الرائق ابحاث الماء سعید کمپنی کراچی ۱/۷۰

Fatawa Rizvia Volume 3

19th: Similarly, Imam al-Isbijabi and Imam al-Sam'ani in *al-Khizanah*, and al-Birjandi in the commentary on *al-Nuqayah*, have cited saffron as an example, while you, relying on the rule, have restricted it to liquids. (T)

20th: (2) Your statement: "Even if its color is like the color of water, the consideration is for the taste." I say: Yes, and this would also include a substance with a quick-acting odor; so how would this example conform to the rule (even though the consideration is absolutely for the taste)? (T)

21st: (3) Why was the condition of agreement in color placed? For in the rule, consideration is absolutely for the taste, even if the color differs, provided the substance has no odor and its taste is quick-acting in the liquid. (T)

22nd: (4) Similarly, Imam al-Isbijabi and *Zad al-Fuqaha*, then Badr Mahmud and Shams al-Quhistani, have cited *nabidh* (fermented drinks) as examples, while *al-Zad* and al-'Ayni have also added water heated by the sun. So, on what basis will the restriction to liquid be made?

23rd: (5) Your statement: "Even if it does not differ in color, taste, and smell, the consideration is for the parts (volume)." I say: Imam al-Burhan stated in *al-Hidayah*...

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Abhas al-Ma, Sa'id Company Karachi 11/70
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Abhas al-Ma, Sa'id Company Karachi 11/70

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

19वाँ: इसी तरह, इमाम अल-इस्बीजाबी और इमाम अल-समा'नी ने 'अल-खिजाना' में, और अल-बिरजंदी ने 'शराह अल-नुकाया' में इसकी मिसाल केसर को करार दिया है, जबकि आपने नियम पर आधारित रहते हुए इसे तरल पदार्थों के साथ सीमित कर दिया है। (त)

20वाँ: (2) आपका कथन: "भले ही इसका रंग पानी के रंग जैसा हो, तो विचार स्वाद का होगा।" मैं कहता हूँ: हाँ, यह मिसाल तेज़ी से असर करने वाली गंध वाली वस्तु को भी शामिल कर लेगी, तो फिर यह मिसाल नियम के अनुसार कैसे होगी (जबकि विचार तो पूरी तरह स्वाद का है)? (त)

21वाँ: (3) उसने रंग की समानता की शर्त क्यों लगाई है? क्योंकि नियम में पूरी तरह से स्वाद का विचार है, भले ही रंग अलग हो, बशर्ते कि वस्तु गंध वाली न हो और उसका स्वाद तरल में तेज़ी से असर करने वाला हो। (त)

22वाँ: (4) इसी तरह, इमाम अल-इस्बीजाबी और 'ज़ाद अल-फ़ुक़हा', फिर बद्र महमूद और शम्स अल-कुहिस्तानी ने इसकी मिसाल नबीज़ों (खमीरयुक्त पेय) को माना है, जबकि 'ज़ाद' और अल-ऐनी ने सूरज से गर्म किए हुए पानी को भी जोड़ा है। तो तरल के साथ विशिष्टता किस आधार पर होगी?

23वाँ: (5) आपका कथन: "और भले ही वह रंग, स्वाद और गंध में भिन्न न हो, तो विचार अंशों (आयतन) का होगा।" मैं कहता हूँ कि इमाम अल-बुरहान ने 'हिदाया' में कहा है...

1. अल-बहर अल-रैक, आबहास अल-मा, सईद कंपनी कराची 11/70
2. अल-बहर अल-रैक, आबहास अल-मा, सईद कंपनी कराची 11/70

पृष्ठ 198 of 756

التاسع عشر مثله الامام الاسبیجابی والامام السمعانی فی الخزانة والبرجندی فی شرح النقایة بالزعفران وخصصتم بالمائع حوطا علی الضابطة۔ انیسواں، امام اسیجابی اور امام سمعانی نے خزانہ میں اور برجندی نے شرح النقایہ میں اس کی مثال زعفران کو قرار دیا ہے جبکہ آپ نے ضابطہ پر مدار رکھتے ہوئے مائع کے ساتھ مختص کیا ہے۔(ت)

العشرون: (۲) قولکم وانکان لونه لون الماء فالعبرة للطعم۔ بیسواں، آپ کا قول ہے کہ اگر اس کا رنگ پانی جیسا ہو تو اعتبار ذائقہ کا ہوگا۔(ت) اقول: نعم ویعم ماخالف بریح اسبق فأنی یوافق الضابطة۔ میں کہتا ہوں، ہاں یہ مثال جلد اثر کرنے والی بو والی شئی کو بھی شامل ہوجائے گی تو یہ مثال ضابطہ کے مطابق کیونکر ہوگی (حالانکہ اعتبار تو مطلقاً ذائقہ کا ہے) (ت)

(۳) الحادی والعشرون: لم شرط فیه وفاق اللون فان العبرة فی الضابطة بالطعم مطلقاً وان خالف فی اللون ایضاً اذالم یکن ذاریح وکان طعمه اسبق۔ بالمائع۔ اکیسواں، اس نے رنگ کی موافقت کی شرط کیوں لگائی ہے؟ کیونکہ ضابطہ میں مطلقاً اعتبار ذائقہ کا ہے رنگ اگرچہ مخالف بھی ہو جبکہ شئی بو والی نہ ہو اور اس کا ذائقہ جلد اثر کرنے والا ہو۔ (ت)

(۴) الثانی والعشرون مثله الامام الاسبیجابی و زاد الفقهاء ثم البدر محمود والشمس القهستانی بالانبذة زاد الزاد والعینی المشمس فمن این التخصیص بائیسواں، امام اسیجابی اور زاد الفقہاء، پھر بدر محمود اور شمس قہستانی نے اس کی مثال نبیذیں قرار دی ہیں جبکہ زاد اور عینی نے سورج سے گرم پانی کا بھی اضافہ کیا ہے تو مائع کے ساتھ تخصیص کس چیز کی ہوگی؟

(۵) الثالث والعشرون: قولکم وان کان لایخالفه فی اللون والطعم والریح فالعبرة للاجزاء - اقول: قال الامام البرهان فی تئیسواں، تمہارا قول ہے کہ جب ملنے والی شے، رنگ ذائقہ اور بو میں سے کسی میں مخالف نہ ہو تو اعتبار اجزاء کا ہوگا۔ میں کہتا ہوں کہ امام برہان نے ہدایہ میں

1۔ البحر الرائق ابحاث الماء سعید کمپنی کراچی 11/ 70 2۔ البحر الرائق ابحاث الماء سعید کمپنی کراچی 11/ 70

Volume Three, Fatawa Razawiya

In Al-Hidayah, regarding water mixed with saffron, soap, or soda ash, it is mentioned that a minor mixture is not taken into account because it is impossible to avoid, just as is the case with soil particles. Therefore, dominance is considered. According to the correct view, dominance is based on the quantity of parts, not on a change in color. So where did the specification of liquid go! (T)

Twenty-fourth: The mention of smell has no impact in their discourse; it was added merely to observe the general rule as you have known. Thus, in this case, the clear meaning of their texts would be that if the added substance does not oppose the water's color and taste, then consideration is for parts, and this is against the rule. (T)

Twenty-fifth: Among the things that follow this path is that Al-Bahr al-Ra'iq quoted a statement from Al-Majma' and found it difficult to apply to the general rule. Then he expressed for it the same interpretation that Al-Shami tried to express in his commentary, whereas in my view, each one is subject to scrutiny. The author of Al-Majma' said: We permit ablution with water whose some qualities change by mixing with a pure thing like saffron, provided the water remains dominant. Al-Bahr al-Ra'iq said this implies that if two qualities change, ablution is permissible; otherwise, he would have said [if all qualities change], and it cannot be attributed to anything else as is evident.

1. Al-Hidayah, Water with which ablution is permissible, Al-Maktaba Al-Arabiyya, Karachi, 1/18
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, Saeed Company, Karachi, 1/69
3. Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, Saeed Company, Karachi, 1/70

खंड तीन, फतावा रज़विया

अल-हिदाया में उस पानी के बारे में जिसमें केसर, साबुन या सोडा ऐश की मामूली मिलावट हो गई हो, कहा गया है कि चूँकि ऐसी मिलावट से बचना संभव नहीं है, इसलिए इसका कोई महत्व नहीं है, जैसा कि मिट्टी के कणों का मामला है। अतः जो हिस्सा अधिक हो उसी का विचार किया जाएगा। सही राय के अनुसार, प्रधानता अवयवों की मात्रा के आधार पर होगी न कि रंग के बदलाव से। तो फिर तरल पदार्थ की विशिष्टता कहाँ गई! (त)

चौबीसवाँ: उनकी बातचीत में गंध का उल्लेख निष्प्रभावी है; इसे केवल नियम के पालन के लिए जोड़ा गया था जैसा कि आप जानते हैं। अतः इस स्थिति में उनके ग्रंथों का स्पष्ट अर्थ यह होगा कि यदि वह पानी में मिलने वाली वस्तु रंग और स्वाद में विरोधी न हो, तो अवयवों का विचार होगा। और यह नियम के विरुद्ध है। (त)

पच्चीसवाँ: इसी क्रम में बहर-उल-रैक ने मजमा' से एक कथन उद्धृत किया है जिसे नियम पर लागू करना कठिन था, तो उन्होंने वही अर्थ व्यक्त किया जो शामी ने अपने हाशिये (कमेंटरी) में व्यक्त करने का प्रयास किया था। जबकि मेरे विचार में दोनों ही जांच का विषय हैं। मजमा' के लेखक ने कहा: हम उस पानी से वज़ू को जायज़ कहते हैं जिसके कुछ गुण केसर जैसी पवित्र वस्तु मिलने से बदल जाएँ, बशर्ते पानी प्रधान रहे। बहर-उल-रैक ने कहा कि इससे यह लाभ प्राप्त हुआ कि यदि दो गुण बदल जाएँ तो वज़ू जायज़ है, अन्यथा वह कहता [सब बदल जाएँ], और इसे किसी और बात पर लागू नहीं किया जा सकता जैसा कि स्पष्ट है।

1. अल-हिदाया, वह पानी जिससे वज़ू जायज़ है, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची, 1/18
2. अल-बहर-उर-रैक, किताबुत तहारत, सईद कंपनी, कराची, 1/69
3. अल-बहर-उर-रैक, किताबुत तहारत, सईद कंपनी, कराची, 1/70

पृष्ठ 199 का 756

الھدایۃ فی الماء الذی اختلط بہ الزعفران او الصابون او الاشنان الخلط القلیل لا یعتبر بہ لعدم امکان الاحتراز عنہ کما فی اجزاء الارض فیعتبر الغالب والغلبۃ بالاجزاء لابتغیر اللون ھو الصحیح اھـ فأین ذھب تخصیص المائع- (۱) اس پانی کے بارے میں کہا جس میں صابن، اشنان اور زعفران کی معمولی سی ملاوٹ ہو جائے چونکہ اس ملاوٹ سے بچنا ممکن نہیں لہذا اس کا کوئی اعتبار نہیں، جیسا کہ اجزاء زمین کا حکم ہے اور اعتبار غالب کا ہو گا اور صحیح قول کے مطابق غلبہ اجزاء کے اعتبار سے ہو گا نہ کہ رنگ کی تبدیلی سے تو مائع کی تخصیص کہاں چلی گئی! (ت)

الرابع والعشرون: ذکر الریح لا اثر لہ فی کلامھم وانما زید رعایۃ للضابطۃ کما علمت فاذن انما صریح نصوصھم انہ ان لم یخالفہ فی اللون والطعم فالعبرۃ للاجزاء وھذا خلاف الضابطۃ- چوبیسواں: بُو کا ذکر محض ضابطہ کی رعایت کیلئے کیا گیا ورنہ اس کے اضافہ سے آپ کو معلوم ہے کہ کوئی اور مقصد نہیں ہے بس اس صورت میں ان کی صریح نصوص یہ ہوں گی کہ اگر وہ ملنے والی شے پانی کے رنگ اور ذائقہ میں مخالف نہ ہو تو اعتبار اجزاء کا ہو گا اور یہ ضابطہ کے خلاف ہے- (ت)

الخامس والعشرون: مما یسلك فی السلك ان البحر نقل عبارۃ عن المجمع واستصعب ردھا الی الضابطۃ ثم ابدی لہ ردہ علیہ الشامی فی حاشیتہ وعندی فی الکل نظر قال فی المجمع ونجیزہ بغالب علی طاھر کزعفران تغیر بہ بعض اوصافہ اھـ قال البحر تفید ان المتغیر لوکان وصفین یجوز اوکلھا لقال ولا یمکن حملہ علی شیئ کما لا یخفی اھـ پچیسواں: بحر الرائق نے مجمع سے ایک روایت نقل کی ہے جسے ضابطہ پر منطبق کرنا مشکل ہوا تو اس نے وہ محمل بیان کیا جو شامی نے اپنے حاشیہ میں بیان کرنے کی کوشش کی تھی جبکہ میرے نزدیک ہر ایک محلِ نظر ہے، صاحبِ مجمع نے کہا ہم

اس پانی سے وضو جائز کہتے ہیں جس کے بعض اوصاف زعفران ایسی پاک شئی کے ساتھ ملنے سے بدل جائیں مگر وہ پانی غالب رہے۔ بحر الرائق نے کہا اس سے یہ فائدہ حاصل ہوا کہ اگر دو صفتیں بدلیں تو وضو جائز

1. الهداية، الماء الذى يجوز به الوضوء، المكتبة العربية، كراچى، 18/1
2. البحر الرائق، كتاب الطهارة، سعيد كمپنى، كراچى، 69/1
3. البحر الرائق، كتاب الطهارة، سعيد كمپنى، كراچى، 70/1

Fatawa Razawiya Volume Three

[Right Column - Urdu Translation/Explication] ...will occur, or if all [attributes] change, then wudu will not be permissible. It was also said that this is a statement which cannot be applied to anything, as is not hidden. That is, it is not applicable to any of the four possibilities because there is no clause in the rule indicating that wudu is prohibited if all attributes change but not prohibited if only two change. He stated that what is apparent is that by 'some attributes' he means the smallest portion of 'some', which is one attribute out of three, as al-Quduri's wording appears in the correction of this discourse. His statement in its commentary also points to this, which is: 'so he changed some attributes', meaning taste, or color, or smell. He mentioned them with the word 'or' (aw), which is for one of several things, and he placed 'or' after 'from' (min), which makes those mentioned things an explanation of 'some'. And no benefit in changing al-Quduri's wording is apparent either. (T) I say that in the fifth rule we have established that 'some' here also includes 'all'. So, whatever changes the entire set of attributes has also changed 'some'. If we adopt the rule itself, then I say that his statement "some of its attributes changed by it" is a quality of "saffron" and not of "pure" (tahir), such that the change of some attributes would be a restriction for the ruling. Thus, the ruling will be based on dominance (ghalaba), and dominance in each category varies in nature...

[Left Column - Arabic Text] That is, regarding any of the four possibilities, and that is because there is no category in the rule that prohibits by the change of three but not two. He said: What appears is that his intention by 'some' is the minimal 'some', which is one, as per al-Quduri's wording to correct his statement. His statement in the commentary indicates this: 'so it changed some of its attributes of taste or smell or color'. He mentioned it with 'or' (aw) which is for one of the things after 'from' (min) which he placed as an explanation for 'some'. No benefit for changing al-Quduri's wording appears. [End of quote] I say: (1) We have previously presented in the fifth rule the research that 'some' here includes 'all'. So, whatever changed the whole has changed the part. If we choose the rule, we say: his statement 'some of its attributes changed by it' is a description of saffron, not for the 'pure' substance, so that it becomes a restriction in the ruling of dominance. And it (dominance) is in every category according to its own measure, either by the safety of all attributes or most of them, or...

[Footer] 1 Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharat, Saeed Company Karachi, 1/70. Page 200 of 756

फ़तावा रज़विया, भाग 3

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...होगा या सब बदल जाएं तो वज़ू जायज़ न होगा, और यह भी कहा कि यह ऐसी इबारत है जिसे किसी चीज़ पर लागू नहीं किया जा सकता जैसा कि स्पष्ट है। यानी चार संभावनाओं में से किसी पर भी इसे लागू नहीं किया जा सकता क्योंकि नियम में ऐसा कोई खंड नहीं है जो इस बात का प्रमाण हो कि सभी गुणों के बदलने पर तो वज़ू वर्जित है और दो के बदलने पर वर्जित नहीं है। फ़रमाया जो बात प्रकट होती है वह यह है कि 'कुछ गुणों' (बअज़ औसाफ़) से उनका तात्पर्य 'कुछ' का न्यूनतम भाग है जो तीन में से एक गुण होता है जैसा कि कुदूरी की इबारत इस कलाम के संशोधन में आई है और इसकी व्याख्या में उनका कथन इस पर संकेत भी करता है जो यह है, 'अतः उसने कुछ गुणों को बदल दिया हो', यानी स्वाद या रंग या गंध। उन्होंने उन्हें शब्द "औ" (या) के साथ उल्लेख किया है जो कई चीज़ों में से एक के लिए होता है और शब्द "औ" को "मिन" (से) के बाद उल्लेख किया है जिसने उन उल्लेखित चीज़ों को 'कुछ' का विवरण बना दिया है। और कुदूरी की इबारत को बदलने का कोई लाभ भी दिखाई नहीं देता। (त) मैं कहता हूँ कि पाँचवें नियम में हम शोध कर चुके हैं कि यहाँ 'कुछ' में 'सब' भी शामिल है, तो जो चीज़ सभी गुणों को बदल देगी वह 'कुछ' को भी बदल देगी। यदि हम नियम ही अपना लें तो मैं कहता हूँ कि उनका कथन "इसके कुछ गुण इससे बदल गए" ज़फ़रान (केसर) की विशेषता है न कि "शुद्ध" (ताहिर) की, यहाँ तक कि कुछ गुणों का बदलना हुक्म के लिए एक शर्त हो। अतः हुक्म प्रभुत्व (ग़ल्बा) के आधार पर होगा और प्रभुत्व हर किस्म में अलग प्रकार का होता है...

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] यानी चार संभावनाओं में से किसी पर, और वह इसलिए क्योंकि नियम में ऐसा कोई भाग नहीं है जो तीन के बदलने पर तो रोके लेकिन दो के बदलने पर नहीं। उन्होंने कहा: जो बात स्पष्ट होती है वह यह है कि 'कुछ' से उनका इरादा न्यूनतम 'कुछ' है, जो कि एक है, जैसा कि कुदूरी के शब्दों में उनके बयान को सही करने के लिए है। उनकी व्याख्या में उनका यह कथन इसका संकेत देता है: 'तो उसने इसके कुछ गुणों को बदल दिया, स्वाद या गंध या रंग से'। उन्होंने इसे 'औ' (या) के साथ उल्लेख किया है जो 'मिन' (से) के बाद की चीज़ों में से एक के लिए है जिसे उन्होंने 'कुछ' के स्पष्टीकरण के रूप में रखा है। कुदूरी के शब्दों को बदलने का कोई लाभ नहीं दिखता। [समाप्त] लेखक का नोट: (1) हमने पाँचवें नियम में शोध प्रस्तुत किया है कि यहाँ 'कुछ' में 'सब' शामिल है। तो जिस चीज़ ने पूरे को बदल दिया उसने कुछ को भी बदल दिया। यदि हम नियम चुनते हैं, तो हम कहते हैं: उनका कथन 'इसके कुछ गुण इससे बदल गए' केसर का वर्णन है, शुद्ध पदार्थ

का नहीं, ताकि यह प्रभुत्व के हुक्म में एक शर्त बन जाए। प्रभुत्व हर श्रेणी में उसके अपने पैमाने के अनुसार होता है, या तो सभी गुणों की सलामती से या उनमें से अधिकांश से, या...

[पादलेख] 1 अल-बहर अल-रैक, किताब अल-तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/70. पृष्ठ 200/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

[دائیں کالم کی عبارت] ہوگا یا سب بدل جائیں تو وضو جائز نہ ہوگا، اور یہ بھی کہا کہ یہ ایسی عبارت ہے جس کو کسی شے پر محمول نہیں کیا جاسکتا کما لا یخی۔ یعنی چار محامل میں سے کسی پر بھی یہ محمول نہیں ہے کیونکہ ضابطہ میں کوئی ایسی شق نہیں ہے جو اس بات پر دال ہو کہ تمام اوصاف بدلنے پر تو وضو کرنا منع ہے اور دو کے بدلنے پر منع نہ ہو ، فرمایا جو بات ظاہر ہوتی ہے وہ یہ ہے کہ بعض اوصاف سے اس کی مراد بعض کا کم تر حصہ ہے جو تین میں سے ایک وصف ہوتا ہے جیسا کہ قدوری کی عبارت اس کلام کی تصحیح میں وارد ہے اور اس کی شرح میں اس کا قول اس پر دلالت بھی کرتا ہے جو یہ ہے ، پس اس نے بعض اوصاف کو بدل دیا ہو ، یعنی ذائقہ یا رنگ یا بو کو تو اس نے انہیں کلمہ "أو" کے ساتھ ذکر کیا ہے جو دو اشیاء میں سے ایک کیلئے ہوتا ہے اور کلمہ "أو" کو "مِنْ" کے بعد ذکر کیا ہے جس نے ان مذکورہ اشیاء کو بعض کا بیان دیا ہے اور قدوری کی عبارت کی تبدیلی کا کوئی فائدہ بھی ظاہر نہیں ہوتا۔ (ت) میں کہتا ہوں کہ پانچویں ضابطہ میں ہم تحقیق کرچکے ہیں کہ یہاں بعض کل کو بھی شامل ہے ، تو جو شے جملہ اوصاف کو تبدیل کرے گی وہ بعض کو بھی تبدیل کرے گی، اگر ہم ضابطہ ہی اختیار کرلیں تو میں کہتا ہوں کہ اس کا قول "تغیر بہ بعض اوصافہ" زعفران کی صفت ہے نہ کہ "طاھر" کی حتی کہ بعض اوصاف کا بدلنا حکم کیلئے قید ہو۔ پس حکم غلبہ کے اعتبار سے ہوگا اور غلبہ ہر قسم میں مختلف نوعیت

[بائیں کالم کی عربی عبارت] ای علی شئ من المحامل الاربعة وذلك لانه ليس في الضابطة قسم يمنع بتغير الثلثة دون الاثنين قال والذی يظهر ان مراده من البعض البعض الاقل وهو الواحد كما هی عبارة القدوری تصحيحاً لكلامه ويدل عليه قوله في شرحه فغير بعض اوصافه من طعم او ريح اولون ذكره

باوا لتی ھی لاحد الاشیاء بعد من التی اوقعھا بیانا للبعض ولا یظھر لتغییر عبارۃ القدوری فائدۃ 1ھ

اقول: (1) قدمنا في الضابطة الخامسة تحقيق ان بعضا ههنا يشمل الكل فما غير الكل فقد غير البعض فان اخترنا الضابطة قلنا قوله تغير بہ بعض اوصافہ صفة للزعفران لا لطاهر حتى يكون قيدا في الحكم بالغلبة وھی فی کل قسم بحسبہ اما بسلامة الاوصاف جميعا او اكثرها او

[فٹ نوٹ] 1 البحر الرائق کتاب الطھارت سعید کمپنی کراچی ۷۰/۱ صفحہ 200 از 756

Fatawa Rizvia Volume Three

Page 201

(Arabic text on the left, Urdu translation on the right)

[Arabic]: Thinness (fluidity) alone, even if [qualities] change, and this is regarding solids, including saffron. Water is dominant even if it changes after its qualities, even within the whole, as long as thinness remains. There is no need for restriction because the discussion is about water, and what becomes thick is not water. Thus, this is the reconciliation of the phrase from 'Al-Majma' with the principle, and there is no difficulty in it. According to the school of thought, we say 'changed by some of its qualities of a pure substance,' meaning we permit [ablution] with water mixed with a pure thing that changed some of its qualities, even all of them, as long as water remains dominant in quantity, nature, and name. Thus, the statement is sound and correct, not needing any forced interpretation. Let it be so.

[Urdu]: It will be so whether all qualities remain safe, or most qualities, or just thinness even if qualities change. This ruling applies to solids, including saffron. Water will be dominant as long as its thinness remains, even if some of its qualities change, even if all qualities are changed. There is no need for further restriction because the discussion is about water, and that which hardens is no longer water. Thus, the reconciliation of the 'Majma' phrase with the principle is as follows, and there is no difficulty in it. If we consider the school of thought and say 'changed by some of its qualities' is an attribute of the 'pure substance,' then the meaning will be that we allow wudu with that water which is mixed with a pure thing that changes some of its qualities, even up to all of them, as long as water remains dominant in terms of quantity, nature, and name. Then the discourse is perfectly correct and clear. No trouble is needed for its correction. (T)

[Arabic]: Twenty-sixth: Allama Shami said in 'Al-Minhah', I say: The statement of Al-Majma 'and we permit it with dominance over a pure substance' is not without two possibilities: either it is applied to the general category of solids and liquids, or to solids only. It is not possible to apply it to water only because of his saying 'like saffron.' If applied to the general category, it is not correct to apply 'some' to a single quality, because the dominance of a mixed solid is considered by the disappearance of thinness, not by the change of qualities, let alone the change of a single quality.

[Urdu]: Twenty-sixth, Allama Shami said in 'Minhah', I say the statement of Majma 'we permit it with dominance over a pure substance' is not empty; it will either be applied to both solids and liquids or only to solids. Applying it only to liquids is not correct because of the phrase 'like saffron.' Therefore, if a general meaning is intended, applying 'some' to a single quality is not correct, because the dominance of a solid substance added to water will be established when the thinness disappears, not by the change of all qualities, let alone the change of one quality.

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

पृष्ठ 201

(बाएं तरफ अरबी पाठ, दाएं तरफ उर्दू अनुवाद)

[अरबी]: केवल पतलापन (तरलता), भले ही [गुण] बदल जाएं और यह ठोस पदार्थों के बारे में है, जिसमें केसर भी शामिल है। पानी तब तक प्रबल रहता है जब तक कि पतलापन बना रहता है, भले ही इसके गुणों के बाद इसमें बदलाव आ जाए, यहाँ तक कि पूर्ण रूप में भी। प्रतिबंध की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि चर्चा पानी के बारे में है, और जो गाढ़ा हो जाता है वह पानी नहीं रहता। इस प्रकार, यह सिद्धांत के साथ 'अल-मजमा' के वाक्यांश का सामंजस्य है, और इसमें कोई कठिनाई नहीं है। विचारधारा के अनुसार, हम कहते हैं 'एक शुद्ध पदार्थ के अपने कुछ गुणों से बदल गया', जिसका अर्थ है कि हम उस पानी के साथ [वज़ू] की अनुमति देते हैं जिसमें एक शुद्ध चीज़ मिलाई गई हो जिसने उसके कुछ गुणों को बदल दिया हो, यहाँ तक कि सभी को, जब तक कि पानी मात्रा, प्रकृति और नाम में प्रबल रहे। इस प्रकार, कथन तर्कसंगत और सही है, जिसे किसी ज़बरदस्ती व्याख्या की आवश्यकता नहीं है। ऐसा ही होने दें।

[उर्दू]: यह तब होगा जब या तो सभी गुण सुरक्षित रहें, या अधिकांश गुण, या सिर्फ पतलापन भले ही गुण बदल जाएं। यह नियम ठोस पदार्थों में होगा जिसमें केसर भी शामिल है। पानी तब तक प्रबल होगा जब तक कि उसका पतलापन बाकी रहे, भले ही उसके कुछ गुण बदल जाएं चाहे सभी गुण ही बदल गए हों। अब कोई प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि चर्चा पानी के बारे में हो रही है और जो सख्त हो जाए वह पानी ही नहीं रहता। तो मजमा के वाक्यांश का सिद्धांत के साथ सामंजस्य इस प्रकार है, और इसमें कोई कठिनाई भी नहीं है। यदि विचारधारा को ही ध्यान में रखें और कहें कि 'उसके कुछ गुणों का बदलना' 'शुद्ध' की विशेषता है, तो अर्थ यह होगा कि हम उस पानी से वज़ू की अनुमति देते हैं जिसके साथ कोई शुद्ध चीज़ मिलकर उसके कुछ गुणों को भी बदल दे, यहाँ तक कि सभी को भी, जब तक पानी मात्रा, प्रकृति और नाम के आधार पर प्रबल रहे। तब कथन बिल्कुल सही और स्पष्ट है। इसके सुधार के लिए किसी कष्ट की आवश्यकता नहीं है। (त)

[अरबी]: छब्बीसवाँ: अल्लामा शामी ने 'अल-मिन्हा' में कहा है, मैं कहता हूँ: अल-मजमा का कथन 'और हम इसे एक शुद्ध पदार्थ पर प्रबलता के साथ अनुमति देते हैं' दो संभावनाओं से रहित नहीं है: या तो इसे ठोस और तरल की सामान्य श्रेणी पर लागू किया जाता है, या केवल ठोस पर। इसे केवल

तरल पर लागू करना संभव नहीं है क्योंकि उनके'केसर की तरह' कहने के कारण। यदि सामान्य श्रेणी पर लागू किया जाता है, तो 'कुछ' को एक ही गुण पर लागू करना सही नहीं है, क्योंकि मिश्रित ठोस की प्रबलता पतलेपन के गायब होने से मानी जाती है, न कि गुणों के परिवर्तन से, एक गुण के परिवर्तन की तो बात ही क्या।

[उर्दू]: छब्बीसवाँ, अल्लामा शामी ने मिन्हा में कहा है कि मैं कहता हूँ कि मजमा का कथन 'हम इसे शुद्ध वस्तु पर प्रबलता के साथ अनुमति देते हैं' खाली नहीं है; इसे या तो ठोस और तरल दोनों पर लागू किया जाएगा या केवल ठोस पर। केवल तरल पर लागू करना सही नहीं है, उनके'केसर की तरह' कहने के कारण। इसलिए, यदि सामान्य अर्थ अभिप्रेत है, तो 'कुछ' को एक गुण पर लागू करना सही नहीं है, क्योंकि पानी में मिलाई गई ठोस वस्तु की प्रबलता पतलेपन के खत्म होने से होगी, न कि सभी गुणों के परिवर्तन से, एक गुण के परिवर्तन की तो बात ही क्या।

الرقة وحدها وان تغيرت وهذا في الجامد ومنه الزعفران فالماء الغالب وان تغير به بعد اوصافه ولو في ضمن الكل مادامت الرقة باقية ولاحاجة الى التقييد لان الكلام في الماء وماثخن ليس بماء فهذا توفيق عبارة المجمع بالضابطة ولاصعوبة فيه اماعلى المذهب فنقول تغير به بعض اوصافه لطاهر والمعنى نجيزه بماء خالطه طاهر فغير بعض اوصافه حتى الكل مادام الماء غالباً قدرا وطبعا واسما (۱) فالكلام وجيه صحيح لايحتاج الى تمحل للتصحيح فليكن۔ السادس والعشرون: وقال العلامة الشامي في المنحة اقول قول المجمع ونجيزه بغالب علي طاهر لايخلو اما ان يحمل علي الاعم من الجامد والمائع اوعلى الجامد فقط ولاسبيل الى حمله على الماء فقط لقوله كزعفران فان حمل على الاعم لايصح حمل البعض على الواحد لان غلبة المخالط الجامد تعتبر بانتفاء الرقة لابالاوصاف فضلاً

کا ہوگا یا تو تمام اوصاف سلامت رہیں یا زیادہ اوصاف یا صرف پتلا پن اگرچہ اوصاف بدل جائیں، اور یہ حکم جامد میں ہوگا جس میں زعفران بھی ہے، تو پانی اُس وقت تک غالب ہوگا جب تک اس کا پتلا پن باقی رہے اگرچہ اس کے بعض اوصاف بدل جائیں۔ چاہے کل اوصاف کے ضمن میں ہی تبدیل ہوئے ہوں، تو اب قید لگانے کی ضرورت نہیں، کیونکہ گفتگو پانی میں ہو رہی ہے اور جو سخت ہو جائے وہ پانی ہی نہیں رہتا تو مجمع کی عبارت کی ضابطہ کے ساتھ تطبیق یوں ہے، اور اس میں کوئی مشکل بھی نہیں ہے۔ اگر مذہب کو ہی ملحوظ رکھیں اور کہیں کہ "تغیر بہ بعض اوصافہ" "طاہر" کی صفت ہے تو پھر معنی یہ ہوگا ہم اس پانی سے وضو کی اجازت دیتے ہیں جس کے ساتھ کوئی پاکیزہ چیز مل کر اس کے بعض اوصاف کو بھی بدل دے یہاں تک کہ کل کو بھی جب تک پانی مقدار، طبیعت اور نام کے اعتبار سے غالب رہے تو کلام بالکل صحیح اور بے غبار ہے۔ اس کی تصحیح کیلئے کسی تکلیف کی ضرورت نہیں کہ اس کا ارتکاب کیا جائے۔ (ت)

چھبیسواں ، علامہ شامی نے منحہ میں کہا ہے میں کہتا ہوں کہ مجمع کا قول "نجیزہ بغالب علی طاہر" خالی نہیں، یا تو جامد اور مائع دونوں پر محمول کیا جائے گا یا فقط جامد پر اور فقط مائع پر محمول کرنا درست نہیں بوجہ اس کے قول "ک زعفران" کے، پس اگر عام مراد ہو تو بعض کو وصفِ واحد پر محمول کرنا درست نہیں کیونکہ جامد ملنے والی شیئ کا غلبہ پتلا پن ختم ہو جانے سے ہوگا تمام اوصاف کی تبدیلی سے نہیں چہ جائیکہ ایک وصف کی تبدیلی سے

Fatawa Razvia Volume 3

[Arabic Text Section]: Regarding a single quality, and also considering the liquid mixing agent, dominance is not established in it by a single quality absolutely. For if it is contrary to water in all qualities, the manifestation of all or most of them is considered for dominance. And if it is applied to solids only, you have learned from what we have established what objection is raised against it—that the negation of thinness and fluidity is considered in it, even if all qualities change, as long as the name of "water" is not removed from it, as the restriction for it will follow. So there is no difference between saffron and bean water. The figurative sense found in 'Al-Yanabee' and 'Al-Zahiriyya'—just as the absence of thinness was considered there, let it be considered in saffron as well. Yes, in the wording of 'Al-Majma' there is room for reflection in terms of its implication that if all qualities change, ablution with it is not permissible, as it is not meant in an absolute sense, so it is restricted by the negation of thinness. Or it is said: when all qualities change due to something like saffron, the name of "water" usually disappears from it. Thus, the possibility of interpreting it according to what has been established has become clear to you. And if it is interpreted as meaning that "some" refers to one quality, as the wording of its commentary suggests, the difficulty increases. So, it is necessary to interpret what is in the commentary as not meaning just one change, or that "or" (aw) is in the sense of "and" (wa), thus organizing the speech. And Allah Almighty is the Bestower of inspiration. End.

[Urdu Text Section]: ...be dominant; seeing a fast-mixing liquid substance, dominance is not proven in any way by the appearance of a single quality, because when that substance is contrary to water in all qualities, the manifestation of all or most qualities will be credible for dominance. And if we apply it only to solids, you know from our discussion the objection raised against it: that in it, the consideration of dominance is by the loss of thinness and the cessation of the ability to flow, even if all qualities change, as long as the name of water is not taken away from it, as the restriction is coming. So now there will be no difference between saffron and bean water. Thus, the metaphor in 'Yanabee' and 'Zahiriyya' is that just as the absence of thinness was considered in them, it should be the same in saffron. Yes, for the purpose of explanation, the phrasing of 'Majma' is noteworthy: if all qualities change, ablution with that water will not be permissible because it no longer remains in its absolute sense, so it is necessary to restrict it with the absence of thinness. Or it can be said that when all qualities change due to a substance like saffron, the name of

water is often lost. Then it would be possible to interpret it according to the meaning described by the author of 'Bahr'. And if it is interpreted as 'some' meaning a single quality, as the commentary's wording strengthens the objection, then this interpretation of the commentary's wording is necessary that...

1 Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Sa'id Company Karachi 1/70.

फतावा रज़विया जिल्द 3

[अरबी पाठ अनुभाग]: एक गुण के बारे में, और तरल मिश्रण करने वाले पदार्थ को देखते हुए भी, इसमें किसी एक गुण के आधार पर वर्चस्व (ग़ल्बा) पूर्णतः सिद्ध नहीं होता है। क्योंकि यदि वह सभी गुणों में पानी के विपरीत है, तो वर्चस्व के लिए उन सभी या अधिकांश का प्रकट होना माना जाएगा। और यदि इसे केवल ठोस पर लागू किया जाए, तो आप हमारे द्वारा स्थापित सिद्धांतों से उस पर होने वाले आक्षेप को जान चुके हैं—कि इसमें वर्चस्व का विचार पतलेपन के अभाव और बहने की क्षमता के समाप्त होने से होता है, भले ही सभी गुण बदल जाएं जब तक कि उससे 'पानी' का नाम न हट जाए, जैसा कि इसके साथ प्रतिबंध आगे आएगा। तो केसर और लोबिया के पानी में कोई अंतर नहीं होगा। 'अल-यनाबी' और 'अज़-ज़हीरिया' में जो रूपक है, जैसे उसमें पतलेपन के अभाव का विचार किया गया है, वैसे ही केसर में भी किया जाना चाहिए। हाँ, 'अल-मजमा' की शब्दावली में समझने के संदर्भ में विचार करने की आवश्यकता है कि यदि सभी गुण बदल जाएं तो उससे वज़ू जायज़ नहीं होगा, क्योंकि यह अपने पूर्ण अर्थ पर नहीं है, अतः इसे पतलेपन के अभाव से प्रतिबंधित करना चाहिए। या यह कहा जाए कि जब केसर जैसी चीज़ से सभी गुण बदल जाते हैं, तो अक्सर उससे पानी का नाम मिट जाता है। इस प्रकार, आपके लिए इसे स्थापित सिद्धांत पर आधारित करने की संभावना स्पष्ट हो गई है। और यदि इसे इस आधार पर लिया जाए कि 'कुछ' से तात्पर्य एक ही गुण है, जैसा कि इसकी व्याख्या की शब्दावली से स्पष्ट है, तो आक्षेप प्रबल हो जाता है। इसलिए व्याख्या में जो कुछ है उसकी यह व्याख्या करना आवश्यक है कि केवल एक परिवर्तन का इरादा नहीं है, या 'या' (ओ) 'और' (वाव) के अर्थ में है, जिससे बात व्यवस्थित हो जाए। और अल्लाह तआला ही प्रेरणा देने वाला है। समाप्त।

[उर्दू पाठ अनुभाग]: ...वर्चस्व हो; तेज़ मिलने वाली तरल चीज़ को देखते हुए तो एक गुण के प्रकट होने से किसी भी स्थिति में वर्चस्व सिद्ध नहीं होता, क्योंकि जब वह वस्तु सभी गुणों में पानी के विपरीत हो, तो वर्चस्व के लिए सभी या अधिकांश गुणों का प्रकट होना विश्वसनीय होगा। और यदि हम इसे केवल ठोस पर लागू करें तो आप हमारी चर्चा से उस पर होने वाले आक्षेप को जान चुके हैं: कि इसमें वर्चस्व का आधार पतलेपन के लुप्त होने और बहने की क्षमता समाप्त होने से है, भले ही सभी गुण बदल जाएं जब तक कि उससे पानी का नाम न छिन जाए जैसा कि प्रतिबंध आने वाला है। तो अब केसर और लोबिया के पानी में कोई अंतर नहीं होगा। अतः'यनाबी' और 'ज़हीरिया' में जो रूपक है कि जैसे उसमें पतलेपन के न होने का विचार किया गया है वैसे ही केसर में भी होना

चाहिए। हाँ, समझाने के लिहाज़ से 'मजमा' की इबारत विचारणीय है कि यदि सभी गुण बदल जाएं तो उस पानी से वज़ू जायज़ नहीं होगा क्योंकि यह अपनी पूर्णता पर नहीं रहा, तो इसे पतलेपन के अभाव से प्रतिबंधित करना आवश्यक है। या यह कहा जाए कि जब केसर जैसी चीज़ से सभी गुण बदल जाते हैं, तो अक्सर पानी का नाम मिट जाता है। तब 'बहर' वाले की इबारत के वर्णित अर्थ पर आधारित करना संभव हो जाएगा। और अगर इसे इस तरह लिया जाए कि 'कुछ' से तात्पर्य एक गुण है, जैसा कि व्याख्या की शब्दावली आक्षेप को पुष्ट करती है, तो फिर व्याख्या की शब्दावली की यह व्याख्या आवश्यक है कि...

1 मिन्हात अल-खालिक अलल बहर अर-राइक, किताबुत तहारत, सईद कंपनी कराची 1/70 पृष्ठ 202 / 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

[عربی عبارت]: عن وصف واحد وایضاً بالنظر الی المخالط المائع لاتثبت الغلبة فیه بوصف واحد مطلقاً فانه اذا کان مخالفاً للماء فی کل الاوصاف یعتبر ظهورها کلها او اکثرها وان حمل علی الجامد فقط فقد علمت مما قررناه مایرد علیه من انه یعتبر فیه انتفاء الرقة والسیلان وان تغیرت الاوصاف کلها مالم یزل عنه اسم الماء کما یاتی التقیید به فلافرق بین الزعفران وبین ماء الباقلاء والمجاز الذی فی الینابیع والظهیریة فکما اعتبر فیه انتفاء الرقة فلیعتبر فی الزعفران نعم فی عبارة المجمع تأمل من حیث افهامها انه لوتغیر الاوصاف کلها لایجوز الوضو به فانه لیس علی اطلاقه فیقید بانتفاء الرقة اویقال اذا تغیرت الاوصاف کلها بنحو الزعفران یزول اسم الماء عنه غالباً فقد ظهر لك امکان حملها علی ما قرره وان حملها علی ان المراد بالبعض الواحد کما هو ظاهر عبارة شرحه یقوی الاشکال فیجب تأویل مافی شرحه علی انه لیس المراد تغییر واحد فقط اوعلی ان او بمعنی الواو فینتظم الکلام واللہ تعالی ولی الالهام اهـ

[اردو عبارت]: غلبہ ہو، تیز ملنے والی مائع شے کو دیکھتے ہوئے تو ایک وصف کے ظاہر ہونے سے کسی صورت میں غلبہ ثابت نہیں ہوتا، کیونکہ جب وہ شے تمام اوصاف میں پانی کے مخالف ہو، تو تمام یا اکثر اوصاف کا ظہور غلبہ کیلئے معتبر ہوگا، اور اگر اسے فقط جامد پر محمول کریں تو آپ کو ہماری گفتگو کے ذریعہ اس پر وارد ہونے والا اعتراض معلوم ہے کہ اس میں غلبہ کا اعتبار پتلے پن کے زوال اور بہنے کی صلاحیت ختم ہونے سے ہوتا ہے اگرچہ تمام اوصاف بدل جائیں جب تک اس سے پانی کا نام سلب نہ ہو جائے جیسا کہ قید آرہی ہے تو اب زعفران اور لوبیا کے پانی میں کوئی فرق نہ ہوگا پس وہ مجاز جو ینابیع اور ظہریہ میں ہے کہ جیسے اس میں پتلا پن کے نہ ہونے کا اعتبار کیا ہے یونہی زعفران میں بھی ہونا چاہئے ہاں سمجھانے کے اعتبار سے

مجمع کی عبارت قابل غور ہے کہ اگر تمام اوصاف بدل جائیں تو اس پانی سے وضو جائز نہ ہوگا کیونکہ یہ اپنے اطلاق پر نہیں رہا تو اسے پتلاپن کے نہ ہونے سے مقید کرنا ضروری ہے یا یہ کہا جائے کہ جب زعفران جیسی شے سے جملہ اوصاف بدل جائیں تو اس سے اکثر اوقات پانی کا نام زائل ہو جاتا ہے تو بحر والے کی عبارت کے بیان کردہ مفہوم پر محمول کرنا ممکن ہو جائے گا، اور اگر اس کو اس پر محمول کیا جائے کہ بعض سے مراد ایک وصف ہے جیسا کہ شرح کی عبارت اعتراض کو قوی بناتی ہے تو پھر شرح کی عبارت کی یہ تاویل ضروری ہے کہ

1 منحة الخالق على البحر الرائق كتاب الطهارة سعيد كمپنی كراچی ۱/۷۰ صفحہ 202 از 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

I say: Firstly (1) the hadith of understanding, we have explained its state to you. Secondly: (2) it became unclear to him, may Allah the Almighty have mercy on him, concerning the dominance of water, about which there is discussion of the assembly, for often in his speech, the attribute of water is by the dominance of the mixing substance. So he said, looking at the liquid mixing substance, dominance is not established in it by a single attribute absolutely, etc... Rather, he should have said, looking at the liquid mixing substance, the dominance of water does not remain after the change of a single attribute absolutely; for if it does not oppose water except in two attributes and changes one, then it has dominated over the water. Thirdly (3) the summary of what he prolonged, may Allah the Almighty have mercy on him, after its correction with what we mentioned, is that the benefit of the phrase based on this interpretation is: the dominance of the mixing substance occurs when it changes more than one attribute, and the dominance of water occurs when it changes one attribute. This is by explicit text, and that is by implication. The first is absolutely invalid for a solid substance, and it must be intended even within the scope of generality because of his saying 'like saffron', for the criterion in it is thinness, even if it changes all the attributes entirely. And the second is invalid for a liquid that does not oppose except...

(Note: The right column provides the Urdu explanation of the Arabic text.)

What is meant is not just the change of one attribute, or "or" (au) is in the sense of "and" (wao), then the statement will be correct, and Allah Almighty is the Inspirer. (T) I say, firstly (1) the state of the matter to explain has been explained to you by us. Secondly (2) the nature of dominance of the water, about which the assembly is talking, remained ambiguous to Shami, may Allah have mercy on him, because with him, it often means water over which some liquid substance becomes dominant after being mixed, and regarding that, he said that in view of the liquid substance being mixed, dominance is not established absolutely by virtue of one attribute, etc. In reality, he should have said it like this: that seeing the liquid thing being mixed, the dominance of water absolutely does not remain with the change of one attribute, because if the thing is opposite in only two attributes of water and changes one attribute, the dominance of water will be gone. Thirdly (3) even after the correction of the text we mentioned, the summary of his long discourse is that if carried on this situation, the meaning of the phrase is that the dominance of the mixed thing will occur when most attributes of water change and water's dominance will be counted

when one attribute changes; the second is known from the words, the first from the meaning. The first is absolutely invalid in solid, although it may be within the scope of generality, but taking it as the meaning is necessary because he said 'like saffron', in which the basis is on thinness even if it changes all the attributes.

फतावा रज़विया, खंड 3

मैं कहता हूँ: पहले (1) समझ की हदीस, हमने आपको उसकी स्थिति समझा दी है। दूसरे: (2) उन पर, अल्लाह तआला उन पर रहम करे, पानी की प्रधानता के बारे में भ्रम हो गया, जिसके बारे में मजलिस की चर्चा है, क्योंकि अक्सर उनके कलाम में पानी की विशेषता मिश्रित वस्तु की प्रधानता से होती है। तो उन्होंने तरल मिश्रित वस्तु को देखते हुए कहा कि इसमें केवल एक गुण के आधार पर पूर्णतः प्रधानता स्थापित नहीं होती है आदि... बल्कि उनका हक यह था कि वह कहते, तरल मिश्रित वस्तु को देखते हुए, एक गुण के पूर्णतः बदल जाने के बाद पानी की प्रधानता शेष नहीं रहती; क्योंकि यदि वह पानी का केवल दो गुणों में विरोध करती है और एक को बदल देती है, तो वह पानी पर हावी हो गई है। तीसरे (3) उन्होंने जो विस्तार से कहा, अल्लाह तआला उन पर रहम करे, हमारे द्वारा बताए गए सुधार के बाद उसका सारांश यह है कि इस व्याख्या के आधार पर इबारत का लाभ यह है: मिश्रित वस्तु की प्रधानता तब होती है जब वह एक से अधिक गुणों को बदल देती है, और पानी की प्रधानता तब होती है जब वह एक गुण बदलती है। यह स्पष्ट शब्दों (मंतूक) से है और वह अर्थ (मफहूम) से। पहला ठोस (जामिद) में पूर्णतः अमान्य है, और सामान्यता के अंतर्गत भी इसका इरादा करना आवश्यक है क्योंकि उन्होंने 'जैसे केसर' कहा है, क्योंकि इसमें आधार पतलापन है, भले ही वह पूरी तरह से सभी गुणों को बदल दे। और दूसरा तरल के लिए अमान्य है जो केवल... का विरोध नहीं करता है।

तात्पर्य केवल एक गुण का परिवर्तन नहीं है या "या" (अऊ) "और" (वाओ) के अर्थ में है तो कथन सही हो जाएगा, और अल्लाह तआला प्रेरणा (इल्हाम) देने वाला है। (त) मैं कहता हूँ पहले (1) तो समझाने की बात का हाल तो हमने आपको समझा दिया। दूसरे (2) जिस पानी की प्रधानता के बारे में मजलिस वाला बात कर रहा है, शामी (अलैहिर्रहमा) पर प्रधानता का प्रकार संदिग्ध रहा क्योंकि उनके यहाँ अक्सर वह पानी मुराद होता है जिस पर कोई तरल वस्तु मिलने के बाद हावी हो जाए और उसके बारे में कहा है कि मिलने वाली तरल वस्तु के मद्देनजर पूर्णतः एक गुण के कारण प्रधानता सिद्ध नहीं होती आदि... असल में तो उन्हें यूँ कहना चाहिए था कि मिलने वाली तरल वस्तु को देखते हुए पानी की प्रधानता एक गुण के बदलने से कतई बाकी नहीं रहती क्योंकि अगर वस्तु पानी के केवल दो गुणों में विपरीत हो और एक गुण को बदल दे तो पानी की प्रधानता चली जाएगी। तीसरे (3) इबारत की वह शुद्धि जो हमने उल्लेख की है उसके बाद भी उनकी लंबी चर्चा का सारांश यह है कि इस स्थिति पर महमूल करें तो इबारत का अर्थ यह है कि मिलने वाली वस्तु की प्रधानता तब होगी जब पानी के

अधिकांश गुण बदल जाएं और पानी की प्रधानता तब गिनी जाएगी जब एक गुण बदले; दूसरे शब्दों से, पहले अर्थ से ज्ञात होता है। पहला ठोस (जामिद) में पूर्णतः गलत है हालाँकि सामान्यता (उमूम) के अंतर्गत हो मगर उसका मुराद लेना ज़रूरी है क्योंकि उन्होंने 'जैसे केसर' कहा है जिसमें आधार पतलापन है हालाँकि सभी गुणों को ही बदल डाले।

पृष्ठ 756 में से 203

اقول: اولاً (۱) حدیث الافہام افھمناک حالہ۔ وثانیاً: (۲) اشتبہ علیہ رحمہ اللہ تعالی غلبۃ الماء الذی فیہ کلام المجمع فان غالباً فی کلامہ صفۃ الماء بغلبۃ المخالط فقال بالنظر الی المخالط المائع لا تثبت الغلبۃ فیہ بوصف واحد مطلقاً الخ۔۔۔ وانما حقہ ان یقول بالنظر الی المخالط المائع لا تبقی غلبۃ الماء بعد تغیر وصف واحد مطلقاً فانہ اذالم یخالف الماء الا فی وصفین فغیر واحدا فقد غلب علی الماء۔ وثالثاً (۳) حاصل ما اطال بہ رحمہ اللہ تعالی بعد تصحیحہ بما ذکرا ان مفاد العبارۃ علی ھذا الحمل غلبۃ المخالط اذا غیر اکثر من وصف والماء اذا غیر وصفاً واحداً ھذا بالمنطوق و ذاک بالمفھوم والاول باطل فی الجامد مطلقاً ولا بد من ارادتہ ولو فی ضمن العموم لقولہ کزعفران فان المناط فیہ الرقۃ وان غیر الاوصاف طرا والثانی باطل فی مائع لا یخالف الا

مراد فقط ایک وصف کی تبدیلی نہیں یا "او" بمعنی "واؤ" کے ہے تو کلام درست ہو جائے گا، اور اللہ تعالیٰ الہام کرنے والا ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں اولاً (۱) تو سمجھانے کی بات کا حال تو ہم نے آپ کو سمجھا دیا۔ ثانیاً (۲) جس پانی کے غلبہ میں مجمع والا گفتگو کر رہا ہے شامی علیہ الرحمۃ پر غلبہ کی نوعیت مشتبہ رہی کیونکہ اس کے ہاں اکثر وہ پانی مراد ہوتا ہے جس پر کوئی مائع چیز ملنے کے بعد غالب آجائے اور اس کے متعلق کہا ہے کہ ملنے والی مائع شے کے پیش نظر مطلقاً ایک وصف کی وجہ سے غلبہ ثابت نہیں ہوتا الخ۔۔۔ اصل میں تو اسے یوں کہنا چاہئے تھا کہ ملنے والی مائع شئ کو دیکھتے ہوئے پانی کا غلبہ ایک وصف کی تبدیلی سے قطعاً باقی نہیں رہتا کیونکہ اگر شے پانی کے صرف دو وصفوں میں مخالف ہو اور ایک وصف کو تبدیل کر دے تو پانی کا غلبہ جاتا رہے گا۔ ثالثاً (۳) عبارت کی وہ تصحیح جو ہم نے ذکر کی ہے اس کے بعد بھی اس کی طویل گفتگو کا ماحصل یہ ہے کہ اس صورت پر محمول کریں تو عبارت کا مطلب یہ ہے کہ ملنے

والی شئ کا غلبہ تب ہوگا جب پانی کے اکثر اوصاف بدل جائیں اور پانی کا غلبہ تب شمار ہوگا جب ایک وصف بدلے ثانی الفاظ سے اول مفہوم سے معلوم ہوتا ہے۔ پہلا جامد میں مطلقاً باطل ہے اگرچہ عموم کے ضمن میں ہو مگر اس کا مراد لینا ضروری ہے کیونکہ اس نے کزعفران کہا ہے جس میں مدار پتلے پن پر ہے اگرچہ تمام اوصاف کو ہی بدل ڈالے

صفحہ 203 از 756

Fatawa Rizvia, Volume 3

In two descriptions, it predominates if it changes one description.

I say: The objection regarding liquids arises from overlooking the method followed here by the regulating Imam, followed by the author of Al-Bahr. Both of them interpret every absolute term in the texts as a specific case. Just as they interpreted the dependency on thinness (liquidity) as applying to solids, without the objection being raised that liquids can be preventative even while thinness remains. And just as they interpreted predominance by parts as applying to compatible liquids, without the objection being raised that this rule breaks with others. And they interpreted the prohibition due to the change of one description as applying to a liquid that differs in one or two descriptions, without the objection being raised about those that differ in three. Similarly, if they interpret prohibition by more than one description as applying to those that differ in three, how can an objection be raised about those that differ in two descriptions? (1) Indeed, you have accepted this in the texts of Al-Quduri, Al-Kanz, and Al-Mukhtar, and you did not prohibit it in the text of Al-Majma'.

Regarding the matter of specificity and generality, I say: (2) it is possible for the author of Al-Bahr to choose generality, and the two objections (3) would not apply. For sometimes a restriction is mentioned to maintain the general sense, not to negate anything else, as in the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny): Al-Hasan and Al-Husayn...

And the second is void in that liquid which differs in only two descriptions, because if even one description changes in it, it predominates over the water. (T)

I say that the objection here regarding liquids is based on negligence of the path taken by the regulating Imam, and the author of Al-Bahr also followed him. Because both of them interpret every absolute statement in the texts as a specific case. For example, they interpret the restriction by thinness as applying to solids, although no objection was raised that liquid things can also be preventative despite remaining thin. And just as they interpreted predominance in a compatible liquid as predominance of parts, and no objection was raised that this rule breaks when the liquid is incompatible. And in that liquid which differs from water in one or two descriptions, they interpreted the prohibition of ablution on the change of one description, and no objection was raised about it differing in three descriptions. Likewise, when they interpreted prohibition in the case of differing in three

descriptions as change in more than one description, how then will the objection of the liquid differing in two descriptions being preventative occur? Even though you have accepted it in the texts of Quduri, Kanz, and Mukhtar, then why did you prohibit it in the text of Majma'? (T) Regarding the talk of specificity and generality, I say that there is room for the author of Al-Bahr to adopt generality, so now both objections will not occur because sometimes a restriction is mentioned to maintain the generality, not to negate what is besides it, as...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

दो गुणों में, यदि यह एक गुण को बदल दे तो यह प्रबल हो जाता है।

मैं कहता हूँ: द्रवों के संबंध में आपत्ति यहाँ विनियमित इमाम द्वारा अपनाए गए मार्ग की उपेक्षा से उत्पन्न होती है, जिसका अनुसरण अल-बहर के लेखक ने भी किया है। वे दोनों ग्रंथों में प्रत्येक निरपेक्ष शब्द को एक विशिष्ट मामले के रूप में व्याख्यायित करते हैं। जिस तरह उन्होंने तरलता पर निर्भरता को ठोस पदार्थों पर लागू किया, बिना इस आपत्ति के कि तरल पदार्थ तरलता बने रहने के बावजूद भी निवारक हो सकते हैं। और जैसे उन्होंने भागों द्वारा प्रबलता को संगत द्रवों पर लागू किया, बिना इस आपत्ति के कि यह नियम दूसरों के साथ टूट जाता है। और उन्होंने एक गुण के परिवर्तन के कारण निषेध को उस द्रव पर लागू किया जो एक या दो गुणों में भिन्न होता है, बिना उन पर आपत्ति किए जो तीन गुणों में भिन्न होते हैं। इसी तरह, यदि वे तीन गुणों में भिन्न होने वालों पर एक से अधिक गुणों के परिवर्तन द्वारा निषेध की व्याख्या करते हैं, तो दो गुणों में भिन्न होने वालों के बारे में आपत्ति कैसे उठाई जा सकती है? (1) वास्तव में, आपने इसे अल-कुदुरी, अल-कंज, और अल-मुख्तार के पाठों में स्वीकार किया है, और आपने इसे अल-मजमा' के पाठ में नहीं रोका।

विशिष्टता और व्यापकता के मामले में, मैं कहता हूँ: (2) अल-बहर के लेखक के लिए व्यापकता को चुनना संभव है, और दो आपत्तियाँ (3) लागू नहीं होंगी। क्योंकि कभी-कभी व्यापक अर्थ को बनाए रखने के लिए एक प्रतिबंध का उल्लेख किया जाता है, न कि इसके अलावा किसी अन्य चीज़ को नकारने के लिए, जैसा कि पैगंबर (उन पर और उनके वंश पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) के कथन में है: अल-हसन और अल-हुसैन...

और दूसरा उस द्रव में शून्य है जो केवल दो गुणों में भिन्न है, क्योंकि यदि उसमें एक भी गुण बदल जाता है, तो वह पानी पर प्रबल हो जाता है। (त)

मैं कहता हूँ कि द्रवों के संबंध में यहाँ आपत्ति विनियमित इमाम के आचरण के तरीके से अनभिज्ञता के कारण है और साहिब-ए-बहर ने भी उनका अनुसरण किया है। क्योंकि वे दोनों ग्रंथों में प्रत्येक निरपेक्ष को एक विशेष रूप पर लागू करते हैं। जैसे वे पतलेपन से बंधे हुए को ठोस पर लागू करते हैं, हालांकि इस पर यह आपत्ति नहीं की गई कि तरल वस्तुएं पतलापन बने रहने के बावजूद भी बाधक हो जाती हैं। और जैसा कि उन्होंने संगत द्रव में प्रबलता को भागों की प्रबलता पर लागू किया है और इस पर यह आपत्ति नहीं की गई कि यह नियम तब टूट जाता है जब द्रव असंगत हो। और उन्होंने उस

द्रव में जो पानी से एक या दो गुणों में भिन्न हो, वज़ू से निषेध को एक गुण के परिवर्तन पर लागू किया है और इस पर तीन गुणों के भिन्न होने की आपत्ति नहीं की। इसी तरह जब उन्होंने तीन गुणों में भिन्न होने की स्थिति में निषेध को एक से अधिक गुणों के परिवर्तन पर लागू किया है, तो उस पर दो गुणों में भिन्न बाधक वाली आपत्ति कैसे आएगी? बावजूद इसके कि आप कुदुरी, कंज और मुख्तार के उद्धरणों में इसे स्वीकार कर चुके हैं, तो मजमा' के उद्धरण में इसे क्यों मना कर दिया? (त) रही विशिष्टता और व्यापकता की बात, तो मैं कहता हूँ कि साहिब-ए-बहर के लिए यह गुंजाइश है कि वे व्यापकता को अपनाएं तो अब दोनों आपत्तियां नहीं आएंगी क्योंकि कभी-कभी व्यापकता को बनाए रखने के लिए प्रतिबंध का उल्लेख किया जाता है, न कि उसके अलावा की नफी (अस्वीकरण) के लिए, जैसा कि...

في وصفين فأنه يغلب اذا غير وصفا -

اقول : الاعتراض بالمائع ذهول عن سنن سلكه ههنا الامام الضابط واقتفى اثره البحر فانهما حملا كل مطلق في النصوص على صورة خاصة فكما حملا النوط بالرقة على الجامد ولم يرد عليه ان المائعات تمنع مع بقاء الرقة وحملا الغلبة بالاجزاء على المائع الموافق ولم يرد عليه انه منقوض بغيره وحملا المنع بتغير وصف واحد على مائع يخالف في وصف او وصفين ولم يرد عليه النقض بما يخالف في الثلاث فكذا اذا حملا المنع باكثر من وصف على ما يخالف في الثلاث كيف يرد عليه النقض بالمخالف في وصفين (۱) وقد قبلتموه في عبارة القدورى والكنز والمختار ولم تمنعونہ في عبارة المجمع -

بقى حديث الخصوص والعموم فأقول (۲) للبحر ان يختار العموم ولا يرد الايرادان (۳) فان التقييد ربما يكون حفظاً للعلوم لالنفي ماعداه كقولہ صلى الله تعالىٰ عليہ وسلم الحسن والحسين

اور دوسرا اس مائع میں باطل ہے جو صرف دو اوصاف میں مخالف ہو کیونکہ اس میں ایک بھی وصف بدل جانے سے وہ پانی پر غالب آجاتا ہے۔ (ت)

میں کہتا ہوں کہ مائع کے ذریعے یہاں اعتراض امام ضابطہ کے طریق سلوک سے غفلت کی بناء پر ہے اور صاحبِ بحر نے بھی اس کی پیروی کی ہے کیونکہ یہ دونوں ہر مطلق کو نصوص میں ایک خاص صورت پر محمول کرتے ہیں جیسا کہ یہ پتلے پن سے مقید کو جامد پر محمول کرتے ہیں حالانکہ اس پر یہ اعتراض نہیں کیا کہ مائع اشیاء تو پتلا پن باقی رہنے کے باوجود بھی مانع ہو جاتی ہیں، اور جیسا کہ انہوں نے مائع موافق میں غلبہ کو اجزاء کے غلبہ پر محمول کیا ہے اور اس پر یہ اعتراض نہیں کیا کہ یہ قاعدہ ٹوٹ جاتا ہے جب مائع غیر موافق ہو اور انہوں نے اس مائع

میں جو پانی سے ایک یا دو اوصاف میں مخالف ہو وضو سے ممانعت کو ایک وصف کی تبدیلی پر محمول کیا ہے اور اس پر تین اوصاف کے مخالف ہونے کا اعتراض نہیں کیا، یونہی جب انہوں نے تین اوصاف میں مخالف ہونے کی صورت میں ممانعت کو ایک سے زیادہ وصف کی تبدیلی پر محمول کیا ہے تو اس پر دو اوصاف میں مخالف مانع والا اعتراض کیونکر وارد ہوگا با وجودیکہ آپ قدوری، کنز اور مختار کی عبارات میں اسے قبول کر چکے ہیں تو مجمع کی عبارت میں اسے کیوں منع کردیا ؟ (ت) رہی خصوص و عموم کی بات، تو میں کہتا ہوں کہ صاحب بحر کیلئے یہ گنجائش ہے کہ وہ عموم کو اختیار کریں تو اب دونوں اعتراض وارد نہ ہوں گے کیونکہ بعض اوقات قید کو عموم کے برقرار رکھنے کیلئے ذکر کیا جاتا ہے ماعدا کی نفی کیلئے نہیں جیسا کہ

Fatawa Rizvia, Volume 3

The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: "Hasan and Husain are the leaders of the youth of Paradise," because among the elders, there were individuals like the four Rightly Guided Caliphs who were superior to them both. This restriction is not actually a restriction for the dominant part; therefore, the meaning would be: we permit ablution (wudu) with water that is dominant over a substance which has changed some of its properties, not with water that has been dominated by a substance that has changed all its properties. Nor is this restriction for the dominated part; the meaning then becomes: we consider ablution permissible with water in which a dominated thing has mixed and changed some of its properties, but not with water where the dominated thing has mixed and changed all its properties, because the corruption in both cases is evident. The reason is that when in both scenarios water is dominant and the mixture is dominated, then without any restriction, ablution with it would be permissible. This is actually an explanation of 'dominated', and the term 'dominance' is only applied when the action of the 'subordinate' remains to some extent. Because if there is no action at all, it would be as if it does not exist, which is called 'diminished' (mudmahil), not 'dominated'. In thinness, the action negates the dominance of water, so only the properties of water remain, unless a solid substance acts upon all properties of water.

---

1 Jami' at-Tirmidhi, Chapters of Merits, Amin Company Delhi, 218/2 Page 205 of 756

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: "हसन और हुसैन जन्नत के नौजवानों के सरदार हैं," क्योंकि बुजुर्गों में चार खलीफाओं जैसे लोग मौजूद थे जो उन दोनों से श्रेष्ठ थे। यह प्रतिबंध वास्तव में प्रभुत्व (गालिब) के लिए प्रतिबंध नहीं है। तो अर्थ यह होगा: हम उस पानी से वज़ू की अनुमति देते हैं जो उस वस्तु पर हावी (गालिब) हो जिसने पानी के कुछ गुणों को बदल दिया हो, न कि उस पानी से जिसने उस वस्तु पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया हो जिसने पानी के सभी गुणों को बदल दिया हो। और न ही यह प्रतिबंध दबे हुए (मगलूब) भाग के लिए है; तो अर्थ यह हुआ कि हम उस पानी से वज़ू को जायज़ मानते हैं जिसमें कोई दबी हुई (मगलूब) चीज़ मिलकर उसके कुछ गुणों को बदल दे, न कि उस पानी के साथ जिसमें दबी हुई चीज़ मिलकर उसके सभी गुणों को बदल दे, क्योंकि इन दोनों स्थितियों में खराबी स्पष्ट है। कारण यह है कि जब दोनों स्थितियों में पानी प्रमुख (गालिब) और मिश्रण दबा हुआ (मगलूब) है, तो बिना किसी प्रतिबंध के उससे वज़ू जायज़ होगा। यह वास्तव में 'मगलूब' (दबे हुए) का स्पष्टीकरण है और प्रभुत्व (गलबा) का शब्द तभी लागू होता है जब 'मर्जू' (अधीन) का प्रभाव भी किसी हद तक बना रहे। क्योंकि पूरी तरह से प्रभाव न होने की स्थिति में, वह न होने के बराबर होगा जिसे 'मुज़महिल' (क्षीण) कहा जाएगा, 'मगलूब' नहीं। और पतलेपन में प्रभाव पानी के प्रभुत्व को नकार देता है, तो केवल पानी के गुण ही रह जाएंगे, सिवाय इसके कि कोई ठोस वस्तु पानी के सभी गुणों पर प्रभाव डाले।

---

1 जामे-उत-तिर्मिज़ी, अबवाबुल मुनाकिब, अमीन कंपनी दिल्ली, 218/2 पेज 756 का 205

آن حضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا حسن و حسین جنت کے نوجوانوں کے سردار ہیں، کیونکہ بزرگوں میں خلفائے اربعہ جیسے لوگ دونوں سے افضل موجود تھے۔ یہ قید در حقیقت غالب کیلئے قید نہیں ہے تو معنیٰ یہ ہوگا کہ ہم اس پانی سے وضو کی اجازت دیتے ہیں جو اس شئی پر غالب ہو جس نے پانی کے بعض اوصاف کو تبدیل کیا ہو، نہ اس پانی سے جس نے اس شئی پر غلبہ حاصل کیا ہو جس نے پانی کے جملہ اوصاف میں تبدیل کر دئے ہوں نہ ہی مغلوب کیلئے یہ قید ہے تو معنیٰ یہ ہوا کہ ہم اس پانی سے وضو کو جائز رکھتے ہیں جس میں کوئی مغلوب شے مل کر اس کے بعض اوصاف کو تبدیل کر دے نہ اس پانی کے ساتھ جس میں مغلوب ملے اور اس کے جملہ اوصاف کو بدل دے کیونکہ ان دونوں کا فساد ظاہر ہے۔ وجہ یہ ہے کہ جب دونوں صورتوں میں پانی غالب اور مخالط مغلوب ہے، تو بغیر کسی قید کے اس سے وضو جائز ہوگا تو یہ دراصل مغلوب کی وضاحت ہوگی اور غلبہ کا اطلاق ہوتا ہی تب ہے جب مرجوع کا عمل بھی کسی حد تک باقی ہو کیونکہ بالکل عمل نہ ہونے کی صورت میں وہ نہ ہونے کے برابر ہوگا جو مضمحل کہلائے گا مغلوب نہیں کہلائے گا اور پتلے پن میں عمل پانی کے غلبہ کی نفی کر دیتا ہے تو پانی کے صرف اوصاف ہی رہ جائیں گے مگر یہ کہ جامد چاہے پانی کے تمام اوصاف میں بھی عمل کرے

---

1 جامع للترمذی ابواب المناقب امین کمپنی دہلی ۲/۲۱۸ Page 205 of 756

Fatawa Razawiya Volume 3

[Arabic Text Column]: The solid, even if it is overcome despite affecting the whole, whereas the liquid, if it affects two attributes, becomes dominant. Therefore, it is necessary to intend 'some' (attributes) in the case of one to correctly depict the general state of being overcome for both types. This applies absolutely to solids, and to liquids if they differ in all attributes. The counter-argument involving another liquid is not applicable, as you know, because this is the path they followed and which you and others have accepted in every instance. Furthermore, this is a conceptualization, and conceptualization only requires the existence of a form that fits the description without necessarily encompassing all individuals. This is my interpretation of the words of 'al-Bahr'. Fourthly: (1) By this, it is known that intending 'one' does not strengthen the problem; rather, under this assumption, it resolves it. If (2) a more general meaning were intended, the difficulty would increase, as the literal meaning would imply water's dominance if it changes due to a liquid with two attributes, which has no validity according to the rules at all. Fifthly: If we base the discussion (3) on what preceded...

[Urdu Text Column]: Volume 3 ...it remains overcome as long as the water remains thin. So, if this specific solid were intended, it would have been enough to say it changes the attributes. There was no need to place a restriction of 'some'. Thus, it is known that the author of 'Majma' wanted to present a combined picture of both, and the effect in this water, where it applies to both overcome solids and liquids, is nothing but effect in one attribute. Because a solid remains overcome even after affecting all attributes, whereas a liquid becomes dominant after affecting two attributes. So, it became necessary that 'one' refers to 'some' so that the picture of general dominance for both categories is correct. This general state of being overcome exists absolutely in solids, whereas in liquids, it exists when all attributes differ. Thus, no objection regarding a non-conforming liquid would apply. As you know, because it is contrary to their designated path. And you yourself and other people have accepted this everywhere. Moreover, this is a depiction where the existence of a form is necessary so that where its depiction is described, it can be true; it does not seek to encompass all individuals. This is the interpretation of the words of 'Bahr al-Ra'iq' according to me. (T) Fourthly: (4) From this, it is known that intending 'one' does not make the problem strong, but rather defends against objections. In the case of a general meaning, difficulty increases because the words of the text would then mean that water's dominance occurs only when there is a

change from a liquid with two attributes, and this is in no way correct according to the rules. (T) Fifthly: (5) If we base the objection on the author of 'Bahr'...

Page 206 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[अरबी पाठ स्तंभ]: ठोस पदार्थ, भले ही वह पूरे में प्रभाव डालने के बावजूद अभिभूत (मगलूब) रहे, लेकिन तरल पदार्थ यदि दो गुणों में प्रभाव डाले तो वह हावी हो जाता है। इसलिए, 'एक' के साथ 'कुछ' का अर्थ लेना आवश्यक है ताकि दोनों श्रेणियों के लिए अभिभूत होने की सामान्य स्थिति का चित्रण सही हो सके। यह ठोस पदार्थों के मामले में पूर्णतः लागू होता है, और तरल पदार्थों के मामले में तब जब वे सभी गुणों में भिन्न हों। किसी अन्य तरल के साथ प्रतिवाद लागू नहीं होता, जैसा कि आप जानते हैं, क्योंकि यही वह मार्ग है जिस पर वे चले और जिसे आपने और अन्य लोगों ने हर स्थान पर स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त, यह एक चित्रण (तस्वीर) है, और चित्रण के लिए केवल एक ऐसी स्थिति के अस्तित्व की आवश्यकता होती है जहाँ चित्रण करने वाला खरा उतरे; यह सभी व्यक्तियों को शामिल करने का दावा नहीं करता। 'अल-बहर' के शब्दों के बारे में मेरी यही व्याख्या है। चौथा: (1) इससे ज्ञात होता है कि 'एक' का इरादा करने से समस्या बढ़ती नहीं है, बल्कि इस धारणा के साथ उसका समाधान होता है। यदि (2) अधिक व्यापक अर्थ लिया जाता, तो कठिनाई बढ़ जाती, क्योंकि तब शब्दों का अर्थ यह होता कि पानी का प्रभुत्व तब होगा जब वह दो गुणों वाले तरल से बदल जाए, जिसका नियमों के अनुसार कोई आधार नहीं है। पाँचवाँ: यदि हम चर्चा को (3) पूर्ववत बातों पर आधारित करें...

[उर्दू पाठ स्तंभ]: जिल्द 3 ...अभिभूत ही रहता है जब तक पानी पतला रहेगा। तो यदि यही ठोस विशेष रूप से उसका उद्देश्य था, तो इतना कहना ही पर्याप्त था कि वह गुणों को बदल दे। 'कुछ' की शर्त लगाने की आवश्यकता नहीं थी। तो ज्ञात हुआ कि 'मजमा' के लेखक दोनों का एक साथ चित्रण करना चाहते हैं और इस पानी में प्रभाव, जिसमें अभिभूत ठोस और तरल दोनों शामिल हों, एक गुण में प्रभाव के अलावा कुछ नहीं है। क्योंकि ठोस सभी गुणों में प्रभाव डालने के बाद भी अभिभूत रहता है, जबकि तरल दो गुणों में प्रभाव डालने के बाद हावी हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक हुआ कि 'एक' से तात्पर्य 'कुछ' हो ताकि दोनों श्रेणियों के लिए सामान्य अभिभूत होने की स्थिति का चित्रण सही हो। और यह सामान्य स्थिति ठोस में पूर्णतः होती है जबकि तरल में सभी गुणों के भिन्न होने पर होती है। अतः इस पर किसी गैर-अनुकूल तरल का आक्षेप लागू नहीं होगा। जैसा कि आप जानते हैं, क्योंकि यह उनके निर्धारित मार्ग के विरुद्ध है। और स्वयं आपने और अन्य लोगों ने भी इसे हर जगह स्वीकार किया है। इसके अलावा, यह वह चित्रण है जहाँ स्वरूप का अस्तित्व आवश्यक है ताकि जहाँ जिसका चित्रण किया गया है वह सत्य सिद्ध हो सके; यह सभी व्यक्तियों के समावेश की अपेक्षा नहीं

रखता। मेरे निकट 'बहर-उर-रायक़' के शब्दों की यही व्याख्या है। (त) चौथा: (4) इससे ज्ञात हुआ कि 'एक' के इरादे से समस्या प्रबल नहीं होती बल्कि आक्षेप का बचाव होता है और सामान्य अर्थ होने की स्थिति में कठिनाई बढ़ जाती है कि इस सूरत में कलाम के शब्द यह होंगे कि पानी का प्रभुत्व तब होगा जब उसमें दो गुणों वाले तरल से परिवर्तन हो और यह नियम के अनुसार किसी भी तरह सही नहीं है। (त) पाँचवाँ: (5) यदि हम आक्षेप का आधार 'बहर' के लेखक को...

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

[عربی متن کا کالم]: الجامد وان کان مغلوباً مع العمل فی الکل لکن المائع اذا عمل فی وصفین غلب فوجب ان یراد بالبعض الواحد لیصح تصویر المغلوبیة العامة للصنفین وذلك فی الجامد مطلقاً وفی المائع اذا خالف فی الاوصاف جمیعاً ولا یرد النقض بمائع غیرہ کما علمت انه المهیع الذی سلکاه وقبلتموہ انتم والناس فی کل مقام علا انه تصویر والتصویر انما یستدعی وجود صورة یصدق فیها المصور لاستغراقه جمیع الافراد هذا ما عندی فی توجیه کلام البحر۔ ورابعاً: به (۱) علم ان ارادة الواحد لا یقوی الاشکال بل علی هذا التقدیر به له الانحلال، ولو (۲) ارید الاعم لقوی الاعضال، فانه یکون منطوق الکلام غلبة الماء اذا تغیر بالمائع له وصفان وهذا لا صحة له علی الضابطة اصلا۔ وخامساً: ان بنیینا الکلام (۳) علی ماسبق

[اردو متن کا کالم]: جلد سوم مغلوب ہی رہتا ہے جب تک پانی پتلا رہے گا، تو اگر یہی جامد خصوصی طور پر اس کی مراد تھا، تو اتنا کہنا ہی کافی تھا کہ اوصاف کو بدل دے۔ بعض کی قید لگانے کی ضرورت نہیں تھی۔ تو معلوم ہوا کہ صاحب مجمع دونوں کی اکٹھی تصویر بتانا چاہتے ہیں اور اس پانی میں عمل جس میں مغلوب جامد اور مائع دونوں کے ساتھ آئے، ایک وصف میں عمل کے سوا کچھ نہیں کہ جامد تمام اوصاف میں بھی عمل کر کے مغلوب رہتا ہے جبکہ مائع دو اوصاف میں عمل کر کے غالب ہو جاتا ہے تو یہ ضروری ہوا کہ واحد سے مراد بعض ہوتا کہ مغلوبیت عامہ للصنفین کی تصویر درست ہو، اور یہ مغلوبیت عامہ جامد میں مطلقاً ہوتی ہے جبکہ مائع میں جملہ اوصاف میں مخالف ہونے پر ہوتی ہے تو اس پر غیر موافق مائع کا اعتراض وارد نہیں ہوگا۔ جیسا کہ آپ کو معلوم ہے، کیونکہ ان کی متعین کردہ راہ کے مخالف ہے۔ اور خود تم نے اور دیگر لوگوں نے بھی اس کو ہر جگہ قبول کیا ہے۔ علاوہ ازیں یہ تصویر ہے جہاں وجود

صورت ضروری ہے تاکہ جہاں جس کی تصویر بیان کی گئی ہے وہ صادق آسکے وہ تمام افراد کے احاطہ کو نہیں چاہتی، بحر الرائق کے کلام کی میرے نزدیک یہی توجیہ ہے۔ (ت) رابعاً:(۴) اس سے معلوم ہوا کہ ایک کے ارادہ سے اشکال قوی نہیں ہوتا بلکہ اعتراض کا دفاع ہوتا ہے اور عام مراد ہونے کی صورت میں تنگی بڑھ جاتی ہے کہ بایں صورت کلام کے لفظ یہ ہونگے کہ پانی کا غلبہ تب ہوگا جب اس سے دو وصفوں والے مائع میں تبدیلی ہو اور یہ ضابطہ کے اعتبار سے کسی طرح درست نہیں ہے۔(ت) خامساً:(۵) اگر ہم اعتراض کی بنیاد صاحب بحر

Fatawa Razawiya - Volume 3

(Arabic Text/Left Column): ...to his mind, may Allah the Almighty have mercy on him, in reverse, that the discussion is about the dominance of the mixing substance. No reason for the strength of the objection appeared, for if you say: 'every liquid that changes one or two qualities of water has dominated it,' the objection regarding what opposes water in three qualities would apply to it, just as it applies to the intention of one quality. And if you say: 'every liquid that changes one quality is dominant,' this also would only be rejected for this reason. So they are equal in being problematic. Sixth: (1) Your second interpretation, that by [changing] all qualities through something like saffron, the name of water is usually removed, is contrary to observation. Seventh: (2) It is contrary to the texts, as previously mentioned in the ruling on date-wines (Anbidha) and others. Eighth: (3) Your first interpretation is based specifically on solids, for it is that which you turn the matter upon regarding thinness (liquidity) and its absence. It is known that the tradition of thinness includes both the literal and the conceptual meanings. So, just as a solid that changes all qualities does not prevent [purity] as long as thinness is not negated, similarly, what changes some [qualities] is not suitable [to prevent purity] as long as thinness remains. So it is negated. Note: Because the ruling encompasses the change of one quality, and that which has three qualities is not overcome by it. 12 From him, may He forgive him. (M)

(Urdu Text/Right Column): ...turning the meaning present in the mind [of the author], may Allah the Almighty have mercy on him, and apply it to this: that this discussion is about the dominance of the mixing substance. Then there is no reason for the strength of the objection. Because when you say that every liquid which changes one or two qualities of water will dominate the water, then the objection of the opponent regarding the three qualities necessarily follows, just as it occurs in the case of intending one quality. If you say that every liquid which changes one quality is dominant, then even then the same objection will occur. So these two are equal in being problematic. (T) Sixth (6): Your second interpretation, that the name of water is usually stripped away due to the changing of all the qualities of water with a substance like saffron, is against observation. (T) Seventh (7): It is also against the texts, as passed in the ruling of Nabidh (date-wines). Eighth (8): The basis of your first interpretation is specifically on solids because for you, the matter depends on the existence and non-existence of thinness (liquidity). And it is a known fact that the talk of thinness includes both the apparent and implied cases. So just as despite

changing all the qualities of water, as long as thinness remains, a solid is not a barrier to Wudu. Likewise, when those some... Note: Because the ruling is general to the change of one quality, and one with three qualities is not overcome by it. 12 From him, may He forgive him (T).

(अरबी पाठ/बायां कॉलम): ...उनके मस्तिष्क में, अल्लाह तआला उन पर रहम करे, उलटते हुए कि यह चर्चा मिलाने वाली चीज़ के प्रभुत्व के बारे में है। आपत्ति की शक्ति का कोई कारण नहीं दिखा, क्योंकि यदि आप कहें: 'प्रत्येक तरल जो पानी के एक या दो गुणों को बदल देता है, उस पर हावी हो जाता है,' तो तीन गुणों में पानी के विपरीत होने वाली आपत्ति उस पर लागू होगी, जैसा कि एक गुण के इरादे पर लागू होती है। और यदि आप कहें: 'प्रत्येक तरल जो एक गुण को बदलता है वह हावी है,' तो इसे भी केवल इसी कारण से अस्वीकार किया जाएगा। अतः वे समस्याग्रस्त होने में समान हैं। छठा: (1) आपकी दूसरी व्याख्या, कि केसर जैसी किसी चीज़ के माध्यम से सभी गुणों के बदलने पर आमतौर पर पानी का नाम समाप्त हो जाता है, अवलोकन के विपरीत है। सातवाँ: (2) यह ग्रंथों के विपरीत है, जैसा कि पहले नबीज़ (खजूर की शराब) और अन्य के नियम में बताया गया है। आठवाँ: (3) आपकी पहली व्याख्या विशेष रूप से ठोस पदार्थों पर आधारित है, क्योंकि यही वह है जिस पर आप पतलेपन (तरलता) और उसके अभाव के बारे में मामला घुमाते हैं। यह ज्ञात है कि पतलेपन की परंपरा में शाब्दिक और वैचारिक दोनों अर्थ शामिल हैं। अत; जिस प्रकार सभी गुणों को बदलने के बावजूद जब तक पतलापन समाप्त नहीं होता, एक ठोस पदार्थ [पवित्रता से] नहीं रोकता है, उसी प्रकार जो कुछ [गुणों] को बदलता है वह तब तक [पवित्रता रोकने के लिए] उपयुक्त नहीं है जब तक पतलापन बना रहता है। अतः वह नकार दिया गया। नोट: क्योंकि नियम एक गुण के परिवर्तन को शामिल करता है, और तीन गुणों वाला उससे पराजित नहीं होता है। 12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

(उर्दू पाठ/दायां कॉलम): ...[लेखक] के मस्तिष्क में मौजूद अवधारणा को उलटते हुए, अल्लाह तआला उन पर रहम करे, और इसे इस पर लागू करें कि: यह चर्चा मिलाने वाली चीज़ के प्रभुत्व के बारे में है। तो आपत्ति की शक्ति का कोई कारण नहीं है। क्योंकि जब आप यह कहें कि हर वह तरल जो पानी के एक या दो गुणों को बदल दे, वह पानी पर हावी हो जाएगा, तो उस पर तीन गुणों में विरोधी की आपत्ति अनिवार्य रूप से आती है, जैसा कि एक गुण मुराद लेने की स्थिति में आती है। यदि आप कहें कि हर वह तरल जो एक गुण को बदल दे वह हावी है, तो भी यही आपत्ति आएगी। तो ये दोनों समस्या होने में बराबर हैं। (त) छठा (6): आपकी दूसरी व्याख्या कि केसर जैसी चीज़ के साथ पानी के सभी गुण बदल जाने से अक्सर पानी का नाम छिन जाता है, यह अवलोकन के खिलाफ है। (त) सातवाँ (7): यह ग्रंथों के भी खिलाफ है, जैसा कि नबीज़ के नियम में गुज़रा। आठवाँ (8): आपकी

पहली व्याख्या की बुनियाद विशेष रूप से ठोस पर है क्योंकि आपके यहाँ पतलेपन के अस्तित्व और अनस्तित्व पर मामले का दारोमदार है। और यह बात तो मालूम है कि पतलेपन की बात ज़ाहिरी और ज़िमनी (निहित) दोनों सूरतों को शामिल है। तो जैसे पानी के तमाम औसाफ़ (गुणों) को बदलने के बावजूद जब तक रक़त (पतलापन) बाक़ी रहे, जामिद (ठोस) वज़ू से मानेअ (बाधक) नहीं है। इसी तरह जब वह कुछ... नोट: क्योंकि हुक्म (नियम) एक वस्फ (गुण) के परिवर्तन के लिए आम है और तीन वस्फों वाला उससे मग़लूब (पराजित) नहीं होता। 12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें माफ़ करे (त)।

पृष्ठ 207 / 756

(عربی متن/بایاں کالم): الی ذھنہ رحمہ اللہ تعالی منقلبا ان الکلام فی غلبة المخالط لم یظھر لقوة الاشکال وجہ فانک اذا قلت کل مائع غیر للماء وصفاً او وصفین فقد غلبہ ورد علیه عه مایخالف الماء فی الاوصاف الثلاثة کما ورد علی ارادة الواحد ولو قلت کل مائع غیر وصفاً واحداً غالب لم یرد ایضاً الا ھذا فھما متساویان فی الاشکال۔ وسادسا: (۱) تأویلکم الآخران عند تغیر الاوصاف جمیعاً بنحو الزعفران یزول اسم الماء غالباً خلاف المشاھد۔ وسابعاً: (۲) خلاف النصوص کما تقدم فی حکم الانبذة وغیرھا۔ وثامناً: (۳) مبنی تأویلکم الاول الحمل علی الجامد خاصة اذھو الذی تدیرون فیہ الامر علی الرقة وعدمھا ومعلوم ان حدیث الرقة یعم فیہ المنطوق والمفھوم فکما ان جامدا غیر جمیع الاوصاف لایمنع مالم تنتف الرقة کذلک ماغیر بعضھا لایصلح مالم تبق الرقة فانتفی عه :لان الحکم یعم تغییر وصف واحد وذو الثلثة لایغلب به ۱۲ منہ غفرلہ (م)

(اردو متن/دایاں کالم): کے ذہن رحمہ اللہ تعالیٰ میں موجود مفہوم کو الٹتے ہوئے اس پر رکھیں کہ یہ کلام ملنے والی چیز کے غلبہ کے بارے میں ہے، تو اعتراض کی قوت کی کوئی وجہ نہیں، کیونکہ جب آپ یہ کہیں کہ ہر وہ مائع جو پانی کی ایک یا دو صفتیں بدل دے تو وہ پانی پر غالب آ جائے گا تو اس پر تین اوصاف میں مخالف کا اعتراض لازم آتا ہے جیسے کہ ایک وصف مراد لینے کی صورت میں وارد ہوتا ہے اگر آپ کہیں کہ ہر مائع جو ایک وصف کو بدل دے وہ غالب ہے تو بھی یہی اعتراض وارد ہوگا تو یہ دونوں اشکال میں برابر ہیں۔ (ت) سادساً (۶)، تمہاری دوسری تاویل کہ زعفران ایسی شے کے ساتھ پانی کی جملہ صفات بدل جانے سے اکثر طور پر پانی کا نام سلب ہوتا ہے یہ مشاہدہ کے خلاف ہے۔ (ت) سابعاً (۷) نصوص کے بھی خلاف ہے، جیسا کہ نبیذوں کے حکم میں گزرا۔ ثامناً (۸)، تمہاری پہلی تاویل کی بنیاد علی الخصوص جامد پر

ہے کیونکہ آپ کے ہاں پتلے پن کے وجود اور عدم وجود پر معاملہ کا مدار ہے اور یہ بات تو معلوم ہے کہ پتلے پن کی بات ظاہری اور ضمنی دونوں صورتوں کو شامل ہے، تو جیسے پانی کے تمام اوصاف کو بدلنے کے باوجود جب تک رقت باقی رہے جامد وضو سے مانع نہیں ہے۔ یونہی جب وہ بعض کیونکہ حکم وصف واحد کی تغییر کو عام ہے اور تین وصفوں والا اس سے مغلوب نہیں ہوتا ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Right Column - English Translation] The difference between part and whole remains, and the restriction is wasted, and the concept becomes void. In short, if he intended it specifically, there would be no reason for adding 'part', which leads to an illusion contrary to the intended and narrated ruling. (T)

Ninthly (9): There is a vast difference between water in which chickpeas and beans have been soaked and water mixed with saffron. Therefore, in the first case, basing the matter on thinness (fluidity) is correct, but in the second case, it is not, as has been repeatedly clarified to you, and praise be to Allah. These sixty discussions are a matter of pride at the beginning and end; praise be to the Lord first and last. Many others have preceded them, and their goodness and benefit are not hidden. Every good is from the gift of Al-Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him), along with those whom He chooses. Allah gives, and the Beloved (peace be upon him) distributes, and honorable leaders send blessings upon you. No one has attained good from anyone other than him, and no one seeking hope expects it from another; hope is from you, giving is from you, and help is from you, in this world and the hereafter, forever. (T)

[Bottom Section - English Translation] In short, this second part of the rule is contrary to the school of Imam Abu Yusuf, the school of Imam Muhammad, and the consecutive (mutawatir) texts; it is contrary to everyone's school. These details are nowhere to be found in the Hanafi school. Yes, they were close to those in Shafi'i books; perhaps that's where the idea stayed in Imam Zabita's mind. Imam Badr Mahmoud Ayni says in 'Binayah':

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

[दायां स्तंभ - हिंदी अनुवाद] अंश और पूर्ण के बीच का अंतर बना रहता है, और प्रतिबंध व्यर्थ हो जाता है, और अवधारणा शून्य हो जाती है। संक्षेप में, यदि उनका इरादा इसे विशेष रूप से था, तो 'अंश' जोड़ने का कोई कारण नहीं होता, जो इच्छित और वर्णित निर्णय के विपरीत भ्रम पैदा करता है। (त)

नौवां (9): जिस पानी में चने और लोबिया भिगोए गए हों और जिस पानी में केसर मिलाया गया हो, उनमें बहुत बड़ा अंतर है। इसलिए, पहले मामले में मामले को पतलेपन (तरलता) पर आधारित करना सही है, लेकिन दूसरे मामले में नहीं, जैसा कि आपके ज्ञान में बार-बार आया है, और अल्लाह की स्तुति हो। ये साठ चर्चाएँ आदि और अंत में गर्व का विषय हैं; पहले और अंत में प्रभु की स्तुति हो। इनके अलावा और भी बहुत सी चर्चाएँ हो चुकी हैं, और उनकी अच्छाई और लाभ छिपा नहीं है। हर अच्छाई अल-मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के उपहार से है, उन लोगों के साथ जिन्हें वह चुनता है। अल्लाह देता है और हबीब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बांटने वाले हैं, और माननीय नेता आप पर दरूद भेजते हैं। आपके अलावा किसी ने भी किसी और से अच्छाई प्राप्त नहीं की है, और न ही कोई आशा रखने वाला किसी दूसरे से इसकी अपेक्षा करता है; आशा आपसे है, प्रदान करना आपसे है, और मदद आपसे है, दुनिया और आख़िरत में, हमेशा के लिए। (त)

[निचला भाग - हिंदी अनुवाद] संक्षेप में, नियम का यह दूसरा हिस्सा इमाम अबू यूसुफ़ के मत, इमाम मुहम्मद के मत और मुतवातिर ग्रंथों के विपरीत है; यह सभी के मत के विपरीत है। हनफ़ी मत में ये विवरण कहीं नहीं हैं। हाँ, वे शाफ़ई किताबों में उनके करीब थे; शायद वहीं से विचार इमाम ज़ाबता के मन में रहा। इमाम बद्र महमूद ऐनी 'बिनाया' में फ़रमाते हैं:

الفرق بين البعض والكل وبقى القيد ضائعاً والمفهوم باطلاً وبالجملة لو أراده بالخصوص لما كان وجه لزيادة البعض الموهمة خلاف الحكم المراد والمنصوص۔ وتاسعاً: (۹) بون (۱) بين بين ماء نقع فيه الحمص والباقلاء وماء خلط بزعفران فارادة الامر في الاول على الرقة صحيحة وفى الثاني لاكما علمت تحقيقه مراراً ولله الحمد فهذه ستون بحثاً فاخرا حمد الرب اولاً وأخرًا وقد تقدمت كثير غيرها وليس يخفي خيرها وميرها (۲) وكل خير من عطاء المصطفى صلى عليه الله مع من يصطفى الله يعطى والحبيب القاسم صلى عليه القادة الاكارم مأ نال خيرا من سواه نائل كلا ولا يرجى لغير نائل منه الرجا منه العطا منه المدد في الدين والدنيا والاخرى للابد

اوصاف کو بدلے تو رقت کے معدوم ہونے پر طہارت کی صلاحیت نہیں رکھے گا، تو بعض اور کل کا فرق باقی نہ رہا قید ضائع گئی اور مفہوم باطل ہو گیا حاصل یہ کہ خاص کر جامد مراد لینے پر حکم منصوص و منطوق کے خلاف وہم میں مبتلا کر دینے والی بعض کی قید لگانے کی کوئی وجہ نہیں ہے۔ (ت) تاسعاً (۹) ، جس پانی میں چنے اور لوبیا بھگوئے گئے ہوں اور جس پانی میں زعفران مل گیا ہو بڑا دور کا فرق ہے تو پہلی صورت میں معاملہ کی بنیاد پتلے پن پر رکھنا درست ہے دوسری میں نہیں جیسا کہ بار بار آپ کے علم میں آیا ولله الحمد یہ ساٹھ بحثیں باعثِ فخر ہیں ابتدا اور انتہاء میں ، تعریف اللہ تعالٰی کیلئے ہے ان کے علاوہ بھی بہت سی گزر چکی ہیں ان میں سے اچھی اور کمزور کوئی بحث مخفی نہ رہی ہر اچھائی مصطفٰی (صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم) کی عطاء سے ہے خدا ان پر جملہ پسندیدہ لوگوں کے ساتھ رحمتیں بھیجے۔ رب دینے والا اور حبیب (صلی اللہ علیہ وسلم) تقسیم کرنے والے ہیں اور آپ پر قابلِ احترام قائدین درود بھیجتے ہیں آپ کے غیر سے کسی نے بھی بھلائی حاصل نہیں کی اور نہ کسی دوسرے سے کوئی حاصل کرنے والا

امید رکھتا ہے امید بھی آپ سے عطا بھی آپ کی اور مدد بھی آپ کی، دنیا اور آخرت میں ہمیشہ کیلئے۔ (ت)

بالجملہ ضابطہ کا یہ دوسرا حصہ مذہب امام ابو یوسف ومذہب امام محمد و نصوصِ متواترہ مذہب سب کے خلاف ہے مذہبِ حنفی میں یہ تفصیلیں کہیں نہیں، ہاں کتبِ شافعیہ میں ان کے قریب تھیں شاید وہیں سے خیال امام ضابطہ میں رہیں۔ امام بدر محمود عینی بنایہ میں فرماتے ہیں:

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Arabic Column] The Shafi'i school of thought, as meticulously recorded, states that if one of the qualities of water changes due to something from which the water cannot be protected—such as moss, and salt, lime, and similar things that appear on the water—then performing wudu (ablution) with it is permissible, because it is impossible to safeguard the water from them. If the change is caused by something from which the water can be protected, then if it is soil thrown into it, the ruling is the same (permissible), because soil agrees with water in being a purifying agent. Thus, it is as if another water was poured into it and changed it. But if it is something other than that, like saffron or moss when it is crushed and thrown into it, or other things that change the water, then performing wudu with it is not permissible. This is because the absolute term 'water' no longer applies due to its mixture with something that is not purifying, and the water could have done without it. It becomes like meat [mixed in]. As for liquids mixing with water, if it is a small amount, purification with it is permissible; otherwise, it is not. How are 'small' and 'large' amounts recognized? It is observed: if the substance differs from water in some qualities, then the criterion is the change. If it changes the water, it is considered a large amount; otherwise, it is small. If the substance matches the water in its qualities—like rosewater that has lost its scent—then there are two views on how to determine 'small' and 'large' amounts. One is that if the water is dominant, purification with it is permissible; if the mixture is dominant, it is not. Some say that if the amount is such that, had its qualities differed from the water, it would not have changed it, then it does not prevent usage. If used water (ma' musta'mal) mixes with absolute water, there are two paths, the most correct of which is...

[Urdu Column] The stance of Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), which has been recorded, is that when a property of water is changed by a substance from which it is impossible to keep the water safe—for example, moss growing on water, or salt, lime, etc., that appear on water—performing wudu with it will be permissible because the water cannot be protected from it. If it is possible to protect the water from that substance, then if it is soil that has been put into the water, the ruling of water applies to it, because it agrees with water in the attribute of being a purifying agent. So, it would be as if more water was added to the water, changing its color. If something other than soil, such as saffron or dried moss from water, is finely ground and put into it, or besides these, there are some substances which, despite being pure, are not purifying agents themselves and they change the water, then wudu

with it will not be permissible. This is because by mixing with a non-purifying substance, it no longer remains 'water' in its absolute sense. It becomes as if meat has been mixed into it. If a liquid substance mixed into water is in a small quantity, wudu is permissible; otherwise, it will be impermissible. How will the small or large quantity be recognized? It will be seen that if that thing matches water in some attributes—like rosewater that has no scent—then the small or large amount will be known in two ways: one is that if the water is dominant, wudu with it will be permissible; if the added substance is dominant, wudu will not be permissible. Some of them say that if that substance is in such a quantity that if its attributes were...

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 3

[अरबी कॉलम] शाफ़ई मज़हब के अनुसार, जैसा कि विवरण में लाया गया है, यदि पानी के गुणों में से कोई एक गुण ऐसी चीज़ से बदल जाए जिससे पानी को सुरक्षित रखना संभव न हो—जैसे कि काई, नमक, चूना और इसी तरह की चीज़ें जो पानी पर दिखाई देती हैं—तो उससे वज़ू करना जायज़ है, क्योंकि पानी को उनसे बचाना मुमकिन नहीं है। लेकिन अगर वह ऐसी चीज़ है जिससे पानी को बचाया जा सकता था, तो: यदि वह मिट्टी है जो उसमें डाली गई है, तो उसका हुक्म पानी जैसा ही है, क्योंकि वह शुद्ध करने के गुण में पानी के समान है। तो यह वैसा ही है जैसे पानी में दूसरा पानी डाल दिया गया हो और उससे उसका रंग बदल गया हो। और यदि वह मिट्टी के अलावा कोई और चीज़ हो, जैसे कि ज़ाफ़रान या काई जिसे पीसकर उसमें डाल दिया गया हो, या इसके अलावा अन्य चीज़ें जिनसे पानी बदल जाता है, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक ऐसी चीज़ के मिलने से जो शुद्ध करने वाली नहीं है, उस पर से 'पानी' का पूर्ण नाम हट जाता है, जबकि पानी को उसकी आवश्यकता नहीं थी। तो वह मांस [मिले हुए] के समान हो गया। जहाँ तक पानी में मिलने वाले तरल पदार्थों का सवाल है, यदि वह थोड़ी मात्रा में है, तो उससे पवित्रता प्राप्त करना जायज़ है; अन्यथा नहीं। 'थोड़ी' और 'अधिक' मात्रा की पहचान कैसे होगी? यह देखा जाएगा: यदि वह चीज़ कुछ गुणों में पानी से भिन्न है, तो परिवर्तन ही आधार है। यदि उसने पानी को बदल दिया है, तो वह 'अधिक' है; अन्यथा 'कम' है। यदि वह गुणों में पानी के समान है—जैसे गुलाब जल जिसकी सुगंध समाप्त हो गई हो—तो 'थोड़ी' और 'अधिक' मात्रा निर्धारित करने के दो तरीके हैं। एक यह कि यदि पानी अधिक (प्रबल) है, तो उससे पवित्रता जायज़ है; यदि मिलाई गई वस्तु अधिक है, तो जायज़ नहीं है। कुछ का कहना है कि यदि वह वस्तु इतनी मात्रा में है कि यदि उसके गुण पानी से अलग होते तो भी वह उसे नहीं बदल पाती, तो वह उपयोग को नहीं रोकती। और यदि पूर्ण शुद्ध जल (मा-ए-मुतलक़) में उपयोग किया हुआ जल (मा-ए-मुस्तअमल) मिल जाए, तो इसके दो रास्ते हैं, जिनमें से सबसे सही है...

[उर्दू कॉलम] इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैह) का मसलक जो रिकॉर्ड में लाया गया है, वह यह है कि पानी के एक गुण को जब ऐसी चीज़ बदल दे जिससे पानी का सुरक्षित रखना मुमकिन नहीं है—उदाहरण के लिए पानी पर पैदा हुई काई और पानी पर जो नमक, चूना आदि नज़र आता है—तो उससे वज़ू जायज़ होगा क्योंकि पानी को इससे बचाया नहीं जा सकता। अगर पानी को उस चीज़ से बचाना मुमकिन है, फिर अगर वह मिट्टी हो जो पानी में डाल दी गई हो, तो उसके लिए हुक्म पानी का

ही है क्योंकि यह पाक (शुद्ध) करने की सिफ़त (गुण) में पानी के मुवाफ़िक़ (समान) है। तो यह ऐसा ही होगा जैसे पानी में दूसरा पानी डाल दिया जाए और उससे पानी का रंग बदल जाए। अगर कोई चीज़ मिट्टी के अलावा हो जैसे ज़ाफ़रान और पानी की सूखी काई जब बारीक पीस कर उसमें डाल दी जाए, या इसके अलावा कुछ ऐसी चीज़ें हों जो पाक होने के बावजूद पाक करने वाली (शुद्ध करने वाली) नहीं हैं जिससे पानी बदल जाता हो, तो उससे वज़ू जायज़ न होगा क्योंकि गैर-तहूर (जो शुद्ध न करे) चीज़ के मिलने से पानी का नाम ज़ायल (समाप्त) हो जाता है। तो यह ऐसा हो गया मानो मांस मिल गया हो। बहने वाली चीज़ अगर पानी में थोड़ी हो तो वज़ू जायज़ वरना नाजायज़ होगा। किल्लत (कमी) और कसरत (अधिकता) की पहचान कैसे होगी? तो देखा जाएगा कि अगर वह चीज़ कुछ गुणों में पानी के मुवाफ़िक़ हो जैसे कि अर्क़ए-गुलाब जिसकी ख़ुशबू न हो, तो किल्लत और कसरत दो तरीक़ों से मालूम होगी: एक यह कि अगर पानी का ग़लबा (प्रबलता) हो तो उसके साथ वज़ू जायज़ होगा; अगर मिलने वाली चीज़ का ग़लबा हो तो वज़ू जायज़ न होगा। उनमें से कुछ लोगों का कहना है कि अगर वह चीज़ इतनी मात्रा में हो कि वह गुणों में...

पृष्ठ 209/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

[عربی کالم] مذهب الشافعی علی التحریر ان الماء اذا تغیر احد اوصافه مما لایمکن حفظ الماء عنه کالطحلب ومایری علی الماء من الملح والنورة ونحوها جاز الـ وضو به لعدم امکان صون الماء عنه وان کان مما یمکن حفظه عنه فان کان تراباً طرح فیه فکذالك لانه یوافق الماء فی کونه مطهراً فهو کما لوطرح فیه ماء آخر فتغیر به وان کان شیئاً سوی ذلك کالزعفران والطحلب اذا دق وطرح فیه وغیر ذلك مما یتغیر الماء منه لم یجز الـ وضو به لانه زال اطلاق اسم الماء بمخالطة مالیس بطهور والماء مستغن عنه فصار کاللحم والمائع المخالط بالماء ان قل جازت الطهارة به والا فلا وبما ذا تعرف القلة والکثرة ینظر فان خالفه فی بعض الصفات فالعبرة بالتغیر فان غیره فکثیر والا فقلیل وان وافقه فی صفاته کماء ورد انقطعت رائحته ففیما یعتبر به القلة والکثرة فیه وجهان احدهما ان کانت الغلبة للماء جازت الطهارة به وان کانت للمخالط لم یجز و منهم من قال اذا کان ذلك قدراً لو کان مخالف الماء فی صفاته لم یغیره لم یمنع ولوخالط الماء المطلق ماء مستعمل فطریقان اصحهما

[اردو کالم] امام شافعی رحمہ اللہ کا مسلک جو ضبط میں لایا گیا وہ یہ ہے کہ پانی کے ایک وصف کو جب ایسی شئی بدل دے جس سے پانی کا محفوظ رکھنا ممکن نہیں مثلاً پانی پر پیدا شدہ جالا اور پانی پر جو نمک چونا وغیرہ نظر آتا ہے تو اس سے وضو جائز ہو گا کیونکہ پانی کو اس سے بچایا نہیں جا سکتا اگر پانی کو اس شئی سے بچانا ممکن ہے پھر اگر وہ مٹی ہو جو پانی میں ڈال دی گئی ہو تو اس کیلئے حکم پانی کا ہے کیونکہ یہ پاک کرنے کی صفت میں پانی کے موافق ہے تو یہ ایسا ہی ہوگا جیسا کہ پانی میں دوسرا پانی ڈال دیا جائے تو اس سے پانی کا رنگ بدل جائے اگر کوئی شے مٹی کے علاوہ ہو جیسے زعفران اور پانی کا خشک جالا جب باریک پیس کر اس میں ڈال دئے جائیں یا اس کے علاوہ کچھ ایسی اشیاء ہوں جو پاک ہونے کے باوجود پاک کنندہ نہیں جس

سے پانی تبدیل ہو جاتا ہو تو اس سے وضو جائز نہ ہو گا کیونکہ غیر طہور شئی کے ملنے سے پانی کا نام زائل ہو جاتا ہے تو یہ ایسے ہو گیا گویا گوشت مل گیا ہو، بہنے والی شئی اگر پانی میں تھوڑی ہو تو وضو جائز ورنہ ناجائز ہوگا، قلت اور کثرت کی پہچان کیونکر ہوگی، تو دیکھا جائے گا کہ اگر وہ چیز بعض صفات میں پانی کے موافق ہو جیسا کہ عرق گلاب جس کی خوشبو نہ ہو تو قلت وکثرت دو طریقوں سے معلوم ہو گی ایک یہ کہ اگر پانی کو غلبہ ہو تو اس کے ساتھ وضو جائز ہو گا اگر ملنے والی شے کا غلبہ ہو تو وضو جائز نہ ہوگا ان میں سے کچھ لوگوں کا کہنا ہے کہ اگر وہ شئی اتنی مقدار میں ہو کہ وہ اوصاف میں

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Arabic Box Left] Like a liquid, and regarding it there are two views. The majority have decisively held this, and Al-Rafi'i (1) authenticated it, etc.--- In summary, the consideration of parts only applies to a liquid that matches water in all qualities; otherwise, the consideration is by qualities. This is what was distributed in the principle. If there's a variation in detail where it differs in all qualities, then two qualities are considered, or if in some, then one. And Allah, Glorified and Exalted be He, knows best. May Allah the Almighty send blessings and peace upon our most compassionate and merciful master and leader, the intercessor of nations, and upon his family, companions, and his noble son, the Ghaus-e-Azam. Amen.

[Urdu Box Right] Despite being different, if it does not change the water, it will not prevent ablution. If used water mixes with absolute water, there are two methods for it. The most correct method is that like a liquid, there will be two possibilities in it as well. On this method, their majority of scholars have expressed certainty and Al-Rafi'i has declared it correct etc... In summary, when the liquid matches water in all qualities, then the parts will be considered; otherwise, this same division of qualities has been made in the principle. Although in case of disagreement, more detail has been given that if all qualities are different, then two qualities will be considered, otherwise one. And Allah, Glorified and Exalted be He, knows best. May Allah the Almighty send blessings and peace upon our most compassionate and merciful master and leader, the intercessor of nations, and upon his family, companions, and his noble son, the Ghaus-e-Azam. Amen. (T)

Fifth, the Nasafi Principle: When something else mixes with water such that it can no longer be distinguished and it overcomes the water, the water is no longer valid for ablution; it becomes 'restricted water' (Ab-e-Muqayyad). This 'overcoming' happens in two ways: either by parts, where its parts are more than the water's parts [i.e., or equal to it; for the equal is like more for caution, as mentioned from Al-Bada'i (2) (Because equal is like more for caution, as passed from Bada'i. T)]; or by complete mixture. This complete mixture also occurs in two ways: either by trees absorbing it or by boiling something pure in water, like broth or bean water. However, if the purpose is extra cleanliness, like using alkali and soap, boiling them is not harmful unless it thickens the water. Imam Al-Ajal Abu al-Barakat al-Nasafi stated in 'Kafi Sharh al-Wafi':

[Arabic Box Left] The invalidation of the attribute of being absolute water due to the dominance of the mixed substance, which occurs through a large number of parts or through complete mixture, such as boiling water with a pure substance like...

[Urdu Box Right] The attribute of absolute water will be invalidated by the dominance of any substance that joins it. Dominance will either be due to an increase in parts or by becoming completely dissolved and mixed, and that is as follows:

1. Al-Binayah Sharh al-Hidayah, The Water with which Ablution is Permissible, Malik Sons Faisalabad, 1/191.
2. Bada'i al-Sana'i, Restricted Water, Saeed Company Karachi, 1/15.

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

[अरबी बॉक्स बायां] एक तरल की तरह, और इसके बारे में दो विचार हैं। बहुमत ने इसे निर्णायक रूप से धारण किया है, और अल-राफ़ई (1) ने इसे प्रमाणित किया है, आदि--- संक्षेप में, भागों का विचार केवल उस तरल पर लागू होता है जो सभी गुणों में पानी से मेल खाता है; अन्यथा, गुणों द्वारा विचार किया जाता है। यही वह चीज़ है जो सिद्धांत में वितरित की गई थी। यदि विवरण में भिन्नता है जहाँ यह सभी गुणों में भिन्न है, तो दो गुणों पर विचार किया जाता है, या यदि कुछ में है, तो एक पर। और अल्लाह, जो महिमामय और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है। अल्लाह सर्वशक्तिमान हमारे अत्यंत दयालु और कृपालु स्वामी और नेता, राष्ट्रों के मध्यस्थ, और उनके परिवार, साथियों और उनके नेक बेटे, ग़ौस-ए-आज़म पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करे। आमीन।

[उर्दू बॉक्स दायां] भिन्न होने के बावजूद, यदि यह पानी को नहीं बदलता है, तो यह वज़ू को नहीं रोकेगा। यदि प्रयुक्त पानी शुद्ध पानी के साथ मिल जाता है, तो इसके लिए दो तरीके हैं। सबसे सही तरीका यह है कि एक तरल की तरह, इसमें भी दो संभावनाएं होंगी। इस पद्धति पर, उनके अधिकांश विद्वानों ने निश्चितता व्यक्त की है और अल-राफ़ई ने इसे सही घोषित किया है आदि... संक्षेप में, जब तरल सभी गुणों में पानी से मेल खाता है, तो भागों पर विचार किया जाएगा; अन्यथा, गुणों का यही विभाजन सिद्धांत में किया गया है। हालांकि असहमति के मामले में, अधिक विवरण दिया गया है कि यदि सभी गुण अलग हैं, तो दो गुणों पर विचार किया जाएगा, अन्यथा एक पर। और अल्लाह, जो महिमामय और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है। अल्लाह सर्वशक्तिमान हमारे अत्यंत दयालु और कृपालु स्वामी और नेता, राष्ट्रों के मध्यस्थ, और उनके परिवार, साथियों और उनके नेक बेटे, ग़ौस-ए-आज़म पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करे। आमीन। (त)

पांचवां, नसफी सिद्धांत: जब पानी में कोई और चीज़ इस तरह मिल जाए कि उसे अलग न किया जा सके और वह पानी पर हावी हो जाए, तो वह पानी वज़ू के लिए वैध नहीं रह जाता; वह 'आब-ए-मुक़य्यद' (सीमित पानी) बन जाता है। यह 'हावी होना' दो तरह से होता है: या तो भागों द्वारा, जहाँ उसके भाग पानी के भागों से अधिक हों [यानी या उसके बराबर हों; क्योंकि समानता सावधानी के लिए अधिक की तरह है, जैसा कि अल-बदाइ (2) से उल्लेखित है (क्योंकि समानता सावधानी के लिए अधिक की तरह है, जैसा कि बदाइ से गुजरा है। त)]; या पूर्ण मिश्रण द्वारा। यह पूर्ण मिश्रण भी दो तरह से होता है: या तो पेड़ों द्वारा इसे सोख लेने से या पानी में किसी शुद्ध चीज़ को उबालने से, जैसे शोरबा या दाल का पानी। हालाँकि, यदि उद्देश्य अतिरिक्त स्वच्छता है, जैसे सज्जी और साबुन का

उपयोग करना, तो उन्हें उबालना हानिकारक नहीं है जब तक कि वह पानी को गाढ़ा न कर दे। इमाम अल-अजल अबू अल-बरकात अल-नसफी ने 'काफी शरह अल-वाफी' में कहा है:

[अरबी बॉक्स बायां] मिश्रित पदार्थ के प्रभुत्व के कारण शुद्ध पानी होने के गुण की अमान्यता, जो भागों की बड़ी संख्या के माध्यम से या पूर्ण मिश्रण के माध्यम से होती है, जैसे पानी को किसी शुद्ध पदार्थ के साथ उबालना जैसे...

[उर्दू बॉक्स दायां] शुद्ध पानी का गुण उसमें मिलने वाली किसी भी चीज़ के प्रभुत्व से समाप्त हो जाएगा। प्रभुत्व या तो भागों में वृद्धि के कारण होगा या पूरी तरह से घुलमिल जाने के कारण, और वह इस प्रकार है:

1. अल-बिनाया शरह अल-हिदाया, अल-मा अल-लज़ी यज़ूज़ु बिही अल-वुदू, मलिक संस फैसलाबाद, 1/191.
2. बदाइ अल-सनाइ, आब-ए-मुक़य्यद, सईद कंपनी कराची, 1/15.

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[عربی عبارت - بائیں جانب] کالمائع وفیه وجهان وبهذا قطع جمهورهم وصححه الرافعي 1 الخ---
وحاصله ان العبرة بالاجزاء انما هی فی المائع الموافق للماء فی جمیع الصفات والا فبالاوصاف وهذا ماوزع به فی الضابطة وان زاد التفصیل بخلاف فی جمیع الاوصاف فیعتبر وصفان اوبعضها فواحد واللہ سبحنه وتعالی اعلم، صلی اللہ تعالی وبارك وسلم، علی سیدنا ومولینا الارأف الارحم، شفیع الامم، وآله وصحبه وابنه الکریم الغوث الاعظم، آمین۔

[اردو ترجمہ - دائیں جانب] مختلف ہونے کے باوجود پانی کو متغیر نہ کرے تو وضو سے مانع نہ ہوگی اگر مطلق پانی کے ساتھ مستعمل پانی مل جائے تو اس کے دو طریقے ہیں، صحیح ترین طریقہ یہ ہے کہ مائع کی طرح اس میں بھی دو وجھیں ہوں گی اس طریقہ پر ان کے جمہور علماء نے یقین کیا ہے اور رافعی نے اسے صحیح قرار دیا ہے الخ... خلاصہ یہ کہ مائع جب تمام صفات میں پانی کے موافق ہو تو اعتبار اجزاء کا ہوگا ورنہ صفات کا یہی تقسیم ضابطہ میں کی گئی ہے اگرچہ اختلاف کی صورت میں زیادہ تفصیل کی ہے کہ تمام اوصاف مختلف ہوں تو دو صفات کا، ورنہ ایک کا اعتبار ہوگا، واللہ سبحنہ وتعالی اعلم وصلی اللہ تعالیٰ وبارک وسلم علی سیدنا ومولنا الارأف الارحم، شفیع الامم، وآلہ وصحبہ وابنہ الکریم الغوث الاعظم، آمین (ت)

پنجم ضابطہ نسفیہ: کہ جس پانی میں اس کا غیر ایسا مل جائے کہ تمیز نہ رہے اور وہ پانی پر غالب ہو تو پانی قابل وضو نہ رہا آب مقید ہو گیا ورنہ نہیں اور اس کا غلبہ دو طور پر ہے یا تو اجزاء سے کہ اُس کے اجزاء پانی سے زائد [یعنی یا برابر ہوں فان المساوی کالزائد احتیاطاً کما مر عن البدائع 2 (کیونکہ مساوی احتیاطاً زائد کی طرح ہے جیسا کہ بدائع سے گزرا۔ت)] یا کمال امتزاج سے اور یہ بھی دو طور پر ہے یا درختوں کے پی لینے سے یا پانی میں کوئی پاک چیز

پکانے سے، جیسے شوربا اور آب باقلا مگر یہ کہ اُس سے زیادتِ نظافت مقصود ہو جیسے اُشنان و صابون کہ ان کا پکانا مضر نہیں جب تک گاڑھا نہ کر دے۔ امام اجل ابوالبرکات نسفی نے کافی شرح وافی میں فرمایا:

[عربی عبارت - بائیں جانب] بطلان صفة الاطلاق بغلبة الممتزج وهی بكثرة الاجزاء اوبكمال الامتزاج وهو يطبخ الماء بخلط الطاهر كماء

[اردو ترجمہ - دائیں جانب] پانی کے مطلق ہونے کی صفت کسی ملنے والی شیئی کے غلبہ سے باطل ہوگی غلبہ یا تو اجزاء بڑھ جانے سے ہوگا یا کامل طور پر گھل مل جانے سے اور وہ یوں

1 البناية شرح الهداية الماء الذي يجوز به الوضو ملك سنز فيصل آباد ۱۹۱/۱ 2 بدائع الصنائع الماء المقيد سعيد كمپنی كراچی ۱۵/۱

(Arabic Text) Al-baqilla (beans), broth, or the absorption of water by plants to the point where the mixture reaches a level where water cannot be extracted from it except through processing. Mixing by cooking only prevents wudu (ablution) with it if the intended purpose of wudu—which is cleaning—is not achieved, such as with ushnan (soda ash) and soap when cooked in water, unless they overwhelm the water so much that it becomes like mixed sawiq (gruel) because the name 'water' is no longer applicable. Mixture is the blending of two things such that they cannot be distinguished. (End)

(Urdu Translation) When water is mixed and cooked with any pure thing, for example, bean water or broth, or if the mixture is such that the herbs absorb the water in a way that the water cannot be separated from them without difficulty. Mixing by cooking will hinder wudu only when the purpose of wudu is not associated with adding it, for example, when soap or ushnan is cooked in water. However, if these also overwhelm the water so much that they become like mixed sattu (parched grain flour), then wudu will not be permissible with this water either because it will no longer be called water. Mixture is the blending of two things such that it is impossible to separate them. (T)

Exactly in the same way, it is mentioned in 'Kifaya' by Imam Jalal al-Din, the commentary on 'Hidaya'. I say: the dominance of the mixture and perfect blending, and its causes like cooking and absorption by plants—all these points Imam Zaylai adopted from here. The great Imam Nasafi took the dominance of the mixture only from the abundance of parts. He added insights into its qualities from his own side. From here it is also clear that the rule of the Hanafi school found in 'Kafi' and 'Kifaya' did not contain this level of detail.

Then I say: the Nasafi rule is the same as the school of Imam Abu Yusuf. It was mentioned in the fourth rule of the tenth discussion that in this reliable school, the inhibitors are four, rather only three: 1. The abundance of mixed parts, in which equality by ruling is also included. 2. Loss of fluidity (riqqat), which primarily includes the loss of flow (sayalan). 3. Loss of the name 'water'. Here, the abundance of parts is the same, and perfect blending through cooking and absorption are forms of the remaining two. So, this rule apparently is like the statements in primary texts

(mutoon), a partial rule that does not exceed the Yusufi rule, even if it does not encompass all scenarios.

I say: but in reality, it is a universal principle (kulliya). Undeniably, there is no cause outside of the dominance of the mixture and perfect blending.

(2) And he only made them partial by interpreting one through some of the other's forms	**He considered them part of the interpretation of some of their forms, whereas**
Therefore, if he had made the interpretation a representation of steadfastness*	If instead of making it an interpretation, he made it a representation

[1] Kafi, commentary on al-Wafi by Nasafi. Page 211 of 756

(अरबी पाठ) अल-बाक़िल्ला (सेम), शोरबा, या पौधों द्वारा पानी का अवशोषण इस सीमा तक कि मिश्रण उस स्तर तक पहुँच जाए जहाँ पानी को प्रसंस्करण के बिना अलग नहीं किया जा सकता। पकाने से हुआ मिश्रण वज़ू के लिए तभी बाधक होगा जब उससे वज़ू का वांछित उद्देश्य यानी सफ़ाई प्राप्त न हो, जैसे उशनान (सोडा ऐश) और साबुन जब पानी में पकाए जाएँ जब तक कि वे पानी पर इतने हावी न हो जाएँ कि वे मिश्रित सवीक़ (दलिया) की तरह हो जाएँ क्योंकि अब उस पर 'पानी' नाम लागू नहीं होता। मिश्रण दो चीज़ों का इस प्रकार मिलना है कि उन्हें अलग न किया जा सके। (समाप्त)

(उर्दू अनुवाद) जब पानी को किसी पाक (शुद्ध) चीज़ के साथ मिलाकर पकाया जाए, उदाहरण के लिए, लोबिया का पानी या शोरबा, या यदि मिश्रण ऐसा हो कि जड़ी-बूटियाँ पानी को इस तरह सोख लें कि उन्हें बिना कठिनाई के अलग न किया जा सके। पकाने से हुआ मिश्रण वज़ू में तभी बाधक होगा जब उसे मिलाने से वज़ू का कोई उद्देश्य न जुड़ा हो, उदाहरण के लिए, जब साबुन या उशनान को पानी में पकाया जाए। हालाँकि, यदि ये भी पानी पर इतने हावी हो जाएँ कि वे मिश्रित सत्तू की तरह हो जाएँ, तो इस पानी से भी वज़ू जायज़ नहीं होगा क्योंकि इसे अब पानी नहीं कहा जाएगा। मिश्रण दो चीज़ों का इस तरह एक हो जाना है कि उन्हें अलग करना संभव न हो। (त)

ठीक इसी तरह, इमाम जलालुद्दीन की 'किफ़ाया' में उल्लेख है, जो 'हिदाया' की व्याख्या है। मैं कहता हूँ: मिश्रण की प्रबलता और पूर्ण एकीकरण, और इसके कारण जैसे पकाना और पौधों द्वारा सोखना—ये सभी बिंदु इमाम ज़ैलई ने यहीं से अपनाए हैं। महान इमाम नसफ़ी ने मिश्रण की प्रबलता को केवल भागों की प्रचुरता से लिया था। उन्होंने इसके गुणों में अपनी ओर से विस्तार किया। यहाँ से यह भी स्पष्ट है कि हनफ़ी संप्रदाय का जो नियम 'काफ़ी' और 'किफ़ाया' में था, उसमें यह विस्तार नहीं था।

फिर मैं कहता हूँ: नसफ़ी नियम वही है जो इमाम अबू यूसुफ़ का मत है। दसवीं चर्चा के चौथे नियम में गुज़रा कि इस विश्वसनीय मत में बाधक चार नहीं बल्कि तीन ही हैं: 1. मिश्रित भागों की अधिकता, जिसमें हुक्मन (नियमतः) समानता भी शामिल है। 2. तरलता (रिक़्क़त) का लुप्त होना, जिसमें बहाव (सय़लान) का लुप्त होना भी शामिल है। 3. 'पानी' नाम का हट जाना। यहाँ, भागों की अधिकता वही है, और पकाने व सोखने से पूर्ण मिश्रण शेष दो की ही स्थितियाँ हैं। तो यह नियम स्पष्ट रूप से मूल

ग्रंथों (मुतून) के बयानों की तरह एक आंशिक नियम है, जो यूसुफ़ी नियम से बाहर नहीं है, भले ही इसमें सभी स्थितियाँ शामिल न हों।

मैं कहता हूँ: लेकिन वास्तव में वह एक सार्वभौमिक नियम (कुल्लिया) है। निर्विवाद रूप से, मिश्रण की प्रबलता और पूर्ण एकीकरण के अलावा और कोई कारण नहीं है।

(2) उन्होंने उन्हें एक-दूसरे के कुछ रूपों के माध्यम से व्याख्यायित करके आंशिक बना दिया	**उन्होंने इसे उनके कुछ रूपों की व्याख्या का हिस्सा माना, जबकि**
इसलिए, यदि उन्होंने व्याख्या के बजाय इसे स्थिरता का चित्रण बनाया होता*	यदि इसे व्याख्या बनाने के बजाय चित्रण बनाया जाता

---

[1] नसफ़ी द्वारा 'अल-वाफ़ी' की व्याख्या 'काफ़ी'। पृष्ठ 211 / 756

الباقلی والمرق اوبتشرب النبات الماء حتی یبلغ الامتزاج مبلغا یمتنع خروج الماء عنه الابالعلاج والامتزاج بالطبخ انما یمنع الوضو به ان لم یکن مقصودا للغرض المطلوب من الوضو وھو التنظیف کالاثنان والصابون اذا طبخ بالماء الا اذا غلب ذلك علی الماء فیصیر کالسویق المخلوط لزوال اسم الماء عنه و الامتزاج الاختلاط بین الشیئین حتی یمتنع التمیز اھ

کہ پانی کو کسی پاکیزہ چیز کے ساتھ ملا کر پکایا جائے مثلاً لوبیا کا پانی یا شوربا یا یہ امتزاج جڑی بوٹیوں کے پانی کو یوں جذب کر لینے کے بعد ہوگا کہ ان سے بغیر مشقت کے پانی کو الگ نہ کیا جاسکے، پکانے سے امتزاج وضو سے اس وقت مانع ہوگا جب اس کے ملانے سے وضو کی کوئی غرض وابستہ نہ ہو مثلاً صابون یا اشنان کو جب پانی میں پکایا جائے البتہ یہ بھی اگر پانی پر یوں غالب آجائیں کہ مخلوط ستو کی مثل شی بن جائیں تو پھر اس پانی سے بھی وضو جائز نہ ہوگا کیونکہ اس پر پانی کا نام نہیں بولا جائے گا امتزاج دو اشیاء کا یوں یکجان ہونا کہ انہیں جدا کرنا ممکن نہ ہو۔ (ت)

بعینہ اسی طرح کفایہ امام جلال الدین شرح ہدایہ میں ہے اقول : غلبہ ممتزج و کمال امتزاج اور اس کے اسباب طبخ و تشرب نبات یہ سب مضمون امام زیلعی نے یہیں سے اخذ فرمائے امام اجل نسفی نے غلبہ ممتزج صرف کثرت اجزاء سے لیا تھا انہوں نے اس میں سخن اوصاف اپنی طرف سے اضافہ فرمایا یہاں سے بھی واضح ہوا کہ کافی و کفایہ تک جو ضابطہ مذہب حنفی میں تھا اس میں اس تفصیل کا پتا نہیں۔

ثم اقول : ضابطہ نسفیہ وہی مذہب امام ابو یوسف ہے۔ ضابطہ چہارم بحث دہم میں گزرا کہ اس مذہب معتمد میں مانع چار بلا بلکہ تین ہی ہیں ۱ کثرتِ اجزائے مخالط جس میں حکماً تساوی بھی

داخل اور ۲ زوال رقت کہ زوال سیلان کو بالاولٰی شامل اور ۳ زوال اسم یہاں کثرت اجزاء تو وہی ہے اور کمال امتزاج بطبخ و تشرب باقی دو کی صورت سے ہیں تو یہ ضابطہ بظاہر مثل عباراتِ متون ضابطہ جزئیہ ہے کہ ضابطہ یوسفیہ سے باہر نہیں اگرچہ سب صور کو محیط بھی نہیں۔

اقول : مگر حقیقۃً وہ کلیہ ہے بلا شبہ غلبہ ممتزج و کمالِ امتزاج بلا بلکہ صرف غلبہ ممتزج سے باہر کوئی سبب نہیں۔

(۲) وانما جعلها جزئية تفسير هما اس کو ان کی بعض صورتوں کی تفسیر کا جزو قرار دیا ہے

ببعض	**حالانکہ**
صورهما فلو جعل التفسير تصوير الاستقام*	اگر اسے تفسیر بنانے کے بجائے تصویر بناتا

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Arabic Box]: And the discourse is completed * and here are many discussions that are not hidden from those who have encompassed what we have presented of refutation and confirmation * and Allah, Glorified be He, is the Guardian of inspiration. *

[Urdu Translation Box]: So it is correct, here are many such discussions that cannot remain hidden from a complete reading of these objections and answers which we have already mentioned. Allah is the Inspirer. (T)

Sixth Rizvi Rule: Glory be to Allah! Am I anything that I should open my mouth in legal rulings? Far from it! The rule is the same rule of Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with him). Following the scholars, I have detailed its summary. In the details, through the blessing of serving the words of the elders, whatever investigations have been bestowed, the branches have been built upon them. It has encompassed all the mentioned correct rules in one circle, which has made the explanation clearer, more comprehensive, and more beneficial, bestowing a robe of novelty upon the rule.

I say, and success is from Allah: (1) The water of rivers, streams, springs, wells, and rain, even dew, is absolute water (Ma-e-Mutlaq) in its essence. Anything that is not of its genus, even if it looks like it, has its attributes, or is named after it, is not water; wudu (ablution) and ghusl (bathing) cannot be performed with it. For example, whey (water of yogurt), water from trees or stones, mineral oil, sap from palm or date trees, coconut water, water from pumpkin or watermelon, even if it only consists of water. Similarly, whatever is extracted from leaves, branches, fruits, or flowers, or by cutting a camphor tree or grapevine like a vine, or if it drips on its own, or is obtained by melting salt, sal-ammoniac, camphor, etc., or by melting gold, silver, tin, etc.

(2) Whatever is truly water (even if it was not water in between, like hail or sky-snow, when they melt entirely), either something else (even if of its own kind) will enter it or not. If not, then it is absolutely "absolute water" (Ab-e-Mutlaq). However, if it is "used water" (Ma-e-Mustamal), the detailed explanation of which was given in 'Al-Tars al-Mu'addal', then wudu and ghusl are not permissible with it. Otherwise, it is absolutely valid, even if wudu with it becomes haram (forbidden) or makruh (disliked) due to it being someone else's property, an endowment (waqf), or being intended for a necessary need, or due to other factors mentioned in the first chapter. This is true even if doubts about its purity arise due to children's hands touching it, a non-believer touching it, or some suspicious thing falling into it, as long as impurity is not

proven. This holds even if its color, smell, or taste changes due to being stagnant for a long time or if it was changed from the beginning, and even if it develops a strong pleasant or unpleasant odor due to proximity to a strong-smelling substance. Yes, if it freezes due to cold and is no longer fluid, like hail or ice, wudu with it will be impermissible until it melts and returns to its original fluidity.

(3) If something enters it, there are two possibilities: either it remains separate from the water, i.e., it does not permeate it, or it becomes mixed...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[अरबी बॉक्स]: और बात पूरी हुई * और यहाँ बहुत सी ऐसी चर्चाएँ हैं जो उनसे छिपी नहीं हैं जिन्होंने उन आपत्तियों और समाधानों का अध्ययन किया है जो हमने पेश किए हैं * और अल्लाह, सुब्हानहु, प्रेरणा का स्वामी है। *

[उर्दू अनुवाद बॉक्स]: तो यह सही है, यहाँ ऐसी बहुत सी चर्चाएँ हैं जो इन आपत्तियों और उत्तरों को पूरी तरह से पढ़ने से छिपी नहीं रह सकतीं जिन्हें हम पहले ज़िक्र कर चुके हैं। अल्लाह ही प्रेरणा देने वाला है। (त)

छठा रज़वी नियम: सुब्हान अल्लाह! फकीर (मैं) भी क्या चीज़ है कि अहकाम (कानूनों) में ज़बान खोल सके। कतई नहीं! नियम वही है जो इमाम अबू यूसुफ़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) का नियम है। उलेमा (विद्वानों) का अनुसरण करते हुए इसके संक्षेप को विस्तार से समझाया है। विवरण में, बड़ों के कलाम की सेवा की बरकत से जो शोध प्रदान किए गए हैं, उन पर शाखाएँ बनाई गई हैं। इसने सभी वर्णित सही नियमों को एक दायरे में ले लिया है, जिसने बयान को अधिक स्पष्ट, व्यापक और लाभदायक बना दिया है और नियम को नवीनता का लिबास पहनाया है।

मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह की ओर से है: (1) नदी, नहर, चश्मे, कुएँ और बारिश का पानी, यहाँ तक कि ओस भी अपनी असलियत में 'आब-ए-मुतलक़' (शुद्ध जल) है। जो कुछ उनकी जिन्स (जाति) से नहीं है, भले ही वह उनकी शक्ल, गुणों या नाम पर हो, वह पानी नहीं है; उससे वज़ू और गुस्ल नहीं हो सकता। जैसे 'मा-उल-जुबुन' (दही का पानी), पेड़ों या पत्थरों का पानी, मिट्टी का तेल (मिनरल ऑयल), ताड़ या खजूर का अर्क़ नारियल, कद्दू या तरबूज का पानी, भले ही उसमें सिर्फ पानी ही क्यों न हो। इसी तरह, जो कुछ पत्तों, शाखाओं, फलों या फूलों से निकाला जाए, या कपूर के पेड़ या अंगूर की बेल को काटने से हासिल हो, या खुद-ब-खुद टपके या नमक, नौशादर, कपूर आदि के पिघलने से, या सोने, चाँदी, रांगे आदि के गलने से प्राप्त हो।

(2) जो कुछ हकीकत में पानी है (भले ही बीच में पानी न रहा हो, जैसे ओले या आसमानी बर्फ जब पूरी तरह पिघल जाए), या तो उसमें कोई और चीज़ (भले ही वह उसी की जिन्स से हो) शामिल होगी या नहीं। अगर नहीं, तो वह मुतलक़न 'आब-ए-मुतलक़' है। लेकिन अगर वह 'मा-ए-मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ पानी) है, जिसका वर्णन 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' में विस्तार से आ चुका है, तो उससे वज़ू और गुस्ल जायज़ नहीं है। वरना वह मुतलक़न सही है, चाहे किसी दूसरे की मिल्कियत

(स्वामित्व), वक़्फ़, या किसी ज़रूरी ज़रूरत की ओर होने के कारण, या अन्य कारणों से जिनका ज़िक्र पहले अध्याय में आ चुका है, उससे वज़ू हराम या मकरूह हो जाए। भले ही बच्चों के हाथ लगने, काफिर के छूने, या किसी संदिग्ध चीज़ के गिरने से उसकी शुद्धता में संदेह पैदा हो जाए, जब तक कि नजासत (गंदगी) साबित न हो जाए। भले ही बहुत देर तक बंद रहने से उसका रंग, गंध या स्वाद बदल जाए या शुरू से ही बदला हुआ हो, भले ही किसी तेज़ खुशबू या बदबू वाली चीज़ के पास होने से उसमें कितनी ही अच्छी या बुरी गंध पैदा हो जाए। हाँ, अगर सर्दी से जम जाए या तरल न रहे, जैसे ओले और बर्फ़ तो उससे वज़ू नाज़ायज़ होगा जब तक कि वह पिघलकर फिर से अपनी असली तरलता पर न आ जाए।

(3) अगर शामिल होगी तो दो सूरतें हैं: या तो पानी से अलग रहेगी, यानी उसमें समाहित (penetrate) नहीं होगी, या मिल जाएगी...

पृष्ठ 212 का 756

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

[Arabic Box]: وتم الکلام * وھھنا مباحث کثیرۃ لاتخفی علی من احاط بمادمنا من النقض والابرام * واللہ سبحانہ ولی الالھام *

[Urdu Translation Box]: تو درست ہوتا یہاں بہت سی ایسی مباحث ہیں کہ جو ان اعتراضات وجوابات کو مکمل پڑھنے سے مخفی نہیں رہ سکتیں جو ہم پہلے ذکر کر چکے ہیں اللہ الہام کرنے والا ہے۔(ت)

ششم ضابطہ رضویہ: سبحن اللہ فقیر بھی کوئی شئی ہے کہ احکام میں زبان کھول سکے حاشا ضابطہ وہی ضابطہ امام ابویوسف رضی اللہ تعالٰی عنہ ہے۔ باتباع علماء اس کے اجمال کو مفصل کر دیا ہے۔ تفاصیل میں خدمت گاری کلام اکابر کے صدقہ سے جن تحقیقات کا افاضہ ہوا ان پر ابنائے شقوق کیا ہے جملہ ضوابط صحیحہ مذکورہ کو ایک دائرے کے احاطہ میں لیا ہے اس نے بیان کو اظہر واجمع وانفع کر کے ضابطہ کے لئے خلعت جدت سیا ہے۔

فاقول: وباللہ التوفیق: (۱) دریا نہر چشمے چاہ باران کا پانی حتی کہ شبنم اپنی حد ذات میں آب مطلق ہے جو کچھ ان کی جنس سے نہیں اگرچہ ان کی شکل ان کے اوصاف ان کے نام پر ہو پانی نہیں اس سے وضو وغسل نہیں ہوسکتا جیسے ماء الجبن دہی کا پانی درختوں پتھروں کامد مٹی کا تیل سینڈھی تاڑی ناریل کدو تربوز کا پانی اگر چہ اس میں صرف پانی ہی ہو یو ہیں جو کچھ پتوں شاخوں پھلوں پھولوں سے نکالا جائے یا کافور کے درخت انگور کی بیل کی طرح کاٹے سے یا آپ ہی ٹپکے یا نمک نوشادر کا فور وغیرہا کے پگھلنے یا سونے چاندی را نگ وغیرہا کے گلنے سے حاصل ہو۔

(۲) جو کچھ حقیقتہ پانی ہے (اگرچہ بیچ میں پانی نہ رہا تھا جیسے اولے یا آسمانی برف یا کل کا جب پگھل جائے) یا تو اس میں کوئی اور چیز (اگرچہ اسی کی جنس سے ہو) داخل ہوگی یا نہیں، اگر نہیں تو وہ مطلقاً آب مطلق ہے لیکن اگر مائے مستعمل ہے جس کا بیان الطرس المعدل میں مفصل گزرا تو اس سے وضو و غسل جائز نہیں ورنہ مطلقاً صحیح ہے اگرچہ بوجہ ملک غیر یا وقف یا کسی حاجت ضروریہ کی طرف مصروف ہونے یا اور عوارض کے سبب جن کا بیان فصل اول میں گزرا اس سے وضو حرام یا مکروہ ہو اگرچہ بچوں کا ہاتھ پڑنے یا کافر کے چھونے یا کسی مشکوک شے کے گرنے سے اس کی طہارت میں اوہام پیدا ہوں جب تک نجاست ثابت نہ ہو جائے اگرچہ دیر تک بند رہنے سے اس کا رنگ، بو، مزہ بدل جائے یا ابتداء ہی سے بدلا ہوا ہو اگرچہ کسی تیز خوشبو یا بدبو شئی کے قرب سے اس میں کتنی ہی بوئے خوش یا ناخوش پیدا ہو جائے، ہاں اگر سردی سے جم جائے یا رقیق نہ رہے جیسے اولے برف اس سے وضو ناجائز ہو گا جب تک پگھل کر پھر اصلی رقت پر نہ آ جائے۔

(۳) اگر داخل ہو گی تو دو صورتیں ہیں یا تو پانی سے جُدا رہے گی یعنی اس میں سرایت نہ کرے گی یا خلط ہو جائے گی

Fatawa Razwiya, Volume Three

...if it remains separate (and this will only happen if a solid object like pebbles etc. are put in water), then if that object is not impure or the water is ten by ten (dah-dar-dah), it remains absolutely absolute and suitable for ablution; and if it is impure and the water is less, it is absolute but will not remain fit for use.

(4) If it gets mixed in water, there are two possibilities: the mixing substance is also originally only water, or it is something else. If it is only water, then again there are two possibilities: is it still water or not? If it is still water, then by its mixing, absolute water will remain absolute, and ablution with it will be permissible, except in two cases: first, if used water (Ma-e-Mustamal) is mixed in it and its quantity is not more than the water; second, if impure water falls into it and it is not ten by ten, and this will happen only when that water became impure without mixing with another substance, for example, a pig's foot or hair fell into small amount of water (Aab-e-Qaleel) and was removed, so that the water remained pure, not mixed, but became impure; otherwise, what became impure due to mixing with an impurity, its mixing will be excluded from this category because it was not the mixing of just water.

(5) If the mixing substance is no longer water (and this will not happen except in hail or ice, whether it be entirely celestial, as this is the only case where water does not remain non-water without mixing), then if it removes the liquidity of the water, it will not remain suitable for ablution until that substance melts and becomes water again. And if the liquidity remains—not in the sense that the hail or ice has not yet melted and mixed into the water and lies at the bottom like stones or pebbles, as that was the third scenario—but rather in the sense that they were so small in quantity that their mixing did not affect the liquidity of the water, then ablution with it is permissible.

(6) If that substance is other than water and it is mixed in the water to such an extent that the water is not more than it in quantity, then it is absolutely not suitable for ablution.

(7) If the water is more in quantity, is that substance impure or pure? If it is impure and the water is not ten by ten, or if it is ten by ten but its color, taste, or smell has changed due to the impurity, then although the water remains absolute, let alone being suitable for ablution, its use on the body will not remain permissible.

(8) If it is ten by ten and no quality has changed, then the ruling of impurity is dropped and some future rulings will apply.

(9) If it is pure, then there are two possibilities: its mixing happened over fire or separately. If it happened separately and that substance is solid, then by the consensus of our noble Imams (may Allah be pleased with them) and according to the correct and reliable school of thought, absolute water will remain absolutely absolute and suitable for ablution, even if the color, taste, and smell all change, except in two cases: one, that the water remains very liquid—and we have researched that this is not specific to solids, many liquids also prevent the liquidity of water; second, that it becomes another substance for another purpose, like honey syrup, sugar syrup, Nabidh, or dye.

Note (Ah): A large body of water (Aab-e-Katheer) does not become impure by falling into it unless one of its qualities changes, and it is obvious that color or taste will only change when the particles of that impurity are mixed in the water, and here the assumed case is that mixing does not occur. Yes, if an impure thing has such a strong odor that its mere proximity without mixing changes the smell of the large body of water, then it should become impure. And Allah Almighty knows best. May He forgive him. (M)

फतावा रज़विया, खंड तीन

...अगर अलग रहे (और यह तब होगा जब कोई ठोस वस्तु जैसे कंकड़ आदि पानी में डाल दिए जाएं), तो अगर वह वस्तु अशुद्ध (नजिस) नहीं है या पानी 'दह दर दह' (दस गुणा दस) है, तो वह पूर्णतः शुद्ध और वज़ू के योग्य है। और अगर वह अशुद्ध है और पानी कम है, तो वह शुद्ध तो है लेकिन इस्तेमाल के योग्य नहीं रहेगा।

(४) अगर पानी में मिश्रण हो गया तो दो स्थितियां हैं: वह मिलने वाली वस्तु भी असल में केवल पानी है या उसके अलावा कुछ और। अगर वह केवल पानी है, तो फिर दो स्थितियां हैं: वह अब भी पानी ही है या नहीं? अगर वह अब भी पानी ही है, तो उसके मिलने से पानी का 'मुतलक़' (शुद्ध) होना तो बना ही रहेगा, उससे वज़ू भी जायज़ होगा, सिवाय दो स्थितियों के: एक यह कि प्रयुक्त जल (आबे मुस्तअमल) उसमें मिल जाए और वह मात्रा में उससे अधिक न हो; दूसरी यह कि अशुद्ध पानी उसमें गिर जाए और वह 'दह दर दह' न हो। यह तब होगा जब वह पानी किसी दूसरी वस्तु के मिलने के बिना ही अपवित्र हो गया हो, जैसे कम मात्रा वाले पानी (आबे कलील) में सूअर का पैर या बाल गिरा और निकाल लिया गया, जिससे पानी शुद्ध तो रहा, मिश्रित नहीं हुआ, लेकिन अपवित्र हो गया। अन्यथा, जो गंदगी के मिलने से अपवित्र हुआ, उसका मिलना इस श्रेणी से बाहर होगा क्योंकि वह केवल पानी का मिलना नहीं हुआ।

(५) अगर वह मिलने वाली वस्तु अब पानी नहीं है (और ऐसा केवल ओलों या बर्फ में ही होगा, चाहे वह पूर्णतः आसमानी हो, क्योंकि यही वह स्थिति है जिसमें पानी बिना मिश्रण के 'गैर-पानी' नहीं रहता), तो अगर वह पानी की तरलता (रक़्क़त) को समाप्त कर दे, तो वह वज़ू के योग्य नहीं रहेगा जब तक कि वह वस्तु पिघलकर फिर से पानी न बन जाए। और अगर तरलता बाकी है—इस अर्थ में नहीं कि ओले या बर्फ अभी घुलकर पानी में मिले नहीं और कंकड़-पत्थर की तरह नीचे पड़े हैं, क्योंकि वह तो तीसरी स्थिति थी—बल्कि इस अर्थ में कि उनकी मात्रा इतनी कम थी कि उनके मिलने से पानी की तरलता में कोई अंतर नहीं आया, तो उससे वज़ू जायज़ है।

(६) अगर वह वस्तु पानी के अलावा कुछ और है और पानी में इतनी मिल गई है कि पानी मात्रा में उससे अधिक नहीं है, तो वह पूर्णतः वज़ू के योग्य नहीं है।

(७) अगर पानी मात्रा में अधिक है, तो क्या वह वस्तु अशुद्ध है या पवित्र (ताहिर)? अगर अशुद्ध है और पानी 'दह दर दह' नहीं है, या है लेकिन अशुद्धता के कारण उसके रंग, स्वाद या गंध में अंतर आ गया

है, तो पानी चाहे 'मुतलक़' रहे, वज़ू के योग्य होना तो दूर, शरीर पर उपयोग के लिए भी जायज़ नहीं रहेगा।

(८) अगर वह 'दह दर दह' है और किसी गुण में परिवर्तन नहीं आया, तो अशुद्धता का हुक्म समाप्त हो जाएगा और कुछ अन्य हुक्म भविष्य में लागू होंगे।

(९) अगर वह पवित्र है, तो फिर दो स्थितियां हैं: उसका मिश्रण आग पर हुआ या अलग से। अगर आग के बिना अलग से हुआ और वह वस्तु ठोस है, तो हमारे महान इमामों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की सर्वसम्मति और सही और विश्वसनीय मत के अनुसार, पानी पूर्णतः'आबे मुतलक़' और वज़ू के योग्य रहेगा, चाहे रंग, स्वाद और गंध सब बदल जाएं सिवाय दो स्थितियों के एक यह कि पानी अधिक तरल रहे—और हमने शोध किया है कि यह केवल ठोस पदार्थों के लिए विशेष नहीं है, कई तरल पदार्थ भी पानी की तरलता में बाधक होते हैं; दूसरा यह कि वह किसी अन्य उद्देश्य के लिए कोई अन्य वस्तु बन जाए, जैसे शहद का शरबत, चीनी का शरबत, नबीज़ या रंग।

टिप्पणी (अह): अधिक मात्रा वाला पानी (आबे कसीर) उसमें अशुद्धता गिरने से तब तक अपवित्र नहीं होता जब तक उसका कोई गुण न बदल जाए, और यह स्पष्ट है कि रंग या स्वाद तभी बदलेंगे जब उस गंदगी के कण पानी में मिल जाएं और यहाँ कल्पित स्थिति यह है कि मिश्रण नहीं हुआ। हाँ, अगर कोई अशुद्ध चीज़ इतनी तीव्र गंध वाली हो कि बिना मिश्रण के केवल उसकी समीपता से अधिक मात्रा वाले पानी की गंध बदल जाए, तो उसे अपवित्र होना चाहिए। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (म)

पृष्ठ २१३ / ७५६

اگر جدا رہے (اور یہ نہ ہو گا کہ شیئ جامد میں جیسے کنکر وغیرہ پانی میں ڈال دئے جائیں) تو اگر وہ شیئ نجس نہیں یا پانی دہ در دہ ہے مطلقاً مطلق و قابلِ وضو ہے اور اگر نجس ہے اور پانی کم تو مطلق ہے مگر لائقِ استعمال نہ رہے گا۔

(۴) اگر پانی میں خلط ہو گئی تو دو صورتیں ہیں وہ ملنے والی شیئ بھی اصل میں صرف پانی ہے یا اس کا غیر اگر صرف پانی ہے تو پھر دو صورتیں ہیں اب بھی پانی ہی ہے یا نہیں اگر اب بھی پانی ہی ہے تو اس کے ملنے سے پانی مطلق تو مطلق رہے گا ہی اُس سے وضو بھی روا ہوگا مگر دو صورتوں میں ایک یہ کہ آبِ مستعمل اس میں مل جائے اور یہ مقدار میں اس سے زائد نہ ہو، دوسرے یہ کہ نجس پانی پڑ جائے اور یہ دہ در دہ نہ ہو اور یہ وہیں ہوگا کہ وہ پانی بے کسی دوسری شیئ کے مختلط ہو جانے کے ناپاک ہو گیا جیسے آبِ قلیل میں خنزیر کا پاؤں یا بال پڑ گیا اور نکل گیا کہ پانی خالص ہی رہا خلط نہ ہوا اور ناپاک ہو گیا ورنہ جو خلط نجس سے نجس ہوا اس کا ملنا اس قسم سے خارج ہوگا کہ یہ صرف پانی کا ملنا نہ ہوا۔

(۵) اگر وہ ملنے والی شیئ اب پانی نہیں (اور یہ نہ ہو گا مگر اولے یا برف میں کل کا ہو خواہ آسمانی کہ یہی وہ صورت ہے کہ پانی بے خلط غیر پانی نہ رہے) تو اگر پانی کی رقت زائل کر دے قابلِ وضو نہ رہے گا جب تک وہ شیئ پگھل کر پھر پانی نہ ہو جائے اور اگر رقت باقی ہے نہ یوں کہ اولے برف ابھی گھل کر پانی میں مخلوط نہ ہوئے پتھر کنکر کی طرح تہ میں پڑے ہیں کہ یہ تو تیسرا نمبر تھا بلکہ یوں کہ مقدار میں اتنے کم تھے جن کے خلط سے رقتِ آب میں فرق نہ آیا تو اس سے وضو جائز ہے۔ (۶) اگر وہ شیئ غیرِ آب ہے اور پانی میں اتنی خلط ہو گئی کہ پانی اُس سے مقدار میں زائد نہیں تو مطلقاً قابلِ وضو نہیں۔ (۷) اگر پانی مقدار میں زیادہ ہے تو وہ شیئ

نجس ہے یا طاہر اگر نجس ہے اور پانی دہ در دہ نہیں یا ہے تو نجاست سے اس کے رنگ یا مزے یا بُو میں فرق آگیا تو پانی اگرچہ مطلق رہے قابلِ وضو درکنار بدن میں جائز الاستعمال رہا۔ (۸) اگر وہ دہ در دہ ہے اور کسی وصف میں تغیر نہ آیا تو نجاست کا حکم ساقط اور احکامِ بعض احکام آئندہ ہوں گے۔ (۹) اگر طاہر ہے تو پھر دو صورتیں ہیں اس کا خلط آگ پر ہوا یا الگ۔ اگر آگ سے الگ ہوا اور وہ شیئ جامد ہے تو ہمارے ائمہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے اجماع سے اور مالکا ہے تو مذہبِ صحیح معتمد میں پانی مطلقاً آبِ مطلق و لائقِ وضو رہے گا اگرچہ رنگ، مزہ، بُو سب بدل جائیں گے مگر دو صورتوں میں، ایک یہ کہ پانی رقیق تر رہے، اور ہم تحقیق کر آئے ہیں کہ یہ کچھ جامد ہی سے خاص نہیں بہت مائعات بھی مانعاتِ رقتِ آب ہوتے ہیں دوسرے یہ کہ شربتِ شہد یا شربتِ شکر یا نبیذ و رنگ کی طرح مقصدِ دیگر کیلئے شیئ دیگر ہو جائے۔

عہ: آبِ کثیر نجاست کے پڑنے سے ناپاک نہیں ہوتا جب تک اُس کا کوئی وصف نہ بدلے اور ظاہر ہے کہ رنگ یا مزہ اسی وقت بدلیں گے جب اُس نجس کے اجزاء پانی میں خلط ہوں اور یہاں وہ صورت مفروض ہے کہ خلط نہ ہو، ہاں اگر کوئی نجس چیز اس درجہ قوی الرائحہ ہو کہ صرف اس کی مجاورت بلا خلط سے آبِ کثیر کی بُو بدل جائے تو نجس ہونا چاہئے۔ واللہ تعالیٰ اعلم منہ غفرلہ۔ (م)

(10) If the mixing occurred on fire, there are two possibilities. If the item has not yet reached a state where it changes its purpose to something else, and the mixture with water is not yet complete enough to thicken upon cooling, and it is removed before that state, then the water remains absolutely pure water (Ab-e-Mutlaq) and suitable for Wudu.

(11) If that substance is cooked, then there are three scenarios: the purpose of cooking was either just the water, or just the substance, or both. In the first two scenarios, it will remain pure water (Ab-e-Mutlaq) as long as it does not reach a state where, upon cooling, it loses its liquidity. Examples of the second scenario passed in the first discussion on cooking (Tabkh) regarding cinnabar, starch, and barley water. The description of the first scenario will come in the fifth chapter, In Sha Allah.

(12) In the third scenario, if water was added in such abundance that it neither serves another purpose nor becomes thick, then it is absolutely pure water and suitable for purification.

(13) If it was not that abundant but could not become thick, then when it serves another purpose, it will no longer be suitable for Wudu.

(14) If the water can become thick, then if it has already become thick such that it does not spread fully when poured, it is absolutely no longer suitable for Wudu, even if soap was cooked in it, the purpose of which is increased cleanliness.

(15) If it hasn't become thick yet but will become so upon cooling, there are two possibilities: if that substance is like soap etc. for increased cleanliness, Wudu is currently permissible with it but will not be valid after it cools down.

(16) If it is not for increased cleanliness, then Wudu is not currently permissible with it either.

This is the elegant research that encompasses all authentic texts, covers and includes all original instructions, contains all previous investigations, and is sufficient and comprehensive for the correct ruling of all possible branches, with the help of Allah Almighty. Praise be to Allah, the Lord of the worlds, and the best of prayers and most perfect peace be upon the Seal of the Prophets, the Master of the Messengers, and upon all of them, and upon his family, his companions, his son, and his entire party, Amen. And praise be to Allah, the Lord of the worlds (Praise is for Allah, the Lord of

the worlds, and the best prayer and most perfect peace be upon the Seal of the Prophets, the Master of the Messengers, and upon all the Prophets, and upon your family and companions, children, and the whole group, Amen, and praise be to Allah, the Lord of the worlds).

Chapter Five: Regarding some modern specifics. By the grace of Allah Almighty, three hundred and seven (307) specifics have been mentioned in the book.

(308) Distilled water, i.e., water dripped in a retort (alembic), where simple water is kept and heated to purify it from earthy components and other impurities so that vapors rise, meet the coldness of the upper water, and become water again and drip down; regarding this water which is obtained purely from water vapor, no explicit specific ruling has come under the sight of this humble one in our books.

(10) यदि मिश्रण आग पर हुआ हो तो दो स्थितियां हैं। यदि वस्तु अभी तक उस अवस्था में नहीं पहुँची है जहाँ वह अपने उद्देश्य को किसी और चीज़ में बदल दे, और पानी के साथ मिश्रण इतना पूर्ण नहीं हुआ है कि ठंडा होने पर वह गाढ़ा हो जाए, और उसे उस स्थिति से पहले उतार लिया जाए, तो पानी पूर्णतः'आबे-मुतलक़' (शुद्ध जल) और वूज़ू के योग्य है।

(11) यदि वह वस्तु पक गई है, तो तीन परिदृश्य हैं: पकाने का उद्देश्य केवल पानी था, या केवल वह वस्तु, या दोनों। पहले दो परिदृश्यों में, वह आबे-मुतलक़ रहेगा जब तक कि वह ऐसी स्थिति में न पहुँच जाए जहाँ ठंडा होने पर उसका तरलपन समाप्त हो जाए। दूसरे परिदृश्य के उदाहरण 'तब्ख़' (पकाने) की पहली चर्चा में सिंदूर, अरारोट और जौ के पानी के संदर्भ में बीत चुके हैं। पहले परिदृश्य का विवरण पांचवें अध्याय में आएगा, इंशा अल्लाह।

(12) तीसरे परिदृश्य में, यदि पानी इतनी प्रचुरता में डाला गया कि न तो वह किसी अन्य उद्देश्य के लिए हो सके और न ही वह गाढ़ा हो सके तो वह पूर्णतः शुद्ध है और पवित्रता के योग्य है।

(13) यदि वह इतना प्रचुर नहीं था लेकिन गाढ़ा नहीं हो सका, तो जब वह किसी अन्य उद्देश्य के लिए हो जाएगा, तो वह वूज़ू के योग्य नहीं रहेगा।

(14) यदि पानी गाढ़ा हो सकता है, तो यदि वह वास्तव में गाढ़ा हो गया है कि डालने पर पूरी तरह से न फैले, तो वह पूरी तरह से वूज़ू के योग्य नहीं रहा, भले ही उसमें साबुन ही पकाया गया हो जिसका उद्देश्य अधिक स्वच्छता हो।

(15) यदि वह अभी गाढ़ा नहीं हुआ है लेकिन ठंडा होने पर हो जाएगा, तो दो स्थितियां हैं: यदि वह वस्तु साबुन आदि जैसी है जो अधिक स्वच्छता के लिए है, तो फिलहाल उससे वूज़ू जायज़ है लेकिन ठंडा होने के बाद सही नहीं।

(16) यदि वह अधिक स्वच्छता के लिए नहीं है, तो फिलहाल भी उससे वूज़ू जायज़ नहीं है।

यह वह उत्तम शोध है जो सभी प्रामाणिक ग्रंथों को समाहित करता है, मूल निर्देशों को शामिल करता है, सभी पिछले शोधों को समाहित करता है, और अल्लाह तआला की सहायता से सभी संभावित शाखाओं के सही निर्णय के लिए पर्याप्त है। प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो दुनिया का रब है, और सर्वश्रेष्ठ दुरूद और पूर्ण शांति नबियों की मुहर, रसूलों के सरदार पर हो, और उन सभी पर और

उनके परिवार, उनके साथियों, उनके पुत्र और उनके पूरे समूह पर, आमीन। और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो दुनिया का रब है। (प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो दुनिया का रब है, और सर्वश्रेष्ठ दुरूद और पूर्ण शांति नबियों की मुहर, रसूलों के सरदार पर और सभी नबियों पर, और आपके परिवार और साथियों, संतानों और समूह पर, आमीन, और प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो दुनिया का रब है)।

पांचवां अध्याय: कुछ आधुनिक सूक्ष्मताओं के बारे में। अल्लाह तआला की कृपा से पुस्तक में तीन सौ सात (307) सूक्ष्मताओं का उल्लेख किया गया है।

(308) आसुत जल (Distilled Water) यानी भभके(retort) में टपकाया हुआ पानी, जिसे मिट्टी के अंशों और अन्य अशुद्धियों से साफ करने के लिए सादा पानी रखकर गर्म किया जाता है ताकि भाप उठे, ऊपर के पानी की ठंडक पाकर फिर से पानी बन जाए और टपक जाए; यह पानी जो केवल पानी की भाप से प्राप्त होता है, इसकी कोई स्पष्ट सूक्ष्मता अपनी पुस्तकों में इस तुच्छ की दृष्टि से नहीं गुजरी।

पृष्ठ 214 का 756

(۱۰) اگر خلط آگ پر ہوا تو دو صورتیں ہیں اگر ہنوز وہ چیز پکنے نہ پائی کہ مقصدِ دیگر کیلئے شے دیگر کر دے پانی سے امتزاج کامل نہ ہونے پایا کہ سرد ہونے پر گاڑھا کر دے اس حالت کے قبل اتار لی تو پانی مطلقاً آبِ مطلق و قابل وضو ہے۔

(۱۱) اگر وہ شے پک گئی تو تین صورتیں ہیں پکانے میں صرف پانی مقصود ہے یا صرف وہ شے یا دونوں، پہلی دو صورتوں میں آبِ مطلق رہے گا جب تک اس قابل نہ ہو جائے کہ سرد ہو کر زوالِ رقت ہو، صورت دوم کی مثالیں بحث اول طَبخ میں شنجرف و نشاستہ و آش جو سے گزریں اور صورت اول کا بیان فصل خامس میں آتا ہے ان شاء اللہ تعالیٰ۔

(۱۲) صورتِ سوم میں اگر پانی اس قدر کثرت سے ڈال دیا کہ نہ مقصودِ دیگر کیلئے ہو سکے نہ اس سے دلدار ہوگا تو مطلقاً مطلق ولائق طہارت ہے۔

(۱۳) اگر اتنا کثیر نہ تھا مگر دلدار نہ ہو سکے گا تو جب مقصودِ دیگر کیلئے ہو جائے گا قابلِ وضو نہ رہے گا۔

(۱۴) اگر پانی دلدار ہو سکتا ہے تو اگر بالفعل گاڑھا ہو گیا کہ بہانے میں پُورا نہ پھیلے گا مطلقاً لائقِ وضو نہ رہا اگرچہ اس میں صابون ہی پکایا ہو جس سے زیادہ نظافت مقصود ہوتی ہے۔

(۱۵) اگر بالفعل گاڑھا نہ ہوا مگر ٹھنڈا ہو کر ہو جائے گا تو دو صورتیں ہیں اگر وہ شے مثل صابون وغیرہ زیادہ نظافت کیلئے ہے فی الحال اس سے وضو جائز ٹھنڈا ہونے کے بعد صحیح نہیں۔

(۱۶) اگر زیادہ نظافت کیلئے نہیں تو اس سے فی الحال بھی وضو جائز نہیں۔

یہ ہے وہ تحقیقِ انیق کہ جمیع نصوصِ صحاح کو متناول اور جملہ ارشاداتِ متون کو حاوی و شامل اور تمام تحقیقاتِ سابقہ پر مشتمل اور سب فروعِ ممکنہ کے حکمِ صحیح کو بعونہ تعالیٰ کافی و کافل والحمد للہ رب العلمین، وافضل الصلوۃ واکمل السلام علی خاتم النبیین، سید المرسلین، و علیھم جمیعاً و علی الہ و صحبہ وابنہ وحزبہ اجمعین، اٰمین والحمد للہ رب العلمین (حمد اللہ رب العالمین کیلئے ہے اور افضل الصلوۃ واکمل السلام خاتم النبیین سید المرسلین پر اور تمام انبیاء پر، اور آپ کے آل و اصحاب، اولاد اور گروہ سب پر ، آمین، والحمد للہ رب العلمین)۔

فصلِ خامس بعض جزئیاتِ جدیدہ میں۔ بجدہ تعالیٰ کتاب میں تین سو سات (۳۰۷) جزئیات مذکور ہوئے۔

(۳۰۸) آبِ مقطر یعنی قرع انبِیق میں ٹپکایا ہوا پانی کہ اجزائے ارضیہ و غیر ہا کثافتوں سے صاف کرنے کیلئے سادہ پانی رکھ کر آنچ کریں کہ بخارات اٹھ کر اوپر کے پانی کی سردی پاکر پھر پانی ہو کر ٹپک جائیں یہ پانی کہ محض پانی کی بھاپ سے حاصل ہوا اس کا صریح جزئیہ اپنی کتب میں نظر فقیر سے نہ گزرا،

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Arabic Text in Left Column]: ...the name of water upon its preparation for another purpose. From here, the difference between solid and liquid emerged, and Muhammad's school of thought became apparent with its four parts—except what we previously mentioned in 190 from this late virtuous commentator of Al-Durar, Al-Khadimi, in a discussion he found where he said in Al-Durar, giving a reason for the impermissibility of purification with water obtained by melting salt, that it has turned into another nature. He said: "He cited ice and vapor, and it was answered that the intended 'nature' is one that is unsuitable for wateriness." Thus, the question and answer benefit the permissibility of [purification with] water formed from vapor, and it is not far-fetched that the intended [meaning] is rainwater and well water, for they are nothing but vapors that turn into water.

[Urdu Text in Right Column]: But only that which we described in number 190, and it was obtained from this saying of a learned commentator of Al-Durar, Khadimi Sahib, which he mentioned in a debate. While in Durar it was stated as an argument for the impermissibility of purification with water made from melting salt, saying that this water is obtained from a change in nature; upon this, Allama Khadimi objected by referring to ice and steam (that the water made from them also has a changed nature, yet wudu with it is permissible). In response to this, it was said that nature refers to a nature that is not suitable for wateriness (etc.). So this question and answer stated the permissibility of wudu with water made from steam. It is not improbable that this refers to rain and well water, because both these waters are formed from the change of vapors. (T)

I say: But by the help of Almighty Allah, the ruling is clear that it is absolute water (ma-e-mutlaq) and purification with it is permissible, for all common waters of the heavens and earth except the sea are formed from vapors. Rose water and borage water (araq-e-gaozaban) etc. will not be included, because although they are also vapors of water, they did not rise from plain water; rather, from that in which another thing was soaked, which turned these transformed vapors into something else for another purpose. Therefore, the name was lost; they are not called water but rose water and extract (araq). Contrary to distilled water (ab-e-taqteer), which is water itself and will be called water; neither the purpose changed nor the name.

I say: (1) However, based on the principle of Imam Zaila'i, rose water and all extracts would be included, because if solid things are mixed, the criterion becomes the

persistence of liquidity (raqat), and that remains. So these vapors, according to the principle, rose from absolute water itself and dripped down as water itself. After that, nothing happened to them which, according to the principle, would make them restricted water (ma-e-muqayyad), as becoming something else for another purpose is not in the principle. So according to the rule, wudu should be permissible with rose water and every extract, although it is not permissible by consensus (bil-ijma').

[Footer Table - Arabic]: Then I saw the clarification of this branch in the books of the Shafi'i masters. [Footer Table - Urdu]: Then I saw the clarification of this branch in the books of the Shafi'i masters, Allama Zain, a student of Imam Ibn Hajar Makki, said...

---

1 Hashiya ala al-Durar by Abu Sa'id al-Khadimi, Book of Purification, Maktaba Uthmania, Egypt, 1/201.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 3

[बाएँ कॉलम में अरबी पाठ]: ...एक अन्य उद्देश्य के लिए इसकी तैयारी पर पानी का नाम। यहीं से ठोस और तरल के बीच अंतर पैदा हुआ और मुहम्मद का पंथ अपने चार भागों के साथ प्रकट हुआ - सिवाय इसके जो हमने पहले 190 में अल-दुरार के इस बाद के गुणी टीकाकार अल-खादिमी से एक चर्चा में उल्लेख किया था जो उन्हें मिली थी। अल-दुरार में नमक पिघलने से प्राप्त पानी से पवित्रता की अमान्यता का कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि यह दूसरी प्रकृति में बदल गया है। उन्होंने कहा: "उन्होंने बर्फ और वाष्प का हवाला दिया, और उत्तर दिया गया कि अभिप्रेत 'प्रकृति' वह है जो जलीयता के लिए अनुपयुक्त है।" इस प्रकार, प्रश्न और उत्तर वाष्प से बने पानी से [पवित्रता की] अनुमति का लाभ देते हैं, और यह दूर की बात नहीं है कि अभिप्रेत [अर्थ] बारिश का पानी और कुएं का पानी है, क्योंकि वे वाष्प के अलावा और कुछ नहीं हैं जो पानी में बदल जाते हैं।

[दाएँ कॉलम में उर्दू पाठ]: मगर सिर्फ वही जो हमने नंबर 190 में बयान किया और वह अल-दुरार के एक आलिम मुफस्सिर (टीकाकार) खादिमी साहब के इस कथन से प्राप्त हुआ जिसे उन्होंने एक बहस के दौरान ज़िक्र किया। जबकि दुरार में नमक के पिघलने से बने पानी से पवित्रता के नाजायज़ होने का तर्क देते हुए कहा गया कि यह पानी प्रकृति के परिवर्तन से प्राप्त हुआ है; इस पर अल्लामा खादिमी ने बर्फ और भाप का हवाला देकर आपत्ति जताई (कि इनसे बना पानी भी तो बदली हुई प्रकृति का होता है, फिर भी उससे वज़ू जायज़ है)। इसके उत्तर में कहा गया कि प्रकृति से तात्पर्य ऐसी प्रकृति है जो जलीयता के अनुकूल न हो (आदि)। तो इस सवाल और जवाब ने भाप से बने पानी से वज़ू की अनुमति को स्पष्ट कर दिया। यह असंभव नहीं कि इससे तात्पर्य वर्षा और कुओं का पानी हो क्योंकि ये दोनों पानी वाष्प के परिवर्तन से ही बनते हैं। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): लेकिन सर्वशक्तिमान अल्लाह की मदद से, नियम स्पष्ट है कि यह पूर्ण जल (मा-ए-मुतलक) है और इससे पवित्रता जायज़ है, क्योंकि समुद्र के अलावा आकाश और पृथ्वी के सभी सामान्य जल वाष्प से ही बनते हैं। गुलाब जल और अर्कए-गाओज़बान आदि शामिल नहीं होंगे, क्योंकि हालांकि वे भी पानी के वाष्प हैं, लेकिन वे सादे पानी से नहीं उठे; बल्कि उससे जिसमें दूसरी चीज़ भिगोई गई थी, जिसने इन परिवर्तित वाष्पों को दूसरे उद्देश्य के लिए कुछ और बना दिया। इसलिए नाम का लोप हो गया; उन्हें पानी नहीं कहा जाता बल्कि गुलाब जल और अर्क कहा जाता है। आसुत जल (आब-ए-तक़्तीर) के विपरीत, जो स्वयं पानी है और पानी ही कहा जाएगा; न उद्देश्य बदला और न नाम।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): (1) हालाँकि, इमाम ज़ैलई के सिद्धांत पर गुलाब जल और सभी अर्क शामिल होंगे, क्योंकि यदि ठोस चीज़ें मिलाई जाती हैं, तो मापदंड तरलता (रक़त) के बने रहने पर होता है, और वह शेष है। तो ये वाष्प, सिद्धांत के अनुसार, पूर्ण जल से ही उठे और स्वयं पानी बनकर टपके। उसके बाद उनके साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ जो सिद्धांत के अनुसार उन्हें प्रतिबंधित जल (मा-ए-मुक़य्यद) बना दे, क्योंकि दूसरे उद्देश्य के लिए कुछ और बन जाना सिद्धांत में नहीं है। तो नियम के अनुसार, गुलाब जल और हर अर्क से वज़ू जायज़ होना चाहिए, हालाँकि आम सहमति (बिल-इज्मा) से यह जायज़ नहीं है।

[फुटर टेबल - अरबी]: फिर मैंने शाफ़ई पंथ के विद्वानों की पुस्तकों में इस शाखा का स्पष्टीकरण देखा। [फुटर टेबल - उर्दू]: फिर मैंने शाफ़ई मसलक के विद्वानों की किताबों में इस शाखा का स्पष्टीकरण देखा, इमाम इब्न हजर मक्की के शागिर्द अल्लामा ज़ैन ने कहा...

---

1 अल-दुरार पर हाशिया, अबू सईद अल-खादिमी द्वारा, पवित्रता की पुस्तक, मकतबा उस्मानिया, मिस्र 1/201।

पृष्ठ 215/756

[عربی متن بائیں کالم میں]: اسم الماء علی تھیؤہ لمقصد اخر فمن ھھنا حصل الفرق بین الجامد والمائع وظھر مذھب محمد باجزائہ الاربعۃ-الا ما قدمنا في ۱۹۰ عن ھذا الفاضل المتأخر محشی الدرر الخادمی في بحث وجد اذ قال في الدرر معللا لعدم جواز الطھارۃ بماء حصل بذوبان الملح انہ انقلب الی طبیعۃ اخری فقال اورد الجمد والبخار واجیب المراد طبیعۃ غیر ملائمۃ للمائیۃ اہ فافاد السؤال والجواب الجواز بماء یتکون من البخار ولایبعد ان المراد ماء المطر والبئر فما ھما الا ابخرۃ تستحیل ماء۔

[اردو متن دائیں کالم میں]: مگر صرف وہی جو ہم نے نمبر ۱۹۰ میں بیان کیا اور وہ الدرر کے ایک فاضل محشی خادمی صاحب کے اس قول سے حاصل ہوا جس کو انہوں نے ایک بحث مباحثہ میں ذکر کیا جبکہ ڈر میں کہا نمک کے پگھلنے سے جو پانی بنا اس سے طہارت کے ناجائز ہونے کی دلیل بیان کرتے ہوئے کہا کہ یہ پانی ایک طبیعت کے انقلاب سے حاصل ہوا ہے، تو اس پر علامہ خادمی نے اعتراض کرتے ہوئے برف اور بخار کا حوالہ دیا (کہ اس سے جو پانی بنتا ہے وہ بھی تو طبیعت بدلا ہوا ہوتا ہے حالانکہ اس سے وضو جائز ہے) اس کے جواب میں کہا گیا کہ طبیعت سے مراد ایسی طبیعت ہے جو پانی کے مناسب نہ ہو اھ تو اس سوال و جواب نے بخار سے بنے ہوئے پانی سے وضو کا جواز بیان کردیا۔ کوئی بعید نہیں کہ اس سے مراد بارش اور کنوؤں کا پانی ہو کیونکہ یہ دونوں پانی بخارات کی تبدیلی سے بنتے ہیں۔ (ت)

اقول: مگر بعونہ تعالی حکم ظاہر ہے کہ وہ مائے مطلق اور اس سے طہارت جائز ہے کہ سمندر کے سوا آسمان وزمین کے عام پانی بخارات ہی سے بنتے ہیں اور گلاب وعرق گاؤزبان وغیرہ وارد نہ ہوں گے کہ وہ بھی اگرچہ پانی ہی کے بخار ہیں مگر وہ سادہ پانی سے نہ اٹھے بلکہ جس میں دوسری شے بھگوئی گئی ہے جس نے ان بخارات مستحیلہ کو مقصدِ دیگر کیلئے چیزِ دیگر

کردیا لہذا زوالِ اسم ہو گیا انہیں پانی نہیں کہا جاتا بلکہ گلاب وعرق بخلاف آبِ تقطیر کہ وہ پانی ہی ہے اور پانی ہی کہا جائے گانہ مقصود بدلا نہ نام۔ اقول: (۱) البتہ ضابطہ امام زیلعی پر گلاب اور سب عرق وارد ہوں گے کہ جامد ہی چیزیں ملیں تو مدار بقائے رقت پر ہوا اور وہ باقی ہے تو یہ بخارات ازروئے ضابطہ آب مطلق ہی سے اٹھے اور پانی ہی ہو کر ٹپکے اس کے بعد کوئی بات انہیں وہ عارض نہ ہوئی جو بر بنائے ضابطہ انہیں آب مقید کردے کہ مقصدِ دیگر کیلئے چیزِ دیگر ہو جانا ضابطہ میں نہیں تو بحکم ضابطہ گلاب وہر عرق سے وضو ہو سکتا چاہئے حالانکہ بالاجمال جائز نہیں۔

[فٹر ٹیبل - بائیں]: ثم رأیت التصریح بهذا الفرع فی کتب السادة الشافعیة [فٹر ٹیبل - دائیں]: پھر میں نے اس فرع کی تصریح شافعی مسلک کے علماء کی کتب میں دیکھی، امام ابن حجر مکی کے شاگرد علامہ زین

---

1 حاشیہ علی الدرر لابی سعید الخادمی کتاب الطهارة مکتبہ عثمانیہ مصر ۱/۲۰۱

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Arabic Quote]: Al-Malibari, a student of Imam Ibn Hajar al-Makki, stated in 'Fath al-Mu'in' that absolute water is that which can be called 'water' without any restriction, even if it is formed from the steam of boiling pure water. In the 'Al-Fatawa al-Kubra al-Fiqhiyyah' of his teacher and Sheikh (may Allah have mercy on them both), it is mentioned that he was asked about a tree in Abyssinia that releases a smoke-like gas when the winds blow, and that gas later takes on a flowing form like water, appearing exactly like water. Is it permissible to attain ritual purity using this gas-water from the tree? He replied that its ruling is not that of water; rather, it is definitely like a fluid. It differs from the steam of boiling pure water because the latter originates from water, whereas this is like tree water and is certainly not purifying at all. (T)

[Urdu Translation]: Malibari stated in 'Fath al-Mu'in' that absolute water is that which can be called water without any restriction, even if it is formed from the steam of boiling pure water. And in the 'Al-Fatawa al-Kubra al-Fiqhiyyah' of his teacher and Sheikh, it is mentioned that he was asked about a tree in Africa that releases a smoke-like gas when the winds blow, and that gas later takes on a flowing form like water which appears exactly like water. Is it permissible to attain purity from the water of this gas of the tree? He replied that its ruling is not like water, rather it is a flowing substance which is different from the vapors of boiling water because the latter is formed from water. And that is like tree water, from which attaining purity is not permissible at all. (T)

I say: If this is from the vapors of pure absolute water, it is suitable for purification. (309) Sometimes water drips from the ceiling and walls of a bathhouse. (310) Covering water while heating it: steam rises and forms some droplets on the inner side of the cover. I say: It remains pure water, and it is permissible to wipe over the head or leather socks with it.

[Arabic Quote]: Because you know it is nothing but parts of absolute water, and the transition into steam does not prevent [it from being water], just like the water of wells and rain.

[Urdu Translation]: Because you know that this is made from the components of absolute water, and taking the form of vapor in between is not a hindrance for it, just like the water of wells and rain, which were also in the form of vapor initially. (T)

(311) Any other vapor droplets found on the lid while cooking something else.

---

1 Fath al-Mu'in bi Sharh Qurrat al-'Ayn, Chapter on Conditions of Prayer, Matba' Amir al-Islam, Tirurangadi, Kerala, p. 8 2 Fatawa al-Kubra, Book of Purification, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut, 1/12

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[अरबी उद्धरण]: मलीबारी ने 'फ़तह अल-मुईन' में कहा है कि मुतलक (शुद्ध) पानी वह होता है जिसे बिना किसी शर्त के पानी कहा जा सके, चाहे वह उबलते हुए पाक पानी की भाप से बना हो। और उनके उस्ताद और शैख़ के'फ़तावा कुबरा फ़िक़्हिया' में है कि उनसे पूछा गया कि हबशा (इथियोपिया) में एक ऐसा पेड़ है जो हवा चलने पर धुएं की तरह एक गैस छोड़ता है और वह गैस बाद में पानी की तरह बहने वाली सूरत अख्तियार कर लेती है जो बिल्कुल पानी मालूम होती है। तो क्या पेड़ की इस गैस के पानी से पाकी हासिल करना जायज़ है? तो उन्होंने जवाब दिया कि इसका हुक्म पानी वाला नहीं है बल्कि वह बहने वाला माद्दा है जो उबलते वाले पानी के बुख़ारात (भाप) से मुख़्तलिफ़ है क्योंकि यह (भाप) तो पानी से बनती है। और वह पेड़ के पानी की तरह है जिससे पाकी हासिल करना बिल्कुल जायज़ नहीं। (त)

[उर्दू अनुवाद]: मलीबारी ने फ़तह अल-मुईन में कहा कि मुतलक पानी वह होता है जिसे किसी क़ैद (शर्त) के बिना पानी कहा जा सके, अगरचे वह उबलने वाले पाक पानी की भाप से बना हो। और उनके उस्ताद और शैख़ के फ़तावा कुबरा फ़िक़्हिया में है कि उनसे पूछा गया कि अफ्रीका में एक ऐसा पेड़ है जो हवाओं के चलने पर धुएं की तरह एक गैस छोड़ता है और वह गैस बाद में पानी की तरह बहने वाली सूरत अख्तियार कर लेती है जो बिल्कुल पानी मालूम होती है। तो क्या पेड़ की इस गैस के पानी से तहारत (पाकी) हासिल करना जायज़ है? तो उन्होंने जवाब दिया कि इसका हुक्म पानी वाला नहीं है बल्कि वह बहने वाला माद्दा है जो उबलने वाले पानी के बुख़ारात से मुख़्तलिफ़ है क्योंकि यह तो पानी से बनता है। और वह पेड़ के पानी की तरह है जिससे तहारत का हुसूल बिल्कुल जायज़ नहीं। (त)

अक़ौल (मैं कहता हूँ): यह अगर आब-ए-मुतलक ताहिर (शुद्ध जल) के बुख़ारात से है तो तहारत (शुद्धिकरण) के क़ाबिल है। (309) कभी हमाम (स्नानगृह) की छत और दीवारों से पानी टपकता है। (310) आब-ए-ग़ाता (ढका हुआ पानी) गर्म किया, भाप उठकर सरपोश (ढक्कन) पर अंदर की जानिब पानी के कुछ क़तरे बने हुए मिलते हैं। अक़ौल: वह बदस्तूर आब-ए-तहूर (शुद्ध जल) है, उससे सर या मोज़ों का मसह (पोंछना) जायज़ है।

[अरबी उद्धरण]: क्योंकि तुम्हें मालूम है कि यह मुतलक पानी के अज्ज़ा (अंशों) के अलावा कुछ नहीं है और बुख़ारात (भाप) में बदलना इसे पानी होने से नहीं रोकता, जैसे कुओं और बारिशों का पानी।

[उर्दू अनुवाद]: क्योंकि तुम्हें मालूम है कि यह मुतलक पानी के अज्ज़ा से बना है और दरमियान में बुख़ारात की सूरत अख्तियार करना इसके लिए रुकावट नहीं है जिस तरह कुओं और बारिशों के पानी कि वह भी पहले बुख़ारात की सूरत में थे। (त)

(311) कोई और चीज़ पकाते समय जो भाप के क़तरे चप्पन (ढक्कन) पर मिलें।

---

1 फ़तह अल-मुईन बशरह कुर्रतुल ऐन, नमाज़ की शर्तों का अध्याय, मतबा आमिरुल इस्लाम तिरुरंगडी केरल, पृ. 8 2 फ़तावा कुबरा, किताबुत तहारत, दारुल कुतुबुल इल्मिया बेरुत 1/12

المليبارى تلميذ الامام ابن حجر المكى فى فتح المعين الماء المطلق ما يقع عليه اسم الماء بلا قيد وان رشح من بخار الماء الطهور المغلى اھ وفى الفتاوى الكبرى الفقهية لشيخه الامام رحمهما الله تعالى سئل عن شجر بارض الحبشة يخرج منه عند انتشار الرياح بخار كالدخان ويرشح مائعا كالماء سواء بسواء فهل له حكم الماء فى الطهورية فاجاب ليس حكمه حكمه بل هو كالمائع جزما و فارق بخار الطهور المغلى بان ذلك من الماء بخلاف هذا اذ هو كماء الشجر وهو ليس بطهور قطعا۔

ملیباری نے فتح المعین میں کہا کہ مطلق پانی وہ ہوتا ہے جس کو کسی قید کے بغیر پانی کہا جاسکے اگرچہ وہ ابلنے والے پاک پانی کی بھاپ سے بنا ہو اھ اور ان کے استاد و شیخ کے فتاوٰی کبرٰی فقہیہ میں ہے کہ ان سے پوچھا گیا کہ افریقہ میں ایک ایسا درخت ہے جو ہواؤں کے چلنے پر دھوئیں کی طرح ایک گیس چھوڑتا ہے اور وہ گیس بعد میں پانی کی طرح بہنے والی صورت اختیار کرلیتی ہے جو بالکل پانی معلوم ہوتی ہے۔ تو کیا درخت کی اس گیس کے پانی سے طہارت حاصل کرنا جائز ہے تو انہوں نے جواب دیا کہ اس کا حکم پانی والا نہیں ہے بلکہ وہ بہنے والا مادہ ہے جو ابلنے والے پانی کے بخارات سے مختلف ہے کیونکہ یہ تو پانی سے بنتا ہے۔ اور وہ درخت کے پانی کی طرح ہے جس سے طہارت کا حصول بالکل جائز نہیں۔ (ت)

اقول: یہ اگر آبِ مطلق طاہر کے بخارات سے ہے قابلِ طہارت ہے۔ (309) کبھی حمام کی چھت اور دیواروں سے پانی ٹپکتا ہے۔ (310) آبِ غطا پانی گرم کیا بھاپ اٹھ کر سرپوش پر اندر کی جانب پانی کے کچھ قطرے بنے ہوئے ملتے ہیں۔ اقول وہ بدستور آبِ طہور ہے اُس سے سر یا موزوں کا مسح جائز ہے،

لما علمت انه لیس الا من اجزاء الماء المطلق وتخلل الاستحالة الی البخار لا یمنع کمیاہ الابار والامطار۔

کیونکہ تمہیں معلوم ہے کہ یہ مطلق پانی کے اجزاء سے بنا ہے اور درمیان میں بخارات کی صورت اختیار کرنا، اس کیلئے مانع نہیں ہے جس طرح کنوؤں اور بارشوں کے پانی کہ وہ بھی پہلے بخارات کی صورت میں تھے۔ (ت)

(311) کوئی اور چیز پکانے میں جو قطراتِ بخار چپن (ڈھکنا) پر ملیں۔

---

1 فتح المعین بشرح قرۃ العین فصل فی شروط الصلوۃ مطبع عامر الاسلام ترور نگاڈی کیرلہ ص 8

2 فتاوٰی کبری کتاب الطھارۃ دار الکتب العلمیہ بیروت 1/ 12

I say: Its ruling will be clear by referring to the issues of cooking. If that thing is for increased cleanliness and the water has not actually become thick, or if it is something else and the water hasn't yet reached a state where it won't remain thin after cooling, nor has it become another thing for another purpose; in this state, the vapors that rise are absolute water (Mutlaq) as they are from the components of absolute water, otherwise they are restricted (Muqayyad) as they are from restricted water.

(312) Vapors rising and dripping from stables etc., which are places of impurities, are absolutely pure as long as the effect of impurity is not apparent in them.

Arabic Text

In Radd al-Muhtar from al-Khaniyyah: The water from a cover (Tabaq) is impure by analogy (qiyas) but not by juristic preference (istihsan). The scenario is: when excrement is burned in a room and its heat (forming moist vapors that collect on the lid and drip) falls onto a person's clothes, the clothes will not be considered impure by istihsan as long as no trace of impurity is visible in those drops. Similarly, in a stable, due to heat and having a cover on the roof, or if there is a water pitcher and it starts dripping. Likewise, in a bathhouse (hammam) if there are various impurities and drops start dripping from walls and ceilings; it is said in al-Hilyah that the apparent rule is to act upon istihsan. That is why in al-Khulasa, only the ruling of istihsan (purity) is mentioned. 'Tabaq' refers to large covers made of glass or clay.

Urdu Translation/Explanation

In Radd al-Muhtar from al-Khaniyyah: The water from a cover (lid) is impure by analogy (qiyas) but not by juristic preference (istihsan). The scenario is: when excrement is burned in a room and its heat (forming moist vapors that collect on the lid and drip) falls onto a person's clothes, the clothes will not be considered impure by istihsan as long as no trace of impurity is visible in those drops. Similarly, in a stable, due to heat and having a cover on the roof, or if there is a water pitcher and it starts dripping. Likewise, in a bathhouse (hammam) if there are various impurities and drops start dripping from walls and ceilings; it is said in al-Hilyah that the apparent rule is to act upon istihsan. That is why in al-Khulasa, only the ruling of istihsan (purity) is mentioned. 'Tabaq' refers to large covers made of glass or clay. (T)

I say: However, they are not purifying (tahoor) or capable of purification if they consist of moisture other than absolute water, as is not hidden.

(313) Ginger water (Zanjareet). (314) Sweet water (lemonade), it is clear they are not absolute water. Note: 'Tabaq' refers to large covers made of glass or clay. (M)

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Impurities, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/238 Page 217 of 756

फ़तावा रजविया जिल्द 3

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इसका हुक्म पकाने के मसलों की तरफ रुजू करने से वाज़ेह होगा। अगर वह चीज़ ज़्यादती-ए-नफ़ासत (सफ़ाई) के लिए है और पानी बिल-फ़ैल (वास्तव में) गाढ़ा नहीं हुआ, या कोई और चीज़ है और पानी अभी इस क़ाबिल नहीं हुआ कि ठंडा होकर रक़ीक़ (पतला) न रहे, न वह मक़सूद-ए-दीगर (अन्य उद्देश्य) के लिए चीज़-ए-दीगर हो गया, तो इस हालत में जो बुखारात (भाप) उठे वे आब-ए-मुतलक़ (शुद्ध पानी) हैं क्योंकि वे आब-ए-मुतलक़ के अज्ज़ा (हिन्सों) से हैं, वरना मुक़य्यद (सीमित) हैं क्योंकि वे मुक़य्यद से हैं।

(312) अस्तबल वग़ैरह नजासत (गंदगी) की जगहों से बुखारात उठकर टपकना मुतलक़न पाक हैं जब तक उनमें नजासत का असर ज़ाहिर न हो।

अरबी इबारत

रद्दुल मुहतार में ख़ानिया से है: ढक्कन (तबाक़) का पानी क़ियास (तर्क) के तौर पर नजिस (अपवित्र) है, इस्तेहसान (न्यायिक वरीयता) के तौर पर नजिस नहीं। इसकी सूरत यूँ होगी कि किसी कमरे में नजासत को आग से जलाने की बिना पर हरारत (से मरतूब बुखारात बनकर ढक्कन पर जमा होकर टपकने) पर वे क़तरे किसी के कपड़ों को लगे तो इस्तेहसान के तौर पर कपड़े नापाक न होंगे जब तक उन क़तरों में नजासत के असरात ज़ाहिर न हों। इसी तरह अस्तबल में हरारत और छत पर ढक्कन होने की सूरत में या वहाँ कोई पानी का मटका होने की सूरत में पानी टपकना शुरू कर दे। इसी तरह किसी हम्माम में अगर मुख़्तलिफ़ नजासतें हों तो वहाँ दीवारों और छत पर क़तरे बनकर टपकने लगें; हिल्या में कहा तो ज़ाहिर यही है कि इस्तेहसान पर अमल किया

उर्दू तर्जुमा व व्याख्या

रद्दुल मुहतार में ख़ानिया से है ढक्कन (सरपोश) का पानी क़ियास के तौर पर नजिस है इस्तेहसान के तौर पर नजिस नहीं, इसकी सूरत यूँ होगी कि किसी कमरे में नजासत को आग से जलाने की बिना पर हरारत (से मरतूब बुखारात बनकर ढक्कन पर जमा होकर टपकने) पर वह क़तरे किसी के कपड़ों को लगे तो इस्तेहसान के तौर पर कपड़े नापाक न होंगे जब तक इन क़तरों में नजासत के असरात ज़ाहिर न हों, इसी तरह अस्तबल में हरारत और छत पर ढक्कना होने की सूरत में या वहाँ कोई पानी का मटका होने की सूरत में पानी टपकना शुरू कर दे। इसी तरह किसी हम्माम में अगर मुख़्तलिफ़ नजासतें हों तो वहाँ दीवारों और छत पर क़तरे बनकर टपकने लगें हिल्या में कहा तो ज़ाहिर यही है कि इस्तेहसान पर अमल किया जाएगा

अरबी इबारत

जाएगा, इसीलिए ख़ुलासा में सिर्फ़ इस्तेहसान वाले हुक्म (तहारत - पवित्रता) का ज़िक्र किया गया है और 'तबाक़' शीशे या मिट्टी के बड़े ढक्कन को कहते हैं।

उर्दू तर्जुमा व व्याख्या

इसी लिये ख़ुलासा में सिर्फ़ इस्तेहसान वाले हुक्म (तहारत) को ज़िक्र किया गया है और तबाक़ शीशे या मिट्टी के बड़े ढक्कने को कहते हैं। (त)

अक़ूल: मगर तहूर (पवित्र करने वाला) और क़ाबिल-ए-तहारत नहीं अगर आब-ए-मुतलक़ के सिवा और रुतूबतों (नमी) से हों जैसा कि पोशीदा नहीं है।

(313) सोंठ का पानी (जिंज़रीट)। (314) मीठा पानी (लेमोनेड), इनका आब-ए-मुतलक़ न होना साफ़ ज़ाहिर है। 'तबाक़' शीशे या मिट्टी के बड़े ढक्कन को कहते हैं। (म)

---

1 रद्दुल मुहतार, बाबुल अनजास, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/238 पेज 217 / 756

اقول: اس کا حکم مسائل طبخ کی طرف رجوع سے واضح ہوگا اگر وہ شے زیادت نظافت کیلئے ہے اور پانی بالفعل گاڑھا نہ ہو گیا یا اور کوئی چیز ہے اور پانی ابھی اس قابل نہ ہوا کہ سرد ہو کر رقیق نہ رہے نہ وہ مقصود دیگر کیلئے چیز دیگر ہو گیا اس حالت میں جو بخارات اٹھے آپ مطلق ہیں کہ آپ مطلق کے اجزاء سے ہیں ورنہ مقید کہ مقید سے ہیں۔

(۳۱۲) اصطبل وغیرہ محل نجاسات سے بخارات اٹھ کر ٹپکنے پاک تو مطلقاً ہیں جب تک ان میں اثر نجاست ظاہر نہ ہو،

| فی رد المحتار فی الخانیۃ ماء الطابق۱ نجس قیاسا لا استحسانا وصورتہ اذا احرقت العذرۃ فی بیت فاصاب ماء الطابق ثوب انسان لا یفسدہ استحسانا مالم یظھر اثر النجاسۃ فیہ وکذا الاصطبل اذا کان حارا وعلی کوتہ طابق او کان فیہ کوز معلق فیہ ماء فترشح وکذا الحمام فیھا نجاسات فعرق حیطانھا وکواتھا وتقاطر قال فی الحلیۃ والظاھر العمل بالاستحسان ولذا اقتصر علیہ فی الخلاصۃ والطابق الغطاء العظیم من الزجاج او اللبن۱ اھ | ردالمحتار میں خانیہ سے ہے ڈھکنے (سرپوش) کا پانی قیاس کے طور پر نجس ہے استحسان کے طور پر نجس نہیں، اس کی صورت یوں ہوگی کہ کسی کمرے میں نجاست کو آگ سے جلانے کی بنا پر حرارت (سے مرطوب بخارات بن کر ڈھکنے پر جمع ہو کر ٹپکنے) پر وہ قطرے کسی کے کپڑوں کو لگے تو استحسان کے طور پر کپڑے ناپاک نہ ہوں گے جب تک ان قطرات میں نجاست کے اثرات ظاہر نہ ہوں، اسی طرح اصطبل میں حرارت اور چھت پر ڈھکنا ہونے کی صورت میں یا وہاں کوئی پانی کا مٹکا ہونے کی صورت میں پانی ٹپکنا شروع کر دے۔ اسی طرح کسی حمام میں اگر مختلف نجاستیں ہوں تو وہاں دیواروں اور چھت پر قطرے بن کر ٹپکنے لگیں حلیہ میں کہا تو ظاہر یہی ہے کہ استحسان پر عمل کیا جائے گا اسی

لئے خلاصہ میں صرف استحسان والے حکم (طہارت) کو ذکر کیا گیا ہے اور طابق شیشے یا مٹی کے بڑے ڈھکنے کو کہتے ہیں۔ (ت) |

اقول: مگر طہور وقابل طہارت نہیں اگر آب مطلق کے سوا اور رطوبتوں سے ہوں کما لا یخفی۔

(۳۱۳) سونٹھ کا پانی جنجریٹ۔ (۳۱۴) میٹھا پانی لیمینیڈ ان کا آب مطلق تو نہ ہونا صاف ظاہر۔ عہ طابق شیشے یا مٹی کے بڑے ڈھکنے کو کہتے ہیں۔ (م)

Fatawa Rizvia Volume Three (315) Salty water (soda water) is also not suitable for purification even if no additional ingredient has been added and it is made solely from the gas of air, [Arabic]: Because there is no doubt that the mentioned air spreads into the water during its effervescence, changing its taste and turning it into something else for another purpose. — [Urdu Translation]: Because without doubt the mentioned gas (soda gas) permeates the water, causing it to bubble and its taste changes, and this (soda gas) turns the water into another thing for another purpose. (T) I say: These three types of water also fall under the rule when they are manufactured from solids such that thinness (liquidity) necessarily remains, [Arabic]: Unless it is claimed in the third case that air is among the fluids because of its flowing and spreading in its form; rather it is more profound in this regard than water because it is finer than it. Thus, this is a fluid that differs from water in taste and has changed it, becoming restricted. So this branch does not go outside the rule. — [Urdu Translation]: But in the third case, it may be claimed that air spreads in a tranquil manner, therefore air is also among the flowing things; rather, let it be said that because air is more subtle, it spreads more, so then air is a flowing thing separate from water which differs from it in taste. Thus, the air changed the water and the water became restricted, therefore this branch will not be excluded from the rule. (T) (316 & 317) Similarly, opium water and cannabis water, even if they remain thin, are not valid for wudu due to the "dominance of parts in the third sense" (the dominance of components according to the third definition. T). They fall under the rule because they are solids and thinness remains. (318) I say: Rather, thin tea, especially in the case where it is not put into boiling water but instead removed from the fire and left until it takes effect and is now called tea—this situation is distinct from cooking. Now, according to the text of the rule, the basis is solely on thinness. Rather, even if we include it in the meaning of cooking because the heat of the water acted upon it, it will still fall under the rule. As stated explicitly by Imam Dhabit and other Imams, the reason for prohibition in cooking is the perfection of mixture, and we have researched that the obstacle is only what causes the loss of thinness, even if it becomes cold. So when thinness remains, it should be permissible according to the rule in every way, whereas it is undoubtedly and unanimously impermissible, [Arabic]: Because the name has vanished, which is what is considered in this chapter, as stated explicitly by Imam Dhabit and all other Imams. How could it not be so, when it has become something else for another purpose? — [Urdu Translation]: Because the name has ended, which is what is considered in this chapter. This was stated explicitly by Imam Dhabit and other Imams. Why would it not be so, while the

thing has been transformed for another purpose? (T) (319 & 320) The water at the bottom of turnip and carrot pickles, which is thick, whereas the upper part is thin water... Page 218 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन (315) खारी पानी (सोडा वॉटर) भी शुद्धिकरण के योग्य नहीं है, भले ही उसमें कोई और तत्व न डाला गया हो और वह केवल गैस की हवा से बनाया गया हो, [अरबी]: क्योंकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि उक्त हवा पानी में उसके उफान के समय समा जाती है, उसका स्वाद बदल देती है और उसे दूसरे उद्देश्य के लिए कुछ और बना देती है। — [उर्दू अनुवाद]: क्योंकि निस्संदेह उक्त हवा (सोडा गैस) पानी में समा जाती है जिससे पानी उबलता है और स्वाद बदल जाता है और यह (सोडा गैस) पानी को किसी और उद्देश्य के लिए दूसरी चीज़ बना देता है। (त) मैं कहता हूँ: ये तीनों प्रकार के पानी भी नियम के अंतर्गत आते हैं जब वे ठोस पदार्थों से बनाए जाते हैं, क्योंकि उनका पतलापन अवश्य बना रहता है। [अरबी]: जब तक कि तीसरे के बारे में यह दावा न किया जाए कि हवा तरल पदार्थों में से है क्योंकि वह अपने रूप में फैलते हुए बहती है; बल्कि, वह पानी से भी अधिक सूक्ष्म होने के कारण उससे भी अधिक प्रवाहित होती है। इस प्रकार, यह पानी से स्वाद में भिन्न एक तरल है, और इसने उसे बदल दिया है, जिससे वह सीमित हो गया है। अत; यह शाखा नियम से बाहर नहीं जाएगी। — [उर्दू अनुवाद]: मगर तीसरे में यह दावा किया जाए कि हवा शांत तरीके से फैलती चली जाती है इसलिए हवा भी बहने वाली चीज़ों में से है, बल्कि यूँ कहा जाए कि हवा अधिक सूक्ष्म होने की वजह से अधिक फैलती है तो फिर हवा पानी से अलग एक बहने वाली चीज़ है जो इससे स्वाद में अलग है, यूँ हवा ने पानी को बदल दिया और पानी सीमित हो गया इसलिए यह शाखा नियम से बाहर नहीं होगी। (त) (316 और 317) इसी तरह अफीम का पानी और भांग का पानी, भले ही वे पतले रहें, वुज़ू के लिए मान्य नहीं हैं क्योंकि "तीसरे अर्थ में भागों की प्रधानता" है (तीसरे अर्थ के अनुसार घटकों की प्रबलता है। त)। वे नियम के अंतर्गत आते हैं क्योंकि वे ठोस हैं और पतलापन बना रहता है। (318) मैं कहता हूँ: बल्कि पतली चाय, विशेष रूप से उस स्थिति में जब इसे उबलते पानी में न डाला जाए, बल्कि आग से उतारकर छोड़ दिया जाए जब तक कि यह अपना प्रभाव न दिखा दे और अब इसे चाय कहा जाए—यह स्थिति पकाने से अलग है। अब नियम के अनुसार, आधार केवल पतलेपन पर है। बल्कि, अगर हम इसे पकाने के अर्थ में शामिल करें क्योंकि पानी की गर्मी ने इसमें काम किया है, तब भी यह नियम के अंतर्गत रहेगा। जैसा कि इमाम धाबित और अन्य इमामों द्वारा स्पष्ट रूप से कहा गया है, पकाने में निषेध का कारण मिश्रण की पूर्णता है, और हमने शोध किया है कि बाधा वही है जो पतलेपन के जाने का कारण बनती है, भले ही वह ठंडा हो जाए। इसलिए, जब पतलापन बना रहता है, तो नियम के अनुसार हर तरह से इसकी अनुमति होनी चाहिए, जबकि यह निर्विवाद रूप से और सर्वसम्मति से अस्वीकार्य है। [अरबी]: क्योंकि नाम समाप्त हो गया है, जो इस अध्याय में मान्य है, जैसा कि इमाम धाबित और बाकी सभी इमामों ने स्पष्ट रूप से कहा है। ऐसा क्यों

नहीं होगा, जबकि वह दूसरे उद्देश्य के लिए कुछ और बन चुका है। — [उर्दू अनुवाद]: क्योंकि नाम खत्म हो गया है जो इस अध्याय में विश्वसनीय है, इसकी स्पष्टता इमाम धाबित और बाकी इमामों ने की है, ऐसा क्यों न होगा जबकि दूसरे उद्देश्य के लिए चीज़ तब्दील हो चुकी है। (त) (319 और 320) शलजम और गाजर के अचार का नीचे बैठा हुआ पानी जो गाढ़ा होता है, वह तो ज़ाहिर है, ऊपर का पतला पानी... पृष्ठ 218 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم (۳۱۵) کھاری پانی سوڈا واٹر بھی قابلِ طہارت نہیں اگرچہ اُس میں کوئی جز نہ ڈالا صرف گیس کی ہوا سے بنایا ہو، [عربی]: فانه لاشك في سراية الهواء المذكور في الماء عند فورانه وتغييره طعمه وجعله شيئاً أخر لمقصود أخر- [اردو]: کیونکہ بلاشبہ مذکور ہوا (گیس سوڈا) پانی میں سرایت کرتی ہے جس سے پانی ابلتا ہے اور ذائقہ تبدیل ہو جاتا ہے اور یہ (سوڈا گیس) پانی کو کسی اور مقصد کیلئے دوسری چیز بنا دیتا ہے۔ (ت) اقول: یہ تینوں (۱) پانی بھی ضابطہ پر وارد ہیں جبکہ ان کا اصطناع جامدات سے ہو کہ رقت ضرور باقی ہے، [عربی]: الا ان يدعى في الثالث ان الهواء من المائعات لجريانه منبسطا على هيئة بل هو ابلغ فيه من الماء لكونه الطف منه فهذا مائع يخالف الماء في الطعم وقد غيره فتقيد فلا يخرج الفرع عن الضابطة- [اردو]: مگر تیسرے میں یہ دعوی کیا جائے کہ ہوا پُر سکون طور پر پھیلتی چلی جاتی ہے لہذا ہوا بھی بہنے والی چیزوں میں سے ہے بلکہ یوں کہا جائے کہ ہوا زیادہ لطیف ہونے کی وجہ سے زیادہ پھیلتی ہے تو پھر ہوا پانی سے علیحدہ ایک بہنے والی چیز ہے جو اس سے ذائقہ میں مختلف ہے یوں ہوا نے پانی کو متغیر کر دیا اور پانی مقید ہو گیا لہذا یہ فرع ضابطہ سے خارج نہ ہوگی۔ (ت) (۳۱۶ و ۳۱۷) یونہی آبِ افیون و بھنگ اگرچہ رقیق رہیں ناقابلِ وضو ہیں لغلبۃ الاجزاء بالمعنی الثالث (تیسرے معنی کے اعتبار سے اجزاء کا غلبہ ہے۔ت) ضابطہ پر وارد کہ جامدات ہیں اور رقت باقی۔ (۳۱۸) اقول: بلکہ رقیق چائے بھی خصوصاً اُس صورت میں کہ پانی کے جوش میں نہ ڈالیں بلکہ آگ سے اتار کر اور رہنے دیں یہاں تک کہ اپنا عمل کرے اور اب وہ پانی چائے کہلائے کہ یہ صورت طبخ سے جدا اور اب بنص ضابطہ محض رقت پر مدار بلکہ اگر اسے معنی طبخ میں داخل کریں کہ حرارتِ آب نے اُس میں عمل کیا جب بھی ضابطہ پر وارد رہے گی کہ بتصریح امام ضابطہ وغیرہ ائمہ طبخ میں وجہ منع کمال امتزاج ہے اور ہم تحقیق کر آئے کہ مانع وہی ہے کہ

موجب زوالِ رقت ہو اگرچہ سرد ہو کر تو جب رقت باقی بر روئے ضابطہ ہر طرح جواز چاہئے حالانکہ بلاشبہ بالاتفاق ناجائز ہے، [عربی]: لزوال الاسم وھو المعتبر في الباب بتصریح الامام الضابط وسائر الائمة کیف وقد صار شیئاً أخر لمقصود أخر- [اردو]: کیونکہ نام ختم ہو گیا ہے جو اس باب میں معتبر ہے اس کی تصریح امام ضابط اور باقی ائمہ نے کی ہے، ایسا کیوں نہ ہوگا حالانکہ دوسرے مقصد کیلئے شے تبدیل ہو چکی ہے۔ (ت) (۳۱۹ و ۳۲۰) شلجم گاجر کے اچار کا تہہ نشین پانی کہ گاڑھا ہوتا ہے وہ تو ظاہر اوپر کا رقیق پانی Page 218 of 756

Fatawa Razawiyya Volume 3

...for this reason also, it is not at all suitable for purification and falls under rule (1).

(341) Glasses are filled with water to a large extent and oil is poured on top to light them. I say, it is clear that no factor from the three causes (of prevention) is found here; when the oil is burnt or removed, nothing but pure water will remain, so purification with it is permissible.

(342) Sometimes, for the sake of beauty, they fill those (glasses) with colored water. If the change in color is so much that it becomes (distinctly) colored, then the impermissibility of wudu (ablution) from it is apparent. I say: and in my opinion, this is the context of what follows from Allama Sayyid Tahtawi (T). And now (2) it falls under the rule since this color is from solid substances; yes, if this is not the case, then according to the reliable Yusafite principles, it is permissible. And Allah Almighty knows best.

(343) In the Holy City (Jerusalem) in the land of Sham (Syria), they extract fibers of certain woods from the earth and soak them in water, due to which the water turns red and is used for tanning (dabaghat), i.e., treating leather. Ablution with it should not be permissible even if it remains thin, because it has become something else for another purpose (T). I say, however, in this case, according to the rule mentioned in Durr al-Mukhtar, it was like this: 'Kaza Ma'u al-Dabughah' (The water used for tanning is also like this. T). Allama Sayyid Tahtawi stated:

Arabic Quote	**Urdu Translation**
ای مثل ماء الکرم فی ان الاظهر عدم جواز رفع الحدث به واخبر بعض من یسکن بلد الخلیل علیه الصلاۃ والسلام انهم یخرجون عروق حطب من الارض یضعونها فی الماء فیحمر فیدبغون به الجلد ویسمونه هذا الاسم ونحوه ماء الدبغة الاحمر الذی یضعونه فی القنادیل بمصر للزینة -	That is, like the water of a grapevine, in that the more apparent (view) is the impermissibility of removing ritual impurity with it. A person living in the city of Khalil (Hebron), peace be upon him, informed me that they extract roots of wood from the earth and put them in water, so it turns red; then they tan leather with it and call it by this name and the like. 'Al-Ma'u al-Dabghah al-Ahmar' (Red Tanning Water) which they put in lamps in Egypt for decoration. (T)

(344) If a few betel leaves, especially prepared ones, fall into a 'Tehra' (a large water vessel), they color the whole water. I say: there is no harm in performing wudu with it, for the mixture is not like cooking which would prevent it by making it thick.

1. Tahtawi ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Beirut, 1/103.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

...भी इसी वजह से हरगिज़ पाकी (तहारत) के क़ाबिल नहीं और ज़ाब्ता (नियम) (1) पर वारिद (लागू)।

(341) गिलासों में ज़्यादा मात्रा में पानी भरकर ऊपर से तेल डालकर रौशन करते हैं। मैं कहता हूँ: ज़ाहिर है कि यहाँ तीनों अस्बाब (कारणों) में से कोई सबब रुकावट वाला नहीं पाया गया, जब तेल जल जाए या निकल जाए तो शुद्ध पानी के सिवा कुछ न रहेगा, तो उससे तहारत जाइज़ है।

(342) कभी ख़ूबसूरती के लिए वे पानी रंगीन करके भरते हैं, अगर रंग में बदलाव इतना हुआ कि वह रंग बन गया, तो उससे वज़ू का नाजाएज़ होना ज़ाहिर है। मैं कहता हूँ: 'वहुवा इंदि महमल मा यअती अनिल अल्लामा अस-सय्यद ता' (मेरे नज़दीक यह अल्लामा सय्यद तहतावी के आगे आने वाले बयान का संदर्भ है)। और अब (2) नियम के अनुसार जबकि यह रंग ठोस चीज़ों से हुआ हो; हाँ, अगर यह स्थिति नहीं है, तो मोतमिदा यूसुफ़िया उसूल के अनुसार जाइज़ है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

(343).क़ुद्स शरीफ़ मुल्क-ए-शाम में कुछ लकड़ियों के रेशे ज़मीन से निकालकर पानी में भिगोते हैं जिससे पानी सुर्ख़ (लाल) हो जाता है और 'दबाअत' यानी चमड़ा पकाने के काम आता है, उससे वज़ू जाइज़ नहीं होना चाहिए चाहे वह पतला ही रहे क्योंकि अब यह दूसरी चीज़ किसी और मक़सद के लिए हो चुकी है (त)। मैं कहता हूँ, मगर इस (3) सूरत में नियम के अनुसार 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में था 'कज़ा माउद दाबूग़ह' (दबाअत का पानी भी ऐसा ही है)। अल्लामा सय्यद तहतावी ने फ़रमाया:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
ای مثل ماء الکرم فی ان الاظهر عدم جواز رفع الحدث به واخبر بعض من یسکن بلد الخلیل علیه الصلاة والسلام انهم یخرجون عروق حطب من الارض یضعونها فی الماء فیحمر فیدبغون به الجلد ویسمونه هذا الاسم ونحوه ماء	यानी अंगूर के पेड़ के पानी की तरह अज़हर (अधिक स्पष्ट) यह है कि इससे तहारत के बारे में अदम-ए-जवाज़ (नाजायज़ होना) है। ख़लील (अलैहिस्सलाम) के शहर में रहने वाले एक व्यक्ति ने बताया कि हम ज़मीन से एक लकड़ी की जड़ें निकालकर पानी में डालते हैं जिससे वह पानी सुर्ख़ हो जाता है, फिर उससे चमड़े को रंगते हैं, इसका नाम 'माउद दाबूग़ह' है, और इसी तरह मिस्र में ख़ूबसूरती के लिए क़ंदीलों में सुर्ख़ पानी रखते हैं जिसे 'माउद दबग़ह' कहते हैं। (त)

अरबी पाठ **उर्दू अनुवाद**

الدبغة الاحمر الذى يضعونه فى

القناديل بمصر للزينة -

(344) 'तेहरे' (पानी का बड़ा बर्तन) में दो-चार पान, ख़ासकर बने हुए, अगर गिर जाते हैं तो सारा पानी रंगीन कर देते हैं। मैं कहता हूँ: उससे वज़ू में कोई हर्ज नहीं क्योंकि वह मिश्रण पकने (तबख़) की तरह नहीं है जो उसे गाढ़ा होने के क़ाबिल कर दे।

---

1. तहतावी अलल दुर्रिल मुख़्तार, बाबुल मियाह, बैरुत 1/103.

بھی اسی وجہ سے ہرگز قابلِ طہارت نہیں اور ضابطہ (۱) پر وارد۔

(۳۴۱) گلاسوں میں زیادہ مقدار تک پانی بھر کر اوپر سے تیل ڈال کر روشن کرتے ہیں اقول ظاہر ہے کہ یہاں اسباب ثلاثہ سے کوئی سبب مانع نہ پایا گیا، جب تیل جل جائے یا نکل جائے آبِ خالص کے سوا کچھ نہ رہے گا تو اُس سے طہارت جائز ہے۔

(۳۴۲) کبھی خوب صورتی کیلئے وہ پانی رنگین کر کے بھرتے ہیں اگر تغیر لون اتنا ہوا کہ رنگ ہو گیا تو اس سے وضو ناجائز ہونا ظاہر اقول: وھو عندی محمل مایأتی عن العلامۃ السید ط (میں کہتا ہوں کہ میرے نزدیک یہ علّامہ سید طحطاوی کے آئندہ بیان کا محمل ہے۔ ت) اور اب (۲) ضابطہ پر وارد جبکہ یہ رنگ جامدات سے ہو اہو، ہاں اگر یہ حالت نہیں تو قضیہ اصول معتمدہ یوسفیہ جواز ہے واللہ تعالی اعلم۔

(۳۴۳) قدس شریف ملک شام میں بعض لکڑیوں کے ریشے زمین سے نکال کر پانی میں بھگوتے ہیں جس سے پانی سرخ ہو جاتا ہے اور دباعت یعنی چمڑا پکانے کے کام آتا ہے اُس سے وضو جائز نہ ہونا چاہئے اگر چہ رقیق رہے لصیرورتہ شیئا آخر لمقصد آخر (کیونکہ اب یہ دوسری چیز کسی اور مقصد کیلئے ہو چکی ہے۔ ت) اقول مگر اس ۳ صورت میں ضابطہ پر وارد در مختار میں تھا کذا ماء الدابوغۃ (دباعت کا پانی بھی ایسے ہے۔ت) علّامہ سید طحطاوی نے فرمایا:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ای مثل ماء الکرم فی ان الاظھر عدم جواز رفع الحدث بہ واخبر بعض من	یعنی انگور کے درخت کے پانی کی طرح اظہر، اس سے طہارت کے بارے میں عدم جواز ہے۔ خلیل علیہ الصلوٰۃ

عربی عبارت **اردو ترجمہ**

یسکن بلد الخلیل علیه الصلاۃ والسلام والسلام کے شہر میں رہنے والے ایک شخص نے بتایا کہ ہم

انهم یخرجون عروق حطب من زمین سے ایک لکڑی کی جڑیں نکال کر پانی میں ڈالتے

الارض یضعونها فی الماء فیحمر ہیں جس سے وہ پانی سرخ ہو جاتا ہے پھر اس سے چمڑے

فیدبغون به الجلد ویسمونه هذا الاسم کو رنگتے ہیں اس کا نام ماء الدابوغہ ہے، اور اسی طرح

ونحوه ماء الدبغة الاحمر الذی یضعونه مصر میں خوبصورتی کیلئے قندیلوں میں سُرخ پانی رکھتے

فی القنادیل بمصر للزینة ۱۔ ہیں جس کو ماء الدبغہ کہتے ہیں۔ (ت)

(۳۴۴) تہرے میں دو چار پان خصوصاً بنے ہوئے اگر پڑ جاتے ہیں سارا پانی رنگین کر دیتے ہیں

اقول: اُس سے وضو میں حرج نہیں کہ طبخ میں وہ امتزاج مانع جو اسے گاڑھا ہونے کے قابل کر

دے۔

---

۱ طحطاوی علی الدر المختار باب المیاہ بیروت ۱/ ۱۰۳

Fatawa Razawiya Volume Three Yes, Rule 1 on 'Jandiya' certainly applies here, as a change has occurred. (325) Someone ate betel leaf (paan), and a significant effect remains in the mouth. After rinsing the mouth and cleaning it, it is observed that the water from those rinses becomes so colored that if full ablution (wudu) is performed in the same basin afterwards, the entire water becomes colored. If this wudu was performed by a person in a state of purity, not with the intention of proximity (to God) but, for example, merely for cooling, will the water remain suitable for wudu? Because none of the three reasons for prohibition are present. I say: And Rule 2 applies when the paan is not fragrant, because the paan in those rinses is a liquid that differs from absolute water in two qualities: color and taste, and it has changed one of them. (326) In a pitcher that contained sugarcane juice, after removing the juice, if it is filled with water, its taste and smell undoubtedly change, and there is no doubt about the validity of wudu with it, as it is certainly still water. I say: But Rule 3 applies here, that the particles of juice remaining on the inner surface of the pitcher are certainly liquid components, and they have changed two qualities. (327) If the water is heated in that same pitcher, the change will increase, and Rule 4 on 'Jandiya' will be violated. (328) To wash a wound, neem leaves are put in water and boiled; because of this, its color, taste, and smell all change, but its thinness (consistency) does not change. I say: According to the requirements of the reliable 'Yousafiya' principles, wudu is permissible with it, to the extent that if the wound was on one of the limbs used for wudu, after washing it with that water, there is no need to wash it with other water or perform masah (wiping). Here, the absence of the dominance of components and dominance of cooking is evident, and the name (water) is also not lost, as it is still water and will be called water. It hasn't become something else for another purpose; the purpose is washing the wound, and this task is performed by the water itself. Neem leaves were added to remove the foulness and prevent harm, so that plain water doesn't aggravate the wound and cause damage. Therefore, whether the leaves are cooked or not is not considered here because the objective is the water, not the leaves. However, according to Rule 5 on 'Jandiya', it is explicitly stated that water changed by cooking becomes invalid. (329 & 330) I say: For the exact same reason, water used for 'Natlool' (pouring medicinal water over a body part) and foot-washing is also, according to reliable principles, suitable for purification. To the degree that after foot-washing or 'Natlool', it is not necessary to wash the head or the area where the water was poured with other water during a bath (ghusl). Allah the Almighty knows best. These situations are also the same; the objective is only water. In pouring or tilting, even plain hot water works; medicines

are for increasing effectiveness. I say: Both of these (6) also clearly fall under the Rule on 'Jandiya'. (331) Even if the color, taste, and smell of hookah water change due to smoke, it remains suitable for purification.

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन हाँ, 'जंदिया' पर नियम १ ज़रूर लागू होता है क्योंकि परिवर्तन हो गया है। (३२५) पान खाया और मुँह में उसका काफ़ी असर बाकी है। कुल्ला करने और मुँह साफ़ करने के बाद देखा गया है कि उन कुल्लों का पानी इतना रंगीन हो जाता है कि अगर उसके बाद उसी बर्तन में पूरा वज़ू किया जाए, तो सारा पानी रंगीन हो जाता है। यदि यह वज़ू एक पवित्र व्यक्ति द्वारा किया गया हो, ईश्वर की निकटता की नीयत से नहीं बल्कि उदाहरण के लिए केवल शीतलता के लिए, तो क्या वह पानी वज़ू के योग्य रहेगा? क्योंकि निषेध के तीन कारणों में से कोई भी कारण नहीं है। मैं कहता हूँ: और नियम २ तब लागू होता है जब पान सुगंधित न हो, क्योंकि उन कुल्लों का पान वह तरल है जो रंग और स्वाद के दो गुणों में शुद्ध जल (आब-ए-मुतलक़) से भिन्न है और उसने एक को बदल दिया। (३२६) जिस घड़े में गन्ने का रस था, रस निकाल कर पानी भरा जाए, तो निस्संदेह उसका स्वाद और गंध बदल जाते हैं और उससे वज़ू की वैधता में कोई संदेह नहीं है क्योंकि वह निश्चित रूप से पानी ही है। मैं कहता हूँ: लेकिन नियम ३ यहाँ लागू होता है कि घड़े की भीतरी सतह पर लगे हुए रस के अंश निश्चित रूप से तरल पदार्थ के अंश हैं और उनसे दो गुण बदल गए। (३२७) उसी घड़े में अगर पानी गरम किया जाए तो परिवर्तन और बढ़ जाएगा और नियम ४ 'जंदिया' का उल्लंघन होगा। (३२८) घाव धोने के लिए पानी में नीम के पत्ते डालकर उबाले जाते हैं, उनसे उसका रंग, स्वाद, गंध सब बदल जाता है लेकिन उसके पतलेपन (रक़त) में अंतर नहीं आता। मैं कहता हूँ: विश्वसनीय 'यूसुफ़िया' सिद्धांतों की आवश्यकताओं के अनुसार, उससे वज़ू जायज़ है, यहाँ तक कि अगर घाव वज़ू के अंगों पर था, तो उस पानी से धोने के बाद उसे दूसरे पानी से धोने या मसह करने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ घटकों की प्रबलता और पकाने की प्रबलता का न होना स्पष्ट है, और नाम का ह्रास भी नहीं हुआ क्योंकि वह पानी ही है और पानी ही कहा जाएगा। वह किसी दूसरे उद्देश्य के लिए कोई दूसरी चीज़ नहीं बन गया; उद्देश्य घाव धोना है और यह काम स्वयं पानी का है। नीम के पत्ते उसकी बुराई दूर करने और हानि रोकने के लिए शामिल किए गए थे कि सादा पानी घाव को नुकसान न पहुँचाए। इसलिए पत्तों के पकने या न पकने पर यहाँ ध्यान नहीं दिया जाता क्योंकि उद्देश्य पानी है न कि पत्ते। लेकिन नियम ५ 'जंदिया' पर स्पष्टता से आया है कि पकाने से पानी बदल गया। (३२९ और ३३०) मैं कहता हूँ: ठीक इसी दलील से 'नतलूल' (औषधीय जल चढ़ाना) और पैर धोने का पानी भी विश्वसनीय सिद्धांतों के अनुसार शुद्धिकरण के योग्य है। यहाँ तक कि पैर धोने या नतलूल के बाद ग़ुस्ल (स्नान) में सिर या उस स्थान को जहाँ वह पानी पहुँचा, दूसरे पानी से धोना ज़रूरी नहीं रहा। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। ये स्थितियाँ भी वैसी ही हैं कि उद्देश्य केवल पानी है। पानी डालने या उंडेलने में अकेला गरम पानी भी काम देता है, दवाएँ शक्ति बढ़ाने के लिए हैं। मैं कहता हूँ: ये दोनों ६

भी 'जंदिया' नियम पर स्पष्ट रूप से लागू होते हैं। (३३१) हुक्के का पानी चाहे धुएँ के कारण उसका रंग, स्वाद, गंध सब बदल जाए, शुद्धिकरण के योग्य है।

पृष्ठ २२०/७५६

فتاوٰی رضویہ جلد سوم ہاں ضابطہ ۱ بر جندیہ پر یہ ضرور وارد کہ تغیر تو ہوگیا۔ (۳۲۵) پان کھایا اور منہ میں اس کا معتد بہ اثر باقی ہے کلیاں کر کے منہ صاف کیا مشاہدہ ہے کہ ان کلیوں کا پانی اتنا رنگین ہو جاتا ہے کہ اس کے بعد اسی لگن میں پورا وضو کیا جائے تو سارا پانی رنگ جاتا ہے اگر یہ وضو طاہر نے نہ بہ نیت قربت بلکہ مثلاً محض تبرید کیلئے کیا پانی قابل وضو رہے گا کہ اسباب ثلثہ منع سے کوئی سبب نہیں۔ اقول: اور ضابطہ ۲ پر وارد جبکہ پان خوشبودار نہ ہو کہ ان کلیوں کا پان وہ مائع ہے کہ آب مطلق سے رنگ و مزہ دو وصفوں میں مخالف ہے اور ایک بدل دیا۔ (۳۲۶) جس گھڑے میں گنے کا رس تھا رس نکال کر پانی بھر ا جائے بلا شبہ اس کا مزہ وبو بدل جاتے ہیں اور اس سے جواز وضو میں شک نہیں کہ وہ یقیناً پانی ہی ہے۔ اقول: مگر ضابطہ ۳ پر وارد کہ رس کے جو اجزاء گھڑے کی سطح اندرونی میں لگے رہ گئے تھے ضرور اجزائے مائع ہیں اور ان سے دو وصف بدل گئے۔ (۳۲۷) اسی گھڑے میں اگر پانی گرم کیا تو تغیر اور زیادہ ہو جائے گا اور ضابطہ ۴ بر جندیہ پر ناقض آئے گا۔ (۳۲۸) زخم دھونے کیلئے پانی میں نیم کے پتے ڈال کر جوش دیتے ہیں ان سے اس کا رنگ ، مزہ ، بُو سب بدل جاتا ہے مگر رقت میں فرق نہیں آتا۔ اقول : مقتضائے اصول معتمدہ یوسفیہ اُس سے وضو کا جواز ہے یہاں تک کہ اگر زخم اعضائے وضو پر تھا اُس پانی سے دھونے کے بعد اُسے دوسرے پانی سے دھونے یا مسح کی حاجت نہیں کہ یہاں غلبہ اجزا و غلبہ طبخ نہ ہونا تو بدیہی اور زوال اسم بھی نہیں کہ وہ پانی ہی ہے اور پانی ہی کہا جائے گا کوئی دوسری چیز دوسرے مقصد کیلئے نہ ہو گیا مقصود زخم دھونا ہے اور یہ کام خود پانی کا ہے نیم کے پتے اس کے رفع غائلہ ودفع ضرر کیلئے شامل کئے گئے تھے کہ سادے پانی کو زخم چرا لے تو نقصان پہنچے ولہذا پیتوں کے پکنے نہ پکنے پر یہاں نظر نہیں ہوتی کہ مقصود پانی ہے نہ پتے مگر ضابطہ بر جندیہ پر صراحت ۵ وارد کہ پانی طبخ

میں متغیر ہو گیا۔ (۳۲۹ و ۳۳۰) اقول: بعینہ اسی دلیل سے نطلول و پاشویہ کا پانی بھی بحکم اصول معتمدہ قابل طہارت ہے یہاں تک کہ پاشویہ کے بعد پاؤں یا نطلول کے بعد غسل میں سر یا اُس موضع کا جہاں وہ پانی دھار نے میں پہنچا دوسرے پانی سے دھونا ضرور نہ رہا واللہ تعالیٰ اعلم یہ صورتیں بھی وہی ہیں کہ مقصود صرف پانی ہے دھار نے امالہ میں تنہا گرم پانی بھی کام دیتا ہے دوائیں زیادت قوت کیلئے ہیں۔ اقول: یہ دونوں ۶ بھی ضابطہ بر جندیہ پر ظاہر الورود۔ (۳۳۱) حقے کا پانی اگرچہ دھوئیں کے سبب اُس کا رنگ ، مزہ ، بُو سب بدل جائیں قابل طہارت ہے

Fatawa Ridawiyyah Volume Three

While it exists, permission for Tayammum cannot be granted, as we have explained in our Fatawa (As we have explained in our Fatawa. - Trans.). If you say, what is the difference between this and soda water, which is made only from gas air? There, air, and here, smoke has changed the qualities, and neither remains in the water.

I say: The difference is the same as has been mentioned many times: there was a loss of the name (definition) such that it cannot be called pure water anymore because it became something else for another purpose. On the contrary, this is water itself; it has not become something else. The explanation of considering purposes has passed sufficiently, and its parallels are turmeric water and saffron water. In both, the change is equal; in the first case, wudu is permissible as long as the thinness remains. This is correct in Al-Hidayah, etc., and it has already passed on page 81 (Al-Hidayah etc. and Hidayah page 81. - Trans.). And in the second case, it is not permissible once it becomes capable of dyeing, even if thinness remains, as the research on page 122 has already passed (As its research has passed on page 122. - Trans.).

I say: And with Allah is success, this will make it clearer: If meaty soup is cooked and one takes an oath not to eat meat, he will break his oath by eating that meat because that mixture with water did not change the essence of the meat, its purpose remains as it is. But if he takes an oath not to drink water, he will not break his oath by drinking soup, because the water changed by mixing with meat, becoming for a new purpose. Similarly, if sugar or honey is mixed in milk for sweetness, it will remain milk; everyone will call it milk. But if it is mixed in water to such an extent, no one will call it water anymore; they will call it syrup. And so on for other things that an intelligent person can understand through analogy. (Besides other things that an intelligent person can understand through analogy. - Trans.)

(332) In the land of Abyssinia, there is a tree from which, when winds blow, something like smoke comes out and falls like rain, exactly like water. Imam Ibn Hajar al-Makki said that wudu is not permissible with it because it is not water but like the moisture of trees, as mentioned before.

[Boxed Section] I say: Our rules do not reject this even according to those who permit it from the dripping of a vine, because according to them, it is water that it drinks until it is saturated, then it returns the excess. This is contrary to this. And Allah Almighty knows best. I say that our rules are not against this fact because those who

have allowed wudu from the water dripping from the vine have expressed the view that this plant drinks water itself and when it is satiated, it throws back the excess water. Contrary to this. (Trans.)

(333) Also, in the desert of Abyssinia, where water is not found, members of a caravan dig a hole in the ground and cover it with branches of some trees. After some time, vapors rise from inside that cave and cling to those branches...

इसके होते हुए तयम्मुम की अनुमति नहीं दी जा सकती, जैसा कि हमने अपने फ़तावा में वर्णन किया है (जैसा कि हमने अपने फ़तावा में वर्णन किया है। -अनु.)। यदि आप कहें कि इसमें और सोडा वाटर में, जो केवल गैस की हवा से बनाया गया है, क्या अंतर है? वहाँ हवा ने और यहाँ धुएँ ने गुणों को बदल दिया और पानी में दोनों शेष नहीं रहे।

मैं कहता हूँ: अंतर वही है जो कई बार बीत चुका है कि वहाँ नाम (परिभाषा) का पतन हो गया कि अब इसे केवल पानी नहीं कहा जा सकता क्योंकि यह दूसरे उद्देश्य के लिए दूसरी चीज़ हो गई। इसके विपरीत, यह पानी ही है, कोई दूसरी चीज़ नहीं हो गई। उद्देश्यों पर विचार करने का वर्णन पर्याप्त रूप से बीत चुका है और इसकी मिसाल हल्दी का पानी और केसर का पानी है। दोनों में परिवर्तन समान है और पहले से वज़ू तब तक जायज़ है जब तक पतलापन बना रहे। हिदाया आदि में यही सही है और यह पृष्ठ 81 में बीत चुका है (हिदाया आदि और हिदाया 81 में बीत चुका है। -अनु.)। और दूसरे से ना-जायज़ है जब वह रंगने के योग्य हो जाए, भले ही पतलापन बना रहे, जैसा कि इसकी तहकीक़ पृष्ठ 122 में बीत चुकी है (जैसा कि इसकी तहकीक़ पृष्ठ 122 में बीत चुकी है। -अनु.)।

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की मदद से यह और स्पष्ट होगा: यदि शोरबे वाला मांस पकाया गया और किसी ने कसम खाई कि वह मांस नहीं खाएगा, तो वह उस मांस को खाने से कसम तोड़ने वाला होगा क्योंकि पानी के उस मिश्रण से मांस अपने मूल स्वरूप में नहीं बदला, उसका उद्देश्य वैसा ही रहा। लेकिन यदि उसने कसम खाई कि वह पानी नहीं पिएगा, तो वह शोरबा पीने से कसम तोड़ने वाला नहीं होगा क्योंकि मांस के मिश्रण से पानी बदल गया और नए उद्देश्य के लिए हो गया। इसी तरह, यदि दूध में मिठास के लिए चीनी या शहद मिलाया जाए, तो वह दूध ही रहेगा; सब उसे दूध ही कहेंगे। लेकिन यदि पानी में इतनी मात्रा में मिलाया जाए, तो अब उसे कोई पानी नहीं कहेगा, शरबत कहेंगे। इसके अलावा अन्य चीजें जिन्हें एक बुद्धिमान व्यक्ति सादृश्य (क़यास) के माध्यम से समझ सकता है। (इसके अलावा अन्य चीजें जिन्हें एक बुद्धिमान व्यक्ति सादृश्य के माध्यम से समझ सकता है। -अनु.)

(332) हबशा (इथियोपिया) की भूमि में एक वृक्ष है कि जब हवाएँ चलती हैं तो उससे धुएँ जैसा कुछ निकलता है और बारिश की तरह बरस जाता है, बिल्कुल पानी जैसा होता है। इमाम इब्न हजर मक्की

ने फ़रमाया कि उससे वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि वह पानी नहीं है बल्कि पेड़ों की नमी के समान है, जैसा कि पहले बीत चुका है।

[बॉक्स अनुभाग] मैं कहता हूँ: और हमारे नियम इस वास्तविकता के विरुद्ध नहीं हैं, यहाँ तक कि उनके अनुसार भी जो अंगूर के पौधे से टपकने वाले पानी को जायज़ मानते हैं, क्योंकि उनके अनुसार यह वह पानी है जिसे वह तब तक पीता है जब तक कि वह संतृप्त न हो जाए, फिर वह अतिरिक्त वापस कर देता है। इसके विपरीत। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। मैं कहता हूँ कि हमारे नियम इस वास्तविकता के विरुद्ध नहीं हैं क्योंकि जिन लोगों ने अंगूर के पौधे से टपकने वाले पानी से वज़ू को जायज़ माना है, उन्होंने यह विचार व्यक्त किया है कि यह पौधा खुद पानी पीता है और जब वह तृप्त हो जाता है, तो वह अतिरिक्त पानी को वापस निकाल देता है। इसके विपरीत। (अनु.)

(333) इसके अलावा, हबशा के रेगिस्तान में जहाँ पानी नहीं मिलता, काफिले के लोग ज़मीन में गड्ढा खोदते हैं और कुछ पेड़ों की शाखाओं से उसे ढक देते हैं। कुछ समय बाद उस गुफा के अंदर से वाष्प उठकर उन शाखाओं से चिपक जाते हैं...

पृष्ठ 221 का 756

اُس کے ہوتے تیمم کی اجازت نہیں ہوسکتی کما بیناہ فی فتاونا (جیسا کہ ہم نے اپنے فتاوٰی میں بیان کیا ہے۔ت) اگر کہئے اس میں اور سوڈا واٹر میں کہ صرف گیس کی ہوا سے بنایا گیا کیا فرق ہے وہاں ہوا اور یہاں دھوئیں نے اوصاف بدل دیے اور پانی میں باقی دونوں نہ رہے۔

اقول: فرق وہی ہے کہ بارہا گزرا وہاں زوال اسم ہوگیا کہ اب اسے نرا پانی نہیں کہہ سکتے کہ مقصدِ دیگر کیلئے شیئِ دیگر ہوگیا بخلاف اس کے کہ پانی ہی ہے کوئی دوسری چیز نہ ہو گیا۔ اعتبارِ مقاصد کا بیان بقدرِ کافی گزرا اور اس کی نظیر آبِ زردج و آبِ زعفران ہے کہ تغیر دونوں میں یکساں اور اول سے وضو روا جب تک رِقّت باقی رہے یہی صحیح ہے ھدایہ وغیرہا وقد مر فی ۸۱ (ہدایہ وغیرہ اور ہدایہ ۸۱ میں گزرا ہے۔ت) اور دوم سے ناروا جبکہ رنگنے کے قابل ہوجائے اگرچہ رقت باقی رہے کما تقدم تحقیقہ فی ۱۲۲ (جیسا کہ اس کی تحقیق ۱۲۲ میں گزر گئی ہے۔ت)

اقول: وباللہ التوفیق اسے روشن تر کرے گا یہ کہ شوربادار گوشت پکایا اگر قسم کھائی کہ گوشت نہ کھائے گا اس گوشت کے کھانے سے حانث ہوگا کہ اس امتزاج آب سے گوشت اپنی ذات میں نہ بدلا کہ اس کا مقصود بحالہ باقی لیکن اگر قسم کھائی پانی نہ پئے گا تو شوربا پینے سے حانث نہ ہوگا کہ اس امتزاج گوشت سے پانی بدل گیا کہ مقصود جدید کیلئے ہو گیا۔ یونہی دودھ میں شکر شہد بقدرِ شیرینی ملائی وہ دودھ ہی رہے گا سب اسے دودھ ہی کہیں گے لیکن پانی میں اس قدر ملائی اب اسے پانی کوئی نہ کہے گا شربت کہیں گے الی غیر ذلک مما یعلمہ المتفطن بالمقایسۃ (اس کے علاوہ دوسری چیزیں جن کو ایک ذہین آدمی قیاس کے ذریعے سمجھ سکتا ہے۔ت)

(۳۳۲) زمینِ حبش میں ایک درخت ہے کہ جب ہوائیں چلتی ہیں اُس سے دھواں سا نکلتا ہے اور مینہ کی طرح برس جاتا ہے بعینہ مثلِ پانی کے ہوتا ہے امام ابنِ حجر مکی نے فرمایا کہ اُس سے وضو جائز نہیں کہ وہ پانی نہیں بلکہ درختوں کی رطوبتوں کے مثل ہے کما تقدم

[Boxed Section] اقول: وقواعدنا لا تأباہ حتی عند من یجوز بتقاطر الکرم فأنے عندہ ماء تشربہ حتی اذا ارتوی رد الفضل بخلاف ھذا واللہ تعالیٰ اعلم۔ میں کہتا ہوں کہ ہمارے قواعد اس حقیقت کے خلاف نہیں ہیں کیونکہ جن لوگوں نے انگور کے پودے سے ٹپکنے والے پانی سے وضو کو جائز قرار دیا ہے انہوں نے خیال ظاہر کیا ہے کہ یہ پودا خود پانی پیتا ہے اور جب وہ سیر ہو جاتا ہے تو وہ زائد پانی کو واپس پھینکتا ہے۔ بخلاف اس کے۔ (ت)

(۳۳۳) نیز صحرائے حبش میں جہاں پانی نہیں ملتا اہل قافلہ زمین میں گڑھا کھودتے اور بعض درختوں کی شاخوں سے اُسے چھپا دیتے ہیں کچھ دیر بعد اُس غار کے اندر سے بخارات اُٹھ کر ان شاخوں سے لپٹتے

...and they turn into water and drip, collecting enough in the pit to suffice the caravan. So Glory be to the Beneficent, the Merciful, the Provider, the Possessor of Firm Power. (Note: Subhan-ar-Rahman ar-Rahim ar-Razzaq zil-Quwwatil-Matin). The aforementioned Imam says that wudu (ablution) is not valid with this either, as it is the extract of a tree and not water.

[Table Content] Arabic: He said after reporting: "And it has reached me that caravans in the land of Abyssinia, when they lack water, dig a pit, then cover it with something from trees and leave it for a period. Then vapor rises from the pit, clings to the tree, then oozes as a liquid in the form of water and collects in the pit in an amount sufficient for them. And it is not purifying as is apparent since it is also tree water." 1 اھ Urdu: After this, he said that I have been informed that in the desert of Abyssinia (Ethiopia), where water is not available, caravan members dig a pit in the ground and cover the pit with branches of some trees. After some time, the vapors rising from the pit make those branches moist, from which water starts dripping, and that pit fills with water from which the caravan members fulfill their needs. This water is also not purifying because apparently it is also tree water. (T)

I say: Apparently, this is subject to consideration. Those vapors did not come from the tree but rose from the ground itself. If the branches' role was only to cool them down and make them drip, then apparently it is water itself. The branches only performed the task that the freezing sphere's air does for rainwater, or the coldness of the earth does for well water. Yes, if by covering them, some moisture from those branches comes out and drips, then certainly wudu is not valid with it as it is tree moisture. As long as the matter remains doubtful, the ruling should be of non-permissibility because purification is commanded with [definite] water, and with doubt, the commanded act is not fulfilled. And Allah Almighty knows best.

(344) Maa-ul-Qatar (distilled water), which seeps from an earthen vessel, is among the praised and purified waters. (345) Similarly, water that is filtered and purified by passing it through bones, round stones, or sand. (346) Starch water, as mentioned at the end of the treatise 'Al-Riqqah wa-al-Tibyan'. When wheat particles settle and the water remains clear, or if mixed, then to the extent that it doesn't make the water viscous, it is 'absolute water' (Aa-e-Mutlaq). Wudu with it is permissible, provided an unwashed hand has not touched it. (347) Barley water (Ash-e-Jo) whose water is

changed repeatedly; if after cooling it is not capable of becoming viscous, it is absolute water, otherwise not.

1 Fatawa Kubra, Kitab al-Taharah, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 1/12 Page 222 of 756

फतावा-ए-रज़विया — जिल्द 3

...और पानी बनकर टपक जाते हैं जिससे गड्ढे में इतना पानी जमा हो जाता है कि क़ाफ़िले के लिए काफ़ी होता है। तो सुब्हान रहमान अर-रहीम, अर-रज़्ज़ाक़ ज़िल-क़ुव्वतिल-मतीन (कृपा करने वाला, रहम करने वाला, रिज़्क़ देने वाला, मज़बूत कुव्वत वाला पाक है)। इमाम साहब फरमाते हैं कि इससे भी वज़ू जायज़ नहीं क्योंकि यह पेड़ का अर्क है, पानी नहीं।

[तालिका सामग्री] अरबी: उन्होंने यह बताने के बाद कहा: "और मुझे यह बात पहुंची है कि हब्शा (इथियोपिया) की सरज़मीन में क़ाफ़िले वाले जब पानी नहीं पाते, तो एक गड्ढा खोदते हैं, फिर उसे पेड़ों की किसी चीज़ से ढक देते हैं और उसे कुछ समय के लिए छोड़ देते हैं। फिर गड्ढे से भाप उठती है, पेड़ से चिपक जाती है, फिर पानी की तरह बहने लगती है और गड्ढे में इतनी मात्रा में जमा हो जाती है जो उनके लिए काफी होती है। और यह पाक करने वाला (पावन) नहीं है जैसा कि ज़ाहिर है क्योंकि यह भी पेड़ का पानी है।" 1 ـه। उर्दू: इसके बाद उन्होंने फ़रमाया कि मुझे इत्तेला मिली है कि हब्शा के रेगिस्तान में जहाँ पानी नहीं मिलता, क़ाफ़िले वाले ज़मीन में एक गड्ढा खोदते हैं और कुछ पेड़ों की टहनियों से गड्ढे को ढक देते हैं। कुछ समय बाद गड्ढे से उठने वाले भाप उन टहनियों को नम कर देते हैं जिनसे पानी टपकने लगता है और वह गड्ढा पानी से भर जाता है जिससे क़ाफ़िले वाले अपनी ज़रूरत पूरी करते हैं। यह पानी भी पाक करने वाला नहीं है क्योंकि ज़ाहिर यही है कि यह भी पेड़ का पानी है। (त)

मैं कहता हूँ: ज़ाहिर तौर पर यह विचारणीय है। वे भाप पेड़ के नहीं बल्कि ज़मीन से ही उठे हैं। अगर उन टहनियों का काम सिर्फ उन्हें ठंडक पहुँचाकर टपकाना है, तो ज़ाहिर है कि वह पानी ही है। टहनियों ने सिर्फ वही काम किया जो बारिश के पानी में ऊपरी ठंडी हवा करती है या कुएं के पानी में ज़मीन की ठंडक। हाँ, अगर टहनियों के लपेटने से उनमें से कोई नमी निकलकर टपकती है, तो बेशक उससे वज़ू जायज़ नहीं क्योंकि वह पेड़ की तरी है। और जब तक मामला संदिग्ध रहे, जायज़ न होने का हुक्म ही होना चाहिए क्योंकि पाकी का हुक्म [निश्चित] पानी से है, और संदेह से हुक्म पूरा नहीं होता। वल्लाहु तआला आलम।

(344) मा-उल-क़तर (आसुत जल), जो मिट्टी के बर्तन से रिसता है, वह प्रशंसित और साफ़ पानी में से है। (345) इसी तरह वह पानी जिसे हड्डियों, गोल पत्थरों या रेत से गुज़ार कर टपकाया और साफ़ किया जाता है। (346) स्टार्च (निशास्ता) का पानी, जिसका ज़िक्र रिसाला 'अल-रिक्क़ा वल-तिब्यान' के

अंत में गुज़रा है। जब गेहूं के कण नीचे बैठ जाएं और ऊपर साफ़ पानी रह जाए, या अगर मिलावट हो तो इतनी कम कि पानी को गाढ़ा न करे, तो वह 'आब-ए-मुतलक़' (साधारण पानी) है। उससे वज़ू जायज़ है बशर्ते कि बे-वज़ू हाथ न लगा हो। (347) जौ का पानी (आश-ए-जौ) जिसका पानी बार-बार बदला जाता है; अगर ठंडा होने पर वह गाढ़ा होने के काबिल न रहे तो वह आब-ए-मुतलक़ है, वरना नहीं।

1 फतावा कुबरा, किताबुत तहारह, दारुल कुतुबुल इल्मिया बेरुत 1/12 पृष्ठ 222 का 756

اور پانی ہو کر ٹپک جاتے ہیں جس سے گڑھے میں اتنا پانی جمع ہو جاتا ہے کہ قافلے کو کفایت کرتا ہے فسبحان الرحمن الرحیم الرزاق ذی القوۃ المتین (مہربان رحم کرنے والا، رزق دینے والا، مضبوط قوت والا پاک ہے۔ ت) امام موصوف فرماتے ہیں اس سے بھی وضو جائز نہیں کہ درخت کا عرق ہے نہ پانی۔

[جدول] عربی: قال بعد مآمر و بلغنی ان القوافل بارض الحبشۃ اذا عدموا الماء حفروا حفرۃ ثم ستروھا بشیئ من الشجر وترکوھا مدۃ ثم یصعد بخار من الحفرۃ یعلق بالشجرۃ ثم یرشح مائعا علی ھیئۃ الماء ویجتمع منہ فی الحفرۃ ما یکفیھم وھو غیر طھور کما ھو ظاھر اذ ھو ماء شجر ایضا 1 اھ۔ اردو: اس کے بعد انہوں نے فرمایا کہ مجھے اطلاع ملی ہے کہ صحرائے حبش میں جہاں پانی نہیں ملتا قافلہ والے زمین میں ایک گڑھا کھودتے ہیں اور بعض درختوں کی شاخوں سے گڑھے کو ڈھانپ دیتے ہیں اور کچھ مدت کے بعد گڑھے سے اٹھنے والے بخارات اٹھ کر ان شاخوں کو مرطوب کر دیتے ہیں جن سے پانی ٹپکنے لگتا ہے اور وہ گڑھا پانی سے بھر جاتا ہے جس سے قافلے والے اپنی ضرورت کو پورا کرتے ہیں یہ پانی بھی پاک کرنے والا نہیں کیونکہ ظاہر یہی ہے کہ یہ بھی درخت کا پانی ہے اھ (ت)

اقول: ظاہر یہ محل نظر ہے وہ بخارات درخت کے نہیں زمین ہی سے اٹھے اگر ان شاخوں کا اثر ان کو سردی پہنچا کر ٹپکا دینے میں ہے تو بظاہر وہ پانی ہی ہوئے شاخوں نے صرف وہ کام دیا جو آب باراں میں کرہ زمہریر کی ہوا دیتی ہے یا آب چاہ میں زمین کی سردی، ہاں اگر ان کے لپٹنے سے ان شاخوں سے کوئی رطوبت نکل کر ٹپکتی ہے تو بیشک اُس سے وضو جائز نہیں کہ

وہ درخت کی تری ہے اور جب تک امر مشکوک رہے حکم عدم جواز ہی ہونا چاہئے کہ مامور بہ پانی سے طہارت ہے اور شک سے مامور بہ ادا نہیں ہوتا واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۳۴۴) ماء القطر پانی کی مٹی کے برتن سے رسے محمود و مصفٰی پانیوں میں ہے۔ (۳۴۵) یوں ہی پانی کہ ہڈیوں، گولوں، ریت پر گزار کر ٹپکایا صاف کیا جاتا ہے۔ (۳۴۶) نشاستہ کا پانی جس کا بیان اواخر رسالہ الرقة والتبیان میں گزرا جب اجزائے گندم تہ نشین ہو کر نتھرا پانی رہ جائے یا خلط رہے تو اتنا کہ پانی کو دلدار نہ کرے وہ آب مطلق ہے اُس سے وضو جائز ہے جبکہ بے وضو ہاتھ نہ لگا ہو۔ (۳۴۷) آش جو کا پانی کہ بار بار بدلا جاتا ہے اگر ٹھنڈا ہو کر دلدار ہونے کے قابل نہ ہو آب مطلق ہے ورنہ نہیں۔

1 فتاویٰ کبریٰ کتاب الطہارۃ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/۱۲ صفحہ 222 از 756

Fatawa Ridawiyya - Volume 3

(338) Honey water (maa al-asal): Mixing two parts water with honey and boiling it until two-thirds evaporate; it is no longer considered water.

(339) Similarly, barley water (maa al-shaeer): Boiling it until it dissolves and becomes thick, then straining it for use; due to complete mixing, it is no longer water.

(340 & 341) Similarly, water of roots (maa al-usool) and water of seeds (maa al-buzoor), which are decoctions of roots and seeds.

(342) Similarly, ash water (maa al-ramad): Repeatedly adding ash to water and boiling it each time, then straining it; it is like a medicinal decoction.

(343) Fish water (maa al-noon): Water that drips from salted fish.

(344) Maa al-Hammah (with damma on Jeem and shadda on fatha-ed Meem), called 'Anguh' in Persian (with sukun on Ba, damma on Kaaf, and fatha on lightened Meem). A greyish liquid comes out of the belly of a certain type of fish in the China Sea and Hormuz; both of these are not water at all.

(345 to 350) Water of gold, silver, copper, tin, iron, lead, known as maa al-dhahab, maa al-fidda, maa al-nuhas, maa al-rasas, maa al-hadid, maa al-asrub; collectively called mineral water (maa al-ma'dan). This has three meanings:

First: Heating them in fire until red and then quenching them in water, which is called 'Zartab', 'Ahantab', etc. This was mentioned in point 136.

Second: Their molten form, called dissolved gold, etc. It is clear that this is not from the genus of water. This was indicated in the second section of the preamble on 'additional attributes' and in partial footnote 190 from Azhari and Wafi.

Third: The water found in their mines.

I say (Aqool): Their composition is from mercury and sulfur, and their fumes and vapors from watery and airy components. If it is that water which partially became vapor, mixed with smoke to become mercury, and then mixed with sulfur to become a mineral; or if it's that part of the vapor that condensed into water upon cooling, then it is 'absolute water' (mutlaq water). But if it is that mercury substance whose liquidity was mixed with sulfurous smoke and prepared to become mercury, but due to lack of dryness still maintains a water-like form, then it is 'restricted water' (muqayyad water) or not water at all. And Allah knows best.

Miscellaneous Scattered Benefits

(1) Since the meticulous scholar al-'Alai corrected in 'al-Durr' by taking from 'al-Bahr'... | (1) Imam al-'Alai took from 'al-Bahr' in 'al-Durr' regarding Imam Fakhr...

फ़तावा रज़विया - जिल्द तीसरा

(338) शहद का पानी (मा अल-असल): शहद में दोगुना पानी मिलाकर उबालना यहाँ तक कि दो-तिहाई जल जाए; वह पानी नहीं रहा।

(339) इसी तरह जौ का पानी (मा अल-शईर): उबालना यहाँ तक कि वह घुलकर गाढ़ा हो जाए, फिर उसे छानकर इस्तेमाल किया जाता है; पूर्ण सम्मिश्रण के कारण वह पानी नहीं रहा।

(340 और 341) इसी तरह जड़ों का पानी (मा अल-उसूल) और बीजों का पानी (मा अल-बुज़ूर), जो जड़ों और बीजों का काढ़ा है।

(342) इसी तरह राख का पानी (मा अल-रमाद): पानी में बार-बार राख डालकर हर बार उबालना, फिर छानना; यह औषधीय काढ़े की तरह है।

(343) मछली का पानी (मा अल-नुन): नमकीन मछली से टपकने वाला पानी।

(344) मा अल-हम्मा (जीम पर पेश और मीम पर तशदीद और ज़बर के साथ), जिसे फ़ारसी में 'आंगुह' (बा साकिन, काफ़ पर पेश और मीम हल्का ज़बर) कहते हैं। चीन के सागर और होर्मुज़ में एक प्रकार की मछली के पेट से राख के रंग का पानी निकलता है; ये दोनों बिल्कुल पानी नहीं हैं।

(345 से 350) सोने, चांदी, तांबे, रांगे, लोहे, सीसे का पानी जिसे मा अल-ज़हब, मा अल-फ़िद्दा, मा अल-नुहास, मा अल-रसास, मा अल-हदीद, मा अल-असरुब कहते हैं और सब को मा अल-मा'दन (खनिज पानी) कहते हैं, इसके तीन अर्थ हैं:

एक यह कि उन्हें आग में लाल करके पानी में बुझाया जाए जिसे ज़रताब, आहनताब आदि कहते हैं। यह 136 में गुज़रा।

दूसरा: उनका पिघला हुआ रूप जिसे पिघला हुआ सोना आदि कहते हैं। ज़ाहिर है कि यह पानी की जाति से नहीं है। इसका संकेत दूसरे भाग के प्रस्तावना के'अतिरिक्त गुणों' में और फुटनोट 190 में अज़हरी और वाफ़ी के हवाले से गुज़रा।

तीसरा: वह पानी जो उनकी खानों में मिलता है।

मैं कहता हूँ (अकूल): उनका निर्माण पारे और गंधक से होता है और उनके धुएं और वाष्प से और उसके जलीय और गैसीय अंशों से। यदि यह वह पानी है जिसके कुछ भाग से वाष्प बनकर धुएं के

साथ मिलकर पारा बना और वह गंधक के साथ मिलकर खनिज बना; या उस वाष्प का वह हिस्सा है जो ठंड पाकर पानी बन गया तो वह 'मुतलक पानी' (शुद्ध पानी) है। और अगर यह वह पारा पदार्थ है जिसकी तरलता में गंधक का धुआं मिला और पारा बनने के लिए तैयार हुआ और अभी शुष्कता की कमी के कारण पानी के रूप में है तो यह 'मुकय्यद पानी' है या पानी ही नहीं रहा। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

विविध बिखरे हुए लाभ

(1) जब सूक्ष्म विद्वान अल-अलाई ने 'अल-दुर' में 'अल-बहर' से लेकर सुधार किया... | (1) इमाम अलाई ने 'दुर' में 'बहर' से लेकर इमाम फ़ख़्र के बारे में...

पृष्ठ 223 का 756

(۳۳۸) ماء العسل کہ شہد میں دو چند پانی ملا کر جوش دیں یہاں تک کہ دو تہائی جل جائے پانی نہ رہا۔

(۳۳۹) یوں ہی ماء الشعیر کہ بجوش دیں یہاں تک کہ گھل کر مہرا ہو جائیں صاف کرکے مستعمل ہوتا ہے بوجہ کمال امتزاج پانی نہ رہا۔

(۳۴۰ و ۳۴۱) یوں ہی ماء الاصول وماء البزور جڑوں اور تخموں کے جوشاندے۔

(۳۴۲) یوں ہی ماء الرماد کہ پانی میں بار بار راکھ ڈال کر ہر بار جوش دیتے ہیں پھر صاف کرتے ہیں مثل جوشاندہ دوا ہے۔

(۳۴۳) ماء النون کہ ماہی نمکسود سے پانی سٹپکتا ہے۔

(۳۴۴) ماء الحُمۃ بضم جیم و تشدید میم مفتوح کہ فارسی میں آنگر بسکون با و ضم کاف وفتح میم مخفف کہتے ہیں دریائے چین و ہر موز میں ایک قسم کی مچھلی کے پیٹ سے خاکستری رنگ پانی نکلتا ہے یہ دونوں سرے سے پانی نہیں۔

(۳۴۵ تا ۳۵۰) سونے، چاندی، تانبے، رانگ، لوہے، سیسے کے پانی کہ ماء الذہب، ماء الفضۃ، ماء النحاس، ماء الرصاص، ماء الحدید، ماء الاسرب اور سب کو ماء المعدن کہتے ہیں، اس کے تین معنی ہیں:

ایک یہ کہ انہیں آگ میں سُرخ کرکے پانی میں بجھائیں جسے زرتاب، آہن تاب وغیرہ کہتے ہیں۔ یہ ۱۳۶ میں گزرا۔

دوم: ان کا گداختہ جسے محلول زر وغیرہ کہتے ہیں ظاہر ہے کہ یہ جنس آب ہی سے نہیں اس کا اشارہ فصل ثانی صدر بیان اضافات میں اور جزئیہ حاشیہ ۱۹۰ میں ازہری و وافی سے گزرا۔

سوم: وہ پانی کہ ان کی معاون میں ملتا ہے۔

اقول: ان کا مکوّن پارے اور گندھک سے ہوتا ہے اور ان کا دخان و بخار سے اور اس کا اجزائے مائیہ و ہوائیہ سے اگر یہ وہ پانی ہے جس کے بعض سے بخار بنا کر دھوئیں سے مل کر زیبق ہوا اور وہ کبریت سے مل کر معدن یا اس بخار کا حصہ ہے کہ سردی پاکر پانی ہو گیا تو آبِ مطلق ہے اور اگر یہ وہ مادہ زیبق ہے جس کی مائیت میں کبریتی دخان ملا اور پارا بننے کیلئے مہیا کیا اور ہنوز قلتِ یبوست نے شکل آب پر رکھا تو آبِ مقید ہے یا پانی ہی نہ رہا واللہ تعالیٰ اعلم۔

فوائد منثورۃ متفرق فائدے

(۱) لما اصلح المدقق العلائی فی الدر مغترفا | (۱) امام علائی نے در میں بحر سے اخذ کر کے امام فخر

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

[Arabic segment]: "From Al-Bahr: The rule of Imam Al-Fakhr, rather its judgment as we informed you, by the addition of 'so long as the name [water] does not vanish' like date-nabidh. Allamah Sh[ami] objected to it, saying that what we previously quoted from Al-Fath applies here. Reflect. (1) That is, what the researcher mentioned in Al-Fath regarding the disappearance of fluidity (riqqat) in the categories, that the discussion is about water, and this [date-nabidh] has lost the name of water."

[Urdu text corresponding to the above]: When the rule of the Imam was refined, or rather implemented as we explained in [page] 287, the condition that the name 'water' no longer remains must be added, such as in the case of date-nabidh. Thus, Allamah Shami, while objecting to Imam Alai, said that our previously quoted passage from Fath al-Qadir would be applicable here. Reflection is needed. (End) This means the statement of the researcher of Fath al-Qadir which he mentioned regarding the loss of fluidity in the categories of water, that once the fluidity ends, it is no longer called water, whereas this discussion is about water. (T)

[Arabic segment]: "I say: (1) Setting aside what we previously stated about Al-Fath, (2) there is a vast difference between them. That which has lost fluidity is no longer water, either linguistically or customarily, unlike this [case], as we mentioned in the second chapter before the [section on] additions (idafat). (3) Even if this were accepted, all categories would fall upon investigation, for the causes are three: the predominance of the parts of the mixed substance, the disappearance of nature (fluidity) and name. The researcher denied the second, and you denied the third, and the first is more deserving of denial than it. So, what contains water and an equal or greater amount of milk is definitely not water, even if it contains water."

[Urdu text corresponding to the above]: I say that setting aside our stated discussion on Fath, there is a great difference between both situations. What is described in Fath is something devoid of fluidity, which is not called water in language or custom. And what Allamah Alai has stated (that if this fluidity ends, the name water will vanish, otherwise not), if it is accepted, then all categories (conflicting with obtaining purity from water) would be deemed fallen. Because the (conflicting) causes are three: the predominance of the parts of the substance mixed in water, the loss of water's nature (fluidity), and the change of name. Among these, the researcher denied the second, and you denied the third, and the first would be denied by priority. Thus, when water and milk are equal, or milk is more, it is not called water

even though water is present in it (i.e., the name changed even though its fluidity remains). (T)

[Arabic segment]: "(2) It occurred in the Commentary of Al-Nuqaya by Allamah Al-Birjandi, after quoting from Al-Hidayah what we previously mentioned in the sixth..."

[Urdu text corresponding to the above]: (2) Allamah Birjandi, in his commentary on Nuqaya, after quoting this subject from Hidayah, which we have [mentioned] in the sixth rule of the third chapter...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt 1/133.

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

[अरबी अंश]: "अल-बहर से: इमाम अल-फ़ख़्र का नियम, बल्कि उसका निर्णय जैसा कि हमने आपको सूचित किया, 'जब तक नाम (पानी) समाप्त न हो जाए' जोड़ने के साथ, जैसे खजूर की नबीज़। अल्लामा शामी ने आपत्ति जताई कि अल-फ़तह से हमारा पहले उद्धृत किया गया कथन यहाँ लागू होता है। चिंतन करें। (1) यानी, शोधकर्ता ने अल-फ़तह में श्रेणियों में तरलता (रक़त) के लुप्त होने के बारे में जो उल्लेख किया है—कि चर्चा पानी के बारे में है, और इसने पानी का नाम खो दिया है।"

[उपरोक्त का उर्दू पाठ]: जब इमाम के नियम को संशोधित किया गया, या बल्कि लागू किया गया जैसा कि हमने [पृष्ठ] 287 में समझाया है, तो यह शर्त जोड़ी जानी चाहिए कि 'पानी' नाम शेष न रहे, जैसे खजूर-नबीज़ के मामले में। इस प्रकार, अल्लामा शामी ने इमाम अलाई पर आपत्ति जताते हुए कहा कि फतह अल-कादिर से हमारा पहले उद्धृत किया गया अंश यहाँ लागू होगा। चिंतन की आवश्यकता है। (समाप्त) इसका अर्थ फतह अल-कादिर के शोधकर्ता के उस कथन से है जो उन्होंने पानी की श्रेणियों में तरलता के लुप्त होने के बारे में उल्लेख किया है, कि एक बार तरलता समाप्त हो जाने पर, इसे अब पानी नहीं कहा जाता है, जबकि यह चर्चा पानी के बारे में है। (त)

[अरबी अंश]: "मैं कहता हूँ: (1) अल-फ़तह पर हमारे पिछले बयान को अलग रखते हुए, (2) दोनों के बीच एक बड़ा अंतर है। वह चीज़ जिसने तरलता खो दी है, वह अब भाषाई या प्रथागत रूप से पानी नहीं है, इस मामले के विपरीत, जैसा कि हमने दूसरे अध्याय में इज़ाफ़ात (जोड़) के अनुभाग से पहले उल्लेख किया है। (3) यदि इसे स्वीकार भी कर लिया जाए, तो जाँच करने पर सभी श्रेणियां समाप्त हो जाएंगी, क्योंकि कारण तीन हैं: मिश्रित पदार्थ के भागों की प्रधानता, प्रकृति (तरलता) और नाम का लुप्त होना। शोधकर्ता ने दूसरे का खंडन किया, और आपने तीसरे का, और पहला इनसे अधिक खंडन के योग्य है। इसलिए, जिसमें पानी है और उसके बराबर या उससे अधिक मात्रा में दूध है, वह निश्चित रूप से पानी नहीं है, भले ही उसमें पानी हो।"

[उपरोक्त का उर्दू पाठ]: मैं कहता हूँ कि फतह पर हमारी वर्णित चर्चा को अलग रखते हुए, दोनों स्थितियों के बीच एक बड़ा अंतर है। फतह में जिसका वर्णन किया गया है वह तरलता से रहित वस्तु है, जिसे भाषा या प्रथा में पानी नहीं कहा जाता है। और अल्लामा अलाई ने जो कहा है (कि यदि यह तरलता समाप्त हो जाती है, तो पानी का नाम मिट जाएगा, अन्यथा नहीं), यदि इसे स्वीकार कर लिया

जाए, तो सभी श्रेणियां (पानी से पवित्रता प्राप्त करने के विपरीत) गिर जाएंगी। क्योंकि (विरोधी) कारण तीन हैं: पानी में मिश्रित पदार्थ के भागों की प्रधानता, पानी की प्रकृति (तरलता) की हानि, और नाम का परिवर्तन। इनमें से, शोधकर्ता ने दूसरे का खंडन किया, और आपने तीसरे का, और पहले का प्राथमिकता से खंडन किया जाएगा। इस प्रकार, जब पानी और दूध बराबर हों, या दूध अधिक हो, तो इसे पानी नहीं कहा जाता है, भले ही उसमें पानी मौजूद हो (यानी, नाम बदल गया है जबकि उसकी तरलता बनी हुई है)। (त)

[अरबी अंश]: "(2) अल्लामा अल-बिरजंदी द्वारा अल-नुकाया की व्याख्या में, अल-हिदाया से उद्धरण के बाद, जो हमने छठे नियम में पहले उल्लेख किया था..."

[उपरोक्त का उर्दू पाठ]: (2) अल्लामा बिरजंदी ने नुकाया की अपनी व्याख्या में, हिदाया के इस विषय को उद्धृत करने के बाद, जिसे हमने तीसरे अध्याय के छठे नियम में [उल्लेख] किया है...

---

1. रद अल-मुह्तार, जल का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/133।

[Arabic segment]: من البحر ضابطة الامام الفخر لابل حکمها کما علمناک فی بزیادة ید مالم یزل الاسم کنبیذ تمر اعترضه العلامة ش بأنه یرد علیه ما قدمناه عن الفتح تأمل۔ (۱) یعنی ما ذکرہ المحقق فی الفتح علی ذکر زوال الرقة فی الاقسام ان الکلام فی الماء وھذا قد زال عنہ اسم الماء۔

کے ضابطہ کی جب اصلاح کی بلانکہ اس کو نافذ کیا جیسا کہ ہم نے ۲۸۷ میں بیان کیا ہے کہ اس میں پانی کا نام باقی نہ رہنے کی قید زیادہ کرنی ہوگی جیسے نبیز تمر۔ تو علامہ شامی نے امام علائی پر اعتراض کرتے ہوئے کہا کہ اس پر فتح القدیر سے ہمارا پہلے نقل ہوا کلام وارد ہوگا، غور چاہئے اھ یعنی اس سے محقق صاحب فتح القدیر کا وہ کلام مراد ہے جو انہوں نے پانی کے اقسام میں رقت کے زائل ہونے کے بارے میں فرمایا ہے کہ رقت کے ختم ہوجانے پر اس کو پانی نہیں کہا جاتا جبکہ یہ بحث پانی کے بارے میں ہے۔ (ت)

[Arabic segment]: اقول: (۱) مع قطع النظر عما قدمنا علی الفتح (۲) بینهما لون بعید فزائل الرقة لم یبق ماء عرفاً ولا لغة بخلاف هذا کما ذکرنا فی الفصل الثانی قبیل الاضافات (۳) ولوسلم هذا سقطت الاقسام کلها علی التحقیق فان الاسباب ثلثة کثرة اجزاء المخالط وزوال الطبع والاسم وقد انکر المحقق الثانی واتم الثالث والاول احق بالانکار منہ فما فیہ ماء ومثلہ اواکثر منہ لبن لیس ماء قطعاً وانکان فیہ ماء۔

میں کہتا ہوں کہ فتح پر ہماری بیان کردہ بحث سے قطع نظر، دونوں صورتوں میں بڑا فرق ہے کہ فتح میں جس کو بیان کیا ہے وہ خالی از رقت چیز ہے جس کو لغت اور عرف میں پانی نہیں کہا جاتا اور یہ جس کو علامہ علائی نے بیان فرمایا ہے اور اگر یہ رقت ختم ہوگی تو پانی کا نام زائل

ہو گا ورنہ نہیں) تسلیم کر لیا جائے تو پھر (پانی سے طہارت کے حصول منافی) تمام اقسام ساقط قرار پائیں گے، کیونکہ (منافی) اسباب تین ہیں، پانی میں ملنے والی چیز کے اجزاء کا غلبہ، پانی کی طبیعت (رقت) کا زوال اور نام کی تبدیلی۔ ان میں سے محقق نے دوسرے اور تم نے تیسرے کا انکار کر دیا اور پہلے کا انکار بطریق اولیٰ ہو جائے گا، پس جب پانی اور دودھ برابر ہوں یا دودھ زیادہ ہو تو اس کو پانی نہیں کہا جاتا حالانکہ اس میں پانی ہے (یعنی نام تبدیل ہو گیا حالانکہ اس کی رقت باقی ہے۔ (ت)

[Arabic segment]: (۲) وقع فی شرح النقایة العلامة البرجندی بعد ما نقل عن الهدایة ما قدمنا فی سادس

(۲) علامہ برجندی نے نقایہ کی اپنی شرح میں ہدایہ کے اس مضمون کو جسے ہم نے تیسری فصل کے چھٹے ضابطہ میں

---

1 ردالمحتار باب المیاہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/۱۳۳

Fatawa Ridawiyyah, Volume 3.

Rules of the third chapter state: "And also in it: dried fruits, when they fall into water, if the taste of that thing dominates, performing ablution (wudu) from it is not permissible." (End of quote).

I say: This is not found in Al-Hidayah either, and it is contrary to the Imams of the school of thought. As we have informed you elsewhere, there is a consensus that regarding solid substances, the criteria for dominance is based on physical components (particles), not on attributes (color, taste, or smell). Disagreement only exists regarding liquid substances. Furthermore, restricting it to 'dried' fruits seems to have no benefit unless it is argued that dried items dissolve more slowly than fresh ones, indicating that staying in water for a long time increases its effect. However, here it is worth considering that in terms of taste, what matters is the dissolution of the fruit; while fresh green fruit dissolves quickly in water, staying submerged in water has no impact in this regard. And Allah Almighty knows best. (T)

(3) Thanks be to Allah, we have established through thorough research that in the case of cooking, for the dominance of the mixed substance, the change in one or all attributes of water is not the criteria. Rather, the criteria is the loss of the water's natural properties or its name, even if it happens later. Moreover, Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) also does not consider attributes for solid substances; he only considers the change in attributes for liquid substances, and even then...

---

1. Sharh al-Niqayah by Al-Barjandi, Researches on Water, Naval Kishore Lucknow 1/32 Page 225 of 756

फ़तवा-ए-रिज़विया, जिल्द 3.

तीसरे अध्याय के नियमों में उल्लेख है: "और इसमें यह भी है कि सूखे फल, जब वे पानी में गिरते हैं, यदि उस चीज़ का स्वाद पानी पर हावी हो जाए, तो उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है।"

मैं कहता हूँ: यह 'अल-हिदाया' में भी नहीं है और यह मज़हब के इमामों के विचारों के भी विपरीत है। जैसा कि हमने आपको वहां बताया है, सर्वसम्मति यह है कि ठोस वस्तुओं के मामले में प्रधानता का पैमाना उसके अंश (कण) हैं, न कि उसके गुण (रंग, स्वाद, गंध)। मतभेद केवल तरल पदार्थों के मामले में है। इसके अलावा, 'सूखा' होने की शर्त भी व्यर्थ लगती है, सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि सूखा फल ताज़ा फल की तुलना में धीरे-धीरे घुलता है, इसलिए पानी में अधिक समय तक रहने से उसका प्रभाव बढ़ जाता है। लेकिन यहाँ यह विचारणीय है कि (स्वाद के मामले में) फल के घुलने का महत्व है, जबकि ताज़ा हरा फल पानी में जल्दी घुल जाता है, इस मामले में पानी में पड़े रहने की अवधि का कोई प्रभाव नहीं है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

(3) अल्लाह का शुक्र है कि हमने गहन शोध से सिद्ध किया है कि पानी में पकाने की स्थिति में (मिश्रित वस्तु की प्रधानता के लिए) पानी के एक या सभी गुणों के परिवर्तन को आधार नहीं माना जाता है, बल्कि पानी के प्राकृतिक स्वभाव या उसके नाम के समाप्त होने को आधार माना जाता है, भले ही वह बाद में हो। इसके अतिरिक्त, इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) भी ठोस वस्तुओं के मामले में इसे आधार नहीं मानते; वे केवल बहने वाली (तरल) वस्तुओं के मामले में गुणों के परिवर्तन को आधार मानते हैं, और वह भी...

---

1. शरह अल-निकाया अल-बरजन्दी, अबहास अल-मा, नवल किशोर लखनऊ 1/32 पृष्ठ 225 का 756

ضوابط الفصل الثالث مأنصه وفیها ایضاً ان الثمار الیابسة اذا وقعت فی الماء فان کان الغالب طعم ذلك الشیئ لایجوز التوضی منه[1] اھ۔ بیان کیا ہے، نقل کرنے کے بعد کہا، جو یہ ہے۔ اور ہدایہ میں بھی ہے کہ اگر پانی میں خشک پھل پڑ جائے اور پانی پر اس پھل کا ذائقہ غالب ہو جائے تو اس پانی سے وضو جائز نہیں ہے اھ (ت)

اقول: ولیس ایضاً في الهدایة ثم هو خلاف (۱) امامی المذهب لما اعلمناك هناك ان اعتبار الاجزاء دون الاوصاف مجمع علیه في الجامد وانما الخلف فی المائع ثم قید (۲) الیابسة لایظهر له فائدة الا ان یقال ان الیابس ابطأ تحللا من الرطب فیدل علی طول مکثه فی الماء فیکثر عمله وفیه ان العمل بالتحلل فالرطب اسرع عملا ولا نظر الی مدة المکث واللہ تعالی اعلم۔ (۳) اثبتنا میں کہتا ہوں کہ ہدایہ میں بھی نہیں اور اس کے علاوہ وہ مذہب کے ائمہ کے بھی خلاف ہے جیسا کہ ہم نے آپ کو وہاں بتایا ہے کہ (جامد چیز کے ملنے سے) بالاتفاق غلبہ میں اجزاء کا اعتبار ہے۔ اختلاف تو صرف بہنے والی چیز کے ملنے میں ہے، پھر خشک کی قید بھی بے فائدہ ہے، ہاں اگر یوں کہا جائے کہ خشک دیر سے گھلتا ہے اس لئے زیادہ دیر پانی میں رہنے کی وجہ سے اس کی تاثیر زیادہ ہوتی ہے لیکن یہاں یہ بات قابلِ غور ہے کہ (ذائقہ کے معاملہ میں) پھل کے گھلنے کا دخل ہے جبکہ پانی میں تازہ سبز پھل جلدی گھل جاتا ہے اس معاملہ میں پانی پڑے رہنے کا کوئی دخل نہیں ہے، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

(۳) وللہ الحمد عرش التحقیق علی ان العبرة في الطبخ بزوال الطبع ولومآلا او الاسم بالمعنی الثالث لابتغیر وصف او اوصاف وان محمدا ایضاً لا یعتبرها فی الجامد واذا اعتبرها فی المائع لایرسل ارسالا بل یرتب فیقدم اللون ثم الطعم ولایعتبر الریح اصلا کما بیناه بکلام الامام ملك العلماء۔ (۳) اللہ تعالٰی کا

شکر ہے کہ ہم نے پوری تحقیق سے ثابت کیا ہے کہ پانی میں پکانے کی صورت میں (ملنے والی چیز کے غلبہ کیلئے) پانی کے ایک وصف یا تمام اوصاف کی تبدیلی کا اعتبار نہیں ہے بلکہ اس صورت میں پانی کی طبیعت یا نام کے زوال کا اعتبار ہے اگرچہ بعد میں ہو نیز امام محمد رحمہ اللہ بھی جامد چیز میں اس کا اعتبار نہیں کرتے وہ صرف بہنے والی چیز میں اس (وصف کی تبدیلی) کا اعتبار کرتے ہیں وہ بھی

---

[1] شرح النقاية للبر جندی ابحاث الماء نولکشو لکھنو ۱/۳۲ Page 225 of 756

Volume Three Fatawa-e-Razviya

[Arabic Column]: Beware of assuming anything from what we presented of his speech there, when he said, answering Imam Al-Karkhi on behalf of Imam Abu Tahir Al-Dabbas regarding cooked nabidh: "If a pure liquid mixes with water, it does not prevent ablution if it does not overpower the water at all. But if it overpowers it in any way, then it is not allowed. Here, it has overpowered in terms of taste and color, even if it did not overpower in terms of parts." (End of quote). The determining factor here is the quality, and smell is also considered, and there is no order in their consideration due to his saying "if it overpowers in any way." Thus, it holds true with the predominance of smell over the others, and of taste over color in something colored. Rather, what is meant by predominance is such that the name [water] ceases to apply. Don't you see his statement at the beginning of the section: "If it mixes with it in a way that the name 'water' is removed from it." And he said regarding what is intended for cleaning: "It is permissible even if the color, taste, or smell of the water changes because the name remains." And he said: "Unless it becomes like thick gruel (sawiq), because then the name 'water' is removed." And he said: "If it changes due to mud, leaves, or fruits, it is permissible because the name 'water' is not removed." And he said: "By analogy to what we mentioned..."

[Urdu Column]: Not in every way, but in terms of the order of qualities, they first consider the color then the taste (change), while they do not consider the change in smell at all, as we clarified from the speech of Imam Malak-ul-Ulama. (T) We previously mentioned the speech of Malak-ul-Ulama where he, responding to Imam Al-Karkhi on behalf of Imam Abu Tahir, said about cooked nabidh that wudu is permissible with water mixed with any pure flowing substance provided that substance does not overpower the water. And if for any reason that substance overpowers, then wudu will not be permissible. Here, in the case of cooked nabidh, predominance occurred in terms of taste and color, although there was no predominance in terms of parts. Let you not be misled by this speech (thinking it contradicts our research mentioned above) because in the aforementioned nabidh (despite the mixing of solid matter and cooking), the quality and the change of bad odor are considered, and there is no order in considering qualities because he said "predominance in any way," which also includes the case of only a change in smell and only a change in taste in a colored substance. This is because (in the aforementioned speech of Malak-ul-Ulama, instead of predominance of parts or loss of nature, for another purpose) predominance that changes the name is meant. At

the beginning of this discussion, look carefully at his following statements: "When something mixes in such a way that it is not correct to call it water," and he said: "If something is mixed for the purpose of greater cleaning, then from it..."

Analogy to what we mentioned.

Footnotes: 1 Bada'i al-Sana'i, Topic: Restricted Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/17 2 Bada'i al-Sana'i, Topic: Restricted Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/17 3 Bada'i al-Sana'i, Topic: Restricted Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/17 4 Bada'i al-Sana'i, Topic: Restricted Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/17 5 Bada'i al-Sana'i, Topic: Restricted Water, H.M. Saeed Company, Karachi, 15/1

ज़िल्द सोम (खंड 3) फ़तावा-ए-रज़विया

[अरबी कॉलम]: यहाँ उनकी बातों से किसी ग़लतफ़हमी में न पड़ें, जब उन्होंने इमाम अबू ताहिर अल-दबास की ओर से इमाम अल-करखी को पकाए हुए नबीज़ के बारे में उत्तर देते हुए कहा: "यदि कोई शुद्ध तरल पानी में मिल जाता है, तो वह वज़ू को नहीं रोकता यदि वह पानी पर बिल्कुल हावी न हो जाए। लेकिन यदि वह किसी भी तरह से हावी हो जाता है, तो नहीं। और यहाँ स्वाद और रंग के मामले में प्रभुत्व हुआ है, भले ही अंशों के मामले में न हुआ हो।" यहाँ निर्णायक कारक गुण है, और गंध पर भी विचार किया जाता है, और उनके विचार में कोई क्रम नहीं है क्योंकि उन्होंने कहा "यदि वह किसी भी तरह से हावी हो जाए।" इस प्रकार, यह अन्य गुणों की तुलना में गंध की प्रधानता, और रंगीन वस्तु में रंग की तुलना में स्वाद की प्रधानता के साथ सच होता है। बल्कि, प्रधानता से तात्पर्य ऐसा है कि नाम (पानी) हट जाए। क्या आप खंड की शुरुआत में उनका कथन नहीं देखते: "यदि यह इसमें इस तरह मिल जाए कि इससे 'पानी' नाम हट जाए।" और उन्होंने सफाई के उद्देश्य से इस्तेमाल होने वाली चीजों के बारे में कहा: "यह जायज़ है भले ही पानी का रंग, स्वाद या गंध बदल जाए क्योंकि नाम बरकरार रहता है।" और उन्होंने कहा: "जब तक कि वह सत्तू (सवीक़) जैसा न हो जाए, क्योंकि तब 'पानी' नाम हट जाता है।" और उन्होंने कहा: "यदि मिट्टी, पत्तों या फलों के कारण बदलाव आता है, तो यह जायज़ है क्योंकि 'पानी' नाम नहीं हटा है।" और उन्होंने कहा: "जैसा हमने उल्लेख किया है उसके सादृश्य से..."

[उर्दू कॉलम]: हर तरह से नहीं, बल्कि गुणों के क्रम के अनुसार, वे पहले रंग और फिर स्वाद (के परिवर्तन) पर विचार करते हैं, जबकि वे गंध के परिवर्तन पर बिल्कुल विचार नहीं करते हैं, जैसा कि हमने इमाम मलक-उल-उलेमा के शब्दों से स्पष्ट किया है। (त) हमने मलक-उल-उलेमा के शब्दों का पहले उल्लेख किया है जहाँ उन्होंने इमाम अबू ताहिर की ओर से इमाम अल-करखी को जवाब देते हुए पके हुए नबीज़ के बारे में कहा कि पानी में बहने वाली किसी भी शुद्ध चीज़ के मिलने से वज़ू जायज़ है बशर्ते वह चीज़ पानी पर हावी न हो। और यदि किसी कारण से वह चीज़ हावी हो जाए, तो वज़ू जायज़ नहीं होगा। यहाँ (पके हुए नबीज़ में) स्वाद और रंग के मामले में प्रधानता हुई है, हालाँकि अंशों के मामले में प्रधानता नहीं है। इस कथन से आपको यह ग़लतफ़हमी न हो (कि यह हमारे ऊपर बताए गए शोध के विरुद्ध है) क्योंकि उक्त नबीज़ में (ठोस पदार्थ मिलने और पकने के बावजूद) गुण और दुर्गंध बदलने पर विचार किया गया है, और गुणों पर विचार करने में कोई क्रम नहीं है क्योंकि उन्होंने "किसी भी तरह से प्रधानता" कहा है, जिसमें केवल गंध बदलने और रंगीन चीज़ में केवल

स्वाद बदलने वाली स्थिति भी शामिल है। यह इसलिए है (क्योंकि मलक-उल-उलेमा के उक्त कथन में अंशों की प्रधानता या प्रकृति के ह्रास के बजाय, किसी अन्य उद्देश्य के लिए) नाम बदलने वाली प्रधानता का अर्थ है। इस चर्चा की शुरुआत में उनके निम्नलिखित कथनों को ध्यान से देखें: "जब कोई चीज़ इस तरह मिल जाए कि उसे पानी कहना सही न हो," और कहा: "यदि अधिक सफाई के उद्देश्य से कोई चीज़ मिलाई गई हो, तो उससे..."

जो हमने उल्लेख किया है उसका सादृश्य।

पादलेख: 1 बदाइ-उस-सनाइ, विषय: मुकय्यद पानी, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/17 2 बदाइ-उस-सनाइ, विषय: मुकय्यद पानी, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/17 3 बदाइ-उस-सनाइ, विषय: मुकय्यद पानी, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/17 4 बदाइ-उस-सनाइ, विषय: मुकय्यद पानी, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/17 5 बदाइ-उस-सनाइ, विषय: मुकय्यद पानी, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 15/1

पृष्ठ 226/756

فاياك ان تتوهم مما قدمنا من كلامه ثمه اذ قال مجيبا للامام الكرخي عن الامام ابي طاهر الدباس في النبيذ المطبوخ ان المائع الطاهر اذا اختلط بالماء لا يمنع التوضو اذا لم يغلب على الماء اصلا اما اذا غلب بوجه من الوجوه فلا وههنا غلب من حيث الطعم واللون وان لم يغلب من حيث الاجزاء 1 اھ ان العبرة ههنا للوصف وان الريح ايضا معتبرة وان لا ترتيب في اعتبارها لقوله اذا غلب بوجه من الوجوه فيصدق بغلبة الريح دون الباقيين وبغلبة الطعم دون اللون في ذي اللون بل المراد الغلبة بحيث يزول الاسم، الا ترى الى قوله في صدر المبحث اذا خالطه على وجه زال عنه اسم الماء 2 وقال فيما يقصد به التنظيف يجوز وان تغير لون الماء او طعمه او ريحه لان الاسماء باق 3 وقال الا اذا صار كالسويق لانه حينئذ يزول اسم الماء 4 وقال لو تغير بالطين والاوراق او الثمار يجوز لانه لم يزل اسم الماء 5 وقال قياس ماذكرنا

ہر طرح نہیں بلکہ اوصاف کی ترتیب کے لحاظ سے، پہلے رنگ پھر ذائقہ (کی تبدیلی) کا اعتبار کرتے ہیں جبکہ بو کی تبدیلی کا وہ بالکل اعتبار نہیں کرتے جیسا کہ امام ملک العلماء کے کلام سے ہم نے واضح کیا ہے۔ (ت) ہم نے ملک العلماء کا کلام پہلے ذکر کیا ہے جہاں انہوں نے امام ابوطاہر کی طرف سے امام کرخی کو جواب دیتے ہوئے پکے ہوئے نبیذ کے بارے میں فرمایا کہ پانی میں بہنے والی کسی پاک چیز کے ملنے سے وضو جائز ہے بشرطیکہ وہ چیز پانی پر غالب نہ ہو اور اگر کسی وجہ سے وہ چیز غالب ہو جائے تو پھر وضو جائز نہ ہو گا اور یہاں (پکے ہوئے نبیذ) میں ذائقہ اور رنگ کے لحاظ سے غلبہ ہوا ہے اگرچہ اجزاء کے لحاظ سے غلبہ نہیں ہے اھ اس کلام سے آپ کو یہ غلط فہمی نہ ہو (کہ یہ ہماری مذکورہ بالا تحقیق کے خلاف ہے) کیونکہ نبیذ مذکور میں (جامد چیز ملنے اور پکے ہونے کے باوجود) وصف کا اور بدبو بدلنے کا

اور اوصاف میں ترتیب نہ ہونے کا اعتبار ہے کیونکہ انہوں نے کسی طرح سے غلبہ کہا ہے جو صرف بُو تبدیل ہونے اور رنگ والی چیز میں صرف ذائقہ بدلنے والی صورت کو بھی شامل ہے۔ یہ اس لئے (کہ ملک العلماء کے مذکور کلام میں غلبہ اجزاء یا زوال طبیعت کی بجائے کسی دوسرے مقصد کیلئے) نام کی تبدیلی والا غلبہ مراد ہے۔ اس بحث کی ابتداء میں ان کے حسب ذیل اقوال کو غور سے دیکھیں "جب کوئی چیز اس طرح ملے کہ پانی کہنا درست نہ ہو" اور کہا "زیادہ صفائی کی غرض سے اگر کوئی چیز ملائی تو اس سے"۔

قیاس ماذکرنا

1 بدائع الصنائع مطلب الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۷ 2 بدائع الصنائع مطلب الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۷ 3 بدائع الصنائع مطلب الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۷ 4 بدائع الصنائع مطلب الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۷ 5 بدائع الصنائع مطلب الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۵/۱

Fatawa-e-Razvia - Volume Three

(Arabic Text Column): It is not permissible with date wine (Nabidh at-Tamr) due to the change in the name of the water and it being overpowered by the taste of dates. Then he mentioned the issue of the cooked [mixture] and that al-Karkhi permitted it because the parts of water are dominant. He responded on behalf of Abu Tahir with what has passed, for what he (may Allah have mercy on him) intended was when it overpowers the water in any way such that it removes its name. And we have informed you that this does not happen through smell alone, nor does it happen with a solid substance unless it becomes something else for another purpose. And this does not happen here unless the taste prevails such that it makes it Nabidh. As he said: the date wine over which there is disagreement is when some dates are thrown into the water and their sweetness is released into the water. He said: It is then carried upon what has become sweet and has left the state of being 'absolute water,' as we have previously stated. Thus, the axis here is on the taste. It is not something where an order [of changes in qualities] applies, because the consideration is not from the perspective of a changing quality, but rather because it changed the water and turned it into Nabidh. Do you not see its management/ usage?

(Urdu Text Column): Wudu is permissible even if the color, smell, and taste of the water change, because its name still remains. And he said, "but when it becomes thick like sattu (flour drink), (then it is not permissible) because it will no longer be called water." And he said, "if a change occurs due to soil, leaves, or fruit falling into the water, wudu is permissible because its name is still water." And he said, "based on our mentioned rule, wudu with date wine is not permissible because its name has changed and it has been overpowered by the taste of dates." After these statements, he mentioned the issue of mixture in cooked water and said that Imam Karkhi considered wudu with it permissible because, in his opinion, the parts of water are still dominant. The answer to this on behalf of Imam Abu Tahir was given by Malik al-Ulama in the mentioned discourse, where he mentioned 'dominance' over water for some reason and meant the dominance that changes the name. (T) And we have already told you that the name of water is not lost solely by a change in smell, nor is its name lost by mixing with a solid substance, as long as it does not become something else for another purpose. Here, regarding Nabidh, the change of name does not occur without a change in taste, which is what causes it to become Nabidh. As he said: the Nabidh about which there is disagreement is when dates are put in

water and the sweetness is transferred to the water. He said that the Nabidh will be sweet and it will be excluded from the general application of 'water,' as we have already explained in discussion 116. Therefore, the formation of Nabidh depends on taste. (T) And in this change, the sequence of qualities does not play a part because, instead of a change in any single quality in Nabidh, this is itself such a change that has transformed the water into Nabidh...

---

[1] Badai' al-Sanai', Topic: Restricted Water, H.M. Saeed Company, Karachi 1/51

(अरबी पाठ स्तंभ): खजूर की शराब (नबीज़-ए-तमर) से वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि पानी का नाम बदल जाता है और वह खजूर के स्वाद से अभिभूत हो जाता है। फिर उन्होंने पके हुए (मिश्रण) का मसला ज़िक्र किया और यह कि अल-कर्खी ने इसे जायज़ माना क्योंकि पानी के हिस्से प्रबल हैं। उन्होंने अबू ताहिर की ओर से उत्तर दिया, जो बीत चुका है, क्योंकि उनका (अल्लाह उन पर रहम करे) मतलब यह था कि जब वह किसी भी तरह से पानी पर हावी हो जाए जिससे उसका नाम मिट जाए। और हमने आपको बताया है कि यह केवल गंध से नहीं होता, और न ही यह किसी ठोस पदार्थ के साथ होता है जब तक कि वह किसी अन्य उद्देश्य के लिए कुछ और न बन जाए। और यह यहाँ तब तक नहीं होता जब तक कि स्वाद इतना प्रबल न हो जाए कि वह उसे नबीज़ बना दे। जैसा कि उन्होंने कहा: खजूर की वह नबीज़ जिस पर मतभेद है, वह तब होती है जब पानी में कुछ खजूरें डाली जाती हैं और उनकी मिठास पानी में आ जाती है। उन्होंने कहा: फिर इसे वह माना जाएगा जो मीठा हो गया और सामान्य पानी होने से बाहर निकल गया, जैसा कि हमने पहले बताया है। अत; यहाँ मुख्य आधार स्वाद है। यह उन चीज़ों में से नहीं है जहाँ (गुणों के बदलाव का) क्रम लागू हो, क्योंकि विचार किसी गुण के बदलने के नज़रिए से नहीं है, बल्कि इसलिए है क्योंकि उसने पानी को बदल दिया और उसे नबीज़ बना दिया। क्या आप इसके प्रबंधन/उपयोग को नहीं देखते?

(उर्दू पाठ स्तंभ): वज़ू जायज़ है चाहे पानी का रंग, गंध और स्वाद बदल जाए, क्योंकि अभी भी इसका नाम पानी ही है। और कहा, "लेकिन जब वह सत्तू की तरह गाढ़ा हो जाए (तो जायज़ नहीं) क्योंकि अब इसे पानी नहीं कहा जाएगा।" और कहा, "अगर पानी में मिट्टी या पत्ते या फल गिरने से बदलाव आए तो वज़ू जायज़ है क्योंकि अभी भी इसका नाम पानी है।" और कहा, "हमारे उक्त नियम के अनुसार खजूर की नबीज़ से वज़ू जायज़ नहीं है क्योंकि इसका नाम बदल गया है और वह खजूर के स्वाद से दब गया है।" इन कथनों के बाद उन्होंने पके हुए पानी में मिलावट का मसला ज़िक्र किया और कहा कि इमाम कर्खी ने इससे वज़ू को जायज़ कहा है क्योंकि उनके विचार में अभी पानी के हिस्से प्रबल हैं। इसका जवाब इमाम अबू ताहिर की ओर से मलिक-उल-उलेमा ने देते हुए उक्त कलाम किया है जिसमें उन्होंने किसी वजह से पानी पर प्रबलता का ज़िक्र करके नाम बदलने वाली प्रबलता मुराद ली है। (त) और हम आपको पहले बता चुके हैं कि पानी का नाम न तो सिर्फ गंध के बदलाव से जाता है और न ही ठोस चीज़ के मिलने से पानी से उसका नाम जाता है, जब तक कि वह किसी दूसरे उद्देश्य के लिए दूसरी चीज़ न बन जाए। यहाँ नबीज़ के बारे में नाम का बदलाव स्वाद के

बदलाव के बिना नहीं होता जिसके कारण नबीज़ बनता है, जैसा कि उन्होंने फ़रमाया कि वह नबीज़ जिसमें मतभेद है वह पानी में खजूरें डालने पर मिठास जब पानी में आ जाए। और कहा कि नबीज़ मीठा होगा और यह पानी के सामान्य होने (इतलाक़) से बाहर होगा जैसा कि हम बहस ११६ में पहले बयान कर चुके हैं, इसी लिए नबीज़ बनने का दारोमदार स्वाद पर है। (त) और इस बदलाव में गुणों के क्रम का दखल नहीं है क्योंकि नबीज़ में किसी गुण के बदलाव के बजाय यह खुद ऐसा बदलाव है जिसने पानी को बदल कर नबीज़ की...

---

[1] बदाए-उस-सनाए, विषय: मुक़ैयद पानी, एच.एम. सईद कंपनी, कराची १/५१

(عربی عبارت کا کالم): ان لایجوز بنبیذ التمر لتغیر اسم الماء وصیرورته مغلوباً بطعم التمر ثم ذکر مسئلة المطبوخ وان الکرخي جوزه لان اجزاء الماء غالبة واجاب عن ابي طاهر بما مرفانما اراد رحمه الله تعالی اذا غلب علی الماء بوجه من الوجوه بحیث ازال اسمه۔ وقد اعلمناك انه لا یکون ذلك بالریح المجردة وانه لا یکون فی الجامد الا اذا صار شیئاً اخر لمقصد آخر ولا یکون هذا ههنا الا اذا غلب الطعم بحیث یجعله نبیذا کما قال نبیذ التمر الذی فیه الخلاف هو ان یلقی شیئ من التمر فی الماء فتخرج حلاوته الی الماء وقال فیحمل علی ماحلا وخرج عن الاطلاق کما قدمناه فی فعلی الطعم المدار ههنا۔ ولیس مما فیه الترتیب لان اعتباره لیس من حیث انه وصف تغیر بل لانه تغیر فغیر الماء وصیره نبیذا الاتری الی ادارته

(اردو عبارت کا کالم): وضو جائز ہے اگرچہ پانی کا رنگ، بو اور ذائقہ تبدیل ہوجائے، کیونکہ ابھی اس کا نام باقی ہے۔ اور کہا مگر جب وہ ستو کی طرح گاڑھا ہوجائے (تو جائز نہیں) کیونکہ اب پانی نہیں کہا جائے گا" اور کہا "اگر پانی میں مٹی یا پتے یا پھل گرنے سے تبدیلی آئے تو وضو جائز ہے کیونکہ ابھی اس کا نام پانی ہے" اور کہا "ہمارے مذکورہ قاعدے پر نبیز تمر سے وضو جائز نہیں کیونکہ اس کا نام تبدیل ہوگیا ہے اور وہ کھجور کے ذائقہ سے مغلوب ہوگیا ہے"۔ ان اقوال کے بعد انہوں نے پکے ہوئے پانی میں ملاوٹ کا مسئلہ ذکر کیا ہے اور کہا کہ امام کرخی نے اس سے وضو کو جائز کہا ہے کیونکہ ان کے خیال میں ابھی پانی کے اجزاء غالب ہیں اس کا جواب امام ابو طاہر کی جانب سے ملک العلماء نے دیتے ہوئے مذکور کلام کیا ہے جس میں انہوں نے کسی وجہ سے پانی پر غلبہ کا ذکر کر کے نام بدلنے والا غلبہ مراد لیا ہے (ت) اور ہم آپ کو پہلے بتا چکے ہیں کہ پانی کا نام نہ تو صرف بو کی تبدیلی سے زائل ہوتا ہے اور نہ ہی جامد چیز

کے ملنے سے پانی سے اس کا نام زائل ہوتا ہے، جب تک وہ کسی دوسرے مقصد کیلئے دوسری چیز نہ بن جائے اور یہاں نبیز کے متعلق نام کی تبدیلی ذائقہ کی تبدیلی کے بغیر نہیں ہوتی جس کے سبب نبیذ بنتا ہے، جیسے کہ انہوں نے فرمایا کہ وہ نبیز جس میں اختلاف ہے وہ پانی میں کھجوریں ڈالنے پر مٹھاس جب پانی میں منتقل ہو جائے اور کہا کہ نبیز میٹھا ہوگا اور یہ پانی کے اطلاق سے خارج ہوگا جیسا کہ ہم بحث ۱۱۶ میں پہلے بیان کر چکے ہیں، اسی لئے نبیز بننے کا دارومدار ذائقہ پر ہے۔ (ت) اور اس تبدیلی میں اوصاف کی ترتیب کا دخل نہیں ہے کیونکہ نبیز میں کسی وصف کی تبدیلی کی بجائے یہ خود ایسی تبدیلی ہے جس نے پانی کو تبدیل کر کے نبیز کی

---

1 بدائع الصنائع مطلب الماء المقید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۵۱

Fatawa Razawiya, Volume 3

[Arabic Text Section] The matter is based on the sweetness of the dates passing into the water and until the name of the water changes and it becomes overcome by the taste of the dates. He did not mention color. If being overcome in any way was sufficient, as it might be wrongly imagined, it would have been appropriate to mention color because change in color precedes change in taste. So, color would be the cause of being overcome rather than the taste that occurs after it has become overcome. He omitted it because what is meant by 'being overcome' is that which removes the name of water and makes it Nabidh (date wine), and that only happens through taste without needing a change in color. So much so that if we suppose some dates or fruit change the taste of water, making it Nabidh, without changing its color, the ruling would still be prohibition. Its mention in the answer by Al-Dabbas was a statement of reality, for taste does not change until after the color has changed. So understand and be firm, this is how the precious words of the scholars should be understood. And Allah Almighty is the grantor of success.

(4) Completing the discourse in justifying the statement of Imam Muhammad regarding the order [of qualities]. I say: and by the grace of Allah, there is no Lord besides Him, indeed the weakest quality in water is its smell, rather it has no real smell, as indicated by Ibn Kamal al-Wazir when he said in al-Idah: its qualities are taste, color, and smell, and change truly happens in the first two, not the last. So it is necessary to resort to...

[Urdu Text Section] ...has changed in reality. Have you not considered basing the definition of Nabidh on the transfer of sweetness from dates and stating that the name of the water changes and it becomes overcome by the taste of the dates, while not mentioning the change in color? If being overcome in any way was sufficient, as is being misunderstood, then color would have been mentioned as a reason because the color of water changes before the taste of dates. Therefore, the change in color should have been stated as the reason for being overcome, rather than the taste which develops later. It was omitted because 'being overcome' refers to that which eliminates the identity of water and turns it into Nabidh. This is all because only taste is required to change the name of water and turn it into Nabidh. Therefore, suppose if there is a date or any fruit that only changes the taste and turns the water into Nabidh, its ruling is prohibition. (As for the question) why Malik al-Ulama, in his response from Abu Tahir al-Dabbas, mentioned the change in color along with the taste, the reason is that he stated it as a matter of factual reality that a change in

color necessarily occurs before a change in taste. Understand and affirm this; the fine words of scholars should be understood in this way, and Allah Almighty alone is the grantor of success. (T)

(4) "Completing the discourse in the justification of the statement of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) regarding the order of qualities." I say: there is no Lord but Allah, and He alone grants success. Undoubtedly, the weakest quality of water is its smell; in fact, in reality, it has no smell, as indicated by Ibn Kamal al-Wazir, because he stated in Al-Idah that the qualities of water are...

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[अरबी पाठ अनुभाग] मामला पानी में खजूर की मिठास के घुलने और पानी का नाम बदल जाने और खजूर के स्वाद से अभिभूत (मगलूब) हो जाने पर आधारित है। उन्होंने रंग का उल्लेख नहीं किया। यदि किसी भी प्रकार का अभिभूत होना पर्याप्त होता, जैसा कि एक गलतफहमी हो सकती है, तो रंग का उल्लेख करना अधिक उचित होता क्योंकि स्वाद से पहले रंग में बदलाव आता है। इसलिए, रंग ही अभिभूत होने का मूल कारण होता, न कि वह स्वाद जो बाद में उत्पन्न होता है। उन्होंने इसे इसलिए छोड़ दिया क्योंकि 'अभिभूत होने' से तात्पर्य उस स्थिति से है जो पानी के नाम को समाप्त कर उसे 'नबीज़' (खजूर का पेय) बना दे, और यह केवल स्वाद के माध्यम से होता है, रंग बदलने की आवश्यकता के बिना। यहाँ तक कि यदि हम मान लें कि कोई खजूर या फल पानी का स्वाद बदल देता है और उसे नबीज़ बना देता है, लेकिन उसका रंग नहीं बदलता, तो भी निर्णय निषेध (मनाही) का ही होगा। अबू ताहिर अद-दब्बास के उत्तर में रंग का उल्लेख वास्तविकता के बयान के रूप में था, क्योंकि आमतौर पर स्वाद बदलने से पहले रंग बदल जाता है। इसलिए समझें और अडिग रहें, विद्वानों के अनमोल वचनों को इसी तरह समझा जाना चाहिए। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है।

(4) इमाम मुहम्मद के कथन के औचित्य में गुणों के क्रम के विषय में चर्चा को पूरा करना। मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से, उसके अलावा कोई रब नहीं है, वास्तव में पानी का सबसे कमजोर गुण उसकी गंध है, बल्कि वास्तव में इसकी कोई गंध नहीं होती, जैसा कि इब्न कमाल अल-वज़ीर ने 'अल-ईदाह' में संकेत दिया है: इसके गुण स्वाद, रंग और गंध हैं, और वास्तव में परिवर्तन पहले दो में होता है, अंतिम में नहीं। तो यह अनिवार्य है कि...

[उर्दू पाठ अनुभाग] ...वास्तव में बदल दिया है। क्या आपने नबीज़ के लिए खजूर की मिठास के हस्तांतरण को आधार बनाने और यह कहने पर विचार नहीं किया कि पानी का नाम बदल जाता है और वह खजूर के स्वाद से अभिभूत हो जाता है, और रंग के बदलाव का उल्लेख नहीं किया? यदि किसी भी कारण से अभिभूत होना पर्याप्त होता, जैसा कि गलत समझा जा रहा है, तो कारण के रूप में रंग का उल्लेख किया जाता क्योंकि खजूर के स्वाद से पहले पानी का रंग बदलता है। इसलिए, रंग के बदलाव को अभिभूत होने का कारण बताया जाना चाहिए था, न कि उस स्वाद को जो बाद में विकसित होता है। इसे इसलिए छोड़ दिया गया क्योंकि 'अभिभूत होने' का अर्थ वह है जो पानी के नाम को समाप्त कर उसे नबीज़ बना दे। यह सब इसलिए है क्योंकि पानी का नाम बदलने और

नबीज़ बनाने के लिए केवल स्वाद की आवश्यकता होती है। इसलिए, मान लीजिए कि यदि कोई खजूर या कोई फल ऐसा है जो केवल स्वाद बदलता है और पानी को नबीज़ बना देता है, तो उसका निर्णय निषेध है। (जहाँ तक इस प्रश्न का संबंध है) कि मलिक अल-उलेमा ने अबू ताहिर अल-दब्बास की ओर से अपने उत्तर में स्वाद के साथ रंग के बदलाव का उल्लेख क्यों किया, इसका कारण यह है कि उन्होंने इसे एक तथ्यात्मक वास्तविकता के रूप में बताया कि स्वाद में बदलाव से पहले रंग में बदलाव अवश्य होता है। इसे समझें और पुष्ट करें; विद्वानों के सूक्ष्म वचनों को इसी तरह समझा जाना चाहिए, और अल्लाह तआला ही सफलता देने वाला है। (त)

(4) "गुणों के क्रम के संबंध में इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) के कथन के औचित्य में चर्चा को पूरा करना।" मैं कहता हूँ: अल्लाह के अलावा कोई रब नहीं है, और वही सफलता देने वाला है। निस्संदेह, पानी का सबसे कमजोर गुण इसकी गंध है; वास्तव में, वास्तविकता में इसकी कोई गंध नहीं होती है, जैसा कि इब्न कमाल वज़ीर ने संकेत दिया है, क्योंकि उन्होंने 'अल-ईदाह' में कहा है कि पानी के गुण...

[عربی متن] الامر علی خروج حلاوته الی الماء والی قوله لتغیر اسم الماء وصیرورته مغلوباً بطعم التمر فلم یذکر اللون ولو کان یکفی الغلبة بوجه من الوجوه علی معنی توهم لکان الوجه ذکر اللون لانه اسبق تغیراً فیه من الطعم فکان هو العلة للغلبة دون الطعم الحادث بعد ما صار مغلوباً فانما ترکه لان المراد الغلبة المخرجة عن اسم الماء الجاعلة له نبیذاً و انما یکون ذلك بالطعم من دون حاجة الی تغیر اللون حتی لو فرض ان من التمر او شیئ من الثمر ما یغیر طعم الماء فیجعله نبیذاً ولا یغیر لونه لکان الحکم المنع وذکره فی الجواب عن الدباس بیان للواقع فان الطعم لا یتغیر به الا وقد تغیر قبله اللون فافهم وتثبت هکذا ینبغی ان تفهم نفائس کلام العلماء والله تعالی الموفق - (۴) اکمال الکلام فی توجیه قول محمد بالترتیب اقول : وبالله التوفیق لارب سواه ان اضعف وصف فی الماء ریحه بل لاریح له حقیقة کما اشار الیه ابن کمال الوزیر اذ قال فی الایضاح اوصافه الطعم واللون والرائحة والتغیر علی الحقیقة فی الاولین دون الاخیر فلابد من المصیر الی

[اردو ترجمہ و شرح] حقیقت میں بدل دیا ہے۔ کیا آپ نے نبیذ کیلئے کھجور کی مٹھاس کے منتقل ہونے کو بنیاد قرار دینے اور یہ کہنے پر کہ پانی کا نام تبدیل ہونے اور کھجور کے ذائقے سے مغلوب ہونے اور رنگ کی تبدیلی کا ذکر نہ کرنے پر غور نہیں کیا، اگر صرف کسی وجہ سے غلبہ کافی ہوتا جیسا کہ غلط فہمی ہو رہی ہے تو پھر وجہ میں رنگ کو ذکر کیا جاتا کیونکہ کھجوروں کے ذائقے سے قبل پانی کا رنگ تبدیل ہوتا ہے، تو چاہئے تھا کہ رنگ کی تبدیلی کو غلبہ کی وجہ بتایا جاتا اور ذائقہ جو بعد میں پیدا ہوا اس کو وجہ نہ بنایا جاتا اس کا ترک اس لئے کیا ہے کہ غلبہ سے مراد وہ ہے جو پانی کے نام کو ختم کر کے اس کو نبیذ بنا دے یہ سب اس لئے کہ پانی کا نام بدلنے اور نبیذ بنانے میں صرف ذائقہ کی ضرورت ہے لہٰذا فرض کریں کہ اگر کھجور

یا کوئی پھل ایسا ہو جس سے صرف ذائقہ تبدیل ہو اور پانی کو نبیذ بنا دے تو اس کا حکم منع ہے (باقی رہا یہ سوال) کہ ملک العلماء نے ابوطاہر الدباس کی طرف سے جواب میں ذائقہ کے ساتھ رنگ کی تبدیلی کا ذکر کیوں کیا، تو اس کی وجہ یہ ہے کہ انہوں نے بطور حقیقت واقعہ بیان کیا ہے کہ ذائقہ کی تبدیلی سے قبل رنگ کی تبدیلی ضرور ہوتی ہے، سمجھو اور اثبات کرو، علماء کے نفیس کلام کو یوں سمجھنا چاہئے، اور اللہ تعالیٰ ہی توفیق دینے والا ہے۔ (ت) (۴) "اوصاف کی ترتیب کے بارے میں امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کے قول کی توجیہ میں کلام کو مکمل کرنا" میں کہتا ہوں اللہ کے بغیر کوئی رب نہیں ہے اور وہی توفیق دینے والا ہے، بلاشبہ پانی کا سب سے کمزور وصف اس کی بُو ہے بلکہ حقیقت میں اس کی بُو نہیں ہے، جیسا کہ ابن کمال وزیر نے اشارہ دیا ہے، کیونکہ انہوں نے ایضاح میں کہا ہے کہ پانی کے اوصاف

Fatawa Rizwia - Volume Three

[Left Column - Arabic Text] The generality of figurative expression, etc. Then its color, until it was said it has no color, as will come later, and the strongest of its attributes is its taste. Furthermore, it is something subtle, moist, and quickly affected. Thus, whatever differs from it in any of its attributes will affect it before the water reaches [a certain] quantity. Therefore, the change of attribute does not depend at all on the equality of quantity. Change occurs more quickly in the weaker attribute. So, whatever differs from it in color and taste, its change of color will occur before the change of taste, as is observed in date-wine (Nabidh) and others. For this reason, the order was established that what differs in color, only color is considered regarding it. Because if it prevails, it strips away its color first. If it does not strip its color, it will not strip its taste by greater reason. If it changes neither of them, how can it be equal to water in quantity? For the change of attributes is much earlier than the equality of quantity. By the absence of change in color, one knows the negation of all causes—meaning prevalence in terms of color, in terms of taste, and in terms of parts. It becomes known that the mixing agent is overwhelmed. For this reason, the matter was linked to the change of color alone. If the taste changes after it, then that is it; otherwise, there is no need for attaining prevalence by color. Yes, what does not differ from it in color will not change it even if it prevails over it in quantity. Thus, the change of taste is considered because it is earlier than the equality of quantity. If it does not change, it is known that equality is negated by greater reason, and it is proven that the mixing agent is overwhelmed.

[Right Column - Urdu Text] There are three: taste, color, and smell. Change actually occurs in the first two states and does not occur in the third, therefore the application of change is in the general figurative sense. And the second weakest attribute of water is color, to the extent that some have said that water has no color, as the upcoming discussion will show, and the strongest attribute of water is its taste. (T) Furthermore, water is a subtle thing that is quickly affected, so anything that goes against the attributes of water will affect water even before being equal to it in quantity, and for the change of attributes of water, it is not necessary to be equal to the quantity of water. Also, the process of change will first occur in the weak attribute of water, therefore, anything that is opposite to water in color and taste will first change the color of water and after that change its taste, as can be observed in date-wine etc. This is the basis of the order in the attributes of water. Therefore, if the substance mixed in water is different only in color, its dominance over water will be

apparent only by the change of color, and if that substance cannot change the color of water even in the case of dominance, then it will never be able to change the taste, and when this substance has not yet been able to change the attributes of water, being equal in quantity is a far-off thing because before being equal in quantity, changes in attributes occur. Therefore, when even the color of water did not change, it became known that so far no cause for change in water has been found, i.e., change of color, change of taste, and change of water's parts.

फतवा-ए-रजविया - जिल्द तीसरी

[बायां कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद] अलंकारिकता की व्यापकता इत्यादि। फिर उसका रंग, यहाँ तक कि कहा गया कि इसका कोई रंग नहीं है जैसा कि आगे आएगा, और उसके गुणों में सबसे प्रबल उसका स्वाद है। इसके अलावा, यह एक सूक्ष्म, नम और जल्दी प्रभावित होने वाली चीज है। अत; जो कुछ भी इसके किसी भी गुण में इसके विपरीत होगा, वह पानी की मात्रा [एक निश्चित सीमा] तक पहुँचने से पहले ही इसे प्रभावित कर देगा। इसलिए, गुण का परिवर्तन मात्रा की समानता पर बिल्कुल निर्भर नहीं करता है। कमजोर गुण में परिवर्तन अधिक तेजी से होता है। तो, जो कुछ भी रंग और स्वाद में इसके विपरीत होगा, उसका रंग बदलना स्वाद बदलने से पहले होगा, जैसा कि नबीज़ (खजूर की शराब) आदि में देखा जाता है। इसी कारण से, यह क्रम स्थापित किया गया था कि जो रंग में भिन्न होता है, उसके संबंध में केवल रंग पर विचार किया जाता है। क्योंकि यदि वह प्रबल होता है, तो वह सबसे पहले उसके रंग को छीन लेता है। यदि वह उसके रंग को नहीं छीनता है, तो वह अधिक प्रबल कारण से उसके स्वाद को नहीं छीनेगा। यदि वह उनमें से किसी को भी नहीं बदलता है, तो वह मात्रा में पानी के बराबर कैसे हो सकता है? क्योंकि गुणों का परिवर्तन मात्रा की समानता से बहुत पहले होता है। रंग में परिवर्तन की अनुपस्थिति से, सभी कारणों के निषेध का पता चलता है - यानी रंग के संदर्भ में, स्वाद के संदर्भ में, और अंशों के संदर्भ में व्यापकता। यह ज्ञात हो जाता है कि मिश्रित करने वाला कारक पराजित है। इसी कारण से, मामला अकेले रंग के परिवर्तन से जुड़ा था। यदि स्वाद इसके बाद बदलता है, तो वही बात है; अन्यथा, रंग द्वारा व्यापकता प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हाँ, जो रंग में इससे भिन्न नहीं है, वह इसे नहीं बदलेगा भले ही वह मात्रा में इस पर प्रबल हो। इस प्रकार, स्वाद के परिवर्तन पर विचार किया जाता है क्योंकि यह मात्रा की समानता से पहले है। यदि यह नहीं बदलता है, तो यह ज्ञात होता है कि समानता अधिक प्रबल कारण से नकारी गई है, और यह सिद्ध होता है कि मिश्रण कारक पराजित है।

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद] तीन हैं: स्वाद, रंग और गंध। परिवर्तन वास्तव में पहले दो स्थितियों में होता है और तीसरी में नहीं होता है, इसलिए परिवर्तन का अनुप्रयोग रूपक के सामान्य अर्थ में है। और पानी का दूसरा सबसे कमजोर गुण रंग है, यहाँ तक कि कुछ ने कहा है कि पानी का कोई रंग नहीं है, जैसा कि आगामी चर्चा से पता चलेगा, और पानी का सबसे प्रबल गुण उसका स्वाद है। (त) इसके अलावा, पानी एक सूक्ष्म चीज है जो जल्दी प्रभावित होती है, इसलिए जो कुछ भी पानी के गुणों के खिलाफ होगा वह पानी की मात्रा के बराबर होने से पहले ही पानी पर प्रभाव डाल देगा,

और पानी के गुणों के परिवर्तन के लिए पानी की मात्रा के बराबर होना आवश्यक नहीं है। इसके अलावा, परिवर्तन की प्रक्रिया सबसे पहले पानी के कमजोर गुण में होगी, इसलिए, जो कुछ भी रंग और स्वाद में पानी के विपरीत होगा वह पहले पानी के रंग को बदलेगा और उसके बाद उसके स्वाद को बदलेगा, जैसा कि नबीज़ आदि में देखा जा सकता है। पानी के गुणों के क्रम का आधार यही चीज है। इसलिए, यदि पानी में मिलाई जाने वाली वस्तु केवल रंग में भिन्न है, तो पानी पर उसका प्रभुत्व केवल रंग के परिवर्तन से स्पष्ट हो जाएगा, और यदि वह वस्तु प्रभुत्व के मामले में भी पानी के रंग को नहीं बदल सकती है, तो वह कभी भी स्वाद को बदलने में सक्षम नहीं होगी, और जब यह वस्तु अभी तक पानी के गुणों को बदलने में सक्षम नहीं हुई है, तो मात्रा में बराबर होना बहुत दूर की बात है क्योंकि मात्रा में बराबर होने से पहले ही गुणों में परिवर्तन हो जाता है। इसलिए, जब पानी का रंग भी नहीं बदला, तो यह ज्ञात हुआ कि अब तक पानी में परिवर्तन का कोई कारण नहीं पाया गया है, यानी रंग का परिवर्तन, स्वाद का परिवर्तन और पानी के हिस्सों का परिवर्तन।

पृष्ठ 229 का 756

[بایاں کالم - عربی متن] عموم المجاز اھ ثم لونه حتی قیل لا لون له کما سیاتي واقواها طعمه۔ ثم هو شیئ لطیف رطب سریع الانفعال فما خالفه في شیئ من اوصافه اثر فیه قبل ان یبلغ الماء قدرا فلایتوقف تغیر الوصف علی تساوی القدر قط والتغیر فی الاضعف اسبق فما خالفه في اللون والطعم یکون تغییره اللون قبل ان یتغیر الطعم کما هو مشاهد فی نبیذ وغیره فمن قبل هذا جاء الترتیب ان ما یخالفه لونا لا یعتبر فیه الا اللون لانه ان غلب سلب لونه اولا فاذا لم یسلبه لم یسلب الطعم بالاولي واذا لم یغیرهما فکیف یساوی الماء قدرا فان تغیر الاوصاف اسبق بکثیر من تساوی المقدار فبعدم التغیر فی اللون یعلم انتفاء الاسباب جمیعا اعنی الغلبة من حیث اللون ومن حیث الطعم ومن حیث الاجزاء ویعلم ان المخالط مغلوب فلذا نیط الامر فیه علی تغیر اللون وحده فان تغیر الطعم بعده فذاك والا فلا حاجة لحصول الغلبة باللون نعم مالا یخالفه في اللون لا یغیره وان غلب علیه قدرا فیعتبر فیه تغیر الطعم لکونه اسبق من تساوی القدر فان لم یتغیر علم انتفاء التساوی بالاولی وثبت ان المخالط مغلوب

[دایاں کالم - اردو متن] تین ہیں: ذائقہ، رنگ اور بُو۔ تبدیلی پہلے دونوں وضعوں میں حقیقتاً ہوتی ہے اور تیسرے میں نہیں ہوتی، لہٰذا تبدیلی کا اطلاق مجاز کے عموم کے طور پر ہے۔ اور دوسرے نمبر کا کمزور وصف پانی کا رنگ ہے حتیٰ کہ بعض نے کہا کہ پانی کا رنگ نہیں ہے جیسا کہ آئندہ بحث آئے گی، اور پانی کا سب سے قوی وصف اس کا ذائقہ ہے۔ (ت) پھر پانی ایک لطیف چیز ہے جو تیزی سے متاثر ہوتا ہے لہٰذا جو چیز پانی کے اوصاف کے خلاف ہوگی وہ مقدار میں پانی کے مساوی ہونے سے قبل ہی پانی پر اثر انداز ہو جاتی ہے اور پانی کے اوصاف کی تبدیلی کیلئے پانی کی مقدار کے برابر ہونا ضروری نہیں، نیز تبدیلی کا عمل سب سے پہلے پانی کے کمزور وصف میں ہوگا لہٰذا جو چیز رنگ اور ذائقہ میں پانی کے مخالف ہوگی وہ پہلے پانی کے

رنگ کو اور اس کے بعد ذائقہ کو تبدیل کرے گی جیسا کہ نبیذ وغیرہ میں اس بات کا مشاہدہ کیا جاسکتا ہے۔ پانی کے اوصاف میں ترتیب کی بنیاد یہی چیز ہے، لہٰذا اگر پانی میں ملنے والی چیز صرف رنگ میں مخالف ہے تو پانی پر اس کا غلبہ صرف رنگ کے تبدیل ہونے سے ظاہر ہو جائے گا اور اگر وہ چیز غلبہ کی صورت میں پانی کا رنگ تبدیل نہ کر سکے تو ذائقہ کو ہر گز تبدیل نہ کر سکے گی، اور جب یہ چیز ابھی تک پانی کے اوصاف کو تبدیل نہیں کر سکی تو مقدار میں برابر ہونا دُور کی بات ہے کیونکہ مقدار میں مساوی ہونے سے قبل اوصاف میں تبدیلی ہوا کرتی ہے، لہٰذا جب پانی کا رنگ تک تبدیل نہ ہوا تو معلوم ہوا کہ ابھی تک پانی میں تبدیلی کا کوئی سبب نہیں پایا گیا یعنی رنگ کی تبدیلی، ذائقہ کی تبدیلی اور پانی کے اجزاء کے

Fatawa Razawiya - Volume 3

[Arabic Text Section] If it changes, then it has been overcome, even if it is not equal in quantity. As for what does not change color or taste, it is only when it does not differ in either of them. Because if it differed, the change would precede the equality of quantity. So this is what predominance by parts is considered in. In short, what differs in color or taste, the predominance of parts is not considered in it. Not in the sense that it exists but is not considered as long as the color or taste does not change, for that is clearly false. And what is to be expected except the quality, along with the certain proof of the compound's departure from its water-like nature? Rather, it means that there is no need for it to know predominance, because it does not occur here until the mixing substance has already predominated before it. Similarly, what differs in color, taste is not considered in it in the sense mentioned. This is the meaning of what reliable narrators have stated, so they limited the consideration of taste to what matches in color, and the consideration of parts to what matches in both, and they gave examples for each category separately. And this is the phrasing of 'Zaad al-Fuqaha', then 'al-Binayah' and others. Predominance is considered first from the perspective of...

[Urdu Explanation Section] In terms of change, meaning its parts decreased and the parts of the mixing substance predominated, and when no process of change appeared, it became known that the substance is still overcome and the water is predominant. Therefore, for the appearance of change, only color has been made the criterion because other changes happen after that; otherwise, there is no need for a change in color. Yes, if a substance is not opposite to water in color, then despite the predominance in parts, the color of the water will not change upon its mixing. So, in this case, the taste will be considered because the change in taste is the criterion before the change (predominance) of parts. And when the change has not occurred in terms of taste, it will be known that the change has not occurred in terms of parts either (even if this substance becomes equal to or predominates over water in quantity). And it has been proven that the mixing substance is overcome; if the taste changes, it will be predominant even if it is not equal in quantity. If the mixing substance does not change both color and taste—and this happens when it is not opposite to either of them, because if it were opposite, a change would occur at an equal quantity—then in such a case, the criterion for predominance over water will be based on parts (meaning the quantity of the mixing substance becoming equal to or more than the water will be made the criterion). (T) In short, when a substance

that changes color and taste mixes with water, first color and second taste will be made the criteria for predominance. This by no means means that the quantity of parts will not be made the criterion for predominance. This is clearly wrong because with the predominance of parts, the water becomes overcome and exits its nature, and it no longer remains water but becomes a compound substance. Undoubtedly, this criterion is not needed yet because the identification of predominance can be done by a lesser degree of change. This is also the purpose of taste not being considered in the presence of an opposing substance in terms of color.

फ़तावा रज़विया - भाग 3

[अरबी पाठ अनुभाग] यदि यह बदल जाता है, तो यह पराजित हो गया है, भले ही यह मात्रा में बराबर न हो। जहाँ तक उस चीज़ का सवाल है जो रंग या स्वाद नहीं बदलती है, यह केवल तब होता है जब यह उनमें से किसी में भी भिन्न न हो। क्योंकि यदि यह भिन्न होता, तो परिवर्तन मात्रा की समानता से पहले होता। तो यह वही है जिसमें घटकों द्वारा प्रभुत्व माना जाता है। संक्षेप में, जो रंग या स्वाद में भिन्न होता है, उसमें घटकों के प्रभुत्व पर विचार नहीं किया जाता है। इस अर्थ में नहीं कि यह मौजूद है लेकिन तब तक विचार नहीं किया जाता जब तक कि रंग या स्वाद नहीं बदलता, क्योंकि वह स्पष्ट रूप से गलत है। और गुणवत्ता के अलावा और क्या अपेक्षित है, साथ ही यौगिक के अपने जल-जैसे स्वभाव से बाहर निकलने के निश्चित प्रमाण के साथ? बल्कि, इसका अर्थ यह है कि प्रभुत्व जानने के लिए इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह यहाँ तब तक नहीं होता जब तक कि मिश्रित पदार्थ पहले से ही उस पर हावी न हो गया हो। इसी तरह, जो रंग में भिन्न होता है, उसमें वर्णित अर्थ में स्वाद पर विचार नहीं किया जाता है। भरोसेमंद वर्णनकर्ताओं ने यही कहा है, इसलिए उन्होंने स्वाद के विचार को उन चीजों तक सीमित कर दिया जो रंग में मेल खाती हैं, और घटकों के विचार को उन चीजों तक जो दोनों में मेल खाती हैं, और उन्होंने प्रत्येक श्रेणी के लिए अलग-अलग उदाहरण दिए। और यह 'ज़ाद अल-फ़ुक़ा', फिर 'अल-बिनाया' और अन्य की शब्दावली है। प्रभुत्व को पहले इस दृष्टिकोण से माना जाता है कि...

[उर्दू स्पष्टीकरण अनुभाग] परिवर्तन के संदर्भ में, यानी इसके घटक कम हो गए और मिलने वाली चीज़ के घटक हावी हो गए, और जब परिवर्तन की कोई प्रक्रिया प्रकट नहीं हुई, तो पता चला कि वह चीज़ अभी भी पराजित है और पानी हावी है। इसलिए, परिवर्तन की उपस्थिति के लिए केवल रंग को ही मानदंड माना गया है क्योंकि शेष परिवर्तन इसके बाद होते हैं, अन्यथा रंग में परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं होती। हाँ, यदि कोई चीज़ रंग में पानी के विपरीत न हो, तो घटकों में प्रभुत्व के बावजूद उसके मिलने पर पानी का रंग नहीं बदलेगा। तो ऐसी स्थिति में स्वाद का विचार किया जाएगा क्योंकि घटकों के परिवर्तन (प्रभुत्व) से पहले स्वाद का परिवर्तन मानदंड है और जब स्वाद के लिहाज़ से परिवर्तन नहीं हुआ, तो पता चल जाएगा कि घटकों के लिहाज़ से भी परिवर्तन नहीं हुआ है (चाहे वह चीज़ मात्रा में पानी के बराबर या उससे अधिक ही क्यों न हो जाए)। और यह सिद्ध हो गया कि मिलने वाली चीज़ पराजित है; यदि स्वाद बदल गया तो वह हावी होगी चाहे वह मात्रा में बराबर न हो। यदि मिलने वाली चीज़ रंग और स्वाद दोनों को न बदले—और ऐसा तब होता है जब वह उन दोनों में

से किसी के विपरीत न हो, क्योंकि यदि वह विपरीत होती तो समान मात्रा में परिवर्तन आ जाता—तो ऐसी स्थिति में पानी पर प्रभुत्व का मानदंड घटकों के आधार पर होगा (अर्थात मिलने वाली चीज़ की मात्रा का पानी के बराबर या उससे अधिक हो जाना मानदंड माना जाएगा)। (त) संक्षेप में, जब रंग और स्वाद को बदलने वाली चीज़ पानी में मिलेगी तो पहले रंग और दूसरे नंबर पर स्वाद को प्रभुत्व का मानदंड माना जाएगा। इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि घटकों की मात्रा को प्रभुत्व का मानदंड नहीं बनाया जाएगा। यह स्पष्ट रूप से गलत है क्योंकि घटकों के प्रभुत्व से पानी पराजित होकर अपने स्वभाव से बाहर हो जाता है और वह पानी नहीं रहता बल्कि वह एक मिश्रित चीज़ बन जाता है। निःसंदेह अभी इस मानदंड की आवश्यकता नहीं है क्योंकि प्रभुत्व की पहचान अभी उससे कम स्तर के परिवर्तन से हो सकती है। रंग के लिहाज़ से विपरीत चीज़ की उपस्थिति में स्वाद के विश्वसनीय न होने का भी यही उद्देश्य है।

पृष्ठ 230 का 756

فتاوی رضویہ - جلد سوم

[عربی عبارت] وان تغیر فقد غلب وان لم یساو قدرا اما مالایغیر لونا ولا طعما وانما یکون اذالم یخالف فی شیئ منهما اذلو خالف لسبق التغیر تساوی القدر فهذا الذی تعتبر فیہ الغلبۃ بالاجزاء۔ فالحاصل ان ماخالفہ لونا او طعما لاعبرۃ فیہ بغلبۃ الاجزاء لا بمعنی انها توجد ولا تعتبر مالم یتغیر لون اوطعم فانہ باطل بداهۃ وفیم ینتظر الاوصف مع ثبوت الخروج عن المائیۃ للمرکب قطعا بل بمعنی انها لا یحتاج الیها لتعرف الغلبۃ لانها لا تحصل ههنا الا وقد غلب المخالط قبلها وکذلك ما خالفہ لونا لاعبرۃ فیہ للطعم بالمعنی المذکور وهذا معنی ما نص علیہ الرواۃ الثقاۃ فقصروا اعتبار الطعم علی مایوافقہ لونا واعتبار الاجزاء علی مایوافقہ فیهما ومثلوا لکل قسم باشیئاء علی حدۃ وهذہ عبارۃ زاد الفقهاء ثم البنایۃ وغیرهما تعتبر الغلبۃ اولا من حیث

[اردو وضاحت] اعتبار سے تبدیلی یعنی اس کے اجزاء کم ہو گئے اور ملنے والی چیز کے اجزاء غالب ہو گئے اور جب تبدیلی کا کوئی عمل ظاہر نہ ہوا تو معلوم ہوا کہ ابھی تک وہ چیز مغلوب ہے اور پانی غالب ہے، اس لئے تبدیلی کے ظہور کے لئے صرف رنگ کو معیار قرار دیا گیا ہے کیونکہ باقی تبدیلیاں اس کے بعد ہوتی ہیں ورنہ رنگ میں تبدیلی کی کوئی حاجت نہیں ہے ہاں اگر کوئی چیز رنگ میں پانی کے مخالف نہ ہو تو اجزاء میں غلبہ کے باوجود اس کے ملنے پر پانی کا رنگ نہیں بدلے گا۔ تو اس صورت میں ذائقہ کا اعتبار ہوگا کیونکہ اجزاء کی تبدیلی (غلبہ) سے قبل ذائقہ کی تبدیلی معیار ہے اور جب ذائقہ کے لحاظ سے تبدیلی نہ ہوئی تو معلوم ہو جائے گا کہ اجزاء کے لحاظ سے بھی تبدیلی نہیں ہوئی (اگرچہ یہ چیز مقدار میں پانی کے مساوی یا غالب بھی ہو جائے) اور ثابت ہو گیا کہ ملنے والی چیز مغلوب ہے اگر ذائقہ تبدیل ہو گیا تو وہ غالب ہو گی اگرچہ مقدار میں برابر نہ ہو، اگر ملنے والی چیز رنگ و ذائقہ دونوں تبدیل نہ کرے اور یہ اس

وقت ہوتا ہے جب وہ دونوں میں سے کسی کے مخالف نہ ہو کیونکہ اگر وہ مخالف ہوتی تو مساوی المقدار میں تبدیلی آجاتی، تو ایسی صورت میں پانی پر غلبہ کا معیار اجزاء کے اعتبار سے ہو گا (یعنی ملنے والی چیز کی مقدار پانی کے برابر یا زیادہ ہو جانے کو معیار قرار دیا جائے گا)۔ (ت) الحاصل جب رنگ اور ذائقہ کو تبدیل کرنے والی چیز پانی میں ملے گی تو پہلے رنگ دوسرے نمبر پر ذائقہ کو معیارِ غلبہ قرار دیا جائے گا، یہ مطلب ہرگز نہیں کہ غلبہ کا معیار اجزاء کی مقدار کو نہیں بنایا جائے گا، یہ واضح طور پر غلط ہے اس لئے کہ اجزاء کے غلبہ سے پانی مغلوب ہو کر اپنی طبع سے خارج ہو جاتا ہے اور وہ پانی نہیں رہتا بلکہ وہ ایک مرکب چیز بن جاتا ہے بلا شبہ ابھی اس معیار کی ضرورت نہیں ہے کیونکہ غلبہ کی پہچان ابھی اس سے کم درجہ کی تبدیلی سے ہو سکتی ہے، رنگ کے لحاظ سے مخالف چیز کی موجودگی میں ذائقہ کے معتبر نہ ہونے کا بھی یہی مقصد ہے۔

Fatawa Razawiya, Volume 3

Color, then taste, then parts/components. If its color differs (meaning that for identifying change, in the presence of the first criterion, from the color of water such as milk, juice, vinegar, and saffron water, the second criterion is not needed, but upon the occurrence of subsequent criteria, the presence of the lower criterion is necessary), then color is the criterion. If they match in color but differ in taste, like watermelon water, sun-exposed water, and infusions, then taste is the criterion. And if they match in both color and taste, like grapevine water, then the parts/components are the criterion. [1] It means that what reliable narrators have stated implies that if a substance mixed with water matches in color, then taste is the criterion; and if it also matches in taste, then parts and quantity will be considered for dominance. And they have given separate examples for each form of the criterion. Thus, in books like Zad al-Fuqaha and Al-Binayah etc., the mentioned statement is explained as follows: dominance will first be by color, then by taste, then by parts. Along with this, examples of things that only reveal a change in color were mentioned as milk, fruit juices, vinegar, and saffron water. It was said that because of these things, when the color of water changes, the water will be considered overcome and these things dominant. And regarding substances that match in color and differ in taste, which when mixed with water reveal a change in the water's taste, they stated that taste will be the criterion. For this, they cited examples of watermelon water, sun-exposed water, and various types of 'Nabidh' (infusions). And in the example of things matching in both color and taste, they mentioned water from grapevine plants.

1. Al-Binayah Sharh al-Hidayah, The water with which wudu is permissible, Malik Sons Faisalabad, 1/189.
2. Bada'i' al-Sana'i', Subject: Restricted Water, Saeed Company Karachi, 15/1.
3. Khizanat al-Muftin.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

रंग, फिर स्वाद, फिर अंश। यदि उसका रंग भिन्न हो (अर्थात परिवर्तन की पहचान के लिए, पहले मापदंड की उपस्थिति में पानी के रंग से जैसे दूध, रस, सिरका और केसर का पानी, दूसरे मापदंड की आवश्यकता नहीं है, लेकिन बाद के मापदंडों के पाए जाने पर निचले मापदंड का पाया जाना आवश्यक होता है), तो रंग ही मापदंड है। यदि वे रंग में समान हों लेकिन स्वाद में भिन्न हों, जैसे तरबूज का पानी, धूप वाला पानी और अर्क(नबीज़), तो स्वाद मापदंड है। और यदि वे रंग और स्वाद दोनों में समान हों, जैसे अंगूर की बेल का पानी, तो अंश ही मापदंड होंगे। [1] विश्वसनीय वर्णनकर्ताओं ने जो बयान किया है उसका यही अर्थ है कि पानी में मिलने वाली चीज़ यदि रंग में समान हो तो स्वाद, और यदि स्वाद में भी समान हो तो फिर प्रभुत्व (ग़लबा) के लिए अंश और मात्रा पर विचार किया जाएगा। और उन्होंने मापदंड के हर रूप का अलग उदाहरण दिया है। तदनुसार, 'ज़ाद अल-फ़ुक़हा' और 'अल-बिनाया' आदि पुस्तकों में उक्त कथन की व्याख्या इस प्रकार की गई है कि प्रभुत्व पहले रंग के आधार पर होगा, फिर स्वाद के आधार पर, फिर अंशों के आधार पर। इसके साथ ही, केवल रंग में परिवर्तन दिखाने वाली चीज़ों के उदाहरण के रूप में दूध, फलों का रस, सिरका और केसर का पानी का उल्लेख किया गया है। और कहा गया है कि इन चीज़ों के कारण जब पानी का रंग बदल जाए, तो पानी को पराजित (मगलूब) और इन चीज़ों को प्रभावी (ग़ालिब) माना जाएगा। और जो चीज़ रंग में समान हो और स्वाद में भिन्न हो, जो पानी में मिलकर पानी के स्वाद के परिवर्तन को प्रकट कर दे, उसके बारे में उन्होंने कहा कि स्वाद ही मापदंड होगा। इसके लिए उन्होंने तरबूज का पानी, धूप वाला पानी और नबीज़ के उदाहरण दिए हैं। और रंग और स्वाद दोनों में समान चीज़ों के उदाहरण में उन्होंने अंगूर के पौधों के पानी का उल्लेख किया है।

1. अल-बिनाया शरह अल-हिदाया, अल-मा'ऊ यजूरु बिही अल-वुद्ध, मलिक संस फैसलाबाद, 1/189।
2. बदा'इ अल-सना'इ, विषय: प्रतिबंधित जल, सईद कंपनी कराची, 15/1।
3. ख़ज़ानत अल-मुफ़्तीन।

पृष्ठ 231 of 756

اللون ثم الطعم ثم الاجزاء فانکان لونه مخالف (یعنی تبدیلی کی پہچان کے لئے پہلے معیار کی موجودگی میں لون الماء کاللبن والعصیر والخل وماء الزعفران دوسرے نمبر کے معیار کی ضرورت نہیں، لیکن بعد کے نمبر فالعبرة باللون فان توافقا لونا لکن تفاوتا طعما والے معیار کے پائے جانے پر نچلے معیار کا پایا جانا ضروری کماء البطیخ والشمس والانبذة فالعبرة للطعم وان ہوتا ہے) ثقہ راویوں نے جو بیان کیا ہے اس کا یہی مطلب توافقا لونا وطعما کماء الکرم فالعبرة للاجزاء 1 اھ ہے کہ پانی میں ملنے والی چیز اگر رنگ میں موافق ہو تو ذائقہ وعبارة ملك العلماء ان کان یخالف لونه لون الماء اور اگر ذائقہ میں بھی موافق ہو تو پھر غلبہ کیلئے اجزاء اور کاللبن وماء العصفر والزعفران تعتبر الغلبة فی مقدار کا اعتبار ہوگا۔ اور انہوں نے معیار کی ہر صورت کی اللون وان کان لایخالف الماء فی اللون ویخالفه فی مثال علیحدہ دی ہے۔ چنانچہ زاد الفقہاء اور بنایہ وغیر ہا کتب الطعم کعصیر العنب الابیض وخله تعتبر فی الطعم میں مذکورہ بیان کی وضاحت یوں کی کہ غلبہ پہلے رنگ کے اعتبار سے ہوگا پھر ذائقہ پھر اجزاء کے اعتبار سے ہو گا اس کے وان کان لا یخالفه فیهما تعتبر فی الاجزاء 2 اھ ساتھ صرف رنگ میں تبدیلی ظاہر کرنے والی چیزوں کی وعبارة خزانة المفتین ینظر ان کان یخالف لونه مثال دُودھ، پھلوں کا جوس، سرکہ اور زعفران کا پانی، ذکر کی لون الماء کاللبن والعصیر والخل والزعفران ہے اور کہا کہ ان چیزوں کی وجہ سے جب پانی کا رنگ بدل فالعبرة باللون وان کان یوافق لونه لون الماء نحو جائے تو پانی کو مغلوب اور ان چیزوں کو غالب قرار دیا ماء الثمار والاشجار والبطیخ فالعبرة للطعم ان جائے گا اور انہوں نے رنگ میں موافق اور ذائقہ میں مخالف کان شیئا یظهر له طعم فی الماء وذلك نحو نقیع چیز جو پانی میں مل کر پانی کے ذائقہ کی تبدیلی کو ظاہر کر دے الزبیب وسائر الانبذة وان کان شیئا لا یظهر

طعمه کے بارے میں فرمایا اس میں ذائقہ معیار ہوگا، اس کی مثال فی الماء فالعبرة لکثرة الاجزاء 3 اھ وعبارة الحلیة میں انہوں نے تربوز کا پانی، دھوپ والا پانی اور نبیذ ووں کو ان کان المخالط شیئا لونه یخالف لون الماء مثل ذکر کیا ہے، اور انہوں نے رنگ اور ذائقہ دونوں میں موافق اللبن والخل وماء الزعفران ثم قال وان کان لا چیزوں کی مثال میں انگور کے پودے کا پانی ذکر کیا ہے یخالف فی اللون ویخالف فی الطعم نحو

1 البناية شرح الهداية الماء يجوز به الوضوء ملک سنز فيصل آباد ۱۸۹/۱ 2 بدائع الصنائع مطلب الماء المقيد سعيد کمپنی کراچی ۱۵/۱ 3 خزانہ المفتین

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

(Arabic Column): Watermelon water, white grape juice, and vinegar. Then he said: If it does not differ from it in these two, the consideration of predominance is based on the parts [quantity] (1) اھ۔ And the phrasing of al-Burjandi is: If its color differs from the color of water, like milk and saffron, then the consideration is for the predominance of color. If they are similar in it, then for the taste. If it has no taste either, then for the parts (2) اھ۔ Thus, al-Bahr summarized it as previously mentioned, adding smell from his own side by saying: His meaning is that if the mixing liquid has a different color, the color is considered. If its color is like water, then taste. If it does not differ in color and taste, then parts (3) اھ۔ What we presented from Imam al-Isbijabi's statement is that if it changes the color, the consideration is for color. If it doesn't change color but changes taste, then for taste. If it doesn't change color or taste, then for parts اھ۔ This pertains to the potentiality (saluh) rather than the actuality (fi'liyah), meaning what is capable of changing the color, which is that which differs in color, then the consideration is for color, even if it does not [actually] change it. But for changing taste by matching in color and differing in taste, then for taste. And so on. It is not that if the mixing substance changes the color then that's it, and if not, one looks at changing its taste, and if not, one turns to parts. That is because you know that what...

(Urdu Column): Whatever gets mixed in water, the predominance over water will be considered based on parts/components (meaning if it is equal to or more than the quantity of water, the water will be considered overcome and the grape juice will be considered dominant). Similarly, in the writings of Malik al-Ulama, Khazanat al-Muftin, Hilyah, and Burjandi, this same subject is mentioned with partial differences in examples. Although Bahr al-Ra'iq mentioned 'smell' from his own side, despite this, he has stated the summary of all. And we have previously quoted the words of Imam al-Isbijabi that if that thing changes the color, then the consideration is of color; if it doesn't change the color, then the consideration is of taste; and if it doesn't change both color and taste, then the parts and quantity will be considered. So the meaning of this sequence is that there should be the potential for the mentioned change in that thing, otherwise, in terms of actuality, if the higher standard is found in the thing mixed in water, the lower one will necessarily be found. It is not possible for the higher standard to be found and the lower not to be found. For example, when the substance mixed in water...

Footnotes: 1. Hilyah 2. Nuqayah lil-Burjandi, Researches on Water, Nawalkishore Lucknow, 1/32 3. Bahr al-Ra'iq, Researches on Water, Saeed Company Karachi, 1/70

फ़तावा रज़विया, खंड 3

(अरबी स्तंभ): तरबूज का पानी, सफेद अंगूर का रस और सिरका। फिर उन्होंने कहा: यदि वह उन दोनों में इससे भिन्न न हो, तो प्रबलता का विचार अवयवों (मात्रा) (1) के आधार पर होगा। और अल-बुरजंदी का कथन है: यदि उसका रंग पानी के रंग से भिन्न हो, जैसे दूध और केसर, तो विचार रंग की प्रबलता का होगा। यदि वे उसमें समान हों, तो स्वाद के लिए। यदि उसका कोई स्वाद भी न हो, तो अवयवों (2) के लिए। इसी तरह अल-बहर ने इसका सारांश दिया जैसा पहले बताया गया, और अपनी ओर से गंध को जोड़ते हुए कहा: उनका अर्थ है कि यदि मिलने वाला तरल पदार्थ भिन्न रंग का है, तो रंग का विचार है। यदि उसका रंग पानी जैसा है, तो स्वाद। यदि रंग और स्वाद में भिन्न नहीं है, तो अवयव (3)। इमाम अल-इस्बीजाबी के कथन से हमने जो प्रस्तुत किया वह यह है कि यदि वह रंग बदल दे, तो विचार रंग का है। यदि रंग न बदले पर स्वाद बदले, तो स्वाद का। यदि रंग और स्वाद दोनों न बदले, तो अवयवों का। यह क्षमता (सुलूह) पर आधारित है न कि वास्तविकता (फ़ेलिया) पर, यानी जो रंग बदलने के योग्य है, जो रंग में भिन्न है, उसमें विचार रंग का है, भले ही वह वास्तव में उसे न बदले। लेकिन रंग में समान और स्वाद में भिन्न होकर स्वाद बदलने के लिए, तो स्वाद के लिए। और इसी तरह। ऐसा नहीं है कि यदि मिलने वाला पदार्थ रंग बदल दे तो वह, नहीं तो स्वाद को देखा जाए, और नहीं तो अवयवों की ओर मुड़ा जाए। ऐसा इसलिए है क्योंकि आप जानते हैं कि जो...

(उर्दू स्तंभ): जो कुछ पानी में मिल जाए, तो पानी पर प्रबलता का विचार अवयवों के आधार पर होगा (अर्थात पानी की मात्रा के बराबर या उससे अधिक होने पर पानी को पराजित और अंगूर के रस को प्रबल माना जाएगा)। इसी तरह मलिक अल-उलेमा, खज़ानत अल-मुफ़्तीन, हिल्या और बुरजंदी के लेखों में यही विषय उदाहरणों में आंशिक अंतर के साथ उल्लेख किया गया है। हालाँकि बहर-उर-रैक ने अपनी ओर से 'गंध' का भी उल्लेख किया है, फिर भी उन्होंने सबका सारांश बता दिया है। और हमने इससे पहले इमाम इस्बीजाबी का जो कथन उद्धृत किया है कि यदि वह चीज़ रंग बदल दे तो रंग का विचार होगा, और रंग को न बदले तो फिर स्वाद का विचार होगा, और यदि रंग और स्वाद दोनों को न बदले तो फिर अवयवों और मात्रा का विचार होगा। तो इस क्रम का अर्थ यह है कि उस चीज़ में उल्लेखित परिवर्तन की क्षमता होनी चाहिए, अन्यथा वास्तविकता के लिहाज़ से पानी में मिली चीज़ में यदि ऊपर वाला मानक पाया जाएगा तो नीचे वाला निश्चित रूप से पाया जाएगा। यह संभव नहीं है कि ऊपर वाला मानक पाया जाए और नीचे वाला न पाया जाए। उदाहरण के लिए जब पानी में मिलने वाली...

पादलेख: 1. हिल्या 2. नुक़ाया लिल-बुरजंदी, पानी पर शोध, नवलकिशोर लखनऊ, 1/32 3. बहर अल-रैक, पानी पर शोध, सईद कंपनी कराची, 1/70

पृष्ठ 232 / 756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

(عربی کالم): ماء البطیخ وعصیر العنب الابیض وخلہ ثم قال وانکان لا یخالفہ فیھما تعتبر الغلبۃ فی الاجزاء ۱ اھـ وعبارۃ البرجندی ان خالف لونہ لون الماء کاللبن والزعفران فالعبرۃ لغلبۃ اللون وان توافقا فیہ فللطعم وان لم یکن لہ طعم ایضا فللا جزاء ۲ اھـ وھکذا لخصہ البحر کما مر وان زاد الریح من عند نفسہ اذقال مرادہ ان المخالط المائع ان کان لونہ مخالفا تعتبر اللون وان کان لونہ لون الماء فالطعم وان کان لایخالفہ فی اللون والطعم فالاجزاء ۳ اھـ فباقدمنا من عبارۃ الامام الاسبیجابی ان غیر لونہ فالعبرۃ للللون وان لم یغیر لونہ بل طعمہ فللطعم وان لم یغیر لونہ وطعمہ فللاجزاء اھـ علی الصلوح دون الفعلیۃ ای ماصلح لتغییر اللون وھو الذی یخالفہ لوناً فالعبرۃ فیہ لللون وان لم یصلح لہ بل لتغییر طعمہ بأن وافقہ لونا و خالفہ طعما فللطعم وھکذا لا ان المخالط ان غیر اللون فذاک والاینظر الی تغییرہ طعمہ فان حصل والا عدل الی الاجزاء وذلك لما علمت ان ما

(اردو کالم): جو پانی میں مل جائے تو پانی پر غلبہ کا اعتبار اجزاء کے لحاظ سے ہوگا (یعنی پانی کی مقدار کے مساوی یا زیادہ ہونے پر پانی کو مغلوب اور انگور کے پودے کے پانی کو غالب قرار دیا جائے گا) اسی طرح ملک العلماء، خزانہ المفتین، حلیہ، برجندی کی عبارتوں میں یہی مضمون مثالوں میں جزوی اختلاف کے ساتھ ذکر کیا گیا ہے۔ بحرالرائق نے اگرچہ اپنی طرف سے بُو کو بھی ذکر کیا ہے لیکن اس کے باوجود انہوں نے سب کا خلاصہ بیان کر دیا ہے۔ اور ہم نے قبل ازیں امام اسبیجابی کا جو کلام نقل کیا ہے کہ وہ چیز رنگ تبدیل کر دے تو رنگ کا اعتبار اور رنگ کو تبدیل نہ کرے تو پھر ذائقہ کا اعتبار اور اگر رنگ اور ذائقہ دونوں کو تبدیل نہ کرے تو پھر اجزاء اور مقدار کا اعتبار ہو گا اھ تو اس ترتیب کا مطلب یہ ہے کہ اس چیز میں تبدیلی مذکورہ کی صلاحیت ہو، ورنہ فعلیت کے لحاظ سے پانی میں ملی ہوئی چیز میں اگر اوپر والا معیار پایا

جائے گا تو نیچے والا ضرور پایا جائے گا۔ یہ ممکن نہیں اوپر والا معیار پایا جائے اور نیچے والا نہ پایا جائے۔ مثلاً جب پانی میں ملنے والی

حواشی: 1 حلیہ 2 نقایہ للبرجندی ابحاث الماء نولکشور لکھنؤ ۱ / ۳۲ 3 بحر الرائق ابحاث الماء سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۰

صفحہ 232 از 756

[Left Column] If a substance is capable of changing both color and taste, then if the color does not change, the taste will not change either. Whatever is suitable for changing both or one of them cannot usually be overcome in both, or be equal in quantity; if this were possible, the ruling based on sequence would be void, and it would be necessary to say that all three are considered collectively—whichever occurs, dominance is established. Once you know this, know that the experts of the regulation did not observe this sequence; rather, they said: whatever differs in two qualities, whichever changes, it is altered; and whatever differs in three qualities, whichever two are replaced, it is changed. In this way, we have presented to them cases where taste precedes color, even if it does not occur according to the Shaybani regulation path, just as we presented to them cases of change in smell, even if it is disregarded by them. The ruling contrary to the Zaila'i regulation is clear regarding odorous substances. As for the precedence of taste, the ruling is restricted to color in color-possessing substances; so if the precedence of taste occurs, the ruling is established even if it does not occur according to their view.

And I say: From the side of Imam Abu Yusuf, if you meant the change of a quality without the loss of the name [of water]...

[Right Column] If a substance is equal to or greater than the quantity of water, then both the lower criteria, i.e., taste and color, will necessarily change. Similarly, if that substance possesses the quality of taste, then upon its presence, the color criterion will certainly be found. This is in the case where there is agreement between the upper and lower criteria; otherwise, if there is no agreement, then the sequence in the three criteria will not be necessary; rather, all three will collectively be declared as the criteria and it will be said that whatever is found, dominance will be found. After this explanation, it should be known that some of those who stated the regulation did not observe the sequence of these criteria and they said that whatever substance differs from water in two qualities, whichever of those two changes, the water will become altered. And a substance which differs from water in three qualities, i.e., color, smell, and taste, if two qualities change among them, they will declare the water altered. So, in their presentation in this manner, I described the sequence and said that color change will occur first. Although this objection does not apply to the Shaybani regulation, just as we objected to them regarding the change in smell, even though it does not apply to the Shaybani regulation. The ruling of this regulation, contrary to the Zaila'i one, is apparent in odorous substances, but the priority of the

taste situation is because the Zaila'i regulation had specified the ruling for colored substances with color; however, if taste occurs first, the ruling will be established even though it would not be first under that regulation. (T) I say, on behalf of Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), I raise this objection that if the name of the water changes...

[बायां कॉलम] यदि कोई पदार्थ रंग और स्वाद दोनों को बदलने की क्षमता रखता है, तो यदि रंग नहीं बदलता है, तो स्वाद भी नहीं बदलेगा। जो कुछ दोनों या उनमें से किसी एक को बदलने के लिए उपयुक्त है, वह आमतौर पर दोनों में अभिभूत नहीं हो सकता, या मात्रा में समान नहीं हो सकता; यदि यह संभव होता, तो अनुक्रम पर आधारित नियम शून्य हो जाता, और यह कहना आवश्यक होता कि तीनों को सामूहिक रूप से माना जाता है—जो भी घटित हो, प्रभुत्व स्थापित हो जाता है। जब आप यह जान लें, तो जान लें कि नियम के विशेषज्ञों ने इस अनुक्रम का पालन नहीं किया; बल्कि उन्होंने कहा: जो दो गुणों में भिन्न हो, उनमें से जो भी बदले, वह परिवर्तित है; और जो तीन गुणों में भिन्न हो, उनमें से जो भी दो बदल जाएँ वह बदल गया है। इस प्रकार, हमने उनके सामने ऐसे मामले पेश किए हैं जहाँ स्वाद रंग से पहले आता है, भले ही वह शैबानी नियम के अनुसार न हो, जैसे हमने उनके सामने गंध में परिवर्तन के मामले पेश किए, भले ही वे उनके द्वारा उपेक्षित हों। जैलई नियम के विपरीत नियम गंधयुक्त पदार्थों के संबंध में स्पष्ट है। जहाँ तक स्वाद की प्रधानता का प्रश्न है, रंगीन पदार्थों में नियम रंग तक ही सीमित है; इसलिए यदि स्वाद की प्रधानता होती है, तो नियम स्थापित हो जाता है भले ही वह उनके विचार के अनुसार न हो।

और मैं कहता हूँ: इमाम अबू यूसुफ की ओर से, यदि आपका तात्पर्य नाम [पानी का] खोए बिना किसी गुण के परिवर्तन से है...

[दायां कॉलम] यदि कोई चीज़ अपनी मात्रा में पानी की मात्रा के बराबर या उससे अधिक होगी, तो निचले दोनों मानदंड, यानी स्वाद और रंग वाले मानदंड, निश्चित रूप से बदल जाएंगे। और इसी तरह, यदि वह चीज़ स्वाद का गुण रखती है, तो उसके पाए जाने पर रंग वाला मानदंड ज़रूर पाया जाएगा। यह उस स्थिति में है जब ऊपर वाले और नीचे वाले मानदंडों में समानता हो; अन्यथा, यदि समानता नहीं होगी, तो तीनों मानदंडों में अनुक्रम अनिवार्य नहीं होगा, बल्कि फिर सामूहिक रूप से तीनों को मानदंड घोषित किया जाएगा और कहा जाएगा कि जो भी पाया जाएगा, प्रभुत्व पाया जाएगा। इस स्पष्टीकरण के बाद यह ज्ञात होना चाहिए कि नियम बताने वालों में से कुछ ने इन मानदंडों के अनुक्रम का ध्यान नहीं रखा और उन्होंने कहा कि जो चीज़ पानी से दो गुणों में भिन्न है, उन दोनों में से जो भी बदलेगा, पानी परिवर्तित हो जाएगा। और जो चीज़ तीन गुणों यानी रंग, गंध और स्वाद में पानी से भिन्न हो, उनमें से दो गुणों में परिवर्तन होने से वे पानी को परिवर्तित घोषित करेंगे। तो उनके इस अंदाज़ के बयान में मैंने अनुक्रम का वर्णन किया और कहा था कि सबसे पहले रंग का परिवर्तन

होगा। हालाँकि शैबानी नियम पर यह आपत्ति नहीं होती, जैसे हमने गंध के परिवर्तन के बारे में उन पर आपत्ति की, भले ही वह शैबानी नियम पर लागू नहीं होती। इस नियम का आदेश जैलई के विपरीत गंध वाली चीज़ों में स्पष्ट है, लेकिन स्वाद वाली स्थिति का पहले होना इसलिए है क्योंकि जैलई नियम ने रंग वाली चीज़ में आदेश को रंग के साथ विशेष कर दिया था; फिर भी यदि स्वाद पहले हो तो आदेश स्थापित होगा, भले ही उस नियम के तहत स्वाद पहले न हो। (त) मैं कहता हूँ, कि इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाह अलैह) की ओर से यह आपत्ति करता हूँ कि यदि पानी का नाम बदल जाए...

पृष्ठ 233 का 756

[بایاں کالم] صلح لتغییر اللون والطعم جمیعاً ان لم یغیر اللون لم یغیر الطعم ایضاً وما صلح لتغییر هما او احدهما لا یمکن ان یکون مغلوباً فیهما غالباً او مساویاً فی القدر وان امکن هذا بطل الحکم بالترتیب ووجب القول باعتبار الثلثة مجملاً ایها حصلت حصلت الغلبة اذا عرفت هذا فاعلم ان اهل الضابطة لم یراعوا هذا الترتیب بل قالوا ما خالف فی وصفین فایهما تغیر غیر وما خالف فی الثلثة فاي اثنین تبدلا بدلا وبهذا الوجه اوردنا علیهم ما فیه سبق الطعم اللون وان کان غیر واقع علی مسلک الضابطة الشیبانیة کما اوردنا علیهم مافیه تغیرالریح وان کان ساقط النظر عندهما وحکما بخلاف الضابطة الزیلعیة ظاهر فی ذوات الریح واما فی سبقة الطعم فالقصر ها الحکم علی اللون فی ذی اللون فان وقع سبق الطعم ثبت الحکم وان لم یکن واقعاً فی نظر ها۔

واقول: من قبل الامام ابی یوسف ان اردتم تغیر وصف بدون زوال الاسم

[دایاں کالم] چیز اپنی مقدار میں پانی کی مقدار کے برابر یا زیادہ ہوگی تو نچلے دونوں معیار یعنی ذائقہ اور رنگ والا معیار ضرور تبدیل ہوگا، اور یوں ہی اگر وہ چیز ذائقہ والا معیار رکھتی ہے تو اس کے پائے جانے پر رنگ والا معیار ضرور پایا جائے گا، یہ اس صورت میں جبکہ اوپر والے اور نیچے والے معیار میں موافقت ہو، ورنہ اگر موافقت نہ ہوگی تو پھر تینوں معیاروں میں ترتیب لازمی نہ ہوگی بلکہ پھر مجمل طور تینوں کو معیار قرار دیں گے اور کہیں گے کہ جو بھی پایا جائے گا غلبہ پایا جائے گا۔ اس وضاحت کے بعد معلوم ہونا چاہئے کہ ضابطہ بیان کرنے والوں میں سے بعض نے ان معیاروں کی ترتیب کی رعایت نہیں کی اور انہوں نے یوں کہا کہ جو چیز پانی سے دو وصفوں میں مختلف ہے ان دو میں سے جو بھی تبدیل ہوگا تو پانی متغیر ہو جائے گا، اور جو چیز چیز تین اوصاف یعنی رنگ، بُو اور ذائقہ میں پانی سے مختلف ہو ان میں سے دو وصفوں

میں تبدیلی ہو جانے سے پانی کو متغیر قرار دیں گے تو ان کی اس انداز کی تقریر میں نے ترتیب کو بیان کیا اور کہا تھا سب سے پہلے رنگ کی تبدیلی ہوگی، اگر چہ ضابطہ شیبانیہ پر یہ اعتراض نہیں ہوتا جیسا کہ بُو کی تبدیلی کے بارے میں ہم نے ان پر اعتراض کیا اگرچہ وہ ضابطہ شیبانیہ پر وارد نہیں ہوتا، اس ضابطہ کا حکم زیلعیہ کے برخلاف بُو والی چیزوں میں ظاہر ہے لیکن ذائقہ والی صورت کا پہلے ہونا اس لئے ہے کہ ضابطہ زیلعیہ نے رنگ والی چیز میں حکم کو رنگ کے ساتھ خاص کر دیا تھا تاہم اگر ذائقہ پہلے ہو تو حکم ثابت ہوگا اگر چہ اس ضابطہ کے تحت ذائقہ پہلے نہیں ہوگا۔ (ت) میں کہتا ہوں، کہ امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے یہ اعتراض کرتا ہوں اگر پانی کا نام تبدیل

Fatawa Razawiyya Volume Three

[Arabic Text]: ...is forbidden as is known, or if its removal is intended then yes. Why do you say that color is prioritized? For by whatever means the name (of water) is removed, it is removed. As for your statement that color is weaker so its change precedes taste, and not vice-versa; we say that the precedence of an action can be due to the weakness of the recipient (making it unable to resist), and similarly it can be due to the strength of the actor (making it irresistible). What prevents something from having a taste stronger and more intense than its color, such that it affects the taste of the strong water before its color affects the water's weak color? Based on this, I say: the Zayla'i rule is correct in permitting the predominance of something other than color before color. And the Shaybani rule is correct in its cases regarding the ruling, for it does not accept the restriction of water in those cases even if it was based on them not occurring. Upon this investigation and scrutiny lies the discourse of this humble person in critiquing the Zayla'i rule and Al-Bahr, and in showing the contradictions between them and the transmitted ruling, based on the rule of Muhammad, the master of the great scholars. So know this, and praise be to Allah, the Best of Masters. (5) By what we have explained, that change in color precedes equality in quantity, what is imagined against the rule of Al-Birjandi is dismissed, as he said regarding mixing without cooking: the meaning of its predominance is that its color overcomes the color of the water according to Muhammad, and parts...

[Urdu Commentary]: If you mean changing the name of water without changing any attribute, then this is not accepted. As it has become known, or if changing the name of water by changing an attribute is meant, then it is accepted. But then why do you call the change of color prioritized? While the name change would be effective through whichever attribute it happens. (And regarding making the consideration of color the meaning) your saying that since color is a weak attribute, it changes before the taste, so a change in taste does not happen before it; in response to this, we say that just as the effect of an action happens quickly due to the weakness of the recipient because it does not become a barrier, similarly if the actor is strong, the effect can also be quick because the actor cannot be stopped. And thus it can happen that something's taste is so intense that it affects the water before the color. For this reason, I say that the Zayla'i rule is correct in allowing another attribute to be effective before color, and the Shaybani rule is correct regarding the forms of change in the ruling because this rule does not accept the restriction of water in cases of change in these attributes, whether these cases occur or not. This investigation of

this humble one's discourse in critiques is based on the statement of the Zayla'i rule and Al-Bahr, and the expression of contradiction between the ruling and the rules is based on Imam Muhammad's rule because he is the leader of the great scholars. Understand this, and the praise of Allah Almighty is your best wealth. (T) (5) Change in color is prior to change in terms of parts and quantity and predominance. From our statement here, an objection to Allama Birjandi's rule is eliminated; Allama Birjandi said that for something mixed in water...

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

[अरबी पाठ]: ...जैसा कि ज्ञात है, वर्जित है, या यदि इसे हटाना उद्देश्य है तो हाँ। आप ऐसा क्यों कहते हैं कि रंग को प्राथमिकता दी जाती है? क्योंकि जिस भी माध्यम से (पानी का) नाम मिटता है, वह मिट जाता है। जहाँ तक आपके इस कथन का प्रश्न है कि रंग कमज़ोर है इसलिए उसका परिवर्तन स्वाद से पहले होता है, और इसके विपरीत नहीं; हम कहते हैं कि किसी क्रिया की प्राथमिकता प्राप्तकर्ता की कमज़ोरी के कारण हो सकती है (जिससे वह विरोध करने में असमर्थ हो जाता है), और इसी तरह यह कर्ता की शक्ति के कारण हो सकती है (जिससे वह अपरिहार्य हो जाता है)। ऐसी क्या चीज़ है जो किसी चीज़ के स्वाद को उसके रंग से अधिक मजबूत और तीव्र होने से रोकती है, जिससे कि उसके रंग द्वारा पानी के कमज़ोर रंग को प्रभावित करने से पहले उसका स्वाद शक्तिशाली पानी के स्वाद को प्रभावित कर सके? इसी आधार पर, मैं कहता हूँ: ज़ैलई नियम रंग से पहले रंग के अलावा किसी अन्य चीज़ की प्रबलता की अनुमति देने में सही है। और शैबानी नियम शासन के संबंध में अपने मामलों में सही है, क्योंकि वह उन मामलों में पानी के प्रतिबंध को स्वीकार नहीं करता है चाहे वह उनके घटित न होने पर आधारित हो। इसी शोध और जाँच पर इस विनम्र व्यक्ति का ज़ैलई नियम और अल-बहर की आलोचना करने में, और मुहम्मद के नियम के आधार पर उनके और प्रेषित शासन के बीच अंतर्विरोधों को दिखाने में भाषण निहित है, जो महान विद्वानों के स्वामी हैं। तो इसे जान लें, और अल्लाह की स्तुति हो, जो स्वामियों में सबसे उत्तम है। (5) जैसा कि हमने स्पष्ट किया है, कि रंग में परिवर्तन मात्रा में समानता से पहले होता है, अल-बिर्जंदी के नियम के खिलाफ जो कल्पना की गई है उसे खारिज कर दिया जाता है, जैसा कि उन्होंने बिना पकाए मिश्रण के संबंध में कहा था: इसकी प्रधानता का अर्थ यह है कि मुहम्मद के अनुसार इसका रंग पानी के रंग पर हावी हो जाता है, और भाग...

[उर्दू भाष्य]: यदि आप बिना किसी गुण के परिवर्तन के पानी का नाम बदलने की बात कर रहे हैं, तो यह स्वीकार्य नहीं है। जैसा कि ज्ञात हो चुका है, या यदि किसी गुण के परिवर्तन से पानी का नाम बदलना अभिप्रेत है, तो यह स्वीकार्य है। लेकिन फिर आप रंग के परिवर्तन को प्राथमिकता क्यों देते हैं? जबकि नाम का परिवर्तन जिस भी गुण के माध्यम से होगा, वही प्रभावी होगा। (और रंग के विचार को अर्थ बनाने के संबंध में) आपका यह कहना कि चूँकि रंग एक कमज़ोर गुण है, इसलिए वह स्वाद से पहले बदल जाता है, अतः स्वाद में परिवर्तन उससे पहले नहीं होता; इसके उत्तर में हम कहते हैं कि जिस प्रकार किसी क्रिया का प्रभाव प्राप्तकर्ता की कमज़ोरी के कारण जल्दी होता है क्योंकि वह

बाधा नहीं बनता, उसी प्रकार यदि कर्ता शक्तिशाली हो, तो प्रभाव भी जल्दी हो सकता है क्योंकि कर्ता को रोका नहीं जा सकता। और इस प्रकार यह हो सकता है कि किसी चीज़ का स्वाद इतना तीव्र हो कि वह रंग से पहले पानी को प्रभावित करे। इसी कारण से, मैं कहता हूँ कि ज़ैलई नियम रंग से पहले किसी अन्य गुण के प्रभावी होने की अनुमति देने में सही है, और शैबानी नियम शासन में परिवर्तन के रूपों के संबंध में सही है क्योंकि यह नियम इन गुणों में परिवर्तन के मामलों में पानी के प्रतिबंध को स्वीकार नहीं करता है, चाहे ये मामले घटित हों या न हों। आलोचनाओं में इस विनम्र व्यक्ति के भाषण की यह जाँच ज़ैलई नियम और अल-बहर के कथन पर आधारित है, और शासन और नियमों के बीच विरोधाभास की अभिव्यक्ति इमाम मुहम्मद के नियम पर आधारित है क्योंकि वे महान विद्वानों के नेता हैं। इसे समझें, और सर्वशक्तिमान अल्लाह की स्तुति ही आपका सबसे अच्छा धन है। (त) (5) रंग में परिवर्तन अंगों और मात्रा और प्रधानता के संदर्भ में परिवर्तन से पहले है। हमारे इस कथन से अल्लामा बिर्जंदी के नियम पर एक आपत्ति समाप्त हो जाती है; अल्लामा बिर्जंदी ने कहा कि पानी में मिली किसी चीज़ के लिए...

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

[عربی متن]: فممنوع كماعلم او ما يزيله فنعم ولم قلتم يقدم اللون فان الاسم باى شيئ زال زال اما قولكم هو اضعف فيسبق في التغير الطعم ولا عكس قلنا سبقة الفعل كما يكون بضعف المنفعل فلا يقاوم بالكسر كذلك يكون بقوة الفاعل فلا يقاوم بالفتح وما المانع ان يكون شيئ طعمه اقوى شديداً من لونه فيعمل في طعم الماء القوى قبل ان يعمل لونه فى لونه الضعيف وعن هذا اقول: ان الضابطة الزيلعية اصابت في تجويزها غلبة غير اللون قبل اللون والضابطة الشيبانية اصابت في صورها في الحكم فانها لاتسلم تقيد الماء فيها وان كان بناء على انها لاتقع وعلى هذا التحقيق والتنقير يبتنى كلام الفقير في التطفلات على الضابطة الزيلعية وعلى البحر وفي ابداء المخالفات بينها وبين الحكم المنقول، على ضابطة محمد سيد الاكابر الفحول، فاعلم ذلك، والحمد لله خير مالكـ (۵) بما بينا ان تغير اللون يسبق مساواة القدر يندفع مايتوهم على ضابطة البرجندى اذ قال في المخالط بلاطبخ معنى غلبته ان يغلب لونه لون الماء عند محمد والاجزاء۔

[اردو شرح]: ہوئے بغیر کسی وصف کی تبدیلی مراد لیتے ہو تو یہ تسلیم نہیں ہے جیسا کہ معلوم ہو چکا ہے یا وصف کی تبدیلی سے پانی کے نام کی تبدیلی بھی مراد ہے تو یہ تسلیم ہے، لیکن پھر رنگ کی تبدیلی کو مقدم کیوں کہتے ہو حالانکہ نام کی تبدیلی جس وصف سے ہو جائے وہی مؤثر ہوگا (اور رنگ کے اعتبار کو مفہوم قرار دینے کی وجہ میں) آپ کا یہ کہنا کہ چونکہ رنگ ایک کمزور وصف ہے اس لئے وہ ذائقہ کی نسبت پہلے متغیر ہو جاتا ہے اس لئے ذائقہ کی تبدیلی اس سے پہلے نہیں ہوتی، تو اس کے جواب میں ہم یہ کہتے ہیں کہ جس طرح اثر کو قبول کرنے والی چیز کی کمزوری کے سبب فعل کی تاثیر جلدی ہوتی ہے کیونکہ وہ چیز رکاوٹ نہیں بنتی اسی طرح اگر فاعل قوی ہو تو بھی تاثیر جلدی ہو سکتی ہے کیونکہ فاعل کو روکا نہیں جاسکتا اور یوں

ہو سکتا ہے کہ کسی چیز کا ذائقہ اتنا شدید ہو کہ وہ رنگ کے مقابلہ میں پانی پر پہلے اثر انداز ہو جائے اسی وجہ سے میں کہتا ہوں کہ ضابطہ زیلعیہ رنگ سے قبل دوسرے کسی وصف کے موثر ہونے کو جائز قرار دینے میں درست ہے، اور ضابطہ شیبانیہ حکم کے بارے میں تبدیلی کی صورتوں میں درست ہے کیونکہ یہ ضابطہ ان اوصاف کی تبدیلی کی صورتوں میں پانی کو مقید تسلیم نہیں کرتا خواہ یہ صورتیں واقع نہ ہوں، تطفلات میں اس فقیر کے کلام کی یہ تحقیق ضابطہ زیلعیہ اور بحر کے بیان پر مبنی ہے، اور حکم اور ضابطوں کے درمیان مخالفت کا اظہار امام محمد کے ضابطہ پر مبنی ہے کیونکہ عظیم اکابر کے سردار ہیں، اس کو سمجھو اور اللہ تعالیٰ کی حمد تیرا بہترین مال ہے۔ (ت) (۵) رنگ کی تبدیلی، اجزاء اور مقدار کے لحاظ سے تبدیلی اور غلبہ پر مقدم ہے۔ ہمارے اس بیان سے علامہ برجندی کے ضابطہ پر ایک اعتراض ختم ہو جاتا ہے، علامہ برجندی نے کہا ہے کہ پانی میں ملی ہوئی چیز جو۔

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

[Arabic Text Section] According to Abu Yusuf (1) [End quote], Imam Muhammad does not consider the abundance of parts, which is definitively void as we pointed out in the third section, at the beginning of the discussions on the dominance of other substances. This is because whoever considers color has narrowed the scope, as its change occurs earlier. For such reasons, I did not mention the abundance of parts in the Shaybani rule except regarding liquid substances. I stated the permissibility of usage in solids as long as fluidity remains and it has not become something else for another purpose. This is because fluidity is definitively removed by solids; rather, equality of quantity is achieved with much less solid. This is the observation I passed in the mentioned discussion from Al-Bahr from Al-Haddadi, that the dominance of parts in solids is by one-third, as I mentioned previously.

[Urdu Text Section] [If something] is mixed without being cooked, the criteria for it being dominant over water, according to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), is the change in color, and according to Imam Yusuf (may Allah have mercy on him), it is the dominance of parts. Some raised an objection to this that Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) does not consider the dominance of parts, and this objection is incorrect as we have clarified in the first discussion of the third section on the dominance of a foreign substance in water. That is, whoever made color change the criterion for dominance, did so under the condition that color change occurs first. Similarly, in the Shaybani rule, I have mentioned the abundance and dominance of parts only for liquid substances. Regarding solids, I have mentioned the permissibility of ablution unconditionally as long as the fluidity of water remains. Along with the preservation of fluidity, it is also noted that it has not become something else for another purpose. This is because, due to solids, the fluidity of water ends much before parts become equal. And as passed in the discussion from Al-Bahr from Al-Haddadi, that due to solids, the fluidity of water ends even before it reaches a one-third quantity. This is its summary as I have explained there. (T)

(6) Some scholars believe that water is colorless and has no color of its own.

[Arabic Bottom Text Section] Until the eminent Ahmad bin Turki al-Maliki defined it in 'al-Jawahir al-Zakiyyah', a commentary on 'al-Muqaddimah al-Ashmawiyyah', by saying: Water is a subtle, liquid substance that has no color; it takes on the color of its container (3). [End quote]

[Urdu Bottom Text Section] So much so that the eminent Ahmad bin Turki al-Maliki, in his commentary on al-Muqaddimah al-Ashmawiyyah, 'Jawahir al-Zakiyyah', gave this definition: water is such a subtle, flowing substance that has no color of its own, but rather appears colored by the color of the container. [End quote] (T)

1. Sharh al-Nuqayah by al-Birjandi, Discussions on Water, Naval Kishore Lucknow, 1/32.
2. Bahr al-Ra'iq, Discussions on Water, Saeed Company Karachi, 1/70.
3. Jawahir Zakiyyah.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[अरबी पाठ अनुभाग] अबू यूसुफ़ (1) के अनुसार [कोट का अंत], इमाम मुहम्मद हिस्सों की प्रचुरता पर विचार नहीं करते हैं, जो निश्चित रूप से शून्य है जैसा कि हमने तीसरे खंड में अन्य पदार्थों के प्रभुत्व पर चर्चाओं की शुरुआत में बताया था। ऐसा इसलिए है क्योंकि जिसने भी रंग पर विचार किया है उसने दायरे को संकुचित कर दिया है, क्योंकि इसका परिवर्तन पहले होता है। ऐसे कारणों से, मैंने तरल पदार्थों के संबंध में शयबानी नियम में हिस्सों की प्रचुरता का उल्लेख नहीं किया। मैंने ठोस पदार्थों में अनुमति की बात कही जब तक कि तरलता बनी रहे और वह किसी अन्य उद्देश्य के लिए कुछ और न बन गया हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि ठोस पदार्थों द्वारा तरलता निश्चित रूप से समाप्त हो जाती है; बल्कि मात्रा की समानता बहुत कम ठोस के साथ प्राप्त हो जाती है। यह वह अवलोकन है जो मैंने अल-बह्र से अल-हद्दादी से उल्लिखित चर्चा में पारित किया था, कि ठोस पदार्थों में हिस्सों का प्रभुत्व एक-तिहाई से होता है, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया था।

[उर्दू पाठ अनुभाग] [यदि कोई चीज़] बिना पकाए मिल गई हो, तो पानी पर उसके हावी होने का मानक इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार रंग का बदलना है, और इमाम यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार हिस्सों का हावी होना है। इस पर कुछ लोगों ने यह आपत्ति उठाई कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) हिस्सों के प्रभुत्व पर विचार नहीं करते हैं, और यह आपत्ति गलत है जैसा कि हमने पानी में बाहरी पदार्थ के प्रभुत्व पर तीसरे खंड की पहली चर्चा में स्पष्ट किया है। यानी जिसने रंग बदलने को प्रभुत्व का मानक बनाया है, उसने यह शर्त लगाई है कि रंग का बदलाव पहले हो। इसी तरह, शयबानी नियम में, मैंने हिस्सों की प्रचुरता और प्रभुत्व का उल्लेख केवल बहने वाली चीज़ों (तरल) के बारे में किया है। ठोस के बारे में, जब तक पानी की तरलता बाकी है, मैंने उससे वज़ू के जायज़ होने का उल्लेख बिना शर्त किया है। तरलता के बने रहने के साथ यह भी ध्यान में रखा गया है कि वह किसी दूसरे उद्देश्य के लिए दूसरी चीज़ न बन गई हो, और यह इसलिए है क्योंकि ठोस की वजह से पानी की तरलता हिस्सों के बराबर होने से बहुत पहले ही खत्म हो जाती है। और जैसा कि अल-बह्र से अल-हद्दादी की चर्चा में गुज़रा कि ठोस की वजह से पानी की तरलता एक-तिहाई मात्रा से भी पहले खत्म हो जाती है, यह इसका सारांश है जैसा कि मैंने वहां बयान किया है। (त)

(6) कुछ विद्वानों का मानना है कि पानी बेरंग है, इसका अपना कोई रंग नहीं होता।

[अरबी निचला पाठ अनुभाग] यहाँ तक कि आदरणीय अहमद बिन तुर्की अल-मालिकी ने 'अल-जवाहर अल-ज़कियाह', जो 'अल-मुकद्दमा अल-अशमावियाह' की व्याख्या है, में इसकी परिभाषा इस प्रकार की: पानी एक सूक्ष्म, तरल पदार्थ है जिसका कोई रंग नहीं होता; यह अपने बर्तन का रंग ग्रहण कर लेता है (3)। [कोट का अंत]

[उर्दू निचला पाठ अनुभाग] यहाँ तक कि आदरणीय अहमद बिन तुर्की अल-मालिकी ने मुकद्दमा अशमाविया की व्याख्या 'जवाहर ज़किया' में इसकी यह परिभाषा दी है कि पानी ऐसा सूक्ष्म बहने वाला पदार्थ है जिसका अपना कोई रंग नहीं होता, बल्कि बर्तन के रंग से रंगीन दिखाई देता है। [कोट का अंत] (त)

1. शरह अल-नुक़ायाह अल-बिरजंदी, पानी पर चर्चा, नवल किशोर लखनऊ, 1/32.
2. बहर अल-रायिक़, पानी पर चर्चा, सईद कंपनी कराची, 1/70.
3. जवाहर ज़किया.

पेज 235 का 756

عند ابی یوسف ۱ اھ ان محمدا لا یعبر الاجزاء وھو باطل قطعا کما نبھنا علیہ فی الفصل الثالث اول ابحاث غلبۃ الغیر وذلك لان من اعتبر اللون فقد ضیق لان تغیرہ اسبق ولمثل ھذا لم اذکر کثرۃ الاجزاء فی الضابطۃ الشیبانیۃ الا فی جھۃ المائع واطلقت القول بالجواز فی الجامد مادامت الرقۃ باقیۃ ولم یصر شیئا اخر لمقصد اخر وذلك لان الرقۃ تزول بالجامد قطعا بل تساوی القدر بکثیر وھذا ملحظ مآمر فی البحث المذکور عن البحر عن الحدادی ان غلبۃ الاجزاء فی الجامد ۲ بالثلث کما قدمت ثمہ۔

پکائے بغیر ملی ہو، اس کے پانی پر غالب ہونے کا معیار امام محمد رحمہ اللہ کے نزدیک رنگ کی تبدیلی ہے، اور امام یوسف رحمہ اللہ کے نزدیک اجزاء کا غالب ہونا ہے۔ اس سے بعض نے یہ اعتراض اٹھایا کہ امام محمد رحمہ اللہ اجزاء کے غلبہ کا اعتبار نہیں کرتے، اور یہ اعتراض غلط ہے جیسا کہ ہم نے تیسری فصل میں پانی پر غیر چیز کے غلبہ کی اول بحث میں واضح کردیا ہے وہ یہ کہ جس نے رنگ کی تبدیلی کو غلبہ کا معیار بنایا ہے اس نے یہ پابندی لگائی ہے کہ رنگ کی تبدیلی پہلے ہو۔ اسی طرح میں نے ضابطہ شیبانی میں اجزاء کی کثرت اور غلبہ کو صرف بہنے والی چیز کے بارے میں کہا ہے اور جامد کے بارے میں جب تک پانی کی رقت باقی ہو تو اس سے وضو کے جواز کو میں نے مطلق ذکر کیا ہے اور رقت کی بقاء کے ساتھ یہ بھی ملحوظ ہے کہ کسی دوسرے مقصد کیلئے دوسری چیز نہ بن چکی ہو، اور یہ اس لئے ہے کہ جامد کی وجہ سے پانی کی رقت اجزاء کے مساوی ہونے سے بہت پہلے ختم ہوجاتی ہے، اور بحر سے حدادی سے مذکور بحث میں جو گزرا کہ جامد کی وجہ سے پانی کی رقت تہائی مقدار سے بھی قبل ختم ہو جاتی ہے یہ اس کا خلاصہ ہے جیسا کہ میں نے وہاں بیان کر دیا ہے۔ (ت)

(۶) بعض علماء کا خیال ہے کہ پانی بے لون ہے خود کوئی رنگ نہیں رکھتا،

حتی عرفه الفاضل احمد بن ترکی المالکي فی الجواهر الزکیة شرح المقدمة العشماویة بقوله الماء جوهر لطیف سیال لا لون له یتلون بلون انائه ۳ اھ۔

حتیٰ کہ فاضل احمد بن ترکی المالکی نے مقدمہ عشماویہ کی شرح جواہر زکیہ میں اس کی یہ تعریف کی ہے کہ پانی ایسا لطیف بہنے والا جو ہر ہے جس کا اپنا کوئی رنگ نہیں بلالکہ برتن کے رنگ سے رنگدار دکھائی دیتا ہے اھ (ت)

1 شرح النقایة للبر جندی ابحاث الماء نولکشور لکھنؤ ۱ / ۳۲ 2 بحر الرائق ابحاث الماء سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۰ 3 جواہر زکیۃ

I say (1): It was incumbent upon him to say that it takes the color of whatever mixes with it, for after the last sentence there is no need for clarification. That is why its commentator Al-Safati Al-Maliki said: Because it is transparent, the color of its vessel appears in it. So when it is placed in a green vessel, the greenness does not belong to the water; rather, it is due to its thinness that it does not block the color of the vessel. (End) (T)

I say (2): In the beginning of 'Sharh al-Mawaqif', in the discussion of 'Knowledge through the Senses', it is stated that snow is composed of transparent parts and has no color, rather they are fine watery parts. This passage is clear in denying color to water. If you say: it is possible that due to the parts being very small, the color is not apparent. I say: Not at all, for do you not see that vapor is perceived as having a color? And it is nothing but the color of the watery parts, and they are finer in vapor than they are in snow. This is the reason why snow falls from above and vapor rises upwards. If a very small thing is isolated, it is not seen, so how can its color be seen? But when small parts gather, they become visible and their color will also be seen, just as in vapor and smoke, and even in dust particles, as we mentioned in the footnotes at the end of the first chapter of our treatise 'Al-Namiqa Al-Anqa'. (T)

And the correct view is that it is colored; this is the chosen opinion of Imam Fakhr al-Razi and others, which is in accordance with the discourse of jurists on the issues of abundant water (Ab-e-Kaseer) and absolute water (Ab-e-Mutlaq), etc.

---

1. Hashiya Safati on Muqaddimah Ashmawiyyah.
2. Sharh al-Mawaqif, the fourth station, regarding necessary sciences, Matba'at al-Sa'adah, Egypt, 1/143.

फ़तावा रज़विया - जिल्द तीसरा

मैं कहता हूँ (1): उन पर लाज़िम था कि वह यूँ परिभाषा करते कि इसमें मिलने वाली चीज़ से रंगदार होता है क्योंकि अंतिम वाक्य बयान का मोहताज रहता है। इसीलिए इसके टीकाकार (मुहशशी) सफ़ती मालिकी ने कहा है कि पारदर्शी होने की वजह से बर्तन का रंग इसमें ज़ाहिर होता है। जब हरे बर्तन में डालें तो हरियाली पानी को नहीं लगती बल्कि वह अपनी बारीकी (रक़्क़त) की बिना पर बर्तन के रंग के लिए पर्दा नहीं बनता। (त)

मैं कहता हूँ (2): 'शरह अल-मवाक़िफ़' में 'इल्म बिल-हिस' की बहस में मौजूद है कि बर्फ पारदर्शी टुकड़ों से बनी है, इसका कोई रंग नहीं है बल्कि वे पानी के बारीक कण हैं। पानी के रंग के इनकार में यह इबारत साफ़ है। अगर आप कहें: हो सकता है कि कण बारीक होने की वजह से रंग ज़ाहिर न होता हो। मैं कहता हूँ कि ऐसा हरगिज़ नहीं, क्योंकि आप देखते हैं कि बादलों के भाप (वाष्प) में रंग ज़ाहिर होता है और यह रंग पानी के कणों का रंग है हालाँकि ये कण बर्फ के कणों से ज़्यादा बारीक हैं। यही वजह है कि बर्फ ऊपर से गिरती है और भाप ऊपर उठती है। और बारीक अगर अकेला हो तो वह दिखाई नहीं देता तो उसका रंग कैसे दिखाई देगा? और छोटे कण जब जमा हों तो नज़र आते हैं तो उनका रंग भी नज़र आएगा जैसा कि भाप और धुएँ में, बल्कि धूल के कणों में ऐसा ही है जैसा कि हमने अपने रिसाला 'अन-नमीक़तुल अनक़ा' की पहली फ़सल के आख़िर के हाशियों में ज़िक्र किया है। (त)

और सही यह है कि वह रंगीन (ज़ी-लौन) है, यही इमाम फ़ख़र राज़ी वगैरह का मानना है जो फ़ुक़हा के कलाम, आब-ए-कसीर और आब-ए-मुतलक़ वगैरह के मसलों के अनुकूल है।

---

1. हाशिया सफ़ती अल-मुक़द्दमतुल अश्माविय्याह।
2. शरह अल-मवाक़िफ़, अल-मरसदुर राबे फ़ी उलूमित दरूरियाह, मतबअतुल सहादह मिस्र, 1/143.

पृष्ठ 236/756

اقول: کان (1) علیه ان یقول یتلون بلون ما یخالطه فان بعد الجملة الاخیرة غنی عن البیان ولذا قال محشیه السفطی المالکی انه لکونه شفافا یظهر فیه لون انائه فاذا وضع فی اناء اخضر فالخضرة لم تقم بالماء وانما هو لرقته لا یحجب لون الاناء ج1 اهـ میں کہتا ہوں کہ ان پر لازم تھا کہ وہ یوں تعریف کرتے کہ اس میں ملنے والی چیز سے رنگدار ہوتا ہے کیونکہ آخری جملہ بیان کا محتاج رہتا ہے اسی لئے اس کے محشی سفطی مالکی نے کہا ہے کہ شفاف ہونے کی وجہ سے برتن کا رنگ اس میں ظاہر ہوتا ہے جب سبز برتن میں ڈالیں اور سبزی پانی کو نہیں لگتی بلکہ وہ رقت کی بنا پر برتن کے رنگ کیلئے حاجب نہیں بنتا اھـ (ت)

اقول: و (2) وقع فی صدر شرح المواقف بحث العلم بالحس الثلج مرکب من اجزاء شفافة لالهنا لها وهی الاجزاء المائیة الرشیة 2اهـ وهو ظاهر فی نفی اللون عن الماء فان قلت منشأ النفی کونها صغیرة جدا فلا یظهر لها لون۔ اقول: کلا الا تری ان البخار یری له لون وما هو الا لون الاجزاء المائیة وهی فیه الطف منها فی الثلج ولذا ینزل ذاك وهذا یعلو والصغیر جدا اذا انفرد لایری فلا یری لونه واذا اجتمعت الصغار بنت ورئ لونها کما فی البخار والدخان بل والهباء کما ذکرناه فی بعض حواشی اواخر الفصل الاول من رسالتنا النمیقة الانقی۔ میں کہتا ہوں کہ شرح مواقف میں علم بالحس کی بحث میں موجود ہے کہ برف شفاف اجزاء سے مرکب ہے اس کا کوئی رنگ نہیں ہے بلکہ وہ پانی کے باریک اجزاء ہیں۔ پانی کے رنگ کی نفی میں یہ عبارت ظاہر ہے۔ اگر تو کہے ہو سکتا ہے کہ اجزاء باریک ہونے کی وجہ سے رنگ ظاہر نہ ہوتا ہو۔ میں کہتا ہوں کہ ایسے ہرگز نہیں، کیونکہ آپ دیکھتے ہیں کہ بادل کے بخارات میں رنگ ظاہر ہوتا ہے اور یہ رنگ پانی کے اجزاء کا رنگ ہیں حالانکہ یہ اجزاء برف کے اجزاء سے زیادہ باریک ہیں۔ یہی وجہ ہے کہ برف اوپر سے گرتی

ہے اور بخارات اوپر کو اٹھتے ہیں اور باریک اگر علیحدہ ہو تو وہ نظر نہیں آتا تو اس کا رنگ کیسے نظر آئے گا اور چھوٹے اجزاء جب جمع ہوں تو نظر آتے ہیں تو ان کا رنگ بھی نظر آئے گا جیسا کہ بخارات اور دھوئیں میں بلکہ ذرات میں ایسا ہے جیسا کہ ہم نے اپنے رسالہ النمیقۃ الانقی کی پہلی فصل کے اواخر کے حواشی میں ذکر کیا ہے۔ (ت)

اور صحیح یہ کہ وہ ذی لون ہے، یہی امام فخر رازی وغیرہ کا مختار ہے جو کلام فقہا مسائل آب کثیر و آب مطلق وغیرہ میں ہے۔

---

1 حاشیہ سفطی علی مقدمۃ عشماویۃ 2 شرح المواقف المرصد الرابع فی علوم الضروریۃ مطبعۃ السعادۃ مصر ۱/۱۴۳

Fatawa Razawiyya Volume Three In it, the mention of color is concurrent, and Ibn Majah narrated from Abu Umama al-Bahili (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (may Allah's peace and blessings be upon him) said: "Indeed, water is pure; nothing makes it impure except what overpowers its smell, taste, and color." (1) Verily, water is pure; nothing makes it impure except that thing which prevails over the smell, taste, and color of the water. (T)

In Sunan al-Daraqutni, from Thawban (may Allah be pleased with him), the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) says: "Water is a purifier except for that whose taste, smell, or color has been overpowered." (2) Every water is a purifier except for the one whose taste, smell, and color have been overpowered. (T)

Imam Tahawi narrated through a Mursal (broken chain) narration from Rashid bin Sa'd that the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him and his family) said: "Nothing makes water impure except what overpowers its smell, taste, or color." (3) Nothing makes water impure except that thing which prevails over the color, smell, or taste of the water. (T)

I say: And the actual reality is "So do not reject the wind" (so the arrival of smell will not occur. T). Furthermore, it has been established that for ordinary worldly sight, it is a condition for a visible thing to possess color; rather, things are not visible unless they have color and light. How can water be colorless? Therefore, Ibn Kamal Pasha was certain of its reality as possessing color, as passed just now (as mentioned before. T). Then, there was a difference regarding its (1) color; some said it is white. The learned Yusuf bin Sa'id Silmiel al-Maliki chose this in Hashiya 'Ashmawiyya and presented three arguments for it: First: Observation. Second: The hadith that stated water is whiter than milk. Third: How white frozen ice appears.

Where he said: If you say, what is the color of water that subsists by itself? I say: What is observed in it is whiteness, and what has been narrated in some hadiths in description testifies to it. When asked, if you say what is the color of water found in water itself, I say that the color seen is white, and this is testified to by one of the hadiths.

---

(1) Sunan Ibn Majah, Chapter of water that does not become impure, HM Saeed Company Karachi, p. 40 (2) Sunan al-Daraqutni, Chapter of changed water, Medina Munawwara Hejaz, 1/28 (3) Sharh Ma'ani al-Athar, Chapter of water in which impurity falls, HM Saeed Company Karachi, 1/18 Page 237 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम इसमें रंग का उल्लेख मुतवातिर है और इब्न माजा ने अबू उमामा बाहिली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: इन अल-माअ तहूरुन ला युनजिसुहु इल्ला मा ग़लबा अला रीहिही व तअमिही व लौनिही (1) बेशक पानी पाक है, उसे कोई चीज़ नापाक नहीं बनाती मगर वो चीज़ जो पानी की बू, ज़ायक़े और रंग पर ग़ालिब आ जाए। (त)

सुनन दारक़ुतनी में सौबान (रज़ियल्लाहु अन्हु) से है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: अल-माअ तहूरुन इल्ला मा ग़लबा अला तअमिही औ रीहिही औ लौनिही (2) हर पानी पाक करने वाला है सिवाय उसके जिसके ज़ायक़े बू और रंग मगलूब हो चुके हों। (त)

इमाम तहावी मुरसल राशिद बिन साद से रावी हैं कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व आलीही वसल्लम) ने फ़रमाया: अल-माअ ला युनजिसुहु शैउन इल्ला मा ग़लबा अला रीहिही औ तअमिही औ लौनिही (3) पानी को कोई चीज़ नापाक नहीं बनाती मगर वो चीज़ जो पानी के रंग, बू या ज़ायक़े पर ग़ालिब हो जाए। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): और असल हक़ीक़त है फ़ला तुरद्दा लिर-रीह (तो बू का आना न होगा। त) इसके साथ यह तय हो चुका है कि दुनियावी आम आँखों के लिए देखने वाली चीज़ का रंगदार होना शर्त है, बल्कि चीज़ दिखाई नहीं देती जब तक कि उसमें रंग और रोशनी न हो। पानी बेरंग कैसे हो सकता है? इसलिए इब्न कमाल पाशा ने इसके हक़ीक़तन रंगदार होने पर यक़ीन ज़ाहिर किया, जैसा कि अभी गुज़रा (त)। फिर उसके(1) रंग में इख़्तिलाफ़ हुआ, कुछ ने कहा सफ़ेद है। फ़ाज़िल यूसुफ बिन सईद सिलमैल मालिकी ने हाशियह अश्मावियह में यही इख़्तियार किया और इस पर तीन दलीलें लाए: अव्वल: मुशाहिदा (देखना)। दोयम: हदीस कि पानी को दूध से ज़्यादा सफ़ेद फ़रमाया। सोयम: बर्फ़ जम कर कैसी सफ़ेद नज़र आती है।

हैसु क़ाल फ़इन क़ुलता मा लौन अल-माइल्लज़ी हुवा क़ाइमुन बिज़ातिहि क़ुलत अल-मुशाहदु फ़ीहि अल-बयाज़ु व यश्हदु लहू मा वरदा फ़ी बअज़िल अहादीसि फ़ी वस्फ़िहि जब कहा कि अगर तू कहे कि पानी का रंग जो पानी में पाया जाता है वो क्या है, तो मैं कहता हूँ कि जो रंग नज़र आता है वो सफ़ेद है और इसकी शहादत उस एक हदीस से मिलती है।

(1) सुनन इब्न माजा, बाब अल-माउल्लज़ी ला युनजिसु, एच एम सईद कंपनी कराची, पृ. 40 (2) सुनन दारक़ुतनी, बाब अल-माउल मुतग़य्यर, मदीना मुनव्वरा हिजाज़, 1/28 (3) शरह मआनी अल-आसार, बाब अल-माउ यक़उ फ़ीहिन नजासतु, एच एम सईद कंपनी कराची, 1/18 पेज 237/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم میں ذکر لون متواتر ہے اور ابن ماجہ نے ابو امامہ باہلی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: ان الماء طھور لا ینجسہ الا ما غلب علی ریحہ و طعمہ و لونہ(۱)۔ بے شک پانی پاک ہے اسے کوئی چیز نجس نہیں بناتی مگر وہ چیز جو پانی کی بو اور ذائقہ اور رنگ پر غالب ہو جائے۔(ت)

سنن دار قطنی میں ثوبان رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ہے نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: الماء طھور الا ما غلب علی طعمہ او ریحہ اولونہ(۲)۔ ہر پانی پاک کرنے والا ہے ماسوائے اس کے جس کے ذائقہ، بُو اور رنگ مغلوب ہو چکے ہوں۔ (ت)

امام طحاوی مرسل راشد بن سعد سے راوی نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا: الماء لا ینجسہ شئ الا ما غلب علی ریحہ او طعمہ او لونہ(۳)۔ پانی کو کوئی چیز نجس نہیں بناتی مگر وہ چیز جو پانی کے رنگ، بُو یا ذائقہ پر غالب ہو جائے۔ (ت)

اقول: اور اصل حقیقت ہے فلا تردا للریح (تو ریح کا ورود نہ ہو گا۔ت) معہذا مقرر ہو چکا کہ ابصار عادی دنیاوی کیلئے مرئی کا ذی لون ہونا شرط ہے بلکہ مرئی نہیں مگر لون وضیا تو پانی بے لون کیونکر ہو سکتا ہے ولہذا ابن کمال پاشا نے اُس کے حقیقۃً ذی لون ہونے پر جزم کیا کما مر انفاً (جیسا کہ ابھی گزرا۔ت) پھر اُس (۱) کے رنگ میں اختلاف ہوا بعض نے کہا سپید ہے فاضل یوسف بن سعید سلمیل مالکی نے حاشیہ عشماویہ میں یہی اختیار کیا اور اس پر تین دلیلیں لائے: اول: مشاہدہ۔ دوم: حدیث کہ پانی کو دودھ سے زیادہ سپید فرمایا۔ سوم: برف جم کر کیسا سپید نظر آتا ہے۔

حیث قال فان قلت ما لون الماء الذی هو قائم بذاته قلت المشاهد فیه البیاض ویشهد له ما ورد في بعض الاحادیث في وصف جب کہا اگر تو کہے کہ پانی کا رنگ جو پانی میں پایا جاتا ہے وہ کیا ہے، تو میں کہتا ہوں کہ جو رنگ نظر آتا ہے وہ سفید ہے اور اس کی شہادت اس ایک حدیث

---

(۱) سنن ابن ماجہ باب الماء الذی لا ینجس ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۴۰ (۲) سنن الدار قطنی باب الماء المتغیر مدینہ منورہ حجاز ۱/ ۲۸ (۳) شرح معانی الاثار باب الماء یقع فیہ النجاسة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۸ Page 237 of 756

[Box 1] (Arabic) Water is whiter than milk, and what indicates that water is white is the observation of whiteness in snow when it freezes and forms on the surface of the earth. (Urdu Translation) It is also found [in descriptions] where water's attribute is stated to be whiter than milk. This fact is also supported by the observation that when water freezes and falls as snow on the ground, its color appears intensely white. (T)

I say, firstly: undoubtedly, observation testifies that it [water] is not white; hence, 'aqueous' (water-colored) is used for a color that leans towards bluishness. Secondly: If a part of a white cloth is washed, as long as it is not dry, its color remains blackish; what is this if not the color of water? Thirdly: Milk in which a lot of water is mixed does not remain white but takes on a bluish tinge. Fourthly: The Black, Green, and Red Seas are famous, and their colors are well-known. 'Aswad' (black) means darkness, and greenness is also a form of light darkness; hence the sky is called 'Khidr' and the 'Green Firmament', and downy hair on the face is called 'Sabzah' (greenery). A dusky complexion is called 'Hasan-e-Sabz' (green beauty), and redness is also close to blackness; if heat acts upon it intensely, it turns black, just as blood turns black after drying. In deep redness, there is actually a hint of blackness; grapes turn green, then red, and then black. Fifthly: The blessed Hadith regarding the pure Pond of Kausar.

[Box 2] (Arabic) May Allah Almighty grant us a drink from it through His favor and compassion, and the generosity of His Beloved and the distributor of His blessings, peace and blessings of Allah be upon him, his family, companions, and his Ummah, Amen. (Urdu Translation) May Allah Almighty, by His grace and kindness and for the sake of His Beloved and the distributor of blessings, peace and blessings of Allah be upon him, his family, companions, and Ummah, quench our thirst from the Pond of Kausar. Amen. (T)

It does not necessarily follow from this that water is absolutely white. In the same Hadith, its fragrance is stated to be better than musk. It is narrated in the Sahihayn from Abdullah bin Amr bin al-Aas (may Allah be pleased with them both) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

[Box 3] (Arabic) My Pond is a month's journey across, its water is whiter than milk and its fragrance is better than musk. (Urdu Translation) My Pond spans a month's journey; its water is whiter than milk and its fragrance is better than musk.

1. Hashiyah Muqaddimah 'Uthmawiyyah
2. Jami' al-Bukhari, Kitab al-Hawdh, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/474

[बॉक्स 1] (अरबी) पानी का दूध से अधिक सफेद होना इस तथ्य से भी प्रमाणित होता है कि जब पानी जमकर बर्फ के रूप में जमीन पर गिरता है, तो उसका रंग अत्यंत सफेद दिखाई देता है। (उर्दू अनुवाद) यह [विवरणों में] भी मिलता है जहाँ पानी की विशेषता के बारे में कहा गया है कि वह दूध से अधिक सफेद है, और इस वास्तविकता पर यह बात भी संकेत करती है कि जब पानी जमकर बर्फ के रूप में जमीन पर गिरता है, तो उसका रंग अत्यंत सफेद नजर आता है। (त)

मैं कहता हूँ, प्रथम: निस्संदेह, अवलोकन गवाही देता है कि वह [पानी] सफेद नहीं है; इसीलिए 'आबी' (जलीय/पानी जैसा) उस रंग को कहते हैं जो नीलेपन की ओर झुका हो। द्वितीय: यदि सफेद कपड़े का कोई हिस्सा धोया जाए, तो जब तक वह सूख न जाए, उसका रंग कालापन लिए रहता है; यदि यह पानी का रंग नहीं है तो और क्या है? तृतीय: दूध जिसमें अधिक पानी मिला हो, वह सफेद नहीं रहता बल्कि नीलिमा लिए होता है। चतुर्थ: काला, हरा और लाल सागर प्रसिद्ध हैं, और इसी तरह उनके रंग भी प्रसिद्ध हैं। 'अस्वद' (काला) का अर्थ कालापन/अंधेरा है और हरापन भी हल्का कालापन ही है; इसलिए आकाश को 'ख़िज़्र' और 'चर्खे अख़ज़र' (हरा आकाश) कहते हैं और चेहरे के रोओं को 'सबज़ा' (हरियाली)। सांवली रंगत को 'हुस्न-ए-सबज़' (हरा सौंदर्य) कहा जाता है और लाली भी कालेपन के करीब है; यदि गर्मी अधिक प्रभाव डाले तो वह काला हो जाता है जैसे सूखने के बाद खून। गहरे लाल रंग में वास्तव में कालेपन की झलक होती है; अंगूर पहले हरा, फिर लाल और फिर काला हो जाता है। पंचम: हदीस-ए-मुबारक कौसर-ए-अतहर के बारे में है।

[बॉक्स 2] (अरबी) अल्लाह सर्वशक्तिमान हमें अपने परोपकार और दया से, और अपने प्रिय, अपनी नेमतों के बांटने वाले के सम्मान में, अल्लाह की उन पर और उनके परिवार, साथियों और उम्मत पर शांति और आशीर्वाद हो, इससे तृप्त करे। आमीन। (उर्दू अनुवाद) अल्लाह तआला अपने एहसान और मेहरबानी और अपने हबीब और कासिम-ए-नेमत (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम) और उनके आल व असहाब और उम्मत पर करम से हमें हौज-ए-कौसर से सैराब फरमाए। आमीन। (त)

इससे यह अनिवार्य नहीं होता कि पानी का रंग पूर्णतः सफेद हो। उसी हदीस में इसकी खुशबू को कस्तूरी (मुश्क) से बेहतर बताया गया है। सहीहैन में हज़रत अब्दुल्ला बिन अमर बिन आस (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया:

[बॉक्स 3] (अरबी) मेरा हौज एक महीने की यात्रा के बराबर चौड़ा है, उसका पानी दूध से अधिक सफेद है और उसकी खुशबू कस्तूरी से बेहतर है। (उर्दू अनुवाद) मेरा हौज एक महीने के रास्ते तक है; उसका पानी दूध से अधिक सफेद है और उसकी खुशबू कस्तूरी से बेहतर।

---

1. हाशिया मुकद्दमा उस्माविया
2. जामे अल-बुखारी, किताब अल-हौज, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/474

[باکس 1] (عربی) الماء من کونہ اشد بیاضاً من اللبن و مما یدل علی ان الماء لونہ ابیض مشاھدۃ البیاض في الثلج حین جمودہ وانعقادہ علی وجہ الارض اھ (اردو) سے بھی ملتی ہے جس میں پانی کی صفت میں کہا گیا ہے کہ وہ دودھ سے زیادہ سفید ہے اور اس حقیقت پر یہ بات بھی دلالت کرتی ہے کہ پانی جم کر جب برف کی صورت زمین پر گرتا ہے تو اس کا رنگ انتہائی سفید نظر آتا ہے اھ (ت)

اقول، اولاً: بلالکہ (1) مشاہدہ شاہد کہ وہ سپید نہیں ولہذا آبی اُس رنگ کو کہتے ہیں کہ نیلگونی کی طرف مائل ہو۔ ثانیاً: سپید (۲) کپڑے کا کوئی حصہ دھویا جائے جب تک خشک نہ ہو اس کا رنگ سیاہی مائل رہے گا، یہ پانی کا رنگ نہیں تو کیا ہے۔ ثالثاً: دودھ (۳) جس میں پانی زیادہ ملا ہو سپید نہیں رہتا نیلا ہٹ لے آتا ہے۔ رابعاً: بحر (۴) اسود و اخضر و احمر مشہور، اور اسی طرح ان کے رنگ مشہور ہیں اسود تو سیاہی ہے اور سبزی بھی ہلکی سیاہی ولہذا آسمان کو خضر اور چرخ اخضر کہتے ہیں اور خط کو سبزہ۔ سانولی رنگت کو حسن سبز اور سرخی بھی قریب سواد ہے اگر حرارت زیادہ عمل کرے سیاہ ہو جائے جس طرح بعد خشکی خون۔ گہری سرخی میں بالفعل سیاہی کی جھلک ہوتی ہے انگور سبز پھر سُرخ پھر سیاہ ہو جاتا ہے۔ خامساً: حدیثؐ مبارک درباره کوثر اطہر ہے۔

[باکس 2] (عربی) سقانا اللہ تعالی منہ بمنہ ورأفتہ، وکرم حبیبہ وقاسم نعمتہ، صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وعلی آلہ وصحبہ وامتہ، آمین۔ (اردو) اللہ تعالیٰ اپنے احسان اور مہربانی اور اپنے حبیب اور قاسم نعمت صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم اور آپ کے آل و اصحاب اور اُمت پر کرم سے ہمیں حوضِ کوثر سے سیراب فرمائے۔ آمین۔ (ت)

اس سے یہ لازم نہیں آتا کہ مطلق پانی کا رنگ سپید ہو، اسی حدیثؐ میں اس کی خوشبو مشک سے بہتر فرمائی۔ صحیحین میں عبداللہ بن عمرو بن عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[باکس 3] (عربی) حوضي مسيرة شهر ماؤه ابيض من اللبن و ريحہ اطيب من المسك 2۔ (اردو) میرا حوض ایک مہینے کی راہ تک ہے اس کا پانی دودھ سے زیادہ سپید ہے اور اس کی خوشبو مشک سے بہتر۔

---

1 حاشية مقدمة عثماوية 2 جامع البخاری کتاب الحوض قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۷۴/۲

Fatawa Rizvia, Volume 3

And in another narration, it is said: "Whiter than silver" (Abyaz min al-waraq), meaning brighter than silver. Although water originally has no smell, it is mentioned in the annotation of Fazil Safati two pages later: "His statement 'or its smell', Ibn Kamal Pasha said it is necessary to interpret the statement 'the smell of water changed' metaphorically because water does not have an inherent smell, so what is meant is a smell that occurs to it. Our teacher Al-Amir mentioned this (end). And we have already let you hear the text of Al-Allamah Al-Wazir." Ibn Kamal Pasha said that it is necessary to consider the statement about the changing of water's smell as metaphorical because water does not have its own inherent smell; therefore, that smell is referred to which overcomes the water. Our teacher Amir Sahib did not mention this, although we have shown you the clarification by Al-Allama Wazir. (T) Its opposite is Hell, and seek refuge with Allah Almighty from it, whose fire is black like a dark night. Malik and Bayhaqi narrate from Abu Huraira (Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Do you see it as red like this fire of yours? It is surely blacker than tar." From this, it does not necessarily follow that the original color of fire is black or that every fire is like that; the Hadith itself states not to consider it red like this fire. Sixthly: The emergence of a new color after solidification is not evidence that it is its original color. Blood turns black upon drying, and the red moisture of fish turns white. From this, it is argued that it is not blood. Seventhly: Air is being illuminated by light; when it enters a transparent body, a faint light is produced there due to it being transparent and shiny, from which whiteness appears. For example, if you grind pearls, glass, or crystal finely, the light will enter between the fine particles. Due to the precision of the separation, there will be no distinction between those fine particles and the light between them, and a color that is lighter than sunlight and brighter than their original color will be felt. This is the whiteness and brilliance that appears in them. Similarly, [in the waves] of the river...

---

1. Hashiya Fazil Safati.
2. Muwatta Imam Malik, Chapter: What has been narrated regarding the description of Hell, Mir Muhammad Kutub Khana, Karachi, p. 733. Page 239 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

और दूसरी रिवायत में फ़रमाया: "चांदी से बढ़कर उजला" (अबीज़ मिनल वरक)। हालाँकि पानी असल में कोई बू (गंध) नहीं रखता, खुद हाशिया फाजिल सफ़ती में दो वरक़ बाद है: "उनका कौल 'या उसकी बू', इब्न कमाल पाशा ने कहा कि पानी की बू बदलने वाले कौल में मिजाज़ (लाक्षणिक अर्थ) मानना ज़रूरी है क्योंकि पानी की अपनी कोई बू नहीं होती, लिहाज़ा इस कौल से वो बू मुराद होती है जो पानी पर तारी होती है। हमारे शैख़ अमीर साहब ने यह नहीं बताया हालाँकि हमने आपको अल्लामा वज़ीर साहब की तसरीह (स्पष्टीकरण) बता दी है।" इब्न कमाल पाशा ने कहा कि पानी की बू बदलने वाले कथन में रूपक मानना आवश्यक है क्योंकि पानी की अपनी कोई गंध नहीं होती है, इसलिए उस गंध का मतलब वह गंध है जो पानी पर हावी हो जाती है। हमारे गुरु अमीर साहब ने यह नहीं बताया, हालांकि हमने आपको अल्लामा वज़ीर साहब का स्पष्टीकरण सुना दिया है। (त) इसकी ज़िद जहन्नुम है, अल्लाह तआला की उससे पनाह, जिसकी आग अंधेरी रात की तरह काली है। मालिक और बैहक़ी अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रावी हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "क्या तुम उसे अपनी इस आग की तरह सुर्ख समझते हो? बेशक वह तो तारकोल से बढ़कर सियाह (काली) है।" इससे यह लाज़िम नहीं आता कि आग का असल रंग सियाह हो या हर आग ऐसी ही हो, खुद हदीस का इरशाद है कि उसे इस आग सा सुर्ख न जानो। छठा: जमने के बाद किसी नए रंग का पैदा होना इस पर दलील नहीं कि यह उसका असली रंग है। सूखने पर खून सियाह हो जाता है और मछली की सुर्ख रुतूबत (नमी) सफेद। इसी से उस पर इस्तिदलाल (तर्क) किया गया कि वह खून नहीं। सातवां: हवा रौशनी से मुस्तनीर (प्रकाशित) हो रही है; जब जिस्म-ए-शफ़्फ़ाफ़ (पारदर्शी शरीर) के अंदर दाख़िल होती है तो उसके शफ़्फ़ाफ़ और चमकदार होने से वहां एक हल्की रौशनी पैदा होती है जिससे सफेदी नज़र आती है। जैसे मोती या शीशे या बिल्लौर को खूब पीसें तो अज्ज़ा (कण) बारीक हो जाने से ज़िया (रौशनी) उनके माबैन (बीच) दाख़िल होगी और दक़्त-ए-फस्ल (बारीक अलगाव) के बाइस उन बारीक-बारीक अज्ज़ा और उनमें हर दो के बीच में अज्ज़ा-ए-ज़िया का इम्तियाज़ न होगा और एक रंग जो धूप से मैला और उनके असली रंग से उजला है महसूस होगा। यह वह सफेदी व बराक़ी (चमक) है जो उनमें नज़र आती है। यूँ ही दरिया के..

---

1. हाशिया फाजिल सफ़ती।

2. मुअत्ता इमाम मालिक, जहन्नुम के गुणों के बारे में जो वर्णन आया है, मीर मोहम्मद कुतुब खाना, कराची, पृ. 733। पृष्ठ 239/756

اور دوسری روایت میں فرمایا: ابیض من الورق چاندی سے بڑھ کر اجلا۔ حالانکہ پانی اصلاً بو نہیں رکھتا، خود حاشیہ فاضل سفطی میں دو ورق بعد ہے: قولہ او ریحہ قال ابن کمال باشا لابد من التجوز فی قولھم تغیر ریح الماء لان الماء لیس لہ رائحۃ ذاتیۃ فالمراد طرافیہ ریح لم یکن افادہ شیخنا الامیر ۱ اھ۔ وقد اسمعناك نص العلامۃ الوزیر۔ ابن کمال پاشا نے کہا، پانی کی بو بدلنے والے قول میں مجاز ماننا ضروری ہے کیونکہ اس کی اپنی کوئی بو نہیں ہے لہٰذا اس قول سے وہ بو مراد ہوتی ہے جو پانی پر طاری ہوتی ہے۔ ہمارے شیخ امیر صاحب نے یہ نہیں بتایا حالانکہ ہم نے آپ کو علامہ وزیر صاحب کی تصریح بتادی ہے۔ (ت) اس کی ضد جہنم ہے والعیاذ باللہ تعالٰی منہا جس کی آگ اندھیری رات کی طرح کالی ہے مالک و بیہقی ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: اترونھا حمراء کنارکم ھذہ لھی اشد سواد من القار2 ۔ کیا تم اُسے اپنی اس آگ کی طرح سرخ سمجھتے ہو بے شک وہ تو تار کول سے بڑھ کر سیاہ ہے۔ اس سے یہ لازم نہیں آتا کہ آگ کا اصل رنگ سیاہ ہو یا ہر آگ ایسی ہی ہو خود حدیث کا ارشاد ہے کہ اسے اس آگ سا سرخ نہ جانو۔ سادساً: بعد انجماد ۲ کوئی نیا رنگ پیدا ہونا اس پر دلیل نہیں کہ یہ اُس کا اصلی رنگ ہے خشک ہونے پر خون سیاہ ہو جاتا ہے اور مچھلی کی سرخ رطوبت سپید۔ اسی سے اُس پر استدلال کیا گیا کہ وہ خون نہیں۔ سابعاً: ہوا کہ ضیا سے ۳ مستیز ہو رہی ہے جب جسم شفاف کے اندر داخل ہوتی ہے اُس کے شفاف اور اس کے چمکدار ہونے سے وہاں ایک ہلکی روشنی پیدا ہوتی ہے جس سے سپیدی نظر آتی ہے جیسے موتی یا شیشے یا بلور کو خوب پیسیں تو اجزاء باریک ہو جانے سے ضیا اُن کے مابین داخل ہوگی اور دقتِ فصل کے باعث اُن باریک باریک اجزاء اور اُن میں ہر دو کے بیچ میں اجزائے ضیا کا امتیاز نہ ہوگا اور

ایک رنگ کہ دھوپ سے میلا اور اُن کے اصلی رنگ سے اُجلا ہے محسوس ہوگا یہ وہ سپیدی و براقی ہے کہ اُن میں نظر آتی ہے یوں ہی ۵ دریا کے

---

1 حاشیہ فاضل سفطی 2 موطا امام مالک ما جاء فی صفۃ جہنم میر محمد کتب خانہ کراچی ص

Fatawa Razawiya Volume 3 ...foam, or even urine, although it is certainly not white; its whiteness is due to disease. Rather, if a crack appears in a mirror[1], whiteness will be perceived there because it has become reflective and [light] has entered the depth. This is the same reason[2] for frozen dew appearing white; it is transparent, and air has entered its fine and shiny particles. Eighthly: [3]It is a rule of transparent bodies that rays fall on them and return. Therefore, in a mirror, the image of oneself and the things behind one appears because it has reflected the visual rays. Upon returning, whatever the gaze fell upon became visible. It is imagined that those forms are in the mirror, whereas they are in their own places; the gaze saw them while returning. Therefore, [5]in a mirror, the right side appears as the left and the left as the right. [6]Therefore, however far an object is from the mirror, it appears that far away, even if the distance is a hundred yards, whereas the thickness of the mirror is only as much as a barleycorn. The reason is the same: the returning gaze travels that same distance to reach it. Now, these fine, adjacent particles of snow, being transparent, reflect the rays of vision. The beams of returning rays shined on them, creating a sunlight-like state, just as when the sun shines on water or a mirror, its reflection on the wall appears brilliantly white. This is also the cause of a mirage appearing from afar in intense sunlight on [8]saline ground. It looks like shimmering, moving water because polished transparent particles are spread far in that land. Visual rays fall on them and return, and it is a rule of [9]rays that they tremble upon return, just as when the sun shines on a mirror, its reflection on a wall appears shimmering. And the angles of the rays here were small because their legs are long, as the mirage is imagined from afar. The hypotenuse is the same distance from the observer's foot to the eye. The further the legs meet on a small hypotenuse, the [10]smaller the angle formed. And the [11]angles of reflection are always equal to the angles of incidence. The visual rays return at the same angles they went out at. Due to the combination of these two factors, the gaze that fell on distant polished particles returned shimmering, trembling at small angles close to the ground. Thus, shimmering moving water was imagined there. And Allah Almighty knows best. I say: This is one way, and if a condition[12] is met, we have chosen the path. | I say this is one way, and if... Note: For example, in triangles Hb, Ab, Hb, Rb, the right angle is common to all. Therefore, the remaining two angles of each are equal to one right angle. But the angles HAb, AAb, HAb, RAb have increased sequentially as each first one is a part of the second. Thus, it is necessary that angles H, A, H, R become smaller to that extent, as each completes its angle up to a right angle. The complement of a small [angle]

will be large, and that of a large one will be small. 12 Minhu Ghafara Lahu (M) Page 240 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरा ...झाग, बल्कि पेशाब के भी हालांकि वो यक़ीनन सफ़ेद नहीं उसकी सफ़ेदी तो मर्ज़ है बल्कि आईना[1] में अगर दरज़ पड़ जाए वहाँ सफ़ेदी मालूम होगी कि अब ताबंदा हुआ उमक़ में दाख़िल हुई यही वजह[2] जमी हुई ओस के सफ़ेद नज़र आने की है कि शफ़्फ़ाफ़ है और अज्ज़ा-ए-बारीक और चमकदार हवा दाख़िल। आठवाँ: [3]शफ़ीफ़ अजरम का क़ादा है कि शुआएँ उन पर पड़ कर वापस होती हैं लिहाज़ा आईना में अपनी और अपने पस-ए-पुश्त चीज़ों की सूरत नज़र आती है कि उसने अशआ-ए-बसर को वापस पलटाया वापसी में निगाह जिस जिस चीज़ पर पड़ी नज़र आई गुमान होता है कि वो सूरतें आईने में हैं हालांकि वो अपनी जगह हैं निगाह ने पलटने में उन्हें देखा है लिहाज़ा [5]आईने में दयनी जानिब बाईं मालूम होती है और बाईं दयनी लिहाज़ा [6]शै आईने से जितनी दूर हो उसी क़दर दूर दिखाई देती है अगरचे सौ गज़ फासला हो हालांकि आईना का डल जो भर है सबब वही है कि पलटती निगाह उतना ही फासला तय करके उस तक पहुँचती है अब बर्फ़ के ये बारीक बारीक मुत्तसिल अज्ज़ा कि शफ़्फ़ाफ़ हैं नज़र की शुआओं को उन्होंने वापस दिया पलटती शुआओं की किरणें उन पर चमकीं और धूप की सी हालत पैदा की जैसे पानी या आईने पर आफ़ताब चमके उसका अक्स दीवार पर कैसा सफ़ेद बुर्राक़ नज़र आता है ज़मीन-ए-[8]शोर में धूप की शिद्दत में दूर से सराब नज़र आने का भी यही बाइस है खूब चमकता जुम्बिश करता पानी दिखाई देता है कि उस ज़मीन में अज्ज़ा-ए-सक़ीला शफ़्फ़ाफ़ा दूर तक फैले होते हैं निगाह की शुआएँ उन पर पड़ कर वापस हुईं और शुआ [9]का क़ादा है कि वापसी में लरज़ती है जैसे आईने पर आफ़ताब चमके दीवार पर उसका अक्स झलझल करता नज़र आता है और शुआओं के ज़ाविए यहाँ छोटे थे कि उनकी साक़ें तवील हैं कि सराब दूर ही से मुतख़य्यल होता है और वतर उसी क़दर है जो नाज़िर के क़दम से आँख तक है और छोटे वतर पर साक़ें जितनी ज़्यादा दूर जाकर मिलेंगी ज़ाविया [10]खुर्दतर बनेगा और ज़वाया-ए-[11]इनइकास हमेशा ज़वाया-ए-शुआ के बराबर होते हैं अशआ-ए-बसरिया इतने ही ज़ावियों पर पलटती हैं जितनों पर गई थीं इन दोनों अम्र के इजतिमा से निगाहें कि अज्ज़ा-ए-बईदा सक़ीला पर पड़ी थीं लरज़ती झलझल करती छोटे ज़ावियों पर ज़मीन से मिली मिली पलटीं लिहाज़ा वहाँ चमकदार पानी जुम्बिश करता मुतख़य्यल हुआ वल्लाहु तआला आलम। अक़ूल: हाज़ा तरीक़ुन व इन शुरित शर्तु[12] अखतरना तरीक़ा | मैं कहता हूँ ये एक रास्ता है, और अगर अनु: मिसाल के तौर पर H B, A 'A B, A H B, A R B मुसल्लसों (त्रिभुजों) में ज़ाविया क़ाइमा (समकोण) और सब में मुश्तरक है तो हर एक के बाक़ी दो ज़ाविए एक क़ाइमा के बराबर हैं लेकिन ज़ाविया-ए-H A B, 'A A B, H A B, R A B बिल-तर्तीब बढ़ते गए हैं कि हर पहला दूसरे का जुज़ है तो वाजिब कि ज़ाविए H, 'A, H, R

इसी क़दर छोटे होते जाएँ कि हर एक अपने ज़ाविया का क़ाइम तक तमाम है छोटे का तमाम बड़ा होगा बड़े का छोटा। १२ मिन्हु ग़फ़रा लहू (म) पेज 240 of 756

فتاوی رضویہ جلد سوم جھاگ بلکہ پیشاب کے بھی حالانکہ وہ یقیناً سپید نہیں اس کی سپیدی تو مرض ہے بلکہ آئینہ۱ میں اگر درز پڑ جائے وہاں سپیدی معلوم ہوگی کہ اب تابندہ ہوا عمق میں داخل ہوئی یہی وجہ۲ جمی ہوئی اوس کے سپید نظر آنے کی ہے کہ شفاف ہے اور اجزاء باریک اور چمکدار ہوا داخل۔ ثامناً: ۳شفیف اجرام کا قاعدہ ہے کہ شعاعیں ان پر پڑ کر واپس ہوتی ہیں ولہذا آئینہ میں اپنی اور اپنے پس پشت چیزوں کی صورت نظر آتی ہے کہ اس نے اشعہ بصر کو واپس پلٹایا واپسی میں نگاہ جس جس چیز پر پڑی نظر آئی گمان ہوتا ہے کہ وہ صورتیں آئینے میں ہیں حالانکہ وہ اپنی جگہ ہیں نگاہ نے پلٹے میں انہیں دیکھا ہے ولہذا ۵آئیے میں دہنی جانب بائیں معلوم ہوتی ہے اور بائیں دہنی ۶ولہذا شے آئینے سے جتنی دور ہو اُسی قدر دُور دکھائی دیتی ہے اگرچہ سو گز فاصلہ ہو حالانکہ آئینہ کا ڈل جو بھر ہے سبب وہی ہے کہ پلٹتی نگاہ اتنا ہی فاصلہ طے کر کے اس تک پہنچتی ہے اب برف کے یہ باریک باریک متصل اجزا کہ شفاف ہیں نظر کی شعاعوں کو انہوں نے واپس دیا پلٹتی شعاعوں کی کرنیں ان پر چمکیں اور دھوپ کی سی حالت پیدا کی جیسے پانی یا آئینے پر آفتاب چمکے اس کا عکس دیوار پر کیسا سفید براق نظر آتا ہے زمین ۸ شور میں دھوپ کی شدت میں دور سے سراب نظر آنے کا بھی یہی باعث ہے خوب چمکتا جنبش کرتا پانی دکھائی دیتا ہے کہ اس زمین میں اجزائے صقیلہ شفافہ دُور تک پھیلے ہوتے ہیں نگاہ کی شعاعیں ان پر پڑ کر واپس ہوئیں اور شعاع ۹ کا قاعدہ ہے کہ واپسی میں لرزتی ہے جیسے آئینے پر آفتاب چمکے دیوار پر اس کا عکس جھل جھل کرتا نظر آتا ہے اور شعاعوں کے زاویے یہاں چھوٹے تھے کہ ان کی ساقیں طویل ہیں کہ سراب دور ہی سے متخیل ہوتا ہے اور وتر اسی قدر ہے جو ناظر کے قدم سے آنکھ تک ہے اور چھوٹے وتر پر ساقیں جتنی زیادہ دور جا کر ملیں گی زاویہ ۱۰ خورد تر بنے گا اور زوایائے ۱۱انعکاس ہمیشہ زوایائے شعاع کی برابر ہوتے ہیں اشعہ بصریہ

اتنے ہی زاویوں پر پلٹتی ہیں جتنیوں پر گئی تھیں ان دونوں امر کے اجتماع سے نگاہیں کہ اجزائے بعیدہ صقیلہ پر پڑی تھیں لرزتی جھل جھل کرتی چھوٹے زاویوں پر زمین سے ملی ملی پلٹیں لہذا وہاں چمکدار پانی جنبش کرتا متخیل ہوا واللہ تعالیٰ اعلم۔ اقول: ہذا طریق وان شرط۱۲ شرط اخترنا طریق | میں کہتا ہوں یہ ایک راستہ ہے، اور اگر عہ: مثلا ح ب۔ ا ع ب۔ ا ہ ب۔ ا ر ب مثلثوں میں زاویہ قائمہ اور سب میں مشترک ہے تو ہر ایک کے باقی دو زاویے ایک قائمہ کے برابر ہیں لیکن زوایائے ح ا ب۔ ع ا ب۔ ح ا ب۔ ر ا ب علی الترتیب بڑھتے گئے ہیں کہ ہر پہلا دوسرے کا جز ہے تو واجب کہ زوایائے ح۔ ع۔ ہ۔ ر اسی قدر چھوٹے ہوتے جائیں کہ ہر ایک اپنے زاویہ کا قائم تک تمام ہے چھوٹے کا تمام بڑا ہو گا بڑے کا چھوٹا ۱۲ منہ غفر لہ (م) Page 240 of 756

Fatawa Rizvia, Volume 3

Al-Adud is the one who said it is the truth and Al-Sayyid approved it, which is the denial of the absence of whiteness in snow, and what was mentioned with it. And the saying that the mixing of luminous air with transparent parts is one of the causes of the occurrence of whiteness, even if there is no temperament (mizaj) followed by the occurrence of color. They both said: "And this is not further than what the philosophers say."

(I say: meaning the foolish among some of the ancients as preceded, followed by Ibn Sina and Ibn Al-Haytham as in 'Tawali' al-Anwar' and 'Sharh al-Tajrid') regarding light being a condition for the occurrence of all colors. For example, if a lamp is taken out of a dark house, the colors of the things in it vanish, and when it is brought back, they become colored with their likenesses, because the restoration of the non-existent is impossible according to them. And there is no doubt that this is further than the occurrence of whiteness in transparent parts by the mixing of air without a temperament. End.

I say: (1) And their saying is rejected (2) by the hadith of Al-Bazzar and Al-Hakim, who authenticated it from Anas (may Allah be pleased with him), from (3) the Prophet (peace be upon him)...

---

1. Sharh al-Tajrid and Tawali' al-Anwar

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

अल-अदुद जिन्होंने कहा कि यह सत्य है और अल-सैय्यद ने इसे स्वीकार किया, जो बर्फ में सफेदी के न होने का खंडन है, और जो उसके साथ उल्लेखित है। और यह कहना कि चमकदार हवा का पारदर्शी भागों के साथ मिलना सफेदी उत्पन्न होने के कारणों में से एक है, भले ही वहां कोई ऐसा स्वभाव (मिज़ाज़) न हो जिसके बाद रंग उत्पन्न हो। उन दोनों ने कहा: "और यह दार्शनिकों की बातों से अधिक दूर नहीं है।"

(मैं कहता हूँ: अर्थात कुछ प्राचीन काल के मूर्ख जैसा कि पहले उल्लेख किया गया, जिनका अनुसरण इब्न सीना और इब्न अल-हैथम ने किया, जैसा कि 'तवालि' अल-अनवार' और 'शराह अल-तजरीद' में है) इस बारे में कि प्रकाश सभी रंगों के उत्पन्न होने के लिए एक शर्त है। उदाहरण के लिए, यदि किसी अंधेरे घर से दीपक बाहर निकाल लिया जाए, तो उसमें मौजूद चीजों के रंग समाप्त हो जाते हैं, और जब उसे वापस लाया जाता है, तो वे अपने समान रंगों से रंगीन हो जाते हैं, क्योंकि उनके अनुसार नष्ट हो चुकी चीज़ का पुनः अस्तित्व में आना असंभव है। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह हवा के मिश्रण से पारदर्शी भागों में बिना किसी मिज़ाज़ के सफेदी उत्पन्न होने से भी अधिक दूर की बात है। समाप्त।

मैं कहता हूँ: (1) और उनकी बात अस्वीकार्य है (2) अल-बज़ार और अल-हाकिम की हदीस के कारण, जिन्होंने इसे हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से प्रमाणित किया है, (3) नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से...

---

1. शराह अल-तजरीद और तवालि' अल-अनवार

العضد الذی قال انه الحق واقره السید وھو منع ان لابیض فی الثلج وما ذکر معه والقول بأن اختلاط الھواء المضیئ بالاجزاء الشفافة احد اسباب حدوث البیاض وان لم یکن ھناک مزاج یتبعه حدوث اللون قالا ولیس ذلک ابعد مما یقوله الحکماء۔ عضد صاحب کا راستہ اختیار کریں جنہوں نے کہا کہ یہ حق ہے اور سید صاحب نے بھی اس کی تائید کی وہ یہ کہ برف میں سفیدی نہ ہونے کا انکار ہے اور اس کے ساتھ مزید یہ قول کہ ہوا کی روشنی شفاف اجزاء میں سفیدی پیدا کرنے کا ایک سبب ہے اگرچہ یہاں کوئی ایسا مزاج نہیں جس کے بعد رنگ پیدا ہوتا ہو ان دونوں نے کہا کہ یہ بات حکماء کے قول سے بعید نہیں ہے۔ (ت)

(اقول: ای السفھاء من بعض القدماء کما قدم وتبعھم ابن سینا والھیثم کما في طوالع الانوار وشرح التجرید) في کون الضوء شرطا لحدوث الالوان کلھا فاذا اخرج المصباح مثلا عن البیت المظلم انتفی الوان الاشیاء التي فیھا واذا اعیدت صارت ملونة بامثالھا لاستحالة اعادة المعدوم عندھم ولا شك ان ھذا ابعد من حدوث البیاض في الاجزاء الشفافة بمخالطة الھواء من غیر مزاج ۱ اھـ (میں کہتا ہوں کہ حکماء سے مراد قدماء میں سے بعض بیوقوف ہیں جیسا کہ پہلے گزر چکا ہے جن کی پیروی ابن سینا اور ابن ہیثم نے کی ہے، جیسا کہ طوالع الانوار اور شرح تجرید ہے) یہ پیروی حکماء کے اس قول میں ہے جس میں حکماء نے تمام رنگوں کے پیدا ہونے میں روشنی کو شرط قرار دیا ہے مثلاً اگر رات کو اندھیرے میں کمرے سے چراغ کو نکال لیا جائے تو کمرے میں موجود تمام رنگ دار چیزوں کا رنگ ختم ہو جائے گا اور جب دوبارہ چراغ کو کمرے میں داخل کیا جائے تو کمرے کی چیزیں پہلے رنگوں کی ہم مثل رنگ دار ہوں گی، یہ اس لئے کہ ان کے نزدیک معدوم ہونے کے بعد کسی چیز کا اعادہ محال ہے (لہٰذا پہلا رنگ دوبارہ عود نہیں کرے گا بلکہ اس کی مثل نیا رنگ

پیدا ہو گا) اور بے شک یہ بات شفاف اجزاء میں ہوا کے ملنے سے کسی مزاج کے بغیر سپید پیدا ہونے سے بھی زیادہ بعید ہے اھ (ت)

اقول: (۱) وقولهم مردود (۲) بحديث البزار والحاكم وصححه عن انس رضي الله تعالى عنه عن (۳) النبي صلى الله عليه وسلم میں کہتا ہوں کہ اُن کا یہ قول مردود ہے ایک حدیث کی بنا پر جس کو بزار اور حاکم نے صحیح طور پر روایت کیا ہے وہ یہ کہ حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے

---

1 شرح التجرید وطوالع الانوار

[Arabic Text]: He said: "The fire of Hell is black and dark." (1) Al-Bayhaqi narrated in 'Al-Ba'th' and Abu al-Qasim al-Isbahani from him said: The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) recited this verse: "Whose fuel is men and stones," and said: "It was lit for a thousand years until it turned red, then for a thousand years until it turned white, then for a thousand years until it turned black. So it is black and dark, its flame does not give light." (2) Tirmidhi, Ibn Majah, and Al-Bayhaqi narrated from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) something similar, and at the end of it: "It is black and dark like a dark night." (3) Tirmidhi considered its 'mawquf' (attributed to a companion) status to be more correct.

[Urdu Translation]: It is narrated from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that he said: "The fire of Hell is extremely black." And Al-Bayhaqi narrated in 'Al-Ba'th', which Abu al-Qasim al-Isbahani narrated from them, that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) recited the noble verse: "Whose fuel is men and stones" (The fuel of Hell is the disbelievers and stones) and regarding it he said: "In Hell, the fire was lit for a thousand years until it turned red, then for a thousand years until it turned white, then for a thousand years until it turned black. Thus, the fire of Hell is extremely black, its flame will not be bright." The same hadith was narrated by Tirmidhi, Ibn Majah, and Al-Bayhaqi from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) but in its final sentence, it says: "That fire is extremely black like a dark night." Tirmidhi stated that the hadith being 'mawquf' is more correct. (T)

[Author's Comment]: I say: In this matter, even a 'mawquf' hadith is like a 'marfu' (attributed to the Prophet) hadith, provided it is not taken from the 'Isra'iliyat' (Judeo-Christian traditions). In this hadith, color has been established for it [Hellfire] along with darkness and absence of light. Therefore, our answer is clear.

[Bottom Section Note]: (Footnote) The Muslims who illuminate [their homes/ mosques] in celebration of the noble birth of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), in the discussion about this in 'Barahin-e-Qatia', this statement of Maulvi Gangohi: "The light which is more than necessary is to show the light of the fire of Hell," is sheer ignorance and boastfulness, and contrary to Sahih Hadiths. While the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says that it is dark like a black night, yet he [Gangohi] perceives light in it. (M)

[Footnotes]: 1. Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Book on the Description of Hell, Mu'assasat al-Risala, Beirut 4/180. 2. Shu'ab al-Iman, Hadith 997, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut 1/289. 3. Jami' al-Tirmidhi, Chapters on the Description of Hell, Amin Company, Kutub Khana Rashidiyah, Delhi 2/83; Sunan Ibn Majah, Chapter on the Description of Fire, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 330.

[अरबी पाठ]: उन्होंने कहा: "जहन्नुम की आग काली और अंधेरी है।" (1) अल-बैहकी ने 'अल-बअथ' में और अबू अल-कासिम अल-असबहानी ने उनसे रिवायत किया कि उन्होंने कहा: अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह आयत पढ़ी: "जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं," और कहा: "इसे एक हज़ार साल तक जलाया गया यहाँ तक कि यह लाल हो गई, फिर एक हज़ार साल तक जलाया गया यहाँ तक कि यह सफेद हो गई, फिर एक हज़ार साल तक यहाँ तक कि यह काली हो गई। तो यह काली और अंधेरी है, इसकी लौ रोशनी नहीं देती।" (2) तिर्मिज़ी, इब्न माजाह और अल-बैहकी ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इसी तरह रिवायत किया है, और इसके अंत में है: "यह काली और अंधेरी है जैसे कोई अंधेरी रात हो।" (3) तिर्मिज़ी ने इसके'मौक़ूफ़' होने को अधिक सही माना है।

[लेखक की टिप्पणी]: मैं कहता हूँ कि इस मामले में यह हदीस मौक़ूफ़ भी मरफ़ूअ की तरह है, बशर्ते कि वह इस्राइलीयात से न ली गई हो। इस हदीस में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अंधेरे और रोशनी के अभाव के साथ उसके लिए रंग साबित किया है। अतः हमारा उत्तर स्पष्ट है।

[निचला अनुभाग नोट]: (फुटनोट) जो मुसलमान हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पवित्र जन्म (ईद मिलादुन नबी) के अवसर पर रोशनी करते हैं, उसके बारे में 'बराहीन-ए-क़ातिआ' में मौलवी गंगोही का यह कथन: "जो रोशनी ज़रूरत से ज़्यादा है वह जहन्नुम की आग की रोशनी दिखाने वाली है," सरासर अज्ञानता और डिंग हांकना है और सही हदीसों के खिलाफ है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं कि वह काली रात की तरह अंधेरी है, लेकिन उन्हें इसमें रोशनी दिखाई दे रही है। (म)

[पाद लेख]: 1. कश्फ़ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़्ज़ार, किताब सिफत जहन्नुम, मुअस्ससात अल-रिसाला, बेरुत 4/180। 2. शुआब अल-ईमान, हदीस 997, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत 1/289। 3. जामिउत तिर्मिज़ी, अबवाब सिफत जहन्नुम, अमीन कंपनी, कुतुब खाना रशीदिया, दिल्ली 2/83; सुनन इब्न माजाह, बाब सिफत अन-नार, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 330।

पृष्ठ 242/756

قال نار جھنم عہ سوداء مظلمة ۱وروی البیہقی فی البعث وابو القاسم الاصبھانی عنہ قال تلا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ہذہ الایۃ وقودھا الناس والحجارۃ فقال اوقد علیھا الف عام حتی احمرت والف عام حتی ابیضت والف عام حتی اسودت فھی سوداء مظلمة لایضیئ لھبھا ۲ و روی الترمذی وابن ماجة والبیھقی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم مثلہ وفی اخرہ فھی سوداء مظلمة کاللیل المظلم ۳ جعل الترمذی وقفہ اصح۔

حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے روایت کیا ہے کہ آپ نے فرمایا کہ جہنم کی آگ انتہائی سیاہ ہے۔ اور بیہقی نے بعث میں روایت کیا جس کو ابوالقاسم اصفہانی نے ان سے روایت کیا کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے آیہ کریمہ وَقُوْدُھَا النَّاسُ وَالْحِجَارَۃُ (جہنم کا ایندھن کافر لوگ اور پتھر ہیں) تلاوت فرمائی اور اس پر آپ نے فرمایا کہ جہنم میں ایک ہزار سال آگ جلائی گئی تو سرخ ہوئی پھر ایک ہزار سال حتی کہ سفید ہوئی پھر ایک ہزار سال حتی کہ سیاہ ہو گئی۔ پس جہنم کی آگ انتہائی سیاہ ہے جس کا شعلہ روشن نہ ہوگا۔ اسی حدیث کو ترمذی، ابن ماجہ اور بیہقی نے ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت کیا لیکن اس کے آخری جملے میں ہے کہ وہ آگ انتہائی سیاہ جیسے اندھیری رات ہے ترمذی نے اس حدیث کے موقوف ہونے کو اصح کہا ہے۔ (ت)

اقول: والوقف فیہ کالرفع اذا لم یکن اخذ عن الاسرائیلیات فقد اثبت لھا اللون مع الظلمة وعدم الضوء (۲) فاذن جوابنا فجر میں کہتا ہوں کہ اس معاملہ میں یہ حدیث موقوف بھی مرفوع کی طرح ہے بشرطیکہ اسرائیلیات سے ماخوذ نہ ہو۔ اس حدیث میں حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے

عہ مسلمان کہ سرورِ ولادت اقدس حضور پُرنور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں روشنی کرتے ہیں اُس کی بحث میں "براہینِ قاطعہ" میں یہ عبارت مولوی گنگوہی کی "جو روشنی زائد از حاجت ہے وہ نارِ جہنم کی روشنی دکھانے والی ہے" محض جہل و گزاف اور احادیث صحیحہ کے خلاف ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تو فرمائیں کہ وہ کالی رات کی طرح اندھیری ہے مگر اس کو اس میں روشنی سوجھی۔ (م)

1 کشف الاستار عن زوائد البزار کتاب صفة جہنم موسسة الرسالة بیروت ۱۸۰/۴ 2 شعب الایمان حدیث ۹۹۷ دار الکتب العلمیہ بیروت ۲۸۹/۱ 3 جامع للترمذی ابواب صفة جہنم امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۸۳/۲، سنن ابن ماجہ باب صفة النار ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۳۳۰

Fatawa Razawiya Volume 3

[Arabic]: It is clearer for proving the whiteness of snow, an occurrence that was not in the water. And Allah the Almighty knows best. | [Urdu]: He affirmed the color for the fire of Hell despite it being dark and non-luminous. So now, for the proof of the whiteness of snow, which was not in water, our answer is clear. (T)

And some have stated the color of water to be black and have brought evidence for this from the Hadith in which the Mother of the Believers Siddiqah (may Allah be pleased with her) said to Hazrat Urwah bin Zubair (may Allah be pleased with both of them):

[Arabic]: "By Allah, O son of my sister, we would look at the crescent moon, then the crescent, then the crescent—three crescents in two months—and no fire was lit in the houses of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). I said: O aunt, then what did you live on? She said: The two black things: dates and water[1]." Reported by the two Sheikhs (Bukhari and Muslim) in their Sahihs from Urwah, from the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her). | [Urdu]: O my nephew, by God, we would see one crescent moon, then the second, then the third—three moons in two months—and no fire would be lit in the homes of Prophethood. Urwah asked, "O aunt, then what did the honorable People of the House eat for months?" She replied, "Only two black things: dried dates and water." (The two Sheikhs narrated in their Sahih collections from Urwah from the Mother of the Believers, may Allah be pleased with her. T)

[Arabic]: I say: This has occurred frequently in the Hadiths and the speech of the Arabs. Among them is the Hadith Musalsal bil-Izafah. Al-Safti said after mentioning the Hadith of the Mother of the Believers with the wording 'We used to stay for many nights while no fire was lit in the chambers of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) and there was nothing but the two black things: water and dates': The answer given is that she (may Allah be pleased with her) called water black by giving dominance to the dates over the water because dates are food and water is drink, and food is more noble than drink; or that their water vessels at that time were predominantly black. | [Urdu]: I say that this subject is frequently found in Hadiths and the speech of the Arabs. In this regard, a Hadith which is 'Musalsal bil-Izafat', Al-Safti, after mentioning the Hadith of the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her) with these words: "that we would spend many nights while no fire was lit in the chambers of the Prophet (peace and blessings

be upon him) and (that food) was only two black things, water and dates," after narrating it, said that the answer given is that the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her) made dates dominant and called the water black because dates are food and water is a drink, and because food has superiority over drink...

[1] Sahih al-Bukhari, Kitab al-Hiba, Qadeemi Kutub Khana Karachi 1/349. Page 243 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द ३

[अरबी]: यह बर्फ की सफेदी को साबित करने के लिए अधिक स्पष्ट है, जो कि एक ऐसी स्थिति है जो पानी में नहीं थी। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। | [उर्दू]: नरक की आग के लिए अंधेरा होने और रोशन न होने के बावजूद रंग का प्रमाण दिया गया। तो अब, बर्फ की सफेदी के प्रमाण के लिए हमारा उत्तर स्पष्ट है, जो पानी में नहीं था। (त)

और कुछ ने पानी का रंग काला बताया और इस पर उस हदीस से प्रमाण लाए कि उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से फ़रमाया:

[अरबी]: "अल्लाह की क़सम, ऐ मेरी बहन के बेटे, हम एक हिलाल (नया चाँद) देखते, फिर दूसरा, फिर तीसरा—दो महीनों में तीन चाँद—और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के घरों में आग नहीं जलाई जाती थी। मैंने कहा: ऐ खाला (मौसी), तो फिर आपका गुज़ारा किस चीज़ पर होता था? उन्होंने कहा: दो काली चीज़ें: खजूर और पानी[1]।" इसे दोनों शैखों (बुखारी और मुस्लिम) ने अपनी सहीह में उरवा के माध्यम से उम्मुल मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत किया है। | [उर्दू]: ऐ मेरे भांजे, खुदा की क़सम हम एक हिलाल देखते फिर दूसरा तीसरा दो महीनों में तीन चाँद और काशाना-ए-नुबुव्वत में आग रोशन न होती। उरवा ने अर्ज़ की ऐ खाला फिर अहले बैत किराम महीनों क्या खाते थे? फ़रमाया: बस दो काली चीज़ें छुआरे और पानी। (शैख़ैन ने अपनी सहीहैन में उरवा से उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया। त)

[अरबी]: मैं कहता हूँ: यह हदीसों और अरबों की बातचीत में अक्सर आया है। उनमें से हदीस मुसल्सल बिल-इज़ाफ़ा है। अल-सफ़्ती ने उम्मुल मोमिनीन की हदीस का इन शब्दों के साथ उल्लेख करने के बाद कहा, 'हम कई रातें गुज़ारते थे जबकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के कमरों में आग नहीं जलाई जाती थी और वहाँ दो काली चीज़ों: पानी और खजूर के अलावा कुछ नहीं था': इसका उत्तर यह दिया गया है कि उन्होंने (रज़ियल्लाहु अन्हा) खजूर को पानी पर प्रधानता देते हुए पानी को काला कहा क्योंकि खजूर भोजन है और पानी पेय है, और भोजन पेय से अधिक श्रेष्ठ है; या उस समय उनके पानी के बर्तन मुख्य रूप से काले थे। | [उर्दू]: मैं कहता हूँ कि हदीसों और अरबों के कलाम में यह विषय कसरत से मौजूद है, इसी सिलसिले में एक हदीस जो मुसल्सल बिल-इज़ाफ़त है, सफ़्ती ने हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस को इन शब्दों के साथ कि हम कई रातें बसर करते दरआँहालिका हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हुजरों में आग रोशन न होती और

(वह खुराक) सिर्फ दो काली चीज़ें पानी और खजूर थीं, को बयान करने के बाद कहा कि इसका जवाब यह दिया गया है कि हज़रत उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा ने खजूर को ग़ालिब (प्रधान) करार देकर पानी को काला फ़रमाया क्योंकि खजूर खुराक (भोजन) है और पानी मशरूब (पेय) है और खुराक को मशरूब पर फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) होने...

१ सहीह अल-बुखारी किताब अल-हिबा कदीमी कुतुब खाना कराची ३४९/१ पेज २४३ ऑफ़ ७५६

اظھر لثبوت بیاض الثلج حادث لم یکن في الماء | جہنم کی آگ کیلئے اندھیری اور روشن نہ ہونے کے باوجود واللہ تعالی اعلم۔ | رنگ کا اثبات فرمایا۔ پس اب برف کی سفیدی کے ثبوت کیلئے جو کہ پانی میں نہ تھا، ہمارا جواب واضح ہے (ت)

اور بعض نے پانی کا رنگ سیاہ بتایا اور اس پر اس حدیث سے سند لائے کہ ام المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا نے حضرت عروہ بن زبیر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے فرمایا:

واللہ یا ابن اختی ان کنا لننظر الی الھلال ثم الھلال | اے میرے بھانجے خدا کی قسم ہم ایک ہلال دیکھتے پھر دوسرا ثم الھلال ثلاثۃ اھلۃ فی شھرین وما اوقد فی ابیات | تیسرا دو مہینوں میں تین چاند اور کاشانہ ہائے نبوت میں آگ النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نار قلت یا خالۃ فما | روشن نہ ہوتی عروہ نے عرض کی اے خالہ پھر اہل بیت کرام کان یعیشکم قالت الاسود ان التمر والماء ۱ ۔ رواہ | مہینوں کیا کھاتے تھے؟ فرمایا: بس دو سیاہ چیزیں چھوہارے الشیخان فی صحیحھما عن عروۃ عن ام المومنین | اور پانی (شیخین نے اپنی صحیحین میں عروہ سے ام المومنین رضی اللہ عنہا۔ | رضی اللہ عنہا سے روایت کیا۔ ت)

اقول: وقد کثر ذلک فی الاحادیث و کلام العرب | میں کہتا ہوں کہ احادیث اور عربوں کے کلام میں یہ ومنھا الحدیث المسلسل بالاضافۃ قال السفطی | مضمون بکثرت موجود ہے، اسی سلسلہ میں ایک حدیث جو بعد ما ذکر حدیث ام المومنین بلفظ کنا نمکث | مسلسل بالاضافت ہے سفطی نے حضرت ام المومنین رضی اللہ لیالی ذوات العدد لا نوقد نارا فی حجر رسول اللہ | عنہا کی حدیث کو ان الفاظ کے ساتھ کہ ہم کئی راتیں بسر صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم وما ھو الا الاسودان | کرتے درانحالیکہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے حجروں میں الماء والتمر اجیب بانھا رضی اللہ تعالٰی

عنها | آگ روشن نہ ہوتی اور (وہ خوراک) صرف دو سیاہ چیزیں پانی جعلت الماء اسود تغلیباً للتمر علی الماء لان | اور کھجور تھیں کو بیان کرنے کے بعد کہا کہ اس کا جواب یہ دیا التمر مطعوم والماء مشروب والمطعوم اشرف من | گیا ہے کہ حضرت ام المومنین رضی اللہ عنہا نے کھجور کو المشروب او ان آنیۃ مائھم اذ ذاک کان یغلب علیھا | غالب قرار دے کر پانی کو سیاہ فرمایا کیونکہ کھجور خوراک ہے السواد | اور پانی مشروب ہے اور خوراک کو مشروب پر فضیلت ہونے

Fatawa Razawiya Volume Three

Due to the abundance of its tanning, our teacher Al-Aydarus informed all of that, and our teacher also confirmed it, and a similar statement is found in the marginalia of our teacher Al-Amir. Some of our teachers said that its color is black, citing the literal meaning of this hadith as evidence, but the first view is the preferred one, so reflect. [1]

(Urdu Explanation): Due to [tanning] the date has predominance over water, or it was called black because at that time their water vessels, being deep-colored, were predominantly black. He said all this discussion was obtained from Sheikh Aydarus and our Sheikh also verified it, and similarly in the marginalia of our Sheikh Amir. And some of our teachers said that the color of water is black; they took the apparent meaning of the hadith as proof. But the first interpretation is correct, reflect. (T)

I say: Firstly, (1) 'Taghlib' (predominance) (2) is a metaphor, so it shouldn't be resorted to as long as it isn't proven that water has no blackness. (3) Secondly: (4) Taghlib occurs in nouns like 'al-Qamarayn' (the two moons, i.e., sun and moon) and 'al-Umarayn' (the two Umars, i.e., Abu Bakr and Umar), not in two opposing descriptions. For instance, one doesn't call a good thing and a bad thing 'two good things', or a tall person and a short person 'two tall ones', or a scholar and an ignorant person 'two scholars'. Would it be considered appropriate for someone who eats meat and drinks water to say, "They are nothing but the two reds" (referring to meat and water)? Or for someone consuming dates and milk to say, "They are nothing but the two blacks" (dates and milk)? And thirdly: (5) You yourselves have said that when water is placed in a green vessel, the greenness does not transfer to the water; similarly, the blackness of the water-skin (is not the color of water). So why resort to metaphorical language without evidence?

(Urdu Explanation): I say that firstly, although Taghlib is permissible, it is not necessary until it is clear that water is not black. Secondly, the practice of Taghlib is applied to names (nouns) like Qamarayn (sun and moon) and Umarayn (Umar Farooq and Abu Bakr Siddiq, may Allah be pleased with them), but it is not applied to opposite qualities, such that one would call 'good and bad' as 'two good' and mean both, or call 'long and short' as 'two long' and mean both, or call 'scholar and ignorant' as 'two scholars' and mean both. Would it be appropriate for someone eating meat and drinking water to say they are just 'Ahmaran' (two reds)? Or for someone consuming dates and milk to say they are just 'Aswadan' (two blacks)? Thirdly, you yourself said that when water is kept in a green vessel, the greenness

doesn't affect the water, so if a water-skin is black, how can water be called black? How can it be metaphorical without proof? (T)

I say: The reality of the matter is that pure water is not black, but its color is not pure white either; it's somewhat off-white or tinged.

[1] Marginalia of Fadil Safati. Page 244 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

इसके शोधन (टैनिंग) की बहुलता के कारण हमारे उस्ताद अल-एदरूस ने यह सब बताया और हमारे उस्ताद ने भी इसकी पुष्टि की, और इसी तरह का उल्लेख हमारे उस्ताद अल-अमीर के हाशिए (marginalia) में भी है। हमारे कुछ उस्तादों ने कहा कि इसका रंग काला है, इस हदीस के प्रत्यक्ष अर्थ को प्रमाण के रूप में पेश किया, लेकिन पहला (विचार) ही तर्कसंगत है, सो विचार करें। [1]

(उर्दू व्याख्या): [शोधन] के कारण खजूर को पानी पर प्रधानता प्राप्त है, या पानी को काला इसलिए कहा गया क्योंकि उस समय उनके पानी के बर्तन गहरे रंग के होने के कारण मुख्य रूप से काले होते थे। उन्होंने कहा कि यह सारी बहस हमें शेख एदरूस से प्राप्त हुई और हमारे शेख ने इसकी पुष्टि भी की, और इसी तरह हमारे शेख अमीर के हाशिये में भी है। और हमारे कुछ उस्तादों ने कहा कि पानी का रंग काला है; उन्होंने इस हदीस के प्रत्यक्ष रूप को दलील बनाया। लेकिन पहली व्याख्या ही सही है, गौर करें। (त)

मैं कहता हूँ: पहली बात, (1) 'तग़लीब' (प्रधानता) (2) एक रूपक है, इसलिए जब तक यह सिद्ध न हो जाए कि पानी में कालापन नहीं है, तब तक इसका सहारा नहीं लिया जाना चाहिए। (3) दूसरी बात: (4) तग़लीब 'अल-क़मरेन' (दो चाँद, यानी सूरज और चाँद) और 'अल-उमरेन' (दो उमर, यानी अबू बक्र और उमर) जैसे नामों में होता है, न कि दो विपरीत गुणों में। उदाहरण के लिए, एक अच्छी और एक बुरी चीज़ को 'दो अच्छी चीज़ें' नहीं कहा जाता, या एक लंबे और एक छोटे व्यक्ति को 'दो लंबे' नहीं कहा जाता, या एक विद्वान और एक अज्ञानी को 'दो विद्वान' नहीं कहा जाता। क्या मांस खाने वाले और पानी पीने वाले के लिए यह कहना उचित होगा, "वे केवल दो लाल (अहमरन) हैं" (मांस और पानी के संदर्भ में)? या खजूर और दूध का सेवन करने वाले के लिए यह कहना उचित होगा, "वे केवल दो काले (असवदान) हैं" (खजूर और दूध)? और तीसरी बात: (5) आपने स्वयं कहा है कि जब पानी किसी हरे बर्तन में रखा जाता है, तो हरापन पानी में नहीं आता; इसी तरह, मशकीज़ा (चमड़े का थैला) का कालापन भी पानी का रंग नहीं है। तो फिर बिना किसी प्रमाण के रूपक का सहारा क्यों लिया जाए?

(उर्दू व्याख्या): मैं कहता हूँ कि पहले तो तग़लीब हालाँकि जायज़ है लेकिन जब तक पानी का काला न होना स्पष्ट न हो जाए तब तक इसकी ज़रूरत नहीं है। और दूसरे तग़लीब का अमल नामों (अस्मा) जैसे क़मरैन (सूरज और चाँद) और उमरैन (उमर फ़ारूक़ और अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु

अन्हुमा) में जारी होता है लेकिन विपरीत गुणों में जारी नहीं होता ताकि अच्छे और बुरे को 'जियदान' (दो अच्छे) कहकर अच्छा और बुरा मुराद लिया जाए, और लंबे और छोटे को 'तवीलान' कहकर लंबा और छोटा मुराद लिया जाए, और आलिम और जाहिल को 'आलिमान' कहकर आलिम और जाहिल मुराद लिया जाए। क्या गोश्त खाने और पानी पीने वाले को यह कहना मुनासिब होगा कि वो सिर्फ 'अहमरैन' (दो सुर्ख़) हैं या खजूर और दूध का सेवन करने पर यह कहना मुनासिब होगा, वो सिर्फ 'असवदान' (दो काले) हैं। और तीसरे तुमने खुद कहा है कि जब पानी सब्ज़ बर्तन में रखा जाए तो सब्ज़ी पानी को नहीं लगती, पस इसी तरह मशकीज़ा का काला रंग हो तो उसमें पानी को क्योंकर काला कहा जा सकता है, बिना दलील के मजाज़ (रूपक) कैसे हो सकता है। (त)

मैं कहता हूँ: हक़ीक़त यह है कि पानी खालिस काला नहीं है मगर उसका रंग सफ़ेद भी नहीं, बल्कि कुछ गंदला सा है।

[1] फ़ाज़िल सफ़ती का हाशियह। पृष्ठ २४४ / ७५६

فتاوی رضویہ جلد سوم لکثرۃ دباغھا افاد جمیع ذلك شیخنا العیدروس وقرہ شیخنا ایضاً ومثلہ فی حاشیۃ شیخنا الامیر وقال بعض شیوخنا ان لونہ اسود مستدلا بظاھر ھذا الحدیث لکن الاول ھو المتجہ فتأمل [1] اھ

کی وجہ سے کھجور کو پانی پر غلبہ ہے، یا اس لئے پانی کو سیاہ فرمایا کہ اس وقت ان کے پانی والے برتن گہرے رنگ دار ہونے کی بنا پر غالب طور پر سیاہ ہوتے تھے اور کہا کہ یہ ساری بحث ہمیں شیخ عیدروس سے حاصل ہوئی اور اس کی ہمارے شیخ نے توثیق بھی کی اور اس طرح ہمارے شیخ امیر کے حاشیہ میں بھی اور ہمارے بعض شیوخ نے فرمایا کہ پانی کا رنگ سیاہ ہے انہوں نے اس حدیث کے ظاہر کو دلیل بنایا ہے۔ لیکن پہلی توجیہ ہی صحیح ہے غور کرواھ (ت)

اقول: اولاً (۱) التغلیب (۲) تجوز فلایصار الیہ مالم یثبت ان الماء لاسواد لہ (۳) وثانیا: (۴) التغلیب فی الاسماء کالعمرین والقمرین دون وصفین متضادین فیقال لجید وردی جیدان وطویل وقصیر طویلان وعالم وجاھل عالمان وھل یستحسن لمن اکل لحماً وشرب ماء ان یقول ماھما الا الاحمران اللحم والماء ومن تناول تمرا ولبناً یقول ماھما الا الاسودان التمر واللبن وثالثاً: (۵) قد قلتم ان الماء اذا وضع فی اناء اخضر فالخضرۃ لم تقم بالماء فکذلك سواد الشن ففیم التجوز بلادلیل۔

میں کہتا ہوں کہ اولاً تغلیب اگرچہ جائز ہے مگر جب تک کہ پانی کا سیاہ نہ ہونا واضح نہ ہو جائے اس وقت اس کی ضرورت نہیں ہے اور ثانیاً تغلیب کا عمل ناموں (اسماء) جیسے قمرین (سورج اور چاند) اور عمرین (عمر فاروق اور ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہما) میں جاری ہوتا ہے لیکن متضاد اوصاف میں جاری نہیں ہوتا تاکہ جید اور ردی کو جیدان کہہ کر جید اور ردی مراد لیا جائے اور طویل اور قصیر کو طویلان کہہ کر طویل اور قصیر مراد لیا جائے، اور عالم اور جاہل کو عالمان کہہ کر عالم اور جاہل مراد لیا جائے۔ کیا گوشت کھانے اور پانی پینے والے کو یہ کہنا مناسب ہوگا

وہ صرف احمران (دو سرخ) ہیں یا کھجور اور دودھ تناول کرنے پر یہ کہنا مناسب ہوگا، وہ صرف اسودان (دو سیاہ) ہیں۔ اور ثالثاً تم نے خود کہا ہے کہ جب پانی سبز برتن میں رکھا جائے تو سبزی پانی کو نہیں لگتی پس اسی طرح مشکیزہ کا سیاہ رنگ ہو تو اس میں پانی کو کیونکر سیاہ کہا جاسکتا ہے بغیر دلیل مجاز کیسے ہوسکتا ہے۔ (ت)

اقول: حقیقت امر یہ ہے کہ پانی خالص سیاہ نہیں مگر اُس کا رنگ سپید نہیں میلا مائل بیک گونہ

[1] حاشیۃ فاضل سفطی

...is a slight darkness and it becomes apparent against clean white objects, as we described the situation of washing a part of a white cloth and mixing water in milk. And Allah (Glory be to Him and Most High) knows best.

(7) After the consensus of scholars, meaning a certain statement not liable to dispute, that among all waters, the most superior is that which repeatedly emerged from the blessed fingers of that boundless ocean of generosity and blessings (peace and blessings of Allah be upon him) and quenched the thirst of thousands—is Zamzam superior or Kawthar? Sheikh al-Islam Siraj al-Din al-Bulqini al-Shafi'i stated that Zamzam is superior because on the Night of Ascension (Isra), the angels washed the blessed heart of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) with it, although they could have brought water from Kawthar. And Allah (the Mighty and Majestic) chose only the best for His Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) at such a place. Shams followed Siraj in this regard. It is stated in the Fatawa of Allama Shams-ud-Din Muhammad al-Ramli al-Shafi'i:

Arabic

The best of waters is that which sprang from between the fingers of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). Al-Bulqini said that the water of Zamzam is better than Kawthar because the chest of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) was washed with it, and it would not have been washed except with the best of waters.

Urdu

The most superior water is that which emerged from the fingers of the Prophet (peace and blessings be upon him). Al-Bulqini said that Zamzam water is superior to Kawthar because the blessed chest of the Prophet (peace and blessings be upon him) was washed with it, and its washing could only be done with the most superior water. (T)

An objection was raised that Zamzam was granted to our master Ismail (peace be upon him) and Kawthar to our Radiant Prophet (peace and blessings be upon him), so it must follow that Kawthar is superior. Imam Ibn Hajar al-Makki replied that this discussion pertains to the world; in the hereafter, Kawthar is undoubtedly superior.

I say: So this is a third view or a reconciliation between the two views. The text of Fatawa al-Fiqhiyya is as follows:

Arabic	Urdu
(Question) Which is superior: Zamzam water or Kawthar? (Answer) Sheikh al-Islam al-Bulqini said: Zamzam water is superior because the angels washed his heart (peace and blessings of Allah be upon him) with it when they opened it on the Night of Ascension, despite being able to use Kawthar water. Thus, choosing it at this stage is evidence of its superiority.	You were asked whether Zamzam water is superior or Kawthar? In response, he said: Sheikh al-Islam al-Bulqini (may Allah have mercy on him) stated that Zamzam water is superior because on the night of Ascension, angels opened and washed your (peace and blessings be upon him) blessed heart with it. So, despite having the power to use Kawthar, giving preference to Zamzam is proof of its excellence.

1. Fatawa Allama Shams-ud-Din al-Ramli on al-Fatawa al-Kubra, Book of Purification, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 1/15.

...हल्का कालापन है और वह साफ़ सफ़ेद चीज़ों के मुक़ाबले में आकर खुल जाता है जैसा कि हमने सफ़ेद कपड़े का एक हिस्सा धोने और दूध में पानी मिलाने की हालत बयान की, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम।

(७) उलमा के उस इज्मा यानी एक निश्चित कथन जो विवाद के योग्य नहीं है, के बाद कि सब पानियों में सबसे अफ़ज़ल (श्रेष्ठ) वह पानी है जो उस उदारता और नियामतों के अथाह समुद्र (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की मुबारक उंगलियों से बार-बार निकला और हज़ारों को सैराब किया— ज़मज़म अफ़ज़ल है या कौसर? शैखुल इस्लाम सिराजुद्दीन बुलक़ीनी शाफ़ई ने फ़रमाया कि ज़मज़म अफ़ज़ल है कि मेराज की रात फ़रिश्तों ने हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मुबारक दिल इससे धोया, हालाँकि वे कौसर का पानी ला सकते थे और अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने ऐसे मुक़ाम पर अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम के लिए अफ़ज़ल के सिवा किसी और का चुनाव न फ़रमाया। शम्स ने इसमें सिराज का अनुसरण किया। अल्लामा शम्सुद्दीन मुहम्मद रमली शाफ़ई के फ़तावा में है:

अरबी	उर्दू
सबसे श्रेष्ठ पानी वह है जो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वआलिही वसल्लम की उंगलियों के बीच से निकला। बुलक़ीनी ने कहा कि ज़मज़म का पानी कौसर से श्रेष्ठ है क्योंकि इसके साथ नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सीने को धोया गया था, और उसे केवल सबसे श्रेष्ठ पानी से ही धोया जा सकता था।	सबसे श्रेष्ठ पानी वह है जो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की उंगलियों से निकला और बुलक़ीनी ने फ़रमाया कि ज़मज़म का पानी कौसर से अफ़ज़ल है क्योंकि इससे हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का मुबारक सीना धोया गया है और उसका धोना अफ़ज़ल पानी से ही हो सकता था। (त)

इस पर एतराज़ हुआ कि ज़मज़म तो सैयदुना इस्माईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम को अता हुआ और कौसर हमारे हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वआलिही वसल्लम को, तो लाज़िम है कि कौसर ही अफ़ज़ल हो। इमाम इब्ने हजर मक्की ने जवाब दिया कि कलाम दुनिया में है, आख़िरत में बेशक कौसर अफ़ज़ल है।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): तो यह तीसरा क़ौल या दोनों क़ौलों के बीच तालमेल हुआ। फ़तावा फ़िक़हिया की इबारत यह है:

अरबी	उर्दू
(प्रश्न) ज़मज़म का पानी श्रेष्ठ है या कौसर? (उत्तर) शैखुल इस्लाम बुलक़ीनी ने कहा: ज़मज़म का पानी श्रेष्ठ है क्योंकि फ़रिश्तों ने मेराज की रात उनके दिल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को इससे धोया था जब उन्होंने उसे खोला था, बावजूद इसके कि वे कौसर के पानी पर सक्षम थे। अतः इस स्थान पर इसका चुनाव इसकी श्रेष्ठता का प्रमाण है।	आपसे पूछा गया कि क्या आब-ए-ज़मज़म अफ़ज़ल है या कौसर? तो उसके जवाब में फ़रमाया: शैखुल इस्लाम बुलक़ीनी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि आब-ए-ज़मज़म अफ़ज़ल है क्योंकि मेराज की रात इससे फ़रिश्तों ने आपके(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मुबारक दिल को खोलकर गुस्ल दिया, तो कौसर के इस्तेमाल पर कुदरत के बावजूद ज़मज़म को तरजीह देना इसकी फ़ज़ीलत का सबूत है।

---

1 फ़तावा अल्लामा शम्सुद्दीन रमली अलल फ़तावा अल-कुबरा, किताबुल तहारत, दारुल कुतुबुल इल्मिया बेरुत १५/१।

سواد خفیف ہے اور وہ صاف سپید چیزوں کے بمقابل آکر کھل جاتا ہے جیسا کہ ہم نے سفید کپڑے کا ایک حصہ دھونے اور دودھ میں پانی ملانے کی حالت بیان کی واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔

(۷) علماء کو اس اجماع اعنی قول متیقن ناصالح لنزاع کے بعد کہ سب پانیوں میں افضل وہ پانی ہے جو اس بحرِ بے پایاں کرم و نعم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی انگشتانِ مبارک سے بارہا نکلا اور ہزاروں کو سیراب کیا زمزم افضل ہے یا کوثر؟ شیخ الاسلام سراج الدین بلقینی شافعی نے فرمایا کہ زمزم افضل ہے کہ شبِ اسراء ملائکہ نے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا دل مبارک اس سے دھویا حالانکہ وہ آبِ کوثر لاسکتے تھے اور اللہ عزوجل نے ایسے مقام پر اپنے نبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے لئے اختیار نہ فرمایا مگر افضل شمس نے اس میں سراج کا اتباع کیا فتاوٰی علامہ شمس الدین محمد رملی شافعی میں ہے :

عربی	اردو
افضل المیاہ ما نبع من بین اصابعہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم وقد قال البلقینی ان ماء زمزم افضل من الکوثر لان بہ غسل صدر النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ولم یکن یغسل الا بافضل المیاہ ۱ــہ اھ	افضل ترین پانی وہ ہے جو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کی انگلیوں سے نکلا اور بلقینی نے فرمایا کہ زمزم کا پانی کوثر سے افضل ہے کیونکہ اس سے حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کا سینہ مبارک دھویا گیا ہے اور اس کا دھونا افضل پانی سے ہی ہو سکتا تھا (ت)

اس پر اعتراض ہوا کہ زمزم تو سیدنا اسمعیل علیہ الصلوٰۃ والسلام کو عطا ہوا اور کوثر ہمارے حضور انور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کو تو لازم کہ کوثر ہی افضل ہو امام ابن حجر مکی نے جواب دیا کہ کلام دنیا میں ہے آخرت میں بے شک کوثر افضل ہے۔

اقول: تو یہ قولِ ثالث یادونوں قولوں کی توفیق ہوا۔ فتاویٰ فقہیہ کی عبارت یہ ہے :

عربی	اردو
(سئل) ایما افضل ماء زمزم او الکوثر (فاجاب) قال شیخ الاسلام البلقینی ماء زمزم افضل لان الملئکة غسلوابہ قلبہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حین شقوہ لیلة الاسراء مع قدرتھم علی ماء الکوثر فاختیا رہ فی ہذا المقام دلیل علی افضلیتہ	آپ سے پوچھا گیا کہ کیا آبِ زمزم افضل ہے یا کوثر؟ تو اس کے جواب میں فرمایا: شیخ الاسلام بلقینی رحمہ اللہ نے فرمایا کہ آبِ زمزم افضل ہے کیونکہ معراج کی رات اس سے فرشتوں نے آپ (صلی اللہ علیہ وسلم) کے قلبِ مبارک کو کھول کر غسل دیا، تو کوثر کے استعمال پر قدرت کے باوجود زمزم کو ترجیح دینا اس کی فضیلت کا ثبوت ہے

---

1 فتاویٰ علامہ شمس الدین رملی علی الفتاوی الکبریٰ کتاب الطھارۃ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۵/۱

Fatawa-e-Razvia Volume Three

And it is not contradicted by the fact that Zamzam is a gift from Allah Almighty to Ismail (peace be upon him) and Al-Kawthar is a gift from Allah Almighty to our Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), because the discussion pertains to worldly excellence, not the Hereafter. Undoubtedly, Al-Kawthar in the Hereafter is one of the greatest privileges given to our Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). For this reason, Allah Almighty said: "Indeed, We have granted you Al-Kawthar," using the 'noon' of majesty (plural of respect) which indicates this. From what I have established, the answer to the objection raised against Al-Bulqini is also known.

At this time, a discussion on this issue from one's own knowledge is not in the sight of this humble person (Faqir), and what has become apparent to the Faqir is the superiority of Al-Kawthar.

So I say: and success is through Allah. 'Afzal' (superior/better) has two meanings. One is in terms of the abundance of reward (Thawab); this meaning applies to those accountable humans who receive more reward, and to those deeds for which the reward is greater. Both these aforementioned forms of this meaning cannot be found in Zamzam and Al-Kawthar. And if it is interpreted here as there being more reward in their exchange (giving and taking), then this meaning cannot apply to Al-Kawthar because it is beyond our power. Therefore, a comparison of excellence cannot be found between the two. And it cannot be said that washing the noble heart of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) with one of these by angels results in more reward for him (peace and blessings of Allah be upon him). (T) Now, a discussion can only be held in the second meaning of 'afzal', which is greatness of stature and elevation of rank in the sight of Allah Almighty and...

---

1 Fatawa Kubra, Kitab-ut-Taharah, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah Beirut 25/1 Page 246 of 756

और यह इस तथ्य से खंडित नहीं होता कि ज़मज़म इस्माईल (अलैहिस्सलाम) के लिए अल्लाह तआला का एक उपहार है और अल-कौसर हमारे पवित्र नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए अल्लाह तआला का उपहार है, क्योंकि चर्चा सांसारिक श्रेष्ठता के बारे में है, परलोक के बारे में नहीं। निस्संदेह, परलोक में अल-कौसर हमारे पवित्र नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को मिलने वाले महानतम विशेषाधिकारों में से एक है। इसी कारण अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "बेशक, हमने आपको अल-कौसर प्रदान किया है," इसमें महानता के'नून' (सम्मान सूचक बहुवचन) का प्रयोग किया गया है जो इसे इंगित करता है। मेरे द्वारा स्थापित किए गए तथ्यों से अल-बुल्किनी पर उठाए गए आक्षेप का उत्तर भी ज्ञात हो गया।

वर्तमान समय में, इस मुद्दे पर अपने स्वयं के ज्ञान से चर्चा इस फ़कीर (विनम्र व्यक्ति) की दृष्टि में नहीं है, और जो इस फ़कीर पर स्पष्ट हुआ है, वह अल-कौसर की श्रेष्ठता है।

अतः मैं कहता हूँ: और सफलता अल्लाह की ओर से है। 'अफ़ज़ल' (श्रेष्ठ) के दो अर्थ हैं। एक सवाब (प्रतिफल) की प्रचुरता के संदर्भ में है; यह अर्थ उन जवाबदेह मनुष्यों पर लागू होता है जिन्हें अधिक सवाब मिलता है, और उन कर्मों पर जिनके लिए सवाब अधिक होता है। इस अर्थ के ये दोनों उपर्युक्त रूप ज़मज़म और कौसर में नहीं पाए जा सकते। और यदि यहाँ यह व्याख्या की जाए कि उनके लेन-देन में अधिक सवाब है, तो यह अर्थ कौसर के लिए संभव नहीं हो सकता क्योंकि वह हमारी शक्ति से बाहर है। इसलिए दोनों के बीच श्रेष्ठता की तुलना नहीं की जा सकती। और यह नहीं कहा जा सकता कि फ़रिश्तों द्वारा इनमें से किसी एक के साथ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पवित्र हृदय को धोने से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए अधिक सवाब है। (त) अब केवल 'अफ़ज़ल' के दूसरे अर्थ में बात हो सकती है और वह अल्लाह तआला के निकट शान की महानता और पद की उच्चता है और...

---

1 फ़तावा कुबरा, किताबुत तहारत, दारुल कुतुबुल इलमिया बेरुत 25/1 पृष्ठ 246/756

ولا یعارضه انه عطیة الله تعالی لاسمعیل علیه الصلوة والسلام والکوثر عطیة الله تعالی لنبینا صلی الله تعالی علیه وسلم لان الکلام في عالم الدنیا لا الآخرة ولا مریة ان الکوثر في الآخرة من اعظم مزایا نبینا صلی الله تعالی علیه وسلم ومن ثم قال تعالی انا اعطینك الکوثر بنون العظمة الدالة علی ذلك وبما قررته علم الجواب عما اعترض به علی البلقیني اه

کی دلیل ہے۔ زمزم کا حضرت اسماعیل علیہ السلام کو اور کوثر کا ہمارے نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کو اللہ تعالٰی کی طرف سے عطیہ ہونا اس کو معارض نہیں کیونکہ کلام دنیاوی فضیلت میں ہے اور آخرت کے لحاظ سے بلا شبہ کوثر کو بہت بڑا اعزاز ہے جو ہمارے نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کو ملے گا اسی لئے اللہ تعالٰی نے انا اعطینک الکوثر کو اپنے لئے منسوب فرمایا جس پر نون متکلم دلالت کرتا ہے اور یہ بڑی عظمت ہے، اور میری تقریر سے یقینی پر وارد ہونے والے اعتراض کا جواب بھی معلوم ہوگیا اہ (ت)

اس وقت اس مسئلہ پر کلام اپنے علم سے نظر فقیر میں نہیں اور وہ کہ فقیر کو ظاہر ہوا تفضیل کوثر ہے۔

فاقول: وبالله التوفیق الافضل معنیان الاکثر ثواباً وهو في المکلفین من یثاب اکثر وفي الاعمال ما الثواب علیه اکبر ولامدخل لهذین في زمزم والکوثر وان اول بالتعاطی ای ما تعاطیه اکثر ثواباً فالکوثر غیر مقدور لنا فلا یتأتی التفاضل من هذا الوجه ایضاً ولا معنی لان یقال ان ثوابه صلی الله علیه وسلم کان اکثر في غسل الملئکة قلبه الکریم باحدهما - فاذن لاکلام فیه الا بمعنی الاعظم شأناً والارفع مکاناً عند الله تعالی و

پس میں کہتا ہوں اور اللہ تعالیٰ سے ہی توفیق حاصل ہے۔ افضل کے دو معنی ہیں، ایک ثواب کے لحاظ کثرت ہے یہ معنی انسانوں میں جس کو ثواب حاصل ہو، اور اعمال میں وہ عمل جس پر ثواب زیادہ مرتب ہو، اس معنی کی دونوں مذکورہ صورتیں زمزم اور کوثر میں نہیں پائی جاسکتیں اور اگر اس معنی کی یہاں یہ تاویل کی جائے کہ ان کے لین دین میں زیادہ ثواب ہے تو پھر کوثر میں یہ معنی نہیں ہوسکتا کیونکہ وہ ہماری قدرت سے باہر ہے اسلئے دونوں میں فضیلت کا تقابل نہیں پایا جاسکتا اور یہ نہیں کہا جاسکتا کہ ان دونوں میں سے ایک کے ساتھ فرشتوں کا حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے قلب مبارک کو دھونا حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے لئے زیادہ ثواب ہے۔ (ت) اب صرف افضل کے دوسرے معنی میں بات ہوسکتی ہے اور وہ عند اللہ عظمت شان اور رفعت

---

1 فتاویٰ کبری کتاب الطھارۃ دار الکتب العلمیہ بیروت 1/ 25 صفحہ 246 از 756

Fatawa Razawiya Volume Three

(1) At this juncture, the reasoning of Imam al-Bulqini (may Allah Almighty have mercy on him) is only complete if we encompass the divine wisdom in the washing of his (the Prophet's) noble heart (upon him be the best blessings and peace) and we know that both (waters, Zamzam and Kawthar) were equal in achieving it. Then Allah, glorified be He, chose this (Zamzam), so it was superior. As for something being more suitable and proper for an action than another, it does not necessitate its being greater in value or grander in pride due to overall superiority over (2) the fact that he (the Prophet), peace and blessings of Allah be upon him, (3) is not honored by anything else; rather, everything is only honored by him. (4) And Allah Almighty bestows through his (the Prophet's) mercy, peace and blessings of Allah be upon him, what He wills from His creation to provide them with grace, just as He chose for his birth, peace and blessings of Allah be upon him, the month of Rabi' al-Awwal instead of Ramadan, and Monday instead of Friday, and the place of his birth, peace and blessings of Allah be upon him, instead of the Kaaba. Grace is in the hand of Allah, He gives it to whom He wills, and Allah is the Possessor of great bounty.

As for the answer of Imam Ibn Hajar, the utmost that appears in his explanation is that Zamzam is superior in this world because it is accessible to us, so we are rewarded for it, and thus superiority follows for us, unlike the Kawthar; if Allah Almighty provides from it to any of us in this world, then the superiority is in it...

1. Al-Quran 73/3 Page 247 of 756

फ़तवा-ए-रज़विया जिल्द सोम

(1) इस स्तर पर इमाम बल्क़ीनी (अल्लाह उन पर रहम फ़रमाए) का तर्क तभी सही हो सकता है जब हम हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मुबारक दिल को धोने के बारे में अल्लाह तआला की हिकमतों को सामने रखें और यह जान लें कि उन्हें हासिल करने में दोनों पानी (ज़मज़म और कौसर) बराबर हैं। इसके बावजूद अल्लाह तआला ने ज़मज़म को पसंद फ़रमाया, लिहाज़ा वह अफ़ज़ल हुआ, क्योंकि यह इस कार्य के लिए ज़्यादा मुवाफ़िक़ और ज़्यादा सलाहियत वाला था। इस लिहाज़ से ज़मज़म का क़द्रो मन्ज़िलत के ऐतबार से कुल्ली तौर पर आज़म होना लाज़िम नहीं आता। इसके अलावा हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम को किसी दूसरे से शर्फ़ हासिल नहीं हुआ बल्कि दूसरों ने हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से शर्फ़ पाया है। अल्लाह तआला अपनी मख्लूक़ में से जिसे चाहता है हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम की रहमत से नवाज़ता है ताकि उसको फ़ज़ीलत दे जैसा कि आपकी विलादत-ए-पाक के लिए रमज़ान के बजाए रबी-उल-अव्वल को और जुमा के बजाए सोमवार के दिन को और काबा के बजाए आपकी जाए-विलादत को मुशर्रफ़ फ़रमाया। फ़ज़ीलत का मालिक अल्लाह तआला है, जिसे चाहता है देता है, वह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

जहाँ तक इमाम इब्न-ए-हजर के जवाब का ताल्लुक़ है, तो उनकी तौजीह में जो बात उभरती है वह यह है कि ज़मज़म दुनिया में अफ़ज़ल है क्योंकि यह हमारे ज़ेर-ए-तसर्रुफ़ है और हमें इस पर सवाब मिलता है और इस तरह हमारे लिए फ़ज़ीलत हासिल होती है, बरख़िलाफ़ कौसर के, अगर अल्लाह तआला दुनिया में हम में से किसी को इसमें से रिज़्क़ अता करे, तो इसमें फ़ज़ीलत है...

1. अल-क़ुरान 73/3 पृष्ठ 756 का 247

(۱) حینئذ لا یتم استدلال الامام البلقینی رحمہ اللہ تعالٰی الا اذا احطنا بالحکم الا لھیۃ فی غسل قلبہ الکریم علیہ افضل الصلاۃ والتسلیم وعلمنا انھما کان سواء فی تحصیلھا ثم اللہ سبحانہ اختار ھذا فکان افضل اما ان یکون شیئ اوفق واصلح العمل من غیرہ فلایستلزم کونہ اجل قدراً واعظم فخراً منہ بالفضل الکلی علی (۲) انہ صلی اللہ تعالٰی (۳) علیہ وسلم لایتشرف بغیرہ بل الکل انما یتشرفون بہ (۴) واللہ تعالٰی یصیب برحمتہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم مایشاء من خلقہ لیرزقہ فضلا کما اختار لولادتہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم شہر ربیع الاول دون شہر رمضان ویوم الاثنین دون الجمعۃ ومکان مولدہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم دون الکعبۃ والفضل بیداللہ یؤتیہ من یشاء واللہ ذو الفضل العظیم

مقام ہے اور اس معنی پر امام بلقینی کا استدلال تب ہی صحیح ہو سکتا ہے جب ہم حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کے قلبِ مبارک دھونے کے بارے میں اللہ تعالٰی کی حکمتوں کو پیشِ نظر رکھیں اور یہ معلوم کر لیں کہ ان کے حاصل کرنے میں دونوں پانی زمزم اور کوثر مساوی ہیں اس کے باوجود اللہ تعالٰی نے زمزم کو پسند فرمایا لہٰذا افضل ہوا، اس لئے کہ یہ اس کارروائی کیلئے زیادہ موافق اور زیادہ صلاحیت والا تھا، اس لحاظ سے زمزم کا قدر و منزلت کے اعتبار سے کلی طور پر اعظم ہونا لازم نہیں آتا۔ علاوہ ازیں حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کو کسی دوسرے سے شرف حاصل نہیں ہوا بلکہ دوسروں نے حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام سے شرف پایا ہے اللہ تعالٰی اپنی مخلوق میں سے جسے چاہتا ہے حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کی رحمت سے نوازتا ہے تاکہ اس کو فضیلت دے جیسا کہ آپ کی ولادت پاک کیلئے رمضان کی بجائے ربیع الاول کو اور جمعہ کی بجائے سوموار کے دن کو اور کعبہ کی بجائے آپ کی جائے ولادت کو مشرف فرمایا۔ فضیلت کا مالک اللہ تعالٰی ہے جسے چاہتا ہے دیتا ہے وہ بڑے فضل والا ہے۔

اما جواب الامام ابن حجر فغاية مايظهر فی توجيهہ ان زمزم افضل فی الدنيا لانہ مقدور لنا فنثاب عليہ فيترتب عليہ الفضل لنا بخلاف الكوثر ان رزق الله تعالیٰ منہ احدنا فی الدنيا فلفضل فيہ ليكن امام ابن حجر كا جواب فضيلت كی توجيہ ميں بہت واضح ہے كہ زمزم دنيا ميں افضل ہے كيونكہ وہ ہمارے زير تصرف ہے اور ہميں اس پر

Fatawa Razawiyya Volume Three

(Arabic Text): Or it is due to a favor from the Lord, Glorified and Exalted is He. Thus, it follows from a virtue, and that which inherits virtue is superior. As for the Hereafter, it is not an abode of deeds, so this aspect ceases there, and the excellence of Kauthar becomes apparent because it is one of the greatest things that Allah Almighty has bestowed upon His Prophet (may Allah Almighty send blessings and peace upon him).

(Urdu Translation): ...reward is obtained through which excellence is achieved for us. And the case of Kauthar is contrary to this. If anyone were to attain it in this world, it would be a virtue for the recipient, or necessarily a favor from Allah Almighty. Kauthar would be based on some virtue, and the one bestowing virtue (Zamzam) would be superior. And the Hereafter is not a place for deeds, so that this reason might be found there, and the excellence of Kauthar would manifest there because it would be a greater gift among the rewards for the Presence of the Prophet (upon whom be peace and blessings). (T)

(Arabic Text): I say: If this [argument] were complete, then every water in the world would be superior to Kauthar by the same evidence, and that is as you see [flawed]. Rather, the discussion (1) as you have known is about the highest in rank and the greatest in pride. This does not change with the change of abode, such that a thing is more exalted in rank with Allah than another in this world, and when the Hereafter comes, the matter is reversed. No, rather (2) nothing appears in the Hereafter except what was with Him here. So, what was superior in the Hereafter was superior in its essence. And what was superior in its essence was superior wherever it was. And you have admitted that Kauthar is superior in the Hereafter, so it is necessary that it has superiority in both this world and the hereafter. How [otherwise], while (3) Zamzam is from the waters of this world and it [Kauthar] is from the waters of the Hereafter, and for the Hereafter there are greater degrees and greater preference (1). Also (4) its water is from Paradise - the Prophet (may Allah Almighty send blessings and peace upon him) said: two spouts pour into it.

(Urdu Translation): I say that if Imam Ibn Hajar's argument were correct, then it would necessarily follow that all the waters of the world become superior to Kauthar, because the same reason is found here, although this is not correct. Rather, here excellence of rank and glory's greatness and loftiness are intended. And this meaning of excellence does not change in respect to the world or the hereafter, such that one

thing in comparison to another in the world is of great value in the sight of Allah, and when the hereafter occurs, the matter becomes reversed. This is not the case at all; rather, in the hereafter, the same thing will manifest as being of rank and status in the sight of Allah which was also such here in this world. And whatever will be superior in the hereafter, will be superior everywhere. And when you have admitted the superiority of Kauthar in the hereafter, then it is necessary that it be superior in both the world and the hereafter. And why not, since Zamzam is the water of the world and Kauthar...

1. Al-Quran 17/21 Page 248 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

(अरबी मूल): या फिर यह अल्लाह सुब्हानहू व तआला के फ़ज़्ल (कृपा) के कारण है, जो किसी फ़ज़ीलत (श्रेष्ठता) के परिणामस्वरूप होता है। जो फ़ज़ीलत का वारिस हो, वह श्रेष्ठ है। जहाँ तक आख़िरत (परलोक) की बात है, वह कर्म करने का घर नहीं है, इसलिए वहाँ यह पहलू समाप्त हो जाता है और कौसर की फ़ज़ीलत प्रकट होती है क्योंकि यह उन महानतम वरदानों में से है जो अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को प्रदान किए हैं।

(उर्दू अनुवाद): ...सवाब मिलता है जिससे हमें फ़ज़ीलत मयस्सर होती है और कौसर का मामला इसके ख़िलाफ़ है अगर दुनिया में किसी को वह नसीब हो जाए तो वह पाने वाले की फ़ज़ीलत होगी या अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़ज़्ल होगा ला-महाला कौसर किसी फ़ज़ीलत पर मुरत्तब होगा, और फ़ज़ीलत देने वाला (ज़मज़म) अफ़ज़ल होता है, और आख़िरत दारुल अमल नहीं है ताकि वहाँ यह वजह पाई जाए और वहाँ कौसर की फ़ज़ीलत ज़ाहिर होगी क्योंकि वहाँ हुज़ूर अलैहिस्सलाम पर इनामात में से यह बड़ा इनाम होगा। (त)

(अरबी मूल): मैं कहता हूँ: अगर यह तर्क पूर्ण होता, तो दुनिया का हर पानी इसी प्रमाण के आधार पर कौसर से श्रेष्ठ होता, और यह जैसा कि आप देख रहे हैं [त्रुटिपूर्ण] है। बल्कि चर्चा (1) जैसा कि आप जानते हैं, उच्चतम पद और महानतम गौरव के बारे में है। यह निवास बदलने से नहीं बदलता, कि दुनिया में अल्लाह तआला के नज़दीक एक चीज़ दूसरी से अधिक मूल्यवान हो, और फिर जब आख़िरत आए, तो मामला उलट जाए। नहीं, बल्कि (2) आख़िरत में वही प्रकट होता है जो यहाँ उनके पास है। तो जो आख़िरत में श्रेष्ठ था, वह अपने आप में श्रेष्ठ था, और जो अपने आप में श्रेष्ठ था, वह जहाँ भी हो श्रेष्ठ था। और आपने स्वीकार किया है कि कौसर आख़िरत में श्रेष्ठ है, इसलिए यह आवश्यक है कि उसे दुनिया और आख़िरत दोनों में श्रेष्ठता प्राप्त हो। और ऐसा क्यों न हो जबकि (3) ज़मज़म दुनिया के पानी में से है और वह [कौसर] आख़िरत के पानी में से है, और आख़िरत के लिए अधिक ऊँचे दर्जे और बड़ी श्रेष्ठताएँ(1) हैं। साथ ही (4) इसका पानी जन्नत से है - नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: इसमें दो परनालों से पानी गिरता है...

(उर्दू अनुवाद): मैं कहता हूँ कि अगर इमाम इब्न हजर की दलील दुरुस्त हो तो इससे लाज़िम आएगा कि दुनिया के तमाम पानी कौसर से अफ़ज़ल हो जाएँ क्योंकि वही दलील यहाँ पाई जाती है हालाँकि यह दुरुस्त नहीं है बल्कि यहाँ फ़ज़ीलत कद्र व फ़ख्र की अज़मत व बुलंदी मुराद है और फ़ज़ीलत का

यह मानी दुनिया या आख़िरत के लिहाज़ से नहीं बदलता ताकि दुनिया में एक चीज़ दूसरी के मुक़ाबले में इन्दल्लाह बड़ी कद्र वाली हो और जब आख़िरत बरपा हो तो मामला उलट जाए ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि आख़िरत में इन्दल्लाह वही चीज़ कद्र व मंज़लت वाली ज़ाहिर होगी जो यहाँ दुनिया में भी ऐसी होगी। और जो चीज़ आख़िरत में अफ़ज़ल होगी वह हर जगह अफ़ज़ल होगी और जब आपने आख़िरत में कौसर के अफ़ज़ल होने का एतराफ़ कर लिया तो ज़रूरी है कि वह दुनिया व आख़िरत दोनों में अफ़ज़ल हो, और क्यों न हो कि ज़मज़म दुनिया का पानी है और कौसर...

1. अल-क़ुरआन 17/21 पृष्ठ 248 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

(عربی متن): او لتفضل من المولی سبحانہ وتعالی فھو یترتب علی الفضل وما یورث الفضل افضل اما الآخرۃ فلیست دار عمل فیذھب ھنالک ھذا الوجہ ویظھر فضل الکوثر لانہ من اعظم ما من اللہ تعالی بہ علی نبیہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم۔

(اردو ترجمہ): ثواب ملتا ہے جس سے ہمیں فضیلت میسر ہوتی ہے اور کوثر کا معاملہ اس کے خلاف ہے اگر دنیا میں کسی کو وہ نصیب ہوجائے تو وہ پانے والے کی فضیلت ہوگی یا اللہ تعالٰی کی طرف سے فضل ہوگا لامحالہ کوثر کسی فضیلت پر مرتب ہوگا، اور فضیلت دینے والا (زمزم) افضل ہوتا ہے، اور آخرت دار العمل نہیں ہے تاکہ وہاں یہ وجہ پائی جائے اور وہاں کوثر کی فضیلت ظاہر ہوگی کیونکہ وہاں حضور علیہ الصلوۃ والسلام پر انعامات سے یہ بڑا انعام ہوگا۔ (ت)

(عربی متن): اقول: لو تم ھذا لکان کل ماء فی الدنیا افضل من الکوثر بعین الدلیل وھو کما تری بل الکلام (۱) کما علمت فی الارفع قدراً والاعظم فخراً وھذا لا یختلف باختلاف الدار حتی یکون شیئ اجل قدراً عند اللہ تعالی من آخر فی الدنیا فاذا جاءت الآخرۃ انعکس الامر کلا بل (۲) لا یظھر فی الآخرۃ الا ما ھو عندہ تعالی ھھنا فما کان افضل فی الآخرۃ کان افضل فی نفسہ وما کان افضل فی نفسہ کان افضل حیث کان وقد اعترفتم ان الکوثر افضل فی الآخرۃ فوجب ان یکون لہ الفضل دنیا واخری کیف و (۳) زمزم من میاہ الدنیا وھو من میاہ الآخرۃ وللآخرۃ اکبر درجت واکبر تفضیلا ۱ وایضاً (۴) ماؤہ من الجنۃ ۔ قال صلی اللہ تعالی علیہ وسلم یغط فیہ میزابان

(اردو ترجمہ): میں کہتا ہوں کہ اگر امام ابن حجر کی دلیل درست ہو تو اس سے لازم آئے گا کہ دنیا کے تمام پانی کوثر سے افضل ہوجائیں کیونکہ وہی دلیل یہاں پائی جاتی ہے حالانکہ یہ درست نہیں

ہے بلکہ یہاں فضیلت قدر و فخر کی عظمت و بلندی مراد ہے اور فضیلت کا یہ معنیٰ دنیا یا آخرت کے لحاظ سے نہیں بدلتا تاکہ دنیا میں ایک چیز دوسری کے مقابل میں عند اللہ بڑی قدر والی ہو اور جب آخرت برپا ہو تو معاملہ الٹ ہوجائے ایسا ہر گز نہیں ہے بلکہ آخرت میں عند اللہ وہی چیز قدر و منزلت والی ظاہر ہوگی جو یہاں دنیا میں بھی ایسی ہوگی۔ اور جو چیز آخرت میں افضل ہوگی وہ ہر جگہ افضل ہوگی اور جب آپ نے آخرت میں کوثر کے افضل ہونے کا اعتراف کر لیا تو ضروری ہے کہ وہ دنیا و آخرت دونوں میں افضل ہو، اور کیوں نہ ہو کہ زمزم دنیا کا پانی ہے اور کوثر

۱ القرآن ۱۷ / ۲۱ صفحہ 248 از 756

[Arabic Text]: It is replenished from Paradise, one (spout) is of gold and the other of silver. [Footnote 1] Narrated by Muslim from Thawban (may Allah be pleased with him). And the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Behold, Allah's commodity is dear; behold, Allah's commodity is Paradise." Then it (the Kauthar) is (1) most beneficial for his (peace and blessings of Allah be upon him) nation there. Whoever drinks from it will never be thirsty, nor will his face ever turn black (2). And Allah the Glorified has bestowed this favor upon the best of His prophets (peace and blessings of Allah be upon him), so our Lord, the Glorified and Exalted, has granted us the best provision by reaching it and drinking from it at the hand of His most beloved, peace and blessings of Allah be upon him. Glory, honor, greatness, and generosity be upon him, his noble family, his great companions, his noble son, and his noble nation, the best of nations. And may it be upon us through them, for them, among them, and with them, O He Who favored us by sending him and bestowed blessings. Praise be to Allah, Lord of the worlds, a praise that lasts with His eternal duration. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best, His knowledge is most complete, and His judgment is most wise.

[Urdu Explanation]: It is water from the Hereafter, and the rank and excellence of the Hereafter is great; furthermore, the water of Kauthar comes from Paradise. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Two spouts fall into Kauthar, both coming from Paradise, one is of gold and the other is of silver." This hadith is narrated by Muslim from Hazrat Thawban (may Allah be pleased with him). And the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Contemplate, Allah's commodity is high-priced and Allah's commodity is Paradise." Then Kauthar is most beneficial there for the nation of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). Whoever drinks it will never be thirsty, nor will his face ever turn black. Allah Almighty has favored the most superior of the Prophets (peace and blessings of Allah be upon him) with Kauthar, hence Kauthar is the most superior. We pray that Allah Almighty allows us to drink from the blessed hand of His Beloved (peace and blessings of Allah be upon him) and grants us the honor of reaching this Kauthar. May Allah's mercies, peace, greatness, honor, and generosity descend upon the Prophet, his chosen family, his noble companions, his generous sons, and his best nation, and upon us too, through their company, their sake, and their means; O He Who favored us by sending him to us, Praise be to Allah, Lord of the worlds. (T)

Question 56: 6 Shawwal 1320 AH, asked by Maulvi Abdul Shakoor Sahab Arkani: What do the scholars of religion say regarding this matter: while performing ablution, if in the pot used for ablution, one's hand or face...

Footnotes: 1. Sahih Muslim, Kitab al-Fada'il, Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/251 2. Jami' at-Tirmidhi, Chapters on the Day of Resurrection, Amin Company Delhi, 2/68

फतावा-ए-रज़विया जिल्द तीसरा

[अरबी पाठ]: यह जन्नत से भरता है, जिनमें से एक (नाला) सोने का है और दूसरा चाँदी का। [पाद-टिप्पणी 1] इसे हज़रत थौबान रज़ियल्लाहु अन्हु से मुस्लिम ने रिवायत किया है। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "सावधान, अल्लाह का सौदा महंगा है; सावधान, अल्लाह का सौदा जन्नत है।" फिर वह (1) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के लिए वहां सबसे अधिक लाभदायक है। जो कोई भी उससे पियेगा वह कभी प्यासा नहीं होगा और न ही उसका चेहरा कभी काला होगा (2)। और अल्लाह सुब्हानहू ने अपने सबसे श्रेष्ठ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर यह एहसान फरमाया है, इसलिए हमारे रब सुब्हानहु व तआला ने हमें सबसे श्रेष्ठ रिज़्क दिया कि उस पर पहुँचें और अल्लाह के सबसे प्रिय हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ से पियें। आप पर, आपके महान परिवार पर, आपके महान साथियों पर, आपके शरीफ़ बेटों और आपकी बेहतरीन उम्मत पर जो तमाम उम्मतों में सर्वश्रेष्ठ है, महिमा, सम्मान, महानता और उदारता हो। और हम पर भी उनके तफ़ैल और उनके साथ हो, ऐ वह जिसने हमें नबी भेजकर एहसान किया और उपकार किए। तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है, ऐसी प्रशंसा जो उसके शाश्वत होने तक रहे। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है, उसका इल्म सबसे पूर्ण है और उसका हुक्म सबसे सटीक है।

[उर्दू व्याख्या]: यह आख़िरत का पानी है और आख़िरत का दर्जा और फ़ज़ीलत बड़ी है, साथ ही कौसर का पानी जन्नत से निकलता है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया: "कौसर में दो मीज़ाब (नाले) गिरते हैं, दोनों जन्नत से आकर गिरते हैं, एक सोने का है और दूसरा चाँदी का।" इस हदीस को हज़रत थौबान रज़ियल्लाहु अन्हु से मुस्लिम ने रिवायत किया है। और हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया: "गौर करो, अल्लाह तआला का सामान कीमती है और अल्लाह तआला का सामान जन्नत है।" फिर कौसर हुज़ूर अलैहिस्सलाम की उम्मत के लिए वहां ज़्यादा फायदेमंद है। जो कोई इसे पियेगा वह कभी प्यासा नहीं होगा और न ही उसका चेहरा कभी काला होगा। अल्लाह तआला ने कौसर को अफ़ज़लुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर एक एहसान के रूप में दिया है, इसलिए कौसर ही सबसे अफ़ज़ल है। दुआ है कि अल्लाह तआला हमें अपने हबीब अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथों से पिलाए और हमें उस कौसर पर पहुँचना नसीब फरमाए। हुज़ूर पर अल्लाह तआला की रहमतें, सलामती, बुज़ुर्गी, शर्फ़ और करम नाज़िल हों और आपकी बरगुज़ीदा आल पर, बुज़ुर्गवार सहाबा पर, आपके

सखी साहबज़ादों पर और आपकी बेहतरीन उम्मत पर, और उनकी सोहबत, सदके और सबब से हम पर भी, ऐ हम पर उन्हें भेजकर एहसान फरमाने वाले, अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन। (त)

मसला 56: 6 शव्वाल 1320 हिजरी, सायल मौलवी अब्दुल शकूर साहब अरकानी: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि वज़ू करते समय जिस लोटे से वज़ू करे उसमें अगर हाथ मुँह...

पाद-टिप्पणी: 1. सहीह मुस्लिम, किताब अल-फ़ज़ाइल, कदीमी कुतुब खाना कराची, 251/2 2. जामिउत तिर्मिज़ी, बाब मिन अबवाब अल-क़यामत, अमीन कंपनी दिल्ली, 68/2

पेज 249/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[عربی متن]: یمد انه من الجنة احدهما من ذهب والأخر من ورق [1] رواه مسلم عن ثوبان رضی الله تعالی عنه وقال صلی الله تعالی علیه وسلم الا ان سلعة الله غالیة الا ان سلعة الله الجنة ثم هو (۱) انفع لامته صلی الله تعالی علیه وسلم من شرب منه لم یظمأ ابدا ولم یسود وجهه ابدا (۲) وقد امتن الله سبحانه به علی افضل انبیائه صلی الله تعالی علیه وسلم فکان افضل رزقنا المولی سبحانه وتعالی الورود علیه، والشرب منه بید احب حبیب الیه، صلی الله تعالی علیه وسلم، ومجد وشرف وعظم وکرم، وعلی اله الکرام، وصحبه العظام، وابنه الکریم وامته الکریمة خیر الامم، وعلینا بهم ولهم وفیهم ومعهم یامن من علینا بارساله وانعم، والحمد لله رب العلمین حمدا یدوم بدوامه الادوم، والله سبحنه وتعالی اعلم، وعلمه جل مجده اتم، وحکمه عز شانه احکم۔

[اردو ترجمہ و تشریح]: آخرت کا پانی ہے اور آخرت کا درجہ اور فضیلت بڑی ہے، نیز کوثر کا پانی جنّت سے نکلتا ہے۔ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا کوثر میں دو میزاب (نالے) گرتے ہیں دونوں جنّت سے آکر گرتے ہیں ایک سونے کا اور دوسرا چاندی کا ہے۔ اس حدیث کو حضرت ثوبان رضی اللہ عنہ سے مسلم نے روایت کیا ہے، اور حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا غور کرو اللہ تعالیٰ کا سامان گراں قیمت والا ہے اور اللہ تعالیٰ کا سامان جنّت ہے پھر کوثر حضور علیہ الصلوۃ والسلام کی اُمّت کیلئے وہاں زیادہ نفع مند ہے جو بھی اسے نوش کرے گا کبھی پیاسا نہ ہوگا اور نہ ہی اس کا چہرہ کبھی سیاہ ہوگا، اور اللہ تعالیٰ نے کوثر حضور افضل الانبیاء صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر احسان فرمایا ہے لہٰذا کوثر ہی سب سے افضل ہے۔ دعا ہے ہمیں اللہ تعالیٰ اپنے حبیب علیہ الصلوۃ والسلام کے دستِ مبارک سے پلائے اور اس کوثر پر ورود ہمیں نصیب فرمائے۔
حضور پر اللہ تعالیٰ کی رحمتیں، سلامتی، بزرگی، شرف و کرم نازل ہو اور آپ کی برگزیدہ آل پر

اور بزرگوار صحابہ پر اور آپ کے سخی صاحبزادے اور آپ کی بہترین اُمّت پر اور اُن کی معیت اور صدقے اور سبب سے ہم پر بھی، اے ہم پر اُن کو بھیج کر احسان فرمانے والے، الحمدللہ رب العلمین۔ (ت)

مسئلہ ۵۶ : ۶ شوال ۱۳۲۰ھ مسئولہ مولوی عبدالشکور صاحب ارکانی کیا فرماتے ہیں علماء دین اس مسئلہ میں کہ وضو کرتے وقت جس لوٹے سے وضو کرے اُس میں اگر ہاتھ منہ

حواشی: ۱ صحیح للمسلم کتاب الفضائل قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۲۵۱ ۲ جامع الترمذی باب من ابواب القیمۃ امین کمپنی دہلی ۲/۶۸

Fatawa Razawiyya Volume 3 If used drops [of water] fall [into it], is the water in that vessel pure or not, and is it correct to wash the remaining parts of the body with it or not? The Answer: It is pure absolutely according to the correct and relied-upon school of Imam Muhammad. Washing the remaining parts of the body with it is also correct, provided that the used water has not fallen in such quantity that it exceeds the unused water. For what is considered here is the dominance in terms of parts, as stated in At-Tabyin, Ad-Durr al-Mukhtar, and others. And Allah Almighty knows best. (Because here dominance is considered in terms of parts, as it is in Tabyin and Durr Mukhtar). And Allah Almighty knows best. From the city of Bareilly, Saturday, 25 Sha'ban 1334 AH. Problem 57: What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this issue: if the water of a pool changes in smell and color due to heat or being old, should one perform ablution (wudhu) in it or not? And in this same issue, the water of village wells etc., develops color and smell; should one perform wudhu with it or not? And Zaid says that if something like a dog or a cat falls into it, causing a smell and change in taste, it becomes impure; but if the taste and color change on their own, the water does not become impure. [What is the ruling?] The Answer: If color, smell, or taste change due to a pure thing falling into it or due to staying still for a long time, the water does not become spoiled. Yes, if the change occurs due to impurity (najasa), it will be impure, no matter how much water there is. And Allah Almighty knows best. Problem 58: From Kamp Deesa, Gujarat, Mohalla Muhammad Pura, via Pesh Imam Maulvi Nizamuddin Sahib, sent by Nisar Ahmad Sahib, 20 Ramadan Sharif 1327 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this issue: jurists write four types of pools: (1) Circular, (2) Square, (3) Triangular, (4) Length without width. Are these four types correct and permissible without disagreement, or is there a disagreement regarding any of these types? And if any of these types has superiority, let it be specified. Please provide a satisfying answer quickly. The Answer: Circular, triangular, and square are merely differences in shape, not separate types with different rulings. However, in "length without width"... 1 Ad-Durr al-Mukhtar, Book of Waters, Mujtabai Delhi, 1/34. Page 250 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3 यदि इस्तेमाल किए हुए (मुस्तमल) कतरे गिर जाएं तो क्या उस लोटे का पानी पाक है या नहीं, और उससे शरीर के बाकी अंगों को धोना सही है या नहीं? उत्तर: इमाम मुहम्मद के सही और विश्वसनीय मत (मज़हब) के अनुसार यह पूर्णतः पाक है। और उससे बाकी अंगों को धोना भी सही है, बशर्ते कि इस्तेमाल किया हुआ पानी इतनी अधिक मात्रा में न गिरा हो कि वह बिना इस्तेमाल किए हुए पानी से अधिक हो जाए। क्योंकि यहाँ भागों (अजज़ा) के आधार पर प्रबलता (ग़लबा) पर विचार किया जाता है, जैसा कि 'तबीन' और 'दुर-ए-मुख्तार' आदि में उल्लेख है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (क्योंकि यहाँ अंगों के हिसाब से अधिकता मानी जाती है जैसा कि तबीन और दुर-ए-मुख्तार में है)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। शहर बरेली से, शनिवार, 25 शाबान 1334 हिजरी। मसाला 57: धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि यदि किसी हौज़ का पानी गर्मी या पुराना होने के कारण उसकी गंध और रंग बदल जाए, तो उसमें वज़ू करना चाहिए या नहीं? और इसी मसले में, गाँवों के कुओं आदि के पानी में रंग और गंध आ जाती है, क्या उससे वज़ू करना चाहिए या नहीं? और ज़ैद कहता है कि यदि उसमें कोई चीज़ जैसे कुत्ता या बिल्ली आदि गिर जाए जिससे गंध आ जाए और स्वाद बदल जाए, तो वह नापाक हो जाता है, और यदि स्वाद और रंग अपने आप बदल जाए, तो पानी नापाक नहीं होता? उत्तर: यदि रंग, गंध या स्वाद किसी पाक चीज़ के गिरने या अधिक समय तक रुके रहने के कारण बदल जाए, तो पानी खराब नहीं होता। हाँ, यदि बदलाव नजासत (गंदगी) के कारण हो, तो वह नापाक (नजिस) होगा, चाहे पानी कितना भी अधिक क्यों न हो। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। मसाला 58: स्थान कंच दीसा, गुजरात, मोहल्ला मुहम्मद पुरा, मारफत पेश इमाम मौलवी निजामुद्दीन साहब, प्रेषक निसार अहमद साहब, 20 रमजान शरीफ 1327 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फरमाते हैं कि फकीह (धर्मशास्त्री) हौज़ के चार प्रकार लिखते हैं: (1) गोल (मुदव्वर), (2) चौकोर (मुरब्बा), (3) तिकोना (मुसल्लस), (4) बिना चौड़ाई के लंबा (तुल बिला अर्ज़)। क्या ये चारों प्रकार बिना किसी विवाद के सही और जायज़ हैं या इनमें से किसी प्रकार में मतभेद है? और यदि इनमें से कोई प्रकार श्रेष्ठता रखता हो, तो उसे स्पष्ट किया जाए। कृपया उत्तर से शीघ्र संतुष्ट करें। उत्तर: गोल, तिकोना और चौकोर तो केवल आकृति (हयात) का अंतर है, ये अलग प्रकार नहीं हैं जिनके नियम अलग हों। अलबत्ता, बिना चौड़ाई के लंबाई में... 1 अद-दुर-अल-मुख्तार, बाब-अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/34। पृष्ठ 756 का 250

فتاوی رضویہ جلد سوم کے مستعمل قطرے گرے تو اس لوٹے کا پانی طاہر ہے یا نہیں اور اس سے بقیہ عضو کا دھونا درست ہے یا نہیں؟ الجواب: طاہر تو مطلقاً ہے علی مذہب محمد المصحح المعتمد (امام محمد کے صحیح و معتمد مذہب پر- ت) اور بقیہ اعضا کا اس سے دھونا بھی درست ہے جبکہ مستعمل پانی اس قدر کثرت سے نہ گرا ہو کہ غیر مستعمل پانی سے زائد ہو جائے فأن المعتبر ھھنا الغلبة بالاجزاء کما في التبیین والدر المختار وغیرھما واللہ تعالیٰ اعلم (کیونکہ یہاں اجزاء کے اعتبار سے غلبہ معتبر ہے جیسا کہ تبیین اور در مختار میں ہے) واللہ تعالیٰ اعلم۔ از شہر بریلی بروز شنبہ ۲۵ شعبان ۱۳۳۴ھ مسئلہ ۵۷: کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ حوض کا پانی بسبب گرمی یا پرانا ہونے سے جس میں بُو اور رنگ تغیر ہو جائے اُس میں وضو کرنا چاہئے یا نہیں، اور اسی مسئلہ میں گاؤں کے چاہ وغیرہ ان کا پانی اور رنگ اور بُو آجاتی ہے اس سے وضو کرنا چاہئے یا نہیں اور زید کہتا ہے اگر اس میں کوئی چیز کتا یا بلی وغیرہ گر جائے جس سے بو آجائے اور مزہ تبدیل ہو جائے تو ناپاک ہو جائے تو ناپاک ہوتا ہے اور آپ ہی خود مزہ اور رنگ تبدیل ہو جائے تو پانی ناپاک نہیں ہوتا ہے؟ الجواب: رنگ یا بو یا مزہ اگر کسی پاک چیز کے گرنے یا زیادہ دیر ٹھہرنے سے بدلے تو پانی خراب نہیں ہوتا ہاں نجاست کی وجہ سے تغیر آجائے تو نجس ہوگا اگر چہ کتنا ہی کثیر کیوں نہ ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۵۸ : مقام کنپ ڈیسہ گجرات محلہ محمد پورہ معرفت پیش امام مولوی نظام الدین صاحب مرسلہ نثار احمد صاحب ۲۰ رمضان شریف ۱۳۲۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ فقہاء حوض کی چار اقسام لکھتے ہیں: (۱) مدور (۲) مربع (۳) مثلث (۴) طول بلا عرض۔ آیا یہ چاروں قسمیں بلا اختلاف درست اور جائز ہیں یا ان میں سے کسی قسم میں اختلاف ہے اور جو قسم ان اقسام میں سے افضلیت رکھتی ہو استثناء کی جائے جواب سے بہت جلد تشفی فرمائیں۔ الجواب:

مدور مثلث مربع تو صرف اختلاف ہیات ہے اقسام جداگانہ نہیں جن کے احکام مختلف ہوں طول بلا عرض میں البتہ 1 الدر المختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/۳۴ صفحہ 250 از 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

There is a difference of opinion. According to some, it is not considered 'Ab-e-Kaseer' (a large body of water) at all, even if it spans from Samarkand to Bukhara. However, the correct and most preferred view is that an area of 100 square hands (cubits) is required, regardless of how it is achieved, as we have thoroughly researched in our Fatawa with nothing further to add. (We have researched this in our Fatawa, which requires no more detail. - Translator). Due to this difference, the measurements for circular and triangular areas will also vary. For those who require both length and width to be ten hands, the area of a circle must be more than 183 hands, and each side of a triangle must be twenty-one and a half hands and 3/8 Girah. According to the chosen opinion (Qawl-e-Mukhtar), the diameter of a circle should be five yards, 10 Girah, and one finger, or say eleven hands, two Girah, and one finger. And each side of a triangle should be fifteen hands and 5/11 hands, as we explained in our treatise "Al-Haniat-ul-Munir fi al-Ma' al-Mustadir," which is among the treatises of our Fatawa. (As we mentioned in our treatise "Al-Haniat-ul-Munir fi al-Ma' al-Mustadir," which is one of the treatises in our Fatawa. - Translator). Indeed, the best is that whether it is square, triangular, or circular, it should be such that a square with each side of five hands or fifteen feet can be placed inside it, because avoiding disagreement is better and more cautious by consensus. And Allah Almighty knows best. (Because avoiding disagreement is better and more cautious by consensus. - Translator).

Mas'ala 59: Questioned by Moulvi Chaudhary Abdul Hameed Khan Sahib, Chief of Sahawar, author of *Kanz al-Akhira*, 7 Muharram-ul-Haram 1335 AH.

Used water (Ab-e-Mustamal) is pure (tahir) but not purifying (mutahhir). From the study of jurisprudence (fiqh), it appears that water less than 'dah-dar-dah' (ten by ten), whether it is in a cauldron, a large pot, or a small pot, if even one complete finger of a person in a state of ritual impurity (hadath or janabat) touches it, it becomes 'used' (mustamal) and then no longer remains fit for purification, as used water is not purifying. In such a situation, a great difficulty arises because a vast number of Muslims, especially women, rely entirely on the water brought by water-carriers (saqqas) for ablution (wudhu) and bathing (ghusl). These water-carriers fill water and bring it to homes, and the entire household uses that water for ablution and purification. The condition of these water-carriers is that, firstly, they often do not pray, and they have no sense of purity or impurity. Besides this, even if they were to pray, they are not always in a state of wudhu. When they pull water from a well,

they hold the rope of the bucket with their teeth, put the fingers of one hand into the bucket, and place the fingers of the other hand on the mouth of the leather bag (mushk) to fill it. Then, when they come to homes to fill water, they open the mouth of the mushk and place their hand near its mouth to fill pitchers and pots, such that all the water flows over their palms before entering the vessel. In such a state, it is certain that water becomes 'used' two or three times over before reaching the pots, and it is from this water that everyone performs purification and ablution. Furthermore, the way common praying Muslims draw water from wells in mosques to fill small pots and large pitchers is also very similar to the methods used by these water-carriers, and from that...

फतावा रज़विया, जिल्द 3

मतभेद है। कुछ के अनुसार वह पूर्णतः'आब-ए-कसीर' (अधिक पानी) नहीं है, चाहे वह समरकंद से बुखारा तक हो। और सही और अधिक तरजीह देने योग्य बात यह है कि 100 हाथ का क्षेत्रफल आवश्यक है, चाहे वह किसी भी तरह प्राप्त हो, जैसा कि हमने अपने फतावा में पूरी शोध के साथ स्पष्ट किया है जिस पर और अधिक की आवश्यकता नहीं है। (इसकी तहक़ीक़ हमने अपने फ़तावा में की है जिस पर ज़्यादा की ज़रूरत नहीं। - अनुवादक)। इसी मतभेद के आधार पर गोलाकार और त्रिकोणीय क्षेत्रों की मापों में भी अंतर आएगा। जिनके अनुसार लंबाई और चौड़ाई दोनों का दस-दस हाथ होना आवश्यक है, गोलाकार का क्षेत्रफल 183 हाथ से भी अधिक होना चाहिए और त्रिकोण की प्रत्येक भुजा साढ़े इक्कीस हाथ 3/8 गिरह होनी चाहिए। और पसंदीदा कथन (क़ौल-ए-मुख्तार) के अनुसार गोलाकार का व्यास पांच गज दस गिरह एक उंगली, या ग्यारह हाथ दो गिरह एक उंगली कहिए। और त्रिकोण की प्रत्येक भुजा पंद्रह हाथ और 5/11 हाथ होनी चाहिए जैसा कि हमने अपने शोध पत्र "अल-हनिया-तुल-मुनीर फी अल-मा अल-मुस्तदीर" में बताया है, जो हमारे फतावा के शोध पत्रों में से है। (जैसा कि हमने अपने रिसाले "अल-हनिया-तुल-मुनीर फ़िल मा-इल-मुस्तदीर" में ज़िक्र किया है, जो हमारे फ़तावा के रसाइल में से है। - अनुवादक)। निःसंदेह सबसे उत्तम यही है कि वर्ग, त्रिकोण या गोलाकार कैसा भी हो, उसके भीतर एक ऐसा वर्ग स्थित हो सके जिसकी प्रत्येक भुजा पांच हाथ या पंद्रह फीट हो, क्योंकि सर्वसम्मति से मतभेद से बचना ही बेहतर और अधिक सावधानीपूर्ण है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (क्योंकि बिल-इत्तिफ़ाक़ इख़्तिलाफ़ से बचना बेहतर और एहतियात वाला है। - अनुवादक)।

मसाला 59: प्रश्नकर्ता: मौलवी चौधरी अब्दुल हमीद खान साहब, रईस सहावर, लेखक कन्सुल आखिरह, 7 मुहर्रम-उल-हराम 1335 हिजरी।

उपयोग किया हुआ पानी (आब-ए-मुस्तअमल) पाक है लेकिन पाक करने वाला नहीं। फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) के अध्ययन से पता चलता है कि जो पानी 'दह-दर-दह' (दस बटा दस) से कम हो, चाहे वह कड़ाही में हो या मटके या लोटे में, यदि उसमें अपवित्रता की स्थिति (हदस या जनाबत) वाले व्यक्ति की एक पूरी उंगली भी डूब जाए, तो वह पानी मुस्तअमल हो जाएगा और फिर वह पवित्रता प्राप्त करने के योग्य नहीं रहेगा, क्योंकि मुस्तअमल पानी पाक करने वाला नहीं होता। ऐसी स्थिति में बड़ी मुश्किल यह आती है कि मुसलमानों के एक बड़े वर्ग, विशेषकर महिलाओं का वज़ू और ग़ुस्ल पूरी तरह से सक्क़ों (पानी लाने वालों) के पानी पर निर्भर है, जो पानी लाकर घरों में भरते हैं और उसी

पानी से घर के सभी लोग वज़ू और पाकी हासिल करते हैं। सक्क़ों की हालत यह है कि पहली बात तो वे अक्सर नमाज़ नहीं पढ़ते, जिन्हें पाकी और नापाकी की कोई पहचान नहीं होती। इसके अलावा, भले ही वे नमाज़ पढ़ने वाले हों, लेकिन हर समय वज़ू की हालत में नहीं होते। जब वे कुएं से पानी खींचते हैं, तो डोल की रस्सी को दांतों से पकड़कर एक हाथ की उंगलियों को डोल में डालते हैं और दूसरे हाथ की उंगलियों को मशक के मुंह पर रखकर पानी मशक में भरते हैं। फिर जब वे घरों में आकर पानी भरते हैं, तो मशक का मुंह खोलकर और मशक के मुंह के पास अपना हाथ रखकर घड़ों और मटकों में पानी भरते हैं, जिससे वह सारा पानी उनकी हथेलियों को छूता हुआ बर्तन में पहुँचता है। ऐसी स्थिति में निश्चित रूप से पानी दो-दो, तीन-तीन बार मुस्तअमल होकर घड़ों-मटकों में पहुँचता है और उसी से सबकी पाकी और वज़ू होता है। इसके अलावा, आम नमाज़ी मुसलमान जिस तरह मस्जिदों में कुओं से पानी खींचकर लोटों और मटकों में भरते हैं, उनका तरीका भी लगभग इन सक्क़ों जैसा ही होता है, और उसी से...

فتاویٰ رضویہ جلد سوم اختلاف ہے بعض کے نزدیک وہ مطلقاً آب کثیر نہیں اگرچہ سمرقند سے بخاراتک ہو اور صحیح و مرجح تر یہ ہے کہ ۱۰۰ ہاتھ مساحت درکار ہے جس طرح بھی حاصل ہو کما حققناہ فی فتاونا بما لا مزید علیہ (اس کی تحقیق ہم نے اپنے فتاویٰ میں کی ہے جس پر زیادہ کی ضرورت نہیں۔ ت) اسی اختلاف کی بنا پر مدور و مثلث کی مساحتوں میں بھی اختلاف پڑے گا جن کے نزدیک دس ہاتھ طول دس ہاتھ عرض دونوں کا ہونا ضرور ہے مدور کا رقبہ ۱۸۳ ہاتھ سے بھی زیادہ ہونا چاہیے اور مثلث کی ہر ضلع ساڑھے اکیس ہاتھ ۳/۸ گرہ اور قول مختار پر مدور کا قطر پانچ گز دس ۱۰ گرہ ایک انگلی یا گیارہ ہاتھ دو گرہ ایک انگل کہیے اور مثلث کی ہر ضلع پندرہ ہاتھ اور ۵/۱۱ ہاتھ کما بینا فی رسالتنا الھنیئ المنیّر فی الماء المستدیر وھو من رسائل فتاونا (جیسا کہ ہم نے اپنے رسالے "الھنیہ المنیّر في الماء المستدیر" میں جو کہ ہمارے فتاویٰ کے رسائل میں سے ہے، میں ذکر کیا ہے۔ ت) افضل بے شک یہی ہے کہ مربع مثلث مدور کیسا بھی ہو اُس کے اندر ایک مربع واقع ہو سکے جس کی ہر ضلع پانچ ہاتھ یا پندرہ فٹ ہو لان الخروج عن الخلاف احوط واحسن بالاتفاق واللہ تعالیٰ اعلم (کیونکہ بالاتفاق اختلاف سے بچنا بہتر اور با احتیاط ہے۔ ت) مسئلہ ۵۹: مسئولہ مولوی چودھری عبد الحمید خاں صاحب رئیس سہاور مصنف کنز الآخرۃ ۷ محرم الحرام ۱۳۳۵ ہجری۔ آب مستعمل طاہر ہے غیر مطہر اور فقہ کے دیکھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ جو پانی دہ در دہ سے کم ہو خواہ وہ دیگ میں ہو خواہ مٹکے یا لوٹے میں، اگر اس میں محدث یا جنب کا ایک پورا بھی چھوٹ جائے گا تو وہ مستعمل ہو جائے گا اور پھر وہ قابل طہارت نہ رہے گا کہ آب مستعمل مطہر نہیں۔ ایسی صورت میں بڑی مشکل یہ پڑتی ہے کہ ایک گروہ کثیر در کثیر مسلمانوں کا خاص کر گروہ اناث کا بالکل دار مدار سقوں کے پانی پر وضو و غسل کرنے کا ہے کہ ستے پانی لے کر گھروں میں بھرتے ہیں اور اُسی پانی سے تمام گھر والے

وضو و طہارت کرتے ہیں اور سقوں کی یہ حالت ہے کہ اول تو وہ بے نمازی ہوتے ہیں جن کو طہارت و نجاست کا کچھ امتیاز نہیں اس کے سوا یہ کہ وہ ستے نمازی ہی کیوں نہ ہوں لیکن ہمہ وقت باوضو نہیں ہوتے اور پانی کنویں سے جب کھینچتے ہیں تو ڈول کی رسی کو دانتوں سے پکڑ کر ایک ہاتھ کی انگلیوں کو ڈول میں ڈال کر دوسرے ہاتھ کی انگلیوں کے مشک کے منہ پر رکھ کر پانی مشک میں بھرتے ہیں اور پھر جب وہ گھروں میں آ کر پانی بھرتے ہیں تو مشک کا منہ کھول کر اور مشک کے منہ کے قریب اپنا ہاتھ رکھ کر گھڑے مٹکوں میں پانی بھرتے ہیں کہ وہ سب پانی اُن کے ہاتھ کی کف دست پر ہو کر ظرف میں پہنچتا ہے اور ایسی حالت میں یقینی دو دو تین تین بار پانی مستعمل ہو کر گھڑے مٹکوں میں پہنچتا ہے اور اُسی سے سب طہارت و وضو ہوتا ہے اس کے سوا عام نمازی مسلمان جس طریق سے مسجدوں میں کنویں سے پانی کھینچ کر لوٹوں اور مٹکوں میں بھرتے ہیں وہ بھی قریب قریب انہیں سقوں کی ترکیب کے عمل کرتے ہیں اور اُسی

Fatawa-e-Razvia Volume Three

(Continuation of a question regarding ritual purity) ... they perform wudu and purification. In such a situation, what is the ruling on this purification? Leaving aside the negligence of the mosque's worshippers, what is the harm in the negligence of the water-carriers (saqqas), on whose water all Muslims depend? And the negligence of the water-carriers, which is a matter of common occurrence, cannot be resolved by any trick or plan, so what should be done now? Wassalam.

The Answer: In reality, the correct position in the school of thought is that if even an unwashed fingernail of a person without wudu falls into water that is not of a large area (dah-dar-dah), all that water becomes 'mustamal' (used water). From the works of Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) to Fath al-Qadir of Imam Ibn al-Humam, this ruling is unanimously mentioned in all books. However, it is a universal principle of the pure Shari'ah that, let alone 'mustamal', even regarding impurity (najasat), it does not consider mere illusions, doubts, and unfounded assumptions. Consider an old used shoe—how much of a source of suspicion of impurity it is—but the ruling is that until impurity is known for certain, the well will not become impure by its falling into it. Only twenty buckets will be drawn for the satisfaction of the heart. If the hand or foot of an ignorant child falls into water, it will not be considered impure without definitive knowledge of impurity. If a cow or goat falls into a well and comes out alive, the well remains pure, even though their hooves and thighs being uncontaminated by urine etc. is far from logical expectation. To the extent that they do not give a ruling of impurity even on the trousers of the transgressive, those who do not pray, or even non-believers, they only consider it disliked (makruh). In the water filled by water-carriers, such doubts do not even exist. At the time they bring the water and pour it into vessels, their hand is not even in the path of the water, otherwise it would stop the water from going into the vessel and make it flow here and there. Water comes out from the opening, and their hand is on the neck of the water-skin (mashk). While filling the water-skin, when they open its mouth with the left hand and pour water from the bucket, at that time the water is in a state of flow. As long as it enters the water-skin, in this state, even if it passes over impurity, it would go on purifying it. As for the right hand, it is mostly seen under the bucket, and when they pull out the bucket, they do so by placing their hand on its wooden part. Even assuming they were to put their hand inside it, then in the first bucket that the hand was put into, it would certainly become 'mustamal' if at that time they were without wudu and the hand had not been washed before, but it got

washed at the same time. Now, what was put into the second bucket did not become 'mustamal'. A water-skin is not less than three buckets. One bucket of 'mustamal' reached it and two or more non-'mustamal', so the entire water in the water-skin became pure and purifying. And the possibility that between the first bucket and before putting the hand into the second bucket, a state of ritual impurity (hadath) occurred to him, is unacceptable. If such 'perhaps' and possibilities were acted upon, then the well-being of both religion and world would become constricted. In short, water filled by the hands of water-carriers is certainly pure and purifying. As for the actions of the common people, the Shari'ah is the ruler over them and over everyone; their carelessness or ignorance cannot rule over the Shari'ah. This is an easy matter in which some later scholars might also disagree. How far do they even fulfill the consensus obligations, such as the elbows in wudu...

(एक प्रश्न का सिलसिला)... वे वुज़ू और पाकी (पवित्रता) करते हैं। ऐसी स्थिति में इस पाकी का क्या हुक्म है? मस्जिद के नमाज़ियों की लापरवाही को छोड़ दें, तो भिश्तियों (पानी भरने वालों) की लापरवाही का क्या नुकसान है, जिनके पानी पर तमाम मुसलमानों का दारोमदार है? और भिश्तियों की लापरवाही, जो एक आम समस्या है, किसी भी तरीक़े या तदबीर से दूर नहीं की जा सकती, तो फिर अब क्या किया जाए? वस्सलाम।

अल-जवाब (उत्तर): वास्तव में सही मज़हब (पंथ) यही है कि बिना वुज़ू वाले आदमी का नाख़ून भी अगर बिना धुला हुआ उस पानी में गिर जाए जो 'दह-दर-दह' (एक बड़े क्षेत्रफल वाला तालाब) न हो, तो वह सारा पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) हो जाएगा। इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) की किताबों से लेकर इमाम इब्न-ए-हुमाम की 'फ़तह अल-क़दीर' तक, सभी किताबों में सर्वसम्मति से यही हुक्म है। लेकिन शरीअत-ए-मुतहरा का यह एक सार्वभौमिक नियम है कि 'मुस्तअमल' तो दूर की बात है, नजासत (गंदगी) के मामले में भी वह केवल वहम, शक और अनुमानों पर ध्यान नहीं देती। उदाहरण के तौर पर, पुराने इस्तेमाल किए हुए जूते को देखें, वह गंदगी का कितना बड़ा संभावित स्रोत है, लेकिन हुक्म यह है कि जब तक गंदगी का पक्का पता न हो, कुएं में उसके गिरने से कुआं नापाक नहीं होगा। केवल मन की तसल्ली के लिए बीस डोल (बाल्टी) निकाले जाएंगे। अगर किसी नासमझ बच्चे का हाथ या पैर पानी में पड़ जाए, तो बिना नजासत की जानकारी के वह नापाक नहीं होगा। अगर कोई गाय या बकरी कुएं में गिर जाए और जीवित बाहर निकल आए, तो कुआं पाक ही रहेगा, हालांकि उनके खुरों और जांघों का पेशाब आदि से मुक्त होना तर्क से परे लगता है। यहाँ तक कि वे फासिक़ों (गुनाहगारों), बे-नमाज़ियों, बल्कि काफिरों के पाजामे पर भी नजासत का हुक्म नहीं देते, सिर्फ'कराहत' (नापसंदगी) मानते हैं। भिश्तियों द्वारा भरे गए पानी में तो ऐसे संदेह भी नहीं होते। जिस समय वे पानी लाकर बर्तनों में डालते हैं, उस समय उनका हाथ पानी के रास्ते में होता ही नहीं है, अन्यथा वह पानी को बर्तन में जाने से रोकेगा और इधर-उधर बहा देगा। पानी मुहाने (मुँह) से निकलता है और उनका हाथ मशक की गर्दन पर होता है। मशक भरते समय जब वे बाएं हाथ से उसका मुँह खोलते हैं और डोल से पानी डालते हैं, उस समय वह पानी प्रवाह की स्थिति में होता है। जब तक वह मशक में दाखिल हो, इस स्थिति में यदि वह नजासत पर से भी गुज़रे, तो उसे भी पाक करता हुआ जाएगा। रहा दायां हाथ, तो वह अक्सर डोल के नीचे देखा गया है और डोल निकालते समय वे उसकी लकड़ी पर हाथ रखते हैं। और मान लें कि यदि वे उसके अंदर हाथ डालते भी हों, तो

पहले डोल में जिसमें हाथ डाला, वह निश्चित रूप से 'मुस्तअमल' हो गया, यदि उस समय वे बिना वुज़ू के हों और हाथ पहले न धुला हो, लेकिन वह उसी के साथ धुल गया। अब जो दूसरे डोल में डाला, वह 'मुस्तअमल' नहीं हुआ। मशक तीन डोल से कम की नहीं होती। एक डोल 'मुस्तअमल' उसमें पहुँचा और दो या उससे अधिक 'ग़ैर-मुस्तअमल', तो मशक का सारा पानी 'ताहिर' (शुद्ध) और 'मुतहर' (शुद्ध करने वाला) हो गया। और यह संभावना कि पहले डोल के बाद दूसरे डोल में हाथ डालने से पहले उसे 'हदस' (अशुद्धि की स्थिति) पेश आई हो, अस्वीकार्य है। यदि ऐसे 'शायद' और संभावनाओं पर अमल किया जाए, तो दीन और दुनिया दोनों की भलाई मुश्किल में पड़ जाएगी। संक्षेप में, भिश्तियों के हाथ का भरा हुआ पानी निश्चित रूप से ताहिर और मुतहर है। रही आम लोगों की हरकतें, तो शरीअत उन पर और सभी पर हाकिम (शासक) है; उनकी लापरवाही या अज्ञानता शरीअत पर हावी नहीं हो सकती। यह तो एक सरल मसला है जिसमें कुछ बाद के विद्वानों का मतभेद भी मिलेगा। वे सर्वसम्मत फ़राइज़ (अनिवार्य कार्यों) को कहाँ तक पूरा करते हैं, वुज़ू में कोहनियाँ...

وضو وطہارت کرتے ہیں تو ایسی صورت میں اس طہارت کا کیا حکم ہے مسجد کے نمازیوں کی بداحتیاطی سے قطع نظر کر کے سقوں کی بداحتیاطی کا کیا مضر ہے کہ جن کے پانی پر تمام مسلمانوں کا دارومدار ہے اور سقوں کی بداحتیاطی جس پر بلوائے عام ہے کسی ترکیب سے کسی تدبیر سے رفع نہیں ہو سکتی تو پھر اب کیا کیا جائے۔ واللہ السلام

الجواب: فی الواقع مذہب صحیح یہی ہے کہ بے وضو آدمی کا ناخن بھی اگر بغیر دھلا ہوا اُس پانی میں کہ وہ دہ در دہ نہیں پڑ جائے تو وہ سب پانی مستعمل ہو جائے گا تصانیف امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ سے فتح القدیر امام ابن الہمام تک تمام کتابوں میں بالاتفاق یہی حکم ہے مگر شریعت مطہرہ کا قاعدہ کلیہ ہے کہ استعمال درکنار درباره نجاست بھی اوہام وشکوک وظنون مجردہ پر نظر نہیں فرماتی ملاحظہ ہو پُرانا استعمالیہ جوتا کس قدر مظنہ نجاست ہے مگر حکم یہ ہے کہ جب تک نجاست معلوم نہ ہو کنوئیں میں گرنے سے کنواں ناپاک نہ ہو گا صرف تطیبِ قلب کیلئے بیس ڈول نکالے جائیں گے، ناسمجھ بچے کا ہاتھ یا پاؤں پانی میں پڑ جائے بے علم نجاست پاک نہ ہوگا۔ گائے بکری کنوئیں میں گر جائے اور زندہ نکل آئے کنواں پاک رہے گا اگرچہ اُن کے کھر اور رانوں کا پیشاب وغیرہ میں ملوث نہ ہونا بعید از قیاس ہے یہاں تک کہ فاسقوں بے نمازیوں بلکہ کافروں کے پاجامے پر بھی حکمِ نجاست نہیں دیتے صرف کراہت مانتے ہیں۔ سقاؤں کے بھرے ہوئے پانی میں تو ایسے ظنون بھی نہیں جس وقت وہ پانی لاکر برتنوں میں ڈالتے ہیں اُس وقت تو اُن کا ہاتھ پانی کی گزرگاہ پر ہوتا ہی نہیں ورنہ پانی کو برتن میں جانے سے روکے اور ادھر اُدھر بہائے دہانے سے پانی نکلتا ہے اور اُن کا ہاتھ مشک کے گلے پر ہوتا ہے مشک بھرتے وقت جو بائیں ہاتھ سے اُس کا منہ کھولتے اور ڈول سے پانی ڈالتے ہیں اُس وقت وہ پانی جریان کی حالت

میں ہوتا ہے جب تک مشک میں داخل ہو اس حالت میں تو اگر نجاست پر گزرے تو اُسے بھی پاک کرتا ہوا جائے گا۔ رہا داہنا ہاتھ اکثر تو ڈول کے نیچے دیکھا گیا ہے اور ڈول نکالتے ہیں تو اُس کی لکڑی پر ہاتھ رکھ کر اور بالفرض یہی ہو کہ اُس کے اندر ہاتھ ڈالا کرتے ہوں تو پہلے ڈول میں کہ ہاتھ ڈالا وہ ضرور مستعمل ہو گیا اگر اُس وقت بے وضو ہو نہ ہاتھ اس سے پہلے دھلا ہو مگر ساتھ ہی دُھل گیا اب جو دوسرے ڈول میں ڈالا وہ مستعمل نہ ہوا مشک تین ڈول سے کم کی نہیں ہوتی ایک ڈول مستعمل اس میں پہنچا اور دو یا زائد غیر مستعمل تو ساری مشک کا پانی طاہر ومطہر ہو گیا اور یہ احتمال کہ پہلے ڈول کے بعد دوسرے ڈول میں ہاتھ ڈالنے سے پہلے اُسے حدث واقع ہوا ہو نا قابلِ قبول ہے ایسے شاید ومحتمل پر عمل کیا جائے تو دین و دنیا دونوں کی عافیت تنگ ہو جائے غرض بہشتیوں کے ہاتھ کا بھرا ہوا پانی ضرور طاہر و مطہر ہے۔ رہیں عوام کی حرکات شریعت اُن پر اور سب پر حاکم ہے اُن کی بے پروائیں یا جہالتیں شرع پر حاکم نہیں ہو سکتیں یہ تو ایک سہل مسئلہ ہے جس میں بعض متاخرین علما کا خلاف بھی ملے گا اجماعی فرائض وہ کہاں تک پورا کرتے ہیں وضو میں گہنیاں،

Fatawa Razawiyya Volume Three

Often the tips of the heels and some hair on the wrists remain dry. It is a common problem that while washing the face, people pour water on the lower part of the forehead and then run their wet hands upwards; this results in wiping (mash) of the upper forehead rather than washing. This is insufficient for both Ghusl (ritual bath) and Wudu (ablution), making prayer invalid. In Ghusl, it is obligatory (fard) to sniff water up to the soft part of the nose. Observe how many do this. They take water in their palm and just touch the tip of the nose, thinking inhalation (istinshaq) is done. Such people remain in a state of major ritual impurity (janabah) at all times; even entering a mosque is forbidden for them, let alone praying. In prostration (sujud), it is obligatory that at least the pad of one toe of each foot touches the ground, and it is necessary (wajib) for the pads of most toes of both feet to be firmly on the ground. Similarly, it is necessary for the nasal bone to touch the ground. For many, the nose doesn't even touch the ground, and if it does, it's just the tip. Such neglect of a 'wajib' (necessary act) is a sin, and if habitual, it leads to 'fisq' (transgression). Look at the feet; often only the tips of the toes are on the ground, and no toe-pad is flat. This makes the prostration and the prayer void (batil), yet the worshiper finishes and goes home. Look at the recitation (qirat); enough Tajweed (proper pronunciation) to distinguish one letter from another is an individual obligation (fard al-ayn). Without it, prayer is absolutely void. Forget the common folk; look at those who consider themselves elite (khawas). How many of them act upon this obligation? I have seen with my own eyes and heard with my own ears—scholars, muftis, teachers, and authors—reciting "Ahd" instead of "Ahad" in "Qul Huwallahu Ahad." In Friday prayers, saying "yahsabun" instead of "yahsabun kulla sai'hatin alaihim," "fa'adharhum" instead of "hum-ul-aduwwu fahdharhum," "huwa al-adheez" instead of "wa huwa al-aziz al-hakim," and even one person reciting "sirat-al-ladhin" instead of "sirat-al-ladhina" in Al-Hamd (Surah Fatihah). To whom should one complain? This is the state of the elders; what then of the poor commoners? Will the Sharia revoke its rulings because of their negligence? No, indeed, "The command is for none but Allah," and "There is no power nor strength except with Allah, the Exalted, the Magnificent." And Allah, the Glorified and Exalted, knows best.

Problem 60: Submitted by Maulvi Abdullah Sahib, from Du-Hadd, District Panchmahal, Gujarat, Ghaznavi Mosque, 7 Safar 1335 AH. In a large pond (Talab-e-Kabeer), if there is dense vegetation or crops such that movement of water in one place does not cause movement in another, can clothes be purified if a small area,

according to Sharia measurements, is cleared of vegetation and washed there? Please explain and you will be rewarded.

The Answer: Since it is a large pond, the presence of crops will not make the water 'qaleel' (small quantity). If a small area is cleared of crops, it remains part of that large pond and carries the same ruling. As long as the color, taste, or smell does not change due to impurity, it will not become impure. This is stated in Al-Hindiyyah[1] and other works. And Allah the Exalted knows best.

---

1 Fatawa Hindiyyah, Al-Fasl al-Awwal min al-Miyah, Peshawar, 1/18 Page 253 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरा

अक्सर एड़ियों और कलाइयों के कुछ बालों के सिरे सूखे रह जाते हैं। यह एक आम समस्या है कि लोग चेहरा धोते समय पानी माथे के निचले हिस्से पर डालते हैं और गीला हाथ ऊपर की ओर फेर लेते हैं; इससे माथे के ऊपरी हिस्से का केवल 'मसह' (पोंछना) होता है, धोना नहीं। यह न तो ग़ुस्ल (धार्मिक स्नान) के लिए पर्याप्त है और न ही वज़ू (आचमन) के लिए, इसलिए नमाज़ भी नहीं होगी। ग़ुस्ल में नाक की नरम हड्डी तक पानी पहुँचाना (इस्तिनशाक़) फ़र्ज़ है। गौर करें कि कितने लोग ऐसा करते हैं। वे हथेली में पानी लेते हैं और नाक की नोक को छू लेते हैं, यह सोचकर कि इस्तिनशाक़ हो गया। ऐसे लोग हर समय 'जुनुब' (नापाक) की स्थिति में रहते हैं; उनके लिए मस्जिद में जाना तक हराम है, नमाज़ तो दूर की बात है। सजदे में यह फ़र्ज़ है कि कम से कम हर पैर की एक उंगली का पेट (निचला हिस्सा) ज़मीन पर लगा हो, और हर पैर की ज़्यादातर उंगलियों के पेट का ज़मीन पर जमना वाजिब है। इसी तरह, नाक की हड्डी का ज़मीन पर लगना वाजिब है। बहुत से लोगों की नाक ज़मीन से लगती ही नहीं, और अगर लगती है तो सिर्फ नाक की नोक। 'वाजिब' का ऐसा परित्याग गुनाह है और आदत बन जाने पर 'फ़िस्क़' (उल्लंघन) है। पैरों को देखें; उंगलियों के केवल सिरे ज़मीन पर होते हैं और किसी उंगली का पेट बिछा नहीं होता। इससे सजदा और नमाज़ बातिल (अमान्य) हो जाती है, फिर भी नमाज़ी पढ़कर घर चले जाते हैं। क़िरात (क़ुरआन पाठ) को देखें; इतनी तजवीद (सही उच्चारण) कि एक अक्षर दूसरे से स्पष्ट रूप से अलग हो, फ़र्ज़-ए-ऐन है। इसके बिना नमाज़ बिल्कुल बातिल है। आम लोगों को तो छोड़िए, उन लोगों को देखें जो ख़ास कहलाते हैं। कितने लोग इस फ़र्ज़ पर अमल करते हैं? मैंने अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना है—आलिमों, मुफ़्तियों, शिक्षकों और लेखकों को—'क़ुल हुवल्लाहु अहद' की जगह 'अहद' पढ़ते हुए। जुमा की नमाज़ में 'यहसबून कुल्ला सैहतिन अलैहिम' की जगह 'यहसबून', 'हुम-उल-अदुव्वु फ़हज़रहुम' की जगह 'फ़ाअज़रहुम', 'व हुवा अल-अज़ीज़ अल-हकीम' की जगह 'हुवा अल-अज़ीज़', और एक साहब को तो अल-हम्द शरीफ़ (सूरह फ़ातिहा) में 'सिरातल-लज़ीना' की जगह 'सिरातल-लज़्ज़ीन' पढ़ते सुना। किस-किस की शिकायत करें? यह बड़ों का हाल है, तो बेचारे आम लोगों की क्या गिनती। क्या अब शरीयत उनकी लापरवाही के कारण अपने हुक्मों को निरस्त कर देगी? नहीं, बिल्कुल नहीं, "हुक्म केवल अल्लाह का है" और "अल्लाह की मदद के बिना न तो कोई ताकत है और न ही शक्ति।" और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

मसला 60: प्रेषित मौलवी अब्दुल्लाह साहिब, दु-हद्द, ज़िला पंचमहाल, गुजरात, मस्जिद ग़ज़नवी, 7 सफ़र 1335 हिजरी। एक बड़े तालाब (तालाब-ए-कबीर) में यदि जड़ी-बूटियाँ या खेती इतनी घनी हो कि एक जगह पानी हिलने से दूसरी जगह न हिले, तो क्या उस तालाब में शरिया की मात्रा के अनुसार थोड़ी सी जगह साफ़ करके कपड़े धोए जाएँ तो वे पाक हो सकते हैं? बयान करें, सवाब पाएँ।

अल-जवाब (उत्तर): चूंकि तालाब बड़ा है, इसलिए खेती का जुड़ाव पानी को 'क़लील' (कम मात्रा) नहीं बना देगा। यदि खेती से थोड़ी सी जगह साफ़ कर ली गई, तो वह भी उसी बड़े तालाब का हिस्सा है और उसी के हुक्म में है। जब तक नजासत (गंदगी) के कारण रंग, स्वाद या गंध न बदले, वह नापाक नहीं होगा। इसका उल्लेख 'अल-हिंदिया'[1] आदि में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

1 फ़तावा हिंदिया, अल-फ़स्ल अल-अव्वल मिन अल-मियाह, पेशावर, 1/18 पेज 253 of 756

ایڑیاں، کلائیوں کے بعض بالوں کی نوکیں اکثر خشک رہ جاتی ہیں اور یہ تو عام بلا ہے کہ منہ دھونے میں پانی ماتھے کے حصہ زیریں پر ڈالتے ہیں اور اوپر بھیگا ہاتھ چڑھا کر لے جاتے ہیں کہ ماتھے کے بالائی حصہ کا مسح ہوانہ غسل اور فرض غسل ہے نہ وضو ہوانہ نماز غسل میں فرض ہے کہ پانی سونگھ کر ناک کے نرم بانسے تک چڑھایا جائے دریافت کردیکھئے کتنے ایسا کرتے ہیں چلو میں پانی لیا اور ناک کی نوک کو لگالیا استنشاق ہوگیا تو ہر وقت جنب رہتے ہیں انہیں مسجد میں جانا تک حرام ہے نماز در کنار سجدے میں فرض ہے کہ کم از کم پاؤں کی ایک انگلی کا پیٹ زمین پر لگا ہو اور ہر پاؤں کی اکثر انگلیوں کا پیٹ زمین پر جما ہونا واجب ہے۔ یوں ہی ناک کی ہڈی زمین پر لگنا واجب ہے بہتیروں کی ناک زمین سے لگتی ہی نہیں اور اگر لگی تو وہی ناک کی نوک یہاں تک تو ترک واجب گناہ اور عادت کے سبب فسق ہی ہوا پاؤں کو دیکھیے انگلیوں کے سرے زمین پر ہوتے ہیں کسی انگلی کا پیٹ بچھا نہیں ہوتا سجدہ باطل نماز باطل اور مصلی صاحب پڑھ کر گھر کو چل دیے قرات دیکھئے اتنی تجوید کہ حرف دوسرے سے صحیح ممتاز ہو فرض عین ہے بغیر اس کے نماز قطعاً باطل ہے عوام بے چاروں کو جانے دیجئے خواص کہلانے والوں کو دیکھیے کتنے اس فرض پر عامل ہیں میں نے اپنی آنکھوں سے دیکھا اور اپنے کانوں سے سنا کن کو علماء کو مفتیوں کو مدرسوں کو مصنفوں کو قل ھو اللہ احد کی جگہ اھد پڑھتے ہوئے جمعہ میں یحسبون کل صیحۃ علیھم کی جگہ یحسبون، ھُم العدو فاحذرھم کی جگہ فاعذرھم ، وھو العزیز الحکیم کی جگہ ھو العذیز بلالکہ ایک صاحب کو الحمد شریف میں صراط الذین کی جگہ صراط اللذین۔ کس کس کی شکایت کیجئے یہ حال اکابر کا ہے پھر عوام بے چاروں

کی کیا گنتی اب کیا شریعت ان کی بے پروائیوں کے سبب اپنے احکام منسوخ فرمادے گی نہیں نہیں ان الحکم الا للہ ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۶۰: مرسلہ مولوی عبداللہ صاحب از دوحد ضلع پنچ محال ملک گجرات مسجد غزنوی ۷ صفر ۳۵ہجری تالاب کبیر میں اگر بوٹی یا زراعت کثرت سے ہو جیسا کہ ایک جگہ کے پانی کی حرکت سے دوسری جگہ کا پانی حرکت نہ کرے تو اُس تالاب میں مقدار شرعی سے تھوڑی سی جگہ خالی کر کے کپڑے دھوئے جائیں تو پاک ہو سکتے ہیں یا نہیں بینوا توجروا۔

الجواب: تالاب جبکہ کبیر ہے تو اس میں زراعت کا اتصال پانی کو قلیل نہ کرے گا تھوڑی جگہ اگر زراعت سے صاف کر لی گئی تو وہ بھی اسی کبیر کا ٹکڑا ہے اور اُسی کے حکم میں ہے جب تک نجاست سے رنگ یا مزہ یا بو نہ بدلے ناپاک نہ ہوگا نص علیہ فی الہندیۃ[1] وغیرہا واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

1 فتاویٰ ہندیہ الفصل الاول من المیاہ پشاور ۱/۱۸ Page 253 of 756

Fatawa Rizvia Volume Three

Problem 61: From Sironj, asked by Abdul Rashid Khan Sahab, 19 Muharram al-Haram 1301 AH.

Question: If the hand of a person in a state of major ritual impurity (janabat) or a menstruating woman accidentally or intentionally dips into a seer of water or less than a seer, is that water suitable for ritual bath (ghusl) and ablution (wudu) or not?

Answer: The Answer: When the hand of someone in a state of major or minor ritual impurity, without being washed, falls into water less than ten-by-ten (dah-dar-dah, a specific large volume), it will make all that water unsuitable for wudu and ghusl. However, if it falls after washing the hands, there is no harm. A woman is considered to be in a state of impurity due to menstruation only after the menstruation stops. Before that, she is not in that state of impurity, nor is ghusl obligatory yet. Therefore, the water remains suitable for wudu and ghusl if her hand touches it. And Allah Almighty knows best.

Question 62: In most cities of India, wells are smaller than ten-by-ten. Ignorant Muslims stand by those wells to take a bath, and their used bath water keeps falling back into the well. Other Muslims then use that same well water for bathing. Is their bath valid or not?

Answer: The Answer: It is correct that used water (ma-e-musta’mal) will only make unused water (ma-e-ghayr musta’mal) "used" when its quantity becomes equal to or more than the unused water. What is the proportion of splashes compared to well water? Yes, if there was actual impurity (najasa-e-haqiqiyyah) on the body and a splash of that water fell into the well water, then the entire well would become impure (najis). And Allah Almighty knows best.

Question 63: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid and Amr went to a well to take a bath, both being in a state of ritual impurity (janabat). Zaid drew water from the well and gave it to Amr. Amr bathed, but Zaid's impure hand touched the water and the bucket several times. In this situation, did the water become impure or not, and was Amr's bath valid or not?

Answer: The Answer: Ritual impurity (najasa-e-hukmiyyah) which arises from janabat —touching the bucket in this state is not harmful. However, if an unwashed hand, finger, nail, or any part of the hand touches the water, that water, though not technically "impure" (najis), will no longer be suitable for ghusl and wudu.

Furthermore, if the same part of the hand that was dipped the first time is dipped again, only the first water was spoiled; subsequent water remains pure and purifying (tahir and mutahhir), suitable for ghusl and wudu. If the subsequent water flowed over Amr's entire body, his ghusl would be valid. But if only the water from the first instance flowed over some part of the body, or if every time a new unwashed part of Zaid's hand [was dipped] in the water...

फ़तावा रज़विया भाग तीन

मसला ६१: सिरोंज से, सायल अब्दुल रशीद खान साहब, १९ मुहर्रम अल-हराम १३०१ हिजरी।

सवाल: यदि किसी नापाक (जुनुब) पुरुष या मासिक धर्म वाली स्त्री का हाथ अनजाने में या जानबूझकर एक सेर या उससे कम पानी में डूब जाए, तो क्या वह पानी ग़ुस्ल और वज़ू के योग्य रहेगा या नहीं?

जवाब: जवाब: जब किसी बड़े या छोटे हदस (नापाकी) वाले का बिना धुला हुआ हाथ 'दह-در-दह' (एक निर्धारित बड़े माप) से कम पानी में पड़ जाए, तो वह उस पूरे पानी को वज़ू और ग़ुस्ल के काबिल नहीं छोड़ेगा। और अगर हाथ धो लेने के बाद पड़े तो कोई हर्ज नहीं। औरत हैज़ (मासिक धर्म) की वजह से उस समय हदस वाली होगी जब हैज़ बंद हो जाए, उससे पहले न उसे हदस है न ग़ुस्ल का हुक्म। उसका हाथ पड़ने से पानी वज़ू और ग़ुस्ल के काबिल रहेगा। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है)।

सवाल ६२: हिन्दुस्तान के अक्सर शहरों में कुएं'दह-दर-दह' से कम होते हैं और जाहिल मुसलमान उन कुओं पर खड़े होकर ग़ुस्ल करते हैं और उनके ग़ुस्ल का पानी कुएं में गिरता रहता है, और उसी कुएं के पानी से और मुसलमान ग़ुस्ल करते हैं। क्या उनका ग़ुस्ल सही हुआ या नहीं?

जवाब: जवाब: यह सही है कि मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) पानी अगर गैर-मुस्तअमल (बिना इस्तेमाल किए हुए) पानी में गिरे, तो वह उसे उसी समय मुस्तअमल करेगा जब उसकी मात्रा गैर-मुस्तअमल के बराबर या उससे अधिक हो जाए। कुएं के पानी की तुलना में छींटों की क्या बिसात है? हाँ, अगर बदन पर कोई हक़ीक़ी नजासत (गंदगी) थी और उस पानी की कोई छींट कुएं के अंदर पानी में गिरी, तो सारा कुआं नापाक हो जाएगा। वल्लाहु तआला आलम।

सवाल ६३: उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रماते हैं कि ज़ैद और अम्र ग़ुस्ल के लिए कुएं पर गए और दोनों जनाबत (नापाकी) की हालत में हैं। ज़ैद ने कुएं से पानी निकालकर अम्र को दिया, अम्र ने ग़ुस्ल किया लेकिन ज़ैद का नापाक हाथ कई बार पानी और डول से लगा। इस हालत में पानी नापाक हुआ या नहीं और अम्र का ग़ुस्ल दुरुस्त हुआ या नहीं?

जवाब: जवाब: नजासत-ए-हुकमिया जो जनाबत से होती है, इस हालत में डोल को हाथ लगने से कोई हर्ज नहीं, अलबत्ता अगर बिना धुला हाथ, उंगली या नाखून या हाथ का कोई हिस्सा पानी को छू ले, तो

वह पानी हालांकि नापाक नहीं होगा मगर ग़ुस्ल और वज़ू के काबिल नहीं रहेगा। फिर हर बार अगर हाथों का वही हिस्सा पानी में डूबा जो पहली बार डूबा था, तो सिर्फ पहला पानी खराब हुआ था, बाद के पानी पाक और पाक करने वाले (ताहिर-ओ-मुतह्हिर) हैं और ग़ुस्ल व वज़ू के काबिल हैं। अगर अम्र के पूरे बदन पर बाद का पानी बह गया तो ग़ुस्ल हो जाएगा, और अगर बदन के कुछ हिस्से पर सिर्फ पहली बार का पानी बहा, या हर बार ज़ैद के बिना धुले हाथ का नया हिस्सा पानी में...

पृष्ठ २५४ का ७५६

فتاوی رضویہ جلد سوم

مسئلہ ۶۱: از سرونج مسئولہ عبدالرشید خان صاحب ۱۹ محرم الحرام ۱۳۰۱ھ

جنب مرد یا حیض والی عورت کا ہاتھ سیر بھر پانی یا سیر سے کم میں سہواً یا عمداً ڈوبے تو وہ پانی غسل و وضو کے قابل ہے یا نہیں؟

الجواب: کسی حدث اکبر یا اصغر والے کا ہاتھ بغیر دھوئے جب کسی دہ در دہ پانی سے کم میں پڑ جائے گا اُس سب کو قابل وضو و غسل نہ رکھے گا اور اگر ہاتھ دھو لینے کے بعد پڑا تو کچھ حرج نہیں۔ عورت حیض کی وجہ سے اُس وقت حدث والی ہوگی جب حیض منقطع ہوجائے اس سے پہلے نہ اُسے حدث ہے نہ حکم غسل اُس کا ہاتھ پڑنے سے قابل وضو و غسل رہے گا واللہ تعالیٰ اعلم۔

سوال ۶۲: اکثر بلاد ہند میں چاہ دہ در دہ سے کم ہیں اور جاہل مسلمان اُن چاہ پر کھڑے ہو کر غسل کرتے ہیں اور اُن کا آب غسل چاہ میں گرتا جاتا ہے اور اُسی چاہ کے پانی سے اور مسلمان غسل کرتے ہیں غسل اُن کا درست ہوا یا نہیں؟

الجواب: درست ہے کہ مستعمل پانی اگر غیر مستعمل میں پڑے تو اُسی وقت اُسے مستعمل کرے گا کہ مقدار میں اُس کی برابر یا اُس سے زائد ہو جائے چھینٹیں کنوئیں کے پانی سے کیا نسبت رکھتی ہیں ہاں اگر بدن پر کوئی نجاستِ حقیقیہ تھی اور اُس کے پانی کی کوئی چھینٹ کنوئیں کے اندر پانی میں گری تو آپ ہی سارا کنواں ناپاک ہو جائے گا واللہ تعالیٰ اعلم۔

سوال ۶۳: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید و عمرو واسطے غسل کے چاہ پر گئے اور دونوں حالتِ جنابت میں ہیں زید نے چاہ سے آب نکال کر عمرو کو دیا عمرو نے غسل کیا

لیکن زید کا ناپاک ہاتھ کئی بار آب اور ڈول سے لگا اس حالت میں پانی ناپاک ہوا یا نہیں اور غسل عمرو کا درست ہوا یا نہیں؟

الجواب: نجاستِ حکمیہ کہ جنابت سے ہوتی ہے اس حالت میں ڈول کو ہاتھ لگنے سے کوئی حرج نہیں البتہ اگر ہاتھ بغیر دھوئے انگلی یا ناخن یا کوئی حصہ ہاتھ کا پانی سے مس کرے گا تو وہ پانی اگر چہ ناپاک نہ ہو گا مگر غسل و وضو کے قابل نہ رہے گا پھر ہر بار اگر وہی حصہ ہاتھوں کا پانی میں ڈوبا جو اول بار ڈوبا تھا تو صرف پہلا پانی خراب ہوا تھا بعد کے پانی طاہر و مطہر قابل غسل و وضو ہیں اگر عمرو کے سارے بدن پر بعد کا پانی بہہ گیا تو غسل اتر جائے گا اور اگر کچھ حصہ بدن پر صرف پہلی دفعہ کا پانی بہا، یا ہر بار زید کے بے دھلے ہاتھ کا نیا حصہ پانی میں

Fatawa Razawiyya Volume Three

If [it] was submerged, all the water became spoiled, so Amr's Ghusl (ritual bath) will not be valid. And Allah Almighty knows best.

Question 4: Fourthly: In the cities of India, Hindu Kahars (water carriers) fill water in the houses of Muslims. Is it correct to perform Ghusl and Wudu with the water filled by their hands or not?

The Answer:

It is correct provided their hands are not impure and they do not dip them in the water without washing, otherwise it is not permissible. And Allah Almighty knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most perfect.

Problem 65: From Mahendraganj School, Head Maulvi, District Garo Hills, Tura, Assam country, sent by Najmuddin Ahmed Sahib, 18 Rabi' al-Awwal Sharif 1310 AH.

[Left Column - Original Persian Text]: Honorable Hazrat Maulana Fazil Sahib, may your boundless kindness be upon this humble one. What is your guidance in this matter? In this humble one's area, there is a shrine named Shah Kamal. For a long time, people from far and wide have been bringing goats and cows for fulfilling vows (Nazr and Niyaz) and slaughtering them after saying 'Bismillah'. The servant of the shrine, with great haste, skins that slaughtered animal and sells it before or after tanning. His livelihood is sustained by this occupation. A few scholars in this region say that benefitting from the skin of an animal (offered) for other than Allah is not permissible even if 'Bismillah' was recited at the time of slaughter. Some say it is undoubtedly permissible because what is for other than Allah is like carrion; as the skin of carrion becomes pure through tanning, the skin of an animal for other than Allah also becomes pure through tanning. This debate and repetition have not yet reached an end. Therefore, it is requested to your holy presence: is the sale and purchase of the skin of an animal slaughtered for other than Allah, before or after tanning, correct or not? Kindly write with proof and book reference, and affix your signature and seal, and you shall receive a great reward from Allah.

[Right Column - Urdu Translation]: Honorable Hazrat Maulana Fazil, it would be your kindness upon me. What is your guidance in this matter that in my area there is a shrine (Dargah Sharif) in the name of Shah Kamal. People come from far and wide and bring cows or goats as offerings (Nazr-o-Niyaz) and slaughter them after reciting 'Bismillah'. The servants there skin the animal immediately after slaughter and sell it

before or after tanning, and that is how they make a living. Some Maulvi gentlemen of this area say that profit from the skin of an animal [offered to someone] other than Allah is not permissible, even if the name of Allah Almighty is recited at the time of slaughter. And some noble scholars say that it is undoubtedly permissible because even if this animal is forbidden like carrion, its skin becomes pure after tanning (Dabagat). This same debate and repetition continues. Therefore, it is requested to your service whether selling the skin of an animal slaughtered for other than Allah before or after tanning is permissible or not? Write the proof and reference of the book and put your signature and seal and get a great reward from Allah.

फतावा रज़विया जिल्द तीन

अगर [वह] डूब गया तो सारा पानी खराब हो गया, इसलिए अम्र का गुस्ल (स्नान) मान्य नहीं होगा। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

प्रश्न 4: चौथा: भारत के शहरों में हिंदुओं के हाथ से भरा हुआ पानी मुसलमानों के घरों में आता है। क्या उनके हाथों से भरे हुए पानी से गुस्ल और वज़ू करना सही है या नहीं?

उत्तर (अल-जवाब):

यह सही है बशर्ते कि उनके हाथ अपवित्र न हों और वे बिना धोए हाथ पानी में न डालें, अन्यथा यह जायज़ नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है और उसका ज्ञान, जिसकी महिमा महान है, सबसे पूर्ण है।

समस्या 65: महेंद्रगंज स्कूल, हेड मौलवी, जिला गारो हिल्स, तुरा, देश असम से, नजमुद्दीन अहमद साहब द्वारा भेजा गया, 18 रबी अल-अव्वल शरीफ 1310 हिजरी।

[बायां कॉलम - मूल फारसी पाठ]: हज़रत क़िबला मौलाना फ़ाज़िल साहब, इस गरीब पर आपकी असीम कृपा होगी। इस मसले में आपका क्या इर्शाद है कि इस फकीर के इलाके में शाह कमाल के नाम से एक दरगाह है। लंबे समय से लोग दूर-दूर से मन्नत और नियाज़ पूरी करने के लिए बकरी और गाय लाते हैं और बिस्मिल्लाह कहकर ज़बह करते हैं। दरगाह का खादिम बड़ी फुर्ती से उस ज़बीहे (ज़बह किए गए जानवर) की खाल उतार लेता है और उसे रंगने (दबागत) से पहले या बाद में बेच देता है। इसी काम से उसका गुज़ारा होता है। इस देश के कुछ उलेमा कहते हैं कि गैर-अल्लाह के लिए समर्पित जानवर के चमड़े से लाभ उठाना जायज़ नहीं है, भले ही ज़बह के वक़्त बिस्मिल्लाह पढ़ी गई हो। और कुछ कहते हैं कि बेशक जायज़ है क्योंकि गैर-अल्लाह का जानवर मुर्दार (मरे हुए पशु) की तरह है; जिस तरह मुर्दार की खाल रंगने से पाक हो जाती है, उसी तरह गैर-अल्लाह के जानवर की खाल भी रंगने से पाक हो जाएगी। यह बहस और तकरार अभी तक खत्म नहीं हुई है। इसलिए हज़रत की खिदमत में अर्ज़ है कि गैर-अल्लाह के ज़बीहे की खाल की खरीद और बिक्री रंगने से पहले या बाद में सही है या नहीं? दलील और किताब के हवाले के साथ लिखकर दस्तखत और मुहर इनायत फरमाएं और अल्लाह के यहाँ भारी पुण्य प्राप्त करें।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद]: हज़रत क़िबला मौलाना फ़ाज़िल, मुझ पर आपकी मेहरबानी होगी। इस मसले में आपका क्या इर्शाद है कि मेरे इलाके में शाह कमाल के नाम से एक दरगाह शरीफ है। वहां दूर-दूर से लोग आकर नज़र-ओ-नियाज़ के तौर पर गाय या बकरी लाकर बिस्मिल्लाह पढ़कर ज़बह करते हैं। वहां के खादिम ज़बह करने के फ़ौरन बाद उसका चमड़ा उतारते हैं और रंगने से पहले या बाद में बेचते हैं और उससे उनकी गुज़र-बसर होती है। इस इलाके के कुछ मौलवी हज़रात कहते हैं कि गैर-अल्लाह के जानवर के चमड़े से नफ़ा जायज़ नहीं है, चाहे ज़बह के वक़्त अल्लाह तआला का नाम पढ़ा जाए। और कुछ उलेमा-ए-किराम फरमाते हैं कि बेशक जायज़ है क्योंकि अगर यह जानवर मुर्दार की तरह हराम भी हो तो इसका चमड़ा (दबागत) रंगने से पाक हो जाता है। यही बहस और तकरार जारी है, इसलिए आपकी खिदमत में अर्ज़ है कि गैर-अल्लाह के ज़बीहे का चमड़ा रंगने से पहले या बाद में बेचना जायज़ है या नहीं? दलील और हवाले की किताब लिखें और दस्तखत व मुहर लगाएं और अल्लाह के पास से भारी पुण्य हासिल करें।

ڈوبا تو سب پانی خراب ہوئے تو عمر و کا غسل نہ اترے گا واللہ تعالٰی اعلم۔

سوال ۴: چہارم : بلادِ ہند میں مسلمانوں کے گھروں میں پانی بھرتی ہیں ہندو کہاروں کے ہاتھ کے بھرے ہوئے سے غسل و وضو درست ہے یا نہیں؟

الجواب:

درست ہے جبکہ اُن کے ہاتھ ناپاک نہ ہوں بے دھوئے پانی میں نہ ڈوبیں ورنہ جائز نہیں واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم۔

مسئلہ ۶۵ : از مہندر گنج سکول ہیڈ مولوی ضلع گارو ہلس تورااملک آسام مرسلہ نجم الدین احمد صاحب ۱۸ ربیع الاول شریف ۱۳۱ھ

[بایاں کالم - فارسی متن]: حضرت قبلہ مولانا فاضل صاحب لطف بیکراں بر غریب بادچہ ارشاد فرمایند دریں مسئلہ کہ در علاقہ فقیر درگاہ ہے بنام شاہ کمال از مدت درازست مردمان از دور دور برائے تعمیل نذر و نیاز بز و بقرہ آوردہ بسم اللہ گفتہ ذبح مینمایند و خادم درگاہ بتعجیل تمام پوست آن ذبیحہ را کشیدہ بعد یا قبل دباغت میفروشند اوقاتش ازیں شغل بسر می شود علمائے چند دریں دیار گویند کہ انتفاع از چرم غیر اللہ جائز نیست اگرچہ بوقت ذبیح بسم اللہ خواندہ شود و بعضے گویند کہ بلاشبہ جائز است زیرا کہ غیر اللہ مثل مردار ست چوں پوست مردار از دباغت پاک شود چرم غیر اللہ نیز از دباغت شود ایں چنین بحث و تکرار ہنوز پایاں نرسید لہٰذا بخدمت اقدس حضرت عرض اینست کہ خرید و فروخت قبل یا بعد دباغت پوست ذبیحہ غیر اللہ درست است یا نہ مع دلیل بحوالہ کتاب رقم درزیدہ و دستخط بالمہر عنایت سازند و عند اللہ اجر جزیل وصول نمایند۔

[دایاں کالم - اردو ترجمہ]: حضرت قبلہ مولانا فاضل مجھ پر آپ کی مہربانی ہوگی آپ کا کیا ارشاد ہے اس مسئلہ میں کہ میرے علاقہ میں شاہ کمال کے نام سے ایک درگاہ شریف ہے وہاں دُور دُور سے لوگ آکر نذر و نیاز کے طور پر گائے یا بکری لا کر بسم اللہ پڑھ کر ذبح کرتے ہیں وہاں کے خادم ذبح کرنے کے فوراً بعد اس کا چمڑا اتارتے ہیں اور رنگنے سے قبل یا بعد فروخت کرتے ہیں اور اس سے ان کی گزر اوقات ہوتی ہے۔ اس علاقہ کے کچھ مولوی حضرات کہتے ہیں کہ غیر اللہ کے جانور کے چمڑے سے نفع جائز نہیں ہے اگرچہ ذبح کے وقت اللہ تعالٰی کا نام پڑھا جائے، اور بعض علماء کرام فرماتے ہیں کہ بلاشبہ جائز ہے کیونکہ اگر یہ جانور مردار کی طرح حرام بھی ہو تو اس کا چمڑا (دباغت) رنگنے سے پاک ہو جاتا ہے۔ یہی بحث و تکرار جاری ہے لہٰذا آپ کی خدمت میں عرض ہے کہ غیر اللہ کے ذبیحہ کا چمڑا رنگنے سے پہلے یا بعد فروخت کرنا جائز ہے یا نہیں دلیل اور حوالہ کتاب لکھیں اور دستخط و مُہر لگائیں اور اللہ کے ہاں بھاری اجر حاصل کریں۔

صفحہ 255 از 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

The Answer:

These skins become pure simply by the act of slaughter; there is no need for tanning for buying, selling, or other uses. The animals that Muslims slaughter for the sake of the noble saints (Awliya Allah), may their secrets be sanctified, they by no means intend the worship of anyone other than Allah. This is a severe suspicion, and such suspicion is far from the Islamic way. Allah Almighty said: "O you who have believed, avoid much [negative] assumption. Indeed, some assumption is sin." And the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) said: "Beware of suspicion, for suspicion is the falsest of speech." It is stated in Durr al-Mukhtar: "We do not harbor ill-suspicion about a Muslim that he intends to seek proximity to a human being through this slaughter." And in Radd al-Muhtar, it is explained: "That is, in the way of worship, because that would lead to infidelity, and this is far from the condition of a Muslim." Furthermore, even if it were assumed that some common people might have such an intention, if the slaughterer slaughters for the sake of God and mentions the name of Allah, the Exalted and Glorious, then the animal becomes Halal, for the credit is given to the intention and word of the slaughterer, as we have verified in our treatise Al-Saghira Hajman al-Kabira (Small in volume, great in content).

1 Al-Quran 49/12 2 Jami' al-Bukhari, Book of Wills, Old Bookstore Karachi 1/384 3 Al-Durr al-Mukhtar, Book of Slaughters, Mujtabai Delhi 2/230 4 Radd al-Muhtar, Book of Slaughters, Mustafa al-Babi Egypt 5/218

Page 256 of 756

फतवा-ए-रज़विया, खंड 3

उत्तर:

ये खालें (चमड़े) केवल ज़बह करने से ही पाक हो जाती हैं; खरीद-बिक्री या अन्य उपयोग के लिए इन्हें पकाना (रंगना) आवश्यक नहीं है। मुसलमान जिन जानवरों को औलिया-ए-किराम के लिए ज़बह करते हैं, उससे उनका उद्देश्य या नीयत कभी भी गैर-अल्लाह की इबादत नहीं होती। यह एक बहुत बड़ा आरोप है जो मुसलमानों पर लगाया जाता है, और इस्लाम में बदगुमानी (बुरा गुमान) करना मना है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "ऐ ईमान वालों! बहुत ज़्यादा गुमान करने से बचो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह हैं।" और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि बदगुमानी से बचो क्योंकि यह सबसे झूठी बात है। और 'दुर्रे मुख्तार' में फरमाया गया है कि हम मुसलमानों के बारे में यह बदगुमानी नहीं कर सकते कि वे इस ज़बह से किसी इंसान की निकटता या उसकी इबादत की नीयत रखते हैं। और 'रद-उल-मुहतार' में है कि इबादत के तौर पर ऐसा गुमान नहीं किया जा सकता क्योंकि यह गुमान मुसलमानों को काफिर ठहराने के बराबर है, और एक मुसलमान की स्थिति से यह बात कोसों दूर है। और अगर यह मान भी लिया जाए कि दुनिया में कोई ऐसा वाकया है, तो भी जब ज़बह करने वाले ने उस पर अल्लाह तआला का नाम ले लिया, तो वह जानवर हलाल हो जाता है क्योंकि ज़बह करने वाले की नीयत और उसके शब्द ही मान्य होते हैं, जैसा कि हमने अपनी रिसाला (पुस्तिका) 'अस-सगीरा हजमन अल-कबीरा' में प्रमाणित किया है।

1 अल-कुरान 12/49 2 जामे-उल-बुखारी, अध्याय: अल्लाह का कथन 'वसीयत के बाद...', पुरानी कुतुब खाना करा3 1/384 چی अल-दुर्रुल मुख्तार, किताबुज़ ज़बाइह, मुज्तबाई दिल्ली 2/230 4 रद-उल-मुहतार, किताबुज़ ज़बाइह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 5/218

पेज 756 में से 256

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

الجواب:

[بائیں کالم میں فارسی/عربی عبارت] آں چرمہا بنفس ذبح پاک میشود ہیچ حاجت دباغت ندارد خرید و فروخت واستعمال آنہامطلقاً رواست مسلمانانِ جانوران کہ برائے اولیائے کرام قدست اسرار ہم ذبح میکنند زنہار عبادت غیر نمی خواہند ایں بدگمانی شدیدست و بدگمانی از طریق اسلامی بعید قال اللہ تعالیٰ: یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِیْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ 1 و قال رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ایاکم والظن فان الظن اکذب الحدیث 2 در مختار فرمود انالانسئ الظن بالمسلم انہ یتقرب الی الآدمی بھذا النحر 3 و ردالمحتار ست ای علی وجہ العبادۃ لانہ المکفر وھذا بعید من حال المسلم 4 ۔ باز اگر گیرم کہ بعض آیندگان جہاں، بمچنان خواہند اگر ذابح برائے خدا ذبح کر دو نام او عزوجل علا گرفت حلال شد کہ اعتبار نیت و قول ذابح راست کما حققناہ فی رسالتنا الصغیرۃ حجماً الکبیرۃ

[دائیں کالم میں اردو ترجمہ] یہ چمڑے صرف ذبح کرنے سے ہی پاک ہو جاتے ہیں خرید و فروخت یا دیگر استعمال کیلئے رنگنا ضروری نہیں ہے مسلمان جن جانوروں کو اولیاء اللہ کیلئے ذبح کرتے ہیں اس سے ان کا مقصد یانیت ہر گز غیر اللہ کی عبادت نہیں ہوتی یہ بہت بڑا بہتان ہے جو مسلمانوں پر لگایا جاتا ہے اور اسلام میں بدگمانی ناجائز ہے۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا اے مومنو! بدگمانی سے بچو اور بدگمانی گناہ ہے۔ اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ بدگمانی سے بچو کیونکہ یہ جھوٹی بات ہے۔ اور در مختار میں فرمایا ہے کہ ہم مسلمانوں کے بارے میں بدگمانی نہیں کر سکتے وہ اس ذبح سے غیر اللہ کے تقرب اور عبادت کی نیت کرتا ہے۔ اور ردالمختار میں ہے کہ عبادت کے بارے میں گمان نہیں ہو سکتا کیونکہ اس گمان سے مسلمانوں کو

کافر بنانا ہے اور مسلمان سے یہ بات بعید ہے۔ اور اگر فرض بھی کر لیا جائے کہ دنیا میں کوئی ایسا واقعہ ہے تو بھی جب ذبح کرنے والے نے اس پر اللہ تعالیٰ کا نام پڑھ لیا تو وہ جانور حلال ہو جاتا ہے کیونکہ ذبح کرنے والے کی نیت اور قول کا اعتبار ہوتا ہے، جیسا کہ ہم نے

1 القرآن ۱۲/۴۹ 2 جامع للبخاری باب قول اللہ عزوجل من بعد وصیۃ یوصی من الوصایا قدیمی کتب خانہ کراچی ۳۸۴/۱ 3 الدرالمختار کتاب الذبائح مجتبائی دہلی ۲۳۰/۲ 4 ردالمختار کتاب الذبائح مصطفی البابی مصر ۲۱۸/۵

Fatawa-e-Razvia Volume 3

Beneficially, if Allah wills, [this is explained in] "Sabil al-Asfiya fi Hukm al-Dhabh lil-Awliya". Our Master, the Exalted, says in the Great Quran: "What is [the matter] with you that you do not eat of that upon which the name of Allah has been mentioned?" Even if we set this aside and assume that, God forbid, the slaughter was performed with the intention of worshipping other than Allah and [the slaughterer] became an apostate, even then, what follows is the prohibition of the slaughtered meat, not the impurity of the skin. According to Imam Qazi Khan, the more correct (arjah) view is that slaughtering cleanses the skin absolutely, even if the slaughterer is an apostate or a Magian (fire-worshipper). It is stated in Bahr al-Ra'iq: "We have previously cited from Mi'raj al-Diraya, attributing it to al-Mujtaba, that the slaughter of a Magian or one who intentionally omits the Basmala effects purification according to the most correct opinion, even if it is not edible. Similarly, the author of al-Mi'raj also cited the purification in this matter from al-Quniya. This is supported by the fact that the author of al-Nihaya mentioned this condition with 'it is said' (qila), attributing it to Fatawa Qazi Khan." In the Fatawa of the most eminent Imam Qazi Khan Fakhr al-Din al-Uzjandi, it is mentioned: "Whatever skin is purified by tanning, its meat is purified by slaughtering." This was mentioned by Shams al-A'imma al-Halwani, may Allah have mercy on him. And it is said: it is permissible on the condition that the slaughtering is done by those qualified for it in its proper place.

I have established this in a small treatise, although that treatise is great in benefit, God willing. Its name is "Sabil al-Asfiya fi Hukm al-Dhabh lil-Awliya". Allah Almighty has said in the Holy Quran: "What has happened to you that you do not eat that upon which Allah's name has been mentioned?" If we leave this too and assume, God forbid, that the slaughterer killed the animal with the intention of worshipping someone other than Allah and became an apostate, even then the animal would be forbidden (haram), but its skin would not be impure. According to Imam Qazi Khan, the correct view is that slaughter absolutely purifies the skin, whether the slaughterer is an apostate or a Magian. It is in Bahr al-Ra'iq that, attributing it to Mujtaba, we have already quoted from Mi'raj al-Diraya that the slaughtered animal of a Magian or one who intentionally does not read Bismillah is also pure, even though it is forbidden to eat. This is correct; also, the author of Mi'raj quoted this issue from Quniya and said it is pure. The fact that the author of Nihaya mentioned this condition with 'it is said' and attributed it to Qazi Khan also points to it being the most correct. And in the fatwas of the most eminent Imam Qazi Khan Fakhr al-Din

Uzjandi, it is stated that the animal whose skin becomes pure by tanning, its meat becomes pure by slaughtering.

---

1. Quran 119/6
2. Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Taharah, Saeed Company Karachi, 106/1 Page 257 of 756

अल्लाह ने चाहा तो लाभदायक रूप से [यह] "सबीलुल असफिया फी हुक्मुल ज़बह लिल औलिया" [में है]। हमारे मौला सुब्हानहू व तआला क़ुरआन अज़ीम में फरमाता है: "तुम्हें क्या हुआ कि तुम उसमें से नहीं खाते जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है।" अगर हम इसे भी छोड़ दें और मान लें कि, ख़ुदा न करे, ज़बह ग़ैर-अल्लाह की इबादत की नीयत से किया गया और [ज़बह करने वाला] मुर्तद (धर्मत्यागी) हो गया, तब भी जो लाज़िम आएगा वह ज़बीहा (ज़बह किए गए जानवर) की हुरमत (अवैधता) है, न कि खाल की नजासत। इमाम क़ाज़ी खान के नज़दीक अरजह (अधिक सही) मज़हब यह है कि ज़बह मुतलक़न (पूर्णत) खाल को पाक कर देता है, चाहे ज़बह करने वाला मुर्तद हो या मजूसी (अग्निपूजक)। बहरुल रैक़ में है: "हमने पहले मेराजुद्दराया से नकल किया है, अल-मुजतबा की ओर मंसूब करते हुए, कि मजूसी या जानबूझकर बिस्मिल्लाह न पढ़ने वाले का ज़बीहा सबसे सही राय के अनुसार पाकी पैदा करता है, भले ही वह खाने योग्य न हो। इसी तरह मेराज के लेखक ने भी इस मसले में कुनिया से पाकी नकल की है। इस बात की दलील यह भी है कि निहाया के लेखक ने इस शर्त को 'कहा गया है' (क़ील) के साथ ज़िक्र किया और इसे फ़तावा क़ाज़ी खान की ओर मंसूब किया।" इमाम अजल क़ाज़ी खान फखरुद्दीन औज़जंदी के फ़तावा में है: "जिस जानवर की खाल रंगाने (दबागत) से पाक हो जाती है, उसका गोश्त ज़बह करने से पाक हो जाता है।" इसे शम्सुल अइम्मा हलवानी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने ज़िक्र किया है। और कहा गया है: यह जायज़ है बशर्ते कि ज़बह करने वाला इसके योग्य हो और सही जगह पर हो।

इसे एक छोटे रिसाले (पुस्तिका) में साबित किया है, हालांकि वह रिसाला फायदे में इंशाअल्लाह बड़ा है, उसका नाम "सबीलुल असफिया फी हुक्मुल ज़बह लिल औलिया" है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में फ़रमाया है: तुम्हें क्या हुआ कि जिस पर अल्लाह तआला का नाम ज़िक्र किया गया तुम उसे नहीं खाते। अगर इसे भी छोड़ें और हम फर्ज़ कर लें कि अल्लाह न करे ज़बह करने वाले ने ग़ैर-अल्लाह की इबादत की नीयत से जानवर को काटा और वह मुर्तद हो गया, तब भी जानवर हराम होगा मगर उसका चमड़ा नापाक न होगा। इमाम क़ाज़ी खान के नज़दीक राज़ह (प्रचलित) बात यही है कि ज़बह मुतलक़न चमड़े को पाक कर देता है चाहे ज़बह करने वाला मुर्तद या मजूसी हो। बहरुल रैक़ में है कि मुजतबा की ओर मंसूब करते हुए हमने मेराजुद्दराया से पहले नकल किया है कि मजूसी या जानबूझकर बिस्मिल्लाह न पढ़ने वाले का ज़बीहा भी पाक है अगरचे वह खाने के लिए हराम है। यही सही है; साथ ही मेराज के लेखक ने भी इस मसले को कुनिया से नकल किया और कहा कि

पाक है। इसके असह (सबसे सही) होने पर यह बात भी दलालत करती है कि साहिबे निहाया ने इस शर्त को 'क़ील' के साथ ज़िक्र किया और इसे क़ाज़ी खान की ओर मंसूब किया है। और इमाम अजल क़ाज़ी खान फखरुद्दीन औज़जंदी के फ़तावा में है कि वह जानवर जिसका चमड़ा रंगने से पाक हो जाता है, ज़बह करने से उसका गोश्त पाक हो जाता है।

---

1. क़ुरआन 119/6
2. बहरुल रैक़, किताबुत तहारत, सईद कंपनी कराची, 106/1 पेज 257 ऑफ 756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

نفعاً ان شاء اللہ تعالیٰ سبیل الاصفیاء فی حکم الذبح للاولیاء و مولیٰ سبحانہ و تعالیٰ در قرآن عظیم فرماید مَالکُم اَلَّا تَا کُلُوا مِمَّا ذُکِرَ اسْمُ اللہِ شمارا چیست کہ نخورید از انچہ برآں نام خدا گرفتہ شدہ است۔ واگرازیں ہم گزریم و فرض کنیم کہ ذبح معاذاللہ بہ نیت عبادت غیر گشت و مرتد گشت تازیبنم آنچہ لازم آید حرمت ذبیحہ است نہ نجاست پوست کہ نزد امام قاضی خان مذہب (۱) ارجح آنست کہ ذبح مطلقاً تطہیر جلد میکند اگرچہ ذابح مرتد یا مجوسی باشد۔ در بحر الرائق ست قد قدمنا عن معراج الدرایۃ معزیاً المجتبٰی ان ذبیحۃ المجوسی وتارك التسمیۃ عمدا توجب الطھارۃ علی الاصح و ان لم یکن مأکولا و کذا نقل صاحب المعراج فی ھذہ المسئلۃ الطھارۃ عن القنیۃ ایضا وھنا ویدل علی ان ھذا ھو الاصح ان صاحب النھایۃ ذکر ھذا الشرط بقیل معزیاً الٰی فتاویٰ قاضی خان۔ در فتاویٰ امام اجل قاضی خان فخر الدین اوزجندی ست مایطھر جلدہ بالدباغ یطھر لحمہ بالذکاۃ ذکرہ شمس الائمۃ الحلوانی رحمہ اللہ تعالیٰ وقیل یجوز بشرط ان تکون الذکاۃ من اھلھا فی محلھا

اس کو ایک چھوٹے رسالے میں ثابت کیا ہے اگرچہ وہ رسالہ فائدہ میں ان شاء اللہ بڑا ہے اس کا نام "سبیل الاصفیاء فی حکم الذبح للاولیاء" ہے اللہ تعالیٰ نے قرآن پاک میں فرمایا ہے تمہیں کیا ہوا کہ جس پر اللہ تعالیٰ کا نام ذکر کیا گیا تم اس کو نہیں کھاتے۔ اس کو بھی اگر چھوڑیں اور ہم فرض کرلیں کہ معاذ اللہ کہ ذبح کرنے والے نے غیر اللہ کی عبادت کی نیت سے جانور کو کاٹا اور وہ مرتد ہوگیا تب بھی جانور حرام ہوگا مگر اس کا چمڑا نجس نہ ہوگا، امام قاضی خان کے نزدیک راجح بات یہی ہے کہ ذبح مطلقاً چمڑے کو پاک کر دیتا ہے خواہ ذبح کرنے والا مرتد یا مجوسی ہو۔ بحر الرائق میں ہے کہ مجتبٰی کی طرف منسوب کرتے ہوئے ہم نے معراج الدرایہ سے پہلے نقل کیا ہے کہ مجوسی یا قصداً بسم اللہ نہ پڑھنے والے کا ذبیحہ بھی پاک ہے اگرچہ وہ کھانے کیلئے

حرام ہے، یہی صحیح ہے نیز صاحب معراج نے بھی اس مسئلہ کو قنیہ سے نقل کیا اور کہا کہ پاک ہے۔ اس کے اصح ہونے پر یہ بات بھی دلالت کرتی ہے کہ صاحبِ نہایہ نے اس شرط کو قیل کے ساتھ ذکر کیا اور اس کو قاضی خان کی طرف منسوب کیا ہے۔ اور امام اجل قاضی خان فخر الدین اوزجندی کے فتاویٰ میں ہے کہ وہ جانور جس کا چمڑا رنگنے سے پاک ہو جاتا ہے ذبح کرنے سے اس کا گوشت پاک ہو جاتا ہے اس کو

---

1. القرآن ۱۱۹/۶
2. بحرالرائق کتاب الطھارۃ سعید کمپنی کراچی ۱۰۶/۱ Page 257 of 756

Fatawa Razawiya Volume 3

[Right Column] Shams al-Din al-Halwani (may Allah have mercy on him) mentioned it, and it has also been said provided that the act of slaughtering is performed in its proper place by a qualified person and 'Bismillah' is recited. (T) I say: From the ruling of comparison, the benefit obtained is that in the first statement, slaughtering is general, whether it is non-legal (non-shari'i), and from the ruling on meat, the ruling on the skin is known by priority (a fortiori). Here, regarding the lack of requirement for shari'i slaughter, there are two preferences: first, mentioning the second statement with 'it was said' (qila); and second, presenting the first statement first because they put the well-known and clear statement first, as they themselves stated in their sermon. Therefore, this first statement is reliable, as stated in Al-Tahtawi and Al-Shami. (T) However, as for the statement in Al-Durr regarding whether shari'i slaughter is a condition for the purity of the skin, some said yes and some said no. The first is more apparent because the slaughter of a Magian or one who intentionally omits Bismillah is as if no slaughter occurred [2 ah]. I say: Yes, that is regarding the lawfulness of consumption; however, the purity of the skin does not depend on it. This is because slaughter acts like tanning in removing impure moisture [3] as stated in Al-Hidaya; rather, it prevents these moistures from attaching to it, whereas tanning is a remover after attachment. And since tanning is a remover and purifier after attachment...

[Left Column] ...and it has preceded [1 ah]. I say: The ruling of comparison indicates that slaughtering in the first statement is general even if non-shari'i. The ruling on meat indicates the ruling on the skin by priority. Thus, there are two preferences for not requiring the shari'i condition: first, what was mentioned regarding the second statement being mentioned with 'qila'; and second, that he presented the first statement first, and he only presents the most apparent and well-known, as he stated in his sermon. So, it is the one relied upon, as in Al-Tahtawi and Al-Shami. As for the statement in Al-Durr: Is shari'i slaughter required for the purity of its skin? It was said 'yes' and it was said 'no'. The first is more apparent because the slaughter of a Magian and the one who intentionally leaves the Basmalah is like no slaughter [2 ah]. So I say: Yes, that is in the right of lawfulness (consumption), but as for the purity of the skin, it does not depend on it. Rather, it is because slaughter performs the action of tanning in removing impure moistures [3] as in Al-Hidaya; indeed, because it prevents them from attaching to it, while tanning removes after attachment. And since tanning after attachment is a remover and purifier...

[Footnotes] 1. Fatawa Qadi Khan, Chapter on Impurities, Naval Kishore, Lucknow, 1/10 2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai, Delhi, 38/1 3. Al-Inaya with Al-Fath al-Qadir, printed in Sukkur, 83/1

फतावा रजविया जिल्द 3

[दायां कॉलम] शम्स अल-दीन हलवानी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने ज़िक्र किया है और यह भी कहा गया है कि बशर्ते कि ज़ब्ह का अमल अपने महल में अहलियत रखने वाले शख़्स से सादिर हुआ हो और बिस्मिल्लाह भी पढ़ी गई हो। (त) मैं कहता हूँ कि मुक़ाबले के हुक्म से यह फ़ायदा हासिल हुआ कि पहले क़ौल में ज़ब्ह आम है चाहे ग़ैर-शई हो, और गोश्त के हुक्म से चमड़े का हुक्म बतरीक़े अव्वल मालूम हुआ, यहाँ ज़ब्ह के लिए शरीयत की शर्त न होने पर दो तरजीहात हैं: अव्वल यह कि दूसरे क़ौल को 'क़ील' (कहा गया) के साथ ज़िक्र करना, और दूसरी यह कि पहले क़ौल को मुक़द्दम (पहले) ज़िक्र करना क्योंकि वह मशहूर और वाज़ेह क़ौल को पहले लाते हैं जैसा कि उन्होंने ख़ुद यह बात अपने खुत्बे में कही है, लिहाज़ा यह पहला क़ौल क़ाबिले एतमाद है जैसा कि तहतावी और शामी में है। (त) लेकिन 'दुर्रे मुख़्तार' का यह क़ौल कि क्या चमड़े के पाक होने के लिए शई ज़ब्ह शर्त है, बाज़ ने कहा हाँ और बाज़ ने कहा नहीं। और अव्वल ज़्यादा ज़ाहिर है क्योंकि मजूसी और बिस्मिल्लाह को जानबूझकर छोड़ने वाले का ज़ब्ह कल-अदम (न होने के बराबर) होता है [2 अह]। मैं कहता हूँ कि हाँ हलाल होने के मामले में तो ऐसा ही है, लेकिन चमड़े के पाक होने का हुक्म इस पर मौक़ूफ़ नहीं है और यह इसलिए कि ज़ब्ह करने वाला अपने अमल में दबाग़ (चमड़ा कमाने) का अमल करता है कि वह नजिस रुतूबतों को निकाल देता है [3] जैसा कि 'हिदाया' में है, बल्कि ज़ब्ह का अमल चमड़े से नापाक रुतूबतें लगने से रोकता है।

[बायां कॉलम] ...और यह पहले गुज़र चुका [1 अह]। मैं कहता हूँ: मुक़ाबले के हुक्म ने यह फ़ायदा दिया कि पहले क़ौल में ज़ब्ह मुतलक़ है चाहे ग़ैर-शई हो और गोश्त का मसला चमड़े के हुक्म पर बतरीक़े अव्वल दलालत करता है। तो इसमें शई होने की शर्त न होने पर दो तरजीहात हैं: पहली वह जो ज़िक्र की गई कि दूसरे क़ौल को 'क़ील' के साथ ज़िक्र किया, और दूसरी यह कि पहले क़ौल को मुक़द्दम किया और वह सिर्फ़ अज़हर और अज़हर (ज़्यादा वाज़ेह) को ही मुक़द्दम करते हैं जैसा कि उन्होंने अपने खुत्बे में कहा है। तो वही मोतमिद (काबिले एतमाद) है जैसा कि तहतावी और शामी में है। रहा 'दुर्र' का क़ौल कि क्या उसके चमड़े की पाकी के लिए ज़ब्ह का शई होना शर्त है? कहा गया हाँ और कहा गया नहीं। और पहला ज़्यादा ज़ाहिर है क्योंकि मजूसी और जानबूझकर बिस्मिल्लाह छोड़ने वाले का ज़ब्ह कोई ज़ब्ह नहीं [2 अह]। तो मैं कहता हूँ: हाँ, यह हलाल होने के हक़ में है, रहा चमड़े का पाक होना तो वह इस पर मौक़ूफ़ नहीं है। और वह इसलिए है क्योंकि ज़ब्ह नजिस रुतूबतों को दूर करने में दबाग़ का काम करता है [3] जैसा कि हिदाया में है; बल्कि इसलिए क्योंकि यह उनसे

जुड़ने से रोकता है, और दबाग़ जुड़ने के बाद ज़ाइल करने वाला है। और जब दबाग़ जुड़ने के बाद ज़ाइल करने वाला और पाक करने वाला था...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. फतावा क़ाज़ी ख़ान, फ़स्ल फ़ी अल-नजासाह, नवल किशोर, लखनऊ, 1/10 2. अल-दुर्र अल-मुख़्तार, बाब अल-मयाह, मुज्तबाई, दिल्ली, 38/1 3. अल-इनाया मअल फतह अल-क़दीर, सुक्कुर में मुद्रित, 83/1

فتاوی رضویہ جلد سوم

[دایاں کالم] شمس الدین حلوانی رحمۃ اللہ تعالیٰ نے ذکر کیا ہے اور یہ بھی کہا گیا بشرطیکہ ذبح کا عمل اپنے محل میں اہلیت والے شخص سے صادر ہوا ہو اور بسم اللہ بھی پڑھی ہو۔ (ت) میں کہتا ہوں کہ حکمِ مقابلہ سے یہ فائدہ حاصل ہوا کہ پہلے قول میں ذبح عام ہے خواہ غیر شرعی ہو، اور گوشت کے حکم سے چمڑے کا حکم بطریق اولٰی معلوم ہوا، یہاں ذبح کیلئے شرع کی شرط نہ ہونے پر دو ترجیحات ہیں اوّل یہ کہ دوسرے قول کو قیل کے ساتھ ذکر کرنا، اور دوسری یہ کہ پہلے قول کو مقدم ذکر کرنا کیونکہ وہ مشہور اور واضح قول کو پہلے لاتے ہیں جیسا کہ انہوں نے خود یہ بات اپنے خطبہ میں کہی ہے لہٰذا یہ پہلا قول قابلِ اعتماد ہے جیسا کہ طحطاوی اور شامی میں ہے۔ (ت) لیکن در مختار کا یہ قول کہ کیا چمڑے کے پاک ہونے کیلئے شرعی ذبح شرط ہے، بعض نے کہا کہ ہاں اور بعض نے کہا نہیں۔ اور اوّل زیادہ ظاہر ہے کیونکہ مجوسی اور بسم اللہ کو قصداً چھوڑنے والے کا ذبح کالعدم ہوتا ہے [۲ اھ]۔ میں کہتا ہوں کہ ہاں حلال ہونے کے معاملہ میں تو ایسا ہی لیکن چمڑے کے پاک ہونے کا حکم اس پر موقوف نہیں ہے اور یہ اس لئے کہ ذبح کرنے والا اپنے عمل میں دباغ کا عمل کرتا ہے کہ وہ نجس رطوبات کو نکال دیتا ہے [۳] جیسا کہ ہدایہ میں ہے بلکہ ذبح کا عمل چمڑے سے ناپاک رطوبتیں لگنے سے منع کرتا ہے، اور دباغ لگنے کے بعد زائل کرنے والا ہے۔ اور جب کہ دباغ لگنے کے بعد زائل کرنے والا اور پاک کرنے والا تھا...

[بایاں کالم] وقد سی ۱ اھ اقول: فافاد بحکم المقابلة ان الذکاة فی القول الاول مطلقة ولو غیر شرعیة والمسألة في اللحم تدل علی حکم الجلد بالاولی ففیه ترجیحان لعدم اشتراط الشرعیة الاول ما ذکر من ذکره القول الثانی بقیل والثانی انه قدم الاول وهو انما یقدم الاظهر الاشهر کمانص علیه في خطبته

فيكون هو المعتمد كما في الطحطاوى والشامى۔ اما قول الدر هل يشترط لطهارة جلده كون ذكاته شرعية قيل نعم وقيل لا والاول اظهر لان ذبح المجوسى وتارك التسمية عمداً كلا ذبح ٢ اھ فاقول نعم ذلك فى حق الحل اما طهارة الجلد فلا تتوقف عليه وانما هى لان الذبح يعمل عمل الدباغ فى ازالة الرطوبات النجسة ٣ كما في الهداية بل لانه يمنع من اتصالها به والدباغ مزيل بعد الاتصال ولما كان الدباغ بعد الاتصال مزيلا ومطهرا

[حواشى] 1 فتاوى قاضى خان فصل فى النجاسة نولكشور لكهنؤ ١ / ١٠ 2 الدر المختار باب المياه مجتبائى دہلى ٣٨/١ 3 العناية مع الفتح القدير مطبوعہ سكهر ٨٣/١

صفحہ 258 از 756

Fatawa Razawiya Volume Three

[Arabic Column] Since the slaughter prevents attachment, it is more appropriate to be a purifier, as stated in Al-Inayah. Undoubtedly, this applies to every slaughter. Therefore, it is like when a Magian (Zoroastrian) tans a hide; thus, the view chosen by Imam Qazi Khan is more evident. Perhaps what is more consistent with analogy and closer to the rules is what was mentioned as authenticated in At-Tanwir, Al-Durr, and Al-Qunyah. This was also firmly held by Al-Akmal, Al-Kamal, and Ibn Al-Kamal in Al-Inayah, Al-Fath, and Al-Idah. In short, they are two authenticated views; this one is more consistent and that one is more convenient. Choose for yourself, and caution is better.

And if we assume and consider that the slaughterer, God forbid, has become an apostate and the slaughtered animal with all its parts becomes impure, even then, not considering the tanning process as purifying for the skin is great ignorance and false according to the consensus of the Imams. Indeed, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whichever hide is tanned, it becomes pure." And Allah the Almighty knows best.

[Urdu Column] Since the process of tanning removes impure fluids after they have been in contact, and the skin becomes pure through tanning which removes the contact of fluids, then by slaughtering it will be pure in a more superior way because it prevents the fluids from staying with the skin, as it is in Al-Inayah. And undoubtedly this thing is found in every slaughter just as every tanning makes it pure even if a Magian does the tanning. Therefore, the evident ruling is the one explained by Qazi Khan; keep it preserved. It is possible that the view authenticated in Tanwir, Durr, and Qunyah is also consistent with analogy and in accordance with the rules. Al-Akmal, Al-Kamal, and Ibn Al-Kamal have adopted the same in Al-Inayah, Al-Fath, and Al-Idah. The summary is that these are two authenticated views, one is closer to analogy and rules and the other is a cause for ease. Choose whichever you prefer for yourself, but caution is better. (T)

And if we also overlook this and accept that the slaughterer, God forbid, is an apostate and all parts including the skin of the slaughtered animal are impure, even then not accepting the skin as pure by the process of tanning is ignorance and is false because there is a consensus of all Imams on this, and the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) himself has stated that every skin becomes pure by dyeing (tanning). And Allah the Almighty knows best. (T)

1. Al-Hidayah, section before the well chapter, Al-Maktabat-ul-Arabiyyah, Karachi 1/24
2. Musnad Imam Ahmad bin Hanbal on the authority of Ibn Abbas, Beirut 1/219

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरा खंड)

[अरबी कॉलम] चूंकि ज़बह (वध) जुड़ाव को रोकता है, इसलिए यह शुद्ध करने वाला होने के लिए अधिक उपयुक्त है, जैसा कि अल-इनाया में है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह हर ज़बह पर लागू होता है। इसलिए, यह वैसा ही है जैसे जब कोई मजूसी (अग्निपूजक) चमड़ा कमाता है; अतः इमाम क़ाज़ी खान द्वारा चुना गया विचार अधिक स्पष्ट है। शायद जो कयास (तर्क) के साथ अधिक सुसंगत है और नियमों के करीब है, वह है जिसका उल्लेख अत-तन्वीर, अद-दुर्र और अल-कुनिया में प्रमाणित के रूप में किया गया है। इसे अल-अकमल, अल-कमल और इब्न अल-कमल ने अल-इनाया, अल-फतह और अल-ईदाह में भी दृढ़ता से माना है। संक्षेप में, ये दो प्रमाणित विचार हैं; यह अधिक सुसंगत है और वह अधिक सुविधाजनक है। अपने लिए चुनें, और सावधानी बेहतर है।

और यदि हम मान लें और विचार करें कि ज़बह करने वाला, ईश्वर न करे, धर्मत्यागी हो गया है और ज़बह किया गया जानवर अपने सभी अंगों के साथ अशुद्ध हो गया है, तब भी पकाने (दबागत) की प्रक्रिया से चमड़े को शुद्ध न मानना भारी अज्ञानता है और इमामों की सहमति के अनुसार असत्य है। वास्तव में, पैगंबर (अल्लाह उन पर कृपा और शांति बरसाए) ने कहा: "जो भी खाल पकाई जाती है, वह शुद्ध हो जाती है।" और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[उर्दू कॉलम] चूंकि दबागत (चमड़ा पकाना) की प्रक्रिया संपर्क के बाद अशुद्ध तरल पदार्थों को दूर करती है, और चमड़ा दबागत के माध्यम से शुद्ध हो जाता है जो तरल पदार्थों के संपर्क को दूर करता है, तो ज़बह के माध्यम से यह बेहतर तरीके से शुद्ध होगा क्योंकि यह तरल पदार्थों को चमड़े के साथ रहने से रोकता है, जैसा कि अल-इनाया में है। और निस्संदेह यह चीज़ हर ज़बह में पाई जाती है जैसे हर दबागत से शुद्ध हो जाता है चाहे मजूसी ही दबागत करे। इसलिए, स्पष्ट निर्णय वही है जिसे क़ाज़ी खान ने समझाया है; इसे सुरक्षित रखें। यह संभव है कि तन्वीर, दुर्र और कुनिया में प्रमाणित विचार भी कयास के अनुरूप और नियमों के अनुसार हो। अल-अकमल, अल-कमल और इब्न अल-कमल ने अल-इनाया, अल-फतह और अल-ईदाह में इसी को अपनाया है। सारांश यह है कि ये दो प्रमाणित विचार हैं, एक कयास और नियमों के अधिक करीब है और दूसरा आसानी का कारण है। अपने लिए जिसे चाहें चुनें, लेकिन सावधानी बेहतर है। (त)

और अगर हम इसे नज़रअंदाज़ भी कर दें और स्वीकार कर लें कि ज़बह करने वाला, अल्लाह न करे, धर्मत्यागी है और ज़बह किए गए जानवर के चमड़े सहित सभी हिस्से नापाक (अशुद्ध) हैं, तब भी

दबागत की प्रक्रिया से चमड़े को शुद्ध न मानना अज्ञानता है और गलत है क्योंकि इस पर सभी इमामों की आम सहमति है, और स्वयं पवित्र पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने फरमाया है कि हर चमड़ा रंगने (पकाने) से पाक हो जाता है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

---

1. अल-हिदाया, कुएं के अध्याय से पहले का अनुभाग, अल-मक्तबत-उल-अरबिया, कराची 1/24
2. मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, इब्न अब्बास के अधिकार पर, बेरूत 1/219 पृष्ठ 756 का 259

فتاوی رضویہ جلد سوم

[عربی کالم] کانت الذکاء المانعة من الاتصال اولی ان تکون مطهرة ۱ کما فی العنایة ولاشك ان هذا یعم کل ذبح فکان کما اذا دبغ مجوسی فالأظهر ما اختاره الامام قاضیخان هذا ولعل الاوفق بالقیاس والا لصق بالقواعد ما ذکر تصحیحه فی التنویر والدر والقنیة ایضاً وبه جزم الا کمل والکمال وابن الکمال فی العنایة والفتح والایضاح وبالجملة هما قولان مصححان وهذا اوفق وذاک ارفق فاختر لنفسك والاحتیاط اولی۔

واگر ازبینم گرزیم و گیریم کہ ذابح معاذ اللہ مرتد شد و ذبیحہ بجمیع اجزائہا نجس گشت بریں تقدیر نیز دباغت را موجب طہارت ندانستن جہل عظیم و باطل باجماع ائمہ ماست فقد قال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ایما اھاب دبغ فقد طھر ۲ واللہ تعالیٰ اعلم۔

[اردو کالم] جبکہ دباغت کا عمل ناپاک رطوبتوں کو لگنے کے بعد زائل کرتا ہے اور دباغت جو کہ رطوبات کو لگنے کے بعد زائل کرتی ہے، سے چمڑا پاک ہو جاتا ہے تو ذبح سے بطریقِ اولیٰ پاک ہوگا کیونکہ وہ رطوبات کو چمڑے کے ساتھ لگنے سے روک دیتا ہے جیسا کہ عنایہ میں ہے اور بلاشبہ یہ چیز ہر ذبح میں پائی جاتی ہے جیسا کہ ہر دباغت سے پاک ہو جاتا ہے خواہ مجوسی ہی دباغت کرے لہذا ظاہر حکم وہی ہے جس کو قاضی خان نے بیان کیا ہے، اس کو محفوظ کرو۔ ہو سکتا ہے جس قول کی تصحیح تنویر، دُر اور قنیہ نے کی وہ بھی قیاس کے موافق اور قواعد کے مطابق ہو۔ اسی کو اکمل، کمال اور ابن کمال نے عنایہ، فتح اور ایضاح میں اختیار کیا ہے۔ حاصل یہ کہ صحیح شدہ یہ دونوں قول ہیں ایک قیاس و قاعدہ کے زیادہ قریب ہے اور دوسرا آسانی کا باعث ہے اپنے طور پر جسے چاہو پسند کرو مگر احتیاط بہتر ہے۔ (ت)

اور اگر ہم اس کو بھی درگزر کریں اور تسلیم کرلیں کہ ذابح معاذ اللہ مرتد ہے اور ذبیحہ کے چمڑے سمیت تمام اجزاء ناپاک ہیں تب بھی دباغت کے عمل سے چمڑے کو پاک نہ ماننا جہالت ہے اور باطل ہے کیونکہ اس پر تمام ائمہ کا اجماع ہے اور خود حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا ہے کہ ہر چمڑا رنگنے سے پاک ہو جاتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

---

۱ الہدایۃ قبیل فصل فی البئر المکتبۃ العربیۃ کراچی ۱/۲۴ ۲ مسند امام احمد بن حنبل عن ابن عباس بیروت ۱/۲۱۹

Fatawa Razawiyya Volume Three

Chapter on the Well

Issue 66: From Khairabad, sent by Maulvi Syed Hussain Bakhsh Sahib Razvi, 1st Rabi-ul-Awwal 1306 AH. What do the scholars of religion say on this matter: if a chameleon falls into a well, how much of its water should be removed, and which animal is a chameleon equivalent to? Although it is larger in body than a common lizard and has more blood, please advise with reference to books. May you be rewarded. The Answer: A chameleon is under the same ruling as a mouse. If it is removed from the well dead and has not bloated or burst, twenty (20) buckets will be removed. In Fatawa Khaniya and Fatawa Hindiyya etc., it is stated: "If a 'Sam Abras' (large lizard) falls into the well and dies, twenty buckets are drawn from it according to the Zahir al-Riwayah." [1] The manifest narration is that if a chameleon falls into a well and dies, twenty buckets will be removed. (T) Allama Hasan Shurunbulali states in Maraqi al-Falah, the commentary on Nur al-Idah: "Between a mouse and a cat, the ruling is that of a mouse." [2] Etc. (All animals sized between a mouse and a cat follow the same ruling as a mouse. T) And Allah Almighty knows best.

Issue 67: What do the scholars of religion say on this matter: what is the volume of a "medium bucket" (Dalu Wasat)? Please explain. The Answer: When something falls into a well and the Pure Sharia commands removing some buckets—where the term "Dalu Wasat" (medium bucket) occurs in later texts, for example, if a mouse falls and dies, twenty medium buckets are to be removed—there are various opinions in defining this bucket, reaching up to seven. However, the manifest narration and the preferred view of Imam Qazi Khan, the author of al-Muhit, the author of al-Ikhtiyar, the author of al-Hidayah, and other major scholars is that for every well, its own bucket with which its water is drawn will be considered reliable. Note: This fatwa is from the remaining old fatwas written by the author in his youth. 12 (M)

1. Fatawa Hindiyya, Type 3, Chapter 1 on Water, Peshawar, 1/20
2. Maraqi al-Falah, Issues of Wells, Bulaq Egypt, p. 22 Page 261 of 756

फतावा रज़विय्या जिल्द सोम (तीसरा खंड)

फ़स्ल फ़िल बीर (कुएं का अध्याय)

मसला ६६: खैरआबाद से मुर्सला (भेजा हुआ) मौलवी सैयद हुसैन बख्श साहब रज़वी, १ रबी-उल-अव्वल १३०६ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अगर गिरगिट कुएं में गिर जाए तो उसका कितना पानी निकाला जाए? और गिरगिट किस जानवर के बराबर माना जा सकता है, हालांकि यह शरीर में छिपकली से बड़ा होता है और अधिक खून रखता है? किताबों के हवाले से इरशाद फ़रमाएं, अल्लाह आपको बदला दे। अल-जवाब: गिरगिट चूहे के हुक्म में है। अगर वह कुएं से मरा हुआ निकले और फूला या फटा न हो, तो बीस (२०) डोल निकाले जाएंगे। फतावा खानिया और फतावा हिन्दिया वगैरह में है: "इज़ा वक़'अ फ़िल बिर्रि साम अब्रस व मात युन्ज़हू मिन्हा इश्रून दलवन फ़ी ज़ाहिरिर रिवायत।" [१] ज़ाहिर रिवायत यह है कि अगर गिरगिट कुएं में गिरकर मर जाए तो बीस (२०) डोल निकाले जाएंगे। (त) अल्लामा हसन शुरुनबुलाली 'मराक़िल फलाह' (शरह नूरुल ईज़ाह) में फ़रमाते हैं: "मा बैनल फ़ारती वल हिर्रति फ़-हुक्मुहू हुक्मुल फ़ारती।" [२] इत्यादि (चूहे और बिल्ली के बीच के आकार वाले सभी जानवरों का हुक्म चूहे जैसा ही है। त) वल्लाहु तआला आलम (अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला ६७: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि 'दलु-ए-वसत' (मध्यम डोल) की मात्रा क्या है? बयान फ़रमाएं। अल-जवाब: कुएं में जब कोई चीज़ गिर जाए और शरीअत-ए-मुतह्हरा कुछ डोल निकालने का हुक्म दे—जहाँ मुतून-ए-मुताख़िरीन में 'दलु वसत' शब्द आया हो, यानी मिसाल के तौर पर चूहा गिरकर मर जाए तो बीस (२०) मध्यम डोल निकाले जाएँ—उस डोल को तय करने में भी विभिन्न मत हैं जो सात तक पहुँचते हैं। मगर ज़ाहिर-अर-रिवायत और इमाम क़ाज़ी ख़ान, साहिब-ए-मुहीत, मुसन्निफ-ए-इख़्तियार, और मुअल्लिफ-ए-हिदाया व अन्य बड़े उलेमा का पसंदीदा मत यही है कि हर कुएं के लिए उसी का डोल विश्वसनीय होगा जिससे उसका पानी भरा जाता है। नोट: यह फ़तवा उन पुराने फ़तवों में से है जो लेखक ने अपनी कम उम्र में लिखे थे। १२ (म)

[१] फतावा हिन्दिया, अल-नौ-अस-सालिस, अल-फ़स्ल-अल-अव्वल, अल-मियाह, पेशावर १/२० [२] मराक़िल फलाह, मसाइल-अल-आबार, बुलाक मिस्र, पृ. २२ पेज २६१ / ७५६

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

فصل فی البئر

مسئلہ ٦٦: از خیرآباد مرسلہ مولوی سید حسین بخش صاحب رضوی یکم ربیع الاول ١٣٠٦ ہجری کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر گرگٹ چاہ افتادہ ہو اُس کا پانی کس قدر نکالا جائے اور گرگٹ کس جانور کے برابر ہو سکتا ہے اگرچہ جثہ میں چھپکلی سے زیادہ اور خون رکھتا ہے بحوالہ کتاب ارشاد ہو، بینوا توجروا۔ الجواب: گرگٹ چھوہے کے حکم میں ہے اگر کنویں سے مُردہ نکلے اور پھولا پھٹانہ ہو بیس ٢٠ ڈول نکالے جائیں گے فتاوٰی خانیہ وفتاوٰی ہندیہ وغیرہما میں ہے : اذا وقع فی البئر سام ابرص ومات ینزح منھا عشرون دلوا فی ظاہر الروایۃ۔١ ظاہر روایت یہ ہے کہ اگر گرگٹ کنویں میں گر کر مر جائے تو بیس ٢٠ ڈول نکالے جائیں گے۔(ت) علامہ حسن شرنبلالی مراقی الفلاح میں شرح نور الایضاح میں فرماتے ہیں: مابین الفارۃ والھرۃ فحکمہ حکم الفارۃ ٢ الخ (چوہے اور بلی کے درمیانی جانور سب کا حکم چوہے جیسا ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ٦٧: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ دلو وسط کی مقدار کیا ہے۔ بینوا توجروا۔ الجواب: کنویں میں جب کوئی چیز گر جائے اور شرع مطہر کچھ ڈول نکالنے کا حکم دے جہاں متون متاخرین میں لفظ دلو وسط واقع ہوا یعنی مثلاً چوہا گر کر مر جائے تو بیس ٢٠ ڈول متوسط نکالے جائیں، اس ڈول کی تعیین میں بھی اقوال مختلفہ ہیں کہ سات ٧ سے تک پہنچتے ہیں مگر ظاہر الروایۃ و مختار امام قاضی خان و صاحب محیط و مصنف اختیار و مولف ہدایہ و غیرہم اکابر علماء یہی ہے کہ ہر کنویں کے لئے اُسی کا ڈول معتبر ہو گا جس سے اس کا پانی بھرا جاتا ہے، ہاں عہ: یہ فتوٰی فتاوٰی قدیمہ کے بقایا سے ہے جو مصنف نے اپنے صغر سن میں لکھے ١٢ (م)

١۔ فتاویٰ ہندیة النوع الثالث من الفصل الاول من المیاه پشاور ١/٢٠ ٢۔ مراقی الفلاح مسائل الآبار

بولاق مصر ص ٢٢ Page 261 of 756

Fatawa Rizvia Volume 3 If there is no specific bucket for that well, then that bucket will be considered in which one sa' of lentils or mash (beans) can fit. It is stated in Ghunyah: الدلو الوسط ما يسع صاعاً من الحب المعتدل (A medium-sized bucket is one that holds a sa' of average grain. - T). And according to our Imam, a sa' consists of eight ratls. Each ratl is twenty 120 astars, each astar is four and a half mithqals, and each mithqal is four and a half mashas. So each ratl is thirty-three (33) tolas and nine mashas, and a sa' is two hundred and seventy (270) tolas.

In Radd al-Muhtar quoted from Sharh Durar al-Bihar: Know that a sa' is four mudds, a mudd is two ratls, a ratl is half a mann, and a mann in dirhams is two hundred and sixty dirhams, and in astars it is forty. An astar (with a kasra on the Hamza) in dirhams is six and a half, and in mithqals it is four and a half. End.

I say: The dirham mentioned here is not the legal (Shar'i) dirham which is considered to have a weight of seven, as evidenced by his setting the astar at six and a half in dirhams and four and a half in mithqals. For if it were of the weight of seven, four and a half mithqals in dirhams would be six and three-sevenths, not six and a half. Furthermore, if the mann were 260 dirhams at the weight of seven, it would be 182 mithqals, whereas according to the aforementioned astar calculation, it is one hundred and eighty, as is not hidden from an accountant.

It is quoted in Radd al-Muhtar from Sharh Durar al-Bihar that it should be known that a sa' is four (4) mudds, and a mudd is two (2) ratls, and a ratl is half a mann. The weight of a mann is two hundred and sixty (260) dirhams, and according to the calculation of astar, a mann is forty (40) astars. The weight of an astar according to the calculation of dirhams is six and a half dirhams, and according to the calculation of mithqals it is four and a half mithqals. End. (T)

I say that the dirham mentioned here is not the legal (Shar'i) dirham in which the weight of seven is considered (i.e., ten dirhams equals seven mithqals). The proof for this is that he has mentioned four and a half (4-1/2) mithqals as equal to six and a half (6-1/2) dirhams in the calculation of astar. If the weight of seven were intended, then instead of six and a half (6-1/2) for four and a half (4-1/2) mithqals, it would have been said to be six dirhams and three-sevenths of a dirham (6-3/7). Also, if a mann of two hundred and sixty (260) dirhams were based on the weight of seven, then it would have been stated as one hundred and eighty-two (182) mithqals for the quantity of a mann, whereas they have

In Radd al-Muhtar quoted from Sharh Durar al-Bihar: Know that a sa' is four mudds, a mudd is two ratls, a ratl is half a mann, and a mann in dirhams is two hundred and sixty dirhams, and in astars it is forty. An astar (with a kasra on the Hamza) in dirhams is six and a half, and in mithqals it is four and a half. End.

It is quoted in Radd al-Muhtar from Sharh Durar al-Bihar that it should be known that a sa' is four (4) mudds, and a mudd is two (2) ratls, and a ratl is half a mann. The weight of a mann is two hundred and sixty (260) dirhams, and according to the calculation of astar, a mann is forty (40) astars. The weight of an astar according to the calculation of dirhams is six and a half dirhams, and according to the calculation of mithqals it is four and a half mithqals. End. (T)

stated one hundred and eighty (180) mithqals instead of one hundred and eighty-two (182) mithqals, which is not hidden from a person who knows calculations. (T)

1. Ghunyat al-Mustamli, Section on the Well, Suhail Academy Lahore, p. 157
2. Radd al-Muhtar, Topic on determining the Sa' from Zakat, Mustafa al-Babi Egypt, 83/2

फ़तावा रज़विया जिल्द 3 अगर उस कुएँ का कोई डोल निश्चित न हो तो उस डोल का विचार करेंगे जिसमें एक सा' मसूर या उड़द के दाने आ जाएँ। ग़ुनिया में है: الدلو الوسط ما یسع صاعاً من الحب المعتدل। (मध्यम डोल वह है जिसमें बराबर के दाने (दाल आदि के) एक सा' के बराबर आ जाएँ। - त) और सा' हमारे इमाम के अनुसार आठ रतल का होता है, प्रत्येक रतल बीस १२० अस्तार, प्रत्येक अस्तार साढ़े चार मिस्क़ाल, प्रत्येक मिस्क़ाल साढ़े चार माशे, तो प्रत्येक रतल तैंतीस ३३ तोले नौ माशे, और सा' दो सौ सत्तर २७० तोले का हुआ।

रद अल-मुह्तार में शरह दुर्र अल-बिहार से उद्धृत है: जान लें कि सा' चार मुद्द है, और मुद्द दो रतल है, और रतल आधा मन है, और मन दिरहम में दो सौ साठ दिरहम है, और अस्तार में चालीस, और अस्तार (हमज़ा के नीचे जेर के साथ) दिरहम में साढ़े छह और मिस्क़ाल में साढ़े चार है। इति।

मैं कहता हूँ: यहाँ वर्णित दिरहम वह शरई दिरहम नहीं है जिसे सात के वजन का माना जाता है, जैसा कि उनके द्वारा अस्तार को दिरहम में साढ़े छह और मिस्क़ाल में साढ़े चार ठहराने से स्पष्ट है। क्योंकि यदि यह सात के वजन का होता, तो दिरहम में साढ़े चार मिस्क़ाल साढ़े छह के बजाय छह और तीन-सातवाँ हिस्सा होता, न कि साढ़े छह। इसके अलावा, यदि मन २६० दिरहम का सात के वजन पर होता, तो वह १८२ मिस्क़ाल होता, जबकि उपर्युक्त अस्तार के हिसाब से यह

रद अल-मुह्तार में शरह दुर्र अल-बिहार से उद्धृत है, ज्ञात होना चाहिए कि सा' चार ४ मुद्द, और मुद्द दो २ रतल, और रतल आधा मन है, और मन का वजन दो सौ साठ २६० दिरहम और मन अस्तार के हिसाब से चालीस ४० अस्तार का होता है, और अस्तार का वजन दिरहम के हिसाब से साढ़े छह दिरहम और मिस्क़ाल के हिसाब से साढ़े चार मिस्क़ाल होता है। इति। (त)

मैं कहता हूँ कि यहाँ जिस दिरहम का उल्लेख किया गया है वह शरई दिरहम नहीं है जिसमें सात का वजन मान्य है (अर्थात दस दिरहम के मुकाबले सात मिस्क़ाल)। इसका प्रमाण यह है कि उन्होंने अस्तार के हिसाब में साढ़े चार (४-१/२) मिस्क़ाल को साढ़े छह (६-१/२) दिरहम के बराबर बताया है और यदि सात का वजन अभिप्रेत होता तो साढ़े चार (४-१/२) मिस्क़ाल के बराबर साढ़े छह (६-१/२) के बजाय छह दिरहम और एक दिरहम के तीन सातवें हिस्से (६-३/७) कहा जाता। साथ ही यदि मन दो सौ साठ २६० दिरहम का सात के वजन पर होता तो एक सौ बयासी १८२ मिस्क़ाल मन की मात्रा में बताया जाता, जबकि उन्होंने एक सौ बयासी १८२ मिस्क़ाल के बजाय

रद अल-मुह्तार में शरह दुर्र अल-बिहार से उद्धृत है: जान लें कि सा' चार मुद्द है, और मुद्द दो रतल है, और रतल आधा मन है, और मन दिरहम में दो सौ साठ दिरहम है, और अस्तार में चालीस, और अस्तार (हमज़ा के नीचे जेर के साथ) दिरहम में साढ़े छह और मिस्क़ाल में साढ़े चार है। इति।

एक सौ अस्सी है, जैसा कि एक लेखाकार से छिपा नहीं है।

रद अल-मुह्तार में शरह दुर्र अल-बिहार से उद्धृत है, ज्ञात होना चाहिए कि सा' चार ४ मुद्द, और मुद्द दो २ रतल, और रतल आधा मन है, और मन का वजन दो सौ साठ २६० दिरहम और मन अस्तार के हिसाब से चालीस ४० अस्तार का होता है, और अस्तार का वजन दिरहम के हिसाब से साढ़े छह दिरहम और मिस्क़ाल के हिसाब से साढ़े चार मिस्क़ाल होता है। इति। (त)

एक सौ अस्सी १८० मिस्क़ाल कहा है, जो गणना करने वाले व्यक्ति पर छिपा नहीं है। (त)

1. ग़ुन्यतुल मुस्तमली, फ़स्ल फ़िल बीर, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ १५७
2. रद अल-मुह्तार, मतलब फ़ी तहरीर अल-सा' मिन अल-ज़कात, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, ८३/२

فتاویٰ رضویہ جلد سوم اگر اُس کنویں کا کوئی ڈول معین نہ ہو تو اس ڈول کا اعتبار کریں گے جس میں ایک صاع عدس یا ماش آجائیں غنیہ میں ہے: الدلو الوسط ما یسع صاعاً من الحب المعتدل (درمیانہ ڈول وہ ہے جس میں صاع برابر (دال وغیرہ کے) دانے آجائیں۔ت) اور صاع ہمارے امام کے نزدیک آٹھ رطل کا ہوتا ہے ہر رطل بیس ۱۲۰ استار ہر استار ساڑھے چار مثقال ہر مثقال ساڑھے چار ماشے، تو ہر رطل تینتیس ۳۳ تولے نو ماشے، اور صاع دوسوستر ۲۷۰ تولے کا ہوا۔

فی ردالمحتار عن شرح درر البحار اعلم ان الصاع اربعة امداد والمد رطلان والرطل نصف من والمن بالدراهم مائتان وستون درهماً وبالاستار اربعون والاستار بکسرا لهمزة بالدراهم ستة ونصف وبالمثاقیل اربعة ونصف اھ

ردالمحتار میں شرح دررالبحار سے منقول ہے، معلوم ہونا چاہئے کہ صاع چار ۴ مد، اور مد دو ۲ رطل، اور رطل نصف من اور من کا وزن دوسوساٹھ ۲۶۰ درہم اور من استار کے حساب سے چالیس ۴۰ استار کا ہوتا ہے، اور استار کا وزن دراہم کے حساب سے ساڑھے چھ درہم اور مثاقیل کے حساب سے ساڑھے چار مثقال ہوتا ہے۔ اھ (ت)

اقول: والدرهم المذکور ههنا غیر الدرهم الشرعی المعتبر بوزن سبع کما یشهد بذلك جعله الاستار بالدراهم ستة ونصفا وبالمثاقیل اربعة ونصفا اذلو کان بوزن سبع لکانت اربعة مثاقیل ونصف بالدراهم ستة وثلثة اسباع لانصفا وایضاً لوکان المن

میں کہتا ہوں کہ یہاں جس درہم کا ذکر کیا گیا ہے وہ شرعی درہم نہیں جس میں سات کا وزن معتبر ہے (یعنی دس درہم بمقابلہ سات مثقال) اس کی دلیل یہ ہے کہ انہوں نے استار کے حساب میں ساڑھے چار (۴-۱/۲) مثقال کو ساڑھے چھ (۶-۱/۲) درہم کے برابر ذکر کیا ہے اور اگر سات کا وزن مراد ہوتا تو پھر ساڑھے چار (۴-۱/۲) مثقال کے برابر ساڑھے چھ (۶-۱/۲) کی بجائے چھ درہم اور ایک درہم کے

فی ردالمحتار عن شرح درر البحار اعلم ان الصاع اربعة امداد والمد رطلان والرطل نصف من والمن بالدراھم مائتان وستون درھماً وبالاستار اربعون والاستار بکسرا لھمزة بالدراھم ستة ونصف وبالمثاقیل اربعة ونصف اھ

ردالمحتار میں شرح دررالبحار سے منقول ہے، معلوم ہونا چاہئے کہ صاع چار ۴ مد، اور مد دو ۲ رطل، اور رطل نصف من اور من کا وزن دوسوساٹھ ۲۶۰ درہم اور من استار کے حساب سے چالیس ۴۰ استار کا ہوتا ہے، اور استار کا وزن دراہم کے حساب سے ساڑھے چھ درہم اور مثاقیل کے حساب سے ساڑھے چار مثقال ہوتا ہے۔ اھ (ت)

۲۶۰ درھماً بوزن سبعة لکان من المثاقیل ۱۸۲ مع انه بحساب الاستار المذکور مائة وثمانون کما لا یخفی علی المحاسب۔

تین ساتویں حصے (۶-۳/۷) کہا جاتا نیز اگر من دوسوساٹھ ۲۶۰ درہم کا سات کے وزن پر ہوتا تو ایک سو بیاسی ۱۸۲ مثقال من کی مقدار میں بیان کیا جاتا حالانکہ انہوں نے ایک سو بیاسی ۱۸۲ مثقال کی بجائے ایک سو اسی ۱۸۰ مثقال کہا جو کہ حساب دان پر مخفی نہیں۔ (ت)

1. غنیۃ المستملی فصل فی البئر سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۵۱
2. ردالمحتار مطلب فی تحریر الصاع من الزکاۃ مصطفی البابی مصر ۸۳/۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

By the grace of Allah Almighty, it has become clear (1) from the aforementioned explanation that when Allama Shami stated after the preceding passage, "Know that the Shari'i Dirham is fourteen carats, while the commonly used one is now sixteen carats. Thus, if a Sa' (a unit of measure) is considered to be one thousand and forty (1040) Shari'i Dirhams, then by the calculation of commonly used Dirhams, a Sa' would be nine hundred and ten (910) Dirhams," etc. In this, the Allama has confused two terminologies. This is because the calculation of a Sa' being one thousand and forty (1040) Dirhams comes from the weight that Allama Shami himself mentioned above. When a Sa' is eight Ratls, and a Ratl contains 20 Istārs, and an Istār, by the calculation of this Dirham, is six and a half (6.5) Dirhams, then multiplying 20 by six and a half (6.5) results in a Ratl being one hundred and thirty (130) Dirhams. Multiplying this by eight gives one thousand and forty (1040). The Dirham which is fourteen carats is the Shari'i Dirham considered as seven (weights), as mentioned in 'Durr al-Mukhtar' and other texts. So pay heed to this, set aside the Dirham calculations, and rely on the calculation of Mithqals which does not vary. Thus, a Mithqal is four and a half (4.5) Mashas, while an Istār will be one Tola, eight Mashas, and two Rattis. In this way, a Ratl will be thirty-three (33) Tolas and nine Mashas, as we have mentioned, and success is only from Allah Almighty. (T)

And this detail—that for every well, its own bucket should be considered valid, and if not available, then a bucket equal to one Sa'—is as if it's the synthesis and reconciliation of these two reliable opinions and is the final verdict. This is also evident from Fatawa Khulasa (1), Sharh Tahawi (2), and Siraj (3).

Footnote: 1. Radd al-Muhtar, Matlab fi Tahrir al-Sa' min al-Zakat, Mustafa al-Babi Egypt 2/83 Page 263 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह स्पष्ट हो गया है (1) कि उपरोक्त स्पष्टीकरण से मालूम हुआ कि अल्लामा शामी ने अपने उपरोक्त कथन के बाद जहाँ यह फ़रमाया कि "यह जान लेना चाहिए कि शरीई दिरहम चौदह किरात का होता है, जबकि अब सोलह किरात वाला प्रचलित है। अतः जब साअ (मापन की इकाई) को एक हज़ार चालीस (1040) शरीई दिरहमों का मान लिया जाए, तो प्रचलित दिरहम के हिसाब से साअ नौ सौ दस (910) दिरहमों का होगा", इत्यादि। इसमें अल्लामा ने दो परिभाषाओं को आपस में मिला दिया है। क्योंकि साअ का एक हज़ार चालीस (1040) दिरहमों का हिसाब उसी वज़न से बनता है जिसका अल्लामा शामी ने स्वयं ऊपर यहाँ ज़िक्र किया है। क्योंकि जब साअ आठ रतल होता है, और एक रतल में 20 इस्तार होते हैं, और एक इस्तार इस दिरहम के हिसाब से साढ़े छह (6.5) दिरहम होता है, तो 20 को साढ़े छह (6.5) से गुणा करने पर एक रतल एक सौ तीस (130) दिरहम का होगा। जब इसे आठ से गुणा करेंगे तो एक हज़ार चालीस (1040) बनेगा। और जो दिरहम चौदह किरात का है वह शरीई दिरहम है जिसमें सात वाला वज़न मान्य है जैसा कि दुर्रे मुख़्तार आदि में है। अतः इस पर ध्यान दें और दिरहमों का हिसाब छोड़ कर मिस्कालों के हिसाब पर भरोसा करें जो बदलता नहीं है। अतः मिस्काल साढ़े चार (4.5) माशा है, जबकि इस्तार एक तोला, आठ माशे और दो रत्ती होगा। इस तरह रतल तैंतीस (33) तोला नौ माशा होगा जैसा कि हमने ज़िक्र किया है, और अल्लाह तआला ही तौफ़ीक़ देने वाला है। (त)

और यह विवरण कि हर कुएँ के लिए उसी की डोल (बाल्टी) को मान्य माना जाए, और यदि न हो तो एक साअ वाली डोल, यह मानो इन दोनों विश्वसनीय कथनों का मेल और समन्वय है और यही अंतिम फ़ैसला है। यही फ़तावा खुलासा (1), शरह तहावी (2) और सिराज (3) से भी ज़ाहिर है।

पादलेख: 1. रद अल-मुह्तार, मतलब फ़ी तहरीर अल-साअ मिन अल-ज़कात, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 2/83 पृष्ठ 263/756

وبه علم بحمد الله تعالی (۱) ان ما وقع من العلامة الشامی حیث قال بعد ما مر ثم اعلم ان الدرهم الشرعی اربعة عشر قیراطا والمتعارف الآن ستة عشر فاذا کان الصاع الفا واربعین درهما شرعیا یکون بالدرهم المتعارف تسعمائة وعشرة الخ خلط بین اصطلاحین فان الصاع انما یکون الفا واربعین بالدرهم المذکور هنالان الصاع ثمانیة ارطال والرطل عشرون استارا والاستار بهذه الدراهم ستة ونصف فاذا ضربت عشرین في ستة ونصف کان الرطل مائة وثلثین درهما بضربها في ثمانیة یحصل الف واربعون والدرهم الذی هو اربعة عشر قیراطا انما هو الدرهم الشرعی المعتبر بوزن سبعة کما في الدر المختار وغیره فتنبه لهذا واترك الدراهم وحاسب بمالا یختلف وهو المثقال فانه اربع ونصف (۲) ماسة فالاستار طولجة وثمان ماسات وربع ای حبتان فالرطل ثلث وثلثون طولجة وتسع ماسات کما ذکرنا وبالله التوفیق۔

مذکور وضاحت سے معلوم ہوا کہ علامہ شامی نے اپنی مذکورہ بالا عبارت کے بعد جہاں یہ فرمایا کہ "جاننا چاہئے کہ شرعی درہم چودہ قیراط کا ہوتا ہے حالانکہ اب سولہ قیراط والا متعارف ہوا پس جب صاع کو ایک ہزار چالیس (۱۰۴۰) شرعی دراہم کا قرار دیا جائے تو متعارف درہم کے حساب سے صاع نوسودس (۹۱۰) دراہم کا ہو گا" الخ۔ اس میں علامہ نے دونوں اصطلاحوں میں خلط کر دیا ہے کیونکہ صاع کا حساب ایک ہزار چالیس (۱۰۴۰) دراہم اس وزن سے بنتا ہے جس کو علامہ شامی نے خود اوپر یہاں ذکر کیا ہے کیونکہ جب صاع آٹھ رطل، اور رطل میں ۲۰ استار، اور استار اس درہم کے حساب سے ساڑھے چھ (۶ ۱/۲) درہم بنتا ہے تو جب بیس ۲۰ کو ساڑھے چھ (۶ ۱/۲) میں ضرب دیں تو رطل ایک سو تیس (۱۳۰) درہم کا ہو گا جب اس کو آٹھ سے ضرب دیں تو ایک ہزار چالیس (۱۰۴۰) بنے، اور جو درہم چودہ قیراط ہے وہ شرعی ہے

جس میں سات والا وزن معتبر ہے جیسا کہ درمختار وغیرہ میں ہے۔ لہٰذا تم سمجھو اور دراہم کا حساب چھوڑ کر مثاقیل کے حساب کا اعتبار کرو جو مختلف نہیں ہوتا۔ پس مثقال ساڑھے چار (۴ ۱/۲) ماشہ جبکہ استار ایک تولہ آٹھ ماشے دو رتی ہو گا۔ اس طرح رطل تینتیس (۳۳) تولہ نو ماشہ ہو گا جیسا کہ ہم نے ذکر کیا، اور اللہ تعالٰی سے ہی توفیق ہے۔ (ت)

اور یہ تفصیل کہ ہر کنویں کیلئے اسی کا ڈول معتبر رکھیں اور نہ ہو تو ایک صاع والا ڈول یہ گویا ان دونوں معتبر قولوں کی جمع وتوفیق اور قول فیصل ہے اور یہی فتاوٰی خلاصہ (۱) و شرح (۲) طحاوی و سراج (۳) سے ظاہر اور صاحب

حاشیہ: 1. رد المحتار مطلب فی تحریر الصاع من الزکوٰۃ مصطفٰی البابی مصر ۸۳/۲ Page 263 of 756

Fatawa Razawiya - Volume 3

Bahr al-Raiq relied on this and the author of Durr al-Mukhtar affirmed it, and following the author of Bahr, assigned these same meanings to the 'medium bucket'.

[Arabic Text Column] In Al-Khaniyah: When it is necessary to bale out some water by a certain number of buckets, the bucket of that specific well is considered. (1) In Al-Hidayah: Then, for every well, its own bucket used for drawing water is considered. It is also said that a bucket holding one *sa'* is considered. (2) In Al-Khulasah: For every well, its own bucket is considered. If that well does not have a bucket, then its water should be baled out with a bucket holding one *sa'*, which is eight *ratls*. From Imam Abu Hanifa, there is a narration of five *manns* (ten *ratls*). (3) In Al-Bahr al-Raiq: There is a difference of opinion regarding the definition of a 'medium bucket'. Some said it is the bucket commonly used in each region. Others said the bucket used in each specific well is intended because when the predecessors spoke of something in general terms, it referred to what was customary. This view was favored in Al-Muhit, Al-Ikhtiyar, Al-Hidayah, etc., and it is the 'Zahir al-Riwayah' (apparent narration) because it is mentioned in Imam Hakim's book "Al-Kafi". Some defined the medium bucket as one holding one *sa'*. Regarding one *sa'*, some said it is eight *ratls* and others said ten *ratls*, and there are other opinions as well.

[Urdu Translation Column] In Khaniyah, it is stated that when some water has been drawn from a well based on a number of buckets, the bucket of that well will be considered. And in Hidayah, it is mentioned that for every well, the same bucket will be considered from which the water is drawn. Some have said that a bucket with the capacity of one *sa'* is considered. In Khulasah, it is stated that for every well, its own bucket is considered, and if it doesn't have its own bucket, then at that time its water should be drawn with a bucket that has the capacity of one *sa'*. One *sa'* is eight *ratls*, and from Imam Abu Hanifa, there is a narration of five *manns* (ten *ratls*). In Bahr al-Raiq, it is mentioned that there is a difference of opinion in determining the 'medium bucket'. Some said it is the bucket used in every area, and some meant the bucket used in every individual well because when the predecessors used an absolute term for something, it meant the customary thing. This has been preferred in Al-Muhit, Al-Ikhtiyar, Al-Hidayah, etc., and this is the 'Zahir al-Riwayah' because it is mentioned in Imam Hakim's book "Al-Kafi". Some have determined the medium bucket to be the one with the capacity of one *sa'*. Regarding one *sa'*, some said eight *ratls* and some said ten *ratls*, besides these, there are other sayings as well. (T)

[Footnotes] 1. Fatawa Qazi Khan, Section on what falls into the well, Naval Kishore Lucknow, 1/6 2. Al-Hidayah, Section on the well, Al-Maktabah al-Arabiyyah Karachi, 1/72 3. Khulasah al-Fatawa, Issues of the well, Naval Kishore Lucknow, 1/11

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

बहर अल-रैक ने इसी पर भरोसा किया और दुर्र अल-मुख्तार के लेखक ने इसी पर दृढ़ता व्यक्त की और बहर के लेखक का अनुसरण करते हुए 'दरमियानी डोल' (medium bucket) के यही अर्थ निर्धारित किए।

[अरबी पाठ स्तंभ] अल-खानिया में: जब डोलों की एक निश्चित संख्या के साथ कुछ पानी निकालना आवश्यक हो, तो उस कुएं के डोल को विश्वसनीय माना जाएगा। (1) अल-हिदाया में: फिर, हर कुएं के लिए, उसका अपना डोल जिससे पानी निकाला जाता है, विश्वसनीय माना जाता है। यह भी कहा गया है कि एक 'साअ' (sa') की क्षमता वाला डोल विश्वसनीय है। (2) अल-खुलासा में: हर कुएं के लिए उसका अपना डोल विश्वसनीय है। यदि उस कुएं में डोल नहीं है, तो उसका पानी एक 'साअ' की क्षमता वाले डोल से निकाला जाना चाहिए, जो आठ 'रतल' (ratl) के बराबर है। इमाम अबू हनीफा से पांच 'मन' (दस रतल) की एक रिवायत है। (3) अल-बहर अल-रैक में: 'दरमियानी डोल' की परिभाषा के संबंध में मतभेद है। कुछ ने कहा कि यह हर क्षेत्र में आमतौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला डोल है। अन्यों ने कहा कि प्रत्येक विशिष्ट कुएं में इस्तेमाल होने वाला डोल अभिप्रेत है क्योंकि जब पूर्वजों ने सामान्य शब्दों में कुछ कहा, तो वह प्रथागत चीज़ को संदर्भित करता था। इस विचार को अल-मुहित, अल-इख्तियार, अल-हिदाया आदि में पसंद किया गया था, और यह 'ज़ाहिर अल-रिवायत' है क्योंकि इसका उल्लेख इमाम हाकिम की पुस्तक "अल-काफी" में है। कुछ ने दरमियानी डोल को एक 'साअ' की क्षमता वाले डोल के रूप में परिभाषित किया। एक 'साअ' के बारे में, कुछ ने आठ 'रतल' और अन्यों ने दस 'रतल' कहा, और इसके अलावा अन्य राय भी हैं।

[उर्दू अनुवाद स्तंभ] खानिया में है कि जब कुएं से चंद डोल के हिसाब से कुछ पानी निकाला गया हो तो उस कुएं का डोल विश्वसनीय (मोअतबर) होगा। और हिदाया में है फिर हर कुएं में उसका वही डोल विश्वसनीय होगा जिससे पानी निकाला जाता है। और कुछ ने कहा कि एक साअ की गुंजाइश वाला विश्वसनीय है। और खुलासा में है कि हर कुएं में उसका अपना डोल विश्वसनीय है और अगर उसका अपना डोल न हो तो उस वक़्त उसका पानी ऐसे डोल के साथ निकाला जाए जिसमें एक साअ की गुंजाइश हो और साअ आठ रतल है और इमाम अबू हनीफा से पांच मन (दस रतल) की रिवायत है। और بحر अल-रैक में है कि दरमियानी डोल के निर्धारण (तय्यीन) में मतभेद है। कुछ ने कहा हर इलाके में वहां का इस्तेमाल होने वाला डोल है और कुछ ने हर कुएं में इस्तेमाल होने वाला डोल मुराद

लिया है क्योंकि अस्लाफ़ (पूर्वजों) ने जब किसी चीज़ को मुतलक़ (सामान्य रूप से) बोला है तो उससे चलन वाली (आदत के अनुसार) चीज़ मुराद होती है। इसी को मुहीत, इख्तियार और हिदाया वगैरह में पसंद किया गया है और यही ज़ाहिर रिवायत है क्योंकि इमाम हाकिम की किताब "काफ़ी" में यही ज़िक्र है। कुछ ने दरमियानी डोल एक साअ की गुंजाइश वाले को करार दिया। एक साअ के बारे में कुछ ने आठ रतल और कुछ ने दस रतल कहा है, इसके अलावा और भी कौल (कथन) हैं। (त)

[पाद-टिप्पणी] 1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, फ़सल कुएं में गिरने वाली चीज़ों के बारे में, नवल किशोर लखनऊ, 1/6 2. अल-हिदाया, फ़सल कुएं के बारे में, अल-मकतब अल-अरबिया कराची, 1/72 3. खुलासा अल-फ़तावा, कुएं के मसले, नवल किशोर लखनऊ, 1/11

بحر الرائق نے اسی پر اعتماد اور صاحب در مختار نے اسی پر جزم کیا اور بہ تبعیت صاحب بحر دلو وسط کے یہی معنی قرار دیے۔

[عربی متن کا کالم] في الخانية: اذا وجب نزح بعض الماء بعدد من الدلاء فالمعتبر فی ذلك دلو هذه البئر ^1 وفي (2) الهداية: ثم المعتبر فی كل بئر دلوها الذي يستقی به منها وقيل دلو يسع فيه صاع ^2 وفي الخلاصة: المعتبر فی كل بئر دلوها فان لم يكن لتلك البئر دلوح ينزح بدلو يسع فيه الصاع وهو ثمانية ارطال وعن ابی حنيفة خمسة امناء ^3 وفی (4) البحر الرائق: واختلف فی تفسير الدلو الوسط فقيل هی الدلو المستعملة فی كل بلد وقيل المعتبر فی كل بئر دلوها لان السلف لما اطلقوا انصرف الی المعتاد واختاره فی المحيط والاختيار والهداية وغيرها وهو ظاهر الرواية لانه مذكور فی الكافي للحاكم وقيل ما يسع صاعا وهو ثمانية ارطال وقيل عشرة ارطال وقيل غير ذلك۔

[اردو ترجمہ کا کالم] خانیہ میں ہے کہ جب کنویں سے چند ڈول کے حساب کچھ پانی نکالا ہو تو اس کنویں کا ڈول معتبر ہو گا۔ اور ہدایہ میں ہے پھر ہر کنویں میں اس کا وہی ڈول معتبر ہو گا جس سے پانی نکالا جاتا ہے۔ اور بعض نے کہا کہ ایک صاع کی گنجائش والا معتبر ہے۔ اور خلاصہ میں ہے کہ ہر کنویں میں اس کا اپنا ڈول معتبر ہے اور اگر اس کا اپنا ڈول نہ ہو تو اس وقت اس کا پانی ایسے ڈول کے ساتھ نکالا جائے جس میں ایک صاع کی گنجائش ہو اور صاع آٹھ رطل ہے اور امام ابو حنیفہ سے پانچ مَن (دس رطل) کی روایت ہے۔ اور بحر الرائق میں ہے کہ درمیانے ڈول کی تعیین میں اختلاف ہے۔ بعض نے کہا ہر علاقے میں وہاں کا مستعمل ڈول ہے اور بعض نے ہر کنویں میں استعمال ہونے والا ڈول مراد لیا ہے کیونکہ اسلاف جب کسی چیز کو مطلق بولتے ہیں تو اس سے زیر عادت چیز مراد ہوتی ہے اسی کو محیط، اختیار اور ہدایہ وغیرہ میں پسند کیا گیا ہے

اور یہی ظاہر روایت ہے کیونکہ امام حاکم کی کتاب "کافی" میں یہی مذکور ہے۔ بعض نے درمیانہ ڈول ایک صاع کی گنجائش والے کو قرار دیا ایک صاع کے بارے میں بعض نے آٹھ رطل اور بعض نے دس رطل کہا ہے، اس کے علاوہ اور بھی قول ہیں۔ (ت)

[حواشی] 1 فتاوی قاضی خان فصل فی مایقع فی البئر نولکشور لکھنئو ۱/۶ 2 الھدایۃ فصل فی البئر المکتبۃ العربیۃ کراچی ۱/۷۲ 3 خلاصۃ الفتاوی مسائل البئر نولکشور لکھنئو ۱/۱۱

Fatawa Razawiya Volume 3

[Top Box - Arabic & Urdu Text] Arabic: What appears to be the case is that either the well has its own bucket or it does not. If it has a bucket, it is taken into account; otherwise, a bucket is prepared for it that holds one Sa' (a specific measure). This is evident from the texts of al-Khulasa, Sharh al-Tahawi, and al-Siraj al-Wahhaj. Therefore, the statement of those who estimated the bucket's size should be applied to when the well does not have its own bucket, as is not hidden. (1) And in al-Durr al-Mukhtar: With a medium bucket, which is the bucket of that well. If there isn't one, then one that holds a Sa'. (2) In al-Shamiya: His words 'if there isn't...', this means if the well has a bucket then it is considered, and if not, then a bucket holding a Sa' is considered. This detail was clarified in al-Bahr and it said: this is evident from the content of al-Khulasa, Sharh al-Tahawi, and al-Siraj. (3) In this matter, there is discussion and speech, some of which Sayyid Ibn Abidin mentioned in this marginal note. We considered it better to omit it for fear of excessive length since the objective is achieved, as its reference is only to the wording. And Allah Almighty knows best what is correct. (T)

Urdu: And the apparent view is that either the well will have its own bucket or not; if it has its own bucket, then that will be considered, otherwise a bucket of one Sa' will be made. This is clear from the statements of Khulasa, Sharh al-Tahawi, and Siraj al-Wahhaj. In this case, those who gave an estimate for the bucket meant when the well does not have its own bucket, as it is not hidden. And in Durr al-Mukhtar, it is stated that a medium bucket is the bucket of the well, and if it doesn't have its own, then it will be a bucket of one Sa'. And in Fatawa Shami, it says that the author's words 'if it is not' mean that if the well has its own bucket, then it is valid, and if not, then a bucket of one Sa' is valid. This detail is mentioned in Bahr, and it's said that this became clear from the contents of Khulasa, Sharh al-Tahawi, and Siraj. (T) In this place, there is a discussion and debate, some of which Allama Ibn Abidin (Shami) mentioned in this footnote. We have left this discussion for fear of length after achieving the goal, because it only relates to the wording. And Allah Almighty knows best. (T)

28 Ramadan 1305 Hijri

Problem 68: What do the scholars of religion say in this matter: A cow or buffalo's sinew (muscle/tendon) used for binding/tying was found in a well. It is not known if a person dropped it or an animal threw it in. It is whole and has not decomposed. What is the ruling for the well? Is it pure (tahir) or impure (najis)? Clarify and be rewarded.

Footnotes: 1. Bahr al-Ra'iq, Book of Purity, Saeed Company Karachi, 1/118 2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Well, Mujtabai Delhi, 1/39 3. Radd al-Muhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi Egypt, 1/159

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[शीर्ष बॉक्स - अरबी और उर्दू पाठ] अरबी/उर्दू सारांश: स्पष्ट यह है कि कुएं की अपनी बाल्टी होगी या नहीं; अगर अपनी बाल्टी हो तो वही मानी जाएगी, वर्ना फिर एक 'सा' (एक माप) वाली बाल्टी बनाई जाएगी। यह 'खुलासा', 'शरह तहावी' और 'सिराज वहाज' के लेखों से स्पष्ट है। इस स्थिति में जिन्होंने बाल्टी का आकार बताया, वह उस समय के लिए है जब कुएं की अपनी बाल्टी न हो। 'दुर्रे मुख़्तार' के अनुसार, मध्यम बाल्टी कुएं की बाल्टी है, और यदि नहीं है, तो एक 'सा' वाली बाल्टी। 'फ़तावा शामी' में उल्लेख है कि यदि कुएं की अपनी बाल्टी हो तो वही मान्य है, अन्यथा एक 'सा' वाली बाल्टी मान्य है। इस विवरण को 'बहर' में विस्तार से बताया गया है। इस विषय पर विद्वानों के बीच चर्चा है, जिसे संक्षिप्तता के लिए यहाँ छोड़ दिया गया है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

28 रमज़ान 1305 हिजरी

मसला 68: धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: एक कुएं में से गाय या भैंस का पट्ठा (स्नायु/नसों का गुच्छा) मिला जो बांधने के काम आता है। यह ज्ञात नहीं है कि किसी व्यक्ति ने गिराया या जानवर ने डाल दिया। वह साबुत है और सड़ा-गला नहीं है। इसके बारे में कुएं के लिए क्या हुक्म है? वह शुद्ध (पाक) है या अशुद्ध (नापाक)? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. बहरुल रैक, किताबुत तहारत, सईद कंपनी कराची, 1/118 2. अद-दुरुल मुख़्तार, फ़स्ल फ़िल बीर, मुजतबाई दिल्ली, 1/39 3. रद-दुल मुहतार, फ़स्ल फ़िल बीर, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/159

والذی یظھر ان البئر اما ان یکون لھا دلوا اولا فانکان لھا دلو اعتبر بہ والا اتخذ لھا دلو یسع صاعاً وھو ظاھر مافی الخلاصۃ وشرح الطحاوی والسراج الوھاج وح فینبغی ان یحمل قول من قدر الدلو علی ما اذا لم یکن للبئر دلو کما لایخفی ۱ وفی (۵) الدر المختار بدلو وسط ھو دلو تلك البئر فان لم یکن فمایسع صاعاً ۲ وفی الشامیۃ قولہ فان لم یکن الخ ھذا اذا کان لھا دلو فان لم یکن فالمعتبر دلو یسع صاعاً ھذا التفصیل استظھرہ فی البحر و قال ھو ظاھر مافی الخلاصۃ وشرح الطحاوی والسراج ۳ وفی المقام بحث و کلام اورد بعضاً منہ السید ابن عابدین فی ھذہ الحاشیۃ رأینا طی الکشح عنہ احری مخافۃ التطویل مع حصول المقصود (ا) اذ لیس مرجعہ الا الی اللفظ واللہ تعالی اعلم بالصواب۔

اور ظاہر یہ ہے کہ کنویں کا اپنا ڈول ہوگا یا نہیں، اگر اپنا ڈول ہو تو وہی معتبر ہوگا ورنہ پھر ایک صاع والا ڈول بنوایا جائے گا اور یہ خلاصہ، شرح طحاوی، سراج وہاج کی عبارات سے ظاہر ہے، اس صورت میں جنہوں نے ڈول کا اندازہ بیان کیا یہ اس وقت ہوگا جب کنویں کا اپنا ڈول نہ ہو، جیسا کہ مخفی نہیں، اور در مختار میں ہے درمیانہ ڈول کنویں کا ڈول ہے اور اگر اس کا ڈول نہ ہو تو پھر ایک صاع والا ڈول ہوگا۔ اور فتاوٰی شامی میں ہے کہ ماتن کے قول اگر نہ ہو، کا مطلب یہ اگر کنویں کا اپنا ڈول ہو تو وہی معتبر ہے اور اگر نہ ہو تو ایک صاع والا ڈول معتبر ہے۔ اس تفصیل کو بحر میں ذکر کیا ہے اور کہا کہ یہ خلاصہ، شرح طحاوی اور سراج کے مضمون سے ظاہر ہوا۔ (ت) اس مقام میں بحث اور کلام ہے جس کا کچھ حصہ علامہ ابن عابدین (شامی) نے اس حاشیہ میں ذکر کیا ہے ہم نے مقصد کے حاصل ہو جانے پر طوالت کے خوف سے اس بحث کو چھوڑ دیا ہے کیونکہ اس کا تعلق صرف الفاظ سے ہے واللہ تعالٰی اعلم بالصواب۔ (ت)

۲۸ رمضان ۱۳۰۵ ہجری

مسئلہ ۶۸ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ کنویں میں سے گائے یا بھینس کا پٹھا نکلا جو بندش کے کام میں آتا ہے نہیں معلوم کسی آدمی سے گرایا جانور نے ڈال دیا ثابت ہے گلا سڑا نہیں اس میں کنویں کیلئے کیا حکم ہے طاہر ہے یا نجس بینوا توجروا۔

حواشی: ۱ بحر الرائق کتاب الطہارت سعید کمپنی کراچی ۱۱۸/۱ ۲ الدر المختار فصل فی البئر مجتبائی دہلی ۳۹/۱ ۳ ردالمحتار فصل فی البئر مصطفی البابی مصر ۱۵۹/۱

Fatawa Ridawiyya Volume Three

The Answer: It is pure absolutely, even if it has decomposed. "In Tanwir, the hair, bone, and sinew of a carcass are pure." [Condensed excerpt][1] It is stated in Tanwir that the bones, hair, and sinews (tendons) of a carcass are pure. I say that this ruling regarding the sinews of a carcass is based on the famous opinion, as mentioned in Al-Durr. Even if the contrary view is considered—meaning the report that the sinews of a carcass are impure—the ruling would still be the same (that the water is pure). This is because regarding the sinew found in the well, it is not known whether it belongs to a carcass or a slaughtered animal; therefore, doubt does not remove certainty. And Allah Almighty knows best. I say: This is regarding the sinew according to the famous view as in Al-Durr, and likewise according to its contrary—meaning the narration of the impurity of the sinew of a carcass—since there is no knowledge that what fell in the well is the sinew of a carcass and not a slaughtered one, and certainty is not removed by doubt.[2] And Allah Almighty knows best.

Problem 69: What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say about this: A Hindu man polluted a well with an impure thing, i.e., he threw a human umbilical cord (placenta) into the well. For two or three days, without knowing of the impurity, Muslims and Hindus drank water from that well and used it for cooking. In this situation, has there been any harm to the faith of these people or not? What is the punishment for the one who threw it? How should the people who drank it become pure, and how should the well be purified? Please explain and be rewarded.

The Answer: In the case mentioned, after removing the impurity, extract all the water from that well. If the time the umbilical cord fell into the well is known—that it was thrown on such a day at such a time—then the well will be declared impure from that time. Any person who performed Wudu (ablution) with that water during this period must wash their limbs used for Wudu, and those who bathed must purify their entire bodies and repeat the prayers of those days. Any clothes touched by that water during Wudu or in any other way, covering an area equal to a Dirham, must be purified. The remaining food cooked with that water should be given to dogs, and the utensils must be cleaned. Those people who unknowingly drank that water and ate food cooked with it during those days bear no sin. Nor has there been any harm to their faith. All these points apply if the day and time of the fall are known. If this cannot be ascertained, the well will be considered impure from the moment the umbilical cord was seen in it. The Wudu, Ghusl (ritual bath), and prayers performed before that are all valid.

[1] Al-Durr al-Mukhtar, Book of Waters, Mujtabai Delhi, 1/38. [2] Ghunyat al-Mustamli, Chapter on the Well, Suhail Academy Lahore, p. 160.

उत्तर: यह पूरी तरह शुद्ध है, चाहे वह गल ही क्यों न गया हो। "तनवीर में है: मुर्दा जानवर के बाल, हड्डी और नस (स्नायु) शुद्ध हैं।" [संक्षिप्त उद्धरण][1] तनवीर में लिखा है कि मुर्दा जानवर की हड्डी, बाल और नसें शुद्ध हैं। मैं कहता हूँ कि मुर्दे की नसों के बारे में यह नियम प्रसिद्ध मत पर आधारित है, जैसा कि 'दुर' में है। और यदि इसके विपरीत मत का भी विचार किया जाए—यानी वह रिवायत जो मुर्दा जानवर की नसों को अपवित्र मानती है—तब भी नियम यही होगा (कि पानी शुद्ध रहेगा), क्योंकि कुएँ से निकलने वाली नस के बारे में यह ज्ञात नहीं है कि वह मुर्दा जानवर की है या हलाल किए हुए जानवर की; इसलिए संदेह से निश्चितता समाप्त नहीं होती। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मैं कहता हूँ: और यह नस के बारे में प्रसिद्ध मत के अनुसार है जैसा कि 'दुर' में है, और इसी प्रकार इसके विपरीत मत पर भी—यानी मुर्दा जानवर की नस की अपवित्रता की रिवायत—क्योंकि यह ज्ञात नहीं है कि कुएँ में जो गिरा है वह मुर्दा जानवर की नस है न कि ज़बह किए हुए की, और संदेह से निश्चितता नष्ट नहीं होती।[2] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 69: धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस बारे में क्या कहते हैं: एक हिंदू ने एक अपवित्र चीज़ से कुएँ को अपवित्र कर दिया, यानी उसने कुएँ में मनुष्य की नाल (नाभि की नाल) डाल दी। बिना अपवित्रता की जानकारी के दो-तीन दिनों तक मुसलमानों और हिंदुओं ने उस कुएँ का पानी पिया और खाना पकाने में इस्तेमाल किया। इस स्थिति में, क्या उन लोगों के ईमान में कोई कमी आई है या नहीं? और उसे डालने वाले के लिए क्या सज़ा है? पीने वाले लोग कैसे शुद्ध हों और कुएँ को कैसे शुद्ध किया जाए? कृपया उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पूछे गए मामले में, अपवित्रता निकालने के बाद उस कुएँ का सारा पानी निकाल दें। यदि कुएँ में नाल गिरने का समय ज्ञात हो कि अमुक दिन अमुक समय पर डाली गई थी, तो कुआँ उसी समय से अपवित्र माना जाएगा। इस अवधि के दौरान जिन लोगों ने उस पानी से वज़ू किया, वे अपने वज़ू के अंगों को साफ़ करें, और जिन्होंने स्नान किया हो वे पूरे शरीर को शुद्ध करें और उन दिनों की नमाज़ें फिर से पढ़ें। वज़ू करते समय या किसी और तरह से जिन कपड़ों पर वह पानी दिरहम के बराबर जगह में लग गया हो, उन्हें शुद्ध किया जाए। उस पानी से पकाए गए खाने का बचा हुआ हिस्सा कुत्तों को डाल दें और बर्तन साफ़ करें। जिन लोगों ने उन दिनों अनजाने में वह पानी पिया और उससे खाना पकाकर खाया, उन पर कोई पाप नहीं है। न ही उनके ईमान में कोई बाधा आई है। ये सभी बातें उसी स्थिति में हैं जब उसके गिरने का दिन और समय ज्ञात हो। और यदि यह बात स्पष्ट न हो सके तो

कुआँ उसी समय से अपवित्र माना जाएगा जब से उसमें वह नाल देखी गई। उससे पहले के वज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ें सब सही हैं।

[1] अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मियाह, मुजतबाई दिल्ली, 1/38। [2] गुन्यातुल मुस्तमली, फ़स्ल फ़िल बीर, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 160।

الجواب: طاہر ہے مطلقاً اگرچہ گل گیا ہو، فی التنویر شعر المیتۃ وعظمھا وعصبھا طاہر اھ ملتقطاً 1 تنویر میں ہے کہ مردار کی ہڈی، بال اور پٹھے پاک ہیں اھ ملتقطاً۔ میں کہتا ہوں کہ یہ حکم مردار کے پٹھوں کے بارے میں مشہور قول پر مبنی ہے جیسا کہ دُر میں ہے اور اگر اس کے خلاف کا لحاظ کیا جائے یعنی مردار کے پٹھوں کو نجس والی روایت، تو بھی حکم یہی ہوگا (کہ پانی پاک ہوگا) کیونکہ کنویں سے نکلنے والے پٹھے کے بارے میں معلوم نہیں کہ مردار کا ہے یا ذبح شدہ جانور کا ہے تو یہ شک یقین کو زائل نہیں کرے گا، واللہ تعالیٰ اعلم (ت) اقول: وھذا فی العصب علی المشھور کما فی الدر وکذا علی خلافہ اعنی روایۃ نجاسۃ عصب المیتۃ اذلا علم بان الواقع فی البئر ھو عصب المیتۃ دون المذبوح والیقین لایزول بالشک 2 واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۶۹: چہ میفرمائیند علمائے دین ومفتیانِ شرع متین ایک ہندو نے ایک چیز ناپاک سے کنویں کو ناپاک کردیا یعنی نال بچہ آدمی کا کنویں میں ڈال دیا اور بدون معلوم ناپاکی کے دو تین روز مسلمانوں اور ہندوؤں نے پانی اُس کنویں کا پیا اور کھانے پکانے کے صرف میں لائے تو اس صورت میں اُن لوگوں کے ایمان میں کچھ خلل ہوا یا نہیں اور ڈالنے والے کے واسطے کیا سزا ہے اور پینے والے لوگ کس طرح طاہر ہوں اور کنواں کس طرح پاک کیا جائے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: صورتِ مسئولہ میں بعد نکالنے نجاست کے سب پانی اُس کنویں کا نکال ڈالیں اور اگر نال کے کنویں میں گرنے کا وقت معلوم ہو کہ اُس نے فلاں روز فلاں وقت ڈالا تو اُس وقت سے کنواں ناپاک قرار پائے گا اور اس مدت میں جن شخصوں نے اُس سے وضو کیا وہ اپنے اعضائے وضو اور جو نہائے ہوں وہ تمام بدن پاک کریں اور اتنے دنوں کی نمازیں پھیریں اور جن کپڑوں کو وضو کرتے میں یا کسی طرح وہ پانی درم برابر جگہ میں لگ گیا ہو وہ پاک کئے جائیں اور اُس

پانی سے جو کھانا پکایا گیا اس کا بقیہ کتوں کو ڈال دیں اور برتن پاک کریں اور جن لوگوں نے اتنے دنوں نادانستہ وہ پانی پیا اور اُس سے کھانا پکا کر کھایا اُن پر کوئی گناہ نہیں۔ نہ ان کے ایمان میں خلل آیا۔ یہ سب باتیں اُس صورت میں ہیں کہ اُس کے گرنے کا دن اور وقت معلوم ہو اور جو یہ امر متحقق نہ ہو سکے تو کنواں اُسی وقت سے ناپاک ٹھہرے گا جب سے وہ نال اس میں دیکھا گیا اس سے پہلے کے وضو اور غسل اور نمازیں سب درست

1 الدر المختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۳۸/۱ 2 غنیۃ المستملی فصل فی البئر سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۶۰

Volume Three Fatawa Rizvia

...and the body, vessels, and clothes are all pure. However, after coming out, if someone unknowingly performed Wudu or Ghusl and prayed with it, or that water touched their clothes or vessels, they should purify their body, vessels, and clothes and repeat that prayer. And the person who put it in is legally liable for punishment and reprimand. And Allah Almighty knows best.

Problem 70: 1st Rajab 1311 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: a bladder (bhukna) fell into a well. At that time, it did not contain urine; rather, children were blowing into it, and it fell from their hands. It is not known whether it was a cow's or a buffalo's bladder. The bladder has been taken out. Now, what is the ruling regarding the well? Explain and be rewarded.

The Answer: The well is pure because the bladder of a slaughtered animal whose meat is permissible (halal) to eat does not, by consensus, possess any inherent impurity.

In al-Durr al-Mukhtar: "Every hide, and similarly the bladder and the rumen, when tanned, becomes pure." And in al-Tanwir: "And whatever becomes pure through that [tanning] also becomes pure through slaughtering (zakah)." (T)	**In Durr Mukhtar: "Every hide, and similarly the bladder and kidneys, when colored/tanned, become pure. And in Tanwir: what becomes pure in this way also becomes pure by slaughtering." (T)**

If it is not known here whether it was slaughtered, then it is also not known whether it came from a carcass (unslaughtered dead animal).

"Certainty is not removed by doubt." I say: this is a case of purity and impurity, not a case of lawfulness and prohibition (halal and haram), so understand. (T)	**And certainty does not cease because of doubt. I say, and this is a matter of purity, and it is not a matter of impurity, lawfulness, or prohibition. Understand. (T)**

As for the fact that it contains urine and is not habitually washed for purification, so that moisture remains inside as it was, this is not harmful here. The bladder is the source (ma'dan) of urine, and as long as impurity is within its source, it is not ruled as impure. There was no impure substance inside its cavity. It is mentioned in Ghunyah:

(1) "If a kid (young goat) falls from its mother, moist, into water, it does not spoil it (the water)." Thus it is in the books of Fatawa.

If a baby goat falls into water as soon as it is born, the water will not become impure. It is the same in the books of Fatawa.

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Waters, Mujtabai Delhi, 1/38
2. Ghunyah al-Mustamli, Section on the Well, Sohail Academy Lahore, p. 160

जिल्द सोम (खंड 3) फतावा रिज़विया

...और बदन, बर्तन और कपड़े सब पाक हैं। हाँ, बाहर निकलने के बाद अगर किसी ने अनजाने में वज़ू या ग़ुस्ल किया और उससे नमाज़ पढ़ी, या वह पानी उसके कपड़ों या बर्तनों पर लगा, तो वह अपने बदन, बर्तन और कपड़ों को पाक करे और उस नमाज़ को दोहराए। और (नजासत) डालने वाला शरीयत के अनुसार सज़ा और ताज़ीर का पात्र है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 70: 1 रजब 1311 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक कुएं में भुकना (मूत्राशय/Bladder) गिर गया। उस समय उसमें पेशाब नहीं था, बल्कि बच्चे उसमें फूँक रहे थे और उनके हाथ से गिर गया। यह मालूम नहीं कि वह गाय का भुकना था या भैंस का। भुकना बाहर निकाल लिया गया है। अब कुएं के बारे में क्या हुक्म है? बयान करें, सवाब पाएँ।

अल-जवाब (उत्तर): कुआं पाक है क्योंकि ज़ब्ह किए गए हलाल जानवर का भुकना (मूत्राशय) सर्वसम्मति से अपनी ज़ात में कोई नजासत (अशुद्धि) नहीं रखता।

'अद-दुर्र अल-मुख्तार' में है: "हर खाल, और इसी तरह भुकना (मूत्राशय) और ओझड़ी, जब रंग दी जाए तो पाक हो जाती है।" और 'अत-तन्वीर' में है: "जो चीज़ इस तरह (रंगने से) पाक हो जाती है, वह ज़ब्ह करने से भी पाक हो जाती है।" (त)

'दुर्र मुख्तार' में है कि हर खाल और इसी तरह मूत्राशय और गुर्दे जब रंगे जाएँ तो पाक हो जाते हैं और 'तन्वीर' में है जो इस तरह पाक हो जाते हैं वे ज़ब्ह से भी पाक हो जाते हैं। (त)

यहाँ अगर ज़ब्ह होना मालूम नहीं, तो मुर्दार (मरे हुए जानवर) से होना भी मालूम नहीं।

"यकीन, शक की वजह से ज़ायल (समाप्त) नहीं होता।" मैं कहता हूँ और यह मामला तहारत (शुद्धता) और नजासत (अशुद्धि) का है, न कि हलाल और हराम का, इसलिए समझें। (त)

और यकीन, शक की वजह से खत्म नहीं होता। मैं कहता हूँ और यह तहारत का स्थल है और नजासत, हलाल व हराम का स्थल नहीं है। समझें। (त)

रहा यह कि उसमें पेशाब होता है और आदतन उसे पाक करने के तौर पर धोया नहीं जाता, जिससे उसके अंदरूनी हिस्से में वह नमी वैसे ही बनी रहती है, तो यह यहाँ कोई नुकसानदेह नहीं है क्योंकि भुकना पेशाब की खान (स्रोत) है, और नजासत जब तक अपनी खान में हो, उसे नजासत का हुक्म नहीं दिया जाता। उसके अंदर कोई नापाक चीज़ नहीं थी। 'ग़ुनया' में है:

(1) "अगर बकरी का बच्चा पैदा होते ही गीली हालत में पानी में गिर जाए, तो वह पानी को नापाक नहीं करेगा।" फ़तावा की किताबों में ऐसा ही है।

बकरी का बच्चा अगर पैदा होते ही पानी में गिर जाए तो पानी नजिस (अशुद्ध) न होगा। फ़तावा की किताबों में ऐसा ही है।

1. अद-दुर्र अल-मुख्तार, बाबुल मियाह (पानी का अध्याय), मुजतबाई दिल्ली, 1/38
2. ग़ुनया अल-मुस्तमली, कुएं का अनुभाग, सोहेल एकेडमी लाहौर, पृ. 160

اور بدن اور برتن اور کپڑے سب پاک ہاں بعد نکلنے کے اگر کسی نے بے خبری میں وضو یا غسل کیا اور اس سے نماز پڑھی یا اس کے کپڑوں یا برتنوں کو وہ پانی لگا تو وہ اپنے بدن برتن کپڑے پاک کرے اور اُس نماز کو پھیرے اور ڈالنے والا شرعاً قابل سزا و تعزیر ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۰ : یکم رجب ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک کُنُویں میں بھکنا گر گیا اُس وقت اُس میں پیشاب نہ تھا بلکہ بچہ اُس میں پھونک رہے تھے اُن کے ہاتھ سے گر گیا یہ معلوم نہیں کہ گائے کا ہے یا بھینس کا پھکنا نکال لیا گیا اب کُنُویں کی نسبت کیا حکم ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب : کنواں پاک ہے کہ مذبوح جانور ماکول اللحم کا پھکنا بالاتفاق اپنی ذات میں تو کوئی نجاست نہیں رکھتا،

فی الدرالمختار کل اھاب ومثلہ المثانۃ والکرش دبغ طھر وفی التنویر وماطھر بہ طھر بذکاۃ ۱۔

در مختار میں ہے ہر چمڑہ اور ایسے ہی مثانہ اور گردے جب رنگ دیئے جائیں تو پاک ہو جاتے ہیں اور تنویر میں ہے جو اس طرح پاک ہو جاتے وہ ذبح سے بھی پاک ہو جاتے ہیں۔ (ت)

یہاں اگر ذبح ہونا معلوم نہیں تو مُردار سے ہونا بھی معلوم نہیں،

والیقین لایزول بالشك ۲ اقول والمحل اور یقین، شک کی وجہ سے زائل نہیں ہوتا، میں کہتا ہوں

محل الطهارة والنجاسة دون الحل اور یہ محل طہارت ہے اور نجاست حلال و حرام کا محل

والحرمة فافهم۔ نہیں ہے فافهم (ت)

رہا یہ کہ اس میں پیشاب ہوتا ہے اور عادتاً اسے پاک کرنے کے طور پر دھویا نہیں جاتا تو اس کے باطن میں وہ رطوبت بدستور لگی رہی یہ یہاں کچھ مضر نہیں کہ پھکنا معدن بول ہے اور نجاست جب تک اپنے معدن میں ہو اُسے حکم نجاست نہیں دیا جاتا اُس کے جوف میں کوئی ناپاک شے نہ تھی۔ غنیہ میں ہے:

(۱) السخلة اذا وقعت من امها، رطبة فی بکری کا بچہ اگر پیدا ہوتے ہی پانی میں گر جائے تو

الماء لاتفسده کذا في کتب الفتاوٰی پانی نجس نہ ہوگا۔ کتبِ فتاوٰی میں ایسے ہی ہے

۱ الدر المختار باب المیاہ مجتبائی دہلی ۱/۳۸ ۲ غنیہ المستملی فصلی فی البئر سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۶۰

(Arabic Text)	(Urdu Translation/Explanation)
And this is because the moisture on it is not impure	This is because the moisture on the kid is not impure because
because it is still in its place. I say: our purpose of citing this	this impurity is still in its original place. I say that
as evidence from the reasoning provided is to convey a useful point.	the purpose of this phrase is only to present evidence for a point useful for the reason (illat).
As for the issue itself, it is based on	However, the original issue is based on the saying of the Sahibayn (Imams Abu Yusuf and Muhammad) that
their (Sahibayn's) view that the moisture of the vulva is impure, while according to	the moisture of the vulva (private parts) is impure, but according to Imam (Abu Hanifa) and in one
him (Imam Abu Hanifa) and in one narration from them (Sahibayn), it is pure.	narration from the Sahibayn, this moisture is pure.
Then I say: (2) I have a reservation regarding this, for the skin of the kid	(T)
is not the place for that moisture; rather, its place is the mother's womb and it	Then I say that I have an objection here because the skin of the
touched the kid from there. Then (3) an objection arises against the ruling of this issue	goat's kid is not the place for that moisture; rather, its place is
and the issue of the bladder and similar things: that they are not impure	its mother's womb, and from there the moisture touched the kid. Then
as long as they remain in them. But when they are moved, they become impure, and when water	there is again an objection to this issue along with the issue of the bladder etc.
touches them or enters them, there is no doubt that the moisture moves	that these will not be impure as long as they are in their own place,

(Arabic Text)	(Urdu Translation/Explanation)
from them into the water. So how can it not be ruled impure due to its mixing	but when they move from there, they will become impure.
with what is now impure, even if it were not ruled	And if water touches them or enters into them, then necessarily
as impure before? Do you not see that (4) the blood of a martyr is pure	their moisture will move into the water. Then how can the water be called pure
as long as it is on him, so the prayer of the person carrying him is valid?	when an impure thing has now mixed in, even though before this,
But if an amount that prevents prayer touches his body	there was no ruling of impurity on the same thing? Do you not know that
or his clothes from that blood, it is not permissible due to the occurrence	a martyr's blood is pure as long as it is on him, therefore the prayer of the one carrying
of separation and transfer. This is what reasoning dictates,	him will be valid. But when this blood touches the body or clothes of the
but the ruling revolves in the fatwas, and I have not seen anyone	one carrying it in such an amount that prevents prayer, then
who addressed it. So reflect and write, perhaps Allah will bring about	prayer will not be valid because that blood has separated from the martyr and
a matter after that. And Allah Almighty knows best.	moved to another place.

1. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Impurities, Sohail Academy Lahore, p. 150

जिल्द तीसरा फ़तावा रज़विया

(अरबी पाठ)	(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)
और यह इसलिए है क्योंकि उस पर जो नमी है वह नापाक नहीं है	यह इसलिए है क्योंकि बच्चे पर जो नमी है वह नापाक नहीं है क्योंकि
क्योंकि वह अब तक अपने स्थान पर है। मैं कहता हूँ: इस कथन को उद्धृत करने का हमारा उद्देश्य	यह नजासत अभी तक अपने मूल स्थान पर है। मैं कहता हूँ कि
प्रदान किए गए तर्क से एक उपयोगी बिंदु के लिए प्रमाण देना है।	इस इबारत का उद्देश्य केवल कारण (इल्लत) के लिए उपयोगी बात पर प्रमाण पेश करना है।
जहाँ तक स्वयं इस मसले का संबंध है, यह	लेकिन मूल मसला साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और मुहम्मद) के इस कथन पर आधारित है कि
साहिबैन के इस मत पर आधारित है कि योनि की नमी नापाक है, जबकि	योनि (शर्मगाह) की नमी नापाक है, लेकिन इमाम साहब और साहिबैन की एक
इमाम (अबू हनीफा) के अनुसार और उनसे (साहिबैन) एक रिवायत के अनुसार, यह पाक है।	रिवायत में साहिबैन के नज़दीक यह नमी पाक है।
फिर मैं कहता हूँ: (2) मुझे इसमें एक आपत्ति है, क्योंकि मेमने की खाल	(त)
उस नमी का स्थान नहीं है; बल्कि उसका स्थान उसकी माँ का गर्भाशय है और यह	फिर मैं कहता हूँ कि मुझे यहाँ ऐतराज़ है क्योंकि बकरी के
वहाँ से बच्चे को लगी है। फिर (3) इस मसले के हुक्म	बच्चे की खाल उस नमी का स्थान नहीं है; बल्कि उसका स्थान तो
और मूत्राशय आदि के मसले पर एक आपत्ति उठती है: कि वे तब तक नापाक नहीं हैं	उसकी माँ का गर्भाशय है, वहाँ से बच्चे को नमी लगी है। फिर
जब तक वे उनमें रहते हैं। लेकिन जब वे स्थानांतरित होते हैं, तो वे नापाक हो जाते हैं, और जब पानी	दोबारा ऐतराज़ इस मसले समेत मूत्राशय वग़ैरा के मसले पर है

(अरबी पाठ)

उन्हें छूता है या उनमें प्रवेश करता है, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि नमी उनमें से पानी में

चली जाती है। तो फिर इसे नापाक होने का हुक्म क्यों नहीं दिया जाता, क्योंकि अब यह

नापाक चीज़ के साथ मिल गया है, भले ही इसे पहले

नापाक न माना गया हो? क्या आप नहीं देखते कि (4) शहीद का खून पाक है

जब तक वह उस पर है, इसलिए उसे ले जाने वाले की नमाज़ जाइज़ है?

लेकिन अगर उस खून की ऐसी मात्रा जो नमाज़ से रोकती हो, उसके शरीर

या कपड़ों को छू जाए, तो अलगाव और स्थानांतरण के कारण नमाज़ जाइज़ नहीं होगी।

तर्क यही कहता है,

लेकिन फ़तवों में यही हुक्म प्रचलित है, और मैंने किसी को

नहीं देखा जिसने इस पर चर्चा की हो। इसलिए चिंतन करें और लिखें, शायद अल्लाह इसके बाद

कोई राह निकाले। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)

कि ये उस वक़्त तक नजिस (नापाक) न होंगे जब तक ये अपने मुकाम (स्थान)

में हैं, लेकिन जब वहाँ से मुंतकिल (स्थानांतरित) हो जाएँ तो नजिस

हो जाएँगे। और अगर उन पर पानी लगेगा या उनमें पानी दाखिल होगा तो लाज़मी तौर पर

उनकी नमी पानी में मुंतकिल होगी। तो फिर पानी को पाक कैसे कहा

जा सकता है जबकि अब नापाक चीज़ मिल चुकी है, हालाँकि इससे पहले

उसी चीज़ पर नापाकी का हुक्म न था? क्या आप नहीं जानते कि

शहीद का खून जब तक उस पर है पाक है, लिहाज़ा इसे उठाने वाले

की नमाज़ जाइज़ होगी। लेकिन जब यह खून उठाने वाले के बदन या

कपड़ों पर इतनी मिक़दार (मात्रा) में लग जाए जो नमाज़ के लिए माने (बाधक) हो, तो

नमाज़ जाइज़ न होगी क्योंकि वह खून शहीद से जुदा होकर दूसरी

जगह मुंतकिल हो गया है।

---

1. ग़ुनियातुल मुस्तमली, बाब अल-अन्जास, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 150 पृष्ठ 268 / 756

(عربی متن) **(اردو ترجمہ و تشریح)**

وہذا لان الرطوبة التی علیها لیست بنجسة

یہ اس لئے کہ بچہ پر جو رطوبت ہے وہ ناپاک نہیں کیونکہ

لکونها فی محلها اھ اقول مقصودنا الاستشهاد

ابھی تک یہ نجاست اپنے محل میں ہے اھ میں کہتا ہوں کہ

بما في التعلیل افاد اما المسألة فمبنیة علی

اس عبارت کا مقصد صرف علت کیلئے مفید امر پر استشہاد پیش

قولهما بنجاسة رطوبة الفرج اما (۱) عنده رضی

کرنا ہے لیکن اصل مسئلہ صاحبین کے اس قول پر مبنی ہے کہ

اللہ تعالٰی عنہ وعنهما فطاهرة۔

فرج (شرمگاہ) کی رطوبت نجس ہے مگر امام صاحب اور ایک

ثم اقول: (۲) ولي فیه نظر فان جلد السخلة

روایت میں صاحبین کے نزدیک یہ رطوبت پاک ہے۔ (ت)

لیس محل تلك الرطوبة بل رحم امها ومنها

پھر میں کہتا ہوں کہ مجھے یہاں اعتراض ہے کیونکہ بکری کے

اصابته ثم (۳) یعکر علی حکم هذه المسألة

بچے کی کھال اس رطوبت کا محل نہیں ہے بلکہ اس کا محل تو

(عربی متن)	(اردو ترجمہ و تشریح)
ومسألة المثانة وامثالهما انها ليست نجسة	اس کی ماں کا رحم ہے وہاں سے بچے کو رطوبت لگی ہے پھر
مادامت فيها فاذا انتقلت صارت نجسة والماء	دوبارہ اعتراض اس مسئلہ سمیت مثانہ وغیرہ کے مسئلہ پر ہے
اذا اصابها اودخلها فلاشك ان الرطوبة تنتقل	کہ یہ اُس وقت تک نجس نہ ہوں گے جب تک یہ اپنے مقام
منها اليه فكيف لا يحكم بنجاسة لاختلاطه	میں ہیں لیکن جب وہاں سے منتقل ہوجائیں تو نجس
بماهو نجس الآن وان لم يكن محكوماً	ہوجائیں گے اور ان کو پانی لگے گا یا اس میں پانی داخل ہو تو لازماً
بالنجاسة قبل الاترى ان (۴) دم الشهيد طاهر	ان کی رطوبت پانی میں منتقل ہوگی تو پھر کیسے پانی کو پاک کہا
مادام عليه فتجوز صلاة حامله لكن ان اصابه	جاسکتا ہے جبکہ اب ناپاک چیز مل چکی ہے اگر چہ قبل ازیں
او ثوبه قدر مانع من دمه لم تجز لحصول	اسی چیز پر ناپاکی کا حکم نہ تھا، کیا آپ کو معلوم نہیں کہ شہید کا
الانفصال والانتقال كذا هذا فهذا ما يقتضيه	خون جب تک اس پر ہے پاک ہے لہذا اس کو اٹھانے والے

(عربی متن)	(اردو ترجمہ و تشریح)
النظر ولكن الحكم دوار فی الفتاوی ولم ار من تعرض له فتأمل وحرر لعل الله يحدث بعد ذلك امراً۔ والله تعالیٰ اعلم۔	کی نماز جائز ہوگی لیکن جب یہ خون اٹھانے والے کے بدن یا کپڑے کو اتنی مقدار میں لگ جائے جو نماز کے لئے مانع ہو تو نماز جائز نہ ہوگی کیونکہ وہ خون شہید سے جدا ہو کر دوسری جگہ منتقل ہوگیا ہے

---

۱ غنية المستملی باب الانجاس سہیل اکیڈمی لاہور ص ۱۵۰ صفحہ 268 از 756

Volume Three, Fatawa Rizvia

Therefore, apparently, the situation is the same here, but this ruling has been traditionally mentioned in Fatawa without anyone paying close attention to it. Reflect and investigate; it may be that Allah Almighty reveals a solution thereafter. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 71: Respected Maulvi Sahib, Assalamu Alaikum. A Hindu diver stripped off all his clothes and, wearing only a small piece of cloth he usually uses, jumped into a well's water to retrieve a shoe, without performing the ritual bath (Ghusl). He entered the well and brought out the shoe, and also found another old shoe that had fallen in unknown when and had decayed. In such a situation, how many buckets of water should be drawn from the well? If, by mistake, water from that well was filled into clay pots like 'Saboo' etc., are those pots usable or have they become impure? Only Peace.

The Answer: May Allah bless you, and peace be upon you too. If it was known for certain that there was impurity (Najasat) on that Hindu's body, clothes, or that shoe, then have all the water removed from the well. If the clay pots used are unglazed, wash them three times; otherwise, each time let them dry. 'Drying' means that no moisture remains that would wet the hand. If it is not known for certain that any of these things were impure, even then the precautionary ruling is to remove all the water because a non-believer (Kafir) is usually not free from impurity. However, if he cleanses his body, bathes well, and wears clean clothes before entering, then there's no need to remove all the water. Considering the unknown state of the shoe, remove twenty (20) buckets to satisfy the heart. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Quote and Urdu Translation] Arabic: It is narrated in 'Al-Dhakhira' from Imam Hassan's 'Kitab al-Salat' that if a non-believer falls into a well while alive, the water shall be drawn out. In 'Al-Badai', it is stated that this is narrated from the Imam (Abu Hanifa). This is because a non-believer is generally not free from actual or legal impurity, to the extent that if he fell into the well immediately after performing a ritual bath (Ghusl), no water would be drawn out. I say that the ruling to draw water from the well upon a non-believer falling in is based on precaution. Reflect. End. Urdu Translation: It is narrated in 'Al-Dhakhira' from Imam Hassan's 'Kitab al-Salat' that when a non-believer falls into a well while alive, water will be drawn out. And in 'Al-Badai', it is said that this is narrated from the Imam. Because a non-believer is generally not free from actual or legal impurity, even if he fell into the well

immediately after performing a bath, no water would be drawn out. I say that the ruling for drawing water from the well after a non-believer falls in is based on precaution, reflect. End (T)

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Wells, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/157. Page 269 of 756

जिल्द सोम, फतावा रज़विया

इसलिए ज़ाहिरी तौर पर यहाँ भी यही सूरत है, लेकिन फतावा में यह हुक्म इसी तरह ज़िक्र होता चला आ रहा है मगर किसी ने इस तरफ तवज्जो नहीं दी, गौर करो और छानबीन करो, हो सकता है कि अल्लाह तआला इसके बाद कोई हल निकाल दे। वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसला ७१: जनाब मौलवी साहब। अस्सलाम-उ-अलैकुम। एक हिंदू गोताखोर था, उसने अपने सारे कपड़े उतार दिए और सिर्फ एक छोटा सा कपड़ा, जो वह हमेशा इस्तेमाल करता था, पहनकर कुएं के पानी में गोता लगाया ताकि वह जूता निकाल सके। उसने ग़ुस्ल के अरकान अदा किए बिना ही गोता लगा दिया। उसने कुएं से जूता निकाल लिया और एक पुराना जूता भी मिला जो खुदा जाने कब गिरा था और गल-सड़ गया था। ऐसी हालत में कुएं से कितने डोल पानी निकलवाना चाहिए? अगर गलती से उस कुएं का पानी मिट्टी के बर्तनों (जैसे सुबू आदि) में भर लिया गया हो, तो क्या वे बर्तन इस्तेमाल के लायक रहेंगे या नापाक (नजिस) हो गए? फ़क़त वस्सलाम।

अल-जवाब: इनायत फ़रमाए मन व अलैकुम अस्सलाम। अगर यकीनी तौर पर मालूम था कि उस हिंदू के बदन, कपड़े या उस जूते पर नजासत (गंदगी) थी, तो कुएं का सारा पानी निकलवाएं। और मिट्टी के जो बर्तन चिकने (unglazed) इस्तेमाल में हों, उन्हें तीन बार धोएं, वरना हर बार सुखा-सुखा कर धोएं। और सूखने का मतलब यह है कि इतनी नमी न रहे जो हाथ को गीला कर दे। और अगर इन चीज़ों में से किसी का नजिस होना यकीनी तौर पर मालूम नहीं है, तब भी एहतियाती हुक्म यही है कि सारा पानी निकालें, क्योंकि काफ़िर आमतौर पर नजासत से खाली नहीं होता। हाँ, अगर वह बदन पाक करके, अच्छी तरह नहाकर और पाक कपड़ा पहनकर जाए, तो सारा पानी निकालने की ज़रूरत नहीं। जूते की नामعلوم हालत के लिहाज़ से दिल की तसल्ली के लिए बीस (२०) डोल निकाल लें। रद-उल-मुहतार में है:

[अरबी उद्धरण और उर्दू अनुवाद] अरबी: 'अल-ज़खीरा' में इमाम हसन की 'किताब-उस-सलात' से नक़ल किया गया है कि यदि कोई काफ़िर कुएं में गिर जाए और जीवित हो, तो पानी निकाला जाएगा। 'अल-बदाई' में कहा गया है कि यह इमाम (अबू हनीफ़ा) से रिवायत है। इसका कारण यह है कि काफ़िर सामान्यतः वास्तविक या कानूनी अशुद्धि से मुक्त नहीं होता, यहाँ तक कि यदि वह स्नान करने के तुरंत बाद कुएं में गिर गया हो, तो कोई पानी नहीं निकाला जाएगा। मेरा कहना है कि काफ़िर के कुएं में गिरने पर पानी निकालने का निर्णय सावधानी पर आधारित है। विचार करें।

समाप्त। उर्दू अनुवाद: इमाम हसन की 'किताब-उस-सलात' से 'ज़खीरा' में नक़ल किया गया है कि काफ़िर जब कुएं में गिर जाए और ज़िंदा हो, तो पानी निकाला जाएगा। और 'बदाए' में है कि यह इमाम साहब (अबू हनीफ़ा) से रिवायت है। क्योंकि काफ़िर आमतौर पर हकीकी या हुक्मी नजासत से खाली नहीं होता, यहाँ तक कि अगर वह ग़ुस्ल के फ़ौरन बाद कुएं में गिरा हो, तो कुछ पानी नहीं निकाला जाएगा। मैं कहता हूँ कि काफ़िर के गिरने से कुएं का पानी निकालने का हुक्म एहतियात पर मबनी है, गौर करो। अहत (त)

१ रद-उल-मुहतार, कुएं का बयान, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, १/१७७। पृष्ठ २६९ / ७५६

لہٰذا بظاہر نظر میں یہاں بھی یہی صورت ہے لیکن فتاویٰ میں یہ حکم ایسے ہی متذکر چلا آرہا ہے مگر کسی نے اس طرف توجہ نہیں کی، غور کرو اور چھان بین کرو، ہو سکتا ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کے بعد کوئی حل نکال دے واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۱: جناب مولوی صاحب۔ السلامُ علیکم۔ غوطہ خور ہندو تھا اور سب کپڑے اتار کر اُس نے ایک چھوٹا سا کپڑا جو اُسی کے استعمال میں رہتا ہے باندھ کر ایک ڈول اُس کنوئیں کے پانی کا جس میں وہ جوتی نکالنے کو گیا تھا بلا ادائے ارکانِ غسل ڈال لیا تھا پس وہ کنویں میں گھس کر جوتی نکال لایا اور ایک جوتی پہلے کی بھی جو خدا جانے کب گری تھی وہ بھی نکلی جو گل سڑ گئی تھی ایسی حالت میں کتنے ڈول پانی کنویں میں سے نکلوانا چاہئے بعد گرنے جوتی کے اگر اُس کنویں کا پانی ظرفِ گلی مثل سبو وغیرہ میں غلطی سے بھر گیا تو ظروف قابل استعمال رہے یا نجس ہوگئے فقط والسلام۔

الجواب: عنایت فرمائے من وعلیکم السلام اگر یقیناً معلوم تھا کہ اس ہندو کے بدن یا کپڑے یا اُس جوتی پر نجاست تھی تو کنویں کا سب پانی نکلوائیں اور مٹی کے جو برتن چکنے استعمالی ہوں تین باریوں ہی دھوئیں ورنہ ہر بار سکھا سکھا کر اور خشک ہونے کے یہ معنی ہیں کہ اتنی تری نہ رہے کہ ہاتھ کو تر کرے اور اگر ان چیزوں میں کسی کا نجس ہونا یقیناً معلوم نہیں جب بھی احتیاطی حکم یہی ہے کہ سب پانی نکالیں اس لئے کہ کافر غالباً نجاست سے خالی نہیں ہوتا ہاں اگر بدن پاک کرکے خوب نہا کر پاک کپڑا باندھ کر جائے تو سب پانی کی حاجت نہیں جوتے کی نامعلوم حالت کے لحاظ سے تطیب قلب کو بیس ۲۰ ڈول نکال لیں ردالمحتار میں ہے :

نقل فی الذخیرۃ عن کتاب الصلاۃ للحسن ان الکافر اذا وقع فی البئر وھو حی نزح الماء وفی البدائع انه روایة عن الامام لانه لا یخلو عن نجاسة حقیقیة او حکمیة حتی لو اغتسل فوقع فیھا من ساعته لا ینزح منھا شیئ اقول ولعل نزحھا للاحتیاط تأمل ۱ اھ (ترجمہ): امام حسن کی کتاب الصلوۃ سے ذخیرہ میں نقل کیا گیا کہ کافر جب کنویں میں گر جائے اور زندہ ہو تو پانی نکالا جائے گا، اور بدائع میں ہے کہ یہ امام صاحب سے مروی ہے۔ کیونکہ کافر عام طور پر نجاست حقیقی یا حکمی سے خالی نہیں ہوتا، حتی کہ اگر وہ غسل کے فوراً بعد کنویں میں گرا ہو تو کچھ پانی نہیں نکالا جائے گا۔ میں کہتا ہوں کہ کافر کے گرنے سے کنویں کے پانی نکالنے کا حکم احتیاط پر مبنی ہے، غور کرو۔ اھ (ت)

۱ ردالمحتار فصل فی البئر مصطفے البانی مصر ۱ / ۱۵۷ Page 269 of 756

Fatawa Razawiyya Volume Three

In Tariqa Muhammadiyya and Hadiqa Nadiyya, it is quoted from Tatarkhaniyya: (Question) Imam Al-Khujandi was asked about a well (rakiyya) in which a leather sock (khuff) was found, i.e., a shoe worn and walked in by its owner on paths. (It is not known when it fell into it, and there is no trace of impurity on it. Is the water judged as impure? He said: No. Summarized.) Imam Khujandi was asked about such a well in which a shoe was found dropped, which the wearer had used by walking on paths (and it was also not known since when it fell in the well, while there was no trace of impurity visible on it. So, will the water of the well be declared impure? Imam Khujandi replied: No. Summarized. (T))

In Khania, it states: (If a sheep falls in and is taken out alive, twenty buckets are drawn for the peace of the heart, not for purification, so much so that if one did not draw them and performed ablution from it, it would be permissible. It is mentioned in the best book that buckets should be drawn from it and it wasn't specified. From Muhammad, may Allah Almighty have mercy on him, in every place where drawing is required, no less than twenty buckets should be drawn because the Sharia did not mention drawing less than twenty. Peace, and Allah Almighty knows best.) In Khania, it states: If a goat falls into a well and is pulled out alive, then twenty (20) buckets should be drawn for peace of mind, not for purification. Even if someone performs ablution without drawing twenty buckets, it will be permissible. It is mentioned in the book that it is better to draw some buckets; the number was not stated here. And it is narrated from Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) that wherever there is a need to purify a well, no less than twenty (20) buckets should be drawn because the Sharia has not mentioned drawing less than twenty buckets. Peace, and Allah knows best. (T)

Problem 72: Locality Bakka Jaibee, area Jagal, Thana Haripur, Post Office Kot Najibullah Khan. Sent by Maulvi Sher Muhammad Sahib, 23 Ramadan 1311 AH. What do the scholars of the true religion say if women take water from the mosque's well while being unveiled? Should one perform ablution from it and offer prayer or not?

The Answer:

---

1. Hadiqa Nadiyya, Al-Sinf al-Thani min al-Sinfayn min al-Tahara, Nuriya Razawiya Faisalabad, 2/737.
2. Fatawa Qazi Khan, Fasl fi ma yaqa'u fi al-bi'r, Naval Kishore Lucknow, 1/5.

फतावा रज़विया जिल्द तीन

तरीक़ा मुहम्मदिया और हदीक़ा नदिया में तातारख़ानिया से है: (सवाल) इमाम अल-खुजंदी से एक कुएं(रकिया) के बारे में पूछा गया जिसमें एक मोज़ा (खफ्फ) पाया गया, यानी ऐसा जूता जिसे उसके मालिक ने रास्तों पर चलते समय पहना था। (यह ज्ञात नहीं है कि वह उसमें कब गिरा, और उस पर अशुद्धि का कोई निशान नहीं है। क्या पानी को अशुद्ध माना जाएगा? उन्होंने कहा: नहीं। संक्षिप्त।) इमाम खुजंदी से ऐसे कुएं के बारे में पूछा गया जिसमें एक जूता गिरा हुआ पाया गया, जिसे पहनने वाले ने रास्तों पर चलकर इस्तेमाल किया था (और यह भी मालूम नहीं था कि वह कब से कुएं में गिरा है, जबकि उस पर नजासत का कोई असर भी मालूम नहीं होता। तो क्या कुएं के पानी को नापाक करार दिया जाएगा? इमाम खुजंदी ने फरमाया: नहीं। संक्षिप्त। (त))

खानिया में है: (यदि एक भेड़ गिर जाए और उसे जीवित बाहर निकाला जाए, तो हृदय की शांति के लिए बीस बाल्टियाँ निकाली जाती हैं, शुद्धिकरण के लिए नहीं, यहाँ तक कि यदि किसी ने उन्हें नहीं निकाला और उससे वज़ू किया, तो यह अनुमत होगा। सर्वोत्तम पुस्तक में उल्लेख है कि उससे बाल्टियाँ निकाली जानी चाहिए और इसे निर्धारित नहीं किया गया था। मुहम्मद, अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर दया करे, से वर्णित है कि हर स्थान पर जहाँ पानी निकालने की आवश्यकता हो, बीस से कम बाल्टियाँ नहीं निकाली जानी चाहिए क्योंकि शरीयत ने बीस से कम निकालने का उल्लेख नहीं किया है। शांति, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।) खानिया में है: अगर कुएं में बकरी गिर जाए और उसे जीवित बाहर निकाल लिया जाए, तो दिल की तसल्ली के लिए बीस (20) डोल निकाले जाएं, पाक करने के लिए नहीं। यहाँ तक कि अगर किसी ने बीस डोल निकाले बिना वज़ू कर लिया तो वह जाइज़ होगा। किताब में ज़िक्र है कि बेहतर यह है कि कुछ डोल निकाले जाएं, यहाँ संख्या नहीं बताई गई। और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) से मरवी है कि जहाँ कुएं को पाक करने की ज़रूरत हो, वहाँ बीस (20) डोल से कम न निकाले जाएं क्योंकि शरीयत ने बीस से कम डोलों का बयान नहीं किया। वस्सलाम, वल्लाहु आलम। (त)

मसला ७२: मौज़ा बक्का जैबी, इलाका जागल, थाना हरीपुर, डाकखाना कोट नजीबुल्लाह खान। प्रेषक मौलवी शेर मुहम्मद साहब, २३ रमजान १३११ हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन कि अगर मस्जिद के कुएं से औरतें बे-पर्दा पानी भरकर ले जाएं, तो उस पानी से वज़ू करके नमाज़ पढ़नी चाहिए या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर):

---

1. हदीक़ा नदिया, अल-सिन्फ अल-थानी मिन अल-सिन्फ़ैन मिन अल-तहारा, नूरिया रज़विया फैसलाबाद, 2/737।
2. फतावा काजी खान, फस्ल फी मा यक़'उ फी अल-बि'र, नवल किशोर लखनऊ, 1/5।

पृष्ठ 270/756

طریقہ محمدیہ وحدیقہ ندیہ میں تاتارخانیہ سے ہے : (سئل) الامام (الخجندی عن رکیة) وھی البئر (وجد فیھا خف) ای نعل تلبس ویمشی بھا صاحبھا في الطرقات (لایدری متی وقع فیھا ولیس علیه اثر النجاسة ھل یحکم بنجاسة الماء قال لا ۱ اھ ملخصا۔ امام خجندی سے ایسے کنویں کے بارے میں پوچھا گیا جس میں ایسا جوتا گرا پایا گیا جس کو پہننے والے نے راستے میں چل پھر کر استعمال کیا ہو (اور یہ بھی معلوم نہ ہو کہ کب سے کنویں میں گرا ہے جبکہ اس پر نجاست کا بھی کوئی اثر معلوم نہ ہو۔ تو کیا کنویں کے پانی کو ناپاک قرار دیا جائے گا، تو امام خجندی نے فرمایا: نہیں اھ ملخصا۔ (ت)

خانیہ میں ہے: لو وقعت شاة واخرجت حیة ینزح عشرون دلوا لتسکین القلب لالتطھیر حتی لولم ینزح وتوضأ منه جاز وذکر في الکتاب الاحسن ان ینزح منھا دلاء ولم یقدر وعن محمد رحمه الله تعالی في کل موضع ینزح لاینزح اقل من عشرین دلوا لان الشرع لم یرد بنزح مادون العشرین ۲ اھ - والسلام والله تعالی اعلم۔ اگر کنویں میں بکری گر جائے اور زندہ نکال لی جائے تو تسکین قلب کیلئے بیس ۲۰ ڈول نکالے جائیں، پاک کرنے کیلئے نہیں حتی کہ اگر کسی نے بیس ڈول نکالے بغیر وضو کر لیا تو جائز ہوگا کتاب میں مذکور ہے کہ بہتر یہ ہے کہ کچھ ڈول نکالے جائیں یہاں تعداد بیان نہیں کی۔ اور امام محمد رحمۃ اللہ تعالٰی سے مروی ہے کہ جہاں پر کنویں کو پاک کرنے کی ضرورت ہو تو وہاں بیس ۲۰ ڈول سے کم نہ نکالے جائیں کیونکہ شریعت نے بیس ۲۰ سے کم ڈول بیان نہیں کئے اھ، والسلام واللہ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۲ : موضع بکہ جیبی والا علاقہ جاگل تھانہ ہری پور ڈاک خانہ کوٹ نجیب اللہ خان مرسلہ مولوی شیر محمد صاحب ۲۳ رمضان ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین متین اگر مسجد کے

کنویں سے عورتیں بے پردہ پانی بھر کر لے جایا کریں اس سے وضو کر کے نماز ادا کرنی چاہئے یا نہیں؟

الجواب:

---

1 حدیقۃ ندیۃ الصنف الثانی من الصنفین من الطہارۃ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/ ۷۳۷ 2 فتاوی قاضی خان فصل فی مایقع فی البئر نولکشور لکھنؤ ۱/ ۵

Fatawa Razvia Volume 3

In Radd al-Muhtar, citing At-Tatar-Khaniya: "Whoever is in doubt whether impurity has afflicted their vessel, clothes, or body, it remains pure as long as there is no certainty. The same ruling applies to wells, basins, and large water jars placed in pathways from which children, adults, Muslims, and non-believers all draw water."

In Radd al-Muhtar, it is stated from Tatar-Khaniya that if someone has a doubt whether impurity has reached their vessels, clothes, or body, they will remain pure until certainty is established. The same rule applies to wells, pools, and jars located on paths from which children, adults, Muslims, and non-believers all obtain water. (T)

Some women who wear lehangas (long skirts) think that since a lehanga lacks a central gusset (miyani) to serve as a barrier over the urinary area, and drawing water requires physical exertion, there is a possibility that a drop of urine might fall into the well due to the exertion and the lack of a barrier. However, these are mere possibilities; Shari'ah does not base its rulings upon them.

Don't you see that most Arab women did not wear trousers but used lower wraps (izar), and an izar also has no barrier in it. Despite this, they used to draw water from wells without any disapproval or objection. And Allah Almighty knows best. (T)

Do you not know that most women of Arabia used to wear lower wraps instead of trousers, even though there is no barrier in a wrap. Despite this, they used to take water out of wells, and there is no objection to this. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 73: From Old City, submitted by Ali Hasan Khan, 5 Muharram-ul-Haram 1314 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: A small reservoir (chaubacha) is located at the edge of a well, near a washroom, and it has a hole for water to flow out. In the washroom, people perform ritual baths for impurity (janaba) and general purification. Wudu water also goes into this reservoir, as does water from water bags and carriers, and it continuously flows through the hole. In summary, bath water for impurity goes into it at times, and wudu water goes in constantly. A pot (pechak) fell into it and then fell into the well. Did the well remain pure or become impure? And what is the ruling on the water of such a reservoir? Furthermore, a Hindu, who was outwardly free from impurity, entered the well to remove mud; what is the ruling for the well? Answer and be rewarded.

The Answer: Since a large amount of water falls into this reservoir and it remains flowing at all times, its water is pure. The pot that fell into it and then into the well did not make the well impure. In fact, bath water itself is pure as long as no actual impurity was washed away with it.

1. Radd al-Muhtar, chapter on research into bathing, Mustafa al-Babi Egypt, 1/111

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

'रद्दुल मुहतार' में 'तातारे खानिया' के हवाले से है कि: "जिस किसी को अपने बर्तनों, कपड़ों या शरीर पर नजासत (गंदगी) होने या न होने का संदेह हो, तो जब तक यकीन न हो जाए, वे पाक (शुद्ध) ही रहेंगे। यही हुक्म उन कुओं, हौज़ों और मटकों का भी है जो रास्तों में स्थित हैं और जिनसे छोटे-बड़े, मुसलमान और काफिर सभी पानी प्राप्त करते हैं।"

'रद्दुल मुहतार' में है कि 'तातारे खानिया' में दर्ज है कि जिसे अपने बर्तनों, कपड़ों या शरीर पर नजासत होने या न होने का संदेह हो, तो जब तक यकीन न हो जाए तब तक ये पाक रहेंगे। रास्तों में स्थित कुओं, हौज़ों और मटकों, जिनमें से बच्चे-बड़े, मुसलमान और काफिर सभी पानी प्राप्त करते हैं, का भी यही हुक्म है। (त)

लहंगा पहनने वाली कुछ महिलाओं को यह विचार आता है कि लहंगे में मियानी (बीच की सिलाई) नहीं होती जो पेशाब के स्थान के लिए आड़ बने, और पानी भरने में ज़ोर लगता है तो संभावना है कि ज़ोर के कारण पेशाब की कोई बूंद टपक जाए और आड़ न होने के कारण कुएँ में चली जाए। लेकिन ये केवल संभावनाएं हैं, शरीअत में इन पर कोई हुक्म आधारित नहीं होता।

क्या आप नहीं देखते कि अधिकांश अरब महिलाएँ पाजामे के बजाय तहबंद (लूंगी) पहनती थीं, जबकि तहबंद में भी कोई आड़ नहीं होती। इसके बावजूद वे कुओं से पानी निकालती थीं और इस पर कोई आपत्ति या इनकार नहीं किया गया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

क्या मालूम नहीं कि अरब की अधिकांश महिलाएँ शलवार की बजाय तहबंद पहनती थीं, हालांकि तहबंद में कोई रुकावट नहीं होती, इसके बावजूद वे कुओं से पानी निकालती थीं जिस पर कोई आपत्ति नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 73: पुराने शहर से, प्रेषक अली हसन खान, 5 मुहर्रमुल हराम 1314 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि: एक चौबच्चा (छोटा हौज) कुएँ के किनारे पर है जो गुसलखाने के करीब है और उसमें पानी बहने के लिए सुराख भी है। गुसलखाने में लोग जनाबत (अशुद्धि) और पाकी का हर तरह का गुसल करते हैं। वज़ू का पानी भी उसी चौबच्चे में जाता है, और मशक और भिश्तियों के भरने का पानी भी, और वह हर वक्त सुराख से बहता रहता है। सारांश यह कि जनाबत का पानी किसी समय उसमें जाता है और वज़ू आदि का पानी हर समय जाता रहता है। उसमें एक पेचक (पात्र) गिरकर कुएँ में गिर गया। कुआँ पाक रहा या नापाक? और ऐसे चौबच्चे के पानी का क्या

हुक्म है? और एक हिंदू जो ज़ाहिरी तौर पर गंदगी से पाक है, मिट्टी निकालने के लिए कुएँ में घुसा, तो कुएँ का क्या हुक्म है? बयान फ़रमाएं और सवाब पाएं।

अल-जवाब: चूंकि इस चौबच्चे में पानी अधिक गिरता है और हर समय बहता रहता है, इसलिए इसका पानी पाक है। वह पेचक जो इसमें गिरकर कुएँ में गिरा, उससे कुआँ नापाक नहीं हुआ। बल्कि गुसल का पानी खुद भी पाक है जब तक कि उससे कोई नजासत न धोई गई हो।

1. 'रद्दुल मुहतार', गुसल के शोध का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/111 पृष्ठ 271/756

فی ردالمحتار فی التاترخانیۃ من شک فی انائہ وثوبہ اوبدنہ اصابتہ نجاسۃ اولا فھو طاہر مالم یستیقن وکذا فی الأبار والحیاض والحباب الموضوعۃ فی الطرقات ویستقی منہا الصغار والکبار والمسلمون والکفار۔۱ ردالمحتار میں ہے کہ تاترخانیہ میں ہے کہ جس کو اپنے برتنوں کپڑوں یا بدن پر نجاست ہونے نہ ہونے کا شک ہو تو جب تک یقین نہ ہو جائے اس وقت تک یہ پاک ہوں گے۔ راستوں میں واقع کنوؤں، حوضوں اور مٹکوں جن میں سے چھوٹے بڑے، مسلمان اور کافر سب پانی حاصل کرتے ہیں، کا بھی یہی حکم ہے۔ (ت)

لہنگے والی عورتوں میں بعض کو یہ خیال ہوتا ہے کہ لہنگے میں میانی نہیں جو موضع بول پر حاجب ہو اور پانی بھرنے میں زور پڑتا ہے احتمال ہے کہ زور کے باعث کوئی قطرہ پیشاب وغیرہ کا ٹپکے اور حاجب نہ ہونے کے سبب کنویں میں جائے مگر یہ احتمالات ہیں شرع میں ان پر بنائے کار نہیں۔

الا تری ان نساء العرب لم یکن لاکثر ھن سراویل انما کن یأتزرن والمئزر ایضا لا حاجب فیہ ثم قد کن یستقین من الأبار من دون نکیر ولا انکار واللہ تعالٰی اعلم۔ کیا معلوم نہیں کہ عرب کی اکثر عورتیں شلوار کی بجائے تہبند پہنتی تھیں حالانکہ تہبند میں کوئی رکاوٹ نہیں ہوتی اس کے باوجود وہ کنوؤں سے پانی نکالتی تھیں جس پر کوئی اعتراض نہیں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۷۳ : از شہر کہنہ مسئولہ علی حسن خان ۵ محرم الحرام ۱۳۱۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک چوبچہ کنویں کے کنارے پر ہے قریب غسل خانہ کے اور اس میں پانی بہنے کیلئے سوراخ بھی ہے غسل خانہ میں لوگ غسل جنابت و پاکی ہر طرح کا کرتے ہیں وضو کا

پانی بھی اسی چوبچہ میں جاتا ہے اور سقاوہ کا بھی اور بہشتیوں کے بھرنے کا بھی اور ہر وقت سوراخ سے جاری رہتا ہے خلاصہ یہ کہ جنابت کا پانی کسی وقت اُس میں جاتا ہے اور وضو وغیرہ کا ہر وقت جاتا رہتا ہے اس میں ایک پیچک گر کر کنویں میں گری کنواں پاک رہا یا ناپاک اور ایسے چوبچہ کے پانی کا کیا حکم ہے اور ایک ہندو ظاہری پلیدی سے پاک ہے مٹی نکالنے کو کنویں میں گھسا کنویں کا کیا حکم ہے، بینوا توجروا۔

الجواب : جبکہ اس چوبچہ میں پانی زیادہ گرتا اور ہر وقت جاری رہتا ہے تو اس کا پانی پاک ہے پیچک کہ اس میں گر کر کنویں میں گری کنواں ناپاک نہ ہوا بلکہ غسل کا پانی خود بھی پاک ہے جب تک کوئی نجاست نہ دھوئی گئی ہو

---

1 رد المحتار مطلب فی ابحاث الغسل مصطفی البابی مصر ۱/۱۱۱ Page 271 of 756

If there was no actual impurity on the Hindu's body, the well did not become impure, but as a precaution, all the water should be removed, as is apparent by referring to Radd al-Muhtar, Al-Wahbaniyya, etc. And Allah Almighty knows best. (As is apparent from referring to Radd al-Muhtar and Al-Wahbaniyya etc. - Trans)

Problem 74: From the old city, sent by Amjad Ali Khan and Tulman Khan, 3 Muharram al-Haram 1312 AH. Respected Maulvi Sahib (May your shadow endure). After greetings, it is submitted that a question of similar content came to you yesterday, but there was some oversight in writing it. Since a Mufti answers exactly what is asked, the situation is being written exactly as it was. Please observe and reply. A small tank (choobacha) under a bathroom is one and a quarter yard long, twelve knots (girah) wide, twelve knots deep, and at a height of eight knots, there is a hole in it equivalent to the spout of a lota (water pot). In this tank comes water from ghusl (bath) of janabat (major ritual impurity) and non-janabat, water from wudu (ablution), water spilled by water-carriers filling from the well, water that falls while filling lotas for wudu, and water from istinja (cleaning after relief) of minor and major needs, and bath water of those in a state of janabat who have physical impurity on them. All this water comes into the tank. When the water level exceeds eight knots, it starts flowing out; otherwise, it stays there. The color and smell of the water hasn't changed, but there is a smell in the tank's water, and no one has tasted it. In these circumstances, is the water in that tank pure or impure? If pure, what type? And one squirt (pichak) from this tank was put into the well; did the well remain pure or become impure? If it became impure, how many buckets (dol) of water should be drawn out?

Answer: In the pure Shari'ah, the basis of impurity is knowledge, and the basis of purity is the unknown nature of impurity. That whose impurity is not known is pure. The water from water-carriers, water-skins, wudu, ghusl without janabat, and ghusl with janabat is all pure. When istinja is performed with a dry clod (dheela), then according to the most correct opinion, purity is achieved, and the water used afterwards for istinja does not become impure as long as the impurity has not exceeded the point of exit (makhraj).

For the Law (Shari'ah) has considered stones as purifying for what is on the exit point to ward off hardship, contrary to analogy regarding the rest of the body,[1] as established in Al-Hilyah regarding the etiquettes of wudu. So what exceeds it, meaning the exit point

If impurity at the place of feces and urine is limited only to the opening (makhraj), then Shari'ah has considered the use of dry clods for purity up to this limit as valid. This command of Shari'ah is contrary to general analogy. Beyond this...

[1] Hilyah

यदि हिंदू के शरीर पर कोई वास्तविक अशुद्धि नहीं थी, तो कुआँ अशुद्ध नहीं हुआ, लेकिन एहतियात के तौर पर सारा पानी निकाल लेना चाहिए, जैसा कि रद अल-मुह्तार और अल-वहनिया आदि के संदर्भ से स्पष्ट होता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (जैसा कि रद अल-मुह्तार और वहनिया आदि के संदर्भ से स्पष्ट है। -अनुवाद)

मसला 74: पुराने शहर से, अमजद अली खान और तुलमन खान द्वारा भेजा गया, 3 मुहर्रम अल-हराम 1312 हिजरी। माननीय मौलवी साहब (आपका साया बना रहे)। सलाम के बाद निवेदन है कि कल इसी विषय का एक प्रश्न आपके पास आया था, लेकिन उसे लिखने में कुछ चूक हो गई थी। चूंकि मुफ्ती उसी का उत्तर देते हैं जो पूछा जाता है, इसलिए स्थिति वैसी ही लिखी जा रही है जैसी वह थी। कृपया इसे देखें और उत्तर दें। स्नानघर के नीचे एक छोटा टैंक (चुबचा) सवा गज लंबा, बारह गिरह चौड़ा, बारह गिरह गहरा है, और आठ गिरह की ऊंचाई पर उसमें लोटे की टोंटी के बराबर एक छेद है। इस टैंक में जनाबत (बड़ी नापाकी) और गैर-जनाबत के स्नान का पानी, वज़ू का पानी, कुएं से पानी भरने वाले भिश्तियों द्वारा गिराया गया पानी, वज़ू के लिए लोटे भरते समय गिरने वाला पानी, और लघु व दीर्घ शंका के बाद इस्तंजा का पानी, और ऐसे जुनुब (नापाक व्यक्ति) जिनके शरीर पर गंदगी लगी हो उनके स्नान का पानी, यह सब पानी इस टैंक में आता है। जब पानी आठ गिरह से ऊपर हो जाता है, तो बाहर निकलने लगता है, अन्यथा वहीं जमा रहता है। पानी का रंग और गंध नहीं बदला है, लेकिन टैंक के पानी में गंध आती है और किसी ने स्वाद नहीं चखा है। इन परिस्थितियों में, उस टैंक का पानी शुद्ध है या अशुद्ध? यदि शुद्ध है, तो किस प्रकार का? और इसी टैंक से एक पिचकारी कुएं में डाली गई थी; तो कुआँ शुद्ध रहा या अशुद्ध? और यदि अशुद्ध हुआ, तो कितने डोल पानी निकाला जाएगा?

अल-जवाब (उत्तर): पावन शरीयत में अशुद्धि का आधार ज्ञान पर है, और शुद्धि का आधार अशुद्धि की अनभिज्ञता पर है। जिस चीज़ की अशुद्धि ज्ञात नहीं है, वह शुद्ध है। भिश्ती, मशक, वज़ू, बिना जनाबत के स्नान और जनाबत वाले स्नान का पानी, ये सब शुद्ध हैं। और जब इस्तंजा ढेले से कर लिया जाए, तो सबसे सही मत के अनुसार शुद्धि हो जाती है, और अब जो पानी से इस्तंजा करें, वह नापाक नहीं होता जब तक कि अशुद्धि मख़रज (निकास द्वार) से आगे न बढ़ी हो।

क्योंकि शरीयत ने कठिनाई को दूर करने के लिए मख़रज पर मौजूद चीज़ के लिए पत्थरों (ढेलों) को शुद्ध करने वाला माना है, जो शरीर के बाकी हिस्सों के संबंध में कयास के विपरीत है,[1] जैसा कि वज़ू के शिष्टाचार के संबंध में 'अल-हिल्या' में स्थापित किया गया है। तो जो इससे आगे बढ़े, यानी मख़रज पाखाना और पेशाब के स्थान पर यदि अशुद्धि केवल सुराख (मख़रज) तक सीमित है, तो शरीयत ने इस सीमा तक शुद्धि के लिए ढेले के उपयोग को मान्य माना है। शरीयत का यह आदेश कयास (तर्क) के विपरीत है, इससे...

[1] हिल्या

ہندو کے بدن پر اگر کوئی نجاستِ حقیقی نہ تھی کنواں ناپاک نہ ہوا مگر احتیاطاً کل پانی نکالیں کما یظھر بالمراجعۃ الیٰ ردالمحتار والوھبانیۃ وغیرھما واللہ تعالٰی اعلم (جیسا کہ ردالمحتار اور وہبانیۃ وغیرہ کی طرف رجوع کرنے سے ظاہر ہے۔ ت)

مسئلہ ۷۴ : از شہر کہنہ مرسلہ امجد علی خان و تلمن خان ۳ محرم الحرام ۱۳۱۲ھ جناب مولوی صاحب دام ظلہ ۔ بعد سلام نیاز کے عرض ہے کہ اسی مضمون کا ایک سوال کل آپ کے پاس آیا تھا لیکن اس کے لکھنے میں کچھ فروگذاشت ہو گیا تھا اور مفتی سے جو سوال کیا جاتا ہے اس کا جواب دیتا ہے لہذا ہو بہو جو حال تھا اس میں لکھ دیا اس کو ملاحظہ کر کے لکھ دیجئے ایک بچہ زیر غسل خانہ سوا گز طول بارہ گرہ چوڑا بارہ گرہ عمیق ہے اور آٹھ گرہ اونچائی پر اُس میں سوراخ لوٹے کی ٹونٹی کے برابر ہے اور بچہ میں پانی جنابت اور غیر جنابت غسل کا اور وضو کا اور کنویں پر جو بہشتی بھرتے ہیں اُن کا گرا ہوا اور سقاوے میں برائے وضو جو لوٹوں میں بھرتے وقت تھوڑا سا گرتا ہے اور استنجا چھوٹا اور بڑا اور ایسے جنب جن کے نجاست لگی ہو اُن کے غسل کا یہ سب پانی بچہ میں آتا ہے اور جب آٹھ گرہ سے زیادہ اونچاپانی اُس میں ہو جاتا ہے تو نکلنا شروع ہوتا ہے ورنہ اُس میں ٹھہرا رہتا ہے اور رنگ بو پانی کا تبدیل نہیں ہوا ہے لیکن اُس بچہ کے پانی میں بو بھی آتی ہے اور مزہ کسی نے چکھا نہیں ہے تو ان صورتوں میں اُس بچہ کا پانی پاک ہے یا ناپاک اور پاک ہے تو کس قسم کا اور ایک پچک اسی بچہ میں ڈال کر کنویں میں ڈالی تھی تو کنواں پاک رہا یا ناپاک اور اگر ناپاک ہوا تو کس قدر ڈول نکلیں گے۔

الجواب: شرعِ مطہر میں مدارِ نجاست علم پر ہے اور مدارِ طہارت نامعلومیِ نجاست پر۔ جس چیز کی نجاست معلوم نہیں وہ پاک ہے سقا وسقایہ و وضو وغسل بے جنابت وغسل جنابت سب کے پانی

پاک ہیں اور استنجا جب ڈھیلے سے کر لیا جائے تو اصح مذہب پر طہارت ہو جاتی ہے اور اب جو پانی سے استنجا کریں تو وہ ناپاک نہیں ہوتا جبکہ نجاست نے مخرج سے تجاوز نہ کیا ہو،

فان الشرع قداعتبر الاحجار مطهرة لما على المخرج دفعاً للحرج على خلاف القياس فى سائر البدن ١ كماقرره فى الحلية من آداب الوضوء فما جاوزه اعنى المخرج

پاخانہ اور پیشاب کے مقام پر اگر نجاست صرف سوراخ (مخرج) تک محدود ہے تو شریعت نے اس حد تک طہارت کے لئے ڈھیلے کے استعمال کو معتبر قرار دیا ہے، شریعت کا یہ حکم خلافِ قیاس ہے اس سے

١ حلیہ

Fatawa Razawiyya, Volume 3

It cannot be so, especially when there is also a difference in the authentication (of a report), then how can it be equal? Therefore, this statement should be relied upon. Success is from Allah Almighty. (T)

And in the bathroom, if the impurity was washed before bathing and its water had not yet reached the cistern when bathing was performed after it, and that pure water washed it away, then the ground became pure and the water also remained pure.

[Table Header: Middle Sections] [Left Column - Arabic]: In Radd al-Muhtar, from Al-Dhakhira: If impurity falls on the ground and water is poured over it so that it flows for the distance of a cubit (Dhira'), the ground becomes pure and the water is pure, like flowing water (1).

[Right Column - Urdu translation]: It is in Radd al-Muhtar that it is stated in Al-Dhakhira that if there is impurity on the ground, then when water is poured over it and that water flows for the distance of one hand (cubit/dhira'), then the ground will become pure and the water will also become pure like flowing water. (T)

And if impure water had reached the cistern, and after that, the pure water from bathing and ablution etc. came flowing and made the cistern's water flow, then all the water that was in the cistern became pure.

[Table Header: Lower Sections] [Left Column - Arabic]: In Radd al-Muhtar: And the current custom is that whenever water enters from one side and exits from another side, it is called flowing, even if the entering amount is small. From this, the ruling for mosque basins and bathhouse catch-pits is apparent, even though it doesn't carry away a piece of straw (2).

[Right Column - Urdu translation]: It is in Radd al-Muhtar and now the common custom is that if water enters from one side and exits from another side, it is called 'flowing', even if the entering water is a small amount. From this, the ruling for the mosque's drain and the drainage from the bathhouse is known, despite the fact that it does not wash away a piece of straw. (T)

And a smell can also arise from water stagnating; this does not necessarily imply impurity unless the smell changes because of an impure thing. In short, in this cistern, most of the time there are greater possibilities of purity, and sometimes a possibility of impurity. So, if it is proven and confirmed that at the time the lizard fell

into it, someone had previously washed some actual impurity and only that water had come into the cistern, and after that, pure water had not come and washed it away, then in this specific case, the ruling for the impurity of the well and the extraction of all water would be given. And if there is no investigative proof of it, then the cistern, lizard, and well are all pure. Nothing happens from mere possibility; rather, for purity, even one possibility of cleanliness is sufficient, especially where it is predominant.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/138.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Waters, Mustafa al-Babi Egypt, 1/138.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

ऐसा नहीं हो सकता, विशेषकर जब वहाँ सुधार के प्रमाणीकरण में भी मतभेद हो, तो वह समान कैसे हो सकता है? इसलिए इस कथन पर भरोसा किया जाना चाहिए। सफलता अल्लाह तआला की ओर से है। (त)

और स्नान गृह में जो गंदगी स्नान से पहले धोई गई थी, यदि उसका पानी अभी हौज (चह-बच्चा) तक नहीं पहुँचा था कि उसके बाद स्नान किया गया और उस पाक पानी ने उसे बहा दिया, तो जमीन भी पाक हो गई और पानी भी पाक रहा।

[मध्य खंड] [बायाँ कॉलम - अरबी]: रद अल-मुह्तार में, अल-ज़खीरा से: यदि ज़मीन पर गंदगी गिर जाए और उस पर पानी डाला जाए जिससे वह एक हाथ (ज़िरा) की दूरी तक बह जाए, तो ज़मीन पाक हो जाती है और पानी बहते पानी की तरह पाक होता है (1)।

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद]: रद अल-मुह्तार में है कि ज़खीरा में वर्णन किया गया है कि यदि ज़मीन पर गंदगी हो, तो जब उस पर पानी बहाया जाए और वह पानी एक हाथ (ज़िरा) तक जारी हो, तो ज़मीन पाक हो जाएगी और पानी भी बहते पानी की तरह पाक हो जाएगा। (त)

और यदि नापाक पानी हौज में पहुँच गया था, उसके बाद स्नान और वुज़ू आदि का पाक पानी बहता हुआ आया और उसने हौज के पानी को जारी (प्रवाहित) कर दिया, तो हौज में मौजूद सारा पानी पाक हो गया।

[निचला खंड] [बायाँ कॉलम - अरबी]: रद अल-मुह्तार में: और अब रिवाज यह है कि जब भी पानी एक तरफ से प्रवेश करता है और दूसरी तरफ से बाहर निकलता है, तो उसे बहता हुआ कहा जाता है, भले ही प्रवेश करने वाली मात्रा कम हो। इससे मस्जिदों के हौज और हम्माम के निकास का हुक्म स्पष्ट होता है, इसके बावजूद कि वह तिनके को बहाकर नहीं ले जाता (2)।

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद]: रद अल-मुह्तार में है और अब रिवाज यह है कि यदि पानी एक तरफ से दाखिल हो और दूसरी तरफ से बाहर निकले, तो उसे 'जारी' (बहता हुआ) कहते हैं, चाहे दाखिल होने वाला पानी कम ही क्यों न हो। इससे मस्जिद की नाली और हम्माम से निकासी का हुक्म मालूम हुआ, इस तथ्य के बावजूद कि वह तिनके को बहाकर नहीं ले जाता। (त)

और पानी में ठहरने से भी गंध आ जाती है; यह अनिवार्य रूप से गंदगी का संकेत नहीं है जब तक कि किसी नापाक चीज़ के कारण गंध में बदलाव न आया हो। संक्षेप में, इस हौज में अक्सर शुद्धता की अधिक संभावनाएँ होती हैं और कभी-कभी गंदगी की एक संभावना। अतः यदि यह सिद्ध और प्रमाणित हो जाए कि जिस समय छिपकली (पचक) उसमें गिरी, उससे पहले किसी व्यक्ति ने कोई वास्तविक गंदगी धोई थी और केवल वही पानी हौज में आया हुआ था, और उसके बाद पाक पानी ने आकर उसे बहाया नहीं था, तो इस विशेष स्थिति में कुएं की गंदगी और पूरा पानी निकालने का हुक्म दिया जाएगा। और यदि इसका कोई शोधपरक प्रमाण नहीं है, तो हौज, छिपकली और कुआं सब पाक हैं। केवल संभावना से कुछ नहीं होता, बल्कि पाकी (शुद्धता) के लिए शुद्धता की एक संभावना ही काफी है, न कि जहाँ वह प्रबल हो।

---

1. रद अल-मुह्तार, बाबुल मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/138।
2. रद अल-मुह्तार, बाबुल मियाह, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/138।

نہیں ہوسکتا خصوصاً جب ہاں تصحیح میں بھی اختلاف ہو تو کیسے مساوی ہوگا۔ لہٰذا اس قول پر اعتماد ہونا چاہئے اللہ تعالٰی سے توفیق ہے۔ (ت)

اور غسل خانے میں جو نجاست پیش از غسل دھوئی گئی اگر ابھی اس کا پانی چہ بچہ میں نہ پہنچا تھا کہ اس کے بعد غسل کیا اور یہ کہ پاک پانی اسے بہا لے گیا تو زمین بھی پاک ہوگئی اور پانی بھی پاک رہا۔

[درمیانی خانہ] [بائیں جانب - عربی]: في ردالمحتار في الذخيرة لواصابت الارض نجاسة فصب عليها الماء فجرى قدر ذراع طهرت الارض والماء طاهر بمنزلة الجارى 1۔

[دائیں جانب - اردو]: ردمحتار میں ہے کہ ذخیرہ میں بیان کیا ہے کہ اگر زمین پر نجاست ہو تو جب اس پر پانی بہایا گیا اور وہ پانی ایک ہاتھ گز (ذراع) تک جاری ہوا تو زمین پاک ہو جائے گی اور پانی بھی جاری پانی کی طرح پاک ہو جائے گا۔ (ت)

اور اگر آب نجس چہ بچہ میں پہنچ گیا تھا اس کے بعد پاک پانی غسل و وضو وغیرہ ہما کا بہتا آیا اور اس نے چہ بچہ کو جاری کردیا تو سارا پانی کہ چہ بچہ میں تھا پاک ہو گیا۔

[نیچے والا خانہ] [بائیں جانب - عربی]: في ردالمحتار والعرف الأن انه متى كان الماء داخلاً من جانب وخارجا من جانب اخر يسمى جاريا وان قل الداخل وبه يظهر الحكم في برك المساجد ومغطس الحمام مع انه لا يذهب بتبنة 2۔

[دائیں جانب - اردو]: ردمحتار میں ہے اور اب عرف یہ ہے کہ اگر پانی ایک جانب سے داخل ہو اور دوسری جانب سے خارج ہو تو اس کو جاری کہتے ہیں اگر چہ داخل ہونے والا قلیل ہو، اس

سے مسجد کی نالی اور حمام سے نکاسی کا حکم معلوم ہوا اس کے باوجود کہ وہ تنکے کو بہا کر نہیں لے جاتا۔ (ت)

اور پانی میں ٹھہرنے سے بھی بُو آجاتی ہے یہ خواہی نخواہی مستلزم نجاست نہیں جب تک نجس چیز کے سبب بُو میں تغیر نہ آیا ہو۔ غرض اس چہ بچہ میں اکثر اوقات زیادہ احتمالات طہارت کے ہیں اور بعض وقت ایک احتمال نجاست کا پس اگر ثابت و محقق ہو کہ جس وقت پچک اس میں گری اس سے پہلے کسی شخص نے کوئی نجاست حقیقیہ دھوئی تھی اور تنہا اُسی کا پانی چہ بچہ میں آیا ہوا تھا اور اس کے بعد پاک پانی نے آکر اسے بہا نہ دیا تھا جب تو اس صورت خاص میں کنویں کی نجاست اور کُل پانی نکالنے کا حکم دیا جائے گا اور اگر اس کا ثبوت تحقیقی طور پر نہیں تو چہ بچہ پچک کنواں سب پاک ہیں احتمال سے کچھ نہیں ہوتا بلالکہ پاکی کیلئے ایک احتمال طہارت کافی ہے نہ کہ جہاں غالب وہی ہو۔

---

1 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۳۸ 2 ردالمحتار باب المیاہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۳۸

Fatawa Razawiya, Volume 3

In Radd al-Muhtar, it is stated that it is said in al-Bahr: We have added the condition of 'knowledge' because the jurists have said that if a buffalo or similar animal falls into a well and is taken out alive, it is not necessary to draw out any water. Even though it is apparent that urine would be on its thighs, there is a possibility of it being pure, such as if it had entered plenty of water immediately before falling into the well. Along with this, the original state of things is purity (tahara). And something similar is in al-Fath al-Qadeer. And Allah Ta'ala knows best. (T)

26 Safar 1314 AH Problem 75: What do the scholars of religion say regarding this problem: a rooster and a hen fell into a well and were taken out alive. To take them out, a dry basket (khancha) was used in which a hen used to be kept, but it is not known if there was impurity in it. In this case, how many buckets should be taken out of the well? And will the act of taking them out or paying for it be obligatory on the person whose hen it is, considering the hen fell into the well while running away from the rooster? Explain and you will be rewarded.

Answer: Twenty (20) buckets should be taken out. A hen being kept in a basket does not necessitate certainty of its impurity, just like a used shoe or the feet of the animals themselves. There is absolutely no compensation (tawan) due from the owner of the hen. If it is forcibly taken, it will be injustice and haram (forbidden). And Allah Ta'ala knows best.

Problem 76: From Tehsil Kichha, District Nainital, sent by Abdul Aziz Khan Sahib, 12 Rajab 1315 AH. If a lizard falls into a well and dies and swells or bursts, how much water should be taken out from the well? Explain and you will be rewarded.

Answer: Since it has flowing blood—the humble servant (faqir) has witnessed this with his own eyes—Radd al-Muhtar...

1 Radd al-Muhtar, Chapter on the Well, Al-Babi, Egypt 1/156. Page 275 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

रद्द अल-मुहतार में है कि अल-बहर में कहा गया है कि हमने 'ज्ञान' की शर्त इसलिए लगाई है क्योंकि फ़ुक़हा (न्यायशास्त्रियों) ने फ़रमाया है कि अगर भैंस आदि कुएं में गिर जाए और उसे ज़िंदा निकाल लिया जाए, तो कुएं से पानी निकालने की ज़रूरत नहीं है। हालाँकि ज़ाहिरी तौर पर भैंस की रानों पर पेशाब लगा होता है, लेकिन इसके बावजूद भैंस के पाक (शुद्ध) होने की संभावना भी है, वह इस तरह कि हो सकता है कुएं में गिरने से ठीक पहले वह बहुत सारे पानी में दाखिल हुई हो। इसके साथ ही यह भी कि असल हालत तहारत (पवित्रता) ही है। और इसी तरह फ़तह अल-क़दीर में भी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

26 सफ़र 1314 हिजरी मसाला 75: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक मुर्गा और मुर्गी कुएं में गिर गए और ज़िंदा निकाल लिए गए। उन्हें निकालने के लिए एक सूखे खाँचे (टोकरी) का इस्तेमाल किया गया जिसमें मुर्गी को रखा जाता था, लेकिन यह पता नहीं है कि उसमें गंदगी थी या नहीं। इस स्थिति में कुएं से कितनी बाल्टियाँ निकाली जानी चाहिए? और क्या उन्हें निकालना या उसका भुगतान करना उस व्यक्ति पर अनिवार्य होगा जिसकी वह मुर्गी है, जबकि मुर्गी मुर्गे से भागते हुए कुएं में गिरी थी? उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: बीस (20) बाल्टियाँ निकाली जानी चाहिए। खाँचे में मुर्गी का बंद होना उसकी गंदगी पर यकीन करने का कारण नहीं है, जैसे इस्तेमाल किया गया जूता या खुद जानवरों के पंजे। मुर्गी के मालिक पर इसका कोई हर्जाना (तावान) बिल्कुल भी नहीं है। अगर उससे जबरदस्ती लिया जाएगा तो यह ज़ुल्म और हराम होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 76: तहसील किच्छा, ज़िला नैनीताल से, अब्दुल अज़ीज़ खान साहब द्वारा भेजा गया, 12 रजब 1315 हिजरी। अगर छिपकली कुएं में गिरकर मर जाए और फूल जाए या फट जाए, तो कुएं से कितना पानी निकाला जाएगा? उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: चूंकि इसमें बहने वाला खून (दाम-ए-साईल) होता है—फ़क़ीर (विनम्र लेखक) ने खुद अपनी आँखों से देखा है—रद्द अल-मुहतार...

1 रद्द अल-मुहतार, कुएं का अध्याय, अल-बाबी, मिस्र 1/156। पृष्ठ 275 of 756

فی ردالمحتار قال فی البحر وقیدنا بالعلم لانھم قالوا فی البقر ونحوہ یخرج حیا لایجب نزح شیئ وان کان الظاھر اشتمال بولھا علی افخاذھا لکن یحتمل طھارتھا بان سقطت عقب دخولھا ماء کثیرا مع ان الاصل الطھارۃ اھ۔ ومثلہ فی الفتح 1اھ واللہ تعالٰی اعلم۔ رد محتار میں ہے کہ بحر میں کہا ہے کہ ہم نے علم کی قید اس لئے لگائی ہے کہ فقہاء نے فرمایا کہ اگر بھینس وغیرہ کنویں میں گر جائے اور زندہ نکال لی جائے تو کنویں سے پانی نکالنے کی ضرورت نہیں ہے اگرچہ ظاہر طور ہر بھینس کی رانوں پر پیشاب لگا ہوتا ہے لیکن اس کے باوجود بھینس کے پاک ہونے کا بھی احتمال ہے وہ یوں کہ ہو سکتا ہے بھینس کنویں میں گرنے سے متصل قبل کثیر پانی میں داخل ہوئی ہو اس کے ساتھ یہ بھی کہ طہارت اصل ہے اھ اور فتح القدیر میں بھی اسی طرح ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

۲۶ صفر ۱۳۱۴ھ مسئلہ ۷۵ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک مرغا اور مُرغی کنویں میں گرے اور زندہ نکل آئے اُن کے نکالنے کو خشک کھانچا جس میں نجاست کا ہونا معلوم نہیں مرغی اُس میں بند ہوا کرتی تھی ڈالا گیا اس صورت میں کنویں میں سے کتنے ڈول نکالے جائیں اور اُن کا نکالنا یا اُس کے دام دینا اُس شخص پر لازم ہوگا یا نہیں جس کی وہ مرغی ہے حالانکہ مرغی آپ مرغ سے بھاگ کر اُس میں گری۔ بینوا توجروا۔

الجواب: بیس ۲۰ ڈول نکالے جائیں اور کھانچے میں مرغی کا بند ہونا کُناس کی نجاست پر یقین کا موجب نہیں جیسے استعالٰی جوتا اور خود جانوروں کے پنجے پاؤں اُس کا تاوان اس پر اصلاً نہیں جس کی وہ مرغی تھی اگر اس سے جبراً لیا جائے گا ظلم و حرام ہوگا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۶ : از در و تحصیل کچہا ضلع نینی تال مرسلہ عبدالعزیز خان صاحب ۱۲ رجب ۱۳۱۵ھ

چھپکلی اگر کنویں میں گر کر مر جائے اور پھول یا پھٹ جائے تو کس قدر پانی کنویں سے نکالا جائے گا، بینوا توجروا۔

الجواب: سب کہ اس میں دَم سائل ہوتا ہے فقیر نے خود اپنی آنکھ سے مشاہدہ کیا ہے، ردالمحتار

1 رد المحتار فصل فی البئر البابی مصر ۱/ ۱۵۶ صفحہ ۲۷۵ از ۷۵۶

Fatawa Razawiyya, Volume 3

In the discussion of residues, under the author's statement "Sawaakin-e-Buyoot (animals living in houses) are Makruh", he said:

His statement: "Sawaakin-e-Buyoot" i.e., those which have flowing blood like mice, snakes, and lizards; and the full discussion is in "Al-Imdaad" (2). (T: By Sawaakin-ul-Buyoot is meant those animals that possess flowing blood, such as mice, snakes, and lizards; the entire discussion is found in "Al-Imdaad"). (T)

In Fatawa of the great Imam Qadhikhan, Chapter on Impurities that Affect Clothing (T: Chapter on impurities affecting clothes), it says:

"The blood of the Halmah and the lizard spoils the clothes and the water" - 2. (T: The blood of the Halmah [a type of insect that infests leather and ruins it] and the lizard's blood spoils the clothing and the water). (T)

In Fatawa (4) Alamgiriyyah it says:

"The blood of the Halmah and the lizard is impure (najis) if it is flowing; similarly mentioned in Az-Zahiriyyah (5). Thus, if it stains the clothes more than the amount of a Dirham, it prevents the validity of prayer (6); similarly stated in Al-Muheet." (T: The blood of the Halmah and the lizard is impure when it is flowing, as stated in Az-Zahiriyyah. When it gets on clothing more than the quantity of a Dirham, it will prohibit the permissibility of prayer; similar is stated in Al-Muheet). (T)

"I say: The restriction of 'flowing' is based on our established principle that from every creature with blood, only its flowing blood is impure. Therefore, a human's blood only breaks the Wudu (ablution) when it is flowing." (T: I say that the condition of 'flowing' regarding blood is based on our established rule that for every blood-possessing creature, only its flowing blood is impure. This is why human blood only invalidates Wudu if it flows). (T)

Undoubtedly, in Khazanat-ul-Muftiyeen with the symbol 'Zha' (ظ) from Fatawa Zahiriyyah:

"The blood of a lizard spoils the clothes." (T: The blood of a lizard spoils the clothes and water).

1. Radd al-Muhtar, Discussion on Residue, Mustafa al-Babi Egypt 1/124.

2. Fatawa Qadhikhan, Chapter on Impurities that Affect Clothing, Naval Kishore Lucknow 1/101.
3. Fatawa Hindiyyah al-A'yan, Chapter on Impurity, Peshawar 1/46.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

'ब़हस आसार' (अवशेषों की चर्चा) में मातैन (लेखक) के कथन 'सवाकिन-ए-बुयूत मकरूह' (घरों में रहने वाले जानवरों का जूठा मकरूह है) के अंतर्गत फ़रमाया:

उनका कथन: 'सवाकिन-ए-बुयूत' यानी वो जिनमें बहने वाला खून हो जैसे चूहा, सांप और छिपकली, और इसकी पूर्ण चर्चा 'अल-इमदाद' (2) में है। (त: सवाकिन-उल-बुयूत से तात्पर्य उन जानवरों से है जिनमें बहने वाला रक्त होता है, जैसे चूहा, सांप, छिपकली; पूरी चर्चा 'अल-इमदाद' में है)। (त)

फ़तावा इमाम अजल्ल क़ाज़ीख़ान, 'फ़स्ल उन-नजासा अल्लती तुसीब अत्तूब' (कपड़े को लगने वाली नजासत का अध्याय) में है:

"हलमा और छिपकली का रक्त कपड़े और पानी को खराब कर देता है" - 2. (त: हलमा [एक प्रकार का कीड़ा जो चमड़े को लग जाता है और उसे नष्ट कर देता है] और छिपकली का रक्त कपड़े और पानी को अपवित्र कर देता है)। (त)

फ़तावा (4) आलमगीरिया में लिखा है:

"हलमा और छिपकली का रक्त नजिस (अपवित्र) है जब वह बहने वाला हो; इसी तरह अज़-ज़हीरिया (5) में है। अतः यदि यह कपड़े पर एक दिरहम की मात्रा से अधिक लग जाए तो नमाज़ की वैधता को रोकता है (6); अल-मुहीत में भी ऐसा ही है।" (त: हलमा का रक्त और छिपकली का रक्त तब नजिस होता है जब वह बहने वाला हो, जैसा कि ज़हीरिया में है। जब यह कपड़े पर दिरहम की मात्रा से अधिक लग जाता है, तो यह नमाज़ के जायज़ होने में बाधक होता है; मुहीत में भी यही उल्लेख है)। (त)

"मैं कहता हूँ: 'बहने' की शर्त हमारे स्थापित सिद्धांत पर आधारित है कि प्रत्येक रक्त वाले प्राणी का केवल बहने वाला रक्त ही अपवित्र होता है। इसी कारण मनुष्य का रक्त केवल तभी वुज़ू (शुद्धि) तोड़ता है जब वह बहता है।" (त: मैं कहता हूँ कि रक्त के साथ बहने की शर्त हमारे तयशुदा नियम पर आधारित है कि हर खून वाले जानवर का सिर्फ बहने वाला खून ही नजिस होता है। इसी कारण मनुष्य का वुज़ू केवल बहने वाले रक्त से ही भंग होता है)। (त)

निःसंदेह, 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' में संकेत 'ज़' (ظ) के साथ फ़तावा ज़हीरिया से है:

"छिपकली का रक्त कपड़े को खराब करता है।" (त: छिपकली का खून कपड़े और पानी को फ़ासिद (अपवित्र) कर देता है)।

1. रद अल-मुह्तार, जूठे के बारे में चर्चा, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/124।
2. फ़तावा क़ाज़ीख़ान, कपड़ों को लगने वाली नजासत का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ 1/101।
3. फ़तावा हिंदिया अल-आयान, नजासत का अध्याय, पेशावर 1/46।

पृष्ठ 276/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

بحث آثار میں زیر قول ماتن سور سواکن بیوت مکروہ (گھروں میں رہنے والے جانوروں کا جھوٹا مکروہ ہے) کے تحت فرمایا:

قولہ سواکن بیوت ای ممالہ دم سائل کالفارۃ والحیۃ والوزغۃ وتمامہ في الامداد (۲)۔ (ت) سواکن البیوت سے مراد وہ جانور جن میں بہنے والا خون ہو، جیسے چوہا، سانپ، چھپکلی، پوری بحث "الامداد" میں ہے۔

فتادی امام اجل قاضیخان فصل النجاسۃ التی تصیب الثوب (کپڑے کو لگنے والی نجاست کی فصل۔ ت) میں ہے:

دم الحلمۃ والوزغۃ یفسد الثوب والماء - 2 (ت) حلمہ (ایک قسم کا کیڑا ہے جو چمڑے کو لگ جاتا ہے اور اسے خراب کردیتا ہے) کا خون اور چھپکلی کا خون کپڑے اور پانی کو فاسد کردیتا ہے۔ (ت)

فتادی (۴) عالمگیریہ میں ہے:

دم الحلمۃ والوزغۃ نجس اذا کان سائلا کذا في الظھیریۃ (۵) فاذا اصاب الثوب اکثر من قدر الدرھم یمنع جواز الصلاۃ (٦) کذا فی المحیط (ت) حلمہ کا خون اور چھپکلی کا خون نجس ہے جب وہ بہنے والا ہو، ظہیریہ میں ایسے ہے جب کپڑے کو مقدار درہم سے زیادہ لگ جائے تو نماز کے جواز سے مانع ہوگا ایسے محیط میں ہے۔ (ت)

اقول: والتقیید بالسیلان علی المعھود من اصلنا ان دم کل دموی لاینجس منہ الاسائلہ ولذا لاینقض دم الانسان وضوء ہ الا اذا کان سائلا۔ (ت) میں کہتا ہوں کہ خون کے ساتھ بہنے کی قید ہمارے مقررہ

قاعدہ پر مبنی ہے کہ ہر خون والے کا صرف بہنے والا خون نجس ہوتا ہے۔ اسی لئے انسان کے وضو کو صرف بہنے والا خون توڑتا ہے۔ (ت)

لاجرم' خزانہ المفتیین میں برمز ظ اس فتاوی ظہیریہ سے ہے:

دم الوزغة یفسد الثوب (ت) چھپکلی کا خون کپڑے اور پانی کو فاسد

1 ردالمختار مطلب فی السؤر مصطفی البابی مصر ۱/۱۲۴ 2 فتاوی قاضی خان فصل فی النجاسة التی تصیب الثوب نولکشور لکھنؤ ۱/۱۰۱ 3 فتاوی ھندیة الاعیان النجاسة پشاور ۱/۴۶

Fatawa Razawiyya, Volume 3

...and water^1 [becomes impure]. (T)

It is stated in Fath al-Qadir: Blood of the chameleon (a type of insect) and lizards is impure.^2 End of quote. (T) I say: These jurists have mentioned lizards in general, while the intention is specifically those with flowing blood. Had there been doubt regarding their blood, it would not have been permissible for them to use such absolute terms, as stated by the Imam Faqih al-Nafs (Imam Abu Hanifa). (T)

It is stated in the Fatawa of the author of Bahr al-Ra'iq: He was asked about the blood of a lizard, is it pure or impure? He replied: It is impure,^3 and Allah Almighty knows best. (T) They were asked about the blood of a lizard, whether it is pure or impure; so they replied that it is impure, and Allah Almighty knows best. (T)

It is stated in Maraqi al-Falah^4: The leftover (sur) of house-dwelling creatures possessing flowing blood, such as snakes and lizards, is disliked (makruh) due to the necessity of their frequent movement (tawaf) and the forbidden nature (hurma) of their impure flesh.^4 End of quote. (T) The leftover of animals living in houses that possess flowing blood, like snakes and lizards, is disliked; this ruling is based on the impurity of their forbidden flesh and their unavoidable presence (moving around the house). (T)

It is stated in Durr^4: The leftover of a lizard is disliked because the forbidden nature of its flesh necessitates the impurity of its leftover, but it is dropped [from being judged as absolutely impure due to necessity]. (T) The leftover of a lizard is disliked because the prohibition of its meat proves its leftover to be impure.

Footnotes: 1. Khizanat al-Muftin 2. Fath al-Qadir, Chapter on Impurities and their Purification, Sukkur, 1/183 3. Fatawa Ibn Nujaym, on the margin of Fatawa Ghiyathiyah, Maktaba Islamia, Quetta, p. 6 4. Maraqi al-Falah with at-Tahtawi, Bulaq, Egypt, p. 19

फतावा रज़विया, खंड 3

...और पानी^1 [को अशुद्ध कर देता है]। (त)

फतह अल-कादिर में है: गिरगिट (एक प्रकार का कीड़ा) और छिपकलियों का खून अशुद्ध है।^2 (त) लेखक की टिप्पणी: मैं कहता हूँ कि इन फुकहा (कानूनविदों) ने सामान्य रूप से छिपकली का उल्लेख किया है, हालांकि उनका उद्देश्य विशेष रूप से बहने वाले खून वाली छिपकलियों से है। यदि उनके खून के बारे में कोई संदेह होता, तो उनके लिए सामान्य शब्द का प्रयोग करना जायज़ नहीं होता, जैसा कि इमाम फकीह अन-नफ्स (इमाम अबू हनीफा) ने फरमाया है। (त)

बहर अल-रायिक के लेखक के फतावा में है: उनसे छिपकली के खून के बारे में पूछा गया कि क्या वह शुद्ध है या अशुद्ध? उन्होंने उत्तर दिया: वह अशुद्ध है^3, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मराक़ी अल-फलाह^4 में है: घरों में रहने वाले ऐसे जीव जिनमें बहता खून होता है, जैसे सांप और छिपकली, उनका जूठा (सोर) मकरूह (नापसंद) है। यह हुक्म उनके घर में अनिवार्य रूप से घूमने-फिरने और उनके हराम मांस की अशुद्धता के कारण है।^4 (त)

दुर्र^4 में है: छिपकली का जूठा मकरूह है क्योंकि इसके मांस की मनाही इसके जूठे को अशुद्ध साबित करती है, लेकिन [ज़रूरत के कारण अशुद्धता का पूर्ण हुक्म] गिर जाता है। (त) छिपकली का जूठा मकरूह है क्योंकि इसके मांस की हुरमत (निषेध) इसके जूठे को नजिस (अशुद्ध) साबित करती है।

पाद-लेख (Footnotes): 1. खिजानतुल मुफ्तीइन 2. फतह अल-कादिर, बाब अल-अंजस व तहीरहा, सुक्कुर, 1/183 3. फतावा इब्न नुजैम, हाशियत फतावा गियासिया पर, मकतबा इस्लामिया क्वेटा, पृष्ठ 6 4. मराक़ी अल-फलाह मअ अत-तहतावी, बुलाक मिस्र, पृष्ठ 19

पृष्ठ 277 का 756

فتاوٰی رضویہ ، جلد سوم

والماء^1- | کر دیتا ہے۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے: دم الحلمة والاوزاغ نجس^2- اھ | حلمة (ایک قسم کا کیڑا) اور چھپکلیوں کا خون ناپاک ہے۔ (ت) اقول: فقد اطلقوا والمراد المراد ولو شك في دمويتها لماساغ لهم الاطلاق كالامام فقيه النفس۔ | میں کہتا ہوں ان فقہاء نے مطلق چھپکلی کو ذکر کیا ہے حالانکہ مراد خاص خون والی ہے اگر اس کے خون کے بارے میں شک ہوتا تو پھر ان کو اطلاق کی گنجائش نہ ہوتی جیسا کہ امام فقیہ النفس نے فرمایا۔ (ت)

فتاوٰی صاحب بحر الرائق میں ہے : سئل عن دم الوزغ هل هو طاهر ام نجس اجاب هو نجس^3 والله تعالٰی اعلم۔ | ان سے چھپکلی کے خون کے بارے میں پوچھا گیا کہ کیا وہ پاک ہے یا نجس ، تو انہوں نے جواب دیا وہ نجس ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مراقی الفلاح^4 میں ہے : سؤر سواكن البيوت مماله دم سائل كالحية والوزغة مكروه للزوم طوافها وحرمة لحمها النجس^4 اھ | بہنے والے خون کے حامل گھروں میں رہنے والے جانوروں جیسے سانپ اور چھپکلی کا جھوٹا مکروہ ہے ان کے حرام گوشت کی نجاست اور ان کے لازمی طواف (گھر میں چلنے پھرنے) کی بناء پر یہ حکم ہے۔ (ت)

در^4 میں ہے : سؤر الو زغة مكروه لان حرمة لحمها او جبت نجاسة سؤرها لكنها سقطت | چھپکلی کا جھوٹا مکروہ ہے کیونکہ اس کے گوشت کی حرمت اس کے جھوٹے کو نجس ثابت کرتی ہے

حواشی: 1. خزانة المفتین 2. فتح القدیر باب الانجاس و تطہیر ہا سکھر ۱/ ۱۸۳ 3. فتاویٰ ابن نجیم علی حاشیۃ فتاویٰ غیاثیہ مکتبہ اسلامیہ کوئٹہ ص ۶ 4. مراقی الفلاح مع الطحطاوی بولاق مصر ص ۱۹

...due to the reason of roaming (talaaf), therefore the dislike (karahiyat) remains. However, the reason for roaming has nullified the obligation of impurity, so the dislike remains. (T)

Ghunyah (12) regarding those with rulings, it says: "And for this reason, if it dies in the water, it makes it impure." And Allah (Glorified and Exalted) knows best. Therefore, when it dies in the water, it will make the water impure. Allah (Glorified and Exalted) knows best. (T)

Issue 77: From the Jame Masjid, sent by Molvi Ehsan Hussain Sahib, 30 Safar 1316 AH. What do the scholars of religion say regarding a Muslim who entered a well after performing Ghusl (ritual bath) and cleaning his clothes to retrieve a vessel (lota)? Now, is it shariah-mandated to draw out 20 buckets from this well or not? Upon what is the fatwa based? Please state along with book references. Explain and be rewarded.

Answer: When the body was pure, the clothes were pure, and no ritual impurity (hadath) was present because he had already bathed, and no ritual impurity occurred in the well, nor was a fresh Wudu (ablution) or Ghusl performed with the intention of gaining proximity (qurbat), then by consensus, there is no need to draw even a single bucket. The water of the well remains pure and purifying as before. In Rad al-Muhtar: If a pure person plunges into water, the water does not become 'used' (must'amal). Bahr has quoted this from Al-Khaniyah and Al-Khulasah. End of summarized quote. And Allah Almighty knows best.

Issue 78: 6 Rabi-ul-Akhir 1317 AH. What do the scholars of religion say in this matter: in many places, Hindus put their vessels in wells and draw water, and stand over them to bathe and wash their dhotis; in this way, all the splashes go into the well. In all these mentioned circumstances, is the well water pure or impure? Explain and be rewarded.

Answer: The ruling is of purity unless certain impurity is known. Just because their vessels or clothes are likely impure...

1 Durr Sharh Ghurar, Chapter on wells less than ten by ten, Ahmad Kamil Al-Ka'ina, Dar Sa'ada, Egypt, 1/72. 2 Hashiyah ala al-Durr by Mullah Khusraw, Chapter on wells less than ten by ten, Ahmad Kamil Al-Ka'ina, Dar Sa'ada, Egypt, 1/72. 3 Rad al-Muhtar, Issue of the Well, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/148.

...तवाफ़ (घूमने) की वजह से, इसलिए नापसंदगी (कराहियत) बनी रहती है। लेकिन तवाफ़ के कारण ने अपवित्रता की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया है, इसलिए कराहियत बनी हुई है। (त)

ग़ुनिया (12) अहकाम वालों के बारे में कहता है: "और इसी कारण, यदि वह पानी में मर जाए, तो उसे नापाक कर देता है।" और अल्लाह बेहतर जानता है। इसलिए, जब वह पानी में मर जाए, तो वह पानी को नापाक कर देगा। अल्लाह (महिमामय और उच्च) बेहतर जानता है। (त)

मसला 77: जामे मस्जिद से, मौलवी एहसान हुसैन साहब द्वारा भेजा गया, 30 सफ़र 1316 हिजरी। दीन के विद्वान क्या कहते हैं कि एक मुसलमान ग़ुस्ल (धार्मिक स्नान) करने और कपड़े साफ़ करने के बाद एक लोटा निकालने के लिए कुएँ में घुसा? अब क्या शरीयत के अनुसार इस कुएँ से 20 बाल्टी पानी निकालने का हुक्म दिया जाएगा या नहीं? फ़तवा किस पर आधारित है? कृपया किताब के संदर्भ के साथ बताएं। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: जब शरीर भी पाक था और कपड़ा भी पाक था और कोई हदस (अशुद्धि) भी नहीं थी क्योंकि वह नहा चुका था और कुएँ में भी कोई अशुद्धि नहीं हुई, न ही उसमें निकटता (कुर्बत) की नीयत से नया वज़ू या ग़ुस्ल किया गया, तो अब सर्वसम्मति से एक बाल्टी निकालने की भी ज़रूरत नहीं है। कुएँ का पानी पहले की तरह ही पाक और पाक करने वाला है। रद्द अल-मुह्तार में है: यदि कोई पाक व्यक्ति पानी में डुबकी लगाता है, तो पानी 'मुस्तअमल' (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होता। बहर ने अल-खनिया और अल-खुलसा से उद्धृत किया है। संक्षिप्त उद्धरण समाप्त। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला 78: 6 रबी-उल-आख़िर 1317 हिजरी। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: कई जगहों पर हिंदू अपने लोटे कुओं में डालते हैं और पानी भरते हैं, और उन पर खड़े होकर नहाते हैं और अपनी धोतियाँ धोते हैं; इस तरह सारी छीटें कुएँ में गिरती हैं। इन सभी वर्णित स्थितियों में कुएँ का पानी पाक है या नापाक? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: हुक्म पाकी (पवित्रता) का है जब तक कि यक़ीनी नजासत (निश्चित अशुद्धि) का पता न चले। केवल इस हद तक कि ग़ालिबन (संभवत:) उनके बर्तन या कपड़े नापाक...

1 दुर्र शरह ग़ुरर, दस बाई दस से कम के कुओं का अध्याय, अहमद कामिल अल-काइना, दार सआदत, मिस्र, 1/72. 2 मुल्ला खुसरौ द्वारा हाशिया अल-दुर्र, दस बाई दस से कम के कुओं का अध्याय, अहमद कामिल अल-काइना, दार सआदत, मिस्र, 1/72. 3 रद्द अल-मुह्तार, कुएँ का मसला, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/148.

لعلة الطواف فبقیت الکراھة [1] - لیکن نجاست کے وجوب کو طواف کی علت نے ساقط کردیا پس کراہیت باقی ہے۔(ت)

غنیہ ۱۲ ذوی الاحکام میں ہے : ولھذا اذا ماتت فی الماء نجستہ [2] واللہ سبحنہ اس لئے جب وہ پانی میں مرجائے تو پانی کو ناپاک کردے گی واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔(ت) وتعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۷: از مسجد جامع مرسلہ مولوی احسان حسین صاحب ۳۰ صفر ۱۳۱۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ ایک مسلمان غسل اور پارچہ صاف کرکے واسطے نکالنے لوٹے کے کنویں میں داخل ہوا تو آیا اب شرعاً بیس ۲۰ ڈول نکالنے کا اس کنویں میں سے حکم دیا جائے گا یا نہیں اور فتویٰ کس پر ہے مع حوالہ کتاب بیان فرمائیں بینوا توجروا۔

الجواب: جبکہ بدن بھی پاک تھا اور جامہ بھی پاک اور حدث بھی نہ تھا کہ نہالیا تھا اور کنویں میں بھی حدث واقع نہ ہوا نہ اُس میں بہ نیت قربت وضو یا غسل تازہ کیا تو اب بالاجماع ایک ڈول نکالنے کی بھی حاجت نہیں کنویں کا پانی بدستور طاہر مطہر ہے۔ فی ردالمحتار الطاھر اذا انغمس لایصیر الماء مستعملا بحر عن الخانیة والخلاصة ۳ اھ مختصرا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۸: ۶ ربیع الآخر ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اکثر جگہ اہل ہنود کنویں میں اپنے لوٹے ڈالتے ہیں اور پانی بھرتے ہیں اور اُن پر کھڑے ہو کر نہاتے ہیں اور اپنی دھوتیاں دھوتے ہیں اسی طرح پر تمام چھینٹیں کنویں میں اندر جاتی ہیں ان سب حالات مذکورہ میں پانی کنویں کا پاک ہے یا ناپاک۔ بینوا توجروا۔

الجواب: حکم پاکی کا ہے جب تک نجاستِ یقینیہ معلوم ہو صرف اس قدر کہ غالبا ان کے برتن کپڑے ناپاک

1 درر شرح غرر فصل بئر دون عشر فی عشر احمد کامل الکائنہ دار سعادت مصر ۱ / ۷۲ 2

حاشیہ علی الدرر لمولی خسرو فصل فی بئر دون عشر احمد کامل الکائنہ دار سعادت مصر ۱ / ۷۲

3 ردالمحتار مسئلہ البئر محبط مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۴۸

Fatawa Razawiyya Volume 3

...they are not sufficient for the ruling of impurity, otherwise, market sweets, milk, ghee, etc., would all be considered forbidden and impure, which causes hardship, and hardship is waived by textual authority (Nass).

This issue has been mentioned in 'Radd al-Muhtar' regarding slaves and infidels, and in 'Nisab al-Ihtisab' specifically regarding the infidels of India. We have provided full details in our treatise 'Al-Ahla min al-Sukkar li-Talabati Sukkar wa Sir'. And Allah knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and most perfect.

The issue regarding slaves and infidels was mentioned in 'Radd al-Muhtar' and specifically about the infidels of India in 'Nisab al-Ihtisab'. We have described its complete details in our treatise "Al-Ahla min al-Sukkar li-Talabati Sukkar wa Sir". And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 79: From Bazari Inayat Ganj, Old City, 26 Safar 1318 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue of a stool in a house where there are small children and chickens? Although no visible impurity is found on that stool, there is a strong probability that a child must have urinated on it or chicken droppings might have stuck to their feet. If this stool falls into a well, does the well water remain pure or become impure? If it becomes impure, how many buckets should be drawn out? State the ruling and be rewarded.

The Answer: The water is pure as long as there is no certainty regarding the impurity of the stool; only 20 buckets should be drawn out,

for the peace of the heart, as mentioned in 'Al-Khaniyyah' and others, because certainty is not removed by doubt. We have investigated this issue in our treatise 'Al-Ahla min al-Sukkar' with nothing further needed. And Allah Almighty knows best.

for the peace of the heart, as stated in 'Al-Khaniyyah' and others. This is because certainty is not removed due to doubt. We have described the research of this issue in our treatise "Al-Ahla min al-Sukkar li-Talabati Sukkar wa Sir". And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 80: 10 Rabi al-Akhir 1318 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: during epidemics, the medicine that is put into wells by the government for the purpose of...

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter: What falls into the well, Naval Kishore Lucknow, 1/51
2. Fatawa Hindiyyah, Al-Ayan al-Najasa, Peshawar, 1/74

फतावा रज़विया जिल्द 3

...हुक्म नजासत (अशुद्धता) के लिए काफी नहीं हैं, वरना बाज़ार की मिठाई, दूध, घी आदि सब हराम और नजिस (अशुद्ध) ठहरेंगे, और यह कठिनाई है, और कठिनाई को शरीयत के प्रमाण (नस) से दूर किया गया है।

यह मसला 'रद्द अल-मुह्तार' में गुलामों और काफिरों के बारे में और 'निसाब अल-इहतिसाब' में विशेष रूप से भारत के काफिरों के बारे में ज़िक्र किया गया है। हमने इसकी पूरी तफ़सील अपने रिसाले 'अल-अहला मिन अल-सुक्कर लि-तलबति सुक्कर व सिर' में बयान कर दी है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है और उसका इल्म, जिसकी शान बुलंद है, सबसे पूर्ण और सबसे परिपक्व है।

'रद्द अल-मुह्तार' में यह मसला गुलामों और काफिरों के बारे में और 'निसाब अल-इहतिसाब' में हिंदुस्तान के काफिरों के बारे में ज़िक्र किया गया है। हमने इसकी मुकम्मल तफ़सील अपने रिसाले "अल-अहला मिन अल-सुक्कर लि-तलबति सुक्कर व सिर" में बयान कर दी है। वल्लाह तआला आलम। (त)

मसला 79: अज़ बज़री इनायत गंज, पुराना शहर, 26 सफर 1318 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि उस घर की पीढ़ी (एक प्रकार का छोटा स्टूल) जिसमें छोटे बच्चे और मुर्गियाँ हैं, और हालांकि उस पीढ़ी पर किसी तरह की ज़ाहिरी नजासत नहीं लगी है, लेकिन प्रबल संभावना (ज़न्ने ग़ालिब) है कि उस पर ज़रूर बच्चे ने कभी पेशाब किया हो या मुर्गियों की नजासत उनके पैरों में लगी हो। अगर यह पीढ़ी कुएं में गिर जाए तो कुएं का पानी पाक रहा या नापाक हो गया? अगर नापाक हो गया तो कितने डोल निकाले जाएं? हुक्म बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

जवाब: पानी पाक है जब तक कि पीढ़ी की नजासत पर यकीन न हो, सिर्फ20 डोल निकाल लिए जाएं।

दिल की तसल्ली के लिए जैसा कि 'ख़ानिया' आदि में है। यह इसलिए कि शक की वजह से यकीन ज़ायल (खत्म) नहीं होता। हमने इस मसले की तहकीक अपने रिसाले 'अल-अहला मिन अल-सुक्कर' में मुकम्मल तौर पर बयान कर दी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

इत्मीनान-ए-क़ल्ब के लिए जैसा कि 'ख़ानिया' वगैरह में है, यह इसलिए कि शक की वजह से यकीन ज़ायल नहीं होता। इस मसले की तहकीक हमने अपने रिसाले "अल-अहला मिन अल-सुक्कर लि-तलबति सुक्कर व सिर" में बयान कर दी है। वल्लाह तआला आलम। (त)

मसला 80: 10 रबीउल आखिर 1318 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि वबा (महामारी) के दिनों में सरकार की तरफ से जो दवा कुओं में वासते (हेतु)...

---

1. फतावा काज़ी ख़ान, फसल: जो कुएं में गिर जाए, नवल किशोर लखनऊ, 1/51
2. फतावा हिन्दिया, अल-अयान अल-नजासा, पेशावर, 1/74

पृष्ठ 279 / 756

ہوتے ہیں حکم نجاست کیلئے کافی نہیں ورنہ بازار کی مٹھائی اور دُودھ گھی وغیرہ سب حرام و نجس ٹھہریں گے اور یہ حرج ہے اور حرج مدفوع بالنص،

وقد ذكر المسألة في رد المحتار في العبيد والكفار وفی نصاب الاحتساب في خصوص كفرة الهند وفصلناها بمالا مزيد عليه فی رسالتنا الاحلی من السكر لطلبة سكرر وسر والله سبحانه وتعالی اعلم وعلمه جل مجده اتم واحكم۔

رد المحتار میں یہ مسئلہ غلاموں اور کافروں کے بارے میں اور نصاب الاحتساب میں ہندوستان کے کفار کے بارے میں ذکر کیا گیا ہے ہم نے اس کی مکمل تفصیل اپنے رسالہ "الاحلی من السکر لطلبۃ سکرر وسر" میں بیان کردی ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۹: از بزری عنایت گنج شہر کہنہ ۲۶ صفر ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں اُس گھر کی پیڑھی جس میں کہ چھوٹے بچے اور مرغیاں ہیں اور ہر چند کو اُس پیڑھی میں کسی طرح کی نجاست ظاہری نہیں لگی ہے مگر ظنِ غالب ہے کہ اس پر ضرور بچہ نے کبھی پیشاب کیا ہو یا مرغیوں کی نجاست اُس کے پاؤں میں لگی ہو اگر یہ پیڑھی کنوئیں میں گر جائے تو پانی کنویں کا پاک رہا یا ناپاک ہو گیا اگر ناپاک ہو گیا تو کس قدر ڈول نکالے جائیں، بینوا توجروا۔

الجواب: پانی پاک ہے جب تک پیڑھی کی نجاست پر یقین نہ ہو، صرف میں ۲۰ ڈول نکال لیے جائیں،

تطيباً للقلب على ما في الخانية وغيرها وذلك لان اليقين لا يزول بالشك 2 وقد

اطمینانِ قلب کیلئے جیسا کہ خانیہ وغیرہ میں ہے یہ اس لئے کہ شک کی وجہ سے یقین زائل نہیں ہوتا اس مسئلہ

حققنا المسألة في رسالتنا الاحلی من السکر بمالا مزید علیه واللہ تعالیٰ اعلم۔ کی تحقیق ہم نے اپنے رسالہ "الاحلی من السکر لطلبۃ سکرر وسر" میں بیان کردی ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۸۰: ۱۰ ربیع الآخر ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علماء دین اس مسئلہ میں کہ ایام و با میں گورنمنٹ کی طرف سے جو دوا کنوؤں میں واسطے

---

1 فتاویٰ قاضی خان فصل مایقع فی البئر نولکشور لکھنؤ ۱/ ۵۱ 2 فتاویٰ ہندیہ الاعیان النجاسۃ پشاور ۱/ ۷۴

Fatawa Rizvia Volume 3

...it is added for the refinement of water, turning the water red and also changing its taste. Is that water pure (Tahir) and purifying (Mutahhir), and fit for drinking and performing ablution (Wudu)? Provide a decree and be rewarded.

The Answer:

As long as there is no knowledge of impurity, the water is pure and purifying. This is explicitly mentioned in Rad al-Muhtar and others, and the original state of things is purity[1]. Similarly, as long as there is no knowledge of prohibition, water is permissible and drinkable. Indeed, the original state of things is permissibility[2]. And Allah, Glory be to Him, the Almighty, knows best, and His knowledge, may His glory be exalted, is most firm. (Indeed, the original state of things is permissibility. Allah knows best.)

Problem 81: From Bareilly, Muhalla Kohara Peer, 13 Rabi-ul-Awwal 1319 AH.

Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: A person came to the mosque well yesterday afternoon and simply told a non-praying boy, "This well is impure, a lizard came out," and left. At evening time, the worshippers were informed. They searched for that person for verification but could not find him, nor was any lizard seen lying near the well by which its condition could be known. In such a situation, is the well pure or impure? If it is impure, how many buckets should be drawn? And what is the ruling regarding the worshippers who performed Wudu and prayed from the mosque's water reservoir (Saka-wa) which was filled a day earlier, after being informed? Should any prayer be repeated or not?

The Answer:

Since neither the identity nor the whereabouts of that person are known, and the reporter is only a minor, non-praying boy, and no signs of impurity were found in the well, in such a case, a ruling of impurity cannot be given. The well is pure, the reservoir is pure, and the prayers are correct. If one wishes to remove doubt from the heart, then drawing only twenty (20) buckets is sufficient. And Allah, Glory be to Him, the Almighty, knows best.

Problem 82: From Pilibhit, Jamia Masjid, sent by Hafiz Shaukat Ali Sahib, 3 Rabi-ul-Akhir 1320 AH.

Question: What do the scholars of religion and the jurists of the clear Sharia say regarding this matter: If Hindus (men and women) fill water from the mosque's well

with their own vessels, will their filling cause harm to the purity of the worshippers' water or not? The person who...

---

[1] Rad al-Muhtar, Chapter on Wells, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/156. [2] Sixth Principle from the Principles of al-Ashbah wa al-Nazair, Saeed Company, Karachi, 1/79.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

...पानी के शोधन के लिए डाली जाती है, जिससे पानी का रंग लाल हो जाता है और स्वाद में भी अंतर आ जाता है। क्या वह पानी शुद्ध (ताहिर) और शुद्ध करने वाला (मुतह्हिर) है, और पीने तथा वज़ू (शुद्धि) के योग्य है? उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर):

जब तक अशुद्धि (नजासत) का ज्ञान न हो, पानी शुद्ध और शुद्ध करने वाला है। रद अल-मुह्तार आदि में इसका स्पष्ट उल्लेख है और वस्तुओं की मूल स्थिति शुद्धता है[1]। इसी प्रकार, जब तक निषेध (हुरमत) का ज्ञान न हो, पानी हलाल और पीने योग्य है। वास्तव में, वस्तुओं की मूल स्थिति अनुमति (इबाहत) है[2]। और अल्लाह, जो महान और सर्वशक्तिमान है, सबसे बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान, जिसकी महिमा बुलंद हो, सबसे दृढ़ है। (निस्संदेह, वस्तुओं में मूल सिद्धांत अनुमति है। अल्लाह बेहतर जानता है।)

मसला 81: बरेली, मोहल्ला कोहाड़ा पीर, 13 रबी-उल-अव्वल 1319 हिजरी।

प्रश्न: धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति कल दोपहर बाद मस्जिद के कुएं पर आया और एक गैर-नमाजी लड़के से केवल यह कहकर चला गया कि "यह कुआं अशुद्ध है, छिपकली निकली है।" शाम के समय नमाजियों को सूचना मिली। उन्होंने सत्यापन के लिए उस व्यक्ति की तलाश की लेकिन उसका पता नहीं चला और न ही कुएं के पास कोई छिपकली पड़ी मिली जिससे उसकी स्थिति का पता चले। अब ऐसी स्थिति में वह कुआं शुद्ध है या अशुद्ध? और यदि अशुद्ध है, तो कितने डोल (बाल्टी) निकालने चाहिए? और मस्जिद के पानी के हौज (सकावे) में जो एक दिन पहले का पानी भरा हुआ था, उससे नमाजियों ने सूचित होने के बाद वज़ू किया और नमाज पढ़ी, उसका क्या हुक्म है? और क्या किसी समय की नमाज लौटाई जाए या नहीं।

अल-जवाब (उत्तर):

चूंकि उस व्यक्ति की न तो स्थिति ज्ञात है न पता, और सूचना देने वाला केवल एक नाबालिग गैर-नमाजी लड़का है, और कुएं में अशुद्धि के कोई लक्षण भी नहीं पाए गए, तो ऐसी स्थिति में अशुद्धि का हुक्म नहीं दिया जा सकता। कुआं भी शुद्ध है, हौज भी शुद्ध है और नमाजें भी ठीक हैं। यदि दिल का

संदेह मिटाना चाहें तो केवल बीस (20) डोल निकाल देना काफी है, और अल्लाह, जो महान और सर्वशक्तिमान है, सबसे बेहतर जानता है।

मसला 82: पीलीभीत, जामा मस्जिद, प्रेषक हाफ़िज़ शौकत अली साहब, 3 रबी-उल-आखिर 1320 हिजरी।

प्रश्न: धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि मस्जिद के कुएं से हिंदू अपने बर्तनों से पानी भरें, पुरुष और महिलाएं दोनों, तो क्या उनका पानी भरना नमाजियों की शुद्धता को नुकसान पहुंचाएगा या नहीं? जो व्यक्ति इसको...

---

[1] रद अल-मुह्तार, कुओं का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/156। [2] अल-अशबाह व अल-नज़ायर के सिद्धांतों में से छठा सिद्धांत, सईद कंपनी, कराची, 1/79।

فتاوی رضویہ جلد سوم

اصلاح پانی کے ڈالی جاتی ہے اور رنگ پانی کا سرخ ہوجاتا ہے اور ذائقہ میں بھی فرق آجاتا ہے وہ پانی طاہر و مطہر اور قابل پینے اور وضو کے ہے یا نہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب:

جب تک نجاست پر علم نہیں پانی طاہر مطہر ہے نص علیہ فی ردالمحتار وغیرھا والاصل فی الاشیاء الطھارۃ1 (رد محتار وغیرہما میں اس کو صراحۃً ذکر کیا ہے اور اشیاء کا اصل حکم طہارت ہے۔ ت) یوں ہی جب تک حرمت پر علم نہیں پانی حلال ومشرب ہے فان الاصل فی الاشیاء الاباحۃ2 واللہ سبحنہ وتعالی اعلم وعلمہ جل مجدہ احکم۔ (پس بے شک اشیاء میں اصل، اباحت ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ ت)

مسئلہ ۸۱: از بریلی محلہ کوہاڑا پیر ۱۳ ربیع الاول ۱۳۱۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کل تیسرے پہر مسجد کے کنویں پر آیا اور وہ ایک لڑکے غیر نمازی سے صرف یہ کہہ کر چلا گیا کہ یہ کنواں ناپاک ہے چھپکلی نکلی ہے شام کے وقت نمازیوں کو خبر ہوئی اور تحقیق کیلئے اس شخص کو تلاش کیا لیکن پتا نہیں چلا اور نہ چھپکلی کنویں کے پاس پڑی ہوئی نظر آئی جس سے اس کی حالت معلوم ہوتی۔ اب ایسی صورت میں وہ کنواں پاک ہے یا ناپاک اور ناپاک ہے تو کس قدر ڈول نکالنا چاہئے اور مسجد کے سقاوے میں جو ایک روز قبل کا پانی بھرا ہوا ہے اُس سے نمازیوں نے مطلع ہو جانے پر وضو کیا اور نماز پڑھی اس کا کیا حکم ہے اور کسی وقت کی نماز لوٹائی جائے یا نہیں۔

الجواب:

جبکہ اُس شخص کا نہ حال معلوم نہ پتا چلا اور اُس سے ناقل صرف ایک لڑکا نابالغ بے نماز ہے نہ کنویں میں کوئی آثار نجاست معلوم ہوئے تو ایسی صورت میں حکم نجاست نہیں ہو سکتا کنواں بھی پاک سقایہ بھی پاک نمازیں بھی ٹھیک۔ اگر دل کا شبہ مٹا دینا چاہیں تو صرف بیس ۲۰ ڈول نکال دیں کافی ہے، واللہ سبحنہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۲: از پیلی بھیت مسجد جامع مرسلہ حافظ شوکت علی صاحب ۳ ربیع الآخر ۱۳۲۰ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ مسجد کے کنویں سے پانی ہنود اپنے برتن سے بھریں مرد و عورت دونوں اُن کا بھرنا پانی کا نمازی کی طہارت کو نقصان لائے گا یا نہیں جو شخص اس کو

---

1 رد المحتار فصل فی البئر مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۵۶ 2 قاعدہ سادسہ من القواعد الاشباہ والنظائر سعید کمپنی کراچی ۱ / ۷۹

Fatawa Rizwia Volume 3 ...considers it permissible and gives strength to Hindus against Islam, what should be said to him? Muslims should strive so that from the well of the mosque water is not drawn by Hindus. And if a person tries to prevent this [effort], who is he? And if someone says regarding a scholar's ruling, "What does he know?", what is the ruling on insulting a scholar, and is it permissible to perform prayer behind such a person or not? Explain with evidence, and you shall be rewarded by the Majestic One.

The Answer: Although purity is assumed unless impurity is certainly known, there is no doubt that the vessels and bodies of Hindus are comprised of all sorts of impurities. Among a people where impurity itself is considered a purifier and cleanser, and where cow urine and dung are called 'pavitra' (pure), i.e., purifying, what certainty is there of their purity? Therefore, caution dictates that the mosque's well should be kept away from their use. A person who, without Sharia necessity, opposes Muslims and gives strength to Hindus against them is in a very dangerous state. Imams have written that insulting a religious scholar is disbelief (Kufr). It is stated in Majma' al-Anhar: 'Disdain for the noble and the scholars is Kufr'[1] (To insult sound-believing Sunni scholars and noblemen is Kufr). Repentance is obligatory for such a person. If he does not comply and persists, prayer should never be performed behind him. And Allah the Almighty knows best and His knowledge is most complete.

Issue 83: From Additional Munsifi Azamgarh, sent by Nabi Hasan Khan Sahib, 8 Shawwal 1331 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this issue: a dog was taken out of a well and it was dead. It was not known when it fell in. Due to lack of awareness, its water continued to be used. On the morning the dog was discovered, before that, a person washed his head with that water or wiped it immediately with a cloth and wore a Turkish cap. At that time, moisture was present on the head. Some effect of the water must have reached the cap. In this state, did the cap remain pure or become impure? And how much water should be removed from that well?

The Answer: All the water should be removed. Since the head was wiped, the cap did not become impure. Just remaining damp is not sufficient to cause impurity unless there is enough moisture that a drop falls upon squeezing, as clarified in authoritative books including Ad-Durr etc. (as clarification exists in reliable books, among them being Ad-Durr etc. - Translator). And according to the opinion of the two companions (Sahibayn), the impurity of the well is ruled from the time the falling of any impurity into it becomes known...

1 Majma' al-Anhar Sharh Multaqa al-Abhur, then these words of disbelief are of types, Beirut 1/295. Page 281 of 756

फतावा रज़विया खंड 3 ...जायज़ रखे और इस्लाम के मुक़ाबले में हिंदुओं को शक्ति दे, उसे क्या कहना चाहिए? मुसलमानों को कोशिश करनी चाहिए कि मस्जिद के कुएं से... पानी न भरें और एक शख़्स कोशिश से बाज़ रखे वो कौन है और किसी आलिम साहब के फ़रमाने को कहे कि वो क्या जाने आलिम की इहानत (अपमान) करना क्या है और उस शख़्स के पीछे नमाज़ पढ़ना जाइज़ है या नहीं। बीनूआ बालदलील फ़तूजरूवा इंदल जलील।

उत्तर: हालाँकि जब तक निश्चित रूप से अपवित्रता (नजासत) ज्ञात न हो, उसे पवित्र ही माना जाता है, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिंदुओं के बर्तन और शरीर सभी प्रकार की अपवित्रता से युक्त होते हैं। जिस जाति के यहाँ स्वयं अपवित्रता को ही पवित्र करने वाला माना गया हो और बछिया के मूत्र और गोबर को 'पवित्र' कहा जाता हो, यानी पवित्र करने वाला, उनकी पवित्रता का क्या भरोसा? इसलिए सावधानी इसी में है कि मस्जिद का कुआँ उनके इस्तेमाल से दूर रहे। जो व्यक्ति बिना शरीयत की आवश्यकता के मुसलमानों का विरोध करता है और उनके मुक़ाबले में हिंदुओं को शक्ति देता है, वह अत्यंत खतरनाक स्थिति में है। इमामों ने धार्मिक विद्वान (आलिम) के अपमान को कुफ्र (ईश-निंदा) लिखा है। 'मजमा-उल-अनहर' में है: "विद्वानों और शरीफ़ों (कुलीन लोगों) का अनादर करना कुफ्र है"[1] (सही अकीदा सुन्नी उलेमा और शरीफ़ों का अपमान करना कुफ्र है)। ऐसे व्यक्ति पर तौबा (प्रायश्चित) करना फ़र्ज़ है। यदि वह न माने और ज़िद पर अड़ा रहे, तो उसके पीछे कभी नमाज़ न पढ़ी जाए। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है और उसका ज्ञान पूर्ण है।

मसला 83: एडिशनल मुन्सिफ़ी आज़मगढ़ से, प्रेषक नबी हसन ख़ान साहब, 8 शव्वाल 1331 हिजरी। दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक कुएं से एक कुत्ता निकाला गया और वह मरा हुआ था। यह नहीं मालूम कि वह कब गिर गया था। अनभिज्ञता के कारण उसका पानी इस्तेमाल होता रहा। जिस सुबह वह कुत्ता निकला, उससे पहले उस पानी से सिर धोया गया या तुरंत कपड़े से पोंछकर तुर्की टोपी पहन ली गई। उस समय सिर में नमी मौजूद थी, पानी का कुछ न कुछ प्रभाव टोपी में ज़रूर पहुँचा होगा। इस स्थिति में टोपी पाक (पवित्र) रही या नापाक (अपवित्र)? और उस कुएं से कितना पानी निकाला जाए?

उत्तर: सारा पानी निकाला जाए। चूंकि सिर पोंछ लिया गया था, इसलिए टोपी नापाक नहीं हुई। केवल नमी का बना रहना नापाक करने के लिए पर्याप्त नहीं है, जब तक कि इतनी तरी न हो कि निचोड़ने से बूंद टपके, जैसा कि विश्वसनीय किताबों में स्पष्ट किया गया है, जिनमें 'अल-दुर्र' आदि शामिल हैं

(जैसा कि विश्वसनीय किताबों में इसकी तसरीह मौजूद है, उनमें से 'दर' वगैरह भी हैं - त.)। और साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के कथन के अनुसार, कुएं की नापाकी का हुक्म उसी समय से दिया जाता है जब से उसमें कोई नजासत (अपवित्रता) गिरना ज्ञात हो।

---

1 मजमा-उल-अनहर शरह मुल्तक़ा अल-अब्हुर, फिर ये कुफ़्र के शब्द कई प्रकार के हैं, बेरुत 1/295. पेज 281/756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم جائز رکھے اور اسلام کے مقابلہ میں ہنود کو قوت دیوے اس کو کیا کہنا چاہئے مسلمان کوشش کریں کہ مسجد کے کنویں سے پانی نہ بھریں اور ایک شخص کوشش سے باز رکھے وہ کون ہے اور کسی عالم صاحب کے فرمانے کو کہے کہ وہ کیا جانے عالم کی اہانت کرنا کیا ہے اور اس شخص کے پیچھے نماز پڑھنا جائز ہے یا نہیں۔ بینوا بالدلیل فتوجروا عندالجلیل۔

الجواب: اگرچہ نجاست جب تک یقیناً نہ معلوم ہو طہارت ہی مانتے ہیں مگر شک نہیں کہ ہنود کے برتن بدن سب نجاستوں پر مشتمل ہوتے ہیں جس قوم کے یہاں خود نجاست مطہر اور پاک کرنے والی مانی گئی ہو اور بچھیا کے مُوت گوبر کو پبتر کہیں یعنی پاک کرنے والا ان کی طہارت کی کیا ٹھیک ہے تو احتیاط اس میں ہے کہ مسجد کا کنواں ان کے تصرف سے دور رہے جو شخص بلا ضرورت شرعیہ مسلمانوں کا خلاف کرتا اور ان کے مقابل ہنود کو قوت دیتا ہے سخت خطرناک حالت میں ہے اور عالم دین کی توہین کو ائمہ نے کفر لکھا ہے۔ مجمع الانہر میں ہے: الاستخفاف بالاشراف والعلماء کفر[1] (صحیح العقیدہ سنّی علماء اور اشراف کی توہین کفر ہے) ایسے شخص پر توبہ فرض ہے اگر نہ مانے اور اصرار کرے تو اس کے پیچھے ہرگز نماز نہ پڑھی جائے واللہ تعالیٰ اعلم وعلمہ اتم۔

مسئلہ ۸۳: از اڈیشنل منصفی اعظم گڑھ مرسلہ نبی حسن خاں صاحب ۸ شوال ۱۳۳۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک کنویں میں سے ایک کُتا نکلا اور وہ مرا ہوا تھا یہ نہیں معلوم کہ کب گر گیا تھا اُس کا پانی عدمِ واقفیت کی وجہ سے استعمال میں آتا رہا جس صبح کو وہ کُتا برآمد ہوا اُس سے قبل اُس پانی سے سر دھویا یا فوراً چادر سے اس کو پونچھ کر تُر کی ٹوپی اوڑھ لی اُس وقت سر میں نمی موجود تھی پانی کا کچھ نہ کچھ اثر ٹوپی میں ضرور پہنچا ہوگا اس حالت میں ٹوپی پاک رہی یا کہ ناپاک، اور اس کُنویں سے کتنا پانی نکالا جائے۔

الجواب: کُل پانی نکالا جائے جبکہ سر پونچھ ڈالا تھا تو ٹوپی ناپاک نہ ہوئی صرف نم باقی رہنا ناپاک کرنے کو کافی نہیں جب تک اتنی تری نہ ہو کہ نچوڑنے سے بوند ٹپکے کما صرح بہ فی الکتب المعتمدۃ منھا الدر وغیرہ (جیسا کہ معتبر کتابوں میں اس کی تصریح موجود ہے ان میں سے در وغیرہ بھی ہیں۔ت) اور صاحبین کے قول پر تو کنویں کی ناپاکی کا اُسی وقت سے حکم دیا جاتا ہے جب سے کوئی نجاست اس میں گرنا معلوم ہو اُس سے

---

1 مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر ثم ان الفاظ الکفر انواع بیروت ۱ / ۲۹۵ Page 281 of 756

Fatawa Ridawiyya Volume Three

...deem the previous water pure, so the water used before the [animal's] extraction is not ruled as impure. And Allah Almighty knows best.

Problem 84: From Chittorgarh, Udaipur, Mewar, sent by Mawlwi Qadi Ismail Muhammad Sahab, Imam of Masjid Chhippiyaan, 14 Dhu al-Qi'dah 1331 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: A person's used shoe fell into the mosque's well (which is not ten by ten [cubits]). The state of impurity being present or absent on the fallen shoe is unknown, but the same person's remaining other shoe was seen at that time and there was no trace of impurity on it. In the available books like Durr al-Mukhtar, 'Alamgiriyyah, Kabiri Sharh Munyah al-Musalli, and other books of jurisprudence, apparently no ruling was found for the situation questioned. However, a scholar Rukn al-Din Sahab, resident of Alwar, in his treatise 'Rukn-e-Deen' without any book reference, stated: 'If a shoe falls into a well, all the water should be extracted because it is certain that impurity remains attached to a used shoe, and here it is not even a common affliction (amm balwa) from which avoidance is difficult,' as mentioned in Ghayat al-Awtar Sharh Durr al-Mukhtar. Therefore, there is great confusion from these statements as to which ruling should be considered correct. Should all the water of the well be taken out or should the water be considered pure? It is hoped that a detailed answer with references from books of jurisprudence will be written soon so that the command of the Shariah can be acted upon, as the worshippers are in great distress. Finis.

The Answer:

Since its impurity is not known, the water did not become impure, for "Certainty is not dispelled by doubt" 1 (Certainty is not lost due to doubt. T). It is stated in Tatar-Khaniyyah, al-Tariqah al-Muhammadiyyah, al-Hadiqah al-Nadiyyah, and other reliable books:

Arabic Text	Urdu Translation
سئل الامام الخجندی رحمہ اللہ تعالیٰ عن رکیة وھی البئر وجد فیھا خف اونعل تلبس ویمشی بھا صاحبھا فی الطرقات لایدری متی وقع فیھا ولیس علیه اثر النجاسة ھل یحکم بنجاسة الماء قال لا	Imam al-Khujandi (may Allah have mercy on him) was asked about a well in which a sock or sandal was found that is worn and used for walking in streets and alleys, and it is not known when it fell into the well, and there is no trace of impurity on it; should the water be ruled as impure? He said: No.

1. Fatawa al-Hindiyyah, The Second Type regarding Impurities, Peshawar, 1/47
2. Al-Hadiqah al-Nadiyyah, The Second Category of the two categories from Purification, Nuriyah Ridawiyyah Faisalabad, 2/477

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

...पहले का पानी पाक फ़रमाते हैं तो [जानवर के] निकलने से पहले जो पानी इस्तेमाल हुआ उस पर नापाकी का हुक्म नहीं देते। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ८४: चित्तौड़गढ़, उदयपुर, मेवाड़ से, प्रेषक मौलवी क़ाज़ी इस्माईल मोहम्मद साहब, इमाम मस्जिद छपियाँ, १४ ज़िल-क़ादा १३३१ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: मस्जिद के कुएं में (जो कि दस बाई दस नहीं है) एक व्यक्ति का इस्तेमाल किया हुआ जूता गिर गया। गिरे हुए जूते पर नजासत (अशुद्धता) होने या न होने का हाल मालूम नहीं है, लेकिन उस व्यक्ति का बचा हुआ दूसरा जूता उसी समय देखा गया तो उस पर नजासत का कोई असर नहीं था। मौजूद किताबों जैसे दुर्र-ए-मुख़्तार, आलमगीरिया, कबीरी शरह मुनियतुल मुसल्ली और अन्य फ़िक़्ह की किताबों में इस मसले का ज़ाहिरी तौर पर कोई हुक्म नहीं मिला। अलबत्ता, अलवर निवासी एक आलिम रुकनुद्दीन साहब ने अपने रिसाले 'रुकन-ए-दीन' में बिना किसी किताब के हवाले के यह लिखा है: 'अगर कुएं में जूती गिर जाए तो सारा पानी निकाला जाना चाहिए क्योंकि इस्तेमाल की हुई जूती में नजासत का लगा रहना यक़ीनी है, और यहाँ कोई आम बलवा (ऐसी स्थिति जिससे बचना कठिन हो) भी नहीं है कि जिससे बचाव मुश्किल हो,' जैसा कि ग़ायतुल अवतार शरह दुर्र-ए-मुख़्तार में है। अतः इन कथनों से भारी असमंजस है कि कौन सा मसला सही समझा जाए। क्या कुएं का सारा पानी निकाला जाए या पानी को पाक (शुद्ध) समझा जाए? आशा है कि फ़िक़्ह की किताबों के हवाले के साथ इसका विस्तृत उत्तर जल्द ही लिखा जाएगा ताकि शरीयत के हुक्म पर अमल किया जा सके क्योंकि नमाज़ियों को बड़ी कठिनाई हो रही है। फ़क़त।

अल-जवाब:

चूंकि इसकी नजासत का पता नहीं है, इसलिए पानी नापाक नहीं हुआ, क्योंकि "निश्चितता संदेह से समाप्त नहीं होती" 1 (संदेह के कारण निश्चितता समाप्त नहीं होती। त)। तातारख़ानिया, तरीक़ा-ए-मुहम्मदिया, हदीक़ा-ए-नदिया और अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में उल्लेख है:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
سئل الامام الخجندی رحمہ اللہ تعالیٰ عن رکیۃ وھی البئر وجد فیھا خف اونعل تلبس ویمشی بھا	इमाम अल-खुजंदी (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि) से एक ऐसे कुएं के बारे में पूछा गया जिसमें कोई ऐसा मोज़ा या चप्पल गिरा हुआ पाया गया जो गली-कूचों में पहनकर चलने में

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
صاحبها فى الطرقات لايدرى متى وقع فيها وليس عليه اثر النجاسة هل يحكم بنجاسة الماء قال لا	इस्तेमाल हुआ हो, और यह मालूम न हो कि वह कुएं में कब गिरा, और उस पर नजासत का कोई असर न हो; क्या पानी के नजिस होने का हुक्म दिया जाएगा? आपने फ़रमाया: नहीं।

1. फ़तावा अल-हिन्दिया, नजासत का दूसरा प्रकार, पेशावर, 1/47
2. अल-हदीक़ा अन-नदिया, तहारत की दो श्रेणियों में से दूसरी श्रेणी, नूरिया रज़विया फ़ैसलाबाद, 2/477

पृष्ठ २८२ / ७५६

پہلے کا پانی پاک فرماتے ہیں تو کٹتے کے نکلنے سے پہلے جو پانی استعمال ہوا اس پر حکم ناپاکی نہیں دیتے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۸۴: از چتور گڑھ اودے پور میواڑ مرسلہ مولوی قاضی اسمعیل محمد صاحب امام مسجد چھپیاں ۱۴ ذی القعدہ ۱۳۳۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسجد کے کنویں میں (جو کہ دہ در دہ نہیں ہے) ایک شخص کا مستعملہ جوتا پڑ گیا گرے ہوئے جوتے پر نجاست کے ہونے نہ ہونے کا حال معلوم نہیں مگر اس شخص کا باقیماندہ دوسرا جوتا اسی وقت دیکھا گیا تو اس پر نجاست کا اثر نہیں تھا کتب موجودہ در مختار عالمگیریہ کبیری شرح منیہ المصلی وغیرہ کتب فقہ میں دیکھا گیا تو بظاہر کوئی حکم صورت مسئولہ میں نہیں پایا گیا البتہ ایک عالم رکن الدین صاحب ساکن الور نے اپنے رسالہ رکن دین میں بلا حوالہ کتاب بایں عبارت کہ کنویں میں اگر جوتی گر جائے تو سارا پانی نکالا جائے کیونکہ جوتی مستعملہ میں نجاست کا لگا رہنا یقینی ہے اور یہاں عام بلوٰی بھی نہیں کہ جس سے بچاؤ مشکل ہو چونکہ غایۃ الاوطار شرح در مختار میں ہے پس ان اقوال سے سخت حیرانی ہے کہ کون سا مسئلہ صحیح سمجھا جاوے آیا کنویں کا سارا پانی نکالا جائے یا پانی پاک سمجھا جائے امید کہ جواب اس کا مفصل بحوالہ کتب فقہ جلد تحریر فرمائیں کہ شرع شریف کے حکم پر عمل کیا جائے نمازیوں کو سخت تکلیف ہے۔ فقط

الجواب:

جبکہ اس کی نجاست معلوم نہیں پانی ناپاک نہ ہوا فان الیقین لایزول بالشك ۱ (شک کی وجہ سے یقین زائل نہیں ہوتا۔ ت) تاتارخانیہ و طریقہ محمدیہ وحدیقہ ندیہ و غیر ہا کتب معتمدہ میں ہے :

عربی متن	اردو ترجمہ
سئل الامام الخجندی رحمہ اللہ تعالیٰ عن رکیة وھی البئر وجد فیھا خف اونعل تلبس ویمشی بھا صاحبھا فی الطرقات لایدری متی وقع فیھا ولیس علیه اثر النجاسة ھل یحکم بنجاسة الماء قال لا	امام خجندی رحمہ اللہ تعالیٰ سے ایسے کنویں کے بارے میں پوچھا گیا جس میں کوئی ایسا موزہ یا چپل گرا ہوا پایا گیا جو گلی کوچے میں پہن کر چلنے میں استعمال ہوا ہو اور یہ معلوم نہ ہو کہ وہ کنویں میں کب گرا، اور اس پر نجاست کا اثر نہ ہو، کیا پانی کے نجس ہونے کا حکم دیا جائے گا، آپ نے فرمایا: نہیں۔

۱ فتاوی ہندیہ النوع الثانی من النجاسۃ پشاور ۱/ ۴۷ ۲ حدیقہ ندیہ الصنف الثانی من الصنفین من الطھارۃ نوریہ رضویہ فیصل آباد ۲/ ۴۷۷

A person carelessly threw in a pitcher that was mixed with cow dung, but the narrator who said it was such a pitcher is a Muslim who is not considered just or reliable (non-aadil and non-thiqah). In any case, I had the water extracted using a bucket that is generally not used in that well, but rather it was twice or even two and a half times larger than the usual bucket of that well, which holds at least one pitcher of water. When the bucket started coming out half-full, or even slightly less than half, I stopped the extraction. A Hindu man was drawing the water, and I myself saw the water coming up to the half mark in the bucket. I also saw that the bucket was not submerging in the well. However, the claim that it was filling less than half is the narration of that Hindu. The well is near a river, so water keeps coming in constantly. Although these buckets are not usually put in this specific well, they are used in another well of the same size in the garden. Just a short while before this incident, a hundred or fifty buckets had already been drawn. But since there was an interval and the water filled up again, I had this process repeated anew. The situation is as follows: has the well now become pure (pak) or not? If not, how much water needs to be extracted to make it pure, and when should the extraction be stopped? Which bucket's capacity should be considered? Since it is the month of Ramadan, bringing water from afar is difficult. Therefore, I have high hopes that you will inform me with a detailed answer as soon as possible. An immediate response is requested. In short, is this well pure or not? If it will become pure this way, let me know. Repeatedly, I saw with my own eyes that there was so little water in this well that the bottom of the bucket would sit on the floor; it wouldn't submerge in the water. Water would enter the bucket only by tilting it. Peace be upon you and a good ending.

The Answer: Respected Sahibzada, may your blessings continue. Greetings with honor. If the heart does not accept the word of the unreliable informant (mukhbir ghair-thiqah) who reported throwing the pitcher, or if there's some hidden motive in his statement, or if he is so careless that he says wrong things in such matters without reason, then there is no ruling of impurity (najasat) for the well at all. But if after deliberation (tahri), his word settles in the heart, then the ruling is of purification (tathir). However, continuity (mualat) is not a condition for purifying a well. The consideration is based on the bucket of that specific well. But since a complete emptying (naz-e-kull) is intended here, is it necessary to consider the number of buckets? Yes, if the large bucket is not being filled halfway when it's two and a half times the regular bucket, that won't suffice if half of the well's regular

bucket, or a bucket that can hold one Sa' of Mash (a unit of measure), could have been filled. However, the hundred or fifty buckets that were drawn before that were likely sufficient, even more than enough, to make up for that deficiency. Also, it should be considered that the total volume present at the time the impurity occurred is what matters. Since water is constantly entering this well due to its proximity to the river, any excess remaining at the end, if it's fresh water that just came in, is not counted. For example, if there were a thousand buckets worth of water at the time of the incident, extract a thousand.

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरा भाग)

एक व्यक्ति ने लापरवाही से एक ऐसा घड़ा डाल दिया जो गोबर से मिला हुआ था, लेकिन इसका वर्णन करने वाला कि वह ऐसा घड़ा था, एक ऐसा मुसलमान है जो न्यायप्रिय या विश्वसनीय (ग़ैर आदिल व सिक़ह) नहीं है। बहरहाल, मैंने उसका पानी एक ऐसे डोल (बाल्टी) से निकलवाया जो आमतौर पर उस कुएँ में नहीं डाला जाता, बल्कि उस कुएँ के सामान्य डोल से दोगुना या ढाई गुना बड़ा था, जिसमें कम से कम एक घड़ा पानी आ जाता है। जब डोल आधा या आधे से भी कुछ कम भरकर आने लगा, तो मैंने पानी निकलवाना बंद करवा दिया। एक हिंदू व्यक्ति पानी निकाल रहा था और मैंने खुद देखा था कि पानी डोल में आधे तक आ रहा था। मैंने यह भी देखा था कि डोल कुएँ में डूब नहीं रहा था। लेकिन उस डोल का आधे से कम भरना उस हिंदू का कथन है। कुआँ नदी के करीब है, इसलिए पानी लगातार आता रहता है। हालाँकि ये डोल इस विशेष कुएँ में नहीं डाले जाते, लेकिन इसके बराबर दूसरे कुएँ में जो बाग में है, डाले जाते हैं। फिर इस प्रक्रिया से थोड़ी देर पहले भी सौ-पचास डोल निकाले जा चुके थे, लेकिन चूँकि बीच में अंतराल हो गया और पानी फिर से भर गया, इसलिए नए सिरे से यह काम दोबारा कराया गया जिसका हाल यह हुआ। अब सवाल यह है कि वह कुआँ पाक (शुद्ध) हो गया या नहीं? अगर नहीं, तो कितना पानी निकालने से पाक होगा और कब पानी निकलवाना छोड़ा जाए और किस डोल का एतबार (मान्यता) किया जाए? चूँकि रमज़ान का महीना है, दूर से पानी लाने में तकलीफ़ है, इसलिए आपसे बहुत उम्मीद है कि विस्तृत उत्तर से जल्द से जल्द सूचित करेंगे। तुरंत उत्तर भेजा जाए। संक्षेप में उत्तर दें कि यह कुआँ पाक है या नहीं? यदि इस तरह पाक होगा तो वह अपेक्षित है। पुनः यह कि मैंने खुद देखा था कि इस कुएँ में इतना कम पानी हो जाता था कि डोल का पेंदा तलहटी पर रखा होता था, पानी में डूबता नहीं था, तिरछा करने से पानी डोल में आता था। वस्सलाम खैर खताम।

उत्तर: हज़रत साहिबज़ादा साहब, आपकी बरकतें बनी रहें। सम्मान के साथ सलाम। वह अविश्वसनीय मुखबिर (सूचना देने वाला) जिसने घड़ा डालने की खबर दी, अगर दिल उसकी बात न मानता हो, उसके इस बयान में उसका कोई स्वार्थ हो या वह इतना लापरवाह हो कि बिना कारण ऐसी बातों में गलत बयानी करता हो, तो कुएँ की अपवित्रता (नजासत) का हुक्म ही नहीं है। और अगर तहकीकात (तहरी) से उसकी बात दिल पर बैठ जाए, तो शुद्धिकरण (ततहीर) का हुक्म है। मगर कुएँ के शुद्धिकरण में निरंतरता (मुवालात) शर्त नहीं है। एतबार उस कुएँ के डोल का है, मगर यहाँ चूँकि पूरा खाली करना (नज़-ए-कुल्ल) अभीष्ट है, तो डोलों की संख्या का ध्यान रखना क्या ज़रूरी है? हाँ, आधा

डोल न भरने में इतने बड़े डोल का उस डोल से ढाई गुना होना पर्याप्त नहीं होगा, जबकि उस कुएँ के डोल का आधा या ऐसे डोल का जिसमें एक सा' माश आए, भर सकता हो। लेकिन उससे पहले जो सौ-पचास डोल निकाले गए थे, वे संभवतः उस कमी को पूरा करने के लिए पर्याप्त बल्कि अधिक होंगे। फिर यह भी ध्यान देने योग्य है कि अपवित्रता होने के समय जो कुल मात्रा (जमा माफिया) थी, उसका एतबार है। चूँकि नदी के पास होने के कारण इस कुएँ में हर समय पानी आता रहता है, तो अंत में जो अधिकता रही, वह अगर ताज़ा पानी आया हुआ है तो उसका विचार नहीं किया जाएगा। उदाहरण के लिए, अपवित्रता के समय कुएँ में एक हज़ार डोल पानी था, तो एक हज़ार डोल निकालें।

पेज 284/756

ایک شخص نے بے احتیاطی سے ایسا گھڑا ڈالا جو گوبر سے مخلوط تھا مگر اس کا راوی کہ وہ ایسا گھڑا تھا ایک مسلمان غیر عادل و ثقہ ہے بہر حال میں نے اُس کا پانی ایک ایسے ڈول سے جو علی العموم اُس چاہ میں نہیں پڑتا بلکہ معمولی اُس چاہ کے ڈول سے دو گنا بلکہ ڈھائی گنا تھا جس میں ایک گھڑا بھر پانی کم از کم آ جاتا ہے نکلوایا اور جب ڈول نصف بلکہ نصف سے بھی کسی قدر کم آنے لگا تو پانی نکلوانا موقوف کرا دیا ایک ہندو شخص نے پانی نکالا تھا اور نصف تک پانی ڈول میں آتے میں نے خود دیکھا تھا اور ڈول کو چاہ میں نہ ڈوبتے بھی میں نے دیکھا تھا مگر اس ڈول کا نصف سے کم بھرنا یہ اُس ہندو کی روایت ہے ندی کے قریب ہی چاہ ہے اس وجہ سے پانی برابر آتا رہتا ہے یہ ڈول اگرچہ اس خاص چاہ میں تو نہیں ڈالے جاتے مگر اس کے برابر دوسرا چاہ جو باغ نہیں ہے اس میں ڈالے جاتے ہیں پھر اس اودیو سے تھوڑی دیر پہلے اور بھی سو پچاس ڈول نکالے جا چکے تھے مگر چونکہ درمیان میں وقفہ ہو گیا پانی پھر بھر گیا لہٰذا نئے سرے سے یہ بار دیگر اودیو کرایا جس کا حال یہ ہوا اب آیا وہ کنواں پاک ہو گیا یا نہیں اگر نہیں تو کس قدر پانی نکالنے سے پاک ہو گا اور کب پانی نکلوانا چھوڑا جائے اور کس ڈول کا اعتبار کیا جائے چونکہ رمضان المبارک کے دن ہیں دُور سے پانی لانے میں تکلیف ہے لہٰذا جناب سے بہت قوی امید ہے کہ جواب سے مفصل جلد سے جلد مطلع فرمائیں گے فوراً جواب روانہ ہوگا مختصر جواب کہ یہ چاہ پاک ہے یا نہیں تو اس طرح پاک ہوگا درکار ہے مکرر یہ کہ اس قدر کم پانی اس چاہ میں ہو جاتے میں نے خود دیکھا تھا کہ ڈول کا پیندا تلی پر رکھا ہوتا تھا پانی میں ڈوبتا نہیں تھا ٹیڑھا کرنے سے پانی ڈول میں آتا تھا والسلام خیر ختام۔

الجواب: حضرت صاحبزادہ والا دامت برکاتہم۔ تسلیم مع التکریم۔ مخبر غیر ثقہ جس نے وہ گھڑا ڈالنے کی خبر دی اگر قلب پر اس کی بات نہ جمتی ہو اس بیان میں اس کی کوئی مصلحت ہو یا اتنا لا بالی ہو کہ محض بے سبب ایسے امور میں غلط باتیں کہتا ہو جب تو کنویں کی نجاست ہی کا حکم نہیں اور اگر تحری سے اس کی بات قلب پر جمے تو حکم تطہیر ہے مگر تطہیر بئر میں موالات شرط نہیں اعتبار اس کنویں کے ڈول کا ہے مگر یہاں کہ نزح کل منظور ہے عدداً لحاظ دلو کیا ضرور ہے ہاں نصف ڈول نہ بھرنے میں اتنے بڑے ڈول کا اُس ڈول سے ڈھائی گنا ہے۔ نہ بھرنا کافی نہ ہو گا جبکہ اُس کنویں کے ڈول کا نصف یا ایسے ڈول کا جس میں ایک صاع ماش آئے بھر سکتا ہو مگر اس سے پہلے جو سو پچاس ڈول نکالے گئے تھے۔ وہ غالباً اس کمی کے پورا کرنے کو کافی بلکہ زائد ہوں پھر یہ بھی قابل لحاظ ہے کہ جمع مافیہ وقت وقوع النجاست کا اعتبار ہے جبکہ بوجہ قربِ نہر پانی اس کنویں میں ہر وقت آتا رہتا ہے تو ختم پر جو زیادت رہی وہ اگر تازہ آئی ہوئی ہے ملحوظ نہیں مثلاً مافیہ وقت الوقوع ہزار ڈول تھے ہزار نکال

...were given, purification was achieved, although after removal, due to the inflow of more water, thousands upon thousands (of gallons) are present. In short, in the case under consideration, the well has likely become pure, and you will be able to judge these matters correctly. Even if there is uncertainty regarding the bucket, let a few more be drawn out. And Allah Almighty knows best.

Problem 87: From Bareilly, Khwab Qutub neighborhood, sent by Muhammad Ibrahim, 21 Eid-ul-Fitr 1332 AH. A masonry well with a diameter of three cubits, currently containing 14 feet of water, into which a gecko (or similar lizard) has fallen.

[Arabic quote analysis]: If you say, is it not the case that a small amount is pardoned, without distinction between camel, sheep, or cattle droppings, whether wet or dry, whole or broken, in the countryside or the city, whether the well has a barrier or not? And whatever of these is attached to a pitcher, according to the relied-upon correct view, is small and requires no purification at all. I say: This ruling is explained by necessity in 'At-Tabyeen'. There is no difference between wet and dry, whole and broken, sheep/camel droppings, or cattle dung, due to the inclusion of necessity. And in 'Al-Fath', it says this is the most appropriate view because necessity encompasses all. In 'Al-Tatarkhaniyah', if there is necessity and common affliction, it does not become impure; otherwise, it does. The 'necessity' applies to the falling in [accidentally], not to intentional throwing. As stated in 'Radd al-Muhtar', if he threw it into the water intentionally, there is no necessity in that because it was his own action. Undoubtedly, lowering [the bucket with impurity] is a form of throwing, so it becomes impure, especially in wells in Muslim lands where those drawing water for them are non-Muslim servants, as in the case of the question. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Explanation]: If the question is whether droppings, dung, or manure, whether dry or wet, whole or in pieces, falls into a well in a small quantity—be it in a city or field, and whether the well is covered or not—it is pardoned. Undoubtedly, the dung stuck to a pitcher is a small amount and requires no purification at all; so I answer that this ruling is based on necessity. It is stated in 'Tabyeen' that there is no harm due to necessity if droppings, dung, or manure, whether dry or wet, whole or in pieces, fall into a well. And in 'Al-Fath', it says this is the reason because necessity includes everything. In 'Al-Tatarkhaniyah', it is mentioned that if there is necessity and common hardship, it will not become impure; otherwise, it will. The 'necessity'

applies to impurity falling in on its own, not to intentional throwing. In 'Radd al-Muhtar' it is stated that when someone intentionally throws impurity into water, there is no 'necessity' because that is his own action. And undoubtedly, if a bucket is lowered and cast in [with impurity], the well will become impure, especially those wells in Muslim cities where the water-carriers for Muslims are their non-Muslim servants, as is the case in the question. And Allah Almighty knows best.

1. Tabyeen al-Haqa'iq, Kitab al-Taharah, 1/72
2. Fath al-Qadir, Kitab al-Taharah, 1/87
3. Al-Fatawa al-Tatarkhaniyah, Kitab al-Taharah, 1/192
4. Radd al-Muhtar

जिल्द तीसरी फ़तावा रज़विया

...दिए गए, शुद्धि हो गई, हालाँकि निकालने के बाद ताज़ा पानी आने के कारण फिर हज़ारों (गैलन) मौजूद हैं। संक्षेप में, पूछी गई स्थिति में संभवतः कुआँ शुद्ध हो गया है और आप इन बातों का सही अनुमान लगा सकेंगे। भले ही डोल (बाल्टी) के बारे में कुछ संदेह हो, कुछ और निकलवा दिए जाएँ। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 87: बरेली, मुहल्ला ख़्वाब क़ुतुब से, प्रेषक मुहम्मद इब्राहिम, 21 ईद-उल-फ़ित्र 1332 हिजरी। एक पक्का कुआँ जिसका व्यास तीन हाथ है और जिसमें इस समय 14 फीट पानी मौजूद है, उसमें एक छिपकली (बिछुआ) गिर गई है।

[अरबी उद्धरण का सार]: यदि आप कहें कि क्या यह सच नहीं है कि थोड़ी मात्रा में गंदगी (जैसे मेंगनी या गोबर) क्षमा है, चाहे वह सूखी हो या गीली, साबुत हो या टुकड़ों में, शहर में हो या जंगल में? और जो कुछ घड़े पर चिपका हो, वह कम मात्रा में होने के कारण उसे शुद्ध करने की ज़रूरत नहीं है। मैं कहता हूँ: 'तबीन' के अनुसार यह आदेश 'ज़रूरत' के कारण है। इसमें सूखे, गीले, साबुत या टुकड़ों में कोई अंतर नहीं है क्योंकि ज़रूरत सबको शामिल है। 'फ़तह' में भी यही कहा गया है। 'ततारख़ानिया' के अनुसार, यदि 'ज़रूरत' और 'आम परेशानी' (बलवा) हो, तो पानी नापाक नहीं होगा। लेकिन यह 'ज़रूरत' केवल गंदगी के अपने आप गिरने पर लागू होती है, जानबूझकर डालने पर नहीं। 'रद्दुल मुहतार' के अनुसार, जानबूझकर गंदगी डालना ज़रूरत नहीं बल्कि अपना किया हुआ कार्य है। अतः यदि गंदगी के साथ डोल डाला जाए, तो कुआँ नापाक हो जाएगा, विशेषकर उन स्थानों पर जहाँ गैर-मुस्लिम सेवक पानी निकालते हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू व्याख्या]: अगर यह सवाल हो कि मेंगनी, गोबर, लीद सूखी हो या गीली, साबुत हो या टुकड़े-टुकड़े, कुएँ में कम मात्रा में गिर जाए—चाहे कुआँ शहर में हो या जंगल में, और कुएँ पर ढक्कन हो या न हो—तो वह क्षमा है। बेशक घड़े पर जो गोबर लगा है वह कम मात्रा में होगा तो उसे शुद्ध करने की बिलकुल ज़रूरत नहीं है। तो मैं इसका जवाब देता हूँ कि यह हुक्म ज़रूरत के आधार पर है। 'तबीन' में है कि मेंगनी, गोबर, लीद सूखी हो या गीली, साबुत हो या टुकड़े-टुकड़े कुएँ में गिर जाए तो ज़रूरत के कारण कोई हर्ज नहीं है। और 'फ़तह' में है कि यही वजह है क्योंकि ज़रूरत सबको शामिल है। और 'ततारख़ानिया' में है कि अगर इसमें ज़रूरत और आम परेशानी हो तो नापाक नहीं होगा, वरना नापाक होगा। और ज़रूरत गंदगी के अपने आप गिरने में है, जानबूझकर डालने में नहीं।

'रद्दुल मुहतार' में फ़रमाया कि जब उसने जानबूझकर गंदगी को पानी में फेंका हो तो ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह तो उसका अपना काम है। और इसमें कोई शक नहीं कि अगर डोल को (गंदगी के साथ) लटका कर डाला गया तो कुआँ नापाक हो जाएगा, ख़ास तौर पर वे कुएँ जो मुसलमानों के शहरों में हों और मुसलमानों को पानी पिलाने वाले उनके नौकर गैर-मुस्लिम हों, जैसा कि सवाल की स्थिति में है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

1. तबीन अल-हक़ाएक़, किताब अल-तहारत, 1/72
2. फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-तहारत, 1/87
3. अल-फ़तावा अल-ततारख़ानिया, किताब अल-तहारत, 1/192
4. रद्दुल मुहतार

دئے گئے طہارت ہوگئی اگرچہ بعد اخراج بوجہ جریان امداد پھر ہزار کے ہزار موجود ہوں غرض عہ صورت مستفسرہ میں غالباً کنواں طاہر ہو گیا اور ان باتوں کا صحیح اندازہ جناب فرما سکیں گے اگر چہ دلو کا اشتباہ معلوم ہو وہ چند اب نکلوا دئے جائیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۷: از بریلی محلہ خواب قطب مرسلہ محمد ابراہیم ۲۱ عید الفطر ۱۳۳۲ھ ایک چاہ پختہ جس کا قطر تین ہاتھ ہے اور جس میں اس وقت ۱۴ فٹ پانی موجود ہے اُس میں ایک بچھوا ہو

عہ فان قلت الیس (۱) ان القلیل عفو بلا فرق بین البعر والروث والخنثی والرطب والیابس والصحیح والمنکسر والفلاۃ والمصر ومالھا حاجز من البئر و مالا کل ذلک علی الصحیح المعتمد ولاشک ان مالصق من الخثی بالجرۃ قلیل فلا یحتاج الی التطہیر اصلا اقول: ہذا الحکم معلل بالضرورۃ فی التبیین لافرق بین الرطب والیابس والصحیح والمنکسر والبعر والخنثی والروث بشمول الضرورۃ ۱ اہ وفی الفتح ہو الاوجہ لان الضرورۃ تشمل الکل ۲ اہ وفی التاتارخانیۃ لوفیہ ضرورۃ وبلوی لاینجس والانجس ۱۳اہ (۲) والضرورۃ فی الوقوع لا في الالقاء قصدا قال فی ردالمحتار اذا رماہ فی الماء قصدا فانہ لا ضرورۃ فی ذلک لکونہ بفعلہ ۴ اہ ولاشک ان الادلاء من الالقاء فینجس لاسیما في ابار فی دور المسلمین والمستقون من الکفرۃ لھم خادمون کما في صورۃ السؤال واللہ تعالی اعلم۔ (م)

اگر یہ سوال ہو کہ مینگنی، گوبر، لید خشک ہو یا تر، ثابت ہو یا ریزہ ریزہ، کنویں میں قلیل مقدار میں گر جائے کنواں ناپاک نہ ہو گا اور میں، کنویں پر ڈھکنا ہو یا نہ ہو تو وہ معاف ہے بے شک گھڑے پر جو گوبر لگا ہے وہ قلیل ہو گا تو اس کے پاک کرنے کی اصلاً حاجت نہیں، تو میں اس کا جواب دیتا ہوں کہ یہ حکم ضرورت کی بنا پر ہے تبیین میں ہے مینگنی، گوبر، لید خشک ہو یا تر،

ثابت ہو یا ریزہ ریزہ کنویں میں گر جائے تو بشمول ضرورت کوئی حرج نہیں ہے اھ اور فتح میں ہے یہی وجہ ہے کیونکہ ضرورت سب کو شامل ہے اھ اور تاتارخانیہ میں ہے اگر اس میں ضرورت اور بلوٰی ہو تو نجس نہ ہوگا ورنہ نجس ہوگا اھ اور ضرورت نجاست کے خود بخود واقع ہونے میں ہے قصداً ڈالنے میں نہیں ردالمحتار میں فرمایا کہ جب اس نے نجس کو پانی میں قصداً پھینکا ہو تو ضرورت نہیں ہے کیونکہ یہ تو اس کا اپنا فعل ہے اھ اور بے شک ڈول کو اگر لٹکا کر ڈالا گیا تو کنواں نجس ہو جائے گا، خاص طور پر وہ کنویں جو مسلمانوں کے شہروں میں ہوں اور مسلمانوں کو پانی پلانے والے ان کے خادم کافر ہوں، جیسا کہ سوال کی صورت میں ہے واللہ تعالٰی اعلم (ت)

۱ تبیین الحقائق ، کتاب الطہارۃ ۱/۷۲ ۲ فتح القدیر ، کتاب الطہارۃ ۱/۸۷ ۳ الفتاوی التاتارخانیہ، کتاب الطہارہ ۱/۱۹۲ ۴ ردالمحتار

Fatawa-e-Razawiya, Volume 3

[An object/animal] crumbled into pieces and came out in the bucket while drawing water. How many buckets or how much water should be drawn from this well to purify it? For a large well, where the rule is to empty it completely, two hundred to three hundred (300) buckets have been specified. Can this rule be applied to this well? If this rule cannot be applied to this well, then how many buckets should be drawn from it? The terms "breaking the water" or "emptying the water completely" are not clear. Please specify the number of buckets after knowing the measurements of the well and water mentioned above.

The Answer:

The command is for "all the water" that was in it at the time the impurity was discovered. The estimate of two hundred (200) to three hundred (300) was for the wells of Baghdad the Holy. In this [well], there might be a thousand buckets of water or more; how can the command for "all" be fulfilled with three hundred (300)? Draw fifty (50) buckets of water and then measure how much the level has dropped. Draw more buckets in the same proportion. For example, if fifty buckets lower the level by one foot and the total depth was 14 feet, then six hundred and fifty more buckets should be drawn. And if the inflow of water into the well is not rapid, then after drawing so many buckets that even half a bucket cannot be filled, it will be said that the water has been "broken" (exhausted). And if the inflow is rapid, then the well will become pure upon drawing as many buckets as calculated for that time, even if the same amount of water refills it. It will be said that "all water has been removed," meaning the water that was present at that time. And Allah Almighty knows best.

Issue 88: What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid installed a pipe in a brick-lined well, four cubits deep into the water and twenty-two (22) cubits high, through which water is lifted to a higher elevation. Will the water reached through the pipe become impure due to the previously present impure water in the said well or not? And will the decrease or increase in depth be considered or not? If so, what will be the amount? Similarly, if impurity falls into the pipe, will the water in the well, other than that in the pipe, become impure or not?

The Answer:

Water is highly permeable. Therefore, the Sharia rule is that if someone digs a well in barren land with the permission of the ruler, no one else will be allowed to dig a well

within forty cubits around it on all four sides, so that the water of the first well is not drawn away and decreased.

In Durr-ul-Mukhtar it is stated:

"The protected perimeter (Hareem) of a well is forty cubits from every side when it is dug in barren land with permission."	**The protected circle (Hareem) of a well will be forty cubits (yards) from every side when it is in unpopulated land with the government's permission.**

फतावा रज़विया, जिल्द 3

[कोई चीज़] टुकड़े-टुकड़े हो गई थी और पानी भरते समय डोल में निकल आई। इस कुएं को पाक करने के लिए इसमें से कितने डोल या कितना पानी निकाला जाए? बड़े कुएं के लिए, जहाँ पानी पूरी तरह निकालने का नियम है, दो सौ से तीन सौ (300) तक डोल तय किए गए हैं। क्या इस कुएं के लिए यह नियम लागू हो सकता है? यदि यह नियम इस कुएं के लिए नहीं हो सकता, तो इस कुएं से कितने डोल निकाले जाएं? "पानी तोड़ना" या "पूरी तरह पानी निकालना" जैसे शब्द स्पष्ट नहीं हैं। कुएं और पानी की उपरोक्त माप ज्ञात होने पर डोलों की संख्या निश्चित फरमाई जाए।

उत्तर:

नियम कुल पानी का है जितना अशुद्धि निकलने के समय उसमें था। दो सौ (200) या तीन सौ (300) का अनुमान बगदाद मुकद्दस के कुओं के लिए था। इसमें हज़ार डोल या उससे अधिक पानी होगा; तीन सौ (300) से "कुल" का नियम कैसे पूरा हो सकता है? पचास (50) डोल पानी निकालकर फिर नापा जाए कि कितना घटा। उसी अनुपात से और डोल निकाल लिए जाएं। उदाहरण के लिए, यदि पचास डोल में एक फीट घटा और कुल 14 फीट पानी था, तो साढ़े छह सौ डोल और निकाल लिए जाएं। और यदि कुएं में पानी की आवक तेज़ नहीं है, तो इतने डोलों के बाद कि उसमें आधा डोल भी न भर सके, उसे कहा जाएगा कि पानी "टूट" गया। और यदि आवक तेज़ हो, तो गणना के अनुसार उतने डोल निकालने पर कुआं पाक हो जाएगा, भले ही फिर उतना ही पानी उसमें आ जाए। इसे यह कहा जाएगा कि "कुल पानी निकल गया," यानी उस समय मौजूद पानी। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 88: उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं: ज़ैद ने एक पक्के कुएं में पानी के भीतर चार हाथ गहरा और बाईस (22) हाथ ऊँचा एक नल लगाया, जिससे पानी ऊंचाई पर ले जाया गया। क्या वह पानी, जो नल के ज़रिए पहुँचा, उस कुएं में पहले से मौजूद नापाक पानी के कारण नापाक होगा या नहीं? और इसमें गहराई की कमी या ज़्यादती का ध्यान रखा जाएगा या नहीं? और अगर होगा तो कितनी मात्रा होगी? इसी तरह, अगर नल में अशुद्धि गिर जाए, तो नल के अलावा कुएं का पानी नापाक होगा या नहीं?

उत्तर:

पानी बहुत तेज़ी से रिसता (permeable) है। इसलिए शरीअत में नियम है कि जो व्यक्ति बंजर ज़मीन में सुल्तान (शासक) की अनुमति से कुआं खोदे, उसके चारों तरफ चालीस-चालीस हाथ तक दूसरे को कुआं खोदने की अनुमति नहीं दी जाएगी ताकि पहले कुएं का पानी उस तरफ खिंच कर कम न हो जाए।

दुर्रे मुख्तार में है:

"कुएं का सुरक्षित घेरा (हरीम) हर तरफ से चालीस हाथ होता है जब उसे बंजर भूमि में अनुमति के साथ खोदा जाए।"	**कुएं का महफूज़ दायरा (हरीम) हर तरफ से चालीस हाथ (गज) होगा जब वह गैर-आबाद ज़मीन में सरकार की अनुमति से हो।**

पेज 286 का 756

ریزہ ریزہ ہو گیا تھا پانی بھرتے ہوئے ڈول میں برآمد ہوا ہے اس چاہ کے پاک کر لینے کیلئے کس قدر ڈول یا پانی اس میں سے نکالا جائے بڑا کنواں جس کیلئے پانی بالکل نکالے جانے کی صورت میں دوسو سے تین سو ۳۰۰ تک ڈول معین کئے گئے ہیں اس کنویں کیلئے یہ حکم جاری ہو سکتا ہے اگر یہ حکم اس کنویں کیلئے نہیں ہو سکتا تو اس چاہ میں سے کس قدر ڈول نکالے جائیں لفظ پانی توڑنا یا بالکل پانی نکالا جانا صاف نہیں ہیں چاہ کی اور پانی کی پیمائش متذکرہ بالا معلوم ہونے پر ڈولوں کی تعداد متعین فرمائی جائے۔

الجواب:

کل پانی کا حکم ہے جتنا نجاست نکلنے کے وقت اُس میں تھا دو سو ۲۰۰ تین سو ۳۰۰ کا تخمینہ بغداد مقدس کے کنوؤں کیلئے تھا اس میں ہزار ڈول پانی یا زائد ہوگا تین سو ۳۰۰ سے کل کا حکم کیسے پورا ہو سکتا ہے سو ۵۰ پچاس ۵۰ ڈول پانی کھینچ کر پھرناپا جائے کہ کتنا گھٹا اُسی نسبت سے ڈول نکال لیے جائیں مثلاً پچاس ڈول میں ایک فٹ گھٹا اور ۱۴ فٹ تھا تو ساڑھے چھ سو ڈول اور نکال لیے جائیں اور اگر کنویں میں پانی کی آمد جلد نہیں تو اتنے ڈولوں کے بعد کہ اُس میں نصف ڈول نہ بھر سکے گا اسے کہیں گے کہ پانی ٹوٹ گیا اور اگر آمد جلد ہو تو جتنے ڈول حساب سے اُس وقت اتنے نکالنے پر کنواں پاک ہو جائے گا اگرچہ پھر اتنا ہی پانی اُس میں موجود ہوا سے کہیں گے کہ پانی کل نکل گیا یعنی اُس وقت موجود تھا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۸۸ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں، زید نے ایک چاہ پختہ میں ایک نل پانی سے چار ہاتھ گہرا بائیس ۲۲ ہاتھ کھڑا لگایا جس سے پانی بلندی پر لے گیا پانی جو نل کے ذریعہ

سے پہنچا وہ اس پانی کے نجس ہونے سے جو پہلے سے چاہ مذکور میں تھا نجس ہوگا یا نہیں اور اس میں کمی و زیادتی گہرائی کا لحاظ ہوگا یا نہیں اور اگر ہوگا تو کیا مقدار ہوگی اور اسی طرح نل میں نجاست کے پڑنے سے سوائے نل کے جو پانی چاہ میں ہے نجس ہوگا یا نہیں۔

الجواب:

پانی نہایت نفاذ ہے ولہذا شرع میں حکم ہے کہ جو شخص زمین افتادہ میں باذن سلطان کنواں کھودے اس کے چاروں طرف چالیس چالیس ہاتھ تک دوسرے کو کنواں کھودنے کی اجازت نہ دی جائے گی کہ اول کا پانی اس طرف کھینچ کر کم نہ ہو جائے۔

در مختار میں ہے:

حریم بئر اربعون ذراعاً من کل	**کنویں کا محفوظ دائرہ (حریم) چالیس ہاتھ (گز) ہر جانب**
جانب اذا حفرھا فی موات باذن	**سے ہوگا جب اسے غیر آباد زمین میں حکومت کی**

Fatawa-e-Razvia-Volume 3

Al-Imam[1] It was dug with permission. (T)

In Radd al-Muhtar it is mentioned:

Al-maqsoodu minal hareemi daf'ul dharari kay laa yahfira bihareemihi ahadu biran ukhra fayatahulu ilayha maau birih[2]	**The purpose of the 'hareem' (surrounding area) is to protect the well from harm, because someone could cause damage by digging another well within the circle (hareem) of the first well, causing the water to divert towards their own well. (T)**

The presence of an impure pit (soak pit) near a well makes it impure. Some have said if it is less than five cubits away, others say less than seven cubits. And the correct view is that no matter how far away it is, if the effect of the impurity becomes apparent, it will make it impure, even if it is at a distance of twenty (20) cubits.

In Durr al-Mukhtar it is mentioned:

Al-bu'du baynal bi'ri wal baloo'ati biqadri ma laa yazharu lin-Najsi athar[3]	**There should be enough distance between the well and the impure pit so that the effect of the impurity does not appear in the well. (T)**

In Radd al-Muhtar it is mentioned:

Fil Khulasati wal Khaniyati wat-ta'weelu 'alayhi wa sahhahahu fil Muheet Bahr[4]	**Reference is given to Al-Khulasa and Al-Khaniya; this is what is relied upon, and it has been declared authentic in Al-Muheet, Bahr. (T)**

In the same book it is mentioned:

Fee riwayati khamsati azru'in wa fee riwayati sab'atin wal haasilu annahu yakhtalifu birakhaawatil ardhi wa salaabatiha wa man qaddarahu i'tabara haala ardhih[5]	**There are also narrations of five cubits and seven cubits; the conclusion is that this distance will be determined based on the softness or hardness of the ground and its condition. (T)**

When water, without a passage, seeps through pores alone in such a way, then wherever a tap is installed, there will definitely be a passage...

---

1. Ad-Durr al-Mukhtar, Kitab Ihya al-Mawat, Mujtabai Delhi, 2/255

2. Radd al-Muhtar, Kitab Ihya al-Mawat, Mustafa al-Babi Egypt, 5/308
3. Ad-Durr al-Mukhtar, Fasl fil Bi'r, Mujtabai Delhi, 1/20
4. Radd al-Muhtar, Fasl fil Bi'r, Mustafa al-Babi Egypt, 1/163
5. Radd al-Muhtar, Fasl fil Bi'r, Mustafa al-Babi Egypt, 1/152-163

फतावा-ए-रज़विया - जिल्द 3

अल-इमाम[1] अनुमति से खोदा गया हो। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है:

अल-मक़सूदु मिनल हरीमी दफ़उल धररि कय ला यहफ़िरा बिहरीमिही अहदु बीरन उख़रा फ़यतहवलु इलयहा माउ बीरिह[2]	**हरीम (कुएं के आसपास का क्षेत्र) का उद्देश्य कुएं को नुकसान से सुरक्षित करना है क्योंकि कोई व्यक्ति कुएं के दायरे (हरीम) में दूसरा कुआं खोदकर अपने कुएं की तरफ पानी फेरने से नुकसान पहुँचा सकता है। (त)**

कुएं के पास नापाक गढ़े (नजिस बच्चा) का होना उसे नापाक कर देता है। कुछ ने कहा कि पांच हाथ से कम तक, कुछ ने सात हाथ से कम तक। और सही यह है कि जितनी दूर से नजासत का असर ज़ाहिर हो, वह उसे नापाक कर देगा, चाहे वह बीस (20) हाथ के फासले से हो।

दुर्रे मुख़्तार में है:

अल-बुअदु बयनल बिअरि वल बालूअति बिक़दरि मा ला यज़हरु लिन-नज्सि असर[3]	**कुएं और नापाक गढ़े के बीच इतना फासला हो कि नजासत का असर कुएं में ज़ाहिर न हो। (त)**

रद्द अल-मुह्तार में है:

फ़िल खुलासाति वल खानियति वत्तअवीलु अलैहि व सह़हह़हु फ़िल मुहीत बहर[4]	**खुलासा और खानिया के हवाले से है, इसी पर भरोसा है और मुहीत में इसी को सही करार दिया गया है, बहर। (त)**

उसी में है:

फ़ी रिवायति ख़मसाति अज़रुइन व फ़ी रिवायति सबअतिन वल हासिलु अन्नहु यख़्तलिफ़ु बिरख़ावतिल अर्ज़ि व सलाबतिहा व मन क़द्दरहु इअतबरा हाला अर्ज़िह[5]	**इसमें पांच हाथ और सात हाथ की रिवायतें भी हैं, निष्कर्ष यह है कि यह फासला ज़मीन की नरमी और सख्ती और उसकी स्थिति के लिहाज़ से तय किया जाएगा। (त)**

जब पानी बिना किसी रास्ते (निकासी) के सिर्फ छिद्रों के माध्यम से इस तरह रिसता है, तो जहाँ भी नल लगाया जाएगा, वहाँ निश्चित रूप से रास्ता होगा...

1. अद-दुर्रे मुख्तार, किताब इह्या अल-मवात, मुजतबाई दिल्ली, 2/255
2. रद्द अल-मुह्तार, किताब इह्या अल-मवात, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 5/308
3. अद-दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल फ़िल बिअर, मुजतबाई दिल्ली, 1/20
4. रद्द अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़िल बिअर, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/163
5. रद्द अल-मुह्तार, फ़स्ल फ़िल बिअर, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/152-163

الامام[1] اجازت سے کھودا گیا ہو۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

المقصود من الحریم دفع الضرر کی لایحفر بحریمہ احد بئرا اخری فیتحول الیھا ماء بئرہ[2] (ت)

حریم کا مقصد کنویں کو نقصان سے محفوظ کرنا ہے کیونکہ کوئی شخص کنویں کے دائرے (حریم) میں دوسرا کنواں کھود کر اپنے کنویں کی طرف پھیرنے سے نقصان پہنچا سکتا ہے۔ (ت)

کنویں کے قریب نجس بچہ کا ہونا اسے نجس کر دیتا ہے بعض نے کہا پانچ ہاتھ سے کم تک بعض نے سات ہاتھ سے کم تک، اور صحیح یہ ہے کہ جتنی دُور سے نجاست کا اثر ظاہر ہو نجس کر دے گا اگرچہ بیس ۲۰ ہاتھ کے فاصلہ سے،

در مختار میں ہے:

البعد بین البئر والبالوعۃ بقدر مالا یظھر للنجس اثر[3]

کنویں اور نجس بچہ کے درمیان اتنا فاصلہ ہو کہ نجاست کا اثر کنویں میں ظاہر نہ ہو۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

فی الخلاصۃ والخانیۃ والتعویل علیہ وصححہ فی المحیط بحر[4]

خلاصہ اور خانیہ کے حوالے کے سے ہے اسی پر اعتماد ہے اور محیط میں اسی کو صحیح قرار دیا گیا ہے، بحر۔ (ت)

اُسی میں ہے:

فی روایة خمسة اذرع وفی روایة سبعة اس میں پانچ ہاتھ اور سات ہاتھ کی روایتیں بھی ہیں،

والحاصل انه یختلف برخاوة الارض الحاصل یہ فاصلہ زمین کی نرمی اور سختی اور اس

وصلابتها ومن قدره اعتبر حال ارضه[5] کی مقدار کے لحاظ سے مقرر کیا جائے گا۔ (ت)

جب پانی بلا منفذ صرف مسام کے ذریعہ سے ایسی سرایت کرتا ہے تو جہاں نل لگے گا ضرور منفذ

---

1. الدرالمختار کتاب احیاء الموات مجتبائی دہلی ۲/۲۵۵
2. ردالمحتار کتاب احیاء الموات مصطفی البابی مصر ۵/۳۰۸
3. الدرالمختار فصل فی البئر مجتبائی دہلی ۱/۲۰
4. ردالمحتار فصل فی البئر مصطفی البابی مصر ۱/۱۶۳
5. ردالمحتار فصل فی البئر مصطفی البابی مصر ۱/۱۵۲-۱۶۳

Fatawa Razawiyya, Volume 3

...will create, then how can the water be stopped? The idea of two separate bodies of water is not logical. The impurity of the water above will surely make the water in the pipe impure. In that rare case where filth enters the pipe while it is connected to water, there should be no doubt about the spread of impurity, even if the pipe is very long, as mere depth is not considered in the correct school of thought, as they have stipulated. This is what has appeared to me, and the knowledge of the truth is with my Lord. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best (As he has clarified; this is what I have come to know, true knowledge is with Allah, and Allah Ta'ala knows best-T).

Issue 89: Asked by Maulvi Abdul Shakoor Arkani, 6 Shawwal 1320 AH. What do the scholars of religion say in this matter: If a dead, rotten animal is taken out of a well, what is the ruling regarding the water of that well?

The Answer: If the animal did not have flowing blood (Dam-e-Sa'il), such as a frog, scorpion, fly, wasp, etc., then it is pure. If it had flowing blood, it is impure; all the water should be removed. And Allah Ta'ala knows best.

Issue 90: From Shehram, Daira neighborhood, Ara district, sent by Hafiz Abdul Jalil, 16 Shawwal, Saturday, 1333 AH. What do the scholars of religion say in this matter: If a Rafizi [Shi'a] who prays enters a well, should the well's water be taken out or not? And should one smoke hookah or drink water at a Rafizi's place or not? If someone has already done so, what is the ruling? Clarify and be rewarded.

The Answer: One should not eat or drink anything at a Rafizi's place. They intentionally try to feed filth to the People of Sunnah. Even if he goes into a Sunni's well, if not feces, he will surely urinate; avoidance is necessary. And precaution lies in this: if such a thing happens, all the water should be removed, as is the ruling for every kafir [disbeliever], clearly stated in Radd al-Muhtar from Al-Dhakhira in the Book of Prayer. And Allah Ta'ala knows best (as is the ruling for every kafir; Radd al-Muhtar has clarified this while quoting from the Book of Prayer in Al-Dhakhira-T).

Issue 91: From Ara district, Post Office and town of Rani Sagar, asked by Muhammad Yusuf on Saturday, 20 Dhul Hijjah 1333 AH. A pig fell into a well and was taken out alive. The well is very large, estimated to have twelve yards of water. How much water needs to be removed for it to become pure?

The Answer: It is necessary to remove all the water that was in the well at the time the pig was taken out. There is no difference between a pig being dead or alive...

...पैदा करेगा फिर पानी कैसे रुक सकेगा, उनका दो पानी अलग-अलग होना तर्कसंगत नहीं है। ऊपर का पानी नापाक होना ज़रूर नल के पानी को नापाक करेगा। और वह दुर्लभ स्थिति कि नल में गंदगी गिरे जबकि पानी का जुड़ाव बना हो, तो गंदगी के फैलने में कोई संदेह नहीं होना चाहिए, चाहे नल कितना ही लंबा क्यों न हो, क्योंकि सही मज़हब में महज़ गहराई का एतबार नहीं है जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है। यह वही है जो मुझ पर प्रकट हुआ है और सत्य का ज्ञान मेरे रब के पास है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है (जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है, मुझे यह ज्ञात हुआ, वास्तविक ज्ञान अल्लाह के पास है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है-त)।

मसला 89: मौलवी अब्दुल शकूर अरकानी द्वारा पूछा गया, 6 शव्वाल 1320 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि अगर कुएं में से कोई सड़ा हुआ मृत जानवर निकले तो उस कुएं के पानी का क्या हुक्म है?

जवाब: अगर जानवर में बहता हुआ खून (दम-ए-साईल) नहीं था जैसे मेंढक, बिच्छू मक्खी, भिड़ आदि तो वह पाक (शुद्ध) है और अगर बहता हुआ खून था तो नापाक (अशुद्ध) है, सारा पानी निकाल दें। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 90: शहरम, मोहल्ला दायरा, ज़िला आरा से, हाफ़िज़ अब्दुल जलील द्वारा भेजा गया, 16 शव्वाल, शनिवार, 1333 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि अगर एक राफ़ज़ी (शिया) नमाज़ी कुएं में घुसे तो क्या कुएं का पानी निकाला जाना चाहिए या नहीं? और क्या राफ़ज़ी के यहाँ हुक्का पीना चाहिए या पानी पीना चाहिए या नहीं? अगर पी लिया तो क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

जवाब: राफ़ज़ी के यहाँ कुछ खाना-पीना नहीं चाहिए, वे जानबूझकर सुन्नियों को गंदगी खिलाने की कोशिश करते हैं। अगर वह सुन्नियों के कुएं में भी जाएगा, तो मल नहीं तो पेशाब ज़रूर कर देगा; परहेज़ ज़रूरी है। और एहतियात (सावधानी) इसी में है कि अगर ऐसा हो तो सारा पानी निकाल दिया जाए, जैसा कि हर काफ़िर का हुक्म है, जिसे रद्द अल-मुह्तार में अल-ज़खीरा से नमाज़ की किताब के तहत स्पष्ट किया गया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (जैसा कि हर काफ़िर का हुक्म है; रद्द अल-मुह्तार ने अल-ज़खीरा में किताबुस-सलात से उद्धृत करते हुए इसकी व्याख्या की है-त)।

मसला 91: ज़िला आरा, डाकखाना और कस्बा रानी सागर से, मुहम्मद यूसुफ द्वारा पूछा गया, शनिवार, 20 ज़ुल हिज्जा 1333 हिजरी। एक कुएं में सुअर गिर गया, उसे ज़िंदा निकाला गया और वह कुआं बहुत बड़ा है जिसमें अंदाज़न बारह गज़ पानी है। कितना पानी निकालने से वह पाक होगा?

जवाब: उसे निकालते समय कुएं में जितना पानी था, वह सारा निकालना ज़रूरी है। सुअर के मुर्दा या ज़िंदा होने में कोई अंतर नहीं...

پیدا کرے گا پھر پانی کیونکر رک سکے گا ان کا دو پانی جدا جدا ہونا معقول نہیں اوپر کا پانی ناپاک ہونا ضرور نل کے پانی کو ناپاک کرے گا اور وہ صورت نادرہ کہ نل میں نجاست پڑے بحال اتصال آب اُسی میں ہے سریان نجاست میں شبہ نہ ہونا چاہئے اگرچہ نل کتنے ہی دُور تک ہو کہ مذہب صحیح میں عمق محض معتبر نہیں کما نصوا علیہ ھذا ما ظھر لی والعلم بالحق عند ربی واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم (جیسا کہ انہوں نے تصریح کی ہے، مجھے یہ معلوم ہوا، حقیقی علم اللہ کے ہاں ہے، واللہ تعالٰی اعلم-ت)

مسئلہ ۸۹: مسئولہ مولوی عبدالشکور ارکانی ۶ شوال ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کنوئیں میں سے کوئی جانور مُردہ سڑا ہوا نکل آئے تو اس کنوئیں کے پانی کا کیا حکم ہے۔

الجواب: اگر جانور میں دمِ سائل نہ تھا جیسے مینڈک، بچھو، مکھی، بھڑ وغیرہ تو پاک ہے اور اگر دمِ سائل تھا تو ناپاک ہے کل پانی نکالیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۹۰: از شہرام محلہ دائرہ ضلع آرہ مرسلہ حافظ عبدالجلیل ۱۶ شوال شنبہ ۱۳۳۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر رافضی نمازی کنوئیں میں گھسے تو پانی کنوئیں کا نکالا جاوے یا نہیں اور رافضی کے یہاں حقہ پینا چاہئے یا نہیں اگر پی لیا تو کیا حکم ہے، بینوا توجروا۔

الجواب: رافضی کے یہاں کچھ کھانا پینا نہ چاہئے وہ اہل سنت کو قصداً نجاست کھلانے کی کوشش کرتے ہیں سنیوں کے کنوئیں میں بھی اگر جائیگا تو پاخانہ نہ ہو تو پیشاب کر ہی دے گا احتراز ضرور ہے اور احتیاط اس میں ہے کہ ایسا ہوا تو کل پانی نکال دیا جاوے کما ھو حکم کل کافر

صرح بہ فی ردالمحتار عن الذخیرۃ عن کتاب الصلاۃ واللہ تعالٰی اعلم (جیسا کہ ہر کافر کا حکم ہے ذخیرہ کی کتاب الصلوٰۃ سے ردالمحتار نے نقل کرتے ہوئے اس کی تصریح کی ہے۔ ت)

مسئلہ ۹۱: از ضلع آرہ ڈاک خانہ و قصبہ رانی ساگر مسئولہ محمد یوسف بروز شنبہ ۲۰ ذی الحجہ ۱۳۳۳ھ ایک کنوئیں میں خنزیر گر گیا زندہ نکالا گیا اور وہ کنواں بہت بڑا ہے جس میں اندازا بارہ گز پانی ہے کس قدر پانی نکالنے سے پاک ہوگا۔

الجواب: اُس کے نکالنے کے وقت جتنا پانی کنوئیں میں تھا اُس سب کا نکال جانا ضرور ہے اور خنزیر کے مُردہ زندہ میں کچھ

Fatawa Rizwia Volume 3

It makes no difference whether it is actual impurity. If the water is too much to be removed all at once, it should be removed gradually. For example, if there are three thousand buckets of water and a thousand buckets are removed daily, it will become pure in three days; and if three hundred buckets are removed daily, it will take ten days. And Allah knows best.

Issue 92: 25 Jumadi al-Ula 1337 AH What do the scholars of religion say regarding the issue that if a cow or a goat falls into a well and comes out alive, it is considered pure? The command to draw ten or twenty buckets for peace of mind is a different matter, even though its hooves and the lower part of its legs are certainly soiled daily with urine etc. On what basis is the ruling of purity given? Clarify and you shall be rewarded.

The Answer: On this very basis, there is a rare narration from our master Imam-e-Azam and Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with them) that the well will become absolutely impure by the falling of a cow or goat even if they come out alive, and this was adopted in 'Hawi al-Qudsi'. It is stated in 'Badai':

[Arabic]: Narrated from Abu Hanifa and Abu Yusuf regarding cows and camels that the water becomes impure because they urinate between their thighs, so they are not free from urine. [Urdu Translation]: Regarding cows and camels, there is a narration from Imam Abu Hanifa and Abu Yusuf (may Allah have mercy on them) that the water will become impure because these animals urinate between their thighs, due to which the thighs are not protected from urine. (T)

It is in 'Hilya': [Arabic]: And 'Al-Hawi al-Qudsi' followed what was narrated from Abu Hanifa regarding this mentioned ruling. [Urdu Translation]: Based on the narration of the Imam regarding this mentioned ruling, 'Hawi al-Qudsi' proceeded upon it. (T)

But the correct, famous, relied-upon, and triumphant school of thought (madhhab) is that as long as it is not known for certain that there is some impurity on their body, the well will remain pure. It is stated in 'Khaniya' and 'Hindiya':

[Arabic]: A sheep fell and came out alive; twenty buckets are drawn for peace of mind, not for purification, so much so that if buckets were not drawn and wudu (ablution) was performed, it would be permissible. [Urdu Translation]: If a goat fell into a well and came out alive, twenty buckets should be drawn for peace of mind,

not for purification, so much so that even if these buckets are not drawn, wudu would still be permissible. (T)

---

1 Badai' us-Sanai, Explanation of the quantity by which a place becomes impure, Saeed Company Karachi, 1/57 2 Hilya 3 Fatawa Qazi Khan, Chapter on what falls into a well, Nawal Kishore Lucknow, 1/5

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह वास्तविक अशुद्धता है। यदि पानी बहुत अधिक है और एक साथ नहीं निकाला जा सकता, तो उसे धीरे-धीरे निकालें। उदाहरण के लिए, यदि तीन हजार बाल्टी पानी है और प्रतिदिन एक हजार बाल्टी निकाली जाती है, तो वह तीन दिनों में शुद्ध हो जाएगा; और यदि तीन-तीन सौ बाल्टियां निकाली जाएं तो दस दिनों में। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 92: 25 जमादी अल-उला 1337 हिजरी धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि यदि गाय या बकरी कुएं में गिरकर जीवित बाहर निकल आए, तो कुएं को शुद्ध बताया जाता है? मन की शांति के लिए दस-बीस बाल्टी निकालने का हुक्म अलग बात है, हालांकि निश्चित रूप से उसके खुर और पैरों का निचला हिस्सा प्रतिदिन पेशाब आदि से दूषित होता रहता है, तो शुद्धता का हुक्म किस आधार पर है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: इसी आधार पर हमारे स्वामी इमाम-ए-आज़म और इमाम अबू यूसुफ (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से एक दुर्लभ वर्णन आया है कि गाय या बकरी के गिरने से कुआँ पूरी तरह से अशुद्ध हो जाएगा, भले ही वे जीवित बाहर निकल आएँ, और इसी को 'हावी अल-कुदसी' में अपनाया गया है। 'बदाइ' में है:

[अरबी]: इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम अबू यूसुफ़ से गाय और ऊँट के बारे में वर्णित है कि पानी अशुद्ध हो जाता है क्योंकि वे अपनी जाँघों के बीच पेशाब करते हैं, इसलिए वे पेशाब से मुक्त नहीं रहते। [उर्दू अनुवाद]: गाय और ऊँट के बारे में इमाम अबू हनीफ़ा और अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाहि अलैहिमा) से रिवायत है कि पानी नापाक हो जाएगा क्योंकि ये जानवर अपनी रानों के बीच पेशाब गिराते हैं जिसकी वजह से रानें, पेशाब से महफूज़ नहीं रहती हैं। (त)

'हिलिया' में है: [अरबी]: और 'अल-हावी अल-कुदसी' इस उल्लेखित हुक्म के बारे में अबू हनीफ़ा से वर्णित बात पर चला। [उर्दू अनुवाद]: इस मज़कूर हुक्म के बारे में इमाम साहब की रिवायत की बिना पर हावी कुदसी इस पर चले। (त)

लेकिन सही, मशहूर, विश्वसनीय और विजयी मत यही है कि जब तक उनके शरीर पर किसी अशुद्धता का होना निश्चित रूप से ज्ञात न हो, कुआँ शुद्ध रहेगा। 'खनिया' और 'हिन्दिया' में है:

[अरबी]: एक भेड़ गिर गई और जीवित निकल आई; मन की शांति के लिए बीस बाल्टियाँ निकाली जाती हैं, शुद्धिकरण के लिए नहीं, यहाँ तक कि अगर बाल्टियाँ नहीं निकाली गईं और वूज़ू (वज़ू)

किया गया, तो वह जायज़ होगा। [उर्दू अनुवाद]: अगर कुएं में बकरी गिरी और ज़िंदा निकली तो इत्मीनान-ए-क़ल्बी के लिए बीस डोल निकाले जाएँ, पाक करने के लिए नहीं, हत्ता कि अगर ये डोल न निकाले तो भी वज़ू जाइज़ होगा। (त)

---

1 बदाइ' उस-सनै', उस मात्रा का वर्णन जिससे स्थान अशुद्ध हो जाता है, सईद कंपनी कराची, 1/57
2 हिलिया 3 फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, कुएं में गिरने वाली चीज़ों का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 1/5

فرق نہیں کہ وہ عین نجاست ہے پانی اگر زیادہ ہے ایک ساتھ نہیں نکل سکتا بتدریج نکالیں مثلاً تین ہزار ڈول پانی ہو اور روز ہزار ڈول نکالیں تو تین دن میں پاک ہوجائے گا اور تین تین سو تو دس دن میں۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۹۲: ۲۵ جمادی الاولٰی ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ گائے یا بکری کنویں میں گر کر زندہ نکل آئے تو کنواں پاک بتاتے ہیں تسکینِ قلب کیلئے دس بیس ڈول کا حکم اور بات ہے حالانکہ یقیناً اس کے کھر اور پاؤں کا زیریں حصہ پیشاب وغیرہ میں روز آلودہ ہوا کرتا ہے تو حکم طہارت کس بنا پر ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اسی بنا پر سیدنا امامِ اعظم وامام ابویوسف رضی اللہ تعالٰی عنہما سے ایک روایت نادرہ آئی کہ گائے بکری کے گرنے سے کنواں مطلقاً ناپاک ہوجائے گا اگرچہ زندہ نکل آئیں اور اسی کو حاوی قدسی میں اختیار کیا۔ بدائع میں ہے:

روی عن ابی حنیفۃ وابی یوسف فی البقر والابل انہ ینجس الماء لانہا تبول بین افخاذہا فلا تخلو عن البول 1- گائے اور اونٹ کے بارے میں امام ابوحنیفہ اور ابویوسف رحمہما اللہ سے روایت ہے کہ پانی نجس ہوجائے گا کیونکہ یہ جانور اپنی رانوں کے درمیان پیشاب گراتے ہیں جس کی وجہ سے رانیں، پیشاب سے محفوظ نہیں رہتی ہیں۔ (ت)

حلیہ میں ہے: وعلی ماعن ابی حنیفۃ من ہذا الحکم المذکور مشی الحاوی القدسی 2- اس مذکورہ حکم کے بارے میں امام صاحب کی روایت کی بنا پر حاوی قدسی اس پر چلے۔ (ت)

مگر مذہب صحیح و مشہور و معتمد و منصور یہی ہے کہ جب تک ان کے بدن پر کسی نجاست کا ہونا یقینا نہ معلوم ہو کنواں پاک رہے گا، خانیہ و ہندیہ میں ہے:

وقعت شاۃ وخرجت حیۃ ینزح عشرون دلوا لتسکین القلب لالتطھیر حتی لولم ینزح وتوضأ جاز 3- اگر کنویں میں بکری گری اور زندہ نکلی تو اطمینانِ قلبی کیلئے بیس ڈول نکالے جائیں پاک کرنے کیلئے نہیں حتی کہ اگر یہ ڈول نہ نکالے تو بھی وضو جائز ہوگا۔ (ت)

---

1 بدائع الصنائع اما بیان المقدار الذی یصیر بہ المحل نجسا سعید کمپنی کراچی ۱/۵۷ 2 حلیہ 3 فتاوٰی قاضی خان فصل مایقع فی البئر نولکشور لکھنو ۱/۵

Fatawa Razawiya Volume 3 Also, in Alamgiriyyah, it is quoted from Tabyin by Imam Zayla'i:

[Table Header] Arabic: In the case where something like a sheep falls and is pulled out alive, the correct opinion is that if there is no impurity on its body, the water is pure (briefly). 1 Urdu: If an animal like a goat falls [in the well] and is taken out alive, then the correct religious opinion is that if there is no impurity on its body, the water of the well is pure. (briefly) (T)

[Main Body Text] The Absolute Researcher Imam [Ibn al-Humam] explained this by saying that although the aforementioned matter is apparent, there is a possibility that before falling into the well, it had passed through abundant water such that its body became pure. It is stated in Fath al-Qadir:

[Table Header] Arabic: The summary is that if the animal pulled out alive is inherently impure (najis al-'ayn) or if there is known impurity on its body, all the water must be drained. We said "known impurity" because the jurists said regarding cows and the like that if they are pulled out alive, it is not mandatory to drain any water, even though it is apparent that their thighs are contaminated with urine. However, there is a possibility of their being pure, as it might have fallen (c) into the well after entering abundant water. This, combined with the original state being purity, confirms that draining is not necessary. And Allah the Glorified and Exalted knows best. Urdu: The summary is that if an animal taken out from the well is alive, and if it is inherently impure (a pig) or if impurity is known to be on its body, then all the water of the well will be drained. We spoke about known impurity because the jurists said regarding cows etc. that if they are taken out alive, it is not necessary to drain any water from the well, even though it is apparent that the thighs of these animals are contaminated with urine. However, there is still a possibility of their being pure...

[Commentary Section] (c) It is said in al-Minhah that the pronoun in "saqatat" refers to the impurity, and the pronoun in "dukhuluha" refers to the cow, and the word "ma'an" is in the accusative case as the object of "dukhul". I say, rather the pronoun in "saqatat" also refers to the cow, and the meaning is that the cow or buffalo fell into the well after entering abundant water. If it were as he (the author of al-Minhah) understood, he would have said "bi-dukhuliha", whereas such a discrepancy in pronouns is without cause. (M) (T)

[Footnotes] 1 Fatawa Hindiyyah, Type 3: Well Water, Peshawar, 1/19 2 Minhat al-Khaliq on al-Bahr al-Ra'iq, Book of Purification, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/171

फ़तावा रज़विया जिल्द 3 साथ ही, आलमगीरिया में इमाम ज़ैलई की तबीन से उद्धृत है:

[तालिका शीर्षक] अरबी: यदि भेड़ जैसा कुछ गिर जाए और उसे जीवित निकाल लिया जाए, तो सही मत यह है कि यदि उसके शरीर पर कोई अशुद्धि नहीं है, तो पानी शुद्ध है (संक्षेप में)। 1 उर्दू: यदि बकरी जैसा कोई जानवर गिरा और जीवित निकाल लिया गया, तो सही मत यह है कि यदि उसके शरीर पर अशुद्धि न हो तो कुएं का पानी पाक (शुद्ध) है। (संक्षेप में) (त)

[मुख्य पाठ] पूर्ण शोधकर्ता इमाम [इब्न अल-हुमाम] ने इसकी व्याख्या यह की कि हालांकि उक्त बात स्पष्ट है, फिर भी यह संभावना है कि कुएं में गिरने से पहले वह बहुत अधिक पानी से गुज़रा हो जिससे उसका शरीर शुद्ध हो गया हो। फ़तह अल-क़दीर में है:

[तालिका शीर्षक] अरबी: सारांश यह है कि कुएं से निकाला गया जीवित जानवर यदि स्वतः अशुद्ध (नजिस अल-ऐन) है या उसके शरीर पर ज्ञात अशुद्धि है, तो सारा पानी निकाला जाएगा। हमने "ज्ञात अशुद्धि" कहा क्योंकि विधिवेत्ताओं ने गाय और उसके जैसे जानवरों के बारे में कहा है कि यदि उन्हें जीवित निकाल लिया जाए, तो कुछ भी पानी निकालना अनिवार्य नहीं है, भले ही यह स्पष्ट हो कि उनकी जांघें मूत्र से सनी हुई हैं। लेकिन उनके शुद्ध होने की संभावना हो सकती है क्योंकि वे बहुत अधिक पानी में प्रवेश करने के बाद (ग) कुएं में गिरे हों। यह मूल स्थिति की पवित्रता के साथ मिलकर इस बात की पुष्टि करता है कि पानी निकालना आवश्यक नहीं है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। उर्दू: सारांश यह है कि कुएं से निकला हुआ जानवर यदि जीवित है, यदि वह नजिस अल-ऐन (सूअर) हो या उसके शरीर पर अशुद्धि का ज्ञान हो, तो कुएं का सारा पानी निकाला जाएगा। हमने अशुद्धि के ज्ञान की बात इसलिए की है क्योंकि फ़ुक़हा ने गाय आदि के बारे में फ़रमाया कि यदि ये जीवित निकाल ली जाएं तो कुएं से कुछ पानी निकालना ज़रूरी नहीं है, भले ही इन जानवरों की रानों का पेशाब से लथपथ होना ज़ाहिर बात है, लेकिन उनके पाक होने की फिर भी संभावना हो सकती है...

[व्याख्या अनुभाग] (ग) मिन्हा में कहा गया है कि "सक़तत" का सर्वनाम अशुद्धि के लिए है, और "दुख़ूलुहा" का सर्वनाम गाय के लिए है, और "माअन" 'दुख़ूल' का कर्म होने के कारण मफ़ऊल है। मैं कहता हूँ बल्कि सक़तत का सर्वनाम भी गाय के लिए है, और अर्थ यह हुआ कि गाय या भैंस बहुत अधिक पानी में दाखिल होने के बाद कुएं में गिरी। और अगर वैसा होता जैसा उन्होंने (मिन्हा के

लेखक) समझा, तो वह "बि-दुःखूलिहा" कहते, जबकि ऐसे सर्वनामों में अंतर बिना किसी कारण के है। (म) (त)

[पाद टिप्पणियाँ] 1 फ़तावा हिंदिया, प्रकार 3: कुओं का पानी, पेशावर, 1/19 2 मिन्हात अल-ख़ालिक़ अल अल-बह्र अर-राइक़, पवित्रता की पुस्तक, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/171

فتاوی رضویہ جلد سوم نیز عالمگیریہ میں تبیین امام زیلعی سے ہے:

ان وقع نحو شاۃ واخرج حیاً فالصحیح انہ اذا لم یکن فی بدنہ نجاسۃ فالماء طاہر ۱ اھ مختصراً۔ اگر بکری جیسا کوئی جانور گرا اور زندہ نکال لیا گیا تو صحیح مذہب یہ ہے کہ اگر اس کے بدن پر نجاست نہ ہو تو کنویں کا پانی پاک ہے اھ مختصراً۔ (ت)

امام محقق علی الاطلاق نے اس کی توجیہ یہ فرمائی کہ اگرچہ امر مذکور ظاہر ہے مگر احتمال ہے کہ کنویں میں گرنے سے پہلے آبِ کثیر میں گزری ہوں کہ بدن پاک ہو گیا ہو، فتح القدیر میں ہے:

الحاصل المخرج حیا ان کان نجس العین اوفی بدنہ نجاسۃ معلومۃ نزحت کلھا وانما قلنا معلومۃ لانھم قالوا فی البقر ونحوہ یخرج حیا لایجب نزح شیئ وان کان الظاھر اشتمال بولھا علی افخاذھا لکن یحتمل طہارتھا بان سقطت(عہ) عقیب دخولھا ماء کثیرا ھذا مع الاصل و ھو الطھارۃ تظا فر علی عدم النزح واللہ سبحنہ و تعالی اعلم۔ الحاصل کنویں سے نکلا ہوا جانور اگر زندہ ہو اگر وہ نجس العین (خنزیر) ہو یا اس کے بدن پر نجاست کا علم ہو تو کنویں کا سارا پانی نکالا جائیگا ہم نے نجاست کے علم کی بات اس لئے کی ہے کہ فقہاء نے گائے وغیرہ کے بارے میں فرمایا کہ اگر یہ زندہ نکال لی جائے تو کنویں سے کچھ پانی نکالنا ضروری نہیں اگرچہ ان جانوروں کی رانوں کا پیشاب سے ملوث ہونا ظاہر بات ہے لیکن ان کے پاک ہونے کا پھر بھی احتمال ہوسکتا

عہ قال فی المنحۃ قولہ بان سقطت ای النجاسۃ وضمیر دخولھا للبقر وماء بالنصب مفعول دخول اھ اقول بل ضمیر سقطت ایضاً للبقر والمعنی سقطت فی البئر بعد دخولھا الماء الکثیر ولو کان کمافھم لقال بدخولھا مع ما فیہ من تفکیک الضمائر من دون حاجۃ اھ منہ (م) منحہ میں کہا ہے کہ "سقطت"

کی ضمیر، نجاست اور "دخولھا" کی ضمیر "بقر" کیلئے ہے اور "ماء" پر نصب "دخول" کا مفعول ہونے کی بنا پر ہے اھ میں کہتا ہوں بلکہ سقطت کی ضمیر بھی بقر کیلئے ہے، اور معنی یہ ہوا کہ گائے یا بھینس کثیر پانی میں داخل ہونے کے بعد کنویں میں گری اور اگر ایسے ہوتا جیسے انہوں (صاحبِ منحہ) نے سمجھا تو پھر بدخولھا کہتا، حالانکہ ایسے ضمیروں کا اختلاف ہے جو کہ بلا وجہ ہے اھ منہ (ت)

۱ فتاوی ہندیۃ النوع الثالث ماء الابار من المیاہ پشاور ۱/۱۹ ۲ منحۃ الخالق علی البحر الرائق کتاب الطہارۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۷۱

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Top Box] (Arabic Column): It is said that all water should be drawn for a sheep, but the rules deviate from this as long as its impurity is not known with certainty, as we have said. 1 (Urdu Column): It is that animals enter a large body of water after urinating and then fall into a well, and along with this, that purity is the base principle; these two things make it clear that no water should be drawn from the well, and Allah Almighty knows best. And it was said that if a sheep falls, all the water in the well should be removed, although this is far from the rules as long as its impurity is not known with certainty, as we have described. (T)

[Middle Section - Urdu] Hilya and Bahr, etc., followed them in this. I say: But what is the scope for this possibility in millions of animals that are tied and eating in houses, and the ruling is undoubtedly general? Therefore, another justification is necessary, and Allah is the Guide and Protector (Allah the Almighty is the Guide and Helper. T). This had been occurring to the mind of this humble servant (may his Almighty Lord forgive him) for a long time that here dryness and dispersal are the causes of purity. That is, just as when urine falls on the ground and dries such that no trace remains, the ground becomes pure for prayer, although Tayammum (dry ablution) cannot be performed with it. Similarly, after urine on their bodies dries, the body becomes pure. Also, just as when some solid impurity sticks to a shoe and dries and falls off due to walking on sand or soil, the shoe becomes pure. Likewise, when their droppings or dung stick to the body, dry, and fall off due to lying down, rolling over, or scratching the body, the body becomes pure. However, I did not dare to say this until, by the grace of Allah Almighty, I saw its clarification in Fatawa Ghiyasiyah.

[Middle Boxed Section] (Arabic Column): Where it is said Abu Nasr (may Allah have mercy on him) was asked about someone (6) who washes an animal and the water (7) or sweat from it gets on him. He said: It does not harm him. It was said to him: What if it has rolled in its dung and urine? He said: If it dries and scatters and its essence disappears, then it does not harm him. Based on this... (Urdu Column): Where they said Abu Nasr (may Allah the Almighty have mercy on him) was asked about a person who is bathing an animal and animal's water or sweat gets on him, in response he said that there is no harm. On this, it was asked what if that animal was contaminated with dung and urine? Answer:

[Bottom Boxed Section] (Arabic Column): I say: Similarly, if the impurity of the tail is known and it passes through water such that the impurity is removed, and then it

strikes with its tail after that, what hits him of its wetness does not harm him. 12 Amanahu Ghafaralahu (M) (Urdu Column): I say, similarly, if the impurity on a horse's tail is known and the tail's impurity was removed due to passing through water, then in this situation, the moisture that hits the rider because of the tail striking will not be harmful. 12 Amanahu Ghafaralahu (T)

[Footer] 1 Fath al-Qadir, Chapter on the Well, Sukkur, 1/92 Page 291 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[शीर्ष बॉक्स] (अरबी स्तंभ): कहा गया है कि भेड़ के गिरने पर सारा पानी निकाला जाए, लेकिन नियम इससे अलग हैं जब तक कि उसकी अपवित्रता का निश्चित रूप से पता न हो, जैसा कि हमने कहा है। 1 (उर्दू स्तंभ): यह है कि जानवर पेशाब करने के बाद बहुत सारे पानी में जाने के बाद कुएं में गिर गए हों और इसके साथ यह भी कि पवित्रता मूल सिद्धांत है, ये दोनों चीजें कुएं से कुछ भी पानी न निकालने को स्पष्ट करती हैं, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। और कहा गया है कि बकरी के गिरने पर कुएं का सारा पानी निकाला जाना चाहिए, हालांकि यह नियमों से दूर है जब तक कि निश्चित रूप से उसका अपवित्र होना न पता हो जैसा कि हमने बयान किया है। (त)

[मध्य भाग - उर्दू] हिलिया और बहर वगैरह ने इस पर उनका अनुसरण किया। मैं कहता हूँ: लेकिन उन लाखों जानवरों में इस संभावना की क्या गुंजाइश है जो घरों में बंधे खाते हैं और हुक्म निःसंदेह सामान्य है? इसलिए दूसरी व्याख्या आवश्यक है और अल्लाह ही मार्गदर्शन करने वाला और रक्षक है (अल्लाह तआला मार्गदर्शक और मददगार है। त)। इस फ़कीर (जिसके शक्तिशाली मालिक उसे क्षमा करें) के मन में लंबे समय से यह विचार आ रहा था कि यहाँ सूखना और बिखरना पवित्रता का कारण है। यानी जिस तरह ज़मीन पर पेशाब गिरा और सूख गया कि कोई निशान न रहा, तो ज़मीन नमाज़ के लिए पाक हो गई, हालाँकि उससे तयम्मुम नहीं हो सकता। इसी तरह उनके शरीर पर पेशाब लगकर सूखने के बाद शरीर पाक हो जाता है। साथ ही, जिस तरह जूते में कोई ठोस गंदगी लगी और चलने में रेत-मिट्टी से सूखकर झड़ गई तो जूता पाक हो गया, वैसे ही जब उनकी मेंगनी या गोबर शरीर पर लगकर सूख गया और लेटने, लौटने या बदन खुजाने से झड़ गया तो शरीर पाक हो गया। लेकिन मैं इस पर साहस नहीं करता था यहाँ तक कि अल्लाह तआला के अनुग्रह से 'फ़तावा ग़ियासिया' में इसकी स्पष्ट व्याख्या देखी।

[मध्य बॉक्स वाला भाग] (अरबी स्तंभ): जहाँ कहा गया है कि अबू नसर (अल्लाह उन पर दया करे) से उस व्यक्ति (6) के बारे में पूछा गया जो जानवर को नहला रहा हो और उसका पानी (7) या पसीना उस पर गिर जाए। उन्होंने कहा: उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाता। उनसे कहा गया: क्या होगा यदि वह अपने गोबर और पेशाब में लोट चुका हो? उन्होंने कहा: यदि वह सूख जाए और झड़ जाए और उसका अंश खत्म हो जाए, तो उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाता। तो इस आधार पर... (उर्दू स्तंभ): जहाँ उन्होंने कहा कि अबू नसर रहमतुल्लाह तआला से ऐसे व्यक्ति के बारे में सवाल किया गया जो जानवर को नहला रहा हो और उसे जानवर का पानी या पसीना लग जाए, जवाब में उन्होंने फ़रमाया

कि कोई हर्ज नहीं। इस पर यह पूछा गया कि अगर वह जानवर गोबर और पेशाब से सना हो तो। जवाब:

[नीचे बॉक्स वाला भाग] (अरबी स्तंभ): मैं कहता हूँ: इसी तरह यदि पूंछ की अपवित्रता का पता हो और वह पानी से इस तरह गुज़रे कि गंदगी दूर हो जाए, फिर उसके बाद वह अपनी पूंछ मारे, तो उसकी नमी से जो उसे लगे वह उसे नुकसान नहीं पहुँचाता। 12 अमानहू गफ़रहू (म) (उर्दू स्तंभ): मैं कहता हूँ इसी तरह अगर घोड़े की दुम पर गंदगी का पता हो और पानी में गुज़रने की वजह से दुम की गंदगी खत्म हो गई हो तो उस सूरत में सवार को दुम मारने की वजह से जो नमी लगी वह नुकसानदेह न होगी। 12 अमानहू गफ़रहू (त)

[फुटर] 1 फ़तहुल् क़दीर, कुएं का अध्याय, सुक्कुर 1/92 पेज 756 का 291

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

[اوپر والا خانہ] (عربی کالم): وقیل ینزح من الشاۃ کلہ والقواعد تنبوعنہ ما لم یعلم یقیناً تنجسھا کما قلنا۔1 (اردو کالم): ہے کہ جانور پیشاب کرنے کے بعد کثیر پانی میں داخل ہونے کے بعد کنویں میں گرے ہوں اور اس کے ساتھ یہ بھی کہ طہارت اصل ہے، یہ دونوں چیزیں کنویں سے کچھ پانی نہ نکالنے کو واضح کرتی ہیں واللہ تعالٰی اعلم، اور کہا گیا ہے کہ بکری کے گرنے پر کنویں کا سارا پانی نکالا جائے حالانکہ یہ قواعد سے بعید ہے جب تک یقینی طور اس کا نجس ہونا معلوم نہ ہو جیسے ہم نے بیان کیا ہے۔ (ت)

[درمیانی حصہ - اردو] حلیہ وبحر وغیر ہما میں اس پر ان کی تبعیت کی۔ اقول: مگر لاکھوں جانور کہ گھروں میں بندھے کھاتے ہیں ان میں اس احتمال کی کیا گنجائش اور حکم بلا شبہ عام ہے_____ تو دوسری توجیہ ضرور درکار واللہ الہادی وولی الایادی (اللہ تعالٰی ہادی اور مددگار ہے۔ ت) خاطر فقیر غفر لہ المولی القدیر میں مدت سے یہ خطور کرتا تھا یہاں جفاف و انتشار سبب طہارت ہوں یعنی جس طرح زمین پر پیشاب پڑا اور خشک ہوگیا کہ اثر باقی نہ رہا زمین نماز کیلئے پاک ہوگئی اگرچہ اس سے تیمم نہیں ہوسکتا یوں ہی ان کے بدن پر ان کا پیشاب لگ کر خشک ہونے کے بعد بدن پاک ہوجاتا ہے نیز جس طرح جوتے میں کوئی جرم دار نجاست لگی اور چلنے میں ریت مٹی سے خشک ہو کر جھڑ گئی جوتا پاک ہو گیا یوں ہی جب ان کی مینگنی گوبر بدن پر لگ کر خشک ہو کر لیٹنے لوٹنے بدن کھجانے سے جھڑ گئی بدن پاک ہو گیا مگر اس پر جرات نہ کرتا تھا یہاں تک کہ بفضلہ تعالٰی فتاوٰی غیاثیہ میں اسکی تصریح دیکھی؟

[درمیانی خانہ والا حصہ] (عربی کالم): حیث قال سئل ابونصر رحمہ اللہ تعالی من (۶) یغسل الدابۃ فیصیبہ من مائھا (۷) او عرقھا قال لایضرہ قیل لہ فان کانت تمرغت فی روثھا وبولھا قال اذا جف

وتناثر وذهب عينه فلايضره فعلى عه هذا (اردو كالم): جہاں انہوں نے کہا ابو نصر رحمۃ اللہ تعالیٰ سے ایسے شخص کے بارے میں سوال کیا گیا جو جانور کو نہلا رہا ہو اور اس کو جانور کا پانی یا پسینہ لگ جائے، جواب میں انہوں نے فرمایا کہ کوئی ضرر نہیں، اس پر یہ پوچھا گیا کہ اگر وہ جانور گوبر اور پیشاب سے ملوث ہو تو۔ جواب

[نیچے والا خانہ والا حصہ] (عربی كالم): عه: اقول: وكذا ان علم نجاسة الذنب ومر على الماء بحيث اذهب النجس فضرب بذنبه بعد ذلك لايضره ما اصابه من بلله ۲ امنه غفر له (م) (اردو كالم): میں کہتا ہوں اسی طرح اگر گھوڑے کی دُم پر نجاست کا علم ہو اور پانی میں گزرنے کی وجہ سے دُم کی نجاست ختم ہوگئی ہو تو اس صورت میں سوار کو دُم مارنے کی وجہ سے جو تری لگی وہ مضر نہ ہوگی ۱۲ امنہ غفر لہ (ت)

Fatawa Razawiyya - Volume 3

(Arabic Text): (1) If a horse runs in water, gets its tail wet, and then strikes its rider with it, it should not harm him (ritually). [Footnote 1] (Urdu Translation): In this, they said that when dried dung, etc., falls off the animal's body and it becomes clean, there is no harm. Based on this, if a horse passes through water and its tail gets wet, and then it strikes the rider with its tail, there should be no harm or issue. (T)

Then, by the grace of Allah, I found support for this in 'Bada'i' by Imam Malik al-Ulama: that a kid (baby goat) is impure as long as its body is wet with uterine fluid from birth. It becomes pure once dry, according to the 'Sahibayn' [Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad] who consider vaginal fluids impure. Otherwise, according to the Imam [Abu Hanifa], it is pure even while wet.

(Arabic Text): This is the text: If a kid drops from its mother while wet, it is impure. Even if a shepherd carries it and its moisture gets on their clothes more than the size of a dirham, it prevents the validity of prayer. If it falls into water at that time, it spoils the water. Once it dries, it becomes pure. [Footnote 2] (Urdu Translation): Its wording is: when a kid is born and is still wet with (uterine fluid), it will be impure to the extent that if a shepherd picks it up and the moisture from the kid gets on their clothes, prayer will not be permissible with that garment if the moisture exceeds the size of a dirham. If the kid falls into water in this state, the water will also become impure, and if the kid dries up, then it is pure. (T)

This is, by the grace of Allah, the second answer, and there is no need for what I had directed towards in 'Al-Ahla min al-Sukkar' after it.

(Arabic Text): Note: I say there is a point of consideration here. When the kid falls from its mother, it cannot support itself, so according to them, it is a 'carrier of impurity'. Even if none of it touches the clothes, it is unavoidable unless it's said that as long as the moisture is on the kid, it's in its origin. We have already refuted this in the issue of a bladder falling into a well. May He forgive him (M). (Urdu Translation): I say this is worth considering. When a kid is born, according to the 'Sahibayn' (mercy of Allah be upon them), there is impurity on the kid's body, so because of being a carrier of impurity, the prayer of the person carrying it will not be valid, even if that moisture does not touch the carrier's clothes or body. However, it can be said that as long as the moisture is on the kid's body, it is in its place of origin, whereas we have already refuted this point in the issue of a bladder falling into a well. (T)

1. Fatawa Ghiyathiyya, Chapter on Clarification of Impurities, Maktaba Islamia Quetta, p. 10.
2. Bada'i al-Sana'i, explanation of the quantity by which a place becomes impure, Saeed Company Karachi, 1/76.

फतावा रज़विया - खंड 3

(अरबी पाठ): (१) यदि घोड़ा पानी में दौड़ता है, अपनी पूंछ गीली करता है, और उससे अपने सवार को मारता है, तो उसे नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए। [फुटनोट १] (उर्दू अनुवाद): इसमें उन्होंने कहा कि जब (जानवर के शरीर) पर से गोबर आदि सूख कर झड़ जाए और शरीर उससे साफ हो जाए तो कोई हर्ज नहीं, इस आधार पर घोड़े के पानी में से गुजरने और उसकी पूंछ गीली हो जाने के बाद यदि घोड़े ने अपनी पूंछ सवार को मार दी तो कोई नुक़सान और हर्ज नहीं होना चाहिए। (त)

फिर अल्लाह के शुक्र से इसकी पुष्टि 'बदाए' इमाम मलिक अल-उलमा में देखी कि बकरी का बच्चा पैदा होते ही जब तक उसका शरीर गर्भाशय की नमी से गीला है, वह नापाक है। वह सूख जाने पर पाक हो जाएगा, यानी साहिबैन [इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद] के अनुसार जिनके पास योनि की नमी नापाक है, वरना इमाम [अबू हनीफा] के अनुसार वह गीला होने पर भी पाक है।

(अरबी पाठ): यह उसका पाठ है: यदि बच्चा अपनी माँ से गीली अवस्था में गिरता है, तो वह नापाक है। यहाँ तक कि यदि चरवाहा उसे उठा ले और उसकी नमी कपड़े पर एक दिरहम से अधिक मात्रा में लग जाए, तो वह नमाज़ की अनुमति को रोकता है। यदि वह उस समय पानी में गिर जाए, तो पानी खराब कर देता है। और जब वह सूख जाए, तो पाक हो जाता है। [फुटनोट २] (उर्दू अनुवाद): इसका पाठ यह है: जब बकरी का बच्चा पैदा हो और वह अभी (गर्भाशय की नमी) से गीला हो तो नापाक होगा यहाँ तक कि अगर उसे चरवाहे ने उठा लिया और उस बच्चे की नमी कपड़े को लग गई तो उस कपड़े से नमाज़ जायज़ न होगी जबकि कपड़े को लगने वाली नमी दिरहम की मात्रा से ज़्यादा हो, और अगर इस हालत में बच्चा पानी में गिरा तो पानी भी नापाक हो जाएगा, और अगर वह बच्चा सूख गया तो फिर पाक है। (त)

यह है, अल्लाह के शुक्र से, दूसरा उत्तर और इसके बाद उस चीज़ की कोई ज़रूरत नहीं जिसकी ओर मैंने 'अल-अहला मिन अल-सुक्कर' में निर्देश दिया था।

(अरबी पाठ): टिप्पणी: मैं कहता हूँ इसमें विचार का विषय है, क्योंकि बच्चा जब अपनी माँ से गिरता है तो वह खुद को संभाल नहीं पाता, तो उन दोनों के अनुसार वह 'नजासत का वाहक' है, भले ही उसका कुछ हिस्सा उसके कपड़े को न लगे, और इससे बचना नामुमकिन है, सिवाय इसके कि यह कहा जाए कि जब तक नमी बच्चे पर है वह अपने उद्गम स्थल में है। और हमने कुएं में मूत्राशय गिरने के मसले में पहले ही इसका खंडन कर दिया है। उसे क्षमा किया जाए (म)। (उर्दू अनुवाद): मैं कहता

हूँ यह विचारणीय है कि जब बकरी का बच्चा पैदा होता है तो साहिबैन (रहमतुल्लाहि अलैहिम) के नज़दीक बच्चे के शरीर पर नजासत (अशुद्धि) है, तो नजासत ढोने के कारण उसे उठाने वाले की नमाज़ न होगी, चाहे वह नमी उठाने वाले के कपड़े या शरीर को न लगी हो। मगर यह कहा जा सकता है कि जब तक नमी बच्चे के शरीर पर है वह अपने मूल स्थान (मअदन) में है, हालाँकि हम मूत्राशय के कुएं में गिरने के मसले में इस बात का खंडन कर चुके हैं। (त)

---

1. फतावा ग्यासिया, अशुद्धियों के स्पष्टीकरण पर अध्याय, मकतबा इस्लामिया क्वेटा, पृ. 10।
2. बदाए अस-सनाए, उस मात्रा का वर्णन जिससे स्थान अशुद्ध हो जाता है, सईद कंपनी कराची, 1/76।

पृष्ठ 292/756

(عربی متن): (۱) اذا جری الفرس فی الماء وابتل ذنبه وضرب به علی راکبه ینبغی ان لا یضره ۱۔

(اردو ترجمہ): میں انہوں نے کہا جب (جانور کے بدن) پر سے گوبر وغیرہ خشک ہو کر جھڑ جائے اور بدن اس سے صاف ہو جائے تو کوئی حرج نہیں، اس بناء پر گھوڑے کے پانی میں گزرنے اور اس کی دُم تر ہو جانے کے بعد اگر گھوڑے نے اپنی دُم سوار کو مار دی تو کوئی ضرر اور حرج نہیں ہونا چاہیے۔ (ت)

پھر بحمد اللہ تعالٰی اس کی تائید بدائع امام ملک العلماء میں دیکھی کہ بکری ۲ کا بچہ اسی وقت پیدا ہوا جب تک اس کا بدن رطوبتِ رحم سے گیلا ہے ناپاک ہے خشک ہو کر پاک ہو جائے گا یعنی صاحبین کے طور پر جن کے نزدیک رطوبتِ فرج نجس ہے ورنہ امام کے نزدیک وہ بحال تری پاک ہے،

(عربی متن): وهذا نصه لوسقطت السخلة من امها وهی مبتلة فهی نجسة حتی لو حملها الراعي فاصاب عه بللها الثوب اکثر من قدر الدرهم منع جواز الصلاة ولو وقعت فی الماء فی ذلك الوقت افسدت الماء واذا یبست فقد طهرت ۲۔ (اردو ترجمہ): اس کی عبارت یہ ہے جب بکری کا بچہ پیدا ہو اور وہ ابھی (رحم کی رطوبت) سے تر ہو تو ناپاک ہوگا حتٰی کہ اگر اس کو چرواہے نے اٹھا لیا اور اس بچے کی تری کپڑے کو لگ گئی تو اس کپڑے سے نماز جائز نہ ہوگی جبکہ کپڑے کو لگنے والی تری مقدارِ درہم سے زیادہ ہو، اور اگر اس حالت میں بچہ پانی میں گرا تو پانی بھی ناپاک ہو جائیگا، اور اگر وہ بچہ خشک ہو گیا تو پھر پاک ہے۔ (ت)

یہ ہے بحمد اللہ تعالٰی جوابِ ثانی ولاحاجة بعده الی ما کنت وجهت به فی الاحلی من السکر

(عربی متن): عہ اقول فیه نظر فالسخلة حین تقع من امها لا تستمسك بنفسها فیکون عندهما حاملا للنجاسة وان لم یصب ثوبه ولا بد منه منه شیئ الا ان یقال ان الرطوبة مادامت علی السخلة في معدنها وقد اسلفنا رده في مسألة المثانة تقع في البئر منه غفر له (م) (اردو ترجمہ): میں کہتا ہوں یہ قابلِ غور ہے بکری کا بچہ جب پیدا ہوتا ہے تو صاحبین رحمہما اللہ کے نزدیک بچے کے بدن پر نجاست ہے تو حاملِ نجاست ہونے کی وجہ سے اس کو اٹھانے والے کی نماز نہ ہوگی اگرچہ وہ رطوبت اٹھانے والے کے کپڑے یا بدن کو نہ لگی ہو مگر یہ کہا جاسکتا ہے کہ جب تک رطوبت بچے کے بدن پر ہے وہ اپنے معدن میں ہے حالانکہ اس بات کا رد ہم مثانہ کے کنویں میں گرنے کے مسئلہ میں کر چکے ہیں۔ (ت)

---

1 فتاوٰی غیاثیہ فصل فی بیان النجاسات مکتبہ اسلامیہ کوئٹہ ص ۱۰ 2 بدائع الصنائع اما بیان المقدار الذی یصیر به المحل نجسا سعید کمپنی کراچی ۱/۷۶

Fatawa Razawiyya Volume Three And Allah Almighty knows best (after this, the reason I have stated in "Al-Ahla min al-Sukkar" is no longer needed. T)

Mas'ala 93: From Bareilly city, asked by Nazir Ahmad, Lodhi Toka locality, Shahar-e-Kohna, Saturday, 22 Shaban 1334 AH. If clothes are washed or a bath is taken from an impure well, and it was not known that it was impure, then now that it is known, what should be done with the clothes? What should the person who bathed do? And if food was cooked with that water, what should be done with that food, and is that food pure or impure? The Answer: Clothes should be purified. If one bathed, performed ablution, or washed hands—in short, whatever part of the body the water touched—it should be purified. The food should be given to dogs. And Allah Almighty knows best.

Mas'ala 94: From Amritsar, Amritsar Tehsil, Special Post Office Vadala and Maram, asked by Shamsuddin Sahib, 24 Dhu al-Qi'dah 1334 AH. Protector of the Support of Religion, Mufti of Sharia Mujtaba, Maulana Ahmad Raza Khan Sahib (may his blessings endure), please write this matter in detail: that a well whose entire water is difficult to extract when it becomes impure such that extracting all its water is commanded—i.e., it is a spring-fed well—then for example, Zaid says its entire water should be extracted in three days. Another person says when, according to the authoritative opinion (mufta bihi), a spring-fed well can be purified by extracting three hundred buckets, then in extracting water over three days, firstly, an interval occurs in between, and secondly, it is an unbearable hardship. In short, whatever number of buckets are commanded to be extracted, if an interval occurs in it, i.e., the water stops moving, will those drawn buckets be counted or not? And does that person, despite ignorance, who goes against the authoritative opinion, deserve to give a fatwa or not? The Answer: Since the well is spring-fed, determine the amount of water in it by measurement to see how many buckets it contains. An easy way for this is to tie a stone to a rope and drop it into the well so that the rope does not bend. At the moment the stone reaches the bottom, stop your hand immediately. Then measure the length of the rope that got wet. For example, let four people quickly pull twenty-five buckets each. Then measure in the same way. Suppose that due to these hundred buckets, the water level dropped by one hand (cubit), and the initial measurement was ten hands. Then extract nine hundred more buckets; so they together will make ten hands. Regarding the extraction of water, the correct view in the school of thought is that continuity is not necessary. If you extract one bucket daily, when the required number is completed, the well will become pure.

1 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Wells, Mujtabai Delhi, 1/39 Page 293 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरा और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (इसके बाद "अल-अहला मिन अस-सुक्कर" में जो कारण मैंने बयान किया है उसकी आवश्यकता नहीं रहती। त)

मसाला 93: बरेली शहर से, प्रेषक नज़ीर अहमद, मोहल्ला लोधी टोका, शहर-ए-कोहना, शनिवार 22 शाबान 1334 हिजरी। अगर नापाक कुएं से कपड़ा धोया जाए या नहाया जाए और यह पता न हो कि यह नापाक है, तो अब जब पता चला है तो कपड़ों का क्या करें? और जो नहाया वह भी क्या करे? और अगर उस पानी से खाना पकाया जाए तो उस खाने का क्या करना चाहिए और वह खाना पाक है या नापाक? उत्तर: कपड़े पाक किए जाएं। नहाया, वज़ू किया या हाथ धोए—संक्षेप में शरीर के जितने हिस्से को पानी लगा उसे पाक किया जाए। खाना कुत्तों को डाल दिया जाए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 94: अमृतसर से, अमृतसर तहसील, विशेष डाकखाना वडाला व मरम, प्रेषक शम्सुद्दीन साहब, 24 ज़िल-कादा 1334 हिजरी। दीन की हिमायत के हामी, मुफ्ती-ए-शरअ मुजतबा मौलाना अहमद रज़ा खान साहब (उनका साया बना रहे), आप इस मसले को विस्तार से लिखें: एक कुआं जिसका पूरा पानी निकालना कठिन है, जब वह इस तरह नापाक हो जाए कि उसका पूरा पानी निकालने का हुक्म हो—यानी वह चश्मा-दार (सोता वाला) कुआं है—तो उदाहरण के लिए ज़ैद कहता है कि उसका सारा पानी तीन दिन में निकाला जाए। और एक कहता है कि जब मुफ़्ता बिही (प्रामाणिक मत) के अनुसार तीन सौ डोल (बाल्टी) से चश्मा-दार कुआं पाक हो सकता है, तो तीन दिन में पानी निकालने में एक तो बीच में अंतराल आता है और दूसरा यह 'तकलीफ़-ए-माल-युताक़' (असहनीय कष्ट) है। संक्षेप में, जितने डोल निकालने का हुक्म है, अगर उसमें अंतराल आ जाए यानी पानी की हलचल रुक जाए, तो क्या वे निकाले गए डोल गिने जाएंगे या नहीं? और वह व्यक्ति अज्ञानता के बावजूद मुफ़्ता बिही मत के विरुद्ध बात करता है, क्या वह फतवा देने का हक़दार है या नहीं? उत्तर: चूँकि कुआं चश्मा-दार है, उसमें पानी की पैमाइश (माप) से पता कर लें कि उसमें कितने डोल हैं। इसका आसान तरीका यह है कि रस्सी में कोई पत्थर बांधकर कुएं में इस तरह छोड़ें कि रस्सी में बल न आए। जिस समय पत्थर तल तक पहुँच जाए, तुरंत हाथ रोक लें। फिर रस्सी का जितना हिस्सा पानी में भीगा उसे नाप लें। मान लीजिए चार लोग पच्चीस-पच्चीस डोल जल्दी निकालें, फिर उसी तरह नापें। मान लें कि इन सौ डोलों के कारण पानी एक हाथ कम हो गया और माप में मान लीजिए दस हाथ आया था, तो नौ सौ डोल और निकाल लें; तो वे मिलकर दस हाथ के बराबर हो जाएंगे। पानी निकालने के बारे में सही मज़हब (विचार) यही है कि लगातार निकालना ज़रूरी नहीं है।

अगर रोज़ाना एक डोल करके भी निकालें, जब वांछित संख्या पूरी हो जाएगी, तो कुआं पाक हो जाएगा।

1 अद-दुर अल-मुख्तार, कुएं का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/39 पृष्ठ 756 का 293

فتاوٰی رضویہ جلد سوم واللہ تعالٰی اعلم (اس کے بعد "الاحلی من السکر" میں جو وجہ میں نے بیان کی ہے اس کی ضرورت نہیں رہتی۔ ت)

مسئلہ ۹۳: از شہر بریلی مسئولہ نظیر احمد محلہ لودہی ٹوکہ شہر کہنہ بروز شنبہ ۲۲ شعبان ۱۳۳۴ھ اگر ناپاک کنویں سے کپڑا دھویا جائے یا نہایا جائے اور یہ معلوم نہیں ہے کہ یہ ناپاک ہے تو اب جب معلوم ہوا کپڑے کو کیا کرے اور جو نہایا وہ بھی کیا کرے اور اگر اُس پانی سے کھانا پکایا جائے تو اُس کھانے کو کیا کرنا چاہئے اور وہ کھانا پاک ہے یا ناپاک۔ الجواب: کپڑے پاک کیے جائیں نہایا وضو کیا یا ہاتھ دھوئے غرض جتنے بدن کو پانی لگا اسے پاک کیا جائے کھانا کُتوں کو ڈال دیا جائے، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۹۴: از امر تسر تحصیل امر تسر ڈاک خانہ خاص وڈالہ ومرم مسئولہ شمس الدین صاحب ۲۴ ذی القعدہ ۱۳۳۴ھ حامی حمایت دین مفتی شرع مجتبٰی مولانا احمد رضا خان صاحب مد ظل فیوضاتہ آپ اس مسئلہ کو کامل وجہ سے تحریر فرمائیں کہ ایک چاہ جس کا پانی تمام نکالنا دشوار ہے جب وہ ایسا ناپاک ہو جائے جس سے اُس کا تمام پانی نکالنے کا حکم ہے یعنی وہ چشمہ دار ہے تو مثلاً زید کہتا ہے کہ اس کا تمام پانی تین روز میں نکالا جائے، اور ایک کہتا ہے کہ جب بقول مفتی بہ تین سو ڈول سے چاہ چشمہ دار پاک ہو سکتا ہے تو تین روز میں پانی نکالنے میں ایک تو وقفہ درمیان واقع ہوتا ہے اور دوم تکلیف مالایطاق ہے غرضکہ جس قدر ڈول نکالنے کا حکم ہے اگر اس میں وقفہ واقع ہو یعنی پانی حرکت سے ٹھہر جائے تو وہ ڈول کشیدہ محسوب ہوں گے یا نہیں وہ شخص باوجود جہالت کے قول مفتی بہ کا خلاف کرتا ہے وہ مستحق فتوٰی دینے کا ہے یا نہیں۔ الجواب: جبکہ کنواں چشمہ دار ہے اُس میں پانی پیمائش سے دریافت کر لیں کہ اتنے ڈول ہے اور اس کا یہ آسان طریقہ ہے کہ رسی میں کوئی پتھر باندھ کر کنویں میں اس طرح چھوڑیں کہ

رسی میں خم نہ آئے جس وقت پتھر تہ تک پہنچ جائے معاً ہاتھ روک لیں پھر جس قدر رسی پانی میں بھیگی اُسے ناپ لیں اور مثلاً چار شخص پچیس پچیس ڈول جلد کھینچیں پھر اُسی طرح ناپیں فرض کرو کہ ان سو ڈولوں کے سبب ایک ہاتھ پانی کم ہو گیا اور پیمائش میں مثلاً دس ہاتھ آیا نو سو ڈول اور نکال لیں سو وہ مل کر دس ہاتھ ہو جائیں گے پانی نکالنے میں صحیح مذہب یہی ہے کہ پے در پے ہو نا ضرور نہیں اگر ایک ڈول روزانہ کرکے نکالیں جب تعداد مطلوب پوری ہو جائے گی کنواں پاک ہو جائے گا

1 الدرالمختار فصل في البئر مجتبائي دهلي 1/39 Page 293 of 756

Fatawa Ridawiyya - Volume 3 (Arabic Text): This has been explicitly mentioned in Al-Durr al-Mukhtar and other reliable books. (Translation): The fatwa regarding 300 buckets is based on the wells of Baghdad; wells there contain about that much water. In places where the ruling is to extract all the water, and there are thousands of buckets of water, how can 300 buckets fulfill the requirement of thousands? Allah knows best.

Problem 95: Sent by Mulla Muhammad Ismail, Qasbah Kapas, Mohalla Momnan, Udaipur, 21 Safar 1335 AH. A well has a spring. If a sparrow or mouse falls into it, dies, bloats, bursts, and disintegrates, how many buckets should be extracted? And what should be the weight of the water in each bucket? If a sparrow, mouse, or a person without wudu (ablution), or without ghusl (bath), or one who doesn't pray falls into the well and comes out alive, is it correct to extract all the water or a certain number of buckets? Please clarify and be rewarded.

The Answer: All the water should be extracted, however many buckets it contains. Or, two reliable experts who are knowledgeable about water should estimate and say that there are this many buckets of water in it; if that much is extracted, it will become pure, even if new water continues to flow in. Alternatively, tie a stone to a rope and lower it into the well such that there's no slack. When it reaches the bottom, pull it out and measure the wet portion. Then, for example, quickly extract 100 buckets. After that, measure again with the rope. Calculate based on the reduction from the 100 buckets. For instance, if the first measurement was 10 cubits and the second was 9 cubits, then 100 buckets reduced it by 1 cubit. To reduce 10 cubits, 1000 buckets were needed. Since 100 were removed, extract 900 more. Where all water needs to be extracted, specifying the size of the bucket has no meaning. However, where the ruling is to extract 20 to 30 or 40 to 60 buckets, the rule is that each well's own bucket is considered valid. If a well doesn't have a specific bucket, then a bucket that can hold one Saa' is used. A Saa' is a measure of 270 Tolas. If it is definitely known that there was impurity on the person's body, then all water must be extracted. Otherwise, if a person without wudu or ghusl falls in, 20 buckets are to be extracted. For a sparrow, nothing is required, and for a mouse, 20 buckets if its mouth touched the water, otherwise nothing. Allah knows best.

Problem 96: Sent by Hikmat Yar Khan, Mohalla Shahabad, 24 Jumadi al-Akhirah 1336 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say about this matter: There is a well whose water never runs out. A bloated, stinking mouse was found in it. Now, what is the way to purify it, and in such a case, should prayers be

repeated? If they are to be repeated, for how many days? Please write the authoritative (mufta biha) opinion.

फ़तावा रज़विया - भाग 3 (अरबी पाठ): अल-दुर अल-मुख्तार और अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में स्पष्ट रूप से इसका उल्लेख किया गया है। (अनुवाद): 300 डोल (बाल्टी) का फतवा बगदाद शरीफ के कुओं के आधार पर है; वहाँ कुओं में लगभग इतना ही पानी होता है। जिन स्थानों पर सारा पानी निकालने का आदेश है और वहां हजारों डोल पानी है, वहां 300 डोल से हजारों डोल की आवश्यकता कैसे पूरी हो सकती है? अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 95: प्रेषक मुल्ला मुहम्मद इस्माइल, कस्बा कपास, मोहल्ला मोमनां, उदयपुर, 21 सफर 1335 हिजरी। एक कुआँ चश्मे वाला है। उसमें चिड़िया या चूहा गिरकर मर जाए और फूलकर फट जाए और टुकड़े-टुकड़े हो जाए, तो उसमें से कितने डोल निकाले जाएं और डोल में पानी का वजन कितना हो? चिड़िया या चूहा या कोई व्यक्ति बिना वज़ू या बिना ग़ुस्ल या बे-नमाज़ी कुएँ में गिर जाए और जीवित बाहर आ जाए, तो क्या कुएँ का सारा पानी निकालना सही है या कुछ निश्चित डोल? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: सारा पानी निकाला जाए, जितने भी डोल उसमें हों। या फिर दो विश्वसनीय विशेषज्ञ जो पानी की समझ रखते हों, अंदाजा लगाकर बताएं कि इसमें इतने डोल पानी है; उतना निकाल देने से वह शुद्ध हो जाएगा, भले ही नया पानी लगातार आता रहे। अथवा, रस्सी में पत्थर बांधकर कुएँ में इस तरह डालें कि रस्सी में ढील न रहे। जब वह तल तक पहुँच जाए, तो उसे निकालें और भीगे हुए हिस्से को माप लें। फिर, उदाहरण के लिए, जल्दी-जल्दी 100 डोल निकालें। उसके बाद फिर से रस्सी डालकर मापें। 100 डोल निकालने पर जितनी कमी हुई, उसी के हिसाब से गणना करें। उदाहरण के लिए, पहली माप में पानी 10 हाथ था और दूसरी माप में 9 हाथ रहा, तो पता चला कि 100 डोल में एक हाथ कम होता है। 10 हाथ कम करने के लिए 1000 डोल की आवश्यकता थी। चूंकि 100 निकल गए, इसलिए 900 डोल और निकालें। जहाँ सारा पानी निकालना अनिवार्य है, वहाँ डोल का आकार निश्चित करने का कोई अर्थ नहीं है। हाँ, जहाँ यह आदेश हो कि 20 से 30 या 40 से 60 डोल तक निकालें, वहाँ नियम यह है कि प्रत्येक कुएँ का अपना डोल मान्य है। और जिस कुएँ का कोई विशेष डोल न हो, वहाँ वह डोल जो एक 'साअ' (Saa') समा सके मान्य है। एक 'साअ' 270 तोले का माप है। यदि निश्चित रूप से ज्ञात हो कि उस व्यक्ति के शरीर पर कोई अशुद्धि थी, तो सारा पानी निकलेगा। अन्यथा, बिना वज़ू या बिना ग़ुस्ल वाले व्यक्ति के गिरने पर 20 डोल निकाले जाएंगे। चिड़िया के मामले में कुछ नहीं, और चूहे के लिए 20 डोल यदि उसका मुँह पानी तक पहुँचा हो, अन्यथा कुछ नहीं। अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 96: प्रेषक हिकमत यार खान, मोहल्ला शाहबाद, 24 जमादी उल-आखिरह 1336 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरिया के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं: एक कुआँ है जिसका पानी कभी खत्म नहीं होता। उसमें से एक फूला हुआ, बदबूदार चूहा निकला। अब इसे शुद्ध करने का क्या तरीका है और ऐसी स्थिति में क्या नमाज़ें दोहराई जाएंगी? यदि दोहराई जाएंगी, तो कितने दिनों की? मुफ्ती-बिह (प्रामाणिक) मत लिखें।

पृष्ठ 756 में से 294

فتاوٰی رضویہ جلد سوم نص علیه في الدر المختار وغیرہ من معتمدات الاسفار (درمختار وغیرہ معتمد کتابوں میں اس پر نص کی گئی ہے۔ ت) تین سو ۳۰۰ ڈول پر فتوٰی بغداد شریف کے کنوؤں کے اعتبار سے ہے وہاں کنویں میں اسی قدر پانی ہوتا ہے اور جہاں کل پانی نکالنے کے حکم میں ہزار ڈول پانی ہے تین سو ۳۰۰ ڈول سے ہزار ڈول کیسے ادا ہو سکتے ہیں، واللہ تعالی اعلم مسئلہ ۹۵: مرسلہ ملا محمد اسمعیل قصبہ کپا س محلہ مومناں علاقہ اودے پورا ۲۱ صفر ۱۳۳۵ھ چاہ چشمہ دار ہو اُس میں چڑیا یا چوہا پڑ کر مر جائے اور پھول پھٹ جائے اور ریزہ ریزہ ہو جائے اُس میں سے کتنے ڈول نکالے جائیں اور ڈول کس قدر وزن پانی کا ہو۔ چڑیا یا چوہا یا آدمی بے وضو یا بے غسل یا بے نمازی کنویں میں گر جائے اور زندہ نکل آئے تو کنویں کا پانی تمام نکالنا یا کس قدر ڈول نکالنا درست ہے۔ بینوا توجروا۔ الجواب: کل پانی نکالا جائے جتنے ڈول اس میں ہیں یا تودو ثقہ مبصر جو پانی میں نگاہ رکھتے ہیں اندازہ کرکے بتائیں کہ اس میں اتنے ڈول پانی ہے اس قدر نکال دیں پاک ہوجائے گا اگر چہ نیا پانی برابر آتا رہے یا رسی میں پتھر باندھ کر کنویں میں اس طرح ڈالیں کہ رسی میں خم نہ آئے جب تہہ کو پہنچ جائے نکال کر جتنی بھیگی ہو ناپ لیں اور مثلاً سو ۱۰۰ ڈول بتعجیل نکالیں اس کے بعد پھر رستی ڈال کر ناپیں سو ڈول میں جتنا گھٹا اُسی کے حساب سے نکال لیں مثلاً پہلی پیمائش میں پانی دس ۱۰ ہاتھ تھا دوسری میں نو ۹ ہاتھ رہا تو معلوم ہوا کہ سو ۱۰۰ ڈول میں ایک ہاتھ گھٹتا ہے دس ۱۰ ہاتھ پر ہزار ڈول چاہئے تھے سو نکل گئے نو سو ۹۰۰ اور نکال دیں جہاں کل پانی نکالنا ہے ڈول کی مقدار معین کرنے کے کوئی معنی نہیں ہاں جہاں یہ حکم ہوتا ہے کہ بیس ۲۰ سے تیس ۳۰ یا چالیس ۴۰ سے ساٹھ ۶۰ ڈول تک نکالیں وہاں اس کی تعیین یہ ہے کہ ہر کنویں کیلئے اُسی کا ڈول معتبر ہے اور جس کنویں کا کوئی خاص ڈول نہ ہو وہاں وہ ڈول جس میں ایک صاع ماش آسکے صاع دوسو ستر ۲۷۰ تولے کا پیمانہ ہے۔ اگر ۴

اس کے بدن پر کوئی نجاست ہونا تحقیق معلوم ہو تو کل پانی نکلے گا ورنہ بے وضو یا بے غسل آدمی کے گرنے میں بیس ۲۰ ڈول اور چڑیا میں کچھ نہیں اور چوہے میں بیس ۲۰ اگر اس کا منہ پانی کو پہنچا ہو ورنہ کچھ نہیں۔ واللہ تعالی اعلم مسئلہ ۹۶: مرسلہ حکمت یار خان محلہ شاہ آباد ۲۴ جمادی الآخرہ ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں، ایک کنواں ہے جس کا پانی کبھی نہیں ٹوٹتا اُس میں سے ایک چوہا پھولا ہوا بدبودار نکلا اب اس کے پاک کرنے کی کیا صورت ہے اور ایسی صورت میں نماز لوٹائی جائیگی یا نہیں؟ اگر لوٹائی جائے گی تو کتنے دن کی، مفتی بہ قول تحریر فرمائیں۔

Volume Three

Fatawa Rizvia

The Answer:

There is no need to drain all the water; just draw out as many buckets as the amount of water currently present in it, and it will become pure. Repeating the prayers of three days and nights is better. And Allah the Almighty knows best.

Issue 97: Sent by Hikmat Yar Khan, Mohalla Shadabad, 25 Jumadi al-Akhira 1337 AH.

Question: What do the scholars of Ahl-e-Sunnat, the vanishers of innovation and extinguishers of darkness, His Eminence Maulana Qibla and Kaaba (may his high shadow last forever), say about a well issue presented in your presence yesterday? Four days have passed since its occurrence, and on that same day, the issue was asked from a scholar of Ahl-e-Sunnat wa Jama'at. He stated that when the water of this well does not run out, it becomes pure by drawing 360 buckets of water. From yesterday's fatwa of your presence, it was learned that the well did not become pure. Now it is requested to know whether the well became pure in the aforementioned manner or not. Also, acting upon the mentioned manner, since that day, prayers have been offered continuously using water from the same well for Wudu (ablution) and Ghusl (ritual bath). Now, what is your ruling in this situation?

The Answer:

May the Almighty Lord forgive, that issue was misstated. The bodies and clothes of those who performed Wudu and Ghusl became impure, and all those prayers were wasted. If it does not cause great hardship due to the large number of people involved, then this is the ruling of the school of thought: that all those people should purify their bodies and clothes and repeat those prayers. If there is severe hardship, Sharia does not impose hardship. Therefore, if those 360 buckets plus the buckets used for Wudu, Ghusl, etc., in those days reached the estimated amount of water present at that time, then the well has now become pure. Otherwise, as many as remain should be drawn out now. And Allah the Almighty knows best.

जिल्द तीसरी

फ़तावा रज़विया

जवाब:

पानी पूरा निकालने की कोई ज़रूरत नहीं है, जितना पानी उसमें मौजूद है उतने डोल निकाल दें, वह पाक हो जाएगा। तीन दिन-रात की नमाज़ों को फिर से पढ़ना बेहतर है, वल्लाह तआला आलम।

मसला 97: मुरसिला हिकमत यार ख़ान, मोहल्ला शादाबाद, 25 जमादी अल-आख़िरा 1337 हिजरी।

सवाल: अहले सुन्नत के उलमा, बिदअत मिटाने वाले और अंधेरा दूर करने वाले, हज़रत मौलाना किबला व काबा (अल्लाह उनका साया ताज़ा रखे), क्या फरमाते हैं कि एक कुएं का मसला जो कल आपकी ख़िदमत में पेश किया गया था, उसे हुए आज चार दिन हो गए। उसी दिन अहले सुन्नत व जमाअत के एक मौलवी साहब से यह मसला पूछा गया था, उन्होंने कहा था कि जब इस कुएं का पानी खत्म नहीं होता है, तो 360 डोल पानी निकालने से वह पाक हो जाएगा। कल आपके फतवे से मालूम हुआ कि कुआं पाक नहीं हुआ। अब यह दरयाफ्त करना है कि बयान की गई सूरत में कुआं पाक हुआ या नहीं? और उसी सूरत पर अमल करते हुए उस दिन से बराबर उसी कुएं के पानी से वज़ू और गुस्ल करके नमाज़ पढ़ी जा रही है, अब इस सूरत में हुज़ूर का क्या हुक्म है?

जवाब:

मौला तआला माफ़ फ़रमाए, वह मसला गलत बयान किया गया। वज़ू और गुस्ल करने वालों के बदन और कपड़े नापाक हो गए और वह सब नमाज़ें बेकार गईं। अगर मुब्तला लोगों की कसरत की वजह से बहुत ज़्यादा परेशानी (हरज-ए-अज़ीम) न हो, तो मज़हब का यही हुक्म है कि वह सब लोग अपने बदन और कपड़े पाक करें और ये नमाज़ें दोबारा पढ़ें। और अगर इसमें बहुत ज़्यादा मशक्कत (हरज-ए-शदीद) हो, तो शरीयत मशक्कत में नहीं डालती। फिर वे 360 डोल और उन दिनों में वज़ू और गुस्ल वगैरह के लिए जितने डोल निकले, वे सब मिलकर अगर उस वक्त मौजूद पानी के अंदाज़े तक पहुँच गए, तो कुआं अब पाक हो गया, वरना जितने बाकी रह गए हों अब निकाल लिए जाएँ। वल्लाह तआला आलम।

पेज 295 / 756

جلد سوم

فتاویٰ رضویہ

الجواب:

پانی توڑنے کی کوئی حاجت نہیں جتنا پانی اس میں موجود ہے اتنے ڈول نکال دیں پاک ہو جائیگا تین دن رات کی نماز کی اعادہ بہتر ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۷: مرسلہ حکمت یار خان محلہ شاد آباد ۲۵ جمادی الآخرہ ۱۳۳۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے اہلسنت و ماحی بدعت قاطع ظلمت حضرت مولانا قبلہ و کعبہ مدظلہ العالی کہ ایک مسئلہ بئر جو کہ کل حضور کی خدمت میں پیش کیا گیا تھا اس کے وقوع کو آج چار دن ہوئے اور اُسی دن ایک مولوی اہلسنت و جماعت سے وہ مسئلہ دریافت کیا گیا اُنہوں نے یہ کہا کہ جب اس کنویں کا پانی نہیں ٹوٹتا ہے تو تین سو ساٹھ ۳۶۰ ڈول پانی نکالنے سے پاک ہو جائیگا کل حضور کے فتوے سے معلوم ہوا کہ کنواں پاک نہیں ہوا اب دریافت طلب ہے کہ صورتِ مذکورہ سے کنواں پاک ہوا یا نہیں وایضاً صورتِ مذکور پر عمل کر کے اُس روز سے برابر اُسی سے وضو اور غسل کر کے نماز پڑھی جاتی ہے اب اس صورت میں حضور کا کیا حکم ہے۔

الجواب:

مولیٰ تعالیٰ معاف فرمائے وہ مسئلہ غلط بیان میں آیا وضو و غسل کرنے والوں کے بدن اور کپڑے ناپاک ہوئے وہ سب نمازیں بیکار گئیں اگر حرجِ عظیم بوجہ کثرتِ مبتلایان نہ ہو تو مذہب کا یہی حکم ہے کہ وہ سب لوگ اپنے بدن اور کپڑے پاک کریں اور یہ نمازیں پھیریں اور اس میں حرجِ شدید ہو تو شریعت حرج میں نہیں ڈالتی پھر ۳۶۰ ڈول وہ اور اتنے دنوں میں جتنے ڈول وضو اور

غسل وغیرہ کیلئے نکلے وہ سب ملا کر اگر اس وقت کے موجود پانی کے اندازے تک پہنچ گئے کنواں اب پاک ہو گیا ورنہ جتنے باقی رہے ہوں اب نکال لئے جائیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

Volume Three Fatawa Razawiyya

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Chapter of Tayammum

Problem 98: From Sarnia, District Bareilly, inquired by Sheikh Amir Ali Razvi, 16 Shawwal 1330 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: the congregation for Eid prayers, Friday prayer, or the five daily prayers is ready. Zaid is without wudu (ablution). If he performs wudu, the prayer will finish. In such a situation, in which prayer can he join without wudu? The Answer: No prayer can be performed without wudu. If there is a fear of missing Eid or funeral prayers, one should perform Tayammum (dry ablution). For Friday prayer and the five daily prayers, wudu is mandatory even if the Friday prayer or congregation is missed. And Allah the Almighty knows best.

Problem 99: Inquired by Maulvi Syed Khurshid Ali Sahib, 11 Rabi al-Akhir Sharif from Hasti Di. What do the scholars of religion say regarding this matter: during the period of wiping (Masah) on socks, there is a need for Ghusl (ritual bath), but due to some excuse, Ghusl cannot be performed. Can Tayammum be performed without removing the socks or not? Please explain and be rewarded. The Answer: Indeed, he can. There is no need to remove the socks in Tayammum because it only consists of two strikes (of the hands on soil) for the face and hands, in which feet have no part at all. [Arabic]: Fi Fasl al-Mas'h ala al-Khuffayn min al-Khaniyyah | In the Khaniyyah, section on wiping over leather socks: regarding feet in Tayammum...

जिल्द सोम (तीसरा भाग) फतावा रज़विया

बिस्मिल्लाह हिर-रहमान निर-रहीम

बाब-उत-तयम्मुम (तयम्मुम का अध्याय)

मसला ९८: सरनिया, जिला बरेली से, मुस्तौ़ला शेख अमीर अली रिज़वी, १६ शव्वाल १३३० हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ईदैन की नमाज़ या जुमा की नमाज़ या पंजगाना (पाँच वक्त) की जमाअत तैयार है, ज़ैद बे-वज़ू है। अगर वह वज़ू करेगा तो नमाज़ खत्म हो जाएगी। ऐसी स्थिति में वह किस नमाज़ में बे-वज़ू शामिल हो सकता है? जवाब: बिना वज़ू के कोई नमाज़ नहीं हो सकती। अगर ईदैन या जनाज़ा की नमाज़ छूट जाने का डर हो, तो तयम्मुम करें। जुमा और पंजगाना नमाज़ों के लिए वज़ू करना लाज़मी है, चाहे जुमा और जमाअत छूट ही क्यों न जाए। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला ९९: मुस्तौ़ला मौलवी सैयद खुर्शीद अली साहब, ११ रबीउल आखिर शरीफ, हस्ती डी से। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि मोज़े पर मसह की मुद्दत के दौरान गुस्ल की ज़रूरत पड़ गई और किसी उज़्र (कारण) की वजह से गुस्ल नहीं कर सकता, तो क्या वह मोज़े उतारे बिना तयम्मुम कर सकता है या नहीं? बयान फरमाएं ताकि सवाब पाएं। जवाब: बेशक कर सकता है। तयम्मुम में मोज़ा उतारने की कोई ज़रूरत नहीं क्योंकि इसमें सिर्फ चेहरे और हाथों पर दो ज़रब (मिट्टी पर हाथ मारना) हैं, जिनमें पैरों का कोई हिस्सा नहीं है। फी फसलिल मसहि अलल खुफ़्फ़ैनी मिनल खानिया | खानिया की फसल 'मोज़ों पर मसह' में है: पैरों का तयम्मुम में...

पृष्ठ २९७/७५६

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

بسم اللہ الرحمن الرحیم

باب التیمم

مسئلہ ۹۸: از سر نیا ضلع بریلی مسئولہ شیخ امیر علی رضوی ۱۶ شوال ۱۳۳۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ نمازِ عیدین یا نمازِ جمعہ یا پنجگانہ کی جماعت تیار ہے زید بے وضو ہے اور اگر وضو کریگا تو نماز ختم ہو جائیگی ایسی حالت میں کون سی نماز میں بے وضو شامل ہو سکتا ہے؟ الجواب: بے وضو کوئی نماز نہیں ہو سکتی عیدین یا جنازہ کی نماز جاتی رہنے کا اندیشہ ہو تو تیمم کرے، جمعہ و پنجگانہ کیلئے وضو کرنا لازم ہے اگرچہ جمعہ وجماعت فوت ہو جائے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۹: مسئولہ مولوی سید خورشید علی صاحب ۱۱ ربیع الآخر شریف از ہستی ڈی کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مدتِ مسح موزہ میں غسل کی ضرورت ہوئی اور بسبب کسی عذر کے غسل نہیں کر سکتا تو تیمم بلا اتارنے موزے کے کر سکتا ہے یا نہیں۔ بینوا توجروا۔ الجواب: بیشک کر سکتا ہے تیمم میں موزہ اتارنے کی کچھ حاجت نہیں کہ وہ صرف چہرہ و دست پر دو ضرب ہیں جن میں پاؤں کا اصلاً حصہ نہیں۔ فی فصل المسح علی الخفین من الخانیۃ | خانیہ فصل المسح علی الخفین میں ہے: پیروں کا تیمم میں

No part of the feet is involved in Tayammum. [1] End.

In Radd al-Muhtar, it is stated: there is no benefit in removing the socks (khuffayn), as removal is for the sake of washing (ghusl). [2] End (Translator).

What the scholars have stated—that a person in a state of major ritual impurity (junub) must remove their leather socks—applies to the state of washing (ghusl). That is to say, just as wiping over leather socks (mash al-khuffayn) is permissible in minor ablution (wudu), it is not permitted in ghusl. This is contrary to tayammum, wherein there is no washing or wiping of the feet at all; therefore, what is the need for removing the socks in it? The matter is clear and the ruling is evident. In the 'Chapter of Tayammum' in Radd al-Muhtar, from a lengthy illustration, a specific sub-ruling (juz'iya) regarding this can also be derived. Therefore, one should refer to the section on 'Nullifiers' (Nawaqid) therein. (In Radd al-Muhtar, this sub-ruling can be seen under the nullifiers. - Translator) And Allah the Almighty knows best.

Problem 100: Sent by Mawlawi Allah Yar Khan Sahib from the residence of Munshi Habibullah Sahib, Tehsildar of Khandwa, District Nimar, Central Province, on 4 Rabi' al-Awwal 1308 AH. To the honorable reservoir of grace, encompassing the rational and traditional sciences, the unraveler of subtle details of branches and principles, Mawlawi Muhammad Ahmad Raza Khan Sahib (may Allah continue his grace, shade, and blessings): A passage is presented before your presence on behalf of seekers of benefit to ascertain its meaning.

If he sells it at the market price or with a slight overcharge (ghabn yasir), performing tayammum is not permissible for him. However, if he sells it with an exorbitant overcharge (ghabn fahish), he may perform tayammum. Exorbitant overcharge (ghabn fahish) is that which does not fall under the estimation of expert appraisers. [3] And some have said that doubling the price constitutes exorbitant overcharge.

If the seller of water sells it at the market price or by adding a little extra, then tayammum is not permissible. If he sells it with an exorbitant overcharge (ghabn fahish) (increasing it greatly), then one should perform tayammum. Exorbitant overcharge is such that even if experts set prices, they would not set the price with such an excess. And some gentlemen have stated that the meaning of exorbitant overcharge is doubling the price. (Translator)

An individual from the 'Vilayat' is opposing me. I am stating the meanings that I have learned through study, but he does not accept them. Therefore, I seek clarification: please state the meanings of 'mithl-e-qimah' (market price), 'ghabn-e-yasir' (slight overcharge), 'ghabn-e-fahish' (exorbitant overcharge), and 'taqwim-e-muqawwimin' (appraisal by experts) in Urdu so that even the unlearned may benefit. Peace be upon you.

Answer: Market price (mithl-e-qimah) refers to the market rate; slight overcharge (ghabn-e-yasir) is a bit above the market rate; exorbitant (fahish) is a lot; and appraisal (taqwim) is setting a price for an item...

---

1. Fatawa Qadi Khan, Mash 'ala al-Khuffayn, Nawal Kishore, Lucknow, 1/24
2. Radd al-Muhtar, Chapter: Mash 'ala al-Khuffayn, Topic: Nullifiers of Wiping, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/202
3. Munyat al-Musalli, Section on Tayammum, Maktaba Qadiriyya Jamia Nizamiyya Razawiyya, Lahore, p. 50

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

तयम्मुम में पैरों का कोई हिस्सा नहीं है। [१] अंत।

रद्दुल मुहतार में है: मोज़े (ख़ुफ़ैन) उतारने में कोई लाभ नहीं, उतारना तो ग़ुस्ल (स्नान) के लिए है। [२] अंत (अनुवादक)।

विद्वानों ने जो फ़रमाया है कि जुनुब (महा-अशुद्धि की स्थिति) को मोज़ा उतारना ज़रूरी है, वह ग़ुस्ल की हालत में है। यानी जिस तरह वज़ू में मसह अल-ख़ुफ़ैन (चमड़े के मोज़ों पर पोंछना) जायज़ है, ग़ुस्ल में जायज़ नहीं है। इसके विपरीत तयम्मुम में पैरों का धोना या पोंछना सिरे से होता ही नहीं, तो इसमें मोज़ा उतारने की क्या ज़रूरत है। मसला साफ़ है और हुक्म ज़ाहिर है। रद्दुल मुहतार के 'बाब-ए-तयम्मुम' में एक लंबी तस्वीर से इसका जुज़िया (उप-नियम) भी निकाला जा सकता है। अतः वहाँ 'नवाकिज़' (अशुद्धि पैदा करने वाली चीज़ों) के उल्लेख के तहत इसे देखा जाना चाहिए। (रद्दुल मुहतार में यह जुज़िया नवाकिज़ के तहत देख लिया जाए - अनुवादक)। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला १००: मौलवी अल्लाह यार ख़ान साहब द्वारा, मुंशी हबीबउल्लाह साहब, तहसीलदार खंडवा, ज़िला निमार, मध्य प्रांत के घर से, ४ रबी अल-अव्वल १३०८ हिजरी। जनाब फ़ैज़-मआब, माकूल और मनकूल के ज्ञाता, शाखाओं और सिद्धांतों की बारीकियों के रहस्योद्घाटक, जनाब मौलवी मोहम्मद अहमद रज़ा ख़ान साहब (अल्लाह उनकी कृपा, साया और बरकतें जारी रखे): उपस्थित जनों की ओर से एक इबारत का अर्थ जानने के लिए उसे आपकी सेवा में पेश किया जा रहा है।

यदि वह उसे बाज़ार की क़ीमत (मिस्ल अल-क़ीमत) या मामूली मुनाफ़ा (ग़बन-ए-यसीर) के साथ बेचे, तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं है। और अगर वह बहुत ज़्यादा मुनाफ़ा (ग़बन-ए-फ़ाहिश) के साथ बेचे, तो तयम्मुम करे। ग़बन-ए-फ़ाहिश वह है जो विशेषज्ञ मूल्यांकनकर्ताओं के आकलन के दायरे में न आए। [३] और कुछ ने कहा है कि क़ीमत दोगुनी करना ग़बन-ए-फ़ाहिश है।

पानी बेचने वाला यदि उसे बाज़ार की क़ीमत में या कुछ थोड़ा बढ़ाकर बेचे, तो तयम्मुम जायज़ नहीं है। और अगर वह बहुत ज़्यादा मुनाफ़ा (ग़बन-ए-फ़ाहिश) के साथ (बहुत बढ़ाकर) बेचे, तो तयम्मुम करे। ग़बन-ए-फ़ाहिश यह है कि यदि विशेषज्ञ भी क़ीमत लगाएँ तो वे इतनी ज़्यादती के साथ उसकी क़ीमत न लगाएँ। और कुछ महानुभावों ने कहा है कि ग़बन-ए-फ़ाहिश का अर्थ क़ीमत दोगुनी कर देना है। (अनुवादक)

एक विलायती साहब मेरे विरोध में हैं। मैं वे अर्थ बता रहा हूँ जो मुझे पढ़ाई के दौरान पता चले, लेकिन वह उन्हें स्वीकार नहीं कर रहे हैं। इसलिए मार्गदर्शन चाहता हूँ कि 'मिस्ल-ए-क़ीमत', 'ग़बन-ए-यसीर', 'ग़बन-ए-फ़ाहिश' और 'तक़वीम-ए-मुक़व्विमीन' के अर्थ उर्दू में बताएँ ताकि कम ज्ञान रखने वाले लोग भी लाभान्वित हों। वस्सलाम।

जवाब: मिस्ल-ए-क़ीमत बाज़ार का भाव है; ग़बन-ए-यसीर बाज़ार भाव से थोड़ा ज़्यादा; फ़ाहिश बहुत ज़्यादा; और तक़वीम चीज़ की क़ीमत लगाना है...

---

1. फ़तावा काज़ी ख़ान, मसह अल-ख़ुफ़ैन, नवल किशोर लखनऊ, १/२४
2. रद्दुल मुहतार, बाब मसह अल-ख़ुफ़ैन, मतलब नवाकिज़ अल-मसह, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/२०२
3. मुन्यतुल मुसल्ली, फ़स्ल तयम्मुम, मकतबा कादरिया जामिअ निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. ५०

पृष्ठ २९८ / ७५६

لاحظ للرجلین من التیمم ۱ اھ وفی رد کوئی حصہ نہیں اھ ردالمحتار میں ہے، موزے اتارنے المحتار لافائدۃ فی النزع لانہ للغسل ۲ اھ۔ میں کوئی فائدہ نہیں، اتارنا تو غسل کیلئے ہے اھ (ت)

علماء نے جو فرمایا ہے کہ جنب کو موزہ اتارنا ضرور ہے وہ بحالتِ غسل ہے یعنی جس طرح وضو میں مسح خفین جائز ہے غسل میں روا نہیں، بخلاف تیمم کہ اس میں سرے سے پاؤں کا غسل یا مسح کچھ بھی نہیں تو اس میں نزع خف کی کیا حاجت۔ مسئلہ واضح ہے اور حکم ظاہر اور ردالمحتار کے باب التیمم میں ایک تصویر طویل سے اس کا جزئیہ بھی مستفاد فلیراجع عندہ ذکر النواقض (ردالمحتار میں یہ جزئیہ نواقض کے تحت دیکھ لیا جائے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۰۰: مرسلہ مولوی اللہ یار خان صاحب از مکان منشی حبیب اللہ صاحب تحصیلدار کھنڈوا ضلع نمار ملک متوسط ۴ ربیع الاول ۱۳۰۸ھ جناب فیض مآب حاوی معقول و منقول کاشف دقائق فروع و اصول جناب مولوی محمد احمد رضا خان صاحب ادام اللہ فیضہم و ظلہم وبر کاتہم بعرض مستفیدان حضور ایک عبارت دریافت معنے کیلئے حاضر کی جاتی ہے۔

ان باعہ بمثل القیمۃ او بغبن یسیر لایجور لہ التیمم وان باع بغبن فاحش تیمم والغبن الفاحش مالایدخل تحت تقویم المقومین وقال بعضھم تضعیف الثمن ۳ -

بیچنے والا پانی اگر مثل قیمت میں یا کچھ زیادہ کرکے فروخت کرے تو تیمم جائز نہیں اور اگر غبن فاحش کے ساتھ (بہت بڑھا کر) بیچے تو تیمم کرے۔ غبن فاحش یہ ہے کہ کسی چیز کے ماہرین اگر قیمتیں لگائیں تو اتنی زیادتی کے ساتھ اس کی قیمت نہ لگائیں۔ اور بعض حضرات نے کہا کہ غبن فاحش کا معنی ہے قیمت دو گنا کردینا۔(ت)

ایک ولایتی صاحب مد مقابل ہیں جو معنی مجھے از راہِ درس معلوم ہیں بیان کرتا ہوں قبول نہیں کرتے لہذا استفادہ کرتا ہے کہ مثل قیمت و غبن یسیر و غبن فاحش و تقویم مقومین کے معنی اردو میں ارشاد فرمائیں کہ بے علم بھی مستفیض ہوں والستلیم۔

الجواب: مثل ۲ قیمت بازار کا بھاؤ اور غبن یسیر نرخ بازار سے تھوڑا بل اور فاحش بہت اور تقویم قیمت لگانا جو چیز

---

1 فتاویٰ قاضی خان مسح علی الخفین نولکشور لکھنؤ ۱ / ۲۴ 2 ردالمحتار باب مسح علی الخفین مطلب نواقض المسح مصطفی البابی مصر ۱ / ۲۰۲ 3 منیة المصلی فصل فی التیمم مکتبہ قادریہ جامع نظامیہ رضویہ لاہور ص ۵۰

When presented before experts for valuation, they may naturally differ slightly in their estimations. For example, for an item worth ten rupees, one might say exactly ten, another nine and a half, and another ten and a half. It will not be that they value a ten-rupee item at five or fifteen. This small difference is called being 'included in the valuation of the valuers' (dakhl fi taqwim al-muqawwimin). Now the issue is that if someone does not have water and cannot get it for free, but has the means beyond his basic needs—if he has money with him, then fine, otherwise if he can get water on credit, for instance, by saying he will send the money after reaching home—in such a state, Tayammum (dry ablution) is not permissible. It is obligatory to buy water for Wudu (ablution) or Ghusl (ritual bath), provided the seller offers it at the market price or with a slight increase known as 'Ghubn Yasir' (slight overpricing). Otherwise, if there is 'Ghubn Fahish' (excessive overpricing), i.e., at a significantly higher price, then buying is not mandatory, and Islamic Law allows Tayammum. Here narrations differ regarding the limit of this slight and excessive overpricing. According to some, a price that can fall within the valuation of experts is 'Ghubn Yasir', and anything more is 'Ghubn Fahish'.

And this is what he prioritized in Maraqi al-Falah and expressed the following with 'it was said' (qila). And similar to that is the statement of Munyat al-Musalli mentioned in the question. And it was said in al-Ghunyah that this view is most appropriate for repelling hardship (1).

This was prioritized in Maraqi al-Falah and the subsequent view was expressed with 'it was said' (qila). Similar to it is the text of Munyat al-Musalli mentioned in the question. And in Ghunyah it was said that this very view is more in accord with repelling hardship and removing distress and difficulty (T) (and repelling hardship is specially considered in Sharia).

According to this narration, where the price of that amount of water is ten paisas and the seller offers it for ten and a half, buying it is obligatory and Tayammum is impermissible. If he offers it for more, e.g., twelve or eleven, Tayammum is impermissible. However, the most apparent, most famous, and most suitable view for practice is the one narrated from Imam Azam (may Allah be pleased with him) in 'Nawadir', that here double the price is called 'Ghubn Fahish', and less than that is 'Ghubn Yasir'. For example, if that much water at that place's market rate is one paisa and the seller offers it for two, then do Tayammum; and for less than two, buying is necessary and Tayammum is forbidden. And in observing the price, specific

consideration is given to the place where water is needed at that time. If the price there is unknown, consider the nearest place. It is stated in Ghunyah:

That which does not fall under the estimation of experts, they estimated it in goods by an increase of more than half a dirham in ten (2). And half is slight, and water is among the goods.	The price which cannot come within the pricing of the valuers has been defined in goods such that on a ten-dirham item, an increase of more than half a dirham is given. An increase up to half a dirham is ordinary. Water also falls under the category of goods. (T)

1. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 70
2. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 70

जब विशेषज्ञों के सामने मूल्य निर्धारण के लिए कोई चीज़ पेश की जाए, तो वे स्वाभाविक रूप से मूल्यांकन में थोड़ा अंतर कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, दस रुपये की चीज़ के लिए कोई पूरा दस कहेगा, कोई साढ़े नौ, तो कोई साढ़े दस। ऐसा नहीं होगा कि दस रुपये की चीज़ को पाँच या पन्द्रह कह दें। इस थोड़े से अंतर को 'तक़ीम अल-मुक़व्विमीन' (मूल्यांकनकर्ताओं के मूल्यांकन में शामिल) कहा जाता है। अब मसला यह है कि जिसके पास पानी न हो और वह मुफ्त में न मिले, और आवश्यक खर्चों से अतिरिक्त धन उसके पास हो—यदि पास में मौजूद है तो ठीक है, अन्यथा यदि उधार पर मिल सके जैसे कि घर पहुँचकर पैसे भेज दूँगा—तो ऐसी स्थिति में तयम्मुम जायज़ नहीं है। वज़ू या गुस्ल के लिए पानी ख़रीदना वाजिब है, बशर्ते बेचने वाला उसे बाज़ार भाव (मिसल क़ीमत) पर दे या मामूली बढ़त के साथ जिसे 'ग़ुब्न यसीर' (मामूली अधिक मूल्य) कहते हैं। अन्यथा, यदि वह 'ग़ुब्न फ़ाहिश' यानी बहुत ज़्यादा कीमत पर देता है, तो ख़रीदना ज़रूरी नहीं है और शरीयत तयम्मुम की अनुमति देगी। यहाँ रिवायतें अलग-अलग हैं कि इस मामूली और अत्यधिक मूल्यवृद्धि की सीमा क्या है। कुछ के अनुसार, इतना मूल्य जो विशेषज्ञों के मूल्यांकन के भीतर आ सके वह 'ग़ुब्न यसीर' है और उससे अधिक 'ग़ुब्न फ़ाहिश' है।

और यही वह है जिसे उन्होंने 'मराक़ी अल-फ़लाह' में प्राथमिकता दी है और बाद वाली बात को 'क़ील' (कहा गया है) से व्यक्त किया है, और इसी तरह 'अल-मुन्या' का वह कथन है जिसका प्रश्न में उल्लेख किया गया है। और 'अल-ग़ुनिया' में कहा गया है कि यह कठिनाई को दूर करने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है (1)।

इसी को 'मराक़ी अल-फ़लाह' में पहले ज़िक्र किया गया और अगले मत को 'क़ील' से व्यक्त किया गया है। इसी तरह 'मुनियत अल-मुसल्ली' का वह कथन है जो सवाल में ज़िक्र हुआ। और 'ग़ुनिया' में कहा गया कि यही मत कठिनाई को दूर करने और तंगी व मशक़्क़त को खत्म करने के साथ ज़्यादा मेल खाता है (त) (और शरीयत में कठिनाई दूर करने का विशेष ध्यान रखा गया है)।

इस रिवायत के अनुसार, जहाँ उतने पानी की क़ीमत दस पैसे हो और बेचने वाला साढ़े दस को दे, तो ख़रीदना वाजिब और तयम्मुम नाजायज़ है। और अधिक, जैसे बारह या ग्यारह को दे, तो तयम्मुम नाजायज़। लेकिन सबसे स्पष्ट, सबसे प्रसिद्ध और अमल के लिए सबसे उपयुक्त वह मत है जो इमाम आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से 'नवादिर' में वर्णित है कि यहाँ दुगुनी क़ीमत का नाम 'ग़ुब्न फ़ाहिश' है और उससे कम 'ग़ुब्न यसीर' है। उदाहरण के लिए, उतने पानी की उस जगह की बाज़ारी

दर एक पैसा है और बेचने वाला दो पैसे में दे, तो तयम्मुम कर ले; और दो से कम में दे तो ख़रीदना लाज़िम और तयम्मुम मना है। और क़ीमत देखने में उस जगह का विशेष विचार किया जाएगा जहाँ उसे उस समय पानी की ज़रूरत है। अगर वहाँ की क़ीमत का पता न चले, तो जो जगह वहाँ से सबसे पास है उसका विचार करें। 'ग़ुनिया' में है:

जो विशेषज्ञों के अनुमान के अंतर्गत नहीं आता है, उन्होंने माल में दस में आधे दिरहम से अधिक की वृद्धि का अनुमान लगाया है (2), और आधा मामूली है, और पानी भी माल की श्रेणी में आता है।

वह क़ीमत जो मूल्य आँकने वालों के आँकने में न आ सके; सामानों में उसकी सीमा इस तरह तय की गई है कि दस दिरहम की चीज़ पर आधे दिरहम से भी ज़्यादा इज़ाफ़ा करके दे। आधे दिरहम तक ही ज़्यादती हो तो यह मामूली है। पानी भी सामानों के ही दायरे में आता है। (त)

1. ग़ुनियत अल-मुस्तमली, बाब अत-तयम्मुम, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 70
2. ग़ुनियत अल-मुस्तमली, बाब अत-तयम्मुम, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 70

पेज 299/756

اُس کے مبصروں کے سامنے قیمت لگانے کیلئے پیش کی جائے وہ عادتاً تھوڑی سی کمی بیشی کے ساتھ تقویم میں اختلاف کرسکتے ہیں مثلاً دس روپے کی چیز کے کوئی پورے دس کہے گا کوئی ساڑھے نو کوئی ساڑھے دس یہ نہ ہوگا کہ دس کی چیز کے پانچ یا پندرہ کہہ دیں اس تھوڑے تفاوت کو داخل فی تقویم المقومین کہتے ہیں اب مسئلہ یہ ہے کہ جس کے پاس پانی نہ ہو اور بے قیمت نہ ملے اور قیمتِ حاجات ضروریہ سے فارغ اُس کی ملک میں ہو اگر پاس موجود ہے فبہا ورنہ پانی وعدہ پر مل سکے کہ مثلاً گھر پہنچ کر قیمت بھیج دوں گا تو ایسی حالت میں تیمم جائز نہیں پانی مول لے کر وضو یا غسل واجب بشرطیکہ بیچنے والا یا تو مثل قیمت کو دے یا بل کرے تو تھوڑا سا جسے غبن یسیر کہتے ہیں ورنہ اگر غبن فاحش یعنی زیادہ بل سے دیتا ہے تو خرید نا ضرور نہیں شرع تیمم جائز فرمائے گی یہاں روایات مختلف ہوئیں کہ اس غبن یسیر و فاحش کی حد کیا ہے بعض کے نزدیک اتنابل کہ تقویم مقومین میں پڑسکتا ہے غبن یسیر ہے اور اس سے زیادہ غبن فاحش۔

وھذا ھو الذی قدمہ فی مراقی الفلاح وعبر عن الآتی بقیل ومثل ذلك عبارۃ المنیۃ المذکورۃ فی السؤال وقد قال فی الغنیۃ انہ الا وفق لدفع الحرج[1] اسی کو مراقی الفلاح میں پہلے ذکر کیا اور اگلے قول کو قیل سے تعبیر کیا ہے، اسی کے مثل منیۃ المصلی کی وہ عبارت ہے جو سوال میں ذکر ہوئی ۔ اور غنیہ میں کہا کہ یہی قول دفع حرج اور ازالہ تنگی و مشقت سے زیادہ موافق و مطابقت رکھتا ہے (ت) (اور دفع حرج کا شریعت میں خاص لحاظ ہے)

اس روایت پر جس جگہ اُس قدر پانی کی قیمت دس پیسے ہو اور بیچنے والا ساڑھے دس کو دے تو خرید نا واجب اور تیمم ناجائز اور زیادہ مثلاً بارہ یا گیارہ کو دے تو تیمم ناجائز مگر اظہر و اشہر

والیت بالعمل وہ قول ہے جو امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے نوادر میں منقول ہوا کہ یہاں دُونی قیمت کا نام غبن فاحش ہے اور اُس سے کم غبن یسیر مثلاً اتنا پانی اُس مقام کے بازاری نرخ سے ایک پیسہ کا ہے اور بیچنے والا دو کو دے تو تیمم کرلے اور دو سے کم کو تو خرید نا لازم اور تیمم ممنوع ۔ اور قیمت دیکھنے میں اعتبار خاص اُس جگہ کا ہے جہاں اسے اس وقت ضرورت آب ہے اگر وہاں کی قیمت کا پتہ نہ چلے تو جو جگہ وہاں سے قریب تر ہے اُس کا اعتبار کرے۔ غنیہ میں ہے :

ما لا یدخل تحت تقویم المقومین قدروہ فی العروض بالزیادۃ علی نصف درھم في العشرۃ[2] والنصف یسیر والماء من جملۃ العروض ۔

وہ قیمت جو نرخ لگانے والوں کے نرخ لگانے میں نہ آسکے سامانوں میں اس کی تحدیدیوں کی گئی ہے کہ دس درہم کی چیز دس پر نصف درہم سے بھی زیادہ اضافہ کرکے دے۔ نصف درہم تک ہی زیادتی ہو تو یہ معمولی ہے پانی بھی سامانوں ہی کے ذیل میں داخل ہے۔ (ت)

[1] غنیۃ المستملی باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۰ [2] غنیۃ المستملی باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۰

Fatawa Ridawiyyah Volume 3

In Khania it is mentioned: Scholars have differed in narrating the definition of 'expensive' (ghali) from Imam Azam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him). One narration is that if someone sells at double the price, it is expensive. Others said that whatever cannot come under the estimation of professional evaluators is expensive. (T)

In Dur-e-Mukhtar it is mentioned: If water is provided at its fair market price (thaman-e-mithl) or with a slight increase, and he has that amount beyond his basic needs, he should not perform Tayammum. But if it is given with an exorbitant increase (ghabn-e-fahish), meaning double the price in that location, or he does not have the price for it, then he should perform Tayammum. (T)

In Radd al-Muhtar it is mentioned: The statement of the author of Dur-e-Mukhtar, "at its fair market price," means the price of water in that specific place. In Bada'i-us-Sana'i and Khania, it is stated that it refers to the price in the nearest place where water is available. It is mentioned in Al-Hilya that the first opinion is apparent, unless there is no known and fixed price for water in that place (in which case the nearest place will be considered), as scholars have stated regarding the price of hunted animals. The statement of the author of Dur-e-Mukhtar, "he has that amount," means he possesses that price. This we have mentioned earlier. "And it is double its value" - this is mentioned in Al-Nawadir.

Footnotes: 1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on what allows Tayammum, Nawal Kishore, 1/26. 2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/44.

Page 300 of 756

फ़तावा रज़विया खंड 3

ख़ानिया में है: इमाम आज़म अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से 'महंगा' (ग़ाली) की परिभाषा को लेकर विद्वानों में मतभेद रहा है। एक कथन यह है कि यदि कोई दोगुनी कीमत पर बेचता है, तो वह महंगा है। कुछ ने कहा कि जो मूल्य निर्धारकों के आकलन के दायरे में न आ सके वह महंगा है। (त)

दुर्रे मुख्तार में है: यदि पानी उचित मूल्य (थमन-ए-मिसल) या थोड़ी अधिक कीमत पर मिल रहा हो और उसके पास अपनी ज़रूरतों से अतिरिक्त इतनी राशि हो, तो वह तयम्मुम न करे। और यदि वह बहुत अधिक मूल्य (ग़ब्न-ए-फ़ाहिश) के साथ दे रहा हो, यानी उस स्थान पर जो कीमत है उसका दोगुना मांगे, या उसके पास पानी की कीमत न हो, तो वह तयम्मुम करे। (त)

रद्दुल मुहतार में है: दुर्रे मुख्तार के लेखक का कथन "उचित मूल्य पर" यानी उस स्थान पर पानी की जो कीमत है। बदाए-उस-सनाए और ख़ानिया में यह है कि जिस स्थान पर पानी दुर्लभ है, उसके सबसे निकटतम स्थान पर जो कीमत है। अल-हिलिया में कहा गया है कि पहला कथन स्पष्ट है, सिवाय इसके कि उस स्थान पर पानी की कोई निश्चित और ज्ञात कीमत न हो (तो निकटतम स्थान का विचार किया जाएगा), जैसा कि विद्वानों ने शिकार किए गए जानवरों की कीमत के बारे में कहा है। दुर्रे मुख्तार के लेखक का कथन "इतना उसके पास हो" यानी उसके स्वामित्व में इतनी कीमत हो। और इसका ज़िक्र हम पहले कर चुके हैं। "और यह उसकी कीमत का दोगुना है" - यह अन-नवादिर में उल्लेखित है।

पाद टिप्पणियाँ: 1. फ़तावा काज़ी ख़ान, फ़स्ल फ़ीमा यजूज़ु लहू अत-तयम्मुम, नवल किशोर, 1/26। 2. अद-दुर अल-मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुजतबाई दिल्ली, 1/44।

पृष्ठ 300 / 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

خانہیہ میں ہے: اختلفوا فی حد الغالی عن ابی حنیفة رضی اللہ تعالی عنه ان کان لا یبیع الا بضعف القیمة فهو غالی وقال بعضهم مالا یدخل تحت تقویم المقومین فهو غالی 1۔ امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے گراں کی حد روایت کرنے میں علماء کا اختلاف ہوا ہے۔ ایک روایت یہ ہے کہ اگر دو گنا قیمت پر بیچتا ہے تو وہ گراں ہے۔ اور بعض نے کہا کہ جو نرخ لگانے والوں کے نرخ لگانے میں نہ آسکے وہ گراں ہے۔(ت)

در مختار میں ہے: ان لم یعطه الا بثمن مثله اوبغبن یسیر وله ذلك فاضلا عن حاجته لا یتیمم ولو اعطاه بأکثر یعنی بغبن فاحش وهو ضعف قیمته فی ذلك المکان او لیس له ثمن ذلك تیمم 2۔ اگر پانی ثمنِ مثل پر یا تھوڑی زیادہ قیمت پر اسے دے اور اتنا اس کے پاس ضرورت سے فاضل موجود ہے تو تیمم نہ کرے۔ اور اگر بہت بڑھا کر غبنِ فاحش کے ساتھ دے یعنی اس جگہ جو قیمت ہے اس کا دو گنا مانگے یا اس کے پاس پانی کی قیمت موجود نہ ہو تو تیمم کرے۔(ت)

ردالمحتار میں ہے: قوله بثمن مثله ای فی ذلك الموضع بدائع وفی الخانیة فی اقرب المواضع من الموضع الذی یعز فیه الماء قال فی الحلیة والظاهر الاول الا ان لا یکون للماء فی ذلك الموضع قیمة معلومة کما قالوا فی تقویم الصید قوله وله ذلك ای وفی ملکه ذلك الثمن وقدمنا انه لو له مال غائب وامکنه الشراء نسئة وجب بخلاف مالو وجد من یقرضه بحر قوله وهو ضعف قیمته هذا ما فی النوادر صاحبِ درمختار کا قول "ثمنِ مثل پر " یعنی اس جگہ پانی کی جو قیمت ہے اسی قیمت پر دے، بدائع الصنائع اور خانیہ میں یہ ہے کہ جس جگہ پانی نایاب ہے اس سے قریب تر مقام میں جو قیمت ہے، حلیہ میں کہا کہ ظاہر پہلا قول ہے مگر یہ صورت ہو کہ اس جگہ پانی کی کوئی معین و معلوم قیمت نہ ہو (تو قریب تر مقام کا اعتبار ہوگا) جیسا کہ علماء نے شکار کی قیمت کے بارے میں

فرمایا ہے۔ صاحبِ در مختار کا قول "اتنا اس کے پاس ہو" یعنی اس کی ملکیت میں اتنی قیمت ہو۔ اور یہ ہم پہلے ذکر کر چکے ہیں

حواشی: 1 فتاوی قاضی خان فصل فیما یجوز لہ التیمم نولکشور ۱ / ۲۶ 2 الدر المختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱ / ۴۴

Fatawa Razawiyya Volume Three

[Arabic Column (Left)] And on this [the author of] Al-Bada'i and Al-Nihaya restricted themselves, so it is the most appropriate, Al-Bahr. [End of summary]. I say: Similarly, it was restricted to in Al-Kafi and other reliable works, so I relied on this because it is a narration from the Imam (may Allah be pleased with him), and due to the majesty of those who rely on it, and their abundance, and because Al-Khaniya gives it precedence while explicitly stating in the beginning of his book that he only gives precedence to what is most apparent and well-known. Furthermore, the price of water needed for purification usually does not exceed approximately one 'fuls' (a small coin), especially in our lands. So, considering an increase of one part out of nineteen parts of a 'fuls', for example, as a reason to drop the obligation of Wudu and Ghusl—despite the price being affordable, the person possessing it currently, and it being surplus to their needs—is something far-fetched. It is not accepted that there is excessive hardship in this that must be averted. So understand. And Allah, Glory be to Him and Exalted is He, knows best.

[Urdu Column (Right)] That if he has wealth in his possession which is not with him [at the moment] and he can buy on credit, then it is obligatory to buy. And if he does not possess it but finds someone who is lending it to him, then it is not obligatory to buy, Al-Bahr. The statement of the author of Durr-e-Mukhtar 'and it is double its price'. This is a narration which is in Nawadir, and Bada'i and Nihaya have sufficed with it, so this is better, Al-Bahr summary (T). I say, and similarly in Kafi etc. reliable books they have sufficed with this, so I too have relied on it because it is a narration from Imam Azam (may Allah be pleased with him). The personages who rely on it are of high stature, their number is also great, the Jurist of the Soul (Faqih-un-Nafs) Imam Qazi Khan has given it precedence in Al-Khaniya, and in the beginning of the book, he has clarified that he gives precedence to that statement which is most apparent and well-known (Azhar-o-Ashhar). And because for any purification, the amount of water needed, its price is usually not more than approximately one paisa, especially in our lands this is the case. So if the price of water is, for example, more by one part out of nineteen parts of a paisa (1/19) and this price is available to him, he is currently the owner of it and it is surplus to his needs, then despite all this, to accept that with such a small increase the obligation of Wudu and Ghusl is dropped is a far-fetched matter. This too is not acceptable that there is any hardship or constriction in it which is necessary to avert. This should be understood. And Allah, Glory be to Him and Exalted is He, knows best. (T)

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/182. Page 301 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरी

[अरबी स्तंभ (बाएं)] और इसी पर अल-बदाई और अल-निहाया के लेखकों ने इकतफ़ा किया है, इसलिए यही औला (बेहतर) है, अल-बहर। [सारांश समाप्त] मैं कहता हूँ: इसी प्रकार अल-काफ़ी और अन्य विश्वसनीय ग्रंथों में भी इसी को अपनाया गया है, अतः मैंने इस पर भरोसा किया है क्योंकि यह इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक रिवायत है, और इसे मानने वालों की महानता और उनकी अधिकता के कारण, और इसलिए कि अल-खानिया ने इसे प्राथमिकता दी है और अपनी पुस्तक की भूमिका में स्पष्ट किया है कि वे केवल उसी को प्राथमिकता देते हैं जो अत्यंत स्पष्ट और प्रसिद्ध हो। इसके अतिरिक्त, शुद्धता के लिए आवश्यक जल का मूल्य आमतौर पर लगभग एक 'फ़ुल्स' (एक छोटा सिक्का) से अधिक नहीं होता, विशेष रूप से हमारे क्षेत्रों में। इसलिए, वुज़ू और गुस्ल की अनिवार्यता को समाप्त करने के लिए एक 'फ़ुल्स' के उन्नीसवें हिस्से के बराबर मूल्य वृद्धि को आधार मानना—जबकि मूल्य वहनीय हो, व्यक्ति के पास वर्तमान में धन हो, और वह उसकी आवश्यकताओं से अधिक हो—एक असंभव बात लगती है। यह स्वीकार्य नहीं है कि इसमें कोई बड़ी कठिनाई है जिसे टाला जाना आवश्यक है। अतः इसे समझें। और अल्लाह, जो महिमामय और सर्वोच्च है, बेहतर जानता है।

[उर्दू स्तंभ (दाएं)] कि अगर उसके अधिकार में ऐसा धन है जो उसके पास नहीं है और वह उधार खरीद सकता है, तो खरीदना वाजिब (अनिवार्य) है। और अगर उसके अधिकार में नहीं है लेकिन कोई ऐसा व्यक्ति मिल गया जो उसे उधार दे रहा है, तो खरीदना वाजिब नहीं है, अल-बहर। दुर्रे मुख्तार के लेखक का कथन है 'और वह उसकी कीमत का दोगुना है'। यह वह रिवायत है जो नवादिरात में है, और अल-बदाई और अल-निहाया में इसी पर इकतफा (पर्याप्त समझना) किया गया है, तो यही औला (बेहतर) है, अल-बहर सारांश (त)। मैं कहता हूँ, और इसी तरह अल-काफी आदि विश्वसनीय किताबों में इसी पर इकतफा किया गया है, तो मैंने भी इसी पर भरोसा किया है क्योंकि यह इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है। इस पर भरोसा करने वाली हस्तियां बहुत बड़े मकाम वाली हैं, उनकी संख्या भी बहुत है। फकीहुन नफ्स इमाम काज़ी खाँ ने अल-खानिया में इसे प्राथमिकता दी है, और किताब की शुरुआत में उन्होंने स्पष्ट किया है कि वे उसी कथन को प्राथमिकता देते हैं जो अज़हर और अश्हर (अधिक स्पष्ट और प्रसिद्ध) हो। और इसलिए कि किसी पाकी के लिए जितने पानी की ज़रूरत है, उसकी कीमत लगभग एक पैसे से ज़्यादा नहीं होती, अक्सर और विशेष रूप से हमारे शहरों में यही हाल है। तो अगर पानी की कीमत उदाहरण के तौर

पर एक पैसे के उन्नीस हिस्सों में से एक हिस्से (1/19) के बराबर ज़्यादा है और यह कीमत उसे सुलभ है, वास्तव में वह उसका मालिक भी है और यह उसकी ज़रूरतों से फालतू भी है, तो इन सब के बावजूद यह मान लेना कि इतनी सी बढ़ोतरी से वुज़ू और गुस्ल की अनिवार्यता खत्म हो जाती है, एक दूर की बात (असंभव) है। यह भी स्वीकार्य नहीं है कि इसमें कोई बड़ी कठिनाई या तंगी है जिसे दूर करना ज़रूरी है। इसे समझ लेना चाहिए। और अल्लाह पाक सबसे बेहतर जानने वाला है। (त)

---

1 रद-उल-मुहतार, बाब-अत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/182. पृष्ठ 301 / 756

[عربی کالم (بائیں)] وعلیه اقتصر فی البدائع والنهایة فکان هو الاولی بحر اه ملخصاً۔ اقول: وکذا اقتصر علیه فی الکافی وغیره من المعتبرات فاعتمدت علی هذا لکونه روایة عن الامام رضی الله تعالی عنه ولجلالة معتمدیه ولکثرتهم ولتقدیم الخانیة ایاه مع تصریحه في فاتحة کتابه انه انما یقدم الاظهر الاشهر ولان قیمة الماء المحتاج الیه لطهر لا تزید غالبا علی نحو فلس لاسیما في بلادنا فاعتبار زیادة جزء من تسعة عشر جزء من اجزاء فلس مثلا مسقطة لوجوب الوضوء والغسل مع تیسر الثمن وتملکه له بالفعل وفراغه عن حاجاته مما یستبعد ولایسلّم ان فیه کثیر حرج یجب دفعه فافهم۔ واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔

[اردو کالم (دائیں)] کہ اگر اس کی ملکیت میں مال ہے جو اس کے پاس نہیں اور ادھار خرید سکتا ہے تو خریدنا واجب ہے۔ اور اگر اس کی ملکیت میں نہیں مگر کوئی ایسا شخص مل گیا جو اسے قرض دے رہا ہے تو خریدنا واجب نہیں ، بحر اھ صاحبِ درمختار کا قول "اور وہ اس کی قیمت کا دو گنا ہے "۔ یہ وہ روایت ہے تو نوادر میں ہے، اور اسی پر بدائع اور نہایہ میں اکتفاء کی ہے ، تو یہی اولٰی ہے ، بحراھ تلخیص (ت) میں کہتا ہوں ، اور اسی طرح کافی وغیرہ معتبر کتابوں میں اسی پر اکتفاء کی ہے تو میں نے بھی اسی پر اعتماد کیا اس لئے کہ یہ امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت ہے اس پر اعتماد کرنے والے حضرات جلیل الشان ہیں ، ان حضرات کی تعداد بھی زیادہ ہے ، فقیہ النفس امام قاضیخان نے خانیہ میں اسے مقدم رکھا ہے ، اور آغازِ کتاب میں وہ اس کی صراحت کر چکے ہیں کہ وہ اسی قول کو مقدم کرتے ہیں جو اظہر و اشہر (زیادہ ظاہر و مشہور) ہو، اور اس لئے کہ کسی طہارت کیلئے جس قدر پانی کی ضرورت ہے اس کی قیمت قریباً ایک پیسہ سے زیادہ نہیں ہوتی اکثر اور خاص طور سے ہمارے بلاد میں یہی حال ہے ، تو اگر

پانی کی قیمت مثلاً ایک پیسے کے انیس حصوں میں سے ایک حصہ (1/19) کے برابر زیادہ ہے اور یہ قیمت اسے میسر ہے۔ بالفعل اس کا مالک بھی ہے اور اس کی ضروریات سے فاضل بھی ہے ، ان سب کے باوجود یہ مان لینا کہ اتنی سی زیادتی سے وضو اور غسل کا وجوب ساقط ہو جاتا ہے ایک مستبعد امر ہے۔ یہ بھی قابلِ تسلیم نہیں کہ اس میں کوئی حرج اور تنگی ہے جسے دفع کرنا ضروری ہے ، اسے سمجھ لینا چاہئے واللہ سبحانہ و تعالی اعلم (ت)

---

1 ردالمختار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۲ صفحہ 301 از 756

Fatawa Razawiya - Volume 3

Issue 101: From Jaunpur, sent by Maulana Muhammad Hasan Sahib - 26 Rabi al-Akhir 1295 AH

Question: What is your ruling, may Allah have mercy on you, regarding this chapter; that for the validity of Tayammum by striking the hand on something that is not of the genus of the earth, such as a pillow, carpet, woollen cloth, grains, minerals, etc., is it sufficient that there is just enough dust on it so that at the time of striking it, something is seen in the air, without the hand carrying the dust? Or is it necessary for the dust to stick and its trace to appear on the hand or on the object after moving the hand over it? Inform us and may you be rewarded. (Left Column Text) Translation: For something that is not of the essence of the earth, such as a pillow, carpet, grain, minerals, etc., how much dust should be on them for Tayammum to be valid? Is it enough that when the hand is lifted from them, it does not carry dust, but rather there is only so much dust on those things that something is visible in the air? Or is it necessary that the dust sticks to the hand and when one hand is passed over the other, the effect of the dust becomes apparent on it? Inform us and be rewarded. (T) (Right Column Text)

Answer: Imam al-Isbijabi, who is among the Imams of Tarjih (preference) and Tashih (correction), stated in the commentary of Mukhtasar al-Tahawi: The presence of dust on an object in such a way that its trace becomes apparent by drawing the hand over it is a requirement for the validity of Tayammum. Know this. (Left Column Text) Translation: Imam al-Isbijabi, who is from the Imams of Tarjih and Tashih, said in the commentary of Mukhtasar al-Tahawi that for Tayammum to be valid on such an object, it is necessary for dust to be present on it and for the effect of the dust to appear by rubbing the hand over it. (Right Column Text)

In 'Al-Durr al-Mukhtar', following what is in 'Al-Bahr al-Ra'iq', it is recorded: Al-Isbijabi restricted it by saying that the trace of dust must become clear on it by passing the hand over it; and if it does not become clear, it is not permissible. Likewise for everything upon which Tayammum is [otherwise] not permissible, like wheat and woollen cloth. So let this be preserved. (Left Column Text) Translation: It is written in Durr al-Mukhtar, following Bahr al-Ra'iq, that Imam al-Isbijabi has placed this restriction that by rubbing the hand on it, the trace of soil on that object should become apparent and clear. If it is not clear, then Tayammum is not valid. Similarly,

every thing upon which Tayammum is not valid, like wheat, a piece of woollen cloth, this should be remembered. (Right Column Text)

Although in common texts and most commentaries this issue is brought forth with general and absolute application, (Note 1) an additional restriction that a reliable Imam imparts must be accepted as long as there is no contradiction. (Left Column Text) Translation: Although this issue has been mentioned absolutely without restriction in common texts and most commentaries (and it has been said that if there is dust and soil on minerals etc., then Tayammum is valid), but such an addition... (Right Column Text)

- This is from the early fatwas that the author wrote in his youth. 12 (M)
- Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/44

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

मसला 101: जौनपुर से, मौलवी मुहम्मद हसन साहब द्वारा प्रेषित - 26 रबी-अल-आख़िर 1295 हिजरी

प्रश्न: अल्लाह आप पर रहम करे, इस अध्याय के बारे में आपका क्या कहना है; कि ऐसी चीज़ पर हाथ मारकर तैयममुम के जायज़ होने के लिए जो ज़मीन की जिन्स (प्रजाति) से न हो, जैसे तकिया, कालीन, ऊनी कपड़ा, अनाज, खनिज आदि, क्या उन पर सिर्फ इतना धूल होना काफी है कि हाथ मारते समय हवा में कुछ उड़ता हुआ दिखे, बिना हाथ में धूल आए? या यह ज़रूरी है कि धूल हाथ में चिपक जाए और हाथ फेरने पर उस चीज़ पर धूल का निशान साफ़ दिखाई दे? बताएं और पुण्य प्राप्त करें। (बायाँ कॉलम) अनुवाद: ऐसी चीज़ जो ज़मीन की जिन्स से न हो जैसे तकिया, फ़र्श, अनाज, खनिज आदि, उन पर तैयममुम जायज़ होने के लिए उन पर कितनी धूल होनी चाहिए? क्या यह काफ़ी है कि उन पर से हाथ उठे तो धूल लेकर न उठे बल्कि उन चीज़ों पर सिर्फ़ इस कदर धूल रही हो कि हवा में कुछ दिखाई देता हो? या यह ज़रूरी है कि हाथ में धूल चिपक जाए और एक हाथ पर दूसरा हाथ फेरा जाए तो उस पर धूल का असर ज़ाहिर हो, बयान करें और पुण्य पायें। (त) (दायाँ कॉलम)

उत्तर: इमाम इस्बीजाबी, जो 'तरजीह' और 'तशहीह' (वरीयता और सुधार) के इमामों में से हैं, उन्होंने 'मुख़्तसर तहावी' की व्याख्या में फ़रमाया है कि ऐसी चीज़ पर धूल का होना और उस पर हाथ फेरने से उसका असर ज़ाहिर होना तैयममुम के जायज़ होने के लिए ज़रूरी है। (बायाँ कॉलम) अनुवाद: इमाम इस्बीजाबी जो अइम्मा-ए-तरजीह व तशहीह में से हैं, उन्होंने मुख़्तसर तहावी की शरह (व्याख्या) में फ़रमाया कि ऐसी चीज़ पर धूल का होना और उस पर हाथ फेरने से धूल का असर ज़ाहिर होना उससे तैयममुम जायज़ होने के लिए ज़रूरी है। (दायाँ कॉलम)

'अद-दुर्रुल मुख़्तार' में 'अल-बह्रुर राइक़' के अनुसरण में लिखा है कि इमाम इस्बीजाबी ने यह शर्त लगाई है कि उस पर हाथ फेरने से मिट्टी का असर ज़ाहिर और वाज़ेह (स्पष्ट) हो। अगर वाज़ेह न हो तो तैयममुम जायज़ नहीं। इसी तरह हर वह चीज़ जिस पर (मूलतः) तैयममुम जायज़ नहीं है जैसे गेहूं, ऊनी कपड़े का टुकड़ा, इसे याद रखना चाहिए। (बायाँ व दायाँ कॉलम संकलित)

हालाँकि आम किताबों और अधिकांश व्याख्याओं में इस मसले को बिना किसी शर्त के सामान्य तौर पर ज़िक्र किया गया है, (नोट 1) लेकिन एक विश्वसनीय इमाम द्वारा दी गई अतिरिक्त शर्त को मानना

अनिवार्य है जब तक कि उसका कोई विरोध न हो। (बायाँ कॉलम) अनुवाद: यह मसला अगरचे आम मतून (मूल पाठ) और अक्सर शूरूह (व्याख्याओं) में बग़ैर क़ैद (शर्त) के मुतलक़न (पूर्ण रूप से) ज़िक्र हुआ है (और कहा गया है कि मादनियात व़गैरह पर ग़ुबार व तुराब हो तो तैयममुम जायज़ है) लेकिन एक ऐसी ज़ायद... (दायाँ कॉलम)

- यह पुराने फ़तवों में से है जिन्हें लेखक ने कम उम्र में लिखा था। 12 (म)
- अद-दुर्रुल मुख़्तार, बाब-अत-तैयममुम, मुज्तबाई दिल्ली, 1/44

पृष्ठ 302 / 756

فتاوٰی رضویہ - جلد سوم

مسئلہ ۱۰۱: از جونپور مرسلہ مولوی محمد حسن صاحب - ۲۶ ربیع الآخر ۱۲۹۵ھ

ما قولکم رحمکم اللہ تعالی دریں باب کہ برائے جواز تیمم بضرب دست بر چیزے کہ از جنس زمین نباشد مثل وسادہ و بساط و جوخہ و حبوب و معادن وغیرہ اینہا بدون برداشتن دست ازان بغبار مرتفع فقط وجودِ غبار دران بقدریکہ بوقت ضرب صرف چیزے در ہوا دیدہ می شود کافی ست یا لزوق غبار و ظاہر شدن اثر آن بر دست یا بران بعد الید علیہ ضرورت۔ بینوا توجروا (بائیں کالم کی عبارت) ایسی چیز جو زمین کی جنس سے نہ ہو جیسے تکیہ، فرش، غلہ، معدنیات وغیرہ ان پر تیمم جائز ہونے کیلئے ان پر کتنا غبار ہونا چاہئے؟ کیا یہ کافی ہے کہ ان پر سے ہاتھ اٹھے تو غبار لے کر نہ اٹھے بلکہ ان چیزوں پر صرف اس قدر غبار رہا ہو کہ ہوا میں کچھ دکھائی دیتا ہو۔ یا یہ ضروری ہے کہ ہاتھ میں غبار چپک جائے اور ایک ہاتھ پر دوسرا ہاتھ پھیرا جائے تو اس پر غبار کا اثر ظاہر ہو ، بینوا توجروا۔ (ت) (دائیں کالم کی عبارت)

الجواب: امام اسبیجابی کہ از ائمہ ترجیح و تصحیح ست در شرح مختصر طحاوی فرمود کہ بودنِ غبار بر چیزے چنان و ظہورِ اثرش بکشیدن دست بران ضرورت در جوازِ تیمم بدان۔ (بائیں کالم کی عبارت) امام اسبیجابی جو ائمہ ترجیح و تصحیح سے ہیں انہوں نے مختصر طحاوی کی شرح میں فرمایا کہ ایسی چیز پر غبار کا ہونا اور اس پر ہاتھ پھیرنے سے غبار کا اثر ظاہر ہونا اس سے تیمم جائز ہونے کیلئے ضروری ہے۔ (دائیں کالم کی عبارت)

فی الدرالمختار تبعاً لما فی البحر الرائق وقیدہ الاسبیجابی بان یستبین اثر التراب علیہ بمد الید علیہ وان لم یستبن لم یجز وکذا کل مایجوز التیمم علیہ کحنطۃ وجوخۃ فلیحفظ ۱۔ (بائیں کالم کی عبارت) در

مختار کے اندر بحر الرائق کے اتباع میں لکھا ہوا ہے کہ اس پر امام اسبیجابی نے یہ قید لگائی ہے کہ اس پر ہاتھ پھیرنے سے اس چیز پر مٹی کا اثر ظاہر و واضح ہو اگر واضح نہ ہو تو تیمم جائز نہیں۔ اسی طرح ہر وہ چیز جس پر تیمم جائز نہیں جیسے گیہوں، اونی کپڑے کا ٹکڑا، اسے یاد رکھنا چاہئے۔ (دائیں کالم کی عبارت)

و ہر چند در عامہ متون و اکثر شروح ایں مسئلہ را بارسال و اطلاق آوردہ اند اما (ف ۱) قیدے زائد کہ امام معتمد افادہ فرماید از قبولش ناگزیرست مادامیکہ خلافش (بائیں کالم کی عبارت) یہ مسئلہ اگرچہ عام متون اور اکثر شروح میں بغیر قید کے مطلقاً ذکر ہوا ہے (اور کہا گیا ہے کہ معدنیات وغیرہ پر غبار و تراب ہو تو تیمم جائز ہے) لیکن ایک ایسی زائد (دائیں کالم کی عبارت)

عہ فتاوائے قدیمہ سے ہے کہ مصنف نے صغرِ سن میں لکھے ۱۲ (م)

1 الدرالمختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱/ ۴۴

Fatawa Razawiya Volume 3

[Arabic/Persian Text]: If it is not explicitly stated or preferred in the words of other Imams, especially when the situation is one of precaution. [Urdu Text]: It is necessary to accept any restriction provided by a reliable Imam as long as there is no explicit statement or preference to the contrary in the words of other Imams. Especially when it is a matter of precaution, it is even more necessary to accept such a restriction stated by a reliable Imam.

[Arabic Text]: The scholars have explicitly stated this regarding the issue of urine splashes being like needle points, and whoever's heart is not at ease, they should refer to Hashiya Shami. [Urdu Text]: Scholars have given a detailed explanation regarding the issue of urine splashes the size of a needle's eye; anyone who does not feel satisfied should study the Hashiya of Shami.

[Arabic/Persian Text]: And this (1) meaning is not contrary to the precedence of original texts (matoon) over commentaries, for that is a branch of contradiction, while this is an explanation of intent. [Urdu Text]: By accepting such a restriction, it cannot be said that original texts have precedence over commentaries, and that by abandoning the absolute nature of original texts in favor of the restrictions in commentaries, it would contradict the precedence of original texts. This is because contradiction occurs only when there is conflict between the two. Here, there is no conflict; rather, it is an explanation of the intended meaning.

[Arabic Header]: And hence they said that the 'Ah' (restriction) is a removal (of ambiguity). [Urdu Header]: That is why the scholars have stated that specification (takhsees) is for removal (of doubt).

[Arabic Text]: Ah: If you say that specification is only simultaneous, whereas delayed specification is abrogation, I say that this applies to the affirmative text, which is the speech of the Lawgiver. So when it is revealed as absolute, the ruling is established as revealed. Then, if a specific case is specialized, it becomes an abrogation for it. As for the scholars, they are narrators, and it is known that they might use absolute terms in places requiring restriction. Therefore, specification is a clarification of what they had summarized and a completion of what they narrated, thus it is considered simultaneous from him, may he be forgiven. (M) [Urdu Text]: If you object that specification (takhsees) must be simultaneous with the initial statement, whereas if it comes later, it is considered an abrogation (nasikh); I say this rule applies to the text establishing a command, which is exclusively the word of the Lawgiver (peace be

upon him). In that case, when an absolute command is given, the ruling is also absolute, and if a specification is later introduced, it abrogates the initial absolute nature. However, the noble scholars are merely narrators. Through research, it is known that scholars sometimes use general terms where a restriction is intended. Thus, specification in their discourse serves as a clarification of brevity and a completion of the ruling they have narrated. Therefore, here, specification will be considered as if it were simultaneous. (T)

फ़तावा रज़विया खण्ड 3

[अरबी/फ़ारसी पाठ]: अन्य इमामों के वचनों में यदि यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है या उसे प्राथमिकता नहीं दी गई है, विशेषकर जब मामला सावधानी का हो। [उर्दू पाठ]: किसी विश्वसनीय इमाम द्वारा प्रदान की गई किसी भी शर्त (पाबंदी) को स्वीकार करना आवश्यक है जब तक कि अन्य इमामों के वचनों में इसके विपरीत कोई स्पष्ट उल्लेख या प्राथमिकता न हो। विशेष रूप से जब मामला सावधानी का हो, तो विश्वसनीय इमाम द्वारा बताई गई ऐसी शर्त को स्वीकार करना और भी आवश्यक हो जाता है।

[अरबी पाठ]: विद्वानों ने सुई की नोक के बराबर पेशाब के छींटों के मसले में इसे स्पष्ट किया है, और जिनका मन संतुष्ट न हो, उन्हें हाशिया शामी का अध्ययन करना चाहिए। [उर्दू पाठ]: सुई के नाके के बराबर पेशाब के छींटे पड़ जाने के मसले में विद्वानों ने इसका स्पष्टीकरण दिया है; जिसे मन की शांति न मिले, वह शामी के हाशिया (टीका) का अध्ययन करे।

[अरबी/फ़ारसी पाठ]: और यह (1) अर्थ मूल ग्रंथों (मतून) की व्याख्याओं (शुरुह) पर प्रधानता के विपरीत नहीं है, क्योंकि वह विरोधाभास की एक शाखा है, जबकि यह इरादे का स्पष्टीकरण है। [उर्दू पाठ]: ऐसी शर्त स्वीकार कर लेने पर यह नहीं कहा जा सकता कि मूल ग्रंथों को व्याख्याओं पर प्रधानता प्राप्त है और मूल ग्रंथों की निरपेक्षता को छोड़कर व्याख्याओं की पाबंदी को अपना लिया जाए, तो यह मूल ग्रंथों की प्रधानता के विपरीत होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि विरोधाभास की बात तो तब होगी जब दोनों में टकराव हो। यहाँ टकराव नहीं है बल्कि अर्थ का स्पष्टीकरण है।

[अरबी शीर्षक]: और इसीलिए उन्होंने कहा कि 'अह' (पाबंदी) निराकरण है। [उर्दू शीर्षक]: इसीलिए विद्वानों ने कहा है कि विशिष्टता (तख़सीस) निराकरण (दफ़ा) है।

[अरबी पाठ]: अह: यदि आप कहें कि विशिष्टता केवल समवर्ती होती है, जबकि विलंबित विशिष्टता निरसन है, तो मैं कहता हूँ कि यह नियम सकारात्मक पाठ पर लागू होता है, जो शरीयत देने वाले (शारे') का वचन है। अतः जब यह निरपेक्ष रूप में आता है, तो हुक्म वैसा ही स्थापित होता है जैसा वह आया था। फिर, यदि किसी विशिष्ट मामले को विशिष्ट किया जाता है, तो वह उसके लिए निरसन (नासिख़) बन जाता है। जहाँ तक विद्वानों की बात है, वे केवल कथावाचक (रावी) हैं, और यह ज्ञात है कि वे कभी-कभी पाबंदी के स्थान पर निरपेक्ष शब्दों का प्रयोग करते हैं। इसलिए, विशिष्टता उनके भाषण में संक्षिप्तता का स्पष्टीकरण और उनके द्वारा वर्णित हुक्म की पूर्णता है, अतः इसे उनकी ओर

से समवर्ती माना जाएगा, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। (म) [उर्दू पाठ]: यदि आप आपत्ति करें कि विशिष्टता (तख़सीस) तो पहले कहे गए वचन के साथ होनी चाहिए, जबकि यदि वह बाद में आए तो वह निरसन (नासिख़) है; मैं कहता हूँ कि यह नियम हुक्म को सिद्ध करने वाले वचन के बारे में है, जो केवल शारे' अलैहिस्सलाम (ईश्वर के कानून निर्माता) का वचन है। उसमें जब निरपेक्ष (मुतलक़) हुक्म आता है, तो हुक्म भी निरपेक्ष होता है, और यदि बाद में विशिष्टता आती है, तो वह निरपेक्षता को रद्द करके उसके लिए निरसन बन जाती है। लेकिन विद्वान तो केवल कथावाचक होते हैं। शोध से यह ज्ञात हुआ है कि विद्वान कभी-कभी पाबंदी वाले स्थान पर निरपेक्ष शब्दों का प्रयोग करते हैं। अतः उनके वचनों में विशिष्टता संक्षेप की व्याख्या और उनके द्वारा वर्णित हुक्म की पूर्णता होती है। इसलिए यहाँ विशिष्टता को समवर्ती ही माना जाएगा। (त)

पृष्ठ 756 का 303

در کلمات دیگر ائمہ مصرح و بران مرجح نباشد خصوصاً در صورتیکه مقام مقام احتیاط ست۔ قید جو کوئی معتمد امام افادہ فرمائیں اسے قبول کرنا ضروری ہے جب تک کہ اس کے خلاف دیگر ائمہ کے کلمات میں تصریح اور اس پر ترجیح نہ ہو خاص طور سے جب احتیاط کا مقام ہو تو امام معتمد کی بتائی ہوئی ایسی قید کا قبول کرنا اور ضروری ہے

صرح به العلماء فی مسئلۃ انتضاح البول مثل رؤس الابر و من لم یطمئن قلبہ فعلیہ بحاشیۃ الشامی۔ سوئی کے ناکہ کے برابر پیشاب کے چھینٹے پڑ جانے کے مسئلہ میں علماء نے اس کی تصریح کی ہے جسے اطمینان قلب نہ ہو حاشیہ شامی کا مطالعہ کرے۔

واین (۱) معنی منافی تقدیم متون نیست کہ آں فرع تضادست و این بیان مراد۔ ایسی قید قبول کرلینے پر یہ نہیں کہا جاسکتا کہ متون کو شروح پر تقدم حاصل ہے اور متون کے اطلاق کو چھوڑ کر شروح کی تقیید کو لیا جائے تو یہ تقدیم متون کے منافی ہوگا اس لئے کہ منافات کی بات تو اس وقت ہوگی جب دونوں میں تضاد ہو۔ یہاں تضاد نہیں بلکہ بیان مراد ہے۔

و من ثم قالوا ان عہ التخصیص دفع اسی لئے علماء نے فرمایا ہے کہ تخصیص دفع ہے

عہ : فان قلت انما التخصیص المقارن اما المتراخي فناسخ اقول ذلك في المثبت وهو كلام الشارع فاذا ورد مطلقاً ثبت الحكم كما ورد فاذا خصص فرداً نتسخ فيه اما العلماء فرواة وقد علم انهم ربما يطلقون في محل التقييد فالتخصيص ابانة لمطووه وتكميل لما رووه فكان مقارنا منه غفر له۔ (م) اگر تو اعتراض کرے کہ تخصیص تو پہلے کلام سے مقارن ہوتی ہے جبکہ مؤخر ہو تو وہ ناسخ ہے اقول یہ قاعدہ، حکم کو ثابت کرنے والے کلام کے بارے میں ہے جو صرف شارع علیہ السلام کا کلام

ہے، اس میں جب مطلق وارد ہو گا تو حکم بھی مطلق ہو گا، اور اگر تخصیص وارد ہو تو وہ اطلاق کو رد کرکے اس کیلئے ناسخ ہو گی۔ لیکن علمائے کرام تو صرف راوی ہوتے ہیں اور تحقیق سے یہ بات معلوم ہے کہ علماء کرام قید والے مقام میں قید کی بجائے اطلاق سے کام لیتے ہیں پس تخصیص ان کے کلام میں اختصار کی وضاحت اور ان کے روایت کردہ حکم کی تکمیل ہوتی ہے لہذا یہاں تخصیص مقارن ہی تصور ہو گی۔ (ت)

Fatawa Rizwia Volume 3

[Arabic Column]: La-raf'a wa qad nassu kama sharah al-Lubab wa Radd al-Muhtar wa ghayrihima inna sha'n al-masha'ikh ibanat al-quyuud fala yu'ad mukhalafatan lil-mutun.

Akhar na deedi ke Allamah Muhaqqiq Zain bin Nujaym Misri rahimahullah ta'ala alaihi dar Bahr al-Raiq bar wa mishi karda hukm Junah wa ghairah bar banaye qillat-e-wujood-e-een shart daran az o istikhraj mi numayad wa Allamah Khair al-Din Ramli ustad-e-sahib-e-Durr al-Mukhtar neez banaye hukm bar een tafseel me nehad wa muhaqqiqeen-e-kiram ashaab-e-Bahr wa Nahr wa mudaqqiq Allai dar Durr al-Mukhtar istihsanash namooda bar hama amr ba hifzash mi farmayand wa muhashiyan-e-a'alam taqreer-ash mi numayand.

Faqad tahalla bi-hilyat al-maqbul kama yazharu kullu dhalika bi-muraja'at kalimatihim wal-ilmu bil-haqqi inda wahib al-uloom wa 'alimu kulli sirrin maktum.

[Urdu Column]: It is not a removal (meaning, specifying a ruling for certain individuals implies separating those who were not included; it does not mean that the ruling established for others was lifted). And regarding this, the clarification of scholars is present. As mentioned in 'Sharh al-Lubab', 'Radd al-Muhtar', and other books, it is the office of the masters of the school (Madhhab) to describe the constraints (if a matter apparently seems absolute while it is actually constrained by a condition, then explaining such constraints is the task of the masters of the school). Therefore, this constraint is not a contradiction of the core texts (mutun), but a clarification. (T)

Did you not see that the research scholar Allamah Zain bin Nujaym Misri (may Allah have mercy on him), in 'Bahr al-Raiq', accepted this constraint and derived the ruling for 'Junah' etc. from it, because this condition is rarely found in those things. Allamah Khair al-Din Ramli, the teacher of the author of 'Durr al-Mukhtar', also bases the ruling on this detail. The authors of 'Bahr al-Raiq' and 'Nahr al-Faiq', and the precise Allai of 'Durr al-Mukhtar', have considered this constraint as good and commendable, and everyone has emphasized remembering it, and the prominent commentators have maintained it. (T)

In view of all these endorsements, this constraint is adorned with the ornament of acceptance, as is evident from reviewing the words of these gentlemen and studying

their statements. And the knowledge of the truth is with the One who grants all knowledge and the Knower of every hidden secret. (T)

Problem 102: From Jais, District Raebareli, near the Mosque, house of Haji Ibrahim, sent by Wali Allah Sahib, 2nd Rabi ul-Awwal Sharif. What do the scholars of religion say regarding this matter: is it permissible to combine two (2) prayers without a valid excuse, and to perform Tayammum without any fatal or harmful illness?

The Answer: To perform a real combining (Jam' Haqiqi) of two (2) prayers without a valid excuse, such that one misses the time of the first to pray it in the time of the second, or before the time of the second arrives...

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[अरबी कॉलम]: ला-रफ़आ व क़द निसू कमा शरह अल-लुबाब व रद अल-मुह्तार व गैरिहिमा इन्न शान अल-मशायिक इबानत अल-क़ुयूद फ़ला यु'अद मुख़ालफ़तन लिल-मुतून।

आख़िर न दीदी के अल्लामा मोहक़्क़िक़ ज़ैन बिन नुजैम मिस्री रहमतुल्लाह तआला अलैहि दर बहर अल-राईक़ बर व मशी कर्दा हुक्म जुनाह व ग़ैरह बर बिनाए क़िल्लत-ए-वजूद-ए-ईन शर्त दरआन अज़ ओ इस्तख़राज मी नुमायाद व अल्लामा ख़ैर अल-दीन रमली उस्ताद-ए-साहिब-ए-दुर्र अल-मुख़्तार नीज़ बिनाए हुक्म बर ईन तफ़सील मे नेहाद व मोहक़्क़िक़ीन-ए-किराम अस्हाब-ए-बहर व नहर व मुदक़्क़िक़ अलाई दर दुर्र अल-मुख़्तार इस्तिहसानश नमूदा बर हमह अम्र बा हिफ़्ज़श मी फ़रमायांद व मुहाशयान-ए-आलम तक़रीर-अश मी नुमायांद।

फ़क़द तहल्ला बि-हिल्यत अल-मक़बूल कमा यज़हरु कुल्लु ज़ालिका बि-मुरजाअत कलिमातिहिम वल-इल्मु बिल-हक़्क़िक़ इंदा वाहिब अल-उलूम व आलिमु कुल्लि सिर्रिन मकतूम।

[उर्दू कॉलम]: यह रफ़अ (रद्द करना) नहीं है (अर्थात, कुछ व्यक्तियों से संबंधित आदेश को विशेष कर देने का अर्थ यह है कि जो उसमें शामिल नहीं थे, उन्हें अलग कर दिया गया; इसका अर्थ यह नहीं है कि जिनके लिए आदेश सिद्ध था, उनसे आदेश हटा लिया गया)। और इस संबंध में विद्वानों का स्पष्टीकरण मौजूद है। जैसा कि 'शरह लुबाब', 'रद अल-मुह्तार' और अन्य पुस्तकों में उल्लेख है कि यह मज़हब के प्रमुख विद्वानों (मशायिक़) का पद है कि वे प्रतिबंधों (क़ैद) का वर्णन करें (यदि कोई बात प्रत्यक्ष रूप से बिना शर्त नज़र आ रही है जबकि वह वास्तव में किसी शर्त के साथ है, तो ऐसी शर्तों की व्याख्या करना मज़हब के प्रमुखों का ही काम है)। इसलिए, यह प्रतिबंध मूल ग्रंथों (मुतून) के विरुद्ध नहीं, बल्कि एक स्पष्टीकरण है। (त)

क्या आपने नहीं देखा कि शोध विद्वान अल्लामा ज़ैन बिन नुजैम मिस्री (अल्लाह उन पर कृपा करे) ने इस शर्त को स्वीकार करते हुए 'बहर अल-राईक़' में जुनाह आदि का आदेश इससे निकाला है क्योंकि इन चीजों में यह शर्त कम ही पाई जाती है। 'दुर्र अल-मुख़्तार' के लेखक के शिक्षक अल्लामा ख़ैर अल-दीन रमली भी आदेश का आधार इसी विवरण पर रखते हैं। 'बहर अल-राईक़' और 'नहर अल-फ़ाइक़' के लेखकों और 'दुर्र अल-मुख़्तार' के सूक्ष्मदर्शी अलाई जैसे शोधकर्ताओं ने इस प्रतिबंध को उत्तम और सराहनीय माना है और सभी ने इसे याद रखने पर ज़ोर दिया है और प्रमुख टीकाकारों ने इसे बनाए रखा है। (त)

इन सभी समर्थनों के मद्देनज़र, यह प्रतिबंध स्वीकृति के आभूषण से सुसज्जित है, जैसा कि इन महानुभावों के शब्दों की समीक्षा और उनके कथनों के अध्ययन से स्पष्ट है। और सत्य का ज्ञान उसी के पास है जो ज्ञान प्रदान करने वाला है और प्रत्येक गुप्त रहस्य का ज्ञाता है। (त)

मसला 102: जाइस, जिला रायबरेली, मस्जिद के पास, हाजी इब्राहिम का घर, प्रेषक वली अल्लाह साहब, 2 रबी उल-अव्वल शरीफ़। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि बिना किसी कारण के दो (2) नमाज़ों को एक साथ जमा करना और बिना किसी जानलेवा या हानिकारक बीमारी के तयम्मुम करना जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब: बिना किसी कारण के दो (2) नमाज़ों को वास्तविक रूप से जमा (जमा हक़ीक़ी) करना, कि पहली का समय खोकर उसे दूसरी के समय में पढ़ना, या दूसरी का समय आने से पहले...

पृष्ठ 304/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[Arabic Column]: لارفع وقد نصوا کما شرح اللباب وردالمحتار وغیرہما ان شان المشائخ ابانة القیود فلا یعد مخالفة للمتون۔

آخر نہ دیدی کہ علامہ محقق زین بن نجیم مصری رحمہ اللہ تعالی علیہ در بحر رائق بر ومشی کردہ حکم جو نہ وغیرہ بر بنائے قلت وجود این شرط دران از و استخراج می نماید و علامہ خیر الدین رملی استاذ صاحب در مختار نیز بنائے حکم برین تفصیل مے نہد و محققین کرام اصحاب بحر و نہر و مدقق علائی در درمختار استحسانش نمودہ بر ہمہ امر بحفظش می فرمایند و محشیان اعلام تقریر ش مینمایند۔

فقد تحلی بحلیة المقبول کما یظہر کل ذلک بمراجعة کلماتہم والعلم بالحق عند واہب العلوم وعالم کل سر مکتوم۔

[Urdu Column]: رفع نہیں (یعنی بعض افراد سے متعلق حکم خاص کردینے کا مطلب یہ ہے کہ جو اس میں داخل نہ تھے ان کو الگ کر دیا یہ مطلب نہیں کہ جن کیلئے حکم ثابت تھا ان سے حکم اٹھا دیا)۔ اور اس سلسلہ میں تو علماء کی صراحت موجود ہے۔ جیسا کہ شرح لباب، ردالمحتار اور دوسری کتابوں میں مذکور ہے کہ یہ مشائخ مذہب کا منصب ہے کہ وہ قیدوں کو بیان کریں (کوئی بات بظاہر مطلق نظر آرہی ہے حالانکہ وہ کسی قید سے مقید ہے تو ایسی قیدوں کی توضیح مشائخ مذہب ہی کا کام ہے) اس لئے یہ تقیید، متون کی مخالفت نہیں، وضاحت ہے۔ (ت)

آپ نے دیکھا نہیں کہ علامہ محقق زین بن نجیم مصری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے اس قید کو قبول کرتے ہوئے بحر رائق میں جو نہ وغیرہ کا حکم اس سے استخراج کیا ہے کیونکہ ان چیزوں میں یہ

شرط کم ہی پائی جاتی ہے۔ صاحب درمختار کے استاد علامہ خیر الدین رملی بھی حکم کی بنیاد اسی تفصیل پر رکھتے ہیں۔ بحر رائق، نہر فائق کے مصنفین اور مدقق علائی صاحب درمختار جیسے محققین کرام نے اس قید کو مستحسن و پسندیدہ قرار دیا اور سبھی نے اسے یاد رکھنے کی تاکید کی اور محشیانِ اعلام نے اسے برقرار رکھا۔ (ت)

ان ساری تائیدات کے پیش نظر یہ قید زیور قبول سے آراستہ و پیراستہ ہے، جیسا کہ ان حضرات کے کلمات کی مراجعت اور ان کی عبارتوں کے مطالعہ سے ظاہر ہے اور حق کا علم اس کے پاس ہے جو علوم عطا فرمانے والا ہے اور ہر راز نہاں کو جاننے والا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۰۲: از جائس ضلع رائے بریلی محلہ زیر مسجد مکان حاجی ابراہیم مرسلہ ولی اللہ صاحب ۲ ربیع الاول شریف کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ دو ۲ نمازوں کو بلاعذر جمع کرنا اور بلا کوئی بیماری مہلک اور مضر کے تیمم کرنا جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: دو ۲ نمازوں کو بلاعذر جمع حقیقی کرنا کہ پہلی کا وقت کھو کر دوسری کے وقت میں پڑھیں یا دوسری کا وقت آنے سے

Fatawa Razawiyya - Volume 3

...first read it in the time of the first one is forbidden. In the first case, the prayer will be missed (Qaza), and in the second case, it won't be performed at all. Its research on a supreme level is in this pauper's treatise 'Hajiz al-Bahrayn'. If water is present and it doesn't cause harm, then for things that are impermissible without purification (Taharah), like prayer (Salah), touching the Holy Quran, or the prostration of recitation (Sajda Tilawat) etc., Tayammum (dry ablution) is forbidden. Yes, for things that are permissible even without purification, like reciting Durood Shareef, Kalima Shareef, or reciting the Holy Quran without Wudu, entering a mosque, giving Salam, or replying to Salam, if Tayammum is performed for these, there is no harm; rather, it is better. And Allah Almighty knows best.

Problem 103: Sent by Sayyid Muhammad Noor Alam Sahib, location Dholna, Tehsil Railway Station Kasganj, District Etah, 2 Jumada al-Ula 1322 AH: To the service of Maulana al-Azam al-Afkham, may Allah benefit the Muslims with your long life. Peace be upon you and the mercy and blessings of Allah. Deprived and unfortunate from the wealth of seeing you for a long time, and benefit from the sparks of scientific benefits. To the extent that I have even become negligent of formal customs of correspondence and inquiring about well-being. Woe to me! Nevertheless, your remembrance and love are present in my heart. I know and my God knows, may God bestow His special grace here and there, Amen. Necessary interruption of your organized time is this: it has been made famous that in the Hanafi school, the Wudu with which one performs or leads the funeral prayer (Janaza), with that one cannot perform other prayers, the five obligatory prayers (Salawat Maktuba Khamsa), and other optional prayers (Nawafil), etc. Do they perform them or is the command of the Hanafi school not to perform prayers with that Wudu? Whatever is the verified matter, please write it down and oblige. And also state whether anyone among the Hanafis has written this or not and what is its basis? Rest all is well and your well-being is desired.

The Answer: Honored by the high observation of Hazrat Azam Afkham Ajal Akram Alam Noor az Noor-e-Alam Sallallahu Ta'ala Alayhi wa Sallam, Hazrat Sayyiduna Maulana Sayyid Shah Muhammad Noor Alam Sahib, may Allah Almighty prolong their light and happiness. After respectful greetings, it is submitted: Al-Hamdu Lillah that the remembrance of this servant holds a place in a corner of your kind heart. This is from the grace of Allah upon us. This issue, which is famous in the world that

one cannot perform other prayers with the Wudu of Janaza, is completely wrong, false, and baseless.

Ruling 1: It is only to this extent that if the funeral prayer has commenced [1] and some healthy persons arrive, water is present, but if they perform Wudu, the prayer will be over, and there is no makeup (Qaza) for the funeral prayer, nor are there two prayers for one deceased person. In this state of compulsion, they are permitted to join the prayer by performing Tayammum. With this Tayammum, they cannot perform other prayers, nor can they perform matters dependent on purification like touching the Mushaf (Quran) etc., because this Tayammum, in a state of health and the presence of water, was done for a specific excuse which was limited to that funeral prayer. So for other prayers and...

[1] Commenced whether actually, that the intention (Niyyat) is tied, or is about to be tied quickly such that by the time Wudu is performed, all four Takbirs will have been completed. 12 Minhu Ghafar-lahu (M)

फ़तावा रज़विया - भाग 3

...पहले उसे पहली के समय में पढ़ लें हराम है, पहली स्थिति में नमाज़ कज़ा होगी और दूसरी में होगी ही नहीं। इसका शोध उच्चतम स्तर पर इस फ़क़ीर के लेख 'हाजिज़ अल-बहरीन' में है। यदि पानी मौजूद हो और नुक़सान न पहुँचाए, तो ऐसी चीज़ों के लिए जो बिना पवित्रता (तहारत) के हराम हैं, जैसे नमाज़, क़ुरान मजीद को छूना या सजदा तिलावत आदि, तयम्मुम हराम है। हाँ, जो चीज़ें बिना पवित्रता के भी जायज़ हैं जैसे दरूद शरीफ़, कलिमा शरीफ़ या बिना वज़ू के क़ुरान मजीद पढ़ना, मस्जिद में जाना, सलाम करना, सलाम का जवाब देना, इनके लिए अगर तयम्मुम कर लिया जाए तो कोई हर्ज नहीं बल्कि बेहतर है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 103: प्रेषक: सैय्यद मुहम्मद नूर आलम साहब, स्थान ढोलना, तहसील रेलवे स्टेशन कासगंज, जिला एटा, 2 जमादी अल-उला 1322 हिजरी: मौलाना अल-आज़म अल-अफ़ख़म की सेवा में, अल्लाह आपकी लम्बी उम्र से मुसलमानों को लाभान्वित करे। आप पर शांति और अल्लाह की दया और बरकतें हों। लंबे समय से आपके दीदार की दौलत से वंचित और अभागा हूँ और ज्ञान के लाभों के प्रकाश से दूर हूँ। यहाँ तक कि पत्राचार और कुशलक्षेम पूछने के औपचारिक रिवाजों से भी गाफ़िल हो गया हूँ। मुझ पर अफ़सोस! इसके बावजूद, आपकी याद और प्यार दिल में मौजूद है। मैं जानता हूँ और मेरा ख़ुदा जानता है, ख़ुदा यहाँ और वहाँ अपनी विशेष कृपा बनाए रखे, आमीन। आपके व्यवस्थित समय में आवश्यक हस्तक्षेप यह है कि यह प्रसिद्ध किया गया है कि हनफ़ी संप्रदाय में जिस वज़ू से जनाज़े की नमाज़ पढ़ी या पढ़ाई जाती है, उससे अन्य नमाज़ें (पाँचों अनिवार्य नमाज़ें और अन्य नफ़्ल आदि) नहीं पढ़ सकते। क्या वे पढ़ते हैं या हनफ़ी संप्रदाय का आदेश उस वज़ू से नमाज़ न पढ़ने का है? जो भी प्रमाणित बात हो, उसे लिखकर उपकृत करें और यह भी बताएँ कि क्या हनफ़ियों में से किसी ने यह लिखा है या नहीं और इसका आधार क्या है? बाकी सब ठीक है और आपकी कुशलता की कामना है।

जवाब: हज़रत आज़म अफ़ख़म अजल्ल अकरम आलम नूर अज़ नूर-ए-आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, हज़रत सैय्यदुना मौलाना सैय्यद शाह मुहम्मद नूर आलम साहब की उच्च सेवा में, अल्लाह तआला उनके नूर और खुशी को बनाए रखे। अदब और सलाम के बाद निवेदन है: अल्हम्दु लिल्लाह कि आपके दयालु हृदय के कोने में इस सेवक की याद जगह रखती है, 'ज़ालिका मिन फ़ज़लिल्लाह अलैना' (यह हम पर अल्लाह का फ़ज़ल है)। यह मसला जो दुनिया में मशहूर है कि जनाज़े के वज़ू से और नमाज़ नहीं पढ़ सकते, वह पूरी तरह ग़लत, बातिल और बेबुनियाद है।

मसला 1: केवल इस हद तक है कि यदि जनाज़े की नमाज़ शुरू हो गई हो [1] और कुछ स्वस्थ लोग आएँ, पानी मौजूद है लेकिन अगर वे वज़ू करें तो नमाज़ खत्म हो जाएगी, और जनाज़े की नमाज़ की कोई कज़ा नहीं है, न ही एक मैय्यत पर दो नमाज़ें होती हैं। इस मजबूरी में उन्हें अनुमति है कि वे तयम्मुम करके नमाज़ में शामिल हो जाएँ। इस तयम्मुम से वे अन्य नमाज़ें नहीं पढ़ सकते, न ही मुसहफ़ (क़ुरान) को छूने जैसे पवित्रता पर आधारित कार्य कर सकते हैं, क्योंकि यह तयम्मुम स्वास्थ्य और पानी की उपलब्धता की स्थिति में एक विशेष बहाने (उज़र) के लिए किया गया था जो उस जनाज़े की नमाज़ तक ही सीमित था। तो अन्य नमाज़ों और...

[1] शुरू हो गई हो, चाहे वास्तव में हो कि नीयत बाँध ली गई हो या जल्दी बँधने वाली हो कि वज़ू करने तक चारों तकबीरें पूरी हो जाएँगी। 12 मिन्हु ग़फ़र-लहू (म)

756 का पृष्ठ 305

...پہلے اُسے پہلی کے وقت میں پڑھ لیں حرام ہے پہلی صورت میں نماز قضا ہوگی اور دوسری میں ہوگی ہی نہیں اس کی تحقیق اعلیٰ درجہ بیان پر فقیر کے رسالہ حاجز البحرین میں ہے پانی موجود ہو اور ضرر نہ کرے تو ایسی چیز کیلئے جو بلاطہارت ناجائز ہے جیسے نماز یا قرآن مجید کا چھونا یا سجدہ تلاوت وغیرہا تیتّم حرام ہے۔ ہاں جو چیزیں بلاطہارت بھی جائز ہیں جیسے درود شریف، کلمہ شریف یا بے وضو قرآن مجید پڑھنا، مسجد میں جانا سلام کرنا سلام کا جواب دینا ان کیلئے اگر تیمم کرلیا مضائقہ نہیں بلکہ بہتر ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۳ : مرسلہ سید محمد نور عالم صاحب مقام ڈھولنہ تحصیل ریلوے اسٹیشن کاسگنج ضلع ایٹہ ۲ جمادی الاولیٰ ۱۳۲۲ھ: خدمت مولانا الاعظم الافخم متع اللہ المسلمین بطول بقائکم السلام علیکم و رحمۃ اللہ وبرکاتہ۔ مدّت سے دولت دیدار سے محروم اور بے نصیب اور اقتباس انوار فوائد علمیہ سے بہ بہر۔ تا آنکہ رسوم صوری مکاتبات اور دریافت خیر یات سے بھی غافل۔ وائے بر من معہذا آپ کی یاد اور محبت دل میں موجود۔ من دانم و خدایم خدا یہاں وہاں اپنا خاص کرم مبذول رکھے آمین ضروری تصدیح اوقات منتظمہ یہ ہے کہ مشہور کیا گیا ہے کہ مذہب حنفی میں جس وضو سے کہ جنازے کی نماز پڑھے یا پڑھائے اس سے دیگر نمازیں صلوات مکتوبہ خمسہ و دیگر نوافل وغیرہ نہیں پڑھتے ہیں آیا پڑھتے ہیں یا حکم مذہب حنفی اور نمازوں کے پڑھنے کا اس وضو سے نہیں ہے جو امر محقق ہو وہ لکھ کر ممنون فرمائیے اور یہ بھی فرمائیے کہ کسی نے احناف میں سے لکھا ہے یا نہیں اور اس کی اصل کیا ہے باقی خیریت اور آپ کی عافیت مطلوب۔

الجواب: بشرف ملاحظہ عالیہ حضرت اعظم افخم اجل اکرم عالم نور از نور عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم حضرت سیدنا مولانا سید شاہ محمد نور عالم صاحب ادام اللہ تعالیٰ نورہم وسرورہم۔ پس از

آداب معروض، الحمد للہ کہ گوشہ خاطر عاطر میں اس خادم کی یاد جگہ رکھتی ہے، ذلک من فضل اللہ علینا یہ مسئلہ کہ جہاں میں مشہور ہے کہ وضوئے جنازہ سے اور نماز نہیں پڑھ سکتے محض غلط و باطل وبے اصل ہے۔

مسئلہ ۱ صرف اس قدر ہے کہ اگر نمازِ جنازہ قائم ہوئی ۱؎ اور بعض اشخاص آئے تندرست ہیں پانی موجود ہے مگر وضو کریں تو نماز ہوچکے گی اور نماز جنازہ کی قضا نہیں، نہ ایک میت پر دو ۲ نمازیں، اس مجبوری میں انہیں اجازت ہے کہ تیمم کرکے نماز میں شریک ہوجائیں اس تیمم سے اور نمازیں نہیں پڑھ سکتے نہ مسِ مصحف وغیرہ امور موقوفہ علی الطہارۃ بجالا سکتے ہیں کہ یہ تیمم بحالت صحت و وجود ماء ایک خاص عذر کیلئے کیا گیا تھا جو اُس نمازِ جنازہ تا حد محدود تھا تو دیگر صلوت و

۱؎ قائم خواہ حقیقی ہو کہ نیت بندھ گئی یا جلد بندھنے کو ہے کہ وضو کرنے تک چاروں تکبیریں ہو چکیں گی ۱۲ منہ غفرلہ (م)

Fatawa Razawiyya, Volume 3

Regarding actions, performing Tayammum (dry ablution) without a valid excuse will remain ineffective. The ruling was such that common people have pushed it to such an extent. If (1) a sick person or someone in a place where water is unavailable performs the funeral prayer with Tayammum, then that Tayammum is sufficient for all prayers as long as the excuse persists, not just for that specific ablution. Peace be upon you with immense respect.

Masla 104: From the old city of Bareilly, asked by Akbar Ali Khan, employee of Madrasa Ahle Sunnat, 1st Dhu al-Hijjah 1331 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid exercises after Asr prayer wearing only a loincloth (langoti). His satr (private parts/area of modesty) is exposed, and other people are also present there. When he finishes exercising, the time for Maghrib prayer is near its end. From a medical perspective, performing wudu (ablution) while he is drenched in sweat after exercise is harmful, as there is a fear of developing body pain. In this case, is his wudu waived or not? Can he pray without fresh wudu or perform Tayammum? What is required? Please explain and be rewarded.

The Answer: It is haraam (prohibited) to expose the satr in front of people. Missing the congregation (jama'at) because of exercise is haraam. Restricting the prayer time and making it Makruh (disliked) is forbidden. Such exercise is impermissible. Wudu is not invalidated by exercise unless something that nullifies wudu occurs. If he has wudu, he should pray with that wudu. If wudu does not remain, one should not intentionally exercise at such a time. Exercise can be done after Isha or Fajr prayers as well. If it has occurred and there is fear of missing the prayer or congregation, and there is a genuine fear of contracting diseases like joint pain etc. by performing wudu at that time, then he should perform Tayammum and pray. There is no need for such waiting, for instance, waiting for an hour until the veins settle before doing wudu and praying.

[Box Content] Left (Arabic): Because consideration is for the present state, not the future. Like a person on a journey who is one mile away from water; it is not obligatory for him to delay the prayer, although it is recommended (mandub). Right (Urdu): This is because consideration is for the current state, not the future. For example, a person who is one mile away from water during a journey is not obligated to delay the prayer, although it is recommended. (T)

Yes, it is better and more virtuous (to wait and do wudu), but if by waiting the time passes or becomes Makruh, or the congregation is missed, then there is no need to wait. Perform Tayammum now and pray. And Allah the Almighty knows best.

Masla 105: From Gondal region, Kathiawar, asked by Sheikh Abdul Sattar bin Ismail Sahib Qadri Razawi, 18 Rajab 1334 AH. Is the water from a hookah (hukka) pure or impure? If during travel water is not found, is wudu permissible with hookah water instead of performing Tayammum?

फतावा रज़विया, जिल्द 3

कर्मों के लिए, बिना किसी कारण के किया गया तयम्मुम निष्प्रभावी रहेगा। नियम यह था कि आम लोगों ने इसे कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया। यदि (1) किसी बीमार व्यक्ति ने या जहाँ पानी न हो, तयम्मुम से जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी, तो वह तयम्मुम भी बहाने के बने रहने तक सभी नमाज़ों के लिए पर्याप्त है, न कि केवल वज़ू के लिए। सलाम और बहुत सम्मान के साथ।

मसला 104: पुराना शहर बरेली से, पूछने वाले अकबर अली खान, मदरसा अहले सुन्नत के कर्मचारी, 1 ज़ुल-हिज्जा 1331 हिजरी। इस मसले में दीन के उलमा क्या कहते हैं कि ज़ैद असर की नमाज़ के बाद लंगोटी बांधकर कसरत (व्यायाम) करता है, उसका सतर (गुप्त अंग) खुला रहता है और दूसरे लोग भी वहाँ मौजूद होते हैं। जब वह कसरत से फारिग होता है तो मग़रिब की नमाज़ का वक़्त आखिरी होता है। हिकमत (चिकित्सा) के लिहाज़ से कसरत के बाद जब वह पसीने में तर हो, वज़ू करना हानिकारक है, शरीर में दर्द हो जाने की आशंका है। इस सूरत में उसका वज़ू माफ़ हुआ या नहीं? क्या वह बिना ताज़ा वज़ू के नमाज़ पढ़ सकता है या तयम्मुम करे, क्या करना चाहिए? बयान करें और पुण्य पाएँ।

जवाब: लोगों के सामने सतर खोलना हराम है। कसरत के कारण जमाअत खोना हराम है। नमाज़ का वक़्त तंग और मकरूह कर देना मना है। ऐसी कसरत नाजायज़ है। कसरत से वज़ू नहीं टूटता जब तक कि वज़ू तोड़ने वाली कोई चीज़ न हो। अगर वज़ू है तो उसी वज़ू से नमाज़ पढ़ ले। और अगर वज़ू बाकी न रहे तो ऐसे वक़्त में जानबूझकर कसरत नहीं करनी चाहिए। कसरत ईशा या फज्र के बाद भी हो सकती है। और अगर कसरत हो गई और नमाज़ या जमाअत छूटने का डर है, और उस वक़्त वज़ू करने से जोड़ों के दर्द (वज'उल मफासिल) आदि बीमारियों के पैदा होने का सच्चा डर है, तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़े। इस इंतज़ार की ज़रूरत नहीं कि मिसाल के तौर पर घंटे भर जब नसें शांत हो जाएँगी तब वज़ू करके पढ़ेगा।

[बॉक्स की सामग्री] बाएँ(अरबी): बेशक एतबार वर्तमान स्थिति का है, भविष्य का नहीं। जैसे वह व्यक्ति जो सफर में पानी से एक मील दूर हो, उस पर नमाज़ को टालना वाजिब नहीं है, हालाँकि यह मंदूब (बेहतर) है। दाएँ(उर्दू): इसलिये कि एतबार मौजूदा हालत का है आइंदा का नहीं। जैसे वह शख़्स जो सफर में पानी से एक मील दूर पर हो उस पर नमाज़ को मोअख्खर (विलंबित) करना वाजिब नहीं अगर चे मंदूब है। (त)

हाँ, यह बेहतर और अफजल है, लेकिन जब इस इंतज़ार से वक़्त निकल जाए या मकरूह हो जाए या जमाअत छूट जाए, तो इंतज़ार की ज़रूरत नहीं। अभी तयम्मुम करे और नमाज़ पढ़े। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 105: गोंडल क्षेत्र, काठियावाड़ से, पूछने वाले शेख अब्दुल सत्तार बिन इस्माइल साहब कादरी रज़वी, 18 रजब 1334 हिजरी। हुक्के का पानी पाक (पवित्र) है या नापाक (अपवित्र)? मुसाफिरी (यात्रा) में अगर पानी न मिले, तो तयम्मुम के बजाय हुक्के के पानी से वज़ू करना जायज़ है या नहीं?

पृष्ठ 306/756

افعال کے لئے وہ تیمم محض بے عذر وبے اثر رہے گا حکم یہ تھا کہ عوام نے اسے کشاں کشاں کہاں تک پہنچایا۔ اگر (۱) مریض نے یا جہاں پانی نہ ہو تیمم سے نماز جنازہ پڑھی تو وہ تیمم بھی تابقائے عذر سب نمازوں کیلئے کافی ہے نہ کہ وضو۔ والسلام مع الوف الاکرام

مسئلہ ۱۰۴: از شہر کہنہ بریلی مسئولہ اکبر علی خان ملازم مدرسہ اہلسنت یکم ذی الحجہ ۱۳۳۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید بعد نماز عصر لنگوٹی باندھ کر ورزش کرتا ہے اُس کا ستر کھلا ہوا ہے اور لوگ بھی وہاں پر موجود ہیں جب وہ ورزش سے فارغ ہوا تو نماز مغرب کا وقت اخیر ہوتا ہے از روئے حکمت بعد ورزش جبکہ وہ پسینہ میں تر ہے وضو کرنا مضر ہے بدن میں درد ہو جانے کا اندیشہ ہے اس صورت میں اس کا وضو ساقط ہوا یا نہیں، بلا تازہ وضو نماز پڑھ سکتا ہے یا تیمم کرے، کیا چاہئے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: لوگوں کے سامنے ستر کھولنا حرام ہے ورزش کے سبب جماعت کھونا حرام ہے نماز کا وقت تنگ و مکروہ کر دینا منع ہے ایسی ورزش ناجائز ہے ورزش سے وضو نہیں جاتا جب تک کوئی شے ناقضِ وضو صادر نہ ہو اگر وضو ہے تو اُسی وضو سے نماز پڑھ لے اور جو وضو باقی نہ رہتا ہو تو ایسے وقت ورزش کرنا قصداً نہ چاہئے ورزش عشا یا صبح کے بعد بھی ہو سکتی ہے اور اگر واقع ہوئی اور نماز یا جماعت کے فوت کا اندیشہ ہے اور اس وقت وضو کرے تو وجع مفاصل وغیرہ امراض پیدا ہونے کا صحیح خوف ہے تو تیمم کر کے نماز پڑھے اس انتظار کی حاجت نہیں کہ مثلاً گھنٹے بھر جب رگیں رگیں ساکن ہو جائیں گی وضو کر کے پڑھے گا۔

[باکس کا متن] دائیں (عربی): فان العبرۃ للحال دون الاستقبال کمن بعد میلا من الماء فی السفر لیس علیہ التاخیر وان ندب۔ بائیں (اردو): اس لئے کہ اعتبار موجودہ حالت کا ہے آئندہ کا نہیں۔ جیسے وہ شخص جو سفر میں پانی سے ایک میل دُور پر ہو اس پر نماز کو مؤخر کرنا واجب نہیں اگر چہ مندوب ہے۔ (ت)

ہاں یہ بہتر وافضل ہے مگر جبکہ اس انتظار سے وقت جاتا یا مکروہ ہوتا یا جماعت فوت ہوتی ہو تو انتظار کی حاجت نہیں ابھی تیمم کرے اور نماز پڑھے واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۰۵ : از گونڈل علاقہ کاٹھیاوار مسئولہ شیخ عبدالستار بن اسمعیل صاحب قادری رضوی ۱۸ رجب ۱۳۳۴ھ حقہ کا پانی پاک ہے یا ناپاک۔ مسافری میں اگر پانی نہ ملے تو بجائے تیمم کے حقے کے پانی سے وضو جائز ہے یا نہیں؟

صفحہ 306/756

Fatawa Razawiya, Volume Three

The Answer: There is no reason for its water to be impure, and the change that occurs in its color, smell, and taste due to smoke does not cause any difference in its being pure and purifying.

[Arabic Text in Box] "Wudu (ablution) is permissible with water whose qualities have changed by mixing with a pure non-liquid substance, as mentioned in 'At-Tabyin', 'Al-Fath', 'Al-Bahr', 'Ad-Durr', and others."

[Urdu Translation in Box] It is permissible to perform wudu with water even if one of its qualities changes due to the addition of a non-liquid pure thing, as stated in Tabyin al-Haqa'iq, Fath al-Qadir, Bahr al-Ra'iq, Durr al-Mukhtar etc. (T)

If water is not found during travel and this water is available in sufficient quantity, Tayammum (dry ablution) will not be valid; Wudu with this water will be obligatory. This is according to the word of Allah Almighty: "And if you find no water" (Quran). Whereas this person has found water. (T) However, if there is a smell in it, then it is necessary that wudu be performed with it at such a wide time that the dislike (Karahah) does not occur until the smell disappears. When the smell is gone, perform the prayer at that time, and if one sees that time is running out, then one should not wait. Allah Almighty knows best.

Issue 106: Submitted by Abid Khan through Munshi Khuda Bakhsh Sahib, Contractor, Sadar Bazaar, Bareilly, Monday 10 Shaban 1336 AH. What do the scholars of religion and the firm Sharia say about this: a person slept after having intercourse with his wife. Now he woke up at a time when the time for Fajr prayer has become very short, such that if he performs Ghusl (ritual bath), the prayer will be missed. In such a time, is it permissible to wash the private parts and pray or not? If prayer without Ghusl is not permissible, then for what reason, even though intercourse with one's wife is Halal (permissible)?

The Answer: When the time for prayer is short, one should wash off the impurity, perform Tayammum, and pray. Then, after bathing and after the sun is high, one should repeat the prayer. The command for purification is not waived because intercourse with a woman is Halal. There are three scenarios here: 1. If the time was such that after intercourse one would not find time to perform Ghusl and pray, then in such a case, intercourse itself is Haram (forbidden) because it is intentional missing of prayer. A woman being a wife does not necessitate that intercourse with

her is permissible in all circumstances. There is prayer, fasting, I'tikaf (seclusion), menstruation, post-natal bleeding, and many scenarios where intercourse with a wedded wife is also Haram. And if 3 the time was...

---

1. Tabyin al-Haqa'iq, Research on Water, Bulaq, Egypt, 1/19.
2. Al-Quran 22/4 (4:43)

फ़तावा रज़विया, खंड तीन

उत्तर: इसके पानी के अशुद्ध होने का कोई कारण नहीं है और धुएं के कारण इसके रंग, गंध और स्वाद में जो परिवर्तन आता है, उससे इसके शुद्ध और शुद्ध करने वाले (ताहिर व मुतहिर) होने में कोई अंतर नहीं आता।

[बॉक्स में अरबी पाठ] "उस पानी से वज़ू करना जायज़ है जिसके गुणों में से कोई एक गुण किसी गैर-तरल शुद्ध चीज़ के मिलने से बदल गया हो, जैसा कि 'अत-तबीन', 'अल-फतह', 'अल-बहर', 'अद-दुर्र' आदि में है।"

[बॉक्स में उर्दू अनुवाद] किसी गैर-तरल पाक चीज़ के मिलने से जिस पानी का कोई एक गुण बदल जाए, उससे वज़ू करना जायज़ है, जैसा कि तबीन अल-हक़ाएक़, फ़तह अल-क़दीर, बहर अर-राएक़, दुर्रे मुख्तार आदि में है। (त)

सफर में अगर पानी न मिले और यह पानी पर्याप्त मात्रा में मौजूद हो, तो तयम्मुम नहीं होगा, इससे वज़ू करना लाज़िम होगा। क्योंकि अल्लाह तआला का फ़रमान है: "और अगर तुम्हें पानी न मिले" (क़ुरआन)। जबकि यह पानी पाने वाला है। (त) अलबत्ता अगर उसमें गंध है, तो यह लाज़िम होगा कि ऐसे विस्तृत समय में उससे वज़ू किया जाए कि गंध दूर होने तक कराहत (नापसंदगी) न आए। जब गंध चली जाए तब नमाज़ पढ़े और अगर देखे कि समय जा रहा है तो इंतज़ार न करे। वल्लाहु तआला आलम।

मसला १०६: प्रेषक: आबिद खान, मार्फ़त मुंशी खुदा बख्श साहिब, ठेकेदार सदर बाज़ार, बरेली, सोमवार १० शाबान १३३६ हिजरी। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत इस बारे में क्या फरमाते हैं कि एक व्यक्ति अपनी पत्नी से संभोग करके सो गया। अब उसकी आँख ऐसे समय खुली जब फज्र की नमाज़ का समय बहुत कम रह गया है कि अगर वह गुस्ल (स्नान) करता है तो नमाज़ कज़ा (छूट) हो जाएगी। ऐसे समय में केवल अंगों को धोकर नमाज़ पढ़ लेना जायज़ है या नहीं? अगर बिना गुस्ल नमाज़ जायज़ नहीं है, तो किस कारण से, जबकि पत्नी से संभोग करना हलाल है?

उत्तर: जब नमाज़ का समय कम हो, तो अशुद्धि को धोकर और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले, फिर स्नान करके सूर्योदय के बाद उसे दोहराए। पत्नी से संभोग हलाल होने के कारण पवित्रता का आदेश समाप्त नहीं हो सकता। यहाँ तीन स्थितियाँ हैं: १. अगर समय ऐसा था कि संभोग के बाद गुस्ल करके

नमाज़ का समय नहीं मिलेगा, तो ऐसी स्थिति में संभोग ही हराम है क्योंकि यह जानबूझकर नमाज़ छोड़ना है। पत्नी का पत्नी होना यह आवश्यक नहीं करता कि हर हाल में उससे संभोग जायज़ हो। नमाज़ है, रोज़ा है, एतिकाफ़ है, मासिक धर्म है, प्रसवोत्तर रक्तस्राव है और कई ऐसी स्थितियाँ हैं जिनमें विवाहित पत्नी से भी संभोग हराम है। और अगर ३ समय ऐसा था...

---

1. तबीन अल-हक़ाएक़, जल पर शोध, बुलाक मिस्र १९/१
2. अल-कुरान २२/४ (४:४३)

पृष्ठ ३०७ / ७५६

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

الجواب: اُس کا پانی نجس ہونے کی کوئی وجہ نہیں اور دھوئیں کے سبب جو اس کے رنگ وبو ومزہ میں تغیر آجاتا ہے اس سے اس کے طاہر و مطہر ہونے میں کوئی فرق نہیں آتا۔

[باکس میں عربی عبارت] "ویجوز الوضوء بماء تغیر احد اوصافه بخلط طاهر غیر مائع کما فی التبیین والفتح والبحر والدر وغیرها۔"

[باکس میں اردو عبارت] کسی غیر سیال پاک چیز کے ملنے سے جس پانی کا کوئی ایک وصف بدل جائے اس سے وضو جائز ہے جیسا کہ تبیین الحقائق، فتح القدیر، بحر الرائق، در مختار وغیرہما میں ہے۔ (ت)

سفر میں اگر پانی نہ ملے اور یہ پانی بقدر کفایت موجود ہے تیّمم نہ ہو گا اس سے وضو لازم ہو گا۔ لقولہ تعالی فَلَمْ تَجِدُوْا مَاءً وَهذَا یَجِدُ مَاءً ("اور تم پانی حاصل نہ کر سکو"۔ جبکہ یہ پانی حاصل کرنے والا ہے۔ت) البتہ اگر اُس میں بو ہے تو یہ لازم ہو گا کہ ایسے وسیع وقت میں اُس سے وضو کیا جائے کہ بو زائل ہونے تک کراہت نہ آئے جب بُو جاتی رہے اُس وقت نماز پڑھے اور اگر دیکھے کہ وقت جاتا ہے تو انتظار نہ کرے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۰۶: مسئولہ عابد خان معرفت منشی خدابخش صاحب ٹھیکیدار صدر بازار بریلی دوشنبہ ۱۰ شعبان ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و شرع متین اس بارے میں کہ ایک شخص اپنی بی بی سے صحبت کر کے سو گیا اب اس کی آنکھ ایسے وقت کھلی جبکہ وقتِ نمازِ فجر بہت تنگ ہو گیا کہ اگر غسل کرتا ہے تو نماز قضا ہوئی جاتی ہے ایسے وقت میں ستر دھو کر نماز پڑھ لینا

جائز ہے یا نہیں، اگر بلا غسل نماز جائز نہیں تو کس وجہ سے جبکہ بی بی سے صحبت کرنا حلال ہے۔

الجواب: جبکہ نماز کا وقت تنگ ہو نجاست دھو کر تیّم کر کے نماز پڑھ لے پھر نہا کر بعد بلند آفتاب اُس کا اعادہ کرے اور عورت سے صحبت حلال ہونے کے سبب طہارت کا حکم ساقط نہیں ہو سکتا۔ یہاں تین صورتیں ہیں اگر ۱ وقت ایسا تھا کہ بعد جماع غسل کر کے نماز کا وقت نہ ملے گا تو ایسی صورت میں جماع ہی حرام ہے کہ قصداً تفویتِ نماز ہے اور عورت ۲ کا زوجہ ہونا اسے مستلزم نہیں کہ ہر حال میں اُس سے صحبت جائز ہو نماز ہے روزہ ہے اعتکاف ہے حیض ہے نفاس ہے اور بہت صورتیں ہیں کہ ان میں منکوحہ سے بھی صحبت حرام ہے اور اگر ۳ وقت ایسا تھا

---

۱ تبیین الحقائق ابحاث الماء بولاق مصر ۱۹/۱ ۲ القرآن ۲۲/۴

Fatawa Razawiyya Volume Three

...that it would have sufficed for bath and prayer, but it was already morning or close to it, and the strong presumption was that if one slept now, eyes wouldn't open (until late), then intercourse was permissible and sleeping was prohibited. And if there was ample time for sleeping as well, and by chance eyes opened at such a constrained time, then both intercourse and sleeping were lawful and sin is waived. In any case, the ruling is the same: when time is short, perform Tayammum and offer prayer, then after taking a bath, repeat it. And Allah Almighty knows best.

Problem 107: 5 Safar 1335 AH. What do the scholars of religion say regarding this problem: due to weakness, there is pain in all the joints of the body. In winter, washing feet causes more pain in the hips and back. For two years, there has been an injury in the elbow of one hand; it always hurts. While performing Wudu, if I wash the hand below the elbow, I perform Masah (wiping) on the elbow, and sometimes I perform Masah on the feet as well. Due to this same fear, bathing on Friday also happens occasionally. In this situation, should Masah be performed on the feet and the elbow of the hand or not? And sometimes I perform Tayammum as well, and sometimes a complete Wudu.

Answer: As much as one has the ability, that much is obligatory. If one has the ability for full Wudu, then neither Masah is permissible nor Tayammum. And if pouring water on the elbow or feet causes harm, then if it always causes harm, perform Masah on that entire area always and wash the remaining limbs. And if it is such that washing in winter causes harm but not in summer, or it causes harm in cold times but not in warm times, then perform Masah at the time it causes harm and wash at other times; Tayammum is not permissible. And Allah Almighty knows best.

Problem 108: Sent by Sayyid Muhammad Fahim, D.T.S. Office, Danapur Ghol, District Patna, 12 Jamadi 1335 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say regarding this problem: A person's one foot is afflicted with the disease of Elephantiasis (Fil-paya). For this reason, washing that foot is harmful for him. In such a situation, can that person perform Masah on it instead of washing, or not? Or will he perform Tayammum in this situation instead of Wudu? Clarify and be rewarded.

Answer: In this situation, permission for Tayammum cannot be given. Rather, if there is no harm, washing the foot will be obligatory. If it causes harm, the ruling of Masah will be mandatory. For example, if washing the foot in cold time causes harm, then wash the foot in warm time and perform Masah on the foot in cold time. Or if

washing with cold water causes harm, wash the foot with warm water and do not perform Masah. Or if water causes harm to one part of the foot and not the other, and that other part can be washed such that the harmful part [does not get] water...

...कि ग़ुस्ल और नमाज़ के लिए काफ़ी था मगर सुबह हो चुकी थी या होने के क़रीब थी और यह ज़न-ए-ग़ालिब (प्रबल संभावना) था कि अब सोकर आँख न खुलेगी तो सोहबत (संभोग) जाइज़ थी और सोना हराम और अगर सोने के लिए भी वक़्त वसीअ (व्यापक) था और इत्तिफ़ाक़न आँख ऐसे तंग वक़्त में खुली तो सोहबत और सोना दोनों हलाल और गुनाह मरफ़ूअ (समाप्त)। बहरहाल हुक्म वही है कि जब वक़्त तंग है तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले और फिर ग़ुस्ल करके इआदा (दोबारा पढ़ना) करे, वल्लाहु तआला आलम।

मसला १०७ : ५ सफ़र १३३५ हिजरी। उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ईफ़ी (बुढ़ापे/कमज़ोरी) के कारण शरीर के सभी जोड़ों में दर्द रहता है। जाड़ों (सर्दियों) में पैर धोने से कूल्हे और कमर में दर्द बढ़ जाता है। एक हाथ की कोहनी में दो साल से चोट लगी है, हमेशा दर्द रहता है। वज़ू करने में कोहनी से नीचे हाथ धोता हूँ तो कोहनी पर मसह कर लेता हूँ और कभी पैरों पर भी मसह कर लेता हूँ। इसी डर की वजह से जुमा के दिन नहाना भी इत्तिफ़ाक़न (कभी-कभी) होता है। इस हालत में पैर का मसह और हाथ की कोहनी का मसह करना चाहिए या नहीं? और किसी वक़्त में तयम्मुम भी कर लेता हूँ और कभी पूरा वज़ू भी।

अल-जवाब : जितनी बात पर क़ुदरत (सामर्थ्य) है उतनी फ़र्ज़ है। अगर पूरे वज़ू पर क़ुदरत है तो न मसह जाइज़ है न तयम्मुम। और अगर कोहनी या पाँव पर पानी डालने से ज़रर (नुकसान) होता है, तो अगर हमेशा नुक़सान होता है, तो हमेशा वहाँ पूरी जगह मसह करे और बाक़ी आज़ा (अंगों) को धोए। और अगर ऐसा है कि जाड़े में धोना नुक़सान करता है, गर्मियों में नहीं, या ठंडे वक़्त में नुक़सान करता है, गर्म वक़्त में नहीं, तो जिस वक़्त नुक़सान करता है उस वक़्त मसह करे बाक़ी औक़ात (समय) में धोए, तयम्मुम जाइज़ नहीं। वल्लाहु तआला आलम।

मसला १०८ : मुरसला सैयद मोहम्मद फ़हीम, डी.टी.एस. ऑफ़िस, दानापुर घोल, ज़िला पटना, १२ जमादी १३३५ हिजरी। उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ मतीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक शख़्स का एक पाँव फ़ील पाया (हाथीपाँव) की बीमारी में मुब्तला है। इस वजह से उस पाँव का धोना उसके हक़ में मुज़िर (हानिकारक) है। ऐसी सूरत में वह शख़्स उस पर बजाये ग़ुस्ल (धोने) के मसह कर सकता है या नहीं? या बजाये वज़ू के सूरत-ए-हाज़ा में तयम्मुम करेगा? बयान फ़रमाएँ, सवाब पायेंगे।

अल-जवाब : इस सूरत में तयम्मुम की इजाज़त नहीं हो सकती, बल्कि ज़रर न हो तो पाँव धोना फ़र्ज़ होगा। ज़रर करे तो मसह का हुक्म लाज़िम होगा। मसलन, ठंडे वक़्त पाँव धोना ज़रर करता है तो गर्म वक़्त में पाँव धोए और सर्द वक़्त में पाँव पर मसह करे। या सर्द पानी से धोना नुक़सान देता है तो गर्म से पाँव धोए मसह न करे। या पाँव के एक हिस्से पर पानी ज़रर पहुँचाता है दूसरे पर नहीं, और वह दूसरा हिस्सा यूँ धो सकता है कि नुक़सान वाले हिस्से को पानी [न पहुँचे]...

पृष्ठ ३०८ का ७५६

کہ غسل و نماز کو کافی تھا مگر صبح ہوچکی تھی یا ہونے کے قریب تھی اور یہ ظن غالب تھا کہ اب سو کر آنکھ نہ کھلے گی تو صحبت جائز تھی اور سونا حرام اور اگر سونے کیلئے بھی وقت وسیع تھا اور اتفاقاً آنکھ ایسے تنگ وقت کھلی تو صحبت اور سونا دونوں حلال اور گناہ مرفوع بہر حال حکم وہی ہے کہ جب وقت تنگ ہے تیمم کر کے نماز پڑھ لے اور پھر غسل کر کے اعادہ کرے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۷ : ۵ صفر ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین صاحب اس مسئلہ میں کہ بسبب ضعیفی کے تمام جوڑوں میں بدن کے درد رہتا ہے جاڑوں میں پیر دھونے سے کولھے اور کمر میں درد زیادہ ہوتا ہے ایک ہاتھ میں دو برس سے کہنی میں چوٹ لگ گئی ہے ہمیشہ درد رہتا ہے وضو کرنے میں کہنی سے نیچے ہاتھ دھوتا ہوں تو کہنی پر مسح کرلیتا ہوں اور کبھی پیروں پر بھی مسح کرلیتا ہوں اسی اندیشہ کی وجہ سے جمعہ کے روز نہانا بھی اتفاقاً ہوتا ہے اس حالت میں پیر کا مسح اور ہاتھ کی کہنی کا مسح کرنا چاہئے یا نہیں اور کسی وقت میں تیمم بھی کرلیتا ہوں اور کبھی پورا وضو بھی۔ الجواب : جتنی بات پر قدرت ہے اتنی فرض ہے اگر پورے وضو پر قدرت ہے تو نہ مسح جائز نہ تیمم اور اگر کہنی یا پاؤں پر پانی ڈالنے سے ضرر ہوتا ہے تو اگر ہمیشہ نقصان ہوتا ہے ہمیشہ وہاں پوری جگہ مسح کرے باقی اعضاء دھوئے اور اگر ایسا ہے کہ جاڑے میں دھونا نقصان کرتا ہے گرمیوں میں نہیں یا ٹھنڈے وقت میں نقصان کرتا ہے گرم وقت میں نہیں تو جس وقت نقصان کرتا ہے اس وقت مسح کرے باقی اوقات دھوئے، تیمم جائز نہیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۰۸ : مرسلہ سید محمد فہیم ڈی ٹی ایس آفس دانا پور گھول ضلع پٹنہ ۱۲ جمادی ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کا ایک پاؤں عارضہ فیل پایہ میں مبتلا ہے بدیں وجہ اُس پاؤں کا دھونا اُس کے حق میں مضر ہے ایسی صورت میں وہ شخص اس پر بجائے غسل کے مسح کرسکتا ہے یا نہیں یا بجائے وضو کے صورتِ ہذا میں تیمم کرے گا۔ بینوا توجروا الجواب : اس صورت میں تیمم کی اجازت نہیں ہوسکتی بلکہ ضرر نہ ہو تو پاؤں دھونا فرض ہوگا ضرر کرے تو مسح کا حکم لازم ہوگا مثلاً ٹھنڈے وقت پاؤں دھونا ضرر کرتا ہے تو گرم وقت میں پاؤں دھوئے اور سرد وقت میں پاؤں پر مسح کرے یا سرد پانی سے دھونا نقصان دیتا ہے تو گرم سے پاؤں دھوئے مسح نہ کرے یا پاؤں کے ایک حصے پر پانی ضرر پہنچاتا ہے دوسرے پر نہیں اور وہ دوسرا حصہ یوں دھو سکتا ہے کہ نقصان والے حصے کو پانی

Fatawa Razawiyya Volume 3

...does not reach, then washing that part is obligatory and wipe (mash) over it. In short, the extent of capability will be considered. Then, for however much of the limb the ruling of wiping applies, it is necessary for the wet hand to reach every single particle of that entire area. If any part remains dry, the wudhu (ablution) will not be valid. These issues are explicitly mentioned in general books. And Allah Almighty knows best. (Clarification exists in general books. And Allah Almighty knows best - T)

Question 109: Second: Is it permissible for the aforementioned person to rely on tayammum (dry ablution) after needing a bath (ghusl), as the use of water has proven harmful for him?

The Answer: The illness is only in the feet. Let him bathe in such a way that water does not reach the part of the feet that the water harms; let him perform a complete wiping (mash) over that part. Tayammum is not permissible. The forms of harm are the same as mentioned above: if water is harmful only in cold weather, then bathe at that time and pray after wiping that area; when a warm time comes, pour water on that area as well. Or if only cold water causes harm, wash that area with warm water and the rest of the body with whatever water desired. Protect that portion of the feet from washing on which flowing water causes harm, whether because the illness itself is there, or because pouring water there would cause water to reach the site of the illness and protection wouldn't be possible, or because though water wouldn't reach it, the cold there would cause harm. Over whatever area harm occurs in any way, the wet hand must comprehensively reach every single particle, otherwise the ghusl (bath) will not be valid. And Allah Almighty knows best.

Issue 110: From Sarnia, District Bareilly, submitted by Sheikh Amir Ali Qadri Razwi, 16 Shawwal 1330 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this matter: Zaid goes to plow at 12 o'clock at night, and Fajr time arrives while he is in the field. Now neither is water available, nor can he go to the mosque now because the mosque is far away and water is also unavailable. Can Zaid now pray with tayammum or not?

The Answer: If water is one mile or more away from his field where he is at this time, he can perform tayammum, otherwise absolutely not.

| In Ad-Durr al-Mukhtar: *Li bu'dihi walaw muqiman fil misri milan* | In Durr al-Mukhtar, among the conditions for the permissibility of tayammum, it says: Due to being one

mile away from water, even if he is a resident in the city. And Allah Almighty knows best. (T) |

1. And Allah Almighty knows best.

---

1. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/41.

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

...न पहुँचे तो उस हिस्से का धोना फ़र्ज़ है और उस हिस्से पर मसह करे। ग़रज़ कुदरत की मिकदार देखी जाएगी। फिर जितने उज़्व (अंग) पर मसह का हुक्म होगा, उस पूरे टुकड़े पर भीगा हाथ एक-एक ज़र्रे पर पहुँचना लाज़िम होगा। अगर कोई हिस्सा खुश्क रहा तो वज़ू न होगा। ये मसाइल आम किताबों में स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (आम किताबों में इनकी स्पष्टता मौजूद है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। -त)

सवाल १०९: दूसरा: मज़कूरा (उपरोक्त) व्यक्ति को ग़ुस्ल की ज़रूरत के बाद तयम्मुम पर इक्तिफ़ा (निर्भर) करना जायज़ है या नहीं, क्योंकि पानी का इस्तेमाल उसके हक में नुकसानदेह साबित हो चुका है?

الجواب। (जवाब): बीमारी तो सिर्फ पाँव में है। वह इस तरह नहाए कि पाँव के उस हिस्से को जिसे पानी नुकसान देता है, पानी न पहुँचे। इतने हिस्से पर मुकम्मल मसह कर ले। तयम्मुम जायज़ नहीं हो सकता। और नुकसान की वही सूरतें हैं जो ऊपर बयान हुईं: कि सिर्फ ठंडे वक्त में पानी नुकसान देता है, तो उस वक्त नहाकर उतनी जगह मसह करके नमाज़ पढ़ ले; जब गर्म वक्त आए तो उतनी जगह पर भी पानी डाल ले। या सिर्फ ठंडा पानी नुकसान देता है, तो उतनी जगह गर्म पानी से धोए, बाकी बदन जैसे पानी से चाहे धोए। और पाँव के उतने हिस्से को धोने से बचाए जितने पर पानी बहना नुकसान देता हो, चाहे इस तरह कि वहां खुद बीमारी हो, या इस तरह कि उस पर पानी डालना बीमारी की जगह तक पानी पहुँचा देगा और बचाव मुमकिन न होगा, या इस तरह कि पानी तो न पहुँचेगा मगर वहां की सर्दी से नुकसान होगा। जितनी जगह किसी तरह नुकसान हो, उसके एक-एक ज़र्रे पर मुकम्मल तौर पर भीगा हाथ पहुँचे, वरना ग़ुस्ल न होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला ११०: सरनिया ज़िला बरेली से, शेख अमीर अली कादरी रज़वी द्वारा प्रस्तुत, १६ शव्वाल १३३० हिजरी। दीन के उलेमा और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: ज़ैद रात १२ बजे हल चलाने जाता है और हल चलाते हुए फ़ज्र का वक्त खेत पर हो गया। अब न पानी मौजूद है और न अब मस्जिद जा सकता है क्योंकि मस्जिद भी दूर है और पानी भी मयस्सर (उपलब्ध) नहीं हो सकता। अब ज़ैद तयम्मुम से नमाज़ पढ़ सकता है या नहीं?

الجواب। (जवाब): अगर पानी उसके खेत से जहाँ वह इस वक्त है एक मील या उससे ज़्यादा दूर है, तो तयम्मुम कर सकता है, वरना हरगिज़ नहीं।

| 'फ़िद्दुर्रिल मुख्तार: लि बुअदिही वलौ मुकीमन फ़िल मिस्रि मीलन' | दुर्रे मुख्तार में जवाज़-ए-तयम्मुम की सूरतों में है: पानी से एक मील दूर होने की वजह से, चाहे वह शहर में मुकीम (निवासी) हो। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) |

1. वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)

---

1. अद-दुर्रुल मुख्तार, बाब-ए-तयम्मुम, मुजतबाई दिल्ली, १/४१

نہ پہنچے تو اس حصے کا دھونا فرض اور اُس حصے پر مسح کرے غرض مقدارِ قدرت دیکھی جائے گی پھر جتنے عضو پر مسح کا حکم ہوگا اُس پورے ٹکڑے پر بھیگا ہاتھ ایک ایک ذرے پر پہنچنا لازم ہوگا اگر کوئی حصہ خشک رہا وضو نہ ہوگا والمسائل منصوص علیہا فی عامۃ الکتب واللہ تعالیٰ اعلم (عامہ کتب میں ان کی صراحت موجود ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ت)

سوال ۱۰۹: دوم: شخص مذکور الصدر کو بعد حاجت غسل کے تیمم پر اکتفاء کرنا جائز ہے یا نہیں کیونکہ استعمالِ پانی اس کے حق میں نقصان دہ ثابت ہو چکا ہے۔

الجواب: مرض تو صرف پاؤں میں ہے اس طرح نہائے کہ پاؤں کے اُس حصے کو جسے پانی نقصان دیتا ہے پانی نہ پہنچے اتنے حصے پر مسح کامل کرلے تیمم جائز نہیں ہو سکتا اور نقصان کی وہی صورتیں ہیں جو اوپر مذکور ہوئیں کہ فقط سرد وقت میں پانی نقصان دیتا ہے تو اُس وقت نہا کر اُتنی جگہ مسح کر کے نماز پڑھ لے جب گرم وقت آئے اتنی جگہ پر بھی پانی ڈال لے یا صرف ٹھنڈا پانی ضرر دیتا ہے تو اتنی جگہ گرم پانی سے دھوئے باقی بدن جیسے پانی سے چاہے دھوئے اور پاؤں کا اتنا حصہ دھونے سے بچائے جتنے پر پانی بہنا ضرر دیتا ہو خواہ یوں کہ خود وہاں مرض ہو یا یوں کہ اُس پر پانی ڈالنا مرض کی جگہ تک پانی پہنچا دے گا بچاؤ نہ ہو سکے گا یا یوں کہ پانی تو نہ پہنچے گا مگر یہاں کی سردی سے وہاں ضرر ہوگا۔ جتنی جگہ کسی طرح ضرر ہو اُس کے ایک ایک ذرہ پر بالاستیعاب بھیگا ہاتھ پہنچے ورنہ غسل نہ ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۱۰ : از سرنیا ضلع بریلی مسئولہ شیخ امیر علی قادری رضوی ۱۶ شوال ۱۳۳۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید ۱۲ بجے رات کے ہل چلانے

جاتا ہے اور ہل چلاتے ہوئے وقتِ فجر کھیت پر ہو گیا اب نہ پانی موجود ہے اور نہ اب مسجد جاسکتا ہے کیونکہ مسجد بھی دور ہے اور پانی بھی دستیاب نہیں ہو سکتا ہے اب زید تیمم سے نماز پڑھ سکتا ہے یا نہیں؟

الجواب: اگر پانی اس کے کھیت سے جہاں اس وقت یہ ہے ایک میل یا زیادہ دُور ہے تو تیمم کر سکتا ہے ورنہ ہر گز نہیں۔

| فی الدرالمختار لبعدہ ولو مقیماً فی المصر میلا | در مختار میں جوازِ تیمم کی صورتوں میں ہے: پانی سے ایک میل دُور ہونے کی وجہ سے، اگرچہ وہ شہر میں مقیم ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت) |

۱۔ واللہ تعالیٰ اعلم

---

۱ الدرالمختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱/۴۱

Fatawa Razawiya Volume 3 Problem 111: From Pilibhit, sent by Maulvi Irfan Ali Sahib Bisalpuri, Wednesday 5 Dhu al-Hijjah 1334 AH. Question: Zaid woke up in the morning at such a tight time that he could only offer the Fajr prayer if he performed Wudu, but he was in need of a ritual bath (Ghusl). So, should he perform Ghusl and then offer the Fajr prayer as a missed (Qada) prayer, or should he, fearing the time would run out, perform Tayammum for Ghusl, then do Wudu, and offer the Fajr prayer within the time, and then repeat the Fajr prayer after performing Ghusl? Explain and be rewarded. The Answer: He should perform Tayammum, offer the prayer within the time, and then later take a bath and repeat the prayer. This is the ruling on which the Fatwa is issued. And Allah Almighty knows best.

फ़तावा रज़विया खंड 3 मसला 111: पीलीभीत से, मौलवी इरफ़ान अली साहब बीसलपुरी द्वारा प्रेषित, बुधवार 5 ज़ुल-हिज्जा 1334 हिजरी। सवाल: ज़ैद सुबह ऐसे तंग वक़्त में सोकर उठा कि वह सिर्फ़ वज़ू करके नमाज़े-फ़ज्र अदा कर सकता है लेकिन उसे ग़ुस्ल (स्नान) की ज़रूरत है। तो क्या उसे ग़ुस्ल करके क़ज़ा नमाज़े-फ़ज्र अदा करनी चाहिए या वक़्त ख़त्म हो जाने के डर से ग़ुस्ल का तयम्मुम करके और वज़ू करके नमाज़े-फ़ज्र अदा करे और बाद में ग़ुस्ल करके नमाज़े-फ़ज्र दोहराए? बयान फ़रमाएं और सवाब पाएं। जवाब: तयम्मुम करके नमाज़ वक़्त के अंदर पढ़ ले, बाद में नहा कर उसे दोहराए। इसी पर फ़तवा दिया जाता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

فتاوٰی رضویہ جلد سوم مسئلہ ۱۱۱: از پیلی بھیت مرسلہ مولوی عرفان علی صاحب بسلپوری چہار شنبہ ۵ ذی الحجہ ۱۳۳۴ھ زید صبح کو ایسے تنگ وقت میں سو کر اٹھا کہ صرف وضو کر کے نمازِ فجر ادا کر سکتا ہے مگر اس کو غسل کی حاجت ہے پس اس کو غسل کر کے قضا نمازِ فجر ادا کرنا چاہئے یا وقت ختم ہو جانے کے خیال سے غسل کا تیمم کر کے اور وضو کر کے نمازِ فجر ادا کرے اور بعدہ غسل کر کے نمازِ فجر کا اعادہ کرے۔ بینوا توجروا الجواب: تیمم کر کے نماز وقت میں پڑھ لے بعد کو نہا کر اعادہ کرے بہ یفتی (اسی پر فتوٰی دیا جاتا ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

Volume Three Fatawa Razawiyya

Treatise: Husn al-Ta'ammum li-Bayan Hadd al-Tayammum An excellent explanation of the nature and definition of Tayammum (T)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful Issue 112: 11 Muharram al-Haram 1325 AH What do the scholars of the religion say about these issues? The first question: What is the legal definition and nature of Tayammum? Explain, and you shall be rewarded. The Answer In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

[Arabic Side]: We have intended a pure surface from the courtyard of grace, to which good words ascend*, so that He may purify our hearts and tongues, so we become worthy of speaking with a pure intention and a wholesome speech. Verily, all praise belongs to Allah, Who revealed a Quran without any crookedness*, and He has not placed upon you in the religion...

[Urdu Side]: We have intended the pure surface (Sa'id Tayyib) of this field of grace, towards which pure words ascend and progress, so that it may grant purity and cleanliness to our hearts and tongues, enabling us to speak with a clean intention and a pure tongue. Verily, all praise belongs to God, Who revealed such a Quran in which there is no crookedness at all, and He has not placed upon you in the religion...

Page 311 of 756

जिल्द तीसरी फ़तावा रज़विया

रिसाला: हुस्न अल-तअमुम लि-बयान हद्द अल-तयम्मुम तयम्मुम की वास्तविकता और परिभाषा का सबसे अच्छा वर्णन (त)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम मसला 112: 11 मुहर्रम अल-हराम 1325 हिजरी दीन के उलेमा इन मसाइल में क्या फरमाते हैं? पहला सवाल: तयम्मुम की शरई परिभाषा और माहियत (हकीकत) क्या है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं। अल-जवाब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

[अरबी पक्ष]: हमने करम के आंगन से एक पवित्र सतह का इरादा किया जिसकी ओर पवित्र शब्द ऊपर जाते हैं, ताकि वह हमारे दिलों और ज़बानों को पाक कर दे, ताकि हम एक शुद्ध नियत और अच्छी बातचीत के साथ बोलने के काबिल हो जाएं। यकीनन, तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं, जिसने ऐसा कुरान उतारा जिसमें कोई टेढ़ापन नहीं है, और उसने दीन में तुम पर नहीं...

[उर्दू पक्ष]: हमने इस करम के मैदान की पाक सतह (सईदे-तय्यिब) का इरादा किया जिस तक पाकीज़ा कलमे ऊँचाई और तरक्की पाते हैं ताकि वो हमारे दिलों और ज़बानों को तहारत और पाकीज़गी बख्श दे जिसके कारण हम साफ-सुथरी नियत और पाकीज़ा ज़बान से बोलने के काबिल हो जाएं। यकीनन सारी तारीफ खुदा के लिए है जिसने ऐसा कुरान नाज़िल फरमाया जिसमें ज़रा भी कजी (टेढ़ापन) नहीं, और उसने दीन में तुम पर कोई...

पेज 756 का 311

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

رسالہ حسن التعمّم لبیان حد التیمّم تیمم کی ماہیت و تعریف کا بہترین بیان (ت)

بسم اللہ الرحمن الرحیم مسئلہ ۱۱۲: ۱۱ محرم الحرام ۱۳۲۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں سوال اوّل تیمم کی تعریف و ماہیت شرعیہ کیا ہے۔ بینوا توجروا الجواب بسم اللہ الرحمن الرحیم

تیممنا صعیدا طیبا من ساحۃ کرم الیہ یصعد | ہم نے اس میدانِ کرم کی سطح پاک (صعید طیب) کا قصد کیا الکلم الطیب لیطھر قلوبنا والسنتنا فنستاھل | جس تک پاکیزہ کلمے صعود وترقی پاتے ہیں تاکہ وہ ہمارے ان نقول بنیۃ زکیۃ و مقول طیب- | دلوں اور زبانوں کو طہارت و پاکیزگی بخش دے جس کے ان الحمد للہ الذی انزل قرآن غیر ذی عوج | باعث ہم صاف ستھری نیت اور پاکیزہ زبان سے بولنے کے وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ | قابل ہو جائیں۔ یقیناً ساری تعریف خدا کیلئے ہے جس نے | ایسا قرآن نازل فرمایا جس میں ذرا بھی کجی نہیں، اور

Fatawa Rizvia Volume 3

(Arabic Text): ...without any hardship. Blessings and peace, as many as the grains of sand and dust, be upon the Mercy of the Beneficent and the Grace of the Bestower, who brought a religion that is easy and facilitated. For him, the Earth was made a mosque and a place of purification. So, whichever man from his Ummah is reached by the time of prayer, let him pray, benefiting from the blessings of the noble progeny of Abu Bakr. And upon his family, his companions, his son, and his party altogether, forever and ever.

(Urdu Translation): Who did not place any hardship upon us in religion. May peace and blessings be upon the Mercy of the Beneficent and the Grace of the Bestower in numbers equal to particles of sand and dust, who came with an easy and simple religion. And for whom the Earth was made a mosque and a purifier, so that any person from his Ummah who finds the time for prayer may perform it, benefiting from the blessings of the pure lineage of the great Abu Bakr. And upon his family, his companions, his sons, and his group, upon all of them, forever and ever (peace and blessings be upon them). (T)

Imam Muhaqqiq Ibn al-Humam, and after him many prominent scholars following him, established that the truth is that it (Tayammum) is to wipe the face and both hands with 'Sa'id,' meaning substances of clean earth. This summary requires much detail; so know that its definition has come in the words of scholars in six ways. (It should be known that the definition of Tayammum has appeared in six ways in the words of scholars. T)

(Arabic Text)	**(Urdu Translation)**
The first aspect is what the majority of commentators of Al-Hidayah have chosen: It is the intention (Qasd) of pure earth for purification[1]. This was refuted by the researcher in Al-Fath and his followers, stating that the intention, which is the 'niyyah,' is a condition (shart) and not a pillar (rukn)[2]. Allama Sh. (Shami) gave two answers to this objection: The first of them is that the condition is the	The first definition is the one chosen by the general commentators of Al-Hidayah: To intend a clean earth surface for purification. This was refuted in Fath al-Qadir by Muhaqqiq Ibn al-Humam and his followers, stating that the intention (Qasd), i.e., the 'niyyah,' is a condition for Tayammum, not a pillar (and in the definition it has been designated as Tayammum itself, from which its being a pillar is apparent). Allama Shami gave two answers to this objection: First

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
intention of a specific act of worship until the end of what follows, not the intention of the substance itself...	answer: The intention and 'niyyah' which is a condition in Tayammum is the intention of some specific worship, not just the intention of the earth's surface itself...

[1] Al-Kifayah with Al-Fath, Chapter of Tayammum, Nooria Rizvia Sukkur 1/106 [2] Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nooria Rizvia Sukkur 1/106

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

(अरबी पाठ): ...बिना किसी कठिनाई के। रेत और धूल के कणों के बराबर दरूद और सलाम हो रहमान की रहमत और वह्हाब (दाता) के एहसान पर, जो एक सरल और आसान दीन लेकर आए। उनके लिए ज़मीन को मस्जिद और पवित्र करने वाला बना दिया गया। अतः उनकी उम्मत का जो भी व्यक्ति नमाज़ का वक़्त पाए, वह नमाज़ पढ़े, महान अबू बक्र के महान वंश की बरकत से लाभ उठाते हुए। और उनके परिवार, उनके साथियों, उनके पुत्र और उनके पूरे समूह पर, हमेशा-हमेशा के लिए।

(उर्दू अनुवाद): जिसने दीन में हम पर कोई तंगी नहीं रखी। रेत और मिट्टी के कणों की संख्या में दरूद और सलाम हो रहमान की रहमत और वह्हाब के एहसान पर, जो एक सरल और आसान दीन लेकर तशरीफ़ लाए। और जिनके लिए ज़मीन को मस्जिद और पवित्र करने वाला बना दिया गया, ताकि उनकी उम्मत का जो भी व्यक्ति नमाज़ का वक़्त पाए, वह बुज़ुर्ग अबू बक्र की पाक आल (वंश) की बरकत से फ़ायदा उठाते हुए नमाज़ अदा कर सके। और उनकी आल, उनके साथियों, उनके बेटों और उनके गिरोह सब पर, हमेशा-हमेशा (दरूद और सलाम हो)। (त)

इमाम मोहक़्क़िक़ इब्न अल-हुमाम और उनके बाद उनके कई अनुयायी प्रमुख विद्वानों ने यह तय किया कि सच्चाई यह है कि चेहरा और दोनों हाथों को 'सईद' यानी पाक ज़मीन की जींस से मसह करना है। यह सारांश बहुत विस्तार की मांग करता है; तो जान लें कि इसकी परिभाषा विद्वानों के शब्दों में छह तरीकों से आई है। (ज्ञात हो कि विद्वानों के शब्दों में तयम्मुम की परिभाषा छह तरह से आई है। त)

(अरबी पाठ)

पहला पहलू वह है जिसे हिदाया के आम टीकाकारों ने चुना है: यह शुद्धि के लिए शुद्ध मिट्टी का इरादा (क़स्द) करना है[1]। फत्ह में शोधकर्ता और उनके अनुयायियों ने इसे यह कहकर खारिज कर दिया कि इरादा, जो कि नीयत है, एक शर्त (शर्त) है न कि एक स्तंभ (रुकन)[2]। अल्लामा श. (शामी) ने इस आपत्ति के दो उत्तर दिए:

(उर्दू अनुवाद)

पहली परिभाषा वह है जिसे हिदाया के आम टीकाकारों ने अपनाया है: शुद्धि के लिए पाक ज़मीन की सतह का इरादा (क़स्द) करना। फत्ह अल-क़दीर में मोहक़्क़िक़ इब्न अल-हुमाम और उनके अनुयायियों ने इसे यह कहते हुए खारिज कर दिया कि इरादा यानी नीयत तयम्मुम के लिए एक शर्त है, रुकन (स्तंभ) नहीं (और परिभाषा में इसे ही तयम्मुम करार दिया गया है, जिससे इसका रुकन होना ही ज़ाहिर होता है)। अल्लामा शामी ने इस

(अरबी पाठ)

उनमें से पहला यह है कि शर्त एक विशिष्ट इबादत का इरादा है जैसा कि आगे आएगा, न कि स्वयं ज़मीन का इरादा...

(उर्दू अनुवाद)

आपत्ति के दो जवाब दिए: पहला जवाब: तयम्मुम में जो इरादा और नीयत शर्त है, वह यह है कि किसी मकसूद इबादत का इरादा हो, न कि स्वयं ज़मीन की सतह का इरादा...

[1] अल-किफ़ाया मा अल-फत्ह, बाबुत तयम्मुम, नूरियह रज़विया सुक्कुर 1/106 [2] फत्ह अल-क़दीर, बाबुत तयम्मुम, नूरियह रज़विया सुक्कुर 1/106

مِنْ حَرَجٍ والصلاۃ والسلام عدد الرمل والتراب علی رحمۃ الرحمن ومنۃ الوھاب الذي اتی بالدین یسرا میسورا وجعلت لہ الارض مسجدا وطھورا فایما رجل من امتہ ادرکتہ الصلاۃ فلیصل متمتعا ببرکۃ ال ابی بکر الاجل - وعلی الہ وصحبہ وابنہ وحزبہ اجمعین* ابد الآبدین۔

جس نے دین میں ہم پر کوئی تنگی نہ رکھی۔ ریت اور مٹی کے ذرات کی تعداد میں درود و سلام ہو رحمت رحمن اور احسان وہاب پر جو سہل و آسان دین لے کر تشریف لائے، اور جن کے لئے زمین مسجد اور مطہر بنادی گئی کہ ان کی امت کا جو شخص بھی نماز کا وقت پا جائے وہ بزرگ ابو بکر کی آل پاک کی برکت سے فائدہ اٹھاتا ہوا نماز ادا کرے۔ اور اُن کی آل، ان کے اصحاب، ان کے فرزند، ان کے گروہ سب پر، ہمیشہ ہمیشہ (درود و سلام ہو) (ت)

امام محقق ابن الہمام پھر اُن کے اتباع سے بہت اعلام نے قرار دیا کہ حق یہ کہ وہ چہرہ و ہر دو دست کا صعید یعنی جنس ارضِ طاہر سے مسح کرنا ہے یہ اجمال بہت تفصیل کا طالب فاعلم انہ جاء تحدیدہ في کلماتھم علی ستۃ وجوہ (معلوم ہو کہ کلمات علماء میں تیمم کی تعریف چھ طرح سے آئی ہے۔ ت)

الوجہ الاوّل ما اختارہ عامۃ شراح الھدایۃ انہ القصد الی الصعید الطاھر للتطھیر[1] ورددہ المحقق فی الفتح واتباعہ بان القصد وھو النیۃ شرط لارکن[2] واجاب عنہ العلامۃ ش بجوابین: اولھما: ان الشرط ھو قصد عبادۃ مقصودۃ الی آخر مایأتی لا قصد نفس

تعریف اول وہ ہے جو ہدایہ کے عامہ شارحین نے اختیار کی: تطہیر کیلئے پاک سطح زمین کا قصد کرنا اعتراض فتح القدیر میں محقق ابن الہمام نے اور ان کے متبعین نے یوں رد کردیا کہ قصد یعنی

نیت تیمم کیلئے شرط ہے رکن نہیں (اور تعریف میں اسے عین تیمم قرار دیا گیا ہے جس سے رکن ہونا ہی ظاہر ہے) علامہ شامی نے اس اعتراض کے دو جواب دیے: جواب اول: تیمم میں جو قصد و نیت شرط ہے وہ یہ کہ کسی عبادت مقصودہ کا قصد ہو خود سطح زمین کا قصد

[1] الکفایۃ مع الفتح باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱۰۶/۱ [2] فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱۰۶/۱

Fatawa Razawiya, Volume 3

Al-Sa'id (The Earth) [1]

...is not a condition.

I say, firstly: (1) To intend (qasd) the earth (Sa'id) is commanded in the Great Quran: *"Perform Tayammum (dry ablution) with clean earth"* [2]. However, the intention must have an objective, which is the permissibility of a specific intended worship, etc. This is achieved through the intentional use of the substance of the earth. Therefore, intending to use the earth is an essential matter without which Tayammum cannot be established or realized. Since this intention is not a 'pillar' (rukn) of Tayammum, it is undoubtedly a 'condition' (shart), just like the earth itself. The earth itself is also among the conditions of Tayammum, as the Allama himself stated that the commentator pointed out that intending the substance of the earth is a condition, and similarly, the earth itself and its being purifying are conditions, as noted by Al-Halabi. Understand this well [3].

Secondly: (2) You aim to refute the objection with this, whereas even if what you mentioned were accepted, it would only serve to increase the objection rather than resolve it. This is because this answer has defined the reality of Tayammum as something upon which Tayammum does not depend at all, let alone it being a pillar...

Marginal Note: i.e., in the Tayammum that makes prayer permissible—may He [Allah] forgive him. (T)

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/168. 2. The Quran 4:43. 3. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/168.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

अस-सईद (मिट्टी) [1]

...शर्त नहीं है।

मैं कहता हूँ, पहले: (1) पाक मिट्टी (सईद) का इरादा करने का हुक्म कुरान-ए-अजीम में मौजूद है: "तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो" [2]। हालाँकि, इरादे का एक उद्देश्य होना चाहिए, जो नमाज़ जैसी इबादत को जायज़ बनाना है। यह उद्देश्य मिट्टी के पदार्थ के जानबूझकर उपयोग से ही पूरा होता है। इसलिए, मिट्टी का इरादा करना एक अनिवार्य कार्य है जिसके बिना तयम्मुम न तो साबित हो सकता है और न ही पूर्ण। चूँकि यह इरादा तयम्मुम का 'रुकन' (अनिवार्य अंग) नहीं है, तो यह निस्संदेह एक 'शर्त' (अनिवार्य स्थिति) है, जैसे कि स्वयं मिट्टी। मिट्टी भी तयम्मुम की शर्तों में से एक है, जैसा कि अल्लामा शामी ने स्वयं कहा है कि टीकाकार ने स्पष्ट किया है कि मिट्टी का इरादा करना एक शर्त है, और वैसे ही मिट्टी और उसका पाक करने वाला होना भी शर्त है, जैसा कि अल-हलबी ने बताया है। इसे अच्छी तरह समझें [3]।

दूसरा: (2) आप इसके माध्यम से आपत्ति (ऐतराज) को दूर करना चाहते हैं, जबकि यदि आपकी बात मान भी ली जाए, तो इससे आपत्ति और बढ़ेगी ही। क्योंकि इस जवाब ने तो तयम्मुम की वास्तविकता (हकीकत) को एक ऐसी चीज़ करार दे दिया जिस पर तयम्मुम सिरे से निर्भर ही नहीं करता, रुकन होना तो दूर की बात...

हाशिया नोट: यानी नमाज़ को जायज़ (मुबाह) बनाने वाले तयम्मुम में—अल्लाह उन्हें माफ़ करे। (त)

पादलेख: 1. रद्द-उल-मुहतार, बाबू-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/168। 2. अल-कुरान 4/43। 3. रद्द-उल-मुहतार, बाबू-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/168।

पृष्ठ 313 / 756

الصعید [1] اھ

شرط نہیں۔

اقول اولاً: (۱) قصد الصعید مأمور به في القرآن العظیم **فَتَیَمَّمُوا صَعِیدًا طَیِّبًا** [2] غیر ان القصد لابد له من غایة وھی استباحة عه عبادة مقصودة الخ ولا یقصد ذلك الا من استعمال الصعید قصدا فقصد الصعید لابد منه ولا تتحقق للتیمم الا به واذ لیس کنا فهو شرط لاشك کنفس الصعید فانه ایضا من شرائط التیمم کما قال العلامة نفسه ان الشارح نبه علی انه ای قصد الصعید شرط وکذا الصعید وکونه مطهرًا کما افاده ح فافهم [3] اھ

اقول: اولاً صعید (سطح زمین) کے قصد کا تو قرآن عظیم میں حکم موجود ہے ارشاد ہے : فَتَیَمَّمُوا صَعِیدًا طَیِّبًا (تو پاک روئے زمین کا قصد کرو) یہ الگ بات ہے کہ قصد کی کوئی غایت ہونا ضروری ہے۔ اور وہ نماز کو مباح کرنے والے تیمم میں یہ ہے کہ کسی عبادت مقصودہ کا جواز چاہے الخ۔ اور یہ قصداً جنس ارض کے استعمال ہی سے مقصود ہوتا ہے تو جنس ارض کا قصد ضروری امر ہے جس کے بغیر تیمم کا ثبوت اور تحقق نہیں ہو سکتا۔ اور یہ قصد جب رکن نہیں تو اس کا شرط ہونا یقینی ہے۔ جیسے خود جنس زمین، یہ بھی شرائط تیمم میں سے ہے، جیسا کہ خود علامہ شامی نے فرمایا ہے کہ شارح نے اس پر تنبیہ کردی کہ جنس زمین کا قصد شرط ہے اور اسی طرح جنس زمین اور اس کا مطہر ہونا بھی شرط ہے جیسا کہ حلبی نے افادہ فرمایا فافہم اھ۔

وثانیاً: (۲) تریدون به رد الایراد وان سلم ما ذکرتم لما افاد الایراد الا الازدیاد لانه جعل حقیقة التیمم مالا تتوقف له علیه اصلا فضلا عن

ثانیاً آپ اعتراض دفع کرنا چاہتے ہیں حالانکہ آپ کا جواب اگر تسلیم کر لیا جائے تو اس سے اعتراض میں اور اضافہ ہی ہوگا اس لئے کہ اس جواب نے تو تیمم کی حقیقت ایک ایسی چیز کو قرار دے دیا جس پر تیمم سرے سے موقوف ہی نہیں اس چیز کا رکن تیمم ہونا

عہ: ای فی التیمم المبیح للصلاۃ منہ غفر لہ - یعنی نماز کو مباح کرنے والے تیمم میں۔ (ت)

حواشی: 1. رد المحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱۶۸/۱ 2. القرآن ۲۲/۴ 3. رد المحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱۶۸/۱

[Continuing from previous page...] separately (meaning, putting aside the desire for the permissibility of the intended worship, the establishment of Tayammum does not depend solely on "intending the genus of the earth," so how can this be a pillar of Tayammum?) (T)

Second Answer: Shariah meanings do not exist without their conditions. For example, if someone prayed without purification, then a Shariah prayer did not occur. Therefore, it is necessary to mention the conditions so that the Shariah meaning can be realized. This is why the scholars said "with specific conditions," as mentioned previously. [End of quote]. What Allama Shami means are those words that will come in the second definition, if Allah wills.

I say (Aqul): There is no dispute in mentioning the conditions; rather, the dispute is in making the condition the reality of the conditioned, as indicated by their saying: "It is the intention of the soil (earth)" [Huwa Qasd-us-Sa'eed]. And in the second definition, the status of the phrase "with specific conditions" is contrary to this. In it, the condition is mentioned while being placed in its correct form and rank. Therefore, relying on it [as a pillar] is out of place. Nothing ever exists without its condition, whether it be a physical essence or a Shariah meaning or anything else. However, the condition does not become a pillar (rukn) of the conditioned by virtue of which it could be defined. Prayer does not come into existence without its condition of purification, but would it be permissible to say that prayer is the name of purification? Yes, in this definition, "intention"...

The Pillar-ness (Al-Rukniyyah).

And the other [reason] is that Shariah meanings are not found without their conditions. For instance, whoever prayed without purification, no Shariah prayer came from him. Thus, it is essential to mention the conditions so that the Shariah meaning is established. Therefore, they said "with specific conditions" as previously noted. [End of quote]. He [Allama Shami] means what follows in the second definition, if Allah wills.

I say: (1) There is no speech against mentioning conditions, but rather against making the condition the essence of the conditioned, as is suggested by their saying, "It [Tayammum] is the intention of the soil." (2) This is unlike their phrase "with specific conditions," for that is mentioning the condition in its proper aspect and

rank. Thus, basing the argument on it is inappropriate. (3) No thing ever exists without its condition, whether it is an object or a Shariah meaning or otherwise. But the condition does not become a pillar of the conditioned so that it defines it. (4) How could it be valid to say that prayer is purification, even though it cannot exist without it? True, a justification for it could be what was mentioned before the answer: that in technical (terminological) words transferred from linguistic ones, it is necessary that the linguistic meaning be predominantly present in them, and the technical meaning be more specific.

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt, 1/168 Page 314 of 756

...तो अलग रहा (यानी इबादते मक़सूदा का जवाज़ चाहने से अलग करके सिर्फ"जिन्से ज़मीन को मक़सूद बनाने" पर तयम्मुम का सुबूत मौक़ूफ ही नहीं तो ये रुकने तयम्मुम क्योंकर होगा?) (त)

जवाब दोम: शरई मानी का वजूद उनकी शर्तों के बगैर नहीं होता। मसलन अगर किसी ने बगैर तहारत के नमाज़ पढ़ी तो उससे नमाज़े शरई का वजूद न हुआ इसलिए शर्तों का ज़िक्र ज़रूरी है ताकि शरई मानी का तहक़्क़ुक़ हो सके इसीलिए उलमा ने "बशराइते मख़सूसा" कहा जैसा कि गुज़रा। अल्लामा शामी की मुराद वो अलफ़ाज़ हैं जो तारीफ़े दोम में आएंगे इन शा अल्लाह तआला।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): शर्तों के ज़िक्र करने पर कोई कलाम नहीं बिला शुबा कलाम इस पर है कि शर्त ही को मश्रूत की हक़ीक़त कैसे बना दिया गया जैसा कि उनका क़ौल "हुवा क़स्दुस सइद" (तयम्मुम जिन्से ज़मीन के क़स्द का नाम है) बता रहा है। और तारीफ़े दोम में लफ्ज़ "बशराइते मख़सूसा" की हैसियत इसके बरख़िलाफ़ है। इसमें शर्त को उसकी सही सूरत और मर्तबे में रख कर ज़िक्र किया गया है। इसलिए इससे इस्तिनाद बेमहल है। कोई भी चीज़ ख़्वाह ऐन हो या मानी-ए-शरई या और कुछ अपनी शर्त के बगैर कभी नहीं पाई जाती लेकिन इससे शर्त, मश्रूत का रुकन नहीं हो जाती कि इस शर्त के ज़रिया इसकी तारीफ़ की जा सके। नमाज़ अपनी शर्त तहारत के बगैर वजूद में नहीं आती लेकिन क्या ये कहना रवा होगा कि नमाज़ तहारत का नाम है? हाँ इस तारीफ़ में "क़स्द"...

रुकनियत (The Pillar-ness)

और दूसरा (सबब) ये है कि शरई मानी अपनी शर्तों के बिना नहीं पाए जाते, तो जिसने बिना तहारत के नमाज़ पढ़ी, उससे शरई नमाज़ वाक़े नहीं हुई। लिहाज़ा शर्तों का ज़िक्र ज़रूरी है ताकि शरई मानी का तहक़्क़ुक़ हो सके। इसीलिए उन्होंने "बशराइते मख़सूसा" कहा जैसा कि पहले गुज़रा। उनका मक़सद वो है जो दूसरी तारीफ़ में आएगा, इन शा अल्लाह।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): (१) शर्तों के ज़िक्र में कोई ऐतराज़ नहीं है, बल्कि ऐतराज़ शर्त को मश्रूत की हक़ीक़त बनाने में है जैसा कि उनके इस क़ौल से ज़ाहिर है कि "वो मिट्टी का क़स्द करना है"। (२) ये उनके क़ौल "बशराइते मख़सूसा" के बरख़िलाफ़ है, क्योंकि वहां शर्त को उसके मक़ाम और मर्तबे पर ज़िक्र किया गया है, तो उस पर दलील पकड़ना ग़लत है। (३) कोई भी चीज़ अपनी शर्त के बिना कभी नहीं पाई जाती, चाहे वो कोई ज़ात हो या शरई मानी या कुछ और। लेकिन शर्त, मश्रूत का रुकन नहीं बन जाती कि उससे उसकी तारीफ़ की जाए। (४) ये कहना कैसे सही हो सकता है कि नमाज़ ही

तहारत है, चाहे वो उसके बिना न हो सके। हाँ, इसके लिए उज़्र वो हो सकता है जो जवाब से पहले कहा गया कि इस्तलाही अलफ़ाज़ में जो लुग़वी मानी से मुंतक़िल हुए हों, ज़रूरी है कि उनमें लुग़वी मानी ग़ालिबन मौजूद हों और इस्तलाही मानी ख़ास हों।

---

१ रद्दुल मुहतार, बाबुत तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/१६८ पेज ३१४ ऑफ़ ७५६

تو الگ رہا (یعنی عبادتِ مقصودہ کا جواز چاہنے سے الگ کر کے صرف "جنس زمین کو مقصود بنانے" پر تیمّم کا ثبوت موقوف ہی نہیں تو یہ رکنِ تیمّم کیونکر ہوگا؟) (ت)

جواب دوم: شرعی معانی کا وجود ان کی شرطوں کے بغیر نہیں ہوتا۔ مثلاً اگر کسی نے بغیر طہارت کے نماز پڑھی تو اس سے نمازِ شرعی کا وجود نہ ہوا اس لئے شرطوں کا ذکر ضروری ہے تاکہ شرعی معنی کا تحقق ہوسکے اسی لئے علماء نے "بشرائط مخصوصہ" کہا جیسا کہ گزرا اھ علامہ شامی کی مراد وہ الفاظ ہیں جو تعریفِ دوم میں آئیں گے ان شاء اللہ تعالیٰ۔

اقول: شرطوں کے ذکر کرنے پر کوئی کلام نہیں بلا شبہ کلام اس پر ہے کہ شرط ہی کو مشروط کی حقیقت کیسے بنادیا گیا جیسا کہ ان کا قول "ھو قصد الصعید" (تیمّم جنسِ زمین کے قصد کا نام ہے) بتا رہا ہے۔ اور تعریف دوم میں لفظ "بشرائط مخصوصہ" کی حیثیت اس کے برخلاف ہے۔ اس میں شرط کو اس کی صحیح صورت اور مرتبہ میں رکھ کر ذکر کیا گیا ہے۔ اس لئے اس سے استناد بے محل ہے۔ کوئی بھی چیز خواہ عین ہو یا معنی شرعی یا اور کچھ اپنی شرط کے بغیر کبھی نہیں پائی جاتی لیکن اس سے شرط، مشروط کا رکن نہیں ہو جاتی کہ اس شرط کے ذریعے اس کی تعریف کی جاسکے۔ نماز اپنی شرط طہارت کے بغیر وجود میں نہیں آتی لیکن کیا یہ کہنا روا ہوگا کہ نماز طہارت کا نام ہے؟ ہاں اس تعریف میں "قصد"

الرکنیۃ۔

والآخر ان المعانى الشرعية لاتو جد بدون شروطها فمن صلى بلا طہارة مثلا لم توجد منہ صلاة شرعا فلابد من ذكر الشروط حتى يتحقق المعنى الشرعى فلذا قالوا بشرائط مخصوصة كما مر اه يريد مايأتى فى التعريف الثانى ان شاء الله تعالٰى۔

اقول: (١) لاكلام فى ذكر الشروط بل فى جعل الشرط حقيقة المشروط كما يفيده بقولهم هو قصد الصعيد (٢) بخلاف قولهم بشرائط مخصوصة فأنه ذكر الشرط على جهتہ و مرتبتہ فالاستناد به فى غير محله (٣) وشيئ ما قط لا يوجد بدون شرطه عينا كان او معنى شرعيا او غيره لكن لا يصير به الشرط ركن المشروط حتى يحدبه (۴) وكيف يسوغ ان يقال ان الصلاة هى الطهارة وان كانت لاتو جد الابهانعم يصلح عذرا له ما قال قبل الجواب انه لابد في الالفاظ الاصطلاحية المنقولة عن اللغوية ان يوجد فيها المعنى اللغوى غالبا ويكون المعنى الاصطلاحى اخص

---

1 رد المحتار باب التيمم مصطفیٰ البابى مصر ١۶٨/١ صفحہ 314 از 756

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

[Arabic Text Segment] من اللغوى ولذا عرف المشائخ الحج بأنه قصد خاص بزيادة اوصاف... مخصوصة ١ اهـ وحاصله انه تسامح يحمل عليه بيان المناسبة بين المنقول عنه واليه وقد اشار اليه بعض المعرفين به كالعناية اذقال التيمم في اللغة القصدُ وفي الشريعة القصدُ الى الصعيد الطاهر للتطهر فالاسم الشرعى فيه المعنى اللغوى ٢ اهـ هذا - (١) ثم التعبير بطاهر طبق عليه عامة الكتب متوناً وشروحاً وفتاوى وابدله في التنوير بالمطهر قال في الدر (٢) خرج الارض المتنجسة اذا جفت فأنها كالماء المستعمل ٣ اهـ اى طاهرة غير طهور فتجوز الصلاة عليها ولا يجوز التيمم بها وبه اخذ البحر على الكنز قائلاً كان ينبغى للمصنف ان يقول بمطهر ليخرج ما ذكرنا كما عبربه في منظومة ابن وهبان ٤ اهـ

Regarding the justification for mentioning "Al-Sa'id" (the earth's surface), what is worthy of mention is what Allama Shami stated before the two aforementioned answers: that in technical terms derived from linguistic meanings, the linguistic meaning is generally present, and the technical meaning is more specific than the linguistic one. For this reason, scholars have defined Hajj as a specific intention along with the addition of certain specific attributes. The summary is that this is a rhetorical leniency (tasamuh) maintained to show the relevance between the original meaning and the transferred meaning. Some definers have also alluded to this. For example, it is stated in Al-Inayah: Linguistically, Tayammum means 'intention', and in Sharia, it is the intention to use pure earth's surface for purification. Thus, the linguistic meaning is also present in the Sharia name for Tayammum. (T)

The difference between using the terms 'Tahir' (pure) and 'Mutahhir' (purifying) in the definition of Tayammum: General books of original texts (mutun), commentaries (shuruh), and fatwas agree on using the term 'Tahir', but in Tanwir al-Absar, 'Mutahhir' is used instead of 'Tahir'. In Durr al-Mukhtar, the benefit of using 'Mutahhir' is explained: by saying this, land that was impure but then dried is excluded, because it is like 'used water' (ma-e-mustamal)—meaning it is pure but not purifying. Therefore, performing prayer on such land is permissible, but performing Tayammum with it is not. This is why in Bahr al-Ra'iq, the wording of Kanz al-Daqaiq is critiqued.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/168. 2. Inayah with al-Fath, Chapter of Tayammum, Maktaba Nooria Razavia, Sukkur, 1/106. 3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Published by Mujtabai, Delhi, 1/41. 4. Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/17.

फतावा रज़विया, भाग तीन

[अरबी पाठ खंड] من اللغوى ولذا عرف المشائخ الحج بأنه قصد خاص بزيادة اوصاف... مخصوصة ١ اهـ وحاصله انه تسامح يحمل عليه بيان المناسبة بين المنقول عنه واليه وقد اشار اليه بعض المعرفين به كالعناية اذقال التيمم في اللغة القصدُ وفي الشريعة القصدُ الى الصعيد الطاهر للتطهر فالاسم الشرعى فيه المعنى اللغوى ٢ اهـ هذا - (١) ثم التعبير بطاهر طبق عليه عامة الكتب متوناً وشروحاً وفتاوى وابدله في التنوير بالمطهر قال في الدر (٢) خرج الارض المتنجسة اذا جفت فأنها كالماء المستعمل ٣ اهـ اى طاهرة غير طهور فتجوز الصلاة عليها ولا يجوز التيمم بها وبه اخذ البحر على الكنز قائلاً كان ينبغى للمصنف ان يقول بمطهر ليخرج ما ذكرنا كما عبربه في منظومة ابن وهبان ٤ اهـ

"अस-सईद" (सतह) का उल्लेख करने के बहाने में बयान किए जाने योग्य वह है जो अल्लामा शामी ने उपर्युक्त दोनों उत्तरों से पहले फरमाया कि भाषाई अर्थों से उद्धृत पारिभाषिक शब्दों में आम तौर पर भाषाई अर्थ अवश्य पाया जाता है। और पारिभाषिक अर्थ भाषाई अर्थ से अधिक विशिष्ट होता है। इसीलिए विद्वानों ने हज की परिभाषा यह की है कि हज कुछ विशिष्ट गुणों की वृद्धि के साथ एक विशेष इरादा है। सार यह है कि यह एक शिथिलता (तसामुह) है जिसे मूल अर्थ और हस्तांतरित अर्थ के बीच संबंध दिखाने के लिए अनुमति दी गई है। कुछ परिभाषित करने वालों ने इस ओर इशारा भी किया है। जैसे 'इनाया' में कहा गया है: भाषा में तयम्मुम का अर्थ 'इरादा' है। और शरीयत में पवित्र होने के लिए पवित्र जमीनी सतह का इरादा करना। तो तयम्मुम के शरीअत नाम में भाषाई अर्थ भी मौजूद है। (त)

तयम्मुम की परिभाषा में 'ताहिर' (पवित्र) और 'मुताहिर' (पवित्र करने वाला) शब्दों के प्रयोग का अंतर: मूल ग्रंथों (मतून), व्याख्याओं (शुरुह) और फतवे की सामान्य पुस्तकों में 'ताहिर' शब्द के प्रयोग पर सहमति है, लेकिन 'तनवीर अल-अबसार' में 'ताहिर' के स्थान पर 'मुताहिर' कहा गया है। 'दुर्रे मुख्तार' में 'मुताहिर' शब्द का लाभ बताया गया है कि ऐसा कहने से वह भूमि बाहर हो गई जो अपवित्र थी और फिर सूख गई, क्योंकि वह 'उपयोग किए गए जल' (मा-ए-मुस्तामल) के समान है, यानी वह स्वयं पवित्र तो है लेकिन पवित्र करने वाली नहीं है। अतः ऐसी भूमि पर नमाज़ पढ़ना तो जायज़ है लेकिन उससे तयम्मुम करना जायज़ नहीं है, इसीलिए 'बहर अल-राइक़' में 'कन्ज़ अद-दक़ाइक़' के कथन पर आपत्ति की गई है।

पादलेख: 1. रद अल-मुह्तार, अध्याय तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/168. 2. इनायाह मा अल-फतह, अध्याय तयम्मुम, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/106. 3. अल-दुर अल-मुख्तार, अध्याय तयम्मुम, मुद्रित मुज्तबाई, दिल्ली, 1/41. 4. बहर अल-राइक़, अध्याय तयम्मुम, एच. एम. सईद कंपनी, कराची, 1/17.

من اللغوی ولذا عرف المشائخ الحج بأنه قصد خاص بزیادة اوصاف مخصوصة ۱ اھ وحاصله انه تسامح یحمل علیه بیان المناسبة بین المنقول عنه والیه وقد اشار الیه بعض المعرفین به کالعنایة اذقال التیمم في اللغة القصدُ وفي الشریعة القصدُ الی الصعید الطاھر للتطھر فالاسم الشرعی فیه المعنی اللغوی ۲ اھ ھذا - (۱) ثم التعبیر بطاھر طبق علیه عامة الکتب متوناً وشروحاً وفتاوی وابدله في التنویر بالمطھر قال في الدر (۲) خرج الارض المتنجسة اذا جفت فأنھا کالماء المستعمل ۳ اھ ای طاھرة غیر طھور فتجوز الصلاة علیھا ولا یجوز التیمم بھا وبه اخذ البحر علی الکنز قائلاً کان ینبغی للمصنف ان یقول بمطھر لیخرج ما ذکرنا کما عبربه في منظومة ابن وھبان ٤ اھ

"الصعید" ذکر کرنے کے عذر میں بیان کئے جانے کے قابل وہ ہے جو علامہ شامی نے مذکورہ دونوں جوابوں سے پہلے فرمایا کہ لغوی معانی سے منقول ، اصطلاحی الفاظ میں عموماً لغوی معنی ضرور پایا جاتا ہے ۔ اور اصطلاحی معنی لغوی معنی سے اخص ہوتا ہے۔ اسی لئے مشائخ نے حج کی تعریف یہ کی ہے کہ حج ایک خاص قصد ہے کچھ مخصوص اوصاف کی زیادتی کے ساتھ اھ حاصل یہ ہوا کہ یہ ایک تسامح ہے جو معنی منقول عنہ اور معنی منقول الیہ کے درمیان مناسبت بتانے کے پیش نظر روا رکھا گیا ہے۔ بعض تعریف کرنے والوں نے اس بات کی طرف اشارہ بھی کیا ہے۔ جیسے عنایہ میں کہا ہے ۔ لغت میں تیمم کا معنی قصد ہے۔ اور شریعت میں پاک ہونے کیلئے پاک سطح زمین کا قصد کرنا۔ تو تیمم کے شرعی نام میں لغوی معنی بھی موجود ہے اھ ہذا۔ (ت)

تیمم کی تعریف میں طاہر اور مطہر سے تعبیر کا فرق متون، شروح، فتاوی کی عامہ کتب کا "طاہر" سے تعبیر پر اتفاق ہے مگر تنویر الابصار میں "طاہر" کی بجائے "مطہر" کہا۔ در مختار

میں مطہر سے تعبیر کا فائدہ بتایا کہ یہ کہنے سے وہ زمین خارج ہو گئی جو نجس ہوئی پھر خشک ہوگئی کیونکہ وہ مائے مستعمل کی طرح ہے یعنی طاہر تو ہے مطہر نہیں۔ تو اس زمین پر نماز پڑھنا جائز ہے مگر اس سے تیمم کرنا جائز نہیں ، اسی لئے بحر الرائق میں کنز الدقائق کی عبارت پر گرفت

حواشی: 1. ردالمحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱۶۸/۱ 2. عنایۃ مع الفتح باب التیمم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۰۶/۱ 3. الدرالمختار باب التیمم مطبوعہ مجتبائی دہلی ۴۱/۱ 4. بحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۷/۱

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Right Column] ...has stated that the author should have said "with a purifier" (bi-mutahhir) so that what we mentioned would be excluded, as it was expressed as "mutahhir" in the poem of Ibn Wahban. (T) And Al-Quhistani said something strange; he objected to 'An-Niqayah' and pointed towards its meaning in such words that the answer to the objection was also present in those very words, if only he had reflected. The text of 'An-Niqayah' is: "On every pure [thing]" (ali kulli tahir). On this, Al-Quhistani said: This generalization is not without some laxity. And the intended meaning is "perfectly pure" because Tayammum is not permissible on land that became impure and then its traces vanished. (T) I say: Purity does not accept doubt (in terms of being dividable into truly perfect and imperfect purity). The difference is that one pure thing has absolutely no impurity mixed in it, and another pure thing contains such a small amount of impurity that is excused. Thus, the answer to the objection against 'An-Niqayah' is that "pure" refers to that which is perfect in purity, containing not even a small amount of excused impurity. (T) Imam Malik-ul-Ulama stated this in 'Badai' al-Sanai': "The effect of the sun's heat and the blowing winds is only to reduce the impurity, not to eradicate it. Although the impurity is reduced, it still contradicts the state of purity. Therefore, the command to perform Tayammum with pure earth cannot be fulfilled (on land that was impure and then dried), hence Tayammum on it is not permissible. However, a small amount of impurity..."

[Left Column] Fatawa Rizvia, Volume 3 (1) And Al-Quhistani went far by objecting to 'An-Niqayah' and pointed to a phrase that contained the answer if he had reflected. When it says "on every pure [thing]", this generalization is not without some laxity. The phrase should have been "on a perfectly pure [thing]," because it is not permissible on land that became impure and then its trace vanished. -1 I say: Purity does not accept doubt; the difference is only in that which has no impurity at all and that which has a small amount of excused impurity. Therefore, this is the answer: that what is intended by "pure" is perfect purity in which there is no excuse. This is what the Imam Malik-ul-Ulama stated in 'Al-Badai' when he said: (1) The burning of the sun and the blowing of winds have an effect in reducing the impurity but not in eradicating it. Impurity, even if it contradicts the description of purity, does not constitute fulfilling what was commanded, so it is not permissible. As for a small amount of impurity, it might prevent the permissibility of prayer according to our companions, and it is not prohibited to consider a small amount of impurity in some things and not in others.

[Footnote] 1 Jami' al-Rumuz, Chapter of Tayammum, Matba' al-Karimiya, Qoran (Iran) 28/1

फतावा रज़विया, जिल्द 3

[दायां कॉलम] ...कहा है कि लेखक को "मुतहहिर (पावन करने वाला)" कहना चाहिए था ताकि वह बाहर हो जाए जिसका हमने उल्लेख किया, जैसा कि इब्न वहबान की कविता में "मुतहहिर" के रूप में व्यक्त किया गया है। (त) और अल-क़ुहस्तानी ने एक अजीब बात कही; उन्होंने 'अन-निकाया' पर आपत्ति जताई और उसके अर्थ की ओर ऐसे शब्दों में इशारा किया कि यदि वे गौर करते तो उन शब्दों में ही आपत्ति का उत्तर भी मौजूद था। 'अन-निकाया' का पाठ है: "हर पाक (चीज़) पर" (अ़ली कुल्लि ताहिर)। इस पर अल-क़ुहस्तानी ने कहा: यह सामान्यीकरण शिथिलता से मुक्त नहीं है। और इसका तात्पर्य "ताहिर-ए-कामिल (पूर्णतः शुद्ध)" है क्योंकि ऐसी ज़मीन पर तयम्मुम जायज़ नहीं है जो नापाक हो गई थी और फिर उसके निशान मिट गए। (त) मैं कहता हूँ: पाकी (शुद्धता) संशय को स्वीकार नहीं करती (कि उसे वास्तविक रूप से पूर्ण और अपूर्ण पाकी में विभाजित किया जा सके)। अंतर यह है कि कोई पाक चीज़ ऐसी होती है जिसमें बिल्कुल भी नापाकी शामिल नहीं होती, और कोई पाक चीज़ ऐसी होती है जिसमें इतनी कम नापाकी होती है जो क्षम्य है। अत; 'अन-निकाया' पर आपत्ति का उत्तर यह है कि "पाक" से तात्पर्य वह है जो पाकी में पूर्ण हो, जिसमें थोड़ी सी क्षम्य नापाकी भी न हो। (त) इमाम मलिक-उल-उलमा ने 'बदाइ अल-सनाइ' में यही बयान किया है: "सूरज की तपिश और चलने वाली हवाओं का प्रभाव केवल नापाकी को कम करना है, उसे जड़ से खत्म करना नहीं। हालांकि नापाकी कम हो गई है, फिर भी यह पाकी की स्थिति के विपरीत है। इसलिए, पाक मिट्टी से तयम्मुम करने के आदेश का पालन (उस ज़मीन पर जो नापाक थी और फिर सूख गई) नहीं किया जा सकता, इसलिए उस पर तयम्मुम जायज़ नहीं है। लेकिन कम नापाकी..."

[बायां कॉलम] फतावा रज़विया, जिल्द 3 (1) और अल-क़ुहस्तानी ने अजीब बात कही कि 'अन-निकाया' पर आपत्ति की और एक ऐसे वाक्यांश की ओर इशारा किया जिसमें उत्तर मौजूद था यदि वह विचार करते। जब उन्होंने कहा "हर पाक पर", तो यह सामान्यीकरण शिथिलता से खाली नहीं है। वाक्यांश "पूर्ण पाक पर" होना चाहिए था क्योंकि ऐसी ज़मीन पर (तयम्मुम) जायज़ नहीं है जो नापाक हो गई और फिर उसका निशान मिट गया। -1 मैं कहता हूँ: पाकी संदेह स्वीकार नहीं करती, अंतर केवल उसमें है जिसमें बिल्कुल भी नापाकी न हो और जिसमें थोड़ी नापाकी हो जो क्षम्य है। अतः यही उत्तर है कि पाक से तात्पर्य पूर्ण पाकी है जिसमें कोई छूट न हो। और यह वही है जो इमाम मलिक-उल-उलमा ने 'बदाइ' में कहा था: (1) सूरज की जलन और हवाओं का प्रभाव नापाकी को कम करने में होता है न कि उसे जड़ से खत्म करने में। नापाकी, भले ही वह पाकी के गुण के विपरीत हो, आदेश

के पालन में पर्याप्त नहीं है इसलिए यह जायज़ नहीं है। जहाँ तक कम नापाकी का सवाल है, वह हमारे साथियों के अनुसार नमाज़ की अनुमति को रोक सकती है, और यह वर्जित नहीं है कि कुछ चीज़ों में कम नापाकी का विचार किया जाए और दूसरों में नहीं।

[पाद लेख] 1 जामे अल-रुमूज़, तयम्मुम का अध्याय, मतबा अल-करीमिया, क़ुरान (ईरान) 28/1

فتاوی رضویہ جلد سوم

[دایاں کالم] کی ہے کہ مصنف کو "بمطہر" کہنا چاہئے تھا تاکہ وہ خارج ہو جائے جس کا ہم نے ذکر کیا، جیسا کہ ابن وہبان کے منظومہ میں "مطہر" سے تعبیر کی ہے اھ (ت) اور قہستانی نے عجب بات کی، نقایہ پر گرفت کر کے اس کی مراد کی طرف ایسے الفاظ میں اشارہ کیا کہ ان ہی الفاظ میں گرفت کا جواب بھی موجود تھا اگر وہ غور سے کام لیتے۔ نقایہ کی عبارت ہے: "علی کل طاہر" (ہر طاہر پر)۔ اس پر قہستانی نے کہا: یہ تعمیم تسامح سے خالی نہیں۔ اور مراد "طاہر کامل" ہے کیونکہ تیمم ایسی زمین پر جائز نہیں جو نجس ہو گئی پھر اس کا اثر جاتا رہا اھ (ت) اقول: طہارت قابل تشکیک نہیں (کہ حقیقی طور پر طاہر کامل و طاہر ناقص کی تقسیم ہوسکے) فرق یہ ہوتا ہے کہ کوئی ایسا طاہر ہوتا ہے جس میں ذرا بھی نجس چیز شامل نہیں۔ اور کوئی ایسا طاہر ہوتا ہے جس میں ایسا قلیل نجس ہوتا ہے جو معاف ہے، تو نقایہ پر اعتراض کا یہی جواب ہے کہ طاہر سے مراد وہ کامل الطہارۃ ہے جس میں نجس قلیل عفو شدہ بھی نہیں۔ (ت) امام ملک العلماء نے بدائع الصنائع میں یہی افادہ فرمایا، فرماتے ہیں: "سورج کے تمازت اور ہواؤں کے اڑانے کا اثر صرف یہ ہوتا ہے کہ نجاست کم ہو جاتی ہے بالکل ختم نہیں ہوتی۔ اور نجاست اگرچہ کم ہو طہارت کے منافی ہے تو (وہ زمین جو نجس ہو کر خشک ہو گئی اس پر تیمم کرنے میں، پاک زمین سے تیمم کا) جو حکم دیا گیا ہے اس کی بجا آوری نہ ہو سکے گی اس لئے اس سے تیمم جائز نہ ہوا۔ لیکن قلیل نجاست

[بایاں کالم] فتاوی رضویہ جلد سوم (۱) واغرب القهستاني فأخذ على النقاية واشار الى عبارة قدكان فيها الجواب لوتأمل اذقال (على كل طاهر) تعميم لايخلو عن تسامح والعبارة على طاهر كامل فأنه لايجوز بارض صارت نجسة ثم ذهب اثرها-1 اقول: الطهارة لا تقبل التشكيك وانما التفاوت بمالانجس

فيه اصلا وما فيه نجس قليل معفوعنه فيكون هذا هو الجواب ان المراد بالطاهر كامل الطهارة الذي لاعفو فيه- وهذا ما افاده الامام ملك العلماء فى البدائع اذقال (١) ان احراق الشمس ونسف الرياح اثرها في تقليل النجاسة دون استئصالها والنجاسة وان كانت تنافي وصف الطهارة فلم يكن اتياناً بالمأموربه فلم يجز فأما النجاسة القليلة قدتمنع جواز الصلاة عند اصحابنا ولا يمتنع ان يعتبر القليل من النجاسة في بعض الاشياء دون

[حاشيہ] 1 جامع الرموز باب التيمم المطبعة الكريميه قران (ايران) ٢٨/١

[Left Column - Arabic] Some [scholars have said]: "Do you not see that if a small amount of impurity falls into a vessel, it prevents the validity of ablution with it? But if it touches a garment, it does not prevent the validity of prayer." [Footnote 1] This is the perspective of those who said it is pure for the purpose of prayer but impure for the purpose of Tayammum. And in [the book] Al-Bahr, this was considered the apparent meaning of their words. I say: Purity and impurity are not relative matters, but rather attributes established for the thing itself, either due to its essence or an accidental cause. The meaning of purity regarding a thing is the permissibility of its use, and impurity is the lack thereof. It is not that a remaining impurity is pardoned for one thing but not for another, as the King of Scholars indicated. [Footnote 2] From this is the case where excessive wringing is commanded; so Zayd wrung it to his limit, but if Amr wrung it, more would drop out. It is pure for Zayd but not for Amr, [Footnote 2] as stated in Al-Durr [Footnote 3] and elsewhere. Thus, what is in the statement of Al-Bahr becomes clear when it says...

[Right Column - Urdu] According to our companions (Hanafi jurists), it does not prevent the validity of prayer. It is not an impossible matter that a small amount of impurity is considered significant in some cases and not in others. Look, if a small amount of impurity falls into a vessel, ablution with it is not permissible, but if the same small amount touches clothes, prayer with them is permissible (T). This is the perspective of those who said that such land is pure for the purpose of prayer but impure for the purpose of Tayammum. However, in Bahr al-Ra'iq, this was declared the apparent meaning of their words. I say: Purity and impurity are not relative matters (in the sense of being pure in relation to one thing and impure in relation to another), but rather an attribute established for the object itself, either inherently or due to an external factor. The meaning of being pure for an object is that its use is permissible, and being impure means its use is not permissible. This happens when some impure part remains which is excused in one context but not in another, as pointed out by Malik al-Ulama. (T) And related to this is the case where thorough wringing is commanded. Now, Zaid wrung it to the best of his strength, but if Amr wrung it, more would still drip. It is pure for Zaid but not for Amr, as...

[Footnotes] 1. Badai' al-Sanai', Conditions of Tayammum, Sa'eed Company Karachi 1/53 2. Al-Durr al-Mukhtar (meaning), Chapter of Impurities, Mujtabai Delhi 1/56

[बायां कॉलम - अरबी] कुछ [विद्वानों] ने कहा: "क्या आप नहीं देखते कि यदि बर्तन में थोड़ी सी नजासत गिर जाए तो वह वज़ू की वैधता को रोक देती है, लेकिन यदि वह कपड़े पर लगे तो नमाज़ की वैधता को नहीं रोकती?" यह उन लोगों का नज़रिया है जिन्होंने कहा कि वह नमाज़ के लिए पाक है लेकिन तयम्मुम के लिए नापाक है। और [किताब] अल-बहर में इसे उनकी बातों का स्पष्ट अर्थ माना गया। मैं कहता हूँ: पवित्रता और अपवित्रता कोई सापेक्ष चीज़ नहीं है, बल्कि वस्तु के लिए स्वयं प्रत्यक्ष रूप से या किसी बाहरी कारण से सिद्ध होने वाला गुण है। किसी वस्तु के पाक होने का अर्थ उसका उपयोग जायज़ होना है, और नापाक होने का अर्थ उसका उपयोग जायज़ न होना है। ऐसा नहीं है कि बची हुई नजासत एक चीज़ के लिए माफ़ हो और दूसरी के लिए नहीं, जैसा कि मलिक-उल-उलेमा ने संकेत दिया। इसी में वह मामला भी है जहाँ अच्छी तरह निचोड़ने का आदेश है; जैद ने अपनी पूरी शक्ति से निचोड़ा, लेकिन अगर अम्र निचोड़ता तो और पानी टपकता। यह जैद के लिए पाक है लेकिन अम्र के लिए नहीं, जैसा कि अल-दुर्र और अन्य जगहों पर उल्लेख है।

[दायां कॉलम - उर्दू] हमारे साथियों (हनफ़ी फ़ुक़हा) के अनुसार यह नमाज़ की वैधता को नहीं रोकता। यह कोई असंभव बात नहीं है कि कुछ चीज़ों में थोड़ी सी अशुद्धि (नजासत) का विचार हो और कुछ अन्य चीज़ों में न हो। देखो, अगर बर्तन में थोड़ी सी नजासत गिर जाए तो उससे वज़ू जायज़ नहीं है, लेकिन अगर वही थोड़ी सी नजासत कपड़े पर लग जाए तो उससे नमाज़ जायज़ है (त)। और यही उन लोगों का दृष्टिकोण है जिन्होंने कहा कि वह ज़मीन नमाज़ के लिए पाक है, लेकिन तयम्मुम के लिए नापाक है। हालाँकि, बहर-उल-राइक़ में इसे उनकी बातों का स्पष्ट अर्थ बताया गया है। मैं कहता हूँ: पवित्रता (तहारत) और अपवित्रता (नजासत) कोई सापेक्ष चीज़ नहीं है (कि किसी के संबंध में पवित्र हो और किसी और के संबंध में अपवित्र), बल्कि यह एक ऐसा गुण है जो वस्तु के लिए स्वयं प्रत्यक्ष रूप से या किसी बाहरी कारण से सिद्ध होता है। किसी वस्तु के लिए पाक होने का अर्थ यह है कि उसमें उसका उपयोग जायज़ है, और नापाक होने का अर्थ यह है कि उसमें उसका उपयोग जायज़ नहीं है। और यह तभी होगा जब कुछ नजासत वाला हिस्सा शेष रह जाए जो एक चीज़ के लिए क्षम्य है और दूसरी चीज़ के लिए नहीं, जैसा कि मलिक-उल-उलेमा ने संकेत दिया है। (त) और इसी से संबंधित वह मामला भी है जिसमें अच्छी तरह निचोड़ने का आदेश है। अब ज़ैद ने अपनी पूरी शक्ति से निचोड़ा, लेकिन अगर अम्र उसे निचोड़ता तो अब भी कुछ और टपकता। यह ज़ैद के लिए पाक है लेकिन अम्र के लिए नहीं। जैसा कि...

[फुटनोट] 1. बदाए-उस-सनाए, तयम्मुम की शर्तें, सईद कंपनी कराची 1/53 2. अल-दुर-उल-मुख्तार (अर्थात), नजासतों का अध्याय, मुज्तबाई दिल्ली 1/56 पेज 317 ऑफ 756

[Left Column - Arabic] البعض الاترى ان النجاسة القليلة لو وقعت فى الاناء تمنع جواز الوضوء به ولو اصابت الثوب لاتمنع جواز الصلاة^1 اه وهذا هو ملمح من قالوا انها طاهرة فى حق الصلاة نجسة فى حق التيمم وجعله فى البحر ظاهر كلامهم۔ اقول: ليست الطهارة ولاالنجاسة امرا اضافيا بل وصف يثبت للشيئ نفسه اما لاصله اولعارض (1) وانما معنى الطهارة فى حق شيئ سوغ الاستعمال فيه والنجاسة فيه عدمه ولايكون الابقاء نجس عفى عنه فى حق شيئ دون آخر كما اشار اليه ملك العلماء۔(۲) ومنه مايؤمر فيه بالعصر البالغ فعصر زيد جهده ولو عصره عمر و لقطر طهر فى حق زيد لاعمر و^2 كما في الدر (۳) وغيره و به ظهر مافى قول البحر اذقال

[Right Column - Urdu] ہمارے اصحاب کے نزدیک جواز نماز سے مانع نہیں اور یہ کوئی محال امر نہیں کہ بعض چیزوں میں قلیل نجاست کا اعتبار ہو اور دوسری بعض چیزوں میں نہ ہو۔ دیکھو کہ برتن میں اگر تھوڑی نجاست پڑ جائے تو اس سے وضو جائز نہیں اور اگر اتنی ہی تھوڑی نجاست کپڑے میں لگ جائے تو اس سے نماز جائز ہے (ت) اور یہی ان حضرات کا مطمح نظر ہے جنہوں نے فرمایا کہ وہ زمین نماز کے حق میں پاک ہے، تیمم کے حق میں ناپاک ہے۔ مگر بحرالرائق میں اسے انکا ظاہر کلام قرار دیا۔ میں کہتا ہوں طہارت اور نجاست کوئی اضافی چیز نہیں (کہ کسی کہ بہ نسبت طہارت ہو اور کسی کی بہ نسبت نجاست) بلکہ یہ ایسا وصف ہے جو خود شیئ کیلئے براہ راست یا کسی عارض کی وجہ سے ثابت ہوتا ہے۔ کسی شیئ کے حق میں پاک ہونے کا معنی یہ ہے کہ اس میں اس کا استعمال جائز ہے اور ناپاک ہونے کا معنی یہ ہے کہ اس میں اس کا استعمال جائز نہیں ہے۔ اور یہ اسی وقت ہوگا جب کچھ نجس جز باقی رہ گیا ہو جو کسی چیز کے حق میں معاف ہے اور دوسری چیز کے حق میں معاف نہیں۔ جیسا کہ ملک العلماء

نے اس کی طرف اشارہ فرمایا۔ (ت) اور اسی سے وہ بھی ہے جس میں خوب نچوڑنے کا حکم ہے۔ اب زید نے اپنی طاقت بھر نچوڑا مگر عمرو اسے نچوڑتا تو ابھی کچھ اور ٹپکتا۔ یہ زید کے حق میں پاک ہے مگر عمرو کے حق میں نہیں۔ جیسا کہ

[Footnotes] 1 بدائع الصنائع شرائط تیمم سعید کمپنی کراچی ۱/۵۳ 2 الدرالمختار بالمعنی باب الانجاس مجتبائی دہلی ۱/۵۶

Fatawa Razawiyya, Volume 3

After quoting it, the truth is that it is pure for everyone, as stated in Durr al-Mukhtar, etc. From this detail, the flaw in the text of Bahr al-Ra'iq is evident. After quoting it, he said: the truth is that the earth (for prayer and tayammum) is pure for everyone. Tayammum is prohibited with it because the attribute of being a purifier (tahuriyya) is missing, just as this attribute is missing in 'used water' (ma' al-musta'mal). The second reason is that the statement of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) is recorded in the hadith: "The earth has been made for me a place of prostration and a purifier (tahur)." This reasoning is based on the fact that 'tahur' means 'mutahhir' (purifier). Discussion on this has already passed. (T)

I say: (1) The point of view of these scholars in this reasoning is that the Holy Quran has stipulated "sa'idan tayyiban" (clean earth).

Note 1: I say: (2) Making this an independent proof is clearly open to question. (Because only the proof that the earth is a purifier is provided from the hadith; if combined with what preceded, it forms a complete proof, but if separated from it, the claim would not be proven. 12 Muhammad Ahmad Misbahi).

Note 2: I say: (3) Previously, at the beginning of the discussion on waters, they denied that 'tahur' linguistically means 'mutahhir' (4). However, there is no doubt that Shariah usage abounds in 'tahur' meaning 'mutahhir'. This hadith is among them, because the earth being pure is not a specific characteristic of this Ummah, rather the earth being a purifier is among the specialties of this Ummah. The Muhaqqiq 'ala al-Itlaq has accepted a consensus (ijma') that in the language of Shariah, 'tahur' is that which purifies others. (T)

1. Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/71 Page 318 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

इसे उद्धृत करने के बाद, सच यह है कि यह सभी के लिए शुद्ध है जैसा कि दुर्र-ए-मुख्तार आदि में है। इस विवरण से बहरुल रैक की इबारत में जो कमी है वह स्पष्ट हो गई। उन्होंने इसे उद्धृत करने के बाद कहा है कि सच यह है कि वह जमीन (नमाज और तयम्मुम के लिए) हर एक के हक में पाक है। और इससे तयम्मुम इसलिए वर्जित है क्योंकि इसमें 'मुतहर' (पवित्र करने वाला) होने का गुण अनुपस्थित है। जैसे 'मा-ए-मुस्तअमल' (प्रयुक्त जल) में यह गुण अनुपस्थित है। दूसरा कारण यह है कि हदीस में नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है: "मेरे लिए ज़मीन को मस्जिद और तहूर (पवित्र करने वाला) बनाया गया है।" यह तर्क इस आधार पर है कि 'तहूर' का अर्थ 'मुतहर' है। और इस पर पहले चर्चा हो चुकी है। (त)

मैं कहता हूँ: (1) इस तर्क में इन विद्वानों का दृष्टिकोण यह है कि कुरान करीम ने "सईदन तय्यिबन" (पवित्र मिट्टी) की शर्त रखी है।

नोट 1: मैं कहता हूँ: (2) इसे एक स्वतंत्र प्रमाण बनाना स्पष्ट रूप से विचारणीय है। (क्योंकि हदीस से केवल यह प्रमाण मिलता है कि ज़मीन मुतहर है; यदि इसे पिछले उल्लेख के साथ जोड़ा जाए तो एक पूर्ण प्रमाण बनता है, लेकिन यदि अलग कर दिया जाए तो दावा सिद्ध नहीं होगा। 12 मुहम्मद अहमद मिस्बाही)।

नोट 2: मैं कहता हूँ: (3) इससे पहले पानी की चर्चा की शुरुआत में उन्होंने भाषाई रूप से 'तहूर' का अर्थ 'मुतहर' होने से इनकार किया है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि शरीयत के मुहावरों में 'तहूर' का अर्थ 'मुतहर' होने के उदाहरण प्रचुर मात्रा में हैं। उन्हीं में से यह हदीस भी है, क्योंकि ज़मीन का केवल पाक (शुद्ध) होना इस उम्मत की विशेषता नहीं है, बल्कि ज़मीन का मुतहर (पवित्र करने वाला) होना इस उम्मत की विशेषताओं में से है। और 'मुहक्किक अलल इतलाक़' ने तो इस बात पर इज्मा (सहमति) स्वीकार की है कि शरीयत की भाषा में 'तहूर' वह है जो दूसरों को पवित्र कर दे। (त)

1. बहरुल रैक, बाबुल तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/71 पृष्ठ 756 का 318

بعد نقله الحق انها طاهرة فی حق الکل قال در مختار وغیرہ میں ہے۔ وانما منع التیمم لفقد الطهورية کالماء اس تفصیل سے بحر الرائق کی عبارت میں جو خامی ہے ظاہر ہو گئی المستعمل وللحدیث عہ الوارد من قوله صلی انہوں نے اسے نقل کرنے کے بعد یہ فرمایا ہے کہ حق یہ ہے کہ اللہ تعالٰی علیہ وسلم جعلت لی الارض مسجدا وہ زمین (نماز و تیمم) ہر ایک کے حق میں پاک ہے اور اس سے وطهورا بناء علی ان الطهور بمعنی المطهر وقد تیمم اس لئے ممنوع ہے کہ اس میں مطہر ہونے کی صفت مفقود عہ۲ تقدم الکلام فیه اھ ہے۔ جیسے مائے مستعمل میں یہ صفت مفقود ہے۔ دوسری وجہ یہ ہے کہ حدیث میں نبی پاک صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا قول وارد اقول: (۱) مطمح نظرهم في هذا التعلیل ان ہے: "میرے لئے زمین کو مسجد اور طہور بنایا گیا"۔ یہ استدلال الکتاب الکریم انما شرط صعیدا طیبا اس بنیاد پر ہے کہ طہور بمعنی مطہر ہے۔ اور اس پر کلام گزر چکا ہے۔ (ت) میں کہتا ہوں اس تعلیل میں ان علماء کا مطمحِ نظر یہ ہے کہ قرآن کریم نے "صعیدِ طیب" کی شرط

عہ۱ اقول: فی (۲) جعله دلیلا براسه نظر لا یخفی ۱۲ اقول: اسے مستقل دلیل بنانا نمایاں طور پر محل نظر ہے ۱۲ منہ منہ غفر له (م) غفر لہ (ت) (کیونکہ حدیث سے صرف یہ ثبوت فراہم ہوتا ہے عہ۲ اقول: (۳) الذي قدم صدر بحث المیاه انکار کہ زمین مطہر ہے اس کو ماسبق سے ملائیں تو ایک دلیل مکمل ان یکون الطهور بمعنی المطهر لغة (۴) ولا شك ان ہوگی اور ماسبق سے الگ کر دیں تو مدعا ثابت نہ ہوگا ۱۲ محمد احمد المحاورات الشرعیة تظافرت علی ذلك منها هذا مصباحی) اقول: اس سے پہلے بحث میاہ کے شروع میں انہوں نے لغت میں طہور بمعنی مطہر ہونے کا انکار کیا ہے لیکن اس میں الحدیث فان کون الارض طاهرة لیس من خصائص شک نہیں کہ طہور بمعنی

مطہر ہونے پر شرعی محاورات کثرت ھذہ الامۃ بل کونھا طھورا وقد سلم المحقق علی سے موجود ہیں انہی میں سے یہ حدیث بھی ہے کیونکہ زمین کا الاطلاق الاجماع علی ان الطھور فی لسان الشرع طاہر ہونا اس امت کی خصوصیات میں نہیں بلکہ زمین کا مطہر ہونا اس امت کے خصائص سے ہے، اور محقق علی الاطلاق نے تو ما یطھر غیرہ ۱۲ منہ غفر لہ (م) اس بات پر اجماع تسلیم کیا ہے کہ زبانِ شرع میں طہور وہ ہے جو دوسرے کو پاک کر دے۔ (ت)

1. بحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۱ Page 318 of 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

(Arabic Text Column): And 'Tayyib' is that which is pure. Therefore, stipulating another attribute above purity is an addition to the Book (Quran). Hence, it is necessary that land which became impure and then dried be excluded from purity, so that the commanded act does not include it. As for the Hadith, I say: (1) Like the verse, it benefits by describing the land as being 'Tahur' (purifying). Thus, it is established for every pure land. It does not restrict purification to that which is 'Tahur' above purity, as the researcher established when he generalized that the earth's surface was known before becoming impure to be pure and purifying. With the impurity, the disappearance of both attributes was known. Then, by drying, one of them was established sharia-wise, i.e., purity. So the other remains according to what was known of its disappearance. And if it is not purifying, Tayammum cannot be performed with it. (1) End. So I say: (2) Its being purifying was not known except through the Noble Verse, and the Noble Verse did not stipulate for its purifying nature except its goodness (Tayyib) and purity. The purifying nature only ceased due to the disappearance of purity. If it returns, it returns. Therefore, it is necessary to say what they said and incline to what they inclined.

(Urdu Text Column): ...applied. And 'Tayyib' is that which is pure. Adding another attribute above purity is an addition to the Book of Allah. Therefore, it is necessary (to say) that the land which became impure and then dried is not 'Tahir' (in the context of Tayammum), so that the commanded act does not include this land at all. (T) As for the Hadith you presented: I say: This also, like the verse, is conveying the attribute of being 'Tahur' for the land. So this attribute is established for every pure land. The Hadith does not convey that the process of purification is restricted and specific to that land which is more than just pure, being 'Mutahhir' (purifying). But this argument of the absolute researcher that "Before becoming impure, the surface of the earth was known to be both pure and purifying. And with becoming impure, the disappearance and ending of both attributes was known. Then, by drying, one attribute, i.e., being pure, was established sharia-wise, so the second attribute will remain in its state of known disappearance (the attribute of being 'Mutahhir' cannot be established) and when it is not 'Mutahhir', Tayammum from it will not be permissible." End. (T) I say: The land being 'Mutahhir' was known from the verse itself, and the verse only stipulated the condition of cleanliness and purity for being 'Mutahhir'. And the attribute of being 'Mutahhir' ended only because the attribute of

purity ended. So, if the attribute of purity returns (by drying), the attribute of being 'Mutahhir' will also return.

---

1 Bahr al-Raiq, Chapter of Impurities, H.M. Saeed Company, Karachi 225/1 Page 319 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

(अरबी पाठ स्तंभ): "तय्यिब" वही है जो पाक है। अतः पवित्रता के ऊपर एक और गुण की शर्त लगाना अल्लाह की किताब पर ज़्यादती है। इसलिए यह (कहना) आवश्यक है कि जो भूमि अपवित्र होकर सूख गई वह (तयम्मुम के संबंध में) पाक ही नहीं है ताकि जिस भूमि का आदेश दिया गया है उसमें यह शामिल ही न हो। हदीस के बारे में, मैं कहता हूँ: (1) यह भी आयत की तरह भूमि के लिए 'तहुर' (पवित्र करने वाला) होने के गुण को बता रही है। अतः यह गुण हर पाक भूमि के लिए सिद्ध हो गया। हदीस यह नहीं बताती कि पवित्र करने की क्रिया केवल उसी भूमि तक सीमित और विशिष्ट है जो पाक होने से बढ़कर 'मुतहर' (पवित्र करने वाली) हो। लेकिन 'मुहक्क़िक अल-इतलाक़' का यह तर्क कि "अपवित्र होने से पहले भूमि की सतह का पाक और मुतहर दोनों होना ज्ञात था। और अपवित्र होने से दोनों गुणों का लोप और समाप्त होना ज्ञात हुआ। फिर सूखने से दोनों में से एक गुण यानी पाक होना शरीयत के अनुसार सिद्ध हुआ, तो दूसरा गुण अपने ज्ञात लोप की स्थिति पर ही रहेगा (मुतहर होने का गुण सिद्ध नहीं हो सकेगा) और जब वह मुतहर नहीं होगी तो उससे तयम्मुम करना जायज़ नहीं होगा।" (1) समाप्त। मैं कहता हूँ: (2) भूमि का मुतहर होना आयत ही से ज्ञात हुआ और आयत ने मुतहर होने के लिए केवल स्वच्छता और पवित्रता की शर्त लगाई। और पवित्र करने का गुण केवल पवित्रता समाप्त होने के कारण ही समाप्त हुआ था। अतः यदि पवित्रता का गुण (सूख जाने से) लौट आए, तो पवित्र करने का गुण भी लौट आएगा। इसी बात को कहना आवश्यक है जो उन्होंने कही और उसी ओर झुकना चाहिए जिसकी ओर वे झुके।

(उर्दू पाठ स्तंभ): ...लगाई। और तय्यिब वही है जो पाक हो। और पाकी से ऊपर एक गुण का और इज़ाफ़ा करना किताबुल्लाह पर ज़्यादती है। इसलिए यह (कहना) ज़रूरी है कि जो ज़मीन नजिस होकर खुश्क हो गई वह (तयम्मुम के हक़ में) ताहिर ही नहीं ताकि मामूर-बेह उस ज़मीन को शामिल ही न हो। (त) रही वह हदीस जो आपने पेश की: मैं कहता हूँ: यह भी आयत की तरह ज़मीन के लिए तहूर होने की सिफ़त का इफ़ादा कर रही है। तो यह सिफ़त हर ताहिर ज़मीन के लिए साबित हो गई। हदीस यह इफ़ादा नहीं करती कि ततहीर का अमल उसी ज़मीन से मुक़य्यद व मख़सूस है जो ताहिर होने से बढ़कर मुतहर हो। लेकिन मुहक्क़िक अ़लल इतलाक़ की यह तक़रीर कि "नजिस होने से क़ब्ल सतह-ए-ज़मीन का ताहिर और मुतहर दोनों का होना मालूम था। और नजिस होने से दोनों सिफ़तों का ज़वाल और ख़त्म होना मालूम हुआ। फिर खुश्क होने से दोनों में एक सिफ़त यानी ताहिर होना शरअ़न साबित हुआ तो दूसरी सिफ़त इसी हाल मालूम-ए-ज़वाल पर बाक़ी रहेगी (मुतहर होने

की सिफ़त साबित न हो सकेगी) और जब मुतहर न होगी तो उससे तयम्मुम जाएज़ न होगा"। समाप्त। (त) मैं कहता हूँ: ज़मीन का मुतहर होना आयत ही से मालूम हुआ और आयत ने मुतहर होने के लिए सिर्फ़ पाकीज़गी व पाकी की शर्त लगाई और सिफ़त-ए-तहारत ख़त्म होने ही की वजह से मुतहर होने की सिफ़त ख़त्म हुई, तो अगर तहारत की सिफ़त (खुश्क हो जाने से) लौट आए तो मुतहर होने की सिफ़त भी लौट आएगी।

---

1 बहर-उर-रैक, बाब अल-अंजास, एच.एम. सईद कंपनी कराची 225/1 पृष्ठ 319 / 756

(عربی متن کا کالم): والطیب ھوالطاھر فاشتراط وصف آخر فوق الطھارۃ زیادۃ علی الکتاب فیجب ان تخرج ارض تنجست وجفت من الطھارۃ کیلا یشملھا المأموربہ۔ امّا الحدیث فاقول: (۱) یفید کالاٰیۃ وصف الارض بانھا طھور فیثبت لکل ارض طاھرۃ لاتقییدہ التطھیر بما ھو منھا طھور فوق الطھارۃ اما قرر بہ المحقق حیث اطلق ان الصعید علم قبل التنجس طاھرا وطھورا وبالتنجس علم زوال الوصفین ثم ثبت بالجفاف شرعا احدھما اعنی الطھارۃ فیبقی الآخر علی ما علم من زوالہ واذا لم یکن طھورا لایتیمّم بہ ۱ اھ۔ فاقول: (۲) لم یعلم کونھا طھورا الا بالکریمۃ والکریمۃ لم تشرط لطھوریتھا الا طیبھا وطھارتھا وما زالت الطھوریۃ الا لزوال الطھارۃ فان عادت عادت فلابد من القول بما قالوا والمیل الی ما مالوا۔

(اردو متن کا کالم): لگائی۔ اور طیب وہی ہے جو پاک ہو۔ اور پاکی سے اوپر ایک وصف کا اور اضافہ کرنا کتاب اللہ پر زیادتی ہے۔ اس لئے یہ (کہنا) ضروری ہے کہ جو زمین نجس ہو کر خشک ہوگئی وہ (تیمم کے حق میں) طاہر ہی نہیں تاکہ مامور بہ اس زمین کو شامل ہی نہ ہو۔ (ت) رہی وہ حدیث جو آپ نے پیش کی فاقول: یہ بھی آیت کی طرح زمین کیلئے طہور ہونے کی صفت کا افادہ کر رہی ہے۔ تو یہ صفت ہر طاہر زمین کیلئے ثابت ہوگئی۔ حدیث یہ افادہ نہیں کرتی کہ تطہیر کا عمل اسی زمین سے مقید و مخصوص ہے جو طاہر ہونے سے بڑھ کر مطہر ہو۔ لیکن محقق علی الاطلاق کی یہ تقریر کہ " نجس ہونے سے قبل سطح زمین کا طاہر اور مطہر دونوں کا ہونا معلوم تھا۔ اور نجس ہونے سے دونوں صفتوں کا زوال اور ختم ہونا معلوم ہوا۔ پھر خشک ہونے سے دونوں میں ایک وصف یعنی طاہر ہونا شرعاً ثابت ہوا تو دوسرا وصف اسی حال معلوم زوال پر باقی رہے گا (مطہر ہونے کا وصف ثابت نہ ہو سکے گا) اور جب مطہر نہ ہوگی تو اس سے تیمم

جائز نہ ہوگا"۔ اھـ (ت) فاقول: زمین کا مطہر ہونا آیت ہی سے معلوم ہوا اور آیت نے مطہر ہونے کیلئے صرف پاکیزگی و پاکی کی شرط لگائی اور وصف طہارت ختم ہونے ہی کی وجہ سے مطہر ہونے کی صفت ختم ہوئی، تو اگر طہارت کی صفت (خشک ہوجانے سے) لوٹ آئے تو مطہر ہونے کی صفت بھی لوٹ آئے گی،

---

1 بحر الرائق باب الانجاس ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۲۵ Page 319 of 756

Fatawa Razawiya Volume 3

I say: But it might be necessary upon it that if water hits it, it becomes impure and returns to being impure because the small and large amount of impurity are the same in small amount of water, so it becomes impure and then makes the earth impure (1). This is one of the two corrections in everything that was judged to be pure without a liquid, as detailed by al-Bahr in al-Bahr just before his saying "and an amount of a Dirham is excused". And it was narrated from al-Muhit regarding the specific issue of the earth as well that the most correct view is the return of impurity. However, the famous narration is that it does not return to being impure, and it is the chosen view in al-Khulasah, and it is the correct view in al-Khaniyyah and al-Mujtaba, and it is the most appropriate because the primary texts (Mutoon) clearly state purity, and the meeting of pure water with a pure thing does not necessitate impurity. This view was chosen in Fath al-Qadir, for whoever says it returns (to being impure) bases it on the idea that the impurity was not removed but only diminished. End of al-Bahr quote.

Therefore, one must agree with what those respected scholars have agreed upon and incline towards what they have inclined towards. (T) I say: However, an objection arises here that if water reaches a piece of land that has become pure by drying, it will become impure, and the land will also become impure again. Because for a small amount of water, both small and large amounts of impurity are equal, so the water will become impure and then make the land impure as well. And regarding every thing for which purity has been ruled without a liquid, one of the two corrections is that it will become impure again upon contact with water, as detailed in al-Bahr al-Ra'iq before "and an amount of a Dirham is excused," and it has been quoted from al-Muhit specifically regarding the land issue that the most correct view is that the impurity will return. But the famous narration is that it will not become impure, and this is the chosen one. Al-Khulasah and the same is correct in Khaniyyah and Mujtaba, and this is more appropriate because the clarity of purity exists in the primary texts (Mutoon), and the connection of pure water with a pure thing is not a cause for impurity. And this was chosen in Fath al-Qadir because those who believe in it becoming impure again base it on the premise that the impurity was not removed, only reduced. End of quote from al-Bahr al-Ra'iq. (T)

I say: The era of research and precise vision is that this too...

Note: From the statement of Malik al-Ulama in Bada'i, it was known that when the land dries, the impurity is not completely removed, some... (continued on the next page).

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Impurities, Saeed Company, Karachi, 1/227. Page 320 of 756

फतावा रज़विया, जिल्द 3

मैं कहता हूँ: लेकिन इस पर यह लाज़िम आ सकता है कि अगर उस पर पानी पहुँच जाए, तो वह नापाक हो जाएगा और दोबारा नापाक हो जाएगा क्योंकि पानी की थोड़ी मात्रा में थोड़ी और ज़्यादा नापाकी बराबर है, इसलिए पानी नापाक हो जाएगा और फिर ज़मीन को नापाक कर देगा (1)। यह उन दो सुधारों में से एक है, जिसमें तरल के बिना पवित्रता का निर्णय दिया गया था, जैसा कि अल-बह्र में "और एक दिरहम की मात्रा माफ है" कहने से ठीक पहले अल-बह्र में विस्तार से बताया गया है। और अल-मुहित से विशेष रूप से ज़मीन के मसले में यह भी नकल किया गया है कि सही यही है कि नापाकी लौट आएगी। लेकिन मशहूर रिवायत यह है कि वह नापाक नहीं होगी, और यही मुख़्तार है खुलासा में, और यही सही है खानिया और मुजतबा में, और यही बेहतर है क्योंकि मतून (मूल पाठ) में तहारत की स्पष्टता मौजूद है और पाक चीज़ के साथ पाक पानी का मिलन नापाकी का कारण नहीं बनता। और इसे फतह अल-कादिर में इख़्तियार किया गया है, क्योंकि जो लोग दोबारा नापाक होने के कायल हैं, उनकी बुनियाद इस पर है कि नापाकी ज़ायल नहीं हुई, बल्कि सिर्फ कम हुई। अल-बह्र का उद्धरण समाप्त।

इसलिए, उसी का कायल होना पड़ेगा जिसका वे हज़रात कायल हैं और उसी की तरफ माहिल होना होगा जिसकी तरफ वे माहिल हैं। (त) मैं कहता हूँ: लेकिन इस पर यह एतराज़ लाज़िम आता है कि खुश्क होने से पाक हो जाने वाली ज़मीन पर अगर पानी पहुँच जाए तो नजिस हो जाएगा और ज़मीन भी फिर नजिस हो जाएगी। इसलिए कि आबे क़लील के लिए क़लील व कसीर दोनों ही नजासतें बराबर हैं तो पानी नजिस हो जाएगा फिर ज़मीन को भी नजिस कर देगा। और हर वह चीज़ जिसके मुताल्लिक किसी बहने वाली चीज़ के बग़ैर पाक हो जाने का हुक्म किया गया है, उसके बारे में दो तसहीहों में से एक यही है कि पानी पड़ने से वह फिर नापाक हो जाएगी, जैसा कि अल-बह्र अल-रईक में "व अफ़ा क़दरुद दिरहम" से क़ब्ल इसकी तफ़सील मौजूद है और मुहीत से ख़ास मसला ज़मीन में, यह नक़ल किया है कि असह यही है कि नजासत लौट आएगी। लेकिन रिवायत मशहूरा यह है कि नजिस न होगी और यही मुख़्तार है। खुलासा और यही सही है खानिया व मुजतबा और यही औला है क्योंकि मतून में तहारत की सराहत मौजूद है और पाक शय से पाक पानी का इत्तेसाल बाइस-ए-नजासत नहीं। और इसी को फ़तहुल क़दीर में इख़्तियार किया इसलिए कि जो दोबारा नजिस हो जाने के कायल हैं उनकी बुनियाद इस पर है कि नजासत ज़ायल नहीं हुई सिर्फ कम हुई। अह अल-बह्र अल-रईक। (त)

मैं कहता हूँ: अहदे तहक़ीक़ और नज़रे दक़ीक़ यह है कि यह भी...

नोट: मुल्क उल उलमा की इबारत बदायूँ से यह मालूम हुआ कि ज़मीन खुश्क हो जाने से नजासत बिल्कुल ज़ायल नहीं होती कुछ (बाकी अगले सफहे पर)।

1. अल-बह्र अल-रईक, बाबु नजासत, सईद कंपनी, कराची, 1/227. पृष्ठ 320 का 756

اقول : لکن قد یلزم علیه انها اذا اصابها الماء تنجس وعادت نجسة لان القلیل والکثیر من النجاسة سواء فی الماء القلیل فیتنجس ثم ینجس الارض (۱) وهو احد تصحیحین فی کل ما حکم بطهارته بغیر مائع کما فصله البحر فی البحر قبیل قوله وعفی قدر الدرهم و نقل عن المحیط فی خصوص مسألة الارض ایضا ان الاصح عود النجاسة لکن الروایة المشهورة انها لا تعود نجسة وهو المختار خلاصة وهو الصحیح خانیة ومجتبی وهو الاولی لتصریح المتون بالطهارة وملاقاة الماء الطاهر للطاهر لا توجب التنجس وقد اختاره فی فتح القدیر فان من قال بالعود بناه علی ان النجاسة لم تزل وانما قلت 'اه بحر۔

اس لئے اسی کا قائل ہونا پڑے گا جس کے قائل وہ حضرات ہیں اور اسی کی طرف مائل ہونا ہوگا، جس کی طرف وہ مائل ہیں۔(ت) اقول: لیکن اس پر یہ اعتراض لازم آتا ہے کہ خشک ہونے سے پاک ہو جانے والی زمین پر اگر پانی پہنچ جائے تو نجس ہو جائے گا اور زمین بھی پھر نجس ہو جائیگی۔ اس لئے کہ آب قلیل کیلئے قلیل و کثیر دونوں ہی نجاستیں برابر ہیں تو پانی نجس ہو جائے گا پھر زمین کو بھی نجس کر دے گا۔ اور ہر وہ چیز جس کے متعلق کسی بہنے والی چیز کے بغیر پاک ہو جانے کا حکم کیا گیا ہے اس کے بارے میں دو تصحیحوں میں سے ایک یہی ہے کہ پانی پڑنے سے وہ پھر ناپاک ہو جائیگی ، جیسا کہ البحر الرائق میں "وعفی قدر الدرهم" سے قبل اس کی تفصیل موجود ہے اور محیط سے خاص مسئلہ زمین میں، یہ نقل کیا ہے کہ اصح یہی ہے کہ نجاست لوٹ آئیگی| لیکن روایت مشہورہ یہ ہے کہ نجس نہ ہو گی اور یہی مختار ہے۔ خلاصہ اور یہی صحیح ہے خانیہ و مجتبیٰ اور یہی اولیٰ ہے کیونکہ متون میں طہارت کی صراحت موجود ہے اور پاک شیئ سے پاک پانی کا اتصال باعث نجاست نہیں۔ اور اسی کو فتح القدیر میں اختیار کیا اس

لئے کہ جو دوبارہ نجس ہو جانے کے قائل ہیں ان کی بنیاد اس پر ہے کہ نجاست زائل نہیں ہوئی صرف کم ہوئی اھ البحر الرائق۔ (ت)

اقول: عہد تحقیق اور نظر دقیق یہ ہے کہ یہ بھی

عہ ملک العلماء کی عبارت بدائع سے یہ معلوم ہوا کہ زمین خشک ہو جانے سے نجاست بالکل زائل نہیں ہوتی کچھ (باقی بر صفحہ آئندہ)

1. البحر الرائق باب الانجاس سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۲۷ Page 320 of 756

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

I say: (2) Both deep investigation and precise observation also apply here. It is not mandatory for them, nor does its lack of mandatoriness harm their objective, meaning Imam Malik al-Ulama and the commentators. For perhaps a small amount is excused in water as well, just as they have explicitly stated regarding droplets of urine like the heads of needles, and the falling of one or two animal droppings into a well that an observer considers insignificant. Similarly, a small amount of cow dung and horse manure. So let this also be part of that, especially since what remains after drying and the disappearance of the trace, such that no smell or color remains, is nothing but like the heads of needles or less. The meaning of "pure" (Tahir) here in the primary texts and elsewhere is "permissible to use," otherwise they have explicitly stated the purity of semen by scraping, and it is known for certain that it is not completely removed but rather parts of it remain. There is no possibility of ruling the parts of impurity as pure as long as the substance remains, so there is no meaning other than it being excused and permissible for use. It has also been excused in water, for the preferred view as in Al-Khulasa is that it does not return to being impure by being touched by water[1].

[Urdu Translation Column]: It will not be mandatory for them, i.e., Malik al-Ulama and the commentators, and with it not being mandatory, it is not harmful to their purpose. Just as in clothes etc., a certain amount of minor impurity is excused, some slight and minor impurity is also excused in water. For example, if droplets of urine like the heads of needles fall, or if animal droppings fall in a well, one or two or a few more, as long as the observer considers it minimal, explicit statements from scholars regarding the excuse of all these are present. The rule for a small amount of cow dung and horse manure is the same. Thus, for the slight impurity remaining on dry ground, the same rule should apply, because when the ground has dried and the trace of impurity has vanished to the extent that neither color nor smell remains, then whatever is left is just like the heads of needles or even less. (So it is no strange thing that such dry ground remains pure even after water falls on it). Here, the word "pure" used in texts etc. means that its use is permissible (this does not mean that...

(Remainder of footnote from previous page): ...remains, which is why Tayammum (dry ablution) is not permissible with it, because in the Book of Allah, the condition of "pure soil" has come for it. Although impurity, even if minor, is contrary to purity, a small amount of impurity is not contrary to the validity of prayer, therefore prayer is permissible on this ground. Now, in the light of the last line of the quoted text from

Bahr al-Ra'iq, according to Malik al-Ulama, such dry ground should become impure again upon contact with water because they have explicitly stated that the impurity decreases by the drying of the ground, it does not end. After "I say" (Aqul), the author has resolved this doubt. 12 Muhammad Ahmad Islahi.

[1] Fatawa Khulasa, another category from the sixth chapter on washing clothes, Naval Kishore Lucknow 21/1 Page 321 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

मैं कहता हूँ: (२) यहाँ भी गहरी शोध और सूक्ष्म दृष्टि लागू होती है। यह उन पर अनिवार्य नहीं होगा, और अनिवार्य न होना उनके उद्देश्य के लिए हानिकारक भी नहीं है, मेरा तात्पर्य इमाम मलिकुल उलमा और टीकाकारों से है। क्योंकि शायद पानी में भी थोड़ी मात्रा माफ़ होती है, जैसा कि उन्होंने सुई के सिरों की तरह पेशाब की बूंदों के बारे में और कुएं में एक या दो मेंगनी के गिरने के बारे में स्पष्ट किया है जिसे देखने वाला कम ही समझे। इसी तरह, गाय का गोबर और घोड़े की लीद की थोड़ी मात्रा। तो इसे भी उन्हीं में से होने दें, विशेष रूप से वह जो सूखने और निशान मिटने के बाद बचता है जिससे न गंध रहती है और न ही रंग, वह केवल सुई के सिरों की तरह या उससे भी कम होता है। मूल ग्रंथों और अन्य में यहाँ 'ताहिर' (पवित्र) का अर्थ 'इस्तेमाल में जायज़' है, अन्यथा उन्होंने रगड़कर वीर्य की पवित्रता को स्पष्ट किया है, जबकि यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि यह पूरी तरह से समाप्त नहीं होता है बल्कि इसके कुछ अंश शेष रह जाते हैं। जब तक पदार्थ मौजूद है, अशुद्धता के अंशों को पवित्र मानने की कोई संभावना नहीं है, इसलिए इसका कोई अर्थ नहीं है सिवाय इसके कि वह माफ़ है और इस्तेमाल के लिए जायज़ है। और पानी में भी इसे माफ़ किया गया है, क्योंकि अल-खुलासा के अनुसार पसंदीदा विचार यह है कि पानी के संपर्क में आने से यह फिर से अशुद्ध नहीं होता है।[1]

[उर्दू अनुवाद स्तंभ]: उन पर, यानी मलिकुल उलमा और टीकाकारों पर यह अनिवार्य नहीं होगा, और अनिवार्य न होने के साथ उनके उद्देश्य के लिए हानिकारक भी नहीं है। कपड़ों आदि में जैसे एक हद तक थोड़ी अशुद्धता माफ़ होती है, कुछ हल्की और थोड़ी सी अशुद्धता पानी में भी तो माफ़ होती है। जैसे सुई के सिरों की तरह पेशाब की बूंदें पड़ जाएं कुएं में मेंगनी पड़ जाए, एक दो या कुछ और, जहाँ तक कि देखने वाला उसे कम ही समझे तो इन सबके माफ़ होने से संबंधित विद्वानों का स्पष्टीकरण मौजूद है। थोड़े गोबर और लीद का भी यही हुक्म है। तो सूखी ज़मीन पर जो हल्की सी अशुद्धता रह गई है, उसका भी यही हुक्म होना चाहिए क्योंकि जब ज़मीन सूख गई और अशुद्धता का असर जाता रहा यहाँ तक कि न रंग बाकी रहा न गंध, तो उसके बाद जो कुछ रह जाता है वह बस सुई के सिरों की तरह या उससे भी कम होता है। (तो यह कोई अजीब बात नहीं है कि ऐसी सूखी ज़मीन पानी पड़ने के बाद भी पाक ही रहे)। यहाँ ग्रंथों आदि में जो 'ताहिर' शब्द आया है, उसका अर्थ यह है कि इस्तेमाल जायज़ है (इसका यह अर्थ नहीं कि...

(पाद-टिप्पणी): (पिछले पृष्ठ की शेष टिप्पणी) ...बाकी रहती है इसीलिए इससे तयम्मुम जायज़ नहीं है क्योंकि अल्लाह की किताब में इसके लिए 'सईद-ए-पाक' (पवित्र मिट्टी) की शर्त आई है। और अशुद्धता भले ही हल्की हो, पवित्रता के विरुद्ध है, लेकिन थोड़ी अशुद्धता नमाज़ की वैधता के विरुद्ध नहीं है, इसलिए इस ज़मीन पर नमाज़ जायज़ है। अब बहुर रैक के उद्धृत पाठ की आखिरी पंक्ति के आलोक में, मलिकुल उलमा के अनुसार, ऐसी सूखी ज़मीन पानी लगने से फिर अशुद्ध हो जानी चाहिए क्योंकि उनका स्पष्टीकरण मौजूद है कि ज़मीन सूखने से अशुद्धता कम होती है, समाप्त नहीं होती। 'अकुल' (मैं कहता हूँ) के बाद लेखक ने इस शंका का समाधान किया है। १२ मोहम्मद अहमद इस्लाही।

[1] फ़तावा खुलासा, कपड़ों की धुलाई पर छठे अध्याय से एक और श्रेणी, नवल किशोर लखनऊ २१/१

اقول: (۲) والتحقیق والنظر الدقیقان ھذا ایضاً لا یلزمھم ولا بعدم لزومہ یستضر مقصودھم اعنی الامام ملك العلماء والشارحین فلربما یعفی مثل القلیل فی الماء ایضا کما نصوا فی رشاش البول کرؤس الابر ووقوع بعرۃ او بعرتین الی ما یستقلہ الناظر فی البئر وکذا الخثی والروث القلیلان فلیکن ھذا ایضا من ذاك کیف وما بقی بعد الجفاف وذھاب الاثر حتی لم یبق ریح ولا لون لا یکون الا کرؤس الابر او اقل ومعنی الطاھر ھنا فی المتون وغیرھا سائغ الاستعمال والا فقد صرحوا بطھارۃ المنی بالفرق ومعلوم قطعاً انہ لا یزول بالکلیۃ بل تبقی لہ اجزاء ولا امکان للحکم بطھارۃ اجزاء النجس مادامت العین باقیۃ فلا معنی الا المعفو عنہ السائغ الاستعمال وقد عفی ایضا فی الماء فان المختار کما فی الخلاصۃ عدم عودہ نجسا باصابۃ الماء[1]۔

[اردو ترجمہ کالم]: ان پر یعنی ملک العلماء اور شارحین پر لازم نہ آئیگا اور لازم نہ آنے کے ساتھ ان کے مقصود کیلئے مضر بھی نہیں۔ کپڑے وغیرہ میں جیسے ایک حد تک قلیل نجاست معاف ہوتی ہے کچھ خفیف و قلیل سی نجاست پانی میں بھی تو عفو ہوتی ہے سوئی کے ناکوں کی طرح پیشاب کے چھینٹے پڑ جائیں، کنویں میں مینگنی پڑ جائے ایک دو یا کچھ اور، جہاں تک کہ دیکھنے والا اسے قلیل ہی سمجھے تو ان سب کے معاف ہونے سے متعلق علماء کی صراحت موجود ہے۔ قلیل گوبر اور لید کا بھی یہی حکم ہے۔ تو خشک زمین پر جو خفیف سی نجاست رہ گئی ہے اس کا بھی یہی حکم ہونا چاہئے کیونکہ جب زمین خشک ہو گئی اور نجاست کا اثر جاتا رہا یہاں تک کہ نہ رنگ باقی رہا نہ بو، تو اس کے بعد جو کچھ رہ جاتا ہے وہ بس سوئی کے ناکوں کی طرح یا اس سے بھی کم تر ہوتا ہے (تو یہ کوئی عجیب بات نہیں کہ ایسی خشک زمین پانی پڑنے

کے بعد بھی پاک ہی رہے) یہاں پر متون وغیرہ میں جو طاہر کا لفظ آیا ہے اس کا معنی یہ ہے کہ استعمال جائز ہے (یہ معنی نہیں کہ

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) باقی رہتی ہے اسی لئے اس سے تیمم جائز نہیں کیونکہ کتاب اللہ میں اس کیلئے صعید پاک کی شرط آئی ہے اور نجاست اگرچہ خفیف ہو طہارت کے منافی ہے لیکن قلیل نجاست جواز نماز کے منافی نہیں اس لئے اس زمین پر نماز کا جواز ہے۔ اب بحر الرائق کی منقولہ عبارت کی آخری سطر کی روشنی میں ملک العلماء کے نزدیک ایسی خشک زمین پانی لگنے سے پھر نجس ہو جانی چاہئے کیونکہ ان کی صراحت موجود ہے کہ زمین خشک ہو جانے سے نجاست کم ہوتی ہے، ختم نہیں ہوتی۔ اقول کے بعد مصنف نے اس شبہ کا ازالہ فرمایا ہے ۱۲ محمد احمد اصلاحی

[1] فتاویٰ خلاصہ جنس آخر من فصل السادس فی غسل الثوب نولکشور لکھنو ۲۱/۱ صفحہ 321 از 756

(that it is completely pure and clean such that there is no existence of impurity at all) Scholars have explicitly stated that if dry semen is on cloth, it will become pure by rubbing. And it is definitely known that semen is not completely eliminated by rubbing, rather some of its parts remain. While the substance remains, it is not possible to rule the parts of impurity as pure, then what is meant by becoming pure? It is that its use is now permissible and whatever remains is forgiven. And this is also forgiven regarding water. Because this is the preferred opinion. As it is in 'Al-Khulasah' that by coming into contact with water it will not become impure again. (T)

Arabic: Thus, by the grace of Allah, the correctness of what they said has become clear, that it is pure for prayer but impure for Tayammum. There is no contradiction between this and what is in the texts regarding the ruling of purity. What the vast majority of scholars did by restricting themselves to describing 'Sa'eed' (earth) as pure is clear and pure, with no dust (doubt) upon it. And Allah Almighty is the granter of success. Furthermore, it might occur to some minds that they made the reality of Tayammum merely the intention (al-qasd), which is clearly false. For this reason, Abdul Halim objected in the commentary on 'Al-Durar' saying that 'usage' (al-isti'mal) is not understood from it, although it is not a hidden fact that usage is a pillar. End quote.

Urdu: From this detail, by the praise of Allah, the correctness of the scholars' statement has become clear that dry land is pure in terms of prayer, but impure in terms of Tayammum. There is no contradiction or conflict between the ruling of purity in the texts regarding land that has become dry after being defiled and the ruling of these scholars regarding its impurity for Tayammum. And the fact that a large number of scholars have restricted themselves to defining 'Sa'eed' for Tayammum as only 'Tahir' (pure) and clean is perfectly clear and there is no dust (doubt) upon it, and only Allah is the granter of success. (T) From the aforementioned definition "Seeking the pure earth for purification", some people get the idea that in this definition, mere intention has been made the reality of Tayammum, the falsity of which is obvious. That is why the learned Rumi Abdul Halim, in the commentary on 'Al-Durar', objected to it saying that 'usage' is not understood from this definition, although it is not a hidden matter that usage is a pillar of Tayammum. (T) I say that usage has not been ignored in this definition; it contains 'for purification' (lit-tatheer).

And I say: (1) It is not so, rather they said 'for purification' meaning the well-known and customary wiping.

---

1. Hashiyah al-Durar by Mawla Abdul Halim, Chapter of Tayammum, Othmaniyah Press Beirut, 1/24.

(कि वह पूरी तरह से पाक और साफ़ है कि ज़रा भी नजासत का वजूद नहीं) उलमा ने स्पष्ट रूप से फरमाया है कि कपड़े पर सूखी मनी हो तो रगड़ देने से पाक हो जाएगी। और यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि रगड़ने से मनी पूरी तरह से खत्म नहीं हो जाती, बल्कि उसके कुछ हिस्से बाकी रह जाते हैं। जब तक उसके अंश बाकी हों, नजासत के हिस्सों को पाक कहने का हुक्म देना मुमकिन ही नहीं, फिर पाक होने का क्या मतलब हुआ? यही कि अब उसका इस्तेमाल जायज़ है और जो कुछ रह गया है वह माफ़ है। और पानी के संबंध में भी यही माफ़ है। क्योंकि यही पसंदीदा राय है। जैसा कि 'अल-खुलासा' में है कि पानी लगने से वह फिर नापाक नहीं होगा। (त)

अरबी: इस प्रकार, अल्लाह की प्रशंसा से, उनके कहे की सत्यता स्पष्ट हो गई है कि वह नमाज़ के लिए पाक है लेकिन तयम्मुम के लिए नापाक है। इसके और मूल ग्रंथों में शुद्धता के नियम के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। उलमा के एक बड़े समूह ने 'सईद' (मिट्टी) को केवल पाक के रूप में सीमित करने का जो कार्य किया है, वह स्पष्ट और शुद्ध है, जिस पर कोई गर्द (संदेह) नहीं है। और अल्लाह तआला ही तौफीक देने वाला है। इसके अलावा, कुछ लोगों के मन में यह आ सकता है कि उन्होंने तयम्मुम की हकीकत को केवल 'इरादे' (अल-क़सद) तक सीमित कर दिया है, जो स्पष्ट रूप से गलत है। इसी कारण अब्दुल हलीम ने 'अल-दुरर' की व्याख्या में इस पर आपत्ति जताई कि इससे 'इस्तेमाल' (अल-इस्तिअमाल) समझ में नहीं आता, हालांकि यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि इस्तेमाल एक स्तंभ है। समाप्त।

उर्दू: इस विस्तार से, अल्लाह की प्रशंसा से उलमा के इस कथन की सत्यता स्पष्ट हो गई कि सूखी ज़मीन नमाज़ के हक में पाक है, लेकिन तयम्मुम के हक में नापाक है। नजासत पड़ने के बाद सूख जाने वाली ज़मीन के बारे में मूल ग्रंथों (मतून) में पाक होने का जो हुक्म है और इन उलमा के कौल में तयम्मुम के हक में उसके नापाक होने के हुक्म में कोई विरोधाभास या मतभेद नहीं है। और उलमा के एक बड़े समूह ने तयम्मुम के लिए 'सईद' को केवल 'ताहिर' और पाक तक सीमित रखने पर जो बस किया है, वह बिल्कुल स्पष्ट और साफ है जिस पर कोई गर्द नहीं है, और अल्लाह तआला ही तौफीक देने वाला है। (त) उपर्युक्त परिभाषा "पाक सतह वाली ज़मीन का इरादा करना पाक होने के लिए" से कुछ लोगों का यह विचार होता है कि इस परिभाषा में केवल 'इरादे' को तयम्मुम की हकीकत करार दे दिया गया है, जिसका गलत होना ज़ाहिर है। इसीलिए 'अल-दुरर' की व्याख्या में विद्वान रूमी अब्दुल हलीम ने इस पर आपत्ति जताई कि इस परिभाषा से 'इस्तेमाल' समझ में नहीं

आता, हालांकि यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि इस्तेमाल तयम्मुम का एक स्तंभ है। (त) मैं कहता हूँ कि इस परिभाषा में इस्तेमाल को नज़रअंदाज़ नहीं किया गया है, इसमें 'पाक होने के लिए' (लित-ततहीर) मौजूद है।

और मैं कहता हूँ: (1) ऐसा नहीं है, बल्कि उन्होंने 'पाक होने के लिए' कहा जिसका अर्थ प्रसिद्ध और प्रचलित मसह (पोंछना) है।

---

1. हाशिया अल-दुरर, मौला अब्दुल हलीम, बाबू-तयम्मुम, मतबअ उस्मानिया बेरूत, 1/24।

पेज 322/756

کہ وہ کامل طور پر ایسا پاک و طاہر ہے کہ ذرا بھی نجاست کا وجود نہیں) علماء نے صراحت فرمائی ہے کہ کپڑے پر خشک منی ہو تو رگڑ دینے سے پاک ہو جائینگی۔ اور یہ قطعی طور پر معلوم ہے کہ رگڑ سے منی بالکل ختم نہیں ہو جاتی بلکہ اس کے کچھ اجزاء باقی رہ جاتے ہیں۔ عین کے باقی رہتے ہوئے اجزاء نجس کی طہارت کا حکم دینا ممکن ہی نہیں پھر پاک ہونے کا کیا مطلب ہوا؟ یہی کہ اب استعمال جائز ہے اور جو کچھ رہ گیا ہے وہ معاف ہے۔ اور یہ پانی کے حق میں بھی معاف ہی ہے۔ اس لئے کہ مختار یہی ہے۔ جیسا کہ خلاصہ میں ہے کہ پانی لگنے سے وہ پھر نجس نہ ہوگا۔ (ت)

عربی: فظهر ولله الحمد صحة ما قالوه من انها طاهرة فی حق الصلاة نجسة فی حق التیمم وان لاخلاف بینه وبین ما فی المتون من حکم الطهارة وان ما فعل الجم الغفیر من الاقتصار علی تقیید الصعید بالطاهر صاف طاهر لاغبار علیه و الله تعالی الموفق۔ ثم قد یسبق الی بعض الاذهان انهم جعلوا حقیقة التیمم مجرد القصد وهو ظاهر الفساد ولذا اعترضه عبد الحلیم فی حاشیة الدرر بانه لا یفهم منه الاستعمال وهو رکن کما لا یخفی اھ

اردو: اس تفصیل سے بحمد اللہ علماء کے اس ارشاد کی صحت روشن ہوگئی کہ وہ خشک زمین نماز کے حق میں پاک ہے، تیمّم کے حق میں ناپاک ہے اور نجاست پڑنے کے بعد خشک ہو جانے والی زمین سے متعلق متون میں پاک ہونے کا جو حکم ہے اور ان علماء کے قول میں تیمّم کے حق میں اس کے ناپاک ہونے کا جو حکم ہے دونوں میں کوئی مخالفت اور منافات نہیں۔ اور علماء کے جمِ غفیر نے تیمّم سے متعلق صعید کو صرف طاہر و پاک سے مقید کرنے پر جو اکتفا کیا ہے یہ بالکل پاک وصاف ہے جس پر کوئی غبار نہیں، اور اللہ تعالٰی ہی توفیق دینے والا ہے۔ (ت) تعریف

مذکور "القصد الی الصعید الطاھر للتطھیر" (پاک سطح زمین کا قصد کرنا تطہیر کیلئے) سے کچھ لوگوں کا یہ خیال ہوتا ہے کہ اس تعریف میں محض قصد کو تیمّم کی حقیقت قرار دے دیا گیا ہے جس کا فاسد ہونا ظاہر ہے۔ اسی لئے درر کے حاشیہ میں فاضل رومی عبدالحلیم نے اس پر اعتراض کیا کہ اس تعریف سے "استعمال" سمجھ میں نہیں آتا حالانکہ استعمال کا رکن تیمّم ہونا کوئی پوشیدہ امر نہیں اھ (ت) میں کہتا ہوں اس تعریف میں استعمال کو نظر انداز نہیں کیا گیا ہے اس میں للتطھیر موجود ہے

واقول: (۱) لیس کذلك بل قالوا للتطھیر یعنی المعروف المعھود من مسح

---

1 حاشیہ الدر لمولی عبدالحلیم باب التیمم مطبع عثمانیہ بیروت ۱/ ۲۴

Fatawa Ridawiyya | Volume 3

[Arabic Section - Left Column] ...face and hands. Thus, the meaning of 'at-tayammum' is to intend pure earth and wipe one's face and hands with it. This whole combination is exactly what the Noble Text (Quran) has conveyed, except that it does not contain what is in the speech of these [scholars], that the combination is a pillar. And Allah Almighty knows best. Second Aspect: What Malik al-Ulama stated in 'al-Bada'i'', followed by many, the last of whom is [the author of] 'al-Durar', is that it is the use of earth on two specific limbs with the intention of purification under specific conditions. [1] End. And the wording of Imam al-Zayla'i in what he narrated from them is: the use of a part of the earth on specific limbs with the intention of purification. [2] End. I say: The restriction of 'pure' is derived from 'the intention of purification'. He said: There is an objection to it because it is not a condition to use the part on the limbs, as it is permissible with a smooth stone. [3] End. More than one [scholar] followed him in this objection, and for this reason, it was made in...

[Urdu Section - Right Column] ("To purify") Intending pure earth. (Purification means what is well-known and recognized, i.e., wiping the face and hands). Now the meaning is that tayammum is "to intend a pure surface of the earth and wipe one's face and hands with it." This same complete point has also been conveyed by the Holy Quran: "Intend the pure surface of the earth and wipe your faces and hands." Yes, in the statement of the Holy Quran, there isn't that flaw which exists in this definition, which is that from this definition, it seems that intention, purification, and wiping are all pillars of tayammum (whereas the reality is that intention is not a pillar but a condition). And Allah Almighty knows best. (T) Second Definition: Which Malik al-Ulama stated in 'al-Bada'i'' and many gentlemen followed him, among whose later ones is the author of 'Durar', which is: "To use the substance of the earth on two specific limbs with the intention of purification under specific conditions." The words mentioned by Imam al-Zayla'i while narrating from the learned scholars are: "To use some part of the earth on specific limbs with the intention of purification." (T) I say (in this definition, there is no explicit mention of pure earth or pure part, but) the restriction of 'pure' is derived from the words "intention of purification" (because purification is not possible with something impure). Imam al-Zayla'i said: "There is an objection to this definition because in tayammum, on the limbs..."

[Footnotes] 1. Hashiyah al-Durar by Mawla Abdul Halim, Book of Tayammum, Uthmaniyya Press Beirut, 1/22. 2. Tabyin al-Haqa'iq, Book of Tayammum, Bulaq Egypt, 1/36. 3. Tabyin al-Haqa'iq, Book of Tayammum, Bulaq Egypt, 1/36.

[अरबी खंड - बायां कॉलम] ...चेहरा और हाथ। अतः'अत-तयम्मुम' का अर्थ यह हुआ कि पवित्र मिट्टी का इरादा करना और उससे अपना चेहरा और हाथ मसह करना। यह पूरा मेल ठीक वही है जो महान ग्रंथ (कुरान) ने बताया है, सिवाय इसके कि इसमें वह नहीं है जो इन [विद्वानों] की बातों में है, कि यह मेल एक रुकन (स्तंभ) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। दूसरा पहलू: जो मलिक अल-उलमा ने 'अल-बदाए' में बताया, और कई लोगों ने उनका अनुसरण किया, जिनमें से अंतिम 'अद-दुरर' [के लेखक] हैं: यह विशिष्ट शर्तों के तहत शुद्धिकरण के इरादे से दो विशिष्ट अंगों पर मिट्टी का उपयोग करना है। [1] समाप्त। और इमाम अज़-ज़ैलई के शब्द जो उन्होंने उनसे वर्णित किए हैं: शुद्धिकरण के इरादे से विशिष्ट अंगों पर पृथ्वी के एक हिस्से का उपयोग करना। [2] समाप्त। मैं कहता हूँ: 'पवित्र' का प्रतिबंध 'शुद्धिकरण के इरादे' से लिया गया है। उन्होंने कहा: इसमें आपत्ति की गुंजाइश है क्योंकि यह शर्त नहीं है कि हिस्से को अंगों पर उपयोग किया जाए, क्योंकि चिकने पत्थर से भी यह जायज़ है। [3] समाप्त। एक से अधिक [विद्वानों] ने इस आपत्ति में उनका अनुसरण किया, और इसी कारण से इसे... में रखा गया...

[उर्दू खंड - दायां कॉलम] ("पवित्र करने के लिए") पाक मिट्टी का इरादा करना। (शुद्धिकरण से मुराद वही है जो मशहूर और मालूम है यानी चेहरे और हाथों का मसह करना)। अब मतलब यह हुआ कि तयम्मुम यह है कि "पाक ज़मीन की सतह का इरादा करके अपने चेहरे और हाथों का उससे मसह करे"। यही पूरी बात कुरान करीम ने भी फरमाई है: "पाक ज़मीन की सतह का इरादा करो तो अपने चेहरों और हाथों का मसह करो"। हाँ, कुरान करीम के बयान में वह खामी नहीं जो इस तारीफ (परिभाषा) में है, वह यह कि इस तारीफ से मालूम होता है कि इरादा और ततहीर (शुद्धिकरण) व मसह सभी तयम्मुम के रुकन हैं (जबकि हकीकत यह है कि इरादा रुकन नहीं शर्त है) वल्लाहु तआला आलम। (त) दूसरी तारीफ (परिभाषा): जिसे मलिक अल-उलमा ने 'बदाए' में बताया और बहुत से हज़रात ने उनका अनुसरण किया, जिसके बाद के लोगों में साहब-ए-दुरर हैं वह यह है: "ज़मीन की चीज़ का, दो खास अंगों में, ततहीर के इरादे से, मखसूस (विशिष्ट) शर्तों के साथ इस्तेमाल करना"। इमाम ज़ैलई ने हज़रात उलेमा से नक्ल करते हुए जो शब्द ज़िक्र किए वे ये हैं "ज़मीन के किसी हिस्से का, खास अंगों पर ततहीर के इरादे से इस्तेमाल करना" (त) मैं कहता हूँ (इस तारीफ में साफ तौर पर पाक मिट्टी या पाक हिस्से का ज़िक्र नहीं है लेकिन) पाक की कैद "कस्द-ए-ततहीर"

(शुद्धिकरण का इरादा) के लफ्ज़ से समझी जाती है (क्योंकि नापाक चीज़ से शुद्धिकरण मुमकिन नहीं है) इमाम ज़ैलई ने फरमाया: "इस तारीफ में एतराज है क्योंकि तयम्मुम के अंदर अंगों पर..."

[पाद टिप्पणियाँ] 1. हाशिया अल-दुरर मौला अब्दुल हलीम द्वारा, बाब अत-तयम्मुम, मतबा उस्मानिया बेरूत, 1/22। 2. तबयीन अल-हक़ाएक़, बाब अत-तयम्मुम, बोलाक़ मिस्र, 1/36। 3. तबयीन अल-हक़ाएक़, बाब अत-तयम्मुम, बोलाक़ मिस्र, 1/36।

[عربی حصہ - بایاں کالم] الوجه والیدین فکان المعنی التیتم ھو ان یقصد صعیدا طاھرا فیمسح وجھه ویدیه منه وھذا المجموع عین ما افاده النظم الکریم غیر انه لیس فیه ما في کلام ھؤلاء ان المجموع رکن واللہ تعالیٰ اعلم۔ الوجه الثانی: ما افاده ملك العلماء فی البدائع وتبعه کثیرون من أخرھم الدرر انه استعمال الصعید فی عضوین مخصوصین علی قصد التطھیر بشرائط مخصوصة ۱ اھ ولفظ الامام الزیلعي فی ما حکی عنھم استعمال جزء من الارض علی اعضاء مخصوصة علی قصد التطھیر ۲ اھ اقول: وقید الطاھر یستفاد من قصد التطھیر قال وفیه نظر لانه لا یشترط ان یستعمل الجزء علی الاعضاء حتی یجوز بالحجر الاملس ۳ اھ وتبعه علی ھذا الایراد غیر واحد ولاجل ھذا جعل فی...

[اردو حصہ - دایاں کالم] ("پاک کرنے کیلئے") صعیدِ طاہر کا قصد کرنا) تطہیر سے مراد وہی ہے جو معروف و معلوم ہے یعنی چہرے اور ہاتھوں کا مسح کرنا۔ اب معنی یہ ہوا کہ تیمم یہ ہے کہ "پاک سطح زمین کا قصد کر کے اپنے چہرے اور ہاتھوں کا اس سے مسح کرے"۔ یہی پوری بات قرآن کریم نے بھی افادہ فرمائی ہے "پاک سطح زمین کا قصد کرو تو اپنے چہروں اور ہاتھوں کا مسح کرو"۔ ہاں قرآن کریم کے بیان میں وہ خامی نہیں جو اس تعریف میں ہے وہ یہ کہ اس تعریف سے معلوم ہوتا ہے کہ قصد اور تطہیر و مسح سبھی تیمم کا رکن ہیں (جبکہ حقیقت یہ ہے کہ قصد رکن نہیں شرط ہے) واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت) تعریف دوم : جس کا ملک العلماء نے بدائع میں افادہ فرمایا اور بہت سے حضرات نے ان کا اتباع کیا جس کے آخری لوگوں میں سے صاحب درر ہیں وہ یہ ہے : "جنس زمین کا، دو خاص عضووں میں، تطہیر کے ارادہ سے، مخصوص شرائط کے ساتھ استعمال کرنا"۔ امام زیلعی نے حضرات علماء سے حکایت کرتے ہوئے جو الفاظ ذکر کیے وہ یہ ہیں "زمین کے کسی جز کا، خاص اعضاء پر تطہیر کے ارادہ سے استعمال کرنا اھ (ت) میں

کہتا ہوں (اس تعریف میں صراحۃً صعیدِ طاہر یا جز و طاہر کا ذکر نہیں مگر) طاہر کی قید "قصدِ تطہیر" کے لفظ سے مستفاد ہو جاتی ہے (کیونکہ غیر طاہر سے تطہیر ممکن نہیں) امام زیلعی نے فرمایا : "اس تعریف میں نظر ہے اس لئے کہ تیمم کے اندر اعضاء پر..."

[حواشی] 1 حاشیۃ الدرر لمولیٰ عبدالحلیم باب التیمم مطبع عثمانیہ بیروت ۲۲/۱ 2 تبیین الحقائق باب التیمم بولاق مصر ۳۶/۱ 3 تبیین الحقائق باب التیمم بولاق مصر ۳۶/۱

Fatawa Razawiyya - Volume Three

Al-Jawharah: The first definition is more correct, as it states: Tayammum is the use of a pure part of the earth on the site of tayammum. It is also said: It is the intention to use pure earth for purification, and this is more suitable because tayammum with stone is permissible. 1 End. I say: There is no circularity in the wording of al-Jawharah, for the site of tayammum is known among people, and the purpose is to explain its legal (shari'ah) reality. Ash-Shurunbulali refuted it in his Ghunyah, saying that although it is more correct than the reason he mentioned, its flaw from another aspect is not hidden, which is that he made its meaning specifically the 'intention'. You already know what al-Kamal mentioned. 2 End. Thus, he accepted the invalidation of the second (definition) although he disputed the correction of the first. The scholar Ibn Kamal Pasha replied in al-Idah, followed by the author of ad-Durr and others, that what is meant by 'use' is what encompasses...

"Using a part of the earth is not a condition; tayammum is also valid with a smooth stone." Many people followed him in this objection, and for this reason, the first definition in al-Jawharah al-Nayyirah was termed "most correct". In al-Jawharah it is stated: Tayammum is the use of any pure part of the earth on the site of tayammum. And it was said: Intending pure earth (earth's surface) for purification. And this definition is more correct because tayammum is also permissible with a stone. End (T) I say, there is no circularity in the text of al-Jawharah because the site of tayammum is well-known to people, and the aim is to describe its Shari'ah reality through the definition. On the second definition mentioned in al-Jawharah, Ash-Shurunbulali refuted it in his Ghunyah like this: "Even though this is more correct in the sense mentioned by al-Jawharah, the flaw in it from another perspective is not hidden. It is that in this definition, the meaning of tayammum is established as a 'specific intention', and the objection raised by Kamal ibn al-Humam on this is known. End (The objection is that intention is a condition, not a pillar/rukun)". So, Ash-Shurunbulali has accepted the refutation of the second definition of al-Jawharah, although he has also disagreed with the correction of its first definition. The objection to our quoted second definition was answered by Allama Ibn Kamal Pasha in al-Idah, which is also mentioned in Durr-e-Mukhtar etc., following him. (T) That is, "by 'use' is meant that which...

1 Al-Jawharah al-Nayyirah, Chapter of Tayammum, Maktabah Imdadiyah, Multan, 23/1 2 Ghunyat Dhawi al-Ahkam, Annotation on Durr al-Mukhtar, Khusraw, Maktabah Kaliyah, Beirut, 29/1

फ़तावा रज़विया - जिल्द तीसरी

अल-जौहरा: पहली परिभाषा अधिक सही है जहाँ उन्होंने कहा है: तयम्मुम तयम्मुम के स्थान पर पृथ्वी के एक पवित्र हिस्से का उपयोग करना है। और कहा गया है कि इसका अर्थ पवित्र मिट्टी से शुद्धिकरण का इरादा करना है, और यह अधिक उपयुक्त है क्योंकि पत्थर से तयम्मुम करना जायज़ है। 1 समाप्त। मैं कहता हूँ: अल-जौहरा के शब्दों में कोई चक्र (circularity) नहीं है, क्योंकि तयम्मुम का स्थान लोगों के बीच ज्ञात है, और उद्देश्य इसकी शरीअत वास्तविकता को समझाना है। अल-शुरुनबुलाली ने अपनी गुनिया में इसका खंडन करते हुए कहा कि हालाँकि यह उनके द्वारा बताए गए पहलू से अधिक सही है, लेकिन दूसरे पहलू से इसमें जो कमी है वह छिपी नहीं है, और वह यह है कि उन्होंने इसके अर्थ को 'विशिष्ट इरादा' बना दिया है। और आप जानते हैं कि अल-कमाल ने क्या उल्लेख किया है। 2 समाप्त। इस प्रकार, उन्होंने दूसरे (परिभाषा) के अमान्य होने को स्वीकार कर लिया, हालांकि उन्होंने पहले के सुधार पर विवाद किया। विद्वान इब्न कमाल पाशा ने अल-ईदाह में उत्तर दिया, जिसका अनुसरण अद-दुर्र और अन्य के लेखकों ने किया, कि 'उपयोग' से तात्पर्य वह है जो समावेश करता है...

"ज़मीन के किसी हिस्से का इस्तेमाल शर्त नहीं है, चिकने पत्थर से भी तयम्मुम जायज़ है।" इस आपत्ति पर कई लोगों ने उनका अनुसरण किया, और इसी कारण जौहरा नय्यिरा में पहली परिभाषा को "असह" (सबसे सही) करार दिया गया। जौहरा में यह है: तयम्मुम, ज़मीन के किसी पाक हिस्से को तयम्मुम के स्थान पर इस्तेमाल करना है। और कहा गया कि: शुद्धिकरण के लिए सईद (ज़मीन की सतह) का इरादा करना। और यह परिभाषा अधिक सही है क्योंकि पत्थर से भी तयम्मुम जायज़ है। समाप्त (त) मैं कहता हूँ, जौहरा की इबारत में कोई चक्र (circularity) नहीं है क्योंकि तयम्मुम का स्थान लोगों के पास प्रसिद्ध है, और परिभाषा से इसकी शरीअत हक़ीक़त बयान करना मक़सूद है। जौहरा में उल्लेखित दूसरी परिभाषा पर अल-शुरुनबुलाली ने अपनी गुनिया में इस तरह रद (खंडन) किया है कि: "यह हालाँकि उस लिहाज़ से सही है जिसका ज़िक्र जौहरा ने किया है, लेकिन एक दूसरे पहलू से इसमें जो ख़ामी है वह छिपी नहीं है। वह यह है कि इस परिभाषा में तयम्मुम के अर्थ को 'विशिष्ट इरादा' करार दिया गया है, और इस पर कमाल इब्न अल-हुमाम ने जो आपत्ति ज़िक्र की है वह ज्ञात है। समाप्त (वह आपत्ति यह है कि इरादा शर्त है, रुक्न नहीं)"। तो जौहरा की दूसरी परिभाषा पर जो रद है, अल-शुरुनबुलाली ने उसे तस्लीम (स्वीकार) किया है, हालाँकि उन्होंने इसकी पहली परिभाषा को सही ठहराने से भी इख़्तलाफ़ (असहमति) किया है। हमारी नक़ल की गई दूसरी

परिभाषा पर जो आपत्ति है, अल्लामा इब्न कमाल पाशा ने अल-ईदाह में उसका जवाब दिया जो दुर्रे-मुख़्तार वग़ैरा में भी उनके अनुसरण में ज़िक्र किया गया है। (त) वह यह कि "इस्तेमाल से मुराद वह है जो...

1 अल-जौहरा अल-नय्यिरा, बाबुल तयम्मुम, मकतबा इमदादिया, मुल्तान, 23/1 2 गुनिया ज़वी अल-अहकाम, हाश्या दुर्र अल-मुख़्तार, खुसरो, मकतबा कालिह, बेरुत, 29/1

الجوهرة التعريف الاول اصح حيث قال التيمم استعمال جزء من الارض طاهر فی محل التيمم وقيل القصد الی الصعيد للتطهير وهذا اصلح لان التيمم بالحجر يجوز 1 اھ اقول: ولا دور فی لفظ الجوهرة فان محل التيمم معروف عند الناس والمقصود بيان حقيقته الشرعية ورده الشرنبلالي فی غنيته بأنه وان كان اصح من الوجه الذی ذكره لا يخفی مافيه من وجه أخر وهو انه جعل مدلوله القصد المخصوص وقد علمت ماذكره الكمال 2 اھ فقد سلم تزييف الثانی وان نازع فی تصحيح الاول واجاب العلامة ابن كمال باشا في الايضاح وتبعه في الدر وغيره۔ بأن المراد من الاستعمال مايعم

جزو زمین کا استعمال شرط نہیں ، چکنے پتھر سے بھی تیمم جائز ہے۔" اس اعتراض پر متعدد حضرات نے ان کا اتباع کیا، اور اسی لئے جوہرہ نیرہ میں تعریف اول کو "اصح" قرار دیا۔ جوہرہ میں یہ ہے : تیمم ، زمین کے کسی پاک جز کو محلِ تیمم میں استعمال کرنا اور کہا گیا کہ : تطہیر کے لئے صعید (سطحِ زمین) کا قصد کرنا۔ اور یہ تعریف زیادہ صحیح ہے اس لئے کہ پتھر سے بھی تیمم جائز ہے اھ (ت) میں کہتا ہوں جوہرہ کی عبارت میں دور نہیں اس لئے کہ محل تیمم لوگوں کے نزدیک معروف ہے ، اور تعریف سے اس کی شرعی حقیقت بیان کرنا مقصود ہے۔ جوہرہ میں مذکور دوسری تعریف پر شرنبلالی نے اپنی غنیہ میں یوں رَد کیا ہے کہ : یہ اگرچہ اس لحاظ سے اصح ہے جسے جوہرہ نے ذکر کیا لیکن ایک دوسری جہت سے اس میں جو خامی ہے وہ پوشیدہ نہیں۔ وہ یہ ہے کہ اس تعریف میں تیمم کا مدلول ، قصد مخصوص کو قرار دیا ہے، اور اس پر کمال ابن ہمام نے جو اعتراض ذکر کیا ہے وہ معلوم ہے اھ (وہ یہ کہ قصد شرط ہے رُکن نہیں) تو جوہرہ کی تعریف ثانی پر جو تردید ہے شرنبلالی نے اسے تسلیم کیا ہے اگرچہ انہوں نے اس کی تعریف اول کی تصحیح سے بھی اختلاف کیا ہے۔ ہماری نقل کردہ تعریف دوم پر جو

اعتراض ہے علامہ ابن کمال پاشا نے ایضاح میں اس کا جواب دیا جو دُرِّمختار وغیرہ میں بھی ان کے اتباع میں مذکور ہے۔ (ت) وہ یہ کہ "استعمال سے مراد وہ ہے جو

1 جوہرہ نیرہ باب التیمم مکتبہ امدادیہ ملتان ۲۳/۱ 2 غنیۃ ذوی الاحکام حاشیہ در المختار خسرو مکتبہ کالیہ بیروت ۲۹/۱

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Legal ruling]: Thus, it is found in tayammum (dry ablution) with a smooth stone. End.

[I say]: (1) Al-Rumi said something strange in the margins of Al-Durar. After mentioning this, he said: "This (objection) occurs if 'sa'id' (pure earth) is meant to be soil. However, if it means the face of the earth, then it includes smooth stones, as is not hidden." End. It is as if he understood that taking the word 'sa'id' to mean soil is not a condition, rather it is permissible with stone. So it was answered that it is soil legally (hukman). It is not hidden from you how far this is from understanding the intended meaning. Al-Nahr answered in another way, saying: "It can be said that tayammum with a smooth [stone] involves the use of a part of the earth." End. This was quoted by Sayyid Abu al-Sa'ud al-Azhari, and it is the summary of what is in Majma' al-Anhur, where it says: "It can be answered that 'part' refers to the part obtained from the earth, and stone is also from the earth. And by its use is meant its legally valid use. Reflect." End. And he followed him, meaning Al-Nahr [author of Al-Durr al-Mukhtar], so he said on the statement of Al-Durr: "Its use is literal or legal, to include tayammum with a smooth stone." This is his text.

...to include legal use as well, and this is also present in tayammum with a smooth stone. (t)

I say, the learned Rumi has made a strange statement in the footnotes of Al-Durar; after writing the aforementioned objection, he said: "This objection will arise when 'sa'id' means soil, but when 'sa'id' means the surface of the earth, it also includes smooth stones, as is apparent." It is as if he understood that the word "sa'id" was criticized because people think it only refers to soil, and soil is not a condition for tayammum; rather, stone is also permissible. Then, in response, it was said that stone is also in the legal status of soil. It is not hidden how distant these things are from understanding the objective. In 'Al-Nahr al-Fa'iq', the above objection has been answered differently: "It can be said that in performing tayammum with a smooth stone, a part of the earth is used." This was quoted by Sayyid Abu al-Sa'ud Azhari. This is also the gist of the answer found in 'Majma' al-Anhur'. In it, it is stated thus: "It can be answered that 'part' refers to a part obtained from the earth, and stone is also obtained from the earth. And from its use..."

1. Hashiya al-Durar by Maulana Abdul Halim, Othmaniya Press, Beirut, 1/25
2. Hashiya al-Durar by Maulana Abdul Halim, Othmaniya Press, Beirut, 1/25

3. Fath al-Mu'in, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/86
4. Majma' al-Anhur, Chapter on Tayammum, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/37

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[कानूनी फैसला]: इस प्रकार, चिकने पत्थर से तयम्मुम (शुष्क वूज़ू) में पाया जाता है। समाप्त।

[मैं कहता हूँ]: (1) अल-रूमी ने अल-दुरर के हाशिये में एक अजीब बात कही है। इसका उल्लेख करने के बाद उन्होंने कहा: "यह (आपत्ति) तब होती है जब 'सईद' (शुद्ध मिट्टी) का अर्थ मिट्टी माना जाए। हालाँकि, अगर इसका अर्थ पृथ्वी की सतह है, तो इसमें चिकने पत्थर भी शामिल हैं, जैसा कि स्पष्ट है।" समाप्त। ऐसा लगता है कि उन्होंने समझा कि 'सईद' शब्द को मिट्टी के अर्थ में लेना अनिवार्य नहीं है, बल्कि पत्थर से भी यह जायज़ है। तो उत्तर दिया गया कि यह कानूनी तौर पर मिट्टी ही है। आपसे यह नहीं छिपा है कि यह उद्देश्य को समझने से कितना दूर है। अल-नहर ने दूसरे तरीके से उत्तर दिया, कहा: "यह कहा जा सकता है कि चिकने [पत्थर] के साथ तयम्मुम में पृथ्वी के एक हिस्से का उपयोग शामिल है।" समाप्त। इसे सैय्यद अबू अल-सऊद अल-अज़हरी ने उद्धृत किया है, और यह मजमा अल-अन्हुर में जो है उसका सारांश है, जहाँ कहा गया है: "यह उत्तर दिया जा सकता है कि 'हिस्सा' पृथ्वी से प्राप्त हिस्से को संदर्भित करता है, और पत्थर भी पृथ्वी से ही है। और इसके उपयोग से तात्पर्य इसके कानूनी रूप से मान्य उपयोग से है। चिंतन करें।" समाप्त। और उन्होंने उनका अनुसरण किया, यानी अल-नहर [अल-दुर्र अल-मुख्तार के लेखक], तो उन्होंने अल-दुर्र के कथन पर कहा: "इसका उपयोग शाब्दिक या कानूनी है, ताकि चिकने पत्थर के साथ तयम्मुम को शामिल किया जा सके।" यह उनका पाठ है।

...कानूनी उपयोग को भी शामिल करने के लिए, और यह चिकने पत्थर के साथ तयम्मुम में भी मौजूद है। (त)

मैं कहता हूँ, विद्वान रूमी ने अल-दुरर के हाशिये में एक अजीब बात कही है; उपरोक्त आपत्ति लिखने के बाद, उन्होंने कहा: "यह आपत्ति तब उठेगी जब 'सईद' का अर्थ मिट्टी हो, लेकिन जब 'सईद' का अर्थ पृथ्वी की सतह हो, तो इसमें चिकने पत्थर भी शामिल हैं, जैसा कि स्पष्ट है।" मानो उन्होंने यह समझा कि "सईद" शब्द पर इसलिए आपत्ति की गई क्योंकि लोग सोचते हैं कि यह केवल मिट्टी को संदर्भित करता है, और तयम्मुम के लिए मिट्टी अनिवार्य शर्त नहीं है; बल्कि पत्थर भी जायज़ है। फिर, जवाब में कहा गया कि पत्थर भी कानूनी रूप से मिट्टी की स्थिति में है। यह छिपा नहीं है कि ये बातें उद्देश्य को समझने से कितनी दूर हैं। 'अल-नहर अल-फ़ाएक' में उपरोक्त आपत्ति का उत्तर अलग तरीके से दिया गया है: "कहा जा सकता है कि चिकने पत्थर से तयम्मुम करने में पृथ्वी के एक

हिस्से का उपयोग किया जाता है।" इसे सैय्यद अबू अल-सऊद अज़हरी ने उद्धृत किया। मजमा अल-अन्हुर में मिले उत्तर का सार भी यही है। उसमें इस प्रकार कहा गया है: "उत्तर दिया जा सकता है कि 'हिस्सा' पृथ्वी से प्राप्त हिस्से को संदर्भित करता है, और पत्थर भी पृथ्वी से ही प्राप्त होता है। और इसके उपयोग से..."

1. हाशिया अल-दुरर, मौलाना अब्दुल हलीम, उस्मानिया प्रेस, बेरूत, 1/25
2. हाशिया अल-दुरर, मौलाना अब्दुल हलीम, उस्मानिया प्रेस, बेरूत, 1/25
3. फतह अल-मुईन, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/86
4. मजमा अल-अन्हुर, तयम्मुम का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/37

الحکمی فیوجد فی التیمّم بالحجر الاملس ۱ اھـ

اقول: (۱) واغرب الرومی فی حواشی الدرر فقال بعد ذکرہ ھذا اذا کان المراد بالصعید التراب اما اذا کان بمعنی وجہ الارض فیشمل الحجر الاملس کما لا یخفی ۲ اھـ فکانہ فھم ان الاخذ علی لفظ الصعید انہ التراب ولا یشترط بل یجوز بالحجر فاجیب بانہ تراب حکماً ولا یخفی علیك ما فیہ من البعد البعید عن فھم المرام واجاب النھر بوجہ آخر فقال یمکن ان یقال ان التیمم بالاملس فیہ استعمال جزء من الارض ۳ اھـ نقلہ السید ابو السعود الازھری وھو مال مافی مجمع الانھر اذ قال یمکن ان یجاب بان یراد من الجزء الجزء الحاصل من الارض والحجر ایضا من الارض والمراد باستعمالہ استعمالہ المعتبر شرعا تدبر ٤ اھـ وتبعہ اعنی النھر ط فقال علی قول الدر استعمالہ حقیقۃ او حکماً لیعم التیمم بالحجر الاملس مانصہ۔

استعمال حکمی کو بھی شامل ہو اور یہ چکنے پتھر سے تیمم میں بھی موجود ہے۔ اھـ (ت)

میں کہتا ہوں فاضل رومی نے حاشیہ درر میں عجیب بات کی، اعتراض مذکور لکھنے کے بعد یہ کہا کہ "یہ اعتراض اس وقت ہوگا جب صعید سے مراد مٹی ہو، لیکن جب صعید بمعنی روئے زمین ہو تو یہ چکنے پتھر کو بھی شامل ہے جیسا کہ ظاہر ہے اھـ گویا انہوں نے یہ سمجھا کہ لفظ "صعید" پر گرفت کی گئی ہے کہ صعید تو مٹی کو کہتے ہیں، اور تیمّم کے لئے مٹی کا ہونا شرط نہیں بلکہ پتھر سے بھی جائز ہے پھر اس کے جواب میں کہا گیا کہ پتھر بھی مٹی کے حکم میں ہے"۔ یہ سب باتیں فہم مقصد سے جس قدر بعید تر ہیں مخفی نہیں۔ اعتراض بالا کا النھر الفائق میں دوسری طرح جواب دیا ہے، فرمایا ہے "کہا جا سکتا ہے کہ چکنے پتھر سے تیمّم کرنے میں بھی

زمین کے ایک جز کا استعمال ہوتا ہے اھ"۔ اسے سید ابوالسعود ازہری نے نقل کیا۔ یہی اس جواب کا بھی مآل ہے جو مجمع الانہر میں ہے۔ اس میں یوں فرمایا ہے: "جواب دیا جا سکتا ہے کہ جز سے مراد زمین سے حاصل ہونے والا جز ہے اور پتھر بھی زمین ہی سے حاصل ہوتا ہے۔ اور استعمال سے"

1 حاشیہ درر لمولنا عبدالحلیم مطبعہ عثمانیہ بیروت ۲۵/۱ 2 حاشیہ درر لمولنا عبدالحلیم مطبعہ عثمانیہ بیروت ۲۵/۱ 3 فتح المعین باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۸۶/۱ 4 مجمع الانہر باب التیمم دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۷/۱

Fatawa Razawiyya - Volume Three

[Left Column]: Answer to a question, the essence of which is that Tayammum (dry ablution) is permissible on a smooth stone although it is not traditionally 'used'. The summary of the answer is that 'constructive use' (Hukmi) is established by placing the hands on it. What is apparent in 'Al-Nahr' is that the use is 'actual' (Haqiqi) by that very act of placing, not merely constructive. Therefore, there is no need for the addition of the phrase 'or constructively' (aw hukman). 1 [End of Quote]

And Shami clarified it, saying: It is not hidden that a smooth stone is a part of the earth which was used for the purification of both limbs. Use does not mean taking a physical part of it, but rather making it an instrument for purification. Since this is so, the aforementioned use is actual use, and this is what the apparent wording of 'Al-Nahr' signifies. Thus, there is no need for the word 'or constructively', as Al-Tahtawi has benefited us. 2 [End of Quote]

I say: (1) No one will doubt that if you intended a smooth stone, placed your palms on it, and then wiped your face and forearms with them, you have indeed used the stone for purification. However, when it is said...

Shami clarified this by saying: 'It is apparent that a smooth stone is a part of the earth which was used for the purification of both limbs. Use does not mean taking a physical part of it, but rather making it an instrument for purification. Since this is so, the aforementioned use is actual use, and this is what the apparent wording of 'Al-Nahr' signifies. Thus, there is no need for the word 'or constructively', as Al-Tahtawi has benefited us. (T)'

I say, no one will doubt that when someone intended a smooth stone, placed both of their palms on it, and then performed Masah (wiping) of their face and both wrists with them, then in the act of purification, the stone was...

[Footnotes]: 1. Al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Beirut, 1/122 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt, 1/167

Page 326 of 756

फ़तावा रज़विया - भाग तीन

[बायाँ कॉलम]: एक प्रश्न का उत्तर जिसका सारांश यह है कि चिकने पत्थर पर तैयम्मुम करना जायज़ है और उसमें इसका उपयोग (इस्तेमाल) नहीं पाया जाता। उत्तर का सारांश यह है कि उस पर दोनों हाथ रखने से 'हुक्मी इस्तेमाल' (कानूनी/रचनात्मक उपयोग) पाया गया। और 'अल्-नहर' के ज़ाहिरी इबारत से यह पता चलता है कि उस पर हाथ रखने की वजह से इस्तेमाल 'हक़ीक़ी' (वास्तविक) है, न कि केवल हुक्मी। अतः इसमें 'या हुक्मी' (औ हुकमन) जोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। 1 [उद्धरण समाप्त]

और शामी ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा: यह स्पष्ट है कि चिकना पत्थर ज़मीन का एक हिस्सा है जिसका उपयोग दोनों अंगों की शुद्धि के लिए किया गया। इस्तेमाल का मतलब यह नहीं है कि उसके किसी हिस्से को ले लिया जाए बल्कि यह मतलब है कि उसे शुद्धि का साधन बनाया जाए। और जब यह बात है तो उक्त इस्तेमाल, हक़ीक़ी इस्तेमाल है और यही 'नहर' की इबारत का ज़ाहिर है, तो 'औ हुकमन' शब्द की कोई ज़रूरत नहीं है, जैसा कि तहतावी ने उल्लेख फ़रमाया है। 2 [उद्धरण समाप्त]

मैं कहता हूँ: (1) इसमें किसी को कोई संदेह नहीं होगा कि जब आपने एक चिकने पत्थर का इरादा किया और उस पर अपनी हथेलियाँ रखीं, फिर उनसे अपने चेहरे और हाथों का मसह किया, तो आपने शुद्धि के लिए पत्थर का उपयोग किया है, लेकिन यदि यह कहा जाए...

[दायाँ कॉलम]: यहाँ वह इस्तेमाल मुराद है जिसे शरीयत में मान्यता प्राप्त है। इस पर विचार करें। और तहतावी ने 'अल्-नहर' का अनुसरण किया है। उन्होंने 'दुर्रे मुख्तार' की इबारत 'इसका हक़ीक़ी इस्तेमाल हो या हुक्मी ताकि चिकने पत्थर से तैयम्मुम को भी शामिल रहे' के तहत यह लिखा है: 'यह एक प्रश्न का उत्तर है। प्रश्न का सार यह है कि तैयम्मुम तो चिकने पत्थर पर भी जायज़ है लेकिन इसमें इसका इस्तेमाल नहीं पाया जाता। उत्तर का सार यह है कि इस पर हाथ रखने से हुक्मी इस्तेमाल हासिल हो गया। और 'नहर फ़ाइक़' की ज़ाहिरी इबारत से यह मालूम होता है कि हाथ रखने की वजह से हुक्मी नहीं बल्कि हक़ीक़ी इस्तेमाल मौजूद है और जब यह बात है तो 'औ हुकमन' बढ़ाने की कोई ज़रूरत नहीं है। (त)'

शामी ने इसे स्पष्ट करते हुए फ़रमाया: 'ज़ाहिर है कि चिकना पत्थर ज़मीन का एक हिस्सा है जिसका उपयोग दोनों अंगों की शुद्धि (ततहीर) के लिए किया गया, क्योंकि इस्तेमाल का मतलब यह नहीं है कि उसके किसी हिस्से को ले लिया जाए बल्कि यह मतलब है कि उसे शुद्धि का साधन बनाया जाए।

और जब यह बात है तो उक्त इस्तेमाल, हक़ीक़ी इस्तेमाल है और यही 'नहर' की इबारत का ज़ाहिर है, तो 'औ हुकमन' शब्द की कोई ज़रूरत नहीं है, जैसा कि तहतावी ने उल्लेख फ़रमाया है। (त)'

मैं कहता हूँ, इसमें किसी को शक न होगा कि जब किसी ने चिकने पत्थर का इरादा करके उस पर अपनी दोनों हथेलियाँ रखीं फिर उनसे अपने चेहरे और दोनों कलाइयों का मसह किया तो शुद्धि (ततहीर) के काम में पत्थर को...

[पादलेख]: 1. तहतावी अल-दुर्र अल-मुख्तार, तैयम्मुम का अध्याय, बेरूत 1/122 2. रद अल-मुह्तार, तैयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/167

पृष्ठ 326/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

جواب عن سؤال حاصلہ انہ یجوز التیمم علی الحجر الاملس ولااستعمال فیہ وحاصل الجواب انہ وجد الاستعمال الحکمی بوضع الیدین علیہ وظاھر ما فی النھر ان الاستعمال فیہ حقیقی بذلك الوضع لاحکمی وعلیہ فلا حاجۃ الی زیادۃ او حکماً 1 اھ۔

وہ استعمال مراد ہے جس کا شریعت میں اعتبار ہے غور کرواھ اور طحطاوی نے نہر کی پیروی کی ہے۔ انہوں نے دُرِ مختار کی عبارت "استعمالہ حقیقۃً او حکماً لیعم التیمم بالحجر الاملس" (اس کا حقیقۃً استعمال ہو یا حکماً تاکہ چکنے پتھر سے تیمم کو بھی شامل رہے) کے تحت یہ لکھا ہے: "یہ ایک سوال کا جواب ہے۔ حاصلِ سوال یہ ہے کہ تیمم تو چکنے پتھر پر بھی جائز ہے اور اس میں اس کا استعمال نہیں پایا جاتا۔ حاصلِ جواب یہ ہے کہ اس پر ہاتھوں کے رکھنے سے حکمی استعمال پالیا گیا۔ اور نہر فائق کی ظاہر عبارت سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ ہاتھوں کے رکھنے کی وجہ سے حکمی نہیں حقیقی استعمال موجود ہے اور جب یہ بات ہے تو "او حکماً" بڑھانے کی کوئی ضرورت نہیں اھ (ت)

واوضحہ ش فقال لا یخفی ان الحجر الاملس جزء من الارض استعمل فی العضوین للتطھیر اذ لیس المراد بالاستعمال اخذ جزء منھا بل جعلہ آلۃ للتطھیر وعلیہ فھو استعمال حقیقۃ و ھو ظاہر کلام النھر فلا حاجۃ الی قولہ او حکماً کما افادہ ط اھ 2۔

شامی نے اسے واضح کر کے یوں فرمایا: "ظاہر ہے کہ چکنا پتھر زمین کا ایک جزء ہے جو تطہیر کیلئے دونوں اعضاء میں استعمال ہوا، کیونکہ استعمال سے یہ مراد نہیں کہ اس کے کسی جزء کو لے لیا جائے بلکہ یہ مراد ہے کہ اس کو آلہ تطہیر بنایا جائے۔ اور جب یہ بات ہے تو

مذکورہ استعمال ، حقیقی استعمال ہے اور یہی عبارتِ نہر کا ظاہر ہے تو لفظ "او حکماً" کی کوئی ضرورت نہیں، جیسا کہ طحاوی نے افادہ فرمایا اھ (ت)

اقول: (1) لایرتاب احد انك اذا عمدت الی حجر املس فوضعت کفیك علیه ثم مسحت بهما وجهك وذراعیك فقد استعملت الحجر فی التطهیر لکن اذا قیل

میں کہتا ہوں اس میں کسی کو شک نہ ہوگا کہ جب کسی نے چکنے پتھر کا قصد کر کے اس پر اپنی دونوں ہتھیلیوں کو رکھا پھر ان سے اپنے چہرے اور دونوں کلائیوں کا مسح کیا تو تطہیر کے کام میں پتھر کو

1 طحطاوی علی الدر المختار باب التیمم بیروت ۱/ ۱۲۲ 2 رد المحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۶۷

Fatawa Razawiyyah, Volume 3

(Arabic Text excerpt): Using a portion of the earth in both organs or upon both organs, as per their terminology, does not immediately bring to mind anything other than the touching of both organs with a portion of the earth. (1) You see that Al-Sayyid Tahtawi interpreted its use by saying: 'It is wiping over the face and the hands.' End. Others have mentioned similar. (2) Rather, Al-Allama Shami himself said shortly after this: 'The use is the specific wiping for the face and the hands.' End. And there is no doubt that wiping both organs with a portion of the earth does not occur on things like smooth stone and anything from which nothing sticks to the palms; what actually occurs in such cases is their touching with palms that have touched the portion, so the portion was not used in them or upon them except through an intermediary, and this is the meaning of its legal usage.

(Urdu Translation/Explanation): ...used. But when it is said that "using a portion of the earth" in both organs "or" upon both organs, as per the wording of these gentlemen, then the mind will gravitate toward the same point: that it is the touching of both organs with a portion of the earth. Look, Al-Sayyid Tahtawi interpreted 'use' in these words: "It is wiping over the face and the hands." Others have mentioned similar things, rather Al-Allama Shami himself said a little after this use: "It is the specific wiping of the face and both hands." And there is no doubt that in smooth stones and everything from which nothing sticks to the palms, wiping of both organs with a portion of the earth will not be found; in that case, the use of the portion of earth on both organs occurred only through an intermediary, and this is the meaning of 'legal usage'. (T)

(Arabic Text excerpt): (2) As for making it a tool for purification, it is a summarized and obscure statement from which a definition is not obtained. For in its absoluteness, it includes the case when dust is sprinkled on someone's face and forearms with the intention of purification; they have indeed made it a tool for it, but they do not become one who has performed tayammum (purification with earth) unless they wipe with their hands over their face and forearms with the intention of purification after the dust has fallen on them, and the issue...

(Urdu Translation/Explanation): And the meaning which Al-Allama Shami stated, that making a portion of the earth a tool of purification, then this is a summarized and hidden statement from which a definition is not obtained. If it is left absolute, it also includes the case when a person sprinkles soil on his face and wrists with the

intention of purification; he has indeed made the portion of earth a tool of purification, but he will not be a performer of tayammum until he wipes with his hands over his face and wrists with the intention of purification after the soil has fallen on them...

Footnotes: 1. Tahtawi on Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Beirut 1/124. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt 1/167.

फतवा रज़विया, खंड 3

(अरबी पाठ का अंश): ज़मीन के एक हिस्से का दोनों अंगों में या दोनों अंगों पर इस्तेमाल करना, जैसा कि उनके शब्दों में है, इससे पहली बात यही ध्यान में आएगी कि दोनों अंगों का ज़मीन के किसी हिस्से को छूना। (1) देखिये, सैय्यद तहतावी ने इसके इस्तेमाल की व्याख्या इन शब्दों में की है: 'वह चेहरे और हाथों पर मसह (पोंछना) करना है।' दूसरों ने भी इसी तरह का उल्लेख किया है। (2) बल्कि अल्लामा शामी ने खुद इसके कुछ देर बाद कहा है: 'इस्तेमाल चेहरे और दोनों हाथों का विशिष्ट मसह है।' और इसमें कोई संदेह नहीं है कि ज़मीन के किसी हिस्से से दोनों अंगों का मसह चिकने पत्थर और हर ऐसी चीज़ में नहीं होता जिससे हथेलियों पर कुछ भी न चिपके; वास्तव में उसमें जो होता है वह उन हथेलियों से छूना है जिन्होंने उस हिस्से को छुआ है, इसलिए उस हिस्से का उन पर इस्तेमाल केवल मध्यस्थ के माध्यम से हुआ, और यही इसके कानूनी इस्तेमाल का अर्थ है।

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या): ...इस्तेमाल किया। लेकिन जब यह कहा जाए कि "ज़मीन के किसी हिस्से को" दोनों अंगों में "या" दोनों अंगों पर "इस्तेमाल करना जैसा कि इन हज़रात की इबारतों में है, तो इससे ज़हन इसी बात की तरफ जाएगा कि दोनों अंगों का ज़मीन के किसी हिस्से को छूना। देख लो सैय्यद तहतावी ने इस्तेमाल की तफ़्सीर इन अल्फ़ाज़ में की है: "वह चेहरे और हाथों पर मसह करना है", इसी के जैसा दूसरे हज़रात ने भी ज़िक्र किया है, बल्कि खुद अल्लामा शामी ने इस इस्तेमाल के कुछ बाद यह कहा है: "वह चेहरे और दोनों हाथों का मख़्सूस मसह है।" और इसमें शक नहीं कि चिकने पत्थर में और हर ऐसी चीज़ में जिससे हथेलियों में कुछ भी चिपक न पाए, दोनों अंगों का जुज़-ए-ज़मीन (ज़मीन का हिस्सा) से मसह नहीं पाया जाएगा, इसमें बस दोनों अंगों पर जुज़-ए-ज़मीन का इस्तेमाल बिल-वास्ता (परोक्ष रूप से) ही हुआ, और यही इस्तेमाल-ए-हुक्मी का मानी है। (त)

(अरबी पाठ का अंश): (2) जहाँ तक इसे शुद्धिकरण का साधन बनाने की बात है, तो यह एक अस्पष्ट और गुप्त कथन है जिससे परिभाषा प्राप्त नहीं होती। क्योंकि अपनी निरपेक्षता में यह उस स्थिति को शामिल करता है जब कोई शुद्धिकरण की नीयत से अपने चेहरे और कलाइयों पर धूल छिड़कता है; उसने वास्तव में इसे इसके लिए एक साधन बना लिया है, लेकिन वह तैयमम करने वाला तब तक नहीं होगा जब तक कि धूल गिरने के बाद शुद्धिकरण की नीयत से अपने हाथों से अपने चेहरे और कलाइयों पर मसह न कर ले, और यह मसला...

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या): और वह मानी जो अल्लामा शामी ने बताया कि ज़ुज़-ए-ज़मीन को आला-ए-ततहीर (शुद्धिकरण का साधन) बनाना, तो यह मुज्मल और ख़फ़ी (अस्पष्ट) कलाम है जिससे तारीफ़ (परिभाषा) हासिल नहीं होती। इसे मुतलक़ (निरपेक्ष) रखा जाए तो यह इस सूरत को भी शामिल है जब आदमी मिट्टी अपने चेहरे और कलाइयों पर ततहीर की नियत से छिड़क ले, उसने ज़ुज़-ए-ज़मीन को आला-ए-ततहीर तो बना लिया मगर तयम्मुम करने वाला न होगा जब तक कि चेहरे और कलाइयों पर मिट्टी पड़ने...

फुटनोट: 1. तहतावी अला अद-दुर अल-मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, बेरूत 1/124। 2. रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/167।

पृष्ठ 327/756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

استعمال جزء من الارض فی العضوین اوعلی العضوین کما ھو الفاظھم لم یتبادر منه الامساس العضوین بجزء من الارض الا (۱) تری ان السید ط فسر استعماله بقوله ھو المسح علی الوجه والیدین 'اھ وذکر مثله غیره (۲) بل قال العلامة ش نفسه بعید ھذا الاستعمال ھو المسح المخصوص للوجه والیدین 'اھ ولاشك ان مسح العضوین بجزء من الارض لا یقع فی نحو الحجر الاملس وکل ما لا یلتزق شیئ منه بالکفین انما الواقع فیه امساسھا بکفین امستا بالجزء فلم یستعمل الجزء فیھما علیھما الا بالواسطة وھذا معنی استعماله الحکمی۔

استعمال کیا۔ لیکن جب یہ کہا جائے کہ "زمین کے کسی جز کو" دونوں اعضاء میں "یا" دونوں عضووں پر "استعمال کرنا جیسا کہ ان حضرات کی عبارتوں میں ہے، تو اس سے ذہن اسی بات کی طرف جائے گا کہ دونوں عضووں کا زمین کے کسی جز کو مس کرنا۔ دیکھ لو سید طحطاوی نے استعمال کی تفسیر ان الفاظ میں کی ہے: "وہ چہرے اور ہاتھوں پر مسح کرنا ہے اھ " اس کے مثل دوسرے حضرات نے بھی ذکر کیا ہے ، بلکہ خود علامہ شامی نے اس استعمال کے کچھ بعد یہ کہا ہے: "وہ چہرے اور دونوں ہاتھوں کا مخصوص مسح ہے۔ اھ اور اس میں شک نہیں کہ چکنے پتھر میں اور ہر ایسی چیز میں جس سے ہتھیلیوں میں کچھ بھی چپک نہ پائے دونوں عضووں کا جزو زمین سے مسح نہ پایا جائے گا اس میں بس دونوں اعضاء پر جزو زمین کا استعمال بالواسطہ ہی ہوا، اور یہی استعمال حکمی کا معنی ہے۔(ت)

(۲) اما جعله آلة للتطھیر فکلام مجمل خفی لا یحصل به التعریف فأنه بأطلاقه یشمل مااذا ذر التراب علی وجھه وذراعیه بنیة التطھیر فقد جعله آلة له ولا یصیر متیماً مالم یمسح بیدیه علی وجھه وذراعیه بنیة التطھیر بعد وقوع التراب علیھما والمسألة

اور وہ معنی جو علامہ شامی نے بتایا کہ جزو زمین کو آلہ تطہیر بنانا تو یہ مجمل و خفی کلام ہے جس سے تعریف حاصل نہیں ہوتی۔ اسے مطلق رکھا جائے تو یہ اس صورت کو بھی شامل ہے جب آدمی مٹی اپنے چہرے اور کلائیوں پر تطہیر کی نیت سے چھڑک لے اُس نے جزو زمین کو آلہ تطہیر تو بنالیا مگر تیم کرنے والا نہ ہو گا جب تک کہ چہرے اور کلائیوں پر مٹی پڑنے

1 طحطاوی علی الدر المختار باب التیمم بیروت ۱۲۴/۱ 2 رد المحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱۶۷/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 3

[Right Column] ...after that, one should not wipe over them with the hands with the intention of purification. Explicit texts and clarifications on this issue are present in reliable books like Khaniyah, Khulasah, Khizanat al-Muftin, al-Idah, al-Jawharah, and others, if Allah the Almighty wills. It will be mentioned further ahead as well. (T)

[Left Column - Arabic] Then I say: Rather, according to me, the research is that "use" is the wiping itself, as interpreted by the masters Tahtawi and Shami. And this is the reality of tayammum as established by the Absolute Researcher (al-Muhaqqiq al-ala al-itlaq). Therefore, its real existence—in the sense that we will soon investigate, God willing—is necessary, and legal/symbolic (hukmi) use will not suffice; otherwise, it would not be a real tayammum. Because the reality and essence is that which is the real pillar.

[Right Column - Urdu] Then I say: Rather, according to me, the research is that 'use' is the wiping itself, as interpreted by the masters Tahtawi and Shami. And this is the reality of tayammum as established by the Absolute Researcher (al-Muhaqqiq al-ala al-itlaq). Therefore, its real existence in the sense that we will soon investigate, God willing, is necessary and symbolic use will not be sufficient; otherwise, one would not be a real performer of tayammum. Because the reality and essence is that which is the real pillar. (T)

[Combined text from both columns] Rather, (the research is that) 'sa'eed' (earth) itself is divided into two types: real and symbolic. Real is any part from the genus of earth, and symbolic is the palm that touched the genus of the earth with the intention of purification. This is because the pure Sharia commanded us to wipe our faces and hands with it. And it guided us to its method by (instructing) to place our palms on it and then wipe with them, without needing anything from the genus of the earth to stick to them; rather, it is Sunnah for us to shake them if something sticks until it falls off. Thus it is known that the part of the earth's genus that sticks to the palms is disregarded; rather, its avoidance is desired. So what is it other than that placing the two palms with intention endows them with the purifying quality of the earth (sa'eed), so they stand in its place and provide benefit.

Page 328 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[दाहिना कॉलम] ...उसके बाद उन पर शुद्धि की नीयत से हाथों से मसह न करे। इस मसले पर खानिया, खुलासा, ख़ज़ुनतुल मुफ़्तीन, अल-ईज़ाह, अल-जौहरा आदि विश्वसनीय किताबों में स्पष्ट प्रमाण और विवरण मौजूद हैं, यदि अल्लाह तआला ने चाहा। इसका उल्लेख आगे भी आएगा। (त)

[बायां कॉलम - अरबी] फिर मैं कहता हूँ: बल्कि मेरे नज़दीक शोध यह है कि 'इस्तेमाल' (उपयोग) वही मसह करना है जैसा कि हज़रात तहतावी और शामी ने व्याख्या की है। और यही तयम्मुम की वास्तविकता है जैसा कि मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने इसकी व्याख्या की। अतः इसका वास्तविक अस्तित्व उस अर्थ में जिसकी हम जल्द ही व्याख्या करने वाले हैं, इंशा अल्लाह तआला, आवश्यक है और प्रतीकात्मक (हुक्मी) उपयोग पर्याप्त नहीं होगा, अन्यथा वह वास्तव में तयम्मुम करने वाला नहीं होगा। क्योंकि वास्तविकता और सार वही है जो वास्तविक स्तंभ हो।

[दाहिना कॉलम - उर्दू] फिर मैं कहता हूँ: बल्कि मेरे नज़दीक शोध यह है कि 'इस्तेमाल' वही मसह करना है जैसा कि हज़रात तहतावी और शामी ने व्याख्या की है। और यही तयम्मुम की हक़ीक़त है जैसा कि मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने इसकी तहक़ीक़ की। तो इसका वजूद हक़ीक़ी उस मायने में जिसकी हम जल्द ही तहक़ीक़ करने वाले हैं, इंशा अल्लाह तआला, ज़रूरी है और हुक्मी इस्तेमाल काफ़ी नहीं होगा, वर्ना वह वास्तव में तयम्मुम करने वाला नहीं होगा। क्योंकि हक़ीक़त और माहियत वही है जो हक़ीक़ी रुकन हो। (त)

[दोनों स्तंभों का संयुक्त विवरण] बल्कि (शोध यह है कि) सईद (मिट्टी) की ही दो श्रेणियाँ हैं: वास्तविक और प्रतीकात्मक। वास्तविक, ज़मीन की नस्ल का कोई हिस्सा है, और प्रतीकात्मक वह हथेली है जिसे शुद्धि की नीयत से ज़मीन के किसी हिस्से से छुआ गया। क्योंकि पवित्र शरीयत ने हमें यह आदेश दिया कि उससे अपने चेहरों और हाथों का मसह करें। और हमें उसका तरीक़ा यह बताया कि उस पर अपनी हथेलियाँ रखें फिर उनसे मसह कर लें, इसकी आवश्यकता नहीं है कि उनमें ज़मीन की नस्ल से कुछ चिपक जाए, बल्कि हमारे लिए सुन्नत यह है कि अगर कुछ लग जाए तो हथेलियों को झाड़ दें ताकि धूल-मिट्टी झड़ जाए। इससे ज्ञात हुआ कि ज़मीन का वह भाग जो हथेलियों से चिपक जाता है, वह विचारणीय नहीं है, बल्कि उससे बचना ही वांछित है। तो यह इसके सिवा और क्या है कि दोनों हथेलियों को नीयत के साथ (ज़मीन पर) रखना उन्हें मिट्टी के शुद्धि वाले गुण से युक्त कर देता है, अतः वे दोनों उसके स्थान पर आ जाती हैं और लाभ पहुँचाती हैं।

[بایاں کالم] مخصوص علیھا فی المعتمدات کالخانیۃ والخلاصۃ وخزانۃ المفتین والایضاح والجوھرۃ وغیرہا ستأتی ان شاء اللہ تعالٰی۔ ثم اقول: بل التحقیق عندی ان الاستعمال ھو المسح کما فسرہ السیدان ط وش وھو حقیقۃ التیمم کما حققہ المحقق حیث اطلق فلابد من وجودہ حقیقۃ بالمعنی الذی سنحققہ ان شاء اللہ تعالٰی فلا یکفی الاستعمال الحکمی والا لم یکن تیمماً حقیقۃ لان الحقیقۃ الرکن حقیقۃ۔ (۱) بل الصعید ھو المنقسم الی الحقیقی وھو جزء من جنس الارض (۲) والحکمی وھو الکف الذی امس بہ علی نیۃ التطھیر فان الشرع المطھر امرنا ان نمسح وجوھنا وایدینا منہ وارشدناہ الی صفتہ بان نضع الاکف علیہ فنمسح بھا من (۳) دون حاجۃ الی ان یلتزق بھا شیئ منہ بل سن لنا ان ننفضھا ان لزق حتی یتناثر فعلم ان الجزء الملتزق ساقط الاعتبار بل مطلوب التجنب فما ھو الا ان الکفین بوضعھما المنوی یورثھما الصعید صفۃ التطھیر فیقومان ویفیدان

[دایاں کالم] کے بعد ان پر بہ نیتِ تطہیر ہاتھوں سے مسح نہ کرے۔ اس مسئلہ پر کتب معتمدہ خانیہ، خلاصہ، خزانہ المفتین، ایضاح، جوہرہ وغیرہا میں نص و تصریح موجود ہے ان شاء اللہ تعالٰی آگے اس کا ذکر بھی آئیگا۔ (ت) ثم اقول: بلکہ میرے نزدیک تحقیق یہ ہے کہ استعمال وہی مسح کرنا ہے جیسا کہ حضرات طحطاوی و شامی نے تفسیر کی۔ اور یہی تیمم کی حقیقت ہے جیسا کہ محقق علی الاطلاق نے اس کی تحقیق کی۔ تو اس کا وجود حقیقی اس معنی میں جس کی ان شاء اللہ تعالٰی ہم عنقریب تحقیق کر رہے ہیں، ضروری ہے اور حکمی استعمال کافی نہ ہوگا، ورنہ حقیقتاً تیمم کرنے والا نہ ہوگا۔ اس لئے کہ حقیقت و ماہیت تو وہی ہے جو حقیقت رکن ہو۔ (ت) بلکہ (تحقیق یہ ہے کہ) صعید ہی کی دو قسمیں ہیں: حقیقی اور حکمی۔ حقیقی، جنسِ زمین کا کوئی جز ہے، اور حکمی، وہ ہتھیلی ہے جو جنسِ زمین سے بہ نیتِ تطہیر مس کی گئی۔ اس لئے کہ شرع مطہر نے

ہمیں یہ حکم دیا کہ اس سے اپنے چہروں اور ہاتھوں کا مسح کریں۔ اور ہمیں اس کا طریقہ یہ بتایا کہ اس پر اپنی ہتھیلیوں کو رکھیں پھر ان سے مسح کرلیں، اس کی ضرورت نہیں کہ ان میں جنسِ زمین سے کچھ چپک جائے، بلکہ ہمارے لئے مسنون یہ ہے کہ اگر کچھ لگ جائے تو ہتھیلیوں کو جھاڑ دیں تاکہ گرد و غبار جھڑ جائے، اس سے معلوم ہوا کہ جنسِ زمین کا وہ جز جو ہتھیلیوں سے چپک جاتا ہے ساقط الاعتبار بلکہ مطلوب التجنب ہے، تو وہ کیا ہے سوائے اس کے کہ دونوں ہتھیلیوں کا نیت کے ساتھ (زمین پر) رکھنا ان کو زمین کی صفتِ تطہیر سے متصف کر دیتا ہے، پس وہ دونوں قائم مقام ہو جاتی ہیں اور فائدہ دیتی ہیں۔

Fatawa Razawiyya, Volume 3

(Column 1 - Arabic & Urdu Text) Its ruling: both are considered 'legal earth' (As-Sa'id al-Hukmi) by a decree from our Lord, Blessed and Exalted be He, whose wisdom is beyond human comprehension. The leader of scholars, Malik al-Ulama, stated in *Al-Bada'i*: Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) said: Tayammum is permissible with everything that belongs to the genus of earth, whether anything sticks to his hand or not. Muhammad (may Allah have mercy on him) said: It is not permissible unless something from its parts sticks to his hand. According to him, the principle is that the use of a part of the earth is mandatory, and this cannot happen unless something sticks to the hand. According to Abu Hanifa, this is not a condition; rather, the condition is touching the surface of the earth with both hands and passing them over both limbs. The reasoning for Muhammad's view is that what is commanded is the use of the earth, which occurs when something from it sticks to the hand. For Abu Hanifa, what is commanded is Tayammum with the earth absolutely, without the condition of sticking. It is not permissible to restrict an absolute command without evidence. His statement that 'use' is a condition is rejected, because (1) it leads to a physical change which resembles mutilation (muthla) and is a sign of the people of the Fire. Therefore, he commanded shaking the hands; rather, the condition is the touching of the hand struck on the surface of the earth upon the face and the two hands.

(Column 2 - Urdu Text) ...rather, it is desirable to avoid it. So it follows that when both palms are placed on the earth substance with intention, a quality of purification is created within those two by the earth substance, due to which these two become its substitutes and provide the benefit of its ruling. Therefore, these two are the 'legal earth' (As-Sa'id al-Hukmi). This is based on the command of our Lord, Blessed and Exalted be He, the meaning of which is beyond human intellect's reach. (T) Imam Malik al-Ulama states in *Al-Bada'i*: Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) said that Tayammum is permissible with everything that belongs to the category of earth, whether anything sticks to the hand or not. And Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) said that Tayammum is not valid unless some particles of the earth's substance stick to the hand. So, according to him, the principle is that using some part of the earth is necessary, and this only happens when something sticks to the hand. And according to Imam Abu Hanifa, this is not a condition. The only condition is that the surface of the earth be touched with the hands and they be wiped over the two organs (face and arms). The reasoning for Imam Muhammad's

view is that what is commanded is the use of the earth's substance, and that will only occur if something from it sticks to the hand. The reasoning for Imam Abu Hanifa is that the command is simply: perform Tayammum with the earth; the condition of sticking to the hand is not present. When the command is absolute (mutlaq), it is not permissible to restrict (muqayyad) it without evidence. And their claim that 'use' is a condition is not accepted because it would lead to a change and alteration of the face, which resembles *muthla* (mutilation) and is a sign of the people of Hell; that is why shaking off the hands is commanded.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

(कॉलम 1 - अरबी और उर्दू पाठ) इसका हुक्म: वे दोनों हमारे रब तबारक व तआला के हुक्म से कानूनी रूप से 'सईद हुक्मी' (कानूनी मिट्टी) हैं, जिसकी हिकमत अक्ल से परे है। विद्वानों के शिरोमणि, मलिक अल-उलमा ने 'बदाइ' में कहा: अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने कहा: ज़मीन की श्रेणी की हर चीज़ से तयम्मुम जायज़ है, चाहे उसके हाथ में कुछ चिपके या न चिपके। मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) ने कहा: यह तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि उसके हाथ में ज़मीन के हिस्सों में से कुछ चिपक न जाए। उनके अनुसार मूल सिद्धांत यह है कि सईद के किसी हिस्से का उपयोग करना अनिवार्य है, और यह केवल तभी हो सकता है जब हाथ में कुछ चिपक जाए। अबू हनीफ़ा के अनुसार, यह शर्त नहीं है; बल्कि शर्त दोनों हाथों से ज़मीन की सतह को छूना और उन्हें दोनों अंगों पर फेरना है। मुहम्मद के दृष्टिकोण का तर्क यह है कि जिसका आदेश दिया गया है वह सईद का उपयोग है, और वह उसके हाथ में कुछ चिपकने से होता है। अबू हनीफ़ा के लिए, आदेश बिना किसी चिपकने की शर्त के पूर्ण रूप से सईद के साथ तयम्मुम करना है। बिना प्रमाण के पूर्ण आदेश (मुतलक) को सीमित (मुक़य्यद) करना जायज़ नहीं है। उनका यह कथन कि 'उपयोग' एक शर्त है, वर्जित है क्योंकि (1) वह रूप-परिवर्तन की ओर ले जाता है जो अंग-भंग (मुथला) के समान है और नरकवासियों की निशानी है। इसलिए, उन्होंने हाथों को झाड़ने का आदेश दिया; बल्कि शर्त ज़मीन की सतह पर मारे गए हाथ का चेहरे और दोनों हाथों पर स्पर्श करना है।

(कॉलम 2 - उर्दू पाठ) ...बल्कि इससे बचना वांछनीय है। तो यही हुआ कि नीयत (इरादे) के साथ जब दोनों हथेलियाँ पृथ्वी की श्रेणी की वस्तुओं पर रख दी जाती हैं, तो उन दोनों के भीतर पृथ्वी की श्रेणी की शुद्धि का गुण पैदा कर देती है, जिसके कारण ये दोनों उसके प्रतिनिधि बन जाते हैं और उसी के हुक्म का लाभ प्रदान करते हैं। इसलिए यही दोनों 'सईद हुक्मी' हैं। यह हमारे रब तबारक व तआला के हुक्म पर आधारित है, जिसका अर्थ बुद्धि की पहुँच से बाहर है। (त) इमाम मलिक अल-उलमा 'बदाइ' में फरमाते हैं: इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने फरमाया कि तयम्मुम हर उस चीज़ से जायज़ है जो ज़मीन की श्रेणी से हो, चाहे हाथ पर कुछ लगे या न लगे। और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) ने फरमाया कि जब तक हाथ में ज़मीन के अंशों में से कुछ लग न जाए, तयम्मुम जायज़ नहीं है। तो उनके अनुसार मूल बात यह है कि सईद के किसी हिस्से का उपयोग करना आवश्यक है और यह तभी होगा जब हाथ में कुछ लग जाए। और इमाम अबू हनीफ़ा के अनुसार यह शर्त नहीं है। शर्त केवल यह है कि ज़मीन की सतह को हाथों से स्पर्श किया जाए और उन दोनों

(हाथों) को दोनों अंगों (चेहरे और हाथों) पर फेर लिया जाए। इमाम मुहम्मद के कथन का तर्क यह है कि जिस चीज़ का आदेश दिया गया है वह पृथ्वी की श्रेणी का उपयोग है और वह इसी तरह होगा कि उसमें से हाथ में कुछ लग जाए। और इमाम अबू हनीफ़ा का तर्क यह है कि आदेश केवल इतना है कि सईद से तयम्मुम करो, हाथ से चिपकने की शर्त नहीं है। जब आदेश पूर्ण (मुतलक) है, तो उसे बिना प्रमाण के सीमित (मुक़य्यद) करना जायज़ नहीं है। और उनका यह कहना कि 'उपयोग' एक शर्त है, स्वीकार्य नहीं है क्योंकि यह चेहरे के रंग और रूप के बदलने का कारण होगा जो 'मुथला' (अंग-भंग) के समान है और नरकवासियों की निशानी है, इसीलिए हाथों को झाड़ देने का आदेश दिया गया है।

पृष्ठ 329/756

(کالم ۱) حکمه فهما الصعيد الحكمي حكما من ربنا تبارك وتعالى غير معقول المعنى- قال الامام ملك العلماء في البدائع قال ابو حنيفة رضي الله تعالى عنه يجوز التيمم بكل ماهو من جنس الارض التزق بيده شيئ او لا وقال محمد رحمه الله تعالى لايجوز الا اذا التزق بيده شيئ من اجزائه فالاصل عنده انه لابد من استعمال جزء من الصعيد ولايكون ذلك الا بأن يلتزق بيده شيئ وعند ابي حنيفة هذا ليس بشرط وانما الشرط مس وجه الارض باليدين وامرارهما على العضوين وجه قول محمد ان المأمور به استعمال الصعيد وذلك بأن يلتزق بيده شيئ منه ولابي حنيفة ان المأموربه هو التيمم بالصعيد مطلقا من غير شرط الالتزاق ولايجوز تقييد المطلق الابدليل وقوله الاستعمال شرط ممنوع لان (۱) ذلك يؤدي الى التغير الذى هو شبيه المثلة وعلامة اهل النار ولهذا امر بنفض اليدين بل الشرط امساس اليد المضروبة على وجه الارض على الوجه واليدين

(کالم ۲) ہے بلکہ اس سے بچنا مطلوب ہے۔ تو یہی ہوا کہ نیت کے ساتھ دونوں ہتھیلیاں جب جنس زمین پر رکھ دی جاتی ہیں تو ان دونوں کے اندر جنس زمین تطہیر کی صفت پیدا کردیتی ہے جس کی وجہ سے یہ دونوں اس کے قائم مقام ہو جاتی ہیں اور اسی کے حکم کا افادہ کرتی ہیں۔ اس لئے یہی دونوں صعید حکمی ہیں۔ یہ ہمارے رب تبارک وتعالٰی کے حکم کی بنا پر ہے جس کا معنی عقل کی دسترس میں نہیں۔ (ت) امام ملک العلماء بدائع میں فرماتے ہیں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ نے فرمایا تیمم ہر اس چیز سے جائز ہے جو جنس زمین سے ہو، ہاتھ اس سے کچھ لگے یا نہ لگے۔ اور امام محمد رحمۃ اللہ علیہ نے فرمایا کہ جب تک ہاتھ میں جنس زمین کے اجزاء سے کچھ لگ نہ جائے تیمم جائز نہیں۔ تو ان کے نزدیک اصل یہ ہے کہ صعید کے کسی جز کا استعمال ضروری ہے اور یہ اسی وقت ہوگا جب ہاتھ میں کچھ لگ جائے۔ اور امام ابو حنیفہ کے نزدیک یہ

شرط نہیں۔ شرط صرف یہ ہے کہ روئے زمین ہاتھوں سے مس ہو اور ان دونوں کو دونوں عضو پر پھیر لیا جائے۔ امام محمد کے قول کی دلیل یہ ہے کہ مامور بہ، جنس ارض کا استعمال ہے اور وہ اسی طرح ہو گا کہ اس میں سے ہاتھ میں کچھ لگ جائے۔ اور امام ابوحنیفہ کی دلیل یہ ہے کہ مامور صرف اتنا ہے کہ صعید سے تیمم کرو، ہاتھ سے چپکنے کی شرط نہیں۔ مامور بہ جب مطلق ہے تو اسے بلادلیل مقید کرنا، جائز نہیں۔ اور ان کا یہ قول کہ استعمال شرط ہے تسلیم نہیں اس لئے کہ یہ چہرہ کی تغیر و تبدیل کا باعث ہوگا جو مثلہ کے مشابہ اور اہل جہنم کی نشانی ہے اسی لئے ہاتھوں کو جھاڑ دینے

Fatawa Razvia, Volume 3

[Right Column] ...is the command, rather the condition is that while placing [hands] on the surface of the earth, the hands should be wiped over the face and hands as an act of worship. One has been made responsible for this, the meaning of which is not within the reach of intellect. This command is based on some wisdom known only to Allah the Almighty. (Ends - T) And in 'Kafi' of Imam Nasafi, it is stated: What is obligatory is to wipe with the palm that has been placed on the ground; the use of soil is not obligatory, because the use of soil would be like 'mutilation' (Muthlah). (Ends). Let the words of 'Badai' be considered; in the statement of Imam Muhammad it is said: "The use of some part of the earth (Sa'id) will be such that some glow appears on the hand from it." In the statement of Imam Azam it is said: "Usage will cause a resemblance to 'mutilation' (Muthlah)." Similarly, these words of 'Kafi' should be seen: "The use of soil is 'mutilation' (Muthlah)." From seeing all these, the intended meaning of 'usage' (Ist'imal) will become known, and it will become clear that 'usage' is not just the name for making it a tool for purification. (T) When it is established that 'usage' is the same wiping which has been commanded. And the command is that both body parts should be wiped with the earth (Sa'id). And from 'Sa'id', only both palms are wiped, then with both of them, the face and both forearms are wiped. From this, it became clear that 'usage' is limited to its legal (Hukmi) meaning and 'Sa'id' is divided into two types, real (Haqiqi) and legal (Hukmi)...

[Left Column] ...as an act of devotion whose meaning is not rationally comprehensible, for a wisdom which Allah Almighty has reserved for His own knowledge. [1] (Ends). The statement in 'Al-Kafi' that "using soil is a mutilation (muthlah)," all of this informs you what is meant by "usage" (ist'imal), and it is not merely making it an instrument for purification. In the 'Kafi' of Imam al-Nasafi: "What is obligatory is wiping with the palm placed on the ground, not using the soil, because using soil is a mutilation." [2] (Ends). (1) Look at the statement in 'al-Badai' regarding the statement of [Imam] Muhammad: "The use of a part of the earth (sa'id) cannot be except by something sticking to his hand," and his statement regarding the statement of the Imam [Abu Hanifa]: "Usage leads to something resembling mutilation, and its like." Since 'usage' is the commanded wiping, and the command came to wipe the two limbs with the earth (sa'id), and nothing is wiped with it except the two palms, then the face and the two forearms are wiped with them, it has become clear to you the division of earth (sa'id) into the real (haqiqi) and the legal

(hukmi), and the restriction of usage absolutely to the legal. This is the ultimate research, and success is with Allah.* And to Him belongs praise as...

---

[1] Badai' al-Sanai', Chapter on that with which Tayammum is performed, Saeed Company, Karachi, 1/54. [2] Kafi Sharh al-Wafi.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[दायां कॉलम] ...का हुक्म है बल्कि शर्त यह है कि रूए ज़मीन पर लगाते हुए हाथ को चेहरे और हाथों से मस कर दिया जाए बतौर इबादत इसका मुकल्लफ़ बनाया गया है जिसका मानी अक़्ल की दरियाफ़्त में नहीं। यह हुक्म किसी ऐसी हिकमत की बिना पर है जिसका इल्म ख़ुदा तआला को है अह- (त) और काफ़ी इमाम नसफ़ी में है: वाजिब यही है कि जो हथेली ज़मीन पर रखी जा चुकी है उससे मस कर लिया जाए, मिट्टी का इस्तेमाल वाजिब नहीं, क्योंकि मिट्टी का इस्तेमाल मुथलह (विकृति) होगा अह बदाइ के अल्फाज़ पर गौर किया जाए, क़ौल इमाम मुहम्मद के बयान में है: "सईद के किसी जुज़ का इस्तेमाल इसी तरह होगा कि उससे हाथ में कुछ चमक आ जाए"। क़ौल इमाम आज़म के बयान में है: "इस्तेमाल मुशाबहा मुथलह होने का बाइस होगा"। इसी तरह काफ़ी के ये अल्फ़ाज़ देखे जाएं "मिट्टी का इस्तेमाल मुथलह है"। इन सब को देखने से इस्तेमाल की मुराद मालूम हो जाएगी और ज़ाहिर हो जाएगा इस्तेमाल सिर्फ़ आला-ए-ततहीर बनाने का नाम नहीं। (त) जब यह साबित हो गया कि इस्तेमाल वही मस है जिसका हुक्म दिया गया है। और हुक्म यह है कि दोनों उज़्वों (अंगों) का सईद से मस किया जाए। और सईद से सिर्फ़ दोनों हथेलियों का मस होता है फिर उन दोनों से चेहरे और दोनों कलाइयों का मस होता है इससे यह वाज़ेह हो गया कि इस्तेमाल तो अपने हुक्मी मानी पर ही महदूद है और सईद हक़ीक़ी व हुक्मी दो क़िस्मों की तरफ...

[बायां कॉलम] ...तअ़ब्बुदन (इबादत के तौर पर) ग़ैर माकूलुल मानी (जिसका अर्थ समझ न आए) ऐसी हिकमत के लिए जिसे अल्लाह तआला ने अपने इल्म के लिए ख़ास कर लिया है। १ अह क़ौल अल-काफ़ी कि "मिट्टी का इस्तेमाल मुथलह है," यह सब आपको बताता है कि 'इस्तेमाल' से क्या मुराद है, न कि महज़ उसे पाकी का आला (साधन) बनाना। और इमाम नसफ़ी की 'काफ़ी' में है: वाजिब वही मस है जो हथेली ज़मीन पर रखने से हो, न कि मिट्टी का इस्तेमाल, क्योंकि मिट्टी का इस्तेमाल मुथलह है। २ अह (१) तो बदाइ के क़ौल को देखें इमाम मुहम्मद के बयान में: "सईद के किसी हिस्से का इस्तेमाल नहीं हो सकता जब तक कि उसके हाथ से कोई चीज़ न चिपक जाए," और इमाम के बयान में उनके क़ौल तक: "इस्तेमाल मुथलह के मुशाबहा होने की तरफ़ ले जाता है, और उसकी मिसाल की तरफ़।" और जब इस्तेमाल वही मस है जिसका हुक्म दिया गया है, और हुक्म सईद से दोनों अंगों के मस का आया है, और उससे सिर्फ़ दोनों हथेलियों का मस होता है, फिर उनसे चेहरे और दोनों कलाइयों का मस होता है, तो आपके सामने सईद का हक़ीक़ी और हुक्मी में बटना

ज़ाहिर हो गया, और इस्तेमाल का मुतलक़न हुक्मी पर महदूद होना। तो यह तहक़ीक़ की इंतिहा है, और तौफ़ीक़ अल्लाह से है।* और उसके लिए वैसी ही हम्द है जैसे...

---

[1] बदाइ अस-सनइ, बाब मा यतयममु बिही, सईद कंपनी कराची १/५४ [2] काफ़ी शरह अल-वाफ़ी

[دایاں کالم] کا حکم ہے بلالکہ شرط یہ ہے کہ روئے زمین پر لگاتے ہوئے ہاتھ کو چہرے اور ہاتھوں سے مس کردیا جائے بطور عبادت اس کا مکلف بنایا گیا ہے جس کا معنی عقل کی دریافت میں نہیں۔ یہ حکم کسی ایسی حکمت کی بنا پر ہے جس کا علم خدا تعالیٰ کو ہے اہ (ت) اور کافی امام نسفی میں ہے: واجب یہی ہے کہ جو ہتھیلی زمین پر رکھی جا چکی ہے اس سے مسح کر لیا جائے، مٹی کا استعمال واجب نہیں، کیونکہ مٹی کا استعمال مثلہ ہوگا اھ بدائع کے الفاظ پر غور کیا جائے، قول امام محمد کے بیان میں ہے: "صعید کے کسی جز کا استعمال اسی طرح ہو گا کہ اس سے ہاتھ میں کچھ چمک جائے"۔ قول امام اعظم کے بیان میں ہے: "استعمال مشابہ مثلہ ہونے کا باعث ہوگا"۔ اسی طرح کافی کے یہ الفاظ دیکھے جائیں: "مٹی کا استعمال مثلہ ہے"۔ ان سب کو دیکھنے سے استعمال کی مراد معلوم ہو جائے گی اور ظاہر ہو جائے گا استعمال صرف آلہ تطہیر بنانے کا نام نہیں۔ (ت) جب یہ ثابت ہو گیا کہ استعمال وہی مسح ہے جس کا حکم دیا گیا ہے۔ اور حکم یہ ہے کہ دونوں عضووں کا صعید سے مسح کیا جائے۔ اور صعید سے صرف دونوں ہتھیلیوں کا مسح ہوتا ہے پھر ان دونوں سے چہرے اور دونوں کلائیوں کا مسح ہوتا ہے اس سے یہ واضح ہو گیا کہ استعمال تو اپنے حکمی معنی پر ہی محدود ہے اور صعید حقیقی و حکمی دو قسموں کی طرف...

[بایاں کالم] تعبدا غیر معقول المعنی لحکمة استأثر الله تعالی بعلمه ١ اه قول الکافی ان استعمال التراب مثلة کل ذلك یفیدك ماهو المراد من الاستعمال لامجرد جعله آلة للتطهیر۔وفی کافی الامام النسفی الواجب المسح بکف موضوع علی الارض لااستعمال التراب لان استعمال التراب مثلة ٢ اه (١) فانظر الی قول البدائع فی بیان قول محمد ان استعمال جزء من الصعید لایکون الابان یلتزق بیده شیئ والی قوله فی

بیان قول الامام ان الاستعمال یؤدی الی شبیه المثلة ومثله واذا کان الاستعمال هو المسح المأموربه والامر ورد بمسح العضوین من الصعید ولایمسح به الا الکفان ثم بهما یمسح الوجه والذراعان تبین لك انقسام الصعید الی الحقیقی والحکمی وقصر الاستعمال مطلقاً علی الحکمی فهذا غایة التحقیق وبالله التوفیق* ولہ الحمد کما

---

1 بدائع الصنائع باب مایتمیم بہ سعید کمپنی کراچی ۱/۵۴ 2 کافی شرح وافی

It is befitting for him and appropriate.* It is divided. This is the pinnacle of research and success is only from God, and for Him is praise as is worthy and appropriate for him. (T)

The Third Point: Sheikh al-Islam Abu Abdullah Muhammad bin Abdullah al-Ghazzi al-Tumurtashi (may Allah have mercy on him) said in Al-Tanwir: "Tayammum is the intention of using a pure earth surface and employing it in a specific manner to establish proximity [to Allah]." (1) The commentator [Shami] said: "The author mentioned the two definitions narrated from the scholars, and it is apparent that he intended to make them into a single definition. Then he mentioned what we have previously stated regarding the incorporation of the linguistic meaning into the legal (Shari'i) meaning, and that it is necessary to mention the conditions so that the legal meaning is realized." He said: "Since the usage—which is the specific wiping of the face and hands—is part of the complete legal essence, he mentioned it along with the 'intention' to complete the definition. So, value this magnificent explanation." (2) End.

Third Definition: Sheikh al-Islam Abu Abdullah Muhammad bin Abdullah al-Ghazzi al-Tumurtashi (may Allah have mercy on him) stated in Tanwir al-Absar: "Tayammum is the intention to use a pure surface of the earth and employing it in a specific way for the performance of an act of proximity [to Allah]." Shami says: "The author mentioned both definitions narrated from the scholars. And it is apparent that he wants to make both into one definition." Then Allama Shami wrote what we mentioned before, i.e., the derivation of the linguistic meaning into the legal definition, and that for the proof and realization of the legal meaning, it is necessary to mention the conditions as well. He said: "Since usage—meaning the specific wiping of the face and hands—is the entire legal reality, therefore, for the completion of the definition, he mentioned it along with the 'intention'. Consider this fine writing and explanation as a boon." (T)

I say: (1) There is no doubt that the author (may Allah have mercy on him) intends a single definition for Tayammum, and this is not a place for seeking further clarification. (2) However, you have already known what is involved in making 'intention' part of the essence; therefore, it is not correct to say that 'wiping' is part of the complete essence and that he joined it with 'intention' to complete the definition. And success is through Allah.

I say: The author (may Allah have mercy on him) undoubtedly wants to make a single definition of Tayammum, so this is not the occasion to say only 'it is apparent'. Without doubt, this is a certain matter. Yes, the flaw in making 'intention' as the essence of Tayammum is already known, so it is not correct that wiping is from the entire essence and for that reason, he...

Footnotes: 1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Mujtabai Press, Delhi, 1/41 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/168

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

उनके लिए उचित और शोभायमान है।* विभाजित है। यह शोध की पराकाष्ठा है और सफलता केवल ईश्वर की ओर से है, और उसी के लिए प्रशंसा है जैसा कि उसके लिए योग्य और उचित है। (त)

तीसरा बिंदु: शेखुल इस्लाम अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-ग़ज़ी अल-तुमुर्ताशी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने 'अल-तन्वीर' में कहा: "तयम्मुम, पाक मिट्टी की सतह का इरादा करना और इबादत की अदायगी के लिए उसे विशेष तरीके से इस्तेमाल करना है।" (1) टीकाकार [शामी] ने कहा: "लेखक ने मशाइख़ से उद्धृत दोनों परिभाषाओं का उल्लेख किया है, और स्पष्ट है कि वह उन दोनों को एक ही परिभाषा बनाना चाहते हैं। फिर उन्होंने वह उल्लेख किया जो हमने पहले बताया था कि भाषाई अर्थ को शरीयत के अर्थ में कैसे लिया जाए, और यह कि शरई अर्थ की प्राप्ति और वास्तविकता के लिए शर्तों का उल्लेख भी आवश्यक है।" उन्होंने कहा: "चूंकि उपयोग—यानी चेहरे और हाथों का विशेष मसह—पूरी शरई हकीकत है, इसलिए परिभाषा को पूरा करने के लिए इरादे के साथ इसका भी उल्लेख किया गया। इस बेहतरीन लेख और स्पष्टीकरण को गनीमत समझो।" (2) समाप्त।

तीसरी परिभाषा: शेखुल इस्लाम अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अब्दुल्ला ग़ज़ी तुमुर्ताशी (अल्लाह उन पर रहम करे) ने 'तन्वीरुल अबसार' में फ़रमाया: "तयम्मुम, पाक करने वाली ज़मीन की सतह का इरादा करना और उसे इबादत की अदायगी के लिए विशेष तरीक़े पर इस्तेमाल करना है।" शामी फ़रमाते हैं: "लेखक ने मशाइख़ से उद्धृत दोनों परिभाषाएँ लिख दी हैं। और ज़ाहिर यह है कि वह दोनों को एक परिभाषा बनाना चाहते हैं।" फिर अल्लामा शामी ने वह लिखा जिसका हमने पहले उल्लेख किया था, यानी शरई परिभाषा में भाषाई अर्थ का लिया जाना, और यह कि शरई अर्थ के प्रमाण और वास्तविकता के लिए शर्तों का ज़िक्र भी ज़रूरी है। फ़रमाया: "चूँकि इस्तेमाल—यानी चेहरे और हाथों का विशेष मसह—पूरी शरई हक़ीक़त है, इसलिए परिभाषा को पूरा करने के लिए 'इरादे' (क़स्द) के साथ इसे भी ज़िक्र किया। इस उम्दा तहरीर और वजाहत को ग़नीमत समझो।" (त)

मैं कहता हूँ (अक़ूल): (1) इसमें कोई शक नहीं कि लेखक (अल्लाह उन पर रहम करे) तयम्मुम की एक ही परिभाषा चाहते हैं, और यह स्थान केवल अनुमान लगाने का नहीं है। (2) लेकिन आप पहले ही जान चुके हैं कि 'इरादे' को हक़ीक़त का हिस्सा बनाने में क्या दोष है; इसलिए यह सही नहीं है कि

मसह पूरी हक़ीक़त का हिस्सा है और उन्होंने परिभाषा की पूर्णता के लिए इसे इरादे के साथ जोड़ा है। और अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है।

मैं कहता हूँ: लेखक (अल्लाह उन पर रहम करे) निस्संदेह तयम्मुम की एक परिभाषा करना चाहते हैं, तो इसे केवल 'ज़ाहिर' कहने का यह अवसर नहीं है। निस्संदेह यह एक निश्चित बात है। हाँ, 'इरादे' को तयम्मुम की हक़ीक़त मानने में जो दोष है वह मालूम हो चुका है, तो यह सही नहीं है कि मसह पूरी हक़ीक़त से है और इसे इरादे के साथ इसलिए... [अगले पृष्ठ पर जारी]

पाद-टिप्पणियाँ: 1. अल-दुर्र अल-मुख्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/41 2. रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/168

पृष्ठ 331 का 756

ینبغی لہ ویلیق* منقسم ہے۔ یہ انتہائے تحقیق ہے اور خدا ہی کی توفیق ہے اور اسی کیلئے حمد ہے جیسا کہ اس کیلئے لائق ومناسب ہے۔ (ت)

الوجہ الثالث: قال شیخ الاسلام ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ الغزی التمرتاشی رحمہ اللہ تعالٰی فی التنویر ھو قصد صعید مطھر واستعمالہ بصفۃ مخصوصۃ لاقامۃ القربۃ (۱) قال ش المصنف ذکر التعریفین المنقولین عن المشائخ والظاھر انہ قصد جعلھما تعریفاً واحداً ثم ذکر ما قدمناہ من اخذ المعنی اللغوی فی الشرعی وانہ لابد من ذکر الشروط حتی یتحقق المعنی الشرعی قال ولما کان الاستعمال وھو المسح المخصوص للوجہ والیدین من تمام الحقیقۃ الشرعیۃ ذکرہ مع القصد تتمیماً للتعریف فاغتنم ھذا التحریر المنیف (۲) اھ

تعریف سوم: شیخ الاسلام ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ غزی تمرتاشی رحمۃ اللہ علیہ نے تنویر الابصار میں فرمایا: "تیمم، پاک کرنے والی سطح زمین کا قصد کرنا اور اسے قربت کی ادائیگی کیلئے مخصوص طریقہ پر استعمال کرنا"۔ شامی فرماتے ہیں: "مصنف نے مشائخ سے منقول دونوں تعریفیں ذکر کردیں۔ اور ظاہر یہ ہے کہ وہ دونوں کو ایک تعریف بنانا چاہتے ہیں۔" پھر علامہ شامی نے وہ لکھا ہے جس کا ہم نے پہلے تذکرہ کیا یعنی شرعی تعریف میں لغوی معنی کا ماخوذ ہونا، اور یہ کہ شرعی معنی کے ثبوت و تحقق کیلئے شرطوں کا بھی ذکر ضروری ہے، فرمایا: "چونکہ استعمال۔ یعنی چہرے اور ہاتھوں کا مخصوص مسح۔ تمام حقیقت شرعیہ ہے اس لئے تکمیلِ تعریف کیلئے قصد کے ساتھ اسے بھی ذکر کیا۔ اس عمدہ تحریر و توضیح کو غنیمت سمجھو"۔ (ت)

اقول: (۱) لاشک ان المصنف رحمه الله تعالٰی یرید حدا واحداً للتیمم ولیس هذا محل الاستظهار (۲) غیر انك قد علمت ما فی جعل القصد من الحقیقة فلا یصح ان المسح من تمام الحقیقة وانه ضمه الی القصد تتمیماً للتعریف وبالله التوفیق

اقول: مصنف رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ بلاشبہ تیمم کی ایک تعریف کرنا چاہتے ہیں تو اسے صرف "ظاہر" کہنے کا یہ موقع نہیں۔ بلاشبہ یہ یقینی بات ہے۔ ہاں "قصد" کو تیمم کی حقیقت سے قرار دینے میں جو خرابی ہے وہ معلوم ہوچکی تو یہ درست نہیں کہ مسح تمام حقیقت سے ہے اور اسے قصد کے ساتھ اس لئے صفحہ پر جاری]

حواشی: 1۔ الدر المختار باب التیمم مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۴۱ 2۔ رد المحتار باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۶۸

Fatawa Ridawiyya - Volume 3

[Right Column] ...mentioned so that the definition is complete. (Intention is not a pillar of Tayammum, so it is also not correct to include it in the description of the reality of Tayammum. And guidance and awareness are from Allah alone. - T) Then we have already explained that both definitions consist of both things - intention and use. The difference is that in the first, it is: intending to use the earth. In the second, it is: using the earth along with the intention. In the third, Tayammum is both intention and use. And the best of matters are the middle ones (pointing towards the excellence of the second definition among the three). Fourth definition: The Muhaqqiq 'al-al-itlaq and following him Bahr, Shurunbulali, Ibn Shalabi, and other gentlemen said: "The truth is that Tayammum is the name for wiping the face and hands with a pure substance. And intention is a condition because it is for niyyat (intent)." End. I say: Based on the investigation we did regarding the meaning of "use," this definition is exactly the same as the second definition. Although Allamah Shami conjectured that "use" is the name for making it an instrument of purification, based on that, this is a separate definition from the second. In this definition, the word "tahir" (pure) is used, not expressed as "mutahhir" (purifying). Despite this, it is surprising that the author of Bahr also followed the Muhaqqiq 'al-al-itlaq in declaring it correct. When this is the truth, then why on Kanz-al-Daqaiq's expression as 'tahir' and 'pak' (pure)...

[Left Column] ...and guidance. Then, we have informed you that both definitions include both matters. The difference is only that the first says: it is the intention of using the soil, and the second is: the use of the soil along with the intention. The third is: it is both intention and use, and the best of matters is the middle one. The fourth aspect: The researcher said, and was followed by Al-Bahr, Al-Shurunbulali, Ibn Al-Shalabi, and others: The truth is that it is a name for wiping the face and hands with pure soil, and intention is a condition because it is the intent. (1) End. I say: Based on what we have investigated regarding the meaning of "use," it is exactly the same as the second definition, although it differs from what Allamah Shami claimed that "use" is making it an instrument of purification. What is surprising is that Allamah Al-Bahr followed the Researcher in validating this, even though it expresses "pure" (tahir) rather than "purifying" (mutahhir). If this is the truth, then why take issue with Al-Kanz? For this reason...

[Footnote] 1. Fath-ul-Qadir, Chapter on Tayammum, published by Nooria Razawiyya Sukkur, 106/1

फतावा रज़विया - खंड 3

[दायां कॉलम] ...जिक्र कर दिया ताकि परिभाषा पूरी हो जाए। (इरादा तैयममुम का स्तंभ नहीं है, इसलिए तैयममुम की वास्तविकता के स्पष्टीकरण में इसे शामिल करना भी सही नहीं है। और मार्गदर्शन और जागरूकता केवल अल्लाह की ओर से है। - त) फिर हम पहले ही बता चुके हैं कि दोनों परिभाषाओं में दोनों बातें - इरादा और उपयोग शामिल हैं। अंतर यह है कि पहली में है: उपयोग के लिए मिट्टी का इरादा करना। दूसरी में है: इरादे के साथ मिट्टी का उपयोग करना। तीसरी में है कि तैयममुम इरादा और उपयोग है। और सबसे अच्छे मामले बीच वाले हैं (तीनों में से दूसरी परिभाषा की श्रेष्ठता की ओर इशारा है)। चौथी परिभाषा: मुहक़्क़िक़ अल-अल-इतलाक़ और उनके अनुसरण में बह्र, शुरुनबुलाली, इब्न शलबी और अन्य सज्जनों ने कहा: "सच यह है कि तैयममुम, पाक (शुद्ध) चीज़ से चेहरे और हाथों के मसह (पोंछने) का नाम है। और इरादा शर्त है क्योंकि यह नियत के लिए है"। अंत। मैं कहता हूँ: हमने उपयोग के अर्थ की जो जांच की, उसके आधार पर यह परिभाषा बिल्कुल दूसरी परिभाषा के समान है। हालाँकि अल्लामा शामी ने जो अनुमान लगाया कि उपयोग इसे शुद्धिकरण का साधन बनाने का नाम है, उसके आधार पर यह दूसरी परिभाषा से अलग परिभाषा है। इस परिभाषा में "ताहिर" शब्द है, "मुतह् हिर" से व्यक्त नहीं किया गया। इसके बावजूद आश्चर्य है कि साहिब-ए-बह्र ने भी इसे सही घोषित करने में मुहक़्क़िक़ अल-अल-इतलाक़ का अनुसरण किया। जब यही सच है तो कंज़-उद-दक़ाएक़ के ताहिर व पाक (शुद्ध) के रूप में व्यक्त करने पर...

[बायां कॉलम] ...और मार्गदर्शन। फिर, हमने आपको सूचित किया है कि दोनों परिभाषाओं में दोनों मामले शामिल हैं। अंतर केवल यह है कि पहली कहती है: यह उपयोग के लिए मिट्टी का इरादा करना है, और दूसरी है: इरादे के साथ मिट्टी का उपयोग। तीसरी है: यह इरादा और उपयोग दोनों है, और सबसे अच्छे मामले बीच वाले होते हैं। चौथा पहलू: शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) ने कहा, और अल-बह्र, अल-शुरुनबुलाली, इब्न अल-शलबी और अन्य लोगों ने उनका अनुसरण किया: सच्चाई यह है कि यह शुद्ध मिट्टी से चेहरे और हाथों को पोंछने का नाम है, और इरादा एक शर्त है क्योंकि यह नियत है। (1) अंत। मैं कहता हूँ: "उपयोग" के अर्थ के संबंध में हमने जो जांच की है, उसके आधार पर यह बिल्कुल दूसरी परिभाषा के समान है, हालांकि यह अल्लामा शामी के दावे से अलग है कि "उपयोग" इसे शुद्धिकरण का साधन बनाना है। आश्चर्य की बात यह है कि अल्लामा अल-बह्र ने इसे मान्य करने में शोधकर्ता का अनुसरण किया, भले ही यह "मुतह् हिर" (शुद्ध करने वाला) के बजाय "ताहिर" (शुद्ध) व्यक्त करता है। यदि यही सत्य है, तो अल-कंज़ पर आपत्ति क्यों? इसी कारण...

[पाद टिप्पणी] 1. फतह-उल-क़दीर, तैयममुम का अध्याय, नूरिया रज़विया सुक्कुर द्वारा प्रकाशित, 106/1

पृष्ठ 756 का 332

فتاوی رضویہ - جلد سوم

[دایاں کالم] ذکر کردیا کہ تعریف کی تکمیل ہوجائے (قصد رکن تیمم نہیں تو حقیقت تیمم کے بیان میں اسے شامل کرنا بھی درست نہیں۔ اور توفیق و آگاہی خدا ہی کی جانب سے ہے۔ ت) پھر ہم یہ بتا چکے کہ دونوں تعریفیں دونوں باتوں۔ قصد و استعمال پر مشتمل ہیں۔ فرق یہ ہے کہ پہلی میں ہے: استعمال کیلئے صعید کا قصد کرنا۔ دوسری میں ہے: قصد کے ساتھ صعید کا استعمال کرنا۔ تیسری میں ہے کہ تیمم قصد اور استعمال ہے۔ اور بہترین امور درمیانی ہے (تینوں میں سے دوسری تعریف کی عمدگی کی طرف اشارہ ہے ۱۲) تعریف چہارم: محقق علی الاطلاق نے اور ان کی تبعیت میں بحر، شرنبلالی، ابن شلبی اور دوسرے حضرات نے فرمایا: "حق یہ ہے کہ تیمم ، پاک جنس سے چہرے اور ہاتھوں کے مسح کا نام ہے۔ اور قصد شرط ہے اس لئے کہ یہ تونیت ہے"۔ اھ اقول: ہم نے معنی استعمال کی جو تحقیق کی ، اس کی بنیاد پر یہ تعریف بعینہ تعریف دوم ہے۔ اگر چہ علامہ شامی نے جو گمان کیا کہ استعمال آلہ تطہیر بنانے کا نام ہے اس کی بنیاد پر یہ تعریف دوم سے جداگانہ تعریف ہے۔ اس تعریف میں "طاہر" کا لفظ ہے "مطہر" سے تعبیر نہیں۔ اس کے باوجود تعجب ہے کہ صاحبِ بحر نے بھی اسے درست قرار دینے پر محقق علی الاطلاق کی پیروی کر لی۔ جب یہی حق ہے تو کنز الدقائق کے طاہر و پاک سے تعبیر کرنے پر

[بایاں کالم] والتوقیف۔ ثم قد اعلمناک ان کلا التعریفین یشمل کلا الامرین وانما الفرق ان الاول یقول ھو قصد الصعید للاستعمال والثانی انہ استعمال الصعید مع القصد والثالث انہ القصد والاستعمال وخیر الامور اوساطھا۔ الوجہ الرابع: قال المحقق وتبعہ البحر والشرنبلالی وابن الشلبی واٰخرون الحق انہ اسم لمسح الوجہ والیدین عن الصعید الطاھر والقصد شرط لانہ النیۃ ۱ اھ اقول: ھو علی ما حققنا من معنی الاستعمال عین الثانی وان فارقہ علی ما زعم العلامۃ ش ان الاستعمال جعلہ اٰلۃ التطھیر (ا) والعجب

من العلامة البحر تبع المحقق على تصويب هذا وفيه التعبير بطاهر دون مطهر فاذا كان هذا هو الحق فلم الاخذ على الكنز ولهذا

[فٹ نوٹ] ۱ فتح القدير باب التيمم مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱۰۶/۱

Fatawa Razawiyya (Volume Three)

[Left Column: Arabic/Urdu Text] It was stated in Minhat al-Khaliq: He should have said 'Al-Mutahhir' (The Purifier), as he himself will point out when discussing the author's phrase 'with a pure (tahir) substance from the genus of the earth'. [1] I say: An objection was raised against the author of al-Bahr for following him in making a distinction between what is pure (tahir) from the earth and what is a purifier (mutahhir). The truth is that the correct view is with al-Kanz, the standard texts (mutun), the Absolute Researcher (al-Muhaqqiq), and the vast majority of scholars. Therefore, he should not have objected to al-Kanz's phrase 'with a pure substance' (1), and it was for you to object to his statement there, not here. Fifth Aspect: Allama Ibn Kamal al-Wazir stated in Idah al-Islah: It is a purity (tahara) achieved by using pure soil on two specific limbs with a specific intention. [2] This was followed in Majma' al-Anhur, and the statement of al-Birjandi in the commentary on al-Nuqaya points to this: 'Tayammum linguistically means intention (qasd), then it was transferred in Sharia to this specific purity'. [3] I say: (2) Purity is the ruling of tayammum and the effect resulting from it, just as it is with wudu. However, wudu is not the purity itself. Do you not see that tayammum is something commanded (ma'mur bihi), and a person is not commanded [to have the effect, but to perform the action]...

[Right Column: Urdu Translation/Commentary] Why did he raise an objection? For this reason, Allama Shami stated in Minhat al-Khaliq, the marginalia of Bahr al-Ra'iq: "No, 'Mutahhir' (purifier) should have been said, as the commentator himself will warn under the author's phrase 'with a pure (tahir) substance from the genus of the earth' regarding this." I say: Allama Shami objected to al-Bahr here because Shami also follows al-Bahr in the matter of distinguishing between pure soil and purifying soil. And the truth is that expressing it as 'tahir' (pure) in Kanz al-Daqaiq, the standard texts (mutun), the Absolute Researcher, and a large group of scholars is correct and accurate. Thus, it was necessary for al-Bahr not to object to the phrase 'with a pure substance' (bi-tahir) in al-Kanz. And it was necessary for Allama Shami to take [al-Bahr] to task for the objection he raised there, and here, since he did not object, he should have been taken to task for that. Fifth Definition: Allama Ibn Kamal Wazir stated in his book al-Islah's commentary al-Idah: "Tayammum is that purity which is obtained through the use of the clean surface of the earth on two specific limbs with a specific intention." [End of quote]. This was also followed in Majma' al-Anhur, and this passage of al-Birjandi in the commentary on al-Nuqaya also points in this

direction: "In literal language, the meaning of tayammum is 'intention' (qasd), then in Sharia, this word was transferred for this specific purity." [End of quote]. I say: Purity is the ruling (hukm) of tayammum and that effect which is established by it, just as this very effect is established by wudu, but wudu is not purity itself. See that tayammum is commanded (ma'mur bihi), and the person bound by Sharia (mukallaf) is commanded for its fulfillment and for doing it...

[Footnotes] 1 Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/138. 2 Idah wa Islah by Allama Wazir Ibn Kamal. 3 Sharh al-Nuqaya by al-Birjandi, Section on Tayammum, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/24.

फ़तावा रज़विया (खंड तीन)

[बायां कॉलम: अरबी/उर्दू पाठ] मिन्हात अल-ख़ालिक़ में कहा गया: उन्हें 'अल-मुतहहिर' (शुद्ध करने वाला) कहना चाहिए था, जैसा कि वे स्वयं लेखक के वाक्यांश 'मिट्टी की जाति से किसी पवित्र (ताहिर) चीज़ के साथ' पर चर्चा करते समय संकेत करेंगे। [1] मैं कहता हूँ: अल-बह्र के लेखक पर आपत्ति की गई क्योंकि उन्होंने पृथ्वी के संबंध में 'ताहिर' (पवित्र) और 'मुतहहिर' (शुद्ध करने वाला) के बीच अंतर करने में उनका अनुसरण किया। सत्य यह है कि सही दृष्टिकोण अल-कन्ज़, मानक ग्रंथों (मुतून), मुतहक़्क़िक़ (परम शोधकर्ता), और विद्वानों के एक विशाल समूह के साथ है। इसलिए, उन्हें अल-कन्ज़ के वाक्यांश 'पवित्र पदार्थ के साथ' (1) पर आपत्ति नहीं करनी चाहिए थी, और आपको वहां उनके कथन पर आपत्ति करनी चाहिए थी, न कि यहाँ। पाँचवाँ पहलू: अल्लामा इब्न कमाल अल-वज़ीर ने ईज़ाह अल-इस्लाह में कहा: यह वह शुद्धता (तहारत) है जो एक विशिष्ट इरादे के साथ दो विशिष्ट अंगों पर पवित्र मिट्टी के उपयोग से प्राप्त होती है। [2] इसी का अनुसरण मजमा' अल-अन्हुर में किया गया है, और नुक़ाया की व्याख्या में अल-बिरजंदी का कथन इसी ओर संकेत करता है: 'भाषाई रूप से तयम्मुम का अर्थ इरादा (क़स्द) है, फिर शरीयत में इसे इस विशिष्ट शुद्धता के लिए स्थानांतरित कर दिया गया'। [3] मैं कहता हूँ: (2) शुद्धता तयम्मुम का नियम (हुक्म) और उससे उत्पन्न होने वाला प्रभाव (असर) है, जैसा कि वज़ू के साथ होता है। हालाँकि, वज़ू स्वयं शुद्धता नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि तयम्मुम का आदेश दिया गया है (मामूर बिही), और व्यक्ति को आदेश नहीं दिया जाता...

[दायां कॉलम: उर्दू अनुवाद/व्याख्या] उन्होंने आपत्ति क्यों की? इसी कारण से, अल्लामा शामी ने बह्र अर-राइक़ के हाशिये मिन्हात अल-ख़ालिक़ में कहा: "नहीं, 'मुतहहिर' (शुद्ध करने वाला) कहा जाना चाहिए था, जैसा कि स्वयं व्याख्याकार लेखक के वाक्यांश 'मिट्टी की जाति से पवित्र (ताहिर) पदार्थ के साथ' के तहत इस संबंध में चेतावनी देंगे।" मैं कहता हूँ: अल्लामा शामी ने यहाँ अल-बह्र पर आपत्ति की क्योंकि शामी भी मिट्टी के पवित्र होने और शुद्ध करने वाले होने के बीच अंतर के मामले में अल-बह्र का अनुसरण करते हैं। और सच तो यह है कि कन्ज़ अल-दक़ाइक़, मानक ग्रंथों (मुतून), मुतहक़्क़िक़-ए-मुतलक़ और विद्वानों के एक बड़े समूह में इसे 'ताहिर' (पवित्र) के रूप में व्यक्त करना ही सही और सटीक है। अत; अल-बह्र के लिए यह आवश्यक था कि वह अल-कन्ज़ के वाक्यांश 'बि-ताहिर' (पवित्र पदार्थ के साथ) पर आपत्ति न करें। और अल्लामा शामी के लिए यह आवश्यक था कि अल-बह्र ने वहाँ जो आपत्ति की है उस पर उन्हें पकड़ते, और यहाँ चूँकि उन्होंने आपत्ति नहीं की, इसलिए उन्हें उसके लिए पकड़ा जाना चाहिए था। पाँचवीं परिभाषा: अल्लामा इब्न

कमाल वज़ीर ने अपनी पुस्तक अल-इस्लाह की व्याख्या अल-ईज़ाह में कहा: "तयम्मुम वह शुद्धता है जो एक विशिष्ट इरादे के साथ दो विशिष्ट अंगों पर धरती की साफ़ सतह के उपयोग से प्राप्त होती है।" [उद्धरण समाप्त]। मजमा' अल-अन्हुर में भी इसी का अनुसरण किया गया है, और नुक़ाया की व्याख्या में बिरजंदी का यह अंश भी इसी दिशा में संकेत करता है: "शाब्दिक भाषा में तयम्मुम का अर्थ 'इरादा' (क़स्द) है, फिर शरीयत में इस शब्द को इस विशिष्ट शुद्धता के लिए स्थानांतरित कर दिया गया।" [उद्धरण समाप्त]। मैं कहता हूँ: शुद्धता तयम्मुम का नियम (हुक्म) है और वह प्रभाव है जो इसके द्वारा स्थापित होता है, जैसे कि यही प्रभाव वज़ू द्वारा स्थापित होता है, लेकिन वज़ू स्वयं शुद्धता नहीं है। देखिए कि तयम्मुम का आदेश दिया गया है (मामूर बिही), और मुकल्लफ़ (शरीयत के पाबंद व्यक्ति) को इसकी पूर्ति और इसे करने के लिए ही आदेश दिया जाता है...

[पाद लेख] 1 मिन्हात अल-ख़ालिक़ अलल बह्र अर-राइक़, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/138. 2 ईज़ाह व इस्लाह, अल्लामा वज़ीर इब्न कमाल द्वारा। 3 शर्ह अल-नुक़ाया, बिरजंदी द्वारा, तयम्मुम अनुभाग, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/24.

فتاویٰ رضویہ (جلد سوم)

[بایاں کالم: عربی/اردو عبارت] قال في منحة الخالق كان عليه ان يقول المطهر كما سينبه عليه نفسه عند قوله المصنف بطاهر من جنس الارض ١ھ اقول: اخذ على البحر لاتباعه له في الفرق بين الطاهر من الارض والمطهر والحق ان الصواب مع الكنز والمتون والمحقق والجم الغفير فانما كان عليه ان لايؤاخذ على الكنز فی قوله بطاهر (١) وعليكم ان تؤاخذوا على قوله ذلك لاهذا۔ الوجه الخامس: قال العلامة ابن كمال الوزير في ايضاح اصلاح هو طهارة حاصلة باستعمال الصعيد الطاهر في عضوين مخصوصين على قصد مخصوص ٢ اه وتبعه في مجمع الانہر واليه يشير قول البرجندی في شرح النقاية التيمم في اللغة القصد ثم نقل الى هذه الطهارة المخصوصة ٣ اه اقول: (٢) الطهارة حكم التيمم والاثر المترتب عليه كما على الوضوء وليس الوضوء نفس الطهارة الاترى ان التيمم مأمور به ولا يؤمر

[دایاں کالم: اردو ترجمہ و تشریح] انہوں نے مواخذہ کیوں فرمایا؟ اسی لئے علامہ شامی نے بحر رائق کے حاشیہ منحۃ الخالق میں فرمایا: "نہیں "مطہر " کہنا چاہئے تھا جیسا کہ خود شارح، مصنف کی عبارت "بطاهر من جنس الارض" کے تحت اس پر تنبیہ کریں گے"۔ اقول: علامہ شامی نے یہاں بحر پر مواخذہ کیا اس لئے کہ زمین طاہر اور زمین مطہر کی تفریق کے معاملہ میں شامی بھی بحر کے متبع ہیں۔ اور حق یہ ہے کہ "طاہر" سے تعبیر میں کنز الدقائق، کتب متون، محقق علی الاطلاق اور علماء کی جماعت کثیر ہ ہی صواب ودرستی پر ہیں۔ تو بحر پر لازم تھا کہ کنز کی عبارت "بطاهر" پر مواخذہ نہ کریں۔ اور علامہ شامی پر لازم تھا کہ بحر نے وہاں جو مواخذہ کیا ہے اس پر گرفت کریں اور یہاں مواخذہ نہ کیا تو اس پر گرفت نہ کریں۔ تعریف پنجم: علامہ ابن کمال وزیر نے اپنی کتاب اصلاح کی شرح ایضاح میں فرمایا: "تیمم وہ طہارت ہے جو مخصوص

ارادہ سے دو مخصوص عضوؤں پر پاک روئے زمین کے استعمال سے حاصل ہو" اھ مجمع الانہر میں بھی اسی کا اتباع کیا ہے، اور نقایہ کی شرح میں برجندی کی یہ عبارت بھی اسی جانب اشارہ کر رہی ہے: "لغت میں تیمم کا معنیٰ قصد ہے پھر شریعت میں یہ لفظ اس مخصوص طہارت کیلئے منقول ہوا"۔ اھ اقول: طہارت تو تیمم کا حکم اور وہ اثر ہے جو اس پر مرتب ہوتا ہے، جیسے یہی اثر وضو پر مرتب ہوتا ہے مگر وضو عین طہارت نہیں۔ دیکھئے کہ تیمم مامور بہ ہے اور مکلف کو اس کی بجا آوری اور اسے کرنے ہی کا تو حکم دیا جاتا ہے اور اسے کرنا وہی

[حواشی] 1 منحة الخالق على البحر الرائق باب التيمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۳۸/۱ 2 ایضاح و اصلاح للعلامہ وزیر ابن کمال 3 شرح النقاية للبرجندی فصل التيمم مطبع نولکشور لکھنؤ بالسروی ۲۴/۱

Fatawa Razawiyya Volume 3

...is the use of earth (sa'id). And the purity obtained from this use is not an act or deed of the person (mukallaf). This is a very manifest fact, and it is unlikely for it to remain hidden from a figure such as the 'Allama. Sixth Definition: Tayammum consists of two strikes: one strike for the face and one strike for the hands including the elbows. This is the explicit text (Nass) from the Lawgiver (peace and blessings of Allah be upon him), and then from the master of the school of law (may Allah be pleased with him). Al-Daraqutni narrated it and stated that all its narrators are trustworthy. Al-Hakim also narrated it and declared its chain of transmission as authentic (Sahih al-Isnad). It is narrated from Jabir ibn Abdullah (may Allah be pleased with them both), who narrates from the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that the Master said: "Tayammum is one strike for the face and one strike for the forearms up to the elbows." Al-Daraqutni and Al-Hakim narrated this, and Al-Bayhaqi in Shu'ab al-Iman narrated from Abdullah ibn Umar (may Allah be pleased with them both) via the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Tayammum is two strikes: one strike for the face and one strike for the hands up to the elbows." This is also narrated as a saying of Ibn Umar, and Al-Daraqutni deemed it correct. Imam Malik al-Ulama wrote in Bada'i al-Sana'i that Imam Abu Yusuf mentioned in Al-Amali that I have...

1. Sunan al-Daraqutni, Book of Tayammum, Madina Munawwara, Hijaz 1/181
2. Sunan al-Daraqutni, Book of Tayammum, Madina Munawwara, Hijaz 1/181
3. Nasb al-Raya, Book of Tayammum, Al-Maktaba al-Islamiyya 1/151
4. Sunan al-Daraqutni, Book of Tayammum, Madina Munawwara, Hijaz 1/181
5. Sunan al-Daraqutni, Book of Tayammum, Madina Munawwara, Hijaz 1/180

फ़तावा रज़विया खंड 3

...मिट्टी का उपयोग है। और इस उपयोग से प्राप्त होने वाली पवित्रता मुकल्लफ़ (धार्मिक रूप से उत्तरदायी व्यक्ति) का कोई कार्य या क्रिया नहीं है। यह तो बहुत स्पष्ट बात है जिसका अल्लामा जैसी हस्ती पर गुप्त रह जाना दूर की बात है। छठी परिभाषा: तयम्मुम दो प्रहार (हाथ मारना) हैं, एक प्रहार चेहरे के लिए और एक प्रहार कोहनियों सहित हाथों के लिए। यह साहिब-ए-शरीअत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और फिर साहिब-ए-मज़हब (रज़ियल्लाहु अन्हु) का स्पष्ट प्रमाण (नस्स) है। दारक़ुत्नी ने रिवायत की और कहा कि इसके सभी वर्णक विश्वसनीय (सिक़ा) हैं। और हाकिम ने रिवायत की और इसे सही-उल-इस्नाद (सटीक श्रृंखला वाला) कहा। हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है, वे नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत करते हैं कि सरकार ने फ़रमाया: "तयम्मुम एक प्रहार चेहरे के लिए है और एक प्रहार कोहनियों तक कलाइयों के लिए है"। इसे दारक़ुत्नी और हाकिम ने, और शुअब-उल-ईमान में बैहक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के माध्यम से नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से इस प्रकार रिवायत किया: "तयम्मुम दो प्रहार हैं, एक प्रहार चेहरे के लिए और एक प्रहार हाथों के लिए कोहनियों तक"। हज़रत इब्न उमर के कथन की हैसियत से भी यह मरुवी है और इसे दारक़ुत्नी ने सही कहा है। इमाम मलिक-उल-उलेमा ने बदाइ-उस-सनाइ में लिखा है कि इमाम अबू यूसुफ़ ने अमाली में उल्लेख किया कि मैंने...

1. सुनन अल-दारक़ुत्नी, बाब अत-तयम्मुम, मदीना मुनव्वरा हिजाज़ 1/181
2. सुनन अल-दारक़ुत्नी, बाब अत-तयम्मुम, मदीना मुनव्वरा हिजाज़ 1/181
3. नसब अर-राया, बाब अत-तयम्मुम, अल-मकतबा अल-इस्लामिया 1/151
4. सुनन अल-दारक़ुत्नी, बाब अत-तयम्मुम, मदीना मुनव्वरा हिजाज़ 1/181
5. सुनन अल-दारक़ुत्नी, बाब अत-तयम्मुम, मदीना मुनव्वरा हिजाज़ 1/180

पृष्ठ 334/756 मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

المکلف الا بفعله و فعله هو الاستعمال ولیست الطهارة الحاصلة به فی شیئ من افعاله وهذا ظاهر جدا وخفاؤه علی مثل العلامة بعید - صعید کا استعمال ہے۔ اور اس استعمال سے حاصل ہونے والی طہارت مکلف کا کوئی عمل اور فعل نہیں۔ یہ تو بہت کھلی ہوئی بات ہے جس کا علامہ جیسی شخصیت پر مخفی رہ جانا بعید ہے۔ الوجه السادس: هو ضربتان ضربة للوجه وضربة للیدین الی المرفقین 1 هذا نص صاحب الشرع صلی الله تعالی علیه وسلم ثم صاحب المذهب رضی الله تعالی عنه فقد اخرج الدار قطنی وقال رجاله کلهم ثقات والحاکم وقال صحیح الاسناد 3 عن جابر بن عبد الله رضی الله تعالی عنهما عن النبی صلی الله تعالی علیه وسلم قال التیمم ضربة للوجه وضربة للذرعین الی المرفقین 4 و رویاه هما والبیهقي في الشعب من حدیث عبد الله بن عمر رضی الله تعالی عنهما عن النبي صلی الله تعالی علیه وسلم التیمم ضربتان ضربة للوجه وضربة للیدین الی المرفقین 5 و روی من قول ابن عمر وصوبه الدار قطنی - وقال الامام ملك العلماء في البدائع ذکر ابویوسف في الامالي تعریف ششم: تیمم دو ضربیں ہیں، ایک ضرب چہرے کیلئے اور ایک ضرب کہنیوں سمیت ہاتھوں کیلئے۔ یہ صاحبِ شریعت صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پھر صاحبِ مذہب رضی اللہ تعالٰی عنہ کا نص ہے۔ دارِقطنی نے روایت کی اور کہا کہ اس کے تمام رجال ثقہ ہیں۔ اور حاکم نے روایت کی اور اسے صحیح الاسناد کہا۔ حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالٰی عنہما سے مروی ہے وہ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت کرتے ہیں سرکار نے فرمایا: "تیمم ایک ضرب چہرے کیلئے ہے اور ایک ضرب کہنیوں تک کلائیوں کیلئے ہے"۔ اسے دارِقطنی وحاکم نے، اور شعب الایمان میں بیہقی نے حضرت عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما کے ذریعہ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے یوں روایت کیا: "تیمم دو ضربیں ہیں، ایک ضرب چہرے کیلئے اور ایک ضرب ہاتھوں

کیلئے کہنیوں تک“۔ حضرت ابن عمر کے قول کی حیثیت سے بھی یہ مروی ہے اور اسے دارِقطنی نے درست کہا ہے۔ امام ملک العلماء نے بدائع الصنائع میں لکھا ہے کہ امام ابویوسف نے امالی میں ذکر کیا کہ میں نے

1 سنن الدار قطنی باب التیمم مدینہ منورہ حجاز 181/1 2 سنن الدار قطنی باب التیمم مدینہ منورہ حجاز 181/1 3 نصب الرایۃ باب التیمم المکتہ الاسلامیہ 151/1 4 سنن الدار قطنی باب التیمم مدینہ منورہ حجاز 181/1 5 سنن الدار قطنی باب التیمم مدینہ منورہ حجاز 180/1

Fatawa Ridawiyyah Volume 3

He said, I asked Abu Hanifa about Tayammum, and he said: "Tayammum consists of two strikes: one strike for the face and one strike for the hands up to the elbows." I said to him, "How is it done?" So he struck his hands on the ground, moved them forward and then backward, then...

Explanation from *Tabyin al-Haqa'iq*: It is mentioned in *Tabyin al-Haqa'iq*: Its description (1) and method is that one should strike their hands on the ground, moving them forward and backward, then lift them and shake them, etc. Ibn al-Shalbi narrated from Yahya, meaning he should move them forward and backward after the strike to intensify the act of reaching the dust between the fingers, even though striking (hitting hands on the ground) is better than just placing the hands (2) end.

Author's note (Aqul): (2) This is not the place for 'in wasliyah' (even though) but for 'lidha' (therefore), i.e., for the sake of this intensification, striking is better (instead of saying 'even though striking is better than placing', it should be said 'therefore striking is better than placing' - 12 Muhammad Ahmad). Meaning, for this intensification, striking is better. However, it can be said in excuse for them that the meaning is that the person doing Tayammum will move their hands forward and backward so that this intensification is increased, even if the intensification itself is achieved through striking, which is preferred over placing. This reason for moving hands forward and backward has been mentioned. (To be continued on next page)

1. Tabyin al-Haqa'iq and Shalbi on Tabyin, Chapter of Tayammum, Al-Matba'ah al-Kubra, Bulaq, Egypt, 1/38.
2. Tabyin al-Haqa'iq and Shalbi on Tabyin, Chapter of Tayammum, Al-Matba'ah al-Kubra, Bulaq, Egypt, 1/38.
3. Hilyah

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

उन्होंने कहा, मैंने इमाम अबू हनीफ़ा से तयम्मुम के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा: "तयम्मुम दो प्रहार (ज़रब) हैं: एक प्रहार चेहरे के लिए और एक प्रहार हाथों के लिए कोहनियों तक।" मैंने उनसे पूछा, "तयम्मुम का तरीका क्या है?" तो उन्होंने अपने हाथों को ज़मीन पर मारा, उन्हें आगे बढ़ाया और पीछे किया, फिर...

'तबीइन अल-हक़ाएक' से विवरण: 'तबीइन अल-हक़ाएक' में है: इसकी गुणवत्ता (1) और विधि यह है कि हाथों को ज़मीन पर आगे करते हुए और पीछे लाते हुए मारे, फिर उन्हें उठाए और झाड़ ले आदि। इब्न अल-शल्बी ने यहया से नकल करते हुए कहा, यानी दोनों हाथों को मारने के बाद, उंगलियों के बीच मिट्टी पहुँचाने के कार्य में अतिशयोक्ति (मुबालग़ा) के लिए उन्हें आगे और पीछे हिलाए। हालाँकि प्रहार (हाथों को ज़मीन पर मारना) वज़अ (सिर्फ ज़मीन पर रखने) से बेहतर है (2) अंत।

लेखक का कथन (अक़ूल): (2) यह 'इन वस्लिया' (हालाँकि) का अवसर नहीं है, बल्कि 'लिज़ा' (इसलिए) का अवसर है (बजाय इसके कि 'हालाँकि प्रहार वज़अ से बेहतर है', यह कहना चाहिए कि 'इसीलिए प्रहार वज़अ से बेहतर है' - 12 मुहम्मद अहमद)। यानी इसी मुबालग़ा के लिए प्रहार बेहतर है। लेकिन उनकी ओर से बहाने में यह कहा जा सकता है कि अर्थ यह है कि तयम्मुम करने वाला हाथ आगे ले जाएगा और पीछे लाएगा ताकि यह मुबालग़ा अधिक हो, भले ही प्रहार मात्र से ही मुबालग़ा प्राप्त हो जाता है, जो रखने (वज़अ) पर वरीयता प्राप्त है। हाथों को आगे बढ़ाने और पीछे लाने का यही कारण बताया गया है। (बाकी अगले पृष्ठ पर)

1. तबीइन अल-हक़ाएक और शल्बी अला अल-तबीइन, बाब अल-तयम्मुम, अल-मत्बा अल-कुबरा, बुलाक, मिस्र, 1/38।
2. तबीइन अल-हक़ाएक और शल्बी अला अल-तबीइन, बाब अल-तयम्मुम, अल-मत्बा अल-कुबरा, बुलाक, मिस्र, 1/38।
3. हिल्या

पृष्ठ 756 में से 335

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

قال سألت ابا حنیفة عن التیمم فقال التیمم ضربتان ضربة للوجه وضربة للیدین الی المرفقین قلت له کیف هو فضرب بیده علی الارض فاقبل عه بهما وادبر ثم

امام ابوحنیفہ سے تیمّم کے بارے میں سوال کیا تو انہوں نے فرمایا : "تیمّم دو ضربیں ہیں ، ایک ضرب چہرے کیلئے اور ایک ضرب ہاتھوں کیلئے کہنیوں تک" ۔ میں نے عرض کیا کہ تیمّم کا طریقہ کیا ہے؟ تو انہوں نے اپنے ہاتھوں کو زمین پر مارا ، انہیں آگے بڑھایا اور پیچھے کیا ، پھر

عه : قال في التبیین کیفیته (۱) ان یضرب بیدیه علی الارض یقبل بهما ویدبر ثم یرفعهما وینفضهما الخ قال ابن الشلبي عن یحیی ای یحرکهما بعد انصرف اماماً وخلفاً مبالغة في ایصال التراب الی اثناء الاصابع وان کان الضرب اولی من الوضع ۲ اھـ

تبیین الحقائق میں ہے : تیمّم کی کیفیت اور اس کا طریقہ یہ ہے کہ ہاتھوں کو زمین پر آگے کرتے ہوئے پیچھے لاتے ہوئے مارے پھر انہیں اٹھائے اور جھاڑ لے الخ۔ ابن شلبی نے یحیٰی سے نقل کرتے ہوئے کہا یعنی دونوں ہاتھوں کو مارنے کے بعد ، انگلیوں کے درمیان مٹی پہنچانے کے عمل میں مبالغہ کیلئے انہیں آگے اور پیچھے کو ہلائے۔ اگرچہ ضرب (ہاتھوں کو زمین پر مارنا) وضع (زمین پر صرف رکھنے) سے بہتر والی ہے اھ

اقول: (۲) لیس هذا محل ان الوصلیة بل محل لذا ای ولاجل هذه المبالغة کان الضرب اولی الا ان یقال المعنی انه یقبل ویدبر زیادة في هذه المبالغة وان کانت تحصل بالضرب المرجح علی الوضع ثم تعلیل الاقبال والادبار بهذا عزاه في الحلیة لبعضهم قال قال بعضهم انما یقبل بیدیه علی الارض ویدبر حتی یلتصق التراب بیدیه ۳ اه وله تعلیل اخر

اقول : یہ ان وصلیہ (اگرچہ) کا موقع نہیں بلکہ لہذا (اسی لئے) کا موقع ہے (اگرچہ ضرب وضع سے اولیٰ ہے کہ بجائے کہنا چاہئے کہ اسی لئے ضرب وضع سے بہتر ہے ۱۲ محمد احمد) یعنی اسی مبالغہ کیلئے تو ضرب بہتر ہے۔ مگر ان کی طرف سے معذرت میں یہ کہا جائے کہ معنی یہ ہے کہ تیمّم کرنے والا ہاتھ آگے لے جائے گا اور پیچھے لائے گا تاکہ یہ مبالغہ زیادہ ہوا اگر چہ نفس مبالغہ ضرب سے بھی حاصل ہو جاتا ہے جو وضع پر ترجیح یافتہ ہے۔ ہاتھوں کو آگے بڑھانے پیچھے لانے کی یہ علت بیان کی گئی ہے (باقی بر صفحہ آئندہ)

۱ تبیین الحقائق و شلبی علی التبیین باب التیمم المطبعۃ الکبری بولاق مصر ۱/۳۸ ۲ تبیین الحقائق و شلبی علی التبیین باب التیمم المطبعۃ الکبری بولاق مصر ۱/۳۸ ۳ حلیہ

Fatawa Razawiya Volume 3

[Top Right Box - Urdu Translation of Arabic] He shook both [hands], then wiped his face with them, then placed his palms on the earth a second time, moved them forward and backward, then shook them both, then with that, wiped the outer and inner parts of both forearms up to the elbows. End.

[Top Left Box - Arabic text] نفضهما ثم مسح بهما وجهه ثم اعاد كفيه على الصعيد ثانيا فأقبل بهما وادبر ثم نفضهما ثم مسح بذلك ظاهر الذراعين وباطنهما الى المرفقين ١ اه (He shook them, then wiped his face with them, then returned his palms to the earth a second time, moving them forward and backward, then shook them, then wiped with that the outer and inner parts of the forearms up to the elbows. 1 End.)

[Bottom Section - Urdu Explanation] (Remainder of the footnote from the previous page) It was attributed in 'Hilya' to some scholars, where it is written that some personages said: one should move the hands forward and backward on the ground so that the dust sticks to the hands. End. There is another reasoning (ta'leel) for it as well, which was cited and then refuted in 'Hilya' because they said: We have shown you by quoting from 'Amali' that this act [moving hands] takes place after placing the hands on the ground; thus, the statement suggesting this happens before the strike (zarb) is refuted. And the reason given for it was so that one prepares himself for Tayammum, i.e., brings the intention (niyyah) to presence. I say: The implication of the first reasoning is that where there is no dust, for example on marble, this should not be sunnah, although they state it to be sunnah absolutely. I say, rather its reason is a third thing, Allah Almighty willing. That is, every part of the palm should touch the ground because the surface of the palm is not level. So, the protruding parts of the palm will touch by just striking, but the recessed parts will not touch; therefore, one will move the hands forward and backward so that every part touches. This reason is such that it applies to all (whether Tayammum is on dust or marble). 12 Minh - May he be forgiven. (M) (Translation by Muhammad Ahmed Misbahi)

[Footnotes] 1. Badai' al-Sanai', Quality of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi 26/1 2. Hilya

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[ऊपर दाईं ओर का बॉक्स - अरबी का उर्दू अनुवाद] दोनों को झाड़ा, फिर उनसे अपने चेहरे का मसह किया, फिर दूसरी बार हथेलियां ज़मीन पर ले जाकर उन्हें आगे बढ़ाया और पीछे किया, फिर दोनों को झाड़ा, फिर उससे दोनों कलाइयों के ज़ाहिर (बाहरी) और बातिन (भीतरी) हिस्से का, कोहनियों तक मसह किया। समाप्त।

[ऊपर बाईं ओर का बॉक्स - अरबी पाठ] نفضهما ثم مسح بهما وجهه ثم اعاد كفيه على الصعيد ثانيا فأقبل بهما وادبر ثم نفضهما ثم مسح بذلك ظاهر الذراعين وباطنهما الى المرفقين ١ اه (उसने दोनों को झाड़ा, फिर उनसे अपने चेहरे का मसह किया, फिर अपनी हथेलियों को दूसरी बार ज़मीन पर रखा, उन्हें आगे और पीछे किया, फिर उन्हें झाड़ा, फिर उससे कोहनियों तक अग्रबाहुओं के बाहरी और भीतरी हिस्सों का मसह किया। 1 समाप्त।)

[नीचे का भाग - उर्दू विवरण] (पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष) इसे 'हिलिया' में कुछ विद्वानों की ओर मंसूब किया गया है, जिसमें यों लिखा है कि कुछ महानुभावों ने फ़रमाया कि ज़मीन पर हाथों को आगे ले जाएगा और पीछे लाएगा ताकि मिट्टी हाथों से चिपक जाए। समाप्त। और इसकी एक दूसरी वजह (तअलील) भी है जिसे 'हिलिया' में उद्धृत करके खंडन कर दिया गया क्योंकि उन्होंने फ़रमाया कि हमने तुम्हें 'अमाली' से उद्धृत करके दिखा दिया कि यह कार्य हाथों को ज़मीन पर रखने के बाद होगा; इस प्रकार वह कथन रद्द हो गया जिससे ज्ञात होता है कि यह कार्य प्रहार (ज़रब) से पहले होगा। और इसका कारण यह बताया गया कि ताकि स्वयं को तयम्मुम के लिए तैयार करे, यानी नीयत (नियत) को उपस्थित कर ले। मैं कहता हूँ: पहले तर्क का निष्कर्ष यह है कि जहाँ मिट्टी न हो, उदाहरण के लिए संग-ए-मरमर, वहाँ यह मसनून (सुन्नत) न हो, जबकि वे इसे पूर्णतः मसनून बताते हैं। मैं कहता हूँ बल्कि इसका कारण एक तीसरी चीज़ है, अल्लाह तआला ने चाहा तो। वह यह कि हथेली का हर हिस्सा ज़मीन से स्पर्श हो जाए क्योंकि हथेली की सतह समतल नहीं होती। अतः हथेली के उभरे हुए हिस्सों का स्पर्श तो प्रहार मात्र से प्राप्त हो जाएगा लेकिन दबे हुए हिस्से स्पर्श नहीं हो पाएंगे; इसलिए हाथों को आगे-पीछे गति देगा ताकि हर हिस्सा स्पर्श कर ले। यह कारण ऐसा है जो (चाहे मिट्टी पर तयम्मुम हो या संग-ए-मरमर पर) सभी के लिए सामान्य है। 12 मिन्हु - उसकी मग़फ़िरत हो। (म) (अनुवाद: मुहम्मद अहमद मिस्बाही)

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. बदाए-उस-सनाए, तयम्मुम की विधि, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 26/1 2. हिलिया

पृष्ठ 336/756

[اوپر دائیں خانہ] دونوں کو جھاڑا، پھر ان سے اپنے چہرے کا مسح کیا پھر دوسری بار ہتھیلیاں زمین پر لے جا کر انہیں آگے بڑھایا اور پیچھے کیا، پھر دونوں کو جھاڑا، پھر اس سے دونوں کلائیوں کے ظاہر و باطن کا، کہنیوں تک مسح کیا۔ اہ

[اوپر بائیں خانہ] نفضهما ثم مسح بهما وجهه ثم اعاد كفيه على الصعيد ثانيا فأقبل بهما وادبر ثم نفضهما ثم مسح بذلك ظاهر الذراعين وباطنهما الى المرفقين ۱ اه

[نیچے کی تفصیل] (بقیہ حاشیہ صفحہ گذشتہ) نقله ورده اذ قال اوجدناك عن الامالی ان ذلك بعد ضرب بهما على الارض فاندفع ماقيل انه قبل الضرب معللا اياه بقوله ليهيئ نفسه للتيمم ۲ اه ای يستحضر النية- (1) اقول: وقضية التعليل الاول ان لا يسن ذلك حيث لاتراب كالرخام مع انهم يطلقونه اطلاقا بل له علة ثالثة ان شاء الله تعالى على ما اقول: وهو امساس كل جزء من الكف بالأرض لان سطح الكف غير مستو فبمجرد الضرب يحصل المس لاجزاء الكف الناشرة دون الطافية فيقبل ويدبر لامساس الكل هذا يعم الكل والله تعالى اعلم ۱۲ منه غفرله۔ (م)

اسے حلیہ میں بعض علما کی طرف منسوب کیا، اس میں یوں لکھا ہے کہ بعض حضرات نے فرمایا کہ زمین پر ہاتھوں کو آگے لے جائے گا اور پیچھے لائیگا تاکہ مٹی ہاتھوں سے چپک جائے اہ اور اس کی ایک دوسری تعلیل بھی ہے جسے حلیہ میں نقل کرکے رد کردیا کیونکہ انہوں نے فرمایا ہم نے تمہیں امالی سے نقل کرکے دکھا دیا کہ یہ کام ہاتھوں کو زمین پر رکھنے کے بعد ہوگا تو وہ قول رد ہوگیا جس سے معلوم ہوتا ہے کہ یہ کام ضرب سے پہلے ہوگا اور اس کی علت میں بتایا گیا کہ تاکہ اپنے کو تیمم کیلئے تیار کرے اہ یعنی نیت متحضر کرلے۔ اقول: پہلی تعلیل کا تقاضا یہ ہے

کہ جہاں مٹی نہ ہو مثلاً سنگِ مرمر وہاں یہ مسنون نہ ہو حالانکہ اسے مطلقاً مسنون بتاتے ہیں۔ اقول بلکہ اس کی علت ایک تیسری چیز ہے ان شاء اللہ تعالیٰ۔ وہ یہ کہ ہتھیلی کا ہر جز زمین سے مس کر دیا جائے اس لئے کہ ہتھیلی کی سطح برابر نہیں ہے تو ہتھیلی کے ابھرے ہوئے اجزا کا مس ہونا تو ضرب ہی سے حاصل ہوجائے گا مگر دبے ہوئے اجزاء مس نہ ہو پائینگے تو ہاتھوں کو آگے پیچھے حرکت دے گا تاکہ ہر جز کو مس کر دے یہ علت ایسی ہے جو (مٹی پر تیمم ہو یا سنگِ مرمر پر) سب کو عام ہے ۱۲ منہ غفرلہ۔ (ترجمہ محمد احمد مصباحی)

[حواشی] 1 بدائع الصنائع کیفیۃ التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۶ 2 حلیہ

Fatawa Rizwia, Volume 3

(Arabic Text Segment) It (Tayammum consists of two strikes...) is the phrasing found in 'Mukhtasar al-Quduri', 'al-Hidayah', 'al-Kafi', 'al-Wiqayah', 'al-Nuqayah', and 'al-Islah' from among the primary texts and others from authoritative books (1). It is not hidden that the apparent implication of its meaning is that two strikes are a pillar [of Tayammum]. This was stated by Sayyid Imam Abu Shuja, and Imam Shams al-A'immah al-Halwani chose it and authenticated it in 'al-Khulasah'. It is said in 'al-Nisab': 'This is a preferred view (Istihsan) and we follow it, and it is more cautious (1).' In 'al-Durr al-Mukhtar' it is said: 'It is the most correct and most cautious (2).' Imam Nasir al-Din was firm upon this. In 'al-Zahiriyyah' it is stated: 'It is excellent and we follow it (3).' This is also mentioned in 'Jawahir al-Fatawa' and it was firmly stated in 'al-Munyah' and others, and affirmed in 'al-Ghunyah', clarifying that it is more cautious (4). In 'al-Hilyah' it is said: 'This is the apparent view of Imam Malik in al-Mudawwanah; it is the new view of Imam Shafi'i, and most scholars hold this view because explicit hadiths have been narrated concerning it (5).' Rather, the Imam and Malik al-Ulama stated in 'al-Bada'i': 'As for its pillar, our companions said: It is two strikes; one strike for the face and one strike for the hands up to the elbows (6).' Then he mentioned the views of Imam Malik.

(Urdu Translation Segment) 'Tayammum is two strikes etc.' This is the text from among the primary texts like Mukhtasar Quduri, Hidayah, Kafi, Wiqayah, Nuqayah, Islah, and several other authoritative books. It is not hidden that the apparent implication and meaning of this expression is that both strikes are pillars of Tayammum. This is the opinion of Sayyid Imam Abu Shuja, which Imam Shams al-Aimmah Halwani adopted and declared correct in al-Khulasah. In al-Nisab, it was stated: 'This is a preferred view (Istihsan), we follow it, and this is more cautious.' In Durr-e-Mukhtar, it says: 'This is the most correct and most cautious.' Imam Nasir al-Din firmly held this view. In Zahiriyyah, it says: 'This is excellent and we follow it.' - Jawahir al-Fatawa. And in Munyah and others, it was firmly stated, and in Ghunyah, it was upheld and explicitly stated that this is more cautious. In Hilyah, it was said: 'This is the apparent opinion of Imam Malik in al-Mudawwanah, and this is the new opinion of Imam Shafi'i; most scholars are proponents of this because explicit Hadiths have been narrated about it.' Rather, Imam Malik al-Ulama stated in Bada'i: 'However, as for its pillar, our companions said: These are two strikes; one strike for the face and one strike for the hands up to the elbows.' Then further Imam Malik's...

Footnotes: 1. Nisab al-Ihtisab 2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/41 3. Fatawa Zahiriyyah 4. Ghunyat al-Mustamli, Section on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 63 5. Hilyah 6. Bada'i al-Sana'i, Pillars of Tayammum, Saeed Company Karachi, 1/45

फतवा रिज़विया, खंड 3

(अरबी पाठ खंड) यह (तयम्मुम दो प्रहार है...) मुख्तसर अल-कुदुरी, अल-हिदाया, अल-काफी, अल-विकाया, अल-नुकाया, और अल-इसलाह जैसे प्राथमिक ग्रंथों और अन्य विश्वसनीय पुस्तकों (1) का विवरण है। यह छिपा नहीं है कि इसके अर्थ का प्रत्यक्ष निहितार्थ यह है कि दो प्रहार एक स्तंभ हैं। यह सैयद इमाम अबू शुजा द्वारा कहा गया था, और इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी ने इसे चुना और 'अल-खुलासा' में इसे प्रमाणित किया। 'अल-नसाब' में कहा गया है: 'यह एक पसंदीदा दृष्टिकोण (इस्तेहसान) है और हम इसका पालन करते हैं, और यह अधिक सुरक्षित (1) है।' 'अल-दुर्र अल-मुख्तार' में कहा गया है: 'यह सबसे सही और सबसे सुरक्षित (2) है।' इमाम नासिर अल-दीन इस पर दृढ़ थे। 'अल-ज़हीरिया' में कहा गया है: 'यह उत्कृष्ट है और हम इसका पालन करते हैं (3)।' यह 'जवाहर अल-फतवा' में भी वर्णित है और 'अल-मुन्या' और अन्य में दृढ़ता से कहा गया था, और 'अल-गुन्या' में इसकी पुष्टि की गई थी, यह स्पष्ट करते हुए कि यह अधिक सुरक्षित (4) है। 'अल-हिलया' में कहा गया है: 'अल-मुदव्वना में इमाम मलिक का यही प्रत्यक्ष विचार है; यह इमाम शाफई का नया विचार है, और अधिकांश विद्वान इस विचार को मानते हैं क्योंकि इसके बारे में स्पष्ट हदीसें वर्णित की गई हैं (5)।' बल्कि, इमाम और मलिक अल-उलामा ने 'अल-बदाए' में कहा: 'जहाँ तक इसके स्तंभ का सवाल है, हमारे साथियों ने कहा: यह दो प्रहार हैं; एक प्रहार चेहरे के लिए और एक प्रहार कोहनियों तक हाथों के लिए (6)।' फिर उन्होंने इमाम मलिक के विचारों का उल्लेख किया।

(उर्दू अनुवाद खंड) 'तयम्मुम दो ज़रब (प्रहार) है आदि' यही मतून (ग्रंथों) में से मुख्तसर कुदुरी, हिदाया, काफी, विकाया, नुकाया, इसलाह और कई अन्य विश्वसनीय पुस्तकों का पाठ है। यह बात छिपी नहीं है कि इस अभिव्यक्ति का प्रत्यक्ष अर्थ और भाव यही है कि दोनों प्रहार तयम्मुम के रुकन (स्तंभ) हैं। यही सैयद इमाम अबू शुजा का कथन है, जिसे इमाम शम्स अल-अइम्मा हलवानी ने अपनाया और अल-खुलासा में सही घोषित किया। अल-नसाब में कहा गया: 'यह इस्तेहसान (प्राथमिकता) है, हम इसे अपनाते हैं, और यही अहवत (सुरक्षित) है।' दुर्रे-मुख्तार में है: 'यही सबसे सही और सबसे सुरक्षित है।' इमाम नासिर अल-दीन ने इसी पर दृढ़ता व्यक्त की। ज़हीरिया में है: 'यह उत्तम है और हम इसे अपनाते हैं।' - जवाहर अल-फतवा। और मुन्या आदि में भी इसी पर दृढ़ता व्यक्त की गई, और गुन्या में इसे बनाए रखा गया और स्पष्ट किया गया कि यही अधिक सुरक्षित है। हिलया में कहा गया: 'अल-मुदव्वना में इमाम मलिक का यही प्रत्यक्ष कथन है, और यही इमाम शाफई का नया कथन है; अधिकांश विद्वान इसी के समर्थक हैं क्योंकि इस पर स्पष्ट हदीसें वर्णित हैं।'

बल्कि इमाम मलिक अल-उलामा ने बदाए में फरमाया: 'लेकिन इसके रुकन के बारे में हमारे साथियों ने फरमाया: ये दो ज़रबें हैं; एक ज़रब चेहरे के लिए और एक ज़रब हाथों के लिए कोहनियों तक।' फिर आगे इमाम मलिक...

फुटनोट्स: 1. नसाब अल-इहतिसाब 2. अल-दुर्र अल-मुख्तार, तयम्मुम अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/41 3. फतावा ज़हीरिया 4. गुन्यात अल-मुस्तमली, तयम्मुम खंड, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 63 5. हिलया 6. बदाए अल-सनाए, तयम्मुम के रुकन, सईद कंपनी कराची, 1/45

पृष्ठ 337/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

(Arabic Column) وھی عبارة مختصر القدوری والھدایة والکافی والوقایة والنقایة والاصلاح من المتون وغیرھا کتاب (۱) معتمد ولا یخفی ان ظاھر مدلولہ رکنیة ضربتین وبہ قال السید الامام ابوشجاع واختارہ الامام شمس الائمة الحلوانی وصححہ فی الخلاصة وقال فی النصاب ھذا استحسان و بہ نأخذ وھو الاحوط 1 وفي الدر المختار ھو الاصح الاحوط اھ 2 و بہ جزم الامام ناصر الدین وفی الظھیریة ھو حسن و بہ نأخذ 3 اھ جواھر الفتاوی و بہ جزم فی المنیة وغیرھا واقرہ فی الغنیة وصرح انہ احوط 4 وقال فی الحلیة ھو ظاھر قول مالك فی المدونة و بہ قال الشافعي فی الجدید واکثر العلماء لاحادیث صریحة بہ 5 اھ بل قال الامام ملك العلماء فی البدائع اما رکنہ فقال اصحابنا ضربتان ضربة للوجہ و ضربة للیدین الی المرفقین 6 اھ ثم ذکر مذاھب الامام مالك

(Urdu Column) التیمم ضربتان الخ یہی متون میں سے مختصر قدوری، ہدایہ، کافی، وقایہ، نقایہ، اصلاح اور متعدد معتمد کتابوں کی عبارت ہے۔ یہ پوشیدہ نہیں کہ اس تعبیر کا ظاہر مدلول و معنیٰ یہی ہے کہ دونوں ضربیں تیمم کا رکن ہیں، یہی سید امام ابوشجاع کا قول ہے، اسی کو امام شمس الائمہ حلوانی نے اختیار کیا، اسی کو خلاصہ میں صحیح کہا نصاب میں فرمایا کہ "یہ استحسان ہے اسی کو ہم لیتے ہیں اور یہی احوط ہے۔" در مختار میں ہے: یہی اصح واحوط ہے۔ اسی پر امام ناصر الدین نے جزم کیا، ظہیریہ میں ہے: یہ عمدہ ہے اور اسی کو ہم لیتے ہیں" اھ جواہر الفتاوٰی اور منیہ وغیرہ میں اسی پر جزم کیا، اور غنیہ میں اسے برقرار رکھا اور صراحت فرمائی کہ یہ احوط ہے۔ حلیہ میں کہا کہ: "یہی مدونہ میں امام مالک کا ظاہر قول ہے یہی امام شافعی کا جدید قول ہے، اکثر علماء اسی کے قائل ہیں اس لئے کہ اس پر صریح حدیثیں وارد ہیں اھ بلکہ امام ملک العلماء نے بدائع میں فرمایا: "لیکن اس کا رکن، تو ہمارے اصحاب نے فرمایا: یہ دو

ضربیں ہیں، ایک ضرب چہرے کیلئے اور ایک ضرب ہاتھوں کیلئے کہنیوں تک" اھ پھر امام مالک،

حواشی: 1 نصاب الاحتساب 2 الدر المختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱/۴۱ 3 فتاویٰ ظہیریہ 4 غنیۃ المستملی فصل فی التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۶۳ 5 حلیہ 6 بدائع الصنائع ارکان التیمم سعید کمپنی کراچی ۱/۴۵

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Arabic Text Column] And al-Shafi'i, al-Zuhri, Ibn Abi Layla, Ibn Sirin, and others, and in all of their reports it is stated that tayammum (dry ablution) consists of one strike, or two strikes, or three strikes. This demonstrates the consensus of our three Imams and all these figures that the strike is an essential pillar (rukn) of tayammum. They only differed regarding the number of strikes and their extent on the hands—whether up to the wrists, the elbows, or the armpits.

Imam Ali al-Isbijabi and Imam Faqih al-Nafs Qadi Khan denied that the strike is a pillar of tayammum. This view was chosen in Al-Bazzaziyya, and asserted in Nur al-Idah and al-Imdad. It was preferred in the commentary on al-Wahbaniyya, explicitly stated by Ibn Kamal, and verified by the Al-Muhaqqiq (the Investigator) in al-Fath, followed by the authors of al-Hilya and al-Bahr. For he said: "What reasoning dictates is that striking the ground should not be considered part of the legal definition of tayammum, because in the Book of Allah, only wiping (mash) is commanded. Allah Almighty says: '...seek clean earth and wipe your faces.' Thus, the saying of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), 'Tayammum is two strikes,' is either interpreted in a general sense encompassing two strikes on the ground or wiping twice over the limb, including both; or it is interpreted based on the fact that the case involving a strike is most common, so this statement was issued based on what is most frequent. And Allah Almighty knows best." [End of quote].

[Urdu Text Column] The schools (madhahib) of Imam Shafi'i, Zuhri, Ibn Abi Layla, Ibn Sirin, etc., were mentioned. In all of them, it is stated that tayammum is one strike, two strikes, or three strikes. So, it was stated that our three Imams and all these figures are in agreement that the strike is a pillar (rukn) of tayammum. Their disagreement is about the number of strikes and their limit—where to wipe on the hands: up to the wrists, or the elbows, or the armpits.

Imam Ali Isbijabi and Imam Faqih al-Nafs Qadi Khan denied that striking is a pillar of tayammum; this same school was adopted in Bazzaziyya, asserted in Nur al-Idah and Imdad al-Fattah, preferred in the commentary on Wahbaniyya, explicitly stated by Ibn Kamal, and the Muhaqqiq-e-Ala al-Itlaq (unrestricted investigator) verified it in Fath al-Qadir, and Hilya and Bahr followed them. They said: The demand of reasoning is that technically, the strike on the ground should not be considered within the meaning of tayammum's nomenclature, because in the Book of Allah, only the command for wiping is given. It is commanded: "Then aim for clean surface earth

and wipe your faces," and the saying of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) "Tayammum is two strikes" will either be interpreted that it is more general than two strikes on the ground or wiping twice on a limb and includes both, or it will be interpreted that the situation with a strike is found most often, so this saying was issued in consideration of describing the majority. And Allah Almighty knows best. (T)

[Footnote] 1. Fath al-Qadir, Chapter on Tayammum, published by Nooria Razawiyya Sukkur 1/110

फ़तावा रज़विया खंड 3

[अरबी पाठ स्तंभ] और अल-शाफ़ई, अल-ज़ुहरी, इब्न अबी लैला, इब्न सिरीन और अन्य, और उन सभी (के विवरणों) में यह है कि तयम्मुम (सूखा वज़ू) एक प्रहार (ज़रब), या दो प्रहार, या तीन प्रहार है। इससे हमारे तीनों इमामों और इन सभी हस्तियों की आम सहमति (इजमा) का पता चलता है कि प्रहार तयम्मुम का एक अनिवार्य स्तंभ (रुकन) है। वे केवल इसकी संख्या और हाथों पर इसके विस्तार की सीमा के बारे में असहमत थे - कलाई तक, या कोहनियों तक, या बगलों तक।

इमाम अली अल-इस्पिजाबी और इमाम फ़क़ीह अल-नफ़्स काज़ी ख़ान ने प्रहार के तयम्मुम का स्तंभ होने से इनकार किया। इसे अल-बज़्ज़ाज़िया में चुना गया था, और नूर अल-इदाह और अल-इमदाद में दृढ़ता से कहा गया था। इसे अल-वहबानिया की व्याख्या में प्राथमिकता दी गई, इब्न कमाल द्वारा स्पष्ट रूप से बताया गया, और अल-मुहक़्क़िक़ (अन्वेषक) ने अल-फतह में इसे प्रमाणित किया, जिसका अल-हिलिया और अल-बहर के लेखकों ने अनुसरण किया। क्योंकि उन्होंने कहा: "तर्क की मांग यही है कि कानूनी तौर पर तयम्मुम की परिभाषा में ज़मीन पर प्रहार को शामिल न किया जाए, क्योंकि अल्लाह की किताब (क़ुरआन) में केवल पोंछने (मसह) का आदेश दिया गया है। अल्लाह तआला का इरशाद है: '...पाक ज़मीन का इरादा करो और अपने चेहरों को मसह करो।' अतः नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का यह कथन, 'तयम्मुम दो प्रहार है,' या तो इस अर्थ में समझा जाएगा कि यह ज़मीन पर दो प्रहार या अंग पर दो बार मसह करने से अधिक व्यापक है और दोनों को शामिल करता है; या इसे इस तथ्य पर आधारित माना जाएगा कि प्रहार वाली स्थिति सबसे अधिक पाई जाती है, इसलिए यह बयान अधिकांश के विवरण के आधार पर जारी किया गया था। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।" [उद्धरण समाप्त]।

[उर्दू पाठ स्तंभ] इमाम शाफ़ई, ज़ुहरी, इब्न अबी लैला, इब्न सिरीन आदि के संप्रदायों (मज़ाहिब) का वर्णन किया गया। उन सभी में यह है कि तयम्मुम एक प्रहार है, या दो प्रहार है, या तीन प्रहार है। तो बताया गया कि हमारे तीनों इमामों और इन सभी महानुभावों का इस पर इजमा है कि प्रहार तयम्मुम का रुकन (स्तंभ) है। उनका मतभेद इस बारे में है कि प्रहार की संख्या और सीमा क्या है, हाथों पर कहाँ तक मसह करना है, कलाईयों तक, या कोहनियों तक, या बगलों तक।

इमाम अली इस्पिजाबी और इमाम फ़क़ीह अल-नफ़्स काज़ी ख़ान ने प्रहार के तयम्मुम का रुकन होने का इनकार किया, इसी मज़हब को बज़्ज़ाज़िया में अपनाया गया, इसी पर नूर अल-इदाह और इमदाद

अल-फ़त्ताह में ज़ोर दिया गया, इसी को शरह वहबानिया में वरीयता दी गई, इसी को इब्न कमाल ने स्पष्ट किया और मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने फतह अल-क़दीर में इसकी जाँच की और हिलिया व बहर में उनका अनुसरण किया गया। उन्होंने कहा: तर्क का तक़ाज़ा यही है कि शरीयत के अनुसार तयम्मुम के अर्थ में ज़मीन पर प्रहार का विचार न किया जाए, क्योंकि अल्लाह की किताब में तो केवल मसह का हुक्म दिया गया है। इरशाद है: "तो पाक सतह ज़मीन का कसद (इरादा) करके अपने चेहरों का मसह करो," और नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का इरशाद "तयम्मुम दो प्रहार है" या तो इस पर आधारित होगा कि यह ज़मीन पर दो प्रहार होने या अंग पर दो बार मसह होने से अधिक व्यापक (आम) है और दोनों ही को शामिल है, या इस पर आधारित होगा कि प्रहार वाली सूरत अक्सर पाई जाती है इसलिए यह इरशाद बयान-ए-अक्सर के लिहाज़ से आया है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

[फुटनोट] 1. फतह अल-क़दीर, तयम्मुम का अध्याय, नूरिया रज़विया सुक्कुर द्वारा मुद्रित 1/110

[عربی متن کا کالم] والشافعي والزهری وابن ابی لیلی وابن سیرین وغیرهم وفی جمیعها ان التیمم ضربة اوضربتان اوثلاث فافاد اجماع ائمتنا الثلثة وهؤلاء جمیعاً علی ان الضربة هی رکن التیمم انما اختلفوا في عدده ومبلغها فی الیدین الی الرسغین او المرفقین او الابطین- ونفاه الامام علی الاسبیجابی والامام فقیه النفس قاضیخان واختاره فی البزازیة وبه جزم فی نورالایضاح والامداد و رجحه فی شرح الوهبانیة ونص علیه ابن کمال وحققه المحقق فی الفتح وتبعه فی الحلیة والبحر اذ قال والذی یقتضیه النظر عدم اعتبار ضربة الارض من مسمّی التیمم شرعاً فان المأمور به المسح لیس غیر فی الکتاب قال تعالی فتیمموا صعیداً طیباً فامسحوا بوجوهکم فیحمل قوله صلی اللہ تعالی علیه وسلم التیمم ضربتان اما علی ارادة الاعم من المسحتین او انه خرج مخرج الغالب واللہ تعالی اعلم اهـ

[اردو متن کا کالم] امام شافعی، زہری، ابن ابی لیلیٰ، ابن سیرین وغیرہ ہم کے مذاہب بیان کیے۔ سب میں یہ ہے کہ تیمم ایک ضرب ہے، یا دو ضرب ہے، یا تین ضرب ہے۔ تو افادہ فرمایا کہ ہمارے تینوں ائمہ اور ان تمام حضرات کا اس پر اجماع ہے کہ ضرب تیمم کا رکن ہے۔ ان کا اختلاف ہے تو اس بارے میں کہ ضرب کی تعداد اور انتہا کیا ہے، ہاتھوں پر کہاں تک مسح کرنا ہے، گٹوں تک، یا کہنیوں تک، یا بغلوں تک۔

امام علی اسپیجابی اور امام فقیہ النفس قاضی خان نے ضرب کے رکن تیمم ہونے کا انکار کیا، اسی مذہب کو بزازیہ میں اختیار کیا، اسی پر نور الایضاح اور امداد الفتاح میں جزم کیا اسی کو شرح وہبانیہ میں ترجیح دی، اسی کی ابن کمال نے تصریح کی اور محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں اس کی تحقیق کی اور حلیہ و بحر میں ان کا اتباع کیا۔ انہوں نے فرمایا: نظر کا تقاضا یہی ہے کہ شرعاً تیمم کے معنیٰ مسمّٰی میں زمین پر ضرب کا اعتبار نہ ہو، اس لئے کہ کتاب اللہ میں تو صرف

مسح کا حکم دیا گیا ہے ارشاد ہے: "تو پاک سطح زمین کا قصد کرکے اپنے چہروں کا مسح کرو، اور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ارشاد "تیمم دو ضرب ہے" یا تو اس پر محمول ہوگا کہ یہ زمین پر دو ضرب ہونے یا عضو پر دو بار مسح ہونے سے اعم اور دونوں ہی کو شامل ہے، یا اس پر محمول ہوگا کہ ضرب والی صورت اکثر پائی جاتی ہے اس لئے یہ ارشاد بیانِ اکثر کے لحاظ سے وارد ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

[حاشیہ] 1 فتح القدیر، باب التیمم، مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۱۰

Fatawa-e-Razviya, Volume 3

They mentioned two results of the difference regarding whether striking (the earth) is a pillar (rukn) or not: One of them: If a person strikes their hands on the ground and then a 'hadath' (ritual impurity) occurs before wiping, it is not permissible to wipe with that strike according to the first opinion because it is a pillar. It becomes as if 'hadath' occurred during wudu after washing some limbs. It is stated in 'Al-Khulasah': "The more correct view is that he does not use that soil. This was chosen by the Shaykh, Imam Shams al-Aimma, just as if 'hadath' occurred in the middle of wudu." End of Quote. Qazi Asbijabi said: It is permissible, like one who fills his palms with water, then 'hadath' occurs, then he uses it. This was asserted in 'Al-Khaniyah' and 'Khazanat al-Muftin'. He said: "When he intends to perform tayammum, then strikes once, then 'hadath' occurs, then he wipes his face with that soil, then strikes again for the hands up to the elbows, it is permissible." End of Quote. In 'Al-Khulasah', this is attributed to some manuscripts of 'Al-Waqi'at'. And its correction is quoted in 'Jami' al-Rumuz' from 'Jami' al-Mudammarat', saying: "If 'hadath' occurs before wiping, the strike is not repeated according to the more correct opinion, as stated in 'Al-Mudammarat'." End of Quote. And it is stated in 'Al-Bahr al-Ra'iq'.

Two outcomes of the difference of opinion regarding whether the 'striking' is a pillar or not have been mentioned: One is that if a person strikes their hands on the ground and then a 'hadath' occurs before wiping, according to the first opinion, wiping with that strike will not be permissible. This is because the strike is a pillar, so it is as if 'hadath' occurred after washing some organs during wudu. It is in 'Al-Khulasah': "The most correct view is that he should not use that soil. Similarly, Imam Shams al-Aimma chose this, as if 'hadath' occurs during wudu." - End of Quote. And Qazi Asbijabi said that it is permissible, just as if someone filled their palms with water, then 'hadath' occurred, and then used that water. This is also asserted in 'Al-Khaniyah' and 'Khazanat al-Muftin'. It is stated: "When he intends for tayammum, then strikes once, then 'hadath' occurs, then he wipes his face with that soil, then strikes another blow for wiping the hands up to the elbows, it is permissible." - End of Quote. For this, 'Al-Khulasah' has cited some manuscripts of 'Al-Waqi'at'. And in 'Jami' al-Rumuz', its correction is quoted from 'Jami' al-Mudammarat', the statement is: "If 'hadath' occurred before wiping, then according to the most correct opinion, the

strike is not repeated, as it is in 'Al-Mudammarat'." - End of Quote. And 'Al-Bahr al-Ra'iq'.

1. Khulasat al-Fatawa, Chapter on Invalidating Tayammum, Naval Kishore Lucknow, 1/73.
2. Fath al-Qadir, Chapter on Tayammum, Sukkur, 1/110.
3. Fatawa Qazi Khan, Section on what Tayammum is not permissible with, Naval Kishore Lucknow, 1/30.
4. Jami' al-Rumuz, Chapter on Tayammum, Matba Karimia Qran, 1/28. Page 339 of 756

फतावा-ए-रजविया, जिल्द 3

'ज़रब' (जमीन पर हाथ मारना) के रुकन (आधारभूत अंग) होने या न होने के मतभेद के दो परिणाम बताए गए हैं: उनमें से एक: यदि किसी ने अपने हाथों को जमीन पर मारा और फिर मसह (पोंछने) से पहले 'हदस' (अशुद्धि) हो गई, तो पहले मत के अनुसार उस ज़रब से मसह जायज़ नहीं होगा क्योंकि यह एक रुकन है। यह वैसा ही हुआ जैसे वज़ू के दौरान कुछ अंगों को धोने के बाद हदस पेश आ जाए। 'अल-खुलासा' में कहा गया है: "सही यह है कि वह उस मिट्टी का उपयोग न करे। इमाम शम्सुल अइम्मा ने भी इसी को चुना है, जैसे कि वज़ू के बीच में हदस पेश आ जाए।" - उद्धरण समाप्त। क़ाज़ी अस्बीजाबी ने कहा: यह जायज़ है, जैसे कोई अपनी हथेलियों में पानी भर ले, फिर हदस हो जाए, फिर उसका उपयोग करे। इसी पर 'खानिया' और 'खज़ानतुल मुफ़्तीन' में यक़ीन जताया गया है। उन्होंने कहा: "जब उसने तयम्मुम का इरादा किया, फिर एक ज़रब मारी, फिर हदस हुआ, फिर उसी मिट्टी से अपने चेहरे का मसह किया, फिर हाथों के लिए कोहनियों तक दूसरी ज़रब मारी, तो यह जायज़ है।" - उद्धरण समाप्त। 'अल-खुलासा' में इसे 'अल-वाक़िआत' के कुछ नुस्ख़ों के हवाले से दर्ज किया गया है। और 'जामेउर रुमूज़' में 'जामेउल मुज़म्मरात' से इसकी तसहीह (पुष्टि) नक़्ल की गई है, इबारत यह है: "अगर मसह से पहले हदस हुआ तो सबसे सही कथन के अनुसार ज़रब को दोहराया नहीं जाएगा, जैसा कि 'मुज़म्मरात' में है।" - उद्धरण समाप्त। और 'अल-बह्रुर राइक़' में कहा गया है।

'ज़रब' के रुकन होने और न होने में मतभेद के दो नतीजे बताए गए हैं: एक यह कि अगर अपने हाथों को जमीन पर मारा फिर मसह करने से पहले हदस हुआ तो पहले कॉल (मत) पर उस ज़रब से मसह जायज़ न होगा, इसलिए कि ज़रब रुकन है तो ऐसा हुआ जैसे वज़ू के दौरान कुछ अंगों के धोने के बाद हदस हुआ। 'खुलासा' में है: "सबसे सही बात यह है कि उस मिट्टी को इस्तेमाल न करे। इसी को इमाम शम्सुल अइम्मा ने चुना जैसे दरमियान-ए-वज़ू अगर हदस पेश आए।" - उद्धरण समाप्त। और क़ाज़ी अस्बीजाबी ने फ़रमाया कि जायज़ है जैसे किसी ने हथेलियों में पानी भर लिया फिर हदस किया फिर उसी पानी को इस्तेमाल किया। इसी पर 'खानिया' और 'खज़ानतुल मुफ़्तीन' में यक़ीन जताया गया है। फ़रमाया: "जब तयम्मुम का इरादा किया फिर एक ज़रब मारी फिर हदस किया फिर उसी मिट्टी से अपने चेहरे का मसह किया, फिर दूसरी ज़रब कोहनियों तक हाथों के मसह के लिए मारी तो जायज़ है।" - उद्धरण समाप्त। इस पर 'खुलासा' में 'वाक़िआत' के कुछ नुस्ख़ों का हवाला दिया है। और 'जामेउर रुमूज़' में 'जामेउल मुज़म्मरात' से इसकी तसहीह नक़्ल की है, इबारत यह है:

"अगर मसह से पहले हदस किया तो कॉल-ए-असह (सबसे सही कथन) पर ज़रब का दोहराना नहीं जैसा कि 'मुज़म्मरात' में है।" - उद्धरण समाप्त। और 'अल-बह्रुर राइक़'।

1. खुलासातुल फतावा, तयम्मुम तोड़ने का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 1/73.
2. फ़तहुल क़दीर, तयम्मुम का अध्याय, सक्खर, 1/110.
3. फतावा क़ाज़ी ख़ान, तयम्मुम किन चीज़ों से जायज़ नहीं का अनुभाग, नवल किशोर लखनऊ, 1/30.
4. जामेउर रुमूज़, तयम्मुम का अध्याय, मतबा करीमिया क़रान, 1/28. पृष्ठ 339/756

وذکروا ثمرة الاختلاف شیئین: احدهما: لوضرب یدیه علی الارض فقبل ان یمسح احدث لا یجوز المسح بتلك الضربة علی القول الاول لانها رکن فصار کما لو احدث فی الوضوء بعد غسل بعض الاعضاء قال فی الخلاصة الاصح انه لا یستعمل ذلك التراب کذا اختاره الشیخ الامام شمس الائمة کما لو اعترض الحدث فی خلال الوضوء اهـ وقال القاضی السبیجابی یجوز کمن ملاء کفیه ماء فاحدث ثم استعمله وبه جزم فی الخانیة وخزانة المفتین قال اذا اراد ان یتیمم فضرب ضربة واحدة ثم احدث فمسح بذلك التراب وجهه ثم ضرب ضربة اخری للیدین الی المرفقین جاز اهـ وعزاه فی الخلاصة الی بعض نسخ الواقعات، ونقل تصحیحه فی جامع الرموز عن جامع المضمرات قائلاً لو احدث قبل المسح لم یعد الضرب علی الاصح کما فی المضمرات اهـ وقال فی البحر

ضرب کی رکنیت اور عدم رکنیت میں اختلاف کا ثمرہ دو باتیں بتائی گئی ہیں: ایک یہ کہ اگر اپنے ہاتھوں کو زمین پر مارا پھر مسح کرنے سے پہلے حدث کیا تو قولِ اوّل پر اس ضرب سے مسح جائز نہ ہوگا اس لئے کہ ضرب رکن ہے تو ایسا ہوا جیسے وضو کے دوران بعض اعضاء دھونے کے بعد حدث کیا خلاصہ میں ہے: "اصح یہ ہے کہ اس مٹی کو استعمال نہ کرے۔ اسی طرح اس کو امام شمس الائمہ نے اختیار کیا جیسے درمیانِ وضو اگر حدث عارض ہو " اھ اور قاضی اسبیجابی نے فرمایا کہ جائز ہے جیسے کسی نے ہتھیلیوں میں پانی بھر لیا پھر حدث کیا پھر اسی پانی کو استعمال کیا۔ اسی پر خانیہ اور خزانہ المفتین میں جزم کیا۔ فرمایا: "جب تیمم کا قصد کیا پھر ایک ضرب ماری پھر حدث کیا پھر اسی مٹی سے اپنے چہرے کا مسح کیا، پھر دوسری ضرب کہنیوں تک ہاتھوں کے مسح کیلئے ماری تو جائز ہے" اھ اس پر خلاصہ میں واقعات کے بعض نسخوں کا حوالہ دیا ہے۔ اور جامع الرموز میں جامع المضمرات سے اس کی تصحیح نقل کی ہے، عبارت یہ

ہے: "اگر مسح سے پہلے حدث کیا تو قول اصح پر ضرب کا اعادہ نہیں جیسا کہ مضمرات میں ہے اھ"۔ اور البحر الرائق

1 خلاصۃ الفتاوٰی جنس فی نقض التیمم نولکشور لکھنؤ ۱/ ۷۳ 2 فتح القدیر باب التیمم سکھر ۱/ ۱۱۰ 3 فتاوٰی قاضی خان فصل فیما لایجوز بہ التیمم نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۰ 4 جامع الرموز، باب التیمم، مطبعہ کریمیہ قران ۱/ ۲۸ Page 339 of 756

Fatawa Razawiya - Volume 3

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] It is stated: We have already mentioned that if one orders another to perform Tayammum for him, it is permissible provided the one giving the order makes the intention. If the appointee strikes his hand on the ground after the intention of the one giving the order, and then the one giving the order experiences a state of ritual impurity (hadath), it is said in 'At-Tawshih' that according to Abu Shuja's view, it should become void due to the impurity of the one who ordered it. In 'Al-Bahr', it is stated: The apparent meaning of this statement is that it will not be void due to the impurity of the appointee, because the appointee is merely a tool and a means, and his strike is the strike of the one who ordered. Therefore, the one who ordered is considered. This is why we stipulated the intention of the one who ordered, not the intention of the appointee.

Another consequence of the difference of opinion is that when the intention for Tayammum is made after striking the ground, those who consider the strike as a core pillar (rukn) did not validate the intention made after it. And those who do not consider it a core pillar validated the intention found after the strike. It is stated similarly in 'As-Siraj al-Wahhaj'. - Bahr.

There are many such specific details and subsidiary rulings in this place that support and testify to the second view (that the strike is not a core pillar). These are mentioned in reliable books without any indication of disagreement. Some details are presented here: Detail 1: In 'Fath al-Qadir' and 'Al-Bahr al-Ra'iq', etc.

[Left Column - Original Arabic Text] We have previously stated that (1) if someone orders another to perform Tayammum for them, it is permissible on the condition that the one ordering intends it. So, if the person being ordered strikes their hand on the earth after the intention of the one who ordered, and then the one who ordered experiences ritual impurity, it is said in 'Al-Tawshih' that it ought to be invalidated by the impurity of the one who ordered, according to the view of Abu Shuja. It is said in 'Al-Bahr': its apparent meaning is that it is not invalidated by the ritual impurity of the one who is ordered, as the one who is ordered is an instrument and their striking is the striking of the one who ordered. Thus, consideration is given to the one who ordered, and for this reason, we stipulated their intention and not the intention of the one who is ordered. (2)

The other [consequence] is when one intends after the strike. Whoever makes it a core pillar does not consider the intention after it, and whoever does not make it a core pillar considers it after it. Likewise in 'Al-Siraj al-Wahhaj'. (3) - Bahr.

And here are many secondary branches that testify to the second view, mentioned in the relied-upon texts without any indication of disagreement therein. Among them are those in 'Al-Fath', 'Al-Bahr', and others.

[Footnotes] 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/125 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/125 3. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/125

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] इसमें है: हम पहले ही बता चुके हैं कि यदि किसी दूसरे को आदेश दिया कि उसे तैयमुम करा दे, तो यह जायज़ है बशर्ते कि आदेश देने वाला नीयत (संकल्प) कर ले। तो यदि नियुक्त व्यक्ति ने आदेश देने वाले की नीयत के बाद ज़मीन पर अपना हाथ मारा और फिर आदेश देने वाले को 'हदस' (अशुद्धि) हो गई, तो 'अत-तौशीह' में कहा गया है कि अबू शुजा के कथन के अनुसार आदेश देने वाले की अशुद्धि से यह बातिल (अमान्य) हो जाना चाहिए। 'अल-बहर' में कहा गया है: इस इबारत का ज़ाहिर यह है कि नियुक्त व्यक्ति की अशुद्धि से बातिल नहीं होगा क्योंकि नियुक्त व्यक्ति एक साधन और जरिया है और उसका मारना (ज़मीन पर हाथ मारना) आदेश देने वाले का ही मारना है, इसलिए आदेश देने वाले का ही एतबार होगा। इसीलिए हमने आदेश देने वाले की नीयत की शर्त रखी, नियुक्त व्यक्ति की नीयत की शर्त नहीं लगाई।

मतभेद का दूसरा परिणाम यह होगा कि जब ज़मीन पर मारने के बाद तैयमुम की नीयत की गई, तो जिन लोगों ने मारने को रुकन (अनिवार्य अंग) माना है, उन्होंने उसके बाद की नीयत को मान्य नहीं माना। और जिन हज़रात ने इसे रुकन नहीं माना है, उन्होंने मारने के बाद पाई जाने वाली नीयत का एतबार किया है। 'अस-सिराज अल-वहाज' में ऐसा ही है। - बहर

इस स्थान पर ऐसे बहुत से जुज़ियात (विवरण) और फरूअ (शाखाएं) हैं जिनसे दूसरे कथन (मारने का रुकन न होना) की ताईद और गवाही मिलती है। ये विश्वसनीय किताबों में वर्णित हैं और किसी मतभेद का कोई संकेत भी नहीं है। कुछ विवरण यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं: जुज़िया १: फ़तहुल क़दीर और बहरुर राइक आदि में।

[बायां कॉलम - मूल अरबी पाठ] हमने पहले बताया है कि (१) यदि कोई दूसरे को आदेश देता है कि वह उसे तैयमुम कराए, तो यह जायज़ है बशर्ते कि आदेश देने वाला नीयत कर ले। यदि नियुक्त व्यक्ति ने आदेश देने वाले की नीयत के बाद ज़मीन पर हाथ मारा और फिर आदेश देने वाले को अशुद्धि हो गई, तो 'अत-तौशीह' में कहा गया है कि अबू शुजा के कथन के अनुसार यह आदेश देने वाले की अशुद्धि से बातिल हो जाना चाहिए। 'अल-बहर' में कहा गया है: इसका ज़ाहिर अर्थ यह है कि यह नियुक्त व्यक्ति की अशुद्धि से बातिल नहीं होगा क्योंकि नियुक्त व्यक्ति एक साधन है और उसका मारना आदेश देने वाले का मारना है। अतः आदेश देने वाले का ही एतबार होगा और इसी कारण हमने उसकी नीयत की शर्त रखी है, न कि नियुक्त व्यक्ति की नीयत की। (२)

दूसरा फल यह है कि जब प्रहार के बाद नीयत की जाए। जिसने इसे रुकन माना, उसने इसके बाद नीयत का एतबार नहीं किया, और जिसने इसे रुकन नहीं माना, उसने इसके बाद नीयत का एतबार किया। जैसा कि 'अस-सिराज अल-वहाज' में है। (३) - बहर।

और यहाँ बहुत सी शाखाएँ(उप-नियम) हैं जो दूसरे कथन की गवाही देती हैं, जो विश्वसनीय ग्रंथों में बिना किसी मतभेद के उल्लेखित हैं। उनमें से 'अल-फ़तह', 'अल-बहर' और अन्य में हैं।

[पाद टिप्पणियाँ] 1. अल-बहरुर राइक, बाबुत तैयमुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/125 2. अल-बहरुर राइक, बाबुत तैयमुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/125 3. अल-बहरुर राइक, बाबुत तैयमुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/125

[دائیں کالم کا متن] میں ہے: ہم پہلے بیان کرچکے کہ اگر دوسرے کو حکم دیا کہ اسے تیمم کرادے تو جائز ہے بشرطیکہ حکم دینے والا نیت کرلے۔ تو اگر مامور نے آمر کی نیت کے بعد زمین پر اپنا ہاتھ مارا پھر آمر کو حدث ہوا تو شیخ میں کہا ہے کہ اسے ابو شجاع کے قول پر آمر کے حدث سے باطل ہو جانا چاہئے اھ بحر میں فرمایا: اس عبارت کا ظاہر یہ ہوا کہ مامور کے حدث سے باطل نہ ہوگا اس لئے کہ مامور آلہ و ذریعہ ہے اور اس کی ضرب آمر ہی کی ضرب ہے تو اعتبار آمر کا ہوگا۔ اسی لئے ہم نے آمر (حکم دینے والے) کی نیت کی شرط رکھی۔ مامور کی نیت کی شرط نہ لگائی اھ دوسرا ثمرہ اختلاف یہ ہوگا کہ جب ضرب کے بعد تیمم کی نیت کی تو جن لوگوں نے ضرب کو رکن قرار دیا ہے انہوں نے بعد کی نیت کا اعتبار نہ کیا۔ اور جن حضرات نے اسے رکن نہیں مانا ہے انہوں نے ضرب کے بعد پائی جانے والی نیت کا اعتبار کیا ہے السراج الوہاج میں ایسا ہی ہے۔ بحر اس مقام پر ایسے بہت جزئیات وفروع ہیں جن سے قول دوم (عدم رکنیت ضرب) کی تائید اور شہادت حاصل ہوتی ہے۔ یہ معتمد کتابوں میں مذکور ہیں اور کسی اختلاف کا کوئی اشارہ بھی نہیں۔ کچھ جزئیات یہاں پیش کئے جاتے ہیں: جزئیہ ۱: فتح القدیر اور بحر الرائق و غیر ہما

[بائیں کالم کا متن] قد قدمنا انه (۱) لوامر غیرہ بان ییممہ جاز بشرط ان ینوی الامر فلو ضرب المامور یدہ علی الارض بعد نیة الامر ثم احدث الامر قال في التوشیح ینبغی ان یبطل بحدث الامر علی قول ابی شجاع ۱ اھ قال البحر وظاہرہ انه لا یبطل بحدث المأمور لما ان المأمور اٰلة وضربہ ضرب الامر فالعبرة للآمر ولہذا اشترطنا نیته لانیة المأمور ۲ اھ والآخر اذا نوی بعد الضرب فمن جعلہ رکنا

لم يعتبر النية بعده ومن لم يجعله ركنا اعتبرها بعده كذا فى السراج الوہاج ۳ بحر ۔ وہہنا فروع جمة تشہد للقول الثانى ذكرت فى المعتمدات من دون اشارة الى خلاف فيها : منها فى الفتح والبحر وغيرہما

[حواشى] 1 البحر الرائق باب التيمم ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ۱/ ۱۲۵ 2 البحر الرائق باب التيمم ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ۱/ ۱۲۵ 3 البحر الرائق باب التيمم ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ۱/ ۱۲۵

Volume 3

Fatawa Rizvia

(1) They [the scholars] have clarified that if the wind throws dust upon a person's face and hands, and they wipe them with the intention of performing Tayammum, it is sufficient. However, if they do not wipe them, it is not permissible [not valid]. This is mentioned in Fath al-Qadir. Then, in al-Zahiriyya and al-Hindiyya, it states: "If dust settles on the face and hands, and one wipes them while intending Tayammum, it is permissible. If they do not wipe, it is not." Similar guidance is found in al-Tabyin.

(2) Among these rulings, in al-Khaniya and al-Khulasa: "If one stands in the path of the wind or demolishes a wall, and dust settles on their face and arms, it is not sufficient until they wipe and intend Tayammum." In al-Durar: "If someone sweeps a house, demolishes a wall, or measures wheat, and dust settles on their face and arms, and they wipe it, it is valid. However, if they do not wipe, it is not valid." Allama Wazir stated in his book 'Idah' (a commentary on 'Islah'): "It is mentioned in Kitab al-Salat that if one sweeps a house, demolishes a wall, or measures wheat, and flying dust settles on the face and arms, it will not count as Tayammum until they pass their hand over it."

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nuriya Rizviya, Sukkur, 1/110. 2. Fatawa Hindiyya, Chapter Four on Tayammum, Peshawar, 1/27. 3. Khulasat al-Fatawa, Section on what is permitted for Tayammum, Naval Kishore, Lucknow, 1/36. 4. Durar al-Hukkam by Mulla Khusraw, Chapter of Tayammum, Matba' Kamilia, Beirut, 1/31. 5. Idah wa Islah.

Page 341 of 756

जिल्द 3

फ़तावा रज़विया

(1) विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि यदि हवा से किसी के चेहरे और हाथों पर धूल पड़ जाए, फिर उसने उन पर तैयमुम की नीयत से हाथ फेर लिया, तो यह पर्याप्त होगा। और यदि हाथ नहीं फेरा, तो तैयमुम जायज़ नहीं होगा। (फ़त्ह अल-क़दीर में)। अल-ज़हीरिया और फिर अल-हिन्दिया में है: "अगर चेहरे और हाथों पर धूल पड़ गई, फिर उस पर तैयमुम की नीयत से हाथ फेर लिया, तो तैयमुम हो जाएगा, और यदि मसह (पूंछा) नहीं किया तो नहीं होगा।" तबीइन में भी ऐसा ही है।

(2) इसी तरह अल-खनिया और अल-खुलासा में है: "अगर कोई हवा के रास्ते में खड़ा हो, या दीवार गिराई और धूल उसके चेहरे और हाथों पर लग गई, जब तक तैयमुम की नीयत से उस पर हाथ न फेरे, तैयमुम जायज़ नहीं होगा।" अल-दुरर में है: "घर में झाड़ू दी, या दीवार गिराई, या गेहूं मापा और चेहरे और हाथों पर धूल पड़ गई, उस पर हाथ फेर लिया तो तैयमुम हो गया, नहीं फेरा तो नहीं हुआ।"

और अल्लामा वज़ीर ने अपनी किताब 'इस्लाह' की व्याख्या 'ईदाह' में फ़रमाया: "किताब अस-सलात में उल्लेख है कि अगर घर में झाड़ू दी या दीवार गिराई या गेहूं मापा और उड़ती हुई धूल चेहरे और हाथों पर पड़ गई, जब तक उस पर हाथ न फेरे तैयमुम नहीं होगा।"

पादलेख: 1. फ़त्ह अल-क़दीर, तैयमुम का अध्याय, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/110। 2. फ़तावा हिन्दिया, तैयमुम का चौथा अध्याय, पेशावर, 1/27। 3. खुलासतुल फ़तावा, तैयमुम किन चीज़ों से जायज़ है, नवल किशोर, लखनऊ, 1/36। 4. दुररुल हुक्काम मुल्ला खुसरो, तैयमुम का अध्याय, मतबा कामिलिया, बेरूत, 1/31। 5. ईदाह वा इस्लाह।

पृष्ठ 341/756

جلد سوم

فتاویٰ رضویہ

(۱) صرحوا انه لو القت الريح الغبار على وجهه ويديه فمسح بنية التيمم اجزاء وان لم يمسح لايجوز[1] اھ وفی الظھیریة ثم الھندیة لواصاب الغبار وجهه ويديه فمسح به ناويًا للتيمّم يجوز وان لم يمسح لا[2] اھ ومثله فی التبیین۔ میں ہے : "علماء نے تصریح فرمائی ہے کہ اگر آندھی سے اس کے چہرے اور ہاتھوں پر غبار پڑ گیا پھر ان پر تیمم کی نیت سے ہاتھ پھیر لیا تو کافی ہو گا اور اگر ہاتھ نہ پھیرا تو تیمم نہ ہوگا"۔ اہ اور ظہیریہ پھر ہندیہ میں ہے: "اگر اس کے چہرے اور ہاتھوں پر غبار پڑ گیا پھر اس پر تیمم کی نیت سے ہاتھ پھیر لیا تو تیمم ہو جائے گا اور اگر مسح نہ کیا تو نہ ہوگا" اھ ایسا ہی تبیین میں بھی ہے

ومنها[3] فی (۲) الخانية والخلاصة لو قام فی مهب الريح اوهدم الحائط فاصاب الغبار وجهه وذراعيه لم يجز حتی يمسح وينوی به التيمّم[3] اھ وفی الدرر كنس دارا او هدم حائطًا اوكال حنطة فاصاب وجهه وذراعيه غبار فمسح جاز حتی اذا لم يمسح لم يجز[4] وقال العلامة الوزير فی ايضاح اصلاحہ قد ذكر فی كتاب الصلوٰة لو كنس دارا او هدم حائطًا اوكال حنطة فاصاب وجهه وذراعيه لم يجزه ذلك من التيمم حتی يمر يده عليه[5]۔ جزئیہ ۲: خانیہ اور خلاصہ میں ہے : "اگر آندھی کی گزرگاہ میں کھڑا ہوا، یا دیوار ڈھائی غبار اس کے چہرے اور ہاتھوں پر لگ گیا جب تک تیمم کی نیت سے اس پر ہاتھ نہ پھیرے تیمم نہ ہوگا" اھ دُرَر میں ہے: "گھر میں جھاڑو دیا، یا دیوار گرائی، یا گیہوں ناپا اس کے چہرے اور ہاتھوں پر غبار پڑ گیا اس پر ہاتھ پھیر لیا تو تیمم ہوگیا، نہ پھیرا تو نہ ہوا"۔ اور علامہ وزیر نے اپنی کتاب اصلاح کی شرح ایضاح میں فرمایا: "کتاب الصلوٰۃ میں ذکر ہے کہ اگر گھر

میں جھاڑو دیا یا دیوار گرائی یا گیہوں ناپا غبار اڑ کر چہرے اور ہاتھوں پر پڑ گیا جب تک اس پر ہاتھ نہ پھیرے تیمم نہ ہوگا" اھـ

1 فتح القدیر باب التیمم نوریه رضویه سکهر ۱/۱۱۰ 2 فتاوی هندیة الباب الرابع من التیمم پشاور ۱/ ۲۷ 3 خلاصة الفتاوی نوع فیما یجوز به التیمم نولکشور لکهنؤ ۱/ ۳۶ 4 درر حکام لملا خسرو باب التیمم مطبعہ کاملیہ بیروت ۳۱/۱ 5 ایضاح واصلاح

Fatawa Razawiyya (Volume 3)

Point 3: In Al-Khania, Al-Khulasa, At-Tatar-Khania, and Al-Hilya, it is stated: "If a person intends to perform Tayammum and rolls in the dust, rubbing it over their entire body; if the dust reaches the face, forearms, and palms, the Tayammum is valid. If it does not reach the face and forearms, it is not valid."

Point 4: In Al-Khulasa, it is stated: "If one places their head (and both hands) into a dusty place with the intention of Tayammum (causing dust to spread over the face and hands), the Tayammum will be valid."

Point 5: In the same book, it is stated: "If a wall collapses and dust rises, and one moves their head within it with the intention of Tayammum, then Tayammum is valid. The condition is that the action must proceed from the person performing Tayammum."

Point 6: In the same book, Al-Khania, and Khazanat-ul-Muftin, it is stated: "If a person sprinkles dust on their face, Tayammum will not be valid. However, if the dust is still on the face and one wipes it with the intention of Tayammum, it will be valid according to Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him)." And it will also be valid according to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him). Imam Yusuf (may Allah have mercy on him) disagrees; according to him, Tayammum with dust is not permissible if one has the ability to perform it using the surface of the earth.

(Footnotes): 1. Khulasa-tul-Fatawa, Method of Tayammum, Nawal Kishore Lucknow, 1/35. 2. Khulasa-tul-Fatawa, Types of things permissible for Tayammum, Nawal Kishore Lucknow, 1/36. 3. Khulasa-tul-Fatawa, Types of things permissible for Tayammum, Nawal Kishore Lucknow, 1/36. 4. Khulasa-tul-Fatawa, Types of things permissible for Tayammum, Nawal Kishore Lucknow, 1/36.

फ़तावा रज़विया (जिल्द 3)

नुक्ता 3: अल-खानिया, अल-खुलसा, अत-ततारखनिया और अल-हिलिया में लिखा है: "जब कोई तयम्मुम का इरादा करके धूल में लोट-पोट हो जाए और उसे अपने पूरे शरीर पर मल ले, तो अगर धूल चेहरे, कलाइयों और हथेलियों तक पहुँच जाए, तो तयम्मुम जायज़ है। और अगर धूल चेहरे और कलाइयों तक न पहुँचे, तो जायज़ नहीं है।"

नुक्ता 4: खुलसा में है: "अगर कोई अपना सिर (और दोनों हाथ) तयम्मुम की नीयत से धूल वाली जगह में डाले (जिससे चेहरे और हाथों पर धूल फैल जाए), तो तयम्मुम हो जाएगा।"

नुक्ता 5: उसी में है: "अगर दीवार ढह जाए और धूल उड़ने लगे, और कोई उसमें तयम्मुम की नीयत से अपना सिर हिलाए, तो तयम्मुम हो जाएगा। शर्त यह है कि तयम्मुम करने वाले की ओर से क्रिया (एक्शन) होनी चाहिए।"

नुक्ता 6: उसी में, खानिया और खज़ानत-उल-मुफ़्तीं में है: "अगर किसी व्यक्ति ने अपने चेहरे पर धूल छिड़की, तो तयम्मुम नहीं होगा। लेकिन, अगर धूल अभी चेहरे पर ही है और उसने तयम्मुम की नीयत से उस पर हाथ फेर लिया, तो इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के नज़दीक तयम्मुम हो जाएगा।" और इमाम मोहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) के नज़दीक भी हो जाएगा। इमाम यूसुफ़ (रहमतुल्लाहि अलैहि) का इससे इख़्तिलाफ़ (असहमति) है; उनके नज़दीक सतह-ए-ज़मीन (मिट्टी) पर कुदरत होने की सूरत में धूल से तयम्मुम जायज़ नहीं है।

(फुटनोट्स): 1. खुलसा-तुल-फ़तावा, कैफ़ियत-ए-तयम्मुम, नवल किशोर लखनऊ, 1/35. 2. खुलसा-तुल-फ़तावा, जिन चीज़ों से तयम्मुम जायज़ है, नवल किशोर लखनऊ, 1/36. 3. खुलसा-तुल-फ़तावा, जिन चीज़ों से तयम्मुम जायज़ है, नवल किशोर लखनऊ, 1/36. 4. खुलसा-तुल-फ़तावा, जिन चीज़ों से तयम्मुम जायज़ है, नवल किशोर लखनऊ, 1/36.

पृष्ठ 342 / 756

ومنها ١ فی الخانیة والخلاصة والتاتارخانیة والحلیة (١) اذا اراد التیمم فتمعک فی التراب وذلک بجسده کله ان کان التراب اصاب وجهه وذراعیه وکفیه جاز وان لم یصب وجهه وذراعیه لم یجز ١۔ جزئیہ ٣ : خانیہ، خلاصہ، تاتارخانیہ اور حلیہ میں ہے: "جب تیمم کا ارادہ کرکے خاک میں لوٹا اور اس سے سارے جسم کو ملا، اگر چہرے، کلائیوں اور ہتھیلیوں پر مٹی پہنچ گئی تو تیمم ہوگیا اور چہرے اور کلائیوں پر نہ پہنچی تو نہ ہوا" اھ

ومنها ٢ فی (٢) الخلاصة لوادخل راسه فی موضع الغبار بنیة التیمم یجوز ٢۔ جزئیہ ۴: خلاصہ میں ہے: " کسی غبار کی جگہ اپنا سر (اور دونوں ہاتھ) تیمم کی نیت سے داخل کیا (جس سے منہ اور ہاتھوں پر غبار پھیل گیا) تو تیمم ہوجائے گا"۔

ومنها ٣ (٣) فیها لو انهدم الحائط فظهر الغبار فحرک راسه ینوی التیمم جاز والشرط وجود الفعل منه ٣۔ جزئیہ ۵ : اسی میں ہے: "اگر دیوار گری جس سے گرد اُٹھی اس میں اپنے سر کو تیمم کی نیت سے حرکت دی تو تیمم ہوگیا۔ تیمم کرنے والے سے فعل کا وجود شرط ہے۔"

ومنها ۴ (۴) فیها وفی الخانیة وخزانة المفتین لو ذر الرجل علی وجهه تراباً لم یجز وان مسح ینوی به التیمم والغبار علیه جاز عند ابی حنیفة رضی الله عنه ۴ اه ای ومحمد خلافا لابی یوسف رحمهما الله تعالی فانه لایجیز التیمم بالغبار مع القدرة علی الصعید ۔ جزئیہ ۶: اس میں اور خانیہ و خزانۃ المفتین میں ہے: " اگر آدمی نے اپنے چہرے پر مٹی گرائی تو تیمم نہ ہوگا اور غبار چہرے پر ابھی پڑا ہے بہ نیت تیمم ہاتھ پھیر لیا تو امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک تیمم ہوجائے گا"۔ اور امام محمد رحمۃ اللہ علیہ کے یہاں بھی ہوجائے گا امام یوسف رحمۃ اللہ علیہ کا اختلاف ہے ان کے نزدیک سطح زمین سے تیمم پر قدرت ہوتے ہوئے

(فٹ نوٹ): 1 خلاصة الفتاوی کیفیت التیمم نولکشور لکهنؤ ۱/ ۳۵ 2 خلاصة الفتاوی نوع فیما یجوز بہ التیمم نولکشور لکهنؤ ۱/ ۳۶ 3 خلاصة الفتاوی نوع فیما یجوز بہ التیمم نولکشور لکهنؤ ۱/ ۳۶ 4 خلاصة الفتاوی نوع فیما یجوز بہ التیمم نولکشور لکهنؤ ۱/ ۳۶

Fatawa Ridawiyya - Volume 3

(Arabic Text on Left Column): In "Al-Jawharah al-Nayyarah", his saying "wipes" (yamsahu) is an indication that if dust is sprinkled on the face and one does not wipe it, it is not permissible. It is stated in "Al-Idah" that it is not permissible. [1] End. Among them are two sub-issues from "Wajiz al-Imam al-Kardari": (1) One sprinkled dust on the area and its dust hit it, or (2) one entered the area into a place where dust was rising, and it reached it through the movement of the area; this is permissible. But not if one stood in the wind's path and the dust rose onto the area by itself, unless one wipes the area with this dust. [2] End. I say: His saying "and it reached it through the movement of the area" relates to both issues of sprinkling and entering. Thus, the meaning is: he sprinkled and its dust hit him, then he moved [his limb] intending Tayammum, so it is permissible because of the presence of action from him, as stated in its source, "Al-Khulasah" (3), that the condition is the presence of the act from him. He indicated this by saying, "not if the dust rose onto the area by itself," having already mentioned before it...

(Urdu Text on Right Column): Performing Tayammum with dust [falling on the body without wiping] is not permissible. In "Jawharah Nayyarah" it is written: "The statement 'wipes' (his phrase 'passes the hand') indicates that if dust is blown onto the face and the hand is not passed over it, Tayammum will not be valid. A clear statement of non-permissibility is also present in 'Al-Idah'." End. Details 7, 8: In "Wajiz Imam Kardari", there are two details: "One blew dust onto the place of Tayammum, the dust fell on it; or one took the parts of Tayammum to the place where dust was blowing and by moving those limbs, dust reached them, then Tayammum will be valid. But if one stood in front of a storm in such a way that the dust blew itself onto the limbs of Tayammum, it will not be valid, unless one passes the hand over the place of Tayammum along with that dust, then it will be valid." End. I say: His phrase "dust reached them by moving the limbs" relates to both issues: blowing dust and entering the limbs of Tayammum into the place where dust is blown. So the meaning is that one blew dust so that it hit, then moved the limbs of Tayammum with the intention of Tayammum, then Tayammum will be valid because his own action was found. As stated in its source 'Khulasah', it is a condition that the act must be performed by the person himself. The author of 'Wajiz' has also indicated this with these words: "If the dust flew by itself and reached the limbs of Tayammum, it will not be valid." And from this...

Footnotes: 1. Al-Jawharah al-Nayyarah, Chapter on Tayammum, Maktabah Imdadiyah Multan, 1/25 2. Fatawa Bazzaziyah with al-Hindiyyah, Chapter on Tayammum, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/17

(बाएं कॉलम पर अरबी पाठ): "अल-जौहरा अल-नय्यरा" में उनका कहना "मसह करता है" (यम्सहु) इस बात की ओर इशारा है कि अगर चेहरे पर धूल छिड़की गई और मसह नहीं किया गया तो यह जायज़ नहीं होगा। "अल-ईदाह" में भी इसके जायज़ न होने की स्पष्ट व्याख्या मौजूद है। [1] समाप्त। इमाम करदरी की "वजीज" में दो उप-मसले हैं: (1) किसी ने जगह पर धूल छिड़की और उसकी गर्द उस पर लग गई, या (2) किसी ने उस जगह को धूल उड़ने वाली जगह पर दाखिल किया और उस जगह की हरकत से गर्द वहाँ तक पहुँच गई; तो यह जायज़ है। लेकिन अगर कोई हवा के रास्ते में खड़ा हो गया और धूल खुद-ब-खुद उस जगह पर उड़कर आ गई, तो यह जायज़ नहीं होगा, जब तक कि वह उस गर्द के साथ उस जगह का मसह न कर ले। [2] समाप्त। मैं कहता हूँ: उनका यह कहना "और जगह की हरकत से वहाँ तक पहुँच गई" धूल छिड़कने और दाखिल करने, दोनों मसलों से संबंधित है। तो मतलब यह हुआ कि धूल छिड़की गई और उसकी गर्द उसे लगी, फिर उसने तयम्मुम की नीयत से अंगों को हरकत दी, तो तयम्मुम हो जाएगा क्योंकि इसमें उसका अपना काम शामिल है। जैसा कि इसके स्रोत "अल-खुलासा" (3) में स्पष्ट किया गया है कि शर्त यह है कि काम स्वयं व्यक्ति द्वारा किया गया हो। "वजीज" के लेखक ने भी इन शब्दों के साथ इसकी ओर इशारा किया है कि "अगर धूल खुद उड़कर तयम्मुम के अंगों तक पहुँची, तो यह नहीं होगा," और इससे...

(दाहिने कॉलम पर उर्दू पाठ): गर्द से तयम्मुम जायज़ नहीं। "जौहरा नय्यरा" में है: "उनका कहना 'मसह' (उनका वाक्यांश 'हाथ फेरे') में यह इशारा है कि अगर चेहरे पर गर्द उड़ाई गई और हाथ नहीं फेरा तो तयम्मुम नहीं होगा, और 'ईदाह' में इसके जायज़ न होने की स्पष्ट व्याख्या भी मौजूद है।" समाप्त। जुज़िया 7, 8: वजीज इमाम करदरी में दो जुज़िए हैं: "तयम्मुम की जगह पर गर्द उड़ाई, धूल उस पर गिरी, तयम्मुम के अंगों को गर्द उड़ाने की जगह ले गया और उन अंगों को हरकत देने से उन पर गर्द पहुँच गई तो तयम्मुम हो जाएगा। लेकिन अगर आंधी के सामने इस तरह खड़ा हुआ कि गर्द खुद उड़कर तयम्मुम के अंगों पर पहुँची तो तयम्मुम नहीं होगा, सिवाय इसके कि उस गर्द के साथ तयम्मुम की जगह पर हाथ फेर लिया जाए तो हो जाएगा।" समाप्त। मैं कहता हूँ: उनका वाक्यांश "अंगों को हरकत देने से उन पर गर्द पहुँच गई" गर्द उड़ाने, और गर्द उड़ाने की जगह तयम्मुम के अंगों को दाखिल करने, दोनों ही मसलों से संबंधित है। तो मतलब यह हुआ कि गर्द उड़ाई गई कि धूल उसे लगी, फिर तयम्मुम के अंगों को तयम्मुम की नीयत से हरकत दी तो तयम्मुम हो जाएगा क्योंकि उसका अपना काम पाया गया। जैसा कि इसके स्रोत 'खुलासा' में स्पष्ट है कि खुद उससे काम

पाया जाना शर्त है। 'वजीज' के लेखक ने भी इन शब्दों से इसकी ओर इशारा किया है कि "अगर गर्द खुद से उड़कर तयम्मुम के अंगों पर पहुँची तो नहीं होगा" और इससे...

फुटनोट: 1. जौहरा नय्यरा, बाब-उत-तयम्मुम, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 1/25 2. फ़तावा बज़ज़िया मअल हिन्दिया, बाब-उत-तयम्मुम, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/17

(بائیں کالم میں عربی متن): وفی الجوهرة النيرة قوله يمسح اشارة الى انه لوذر التراب على وجهه ولم يمسحه لم يجز وقد نص عليه في الايضاح انه لايجوز ١ اه ومنها ومنها فرعان فی وجیز الامام الكردرى (١) ذر على المحل التراب فاصابه غباره او (٢) ادخل المحل فی مثار الغبار فوصل بتحريك المحل جاز لا ان وقف فی المهب فثار الغبار على المحل بنفسه الا ان يمسح بهذا الغبار المحل ٢ اه اقول: قوله فوصل بتحريك المحل متعلق بكلتا مسئلتی الذر والادخال فالمعنى ذرفأصابه غباره فحرك ينوی التيمم جاز لوجود الصنع منه كمانص عليه فی مأخذه الخلاصة (٣) ان الشرط وجود الفعل منه واشار هو اليه بقوله لاان ثار الغبار على المحل بنفسه وقد قدم قبله

(دائیں کالم میں اردو متن): غبار سے تیمم جائز نہیں۔ جوہرہ نیرہ میں ہے: "قولہ یمسح (ان کی عبارت 'ہاتھ پھیرے') میں یہ اشارہ ہے کہ اگر چہرے پر گرد اڑائی اور ہاتھ نہ پھیرا تو تیمم نہ ہوگا، اور ایضاح میں عدم جواز کی تصریح بھی موجود ہے" اھ جزئیہ ۷، ۸: وجیز امام کردری میں دو جزئیے ہیں: "محل تیمم پر گرد اڑائی، غبار اس پر گرایا اعضائے تیمم کو غبار اڑانے کی جگہ لے گیا اور ان اعضاء کو حرکت دینے سے ان پر گرد پہنچ گئی تو تیمم ہوجائے گا۔ لیکن اگر آندھی کے سامنے اس طرح کھڑا ہوا کہ غبار خود اڑ کر اعضائے تیمم پر پہنچا تو تیمم نہ ہوگا مگر اس گرد کے ساتھ محل تیمم پر ہاتھ پھیر لیا تو ہوجائے گا" اھ اقول: ان کی عبارت "اعضا کو حرکت دینے سے ان پر گرد پہنچ گئی" گرد اڑانے، اور گرد اڑانے کی جگہ اعضائے تیمم کو داخل کرنے دونوں ہی مسئلوں سے متعلق ہے۔ تو معنی یہ ہوا کہ گرد اڑائی کہ غبار اسے لگا پھر اعضائے تیمم کو بہ نیت تیمم حرکت دی تو تیمم ہوجائے گا کیونکہ خود اس کا عمل پالیا گیا۔ جیسا کہ اس کے ماخذ خلاصہ میں تصریح موجود ہے کہ خود اس سے فعل پایا جانا شرط ہے۔ صاحب وجیز نے بھی

اس کی طرف ان الفاظ سے اشارہ کیا ہے کہ "اگر غبار خود سے اڑ کر اعضائے تیمم پر پہنچا تو نہ ہوگا" اور اس سے

حواشی: 1 جوہرہ نیرہ باب التیمم مکتبہ امدادیہ ملتان ۲۵/۱ 2 فتاویٰ بزازیہ مع الہندیہ باب التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۱۷/۴

Fatawa Razawiya - Volume 3

[Arabic Text Translation:] The condition for its realization is a specific act from the person in bringing the dust to its place with intention; if both or one of them is missing, it is not realized. Mere scattering is not the required act, just as going near the stirred-up dust and standing there with the intention of Tayammum is not the required act. This is because this action is a remote cause for the arrival of the dust to its place. What is commanded is wiping (Masah), which is an act in itself that achieves the delivery and contact between the limb and the earth surface. And since standing in the stirred dust is not considered unless the limb is moved with the intention of Tayammum, because the dust reaches the limb by itself due to its natural downward inclination, scattering will not be considered a fortiori, as we have previously mentioned the specific text from authoritative sources. So understand and be firm. It remains that the sub-issue of placing the limb in the place of dust is absolute in Al-Khulasa, while Al-Bazzazi restricted it by reaching through the movement of the limb. The sub-issue of scattering is mentioned in books with the condition of wiping, and Al-Bazzazi replaced it with movement. Soon the intention of these speeches will be revealed to you, if Allah Almighty wills, and its reasoned fruit will be placed within reach. From this, it will appear that we made the two parts mentioned in Bazzaziya distinct from the sixth and fourth branches.

[Urdu Text Translation:] We have mentioned before that "For Tayammum to be realized, it is a condition that one's own specific action of reaching the dust to the place of Tayammum exists along with intention. If both things are absent or one is absent, Tayammum will not be valid." And merely scattering is not the required act, just as going to a place where dust is flying and staying there with the intention of Tayammum is not the required act. This is because this action is a remote cause for the dust to reach the place of Tayammum. And the action commanded is wiping; it is such an action that through it, the delivery of dust and the connection between the limb and the earth surface is realized. And when, with the intention of Tayammum, without moving the limb, standing in the place of dust is not considered valid. Because dust reaches the limb by its natural inclination downwards. So, scattering dust will certainly not be considered. As we have already quoted its clarification from multiple books. So understand and stay firm. It remains that the issue of entering the limbs into the place of dust is general in 'Khulasa' and in 'Bazzaziya' it is restricted by the movement of limbs for the dust to reach. And the issue of scattering dust is mentioned in books with the condition of wiping and in 'Bazzaziya' instead of wiping,

movement is mentioned. Soon the intent of these words will be revealed and the fruit chosen from them will be placed by the side of the path; from this, it will also be apparent that we have listed the two parts mentioned in Bazzaziya as sixth and fourth.

[Footnote:] 1. Fatawa Bazzaziya with Al-Hindia, Chapter of Tayammum, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/47.

[अरबी पाठ का अनुवाद:] इसकी सिद्धि की शर्त यह है कि नीयत के साथ मिट्टी को उसके स्थान तक पहुँचाने का एक विशेष कार्य स्वयं किया जाए। यदि ये दोनों या इनमें से कोई एक न हो, तो तयम्मुम नहीं होगा। केवल मिट्टी उड़ाना वह अपेक्षित कार्य नहीं है, जैसे धूल उड़ने वाली जगह पर जाना और वहां तयम्मुम की नीयत से खड़ा होना वह अपेक्षित कार्य नहीं है। क्योंकि यह कार्य मिट्टी के स्थान तक पहुँचने का एक दूर का कारण है। और जिसे करने का आदेश दिया गया है वह 'मसाह' (पोंछना) है, यह ऐसा कार्य है जिससे स्वयं मिट्टी का पहुँचना और अंग तथा पृथ्वी की सतह के बीच संपर्क सिद्ध होता है। और जब तयम्मुम की नीयत से अंग को हिलाए बिना केवल धूल वाली जगह पर खड़े होने का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि धूल अपने स्वाभाविक झुकाव के कारण स्वयं ही अंग तक पहुँचती है। तो धूल उड़ाने का महत्व तो और भी कम होगा, जैसा कि हम पहले ही कई विश्वसनीय पुस्तकों से स्पष्ट कर चुके हैं। तो इसे समझें और दृढ़ रहें। रही बात धूल वाली जगह पर तयम्मुम के अंगों को ले जाने की, तो यह मसला 'खुलासा' में सामान्य है और 'बज़ाज़िया' में इसे अंग हिलाकर धूल पहुँचाने की शर्त के साथ सीमित किया गया है। और धूल उड़ाने का मसला पुस्तकों में मसाह की शर्त के साथ वर्णित है और 'बज़ाज़िया' में मसाह के बदले हरकत (हिलना-डुलना) का उल्लेख है। तो जल्द ही इन बातों का उद्देश्य स्पष्ट हो जाएगा, यदि अल्लाह ने चाहा, और इसका निष्कर्ष मार्ग के किनारे रख दिया जाएगा। इससे यह भी स्पष्ट होगा कि हमने 'बज़ाज़िया' में वर्णित दोनों अंशों को छठा और चौथा उप-भाग बनाया है।

[उर्दू पाठ का अनुवाद:] पहले भी बता चुके हैं कि "तयम्मुम सिद्ध होने के लिए तयम्मुम के स्थान तक मिट्टी पहुँचने में नीयत के साथ स्वयं का विशेष कार्य पाया जाना शर्त है। यदि दोनों चीजें न हों या एक न हो तो तयम्मुम नहीं होगा।" और केवल उड़ाना वह अपेक्षित कार्य नहीं है, जैसे धूल उड़ने की जगह जाना और वहां तयम्मुम की नीयत से ठहरना वह अपेक्षित कार्य नहीं है। इसलिए कि यह कार्य, तयम्मुम के स्थान तक मिट्टी पहुँचने का एक दूर का कारण है। और उसे जिस कार्य का आदेश दिया गया है वह 'मसाह' है, यह ऐसा कार्य है कि स्वयं उसी से मिट्टी पहुँचाना, और अंग तथा पृथ्वी की सतह के बीच संपर्क सिद्ध होता है। और जब तयम्मुम की नीयत से अंग को हिलाए बिना, धूल की जगह केवल खड़े होने का महत्व नहीं है। क्योंकि धूल नीचे की ओर अपने स्वाभाविक झुकाव के कारण स्वयं ही अंग तक पहुँचती है। तो धूल उड़ाने का महत्व तो और भी कम होगा। जैसा कि हम कई पुस्तकों से इसका स्पष्टीकरण पहले उद्धृत कर चुके हैं। तो समझें और दृढ़ रहें। यह रह गया कि

धूल की जगह तयम्मुम के अंगों को ले जाने का मसला 'खुलासा' में सामान्य है और 'बज़ाज़िया' में अंगों को हिलाने से धूल पहुँचने की शर्त के साथ सीमित है। और धूल उड़ाने वाला मसला पुस्तकों में मसाह की शर्त के साथ वर्णित है और 'बज़ाज़िया' में मसाह के बदले हरकत का उल्लेख है। तो जल्द ही इन बातों का उद्देश्य स्पष्ट होगा और उनसे चुना हुआ फल मार्ग के किनारे रख दिया जाएगा; इससे यह भी स्पष्ट होगा कि हमने बज़ाज़िया में वर्णित दोनों अंशों को छठे और चौथे के रूप में सूचीबद्ध किया है।

[पाद टिप्पणी:] 1. फ़तावा बज़ाज़िया मय अल-हिंदिया, तयम्मुम का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/47।

पृष्ठ 344/756

فتاوی رضویہ - جلد سوم

[عربی متن:] ان الشرط فی تحققه صنع منه خاص فی وصول التراب الی محله بالنیة و ان عدما او احدهما لا اه و مجرد الذر لیس ذلك الصنع المطلوب کما لیس به الذهاب الی قرب المثار والوقوف عنده بنیة التیمم فان هذا الفعل سبب بعید لوصول التراب الی المحل والمأموربه هو المسح وهو فعل بنفسه یقع الایصال والاتصال بین العضو والصعید واذ الوقوف فی المثار لم یعتبر مالم یحرك عضوه بنیة التیمم فان الغبار انما یصل الی العضو بنفسه بمیله الطبعی الی السفل فلا یعتبر الذر بالاولی کما قدمنا التنصیص به عن المعتمدات فافهم وتثبت.بقی ان فرع ادخال المحل موضع الغبار مطلق فی الخلاصة وقیده البزازی بالوصول بتحریك المحل وفرع الذر مذکور فی الکتب بأشتراط المسح وابدله البزازی بالتحریك فیکشف لك أنفا ان شاء الله تعالی منا شیئ الکلام ویوضع جناه المعلل علی طرف الثمام وبه یظهر جعلنا فرعی البزازیة غیر السادس والرابع

[اردو متن:] پہلے بھی بتا چکے ہیں۔ کہ "تیمم متحقق ہونے کے لئے محل تیمم تک مٹی پہنچنے میں نیت کے ساتھ خود اس کا خاص عمل پایا جانا شرط ہے۔ اگر دونوں چیزیں نہ ہوں یا ایک نہ ہو تو تیمم نہ ہو گا" اھ اور صرف اڑانا وہ فعل مطلوب نہیں، جیسے غبار اڑنے کی جگہ جانا اور وہاں تیمم کی نیت سے ٹھہرنا وہ فعل مطلوب نہیں۔ اس لئے کہ یہ عمل، محل تیمم تک مٹی پہنچنے کا سبب بعید ہے۔ اور اسے جس فعل کا حکم دیا گیا ہے وہ مسح ہے، یہ ایسا فعل ہے کہ خود اسی سے مٹی کا پہنچانا، اور عضو وصعید کے درمیان اتصال متحقق ہوتا ہے۔ اور جب بہ نیت تیمم عضو کو حرکت دیے بغیر، غبار کی جگہ صرف کھڑے ہونے کا اعتبار نہیں۔ کیونکہ غبار نیچے کی جانب اپنے میل طبعی کے باعث از خود عضو تک پہنچتا ہے۔ تو غبار اڑانے کا اعتبار بدرجہ اولی نہ ہو گا۔ جیسا کہ متعدد کتابوں سے ہم اس کی تصریح پہلے نقل کر چکے۔ تو سمجھو اور ثابت رہو۔ یہ رہ

گیا کہ غبار کی جگہ اعضائے تیمم کو داخل کرنے کا مسئلہ خلاصہ میں مطلق ہے اور بزازیہ میں اعضائے تیمم کو حرکت دینے سے گرد پہنچنے کی قید سے مقید ہے۔ اور گرد اڑانے والا مسئلہ کتابوں میں مسح کی شرط کے ساتھ مذکور ہے اور بزازیہ میں مسح کے بدلے حرکت دینے کا ذکر ہے۔ تو عنقریب ان کلاموں کا منشا منکشف ہوگا اور ان سے چنا ہوا پھل سر راہ رکھ دیا جائے گا اس سے یہ بھی ظاہر ہوگا کہ ہم نے بزازیہ میں ذکر شدہ دونوں جزیئے چھٹے اور چوتھے

[حاشیہ:] ۱ فتاوی بزازیہ مع الھندیہ باب التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۴۷

Fatawa-e-Razviya, Volume 3 And success is from Allah. I say: (1) The invalidity of what was mentioned by the learned Abdul Halim al-Rumi in Hashiyah al-Durar has become clear, as he said after quoting from al-Khulasah that "the condition is that an action originates from him," which he phrased as follows: "I say: It appears from this that if someone measured wheat so that tayammum could be performed with its dust, it would suffice if the dust reached the parts for tayammum, as is not hidden." ^{1} Thus, he changed the text of al-Durar, which says "if he does not wipe, it is not permissible," into meaning "if he does not wipe when no action with the intention of tayammum has originated from him, and the sprinkling on the limbs is not considered valid as long as he does not wipe or move his limbs," and so on.

Note: If you say it is an interpretation (ta'wil) and not an alteration (tahwil). I say: Not at all; if he had intended to follow this path in the commentary, he would have said: "By mentioning wiping, he pointed towards every action that is performed with the intention of tayammum." He would not have assumed a restriction within the text for which there is no trace or indication in the words. So understand this. (M)

How were the sub-rules counted separately? And success is from Allah. I say: The error in what the learned Abdul Halim Rumi wrote in Hashiyah Durar after quoting the phrase from Khulasah "the occurrence of an action from him is a condition" has become apparent. His phrase is: "I say: From this it appears that if he measured wheat so that tayammum could be performed with its dust, it would be sufficient if dust reached the areas of tayammum. This is not hidden." For this reason, Fazil Rumi diverted the phrase of Durar "if he did not wipe, tayammum is not valid" from its original meaning and made it: "The meaning is that in the case where no action is found from him with the intention of tayammum, when the hand is not rubbed (then tayammum is not valid)". Spreading dust on the limbs is not reliable until the hands are rubbed or the limbs are...

If it is said that (this phrase of Durar is) an interpretation (ta'wil), not a transformation (tahwil - turning from the original meaning to another meaning). I say: Absolutely not. If he wanted to run the commentary on this path, he would say: "The author, by mentioning 'wiping', has pointed towards every action that is found from him with the intention of tayammum." He would not have done such a thing as to assume a

restriction in their speech for which there is neither a sign nor an indication in their speech. So understand. (T)

1. Hashiyah al-Durar by Mawla Abdul Halim, Chapter on Tayammum, Uthmaniyya Printing Press, Beirut, 1/72. Page 345 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 3 व-बिल्लाहित-तौफ़ीक़। (और सफलता अल्लाह से है।) मैं कहता हूँ: (1) फाज़िल अब्दुल हलीम अल-रूमी ने हाशिया अल-दुरर में जो ज़िक्र किया है उसका बातिल होना स्पष्ट हो गया है, क्योंकि उन्होंने अल-खुलासा से यह नक़ल करने के बाद कि "शर्त यह है कि उसकी ओर से कार्य का होना है", कहा: "मैं कहता हूँ: इससे यह ज़ाहिर होता है कि अगर उसने गेहूं इस नीयत से नापा कि उसके धूल से तयम्मुम हो जाए, तो यह काफ़ी है अगर तयम्मुम के हिस्सों पर धूल पहुँच गई, जैसा कि छिपा नहीं है।" ^{1} इस तरह उन्होंने अल-दुरर की इबारत "अगर उसने मसह नहीं किया तो जायज़ नहीं" को बदल कर यह बना दिया कि: "मुराद यह है कि जब तयम्मुम की नीयत से उसकी तरफ़ से कोई काम न पाया जाए, और अंगों पर धूल उड़ना एतबार के क़ाबिल नहीं जब तक कि वह मसह न करे या अपने अंगों को न हिलाए" और इसी तरह आगे भी।

नोट: अगर तुम कहो कि यह तावील (व्याख्या) है, तहवील (मूल अर्थ बदलना) नहीं। मैं कहता हूँ: बिल्कुल नहीं; अगर वह शरह (व्याख्या) में इस रास्ते पर चलना चाहते तो कहते: "लेखक ने मसह का ज़िक्र करके हर उस काम की ओर इशारा किया है जो तयम्मुम की नीयत से पाया जाए।" वह ऐसा न करते कि कलाम के अंदर ऐसी पाबंदी मान लें जिसका कलाम में न कोई निशान है और न ही कोई इशारा। पस इसे समझें। (म)

जुज़ियात (उप-नियम) को अलग कैसे गिना गया? व-बिल्लाहित-तौफ़ीक़। मैं कहता हूँ: फाज़िल अब्दुल हलीम रूमी ने हाशिया दुरर में खुलासा की इबारत "उससे फ़ेल (कार्य) का पाया जाना शर्त है" नक़ल करने के बाद जो लिखा है उसका गलत होना ज़ाहिर हो गया, उनकी इबारत यह है: "मैं कहता हूँ: इससे ज़ाहिर होता है कि अगर उसने गेहूं इसलिए नापा कि उसकी धूल से तयम्मुम हो जाए तो यह काफ़ी है अगर तयम्मुम की जगहों पर धूल पहुँच गई। यह पोशीदा (छिपा हुआ) नहीं है।" इसीलिए फाज़िल रूमी ने दुरर की इबारत "इज़ा लम यमसहु लम यजुज़" (हाथ नहीं फेरा तो तयम्मुम नहीं हुआ) को उसके अर्थ से फेर कर यह बनाया कि: "मुराद यह है कि तयम्मुम की नीयत से उससे कोई काम न पाए जाने की सूरत में जब हाथ न फेरा (तो तयम्मुम नहीं हुआ)"। जब अंगों पर धूल उड़ाना एतबार के क़ाबिल नहीं जब तक कि हाथ फेरे या अंगों को...

अगर कहा जाए कि (दुरर की यह इबारत) तावील है, तहवील (मूल अर्थ से दूसरे अर्थ की तरफ़ फेरना) नहीं है। मैं कहता हूँ: हरगिज़ नहीं। अगर वह इस तरीके पर शरह को चलाना चाहते तो यूँ कहते: "मुसन्निफ़ (लेखक) ने मसह का ज़िक्र करके हर उस काम की जानिब इशारा किया है जो

उससे तयम्मुम के इरादे से पाया जाए।" ऐसा न करते कि उनके कलाम के अंदर एक ऐसी शर्त मान लें जिसका उनके कलाम में न कोई नाम-ओ-निशान है न ही कोई इशारा। पस समझें। (त)

1. हाशिया अल-दुरर, मौला अब्दुल हलीम द्वारा, बाब अल-तयम्मुम, मतबा उस्मानिया, बेरूत, 1/72। पृष्ठ 345/756

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم وباللہ التوفیق۔ اقول: (۱) قد بان بطلان ما وقع للفاضل عبدالحلیم الرومی فی حاشیۃ الدرر اذ قال بعد نقل مانی الخلاصۃ ان الشرط وجود الفعل منہ مانصہ اقول یظھر منہ انہ لو کال حنطۃ لیحصل التیمم بغبارہ کفی ان اصاب مواضع التیمم غبار کما لا یخفی ۱ اھ و بہ حول الدرر حتی اذالم یمسح لم یجز الی ان المراد اذا ۲ لم یمسح عند عدم وجود فعل منہ بنیۃ التیمم والذر علی الاعضاء اذ لم یصلح للاعتبار مالم یمسح او یحرک اعضاءہ فما بعد

عہ فان قلت تأویل لا تحویل اقول: کلا لواراد ان یسلک بالشرح ھذا المسلک لقال اشار بذکر المسح الی کل فعل یوجد منہ بنیۃ التیمم لان یقدر فی کلامہ قیدا لا اثر لہ فی الکلام ولا اشارۃ فافھم منہ (م)

جزئیے جیسے الگ کیسے شمار کئے۔ وباللہ التوفیق۔ اقول: فاضل عبدالحلیم رومی نے حاشیہ درر میں خلاصہ کی عبارت "اس سے فعل پایا جانا شرط ہے" نقل کرنے کے بعد جو لکھا ہے اس کا غلط ہونا واضح ہوگیا، ان کی عبارت یہ ہے: "اقول: اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ اگر اس نے گیہوں اس لئے ناپا کہ اس کے غبار سے تیمم ہوجائے تو یہ کافی ہے اگر تیمم کی جگہوں پر غبار پہنچ گیا۔ یہ پوشیدہ نہیں۔" اسی لئے فاضل رومی نے درر کی عبارت "اذا لم یمسح لم یجز" (ہاتھ نہ پھیرا تو تیمم نہ ہوا) کو اس کے معنی سے پھیر کر یہ بنایا کہ: "مراد یہ ہے کہ بہ نیت تیمم اس سے کوئی فعل نہ پائے جانے کی صورت میں جب ہاتھ نہ پھیرا (تو تیمم نہ ہوا) "۔ جب اعضاء پر گرد اڑانا قابلِ اعتبار نہیں جب تک کہ ہاتھ پھیرے یا اعضاء کو

اگر کہا جائے کہ (یہ عبارتِ درر کی) تاویل ہے، تحویل (اصل معنی سے دوسرے معنی کی طرف پھیرنا) نہیں ہے۔ اقول: ہرگز نہیں۔ اگر وہ اس روش پر شرح کو چلانا چاہتے تو یوں کہتے:
"مصنف نے مسح کا ذکر کرکے ہر اس فعل کی جانب اشارہ کیا ہے جو اس سے بہ قصد تیمم پایا

جائے۔" ایسا نہ کرتے کہ ان کے کلام کے اندر ایک ایسی قید مان لیں جس کا ان کے کلام میں نہ کوئی نام و نشان ہے نہ ہی کوئی اشارہ فافھم (ت)

۱ حاشیۃ الدرر للمولی عبدالحلیم باب التیمم مطبعۃ عثمانیہ بیروت ۱/ ۷۲ Page 345 of 756

Fatawa Razawiya - Volume 3

[Left Column - Arabic/Urdu Mix] Measuring, demolishing, and sweeping are to be taken into account; and Allah Almighty is the Grantor of success. Glory be to Allah, how comprehensive is the phrase of the Imam of the school of thought in the 'Book of Prayer'. When he brought forth that which contains an action for him such as sweeping, demolishing, and measuring, and then stated the lack of permissibility in absolute terms as long as he does not pass his hand over it, it was as a guidance that these actions are not sufficient, even if they were with the intention of Tayammum, as long as the wiping is not present. As for what the virtuous Al-Khadimi said regarding the statement in 'Al-Durar', that these actions give the impression that it is necessary for the dust to be an effect of the action of the one performing Tayammum, but it is not so; i.e., regarding the fourth branch of wind throwing dust and the fifth branch of the wall collapsing. I say: He is correct in this, because 'Al-Durar' mentioned these actions on the side of permissibility, so it became a source of the misconception that permissibility is conditional upon that which is wiped with being raised by his action, unlike the phrase in the 'Book of Prayer', for in it they are mentioned on the side of prohibition, thus yielding that returning benefit.

[Right Column - Urdu] If one does not move it, then how far-fetched it is for measuring wheat, etc., knocking down a wall, or sweeping to be considered valid. And Allah alone is the Giver of success. In the 'Book of Prayer', how comprehensive and excellent is the wording of the Imam of the school of thought. He mentioned sweeping, knocking down a wall, and measuring wheat, in which the action of the person performing Tayammum himself is found. Then he mentioned it in absolute terms that Tayammum will not be valid until he passes his hand over it, so that guidance is provided towards the point that until the passing of the hand is not found, these actions are not sufficient even if they are with the intention of Tayammum. The virtuous Khadimi wrote on the text of Durar that "these actions create the delusion that it is necessary for the dust to be a result and effect of some action of the person performing Tayammum, whereas it is not so" etc. Because the partial ruling regarding the wind throwing dust and the fifth partial ruling regarding the collapsing of a wall has already passed. I say: This statement of the mentioned virtuous scholar is correct because in 'Durar' these actions are mentioned under the heading of permissibility, from which the delusion arises that permissibility is conditional on the condition that the dust with which wiping is done must have flown

by his action. But in the text of the 'Book of Prayer', there is no scope for this delusion because in it these actions are mentioned under prohibition. Therefore...

---

1 Hashiya al-Durar Sharh Ghurar by Abi Sa'id al-Khadimi, Chapter of Tayammum, Uthmaniyyah Press, Beirut, 28/1 Page 346 of 756

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

[बायां कॉलम - अरबी/उर्दू मिश्रण] मापना, गिराना और झाड़ू लगाना विचार करने योग्य हैं; और अल्लाह तआला तौफीक देने वाला है। अल्लाह के लिए इमाम-ए-मज़हब की इबारत किताब-उस-सलात में क्या ही खूब है। जब उन्होंने वह चीज़ पेश की जिसमें झाड़ू देने, गिराने और मापने जैसा काम शामिल है, और फिर हाथ फेरे बिना उसे नाज़ायज़ करार दिया, तो यह इस बात की रहनुमाई थी कि ये काम काफी नहीं हैं, भले ही वे तैयमुम की नियत से हों, जब तक कि मसह (पोंछना) न पाया जाए। जहाँ तक फ़ाज़िल खादिमी ने 'दुरर' के कौल पर कहा कि ये काम इस बात का वहम पैदा करते हैं कि ग़ुबार का तैयमुम करने वाले के काम का असर होना ज़रूरी है, जबकि ऐसा नहीं है; यानी चौथी उप-शाखा हवा के धूल उड़ाने और पाँचवीं उप-शाखा दीवार गिरने के बारे में। मैं कहता हूँ: वह इसमें सही हैं क्योंकि 'दुरर' ने इन कामों का ज़िक्र जवाज़ (अनुमति) के पहलू में किया था, जिससे यह वहम पैदा हुआ कि जवाज़ इस शर्त पर मुनहसिर है कि जिससे मसह किया जाए वह उसी के काम से उड़ा हो, इसके विपरीत किताब-उस-सलात की इबारत में इनका ज़िक्र ममानअत (निषेध) के पहलू में है, जिससे वह फायदा हासिल हुआ।

[दायां कॉलम - उर्दू] अगर हरकत न दे तो गेहूँ वगैरह नापने, दीवार गिराने, झाड़ू देने का मोतबर होना किस कदर बईद (दूर) है। और खुदा ही तौफीक देने वाला है। किताब-उस-सलात में इमाम-ए-मज़हब की इबारत क्या ही जामे और क्या ही खूब है। उन्होंने झाड़ू देना, दीवार गिराना, गेहूँ नापना ज़िक्र किया जिसमें खुद तैयमुम करने वाले का फेल (काम) पाया जाता है, फिर मुतलक तौर पर ज़िक्र फरमा दिया कि तैयमुम न होगा जब तक उस पर हाथ न गुज़ारे ताकि इस बात की जानिब रहनुमाई हो कि जब तक हाथ फेरना न पाया जाए ये काम काफी नहीं हैं अगरचे तैयमुम की नियत से हों। फाज़िल खादिमी ने 'दुरर' की इबारत पर लिखा कि "ये काम इस बात का वहम पैदा करते हैं कि गुबार को तैयमुम करने वाले के किसी काम का नतीजा और असर होना ज़रूरी है, जबकि ऐसा नहीं है" अह्। क्योंकि आँधी के गुबार डालने का जुज़िया (अंश) और दीवार गिरने से मुताल्लिक पाँचवाँ जुज़िया गुज़र चुका। फ़अकुल (मैं कहता हूँ): फ़ाज़िल मौसूफ़ का यह कलाम दुरुस्त है क्योंकि 'दुरर' में ये काम जवाज़ के तहत मज़कूर हैं जिनसे वहम पैदा होता है कि जवाज़ इस शर्त के साथ मश्रूत है कि जिस गुबार से मसह हो वह उसके फेल से उड़ा हो, मगर किताब-उस-सलात की इबारत में इस वहम का मौका नहीं क्योंकि इसमें ये काम ममानअत के तहत मज़कूर हैं। इसलिए...

1 हाशिया अद-दुरर शरह ग़ुरर ल-अबी सईद खादिमी, बाब-अत-तयम्मुम, मतबा उस्मानिया बेरूत, 28/1 पृष्ठ 346 / 756

[بایاں کالم - عربی/اردو] الکیل والھدم والکنس من الاعتبار واللہ تعالی الموفق۔ وللہ در امام المذھب في کتاب الصلاۃ اذا اتی بما فیہ فعل لہ من الکنس والھدم والکیل ثم اطلق عدم الجواز مالم یمر یدہ علیہ ارشادا الی ان ھذہ الافعال لا تکفی وان کانت بنیۃ التیمم ما لم یوجد المسح اما ما قال الفاضل الخادمي علی قول الدرر انہ یوھم ھذہ الافعال انہ لابد من کون الغبار اثر الفعل المتیمم ولیس کذلك اہ ای للفرع البار القاء الریح الغبار والفرع الخامس انھدام الجدار۔ فاقول: ھو فیہ مصیب لان الدرر ذکر ھذہ الافعال في جانب الجواز فکان مثارا للتوھم ان الجواز مشروط بکون مایمسح بہ منہ ثائرا بفعلہ بخلاف عبارۃ کتاب الصلاۃ ففیھا ذکرھا في جانب المنع فافادت تلك الفائدۃ العائدۃ۔

[دایاں کالم - اردو] حرکت نہ دے تو گیہوں وغیرہ ناپنے، دیوار گرنے، جھاڑو دینے کا معتبر ہونا کس قدر بعید ہے۔ اور خدا ہی توفیق دینے والا ہے۔ کتاب الصلوۃ میں امام مذہب کی عبارت کیا ہی جامع کیا ہی خوب ہے انہوں نے جھاڑو دینا، دیوار گرانا، گیہوں ناپنا ذکر کیا جس میں خود تیمم کرنے والے کا فعل پایا جاتا ہے پھر مطلق طور پر ذکر فرما دیا کہ تیمم نہ ہوگا جب تک اس پر ہاتھ نہ گزارے تاکہ اس بات کی جانب رہنمائی ہو کہ جب تک ہاتھ پھیرنا نہ پایا جائے یہ افعال کافی نہیں اگرچہ بہ نیت تیمم ہوں۔ فاضل خادمی نے درر کی عبارت پر لکھا کہ "یہ افعال اس بات کا وہم پیدا کرتے ہیں کہ غبار کو تیمم کرنے والے کے کسی فعل کا نتیجہ و اثر ہونا ضروری ہے۔ جبکہ ایسا نہیں "اہ۔ کیونکہ آندھی کے غبار ڈالنے کا جزئیہ اور دیوار گرنے سے متعلق پانچواں جزئیہ گزر چکا۔ فاقول: فاضل موصوف کا یہ کلام درست ہے اس لئے کہ درر میں یہ افعال جواز کے تحت مذکور ہیں جن سے وہم پیدا ہوتا ہے کہ جواز اس شرط کے ساتھ مشروط ہے کہ جس غبار سے

مسح ہو وہ اس کے فعل سے اڑا ہو مگر کتاب الصلوۃ کی عبارت میں اس وہم کا موقع نہیں کیونکہ اس میں یہ افعال ممانعت کے تحت مذکور ہیں۔ اس لئے

---

1 حاشیہ الدرر شرح غرر لابی سعید خادمی باب التیمم مطبعہ عثمانیہ بیروت 28/1 Page 346 of 756

Fatawa Rizvia, Volume 3

That statement carries the mentioned great benefit, and Allah the Almighty knows best.

Point 9: In 'Al-Muhit' then in 'Al-Hindiyyah' it is stated: "One method of Tayammum (dry ablution) with dust is to strike one's hands on a cloth, felt, pillow, or any such pure thing upon which dust has settled; when dust gets on the hands, then perform Tayammum with it."

Point 10: In the same 'Al-Muhit' and 'Al-Hindiyyah', after the aforementioned statement, it says: "Or shake one's clothes so that dust rises, then raise one's hands in the air; when dust settles on the hands, then perform Tayammum."

And among them in (1) Al-Muhit then Al-Hindiyyah, the method of Tayammum with dust is that one strikes their hands on cloth, felt, a pillow, or similar (2) pure entities that have dust upon them. When dust falls on the hands, perform Tayammum. [1]

And among them in both, they said after what passed: Or shake one's cloth until its dust rises, then raise one's hands in the dust in the air; when dust falls on the hands, perform Tayammum. [2] (Ends)

Note (I say): Only the purity of the dust is a condition, not the purity of the object the dust is on. However, dust becomes impure by falling on a wet impure thing. But if it falls after it has dried, there is no harm, as mentioned a few lines later from 'Al-Nihayah' regarding performing Tayammum with dust from an impure cloth: "It is not permissible unless the dust falls after the cloth has dried." (Ends). This is also mentioned in 'Al-Hilyah', stating that there is an indication towards this in 'Al-Tajnis'. [4] (Ends) 12. From him, may he be forgiven (M).

I say: Only the purity of the dust is a condition. It is not a condition for the object on which the dust lies to be pure, except that dust becomes impure by falling on a wet impure thing, but if dust falls on it after it has dried, there is no harm. As mentioned after a few lines with reference to 'Nihayah' that: "If one performs Tayammum with dust from impure clothes, it will not be valid, but if dust falls after the cloth has dried, it will be valid." (Ends). This is also mentioned in 'Hilyah' and it is stated that there is an indication towards this in 'Tajnis'. (Ends) (T)

---

1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 4 on Tayammum, Peshawar, 1/27
2. Fatawa Hindiyyah, Chapter 4 on Tayammum, Peshawar, 1/27

3. Fatawa Hindiyyah, Chapter 4 on Tayammum, Peshawar, 1/27
4. Hilyah

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 3

वह इबारत (कथन) उल्लेखित महान लाभ समेटे हुए है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 9: 'अल-मुहीत' फिर 'अल-हिंदिया' में है: "ग़ुबार (धूल) से तयम्मुम का एक तरीका यह है कि किसी कपड़े या गलीचे या तकिए या इसी तरह की किसी पाक चीज़ जिस पर धूल जमी हो, उस पर हाथ मारे; जब हाथों पर धूल आ जाए तो उससे तयम्मुम कर ले।"

मसाला 10: उसी 'अल-मुहीत' व 'हिंदिया' में उल्लेखित इबारत के बाद है: "या अपने कपड़े को इस तरह झाड़े कि धूल उड़ने लगे, फिर अपने हाथों को हवा में ऊपर उठाए; जब उसके हाथों पर धूल लग जाए तो तयम्मुम कर ले।" (समाप्त)

और उनमें से (1) 'अल-मुहीत' फिर 'अल-हिंदिया' में तयम्मुम की सूरत धूल के साथ यह है कि अपने हाथों को कपड़े, गलीचे, तकिए या वैसी ही (2) पाक वस्तुओं पर मारे जिन पर धूल हो। फिर जब हाथों पर धूल गिर जाए तो तयम्मुम करे। [1]

और उनमें से दोनों में गुज़री हुई बात के बाद कहा गया: या अपना कपड़ा झाड़े यहाँ तक कि उसकी धूल उड़ने लगे, फिर अपने हाथ हवा में धूल के बीच उठाए; जब हाथों पर धूल गिर जाए तो तयम्मुम करे। [2] (समाप्त)

नोट (मैं कहता हूँ): केवल धूल का पाक होना शर्त है, उस चीज़ का नहीं जिस पर धूल है। अलबत्ता धूल किसी गीली नापाक चीज़ पर गिरने से नापाक हो जाती है, लेकिन अगर उसके सूखने के बाद धूल गिरे तो कोई हर्ज नहीं, जैसा कि कुछ पंक्तियों के बाद 'निहाया' के हवाले से बताया गया है कि नापाक कपड़े की धूल से तयम्मुम करने के बारे में: "यह जायज़ नहीं है जब तक कि धूल कपड़े के सूखने के बाद न गिरी हो।" (समाप्त)। इसका उल्लेख 'हिलया' में भी है और कहा गया है कि 'तजनीस' में इसकी ओर संकेत है। [4] (समाप्त) 12. उसकी ओर से, उसे माफ़ किया जाए (M)।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): केवल धूल का पाक होना शर्त है। जिस चीज़ पर धूल पड़ी हो उसका पाक होना शर्त नहीं है, सिवाय इसके कि धूल किसी तर (गीली) नापाक चीज़ पर पड़ने से नापाक हो जाती है, लेकिन अगर उसके सूखने के बाद उस पर धूल पड़े तो कोई हर्ज नहीं। जैसा कि कुछ पंक्तियों के बाद 'निहाया' के हवाले से ज़िक्र किया गया है कि: "अगर नापाक कपड़े की धूल से तयम्मुम करे तो

नहीं होगा, लेकिन जब कपड़ा सूखने के बाद धूल पड़ी तो हो जाएगा।" (समाप्त)। इसे 'हिलया' में भी ज़िक्र किया गया है और कहा गया है कि इस तरफ 'तजनीस' में इशारा मौजूद है। (समाप्त) (T)

---

1. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 4 तयम्मुम पर, पेशावर, 1/27
2. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 4 तयम्मुम पर, पेशावर, 1/27
3. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 4 तयम्मुम पर, पेशावर, 1/27
4. हिलया

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

وہ عبارت، مذکورہ عظیم فائدہ کی حامل ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

جزئیہ ۹: محیط پھر ہندیہ میں ہے: "غبار سے تیمم کا ایک طریقہ یہ ہے کہ کوئی کپڑا یا گدا یا تکیہ یا اسی طرح کی کوئی پاک چیز جس پر غبار پڑا ہوا ہو اس پر ہاتھ مارے جب ہاتھوں پر غبار آ جائے تو اس سے تیمم کر لے۔"

جزئیہ ۱۰: محیط و ہندیہ ہی میں، مذکورہ عبارت کے بعد ہے: "یا اپنے کپڑے کو اس طرح جھاڑے کہ غبار بلند ہو پھر اپنے ہاتھوں کو ہوا میں بلند کرے جب اس کے ہاتھوں پر غبار پڑ جائے تو تیمم کر لے۔" اھ

ومنها فی (۱) المحیط ثم الهندیة صورة التیمم بالغبار ان یضرب بیدیہ ثوبا اولبدا او وسادة او ماشبهها (۲) من الاعیان الطاهرة التی علیها غبار فاذا وقع الغبار علی یدیہ تیمم۔ $1^$

ومنها فیهما قالا بعدما مر او ینفض ثوبہ حتی یرتفع غبارہ فیرفع یدیہ فی الغبار فی الهواء فاذا وقع الغبار علی یدیہ تیمم $2^$ اھ

عه اقول: انما یشترط طهارة الغبار دون مایقع علیہ غیر ان الغبار یتنجس بوقوعہ علی نجس رطب اما اذا وقع بعد جفافہ فلا بأس کما ذکر بعد اسطر عن النهایة اذا تیمم بغبار الثوب $3^$ النجس لایجوز الا اذا وقع التراب بعد ما جف الثوب اھ وذکرہ فی الحلیة وقال اشار الیہ فی التجنیس $4^$ اھ ۱۲ منہ غفر لہ (م)

اقول: صرف غبار کا پاک ہونا شرط ہے۔ جس چیز پر غبار پڑا ہو اس کا پاک ہونا شرط نہیں مگر یہ ہے کہ غبار کسی تر نجس چیز پر پڑنے سے نجس ہو جاتا ہے لیکن اس کے خشک ہونے کے بعد

اس پر غبار پڑے تو کوئی حرج نہیں۔ جیسا کہ چند سطروں کے بعد نہایہ کے حوالے سے ذکر کیا ہے کہ: "اگر نجس کپڑے کے غبار سے تیمم کرے تو نہ ہوگا مگر جب کپڑا خشک ہونے کے بعد گرد پڑی تو ہو جائے گا۔" اھ اسے حلیہ میں بھی ذکر کیا ہے اور کہا ہے کہ اس طرف تجنیس میں اشارہ موجود ہے اھ (ت)

$1^$ فتاوی ہندیہ، الباب الرابع فی التیمم، پشاور، ۱/ ۲۷ $2^$ فتاوی ہندیہ، الباب الرابع فی التیمم پشاور ۱/ ۲۷ $3^$ فتاوی ہندیہ، الباب الرابع فی التیمم، پشاور، ۱/ ۲۷ $4^$ حلیہ

Fatawa Razawiyya - Volume 3

[Left Column - Arabic Original] I say: What was mentioned first about striking the hands on the garment is not the required 'strike' (of Tayammum). It is only to raise the dust; otherwise, there would be no need for dust to settle on the hands. When the hand strikes the earth (Sa'id), it acquires the quality of purification, so one wipes with it even if nothing sticks to it. He made this clear in the final scenario, which is limited to shaking the garment. And among them (1) in al-Dhakhira then al-Hindiyyah: If his hands were paralyzed, he should rub his hand on the ground and his face on the wall, and it will suffice him. [End of quote] (1) I say: This may be justified by necessity. Thus, the strike is a pillar (rukn) that may be waived, like recitation is waived for a mute person. So, those are ten complete cases in which there is no strike, yet Tayammum is valid. Therefore, the researcher, when speaking generally, took two paths in them, as he said after mentioning the first sub-branch, it is necessary in them that it be either a statement...

[Right Column - Urdu Commentary] I say: What was mentioned earlier about striking the hands on the garment—this is not the required strike for Tayammum. This is only so that dust may rise from the garment; otherwise, there would be no need for dust to settle on the hands. Because whenever hands are struck on the earth (Sa'id), it creates the quality of purification in them; then one performs wiping (masah) with them, even if no dust or dirt sticks to the hands. They clarified this purpose with the subsequent scenario where only shaking the clothes is mentioned. Sub-issue 11: It is in al-Dhakhira and then in al-Hindiyyah: "If both hands have become paralyzed, he should wipe his hands on the ground and his face on the wall; with this, his Tayammum will be complete." [End of quote] I say: In this sub-issue, it can be said that due to necessity, Tayammum was valid without striking. Thus, striking is such a pillar (rukn) that can be waived, just as the pillar of recitation in prayer is waived for a mute person. So, leaving this sub-issue aside, there are ten full sub-issues in which, despite the absence of striking, the ruling is that Tayammum is valid. Regarding them, the Muhaqqiq 'al-al-Itlaq (the absolute researcher) adopted two methods, in such a way that after mentioning the first sub-issue, he said: "In this, it is necessary that..."

---

1 Fatawa Hindiyyah, Chapter Four on Tayammum, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/26. Page 348 of 756

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

[बायां कॉलम - अरबी मूल] अक़ुल: कपड़ों पर हाथ मारने का जो पहले ज़िक्र हुआ, वह तैयम्मुम की वांछित 'ज़रब' (चोट) नहीं है। यह सिर्फ इसलिए है ताकि धूल उड़ सके, वरना हाथों पर धूल पड़ने की ज़रूरत ही नहीं होती। क्योंकि जब हाथ सईद (शुद्ध ज़मीन) पर मारा जाता है, तो उसमें पाकी (पवित्रता) का गुण आ जाता है, फिर उससे मसह किया जाएगा, भले ही उस पर धूल का कोई कण न लगा हो। उन्होंने इसे आखिरी सूरत से स्पष्ट कर दिया है जिसमें सिर्फ कपड़ों को झाड़ने का ज़िक्र है। और उनमें से (1) ज़ख़ीरा फिर हिन्दिया में है: "अगर उसके दोनों हाथ सुन्न (पंगु) हो गए हों, तो वह अपना हाथ ज़मीन पर और चेहरा दीवार पर रगड़े, और यह उसके लिए काफ़ी होगा।" [समाप्त] अक़ुल: इसमें शायद मजबूरी (ज़रूरत) का तर्क दिया जा सकता है। इस प्रकार 'ज़रब' एक ऐसा रुकन (स्तंभ) है जो गिर सकता है (छूट सकता है), जैसे गूंगे से नमाज़ में क़िरात (पाठ) का रुकन गिर जाता है। तो ये पूरे दस ऐसे मामले हुए जिनमें 'ज़रब' न होने के बावजूद तैयम्मुम सही होने का हुक्म है। उनके बारे में मुहक़्क़िक 'अलल इतलाक़' ने दो तरीके अपनाए हैं, इस तरह कि पहले उप-विषय का ज़िक्र करने के बाद फरमाया कि इसमें लाज़िम है कि...

[दायां कॉलम - उर्दू टिप्पणी] अक़ुल: पहले जो ज़िक्र किया कि कपड़े पर अपने हाथों को मारे, यह तैयम्मुम की ज़रब (चोट) मतलूब (वांछित) नहीं है। यह तो सिर्फ इसलिए है कि कपड़े से ग़ुबार (धूल) उठे, वरना हाथों पर ग़ुबार पड़ने की ज़रूरत ही न थी। क्योंकि सईद पर जब भी हाथ मारे तो वह उसमें ततहीर (शुद्धता) की सिफ़त पैदा कर देगी, फिर उससे वह मसह करेगा अगरचे हाथ पर कुछ भी गर्द-ओ-ग़ुबार न लगा हो। इस मक़सद को उन्होंने बाद वाली सूरत से वाज़ेह (स्पष्ट) कर दिया है जिसमें सिर्फ कपड़े को झाड़ने का ज़िक्र है। जुज़िया 11: ज़ख़ीरा फिर हिन्दिया में है: "अगर दोनों हाथ शल (पंगु) हो गए हों, तो ज़मीन पर हाथ और दीवार पर चेहरा फेरे, इसी से उसका तैयम्मुम हो जाएगा।" [समाप्त] अक़ुल: इस जुज़िया में यह कहा जा सकता है कि ज़रूरत की वजह से बग़ैर ज़रब के तैयम्मुम हो गया, तो ज़रब एक ऐसा रुकन है जो साक़ित (समाप्त) हो सकता है जैसे नमाज़ का रुकन क़िरात गूंगे से साक़ित है। तो इस जुज़िया को छोड़कर वह पूरे दस जुज़िये हुए जिनमें ज़रब न होने के बावजूद तैयम्मुम सही होने का हुक्म है। इनसे मुताल्लिक़ मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ ने दो तरीक़े अख़्तियार किए हैं, इस तरह कि उन्होंने पहले जुज़िया को ज़िक्र करने के बाद फ़रमाया है कि: "इसमें लाज़िम है कि..."

1 फतावा हिन्दिया, अल-बाब अल-राबे फ़ित-तयम्मुम, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 26/1. पृष्ठ 348/756

[بائیں جانب کی عبارت - عربی متن] اقول: ومَاذ کر اولا من الضرب بیدیه علی الثوب لیست الضربة المطلوبة وانما هي لاثارة الغبار والا لما احتاج الی وقوع الغبار علی یدیه فان الید اذا ضربت علی الصعید اکسبها صفة التطهیر فیمسح بها وان لم یلتزق بها شئ منه وقد اوضح ذلك بالصورة الاخیرة المقتصرة علی نفض الثوب۔ ومنها (۱) في الذخیرة ثم الهندیة لوشلت یداه یمسح یده علی الارض و وجهه علی الحائط ویجزیه۱ اھ اقول: وهذا ربما یعتل فیه بالضرورة فتکون الضربة رکنا محتمل السقوط کالقراءة عن الاخرس فتلك عشرة کاملة لاضرب فیها مع صحة التیمم۔ فالمحقق حیث اطلق سلك فیها مسلکین اذقال بعد ذکر الفرع الاول یلزم فیها اما کونه قول

[دائیں جانب کی عبارت - اردو شرح] اقول: پہلے جو ذکر کیا کہ کپڑے پر اپنے ہاتھوں کو مارے یہ تیمم کی ضرب مطلوب نہیں یہ تو صرف اس لئے ہے کہ کپڑے سے غبار اُٹھے ورنہ ہاتھوں پر غبار پڑنے کی ضرورت ہی نہ تھی ، کیونکہ صعید پر جب بھی ہاتھ مارے تو وہ اس میں تطہیر کی صفت پیدا کردے گی پھر اس سے وہ مسح کرے گا اگرچہ ہاتھ پر کچھ بھی گردو غبار نہ لگا ہو اس مقصد کو انہوں نے بعد والی صورت سے واضح کردیا ہے جس میں صرف کپڑے کو جھاڑنے کا ذکر ہے۔ جزئیہ ۱۱: ذخیرہ پھر ہندیہ میں ہے: "اگر دونوں ہاتھ شل ہوگئے ہوں تو زمین پر ہاتھ اور دیوار پر چہرہ پھیرے اسی سے اس کا تیمم ہوجائے گا"۔ اھ اقول: اس جزئیہ میں یہ کہا جا سکتا ہے کہ ضرورت کی وجہ سے بغیر ضرب کے تیمم ہوگیا تو ضرب ایک ایسا رکن ہے جو ساقط ہوسکتا ہے جیسے نماز کا رکن قرات گونگے سے ساقط ہے۔ تو اس جزئیہ کو چھوڑ کر وہ پورے دس جزیئے ہوئے جن میں ضرب نہ ہونے کے باوجود تیمم صحیح ہونے کا حکم ہے۔ ان سے متعلق

محقق علی الاطلاق نے دو طریقے اختیار کئے ہیں اس طرح کہ انہوں نے پہلے جزئیہ کو ذکر کرنے کے بعد فرمایا ہے کہ: "اس میں لازم ہے کہ

---

1 فتاویٰ ہندیہ الباب الرابع فی التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۲۶/۱ صفحہ 348 از 756

Fatawa Razvia, Volume 3

(Arabic Text on the left): Those who excluded 'striking' (meaning from the literal definition of Tayammum) — this is not the opinion of everyone. As for considering 'striking' as more general than being on the ground or being a wiping over the limb [1]. This was affirmed in 'al-Hilya', but 'al-Bahr' disagreed with it. After citing his words, he [al-Bahr] said: 'Know that the condition is the occurrence of an action by him, broader than whether it be wiping, striking, or something else. For he said in 'al-Khulasa' (mentioning its impact in the fourth and fifth branches): This designates that these branches are based on the view of those who exclude 'striking' from the definition of Tayammum. As for those who include it, they cannot hold this view based on what we quoted from 'al-Khulasa', as there is no striking mentioned there at all — neither on the ground nor on the body. Unless it is said that by 'striking' he means an action from him, broader than it being striking or otherwise, but this is far-fetched as is evident [2].' And his brother, the investigator (al-Muhaqqiq) in 'al-Nahr', and the scrutinizer (al-Mudaqqiq) in 'al-Durr' followed him, both saying: 'The meaning is striking or what takes its place.' And 'al-Durr' formulated it: 'With two strikes, even if from another person, or what takes their place, due to what is in 'al-Khulasa' and others.'

(Urdu Text on the right): This is only the opinion of those gentlemen who consider 'striking' (Zarb) to be outside the reality of Tayammum; it is not the opinion of all. Or it should be accepted that 'striking' is more general, whether it is on the ground or in the form of wiping on the limb. [1] This was maintained in 'al-Hilya', and 'al-Bahr' opposed it. After quoting the words of the investigator (Hazrat Muhaqqiq), he wrote: "It should be known that the condition is that an action should be found from him, whether it is wiping or striking or something else, because it is said in 'al-Khulasa': (After this, he quoted sub-issue 4 and sub-issue 5 and said) from this it becomes determined that these sub-issues are based on the opinion of those gentlemen who consider 'striking' as outside the reality of Tayammum, but those people who consider it included in Tayammum cannot be convinced of it as we have quoted from 'al-Khulasa' because there is no existence of striking in it at all, neither on the ground nor on the limb. Unless it is said that their meaning of striking is the act of Tayammum, whether it be striking or something else, then it could be possible. But it is obvious that this is far-fetched." [2] His brother Muhaqqiq in 'al-Nahr al-Faiq' and Mudaqqiq 'Ala'i in 'Durr-e-Mukhtar' followed him, and both these gentlemen said: "The meaning is that there should be a strike or that which stands in its place." And

the wording of 'Durr-e-Mukhtar' is also this: "With two strikes, even if they are issued by another person, or with such an action that stands in the place of both strikes, because in 'al-Khulasa' etc."

1 Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nooria Razvia, Sukkur, 1/110 2 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/125

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द तीसरी

(बायां अरबी भाग): जिन्होंने 'ज़रब' (मारने/हाथ मारने) को तयम्मुम की वास्तविकता से बाहर रखा है —यह सभी की राय नहीं है। या 'ज़रब' को ज़मीन पर होने या अंग पर मसह होने से अधिक व्यापक माना जाए [1]। 'अल-हिलिया' में इसकी पुष्टि की गई, लेकिन 'अल-बहर' ने इससे असहमति जताई। उनके शब्दों को उद्धृत करने के बाद, उन्होंने कहा: 'जानें कि शर्त उसके द्वारा एक क्रिया का होना है, जो मसह, ज़रब, या कुछ और होने से अधिक व्यापक है। क्योंकि उन्होंने 'अल-ख़ुलासा' में कहा है (चौथी और पांचवीं शाखाओं में इसके प्रभाव का उल्लेख करते हुए): यह निर्दिष्ट करता है कि ये शाखाएं उन लोगों के विचार पर आधारित हैं जो तयम्मुम की परिभाषा से 'ज़रब' को बाहर निकालते हैं। जहाँ तक उन लोगों की बात है जो इसे शामिल करते हैं, वे 'अल-ख़ुलासा' से हमारे द्वारा उद्धृत किए गए आधार पर यह विचार नहीं रख सकते, क्योंकि वहां किसी भी ज़रब का उल्लेख नहीं है—न ज़मीन पर और न ही शरीर पर। जब तक कि यह न कहा जाए कि 'ज़रब' से उनका मतलब उनके द्वारा की गई क्रिया से है, चाहे वह ज़रब हो या अन्यथा, लेकिन यह जैसा कि स्पष्ट है, दूर की बात है [2]।' और 'अल-नहर' में उनके भाई अन्वेषक (मुहक़्क़िक) और 'अल-दुर्र में सूक्ष्मदर्शी (मुदक़्क़िक) ने उनका अनुसरण किया, दोनों ने कहा: 'इसका अर्थ ज़रब है या वह जो उसका स्थान लेता है।' और 'अल-दुर्र' ने इसे इस प्रकार तैयार किया: 'दो ज़रबों के साथ, भले ही वे किसी अन्य व्यक्ति से हों, या जो उनका स्थान ले, जैसा कि अल-ख़ुलासा और अन्य में है।'

(दायां उर्दू भाग): यह केवल उन हज़रात का क़ौल है जो ज़रब को तयम्मुम की हक़ीक़त से बाहर मानते हैं; यह सब का क़ौल नहीं है। या यह माना जाए कि ज़रब इससे आम है, चाहे वह ज़मीन पर हो या मसह के रूप में अंग पर हो। [1] 'हिलिया' में इसे बरक़रार रखा गया है, और 'बहर' ने इसकी मुख़ालफ़त की है। हज़रत मुहक़्क़िक की इबारत नक़ल करने के बाद यह लिखा: "जानना चाहिए कि शर्त यह है कि उससे फ़ेल (क्रिया) पाया जाए चाहे मसह हो या ज़रब हो या कुछ और हो, क्योंकि 'ख़ुलासा' में यह कहा है: (इसके बाद जुज़िया 4 और जुज़िया 5 नक़ल किया और कहा) इससे यह बात मुतअय्यन हो जाती है कि ये जुज़ियात उन हज़रात के क़ौल पर मबनी (आधारित) हैं जो ज़रब को हक़ीक़त-ए-तयम्मुम से ख़ारिज मानते हैं, लेकिन जो लोग इसे दाख़िल-ए-तयम्मुम मानते हैं वे इसमें इसके क़ायल नहीं हो सकते जिसे हमने 'ख़ुलासा' से नक़ल किया क्योंकि इसमें सिरे से ज़रब का वजूद ही नहीं न ज़मीन पर न उज़्व (अंग) पर। मगर यह कहा जाए कि ज़रब से उनकी मुराद तयम्मुम का अमल है ख़्वाह ज़रब हो या और कुछ, तो हो सकता है। लेकिन ज़ाहिर है कि यह बईद (दूर की

बात) है।" [2] उनके बिरादर-ए-मुहक़्क़िक ने 'अल-नहर अल-फ़ाइक़' में और मुदक़्क़िक अलाई ने 'दुर्रे मुख़्तार' में उनकी पैरवी की है, इन दोनों हज़रात ने फ़रमाया: "मुराद यह है कि ज़रब हो या वह जो उसके क़ायम मक़ाम हो।" और 'दुर्रे मुख़्तार' की इबारत यह भी है: "दो ज़रबों से, अगरचे ये दूसरे शख़्स से सादिर हों, या ऐसे फ़ेल से जो दोनों ज़रबों के क़ायम मक़ाम हो क्योंकि 'ख़ुलासा' वग़ैरह।"

1 फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-तयम्मुम, नूरया रज़विया, सुक्कुर, 1/110 2 अल-बहर अल-राइक़, बाब अल-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/125

पृष्ठ 349/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

(عربی عبارت بائیں طرف): من اخرج الضربة (ای عن مسمّی التیمم) لاقول الکل واما اعتبار الضربة اعم من کونها علی الارض اوعلی العضو مسحاً ۱۸ اه اقره فی الحلیة وخالفه فی البحر فقال بعد نقل کلامه اعلم ان الشرط وجود الفعل منه اعم من ان یکون مسحاً اوضرباً اوغیره فقد قال فی الخلاصة (فاثر کلامه فی الفرع الرابع والخامس) قال وهذا یعین ان هذا الفروع مبنیة علی قول من اخرج الضربة من مسمّی التیمم اما من ادخلها فلایمکنه القول بها فیما نقلنا عن الخلاصة اذ لیس فیها ضرب اصلا لا علی الارض ولا علی العضو الا ان یقال مراده بالضرب الفعل منه اعم من کونه ضرباً اوغیره وهو بعید کما لا یخفی ۲۸ اه وتبعه اخوه المحقق فی النهر والمدقق فی الدر فقالا المراد الضرب او ما یقوم مقامه ونظم الدر بضربتین ولو من غیره او ما یقوم مقامها لما فی الخلاصة وغیرها

(اردو عبارت دائیں طرف): یہ صرف ان حضرات کا قول ہو جو ضرب کو حقیقت تیمم سے خارج مانتے ہیں، سب کا قول نہ ہو۔ یا یہ مانا جائے کہ ضرب اس سے عام ہے کہ زمین پر ہو یا بطور مسح کے عضو پر ہواھ۱۸ حلیہ میں اسے برقرار رکھا ہے اور بحر نے اس کی مخالفت کی ہے۔ حضرت محقق کی عبارت نقل کرنے کے بعد یہ لکھا: "جاننا چاہیے کہ شرط یہ ہے کہ اس سے فعل پایا جائے چاہے مسح ہو یا ضرب ہو یا کچھ اور ہو، کیونکہ خلاصہ میں یہ کہا ہے: (اس کے بعد جزئیہ ۴ و جزئیہ ۵ نقل کیا اور کہا) اس سے یہ بات متعین ہوجاتی ہے کہ یہ جزئیات ان حضرات کے قول پر مبنی ہیں جو ضرب کو حقیقت تیمم سے خارج مانتے ہیں، لیکن جو لوگ اسے داخلِ تیمم مانتے ہیں وہ اس میں اس کے قائل نہیں ہوسکتے جسے ہم نے خلاصہ سے نقل کیا کیونکہ اس میں سرے سے ضرب کا وجود ہی نہیں نہ زمین پر نہ عضو پر۔ مگر یہ کہا جائے کہ ضرب سے ان کی مراد تیمم کا عمل ہے خواہ ضرب ہو یا اور کچھ، تو ہوسکتا ہے۔ لیکن ظاہر ہے کہ یہ بعید

ہے" اھ ان کے برادرِ محقق نے النہر الفائق میں اور مدقق علائی نے دُرمختار میں ان کی پیروی کی ہے ان دونوں حضرات نے فرمایا: "مراد یہ ہے کہ ضرب ہو یا وہ جو اس کے قائم مقام ہو۔" اور درمختار کی عبارت یہ بھی ہے: "دو ضربوں سے، اگرچہ یہ دوسرے شخص سے صادر ہوں، یا ایسے فعل سے جو دونوں ضربوں کے قائم مقام ہو کیونکہ خلاصہ وغیرہ ہا

1^ فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۱۱۰ 2^ البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۱۲۵

Fatawa-e-Razvia Volume 3

In [Durr al-Mukhtar] it is mentioned: "If someone moves their head with the intention of Tayammum or enters it into a place of dust, it is permissible, provided that an action is performed by them." [End]

I say: (1) It is surprising that Sayyid al-Tahtawi writes: "The commentator (Al-Haskafi), by his statement 'or whatever stands in their place,' points towards adopting what Kamal ibn al-Humam stated." [End] Then, under the commentator's phrase "the existence of the action from him" (it is a condition for an action to be found from him), he (Tahtawi) said: "It is general, whether that action is wiping (masah), striking (the earth), or anything else, as stated in Al-Bahr al-Raiq." [End] So, how is this what Kamal ibn al-Humam chose! Unless it is said that the meaning is that the commentator also chose the view that striking is outside the literal meaning of Tayammum, even if he did not follow the 'Muhaqqiq ala al-Itlaq' (Kamal ibn al-Humam) in his view that "specifically wiping is the pillar of Tayammum," but rather any action performed by him, such as moving the head or entering it into a place of dust. Then Sayyid al-Tahtawi also objected to this by saying: "The flaw in this is that they considered it sufficient for someone else to perform Tayammum for him, even though no action was performed by him." [End] Allama Shami answered this by saying that the action of another by his command is like his own action.

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/24
2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/24
3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/24
4. Tahtawi on Al-Durr, Chapter of Tayammum, Beirut, 1/127

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 3

[दुर-ए-मुख्तार] में है कि: "यदि तयम्मुम की नीयत से अपने सिर को हिलाया या उसे धूल वाली जगह में डाला, तो यह जायज़ है, और शर्त यह है कि उसके द्वारा कोई क्रिया (काम) की जाए।" [अत]

मैं कहता हूँ: (1) आश्चर्य है कि सैय्यद तहतावी लिखते हैं कि "शारह (व्याख्याकार) ने अपने कथन 'या वह जो उन दोनों के स्थान पर हो' से इस ओर इशारा किया है कि उन्होंने वही चुना है जो कमाल इब्न अल-हुमाम ने कहा है।" [अत] फिर शारह के कथन "उसके द्वारा क्रिया का पाया जाना" (यानी उसके द्वारा क्रिया का पाया जाना शर्त है) के तहत कहा: "यह सामान्य है, चाहे वह क्रिया मसह हो, प्रहार (धूल पर हाथ मारना) हो या कुछ और, जैसा कि बह्र-ए-राईक़ में है।" [अत] तो यह वह कहाँ रहा जो कमाल इब्न अल-हुमाम ने चुना था! परन्तु यह कहा जाए कि अर्थ यह है कि शारह ने भी यही चुना है कि प्रहार तयम्मुम की वास्तविकता से बाहर है, भले ही उन्होंने इस संबंध में 'मुहक़्क़िक़ अला अल-इतलाक़' (कमाल इब्न अल-हुमाम) का अनुसरण नहीं किया कि "विशेष रूप से मसह ही तयम्मुम का रुकन (स्तंभ) है," बल्कि कोई भी क्रिया जो उससे पाई जाए, जैसे सिर हिलाना या धूल वाली जगह में सिर डालना। फिर सैय्यद तहतावी ने इस पर भी आपत्ति की है: "इसमें यह कमी है कि उन्होंने दूसरे द्वारा उसे तयम्मुम करा देने को भी पर्याप्त माना है, जबकि स्वयं उसका कोई काम नहीं पाया गया।" [अत] अल्लामा शामी ने इसका उत्तर दिया है कि उसके आदेश से दूसरे का काम स्वयं उसी के काम के समान है।

1. अल-दुर अल-मुख्तार, अध्याय तयम्मुम, मुज्तबाई दिल्ली, 1/24
2. अल-दुर अल-मुख्तार, अध्याय तयम्मुम, मुज्तबाई दिल्ली, 1/24
3. अल-दुर अल-मुख्तार, अध्याय तयम्मुम, मुज्तबाई दिल्ली, 1/24
4. तहतावी अल-दुर पर, अध्याय तयम्मुम, बेरूत, 1/127

पृष्ठ 350/756

میں ہے کہ: "اگر تیمم کی نیت سے اپنے سر کو حرکت دی یا اسے غبار کی جگہ داخل کیا تو جائز ہے اور شرط یہ ہے کہ اس سے فعل پایا جائے"۔ اھ

اقول: (۱) والعجب ان السید ط قال فاشار الشارح بقولہ او ما یقوم مقامہما الی اختیار ما قالہ الکمال ۲ھ ثم قال علی قولہ وجود الفعل منہ اعم من ان یکون مسحاً او ضرباً او غیرہ کما فی البحر ۳ھ فاین ھذا مما اختار الکمال الا ان یقال ان المراد اختیار خروج الضرب عن مسمی التیمم وان لم یتابع المحقق علی رکنیۃ المسح بخصوصہ بل فعل مامنہ کتحریک الرأس او ادخالہ فی موضع الغبار ثم اعترض علی ھذا ایضاً بقولہ وفیہ انھم اکتفوا بتیمم الغیر لہ ولا فعل منہ ۴ھ واجاب العلامۃ ش بان فعل غیرہ بامرہ

اقول: حیرت ہے کہ سید طحطاوی لکھتے ہیں کہ "شارح نے اپنی عبارت "او مایقوم مقامہما" (یا وہ فعل جو دونوں ضربوں کے قائم مقام ہو) سے اس بات کی طرف اشارہ کیا ہے کہ ان کا مختار وہ ہے جو کمال ابن ہمام نے فرمایا"۔ اھ پھر شارح کی عبارت "وجود الفعل منہ" (اس سے فعل پایا جانا شرط ہے) کے تحت فرمایا: "عام اس سے کہ وہ فعل مسح ہو یا ضرب ہو اور کچھ ہو جیسا کہ بحر رائق میں ہے"۔ اھ تو یہ وہ کہاں رہا جو کمال ابن ہمام نے اختیار فرمایا! مگر یہ کہا جائے کہ مطلب یہ ہے کہ شارح نے بھی یہی اختیار کیا ہے کہ ضرب حقیقتِ تیمم سے خارج ہے اگرچہ انہوں نے اس سلسلہ میں محقق علی الاطلاق کی متابعت نہیں کی ہے کہ "خاص مسح رکنِ تیمم ہے" بلکہ کوئی بھی فعل جو اس سے پا لیا جائے جیسے سر کو حرکت دینا یا غبار کی جگہ داخل کرنا۔ پھر سید طحطاوی نے اس پر بھی یوں اعتراض کیا ہے: "اس میں یہ خامی ہے کہ دوسرے کا اسے تیمم کرا دینا بھی کافی مانا گیا ہے جب کہ خود اس کا کوئی فعل نہ پایا گیا" اھ علامہ شامی

نے اس کا جواب دیا ہے کہ اس کے حکم سے دوسرے کا فعل خود اسی کے فعل کے (قائم مقام ہے)۔

1. الدر المختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱/ ۲۴
2. الدر المختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱/ ۲۴
3. الدر المختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱/ ۲۴
4. طحطاوی علی الدر باب التیمم بیروت ۱/ ۱۲۷

[Arabic Section]: "It stands in place of his action, so it is essentially from him." End of quote. And before this, it was said: "In this case, the occurrence of the action from him is a condition. That action is wiping or moving. And it has been found. So this is evidence that striking (the earth) is not necessary, as previously mentioned." End of quote.

[Urdu Explanation]: It stands in place, so it carries the same meaning. End of quote. And before this, it was stated: "In this situation," it is a condition that the action originates from him. That is wiping or moving. And this has been achieved. So this serves as proof that striking (the earth) is not essential, as mentioned earlier. End of quote.

[Arabic Section]: I say: (1) What is the specific characteristic of this situation? For the action from him is present in striking, wiping, moving, and inserting altogether. Unless by this situation, they mean when one performs Tayammum (dry ablution) by oneself. However, if someone else assists them in performing Tayammum, then the occurrence of the action from them is not a condition. In that case, this would be another approach to the answer, and it would have been appropriate for them to say: "Or we say, the action of another by his command", etc.

[Urdu Explanation]: I say: What is the specialty of this specific form? The action of striking, wiping, inserting, and moving is found in all forms from him. However, it can be said that by this form, their intention is when he performs Tayammum himself; but if someone else assists him, then the action originating from him is not a condition. In that case, this would be a second way to answer, and at that time they should have said: "Or we say, the action of another by his command", etc. (Or we say that the action of another by his command is his own action).

[Arabic Section]: I say: One point still remains to be said, which is that his commanding it is indeed his own action. Thus, the debate has proceeded. For this weak servant—may the Kind Master grace him with His kindness—there are several discussions on this matter. Then follows a research and reconciliation through which the difficulty is resolved, by the grace of the Guardian King, the Most High.

[Urdu Explanation]: I say: One thing still remains to be said, which is that giving the command itself is his action. Similarly, the debate continues here. At this point, several discussions are presented by this weak servant—may the Kind [Lord] grace

him with kindness. Then follows such a research and application through which the confusion is removed. This is all by the grace of God, the Exalted and Guardian.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/174.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/174. Page 351 of 756

[अरबी भाग]: "यह उसके कार्य के स्थान पर है, इसलिए यह अर्थतः उसी का है।" समाप्त। और इससे पहले कहा गया कि: "इस स्थिति में" उससे कार्य का पाया जाना शर्त है। वह मसह (पोंछना) है या हरकत देना (हिलाना)। और यह पाया गया। तो यह इस बात का प्रमाण है कि ज़र्ब (मिट्टी पर हाथ मारना) आवश्यक नहीं है, जैसा कि पहले बताया जा चुका है।" समाप्त।

[उर्दू व्याख्या]: यह कार्य के स्थान पर है, इसलिए इसका अर्थ भी वही है। और इससे पहले फ़रमाया गया कि: "इस सूरत में" उससे कार्य का होना अनिवार्य है। वह मसह करना है या हिलाना। और यह पाया गया। तो यह इस बात की दलील है कि ज़र्ब ज़रूरी नहीं है, जैसा कि गुज़र चुका है।

[अरबी भाग]: मैं कहता हूँ: (1) इस स्थिति की क्या विशेषता है? क्योंकि ज़र्ब, मसह, इद्ख़ाल (प्रवेश), और तहरीक (गति) सभी स्थितियों में कार्य उससे पाया जाता है। सिवाय इसके कि इस स्थिति से उनका अभिप्राय यह हो कि जब वह स्वयं तयम्मुम करे। लेकिन अगर उसे कोई और तयम्मुम कराए तो उससे कार्य का पाया जाना शर्त नहीं है। तब यह उत्तर का एक दूसरा तरीका होगा और उस समय उन्हें इस तरह कहना चाहिए था: 'या हम कहें कि उसके आदेश से दूसरे का कार्य' आदि।

[उर्दू व्याख्या]: मैं कहता हूँ: इसी सूरत की क्या विशेषता है, कार्य तो उससे ज़र्ब, मसह, इद्ख़ाल, तहरीक सभी सूरतों में पाया जाता है। मगर यह कहा जाए कि इस सूरत से उनकी मुराद यह है कि जब वह खुद तयम्मुम करे, लेकिन अगर उसे कोई और तयम्मुम कराए तो कार्य उससे पाया जाना शर्त नहीं। तब यह जवाब का एक दूसरा तरीका होगा और उस वक्त उन्हें यूँ कहना चाहिए था: 'या हम कहें कि उसके हुक्म से दूसरे का फेल (कार्य)' आदि (या हम यह कहें कि उसके हुक्म से दूसरे का फेल उसका अपना फेल है)।

[अरबी भाग]: मैं कहता हूँ: अब भी कहने की एक बात शेष है, वह यह कि उसका आदेश देना ही उसका कार्य है। इसी प्रकार यहाँ चर्चा जारी है। इस स्थान पर इस कमज़ोर बंदे की—जिसे दयालु स्वामी अपनी कृपा से नवाज़े—कुछ बहसें हैं, फिर एक ऐसी शोध और सामंजस्य है जिससे कठिनाई दूर हो जाती है। यह सब सर्वोच्च रक्षक ईश्वर की तौफीक (कृपा) से है।

[उर्दू व्याख्या]: मैं कहता हूँ: अब भी कहने की एक बात रह गई, वो यह कि उसका हुक्म देना ही उसका फेल है। इसी तरह यहाँ क़ील-ओ-क़ाल (वाद-विवाद) जारी है। इस मक़ाम पर बंदा-ए-ज़ईफ़ (कमज़ोर दास) की—लतीफ़ (दयालु प्रभु) उसे लुत्फ़ (कृपा) से नवाज़े—की चंद बहसें हैं फिर एक

ऐसी तहक़ीक़ (शोध) और ततबीक़ (सामंजस्य) है जिससे इष्काल (शंका) दूर हो जाता है। यह सब ख़ुदा-ए-बुलंद ओ निगहबान की तौफ़ीक़ से है।

---

1. रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/174।
2. रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/174। पृष्ठ 351 का 756

قائم مقام فعله فهو منه فی المعنی[1] اه وقَال قَبْله اَی الشّرط فِی هٰذِهِ الصُّورَةِ وجودُ الْفِعْلِ مِنْه وهو المسح او التحریك وقد وُجد فهو دلیل علی ان الضرب غیر لازم کما مر[2] اه قائم مقام ہے تو وہ معنیٰ اسی کا ہے "اھ اور اس سے پہلے فرمایا کہ : "اس صورت میں" اس سے فعل پایا جانا شرط ہے۔ وہ مسح ہے یا حرکت دینا۔ اور یہ پالیا گیا۔ تو یہ اس بات کی دلیل ہے کہ ضرب ضروری نہیں، جیسا کہ گزر چکا" اھ

اقول: (۱) اَی خصوصیۃ لهذه الصورة فان الفعل منه موجود فی الضرب والمسح والتحریك والادخال جمیعاً الا ان یرید بهذه الصورة ما اذا تیمّم بنفسه امّا لو یممّه غیره فلا یشترط وجود الفعل منه فح یکون هذا مسلکا اخر فی الجواب وکان اذن حقه ان یقول اونقول فعل غیره بامره الخ اقول: اسی صورت کی کیا خصوصیت ہے فعل تو اس سے ضرب، مسح، ادخال، تحریک سبھی صورتوں میں پایا جاتا ہے۔ مگر یہ کہا جائے کہ اس صورت سے ان کی مراد یہ ہے کہ جب خود تیمم کرے لیکن اگر اس کو کوئی اور تیمم کرائے تو فعل اس سے پایا جانا شرط نہیں۔ تب یہ جواب کا ایک دوسرا طریقہ ہوگا اور اس وقت انہیں یوں کہنا چاہئے تھا : اونقول فعل غیرہ بامرہ الخ (یا ہم یہ کہیں کہ اس کے حکم سے دوسرے کا فعل)۔

اقول: وبقی ان یقول امره من فعله هکذا جری القیل والقال وللعبد الضعیف لطف به مولاه اللطیف عدة ابحاث فی هذا المقال ثم تحقیق و توفیق یزول به الاشکال بتوفیق الملك المهیمن المتعال اقول: اب بھی کہنے کی ایک بات رہ گئی، وہ یہ کہ اس کا حکم دینا ہی اس کا فعل ہے۔ اسی طرح یہاں قیل و قال جاری ہے۔ اس مقام پر بندہ ضعیف اب۔ لطیف اسے لطف سے نوازے۔ کی چند بحثیں ہیں پھر ایک

ایسی تحقیق اور تطبیق ہے جس سے اشکال دُور ہو جاتا ہے۔ یہ سب خدائے بلند ونگہبان کی توفیق سے ہے۔

---

1 ردالمحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۴ 2 ردالمحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر

Fatawa Razawiyya - Volume 3

Discussions of the Author | Researches of the Author

I say: And from Him I seek help. Research 1: There are many verbal and practical traditions (hadiths) in which the mention of 'striking' (the earth) for Tayammum has appeared; rather, in most hadiths related to the method of Tayammum, this is the well-known and recognized way. If there were no fear of lengthening the text, I would have mentioned all those hadiths here. I do not say as stated in (1) Ghayat al-Bayan that: "Striking is not mentioned in the (Quranic) verse, nor in all the reports (athar); it only appears in some of them." End quote. By this, he intended to criticize the following statement of Al-Mustasfa by Imam al-Nasafi: "Although placing (the hands), i.e., putting hands on the pure earth to perform Tayammum, is also permissible, the reason these scholars chose the word 'striking' (darb) is that the word 'striking' occurs in reports and traditions." End quote.

Whoever investigates the hadiths will find it clear that the statement of Al-Mustasfa is correct, and the criticism against it is baseless and misplaced, even though Al-Bahr also maintained this criticism. This was regarding the mere mention of 'striking' in the hadiths. Now, the question remains whether its being a pillar (rukn) of Tayammum is also mentioned in the hadiths? In my knowledge, there are not even two authentic (sahih) hadiths on this subject, let alone a single explicit (sarih) hadith. Forget about having (many) hadiths. Now read this excerpt from Al-Hilyah. They say: "Most scholars believe in the necessity (rukn-iyat) of 'striking' because 'explicit hadiths' have been reported in this regard, among which is the hadith from Hazrat Ibn Umar (may Allah be pleased with both of them)... (then he mentioned what we have already presented)."

Footnotes: 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/251 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/251

Page 352 of 756

फ़तावा रज़विया - भाग 3

लेखक की चर्चाएँ| लेखक का शोध

मैं कहता हूँ: और उसी से मैं मदद माँगता हूँ। शोध 1: कई मौखिक और व्यावहारिक (हदीसें) परंपराएं हैं जिनमें तयम्मुम के लिए 'स्ट्राइक' (प्रहार) का उल्लेख आया है; बल्कि, तयम्मुम के तरीके से संबंधित अधिकांश हदीसों में, यही प्रसिद्ध और मान्यता प्राप्त तरीका है। यदि लेख के लंबा होने का डर न होता, तो मैं उन सभी हदीसों का उल्लेख यहीं कर देता। मैं वैसा नहीं कहता जैसा कि (1) ग़ायत अल-बयान में कहा गया है कि: "प्रहार का ज़िक्र आयत में नहीं है, और न ही सभी रिवायतों (आसार) में है; यह केवल कुछ में ही आया है।" उद्धरण समाप्त। इसके द्वारा उन्होंने इमाम अन-नसफ़ी की अल-मुस्तस्फ़ा के निम्नलिखित कथन की आलोचना करनी चाही है: "यद्यपि 'वज़अ' यानी शुद्ध मिट्टी पर हाथ रखकर तयम्मुम कर लेना भी जायज़ है, लेकिन इन विद्वानों द्वारा 'प्रहार' (दरब) शब्द चुनने का कारण यह है कि 'प्रहार' शब्द रिवायतों और हदीसों में आया है।" उद्धरण समाप्त।

जो हदीसों की छानबीन करेगा, उसे स्पष्ट हो जाएगा कि मुस्तस्फ़ा का कथन सही है, और उस पर आलोचना निराधार और अनुचित है, हालाँकि अल-बहर में भी इस आलोचना को बरकरार रखा गया है। यह हदीसों में 'प्रहार' के केवल उल्लेख की बात थी। अब सवाल यह है कि क्या हदीसों में इसका तयम्मुम का एक स्तंभ (रुकन) होना भी वर्णित है? मेरी जानकारी में, इस विषय पर दो सही (सहीह) हदीसें तो क्या, एक भी स्पष्ट (सरीह) हदीस नहीं है। हदीसें होने की बात तो दूर की है। अब अल-हिल्या का यह उद्धरण पढ़ें। वे कहते हैं: "अधिकांश विद्वान 'प्रहार' की रुकनियत (स्तंभ होने) के कायल हैं क्योंकि इस बारे में 'स्पष्ट हदीसें' आई हैं, जिनमें से एक हज़रत इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत हदीस है... (फिर उन्होंने वह ज़िक्र किया जो हम पहले पेश कर चुके हैं)।"

पाद-टिप्पणियाँ: 1. अल-बहर अल-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/251 2. अल-बहर अल-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/251

पृष्ठ 352/756

فأقول: وبه استعین۔ فاقول: اسی سے مدد طلب کرتا ہوں۔ بحث۱: بہت سی قولی و فعلی حدیثیں ہیں جن میں تیمم کے اندر ضرب کا ذکر آیا ہے بلکہ کیفیت تیمم سے متعلق بیشتر احادیث میں یہی معہود و معروف ہے اگر تطویل کا اندیشہ نہ ہوتا تو میں یہاں ان تمام احادیث کو ذکر کرتا، اور میں اس طرح نہیں کہتا جیسے غایۃ البیان میں کہا ہے کہ: "ضرب آیت میں مذکور نہیں، اور تمام آثار میں بھی نہیں، صرف بعض میں ہے" اھ اس سے انہوں نے المستصفی للامام النسفی کی درج ذیل عبارت پر گرفت کرنی چاہی ہے: اگرچہ وضع یعنی صعید پر ہاتھ رکھ کر تیمم کر لینا بھی جائز ہے مگر ان حضرات کے لفظ ضرب اختیار فرمانے کی وجہ یہ ہے کہ لفظ ضرب آثار و احادیث میں وارد ہے" اھ

جو احادیث کی چھان بین کرے گا اس پر عیاں ہو جائیگا کہ مستصفی کی عبارت بجا ہے تو اس پر گرفت بلاوجہ اور بے جا ہے اگرچہ بحر میں بھی اس گرفت کو برقرار رکھا ہے۔ یہ احادیث میں ضرب کے صرف مذکور ہونے کی بات ہوئی اب یہ بات رہی کہ کیا احادیث میں اس کا رکنِ تیمم ہونا بھی مذکور ہے؟ تو میرے علم میں تو اس بارے میں دو صحیح حدیثیں بلانکہ ایک بھی صریح حدیث نہیں۔ احادیث ہونا تو دور کی بات ہے۔ اب حلیہ کا یہ اقتباس پڑھئے۔ فرماتے ہیں: "اکثر علماء رکنیت ضرب کے قائل ہیں اس لئے کہ اس بارے میں " صریح احادیث وارد ہیں انہی میں سے وہ حدیث ہے جو حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما (فذکر ما قدمنا)

حواشی: 1. البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۵۱ 2. البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۵۱

(He said) Narrated by Al-Hakim, who praised it. Among them is what is narrated from Ammar bin Yasir (may Allah be pleased with them both), who said: "I was among the people when the permission (concession) was revealed. We were ordered to strike twice; once for the face, then another strike for the hands up to the elbows." Al-Bazzar recorded it with a good (hasan) chain of narration. Here, first, Al-Hakim did not praise it, but remained silent about its authentication and the authentication of its chain. The researcher in Al-Fath, following Imam Al-Zayla'i, said: "Al-Hakim remained silent about it and said: 'I do not know anyone who narrated it as a chain (musnad) from Ubaidullah except Ali bin Dhabiyan, and he is truthful (saduq).'"

I say: (1) Praising (2) the narrator is not praise for (3) the narration itself. A person being truthful in themselves does not contradict their being weak in their narration. How (4) could it be otherwise when the statements have converged?

---

1. Hulyah
2. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Sukkur 1/110 Page 353 of 756

(उन्होंने कहा) अल-हाकिम ने इसे रिवायत किया और इसकी प्रशंसा की। उन्हीं में से वह भी है जो हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत है, उन्होंने कहा: "जब रियायत (रुख़्सत) नाज़िल हुई तो मैं लोगों के बीच मौजूद था, सरकार ने हमें दो बार हाथ मारने (ज़रब) का हुक्म दिया; एक बार चेहरे के लिए, फिर दूसरी बार कोहनियों तक हाथों के लिए।" बज़ार ने इसे हसन सनद के साथ रिवायत किया है। इसमें पहली बात यह है कि अल-हाकिम ने इसकी प्रशंसा नहीं की, बल्कि इसकी और इसकी सनद की प्रमाणिकता (तसहीह) पर चुप्पी साधी। अल-फतह के शोधकर्ता ने इमाम अल-ज़ैलाई का अनुसरण करते हुए कहा: "हाकिम ने इस पर चुप्पी साधी और कहा: 'मेरे ज्ञान में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसने इस हदीस को उबैदुल्लाह से मुसनद रिवायत किया हो, सिवाय अली बिन ज़बयान के, और वे सदूक (सच्चे) हैं'।"

मैं कहता हूँ: (१) रावी (वर्णनकर्ता) की प्रशंसा, (२) रिवायत (कथन) की (३) प्रशंसा नहीं है। किसी व्यक्ति का स्वयं में सच्चा होना, उसकी हदीस में कमज़ोर (ज़ईफ़) होने के विपरीत नहीं है। फिर (४) उक्त रावी हदीस में कमज़ोर क्यों न हों? जबकि शब्द एकमत हो गए हैं।

---

1. हुलिया
2. फ़त्ह अल-क़दीर, बाब अत-तयम्मुम, सुक्कुर १/११० पृष्ठ ३५३ का ७५६

قال) رواہ الحاکم واثنی علیہ ومنہا ما عن عمار بن یاسر رضی اللہ تعالی عنہما قال کنت فی القوم حین نزلت الرخصۃ فأمرنا بضربتین واحدۃ للوجہ ثم ضربۃ اخری للیدین الی المرفقین اخرجہ البزار باسناد حسن اھ۔ فیہ اولاًان الحاکم لم یثن علیہ بل سکت عن تصحیحہ وعن تصحیح اسنادہ قال المحقق فی الفتح تبعاً للامام الزیلعی المخرج سکت عنہ الحاکم وقال لا اعلم احداً اسندہ عن عبیداللہ غیر علی بن ظبیان وھو صدوق اھ۔

رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی ہے (اس کے بعد وہ الفاظِ حدیث ہیں جو پہلے ہم نے تعریفِ ششم کے بعد ہی ذکر کیے ہیں فرمایا) اسے حاکم نے روایت کیا اور اس کی ستائش کی۔ اور ان ہی میں سے وہ بھی ہے جو حضرت عمار بن یاسر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی ہے، فرمایا: جب رخصت نازل ہوئی میں لوگوں کے درمیان موجود تھا، سرکار نے ہمیں دو ضربوں کا حکم دیا ایک چہرے کیلئے، پھر دوسری ضرب کہنیوں تک ہاتھوں کیلئے۔ بزار نے اس حدیث کی بسندِ حسن تخریج کی اھ " اس عبارت میں حلیہ پر چند کلام ہیں : اولاً: حاکم نے اس کی ستائش نہ کی، اس کی تصحیح سے بلکہ اس کی اسناد کی تصحیح سے بھی سکوت اختیار کیا۔ نصب الرایہ میں اس کی تخریج فرمانے والے امام زیلعی کی تبعیت میں محقق علی الاطلاق نے بھی فتح القدیر میں فرمایا: "حاکم نے اس سے سکوت اختیار کیا اور فرمایا کہ میرے علم میں کوئی ایسا شخص نہیں جس نے اس حدیث کو عبید اللہ سے مُسند روایت کیا ہو، سوائے علی بن ظبیان کے، اور یہ صَدوق (راست گو) ہیں اھ"۔

اقول: (۱) الثناء علی (۲) الراوی لیس ثناءاً علی (۳) الروایۃ وکونہ صادقاً في نفسہ لا ینافی کونہ ضعیفاً في حدیثہ کیف (۴) وقد تظافرت کلمات

اقول: راوی کی تعریف وستائش، روایت کی تعریف وستائش نہیں۔ اور راوی کا فی نفسہ صادق ہونا، حدیث میں اس کے ضعیف ہونے کے منافی نہیں۔ پھر راوی مذکور حدیث میں ضعیف کیسے نہ ہوں؟ جبکہ

---

1 حلیہ 2 فتح القدیر باب التیمم سکھر ۱/ ۱۱۰ صفحہ 353 of 756

Fatawa Razawiya Volume 3

Scholars of this field unanimously consider him weak. Not only that, Abu Hatim and then Al-Nasa'i have called him "Matrook" (abandoned). In fact, even more so, Ibn Ma'in—as reported from him—called him a "Kadhāb" (liar), which misled Al-Munawi in "Al-Taysir" to write "Kadhāb" about him.

I say: (1) However, it is not so. He is a favored, religious, and scholarly person (faqih). The matter is that according to the scholars of Hadith, he is weak in Hadith narration; therefore, it was stated in "Al-Taqrib" (1) that he is "Da'if" (weak).

Secondly: (2) It is also strange that he relied on this Hadith but left the authentic chain of narration (Sahih al-Isnad) of the Hadith from Hazrat Jabir bin Abdullah (may Allah be pleased with them). The same happened with Imam Al-Suyuti in "Al-Jami' al-Saghir."

Thirdly: (3) Now take the Hadith of Hazrat Ammar (may Allah be pleased with him); it only mentions that "we were commanded to strike twice." It is not necessary that everything commanded becomes a pillar (rukn). Even further from this is the narration from the Mother of the Believers, Hazrat Siddiqah (may Allah be pleased with her), from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), found in Musnad al-Bazzar. Firstly, its chain is weak; secondly, the text only says: "In Tayammum, there are two strikes." (2) (End).

Footnotes: 1. Al-Taqrib al-Tahdhib, Dar Nashr al-Kutub al-Islamiyah, Gujranwala, p. 477. 2. Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Chapter of Tayammum, Mu'assasah al-Risalah, Beirut, 1/159.

फ़तावा रज़विया खंड 3

इस विषय के प्रमुख विद्वान उन्हें सर्वसम्मति से 'ज़ईफ़' (कमज़ोर) कहते हैं। इतना ही नहीं, अबू हातिम और फिर अन-नसाई ने तो उन्हें 'मतरूक' (त्यागा हुआ) भी कहा है। बल्कि इससे भी आगे बढ़कर इब्न मुईन ने—जैसा कि उनसे वर्णित है—उन्हें 'कज़्ज़ाब' (झूठा) कहा, जिससे गुमराह होकर 'अत-तयसीर' में अल-मुनावी ने उनके बारे में 'कज़्ज़ाब' लिख दिया।

मैं कहता हूँ: (1) हालांकि ऐसा नहीं है। वे एक पसंदीदा, धर्मनिष्ठ और विद्वान (फ़क़ीह) व्यक्ति हैं। बात यह है कि हदीस के विद्वानों के अनुसार वे हदीस रिवायत करने में कमज़ोर हैं; इसीलिए 'अत-तक़रीब' (1) में कहा गया है कि वे 'ज़ईफ़' हैं।

दूसरा: (2) यह भी अजीब बात है कि उन्होंने इस हदीस पर तो भरोसा किया, लेकिन हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की सही सनद (विश्वसनीय श्रृंखला) वाली हदीस को छोड़ दिया। इमाम सुयुती के साथ भी 'अल-जामी अस-सग़ीर' में यही हुआ।

तीसरा: (3) अब हज़रत अम्मार (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की हदीस को लें; इसमें सिर्फ इतना है कि "हमें दो बार मारने (मिट्टी पर हाथ मारने) का आदेश दिया गया।" ऐसा नहीं है कि जिस चीज़ का भी आदेश दिया जाए वह 'रुक्न' (स्तंभ या अनिवार्य हिस्सा) बन जाए। इससे भी अधिक दूर नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से हज़रत उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की रिवायत है जो मुसनद अल-बज़ार में है। एक तो इसकी सनद कमज़ोर है, दूसरा यह कि मूल पाठ (मत्न) में केवल यह है: "तयम्मुम में दो ज़र्बें (मार) हैं।" (2) (समाप्त)।

पादलेख: 1. तक़रीब अत-तहज़ीब, दार नश्र अल-कुतुब अल-इस्लामिया, गुजरांवाला, पृष्ठ 477। 2. कश्फ़ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़ार, बाब अत-तयम्मुम, मुअस्ससा अर-रिसाला, बेरुत, 1/159।

ائمۃ الشان علی تضعیفہ بل قال ابوحاتم ثم النسائی متروک بل بالغ ابن معین فیما روی عنہ فقال کذاب واغتربہ المناوی فی التیسیر فقال فیہ کذاب۔ ائمہ فن انہیں بیک زبان ضعیف کہتے ہیں۔ اتنا ہی نہیں ابو حاتم پھر نسائی نے تو "متروک" بھی کہا ہے۔ بلکہ اس سے بھی بڑھ کر ابن معین نے۔ جیسا کہ ان سے روایت کی گئی ہے۔ کذاب کہا جس سے دھوکا کھا کر تیسیر میں منادی نے "کذاب" لکھ ڈالا۔

اقول: (۱) ولیس کذلک بل الرجل خیر دین فقیہ ضعیف عند المحدثین فی الحدیث لاجرم ان قال فی التقریب ۱ ضعیف۔ **اقول:** حالانکہ ایسا نہیں۔ آدمی پسندیدہ، دین دار، فقیہ ہیں۔ یہ ہے کہ محدثین کے نزدیک حدیث میں ضعیف ہیں لاجرم تقریب میں کہا: ضعیف ہیں۔

وثانیاً: (۲) العجب استنادہ الی ھذا وترکہ حدیث جابر الصحیح الاسناد وتوارد علیہ الامام السیوطی فی الجامع الصغیر۔ **ثانیاً:** یہ بھی عجیب بات ہے کہ انہوں نے اس حدیث سے تو استناد کیا مگر حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی صحیح الاسناد حدیث کو چھوڑ دیا، جامع صغیر میں امام سیوطی سے بھی یہی ہوا ہے۔

وثالثاً: حدیث (۳) عمار رضی اللہ تعالیٰ عنہ انما فیہ الامر بضربتین ولیس کل یؤمر بہ رکناً وابعد منہ حدیث البزار عن ام المؤمنین الصدیقۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہا عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فلفظہ علی ضعف اسنادہ فی التیمم ضربتان ۲ اھ **ثالثاً:** اب حضرت عمار رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حدیث لیجئے اس میں صرف اتنا ہے کہ "ہمیں دو ضربوں کا حکم ہوا۔" اور ایسا نہیں کہ جس چیز کا بھی حکم دیا جائے وہ رکن ہو۔ اس سے بھی زیادہ بعید نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم سے حضرت ام

المؤمنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی روایت سے مسند بزار کی حدیث ہے۔ ایک تو اس کی سند ضعیف ہے، دوسرے یہ کہ متن میں بس یہ ہے: "فی التیمم ضربتان" (تیمم میں دو ضربیں ہیں) اھ

---

۱ تقریب التہذیب دار نشر الکتب الاسلامیہ گوجرانوالہ ص ۴۷۷ ۲ کشف الاستار عن زوائد البزار باب التیمم مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۱۵۹/۱

Fatawa Razawiyya - Volume Three

[Arabic]: Fourthly: (1) Rather, the phrase "Tayamum is two strikes" (2) is not explicit regarding its status as a pillar (rukn). It has already been stated by the Muhaqqiq (the Absolute Researcher) that this was stated in light of the dominant and frequent practice, and its verification will follow, Insha-Allah Ta'ala. [Urdu]: Fourthly: Undoubtedly, the phrase "Tayamum is two strikes" is not explicit regarding its rukniyat (being a pillar). It has already passed that the Muhaqqiq al-al-Itlaq stated that this statement is given in terms of majority and commonality; its verification is coming shortly.

[Arabic]: I say: Rather, Imam Muslim narrated from Mu'awiya bin al-Hakam (may Allah be pleased with him) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that this prayer is not suitable for anything from the speech of people; it is only tasbeeh, takbeer, and recitation of the Quran. While neither tasbeeh nor takbeer are from its pillars. And Malik al-Ulama said in 'al-Badai': The funeral prayer is a supplication for the deceased. [End quote]. And it is known that its pillars are nothing but the four takbeers. [Urdu]: I say: Rather, Imam Muslim narrated this Hadith from Hazrat Mu'awiya bin al-Hakam (may Allah be pleased with him) from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Nothing of people's conversation is worthy of being inside this prayer; the prayer is only tasbeeh, takbeer, and recitation of the Quran." While neither tasbeeh is among the pillars of prayer nor is takbeer (similarly, "Tayamum is two strikes" is also not explicit in making the predicate a pillar of the subject). Malik al-Ulama stated in Badai' al-Sanai': "Funeral prayer is to pray for the deceased." [End quote]. As it is known that the pillars of the funeral prayer are nothing but the four takbeers.

[Arabic]: Second: (1) Purely physical duties do not allow for representation (niyabat). So no one shall pray on behalf of another, nor shall anyone perform ablution on behalf of another, and similarly, no one shall perform tayamum on behalf of another, and we have allowed... [Urdu]: Discussion 2: Representation does not work in actions that are purely physical. No person can pray on behalf of another person, nor can anyone perform wudu (ablution) on behalf of another; similarly, a person cannot perform tayamum on behalf of another either. And this has been kept permissible...

[Footnotes]: 1. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nooria Razawiya Sukkur 1/111 2. Al-Sahih li Muslim, Chapter on the Prohibition of Speaking in Prayer, etc., printed at

Qadimi Kutub Khana Karachi 1/203 3. Badai' al-Sanai', Method of Funeral Prayer, Karachi 1/313

फतावा रज़विया - जिल्द 3

[अरबी]: चौथा: (1) बल्कि 'तयम्मुम दो प्रहार है' (2) का वाक्यांश स्तंभता (रुकनियत) के बारे में स्पष्ट नहीं है। मुहक़्क़िक़ (परम शोधकर्ता) द्वारा पहले ही कहा जा चुका है कि यह प्रचलित और अधिकांश अभ्यास के संदर्भ में कहा गया है, और इसका सत्यापन इंशा-अल्लाह ताला जल्द ही आएगा। [उर्दू]: चौथा: निस्संदेह, "तयम्मुम दो प्रहार है" यह वाक्यांश भी स्तंभता (रुकनियत) के बारे में स्पष्ट नहीं है। यह बताया जा चुका है कि मुहक़्क़िक़ अलल-इतलक़ ने फरमाया है कि यह बयान प्रमुख और अक्सरियत के लिहाज़ से दिया गया है; इसकी तहक़ीक़ जल्द ही आ रही है।

[अरबी]: मैं कहता हूँ: बल्कि इमाम मुस्लिम ने मुआ़विया बिन अल-हकम (रज़ियल्लाहु अन्हु) से नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की है कि इस नमाज़ में लोगों की बातचीत का कुछ भी उचित नहीं है; यह केवल तस्बीह, तकबीर और कुरान का पाठ है। जबकि न तो तस्बीह और न ही तकबीर इसके स्तंभों (अरकान) में से हैं। और मलिक अल-उलमा ने 'अल-बदाइअ' में कहा: जनाज़ा की नमाज़ मृतक के लिए दुआ है। [समाप्त]। और यह ज्ञात है कि इसके स्तंभ चार तकबीरों के अलावा कुछ भी नहीं हैं। [उर्दू]: मैं कहता हूँ: बल्कि इमाम मुस्लिम ने हज़रत मुआविया बिन अल-हकम (रज़ियल्लाहु अन्हु) से नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की यह हदीस रिवायत की है: "लोगों की बातचीत में से कुछ भी इस नमाज़ के अंदर होने के योग्य नहीं है, नमाज़ तो बस तस्बीह, तकबीर और कुरान की क़िरअत है।" हालांकि न तो तस्बीह नमाज़ के अरकान में से है और न ही तकबीर (इसी प्रकार "तयम्मुम दो प्रहार है" भी विधेय को विषय का स्तंभ बताने के मामले में स्पष्ट नहीं है)। मलिक अल-उलमा ने बदाइअुस-सनाइअ में फरमाया है: "नमाज़-ए-जनाज़ा मय्यत के लिए दुआ करना है।" [समाप्त]। जैसा कि ज्ञात है कि नमाज़-ए-जनाज़ा के अरकान चार तकबीरों के अलावा और कुछ नहीं हैं।

[अरबी]: द्वितीय: (1) विशुद्ध रूप से शारीरिक कर्तव्यों में प्रतिनिधित्व (नियाबत) की अनुमति नहीं है। इसलिए कोई भी दूसरे की ओर से नमाज़ नहीं पढ़ेगा, न ही कोई दूसरे की ओर से वज़ू करेगा, और इसी तरह, कोई भी दूसरे की ओर से तयम्मुम नहीं करेगा, और हमने अनुमति दी है... [उर्दू]: बहस 2: जो केवल शारीरिक कार्य हैं उनमें प्रतिनिधान (नियाबत) नहीं चलता। कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की ओर से नमाज़ नहीं पढ़ सकता और न ही कोई दूसरे की ओर से वज़ू कर सकता है, इसी प्रकार एक व्यक्ति दूसरे की ओर से तयम्मुम भी नहीं कर सकता। और इसे जायज़ रखा गया है...

[पाद टिप्पणियाँ]: 1. फतह अल-क़दीर, बाब अल-तयम्मुम, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/111 2. अल-सहीह लि मुस्लिम, बाब तहरीर अल-कलाम फि अल-सलात आदि, मुद्रित क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/203 3. बदाइअुस-सनाइअ, नमाज़-ए-जनाज़ा की कैफियत, कराची 1/313

पृष्ठ 355/756

فتاویٰ رضویہ - جلد سوم

[عربی]: ورابعاً (۱) بل لیست العبارة التیمم ضربتان (۲) صریحة فی الرکنیة وقد تقدم عن المحقق انه خرج مخرج الغالب وسیاتی تحقیقه ان شاء الله تعالی- [اردو]: رابعاً: بلاشبہ "التیمم ضربتان" (تیمم دو ضرب ہے) یہ عبارت بھی رکنیت کے بارے میں صریح نہیں۔ گزر چکا کہ محقق علی الاطلاق نے فرمایا ہے یہ بیانِ غالب واکثر کے لحاظ سے وارد ہے، عنقریب اس کی تحقیق آرہی ہے۔

[عربی]: اقول: بل روی مسلم عن معویة بن الحکم رضی الله تعالی عنه عن النبی صلی الله تعالی علیه وسلم ان هذه الصلاة لا یصلح فیها شیئ من کلام الناس انما هی التسبیح والتکبیر وقراءة القرآن (2) ولیس التسبیح ولا التکبیر من ارکانها وقال ملك العلماء فی البدائع صلاة الجنازة دعاء للمیت (3) اه ومعلوم ان لیس ارکانها الا التکبیرات الاربع- [اردو]: اقول: بلکہ امام مسلم نے حضرت معاویہ بن الحکم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی یہ حدیث روایت کی ہے: "لوگوں کی بات چیت میں سے کچھ بھی اس نماز کے اندر ہونے کے لائق نہیں، نماز تو بس تسبیح و تکبیر اور قرآن کی قرات ہے"۔ حالانکہ نہ تسبیح نماز کے ارکان میں سے ہے نہ تکبیر (اسی طرح "تیمم" دو ضرب ہے۔ یہ بھی محمول کو موضوع کا رکن بتانے کے معاملے میں صریح نہیں) ملک العلماء نے بدائع الصنائع میں فرمایا ہے: "نمازِ جنازہ میت کیلئے دُعا کرنا ہے" اھ جیسا کہ معلوم ہے کہ ارکانِ نمازِ جنازہ، چاروں تکبیروں کے سوا اور کچھ نہیں۔

[عربی]: الثانی: (۱) الوظائف البدنیة المحضة لاتجري فیها النیابة فلا یصلی احد عن احد ولا یتوضؤ احد عن احد کذا لا یتیمم احد عن احد وقد جوزنا [اردو]: بحث ۲: جو محض بدنی اعمال ہیں ان میں نیابت نہیں چلتی۔ کوئی شخص دوسرے شخص کی طرف سے نماز نہیں پڑھ سکتا نہ کوئی دوسرے

کی جانب سے وضو کر سکتا ہے، اسی طرح ایک شخص کی طرف سے تیمم بھی نہیں کر سکتا۔ اور یہ جائز رکھا گیا ہے۔

[حواشی]: 1 فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۱۱ 2 الصحیح لمسلم باب تحریم الکلام فی الصلوٰۃ الخ مطبوعہ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۰۳ 3 بدائع الصنائع کیفیہ صلوٰۃ الجنازۃ کراچی ۱/ ۳۱۳

Fatawa Razawiyya Volume 3

(Arabic Text transcribing the arguments): If Amr performs Tayammum for Zaid, then the two strikes (striking the earth) are only performed by Amr. All the pillars of Tayammum would then be fulfilled by Amr alone, meaning Amr performed the action of Tayammum while Zaid became purified. If those two strikes are only some of its pillars, then part of the Tayammum would be with Zaid and part with Amr. Is there any parallel to this in Shariah? Then, the whole Tayammum would be attributed to Zaid. All of this is irrational and unacceptable. Third: Investigation into what the researcher benefit us by saying that what is commanded is wiping (Masah) and nothing else. The Holy Book has only commanded the intention of clean soil, so wiping is from it. This does not depend on striking, let alone it being part of its reality. For example, if wind throws dust on someone's limbs, it is possible for him to intend to wipe with that dust by passing his hands over them without needing to strike the ground. Yes, someone who does not find dust on his limbs needs to intend to get it from the earth or a wall, and this does not necessitate it being a pillar (Rukn) nor even a condition (Shart). Striking the soil in Tayammum is only like...

(Urdu Text translation and elaboration): ...that Zaid should be made to perform Tayammum by Amr. In this case, the action of striking both times proceeded only from Amr. In technical terms, both strikes are associated only with Amr. Now, if these two strikes are all the pillars of Tayammum, then it follows that Amr performed Tayammum and Zaid became pure. And if these two strikes are some of the pillars of Tayammum, then it follows that some of the Tayammum is attached to Zaid and some to Amr. Then both of these together became the full Tayammum of Zaid. Is there any parallel for this in the Shariah? (That all the parts and pillars of a bodily action are performed by Amr and it becomes Zaid's action? Or one part of the same bodily obligation is performed by Zaid and the other part by Amr, then both combine to come into Zaid's portion and the obligation is lifted from him? 12 Muhammad Ahmad Islahi). All this is irrational and unacceptable. Discussion 3: Regarding the researcher's benefit that what is commanded is only wiping (Masah), the research on it is that the Quran al-Hakim has given this very command that after intending pure soil, wipe with it. This task is not dependent on striking, let alone striking being part of its reality. For this reason, for example, if dust falls on someone's face and hands due to a storm, it is possible for him to intend to wipe with that same dust and rub his hands over it; he doesn't need to strike the ground. Yes, the one whose limbs do not have dust on them needs to intend soil from some ground or wall, and this point

does not demand it being a pillar, nor even a condition. Because in Tayammum, on soil...

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (भाग ३)

(अरबी पाठ का अनुवाद): अगर अम्र जैद को तयम्मुम कराए, तो दो बार प्रहार (ज़मीन पर हाथ मारना) का कार्य केवल अम्र से हुआ। तयम्मुम के सभी स्तंभ (अर्काम) अम्र के माध्यम से स्थापित हुए, यानी तयम्मुम अम्र ने किया और पवित्र जैद हुआ। यदि वे दो प्रहार इसके कुछ ही स्तंभ हैं, तो आधा तयम्मुम जैद के साथ और आधा अम्र के साथ जुड़ा होगा। क्या शरीयत में इसका कोई उदाहरण है? फिर वह पूरा तयम्मुम जैद के लिए हो गया। यह सब तर्कहीन और अस्वीकार्य है। तीसरा: शोधकर्ता ने जो यह लाभ पहुँचाया है कि जिसका आदेश दिया गया है वह केवल पोंछना (मसाह) है, उसकी सच्चाई यह है कि पवित्र पुस्तक ने केवल स्वच्छ मिट्टी (सईद ए तय्यब) का इरादा करने का आदेश दिया है, इसलिए पोंछना उसी से है। यह प्रहार (ज़मीन पर हाथ मारने) पर निर्भर नहीं है, उसकी वास्तविकता में शामिल होना तो दूर की बात है। उदाहरण के लिए, यदि हवा किसी के अंगों पर धूल डाल दे, तो उसके लिए संभव है कि वह उसी धूल से पोंछने का इरादा करे और उस पर अपना हाथ फेर ले, उसे ज़मीन पर प्रहार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हाँ, जिसके अंगों पर धूल न हो, उसे किसी ज़मीन या दीवार से मिट्टी का इरादा करने की ज़रूरत है, और यह बात न तो रुकनियत (अनिवार्यता) का तक़ाज़ा करती है और न ही शर्त की। तयम्मुम में मिट्टी पर प्रहार करना केवल...

(उर्दू पाठ का अनुवाद): ...कि जैद को अम्र तयम्मुम करा दे। इस स्थिति में दोनों बार हाथ मारने का कार्य केवल अम्र से ही संपन्न हुआ। तकनीकी शब्दों में, दोनों प्रहार केवल अम्र के साथ जुड़े हुए हैं। अब यदि ये ही दो प्रहार तयम्मुम के सभी स्तंभ हैं, तो इसका परिणाम यह हुआ कि तयम्मुम अम्र ने किया और जैद पवित्र हो गया। और यदि ये दो प्रहार तयम्मुम के कुछ स्तंभ हैं, तो इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ तयम्मुम जैद के साथ लगा हुआ है और कुछ अम्र के साथ। फिर ये दोनों मिलकर जैद का पूरा तयम्मुम बन गया। क्या शरीयत में इसकी कोई मिसाल है? (कि किसी शारीरिक कार्य के सभी अंग और स्तंभ अम्र अदा करे और वह जैद का कार्य हो जाए? या एक ही शारीरिक कर्तव्य का एक हिस्सा जैद अदा करे और दूसरा हिस्सा अम्र पूरा करे, फिर दोनों मिलकर जैद के हिस्से में आ जाएँ और उसके ऊपर से फ़र्ज़ उतर जाए? १२ मुहम्मद अहमद इस्लाही)। यह सब तर्कहीन और अस्वीकार्य है। बहस ३: हज़रत मोहक़्क़िक़ ने जो यह बात बताई है कि आदेशित कार्य केवल 'मसाह' (पोंछना) है, उसकी तहक़ीक़ यह है कि क़ुरआन ए हकीम ने तो यही हुक्म दिया है कि पाकीज़ा मिट्टी का इरादा करके उससे मसाह करो, यह काम प्रहार (ज़मीन पर हाथ मारने) पर निर्भर नहीं है, प्रहार का इसकी हक़ीक़त में शामिल होना तो दूर की बात है। इसलिए कि मिसाल के तौर पर जिसके चेहरे

और हाथों पर आंधी से गर्द (धूल) पड़ गई, उससे यह हो सकता है कि उसी गर्द से मसाह का इरादा करके उस पर अपना हाथ फेर ले, उसे ज़मीन पर हाथ मारने की कोई ज़रूरत नहीं। हाँ, जिसके अंगों पर धूल न हो उसे किसी ज़मीन या दीवार से मिट्टी का इरादा करने की ज़रूरत है और यह बात रुकनियत क्या, शर्त की भी मुक़्तज़ी नहीं। क्योंकि तयम्मुम में सईद पर...

ان ییمم زیدا عمرو فاذن الضربتان لاتقومان الابعمر و فلوکانتا جمیع ارکان التیمم فقد تییم عمرو وطھر بہ زید ولوکانتا بعض ارکانہ فقد قام بعض التیمم بزید وبعضہ بعمرو وھل لہ نظیر في الشرع ثم قد حصل کلہ لزید وھذا کلہ غیر معقول ولامقبول۔ الثالث: تحقیق ماافاد المحقق بقولہ ان المأموربہ مسح لاغیر ان الکتاب العزیز انما امر بقصد الصعید الطیب فالمسح منہ وھذا لا توقف لہ علی الضرب فضلاً عن دخولہ فی فسخ حقیقتہ (۱) فان من القت الریح الغبار علی عضویہ مثلا یتأتی لہ قصدہ للمسح منہ بأمراریدہ علیہ من دون حاجۃ الی الضرب علی الارض نعم من لا یجدہ علی اعضائہ یحتاج الی قصدہ من ارض او جدار وذلك لایقتضی الرکنیۃ بل ولا الشرطیۃ فأنما مثل الضرب علی الصعید في التیمم

کہ زید کو عمرو تیمم کرادے۔ اس صورت میں دونوں ضربیں مارنے کا عمل صرف عمرو سے صادر ہوا۔ بلفظ اصطلاحی دونوں ضربیں صرف عمرو کے ساتھ قائم ہیں۔ اب اگر یہی دو ضربیں تمام ارکانِ تیمم ہیں تو لازم آیا کہ عمرو نے تیمم کیا اور زید پاک ہوا۔ اور اگر یہ دونوں ضربیں، بعض ارکانِ تیمم ہیں تو لازم آیا کہ کچھ تیمم زید کے ساتھ لگا ہوا ہے او ر کچھ عمرو کے ساتھ۔ پھر یہ دونوں مل کر سارا تیمم زید ہی کا ہو گیا۔ کیا شریعت میں اس کی کوئی نظیر ہے؟ (کہ کسی بدنی عمل کے سارے اجزاء وارکان عمرو ادا کرے اور وہ زید کا عمل ہو جائے؟ یا ایک ہی فریضہ بدنیہ کا ایک جزء زید ادا کرے اور دوسرا جزء عمرو بجالائے، پھر دونوں مل کر سب زید کے حصہ میں آجائے اور اس کے سر سے فرض اتر جائے؟ ۱۲ محمد احمد اصلاحی) یہ سب نامعقول اور ناقابلِ قبول ہے۔ بحث ۳: حضرت محقق نے جو افادہ فرمایا کہ مامور بہ صرف مسح ہے، اس کی تحقیق یہ ہے کہ قرآنِ حکیم نے تو یہی حکم دیا ہے کہ پاکیزہ صعید کا قصد کر کے اس سے مسح کرو، یہ کام ضرب پر موقوف نہیں، ضرب کا اس کی حقیقت میں داخل ہونا درکنار۔ اس لئے

کہ مثلاً جس کے چہرے اور ہاتھوں پر آندھی سے گرد پڑ گئی اس سے یہ ہو سکتا ہے کہ اسی گرد سے مسح کا قصد کر کے اس پر اپنا ہاتھ پھیر لے اسے زمین پر ضرب کی کوئی ضرورت نہیں۔ ہاں جس کے اعضاء پر گرد نہ ہو اسے کسی زمین یا دیوار سے مٹی کے قصد کی ضرورت ہے اور یہ بات رکنیت کیا، شرط کی بھی مقتضی نہیں۔ کیونکہ تیمم میں صعید پر

Fatawa-e-Razvia Volume 3

(Arabic Text) It is like taking a handful of water from a vessel during ablution (Wudu). So, for one who stands in the rain, it suffices him from taking a handful. Yes, if it is not possible to perform Wudu without taking and pouring water by hand, then it would be necessary. And no one can say that taking water with the palm is among the pillars (Arkan) or conditions (Shara'it) of Wudu. This matter is very clear and obvious, and there should be no doubt about it. Therefore, neither the words of the Lawgiver (peace and blessings of Allah be upon Him) nor the words of the Master of the School (may Allah be pleased with him) should be interpreted contrary to this.

Fourth: Coming to the interpretation (of the words of the Lawgiver and the Master of the School), the first point is that this is based on the predominant and well-known situation. This is because finding dust already on the two limbs (face and hands) is very rare. Similarly, it is not common in the description of Tayammum (dry ablution) to put one's head in a place of dust, or to stand where dust is flying, and then move the limbs of Tayammum. Instead, the well-known and customary method is that of striking (the earth). On this basis, both verbal and practical Hadiths have been narrated. When Hazrat Ammar (may Allah be pleased with him) rolled on the ground for Tayammum, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon Him) said to him: "It would have been sufficient for you to strike the ground with your hands, then blow on them, and then wipe your face and your hands with them." This Hadith is mentioned in the Sahih Sittah (the six authentic books of Hadith).

(Urdu Text) The status of 'Dharb' (striking the earth) is the same as taking a handful of water from a vessel during ablution. For one who stands in the rain, there is no need to take a handful of water; the rain itself is sufficient. Yes, if Wudu cannot be performed without taking and pouring water by hand, then it will be necessary. And no one can say that taking water with a handful is included in the pillars or conditions of Wudu. This matter is absolutely clear and bright, and there should be no doubt in it. Therefore, neither the words of the Lawgiver (peace and blessings be upon him) nor the words of the Master of the School (may Allah be pleased with him) can be interpreted as anything contrary to this.

Discussion 4: Now we come to the interpretation (of the words of the Lawgiver and the Master of the School). The first point is that this is according to the majority and well-known state, because finding dust already on the face and hands is very rare. Likewise, in the description of Tayammum, putting the head in a place of dust, or

standing in a place where dust is flying and moving the organs of Tayammum, is not familiar or well-known. The familiar and well-known method is that of striking (the earth); verbal and practical Hadiths related to this have been narrated. When Hazrat Ammar (may Allah be pleased with him) rolled on the ground for Tayammum, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said to him: "It was enough for you to strike the ground with your hands and then blow, then wipe your face and hands with them." This Hadith has appeared in the Sahah-e-Sittah.

1 Sunan Abi Dawud, Chapter of Tayammum, Mujtabai Lahore, 1/47.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द तीसरा

(अरबी पाठ) यह वज़ू के दौरान बर्तन से चुलू के ज़रिए पानी लेने जैसा है। लिहाज़ा, जो बारिश में खड़ा हो गया, उसे चुलू लेने की ज़रूरत नहीं है, बारिश ही काफ़ी है। हाँ, अगर हाथ से पानी लिए और बहाए बिना वज़ू न हो सके तो उसकी ज़रूरत होगी। और कोई यह नहीं कह सकता कि चुलू से पानी लेना वज़ू के अरकान (स्तंभों) या शराइत (शर्तों) में शामिल है। यह चीज़ बिल्कुल साफ़ और रोशन है जिसमें कोई शक नहीं होना चाहिए। इसलिए, न तो शारे' (कानून देने वाले, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कलाम को और न ही साहब-ए-मज़हब (रज़ियल्लाहु अन्हु) के कलाम को इसके खिलाफ समझा जा सकता है।

चौथा: अब हम (शारे' और साहब-ए-मज़हब के कलाम की) तावील (व्याख्या) पर आएँ तो पहली बात यह है कि यह अक्सर और मशहूर हालत के लिहाज़ से है। क्योंकि चेहरे और हाथों पर पड़ी हुई गर्द (धूल) मिलना बहुत ही दुर्लभ है। इसी तरह तयम्मुम की सिफ़त (विशेषता) में यह ज्ञात और प्रचलित नहीं है कि सिर को धूल वाली जगह में डाला जाए, या धूल उड़ने वाली जगह पर खड़ा हुआ जाए और तयम्मुम के अंगों को हरकत दी जाए। बल्कि मशहूर और ज्ञात तरीका वही 'ज़र्ब' (ज़मीन पर हाथ मारना) का है। इसी से संबंधित ज़ुबानी और व्यावहारिक हदीसें आई हैं। जब हज़रत अम्मार (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने तयम्मुम के लिए ज़मीन पर लोट-पोट किया था, तो उनसे नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "तुम्हारे लिए यह काफ़ी था कि अपने हाथों से ज़मीन पर मारते, फिर उन्हें फूँक देते, फिर उनसे अपने चेहरे और हाथों का मसह कर लेते।" यह हदीस सहाह-ए-सित्ता में आई है।

(उर्दू पाठ) ज़रब की हैसियत वही है जो वज़ू में बर्तन में चुलू के ज़रिए पानी लेने की है। जो बारिश में खड़ा हुआ उसे चुलू लेने की कोई ज़रूरत नहीं, बारिश ही काफ़ी है। हाँ, जब हाथ से पानी लिए और बहाए बिना वज़ू न हो पाए तो उसकी ज़रूरत होगी। और यह कोई नहीं कह सकता कि चुलू से पानी लेना वज़ू के अरकान या शराइत में दाखिल है। यह चीज़ बिल्कुल वाज़ेह और रोशन है जिसमें कोई शक नहीं होना चाहिए। तो इसके ख़िलाफ़ किसी बात पर न शारे' अलैहिस्सलाम के कलाम को महमूल किया जा सकता है न साहब-ए-मज़हब रज़ियल्लाहु अन्हु के कलाम को।

बहस 4: अब हम (कलाम-ए-शारे' और कलाम-ए-साहब-ए-मज़हब की) तावील पर आएँ तो पहली बात यह है कि यह अक्सरी और मारूफ़ हालत के लिहाज़ से है, इसलिए कि चेहरे और हाथों पर पड़ी

हुई गर्द मिलना बहुत ही नादिर है यूँ ही ग़ुबार की जगह सर दाखिल करना, या गर्द उड़ने की जगह खड़ा होना और आज़ा-ए-तयम्मुम को हरकत देना सिफ़त-ए-तयम्मुम में मअहूद-ओ-मारूफ़ नहीं। मारूफ़-ओ-मअहूद वही ज़रब का तरीक़ा है इसी से मुताल्लिक़ क़ौली और फ़ेअली हदीसें वारिद हैं। जब हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हु ने तयम्मुम के लिए ज़मीन पर लोट-पोट किया था तो उनसे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हारे लिए यह काफ़ी था कि अपने हाथों से ज़मीन पर मारते फिर फूंक देते, फिर उनसे अपने चेहरे और हाथों का मसह कर लेते।" यह हदीस सहाह-ए-सित्ता में आई है।

1 सुनन अबी दाऊद, बाब-अत-तयम्मुम, मुज्तबाई लाहौर, 1/47.

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

(عربی عبارت) کمثل الاغتراف من الاناء فی الوضوء فمن وقف فی المطر اغناہ عن الاغتراف نعم اذالم یجدہ الابآخذ وصب احتاج الیہ ولیس لاحد ان یقول ان الاغتراف من ارکان الوضوء اومن شرائطہ۔ وھذا شیئ واضح جدا لاینبغي الارتیاب فیہ فلایحمل کلام الشارع صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ولاکلام صاحب المذھب رضی اللہ تعالی عنہ علی خلافہ۔

الرابع: اتینا علی التاویل فاولہ ان الکلام انما جاء علی الغالب المعھود فان من النادر جدا وجد ان الغبار علی العضوین وکذا لم یعھد فی صفۃ التیمم ادخال الراس فی موضع الغبار اوالوقوف فی مثارہ وتحریک العضوین وانما المعروف المعھود ھو طریقۃ الضرب وبھأ وردت الاحادیث القولیۃ والفعلیۃ ولما تمعک عمار رضی اللہ تعالی عنہ قال لہ النبي صلی اللہ علیہ وسلم ان کان یکفیک ان تضرب بیدیک ۱ ثم تنفخ ثم تمسح بھما وجھک و کفیک رواہ الستۃ۔

(اردو عبارت) ضرب کی حیثیت وہی ہے جو وضو میں برتن میں چلو کے ذریعہ پانی لینے کی ہے، جو بارش میں کھڑا ہوا اسے چلو لینے کی کوئی ضرورت نہیں بارش ہی کافی ہے۔ ہاں جب ہاتھ سے پانی لئے اور بہائے بغیر وضو نہ ہو پائے تو اس کی ضرورت ہوگی۔ اور یہ کوئی نہیں کہہ سکتا کہ چلو سے پانی لینا وضو کے ارکان یا شرائط میں داخل ہے۔ یہ چیز بالکل واضح اور روشن ہے جس میں کوئی شک نہیں ہونا چاہئے۔ تو اس کے خلاف کسی بات پر نہ شارع علیہ الصلوۃ والسلام کے کلام کو محمول کیا جاسکتا ہے نہ صاحبِ مذہب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے کلام کو۔

بحث ۴: اب ہم (کلام شارع اور کلام صاحب مذہب کی) تاویل پر آئے تو پہلی بات یہ ہے کہ یہ اکثری اور معروف حالت کے لحاظ سے ہے، اس لئے کہ چہرے اور ہاتھوں پر پڑی ہوئی گرد ملنا بہت ہی نادر ہے یوں ہی غبار کی جگہ سر داخل کرنا، یا گرد اڑنے کی جگہ کھڑا ہونا اور اعضائے تیمم کو حرکت دینا صفتِ تیمم میں معہود و معروف نہیں۔ معروف و معہود وہی ضرب کا طریقہ ہے اسی سے متعلق قولی اور فعلی حدیثیں وارد ہیں۔ جب حضرت عمار رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے تیمم کیلئے زمین پر لوٹ پوٹ کیا تھا تو ان سے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: "تمہارے لئے یہ کافی تھا کہ اپنے ہاتھوں سے زمین پر مارتے پھر پھونک دیتے، پھر ان سے اپنے چہرے اور ہاتھوں کا مسح کر لیتے۔" یہ حدیث صحاحِ ستہ میں آئی ہے۔

1 سنن ابی داؤد باب التیمم مجتبائی لاہور ۴۷/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 3

Page 358 of 756

(Right Column - Arabic Text) I say: (1) However, an objection is raised against it from what we previously presented from Malik al-Ulama regarding the consensus of our three Imams (may Allah the Exalted be pleased with them) on the essentiality (rukniyat) of the two strikes. This makes the matter difficult regarding the second opinion. Therefore, one must resort to the interpretation of the second researcher (al-Muhaqqiq al-Thani), and the discussion on this will follow shortly.

Fifth: Just as the researcher followed two paths regarding the Hadith, he also went against the first opinion in the following branches with two doctrines. The first path—that the discourse is based on the majority—did not apply there, because essentiality necessitates obligation. Thus, he made the first path in them its restriction to the second opinion, meaning those branches are also from the fruits of the difference of opinion. Al-Bahr was certain of this, and [Shaykh] followed him.

(Left Column - Urdu Text) I say: But an objection will be raised against it which we have quoted from Malik al-Ulama (after the sixth definition) that there is a consensus of our three Imams on the essentiality (rukniyat) of the two strikes. Due to this, the matter will also be difficult for the second opinion (the non-essentiality of strikes). At that time, one will have to refer to the second interpretation of the respected researcher, and a discussion on this is coming soon.

Discussion 5: The respected researcher has adopted two methods in the interpretation of the Hadith (one is that since Tayammum usually occurs through strikes, these Hadiths have come here by way of the majority and frequency; second is that 'strike' is more general than it being on the ground or on a limb as wiping - Fath 1/111). Similarly, those sub-issues (juz'iyat) which have come contrary to the first opinion (the essentiality of the two strikes), two methods of interpretation have been adopted in them (the first method is that those sub-issues are only based on the opinion of those who say strikes are not essential; the second is that by the word 'strike', a meaning more general than both a strike on the ground and wiping on a limb is intended). In the Hadith, one method of interpretation adopted was that this is in view of the majority and frequency. That interpretation could not be applied here because when the strikes are accepted as an essential (rukn) of Tayammum, then the existence of strikes becomes necessary for Tayammum, as the existence and realization of a thing without its essential part is not possible. Therefore, here the

first method of interpretation was kept that these sub-issues are only based on the opinion of those who say strikes are not essential, so this...

फतावा रज़विया, खंड 3

पृष्ठ 358/756

(दायां कॉलम - अरबी पाठ) मैं कहता हूँ: (1) लेकिन इस पर वह आपत्ति लागू होगी जो हमने मलिक अल-उलमा से पहले प्रस्तुत की है कि हमारे तीनों इमामों (अल्लाह तआला उन पर प्रसन्न हो) का दो प्रहारों (ज़रबैन) की रुक्नियत (अनिवार्यता) पर आम सहमति (इजमा) है। इससे दूसरे मत पर मामला कठिन हो जाएगा। अतः उस समय दूसरे शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) की व्याख्या की ओर लौटना होगा और इस पर चर्चा जल्द ही आएगी।

पाँचवाँ: जैसा कि शोधकर्ता ने हदीस के संबंध में दो मार्ग अपनाए, वे आने वाली शाखाओं (फ़ुरऊ) में भी पहले मत के विपरीत दो सिद्धांतों पर चले गए। वहाँ पहला मार्ग—कि बातचीत बहुमत पर आधारित है—लागू नहीं हो सका, क्योंकि रुक्नियत अनिवार्यता पैदा करती है। इसलिए उन्होंने उनमें पहला मार्ग इसे दूसरे मत तक सीमित करना बनाया, यानी वे शाखाएँ भी मतभेद के परिणामों में से हैं। अल-बहर इस पर निश्चित थे और [शेख] ने उनका अनुसरण किया।

(बायां कॉलम - उर्दू पाठ) मैं कहता हूँ: लेकिन इस पर वह आपत्ति आएगी जो हमने मलिक अल-उलमा से (छठी परिभाषा के बाद) उद्धृत की है कि दो प्रहारों की रुक्नियत पर हमारे तीनों इमामों की आम सहमति है। इसी वजह से दूसरे मत (प्रहार की गैर-रुक्नियत) पर भी मामला मुश्किल होगा। तो उस समय हज़रत मुहक़्क़िक़ की दूसरी व्याख्या की ओर लौटना होगा और इस पर चर्चा जल्द आने वाली है।

बहस 5: हज़रत मुहक़्क़िक़ ने हदीस की व्याख्या में दो तरीके अपनाए हैं (एक यह कि चूँकि तयम्मुम अक्सर प्रहारों के माध्यम से ही होता है, इसलिए ये हदीसें यहाँ बहुमत और अधिकता के तौर पर आई हैं; दूसरा यह कि 'प्रहार' (ज़रब) इससे अधिक व्यापक है कि वह ज़मीन पर हो या अंग पर मसह के तौर पर हो - फ़तह 1/111)। इसी तरह वे उप-विषय (जुज़ियात) जो पहले मत (दो प्रहारों की रुक्नियत) के विपरीत आए हैं, उनमें व्याख्या के दो तरीके अपनाए गए हैं (पहला तरीका यह कि उप-विषय केवल उन लोगों के मत पर हैं जो प्रहार की गैर-रुक्नियत के कायल हैं; दूसरा यह कि शब्द 'ज़रब' से ज़मीन पर प्रहार और अंग पर मसह दोनों से अधिक व्यापक अर्थ मुराद है)। हदीस में व्याख्या का एक तरीका यह अपनाया गया था कि यह बहुमत और अधिकता के लिहाज़ से है। वह व्याख्या यहाँ नहीं हो सकती थी क्योंकि जब प्रहारों को तयम्मुम का रुक्न मान लिया गया तो तयम्मुम

के लिए प्रहार का अस्तित्व तो अनिवार्य हो गया क्योंकि रुक्न के बिना किसी चीज़ का प्रमाण और सिद्धि संभव ही नहीं। इसलिए यहाँ पहला तरीका व्याख्या का यह रखा कि ये उप-विषय केवल उन लोगों के मत पर हैं जो प्रहार की गैर-रुक्नियत के कायल हैं तो यह...

(دائیں کالم کا متن) اقول: (۱) لکن یرد علیه ماقدمنا عن ملك العلماء من اجماع ائمتنا الثلثة رضی الله تعالی عنهم علی رکنیة الضربتین وبه یصعب الامر علی القول الثانی فاذن یفزع الی تأویل المحقق الثانی وسیأتی الکلام علیه۔ الخامس: کما سلك المحقق بالحدیث مسلکین ذهب ایضاً بتلك الفروع الآتیة علی خلاف القول الاول مذهبین ولم یتأت فیها المسلك الاول ان الکلام علی الغالب فان الرکنیة توجب اللزوم فجعل المسلك الاول فیها قصرها علی القول الثانی ای فتکون تلك الفروع ایضاً من ثمرات الخلاف وبه جزم البحر وتبعه ش۔

(بائیں کالم کا متن) اقول: لیکن اس پر اُس سے اعتراض وارد ہوگا جو ہم نے ملک العلماء سے (تعریف سادس کے بعد) نقل کیا کہ رکنیت ضربین پر ہمارے تینوں ائمہ کا اجماع ہے اسی سے دوسرے قول (عدم رکنیت ضرب) پر بھی معاملہ دشوار ہوگا۔ تو اس وقت حضرت محقق کی تاویلِ ثانی کی طرف رجوع کرنا پڑے گا اور اس پر کلام عنقریب آنے والا ہے۔ بحث ۵: حضرت محقق نے حدیث کی تاویل میں دو طریقے اختیار کئے ہیں (ایک یہ کہ چوں کہ تیمم اکثر ضربوں ہی کے ذریعہ ہوتا ہے اس لئے یہ احادیث یہاں غالب واکثر کے طور پر آئی ہیں، دوسرا یہ کہ ضرب اس سے عام ہے کہ زمین پر ہو یا عضو پر بطور مسح ہو ۱۲ فتح ۱۱۱/۱) اسی طرح وہ جزئیات جو قول اول (رکنیت ضربین) کے برخلاف آئے ہیں ان میں تاویل کے دو طریقے اختیار کئے ہیں (پہلا طریقہ یہ کہ جزئیات صرف ان حضرات کے قول پر ہیں جو ضرب کی عدم رکنیت کے قائل ہیں، دوسرا یہ کہ لفظ ضرب سے زمین پر ضرب اور عضو پر مسح دونوں سے اعم معنی مراد ہے) حدیث میں ایک طریقہ تاویل یہ اختیار کیا تھا کہ یہ بلحاظ غالب و اکثر ہے وہ تاویل یہاں نہیں

ہوسکتی تھی کیونکہ جب ضربوں کو رکن تیمم مان لیا گیا تو تیمم کیلئے ضرب کا وجود تو لازم ہو گیا کہ رکن کے بغیر شیئ کا ثبوت و تحقق ممکن ہی نہیں۔ اس لئے یہاں پہلا طریقہ تاویل یہ رکھا کہ یہ جزئیات صرف ان لوگوں کے قول پر ہیں جو ضرب کی عدم رکنیت کے قائل ہیں تو یہ

Fatawa Rizvia, Volume 3

The subsidiary details (juz'iyyat) will also be the result of the disagreement between the two schools of thought (concerning whether striking the earth is an essential pillar [rukn] or not). For those who do not consider striking as a pillar of Tayammum, those cases and details regarding the validity of Tayammum will exist, whereas for those who consider striking as a pillar, Tayammum will not be valid in those cases. Upon this interpretation, Imam Bahr expressed certainty, and Allama Shami also followed him in this. (T)

I say: Firstly, it contains what I have already pointed out, that the sub-branches (furu') are cited in all the books as matters of consensus; no one pointed to any disagreement regarding them. I say: Accepting this interpretation as correct would lead to several objections. Firstly, what I pointed out earlier: that these subsidiary details are presented in all books in such a way that no one has even hinted at any disagreement regarding them, which shows that they are agreed upon among all these scholars and are not just based on the opinion of some.

Secondly: (1) If they were based on the second opinion, they would be contrary to the consensus of our Imams. So how could inclining towards them be permissible, let alone affirming them with certainty without any indication at all of disagreement regarding them? Secondly: If these details were based on the second opinion (non-essentiality of the two strikes), they would be contrary to the consensus (ijma') of our Imams. How then would an inclination towards them be permissible? And to affirm them with certainty without even a hint of disagreement regarding them would be even more improper.

Thirdly: (2) Most of those sub-branches are in Al-Khulasa, and its author, Imam Tahir, had already authenticated the first opinion. So how could he proceed in them entirely contrary to what he considers correct? Nay, he has even indicated that they are agreed upon, as is implied by the practice of all of them. For this reason, [the author of] Al-Durr [Al-Mukhtar] affirmed them with certainty along with his clarification. Thirdly: Most of these subsidiary details are mentioned in 'Khulasat al-Fatawa,' and the author of 'Khulasa,' Imam Tahir, has already declared the first opinion (essentiality of the two strikes) as correct. How then would he go against his own correct school of thought in all these details? Rather, he also informed that these details are agreed upon, just as the conduct of all other personages also necessitates

this. This is why in 'Durr al-Mukhtar,' certainty was expressed regarding these details, even though...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

विवरण (जुज़इयात) भी दोनों संप्रदायों के बीच मतभेद (प्रहार का अंग होना या न होना) का परिणाम होंगे। जिनके अनुसार प्रहार तैयम्मुम का अंग नहीं है, उनके यहाँ तैयम्मुम की वैधता के वे रूप और विवरण होंगे, और जिनके अनुसार प्रहार तैयम्मुम का अंग है, उनके यहाँ उन रूपों में तैयम्मुम मान्य नहीं होगा। इसी व्याख्या पर [इमाम] बहर ने निश्चितता व्यक्त की है, और अल्लामा शामी ने भी उनका अनुसरण किया है। (त)

मैं कहता हूँ: पहली बात वह है जिसकी ओर मैंने संकेत किया था कि सहायक शाखाओं (फ़ुर'ऊ) को सभी पुस्तकों में सर्वसम्मत विषय के रूप में प्रस्तुत किया गया है; किसी ने भी उनमें किसी मतभेद की ओर इशारा नहीं किया। मैं कहता हूँ: इस व्याख्या को सही मान लेने में कई आपत्तियाँ उत्पन्न होंगी। पहली बात जिसकी ओर मैंने पहले संकेत किया था कि ये विवरण सभी पुस्तकों में इस तरह बताए गए हैं कि किसी ने भी मतभेद की ओर कोई संकेत तक नहीं किया, जिससे यह ज्ञात होता है कि ये सभी महानुभावों के बीच सर्वसम्मत हैं और केवल कुछ की राय पर आधारित नहीं हैं।

दूसरा: (1) यदि वे दूसरे मत पर आधारित होते, तो वे हमारे इमामों की सर्वसम्मति के विपरीत होते, तो फिर उनकी ओर झुकाव कैसे संभव होता, उन पर निश्चितता जताना तो दूर की बात है, वह भी उनमें किसी मतभेद के संकेत के बिना? दूसरा: यदि ये विवरण दूसरे मत (दो प्रहारों का अंग न होना) के आधार पर होते, तो वे हमारे इमामों की सर्वसम्मति (इज्मा) के विरुद्ध होते। फिर उनकी ओर झुकाव कैसे स्वीकार्य होता? और उनसे संबंधित किसी भी मतभेद का संकेत दिए बिना उन पर निश्चितता जताना तो और भी अनुचित होता।

तीसरा: (2) उन सहायक शाखाओं में से अधिकांश 'अल-खुलासा' में हैं, और इसके लेखक इमाम ताहिर ने पहले मत को प्रमाणित किया था। तो वह उनमें पूरी तरह से उसके विपरीत कैसे चल सकते हैं जो उनके अनुसार सही है? बल्कि उन्होंने संकेत दिया है कि वे सर्वसम्मत हैं, जैसा कि उन सभी के आचरण की आवश्यकता है। इसलिए [अल-दुर्र अल-मुख्तार के लेखक] ने अपने स्पष्टीकरण के साथ उन पर निश्चितता व्यक्त की। तीसरा: इन विवरणों में से अधिकांश 'खुलासा अल-फतावा' में उल्लिखित हैं और 'खुलासा' के लेखक इमाम ताहिर पहले मत (दो प्रहारों का अंग होना) को सही घोषित कर चुके हैं। फिर वे इन सभी विवरणों में अपने ही सही मत के विरुद्ध कैसे चलेंगे? बल्कि उन्होंने तो यह भी सूचित किया कि ये विवरण सर्वसम्मत हैं, जैसा कि अन्य सभी महानुभावों के

आचरण का भी यही तकाज़ा है। यही कारण है कि 'दर-ए-मुख़्तार' में इन विवरणों पर निश्चितता व्यक्त की गई है, हालांकि...

पृष्ठ 359/756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

جزئیات بھی اختلاف مذہبین (رکنیت ضرب و عدم رکنیت) کا ثمرہ ہوں گی (جن کے نزدیک ضرب رکن تیمم نہیں ان کے یہاں جواز تیمم کی وہ صورتیں اور وہ جزئیات ہوں گے اور جن کے یہاں ضرب رکن تیمم ہے ان کے نزدیک ان صورتوں میں تیمم نہ ہوگا) اسی تاویل پر بحر نے جزم کیا ہے اور علامہ شامی نے بھی ان کا اتباع کیا ہے۔ (ت)

اقول: فیه اولاً ما اشرت الیه ان الفروع سیقت فی الکتب جمیعاً مساق المتفق علیه لم یؤم احد الی خلاف فیها۔ اقول: یہ تاویل درست مان لینے میں چند اعتراضات لازم آئیں گے اولاً وہ جس کی طرف میں نے پہلے اشارہ کیا کہ یہ جزئیات تمام کتابوں میں اس طرح بیان کیے گئے ہیں کہ کسی نے اختلاف کی طرف کوئی اشارہ بھی نہ کیا جس سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ یہ تمام حضرات کے نزدیک متفق علیہ ہیں اور یہ صرف بعض کے قول پر نہیں۔

ثانیاً: (۱) لو کانت مبنیة علی القول الثانی لکانت مخالفة لاجماع ائمتنا فکیف یسوغ المیل الیها فضلاً عن الجزم بها من دون اشارة اصلاً الی خلاف فیها۔ ثانیاً: اگر یہ جزئیات قول ثانی (عدم رکنیت ضربین) کی بنیاد پر ہوتے تو ہمارے ائمہ کے اجماع کے خلاف ہوتے۔ پھر ان کی جانب میلان کیونکر روا ہوتا۔ اور ان سے متعلق کسی اختلاف کا کوئی اشارہ کیے بغیر ان پر جزم کر لینا تو بدرجہ اولیٰ ناروا ہوتا۔

ثالثاً: (۲) اکثر تلک الفروع في الخلاصة ومصنفها الامام طاهر قد صحح القول الاول فکیف یمشی فیها طرا علی خلاف ماهو الصحیح عنده بل قد افاد انها متفق علیها کما هو قضیة صنیعهم جمیعاً ولذا جزم بها الدرمع تصریحه۔ ثالثاً: ان جزئیات میں سے زیادہ تر خلاصۃ الفتاوی میں مذکور ہیں اور خلاصہ

کے مصنف امام طاہر قول اول (رکنیت ضربین) کو صحیح قرار دے چکے ہیں۔ پھر ان تمام جزئیات میں وہ اپنے صحیح مذہب کے خلاف کیسے چلیں گے؟ بلکہ انہوں نے تو یہ بھی افادہ کیا کہ یہ جزئیات متفق علیہ ہیں جیسا کہ دوسرے تمام حضرات کے طرز عمل کا بھی یہی مقتضی ہے اسی لئے درمختار میں ان جزئیات پر جزم کیا حالانکہ۔

Volume Three Fatawa Razvia

...clarifying the priority and correctness of the first opinion. Fourthly: (1) It was previously mentioned from Al-Badai' the consensus of our Imams regarding the pillarship (rukniyat) of the two strikings, and they are the ones who explicitly stated this in the 'Book of Prayer' in the second sub-issue, which settles the dispute.

Fourthly: The consensus of our Imams on the pillarship of the two strikings has been stated with reference to 'Badai', but despite this, they are also clarifying the second sub-issue in the 'Book of Prayer' itself. This is a decisive matter that settles the dispute (this proves that the sub-issues are not based only on the opinion of those who do not believe in pillarship, but are agreed upon).

Sixthly: As for his second approach, in which the Hadith and those sub-issues are shared—that the meaning of the two strikings is more general than striking on the ground or striking on the body part—therein:

Discussion 6: Now remains the second interpretation of Imam Muhaqqiq, which is common to the Hadith and the mentioned sub-issues, that 'striking' means something more general than striking on the ground or striking on the body part. So, there are several objections to it:

Firstly: As (2) I say, the researcher (al-Muhaqqiq) has established that the reality of Tayammum is wiping, and striking on the ground is not a part of it in any way. So there is no reason for generalization in the pillar of striking; rather, it is said that the meaning of the two strikings is the two wipings. In that case, the statement of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), and then the statement of the author of the Madhhab—'one striking for the face and one striking for the hands'—would not be compatible. If this were intended, it would have been said: 'a strike on the face and another on the hands.'

Firstly: I say: The Hazrat Muhaqqiq himself has researched and stated that the reality of Tayammum is just wiping. And striking on the ground has no role in the reality of Tayammum. So, for the 'striking' that has been declared a pillar of Tayammum and included in its reality, there is no reason to generalize it to include striking on the ground under it and making it part of the reality of Tayammum. Rather, it will be said that by the two strikings is meant the wiping of both (wiping of the face and wiping of the hands). And in this case, the saying of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and then the saying of the author of the school of

thought—'a strike for the face and a strike for the hands' (one strike for the face and one strike for the hands)—will not be according to the mentioned interpretation, nor will it be compatible because...

जिल्द सोम (भाग 3) फतावा रज़विया

...पहले मत की प्राथमिकता और उसकी पुष्टि के साथ। वह पहले मत (रुकनियत) के अधिक सुरक्षित और सही होने को स्पष्ट कर चुके हैं।

चौथा: (1) 'अल-बदाई' से हमारे इमामों का दो बार जमीन पर हाथ मारने (ज़रबैन) की रुकनियत (अनिवार्यता) पर आम सहमति का उल्लेख हो चुका है, और वे वही हैं जिन्होंने 'किताब-उस-सलात' की दूसरी उप-शाखा में इसे स्पष्ट किया है, और यह विवाद को समाप्त कर देता है।

चौथा: 'ज़रबैन' (दो बार हाथ मारना) की रुकनियत पर हमारे इमामों की सर्वसम्मति 'बदाई' के संदर्भ से वर्णित हुई है, लेकिन इसके बावजूद वे स्वयं 'किताब-उस-सलात' में दूसरी उप-शाखा को स्पष्ट कर रहे हैं। यह बात निर्णायक और विवाद को समाप्त करने वाली है (इससे सिद्ध होता है कि उप-शाखाएँ केवल रुकनियत न मानने वालों के कथन पर आधारित नहीं हैं, बल्कि सर्वसम्मत हैं)।

छठा: जहाँ तक उनके दूसरे मार्ग का सवाल है जिसमें हदीस और वे उप-शाखाएँ साझा हैं, कि दो बार मारने का अर्थ जमीन पर मारने या अंग पर मारने से अधिक व्यापक है, तो उसमें:

बहस 6: अब रही इमाम मुहक्किक की दूसरी व्याख्या जो हदीस और उक्त उप-शाखाओं में साझा है कि 'ज़रब' (मारने) से तात्पर्य जमीन पर मारना या अंग पर मारने से अधिक व्यापक है। तो इस पर कुछ आपत्तियाँ हैं:

पहला: जैसा कि (2) मैं कहता हूँ, शोधकर्ता (मुहक्किक) ने यह प्रमाणित किया है कि तयम्मुम की वास्तविकता केवल मसह (पोंछना) है, और जमीन पर हाथ मारना किसी भी तरह से इसका हिस्सा नहीं है। इसलिए रुकन (अनिवार्य हिस्से) के रूप में हाथ मारने के सामान्यीकरण का कोई आधार नहीं है; बल्कि यह कहा जाना चाहिए कि दो बार हाथ मारने से तात्पर्य दो बार मसह करना है। ऐसी स्थिति में, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कथन और फिर मज़हब के प्रणेता का कथन: "चेहरे के लिए एक बार हाथ मारना और हाथों के लिए एक बार हाथ मारना" संगत नहीं होगा। यदि यही उद्देश्य होता, तो कहा जाता: "चेहरे पर एक बार हाथ मारना और हाथों पर दूसरी बार।"

पहला: मैं कहता हूँ: हज़रत मुहक्किक स्वयं शोध कर चुके हैं कि तयम्मुम की वास्तविकता केवल मसह है। और जमीन पर हाथ मारने का तयम्मुम की वास्तविकता में कोई दखल नहीं है। तो वह 'ज़रब' जिसे तयम्मुम का रुकन और उसकी वास्तविकता में शामिल माना गया है, उसे व्यापक

बनाकर जमीन पर हाथ मारने को भी उसके अंतर्गत लाने और तयम्मुम की वास्तविकता में शामिल करने का कोई कारण नहीं है। बल्कि यह कहा जाएगा कि दोनों 'ज़रब' से तात्पर्य दोनों का मसह (चेहरे का मसह और हाथों का मसह) है। और इस स्थिति में अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इरशाद और फिर साहिब-ए-मज़हब का कथन: "ज़रबतुन लिल वजही व ज़रबतुन लिल यदैनी" (एक बार हाथ मारना चेहरे के लिए और एक बार हाथों के लिए) उक्त व्याख्या के अनुसार नहीं होगा और न ही उसके अनुकूल होगा क्योंकि...

पृष्ठ 360/756

جلد سوم فتاوی رضویہ

بأحوطية القول الاول وتصحيحه۔ وہ قول اول (رکنیت) کے احوط اور صحیح ہونے کی تصریح کرچکے ہیں۔

رابعاً: (۱) تقدم عن البدائع اجماع ائمتنا علی رکنیة الضربتین وھم المصرحون فی کتاب الصلوۃ بالفرع الثانی وھذا یقطع النزاع۔ رابعاً: رکنیتِ ضربین پر ہمارے ائمہ کا اجماع بدائع کے حوالہ سے بیان ہوا مگر اس کے باوجود خود ہی کتاب الصلوۃ میں جزئیہ دوم کی تصریح بھی کررہے ہیں۔ یہ بات فیصلہ کن اور قاطع نزاع ہے (اس سے ثابت ہو جاتا ہے کہ جزئیات صرف عدمِ رکنیت ماننے والوں کے قول پر مبنی نہیں بلکہ متفق علیہ ہیں)

السادس: اما مسلکه الثانی المشترك فیه الحدیث وتلك الفروع ان المراد بالضربتین اعم من الضرب علی الارض وعلی العضو ففیه۔ بحث ۶: اب رہی امام محقق کی دوسری تاویل جو حدیث اور مذکورہ جزئیات میں مشترک ہے کہ ضرب سے مراد ضرب علی الارض یا ضرب علی العضو سے اعم ہے۔ تو اس پر چند اعتراضات ہیں:

اولاً: کما (۲) اقول قد حقق المحقق ان حقیقة التیمم ھو المسح وان الضرب علی الارض لیس منھا فی شئ فلا وجه للتعمیم فی الضرب الرکن بل انما یقال ان المراد بالضربتین ھما المسحتان وحینئذ لا یلائمہ قولہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ثم قول صاحب المذھب ضربة للوجه وضربة للیدین اذ لو ارید ھذا لقیل ضربة علی الوجه واخری علی الیدین۔ اولاً: اقول: حضرت محقق خود تحقیق فرماچکے ہیں کہ تیمم کی حقیقت بس مسح ہے۔ اور ضرب علی الارض کا حقیقت تیمم میں کوئی دخل نہیں۔ تو وہ ضرب جو تیمم کا رکن اور اس کی حقیقت میں داخل قرار دی گئی ہے اس کی تعمیم کرکے ضرب علی

الارض کو بھی اس کے تحت لانے اور حقیقت تیمم میں داخل کرنے کی کوئی وجہ نہیں۔ بلکہ یوں کہا جائے گا کہ دونوں ضربوں سے مراد دونوں کا مسح (چہرے کا مسح اور ہاتھوں کا مسح) ہے۔ اور اس صورت میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ارشاد پھر صاحب مذہب کا قول: ضربة للوجه وضربة لليدين (ایک ضرب چہرے کیلئے اور ایک ضرب ہاتھوں کیلئے) تاویلِ مذکور کے مطابق نہ ہوگا اور موافق بھی نہ ہوگا کیونکہ

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

[Right Column Text]: If this were the intention, it would have been stated as: "A strike on the face and another on the hands" (one strike on the face and one strike on the hand).

[Left Column Text]: Secondly: As I say: (1) Also, based on this interpretation, the difference of opinion regarding whether 'striking' is an essential pillar (rukn) or not would disappear, along with all its mentioned consequences. However, the scholars, including the Researcher himself, uphold this difference and its consequences.

[Right Column Text]: Secondly: I say: Based on this interpretation, the disagreement regarding whether 'striking' is an essential pillar or not would cease to exist, and all the mentioned consequences of this disagreement would also vanish. However, scholars, including the respected Researcher himself, consider this disagreement and its consequences as established.

[Left Column Text]: Thirdly: As mentioned in 'Al-Bahr', this interpretation cannot be applied to the two sub-cases in 'Al-Khulasa', as there is no striking on the ground or on the body parts in them (1). I say: But (2) it returns to an objection against the wording. If the Researcher had said that "the two strikes" refers to "the two wipes," it would not imply that there is no strike here at all.

[Right Column Text]: Thirdly: The objection from 'Al-Bahr al-Ra'iq' is that this interpretation cannot be applied to the two sub-cases mentioned in 'Al-Khulasa' (where putting the limbs of tayammum into dust and moving them with the intention of tayammum is deemed sufficient), because in those cases there is neither a strike on the ground nor on the limb. I say: But the crux of this objection is merely a critique of the wording. If the respected Researcher had said that both strikes refer to both wipes, then this objection—that there is no strike here at all—would not apply.

[Left Column Text]: Fourthly: As 'Al-Bahr' also showed, there isn't even 'wiping' there either, and Al-Khadimi adopted this in 'Al-Durar'. Rather (3) [this applies] to the elite of the esteemed authorities like Al-Zahiriyya, Al-Khaniyya, Al-Khulasa, Khizanat al-Muftiyyin, Al-Jawhara, Al-Idah, Al-Fath, Al-Bahr, and Ibn Kamal, up to the 'Book of Prayer' by the disciple of the Imam of the school of thought, as they all stated explicitly...

[Right Column Text]: Fourthly: 'Al-Bahr' himself expressed this objection as well: that here (in the case of moving limbs in a dusty place), even 'wiping' does not occur. On this basis, the commentator on 'Al-Durar', Al-Khadimi, raised objections not only against 'Al-Durar' but against most of the reliable books such as Al-Zahiriyya, Al-Khaniyya, Al-Khulasa, Khizanat al-Muftiyyin, Al-Jawhara, Al-Idah, Fath al-Qadir, Al-Bahr al-Ra'iq, and Ibn Kamal, up to the 'Book of Prayer' by the student of the Imam of the school of thought. This is because, as has been mentioned, all these gentlemen explicitly...

[Footnote]: 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/125. Page 361 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[दायाँ कॉलम]: अगर इससे यह मुराद होता तो यूँ इरशाद होता: "चेहरे पर एक ज़रब और हाथों पर दूसरी ज़रब" (चेहरे पर एक ज़रब और हाथ पर एक ज़रब)।

[बायाँ कॉलम]: दूसरा: जैसा कि मैं कहता हूँ: (1) साथ ही, इस व्याख्या के आधार पर ज़रब (चोट) के रुकन (अनिवार्य अंग) होने या न होने का मतभेद ही समाप्त हो जाएगा और इसके उल्लेखित सभी परिणाम भी नहीं रहेंगे। जबकि विद्वान, जिनमें स्वयं शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) भी शामिल हैं, इस मतभेद और इसके परिणामों को प्रमाणित मानते हैं।

[दायाँ कॉलम]: दूसरा: मैं कहता हूँ: इस व्याख्या के आधार पर ज़रब की रुकनियत और अदम-रुकनियत (अनिवार्य अंग होना या न होना) का मतभेद ही समाप्त हो जाएगा और इसके तमाम उल्लेखित परिणाम भी बाकी नहीं रहेंगे, हालांकि उलेमा, जिनमें खुद हज़रत मुहक़्क़िक़ भी शामिल हैं, इस मतभेद और परिणामों को साबित मानते हैं।

[बायाँ कॉलम]: तीसरा: जैसा कि 'अल-बहर' में कहा गया है कि यह 'अल-खुलासा' की दो उप-स्थितियों में लागू नहीं होता क्योंकि उनमें न तो ज़मीन पर ज़रब है और न ही अंग पर (1)। मैं कहता हूँ: लेकिन (2) यह शब्दों पर आपत्ति की ओर लौटता है। यदि शोधकर्ता ने कहा होता कि "दो ज़रबों" से मुराद "दो मसह" (पोंछना) है, तो इसका यह मतलब नहीं होता कि यहाँ बिल्कुल ज़रब है ही नहीं।

[दायाँ कॉलम]: तीसरा: 'अल-बहर-उर-रइक़' की आपत्ति कि यह तावील (व्याख्या) 'खुलासा' में वर्णित उन दो जुज़ईयों (उप-स्थितियों) में लागू नहीं हो सकती (जिनमें ग़ुबार की जगह अंगों को दाख़िल करके तयम्मुम की नियत से हरकत दे लेने को काफ़ी क़रार दिया गया है) क्योंकि उनमें न तो ज़मीन पर ज़रब है और न ही अंग पर। मैं कहता हूँ: मगर इस आपत्ति का नतीजा सिर्फ़ लफ़्ज़ पर पकड़ है। अगर हज़रत मुहक़्क़िक़ ने फ़रमाया होता कि दोनों ज़रब से मुराद दोनों मसह है, तो यह एतराज़ (आपत्ति) पैदा ही न होता कि यहाँ से तो सिरे से ज़रब ही नहीं।

[बायाँ कॉलम]: चौथा: जैसा कि 'अल-बहर' ने यह भी ज़ाहिर किया है कि वहाँ मसह भी नहीं है, और इसी को ख़ादिमी ने 'दुरर' पर अपनाया है। बल्कि (3) यह 'ज़हीरिया', 'ख़ानिया', 'खुलासा', 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन', 'जौहरा', 'ईज़ाह', 'अल-फ़तह', 'अल-बहर' और 'इब्न कमाल' जैसे महान प्रमाणों तक पर लागू होता है, यहाँ तक कि मज़हब के इमाम के शागिर्द की 'किताबुस सलात' तक, क्योंकि उन सब ने स्पष्ट रूप से बयान किया है...

[दायाँ कॉलम]: चौथा: 'बहर' ही ने यह एतराज़ भी ज़ाहिर किया है कि यहाँ (धूल वाले स्थान पर अंगों को हिलाने की सूरत में) मसह भी तो नहीं है। इसी बुनियाद पर मुह्शी 'दुरर' ख़ादिमी ने 'दुरर' पर बल्कि अक्सर मोअतमिदा (प्रामाणिक) कुतुब जैसे 'ज़हीरिया', 'ख़ानिया', 'खुलासा', 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन', 'जौहरा', 'ईज़ाह', 'फ़तहुल क़दीर', 'अल-बहर-उर-रइक़' और 'इब्न कमाल' यहाँ तक कि साहिबे मज़हब के शागिर्द की किताब 'अस्-सलात' पर भी पकड़ की है। इसलिए कि जैसा कि गुज़र चुका, इन तमाम हज़रात ने तसरीह (स्पष्टीकरण) की है...

[पाद टिप्पणी]: 1. अल-बहर-उर-रइक़, बाबुत्तयम्मुम, एच. एम. सईद कंपनी, कराची, 1/125। पृष्ठ 361 का 756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

اگر اس سے مراد ہوتا تو یوں ارشاد ہوتا ضربة علی الوجه واخری علی الیدین (ایک ضرب چہرے پر اور ایک ضرب ہاتھ پر)

وثانیاً: کما اقول: (۱) ایضا علی هذا یرتفع الخلاف وتذهب ثمراته المذکورة عن اخرها والقوم ومنهم المحقق نفسه علی اثباتها۔ ثانیاً: اقول: اس تاویل کی بنیاد پر ضرب کی رکنیت وعدم رکنیت کا اختلاف ہی اٹھ جائیگا اور اس کے تمام مذکورہ ثمرات بھی باقی نہ رہیں گے حالانکہ علماء جن میں خود حضرت محقق بھی ہیں اس اختلاف اور ثمرات کو ثابت مانتے ہیں۔

وثالثاً: کما قال البحر انه لا یمشی فی فرعی الخلاصة اذ لا ضرب فیها علی الارض ولا علی العضو ۱ اقول لکن (۲) مرجعه الی مؤاخذة علی اللفظ فلو قال المحقق ان المراد بالضربتین المسحتان لم یرد انه لا ضرب ههنا اصلا۔ ثالثاً: البحر الرائق کا اعتراض کہ یہ تاویل خلاصہ میں مذکور ان دو جزئیوں میں جاری نہیں ہو سکتی (جن میں غبار کی جگہ اعضائے تیمم کو داخل کر کے بہ نیت تیمم حرکت دے لینے کو کافی قرار دیا ہے) کیوں کہ ان میں نہ زمین پر ضرب ہے نہ عضو پر۔ اقول: مگر اس اعتراض کا مآل صرف لفظ پر گرفت ہے اگر حضرت محقق نے فرمایا ہوتا کہ دونوں ضرب سے مراد دونوں مسح ہے تو یہ اعتراض وارد نہ ہوتا کہ یہاں سے تو سرے سے ضرب ہی نہیں۔

ورابعاً: کما ابدی البحر ایضا ان لیس ثمه مسح ایضا وبه اخذ الخادمی علی الدرر بل (۳) وعلی جلة العمائد الغرر کالظهیریة والخانیة والخلاصة وخزانة المفتیین والجوهرة والایضاح والفتح والبحر وابن کمال حتی کتاب الصلاة لصاحب المذهب اذ صرحوا جمیعا رابعاً: بحر ہی نے یہ اعتراض بھی ظاہر کیا ہے کہ یہاں (موضع غبار میں تحریک اعضا والی صورت میں) مسح بھی تو نہیں۔ اسی بنیاد پر

محشی درر خادمی نے درر پر بلکہ اکثر کتب معتمدہ جیسے ظہیریہ، خانیہ، خلاصہ، خزانہ المفتین، جوہرہ، ایضاح، فتح القدیر، البحر الرائق اور ابن کمال یہاں تک کہ صاحب مذہب کے شاگرد کی کتاب الصلوٰۃ پر بھی گرفت کی ہے۔ اس لئے کہ جیسا کہ گزر چکا ان تمام حضرات نے تصریح

۱۔ بحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۲۵ Page 361 of 756

Fatawa Razawiya, Volume 3

As mentioned before, if dust falls on someone's face and arms, it is not permissible (for tayammum) until it is wiped with the intention of tayammum. It was said about this (in Khadimi) "Fihi Ma Fihi" (it has what it has/it's questionable), as you have just learned from Al-Khulasah and Al-Bahr (i.e., from the sufficiency of moving the limbs). It is said: "Except it be said that 'wiping' means something more general than what is literal or legal, so it includes moving the head, etc." End.

I say: Firstly (1), it escaped him that Al-Khulasah and Al-Bahr are also among those who explicitly stated that if it is not wiped, it is not valid, as we previously quoted from them in the first, second, and sixth branches.

Secondly: (2) If one considers what they explicitly stated regarding non-sufficiency except with wiping, and where Al-Khulasah and Al-Bahr deemed moving the limbs sufficient, one would know the difference, and it would be known that there is no objection to be taken against Ad-Durar and the great works, as the secret of this will be revealed to you, God willing.

Thirdly: Let us return to Al-Bahr.

---

1 Khulasat al-Fatawa, Section on what is permissible for Tayammum, Nawal Kishore, Lucknow, 1/36. 2 Durar Sharh al-Ghurar by Abu Sa'id Khadimi, Chapter on Tayammum, Uthmaniyya Press, Beirut, 1/28. Page 362 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है कि यदि चेहरे और हाथों पर धूल पड़ जाए, तो यह (तयम्मुम के लिए) तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि तयम्मुम की नीयत से उस पर हाथ न फेरा जाए। खादिमी ने इस बारे में कहा: "फीही मा फीही" (इसमें वह कमी है जो इसमें है), जैसा कि आपने अभी अल-खुलासा और अल-बहर के हवाले से जाना (यानी अंगों को हिलाना पर्याप्त है)। लेकिन यह कहा जाए कि 'मसह' से तात्पर्य वह है जो हकीकतन और हुकमन दोनों मसह से अधिक व्यापक है। इस तरह मसह शब्द सिर हिलाने आदि वाली स्थिति को भी शामिल कर लेगा।" समाप्त।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): पहले (1), खादिमी को यह याद नहीं रहा कि अल-खुलासा और अल-बहर में भी यह स्पष्ट रूप से मौजूद है कि यदि हाथ न फेरा गया तो तयम्मुम नहीं होगा, जैसा कि हमने उनसे पहले, दूसरे और छठे अंश में उद्धृत किया है।

दूसरे: (2) यदि उस स्थिति पर विचार किया जाए जिसमें विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि हाथ फेरे बिना तयम्मुम नहीं होगा, और जिस स्थिति में अल-खुलासा और अल-बहर ने अंगों को हिलाने को पर्याप्त माना है, तो दोनों में अंतर स्पष्ट हो जाता, और उन्हें पता चलता कि अल-दुरर और प्रतिष्ठित पुस्तकों पर आपत्ति की कोई गुंजाइश नहीं है, जैसा कि जल्द ही इंशा अल्लाह इसकी वास्तविकता स्पष्ट हो जाएगी।

तीसरे: अब हम अल-बहर की ओर लौटते हैं।

---

1 खुलासातुल फ़तावा, तयम्मुम के जायज़ होने के बारे में, नवल किशोर लखनऊ, 1/36. 2 दुरर शरह अल-गुरर, अबू सईद खादिमी, तयम्मुम का अध्याय, उस्मानिया प्रेस बेरूत, 1/28. पेज 362 of 756

کما تقدم بانه اصاب الغبار وجهه و ذراعیه لایجوز مالم یمسح بنیة التیمم[1] فقال فیه مافیه لما عرفت انفا من الخلاصة و البحر (ای من کفایة تحریک الاعضاء قال الا ان یقال المراد من المسح اعم مما هو حقیقة او حکما فیشمل نحو تحریک الرأس[2] اهـ فرمائی ہے کہ "اگر صرف اتنا ہوا کہ چہرے اور ہاتھوں پر غبار پہنچ گیا تو تیمم نہ ہوگا جب تک کہ بہ نیت تیمم اس پر ہاتھ نہ پھیرے"۔ خادمی نے کہا: "فیہ مافیہ" اس میں وہ خامی ہے جو اس میں ہے کیونکہ ابھی خلاصہ اور بحر کے حوالہ سے معلوم ہوا (کہ تحریک اعضا بھی کافی ہے) مگر یہ کہا جائے کہ مسح سے مراد وہ ہے جو حقیقۃً اور حکماً دونوں مسح سے اعم ہے۔ اس طور پر لفظ مسح تحریک سر وغیرہ والی صورت کو بھی شامل ہو جائیگا"۔ اهـ

واقول: اولا (۱) ذهب عنه ان الخلاصة والبحر ایضا من المصرحین بانه ان لم یمسح لم یجز کما قدمنا عنهما فی الفرعین الاولین والسادس۔ اقول: اولاً خادمی کو یہ خیال نہ رہا کہ خلاصہ اور بحر میں بھی یہ تصریح موجود ہے کہ اگر ہاتھ نہ پھیرا تو تیمم نہ ہو گا جیسا کہ جزئیہ ۱، ۲، ۶ میں ان سے ہم نے نقل کیا ہے۔

وثانیا: (۲) لونظر الی ماصرحوا فیه بعدم الاجزاء الا بالمسح والخلاصة والبحر باجزاء التحریک لعرف الفرق وعلم ان لااخذ علی الدرر والجلة الغرر کما سینکشف لک سر ذلک ان شاء الله تعالٰی۔ ثانیاً جس صورت میں حضرات علماء نے تصریح فرمائی ہے کہ ہاتھ پھیرے بغیر تیمم نہ ہو گا اور جس صورت میں خلاصہ اور بحر نے تحریک اعضاء کو کافی قرار دیا ہے دونوں میں اگر فاضل خادمی نے غور کیا ہوتا تو فرق واضح ہو جاتا اور انہیں معلوم ہوتا کہ درر اور کتب معتمدہ پر مؤاخذہ کی گنجائش نہیں جیسا عنقریب ان شاء اللہ اس کی حقیقت واضح ہو گی۔

وثالثا: نعود الی البحر ثالثاً: اب ہم بحر کی طرف رجوع کرتے ہیں

---

1 خلاصۃ الفتاویٰ نوع فیما یجوز بہ التیمم نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۶ 2 درر شرح الغرر لابی سعید خادمی باب التیمم مطبع عثمانیہ بیروت ۱/ ۲۸ Page 362 of 756

Fatawa Razawiyya Volume Three

I say: (1) Based on this objection, the status of 'Masah' (wiping) as a pillar, which Al-Bahr itself acknowledged as truth, would be rejected. Even 'Masah' would not be established as a pillar of Tayammum.

But I say: (2) And from my Lord I seek help, that wiping one thing with another means passing one over the other and making it touch it. Tabarani narrated in 'Al-Mu'jam al-Saghir' via Salman al-Farsi (may Allah be pleased with him) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Perform Masah with the earth, for it is kind to you."

It is stated in 'Al-Taysir': It means to touch it directly in prayer without any barrier. And it was said that it means Tayammum (2) End. In 'Al-Nihayah', 'Al-Durr al-Nathir', and 'Majma' al-Bihar', it is said: It refers to Tayammum. And it was said that it means touching the soil of the earth with the foreheads while prostrating without any barrier and making the skin touch it. And the command is for recommendation (Mandub), not obligation (Ijab) (3) End.

I say: (3) This is the obvious meaning from the context and reasoning. So this was the preferred interpretation as done in 'Al-Taysir', and by Ibn al-Athir in his summary, and by Al-Suyuti and in 'Majma' al-Bihar'. The meaning of "Masahum bi Rabbihim" is...

Footnotes: 1. Al-Mu'jam al-Saghir, Chapter: From whose name is Hamlah, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 1/148. 2. Al-Taysir Jami' al-Saghir, letter Ta, Maktabah al-Imam al-Shafi'i, Riyadh, Saudi Arabia, 1/567; Majma' Bihar al-Anwar, under the word Masah, Munshi Naval Kishore, Lucknow, 3/296. 3. Al-Nihayah by Ibn al-Athir, Chapter Mim and Seen, Al-Maktabah al-Islamiyyah, Beirut, 4/327.

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

मैं कहता हूँ: (1) इस आपत्ति के आधार पर तो 'मसह' (पोंछना) की रुक्नियत (स्तंभ होना), जिसे स्वयं 'बहर' ने भी सत्य माना है, रद्द हो जाएगी। मसह भी तयम्मुम का रुक्न करार नहीं पा सकेगा।

लेकिन मैं कहता हूँ: (2) और मैं अपने रब ही से मदद चाहता हूँ, एक चीज़ को दूसरी चीज़ से मसह करने का अर्थ यह है कि एक को दूसरी पर गुज़ार दिया जाए और उसे उस से स्पर्श (टच) किया जाए। तबरानी ने 'मुअजम सगीर' में सलमान फ़ारसी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की रिवायत से नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत किया है: "ज़मीन से मसह करो क्योंकि वह तुम्हारे साथ नेक सुलूक करने वाली है।"

'तयसीर' में फरमाया: इस तरह कि ज़मीन पर बिना किसी रुकावट (हाइल) के नमाज़ अदा करते हुए उस से अपनी जिल्द (त्वचा) को मसह करो, और कहा गया कि इस हदीस में मसह ज़मीन से मुराद 'तयम्मुम' है। (2) अंत। 'निहाया', 'दुर्रे नशीर' और 'मजमा-उल-बिहार' में है: "इस से मुराद तयम्मुम है। और कहा गया कि बिना किसी हाइल के सजदा करते हुए पेशानियों से ज़मीन की मिट्टी को इस्तेमाल करना और जिल्द को उस से मसह करना मुराद है और यह हुक्म मुस्तहब (मन्दूब) है, वाजिब (ईजाब) नहीं।" (3) अंत।

मैं कहता हूँ: (3) कलाम के सियाक़ और दलील से यही आख़िरी अर्थ ज़ाहिर होता है, इसलिए यही मुराद लेना बेहतर है जैसा कि 'तयसीर' में किया गया है। 'निहाया' इब्न असीर और 'तल्खीस निहाया' लिल-सुयुती और 'मजमा-उल-बिहार' में है: "मसहुम बि-रब्बिहिम" का अर्थ है...

पादलेख: 1. अल-मुअजम अस-सगीर, बाब: जिसका नाम हमला है, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 1/148 2. अत-तयसीर जामि' अस-सगीर, हर्फ़ त, मकतबा अल-इमाम अश्-शाफ़ई, रियाद, सऊदी अरब, 1/567; मजमा' बिहार अल-अनवार, 'मसह' शब्द के तहत, मुंशी नवल किशोर, लखनऊ, 3/296 3. अन-निहाया इब्न अल-असीर, बाब मीम और सीन, अल-मकतबा अल-इस्लामिया, बेरूत, 4/327

पृष्ठ 363/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

فأقول: على (1) هذا يندفع ما اعترف به البحر ايضا انه الحق وهو ركنية المسح - فأقول: اس اعتراض کی بنیاد پر تو رکنیت مسح جس کو خود بحر نے بھی حق مانا ہے مسترد ہو جائے گی۔ مسح بھی رکن تیمم قرار نہ پاسکے گا۔

لكني اقول: (2) وبربي استعين انما مسح شيئ بشيئ امرار هذا عليه وامساسه به روى الطبرانى فى الصغير عن سلمان الفارسى رضى الله تعالى عنه عن النبى صلى الله تعالى عليه وسلم تمسحوا بالارض فانها بكم برة1 لكنى اقول: وبربى استعين (لیکن میں کہتا ہوں اور اپنے رب ہی سے مدد چاہتا ہوں) ایک شیئ کو دوسری شیئ سے مسح کرنے کا معنی یہ ہے کہ ایک کو دوسری پر گزار دیا جائے اور اسے اس سے مس کیا جائے۔ طبرانی نے معجم صغیر میں بروایت سلمان فارسی رضی اللہ تعالی عنہ نے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت کیا ہے: "زمین سے مسح کرو کیونکہ وہ تمہارے ساتھ نیک سلوک کرنیوالی ہے"۔

قال فى التيسير بان تباشروها بالصلاة بلا حائل وقيل اراد التيمم2 اه وقال فى النهاية والدر النثير ومجمع البحار ارادبه التيمم وقيل اراد مباشرة ترابها بالجباه فى السجود من غير حائل والامر ندب لا ايجاب3 اه - تیسیر میں فرمایا: اس طرح کہ زمین پر بغیر کسی حائل کے نماز ادا کرتے ہوئے اس سے اپنی جلد کو مس کرو، اور کہا گیا کہ اس حدیث میں مسح زمین سے مراد تیمم ہے۔ اھ نہایہ، دُرّ نثیز اور مجمع البحار میں ہے: "اس سے مراد تیمم ہے۔ اور کہا گیا کہ بغیر کسی حائل کے سجدہ کرتے ہوئے پیشانیوں سے زمین کی مٹی کو استعمال کرنا اور جلد کو اس سے مس کرنا مراد ہے اور یہ امر مندوب ہے واجب نہیں"۔ اھ

اقول: (3) وھو ظاھر السوق والتعلیل فکان ھو الاولی کما فعل فی التیسیر وفی ابن اثیر وتلخیصه للسیوطی والمجمع مسحھم مربھم اقول: سیاق کلام اور تعلیل سے یہی آخری معنی ظاہر ہوتا ہے اس لئے یہی مراد لینا بہتر ہے جیسا کہ تیسیر میں کیا ہے۔ نہایہ ابن اثیر اور تلخیص نہایہ للسیوطی اور مجمع البحار میں ہے: "مسحھم مربھم کا معنی ہے

1 المعجم الصغیر باب من اسمہ حملہ دار الکتب العلمیہ بیروت ۱/ ۱۴۸ 2 التیسیر جامع صغیر حرف التاء مکتبہ الامام الشافعی الریاض السعودیہ ۱/ ۵۶۷ ، مجمع بحار الانوار تحت لفظ مسح منشی نولکشور لکھنو ۳/ ۲۹۶ 3 النہایہ لابن اثیر باب المیم والسین المکتبہ الاسلامیہ بیروت ۴/ ۳۲۷

Fatawa Ridawiyyah, Volume 3

"He passed by them so swiftly that he did not stay with them." It is stated in Majma' al-Bihar: "In the Hadith it is mentioned: 'He wipes our shoulders,' meaning (while straightening the rows) the Master would place his hand on our shoulders to align them." In al-Qamus it is stated: "Tamāsahā tabāyā'ā fatasāfaqa" (The meaning of 'tamāsahā' is that they bought and sold with each other and one struck the hand of the other). In Taj al-Arus it says: "māsahahu means he shook hands with him; they met and 'tamāsahū' meaning when they met they shook hands with each other." In al-Qamus, Majd ad-Din wrote: "huwa yatamassahu bihi ay yatabarraku bihi lifadhlihi" (He wipes against him, meaning he seeks blessings from him due to his excellence). Regarding this, it is said in Taj al-Arus: "As if he is gaining proximity to Allah Almighty by being close to him. And 'yatamassahu bi thawbihi' means that he passes his clothes over his body wanting to attain closeness to God through that. It is said that for this reason, Prophet Isa (Peace and blessings of Allah be upon him and our Prophet) was called Al-Masih (the Messiah). This was stated by al-Azhari."

1. Al-Nihayah by Ibn al-Athir, Chapter Mim with Sin, Al-Maktabah al-Islamiyyah Beirut, 4/427
2. Majma' al-Bihar, under the word 'Masah', Nawal Kishore Lucknow, 3/298
3. Al-Qamus, Chapter Ha, Section Mim, Mustafa al-Babi Egypt, 1/258
4. Taj al-Arus, Section Mim from Chapter Ha, Ihya al-Turath al-Arabi Egypt, 2/226
5. Al-Qamus al-Muhit, Chapter Ha, Section Mim, Mustafa al-Babi Egypt, 1/258
6. Taj al-Arus, Section Mim from Chapter Ha, Ihya al-Turath al-Arabi Egypt, 2/226

फ़तावा रज़विया, खंड 3

"वह उनके पास से इतनी तेज़ी से गुज़रा कि उनके पास नहीं रुका"। मजमा-उल-बिहार में है: "हदीस में है 'यमसहु मनाकिबना', यानी (सफें सीधी करते समय) सरकार हमारे कंधों को बराबर करने के लिए उन पर अपना हाथ रखते"। अल-क़ामूस में है: "तमासहा तबायाअ फ़तसाफ़क़ा" (तमासहा का अर्थ है कि उन्होंने आपस में खरीद-फरोख्त की और एक ने दूसरे के हाथ पर हाथ मारा)। ताज अल-अरूस में है: "मासहहु का अर्थ है उसने उससे मुसाफ़हा (हाथ मिलाना) किया; वे मिले और 'तमासहू' यानी जब मिले तो एक-दूसरे से मुसाफ़हा किया"। अल-क़ामूस में मजदुद्दीन ने लिखा: "हुवा यतमस्सहु बिही अय यतबर्रकु बिही लिफज़लिही" (वह उससे मस्रह (स्पर्श) करता है यानी उसकी श्रेष्ठता के कारण उससे बरकत हासिल करता है)। इस पर ताज अल-अरूस में कहा गया: "मानो वह उसके करीब रहकर अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त कर रहा है। और 'यतमस्सहु बि थौबिही' का अर्थ यह है कि वह उसके कपड़ों को अपने शरीर पर गुज़ार कर उससे ईश्वर की निकटता प्राप्त करना चाहता है। कहा गया है कि इसी कारण हज़रत ईसा (हमारे नबी और उन पर सलातो-सलाम हो) को मसीह कहा गया। यह अज़हरी ने कहा है"।

1. अल-निहाया लि-इब्न अल-असीर, बाब अल-मीम मा अल-सीन, अल-मकतबा अल-इस्लामिया बेरूत, 4/427
2. मजमा-उल-बिहार, शब्द 'मस्रह', नवल किशोर लखनऊ, 3/298
3. अल-क़ामूस, बाब अल-हा, फ़स्ल अल-मीम, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/258
4. ताज अल-अरूस, फ़स्ल अल-मीम बाबे अल-हा से, इहया अल-तुरास अल-अरबी मिस्र, 2/226
5. अल-क़ामूस अल-मुहीत, बाब अल-हा, फ़स्ल अल-मीम, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/258
6. ताज अल-अरूस, फ़स्ल अल-मीम बाबे अल-हा से, इहया अल-तुरास अल-अरबी मिस्र, 2/226

مر اخفیًا لم یقم فیه عندهم اهـ ان کے پاس سے ایسی سبک روی سے گزر گیا کہ ان کے پاس ٹھہرا نہیں"۔ مجمع البحار میں ہے: "حدیث میں ہے یمسح مناکبنا، یعنی (صفیں سیدھی کرتے وقت) سرکار ہمارے کاندھوں کو برابر کرنے کیلئے ان پر اپنا ہاتھ رکھتے"۔ وفي الاثیر حدیث یمسح مناکبنا ای یضع یده علیها لیسویها اهـ ای عند اقامة الصفوف وفی القاموس تماسحا تبایعا فتصافقا اهـ قاموس میں ہے: "تماسحا تبایعا فتصافقا اهـ (تماسحاً کا معنی یہ ہے کہ باہم خرید و فروخت کرکے ایک نے دوسرے کے ہاتھ پر ہاتھ مارا) وفی التاج ماسحه صافحه والتقوا فتماسحوا تصافحوا اهـ وقال المجد هو یتمسح به ای یتبرك به لفضله تاج العروس میں ہے: "ماسحہ کا معنی ہے اس سے مصافحہ کیا التقوا فتماسحوا یعنی باہم ملے تو ایک دوسرے سے مصافحہ کیا" اهـ قاموس میں مجد الدین نے لکھا: "هو یتمسح به ای یتبرك به لفضله" (وہ اس سے مسح کرتا ہے یعنی اس کی فضیلت کی وجہ سے اس سے برکت حاصل کرتا ہے"۔ فقال التاج کأنه یتقرب الی الله تعالی بالدنو منه ویتمسح بثوبه ای یمرثوبه علی الابدان فیتقرب به الی الله تعالی قیل وبه سمی المسیح عیسی علی نبینا وعلیه الصلاة والسلام قاله الازهري اهـ اس پر تاج العروس میں کہا: "گویا وہ اس کے قرب کے ذریعہ خدا کی نزدیکی حاصل کر رہا ہے۔ اور یتمسح بثوبہ کا معنی یہ ہے کہ وہ اس کے کپڑے کو اپنے بدن پر گزار کر اس سے خدا کا قرب حاصل کرنا چاہتا ہے۔ کہا گیا ہے کہ اس وجہ سے حضرت عیسیٰ علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام کو مسیح کہا گیا۔ یہ ازہری نے کہا ہے"۔ اهـ

1. النهایة لابن اثیر باب المیم مع السین المکتبة الاسلامیة بیروت ۴۲۷/۴
2. مجمع البحار لفظ مسح نولکشور لکهنو ۲۹۸/۳
3. القاموس باب الحاء فصل المیم مصطفی البابی مصر ۲۵۸/۱

4. تاج العروس فصل الميم من باب الحاء احياء التراث العربى مصر ٢٢٦/٢

5. القاموس المحيط باب الحاء فصل الميم مصطفى البابى مصر ٢٥٨/١

6. تاج العروس فصل الميم من باب الحاء احياء التراث العربى مصر ٢٢٦/٢

Fatawa Razvia - Volume Three

(Left Column - Arabic Original) I say: (1) As for the statement of Al-Majd that wiping (al-mash) is passing the hand over a liquid thing [1], liquidity is not its necessary attribute. For this reason, Al-Raghib did not add it in his 'Mufradat'. And this is our Lord, Blessed and Exalted, saying regarding the soil: "then wipe your faces and hands from it" [2]. Wiping with the hand (2) is not a restriction within it, because of the Hadith 'Wipe the ground' (tamassahu bil-ard) regarding placing the foreheads on it without a barrier. Otherwise, passing (al-imrar) in the sense of moving over it exists because the Hadith says 'He wiped our shoulders' (yamsahu manakibana). Indeed, our Imams have stated that striking the palms, and even placing them on the ground with intention, purifies them; therefore, one should not wipe them afterwards. Some of its texts will come to you, God Almighty willing. Verily, the Lord, Glorified and Exalted, commanded...

(Right Column - Urdu Translation/Explanation) I say: In the light of these clarifications, it becomes clear that what Majd-ud-Din wrote in 'Al-Qamus' regarding the meaning of 'mash' as passing the hand over a liquid thing, (the restriction of it being a liquid thing should not be there because) liquidity is not a necessary component for this concept. That is why Imam Raghib did not add this restriction in 'Mufradat'. In the Holy Quran, the command of Allah the Almighty is: "then wipe your faces and hands with it." In this, the hand is not a restriction for the concept of 'mash', because in Hadith, the word 'mash' is also used for placing the forehead on the ground without a barrier, as mentioned previously 'tamassahu bil-ard'. Similarly, moving the hand, i.e., moving it over the limb and passing it, is also not a restriction for the concept of 'mash' because it is mentioned in the Hadith 'yamsahu manakibana' (He wipes our shoulders). Whereas here, it meant just placing the hand on the shoulders (as described with reference to Majma-ul-Bihar). Another proof of this is that our noble Imams have explicitly stated that if with the intention of tayammum both...

(Middle Section) Arabic: Note: And in 'An-Nihayah', 'Ad-Durr an-Nathir', and 'Majma-ul-Bihar' under the Hadith of Hammad: A woman in her waiting period (mu'tadda) during the era of ignorance (Jahiliyyah) would take a bird and wipe her private parts with it. 12 [From him, may he be forgiven] (M) Urdu: In 'Nihayah', 'Durr-e-Nathir', and 'Majma-ul-Bihar' under the Hadith of Hammad, it is mentioned that in the era of ignorance, a woman in her waiting period would take a bird and touch it to her private parts. 12 [From him, may he be forgiven] (T)

(Footnotes) 1. Al-Qamus al-Muhit, Chapter of Ha, Section of Mim, Mustafa al-Babi Egypt, 1/285 2. Al-Quran 43/4

फ़तावा रज़विया - भाग तीन

(बायाँ कॉलम - अरबी मूल) मैं कहता हूँ: (१) अल-मज्द का कथन कि 'मसह' (पोंछना) किसी तरल चीज़ पर हाथ फेरना है [१], इसमें तरलता (सीलान) उसकी अनिवार्यता नहीं है। इसीलिए अल-राग़िब ने अपनी 'मुफ़्रदात' में इसे नहीं जोड़ा। और यह हमारे रब्ब, मुबारक और बुलंदो-बाला का फ़रमान है मिट्टी के बारे में: "तो अपने चेहरों और हाथों का उससे मसह करो" [२]। हाथ से पोंछना (२) इसमें कोई शर्त नहीं है, क्योंकि हदीस 'ज़मीन से मसह करो' (तमसहू बिल-अर्ज़) में बिना किसी आड़ के ज़मीन पर माथा रखने के लिए भी मसह शब्द आया है। वरना, फेरने (अल-इमरार) का मतलब उस पर हरकत देना है, क्योंकि हदीस में है 'उन्होंने हमारे कंधों का मसह किया' (यमसहू मनाकिबना)। हमारे इमामों ने स्पष्ट किया है कि हथेलियों को ज़मीन पर मारना, बल्कि नियत के साथ उन्हें ज़मीन पर रखना ही उन्हें पाक कर देता है; इसलिए उनके बाद उन्हें मसह नहीं करना चाहिए। इसके कुछ प्रमाण इंशाअल्लाह तआला आपके सामने आएंगे। वास्तव में मौला सुब्हानहू व तआला ने हुक्म दिया...

(दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या) मैं कहता हूँ: इन स्पष्टीकरणों की रोशनी में यह साफ़ हो जाता है कि मज्द-उद-दीन ने 'क़ामूस' में मसह के अर्थ में तरल चीज़ पर हाथ फेरना जो लिखा है, उसमें (किसी चीज़ के साथ तरल की शर्त नहीं होनी चाहिए क्योंकि) तरलता इस अर्थ के लिए ज़रूरी चीज़ नहीं है। इसीलिए इमाम राग़िब ने 'मुफ़्रदात' में इस शर्त का इज़ाफ़ा नहीं किया। क़ुरान मजीद में बारी तआला का इरशाद है: "उससे अपने चेहरों और हाथों का मसह करो।" इसमें हाथ मसह के अर्थ की शर्त नहीं है, क्योंकि हदीस में ज़मीन पर बिना किसी आड़ के माथा रखने के लिए भी लफ़्ज़ मसह आया है जैसा कि गुज़रा "तमसहू बिल-अर्ज़"। इसी तरह हाथ फेरना यानी अंग पर उसे हरकत देना और गुज़ारना भी मसह के अर्थ की शर्त नहीं है क्योंकि हदीस में आया है "यमसहू मनाकिबना"। जबकि यहाँ कंधों पर सिर्फ़ हाथ रखना होता था (जैसा कि मज्म-उल-बिहार के हवाले से बयान हुआ)। इसका दूसरा सबूत यह भी है कि हमारे अइम्मा किराम ने तसरीह फ़रमाई कि अगर तयम्मुम की नियत से दोनों...

(मध्य भाग) अरबी: नोट: 'अन्-निहाया', 'अद्दुर्र अन्-नसीर' और 'मज्म-उल-बिहार' में हदीस-ए-हम्माद के तहत: जाहिलियत के ज़माने में मुअतद्दा औरत एक परिंदा पकड़ती और उससे अपनी शर्मगाह का मसह करती। १२ [उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे] (म) उर्दू: 'निहाया', 'दुर्रे-नसीर' और

'मज्म-उल-बिहार' में हदीस-ए-हम्माद के तहत है कि ज़माना-ए-जाहिलियत में मुअतद्दा औरत परिंदा पकड़ती तो उसे अपनी शर्मगाह पर लगाती। १२ [उनसे, अल्लाह उन्हें क्षमा करे] (त)

(पादलेख) १. अल-क़ामूस अल-मुहीत, बाब अल-हा, फ़स्ल अल-मीम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/२८५ २. अल-क़ुरान ४३/४

पृष्ठ ३६५ / ७५६

(بایاں کالم) اقول: (۱) فقول المجد المسح امرار الید علی الشیئ السائل [1] لیس السیلان لازمہ ولذا لم یزدہ الراغب فی مفرداتہ وھذا ربنا تبارک وتعالی یقول فی الصعید [2] فَامْسَحُوْا بِوُجُوْھِکُمْ وَاَیْدِیْکُمْ مِّنْہُ ولا الید (۲) قیدا فیہ لحدیث تمسحوا بالارض فی وضع الجباہ علیھا بلا حائل والاالامرار بمعنی التحریك علیہ لحدیث یمسح مناکبنا وقد نص ائمتنا ان ضرب الکفین بل ووضعھما علی الارض ناویا یطھرھما فلا یمسحھما بعد وسیأتیك بعض نصوصہ ان شاء اللہ تعالیٰ وانما امر المولی سبحانہ وتعالی

(دایاں کالم) اقول: ان تصریحات کی روشنی میں واضح ہوجاتا ہے کہ مجد الدین نے قاموس میں مسح کے معنی میں سیال چیز پر ہاتھ گزارنا جو لکھا ہے اس میں (شیئی کے ساتھ سیال کی قید نہ ہونا چاہئے کیونکہ) سیلان اس مفہوم کیلئے لازم شیئی نہیں۔ اسی لئے مفردات میں امام راغب نے اس قید کا اضافہ نہ کیا۔ قرآن مجید میں باری تعالی کا ارشاد ہے: فَامْسَحُوْا بِوُجُوْھِکُمْ وَاَیْدِیْکُمْ مِّنْہُ (اس سے اپنے چہروں اور ہاتھوں کو مسح کرو) اس میں ہاتھ مفہوم مسح کی قید نہیں، کیوں کہ حدیث میں زمین پر بغیر حائل کے پیشانی رکھنے کیلئے بھی لفظ مسح وارد ہے جیسا کہ گزرا تمسحوا بالارض۔ اسی طرح ہاتھ پھیرنا یعنی عضو پر اسے حرکت دینا اور گزارنا یہ بھی مفہوم مسح کی قید نہیں کیونکہ حدیث میں وارد ہے یمسح مناکبنا۔ جبکہ یہاں کاندھوں پر صرف ہاتھ رکھنا ہوتا تھا (جیسا کہ مجمع البحار کے حوالے سے بیان ہوا) اس کا دوسرا ثبوت یہ بھی ہے کہ ہمارے ائمہ کرام نے تصریح فرمائی کہ اگر تیمم کی نیت سے دونوں

(درمیانی حصہ) عہ وفی النھایۃ والدر النثیر ومجمع البحار تحت حدیث حماد المعتدۃ في الجاھلیۃ تأخذ طائرا فتمسح بہ فرجھا ۱۲ منہ غفر لہ (م) نہایہ، دُرِّنثیراور مجمع البحار میں حدیث حماد کے تحت

ہے کہ زمانہ جاہلیت میں معتدہ عورت پرندہ پکڑتی تو اسے اپنی شرمگاہ پر لگاتی ۱۲ منہ غفرلہ غفرلہ (ت)

(حواشی) 1 القاموس المحیط باب الحاء فصل المیم مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۸۵ 2 القرآن ۴۳/۴

Fatawa Razawiya Volume 3

[Left Column - Arabic Text] ...by wiping. If touching the ground with them were not equivalent to wiping them with it, it would not have sufficed. When you know this, then know (1) that here are two scenarios that turn into four. This is because when you intend to perform Tayammum (dry ablution), you either find the earth connected to your limbs or separate from them. In the second case, you have two ways: one of them is to touch it with your palms and then wipe your limbs with them. This is the well-known and customary method, and it is mentioned in the verbal and practical Hadiths. The other way is to pass your limbs over the earth, either by wiping over it, as mentioned in the eleventh branch for the paralyzed person, or in the third for the healthy person. This is the incident of our master Ammar bin Yasir (may Allah Almighty be pleased with him), and the Prophet (may Allah Almighty send blessings and peace upon him) did not disapprove of it, in the sense that he did not negate its purifying effect, even though he guided towards a sufficient method to avoid what was beyond the need. Or by inserting [the limbs into it]...

[Right Column - Urdu Text] ...struck the palm of the hand on the ground, but rather with the intention of placing both on the ground, so both became pure. Afterwards, he will not wipe both palms. Some texts (nusus) in this regard will come soon, Insha-Allah, although the Almighty Lord has commanded "wiping". If touching both palms to the ground were not their wiping, then wiping them separately afterwards would be necessary. And touching them to the ground the first time would not have exempted the need for wiping them. After all this becomes clear, it should be known that there are two scenarios here which become four. Because when the intention for Tayammum is made, the person performing Tayammum will either find the earth (Sa'eed) connected to his limbs of Tayammum (1) or separate (2). In the second case, there are two scenarios: (1) Touch the palms to the earth and then rub the palms over the limbs. This is the well-known, customary form mentioned in the verbal and practical Hadiths. (2) Pass the limbs of Tayammum over the earth. Whether it be in such a way as to rub the limbs over the earth, as described in sub-point 11 for a person with paralyzed limbs, and mentioned in sub-point 3 for a healthy person. This is also the incident of our master Ammar bin Yasir (may Allah Almighty be pleased with them both), which the Prophet (may Allah Almighty send blessings and peace upon him) did not reject, meaning he did not negate their purification, although he provided guidance for a sufficient amount to invalidate what was beyond the need, whether by [passing] the limbs of Tayammum inside the earth...

फ़तावा रज़विया खंड 3

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] ...मसाह (पोंछने) के साथ। यदि उन्हें ज़मीन से छूना ही उनका मसाह करना न होता, तो यह पर्याप्त नहीं होता। जब आप यह जान गए, तो जान लें (1) कि यहाँ दो स्थितियाँ हैं जो चार में बदल जाती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब आप तयम्मुम का इरादा करते हैं, तो या तो आप मिट्टी (सईद) को अपने अंगों से जुड़ा हुआ पाते हैं या उनसे अलग। दूसरी स्थिति में आपके पास दो तरीके हैं: उनमें से एक यह है कि आप अपनी हथेलियों से इसे छुएं और फिर उनसे अपने अंगों का मसाह करें। यही प्रसिद्ध और ज्ञात तरीका है, और यह कथनी और करनी वाली हदीसों में वर्णित है। दूसरा तरीका यह है कि आप अपने अंगों को मिट्टी पर गुज़ारें, या तो उसके ऊपर मसाह करके, जैसा कि ग्यारहवीं शाखा में लकवाग्रस्त व्यक्ति के लिए बताया गया है, और तीसरी में स्वस्थ व्यक्ति के लिए। यह हमारे स्वामी अम्मार बिन यासिर (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की घटना है, और पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इसका खंडन नहीं किया, इस अर्थ में कि उन्होंने इसके द्वारा उनकी पवित्रता को नकारा नहीं, भले ही उन्होंने आवश्यकता से अधिक को व्यर्थ बनाने के लिए पर्याप्त मात्रा की ओर मार्गदर्शन किया। या उसे अंदर डालने के द्वारा...

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] ...हथेली को ज़मीन पर मारा, बल्कि इस नीयत से दोनों को सिर्फ ज़मीन पर रख दिया तो दोनों पाक हो गईं, बाद में दोनों हथेलियों का मसाह नहीं करेगा। इस सिलसिले में कुछ नुसूस (प्रमाण) इंशा अल्लाह बहुत जल्द आएंगे, हालांकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने "मसाह" का हुक्म दिया है। अगर ज़मीन से दोनों हथेलियों को छूना ही उनका मसाह न होता, तो बाद में अलग से उनका मसाह करना ज़रूरी होता। और पहली बार दोनों को ज़मीन पर छूना उनके मसाह से बेनियाज़ (मुक्त) न करता। यह सब स्पष्ट हो जाने के बाद यह जानना चाहिए कि यहाँ दो सूरतें (स्थितियाँ) हैं जो चार हो जाती हैं। इसलिए कि जब तयम्मुम का इरादा हो, तयम्मुम करने वाला उस समय सईद (मिट्टी) को या तो अपने तयम्मुम के अंगों से मिला हुआ (1) पाएगा या अलग (2)। दूसरी सूरत में दो स्थितियाँ हैं: (1) सईद से हथेलियाँ छूकर हथेलियों को अंगों पर फेर ले। यही जानी-पहचानी और कथनी और करनी वाली हदीसों में वर्णित सूरत है। (2) तयम्मुम के अंगों को सईद पर गुज़ारे। चाहे इस तरह कि सईद के ऊपर अंगों को फेरे जैसा कि जुज़िया (उप-बिंदु) 11 में सुन्न (लकवाग्रस्त) अंगों वाले व्यक्ति के लिए बयान हुआ और जुज़िया 3 में तंदुरुस्त के लिए ज़िक्र हुआ। यही हमारे सरदार अम्मार बिन यासिर (अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो) का वाकया भी है जिस पर नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इनकार नहीं फरमाया यानी उनकी पाकी (शुद्धता) की नफी

(नकार) नहीं फरमाई, अगरचे ज़रूरत से ज़्यादा को लग़्व (व्यर्थ) बनाने के लिए पर्याप्त कद्र की हिदायत और रहनुमाई फरमाई, चाहे इस तरह कि तयम्मुम के अंगों को सईद के अंदर...

[بایاں کالم - عربی عبارت] بالمسح فلولا ان امساسهما بالارض مسحهما بها لما اغنی۔ اذا علمت هذا فاعلم (۱) ان ههنا صورتین تعود اربعاً و ذلک لانک حین ترید التیمم اما ان تجد الصعید متصلاً باعضائک او منفصلاً عنها علی الثانی لک وجهان احدهما ان تمسه کفیك فتمسح بهما عضویک و ذلک هو المعهود المعروف و الوارد فی الاحادیث القولیة و الفعلیة و الآخر عط امرارك عضویک علی الصعید اما مسحاً من فوقه کما فی الفرع الهادی عشر للاشل و فی الثالث للصحیح و هی واقعة سیدنا عمار بن یاسر رضی اللہ تعالیٰ ولم ینکر علیہ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بمعنی انه لم ینف طهوره به و ان ارشد الی مکان یکفی الغاء للزائد علی الحاجة و اما ادخالا فی

[دایاں کالم - اردو عبارت] کف دست کو زمین پر مارا بلکہ اس نیت سے دونوں کو زمین پر صرف رکھ دیا تو دونوں پاک ہو گئیں بعد میں دونوں ہتھیلیوں کا مسح نہیں کرے گا۔ اس سلسلہ میں کچھ نصوص ان شاء اللہ تعالیٰ عنقریب آئیں گے حالانکہ مولائے کریم سبحانہ وتعالیٰ نے "مسح" کا حکم دیا ہے اگر زمین سے دونوں ہتھیلیوں کو مس کرنا ہی ان دونوں کا مسح نہ ہوتا تو بعد میں الگ سے ان کا مسح ضروری ہوتا۔ اور پہلی بار دونوں کا زمین پر مس کرنا ان دونوں کے مسح سے بے نیاز نہ کرتا۔ یہ سب واضح ہو جانے کے بعد یہ جاننا چاہئے کہ یہاں دو صورتیں ہیں جو چار ہو جاتی ہیں۔ اس لئے کہ جب تیمم کا ارادہ ہو متیمم اس وقت صعید کو یا تو اپنے اعضائے تیمم سے متصل (۱) پائے گا یا منفصل (۲)۔ بر تقدیر ثانی دو صورتیں ہیں (۱) صعید سے ہتھیلیاں مس کرکے ہتھیلیوں کو اعضا پر پھیرلے۔ یہی صورتِ معہود و معروف اور قولی و فعلی احادیث میں مذکور ہے۔ (۲) اعضائے تیمم کو صعید پر گزارے۔ خواہ اس طرح کہ صعید کے اوپر اعضاء کو پھیرے جیسے جزئیہ ۱۱ میں اعضاء شل ہو جانے والے شخص کیلئے بیان ہوا اور جزئیہ ۳ میں تندرست

کیلئے ذکر ہوا۔ یہی سیدنا عمار بن یاسر رضی اللہ تعالیٰ عنہما کا واقعہ بھی ہے جس پر نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے انکار نہ فرمایا یعنی ان کی طہارت کی نفی نہ فرمائی، اگرچہ قدرِ حاجت سے زائد کو لغو بنانے کیلئے قدرِ کافی کی ہدایت ورہنمائی فرمائی، خواہ اس طرح کہ اعضائے تیمم کو صعید کے اندر

Fatawa Rizvia - Volume 3

(Left Column - Arabic text) ...during it, such as one who inserts his face and palms into the sand with the intention of Tayammum; this is based on the fourth sub-case. Or by passing the Sa'eed (clean earth) over your two limbs, for example, taking a piece of stone and passing it over your face and forearms with the intention of covering them completely. In summary, perform an action such that the contact between the Sa'eed and the limb occurs through the action itself.

I say: This last method which I have added, even though scholars have not mentioned it, its sufficiency for the validity of Tayammum is definitely known because it fulfills the command of Allah Almighty: 'So seek clean earth and wipe your faces and your hands with it.' This entire discussion pertained to the second premise. As for the first premise, which is finding the Sa'eed already connected to the limbs, there are two scenarios: First: That you find it only on your limbs and not on what is behind them, like settled dust that fell upon them due to wind, as in the first sub-case, or due to an action of yours like demolition, sweeping, measuring, scattering, striking it, or shaking a cloth, as in the second, sixth, ninth, and tenth sub-cases. All of this applies if you intended Tayammum with what remained on your limbs after it settled, or if the dust was not raised during scattering but rather fell and settled on the limb.

(Right Column - Urdu text) ...inserts them. For example, if someone inserts their face and hands into the sand with the intention of Tayammum, this is under sub-case 4. B. Or pass the Sa'eed over the limbs. For example, take a piece of stone and, with the intention of Tayammum, wipe it completely over the face and hands. In short, let there be such an action that the Sa'eed and the limbs of Tayammum come into contact through that very action.

I say: This last scenario which I have added, although scholars have not mentioned it, its validity and sufficiency for Tayammum is known with certainty because the fulfillment of the command of the Lord Almighty: 'Seek clean earth and wipe your faces and hands with it' is present. This discourse was based on the second premise. Now take the first premise, i.e., finding the Sa'eed already attached to the limbs. There are two cases in this: (1) The person performing Tayammum finds Sa'eed only on the face and hands and not on any other limb, for example, dust was blown onto both limbs by the wind. As mentioned in sub-case 1, or dust came onto these limbs by some action of the person performing Tayammum himself, like a wall falling, sweeping, measuring grain, sprinkling soil, or hitting it, or shaking a dusty cloth—any

such action due to which dust came and settled on the limbs of Tayammum, as in sub-cases 2, 6, 9, 10. In all these cases, it should be that when the dust settled on the limbs, one then made the intention of Tayammum with the dust already resting on the limbs, or in the case of sprinkling, the dust was not raised into the air but rather the sprinkled soil fell and settled on the limb.

फ़तावा रिज़विया - जिल्द 3

(बायां कॉलम - अरबी पाठ) ...उसके दौरान, जैसे वह व्यक्ति जो तयम्मुम की नीयत से अपना चेहरा और हथेलियां रेत में डाल देता है; यह चौथी शाखा पर आधारित है। या अपने अंगों पर सईद (स्वच्छ मिट्टी/पत्थर) फेरना, जैसे पत्थर का एक टुकड़ा लेकर उसे चेहरे और बाजुओं पर पूरी तरह से ढंकने की नीयत से फेरना। संक्षेप में, ऐसा कार्य करें जिससे सईद और अंग के बीच संपर्क स्वयं उसी कार्य से हो जाए।

मैं कहता हूँ: यह अंतिम तरीका जिसे मैंने जोड़ा है, भले ही विद्वानों ने इसका उल्लेख नहीं किया है, तयम्मुम के लिए इसकी वैधता निश्चित रूप से ज्ञात है क्योंकि यह अल्लाह सर्वशक्तिमान के आदेश का पालन करता है: 'पवित्र मिट्टी का इरादा करो और उससे अपने चेहरों और हाथों का मसह करो।' यह सब दूसरे परिदृश्य के बारे में था। जहाँ तक पहले का प्रश्न है, यानी सईद को अंगों से जुड़ा हुआ पाना, इसमें दो स्थितियाँ हैं: पहली: कि आप इसे केवल अपने अंगों पर पाएं न कि उनके पीछे, जैसे जमी हुई धूल जो हवा से उन पर गिर गई हो, जैसा कि पहली शाखा में है, या आपके किसी कार्य जैसे विध्वंस, झाड़ू लगाना, मापना, बिखेरना, प्रहार करना, या कपड़ा झाड़ना, जैसा कि दूसरी, छठी, नौवीं और दसवीं शाखाओं में है। यह सब तब लागू होता है जब आपने तयम्मुम का इरादा उन अंगों पर बची हुई धूल से किया हो जब वह जम गई हो या यदि बिखेरने के दौरान धूल नहीं उड़ी बल्कि अंग पर गिरकर जम गई हो।

(दायां कॉलम - उर्दू पाठ) ...दाख़िल कर दे। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति तयम्मुम की नीयत से अपने चेहरे और हाथों को रेत में दाख़िल करे, इस पर जुज़िया 4 है। ब. या सईद को अंगों पर गुज़ारे। उदाहरण के लिए, पत्थर का कोई टुकड़ा लेकर तयम्मुम की नीयत से चेहरे और हाथों पर पूरे तौर से फेर ले। संक्षेप में यह कि ऐसा कार्य हो कि खुद उसी कार्य से सईद और तयम्मुम के अंग आपस में स्पर्श हो जाएं।

मैं कहता हूँ: यह अंतिम स्थिति जिसका मैंने इज़ाफ़ा किया है, हालांकि विद्वानों ने इसका उल्लेख नहीं किया है, लेकिन तयम्मुम के लिए इसका पर्याप्त होना निश्चित रूप से ज्ञात है क्योंकि अल्लाह सर्वशक्तिमान के आदेश: 'पवित्र मिट्टी का इरादा करके उससे अपने चेहरों और हाथों का मसह करो' का पालन पाया जाता है। यह विमर्श दूसरी पूर्वधारणा पर था। अब पहली पूर्वधारणा लीजिये यानी सईद को अंगों से मुत्तसिल (जुड़ा हुआ) पाना। इसमें दो स्थितियाँ हैं: (1) तयम्मुम करने वाला केवल

चेहरे और हाथों पर सईद पाए और किसी अंग पर न पाए, उदाहरण के लिए दोनों अंगों पर धूल हवा द्वारा उड़कर पड़ गई हो। जैसा कि जुज़िया 1 में है या खुद तयम्मुम के किसी कार्य से इन अंगों पर गर्द आई हो जैसे दीवार गिरना, झाड़ू देना, अनाज नापना या मिट्टी छिड़कना या उस पर हाथ मारना, या धूल भरा कपड़ा झाड़ना—ऐसा कोई कार्य जिसके कारण गर्द आकर तयम्मुम के अंगों पर बैठ गई जैसा कि जुज़िया 2, 6, 9, 10 में है। इन सभी स्थितियों में यह हो कि जब गर्द अंगों पर बैठ गई, उसके बाद अंगों पर बैठी हुई गर्द से तयम्मुम का इरादा किया, या छिड़कने की स्थिति में धूल नहीं उड़ी बल्कि जो मिट्टी छिड़की वह अंग पर गिरकर बैठ गई।

पृष्ठ 367/756

خلاله كمن يولج وجهه وكفيه في الرمل بنية التيمم وعليه الفرع الرابع اوعط امرارك الصعيد على عضويك كان تأخذ قطعة حجر فتمرها على وجهك وذراعيك ناويا مستوعبا وبالجملة تفعل مابنفسه يقع المساس بين الصعيد والمحل۔ واقول: وهذا الوجه الاخير الذى زدته وان لم يذكروه معلوم اجزاؤه قطعا لوجود امتثال قوله عزوجل فتيمموا صعيدا طيبا فامسحوا بوجوهكم وايديكم منه هذا كله فى الثانى اما الاول اعنى وجدانه متصلا ففيه صورتان: الاولى: ان تجده على عضويك فقط لاورائهما كغبار ساكن وقع عليهما بالقاء ريح كما فى الفرع الاول اوبفعل منك كهدم اوكنس اوكيل اوذر اوضرب به اونفض ثوب كما فى الفرع الثانى والسادس والتاسع والعاشر كل ذلك اذا اردت التيمم بما بقى منه على عضويك بعد سكونه اولم يثر غبارا فى الذربل نزل على العضو فسكن۔

داخل کردے۔ مثلاً کوئی شخص بہ نیتِ تیمّم اپنے چہرے اور ہاتھوں کو ریت میں داخل کرے، اس پر جزئیہ ۴ ہے۔ ب۔ یا صعید کو اعضاء پر گزارے۔ مثلاً پتھر کا کوئی ٹکڑا لے کر بہ نیتِ تیمّم چہرے اور ہاتھوں پر پورے طور سے پھیر لے۔ مختصر یہ کہ ایسا فعل ہو کہ خود اسی فعل سے صعید اور اعضائے تیمّم باہم مَس ہو جائیں۔ اقول: یہ آخری صورت جس کا میں نے اضافہ کیا اگرچہ اسے علماء نے ذکر نہیں کیا مگر اس کا جواز تیمّم کیلئے کافی ہونا قطعی طور پر معلوم ہے اس لئے کہ ارشاد باری عزوجل: 'تو پاک صعید کا قصد کر کے اس سے اپنے چہروں اور ہاتھوں کا مسح کرو' کی بجا آوری پائی جاتی ہے۔ یہ کلام برتقدیر ثانی تھا۔ اب پہلی تقدیر لیجئے یعنی صعید کو اعضاء سے متصل پانا۔ اس میں دو صورتیں ہیں: (۱) تیمّم کرنے والا صرف چہرے اور ہاتھوں پر صعید پائے اور کسی عضو پر نہ پائے مثلاً دونوں عضووں پر غبار ہوا کے اڑا کر ڈال دینے سے پڑا ہو۔ جیسا کہ جزئیہ ۱ میں ہے یا خود تیمّم کے کسی فعل سے ان اعضاء پر گرد آئی ہو جیسے دیوار

گرنا، جھاڑو دینا، غلہ ناپنا یا مٹی چھڑکنا یا اس پر ہاتھ مارنا، یا غبار آلود کپڑا جھاڑنا، ایسا کوئی فعل جس کے باعث گرد آکر اعضائے تیمّم پر بیٹھ گئی جیسا کہ جزئیہ ۲، ۶، ۹، ۱۰ میں ہے۔ ان ساری صورتوں میں یہ ہو کہ جب گرد اعضاء پر بیٹھ گئی اس کے بعد اعضائے تیمّم پر بیٹھی ہوئی گرد سے تیمّم کا ارادہ کیا، یا چھڑکنے کی صورت میں غبار نہ اڑایا بلکہ جو مٹی چھڑ کی وہ عضو پر گر کر بیٹھ گئی۔

Fatawa Razawiyyah --- Volume 3

Second: That you find a great thickness (of earth) around your limbs, as if you are hidden in sand, or dust rushes upon you due to a blowing wind, or by your own stirring through demolition or otherwise, even if it is through scattering dust; so you find rising, continuous dust surrounding your limbs, and you wish to perform Tayammum with it before it settles, as mentioned in the fifth branch, and also the seventh and eighth related to it.

(2) A person finds a sufficient thickness of earth around their limbs, for example, being hidden in sand, or due to a windstorm, or demolishing a wall etc., even if it is due to dust-inducing sprinkling that a significant amount of dust has accumulated, because of which one is experiencing rising, non-stop dust around their limbs and wishes to perform Tayammum from it before it settles. As in sub-point 5. Sub-points 7 and 8 are also related to this.

In both these cases, although contact is found between the earth and the limbs, it is not through your action for Tayammum. Instead, either you have no action in it, as in the wind casting dust and dust rising from the collapse of a wall, or your action was in stirring it, then its reaching your limbs occurred by its own nature, as in demolition, sweeping, measuring, scattering, striking with the hand, and shaking a cloth. Or it reached by your action but not for Tayammum, as in the case of being hidden. The condition is the existence of an intended action that by itself accomplishes the touching of the limbs to the earth.

In both these cases, although contact was found between the earth and the limbs, this contact did not occur through the action performed by the person (mutayammim) for Tayammum. Rather, in this, either there was no action at all by the person, like in the case where the wind blew dust onto the limbs, or dust rose from a collapsing wall; or the person's action did occur but it was only to move or provoke the dust, then the dust reaching the limbs occurred under its own natural disposition, like in the case where the person demolished a wall, swept, measured grain, sprinkled soil, struck dust, shook a cloth; or the dust reached due to the action of Tayammum itself but this action was not for the purpose of Tayammum, like in the case where the person was hidden in sand. And the condition is that such an action should be found with the intention of Tayammum that the touching of the limbs with the earth is realized through that very action.

In the second scenario, since there is thickness of the earth around your limbs, it is sufficient for you.

In the second scenario, since the thickness of the earth is present around the limbs of Tayammum, therefore, with the intention of Tayammum...

द्वितीय: कि आप अपने अंगों के चारों ओर (मिट्टी की) बहुत मोटाई पाएं, जैसे कि आप रेत में छिपे हों, या हवा चलने के कारण धूल आप पर हमला करे, या तोड़-फोड़ या किसी अन्य माध्यम से आपके द्वारा धूल उड़ाई गई हो, भले ही वह धूल उड़ाना ही क्यों न हो; तो आप अपने अंगों के चारों ओर उठती हुई, निरंतर धूल पाते हैं और इसके बैठने से पहले इससे तयम्मुम करना चाहते हैं, जैसा कि पांचवीं शाखा में उल्लेख है, और इसी से संबंधित सातवीं और आठवीं में भी।

(२) व्यक्ति अपने अंगों के चारों ओर मिट्टी की पर्याप्त मोटाई पाता है, उदाहरण के लिए, रेत में छिपा होना, या आंधी के कारण, या दीवार गिराने आदि के कारण, भले ही वह धूल पैदा करने वाले छिड़काव के कारण हो कि धूल की काफी मात्रा जमा हो गई हो, जिसके कारण कोई अपने अंगों के चारों ओर उठती हुई, बिना रुके धूल का अनुभव कर रहा है और इसके बैठने से पहले इससे तयम्मुम करना चाहता है। जैसा कि उप-बिंदु ५ में है। उप-बिंदु ७ और ८ भी इसी से संबंधित हैं।

इन दोनों स्थितियों में, हालांकि मिट्टी और अंगों के बीच संपर्क पाया जाता है, लेकिन यह तयम्मुम के लिए आपके कार्य के माध्यम से नहीं है। इसके बजाय, या तो इसमें आपका कोई कार्य नहीं है, जैसा कि हवा द्वारा धूल डालने और दीवार गिरने से धूल उठने में होता है, या आपका कार्य उसे हिलाने में था, फिर अंगों तक उसका पहुँचना उसके स्वयं के स्वभाव से हुआ, जैसे तोड़-फोड़, सफाई, मापन, बिखराव, हाथ से मारना और कपड़े झाड़ने में। या यह आपके कार्य से पहुँचा लेकिन तयम्मुम के लिए नहीं, जैसा कि छिपने के मामले में। शर्त एक इरादे वाले कार्य का अस्तित्व है जो स्वयं अंगों के मिट्टी को छूने को पूरा करता है।

इन दोनों स्थितियों में, यद्यपि मिट्टी और अंगों के बीच संपर्क पाया गया, लेकिन यह संपर्क तयम्मुम करने वाले के तयम्मुम के लिए किए गए कार्य के माध्यम से नहीं हुआ। बल्कि, इसमें या तो व्यक्ति द्वारा बिल्कुल भी कोई कार्य नहीं किया गया था, जैसे कि उस स्थिति में जहां हवा ने अंगों पर धूल उड़ाई, या दीवार गिरने से धूल उठी; या व्यक्ति का कार्य तो हुआ लेकिन वह केवल धूल को हिलाने या उत्तेजित करने के लिए था, फिर अंगों तक धूल पहुँचना उसके अपने प्राकृतिक स्वभाव के तहत हुआ, जैसे कि उस स्थिति में जहाँ व्यक्ति ने दीवार गिराई, झाड़ू लगाई, अनाज मापा, मिट्टी छिड़की, धूल पर प्रहार किया, कपड़ा झाड़ा; या धूल तयम्मुम के कार्य के कारण ही पहुँची लेकिन यह कार्य तयम्मुम के उद्देश्य से नहीं था, जैसे कि उस स्थिति में जहाँ व्यक्ति रेत में छिपा हुआ था। और शर्त यह

है कि तयम्मुम की नियत (इरादे) के साथ ऐसा कार्य पाया जाना चाहिए कि उसी कार्य के माध्यम से अंगों का मिट्टी से स्पर्श होना साकार हो जाए।

दूसरे परिदृश्य में, चूँकि आपके अंगों के चारों ओर मिट्टी की मोटाई है, यह आपके लिए पर्याप्त है।

दूसरे परिदृश्य में, चूँकि तयम्मुम के अंगों के चारों ओर मिट्टी की मोटाई मौजूद है, इसलिए तयम्मुम की नियत से...

فتاوی رضویہ --- جلد سوم والثانية: ان تجد له ثخناً كثيرا حول اعضائك كأن تكون مختبياً في رمل او يهجم غبار بهبوب ريح او اثارة منك بهدم وغيره ولوبذر مثير فتجد غباراً ثائراً مرتفعاً غير منقطع احاط بعضويك فتريد التيمم به قبل سكونه كما في الفرع الخامس ومنه السابع والثامن۔ (۲) منیم اپنے اعضاء کے گرد صعید کی کافی دبازت پائے مثلاً ریت میں چھپا ہوا ہو، یا آندھی چلنے، یا دیوار گرانے وغیرہ سے خواہ غبار انگیز چھڑکاؤ ہی کی وجہ سے غبار کی وافر مقدار ہو گئی ہے جس کے باعث اپنے اعضاء کے گرد نہ ختم ہونے والا بلند اڑتا ہوا غبار پا رہا ہے اور چاہتا ہے کہ اس کے ٹھہرنے سے پہلے اس سے تیمم کرلے۔ جیسا کہ جزئیہ ۵ میں ہے۔ اسی سے متعلق جزئیہ ۷، ۸ بھی ہے۔ ففي هاتين وان وجد الاتصال بين الصعيد والعضوين لكن ليس بفعلك للتيمم بل اما لا فعل لك فيه كما في القاء الريح وارتفاع الغبار بانهدام الجدار اوكان فعلك في تحريكه ثم وصوله الى عضويك بطبعه كما في الهدم والكنس والكيل والذر وضرب اليد ونفض الثوب اووصل بفعلك لالتيمم كما في صورة الاختباء والشرط وجود فعل ناو يقع بنفسه امساس العضوين بالصعيد۔ ان دونوں صورتوں میں اگرچہ صعید اور اعضاء کے درمیان اتصال پایا گیا لیکن یہ اتصال تیمم کیلئے متیمم سے ہونے والے فعل کے ذریعہ نہ ہوا بلکہ اس میں یا تو متیمم کا سرے سے کوئی فعل ہی نہیں، جیسے اس صورت میں کہ آندھی نے اعضاء پر غبار ڈال دیا، یا دیوار گرنے سے غبار اٹھا، یا متیمم کا فعل تو ہوا لیکن یہ فعل صرف اتنا تھا کہ غبار کو حرکت دی، برانگیختہ کیا، پھر اعضاء تک غبار کا پہنچنا خود غبار کی فطرت و طبیعت کے تحت پایا گیا، جیسے اس صورت میں کہ متیمم نے دیوار گرائی، جھاڑو دیا، غلہ ناپا، مٹی جھڑکی، غبار پر ہاتھ مارا، کپڑا جھاڑا، یا غبار تیمم کے فعل ہی سے پہنچا لیکن یہ فعل تیمم کیلئے نہ تھا جیسے اس صورت میں کہ متیمم ریت میں چھپا ہوا تھا۔ اور شرط یہ ہے کہ بہ نیت تیمم ایسا فعل پایا جائے کہ خود اسی فعل سے اعضاء کو صعید سے مس کرنا متحقق ہو۔ ففي

الصورة الثانية حيث ان للصعيد ثخناً حول اعضائك يكفيك دوسری صورت میں چونکہ اعضائے تیمم کے گرد صعید کی دبازت موجود ہے اس لئے بہ نیت تیمم Page 368 of 756

Fatawa Razawiyya - Volume Three

[Arabic Text]: Moving your two limbs (face and hands) with the intention of Tayammum (is sufficient) because through it, contact and touching occur with something other than what was initially in contact. Thus, the intended action is achieved. This is what is stated in 'Al-Khulasa' and 'Al-Bahr' under the fifth sub-section.

[Urdu Explanation]: It is sufficient for him to move his face and hands with the intention of Tayammum because, due to the act of movement, contact and touching with the earth (sa'id) occurs in addition to the initial contact. Thus, the intended action is achieved. This same legal case is mentioned under sub-section 5 in 'Al-Khulasa' and 'Al-Bahr'.

[Arabic Text]: But in the first scenario, you do not find earth (sa'id) beyond your two limbs. Thus, their movement did not result in touching something new. So it is not sufficient. It is necessary that your hand passes over it with intention, so touching occurs where it did not exist before. This is stated in 'Al-Fath', 'Al-Bahr', 'Al-Zahiriyya', and 'Al-Hindiyya' in the first sub-section; in 'Al-Khulasa', 'Al-Durar', 'Al-Bazzaziyya', and 'Ibn Kamal' and 'Kitab al-Salat' in the second sub-section; in 'Al-Khaniya', 'Al-Khulasa', 'Al-Khizana', 'Al-Idah', and 'Al-Jawhara' in the sixth sub-section; and in 'Al-Muhit' and 'Al-Hindiyya' in the ninth and tenth sub-sections. Thus, the anxiety has vanished and the dawn has broken. All praise is to Allah.

[Urdu Explanation]: However, in the first scenario, since there is no earth (sa'id) around the limbs of Tayammum, even if he moves his face and hands, contact with a new surface will not be achieved. Therefore, here, moving the limbs cannot suffice for Tayammum. It is necessary that, with the intention of Tayammum, he wipes his hands over the earth so that the act of touching the limbs with the earth is achieved, which was not achieved before. This same case is mentioned under sub-section 1 in 'Fath al-Qadir', 'Bahr al-Raiq', 'Zahiriyya', and 'Hindiyya'; and under sub-section 2 in 'Al-Khulasa', 'Al-Durar', 'Al-Bazzaziyya', 'Ibn Kamal', and 'Kitab al-Salat'; under sub-section 6 in 'Khaniya', 'Al-Khulasa', 'Al-Khizana', 'Al-Idah', and 'Al-Jawhara'; and under sub-sections 9 and 10 in 'Al-Muhit' and 'Hindiyya'. With this detail and research, the confusion has been removed, and the beauty of the morning has become clear, Praise be to Allah.

[Arabic Text]: And from this luminous explanation, important benefits appeared, whose usefulness is abundant. Among them is that there is no contradiction between

'Al-Khulasa' and 'Al-Bahr' sufficing with movement and 'Al-Durar' and 'Al-Julla al-Ghurar' making wiping (Masah) a condition, as the eminent scholar Al-Khadimi mistakenly thought.

[Urdu Explanation]: And from this luminous explanation, several important benefits have appeared which are very beneficial; the description of some benefits is as follows: Benefit 1: 'Al-Khulasa' and 'Al-Bahr' sufficed with only the mention of moving the limbs, but 'Al-Durar' and other reliable books made wiping (Masah) a condition. There is no difference or conflict between the two, as the scholar Al-Khadimi mistakenly thought. Therefore...

फ़तावा रज़विया - खंड तीन

[अरबी पाठ]: तयम्मुम की नीयत से अपने दो अंगों (चेहरे और हाथों) को हिलाना (पर्याप्त है) क्योंकि इसके द्वारा, उस चीज़ के अलावा किसी अन्य चीज़ के साथ संपर्क और स्पर्श होता है जो शुरू में संपर्क में थी। इस प्रकार, इच्छित कार्य पूरा हो जाता है। यही 'अल-खुलासा' और 'अल-बहर' में पांचवें उप-खंड के अंतर्गत बताया गया है।

[उर्दू व्याख्या]: तयम्मुम की नीयत से अपने चेहरे और हाथों को हिला लेना ही उसके लिए पर्याप्त है क्योंकि हिलाने की क्रिया के कारण, प्रारंभिक संपर्क के अतिरिक्त मिट्टी (सईद) के साथ संपर्क और स्पर्श होता है। इस प्रकार, अभीष्ट कार्य संपन्न हो जाता है। यही कानूनी मामला 'अल-खुलासा' और 'अल-बहर' में उप-खंड 5 के अंतर्गत उल्लिखित है।

[अरबी पाठ]: लेकिन पहली स्थिति में, आपको अपने दो अंगों के परे मिट्टी (सईद) नहीं मिलती है। इस प्रकार, उनके हिलने से किसी नई चीज़ को छूने का परिणाम नहीं निकला। इसलिए यह पर्याप्त नहीं है। यह आवश्यक है कि आपका हाथ नीयत के साथ उस पर से गुजरे, ताकि स्पर्श वहां हो जहां वह पहले नहीं था। यह 'अल-फतह', 'अल-बहर', 'अल-ज़हीरिया' और 'अल-हिंदिया' में पहले उप-खंड में बताया गया है; 'अल-खुलासा', 'अल-दुरर', 'अल-बज़्ज़ाज़िया', और 'इब्न कमाल' तथा 'किताब अल-सलात' में दूसरे उप-खंड में; 'अल-खनिया', 'अल-खुलासा', 'अल-खिजाना', 'अल-इदाह' और 'अल-जौहरा' में छठे उप-खंड में; और 'अल-मुहीत' तथा 'अल-हिंदिया' में नौवें और दसवें उप-खंड में। इस प्रकार, चिंता दूर हो गई है और भोर हो गई है। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है।

[उर्दू व्याख्या]: हालाँकि, पहली स्थिति में, चूँकि तयम्मुम के अंगों के चारों ओर मिट्टी (सईद) मौजूद नहीं है, इसलिए यदि वह चेहरे और हाथों को हिलाता भी है, तो नई सतह से संपर्क प्राप्त नहीं होगा। इसलिए यहाँ, अंगों को हिलाना तयम्मुम के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। यह आवश्यक है कि तयम्मुम की नीयत से वह मिट्टी पर हाथ फेरे ताकि अंगों को मिट्टी से स्पर्श करने की क्रिया प्राप्त हो जाए, जो पहले प्राप्त नहीं हुई थी। यही मामला 'फतह अल-क़दीर', 'बहर अल-रैक', 'ज़हीरिया' और 'हिंदिया' में उप-खंड 1 के अंतर्गत उल्लिखित है; और 'अल-खुलासा', 'अल-दुरर', 'अल-बज़्ज़ाज़िया', 'इब्न कमाल' और 'किताब अल-सलात' में उप-खंड 2 के अंतर्गत; उप-खंड 6 के अंतर्गत 'खनिया', 'अल-खुलासा', 'अल-खिजाना', 'अल-इदाह' और 'अल-जौहरा' में; और 'अल-मुहीत' तथा 'अल-हिंदिया' में

उप-खंड 9 और 10 के अंतर्गत। इस विवरण और शोध के साथ, भ्रम दूर हो गया है, और सुबह का सौंदर्य स्पष्ट हो गया है, अल्लाह की स्तुति हो।

[अरबी पाठ]: और इस प्रकाशमान स्पष्टीकरण से, महत्वपूर्ण लाभ प्रकट हुए, जिनकी उपयोगिता प्रचुर है। उनमें से यह है कि 'अल-खुलासा' और 'अल-बहर' द्वारा हिलाने को पर्याप्त मानने और 'अल-दुरर' और 'अल-जुल्ला अल-घुरार' द्वारा पोंछने (मसह) को शर्त बनाने के बीच कोई विरोधाभास नहीं है, जैसा कि प्रतिष्ठित विद्वान अल-खादिमी को भ्रम हुआ था।

[उर्दू व्याख्या]: और इस प्रकाशमान स्पष्टीकरण से कई महत्वपूर्ण लाभ प्रकट हुए हैं जो बहुत लाभकारी हैं; कुछ लाभों का विवरण इस प्रकार है: लाभ 1: 'अल-खुलासा' और 'अल-बहर' ने केवल अंगों को हिलाने के उल्लेख से ही संतोष किया, लेकिन 'अल-दुरर' और अन्य विश्वसनीय पुस्तकों ने पोंछने (मसह) को एक शर्त बनाया। दोनों के बीच कोई अंतर या संघर्ष नहीं है, जैसा कि विद्वान अल-खादिमी को भ्रम हुआ था। इसलिए...

تحریك عضویك بنیة التیمم لانه یقع به الاتصال والامساس بغیرها اتصل اولا فیحصل الفعل المقصود وهذا ما فی الخلاصة والبحر فی الفرع الخامس۔ اس کا اپنے چہرے اور ہاتھوں کو حرکت دے لینا ہی کافی ہے کیونکہ پہلے جس سے اتصال تھا اس کے علاوہ فعل (فعل تحریک) کی وجہ سے صعید سے اتصال اور مس کرنا پایا جاتا ہے تو فعلِ مقصود کا حصول ہو جاتا ہے۔ یہی صورت جزئیہ ۵ کے تحت خلاصہ اور بحر میں ہے۔

لکن فی الصورة الاولی لا تجد صعیدا وراء عضویك فهما حرکتهما لم یحصل امساس بشیئ جدید فلا یکفي ولابد من ان تمر یدك علیه ناویا فیقع امساس لم یکن وهذا ما فی الفتح والبحر والظهیریة والهندیة فی الفرع الاول والخلاصة والدرر والبزازیة وابن کمال وکتاب الصلاة فی الفرع الثانی والخانیة والخلاصة والخزانة والایضاح والجوهرة فی الفرع السادس والمحیط والهندیة فی الفرعین التاسع والعاشر فذهب القلق واسفر الفلق والله الحمد۔ لیکن پہلی صورت میں چونکہ اعضائے تیمم کے گرد صعید موجود نہیں ہے اس لئے اگر وہ چہرے اور ہاتھوں کو حرکت دے تو کسی نئی چیز سے مس کرنا حاصل نہ ہو گا اس لئے یہاں تحریکِ اعضاء تیمم کیلئے کفایت نہیں کر سکتی۔ ضروری ہے کہ بہ نیت تیمم صعید پر ہاتھ پھیرے کہ اعضاء کو صعید سے مس کرنے کا عمل حاصل ہو جو پہلے حاصل نہ تھا۔ یہی صورت جزئیہ ا کے تحت فتح القدیر، بحر الرائق، ظہیریہ اور ہندیہ میں ہے، اور جزئیہ ۲ کے تحت خلاصہ، درر، بزازیہ، ابن کمال اور کتاب الصلاۃ میں ہے جزئیہ ۶ کے تحت خانیہ، خلاصہ، خزانہ، ایضاح اور جوہرہ میں ہے۔ اور جزئیہ ۹، ۱۰ کے تحت محیط اور ہندیہ میں ہے۔ اس تفصیل و تحقیق سے اضطراب دُور ہو گیا، اور صبح کا جمال روشن ہو گیا والله الحمد۔

وظهر(١) بهذا التقرير المنير فوائد مهمة نفعها غزير * منها انه لاخلف بين اكتفاء الخلاصة والبحر بالتحريك واشتراط الدرر والجلة الغرر المسح كما توهم الفاضل (١) الخادمی۔ اور اس تقریرِ منیر سے چند اہم فوائد بھی ظاہر ہوئے جو بہت نفع بخش ہیں، کچھ فوائد کا بیان درج ذیل ہے: ف١: خلاصہ اور بحر نے صرف تحریکِ اعضاء کے ذکر پر اکتفاء کیا مگر درر اور دیگر کتب معتمدہ نے مسح کی شرط لگائی دونوں میں کوئی اختلاف و تعارض نہیں جیسا کہ فاضل خادمی کو وہم ہوا۔ اس لئے۔

Fatawa Razawiyya, Volume 3

The first is in rising dust and the second is in the discontinued (dust). First, in the case where rising dust is present around the limbs, and second, in the case where the dust has already ceased.

Among them is that wiping (Masah) in the issue of Al-Durar in the second branch does not have a meaning that includes movement, as was also claimed (1). Indeed, movement is not sufficient; rather, passing the hand (over) is necessary. F 2: In the problem of Al-Durar mentioned under point 2, wiping does not mean anything that includes moving the limbs, as the respected scholar thought. Movement cannot be sufficient in this; rather, it is necessary to rub the hands over the limbs.

Among them is that there is no contradiction between the statement of Al-Khulasa in the fifth branch and its statement in the second and sixth for the same reason that passed in Al-Durar. F 3: There is no conflict between the text of Khulasa mentioned under point 5 and the text of Khulasa mentioned under points 2 and 6. The reason is the same as was just explained in the clarification of the text of Al-Durar.

Among them: It's like for Al-Bahr in the fifth and the first. F 4: The same applies to the mentioned texts of Al-Bahr under point 5 and point 1.

Among them: Scattering in the sixth branch refers to what does not raise dust, and you want Tayammum after it has fallen and settled; hence they conditioned wiping. In the seventh branch is that which raises (dust), and you want Tayammum while it is rising, so Al-Bazzazi found moving the place sufficient because you know that movement after settling does not benefit. F 5: The mention of sprinkling soil on the limbs under point 6 refers to such sprinkling that does not cause dust to fly and the soil falls and sits on the limbs, after which Tayammum was intended. That is why wiping is a condition in it. And under point 7, such sprinkling is meant where dust rises, and the intention for Tayammum is made while the dust is rising. Therefore, Bazzazi found it sufficient to move the Tayammum limbs in that dust. This is because it is known that after the dust settles, moving the limbs is of no use.

Among them: Standing in the wind's path. F 6: Standing facing the storm if in this case...

फ़तावा रज़विया, खंड 3

पहला उड़ती हुई धूल में है और दूसरा रुक चुकी धूल में है। पहला उस स्थिति में है जब अंगों के चारों ओर उठती हुई धूल मौजूद हो, और दूसरा उस स्थिति में है जब धूल रुक चुकी हो।

उनमें से एक यह है कि 'अल-दुरर' के मसले में दूसरी शाखा में 'मसह' (पोंछने) का ऐसा कोई अर्थ नहीं है जिसमें अंगों को हिलाना भी शामिल हो जैसा कि दावा (1) किया गया है। वास्तव में, केवल हिलाना पर्याप्त नहीं है बल्कि अंगों पर हाथ फेरना (मलना) आवश्यक है। फ़ा २: 'दुरर' के मसले में मद संख्या २ के तहत उल्लिखित 'मसह' का ऐसा कोई अर्थ अभिप्रेत नहीं है जिसमें अंगों का हिलना भी शामिल हो जैसा कि सम्मानित विद्वान ने सोचा था। इसमें केवल हिलाना तो पर्याप्त हो ही नहीं सकता, बल्कि अंगों पर हाथ फेरना ज़रूरी है।

उनमें से एक यह है कि 'अल-ख़ुलासा' के पांचवीं शाखा के कथन और दूसरी व छठी शाखा के कथन के बीच कोई विरोधाभास नहीं है, उसी कारण से जो 'अल-दुरर' में बीत चुका है। फ़ा ३: मद संख्या ५ के तहत उल्लिखित 'ख़ुलासा' के पाठ और मद संख्या २, ६ के तहत उल्लिखित 'ख़ुलासा' के पाठ के बीच कोई विरोध नहीं है। कारण वही है जो अभी 'दुरर' के पाठ के स्पष्टीकरण में बताया गया।

उनमें से: 'अल-बहर' के लिए भी पांचवें और पहले में ऐसा ही है। फ़ा ४: यही हाल मद संख्या ५ और मद संख्या १ के तहत 'बहर' के उल्लिखित पाठों का है।

उनमें से: छठी शाखा में बिखेरना वह है जिससे धूल नहीं उड़ती और आप इसके गिरने और जमने के बाद 'तयम्मुम' चाहते हैं, इसलिए उन्होंने 'मसह' की शर्त रखी। और सातवीं शाखा में वह है जिससे धूल उड़ती है और आप उठती हुई धूल की स्थिति में 'तयम्मुम' चाहते हैं, तो 'अल-बज़्ज़ाज़ी' ने उस जगह को हिलाने को ही पर्याप्त माना क्योंकि आप जानते हैं कि धूल जमने के बाद अंगों को हिलाने से कोई लाभ नहीं होता। फ़ा ५: मद संख्या ६ के तहत अंगों पर मिट्टी छिड़कने का जो ज़िक्र है, उससे ऐसा छिड़कना मुराद है जिससे धूल न उड़ती हो और मिट्टी अंगों पर गिरकर बैठ गई हो, उसके बाद तयम्मुम का इरादा किया गया। इसीलिए इसमें मसह की शर्त है। और मद संख्या ७ के तहत ऐसा छिड़कना मुराद है जिससे धूल उड़ती हो और धूल उठने की स्थिति में ही तयम्मुम का इरादा हो, इसीलिए बज़्ज़ाज़ी ने तयम्मुम के अंगों को उस धूल में हरकत (हिलाने) देने पर ही इक्तिफ़ा (बस) किया। यह इसलिए कि मालूम है कि धूल बैठ जाने के बाद अंगों को हिलाने से कोई फ़ायदा नहीं।

उनमें से: हवा के रुख की ओर खड़ा होना। फ़ा ६: आंधी के रुख पर खड़ा होना अगर इस स्थिति में...

पृष्ठ ३७०/७५६

فالاول فی الغبار المرتفع والثانی فی المنقطع ۔ اوّل اس صورت میں ہے جب اعضاء کے گرد اٹھتا ہوا غبار موجود ہو ، اور ثانی اس صورت میں ہے جب غبار منقطع ہو چکا ہو۔

ومنها ان لیس المسح في مسألة الدرر فی الفرع الثانی بمعنی یشمل التحریك کما زعم (۱) ایضا فان التحریك لا یکفی فیه بل لابد من امرار الید ۔ ف ۲: جزئیہ ۲ کے تحت ذکر شدہ مسئلہ درر میں مسح کا ایسا کوئی معنی مراد نہیں جو تحریک اعضاء کو بھی شامل ہو جیسا کہ فاضل موصوف نے خیال کیا۔ اس میں تحریک تو کافی ہو ہی نہیں سکتی بلکہ اعضاء پر ہاتھ پھیرنا ضروری ہے۔

ومنها ان لا تهافت بین کلام الخلاصة في الفرع الخامس وکلامه فی الثانی والسادس لعین ما مر في الدرر۔ ف ۳: جزئیہ ۵ کے تحت ذکر شدہ عبارت خلاصہ اور جزئیہ ۲، ۶ کے تحت مذکورہ عبارت خلاصہ کے درمیان کوئی تعارض نہیں۔ وجہ وہی ہے جو عبارتِ درر کی توضیح میں ابھی بیان ہوئی۔

ومنها مثله للبحر فی الخامس والاول ۔ ف ۴: یہی حال جزئیہ ۵ اور جزئیہ ۱ کے تحت بحر کی مذکور عبارتوں کا ہے۔

ومنها ان الذر فی الفرع السادس مالا یثیر نقعا وترید التیمم بعد ما وقع وسکن فلذا شرطوا المسح وفي الفرع السابع ما یثیر وترید التیمم وهو مرتفع فاکتفی البزازی بتحریك المحل لما علمت ان التحریك لا ینفع بعد السکون ۔ ف ۵: جزئیہ ۶ کے تحت اعضاء پر مٹی چھڑکنے کا جو ذکر ہے اس سے ایسا چھڑکنا مراد ہے جس سے غبار نہ اڑتا ہو اور مٹی اعضاء پر گر کر بیٹھ گئی اس کے بعد تیمم کا ارادہ کیا۔ اسی لئے اس میں مسح کی شرط ہے۔ اور جزئیہ ۷ کے تحت ایسا چھڑکنا مراد ہے جس

سے غبار اٹھتا ہو اور غبار بلند ہونے کی حالت میں ہی تیمم کا ارادہ ہو اسی لئے بزازی نے اعضائے تیمم کو اس غبار میں حرکت دے لینے پر ہی اکتفا کیا۔ یہ اس لئے کہ معلوم ہے غبار بیٹھ جانے کے بعد تحریک اعضاء سے کوئی فائدہ نہیں۔

ومنها ان القيام في مهب الريح ف ۶: آندھی کے رخ پر کھڑا ہونا اگر اس صورت

Fatawa Razawiyya - Volume 3

(Arabic Text) If it so happens that a wind blows and kicks up dust such that it surrounds you, and you intend to perform Tayammum while it is still aloft, then moving [your limbs] is sufficient for you. This is the meaning of Al-Bazzaziyyah in the eighth branch. And if you intend to perform it after the dust has settled, it is mandatory for you to pass your hands over the limbs, and this is the meaning of Al-Khulasah in the second branch. Among them is that inserting (1) the limb into the place of the earth (Sa'id), whether it be soil, sand, or dust, if done with the intention of Tayammum, is sufficient for the achievement of contact through your action with intention. This is the fourth branch of Al-Khulasah. If it was done without intention and then you intended Tayammum, then moving [the limbs] is mandatory for you, and this is the eighth branch of Al-Bazzaziyyah. Thus, insertion in Al-Khulasah is with intention, which is why nothing further was added, whereas in Al-Bazzaziyyah it is without intention, which is why movement was added. In summary, if a wind blows and kicks up dust, and you go to it and enter it with intention, it belongs to the fourth branch. If entered without intention while the dust is still aloft, then it belongs to the eighth branch, or if you intended...

(Urdu Text) ...[if you] are in a situation where a storm blew, raising so much dust that it surrounded the person from all sides. Now, if he intended Tayammum while the dust was still high, then simply moving the limbs of Tayammum in that high dust is sufficient. This is the meaning of Bazzaziyyah under Sub-point 8. And if the intention for Tayammum was made after the dust settled, then it is necessary to wipe the hands over the dust settled on the limbs. This is the meaning of Khulasah under Sub-point 2. F 7: Inserting the limbs of Tayammum into the place of Sa'id (pure earth). Whether the Sa'id is soil, sand, or dust. When it is done with the intention of Tayammum, it is sufficient because the act of touching the limbs with Sa'id along with intention is achieved. This is the Sub-point 4 mentioned in Khulasah. And if the limbs were inserted without intention and then Tayammum was intended, then it is necessary to move the limbs. This is Sub-point 8 mentioned in Bazzaziyyah. So, the insertion mentioned in Khulasah is with the intention of Tayammum, which is why no further action was added. And the insertion described in Bazzaziyyah is without the intention of Tayammum. That is why the condition of movement was added to it. The conclusion is that when a wind blows raising dust, and one goes near that flying dust and enters it with the intention of Tayammum, this situation will fall under Sub-point

4. And if one entered without intention and the dust is still high, then it will be the situation of Sub-point 8.

फ़तावा रज़विया - भाग 3

(अरबी पाठ) यदि ऐसा हो कि हवा चले और धूल इतनी उड़े कि वह आपको चारों ओर से घेर ले, और आप धूल के ऊंचे रहने की स्थिति में ही तयम्मुम का इरादा करें, तो [धूल के भीतर अंगों को] हिलाना ही आपके लिए पर्याप्त है। अल-बज्जाज़िया की आठवीं शाखा में यही अर्थ है। और यदि आप धूल के जम जाने के बाद तयम्मुम का इरादा करते हैं, तो अंगों पर हाथ फेरना अनिवार्य है, और अल-खुलासा की दूसरी शाखा में यही अर्थ है। उनमें से एक यह है कि तयम्मुम के अंग को 'सईद' (पाक मिट्टी आदि) के स्थान में डालना, चाहे वह मिट्टी हो, रेत हो या धूल, यदि तयम्मुम की नीयत के साथ हो, तो आपके इरादे के साथ स्पर्श की क्रिया प्राप्त होने के कारण पर्याप्त है। यह अल-खुलासा की चौथी शाखा है। और यदि यह बिना नीयत के था और आपने तयम्मुम का इरादा किया, तो अंगों को हिलाना अनिवार्य है, और यह अल-बज्जाज़िया की आठवीं शाखा है। इस प्रकार, अल-खुलासा में प्रवेश नीयत के साथ है, इसलिए इसमें कुछ और नहीं जोड़ा गया, जबकि अल-बज्जाज़िया में यह बिना नीयत के है, इसलिए इसमें हिलाने की शर्त जोड़ी गई। संक्षेप में, यदि हवा चले और धूल उड़े, और आप उसके पास जाएं और नीयत के साथ उसमें प्रवेश करें, तो यह चौथी शाखा के अंतर्गत आएगा। और यदि बिना नीयत के प्रवेश किया और धूल अभी भी ऊंची है, तो यह आठवीं शाखा की स्थिति होगी, या यदि आपने इरादा किया...

(उर्दू पाठ) ...[यदि आप] ऐसी स्थिति में हों जहाँ आंधी चली जिससे इतनी धूल उड़ी कि उसने व्यक्ति को हर तरफ से घेर लिया। अब उसने धूल के ऊंचे रहने की स्थिति में ही तयम्मुम का इरादा किया, तो उस समय तयम्मुम के अंगों को उस ऊंची धूल में हिला लेना ही काफी है। जुज़िया 8 के तहत यही बज्जाज़िया का अर्थ है। और अगर धूल जम जाने के बाद तयम्मुम का इरादा किया, तो अंगों पर जमी हुई धूल पर हाथ फेरना ज़रूरी है। जुज़िया 2 के तहत खुलासा का यही अर्थ है। F 7: तयम्मुम के अंगों को सईद (पाक मिट्टी आदि) के स्थान पर दाखिल करना। सईद चाहे मिट्टी हो, रेत हो या धूल। जब तयम्मुम की नीयत से हो तो यही काफी है क्योंकि नीयत के साथ अंगों को सईद से स्पर्श करने का कार्य हासिल हो गया। खुलासा में ज़िक्र किया गया जुज़िया 4 यही है। और अगर तयम्मुम के अंगों को बिना नीयत के दाखिल किया गया फिर तयम्मुम का इरादा किया, तो अंगों को हरकत देना ज़रूरी है। यह बज्जाज़िया में ज़िक्र किया गया जुज़िया 8 है। तो खुलासा में जो दाखिल करना ज़िक्र है वह तयम्मुम की नीयत के साथ दाखिल करना है, इसीलिए इस पर किसी और अमल का इज़ाफ़ा नहीं बताया गया। और बज्जाज़िया में जो दाखिल करना बयान हुआ वह बिना तयम्मुम की नीयत के

दाखिल करना है। इसीलिए इसमें तहरीक (हिलाने) की शर्त का इज़ाफ़ा किया गया। हासिल-ए-कलाम (निष्कर्ष) यह कि जब आंधी चले जिससे धूल उड़े, उस उड़ती हुई धूल के पास जाकर तयम्मुम की नीयत से उसमें दाखिल हो जाए तो यह सूरत जुज़िया 4 के तहत आएगी। और अगर बिना नीयत के दाखिल हो गया और धूल अभी भी ऊंची है तो जुज़िया 8 की सूरत होगी।

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

(عربی عبارت) ان كان بحيث هبت فثارت نقعاً احاط بك فاردت التيمم حين هو مرتفع كفاك التحريك وهو المراد البزازية في الفرع الثامن وان اردت بعد ماسكن لزمك امرار اليد وهو المراد الخلاصة في الفرع الثاني۔ ومنها ان ادخال (1) المحل في موضع الصعيد تراباً كان او رملا او غبارا اذا كان بنية التيمم كفى لحصول الامساس بفعلك ناوياً وهو فرع الخلاصة الرابع وان كان لا بالنية و اردت التيمم لزمك التحريك وهو فرع البزازية الثامن فالا دخال في الخلاصة مع النية ولذا لم يزد شيئا وفي البزازية بدونها ولذا زاد التحريك۔ وبالجملة اذا هبت ريح فاثارت غبارا فذهبت اليه ودخلته ناوياً كان من الفرع الرابع اوغير ناو والغبار مرتفع كان من الثامن او اردت

(اردو عبارت) میں ہو کہ آندھی چلی جس سے اس قدر غبار اٹھا کہ اس نے ہر طرف سے آدمی کو گھیر لیا اب اس نے غبار بلند رہنے ہی کی حالت میں تیمم کا ارادہ کیا تو اس وقت اعضائے تیمم کو اس بلند غبار میں حرکت دے لینا ہی کافی ہے۔ جزئیہ ۸ کے تحت یہی بزازیہ کی مراد ہے۔ اور اگر غبار بیٹھ جانے کے بعد تیمم کا ارادہ کیا تو اعضاء پر بیٹھے ہوئے غبار پر ہاتھ پھیرنا ضروری ہے۔ جزئیہ ۲ کے تحت خلاصہ کی یہی مراد ہے۔ ف ۷ : اعضائے تیمم کو صعید کی جگہ داخل کرنا۔ صعید خواہ مٹی ہو یا ریت یا غبار۔ جب بہ نیت تیمم ہو تو یہی کافی ہے کیونکہ نیت کے ساتھ اعضاء کو صعید سے مس کرنے کا عمل حاصل ہوگیا۔ خلاصہ میں ذکر شدہ جزئیہ ۴ یہی ہے۔ اور اگر اعضائے تیمم کو داخل کرنا نیت کے بغیر ہوا پھر تیمم کا ارادہ کیا تو اعضا کو حرکت دینا ضروری ہے۔ یہ بزازیہ میں مذکورہ جزئیہ ۸ ہے۔ تو خلاصہ میں جو داخل کرنا مذکور ہے وہ بہ نیت تیمم داخل کرنا ہے اسی لئے اس پر کسی اور عمل کا اضافہ نہ بتایا۔ اور بزازیہ میں جو داخل کرنا بیان ہوا وہ بلا نیت تیمم داخل کرنا ہے۔ اسی لئے اس میں قیدِ تحریک کا اضافہ کیا۔ حاصل کلام

یہ کہ جب آندھی چلے جس سے غبار اٹھے اس اڑتے ہوئے غبار کے پاس جاکر تیمم کی نیت سے اس میں داخل ہو جائے تو یہ صورت جزئیہ ۴ کے تحت آئیگی۔ اور بغیر نیت داخل ہو گیا اور غبار ابھی بلند ہے تو جزئیہ ۸ کی صورت ہوگی۔

Fatawa-e-Razvia Volume 3

[Arabic Section - Left Column] ...after it has settled, it belongs to the second case. And if you stand in the direction of the wind until the dust comes to you and surrounds you, it is not sufficient at all, even if your standing was with the intention of tayammum (dry ablution). This is because the reaching occurred from the side of the dust, not from your side. But if it was while still suspended and you moved your limbs with intention, it belongs to the eighth branch. And if it fell and settled, and you intended (tayammum), it belongs to the second branch. In a more concise way: either you go to the dust and enter your limbs into it with or without intention, or it comes to you in the first case then tayammum, and in the latter two cases, moving (the limbs) is sufficient if it is suspended, and it is necessary to wipe the hands if it has fallen and settled. And from this: that moving and entering are both forms of wiping as you have learned, so (1) the objection against the Muhaqqiq (Researcher), as Al-Bahr claimed, is dismissed. And from this: the meaning of Al-Khulasa in...

[Urdu Section - Right Column] And if after the dust settles, one intends tayammum with the dust that has fallen on the limbs, it will be the case of sub-point 2. And if one stands in the direction of the wind and then the dust eventually surrounds him, then this much is absolutely not enough, even if this standing was with the intention of tayammum. This is because the act of reaching was from the side of the dust, not from the person performing tayammum. Now if the dust is still suspended and one moves their limbs in it with the intention of tayammum, it becomes the case of sub-point 8. And if the dust fell on the body and settled, then one intended tayammum, this case will fall under sub-point 2. And more concisely, it will be said that there are three scenarios: (1) The person performing tayammum goes near the dust and enters their tayammum limbs into it with the intention of tayammum. (2) Entering the limbs without intention. (3) The dust itself reaches the person performing tayammum. In the first case, tayammum is completed by that action alone. In the last two cases, if the dust is still suspended, then moving the limbs is sufficient. And if the dust fell on the limbs and settled, then wiping with the hands is necessary. Note 8: In the detail of various cases, it was known that moving the limbs in the dust is also wiping (masah), and entering them into it is also wiping. Therefore, the objection raised by Bahr against Muhaqqiq-ala-al-Itlaq is dismissed. Note 9: What Al-Khulasa said, that "the condition is that self...

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3

[अरबी खंड - बायाँ कॉलम] ...उसके जम जाने के बाद, यह दूसरे मामले का हिस्सा है। और यदि आप हवा की दिशा में खड़े होते हैं जब तक कि धूल आप तक न आ जाए और आपको घेर न ले, तो यह बिल्कुल भी पर्याप्त नहीं है, भले ही आपका खड़ा होना तयम्मुम की नीयत से हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि पहुँचने का कार्य धूल की ओर से हुआ, न कि आपकी ओर से। लेकिन यदि वह अभी भी हवा में निलंबित थी और आपने नीयत के साथ अपने अंगों को हिलाया, तो यह आठवीं शाखा का हिस्सा है। और यदि वह गिरकर जम गई, और आपने (तयम्मुम की) नीयत की, तो यह दूसरी शाखा का हिस्सा है। अधिक संक्षिप्त रूप में: या तो आप धूल के पास जाएं और अपने अंगों को नीयत के साथ या बिना नीयत के उसमें डालें, या वह पहले मामले में आप तक आए फिर तयम्मुम, और बाद के दो मामलों में, यदि वह निलंबित है तो (अंगों को) हिलाना पर्याप्त है, और यदि वह गिरकर जम गई है तो हाथों को फेरना आवश्यक है। और इससे: कि हिलाना और अंदर डालना दोनों ही मसह (पोंछना) के रूप हैं जैसा कि आपने सीखा है, इसलिए (1) मुहाक़्क़िक़ पर किया गया ऐतराज़, जैसा कि अल-बहर ने दावा किया था, ख़ारिज कर दिया गया है। और इससे: अल-खुलासा का अर्थ...

[उर्दू खंड - दायाँ कॉलम] और धूल बैठ जाने के बाद अंगों पर पड़ी हुई धूल से तयम्मुम का इरादा किया तो जुज़िया 2 की सूरत होगी। और अगर आंधी के रुख पर खड़ा हो गया फिर धूल आखिर में घेर लिया तो इस कदर मुतलक़न काफी नहीं अगरचे यह ठहरना तयम्मुम ही की नीयत से हुआ हो। इसलिए कि पहुंचने का अमल धूल की जानिब से हुआ तयम्मुम से न हुआ। अब अगर धूल अभी बुलंद है इसमें अपने अंगों को ब-नीयत तयम्मुम हरकत दे ली तो जुज़िया 8 की सूरत हो गई। और धूल जिस्म पर पड़ गई और बैठ गई फिर तयम्मुम का इरादा किया तो यह सूरत जुज़िया 2 के तहत आएगी। और ज़्यादा मुख़्तसर तौर पर यूँ कहा जाएगा कि तीन सूरतें हैं: (1) तयम्मुम करने वाला धूल के पास जाकर तयम्मुम की नीयत से इसमें अपने अंगों को दाखिल करे। (2) बिना नीयत अंगों को दाखिल करे। (3) धूल खुद तयम्मुम करने वाले तक पहुंचे। पहली सूरत में इतने ही अमल से तयम्मुम मुकम्मल हो गया। आखिरी दो सूरतों में अगर धूल अब भी बुलंद है तो अंगों को हरकत दे लेना काफी है। और अगर धूल अंगों पर पड़ गई और बैठ गई तो हाथ फेरना ज़रूरी है। नोट 8: मुख़्तलिफ़ सूरतों की तफ़्सील के ज़ैल में मालूम हुआ कि धूल में अंगों को हरकत देना भी मसह है और इसमें दाखिल करना भी मसह है। तो बहर ने मुहाक़्क़िक़-अलल-इतलाक पर जो ऐतराज़ किया वह साक़ित है। नोट 9: खुलासा ने जो कहा कि "शर्त यह है कि खुद...

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[عربی حصہ - بایاں کالم] بعدما سکن کان من الثاني واذا قمت في جهة المهب حتی اتاك الغبار واحاط بك لم یکفك مطلقا وان کان وقوفك هذا بنیة التیمم لان الوصول من جهة الغبار لامن قبلك فان کان بعد مرتفعا فحرکت اعضائك ناویا کان من الفرع الثامن وان وقع وسکن فاردت کان من الفرع الثاني۔ وبوجه اخصر اما ان تذهب الی الغبار فتدخل فیه اعضائك ناویا اوغیر ناو اویاتیك علی الاول ثم التیمم وعلی الاخرین کفی التحریك ان کان مرتفعا ولزم امرار الیدان وقع وسکن۔ ومنها ان التحریك والادخال کل ذلك مسح کما علمت فلا(۱) اخذ علی المحقق کما زعم البحر۔ ومنها ان مراد الخلاصة في

[اردو حصہ - دایاں کالم] اور غبار بیٹھ جانے کے بعد اعضاء پر پڑے ہوئے غبار سے تیمم کا ارادہ کیا تو جزئیہ ۲ کی صورت ہوگی۔ اور اگر آندھی کے رُخ پر کھڑا ہو گیا پھر غبار آخر محیط ہو گیا تو اس قدر مطلقاً کافی نہیں اگرچہ یہ ٹھہرنا تیمم ہی کی نیت سے ہوا ہو۔ اس لئے کہ پہنچنے کا عمل غبار کی جانب سے ہوا تیمم سے نہ ہوا۔ اب اگر غبار ابھی بلند ہے اس میں اپنے اعضاء کو بہ نیت تیمم حرکت دے لی تو جزئیہ ۸ کی صورت ہوگئی۔ اور غبار جسم پر پڑ گیا اور بیٹھ گیا پھر تیمم کا ارادہ کیا تو یہ صورت جزئیہ ۲ کے تحت آئے گی۔ اور زیادہ مختصر طور پر یوں کہا جائے گا کہ تین صورتیں ہیں : (۱) تیمم غبار کے پاس جا کر تیمم کی نیت سے اس میں اپنے اعضائے تیمم داخل کرے۔ (۲) بلانیت اعضاء کو داخل کرے۔ (۳) غبار خود تیمم تک پہنچے۔ پہلی صورت میں اتنے ہی عمل سے تیمم مکمل ہو گیا۔ آخری دو صورتوں میں اگر غبار اب بھی بلند ہے تو اعضاء کو حرکت دے لینا کافی ہے۔ اور اگر غبار اعضاء پر پڑ گیا اور بیٹھ گیا تو ہاتھ پھیرنا ضروری ہے۔ ف ۸: مختلف صورتوں کی تفصیل کے ذیل میں معلوم ہوا کہ غبار میں اعضاء کو حرکت دینا بھی

مسح ہے اور اس میں داخل کرنا بھی مسح ہے۔ تو بحر نے محقق علی الاطلاق پر جو اعتراض کیا وہ ساقط ہے۔ ف ۹: خلاصہ نے جو کہا کہ " شرط یہ ہے کہ خود

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Left Column - Arabic Quotes]: His statement: "The condition is the existence of the act from it," refers specifically to wiping (Mash), not something general (as denoted by 'lama') that would include both wiping and non-wiping as was also claimed. And from among them is that wiping is the sole pillar (rukn) of Tayammum; it is constituted by it and cannot be conceived without it, as the investigator (al-Muhaqqiq) said, "it is the truth." This is how the words of the noble scholars should be understood. Praise be to Allah, the Guardian of blessings, the Possessor of Majesty and Honor, and the best of prayers and most perfect peace be upon the Master of Mankind, and his family and companions throughout the passage of nights and days. Amen. Seventh: No reason appears for the sufficiency of the intention after striking (the ground). How so? For soil is inherently a pollutant, and it was only made a purifier through intention by the grace of the Lord, Glory be to Him and Exalted is He. The great Imam Abu al-Barakat said in 'al-Kafi': Zafar said that intention is not a condition for it, just like in ablution (Wudu), because it is its substitute (for water), thus it does not differ from it. For us, soil is inherently a pollutant and only becomes a purifier when it is intended.

[Right Column - Urdu Text]: "The existence of the act from Tayammum" — by this act, they mean specifically wiping (Mash); no such act is meant that is common to Mash and non-Mash, as is the view of [the author of] al-Bahr. Note 10: Mash itself is the pillar of Tayammum, nothing else. The reality of Tayammum is established through it, and without it, Tayammum cannot even be conceived, just as the honorable investigator stated that "this is the truth." In the same way, the words of the noble scholars should be understood. And all praises are for God, who is the owner of favor and the possessor of honor and greatness. And may the best blessings and most complete peace be upon the Master of Mankind, his family, and his companions as long as the cycle of day and night continues. Amen! Discussion 7: (One result of the difference regarding whether the strikes are a pillar of Tayammum or not is stated that if the intention for Tayammum is made after striking, then this intention would be sufficient according to the view of non-pillarhood. Here, first, the author's research is that there is no reason for the sufficiency of the aforementioned intention according to any view. Finally, one way of reconciliation between the two opinions found regarding this intention being sufficient or not has also been mentioned. 12 m-alif) If the intention for Tayammum is made after striking the hand on the earth, then no reason is understood for the sufficiency of this intention. And how could it

possibly be sufficient when soil is actually a polluting thing, and it has been declared a purifier (mutahhir) only because of intention by the grace and mercy of the Lord, Glory be to Him and Exalted is He. The great Imam Abu al-Barakat Nasafi in 'al-Kafi'...

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[बायाँ स्तंभ - अरबी उद्धरण]: उनका कथन: "शर्त उससे कार्य का अस्तित्व है," विशेष रूप से मसह (पोंछने) को संदर्भित करता है, न कि किसी सामान्य चीज़ को (जैसा कि 'लामा' द्वारा सूचित किया गया है) जो मसह और गैर-मसह दोनों को शामिल करती हो जैसा कि दावा किया गया था। और उनमें से यह है कि मसह ही तयम्मुम का एकमात्र रुकन (स्तंभ) है; यह इसी से बनता है और इसके बिना इसकी कल्पना नहीं की जा सकती, जैसा कि अन्वेषक (मुहक्क़िक़) ने कहा, "यही सत्य है।" विद्वानों के शब्दों को इसी प्रकार समझना चाहिए। और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो नियामतों का स्वामी है, महिमा और सम्मान का स्वामी है, और सर्वश्रेष्ठ प्रार्थनाएं और सबसे पूर्ण शांति सृष्टि के स्वामी, उनके परिवार और उनके साथियों पर हो, रातों और दिनों के बीतने के साथ। आमीन। सातवां: प्रहार (ज़मीन पर) के बाद नीयत की पर्याप्तता का कोई कारण स्पष्ट नहीं होता है। ऐसा कैसे? क्योंकि मिट्टी मूलतः दूषित करने वाली चीज़ है, और इसे प्रभु (वह पवित्र और महान है) के अनुग्रह से नीयत के कारण ही शुद्ध करने वाला बनाया गया है। महान इमाम अबू अल-बरकात ने 'अल-काफी' में कहा: ज़फ़र ने कहा कि नीयत इसमें शर्त नहीं है, जैसे वुज़ू में, क्योंकि यह उसका (पानी का) स्थानापन्न है, इसलिए यह उससे भिन्न नहीं है। हमारे लिए, मिट्टी मूलतः दूषित करने वाली चीज़ है और नीयत होने पर ही शुद्ध करने वाली बनती है।

[दायाँ स्तंभ - उर्दू पाठ]: "तयम्मुम से कार्य का अस्तित्व हो" — इस कार्य से उनका अभिप्राय विशेष रूप से मसह है; ऐसा कोई कार्य अभिप्रेत नहीं है जो मसह और गैर-मसह दोनों के लिए सामान्य हो, जैसा कि 'बह्र' (के लेखक) का विचार है। नोट 10: मसह ही तयम्मुम का रुकन है, और कुछ नहीं। तयम्मुम की वास्तविकता इसी के माध्यम से स्थापित होती है, और इसके बिना तयम्मुम की कल्पना भी नहीं की जा सकती, जैसा कि मुहक्क़िक़ ने कहा कि "यही सत्य है।" इसी प्रकार विद्वान संतों के वचनों को समझना चाहिए। और सारी खूबियां खुदा के लिए हैं जो एहसान का मालिक और इज्ज़त व बुज़ुर्गी वाला है। और बेहतर दुरूद, कामिल तर सलाम हो सैयदे अनाम और उनकी आल व अस्हाब पर जब तक रोज़ ओ शब की गर्दिश जारी रहे। आमीन! बहस 7: (प्रहारों के तयम्मुम का रुकन होने और न होने के मतभेद का एक परिणाम यह बताया गया है कि यदि प्रहार के बाद तयम्मुम की नीयत की गई, तो यह नीयत रुकन न होने वाले मत के अनुसार पर्याप्त होगी। यहाँ सबसे पहले लेखक का शोध यह है कि किसी भी मत के अनुसार उक्त नीयत के पर्याप्त होने का कोई कारण नहीं है। अंतत; इस नीयत के पर्याप्त होने या न होने के संबंध में पाए जाने वाले दो मतों के बीच सामंजस्य का एक

तरीका भी उल्लेख किया गया है। 12 म-अलिफ़) ज़मीन पर हाथ मारने के बाद यदि तयम्मुम की नीयत की जाए, तो इस नीयत के पर्याप्त होने का कोई कारण समझ में नहीं आता। और यह भला कैसे पर्याप्त होगा जबकि मिट्टी वास्तव में दूषित करने वाली चीज़ है, और मौला सुब्हानहु व तआला के फ़ज़ल व करम से नीयत के कारण ही इसे मुतह्हिर (पवित्र करने वाला) घोषित किया गया है। महान इमाम अबू अल-बरकात नसफ़ी 'अल-काफ़ी' में...

فتاویٰ رضویہ، جلد سوم

[بایاں کالم - عربی عبارات]: قوله ان الشرط وجود الفعل منه هو المسح عيناً لاما(۱) يعمه وغيره كما زعم ايضا۔ ومنها ان المسح هو ركن التيمم لاغير به يتقوم ولا تصور له بدونه كما قال المحقق انه الحق هكذا ينبغى ان تفهم كلمات العلماء كرام والحمد لله ولى الانعام ذى الجلال والاكرام وافضل الصلاة واكمل السلام على سيد الانام واله وصحبه على مر اللياالى والايام امين۔ السابع: لا وجه يظهر(۲) لكفاية النية بعد الضرب كيف(۳) وان التراب فى اصله ملوث وانما جعل مطهرا بالنية تفضلا من المولى سبحنه وتعالى قال الامام الجليل ابو البركات فى الكافى قال زفر النية ليست بشرط فيه كالوضوء لانه خلفه فلا يخالفه ولنا ان التراب ملوث بذاته وانما صار مطهرا اذا نوى

[دایاں کالم - اردو متن]: "تیمم سے فعل کا وجود ہو" اس فعل سے ان کی مراد بعینہٖ مسح ہے ایسا کوئی فعل مراد نہیں جو مسح اور غیر مسح کو عام ہو جیسا کہ بحر کا خیال ہے۔ ف ۱۰: مسح ہی رکنِ تیمم ہے، کچھ اور نہیں۔ اسی سے تیمم کی حقیقت وجود میں آتی ہے اور اس کے بغیر تیمم متصور بھی نہیں ہو سکتا، جیسا کہ حضرت محقق نے فرمایا کہ "یہ حق ہے"۔ اسی طرح علمائے کرام کے کلمات کو سمجھنا چاہیے۔ اور ساری خوبیاں خدا کیلئے جو احسان کا مالک اور عزت و بزرگی والا ہے۔ اور بہتر درود، کامل تر سلام ہو سیدِ انام اور ان کی آل و اصحاب پر جب تک روز وشب کی گردش جاری رہے۔ آمین! بحث ۷: (ضربوں کے رکن تیمم ہونے اور نہ ہونے کا ایک ثمرہ اختلاف یہ بتایا گیا کہ بعد ضرب اگر نیتِ تیمم کی تو یہ نیت عدم رکنیت والے قول پر کافی ہو گی یہاں اولاً مصنف کی تحقیق یہ ہے کہ کسی قول پر بھی مذکورہ نیت کے کافی ہونے کی کوئی وجہ نہیں، آخر اس نیت کے کافی ہونے اور کافی نہ ہونے سے متعلق جو دو قول ملتے ہیں ان میں تطبیق کی ایک صورت بھی ذکر کی ہے ۱۲ م الف) جنسِ زمین پر ہاتھ مارنے کے بعد تیمم کی نیت

کی جائے تو اس نیت کے کافی ہونے کی کوئی وجہ سمجھ میں نہیں آتی اور یہ بھلا کیونکر کافی ہو گی جبکہ مٹی دراصل آلودہ کرنے والی چیز ہے اور مولیٰ سبحانہ و تعالیٰ کے فضل و کرم سے نیت ہی کی وجہ سے اسے مُطَہِّر (پاک کرنیوالی) قرار دیا گیا ہے۔ امام جلیل ابوالبرکات نسفی کافی میں

Volume 3 Fatawa Rizwia

[Arabic Column Text]: (Being) a specific act of worship. Water was created as a purifier, so when it is used on an impure site, it purifies it, even if it is legally (hukman) impure. The substitute (tayammum) may differ from the original (wudu) due to their different circumstances. Do you not see that wudu is achieved with four organs, unlike tayammum, and repetition is a sunnah in the original but not in the substitute. (Ends)

Scholars have specified that the striking considered in tayammum purifies the palms, so they are not wiped after it. It is known that purification does not happen without intention. Even if striking without intention were sufficient in tayammum, it would have been necessary to restrict the issue with it, but they (the scholars) mention it generally. In the commentary on Jami al-Saghir by Imam Qazi Khan, then al-Hilyah and Jami al-Rumuz, and in Jami al-Mudmarat, then al-Hindiyyah, then al-Tahtawi, then al-Shami: Will he wipe the palm? The correct view is that he does not wipe, and striking the palm is sufficient.[2] (Ends)

[Urdu Column Text]: It is written: Imam Zufar's opinion is that, like wudu, intention is not a condition in tayammum either. This is because tayammum is the successor and deputy of wudu, so it will not be contrary to it. And our evidence is that soil is inherently a dirtying substance and is a purifier only when there is an intention of a specific act of worship, whereas water was created inherently as a purifier. When used on an impure place, it will purify it, even if that place is legally (hukman) impure. And a deputy can sometimes be separate from and contrary to the original when the states of both are different. Look, wudu is performed on four organs and it is not so in tayammum. Similarly, in the original, i.e., wudu, repetition is a sunnah, but in the deputy, i.e., tayammum, there is no repetition. (Ends)

Scholars have clarified that the valid striking in tayammum, meaning striking both hands on the ground, purifies the palms, therefore after this striking, the palms will not be wiped. And it is known that purification cannot be without intention. If striking without intention were sufficient in tayammum, then it would have been necessary to restrict the matter by it, although scholars mention it absolutely. In Imam Qazi Khan's commentary on Jami al-Saghir, then in al-Hilyah and Jami al-Rumuz, and in Jami al-Mudmarat, then al-Hindiyyah, then al-Tahtawi, then al-Shami, it is mentioned: Will he wipe on the palm as well? The correct view is that he will not wipe on it and striking the palms on the ground is sufficient. (Ends)

[Footnotes]: [1] Al-Kafi [2] Fatawa Hindiyyah, Chapter Four on Tayammum, Peshawar 1/26

जिल्द 3 फ़तावा रिज़विया

[अरबी स्तंभ पाठ]: (होना) एक विशिष्ट इबादत। पानी को शुद्ध करने वाला बनाया गया है, इसलिए जब इसे अशुद्ध स्थान पर उपयोग किया जाता है, तो यह उसे शुद्ध कर देता है, भले ही वह कानूनी रूप से (हुकमान) अशुद्ध हो। विकल्प (तयम्मुम) अपनी परिस्थितियों के अंतर के कारण मूल (वज़ू) से भिन्न हो सकता है। क्या आप नहीं देखते कि वज़ू चार अंगों के साथ प्राप्त होता है, तयम्मुम के विपरीत, और मूल में दोहराव सुन्नत है लेकिन विकल्प में नहीं। (समाप्त)

विद्वानों ने निर्दिष्ट किया है कि तयम्मुम में माना जाने वाला प्रहार हथेलियों को शुद्ध कर देता है, इसलिए उनके बाद उन्हें पोंछा नहीं जाता है। यह ज्ञात है कि नीयत के बिना शुद्धिकरण नहीं होता है। भले ही बिना नीयत के प्रहार तयम्मुम में पर्याप्त होता, तो इस मुद्दे को इसके साथ प्रतिबंधित करना आवश्यक होता, लेकिन वे (विद्वान) इसका उल्लेख सामान्य रूप से करते हैं। इमाम क़ाज़ी ख़ान द्वारा जामिअ अल-सग़ीर की व्याख्या में, फिर अल-हिल्या और जामिअ अल-रुमुज़ में, और जामिअ अल-मुद्मरात में, फिर अल-हिंदिया में, फिर अल-तहतावी में, फिर अल-शामी में: क्या वह हथेली को पोंछेगा? सही विचार यह है कि वह नहीं पोंछता है, और हथेली का प्रहार पर्याप्त है।[2] (समाप्त)

[उर्दू स्तंभ पाठ]: लिखा है: इमाम ज़ुफ़र का मत है कि वज़ू की तरह तयम्मुम में भी नीयत शर्त नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि तयम्मुम वज़ू का उत्तराधिकारी और प्रतिनिधि है, इसलिए यह इसके विपरीत नहीं होगा। और हमारा तर्क यह है कि मिट्टी मूल रूप से गंदा करने वाली चीज़ है और यह केवल तभी शुद्ध करने वाली बनती है जब किसी विशिष्ट पूजा की नीयत हो, जबकि पानी मूल रूप से शुद्ध करने वाला बनाया गया था। जब इसे किसी अशुद्ध स्थान पर उपयोग किया जाएगा, तो यह उसे शुद्ध कर देगा, भले ही वह स्थान कानूनी रूप से (हुकमान) अशुद्ध हो। और एक प्रतिनिधि कभी-कभी मूल से अलग और उसके विपरीत हो सकता है जब दोनों की स्थितियाँ अलग हों। देखिए, वज़ू चार अंगों पर किया जाता है और तयम्मुम में ऐसा नहीं है। इसी तरह, मूल यानी वज़ू में दोहराव सुन्नत है, लेकिन प्रतिनिधि यानी तयम्मुम में कोई दोहराव नहीं है। (समाप्त)

विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि तयम्मुम में मान्य प्रहार, यानी दोनों हाथों को ज़मीन पर मारना, हथेलियों को शुद्ध कर देता है, इसलिए इस प्रहार के बाद हथेलियों को पोंछा नहीं जाएगा। और यह ज्ञात है कि नीयत के बिना शुद्धिकरण नहीं हो सकता। यदि बिना नीयत के प्रहार तयम्मुम में पर्याप्त होता, तो इस मुद्दे को इसके द्वारा प्रतिबंधित करना आवश्यक होता, हालाँकि विद्वान इसका उल्लेख निरपेक्ष रूप से

करते हैं। इमाम क़ाज़ी ख़ान की जामिअ अल-सग़ीर की व्याख्या में, फिर अल-हिल्या और जामिअ अल-रुमुज़ में, और जामिअ अल-मुद्मरात में, फिर अल-हिंदिया में, फिर अल-तहतावी में, फिर अल-शामी में है: क्या वह हथेली पर भी मसह (पोंछना) करेगा? सही विचार यह है कि वह उस पर मसह नहीं करेगा और हथेलियों को ज़मीन पर मारना ही पर्याप्त है। (समाप्त)

[पाद-टिप्पणियां]: [1] अल-काफ़ी [2] फ़तावा हिंदिया, तयम्मुम पर चौथा अध्याय, पेशावर 1/26

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

[عربی کالم]: قربة مخصوصة والماء خلق مطهرا فاذا استعملہ فی المحل النجس طہرہ وان کان نجسًا حکما والخلف قد یفارق الاصل لاختلاف حالہما الا تری ان الوضوء یحصل باربعة اعضاء بخلاف التیمم وسن التکرار(۱) فی الاصل دون الخلف اھ وقد نصوا ان(۲) الضرب المعتبر فی التیمم یطہر الکفین فلا تمسحان بعدہ و معلوم ان لاتطہیر الابلنیة ولو(۳) کان الضرب بدون النیة کافیا فی التیمم وجب تقیید المسألة بہ و ہم انما یرسلونہ ارسالا ففی شرح الجامع الصغیر للامام قاضی خان ثم الحلیة وجامع الرموز وفی جامع المضمرات ثم الھندیہ ثم ط ثم ش ھل یمسح الکف الصحیح انہ لا یمسح وضرب الکف یکفی[2] اہ

[اردو کالم]: رقمطراز ہیں: امام زفر کا قول ہے کہ وضو کی طرح تیمّم میں بھی نیت شرط نہیں۔ اس لئے کہ تیمّم وضو کا خلیفہ و نائب ہے تو اس کے برخلاف نہ ہوگا۔ اور ہماری دلیل یہ ہے کہ مٹی بذات خود آلودہ کرنے والی چیز ہے اور مطہر صرف اس وقت ہے جب قربتِ مخصوصہ کی نیت ہو اور پانی تو مطہر ہی پیدا کیا گیا ہے۔ وہ جب نجس جگہ استعمال ہوگا تو اسے پاک کر دیگا اگرچہ وہ جگہ حکماً نجس ہو۔ اور نائب کبھی اصل سے الگ اور اس کے برخلاف ہوتا ہے جب کہ دونوں کی حالت مختلف ہو۔ دیکھئیے وضو چار اعضا میں ہوتا ہے اور تیمّم میں ایسا نہیں۔ اسی طرح اصل یعنی وضو میں تکرار مسنون ہے اور نائب یعنی تیمّم میں تکرار نہیں۔ اھ علماء نے تصریح فرمائی ہے کہ تیمّم میں معتبر ضرب یعنی دونوں ہاتھوں کو زمین پر مارنا ہتھیلیوں کو پاک کر دیتا ہے اس لئے اس ضرب کے بعد ہتھیلیوں کا مسح نہیں کیا جائیگا۔ اور یہ معلوم ہے کہ تطہیر بغیر نیت کے نہیں ہوسکتی، اگر بلانیت ضرب تیمّم میں کافی ہوتی تو مسئلہ کو اس سے مقید کرنا ضروری ہوتا، حالانکہ علماء اسے مطلق ذکر فرماتے ہیں۔ امام قاضی خاں کی شرح جامع صغیر،

پھر حلیہ و جامع الرموز میں، اور جامع المضمرات پھر ہندیہ پھر طحطاوی پھر شامی میں ہے کیا ہتھیلی پر بھی مسح کریگا؟ صحیح یہ ہے کہ اس پر مسح نہ کرے گا اور ہتھیلیوں کو زمین پر مارنا ہی کافی ہے۔ اھ

[حواشی]: 1. کافی 2. فتاویٰ ہندیہ الباب الرابع فی التیمم پشاور ۲۶/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 3

Text: In Al-Huliya, cited from Az-Zakhira, it is mentioned that Imam Muhammad did not specify whether to strike the ground with the back of the hands or the palms. He indicated (1) that one should strike with the palms, for he stated in the Book:

Commentary: In Ad-Durr al-Mukhtar: The Sunnahs of Tayammum are eight, among them is striking the ground with the palms, etc. In Shami (Radd al-Muhtar), citing Az-Zakhira: The more correct view (2) is to strike the ground with both the palms and the back of the hands (2) — i.e., it is Sunnah to strike with both together. For this reason, in the additions to the Sunnahs mentioned in Ad-Durr al-Mukhtar, [Allama Shami] said: Striking with the back of both hands should also be added to the Sunnahs of Tayammum, as you have learned its correction (3).

I say: In any case, striking with the palms is merely a Sunnah. Therefore, what is stated in Nur al-Idah and Maraqi al-Falah—that the sixth condition for Tayammum is to strike the ground twice with the palms (4)—is not acceptable. It is stated in Al-Nahr al-Faiq: It is evident that validity is achieved with either; yes, striking with the palms is Sunnah (5), as cited from it in Al-Minha. It is surprising (3) that astute observers like the two Sayyids, Al-Azhari and Al-Tahtawi, did not point out this error. [From him, may Allah forgive him (M)].

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar with Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum 1/154-55 2. Radd al-Muhtar with Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum 1/154-55 3. Radd al-Muhtar with Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum 1/154-55 4. Maraqi al-Falah with Al-Tahtawi, Chapter on Tayammum, p. 69 5. Minhat al-Khaliq on Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum 1/146

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

पाठ: 'अल-हुलिया' में 'अज़-ज़ख़ीरा' के हवाले से उल्लेख है कि इमाम मुहम्मद ने यह ज़िक्र नहीं फ़रमाया कि ज़मीन पर हथेलियों की पुश्त (पीछे का हिस्सा) से मारे या पेट (हथेली) से। उन्होंने इस बात की तरफ इशारा फ़रमाया (1) कि हथेली के अंदरूनी हिस्से से मारे। उन्होंने किताब में यूँ फ़रमाया है:

व्याख्या: 'दुर्रे मुख्तार' में है: तयम्मुम की सुन्नतें आठ हैं, हथेली के अंदरूनी हिस्से से ज़मीन पर मारना आदि। 'शामी' में 'अज़-ज़ख़ीरा' के हवाले से है: अधिक सही यह है (2) कि हथेलियों के अंदरूनी और बाहरी दोनों ही हिस्सों को ज़मीन पर मारे—अर्थात सुन्नत यह है कि दोनों से एक साथ ज़मीन पर मारे। इसीलिए अल्लामा शामी ने 'दुर्रे मुख्तार' के बयान पर जिन सुन्नतों का इज़ाफ़ा किया है, उसमें यह भी फ़रमाया है: दोनों हथेलियों के बाहरी हिस्से से भी ज़मीन पर मारना तयम्मुम की सुन्नतों में शामिल कर लिया जाए, जैसा कि आपको इसकी तस्दीक मालूम हो चुकी है (3)।

मैं कहता हूँ: मामला जो भी हो, हथेली के अंदरूनी हिस्से से ज़मीन पर मारना केवल सुन्नत ही है (शर्त नहीं)। अतः 'नूरुल ईज़ाह' और 'मराक़िल फ़लाह' में जो दर्ज है कि "छठी शर्त यह है कि तयम्मुम दोनों हथेलियों के अंदरूनी हिस्से से दो बार ज़मीन पर मारकर हो" (4), यह स्वीकार्य नहीं है। 'अन्-नहरुल फ़ाएक़' में है: यह बात ज़ाहिर है कि हथेली के अंदरूनी हिस्से से ज़मीन पर मारे या बाहरी हिस्से से, तयम्मुम दोनों ही सूरत में हो जाएगा, हाँ, अंदरूनी हिस्से से मारना सुन्नत है (5), जैसा कि 'मिन्हातुल ख़ालिक़' में 'नहर' से उद्धृत है। लेकिन आश्चर्य है (3) कि 'नूरुल ईज़ाह' पर सैय्यद अज़हरी और सैय्यद तहतावी जैसे सूक्ष्मदर्शी हज़रात ने इसकी इस ग़लती पर ध्यान नहीं दिलाया। [उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें माफ़ करे (म)]।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद-अल-मुह्तार मअ दुर्रे मुख्तार, बाब-अत-تतयम्मुम 1/ 154-55 2. रद-अल-मुह्तार मअ दुर्रे मुख्तार, बाब-अत-तयम्मुम 1/ 154-55 3. रद-अल-मुह्तार मअ दुर्रे मुख्तार, बाब-अत-تतयम्मुम 1/ 154-55 4. मराक़िल फ़लाह मअ अत-तहतावी, बाब-अत-तयम्मुम, पृष्ठ 69 5. मिन्हातुल ख़ालिक़ अल-बहर-अर-राएक़, बाब-अत-तयम्मुम 1/ 146

पृष्ठ 375/756

وفی الحلیة عن الذخیرة لم یذکر محمد انه یضرب علی الارض ظاهر کفیه اوباطنهما واشار(1) الی انه یضرب باطنهما فانه قال فی الکتاب حلیہ میں ذخیرہ سے منقول ہے کہ امام محمد نے یہ ذکر نہ فرمایا کہ زمین پر ہتھیلیوں کی پشت سے مارے یا پیٹ سے۔ انہوں نے اس بات کی طرف اشارہ فرمایا کہ باطن کف سے مارے گا۔ انہوں نے کتاب میں یوں فرمایا ہے

عه وفی الدرر سننه ثمانیة الضرب بباطن کفیه[1] الخ وفی ش عن الذخیرة الاصح(2) انه یضرب بباطنهما وظاهرهما علی الارض[2] اهای فالسنة الضرب بهما معا ولذا قال فی ما زاد من السنن یزاد الضرب بظاهر الکفین ایضا کما علمت تصحیحه[3] اھ درمختار میں ہے: تیمم کی سنتیں آٹھ ہیں، باطن کف سے زمین پر مارنا الخ۔ شامی میں ذخیرہ کے حوالے سے ہے: اصح یہ ہے کہ ہتھیلیوں کے باطن اور ظاہر دونوں ہی کو زمین پر مارے اھ تو سنت یہ ہے کہ ظاہر و باطن دونوں سے زمین پر مارے۔ اسی لئے علامہ شامی نے در مختار کے بیان پر جن سنتوں کا اضافہ کیا ہے اس میں یہ بھی فرمایا ہے: دونوں ہتھیلیوں کے ظاہر سے بھی زمین پر مارنا سنن تیمم میں اسے زیادہ کر لیا جائے۔ جیسا کہ تمہیں معلوم ہو چکا کہ یہی صحیح ہے۔

اقول: وکیفما کان لیس الضرب بباطنها الاسنة فما وقع فی نور الایضاح ومراقی الفلاح السادس من الشروط ان یکون بضربتین بباطن الکفین[4] اھ غیر مسلم وقد قال فی النهر غیر خاف ان الجواز حاصل بایهما کان نعم الضرب بالباطن سنة[5] اھ کما فی المنحة عنه والعجب(3) ان لم ینبه علیه ناظروه کالسیدین الازهری والطحطاوی ۱۲ منه غفر له (م) اقول: جیسے بھی ہو مگر باطن کف سے زمین پر مارنا سنت ہی ہے (شرط نہیں) تو نور الایضاح اور مراقی الفلاح میں جو درج ہے کہ "چھٹی شرط یہ ہے کہ تیمم دونوں ہتھیلیوں کے باطن سے دو ضربوں سے ہو" اھ یہ قابلِ تسلیم نہیں۔ النہر

الفائق میں ہے: یہ بات ظاہر ہے کہ باطن کف سے زمین پر مارے یا ظاہر کف سے مارے تیمم دونوں ہی صورت میں ہو جائے گا ہاں باطن کف سے مارنا سنت ہے اھ جیسا کہ منحۃ الخالق میں نہر سے نقل ہے۔ مگر تعجب ہے نور الایضاح پر سید ازہری اور سید طحطاوی جیسے نظر فرمانیوالے حضرات نے اس کی اس خطا پر تنبیہ نہ کی ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1۔ ردالمحتار مع درمختار باب التیمم ۱/ ۱۵۴-۵۵ 2۔ ردالمحتار مع درمختار باب التیمم ۱/ ۱۵۴-۵۵

3۔ ردالمحتار مع درمختار باب التیمم ۱/ ۱۵۴-۵۵ 4۔ مراقی الفلاح مع الطحطاوی باب التیمم ص ۶۹

5۔ منحۃ الخالق علی البحر الرائق باب التیمم ۱/ ۱۴۶

Volume Three If one omits wiping the back of the palms (the back of the hands), it is not permissible. One is considered to have omitted wiping the back of the palms if they struck the ground with the inside of their palms. [1] Thus, it conveys that if the striking was done with the back of the palms, it would count as wiping the back of them. I say: It is apparent that the scholars' statement "He should not wipe its back" is for prohibition, not meaning that there is no need to wipe the back of the hand (but if done, there is no harm), as might be mistakenly understood from the statement in Al-Tabyin: "In the correct view, wiping the inside of the palm is not obligatory because striking them on the ground is sufficient." [2] End. Al-Bahr followed this phrasing because when wiping occurs once by striking, as Al-Khaniyah noted by saying: "Because he wiped once when his hands struck the ground," [3] End. And repetition is not Sunnah in Tayammum, as we previously cited from Al-Kafi. Therefore, repeating it would be futile and thus disliked (Makruh), as stated in Al-Bahr that "Tayammum upon Tayammum is [futile]."

Footnotes: 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/126 2. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Tayammum, Bulaq Egypt, 1/38 3. Fatawa Qazi Khan, Chapter of Tayammum, Nawal Kishore Lucknow, 1/25

जिल्द तीसरी कि अगर हथेलियों के ऊपरी हिस्से (पीठ) पर मसह करना छोड़ दिया तो जायज़ नहीं। और हथेलियों के ऊपरी हिस्से पर मसह छोड़ने वाला उस वक्त माना जाएगा जब उसने जमीन पर हथेली के अंदरूनी हिस्से से प्रहार किया हो। इस इबारत से इमाम मुहम्मद ने यह जानकारी दी कि अगर हथेलियों के ऊपरी हिस्से से जमीन पर प्रहार किया गया हो, तो यही प्रहार ऊपरी हिस्से का मसह भी हो गया। मैं कहता हूँ: ज़ाहिर यह है कि विद्वानों का कथन "ला युमसाहु अला ज़ाहिरिहि" (उसकी पीठ पर मसह न करे) निषेध के लिए है, इसका यह अर्थ नहीं है कि हाथ की पीठ पर मसह की आवश्यकता नहीं है (मगर कर लिया तो कोई बुराई भी नहीं), जैसा कि तबीयून की इस इबारत से वहम होता है: "सही मज़हब में हथेली के अंदरूनी हिस्से का मसह वाजिब नहीं है क्योंकि ज़मीन पर उसका मारना ही काफी है"। अह्। इस व्याख्या में बहर ने भी तबीयून का अनुसरण किया है। 'ला युमसाहु' निषेध के लिए इसलिए है कि प्रहार के द्वारा जब एक बार हथेलियों का मसह कर लिया गया। जैसा कि खानिया में फ़रमाया गया है कि "इसलिए कि उसने जब ज़मीन पर हाथों को मारा तो एक बार मसह कर लिया"। अह्। और तयम्मुम में दोहराना सुन्नत नहीं है जैसा कि अभी हम काफी के हवाले से बयान कर आए हैं, तो दोबारा उनका मसह करना व्यर्थ होगा इसलिए मकरूह होगा जैसा कि अल-बहर अल-राईक में फ़रमाया है कि "तयम्मुम पर तयम्मुम कोई [व्यर्थ कार्य है]"।

फुटनोट: 1. अल-बहर अल-राईक, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/126 2. तबीयून अल-हक़ाईक़, बाब अत-तयम्मुम, बुलाक मिस्र, 1/38 3. फ़तावा क़ाज़ी खान, बाब अत-तयम्मुम, नवल किशोर लखनऊ, 1/25

पृष्ठ 376 का 756

جلد سوم کہ اگر ظاہر کف (پشت کفِ دست) پر مسح ترک کر دیا تو جائز نہیں۔ اور ظاہر کف پر مسح ترک کرنے والا اس وقت قرار پائے گا جب زمین پر باطن کف سے مارا ہو۔ اس عبارت سے امام محمد نے یہ افادہ فرمایا کہ اگر ظاہرِ کف سے زمین پر مارا ہو تو یہی مارنا ظاہرِ کف کا مسح بھی ہو گیا۔ اقول: ظاہر یہ ہے کہ علماء کا قول "لا یمسح علی ظاھرہ" (ظاہر کف پر مسح نہیں کرے گا) نہی کیلئے ہے، یہ معنی نہیں کہ پشت دست پر مسح کی حاجت نہیں (مگر کر لیا تو کوئی کراہت بھی نہیں) جیسا کہ تبیین کی اس عبارت سے وہم ہوتا ہے: "صحیح مذہب میں باطن کف کا مسح واجب نہیں اس لئے کہ زمین پر اس کا مارنا ہی کافی ہے"۔ اھ اس تعبیر میں بحر نے بھی تبیین کی پیروی کی ہے لایمسح نہی کیلئے اس لئے ہے کہ ضرب کے ذریعہ جب ایک بار ہتھیلیوں کا مسح کر لیا۔ جیسا کہ خانیہ میں فرمایا ہے کہ "اس لئے کہ اس نے جب زمین پر ہاتھوں کو مارا تو ایک بار مسح کر لیا"۔ اھ اور تیمم میں تکرار مسنون نہیں جیسا کہ ابھی ہم کافی کے حوالے سے بیان کر آئے تو دوبارہ ان کا مسح کرنا عبث ہوگا اس لئے مکروہ ہوگا جیسا کہ البحر الرائق میں فرمایا ہے کہ "تیمم پر تیمم کوئی [عبث کام ہے]"۔

حواشی: 1۔ البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۶ 2۔ تبیین الحقائق باب التیمم بولاق مصر ۱/ ۳۸ 3۔ فتاوی قاضی خان باب التیمم نولکشور لکھنو ۱/ ۲۵

صفحہ 376 از 756

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Arabic segment]: "It is not an act of worship (qurbah), as stated in Al-Qunya, and its apparent meaning is that it is not disliked (Makruh). However, it should be disliked because it is futile (abathan). End quote. Rather, Al-Quhistani stated that the wiping (mash) should not be repeated because it is disliked by consensus, as mentioned in Al-Kashf. End quote. For this reason, the majority of them mentioned the method of Tayammum as wiping the outer part of the forearms from the fingertips to the elbows, and their inner part from the elbows to the wrists, as in Al-Badai', Al-Jawhara, Al-'Inaya, in Al-Muhit of Al-Sarakhsi and Al-Hindiyya, and in Al-Tuhfa and Al-Muhit Al-Radwi and Zad Al-Fuqaha, then Al-Hilya and Radd al-Muhtar. And he supported it in Al-Hilya with a narration from Bukhari and another from Muslim concerning the Hadith of Ammar (may Allah be pleased with him), stating that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), after striking his palms [on the ground], wiped the back of his palms. So this will take precedence over what is in Al-Kafi: 'He should place the palm of his left hand on the back of his right palm and wipe with the three smaller fingers the outer side of his right hand up to the elbows, then wipe the inner side with the thumb and index finger to the fingertips.'"

[Urdu segment]: It is not a means of proximity (act of worship). This is how it is in Al-Qunya. The apparent meaning of this statement is that repeating Tayammum over Tayammum is not disliked, but it should be disliked because it is futile. Rather, Al-Quhistani wrote that "the wiping shall not be repeated because it is disliked by consensus as mentioned in Al-Kashf." For this reason, the majority of scholars have stated the method of Tayammum as follows: wipe the upper part of the wrists from the fingertips to the elbows, and wipe the inner part from the elbows to the wrists. As mentioned in Badai', Jawhara, Inaya, and Muhit-e-Sarakhsi then Hindiyya, and in Tuhfa, Muhit-e-Rizvi, Zad al-Fuqaha, then Hilya, then Radd al-Muhtar. And in Hilya, in support of this, a narration from Bukhari related to the Hadith of Ammar (may Allah be pleased with him) and another narration from Muslim are presented, which state that the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), after striking his palms on the ground, wiped the back of his hands. So this will take precedence over what is in Al-Kafi that: "It is necessary to place the palm of the left hand on the back of the right hand and wipe the back of the right hand up to the elbows with the three small fingers. Then wipe the inner side with the thumb and index finger to the 'fingertips'."

1. Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/149.
2. Jami' al-Rumuz, Section on Tayammum, Karimi Printing Press, 28/1.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[अरबी खंड]: "यह कुर्बत (इबादत) नहीं है, जैसा कि अल-कुन्या में है, और इसका ज़ाहिरी अर्थ यह है कि यह मकरूह नहीं है, और इसे मकरूह होना चाहिए क्योंकि यह व्यर्थ (अबस) है। बल्कि अल-कुहिस्तानी ने कहा है कि मसह को दोहराया नहीं जाएगा क्योंकि यह आम सहमति (इज्मा) से मकरूह है, जैसा कि अल-कश्फ़ में है। इसी कारण से उन अधिकांश ने तयम्मुम की विधि का उल्लेख किया है कि अग्रबाहुओं के बाहरी हिस्से को उंगलियों के पोरों से कोहनियों तक मसह करना और उनके आंतरिक हिस्से को कोहनियों से कलाई तक मसह करना, जैसा कि अल-बदाए, अल-जौहरा, अल-इनाया, अल-मुहित अल-सरखसी और अल-हिन्दिया में है, और अल-तुहफा और अल-मुहित अल-रज़वी और ज़ाद अल-फुक़्हा में, फिर अल-हिलिया और रद-उल-मुहतार में। और उन्होंने हिलिया में बुखारी के एक वर्णन और मुस्लिम के दूसरे वर्णन के साथ अम्मार (अल्लाह उनसे खुश हो) की हदीस के संबंध में इसका समर्थन किया है, जिसमें कहा गया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हथेलियों को [ज़मीन पर] मारने के बाद, अपनी हथेलियों के पिछले हिस्से पर मसह किया। तो यह उस पर प्रबल होगा जो अल-काफ़ी में है: 'उसे अपनी बाईं हथेली को अपनी दाईं हथेली के पिछले हिस्से पर रखना चाहिए और तीन छोटी उंगलियों से अपने दाहिने हाथ के बाहरी हिस्से को कोहनियों तक मसह करना चाहिए, फिर अंगूठे और तर्जनी के साथ आंतरिक हिस्से को उंगलियों के पोरों तक मसह करना चाहिए।'"

[उर्दू खंड]: कुर्बत नहीं है। ऐसा ही कुन्या में है। इस इबारत का ज़ाहिर यह है कि तयम्मुम पर तयम्मुम मकरूह नहीं, मगर इसे मकरूह होना चाहिए, इसलिए कि यह अबस है। बल्कि कुहिस्तानी ने लिखा है कि "मसह की पुनरावृत्ति नहीं की जाएगी क्योंकि यह इज्मा (आम सहमति) से मकरूह है जैसा कि कश्फ़ में ज़िक्र है"। इसी कारण आम उलेमा ने तयम्मुम का तरीका यह बताया है कि कलाइयों के ऊपरी हिस्से का, उंगलियों के सिरे से कोहनियों तक मसह करे और अंदरूनी हिस्से का कोहनियों से पहुँच (कलाई) तक मसह करे। जैसा कि बदाए, जौहरा, इनाया में और मुहित सरख्सी फिर हिंदिया में, और तोहफा, मुहित रज़वी, ज़ाद अल-फुक़्हा फिर हिलिया फिर रद-उल-मुहतार में है। और हिलिया में इसकी ताईद में हदीस-ए-अम्मार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से संबंधित बुखारी की एक रिवायत और मुस्लिम की एक दूसरी रिवायत पेश की है जिसमें यह है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ज़मीन पर हथेलियां मारने के बाद पुश्त-ए-कफ़-ए-दस्त (हथेली के पिछले हिस्से) पर मसह फरमाया। तो इसे उस पर तरजीह होगी जो काफ़ी में है कि: "यह चाहिए कि अपनी

बाईं हथेली का पेट दाहिनी हथेली की पुश्त पर रखे और तीन छोटी उंगलियों से अपने दाहिने हाथ की पुश्त का कोहनियों तक मसह करे। फिर पेट की जानिब का अंगूठे और शहादत की उंगली से 'उंगलियों के सिरों' तक।"

---

1. बह्र-उर-राइक़, बाब-उत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/149
2. जामे-उर-रुमूज़, फ़स्ल-फ़ित-तयम्मुम, मतबअ करीमी, कुरान 28/1

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

لیس بقربة کذا في القنیة وظاهره انه لیس بمکروه وینبغي کراهته لکونه عبثا[1] اهـ بل قال القهستاني لا(۱) یکرر المسح فانه مکروه بالاجماع کما في الکشف[2] اهـ ولاجل هذا ذکر عامتهم في کیفیة التیمم مسح ظاهر الذراعین من رؤس الاصابع الی المرافق وباطنهما من المرافق الی الرسغ کما فی البدائع والجوهرة والعنایة في محیط السرخسی والهندیة وفی التحفة والمحیط الرضوی وزاد الفقهاء فالحلیة فرد المحتار- وایده في الحلیة بما في روایة للبخاري واخری لمسلم في حدیث عمار رضي الله تعالی عنه من مسحه صلی الله علیه وسلم بعد الضرب ظهر کفیه فیترجح علی مافی الکافي ینبغي(۲) ان یضع بطن کفه الیسری علی ظهر کفه الیمنی ویمسح بثلاثة اصابع اصغرها ظاهر یده الیمنی الی المرافق ثم یمسح باطنه بالابهام والمسبحة الی رؤس الاصابع

قربت نہیں۔ایساہی قنیہ میں ہے۔ اس عبارت کا ظاہر یہ ہے کہ تیمم پر تیمم مکروہ نہیں، مگر اسے مکروہ ہونا چاہئے، اس لئے کہ یہ عبث ہے اھـ بلکہ قہستانی نے لکھا ہے کہ "مسح کی تکرار نہ کی جائیگی اس لئے کہ یہ بالاجماع مکروہ ہے جیسا کہ کشف میں ذکر ہے" اھـ اسی لئے عامہ علماء نے تیمم کا طریقہ یہ بتایا ہے کہ کلائیوں کے اوپری حصہ کا، انگلیوں کے سرے کہنیوں تک مسح کرے اور اندرونی حصہ کا کہنیوں سے گئے تک مسح کرے۔ جیسا کہ بدائع، جوہرہ، عنایہ میں اور محیط سرخسی پھر ہندیہ میں، اور تحفہ، محیط رضوی، زاد الفقہاء پھر حلیہ پھر ردالمحتار میں ہے۔ اور حلیہ میں اس کی تائید میں حدیث عمار رضی اللہ تعالٰی عنہ سے متعلق بخاری کی ایک روایت اور مسلم کی ایک دوسری روایت پیش کی ہے جس میں یہ ہے کہ نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے زمین پر ہتھیلیاں مارنے کے بعد پشت کف دست پر مسح فرمایا۔ تو اسے اس پر ترجیح ہوگی جو کافی میں ہے کہ : "یہ چاہئے کہ اپنی بائیں ہتھیلی کا پیٹ داہنی ہتھیلی کی پشت پر

رکھے اور تین چھوٹی انگلیوں سے اپنے داہنے ہاتھ کی پشت کا کہنیوں تک مسح کرے- پھر پیٹ کی جانب کا انگوٹھے اور شہادت کی انگلی سے "انگلیوں کے سروں""

---

1. بحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۴۹
2. جامع الرموز فصل فی التیمم مطبعہ کریمی قران ۲۸/۱

Fatawa Rizwia, Volume 3

...wipe. Then he does the same with the left hand. [End]. Al-Quhistani narrated the same from Al-Muhit, then he followed it up with a rectification based on what is in Jami' al-Imam al-Qadhi [Khan] that according to the "correct opinion, the palm (inner hand) is not wiped," as we have previously cited. And in Al-Bahr al-Ra'iq, regarding Al-Muhit al-Radawi, it is written as follows: The method of tayammum is to strike both hands on the ground, then shake them off and wipe the face with them such that not even a small part of it is left out. Then strike the hands on the ground a second time, shake them off, and wipe with them the palms and both forearms up to the elbows. And our scholars said that one should strike both hands a second time.

This 'Al-Muhit' is 'Al-Radawi' as is apparent from studying 'Al-Hilya'. The point is that what is quoted in 'Al-Bahr' with reference to 'Al-Muhit al-Radawi', and in 'Al-Hindiya' with reference to 'Al-Muhit' of Al-Sarakhsi, is contrary to what Al-Quhistani narrated (from Al-Muhit). If the text quoted by Al-Quhistani is from 'Al-Muhit al-Burhani', then it is possible. (May he be forgiven). Allah Almighty knows best.

The method of wiping mentioned in both 'Muhits' is also in 'Al-Tuhfa', 'Al-Bada'i'', and 'Zad al-Fuqaha'. All these scholars have explicitly stated that this is "more cautious (ahwat)". As in 'Al-Hilya', (to be continued on next page).

Footnotes: 1. Jami' al-Rumuz, Chapter on Tayammum, Karimiya Qur'an Press, 28/1 2. Jami' al-Rumuz, Chapter on Tayammum, Karimiya Qur'an Press, 28/1

फ़तावा रज़विया, जिल्द ३

...मसह करे। फिर बाएं हाथ का उसी तरह मसह करे 'अह'। इसी के समान अल-क़ुहस्तानी ने 'मुहीत' से उद्धृत किया है, फिर उस पर उससे संशोधन किया है जो 'जामि इमाम क़ाज़ीख़ां' में है कि "सही मत के अनुसार हथेली (बातिन कफ़) का मसह नहीं होगा।" जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है। और 'अल-बहर अर-राइक' में 'मुहीत रज़वी' के हवाले से इस तरह तहरीर है: तयम्मुम का तरीका यह है कि ज़मीन पर अपने दोनों हाथ मारकर झाड़ ले, फिर उनसे चेहरे का इस तरह मसह करे कि उसका ज़रा सा हिस्सा भी छूटने न पाए। फिर दूसरी बार ज़मीन पर हाथ मारकर झाड़ ले, उनसे अपनी हथेलियों और दोनों कलाइयों का कोहनियों तक मसह करे। और हमारे मशाएख़ ने फ़रमाया कि दूसरी बार दोनों हाथों को मारे।

यह 'मुहीत', 'मुहीत रज़वी' ही है जैसा कि 'हिल्या' के अध्ययन से स्पष्ट होता है। मक़सद यह है कि 'बहर' में जो 'मुहीत रज़वी' के हवाले से और 'हन्दिया' में 'मुहीत सरख़सी' के हवाले से उद्धृत है, यह उसके ख़िलाफ़ है जो अल-क़ुहस्तानी ने ('मुहीत' से) उद्धृत किया है। अगर अल-क़ुहस्तानी की उद्धृत की हुई इबारत 'मुहीत बुरहानी' की हो तो हो सकता है। (अल्लाह उन्हें क्षमा करे)। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

दोनों 'मुहीत' में जो मसह का तरीका है वही 'तुहफ़ा', 'बदाइ' और 'ज़ाद अल-फ़ुक़हा' में भी है। और तमाम हज़रात ने स्पष्ट किया है कि यह "अहवत" (अधिक सुरक्षित) है। जैसा कि 'हिल्या', (बाकी अगले पृष्ठ पर)।

पाद-टिप्पणी: १. जामि अल-रुमूज़, तयम्मुम का अध्याय, करीमिया क़ुरआन प्रेस, २८/१ २. जामि अल-रुमूज़, तयम्मुम का अध्याय, करीमिया क़ुरआन प्रेस, २८/१

पृष्ठ ३७८ / ७५६

فتاوٰی رضویہ ، جلد سوم

ثم يفعل باليد اليسرى كذلك اه ونقل مثله القهستاني عن المحيط ثم استدرك عليه بما في جامع الامام القاضي ان الكف لا يمسح جعل الصحيح اه كما قدمنا ، والذي في البحر عه عن المحيط الرضوي هكذا كيفية التيمم ان يضرب يديه على الارض ثم ينفضهما فيمسح بهما وجهه بحيث لا يبقى منه شيئ وان قل ثم يضرب يديه ثانيا على الارض ثم ينفضهما فيمسح بهما كفيه و ذراعيه كليهما الى المرفقين ، وقال مشائخنا يضرب عه ٢ يديه ثانيا. تک مسح کرے۔ پھر بائیں ہاتھ کا اسی طرح مسح کرے "اہ" اسی کے مثل قہستانی نے محیط سے نقل کیا ہے پھر اس پر اس سے استدراک کیا ہے جو جامع امام قاضیخان میں ہے جبکہ "صحیح قول کے مطابق ہتھیلی (باطن کف) کا مسح نہیں ہوگا۔" جیسا کہ ہم نے پہلے نقل کیا ہے۔ اور البحر الرائق میں محیط رضوی کے حوالے سے اس طرح تحریر ہے تیمم کا طریقہ یہ ہے کہ زمین پر اپنے دونوں ہاتھ مار کر جھاڑ لے پھر ان سے چہرے کا اس طرح مسح کرے کہ اس کا ذرا سا حصہ بھی چھوٹنے نہ پائے۔ پھر دوسری بار زمین پر ہاتھ مار کر جھاڑ لے ان سے اپنی ہتھیلیوں اور دونوں کلائیوں کا کہنیوں تک مسح کرے۔ اور ہمارے مشائخ نے فرمایا کہ دوسری بار دونوں ہاتھوں کو مارے

عه١ والمحيط هذا هو الرضوي كما يظهر بمراجعة الحلية ويريد بهذا ان الذي نقل في البحر عن المحيط الرضوي وفي الهندية عن المحيط للسرخسي خلاف مانقله القهستاني فليكن ان كان في المحيط البرهاني والله تعالى اعلم ١٢ منه غفر له (م) یہ محیط، محیط رضوی ہی ہے جیسا کہ حلیہ کے مطالعہ سے ظاہر ہوتا ہے۔ مقصد یہ ہے کہ بحر میں جو محیط رضوی کے حوالہ سے، اور ہندیہ میں محیط سرخسی کے حوالہ سے منقول ہے یہ اس کے خلاف ہے جو قہستانی نے (محیط سے) نقل کیا ہے۔ اگر قہستانی کی نقل کردہ عبارت "محیط برہانی" کی ہو تو ہو سکتا ہے ١٢ امنہ غفر لہ (ت)

عه۲ الذي في المحيطين مثله في التحفة والبدائع و زاد الفقهاء ونصوا جميعا انه احوط كما عزا لهم في الحلية و دونوں محیط میں جو طریقہ مسح ہے وہی تحفہ، بدائع اور زاد الفقہاء میں بھی ہے۔ اور تمام حضرات نے صراحت کی ہے کہ یہ "احوط" ہے۔ جیسا کہ حلیہ ، (باقی بر صفحہ آیندہ)

حواشی: 1 جامع الرموز فصل فی التیمم مطبعہ کریمیۃ قرآن ۲۸/۱ 2 جامع الرموز فصل فی التیمم مطبعہ کریمیۃ قرآن ۲۸/۱

Fatawa Razawiyya (Volume 3)

[Header Box] And he wipes with the four fingers of his left hand | and with the four fingers of the left hand [wipes] the right hand's...

(Remaining footnote from previous page) Al-Bahr wal-Hindiyyah. It has been stated in Al-Bahr and Al-Hindiyyah with reference to them.

[Arabic Section]: I say: First, we will soon investigate (1) that soil is not characterized by use, so what is the caution for? And if it is assumed or intended to mean 'legal earth' (as-sa'id al-hukmi) based on our investigation, then this water which is by consensus characterized as 'used' does not become used within a single limb during wudu, nor in any part of the body during ghusl, because in ghusl everything is like a single limb. So how can soil become used within a single limb?

[Urdu Commentary]: I say: Firstly, we will soon investigate that soil is not characterized as being 'used' (mustamal), so what is the basis for caution? And if it were assumed or if 'legal earth' was intended, as we are about to investigate, then in this case the argument is that water, which by consensus is characterized as 'used', does not become used within a single limb during wudu, nor in any part of the body during the ritual bath (ghusl), because in ghusl all limbs are like a single limb. Then why would soil become used within a single limb?

[Arabic Section]: Secondly: If (2) it were assumed, there is no escape from it because the palm cannot encompass the forearm even without the [excess] moisture, nor [can it encompass] around the elbow in width. That is why I wrote on the statement of 'Sh' [Shami] quoting from 'al-Bada'i' that this is closer to caution because it involves avoiding the use of 'used soil' to the extent possible, as its text says.

[Urdu Commentary]: Secondly: Even if we assume 'legal earth', there is no escape from it because the palm cannot cover the entire length of the forearm, nor can it encompass the width around the elbow. For this reason, Shami, quoting from 'Badai', included this statement: "This is closer to caution because it avoids using 'used soil' to the extent possible." Upon this, I wrote:

[Arabic Section]: I say: I, along with his statement 'to the extent possible' combined with what is explicitly stated in hadiths and narrations that Tayammum consists of two strikes, that if he did not do so...

[Urdu Commentary]: I say: Keeping in view the clarification in Ahadith and narrations that Tayammum consists of two strikes, their phrase 'to the extent possible' signifies that if specifically this... (remaining on the next page)

फ़तावा रज़विया (जिल्द तीसरी)

[शीर्षक बॉक्स] वह अपने बाएं हाथ की चार उंगलियों से पोंछता है | और बाएं हाथ की चार उंगलियों से [पोंछता है] दाएं हाथ की...

(पिछले पृष्ठ का शेष फुटनोट) अल-बहर वल-हिंदिया। बहर और हिंदिया में उनके संदर्भ में यह बताया गया है।

[अरबी अनुभाग]: मैं कहता हूँ: पहले, हम जल्द ही शोध करेंगे (1) कि मिट्टी उपयोग द्वारा वर्णित नहीं होती, तो फिर सावधानी किस लिए? और यदि यह मान लिया जाए या हमारे शोध के आधार पर 'सईद-ए-हुकमी' (कानूनी मिट्टी) मुराद ली जाए, तो यह पानी जो सर्वसम्मति से 'प्रयुक्त' (मुस्तअमल) कहा जाता है, वह वज़ू में एक ही अंग के भीतर और ग़ुस्ल में शरीर के किसी भी हिस्से में प्रयुक्त नहीं होता, क्योंकि ग़ुस्ल में सब एक ही अंग के समान है। फिर मिट्टी एक ही अंग में प्रयुक्त कैसे हो सकती है?

[उर्दू भाष्य का अनुवाद]: मैं कहता हूँ: सबसे पहले, हम जल्द ही शोध करेंगे कि मिट्टी 'प्रयुक्त' (मुस्तअमल) होने के गुण से नहीं पहचानी जाती, फिर सावधानी किस बात की? और यदि यह मान लिया जाए या इससे 'सईद-ए-हुकमी' मुराद ली जाए जैसा कि हम शोध करने वाले हैं, तो इस स्थिति में यह तर्क है कि पानी, जो सर्वसम्मति से 'प्रयुक्त' होने के गुण वाला होता है, वह भी वज़ू में एक ही अंग के भीतर और ग़ुस्ल में शरीर के किसी भी हिस्से में प्रयुक्त नहीं हो जाता, क्योंकि ग़ुस्ल में सभी अंग एक ही अंग की तरह हैं। फिर क्या बात है कि मिट्टी एक ही अंग में प्रयुक्त हो जाए?

[अरबी अनुभाग]: दूसरा: यदि (2) इसे मान भी लिया जाए, तो इससे कोई बचाव नहीं है क्योंकि हथेली पूरी कलाई की लंबाई को नहीं ढंक सकती, और न ही कोहनी के घेरे को चौड़ाई में। इसीलिए मैंने 'श' [शामी] के कथन पर 'अल-बदाइ' के हवाले से लिखा कि यह सावधानी के सबसे करीब है क्योंकि इसमें प्रयुक्त मिट्टी के यथासंभव उपयोग से बचाव होता है, जैसा कि इसका मूल पाठ कहता है।

[उर्दू भाष्य का अनुवाद]: दूसरा: यदि हम 'सईद-ए-हुकमी' मान भी लें, तो भी इससे कोई बचाव नहीं है क्योंकि हथेली लंबाई में पूरी कलाई को नहीं ढंक सकती, और न ही चौड़ाई में कोहनी के घेरे को पूरी तरह ले सकती है। इसी कारण 'बदाइ' से उद्धृत करते हुए शामी ने यह वाक्य दर्ज किया है कि: "यही सावधानी के सबसे करीब है क्योंकि इसमें 'यथासंभव' प्रयुक्त मिट्टी के उपयोग से बचा जा सकता है"। इस पर मैंने यह लिखा था:

[अरबी अनुभाग]: मैं कहता हूँ: मैं, उनके'यथासंभव' कथन के साथ-साथ हदीसों और रिवायतों में स्पष्ट रूप से वर्णित इस बात को ध्यान में रखते हुए कि तयम्मुम दो प्रहार (हाथ मारना) है, कि यदि वह ऐसा न करता...

[उर्दू भाष्य का अनुवाद]: मैं कहता हूँ: हदीसों और रिवायतों में तयम्मुम के दो प्रहार होने के स्पष्टीकरण को सामने रखते हुए, उनके वाक्यांश "यथासंभव" से यह संकेत मिलता है कि यदि विशेष रूप से यह... (शेष अगले पृष्ठ पर)

فتاوی رضویہ (جلد سوم)

[Header Box] ویمسح باربع اصابع یدہ الیسر | اور بائیں ہاتھ کی چار انگلیوں سے دائیں ہاتھ کی

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) البحر والہندیۃ۔ بحر اور ہندیہ میں ان کے حوالے سے بیان کیا گیا ہے۔

[Arabic Section]: اقول: اولا سنحقق(1) ان التراب لایوصف بالاستعمال ففیم الاحتیاط وان فرض اواریدبہ الصعید الحکمی علی مانحققہ فہذا الماء الذی یوصف بہ اجماعاً لایصیر مستعملاً فی عضو واحد فی الوضوء وفی شیئ من البدن فی الغسل لان الکل فیہ کعضو واحد فما بال التراب یصیر مستعملا في عضو واحد۔

[Urdu Commentary]: اقول ، اولاً عنقریب ہم تحقیق کریں گے کہ مٹی مستعمل ہونے سے موصوف نہیں ہوتی پھر احتیاط کس بات میں ہے؟ اور اگر فرض کیا جائے یا اس سے صعید حکمی مراد لیا جائے جیسا کہ ہم اس کی تحقیق کرنے والے ہیں تو اس صورت میں یہ کلام ہے کہ پانی جو مستعمل ہونے سے بالاجماع موصوف ہوتا ہے وہ بھی وضو میں ایک ہی عضو کے اندر اور غسل میں بدن کے کسی بھی حصے میں مستعمل نہیں ہوجاتا ، اس لئے کہ غسل سب عضو واحد کی طرح ہے۔ پھر کیا بات ہے کہ مٹی ایک ہی عضو میں مستعمل ہو جائے؟

[Arabic Section]: وثانیا: ان (۲) فرض فلامفر منہ لان الکف لا یستوعب الذراع لولابل ولاحول المرفق عرضاً ولذا کتبت علی قول ش نقلا عن البدائع ہذا الاقرب الی الاحتیاط لما فیہ من الاحتراز عن استعمال التراب المستعمل بالمقدار الممکن مآ نصہ۔

[Urdu Commentary]: ثانیاً : اگر صعید حکمی فرض کریں تو بھی اس سے مفر نہیں اس لئے کہ ہتھیلی طول میں پوری کلائی کا استیعاب نہیں کرسکتی، بلکہ عرض میں بھی کہنی کے گرد کا استیعاب واحاطہ نہیں کرتی۔ اسی لئے بدائع سے نقل کرتے ہوئے شامی نے جو یہ عبارت درج کی ہے کہ : " یہی احتیاط سے قریب تر ہے کیونکہ اس میں "بقدر ممکن" مستعمل مٹی کے استعمال سے بچنا حاصل ہوتا ہے"۔ اس پر میں نے یہ لکھا تھا:

[Arabic Section]: اقول: انا وبقولہ بالقدر الممکن مع ما صرح بہ فی الاحادیث والروایات ان التیمم ضربتان انہ لولم یفعل

[Urdu Commentary]: اقول : احادیث اور روایات میں تیمم دو ضرب ہونے کی تصریح کو سامنے رکھتے ہوئے ان کی عبارت "بقدر ممکن" سے یہ افادہ ہوتا ہے کہ اگر خاص اس (باقی بر صفحہ آئندہ)

Fatawa Ridawiyya | Volume 3

[Upper Box] **Arabic Text:** Wipe the back of the right hand from the fingertips to the elbow. Then, with the left palm, wipe the inner side of the right hand up to the wrist. Pass the inner side of the left thumb over the back of the right thumb. Then do the same for the left hand. This is the more precautionary method.

[Main Body Text] **(Continuation of the footnote from the previous page)** If wiping is done in any way and the entire limb is covered, then the Tayammum will be valid. This is because everyone knows that the circumference of the arm near the elbow is much larger than the length of the palm along with the fingers. Therefore, it is impossible to achieve full coverage even with the method mentioned by those scholars; rather, some spots will surely remain unwiped. If this (re-using used dust on those missed spots for coverage) were not permissible, then instead of two strikes [on the earth], many strikes would be necessary, which is invalid. For this reason, they expressed the aforementioned method with the word 'appropriate' (yanbaghi) and not 'obligatory' (layajib). So, praise be to Allah who has provided ease in this matter. My commentary written on 'Shami' ends here. And now I say that when the objective (avoiding the use of used dust) is not achieved even through this method of wiping, then it is merely an unnecessary burden (takalluf). Therefore, what is quoted from some scholars in 'Al-Badai'—that "one should perform wiping without such meticulous observance and not fall into unnecessary burden"—is very excellent and how wonderful it is. 12 [From him, may he be forgiven]. (T)

[Footnotes] 1. *Jadd al-Muhtar 'ala Radd al-Muhtar*, Chapter on Tayammum, Al-Majma' al-Islami, Mubarakpur, 1/140-141. 2. *Al-Bahr al-Ra'iq*, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/251.

[ऊपरी बॉक्स] दाहिने हाथ के पीछे के हिस्से को उंगलियों के पोरों से कोहनी तक मलें। फिर अपनी बाईं हथेली से दाहिने हाथ के अंदरूनी हिस्से को कलाई तक मलें। और बाएं अंगूठे के अंदरूनी हिस्से को दाएं अंगूठे के पीछे की तरफ फेरें। फिर बाएं हाथ के लिए भी ऐसा ही करें। और यही अधिक सावधानीपूर्ण तरीका है।

[मुख्य पाठ] **(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग)** यदि पोंछना (मसह) किसी भी तरह से किया गया और पूरे अंग को कवर कर लिया गया, तो तयम्मुम वैध होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि हर कोई जानता है कि कोहनी के पास हाथ का घेरा उंगलियों सहित हथेली की लंबाई से कहीं अधिक होता है। इसलिए, उन विद्वानों द्वारा बताए गए तरीके से भी पूर्ण कवरेज प्राप्त करना असंभव है; बल्कि कुछ स्थान निश्चित रूप से बिना पोंछे रह जाएंगे। यदि यह (कवरेज के लिए उन छूटे हुए स्थानों पर उपयोग की गई धूल का उपयोग करना) जायज नहीं होता, तो दो बार के बजाय कई बार हाथ मारना पड़ता, जो कि अमान्य है। इसी कारण उन्होंने उक्त तरीके को 'उपयुक्त' कहा और 'अनिवार्य' नहीं कहा। तो अल्लाह का शुक्र है जिसने काम में आसानी रखी है। 'शामी' पर मेरी लिखी हुई टिप्पणी यहाँ समाप्त होती है। और अब मैं यह कहता हूँ कि जब पोंछने के इस तरीके से भी उद्देश्य (उपयोग की गई धूल के उपयोग से बचना) प्राप्त नहीं होता है, तो यह केवल एक अनावश्यक बोझ (तकल्लुफ़) है। इसलिए, 'अल-बदाए' में कुछ विद्वानों से जो उद्धृत है कि "वह इन औपचारिकताओं के बिना पोंछ ले और तकल्लुफ़ में न पड़े", वह बहुत ही उत्कृष्ट और कितना अच्छा है। 12 [उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए]। (त)

[पादलेख] 1. जद अल-मुह्तार अला रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, अल-मजमा अल-इस्लामी, मुबारकपुर, 1/140-141। 2. अल-बहर अर-राइक, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/251।

पृष्ठ 380/756

[اوپری باکس] **عربی عبارت:** ظاهره يده اليمنى من رؤس الاصابع الى المرفق ثم يمسح بكفه اليسرى باطن يده اليمنى الى الرسغ ويمر باطن ابهامه اليسرى على ظاهر ابهامه اليمنى ثم يفعل باليد اليسرى كذلك وهو الاحوط ١ اهـ **اردو ترجمہ:** پشت کا انگلیوں کے سروں سے کہنی تک مسح کرے پھر اپنی بائیں ہتھیلی سے دائیں ہاتھ کے پیٹ کا گٹے تک مسح کرے۔ اور بائیں انگوٹھے کا پیٹ دائیں انگوٹھے کی پشت پر پھیرے۔ پھر بائیں ہاتھ کا اسی طرح مسح کرے۔ اور یہی زیادہ بااحتیاط طریقہ ہے۔ اھ

[بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ] **عربی عبارت:** ذلك وانما استوعب المسح كيفما اتفق اجزاء ٥ وذلك لان كل احد يعلم ان دور يده قريب المرفق اعظم بكثير من طول مقدار الكف مع الاصابع فلايمكن ان يحصل الاستيعاب بما ذكروا بل لابد من بقاء مواضع فلولم يجز ذلک لزمت ضربات مكان هو ضربتين وهو باطل ولذا عبروه ببينبغى لايوجب فالحمدلله الذى جعل هذا الامر واسعاً ٢ اهـ ما كتبت عليه والآن اقول اذا لم يحصل به المقصود لم يكن الا تكلفاً فما احسن ما في البدائع من بعضهم انه يمسح من دون تلك المراءآت والا يتكلفاً ١٢ منه غفرله۔ (م) **اردو عبارت:** طریقہ پر مسح نہ کیا اور جیسے بھی اتفاق ہوا مسح سے پورے عضو کا احاطہ کرلیا تو تیمم ہو جائیگا۔ یہ اس لئے کہ ہر شخص جانتا ہے کہ کہنی کے قریب اس کے ہاتھ کا دور (گھیرا) انگلیوں سمیت ہتھیلی کی مقدار سے بہت زیادہ ہے، تو ان حضرات کے بتائے ہوئے طریقہ پر بھی اس حصہ کا احاطہ ممکن نہیں، بلکہ کچھ جگہیں ضرور مسح سے رہ جائیں گی تو اگر یہ (احاطہ مسح کیلئے چھوٹی ہوئی جگہوں پر مستعمل مٹی کو استعمال کرنا) جائز نہ ہو تو بجائے دو ضربوں کے بہت ساری ضربیں لازم ہوں گی۔ اور یہ باطل ہے۔ اسی لئے مذکورہ طریقہ کو "مناسب" فرمایا "واجب" نہ کہا۔ تو خدا کا شکر ہے کہ اس نے کام

میں وسعت رکھی ہے۔ شامی پر میری لکھی ہوئی عبارت ختم ہوئی۔ اور اب میں یہ کہتا ہوں کہ اس طریقہ مسح سے بھی جب مقصود (مستعمل مٹی کے استعمال سے احتراز) حاصل نہیں تو یہ بس تکلف ہی ہے اس لئے بعض حضرات سے بدائع میں جو منقول ہے کہ "اس رعایت کے بغیر مسح کرلے اور تکلف میں نہ پڑے" وہ بہت عمدہ اور کیا خوب ہے ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

[حواشی] 1. جد المحتار علی ردالمحتار باب التیمم المجمع الاسلامی مبارکپور ۱ / ۱۴۰ - ۱۴۱ 2. بحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۲۵۱

Fatawa Rizvia, Volume 3

This method is written in Al-Hindiyya with reference to Muhit al-Sarakhsi. In summary, the correct, preferred, and well-known opinion mentioned for the majority is that the palms of the hands should not be wiped.

I say: From this research, it becomes clear that the phrase quoted in Al-Zakhirah from Imam Muhammad in Al-Asl, stating: "Then he strikes again and shakes them, and with them wipes his palms and his forearms up to the elbows" - the meaning of "palms" here is their back, as stated in Al-Hilyah regarding the phrase in Sharh al-Jami' al-Saghir: "Will he wipe the palm? The correct answer is no," where it is written that "here, 'palm' refers to its inner part, not its back."

If an objection is raised that the same work (Al-Hilyah) also quotes from Al-Zakhirah that "our scholars said that in wiping the forearms, the better way is to wipe the back of his right hand with three fingers of his left hand up to the elbows and wipe the elbow, then wipe its inner part with the thumb and index finger to the fingertips, and similarly do with the left hand. And if one performs tayammum with all the fingers and the palm without observing..."

---

1. Al-Mabsut by Imam Muhammad, Chapter of Tayammum, Idarat al-Qur'an Karachi, 103/1.
2. Hilyah.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

यही तरीका अल-हिंदिया में मुहीत अल-सरख़सी के हवाले से लिखा हुआ है। संक्षेप में, सही, प्रबल और मशहूर राय जिसे अधिकांश विद्वानों ने ज़िक्र किया है, वह यह है कि हथेलियों के भीतरी भाग (पेट) का मसह नहीं किया जाएगा।

अक़ुल (मैं कहता हूँ): इस शोध से यह स्पष्ट हो जाता है कि इमाम मुहम्मद से अल-असल के हवाले से अल-ज़खीरा में जो यह इबारत नक़ल की गई है कि "फिर दूसरी बार हाथ मारे और दोनों को झाड़ ले और उनसे अपनी हथेलियों और कोहनियों सहित कलाइयों का मसह करे", इसमें हथेलियों से मुराद उनकी पीठ है जैसा कि हलिया में शरह अल-जामि' अल-सग़ीर की इबारत के बारे में कहा गया है कि "क्या हथेली का मसह करेगा? सही यह है कि 'नहीं'", जिसके बारे में लिखा है कि "(यहाँ) हथेली से मुराद उसका भीतरी भाग है, बाहरी नहीं"।

यदि यह आपत्ति की जाए कि उसी (हलिया) में अल-ज़खीरा से यह भी नक़ल है कि "हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया है कि कलाइयों के मसह में बेहतर तरीका यह है कि अपने बाएं हाथ की तीन उंगलियों से अपने दाएं हाथ की पीठ का कोहनियों तक मसह करे और कोहनी का मसह करे, फिर उसके भीतरी भाग का अंगूठे और शहादत की उंगली से उंगलियों के सिरों तक मसह करे, और इसी तरह बाएं हाथ का भी मसह करे। और अगर..."

---

1. अल-मबसूत ले इमाम मुहम्मद, बाबुत तयम्मुम, इदारातुल कुरान कराची, 103/1.
2. हलिया।

पृष्ठ 381 का 756

یہی طریقہ ہندیہ میں محیط سرخسی کے حوالے سے لکھا ہوا ہے۔ الحاصل صحیح ، راجح ، مشہور جمہور کا بیان کیا ہوا قول یہی ہے کہ ہتھیلیوں کے پیٹ کا مسح نہیں کیا جائیگا۔

اقول: اس تحقیق سے یہ واضح ہو جاتا ہے کہ امام محمد سے اصل کے حوالے سے ذخیرہ میں جو یہ عبارت نقل کی ہے کہ "پھر دوسری بار ہاتھ مارے اور دونوں کو جھاڑ لے اور ان سے اپنی ہتھیلیوں کا اور کہنیوں سمیت کلائیوں کا مسح کرے" اھ اس میں ہتھیلیوں سے مراد ان کی پشت ہے جیسے حلیہ میں شرح جامع صغیر کی عبارت "کیا ہتھیلی کا مسح کریگا؟ صحیح یہ ہے کہ "نہیں" سے متعلق لکھا ہے کہ "(یہاں) ہتھیلی سے مراد اس کا باطن ہے ظاہر نہیں " اھ

اگر یہ اعتراض ہو کہ اسی (حلیہ) میں ذخیرہ سے یہ بھی نقل ہے کہ "ہمارے مشائخ نے فرمایا ہے کہ کلائیوں کے مسح میں بہتر طریقہ یہ ہے کہ اپنے بائیں ہاتھ کی تین انگلیوں سے اپنے دائیں ہاتھ کے ظاہر کے کہنیوں تک مسح کرے اور کہنی کا مسح کرے، پھر اس ہاتھ کے اندرونی جانب کا انگوٹھے اور شہادت کی انگلی سے " انگلیوں کے سروں" تک مسح کرے۔ اور اسی طرح بائیں ہاتھ کا بھی مسح کرے۔ اور اگر

---

1 المبسوط لامام محمد باب التیمم بالصعید ادارۃ القرآن کراچی ۱/۱۰۳ 2 حلیہ

Fatawa Razawiyya - Volume Three

[Left Column - Arabic Context] “The palm and fingers [combined for Tayammum] is permissible.”[1] - Ends. I say: Do not deny the difference of opinion. The correct position has been reported, and when the correct position is established, one should not deviate from it. Qadi Khan mentioned in the description of the method of Tayammum that: “He should place the palm of his left hand on the back of his right hand and start from the tips of the fingers to the elbow, then turn it to the palm of the forearm and stretch it to the palm. Will he wipe the palm? Some said no, because he wiped it once when he struck his hands on the earth. Then he places the palm of his right hand on the back of his left hand and does what he did with the right.”[2] - Ends Khania. This description is only an explanation of what is preferable in Tayammum. Wiping the palms was excluded from it, so it was not preferable, thus it was a futile action and was disliked. And Allah Almighty knows best. Then, the school of the Founder of the Madhhab (Imam Abu Hanifa), may Allah be pleased with him, is that he does not need something that sticks to the hand...

[Right Column - Urdu Explanation] “If one performs Tayammum by combining fingers and palms without observing the distinction between palms and fingers, it is also permissible.” - Ends. I say: (So the answer would be) We do not deny the difference. By stating the abandonment of wiping over the leather socks as the correct opinion, it is inferred that although there is a difference in this issue, when a correct opinion is proven, there is no room for deviation and departure from it. Qadi Khan has also mentioned it in the description of the method of Tayammum that “he will place the palm of his left hand on the back of his right hand and pull it from the tips of the fingers to the elbow, then turn it towards the side of the palm of the forearm and take it to the palm. Will he also wipe the palm? Some people said: No. Because when he struck his hands on the ground, he wiped it once at that time. Then he will place the palm of his right hand on the back of his left hand and do the same as he did with the right.” - Ends Khania. What is this method? It is the explanation of what is better in Tayammum, and if the wiping of the palms was excluded from it, then it did not remain preferable, so this would be a futile action, so it would be disliked. And Allah Almighty knows best. Then the school of the Master of the School (Imam Abu Hanifa), may Allah be pleased with him, is that there is no need for it to be with a hand...

[Footnotes] 1. Hilya 2. Fatawa Qadi Khan, Chapter of Tayammum, Naval Kishore, Lucknow, 1/25

फ़तावा रज़विया - तीसरा खंड

[बायाँ कॉलम - अरबी संदर्भ] "हथेली और उंगलियाँ [तयम्मुम के लिए मिलाकर] जायज़ है।"[1] - समाप्त। मैं कहता हूँ: मतभेद से इनकार न करें। सही राय बता दी गई है, और जब सही राय स्थापित हो जाए, तो उससे हटना नहीं चाहिए। क़ाज़ी ख़ान ने तयम्मुम की विधि के वर्णन में उल्लेख किया है कि: "उसे अपने बाएं हाथ की हथेली को अपने दाहिने हाथ के पीछे रखना चाहिए और उंगलियों के पोरों से कोहनी तक शुरू करना चाहिए, फिर उसे अग्रबाहु की हथेली की ओर मोड़ना चाहिए और हथेली तक खींचना चाहिए। क्या वह हथेली को पोंछेगा? कुछ ने कहा नहीं, क्योंकि जब उसने अपने हाथों को ज़मीन पर मारा तो उसने एक बार उसे पोंछ लिया था। फिर वह अपने दाहिने हाथ की हथेली को अपने बाएं हाथ के पीछे रखता है और वही करता है जो उसने दाहिने हाथ के साथ किया था।"[2] - समाप्त खानिया। यह वर्णन केवल इस बात की व्याख्या है कि तयम्मुम में क्या बेहतर है। हथेलियों को पोंछना इससे बाहर रखा गया था, इसलिए यह बेहतर नहीं रहा, इस प्रकार यह एक व्यर्थ कार्य था और नापसंद (मक़रूह) था। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। फिर, मज़हब के संस्थापक (इमाम अबू हनीफ़ा) रज़ियल्लाहु अन्हु का मत यह है कि उसे हाथ से चिपकने वाली किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है...

[दायाँ कॉलम - उर्दू स्पष्टीकरण] "यदि कोई हथेलियों और उंगलियों के बीच अंतर किए बिना उंगलियों और हथेलियों को मिलाकर तयम्मुम करता है, तो यह भी जायज़ है।" - समाप्त। मैं कहता हूँ: (तो उत्तर यह होगा) हम मतभेद से इनकार नहीं करते हैं। मोज़ों पर मसह (पोंछने) को छोड़ने को सही राय बताने से यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्यपि इस मुद्दे में मतभेद है, लेकिन जब एक सही राय सिद्ध हो जाती है, तो उससे विचलन और प्रस्थान की कोई गुंजाइश नहीं होती है। क़ाज़ी ख़ान ने तयम्मुम की विधि के वर्णन में यह भी उल्लेख किया है कि "वह अपने बाएं हाथ की हथेली को अपने दाहिने हाथ के पीछे रखेगा और उसे उंगलियों के पोरों से कोहनी तक खींचेगा, फिर उसे अग्रबाहु की हथेली की ओर घुमाएगा और हथेली तक ले जाएगा। क्या वह हथेली को भी पोंछेगा? कुछ लोगों ने कहा: नहीं। क्योंकि जब उसने ज़मीन पर अपने हाथ मारे, तो उसने उसी समय एक बार उसे पोंछ लिया था। फिर वह अपने दाहिने हाथ की हथेली को अपने बाएं हाथ के पीछे रखेगा और वही करेगा जो उसने दाहिने हाथ के साथ किया था।" - समाप्त खानिया। यह विधि क्या है? यह तयम्मुम में क्या बेहतर है उसका विवरण है, और यदि हथेलियों को पोंछना इससे बाहर कर दिया गया था, तो यह बेहतर नहीं रहा, इसलिए यह एक व्यर्थ कार्य होगा, इसलिए यह मक़रूह (नापसंद) होगा। और

अल्लाह तआला बेहतर जानता है। फिर मज़हब के इमाम (इमाम अबू हनीफ़ा) रज़ियल्लाहु अन्हु का मत यह है कि हाथ के साथ होने की कोई आवश्यकता नहीं है...

[पाद-टिप्पणी] 1. हिलिया 2. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, बाब-अत-तयम्मुम, नवल किशोर, लखनऊ, 1/25

[بایاں کالم - عربی عبارت] الکف والاصابع یجوز 1 اھـ اقول: لا تنکر الخلاف فقد افید بالتصحیح لکن اذا ثبت الصحیح لا یعدل عنه وقد ذکره قاضي خان في بیان صفة التیمم انه یضع بطن کفه الیسری علی ظهر کفه الیمنی ویبد من رؤس الاصابع الی المرفق ثم یدیر الی بطن الساعد ویمد الی الکف وهل یمسح الکف قال بعضهم لا لانه مسح مرة حین ضرب یدیه علی الارض ثم یضع بطن کفه الیمنی علی ظهر کفه الیسری ویفعل ما فعل بالیمنی 2 اھـ خانیه فهذه الصفة لیست الابیان ما هو الاولی في التیمم وقد اخرج منه مسح بطن الکفین فلم یکن اولی فکان عبثا فکان مکروها و اللہ تعالی اعلم - ثم مذهب صاحب المذهب رضي اللہ تعالی عنه انه لا یحتاج الی شیئ یلتزق

[دایاں کالم - اردو ترجمہ و شرح] انگلیاں اور ہتھیلی سب ملا کر ہتھیلی اور انگلیوں کی رعایت کیے بغیر تیمم کر لیا تو بھی جائز ہے۔" اھـ اقول: (تو جواب یہ ہوگا) ہمیں اختلاف سے انکار نہیں ترک مسح خفین کو قول صحیح بتانے سے ہی یہ مستفاد ہو جاتا ہے کہ اس مسئلہ میں اختلاف ضرور ہے لیکن جب قول صحیح ثابت ہو تو اس سے عدول وانحراف کی گنجائش نہیں۔ اسے قاضیخان نے طریقہ تیمم کے بیان میں ذکر بھی فرمایا ہے کہ "وہ اپنی بائیں ہتھیلی کا پیٹ داہنی ہتھیلی کی پشت پر رکھے گا اور انگلیوں کے سروں سے کہنی تک کھینچے گا، پھر کلائی کے پیٹ کی جانب گھمائے گا اور ہتھیلی تک لے جائے گا، کیا ہتھیلی کا بھی مسح کریگا؟ بعض حضرات نے فرمایا: نہیں۔ کیوں کہ جب زمین پر اپنے ہاتھوں کو مارا اس وقت ایک بار اس کا مسح کر لیا۔ پھر اپنی داہنی ہتھیلی کا پیٹ اپنی بائیں ہتھیلی کی پشت پر رکھے گا اور وہی کرے گا جو دائیں میں کیا "۔ اھـ خانیہ۔ یہ طریقہ کیا ہے؟ اس کا بیان ہے جو تیمم میں بہتر والی ہے اور ہتھیلیوں کے پیٹ

کا مسح اس سے خارج کردیا تو یہ اولیٰ نہ ہوا پس یہ عبث تو مکروہ ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ پھر صاحب مذہب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مذہب یہ ہے کہ اس کی حاجت نہیں کہ ہاتھ سے

[حواشی] 1 حلیہ 2 فتاویٰ قاضی خان باب التیمم نولکشور لکھنؤ ۲۵/۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

(Arabic Text Analysis): ...with the hand, rather the Sunnah is to remove it [the dust] by blowing and shaking it off. We have already presented this under the second aspect from Al-Bada'i. It is also mentioned therein that the ritual obligation is to wipe the palm that has touched the dust over the two organs [face and hands], not to soil them with it.

In Al-Kafi (1), it is stated to shake one's hands once, and from Abu Yusuf twice. In reality, there is no disagreement, because if the dust stuck to the palm falls off with one shake, it suffices; otherwise, two shakes are needed. This is because the obligation is to wipe with a palm placed on the ground, not to use the dust itself, as that would be like disfigurement (muthla). Similarly, it is cited from him in Al-Birjandi, and the same meaning is in Al-Hilya and others. It is not restricted to two shakes either; rather, one should shake until it [the excess dust] falls off. As stated in Al-Hidaya: "One should shake their hands as much as needed for the dust to fall off so that it does not become a disfigurement (muthla)."

So, whoever was sitting on a marble floor and stood up leaning on their palms upon it...

(Urdu Translation Side): ...some dust might stick, rather the Sunnah is to remove it by blowing and shaking it off. We have already quoted this under the second definition with reference to Al-Bada'i. In Al-Bada'i, it is also stated that "the command of Sharia has come that the palm which has touched the dust should be wiped over both organs; it is not the command to soil both with it."

And in Al-Kafi, it is mentioned: "One should shake both hands once," and from Imam Abu Yusuf, there is a narration of twice. In reality, there is no disagreement, for if the dust stuck to the palm falls off with a single shake, one should be content with that, otherwise shake twice because the obligation is to wipe with the palm that has been placed on the ground; it is not obligatory to use the dust, as this is 'muthla' (disfigurement). A similar text is quoted in Al-Birjandi with reference to Al-Kafi, and in Al-Hilya, etc., a text with the same meaning is written. There is no restriction on shaking only twice; rather, one should shake until the dust falls off. Because in Al-Hidaya, it is stated: "One will shake their hands to such an extent that the dust falls off so that it does not become 'muthla'." Thus, a person who was sitting on a marble floor and then leaned their both palms on it...

1. Bada'i al-Sana'i, Rukn al-Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/46
2. Al-Kafi
3. Al-Hidaya, Chapter of Tayammum, Al-Maktaba al-Arabiyya, Karachi, 1/42

फ़तावा रज़विया, खंड 3

(अरबी पाठ विश्लेषण): ...हाथ से, बल्कि सुन्नत यह है कि [मिट्टी को] फूंक मारकर और झाड़कर हटा दिया जाए। हमने इसे अल-बदाइ' के हवाले से दूसरे पहलू के तहत पहले ही प्रस्तुत किया है। उसमें यह भी उल्लेख है कि शरीयत का हुक्म यह है कि जिस हथेली से मिट्टी छुई गई है उसे दोनों अंगों [चेहरे और हाथों] पर फेरा जाए, न कि उन्हें मिट्टी से गंदा किया जाए।

'अल-काफी' (1) में है कि अपने हाथों को एक बार झाड़े, और अबू यूसुफ से दो बार झाड़ने की रिवायत है। हकीकत में इनमें कोई मतभेद नहीं है, क्योंकि अगर एक ही बार झाड़ने से हथेली पर चिपकी मिट्टी झड़ जाए तो उतना ही पर्याप्त है; अन्यथा दो बार झाड़े। ऐसा इसलिए है क्योंकि अनिवार्य (वाजिब) ज़मीन पर रखी गई हथेली से मसह करना है, न कि मिट्टी का उपयोग करना, क्योंकि वह 'मुसला' (रूप बिगाड़ना) जैसा होगा। इसी तरह की बात 'बर्जन्दी' में 'काफी' के हवाले से है, और 'हिलिया' आदि में भी इसके समान अर्थ वाली इबारत है। दो बार झाड़ने की भी कोई पाबंदी नहीं है; बल्कि तब तक झाड़े जब तक कि [अतिरिक्त मिट्टी] झड़ न जाए। जैसा कि 'हिदाया' में कहा गया है: "अपने हाथों को इतना झाड़े कि मिट्टी झड़ जाए ताकि वह 'मुसला' न हो।"

तो, जो व्यक्ति संगमरमर के फर्श पर बैठा हो और अपनी हथेलियों का उस पर सहारा लेकर खड़ा हो...

(उर्दू अनुवाद पक्ष): ...कुछ मिट्टी चिपक सकती है, बल्कि सुन्नत यह है कि फूंक मारकर और झाड़कर उसे दूर कर दिया जाए। इसे परिभाषा दो के तहत बदाइ' के हवाले से हम उद्धृत भी कर चुके हैं। बदाइ' में यह भी है कि "शरीयत का हुक्म यह आया है कि जो हथेली मिट्टी से स्पर्श हो चुकी है उसे दोनों अंगों पर फेरा जाए; यह हुक्म नहीं कि उससे दोनों को प्रदूषित किया जाए।"

और 'काफी' में है: "अपने दोनों हाथों को एक बार झाड़ लेगा," और इमाम अबू यूसुफ से रिवायत है कि दो बार। और वास्तव में कोई मतभेद नहीं है क्योंकि अगर एक ही बार झाड़ने से हथेली पर चिपकी मिट्टी झड़ जाए तो उसी पर संतोष करे, अन्यथा दो बार झाड़े क्योंकि अनिवार्य यही है कि जो हथेली ज़मीन पर रखी जा चुकी है उससे मसह करे; यह अनिवार्य नहीं कि मिट्टी का उपयोग करे, यह तो 'मुसला' (रूप बिगाड़ना) है। इसी के समान 'काफी' के हवाले से 'बर्जन्दी' में उद्धृत है, और 'हिलिया' आदि में इसके समान अर्थ वाली इबारत लिखी है। और दो ही बार झाड़ने की भी कोई पाबंदी नहीं है बल्कि यहाँ तक झाड़े कि मिट्टी झड़ जाए। क्योंकि 'हिदाया' में यह फरमाया गया है:

"अपने हाथों को इस कदर झाड़ेगा कि मिट्टी झड़ जाए ताकि मुसला न हो।" तो जो व्यक्ति किसी संगमरमर के फर्श पर बैठा हुआ था फिर अपनी दोनों हथेलियों को उस पर टेक देते हुए...

---

1. बदाइ' अस्सनाइ', रुकन अत-तयममुम, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/46
2. अल-काफी
3. अल-हिदाया, बाब अत-तयममुम, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची, 1/42

पृष्ठ 383/756

باليد بل السنة ازالته بالنفخ والنفض وقد قدمناه تحت الوجه الثاني عن البدائع وفيها ايضاً التعبد ورد يمسح كف مسه التراب على العضوين لاتو يثهما به اهـ وفی الكافی (۱) ينفض يديه مرة وعن ابی يوسف مرتين ولاخلاف فی الحقيقة لانه ان تناثر ما التصق بكفه من التراب بنفضة يكتفی بها والانفض نفضتين لان الواجب المسح بكف موضوع على الارض لااستعمال التراب فانه مثله اهـ ومثله عنه فی البرجندی ومعناه فی الحلية وغيرها ولايتقيد بنفضتين ايضاً بل ينفض الی ان يتناثر فقد قال فی الهداية ينفض يديه بقدر مايتناثر التراب كيلايصير مثلة اهـ فمن كان جالسا على فرش من رخام فقام معتمدا بكفيه عليه

کچھ مٹی چپک جائے بلکہ سنت یہ ہے کہ پھونک کر اور جھاڑ کر اسے دُور کردیا جائے۔ اسے تعریف دوم کے تحت بدائع کے حوالے سے ہم نقل بھی کرچکے ہیں۔ بدائع میں یہ بھی ہے کہ "حکم شرع یہ آیا ہے کہ جو ہتھیلی مٹی سے مس ہوچکی ہے اسے دونوں عضووں پر پھیرا جائے یہ حکم نہیں کہ اس سے دونوں کو آلودہ کیا جائے"۔ اھ اور کافی میں ہے "اپنے دونوں ہاتھوں کو ایک بار جھاڑ لے گا اور امام ابویوسف سے روایت ہے کہ دو بار۔ اور در حقیقت کوئی اختلاف نہیں اس لئے کہ اگر ایک ہی بار جھاڑنے سے ہتھیلی پر چپکی ہوئی مٹی جھڑ جائے تو اسی پر اکتفاء کرے ورنہ دو بار جھاڑے کیونکہ واجب یہی ہے کہ جو ہتھیلی زمین پر رکھی جاچکی ہے اس سے مسح کرے یہ واجب نہیں کہ مٹی کو استعمال کرے یہ تو مثلہ ہے"۔ اھ اسی کے مثل کافی کے حوالہ سے بر جندی میں نقل ہے، اور حلیہ وغیرہ میں اس کے ہم معنی عبارت تحریر ہے۔ اور دو ہی بار جھاڑنے کی بھی کوئی پابندی نہیں بلکہ یہاں تک جھاڑے کہ مٹی جھڑ جائے۔ کیونکہ ہدایہ میں یہ فرمایا ہے:

"اپنے ہاتھوں کو اس قدر جھاڑے گا کہ مٹی جھڑ جائے تاکہ مثلہ نہ ہو اھـ تو جو شخص کسی سنگِ مرمر کے فرش پر بیٹھا ہوا تھا پھر اپنی دونوں ہتھیلیوں کو اس پر ٹیک دیتے ہوا

---

1 بدائع الصنائع رکن التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۴۶ 2 کافی 3 الہدایہ باب التیمم المکتبۃ العربیہ کراچی ۱/ ۴۲

Fatawa Razawiyya - Volume 3

Then after some time he wanted to perform Tayammum, so he contented himself with the touch that occurred between the marble and his palms while standing. So when did he intend pure soil (Sa'id) for purification? When the soil was in contact with his palms, he did not intend. And when he intended, there was no soil at that time. Thus, the act of intention was found upon empty palms. So, the apparent truth in this matter is with the Master Imam Abu Shuja'. And the strength and abundance of his rectifications are known, whether we say (1) both strikes are pillars of Tayammum or not. This is because the act of contact between the palms and the soil becomes purifying only when it is done with purpose and intention.

Yes, if (2) as much dust as is sufficient for Tayammum was stuck to his palms and he now makes the intention, it is permissible because it has now become true that he intended pure soil for purification. There are many precedents of this in the preceding sub-issues. If the opinion that grants permissibility is understood in this sense, then there will be a reconciliation between the two opinions (the opinion of permissibility is for when a sufficient amount of pure soil is present on the hands, and the opinion of non-permissibility is for when it is not. M.A.). And Allah, Glory be to Him and the Most High, knows best.

Page 384 of 756

फिर कुछ समय बाद उसने तयम्मुम करने का इरादा किया, तो खड़े होते समय उसकी हथेलियों और संगमरमर के बीच जो स्पर्श हुआ, उसी पर संतोष कर लिया। तो उसने पवित्र मिट्टी (सईद) का इरादा कब किया? जब मिट्टी उसकी हथेलियों के संपर्क में थी, तब उसने इरादा नहीं किया। और जब उसने इरादा किया, उस समय मिट्टी नहीं थी। बस खाली हथेलियों पर इरादे का अमल पाया गया। तो ज़ाहिर यह है कि इस मसले में सच्चाई और दुरुस्ती सैय्यद इमाम अबू शुजा के साथ है। और उनकी सुधारों की ताक़त और कसरत भी मालूम है, चाहे हम यह कहें (१) कि दोनों प्रहार (ज़र्ब) तयम्मुम के स्तंभ (रुकन) हैं या नहीं। इसलिए कि हथेलियों और मिट्टी के बीच पाया जाने वाला स्पर्श का अमल तभी पवित्र करने वाला होता है जब वह उद्देश्य और नीयत के साथ हो।

हाँ, अगर (२) उसकी हथेलियों पर इतनी मिट्टी लगी हुई मौजूद हो जो तयम्मुम के लिए काफी है और अब नीयत कर ली, तो जायज़ है क्योंकि अब यह बात सच साबित हो गई कि उसने पाक होने के लिए पवित्र मिट्टी का इरादा किया। पिछले उप-नियमों में इसकी बहुत सी मिसालें आ चुकी हैं। ज़मीन पर हाथ मारने के बाद पाई जाने वाली नीयत से तयम्मुम जायज़ करार देने वाले कोल को अगर इस अर्थ में लिया जाए, तो दोनों कोलों (विचारों) के बीच तालमेल भी हो जाएगा (जायज़ होने की बात उस सूरत में है जब हाथों पर पर्याप्त मात्रा में पवित्र मिट्टी मौजूद हो, और नाजायज़ होने की बात उस सूरत में है जब ऐसा न हो। म. अ.)। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

पेज ३८४ ऑफ़ ७५६

کھڑا ہوا پھر کچھ دیر بعد تیمم کرنا چاہا تو کھڑے ہوتے وقت اس کی ہتھیلیوں اور سنگ مرمر کے درمیان جو مس پایا اسی پر اکتفا کر لیا تو اس نے طہارت کے لئے پاک صعید کا قصد کب کیا؟ جب صعید اس کی ہتھیلیوں سے متصل تھی اُس وقت قصد نہ کیا۔ اور جب قصد کیا اس وقت صعید نہیں۔ بس خالی ہتھیلیوں پر قصد کا عمل پایا گیا۔ تو ظاہر یہ ہے کہ اس مسئلہ میں صواب ودرستی سید امام ابو شجاع کے ساتھ ہے۔ اور ان کی تصحیحات کی قوت اور کثرت بھی معلوم ہے خواہ ہم یہ کہیں کہ دونوں ضربیں رکنِ تیمم ہیں یا نہیں ہیں۔ اس لئے کہ ہتھیلیوں اور مٹی کے درمیان پایا جانے والا عمل مس اسی وقت مطہر ہوتا ہے جب مقصد و نیت کے ساتھ ہو۔

ہاں اگر اس کی ہتھیلیوں سے اتنی مٹی لگی ہوئی موجود ہو جو تیمم کیلئے کافی ہے اور اب نیت کر لی تو جائز ہے کیونکہ اب یہ بات صادق آگئی کہ اس نے تطہیر کیلئے پاکیزہ صعید کا قصد کیا۔ گزشتہ جزئیات میں اس کی بہت سی نظیریں بھی آچکی ہیں۔ زمین پر ہاتھ مارنے کے بعد پائی جانیوالی نیت سے تیمم جائز قرار دینے والے قول کو اگر اس معنی پر محمول کر لیا جائے تو دونوں قولوں میں تطبیق بھی ہو جائے گی (جواز کا قول اس صورت میں ہے جب ہاتھوں پر بقدرِ کافی پاک صعید موجود ہو اور عدمِ جواز کا قول اس صورت میں ہے جب ایسا نہ ہو۔ م۔ ا) واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiyya Volume 3

Discussion 8: The matter of another consequence of disagreement is even clearer than this. This is because when the palms are touched for purification, by Allah's permission, the soil bestows the quality of purification to those palms, to the extent that the soil itself is removed from in between. If some remains, it is shaken off from the hands. And it is impossible for something impure to be a purifier. So, when one strikes their hands on the ground and then, before wiping (masah), a ritual impurity (hadath) occurs, their palms become devoid of purity. Then how can they, being non-pure themselves, remain purifiers? Now, regarding the point argued in support of Sayyid Imam Abu Shuja' that based on the view of the 'strike' (zarb) being a pillar (rukn), it necessarily follows that the impurity occurred during the performance of tayammum.

I say: This is necessary in any case because we have just explained that the palms became pure by the strike, and based on the correct view, they will not be wiped again. Thus, the impurity occurring after the strike is happening in a state where some part of tayammum has already been performed, even if the strike is not a pillar of tayammum (according to the view that the strike is not a pillar, the subsequent masah after the aforementioned strike is valid).

Eighth: The matter is clearer in the other fruit of disagreement, for (2) the soil, by the touching of the two palms for purification, grants them, by Allah Almighty's permission, the attribute of purifying, to the extent that it itself departs from between, even if there remains a residue that is removed by shaking the hands; and it is impossible for an impure thing to be a purifier. So if he strikes then experiences a ritual impurity before wiping, his two palms have become non-pure, so how can they remain purifiers?

And what they argued (3) for the Leading Master is that based on its being a pillar, the ritual impurity occurs during the tayammum.

I say: This is attained in any case because of what we have just presented that the two palms have been purified by the strike to the extent that he does not wipe them according to the correct view, so the ritual impurity occurring after the strike does not occur except when some of the tayammum has been performed, even if the strike were not a pillar. As for the hadith of "whoever fills his palms..."

Note: From the previous discussion, it became clear that the point regarding the strike sufficing for intention does not align with any view, and it is in no way correct to consider it a result of the difference between the strike being a pillar or not. Now, the honorable author has commented on the first fruit of disagreement mentioned after the eighth definition. That result was stated as follows: if after the strike, a ritual impurity occurs to the one performing tayammum, then according to the view of it being a pillar, this strike will not be sufficient for tayammum, but according to the other view, it will be sufficient. (12 M. Alif)

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

बहस 8: मतभेद के अन्य परिणाम का मामला इससे कहीं अधिक स्पष्ट है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब पवित्रता के लिए हथेलियों को छुआ जाता है, तो अल्लाह की अनुमति से मिट्टी उन हथेलियों को शुद्ध करने का गुण प्रदान कर देती है, यहाँ तक कि मिट्टी स्वयं बीच से निकल जाती है। यदि कुछ अवशेष रह जाता है, तो उसे हाथों को झाड़कर दूर कर दिया जाता है। और यह असंभव है कि कोई अपवित्र वस्तु शुद्ध करने वाली हो। अत; जब कोई व्यक्ति ज़मीन पर हाथ मारता है और फिर मसह (पोंछने) से पहले उसे कोई अशुद्धि (हदथ) हो जाती है, तो उसकी हथेलियाँ पवित्रता से रहित हो जाती हैं। फिर वे स्वयं अपवित्र होकर शुद्ध करने वाली कैसे बनी रह सकती हैं? अब रही बात उस तर्क की जो सैय्यद इमाम अबू शुजा के समर्थन में दिया गया था कि 'ज़रब' (चोट) को 'रुकन' (स्तंभ) मानने के विचार के अनुसार, यह अनिवार्य हो जाता है कि अशुद्धि तयम्मुम के दौरान हुई है।

मैं कहता हूँ: यह हर हाल में अनिवार्य है क्योंकि हम अभी बता चुके हैं कि ज़रब से हथेलियाँ पवित्र हो गईं, और सही मत के अनुसार, उन्हें दोबारा मसह नहीं किया जाएगा। इस प्रकार, ज़रब के बाद होने वाली अशुद्धि उसी अवस्था में हो रही है जब तयम्मुम का कुछ भाग पहले ही किया जा चुका है, भले ही ज़रब तयम्मुम का रुकन न हो (ज़रब के रुकन न होने के विचार के अनुसार, उक्त ज़रब के बाद अगला मसह सही है)।

आठवाँ: मतभेद के दूसरे फल में मामला अधिक स्पष्ट है, क्योंकि (2) पवित्रता के लिए मिट्टी का दो हथेलियों को छूना, अल्लाह सर्वशक्तिमान की अनुमति से उन्हें शुद्ध करने का गुण प्रदान करता है, यहाँ तक कि वह स्वयं बीच से निकल जाती है, भले ही उसका कुछ अवशेष रह जाए जिसे हाथों को झटकने से हटा दिया जाता है; और यह असंभव है कि कोई अपवित्र वस्तु शुद्ध करने वाली हो। अतः यदि वह हाथ मारता है और फिर मसह करने से पहले अशुद्ध हो जाता है, तो उसकी दोनों हथेलियाँ अपवित्र हो गई हैं, तो वे शुद्ध करने वाली कैसे बनी रह सकती हैं?

और जो उन्होंने (3) अग्रणी इमाम के लिए तर्क दिया है कि रुकन होने के आधार पर, तयम्मुम के बीच में अशुद्धि उत्पन्न होती है।

मैं कहता हूँ: यह हर हाल में प्राप्त होता है क्योंकि जैसा कि हमने अभी प्रस्तुत किया है कि ज़रब से दोनों हथेलियाँ शुद्ध हो गई हैं, यहाँ तक कि सही मत के अनुसार वह उन्हें पोंछता नहीं है, इसलिए

ज़रब के बाद होने वाली अशुद्धि तभी होती है जब तयम्मुम का कुछ भाग किया जा चुका हो, भले ही ज़रब रुकन न हो। जहाँ तक उस हदीस का प्रश्न है "जिसने अपनी हथेलियाँ भर लीं..."

नोट: पिछली बहस से यह स्पष्ट हो गया कि नीयत के लिए ज़रब की पर्याप्तता की बात किसी भी मत के साथ मेल नहीं खाती, और इसे ज़रब के रुकन होने या न होने के मतभेद का परिणाम मानना किसी भी तरह से सही नहीं है। अब, आदरणीय लेखक ने आठवीं परिभाषा के बाद उल्लिखित पहले मतभेद के फल पर टिप्पणी की है। वह परिणाम इस प्रकार बताया गया था: यदि ज़रब के बाद तयम्मुम करने वाले को अशुद्धि हो जाती है, तो रुकन होने के मत के अनुसार यह ज़रब तयम्मुम के लिए पर्याप्त नहीं होगी, लेकिन दूसरे मत के अनुसार यह पर्याप्त होगी। (12 मी. अलिफ़)

पृष्ठ 385/756

بحث ۸: عہ اختلاف کے ثمرہ دیگر کا معاملہ اس سے زیادہ روشن ہے۔ اس لئے کہ ہتھیلی کو طہارت کیلئے جب مس کیا جاتا ہے تو مٹی باذن الٰہی ان ہتھیلیوں کو تطہیر کی صفت بخش دی جاتی ہے۔ یہاں تک کہ خود مٹی درمیان سے نکل جاتی ہے۔ اگر کچھ باقی رہ بھی گئی تو ہاتھوں کو جھاڑ کر دُور کر دی جاتی ہے۔ اور یہ محال ہے کہ کوئی نجس مطہر ہو۔ تو جب اس نے زمین پر ہاتھ مارے پھر مسح سے پہلے اسے حدث عارض ہو گیا تو اب اس کی ہتھیلیاں تو بے طہارت ہو گئیں جھپڑ وہ خود غیر طاہر ہو کر مطہر کیسے رہ جائیں گی؟ اب وہ بات رہی جس سے سید امام ابو شجاع کی حمایت میں استدلال کیا گیا ہے کہ ان کے رکنیت ضرب کے قول پر یہ لازم آرہا ہے کہ حدث درمیان تیمم میں واقع ہوا۔

فاقول: یہ تو بہر حال لازم ہے کیونکہ ابھی ہم بتا چکے کہ ضرب سے ہتھیلیاں پاک ہو گئیں اب قول صحیح کی بنیاد پر، ان پر دوبارہ مسح نہ کیا جائے گا۔ تو ضرب کے بعد پایا جانے والا حدث اسی حالت میں واقع ہو رہا ہے جب کہ کچھ تیمم ہو چکا ہے اگر چہ ضرب رکن تیمم نہ ہو (عدم رکنیت ضرب کے قول پر حدث بھی ضرب مذکور سے اگلا مسح درست

الثامن: اظهر (۱) منه الامر فی ثمرة الخلاف الاخری فان (۲) التراب بامساس الکفین بہ للطهور یکسبهما باذن الله تعالی وصف التطهیر حتی انہ بنفسہ یخرج من البین وان کان لہ بقیة تزال بنفض الیدین ومستحیل ان یکون نجس مطهرا فاذا ضرب ثم احدث قبل المسح فقد صار کفاه غیر طاهرتین فکیف تبقیان مطهرتین۔

و ما استدلوا (۳) بہ للسید الامام انہ علی الرکنیة یقع الحدث فی خلال التیمم۔

فاقول: حاصل علی کل حال لما قدمنا آنفا من ان الکفین قد طہرتا بالضرب حتی لا یمسحہما علی الصحیح فالحدث الواقع بعد الضرب لا یقع الا وقد اتی ببعض التیمم وان لم تکن الضربۃ رکنا اما حدیث من ملأ کفیہ

عہ بحث سابق سے معلوم ہوا کہ ضرب کفایت نیت کی بات کسی قول پر بھی راست نہیں آتی اور اسے ضرب کی رکنیت اور عدم رکنیت میں اختلاف کا ثمرہ شمار کرانا کسی طرح درست نہیں۔ اب حضرت مصنف نے تعریف ہشتم کے بعد ذکر شدہ پہلے ثمرہ اختلاف پر کلام کیا ہے وہ ثمرہ یہ بیان کیا گیا تھا کہ بعد ضرب اگر تیمم کو حدث عارض ہوا تو قول رکنیت پر یہ ضرب تیمم کے لئے کافی نہ ہو گی اور قول دیگر پر کافی ہو گی ۱۲ م۔ الف)

صفحہ ۳۸۵ از ۷۵۶

...should not have washed them; otherwise, this ritual impurity (hadath) would occur during wudu. And if one took water at the very beginning and a ritual impurity occurred, then there is no hindrance in using that water for washing one's hands because both these hands were in a state of ritual impurity and without purity even at the time of scooping water. Now, the water has come into contact with them, and using it remains permissible because the water has not yet separated from the hand (and as long as water does not separate from the limb, it is not deemed 'must'amal' [used] or non-purifying). If a ritual impurity occurred after scooping, then this impurity does not add anything more to the previous state of the hands (previously, the water was in hands with hadath, and now too, the water is in hands with hadath). And it is the water that is the purifier; his two hands are not. Unlike the case of tayammum, because here, his two palms themselves are considered purifiers after the striking, not the dust, which is no longer needed; rather, even if it is on the hands, it would be shaken off.

[Arabic quote in the left column]: Otherwise, it would be a ritual impurity occurring during wudu, and in that case (1), there is no hindrance to using it to wash one's hands because they were in a state of ritual impurity at the time of scooping water, and the water met them. It remains permissible for use due to lack of separation. Thus, the ritual impurity after scooping adds nothing more to it, and the purifier is the water, not his hands, unlike what is here (2), for his palms were considered purifiers after the striking, not the dust which is no longer needed; rather, if it were there, it would be removed.

(Remainder of the previous page's footnote) [Arabic part]: As he indicated by saying, "it becomes as if a ritual impurity occurred during wudu after washing some limbs," and that is because the water separates from a hand in a state of hadath and becomes 'must'amal' (used), thus it does not remain purifying. So understand. [Urdu explanation]: Washing the face is not permissible. As he pointed out with his words that it became like someone who had a ritual impurity occur in the middle of wudu after washing some limbs. This is because this water (when he pours it from the hand onto the face at that very moment) will separate from the hand in state of hadath, so it will become 'must'amal' (used), then it will no longer be a purifier (so that he could wash his face with it). So understand. Understand this. The footnote I wrote on Radd al-Muhtar ends here. 12 [dated], May he be forgiven. (T)

1 Jadd al-Mumtar 'ala Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Al-Majma' al-Islami, Mubarakpur, 1/141. Page 387 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द (खंड) तीसरी

...न धोया हो वरना यह हदत (अशुद्धि) वज़ू के दौरान होगी। और शुरू ही में जो पानी लिया और हदत हो गई तो उस पानी को अपने हाथों के धोने के अमल में लगाने से कोई रुकावट नहीं क्योंकि ये दोनों हाथ चुल्लू (हाथ में पानी भरना) लेते समय भी मुहदिस (अशुद्ध) और बिना पाकी (पवित्रता) के थे। अब उनसे पानी का मेल हुआ और उसे इस्तेमाल करना जायज़ रहा क्योंकि अभी पानी हाथ से जुदा (अलग) नहीं हुआ (और पानी जब तक अंग से जुदा न हो वह मुस्तअमल और गैर-मुतह्हिर [पवित्र न करने वाला] करार नहीं पाता)। चुल्लू लेने के बाद हदत पाया गया तो यह हदत हाथों की स्थिति में पिछली स्थिति से ज़्यादा कोई इज़ाफ़ा (वृद्धि) तो नहीं कर रहा है (पहले भी पानी मुहदिस हाथों में ही था और अब भी पानी मुहदिस हाथों में ही है) और मुतह्हिर (पवित्र करने वाला) पानी ही है उसके दोनों हाथ मुतह्हिर नहीं हैं। बरख़िलाफ़ (विपरीत) तयम्मुम वाली सूरत के, क्योंकि यहाँ तो उसकी दोनों हथेलियाँ ही प्रहार (मिट्टी पर मारने) के बाद मुतह्हिर मानी गई हैं, न कि वह मिट्टी जिसकी अब कोई ज़रूरत न रही, बल्कि अगर हाथ पर लगी भी हो तो वह झाड़ दी जाएगी।

[बाएं कॉलम का अरबी संदर्भ]: अन्यथा यह वज़ू के दौरान होने वाली एक हदत होगी और उस स्थिति में (1), इसे अपने हाथ धोने में खर्च करने में कोई बाधा नहीं है क्योंकि चुल्लू लेते समय वे दोनों मुहदिस थे और पानी उनसे मिला और अलगाव की कमी के कारण उपयोग के लिए जायज़ रहा। इसलिए चुल्लू लेने के बाद की हदत उस पर कुछ और नहीं बढ़ाती है, और मुतह्हिर पानी है, उसके हाथ नहीं, इसके विपरीत जो यहाँ है (2), क्योंकि उसकी हथेलियाँ प्रहार के बाद मुतह्हिर मानी गईं, न कि वह मिट्टी जिसकी कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि यदि वह होती तो उसे हटा दिया जाता।

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग) [अरबी भाग]: जैसा कि उन्होंने अपने शब्दों से इशारा फ़रमाया: "यह वैसा ही हो गया जैसे वज़ू के दौरान कुछ अंगों को धोने के बाद हदत हुई हो," और ऐसा इसलिए है क्योंकि पानी मुहदिस हाथ से अलग हो जाता है तो वह मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ) हो जाता है, फिर वह मुतह्हिर (पवित्र करने वाला) नहीं रहता, इसलिए समझें। [उर्दू व्याख्या]: चेहरा धोना जायज़ नहीं। जैसा कि इसकी तरफ अपने शब्दों से इशारा फ़रमाया है कि वह ऐसा हुआ जैसे कुछ अंग धोने के बाद दरम्यान-ए-वज़ू उसे हदत हुआ। यह इसलिए कि यह पानी (जब हाथ से चेहरे पर डालेगा उसी वक्त वह) मुहदिस हाथ से जुदा होगा तो मुस्तअमल हो जाएगा, फिर मुतह्हिर न रह जाएगा (कि उससे चेहरा धो सके)। अतः समझें। इसे समझें। रद-अल-मुहतार पर मेरा लिखा हुआ हाशिया खत्म हुआ। 12 मिन्हु गुफ़िरा लहू (त)।

1 जद अल-मुम्तार अली रद-अल-मुहतार, बाब-अत-तयम्मुम, अल-मजमा अल-इस्लामी, मुबारकपुर, 1/141। पृष्ठ 387 / 756

نہ دھویا ہو ورنہ یہ حدث درمیانِ وضو میں ہوگا۔ اور شروع ہی میں جو پانی لیا اور حدث ہوگیا تو اس پانی کو اپنے ہاتھوں کے دھونے کے عمل میں صرف کرنے سے کوئی مانع نہیں کیونکہ یہ دونوں ہاتھ تو چُلو لینے کے وقت بھی محدث و بے طہارت تھے اب ان سے پانی کا اتصال ہوا اور اسے استعمال کرنا جائز رہا کیوں کہ ابھی پانی ہاتھ سے جُدا نہ ہوا (اور پانی جب تک عضو سے جُدا نہ ہو وہ مستعمل اور غیر مطہر قرار نہیں پاتا) چُلو لینے کے بعد حدث پایا گیا تو یہ حدث ہاتھوں کی حالت میں سابقہ حالت سے زیادہ کوئی اضافہ تو نہیں کر رہا ہے (پہلے بھی پانی محدث ہاتھوں میں ہی تھا اور اب بھی محدث پانی ہاتھوں میں ہی ہے) اور مطہر پانی ہی ہے اس کے دونوں ہاتھ مطہر نہیں ہیں۔ بخلافِ تیمم والی صورت کے، کیوں کہ یہاں تو اس کی دونوں ہتھیلیاں ہی ضرب کے بعد مطہر مانی گئی ہیں، نہ کہ وہ مٹی جس کی اب کوئی ضرورت نہ رہی بلا کہ اگر ہاتھ پر لگی بھی ہو تو وہ جھاڑ دی جائے گی۔

[عربی عبارت بائیں کالم میں]: والالکان حدثاً فی خلال الوضوء وحینئذ(۱) لامانع من ان یصرفه فی غسل یدیه لانهما کانتا محدثتین عند الغرف وقد لاقامهما الماء وبقی سائغ الاستعمال لعدم الانفصال فالحدث بعد الغرف لایزیده شیئا فوق ذلک والمطهر هو الماء لایداه بخلاف ماهنا(۲) فان کفیه هما اعتبرتا مطهرتین بعد الضراب لا التراب الذی لاحاجة الیه بل لوکان ازیل۔

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) [عربی حصہ]: کمااشار الیه بقوله صار کما لو احدث فی الوضوء بعد غسل بعض الاعضاء وذلك لان الماء ینفصل عن ید محدثة فیصیر مستعملاً فلایبقی طهورا فافهم۔ [اردو وضاحت]: چہرہ دھونا جائز نہیں۔ جیسا کہ اس کی طرف اپنے الفاظ سے اشارہ فرمایا ہے کہ وہ ایسا ہوا جیسے بعض اعضا دھونے کے بعد درمیان وضو اسے حدث ہوا یہ اس لئے کہ یہ پانی

(جب ہاتھ سے چہرے پر ڈالے گا اسی وقت وہ) محدث ہاتھ سے جدا ہوگا تو مستعمل ہو جائے گا پھر مطہر نہ رہ جائے گا (کہ اس سے چہرہ دھو سکے) فافہم۔ اسے سمجھو۔ ردالمحتار پر میرالکھا ہوا حاشیہ ختم ہوا ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

---

1 جد الممتار علی ردالمختار باب التیمم المجمع الاسلامی مبارکپور ۱ / ۴۱ Page 387 of 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

Arabic Text: Then I say: It has not become clear (1) to this weak servant what the difference made here is between the occurrence of a state of ritual impurity (hadath) after scooping water but before the act of purification, and the occurrence of hadath during the process of purification. Except that this nullifies what preceded it, while the other has nothing preceding it to nullify. There is no dispute in that; the dispute is only regarding the permissibility of its use. To the best of my knowledge, whether some part of the purification had already occurred or not has no relevance here. For (2) if someone washes their face, then fills their palms to wash their hands, and then a hadath occurs, the purification of their face is void. As for their hands, the hadath was already present in them until now, and it did not increase by the addition of this new hadath. The water has not yet become 'used water' (musta'mal) because it has not separated from the hand. Why then is it not permissible to wash the forearms with it? And what is it now but like someone who has scooped water for the first time? Because it has returned to how it was. The water meets a hand in a state of impurity in both cases. Therefore, it should be permissible where it is permissible there, and not where it is not. This needs to be refined and pondered upon. For I am surprised at how this was narrated...

Urdu Text Translation: Then I say: What difference has been made here between the occurrence of hadath after taking a handful of water but before the act of purification, and the occurrence of hadath during the act of purification? This has not become clear to this weak servant; after all, what is the difference between the two? Except that this hadath (which occurred after some wudu was done) nullifies the previous wudu, and that (which occurred right at the beginning after taking a handful) had no act of wudu performed before it to nullify. And the discussion is not about that; the discussion is about the permissibility of the use of that water, and as far as my knowledge goes, it has no relevance in this matter whether some wudu has already been done or nothing has been done yet. Because the person who washed their face, then took water in their palms to wash their hands, and then hadath occurred, the purity of their face was terminated. As for the hands, hadath was already present in both of them until now; it did not increase more than that due to this new hadath, nor did the water become 'used' because it has not yet separated from the hand. Then why is it not permissible to wash the forearms with it? At that time, it is just like the person who took a handful of water for the first time. Therefore, it became just as it was, so the connection of water with the ritually

impure palm is found in both situations. Thus, if its use is permissible there, it should be permissible here as well; and if it is not permissible there, it should not be permissible here either. There is a need for clarification of this distinction and reflection upon it. Because I am surprised that this [narrated by] Imam Asbijabi, and...

फतावा रज़विया, जिल्द 3

अरबी पाठ: फिर मैं कहता हूँ: इस कमज़ोर बंदे पर यह स्पष्ट नहीं हुआ (1) कि यहाँ चुल्लू लेने के बाद पवित्रता के कार्य से पहले 'हदस' (अशुद्धि) होने और पवित्रता के कार्य के दौरान 'हदस' होने के बीच क्या अंतर किया गया है। सिवाय इसके कि यह पिछले को अमान्य कर देता है, जबकि दूसरे में अमान्य करने के लिए पहले कुछ था ही नहीं। इसमें कोई विवाद नहीं है; विवाद केवल इसके उपयोग की अनुमति के बारे में है। मेरी जानकारी के अनुसार, यहाँ इसकी कोई भूमिका नहीं है कि पवित्रता का कुछ हिस्सा पहले हो चुका था या नहीं। क्योंकि (2) यदि कोई अपना चेहरा धोता है, फिर अपने हाथों को धोने के लिए अपनी हथेलियाँ भरता है, और फिर 'हदस' होता है, तो उसके चेहरे की पवित्रता समाप्त हो जाती है। जहाँ तक उनके हाथों का प्रश्न है, उनमें अब तक 'हदस' पहले से ही मौजूद था, और इस नए 'हदस' के जुड़ने से वह बढ़ा नहीं। पानी अभी तक 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) नहीं हुआ है क्योंकि वह हाथ से अलग नहीं हुआ है। फिर इससे कलाइयों को धोना जायज़ क्यों नहीं है? और यह अब वैसा ही तो है जैसे किसी ने पहली बार चुल्लू लिया हो? क्योंकि वह अपनी पूर्व स्थिति में लौट आया है। पानी दोनों ही स्थितियों में 'मुहद्दस' (अशुद्ध) हथेली से मिलता है। इसलिए, जहाँ वहां जायज़ है वहाँ यहाँ भी जायज़ होना चाहिए, और जहाँ नहीं वहाँ नहीं। इसे परिष्कृत करने और इस पर विचार करने की आवश्यकता है। क्योंकि मुझे आश्चर्य है कि यह कैसे वर्णित है...

उर्दू पाठ अनुवाद: फिर मैं कहता हूँ: चुल्लू लेने के बाद पवित्रता के कार्य से पहले 'हदस' होने और पवित्रता के कार्य के दौरान 'हदस' होने में यहाँ जो अंतर किया गया है, वह इस कमज़ोर बंदे पर स्पष्ट नहीं हुआ; आखिर दोनों में क्या अंतर है? सिवाय इसके कि यह 'हदस' (जो कुछ वज़ू हो जाने के बाद हुआ) पिछले वज़ू को बाटल (अमान्य) कर देता है और वह (जो चुल्लू लेने के बाद शुरू में ही हुआ) उससे पहले वज़ू का कोई कार्य अस्तित्व में आया ही नहीं कि उसे बातिल करे। और चर्चा इसमें नहीं है, चर्चा तो उस पानी के इस्तेमाल के जवाज़ (अनुमति) में है और इस मसले में मेरे इल्म (ज्ञान) की हद तक इसका कोई दखल नहीं है कि कुछ वज़ू पहले हो चुका है या अभी कुछ भी नहीं हुआ है। इसलिए कि जिसने चेहरा धो लिया फिर हाथ धोने के लिए चुल्लू में पानी लिया और फिर उसे 'हदस' हुआ, तो उसके चेहरे की तहारत (पवित्रता) तो खत्म हो गई। रहे हाथ, तो उन दोनों में तो अब तक 'हदस' मौजूद ही था, वह इस जदीद (नए) 'हदस' के मिलने से ज़्यादा न हुआ, न ही पानी मुस्तअमल हुआ क्योंकि अभी हाथ से जुदा नहीं हुआ। फिर उससे कलाइयाँ धो लेना क्यों जायज़ नहीं है? वह उस वक्त उसी की तरह है जिसने शुरू-शुरू में चुल्लू लिया। इसलिए वह जैसा था वैसा ही हो गया है, तो पानी

का इत्तसाल (जुड़ाव) दोनों ही सूरतों में मुहद्दस हथेली से पाया जा रहा है। तो अगर वहाँ उसका इस्तेमाल जायज़ है तो यहाँ भी जायज़ होना चाहिए; और अगर वहाँ जायज़ नहीं तो यहाँ भी जायज़ नहीं होना चाहिए। इस तफ़रीक़ (अंतर) की वज़ाहत और इसमें ताम्मुल (विचार) की ज़रूरत है। क्योंकि मुझे हैरत है कि यह इमाम अस्बीजाबी, और...

पेज 388/756

فتاویٰ رضویہ، جلد سوم

عربی عبارت: ثم اقول: لم یظھر (۱) للعبد الضعیف ما فرق بہ ھھنا بین الحدث بعد الاغتراف قبل التطھر والحدث فی خلالہ غیر ان ھذا یبطل ماسبق وذلک لاسابق لہ فیبطلہ ولا کلام فیہ انما کلام فی جواز استعمالہ ولامدخل فیہ لسبق بعض التطھر وعدمہ فیما اعلم فان (۲) من غسل وجھہ ثم ملأ کفیہ لغسل یدیہ فحدث بطلت طھارۃ وجھہ اما یداہ فقد کان الحدث فیھما الی الآن ولم یزد بانضیاف ھذا الجدید ولم یصر الماء مستعملا بعد لعدم الانفصال فلم لا یجوز ان یغسل بہ ذراعیہ وما ھو الآن الا کمن اغترف اول وھلۃ لانہ قد عاد کما کان فالماء یلاقی کفاً محدثۃ فی الوجھین فینبغی ان یجوز حیث یجوز ثمہ ولا حیث لا فلیحرر ولیتامل۔ فانی متعجب کیف توارده۔

اردو عبارت: ثم اقول: چلو لینے کے بعد عمل طہارت سے پہلے حدث ہونے اور عمل طہارت کے درمیان حدث ہونے میں یہاں جو فرق کیا گیا ہے وہ بندہ ضعیف پر واضح نہ ہوا دونوں میں آخر کیا فرق ہے؟ سوائے اس کے یہ حدث (جو کچھ وضو ہو جانے کے بعد عارض ہوا) ما سبق وضو کو باطل کر دیتا ہے اور وہ (جو چلو لینے کے بعد شروع ہی میں عارض ہوا) اس سے پہلے کچھ عمل وضو وجود میں آیا ہی نہیں کہ اسے باطل کرے۔ اور کلام اس میں نہیں، کلام تو اُس پانی کے استعمال کے جواز میں ہے اور اس مسئلہ میں میرے علم کی حد تک اس کا کوئی دخل نہیں کہ کچھ وضو پہلے ہو چکا ہے یا ابھی کچھ بھی نہیں ہوا ہے۔ اس لئے کہ جس نے چہرہ دھو لیا پھر ہاتھ دھونے کیلئے چلو میں پانی لیا پھر اسے حدث ہوا تو اس کے چہرے کی طہارت تو ختم ہوگئی، رہ گئے ہاتھ تو ان دونوں میں تو اب تک حدث موجود ہی تھا، وہ اس جدید حدث کے ملنے سے زیادہ نہ ہوا، نہ ہی پانی مستعمل ہوا کیونکہ ابھی ہاتھ سے جدا نہیں ہوا پھر اس سے کلائیاں دھولینا کیوں جائز نہیں؟ وہ اس وقت اُسی کی طرح ہے جس نے شروع شروع چلو لیا، اس لئے وہ جیسا تھا ویسا

ہی ہو گیا ہے تو پانی کا اتصال دونوں ہی صورتوں میں محدث ہتھیلی سے پایا جارہا ہے۔ تو اگر وہاں اس کا استعمال جائز ہے تو یہاں بھی جائز ہونا چاہئے اور اگر وہاں جائز نہیں تو یہاں بھی جائز نہیں ہونا چاہئے۔ اس تفریق کی وضاحت اور اس میں تامل کی ضرورت ہے۔ کیونکہ مجھے حیرت ہے کہ یہ امام اسبیجابی، اور

Fatawa Rizvia Volume 3

[Top Left Arabic Column] These great scholars like Al-Subeijabi, Al-Inayah, Al-Fath, Al-Jawharah, Jawahir al-Fatawa, Al-Hilyah, Al-Ghunyah, Al-Bahr, Al-Shurunbulali, and others, all remained silent on this matter. Perhaps there is a secret in it that my understanding has not reached. I have already explained in some fatwas in the chapter of Wudu that this is based on one of two weak opinions in the madhhab. So remember and look closely, and Allah Almighty knows best. However, here there is no way to allow it because if the strike occurs upon impurity (hadath), it removes it and gives the palms the quality of purification. So when impurity occurs on them later, it nullifies the purification.

[Top Right Urdu Column] How did all these prominent authors like those of Inayah, Fath al-Qadir, Jawharah, Jawahir al-Fatawa, Hilyah, Ghunyah, Al-Bahr al-Ra'iq, and Shurunbulali etc., converge on this? And why did all these masters remain silent on it? Perhaps there is some secret in this to which my understanding could not reach. I have already stated in a fatwa of mine in the chapter of Wudu that its foundation is on one of the two weak narrations of our school; keep it in mind and deliberate. (Margin note: And Allah Almighty knows best). But here, there is no possibility of permissibility because after impurity (hadath), when the strike occurred, it removed the impurity and bestowed the attribute of purification upon the palms. Then when impurity occurred upon it again, it invalidated the purification.

[Bottom Urdu Section] Note: The author (may his secret be sanctified) says in this fatwa: I say, and with Allah is success. The issue they cited in support—that "if someone took Wudu water in their palms, then impurity occurred, then they used it in some part of Wudu, it is permissible"—could be based on one of two unaccepted narrations. One is Imam Abu Yusuf's view that for water to become 'used' (musta'mal), it is a condition to pour it on the person in a state of impurity and to have intention. In the mentioned case, both are absent. The second narration, which the scholars of Balkh do not follow, is that it is a condition for the water to settle on the body, clothing, ground, or something else after separation. It is known that when one uses the water from the palm on an organ, although separation from the palm is achieved, that water has not yet settled, so it would not become 'used'. However, according to the correct and relied-upon view, merely touching the body of one in a state of impurity and separating from it is sufficient to rule it as 'used', even if pouring, intention, or settling after separation are not found. So there is no doubt that by separating from the palm, the water will become 'used'; then its use in Wudu

for any organ will not be correct. This is what I understood, and it is very clear, and with this, the refutation of that statement is complete. And Allah Almighty knows best. (Fatawa Rizvia Vol 1, Chapter of Wudu, Fatwa No. 5) 12 Minhu Muhammad Ahmad Misbahi.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[शीर्ष बायाँ अरबी कॉलम] ये महान विद्वान जैसे अल-सुबैजाबी, अल-इनायाह, अल-फ़तह, अल-जौहराह, जवाहर अल-फ़तावा, अल-हिलयाह, अल-गुनियाह, अल-बह्र, अल-शुरुनबुलाली और अन्य, सभी इस पर चुप रहे। शायद इसमें कोई ऐसा रहस्य हो जहाँ तक मेरी समझ न पहुँच सकी हो। मैं वज़ू के अध्याय में कुछ फ़तवों में पहले ही स्पष्ट कर चुका हूँ कि यह हमारे पंथ (मज़हब) के दो कमज़ोर मतों में से एक पर आधारित है। इसलिए याद रखें और ध्यान से देखें, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। जहाँ तक यहाँ की बात है, तो अनुमति का कोई रास्ता नहीं है क्योंकि जब प्रहार (ज़रब) अशुद्धि (हदस) पर होता है, तो वह उसे दूर कर देता है और हथेलियों को शुद्धिकरण का गुण प्रदान कर देता है। फिर जब उन पर अशुद्धि दोबारा आती है, तो वह शुद्धता को समाप्त कर देती है।

[शीर्ष दायाँ उर्दू कॉलम] इनायाह, फ़तह अल-क़दीर, जौहराह, जवाहर अल-फ़तावा, हिलयाह, गुनियाह, अल-बह्र अल-राइक के लेखकों और शुरुनबुलाली आदि जैसे सभी महानुभावों का इस पर एकमत कैसे हो गया? और इन सभी महापुरुषों ने इस पर चुप्पी क्यों साधी? शायद इसमें कोई ऐसा राज़ हो जहाँ तक मेरी समझ की पहुँच न हो सकी। मैं तो वज़ू के अध्याय में अपने एक फ़तवे में यह बयान कर चुका हूँ कि इसकी बुनियाद हमारे मज़हब की दो ज़ईफ़ (कमज़ोर) रिवायतों में से किसी एक पर है, इसे ज़हन में रखें और गौर करें (हाशिया: और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)। लेकिन यहाँ तो जवाज़ (अनुमति) की कोई सूरत नहीं है क्योंकि हदस के बाद जब ज़रब (प्रहार) वाकई हुआ, तो उसने हदस उठा दिया और हथेलियों को ततहीर (शुद्धिकरण) की सिफ़त बख्श दी, फिर जब उस पर हदस तारी हुआ, तो उसने तहारत को समाप्त कर दिया।

[निचला उर्दू हिस्सा] हाशिया: मुसन्निफ़ (क़ुद्दिस सिर्रहु) इस फ़तवे में फ़रमाते हैं: मैं कहता हूँ और अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है। उन्होंने इस्तशहाद (प्रमाण) में जो यह मसला बयान किया कि "जिसने हथेलियों में वज़ू का पानी लिया फिर उसे हदस हुआ फिर उसने उसे बाज़ वज़ू में इस्तेमाल किया तो यह जायज़ है।" यह दो ग़ैर-माख़ूज़ (अस्वीकृत) रिवायतों में से किसी एक की बुनियाद पर चल सकता है। एक इमाम अबू यूसुफ़ का क़ौल है कि मुस्तअमल (उपयोग किया हुआ) होने के लिए मुहदिस (अशुद्ध व्यक्ति) का पानी बहाना और नियत करना शर्त है। और मज़कूर (उल्लिखित) सूरत में दोनों नदारद हैं। दूसरी रिवायत वह जिस पर मशाईख़-ए-बल्ख़ नहीं हैं कि जुदा होने के बाद बदन या कपड़े या ज़मीन या किसी और चीज़ पर पानी का ठहर जाना शर्त है। और मालूम है कि जब

हथेली का पानी वह किसी उज़्व (अंग) में इस्तेमाल करे तो हथेली से जुदा होना अगरचे पा लिया गया मगर वह पानी अभी ठहरा नहीं इसलिए मुस्तअमल न होगा। लेकिन सहीह मोअतमिद (विश्वसनीय) क़ौल की बुनियाद पर यह है कि हदस वाले बदन से पानी का महज़ मस (स्पर्श) हो जाना और उससे जुदा हो जाना मुस्तअमल होने का हुक्म करने के लिए काफ़ी है, अगरचे वहाँ न हदस वाले से बहाना पाया गया हो, न नियत हो, न जुदा होने के बाद इस्तिक़रार (ठहराव) हुआ हो। तो इसमें कोई शक नहीं कि उसकी हथेली से पानी जुदा होने से मुस्तअमल हो जाएगा, फिर किसी उज़्व के वज़ू में उसका इस्तेमाल सहीह न होगा। यही मुझे समझ में आया और यह बहुत वाज़ेह (स्पष्ट) है और इसी से उस क़ौल का रद्द (खंडन) मुकम्मल हो जाता है, वल्लाहु तआला आलम (फ़तावा रज़विया जिल्द 1, बाब अल-वुज़ू, फ़तवा नंबर 5)। 12 मिन्हु मुहम्मद अहमद मिस्बाही।

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

[اوپر والا عربی کالم] هؤلاء الجلة كالسبيجابي والعناية والفتح والجوهره وجواهر الفتاوى والحلية والغنية والبحر والشرنبلالي وغيرهم وسكتوا جميعاً عليه فلعل فيه سرا لم اصل اليه وقد بينت في بعض فتاوى في باب الوضوء انه يبتنى على احد قيلين ضعيفين في المذهب فتذكر وتبصر والله تعالى اعلم اماهنا فلاسبيل الى الجواز لان الضربة اذا اتت على الحدث رفعته وكست الكفين صفة التطهير فاذا طرء الحدث عليها ابطل الطهارة

[اوپر والا اردو کالم] عنایہ، فتح القدیر، جوہرہ، جواہر الفتاویٰ، حلیہ، غنیہ، البحر الرائق کے مصنفین اور شرنبلالی وغیرہ ہم جیسے اجلہ سب کا اس پر توارد کیسے ہو گیا؟ اور سبھی حضرات نے کیسے اس پر سکوت فرمایا؟ شاید اس میں کوئی ایسی رمز ہو جہاں تک میرے فہم کی رسائی نہ ہو سکی۔ میں تو باب وضو میں اپنے ایک فتوے کے اندر یہ بیان کر چکا ہوں کہ اس کی بنیاد ہمارے مذہب کی دو ضعیف روایتوں میں سے کسی ایک پر ہے اسے ذہن میں لائیں اور غور کریں عہ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مگر یہاں تو کوئی صورت جواز نہیں اس لئے کہ حدث کے بعد جب ضرب واقع ہوئی تو اس نے حدث اٹھا دیا اور ہتھیلیوں کو تطہیر کی صفت بخش دی پھر جب اس پر حدث طاری ہوا، اس نے طہارت باطل کر دی۔

[نیچے والا اردو حصہ] عہ مصنف قدس سرہ اس فتوے میں فرماتے ہیں: اقول وباللہ التوفیق۔ انہوں نے استشہاد میں جو یہ مسئلہ بیان کیا کہ "جس نے ہتھیلیوں میں آب وضو لیا پھر اسے حدث ہوا پھر اسے بعض وضو میں استعمال کیا تو یہ جائز ہے۔" یہ دو غیر ماخوذ روایتوں میں سے کسی ایک کی بنیاد پر چل سکتا ہے۔ ایک امام ابویوسف کا قول ہے کہ مستعمل ہونے کیلئے محدث کا پانی بہانا اور نیت کرنا شرط ہے۔ اور مذکورہ صورت میں دونوں مفقود ہیں۔ دوسری روایت وہ جس پر مشائخ

بلخ نہیں کہ جدا ہونے کے بعد بدن یا کپڑے یا زمین یا کسی اور چیز پر پانی کا ٹھہر جانا شرط ہے۔ اور معلوم ہے کہ جب ہتھیلی کا پانی وہ کسی عضو میں استعمال کرے تو ہتھیلی سے جدا ہونا گرچہ پالیا گیا مگر وہ پانی ابھی ٹھہرا نہیں اس لئے مستعمل نہ ہوگا___ لیکن صحیح معتمد قول کی بنیاد پر یہ ہے کہ حدث والے بدن سے پانی کا محض مس ہو جانا اور اس سے جدا ہو جانا مستعمل ہونے کا حکم کرنے کیلئے کافی ہے اگر چہ وہاں نہ حدث والے سے بہانا پایا گیا ہو نہ نیت ہو نہ جدا ہونے کے بعد استقرار ہوا ہو۔ تو اس میں کوئی شک نہیں کہ اس کی ہتھیلی سے پانی جدا ہونے سے مستعمل ہو جائے گا پھر کسی عضو کے وضو میں اس کا استعمال صحیح نہ ہوگا۔ یہی مجھے سمجھ میں آیا اور یہ بہت واضح ہے اور اسی سے اس قول کا رد مکمل ہو جاتا ہے، واللہ تعالیٰ اعلم (فتاویٰ رضویہ جلدا باب الوضوء فتویٰ نمبر ۵) ۱۲منہ محمد احمد مصباحی

Volume Three Fatawa Razviya

[Arabic Passage]: ...so it nullified the purification, and Allah Almighty knows best. Then I say: If the matter were as such, it would follow that whoever's hands touched a wall or the ground, or who took a pitcher or anything made of clay in their hands, and years passed, and they now needed Tayammum (dry ablution), they would not need to intend for the earth or touch it at all for either of their limbs. Instead, they would just intend and wipe their face, for example, with their palms, because touching the earth once in their life would have been sufficient for them. Simultaneous intention is not required, and the occurrence of ritual impurity (hadath) after touching but before wiping does not invalidate it, even if it happens a thousand times. I do not know of anyone who accepts this and considers it a valid Shari'i Tayammum. In summary, the correct view in the words of both branches of jurists is with Sayyid al-Imam, if Allah Wills, and there is no basis for them on the premise that the strike is a pillar (rukn) of Tayammum. So, let them ignore the consequence (fruit) of disagreement in anything as far as I know, and my Lord knows best.

[Urdu Passage]: ...removed it, so the attribute of purification was also terminated, and Allah Almighty knows best. Then I say: If the matter were such (that Tayammum remains valid from a strike even if ritual impurity occurs after it), then it would follow that anyone whose hands touched a wall or ground, or picked up a pitcher or any clay object, and years passed after that act, and now they needed Tayammum, they would not need to intend for the earth (the genus of ground) nor would there be any need to touch it for either limb. Rather, they would simply make an intention now and wipe their palms over their face; this would suffice because these palms had touched the genus of ground at some point in their life. Intention being concurrent with the act is not a condition, nor is the occurrence of ritual impurity after touching but before wiping contrary to it, even if it happens a thousand times. I believe no one can accept this nor declare it a valid Shari'i Tayammum. The gist is that in both issues (if the intention for Tayammum is made after the strike, Tayammum will not be valid from that strike; if ritual impurity occurs after the strike, Tayammum will not be valid from it either), the truth and correctness lie with Sayyid Imam Abu Shuja, and the foundation of these issues is not that the strike is a pillar of Tayammum. So, to the best of my knowledge, they have no relation to being a result of disagreement. And my Lord knows best.

Page 390 of 756

जिल्द तीसरी फ़तावा रज़विया

[अरबी अंश]: ...अतः इसने पवित्रता को निष्प्रभावी कर दिया, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। फिर मैं कहता हूँ: यदि मामला ऐसा होता, तो यह अनिवार्य होता कि जिसके हाथ किसी दीवार या ज़मीन से छुए हों, या जिसने अपने हाथों से कोई घड़ा या मिट्टी का कोई बर्तन पकड़ा हो, और उस क्रिया पर वर्षों बीत गए हों, और अब उसे तयम्मुम की आवश्यकता हो, तो उसे अपने दोनों अंगों में से किसी के लिए भी मिट्टी का इरादा करने या उसे छूने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। इसके बजाय, वह केवल नियत करेगा और अपने चेहरे का मसह अपनी हथेलियों से कर लेगा, क्योंकि उसके जीवन के किसी भी समय में ज़मीन को छूना उसके लिए पर्याप्त हो चुका होता। कार्य के साथ नियत का होना शर्त नहीं माना जाता, और छूने के बाद तथा मसह से पहले अशुद्धि (हदस) का होना भी इसके विरुद्ध नहीं माना जाता, चाहे वह हज़ार बार ही क्यों न हुआ हो। मैं नहीं जानता कि कोई भी इसे स्वीकार करता हो और इसे एक वैध शरी'ई तयम्मुम मानता हो। संक्षेप में, दोनों शाखाओं के कथनों में सही विचार सैय्यद अल-इमाम के साथ है, यदि अल्लाह ने चाहा, और प्रहार (ज़रब) के तयम्मुम का स्तंभ (रुकन) होने पर उनका कोई आधार नहीं है। अत; जहाँ तक मैं जानता हूँ, उन्हें किसी भी चीज़ में मतभेद के परिणाम (समरा) को नज़रअंदाज़ करने दें, और मेरा रब बेहतर जानता है।

[उर्दू अंश]: ...मिटा दिया, तो पवित्रता का गुण भी समाप्त हो गया, और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। फिर मैं कहता हूँ: यदि मामला ऐसा हो (कि प्रहार के बाद अशुद्धि हो फिर भी उस प्रहार से तयम्मुम जायज़ हो), तो यह अनिवार्य होगा कि जिसके हाथ किसी दीवार या ज़मीन से छुए हों या अपने हाथों से कोई घड़ा या मिट्टी का कोई बर्तन पकड़ा हो, फिर उस क्रिया पर साल-दर-साल बीत गए हों और अब उसे तयम्मुम की ज़रूरत हुई, तो दोनों अंगों में से किसी के लिए भी न मिट्टी (ज़मीन की श्रेणी) के इरादे की ज़रूरत हो न छूने की कोई ज़रूरत। बल्कि अब नियत कर ले और हथेलियाँ चेहरे पर फेर ले, यही काफ़ी हो जाएगा क्योंकि ये हथेलियाँ उम्र के किसी हिस्से में ज़मीन की श्रेणी से छू चुकी थीं। कार्य के साथ नियत होना शर्त ही नहीं, न ही मसह से पहले अशुद्धि होना इसके विरुद्ध है, चाहे हज़ार बार अशुद्धि हुई हो। मैं समझता हूँ कि कोई भी न इसे मान सकता है न ही इसे सही शरी'ई तयम्मुम क़रार दे सकता है। निष्कर्ष यह कि दोनों मसलों में (प्रहार के बाद तयम्मुम की नियत हो तो उस प्रहार से तयम्मुम नहीं हो पाएगा, प्रहार के बाद अशुद्धि हो जाए तो उससे भी तयम्मुम नहीं होगा) सच्चाई और सही बात सैय्यद इमाम अबू शुजा के साथ है और इन मसलों की बुनियाद इस पर

नहीं कि प्रहार तयम्मुम का स्तंभ है। तो मेरे ज्ञान के अनुसार, उनका मतभेद का परिणाम होने से कोई संबंध नहीं है। और मेरा रब बेहतर जानने वाला है।

पृष्ठ 390/756

فأبطل التطهير و الله تعالى اعلم۔ ثم اقول: لوكان الامر على هذا لزم ان من كان مست يداه جدارا او ارضا او اخذ بيديه جرة اوشيئا من خزف ومضت عليه سنون و احتاج الأن الى التيمم لا يحتاج لاحد عضويه الى قصد صعيد ولامسه اصلا بل ينوى و يمسح وجهه مثلا بكفيه لانه قد كان كفاه مسّا الصعيد في وقت من عمره ولا يشترط قرآن النية ولا ينافيه الحدث بعده قبل المسح و ان كان الف مرة لا اعلم احدا يقبل هذا ويجعله تيمما صحيحا شرعيا۔ وبالجملة فالصواب فى كلام الفرعين مع السيد الامام ان شاء الله تعالى و لا (ا) بناء لهما على ركنية الضرب فليسامن ثمرة الخلاف في شيئ فيما اعلم و ربى اعلم۔

زائل کر دی تو تطہیر کی صفت بھی ختم کر دی واللہ تعالیٰ اعلم۔ ثم اقول: اگر معاملہ ایسا ہو (کہ ضرب کے بعد حدث ہوا پھر بھی اس ضرب سے تیمم جائز ہو) تو لازم آئے گا کہ جس کے ہاتھ کسی دیوار یا زمین سے مس ہوئے یا اپنے ہاتھوں سے کوئی گھڑا یا ٹھیکری کی کوئی بھی چیز پکڑلی پھر اس فعل پر سالہا سال گزر گئے اور اب اسے تیمم کی حاجت ہوئی تو دونوں عضووں میں سے کسی کیلئے بھی نہ صعید (جنس زمین) کے قصد کرنے کی ضرورت ہو نہ مس کرنے کی کوئی حاجت۔ بلکہ اب نیت کرلے اور ہتھیلیاں چہرے پر پھیر لے یہی کافی ہوجائے اس لئے کہ یہ ہتھیلیاں عمر کے کسی حصے میں جنس زمین سے مس ہو چکی تھیں، نیت کام کے ساتھ ہونا شرط ہی نہیں، نہ ہی مس کے بعد مسح سے پہلے حدث ہونا اس کے منافی، اگرچہ ہزار بار حدث ہو۔ میں سمجھتا ہوں کہ کوئی بھی نہ اسے مان سکتا ہے نہ ہی اسے صحیح شرعی تیمم قرار دے سکتا ہے۔ الحاصل دونوں مسئلوں (ضرب کے بعد تیمم کی نیت ہو تو اس ضرب سے تیمم نہ ہو پائے گا، ضرب کے بعد حدث ہو جائے تو اس سے بھی تیمم نہ ہوگا) میں حق وصواب سید امام ابو شجاع

کے ساتھ ہے اور ان مسئلوں کی بنیاد اس پر نہیں کہ ضرب رکن تیمم ہے۔ تو میرے علم کی حد تک انہیں ثمرہ اختلاف ہونے سے کوئی واسطہ نہیں۔ اور میرا رب خوب جاننے والا ہے۔

Volume 3 Fatawa Razawiya [Arabic Column]: Yes, when (1) he strikes the ground and enough dust sticks to his hand for tayammum, then he experiences hadath (ritual impurity), and then he wipes his face with that dust with the intention of tayammum, it is sufficient for him. Because even though the purity and purifying quality of the palm are voided, and its state as 'ruling soil' (sa'id hukmi) is gone, the 'actual soil' (sa'id haqiqi) is present in his hand. Thus, this becomes tayammum with the dust, not with the palm that had acquired the purifying quality through the strike.

[Urdu Column]: Yes, when he struck his hand on the ground and enough dust stuck to it to be sufficient for tayammum, then ritual impurity occurred to him. Then, with the intention of tayammum, he wiped his face with that dust; this will be sufficient because although the purity and purifying power of the palm are gone, and for this reason the 'legal soil' (sa'id hukmi) is gone, 'actual soil' (sa'id haqiqi) remains in his hand. So, this will be performing tayammum with the actual dust, not with the palm that acquired the attribute of being a purifier due to the strike.

[Arabic Column]: And this, in my view, is the interpretation of what was mentioned earlier from al-Khaniya and Khizanat al-Muftin, because they said: "so he wiped his face with that dust," and they did not say: "he wiped with that hand which has experienced hadath."

[Urdu Column]: The aforementioned text of al-Khaniya and Khizanat al-Muftin is, in my opinion, applicable to this situation because their words are: (When the intention for tayammum was made, he struck his hand once on the ground, then ritual impurity occurred to him) so he wiped his face "with that same dust" (then struck his hand a second time for the arms including elbows); this is permissible, and tayammum is completed. It was not said that he wiped "with that same [impure] palm."

[Arabic Column]: One should refer to the text of al-Mudmarat, for perhaps it is like the text of al-Khaniya and al-Khizana. And you may read his statement "lam ya'ud" (لم يعد) with a fatha on the 'ayn and a shadda on the dal, from 'adad (counting/ numbering) rather than i'adah (repetition), which would be a correction of what the Sayyid al-Imam is upon. Otherwise, if we restrict it to the condition that the dust is on his palms, it would be a reconciliation.

[Urdu Column]: The original text of al-Mudmarat should also be checked; perhaps its text is also like that of al-Khaniya and al-Khizana (Jami' al-Rumuz did not quote the actual words of al-Mudmarat but wrote: "If hadath occurred before wiping, one does

not repeat the strike according to the most correct view, as in al-Mudmarat," the meaning of which is taken to be that if ritual impurity occurs after striking but before wiping, then according to the correct view, he should not repeat the strike, i.e., he should wipe from the same strike as in al-Mudmarat). In this text too, taking "lam ya'ud" with a fatha on 'ayn and shadda on dal, meaning numbering instead of repetition...

खंड 3 फ़तावा रज़विया [अरबी कॉलम]: हाँ, जब (१) उसने ज़मीन पर हाथ मारा और उसके हाथ में इतनी धूल लग गई जो तयम्मुम के लिए पर्याप्त हो, फिर उसे हदस (अशुद्धि) हो गई, फिर उसने तयम्मुम की नीयत से उस धूल से अपना चेहरा पोंछा, तो यह उसके लिए पर्याप्त है। क्योंकि यद्यपि हथेली की पवित्रता और शुद्ध करने की गुणवत्ता समाप्त हो गई है, और इसका 'सईदे हुक्मी' (कानूनी मिट्टी) वाला भाव चला गया है, लेकिन 'सईदे हक़ीक़ी' (वास्तविक मिट्टी) उसके हाथ में मौजूद है। अतः, यह धूल से तयम्मुम करना होगा, न कि उस हथेली से जिसने प्रहार के माध्यम से शुद्धिकरण का गुण प्राप्त किया था।

[उर्दू कॉलम]: हाँ जब उसने ज़मीन पर हाथ मारा और उसके हाथ में इतनी मिट्टी लग गई जो तयम्मुम के लिए काफी हो, फिर उसे हदस हुआ, फिर तयम्मुम की नीयत से उस मिट्टी से अपने चेहरे का मसह (पोंछना) कर लिया तो यह काफी होगा। इसलिए कि हथेली की तहारत (पवित्रता) और ततहीर (शुद्धिकरण) अगरचे खत्म हो गई और इसी वजह से सईदे हुक्मी जाती रही मगर सईदे हक़ीक़ी उसके हाथ में मौजूद है तो यह असल मिट्टी से तयम्मुम करना होगा, उस हथेली से नहीं जिसने प्रहार की वजह से ततहीर हासिल करने का गुण पाया था।

[अरबी कॉलम]: और यह, मेरे विचार में, अल-खनिया और खज़ानतुल मुफ़्तीन से पहले जो उद्धृत किया गया था उसकी व्याख्या है, क्योंकि उन्होंने कहा: "तो उसने उस धूल से अपना चेहरा पोंछा," और उन्होंने यह नहीं कहा: "उस हदस वाले हाथ से पोंछा।"

[उर्दू कॉलम]: खनिया और खज़ानतुल मुफ़्तीन की उपर्युक्त इबारत (लेख) मेरे नज़दीक इसी सूरत पर महमूल (लागू) है इसलिए कि उनके शब्द ये हैं: (जब तयम्मुम का इरादा हुआ, ज़मीन पर एक बार हाथ मारा फिर उसे हदस हो गया) तो "उसी मिट्टी से" चेहरे का मसह कर लिया (फिर कोहनियों समेत हाथों के लिए दूसरी बार हाथ मारा), यह जायज़ है और तयम्मुम हो गया। यह नहीं फरमाया कि "उसी बे-वज़ू हथेली से" मसह कर लिया।

[अरबी कॉलम]: अल-मुदमरात के पाठ को भी देखा जाना चाहिए, शायद वह अल-खनिया और अल-खज़ाना के पाठ की तरह ही हो। और आप उनके कथन "लम य'उद" (لم یعد) को ऐन पर फत्हा और दाल पर शद्दा के साथ पढ़ सकते हैं, जो 'अदद (गिनती) से है न कि इआदा (दोहराने) से, जो सैय्यद अल-इमाम के मत का सुधार होगा। अन्यथा, यदि हम इसे इस शर्त के साथ सीमित करें कि धूल उसकी हथेलियों पर है, तो यह एक समन्वय होगा।

[उर्दू कॉलम]: मुदमरात की असल इबारत भी देखनी चाहिए शायद वह भी खनिया और खज़ाना ही की तरह हो (जामिउर रुमूज़ ने मुदमरात के असल शब्द नक़ल नहीं किए बल्कि यूँ लिखा है कि "अगर मसह से पहले हदस हो जाए तो सहीह क़ौल के मुताबिक़ प्रहार को न दोहराए, जैसा कि मुदमरात में है") जिसका मतलब यह लिया जाता है कि अगर हाथ मारने के बाद मसह से पहले उसे हदस हुआ तो सहीह क़ौल के मुताबिक़ प्रहार का इआदा न करे, यानी उसी प्रहार से मसह कर ले जैसा कि मुदमरात में है)। इस इबारत में भी "लम य'उद" को ऐन के फत्हा और दाल की तशदीद के साथ बजाए इआदा के अदद से लेकर...

पेज 391 का 756

جلد سوم فتاوی رضویہ نعم اذا (۱) ضرب فالتزق بیدہ من التراب ما یکفی للتیمم ثم احدث ثم مسح بذلک التراب وجھہ ناویاً اجزأہ لان الکف وان بطلت طھارتھا وتطھیرھا وذھب بہ الصعید الحکمي فالصعید الحقیقی موجود بیدہ فیکون ھذا تیمماً بالتراب لابالکف المکتسی بالضرب صفۃ التطھیر۔

ہاں جب اس نے زمین پر ہاتھ مارا اس کے ہاتھ میں اتنی مٹی لگ گئی جو تیمم کیلئے کافی ہو پھر اسے حدث ہو، پھر بہ نیت تیمم اس مٹی سے اپنے چہرے کا مسح کرلیا تو یہ کافی ہوگا اس لئے کہ ہتھیلی کی طہارت اور تطہیر اگر چہ ختم ہوگئی اور اسی وجہ سے صعید حکمی جاتی رہی مگر صعید حقیقی اس کے ہاتھ میں موجود ہے تو یہ اصل مٹی سے تیمم کرنا ہوگا ضرب کی وجہ سے صفت تطہیر حاصل کرنے والی ہتھیلی سے نہیں۔

وھذا ھو عندی محمل ما تقدم عن الخانیۃ وخزانۃ المفتین لقولھما فمسح بذلک التراب وجھہ ولم یقولا مسح بتلک الکف المحدثۃ۔

خانیہ اور خزانہ المفتین کی مذکورہ عبارت میرے نزدیک اسی صورت پر محمول ہے اس لئے کہ ان کے الفاظ یہ ہیں: (جب تیمم کا ارادہ ہوا زمین پر ایک بار ہاتھ مارا پھر اسے حدث ہوگیا) تو "اسی مٹی سے" چہرے کا مسح کرلیا (پھر کہنیوں سمیت ہاتھوں کیلئے دوسری بار ہاتھ مارا) یہ جائز ہے تیمم ہوگیا اھ یہ نہ فرمایا کہ "اسی بے ہتھیلی سے" مسح کرلیا۔

ولیراجع عبارۃ المضمرات فلعلھا کعبارۃ الخانیۃ والخزانۃ ولك ان تقرأ قولہ لم یعد الضرب بفتح العین وشد الدال من العد دون الاعادۃ فیکون تصحیحاً لما علیہ السید الامام والا فاذا قیدنا ھا بکون التراب علی کفیہ کان توفیقاً۔

مضمرات کی اصل عبارت بھی دیکھنا چاہئے شاید وہ بھی عبارت خانیہ و خزانہ ہی کی طرح ہو (جامع الرموز نے مضمرات کے اصل الفاظ نقل نہ کئے بلکہ یوں لکھا ہے کہ "لو احدث قبل المسح لم یعد الضرب علی الاصح، کما فی المضمرات" جس کا مفہوم یہ لیا جاتا ہے کہ اگر ہاتھ مارنے کے بعد مسح سے پہلے اسے حدث ہوا تو بر قول صحیح ضرب کا اعادہ نہ کرے، یعنی اسی ضرب سے مسح کرلے جیسا کہ مضمرات میں ہے) اس عبارت میں بھی "لم یعد" کو عین کے فتحہ اور دال کی تشدید کے ساتھ بجائے اعادہ کے عدد سے لے کر

Fatawa Razawiyya Volume 3

By the grace of Allah.

[Right Column] ...it can be read as "Lam ya'id ad-darba" (did not repeat the strike). Now the meaning will be that if hadath (ritual impurity) occurs before the wiping (masah), then this strike, according to the most correct view, will not be counted. In this case, the rectification of the same view held by Sayyid Imam Abu Shuja will be achieved from it. If we don't read it this way, when we restrict it to this scenario (the need to repeat the strike is not there when) sufficient dust is already on the palms, then reconciliation and harmony between the two views will be achieved. And success is from Allah alone.

[Left Column] Ninth: What Allamah al-Haddadi discussed regarding (1) if one person commands another to perform Tayammum for them, so the commanded person strikes their hands [on the ground], then the commander experiences hadath [ritual impurity]. [Al-Haddadi said] that it ought to be invalid according to the view of Abu Shuja. However, in my view (2), there is some hesitation in this. Because when the commander gave the command and made the intention, and then the commanded person struck their palms on the earth, that strike granted those palms the quality of purification, and they became "legal earth" (sa'id hukmi), such that they became fit to purify the commander through wiping with them. The occurrence of hadath in the commander does not interfere with any of that; the purity of the commanded person's palms is not removed by it, such that their quality of purification would cease. - And the commander was already in a state of hadath before the strike.

Discussion 9: Someone commanded another person to perform Tayammum for him. The appointee (mamur) struck both his hands on the ground, but before the wiping could occur, the commander (amir) experienced a new state of hadath (ritual impurity). Discussing this, Allamah Haddadi stated that according to the view of Abu Shuja, the aforementioned strike of the appointee should become invalid. I have some hesitation regarding this. This is because when the commander gave the order and made the intention, and then the appointee struck his palms on the ground, that strike gave those palms the attribute of purification, and they became 'legal earth' (sa'id hukmi), becoming capable of purifying the commander through wiping. The commander's hadath does not cause any flaw in this process. The purity of the appointee's palms is not lost by the commander's hadath, such that their attribute of

purification would end. And the commander was already in a state of hadath, even before the strike.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

अल्लाह की सहायता से।

[दायां कॉलम] ... इसे "लम यअद अद-दरबा" (प्रहार नहीं दोहराया) पढ़ा जा सकता है। अब इसका मतलब यह होगा कि अगर मसह (पोंछने) से पहले हदस (अशुद्धि) हो जाए, तो सबसे सही राय के अनुसार इस प्रहार की गणना नहीं की जाएगी। इस मामले में, इससे उसी राय का सुधार प्राप्त होगा जो सैयद इमाम अबू शुजा का है। यदि हम इसे इस तरह से नहीं पढ़ते हैं, जब हम इसे इस स्थिति तक सीमित कर देते हैं (प्रहार को दोहराने की आवश्यकता तब नहीं होती जब) हथेलियों पर पर्याप्त मिट्टी पहले से मौजूद हो, तो दोनों विचारों के बीच सामंजस्य और समन्वय प्राप्त होगा। और सफलता केवल अल्लाह की ओर से है।

[बायां कॉलम] नौवां: अल्लामा अल-हद्दादी ने इस बारे में जो चर्चा की (1) यदि कोई व्यक्ति दूसरे को अपने लिए तयम्मुम करने का आदेश देता है, तो आदेश पाने वाले व्यक्ति ने अपने हाथ [जमीन पर] मारे, फिर आदेश देने वाले को हदस [अनुष्ठानिक अशुद्धि] हो गई। [अल-हद्दादी ने कहा] कि अबू शुजा के विचार के अनुसार इसे अमान्य होना चाहिए। हालाँकि, मेरे विचार (2) में इसमें कुछ संकोच है। क्योंकि जब आदेश देने वाले ने आदेश दिया और इरादा (नियत) किया, और फिर आदेश पाने वाले ने अपनी हथेलियाँ ज़मीन पर मारीं, तो उस प्रहार ने उन हथेलियों को शुद्धिकरण का गुण प्रदान किया, और वे "कानूनी मिट्टी" (सईद हुक्मी) बन गईं, जिससे वे पोंछने के माध्यम से आदेश देने वाले को शुद्ध करने के योग्य हो गईं। आदेश देने वाले में हदस का होना इनमें से किसी भी बात में हस्तक्षेप नहीं करता है; आदेश पाने वाले की हथेलियों की शुद्धता इससे समाप्त नहीं होती है कि उनका शुद्धिकरण का गुण समाप्त हो जाए। - और आदेश देने वाला प्रहार से पहले भी हदस की स्थिति में था।

बहस 9: किसी ने दूसरे को हुक्म दिया कि मुझे तयम्मुम करा दे। मामूर (आदेश पाने वाले) ने अपने दोनों हाथ ज़मीन पर मारे, लेकिन मसह करने से पहले ही हुक्म देने वाले (आमेर) को नया हदस हो गया। इस पर बहस करते हुए अल्लामा हद्दादी ने फरमाया कि अबू शुजा के कौल (विचार) पर मामूर का ज़िक्र किया गया प्रहार बातिल (अमान्य) हो जाना चाहिए। मुझे इस बारे में कुछ झिझक है। इसलिए कि आमेर ने जब हुक्म दिया और नियत कर ली फिर मामूर ने अपनी हथेलियाँ ज़मीन पर मारीं तो इस प्रहार ने उन हथेलियों को शुद्धिकरण की विशेषता प्रदान कर दी और वे सईद हुक्मी

(क़ानूनी मिट्टी) बनकर अपने मसह से आमेर को पाक करने के काबिल हो गईं। और आमेर का हदस इसमें से किसी बात में कुछ खलल नहीं लाता। उसके हदस से मामूर की हथेलियों की पाकी (शुद्धता) तो खत्म होती नहीं कि उनका शुद्धिकरण का गुण खत्म हो सके। और आमेर तो हदस वाला था ही, प्रहार से पहले भी।

पृष्ठ 392 का 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

باللہ التوفیق۔

[دایاں کالم] لَمْ یَعِدِ الضَّرْبَ پڑھا جاسکتا ہے۔ اب یہ معنی ہو جائیگا کہ اگر قبل مسح حدث ہو گیا تو یہ ضرب بر قول اصح، شمار نہ کی جائے گی۔ اس صورت میں اس سے اسی قول کی تصحیح حاصل ہو گی جو سید امام ابو شجاع کا ہے اگر یہ نہ پڑھیں تو جب ہم اسے اس صورت سے مقید کردیں (اعادہ ضرب کی حاجت اُس وقت نہیں جب) ہتھیلیوں پر لگی ہوئی مٹی بقدر کافی موجود ہو تو دونوں قولوں میں تطبیق و توفیق ہو جائے گی۔ اور خدا ہی سے توفیق ملتی ہے۔

[بایاں کالم] التاسع: مابحث العلامۃ الحدادی فیما (1) اذا امر غیرہ لیتیممہ فضرب المأمور یدیہ فاحدث الأمر انہ ینبغی بطلانہ علی قول ابی شجاع فعندی (۲) فیہ وقفۃ فان الأمر اذا امر ونوی فضرب المأمور کفیہ علی الصعید اکسبھما صفۃ التطھیر وصارا صعیدا حکمیا حتی صلحتا لتطھیر الأمر بمسحھما وحدث الأمر لا یخل بشیئ من ذلك لا تزول بہ طھارۃ کفی المأمور لینتفی تطھیرھما - وقد کان الأمر محدثا قبل

بحث ۹ :دوسرے کو حکم دیا کہ مجھے تیمم کرادے، مامور نے اپنے دونوں ہاتھ زمین پر مارے کہ حکم دینے والے کو حدث عارض ہوا۔ اس پر بحث کرتے ہوئے علامہ حدادی نے فرمایا کہ ابوشجاع کے قول پر مامور کی ضرب مذکور کو (جس کے بعد قبل مسح آمر کو حدث جدید عارض ہوا) باطل ہوجانا چاہئے۔ مجھے اس بارے میں کچھ توقف ہے۔ اس لئے کہ آمر نے جب حکم دیا اور نیت کرلی پھر مامور نے اپنی ہتھیلیاں جنس زمین پر ماریں تو اس ضرب نے ان ہتھیلیوں کو تطہیر کی صفت بخش دی اور وہ صعید حکمی بن کر اپنے مسح سے آمر کو پاک کرنے کے قابل ہوگئیں۔ اور

آمر کا حدث اس میں سے کسی بات میں کچھ خلل نہیں لاتا۔ اس کے حدث سے مامور کی ہتھیلیوں کی طہارت تو زائل ہوتی نہیں کہ ان کا وصفِ تطہیر ختم ہوسکے۔ اور آمر تو محدث تھا ہی، ضرب سے پہلے بھی

[Arabic Column] ...the striking (of hands on earth) and after it as long as the wiping (masah) has not occurred. Thus, the state of ritual impurity (hadath) of the one ordering (Amir) - meaning his being in a state of impurity - and the establishment of the quality of purification for the palms of the one being ordered (Ma'mur) occurred simultaneously and persisted until the wiping was performed. If the purity of the Amir were a condition for the establishment of the quality of purification for both (the palms), it would lead to circularity (daur) and the issue would be fundamentally impossible. Since his being in a state of impurity does not contradict it, how could his new impurity contradict it? It adds nothing more to what he already is now. Tenth: What is apparent from 'Al-Bahr' is that it is not invalidated by the state of ritual impurity of the one being ordered. In my view, this is even more remote. For if we grant that the impurity of the one ordering invalidates the striking of the one being ordered, despite not making the palms of the one being ordered impure, then the impurity of the one being ordered should invalidate that striking even more appropriately. This is because his own impurity would make his palms impure, thereby stripping away their purity and consequently their quality of purification. The fact that he is a means and a tool does not contradict this, because it is a tool for purification. Therefore, one must be pure, as one who is not pure, how can he grant purification to another? The apparent [ruling] to me is the opposite of what they both said.

[Urdu Column] And even after striking, until the wiping is done. So the Amir's state of ritual impurity (hadath), meaning his being in a state of impurity, and the proof of the quality of purification in the palms of the Ma'mur, both things gathered at the same time and this gathering remained constant and lasting until the wiping was done. And if the purity of the Amir were made a condition for the quality of purification in the Ma'mur's palms, it would lead to circularity. And the very existence of this issue would become impossible. So when his being in a state of impurity is not contradictory to it, then how will this new impurity be contradictory to it when it adds nothing more than what is already present in him at that time? (Even now he is in a state of impurity; even with the new impurity he remains in a state of impurity, so what is the effect of the new impurity on the striking?) Discussion 10: Taking Allama Haddadi's discussion, the author of Bahr said that: "Its appearance is that it will not be invalidated by the impurity of the Ma'mur because he is merely a means and a tool." This point is even more remote to me than the first. Because if we accept that

the Amir's impurity invalidates the Ma'mur's strike despite not being a cause of making the Ma'mur's palms impure, then the Ma'mur's impurity will invalidate this strike even more appropriately because his own impurity will make his palms impure and take away purity from them, then the quality of purification will also be taken away. And the Ma'mur being a means and tool is not contradictory to this because he is a tool of purification.

[अरबी स्तंभ] ...प्रहार (हाथ ज़मीन पर मारना) और उसके बाद जब तक कि मसह न हो जाए। अतः आदेश देने वाले (आमिर) की अशुद्धि (हदस) - अर्थात् उसका अपवित्र होना - और जिसे आदेश दिया गया (मामूर) की हथेलियों में शुद्धिकरण (ततहीर) के गुण की स्थापना, दोनों चीजें एक ही समय में एकत्रित हुईं और मसह होने तक बनी रहीं। यदि दोनों के लिए आमिर की शुद्धता (तहारत) को शर्त बनाया जाता, तो यह चक्रक दोष (दौर) की ओर ले जाता और मसला ही असंभव हो जाता। जब उसका अशुद्ध होना इसके विपरीत नहीं है, तो उसकी नई अशुद्धि कैसे इसके विपरीत होगी? यह वर्तमान स्थिति में कोई वृद्धि नहीं करती है। दसवाँ: 'अल-बहर' से जो ज़ाहिर होता है वह यह है कि मामूर की अशुद्धि से यह बातिल (अमान्य) नहीं होता। मेरे निकट यह पहले से भी अधिक दूर की बात है। क्योंकि यदि हम यह मान लें कि आमिर की अशुद्धि मामूर की हथेलियों को अपवित्र किए बिना भी उसके प्रहार को बातिल कर देती है, तो मामूर की अपनी अशुद्धि उस प्रहार को और भी अधिक दृढ़ता से बातिल कर देगी। क्योंकि उसकी अपनी अशुद्धि उसकी हथेलियों को अपवित्र कर देगी और उनसे शुद्धता छीन लेगी, तो शुद्धिकरण का गुण भी छिन जाएगा। मामूर का ज़रिया और साधन होना इसके विपरीत नहीं है क्योंकि वह शुद्धिकरण का साधन है। इसलिए उसका शुद्ध होना आवश्यक है, क्योंकि जो स्वयं शुद्ध नहीं है, वह दूसरे को कैसे शुद्ध कर सकता है? मेरे निकट ज़ाहिर बात वह है जो उन दोनों के कहे के विपरीत है।

[उर्दू स्तंभ] और प्रहार (जरब) के बाद भी, जब तक कि मसह नहीं हो जाता। तो आमिर की अशुद्धि (हदस) यानी उसका अपवित्र होना और मामूर की हथेलियों में शुद्धिकरण के गुण का प्रमाण, दोनों चीजें एक साथ जमा हुईं और यह जमा मसह हो जाने तक कायम व कायम रहा। और अगर मामूर की हथेलियों में शुद्धिकरण के गुण के लिए आमिर की पाकी (तहारत) की शर्त लगाई जाए तो चक्रक दोष (दौर) लाज़िम आएगा। और इस मसले का वजूद ही मुहाल (असंभव) हो जाएगा। तो जब उसका अशुद्ध होना इसके मुनाफी (विपरीत) नहीं है तो यह नई अशुद्धि (हदस-ए-जदीद) कैसे इसके मुनाफी हो जाएगी जबकि वह मामूर की हालत में इससे ज़्यादा कोई इज़ाफ़ा नहीं करती जो उस समय उसमें मौजूद है (फिलहाल भी वह अशुद्ध ही है, नई अशुद्धि से भी अशुद्ध ही रहा तो प्रहार पर नई अशुद्धि का क्या असर?) बहस १०: अल्लामा हद्दादी की बहस लेकर साहिब-ए-बहर ने यह कहा था कि: "इसका ज़ाहिर यह है कि वह मामूर की अशुद्धि से बातिल न होगी इसलिए कि वह तो सिर्फ ज़रिया और आला (साधन) है"। यह बात मेरे नज़दीक पहली से भी ज़्यादा बईद (दूर) है। इसलिए कि अगर

हम यह मान लें कि आमिर की अशुद्धि मामूर की हथेलियों को नजासत (अपवित्रता) पहुँचाने का सबब न होने के बावजूद मामूर के प्रहार को बातिल कर देता है, तो मामूर की अशुद्धि इस प्रहार को बदरजा-ए-औला (और भी ज़्यादा) बातिल कर देगी क्योंकि उसकी अपनी अशुद्धि तो उसकी हथेलियों को नापाक करके उनसे पाकीज़गी छीन लेगी तो शुद्धिकरण (ततहीर) का गुण भी छीन लेगा। और मामूर का ज़रिया और साधन होना इसके विपरीत नहीं है क्योंकि वह शुद्धिकरण का साधन है।

पृष्ठ ३९३/७५६

[عربی کالم] الضروب و بعده مالم یمسح فاجتمع حدث الأمر اعنی کونہ محدثاً و ثبوت صفة التطهیر لکفی المأمور في وقت واحد و دام الی حصول المسح و لو اشترط الثبوته لهما طهارة الأمر لدار و استحالت المسألة رأساً فاذ الم ینافه کونه محدثاً کیف ینافیه حدثه الجدید ولا یزیده شیئاً فوق ماهو علیہ الآن۔ العاشر : ما (۱) استظهر منه البحر انه لایبطل بحدث المأمور فعندی ابعد منه اذ لو سلمنا انه یبطل بحدث الأمر مع انه لایوجب تنجیس کفی المأمور وجب بطلانه بحدث المأمور بالأولی لانه ینجسهما فیسلبهما الطهارة فیسلبهما التطهیر ولونه آلة لا ینفیه فانه آلة التطهیر فلا بد من طهارته اذ مالیس بطاهر کیف یفید غیرہ التطهیر فالظاهر عندی عکس ما قالاہ

[اردو کالم] اور ضرب کے بعد بھی، جب تک کہ مسح نہیں ہو جاتا۔ تو آمر کا حدث یعنی اس کا محدث ہونا اور مامور کی ہتھیلیوں میں صفت تطہیر کا ثبوت دونوں چیزیں بیک وقت جمع ہوئیں اور یہ اجتماع مسح ہو جانے تک قائم و دائم رہا۔ اور اگر مامور کی ہتھیلیوں میں صفت تطہیر کیلئے طہارت آمر کی شرط لگائی جائے تو دور لازم آئے گا۔ اور اس مسئلہ کا وجود ہی محال ہوجائے گا۔ تو جب اس کا محدث ہونا اس کے منافی نہیں تو یہ حدث جدید کیسے اس کے منافی ہو جائے گا جب کہ وہ مامور کی حالت میں اس سے زیادہ کوئی اضافہ نہیں کرتا جو بروقت اس میں موجود ہے (فی الحال بھی وہ محدث ہی ہے حدث جدید سے بھی محدث ہی رہا تو ضرب پر حدث جدید کا کیا اثر؟)

بحث ۱۰ : علامہ حدادی کی بحث لے کر صاحب بحر نے یہ کہا تھا کہ : " اس کا ظاہر یہ ہے کہ وہ ضرب مامور کے حدث سے باطل نہ ہوگی اس لئے کہ وہ تو صرف ذریعہ اور آلہ ہے"۔ یہ بات میرے نزدیک پہلی سے بھی زیادہ بعید ہے۔ اس لئے کہ اگر ہم یہ مان لیں کہ آمر کا حدث مامور کی ہتھیلیوں کو نجس بنانے کا موجب نہ ہونے کے باوجود مامور کی ضرب کو باطل کر دیتا ہے تو

مامور کا حدث اس ضرب کو بدرجہ اولٰی باطل کر دے گا کیونکہ اس کا اپنا حدث تو اس کی ہتھیلیوں کو نجس کر کے ان سے طہارت سلب کرلے گا تو وصفِ تطہیر بھی سلب کرلے گا۔ اور مامور کا ذریعہ و آلہ ہونا اس کے منافی نہیں کیونکہ وہ تطہیر کا آلہ ہے

صفحہ 393 از 756

Fatawa Razawiya, Volume 3

...so its own purity is necessary because how can one who is not pure themselves grant purification to another? Therefore, what these two gentlemen (Haddadi and Bahr) stated is the opposite in my view. The said 'striking' will become void by the ritual impurity (hadath) of the one commanded and will not be voided by the ritual impurity of the commander. And Allah, Glory be to Him and Most High, knows best.

It becomes void by the minor ritual impurity of the one commanded, not the commander. And Allah, Glory be to Him and Most High, knows best.

Eleventh: The discussions so far have only increased the complexity of the original matter because it is established that the ten secondary issues are agreed upon among our Imams, and there is no 'striking' (darb) in them in the well-known sense, while they are unanimous on it being a pillar (rukn) -

Discussion 11: From the discussions so far, the complexity of the original matter has only increased because it has been proven that the ten mentioned details are agreed upon among our Imams, and in them, 'striking' in the well-known sense does not exist, even though there is a consensus among these Imams that 'striking' is a pillar of Tayammum (then how can a thing be realized without its pillar?).

So I say, and success is from Allah: We have shown you that 'sa'id' (earth/surface) is of two types: physical (haqiqi) and legal (hukmi). And the customary, well-known Tayammum commanded in oral and practical Hadiths is touching the palms to the physical earth, and the rest of the limbs to this legal earth. And the non-customary one is touching all parts of the limbs to physical earth. Thus, Tayammum is also divided into two types: the customary one with the physical on the palms and the legal on others, and the other one with the physical on all -

So I say, and success is from Allah: We have explained that there are two types of 'sa'id': physical and legal. The customary Tayammum reported in oral and practical Hadiths is that the palms are touched to the physical earth, and the rest of the hands and face are touched with this legal earth (the palms). The non-customary Tayammum is where all parts of the face and hands are touched to the physical earth (earth materials). Thus, Tayammum became two types: one is the customary Tayammum, striking the palms on physical earth and wiping the rest with legal earth. The second is non-customary Tayammum, wiping everything with physical earth.

Then, the pillar of any thing, even if it is a religious/legal pillar, without it, the thing in external existence also...

Then, the pillar of a thing, even if it is legal/religious, its existence is also in tangible things.

(फ़तावा रज़विया, खंड 3)

...तो इसका स्वयं पाक (पवित्र) होना आवश्यक है क्योंकि जो स्वयं पाक नहीं है, वह दूसरे को पाकी कैसे प्रदान कर सकता है? इसलिए, इन दो महानुभावों (हद्दादी और बहर) ने जो कहा है, वह मेरे विचार में इसके विपरीत है। उक्त 'प्रहार' (ज़रब) आदेश पाने वाले की अशुद्धि (हदस) से शून्य हो जाएगा और आदेश देने वाले की अशुद्धि से शून्य नहीं होगा। और अल्लाह, वह महिमामय और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है।

यह आदेश पाने वाले की अशुद्धि से अमान्य हो जाता है, न कि आदेश देने वाले की। और अल्लाह, वह महिमामय और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है।

ग्यारहवाँ: अब तक की चर्चाओं ने मूल मामले की जटिलता को ही बढ़ाया है क्योंकि यह सिद्ध हो चुका है कि वर्णित दस गौण मुद्दे हमारे इमामों के बीच सर्वसम्मत हैं, और उनमें प्रसिद्ध अर्थ में 'प्रहार' (ज़रब) का अस्तित्व नहीं है, जबकि वे इसके एक स्तंभ (रुकन) होने पर एकमत हैं -

चर्चा 11: यहाँ तक की चर्चाओं से मूल मामले की जटिलता में और इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) ही हुआ क्योंकि यह साबित हुआ कि उपर्युक्त दस विवरण हमारे इमामों के बीच सर्वसम्मत हैं और उनमें प्रसिद्ध अर्थ में 'प्रहार' का अस्तित्व नहीं है, हालाँकि इन इमामों का इस पर सर्वसम्मति (इज्मा) है कि 'प्रहार' तयम्मुम का एक स्तंभ है (फिर स्तंभ के बिना किसी चीज़ की प्राप्ति कैसे संभव हुई?)।

तो मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह की ओर से है: हमने आपको दिखाया है कि 'सईद' (मिट्टी/सतह) दो प्रकार की होती है: वास्तविक (हक़ीक़ी) और कानूनी/अमूर्त (हुक्मी)। और मौखिक और व्यावहारिक हदीसों में आदेशित प्रथागत, प्रसिद्ध तयम्मुम हथेलियों को वास्तविक मिट्टी से छूना है, और अन्य अंगों को इस कानूनी मिट्टी (हथेलियों की धूल) से छूना है। और गैर-प्रथागत तयम्मुम अंगों के सभी भागों को वास्तविक मिट्टी से छूना है। इस प्रकार, तयम्मुम भी दो भागों में विभाजित हो गया: हथेलियों पर वास्तविक और अन्य पर कानूनी के साथ प्रथागत, और सभी पर वास्तविक के साथ दूसरा -

तो मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह की ओर से है: हम बता चुके हैं कि सईद की दो किस्में (प्रकार) हैं: हक़ीक़ी और हुक्मी। और प्रथागत तयम्मुम जो मौखिक और व्यावहारिक हदीसों में वर्णित है, वह यह है कि हथेलियों को सईद हक़ीक़ी से स्पर्श किया जाए और बाकी हाथों और चेहरे को इस सईद हुक्मी (हथेलियों) से स्पर्श किया जाए। और गैर-प्रथागत तयम्मुम यह है कि चेहरे और हाथों के

सभी हिस्सों को सईद हक़ीक़ी (मिट्टी की श्रेणी) से स्पर्श किया जाए। तो तयम्मुम की दो किस्में हो गईं: एक प्रथागत तयम्मुम, वास्तविक मिट्टी से हथेलियों का और कानूनी मिट्टी से शेष का मसह करना। दूसरा गैर-प्रथागत तयम्मुम, वास्तविक मिट्टी से सभी का मसह करना। फिर किसी भी चीज़ का स्तंभ चाहे वह धार्मिक ही क्यों न हो, उसके बिना बाहरी अस्तित्व में भी चीज़...

फिर किसी चीज़ का स्तंभ, भले ही वह धार्मिक/कानूनी हो, उसका अस्तित्व मूर्त वस्तुओं में भी होता है।

فتاوی رضویہ، جلد سوم

...تو خود اس کا طاہر ہونا ضروری ہے اس لئے کہ جو خود ہی طاہر نہیں وہ دوسرے کو تطہیر کیسے عطا کر سکے گا؟ تو ان دونوں حضرات (حدادی و بحر) نے جو فرمایا میرے نزدیک اس کے بر عکس ہے۔ ضرب مذکور مامور کے حدث سے باطل ہو جائیگی اور آمر کے حدث سے باطل نہ ہو گی واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔

یبطل بحدث المأمور دون الآمر واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔ (ترجمہ: یہ عمل مامور کے حدث سے باطل ہو جاتا ہے نہ کہ آمر کے، اور اللہ سبحانہ وتعالی خوب جاننے والا ہے۔)

الحادی عشر: الابحاث الی ھنا لم تزد اصل الامر الاغمة لانه ثبت ان الفروع العشرة متفق علیھا بین ائمتنا ولا ضرب فیھا بالمعنی المعروف وھم مجمعون علی رکنیته - (ترجمہ: گیارہویں بات: اب تک کی بحثوں نے اصل معاملہ کی پیچیدگی میں اضافہ ہی کیا ہے کیونکہ یہ ثابت ہو چکا ہے کہ وہ دس فروعی مسائل ہمارے ائمہ کے درمیان متفق علیہ ہیں اور ان میں معروف معنی میں 'ضرب' (مارنا) نہیں ہے، حالانکہ وہ اس کے رکن ہونے پر متفق ہیں۔)

بحث ۱۱: یہاں تک کی بحثوں سے اصل معاملہ کی پیچیدگی میں اور اضافہ ہی ہوا اس لئے کہ ثابت یہ ہوا کہ مذکورہ دس جزئیات ہمارے ائمہ کے درمیان متفق علیہ ہیں اور ان میں ضرب بمعنی معروف کا وجود نہیں ، حالانکہ ان ائمہ کا اس پر اجماع ہے کہ ضرب تیمم کا رکن ہے (پھر رکن کے بغیر شئی کا تحقق کیونکر ہو گیا؟)

فاقول: وباللہ التوفیق قد اوجدناك ان الصعید ضربان حقیقی وحکمی وان التیمم المعھود المعروف المأمور فی الاحادیث القولیة والفعلیة ھو امساس الکفین بالصعید الحقیقی وسائر العضوین بھذا الصعید

الحکمی وغیر المعهود هو امساس جمیع اجزاء العضوین بالصعید الحقیقی فانقسم التیمم ایضاً الی قسمین المعهود بالحقیقی فی الکفین والحکمی فی غیرهما وغیره بالحقیقی فی الکل - (ترجمہ: پس میں کہتا ہوں اور اللہ کی توفیق سے: ہم آپ کو دکھا چکے ہیں کہ صعید کی دو قسمیں ہیں: حقیقی اور حکمی۔ اور احادیثِ قولیہ و فعلیہ میں جس معروف و معہود تیمم کا حکم ہے وہ ہتھیلیوں کو صعیدِ حقیقی سے مس کرنا ہے اور باقی اعضاء کو اسی صعیدِ حکمی سے۔ اور غیر معہود (تیمم) اعضاء کے تمام حصوں کو صعیدِ حقیقی سے مس کرنا ہے۔ پس تیمم کی بھی دو قسمیں ہو گئیں: معہود جو ہتھیلیوں میں حقیقی اور باقیوں میں حکمی سے ہو، اور دوسرا جو تمام میں حقیقی سے ہو۔)

فاقول: وباللہ التوفیق۔ ہم بتا چکے ہیں کہ صعید کی دو قسمیں ہیں: حقیقی اور حکمی اور معہود تیمم جو قولی وفعلی احادیث میں مروی ہے وہ یہ ہے کہ ہتھیلیوں کو صعید حقیقی سے مس کیا جائے اور بقیہ ہاتھوں اور چہرے کو اس صعید حکمی (ہتھیلیوں) سے مَس کیا جائے اور غیر معہود تیمم یہ ہے کہ چہرے اور ہاتھوں کے تمام اجزاء کو صعید حقیقی (جنس زمین) سے مس کیا جائے تو تیمم دو قسمیں ہو گئیں: ایک معہود تیمم صعید حقیقی سے ہتھیلیوں کا، اور حکمی سے بقیہ کا مسح کرنا۔ دوسرا غیر معہود تیمم صعید حقیقی سے سبھی کا مسح کرنا۔ پھر کسی بھی شئی کا رکن اگرچہ وہ شرعی ہی ہو اس کے بغیر خارج میں بھی شئی...

ثم رکن الشیئ وان کان شرعیاً وجوده فی الاعیان ایضاً (ترجمہ: پھر کسی چیز کا رکن اگرچہ وہ شرعی ہو، اس کا وجود اعیان (خارجی اشیاء) میں بھی ہوتا ہے۔)

Fatawa Razawiyya Volume 3

(Arabic Text): ...without it, since it constitutes it, such as bowing (Ruku') and prostrating (Sujud) for prayer, and the offer and acceptance for marriage. O Allah, except that it be an additional pillar, like recitation. As for the Shari'ah condition, it is not necessary that its absence leads to its physical non-existence, but rather its legal (Shari'ah) non-existence. Do you not see that the pillars of prayer—standing, sitting, bowing, prostrating, and reciting—none of them depend for their physical existence upon its Shari'ah conditions like purity, facing the Qiblah, the opening Takbir, and others, even if they are not legally considered valid due to their loss? However, among the Shari'ah conditions are those that resemble a pillar, so the thing becomes in need of it for its physical existence as well, just as its need for the pillars. Such a condition is most similar to a pillar, as if it were a barrier (Barzakh) between the pillars and the previously mentioned conditions. Thus, there is no harm in applying the name 'pillar' to it, and that is like the place for prayer, the woman for marriage, and the earth for dry ablution (Tayammum). I say: Upon this is based the statement of the Shaikh of Islam, the Allamah al-Ghazzi, may Allah Almighty have mercy on him, in...

(Urdu Translation/Explanation): ...cannot exist. This is because the constitution and reality of a thing are formed by that very pillar, just as Ruku' and Sujud for prayer and offer and acceptance for marriage. Yes, unless it is an additional pillar like recitation. However, the matter of a Shari'ah condition is different; its absence does not necessarily mean the non-existence of the thing's physical and external existence, but rather only the absence of its Shari'ah existence is necessary. See that none of the pillars of prayer—standing, sitting, Ruku', Sujud, recitation—depend for their external existence upon the conditions of prayer like purity, facing the Qiblah, Takbir, etc. (those pillars can exist externally even without these conditions), although such a prayer is not considered "legally" valid due to the lack of conditions. Yes, some Shari'ah conditions are also such that they resemble a pillar in that a thing is also in need of them for its external existence, and some are even more similar to pillars, as if they hold the status of a 'Barzakh' between the pillars and the mentioned conditions. So, it is not strange if they are mentioned by the name of a pillar (and called a pillar instead of a condition). Examples of such a condition: like a place for prayer, a woman for marriage, pure earth (Sa'id) for Tayammum. I say: On this application (calling a condition a pillar based on intense resemblance and need), in

the text of 'Tanwir al-Absar', Shaikh al-Islam Allamah Ghazzi (Mercy of Allah be upon him) and his...

फतवा रज़विया जिल्द 3

(अरबी पाठ): ...उसके बिना, क्योंकि यह उसे गठित करता है, जैसे नमाज़ के लिए रुकू और सुजूद, और निकाह के लिए ईजाब और क़ुबूल। हे अल्लाह, सिवाय इसके कि वह एक अतिरिक्त रुकन हो, जैसे किराअत (पाठ)। जहाँ तक शरीयत की शर्त का सवाल है, यह आवश्यक नहीं है कि उसकी अनुपस्थिति उसके भौतिक गैर-अस्तित्व का कारण बने, बल्कि उसका शरीयत (कानूनी) गैर-अस्तित्व हो। क्या आप नहीं देखते कि नमाज़ के अरकान—क़ियाम, क़ुऊद, रुकू सुजूद और किराअत—उनमें से कोई भी अपने भौतिक अस्तित्व के लिए इसकी शरीयत शर्तों जैसे पाकी, क़िबला की ओर मुँह करना, तहरीमा, और अन्य पर निर्भर नहीं करता है, भले ही वे उनके अभाव के कारण कानूनी रूप से मान्य न माने जाएं हालाँकि, शरीयत की शर्तों में वे भी हैं जो एक रुकन के समान हैं, इसलिए वस्तु अपने भौतिक अस्तित्व के लिए भी उसकी आवश्यकता महसूस करती है, ठीक वैसे ही जैसे अरकान के लिए उसकी आवश्यकता। ऐसी शर्त एक रुकन के सबसे समान है, मानो वह अरकान और पहले उल्लेखित शर्तों के बीच एक 'बरज़ख़' (बाधा) हो। इस प्रकार, उस पर 'रुकन' नाम लागू करने में कोई हर्ज नहीं है, और वह नमाज़ के लिए जगह, निकाह के लिए महिला और तयम्मुम के लिए मिट्टी (सईद) जैसा है। मैं कहता हूँ: इसी पर शैखुल इस्लाम, अल्लामा अल-ग़ज़ी, अल्लाह सर्वशक्तिमान उन पर रहम करे, का कथन आधारित है...

(उर्दू अनुवाद/स्पष्टीकरण): ...अस्तित्व में नहीं हो सकता। ऐसा इसलिए है क्योंकि किसी चीज़ का गठन और वास्तविकता उसी रुकन से बनती है, जैसे नमाज़ के लिए रुकू और सजदा और निकाह के लिए ईजाब और क़ुबूल। हाँ, बशर्ते कि वह अतिरिक्त रुकन न हो जैसे किराअत। हालाँकि, शरीयत की शर्त का मामला अलग है; उसकी अनुपस्थिति का मतलब यह नहीं है कि चीज़ का भौतिक और बाहरी अस्तित्व नहीं है, बल्कि केवल उसके शरीयत अस्तित्व का अभाव आवश्यक है। देखिए कि नमाज़ के अरकान—क़ियाम, क़ुऊद, रुकू सुजूद, किराअत—में से कोई भी अपने बाहरी अस्तित्व के लिए नमाज़ की शर्तों जैसे पाकी, क़िबला की ओर मुँह करना, तकबीर, आदि पर निर्भर नहीं है (वे अरकान इन शर्तों के बिना भी बाहरी रूप से मौजूद हो सकते हैं), हालांकि शर्तों की कमी के कारण ऐसी नमाज़ को "कानूनी रूप से" वैध नहीं माना जाता है। हाँ, कुछ शरीयत की शर्तें ऐसी भी हैं जो रुकन के समान हैं कि एक चीज़ अपने बाहरी अस्तित्व के लिए भी उनकी मोहताज होती है, और कुछ अरकान के और भी अधिक समान हैं, जैसे कि वे अरकान और उल्लिखित शर्तों के बीच 'बरज़ख़' का दर्जा रखती हों। इसलिए, यह अजीब नहीं है यदि उनका उल्लेख रुकन के नाम से किया

जाए (और शर्त के बजाय रुकन कहा जाए)। ऐसी शर्त के उदाहरण: जैसे नमाज़ के लिए जगह, निकाह के लिए औरत, तयम्मुम के लिए सईद (पाक मिट्टी)। मैं कहता हूँ: इस अनुप्रयोग पर (तीव्र समानता और आवश्यकता के आधार पर शर्त को रुकन कहने पर), 'तनवीर अल-अबसार' के पाठ में शैखुल इस्लाम अल्लामा ग़ज़ी (अल्लाह की उन पर कृपा हो) और उनकी...

(عربی عبارت): بدونہ اذبہ تقومہ کالرکوع والسجود للصلاۃ والایجاب والقبول للنکاح اللھم الا ان یکون رکنا زائدا کالقراء ۃ اما شرطہ الشرعی فلا یجب ان ینتفی بانتفائہ وجودہ العینی بل الشرعی الاتری ان ارکان الصلاۃ من القیام والقعود والرکوع والسجود والقراءۃ لاتتوقف لشئ منھا في وجودہ العینی علی شروطھا الشرعیۃ من الطھارۃ والاستقبال والتحریمۃ وغیرھا وان لم تعتبر شرعا نفقدھا غیران من الشروط الشرعیۃ مایحکی حکایۃ الرکن فیفتاق الیہ الشیئ في وجودہ العینی ایضا کافتیاقہ الی الارکان ومثل الشرط اشبہ شیئ بالرکن وکأنہ برزخ بین الارکان والشروط السالفۃ الذکر فلاغرو في اجراء اسم الرکن علیہ وذلك کالمکان للصلاۃ والمرأۃ للنکاح والصعید للتیمم - اقول: وعلی ھذا یبتنی قول شیخ الاسلام العلامۃ الغزي رحمہ اللہ تعالی في

(اردو تشریح): کا وجود نہیں ہوسکتا۔ اس لئے کہ شے کا قوام اور اس کی حقیقت اسی رکن ہی سے بنتی ہے جیسے نماز کیلئے رکوع و سجود اور نکاح کیلئے ایجاب و قبول ہاں مگر یہ کہ رکن زائد ہو جیسے قرات مگر شرط شرعی کا معاملہ مختلف ہے اس کے نہ ہونے سے شئی کے وجود عینی خارجی کا نہ ہونا ضروری نہیں، بلکہ اس کے انتفاء سے صرف وجود شرعی کا انتفاء ضروری ہے دیکھ لیجئے کہ ارکان نماز قیام، قعود، رکوع، سجود، قرات میں سے کوئی بھی اپنے وجود خارجی میں شرائط نماز طہارت، استقبالِ قبلہ، تحریمہ وغیرہ پر موقوف نہیں (ان شرائط کے بغیر بھی وہ ارکان خارجی میں موجود ہو سکتے ہیں) اگرچہ فقدان شرائط کے سبب ایسی نماز کا "شرعاً" اعتبار نہیں۔ ہاں کچھ شرعی شرطیں ایسی بھی ہیں جو رکن سے مشابہت رکھتی ہیں کہ شے اپنے وجود خارجی میں ان کی بھی محتاج ہوتی ہے اور کچھ مثل شرط رکن سے مشابہ تر بھی ہیں گویا وہ رکن اور مذکورہ شرطوں کے درمیان برزخ کی حیثیت رکھتی ہیں، تو کوئی عجب نہیں

کہ ان کو رکن ہی کے نام سے ذکر کر دیا جائے (اور بجائے شرط کے رکن کہہ دیا جائے) ایسی شرط کی مثال: جیسے نماز کیلئے جگہ، نکاح کیلئے عورت، تیمم کیلئے سعید۔ اقول: اسی اطلاق پر (شدت مشابہت و احتیاج کی بنا پر شرط کو رکن کہہ دینے پر) متن تنویر الابصار میں شیخ الاسلام علامہ غزی رحمہ اللہ تعالیٰ اور اسکی

صفحہ 395 از 756

Fatawa Razvia - Volume 3

The following statement of the researcher (mudaqqiq) Al-Ala'i (may Allah have mercy on him) in the commentary of 'Durr-e-Mukhtar' is based on: "(There are four pillars of istinja.) (The one performing istinja) person... the thing (with which istinja is performed) such as water and stone; the impurity that (3) exits from one of the two paths (subilain); (and the exit point) (4) the back passage or front passage, etc." Syed Allama Tahtawi maintained this statement by explaining its reasoning with the following words: "This is because istinja is the name for the removal of impurity, and for its realization, it is necessary that there be someone who removes it, which is the person (1); something to be removed, which is the waste (2); a place from where it is removed, which is the exit point (3); and a tool or means for removal, which is the stone (4) etc."

Syed Tahtawi did not pay attention to the objection of Allama Syed Halabi that "Istinja, which is the name for removing impure things from a path, its reality is not formed by these four or by any one of them." (Then how were they called pillars?) Syed Allama Shami also followed Syed Halabi in this objection, and both of them mentioned all that and lengthened the discourse, from which the author and commentator...

Arabic Text Segment: Matan al-Tanwir and Al-Mudaqqiq al-Ala'i in his commentary on Al-Durr (The pillars of Istinja are four): A person (mustanji), and a thing (mustanja bihi) like water and stone, (and) impurity (kharij) from one of the two paths, (and the exit point) anus or penis. 1 Ah. And the Syed Allama [Tahtawi] endorsed it, justifying it with his saying: 'And that is because it is removal, and it is not realized except with a remover, who is the person; and something removed, which is the waste; and something removed from, which is the exit point; and a tool of removal, which is the stone and its likes.' 2 Ah. He did not pay heed to what the Allama Syed H [Halabi] objected with: 'That the reality of Istinja, which is the removal of impurity from a path, is not constituted by even one of these four.' 3. And the Syed Allama Sh [Shami] followed him, and they both lengthened (1) in a way that excludes the two scholars, the author and the commentator, from being...

Footnotes: 1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Istinja, Mujtabai Delhi, 1/56 2. Tahtawi ala al-Durar, Chapter of Istinja, Beirut, 1/124 3. Radd al-Muhtar, Chapter of Istinja, Mustafa al-Babi Egypt, 1/246 Page 396 of 756

फ़तावा रज़विया - भाग 3

शराह दुर्रे मुख़्तार में मुदक़्क़िक़ अलाई (रहमतुल्लाह अलैहि) का निम्नलिखित कथन आधारित है: "(इस्तिनजा के चार अरकान हैं।) (इस्तिनजा करने वाला) व्यक्ति... वह चीज़ (जिससे इस्तिनजा किया जाए) जैसे पानी और पत्थर; वह गंदगी जो (3) दो रास्तों (सबीलैन) में से किसी एक से निकलती है; (और निकलने का स्थान) (4) पिछला स्थान या अगला स्थान।" सैय्यद अल्लामा तहतावी ने निम्नलिखित शब्दों के साथ इस कथन का कारण बताते हुए इसे बरकरार रखा: "यह इसलिए है क्योंकि इस्तिनजा गंदगी हटाने का नाम है, और इसकी सिद्धि के लिए यह आवश्यक है कि कोई हटाने वाला हो, जो व्यक्ति (1) है; कोई हटाई जाने वाली चीज़ हो, जो गंदगी (2) है; कोई जगह हो जहाँ से उसे हटाया जाए, जो निकास (3) है; और हटाने का कोई उपकरण या साधन हो, जो पत्थर (4) आदि है।"

सैय्यद तहतावी ने अल्लामा सैय्यद हलबी की इस आपत्ति पर ध्यान नहीं दिया कि "इस्तिनजा, जो किसी एक रास्ते से गंदी चीज़ को दूर करने का नाम है, उसकी हक़ीक़त इन चारों से या इनमें से किसी एक से भी नहीं बनती"। (फिर इन्हें रुकन कैसे कह दिया गया?) सैय्यद अल्लामा शामी ने भी इस आपत्ति में सैय्यद हलबी का अनुसरण किया और दोनों महानुभावों ने वह सब ज़िक्र करके कलाम को लंबा किया जिससे लेखक और व्याख्याकार...

पादलेख: 1. अल-दुर्र अल-मुख़्तार, इस्तिनजा का अध्याय, मुजतबाई दिल्ली, 1/56 2. तहतावी अला अल-दुरर, इस्तिनजा का अध्याय, बेरूत, 1/124 3. रद अल-मुह्तार, इस्तिनजा का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/246 पृष्ठ 396 / 756

شرح دُرِّمختار میں مدقق علائی رحمہ اللہ تعالیٰ کی درج ذیل عبارت مبنی ہے: " (استنجا کے چار ارکان ہیں۔) (استنجا کرنے والا) شخص ۔۔۔ وہ چیز (جس سے استنجا کیا جائے) جیسے پانی اور پتھر وہ نجس جو سبیلین میں کسی ایک سے (خارج (۳) ہو (اور مخرج) (۴) پیچھے کا مقام یا آگے کا مقام اھ " سید علامہ طحطاوی نے ذیل کے الفاظ سے اس قول کی علت بتاتے ہوئے اسے برقرار رکھا: " یہ اس لئے کہ استنجاء ازالہ نجاست کا نام ہے اور اس کے تحقق کیلئے ضروری ہے کہ کوئی زائل کرنے والا ہو، وہ شخص (۱) ہے، اور کوئی زائل کیا جانیوالا ہو وہ خارج (۲) ہے، اور کوئی جگہ ہو جہاں سے زائل کیا جائے وہ مخرج (۳) ہے اور کوئی ازالہ کا آلہ وذریعہ ہو وہ پتھر (۴) وغیرہ ہے" اھ سید طحطاوی نے علامہ سید حلبی کے اس اعتراض کی طرف التفات نہ کیا کہ " استنجا جو کسی ایک راستے سے نجس چیز کو دُور کرنے کا نام ہے اس کی حقیقت ان چاروں سے یا ان میں کسی ایک سے بھی نہیں بنتی"۔ (پھر انہیں رکن کیسے کہہ دیا گیا؟) سید علامہ شامی نے بھی اس اعتراض میں سید حلبی کی پیروی کی اور دونوں حضرات نے وہ سب ذکر کرکے کلام طویل کیا جس سے مصنف وشارح

متنه التنوير والمدقق العلائي في شرحه الدر (الاستنجاء اركانه اربعة) شخص (مستنج) وشيئ (مستنجى به) كماء وحجر (و) نجس (خارج) من احد السبيلين (ومخرج) دبر اوقبل ١ اھ واقره السيد العلامة ط معللا اياه بقوله وذلك لانه الازالة ولاتتحقق الابمزيل وهو الشخص ومزال وهو الخارج ومزال عنه وهو المخرج وآلة ازالة وهو الحجر ونحوه ٢ اھ ولم يلتفت الى مااعترض به العلامة السيد ح ان حقيقة الاستنجاء الذي هو ازالة نجس عن سبيل لاتتقوم ولابواحد من هذه الاربعة ٣۔ وتبعه السيد العلامة ش واطالا (١) بما حاشا العلامتين المصنف والشارح ان يكونا

حواشی: 1 الدر المختار فصل الاستنجاء مجتبائی دہلی ۱/ ۵۶ 2 طحطاوی علی الدرر فصل الاستنجاء بیروت ۱/ ۱۲۴ 3 رد المحتار فصل الاستنجاء مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۴۶ Page 396 of 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

[Arabic Column Text]: They are far from being heedless of it. Indeed, the explanation of its reality given here was taken from their own mouths at the beginning of the discourse. Then it should not remain hidden from you that what is meant by 'striking' (darb) is touching (imsaas), not specifically the intensity inherent in its literal meaning, although it is better (awla) in some cases. In 'Al-Khaniyah' and 'Al-Khulasah': As for the manner of Tayammum, it is mentioned in 'Al-Asl' that it is said: he should place his hands on the earth. In some narrations, it says: he should strike (yadrib) his hands on the earth. Thus, the first phrasing implies gentleness, and the second implies intensity. This latter way is better so that the dust enters between the fingers. This is the wording of 'Al-Khaniyah'. It is summarized in 'Al-Khulasah' by saying: 'Al-Asl' states: he places his hands on the earth, and in some narrations it says: he strikes, meaning placing with force, and this is better.

[Urdu Column Text]: It is unlikely that those two (mercy be upon them) were unaware; these very personages (Halabi and Shami) have taken the reality of Tayammum which they explained from their own mouths at the beginning of the speech. Let it also not be hidden that 'striking' means touching; the word 'striking' (hitting) which implies intensity is not specifically intended, even though it is better in some situations. And in some narrations it is: let him strike his hands on the ground. So the first statement's form is that it be in a gentle manner, the second's is that he places his hands on the ground with force. And this is better so that the dust enters between the fingers. These are the words of 'Al-Khaniyah'. It has been summarized in 'Al-Khulasah' like this: "It was stated in 'Al-Asl': place your hands on the earth (sa'eed), and in some narrations: strike, meaning keeping with force is intended, and this is better."

[Bottom Section]: Note: i.e., from the mouth of the commentator (Sharh), where he said: Istinja is the removal of impurity from a passage. So it is not sunnah for wind, pebbles, sleep, or bloodletting. (12, from him, may he be forgiven - m)

That is, from the tongue of the commentator, they said: Istinja is to remove an impure thing from one of the passages. Therefore, Istinja is not sunnah for wind, pebbles, sleep, or bloodletting. (12, from him, may he be forgiven - t)

[Footnotes]: 1. Fatawa Qazi Khan, Chapter of Tayammum, Naval Kishore Lucknow, 1/25 2. Khulasat al-Fatawa, Manner of Tayammum, Naval Kishore Lucknow, 1/34 3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Istinja, 1/56

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[अरबी कॉलम का अनुवाद]: वे इससे गाफ़िल रहने से दूर हैं। वास्तव में, इसकी वास्तविकता का जो बयान यहाँ दिया गया है, वह स्वयं उनके मुँह से बहस की शुरुआत में सुनकर लिया गया है। फिर यह भी आपसे छिपा नहीं रहना चाहिए कि 'ज़र्ब' (प्रहार) से तात्पर्य स्पर्श (मस्स) करना है, न कि विशेष रूप से इसके शाब्दिक अर्थ में निहित तीव्रता, हालाँकि कुछ स्थितियों में यह बेहतर (औला) है। 'अल-खानिया' और 'अल-खुलासा' में: तयम्मुम के तरीके के बारे में 'अल-अस्ल' में उल्लेख है कि कहा गया है: वह अपने दोनों हाथ ज़मीन पर रखे। कुछ रिवायतों में है: वह अपने दोनों हाथ ज़मीन पर मारे (यज़रिब)। अतः पहला शब्द नरमी के साथ होने को दर्शाता है और दूसरा शब्द तीव्रता के साथ। और यह बाद वाला तरीका बेहतर है ताकि मिट्टी उँगलियों के बीच में प्रवेश कर जाए। ये 'अल-खानिया' के शब्द हैं। 'अल-खुलासा' में इसे इस तरह संक्षिप्त किया गया है: 'अल-अस्ल' में कहा गया है: वह अपने हाथ ज़मीन पर रखे, और कुछ रिवायतों में है: मारे, यानी ज़ोर से रखना मुराद है, और यह बेहतर है।

[उर्दू कॉलम का अनुवाद]: उन दोनों (उन पर अल्लाह की रहमत हो) का गाफ़िल रहना दूर की बात है; स्वयं उन्हीं महानुभावों (हलबी और शामी) ने तयम्मुम की जो हकीकत बयान की है, वह कलाम की शुरुआत में खुद उनके मुँह से सुनकर ली है। यह भी छिपा न रहे कि 'ज़र्ब' से मुराद 'मस्स' (छूना) है; 'ज़र्ब' (मारने) का शब्द जिस तीव्रता को दर्शाता है वह खास तौर पर मुराद नहीं है, अगरचे कुछ सूरतों में यह औला (बेहतर) है। और बाज़ रिवायतों में है: अपने हाथों को जिन्से ज़मीन पर मारे, तो पहली इबारत की सूरत यह है कि नरमी के तौर पर हो, दूसरी की सूरत यह कि ज़मीन पर सख्ती के साथ हाथ रखता हो। और यह औला है ताकि मिट्टी उँगलियों के दरमियान दाखिल हो जाए। ये खानिया के अल्फाज़ हैं। इसे खुलासा में इस तरह मुख्तसर किया गया है: "असल में फरमाया: अपने हाथों को सईद पर रखे और बाज़ रिवायतों में है: मारे, इससे सख्ती के साथ रखना मुराद है और यह औला है।"

[निचला अनुभाग]: नोट: यानी शारह (व्याख्याकार) के मुँह से, जहाँ उन्होंने कहा: इस्तिंजा किसी रास्ते से नजासत दूर करना है। तो हवा (रीह), कंकरी, नींद और फस्द (रक्तस्राव) के कारण इस्तिंजा सुन्नत नहीं है। (12, उनकी ओर से, खुदा उन्हें माफ़ करे - म)

यानी शारह हज़रत की ज़बानी उन्होंने फरमाया है: इस्तिंजा किसी एक रास्ते से नापाक चीज़ दूर करना है। तो हवा, कंकरी, नींद और फस्द की वजह से इस्तिंजा मसनून नहीं है। (12, उनकी ओर से, खुदा उन्हें माफ़ करे - त)

[पादलेख]: 1. फ़तावा काज़ी खान, बाब अल-तयम्मुम, नवल किशोर लखनऊ, 1/25 2. खुलासत अल-फ़तावा, कैफ़ियत अल-तयम्मुम, नवल किशोर लखनऊ, 1/34 3. दुर्रे मुख्तार, फ़स्ल फ़िल इस्तिंजा, 1/56

पृष्ठ 397/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[عربی عبارت]: غافلین عنہ وانما اخذا بیان حقیقته هذا فیه عه فی صدر هذا الکلام ثم لایخفی علیك ان المراد بالضرب هو الامساس لاخصوص مافی مدلوله من الشدة وان کان اولی فی بعض الصور۔ ففی الخانیة والخلاصة اما صورة التیمم ماذکر فی الاصل قال یضع یدیه علی الصعید وفي بعض الروایات یضرب یدیه علی الصعید فاللفظ الاول ان یکون علی وجه اللین والثانی ان یکون الوجه مع وجه الشدة وهذا اولی لیدخل التراب فی اثناء الاصابع 1هذا لفظ الخانیة واختصره فی الخلاصة بقوله قال فی الاصل یضع یدیه علی الصعید وفي بعض الروایات یضرب یعنی الوضع علی وجه الشدة وهذا اولی 2اھـ

[اردو عبارت]: علیہما الرحمہ کا غافل رہنا بعید ہے، خود ان حضرات (حلبی و شامی) نے تیمم کی جو حقیقت بیان کی ہے وہ ابتدائے کلام میں خود ان ہی کے منہ سے سُن کر اخذ کی ہے۔ یہ بھی مخفی نہ رہے کہ ضرب سے مراد مس کرنا ہے ضرب (مارنے) کا لفظ جس شدت پر دلالت کر رہا ہے خاص وہ مراد نہیں اگرچہ وہ بعض صورتوں میں اولٰی ہے۔ اور بعض روایتوں میں ہے: اپنے ہاتھوں کو جنس زمین پر مارے تو پہلی عبارت کی صورت یہ ہے کہ نرمی کے طور پر ہو دوسری کی صورت یہ کہ زمین پر سختی کے ساتھ ہاتھ رکھتا ہو۔ اور یہ اولٰی ہے تاکہ مٹی انگلیوں کے درمیان داخل ہو جائے۔ یہ خانیہ کے الفاظ ہیں۔ اسے خلاصہ میں اس طرح مختصر کیا ہے: "اصل میں فرمایا: اپنے ہاتھوں کو صعید پر رکھے اور بعض روایات میں ہے: مارے اس سے سختی کے ساتھ رکھنا مراد ہے اور یہ اولٰی ہے اھ

[نچلی عبارت]: عه ای من فم الشارح حیث قال الاستنجاء ازالة نجس عن سبیل فلایسن من ریح وحصاة ونوم وفصد 3اھـ ۱۲ منه غفرله (م) یعنی حضرت شارح کی زبانی انہوں نے فرمایا ہے:

استنجاء کسی ایک راستے سے نجس چیز دور کرنا ہے۔ تو ریح، کنکری، نیند اور فصد کی وجہ سے استنجاء مسنون نہیں اھ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

[حواشی]: 1 فتاوٰی قاضی خان باب التیمم نولکشور لکھنؤ ۲۵/۱ 2 خلاصۃ الفتاوٰی کیفیت التیمم نولکشور لکھنؤ ۳۴/۱ 3 در مختار فصل فی الاستنجاء ۵۶/۱

I say: This is preferable so that a misconception does not arise from the wording of Al-Khaniyah in the first instance—that 'placing' is specific only to soft surfaces. Rather, the meaning is that it includes them. The reason given for the preference of 'striking' in Al-Khaniyah is the same as that cited in several other books like Kifayat al-Bayan, Al-Inayah, Al-Hilyah, Al-Bahr, and others.

It is stated in Al-Khaniyah and Al-Khulasah: "The form of tayammum is that which was mentioned in the original text (Al-Mabsut). He said: Place your hands on the earth surface (species of earth)."

I say: This expression (the wording of Al-Khulasah) is superior so that the misconception, which might arise from the explanation of the previous text in the words of Al-Khaniyah, is avoided—that the word 'placing' is specific to soft surfaces only. In fact, 'placing' is general (whether with softness or firmness). The reason given in Al-Khaniyah for 'striking' being preferable is the same reason mentioned in Ghayat al-Bayan, Al-Inayah, Al-Hilyah, Al-Bahr al-Raiq, and several other books.

I say: Therefore, it is limited to that from which soil or dust can be detached, excluding things like a smooth stone. For this reason, I said regarding some cases: Yes, if one considers its occurrence in the traditions, as reasoned in Al-Mustasfa and seconded in Al-Hilyah, then its absolute preference is not far-fetched to follow the reported wording.

I say: This reason (that soil enters between the fingers through striking) is specific to striking on something from which soil or dust can be separated. This reason will not be found in striking on a smooth stone. That is why I referred to it as "preferable in some cases." However, if it is considered that the word 'strike' (darb) is mentioned in the traditions (making its practice superior), as mentioned in Al-Mustasfa, and recorded in second place in Al-Hilyah, then it is not unlikely that 'striking' is absolutely preferable on this basis because it follows the wording of the Hadith.

In short, what is necessary and mandatory is only touching (the surface). It is clear that the conventional tayammum cannot be realized externally except by it, because conventional tayammum consists of wiping the palms with the actual earth surface and wiping the rest of the limbs with the palm that was placed on the earth surface, as previously mentioned from Al-Kafi and Al-Barjandi that "it is mandatory that the wiping be with the palm placed on the..."

In summary, the binding and necessary requirement is only to touch. It is evident that without this, conventional tayammum cannot manifest in reality, as conventional tayammum involves wiping the palms against the actual earth and then using the palm that touched the earth to wipe the rest of the limbs and the face. As mentioned earlier with reference to Al-Kafi and Al-Barjandi, "the obligation is that the wiping be done with that palm which was placed on the ground..."

फ़तावा रिज़विया - जिल्द 3

मैं कहता हूँ: यह बेहतर है ताकि अल-खानिया के पहले शब्दों से यह भ्रम पैदा न हो कि 'रखना' केवल नरम सतह के लिए विशिष्ट है। बल्कि, इसका अर्थ यह है कि इसमें वह भी शामिल है। अल-खानिया में 'मारने' (ज़रब) की प्राथमिकता का जो कारण बताया गया है, वही किफ़ायत अल-बयान, अल-इनाया, अल-हिलिया, अल-बहर और अन्य कई किताबों में भी दिया गया है।

खानिया और खुलासा में है: "तयम्मुम का तरीका वही है जो मूल (मबसूत) में ज़िक्र किया गया है। फ़रमाया: अपने हाथों को सईद (मिट्टी की किस्म) पर रखे।"

मैं कहता हूँ: और यह अभिव्यक्ति (खुलासा की इबारत) बेहतर है ताकि वह वहम पैदा न हो जो पहली इबारत की व्याख्या में खानिया के शब्दों से पैदा हो रहा था कि रखने का शब्द केवल नरम स्थिति के लिए विशिष्ट है, जबकि रखने से मुराद सामान्य है (चाहे नरमी के साथ हो या सख्ती के साथ)। खानिया में मारने के बेहतर होने की जो वजह बताई गई है, वही ग़ायत अल-बयान, इनाया, हिलिया, अल-बहर अर-राइक और अन्य कई किताबों में बयान की गई है।

मैं कहता हूँ: इसलिए यह उसी चीज़ तक सीमित है जिससे मिट्टी या गर्द अलग हो सके, न कि चिकने पत्थर जैसी चीज़। इसी लिए मैंने कुछ सूरतों में कहा: हाँ, अगर इस पर नज़र की जाए कि रिवायतों में 'ज़रब' (मारना) शब्द आया है, जैसा कि मुस्तस्फ़ा में दलील दी गई है और हिलिया में इसे दूसरे नंबर पर ज़िक्र किया गया है, तो यह दूर नहीं कि इस आधार पर ज़रब (मारना) पूर्णतः बेहतर हो क्योंकि इसमें हदीस के शब्दों का पालन होगा।

मैं कहता हूँ: यह वजह (मारने से मिट्टी का उंगलियों के बीच दाखिल हो जाना) उसी चीज़ पर मारने के लिए खास है जिससे मिट्टी या गर्द जुदा हो सके। चिकने पत्थर जैसी चीज़ पर मारने में यह वजह नहीं पाई जाएगी। इसी लिए मैंने इसे "कुछ सूरतों में बेहतर" कहा। हाँ, अगर इस बात पर गौर किया जाए कि रिवायतों में 'ज़रब' शब्द आया है (इसलिए इस पर अमल बेहतर है), जैसा कि मुस्तस्फ़ा में यही दलील बताई गई है और हिलिया में इसे दूसरे नंबर पर ज़िक्र किया गया है, तो यह मुमकिन है कि इस आधार पर ज़रब मुतलकन (पूर्णतः) बेहतर हो क्योंकि इसमें हदीस के लफ़्ज़ की पैरवी होगी।

कुल मिलाकर, अनिवार्य और ज़रूरी सिर्फ छूना है। और यह ज़ाहिर है कि इसके बिना असल तयम्मुम मुमकिन नहीं है, क्योंकि असल तयम्मुम यह है कि हथेलियों को असली मिट्टी से मसः किया जाए, और बाकी अंगों को मिट्टी पर रखी हुई हथेली से मसः किया जाए। जैसा कि अल-काफ़ी और

बरजंदी के हवाले से पहले गुज़र चुका है कि "वाजिब यह है कि मसः उस हथेली से हो जो ज़मीन पर रखी गई..."

हासिल यह कि लाज़िम और ज़रूरी सिर्फ मस करना है और ज़ाहिर है कि इसके बिना तयम्मुम-ए-महऊद (प्रचलित तयम्मुम) हकीकत में मुमकिन नहीं है क्योंकि तयम्मुम-ए-महऊद यह है कि हथेलियों का मिट्टी से, और बाकी हाथों और चेहरे का मिट्टी पर रखी हुई हथेली से मसः हो। जैसा कि काफ़ी और बरजंदी के हवाले से गुज़र चुका है कि "वाजिब यह है कि मसः उस हथेली से हो जो ज़मीन पर रखी..."

पृष्ठ 398 का 756

اقول: وھذا اولی کیلا یتوھم من لفظ الخانیة في اللفظ الاول ان الوضع یختص باللین وانما المعنی انه یشمله ومآعلل به اولویة الضرب في الخانیة به عللوھا فی غیر ما کتاب کفایة البیان والعنایة والحلیة والبحر وغیرھا۔ خانیہ اور خلاصہ میں ہے: "تیمم کی صورت وہ ہے جو اصل (مبسوط) میں ذکر کی گئی ہے۔ فرمایا: اپنے ہاتھوں کو صعید (جنس زمین) پر رکھے اقول: اور یہ تعبیر (خلاصہ کی عبارت) اولی ہے تاکہ وہ وہم نہ پیدا ہو جو پہلی عبارت کی توضیح میں خانیہ کے الفاظ سے پیدا ہورہا تھا کہ رکھنے کا لفظ صرف نرمی والی صورت سے ہی مخصوص ہے جب کہ رکھنے سے مراد عام ہے (نرمی کے ساتھ ہو یا سختی کے ساتھ) خانیہ میں ضرب کے اولیٰ ہونے کی جو علت بتائی ہے وہی غایۃ البیان، عنایہ، حلیہ، البحر الرائق و غیر ہا متعدد کتابوں میں بیان کی گئی ہے۔

اقول: فیقتصر علی ما ینفصل منه تراب اونقع دون نحو حجر املس ولذا قلت في بعض الصور نعم ان نظر الی وروده في الاثار کما علل به في المستصفی وثنی به فی الحلیة فلا یبعد اولویته مطلقا لاتباع اللفظ الوارد۔ اقول: یہ علت (ضرب سے مٹی کا انگلیوں کے درمیان داخل ہو جانا) اسی چیز پر ضرب سے خاص ہے جس سے مٹی یا غبار جدا ہو سکے چکنے پتھر جیسی چیز پر ضرب میں یہ علت نہ پائی جائے گی۔ اسی لئے میں نے اسے "بعض صورتوں میں اولیٰ" کہا ہاں اگر اس پر نظر کی جائے کہ لفظ ضرب آثار میں وارد ہے (اسی لئے اس پر عمل اولیٰ ہے) جیسا کہ مستصفی میں یہی علت بتائی ہے اور حلیہ میں اسے دوسرے نمبر پر ذکر کیا ہے تو بعید نہیں کہ اس بنیاد پر ضرب مطلقاً اولیٰ ہو کیونکہ اس میں لفظ حدیث کا اتباع ہوگا۔ وبالجملة فلیس اللازم الا الامساس ومن البین ان التیمم المعھود لا تحقق له فی الخارج الابه لانه مسح الکفین بالصعید الحقیقی وبقیة العضوین بالکف الموضوع علی الصعید کما تقدم عن الکافي والبرجندي ان الواجب المسح بکف موضوع علی

الحاصل لازم و ضروری صرف مس کرنا ہے اور ظاہر ہے کہ اس کے بغیر خارج میں تیمم معہود کا تحقق بھی نہیں ہوسکتا کیونکہ تیمم معہود یہ ہے کہ ہتھیلیوں کا صعیدِ حقیقی سے، اور بقیہ ہاتھوں اور چہرے کا صعید پر رکھی ہوئی ہتھیلی سے مسح ہو۔ جیسا کہ کافی اور برجندی کے حوالے سے گزر چکا کہ "واجب یہ ہے کہ مسح اس ہتھیلی سے ہو جو زمین پر رکھی

Fatawa Razawiyya, Volume 3

(Arabic text translation): "...the earth.[1] And from Al-Bada'i, it is stated that the condition is to touch the face and hands with the hands struck upon the surface of the earth.[2] End quote. Therefore, if there is no striking, neither of them is realized (neither wiping with real earth nor legal earth), and its pillars do not exist except with this condition. This, despite its extreme clarity, might be further clarified by the fact that if someone wakes up from sleep and starts wiping the sleep from their face, and passes their palms over their forearms to remove lethargy, or performs ablution (wudu) and wipes water from their face and forearms—no one would imagine that the pillars of tayammum have been realized externally. Thus, it is established that the two strikings are among the conditions."

(Urdu text): "...has already passed. And it was mentioned with reference to Al-Bada'i that 'the condition is that the face and hands be touched with the hands struck upon the surface of the earth.' End quote. So when there is no striking, then neither of the two (wiping with real earth and wiping with legal earth) will be realized, thus without this condition, the pillars of the customary tayammum will not even exist. Despite being very clear, it is further explained by this: if a person wakes up from sleep and starts rubbing their face to remove the effects of sleep and also rubs their palms over their wrists to remove laziness, or if someone who had to perform wudu wiped water on their face and wrists—in these cases no one can even have a thought that the pillars of tayammum have been realized externally. So it is proven that both strikings are among such conditions that..."

(Marginal Note): "I say: On the statement in Durr-e-Mukhtar 'the earth (sa'id) is among the conditions of tayammum,' Sayyid Tahtawi remarked that the earth is a part of the essence of tayammum because it is the name for rubbing hands and face on the earth. Sayyid Tahtawi's statement could also be interpreted as calling a condition a part or essence (pillar). However, immediately after this, by saying 'it (the earth) is not a condition,' he [rendered] his statement... (Continued on the next page)"

Footnotes: 1. Sharh al-Niqayah by al-Birjandi, Chapter on Tayammum, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/46. 2. Bada'i al-Sana'i, Chapter on what is used for Tayammum, Saeed Company, Karachi, 1/53.

Page 399 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

(अरबी पाठ अनुवाद): "...पृथ्वी।[1] और अल-बदाए' से यह है कि शर्त यह है कि पृथ्वी की सतह पर मारे गए हाथों से चेहरे और हाथों को छुआ जाए।[2] अंत उद्धरण। इसलिए, यदि प्रहार नहीं है, तो उनमें से कोई भी साकार नहीं होता है (न तो वास्तविक मिट्टी से पोंछना और न ही कानूनी मिट्टी से), और इसके स्तंभ इस शर्त के बिना मौजूद नहीं होते हैं। यह, अपनी अत्यधिक स्पष्टता के बावजूद, इस तथ्य से और स्पष्ट हो सकता है कि यदि कोई व्यक्ति नींद से जागता है और अपने चेहरे से नींद पोंछने लगता है, और सुस्ती दूर करने के लिए अपनी हथेलियों को अपने अग्रभागों पर फेरता है, या वज़ू करता है और अपने चेहरे और अग्रभागों से पानी पोंछता है—कोई भी यह कल्पना नहीं करेगा कि तयम्मुम के स्तंभ बाहरी रूप से साकार हो गए हैं। इस प्रकार, यह स्थापित हो गया है कि दो प्रहार शर्तों में से हैं।"

(उर्दू पाठ): "...चुकी है। और बदाए' के हवाले से गुज़रा कि 'शर्त यह है कि रू-ए-ज़मीन पर मारे हुए हाथ से चेहरे और हाथों को मस किया जाए।' अंत उद्धरण। तो जब ज़र्ब ही न हो तो दोनों (सईद हक़ीक़ी से मस और सईद हुक्मी से मस) में से किसी का तहक़्क़ुक़ न होगा, तो इस शर्त के बिना तयम्मुम-ए-माहूद के अरकान का वुजूद ही न होगा। बहुत वाज़ेह होने के बावजूद इसकी मज़ीद वज़ाहत इससे होती है कि अगर कोई शख़्स नींद से उठकर असर दूर करते हुए चेहरे पर हाथ फेरने लगा और कलाइयों पर भी सुस्ती दूर करने के लिए हथेलियाँ फेर लें, या किसी को वज़ू करना हुआ तो अपने चेहरे और कलाइयों पर पानी से मस किया—इन सूरतों में किसी को वहम भी नहीं हो सकता कि ख़ारिज में तयम्मुम के अरकान मुतहक़्क़िक़ हो गए। तो साबित हुआ कि दोनों ज़र्बें ऐसी शर्तों में से हैं कि..."

(हाशिया): "अक़ूल (मैं कहता हूँ): दुर्र-ए-मुख्तार की इबारत 'सईद शराइत-ए-तयम्मुम से है' पर सैय्यद तहतावी ने फ़रमाया कि सईद हक़ीक़त-ए-तयम्मुम का जुज़ है क्योंकि वह सईद पर हाथ और चेहरे फेरने का नाम है। सैय्यद तहतावी की इस इबारत को भी इसी तरफ फेरा जा सकता था कि शर्त को जुज़-ओ-हक़ीक़त (रुकन) कह दिया है। लेकिन उन्होंने इसके बाद ही यह कह कर कि 'वह (सईद) शर्त नहीं' अपनी इबारत को... (बाक़ी अगले सफ़हे पर)"

पादलेख: 1. शरह अल-निक़ाया अल-बिरजंदी, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/46। 2. बदाए' अल-सनाई', तयम्मुम की चीज़ों का अध्याय, सईद कंपनी, कराची, 1/53।

فتاوی رضویہ، جلد سوم

الارض[1] وعن البدائع ان الشرط امساس الید المضروبة علی وجه الارض علی الوجه والیدین[2] اه فاذا لم یضرب لم یتحقق شیئ منهما فلا وجود لارکانه الا بهذا الشرط وهذا مع شدة وضوحه ربما یزیده ایضاحاً ان من قام عن نومه فجعل یمسح النوم عن وجهه وامر کفیه علی ذراعیه رفعاً للکسل اوتوضأ فمسح الماء عن وجهه وذراعیه لیس لاحد ان یتوهم ان قد تحقق ارکان التیمم في الخارج فثبت عہ ان الضربتین من الشرائط

جا چکی ہے۔" اور بدائع کے حوالے سے گزرا کہ "شرط یہ ہے کہ روئے زمین پر مارے ہوئے ہاتھ سے چہرے اور ہاتھوں کو مس کیا جائے" اھ تو جب ضرب ہی نہ ہو تو دونوں (صعید حقیقی سے مسح اور صعید حکمی سے مسح) میں سے کسی کا تحقق نہ ہوگا تو اس شرط کے بغیر تیمم معہود کے ارکان کا وجود ہی نہ ہوگا۔ بہت واضح ہونے کے باوجود اس کی مزید وضاحت اس سے ہوتی ہے کہ اگر کوئی شخص نیند سے اٹھ کر اثر دور کرتے ہوئے چہرے پر ہاتھ پھیرنے لگا اور کلائیوں پر بھی سستی دُور کرنے کیلئے ہتھیلیاں پھیر لیں ، یا کسی کو وضو کرنا ہوا تو اپنے چہرے اور کلائیوں پر پانی سے مسح کیا ان صورتوں میں کسی کو وہم بھی نہیں ہو سکتا کہ خارج میں تیمم کے ارکان متحقق ہوگئے تو ثابت ہوا کہ دونوں ضربیں ایسی شرطوں میں سے ہیں کہ

عہ اقول: وکان یمکن ان یرجع الی هذا قول السید ط لما ذکر الدر الصعید من شرائط التیمم قال هو جزء الحقیقة لانها مسح الوجه والیدین علی الصعید لکنه رحمه الله تعالی زاد بعده ولیس بشرط فجعله اقول: درِ مختار کی عبارت "صعید شرائطِ تیمم سے ہے" پر سید طحطاوی نے فرمایا صعید حقیقتِ تیمم کا جز ہے اس لئے کہ وہ صعید پر ہاتھ اور چہرے پھیرنے کا نام ہے۔ سید طحطاوی کی اس عبارت کو

بھی اسی طرف پھیرا جاسکتا تھا کہ شرط کو جز و حقیقت (رکن) کہہ دیا ہے۔ لیکن انہوں نے اس کے بعد ہی یہ کہہ کر کہ "وہ (صعید) شرط نہیں " اپنی عبارت کو (باقی بر صفحہ آئندہ)

[1] شرح النقایہ للبرجندی فصل التیمم مطبع نولکشور لکھنؤ ۴۶/۱ [2] بدائع الصنائع فصل ما یتیمم بہ سعید کمپنی کراچی ۵۳/۱

Fatawa Razvia, Volume 3

Which does not realize the customary tayammum (dry ablution) in actual practice either, except by both of them (striking the earth twice). Thus, it was appropriate to call them "pillars" (arkan). However, non-customary tayammum does not depend on these two strikes; rather, it is achieved by placing the body parts of tayammum in a place with dust, or by moving those parts within it, or by rubbing the hand over the dust already settled on the body parts, or by picking up something of the earth's nature and rubbing it over those parts. As has been explained previously for all of these. All praise is due to Allah, it has become manifest that our Imams' intent by "striking" (darb) is the contact of the palm with the earth, and by "pillar" (rukn) they mean a condition without which the thing conditioned cannot be conceived, and by "tayammum" they mean the customary tayammum. This is a clear and truthful statement with no ambiguity. As for the ten sub-cases, they all pertain to non-customary tayammum. Therefore, the absence of striking in them does not contradict the status of striking as a pillar in customary tayammum. Through this elegant research, worthy of acceptance, the words of the great Imams are reconciled and aligned, and doubts regarding the sub-cases are dispelled.

(Remainder of the footnote from the previous page): Making it explicit and beyond interpretation, and upon this (1), it would follow that the face and hands are also parts of the reality of tayammum, just as sight is a part of the reality of blindness. Its weakness and flaw are evident to every observer. 12 (From him, may he be forgiven) (M). Made it an explicit non-interpretable matter, and based on this, it would be necessary that the face and both hands also be parts of the essence of tayammum, and sight be a part of the essence of blindness. Its flaw and weakness are manifest to every observer. 12 (From him, may he be forgiven) (T).

Page 400 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

जो बाहरी वास्तविकता में भी प्रचलित तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) को उन दोनों (दो बार हाथ मारने) के बिना सिद्ध नहीं करता, इसीलिए उन्हें 'रुकन' (स्तंभ) नाम देना उचित हुआ। लेकिन गैर-परंपरागत तयम्मुम इन दो प्रहारों पर निर्भर नहीं है, बल्कि यह इस तरह भी सिद्ध हो जाता है कि तयम्मुम के अंगों को धूल वाली जगह पर रख दिया जाए, या उनमें अंगों को हिला लिया जाए, या अंगों पर पड़ी धूल पर हाथ फेर लिया जाए, या ज़मीन की किसी चीज़ को उठाकर उन अंगों पर फेर लिया जाए। जैसा कि इन सब का विवरण पहले आ चुका है। अल्लाह का शुक्र है कि यह स्पष्ट हो गया कि हमारे इमामों का 'ज़रब' (प्रहार) से तात्पर्य हथेली का ज़मीन से स्पर्श करना है, और 'रुकन' से तात्पर्य ऐसी शर्त है जिसके बिना मूल कार्य की कल्पना नहीं की जा सकती, और 'तयम्मुम' से तात्पर्य प्रचलित तयम्मुम है। और यह पूरी तरह से स्पष्ट और सत्य बात है। रही बात उन दस उप-मामलों की, तो वे सभी गैर-परंपरागत तयम्मुम से संबंधित हैं। उनमें प्रहार का न होना प्रचलित तयम्मुम में प्रहार की रुकनियत (स्तंभ होने) के विपरीत नहीं है। इस आकर्षक और स्वीकार्य शोध से महान इमामों के शब्दों में तालमेल और सहमति बन जाती है, और उप-मामलों से संबंधित संदेह दूर हो जाते हैं।

(पिछले पृष्ठ का शेष फ़ुटनोट): व्याख्या की गुंजाइश के बिना स्पष्ट कर दिया, और इस आधार पर (1) यह अनिवार्य होगा कि चेहरा और दोनों हाथ भी तयम्मुम की वास्तविकता के हिस्से हों और दृष्टि अंधेपन की वास्तविकता का हिस्सा हो। इसकी कमज़ोरी और दोष हर देखने वाले पर स्पष्ट है। 12 (उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए) (म)। इसे व्याख्या के अयोग्य स्पष्ट विषय बना दिया, और इस पर यह अनिवार्य होगा कि चेहरा और दोनों हाथ भी तयम्मुम के सार का हिस्सा हों और दृष्टि अंधेपन के सार का हिस्सा हो। इसकी खामी और कमजोरी हर देखने वाले पर ज़ाहिर है। 12 (उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए) (त)।

पृष्ठ 400/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم التی لاتحقق التیمم المعهود فی الاعیان ایضاً ان کے بغیر خارج میں بھی تیمم معہود کا تحقق نہیں ہوسکتا اس الابهما فناسب ان تسمیا رکنین۔ لئے انہیں رکن کا نام دینا مناسب ہوا۔ اما التیمم الغیر المعهود فلا یتوقف علیهما بل لیکن تیمم غیر معہود ان دو ضربوں پر موقوف نہیں، وہ یوں یتحقق بادخال المحل فی موضع الغبار بھی متحقق ہوجاتا ہے کہ اعضائے تیمم کو غبار کی جگہ داخل وبتحریکہ فیہ وبامرار الید علی النقع الواقع کردے، یا اس میں ان اعضاء کو جنبش دے لے یا اعضاء پر علی المحل وبامرار الصعید علیہ کما مر تقریر پڑے ہوئے غبار پر ہاتھ پھیر لے یا جنس زمین سے کوئی چیز کل ذلک فظهر وللہ الحمد ان مراد ائمتنا اٹھا کر ان اعضاء پر پھیر لے۔ جیسا کہ ان سب کی تقریر بالضرب امساس الکف بالصعید وبالرکن گزر چکی۔ تو بحمداللہ ظاہر ہوا کہ ضرب سے ہمارے ائمہ کی مراد الشرط الذی لا تصور المشروط بدونہ وبالتیمم صعید سے ہتھیلی کو مس کرنا، اور رکن سے مراد ایسی شرط جس التیمم المعهود وهو کلام حق لا غبار علیہ۔ کے بغیر مشروط کا تصور نہیں ہوتا، اور تیمم سے مراد تیمم معہود اما الفروع العشرة فکلها فی التیمم الغیر اور یہ بالکل بے غبار اور برحق کلام ہے۔ المعهود فعدم الضرب فیها لاینافی رکنیتہ رہ گئے وہ دسوں جزئیات تو وہ سب تیمم غیر معہود سے متعلق للتیمم المعهود وبهذا التحقیق الانیق الحقیق ہیں ان میں ضرب کا نہ ہونا تیمم معہود میں رکنیت ضرب کے بالقبول * تلتئم کلمات الائمة الفحول * وتندفع منافی نہیں۔ اس دلکش، لائق قبول تحقیق سے ائمہ فحول کے الشبهات عن الفروع و کلمات میں مطابقت و موافقت ہوجاتی ہے، اور فروع و

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) مفسّر ناقابل تاویل بنادیا اور اس پر یہ لازم آئے گا کہ چہرہ اور دونوں مفسّراً بغیر قابل للتأویل وعلی (۱) هذا یلزم ان یکون ہاتھ بھی حقیقت تیمم کا جز ہوں اور بصر

حقیقت عمیٰ کا جز ہو، اس کی الوجہ والیدان ایضاً اجزاء حقیقة التیمم والبصر جزء خامی وکمزوری ہر ناظر پر عیاں ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت) حقیقة العمی وھو کما تری ۱۲ منہ غفرلہ (م)

Fatawa Rizvia - Volume 3

Principles: The ongoing dispute for a thousand years between the chosen just ones is resolved. This is how investigation should be. Praise be to Allah for the success granted. May Allah's blessings be upon our master and lord, and his family, companions, offspring, and his entire group, forever and ever. All praise is due to Allah, the Lord of all worlds.

Discussion 12: From these discussions, it becomes evident that among the six mentioned definitions, the better ones are those with even numbers, not odd ones. It is also known that the sixth definition is specific to the customary (known) Tayammum, whereas the second and fourth are general to all forms of Tayammum. In the fourth definition, only the essence of Tayammum is stated, thus fulfilling the requirement of definition, while the second definition adds "intention of purification" for further clarity.

The six mentioned definitions are as follows: (1) Intention of using pure soil for purification. (2) Using pure soil on two specific organs with the intention of purification under specific conditions, or using any part of the earth on specific organs with the intention of purification. (3) Intention of using purifying soil and its use specifically for an act of worship. (4) Wiping the face and hands with pure soil. (5) The state of purity obtained by using pure soil on two specific organs with a specific intention. (6) Two strikes (on soil), one for the face and one for the hands up to the elbows. — 12 Muhammad Ahmad Misbahi

Page 401 of 756

सिद्धांत: चुने हुए न्यायियों के बीच हज़ार साल से चला आ रहा विवाद सुलझ जाता है। शोध इसी प्रकार होना चाहिए। सफलता के लिए अल्लाह का शुक्र है। अल्लाह की कृपा हमारे स्वामी और मालिक पर, और उनके परिवार, साथियों, संतान और उनके पूरे दल पर सदा बनी रहे। समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो लोकों का स्वामी है।

चर्चा 12: इन चर्चाओं से यह स्पष्ट हुआ कि उल्लिखित छह परिभाषाओं में से वे बेहतर हैं जो सम संख्या वाली हैं, न कि वे जो विषम हैं। यह भी ज्ञात हुआ कि छठी परिभाषा ज्ञात (प्रचलित) तयम्मुम के लिए विशिष्ट है, जबकि दूसरी और चौथी परिभाषाएँ हर प्रकार के तयम्मुम के लिए सामान्य हैं। चौथी परिभाषा में तयम्मुम की वास्तविकता के वर्णन पर ही संतोष किया गया है, जिसने परिभाषा की मर्यादा को पूरा किया, जबकि दूसरी ने "पवित्रता का इरादा" शब्द जोड़कर और अधिक स्पष्टता प्रदान की है।

उल्लिखित छह परिभाषाएँ इस प्रकार हैं: (1) पवित्रता के लिए पाक मिट्टी (सईद) का इरादा करना। (2) विशिष्ट शर्तों के साथ पवित्रता के इरादे से दो विशिष्ट अंगों पर पाक मिट्टी का उपयोग करना या पवित्रता के इरादे से भूमि के किसी भाग का विशिष्ट अंगों पर उपयोग करना। (3) पवित्र मिट्टी का इरादा करना और इबादत के लिए विशेष रूप से उसका उपयोग करना। (4) पाक मिट्टी से चेहरे और हाथों का मसह (पोंछना) करना। (5) वह पवित्रता जो पाक मिट्टी को दो विशिष्ट अंगों पर विशिष्ट इरादे के साथ उपयोग करने से प्राप्त हो। (6) दो प्रहार (मिट्टी पर हाथ मारना), एक प्रहार चेहरे के लिए और एक कोहनियों तक हाथों के लिए। — 12 मुहम्मद अहमद मिस्बाही

पेज 401/756

الاصول * ویرتفع النزاع المستمر من الف سنة | اصول سے شبہات کے غبار چھٹ جاتے ہیں۔ اور عادلوں بین الخیار العدول * هكذا ينبغي | برگزیدہ کے مابین "ہزار سال سے جاری رہنے والے التحقیق * والحمد لله على حسن التوفيق * وصلى | اختلاف" کا خاتمہ ہو جاتا ہے تحقیق اسی طرح ہونی چاہئے اور اللہ تعالی علی سیدنا ومولانا وآله وصحبه وابنه | حسن توفیق پر خدا کا شکر ہے اور اللہ تعالیٰ کا درود ہو ہمارے وحزبه اجمعين ابد الأبدين * والحمد لله رب | سردار اور آقا پر اور ان کی آل، اصحاب، فرزند، جماعت سب پر العلمين * | ہمیشہ ہمیشہ۔ اور ساری خوبیاں اللہ کیلئے ہیں جو سارے جہانوں کا رب ہے۔

الثانی عشر: ظهر لك من هذه المباحث ان احسن | بحث ۱۲: ان مباحث سے ظاہر ہوا کہ مذکورہ چھ تعریفوں هذه الحدود الستة ازواجها دون اوتارها وان | میں بہتر وہ ہیں جو جفت نمبر پر آئی ہیں، وہ نہیں جو طاق السادس مختص بالتيمم المعهود والثانی | ہیں۔ اور یہ بھی معلوم ہوا کہ چھٹی تعریف تیممِ معہود سے والرابع يعمان كل تيمم بيد ان الرابع مقتصر | خاص ہے اور دوسری، چوتھی ہر تیمم کو عام ہیں۔ ہاں یہ ہے کہ علی حقیقته فقرادی حق الحد والثانی زاده | چوتھی تعریف میں حقیقتِ تیمم کے بیان پر اکتفا کیا ہے تو اس ایضا حابا بزيادة قصد التطهير۔ | نے تحدید کا حق ادا کیا اور دوسری نے "قصدِ تطہیر" کا اضافہ کرکے مزید وضاحت کر دی ہے۔

عہ مذکورہ چھ تعریفیں یوں ہیں: (۱) تطہیر کیلئے پاک صعید کا قصد۔ (۲) دو مخصوص عضووں پر تطہیر کے قصد سے مخصوص شرطوں کے ساتھ صعید کا استعمال یا زمین کے کسی جز کا بقصدِ تطہیر اعضائے مخصوصہ پر استعمال۔ (۳) مطہر صعید کا قصد اور ادائے قربت کے لئے مخصوص طور پر اس کا استعمال۔ (۴) پاک صعید سے چہرے اور ہاتھوں کا مسح۔ (۵) وہ طہارت

جو پاک صعید کو دو مخصوص عضووں میں بقصدِ مخصوص استعمال کرنے سے حاصل ہو۔ (۶) دو ضربیں، ایک ضرب چہرے کیلئے اور ایک ضرب کہنیوں تک ہاتھوں کیلئے۔ ۱۲ محمد احمد مصباحی

صفحہ 401 از 756

Fatawa-e-Razviya Volume Three

I say: There are three discussions here. Firstly, it is apparent that by purification (tathir), the removal of legal impurity (najasa-e-hukmiya) is intended. However, sometimes tayammum is performed for the deceased (1) when water is not found, or if it is a man among women, or a woman among men, or an adolescent hermaphrodite in any case. A Mahram (unmarriageable relative) will perform the tayammum. If no Mahram is present, then a stranger will perform it using a cloth. All this is in 'Al-Durr al-Mukhtar', and a detailed mention will follow. Most of the scholars (2) have stated that the deceased becomes physically impure (najasa-e-haqiqiya) upon death, and this is more apparent (Bada'i 2). This is the correct view (Kafi 3) and it is more in line with logical deduction (Fath al-Qadir 4).

Annotation: This is because a human is a being with blood, so like other such animals, they become impure upon death (Fath al-Qadir 5). I say: An objection arises here that if it were so, their purification through washing (ghusl) would not be possible. Observe that if a carcass is washed a thousand times, it does not become pure; however, its skin alone becomes pure through tanning.

Watermark: I.T. Majlis of Dawatelslami

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Funeral Prayer, published by Mujtabai Delhi, 1/119
2. Bada'i al-Sana'i, Section on the Obligation of Washing the Deceased, H.M. Saeed Company Karachi, 1/299
3. Kafi
4. Fath al-Qadir, Section on Washing, Nooriyya Razviyya Sukkur, 1/70
5. Ibid

Page 402 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

मैं कहता हूँ: यहाँ तीन चर्चाएँ हैं। पहली, ज़ाहिर यह है कि पाकी (ततहीर) से मुराद हुक्मी नापाकी (नजासत-ए-हुक्मिया) का ख़ात्मा है। लेकिन कभी ऐसा होता है कि मय्यत को तयम्मुम कराया जाता है (१) जब पानी न मिले, या औरतों के बीच कोई मर्द हो, या मर्दों के बीच कोई औरत, या मुतलक़ तौर पर कोई बालिग होने के क़रीब वाला उभयलिंगी (ख़ुनसा) हो। कोई महरम उसे तयम्मुम कराएगा। अगर महरम न हो, तो अजनबी किसी कपड़े के ज़रिये तयम्मुम कराएगा। यह सब 'दुर्रे मुख़्तार' में है और विस्तार से ज़िक्र आगे आएगा। आम तौर पर मशाइख़ (विद्वानों) ने (२) यह फ़रमाया है कि मौत से मय्यत हक़ीक़ी नापाकी (नजासत-ए-हक़ीक़िया) के साथ नापाक हो जाती है। यही ज़्यादा स्पष्ट (ज़ाहिर तर) है (बदाए २), यही सहीह है (काफ़ी ३), यही दलील (क़यास) के ज़्यादा क़रीब है (फ़तह अल-क़दीर ४)।

टीका: क्योंकि इंसान ख़ून रखने वाला जानदार है, इसलिए वह भी दूसरे जानदारों की तरह मौत से नापाक हो जाएगा (फ़तह अल-क़दीर ५)। मैं कहता हूँ: इस पर यह एतराज़ (आपत्ति) होता है कि अगर ऐसा होता तो ग़ुस्ल से उसकी पाकी मुमकिन न होती। देख लीजिए कि मुर्दार (मरे हुए जानवर) को अगर हज़ार बार भी ग़ुस्ल दिया जाए तो वह पाक नहीं होगा, हाँ सिर्फ खाल रंगने (दबाग़त) से पाक होती है।

वॉटरमार्क आई.टी. मज्लिस ऑफ दावत-ए-इस्लामी

1. अल-दुर्र अल-मुख़्तार, जनाज़ा की नमाज़ का अध्याय, मुजतबाई देहली द्वारा मुद्रित, 1/119
2. बदाए अल-सनाए, मय्यत को ग़ुस्ल देने के हुक्म का खंड, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/299
3. काफ़ी
4. फ़तह अल-क़दीर, ग़ुस्ल का खंड, नूरिय्या रज़विया सुक्कुर, 1/70
5. ऐज़न (वही)

पृष्ठ 402/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

اقول: وفیه ثلثة مباحث الاول الظاهر ان المراد بالتطهیر ازالة النجاسة الحکمیة لکن ربما ییمم (۱) المیت اذالم یوجد ماء اوکان رجلا بین نساء اوامرأة بین رجال اوخنثی مراهقة مطلقاً فانه ییمم المحرم فان لم یکن فالاجنبی بخرقة الکل فی الدر ویأتی مفصلا وقد (۲) قال عامة المشائخ ان المیت یتنجس بالموت نجاسة حقیقة وهو الاظهر ۲ بدائع وهو الصحیح ۳ کافی وهو الاقیس ۴ فتح ۔

اقول: یہاں تین بحثیں ہیں: اول ظاہر یہ ہے کہ تطہیر سے نجاست حکمیہ کا ازالہ مراد ہے لیکن کبھی ایسا ہوتا ہے کہ میت کو تیمم کرایا جاتا ہے جب پانی نہ ملے یا میت عورتوں کے درمیان کوئی مرد، یا مردوں کے درمیان کوئی عورت یا کوئی مراہق خنثی ہو مطلقاً۔ اسے کوئی محرم تیمم کرائے گا، وہ نہ ہو تو اجنبی کسی کپڑے کے ذریعے تیمم کرائے گا۔ یہ سب درمختار میں ہے اور تفصیلی ذکر آگے آئے گا اور عامہ مشائخ نے یہ فرمایا ہے کہ موت سے میت نجاست حقیقیہ کے ساتھ نجس ہوجاتی ہے اور یہ ظاہر تر ہے، بدائع۔ یہی صحیح ہے، کافی۔۔۔ یہی زیادہ قرینِ قیاس ہے، فتح القدیر۔

عه لان الآدمی حیوان دموی فیتنجس بالموت کسائر الحیوان ۵ فتح اقول: ویرد علیه ان لوکان کذالم یمکن تطهیره بالغسل الاتری الجیفة لوغسلت الف مرة لم تطهر وانما یطهر منها الجلد بالدباغ

اس لئے کہ آدمی ، خون رکھنے والا جاندار ہے تو یہ بھی ایسے دوسرے جانداروں کی طرح موت سے نجس ہوجائے گا، فتح القدیر۔ اقول: اس پر یہ اعتراض وارد ہوگا کہ اگر ایسا ہوتا تو غسل سے اس کی تطہیر ممکن نہ ہوتی۔ دیکھ لیجئے کہ مردار کو اگر ہزار بار بھی غسل دیا جائے تو پاک نہ ہوگا، ہاں دباغت سے صرف

Watermark: I.T. Majlis of Dawatelslami

1 الدرالمختار باب صلاة الجنائز مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۱۱۹ 2 بدائع الصنائع فصل فی وجوب غسل المیت ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۹۹ 3 کافی 4 فتح القدیر فصل فی الغسل نوریہ رضویہ سکھر ۱/۷۰ 5 ایضاً

Fatawa Razawiya Volume 3

I say: Meaning other than the Prophets, for they (1) I say: It refers to those other than the Prophets because

(Continued from previous page's footnote) Human skin does not admit it. Perhaps my statement is better than the statement of those who speak of the 'ritual impurity (hadath) of the deceased' when they said: 'It is the impurity of ritual state (hadath) that is removed by bathing, not the impurity of death, because the cause of the latter persists after it. So, the bathing of a Muslim is not due to an impurity that inheres in him due to death, but due to ritual impurity (hadath), because death is a cause of relaxation and the cessation of intellect. Since an objection would be raised that this is a cause for ablution (wudu), not bathing (ghusl), they said: Rather, it is the cause for bathing, and that was the analogy in a living person; it was limited to ablution therein to avoid hardship due to the repetition of the cause of ritual impurity from him, unlike the deceased.' This is finished. On this, the objection raised in Fath al-Qadir applies: 'The obligation of the persistence of the cause is common to both cases because the cause of ritual impurity also persists after bathing.' (Continued on next page)

Arabic text: وجلد الانسان لایحتمله ولعل قولی هذا اولی من قول القائلین بالحدث اذقالوا نجاسة الحدث تزول بالغسل لانجاسة الموت لقیام موجبها بعده فغسل المسلم لیس لنجاسة تحل بالموت بل للحدث لان الموت سبب الاسترخاء و زوال العقل ولما کان یرد علیه ان هذا سبب الوضوء دون الغسل قالوا بل هو سبب الغسل وکان هو القیاس فی الحی وانما اقتصر فیه علی الوضوء دفعاً للحرج لتکرر سبب الحدث منه بخلاف المیت(1) اه اذیرد علیه ما فی الفتح ان قیام الموت مشترك الالزام فان سبب الحدث ایضاً قائم بعد الغسل(2) اهـ

Urdu text: اس کی جلد پاک ہو جاتی ہے، اور انسان کی جلد میں اس کا احتمال نہیں۔ امید ہے کہ میری مذکورہ عبارت حدثِ میت کے قائل حضرات کی اس عبارت سے بہتر ہو گی جس میں انہوں نے یہ کہا کہ "حدث ہی کی نجاست ہے جو غسل سے دُور ہوتی ہے نہ کہ موت کی نجاست ، اس لئے کہ اس نجاست کا سبب (موت) تو بعد غسل بھی قائم و باقی رہتا ہے۔ تو مسلم کا غسل کسی ایسی نجاست کی وجہ سے نہیں جو موت سے اس میں حلول کر جاتی ہے بلکہ حدث کی وجہ سے ہے ، اس لئے کہ موت اعضاء کے ڈھیلے پڑنے اور عقل کے زائل ہونے کا سبب ہے" اس پر جو اعتراض وارد ہوتا تھا کہ یہ تو وضو کا سبب ہے غسل کا نہیں، تو اس کے جواب میں ان حضرات نے کہا: "بلکہ یہ غسل ہی کا سبب ہے اور زندہ شخص میں بھی قیاس کا تقاضا یہی تھا کہ اس سے غسل لازم ہو، مگر دفعِ حرج کیلئے اس میں صرف وضو پر اکتفا کا حکم ہوا کیونکہ اس سے یہ سبب بار بار پایا جاتا ہے۔ بخلاف میت کے، کہ اس میں ایسا نہیں۔" اھ۔ اس عبارت پر وہ اعتراض وارد ہوتا ہے جو فتح القدیر میں ہے کہ "سبب کے قائم وباقی رہنے کا الزام تو دونوں ہی صورتوں

میں مشترک ہے کیونکہ حدث کا سبب بھی تو غسل کے بعد قائم وباقی رہتا ہے " اھ۔ (باقی بر صفحہ آئندہ)

1. Fath al-Qadir, Chapter on Ghusl, Maktaba Nooriya Razawiya Sukkur, 2/70
2. Fath al-Qadir, Chapter on Ghusl, Maktaba Nooriya Razawiya Sukkur, 2/70

फ़तावा रज़विया भाग 3

मैं कहता हूँ: अर्थात नबियों के अलावा, क्योंकि वे (1) मैं कहता हूँ: मुराद नबियों के अलावा अन्य लोग हैं क्योंकि

(पिछले पृष्ठ के पाद-टिप्पणी से जारी) मनुष्य की त्वचा इसकी संभावना नहीं रखती। उम्मीद है कि मेरा उक्त कथन मृत व्यक्ति की अशुद्धि (हद्दथ) के समर्थकों के उस कथन से बेहतर होगा जिसमें उन्होंने कहा था कि 'यह केवल हद्दथ की अशुद्धि है जो स्नान (गुसल) से दूर होती है न कि मृत्यु की अशुद्धि, क्योंकि इसका कारण मृत्यु स्नान के बाद भी बना रहता है। इसलिए एक मुस्लिम का स्नान किसी ऐसी अशुद्धि के कारण नहीं है जो मृत्यु के कारण उसमें प्रवेश करती है, बल्कि हद्दथ के कारण है, क्योंकि मृत्यु अंगों के ढीले पड़ने और बुद्धि के नष्ट होने का कारण है।' इस पर जो आपत्ति उठाई गई थी कि यह तो वज़ू का कारण है, गुसल का नहीं, तो इसके उत्तर में उन सज्जनों ने कहा: 'बल्कि यह गुसल का ही कारण है और जीवित व्यक्ति में भी तर्क की मांग यही थी कि इससे गुसल अनिवार्य हो, लेकिन कठिनाई को दूर करने के लिए इसमें केवल वज़ू पर संतोष करने का आदेश दिया गया क्योंकि यह कारण उससे बार-बार घटित होता है। इसके विपरीत मृत व्यक्ति के मामले में ऐसा नहीं है।' इस कथन पर वह आपत्ति लागू होती है जो फतह अल-क़दीर में है कि 'कारण के बने रहने और शेष रहने का आरोप तो दोनों ही स्थितियों में समान है क्योंकि हद्दथ का कारण भी तो गुसल के बाद बना रहता है'। (बाकी अगले पृष्ठ पर)

अरबी पाठ: وجلد الانسان لایحتمله ولعل قولی هذا اولی من قول القائلین بالحدث اذقالوا نجاسة الحدث تزول بالغسل لانجاسة الموت لقیام موجبها بعده فغسل المسلم لیس لنجاسة تحل بالموت بل للحدث لان الموت سبب الاسترخاء و زوال العقل ولما کان یرد علیه ان هذا سبب الوضوء دون الغسل قالوا بل هو سبب الغسل وکان هو القیاس فی الحی وانما اقتصر فیه علی الوضوء دفعاً للحرج لتکرر سبب الحدث منه بخلاف المیت(1) اه اذیرد علیه ما فی الفتح ان قیام الموت مشترك الالزام فان سبب الحدث ایضاً قائم بعد الغسل(2) اهـ

उर्दू पाठ: اس کی جلد پاک ہو جاتی ہے، اور انسان کی جلد میں اس کا احتمال نہیں۔ امید ہے کہ میری مذکورہ عبارت حدثِ میت کے قائل حضرات کی اس عبارت سے بہتر ہو گی جس میں انہوں نے یہ کہا کہ "حدث ہی کی نجاست ہے جو غسل سے دُور ہوتی ہے نہ کہ موت کی نجاست ، اس لئے کہ اس نجاست کا سبب (موت) تو بعد غسل بھی قائم و باقی

رہتا ہے۔ تو مسلم کا غسل کسی ایسی نجاست کی وجہ سے نہیں جو موت سے اس میں حلول کر جاتی ہے بلکہ حدث کی وجہ سے ہے ، اس لئے کہ موت اعضاء کے ڈھیلے پڑنے اور عقل کے زائل ہونے کا سبب ہے" اس پر جو اعتراض وارد ہوتا تھا کہ یہ تو وضو کا سبب ہے غسل کا نہیں، تو اس کے جواب میں ان حضرات نے کہا: "بلکہ یہ غسل ہی کا سبب ہے اور زندہ شخص میں بھی قیاس کا تقاضا یہی تھا کہ اس سے غسل لازم ہو، مگر دفعِ حرج کیلئے اس میں صرف وضو پر اکتفا کا حکم ہوا کیونکہ اس سے یہ سبب بار بار پایا جاتا ہے۔ بخلاف میت کے، کہ اس میں ایسا نہیں۔" اھ۔ اس عبارت پر وہ اعتراض وارد ہوتا ہے جو فتح القدیر میں ہے کہ "سبب کے قائم وباقی رہنے کا الزام تو دونوں ہی صورتوں میں مشترک ہے کیونکہ حدث کا سبب بھی تو غسل کے بعد قائم وباقی رہتا ہے " اھ۔ (باقی بر صفحہ آئندہ)

1. फतह अल-क़दीर, गुसल का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 2/70
2. फतह अल-क़दीर, गुसल का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 2/70

اقول: ای غیر الانبیاء فانھم(۱) اقول: مراد غیر انبیاء ہیں اس لئے کہ

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) وجلد الانسان لایحتملہ ولعل قولی ھذا اولی من قول القائلین بالحدث اذقالوا نجاسۃ الحدث تزول بالغسل لانجاسۃ الموت لقیام موجبھا بعدہ فغسل المسلم لیس لنجاسۃ تحل بالموت بل للحدث لان الموت سبب الاسترخاء و زوال العقل ولما کان یرد علیہ ان ھذا سبب الوضوء دون الغسل قالوا بل ھو سبب الغسل وکان ھو القیاس فی الحی وانما اقتصر فیہ علی الوضوء دفعاً للحرج لتکرر سبب الحدث منہ بخلاف المیت(1) اہ اذیرد علیہ ما فی الفتح ان قیام الموت مشترك الالزام فان سبب الحدث ایضاً قائم بعد الغسل(2) اھـ

اس کی جلد پاک ہو جاتی ہے، اور انسان کی جلد میں اس کا احتمال نہیں۔ امید ہے کہ میری مذکورہ عبارت حدثِ میت کے قائل حضرات کی اس عبارت سے بہتر ہو گی جس میں انہوں نے یہ کہا کہ "حدث ہی کی نجاست ہے جو غسل سے دُور ہوتی ہے نہ کہ موت کی نجاست ، اس لئے کہ اس نجاست کا سبب (موت) تو بعد غسل بھی قائم و باقی رہتا ہے۔ تو مسلم کا غسل کسی ایسی نجاست کی وجہ سے نہیں جو موت سے اس میں حلول کر جاتی ہے بلکہ حدث کی وجہ سے ہے ، اس لئے کہ موت اعضاء کے ڈھیلے پڑنے اور عقل کے زائل ہونے کا سبب ہے" اس پر جو اعتراض وارد ہوتا تھا کہ یہ تو وضو کا سبب ہے غسل کا نہیں، تو اس کے جواب میں ان حضرات نے کہا: "بلکہ یہ غسل ہی کا سبب ہے اور زندہ شخص میں بھی قیاس کا تقاضا یہی تھا کہ اس سے غسل لازم ہو، مگر دفعِ حرج کیلئے اس میں صرف وضو پر اکتفا کا حکم ہوا کیونکہ اس سے یہ سبب بار بار پایا جاتا ہے۔ بخلاف میت کے، کہ اس میں ایسا نہیں۔" اھـ اس عبارت پر وہ اعتراض وارد ہوتا ہے جو

فتح القدیر میں ہے کہ "سبب کے قائم وباقی رہنے کا الزام تو دونوں ہی صورتوں میں مشترک ہے کیونکہ حدث کا سبب بھی تو غسل کے بعد قائم وباقی رہتا ہے " اھ (باقی بر صفحہ آئندہ)

1 فتح القدیر فصل فی الغسل مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۷۰/۲ 2 فتح القدیر فصل فی الغسل مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۷۰/۲

Fatawa Razawiyya Volume 3 Blessings and peace of Allah be upon them. Noble Prophets, peace and blessings of Allah be upon them. (Remaining footnote from the previous page) I say: (Against the statement of those who claim ritual impurity, this objection applies to my statement, although in my view there is an answer to it as well that) this accusation is not common to both views (physical impurity and ritual impurity). This is because death allows impurities to remain permeated in the body and they are not removed by washing. And the loosening of limbs becomes a cause for the discharge of wind, and due to the loss of intellect, a person does not become aware of it, just as it happens in the state of sleep. So this became an incidental cause. And both matters (loosening of limbs and loss of intellect) occurred to the deceased while still in a state of life, so the address of legal obligation was directed towards him, and legal impurity was established. When he was given a bath (Ghusl), it was removed and it is not to return because it is legal/symbolic, and due to death, the direction of the address towards him and his being legally accountable has ended. As for the excuse of those (proponents of impurity) that "Ghusl has been established as a purifier for him out of honor," as mentioned in 'Fath al-Qadeer,' I say: Honor consists in not declaring him as a carcass. Not that a decree of his being a vile carcass be given and then (contradictory point on next page...)

फ़तावा रज़विया खंड 3 अल्लाह तआला का दुरूद और सलाम उन पर हो। हज़रत अंबिया, उन पर अल्लाह तआला का दुरूद और सलाम हो। (पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष भाग) मैं कहता हूँ: (मेरी इबारत के ख़िलाफ़ ह़दथ (अनुष्ठानिक अशुद्धता) के क़ायलिन की इबारत पर यह एतराज़ है, हालाँकि मेरे नज़दीक इसका जवाब भी है कि) यह इल्ज़ाम दोनों कौल (नजासत और ह़दथ) में मुश्तरक नहीं है, क्योंकि मौत बदन में नजासतों को जज़्ब रहने देती है और वे ग़ुस्ल से दूर नहीं होतीं। और अंगों का ढीला पड़ना हवा ख़ारिज होने का सबब होता है, और अक्ल खो जाने के कारण आदमी इस पर सचेत नहीं होता, जैसा कि नींद की हालत में होता है। तो यह बिल-अर्ज़ (गौण) सबब हुआ, और दोनों बातें (अंगों का ढीला पड़ना और अक्ल का जाना) मय्यत को जीवन की स्थिति में ही पेश आईं, तो उसकी ओर संबोधन (ख़िताब) मुतवज्जह हुआ और नजासत-ए-हुकमिया साबित हुई। जब उसे ग़ुस्ल दे दिया गया तो वह ख़त्म हो गई और दोबारा लौटने वाली नहीं, क्योंकि यह हुकमिया है और मौत की वजह से उसकी ओर संबोधन और उसका मुकल्लफ़ (उत्तरदायी) होना समाप्त हो गया। अब रहा उन (नजासत के कायलिन) का यह उज्र कि "सम्मानवश (तक़रीमन) उसके लिए ग़ुस्ल को मुतह़र (पवित्र करने वाला) क़रार दिया गया है," जैसा कि 'फ़तह अल-क़दीर' में है, तो मैं कहता हूँ: सम्मान तो इसमें है कि उसे मुरदार (मुर्दा मांस) न क़रार दिया जाए। यह नहीं कि उसके ख़बीस मुरदार होने का हुक्म दिया जाए और फिर मुनाफ़ी (बाकी अगले पेज पर...)

فتاوٰی رضویہ جلد سوم صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہم حضرات انبیاء صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہم۔ (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) واقول: بل لیس (۱) مشترکا فأن الموت تبقی النجاسات متشربۃ فی البدن ولا تزول بالغسل والاسترخاء یوجب خروج ریح وبزوال العقل لا یتنبہ لہ کالنوم فکان سببا بالعرض وھما قد عرضا للمیت وھو حی فتوجہ الیہ الخطاب وثبتت النجاسۃ الحکمیۃ فأذا غسل زالت ولا تعود لأنھا حکیۃ وقد انتھی الموت توجہ الخطاب والتکلیف۔ واقول: (میری عبارت کے برخلاف قائلینِ حدث کی عبارت پر یہ اعتراض ہے اگرچہ میرے نزدیک اس کا جواب بھی ہے کہ) یہ الزام دونوں قول (نجاست وحدث) میں مشترک نہیں اس لئے کہ موت، بدن میں نجاستوں کو پیوست رہنے دیتی ہے اور وہ غسل سے دُور نہیں ہوتیں۔ اور اعضاء ڈھیلے پڑنا اور ہوا خارج ہونے کا سبب ہوتا ہے اور آدمی عقل زائل ہونے کی وجہ سے اس پر متنبہ نہیں ہوتا، جیسے نیند کی حالت میں ہوتا ہے۔ تو یہ بالعرض سبب ہوا، اور دونوں امر (اعضاء ڈھیلے پڑنا اور زوالِ عقل) میت کو حالتِ حیات ہی میں عارض ہوئے تو اس کی جانب خطاب متوجہ ہوا، اور نجاست حکمیہ ثابت ہوئی، جب اسے غسل دے دیا گیا تو زائل ہوگئی اور دوبارہ لوٹنے والی نہیں اس لئے کہ یہ حکمیہ ہے اور موت کی وجہ سے اس کی جانب خطاب کا متوجہ ہونا اور اس کا مکلف ہونا ختم ہوگیا۔ اما اعتذارھم بأن الغسل جعل مطھرا لہ تکریما کما فی الفتح فاقول: التکریم ان (۲) لا یجعل جیفۃ لان یحکم بأنہ جیفۃ خبیثۃ ثم یحکم بطھارتہ بالغسل مع اب رہا ان (قائلین نجاست) کا یہ عذر کہ "تکریماً اس کے لئے غسل کو مطہر قرار دیا گیا ہے" جیسا کہ فتح القدیر میں ہے فاقول: تکریم تو یہ ہے کہ اسے مردار نہ قرار دیا جائے۔ یہ نہیں کہ اس کے مردار خبیث ہونے کا حکم دیا جائے پھر منافی (بقیہ صفحہ آئندہ پر)

Fatawa Razawiyya, Volume 3 Pure and clean in life and death, rather for them...

(Continuation of the footnote from the previous page) ...even if the impurity remains, a decree of purity through ritual bathing (ghusl) is given, whereas the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Indeed, a believer is not impure." This hadith is narrated in the Sihah Sitta (the six authentic books of hadith) from Abu Hurayrah. Imam Ahmad and five others, excluding Tirmidhi, narrated it from Hudhayfah. Nasa'i narrated it from Ibn Masud, and Tabarani narrated it in Al-Mu'jam al-Kabir from Abu Musa (may Allah be pleased with them all). In the hadith of Abu Hurayrah narrated by Al-Hakim, the wording is: "(A believer) 'in any state of life and death' (is not impure)." In Fath al-Qadir, it is stated: "If this narration is authentic, then it is necessary to prefer the view that ghusl is due to a state of ritual impurity (hadath)."

Author's Note (Aqool): (Regarding the narration of Al-Hakim with the mentioned addition) Even if it were not authentic, the general wording in the Sihah Sitta would suffice—saying "a believer is not impure" generally proves that they are not impure in any state, life or death. However, praise be to Allah, the authenticity of Al-Hakim's narration is established. It is mentioned in Al-Hilya: "Al-Hakim narrated from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'Do not consider your dead as impure, for indeed a believer is never impure, whether alive or dead.'" He said it is authentic according to the conditions of Bukhari and Muslim, and Al-Hafiz Diya al-Din said... (Continued on the next page)

1. Sahih Bukhari, Book of Ghusl, 1/39
2. Fath al-Qadir, Chapter on Ghusl, 2/70

फ़तावा रज़विया, खंड 3 जीवन और मृत्यु की हर स्थिति में पवित्र और स्वच्छ, बल्कि उनके लिए...

(पिछले पृष्ठ के पादलेख का शेष भाग) ...नजासत (अशुद्धि) बने रहने के बावजूद गुसल (स्नान) से इसके पाक (पवित्र) हो जाने का हुक्म (आदेश) दे दिया जाए, जबकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इरशाद है: "बेशक मोमिन (आस्तिक) नजिस (अशुद्ध) नहीं होता"। यह हदीस सहाह सत्ता (हदीस की छह प्रामाणिक पुस्तकें) में हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है। हज़रत हुजैफ़ा से इमाम अहमद और तिर्मिज़ी के अलावा पांच अन्य महानुभावों ने रिवायत की है। हज़रत इब्न मसूद से नसाई ने और हज़रत अबू मूसा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से तबरानी ने मुअजम कबीर में रिवायत की है। हज़रत अबू हुरैरा की हदीस में हाकिम के शब्द इस प्रकार हैं: "(मोमिन) 'जीवन और मृत्यु की किसी भी स्थिति में' (नजिस नहीं होता)"। फतह अल-कादिर में है: "अगर यह रिवायत सही है, तो इस बात को तरजीह (प्राथमिकता) देना ज़रूरी है कि गुसल हदस (अनुष्ठानिक अशुद्धि) की वजह से है"।

लेखक का कथन (अकूल): (उपरोक्त शब्दों की वृद्धि के साथ हाकिम की जो रिवायत है) यदि वह सही न भी होती, तो सहाह सत्ता की रिवायत का सामान्य होना ही पर्याप्त होता (मोमिन नजिस नहीं होता, सामान्य रूप से कहने से यही साबित होता है कि वह जीवन और मृत्यु की किसी भी स्थिति में नजिस नहीं होता)। लेकिन अल्लाह का शुक्र है कि हाकिम की रिवायत की प्रामाणिकता सिद्ध है। 'हिलिया' में फरमाया: "हाकिम ने हज़रत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इरशाद है: 'अपने मुर्दों को नजिस न समझो, क्योंकि मोमिन न तो जीवित अवस्था में नजिस होता है और न ही मृत अवस्था में'।" उन्होंने कहा कि यह बुखारी और मुस्लिम की शर्तों पर सही है और अल-हाफ़िज़ ज़ियाउद्दीन ने कहा... (अगले पृष्ठ पर जारी)

1. सही बुखारी, किताबुल गुसल, 1/39
2. फतह अल-कादिर, फस्ल फिल गुसल, 2/70

पृष्ठ 756 का 405

فتاوٰی رضویہ ، جلد سوم طیبون طاھرون احیاء وامواتاً بل حیات وممات ہر حالت میں طیب وطاہر ہیں بلکہ ان کیلئے

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) قائم رہنے کے باوجود غسل سے اس کے پاک ہو جانے کا حکم دے دیا جائے حالانکہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ارشاد ہے: "یقینا مومن نجس نہیں ہوتا"۔ یہ حدیث صحاح ستہ میں حضرت ابوہریرہ سے مروی ہے اور حضرت حذیفہ سے امام احمد اور ترمذی کے علاوہ پانچوں حضرات نے روایت کیا ہے اور حضرت ابن مسعود سے نسائی نے اور حضرت ابوموسیٰ سے رضی اللہ تعالٰی عنہم طبرانی نے معجم کبیر میں روایت کیا ہے۔ اور حضرت ابوہریرہ کی حدیث میں حاکم کے الفاظ یہ ہیں کہ (مومن) "حیات و موت کسی بھی حالت میں" (نجس نہیں ہوتا) فتح القدیر میں ہے: "اگر یہ روایت صحیح ہے تو اس قول کی ترجیح لازم ہے کہ غسل حدث کی وجہ سے ہے" اھ اقول: (الفاظ مذکورہ کے اضافہ کے ساتھ حاکم کی جو روایت ہے) اگر صحیح نہ بھی ہوتی تو صحاح ستہ کی روایت کا مطلق ہونا ہی کافی ہوتا (مومن نجس نہیں ہوتا، مطلق فرمانے سے یہی ثابت ہوتا ہے کہ حیات وموت کسی حالت میں نجس نہیں ہوتا) مگر بحمد اللہ روایت حاکم کی صحت ثابت ہے۔ حلیہ میں فرمایا: "حاکم نے حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کی ہے انہوں نے فرمایا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا ارشاد ہے: "اپنے مردوں کو (باقی بر صفحہ آئندہ)

1 صحیح البخاری کتاب الغسل ۱/۳۹ 2 فتح القدیر فصل فی الغسل ۷۰/۲

Volume Three Fatawa Razawiya No (1) death for them except momentarily to fulfill the promise, then they... Pure instantaneous death is to fulfill the Divine promise, then they... (Remaining footnote from previous page) In his book, its chain is according to my conditions for authenticity, so the first one is preferred (1). End of quote. I say: And with this, it is refuted because for whoever ponders over the interpretation of (1) Al-Ghunya, that the meaning is 'it does not become impure due to ritual impurity (janabah)' according to the context of the hadith of Abu Hurayrah (Allah be pleased with him) - As for the saying of 'Sh' (Shami): 'The meaning is the negation of permanent impurity, otherwise it would follow that if an external impurity reaches him, he would not become impure' (2). End of quote. I say: Its refutation has already appeared to you (2) through what we have established. For there is a vast difference between an external impurity reaching him and then being removed, and being considered a foul carcass, making every single part of him impure, externally and internally. This is the reality of impurity, unlike someone whose skin is touched by external impurity, for it is not truly correct to say he is impure; the impure part is only that portion of his skin which the impurity has touched.

...do not consider him impure because a believer, in life or death, never becomes impure." And he said this is authentic based on the criteria of Bukhari and Muslim. And Hafiz Zia-ud-Din said in his book: its chain of transmission, in my view, is authentic based on the criteria [of Bukhari and Muslim], thus preference is given to the first. End of quote. I say: For the person who ponders, this also refutes the interpretation of Al-Ghunya that: "In light of the context of the narration of Abu Hurayrah (Allah be pleased with him), the meaning of this statement is that a believer does not become impure due to ritual impurity (janabah)." As for the statement of Allama Shami that: "By this, the negation of permanent impurity is intended, otherwise it would imply that if some external impurity touches him, he would still not become impure." End of quote. I say: The answer to this is also apparent to the reader from our previous discussion. There is a great and distinct difference between an external impurity touching him which is then removed, and between being declared a foul carcass where every single part of him, internally and externally, is declared impure. This is the reality of being impure. On the contrary, for someone whose skin has been touched by an external impurity, it is not truly correct to say

that he is impure; rather, only that part of his outer skin which the impurity touched is impure. (Continued on next page)

1. Hilya
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Funeral Prayer, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/573 Page 406 of 756

खण्ड तीन फ़तावा रज़विया नहीं (१) उनके लिए मृत्यु है सिवाय एक क्षण के वादे को पूरा करने के लिए, फिर वे... शुद्ध क्षणिक मृत्यु ईश्वरीय वादे को पूरा करने के लिए है, फिर वे... (पिछले पृष्ठ से शेष पाद टिप्पणी) अपनी पुस्तक में, इसकी सनद मेरे अनुसार सही की शर्त पर है, अतः प्रथम को प्राथमिकता दी जाती है (१)। इति। मैं कहता हूँ: और इससे यह खंडित हो गया क्योंकि जो कोई (१) 'अल-ग़ुनिया' की इस व्याख्या पर विचार करेगा कि इसका अर्थ 'जनाबत के कारण नापाक नहीं होता' है, अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस के संदर्भ के अनुसार - जहाँ तक 'श' (शामी) के कथन का प्रश्न है: 'अर्थ स्थायी नापाकी का निषेध है, अन्यथा यह परिणाम होगा कि यदि उसे बाहरी नापाकी पहुँचती है, तो वह नापाक नहीं होगा' (२)। इति। मैं कहता हूँ: इसका खंडन आपके सामने (२) हमारे द्वारा स्थापित तर्कों से स्पष्ट हो चुका है। क्योंकि बाहरी नापाकी के लगने और फिर हटा दिए जाने, और एक घृणित शव समझे जाने के बीच बहुत बड़ा अंतर है, जिससे उसका प्रत्येक भाग, बाहरी और आंतरिक रूप से नापाक हो जाता है। यही नापाकी की वास्तविकता है, उस व्यक्ति के विपरीत जिसकी त्वचा पर बाहरी अशुद्धि लग जाती है, क्योंकि यह कहना वास्तव में सही नहीं है कि वह नापाक है; नापाक तो उसकी त्वचा का केवल वही हिस्सा है जिसे अशुद्धि ने छुआ है।

...अपवित्र न समझो क्योंकि एक मोमिन, जीवन या मृत्यु की किसी भी स्थिति में अपवित्र नहीं होता"। और उन्होंने कहा कि यह बुखारी और मुस्लिम की शर्तों के अनुसार सही है। और हाफ़िज़ ज़िया-उद-दीन ने अपनी पुस्तक में कहा: इसकी सनद (सूत्र) मेरे विचार में सही की शर्त पर है, अतः पहले वाले को प्राथमिकता प्राप्त हो गई। इति। मैं कहता हूँ: विचार करने वाले के लिए इससे 'अल-ग़ुनिया' की यह व्याख्या भी खारिज हो जाती है कि: "हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस के संदर्भ में इस कथन का अर्थ यह है कि मोमिन जनाबत (अनुष्ठानिक अशुद्धि) के कारण नापाक नहीं हो जाता"। रही बात अल्लामा शामी के इस कथन की कि: "इससे स्थायी नापाकी का निषेध मुराद है, अन्यथा यह अर्थ निकलेगा कि यदि उसे कोई बाहरी नापाकी लग जाए तब भी वह नापाक न हो"। इति। मैं कहता हूँ: हमारी पिछली चर्चा से इसका उत्तर भी पाठक पर स्पष्ट है। इसमें बड़ा स्पष्ट अंतर है कि उसे बाहर से कोई नापाकी लग जाए फिर दूर कर दी जाए, और इसमें कि उसे एक गंदा मुर्दार करार दिया जाए और उसके हर-हर हिस्से को ज़ाहिरी और बातिनी तौर पर नापाक करार दिया जाए। यही नापाकी की वास्तविकता है। इसके विपरीत जिसके शरीर पर बाहर से कोई नापाकी लग गई हो, उस पर

वास्तविक रूप से यह बात खरी नहीं उतरती कि वह नापाक है; नापाक तो केवल उसकी बाहरी त्वचा का वह हिस्सा है जिस पर नापाकी लगी है। (अगले पृष्ठ पर जारी)

1. हिल्या
2. रद अल-मुह्तार, जनाज़ा नमाज़ का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, १/५७३ पृष्ठ ४०६ / ७५६

جلد سوم فتاویٰ رضویہ لا (۱) موت لھم الّا انیا تصدیقًا للوعد ثم ھم موت محض آنی تصدیق وعدہ الٰہیہ کے لئے ہے پھر وہ (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) فی کتابہ اسنادہ عندی علی شرط الصحیح فترجح الاول ۱ اھ اقول: و بہ اندفع لانہ لمن تامل تاویل (۱) الغنیة ان المراد لا ینجس بالجنابة لسیاق حدیث ابي ھریرة رضي اللہ تعالی عنہ۔ اما قول ش المراد نفي النجاسة الدائمة والالزم ان لو اصابہ نجاسة خارجیة لا ینجس ۲ اھ اقول: وقد ظھر لك دفعہ (۲) بما قررنا فبون بین ان تصیبہ نجاسة من خارج فتزال وان یجعل جیفة خبیثة نجسا کل جزء جزء منہ ظاھرا وباطنا وھذا ھو حقیقة النجس بخلاف من اصاب جلدہ نجاسة من خارج فلا یصح علیہ حقیقة انہ نجس انما النجس ما اصابہ النجاسة من بشرتہ۔

نجس نہ قرار دو اس لئے کہ مومن حیات وموت کسی حالت میں نجس نہیں ہوتا"۔ اور کہا کہ یہ صحیح برشرط بخاری و مسلم ہے۔ اور حافظ ضیاء الدین نے اپنی کتاب میں فرمایا: اس کی سند میرے نزدیک برشرط صحیح ہے تو اول کو ترجیح حاصل ہو گئی۔ اھ اقول: تامل کرنے والے کیلئے اسی سے غنیہ کی یہ تاویل بھی دفع ہو جاتی ہے کہ : "حدیث ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے سیاق کی روشنی میں اس ارشاد کی مراد یہ ہے کہ مومن جنابت کی وجہ سے نجس نہیں ہو جاتا"۔ رہا علامہ شامی کا یہ قول کہ "اس سے دائمی نجاست کی نفی مراد ہے ورنہ لازم آئے گا کہ اسے کوئی خارجی نجاست لگ جائے تو بھی نجس نہ ہو"۔ اھ اقول: ہماری تقریر سابق سے اس کا جواب بھی ناظر پر ظاہر ہے۔ بڑا نمایاں فرق ہے اس میں کہ اسے خارج سے کوئی نجاست لگ جائے پھر دور کردی جائے اور اس میں کہ اسے مردار خبیث، اور ظاہراً باطناً اس کے ہر ہر جز کو نجس قرار دیا جائے۔ یہی نجس کی حقیقت ہے۔ اس کے برخلاف جس کی جلد پر خارج سے

کوئی نجاست لگ گئی ہو، اس پر حقیقی طور سے یہ بات راست نہیں آتی کہ وہ نجس ہے نجس تو صرف اس کی ظاہری جلد کا وہ حصہ ہے جس پر نجاست لگی ہے۔ (باقی بر صفحہ آئندہ)

1 حلیہ 2 رد المحتار باب صلوٰۃ الجنائز دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۵۷۳ Page 406 of 756

Volume Three Fatawa Rizvia

(Prophets) are forever alive with a real, worldly, spiritual, and physical life, as is the belief of the Ahl al-Sunnah wa al-Jama'ah. Therefore, they are not inherited from, and it is prohibited for anyone to marry their wives, peace and blessings of Allah Almighty be upon them. This is unlike the martyrs (1) about whom the Noble Book has explicitly stated that they are alive and has forbidden calling them dead (however, their inheritance will be divided, and their wives can remarry). Thus, according to the view of the general scholars, this Tayammum is a purifier.

(Continued from the footnote of the previous page) Thus, praise be to Allah, it is established (2) that the noble Hadith negates the impurity of a Muslim due to death. Therefore, as stated by the two researchers, it is necessary to prefer the view that the washing of the deceased is due to ritual impurity (Hadath). And it is stated in 'Al-Bahr' that this is the most correct view. As for (3) these two subsidiary issues: the invalidity of the prayer of someone carrying the deceased before they are washed, and the water (4) becoming small (impure) by a deceased person falling into it—these are based on the general view of scholars, as Sh (Shami) allowed. I say: and we act upon both, adopting the path of precaution. As for the disbeliever, they are definitely a filthy carcass, so both rulings regarding them are definitive. And Allah Almighty knows best. 12 from him, may he be forgiven (M).

By the grace of Allah, it has been established that the noble Hadith negates the impurity of a Muslim due to death. Therefore, according to the statement of the two researchers, it is necessary to prioritize the view that the washing of the deceased is due to ritual impurity. And in 'Al-Bahr' it is said, "This is the most correct view." Now, as for these two subsidiary points: if someone carries a deceased person who has not been given a ritual bath during prayer, their prayer becomes invalid (and if a deceased person falls into a small amount of water, that water becomes impure). These two issues are based on the saying of the general scholars, as Allama Shami has stated it as a proposal and possibility (meaning it is possible that this saying is based on the general view, and in reality, it is based on their saying). I say: adopting the aspect of precaution, our practice will be on both aforementioned issues. However, a disbeliever is absolutely a filthy carcass, so both rulings regarding them are definitive. And Allah Almighty knows best. 12 from him, may he be forgiven (T).

जिल्द सोम (भाग तीन) फ़तावा रिज़विया

(नबी) हमेशा वास्तविक, सांसारिक, आध्यात्मिक और शारीरिक जीवन के साथ जीवित हैं, जैसा कि अहले सुन्नत वल जमाअत का अक़ीदा (विश्वास) है। इसीलिए उनका कोई वारिस नहीं होता और उनकी पत्नियों से निकाह करना मना है, उन पर अल्लाह तआला की रहमतें और सलामती हो। यह शहीदों (1) के विपरीत है जिनके बारे में किताब-ए-मजीद (क़ुरआन) ने स्पष्ट रूप से फरमाया है कि वे जीवित हैं और उन्हें मुर्दा कहने से मना किया है (लेकिन उनकी विरासत विभाजित होगी, उनकी पत्नियों का दूसरा निकाह हो सकता है)। तो आम मशाईख़ के कथन के अनुसार, यह तयम्मुम पाक करने वाला है।

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग) तो अल्लाह की प्रशंसा है कि यह साबित (2) हो गया कि हदीस पाक से मृत्यु के कारण मुसलमान के नापाक होने का खंडन होता है। तो दोनों शोधकर्ताओं (मुहक़्क़िक़ीन) के कहने के अनुसार इस बात को प्राथमिकता देना अनिवार्य है कि मृत शरीर का ग़ुस्ल (स्नान) 'हदस' (अनुष्ठानिक अशुद्धि) के कारण है। और 'बहर' में कहा गया है कि यही सबसे सही (असह) बात है। अब रहे ये (3) दो उप-नियम (फ़र'आ): ग़ुस्ल से पहले मुर्दे को उठाकर नमाज़ पढ़ने वाले की नमाज़ का फ़ासिद (अमान्य) होना और थोड़े पानी (4) में मुर्दे के गिरने से उस पानी का नापाक होना - ये दोनों आम मशाईख़ के कथन पर आधारित हैं जैसा कि 'श' (शामी) ने इसे मुमकिन बताया है। मैं कहता हूँ: और हम सावधानी (एहतियात) बरतते हुए दोनों पर अमल करेंगे। जहाँ तक काफ़िर का सवाल है, वह निश्चित रूप से एक गंदा मुर्दार है, इसलिए उनके बारे में दोनों हुक्म कतई (निश्चित) हैं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। 12 उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए (म)।

तो अल्हम्दुलिल्लाह यह साबित हो गया कि हदीस पाक से मौत की वजह से मुसलमान के नजिस (नापाक) होने की नफ़ी (खंडन) होती है। तो दोनों मोहक़्क़िक़ों के फ़रमान के मुताबिक़ इसकी तरजीह ज़रूरी है कि ग़ुस्ल-ए-मय्यित हदस की वजह से है। और 'बहर' में फ़रमाया है कि "यही असह है"। अब रहे ये दो जुज़ईये (उप-बिंदु) कि अगर कोई ग़ुस्ल दिए बग़ैर मुर्दे को नमाज़ में लिए हुए हो तो उसकी नमाज़ फ़ासिद हो जाती है (और मुर्दा आबे-क़लील/थोड़े पानी में पड़ जाए तो वह पानी फ़ासिद हो जाता है)। तो ये दोनों मसले आम मशाईख़ के क़ौल की बुनियाद पर हैं, जैसा कि अल्लामा शामी ने बतौरे-तजवीज़ व एहतमाल (प्रस्ताव और संभावना के रूप में) इसे कहा है (यानी यह कि हो सकता है कि यह क़ौल आम की बुनियाद पर हो, और हक़ीक़तन यह उन्हीं के क़ौल पर

मबनी है)। अक़ूल (मैं कहता हूँ): और एहतियात का पहलू इख़्तियार करते हुए हमारा अमल मज़कूरा दोनों मसलों पर होगा। लेकिन काफ़िर क़तअन मुर्दार ख़बीस है तो उसके बारे में दोनों हुक्म क़तई हैं। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है)। 12 मिन्हु गुफ़िर लहु (त)।

احیاء ابدا بحیاۃ حقیقۃ دنیاویۃ روحانیۃ جسمانیۃ کما ھو معتقد اھل السنۃ والجماعۃ ولذا لایورثون ویمتنع تزوج نسائھم صلوات اللہ تعالی وسلامہ علیھم بخلاف الشھداء(۱) الذین نص الکتاب العزیز انھم احیاء ونھی ان یقال لھم اموات فعلی قول العامۃ یکون ھذا التیمم مطھرا ہمیشہ حیات حقیقی ودنیاوی روحانی وجسمانی کے ساتھ زندہ ہیں جیسا کہ اہل السنت والجماعت کا عقیدہ ہے اسی لئے کوئی ان کا وارث نہیں ہوتا اور ان کی عورتوں کا کسی سے نکاح کرنا ممنوع ہے صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہم بخلاف شہداء کے جن کے بارے میں کتابِ مجید نے صراحت فرمائی ہے کہ وہ زندہ ہیں اور اس سے نہی فرمائی ہے کہ انہیں مردہ کہا جائے (مگر ان کی میراث تقسیم ہوگی، ان کی ازواج کا دوسرا نکاح ہو سکتا ہے) تو عامہ مشائخ

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) فثبت(۲) وللہ الحمد ان الحدیث ینفی تنجس المسلم بالموت فوجب کما قال المحققان ترجیح ان غسلہ للحدث وقد قال فی البحر انہ الاصح اما(۳) فرعا فساد صلاۃ حاملہ قبل الغسل والماء(۴) القلیل بوقوعہ فبنیان علی قول العامۃ کما جوزہ ش اقول ونعمل بھما اخذا بالاحتیاط اما الکافر فجیفۃ خبیثۃ قطعا فالحکمان فیہ قطعیان واللہ تعالٰی اعلم ۱۲ منہ غفر لہ (م)

تو بحمد اللہ یہ ثابت ہو گیا کہ حدیث پاک سے موت کی وجہ سے مسلمان کے نجس ہونے کی نفی ہوتی ہے تو دونوں محققوں کے فرمان کے بموجب اس کی ترجیح ضروری ہے کہ غسلِ میت حدث کی وجہ سے ہے۔ اور بحر میں فرمایا ہے کہ "یہی اصح ہے اب رہے یہ دو جزئیے کہ اگر کوئی غسل دئے بغیر مُردہ کو نماز میں لیے ہوئے ہو تو اس کی نماز فاسد ہو جاتی ہے (اور مردہ آبِ قلیل میں پڑ جائے تو وہ پانی فاسد ہو جاتا ہے"۔ تو یہ دونوں مسئلے عامہ مشائخ کے قول کی بنیاد پر ہیں، جیسا کہ علامہ شامی نے بطور تجویز واحتمال اسے کہا ہے (یعنی یہ کہ ہو سکتا ہے کہ یہ

قول عامہ کی بنیاد پر ہو، اور حقیقۃً یہ انہی کے قول پر مبنی ہے) اقول: اور احتیاط کا پہلو اختیار کرتے ہوئے ہمارا عمل مذکورہ دونوں مسئلوں پر ہوگا۔ لیکن کافر قطعاً مردار خبیث ہے تو اس کے بارے میں دونوں حکم قطعی ہیں واللہ تعالیٰ اعلم ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

Fatawa Rizwia, Volume 3

...according to the saying, this tayammum of the deceased will be what purifies them from impurity (khubth). I say: From this, the preference for the opinion of those who say that death is a ritual impurity (hadath) is understood. It is stated in the Chapter of Purification of Al-Bahr al-Ra'iq that this is the most correct view, because tayammum is only known and recognized as a purifier from ritual impurity (najasa hukmiyya). Allah Almighty says: "...or one of you comes from the place of relieving oneself or you have contacted women and find no water, then perform tayammum..."[1] However, it may be said that the Master, Glory be to Him and Most High, in the event that washing (ghusl) is not possible, has designated this wiping (masah) with earthly material as a remover of impurity from the entire body of the deceased, purely out of grace and generosity. It is a devotional command (ta'abbudi) whose rationale is beyond the reach of human intellect, just as He designated wiping with a stone in istinja' as a remover of impurity. And Allah Almighty knows best.

Annotation (عه): And for those who maintain it is a real impurity (najasa haqiqiyya), there is also no escape from this kind of reasoning, because they have also explicitly stated that washing the body of the deceased once is sufficient, and washing three times is only a Sunnah. If it were a real impurity, washing three times would be obligatory (wajib). They responded to this by saying that this is an honoring from Allah, Glory be to Him and Most High, for His deceased Muslim servant, such that He commanded his purification with just one washing. (12, from him, may he be forgiven).

[1] Quran 4/43

Page 408 of 756

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

...के कथन के अनुसार, मृतक का यह तयम्मुम उसे गंदगी (ख़ुब्थ) से शुद्ध करने वाला होगा। मैं कहता हूँ: इससे उन हज़रात के कथन को वरीयता मिलने की बात समझ में आती है जो कहते हैं कि मृत्यु एक अनुष्ठानिक अशुद्धि (हदथ) है। 'अल-बहर अल-राइक़' के शुद्धि अध्याय में बताया गया है कि यही सबसे सही विचार है, क्योंकि तयम्मुम केवल हुक्मी अशुद्धि (नजासते हुकमिया) से शुद्ध करने की हैसियत से ही जाना-पहचाना गया है। अल्लाह तआला का इरशाद है: "...या तुममें से कोई शौचालय से आए या तुमने स्त्रियों को छुआ हो और तुम्हें पानी न मिले, तो तयम्मुम करो..."[1] लेकिन यह कहा जा सकता है कि मौला सुब्हानहू व तआला ने, ग़ुस्ल (स्नान) संभव न होने की स्थिति में, मिट्टी की जाति से इस मसह (पोंछने) को मृतक के पूरे शरीर से गंदगी दूर करने वाला घोषित कर दिया है, जो केवल कृपा और उदारता है। यह एक ऐसा धार्मिक आदेश है जिसका अर्थ बुद्धि की पहुँच में नहीं है, जैसे इस्तिंजा में पत्थर से पोंछने को गंदगी दूर करने वाला घोषित किया गया है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

टिप्पणी (عہ): वास्तविक अशुद्धि (नजासते हक़ीक़िया) मानने वालों के लिए भी इस तरह की बात से कोई छुटकारा नहीं है, क्योंकि उन्होंने भी यह स्पष्ट किया है कि मृतक के शरीर को एक बार धोना ही पर्याप्त है और तीन बार धोना केवल सुन्नत है। यदि यह वास्तविक अशुद्धि होती, तो तीन बार धोना अनिवार्य (वाजिब) होता। उन्होंने इसका यह उत्तर दिया है कि यह अल्लाह सुब्हानहू व तआला की ओर से अपने मृतक मुस्लिम बंदे का सम्मान है कि एक ही बार में उसकी शुद्धि का आदेश दे दिया। (12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए)।

[1] क़ुरआन 4/43

पृष्ठ 408 / 756

کے قول پر یہ تیمم میت اسے خبث سے پاک کرنے والا ہوگا۔ اقول : اس سے ان حضرات کے قول کی ترجیح سمجھ میں آتی ہے جو یہ فرماتے ہیں کہ موت حدث ہے، اور البحرالرائق کے باب طہارت میں افادہ فرمایا ہے کہ یہی اصح ہے اس لئے کہ تیمم نجاست حکمیہ سے مطہر ہونے کی حیثیت سے ہی جانا پہچانا گیا ہے ارشاد باری تعالٰی ہے : " تم میں کا کوئی پاخانہ سے آئے یا تم نے عورتوں سے قربت کی ہو اور پانی نہ پاؤ تو تیمم کرو"[1]۔ مگر یہ کہا جائے کہ مولٰی سبحانہ وتعالٰی نے غسل نہ ہوسکے کی صورت میں جنسِ زمین سے اس مسح کو پورے بدن میت سے خبث دور کرنے والا قرار دیا ہے محض ازراہِ فضل و کرم ، ایسا حکم تکلیفی جس کا معنٰی عقل کی دسترس میں نہیں، جیسے استنجاء میں پتھر سے مسح کو خبث دور کرنے والا قرار دیا ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

عہ : نجاست حقیقیہ ماننے والوں کیلئے بھی اس طرح کی بات سے مفر نہیں کیوں کہ انہوں نے بھی یہ تصریح کی ہے میت کے بدن کو ایک بار دھونا ہی کفایت کرتا ہے اور تین بار دھونا فقط سنت ہے۔ اگر نجاست حقیقیہ ہوتی تو تین بار دھونا واجب ہوتا۔ اس کا انہوں نے یہ جواب دیا ہے کہ یہ اللہ سبحانہ وتعالٰی کی جانب سے اپنے بندہ مسلم کی میت کی تکریم ہے کہ ایک بار سے ہی اس کی تطہیر کا حکم فرما دیا ۱۲ منہ (ت)

[1] القرآن ۴/ ۴۳

Fatawa Rizvia - Volume 3

[Left Column - Arabic Text] Second: A discerning child shall be commanded to perform ablution (wudu) and prayer. If he is ill or on a journey and finds no water, he shall perform tayammum (dry ablution). His tayammum is not excluded from Shari'i tayammum, just as his wudu and prayer are, even though he has no ritual impurity (hadath), as we explained in 'Al-Tars al-Mu'addal'. In this case, the form of purification is intended, even if it is not purification in reality due to the absence of legal impurity (najasah hukmiyah). It is like what is stated in 'Al-Khaniyah': "When a discerning child performs wudu intending purification, the water should become used (musta'mal) because he intended a valid act of worship (qurbah)." Reflect. It may also be said, based on what we explained in 'Al-Tars al-Mu'addal', that (1) legal impurity encompasses both sins and disliked acts (makruhat). Therefore, wudu upon wudu with intention causes the water to become used, even in the absence of a ritual impurity that strips water of its purifying quality. Spiritual scholars—among them Sidi Abdul Wahab al-Sha'rani (may Allah sanctify his secret) in 'Al-Mizan al-Shari'ah al-Kubra'—have explicitly stated that even for children, there are 'sins' appropriate to their state, even if they are not counted as sins in the outward Shari'ah. It is because of these 'sins' that afflictions reach them, just as no tree is cut, no leaf falls, and no animal is slaughtered except because of its negligence in the glorification of Allah (tasbih). Based on this, legal impurity is also established in them.

[Right Column - Urdu Text] Second: A discerning child shall be commanded to perform ablution and prayer. Thus, if he is ill or on a journey and does not find water, he shall perform tayammum. His tayammum is not outside the scope of Shari'i tayammum, just like his wudu and prayer, even though he does not have ritual impurity (hadath), as we explained in 'Al-Tars al-Mu'addal'. Therefore, the form of purification is intended in this, even if it is not purification in reality because there is no legal impurity (najasah hukmiyah). It will be as stated in 'Al-Khaniyah': "When a discerning child performs wudu with the intention of purification, the water should become used (musta'mal) because he intended a valid act of worship (qurbah)." Ah Tamul (Reflect/Ponder). It can also be said, as we explained in "Al-Tars al-Mu'addal", that legal impurity is common to both sins and disliked acts. For this reason, wudu upon wudu with intention is the cause for the water becoming used, while there is no such ritual impurity which is stripping the quality of being a purifier from the water. And the scholars of the inner path—among whom is Sidi Abdul Wahab al-Sha'rani (may Allah sanctify his secret)—are the authors of 'Mizan al-Shari'ah al-Kubra'. They

have stated clearly that for children as well, there are 'sins' according to their state, even if they are not counted within the circle of sins in the outward Shari'ah. And it is because of these very sins that the calamities which reach them, reach them. Just as it is that any tree is cut, or any leaf falls, or any animal is slaughtered, it is because it was negligent of the glorification of Allah...

[Footer] [1] Fatawa Qazikhan, last section on used water. 1/9 Page 409 of 756

फ़तावा रज़विया - जिल्द ३

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] द्वितीय: समझदार बच्चे को वज़ू और नमाज़ का हुक्म दिया जाएगा। यदि वह बीमार हो या सफर में हो और पानी न मिले, तो वह तयम्मुम करे। उसका तयम्मुम शरई तयम्मुम से बाहर नहीं है, जैसे उसका वज़ू और नमाज़। जबकि उसके पास कोई हदस (अशुद्धि) नहीं है, जैसा कि हमने 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' में बयान किया है। इसमें पाकी की सूरत मक़सूद होती है, भले ही वह वास्तव में पाकी न हो क्योंकि हक्मी नजासत (कानूनी अशुद्धि) मौजूद नहीं है। यह वैसा ही है जैसा 'ख़ानिया' में कहा गया है: "जब एक समझदार बच्चा पाकी के इरादे से वज़ू करता है, तो पानी 'मुस्तअमल' (उपयोग किया हुआ) हो जाना चाहिए क्योंकि उसने एक विश्वसनीय इबादत (क़ुर्बत) का इरादा किया है।" इस पर गौर करें। यह भी कहा जा सकता है, जैसा कि हमने 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' में बयान किया है कि (१) हक्मी नजासत गुनाहों और मकरूहात दोनों को शामिल है। इसीलिए नीयत के साथ वज़ू पर वज़ू पानी के मुस्तअमल होने का कारण है, जबकि कोई ऐसा हदस नहीं है जो पानी से पाक करने की खूबी छीन रहा हो। बातिनी उलेमा—जिनमें से सैयदी अब्दुल वहाब शेरानी (क़ुद्दस सरुहू) ने 'मीज़ान-उश-शरिया अल-कुबरा' में लिखा है—ने स्पष्ट किया है कि बच्चों के लिए भी उनकी स्थिति के अनुसार 'गुनाह' होते हैं, भले ही ज़ाहिरी शरीयत के अनुसार वे गुनाहों के दायरे में नहीं आते। उन्हीं गुनाहों की वजह से उन्हें जो मुसीबत पहुँचती है वह पहुँचती है, जैसे कोई भी पेड़ काटा जाता है या कोई पत्ता गिरता है या कोई जानवर ज़िबह किया जाता है तो वह इसीलिए कि वह अल्लाह की तस्बीह (महिमागान) से ग़ाफ़िल था। इस आधार पर उनमें भी हक्मी नजासत साबित होती है।

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ] द्वितीय: समझदार बच्चे को वज़ू और नमाज़ का हुक्म दिया जाएगा। तो अगर वह बीमार हो या सफ़र में हो और पानी न पाए तो तयम्मुम करे, और उसका तयम्मुम शरई तयम्मुम से बाहर नहीं है, जैसे उसका वज़ू और नमाज़। हालांकि उसके पास हदस नहीं है, जैसा कि 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' में हमने इसे बयान किया है, तो इसमें ततहीर (पाकी) की सूरत मक़सूद होती है अगरचे हक़ीक़तन ततहीर न हो क्योंकि नजासत-ए-हक्मी नहीं। तो ऐसा होगा जैसे 'ख़ानिया' में फ़रमाया है: "समझदार बच्चा जब ततहीर के इरादे से वज़ू करे तो पानी मुस्तअमल हो जाना चाहिए इसलिए कि उसने एक मोतबर (विश्वसनीय) क़ुर्बत का इरादा किया।" अह तामुल (ग़ौर करो)। यह भी कहा जा सकता है जैसा कि हमने "अत-तर्स अल-मुअद्दल" में बयान किया है कि नजासत-ए-हक्मी मासी (गुनाहों) और मकरूहात दोनों ही को आम है, इसलिए नीयत के साथ वज़ू पर वज़ू पानी के मुस्तअमल होने का सबब है जबकि ऐसा कोई हदस नहीं जो पानी से मुतहिर (पाक करने वाला) होने

की सिफ़त सलब कर रहा हो। और उलेमा-ए-बातिन ने—जिनमें से सैयदी अब्दुल वहाब शेरानी (क़ुद्दस सरुहू) मीज़ान-उश-शरिया अल-कुबरा में रक़मतराज़ हैं—तसरीह (स्पष्टीकरण) फ़रमाई है कि बच्चों के लिए भी उनकी हालत के लिहाज़ से मासी होते हैं अगरचे ज़ाहिर-ए-शरीयत में वे मासी के दायरे में शुमार नहीं, और उन्हीं मासी की वजह से उन्हें जो मुसीबत पहुँचती है वह पहुँचती है जैसे यह है कि कोई भी दरख़्त काटा जाता है या कोई पत्ता गिरता है या कोई जानवर ज़िबह किया जाता है तो इस वजह से कि वह तस्बीह-ए-इलाही से ग़ाफ़िल...

[पाद लेख] [1] फ़तावा क़ाज़ीख़ान, आख़िर फ़स्ल फ़िल मा'उल मुस्तअमल। १/९ पृष्ठ ७५६ का ४०९

[Left Column - Arabic] الثانی: یؤمر الصبي العاقل بالوضوء والصلاة فان کان مریضاً اوعلی سفر ولم یجد ماء تیمم ولا یخرج تیممه من التیمم الشرعي کوضوئه وصلاته مع انه لا یحدث عنده کما بینا في الطرس المعدل فیراد فیه صورة التطهیر وان لم یکن تطهیرا حقیقة لعدم النجاسة الحکمیة فکان کقول الخانیة الصبي العاقل اذا توضأ یرید به التطهیر ینبغی ان یصیر الماء مستعملاً لانه نوی قربة معتبرة ۱ اھ تأمل۔ وقد یقال علی مابینا في الطرس المعدل ان (۱) النجاسة الحکمیة تعم المعاصی والمکروھات ولذا کان الوضوء علی الوضوء منویاً موجباً لاستعمال الماء مع عدم حدث یسلب الماء طھوریته ونص (۲) علماء الباطن منھم سیدی عبد الوھاب الشعرانی قدس سرہ فی المیزان ان للاطفال ایضاً معاصی بحسبھم وان لم تعد معاصی في ظاھر الشریعة وبھا یصیبھم ما یصیبھم کما لا (۳) تعضد شجرة ولا تسقط ورقة ولا یذبح حیوان الا لغفلته عن التسبیح فعلی ھذا تحقق النجاسة الحکمیة فیھم ایضاً

[Right Column - Urdu] دوم: عاقل بچہ کو وضو و نماز کا حکم دیا جائیگا، تو اگر وہ بیمار، یا سفر میں ہو اور پانی نہ پائے تو تیمم کرے اور اس کا تیمم، تیمم شرعی سے باہر نہیں، جیسے اس کا وضو اور نماز۔ حالانکہ اس کے پاس حدث نہیں، جیسا کہ الطرس المعدل میں ہم نے اسے بیان کیا ہے تو اس میں تطہیر کی صورت مقصود ہوتی ہے اگرچہ حقیقۃً تطہیر نہ ہو کیوں کہ نجاست حکمیہ نہیں۔ تو ایسا ہوگا جیسے خانیہ میں فرمایا ہے : "عاقل بچہ جب تطہیر کے ارادہ سے وضو کرے تو پانی مستعمل ہو جانا چاہئے اس لئے کہ اس نے ایک معتبر قربت کا ارادہ کیا" اھ تامل (غور کرو) یہ بھی کہا جاسکتا ہے جیسا کہ ہم نے "الطرس المعدل" میں بیان کیا ہے کہ نجاست حکمیہ معاصی اور مکروہات دونوں ہی کو عام ہے اس لئے نیت کے ساتھ وضو پر وضو

پانی کے مستعمل ہونے کا سبب ہے جبکہ ایسا کوئی حدث نہیں جو پانی سے مطہر ہونے کی صفت سلب کر رہا ہو۔ اور علمائے باطن نے۔ جن میں سے سیدی عبدالوہاب شعرانی قدس سرہ میزان الشریعۃ الکبریٰ میں رقمطراز ہیں۔ تصریح فرمائی ہے کہ بچوں کیلئے بھی ان کی حالت کے لحاظ سے معاصی ہوتے ہیں اگرچہ ظاہر شریعت میں وہ معاصی کے دائرہ میں شمار نہیں، اور ان ہی معاصی کی وجہ سے انہیں جو مصیبت پہنچتی ہے وہ پہنچتی ہے جیسے یہ ہے کہ کوئی بھی درخت کاٹا جاتا ہے یا کوئی پتہ گرتا ہے یا کوئی جانور ذبح کیا جاتا ہے تو اس وجہ سے کہ وہ تسبیح الٰہی سے غافل

[Footer] [1] فتاویٰ قاضیخان، آخر فصل فی الماء المستعمل ۔ ۹/۱ Page 409 of 756

Fatawa Ridawiyya, Volume Three

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] ...happened, so based on this statement, the proof of ritual impurity (najast hukmiya) in children will also be factual. And Allah Almighty knows best.

Thirdly: We have already stated that the use of earth refers to wiping (mash). And saying "wiping both limbs with the intention of purification" leads the mind to think that the wiper will also be the intender. Whereas this ruling is not absolute because for one who makes another perform tayammum (dry ablution) by his order, the intention of the commander (aamir) will be valid, not the one commanded (mamur), as passed with reference to Al-Bahr al-Raiq. Yes, one who performs tayammum himself or makes a deceased person perform tayammum, then in that case, the intention of the one performing the wiping will be considered. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. (T)

[Left Column - Arabic Text] Reality, 1 and Allah Almighty knows best. Thirdly: We have already mentioned that 'use' means wiping (mash). And your statement "wiping both limbs with the intention of purification" suggests that the one who wipes is also the one who intends. However, this is not absolute. For instance, if someone performs tayammum for another by their command, the intention of the commander is considered, not the one commanded, as previously cited from al-Bahr. Yes, if one performs tayammum for oneself or performs it for a deceased person (1), the intention of the one performing the wiping is considered. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best.

[Bottom Section - Urdu] Seventh Razavi Definition - I say: And success is with Allah. What we have clarified in these grand discussions, with Allah's help, the most correct, clear, and explicit definition of tayammum is: For the sake of obligatory purification, in a state of inability to use sufficient water, a sane Muslim, to remove ritual impurity (najast hukmiya) from his body factually or figuratively, or from the body of a deceased Muslim the factual impurity of death or ritual impurity according to the second view, uses a perfectly pure substance from the genus of earth on his or the deceased's face and hands—specifically the parts washed in wudu—either by himself or by commanding another with the said intention, in such a way that either through this act every part of those two limbs is touched by that genus of earth, or his or his appointee's palms, which have been brought into contact with the genus of earth with the said intention, wipe the face and up to the elbows with each hand through

many separate contacts, such that no part remains untouched by the genus of earth itself or those palms.

Explanations: The many benefits of our statements and restrictions are clear from the previous discussions, but for our common brothers who may not understand, we summarize and provide many abundant new benefits that were not mentioned before.

1 Al-Mizan al-Kubra, Conclusion of the Book, Mustafa al-Babi, Egypt 209/2 Page 410 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड तीन

[दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...हुआ, तो इस कथन के आधार पर बच्चों में भी नजासत हुक्मिया (नियमबद्ध अशुद्धि) का प्रमाण वास्तविकता के तौर पर होगा। वल्लाहु तआला आलम।

तीसरा: हम पहले ही बता चुके हैं कि ज़मीन (सईद) के इस्तेमाल से तात्पर्य मसह (पोंछना) है। और "पाकी की नीयत से दोनों अंगों का मसह" कहने से ज़हन इस तरफ जाता है कि मसह करने वाला ही नीयत करने वाला भी होगा। जबकि यह नियम पूर्ण (निरपेक्ष) नहीं है, क्योंकि जो व्यक्ति किसी दूसरे को उसके आदेश से तयम्मुम कराए, उसमें आदेश देने वाले (आ़मिर) की नीयत का विचार होगा, न कि जिसका किया जा रहा है (मामूर), जैसा कि अल-बहरुल राइक के हवाले से पहले बताया गया है। हाँ, जो खुद तयम्मुम करे या किसी मृत व्यक्ति को तयम्मुम कराए, तो उसमें मसह करने वाले की नीयत का विचार किया जाएगा। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम। (त)

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] हकीकत, 1 और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। तीसरा: हम पहले ही बता चुके हैं कि 'इस्तेमाल' का मतलब मसह है। और आपका यह कहना कि 'पाकी की नीयत से दोनों अंगों का मसह करना' इससे यह ज़हन में आता है कि मसह करने वाला ही नीयत करने वाला भी होगा। हालाँकि, यह नियम पूर्ण नहीं है। क्योंकि जो व्यक्ति किसी दूसरे के आदेश पर उसे तयम्मुम कराता है, तो उसमें आदेश देने वाले की नीयत का विचार किया जाएगा, न कि जिसका किया जा रहा है, जैसा कि अल-बहर के हवाले से पहले बताया जा चुका है। हाँ, जो खुद तयम्मुम करे या किसी मृत व्यक्ति (1) को तयम्मुम कराए, तो उसमें मसह करने वाले की नीयत का विचार किया जाएगा। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

[निचला भाग - उर्दू] सातवीं रज़वी परिभाषा - मैं कहता हूँ: और सफलता अल्लाह की तौफ़ीक से है। इन महान विषयों में हमने जो कुछ स्पष्ट किया है, उस पर अल्लाह तआला की सहायता से तयम्मुम की सबसे सही, स्पष्ट और साफ़ परिभाषा यह हुई कि: फ़र्ज़ पाकी के लिए पर्याप्त पानी के अभाव की स्थिति में, एक विवेकशील मुसलमान का अपने शरीर से नियमबद्ध अशुद्धि (नजासत हुक्मिया) हकीकी या प्रतीकात्मक रूप में, या मुसलमान मृत के शरीर से मृत्यु की वास्तविक अशुद्धि या दूसरे मत के अनुसार नियमबद्ध अशुद्धि को दूर करने के लिए, अपने या उस मृत के चेहरे और हाथों पर—इतने हिस्से पर जिसे वज़ू में धोया जाता है—मिट्टी की श्रेणी (जिंस-ए-ज़मीन) से किसी पूर्णतः शुद्ध चीज़ को खुद या अपनी बताई गई नीयत के साथ दूसरे को आदेश देकर उसके माध्यम से इस तरह

उपयोग करना कि या तो खुद इस कार्य से उन दोनों अंगों के हर हिस्से पर उस मिट्टी की श्रेणी का स्पर्श हो जाए, या उसकी या उसके प्रतिनिधि की वे हथेलियाँ जिन्हें निर्धारित नीयत के साथ मिट्टी से स्पर्श कराया गया हो, उनके द्वारा चेहरे और कोहनियों तक हर हाथ से इस तरह मसह हो कि कोई हिस्सा अछूता न रहे।

स्पष्टीकरण: हमारे इन विवरणों और प्रतिबंधों के कई लाभ पिछली बहसों से स्पष्ट हैं, लेकिन हमारे सामान्य भाइयों के लिए जो इसे न समझ सकें, हम संक्षेप में दोहराव करते हैं और कई नए लाभ प्रदान करते हैं जो पहले नहीं बताए गए थे।

1 अल-मीज़ान अल-कुबरा, ग्रंथ का समापन, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 209/2 पेज 410 / 756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

[دایاں کالم] ہوا، تو اس قول کی بنیاد پر بچوں میں بھی نجاست حکمیہ کا ثبوت حقیقۃً ہوگا ۔ واللہ تعالٰی اعلم ۔ سوم: ہم بتا چکے ہیں کہ استعمال صعید سے مراد مسح ہے۔ اور "بقصد تطہیر دونوں عضوؤں کا مسح" کہنے سے ذہن اس طرف جاتا ہے کہ مسح کرنے والا قصد کرنے والا بھی ہوگا ۔ حالانکہ یہ حکم مطلق نہیں اس لئے کہ جو کسی دوسرے کو اس کے حکم سے تیمم کرائے اس میں آمر کی نیت کا اعتبار ہوگا مامور کی نیت کا نہیں جیسا کہ البحرالرائق کے حوالے سے گزرا۔ ہاں جو خود تیمم کرے یا کسی میت کو تیمم کرائے تو اس میں مسح کرنے والے کی نیت کا اعتبار ہوگا ۔ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔ (ت)

[بایاں کالم - عربی متن] حقیقة 1 واللہ تعالیٰ اعلم۔ الثالث: قدمنا ان الاستعمال ھو المسح وقولك مسح العضوین علی قصد التطھیر یتبادر منه ان الماسح ھو القاصد ولیس ھذا علی اطلاقه فان من یمم غیرہ بأمرہ یعتبر فیه نیة الأمر دون المأمور کما تقدم عن البحر نعم من یتیم بنفسه اویمم (۱) میتا اعتبر فیه نیة الماسح واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔

[نیچے والا حصہ] تعریفِ ہفتم رضوی۔ اقول: وباللہ التوفیق ان مباحث جلیلہ میں جو کچھ ہم نے منقح کیا اس پر تیمم کی تعریف اصح واوضح واصرح بعونہ تعالٰی یہ ہوئی کہ فرضِ طہارت کیلئے کافی پانی سے عجز کی حالت میں مسلمان عاقل کا اپنے بدن سے نجاست حکمیہ حقیقۃً یا صورۃً یا میتِ مسلم کے بدن سے نجاستِ موت حقیقیہ یا دوسرے قول پر حکمیہ دُور کرنے کیلئے اپنے یا اُس میت کے منہ اور ہاتھوں سے اتنے حصّہ پر جس کا دھونا وضو میں ہے جنسِ زمین سے کسی کامل الطہارۃ چیز کو خود یا اپنی نیت مذکورہ سے دوسرے کو حکم دے کر اُس کے واسطہ سے یوں استعمال کرنا کہ یا تو خود اس فعل سے ان دونوں عضوؤں کے ہر جز کو اُس جنسِ ارض سے مس

واقع ہو یا اپنے خواہ اپنے مامور کے وہ کف کہ اس کی نیت مذکور کے ساتھ جنس ارض سے اتصال دیئے گئے ہوں اُن کے اکثر کا جدا جدا اتصالوں سے منہ اور کہنیوں کے اوپر ہر ہاتھ سے اس طرح مس ہو نا کہ کوئی حصّہ ایسا نہ رہے جسے خود جنسِ ارض یا اُس کف سے اتصال نہ ہو۔

توضیحات: ہمارے ان بیانات وقیود کے بہت فوائد مباحث سابقہ سے روشن ہیں مگر ہمارے عوام بھائی نہ سمجھیں اُن کیلئے اجمالاً اعادہ اور کثیر وغریز جدید فوائد کا کہ پہلے مذکور نہ ہوئے افادہ کریں۔

1 المیزان الکبریٰ خاتمة الکتاب مصطفٰی البابی مصر ۲۰۹/۲ صفحہ 410 از 756

Fatawa Razawiya Volume 3

Samh-ul-Nadri fima yurith-ul-ajz 'anil-ma 1335 AH

I say: And with Allah is the guidance. Firstly, there are 5 to 7 forms of inability regarding water: (1) Water is a mile away from there, even if he is in his own city or on a journey heading in the same direction. In *Durr-ul-Mukhtar* it says: "Due to its distance, even if he is a resident in the city, at a distance of one mile" (because he is one mile away from water even if he resides in the city). In *Fath-ul-Qadir* it is stated: "His saying 'a mile' is the preferred view, to avoid what was said about 'two miles' or 'two miles if the water is in front of him, otherwise one mile'." (The author's word 'mile' is the preferred view. This is to avoid those two opinions: (i) two miles, (ii) two miles if water is in the direction ahead of him, otherwise one mile).

Warning: Look at the mercy of the pure Sharia of the Mercy to the Worlds, the Compassionate and Merciful towards the believers (peace and blessings of Allah be upon him). He showed such consideration for our hardship of walking just one mile that He did not require performing wudu or even ghusl in the state of ritual impurity, and allowed tayammum. Even if a person is in his own city, or on a journey and water is one mile away in the direction he is traveling, he can still perform tayammum and pray here, even if he has to cover that mile himself. Yes, if there is water in the direction he is going, and he won't reach it at a disliked time, then it is recommended that he goes there, performs purification with water, and prays. In the primary texts (*Mutun*) it says: "It is recommended for the one who expects water to delay until the end of the time (*Tanwir*). Recommended in *Ad-Durr*. This is the most correct view (*Shami*)." (Delay is recommended for the one who hopes to find water at the end of the time. *Tanwir-ul-Absar* means: at the end of the recommended time, and in *Durr-ul-Mukhtar* this is the most correct. *Shami*). (2) There is a well in the forest but no rope or bucket to draw water, and he cannot extract it with a turban etc., nor is there anyone who can go down and bring it. (3) Or the one who brings it asks for more than the standard wage, as in *Al-Bahr* from *At-Tawshih*. (4) I say: Or he is poor and cannot pay the wage at all. (5) Or he doesn't have it here to give, his wealth is elsewhere, and the laborer does not agree to credit. If he agrees, then tayammum will not be permissible. This was derived from what follows regarding the price of water. (6) He has clothes that can be used as a rope to draw water, or by repeatedly dipping and

squeezing them he can get enough water for purification, but by doing so, the clothes...

1. *Ad-Durr-ul-Mukhtar*, Chapter of Tayammum, Mujtabai Press Delhi, 1/41
2. *Fath-ul-Qadir*, Chapter of Tayammum, Nooria Rizvia Sukkur, 1/108
3. *Radd-ul-Muhtar* with *Ad-Durr*, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi Egypt, 1/182
4. *Al-Bahr-ur-Ra'iq*, Chapter of Tayammum, Saeed Company Karachi, 1/231

फ़तावा रज़विया खंड 3

सम्ह-उल-नद्री फ़ीमा यूरिथ-उल-अज्ज़ 'अनिल-मा (1335 हिजरी)

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से। सबसे पहले, पानी के प्रति असमर्थता के5 या 7 रूप हैं: (1) पानी वहाँ से एक मील दूर हो, चाहे वह अपने ही शहर में हो या यात्रा में उसी दिशा में जा रहा हो। 'दुर्रे मुख्तार' में है: "उसकी दूरी के कारण, भले ही वह शहर में निवासी हो, एक मील दूर" (क्योंकि वह पानी से एक मील दूर है भले ही वह शहर में रहता हो)। 'फ़तहुल क़दीर' में है: "लेखक का कहना 'एक मील' ही पसंदीदा है, उन बातों से बचने के लिए जो 'दो मील' या 'दो मील यदि पानी उसके सामने की दिशा में हो, अन्यथा एक मील' के बारे में कही गई हैं"। (लेखक का शब्द 'मील' ही पसंदीदा है। यह इन दो मतों से बचने के लिए है: (i) दो मील (ii) दो मील यदि पानी उसके सामने की दिशा में हो, अन्यथा एक मील)।

चेतावनी: 'रहमतुल-लिल-आलमीन', मोमिनों पर कृपालु और दयालु (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पवित्र शरीअत की दया देखें। उन्होंने हमारे केवल एक मील चलने के कष्ट का इतना ध्यान रखा कि उसके लिए वज़ू, बल्कि जनाबत की स्थिति में ग़ुस्ल की ज़रूरत नहीं रखी और तयम्मुम की अनुमति दे दी। भले ही आदमी अपने शहर में हो, या यात्रा में जिस दिशा में जाना है उसी दिशा में एक मील की दूरी पर पानी हो, तब भी वह यहाँ तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ सकता है, चाहे वह मील उसे खुद ही तय करना पड़े। हाँ, जिस दिशा में वह जा रहा है उधर ही पानी है और जाने में मकरूह समय नहीं होगा, तो मुस्तहब (पसंदीदा) यह है कि वहाँ पहुँचकर पानी से ही पाकी हासिल करके नमाज़ पढ़े। 'मुतून' (मूल ग्रंथों) में है: "पानी की उम्मीद रखने वाले के लिए आखिरी समय तक देरी करना मुस्तहब है (तन्वीरुल अबसार)। अद-दुर्र के अनुसार मुस्तहब है। यही सबसे सही है (शामी)।" (उसके लिए देरी करना पसंदीदा है जो अंतिम समय में पानी मिलने की उम्मीद रखता हो। तन्वीरुल अबसार यानी मुस्तहब समय के अंत में, दुर्रे मुख्तार में यही सबसे सही है। शामी)। (2) जंगल में कुआँ है, रस्सी या डोल (बाल्टी) भरने का उपकरण नहीं है, न ही वह पगड़ी आदि से निकाल सकता है, न ही कोई ऐसा व्यक्ति है जो पानी नीचे उतर कर ला सके। (3) या पानी लाने वाला औसत मज़दूरी से अधिक माँगता है, जैसा कि 'अलबहर' में 'अत-तौशीह' के हवाले से है। (4) मैं कहता हूँ: या वह निर्धन है कि मज़दूरी दे ही नहीं सकता। (5) या यहाँ देने के लिए पैसे नहीं हैं, उसका धन दूसरी जगह है और मज़दूर उधार पर राज़ी नहीं है। और अगर राज़ी हो जाए, तो तयम्मुम जायज़ नहीं होगा। यह बात पानी की कीमत के बारे में आगे आने वाले मसले से ली गई है। (6) कपड़े तो ऐसे हैं जिन्हें रस्सी की जगह इस्तेमाल

करके पानी निकाल सकता है, या बार-बार डुबोकर निचोड़ने से पाकी के काबिल पानी ले सकता है, मगर ऐसा करने से कपड़ा...

1. अल-दुर्र-उल-मुख़्तार, बाब-उत-तयम्मुम, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/41
2. फ़तहुल क़दीर, बाब-उत-तयम्मुम, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/108
3. रद-उल-मुहतार मा 'अद-दुर्र', बाब-उत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/182
4. अल-बहर-उर-राइक, बाब-उत-तयम्मुम, सईद कंपनी कराची, 1/231

पृष्ठ 411 / 756

سمح الندرٰی فیما یورث العجز عن الماء ۱۳۳۵ھ

فأقول: وباللہ التوفیق اوّل پانی سے عجز کی ۷،۵ صورتیں ہیں: (۱) پانی وہاں سے میل بھر دُور ہو اگرچہ خود اپنے شہر ہی میں ہو یا سفر میں اسی طرف جدھر جارہا ہے، در مختار میں ہے: لبعدہ ولو مقیماً فی المصر میلاً (کیونکہ وہ پانی سے ایک میل دُور ہے اگرچہ شہر ہی میں مقیم ہے۔ت) فتح القدیر میں ہے قولہ المیل ھو المختار احترازا عما قیل میلان او میلان ان کان الماء امامہ والا فمیل (مصنف کا قول "میل" یہی مختار ہے۔ یہ ان دونوں قولوں سے احتراز ہے: (i) دو میل (ii) دو میل اگر پانی اس کے آگے سمت میں ہو ورنہ ایک میل۔ت)

تنبیہ: رحمۃ اللعالمین بالمومنین رؤف رحیم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی شریعت مطہرہ کی رحمت دیکھئے ہمارے صرف میل بھر چلنے کی مشقت پر ایسا لحاظ فرمایا کہ اس کیلئے وضو بلکہ بحال جنابت غسل کی ضرورت نہ رکھی تیمم جائز فرما دیا اگرچہ آدمی خود اپنے شہر میں ہو بلکہ سفر میں جس طرف جانا ہے اسی طرف میل بھر ہو جب بھی یہاں تیمم کرکے نماز پڑھ سکتا ہے اگرچہ یہ میل خود ہی طے کرے گا ہاں جس طرف جاتا ہے اُدھر ہی پانی ہے اور جانے میں وقت کراہت نہ آجائے گا تو مستحب یہ ہے کہ وہاں پہنچ کر پانی ہی سے طہارت کرکے نماز پڑھے متون میں ہے ندب لراجیہ آخر الوقت تنویر۔ المستحب در۔ ھو الاصح ش (اس کیلئے تاخیر مندوب ہے جو آخر وقت میں پانی ملنے کی امید رکھتا ہو۔ تنویر الابصار یعنی۔ آخر وقت مستحب میں در مختار یہی اصح ہے۔ شامی۔ ت) (۲) جنگل میں کُنواں ہے رسی یا ڈول بھرنے کا آلہ نہیں نہ عمامے وغیرہ سے نکال سکے نہ کوئی ایسا ہو کہ پانی اُتر کر لادے (۳) یا لانے والا اُجرت مثل سے زائد مانگتا ہے کما فی البحر عن التوشیح (جیسا کہ البحر الرائق میں توشیح کے حوالے سے ہے۔ ت) (۴) اقول:

یا یہ مفلس ہے کہ اُجرت دے ہی نہیں سکتا (۵) یا یہاں دینے کو نہیں اس کا مال دوسری جگہ ہے اور اجیر ادھار پر راضی نہیں اور اگر راضی ہو جائے تو تیمم جائز نہ ہو گا زد تھا اخذ مما یأتي فی ثمن الماء (پانی کے دام سے متعلق جو مسئلہ آرہا ہے اس سے اخذ کرتے ہوئے میں نے ان دو صورتوں کا اضافہ کیا۔ ت) (۶) کپڑا تو ایسا ہے جسے رستی کی جگہ کر کے پانی نکال سکتا ہے یا بار بار ڈبو کر نچوڑنے سے پانی قابلِ طہارت لے سکتا ہے مگر ایسا کرنے سے کپڑا

1 الدر المختار باب التیمم مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۴۱ 2 فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۰۸ 3 رد المحتار مع الدر و باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/۱۸۲ 4 بحر الرائق باب التیمم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۳۱

Fatawa Razawiya Volume Three It will get ruined or it will be necessary to cut it in the middle and tie it to reach the water. And if doing so causes a loss of one Dirham, then Tayammum is allowed, otherwise not. [Reference from Al-Tatarkhaniyya from Imam Faqih al-Nafs, contrary to what is in Al-Tawshih, Al-Bahr, Al-Nahr, and Ad-Durr, relying on what is in the books of the Shafi'is that if the reduction in the value of water and the tool for drawing water is less [than the threshold], one does not perform Tayammum, but if it exceeds, one does. (Shami from Tatarkhaniyya from Imam Faqih al-Nafs Qazi Khan, contrary to what is in Tawshih, then Bahr, then Nahr, then Durr, relying on what is in Shafi'i books that if the price of water and the tool for drawing water is equal to the loss, do not do Tayammum, otherwise do Tayammum. - T)] Benefit: The Shari'i Dirham here is 175/7 of a Rupee, i.e., 6.25 pies less than four and a half annas. (7) The pond water has frozen on top due to ice, and one has no tool to break it to extract water from underneath or to melt the ice. [Reported in Al-Bahr from Al-Mubtaghi. (Bahr mentioned it with reference to Mubtaghi. - T)] I say: If it can be melted by air without a tool, even then Tayammum will be valid, but if it takes so long to melt that the prayer time expires, then perform Tayammum and pray.

| And is this ruling based on the view of Zufar, which is given Fatwa, about the permissibility of Tayammum | Is this ruling based on the view of Imam Zufar, which is the given fatwa, that if there is a fear of missing | | due to the fear of missing a timed prayer, so one acts upon it and then repeats it after purifying | a timed prayer, then Tayammum is permissible. Therefore, one should act upon it, then, while acting on the original | | with water in accordance with the original school of thought, or is it based on the view of all? | school of thought, should perform wudu with water and repeat the prayer? Or is this according to everyone's view? | | I say: The apparent answer is the second because he truly lacks water, | I say: It is apparent that it is based on everyone's view. Because in reality, he is | | unlike the issue of Zufar, where Tayammum is permissible even if he | not one who finds water. Unlike Imam Zufar's case, Tayammum for him | | will find it after the time by melting. Do you not see that the one who hopes | is permissible even if he will get water after the time due to melting; see that | | for it at the end of the time is not obliged to delay, so what about the one... | for one who hopes to find water at the end of the time, delay is not obligatory, so how about someone who... |

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa Al-Babi, Egypt, 1/173 2 Al-Bahr al-Ra'iq, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/143 Page 412 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम खराब हो जाएगा या पानी तक पहुँचने के लिए इसे बीच में से चीर कर बांधना पड़ेगा। और ऐसा करने से उसमें एक दिरहम का नुकसान होता है तो तयम्मुम की इजाज़त है वरना नहीं। [अल-ततारखानिया से इमाम फ़क़ीह अल-नफ़्स के हवाले से, अल-तौशीह के विपरीत। पस अल-बहर, फिर अल-नहर, फिर अल-दुर्र में शाफ़ई किताबों पर भरोसा करते हुए यह है कि अगर पानी और पानी निकालने के औज़ार की कीमत में कमी [नुकसान] की मात्रा के बराबर हो तो तयम्मुम न करे, वरना कर ले। (शामी अज़ ततारखानिया अज़ इमाम फ़क़ीह अल-नफ़्स क़ाज़ी खान, इसके बर-खिलाफ़ जो तौशीह फिर बहर फिर नहर फिर दुर्र में है, उस पर एतमाद करते हुए जो कुतुब-ए-शाफ़ईया में है कि अगर पानी और पानी खींचने के आले की कीमत ब-क़दर नुक़सान हो तो तयम्मुम न करे वरना तयम्मुम कर ले। - त)] फ़ायदा: दिरहम-ए-शरई यहाँ के रुपये से 175/7 है यानी साढ़े चार आने से 6.25 पाई कम। (7) तालाब का पानी ऊपर से बर्फ की वजह से जम गया है और उसके पास कोई औज़ार नहीं है कि उसे तोड़कर नीचे से पानी निकाल सके या बर्फ को पिघला सके। [अल-बहर ने अल-मुब्तग़ी के हवाले से ज़िक्र किया है। - त] अक़ूल (मैं कहता हूँ): अगर बिना औज़ार के हवा से पिघल सके तब भी तयम्मुम जायज़ होगा, लेकिन अगर इतनी देर में पिघले कि नमाज़ का वक़्त गुज़र जाए, तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले।

| व-हल हुवा अला क़ौले ज़ुफ़र अल-मुफ़्ता बिहि मिन जवाज़ित तयम्मुम | क्या यह हुक्म इमाम ज़ुफ़र के मुफ़्ता-बिहि क़ौल पर है कि अगर नमाज़ | | ल-ख़ौफ़े फ़ौते वक़्तिय्यतिन फ़-युअमलु बिहि सुम्मा युईदु मुततहि-रन | वक़्ती के फ़ौत होने का अंदेशा हो तो तयम्मुम जायज़ है। लिहाज़ा इस पर अमल | | बिल-माई अमलन बि-असलिल मज़हब अम अला क़ौलिल कुल्ल- | कर ले, फिर असल मज़हब पर अमल करते हुए पानी से वज़ू | | अक़ूल: अज़-ज़ाहिरुस सानी लि-अन्नहु आदिमुन लिल-माई ह़क़ीक़तन | करके नमाज़ का एआदा करे? या यह सबके क़ौल पर है? | | बि-ख़िलाफ़े मस-अलति ज़ुफ़र फ़-यसूग़ुत तयम्मुमु फ़-इन का-न | अक़ूल: ज़ाहिर यह है कि यह सबके क़ौल पर है। इसलिए कि ह़क़ीक़तन वह | | यजिदुहु बाद़ल वक़्ति बि-ज़ौबान अला तरा अन्ना राजियहु | पानी पाने वाला नहीं। ब-ख़िलाफ़ मसला इमाम ज़ुफ़र के तो तयम्मुम इस के लिए | | आख़िरल वक़्ति ला यजिबु अलैहित ताख़ीर फ़-कैफ़ा मन | जायज़ है अगरचे वक़्त के बाद पिघलने से वह पानी पा ले गा देखिये कि | | | जिसे आख़िर वक़्त में पानी मिलने की |

1 रद-उल-मुहतार, बाब-उत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/173 2 अल-बहर-उर-रायिक़, एच. एम. सईद कंपनी, कराची, 1/143 पेज 412 ऑफ़ 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم خراب ہو جائیگا یا پانی تک پہنچنے کیلئے اسے بیچ میں چیر کر باندھنا درکار ہوگا۔ اور ایسا کرنے سے اس میں ایک درم کا نقصان ہوتا ہے جب بھی تیمم کی اجازت ہے ورنہ نہیں ش عن التاتارخانیة عن الامام فقیه النفس خلافاً لما في التوشیح فالبحر فالنهر فالدر معتمدین مانی کتب الشافعیة ان لونقص قدر قیمة الماء وألة الاستقاء لا یتیمم وان زاد تیمم (شامی از تاتارخانیہ از امام فقیہ النفس قاضی خان اس کے بر خلاف جو توشیح پھر بحر پھر نہر پھر در میں ہے اس پر اعتماد کرتے ہوئے جو کتب شافعیہ میں ہے کہ اگر پانی اور پانی کھینچنے کے آلے کی قیمت بقدر نقصان ہو تو تیمم نہ کرے ورنہ تیمم کرلے۔ت) فائدہ' درم شرعی یہاں کے روپے سے ۱۷۵/ ۷ ہے یعنی ساڑھے چار آنے سے ۶/۲۵ پائی کم۔ (۷) تالاب کا پانی اوپر سے بوجہ برف جم گیا ہے اور اس کے پاس کوئی آلہ نہیں کہ اسے توڑ کر نیچے سے پانی نکال سکے یا برف کو پگھلا سکے بحر عن المبتغی (بحر نے مبتغی کے حوالے سے ذکر کیا ہے۔ت) اقول: اگر بلا آلہ ہوا سے پگھلا سکے جب بھی تیمم روانہ ہوگا مگر یہ کہ اتنی دیر میں پگھلے کہ وقت جاتا رہے گا تو تیمم کر کے پڑھ لے۔

| وھل ھو علی قول زفر المفتی به من جواز التیمم | کیا یہ حکم امام زفر کے مفتی بہ قول پر ہے کہ اگر نماز وقتیہ کے | | لخوف فوت وقتیة فیعمل به ثم یعید متطهرا | فوت ہونے کا اندیشہ ہو تو تیمم جائز ہے۔ لہذا اس پر عمل | | بالماء عملا بأصل المذهب ام علی قول الکل۔ | کرلے، پھر اصل مذہب پر عمل کرتے ہوئے پانی سے وضو | | اقول: الظاهر الثانی لانه عادم للماء حقیقة | کرکے نماز کا اعادہ کرے؟ یا یہ سب کے قول پر ہے؟ | | بخلاف مسألة زفر فیسوغ التیمم فان کان | اقول: ظاہر یہ ہے کہ سب کے قول پر ہے۔ اس لئے کہ حقیقۃ وہ | | یجده بعد الوقت بالذوبان الا تری ان راجیه | پانی پانے والا نہیں۔ بخلاف مسئلہ امام زفر کے تو تیمم اس کیلئے | | آخر الوقت

لا يجب عليه التأخير فكيف من | جائز ہے اگرچہ وقت کے بعد پگھلنے سے وہ پانی پا لے گا

دیکھئے کہ | | | جسے آخر وقت میں پانی ملنے کی |

1 ردالمحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/۱۷۳ 2 البحر الرائق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی

Page 412 of 756 ۱/۱۴۳

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

[Arabic]: Lā yarjūhu fī al-waqt aṣlan wa-Allāhu ta‘ālā a‘lam. | If there is no hope [of finding water] at all, then delay is not obligatory. What would be the ruling for someone who has no hope of finding water within the time at all? And Allah knows best. (T)

(8) There is a lion, wolf, or any predator, or a snake, or fire near the water such that he cannot take the water. (9) There is a highwayman who will rob him. (10) There is an enemy whose attack is reasonably feared. (11) There is a transgressor such that an immoral act against a woman or a youth is feared from him. (12) There is a creditor, and the person is destitute, and he (the creditor) will imprison him for the demand. All this is in *al-Bahr* and *al-Durr*. (All this is in *al-Bahr al-Ra'iq* and *Durr al-Mukhtar*. - T)

I say: This is a Shari'i ruling that is not applicable in these lands. Here, a creditor has no authority to imprison [someone] himself except by filing a lawsuit. So, it is not an excuse here in this way, but rather in the sense that he has initiated an arrest; if he goes there or comes out, he will be arrested. (13) One who cannot go to the water because of a warrant. (14) One who is hiding from the police. And they have mentioned (1) regarding Jumu'ah that hiding from an unjust ruler waives [the obligation of Jumu'ah]. *Fath* and *Hindiyya*. (Scholars have mentioned regarding Jumu'ah that due to hiding for fear of an unjust king, Jumu'ah becomes waived. *Fath*, *Hindiyya*. - T)

(15) I say: These two scenarios that the Faqir (the author) added are obvious, and they are proven from the issue of the debtor by the indication of the text (Dalalat al-Nass). There is a third scenario: a religious dignitary or a religious scholar who avoids courts for the sake of the honor of religion and religious knowledge. An opponent, to cause distress, has listed him as a witness or summoned him in some other way, and a summons has been issued. He cannot go out due to fear of it. Apparently, this too, God willing, is a valid excuse, as ultimately this harm is much greater than the loss of one paisa, for which the Shariah permitted Tayammum (which will be mentioned shortly). So let it be refined and reflected upon, and Allah knows best. (Its clarification and reflection on it are needed. And Allah Almighty knows best. - T) These three scenarios will expand if the one who carries [water] for a fee asks for more than the standard fee (ujrat al-mithl), or he (the person) is not able to pay the fee, or does not have it at the time.

(16 to 32) I say: In every scenario from 10 to 15, it is also a condition that no one like a servant, slave, son etc. is available to bring water, and in each case, as before, they are not willing to do it on credit. (33) He has wealth with him, whether his own or held in trust, and it is not possible to take it with him to the water, nor is there a guard here. If he goes to get water...

1. *Al-Bahr al-Ra'iq*, Chapter of Tayammum, published by H.M. Saeed Company, Karachi, 1/244.
2. *Fath al-Qadir*, Chapter of Friday Prayer, published by Nooria Rizvia, Sukkur, 2/32.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[अरबी]: लायर्जुहु फिल वक्ति अस्लन वल्लाहु तआला आलम। | यदि उस समय [पानी मिलने की] बिल्कुल भी आशा न हो, तो विलंब करना अनिवार्य नहीं है। फिर उस व्यक्ति के लिए क्या नियम होगा जिसे समय के भीतर पानी मिलने की बिल्कुल भी आशा न हो? और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)

(8) पानी के पास शेर, भेड़िया आदि हिंसक जानवर या सांप या आग है कि पानी नहीं ले सकता। (9) राहज़न (डाकू) है जो लूट लेगा। (10) दुश्मन है जिससे हमले का सही डर है। (11) फासिक (पापी) है कि उससे किसी औरत या लड़के के साथ दुराचार का डर है। (12) कर्जदाता है और यह निर्धन है और वह मांग के कारण कैद कर लेगा। 'अल-बहर' और 'अद-दुर्र' में यह सब है। (यह सब 'अल-बहर अल-रायिक' और 'दुर्रे मुख्तार' में है। - त)

अकौल (मैं कहता हूँ): यह एक शरीयत का मसला है जो इन देशों में लागू नहीं है। यहाँ कर्जदाता को मुकदमा दायर करने के अलावा स्वयं कैद करने का अधिकार नहीं है। तो यह यहाँ इस तरह से बहाना नहीं है, बल्कि इस तरह कि उसने गिरफ्तारी वारंट जारी कराया है; यदि वह वहां जाता है या बाहर निकलता है तो गिरफ्तार हो जाएगा। (13) जो वारंट के कारण पानी के पास नहीं जा सकता। (14) जो पुलिस से छुपा हुआ है। और उन्होंने जुमे के बारे में उल्लेख किया है (1) कि अत्याचारी शासक से छिपना [जुमे की अनिवार्यता को] समाप्त कर देता है। 'फतह' और 'हिन्दिया'। (विद्वानों ने जुमे के बारे में उल्लेख किया है कि अत्याचारी राजा के डर से छिपने के कारण जुमा माफ हो जाता है। फतह, हिन्दिया। - त)

(15) अकौल: ये दोनों सूरतें जो फकीर (लेखक) ने बढ़ाई हैं, स्पष्ट हैं और देनदार के मसले से दलालतुल-नस् (पाठ के संकेत) द्वारा सिद्ध हैं। तीसरी सूरत और है कि एक धार्मिक प्रतिष्ठित व्यक्ति या धार्मिक विद्वान जो दीन और इल्म-ए-दीन के सम्मान के लिए अदालतों से बचता है; विरोधी ने उसे कष्ट पहुँचाने के लिए गवाह के रूप में लिखवा दिया या किसी और तरह से बुलवाया, समन जारी है। उसके डर से बाहर नहीं जा सकता। ज़ाहिर है कि यह भी इंशा-अल्लाह अज़ीज़ एक वैध बहाना है, क्योंकि अंततः यह नुकसान एक पैसे के नुकसान से कहीं अधिक है जिसके लिए शरीयत ने तयम्मुम की अनुमति दी है (जिसका उल्लेख शीघ्र ही आएगा)। तो इसे परिष्कृत किया जाना चाहिए और इस पर विचार किया जाना चाहिए, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (इसके स्पष्टीकरण और इस पर

विचार की आवश्यकता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। - त) ये तीन-तीन सूरतें बढ़ेंगी कि मज़दूरी पर पानी लाने वाला व्यक्ति 'उजरत-ए-मिसल' (सामान्य मज़दूरी) से अधिक मांगता है, या वह व्यक्ति मज़दूरी देने में सक्षम नहीं है, या उस समय उसके पास पैसे नहीं हैं।

(16 से 32) अकौल: 10 से 15 तक की हर सूरत में यह भी शर्त है कि कोई पानी लाने वाला नौकर, गुलाम, बेटा आदि न मिले, और हर एक में पहले की तरह वे उधार पर राज़ी नहीं हैं। (33) उसके पास माल है, चाहे अपना हो या अमानत का, और उसे पानी के पास साथ ले जाना संभव नहीं है, और न ही यहाँ कोई रक्षक है। यदि पानी लेने...

1. अल-बहर अल-रायिक, बाबुत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/244
2. फतहुल-क़दीर, बाबू सलातुल-जुमा, नूरुय्या रज़विया सुक्कुर, 2/32 पेज 413 of 756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

لایرجوہ فی الوقت اصلا واللہ تعالی اعلم۔ | امید ہو اس پر تاخیر واجب نہیں، پھر اس کا کیا حکم ہوگا جسے وقت میں پانی ملنے کی بالکل امید نہیں۔ واللہ تعالی اعلم۔(ت)

(۸) پانی کے پاس شیر بھیڑیا وغیرہ درندہ یا سانپ یا آگ ہے کہ پانی لے نہیں سکتا (۹) رہزن ہے کہ لوٹ لے گا (۱۰) دشمن ہے جس سے حملہ کا صحیح اندیشہ ہے (۱۱) فاسق ہے کہ عورت یا امر د کو اس سے اندیشہ بدکاری ہے (۱۲) قرضخواہ ہے اور یہ مفلس وہ مطالبہ میں حبس کرلے گا الکل فی البحر والدر (یہ سب البحر الرائق اور دُر مختار میں ہے۔ ت)

اقول: یہ ایک شرعی مسئلہ ہے کہ ان بلاد میں جاری نہیں یہاں قرضخواہ نالش کے سوا خود حبس کا اختیار نہیں رکھتا تو یہ یہاں یوں عذر نہیں بلکہ اس طرح کہ اُس نے گرفتاری جاری کرائی ہے اگر وہاں جاتا یا باہر نکلتا ہے گرفتار ہوجائے گا (۱۳) جو وارنٹ کے سبب پانی کے پاس نہیں جاسکتا (۱۴) جو پولیس سے روپوش ہے وقد ذکروا (۱) فی الجمعۃ ان الاختفاء من السلطان الظالم مسقط فتح وھندیۃ (علماء نے جمعہ کے بارے میں ذکر کیا ہے کہ ظالم بادشاہ کے خوف سے روپوشی کے سبب جمعہ ساقط ہوجاتا ہے۔ فتح ، ہندیہ۔ ت)

(۱۵) اقول: یہ دونوں صورتیں کہ فقیر نے زائد کیں ظاہر ہیں اور مسئلہ مدیون سے بدلالتہ النص ثابت تیسری صورت اور ہے کہ عزت دینی والا عالم دین جسے اعزاز دین و علم دین کیلئے کچہریوں سے احتراز ہے مخالف نے ایذا رسانی کیلئے اسے شہادت میں لکھوا دیا یا اور کسی طرح طلب کرایا سمن جاری ہے اس کے خوف سے باہر نہیں جاسکتا ظاہر آ یہ بھی ان شاء اللہ العزیز عذر صحیح ہے کہ آخر یہ مضرت ایک پیسے کے نقصان سے جس کیلئے شرع نے تیمم

جائز فرمایا جس کا ذکر عنقریب آتا ہے کہیں زیادہ ہے فلیحرر ولیتأمل واللہ تعالیٰ اعلم (اس کی توضیح اور اس میں تامل کی ضرورت ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔ ت) یہ تین تین صورتیں بڑھیں گی کہ اُجرت پر لادینے والا اجرت مثل سے زائد مانگتا ہے یا یہ اُجرت دینے پر قادر نہیں یا اس وقت پاس نہیں

(۱۶ تا ۳۲) اقول: ۱۰ سے ۱۵ تک ہر صورت میں یہ بھی شرط ہے کہ کوئی پانی لادینے والا غلام خادم بیٹا وغیرہ نہ ملے اور ہر ایک میں بدستور اور وہ ادھار پر راضی نہیں۔ (۳۳) مال پاس ہے اپنا خواہ امانت اور پانی پر ساتھ لے جانے کا نہیں نہ یہاں کوئی محافظ اگر پانی لینے

۱۔ البحر الرائق باب التیمم مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۴۴ ۲۔ فتح القدیر باب صلوۃ الجمعہ مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۲/ ۳۲ Page 413 of 756

Fatawa Ridawiyya Volume Three

If there is a fear of its loss [1: Al-Bahr and Al-Durr], provided that the property is not less than one dirham [2: As derived by 'Sh' from the sub-branch of the aforementioned Al-Tatar Khaniyah, and the issue requires further detailed writing]. (This is based on what Allamah Shami said while benefiting from the mentioned detail of Tatar Khaniyah, but this issue still needs more clarification. - T)

(35) Water is available but at double the price, meaning the seller asks for twice the price of the water according to the market rate of that place [3: Al-Bahr citing Al-Bada'i, Al-Nihaya, and Al-Nawadir, and it was prioritized in Al-Khaniya, so it is the most manifest and famous]. (Bahr citing Bada'i, Nihaya, and Nawadir, and its prioritization in Khaniya makes it the most manifest and famous. - T)

(36) It is available at the equivalent price (1), but the person is destitute, meaning he does not possess enough wealth beyond his needs [4: As in Al-Durr]. (As it is in Durr al-Mukhtar. - T). (37) He possesses wealth, but not at the present location, and the seller does not agree to give it on credit. Yes, (2) if the seller agrees to credit, buying it is not obligatory; and if someone (3) wishes to lend him that amount of money, it is not mandatory to accept it; he can perform Tayammum because in credit, the period is binding and no demand can be made before its due date, unlike a loan [5: 'Sh' from Al-Bahr]. (Because in the case of credit, the fixed period is binding and demand cannot be made before that, while the ruling for a loan is the opposite. - Shami citing Bahr. - T)

Warning: Observe the mercy of the Shariah of Mustafa (Peace and blessings of Allah be upon him and his family), consideration has been given even to our single pennies. There is a need for a bath, and the price of water suitable for a bath there is one penny, but the owner asks for two pennies. Do not pay the extra penny, perform Tayammum and offer prayer. To consider any command of such a merciful Shariah as harsh or to fail to implement it due to the misfortune of the self, what ingratitude and shamelessness it is! May the Lord Almighty, for the sake of the mercy of Mustafa (Peace and blessings of Allah be upon him), grant this humble faqir and all the Ahl al-Sunnat the success of perfect following of the Shariah and accept it out of His pure mercy. Ameen. And may the blessings of Allah Almighty be upon our master Muhammad, his family, and all his companions. (38) He is a patient; if he uses water for purification, the illness will increase or recovery will be delayed, and this fact is

established by apparent signs [6] or experience ['Sh' from Al-Ghunyah (Shami citing Ghunyah)] or...

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, printed at Mujtabai, Delhi, 1/41
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/137
3. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/221
4. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai, Delhi, 1/44
5. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/184
6. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/171

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरा भाग)

...यदि उसके नष्ट होने की आशंका हो [1: अल-बह्र व अल-दुर्र], जबकि वह माल एक दिरहम से कम न हो [2: जैसा कि 'श' ने उल्लेखित अल-तातार खानिया की शाखा से लाभ उठाया, और मामले को बाद में और अधिक लिखने की आवश्यकता है]। (यह उस आधार पर है जिसे अल्लामा शामी ने तातार खानिया के उक्त विवरण से लाभ उठाते हुए कहा था, लेकिन यह मुद्दा अभी भी और अधिक स्पष्टीकरण का मोहताज है। -त)

(35) पानी मिलता है लेकिन दोगुनी कीमत पर, यानी उस जगह बाज़ार के भाव से उस पानी की जो कीमत है, बेचने वाला उससे दोगुना मांगता है [3: बह्र, अल-बदाए, अल-निहाया और अल-नवादिर के हवाले से, और इसे खानिया में प्राथमिकता दी गई है, इसलिए यही सबसे स्पष्ट और प्रसिद्ध है]। (बह्र, बदाए, निहाया और नवादिर के हवाले से, और खानिया में इसे प्राथमिकता देना इसे सबसे स्पष्ट और प्रसिद्ध बनाता है। -त)

(36) कीमत (1) सामान्य ही मिलती है, लेकिन यह निर्धन है, यानी ज़रूरत से ज़्यादा इतना माल नहीं रखता [4: जैसा कि दुर्र में है]। (जैसा कि दुर्र-ए-मुख्तार में है। -त)। (37) माल तो रखता है लेकिन यहाँ नहीं है, और बेचने वाला उधार देने पर राजी नहीं है। हाँ, (2) राजी हो तो खरीदना वाजिब नहीं; और अगर कोई (3) उतने पैसे उसे कर्ज देना चाहे तो लेना लाजिम नहीं; वह तयम्मुम कर सकता है क्योंकि अवधि लाजिम है और नियत समय से पहले मांग नहीं हो सकती, कर्ज के विपरीत [5: 'श' बह्र के हवाले से]। (क्योंकि उधार के मामले में नियत अवधि लाजिम होगी और उससे पहले मांग नहीं की जा सकती, जबकि कर्ज का हुक्म इसके विपरीत है। -शामी बह्र के हवाले से। -त)

चेतावनी: मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनकी आल) की शरीयत की रहमत देखिये, हमारे एक-एक पैसे का ख्याल रखा गया है। नहाने की जरूरत है और वहाँ नहाने के योग्य पानी की कीमत एक पैसा है, और जिसके पास है वह दो पैसे मांगता है। ज्यादा पैसा न दो और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ लो। ऐसी रहमत वाली शरीयत के किसी हुक्म को सख्त समझना या नफ़्स की शामत से उसे पूरा न करना कैसी नाशुक्रगुज़ारी और बेहयाई है! मौला अज़्ज़-व-जल्ल मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की रहमत के सदके में इस फ़क़ीर-ए-आजिज़ और तमाम अहले सुन्नत को शरीयत के मुकम्मल पालन की तौफीक अता फरमाए और अपनी महज रहमत से कुबूल फरमाए। आमीन। और अल्लाह तआला का दरूद हो हमारे सरदार मुहम्मद और उनकी आल और उनके तमाम

सहाबा पर। (38) मरीज़ है, पानी से पाकी हासिल करे तो बीमारी बढ़ जाएगी या देर से ठीक होगा और यह बात ज़ाहिर अलामत [6] या तजुर्बे से साबित हो ['श' अल-ग़ुनिया के हवाले से (शामी ग़ुनिया के हवाले से)] या...

1. अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुतबूआ मुज्तबाई दिल्ली 1/41
2. रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/137
3. अल-बह्र अल-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एच. एम. सईद कंपनी कराची 1/221
4. अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुज्तबाई दिल्ली 1/44
5. रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/184
6. रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/171

جائے تو اس کے ضائع ہونے کا اندیشہ ہے ۱ بحر و در جبکہ وہ مال ایک درم سے کم نہ ہو ۲ علی ما استفاد ش من فرع التاتر خانیۃ المذکور والمسألۃ تحتاج بعد الی زیادۃ تحریر (یہ اس بنیاد پر ہے جو علامہ شامی نے تاتار خانیہ کے مذکورہ جزئیہ سے استفادہ کرتے ہوئے کہا مگر یہ مسئلہ اب بھی مزید توضیح کا محتاج ہے۔ت)

(۳۵) پانی ملتا ہے مگر دو چند قیمت کو یعنی اس جگہ بازار کے بھاؤ سے اتنے پانی کی جو قیمت ہے بیچنے والا اس سے دو چند مانگتا ہے ۳ بحر عن البدائع والنہایۃ والنوادر وقدمہ فی الخانیۃ فکان ھو الاظھر الا شھر (بحر بحوالہ بدائع ونہایہ ونوادر، اور خانیہ میں اسے مقدم رکھا تو یہی اظہر واشہر ہے۔ت)

(۳۶) قیمت (۱) مثل ہی کو ملتا ہے مگر یہ مفلس ہے یعنی حاجت سے زائد اتنا مال نہیں رکھتا ۴ کما فی الدر (جیسا کہ دُرِ مختار میں ہے۔ت) (۳۷) مال تو رکھتا ہے مگر یہاں نہیں اور بیچنے والا اُدھار دینے پر راضی نہیں ہاں (۲) راضی ہو تو خرید نا واجب اور اگر کوئی (۳) اتنے دام اسے قرض دینا چاہے تو لینا لازم نہیں تیمم کر سکتا ہے لان الاجل لازم ولا مطالبۃ قبل حلولہ بخلاف القرض ۵ ش عن البحر (اس لئے کہ ادھار کی صورت میں مقررہ میعاد لازم ہوگی اور اس سے پہلے مطالبہ نہیں ہو سکتا، اور قرض کا حکم اس کے برخلاف ہے۔ شامی بحوالہ بحر۔ ت)

تنبیہ: شریعت مصطفٰی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی رحمت دیکھئے ہمارے ایک ایک پیسے پر لحاظ فرمایا گیا نہانے کی حاجت ہے اور وہاں قابلِ غسل پانی کی قیمت ایک پیسہ ہو اور جس کے پاس ہے دو پیسے مانگتا ہے پیسہ زیادہ نہ دو اور تیمم کر کے نماز پڑھ لو ایسی رحمت والی شریعت

کے کسی حکم کو کڑا سمجھنا یا شامتِ نفس سے بجانہ لانا کیسی ناشکری وبے حیائی ہے مولیٰ عز وجل صدقہ مصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی رحمت کا اس فقیر عاجز اور سب اہل سنت کو کامل اتباعِ شریعت کی توفیق بخشے اور اپنی رحمتِ محضہ سے قبول فرمائے آمین وصلی اللہ تعالیٰ علیٰ سیدنا محمد وآلہ وصحبہ اجمعین (۳۸) مریض ہے پانی سے طہارت کرے تو مرض بڑھ جائے گا یا دیر میں اچھا ہو گا اور یہ بات ظاہر علامت ۶ یا تجربہ سے ثابت ہو ش عن الغنیۃ (شامی بحوالہ غنیہ) یا

1 الدرالمختار باب التیمم مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۴۱ 2 ردالمحتار باب التیمم مصطفیٰ البابی مصر ۱/۱۳۷ 3 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۲۱ 4 الدرالمختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱/۴۴ 5 ردالمحتار باب التیمم مصطفیٰ البابی مصر ۱/۱۸۴ 6 ردالمحتار باب التیمم مصطفیٰ البابی مصر ۱/۱۷۱

Volume Three Fatawa Razawiyya If a skilled, practicing Muslim physician says so, then according to 'Ghuniyah' (and also mentioned in 'Durr al-Mukhtar' and 'Shami') it is required for him to be upright ('Adil'). (Ghuniyah - T). I say: There is a point here regarding hardship, whereas Tayammum was ordained precisely to remove hardship. (T). (39) Similarly, if there is no illness at present, but it is proven through experience or other reliable Shari'a evidence as mentioned that if one performs purification with water at this time, he will fall ill. This is mentioned in 'Sh' from 'al-Quhustani' (Shami from al-Quhustani - T). (40) If the cold is severe and there is no public bath (Hammam) available, or he cannot afford the fee, and he cannot heat water, nor does he have such clothes that after bathing he could get warmth from them, nor can he find a fire to warm himself, and there is a genuine fear of illness from bathing in this cold, then he can perform Tayammum even if he is in a city. (Durr al-Mukhtar). One cannot skip Wudu (ablution) just because of cold; "and this is the correct view as in al-Khaniyah and al-Khulasah, rather it is by consensus" (Musaffa). (This is the correct view according to Khaniyah, Khulasah, and rather it's by consensus. Musaffa - T). Yes, if in this cold there is also a genuine fear of contracting an illness from Wudu, then he should perform Tayammum. ('Sh' from 'al-Imdad' - Shami citing Imdad al-Fattah - T). Mere suspicion is not considered for bathing, let alone for Wudu. (41) Purification with water is not harmful to the patient, but movement is harmful. (42) There is no harm [from water], but he cannot perform Wudu himself and there is no one else to help him. If there is someone, like a slave, servant, or children who are obligated to obey and serve him, then by consensus he cannot perform Tayammum. And if service is not obligatory upon them but they would perform Wudu for him if asked, such as a friend or spouse, then the reliable opinion is that Tayammum is still not permissible. (43) Another person is available, but he asks for a fee and he (the sick person) cannot afford it. (44) He can afford it, but the person asks for more than the standard fee (Ujrat al-Mithl). All of this is in 'al-Bahr' and 'al-Durr'. (All these are in Bahr al-Ra'iq and Durr al-Mukhtar - T). (45) I say: A situation will also arise here where he asks for only the standard fee and he can afford it, but he doesn't have it on him right now and the other person does not agree to credit. (46 to 48) Water is available nearby while traveling and...

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar with al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt 1/171. 2. Radd al-Muhtar with al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt 1/171. 3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Mujtaba'i Delhi 1/41. 4. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum,

Mustafa al-Babi Egypt 1/171-172. 5. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt 1/171-172. 6. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/240. 7. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/241.

जिल्द-3 (तीसरा खंड) फ़तावा रज़विया एक कुशल और प्रतिष्ठित मुस्लिम चिकित्सक ऐसा कहे, तो 'ग़ुनिया' के अनुसार (दुर्रे मुख़्तार और शामी में भी है, और कहा गया कि उसका न्यायपूर्ण (आदिल) होना शर्त है। ग़ुनिया - त)। मैं कहता हूँ: इसमें कठिनाई (हरज) का पहलू है, जबकि तयम्मुम कठिनाई को दूर करने के लिए ही शुरू किया गया है। (त)। (39) इसी तरह, यदि वर्तमान में कोई बीमारी नहीं है, लेकिन अनुभव या अन्य प्रामाणिक शरीयत के प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि इस समय पानी से पवित्रता प्राप्त करने पर व्यक्ति बीमार हो जाएगा। 'शह' ने 'अल-कुहुस्तानी' के हवाले से (शामी ने कुहुस्तानी से - त) लिखा है। (40) यदि ठंड बहुत अधिक है और कोई स्नानगृह (हम्माम) नहीं है या भुगतान करने के लिए पैसे नहीं हैं, न ही वह पानी गर्म कर सकता है, न ही उसके पास ऐसे कपड़े हैं कि नहाने के बाद उनसे गर्मी प्राप्त कर सके, न ही तापने के लिए आग मिल सकती है, और इस ठंड में नहाने से बीमारी का वास्तविक डर है, तो वह तयम्मुम कर सकता है, चाहे वह शहर में ही क्यों न हो। 'दुर्रे मुख़्तार'। केवल ठंड के कारण वज़ू नहीं छोड़ा जा सकता, "और यही सही है जैसा कि ख़ानिया और ख़ुलासा में है, बल्कि इस पर आम सहमति (इज्मा) है।" मुसफ़्फ़ा। (यही सही है - ख़ानिया, ख़ुलासा, बल्कि यह आम सहमति से है। मुसफ़्फ़ा - त)। हाँ, अगर इस ठंड में वज़ू से भी बीमारी होने का वास्तविक डर हो, तब भी वह तयम्मुम करे। 'शह' ने 'अल-इमदाद' के हवाले से (शामी ने इमदाद अल-फ़त्ताह के हवाले से - त) लिखा है। केवल संदेह का स्नान में भी कोई महत्व नहीं है, वज़ू तो वज़ू है। (41) रोगी को पानी से पवित्रता तो नुकसानदेह नहीं है, लेकिन हिलना-डुलना नुकसानदेह है। (42) कोई नुकसान तो नहीं है, लेकिन वह वज़ू नहीं कर सकता और कोई दूसरा कराने वाला नहीं है। और यदि कोई है, जैसे दास, सेवक या संतान जिन पर उसकी आज्ञा मानना और सेवा करना अनिवार्य है, तो सर्वसम्मति से वह तयम्मुम नहीं कर सकता। और यदि सेवा अनिवार्य नहीं है, लेकिन उसके कहने पर वे वज़ू करा देंगे, जैसे मित्र या पति या पत्नी, तो विश्वसनीय राय यह है कि अब भी तयम्मुम जायज़ नहीं है। (43) दूसरा व्यक्ति उपलब्ध है लेकिन वह मज़दूरी मांगता है और यह भुगतान करने में समर्थ नहीं है। (44) समर्थ भी है, लेकिन वह उचित मज़दूरी (उजरत-ए-मिस्ल) से अधिक मांगता है। यह सब 'बहर' और 'दुर्र' में है। (ये सब बहरुर्राइक और दुर्रे मुख़्तार में हैं - त)। (45) मैं कहता हूँ: यहाँ वह स्थिति भी आएगी कि वह केवल उचित मज़दूरी ही मांगता है और यह दे भी सकता है, लेकिन यहाँ उसके पास पैसा नहीं है और वह उधार पर राज़ी नहीं है। (46 से 48) यात्रा में पानी पास मौजूद है और...

फ़ुटनोट्स: 1. रद्दुल मुहतार मआ दुर्रे मुख़्तार, बाब-उत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/171 2. रद्दुल मुहतार मआ दुर्रे मुख़्तार, बाब-उत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/171 3. अल-दुर्रे मुख़्तार, बाब-उत-तयम्मुम, मुजतबाई दिल्ली 1/41 4. रद्दुल मुहतार, बाब-उत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/171-172 5. रद्दुल मुहतार, बाब-उत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/171-172 6. बहरुर्राइक, बाब-उत-तयम्मुम, एच. एम. सईद कंपनी कराची 1/240 7. बहरुर्राइक, बाब-उत-तयम्मुम, एच. एम. सईद कंपनी कराची 1/241

पृष्ठ 415/756

جلد سوم فتاوی رضویه طبیب حاذق مسلم مستور ایسا کہے دروش و قیل عدالتہ شرط غنیہ (در مختار و شامی ، اور کہا گیا کہ اس کا عادل ہونا شرط ہے۔ غنیہ ۔ ت) اقول: فیہ ما فیہ من الحرج و ما شرع التیمم الا لدفعہ (اس پر اعتراض یہ ہے کہ اس میں حرج ہے حالانکہ تیمم دفع حرج ہی کیلئے مشروع ہوا۔ ت) (۳۹) یوں ہی اگر فی الحال مرض نہیں مگر تجربہ وغیرہ دلائل معتبرہ شرعیہ مذکورہ سے ثابت ہے کہ اس وقت پانی سے طہارت کی تو بیمار ہو جائے گا 'ش عن القھستانی (شامی از قہستانی ۔ ت) (۴۰) سردی شدید ہے اور حمام نہیں یا اجرت دینے کو نہیں نہ پانی گرم کر سکتا ہے نہ ایسے کپڑے میں کہ نہا کر ان سے گرمی حاصل کر سکے نہ تاپنے کو الاؤ مل سکتا ہے اور اس سردی میں نہانے سے مرض کا صحیح خوف ہے تو تیمم کر سکتا ہے اگرچہ شہر میں ہو 'در مختار۔ سردی کے باعث وضو نہیں چھوڑ سکتا وھو الصحیح کما فی الخانیہ والخلاصۃ بل ھو بالا جماع، مصفی (یہی صحیح ہے۔ خانیہ، خلاصہ بلکہ یہ بالاجماع ہے۔ مصفی۔ ت) ہاں اگر اس سردی میں وضو سے بھی صحیح خوف حدوث مرض ہو جب بھی تیمم کرے 'ش عن الامداد (شامی بحوالہ امداد الفتاح۔ ت) خالی و ہم کا اعتبار نہانے میں بھی نہیں وضو تو وضو (۴۱) مریض کو پانی سے طہارت تو مضر نہیں مگر جنبش مضر ہے (۴۲) ضرر تو کچھ نہیں مگر وضو نہیں کر سکتا اور دوسرا کرانے والا نہیں اور اگر ہے تو مثلاً غلام یا نوکر یا اولاد جن پر اس کی اطاعت و خدمت لازم ہے تو بالا تفاق تیمم نہیں کر سکتا اور اگر اس پر خدمت لازم تو نہیں مگر اس کے کہنے سے وضو کرا دے گا جیسے دوست یا زوج یا زوجہ تو معتمد یہ کہ اب بھی تیمم جائز نہیں (۴۳) دوسرا ہے مگر وہ اجرت مانگتا ہے اور یہ قادر نہیں (۴۴) قادر بھی ہے مگر وہ اجرت مثل سے زیادہ مانگتا ہے 'الکل فی البحر والدر (یہ سب بحر رائق اور در مختار میں

ہے۔ ت) (۴۵) اقول: یہاں بھی وہ صورت آئے گی کہ وہ اجرت مثل ہی مانگتا ہے اور یہ دے بھی سکتا ہے مگر یہاں نہیں اور وہ ادھار پر راضی نہیں (۴۶ تا ۴۸) سفر میں پانی پاس موجود ہے اور

حواشی: 1. ردالمختار مع الدرالمختار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۷۱ 2. ردالمختار مع الدرالمختار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۷۱ 3. الدرالمختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱ / ۴۱ 4. ردالمختار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۷۲ و ۱۷۱ 5. ردالمختار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۷۲ و ۱۷۱ 6. بحرالرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۲۴۰ 7. بحرالرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۲۴۱

Fatawa-e-Razvia Volume 3 ...Even if one has the power to use water and there is no fear of illness, but if performing purification with it would result in him now or later, or another Muslim, or his animal (even a dog whose keeping is permissible) remaining thirsty (46) or (49) water will not be available later to knead dough (50) or (5) there is impurity on the body or on clothing to the extent of covering the private parts ('satr-e-aurat') such that prayer would not be valid, and if wudhu or ghusl is performed, water will not remain to clean that much impurity which prevents prayer - these five scenarios are explained in our treatise 'An-Noor wal-Nuraq', Chapter 1, Number 31. (51) On the way, water from a public fountain ('sabeel') is available, but it is endowed (waqf) for drinking only, not for ghusl and wudhu. Its extremely detailed and complete explanation is in our same treatise, Number 29. (52) It is endowed for purification, but for a specific group or a specific description, and this person is not among them; its explanation is in Number 30. (53) Water belongs to someone else and permission is not granted; its explanation is in Number 32 etc. (54) There is a need for a bath (ghusl) and people are present who neither move away nor is there any screen available for him, nor is there anything to tie up for bathing; he should perform tayammum, even if it is a man among men only or a woman among women only [1]'according to what has been expressed as evident in al-Hilyah and al-Ghunyah, contrary to what is in al-Qunyah and al-Durr' (This is based on what is described as 'evident' in Hilyah and Ghunyah, contrary to what is in Qunyah and Durr Mukhtar. - Translator). I say: And the restrictions I added are evident (and the conditions I have added are clear. - Translator). Then, whether he should repeat the prayer later or not is mentioned in Number 67. And success is from Allah. (55) I say: Similarly, if a woman has to perform wudhu and a non-mahram man is present from whom she cannot hide while washing her hands and wiping her head (masah), she should perform tayammum. (56) A prisoner who does not get water. (57) Disbelievers (God forbid) captured him and do not allow ghusl or wudhu. (58) An oppressor threatens: "If you perform purification with water, I will kill you or cut off a limb," and there is such a fear by which compulsion ('ikrah') is established[2]. All of this is in 'al-Dhakheerah', 'Sharh al-Wiqayah', 'al-Fath', 'al-Durar', etc. (All this is in Dhakheerah, Sharh Wiqayah, Fath al-Qadir, Durar, etc. - Translator). I say: And what I added regarding cutting [of limbs] and other things by which compulsion is valid is evident (I added cutting a limb and everything through which compulsion is established; this is clear. - Translator). (59) Water is less than a mile away, but the master or employer does not give permission to the servant or laborer to go[3]. 'Bahr' from 'al-Mubtaghi' (Bahr citing Mubtaghi). (60) I say: In a train, if...

1 Ghunyat al-Mustamli, Sunan al-Ghusl, published by Suhail Academy Lahore, p. 51. 2 Fath al-Qadir, Chapter on Tayammum, Nuriyya Razviyya Sukkur, 1/118. 3 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/221. Page 416 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3 ...इस्तेमाल पर कुदरत भी हो और बीमारी का अंदेशा भी न हो, मगर उस (पानी) से पाकी हासिल करने में ये ख़तरा हो कि अभी या बाद में वो ख़ुद या कोई दूसरा मुसलमान या उसका जानवर (चाहे वह कुत्ता हो जिसे पालना जायज़ है) प्यासा रह जाएगा (46) या (49) आटा गूँधने के लिए फिर पानी नहीं मिलेगा (50) या (5) बदन पर या सतर ढकने के कपड़ों पर इतनी नजासत (गंदगी) है जिससे नमाज़ नहीं होगी और अगर वज़ू या ग़ुस्ल कर लिया तो इतनी नजासत साफ़ करने के लिए पानी नहीं मिलेगा जिससे नमाज़ हो सके- ये पाँचों सूरतें हमारे रिसाले 'अन-नूर वल-नूरक़' के पहले फ़स्ल के नम्बर 31 में तफ़सील से हैं। (51) रास्ते में सबील का पानी मौजूद है मगर वह सिर्फ़ पीने के लिए वक़्फ़ (दान) है, ग़ुस्ल और वज़ू के लिए नहीं। इसका बहुत ही तफ़सीली बयान हमारे उसी रिसाले के नम्बर 29 में है। (52) पाकी ही के लिए वक़्फ़ है मगर किसी ख़ास क़ौम या ख़ास सिफ़त वालों के लिए और यह उनमें शामिल नहीं है, इसका बयान नम्बर 30 में है। (53) पानी दूसरे की मिल्कियत है और उसकी इजाज़त नहीं है, इसका बयान नम्बर 32 वग़ैरह में है। (54) नहाने की ज़रूरत है और वहाँ कुछ लोग हैं कि न वे हटते हैं न उसे ओट (पर्दा) मिलती है और न कुछ बाँध कर नहाने का इंतज़ाम है, तो तैयम्मुम करे, चाहे मर्द सिर्फ़ मर्दों ही में हो या औरत सिर्फ़ औरतों में [1]'जैसा कि अल-हिलया और अल-ग़ुनिया में ज़ाहिर (स्पष्ट) किया गया है, उसके ख़िलाफ़ जो अल-कुनिया और अद-दुर्र में है' (यह उस बुनियाद पर है जिसे हिलया और ग़ुनिया में 'ज़ाहिर' कहकर बयान किया गया है, उसके विपरीत जो कुनिया और दुर्रे मुख़्तार में है। - अनुवादक)। मैं कहता हूँ: और मैंने जिन शर्तों (क़ैदों) का इज़ाफ़ा किया है वे ज़ाहिर हैं (और मैंने जो शर्तें जोड़ी हैं वे स्पष्ट हैं। - अनुवादक)। फिर बाद में नमाज़ दोहराए या न दोहराए इसका ज़िक्र नम्बर 67 में आता है। और तौफ़ीक़ अल्लाह ही से है। (55) मैं कहता हूँ: इसी तरह अगर औरत को वज़ू करना है और वहाँ कोई गैर-महरम मर्द मौजूद है जिससे छुपकर वह अपने हाथ धोना और सर का मसह नहीं कर सकती, तो तैयम्मुम करे। (56) क़ैदी जिसे पानी नहीं मिलता। (57) काफ़िरों ने (अल्लाह की पनाह) पकड़ लिया और ग़ुस्ल या वज़ू नहीं करने देते। (58) ज़ालिम डराता है कि "पानी से पाकी हासिल की तो मार डालूँगा या कोई अंग काट दूँगा" और ऐसा ख़ौफ़ हो जिससे इकरा (मजबूरी/ज़बरदस्ती) साबित[2] हो। यह सब ज़खीरा, शरह विक़ाया, फ़त्ह और दुरर वग़ैरह में है। मैं कहता हूँ: और मैंने अंग काटने और उन तमाम चीज़ों का इज़ाफ़ा किया है जिनसे इकरा (मजबूरी) साबित होती है, यह ज़ाहिर है (मैंने अंग काटने और हर उस चीज़ को शामिल किया है जिससे मजबूरी साबित होती है, यह साफ़ है। - अनुवादक)। (59) पानी एक मील से कम दूरी पर है मगर मालिक या

ठेकेदार नौकर या मज़दूर को जाने की इजाज़त नहीं देता[3] 'बहर' अल-मुब्तग़ी के हवाले से। (60) मैं कहता हूँ: रेल में है...

1 ग़ुनियत अल-मुस्तमली, सुनन अल-ग़ुस्ल, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 51. 2 फ़त्ह अल-क़दीर, बाब अत-तैयम्मुम, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/118. 3 अल-बहर अर-राइक़, बाब अत-तैयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/221. पेज 416 ऑफ़ 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم استعمال پر قدرت بھی اور مرض کا بھی اندیشہ نہیں مگر اس سے طہارت کرتا ہے تو اب[1] یا بعد کو یہ یا[2] اور کوئی مسلمان یا[3] اس کا جانور اگرچہ وہ کتا جس کا پالنا جائز ہے پیاسا رہ جائے گا (۴۶) یا (۴۹) آٹا گوندھنے کو پھر پانی نہیں ملے گا (۵۰) یا (۵) بدن یا بقدر ستر عورت کے کپڑے پر نجاست ہے جس سے نماز نہ ہو گی اور اگر وضو یا غسل کر لیا تو اتنی نجاست پاک کرنے کو جس سے وہ مانع نماز نہ رہے پانی نہ ملے گا، یہ پانچوں صورتیں ہمارے رسالہ النور والنورق فصل اول نمبر ۳۱ میں مشرح ہیں (۵۱) راہ میں سبیل کا پانی موجود ہے مگر وہ پینے کیلئے وقف ہے غسل و وضو کیلئے نہیں۔ اس کا نہایت مفصل مکمل بیان ہمارے اسی رسالہ نمبر ۲۹ میں ہے (۵۲) طہارت ہی کیلئے وقف ہے مگر ایک قوم خاص یا وصف خاص پر اور یہ اُن میں نہیں اس کا بیان نمبر ۳۰ میں ہے۔ (۵۳) پانی دوسرے کی ملک ہے اور اس کیلئے اجازت نہیں اس کا بیان نمبر ۳۲ وغیرہ میں ہے (۵۴) نہانے کی حاجت ہے اور وہاں کچھ لوگ ہیں کہ نہ وہ ہٹتے ہیں نہ اُسے آڑ ملتی ہے نہ کچھ باندھ کر نہانے کو ہے تیمم کرے اگر چہ مرد صرف مردوں ہی میں ہو یا عورت صرف عورتوں میں [1]علی ماستظهر في الحلية والغنية خلافا لما في القنية والدر (یہ اس بنیاد پر ہے جسے حلیہ اور غنیہ میں ظاہر کہہ کے بیان کیا اس کے برخلاف جو قنیہ اور در مختار میں ہے۔ت) اقول: ومازدت من القيود ظاهر (اور میں نے جن قیدوں کا اضافہ کیا ہے وہ ظاہر ہیں۔ ت) پھر بعد کو نماز کا اعادہ کرے یا نہ کرے اس کا ذکر نمبر ۶۷ میں آتا ہے وباللہ التوفیق۔ (۵۵) اقول : یونہی اگر عورت کو وضو کرنا ہے اور وہاں کوئی نا محرم مرد موجود ہے جس سے چھپا کر ہاتھوں کا دھونا اور سر کا مسح نہیں کر سکتی تیمم کرے (۵۶) محبوس کو پانی نہیں ملتا (۵۷) کفار معاذاللہ پکڑ لے گئے اور غسل یا وضو نہیں کرنے دیتے (۵۸) ظالم ڈراتا ہے کہ پانی سے طہارت کی تو مار ڈالوں گا یا کوئی عضو کاٹ دوں گا اور ایسا ہی خوف جس سے

اکراہ ثابت[2] ہو۔ الکل فی الذخیرۃ وشرح الوقایۃ والفتح والدرر وغیرھا (یہ سب ذخیرہ ، شرح وقایہ ، فتح القدیر ، درر و غیرہا میں ہے۔ ت) اقول: ومازدت من القطع وسائر مایصح بہ الاکراہ ظاہر (میں نے عضو کاٹنے اور ہر اس چیز کا جس سے اکراہ ثابت ہوا اضافہ کیا، یہ ظاہر ہے۔ ت) (۵۹) پانی میل بھر سے کم دور ہے مگر نوکر یا مزدور کو آقا یا مستاجر جانے کی اجازت نہیں دیتا[3] بحر عن المبتغی (بحر بحوالہ مبتغی) (۶۰) اقول : ریل میں ہے

1 غنیۃ المستملی سنن الغسل مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۵۱ 2 فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۱۱۸ 3 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۲۲۱ Page of 756 416

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

In such a state where there is no water and the door is locked, one should perform Tayammum because he is like a prisoner in terms of helplessness (T). However, from case 56 to this point, in all these five scenarios, when water is found, one should perform purification and repeat the prayer because the hindrance is from the side of human beings (T). And if there is a fear of losing property by getting down to fetch water, then there is no repetition (of prayer) either, and this is case number 34. And if there is an apprehension of the train leaving, then one should also perform Tayammum and there is no repetition; this falls under the rule for the future. (61) Water is less than a mile away but so far that if he goes there, the caravan will depart and disappear from his sight. (62) I say: Or although it might not be out of sight yet, he is so weak that he cannot catch up with it.

[Boxed Section] Arabic Column: It is stated in Al-Bahr on the authority of Abu Yusuf that if the situation is such that if he went there and performed Wudu, the caravan would leave and disappear from his sight, then it is considered 'far' and Tayammum is permissible for him. The scholars (Mashaikh) have deemed this narration as preferable (Istihsan), as mentioned in At-Tajnis and other works. I say: The chosen opinion regarding the estimation of distance is one mile, but this is a valid and reliable excuse without doubt. Therefore, the scholars approved it, so it must be considered an independent excuse, not just in terms of defining distance.

Urdu Column: It is stated in Al-Bahr: It is narrated from Imam Abu Yusuf that "When the situation is such that if one goes to the water and performs Wudu, the caravan will leave and disappear from his sight, then that water is 'far' and Tayammum is permissible for him." The scholars viewed this narration with approval and liked it; similar is in Al-Tajnis etc. (T). I say: Although the chosen limit for distance is one mile, there is no doubt that this is a valid and reliable excuse. That's why the scholars liked it, so its consideration as a standalone excuse is necessary, not because this very distance was accepted as the limit. (T)

(63 to 66) I say: A woman has no water, nor a shawl to go outside, nor a son etc. to bring it, or a hired person demands more than the standard wage, or she is poor, or her wealth is away and the person (selling water) does not agree to credit; she should perform Tayammum and there is no repetition because the prohibition is from the side of Sharia (i.e., the hindrance is religious). (T)

(67) I say: A noble, veiled lady who is absolutely not accustomed to going out, if there is no water in the house nor from outside...

[1] Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/120. Page 417 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 3

और इस स्थिति में पानी नहीं है और दरवाज़ा बंद है, तो तयम्मुम करे क्योंकि वह बेबसी के मामले में एक कैदी की तरह है। (त) लेकिन 56 से यहाँ तक इन पाँचों स्थितियों में जब पानी मिल जाए, तो पवित्रता प्राप्त करके नमाज़ दोहराए क्योंकि बाधा मनुष्यों की ओर से है। (त) और अगर पानी लाने के लिए नीचे उतरने पर माल चले जाने का डर हो, तो दोहराना भी नहीं है और यह संख्या 34 है। और अगर ट्रेन छूट जाने का अंदेशा हो तब भी तयम्मुम करे और दोहराना नहीं है; यह भविष्य के आदेश में है। (61) पानी एक मील से कम है लेकिन इतना दूर है कि अगर वह वहाँ जाए तो काफिला चला जाएगा और उसकी नज़रों से ओझल हो जाएगा। (62) अक़ूल (मैं कहता हूँ): या यद्यपि अभी नज़रों से ओझल न होगा लेकिन वह इतना कमज़ोर है कि मिल नहीं सकेगा।

[बक्से वाला भाग] अरबी कॉलम: 'अल-बहर' में इमाम अबू यूसुफ़ से रिवायत है कि यदि स्थिति ऐसी हो कि यदि वह वहाँ जाए और वज़ू करे तो काफिला चला जाएगा और उसकी नज़रों से ओझल हो जाएगा, तो वह 'दूर' माना जाता है और उसके लिए तयम्मुम जायज़ है। विद्वानों (मशाइख) ने इस रिवायत को बेहतर (इस्तिहसान) माना है, जैसा कि 'अत-तजनीस' आदि में है। अक़ूल: दूरी के आकलन के मामले में चुनी हुई राय एक मील है, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक सही और विश्वसनीय उज़्र (बहाना/कारण) है। इसलिए विद्वानों ने इसे पसंद किया, तो इसे एक स्वतंत्र उज़्र के रूप में माना जाना चाहिए, न कि केवल दूरी निर्धारित करने के संदर्भ में।

उर्दू कॉलम: 'अल-बहर' में कहा गया है: इमाम अबू यूसुफ़ से रिवायत है कि "जब यह स्थिति हो कि पानी तक जाकर वज़ू करे तो काफिला चला जाएगा और उसकी नज़र से ओझल हो जाएगा तो वह पानी से दूर है और उसके लिए तयम्मुम जायज़ है।" मशाइख ने इस रिवायत को पसन्द की नज़र से देखा, इसे पसंद किया, ऐसा ही तजनीस आदि में है। (त) अक़ूल: दूरी की सीमा तय करने में यद्यपि 'मुख्तार' (चुना हुआ मत) एक मील ही है, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि यह एक सही और विश्वसनीय उज़्र है। इसीलिए मशाइख ने इसे पसंद किया, तो स्वतंत्र रूप से इसका एतबार ज़रूरी है, इस लिहाज़ से नहीं कि इसी दूरी की सीमा मान ली गई है। (त)

(63 से 66) अक़ूल: औरत के पास पानी नहीं है, न बाहर निकलने के लिए चादर है, न बेटा आदि लाकर देने वाला है, या मज़दूर सामान्य मज़दूरी से ज़्यादा मांगता है, या वह निर्धन है, या माल कहीं

और है और वह (बेचने वाला) उधार पर राज़ी नहीं, तो तयम्मुम करे और नमाज़ दोहराना नहीं है क्योंकि बाधा शरीअत की ओर से है। (त)

(67) अक़ूल: शरीफ ज़ादी पर्दानशीं जो बाहर निकलने की बिल्कुल आदी नहीं, अगर घर में पानी न रहे न बाहर से...

[1] अल-बहर-उर-राईक़, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/120 पृष्ठ 417/756

اور اس درجے میں پانی نہیں اور دروازہ بند ہے تیمّم کرے لانہ کالمحبوس فی معنی العجز (اس لئے کہ وہ عاجز ہونے میں قیدی کی طرح ہے۔ ت) مگر ۵۶ سے یہاں تک ان پانچوں صورتوں میں جب پانی پائے طہارت کرکے نماز پھیرے لان المانع من جھۃ العباد (اس لئے کہ مانع بندوں کی طرف سے ہے۔ ت) اور اگر اُتر کر پانی لانے میں مال جاتے رہنے کا خوف ہو تو اعادہ بھی نہیں اور یہ نمبر ۳۴ ہے اور اگر ریل چلے جانے کا اندیشہ ہو تب بھی تیمّم کرے اور اعادہ نہیں یہ نمبر آئندہ کے حکم میں ہے (۶۱) پانی میل سے کم مگر اتنی دُور ہے کہ اگر یہ وہاں جائے تو قافلہ چلا جائے گا اور اس کی نگاہ سے غائب ہوجائے گا (۶۲) اقول: یا اگرچہ ابھی نگاہ سے غائب نہ ہوگا مگر یہ ایسا کمزور ہے کہ مل نہ سکے گا۔

[باکس والا حصہ] عربی کالم: قال فی البحر عن ابی یوسف اذا کان بحیث لو ذھب الیہ وتوضأ تذھب القافلۃ وتغیب عن بصرہ فھو بعید ویجوز لہ التیمم واستحسن المشائخ ھذہ الروایۃ کذا في التجنیس وغیرہ[1] اھ۔ اقول: والمختار فی تقدیر البعد وان کان المیل لکن ھذا عذر صحیح معتبر لاشك ولذا استحسنہ المشائخ فیجب اعتبارہ مستقلا لا من حیث تقدیر البعد بہ۔

اردو کالم: بحر میں فرمایا: امام ابو یوسف سے روایت ہے کہ "جب یہ حالت ہو کہ پانی تک جاکر وضو کرے تو قافلہ چلا جائے گا اور اس کی نظر سے غائب ہو جائے گا تو وہ پانی سے دور ہے اور اس کیلئے تیمّم جائز ہے۔" مشائخ نے یہ روایت بنظرِ استحسان دیکھی، اسے پسند کیا، ایسا ہی تجنیس وغیرہ میں ہے اھ(ت) اقول: دوری کی تحدید میں مختار اگرچہ میل ہی ہے لیکن اس میں شک نہیں کہ یہ ایک صحیح اور معتبر عذر ہے اسی لئے مشائخ نے اسے پسند کیا تو مستقل طور پر اس کا اعتبار ضروری ہے اسی لحاظ سے نہیں کہ یہی دوری کی حد مان لی گئی ہے۔ (ت)

(۶۳تا۶۶) اقول: عورت کے پاس پانی نہیں نہ باہر نکلنے کو چادر نہ بیٹا وغیرہ لادینے والا یا اجیر اجرتِ مثل سے زیادہ مانگتا ہے یا یہ مفلس ہے یا مال غائب اور وہ ادھار پر راضی نہیں تیمّم کرے اور اعادہ نہیں لان المنع من جھۃ الشرع (اس لئے کہ رکاوٹ شریعت کی جانب سے ہے۔ ت)

(۶۷) اقول شریف زادی پردہ نشین کہ باہر نکلنے کی قطعاً عادی نہیں اگر گھر میں پانی نہ رہے نہ باہر سے

[1] البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۲۰ صفحہ 417 از 756

Fatawa Razawiyya (Volume 3)

If there is someone to bring it (water), then by the mercy of the Kind and Merciful [Prophet] (peace and blessings of Allah be upon him), it is hoped that she has permission for Tayammum (dry ablution), and there will be no need for repetition even upon finding water. The detail of this is that there are several types of women: First, those who roam the markets in broad daylight with their faces uncovered without hesitation. These are absolutely like men, except when they cannot find a shawl/veil. I say: even if they are accustomed to roaming about with immodesty, which is forbidden, and the Shari'ah does not command the forbidden. Second, those who go out during the day wearing a burqa. These also cannot be excused, except in the case where they cannot find even a burqa or shawl. Third, those who go to other neighborhoods at night wearing a shawl, as has been heard to be the custom in many houses in Rampur and Budaun. For them, there might be an excuse during the day, but never at night, unless there is a gathering of men at the well and she cannot go into the crowd even with a shawl at night. Fourth, those who cannot go far even at night with a shawl, only being accustomed to taking two steps out of the house to the front door. For her, if the well is that close and there are no men there, then there is no excuse. But if the well is far or there is a gathering of men, then it can be said she is excused. Fifth, those who are absolutely not accustomed to stepping out of the house, as is the custom of noble-born women in Bareilly, by the grace of Allah. She is excused in every way, and how can she be compelled? Although she has never even seen the well, nor does she know the way to it, nor will she be able to ask anyone, nor will her feet move.

"Allah does not burden a soul beyond that it can bear"[1] (And God does not give any soul a hardship more than its capacity.)

There is difficulty in breaking a habit, especially that good habit based on perfect modesty. And the more modesty there is, the better it is. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Modesty is altogether good"[2] Reported by al-Bukhari, Muslim, Abu Dawud, and an-Nasa'i from 'Imran bin Husayn (may Allah be pleased with him and with all the companions). (Bukhari, Muslim, Abu Dawud, and Nasa'i have narrated it from Hazrat 'Imran bin Husayn; may God be pleased with him and with all the Sahaba. - T). It was mentioned above that the pure Shari'ah considered our single penny, that if the water-seller asks for two pennies instead of one, do not give it and perform Tayammum. For those noble-born women,

if someone gives ten rupees or even a thousand rupees according to status and says, "Bring water from the well," it would never be possible for them.

Note (Saying of the author): The parallel to this is that it is not permitted to perform wudu from water meant for drinking (Sabil). If only that water is available, one should perform Tayammum. And if a person is accustomed to oppression and usurpation, then for him too the command will be Tayammum. It will not be said, "You are a usurper, take it by force and perform wudu." 12 Minhu (M).

---

[1] Al-Quran 2/286 [2] As-Sahih lil-Muslim, chapter on the number of branches of faith etc., Qadimi Kutub Khana Karachi 1/48.

फ़तावा रज़विया (खंड 3)

यदि कोई (पानी) ला देने वाला हो, तो रऊफ़ व रहीम (अत्यंत दयालु और कृपालु) सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की रहमत से उम्मीद है कि उसे तयम्मुम की अनुमति है और पानी पाने पर भी (नमाज़) दोहराने की आवश्यकता नहीं होगी। इसका विस्तार यह है कि स्त्रियाँ कई प्रकार की होती हैं: पहली वे जो दिन-दहाड़े बेझिझक चेहरा खोले बाज़ारों में घूमती फिरती हैं। ये बिल्कुल पुरुषों के समान हैं, सिवाय इसके कि जब वे चादर न पायें। मैं कहता हूँ: यद्यपि वे स्वयं बेहायाई से घूमने की आदी हों, जो कि हराम है, और शरीयत हराम का हुक्म नहीं देती। दूसरी वे जो बुर्क़ा पहनकर दिन में आती-जाती हैं। ये भी मजबूर (उज़्र वाली) नहीं हो सकतीं, सिवाय उस स्थिति के जब वे बुर्क़ा या चादर भी न पायें। तीसरी वे जो रात को चादर ओढ़कर दूसरे मोहल्लों तक जाती हैं, जैसा कि रामपुर और बदायूँ के बहुत से घरों की रस्म सुनी गई है। उनके लिए शायद दिन में उज़्र (बहाना) हो सके, रात में हरगिज़ नहीं, सिवाय इसके कि कुएँ पर पुरुषों का जमघट हो और वह जमघट में चादर ओढ़कर रात को भी न जा सकती हों। चौथी वे जो रात को चादर के साथ भी दूर न जा सकें, सिर्फ इसकी आदी हों कि घर से निकलकर सामने के दरवाज़े पर दो कदम रखकर चली जाएँ। इसके लिए यदि कुआँ इतना ही पास है और वहाँ पुरुष नहीं हैं, तो कोई उज़्र नहीं है। और यदि कुआँ दूर है या वहाँ पुरुषों का जमावड़ा है, तो कह सकते हैं कि वह मजबूर है। पाँचवीं वे जो घर से बाहर कदम रखने की बिल्कुल आदी नहीं हैं, जैसा कि अल्हम्दुलिल्लाह तआला बरेली में शरीफ़ज़ादियों (कुलीन महिलाओं) का दस्तूर है। यह हर तरह से मजबूर हैं, और उसे कैसे विवश किया जाएगा? हालाँकि उसने कुआँ तक नहीं देखा है, न उस तक रास्ता जानती है, न किसी से पूछ सकेगी, न उसके कदम उठेंगे।

"अल्लाह किसी जान पर उसकी सामर्थ्य से अधिक बोझ नहीं डालता"[1] (और ख़ुदा किसी जान को उसकी सामर्थ्य से अधिक कष्ट नहीं देता।)

आदत छुड़ाने में कठिनाई है, विशेष रूप से वह नेक आदत जो पूर्ण हया (शर्म) पर आधारित हो। और हया जितनी अधिक हो उतनी ही बेहतर है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "हया पूरी की पूरी बेहतर है"[2] इसे बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और नसाई ने इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और तमाम सहाबा से रिवायत किया है। (बुख़ारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और नसाई ने हज़रत इमरान बिन हुसैन से इसे रिवायत किया है; अल्लाह उनसे और सभी सहाबा किराम से राज़ी हो। - त)। ऊपर गुज़रा कि शरीयत मुतह्हरा ने हमारे एक पैसे का लिहाज़ फ़रमाया कि यदि पानी बेचने वाला एक पैसे की जगह दो माँगता हो, तो मत दो और तयम्मुम कर

लो। उन शरीफ़ज़ादियों को यदि कोई दस रुपये बल्कि हैसियत के अनुसार हज़ार रुपये दे और कहे कि कुएँ से पानी भर लाओ, तो उनसे यह हरगिज़ न हो सकेगा।

पाद-टिप्पणी (लेखक का कथन): इसका उदाहरण यह है कि पीने के लिए रखे पानी (सबील) से वज़ू की अनुमति नहीं है। यदि केवल वही पानी हो तो तयम्मुम करे। और यदि कोई व्यक्ति ज़ुल्म और ग़सब (छीनने) का आदी हो, तो उसके लिए भी तयम्मुम का हुक्म होगा। यह नहीं कहा जाएगा कि "तू तो ग़ासिब है, इसे ज़बरदस्ती लेकर वज़ू कर ले।" 12 मिन्हु (म)।

---

[1] अल-क़ुरान 286/2 [2] अस-सहीह लिल-मुस्लिम, अध्याय ईमान की शाखाओं की संख्या आदि, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 48/1।

کوئی لادینے والا ہو تو رؤف رحیم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی رحمت سے امید ہے کہ اسے اجازت تیمّم ہو اور پانی پانے پر اعادہ کی بھی حاجت نہ ہو تفصیل اس کی یہ کہ عورات چند قسم ہیں ایک وہ کہ دن دہاڑے منہ کھولے بے تکلف بازاروں میں پھرتی ہیں یہ مطلقاً مردوں کی مثل ہیں مگر جبکہ چادر نہ پائیں ۔اقول: اگرچہ خود بدلحاظی سے پھرنے کی عادی ہوں کہ وہ حرام ہے اور شرع حرام کا حکم نہیں دیتی۔ دوسری وہ کہ برقع اوڑھ کردن کو آتی جاتی ہیں یہ بھی معذور نہیں ہو سکتیں مگر اُسی حالت میں کہ بُرقع یا چادر بھی نہ پائیں تیسری وہ کہ رات کو چادر اوڑھ کر دوسرے محلوں تک جاتی ہیں جس طرح رامپور وبدایوں کے بہت گھروں کی رسم سُنی گئی ان کیلئے دن میں شاید عذر ہوسکے شب میں ہر گز نہیں مگر یہ کہ کنویں پر مردوں کا مجمع ہو اور یہ مجمع میں چادر اوڑھ کر شب کو بھی نہ جاسکتی ہوں چوتھی وہ کہ شب کو چادر کے ساتھ بھی دُور نہ جاسکے صرف اس کی عادی ہو کہ گھر سے نکل کر سامنے کے دروازے میں دو قدم رکھ کر چلی جائے اس کیلئے اگر کنواں ایسا ہی قریب ہے اور اس پر مرد نہیں تو عذر نہیں اور اگر کنواں دُور ہے یا وہاں مردوں کا اجتماع ہے تو کہہ سکتے ہیں کہ معذور ہے پانچویں وہ کہ گھر سے باہر قدم رکھنے کی مطلقاً عادی نہیں جس طرح بحمد اللہ تعالیٰ بریلی میں شریف زادیوں کا دستور ہے یہ ہر طرح معذور ہے اور کیونکر اُسے مجبور کیا جائے گا حالانکہ اس نے کنواں دیکھا تک نہیں، نہ اس تک راہ جانتی ہے نہ کسی سے پوچھ سکے گی نہ اُس کے قدم اُٹھیں گے

لَا یُکَلِّفُ اللّٰہُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَھَا۱ (اور خدا کسی جان کو اس کی وسعت سے زیادہ تکلیف نہیں دیتا۔)

عادت چھڑانے میں حرج ہے خصوصاً وہ نیک عادت کہ کمال حیا پر مبنی ہو اور حیا جتنی زائد ہو اُسی قدر بہتر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: الحیاء خیر کلہ۲ حیا سراسر بہتر ہے

رواہ البخاری ومسلم وابوداؤد والنسائی عن عمران بن حصین رضی اللہ تعالیٰ عنہ وعن الصحابۃ جمیعاً (اسے بخاری، مسلم، ابوداؤد اور نسائی نے حضرت عمران بن حصین سے روایت کیا ہے خدا اُن سے اور تمام صحابہ کرام سے راضی ہو۔ ت) اُوپر گزرا کہ شریعت مطہرہ نے ہمارے ایک پیسے کا لحاظ فرمایا کہ پانی بیچنے والا پیسے کی جگہ دو مانگتا ہو نہ دواور تیمّم کرلوان شریف زادیوں کو اگر کوئی دس روپے بلکہ باعتبار حیثیت ہزار روپے دے اور کہے کنویں سے پانی بھر لاؤ اُن سے ہر گز نہ ہوسکے گا

عہ اقول: اس کی نظیر یہ ہے کہ پانی پینے کی سبیل سے وضو کی اجازت نہیں اگر صرف وہی پانی ہو تیمّم کرے اور اگر کوئی شخص ظلم وغصب کا عادی ہو تو اسے بھی تیمّم کا حکم ہوگا یہ نہ فرمایا جائے گا کہ تو تو غاصب ہے اسے غصبًا لے کر وضو کر ۱۲ منہ (م)

---

۱ القرآن ۲/۲۸۶ ۲ الصحیح للمسلم باب عدد شعب الایمان الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۴۸

Fatawa Razawiyya Volume 3

Praise be to Allah, how can she be forced into this? This is what has come to the mind of this humble person through contemplation.

And I do not say: It is the decree of Allah Almighty, but I hope that it is the decree of the Almighty Lord. So let the scholars look into it, those who have eyes of insight and hearts of understanding. And Allah alone guides to the right path, and He is sufficient for me and He is the best Disposer of affairs. (T)

As for my saying: If she finds water, she does not repeat (the prayer), because the impediment is modesty, and modesty is from the Lord, Glorified and Exalted. So the impediment is from the side of the Owner of the Right (Allah), as was inferred by the two eminent scholars, al-Rahmati and then al-Shami, in the issue of 'Namrah' and similar cases, saying that the excuse did not come from the side of the creation. For the impediment for her is the Sharia and modesty, and both are from Allah Almighty, just as they said (1): If one performs tayammum out of fear of an enemy, then if the enemy threatened him against performing wudu or ghusl, he repeats (the prayer), because the excuse came from someone other than the Owner of the Right, and even if...

And I do not say that this is the command of Allah Almighty, rather I hope that this is the command of the Almighty Lord. So those scholars should look into it who have eyes of insight and hearts of understanding. And Allah alone is the one who guides to the right path, and He is sufficient for me and what a wonderful Disposer of affairs. (T)

But what I said that "on finding water, there is no need to repeat it either." This is because the thing preventing her from water is modesty, and modesty was expressed by the Lord, Glorified, like in 55. Their words are: "The excuse did not come from the side of the creation because for this woman, the impediment is Sharia and modesty, and it is from the side of the Almighty. So the impediment is from the Owner of the Right, Glorified and Exalted, Himself, as the eminent Rahmati then Shami [said] in issue 54 and in both of it, it is from the side of Allah Almighty alone. As the scholars have said, if tayammum was done out of fear of an enemy, then if the situation is that the enemy has given some threat for performing wudu or ghusl, he will repeat it because the excuse is not from the side of the Owner of the Right (the Almighty Lord).

Footnote: Avoidance of some people of this time who have named themselves with knowledge while they have nothing of knowledge but the name. 12 From him, may he be forgiven (M). These are such people of the age who have attached the name of knowledge and scholars to themselves, whereas in reality they do not have knowledge, only the name of knowledge. 12 From him, may he be forgiven (T).

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

अल्लाह की प्रशंसा है, उसे इस पर कैसे मजबूर किया जा सकता है? यह वह है जो इस फ़कीर (विनम्र व्यक्ति) के मन में विचार-मंथन के माध्यम से आया।

और मैं यह नहीं कहता: यह अल्लाह सर्वशक्तिमान का निर्णय है, बल्कि मुझे आशा है कि यह सर्वशक्तिमान प्रभु का निर्णय है। तो विद्वान इसमें देखें, वे जिनके पास देखने के लिए अंतर्दृष्टि की आँखें और समझने के लिए हृदय हैं। और अल्लाह ही सही मार्ग की ओर मार्गदर्शन करता है, और वह मेरे लिए पर्याप्त है और वह सबसे अच्छा कार्यसाधक है। (त)

और मैं यह नहीं कहता कि यही अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल का हुक्म है बल्कि मुझे उम्मीद है कि यह रब तआला का हुक्म हो। तो इसमें वो उलमा नज़र फ़रमाएं जिनके पास बसीरत वाली निगाहें और फ़क़ाहत वाले दिल हैं। और ख़ुदा ही सही रास्ते की तरफ हिदायत फ़रमाने वाला है, और वही मुझे काफ़ी और क्या ही उम्दा कारसाज़ है। (त)

जहाँ तक मेरे इस कथन का प्रश्न है: कि यदि उसे पानी मिल जाए, तो वह (प्रार्थना) दोहराती नहीं है, क्योंकि बाधा हया (लज्जा) है, और हया उस स्वामी की ओर से है जो पवित्र और उच्च है। तो बाधा हक के मालिक (अल्लाह) की ओर से है, जैसा कि दो प्रतिष्ठित विद्वानों, अल-रहमती और फिर अल-शामी ने 'नमराह' और इसी तरह के मामलों में अनुमान लगाया था, यह कहते हुए कि बहाना सृष्टि की ओर से नहीं आया था। क्योंकि उसके लिए बाधा शरिया और हया है, और दोनों अल्लाह सर्वशक्तिमान की ओर से हैं, जैसा कि उन्होंने कहा (1): यदि कोई शत्रु के भय से तयम्मुम करता है, तो यदि शत्रु ने उसे वज़ू या ग़ुस्ल करने के विरुद्ध धमकी दी है, तो वह (प्रार्थना) दोहराता है, क्योंकि बहाना हक के मालिक

लेकिन ये जो मैंने कहा कि "पानी पाने पर उसे एआदा की भी हाजत नहीं।" तो इसलिए कि इसके लिए पानी से मानिअ चीज़ हया है, और हया मौला सुब्हानहू मिस्ल 55 में इज़हार किया। उनके अल्फाज़ ये हैं: "उज़्र मख़्लूक़ की जानिब से न आया इसलिए कि इस औरत के लिए मानिअ शरीअत और हया है और तआला की जानिब से है। तो मानिअ ख़ुद साहब-ए-हक़ अज़्ज़-ओ-जलालहु की तरफ़ से है जैसा कि फ़ाज़िल रहमती फिर शामी ने मसला 54 में और इसी के दोनों ही अल्लाह तआला की जानिब से हैं। जैसा कि उलमा ने फ़रमाया है कि अगर दुश्मन के ख़ौफ़ से तयम्मुम किया, तो अगर ये सूरत है कि दुश्मन ने वज़ू या ग़ुस्ल करने पर कोई धमकी दी है तो एआदा करेगा

के अलावा किसी और की ओर से आया था, और भले ही...	इसलिए कि उज़्र साहब-ए-हक़ (मौला तआला) की जानिब से नहीं।

फ़ुटनोट: ज़माने के कुछ ऐसे लोगों से परहेज़ जिन्होंने अपना नाम इल्म के साथ रख लिया है जबकि उनके पास इल्म का सिर्फ नाम है। 12 उनकी ओर से, उन्हें माफ़ किया जाए (म)। ये ऐसे कुछ ज़माने के लोग हैं जिन्होंने अपने साथ इल्म और उलमा का नाम चस्पां कर लिया है और हकीकत में उनके पास इल्म नहीं सिर्फ इल्म का नाम है। 12 उनकी ओर से, उन्हें माफ़ किया जाए (त)।

وللہ الحمد تو یہ اس پر کیونکر مجبور کی جائیں۔ یہ ہے وہ جو براہِ تفقہ ذہنِ فقیر میں آیا،

ولاقول: انه حکم الله عزوجل بل ارجوان یکون حکمه تعالٰی فلینظر فیه العلماء الذین عه لهم اعین یبصرون بها ولهم قلوب یفقهون بها والله یهدی السبیل وهو حسبی ونعم الوکیل۔ (ت)

اور میں یہ نہیں کہتا کہ یہی اللہ عزوجل کا حکم ہے بلکہ مجھے امید ہے کہ یہ رب تعالٰی کا حکم ہو۔ تو اس میں وہ علما نظر فرمائیں جن کے پاس بصیرت والی نگاہیں اور فقاہت والے دل ہیں۔ اور خدا ہی صحیح راستے کی طرف ہدایت فرمانے والا ہے، اور وہی مجھے کافی اور کیا ہی عمدہ کارساز ہے۔ (ت)

امّا قولی انها اذا وجدت الماء لا تعید فلان المانع الحیاء والحیاء من المولی سبحنہ وتعالٰی فالمانع من جهة صاحب الحق عزجلا له کما استظهر الفاضلان الرحمتی ثم الشامی فی مسألة نمرة ومثلها قائلین ان العذر لم یأت من قبل المخلوق فان المانع لها الشرع والحیاء وهما من الله تعالٰی کما قالوا (۱) لو تیمّم لخوف العدو فان توعده علی الوضوء او الغسل یعید

لیکن یہ جو میں نے کہا کہ "پانی پانے پر اسے اعادہ کی بھی حاجت نہیں۔" تو اس لئے کہ اس کیلئے پانی سے مانع چیز حیا ہے، اور حیا مولٰی سبحانہ مثل ۵۵ میں اظہار کیا۔ ان کے الفاظ یہ ہیں: "عذر مخلوق کی جانب سے نہ آیا اس لئے کہ اس عورت کے لئے مانع شریعت اور حیا ہے اور تعالٰی کی جانب سے ہے۔ تو مانع خود صاحب حق عزوجلالہ کی طرف سے ہے جیسا کہ فاضل رحمتی پھر شامی نے مسئلہ ۵۴ میں اور اسی کے دونوں ہی اللہ تعالٰی کی جانب سے ہیں۔ جیسا کہ علماء نے فرمایا ہے کہ اگر دشمن کے خوف سے تیمم کیا، تو اگر یہ صورت ہے کہ دشمن نے وضو یا غسل کرنے پر

لان العذر اتی من غیر صاحب الحق کوئی دھمکی دی ہے تو اعادہ کرے گا اس لئے کہ عذر ولو صاحب حق (مولیٰ تعالیٰ) کی جانب سے نہیں۔

عه احتراز عن بعض ابناء الزمان الذین تسموا بالعلم ومالهم من العلم الا الاسم ۱۲ منه غفرله (م) یہ ایسے بعض ابنائے زمانہ سے احتراز ہے جنہوں نے اپنے ساتھ علم وعلماء کا نام چسپاں کر لیا ہے اور حقیقت میں ان کے پاس علم نہیں صرف علم کا نام ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiya Volume 3

(Arabic Text) If one feared without being threatened by an enemy, then no (repetition of prayer is needed) because Allah Almighty placed the fear in his heart. Since the excuse came from the Giver of Rights (Allah), repetition is not mandatory for him. "Ah". And you know that the matter in our issue here is clearer than that one, for there is nothing here from the part of human beings. As for that one, the researcher Al-Halabi said in "Al-Hilya" that repetition is more appropriate, branching out from the apparent state of the school of thought regarding someone prevented from removing ritual impurity due to human action. "Ah". And I saw that I had written a text concerning the aforementioned statement of Ar-Rahmati, which says: I say: And by Allah is the success (1). The place (2) for this issue is only when one is prevented from moving to a screened place; otherwise, it would definitely not be permissible for him to uncover himself nor to perform dry ablution (Tayammum). This prevention is either from the people's side—for example, they have imprisoned him or said to him: "If you move from here, we will kill you or snatch your wealth," for wealth is like the soul's sibling. Or from the people's side...

(Urdu Text) And if he became fearful without being threatened by an enemy (and performed Tayammum), then there is no repetition (of prayer). Because Allah Almighty Himself put fear in his heart, so this excuse came from the side of the Right-Owner (Allah), therefore repetition is not mandatory for him." Ah (T) And it is known that in the issue under our current writing, the matter is more manifest and clear than that. Because here there is no existence of anything from the side of human beings. And in that issue, Muhaqqiq Halabi has written in Hilya that "The person who cannot remove ritual impurity due to the act of humans, the ruling about him in the apparent Madhhab is this that he should repeat (the prayer)," so while branching out in the apparent Madhhab, here too a repetition is more appropriate. "Ah" I saw that I had personally written the following text on the aforementioned statement of Rahmati: I say: And with Allah is the success (I say, and the success is only from God's side). This issue is only in that case when there is an obstruction to going to a screened place; otherwise, neither opening the satr (private parts) would be permissible for him nor would performing Tayammum be permissible. Now this obstruction is either from the side of people. For example, he has been imprisoned or told that if he moves from here, we will kill you or snatch your wealth. Wealth is also the brother of life. Or from the side of people...

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Discussions on Ghusl, Mustafa Al-Babi, Egypt 1/115. 2. Radd al-Muhtar, Discussions on Ghusl, Mustafa Al-Babi, Egypt 1/115.

फ़तावा रज़विया खंड 3

(अरबी पाठ) यदि वह शत्रु की धमकी के बिना डर गया, तो नहीं (नमाज़ दोहराना आवश्यक नहीं) क्योंकि अल्लाह तआला ने उसके दिल में डर डाल दिया। चूँकि माफ़ी अधिकारदाता (अल्लाह) की ओर से आई, अतः उस पर दोहराना अनिवार्य नहीं है। "अह"। और आप जानते हैं कि यहाँ हमारे मसले में मामला उससे अधिक स्पष्ट है, क्योंकि यहाँ मनुष्यों की ओर से कुछ भी नहीं है। जहाँ तक उस मसले की बात है, शोधकर्ता अल-हलाबी ने "अल-हिल्या" में कहा है कि दोहराना अधिक उचित है, जो मानव कार्य के कारण अनुष्ठानिक अशुद्धि को दूर करने से रोके गए व्यक्ति के संबंध में विचारधारा के प्रत्यक्ष दृष्टिकोण से निकला है। "अह"। और मैंने देखा कि मैंने अर-रहमती के उपर्युक्त कथन के संबंध में एक पाठ लिखा था, जो कहता है: मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से ही सफलता मिलती है (1)। इस मसले का स्थान (2) केवल तभी है जब उसे छिपने के स्थान पर जाने से रोका गया हो; अन्यथा, उसके लिए न तो स्वयं को उजागर करना और न ही सूखी शुद्धि (तयम्मुम) करना निश्चित रूप से जायज़ होगा। यह रोकथाम या तो लोगों की ओर से है, जैसे कि उन्होंने उसे कैद कर लिया हो या उससे कहा हो: "यदि तुम यहाँ से हिले, तो हम तुम्हें मार डालेंगे या तुम्हारा माल छीन लेंगे," क्योंकि धन आत्मा के भाई के समान है। या लोगों की ओर से...

(उर्दू पाठ) और अगर दुश्मन के डराए बगैर वह खौफ़ज़दा हुआ (और तयम्मुम कर लिया) तो एआदा (दोहराना) नहीं। इसलिए कि खुदाए तआला ने ही उसके दिल में खौफ डाल दिया तो यह उज़्र साहिबे हक़ की जानिब से ही आया लिहाज़ा इस पर एआदा लाज़िम नहीं।" अह (त) और मालूम है कि हमारे ज़ेरे तहरीर मसले में मामला उस से ज़्यादा ज़ाहिर और वाज़ेह है। इसलिए यहाँ बंदों की जानिब से किसी चीज़ का वजूद ही नहीं। और उस मसले में तो मुहाक़्क़िक हलाबी ने हिल्या में यह लिखा है कि "जो शख्स बंदों के फेल की वजह से इज़ाला-ए-हदस न कर सके उसके मुताल्लिक ज़ाहिर मज़हब में यही हुक्म है कि एआदा करे" तो ज़ाहिर मज़हब में तफ़रीअ करते हुए यहाँ भी ज़्यादा मुनासिब एआदा ही है "अह" मैंने देखा कि रहमती के कौल मज़कूर पर खुद मैंने कभी दर्ज ज़ैल इबारत तहरीर की थी: अक़ूलु: वबिल्लाहित तौफ़ीक़ (मैं कहता हूँ, और तौफ़ीक़ खुदा ही की जानिब से है) यह मसला उसी सूरत में है जब किसी पर्दा की जगह चले जाने से रुकावट हो वरना इसके लिए न सतर खोलना जायज़ होगा न ही तयम्मुम करना जायज़ होगा। अब यह रुकावट या तो लोगों की जानिब से है। मसलन उसे कैद कर दिया है या उससे कहा है कि यहाँ से हटे तो हम तुझे कत्ल कर देंगे या तेरा माल छीन लेंगे। माल भी जान का भाई है। या लोगों की जानिब से...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद अल-मुह्तार, ग़ुस्ल पर चर्चा, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र 1/115. 2. रद अल-मुह्तार, ग़ुस्ल पर चर्चा, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र 1/115.

خاف بدون توعد من العدو فلا لان الخوف اوقعه الله تعالٰی فی قلبہ فقد جاء العذر من صاحب الحق فلا تلزمہ الاعادة ۱ اھـ وانت تعلم ان الامر فی مسألتنا هذه اظهر من تلك فليس ههنا شيئ من قبل العباد اما تلك فقال المحقق الحلبی فی الحلية الاشبه الاعادة تفريعاً على ظاهر المذهب فی الممنوع من ازالة الحدث بصنع العباد ۲ اھـ ورأيتنی كتبت على قول الرحمتي المذكور مأ نصہ۔ اقول: وبالله (۱) التوفيق محل (۲) المسألة انما هو حيث كان ممنوعاً عن التحول الى موضع ستر والا لم يجز له الكشف ولا التيمم قطعاً فهذا المنع اما ان يكون من قبل القوم كأن حبسوه او قالوا له لو تحولت قتلناك او سلبناك فان المال شقيق النفس

اور اگر دشمن کے ڈرائے بغیر یہ خوفزدہ ہوا (اور تیمم کرلیا) تو اعادہ نہیں۔ اس لئے کہ خدائے تعالٰی نے ہی اس کے دل میں خوف ڈال دیا تو یہ عذر صاحب حق کی جانب سے ہی آیا لہٰذا اس پر اعادہ لازم نہیں۔" اھـ (ت) اور معلوم ہے کہ ہمارے زیر تحریر مسئلہ میں معاملہ اُس سے زیادہ ظاہر اور واضح ہے۔ اس لئے یہاں بندوں کی جانب سے کسی چیز کا وجود ہی نہیں۔ اور اُس مسئلہ میں تو محقق حلبی نے حلیہ میں یہ لکھا ہے کہ "جو شخص بندوں کے فعل کی وجہ سے ازالہ حدث نہ کر سکے اس کے متعلق ظاہر مذہب میں یہی حکم ہے کہ اعادہ کرے" تو ظاہر مذہب میں تفریع کرتے ہوئے یہاں بھی زیادہ مناسب اعادہ ہی ہے "اھ میں نے دیکھا کہ رحمتی کے قول مذکور پر خود میں نے کبھی درج ذیل عبارت تحریر کی تھی: اقول: وباللہ التوفیق (میں کہتا ہوں، اور توفیق خدا ہی کی جانب سے ہے) یہ مسئلہ اُسی صورت میں ہے جب کسی پردہ کی جگہ چلے جانے سے رکاوٹ ہو ورنہ اس کیلئے نہ ستر کھولنا جائز ہوگا نہ ہی تیمم کرنا جائز ہوگا۔ اب یہ رکاوٹ یا تو

لوگوں کی جانب سے ہے۔ مثلاً اسے قید کر دیا ہے یا اس سے کہا ہے کہ یہاں سے ہٹے تو ہم تجھے قتل کر دیں گے یا تیرا مال چھین لیں گے۔ مال بھی جان کا بھائی ہے۔ یا لوگوں کی جانب سے

۱ رد المحتار ابحاث الغسل مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۱۵ ۲ رد المحتار ابحاث الغسل مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۱۵

Volume 3 Fatawa Rizwia

Firstly, like a sick person or someone on a ship in the middle of the ocean. In the first case, there is no doubt that the hindrance comes from people, so he performs tayammum (dry ablution) and then repeats [the prayer later]. In the second case, one could say it is necessary for him to ask people to turn their backs or lower their gaze. If they do so, it's fine; otherwise, they have caused the hindrance, even if the primary obstacle is not from them. It's like the matter of fear, which is fundamentally from Allah Almighty; however, when fear arises because a person has threatened someone, it is attributed to that person and a repeat [of prayer] is commanded. In light of this detail, what the researcher Al-Hilli stated is more appropriate. Additionally, there is an aspect of caution in it because if he repeats [the prayer], he will certainly be relieved and fulfilled of his duty. Therefore, his statement should be relied upon. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. (T)

(68 to 70) I say: Similarly, if the person who brings water asks for a wage and this person is poor, or the provider does not agree to credit, or asks for more than the standard wage. 1 Following the same rule as mentioned in numbers 365 and 367 from Al-Bahr and Ad-Durr (likewise as explained in numbers 365 and 367 with reference to Bahr al-Ra'iq and Durr al-Mukhtar. T).

(71) I say: The well, rope, and bucket are all present, but he is such a sick person or so weak that he is unable to fill it, and there is no servant, slave, or son nearby, nor anyone who would fill it at his request, nor any of the other methods mentioned in number 2.

---

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/124.

जिल्द सोम (भाग 3) फतावा रज़विया

पहले, जैसे एक बीमार व्यक्ति या समुद्र के बीच में एक जहाज़ पर सवार व्यक्ति। पहली स्थिति में, इसमें कोई संदेह नहीं है कि बाधा मनुष्यों की ओर से है, इसलिए वह तयम्मुम करेगा और फिर (बाद में) नमाज़ दोहराएगा। दूसरी स्थिति में, कहने वाला कह सकता है कि उस पर लाज़िम है कि वह लोगों से कहे कि अपनी पीठ फेर लें या निगाहें नीची कर लें। अगर वे ऐसा कर लेते हैं तो ठीक है, वरना वे बाधा का कारण बन गए, भले ही असल रुकावट उनकी तरफ से न हो। जैसे डर का मामला है कि वास्तव में यह अल्लाह तआला की ओर से है, इसके बावजूद जब डर इस कारण पैदा हुआ कि किसी व्यक्ति ने धमकी दी है, तो उसे उस व्यक्ति की ओर से गिना जाता है और (नमाज़) दोहराने का हुक्म दिया जाता है। इस विवरण के प्रकाश में, अधिक उपयुक्त (अश्बह) वही है जो मुहक़्क़िक़ हिल्ली ने फरमाया। साथ ही इसमें सावधानी का पहलू भी है क्योंकि अगर वह दोहरा ले तो निश्चित रूप से अपनी ज़िम्मेदारी से मुक्त हो जाएगा। इसलिए उनके कथन पर भरोसा किया जाना चाहिए। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

(68 से 70) मैं कहता हूँ: इसी प्रकार यदि पानी लाने वाला मज़दूरी माँगता है और यह व्यक्ति निर्धन है, या वह उधार पर सहमत नहीं है, या वह सामान्य मज़दूरी से अधिक माँगता है। 1 जैसा कि अल-बहर और अद-दुर में नंबर 365 और 367 में गुज़रा (उसी प्रकार जैसा कि नंबर 365, 367 में बहर-ए-राइक और दुर-ए-मुख्तार के हवाले से बयान हुआ है। त)।

(71) मैं कहता हूँ: कुआँ, रस्सी, डोल सब कुछ मौजूद है लेकिन वह ऐसा बीमार है या इतना कमज़ोर है कि भरने पर सक्षम नहीं है और कोई नौकर, गुलाम, बेटा पास नहीं है, न ही कोई ऐसा है जो उसके कहने पर भर दे, और न ही अन्य उपाय जो नंबर 2 में गुज़रे।

---

1 अल-बहर अर-राइक, बाब अत-तयम्मुम, एच. एम. सईद कंपनी, कराची, 1/124।

اولاً کمریض ومن سفینة في لجة بحر علی الاول لاشك ان المنع جاء من قبل العباد فیتیمم ویعید وعلی الثانی لقائل ان یقول لابدله ان یسألهم تحویل الدبر اوغض البصر فان فعلوا فبها والا فقد تسببوا في المانع وان لم یکن نفس المانع من قبلهم کالخوف فانه من قبل الله تعالی ومع ذلك اذا نشأ بتسبب العبد بالا یعاد یعد من العبد ویؤمر بالاعادة فاذن الاشبه ماذکر المحقق الحلبي مع ان فیه الخروج عن العهدة بیقین فعلیه فلیکن التعویل والله سبحانه وتعالی اعلم۔ رکاوٹ نہیں ہے۔ مثلاً بیمار ہے یا سمندر کی گہرائی میں کشتی پر سوار ہے۔ پہلی صورت میں رکاوٹ بلا شبہ بندوں کی جانب سے ہے تو تیمم کرے گا پھر اعادہ کرے گا۔ اور دوسری صورت میں کہنے والا کہہ سکتا ہے کہ اس پر لازم ہے کہ لوگوں سے کہے پیٹھ پھیر لیں یا نگاہ بند کرلیں، اگر وہ ایسا کرلیں تو ٹھیک ورنہ وہ رکاوٹ کا سبب بن گئے اگر چہ اصل مانع ان کی طرف سے نہیں۔ جیسے خوف کا معاملہ ہے کہ دراصل یہ اللہ تعالیٰ کی جانب سے ہے، اس کے باوجود جب خوف اس سبب سے پیدا ہوا کہ کسی بندے نے دھمکی دی ہے تو وہ بندے کی جانب سے شمار ہوتا ہے اور اعادہ کا حکم دیا جاتا ہے اس تفصیل کی روشنی میں اشبہ (زیادہ مناسب) وہی ہے جو محقق حلبی نے فرمایا۔ ساتھ ہی اس میں احتیاط کا پہلو بھی ہے کیونکہ اعادہ کرلے تو یقینی طور پر سبکدوش اور عہدہ برآ ہو جائے گا اس لیے انہی کے قول پر اعتماد ہونا چاہئے، واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔ (ت)

(۶۸تا۷۰) اقول: یوں ہی اگر پانی لادینے والا اجرت مانگتا ہے اور یہ مفلس یا وہ ادھار پر راضی نہیں یا اُجرت مثل سے زیادہ کا طالب ۱ علی وزان ما مر فی ۳۶۵ و ۳۶۷ عن البحر والدر (اسی طور پر جیسا کہ نمبر ۳۶۵، ۳۶۷ میں بحر رائق اور درمختار کے حوالہ سے بیان ہوا ہے۔ت)

(۷۱) اقول: کنواں رسّی ڈول سب کچھ موجود ہے مگر یہ ایسا مریض یا اتنا ضعیف ہے کہ بھرنے پر قادر نہیں اور نوکر غلام بیٹا کوئی پاس نہیں نہ کوئی ایسا کہ اس کے کہنے سے بھر دے نہ اور تدبیروں سے کہ نمبر ۲ میں گزریں

---

1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۴

صفحہ 756 کا 421

Fatawa Razawiyya Volume Three ...can get water,

[Arabic]: For his inability has been established, and that is the basis of permissibility [of Tayammum]. It is as if it falls under what they mentioned regarding the lack of tools. For in it, there is a legal (hukman) lack even if it is not physical (hissan), as Allah the Almighty said: "And you do not find water." Thus, it includes both physical and legal lack. (T)

(74 to 77) I say: Similarly, if another person asks for a fee to fill the water, and this person is poor, or the other is not willing to give credit, or asks for more than the standard fee.

(78 to 82) I say: Similar to these situations is if he is neither sick nor weak, but (1) he cannot pull the large bucket from the well alone, and there is no other small bucket or another way to get water, nor does he have enough people to pull it together or have it pulled for him; (2) he does not have the fee; or (3) those who pull it ask for more than the standard fee; or (4) they are not willing to give credit. And this situation is not limited to one person; even if there are two or more, but more people are needed to pull that large bucket, the same rulings will apply, especially if they are women, like the event of the two daughters of [Prophet] Shu'aib (upon him and upon them be blessings and peace). (T)

(83) I say: He passes by water and everything is available, but he is mounted on a horse, and the horse is such that dismounting and remounting would cause great difficulty. He may perform Tayammum and pray on the horse, provided something from the earth's category is with him, even if it is a pipe bowl, or there is enough dust on the saddle etc. that wiping it leaves finger marks.

(80 to 83) I say: Likewise, even if the mount is suitable, but he is a patient or so weak that he cannot mount without a helper, and (1) a helper is not available according to those details; or (2) [the helper] asks for a fee and he is poor; or (3) [the helper] is not willing to give credit; or (4) [the helper] wants more than the standard fee.

(84) I say: Similarly, if the rider is a woman and a Mahram or husband is needed to help her mount, and they are not with her. It is in Munyah: [Arabic]: An elderly person (1) when riding an animal and is not able to [dismount]...

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरी) ...पानी ले सकता है,

[अरबी]: क्योंकि उसकी लाचारी प्रमाणित हो गई है और यही तैयम्मुम की अनुमति का आधार है। यह वैसा ही है जैसे उन्होंने (विद्वानों ने) पानी निकालने के औज़ार न होने का ज़िक्र किया है, तो इसमें कानूनी (हुक्मन) कमी है चाहे वह शारीरिक (हिसन) न हो, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और तुम पानी न पाओ।" तो यह शारीरिक और कानूनी दोनों तरह की कमी को शामिल करता है। (त)

(74 से 77) अक़ूल: इसी तरह अगर पानी भरने वाला मज़दूरी माँगता है और यह निर्धन है या वह उधार पर राज़ी नहीं या बाज़ार भाव (उजरत-ए-मिसल) से ज़्यादा माँगता है।

(78 से 82) अक़ूल: इन्हीं स्थितियों के समान है कि वह बीमार या कमज़ोर भी न हो लेकिन (1) कुएँ का बड़ा डोल (चरसा) अकेले न खींच सके और दूसरा छोटा डोल या पानी लेने का और कोई तरीका न हो, न उसके पास इतने आदमी हों कि मिलकर खींच दें या खिंचवा दें; (2) मज़दूरी देने के पैसे न हों; या (3) खींचने वाले उजरत-ए-मिसल से ज़्यादा माँगते हों; या (4) उधार पर राज़ी न हों। और यह स्थिति केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं है, दो या उससे अधिक भी हों लेकिन उस चरसे को खींचने के लिए ज़्यादा आदमियों की ज़रूरत हो, तब भी यही नियम होंगे, विशेष रूप से जब वे औरतें हों, जैसे हज़रत शुएब (अलैहिस्सलाम) की दो बेटियों की घटना है (उन पर और उन दोनों पर दुरूद व सलाम। त)।

(83) अक़ूल: पानी के पास से गुज़र हो रहा है और सब सामान उपलब्ध है, लेकिन वह घोड़े पर सवार है और घोड़े की स्थिति ऐसी है कि उतरकर फिर से चढ़ने में बहुत कठिनाई होगी। ऐसी स्थिति में वह तैयम्मुम करके घोड़े पर ही नमाज़ पढ़ ले, बशर्ते कि उसके पास ज़मीन की किस्म की कोई चीज़ हो, चाहे वह चिलम हो या ज़ीन (काठी) आदि पर इतनी धूल हो कि हाथ फेरने से उंगलियों के निशान बन जाएँ।

(80 से 83) अक़ूल: इसी तरह भले ही सवारी ठीक हो लेकिन वह मरीज़ या इतना कमज़ोर है कि बिना मददगार के चढ़ न सकेगा और (1) मददगार उन विवरणों के अनुसार उपलब्ध नहीं है; या (2) वह मज़दूरी माँगता है और यह निर्धन है; या (3) वह उधार पर राज़ी नहीं है; या (4) वह उजरत-ए-मिसल से ज़्यादा चाहता है।

(84) अक़ूल: इसी तरह अगर सवार औरत है और उसे चढ़ाने के लिए महरम या शौहर की ज़रूरत है और वे साथ नहीं हैं। मुन्या में है: [अरबी]: "बूढ़ा व्यक्ति (1) किसी जानवर पर सवार हो और उतरने पर सामर्थ्य..."

पृष्ठ 422 / 756

فتاوی رضویہ جلد سوم پانی لے سکتا ہے،

فقد تحقق عجزہ وھو ملاك الاباحة وكانه دخل | اس لئے کہ اس کا عاجز ہونا متحقق ہو گیا اور جوازِ تیمم کی بنیاد یہی فیما ذکروا من فقد الآلة فان فیه الفقد حکماً | ہے۔ علماء نے پانی کھینچنے کا آلہ نہ پانے کا جو ذکر کیا ہے گویا یہ وان لم یکن حسا کما قال تعالی وَلَمْ تَجِدُوا مَاءً | صورت بھی اس میں داخل ہے کیونکہ اس میں بھی حکماً ذریعہ فعم الفقد الحسی والحکمی۔ | کا فقدان ہے اگرچہ حساً فقدان نہیں جیسے باری تعالیٰ کا ارشاد ہے: "اور تم پانی نہ پاؤ" یہ حسی و حکمی دونوں فقدان کو شامل ہے۔ (ت)

(۷۴ تا ۷۷) اقول یوں ہی اگر دوسرا پانی بھر دینے والا اجرت مانگتا ہے اور یہ مفلس یا وہ ادھار پر راضی نہیں یا اجرت مثل سے زائد مانگتا ہے۔

(۷۸ تا ۸۲) اقول انہی صورتوں کی مثل ہے کہ یہ مریض و ضعیف بھی نہ ہو مگر (۱) کنویں کا چرسہ اکیلے سے نہ کھینچ سکے گا اور دوسرا چھوٹا ڈول یا پانی لینے کا اور طریقہ نہیں نہ اس کے پاس اتنے آدمی کہ مل کر کھینچ دیں یا کھینچوا دیں (۲) کی اجرت نہیں رکھتا یا کھینچنے (۳) والے اجرت مثل سے زیادہ مانگتے ہیں یا ادھار (۴) پر راضی نہیں اور یہ صورت اکیلے شخص پر منحصر نہیں دو ۲ یا زائد بھی ہوں مگر اس چرسہ کے کھینچنے کو زیادہ آدمی درکار ہیں جب بھی یہی احکام ہوں گے خصوصاً جبکہ یہ عورتیں ہوں کو اقعۃ بنتی شعیب علیه و علیہما الصلاۃ و السلام (جیسے حضرت شعیب کی دونوں بیٹیوں کا واقعہ ہے۔ ان پر اور ان دونوں پر درود و سلام۔ ت)

(۸۳) اقول : پانی پر گزر اسامان سب حاضر ہے مگر یہ گھوڑے پر سوار ہے اور گھوڑا بدرکاب کہ اتر کر چڑھنے میں بہت دقت کا سامنا ہوگا تیمم کر کے گھوڑے پر پڑھ لے جبکہ جنسِ ارض سے کوئی شے پاس ہو اگرچہ چلم ہو یا زین وغیرہ پر اتنا غبار ہو کہ ہاتھ پھیرنے سے انگلیوں کا نشان بن جائے۔

(۸۰ تا ۸۳) اقول : یونہی اگرچہ سواری شائستہ ہو مگر یہ مریض یا ایسا ضعیف ہے کہ بے مددگار چڑھ نہ سکے گا اور (۱) مددگار انہیں تفصیلوں پر نہیں یا (۲) اجرت مانگتا ہے اور یہ مفلس یا (۳) وہ ادھار پر راضی نہیں یا (۴) اجرت مثل سے زیادہ چاہتا ہے۔

(۸۴) اقول : یوں ہی اگر سوار عورت ہے اور چڑھانے کو محرم یا شوہر درکار اور وہ ساتھ نہیں، منیہ میں ہے: الشیخ (۱) اذارکب دابة ولم یقدر علی | "بوڑھا شخص کسی جانور پر سوار ہو اور اترنے پر قدرت

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

[Arabic Column]: ...alighting, or a woman (1) who does not have a mahram with her, they both pray on it [the mount] (1) - end of quote. It is mentioned in Al-Hilya: In fact, the literal meaning of Al-Khaniyah is that it is permissible for her even if she has a mahram with her. For it states: "When a man carries his wife [on a mount] from a village to a city, she may pray on the animal on the way if she is unable to mount and alight by herself." - End of quote. However, this is apparent based on Imam Abu Hanifa's principle that he does not consider a person's ability through another as equivalent to their own ability. As for the opinion of the two companions (Imams Abu Yusuf and Muhammad), it should not be permissible if the husband is able to assist her in mounting and alighting and offers to do so. Furthermore, it is not hidden that the answer in Al-Khaniyah, with our critique of it, applies a fortiori (by way of priority) if there is a mahram or a stranger instead of the husband (2) - end of quote.

I say (Aqool): As for the "priority" (awlawiyyah) in applying the ruling of Al-Khaniyah, if it is interpreted as absolute permissibility even if the one with her assists her in mounting and alighting, then it is obvious. But...

[Urdu Column]: ...not, or a woman is riding and there is no mahram with her, then the ruling for both is to pray while mounted. "It is stated in Al-Hilya": However, it appears from the literal meaning of Al-Khaniyah that it is permissible for a woman even if she has a mahram with her. This is because in Al-Khaniyah it says: "When a man mounts his woman and takes her from a village to a city, the woman may pray on the mount on the way when she is not able to mount or alight herself." - End of quote. This ruling is clear based on the principle of Imam-e-Azam Abu Hanifa, as they do not consider the power a human obtains through another to be like their own power. But according to the opinion of the Sahibaen (Imams Abu Yusuf and Muhammad), there should be no permissibility in this case when the husband is able to help her mount and alight and can offer his help. Then the ruling mentioned in Al-Khaniyah, along with our critique, will apply a fortiori even in a case where instead of a husband, there is a mahram or a stranger, as is apparent. - End of quote (T).

I say (Aqool): The meaning of the aforementioned ruling from Al-Khaniyah being applicable is that there is absolute permissibility even if the woman's companion is her assistant in mounting and alighting. So here, its being a fortiori (awla) is apparent. But (here, the critique of the author of Al-Hilya also being applicable a fortiori...

Footnotes: 1 Munyat al-Musalli, Fara'id al-Salah, Maktaba Qadriya Jamia Nizamia Lahore, p. 253. 2 Ta'liq al-Majli ma' al-Munyah, Fara'id al-Salah, Maktaba Qadriya Jamia Nizamia Lahore (Abridged). Page 423 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[अरबी कॉलम]: ...उतरना, या ऐसी महिला (1) जिसके साथ कोई महरम न हो, वे दोनों उस पर (सवारी पर) नमाज़ पढ़ लें (1) - उद्धरण समाप्त। 'अल-हिलिया' में उल्लेख है: वास्तव में, 'अल-खानिया' के शाब्दिक अर्थ से पता चलता है कि यह उसके लिए अनुमेय है भले ही उसके साथ कोई महरम हो। क्योंकि उसमें उल्लेख है: "जब कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को [सवारी पर] गाँव से शहर ले जाता है, तो महिला रास्ते में जानवर पर नमाज़ पढ़ सकती है यदि वह स्वयं चढ़ने और उतरने में असमर्थ हो।" - उद्धरण समाप्त। हालाँकि, यह इमाम अबू हनीफ़ा के इस सिद्धांत पर स्पष्ट है कि वह किसी दूसरे के माध्यम से प्राप्त व्यक्ति की क्षमता को उसकी अपनी क्षमता के बराबर नहीं मानते हैं। जहाँ तक दोनों साथियों (इमाम अबू यूसुफ और मुहम्मद) की राय का सवाल है, यह जायज़ नहीं होना चाहिए यदि पति उसे चढ़ने और उतरने में सहायता करने में सक्षम हो और ऐसी सहायता प्रदान करता हो। इसके अलावा, यह छिपा नहीं है कि 'अल-खानिया' का उत्तर, हमारी आलोचना के साथ, और भी अधिक दृढ़ता से (प्रायरिटी के साथ) लागू होता है यदि पति के स्थान पर कोई महरम या अजनबी हो (2) - उद्धरण समाप्त।

मैं कहता हूँ (अकूल): जहाँ तक 'अल-खानिया' के हुक्म को लागू करने में 'प्रायरिटी' की बात है, यदि इसका अर्थ पूर्ण अनुमति लिया जाए चाहे साथ वाला व्यक्ति उसे चढ़ने-उतरने में मदद ही क्यों न कर रहा हो, तो यह स्पष्ट है। लेकिन...

[उर्दू कॉलम]: ...नहीं, या औरत सवार हुई जिसके साथ कोई महरम नहीं तो दोनों के लिए यह हुक्म है कि सवारी पर नमाज़ पढ़ लें। "अह हिलिया में फ़रमाया:" लेकिन खानिया के ज़ाहिर से मालूम होता है कि औरत के साथ महरम हो जब भी उसके लिए इजाज़त है इसलिए कि खानिया में यह है कि जब मर्द अपनी औरत को सवार करके गाँव से शहर ले जाए तो औरत रास्ते में सवारी पर नमाज़ पढ़ ले जब चढ़ने उतरने पर कादिर न हो "इन्तही। यह हुक्म इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा के काएदे पर तो ज़ाहिर है इसलिए कि वो इंसान के लिए दूसरे के ज़रिया हासिल होने वाली कुदरत को खुद उसकी अपनी कुदरत की तरह करार नहीं देते। लेकिन साहिबैन के कौल पर इस सूरत में इसका जवाज़ नहीं होना चाहिए जब शौहर चढ़ने उतरने में उसकी मदद कर सकता हो और अपनी मदद पेश भी कर सकता हो फिर खानिया में जो हुक्म मज़कूर है यह हमारी तनकीद के साथ इस सूरत में भी ब-दरजा-ए-औला जारी होगा जब बजाए शौहर के, कोई महरम या अजनबी हो, जैसा कि ज़ाहिर है अह्"। (त)

अकूल: खानिया में मज़कूरा हुक्म के जारी होने का यह मानी है कि मुतलकन जवाज़ हो अगरचे औरत का हम-राही उतरने चढ़ने में उसका मुआविन हो तो यहाँ इसका औला होना ज़ाहिर है। लेकिन (यहाँ साहिब-ए-हिलिया की तनकीद भी ब-दरजा-ए-औला जारी होने...

पादलेख: 1 मुन्यतुल मुसल्ली, फ़राइज़ुस सलाह, मकतबा कादरिया जामिया निज़ामिया लाहौर, पृष्ठ 253। 2 ता'लीकुल मजली मअल मुन्या, फ़राइज़ुस सलाह, मकतबा कादरिया जामिया निज़ामिया लाहौर (संक्षिप्त)। पृष्ठ 423/756

النزول اوامرأة (۱) وليس معها محرم يصليان عليها ۱ اه قال في الحلية بل ظاهر الخانية انه يجوز لها وان كان معها محرم فان فيها الرجل اذا حمل امرأته من القرية الى المصر كان لها ان تصلى على الدابة في الطريق اذا كانت لا تقدر على الركوب والنزول انتهى لكن هذا ظاهر على اصل ابى حنيفه فى انه لا يجعل قدرة الانسان بغيره كقدرته بنفسه اما على قولهما فينبغى ان لا يجوز اذا كان الزوج يقدر على مساعدتها في الركوب والنزول ويبذل ذلك لها ثم لا يخفى ان جواب الخانية مع تعقبنا به آت بطريق اولى اذا كان مكان الزوج محرم او اجنبى ۱۲هـ اقول: اما الاولوية في تأتى جواب الخانية ان حمل على الجواز مطلقاً وان ساعدها من معها على الركوب والنزول فظاهرة ولكن

نہیں ،یا عورت سوار ہوئی جس کے ساتھ کوئی محرم نہیں تو دونوں کے لئے یہ حکم ہے کہ سواری پر نماز پڑھ لیں "اہ حلیہ میں فرمایا:" لکھ خانیہ کے ظاہر سے معلوم ہوتا ہے کہ عورت کے ساتھ محرم ہو جب بھی اس کے لئے اجازت ہے اس لئے کہ خانیہ میں یہ ہے کہ جب مرد اپنی عورت کو سوار کر کے گاؤں سے شہر لے جائے تو عورت راستے میں سواری پر نماز پڑھ لے جب چڑھنے اترنے پر قادر نہ ہو "انتہی۔ یہ حکم امام اعظم ابو حنیفہ کے قاعدہ پر تو ظاہر ہے اس لئے کہ وہ انسان کیلئے دوسرے کے ذریعہ حاصل ہونے والی قدرت کو خود اس کی اپنی قدرت کی طرح قرار نہیں دیتے۔ لیکن صاحبین کے قول پر اس صورت میں اس کا جواز نہیں ہونا چاہئے جب شوھر چڑھنے اترنے میں اس کی مدد کر سکتا ہو اور اپنی مدد پیش بھی کر سکتا ہو پھر خانیہ میں جو حکم مذکور ہے یہ ہماری تنقید کے ساتھ اس صورت میں بھی بدرجہ اولٰی جاری ہوگا جب بجائے شوہر کے ، کوئی محرم یا اجنبی ہو ، جیسا کہ ظاہر ہے اھ" ۔ (ت) اقول: خانیہ میں مذکورہ حکم کے جاری ہونے کا یہ معنی ہے کہ مطلقاً جواز ہو اگرچہ عورت کا ہم راہی اترنے چڑھنے

میں اس کا معاون ہو تو یہاں اس کا اولیٰ ہونا ظاہر ہے۔ لیکن (یہاں صاحب حلیہ کی تنقید بھی بدرجہ اولیٰ جاری ہونے

1 منیة المصلی فرائض الصلوۃ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۲۵۳ 2 تعلیق المجلی مع المنیة فرائض الصلوۃ مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور (ملتقطاً) Page 423 of 756

Fatawa-e-Razvia Volume 3

Firstly, concerning the 'Mahram', how can the aforementioned restriction apply by way of priority? In the case of this restriction, the husband himself has the priority. Secondly, regarding a stranger (non-Mahram), the mentioned restriction cannot even apply, let alone be a priority, because there are many evils and difficulties in helping her mount and dismount. The text of 'Munyat al-Musalli' explicitly states that when a stranger is with a woman, it is permissible for her to pray on the mount; this is its explicit wording and literal meaning. And when a 'Mahram' is with the woman, praying on the mount is not permissible; this is its contrary meaning and implication. So act with understanding and steadfastness. (T)

(85) I say: Similarly, if dismounting or mounting would worsen an illness. These issues have been mentioned by the scholars regarding prayer, that if there is an inability to dismount, one should pray on the mount. Then regarding purity (tahara), it applies even more so. In 'Durr-ul-Mukhtar', under the text 'Prayer on a mount is permissible in case of excuse, not otherwise', it states: 'And among the excuses is a mount that cannot be ridden except with difficulty or with a helper.' (This is also an excuse, that one cannot mount the animal without hardship or without a helper. T)

In 'Radd al-Muhtar' it is stated: If the animal is unruly such that if one dismounts, it is not possible to remount without a helper, or if the rider is very old such that if he dismounts, he cannot remount and finds no one to help him, then it is permissible to pray on the mount. End quote. And we have previously stated with reference to 'Al-Mujtaba' that...

---

1. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter of Witr and Nawafil, Mujtabai Delhi, 1/98. Page 424 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3

पहला, 'महरम' के संबंध में, पूर्वोक्त प्रतिबंध प्राथमिकता के आधार पर कैसे लागू हो सकता है? इस प्रतिबंध के मामले में, पति स्वयं प्राथमिकता रखता है। दूसरा, अजनबी (गैर-महरम) के संबंध में, उक्त प्रतिबंध लागू भी नहीं हो सकता, प्राथमिकता होना तो दूर की बात है, क्योंकि उसे चढ़ाने और उतारने में बहुत सारी बुराइयाँ और कठिनाइयाँ हैं। 'मुनियतुल मुसल्ली' के पाठ में स्पष्ट है कि जब महिला के साथ कोई अजनबी हो, तो उसके लिए सवारी पर नमाज़ पढ़ना जायज़ है; यह उसका स्पष्ट कथन और प्रत्यक्ष अर्थ है। और जब महिला के साथ महरम हो, तो सवारी पर नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है; यह इसका विपरीत अर्थ और निहितार्थ है। तो समझ और दृढ़ता से काम लें। (त)

(85) मैं कहता हूँ: इसी तरह, अगर उतरने या चढ़ने से बीमारी बढ़ जाए। ये मसले उलमा-ए-किराम ने नमाज़ के बारे में ज़िक्र फरमाए हैं कि अगर उतरने से लाचारी हो तो सवारी पर पढ़े। फिर पाकी (तहारत) के बारे में तो यह बात और भी ज़्यादा लागू होती है। 'दुर्रे मुख़्तार' में मूल पाठ 'सवारी पर नमाज़ पढ़ना उज़्र (मजबूरी) की हालत में जायज़ है, बिना उज़्र के नहीं' के अंतर्गत फरमाया: 'और उज़्रों में से यह है कि जानवर ऐसा हो जिस पर बिना मशक्कत या बिना किसी मददगार के सवार न हुआ जा सके।' (यह भी उज़्र ही है कि जानवर पर मशक्कत या किसी मददगार के बिना सवार न हो सके। त)

'रद्दुल मुहतार' में है: अगर जानवर सरकश हो कि अगर उतर जाए तो बिना मददगार के उस पर चढ़ना मुमकिन न हो, या सवार बहुत बूढ़ा हो कि उतर जाए तो चढ़ न सके और न ही उसे कोई मददगार मिले, तो सवारी पर नमाज़ अदा करना जायज़ है। इल्तेहा (समाप्त)। और हम 'मुज्तबा' के हवाले से पहले बयान कर चुके हैं कि...

---

1. अद-दुर्रुल मुख़्तार, बाबुल वित्र वन-नवाफिल, मुज्तबाई दिल्ली, 1/98. पेज 424 / 756

اولاً ای اولویۃ (۱) فی اتیان التعقب فی المحرم بل الزوج ھو الاولی وثانیا لا (۲) تآتی للتعقب فی الاجنبی فضلا عن الاولویۃ فان ارکابہ وانزالہ ایاھا فیہ مافیہ وقد (۳) نصت مسألۃ المتن علی جواز صلاتھا علی الدابۃ اذا کان معھا اجنبی ھٰذا منطوقھا وعدم الجواز اذا کان معھا محرم مفھومھا وتثبت۔ (پر ہمیں کلام ہے) اولاً محرم سے متعلق تقیید مذکور بطریقِ اولٰی کیوں کر جاری ہو سکتی ہے اس تقیید کے معاملہ میں تو شوہر ہی اولٰی ہے ثانیاً اجنبی کے سلسلہ میں تو تقییدِ مذکور جاری بھی نہیں ہو سکتی اس کا اولٰی ہونا تو در کنار، اس لئے کہ اس کے چڑھانے اتارنے میں بہت خرابیاں دشواریاں ہیں متن (منیۃ المصلی) کے مسئلہ میں اس کی صراحت ہے کہ جب عورت کے ساتھ اجنبی ہو تو اس کیلئے سواری پر نماز پڑھنا جائز ہے، یہ اس کی صریح عبارت اور منطوق ہے۔ اور جب عورت کے ساتھ محرم ہو تو سواری پر نماز پڑھنا جائز نہیں یہ اس کا معنی مخالف اور مفہوم ہے تو فہم و ثبات سے کام لو۔ (ت)

(۸۵) اقول: یوں ہی اگر اترنے چڑھنے سے بیماری بڑھے۔ یہ مسائل علمائے کرام نے درباره نمازِ ذکر فرمائے کہ یوں اترنے سے عجز ہو تو سواری پر پڑھے تو درباره طہارت بدرجہ اولٰی درِ مختار میں زیرِ قول متن الصلوۃ علی الدابۃ تجوز فی حالۃ العذر لا فی غیرھا (سواری پر نماز ادا کرنا بحالتِ عذر جائز ہے بلا عذر نہیں۔ ت) فرمایا ومن (۴) العذر دابۃ لاترکب الابغناء او بمعین ۱ (یہ بھی عذر ہی ہے کہ جانور پر مشقت یا کسی مددگار کے بغیر سوار نہ ہو سکے۔ت)

ردالمختار میں ہے : لو کانت الدابۃ جموحاً لونزل لایمکنہ الرکوب الابمعین او کان شیخاً کبیراً لونزل لایمکنہ ان یرکب ولایجد من یعینہ تجوز الصلاۃ علی الدابۃ اھ وقد منا عن المجتبی ان اگر جانور سرکش ہو کہ اتر جائے تو بغیر مددگار کے اس پر چڑھنا ممکن نہ ہو یا سوار بہت بوڑھا ہو کہ اتر

جائے تو چڑھ نہ سکے نہ ہی اسے کوئی مددگار ملے تو سواری پر نماز ادا کرنا جائز ہے اھ اور ہم مجتبٰی کے حوالہ سے پہلے بیان کر چکے ہیں کہ ان کے

---

1 الدرالمختار باب الوتر والنوافل مجتبائی دہلی ۹۸/۱ Page 424 of 756

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Arabic Box - Left]: According to the most correct opinion, dismounting is obligatory if a stranger is found who would assist him. On this basis, there is no disagreement regarding the obligation to dismount for someone who finds an assistant who would obey him, provided he is not (1) a sick person for whom dismounting would increase his illness. In Al-Minya: As for a woman, if she does not have a mahram, her prayer on an animal is permissible if she is unable to dismount. 1 Ah.

[Urdu Box - Right]: According to the most correct opinion, dismounting is obligatory if a stranger is found who would assist him. Therefore, there is no disagreement on this basis that dismounting is obligatory for a person who finds such a helper who would obey him and who is not so sick that dismounting would worsen his illness. In Al-Minya, it is stated: "When a woman is without a mahram, it is permissible for her to pray on a mount if she does not have the strength to dismount." (T)

(86) I say: If there is a wound that will start bleeding if one dismounts, and the prayer cannot be performed with ritual purity (wudu), then one should not dismount and should pray with tayammum. This ruling has also been explained by scholars regarding prayer: if standing causes a wound to bleed, one should pray sitting. In Durr al-Mukhtar, it says: "Sitting may become mandatory, such as for someone whose wound bleeds when standing or who suffers from urinary incontinence (it is obligatory for him to pray sitting whose wound starts flowing due to standing or who starts leaking urine when standing. T)"

(87) Any act of worship—obligatory (Fardh), necessary (Wajib), or Sunnah—that would be missed if one were to perform ritual purification with water, and there is no substitute for it, then one can perform tayammum for it. However, this tayammum will only provide purity for that specific worship, not for others, because the permission was granted solely due to its necessity. Therefore, with this tayammum, no other worship that requires ritual purity will be permissible. There are many scenarios of such missed acts without a substitute; for example, the funeral prayer (Janaza) is in progress or about to start, and if one waits for wudu, all four takbirs will be over, even if the greeting (salam) remains, because the funeral prayer concludes with the takbirs; there is no place to join after them, even if the salam hasn't been said yet, as stated in Al-Durr, etc. (as it is in Durr al-Mukhtar etc. T) Or the time for Eid prayers will expire, or their appointed Imam will say the salam.

I say: When another appointed Imam is not found behind whom one can follow, as they said regarding a transgressor (Fasiq), he is not to be followed in the Friday prayer (Jumu'ah) as well, if there are multiple locations in the city, because it is possible to move to another, as stated in Al-Fath and others (like scholars...

---

1 Durr al-Mukhtar, Book of Witr and Nawafil, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/518. 2 Durr al-Mukhtar, Chapter: Description of Prayer, Mujtabai Delhi, 1/70. 3 Durr al-Mukhtar, Chapter: Tayammum, Mujtabai Delhi, 1/31. 4 Fath al-Qadir, Chapter: Imamate, Nuriya Razawiyya, Sukkur, 1/304. Page 425 of 756

फतावा रजविया जिल्द सोम (तीसरा)

[अरबी बॉक्स - बायां]: अधिक सही राय के अनुसार, उतरना अनिवार्य है यदि कोई अजनबी मिल जाए जो उसकी सहायता करे। इस आधार पर, उस व्यक्ति के लिए उतरने की अनिवार्यता में कोई मतभेद नहीं है जिसे ऐसा सहायक मिल जाए जो उसकी बात माने, बशर्ते वह (1) ऐसा बीमार न हो जिसके लिए उतरने से बीमारी बढ़ जाए। और 'अल-मिन्या' में है: महिला के लिए, यदि उसका कोई महरम न हो, तो सवारी पर नमाज़ पढ़ना जायज़ है यदि वह उतरने में असमर्थ हो। 1 अह।

[उर्दू बॉक्स - दायां]: अधिक सही राय यह है कि उतरना ज़रूरी है अगर ऐसा कोई अजनबी मिल जाए जो उसकी बात मान ले। तो इस बुनियाद पर इसमें कोई मतभेद नहीं कि उस शख्स के लिए उतरना लाज़िम है जिसे कोई ऐसा मददगार मिल जाए जो उसकी बात मान ले और वह ऐसा बीमार न हो कि उतरने से मर्ज़ बढ़ जाए। 'मिन्या' में है कि: "औरत के साथ जब महरम न हो तो उसके लिए सवारी पर नमाज़ पढ़ना जायज़ है जबकि उतरने पर कुदरत न हो।" (त)

(८६) अकुल: अगर ज़ख्म ऐसा है कि उतरने से बहने लगेगा और नमाज़ पाकी (वुज़ू) के साथ मुमकिन न होगी, तो न उतरे और तयम्मुम करके पढ़े। यह मसला भी उलमा ने नमाज़ के बारे में बयान फरमाया है कि अगर खड़े होने से ज़ख्म बहने लगे तो बैठकर पढ़े। 'दुर्रे मुख्तार' में है: "बैठकर नमाज़ पढ़ना वाजिब है उस शख़्स के लिए जिसका ज़ख्म खड़े होने से बहने लगता हो या जिसे खड़े होने से पेशाब आने लगता हो।" (त)

(८७) हर इबादत—फ़र्ज़, वाजिब या सुन्नत—जिसे अगर पानी से पाकी हासिल करके अदा किया जाए तो वह छूट (फौत) हो जाएगी और उसका कोई बदल (कज़ा) न होगा, तो उसके लिए तयम्मुम किया जा सकता है। मगर यह तयम्मुम सिर्फ उसी इबादत के लिए होगा न कि किसी और के लिए, क्योंकि उसी की ज़रूरत की वजह से इजाज़त मिली थी। तो इस तयम्मुम से कोई और इबादत जायज़ न होगी जिसके लिए पाकी शर्त है। इस 'फौत बिला बदल' की कई सूरतें हैं, मसलन: नमाज़-ए-जनाज़ा कायम है या कायम होने वाली है, उसके वुज़ू का इंतज़ार नहीं किया जाएगा जब तक वुज़ू करे चारों तकबीरें हो जाएँगी, अगरचे सलाम फेरना बाकी रहे क्योंकि जनाज़ा की नमाज़ तकबीरों पर खत्म हो जाती है, उनके बाद शामिल होने की जगह नहीं रहती, अगरचे अभी सलाम न हुआ हो जैसा कि 'दुर्रे मुख्तार' वगैरह में है। (जैसा कि दुर्रे मुख्तार वगैरह में है। त) या ईदैन का वक्त निकल जाएगा या उनका मुअय्यन इमाम सलाम फेर देगा।

अकुल: जबकि किसी दूसरे मुअय्यन इमाम के पीछे नमाज़ न मिल सके, जैसा कि उलमा ने फासिक के बारे में कहा है कि जुमा में भी उसकी पैरवी न की जाए अगर शहर में कई जगह जुमा होता हो, क्योंकि दूसरी जगह मुंतकिल होना मुमकिन है, जैसा कि 'फ़तहुल् कदीर' वगैरह में है (जैसे उलमा...

---

1 रद-उल-मुख्तार, बाब-अल-वित्र वन-नवाफिल, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/518. 2 अद-दुर-अल-मुख्तार, बाब: सिफ़त-उस-सलात, मुजतबाई दिल्ली, 1/70. 3 अद-दुर-अल-मुख्तार, बाब-अत-तयम्मुम, मुजतबाई दिल्ली, 1/31. 4 फ़त-हुल-क़दीर, बाब-अल-इमामत, नूरिया रजविया, सुक्कुर, 1/304. पेज 425 of 756

[الاصح عنده لزوم النزول لو وجد اجنبياً يطيعه فعلى هذا لا خلاف في لزوم النزول لمن وجد معيناً يطيعه و لم يكن (۱) مريضاً يلحقه بنزوله زيادة مرض وفي المنية المرأة اذا لم يكن لها محرم تجوز صلاتها على الدابة اذا لم تقدر على النزول ۱ھ]

[نزدیک اصح یہ ہے کہ اترنا لازم ہے اگر ایسا کوئی اجنبی مل جائے جو اس کی بات مان لے۔ تو اس بنیاد پر اس میں کوئی اختلاف نہیں کہ اس شخص کیلئے اترنا لازم ہے جسے کوئی ایسا مددگار مل جائے جو اس کی بات مان لے اور ایسا بیمار نہ ہو کہ اترنے سے مرض بڑھ جائے اور منیہ میں ہے کہ: "عورت کے ساتھ جب محرم نہ ہو تو اس کیلئے سواری پر نماز پڑھنا جائز ہے جبکہ اترنے پر قدرت نہ ہوا۔ (ت)

(۸۶) اقول: اگر زخم ہے کہ اترنے سے جاری ہو جائے گا اور نماز طہارت سے نہ مل سکے گی نہ اترے اور تیمم سے پڑھے یہ مسئلہ بھی علماء نے نماز میں افادہ فرمایا ہے کہ اگر کھڑے ہونے سے زخم جاری ہوتا ہو بیٹھ کر پڑھے دُر مختار میں ہے قد یتحتم القعود کمن یسیل جرحہ اذا قام او یسلس بولہ (اس کیلئے بیٹھ کر نماز پڑھنا واجب ہے جس کا زخم قیام سے بہنے لگتا ہو یا جسے کھڑے ہونے سے پیشاب آنے لگتا ہو۔ت)

(۸۷) ہر عبادت فرض یا واجب یا سنت کہ پانی سے طہارت کرے تو فوت ہو جائے گی اور اس کا عوض کچھ نہ ہوگا اس کیلئے تیمم کر سکتا ہے مگر یہ تیمم صرف اسی عبادت کیلئے طہارت ہوگا نہ اور کیلئے کہ اسی کی ضرورت سے اجازت ہوئی تھی تو اس تیمم سے کوئی اور عبادت کہ بے طہارت جائز نہ ہو جائز نہ ہوگی اس فوت بلا عوض کی بہت صورتیں ہیں مثلاً نماز جنازہ قائم ہے

یا قائم ہونے کو ہے اس کے وضو کا انتظار نہ ہو گا جب تک وضو کرے چاروں تکبیریں ہو چکیں گی اگر چہ سلام پھیرنا باقی رہے کہ نماز جنازہ تکبیروں پر ختم ہو جاتی ہے ان کے بعد ملنے کا محل نہیں اگر چہ ابھی سلام نہ ہوا ہو کما فی الدر وغیرہ (جیسا کہ در مختار وغیرہ میں ہے۔ت) یا عیدین کا وقت نکل جائے گا یا ان کا امام معین سلام پھیر دے گا۔

اقول: جبکہ دوسرے امام معین کے پیچھے نہ ملیں کما قالوا في الفاسق لا یقتدی به فی الجمعة ایضا اذا تعددت في المصر لانه بسبیل من التحول کما فی الفتح وغیرہ (جیسے علما...

---

1 ردالمحتار باب الوتر والنوافل مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱ / ۵۱۸ 2 الدر المختار باب صفة الصلوة مجتبائی دہلی ۱ / ۷۰ 3 الدر المختار باب التیمم مجتبائی دہلی ۱ / ۳۱ 4 فتح القدیر باب الامامة نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۳۰۴ Page 425 of 756

Fatawa-e-Razviya, Volume 3

He (the author) stated that even in Friday (Jumu'ah) prayers, a transgressor (fasiq) should not be followed if Jumu'ah is held in multiple places in the city, because there is a way to leave such an imam and go elsewhere, as mentioned in Fath al-Qadir etc. (t) This is because the Eid prayers (1) like Jumu'ah cannot be performed behind every imam except the Sultan of Islam or his deputy or one authorized by him; and if they are not present, out of necessity, whoever Muslims appoint as the Imam of Jumu'ah [can lead]. Or Sun (2) eclipse [prayer]. 'The funeral prayer and the two Eids are among the matters of the core texts (mutun), and the eclipse prayer is added, like the upcoming regular optional prayers (rawatib),' discussed in 'al-Hilyah' and affirmed in al-Bahr, al-Nahr, al-Durr, and their commentaries (the issue of funeral prayer and Eids is mentioned in the core texts, and the issue of eclipse prayer, similar to the upcoming issue regarding Sunan al-Rawatib, was extensively discussed in 'al-Hilyah', which was maintained in Bahr al-Ra'iq, Nahr al-Fa'iq, Durr al-Mukhtar, and its commentaries. (t))

I say: And if the eclipse remains and the congregation has already taken place, tayammum is not permitted because although in the eclipse (prayer) (2) too, not everyone can lead - only the specific Imam of Jumu'ah can be its imam, as in al-Durr (2) etc. (as it is in Durr al-Mukhtar etc. (t)) - however, in this (3) congregation is not necessary, it can be done individually, nor is repetition prohibited like in the funeral (4) prayer.

[Table] Left Column (Arabic excerpt): ...due to their clarification that it is permissible for everyone to pray it on their own in their house, as in Sharh al-Tahawi, and this was followed in al-Durr; or in their mosques according to what is in al-Zahiriyyah, and attributed in al-Muhit to Shams al-A'immah (4) from the Mufti of Damascus, Isma'il. Indeed, congregation is recommended when the Imam of Jumu'ah is present (5), as in al-Durr.

Right Column (Urdu translation/explanation): Because the scholars have clarified that the eclipse prayer can be performed by each person individually in their home. As it is in Sharh al-Tahawi, and the author of Durr al-Mukhtar also followed this path; or people can also perform it in their respective mosques as it is in al-Zahiriyyah; and in al-Muhit it is stated with reference to Shams al-A'immah. Shami from the Mufti of Damascus, Sheikh Isma'il. Yes, when the Imam of Jumu'ah is present, the congregation is recommended. As it is in Durr al-Mukhtar. (t)

[Footnotes] 1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/178 2. Al-Durr al-Mukhtar, Prayer of Eclipse, published by Mujtabai, Delhi, 1/171 3. Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Prayer of Eclipse, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/623 4. Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Prayer of Eclipse, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/623 5. Al-Durr al-Mukhtar, Prayer of Eclipse, published by Mujtabai, Delhi, 1/171

फ़तवा-ए-रज़विया, जिल्द सोम (तीसरी)

उन्होंने फ़रमाया है कि जुमा में भी फ़ासिक़ की इक़्तिदा न की जाएगी अगर शहर में मुतअद्दद (अनेक) जगह जुमा होता हो क्योंकि ऐसे इमाम को छोड़ कर दूसरी जगह जाने की राह मौजूद है, जैसा कि फ़तह उल-क़दीर वगैरह में है। (त) यह इसलिए कि ईदैन (1) की नमाज़ मिस्ल-ए-जुमा हर इमाम के पीछे नहीं हो सकती सिवाए सुल्तान-ए-इस्लाम या उसके नायब या माज़ून (अनुमत) के और वे न हों तो बज़रूरत जिसे मुसलमान इमाम-ए-जुमा मुक़र्रर कर लें या सूरज (4) गहन हो चुकेगा। 'नमाज़-ए-जनाज़ा और ईदैन का मसला तो मुतून में ज़िक्र है और कुसूफ़ (सूर्य ग्रहण) का मसला यूँ ही सुनन-ए-रवातिब से मुतअल्लिक़ आने वाला मसला 'हिलिया' में बतौर-ए-बहस ज़्यादा किया जिसे बहर-ए-राइक़, नहर-ए-फ़ाइक़, दुर्र-ए-मुख्तार और इसके हवाशी (हाशियों) में बरक़रार रखा गया। (त)'

अक़ूल (मैं कहता हूँ): और अगर कुसूफ़ बाक़ी रहे और जमाअत हो चुकेगी तो तयम्मुम की इजाज़त नहीं कि अगरचे कुसूफ़ (2) में भी हर शख़्स इमामत नहीं कर सकता ख़ास इमाम-ए-जुमा ही उसका इमाम हो सकता है कमा फ़िल दुर्र (2) वगैरह (जैसा कि दुर्र-ए-मुख्तार वगैरह में है। (त)) मगर इसमें (3) जमाअत ज़रूरी नहीं तन्हा भी हो सकती है, न मिस्ल-ए-जनाज़ा (4) तकरार ममनूअ (प्रतिबंधित) है,

[तालिका] बायाँ कॉलम (अरबी अंश): ...क्योंकि उन्होंने वज़ाहत की है कि इसे हर शख़्स के लिए अपने घर में अकेले पढ़ना जायज़ है, जैसा कि शरह अत-तहावी में है, और इसी पर दुर्र में अमल किया गया है; या उनकी मस्जिदों में जो ज़हीरिय्या में है उसके अनुसार, और इसे अल-मुहीत में शम्स अल-अइम्मा (4) ने मुफ़्ती-ए-दमिश्क़ इस्माइल के हवाले से बयान किया है। निस्संदेह, जमाअत मुस्तहब (पसंदीदा) है जब जुमा का इमाम मौजूद हो (5), जैसा कि दुर्र में है।

दायाँ कॉलम (उर्दू अनुवाद/व्याख्या): इसलिए कि उलमा ने तसरीह (वज़ाहत) फ़रमाई है कि नमाज़-ए-कुसूफ़ हर शख़्स अपने घर में इन्फ़िरादी (व्यक्तिगत) तौर पर अदा कर सकता है। जैसा कि शरह तहावी में है, इस राह पर साहब-ए-दुर्र-ए-मुख्तार भी गए हैं या लोग अपनी अपनी मस्जिदों में भी अदा कर सकते हैं जैसा कि ज़हीरिय्या में है और मुहीत में इसे शम्स उल-अइम्मा के हवाले से बयान किया गया है। शामी अज़ मुफ़्ती-ए-दमिश्क़ शैख़ इस्माईल। हाँ जब इमाम-ए-जुमा मौजूद हो तो जमाअत मुस्तहब है। जैसा कि दुर्र-ए-मुख्तार में है। (त)

[पाद लेख] 1. अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, मतबुआ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/178 2. अल-दुर्र अल-मुख्तार, सलात अल-कुसूफ़, मतबुआ मुज्तबाई दिल्ली, 1/171 3. अल-दुर्र अल-मुख्तार माअश शामी, सलात अल-कुसूफ़, मतबुआ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/623 4. अल-दुर्र अल-मुख्तार माअश शामी, सलात अल-कुसूफ़, मतबुआ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/623 5. अल-दुर्र अल-मुख्तार, सलात अल-कुसूफ़, मतबुआ मुज्तबाई दिल्ली, 1/171

نے فرمایا ہے کہ جمعہ میں بھی فاسق کی اقتداء نہ کی جائے گی اگر شہر میں متعدد جگہ جمعہ ہوتا ہو کیوں کہ ایسے امام کو چھوڑ کر دوسری جگہ جانے کی راہ موجود ہے، جیسا کہ فتح القدیر وغیرہ میں ہے۔ ت) یہ اس لئے کہ عیدین (۱) کی نماز کی نماز مثلِ جمعہ ہر امام کے پیچھے نہیں ہو سکتی سوا سلطانِ اسلام یا اس کے نائب یا ماذون کے، اور وہ نہ ہوں تو بضرورت جسے مسلمان امامِ جمعہ مقرر کر لیں یا سورج (۴) گہن ہو چکے گا صلاۃ الجنازۃ والعیدین من مسائل المتون و زاد الکسوف کالرواتب الآتیہ 'فی الحلیہ بحثا واقرہ فی البحر والنہر والدر وحواشیہ (نماز جنازہ اور عیدین کا مسئلہ تو متون میں ذکر ہے اور کسوف کا مسئلہ یوں ہی سنن رواتب سے متعلق آنے والا مسئلہ حلیہ میں بطور بحث زیادہ کیا جسے بحر رائق ، نہر فائق ، دُر مختار اور اس کے حواشی میں برقرار رکھا گیا۔ ت)

اقول: اور اگر کسوف باقی رہے اور جماعت ہو چکے گی تو تیمّم کی اجازت نہیں کہ اگرچہ کسوف ۲ میں بھی ہر شخص امامت نہیں کر سکتا خاص امامِ جمعہ ہی اس کا امام ہو سکتا ہے کما فی الدر ۲ وغیرہ (جیسا کہ دُر مختار وغیرہ میں ہے۔ت) مگر اس ۳ میں جماعت ضروری نہیں تنہا بھی ہو سکتی ہے نہ مثلِ ۴ جنازہ تکرار ممنوع ہے،

[جدول] بایاں کالم: لتصریحہم بجواز ان یصلیھا کل بحیالہ فی بیتہ کما فی شرح الطحاوی ومشی علیہ فی الدر او فی مساجد ھم علی مانی الظہیریۃ وعزاہ فی المحیط الی شمس الائمۃ ۴ش عن مفتی دمشق اسمعیل نعم الجماعۃ مستحبۃ اذا حضر امام الجمعۃ ۵کما فی الدر۔

دایاں کالم: اس لئے کہ علماء نے تصریح فرمائی ہے کہ نماز کسوف ہر شخص اپنے گھر میں انفرادی طور پر ادا کر سکتا ہے۔ جیسا کہ شرح طحاوی میں ہے اس راہ پر صاحبِ دُر مختار بھی گئے ہیں یا لوگ اپنی اپنی مسجدوں میں بھی ادا کر سکتے ہیں جیسا کہ ظہیر یہ میں ہے اور محیط میں اسے شمس الائمہ کے حوالہ سے بیان کیا ہے۔ شامی از مفتی دمشق شیخ اسمعیل۔ ہاں جب امامِ جمعہ موجود ہو تو جماعت مستحب ہے۔ جیسا کہ دُر مختار میں ہے۔ (ت)

[حواشی] 1 الدرالمختار باب التیمم مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۷۸ 2 الدرالمختار صلوۃ الکسوف مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۷۱۱ 3 الدر المختار مع الشامی صلوۃ الکسوف مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۶۲۳ 4 الدر المختار مع الشامی صلوۃ الکسوف مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۶۲۳ 5 الدر المختار صلوۃ الکسوف مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۷۱۱

Fatawa Razawiya Volume 3

So its missing will be like this: if the eclipse ends, in Radd al-Muhtar it says, "If it clears up, do not pray after it" (1) (If the sun becomes bright, then the eclipse prayer will not be offered after it. - Trans.). Or if the wudu is lost after the obligatory prayers of Dhuhr, Jumu'ah, Maghrib, and Isha, and now if he performs wudu, the sunnah prayers following them will not be available, as the time will expire. I say: Similarly, if one could not offer the first sunnahs of Dhuhr or Jumu'ah due to the congregational prayer being established, and after the obligatory prayer or after the subsequent sunnahs, the wudu is lost, and now if he performs wudu, the time for Asr will arrive, because even though these sunnahs were missed from their designated time, they are made up within the time, and there is no making up (qada) after the time has passed; therefore, their makeup is missed, not replaced by anything else (2). (Because even though these sunnahs were missed from their appointed time, their makeup can only be done within the time, not after the time; so after Dhuhr and Jumu'ah, if their makeup is missed, then there is no substitute for it. - Trans.). Or at the time of Fajr, one ordered water for wudu and someone promised to provide it; if he waits for it, performs wudu, and only gets to pray the obligatory prayer, such that either there's no time left for sunnahs, or if he prays sunnahs, he misses the congregation, so he must leave the four sunnahs; in such a case, until the water arrives, he should perform tayammum and pray the sunnahs, then perform wudu and pray the obligatory prayer as mentioned in 'Sh' (Shami) etc. (As is in Shami etc. - Trans.). Or (12) the Fajr prayer was not performed, and now there isn't enough time until noon (Zawal) to perform wudu and pray two rak'ats, so perform tayammum and pray the sunnahs, as they cannot be prayed after noon, then perform wudu and pray the obligatory Fajr prayer when Dhuhr time starts. Shami mentioned this from his teacher, saying: and (at-Tahthawi) mentioned two other forms for it, end (He [Shami] mentioned it with reference to his teacher and said that Tahthawi mentioned two more forms of it. - Trans.).

I say: Rather, the first of them is this which he narrated from his teacher and mentioned another and rejected it, and it is worthy of rejection (Rather, the better form among these two is the one Shami narrated from his teacher, and he mentioned the second form and rejected it, and it is worthy of rejection. - Trans.). Or (13) one is without wudu, especially in a state of major ritual impurity (junub), and someone greeted him (salam) or (14) someone came in front and he has to greet them himself, and 'Salam' is a name of Allah Almighty, he didn't want to take it

without purity, and if he performs wudu, the 'salam' is missed because in the response (3) so much delay is not permitted, and greeting is also at the start of meeting, not after a long time. Therefore, it is permitted to perform tayammum and give the answer or greet. The issue of the response is proven from the holy action of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him).

1. Radd al-Muhtar with Ash-Shami, Salat al-Kusuf, Printed at Mustafa al-Babi, Egypt 1/622
2. Radd al-Muhtar, Bab al-Tayammum, Printed at Mustafa al-Babi, Egypt 1/178
3. Radd al-Muhtar, Bab al-Tayammum, Printed at Mustafa al-Babi, Egypt 1/178
4. Radd al-Muhtar, Bab al-Tayammum, Printed at Mustafa al-Babi, Egypt 1/178

तो इसका छूटना ऐसे ही होगा कि ग्रहण समाप्त हो जाए, रद-अल-मुह्तार में है, "अगर उजाला हो जाए तो उसके बाद नमाज़ न पढ़ी जाए" (1) (अगर सूरज साफ़ हो गया तो उसके बाद नमाज़-ए-कुसूफ़ नहीं पढ़ी जाएगी। - अनुवाद)। या ज़ुहर, जुमा, मग्रिब और इशा के फ़र्ज़ों के बाद वज़ू जाता रहा और अब वज़ू करता है तो बाद की सुन्नतें नहीं मिलेंगी, समय निकल जाएगा। मैं कहता हूँ: इसी तरह अगर ज़ुहर या जुमा की पहली सुन्नतें जमाअत खड़ी होने के कारण नहीं पढ़ सका और फ़र्ज़ के बाद या बाद वाली सुन्नतों के बाद वज़ू जाता रहा और अब वज़ू करे तो अस्र का समय आ जाएगा, क्योंकि ये सुन्नतें हालांकि अपने निश्चित समय से ही छूट गई हैं, मगर उनकी कज़ा समय के अंदर ही हो सकती है, समय निकलने के बाद कोई कज़ा नहीं है; इसलिए उनकी कज़ा छूट जाती है, उसका कोई विकल्प नहीं (2)। (क्योंकि ये सुन्नतें हालांकि अपने मुकर्रर वक्त से छूट गईं मगर उनकी कज़ा वक्त के अंदर ही हो सकती है बाद वक्त कज़ा नहीं; तो बाद ज़ुहर व जुमा अगर उनकी कज़ा फ़ौत हो जाती है तो फिर उसका कोई बदल नहीं। - अनुवाद)। या फज्र के समय वज़ू के लिए पानी मंगवाया, किसी ने देने का वादा किया है, उसका इंतज़ार करे तो वज़ू करके सिर्फ फ़र्ज़ पा सकेगा, इस तरह कि या तो सुन्नतों के लायक समय ही नहीं रहेगा या सुन्नतें पढ़े तो जमाअत छूट जाएगी, तो चार सुन्नतें छोड़नी होंगी; तो जब तक पानी आए, तयम्मुम करके सुन्नतें पढ़ ले फिर वज़ू करके फ़र्ज़ पढ़े जैसा कि 'श' (शामी) आदि में है। (जैसा कि शामी वगैरा में है। - अनुवाद)। या (12) फज्र की नमाज़ नहीं हुई थी और अब ज़वाल (दोपहर) तक इतना समय नहीं कि वज़ू करके दो रकअतें पढ़ सके तो तयम्मुम करके सुन्नतें पढ़ ले क्योंकि ज़वाल के बाद नहीं हो सकेंगी, फिर वज़ू करके ज़ुहर का समय आने पर फज्र के फ़र्ज़ पढ़े। शामी ने इसे अपने उस्ताद के हवाले से ज़िक्र किया और कहा: "और (अत-तहतवी) ने इसकी दो और सूरतें ज़िक्र की हैं", समाप्त (इसे शामी ने अपने शैख़ के हवाले से ज़िक्र किया और फ़रमाया कि तहतावी ने इसकी दो सूरतें और ज़िक्र की हैं। - अनुवाद)।

मैं कहता हूँ: बल्कि उनमें से पहली यही है जिसे उसने अपने शैख़ से नक़ल किया और दूसरी ज़िक्र करके उसे रद्द कर दिया और वह रद्द के ही लायक है (बल्कि इन दोनों से बेहतर यही सूरत है जो शामी ने अपने शैख़ से नक़ल फ़रमाई और दूसरी सूरत ज़िक्र करके उसे रद्द कर दिया और वह रद्द ही के लायक है। - अनुवाद)। या (13) बे-वज़ू है ख़ासकर जुनुब (नापाक) है और किसी ने सलाम किया या (14) कोई सामने आया और खुद उसे सलाम करना है और सलाम अल्लाह तआला का नाम है, बिना पाकी के लेना न चाहा और वज़ू करे तो सलाम फ़ौत होता है क्योंकि जवाब (3) में इतनी देर

की इजाज़त नहीं और सलाम भी मिलने की शुरुआत में है न कि देर के बाद। लिहाज़ा इजाज़त है कि तयम्मुम करके जवाब दे या सलाम करे। जवाब का मसला स्वयं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पवित्र कृत्य से साबित है कि...

1. रद-अल-मुह्तार मअ अश-शामी, सलातुल कुसूफ़, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/622
2. रद-अल-मुह्तार, बाब-अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/178
3. रद-अल-मुह्तार, बाब-अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/178
4. रद-अल-मुह्तार, बाब-अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/178

تو اس کا فوت ' یوں ہی ہوگا کہ گہن چھوٹ جائے، ردالمحتار میں ہے لو انجلت لم تصل بعدہ ۱ (اگر سورج روشن ہو گیا تو اس کے بعد نماز کسوف نہ پڑھی جائے گی۔ ت) یا ظہر ۳ وجمعہ ۴ ومغرب ۵ وعشاء کے فرضوں کے بعد وضو جاتا رہا اور اب وضو کرتا ہے تو بعد کی سنتیں نہ ملیں گی وقت نکل جائے گا۔ اقول: یونہی ظہر یا جمعہ کی پہلی سنتیں اگر قیام جماعت کے سبب نہ پڑھ سکا اور بعد فرض یا بعد سنّتِ بعدیہ وضو جاتا رہا اور اب وضو کرے تو وقت عصر آ جائے گا لانھا وان فاتت عن وقتھا فانھا تقضی فی الوقت ثم لا قضاء فقضاؤھا یفوت لا الی بدل ۲ (اس لئے کہ یہ سنتیں اگرچہ اپنے مقررہ وقت سے ہی فوت ہوئیں مگر ان کی قضا وقت کے اندر ہی ہو سکتی ہے بعد وقت قضا نہیں تو بعد ظہر وجمعہ اگر ان کی قضا فوت ہو جاتی ہے تو پھر اس کا کوئی بدل نہیں۔ ت) یا صبح کے وقت پانی وضو کیلئے منگوایا کسی نے دینے کا وعدہ کیا ہے اس کا انتظار کرے تو وضو کرکے صرف فرض پائے گا یوں کہ یا تو سنتوں کے قابل وقت ہی نہ رہے گا یا سنتیں پڑھے تو جماعت فوت ہونا چار سنتیں چھوڑنی ہوں گی تو جب تک پانی آئے تیمم کرکے سنتیں پڑھ لے پھر وضو کرکے فرض کما فی ش وغیرہ (جیسا کہ شامی وغیرہ میں ہے۔ ت) یا ۱۲ صبح کی نماز نہ ہوئی تھی اور اب زوال تک اتنا وقت نہیں کہ وضو کرکے دو رکعتیں پڑھ سکیں تو تیمم کرکے سنتیں پڑھ لے کہ بعد زوال نہ ہو سکیں گی پھر وضو کرکے وقت ظہر آنے پر صبح کے فرض پڑھے ذکرہ ش عن شیخہ قال وذکر لھا ط صورتین اخریین اھ (اسے شامی نے اپنے شیخ کے حوالہ سے ذکر کیا اور فرمایا کہ طحطاوی نے اس کی دو صورتیں اور ذکر کی ہیں۔ ت)

اقول: بل اولھما ھي ھذہ التی اثرھا عن شیخہ و ذکر اخری وردھا و ھی حقیقۃ بالرد (بلکہ ان دونوں سے بہتر یہی صورت ہے جو شامی نے اپنے شیخ سے نقل فرمائی اور دوسری صورت ذکر کر

کے اسے رد کردیا اور وہ رد ہی کے لائق ہے۔ ت) یا ۱۳ بے وضو خصوصاً جنب ہے اور کسی نے سلام کیا یا ۱۴ کوئی سامنے آیا اور خود اسے سلام کرنا ہے اور سلام نام الٰہی عزوجل ہے بے طہارت لینا نہ چاہا اور وضو کرے تو سلام فوت ہوتا ہے کہ جواب ۳ میں اتنی دیر کی اجازت نہیں اور سلام بھی ابتدائے لقاء پر ہے نہ بعد دیر لہذا اجازت ہے کہ تیمم کرکے جواب دے یا سلام کرے مسئلہ جواب خود فعل اقدس حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے ثابت کہ

1. رد المحتار مع الشامي صلوۃ الکسوف مطبوعہ مصطفی البانی مصر ۱ / ۶۲۲
2. رد المحتار باب التیمم مطبوعہ مصطفی البانی مصر ۱ / ۱۷۸
3. رد المحتار باب التیمم مطبوعہ مصطفی البانی مصر ۱ / ۱۷۸
4. رد المحتار باب التیمم مطبوعہ مصطفی البانی مصر ۱ / ۱۷۸

Fatawa Ridawiyya Volume 3

A person passed by and offered Salam (greeting) to the Noble Prophet (may Allah's blessings and peace be upon him). The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) did not respond until he was almost past the street. Then the Prophet performed Tayammum (dry ablution) and responded to the greeting, saying: "Indeed, nothing prevented me from returning the greeting to you except that I was not in a state of purity (Wudu)." ^1 This was narrated by Abu Dawood from Nafi', from Ibn Umar (may Allah be pleased with them). The researcher Al-Halabi stated in Al-Hilya: "Abu Dawood remained silent on it, so it is a proof." ^2 (Narrated by Abu Dawood via Nafi' from Hazrat Ibn Umar. Investigator Halabi said in Hilya that Abu Dawood's silence on it makes it an argument. - Translators' note). And analogizing the initiation of Salam to this is an addition by the noble Imams. It is stated in Al-Bahr: "The correct position in the school (Madhhab) is that Tayammum for Salam is valid." ^3

Note: Allama Sayyid Tahtawi, and following him, Allama Sayyid Shami, added two more things: if one performs Wudu, the lunar eclipse will have ended, or the time for the Duha (forenoon) prayer (Dahwah al-Kubra) will pass; so one can perform these two with Tayammum. It was in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic Text	**Urdu Translation**
He said in Al-Durr: It is permissible for Kusoof (solar eclipse). Tahtawi ^4 said: His intention is what includes Khusoof (lunar eclipse). Shami quoted and affirmed it, and said in his commentary on Al-Maraqi: Halabi derived from this the permissibility of Tayammum for Kusoof, i.e., and Khusoof. ^5 He said there, Shami: It is apparent that the recommendation is likewise due to its passing.	Tayammum is permissible for the solar eclipse prayer. Upon this, Tahtawi said that by this, his intention is that which also includes the lunar eclipse. Shami quoted it and maintained it. And Tahtawi wrote in the commentary of Maraqi al-Falah that from this same source, Halabi has derived the permissibility of Tayammum for solar eclipse, meaning also for lunar eclipse. And then Allama Shami has said that what is apparent is that it is recommended [for fear of missing it].

Footnotes: 1. Sunan Abi Dawood, Chapter on Tayammum in residence near the latrine, printed by Mujtabai, Lahore, 1/74. 2. Hilya. 3. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/150. 4. Tahtawi 'ala al-Durr, Chapter on

Tayammum, printed in Beirut, 1/129. 5. Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah, Chapter on Tayammum, printed in Azhariyya, Egypt, p. 68.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

एक साहब गुज़रे, उन्होंने हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सलाम किया। हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब न दिया यहाँ तक कि करीब था कि वो गली से गुज़र जाएँ। हुज़ूर ने तयम्मुम फरमा कर जवाब दिया और इरशाद फरमाया: "इन्नहू लम यमनअनी अन अरुद्द अलैकुस सलाम इल्ला अन्नी लम अकुन अला तुह्रिन" ^1 (मुझे आपको सलाम का जवाब देने से किसी चीज़ ने नहीं रोका सिवाय इसके कि मैं पाकी (वुज़ू) की हालत में न था)। इसे अबू दाऊद ने नाफ़ेअ के ज़रिए इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है। मुहक़्क़िक ह़लबी ने 'ह़िलिया' में फरमाया कि अबू दाऊद ने इस पर सुकूत (खामोशी) अख्तियार किया है, इसलिए यह दलील है। ^2 (इसे अबू दाऊद ने नाफ़ेअ के माध्यम से हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है। मुहक़्क़िक ह़लबी ने ह़िलिया में कहा है कि अबू दाऊद ने इस पर मौन धारण किया है, इसलिए यह एक प्रमाण है। - अनु.) और सलाम की पहल को भी इस पर क़ियास (अनुमान) करना अइम्मा-ए-किराम का इज़ाफ़ा है। 'बहर' में है: "अल-मज़हब अन्नल तयम्मुम लिस-सलाम सहीह़" ^3 (मज़हब यह है कि सलाम के लिए तयम्मुम सही है)।

नोट: अल्लामा सैय्यद तह़तावी, और उनके अनुसरण में अल्लामा सैय्यद शामी ने दो चीज़ें और जोड़ी हैं: अगर कोई वुज़ू करता है तो चाँद ग्रहण खत्म हो जाएगा या चश्त की नमाज़ का वक़्त (दह़वा-ए-कुबरा) गुज़र जाएगा; तो वह इन दोनों को तयम्मुम के साथ अदा कर ले। 'दुर्रे मुख्तार' में था:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
दुर्र में कहा गया है कि यह कुसूफ़ (सूर्य ग्रहण) के लिए जायज़ है। तह़तावी ^4 ने कहा: उनका इरादा वह है जो ख़ुसूफ़ (चंद्र ग्रहण) को भी शामिल करता है। शामी ने इसे उद्धृत किया और इसकी पुष्टि की, और अल-मराक़ी के अपने हाशिए (व्याख्या) में कहा: ह़लबी ने इससे कुसूफ़, यानी और ख़ुसूफ़ के लिए तयम्मुम की अनुमति प्राप्त की है। ^5 फिर शामी ने वहाँ कहा: ज़ाहिर यह है कि इसके छूट	सूर्य ग्रहण की नमाज़ के लिए तयम्मुम जायज़ है। इस पर तह़तावी ने कहा कि इससे उनका तात्पर्य वह है जिसमें चंद्र ग्रहण भी शामिल है। शामी ने इसे उद्धृत करके बरकरार रखा। और तह़तावी ने हाशियह मराक़ी अल-फलाह़ में लिखा है कि इसी से ह़लबी ने सूर्य ग्रहण के लिए, यानी चंद्र ग्रहण के लिए भी तयम्मुम के जायज़ होने का निष्कर्ष निकाला है। और फिर अल्लामा

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
जाने के डर से यह मुस्तह़ब (पसंदीदा) भी वैसा ही है।	शामी ने फरमाया है कि ज़ाहिर यह है कि यह मुस्तह़ब है।

पाद टिप्पणियाँ: 1. सुनन अबी दाऊद, बाबुत तयम्मुम फिल ह़ज़र इंदल खला, मुज्तबाई लाहौर, 1/74 2. ह़िलिया 3. अल-बहरुल राइक, बाबुत तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/150 4. तह़तावी अलद दुर्र, बाबुत तयम्मुम, बेरुत, 1/129 5. तह़तावी अला मराक़िल फलाह़, बाबुत तयम्मुम, अज़हरिया मिस्र, पृ. 68

ایک صاحب گزرے حضور انور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو سلام کیا حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے جواب نہ دیا یہاں تک کہ قریب ہوا وہ گلی سے گزر جائیں حضور نے تیمم فرما کر جواب دیا اور ارشاد فرمایا انہ لم یمنعنی ان ارد علیك السلام الا انی لم اکن علی طھر ۱؎ ہم کو جواب دینے سے مانع نہ ہوا مگر یہ کہ اس وقت وضو نہ تھا رواہ ابو داؤد عن نافع عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنھما قال المحقق الحلبی فی الحلیۃ سکت علیہ ابوداؤد فھو حجۃ ۲؎ اھ (اسے ابوداؤد نے بطریق نافع حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا، محقق حلبی نے حلیہ میں فرمایا کہ ابوداؤد نے اس پر سکوت کیا ہے اس لئے وہ حجت ہے اھ ت) اور ابتدائے سلام اُس پر قیاس کرکے زیادتِ ائمہ کرام ہے ، بحر میں ہے المذھب ان التیمم للسلام صحیح ۳؎ (مذہب یہ ہے کہ سلام کے لیے تیمم درست ہے ت)

تنبیہ: علامہ سید طحطاوی پھر اُن کے اتباع سے علامہ سید شامی نے دو چیزیں اور زائد کیں وضو کرتا ہے تو چاند گہن ہو چکے گا یا ضحوہ کبری ہو جائے گی نمازِ چاشت جاتی رہے گی تو ان دونوں کو تیمم سے ادا کرلے دُر مختار میں تھا:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
قال فی الدر جاز لکسوف فقال ط مرادہ مایعم الخسوف ۴؎ اھ و نقلہ ش واقرہ وقال فی حاشیتہ علی المراقی اخذ منہ الحلبی جواز التیمم	تیمم سورج گہن کی نماز کیلئے جائز ہے۔ اس پر طحطاوی نے کہا اس سے ان کی مراد وہ ہے جو چاند گہن کو بھی شامل ہے اھ اسے شامی نے نقل فرما کر برقرار رکھا۔ اور طحطاوی نے حاشیہ مراقی الفلاح میں لکھا ہے کہ اسی سے

عربی عبارت	اردو ترجمہ
للكسوف ای والخسوف ۵۸ اه وقال حلبی نے سورج گہن کیلئے۔ یعنی چاند گہن کیلئے بھی تیمم کا جواز اخذ کیا ہے اھ اور انہوں نے پھر علامہ شامی نے فرمایا ہے کہ ظاہر یہ ہے کہ مستحب کا	هو ثم ش الظاهر ان المستحب كذلك لفوته

1. سنن ابی داؤد باب التیمم فی الحضر عند الخلا مطبوعہ مجتبائی لاہور ۱/ ۷۴
2. حلیہ
3. بحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵۰
4. طحطاوی علی الدر باب التیمم مطبوعہ بیروت ۱/ ۱۲۹
5. طحطاوی علی مراقی الفلاح باب التیمم مطبوعہ ازہر یہ مصر ص ۶۸

...due to the expiration of its time, as when the time for Duha (forenoon prayer) becomes too short for it and for Wudu, then Tayammum is performed for it. [Footnote 1] Ah. This also follows the same ruling because it also expires with the expiration of time. For example, if the time for the Chasht (forenoon) prayer becomes so narrow that there is no room for both the Chasht prayer and Wudu, then one will perform Tayammum for this prayer. Ah. (T)

I say: Based on this premise, Tayammum would also be permissible for the Tahajjud prayer when there isn't enough time to perform two rak'ahs while making Wudu before dawn breaks, as our research suggests it is commendable (Mustahabb), as we have explained in our Fatawa. (As we have stated in our fatwas. T). Even if, according to some's view, it is considered a Sunnah Mu'akkadah, its permissibility will be like the regular Sunnahs (Rawatib), but that view is weak. Similarly, when the Sunnahs of Fajr are missed and performed alone, their qada (makeup) is commendable until midday (Zawal). According to one derivation, it is Sunnah according to Imam Muhammad. Anyway, the discussion here is that according to the opinion of the learned scholars Tahtawi and Shami, commendable prayers are also like regular Sunnahs in this permissibility of Tayammum.

I say: However, this is a grave oversight. In the books of the school [Hanafi], only two prayers are mentioned: the funeral prayer (Janaza) and the two Eid prayers (Eidain). This much is reported from the leaders of the school, so much so that Allama Ibn Amir Hajj Halabi himself explicitly stated in 'Al-Hilyah' that according to us, for a healthy person in a city, while water is available without fear of illness, Tayammum is [only] permissible for these two prayers.

And this is its text: "Know that it is permissible for a healthy person in the city to perform Tayammum, according to our school, in three cases: First, when one is in a state of ritual impurity (Janaba) and fears illness due to bathing with cold water. Second, when a funeral prayer is present and there is a fear that by the time one finishes Wudu, the prayer will be missed. Third, if there is a fear of missing the Eid prayer." [Footnote 2] Ah. Their text says: According to us, the permissibility of Tayammum for a healthy person in the city is in three matters: (1) When in a state of major impurity and one fears illness due to bathing with cold water (T). (2) When a funeral is present and there is a fear of missing the funeral prayer in the case of performing Wudu. (3) When there is a fear of missing the Eid prayer. Ah. (T)

And the number four is an addition which is negated, as stated in Al-Hidayah and others. (As it is in Hidayah etc. T). In fact, Imam Malik al-Ulama in 'Bada'i' has explicitly restricted them to [those] two prayers and has stated the impermissibility of Tayammum for anything besides them.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt, 1/178
2. Hilyah

फ़तावा रज़विया खंड तीन

...इसके समय के समाप्त होने के कारण, जैसे कि जब दुहा (पूर्वाह्न की नमाज़) का समय उसके और वुज़ू दोनों के लिए कम हो जाए, तो उसके लिए तयम्मुम किया जाएगा। [फ़ुटनोट १] आह। यही हुक्म भी है क्योंकि वह भी समय बीतने के साथ बीत जाता है। उदाहरण के लिए, चाश्त की नमाज़ का समय इतना कम हो जाए कि चाश्त की नमाज़ और वुज़ू दोनों की गुंजाइश न रहे, तो वह इस नमाज़ के लिए तयम्मुम कर लेगा। आह। (त)

मैं कहता हूँ: इस आधार पर, तहज्जुद की नमाज़ के लिए भी तयम्मुम जायज़ होगा जब वुज़ू करने में फ़ज्र की नमाज़ निकलने से पहले दो रकात का समय न मिले, जैसा कि हमारा शोध है कि यह मुस्तहब है, जैसा कि हमने अपने फ़तवा में बयान किया है। (जैसा कि हमने अपने फतावा में बयान किया है। त)। अगर कुछ लोगों के विचार के अनुसार इसे सुन्नत मुअक्कदा माना जाए, तो रवातब (नियमित सुन्नतें) की तरह इसका जायज़ होना ही होगा, लेकिन वह कमज़ोर मत है। इसी तरह, जब फ़ज्र की सुन्नतें अकेले कज़ा हों, तो ज़वाल (दोपहर) तक उनकी कज़ा मुस्तहब है। एक राय के अनुसार, इमाम मुहम्मद के नज़दीक यह सुन्नत है। खैर, यहाँ बात यह है कि तहतावी और शामी जैसे विद्वानों के विचार के अनुसार, मुस्तहब नमाज़ें भी तयम्मुम के इस जायज़ होने में रवातब की तरह हैं।

मैं कहता हूँ: लेकिन यह घोर लापरवाही है। [हनफी] मज़हब की किताबों में केवल दो नमाज़ों का उल्लेख है: जनाज़ा और ईदैन। मज़हब के इमामों से इतना ही वर्णित है, यहाँ तक कि स्वयं अल्लामा इब्न अमीर हाज हलबी ने 'अल-हिलिया' में स्पष्ट रूप से कहा है कि हमारे नज़दीक शहर में एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए, पानी होते हुए बीमारी के डर के बिना, इन दो नमाज़ों के लिए तयम्मुम जायज़ है।

और यह इसका मूल पाठ है: "जान लें कि हमारे नज़दीक शहर में एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए तीन स्थितियों में तयम्मुम जायज़ है: पहला, जब वह जनाबत (अशुद्धि) की स्थिति में हो और ठंडे पानी से स्नान के कारण बीमारी का डर हो। दूसरा, जब जनाज़ा मौजूद हो और वुज़ू करने की स्थिति में नमाज़-ए-जनाज़ा छूट जाने का डर हो। तीसरा, जब ईद की नमाज़ छूट जाने का डर हो।" [फ़ुटनोट २] आह। उनकी इबारत यह है: हमारे नज़दीक शहर में एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए तयम्मुम का जायज़ होना तीन मसलों में है: (१) जब जनाबत की हालत में हो और ठंडे पानी से ग़ुस्ल की वजह से बीमारी का अंदेशा हो (त)। (२) जनाज़ा हाज़िर हो और वुज़ू करने की सूरत में नमाज़-ए-जनाज़ा फ़ौत (छूट) होने का अंदेशा हो। (३) नमाज़-ए-ईद फ़ौत होने का अंदेशा हो। आह। (त)

और संख्या चार ऐसी अधिकता है जिसका खंडन किया गया है, जैसा कि अल-हिदाया आदि में है। (जैसा कि हिदाया आदि में है। त)। बल्कि इमाम मलिक अल-उलेमा ने 'बदाइ' में स्पष्ट रूप से उन्हें दो नमाज़ों में सीमित कर दिया है और इसके अलावा किसी और के लिए तयम्मुम के नाजायज़ होने का उल्लेख किया है।

---

1. रद अल-मुहतार, बाबूत्तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/१७८
2. हिलिया

पृष्ठ ४२९ का ७५६

بفوت وقتہ کما اذا ضاق وقت الضحی عنہ وعن الوضوء فتییم لہ ۱ھ بھی یہی حکم ہے کیونکہ وہ بھی وقت کے فوت ہونے سے فوت ہو جاتا ہے مثلاً چاشت کا وقت اتنا تنگ ہو جائے کہ نماز چاشت اور وضو دونوں کی گنجائش نہ رہے تو اس نماز کیلئے تیمم کر لے گا اھ (ت)

اقول: اس تقدیر پر نماز ۱ تہجد کیلئے بھی تیمم جائز ہوگا جبکہ وضو کرنے میں دو رکعت کا وقت نہ ملے اور فجر طلوع کر آئے کہ ہماری تحقیق میں وہ مستحب ہے کما بیناہ فی فتاونا (جیسا کہ ہم نے اپنے فتاوٰی میں بیان کیا ہے۔ت) اگر زعم بعض کے طور پر سنت مؤکدہ مانے جب تو مثل رواتب جواز ہوگا ہی مگر وہ ضعیف ہے یوں ہی فجر کی سنتیں جب تنہا قضا ہوں زوال تک اُن کی قضا مستحب ہے اور ایک تخریج پر امام محمد کے نزدیک سنت۔ خیر، یہاں کلام اس میں ہے کہ مستحب نمازیں بھی حسب گمان فاضلین طحطاوی و شامی اس جواز تیمم میں مثل رواتب ہیں۔

اقول: مگر یہ سخت ۲ تساہل ہے کتب ۳ مذہب میں صرف دو نمازوں کا ذکر ہے جنازہ و عیدین اور اسی قدر ائمہ مذہب سے منقول حتی کہ خود علامہ ابن امیر حاج حلبی نے حلیہ میں تصریح فرمائی کہ ہمارے نزدیک تندرست کو بے خوف مرض پانی ہوتے ہوئے انہیں دو نمازوں کے لئے تیمم جائز ہے۔

وھذا نصہ اعلم انہ یجوز التیمم للصحیح فی المصر عندنا فی ثلاث مسائل احدھا اذا کان جنبا وخاف المرض بسبب الاغتسال بالماء البارد الثانیۃ حضرت جنازۃ وخاف ان اشتغل بالوضوء تفوتہ الصلوۃ علیھا الثالثۃ اذا خاف فوات صلاۃ العید ج ۲ اھ ان کی عبارت یہ ہے: ہمارے نزدیک تندرست کیلئے شہر میں تیمم کا جواز تین مسائل میں ہے۔ (۱) جب حالت جنابت میں ہو اور ٹھنڈے پانی سے غسل

کی وجہ سے بیماری کا اندیشہ رکھتا ہو (ت) (۲) جنازہ حاضر ہو اور وضو کرنے کی صورت میں نماز جنازہ فوت ہونے کا اندیشہ ہو۔ (۳) نماز عید فوت ہونے کا اندیشہ ہو۔ اھ (ت)

اور ۴ عدد نافی زیادت ہے کمافی الہدایۃ وغیرہا (جیسا کہ ہدایہ وغیرہ میں ہے۔ت) بلکہ امام ملک العلماء نے بدائع میں صراحتاً انہیں دو نمازوں میں حصر اور اس کے ماسوا کے لئے عدم جواز تیمم

---

۱ ردالمحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۸ ۲ حلیہ

Volume Three Clarification provided by Fatawa Razawiyya:

[Table Header] [Arabic]: Where he said: And this condition which we mentioned for the permissibility of Tayammum, which is the absence of water, is for prayers other than the funeral prayer and the two Eid prayers. As for these two prayers, it is not a condition; rather, the condition for them is the fear of missing the prayer if one busies himself with Wudu. (1) [Urdu]: He says: The condition we mentioned for the permissibility of Tayammum, i.e., the absence of water, is for prayers other than the funeral prayer and the two Eids. In these two, this is not a condition, but rather the condition is the fear of missing the prayer due to engaging in Wudu. (T)

In the same manner, Imam Tumurtashi and Imam Ali al-Sbijabi explicitly restricted it to these two. In Al-Bahr, under the author's statement "and for a distance of a mile" when it is one mile away. (T).

[Table Header] [Arabic]: He said in the commentary of Al-Tahawi: Tayammum is not permissible in the city except for fear of missing a funeral prayer or Eid prayer, or for someone in a state of major ritual impurity (Junub) who fears the cold. Similarly, Tumurtashi mentioned [it]. (2) [Urdu]: It is stated in Sharh Tahawi: In the city, the permissibility of Tayammum is only due to the fear of missing the funeral prayer or the Eid prayer, or for such a Junub person who fears the cold. Tumurtashi has also mentioned the same. (T)

Likewise, it is in Khizanat al-Muftin from Al-Nawazil: "Tayammum is not permissible in the city except in three places," (3) etc. (In the city, Tayammum is not permissible except in three places, etc. T). So the original text-based ruling is this. However, Hilya, in its discussion regarding the cause—which is the fear of missing without a substitute—included the Eclipse prayer and the Sunan Rawatib (regular voluntary prayers). Bahr, Nahr, and Durr also followed suit, and similarly, they restricted the Sunan to the Rawatib. This restriction excludes purely optional (Nafl) prayers. Then in Hilya, regarding the inclusion of Rawatib, it was also deduced that Tayammum for the Eid prayer is narrated from the Imams of the school of thought, and according to the preferred view of Imam Shams al-A'imma al-Sarakhsi and others, it is indeed a Sunnah. This shows there was also doubt in including the Sunan Rawatib, as the funeral prayer is a communal obligation (Fard) and the Eid prayers are necessary (Wajib). This doubt was removed as follows:

[Table Header] [Arabic]: Where he said: So it is concluded, as in Sharh al-Zahidi of Al-Quduri, that prayer is of three types: one type for which there is no fear of missing at

all due to it not being timed, such as supererogatory prayers, so Tayammum is not permissible for it in the presence of water due to the lack of... [Urdu]: He said: "The conclusion is, as in Zahidi's commentary on Quduri, that prayer is of three types: one type is that for which there is no fear of missing, because..."

[Footnotes] 1. Bada'i' al-Sana'i', section on conditions of the pillar of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/51 2. Al-Bahr al-Ra'iq, chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/201 3. Khizanat al-Muftin

जिल्द (भाग) तीन फ़तावा रज़विया का स्पष्टीकरण:

[सारणी शीर्षक] [अरबी]: जहाँ उन्होंने कहा: और यह शर्त जिसका हमने तैयम्मुम की अनुमति के लिए उल्लेख किया है, यानी पानी का अभाव, यह जनाज़ा की नमाज़ और दोनों ईद की नमाज़ों के अलावा अन्य नमाज़ों के लिए है। जहाँ तक इन दो नमाज़ों की बात है, तो यह शर्त नहीं है; बल्कि उनके लिए शर्त वूज़ू में व्यस्त होने के कारण नमाज़ के छूट जाने का डर है। (1) उर्दू: वे फरमाते हैं: तैयम्मुम की अनुमति के लिए हमने पानी न होने की जो शर्त ज़िक्र की, वह जनाज़ा की नमाज़ और ईदैन (दोनों ईदों) के अलावा अन्य नमाज़ों में है। इन दोनों में यह शर्त नहीं है, बल्कि यह शर्त है कि वूज़ू में मशगूल होने से नमाज़ छूट जाने का अंदेशा हो। (त)

ठीक इसी तरह इमाम तुमुरताशी और इमाम अली अल-स्बिजबी ने स्पष्ट रूप से इन्हीं दो में सीमित फ़रमाया है। अल-बहर में, ग्रन्थकर्ता के कथन "और एक मील की दूरी पर" के तहत जब वह एक मील दूर हो। (त) है।

[सारणी शीर्षक] [अरबी]: तह़ावी की व्याख्या में कहा गया है: शहर में तैयम्मुम की अनुमति नहीं है, सिवाय जनाज़ा की नमाज़ या ईद की नमाज़ के छूट जाने के डर से, या उस जुनुबी (अशुद्ध) व्यक्ति के लिए जिसे ठंड का डर हो। इसी तरह तुमुरताशी ने भी उल्लेख किया है। (2) उर्दू: शरह तह़ावी में फ़रमाया: शहर में तैयम्मुम की अनुमति केवल जनाज़ा की नमाज़ या ईद की नमाज़ के छूट जाने के अंदेशे से है या ऐसे जुनुबी के लिए जिसे ठंड से अंदेशा हो। इसी तरह तुमुरताशी ने भी ज़िक्र किया है। (त)

इसी प्रकार 'ख़िज़ानतुल मुफ़्तीन' में 'नवाज़िल' से है: "शहर के अंदर तीन स्थानों के अलावा तैयम्मुम जायज़ नहीं है" (3) आदि। (शहर के अंदर तीन स्थानों के सिवा तैयम्मुम जायज़ नहीं है आदि। त)। तो मूल आदेश तो यही है, हाँ 'हिलिया' ने अपनी चर्चा में इस कारण को देखते हुए कि छूट जाने का डर बिना किसी विकल्प (बदल) के है, कुसूफ़ (सूर्य ग्रहण) की नमाज़ और सुनन रवातब (नियमित सुन्नतें) को भी इसमें शामिल किया। 'बहर', 'नहर' और 'दुर्र' ने भी उनका अनुसरण किया और इसी तरह सुन्नतों को रवातब तक सीमित किया। यह पाबंदी केवल नफ़्ल नमाज़ों को बाहर निकाल रही है। फिर 'हिलिया' में 'रवातब' को शामिल करने पर भी यह स्पष्ट किया गया कि ईद की नमाज़ के लिए तैयम्मुम मज़हब के इमामों से वर्णित है, और इमाम शम्सुल अइम्मा सरखसी आदि के पसंदीदा मत के

अनुसार वह सुन्नत ही है। जिससे साफ़ है कि सुनन रवातब को शामिल करने में भी संदेह था, क्योंकि जनाज़ा फ़र्ज़ है और ईदैन वाजिब हैं। इस संदेह को इस तरह दूर किया गया:

[सारणी शीर्षक] [अरबी]: जहाँ उन्होंने कहा: तो निष्कर्ष यह निकलता है, जैसा कि कुदूरी की शरह ज़ाहिदी में है, कि नमाज़ तीन प्रकार की होती है: एक प्रकार वह जिसका बिल्कुल छूटने का डर नहीं होता क्योंकि उसका समय निर्धारित नहीं है, जैसे कि नफ़्ल नमाज़ें, इसलिए पानी की उपस्थिति में इसके लिए तैयम्मुम जायज़ नहीं है क्योंकि...

[पादलेख] 1. बदाएउस सनाए, तैयम्मुम के स्तंभ की शर्तों का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/51 2. अल-बहरुर रैक़, तैयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/201 3. ख़िज़ानतुल मुफ़्तीन

جلد سوم فتاویٰ رضویہ کی تصریح فرمائی،

[ٹیبل ہیڈر] [عربی]: حیث قال وھذا الشرط الذی ذکرنا الجواز التیمم وھو عدم الماء فیما وراء صلاۃ الجنازۃ وصلاۃ العیدین فاما فی ھاتین الصلاتین فلیس بشرط بل الشرط فیھما خوف الفوت لو اشتغل بالوضوء1۔ [اردو]: وہ فرماتے ہیں: جوازِ تیمم کیلئے ہم نے پانی نہ ہونے کی جو شرط ذکر کی یہ نمازِ جنازہ اور عیدین کے ماسوا میں ہے۔ ان دونوں میں یہ شرط نہیں بلکہ یہ شرط ہے کہ وضو میں مشغول ہونے سے فوتِ نماز کا اندیشہ ہو۔ (ت)

بعینہ اسی طرح امام تمر تاشی و امام علی اسبیجابی نے صراحۃً انہیں دو میں حصر فرمایا بحر میں زیر قول ماتن ولبعدہ میلا جبکہ وہ ایک میل دُور ہو۔ ت) ہے۔

[ٹیبل ہیڈر] [عربی]: قال فی شرح الطحاوی لا یجوز التیمم فی المصر الا لخوف فوت جنازۃ او صلاۃ عید او للجنب الخائف من البرد وکذا ذکر التمرتاشی2۔ [اردو]: شرح طحاوی میں فرمایا: شہر میں تیمم کا جواز صرف نماز جنازہ یا نماز عید کے فوت ہونے کے اندیشہ سے ہے یا ایسے جنبی کیلئے جسے ٹھنڈک سے اندیشہ ہو۔ ایسے ہی تمر تاشی نے بھی ذکر کیا ہے۔ (ت)

اسی طرح خزانیۃ المفتین میں نوازل سے ہے لا یجوز التیمم فی المصر الا فی ثلثۃ مواضع3 الخ (شہر کے اندر تین مقامات کے سوا تیمم جائز نہیں الخ۔ ت) تو اصل حکم منصوص تو یہ ہے ہاں حلیہ نے اپنی بحث میں نظر بہ علت کہ خوف فوت لا الی بدل ہے نمازِ کسوف و سننِ رواتب کا الحاق کیا ان کی تبعیت بحر و نہر و دُر نے بھی کی اور یوں ہی سُنن کو رواتب سے مقید کیا یہ قید نافلہ محضہ کو خارج کررہی ہے پھر حلیہ میں ' رواتب کے الحاق پر بھی اس سے استظہار کیا کہ نمازِ عید کیلئے تیمم ائمہ مذہب سے منقول ہے اور وہ مختار امام شمس الائمہ سرخسی وغیرہ میں

سنت ہی ہے جس سے ظاہر کہ سننِ رواتب کے الحاق میں بھی اشتباہ تھا کہ جنازہ فرض عیدین واجب ہیں اس اشتباہ کا یوں ازالہ کیا

[ٹیبل ہیڈر] [عربی]: حیث قال فتحصل کما فی شرح الزاهدی للقدوری ان الصلوة ثلاثة انواع نوع لا یخشی فوتها اصلا لعدم توقیتها کالنوافل فلا یجوز له التیمم عند وجود الماء لعدم [اردو]: فرمایا: "حاصل یہ ہوا جیسا کہ زاہدی کی شرح قدوری میں ہے کہ نماز تین قسم کی ہے ایک قسم وہ جس کے فوت ہونے کا کوئی اندیشہ نہیں کیوں کہ

[حواشی] 1 بدائع الصنائع فصل فی شرائط رکن التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۵۱ 2 بحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۲۰۱ 3 خزانۃ المفتین

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Table Left Column - Arabic Text] The excuse and the type whose loss is feared due to its timing, but it is made up after being missed, such as the Friday prayer and the prescribed prayers. Tayammum is not permissible for them because it is possible to compensate for them with a substitute through the more complete of the two purifications. And the type whose loss is feared without a substitute, such as the funeral and Eid prayers. For these, it is permissible, contrary to Shafi'i. The weak servant—may Allah Almighty forgive him—said: Based on this, it is for the proponent to say that it is permissible for the eclipse prayer and the established Sunnahs, because they pass without a substitute, as they are not made up, as in the case of Eid. Especially according to the view that the Eid prayer is a Sunnah, as chosen by Shams al-A'imma al-Sarakhsi and others. [End]

[Table Right Column - Urdu Text] ...It has no fixed time like voluntary prayers (nawafil). For this, Tayammum is not permissible in the presence of water because there is no excuse. The second type is that which is feared to be missed because the time is fixed, but it can be made up (qada) after being missed, like the Friday prayer and the five daily obligatory prayers. For these too, Tayammum is not permissible because a remedy is possible through a substitute with a more complete purification. The third type is that which is feared to be missed and there is no substitute, like the funeral prayer (Janazah) and Eid prayers. For these, Tayammum is permissible. Contrary to Imam Shafi'i, this weak servant—may Allah Almighty forgive him—says: It is incumbent upon this proponent to also accept the permissibility of Tayammum for the solar eclipse prayer (Kusoof) and the established Sunnah prayers (Sunan al-Rawatib), because they are missed without a substitute and are not made up, just like the Eid prayer. Especially according to the view that the Eid prayer is a Sunnah, as chosen by Shams al-A'imma al-Sarakhsi and others. End (T).

[Bottom Paragraph] And it is quite clear that absolute voluntary prayers (nafl mutlaq) do not fall under the ruling of established Sunnahs (Sunnah Ratibah). Shari'ah demands the latter, but not the former. So how can they be joined with them? Legally, it is only the Shari'ah's demand that provides the path for the permissibility of Tayammum in this situation. It is obvious that if water is present and there is power to use it, then Tayammum is invalid. If one performs it, the prayer would be without purification, and prayer without purification is absolutely haram (forbidden). Yes, when the Owner of the Right (Allah), may His Majesty be glorified, demands this specific worship at this specific time from him, and along with it is the ruling that if

this time passes, there is no way to be absolved from this demand—its substitute will not be possible and there is a shortage of time such that he cannot perform wudu—inevitably, for the fulfillment of this demand, his inability to procure water is established and the path for Tayammum is found. As for a prayer which the Shari'ah does not demand at all, for what fulfillment of duty would Tayammum be permissible while water is available?

1 Hilya Page 431 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[तालिका बायां स्तंभ - अरबी पाठ] उज्र (बहाना) और वह किस्म जिसके छूट जाने का अंदेशा उसके समयबद्ध होने के कारण है, लेकिन छूट जाने के बाद उसकी क़ज़ा की जाती है जैसे जुमा और फ़राइज़। उनके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं है क्योंकि दो पाकियों में से अधिक पूर्ण पाकी के माध्यम से उनके विकल्प द्वारा उनकी क्षतिपूर्ति करना संभव है। और वह किस्म जिसके छूट जाने का अंदेशा है बिना किसी विकल्प के, जैसे जनाज़ा और ईद की नमाज़। इनके लिए यह जायज़ है, जो शाफ़ई के विपरीत है। कमज़ोर बंदे —अल्लाह तआला उसे माफ़ करे— ने कहा: इस आधार पर, कहने वाले के लिए यह कहना जायज़ है कि ग्रहण की नमाज़ (कुसूफ़) और मुक़र्ररा सुन्नतों के लिए तयम्मुम जायज़ है, क्योंकि वे बिना किसी विकल्प के छूट जाती हैं, क्योंकि उनकी क़ज़ा नहीं की जाती जैसा कि ईद के मामले में है। विशेष रूप से इस विचार के अनुसार कि ईद की नमाज़ सुन्नत है, जैसा कि शम्सुल अइम्मा सरख़सी और अन्य लोगों ने चुना है। [समाप्त]

[तालिका दायां स्तंभ - उर्दू पाठ] ...इसका कोई निर्धारित समय नहीं है जैसे नवाफ़िल। इसके लिए पानी की मौजूदगी में तयम्मुम जायज़ नहीं है क्योंकि कोई बहाना नहीं है। दूसरी किस्म वह है जिसके छूट जाने का अंदेशा है क्योंकि समय निर्धारित है लेकिन छूटने के बाद इसकी क़ज़ा हो सकती है जैसे नमाज़-ए-जुमा और पांच समय के फ़राइज़। इसके लिए भी तयम्मुम जायज़ नहीं है क्योंकि पूर्ण पाकी के साथ बदल के ज़रिए इसका समाधान हो सकता है। तीसरी किस्म वह है जिसके छूट जाने का अंदेशा है और कोई बदल नहीं है जैसे नमाज़-ए-जनाज़ा और ईद, इसके लिए तयम्मुम जायज़ है। इमाम शाफ़ई के विपरीत, यह कमज़ोर बंदा —अल्लाह तआला उसे माफ़ करे— कहता है: इस कहने वाले पर लाज़िम आता है कि नमाज़-ए-कुसूफ और सुन्नत-ए-रावतिब के लिए भी तयम्मुम की अनुमति को माने क्योंकि ये भी ऐसी छूटने वाली नमाज़ें हैं जिनका कोई बदल नहीं है, ख़ासकर इस विचार पर कि ईद की नमाज़ सुन्नत है जैसा कि शम्सुल अइम्मा सरख़सी वगैरह ने इसे चुना है। समाप्त (त)

[नीचे का पैराग्राफ] और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि नफ़्ल-ए-मुतलक़ सुन्नत-ए-रावतिब के हुक्म में नहीं है। शरीयत उनका मुतालबा (मांग) करती है और इनका नहीं, तो ये उनसे कैसे जोड़े जा सकते हैं? शरीयत की मांग ही वह चीज़ है जो इस स्थिति में तयम्मुम की अनुमति का रास्ता देती है। ज़ाहिर है कि अगर पानी मौजूद हो और इस्तेमाल की ताक़त हो तो तयम्मुम बातिल है। अगर कोई करे तो

नमाज़ बिना पाकी के होगी और बिना पाकी के नमाज़ क़तई हराम है। हाँ, जब हक़ के मालिक (अल्लाह), जिनकी शान बुलंद है, इस विशिष्ट इबादत का इस विशिष्ट समय में उससे मुतालबा कर रहे हैं और साथ ही हुक्म है कि यह समय निकल गया तो इस मुतालबा से बरी होने की कोई सूरत नहीं, इसका बदल भी नहीं हो सकेगा और समय में तंगी है कि वज़ू नहीं कर सकता, तो लाज़िम है कि इस मुतालबा की अदायगी के लिए पानी पर क़ादिर न होना साबित हुआ और तयम्मुम का रास्ता मिला। जिस नमाज़ का शरीयत मुतालबा ही नहीं करती, उसमें किस ज़िम्मेदारी को पूरा करने के लिए पानी होते हुए तयम्मुम जायज़ होगा?

1 हल्या पेज 431 / 756

[Table Left Column - Arabic] العذر ونوع نخشی فواتها لتوقیتها ولکن تقضی بعد الفوات کالجمعة والمکتوبات فلا یجوز لها التیمم لامکان جبرها بالبدل باکمل الطهارتین ونوع نخشی فواتها لا الی بدل کصلاة الجنازة والعید فیجوز خلافا للشافعي قال العبد الضعیف غفر الله تعالی له وعلی هذا القائل ان یقول یجوز لصلاة الکسوف والسنن الرواتب لانها تفوت لا الی بدل فانها لا تقضی کما في العید ولا سیما علی القول بأن صلاة العید سنة کما اختاره شمس الائمة السرخسی و غیره ۱ھ

[Table Right Column - Urdu] اس کا کوئی مقررہ وقت نہیں جیسے نوافل۔ اس کیلئے پانی کی موجودگی میں تیمم جائز نہیں اس لئے کہ کوئی عذر نہیں دوسری قسم وہ جس کے فوت ہونے کا اندیشہ ہے کیونکہ وقت مقرر ہے لیکن فوت ہونے کے بعد اس کی قضا ہو سکتی ہے جیسے نماز جمعہ اور پنجگانہ فرائض۔ اس کیلئے بھی تیمم جائز نہیں کیونکہ کامل تر طہارت کے ساتھ بدل کے ذریعہ اس کا تدارک ہو سکتا ہے۔ تیسری قسم وہ جس کے فوت ہونے کا اندیشہ ہے اور کوئی بدل نہیں جیسے نماز جنازہ اور عید اس کیلئے تیمم جائز ہے۔ بخلاف امام شافعی کے بندہ ضعیف -- خدا اس کی مغفرت فرمائے کہتا ہے: اس قائل پر لازم آتا ہے کہ نماز کسوف اور سنن رواتب کیلئے بھی تیمم کا جواز مانے کیونکہ یہ بھی ایسی فوت ہونے والی نمازیں ہیں کہ ان کا کوئی بدل نہیں، خصوصاً اس قول پر کہ نمازِ عید سنّت ہے جیسا کہ شمس الائمہ سرخسی وغیرہ نے اسے اختیار کیا ہے۔" اھ (ت)

[Bottom Paragraph - Urdu] اور پُر ظاہر کہ نفل مطلق سنّت راتبہ کے حکم میں نہیں شرع اُن کا مطالبہ فرماتی ہے اور اس کا نہیں تو یہ اُن سے کیونکر ملحق کیا جائے مطالبہ شرعاً ہی وہ چیز ہے جو اس صورت میں جوازِ تیمم کی راہ دیتا ہے ظاہر ہے کہ پانی موجود اور استعمال

پر قدرت ہو تو تیمم باطل اگر کرے تو نماز بے طہارت ہو اور نماز بے طہارت حرام قطعی ہے ہاں جب صاحبِ حق عز جلالہ خاص اس عبادت کا اس وقتِ خاص میں اس سے مطالبہ فرما رہا ہے اور ساتھ ہی حکم ہے کہ یہ وقت نکل گیا تو اس مطالبہ سے برات کی کوئی صورت نہیں اس کا بدل بھی نہ ہو سکے گا اور وقت میں تنگی ہے کہ وضو نہیں کر سکتا لاجرم اس ادائے مطالبہ کیلئے پانی پر قادر نہ ہونا ثابت ہوا اور تیمم کی راہ ملی جس نماز کا شرع مطالبہ ہی نہیں فرماتی اُس میں کون سی عہدہ برآئی کیلئے پانی ہوتے ہوئے تیمم جائز

Fatawa-e-Razawiyya Volume 3

...there will be a Sharia demand. The state of affairs here is that there was even doubt regarding the permissibility of Tayammum for the funeral prayer because it is a Fard-al-Kifayah (communal obligation). When is there a demand from every individual? Scholars felt the need for an answer that even in Fard-al-Kifayah, the demand is from everyone; therefore, if everyone abandons it, all are sinners, even though the action of some drops the demand from everyone. It is stated in Fath-al-Qadir and Ghunya:

Arabic	Urdu Translation
He (Imam Shafi'i) prohibited it (i.e., Tayammum for the funeral prayer) because it is Tayammum in the absence of its condition. We say: the person addressed for prayer who is unable to perform Wudu for it, then it is permissible. As for the first point, the connection of Fard-al-Kifayah is general (to all), except that it is dropped by the action of some. As for the second point, it is by assuming the case (1).	Imam Shafi'i does not accept the permissibility of Tayammum for the funeral prayer. This is because it would be a Tayammum whose condition is missing. We reply that (the condition is present because) the address for performing the prayer is also to that person who is unable to perform Wudu for it, so Tayammum will be permissible. The first point is because Fard-al-Kifayah generally pertains to everyone, it's just that it is dropped by the performance of some. The detail of the second point is clear from the assumed form of the issue. (T)

When is there a demand for Chasht (forenoon) and Tahajjud (night) prayers? Similarly, the prayer for a lunar eclipse (Khusoof) is only recommended (Mustahabb). This is in contrast to the solar eclipse prayer (Kusoof) (2), which is of the level of Sunnah, which Imam Dabusi called Wajib (obligatory), and Imam Malik al-Ulama gave preference to this in Bada'i and replied to the arguments for it being Sunnah. Yes, the chosen view of the majority is that it is Sunnah. I say: rather, it is an explicit text of the established school of Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) in the book Al-Mabsut, as the investigation of it will follow, thus ending the dispute. (As the investigation from our pen is coming soon, this text ends the disagreement. T) It is stated in Bada'i:

Arabic	Urdu Translation
Is the Kusoof (solar eclipse) prayer obligatory (Wajib) or Sunnah? Muhammad	Is the Kusoof prayer Wajib or Sunnah? What Imam Muhammad (may Allah have

Arabic	Urdu Translation
(may Allah have mercy on him) mentioned in Al-Asl what indicates its non-obligatoriness. For he said: No voluntary (Nafl) prayer is to be prayed in congregation except the standing of Ramadan (Tarawih) and the Kusoof prayer. And Hasan bin Ziyad narrated...	mercy on him) has written in 'Al-Asl' (Al-Mabsut) indicates non-obligatoriness. He says: "No voluntary (Nafl) prayer shall be performed in congregation except for the standing of Ramadan and the Kusoof prayer." And Hasan bin Ziyad...

1 Ghunyat-ul-Mustamli, Chapter on Tayammum, Sohail Academy Lahore, p. 81 Page 432 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3

...शरई मुतालबा होगा। यहाँ कारगुज़ारी की हालत यह है कि नमाज़-ए-जनाज़ा के लिए जवाज़-ए-तयम्मुम में भी शुबा हुआ कि वह तो फ़र्ज़-ए-किफ़ाया है, हर शख्स से मुतालबा कब है? और उलमा को इस जवाब की हाजत हुई कि फ़र्ज़-ए-किफ़ाया में भी मुतालबा सब से है, लिहाज़ा अगर सब तर्क करें तो सब गुनहगार हैं, अगरचे बाज़ का फ़ेल सब पर से मुतालबा साकित कर देता है। फ़तह-उल-क़दीर व गुनिया में है:

अरबी

उन्होंने (इमाम शाफ़ई ने) इसे (यानी नमाज़-ए-जनाज़ा के लिए तयम्मुम को) मना किया क्योंकि यह शर्त की अदम-मौजूदगी में तयम्मुम है। हम कहते हैं: नमाज़ के लिए मुखातब शख्स जो उसके लिए वुज़ू से आज़िज़ है, तो जायज़ होगा। रही बात पहली, तो फ़र्ज़-ए-किफ़ाया का ताल्लुक़ उमूम (सब) से है, सिवाय इसके कि वह बाज़ के फ़ेल से साकित हो जाता है। और दूसरी बात मसले की मफ़रूज़ा सूरत से है। (1)

उर्दू अनुवाद

इमाम शाफ़ई नमाज़-ए-जनाज़ा के लिए तयम्मुम का जवाज़ नहीं मानते। इसलिए कि यह ऐसा तयम्मुम होगा जिसकी शर्त मफ़क़ूद (ग़ायब) है, हम यह जवाब देते हैं कि (शर्त मौजूद है इसलिए कि) उस शख्स से भी अदा-ए-नमाज़ का ख़िताब है जो उसके लिए वुज़ू से आज़िज़ है तो तयम्मुम का जवाज़ होगा। पहली बात इसलिए है कि फ़र्ज़-ए-किफ़ाया का ताल्लुक़ बतौरे उमूम सभी से है, इतना है कि बाज़ के अदा कर लेने से साकित हो जाता है। दूसरी बात की तफ़सील मसले की मफ़रूज़ा सूरत से ज़ाहिर है। (त)

नमाज़-ए-चाश्त और नमाज़-ए-तहज्जुद का मुतालबा कब है? इसी तरह चाँद ग्रहण की नमाज़ सिर्फ़ मुस्तहब है। बख़िलाफ़ नमाज़-ए-कुसूफ़ (2) के कि इस मर्तबा की सुन्नत है जिसे इमाम दबूसी ने वाजिब कहा और इसी को इमाम मलिक-उल-उलमा ने बदाइ में तरजीह दी और सुन्नत होने के दलाइल से जवाब दिया। हाँ, मुख्तार जमहूर सुन्नतियत है। अक़ूल: बल्कि वह किताब मबसूत में मुहर्रर मज़हब इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) की नस (इबारत) है जैसा कि इसकी तहक़ीक़ आगे आएगी तो निज़ाअ (झगड़ा) ख़त्म हो गया। (जैसा कि इसकी तहक़ीक़ हमारे क़लम से अनक़रीब आ रही है तो इस नस से इख्तिलाफ़ का खात्मा हो जाता है। त) बदाइ में फ़रमाया:

अरबी

नमाज़-ए-कुसूफ़ वाजिब है या सुन्नत? मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने असल में वह ज़िक्र किया जो वाजिब न होने पर दलालत करता है। उन्होंने फ़रमाया: और कोई नफ़्ल नमाज़ जमाअत से न पढ़ी जाए सिवाय क़याम-ए-रमज़ान और नमाज़-ए-कुसूफ़ के। और हसन बिन ज़ियाद ने रिवायत की...

उर्दू अनुवाद

नमाज़-ए-कुसूफ़ वाजिब है या सुन्नत? इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने असल (मबसूत) में जो तहरीर फ़रमाया है उससे अदम-ए-वुजूब (वाजिब न होने) का पता चलता है। वह फ़रमाते हैं: "क़याम-ए-रमज़ान और नमाज़-ए-कुसूफ़ के अलावा कोई नमाज़ नफ़्ल बा-जमाअत न अदा की जाएगी।" और हसन बिन ज़ियाद...

1 गुनिया-तुल-मुस्तमली, फ़स्ल फ़ी-तयम्मुम, सुहैल एकेडमी लाहौर, सफा 81 पेज 432 ऑफ़ 756

ہو جائے گا مطالبہ شرعیہ پر' یہاں بنائے کار کی یہ حالت ہے کہ نماز جنازہ کیلئے جوازِ تیمم میں بھی شبہ ہوا کہ وہ تو فرضِ کفایہ ہے ہر شخص سے مطالبہ کب ہے اور علماء کو اس جواب کی حاجت ہوئی کہ فرضِ کفایہ میں بھی مطالبہ سب سے ہے ولہذا سب ترک کریں تو سب گنہگار ہیں اگرچہ بعض کا فعل سب پر سے مطالبہ ساقط کردیتا ہے۔ فتح القدیر وغنیہ میں ہے :

عربی متن

منعه (ای التیمم لصلاۃ الجنازۃ) الشافعی لانه تیمم مع عدم شرطه قلنا مخاطب بالصلاۃ عاجز عن الوضوء لها فیجوزا ما الاولی فلان تعلق فرض الکفایة علی العموم غیر انه یسقط بفعل البعض واما الثانیة فبفرض المسألة 1۔

اردو ترجمہ

امام شافعی نمازِ جنازہ کے لئے تیمم کا جواز نہیں مانتے۔ اس لئے کہ یہ ایسا تیمم ہو گا جس کی شرط مفقود ہے، ہم یہ جواب دیتے ہیں کہ (شرط موجود ہے اس لئے کہ) اس شخص سے بھی ادائے نماز کا خطاب ہے جو اس کیلئے وضو سے عاجز ہے تو تیمم کا جواز ہو گا۔ پہلی بات اس لئے ہے کہ فرضِ کفایہ کا تعلق بطورِ عموم سبھی سے ہے، اتنا ہے کہ بعض کے ادا کر لینے سے ساقط ہو جاتا ہے۔ دوسری بات کی تفصیل مسئلہ کی مفروضہ صورت سے ظاہر ہے۔ (ت)

نمازِ چاشت و نمازِ تہجد کا مطالبہ کب ہے یوں ہی چاند گہن کی نماز صرف مستحب ہے۔ بخلاف نمازِ کسوف ۲ کہ اس مرتبہ کی سنت ہے جسے امام دبوسی نے واجب کہا اور اسی کو امام ملک العلماء نے بدائع میں ترجیح دی اور دلائل سنیت سے جواب دیا ہاں مختار جمہور سنیت ہے اقول: بلکہ وہ کتاب مبسوط میں محرر مذہب امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی کا نص ہے کما سیأتي مناتحقیقه

فانقطع النزاع (جیسا کہ اس کی تحقیق ہمارے قلم سے عنقریب آرہی ہے تو اس نص سے اختلاف کا خاتمہ ہو جاتا ہے۔ت) بدائع میں فرمایا:

عربی متن	اردو ترجمہ
صلاة الكسوف واجبة ام سنة ذكر محمد رحمه الله تعالیٰ فی الاصل ما یدل علی عدم الوجوب فانه قال ولا تصلی نافلة فی جماعة الا قیام رمضان وصلاة الكسوف وروی الحسن بن زیاد	نمازِ کسوف واجب ہے یا سنت؟ امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ نے اصل (مبسوط) میں جو تحریر فرمایا ہے اس سے عدمِ وجوب کا پتہ چلتا ہے۔ وہ فرماتے ہیں: "قیامِ رمضان اور نمازِ کسوف کے علاوہ کوئی نماز نفل باجماعت نہ ادا کی جائے گی۔" اور حسن بن زیاد

1 غنیة المستملی فصل فی التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۱ صفحہ 432 از 756

Fatawa Razawiya, Volume 3

[Arabic Column] It is narrated from Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) that he said regarding the solar eclipse: "If they wish, they may pray two rak'ats; if they wish, four; and if they wish, more." And choice (takhyir) is only in supererogatory (nafl) prayers. Some of our scholars said that it (the eclipse prayer) is obligatory (wajib), because of what Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) narrated (mentioning the eclipse hadith, which includes the saying of the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him): "Pray until it (the sun) clears." And in the narration of Abu Mas'ud al-Ansari (may Allah be pleased with him): "So when you see it, stand up and pray." A general command indicates obligation. Imam Muhammad's (may Allah have mercy on him) calling it a "nafl" (voluntary prayer) does not negate its obligation, because "nafl" literally means "excess," and every obligatory act is in addition to the prescribed fard (mandatory) acts. Do you not see that he mentioned the eclipse prayer alongside the nighttime prayers of Ramadan, which is Tarawih, and it is a confirmed Sunnah (Sunnah Mu'akkadah), which carries the meaning of obligation (wajib). The narration of Hasan bin Ziyad also does not negate obligation because choice can exist between obligatory options, as in the saying of Allah the Almighty: "So its expiation is feeding ten poor persons from the average of what you feed your [own] families or clothing them or the freeing [of a slave]..."

[Urdu Column] It is narrated from Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) that he said regarding the solar eclipse: "If people wish, they may pray two rak'ats each; if they wish, four; and if they wish, more." And choice only exists in supererogatory prayers. Our some scholars have said that the eclipse prayer is wajib because it is narrated from Hazrat Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) - after which the hadith of the eclipse is mentioned containing the Prophet's ﷺ instruction - "Perform the prayer until the sun becomes bright." In the narration of Hazrat Abu Mas'ud al-Ansari (may Allah be pleased with him), the words are: "So when you see it, stand up and perform the prayer." An absolute command is for obligation. Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) mentioning it as 'nafl' does not negate obligation because the meaning of 'nafl' is "extra," and every wajib is extra to the prescribed fard duties. See, they mentioned the eclipse prayer along with the standing of Ramadan. This is the Tarawih prayer which is Sunnah Mu'akkadah, and Sunnah Mu'akkadah holds the meaning of wajib. The narration of Hasan bin Ziyad also does not negate obligation because choice occurs in obligations too, as in the

Almighty's command: "So its expiation is to feed ten poor people from the average of what you feed your family, or to give clothes to ten poor people, or a slave."

Page 433 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[अरबी कॉलम] इमाम अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत है कि उन्होंने सूर्य ग्रहण के बारे में फ़रमाया: "यदि वे चाहें तो दो रकात पढ़ें, यदि चाहें तो चार, और यदि चाहें तो अधिक।" और विकल्प नफ़्ल नमाज़ों में होता है। हमारे कुछ आचार्यों ने कहा कि यह अनिवार्य (वाजिब) है क्योंकि इब्न मसूद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने रिवायत की है (ग्रहण की हदीस जिसमें नबी ﷺ का वचन है): "नमाज़ पढ़ो यहाँ तक कि वह साफ़ हो जाए।" अबू मसूद अल-अंसारी (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की रिवायत में है: "जब तुम उसे देखो, तो खड़े हो जाओ और नमाज़ पढ़ो।" पूर्ण आदेश अनिवार्यता को दर्शाता है। इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर दया करे) द्वारा इसे 'नफ़्ल' कहना अनिवार्यता को नकारता नहीं है क्योंकि 'नफ़्ल' का अर्थ अतिरिक्त है, और प्रत्येक वाजिब निर्धारित फ़र्ज़ से अतिरिक्त होता है। क्या आप नहीं देखते कि उन्होंने इसे रमज़ान के क़ियाम (तरावीह) के साथ जोड़ा है, जो सुन्नत मुअक्कदा है, और यह वाजिब के अर्थ में है। अल-हसन की रिवायत अनिवार्यता को नहीं नकारती क्योंकि विकल्प अनिवार्य कार्यों के बीच भी हो सकता है जैसा कि अल्लाह के इस कथन में है: "तो इसका कफ़्फ़ारा दस निर्धनों को भोजन कराना है जो तुम अपने परिवार को खिलाते हो उसके औसत से, या उन्हें कपड़े देना, या एक दास मुक्त करना..."

[उर्दू कॉलम] इमाम अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत है कि उन्होंने सूर्य ग्रहण के बारे में फ़रमाया: "लोग अगर चाहें तो दो-दो रकात पढ़ें, चाहें तो चार पढ़ें और चाहें तो ज़्यादा पढ़ें।" और विकल्प नफ़्ल में ही होता है। हमारे कुछ उलेमा ने कहा है कि ग्रहण की नमाज़ वाजिब है क्योंकि हज़रत इब्न मसूद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत है (इसके बाद ग्रहण की हदीस है जिसमें नबी ﷺ का निर्देश है) "नमाज़ पढ़ो यहाँ तक कि सूरज साफ़ हो जाए।" हज़रत अबू मसूद अंसारी (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की रिवायत में शब्द हैं: "जब तुम उसे देखो तो खड़े हो जाओ और नमाज़ पढ़ो।" सामान्य आदेश वाजिब के लिए होता है। इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) का इसे नफ़्ल कहना वाजिब को नकारता नहीं है क्योंकि नफ़्ल का अर्थ 'अतिरिक्त' है, और हर वाजिब तयशुदा फ़र्ज़ से अतिरिक्त ही होता है। देखिए कि उन्होंने ग्रहण की नमाज़ का ज़िक्र रमज़ान के क़ियाम के साथ किया है। यह तरावीह की नमाज़ है जो सुन्नत मुअक्कदा है और सुन्नत मुअक्कदा वाजिब का अर्थ रखती है। हसन बिन ज़ियाद की रिवायत से भी वाजिब होने का इनकार नहीं होता क्योंकि वाजिब चीज़ों के बीच भी विकल्प हो सकता है जैसा कि अल्लाह के इस इरशाद में है: "तो

इसका कफ़्फ़ारा दस मिस्कीनों को औसत दर्जे का खाना खिलाना है जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो, या दस मिस्कीनों को कपड़ा देना, या एक ग़ुलाम।"

पृष्ठ 433 / 756

عن ابي حنيفة رضي الله تعالى عنه انه قال في كسوف الشمس ان شاؤا صلوا ركعتين وان شاؤا اربعا وان شاؤا اكثر والتخيير يكون في النوافل وقال بعض مشائخنا انها واجبة لما روى ابن مسعود رضي الله تعالى عنه (فذكر حديث الكسوف وفيه قوله صلى الله تعالى عليه وسلم) صلوا حتى تنجلى وفى رواية ابي مسعود الانصارى رضي الله تعالى عنه فاذا رأيتموها فقوموا وصلوا ومطلق الامر للوجوب وتسمية محمد رحمه الله تعالى اياها نافلة لا ينفى الوجوب لان النافلة عبارة عن الزيادة وكل واجب زيادة على الفرائض الموظفة الا ترى انه قرنها بقيام رمضان وهو التراويح وانها سنة مؤكدة وهى فى معنى الواجب وروایة الحسن لا تنفى الوجوب لان التخيير قد يجرى بين الواجبات كما فى قوله تعالى: فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَكِينَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ

نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے کہ انہوں نے سورج گہن کے بارے میں فرمایا ہے کہ "لوگ اگر چاہیں تو دو دو رکعت پڑھیں، چاہیں تو چار پڑھیں اور چاہیں تو زیادہ پڑھیں" اور تخییر نوافل ہی میں ہوتی ہے اور ہمارے بعض مشائخ نے فرمایا ہے کہ نماز کسوف واجب ہے اس لئے کہ حضرت ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت ہے (اس کے بعد حدیث کسوف ذکر کی ہے رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا یہ ارشاد ہے) نماز ادا کرو یہاں تک کہ سورج روشن ہو جائے۔ اور حضرت ابو مسعود انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت میں یہ الفاظ ہیں: "تو جب تم اسے دیکھو تو کھڑے ہو جاؤ اور نماز پڑھو"۔ اور مطلق امر وجوب کیلئے ہوتا ہے۔ اور امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کا اسے نفل کے نام سے ذکر کرنا وجوب کی نفی نہیں کرتا اس لئے کہ نفل کا معنی "زائد" ہے، اور ہر واجب مقررہ فرائض سے زائد ہی ہے۔ دیکھ لیجئے کہ انہوں نے نماز کسوف کو قیام رمضان کے ساتھ ذکر کیا ہے۔ یہ نماز تراویح ہے جو سنت مؤکدہ ہے

اور سنت مؤکدہ واجب کا معنیٰ رکھتی ہے اور حسن بن زیاد کی روایت سے بھی وجوب کی نفی نہیں ہوتی اس لئے کہ تخییر واجبات میں بھی ہوتی ہے جیسے باری تعالیٰ کے اس ارشاد میں ہے:

"تو اس کا کفارہ دس مسکینوں کو کھانا دینا ہے جو تم اپنے گھر والوں کو کھلاتے ہو اس میں سے متوسط قسم کا کھانا یا دس مسکینوں کو کپڑا دینا یا ایک بردہ"

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Left Column - Arabic] ...neck (1). His speech, may his secret be sanctified, has ended. And what he intended to repel in 'Al-Inaya' by his saying after citing the Hadith: "If it is said this is a command and a command is for obligation, so it should be obligatory," we say: "Some of our companions have gone to that, and the author of 'Al-Asrar' chose it. But the common view is that it is Sunnah because it is not one of the symbols of Islam, for it occurs due to a temporary cause. However, the Prophet, may Allah the Exalted bless him and grant him peace, performed it, so it was Sunnah, and the command is for recommendation (2)." - (End of quote). So I say: Its outcome is that this is not a symbol, and every obligatory thing is a symbol, so this is not obligatory. The major premise (1) is disallowed, for many an obligatory thing is not from the symbols, such as the expiation for an oath, zihar, and fasting. Likewise, the minor premise (2) is disallowed, and its evidence is that this is due to a temporary cause, and whatever is due to a temporary cause is not a symbol. In it also the major premise is disallowed, and what is the evidence for it? And he has already said in 'Al-Asrar'...

[Right Column - Urdu] "...setting free." The speech of Malik al-Ulama, may his secret be sanctified, has ended. In 'Inaya', the response after mentioning the Hadith was intended to be given in this way: "If it is said that this is an order and the order is for obligation, then the eclipse prayer should be mandatory. We will say yes, some of our companions have gone in this direction, and the author of 'Asrar' has also chosen this. But the general opinion of the scholars is that the eclipse prayer is Sunnah because it is not from the symbols of Islam, as its existence is temporary. But the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, performed the eclipse prayer, so it became Sunnah and the order is for recommendation." - (End of quote) (T) So I say: The gist of this response is that the eclipse prayer is not a symbol, and every mandatory act is a symbol, so this is not mandatory. The 'Kubra' (major premise) of this reasoning is disallowed because there are many mandatory acts that are not symbols, such as the expiation of an oath, the expiation of Zihar, and the expiation of fasting. Similarly, the 'Sughra' (minor premise) is also disallowed. The reason given for the 'Sughra' was that this prayer is due to a temporary cause, and what is due to a temporary cause is not a symbol. The 'Kubra' of this analogy is also disallowed. After all, what is the evidence for this 'Kubra'? While it is stated in 'Asrar'...

[Footnotes] 1 Bada'i al-Sana'i, Salat al-Kusuf, H.M. Saeed Company Karachi, 1/280 2 Inaya with Al-Fath, Chapter on Salat al-Kusuf, Nuriya Razawiya Sukkur, 2/56

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[बायां स्तंभ - अरबी] ...ग़ुलाम (1)। उनका भाषण, अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे, समाप्त हुआ। और 'अल-इनाया' में हदीस का उल्लेख करने के बाद उनके इस कथन से जो वह बचाव करना चाहते थे कि: "यदि यह कहा जाए कि यह एक आदेश है और आदेश अनिवार्यता के लिए होता है, तो इसे अनिवार्य होना चाहिए," हम कहेंगे: "हमारे कुछ साथियों ने उस दिशा में रुख किया है, और 'अल-असरार' के लेखक ने इसे चुना है। लेकिन सामान्य दृष्टिकोण यह है कि यह सुन्नत है क्योंकि यह इस्लाम के प्रतीकों में से नहीं है, क्योंकि यह एक अस्थायी कारण से घटित होता है। हालांकि, नबी, अल्लाह उन पर कृपा और शांति प्रदान करे, ने इसे पढ़ा था, इसलिए यह सुन्नत हुई, और आदेश सिफ़ारिश (2) के लिए है।" - (उद्धरण समाप्त)। तो मैं कहता हूँ: इसका निष्कर्ष यह है कि यह एक प्रतीक नहीं है, और प्रत्येक अनिवार्य वस्तु एक प्रतीक होती है, इसलिए यह अनिवार्य नहीं है। मुख्य आधार (1) वर्जित है, क्योंकि कई अनिवार्य वस्तुएं प्रतीकों में से नहीं हैं, जैसे शपथ का कफ़्फ़ारा, ज़िहार और उपवास। इसी तरह, गौण आधार (2) वर्जित है, और इसका प्रमाण यह है कि यह एक अस्थायी कारण से है, और जो कुछ भी अस्थायी कारण से होता है वह प्रतीक नहीं होता है। इसमें भी मुख्य आधार वर्जित है, और इसका प्रमाण क्या है? और उन्होंने पहले ही 'अल-असरार' में कहा है...

[दायां स्तंभ - उर्दू] "...आज़ाद करना।" मलिक-उल-उलमा, अल्लाह उनके रहस्य को पवित्र रखे, का भाषण समाप्त हुआ। 'इनाया' में हदीस का उल्लेख करने के बाद उत्तर इस तरह देने का इरादा किया गया है: "यदि यह कहा जाए कि यह एक आदेश है और आदेश अनिवार्यता के लिए है, तो ग्रहण की नमाज़ अनिवार्य होनी चाहिए। हम कहेंगे हाँ, हमारे कुछ साथी इस दिशा में गए हैं, और 'असरार' के लेखक ने भी इसे चुना है। लेकिन विद्वानों की आम राय यह है कि ग्रहण की नमाज़ सुन्नत है क्योंकि यह इस्लाम के प्रतीकों में से नहीं है, क्योंकि इसका अस्तित्व अस्थायी है। लेकिन पवित्र नबी, सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ग्रहण की नमाज़ पढ़ी, इसलिए यह सुन्नत हुई और आदेश सिफ़ारिश के लिए है।" - (उद्धरण समाप्त) (टी) तो मैं कहता हूँ: इस उत्तर का सार यह है कि ग्रहण की नमाज़ प्रतीक नहीं है, और प्रत्येक अनिवार्य कार्य एक प्रतीक होता है, इसलिए यह अनिवार्य नहीं है। इस तर्क का 'कुबरा' (मुख्य आधार) वर्जित है क्योंकि बहुत से अनिवार्य कार्य ऐसे हैं जो प्रतीक नहीं हैं, जैसे शपथ का कफ़्फ़ारा, ज़िहार का कफ़्फ़ारा, और उपवास का कफ़्फ़ारा। इसी तरह, 'सुगरा' (गौण आधार) भी वर्जित है। 'सुगरा' के लिए दिया गया कारण यह था कि यह नमाज़ एक अस्थायी कारण से

होती है, और जो अस्थायी कारण से हो वह प्रतीक नहीं है। इस सादृश्य का 'कुबरा' भी वर्जित है। आख़िर इस 'कुबरा' का प्रमाण क्या है? जबकि 'असरार' में यह कहा गया है...

[फ़ुटनोट्स] 1 बदाए-उस-सनाए, सलातुल कुसूफ़, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/280 2 इनाया मअ अल-फ़तह, बाब सलातुल कुसूफ़, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 2/56

[Column Left - Arabic] رَقَبَةٍ ۱ اه کلامه قدس سره۔ وما ارادبه دفعه فی العنایة بقوله بعد ایراد الحدیث فان قیل هذا امر والامر للوجوب فکان ینبغی ان تکون واجبة قلنا قدذهب الی ذلك بعض اصحابنا واختاره صاحب الاسرار والعامة ذهبت الی کونها سنة لانها لیست من شعائر الاسلام فانها توجد بعارض لکن صلاها النبی صلی الله تعالی علیه وسلم فکانت سنة والامر للندب ۲ اهـ فاقول: حاصله ان هذا لیس بشعار وکل واجب شعار فهذا لیس بواجب والکبری (۱) ممنوعة فرب واجب لیس من الشعائر ککفارة الیمین والظهار والصیام وکذا (۲) الصغری ممنوعة ودلیلها ان هذا لعارض وما کان لعارض لم یکن شعارا فیه ایضا الکبری ممنوعة وای دلیل علیها وقد قال فی الاسرار

[Column Right - Urdu] آزاد کرنا"۔ ملک العلماء قدس سرہ کا کلام ختم ہوا۔ عنایہ میں اس کا جواب حدیث ذکر کرنے کے بعد اس طور پر دینا چاہا ہے : "اگر کہا جائے کہ یہ امر ہے اور امر وجوب کیلئے ہوتا ہے تو نمازِ کسوف کو واجب ہونا چاہئے ۔ تو ہم کہیں گے ہاں اس طرف ہمارے بعض اصحاب گئے ہیں، اسی کو صاحب اسرار نے بھی اختیار کیا ہے۔ مگر عامہ علماء کا مذہب یہ ہے کہ نمازِ کسوف سنت ہے اس لئے کہ یہ شعارِ اسلام نہیں کیونکہ اس کا وجود عارضی طور پر ہوتا ہے لیکن نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے نمازِ کسوف پڑھی ہے اس لئے سنت ہوئی اور امر ندب کیلئے ہے"۔ اھ (ت) فاقول: اس جواب کا حاصل یہ ہوا کہ نمازِ کسوف شعار نہیں اور ہر واجب شعار ہوتا ہے اس لئے نمازِ کسوف واجب نہیں اس دلیل کا کبریٰ ممنوع ہے اس لئے کہ بہت سے ایسے بھی واجب ہیں جو شعار نہیں جیسے کفارہ قسم ، کفارہ ظہار، کفارہ صیام اسی طرح صغریٰ بھی ممنوع ہے صغریٰ کی دلیل یہ دی تھی کہ یہ نماز عارض کی بنا پر ہوتی ہے اور

جو عارض کی بنا پر ہو وہ شعار نہیں اس قیاس کا بھی کبریٰ ممنوع ہے۔ آخر اس کبریٰ کی دلیل کیا ہے؟ جب کہ اسرار میں یہ فرمایا ہے

[Footnotes] 1 بدائع الصنائع صلوٰۃ لکسوف ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۸۰/۱ 2 عنایہ مع الفتح باب صلوٰۃ لکسوف نوریہ رضویہ سکھر ۵۶/۲

Fatawa Razawiya Volume 3

As mentioned in "Fath al-Qadir": "This is a prayer performed publicly, famously, and through announcement, so it is a hallmark (symbol) of the religion in times of fear and panic." [End of quote] - (T) And it is stated in "al-Bada'i": Regarding the solar eclipse prayer, al-Qadi mentioned in his commentary on "Mukhtasar al-Tahawi" that it should be performed in the Eid prayer ground (Eidgah) or the congregational mosque (Jami' Masjid) because it is one of the symbols (hallmarks) of Islam. Therefore, its performance should be in a place prepared for the announcement and manifestation of the symbols of religion. [End of quote] - (T) In "al-Asrar," it was argued for the necessity (Wujub) of the eclipse prayer based on it being a symbol of Islam. To this, "Fath al-Qadir" replied: "The mentioned meaning (i.e., the eclipse prayer being a symbol of Islam) does not necessitate obligation, because there is no hindrance to a symbol that is intended from the start being Sunnah, let alone a symbol that relates to an accidental event." [End of quote] (T). The argument made for the necessity of the eclipse prayer based on it being a symbol of Islam is refuted by this answer. Similarly, from this answer...

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, Chapter on Eclipse Prayer, Nooriya Razawiya, Sukkur, 51/2 2. Bada'i al-Sana'i, Manner of Eclipse Prayer, H.M. Saeed Company, Karachi, 282/1 3. Fath al-Qadir, Chapter on Eclipse Prayer, Nooriya Razawiya, Sukkur, 51/2

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

जैसा कि "फ़तहुल क़दीर" में नक़ल किया गया है: "यह ऐसी नमाज़ है जो सार्वजनिक रूप से, प्रसिद्धि और घोषणा के साथ अदा की जाती है, तो डर और घबराहट की स्थिति में यह दीन का प्रतीक (शआर) है।" [समाप्त] - (त) और "बदाइअ" में कहा गया है: सूर्य ग्रहण की नमाज़ के बारे में क़ाज़ी ने "मुख़्तसर तहावी" की अपनी शरह (व्याख्या) में उल्लेख किया है कि इसे ईदगाह या जामा मस्जिद में अदा किया जाएगा क्योंकि यह इस्लाम के प्रतीकों (शआर) में से एक है। इसलिए इसकी अदायगी ऐसी ही जगह होगी जो दीन के प्रतीकों की घोषणा और प्रकटीकरण के लिए तैयार की गई है।" [समाप्त] - (त) "असरार" में सूर्य ग्रहण की नमाज़ के वाजिब (अनिवार्य) होने पर इस बात से दलील दी गई कि वह इस्लाम का प्रतीक है, तो "फ़तहुल क़दीर" में इसका यह उत्तर दिया गया कि: "उक्त अर्थ (यानी सूर्य ग्रहण का इस्लाम का प्रतीक होना) वजूब (अनिवार्यता) को आवश्यक नहीं बनाता क्योंकि जो प्रतीक आरंभ से ही अभीष्ट हो उसके भी सुन्नत होने में कोई बाधा नहीं है, फिर जो प्रतीक केवल किसी आकस्मिक घटना से संबंधित हो उसके सुन्नत होने से कौन सी चीज़ रोक सकती है?" [समाप्त] (त)। सूर्य ग्रहण की नमाज़ के वजूब पर इसके इस्लाम का प्रतीक होने से जो दलील दी गई है, इस उत्तर से उसका खंडन होता है। इसी तरह इस उत्तर से...

फुटनोट: 1. फ़तहुल क़दीर, बाब सलातुल कुसूफ़, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 51/2 2. बदाइअ उस-सनाइअ, कैफ़ियत सलातुल कुसूफ़, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 282/1 3. फ़तहुल क़दीर, बाब सलातुल कुसूफ़, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 51/2

पृष्ठ 435 / 756

کما فی الفتح انھا صلاۃ تقام علی سبیل الشھرۃ فکان شعاراً للدین حال الفزع ۱ اھ جیسا کہ فتح القدیر میں نقل کیا ہے : " یہ ایسی نماز ہے جو علانیہ طور پر اور بطریق شہرت و اعلان ادا کی جاتی ہے تو فزع اور گھبراہٹ کی حالت میں یہ دین کا شعار ہے " اھ ۔ (ت) وقال فی البدائع امانی کسوف الشمس فقد ذکر القاضی فی شرحہ مختصر الطحاوی انہ یصلی (۱) فی الموضع الذی یصلی فیہ العید او المسجد الجامع لانھا من شعائر الاسلام فتؤدی فی المکان المعد لاظھار الشعائر 2 اھ اور بدائع میں فرمایا ہے : نماز کسوف کے بارے میں قاضی نے مختصر طحاوی کی شرح میں ذکر کیا ہے کہ یہ عید گاہ یا جامع مسجد میں ادا کی جائے گی اس لئے کہ یہ ایک شعار اسلام ہے تو اس کی ادائیگی ایسی ہی جگہ ہو گی جو شعائر دین کے اعلان و اظہار کیلئے تیار رکھی گئی ہے " اھ ۔ (ت) وقد اجاب فی الفتح عن استدلال الاسرار علی وجوبھا بشعاریتھا بان المعنی المذکور لایستلزم الوجوب اذلامانع من استنان شعار مقصود ابتداء فضلا عن شعار یتعلق بعارض 3 اھ اسرار میں نماز کسوف کے وجوب پر اس امر سے استدلال کیا کہ وہ شعائر اسلام ہے تو فتح القدیر میں اس کا یہ جواب دیا کہ : " معنی مذکور (یعنی کسوف کا شعار اسلام ہونا) وجوب کو مستلزم نہیں اس لئے کہ جو شعار ابتدا ہی سے مقصود ہو اس کے بھی مسنون ہونے سے کوئی مانع نہیں پھر جو شعار محض کسی عارض سے متعلق ہو اس کے مسنون ہونے سے کون سی چیز مانع ہو سکتی ہے؟ " اھ (ت) وھذا کما ینفی الاستدلال علی الوجوب بالشعاریۃ کذلک یرد الاستدلال علی نفی الشعاریۃ نماز کسوف کے وجوب پر اس کے شعار اسلام ہونے سے جو استدلال کیا گیا ہے اس جواب سے اس کی تردید ہوتی ہے اسی طرح اس جواب سے اس

۱ فتح القدیر باب صلوۃ الکسوف نوریہ رضویہ سکھر ۵۱/۲ 2 بدائع الصنائع کیفیۃ صلوۃ الکسوف ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۸۲/۱ 3 فتح القدیر باب صلوۃ الکسوف نوریہ رضویہ سکھر ۵۱/۲

Fatawa Razawiya, Volume 3

...due to being an incidental cause. The argument is also refuted in which it is said that the eclipse prayer occurs due to an accidental cause, therefore it cannot be a symbol (ritual).

In summary (1), the author of Al-Asrar holds the view that every symbol (sha'ar) is mandatory (wajib), while the author of Al-Inayah holds the view that every mandatory act is a symbol. The correct view is that there is a general partial overlap (umum min wajh) between the two. They both occur together in the two Eids, but they diverge in the call to prayer (Adhan) and expiations (Kaffarat). Later, I saw that Sa'di Effendi raised the second objection against Al-Inayah, taking it from Al-Fath, as he said: "I say, what prevents something that is among the symbols from being related to an accidental cause? Reflect (tammul)." (1) end.

Briefly, the author of Asrar thinks that every ritual is mandatory, and the author of Inayah thinks every mandatory act is a ritual. The truth is that there is a relationship of partial overlap between mandatory and ritual. Some acts are both mandatory and rituals, like the Eid prayers. Some things are rituals but not mandatory, like the call to prayer (Adhan). And some things are mandatory but not rituals, like expiations (Kaffarat). (In the author's short words, it means that) in the two Eids, there is a conjunction of both mandatory and ritual elements. In the Adhan and expiations, they are separated. Then I saw that the second objection I made against Inayah was also made by Sa'di Effendi, taking from Fath al-Qadir in these words: "I say, if something is among the symbols of Islam, what prevents its connection to an accidental cause? Use reflection." End.

But I say, and through Allah is success, the answer to the words of the author of the school (muharrir al-madhhab) in al-Asl (2) was not completed, for if his intention was this, then... (T) But I say, and through Allah is success, in Mabsut, the response to the statement of the author of the school (that no voluntary prayer except for the night prayer of Ramadan and the eclipse prayer shall be performed in congregation) has not been fully resolved, because if his intention was that...

1. Marginalia of Sa'di Effendi with Al-Fath, Prayer of the Eclipse, Nooria Razawiya Sukkur, 1/56 Page 436 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

...एक आकस्मिक कारण (आरिज़) होने के नाते। उस तर्क का भी खंडन किया जाता है जिसमें यह कहा गया है कि सूर्य ग्रहण की नमाज़ एक आकस्मिक घटना के कारण होती है, इसलिए यह इस्लाम का प्रतीक (शआर) नहीं हो सकती।

संक्षेप में (१), 'असरार' के लेखक का मत है कि प्रत्येक प्रतीक (शआर) अनिवार्य (वाजिब) है और 'इनाया' के लेखक का मत है कि प्रत्येक अनिवार्य कार्य एक प्रतीक है। सही बात यह है कि इन दोनों के बीच आंशिक समानता (उमूम मिन वजह) का संबंध है। वे दो ईदों की नमाज़ों में एक साथ मिलते हैं और अज़ान तथा कफ़्फ़ारा में अलग हो जाते हैं। फिर मैंने देखा कि सादी अफ़ंदी ने 'फ़तह' से लेते हुए दूसरे ऐतराज के साथ 'इनाया' पर आपत्ति जताई है, जैसा कि उन्होंने कहा: "मैं कहता हूँ, जो चीज़ प्रतीकों में से है, उसका किसी आकस्मिक कारण से संबंधित होने में क्या बाधा है? विचार करें।" (१) अंत।

संक्षेप में यह कि 'असरार' के लेखक का विचार है कि हर प्रतीक वाजिब होता है और 'इनाया' के लेखक का यह सिद्धांत है कि हर वाजिब प्रतीक होता है। और सही यह है कि वाजिब और प्रतीक में आंशिक समानता का संबंध है। कोई कार्य वाजिब और प्रतीक दोनों होता है जैसे ईदों की नमाज़, और कोई चीज़ प्रतीक तो होती है लेकिन वाजिब नहीं होती जैसे अज़ान। और कोई कार्य वाजिब तो होता है लेकिन प्रतीक नहीं होता जैसे कफ़्फ़ारा। (लेखक के संक्षिप्त शब्दों में यह है कि) ईदों में वाजिब और प्रतीक दोनों का मिलन है। अज़ान और कफ़्फ़ारा में दोनों का अलगाव है। फिर मैंने देखा कि मैंने 'इनाया' पर जो दूसरा ऐतराज किया था, वही सादी अफ़ंदी ने भी 'फ़तहुल क़दीर' से लेते हुए अपने इन शब्दों में किया है: "मैं कहता हूँ कि जो चीज़ इस्लाम के प्रतीकों में से हो, किसी आकस्मिक कारण से उसके संबंध होने से कौन सी चीज़ बाधक है? विचार से काम लो।" अंत।

लेकिन मैं कहता हूँ, और अल्लाह की तौफ़ीक से, 'अल-अस्ल' (२) में पंथ के संकलनकर्ता (मुहर्रिर-ए-मज़हब) के शब्दों का उत्तर पूरा नहीं हुआ, क्योंकि यदि उनका इरादा यह होता तो... (त) लेकिन मैं कहता हूँ, और अल्लाह की तौफ़ीक से, 'मबसूत' में पंथ के संकलनकर्ता के कथन (कि रमज़ान की

रात की नमाज़ और ग्रहण की नमाज़ के अलावा कोई भी नफ़्ली नमाज़ जमात के साथ नहीं पढ़ी जाएगी) का उत्तर पूरा नहीं हुआ है, क्योंकि यदि उनका इरादा वह...

1. हाशियह सादी अफ़ंदी मअ अल-फ़तह, सलातुल कुसूफ़, नूरिया रज़विया सुक्कुर १/५६ पेज ७५६ का ४३६

بکونہ لعارض۔ استدلال کی بھی تردید ہوتی ہے جس میں ہے یہ کہا گیا ہے کہ نماز کسوف امر عارض کی وجہ سے ہوتی ہے اس لئے شعار نہیں ہوسکتی۔

وبالجملة (۱) ذهب الاسرار الی ان کل شعار واجب والعنایة الی ان کل واجب شعار والصحیح ان بینهما عموما من وجه یجتمعان فی العیدین ویفترقان فی الاذان والکفارات ثم رأیت سعدی افندی اعتراض العنایة باعتراض الثانی أخذا عن الفتح اذ قال اقول ما المانع في تعلق ما هو من الشعائر بعارض تأمل ۱ـہ اھ مختصر یہ کہ صاحب اسرار کا یہ خیال ہے کہ ہر شعار واجب ہوتا ہے اور صاحبِ عنایہ کا یہ نظریہ ہے کہ ہر واجب شعار ہوتا ہے اور صحیح یہ ہے کہ واجب اور شعار میں عموم من وجہ کی نسبت ہے کوئی امر واجب اور شعار دونوں ہوتا ہے جیسے نماز عیدین اور کوئی چیز شعار تو ہوتی ہے مگر واجب نہیں ہوتی جیسے اذان۔ اور کوئی امر واجب ہوتا ہے مگر شعار نہیں ہوتا جیسے کفارات (مصنف کے مختصر الفاظ میں یہ ہے کہ) عیدین میں واجب وشعار دونوں کا اجتماع ہے۔ اذان اور کفارات میں دونوں کا افتراق ہے پھر میں نے دیکھا کہ میں نے عنایہ پر جو دوسرا اعتراض کیا ہے وہی سعدی آفندی نے بھی فتح القدیر سے اخذ کرتے ہوئے اپنے ان الفاظ میں کیا ہے: "میں کہتا ہوں جو چیز شعائر اسلام سے ہو کسی عارض سے اس کا تعلق ہونے سے کون سی چیز مانع ہے؟ تامل سے کام لو"۔ اھ

لکنی اقول: وباللہ التوفیق لم (۲) یتم الجواب عن کلام محرر المذهب فی الاصل اذلو کان مراده هذا لم (ت) لکنی اقول: وباللہ التوفیق، مبسوط میں محرر مذہب کے ارشاد (قیام رمضان اور نماز کسوف کے سوا کوئی نفلی نماز جماعت سے نہ ادا کی جائیگی، کا جواب تام نہیں ہوا اس لئے کہ اگر ان کی مراد وہ

Fatawa Razawiya - Volume 3

[Left Column Text] ...it would be correct to limit it to two due to the two Eids. If it were so, limiting it to two would not be correct because, besides these two, the Eid prayers are also performed in congregation.

As for the argument of obligation based on the imperative form (sigha-e-amr), I say: this argument is invalidated by the prayer of the lunar eclipse (Khusuf), as well as the prayers for strong winds, thunderbolts, earthquakes, continuous rain and snow, darkness during the day, terrifying light at night, and similar frightening events—may the Lord, Glorified and Exalted, protect us and all the people of Sunnah from them in this world and the hereafter, Amen. The argument is refuted because prayers for all these events are recommended (mustahab) by consensus, yet the command includes them all.

Even Malik al-Ulama himself stated: "As for the prayer of the lunar eclipse, it is good (hasan) because of what we narrated from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): 'When you see any of these frightening things, hasten to prayer.'" Then he said: "Similarly, prayer is recommended in every frightening situation, such as strong winds, earthquakes, darkness, and continuous rain, because they are among the frightening and terrifying events."

[Bottom Section] Thus it is clear that the analogy of voluntary prayers (nawafil) to established Sunnah prayers, and of the lunar eclipse (Khusuf) to the solar eclipse (Kusuf), is a flawed analogy. And with Allah is all success, except it can be said that here...

---

1. Bada'i al-Sana'i, Kayfiyyat al-Kusuf, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/282.
2. Bada'i al-Sana'i, Kayfiyyat al-Kusuf, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/282.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

[बायाँ कॉलम पाठ] ...इन दोनों में ही सीमित रखना सही होगा क्योंकि दो ईदें हैं। अगर ऐसा होता, तो दो में सीमित रखना सही नहीं होता क्योंकि इन दोनों के अलावा ईद की नमाज़ें भी जमात (सामूहिक) के साथ अदा की जाती हैं।

जहाँ तक आज्ञावाचक रूप (सीग़ा-ए-अम्र) के आधार पर अनिवार्यता (वजुब) का तर्क है, तो मैं कहता हूँ: यह तर्क चंद्र ग्रहण (खुसूफ़) की नमाज़, और साथ ही तेज़ हवाओं, बिजली गिरने, भूकंप, निरंतर वर्षा और बर्फबारी, दिन में अंधेरा, रात में भयानक रोशनी, और इसी तरह की अन्य डरावनी चीज़ों से अमान्य हो जाता है—मौला सुब्हानहु व तआला हमें और सुन्नत के सभी लोगों को दुनिया और आखिरत में इनसे पनाह (शरण) में रखे, आमीन। इन सब से संबंधित नमाज़ों पर यह तर्क लागू नहीं होता क्योंकि ये सभी सर्वसम्मति से मुस्तहब (पसंदीदा) हैं, और आदेश उन सभी को शामिल करता है।

स्वयं मलिक अल-उलेमा ने फरमाया है: "जहाँ तक चंद्र ग्रहण की नमाज़ का सवाल है, तो यह हसन (बेहतर) है क्योंकि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से रिवायत है: 'जब तुम इन डर और घबराहट वाली चीज़ों में से कुछ देखो, तो नमाज़ की शरण लो'।" फिर उन्होंने कहा: "इसी प्रकार, हर डर, घबराहट और परेशानी की स्थिति में नमाज़ मुस्तहब है जैसे आंधी, भूकंप, अंधेरा, और निरंतर बारिश, क्योंकि ये सभी डरावनी और भयानक चीज़ें हैं।"

[नीचे का अनुभाग] तो स्पष्ट हुआ कि नफ़्ल नमाज़ों की तुलना सुन्नत नमाज़ों से, और चंद्र ग्रहण (खुसूफ़) की तुलना सूर्य ग्रहण (कुसूफ़) से करना बेबुनियाद है। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है, मगर यह कहा जा सकता है कि यहाँ...

---

1. बदाए अस-सनाए, कैफियतुल कुसूफ़, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/282।
2. बदाए अस-सनाए, कैफियतुल कुसूफ़, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/282।

पृष्ठ 756 का 437

[بائیں بازو کا کالم] یصح الحصر فیهما لمکان العیدین۔ اما الاستدلال (۱) بصیغة الامر فاقول منقوض بصلاة الخسوف بل وصلوات (۲) الریح الشدیدة والصواعق والزلزلة والمطر والثلج الدائمین والظلمة بالنهار والضوء الهائل باللیل وامثال ذلك الاهوال اعاذنا المولی سبحانه وتعالی واهل السنة جمیعا منها دنیا واخری امین فانها مستحبة اجماعا والامر یشملها جمیعا۔ وقد (۳) قال ملك العلماء نفسه اما صلاة خسوف القمر فحسنة لما روینا عن النبی صلی الله تعالی علیه وسلم اذارأیتم من هذه الافزاع شیأ فافزعوا الی الصلاة اهـ ثم قال وکذا تستحب الصلاة في کل فزع کالریح الشدیدة والزلزلة والظلمة والمطر الدائم لکونها من الافزاع والاهوال اهـ

[دائیں بازو کا کالم] ہوتی تو دو میں حصر درست نہ ہوتا اس لئے کہ ان دونوں کے علاوہ عیدین بھی جماعت سے ادا ہوتی ہیں۔ اب رہا صیغہ امر سے وجوب پر استدلال، فاقول: خسوف (چاند گہن) کی نماز، بلکہ آندھی، صاعقہ، زلزلے، دائمی ابر باری و برف باری، دن میں تاریکی، رات میں خوفناک تابانی، اور اس طرح کی دوسری ہولناک چیزیں مولی سبحانہ و تعالٰی ہمیں اور تمام اہل سنت کو ان سے دنیا اور آخرت میں پناہ میں رکھے۔ آمین سب سے متعلق نمازوں سے اس استدلال پر نقض وارد ہوتا ہے کیونکہ یہ سب بالا جماع مستحب ہیں۔ اور امر سب کو شامل ہے۔ خود ملک العلماء فرماتے ہیں: نماز خسوف حسن (پسندیدہ و عمدہ) ہے اس لئے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت ہے: "جب تم ان خوف و پریشانی والی چیزوں میں سے کوئی چیز دیکھو تو نماز کی پناہ لو"۔ پھر فرمایا: "اسی طرح ہر فزع، گھبراہٹ اور پریشانی کی چیز میں نماز مستحب ہے جیسے آندھی، زلزلہ، تاریکی، دائمی بارش، کیونکہ یہ سب ہول و فزع والی چیزیں ہیں اھ" (ت)

[نیچے والا حصہ] تو ظاہر ہوا کہ نوافل کا سنن اور خسوف کا کسوف پر قیاس مع الفارق ہے۔ وباللہ التوفیق الا ان یقال | وباللہ التوفیق، مگر یہ کہا جا سکتا ہے کہ یہاں

---

1 بدائع الصنائع کیفیۃ الکسوف ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۸۲ 2 بدائع الصنائع کیفیۃ الکسوف ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۸۲

The need here is to multiply the doors of goodness, intending for the outpouring of the bounty of Allah, the Almighty and Majestic. Do you not see that He has permitted the performance of voluntary (Nafl) prayers on a riding beast by gesture towards a direction other than the Qibla, despite the loss of conditions and pillars in it? There is no necessity except for the slave's need to seek more of His Almighty's bounty, as stated in "Al-Fath" regarding the issue that one may pray whatever obligatory (Fard) and voluntary prayers one wishes with one's tayammum. According to Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), one must perform tayammum for every obligatory prayer because it is a purification of necessity[1].

I say: This reasoning is muddied by the fact that this is applicable where tayammum is valid due to its condition, which is the lack of water. For us, it is an absolute purification. If it were permitted solely for the purpose of increasing [good deeds], it would have been permissible for all voluntary prayers, even those not bound by a specific time, because of the certain knowledge that the amount of prayer one can offer with tayammum is more than what one can offer after performing ablution (Wudu) or a full bath (Ghusl). Do you not see that the one who was permitted to pray on a beast by gesture in a direction other than the Qibla was not permitted to perform tayammum if he had power over water and the ride?

---

[1] Fath al-Qadir with al-Hidayah, Chapter on Tayammum, Nooria Rizvia, Sukkur, 1/121

यहाँ आवश्यकता भलाई के द्वारों को बढ़ाने की है, ताकि अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल की कृपा की वर्षा का इरादा किया जा सके। क्या आप नहीं देखते कि उसने सवारी पर इशारे से और क़िब्ला के अलावा दूसरी दिशा में नफ़्ल (स्वैच्छिक) नमाज़ पढ़ने की अनुमति दी है, जबकि उसमें नमाज़ की शर्तें और अरकान (स्तंभ) भी छूट जाते हैं? और यहाँ कोई आवश्यकता नहीं है सिवाय बंदे की उस ज़रूरत के कि वह अल्लाह तआला के फ़ज़्ल (कृपा) की अधिकता की कामना करे, जैसा कि 'फ़तहुल् क़दीर' में इस मसले के तहत बयान किया गया है कि बंदा अपने एक तैयम्मुम से जितने चाहे फ़राइज़ (अनिवार्य) और नवाफ़िल (स्वैच्छिक) नमाज़ें अदा कर सकता है। और इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाहि अलैहि) के नज़दीक यह है कि हर फ़र्ज़ के लिए तैयम्मुम करे क्योंकि तैयम्मुम 'तहारते ज़रूरिया' (आवश्यकता की शुद्धि) है[1]।

अक़ूलु (मैं कहता हूँ): इस तर्क की स्पष्टता पर मलीनता इस दिशा से आती है कि यह हुक्म वहाँ है जहाँ तैयम्मुम अपनी शर्त यानी पानी की अनुपलब्धता के कारण सही और दुरुस्त हो चुका हो (तो वह जितने चाहे फ़राइज़ और नवाफ़िल पढ़ सकता है) क्योंकि हमारे नज़दीक तैयम्मुम 'तहारते मुतलक़ा' (पूर्ण शुद्धि) है। और यदि इसे केवल अल्लाह के फ़ज़्ल की अधिकता चाहने के लिए जायज़ करार दिया जाता, तो यह मुतलक़ नवाफ़िल के लिए भी जायज़ होता, चाहे वे नवाफ़िल किसी विशेष समय के पाबंद न हों, क्योंकि यह बात यक़ीनी तौर पर मालूम है कि वज़ू या ग़ुस्ल करने के बाद जितनी नमाज़ें पढ़ी जा सकती हैं, तैयम्मुम करके उससे कहीं ज़्यादा नमाज़ें अदा की जा सकती हैं। देखिये, जिसके लिए सवारी पर इशारे से और ग़ैर-क़िब्ला की तरफ़ नमाज़ की इजाज़त दी गई, उसे तैयम्मुम की अनुमति नहीं दी गई यदि वह पानी और सवारी पर सक्षम हो।

---

[1] फ़तहुल् क़दीर मअ अल-हिदाया, बाब अत्-तयम्मुम, नूरिया रिज़विया, सुक्कुर, 1/121 पृष्ठ 438 का 756

ان الحاجة هنا تكثير ابواب الخيرات ارادة لافاضة كرمه عزوجل الا يرى انه اباح التنفل على الدابة بالايماء لغير القبلة مع فوات الشروط والاركان فيها ولا ضرورة الا لحاجة القائمة بالعبد لزيادة الاستكثار من فضله تعالى كما افاده فى الفتح فى مسألة انه يصلى بتيممه ماشاء من الفرائض والنوافل وعند الشافعى رحمه الله تعالى يتيمم لكل فرض لانه طهارة ضرورية[1]۔ ضرورت یہ ہے کہ کرم باری عزوجل کے فیضان کے ارادہ سے نیکیوں کی راہیں زیادہ کی جائیں دیکھئے کہ باری تعالیٰ نے سواری پر اشارہ سے اور غیر قبلہ کی جانب نفل پڑھنے کو جائز فرمایا جبکہ اس میں نماز کی شرطیں بھی فوت ہوتی ہیں اور ارکان بھی اور ضرورت یہی ہے کہ بندہ کو باری تعالیٰ کے فضل کی کثرت طلب کرنے میں زیادتی کی حاجت ہے جیسا کہ فتح القدیر میں افادہ فرمایا ہے اس مسئلہ کے تحت کہ بندہ اپنے تیمم سے جس قدر فرائض و نوافل چاہے ادا کرے اور امام شافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے نزدیک یہ ہے کہ ہر فرض کیلئے تیمم کرے اس لئے کہ تیمم طہارتِ ضروریہ ہے۔

اقول: ویکدره ان هذا حيث صح التيمم بوجود شرطه من فقد الماء فانها طهارة مطلقة عندنا ولو جوز لمجرد الاستكثار لجاز لمطلق النوافل ولو غير موقتة للعلم القطعى بان ما تصليه بالتيمم اكثر مما تصليه بعد التوضيئ او الاغتسال الا ترى ان الذى رخص له الصلاة على الدابة بالايماء على غير القبلة لم يرخص له فى التيمم اذا قدر على الماء والركوب۔ اقول: اس استدلال کی صفائی پر کدورت اس جہت سے آتی ہے کہ یہ حکم وہاں ہے جہاں تیمم صحیح و درست ہو چکا اس طرح کہ تیمم کی شرط پانی کا فقدان پائی جا چکی (تو وہ جس قدر فرائض و نوافل چاہے پڑھ سکتا ہے) اس لئے کہ تیمم ہمارے نزدیک طہارتِ مطلقہ ہے۔ اور اگر محض کثرتِ فضل طلب کرنے کیلئے اسے جائز قرار دیا جاتا تو مطلق نوافل کیلئے اس کا جواز ہوتا اگرچہ نوافل ایسے ہوں جو کسی خاص وقت کے پابند نہیں

اس لئے کہ یہ بات قطعی طور پر معلوم ہے کہ وضو یا غسل کرنے کے بعد جس قدر نمازیں پڑھی جاسکتی ہیں تیمم کر کے اس سے زیادہ نمازیں ادا کی جاسکتی ہیں۔ دیکھئے جس کیلئے

---

[1] فتح القدیر مع الہدایۃ باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۲۱ Page 438 of 756

[Box Content] (Right Side Urdu Text): Permission was given to pray by gesture on a mount and facing a direction other than the Qiblah. However, despite having the ability to get water and to ascend/descend, permission for tayammum (dry ablution) was not granted when the duration of stay for obtaining purification with water and the resulting reduction in supererogatory prayers would exceed that of a resident who is in his home and has water available. (T) (Left Side Arabic Text): And descending while his stay for seeking purification with water and the reduction of his supererogatory prayers would be more than the resident in his house when he has water with him.

In short, according to this humble one, this ruling regarding purely recommended acts like the eclipse prayer (Kusoof), night prayer (Tahajjud), and mid-morning prayer (Chasht) is contrary to evidence. For this, a transmission from the Imams was required, which is absent; in fact, the transmission is on the side of negation, as has preceded. And success is from Allah, and Allah, Glorified and Exalted, knows best. (As its explanation has passed by the grace of Allah, and Allah knows best. -T)

(88) For every timed prayer whose missed performance must be made up (qada), such as the five daily prayers, Jumu'ah (Friday prayer), and Witr; if time is running out to perform it with water purification, one should perform it with tayammum within the time so that it does not become qada, then subsequently perform purification with water and repeat the prayer.

I say: This should have the following detail: for instance, if one woke up for Fajr at such a late hour that if they perform wudu or need a bath and perform ghusl, the sun would rise before the final salutation of the prayer; or if they purify for Jumu'ah, the time for Asr begins before the Jumu'ah salutation; or a follower cannot join the Jumu'ah congregation before the salutation and cannot find another place to pray behind a designated Jumu'ah Imam; or someone in a state of ritual impurity (needing wudu or ghusl) finds so little time for Dhuhr, Asr, Maghrib, or Isha that they cannot even make the intention; or they woke up after sleeping through the Isha obligatory prayer and need a bath or wudu, and there isn't enough time in the morning to make the intention for Witr after water purification; then in all these cases, perform these prayers with tayammum, then after performing ghusl or wudu, pray them again after the time. In short, for Fajr and Jumu'ah, the expiration of time before the final salutation or the follower's inability to join the congregation behind the designated

Jumu'ah Imam should be the deciding factor. For the remaining prayers, the factor should be whether the opening Takbir (Takbir-e-Tahrimah) is performed within the time, because Fajr, Jumu'ah, and Eid prayers become void if the time expires before the final salutation. This is unlike the other prayers, where it is sufficient to commence with the Takbir within the time.

Furthermore, I say: If the situation is such that if one purifies with water in the morning, they only manage two rak'ahs within the time, but with tayammum they get all four, then they should pray with tayammum at sunrise. Similarly, in other prayers, if the time allows the obligatory (fard) prayers to be performed within time using water purification, but the sunnahs before or after Dhuhr, or the sunnahs of Maghrib, or the sunnah and Witr of Isha cannot be performed, whereas with tayammum all can be obtained, then the priority of the fard prayers will prevail. One should perform the fard with water purification along with whatever else can be managed; if the sunnahs are missed...

[बॉक्स सामग्री] (दाहिनी ओर उर्दू पाठ): सवारी पर इशारे से, और ग़ैर क़िबला की सिम्त (दिशा) नमाज़ पढ़ने की रुख़सत दी गई। इसके लिए पानी और चढ़ने-उतरने पर क़ुदरत (क्षमता) होते हुए तयम्मुम की रुख़सत नहीं दी गई, जबकि पानी से तहारत (पाकी) हासिल करने में उसके रुकने की मुद्दत और उसके नवाफ़िल (अतिरिक्त नमाज़ों) की कमी उस मुकीम (निवासी) से ज़्यादा होगी जो अपने घर में है और उसके पास पानी भी मौजूद है। (त) (बाईं ओर अरबी पाठ): और उतरना, इस तथ्य के साथ कि पानी से पवित्रता की तलाश में उसका रुकना और उसके नवाफ़िल की कमी उस निवासी से अधिक है जो अपने घर में है और उसके पास पानी है।

संक्षेप में, इस फ़क़ीर के नज़दीक महज़ मुस्तहब्बात (पसंदीदा कार्य) जैसे नमाज़-ए-खुसूफ़ (सूर्य ग्रहण), तहज्जुद और चाश्त में यह हुक्म दलील (प्रमाण) के ख़िलाफ़ है। इसके लिए इमामों से कोई उल्लेख आवश्यक था, और वह अनुपस्थित है; बल्कि उल्लेख नकारात्मक पक्ष में है, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। और सफलता अल्लाह की ओर से है, और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे ज़्यादा जानने वाला है। (जैसा कि अल्लाह की तौफ़ीक़ से इसका विवरण गुज़र चुका है, और अल्लाह बेहतर जानता है। -त)

(88) हर वह नमाज़ जिसके वक़्त के बाद कज़ा है, जैसे पांच वक़्त की नमाज़ें, जुमा और वित्र; जब पानी से पाक होने में वक़्त निकल जाने का ख़तरा हो, तो तयम्मुम करके वक़्त के अंदर पढ़ ले ताकि कज़ा न हो जाए, फिर पानी से पाक होकर उसे दोबारा पढ़े।

मैं कहता हूँ: इसमें यह विस्तार होना चाहिए कि मिसाल के तौर पर सुबह इतने कम वक़्त में उठा कि वज़ू करे या नहाने की ज़रूरत हो और ग़ुस्ल करे तो नमाज़ के सलाम से पहले सूरज निकल आए; या जुमा के लिए पाक हो तो जुमा के सलाम से पहले अस्र का वक़्त आ जाए; या मुक्तदी जुमा की जमात में सलाम से पहले शामिल न हो सके और दूसरी जगह भी मुकर्रर (नियत) इमाम के पीछे नमाज़ न मिल सके या कोई अपवित्र हो और वज़ू या ग़ुस्ल के लिए ज़ुहर, अस्र, मग़रिब या इशा का इतना वक़्त न पाए कि नियत बांध ले; या इशा का फ़र्ज़ पढ़ कर सोया और उठा तो नहाने या वज़ू की ज़रूरत है और सुबह में इतनी मोहलत नहीं कि पानी से पाक होने के बाद वित्र की नियत बांध ले; तो इन सब सूरतों में ये नमाज़ें तयम्मुम से पढ़ ले, फिर ग़ुस्ल या वज़ू करके वक़्त के बाद दोबारा पढ़े। कुल मिलाकर फ़ज्र और जुमा में सलाम से पहले वक़्त निकल जाना या मुक्तदी का मुकर्रर इमाम के पीछे

जमात न पाना विचारणीय होना चाहिए। शेष नमाज़ों में तकबीर-ए-तहरीमा वक़्त के अंदर न मिल पाने का विचार होना चाहिए, क्योंकि फ़ज्र, जुमा और ईदैन नमाज़ें सलाम से पहले वक़्त निकल जाने से बातिल (अमान्य) हो जाती हैं। इसके विपरीत अन्य नमाज़ों में वक़्त के अंदर तहरीमा बांध लेना ही पर्याप्त है।

फिर मैं कहता हूँ: अगर स्थिति यह है कि सुबह में पानी से पाकी हासिल करे तो वक़्त के अंदर केवल दो रकअतें ही मिल पाएंगी, लेकिन तयम्मुम से चारों मिलेंगी, तो तयम्मुम के साथ सूरज की ऊंचाई पर पढ़े। इसी तरह अन्य नमाज़ों में, यदि वक़्त इतना मिलता है कि पानी की तहारत से फ़र्ज़ नमाज़ें वक़्त के भीतर हो जाएंगी, परंतु ज़ुहर की सुन्नत-ए-क़ब्लिया (पहले की) या बादिया (बाद की) या दोनों, अथवा मग़रिब की सुन्नतें या इशा की सुन्नत व वित्र नहीं मिल पाएंगी, जबकि तयम्मुम से सब मिल सकती हैं, तो फ़र्ज़ों का ही पलड़ा भारी रहेगा। पानी की तहारत से फ़र्ज़ और उसके साथ जो कुछ संभव हो अदा कर ले; यदि सुन्नतें छूट गईं तो...

पृष्ठ 756 का 439

[باکس کا متن] (دائیں جانب اردو متن): سواری پر اشارہ سے، اور غیر قبلہ کی سمت نماز پڑھنے کی رخصت دی گئی اس کیلئے پانی اور چڑھنے اترنے پر قدرت ہوتے ہوئے تیمم کی رخصت نہ دی گئی جب کہ پانی سے طہارت حاصل کرنے میں اس کے توقف کی مدت اور اس کے نوافل کی کمی اس مقیم سے زیادہ ہوگی جو اپنے گھر میں ہے اور اس کے پاس پانی بھی موجود ہے۔ (ت) (بائیں جانب عربی متن): والنزول مع ان مکثہ فی طلب الطہارۃ بالماء وقلۃ نوافلہ اکثر من المقیم فی بیتہ وعندہ الماء۔

بالجملہ فقیر کے نزدیك مستحبات محضہ مثل نمازِ خسوف و تہجد و چاشت میں یہ حکم خلافِ دلیل ہے اس کیلئے ائمہ سے نقل درکار تھی اور وہ منتفی بلکہ نقل جانبِ نفی نقل ہے کما تقدم وباللہ التوفیق واللہ سبحنہ و تعالی اعلم (جیسا کہ اس کا بیان گزر چکا اللہ تعالی کی توفیق سے ، اور اللہ تعالی زیادہ جانتا ہے۔ت)

(۸۸) ہر نمازِ موقت کہ بعد فوت جس کی قضاء ہے جیسے نمازِ پنجگانہ وجمعہ و وتر جب طہارتِ آب سے وقت جاتا ہو تیمم سے وقت کے اندر پڑھ لے کہ قضا نہ ہو جائے پھر پانی سے طہارت کرکے اعادہ کرے۔

اقول: اس میں یہ تفصیل ہونی چاہئے کہ مثلاً صبح اتنے تنگ وقت اٹھا کہ وضو کرے یا نہانے کی حاجت ہے اور غسل کرے تو سلامِ نماز سے پہلے سورج چمك آئے یا امام جمعہ سے طہارت کرے تو سلامِ جمعہ سے پہلے وقتِ عصر آجائے یا مقتدی جماعتِ جمعہ میں قبل سلام شریك نہ ہو پائے اور دوسری جگہ بھی امام مقرر جمعہ کے پیچھے نماز نہ مل سکے یا محدث وضو خواہ جنب غسل

کرے تو ظہر یا عصر یا مغرب یا عشا کا اتنا وقت نہ پائے کہ نیت باندھ لے یا فرض عشا پڑھ کر سویا اٹھا تو نہانے کی حاجت ہے یا وضو ہی کرنا ہے اور صبح میں اتنی مہلت نہیں کہ پانی سے طہارت کے بعد وتر کی نیت باندھ لے تو ان سب صورتوں میں یہ نمازیں تیمم سے پڑھ لے پھر غسل باوضو کرکے دوبارہ بعد وقت پڑھے بالجملہ فجر و جمعہ میں سلام سے پہلے وقت نکل جانا یا مقتدی کا امام مقرر للجمعہ کے پیچھے جماعت نہ پانا معتبر ہونا چاہئے باقی نمازوں میں تکبیرِ تحریمہ وقت کے اندر نہ ملنے کا اعتبار چاہئے کہ فجر و جمعہ و عیدین سلام سے پہلے خروجِ وقت سے باطل ہو جاتی ہیں۔ بخلاف باقی صلوات کہ ان میں وقت کے اندر تحریمہ باندھ جانا کافی ہے۔

ثم اقول: اگر صورت یہ ہے کہ صبح میں پانی سے طہارت کرے تو صرف دو رکعتیں وقت میں پائے اور تیمم سے چاروں تو تیمم کی بلندیِ آفتاب پڑھے یوں ہی باقی نمازوں میں اگر وقت اتنا ملتا ہے کہ پانی کی طہارت سے فرض وقت ہو جائیں گے ظہر کی سنتِ قبلیہ یا بعدیہ یا دونوں یا مغرب میں سنتیں یا عشا میں سنت و وتر نہ ملیں گے اور تیمم سے سب مل سکتے ہیں تو فرضوں ہی کا پلہ راجح رہے گا طہارتِ آب سے فرض اور اس کے ساتھ اور جو کچھ مل سکے ادا کرلے سنتیں رہ گئیں تو

Fatawa Razawiyya Volume Three

...were missed, and Witr remained, then perform their make-up (Qada). In short, it will not be permissible to perform obligatory (Fard) prayers with Tayammum (dry ablution) for the sake of observing a non-obligatory prayer, even if Tayammum was permissible for that non-obligatory prayer due to the fear of missing it. And perhaps everything I have mentioned in these two contexts is very clear, and Allah Almighty knows best. (It is expected that what I have mentioned in these two places is very clear, and Allah Almighty knows best. - T)

Page 440 of 756

फतावा रज़विया जिल्द सोम

...गईं और वित्र रह गए तो उनकी कज़ा पढ़े। संक्षेप में, गैर-फ़र्ज़ (नवाफ़िल या सुन्नत) की रियायत (लिहाज़) में फ़र्ज़ नमाज़ों को तयम्मुम से अदा करना जायज़ नहीं होगा, भले ही उस गैर-फ़र्ज़ के लिए उसके छूट जाने के डर से तयम्मुम जायज़ था। और शायद जो कुछ मैंने इन दोनों स्थानों पर ज़िक्र किया है वह बहुत स्पष्ट है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (उम्मीद है कि इन दोनों स्थानों पर मैंने जो कुछ ज़िक्र किया है वह बहुत साफ़ है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। - त)

पेज 756 में से 440

گئیں اور وتر رہ گئے تو ان کی قضا پڑھے غرض غیر فرض کی رعایت سے فرضوں کا تیمّم سے ادا کرنا روا نہ ہوگا اگر چہ اس غیر فرض کیلئے خوفِ فوت میں تیمّم روا تھا ولعل کل ما ذکرت فی المقامین ظاہر جدا واللہ تعالٰی اعلم (توقع ہے کہ ان دونوں مقاموں پر جو کچھ میں نے ذکر کیا ہے بہت ظاہر ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ ت)

Volume Three | Fatawa Ridawiyya

Supplementary Treatise Al-Zafar li-Qawl Zufar 1335 AH Statement of the strengthening of Imam Zufar's view regarding the permissibility of Tayammum due to shortage of time (T)

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful. We praise Him and invoke blessings upon His noble Messenger.

Then know (1) that the permissibility of Tayammum due to fear of missing the time is the saying of Imam Zufar (may Allah Almighty have mercy on him), contrary to the school of our three Imams (may Allah Almighty be pleased with them). Indeed, they have agreed with him in one narration, and it is strengthened by subsidiary rulings (furu'), chosen by the greats, and its evidence has been strengthened by the researchers. The explanation of this is in sentences. The first sentence: The agreement of our three Imams in one narration. Ash-Shami said: It is the saying of Zufar, and in Al-Qunyah it is a narration from our masters (Al-Bahr). Then he said: You have known from the words of Al-Qunyah that it is a narration from our masters.

Be it clear that Imam Zufar (may Allah Almighty have mercy on him), contrary to the school of our three Imams (may Allah Almighty be pleased with them), considers Tayammum permissible due to the fear of missing the prayer time. One narration from the three Imams has also come down in agreement with the school of Imam Zufar; it is also supported by several subsidiary details. Some elders have adopted it, and many researchers have also given strength to his evidence. Its detailed explanation is recorded in a few sentences under the title of 'Jumla' (Sentence):

The First Sentence: Agreement of the Three Imams One narration of our three Imams has come in accordance with the school of Imam Zufar. Regarding this, Allama Shami writes: "This is the saying of Imam Zufar, and it is in Al-Qunyah that it is also narrated in one report from our scholars. - Al-Bahr." Then Shami says: Before this, it has become known from the text of Al-Qunyah that this...

जिल्द सोम (तृतीय) | फतावा रज़विया

रिसाला ज़मनिया अल-ज़फ़र लिक़ौल ज़फ़र 1335 हिजरी समय की कमी के कारण तयम्मुम की अनुमति के बारे में इमाम ज़फ़र के मत के सुदृढ़ीकरण का विवरण (त)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और दयावान है। हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं।

फिर जान लें (1) कि समय निकल जाने के डर से तयम्मुम की अनुमति इमाम ज़फ़र (रहमतुल्लाह अलैहि) का कथन है, जो हमारे तीनों इमामों (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के मत के विपरीत है। वास्तव में, उन्होंने एक रिवायत में उनका समर्थन किया है, और इसे उप-नियमों (फुरू) द्वारा सुदृढ़ किया गया है, बड़ों द्वारा चुना गया है, और शोधकर्ताओं द्वारा इसके प्रमाण को मज़बूत किया गया है। इसका विवरण वाक्यों में है। पहला वाक्य: एक रिवायत में हमारे तीनों इमामों की सहमति। अल-शामी ने कहा: यह ज़फ़र का कथन है, और अल-कुनिया में यह हमारे मशायख़ से एक रिवायत है (अल-बहर)। फिर उन्होंने कहा: आप अल-कुनिया के शब्दों से जान चुके हैं कि यह हमारे मशायख़ से एक रिवायत है।

यह स्पष्ट हो कि इमाम ज़फ़र (रहमतुल्लाह अलैहि), हमारे तीनों इमामों (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के मत के विपरीत, समय समाप्त होने की आशंका के कारण तयम्मुम को जायज़ मानते हैं। तीनों इमामों से एक रिवायत इमाम ज़फ़र के मत के अनुकूल भी आई है; कई उप-नियमों (जुज़ियात) से भी इसका समर्थन होता है। कुछ बुज़ुर्गों ने इसे अपनाया भी है और कई शोधकर्ताओं ने उनके तर्क को बल भी प्रदान किया है। इसका विस्तृत विवरण 'जुमला' (वाक्य) शीर्षक के तहत कुछ वाक्यों में दर्ज किया गया है:

जुमला अव्वल: तीनों इमामों की सहमति हमारे तीनों इमामों की एक रिवायत इमाम ज़फ़र के मत के अनुसार आई है। इसके बारे में अल्लामा शामी लिखते हैं: "यह इमाम ज़फ़र का कथन है और 'कुनिया' में है कि हमारे मशायख़ से भी एक रिवायत में यही वर्णित है। - बहर।" फिर शामी फ़रमाते हैं: इससे पहले कुनिया की इबारत से यह पता चल चुका है कि यह...

पृष्ठ 756 में से 441

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

رسالہ ضمنیہ الظفر لقول زفر ۱۳۳۵ھ وقت کی تنگی کے باعث جواز تیمم کے بارے میں امام زفر کے قول کی تقویت کا بیان (ت)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم، نحمدہ ونصلی علٰی رسولہ الکریم

ثم اعلم (۱) ان جواز التیمم لخوف فوت الوقت قول الامام زفر رحمہ اللہ تعالی علی خلاف مذھب ائمتنا الثلاثۃ رضی اللہ تعالی عنھم وقد وافقوہ فی روایۃ وشیدتہ فروع واختارہ کبراء وقوی دلیلہ محققون وبیان ذلك فی جمل۔ الجملۃ الاولی موافقۃ ائمتنا الثلاثۃ فی روایۃ قال الشامی ھو قول زفر وفی القنیۃ انہ روایۃ عن مشائخنا بحر اھ۔ ثم قال قد علمت من کلام القنیۃ انہ روایۃ عن مشائخنا

واضح ہو کہ امام زفر رحمہ اللہ تعالیٰ ہمارے تینوں ائمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے مذہب کے برخلاف وقت فوت ہونے کے اندیشہ سے تیمم کو جائز کہتے ہیں۔ ائمہ ثلاثہ سے ایک روایت مذہب امام زفر کے موافق بھی آئی ہے متعدد جزئیات سے بھی اس کی تائید ہوتی ہے۔ کچھ بزرگوں نے اسے اختیار بھی کیا ہے اور کئی محققین نے ان کی دلیل کو تقویت بھی دی ہے۔ اس کا تفصیلی بیان جملہ کے عنوان سے چند جملوں میں رقم کیا جاتا ہے:

جملہ اولٰی ائمہ ثلاثہ کی موافقت ہمارے تینوں ائمہ کی ایک روایت مذہب امام زفر کے موافق آئی ہے اس سے متعلق علامہ شامی لکھتے ہیں: "یہ امام زفر کا قول ہے اور قنیہ میں ہے کہ ہمارے مشائخ سے بھی ایک روایت میں یہی منقول ہے۔ بحر"۔ اھ پھر شامی فرماتے ہیں: اس سے پہلے قنیہ کی عبارت سے معلوم ہو چکا ہے کہ یہ

Fatawa Rizwia Volume 3

[Right Column - Urdu] It is a narration from our three masters (Mashaikh), may Allah Almighty be pleased with them. -Ended- (T)

I say: May Allah reward the scholar with His mercy. He went to great lengths in search of the objective and presented a citation that is not explicit. This is because under the heading 'no missing of Friday prayer' (meaning Tayammum is not permissible for fear of missing the Friday prayer), the words of Al-Bahr are: 'We have already mentioned with reference to Al-Qunya that a narration from our Mashaikh allows Tayammum for fear of the time passing.' Ended. And what he mentioned before that is his following statement under 'due to being a mile away,' written after mentioning a specific detail related to 'Killah' (a mosquito net or similar type of tent): 'Let it not be hidden that this issue is consistent with the view of Imam Zufar and does not align with the view of our Imams. This is because, according to them, the fear of time passing is not considered; only distance is the criterion, as we stated earlier. It is similar in the commentary of Munyat al-Musalli. But I also found this statement that a narration from our Mashaikh allows Tayammum for fear of time running out. It is mentioned in Al-Qunya under issues related to being afflicted by two calamities.' Ended- (T)

[Left Column - Arabic] ...the three, may Allah Almighty be pleased with them. Ended. I say: (1) May Allah Almighty have mercy on him, he went to great lengths and presented something that is not explicit. Because the wording of Al-Bahr at the point of 'no missing of Friday' is: 'We have already mentioned from Al-Qunya that Tayammum for fear of the expiry of time is a narration from our masters.' And what was mentioned at the point of 'being a mile away' after mentioning the branch of 'al-Killah' follows: 'It is not hidden that this is consistent with the view of Imam Zufar, not the view of our Imams. For they do not consider the fear of expiry of time; rather, the criterion is distance, as we have mentioned. Thus it is in the commentary of Munyat al-Musalli. However, I found that Tayammum for fear of expiry of time is a narration from our masters, mentioned in Al-Qunya under the issues of one afflicted with two calamities. Ended.'

[Footnotes] 1 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt, 1/180 2 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, HM Saeed Company Karachi, 1/159 3 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, HM Saeed Company Karachi, 1/140

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[दायां कॉलम - उर्दू] हमारे तीनों मशाइख़ (अल्लाह तआला उन पर प्रसन्न हो) की एक रिवायत है। -समाप्त- (त)

मैं कहता हूँ: अल्लाह तआला अल्लामा को अपनी रहमत से नवाज़े, वे वाँछित लक्ष्य की तलाश में बहुत दूर निकल गए और ऐसा उद्धरण पेश किया जो स्पष्ट नहीं है। क्योंकि 'ला-फ़ौत अल-जुमुआ' (जुमा न छूटने के डर से तयम्मुम नहीं) के तहत 'अल-बहर' के शब्द ये हैं: "हम पहले 'अल-क़ुनिया' के हवाले से ज़िक्र कर चुके हैं कि समय समाप्त होने के डर से तयम्मुम का जायज़ होना हमारे मशाइख़ की एक रिवायत है।" समाप्त। और इससे पहले जो ज़िक्र किया गया है, वह उनकी निम्नलिखित इबारत है जो 'एक मील की दूरी' के तहत 'किल्ला' (मच्छरदानी या उसी प्रकार का शामियाना) से संबंधित उप-मसाले के बाद लिखी गई है: "यह छिपा न रहे कि यह मसला इमाम ज़ुफ़र के कौल के अनुकूल है और हमारे इमामों के कौल के अनुकूल नहीं है। क्योंकि उनके नज़दीक समय बीतने के डर का कोई एतबार नहीं है; केवल दूरी का एतबार है, जैसा कि हमने पहले बयान किया। 'मुन्यातुल मुसल्ली' की शरह (व्याख्या) में भी ऐसा ही है। लेकिन मुझे यह बयान भी मिला कि समय समाप्त होने के डर से तयम्मुम का जायज़ होना हमारे मशाइख़ से भी एक रिवायत में आया है। इसे 'क़ुनिया' में दो मुसीबतों में मुब्तला होने वाले से संबंधित मसाइल के तहत बयान किया गया है।" -समाप्त- (त)

[बायां कॉलम - अरबी] ...तीनों, अल्लाह तआला उन पर प्रसन्न हो। समाप्त। मैं कहता हूँ: (1) अल्लाह तआला उन पर रहम करे, वे तलाश में बहुत दूर निकल गए और ऐसा कुछ पेश किया जो स्पष्ट नहीं है। क्योंकि 'अल-बहर' के शब्द "जुमा न छूटने" के अवसर पर ये हैं: 'हमने पहले क़ुनिया से उल्लेख किया है कि समय की समाप्ति के डर से तयम्मुम हमारे मशाइख़ से एक रिवायत है।' और जो 'एक मील की दूरी' के स्थान पर 'किल्ला' की शाखा के उल्लेख के बाद आया है, वह यह है: 'यह छिपा नहीं है कि यह इमाम ज़ुफ़र के कौल के अनुकूल है, हमारे इमामों के कौल के नहीं। क्योंकि वे समय के समाप्त होने के डर का विचार नहीं करते; बल्कि विचार केवल दूरी का है जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया। मुन्यातुल मुसल्ली की शरह में भी ऐसा ही है। लेकिन मैंने पाया कि समय की समाप्ति के डर से तयम्मुम हमारे मशाइख़ से एक रिवायत है जिसका उल्लेख क़ुनिया में दो बलाओं में फँसे व्यक्ति के मसाइल के तहत किया गया है।' समाप्त।

[पाद टिप्पणियाँ] 1 रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/180 2 अल-बहर अर-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एचएम सईद कंपनी कराची, 1/159 3 अल-बहर अर-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एचएम सईद कंपनी कराची, 1/140

पृष्ठ 756 का 442

[دایاں کالم] ہمارے تینوں مشائخ رضی اللہ تعالٰی عنہم کی ایک روایت ہے۔ "-اھ-(ت) اقول: خدا اپنی رحمت سے علامہ کو نوازے تلاشِ مطلوب میں بہت دُور نکل گئے اور نقل وہ پیش کی جو صریح نہیں۔ اس لئے کہ لافوت الجمعۃ (فوتِ جمعہ کے اندیشہ سے جوازِ تیمم نہیں) کے تحت بحر کے الفاظ یہ ہیں: "ہم قنیہ کے حوالے سے پہلے ذکر کر آئے ہیں کہ وقت نکل جانے کے اندیشہ سے جوازِ تیمم ہمارے مشائخ کی ایک روایت ہے"۔ اھ اور اس سے پہلے جو ذکر کیا ہے وہ ان کی درجِ ذیل عبارت ہے جو لبعدہ میلاً کے تحت کِلّۃ (مچھر دانی یا اسی قسم کا خیمہ) سے متعلق آنے والے جزئیہ کو ذکر کرنے کے بعد لکھی ہے: "پوشیدہ نہ رہے کہ یہ مسئلہ قولِ امام زفر سے مناسبت رکھتا ہے ہمارے ائمہ کے قول سے مناسبت نہیں رکھتا۔ اس لئے کہ ان کے نزدیک فوتِ وقت کے اندیشہ کا اعتبار نہیں۔ صرف دُوری کا اعتبار ہے جیسا کہ ہم نے پہلے بیان کیا۔ منیہ المصلی کی شرح میں بھی ایسا ہی ہے۔ لیکن مجھے یہ بیان بھی ملا کہ وقت نکل جانے کے اندیشہ سے جوازِ تیمم ہمارے مشائخ سے بھی ایک روایت میں آیا ہے۔ اسے قنیہ میں دو مصیبتوں میں مبتلا ہونے والے سے متعلق مسائل کے تحت بیان کیا گیا ہے"۔ اھ (ت)

[بایاں کالم] الثلثة رضي الله تعالى عنهم ١ اهـ. اقول: (١) رحمه الله تعالى قد ابعد النجعة واتى بغير صريح فأن لفظ البحر عند قوله لافوت جمعة قد قدمنا عن القنية ان التيمم لخوف فوت الوقت رواية عن مشائخنا ٢ اهـ والذى قدم عند قوله لبعده ميلا بعد ذكر فرع الكلة الآتى لأ يخفى ان هذا مناسب لقول زفر لا لقول ائمتنا فأنهم لايعتبرون خوف الفوت وانما العبرة للبعد كما قدمناه كذا فى شرح منية المصلى لكن ظفرت بان التيمم لخوف فوت الوقت رواية عن مشائخنا ذكرها فى القنية فى مسائل من ابتلى ببليتين ٣ اهـ

[حواشی] ۱ رد المحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۰ ۲ البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵۹ ۳ البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۴۰

Fatawa Rizvia Volume 3 It is well-known that the term "our Mashaikh" (our scholars) is applied to those who came after the Imams (may Allah be pleased with them). Yes, it can be inferred from this rectification (but I also found this report, etc.) that by "our Mashaikh," he means the three Imams. The most explicit in terms of narration chain and the most grand in terms of reliability is what is mentioned in Al-Hilya and Al-Ghunia from Al-Mujtaba, narrated from Imam Shams al-A'imma al-Halwani: "If a traveler (1) cannot find a clean place—such that there was filth on the ground which became wet with rain and mixed—then if he is able to walk quickly to reach a clean place for prayer before the time expires, he should do so. Otherwise, he should pray by gestures and does not need to repeat it." Then Halwani said: "The expiration of time was considered here for the permissibility of gesturing, while it was not considered there for the permissibility of tayammum (dry ablution)." Imam Zufar equated the two cases. Our Mashaikh have stated regarding tayammum that time will also be considered, and a narration (2) in this matter is a narration for him as well since there is no difference between them. The narration in the section on tayammum is a narration in this matter too. Halwani says: "Thus, in both issues, there will be two narrations each." End of quote. (T)

I say: The pronoun in his statement "he considered here and did not consider there" refers to Imam Muhammad. And the issue of the traveler is the position of our Imams, so the narration...

1 Ghuniyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 83 Page 443 of 756

फ़तावा रिज़विया खंड 3 यह सर्वविदित है कि "हमारे मशाईख़" शब्द उन महानुभावों के लिए प्रयोग किया जाता है जो अइम्मा (इमामों) रज़ियल्लाहु अन्हुम के बाद आए। हाँ, उनके इस स्पष्टीकरण (लेकिन मुझे यह विवरण भी मिला आदि) से यह निष्कर्ष निकलता है कि "हमारे मशाईख़" शब्द से उनका तात्पर्य तीनों इमामों से है। सनद के लिहाज़ से अधिक स्पष्ट और विश्वसनीयता के लिहाज़ से अधिक महत्वपूर्ण वह इबारत है जो 'हलिया' और 'ग़ुनिया' में 'मुजतबा' से उद्धृत है, और इसमें इमाम शम्सुल अइम्मा हलवानी से वर्णित है: "जब किसी यात्री (1) को कोई स्वच्छ स्थान न मिले, इस प्रकार कि ज़मीन पर गंदगी थी और ज़मीन बारिश से भीग कर गंदगी से दूषित हो गई, तो यदि वह ऐसा कर सके कि तेज़ चलकर ऐसी जगह पहुँच जाए जहाँ समय निकलने से पहले उसे नमाज़ पढ़ने के लिए कोई पाक जगह मिल जाए, तो वह ऐसा ही करे। अन्यथा, इशारे से नमाज़ अदा कर ले और उसका दोहराना उसके ज़िम्मे नहीं है।" फिर हलवानी फ़रमाते हैं: यहाँ इशारे की अनुमति के लिए समय की समाप्ति पर विचार किया गया है, और वहाँ तयम्मुम की अनुमति के लिए इस पर विचार नहीं किया गया। और इमाम ज़ुफ़र ने दोनों स्थितियों को बराबर रखा। हमारे मशाईख़ ने तयम्मुम के बारे में फ़रमाया है कि समय पर भी विचार किया जाएगा, और इस (यात्री के मसले) में रिवायत का होना उस (तयम्मुम के मसले) में भी रिवायत होना है क्योंकि दोनों में कोई अंतर नहीं है। और तयम्मुम के मसले में रिवायत का होना इस (यात्री के मसले) में भी रिवायत होना है। हलवानी फ़रमाते हैं: "तो दोनों ही मसलों में दो-दो रिवायतें होंगी।" (समाप्त)

मैं कहता हूँ: उनकी इबारत 'अ'तबरा हुना, वलम यु'तबर सुम्मा' (यहाँ विचार किया और वहाँ विचार नहीं किया) में ज़मीर (सर्वनाम) इमाम मुहम्मद के लिए है। और यात्री का मसला हमारे इमामों का कथन है, अतः रिवायत...

1 ग़ुनियत अल-मुस्तमली, फ़स्ल फ़ित-तयम्मुम, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 83 पृष्ठ 756 का 443

فتاوی رضویہ جلد سوم فالمعروف اطلاق مشائخنا علی من بعد الائمة رضی اللہ تعالیٰ عنہم نعم قد یستفاد من ھذا الاستدراک ان مرادہ بمشائخنا الائمة الثلثة والاوضح سندا والاجل معتمدا ما فی الحلیة والغنیہ عن المجتبی عن الامام شمس الائمة الحلوانی المسافر (۱) اذا لم یجد مکانا طاھرا بأن کان علی الارض نجاسات وابتلت بالمطر واختلطت فان قدر علی ان یسرع المشی حتی یجد مکانا طاھرا للصلاۃ قبل خروج الوقت فعل والا یصلی بالایماء ولا یعید ثم قال الحلوانی اعتبر ھھنا خروج الوقت لجواز الایماء ولم یعتبرہ لجواز التیمم ثمہ وزفر سوی بینھما وقد قال مشائخنا فی التیمم انہ یعتبر الوقت ایضا والروایة (۲) فی ھذا روایة لہ اذلا فرق بینھما والروایة فی فصل التیمم روایة فی ھذا ایضا قال الحلوانی فاذا فی المسألتین جمیعا روایتان ۱۱ھ یہ صریح اس لئے نہیں کہ معروف یہ ہے کہ مشائخ کا لفظ ان حضرات کیلئے استعمال ہوتا ہے جو ائمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے بعد آئے ہیں ہاں ان کے اس استدراک (لیکن مجھے یہ بیان بھی ملا الخ) سے یہ مستفاد ہوتا ہے کہ "ہمارے مشائخ" کے لفظ سے وہ ائمہ ثلاثہ کو مراد لے رہے ہیں۔ سند کے لحاظ سے زیادہ واضح اور اعتماد کے لحاظ سے زیادہ جلیل القدر عبارت وہ ہے جو حلیہ اور غنیہ میں مجتبی سے، اور اس میں امام شمس الائمہ حلوانی سے منقول ہے : "مسافر کو جب پاک جگہ نہ ملے اس طرح کہ زمین پر نجاستیں پڑی ہوئی تھیں اور زمین بارش سے بھیگ کر نجاستوں سے آلودہ ہو گئی تو اگر وہ یہ کر سکتا ہو کہ تیز چل کر ایسی جگہ پہنچ جائے جہاں وقت نکلنے سے پہلے اسے نماز پڑھنے کیلئے کوئی پاک جگہ مل جائے گی تو ایسا ہی کرے ورنہ اشارے سے نماز ادا کرلے اور اس کا اعادہ اس کے ذمہ نہیں۔" پھر حلوانی فرماتے ہیں: جواز اشارہ کیلئے یہاں خروج وقت کا اعتبار فرمایا ہے اور وہاں جواز تیمم کیلئے اس کا اعتبار نہیں کیا۔ اور امام زفر نے دونوں جگہ برابری رکھی۔ اور ہمارے مشائخ نے تیمم کے بارے میں فرمایا ہے کہ وقت کا بھی اعتبار ہوگا اور اس (مسئلہ مسافر) میں روایت کا

ہونا اس (مسئلہ تیمم) میں بھی روایت ہونا ہے کیونکہ دونوں میں کوئی فرق نہیں۔ اور مسئلہ تیمم میں روایت کا ہونا اس (مسئلہ مسافر) میں بھی روایت ہونا ہے۔ حلوانی فرماتے ہیں: تو دونوں ہی مسئلوں میں دو دو روایتیں ہوں گی"۔ اھ (ت)

اقول: الضمیر فی قولہ اعتبر ھھنا ولم یعتبر ثم لمحمد ومسألۃ المسافر قول ائمتنا فالروایۃ اقول: ان کی عبارت اعتبر ھنا، ولم یعتر ثم (یہاں اعتبار فرمایا اور وہاں اعتبار نہ کیا) میں ضمیر امام محمد کیلئے ہے۔ اور مسئلہ

1 غنیۃ المستملی فصل فی التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۳ Page 443 of 756

Fatawa Rizvia - Volume 3

(Arabic Text Column): From them (the Imams), there is a narration regarding Tayammum (dry ablution) that it is permissible due to the fear of missing the time [for prayer]. And regarding the issue of Tayammum, it is also their saying that it is not permissible for the sake of preserving the time. Thus, the narration in this regard is a narration in the case of the traveler, stating that he should continue walking until he leaves that place and not pray there, even if the time passes. This informs them that in both issues, there are two opinions. However, the issue of the traveler became famous for the ruling of permission, while the issue of Tayammum became famous for the ruling of prohibition. So, this is the strongest evidence found to strengthen the opinion of [Imam] Zufar, in accordance with our three Imams (may Allah the Exalted be pleased with them).

The second section: Branches of fortification and the choices of the elders. It is stated in 'al-Hilyah' regarding the explanation of Imam Zufar's saying: 'Al-Zahidi has narrated this ruling in his commentary from Al-Layth bin Sa'd.' Ibn Khallikan mentioned that he saw in some collections that Al-Layth (1) was of the Hanafi school. The author of 'al-Jawahir al-Mudi'ah fi Tabaqat al-Hanafiyyah' relied on this and mentioned him therein among them. End.

(Urdu Text Column): Regarding the traveler, it is the saying of our Imams, so in this issue, a narration from them concerning Tayammum is also present, stating that it is permissible even with the apprehension of the time passing. And the issue of Tayammum, that it is not permissible for the sake of preserving the time, is also the saying of our Imams. Thus, the narration in this case is also a narration in the issue of the traveler, that he should move away from that place and not pray there, even if the time passes. From this detail, it is clear that in both issues, there are two (2) opinions of theirs; it is another matter that the traveler's issue became famous for the ruling of permission and the Tayammum issue gained fame for the ruling of prohibition. This is the strongest evidence available for strengthening the opinion of Imam Zufar due to the agreement of our three Imams (may Allah the Exalted be pleased with them).

The second section: Supporting details And regarding the choice of the elders for Imam Zufar's opinion. It is stated in 'Hilyah' regarding the explanation of Imam Zufar's saying: 'Zahidi has narrated this ruling from Imam Layth bin Sa'd in his commentary.' Ibn Khallikan mentioned that in some works he saw that Imam Layth

(1) was of the Hanafi school. The author of 'al-Jawahir al-Mudi'ah fi Tabaqat al-Hanafiyyah' relied on this and mentioned Imam Layth in his book as well. End.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt 1/180 Page 444 of 756

(अरबी पाठ स्तंभ): उनसे (इमामों से) तयम्मुम के बारे में एक रिवायत है कि समय निकल जाने के डर से यह जायज़ है। और तयम्मुम का मसला यह है कि समय की रक्षा के लिए भी तयम्मुम जायज़ नहीं है; यह भी उनका कौल (कथन) है। अतः इसमें रिवायत, मुसाफ़िर के मसले में एक रिवायत है कि वह तब तक चलता रहे जब तक उस स्थान से बाहर न निकल जाए और वहाँ नमाज़ न पढ़े, चाहे समय निकल ही क्यों न जाए। इससे उन्हें यह ज्ञात होता है कि दोनों ही मसलों में दो कौल हैं। हालाँकि, मुसाफ़िर का मसला 'इजाज़त' के हुक्म से मशहूर हुआ और तयम्मुम का मसला 'निषेध' के हुक्म से प्रसिद्ध हुआ। तो, हमारे तीनों इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की सहमति से इमाम ज़ुफ़र के कौल की मज़बूती पर मिलने वाली यह सबसे प्रबल दलील है।

दूसरा खंड: पुष्टिकरण की शाखाएँ और बुज़ुर्गों का चुनाव। 'अल-हिलिया' में इमाम ज़ुफ़र के कौल के बयान में है: 'ज़ाहीदी ने अपनी शरह (व्याख्या) में यह हुक्म लैथ बिन साद से नकल किया है।' इब्न खल्लिकान ने ज़िक्र किया है कि उन्होंने कुछ संकलनों में देखा कि लैथ (1) हनफ़ी मज़हब के थे। 'अल-जवाहर अल-मुज़िया फ़ी तबकात अल-हनफ़िया' के लेखक ने इस पर भरोसा किया और उनमें उनका ज़िक्र किया। समाप्त।

(उर्दू पाठ स्तंभ): मुसाफ़िर हमारे अइम्मा (इमामों) का कौल है, तो इस मसले में उनसे रिवायत होना तयम्मुम के बारे में भी उनसे यह रिवायत होना है कि वक्त निकल जाने के अंदेशे से भी जायज़ है। और तयम्मुम का मसला कि हिफ़्ज़-ए-वक्त (समय की बचत) के पेश-ए-नज़र तयम्मुम जायज़ नहीं है, यह भी हमारे अइम्मा का कौल है। तो इसमें रिवायत होना मसला-ए-मुसाफ़िर में भी रिवायत होना है कि वह उस जगह से चल कर निकल जाए और वहाँ नमाज़ न पढ़े, अगरचे वक्त जाता रहे। इस तफ़सील (विस्तार) से ज़ाहिर हुआ कि दोनों ही मसलों में उनके दो (2) कौल हैं; यह बात अलग है कि मसला-ए-मुसाफ़िर हुक्म-ए-इजाज़त से मशहूर हो गया और मसला-ए-तयम्मुम हुक्म-ए-ममानत (निषेध) से शोहरत पा गया। हमारे अइम्मा-ए-सलासा (तीनों इमामों) रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की मुवाफ़क़त से इमाम ज़ुफ़र के कौल की तक़वियत (पुष्टि) पर दस्तियाब होने वाली यह सबसे ज़्यादा कवी (मज़बूत) सनद है।

जुमला सानिया: ताईदी जुज़ियात और बुज़ुर्गों के कौल इमाम ज़ुफ़र अख्तियार करने से मुताल्लिक है। 'हिलिया' में कौल-ए-इमाम ज़ुफ़र के बयान में है: 'ज़ाहीदी ने अपनी शरह में यह हुक्म इमाम लैथ बिन

साद से नक़ल किया है।' इब्न खल्लिकान ने ज़िक्र किया है कि बाज़ तालीफ़ात (रचनाओं) में उन्होंने यह देखा कि इमाम लैथ (1) हनफ़ी मज़हब थे। साहिब-ए-अल्जवाहर अल-मुज़िया फ़ी तबकात अल-हनफ़िया ने इस पर एतिमाद (भरोसा) किया और अपनी किताब में इमाम लैथ का भी ज़िक्र किया। समाप्त।

---

1. रद्दे मुहतार, बाब-अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/180 पेज 756 का 444

(عربی متن کا کالم): عنهم فيها رواية عنهم فى التيمم انه يجوز لخوف فوت الوقت ومسألة التيمم انه لا يجوز لحفظ الوقت ايضا قولهم فالرواية فيها رواية فى مسألة المسافر انه يمشى حتى يخرج من ذلك المكان ولا يصلى ثمه وان خرج الوقت فآذن لهم فى كلتا المسألتين قولان غير ان مسألة المسافر اشتهرت بحكم الاجازة ومسألة التيمم بحكم المنع فهذا اقوى ما يوجد من تقوية قول زفر بموافقة ائمتنا الثلثة رضى الله تعالى عنهم۔ الجملة الثانية فروع التشييد واختيار الكبراء قال فى الحلية فى بيان قول زفر قد نقل الزاهدى فى شرحه هذا الحكم عن الليث بن سعد وقد ذكر ابن خلكان انه رأى فى بعض المجاميع ان الليث (۱) كان حنفى المذهب واعتمد هذا صاحب الجواهر المضيئة فى طبقات الحنفية فذكره فيها منهم اھ

(اردو متن کا کالم): مسافر ہمارے ائمہ کا قول ہے تو اس مسئلہ میں ان سے روایت ہونا تیمم کے بارے میں بھی ان سے یہ روایت ہونا ہے کہ وقت نکل جانے کے اندیشہ سے بھی جائز ہے اور مسئلہ تیمم کہ حفظِ وقت کے پیش نظر تیمم جائز نہیں یہ بھی ہمارے ائمہ کا قول ہے تو اس میں روایت ہونا مسئلہ مسافر میں بھی روایت ہونا کہ وہ اس جگہ سے چل کر نکل جائے اور وہاں نماز نہ پڑھے اگرچہ وقت جاتا رہے۔ اس تفصیل سے ظاہر ہوا کہ دونوں ہی مسئلوں میں ان کے دو ۲ قول ہیں، یہ بات الگ ہے کہ مسئلہ مسافر حکمِ اجازت سے مشہور ہو گیا اور مسئلہ تیمم حکم ممانعت سے شہرت پاگیا ہمارے ائمہ ثلاثہ رضی اللہ تعالٰی عنہم کی موافقت سے امام زفر کے قول کی تقویت پر دستیاب ہونے والی یہ سب سے زیادہ قوی سند ہے۔ جملہ ثانیہ تائیدی جزئیات اور بزرگوں کے قول امام زفر اختیار کرنے سے متعلق ہے۔ حلیہ میں قولِ امام زفر کے بیان میں ہے: "زاہدی نے اپنی شرح میں یہ حکم امام لیث بن سعد سے نقل کیا ہے۔ ابن خلکان نے ذکر کیا ہے کہ

بعض تالیفات میں انہوں نے یہ دیکھا کہ امام لیث حنفی المذہب تھے صاحب الجواھر المضیئۃ فی طبقات الحنفیہ نے اس پر اعتماد کیا اور اپنی کتاب میں امام لیث کا بھی ذکر کیا اھـ

۱۔ ردالمحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/۱۸۰ صفحہ 444 از 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

(Arabic Text)

Shami said: Then I saw it narrated from Abu Nasr bin Salam, and he is certainly among the great Hanafi Imams. (Ends)

I say: In Jami' al-Rumuz, restricting it to a mile indicates that if it is less than that, one does not perform Tayammum even if he fears the end of the time, as mentioned in Al-Irshad. However, in Al-Nawazil, it states that he performs Tayammum in such a situation. (Ends)

Rather, in Al-Khulasa: If he does not know whether the distance between him and the water is a mile or less or more, but he went out to gather wood and did not find water, if his condition is such that if he went to the water the time would expire, he performs Tayammum at the end of the time. Thus it is in Al-Nawazil. (Ends)

In Al-Hulya, the jurist Abu al-Layth in Khizanat al-Fiqh stated the absolute permissibility of Tayammum when the distance between him and the water is such that it cannot be covered within the prayer time. (Ends)

In it, from Al-Mujtaba and Al-Qunya, and in Al-Hindiyya from Az-Zahidi and Al-Kifaya, all of them from Jami' al-Ulum: He may perform Tayammum in a tent [Killa] for fear of mosquitoes or rain or intense heat. (Ends)

(Urdu Translation/Explanation)

Shami says: Then I saw that this saying is also narrated from Abu Nasr bin Salam, who are undoubtedly among the great Hanafi Imams. (Ends)

I say: It is in Jami' al-Rumuz: "The restriction of a mile tells us that if the distance is less than that, permission for Tayammum is not granted even if there is a fear of the time passing, as it is in Al-Irshad, but in Al-Nawazil it is that in such a time he should perform Tayammum." (Ends).

Rather, in Al-Khulasa it is: "If it is not known that the distance between him and the water is one mile, whether it is less or more, but he went out to bring wood (from the forest) and did not find water, if the situation is such that if he goes to the water the time will pass, then he should perform Tayammum at the last moment. Similar is in Al-Nawazil" (Ends)

and in Al-Hulya it is: "Jurist Abu al-Layth in Khizanat al-Fiqh has termed Tayammum as absolutely permissible in this case when there is so much distance between him and the water that it cannot be covered within the prayer time." (Ends).

And in Al-Hulya with reference to Al-Mujtaba and Al-Qunya and in Al-Hindiyya with reference to Al-Zahidi and Al-Kifaya and in all of them with reference to Jami' al-Ulum it is: "If there is a fear of mosquitoes

(Arabic Text)	(Urdu Translation/Explanation)
	or rain or extreme heat, then kulla (like a mosquito net...)"

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt 1/180
2. Jami' al-Rumuz, Section on Tayammum, Islamia Press, Iran 1/65
3. Khulasa al-Fatawa, Chapter Five on Tayammum, Naval Kishore Press, Lucknow 1/31
4. Hulya
5. Fatawa Hindiyya, Section One on Tayammum, Noorani Kutub Khana, Peshawar 1/28

फ़तावा रज़विया, खंड 3

(अरबी पाठ)

शामी ने कहा: फिर मैंने इसे अबू नसर बिन सलाम से वर्णित देखा, और वे निश्चित रूप से महान हनफ़ी इमामों में से हैं। (समाप्त)

मैं कहता हूँ: जामे-उर-रुमूज़ में एक मील की पाबंदी यह बताती है कि यदि दूरी इससे कम हो तो तयम्मुम की अनुमति नहीं है, भले ही समय बीत जाने का डर हो, जैसा कि अल-इरशाद में है। लेकिन अल-नवाज़िल में है कि वह ऐसी स्थिति में तयम्मुम कर ले। (समाप्त)

बल्कि अल-खुलासा में है कि: यदि उसे पता न हो कि उसके और पानी के बीच की दूरी एक मील है या कम या ज्यादा, लेकिन वह लकड़ी इकट्ठा करने के लिए निकला और उसे पानी नहीं मिला, यदि स्थिति ऐसी हो कि यदि वह पानी के पास जाए तो समय निकल जाएगा, तो वह समय के अंत में तयम्मुम कर ले। अल-नवाज़िल में ऐसा ही है। (समाप्त)

और अल-हुलिया में फकीह अबू लैथ ने ख़ज़ानतुल फिक़्ह में उस स्थिति में तयम्मुम को पूर्णतः जायज़ बताया है जब उसके और पानी के बीच इतनी दूरी हो जिसे नमाज़ के समय के भीतर तय नहीं किया जा सकता। (समाप्त)

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)

शामी फ़रमाते हैं: फिर मैंने देखा कि यह क़ौल अबू नसर बिन सलाम से भी मंक़ूल (वर्णित) है जो बिला-शुबा किबार अइम्म-ए-हनफ़िया (हनफ़ी के बड़े इमामों) में से हैं। (समाप्त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): जामे-उर-रुमूज़ में है: "मील की क़ैद (पाबंदी) यह बताती है कि इससे कम दूरी हो तो तयम्मुम की इजाज़त नहीं अगरचे वक़्त निकल जाने का अंदेशा हो, जैसा कि इरशाद में है लेकिन नवाज़िल में है कि ऐसे वक़्त में तयम्मुम कर ले"। (समाप्त)।

बल्कि खुलासा में है कि: "अगर यह पता न हो कि उसके और पानी के माबैन (बीच) एक मील का फ़ासला है कि या कम ओ बेश है लेकिन (जंगल से) लकड़ी लाने के लिए निकला और उसे पानी न मिला अगर ऐसी हालत हो कि पानी तक जाए तो वक़्त निकल जाएगा तो वह आख़िर वक़्त में तयम्मुम कर ले। ऐसा ही नवाज़िल में है " (समाप्त)

और हुलिया में है: "फ़क़ीह अबू लैथ ने ख़ज़ानतुल फ़िक़्ह में इस सूरत में तयम्मुम को मुतलक़न (पूर्णतः) जाइज़ कहा है जब उसके और पानी के माबैन इतनी मसाफ़त (दूरी) हो जिसे वक़्त-ए-नमाज़ के अंदर तय नहीं कर सकता"। (समाप्त)

(अरबी पाठ)

और इसमें अल-मुज्तबा और अल-कुनिया से, और अल-हिंदिया में अल-ज़ाहिदी और अल-किफ़ाया से, ये सभी जामे-उल-उलूम से हैं: वह मच्छरों या बारिश या अत्यधिक गर्मी के डर से किल्ला (मच्छरदानी जैसे छोटे तंबू) में तयम्मुम कर सकता है। (समाप्त)

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या)

और हुलिया में बहवाला-ए-मुज्तबा ओ क़ुनया और हिंदिया में बहवाला-ए-ज़ाहिदी ओ किफ़ाया और इन सब में बहवाला-ए-जमा-उल-उलूम यह है: "मच्छर या बारिश या सख़्त गर्मी का अंदेशा हो तो कल्ला (मच्छरदानी जैसे छोटे छतरी/तंबू)"

1 रद-उल-मुहतार, बाबू-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/180 2 जामे-उर-रुमूज़, फ़स्ल-फ़ित-तयम्मुम, मतबआ अल-इस्लामिया, ईरान 1/65 3 खुलासा-तुल-फ़तावा, फ़स्ल-ए-पांचवां, फ़ित-तयम्मुम, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ 1/31 4 हुलिया 5 फ़तावा हिंदिया, फ़स्ल-ए-अव्वल, मिन-अत-तयम्मुम, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर 1/28

(عربی متن)

قال الشامی ثم رأیته منقولا عن ابی نصر بن سلام وھو من کبار الائمة الحنفیة قطعاً ۱ھ

اقول: وفی جامع الرموز التقیید بالمیل یدل علی ان فی الاقل لم یتیمم وان خاف خروج الوقت کما فی الارشاد لکن فی النوازل انه یتیمم حینئذ ۲ھ

بل في الخلاصة لولم یعلم ان بینه وبین الماء میلا اواقل او اکثر ولکن خرج لیحتطب ولم یجد الماء ان کان بحال لوذھب الی الماء خرج الوقت تیمم في آخر الوقت ھکذا في النوازل ۳ھ

وفي الحلیة اطلق الفقیه ابواللیث في خزانة الفقه جواز التیمم اذا کان بینه وبین الماء مسافة لایقطعها في وقت الصلاة ۴ھ

(اردو ترجمہ/تشریح)

شامی فرماتے ہیں: پھر میں نے دیکھا کہ یہ قول ابو نصر بن سلام سے بھی منقول ہے جو بلاشبہ کبار ائمہ حنفیہ میں ہیں۔ اھ (ت)

اقول: جامع الرموز میں ہے: "میل کی قید یہ بتاتی ہے کہ اس سے کم دوری ہو تو تیمم کی اجازت نہیں اگرچہ وقت نکل جانے کا اندیشہ ہو، جیسا کہ ارشاد میں ہے لیکن نوازل میں ہے کہ ایسے وقت میں تیمم کرلے"۔ اھ

بلکہ خلاصہ میں ہے کہ: "اگر یہ پتا نہ ہو کہ اس کے اور پانی کے مابین ایک میل کا فاصلہ ہے کہ یا کم و بیش ہے لیکن (جنگل سے) لکڑی لانے کیلئے نکلا اور اسے پانی نہ ملا اگر ایسی حالت ہو کہ پانی تک جائے تو وقت نکل جائے گا تو وہ آخر وقت میں تیمم کرلے۔ ایسا ہی نوازل میں ہے "اھ (ت)

اور حلیہ میں ہے: "فقیہ ابو اللیث نے خزانتہ الفقہ میں اس صورت میں تیمم کو مطلقاً جائز کہا ہے جب اس کے اور پانی کے مابین اتنی مسافت ہو جسے وقتِ نماز کے اندر طے نہیں کر سکتا"۔ اھ

(عربی متن)	(اردو ترجمہ/تشریح)
وفيها عن المجتبى والقنية وفى الهندية عن الزاهدى والكفاية كلها عن جمع العلوم له التيمم في كلة لخوف البق او مطر او حر شديد ۵ھ	اور حلیہ میں بحوالہ مجتبیٰ وقنیہ اور ہندیہ میں بحوالہ زاہدی وکفایہ اور ان سب میں بحوالہ جمع العلوم یہ ہے: "مچھر یا بارش یا سخت گرمی کا اندیشہ ہو تو کلہ (مچھر دانی جیسے چھوٹے چھوٹی)

1 ردالمحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۰ 2 جامع الرموز فصل فی التیمم مطبعۃ الاسلامیہ ایران ۱/ ۶۵ 3 خلاصۃ الفتاوی الفصل الخامس فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/ ۳۱ 4 حلیہ 5 فتاوی ہندیہ الفصل الاول من التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸

Fatawa Rizvia Volume 3

In it [Al-Quniyah] and in Al-Bahr [Al-Ra'iq], quoting Al-Mubtaghi (with the letter Ghain), it is stated: "Whoever is in a tent [can perform Tayammum]." - Ended. In Al-Hilyah and Al-Bahr, it is cited from Al-Mubtaghi: "For one who is in a protected small tent like a mosquito net, Tayammum is permissible for him due to the fear of mosquitoes, rain, or intense heat, if there is a risk of the prayer time lapsing." - Ended. And in Al-Hilyah, quoting Al-Quniyah from Najm al-A'immah al-Bukhari, it is transmitted: "If a person is on a roof at night and there is water inside the house, but he fears the darkness upon entering the house, he should not perform Tayammum if there is no fear of the prayer time lapsing." He said: "This contains an indication that if there is fear of the time lapsing, he should perform Tayammum." - Ended. In Al-Bahr, from Al-Quniyah, it is quoted with the words: "Perform Tayammum if you fear the lapse of time." - Ended. He [the author of Al-Bahr] did not attribute it to Najm al-A'immah but rather presented it as a derivation (tafri') based on the reports from our Shaykhs (may Allah Almighty be pleased with them). In Al-Hilyah, after citing all the above, it says: "Apparently, all of this is a derivation based on the school (madhhab) of Imam Zufar, because for him, the distance [from water] is not the criterion, but rather the remaining or elapsing of time." He said: "Perhaps these statements of the Shaykhs are based on the fact that they adopted the opinion of Imam Zufar because his reasoning regarding this issue is strong." - Ended.

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/120.
2. Hilyah.
3. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/159.
4. Hilyah.

फतावा रज़विया जिल्द 3

इसमें और अल-बहर में 'अल-मुब्तगी' (ग़ैन के साथ) के हवाले से है: "जो व्यक्ति शामियाने (तंबू) में हो [वह तयम्मुम कर सकता है]।" - समाप्त। 'हिलिया' और 'बहर' में 'मुब्तगी' के हवाले से है: "जो किसी मच्छरदानी जैसे सुरक्षित छोटे तंबू में हो, तो मच्छर या बारिश या भीषण गर्मी के डर से उसके लिए तयम्मुम जायज़ है, यदि (नमाज़ का) समय निकल जाने का डर हो।" - समाप्त। और 'हिलिया' में 'क़ुनिय्या' के हवाले से नज्म अल-आइम्मा अल-बुखारी से उद्धृत है: "यदि कोई रात में छत पर हो और घर के अंदर पानी हो, लेकिन घर के अंदर जाने में अंधेरे का डर हो, तो वह तयम्मुम न करे यदि समय निकल जाने का डर न हो।" उन्होंने कहा: "इसमें यह संकेत मौजूद है कि यदि समय निकल जाने का डर हो, तो वह तयम्मुम कर ले।" - समाप्त। 'बहर रायक' में 'क़ुनिय्या' के हवाले से ये शब्द उद्धृत हैं: "यदि समय निकल जाने का डर हो, तो तयम्मुम कर लो।" - समाप्त। 'बहर' ने इसे नज्म अल-आइम्मा की ओर मंसूब नहीं किया, बल्कि इसे हमारे मशाइख़ (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के रिवायत पर एक निष्कर्ष (तफ़रीअ) के रूप में प्रस्तुत किया। 'हिलिया' में उपरोक्त कथनों को उद्धृत करने के बाद कहा गया है: "जाहिर है कि यह सब इमाम ज़ुफ़र के मज़हब पर आधारित निष्कर्ष है, क्योंकि उनके नज़दीक (पानी से) दूरी का विचार नहीं है, बल्कि समय के बाक़ी रहने या निकल जाने का विचार है।" उन्होंने कहा: "शायद मशाइख़ के ये कथन इस आधार पर हैं कि उन्होंने इमाम ज़ुफ़र के कथन को अपनाया है, क्योंकि इस मुद्दे से संबंधित इमाम ज़ुफ़र की दलील मज़बूत है।" - समाप्त।

---

1. अल-बहर अल-रायक, बाब अल-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/120
2. हिलिया
3. अल-बहर अल-रायक, बाब अल-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/159
4. हिलिया

فتاوی رضویہ جلد سوم

وفیھا وفي البحر عن المبتغی بالغین من کان في خیمة میں تیمم کرسکتا ہے" - اھ حلیہ اور بحر میں مبتغی (غین سے) کے حوالہ سے ہے: "جو کسی مچھر دانی جیسے محفوظ چھوٹے خیمہ میں ہو تو مچھر یا بارش یا سخت گرمی کے اندیشہ سے اس کیلئے تیمم جائز ہے اگر وقت نکل جانے کا خطرہ ہو"۔ اھ اور حلیہ میں بحوالہ قنیہ نجم الائمہ بخاری سے نقل ہے: "اگر رات کو چھت پر ہو اور گھر کے اندر پانی ہے لیکن گھر کے اندر داخل ہوتا ہے تو تاریکی کا خطرہ درپیش ہے ایسی صورت میں اگر وقت نکلنے کا اندیشہ نہ ہو تو تیمم نہ کرے فرمایا: اس میں یہ اشارہ موجود ہے کہ اگر وقت نکلنے کا اندیشہ ہو تو تیمم کرلے اھ بحر رائق میں قنیہ کے حوالے سے یہ الفاظ نقل ہیں: "اگر وقت نکل جانے کا اندیشہ ہو تو تیمم کرلے" اھ بحر نے اسے نجم الائمہ کی طرف منسوب نہیں کیا بلکہ اسے مشائخِ مذہب رضی اللہ تعالٰی عنہم کی روایت پر تفریح قرار دیا۔ حلیہ میں عبارات بالا نقل کرنے کے بعد فرمایا ہے: "بظاہر یہ سب امام زفر کے مذہب پر تفریح ہے اس لئے کہ ان کے نزدیک دوری کا اعتبار نہیں بلکہ وقت باقی رہنے اور نکل جانے کا اعتبار ہے " فرمایا شاید ان مشائخ کے یہ اقوال اس بنیاد پر ہیں کہ انہوں نے امام زفر کا قول اختیار کیا ہے کیونکہ اس مسئلہ سے متعلق امام زفر کی دلیل قوی ہے اھ

1۔ البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۱۲۰ 2۔ حلیہ 3۔ بحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۱۵۹ 4۔ حلیہ

Fatawa Rizvia, Volume 3

(Left Column - Arabic Text) Nay, Al-Shami has mentioned that the fatwa in this matter is based on the opinion of Zufar, and it is one of the twenty instances where the fatwa is given according to his opinion. He mentioned them in the Chapter on Maintenance (Nafaqah), Book of Divorce (Talaq), and versified them beautifully. He said therein: "And thereafter, a fatwa shall not be given according to what Zufar said, except in twenty cases whose division is clear; for one who fears the lapsing of time, Tayammum is permissible, but one should repeat it after washing (with water) to be on the safe side."[1]- The third sentence - strengthening his evidence, which is argued from several aspects: First: What the Muhaqqiq ala al-Itlaq said in Fath al-Qadir, that for him (Imam Zufar), Tayammum was only legislated for obtaining prayer within its time. Thus, the saying of others does not apply to him, that "falling back to a substitute is like not failing at all."[2] Ah. And it was answered, firstly, as Al-Bahr has shown, its permissibility for the traveler is by textual evidence (Nass), not for fear of missing the time, but so that the missed prayers do not accumulate upon him and cause hardship...

(Right Column - Urdu Translation/Explanation) Rather, Allama Shami has mentioned that the fatwa in this matter is according to the opinion of Imam Zufar, and this is one of the twenty (20) instances where the fatwa is given according to the opinion of Imam Zufar. It is mentioned in the Chapter of Maintenance (Nafaqah) in the Book of Divorce (Talaq), and it has been versified beautifully. The poem says: (after praise and prayers) a fatwa will not be given based on Imam Zufar's opinion except in twenty (20) specific cases whose division is clear; one of them is that for one who fears the time will lapse, Tayammum is permissible, but as a precaution, one should repeat it after performing purification with water." Third Sentence - Strengthening Imam Zufar's argument. Arguments are made in several ways: First Argument: The Muhaqqiq ala al-Itlaq stated in Fath al-Qadir: Imam Zufar's reasoning is that Tayammum was only legislated so that the prayer could be performed within its time. Therefore, the objection does not apply to him that "the missing of the prayer towards its substitute is like not missing it at all." Answer - Firstly: As expressed in Al-Bahr: "For a traveler, the permissibility of Tayammum by 'Nass' (textual evidence) is not due to the fear of missing the time, but rather so that the number of missed prayers does not accumulate upon him and in making them up..."

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Mustafa Al-Babi, Egypt, 2/26 [2] Fath al-Qadir, Chapter on Tayammum, Nooria Rizvia, Sukkur, 1/123

फतावा रज़विया, जिल्द 3

(बायां कॉलम - अरबी पाठ) बल्कि अल-शामी ने उल्लेख किया है कि इस मामले में फतवा ज़ुफ़र के मत पर है, और यह उन बीस स्थानों में से एक है जहाँ उनके मत के अनुसार फतवा दिया जाता है। उन्होंने इनका उल्लेख किताबुत तलाक़ के बाब-उल-नफ़क़ा (खर्च का अध्याय) में किया है, और उन्हें बहुत खूबसूरती से पद्यबद्ध किया है। उन्होंने उसमें कहा: "और उसके बाद, ज़ुफ़र द्वारा कही गई बातों के अनुसार फतवा नहीं दिया जाएगा, सिवाय बीस मामलों के जिनका विवरण स्पष्ट है; जो समय बीतने के डर से हो, उसके लिए तयम्मुम जायज़ है, लेकिन एहतियातन धोने (पानी से) के बाद उसे दोहराना चाहिए।"[1]- तीसरा वाक्य - उनके प्रमाण को मज़बूत करना, जिसे कई पहलुओं से तर्क दिया जाता है: पहला: मुहाक्किक़ अ़लल इत्लाक़ ने फ़त्हुल क़दीर में जो कहा, कि उनके लिए (इमाम ज़ुफ़र), तयम्मुम केवल समय के भीतर नमाज़ प्राप्त करने के लिए शरीयत में लाया गया था। इस प्रकार, दूसरों की यह बात उन पर लागू नहीं होती कि "विकल्प की ओर लौटना बिल्कुल समय न छूटने की तरह है।"[2] अह। और इसका उत्तर दिया गया, सबसे पहले, जैसा कि अल-बहर ने प्रकट किया है, कि मुसाफ़िर के लिए इसकी अनुमति 'नस्स' (धार्मिक ग्रंथ) द्वारा है, समय छूटने के डर से नहीं, बल्कि इसलिए कि उसके ऊपर छूटी हुई नमाज़ें जमा न हों और कठिनाई पैदा न करें...

(दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या) बल्कि अल्लामा शामी ने तो यह उल्लेख किया है कि इस बारे में फतवा इमाम ज़ुफ़र के मत पर है और यह उन बीस (20) स्थानों में से एक है जिनमें इमाम ज़ुफ़र के मत पर फतवा दिया जाता है, किताबुत तलाक़ के बाब-उल-नफ़क़ा में उल्लेख किया है और बहुत खूबसूरती से नज़्म किया है। नज़्म में यह है (हम्द ओ सलात के बाद) इमाम ज़ुफ़र के मत पर फतवा नहीं दिया जाएगा सिवाय बीस (20) सूरतों के जिनकी तक़सीम (विभाजन) स्पष्ट है, उनमें से एक यह भी है कि उसके लिए जिसे वक्त फ़ौत (नष्ट) होने का अंदेशा (डर) हो तयम्मुम जायज़ है लेकिन एहतियातन पानी से तहारत (पवित्रता) करके इआदा (पुनरावृत्ति) करे।" तीसरा जुमला - इमाम ज़ुफ़र की दलील की तक़्वियत (पुष्टि)। इस पर कई तरह से इस्तिदलाल (तर्क) किया जाता है: दलील अव्वल (पहली): मुहाक्किक़ अ़लल इत्लाक़ ने फ़त्हुल क़दीर में फ़रमाया है: इमाम ज़ुफ़र की दलील यह है कि तयम्मुम इसीलिए तो मशरूअ (निर्धारित) हुआ है कि नमाज़ की अदायगी वक्त के अंदर की जा सके। लिहाज़ा इस जवाब से उन पर इल्ज़ाम (आपत्ति) नहीं आता कि "नमाज़ का नायब (विकल्प) की जानिब फ़ौत होना, फ़ौत न होने की तरह है।" जवाब - अव्वलन (पहला): जैसा कि 'बहर' ने इज़हार

किया: "मुसाफ़िर के लिए 'नस्स' से तयम्मुम का जवाज़ वक्त फ़ौत होने के अंदेशे से नहीं बल्कि इस वजह से है कि उसके ज़िम्मे फ़ौत शुदा नमाज़ें ज़्यादा न हों और कज़ा में..."

[1] रद्दुल मुहतार, बाब-उल-नफ़क़ा, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 2/26 [2] फ़त्हुल क़दीर, बाब-उत-तयम्मुम, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/123

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

(بایاں کالم - عربی متن) بل قد ذکر الشامي ان الفتوی في هذا علی قول زفر و انه احد المواضع العشرین التي یفتی فیها بقوله ذکرها في باب النفقة کتاب الطلاق و نظمها نظما حسنا قال فیه وبعد فلایفتی بما قاله زفر سوی صور عشرین تقسیمها انجلی لمن خاف فوت الوقت ساغ تیمم ولکن لیحط بالاعادة غاسلا[1]- الجملة الثالثة تقویة دلیله ویستدل له بوجوه: اولها: ما قال المحقق علی الاطلاق في فتح القدیر له ان التیمم لم یشرع الا لتحصیل الصلاة في وقتها فلم یلزمه قولهم ان الفوات الی خلف کلا فوات[2] اه واجیب عنه اولا کما ابدی البحران جوازه للمسافر بالنص لا لخوف الفوت بل لاجل ان لا تتضاعف علیه الفوائت ویحرج

(دایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح) بلکہ علامہ شامی نے تو یہ ذکر کیا ہے کہ اس بارے میں فتویٰ امام زفر کے قول پر ہے اور یہ ان بیس ۲۰ مقامات میں سے ایک ہے جن میں امام زفر کے قول پر فتویٰ دیا جاتا ہے، کتاب الطلاق باب النفقہ میں ذکر کیا ہے اور بڑی خوش اسلوبی سے نظم کیا ہے۔ نظم میں یہ ہے (حمد وصلوۃ کے بعد) امام زفر کے قول پر فتویٰ نہ دیا جائے گا مگر صرف بیس (۲۰) صورتوں میں جن کی تقسیم روشن ہے ان میں ایک یہ بھی ہے کہ اس کیلئے جسے وقت فوت ہونے کا اندیشہ ہو تیمم جائز ہے لیکن احتیاطاً پانی سے طہارت کرکے اعادہ کرے"۔ جملہ ثالثہ۔ دلیل امام زفر کی تقویت اس پر چند طرح استدلال کیا جاتا ہے: دلیل اول: محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں فرمایا ہے : امام زفر کی دلیل یہ ہے کہ تیمم اسی لئے تو مشروع ہوا ہے کہ نماز کی ادائیگی وقت کے اندر کی جاسکے۔ لہٰذا اس جواب سے ان پر الزام نہیں آتا کہ "نماز کا نائب کی جانب فوت ہونا، فوت نہ ہونے کی طرح ہے۔ جواب۔ اولاً: جیسا کہ بحر نے اظہار کیا: "مسافر

کیلئے "نص سے "تیمم کا جواز فوت وقت کے اندیشہ سے نہیں بلکہ اس وجہ سے ہے کہ اس کے ذمہ فوت شدہ نمازیں زیادہ نہ ہوں اور قضاء میں

[1] ردالمحتار باب النفقۃ مصطفی البابی مصر ۲/۲۶ [2] فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۲۳

Volume Three Fatawa Ridawiyya Regarding Judicial Matters - 1 I say: There is no benefit in saying its permissibility is "by text" (nass), because the text is not purely devotional (ta'abbudi), but rational and reasoned (mu'allal), as is inferred from the end of their statement. If it were so, they would not have permitted it for the funeral prayer and the Eid prayer, as the text only mentions the sick and the traveler. Now, the reason for permissibility they have mentioned is being discussed. I say: Are you not of the view that if water is at a distance of one mile, tayammum is permissible? Even if the water is in the direction of travel. Where is the increase in missed prayers in this? This point also holds that if there is a fear of increasing missed prayers, it is in long-distance travels, but the travel mentioned in the noble verse does not mean only the specific travel of shortening (safar al-qasr). Rather, this ruling includes everyone who is outside the city, even if they went out only to cut wood, or bring grass, or search for a mount, as stated in al-Khaniyyah and al-Munyah. And it is stated in al-Hidayah and al-'Inayah: "The permissibility of tayammum is for everyone who is outside the city, even if they are not a traveler, provided there is a distance of one mile between them and the water." End. You yourselves have quoted this text from al-Khaniyyah.

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, Statement "No missing of Friday [prayer]", H.M. Saeed Company Karachi 1/159
2. Al-'Inayah with al-Fath, Chapter on Tayammum, Nooria Rizviya Sukkur 1/107 Page 448 of 756

जिल्द तीन फ़तावा रज़विया न्यायिक मामलों के बारे में - 1 मैं कहता हूँ: यह कहना कि इसकी अनुमति "नस" (मूल पाठ) से है, इसका कोई लाभ नहीं। इसलिए कि नस केवल इबादत (तअ़ब्बुदी) से संबंधित नहीं है, बल्कि तर्कसंगत और सकारण (मुअ़ल्लल) है, जैसा कि उनके कथन के अंत से स्वयं स्पष्ट होता है। यदि ऐसा होता, तो वे जनाज़ा और ईद की नमाज़ के लिए तयम्मुम जायज़ न कहते क्योंकि नस तो केवल बीमार और मुसाफ़िर (यात्री) के बारे में आई है। अब उन्होंने जो अनुमति का कारण बयान किया है, उस पर चर्चा की जाती है। मैं कहता हूँ: क्या आप हज़रात इस बात के क़ायल नहीं हैं कि यदि पानी एक मील की दूरी पर हो तो तयम्मुम जायज़ है? भले ही पानी उसी दिशा में हो जिस तरफ जाना है। इसमें छूटी हुई नमाज़ों की वृद्धि कहाँ है? यह बात भी है कि यदि नमाज़ों के छूटने का डर है, तो वह लंबी यात्राओं में होता है, लेकिन पवित्र आयत में जिस यात्रा का उल्लेख है, उससे केवल 'सफ़र-ए-क़स्र' (वह यात्रा जिसमें नमाज़ छोटी की जाती है) मुराद नहीं है। बल्कि यह हुक्म हर उस व्यक्ति को शामिल है जो शहर से बाहर हो, भले ही वह लकड़ी काटने या घास लाने या सवारी का जानवर ढूँढने के लिए ही निकला हो, जैसा कि 'ख़ानिया' और 'मुनिया' में बताया गया है। और 'हिदाया' व 'इनाया' में है: "तयम्मुम की अनुमति हर उस व्यक्ति के लिए है जो शहर के बाहर हो, भले ही वह मुसाफ़िर न हो, बशर्ते कि उसके और पानी के बीच एक मील का फ़ासला हो।" आपने स्वयं 'ख़ानिया' से यह इबारत नक़ल की है।

1. अल-बहर अल-राइक़, अध्याय तयम्मुम, कथन 'ला फ़ौतुल जुमुआ', एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/159
2. अल-इनाया मअ़ अल-फ़तह, अध्याय तयम्मुम, नूरिया रिज़विया सुक्कुर 1/107 पृष्ठ 448 का 756

جلد سوم فتاوی رضویہ فی القضاء - ۱ اقول: لا فائدہ (۱) لقولہ جوازہ بالنص فان النص لیس تعبدیا کما یفیدہ آخر کلامہ ولو کان کذا لم یجیزوہ لصلاۃ الجنازۃ والعید فان النص انما ورد فی المریض والمسافر۔ اما التعلیل فاقول اما (۲) تجیزونہ لبعد الماء میلا ولو فی جہۃ مسیرۃ فانی فیہ تضاعف الفوائت وایضا خوف (۳) التضاعف ان کان ففی الاسفار البعیدہ ولیس السفر فی الکریمۃ سفر القصر بل یشمل من خرج من المصر لولاحتطاب اواحتشاش او طلب دابۃ کما افادہ فی الخانیۃ والمنیۃ وقال فی الھدایۃ والعنایۃ جواز التیمم لمن کان خارج المصر وان لم یکن مسافرا اذا کان بینہ وبین الماء میل ۲ اھ وقد نقلتم عن الخانیۃ

اسے زحمت نہ ہو "۔ اھ اقول : "نص سے " جواز کہنے کا کوئی فائدہ نہیں۔ اس لئے کہ نص تعبدی نہیں (بلکہ قیاسی اور معلّل ہے) جیسا کہ ان کی آخری عبارت سے خود ہی مستفاد ہے۔ اگر ایسا ہوتا تو نماز جنازہ اور نماز عید کیلئے بھی تیمم جائز نہ کہتے کیونکہ نص تو صرف مریض اور مسافر کے بارے میں آئی ہے۔ اب انہوں نے جو علّت جواز بیان کی ہے اس پر کلام کیا جاتا ہے فاقول : کیا آپ حضرات اس کے قائل نہیں ہیں کہ پانی ایک میل کی دوری پر ہو تو تیمم جائز ہے؟ اگر چہ پانی اس کی سمتِ سیری میں ہو۔ اس میں فوت شدہ نمازوں کی زیادتی کہاں ہے؟ یہ بات بھی ہے کہ اگر زیادتی فوائت کا اندیشہ ہے تو دور دراز سفروں میں ہے مگر آیت کریمہ میں جو سفر مذکور ہے اس سے خاص سفرِ قصر مراد نہیں بلکہ یہ حکم ہر اس شخص کو شامل ہے جو شہر سے باہر ہو اگر چہ لکڑی کاٹنے ، یا گھاس لانے، یا سوار کا جانور ڈھونڈنے ہی کیلئے نکلا ہو ، جیسا کہ خانیہ اور منیہ میں افادہ فرمایا ہے۔ اور ہدایہ و عنایہ میں ہے : " تیمم کا جواز ہر اس شخص کیلئے ہے جو شہر کے باہر ہو اگر چہ مسافر نہ ہو بشرطیکہ اس کے اور پانی کے درمیان ایک میل کا فاصلہ ہو "۔ اھ خود آپ ہی نے خانیہ سے یہ عبارت نقل کی ہے

۱۔ البحر الرائق باب التیمم قول لافوت الجمعة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵۹ ۲۔ العنایة مع الفتح باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۰۷ Page 448 of 756

Fatawa Razawiya, Volume 3

(1) A short journey and a long journey are equal regarding Tayammum (dry ablution) and performing prayer on a mount outside the city. The difference between a short and long journey is only in three matters: (i) shortening the prayer (Qasr), (ii) making up missed fasts (Iftar/Qadha), and (iii) wiping over leather socks (Masah al-Khuffayn) [the duration varies]. End quote. Since this is established, it is also established that the legislation of Tayammum is only for safeguarding the prayer time.

Secondly: The negligence and shortcoming were from his own side, so it cannot necessitate a dispensation for him. End quote from Fath al-Qadeer.

I say: The explanation of this response would be like this: We accept that Tayammum is for the sake of safeguarding the time, but only he who did not cause the shortage of time himself is entitled to its dispensation. For example, a person who fears an enemy or an illness, such that if he waits, the time will pass, and there is no negligence on his part; for him, the Sharia has granted the dispensation of Tayammum so that the time is not lost. However, this person committed negligence and himself delayed the prayer to the point that there is no room left for purification and prayer within the time. Such a person is not entitled to receive the ease of dispensation. In Fath al-Qadeer, this response has been refuted with these words: "This response would only be complete if..."

---

1 Fatawa Qazi Khan, Section on what Tayammum is not permissible for, Naval Kishore Lucknow, 1/26. 2 Fath al-Qadeer, Chapter on Tayammum, Nooria Razviya Sukkur, 1/123.

फतावा रज़विया, खंड 3

(1) शहर के बाहर तयम्मुम और सवारी पर नमाज़ पढ़ने के मामले में कम और ज़्यादा सफ़र (यात्रा) दोनों बराबर हैं। कम और ज़्यादा सफ़र के बीच अंतर केवल तीन मसलों में है: (i) नमाज़ में कसर करना (ii) रोज़ा कज़ा करना (iii) मोज़ों पर मसह करना (की अवधि कम या ज़्यादा होना)। उद्धरण समाप्त। जब यह साबित है, तो यह भी साबित है कि तयम्मुम की शरीयत केवल समय की सुरक्षा के लिए ही बनी है।

दूसरा: कोताही और लापरवाही उसकी अपनी तरफ से हुई, तो यह उसके लिए रियायत का कारण नहीं बन सकती। उद्धरण समाप्त, फ़तह अल-क़दीर।

मैं कहता हूँ: इस उत्तर की व्याख्या इस प्रकार होगी: हमें स्वीकार है कि तयम्मुम समय बचाने के लिए है, लेकिन जो ऐसा हो कि समय की कमी उसकी अपनी तरफ से पैदा न हुई हो, वही इसकी रियायत का हकदार होगा। उदाहरण के लिए वह व्यक्ति जिसे किसी दुश्मन या बीमारी का डर हो कि अगर वह इंतज़ार करता है तो समय निकल जाएगा और उसकी अपनी तरफ से कोई कोताही नहीं है; तो उसके लिए शरीयत ने तयम्मुम की रियायत दी है ताकि समय न निकल जाए। लेकिन इस व्यक्ति ने तो कोताही की है और खुद ही नमाज़ यहाँ तक देर कर दी कि समय में पाकी और नमाज़ की गुंजाइश न रही, तो ऐसा व्यक्ति रियायत की राहत पाने का हकदार नहीं है। फ़तह अल-क़दीर में इस जवाब को इन शब्दों के साथ खारिज कर दिया गया है कि: "यह जवाब तभी पूरा होगा जब..."

---

1 फतावा काज़ी खान, फ़स्ल उन चीज़ों के बारे में जिनमें तयम्मुम जायज़ नहीं, नवल किशोर लखनऊ, 1/26। 2 फ़तह अल-क़दीर, बाब तयम्मुम, नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/123।

पृष्ठ 449 का 756

ان (۱) قليل السفر وكثيرة سواء في التيمم والصلوة على الدابة خارج المصر انما الفرق بين القليل والكثير في ثلثة في قصر الصلوة والافطار ومسح الخفين اه واذا ثبت ذلك ثبت ان ليس تشريعه الا لاحراز الوقت۔ کہ: "بیرون شہر تیمم اور سواری پر ادائے نماز کے معاملہ میں قلیل و کثیر سفر سب برابر ہیں۔ قلیل و کثیر کے درمیان فرق صرف تین مسائل میں ہے: (i) نماز میں قصر کرنا (ii) روزہ قضا کرنا (iii) موزوں پر مسح (کی مدت کم و بیش ہونا) "اھ جب یہ ثابت ہے تو یہ بھی ثابت ہے کہ تیمم کی مشروعیت تحفظ وقت ہی کیلئے ہوئی ہے۔

وثانیا: التقصیر جاء من قبله فلا یوجب الترخیص علیه اھ فتح۔ ثانیا: تقصیر و کوتاہی خود اس کی جانب سے ہوئی تو یہ اس کیلئے موجبِ رخصت نہ ہوسکے گی اھ فتح القدیر۔

اقول: تقریرہ سلمنا ان التیمم لحفظ الوقت لکن انما یستحقه من لیس ضیق الوقت من قبله کمن خاف عدوا اومرضاً فانه ان ینتظر یذهب الوقت من دون تفریط منه فرخص له الشرع في التیمم کیلا یفوته الوقت اما هذا فقد قصر واخر بنفسه حتی ضاق الوقت عن الطهارة والصلوة فلا یستحق الترفیه بالترخیص۔

اقول: اس جواب کی تقریر اس طرح ہوگی ، ہمیں تسلیم ہے کہ تیمم وقت کے تحفظ کی خاطر ہے لیکن جو ایسا ہو کہ وقت کی تنگی خود اس کی طرف سے نہ پیدا ہوئی وہی اس کی رخصت کا مستحق ہوگا مثلاً وہ شخص جسے کسی دشمن یا مرض کا خطرہ ہو کہ وہ اگر انتظار کرتا ہے تو وقت نکل جائے گا اور خود اس کی جانب سے کوئی کوتاہی نہیں تو اس کیلئے شریعت نے تیمم کی رخصت دی ہے تاکہ وقت فوت نہ ہو لیکن اس شخص نے تو کوتاہی کی ہے اور خود ہی نماز یہاں تک مؤخر کردی کہ وقت میں طہارت اور نماز کی گنجائش نہ رہی تو ایسا شخص رخصت کی آسائش پانے کا حقدار نہیں۔

اورده فی الفتح بانه انما یتم اذا فتح القدیر میں اس جواب کو ان الفاظ سے رَد کردیا ہے کہ: "یہ جواب اسی وقت تام ہوگا جب

---

1 فتاویٰ قاضی خان فصل فیما لا یجوز لہ التیمم نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲۶ 2 فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۲۳

...he delayed the prayer without any valid excuse.

I say: The purpose is that the ruling is general for both (the one who delays without excuse and the one who delays due to an excuse) according to both parties (if it is permissible for one, it is for both; if not, then for neither). Now, for a person who fell asleep and woke up at such a time that there is no room for purification with water and performing the obligatory prayer, how can it be said that the negligence was on his part when the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) says: "There is no negligence in sleep; negligence is only in wakefulness." This Hadith was narrated by Imam Muslim from Abu Qatada (may Allah be pleased with him). Similarly, for a person who forgot the prayer and remembered it only when the time had become short. Since error and forgetfulness have been removed from the Ummah of the Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him), there is no negligence on the part of the forgetful person either.

Rather, I say: Secondly (Mathniyan), I also say that the divine concessions granted by God are, in our view, general for both the obedient and the disobedient. Even for one who is traveling for a sinful purpose, for him too, fasting [is permitted to be broken].

---

1. Fath al-Qadir, Book of Tayammum, Nooria Rizvia, Sukkur, 1/123.
2. Sunan Abi Dawud, Chapter on the one who slept through prayer, Mujtabai Press, Lahore, 1/64.
3. Sunan Ibn Majah, Divorce of the forced and the forgetful, Mujtabai Press, Lahore, p. 128.

फ़तावा रिज़विया जिल्द तीसरी

...उसने बिना किसी उज़्र (बहाने) के नमाज़ में देरी कर दी हो।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): उद्देश्य यह है कि हुक्म तो (बिना उज़्र देरी करने वाले और उज़्र की वजह से देरी करने वाले) दोनों ही के लिए दोनों पक्षों के नज़दीक आम (सामान्य) है (जिसके यहाँ जाइज़ है तो दोनों के लिए, जिसके यहाँ जाइज़ नहीं है तो दोनों के लिए)। अब वह व्यक्ति जो सो गया, और ऐसे समय में जागा कि पानी से पाकी हासिल करने और फ़र्ज़ अदा करने की गुंजाइश नहीं है, उसके बारे में कैसे कहा जा सकता है कि उसी की ओर से कोताही (लापरवाही) हुई, जबकि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमा रहे हैं: "नींद (की स्थिति) में कोताही नहीं है, कोताही तो बेदारी (जागने की स्थिति) में है।" यह हदीस इमाम मुस्लिम ने अबू क़तादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है। इसी तरह वह व्यक्ति जिसे नमाज़ का ख्याल नहीं रहा और जब याद आया तो वक़्त कम हो चुका था। चूँकि खता और निस्यान (भूल-चूक) तो नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की उम्मत से उठा लिए गए हैं, तो भूलने वाले की ओर से भी कोई कोताही नहीं है।

बल्कि अक़ूल: मसनिया (दूसरे नंबर पर मैं यह भी कहता हूँ) कि खुदा की दी हुई रुख़सतें (छूट) हमारे नज़दीक मुती (आज्ञाकारी) और आसी (गुनहगार) दोनों ही के लिए आम हैं। जो किसी गुनाह के काम के लिए सफ़र कर रहा है, उसके लिए भी रोज़ा [छोड़ना जाइज़ है]।

---

1. फ़तह अल-क़दीर, बाब अत-तयम्मुम, नूरिय्या रिज़विया, सक्खर, 1/123।
2. सुनन अबी दाऊद, बाब फ़ीमन नामा अन सलात, मुजतबाई प्रेस, लाहौर, 1/64।
3. सुनन इब्न माजह, तलाक़ अल-मुकरह व अन-नासी, मुजतबाई प्रेस, लाहौर, पृ. 128।

पृष्ठ 450/756

اس نے بغیر کسی عذر کے نماز مؤخر کر دی ہو۔

اقول: مقصد یہ ہے کہ حکم تو (بلا عذر تاخیر کرنے والے اور عذر کی وجہ سے تاخیر کرنے والے) دونوں ہی کے لئے فریقین کے نزدیک عام ہے (جس کے یہاں جواز ہے تو دونوں کیلئے، جس کے یہاں عدم جواز ہے تو دونوں کیلئے) اب وہ شخص جو سو گیا، بیدار ہوا تو ایسے ہی وقت کہ پانی سے طہارت اور ادائے فرض کی گنجائش نہیں اس کے بارے میں کیسے کہا جا سکتا ہے کہ خود اسی کی جانب سے کوتاہی ہوئی جب کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرمارہے ہیں: "نیند (کی صورت) میں کوتاہی نہیں کوتاہی تو بیداری (کی صورت) میں ہے۔" یہ حدیث امام مسلم نے ابوقتادہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی۔ ایسے ہی وہ شخص جسے نماز کا خیال نہ رہا یاد آئی تو وقت تنگ ہو چکا ہے۔ خطا و نسیان تو نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی امت سے اٹھا لیا گیا ہے تو نسیان والے کی جانب سے بھی کوتاہی نہیں۔

بلکہ اقول: مثنیا (دوسرے نمبر پر میں یہ بھی کہتا ہوں کہ خدا کی دی ہوئی رخصتیں ہمارے نزدیک مطیع و عاصی دونوں ہی کیلئے عام ہیں۔ جو کسی معصیت کیلئے سفر کر رہا ہے اس کیلئے بھی روزہ [افطار کرنا جائز ہے]۔

---

1 فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۲۳ 2 سنن ابی داؤد باب فیمن نام عن صلوۃ مطبع مجتبائی لاہور ۱/ ۶۴ 3 سنن ابن ماجہ طلاق المکرہ والناسی مطبع مجتبائی لاہور ص ۱۲۸

Fatawa Razawiyya Volume Three

[Arabic side text] Rather, shortening (the prayer) is obligatory for him. And for someone who becomes in a state of major ritual impurity (janaba) due to adultery—may Allah Most High protect us—and cannot find water, tayammum is permissible for him, rather it is obligatory. Then I saw that the student of the Master, the investigator al-Halabi, in 'al-Hilya', quoted his words and supported them, and discussed 'delaying without an excuse' exactly as I discussed it, praise be to Allah. He said: "But the doctrine is that the obedient and the disobedient are equal regarding concessions." 1 End. He provided another benefit, saying: "If it is said that delaying to this extent is an excuse arising from someone other than the right-holder, then it would be appropriate to say he performs tayammum and prays, then repeats it with wudu, like one who was unable to perform wudu due to (actions of) other human beings." 2 End. I say: This has no entry (1) into the discussion from either of the two parties. For it is not for either of them to start with it or repeat it. As for our Imams, because they do not permit tayammum (in this case). And as for Zufar, because he does not advocate for repetition. Rather, his right was to establish it like this...

[Urdu side text] Not keeping it is permissible, rather it is obligatory for him to perform the shortened prayer (Qasr). And for the one who—may Allah Most High protect us—became in a state of ritual impurity (janabat) due to adultery and could not find water, tayammum is permissible, rather obligatory, for him. Then I saw that the student of Imam Ibn al-Humam, Muhaqqiq Halabi, in 'Hilya', quoted his text and supported it, and conducted exactly the same discussion regarding "delay without an excuse" that I did, Praise be to Allah. His words are: "But the school of thought is that in the matter of concessions, the obedient and the disobedient are equal." End. Rather, he stated another benefit, writing: If it is said that delaying to this extent is such an excuse that arose from someone other than the rightful owner. So in response, it would be appropriate to say that he should perform tayammum and pray, then perform wudu and repeat it, like a person who is unable to perform wudu due to some excuse arising from human beings. End (T) I say, this statement has no relevance in the discussion from either side, because it is no one's opinion that one should first perform tayammum, and then repeat it with water. According to our Imams, because they do not believe in the permissibility of tayammum here, and according to Imam Zufar, because he does not believe in repetition. For this purpose...

1 Hilya 2 Hilya Page 451 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरा खंड)

[अरबी पक्ष का पाठ] बल्कि उस पर (नमाज़) क़स्र करना अनिवार्य है। और जिसे व्यभिचार (ज़िना) के कारण—अल्लाह तआला रक्षा करे—जनाबत हुई और पानी न मिल सका, उसके लिए तयम्मुम जायज़ है, बल्कि फ़र्ज़ है। फिर मैंने देखा कि इमाम इब्न अल-हुमाम के शिष्य मुहक़्क़िक़ हलबी ने 'अल-हिल्या' में उनके शब्दों को उद्धृत किया और उनका समर्थन किया, और "बिना किसी बहाने के देरी" के संबंध में वही चर्चा की जो मैंने की थी, अल्लाह का शुक्र है। उन्होंने कहा: "लेकिन मत यह है कि रियायतों के मामले में आज्ञाकारी और अवज्ञाकारी बराबर हैं।" 1 अंत। उन्होंने एक और लाभ प्रदान किया, कहते हुए: "यदि यह कहा जाए कि इस हद तक देरी करना एक ऐसा बहाना है जो हक़-धारक (अल्लाह) के अलावा किसी और की ओर से उत्पन्न हुआ है, तो इसके उत्तर में यह कहना उचित होगा कि वह तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले, फिर वज़ू करके दोहराए, जैसे वह व्यक्ति जो बंदों (मनुष्यों) की ओर से उत्पन्न किसी बाधा के कारण वज़ू करने में असमर्थ हो।" 2 अंत। मैं कहता हूँ: दोनों पक्षों में से किसी भी ओर से चर्चा में इस कथन का कोई दखल (1) नहीं है। क्योंकि उनमें से किसी के लिए भी इसके साथ शुरुआत करना या दोहराना संभव नहीं है। हमारे इमामों के अनुसार इसलिए कि वे (यहाँ) तयम्मुम के जायज़ होने के क़ायल ही नहीं हैं, और इमाम ज़ुफ़र के अनुसार इसलिए कि वे दोहराने (एआदा) के क़ायल नहीं हैं। बल्कि उनका हक़ था कि वे इसे इस तरह स्थापित करते...

[उर्दू पक्ष का पाठ] न रखना जायज़ है बल्कि उसके ज़िम्मे नमाज़ क़स्र करना वाजिब है। और जिसे ज़िना की वजह से—वअलयाज़ु बिल्लाह तआला—जनाबत हुई और पानी न पा सका उसके लिए भी तयम्मुम जायज़ बल्कि फ़र्ज़ है। फिर मैंने देखा कि इमाम इब्न अल-हुमाम के शागिर्द मुहक़्क़िक़ हलबी ने 'हिल्या' में उनकी इबारत नक़्ल करके उसकी ताईद की है और "ताखीर बिला उज़र" से मुताल्लिक़ बेऐनही वही बहस की है जो मैंने की, वलिल्लाहिल हम्द उनके अल्फ़ाज़ ये हैं: "लेकिन मज़हब ये है कि रुख़्सतों के मामले में मुतीअ व आसी यकसां (बराबर) हैं।" अह् बल्कि उन्होंने एक और अफ़ादा फ़रमाया है, लिखते हैं: अगर ये कहा जाए कि इस हद तक ताखीर ऐसा उज़र है जो ग़ैर साहिब-ए-हक़ की जानिब से रुनुमा हुआ। तो इसके जवाब में ये कहना मुनासिब होगा कि वो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले, फिर वज़ू करके एआदा करे जैसे वो शख़्स जो बंदों की जानिब से पैदा होने वाले किसी उज़र की वजह से वज़ू पर क़ादिर न हो। अह् (त) मैं कहता हूँ फ़रीक़ैन में से किसी जानिब से बहस में इस कलाम का कोई दख़ल नहीं, इसलिए ये किसी का क़ौल नहीं कि पहले तयम्मुम करले, फिर पानी

से एआदा करे। हमारे अइम्मा के नज़दीक इसलिए कि वो यहाँ जवाज़-ए-तयम्मुम के क़ायल ही नहीं और इमाम ज़ुफ़र के नज़दीक इसलिए कि वो एआदा के क़ायल नहीं। इस मक़सद की...

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[عربی عبارت] بل وجب علیه القصر ومن اجنب بالزنا والعیاذ بالله تعالی ولم یجد ماء جازله التیمم بل افترض علیه- ثم رأیت تلمیذه المحقق الحلبي في الحلیة نقل کلامه وایده وبحث في التأخیر بلا عذر بعین مابحثت ولله الحمد قال لکن المذهب ان المطیع والعاصی في الرخص سواء 1 اهـ- وافاد فائدة اخری فقال لو قیل تأخیره الی هذا الحد عذرجاء من قبل غیر صاحب الحق لقیل فینبغي ان یقال یتیمم ویصلی ثم یعید بالوضوء کمن لم یقدر علی الوضوء من قبل العباد 2 اهـ اقول: هذا لامدخل (1) له فی البحث من قبل احد من الفریقین فلیس لاحدهما ان یبدئ به او یعید اما ائمتنا فلانهم لا یقولون بالتیمم واما زفر فلانه لایقول بالاعادة بل کان حقه ان یقرر هکذا

[اردو عبارت] نہ رکھنا جائز ہے بلکہ اس کے ذمہ نماز قصر کرنا واجب ہے۔ اور جسے زنا کی وجہ سے۔ والعیاذ باللہ تعالٰی۔ جنابت ہوئی اور پانی نہ پاسکا اس کیلئے بھی تیمم جائز بلکہ فرض ہے۔ پھر میں نے دیکھا کہ امام ابن الہمام کے شاگرد محقق حلبی نے حلیہ میں ان کی عبارت نقل کر کے اس کی تائید کی ہے اور "تاخیر بلا عذر" سے متعلق بعینہ یہی بحث کی ہے جو میں نے کی وللہ الحمد ان کے الفاظ یہ ہیں: "لیکن مذہب یہ ہے کہ رخصتوں کے معاملہ میں مطیع وعاصی یکساں ہیں۔" اھ بلکہ انہوں نے ایک اور افادہ فرمایا ہے، لکھتے ہیں: اگر یہ کہا جائے کہ اس حد تک تاخیر ایسا عذر ہے جو غیر صاحبِ حق کی جانب سے رونما ہوا۔ تو اس کے جواب میں یہ کہنا مناسب ہو گا کہ وہ تیمم کر کے نماز پڑھ لے، پھر وضو کر کے اعادہ کرے جیسے وہ شخص جو بندوں کی جانب سے پیدا ہونے والے کسی عذر کی وجہ سے وضو پر قادر نہ ہو۔ اھ (ت) میں کہتا ہوں فریقین میں سے کسی جانب سے بحث میں اس کلام کا کوئی دخل نہیں، اس لئے یہ کسی کا قول نہیں کہ

پہلے تیمم کرلے، پھر پانی سے اعادہ کرے۔ ہمارے ائمہ کے نزدیک اس لئے کہ وہ یہاں جوازِ تیمم کے قائل ہی نہیں اور امام زفر کے نزدیک اس لئے کہ وہ اعادہ کے قائل نہیں۔ اس مقصد کی

Fatawa Razvia, Volume 3

[Right Column - Urdu Text] The discussion should be structured in such a way that this becomes the third point regarding the text of 'al-Fath'. What you stated is that if the shortcoming was on his part, then at most, the ruling should be that you command him to perform Tayammum and then repeat the prayer, as is the rule for every such excuse that arises from the side of human beings. It should not be that you completely prohibit him from performing Tayammum. (T) Second proof: This is the 'Prayer of Fear' (Salat al-Khawf), which was legislated specifically for the preservation of time. The response given to this in 'al-Bahr' is: "The Prayer of Fear is due to fear itself, not due to the apprehension of missing the time." (End). I say: Glory be to Allah. The status of fear is not so extreme that it makes performing the prayer within its time mandatory despite committing acts incompatible with prayer. Rather, there was room for them to delay it until safety and tranquility were attained, just as you yourself argue in several sub-issues within 'al-Bahr'. A few sub-issues are listed below: Sub-issue 1: A crowd is gathered at a well and there is no way to draw water except by taking turns, because the standing area is narrow, or there is only one bucket and rope, or some other similar reason. Now, it remains to be seen that by the time his turn comes, the prayer time will have passed. In our view, the ruling is that...

[Left Column - Arabic Text] ...so that it becomes threefold regarding what is in 'al-Fath'. Indeed, the utmost of what you said is that if the negligence is on his part, you should command him to perform Tayammum and then repeat (the prayer), as is the rule for every excuse that arises from the side of human beings; not that you forbid him from Tayammum altogether. Secondly: This is the 'Prayer of Fear'. It was only prescribed to preserve the time. He answered it in 'al-Bahr' that the Prayer of Fear is due to fear, not due to fear of missing the time. (End). I say: Glory be to Allah (1). Fear was not meant to make performing it within the time obligatory while committing acts contrary to prayer. Rather, they were in a position to delay it until they reached safety and tranquility, as you mentioned in your 'al-Bahr' in several sub-issues: Among them: A group gathered at a well where it is impossible to draw water except by taking turns, due to the narrowness of the standing area or the uniqueness of the drawing tool and such. It is known that his turn won't come until after the time expires. According to us, he waits to perform Wudu after the time, while according to Zufar...

[Footnote] 1 Al-Bahr al-Raiq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/159 Page 452 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द सोम

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] तक़रीर इस तरह होनी चाहिए ताकि 'फ़त्ह' की इबारत से मुताल्लिक यह तीसरा कलाम हो जाए कि आपने जो फ़रमाया कि कोताही खुद उसकी जानिब से हुई तो उस पर ज़्यादा से ज़्यादा यह होना चाहिए कि आप हुक्म यह दें कि वह तयम्मुम कर ले फिर एआदा (दोहराए) करे जैसा कि यह हर उस उज़्र का हुक्म है जो बंदों की जानिब से रुनमा हुआ हो, यह नहीं होना चाहिए कि उसे आप तयम्मुम से बिल्कुल ही रोक दें। (ت) दलील दोम: यह नमाज़-ए-खौफ़ है जिसकी मशरूइयत (निर्धारण) तहफ़्फ़ुज़-ए-वक़्त (समय की सुरक्षा) के लिए ही हुई है। इसका जवाब 'बहर' में यह दिया गया है कि: "नमाज़-ए-खौफ़ तो खौफ़ की वजह से है, फ़ौत-ए-वक़्त (समय निकल जाने) के अंदेशे से नहीं है।" (अह) अक़ूलु (मैं कहता हूँ): सुब्हान अल्लाह। खौफ़ की हैसियत इतनी बढ़ी हुई नहीं कि मनाफ़ी-ए-नमाज़ (नमाज़ के विपरीत) के इर्तिकाब के साथ वक़्त के अंदर नमाज़ की अदायगी लाज़िम कर दे बल्कि उनके लिए अमन-ओ-इत्मीनान होने तक ताखीर (देरी) की गुंजाइश थी जैसा कि 'बहर' के अंदर मुतअद्दिद जुज़इयात में खुद आप ही इसके क़ायल हैं। चंद जुज़इयात दर्ज-ज़ैल हैं: जुज़इया १: किसी कुएं पर एक हुजूम जमा है और बारी-बारी पानी निकालने के सिवा कोई गुंजाइश नहीं इसलिए कि खड़े होने की जगह तंग है या डोल रस्सी एक ही है या ऐसा ही कोई और सबब है। अब यह देखना है कि जब तक उसकी बारी आएगी वक़्त निकल जाएगा तो हमारे नज़दीक हुक्म यह है कि...

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] ...ताकि यह 'अल-फ़त्ह' के बारे में तीन गुना हो जाए। वास्तव में, आपने जो कहा उसका सार यह है कि यदि कोताही उसकी ओर से है, तो आपको उसे तयम्मुम करने और फिर नमाज़ दोहराने का आदेश देना चाहिए, जैसा कि हर उस उज़्र (बहाने) का नियम है जो बंदों की ओर से उत्पन्न होता है; न कि आप उसे पूरी तरह से तयम्मुम करने से रोक दें। दूसरा: यह 'नमाज़-ए-खौफ़' है। यह केवल समय की रक्षा के लिए निर्धारित की गई थी। 'अल-बहर' में इसका उत्तर दिया गया है कि नमाज़-ए-खौफ़ खौफ़ के कारण है, न कि समय निकल जाने के डर से। (समाप्त) मैं कहता हूँ: सुब्हान अल्लाह (1)। खौफ़ की स्थिति ऐसी नहीं थी कि नमाज़ के विपरीत कार्यों के होते हुए भी उसे समय के भीतर अदा करना अनिवार्य कर दे। बल्कि उनके पास अमन और सुकून मिलने तक इसमें देरी करने की गुंजाइश थी, जैसा कि आपने अपने 'बहर' में कई उप-मुद्दों में उल्लेख किया है: उनमें से: एक कुएं पर भीड़ जमा है जहाँ खड़े होने की जगह तंग होने या पानी निकालने का साधन एक ही होने आदि के कारण बारी-बारी से पानी निकालने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। यह ज्ञात है

कि उसकी बारी समय बीतने के बाद ही आएगी। हमारे निकट वह समय बीतने के बाद वुज़ू करने के लिए इंतज़ार करेगा, जबकि ज़ुफ़र के निकट...

[पाद टिप्पणी] 1 अल-बहरुर ऱाएक़, बाब-उत-तयम्मुम, एच एम सईद कंपनी कराची, 1/159 पेज 452 of 756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

[دایاں کالم - اردو متن] تقریر اس طرح ہونی چاہئے تاکہ فتح کی عبارت سے متعلق یہ تیسرا کلام ہو جائے کہ آپ نے جو فرمایا کہ کوتاہی خود اس کی جانب سے ہوئی تو اس پر زیادہ سے زیادہ یہ ہونا چاہئے کہ آپ حکم یہ دیں کہ وہ تیمّم کرلے پھر اعادہ کرے جیسا کہ یہ ہر اُس عذر کا حکم ہے جو بندوں کی جانب سے رونما ہوا ہو یہ نہیں ہونا چاہئے کہ اسے آپ تیمّم سے بالکل ہی روک دیں۔ (ت) دلیل دوم: یہ نماز خوف ہے جس کی مشروعیت تحفظِ وقت کیلئے ہی ہوئی ہے۔ اس کا جواب بحر میں یہ دیا ہے کہ : "نمازِ خوف تو خوف کی وجہ سے ہے، فوتِ وقت کے اندیشہ سے نہیں ہے۔" اھ اقول: سبحان اللہ۔ خوف کی حیثیت اتنی بڑھی ہوئی نہیں کہ منافیِ نماز کے ارتکاب کے ساتھ وقت کے اندر نماز کی ادائیگی لازم کردے بلکہ ان کیلئے امن واطمینان ہونے تک تاخیر کی گنجائش تھی جیسا کہ بحر کے اندر متعدد جزئیات میں خود آپ ہی اس کے قائل ہیں۔ چند جزئیات درج ذیل ہیں: جزئیہ۱: کسی کُنوئیں پر ایک ہجوم جمع ہے اور باری باری پانی نکالنے کے سوا کوئی گنجائش نہیں اس لئے کہ کھڑے ہونے کی جگہ تنگ ہے یا ڈول رسّی ایک ہی ہے یا ایسا ہی کوئی اور سبب ہے۔ اب یہ دیکھنا ہے کہ جب تک اس کی باری آئے گی وقت نکل جائے گا تو ہمارے نزدیک حکم یہ ہے کہ

[بایاں کالم - عربی متن] لیکون مثلثاً لما فی الفتح ان غایة ما قلتم ان التقصیر من قبله ان تأمروه بالتیمم ثم الاعادة کما هو حکم کل عذر جاء من قبل العباد لا ان تحجروا علیه التیمم رأسا۔ وثانیها: هذه صلوة الخوف ما شرعت الالحفظ الوقت۔ واجاب عنه فی البحر بأن صلاة الخوف للخوف دون خوف الفوت ۱ اھ اقول: سبحن (۱) الله ماکان الخوف لیوجب الاتیان بها فی الوقت مع ارتکاب المنافی بل کانوا بسبیل من تأخیرها الی ان یطمئنوا کما قلتم فی بحرکم فی عدة فروع: منها: ازدحم جمع علی بئر لا یمکن

الاستقاء منها الا بالمناوبة لضيق الموقف اولاتحاد آلة الاستقاء ونحو ذلك وعلم انها لا تصير اليه الا بعد خروج الوقت و يصبر عندنا ليتوضأ بعد الوقت وعند زفر

[حاشیہ] 1 البحر الرائق، باب التیمم، ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۱۵۹/۱ صفحہ 452 از 756

Fatawa Rizvia Volume Three Tayammum

...wait so that one can perform Wudhu after the time has passed, and according to Imam Zufar, the ruling is that he should perform Tayammum.

[Arabic quote 1]: Among them: A group of naked people who have only one garment which they share in turns. If it is known that the turn will not reach someone until after the time, then he should wait and not pray naked. Case 2: There are several naked people who have only one garment (suitable for covering the private parts) which they use in turn to perform prayer. If one of them knows that by the time his turn comes, the prayer time will have passed, he should wait and not pray naked.

[Arabic quote 2]: Among them: They are gathered in a ship or a small house where there is no space to pray standing. He should not pray sitting, but rather wait and pray standing after the time. Case 3: People are gathered in a ship or a narrow room where there is not enough space to perform prayer standing. He should not pray sitting but rather wait and perform prayer standing after the time has passed.

[Arabic quote 3]: Among them: He has an impure garment and water to wash it, but if he washes it, the time will expire. It is necessary to wash it even if the time expires. Case 4: Someone has an impure garment and water is also available for washing it, but if he spends time washing it, the prayer time will pass. It is obligatory for him to wash the garment (and perform prayer with a clean garment) even if the time passes.

[Arabic quote 4]: Among them: Similarly, if he is a patient unable to stand and use water during the time, and he strongly suspects he will be able after that, he should delay it and not pray during the time. Case 5-6: There is a patient who is unable to stand on time, or is so ill that he cannot use water during the prayer time and it is highly likely that after the time passes, he will have the ability (to stand or use water). In this case, he should delay the prayer until he gains ability and should not pray within the time (without standing or by performing Tayammum).

[Arabic quote 5]: Among them: His companion promised him that... Case 7: From someone his companion promised that...

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, published by HM Saeed Company Karachi, 1/120

2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, published by HM Saeed Company Karachi, 1/120
3. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, published by HM Saeed Company Karachi, 1/120
4. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, published by HM Saeed Company Karachi, 1/120
5. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, published by HM Saeed Company Karachi, 1/120

...इंतज़ार करे ताकि वक्त के बाद वज़ू कर सके, और इमाम ज़ुफ़र के नज़दीक यह हुक्म है कि तयम्मुम कर ले।

[अरबी उद्धरण 1]: इनमें से: नग्न लोगों का एक समूह जिनके पास केवल एक ही कपड़ा है जिसे वे बारी-बारी से लेते हैं। यदि ज्ञात हो कि किसी की बारी समय बीतने के बाद ही आएगी, तो वह प्रतीक्षा करे और नग्न अवस्था में नमाज़ न पढ़े। जज़ईया 2: चंद आदमी बरहना (नग्न) हैं जिनके पास (सत्र-ए-औरत के काबिल) एक ही कपड़ा है जिसे बारी-बारी बाँध कर नमाज़ अदा करते हैं, उनमें से किसी को मालूम है कि जब तक उसकी बारी आएगी वक्त निकल जाएगा तो वह इंतज़ार करे और बरहना नमाज़ न पढ़े।

[अरबी उद्धरण 2]: इनमें से: वे एक जहाज़ या एक तंग घर में एकत्र हुए हैं और खड़े होकर नमाज़ पढ़ने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है। वह बैठकर नमाज़ न पढ़े, बल्कि प्रतीक्षा करे और समय के बाद खड़े होकर नमाज़ पढ़े। जज़ईया 3: किसी कश्ती या तंग कोठरी में लोग जमा हैं जहाँ इतनी जगह नहीं कि खड़े होकर नमाज़ अदा करे तो वह बैठकर न पढ़े बल्कि इंतज़ार करे और वक्त गुज़र जाने के बाद खड़े होकर नमाज़ अदा करे।

[अरबी उद्धरण 3]: इनमें से: उसके पास एक नापाक कपड़ा है और उसे धोने के लिए पानी भी है, लेकिन अगर वह उसे धोता है तो समय समाप्त हो जाएगा। उसे धोना आवश्यक है भले ही समय निकल जाए। जज़ईया 4: किसी के पास एक नापाक कपड़ा है और उसके धोने के लिए पानी भी मौजूद है लेकिन अगर कपड़ा धोने में लगता है तो नमाज़ का वक्त निकल जाएगा उस पर लाज़िम है कि कपड़ा धोए (और पाक कपड़े से ही नमाज़ अदा करे) अगरचे वक्त निकल जाए।

[अरबी उद्धरण 4]: इसी तरह, यदि कोई रोगी समय के दौरान खड़े होने और पानी का उपयोग करने में असमर्थ है, और उसे दृढ़ विश्वास है कि वह बाद में सक्षम होगा, तो उसे देरी करनी चाहिए और समय के भीतर नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिए। जज़ईया 5-6: कोई ऐसा मरीज़ है जो बरवक्त खड़ा होने पर कादिर नहीं, या ऐसा बीमार है कि अभी वक्त-ए-नमाज़ में पानी नहीं इस्तेमाल कर सकता और ज़न्न-ए-गालिब है कि वक्त निकल जाने के बाद (खड़े होने या पानी इस्तेमाल करने पर) कुदरत हो जाएगी, तो वह हुसूल-ए-कुदरत तक नमाज़ मुअक्खर (देरी) करे और वक्त के अंदर (बिला क्याम या तयम्मुम से) नमाज़ न पढ़े।

[अरबी उद्धरण 5]: इनमें से: उसके साथी ने उससे वादा किया कि... जज़ईया 7: किसी से उसके साथी ने...

---

1. अल-बह्र अल-रईक़, बाब-उत-तयम्मुम, मतबुआ एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/120
2. अल-बह्र अल-रईक़, बाब-उत-तयम्मुम, मतबुआ एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/120
3. अल-बह्र अल-रईक़, बाब-उत-तयम्मुम, मतबुआ एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/120
4. अल-बह्र अल-रईक़, बाब-उत-तयम्मुम, मतबुआ एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/120
5. अल-बह्र अल-रईक़, बाब-उत-तयम्मुम, मतबुआ एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/120

पृष्ठ 453/756

انتظار کرے تاکہ وقت کے بعد وضو کر سکے، اور امام زفر کے نزدیک یہ حکم ہے کہ تیمم کر لے۔

ومنها ١ جمع (١) من العراة ليس معهم الا ثوب يتناولونه وعلم ان النوبة لا تصل اليه الا بعد الوقت فانه يصبر ولا يصلى عارياً جزئیہ ٢: چند آدمی برہنہ ہیں جن کے پاس (ستر عورت کے قابل) ایک ہی کپڑا ہے جسے باری باری باندھ کر نماز ادا کرتے ہیں، ان میں سے کسی کو معلوم ہے کہ جب تک اس کی باری آئے گی وقت نکل جائے گا تو وہ انتظار کرے اور برہنہ نماز نہ پڑھے۔

ومنها ٢ اجتمعوا (٢) في سفينة اوبيت ضيق وليس هناك موضع يسع ان يصلى قائماً لا يصلى قاعداً بل يصبر ويصلى قائماً بعد الوقت جزئیہ ٣: کسی کشتی یا تنگ کوٹھڑی میں لوگ جمع ہیں جہاں اتنی جگہ نہیں کہ کھڑے ہو کر نماز ادا کرے تو وہ بیٹھ کر نہ پڑھے بلکہ انتظار کرے اور وقت گزر جانے کے بعد کھڑے ہو کر نماز ادا کرے۔

ومنها ٣ معه (٣) ثوب نجس وماء لغسله ولكن لو غسل خرج الوقت لزم غسله وان خرج جزئیہ ۴: کسی کے پاس ایک ناپاک کپڑا ہے اور اس کے دھونے کیلئے پانی بھی موجود ہے لیکن اگر کپڑا دھونے میں لگتا ہے تو نماز کا وقت نکل جائے گا اس پر لازم ہے کہ کپڑا دھوئے (اور پاک کپڑے سے ہی نماز ادا کرے) اگرچہ وقت نکل جائے۔

ومنها ۴ كذا (۴) لو كان مريضاً عاجزاً عن القيام (٢) واستعمال (۵) الماء في الوقت ويغلب على ظنه القدرة بعده ۵ اهای يؤخر ولا يصلى فى الوقت جزئیہ ۵-۶: کوئی ایسا مریض ہے جو بروقت کھڑا ہونے پر قادر نہیں، یا ایسا بیمار ہے کہ ابھی وقت نماز میں پانی نہیں استعمال کر سکتا اور ظن

غالب ہے کہ وقت نکل جانے کے بعد (کھڑے ہونے یا پانی استعمال کرنے پر) قدرت ہو جائیگی، تو وہ حصولِ قدرت تک نماز مؤخر کرے اور وقت کے اندر (بلا قیام یا تیمم سے) نماز نہ پڑھے۔

ومنها ۶ وعده صاحبه ان جزئیہ ۷: کسی سے اس کے ساتھی نے

---

۱ البحر الرائق باب التیمم مطبوعه ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۲۰/۱ ۲ البحر الرائق باب التیمم مطبوعه ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۲۰/۱ ۳ البحر الرائق باب التیمم مطبوعه ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۲۰/۱ ۴ البحر الرائق باب التیمم مطبوعه ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۲۰/۱ ۵ البحر الرائق باب التیمم مطبوعه ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۲۰/۱

Fatawa Razawiyyah Volume Three

According to him (Imam Abu Hanifa), may Allah be pleased with him, the ruling in both these issues is that he should pray within the time after performing Tayammum or while naked. This is because, according to him, power over things other than water is not established through permission (of use), as its explanation will follow shortly.

I say: (I say that) this also supports the school of Imam Zufar, because if the preservation of time were not a consideration, delay would have been commanded, especially.

(Remaining footnote from the previous page): If a person is naked and his companion has a piece of cloth, and the companion says, "Wait, I will give it to you after I finish my prayer," then it is recommended for him to wait until the end of the time. If he did not wait and prayed while naked, it is permissible according to the statement of Imam Abu Hanifa, may Allah be pleased with him. And if the travel companion has enough water for both and says, "Wait until I finish my prayer, then I will give you water," then in this case it is obligatory for him to wait even if there is a fear of the time expiring. If he performed Tayammum without waiting, it is not permissible. The fundamental principle according to Imam Abu Hanifa, may Allah be pleased with him, is that in owned property, power is not established by offering or permission, but in water, power is established by permission. "End. I say: The second sentence is as an exception to the first sentence because the discussion is about owned water (so the meaning is that in owned things, power is not established through permission except for owned water, in which power is established through permission. 12 Muhammad Ahmad). And Allah Almighty knows best. May He forgive him. (T)

1 Fatawa Qazi Khan, Chapter on Tayammum, Section on what makes Tayammum permissible, Naval Kishore Lucknow, 1/72.

Page 455 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द (भाग) तीन

इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नज़दीक दोनों मसलों में हुक्म यह है कि वह वक़्त के अंदर तयम्मुम करके या नग्न अवस्था में नमाज़ पढ़ ले, क्योंकि उनके नज़दीक पानी के अलावा चीज़ों पर केवल अनुमति (इबाहत) से अधिकार (क़ुदरत) साबित नहीं होता, जैसा कि शीघ्र ही इसका बयान आ रहा है।

अक़ूल: (मैं कहता हूँ) इससे इमाम ज़ुफ़र के मज़हब का भी समर्थन होता है, क्योंकि अगर वक़्त की पाबंदी (तहफ़्फ़ुज़-ए-वक़्त) का लिहाज़ न होता तो देरी करने का हुक्म दिया जाता, विशेषकर।

(पिछले पृष्ठ का शेष हाशिया): अगर कोई नग्न है और उसके साथी के पास एक कपड़ा है और उसने कहा कि इंतज़ार करो मैं नमाज़ पढ़कर तुम्हें दूँगा, तो उसके लिए वक़्त के अंत तक इंतज़ार कर लेना मुस्तहब (पसंदीदा) है। अगर इंतज़ार नहीं किया और नग्न ही नमाज़ पढ़ ली तो इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़ौल पर यह जायज़ है। और अगर सफ़र के साथी के पास इतना पानी था जो दोनों के लिए काफ़ी होता और उसने कहा कि इंतज़ार करो मैं नमाज़ से फ़ारिग होकर तुम्हें पानी दूँगा, तो इस सूरत में उस पर इंतज़ार करना लाज़िम है चाहे वक़्त निकल जाने का अंदेशा ही क्यों न हो। अगर बिना इंतज़ार तयम्मुम कर लिया तो जायज़ नहीं। और इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नज़दीक असल ज़ाब्ता (सिद्धांत) यह है कि किसी दूसरे की मलकियत (स्वामित्व) वाली चीज़ पर केवल उसकी पेशकश या अनुमति से अधिकार साबित नहीं होता, और पानी में अनुमति से अधिकार साबित हो जाता है। "अक़ूल: दूसरा जुमला (वाक्य) पहले जुमले से इस्तिसना (अपवाद) के तौर पर है क्योंकि गुफ़्तगू मलकियत वाले पानी के बारे में ही है (तो मतलब यह हुआ कि मलकियत वाली चीज़ों में अनुमति से अधिकार साबित नहीं होता मगर मलकियत वाले पानी में अनुमति से अधिकार साबित हो जाता है। 12 मुहम्मद अहमद)। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है) 12 मिन्हु गुफ़र-लहु, (त)।

1 फ़तावा क़ाज़ी ख़ां, बाब अल-तयम्मुम, फ़स्ल फ़ीमा यजोज़ु लहु अल-तयम्मुम, नवल किशोर लखनऊ, 1/72.

पेज 455 का 756

عنه انه یصلی فی الوقت متیمما او عاریا لان القدرة علی ماسواء الماء لا یثبت عنده بالاباحة کما سیأتی۔

رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک دونوں مسئلوں میں حکم یہ ہے کہ وہ وقت کے اندر تیمم سے یا برہنہ نماز پڑھ لے اس لئے کہ ان کے نزدیک پانی کے علاوہ چیزوں پر اباحت سے قدرت ثابت نہیں ہوتی جیسا کہ عنقریب اس کا بیان آرہا ہے۔ اقول: وھذا ایضا من مؤیدات زفر اذلو لاحفظ الوقت لأمر بالتأخیر لاسیما اقول: (میں کہتا ہوں) اس سے بھی امام زفر کے مذہب کی تائید ہوتی ہے اس لئے کہ اگر تحفظ وقت ملحوظ نہ ہوتا

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) اگر برہنہ ہے اور اس کے رفیق کے پاس ایک کپڑا ہے اس نے کہا انتظار کرو میں نماز پڑھ کر تمہیں دوں گا، تو اس کیلئے آخر وقت تک انتظار کر لینا مستحب ہے۔ اگر انتظار نہ کیا اور برہنہ نماز پڑھ لی تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قول پر یہ جائز ہے۔ اور اگر رفیق سفر کے پاس اتنا پانی تھا جو دونوں کو کافی ہوتا اس نے کہا انتظار کرو میں نماز سے فارغ ہو جاؤں تو تمہیں پانی دوں گا، اس صورت میں اس پر انتظار کرنا لازم ہے اگر چہ وقت نکل جانے کا اندیشہ ہو۔ اگر بلا انتظار تیمم کر لیا تو جائز نہیں۔ اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک اصل ضابطہ یہ ہے کہ بذل واباحت سے مملوک میں قدرت ثابت نہیں ہوتی ، اور پانی میں اباحت سے قدرت ثابت ہو جاتی ہے۔ "اھ اقول: دوسرا جملہ پہلے جملہ سے استثناء کے طور پر ہے اس لئے کہ گفتگو مملوک پانی ہی کی ہے (تو معنی یہ ہوا کہ مملوک چیزوں میں اباحت سے قدرت ثابت نہیں ہوتی مگر مملوک پانی میں اباحت سے قدرت ثابت ہو جاتی ہے ۱۲ محمد احمد) واللہ تعالیٰ اعلم ۱۲ منہ غفرلہ، (ت) لوکان عریانا ومع رفیقه ثوب فقال له انتظر حتی اصلی ثم ادفعه الیك یستحب له ان ینتظر الی آخر الوقت فان لم ینتظر وصلی عریانا جاز فی قول ابی

حنيفة رضى الله تعالى عنه ولوكان مع رفيقه ماء يكفى لهما فقال انتظر حتى افرغ من الصلاة ثم ادفعه اليك لزمه ان ينتظر وان خاف خروج الوقت ولوتيمم ولم ينتظر لا يجوز فالاصل عند ابى حنيفة رضى الله تعالى عنه ان فى المملوک لا تثبت القدرة بالبذل والاباحة وفى الماء تثبت القدرة بالاباحة اهـ 1_

اقول: والجملة الثانية محل الاستثناء من الاولى لان الكلام فى ماء مملوك والله تعالى اعلم ١٢ منه غفرله (م)

1 فتاوى قاضى خاں، باب التيمم، فصل فيما يجوز لہ التيمم نولكشور لكهنؤ، ١/ ٧٢

Fatawa Rizvia Volume 3

[Left Column] ...with the promise, these are the third and fourth of its evidences. As for the fifth and sixth branches, I say: I do not see (1) that the Madhab (school of thought) includes an order to let the prayer pass. How [could it be], when obedience is according to ability? Our Lord, Blessed and Exalted, said: "So fear Allah as much as you can." (1) And in the matter [of ability], only the current state is considered. Do you not see that (2) one who expects water at the end of the time is not obliged to delay, but rather he may pray now with Tayammum (dry ablution). It was said in al-Durr (3): (the doctor ordered him to lie down to drain fluid from his eye, so he prayed with gestures because the sanctity of the limbs is like the sanctity of life. (2) - End). It is known (3) that the doctor does not order stillness except for a short period, and perhaps it does not exceed a day and a night. So they commanded that he pray by gestures and not delay. Regarding these four branches, the correct answer in the Madhab of our Imam, may Allah be pleased with him, is that he prays as much as he is able...

[Right Column] ...then the ruling for delay would be, especially in the case where someone has made a promise; so this became their third and fourth argument. Now look at sub-points 5 and 6. I say: I do not think that in this state of inability, the ruling in our school of thought would be to miss the prayer. How can this be, while obedience is mandatory only to the extent of one's ability? Our Lord, Blessed and Exalted, says: "So fear Allah as much as you are able." And in the matter of ability, only the current state will be considered. See, if someone hopes to find water at the end of the [prayer] time, it is not mandatory for him to delay the prayer; rather, he can perform Tayammum and pray right now. It is stated in Durr al-Mukhtar: "The doctor ordered the patient to lie on his back due to an eye operation and the removal of water [fluid], so he prayed with gestures because the sanctity of the limbs is like the sanctity of life." End. It is known that a doctor does not prohibit movement for a long period, but generally orders peace [stillness] for a short duration, which is usually not more than a day and a night. Despite this, the jurists (Fuqaha) gave the ruling to pray with gestures; they did not say that (permission for movement and)...

[Footnotes] 1. Al-Quran 64:16 2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of the Sick, Mujtabai Delhi 1/103

Page 456 of 756

फतावा रिज़विया खंड 3

[बायाँ कॉलम] ...वादे के साथ, तो ये इसके तीसरे और चौथे प्रमाण हैं। जहाँ तक पाँचवीं और छठी शाखाओं का प्रश्न है, मैं कहता हूँ: मुझे नहीं लगता (1) कि मज़हब (पंथ) में नमाज़ छोड़ने का आदेश हो। यह कैसे हो सकता है, जबकि आज्ञाकारिता क्षमता के अनुसार है? हमारे रब, धन्य और महान, ने कहा: "अत: अल्लाह से डरो जहाँ तक तुम सक्षम हो।" (1) और इसमें केवल वर्तमान स्थिति पर विचार किया जाता है। क्या आप नहीं देखते कि (2) जिसे समय के अंत में पानी मिलने की आशा है, वह देरी करने के लिए बाध्य नहीं है, बल्कि वह अभी तैयमुम के साथ नमाज़ पढ़ सकता है। अल-दुर्र (3) में कहा गया है: (डॉक्टर ने उसे अपनी आँख से तरल निकालने के लिए लेटे रहने का आदेश दिया, इसलिए उसने इशारों से नमाज़ पढ़ी क्योंकि अंगों की पवित्रता जीवन की पवित्रता के समान है। (2) - समाप्त)। यह ज्ञात है (3) कि डॉक्टर थोड़े समय के अलावा स्थिरता का आदेश नहीं देता है, और शायद यह एक दिन और एक रात से अधिक नहीं होता है। इसलिए उन्होंने आदेश दिया कि वह इशारे करे और देरी न करे। इन चार शाखाओं के संबंध में, हमारे इमाम, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, के मज़हब में सही उत्तर यह है कि वह उतना नमाज़ पढ़े जितना वह सक्षम है...

[दायाँ कॉलम] ...तो विलंब का आदेश होता, विशेष रूप से उस स्थिति में जब किसी ने वादा किया हो; तो यह उनका तीसरा और चौथा तर्क हुआ। अब उप-बिंदु 5, 6 को देखें। मैं कहता हूँ: मुझे नहीं लगता कि अक्षमता की इस स्थिति में, हमारे मज़हब में नमाज़ फौत (छूटने) करने का आदेश हो। यह कैसे हो सकता है जब कि आज्ञाकारिता केवल क्षमता के अनुसार ही अनिवार्य है? हमारे रब तबारक व ताला का इरशाद है: "तो अल्लाह से डरो जहाँ तक तुम्हें इस्तताअत (क्षमता) हो"। और इस्तताअत के मामले में वर्तमान स्थिति पर ही नज़र की जाएगी। देखिए, अगर किसी को अंत समय में पानी मिलने की उम्मीद है, तो उस पर यह लाज़िम नहीं कि नमाज़ मुअख़्ख़र (विलंबित) करे बल्कि वह उसी समय तैयमुम करके नमाज़ पढ़ सकता है। दुर्र-ए-मुख्तार में है: "आँख का ऑपरेशन करने और पानी निकालने की वजह से तबीब (डॉक्टर) ने बीमार को हुक्म दिया कि चित्त लेटा रहे, तो वह इशारे से नमाज़ पढ़े, इसलिए कि अंगों की हुरमत (पवित्रता) भी जान की हुरमत की तरह है।" समाप्त। यह मालूम है कि तबीब लंबे समय तक हरकत (हिलने-डुलने) की मनाही नहीं रखता बल्कि अमूमन कम समय के लिए, जो एक दिन-रात से ज़्यादा नहीं होता, पुरसुकून रहने का हुक्म देता है। इसके बावजूद फ़ुक़हा (विद्वानों) ने उसे इशारे से नमाज़ पढ़ लेने का हुक्म दिया, यह न फ़रमाया कि (हरकत की इजाज़त और)...

[पाद लेख] 1. अल-कुरान 16/64 2. अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-मरीज़, मुजतबाई दिल्ली 1/103

[Left Column] مع الوعد فهذان ثالث دلائله و رابعها۔ اما الفرع الخامس و السادس فاقول: لا ارى (1) ان يكون المذهب فيه الامر بتفويت الصلاة كيف وان الطاعة بحسب الاستطاعة_قال ربنا تبارك وتعالى فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ (1) ولا ينظر فيها الا الى الحالة الراهنة الاترى ان (2) راجى الماء أخر الوقت ليس عليه التأخير بل له ان يصلى الآن متيمما۔ وقد قال فى الدر (3) (امره الطبيب بالاستلقاء لبزغ الماء من عينه صلى بالايماء لان حرمة الاعضاء كحرمة النفس 2 اهـ ومعلوم (3) ان الطبيب لا يأمره بالسكون الامدة قليلة وربما لا تزيد على يوم وليلة فأمروا ان يؤمى لا ان يؤخر فهذه الفروع الاربعة الجواب الصواب فيها على مذهب امامنا رضى الله تعالى عنه انه يصلى كما قدر

[Right Column] تو تاخیر کا حکم ہوتا خصوصاً اس صورت میں جبکہ کسی نے وعدہ کرلیا ہے تو یہ ان کی تیسری اور چوتھی دلیل ہوئی۔ اب جزئیہ ۵، ۶ کو دیکھئے۔ فاقول: میں نہیں سمجھتا کہ اس صورت عجز میں نماز فوت کرنے کا حکم ہمارے مذہب میں ہو یہ کیسے ہو سکتا ہے جب کہ طاعت بقدر استطاعت ہی لازم ہوتی ہے۔ ہمارے رب تبارک وتعالیٰ کا ارشاد ہے: "تو اللہ سے تم ڈرو جہاں تک تمہیں استطاعت ہو"۔ اور استطاعت کے معاملہ میں موجودہ حالت پر ہی نظر کی جائے گی۔ دیکھئے اگر کسی کو آخر وقت میں پانی ملنے کی امید ہے تو اس پر یہ لازم نہیں کہ نماز مؤخر کرے بلکہ وہ اسی وقت تیمّم کر کے نماز پڑھ سکتا ہے۔ در مختار میں ہے: آنکھ کا آپریشن کرنے اور پانی نکالنے کی وجہ سے طبیب نے بیمار کو حکم دیا کہ چت لیٹا رہے تو وہ اشارہ سے نماز پڑھے اس لئے کہ حرمت اعضاء بھی حرمتِ جان کی طرح ہے" اھ یہ معلوم ہے کہ طبیب زیادہ زمانہ تک حرکت کی ممانعت نہیں رکھتا بلکہ عموماً قلیل مدت تک جو ایک شبانہ

روز سے زیادہ نہیں ہوتی پرسکون رہنے کا حکم دیتا ہے اس کے باوجود فقہاء نے اسے اشارہ سے نماز پڑھ لینے کا حکم دیا یہ نہ فرمایا کہ (اجازت حرکت و)

[Footnotes] 1 القرآن ۱۶/۶۴ 2 الدرالمختار باب المریض مجتبائی دہلی ۱/۱۰۳

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Right Column] ...until standing) postpone the prayer. In these four sub-cases (5 to 8), the correct ruling according to the school of our Imam Azam (may Allah be pleased with him) will be that he should perform the prayer within the time in whatever way he is able to, and there is no repetition after the time. (T) Now, as for the first four sub-cases, I say: in them also, this will be the ruling. The difference is that in these cases, repetition must also be done after the time. We derived the ruling for performing the prayer within the time from that rule and sub-case which we cited in previous pages from Shams al-A'immah with reference to Al-Hilyah and Al-Ghuniyah, that there is no difference in these sub-cases, and the narration in one is the narration in the other. And there, i.e., in the sub-case described by Shams al-A'immah, it was that contact with impurity was necessary even if only in the feet or leather socks, and bowing and prostration were omitted. And in this fourth sub-case as well, this same contact with impurity (clothing) is being made necessary, and the ruling of repetition is so that the original school's principle is observed. Along with this, in the first three sub-cases, there is also the fact that a form of hindrance from the side of the servants is being found. And Allah Almighty knows best. (T)

Fifth proof: You give permission for Tayammum due to the fear of missing the funeral prayer and the Eid prayer, so the fear of the time being missed is also like this. In 'Al-Bahr', the answer to this is given that ("in the five daily prayers, the primary goal is the prayer itself, and for it, the virtue of not becoming missed) being performed and being within the time is a quality of the performer, which is its...

[Left Column] ...in the time and does not repeat. As for the first four sub-cases, I say: Such is the ruling in them, except that he repeats. As for the ruling, it is based on what I have previously mentioned from Al-Hilyah and Al-Ghuniyah on the authority of Shams al-A'immah, that there is no difference in those sub-cases, and that the narration in one of them is a narration in the rest. There—meaning the sub-case of Shams al-A'immah—contamination with impurity was present even if only on the two feet or the two leather socks (khuffs), along with the omission of bowing (ruku') and prostration (sujud). In this fourth sub-case, there is nothing except contamination with impurity. As for the repetition, it is because of observing the root principle of the school, along with what is found in the first three sub-cases regarding the form of prevention from the side of the people (servants). And Allah Almighty knows best the path of guidance.

Fifthly: You allow it (Tayammum) out of fear of missing the funeral prayer and the Eid prayer, so likewise for the fear of missing the time.

And the author of 'Al-Bahr' replied that the excellence of the time and performance is a quality of the performer, subordinate to it, not intended for its own sake, unlike the funeral prayer and the Eid prayer, for they are the primary goal, so missing them is a complete loss.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[दायां कॉलम] ...खड़े होने तक) नमाज़ को टाल दे। तो इन चारों विवरणों (5 से 8) में हमारे इमाम-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़हब पर सही हुक्म यह होगा कि वह समय के भीतर नमाज़ अदा करे जैसे भी उसे सामर्थ्य हो, और समय के बाद उसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है। (त) अब रहे पहले चार विवरण, तो मैं कहता हूँ: उनमें भी यही हुक्म होगा, अंतर यह है कि इन स्थितियों में समय के बाद दोहराना भी होगा। समय के भीतर नमाज़ अदा करने का हुक्म हमने उस नियम और विवरण से निकाला है जिसे हमने पिछले पृष्ठों में शम्स अल-अइम्मा के हवाले से 'हिलिया' और 'ग़ुनिया' के संदर्भ से उद्धृत किया था कि इन विवरणों में कोई अंतर नहीं है और एक में जो रिवायत है वही दूसरे में भी है। और वहाँ यानी शम्स अल-अइम्मा द्वारा वर्णित विवरण में यह था कि अशुद्धि से संपर्क आवश्यक हो रहा था, चाहे वह केवल पैरों या मोजों में ही हो, और रुकू और सजदा छोड़ दिया गया था। और इस चौथे विवरण में भी इसी नजासत (कपड़े) से संपर्क आवश्यक हो रहा है और दोहराने का हुक्म इसलिए है ताकि मूल मज़हब का पालन हो जाए। साथ ही पहले तीन विवरणों में यह बात भी है कि बंदों की ओर से रुकावट की स्थिति पाई जा रही है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

पाँचवीं दलील: आप जनाज़ा और ईद की नमाज़ छूट जाने के डर से तयम्मुम की अनुमति देते हैं, तो समय के छूट जाने का डर भी ऐसा ही है। 'बहर' में इसका उत्तर यह दिया गया है कि ("पाँचों नमाज़ों में मूल उद्देश्य स्वयं नमाज़ है, और इसके लिए कज़ा न होना) अदायगी और समय के भीतर होने की श्रेष्ठता कर्ता का एक गुण है, जो इसके..

[बायां कॉलम] ...समय के भीतर और दोहराता नहीं। जहाँ तक पहली चार शाखाओं (उप-मामलों) का संबंध है, मैं कहता हूँ: उनमें भी यही हुक्म है, सिवाय इसके कि वह दोहराए। जहाँ तक हुक्म का सवाल है, यह उस आधार पर है जो मैंने शम्स अल-अइम्मा के हवाले से 'अल-हिलिया' और 'अल-ग़ुनिया' से पहले उद्धृत किया है कि उन शाखाओं में कोई अंतर नहीं है और उनमें से एक में जो रिवायत है वही शेष में भी है। वहाँ - यानी शम्स अल-अइम्मा की शाखा में - अशुद्धि (नजासत) का स्पर्श होना था, चाहे वह पैरों या मोजों पर ही क्यों न हो, साथ ही रुकू और सजदा छोड़ना भी शामिल था। इस चौथी शाखा में अशुद्धि के स्पर्श के अलावा कुछ नहीं है। जहाँ तक दोहराने की बात है, वह मज़हब के मूल सिद्धांत का पालन करने के कारण है, साथ ही पहले तीन उप-मामलों में जो मनुष्यों

की ओर से रुकावट का स्वरूप पाया जाता है। और अल्लाह तआला मार्गदर्शन के मार्ग को बेहतर जानता है।

पाँचवाँ: आप जनाज़ा की नमाज़ और ईद की नमाज़ छूट जाने के डर से (तयम्मुम) की अनुमति देते हैं, तो इसी तरह समय छूट जाने के डर के लिए भी है।

और 'अल-बहर' के लेखक ने उत्तर दिया कि समय और अदायगी की श्रेष्ठता कर्ता का एक गुण है, जो उसके अधीनस्थ है, अपने आप में उद्देश्य नहीं है, जनाज़ा और ईद की नमाज़ के विपरीत, क्योंकि वे स्वयं मूल हैं, इसलिए उनका छूटना पूरी तरह छूटना है।

पृष्ठ 457 का 756

[داہنا کالم] قیام تک) نماز مؤخر کرے۔ تو ان چاروں جزئیات (۵ تا ۸) میں ہمارے امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے مذہب پر حکم صحیح یہ ہوگا کہ جس طرح بھی اسے قدرت ہے ویسے ہی وہ وقت کے اندر نماز ادا کرے اور بعد وقت اس کا اعادہ بھی نہیں۔ (ت) اب رہے پہلے چار جزئیات فاقول: ان میں بھی یہی حکم ہوگا فرق یہ ہے کہ ان صورتوں میں بعد وقت اعادہ بھی کرنا ہوگا۔ وقت کے اندر ادائے نماز کا حکم ہم نے اس قاعدہ اور جزئیہ سے اخذ کیا جو حلیہ و غنیہ کے حوالہ سے شمس الائمہ سے ہم نے گزشتہ صفحات میں نقل کیا کہ ان جزئیات میں فرق نہیں اور ایک میں روایت دوسرے میں بھی روایت ہے۔ اور وہاں یعنی شمس الائمہ کے بیان کردہ جزئیہ میں یہ تھا کہ نجاست سے اتصال لازم آتا تھا اگرچہ صرف قدموں یا موزوں ہی میں، اور رکوع و سجود ترک ہوتا تھا۔ اور اس چوتھے جزئیہ میں بھی یہی نجس (کپڑے) سے اتصال لازم آرہا ہے اور اعادہ کا حکم اس لئے کہ اصل مذہب کی رعایت ہوجائے ساتھ ہی پہلے تین جزئیوں میں یہ بات بھی ہے کہ بندوں کی جانب سے رکاوٹ کی صورت پائی جارہی ہے واللہ تعالٰی اعلم (ت)

دلیل پنجم: آپ نماز جنازہ اور نماز عید فوت ہونے کے اندیشہ سے تیمم کی اجازت دیتے ہیں تو وقت کے فوت ہو جانے کا اندیشہ بھی تو ایسا ہی ہے۔ بحر میں اس کا جواب یہ دیا ہے کہ ("پنجگانہ نمازوں میں مقصود بالذات خود نماز ہے اور اس کیلئے قضا نہ ہونے) ادا ہونے اور وقت کے اندر ہونے کی فضیلت مؤدی کی ایک صفت ہے جو اس کے

[بایاں کالم] فی الوقت ولا یعید۔ اما الفروع الاربعة الاول فاقول: کذا الحکم فیها بید انہ یعید اما الحکم فلما قدمت عن الحلیة والغنیة عن شمس الائمة انہ لافرق فی تلک الفروع وان الروایة فی احدها روایة فی سائرها وقد کان هناک اعنی فرع شمس الائمة التلبس بالنجاسة ولو فی القدمین اوالخفین مع ترک

الركوع والسجود وليس فى هذا الفرع الرابع الا التلبس بنجس واما الاعادة فلما علمت من مراعاة اصل المذهب مع ما فى الفروع الثلثة الاول من صورة المنع من جهة العباد والله تعالى اعلم بسبيل الرشاد۔

وخامسها: تجيزونہ خوف فوت صلاة الجنازة وصلاة العيد فكذا خوف فوت الوقت۔

واجاب البحر بأن فضيلة الوقت والاداء وصف للمؤدى تابع لہ غير مقصود لذاتہ بخلاف صلاة الجنازة والعيد فأنها اصل فيكون فواتها فوات۔

صفحہ 457 از 756

Fatawa Rizvia, Volume III

[Right Column - Urdu Commentary/Translation] ...is subordinate, not intended in itself. However, the funeral prayer and Eid prayer are themselves primary [intents], so missing them is missing a primary intent. "Ah [End of quote]." This is the complete effort of the author of al-Bahr; may Allah have mercy on him and on us for his sake. In 'Manhatul Khaliq', Allama Shami also maintained all of these. (T) I say: Firstly: For one thing to be a quality of another thing does not necessitate that it is not intended in itself. For example, the quality of faith in a slave given as an expiation for killing is not unintentional; rather, sometimes the quality itself is the intent, such as the quality of being Muslim in the recipient of Zakat. Secondly: We know with certainty that just as the Lord (subhanahu wa ta'ala) has commanded us to pray, He has also commanded us to perform it within its time and has forbidden taking it outside of its time without excuse. So, all are intended in themselves. The divine command is: "Indeed, prayer has been decreed upon the believers a timed obligation." And the command is: "Guard the prayers and the middle prayer." And He said: "So woe to those who pray, those who are heedless of their prayers." These are the people who delay prayer to the extent that its time expires; He called them 'musalleen' (performers of prayer), and at the same time, He decreed 'Wail' (woe/destruction) for them because [they delayed it]...

[Left Column - Arabic Text] Primary intent - this is the end of his effort, may Allah Almighty have mercy on him and have mercy on us through him. And he [Allama Shami] has affirmed it all in 'al-Minhah'. I say: Firstly (1) for something to be a quality in something else does not necessitate that it is not intended in itself, like the quality of faith in a slave for the expiation of killing. Rather, sometimes (2) the quality is what is intended, like Islam in the recipient of Zakat. Secondly: We (2) know with certainty that the Lord (subhanahu wa ta'ala), just as He commanded us to pray, commanded us to perform it in its time and forbade taking it out of it except for an excuse. So, each is intended specifically. (Al-Quran) "Indeed, prayer has been decreed upon the believers a timed obligation." (2) And the Almighty said: "Guard the prayers and the middle prayer." (3) And the Almighty said: "So woe to those who pray, those who are heedless of their prayers." (4) And they are those who delay it until its time expires. He called them 'performers of prayer' and assigned 'Wail' to them for taking it out of its time. Thus, the time...

[Footnotes] 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, under the statement "not to miss the Friday prayer", H.M. Saeed Company, Karachi 1/159 2. Al-Quran 4/103 3. Al-Quran 2/238 4. Al-Quran 107/4-5

फ़तावा रिज़विया, जिल्द III

[दायाँ कॉलम - उर्दू टीका/अनुवाद] ...अधीन है, स्वतः अभीष्ट (मक़सूद बिल-ज़ात) नहीं है। लेकिन जनाज़ा की नमाज़ और ईद की नमाज़ स्वयं मूल हैं, इसलिए उनका छूटना एक मूल उद्देश्य का छूटना है। "अह [उद्धरण समाप्त]"। यह साहब-ए-बहर की पूरी कोशिश है; अल्लाह उन पर और उनके सदके में हम पर रहम फ़रमाए। 'मन्हातुल ख़ालिक़' में अल्लामा शामी ने भी इन सब को बरक़रार रखा है। (त) मैं कहता हूँ: पहली बात: किसी एक चीज़ का दूसरी चीज़ का गुण (सिफ़त) होना उसे स्वतः अनपेक्षित नहीं बनाता। जैसे हत्या के कफ़्फ़ारे में दिए जाने वाले गुलाम या दासी में ईमान का गुण स्वतः अनपेक्षित नहीं है, बल्कि कभी-कभी गुण ही उद्देश्य होता है, जैसे ज़कात लेने वाले में इस्लाम का गुण। दूसरी बात: हमें निश्चित रूप से ज्ञात है कि जिस तरह मौला सुब्हानहू व तआला ने हमें नमाज़ पढ़ने का आदेश दिया है, वैसे ही हमें यह भी आदेश दिया है कि नमाज़ को उसके निर्धारित समय के भीतर अदा करें और बिना किसी मज़बूरी (उज़्र) के उसे समय से बाहर ले जाना हराम करार दिया है। तो सभी स्वतः अभीष्ट हैं। इरशाद है: "बेशक नमाज़ ईमान वालों पर समय के पाबंद फ़र्ज़ के रूप में है।" और इरशाद है: "नमाज़ों की और विशेष रूप से बीच वाली नमाज़ की हिफ़ाज़त करो।" और फ़रमाया: "तो तबाही (वैल) है उन नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ से गाफ़िल (लापरवाह) हैं।" ये वे लोग हैं जो नमाज़ को इस हद तक टालते हैं कि उसका समय निकल जाता है; उन्हें नमाज़ी कहा, और साथ ही उनके लिए 'वैल' की चेतावनी भी दी, इसलिए...

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] मूल उद्देश्य - यह उनकी कोशिश की पराकाष्ठा है, अल्लाह तआला उन पर और उनके वसीले से हम पर रहम फ़रमाए। और उन्होंने [अल्लामा शामी] 'अल-मन्हा' में इसे पूरी तरह से स्वीकार किया है। मैं कहता हूँ: पहली बात (१) किसी चीज़ का किसी दूसरी चीज़ में गुण होना, उसे स्वतः अनपेक्षित होना आवश्यक नहीं करता, जैसे हत्या के कफ़्फ़ारे में गुलाम की गर्दन में ईमान का गुण होना। बल्कि कभी-कभी (२) गुण ही मूल उद्देश्य होता है, जैसे ज़कात के पात्र के लिए इस्लाम। दूसरी बात: हम (२) निश्चित रूप से जानते हैं कि मौला सुब्हानहू व तआला ने, जिस प्रकार हमें नमाज़ का आदेश दिया, हमें उसे उसके समय पर अदा करने का आदेश दिया और बिना किसी मज़बूरी के उसे समय से बाहर करने से मना किया। अतः प्रत्येक स्पष्ट रूप से मक़सूद है। (अल-क़ुरआन) "बेशक नमाज़ ईमान वालों पर समय के पाबंद फ़र्ज़ के रूप में है।" (२) और सर्वशक्तिमान ने फ़रमाया: "नमाज़ों की और बीच वाली नमाज़ की हिफ़ाज़त करो।" (३) और तआला ने फ़रमाया: "तो तबाही है उन नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ से गाफ़िल हैं।" (४) और ये वे लोग हैं जो इसे

इतना टालते हैं कि समय निकल जाता है। उसने उन्हें 'नमाज़ी' कहा और समय से बाहर ले जाने के कारण उनके लिए 'वैल' तय किया। अतः समय...

[पाद टिप्पणियाँ] १. अल-बहरर-राइक़, बाबूत्तयममुम, जुमे के छूटने के बारे में, एच.एम. सईद कंपनी, कराची १/१५९ २. अल-क़ुरआन ४/१०३ ३. अल-क़ुरआन २/२३८ ४. अल-क़ुरआन १०७/४-५

पृष्ठ ७५६ का ४५८

[دایاں کالم] تابع ہے مقصود بالذات نہیں ہے۔ مگر نماز جنازہ و عید خود اصل ہیں تو ان کا فوت ہونا ایک اصل مقصود کا فوت ہونا ہے "اھ یہ صاحب بحر کی تمام تر کاوش ہے، خدا ان پر اور ان کے طفیل ہم پر رحم فرمائے منحۃ الخالق میں علامہ شامی نے بھی ان سب کو برقرار رکھا ہے۔(ت)

اقول: اولاً: ایک شئی کا دوسری شئی کی صفت ہونا اس کے غیر مقصود بالذات ہونے کو لازم نہیں کرتا جیسے کفارہ قتل میں دئے جانے والے غلام یا باندی میں صفت ایمان غیر مقصود بالذات نہیں بلکہ بعض اوقات خود وصف ہی مقصود ہوتا ہے جیسے مصرف زکوۃ میں صفت اسلام۔ ثانیاً: ہمیں قطعی طور پر معلوم ہے کہ مولٰی سبحانہ و تعالٰی نے جس طرح ہمیں نماز پڑھنے کا حکم دیا ہے اسی طرح ہمیں یہ بھی حکم دیا ہے کہ نماز کو اس کے مقررہ وقت کے اندر ادا کریں اور بغیر کسی عذر کے اس وقت سے باہر لانا حرام فرمایا ہے، تو سبھی مقصود بالذات ہے ارشاد ہے: "بے شک نماز ایمان والوں پر وقت باندھا ہوا فریضہ ہے"۔ اور ارشاد ہے: "نمازوں اور بیچ والی نماز کی حفاظت کرو" اور فرمایا: "تو ویل (خرابی) ہے ان نمازیوں کیلئے جو اپنی نماز سے غافل ہیں"۔ یہ وہی لوگ ہیں جو نماز اس حد تک مؤخر کرتے ہیں کہ اس کا وقت نکل جاتا ہے انہیں نمازی کہا، ساتھ ہی ان کیلئے ویل بھی قرار دیا اس لئے

[بایاں کالم] اصل مقصود اه هذا تمام سعيه رحمه الله تعالى ورحمنا به وقد اقره على كله في المنحه.

اقول: اولا (1) كون شيئ وصفا فى شيئ لا يوجب كونه غير مقصود بالذات كوصف الايمان فى رقبة كفارة القتل بل قد (2) يكون الوصف هو المقصود كالإسلام في مصرف الزكوة. وثانيا: نحن (2) نعلم قطعا ان المولى سبحانه وتعالى كما امرنا بالصلاة امرنا بايقاعها في وقتها وحرم اخراجها عنه لا لعذر ف الكل مقصود عينا سبحانه إِنَّ الصَّلَوٰةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَبًا مَّوْقُوْتًا۝ 2 وقال عز وجل حٰفِظُوْا

عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلَوٰةِ الْوُسْطٰى 3 وقال تعالى فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ۝ الَّذِيْنَ هُمْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ۝ 4 وهم الذين يؤخرونها حتى تخرج وقتها سماهم مصلين وجعل لهم الويل لاخراجهم اياها عن وقتها فكان الوقت

[حواشی] 1 البحر الرائق باب التيمم عند قولہ لافوت الجمعة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۵۹ 2 القرآن ۱۰۳/۴ 3 القرآن ۲۳۸/۲ 4 القرآن ۴/ ۱۰۷

Fatawa Rizvia - Volume 3

[Left Column - Arabic Context] ...intended in itself (Maqsudan 'aynan).

Thirdly: Even if (1) it is conceded that safeguarding the time is an individual obligation (Fard 'Ayn), while the funeral prayer is a communal obligation (Fard Kifaya) and the Eid prayer is not an obligatory act (Fard) at all, then Fard—even if intended for something else (Maqsudan li-ghayrihi)—is more important and greater than what is below it, even if that lower act is intended in itself (Maqsudan li-dhatihi). (2) Do you not see that if the time is too narrow for the necessary acts (Wajibat), it becomes mandatory to drop them and suffice with the obligatory acts (Fara'id) to perform them within the time? If this is the case, when Tayammum is permissible for fear of missing something of lower status, how can it not be permissible for something of higher status? Especially since the obligation of the funeral prayer is dropped if someone else performs it.

Fourthly: You (3) have stated that Tayammum is permissible for fear of missing the Sunnah prayers, yet Sunnahs are not the core principles (Usul); they were only legislated as complements to the core principles. Even (4) if conceded, where is the protection of the obligatory time compared to the protection of a Sunnah?

Fifthly: You (5) have admitted that if what is being missed has no replacement (Khalaf), Tayammum is permissible for it. There is no doubt that the divine demand for performing the obligatory prayer within its time is as strong as the demand for the performance itself. This [performing it within time] has no replacement, even if the essence of the prayer has a replacement. This was the objective of the fifth argument, and the response does not address it.

[Right Column - Urdu Commentary] ...that they perform that prayer outside of its time. So, the time itself also became inherently intended (Maqsud bi-dhatihi). (T)

Thirdly: Even if your point is accepted, it will still be said that safeguarding the time is an individual obligation (Fard 'Ayn), while the funeral prayer is a communal obligation (Fard Kifaya), and the Eid prayer is not obligatory at all (rather, it is Wajib). An obligatory act (Fard), even if it is intended for something else (Maqsud bi-ghayrihi), holds greater majesty and importance than what is below it, even if that lower act is inherently intended. Consider this: if time is so constricted that only the obligatory acts (Fara'id) can be performed and there is no room for necessaries (Wajibat), then it is mandatory to drop the Wajibat and suffice with the Fard so that the performance

occurs within the time. If this is the situation, when Tayammum is permissible due to the fear of missing something of lower rank, why would it not be permissible for something of higher rank? Especially since the obligation of the funeral prayer is dropped if someone else performs it. (T)

Fourthly: You have deemed Tayammum permissible even for the fear of missing the Sunnah prayers, whereas Sunnahs are not the core; they are legislated as complements to the core. Even if it is accepted that Sunnahs are intended and are the core themselves, where is the comparison between safeguarding an important obligation like time and safeguarding a Sunnah? (There is a big difference between the two). (T)

Fifthly: You admit that if the thing being missed is such that it has no substitute or replacement, then Tayammum is permissible for it. Now, there is no doubt that God's demand to perform the prayer within its time is just like the demand to perform the prayer itself. Performing it within the time is an act that has no substitute, even if there is a substitute for the essence of the prayer itself. This was the objective of the fifth argument, which the response does not address. (T)

फ़तावा रिज़विया - जिल्द 3

[बायां कॉलम - अरबी संदर्भ] ...साक्षात अभीष्ट (मक्सूदन ऐनन)।

तीसरा: भले ही (1) यह मान लिया जाए कि समय की सुरक्षा फ़र्ज़-ए-ऐन है, जबकि जनाज़ा की नमाज़ फ़र्ज़-ए-किफ़ाया है और ईद की नमाज़ मूलतः फ़र्ज़ नहीं है, तो फ़र्ज़ - चाहे वह किसी और चीज़ के लिए अभीष्ट हो (मक्सूदन लि-ग़ैरिही) - अपने से नीचे वाली चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण और महान होता है, चाहे वह नीचे वाली चीज़ स्वयं में अभीष्ट (मक्सूदन लि-ज़ातिही) ही क्यों न हो। (2) क्या आप नहीं देखते कि यदि समय इतना कम हो कि वाजिबों को अदा करना संभव न हो, तो उन्हें छोड़ना और केवल फ़र्ज़ पर इक्तिफ़ा करना अनिवार्य हो जाता है ताकि उन्हें समय के भीतर अदा किया जा सके? यदि मामला ऐसा है, तो जब निचले दर्जे की चीज़ के छूटने के डर से तयम्मुम जायज़ है, तो उच्च दर्जे की चीज़ के लिए कैसे जायज़ नहीं होगा? विशेष रूप से जब जनाज़ा का फ़र्ज़ किसी और के पढ़ लेने से समाप्त हो जाता है।

चौथा: आपने (3) सुन्नतें छूटने के डर से तयम्मुम को जायज़ बताया है, जबकि सुन्नतें मूल (उसूल) नहीं हैं; वे केवल मूल की पूरक के रूप में निर्धारित की गई हैं। और (4) यदि इसे स्वीकार भी कर लिया जाए, तो समय जैसे महत्वपूर्ण फ़र्ज़ की सुरक्षा की तुलना सुन्नत की सुरक्षा से कहाँ की जा सकती है?

पांचवां: आपने (5) यह स्वीकार किया है कि यदि छूटने वाली चीज़ का कोई विकल्प (खलफ़) न हो, तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि नमाज़ को उसके समय के भीतर अदा करने की ईश्वरीय मांग वैसी ही है जैसे खुद नमाज़ पढ़ने की मांग है। इस [समय के भीतर अदा करने] का कोई विकल्प नहीं है, भले ही नमाज़ के सार का विकल्प मौजूद हो। पांचवीं दलील का उद्देश्य यही था, और उत्तर इसे छूता तक नहीं।

[दायां कॉलम - उर्दू टिप्पणी] ...कि वे नमाज़ वक्त से बाहर अदा करते हैं। तो खुद वक्त भी मक़सूद बि-ज़ातिही (स्वयं में अभीष्ट) हुआ। (त)

तीसरा: यदि आपकी बात मान भी ली जाए, तो भी यह कहा जाएगा कि वक्त की हिफाज़त फ़र्ज़-ए-ऐन है और जनाज़ा फ़र्ज़-ए-किफ़ाया है, और ईद की नमाज़ तो सिरे से फ़र्ज़ ही नहीं (बल्कि वाजिब है)। और फ़र्ज़, भले ही वह किसी और चीज़ के लिए अभीष्ट (मक़सूद बि-ग़ैरिही) हो, अपने से नीचे वाले से ज़्यादा महान और महत्वपूर्ण होता है, चाहे वह स्वयं में अभीष्ट ही क्यों न हो। देखिए, अगर वक्त इतना कम हो कि केवल फ़र्ज़ ही अदा किए जा सकें और वाजिब के लिए जगह न हो, तो वाजिब

को छोड़ देना और फ़र्ज़ पर इक्तिफ़ा करना लाज़िम है ताकि अदायगी वक्त के अंदर हो जाए। जब यह मामला है, तो जब निचले दर्जे की चीज़ छूटने के डर से तयम्मुम जायज़ है, तो उच्च दर्जे की चीज़ के लिए क्यों जायज़ नहीं होगा? जबकि जनाज़ा का फ़र्ज़ तो किसी और के पढ़ लेने से भी समाप्त हो जाता है। (त)

चौथा: आपने तो सुन्नतें छूटने के डर से भी तयम्मुम को जायज़ कहा है, जबकि सुन्नतें असल (मूल) नहीं हैं, बल्कि ये असल की पूरक के रूप में निर्धारित की गई हैं। और अगर यही मान लिया जाए कि सुन्नतें खुद मक़सूद और असल हैं, तो भी वक्त जैसे महत्वपूर्ण फ़र्ज़ की हिफाज़त और सुन्नत की हिफाज़त में कोई तुलना नहीं (दोनों में बहुत बड़ा अंतर है)। (त)

पांचवां: आप यह स्वीकार करते हैं कि यदि छूटने वाली चीज़ ऐसी हो जिसका कोई विकल्प या बदल न हो, तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ है। अब इसमें कोई संदेह नहीं है कि ईश्वर की मांग नमाज़ को उसके वक्त के भीतर अदा करने की वैसी ही है जैसे खुद नमाज़ पढ़ने की है। और वक्त के भीतर अदा करना एक ऐसा काम है जिसका कोई विकल्प नहीं है, भले ही नमाज़ के सार का विकल्प मौजूद हो। पांचवीं दलील का उद्देश्य यही था, जिसे उत्तर छूता तक नहीं। (त)

पृष्ठ 756 का 459

[بایاں کالم] مقصودا عینا۔ وثالثاً: لئن (۱) سلم محافظة الوقت فرض عین والجنازة فرض کفایة وصلاة العید لیست فریضة اصلاً والفرض ولو مقصوداً لغیرہ اھم واعظم مما دونہ ولو مقصوداً لذاتہ الا (۲) تری ان لوضاق الوقت عن الواجبات وجب اسقاطھا والاقتصار علی الفرض لا یقاعہ فی الوقت واذا لامر ھکذا فاذا جاز التیتم لخوف فوت الادنی کیف لا یجوز للاعلی لاسیما وقد سقط فرض الجنازة بصلاة غیرہ۔ ورابعاً: قد (۳) قلتم بالتیمم لخوف فوت السنن وما ھن اصول انما شرعت مکملات للاصول وعلی (۴) التسلیم فأین التحفظ علی فریضة الوقت من التحفظ علی سنة۔ وخامساً: (۵) قد سلمتم ان الفائت لا الی خلف یجوز لہ التیمم ولاشك ان الطلب الالھی منتھض علی ایقاع الفریضة فی وقتھا کانتھاضہ علی نفس ایقاعھا وھذا لاخلف لہ وان کانت الصلاة لھا خلف فھذا مقصود الدلیل ولا یمسہ الجواب۔

[دایاں کالم] کہ وہ نماز وقت سے باہر ادا کرتے ہیں۔ تو خود وقت بھی مقصود بالذات ہوا۔ (ت) ثالثاً: اگر آپ کی بات تسلیم کر لی جائے تو بھی یہ کہا جائے گا کہ وقت کا تحفظ فرض عین ہے اور جنازہ فرض کفایہ ہے اور نمازِ عید تو سرے سے فرض ہی نہیں (بلکہ واجب ہے) اور فرض اگرچہ مقصود بغیرہ ہو ، اپنے نیچے والے سے خواہ وہ مقصود بالذات ہو زیادہ عظمت واہمیت رکھتا ہے۔ دیکھئے اگر وقت اس قدر تنگ ہے کہ صرف فرائض ادا کر سکتا ہے واجبات کی گنجائش نہیں تو واجبات کو ساقط کر دینا اور فرض پر اکتفا کرنا لازم ہے تاکہ ادائیگی وقت کے اندر ہو جائے یہ معاملہ ہے تو جب فوتِ ادنٰی کے اندیشہ سے تیمم جائز ہو تو اعلٰی کی وجہ سے کیوں جائز نہ ہوگا جب کہ فرضِ جنازہ تو دوسرے کے پڑھ لینے سے ساقط ہو جاتا ہے۔ (ت) رابعاً: آپ نے تو سنتیں فوت ہونے کے اندیشہ سے بھی تیمم جائز کہا ہے حالانکہ سنتیں اصل نہیں بلکہ یہ

اصل کے متمم کی حیثیت سے مشروع ہوئی ہیں اور اگر یہی مان لیا جائے کہ سنتیں خود مقصود اور اصل ہیں تو بھی کہاں وقت جیسے اہم فریضہ کا تحفظ اور کہاں سنت کا تحفظ (دونوں میں بڑا فرق ہے)۔ (ت) خامساً: آپ کو یہ تسلیم ہے کہ اگر فوت ہونے والی چیز ایسی ہو کہ اس کا کوئی نائب و بدل نہیں تو اس کیلئے تیمم جائز ہے۔ اب اس میں کوئی شک نہیں کہ خدا کا مطالبہ نماز کو اس کے وقت کے اندر ادا کرنے کا بھی اسی طرح ہے جیسے خود نماز پڑھنے کا ہے اور وقت کے اندر ادا کرنا ایسا امر ہے جس کا کوئی بدل نہیں اگرچہ نفس نماز کا بدل ہے۔ دلیلِ پنجم کا مقصود یہی تھا جس سے جواب کو کوئی مس نہیں۔ (ت)

Fatawa Razawiyya - Volume 3

Sixth Argument: As I say, there is a consensus among our Imams (may Allah be pleased with them) that a person in a state of major ritual impurity (junub) who fears the cold outside the city should perform tayammum (dry ablution), as stated in al-Hidayah and other common books. It has already been mentioned with references to al-Hilyah, al-Badai', al-Bahr, al-Isbijabi, and al-Timurtashi. It is well known that fear [of cold] is most likely at dawn when one wakes up in a state of impurity on a cold night. Then, the fear subsides after the sun rises. However, the Imams did not command him to delay the prayer until the sun rose; instead, they permitted tayammum for him, which shows that this is solely for the sake of preserving the prayer time. (T)

Seventh Argument: As I say, tayammum has been permitted due to fear of an enemy, a thief, a predatory animal, a snake, or fire. It is known that most of these are temporary threats. For instance, a fire might go out or pass in an hour or two. Yet, the command was not to wait even if the prayer time expires. (T) If it is said in response, as occurred to me, that tayammum is not for preserving the time but rather to avert harm (darar) and hardship (haraj) wherever they exist—since there is harm in things like cold and fire, and hardship in being a mile away—then the basis for the ruling (manat) is established. Because when the time for prayer arrives and he...

---

1 Al-Hidayah, Chapter on Tayammum, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Karachi, 1/32 Page 460 of 756

छठी दलील: जैसा कि मैं कहता हूँ, हमारे इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) का इस पर आम सहमति (इज्मा) है कि वह व्यक्ति जो शहर के बाहर हो और ठंड से डरता हो और जनाबत (अशुद्धता) की स्थिति में हो, वह तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) करे, जैसा कि हिदाया और अन्य सामान्य किताबों में है। हिल्या, बदाई, बहर, इस्बिजाबी और तिमुरताशी के हवाले से पहले भी इसका ज़िक्र हो चुका है। यह ज्ञात है कि अक्सर ठंड का डर सुबह के समय होता है जब कोई ठंडी रात में जनाबत की स्थिति में उठता है। फिर, सूरज उगने के बाद वह डर खत्म हो जाता है। लेकिन इमामों ने उसे सूरज ऊँचा होने तक नमाज़ टालने का आदेश नहीं दिया, बल्कि उसके लिए तयम्मुम की अनुमति दी, जिससे पता चला कि यह केवल नमाज़ के समय की रक्षा के लिए ही है। (त)

सातवीं दलील: जैसा कि मैं कहता हूँ, दुश्मन, चोर, जंगली जानवर, साँप और आग के डर से तयम्मुम की अनुमति दी गई है, जबकि यह ज्ञात है कि इनमें से अधिकांश चीज़ें बहुत कम समय के लिए होती हैं। आग भी एक या दो घंटे में बुझ जाती है या आगे निकल जाती है। फिर भी यह आदेश नहीं दिया गया कि वह प्रतीक्षा करे चाहे वक़्त निकल जाए। (त) यदि इसके उत्तर में यह कहा जाए, जैसा कि मेरे मन में विचार आया, कि तयम्मुम वक़्त की रक्षा के लिए नहीं बल्कि नुकसान (ज़र) और कठिनाई (हरज) को दूर करने के लिए है जहाँ भी वे हों—चूँकि ठंड और आग जैसी चीज़ों में नुकसान है और एक मील दूर होने में कठिनाई है—तो हुक्म की बुनियाद (मनात) सिद्ध हो गई। क्योंकि जब नमाज़ का वक़्त आ गया और उसने...

---

1 अल-हिदाया, बाब अत-तयम्मुम, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची, 1/32 पृष्ठ 460 का 756

دلیل ششم: جیسا کہ میں کہتا ہوں، ہمارے ائمہ رضی اللہ تعالٰی عنہم کا اس پر اجماع ہے کہ جنب جسے بیرونِ شہر سردی سے خطرہ ہے وہ تیمم کرے جیسا کہ ہدایہ اور عامہ کتب میں ہے۔ اور حلیہ، بدائع، بحر، اسبیجابی اور تمرتاشی کے حوالہ سے پہلے ذکر بھی ہو چکا۔ یہ معلوم ہے کہ زیادہ تر صبح کو خوف ہوتا ہے جبکہ کسی سردی کی رات میں صبح کو جنابت کی حالت میں اُٹھے۔ پھر سورج بلند ہونے کے بعد خوف نہیں رہ جاتا۔ مگر ائمہ نے اسے یہ حکم نہ دیا کہ آفتاب بلند ہونے تک نماز مؤخر کرے بلکہ اس کیلئے تیمم جائز قرار دیا جس سے معلوم ہوا کہ یہ تحفظِ وقت ہی کیلئے ہے۔ (ت)

دلیل ہفتم: جیسا کہ میں کہتا ہوں، دشمن، چور، درندے، سانپ اور آگ کے خوف سے تیمم جائز قرار دیا گیا ہے جبکہ معلوم ہے کہ ان میں سے زیادہ تر وہ چیزیں ہیں جو تھوڑی ہی دیر رہتی ہیں۔ آگ بھی گھنٹے دو گھنٹے میں بجھ جاتی ہے یا گزر جاتی ہے۔ مگر یہ حکم نہ ہوا کہ انتظار کرے اگرچہ وقت نکل جائے۔ (ت) اگر اس کے جواب میں یہ کہا جائے جیسا کہ میرے دل میں خیال آیا کہ تیمم تحفظِ وقت کیلئے نہیں بلکہ ضرر و حرج دفع کرنے کیلئے ہے جہاں بھی ہو۔ ٹھنڈک اور آگ جیسی چیزوں میں ضرر ہے اور ایک میل دُور ہونے میں حرج ہے تو جو امرِ مدارِ جواز ہے وہ پالیا گیا۔ اس لئے کہ جب نماز کا وقت آگیا اور اس نے...

---

1 الہدایۃ باب التیمم المکتبۃ العربیۃ کراچی ۳۲/۱ صفحہ 460 از 756

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

If one wants to pray, they should not be stopped from it, and their current state will be considered. In this state, if there is actual harm or hardship for them in performing ablution (Wudu) or bathing (Ghusl), then Tayammum was declared permissible for them. (T)

I say: Is hardship or harm specific to that which affects their body and wealth, or is it general to include what causes loss and harm in their religion? On the first premise, the question arises: why did you allow Tayammum for fear of missing a funeral prayer or Eid prayer? And on the second premise, if the loss to their religion lies in missing a Fard al-Kifayah (communal obligation) while others have already fulfilled it, or in missing a Wajib (obligatory act), or even just a Sunnah for which there is no substitute. (Therefore you allowed Tayammum) because without Tayammum they cannot fulfill that Sharia demand. Thus, a greater and more severe loss than that is the passing of the time for a Fard al-Ayn (individual obligation), and without Tayammum, they cannot fulfill this greater Sharia demand within its time. Therefore, it is necessary that Tayammum be permissible for this as well. (T)

This is what I have (according to my knowledge and thought). By the grace of Allah Almighty, it has become clear in detail what the inclination of the Absolute Researcher (Al-Muhaqqiq al-Alaq) and his followers is, that based on the strength of Imam Zufar's evidence, or rather based on other narrations, it is the evidence of all our Imams.

Page 461 of 756

नमाज़ पढ़नी चाहिए तो उसे इससे रोका नहीं जाएगा और उसकी वर्तमान स्थिति ही देखी जाएगी। इस स्थिति में वज़ू या ग़ुस्ल से वास्तव में उसके लिए हानि या कठिनाई है तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ करार दिया गया। (त)

अक़ूलु: (मैं कहता हूँ) क्या कठिनाई या हानि उसी चीज़ के साथ विशेष है जो उसके शरीर और धन से संबंधित हो या यह सामान्य है जिसमें उसके धर्म में नुकसान और हानि हो? पहली संभावना पर यह बात है कि फिर आपने जनाज़ा और ईद छूट जाने के डर से तयम्मुम क्यों जायज़ कहा? और दूसरी संभावना पर यह कि यदि उसके धर्म का नुकसान इसमें है कि एक फ़र्ज़-ए-किफ़ाया छूट रहा है जबकि अन्य लोगों द्वारा उसकी अदायगी अमल में आ चुकी है, और इसमें कि एक वाजिब छूट रहा है बल्कि सिर्फ एक सुन्नत भी जिसका कोई विकल्प नहीं। (इसलिए आपने तयम्मुम को जायज़ कहा) क्योंकि बिना तयम्मुम के वह उस शरीयत की माँग से मुक्त नहीं हो सकता। तो इससे अधिक महान और इससे अधिक गंभीर नुकसान तो इसमें है कि एक फ़र्ज़-ए-ऐन अपने समय से छूट रहा है और बिना तयम्मुम के इस महान शरीयत की माँग को समय के भीतर पूरा करने से मुक्त नहीं हो सकता। तो अनिवार्य है कि इसके लिए भी तयम्मुम जायज़ हो। (त)

हाज़ा मा इंदी (मेरे ज्ञान और विचार के अनुसार यही है) इस विस्तार से अल्हम्दुलिल्लाह वह स्पष्ट हो गया जिसकी ओर मुहाक़्क़िक़ अली-अल-इतलाक़ और उनके अनुयायियों का रुझान है कि इमाम ज़ुफ़र के तर्क की शक्ति के बजाय, अन्य रिवायतों के लिहाज़ से हमारे सभी इमामों का तर्क है।

पृष्ठ 756 में से 461

نماز پڑھنا چاہے تو اس سے اسے روکا نہ جائے گا اور اس کی موجودہ حالت ہی دیکھی جائے گی۔ اس حالت میں وضو یا غسل سے واقعۃً اس کیلئے ضرر یا حرج ہے تو تیمم اس کیلئے جائز قرار دیا گیا۔ (ت)

اقول: (میں کہتا ہوں) کیا حرج یا ضرر اسی چیز سے خاص ہے جو اس کے بدن اور مال سے تعلق رکھتی ہو یا اسے بھی عام ہے جس سے اس کے دین میں نقصان وضرر ہو؟ پہلی تقدیر پر یہ کلام ہے کہ پھر آپ نے فوت جنازہ وعید کے اندیشہ سے تیمم کیوں جائز کہا؟ اور دوسری تقدیر پر یہ کہ اگر اس کے دین کا نقصان اس میں ہے کہ ایک فرض کفایہ فوت ہورہا ہے جبکہ دوسرے لوگوں سے اس کی ادائیگی عمل میں آچکی اور اس میں کہ ایک واجب فوت ہورہا ہے بلکہ صرف ایک سنت بھی جس کا کوئی بدل نہیں۔ (اس لئے آپ نے تیمم کو جائز کہا) کیوں کہ بغیر تیمم کے وہ اس شرعی مطالبہ سے عہدہ برآ نہیں ہوسکتا تو اس سے زیادہ عظیم اور اس سے زیادہ شدید نقصان تو اس میں ہے کہ ایک فرض عین اپنے وقت سے فوت ہورہا ہے اور بغیر تیمم کے اس عظیم تر شرعی مطالبہ وقت کے اندر ادائیگی سے عہدہ برآ نہیں ہوسکتا۔ تولازم ہے کہ اس کیلئے بھی تیمم جائز ہو۔ (ت)

ہذا ما عندی (میرے علم و فکر کی رُو سے یہی ہے) اس تفصیل سے بحمداللہ تعالٰی وہ روشن ہوگیا جس کی طرف محقق علی الاطلاق اور ان کے متبعین کا رجحان ہے کہ امام زفر کی دلیل بلکہ روایت دیگر کے لحاظ سے ہمارے سبھی ائمہ کی دلیل۔

Fatawa Rizvia Volume 3

[Arabic Text]: Whatever it may be, it is no less than that it should be adopted as a precaution for the obligatory prayer of the time, then re-performance is ordered in accordance with the well-known report in the school of law. Certainly, it was said in Al-Ghunyah after presenting what we previously cited from Shams al-A'immah: "At this point, precaution dictates that one should pray with tayammum (dry ablution) within the time, then perform wudu (ablution) and repeat the prayer so that we may be discharged from both obligations with certainty." 1 End.

[Urdu Translation]: It is strong, and however it may be, at the very least, this view should be adopted to protect the obligatory prayer of the time, then the order for re-performance should be given so that the famous narration of the school of law is also acted upon. After mentioning what we stated earlier with reference to Shams al-A’immah, it is written in Ghunyah: “In view of this, precaution is that one should pray with tayammum within the time, then perform wudu and repeat it so that one is certainly relieved of both responsibilities.”

[Arabic Text]: This statement of his has been quoted in Ad-Durr, and he (the author) and the four masters, its commentators—H (Halabi), T (Tahtawi), Sh (Shami), and Abu al-Saud—have endorsed it. Ash-Shami said: “This is a middle-ground position between the two views, and in it is the discharge from the obligation with certainty; therefore, the commentator endorsed it. Thus, it is appropriate to act upon it as a precaution, especially since Ibn al-Humam's words lean towards preferring the view of Zufar; rather, you have known that it is a report from our three masters, may Allah the Exalted be pleased with them. (1) A similar case is the issue of a guest who fears suspicion; for they said he prays and then repeats.” 2 End.

[Urdu Translation]: This statement of his was quoted and maintained in Durr-e-Mukhtar, and the four commentators of Durr-e-Mukhtar, Sayyid Halabi, Sayyid Tahtawi, Sayyid Shami, and Sayyid Abu al-Saud, also maintained it. And Allamah Shami said: “This is a middle opinion between the two views, and in it is a certain discharge from responsibility. That is why the commentator maintained it. So, it should be acted upon out of precaution, especially since Imam Ibn al-Humam's speech appears to lean towards the preference of Imam Zufar's view; in fact, it has also become known that this is a narration from our three mentors (may Allah be pleased with them). Its parallel is the issue of the guest who fears being accused. Regarding him, the jurists have said that he should pray and then repeat it.” End.

[Arabic Text]: We have elaborated on the discussion here because we saw some scholars expressing surprise at it when I gave a fatwa (legal ruling) on it in a gathering that brought us together. And with Allah is success and reaching the heights of investigation.

[Urdu Translation]: We have discussed this matter in detail here because we saw that when I had given a fatwa on this in a meeting of ours, some scholars had expressed surprise at it. And success and reaching the heights of research are only by the grace of Allah.

--- Footnotes --- 1 Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 83 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt, 1/180

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[अरबी पाठ]: और जो भी हो, यह कम से कम इतना तो है ही कि समय की फर्ज़ नमाज़ की सुरक्षा के लिए इस मत को अपनाया जाए, फिर पंथ की प्रसिद्ध रिवायत पर अमल करने के लिए उसे दोहराने का हुक्म दिया जाए। यकीनन, अल-गुनिया में शम्सुल अइम्मा से जो हमने पहले बयान किया उसे उल्लेख करने के बाद लिखा है: "इसके मद्देनज़र एहतियात (सावधानी) यही है कि समय के भीतर तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ले, फिर वज़ू करके उसे दोहराए ताकि दोनों जिम्मेदारियों से यकीनी तौर पर बरी हो जाए।" 1 समाप्त।

[उर्दू अनुवाद]: यह मज़बूत है और जैसा भी हो, कम से कम इतना ज़रूर है कि वक्त की फ़र्ज़ नमाज़ के तहफ़्फ़ुज़ (सुरक्षा) के लिए इस क़ौल को लिया जाए, फिर एआदा (दोहराने) का हुक्म दिया जाए ताकि मज़हब की रिवायत-ए-मशहूरा पर भी अमल हो जाए। शम्सुल अइम्मा के हवाले से जो हमने पहले बयान किया उसे ज़िक्र करने के बाद ग़ुनिया में लिखा है: "इसके पेश-ए-नज़र एहतियात यही है कि वक़्त के अंदर तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ले, फिर वज़ू करके एआदा करे ताकि दोनों ज़िम्मेदारियों से यक़ीनी तौर पर सुबुकदोश (मुक्त) हो जाए।"

[अरबी पाठ]: उनकी इस बात को अद-दुर्र में उद्धृत किया गया है और उन्होंने और चार उस्तादों, इसके व्याख्याकारों - ह (हलबी), त (तहतावी), श (शामी) और अबू अल-सऊद - ने इसकी पुष्टि की है। अल-शामी ने कहा: "यह दो मतों के बीच एक मध्यम मार्ग है, और इसमें जिम्मेदारी से निश्चित रूप से मुक्ति है; इसलिए व्याख्याकार ने इसकी पुष्टि की। अतः एहतियात के तौर पर इस पर अमल करना उचित है, विशेष रूप से चूंकि इब्न अल-हुमाम के शब्द जुफर के मत को प्राथमिकता देने की ओर झुकते हैं; बल्कि आपको ज्ञात हो गया है कि यह हमारे तीन उस्तादों की रिवायत है, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। (1) इसी तरह का एक मामला उस मेहमान का है जिसे संदेह का डर हो; उनके बारे में उन्होंने कहा कि वह नमाज़ पढ़े और फिर दोहराए।" 2 समाप्त।

[उर्दू अनुवाद]: उनका यह कलाम दुर्रे मुख्तार में नक़ल करके बरक़रार रखा गया और दुर्रे मुख्तार के चारों मुहश्शी (टीकाकार) सैय्यद हलबी, सैय्यद तहतावी, सैय्यद शामी और सैय्यद अबू अल-सऊद ने भी बरक़रार रखा। और अल्लामा शामी ने फरमाया: "यह दोनों क़ौलों के माबैन (बीच) एक दरम्यानी क़ौल है, और इसमें यक़ीनी तौर पर ज़िम्मेदारी से सुबुकदोशी है। इसी लिए शारह ने इसे बरक़रार रखा। तो एहतियातन इसी पर अमल होना चाहिए खुसूसन (विशेषकर) जबकि इमाम इब्न-ए-

हुमाम का कलाम इमाम ज़ुफ़र के क़ौल की तरजीह (प्राथमिकता) की जानिब माइल (झुका हुआ) नज़र आता है; बल्कि यह भी मालूम हो चुका कि यह तो हमारे तीनों मशाइख़ (गुरुओं) से एक रिवायत है रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम। इसकी नज़ीर (उदाहरण) उस मेहमान का मसला है जिसे तोहमत (आरोप) का अंदेशा हो। उसके बारे में फ़ुक़हा ने फरमाया है कि नमाज़ पढ़ ले फिर एआदा करे।" समाप्त।

[अरबी पाठ]: हमने यहाँ चर्चा को विस्तार दिया है क्योंकि हमने कुछ विद्वानों को इस पर आश्चर्य व्यक्त करते देखा जब मैंने एक सभा में इस पर फतवा दिया था। और अल्लाह ही की सफलता और शोध की ऊंचाइयों तक पहुँचना संभव है।

[उर्दू अनुवाद]: इस मक़ाम पर हमने तफ़सीली (विस्तृत) बहस इसलिए की क्योंकि हमने देखा कि जब मैंने हमारी एक मजलिस (सभा) में इस पर फतवा दिया था तो बाज़ उलमा ने इस पर ताज्जुब का इज़हार किया था। और अल्लाह तआला ही की तौफीक से कामयाबी और तहक़ीक़ (अनुसंधान) की बुलंदियों तक रसाई है।

--- फुटनोट्स --- 1 गुनियातुल मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 83 2 रद्दुल मुहतार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/180

وكيفما كان لاينزل من ان يؤخذ به تحفظاً على فريضة الوقت ثم يؤمر بالاعادة عملاً بالرواية المشهورة في المذهب لاجرم ان قال في الغنية بعد ايراد ماقدمنا عن شمس الائمة وحينئذ فالاحتياط ان يصلى بالتيمم في الوقت ثم يتوضؤ ويعيد لنخرج عن العهدتين بيقين 1 اھـ قوی ہے اور جیسا بھی ہو کم از کم اتنا ضرور ہے کہ فریضہ وقت کے تحفظ کیلئے اس قول کو لیا جائے پھر اعادہ کا حکم دیا جائے تاکہ مذہب کی روایت مشہورہ پر بھی عمل ہو جائے شمس الائمہ کے حوالہ سے جو ہم نے پہلے بیان کیا اسے ذکر کرنے کے بعد غنیہ میں لکھا ہے: "اس کے پیش نظر احتیاط یہی ہے کہ وقت کے اندر تیمم سے نماز پڑھ لے، پھر وضو کرکے اعادہ کرے تاکہ دونوں ذمہ داریوں سے یقینی طور پر سبکدوش ہو جائے۔" وقد نقل كلامه هذا في الدر واقره هو والسادة الاربعة محشوه ح ط ش وابو السعود وقال الشامي هذا قول متوسط بين القولين وفيه الخروج عن العهدة بيقين فلذا اقره الشارح فينبغي العمل به احتياطاً ولاسيما وكلام ابن الهمام يميل الى ترجيح قول زفر بل قد علمت انه رواية عن مشائخنا الثلاثة رضي الله تعالى عنهم (۱) ونظير هذا مسألة الضيف الذي خاف ريبة فانهم قالوا يصلي ثم يعيد 2 اھـ ان کا یہ کلام در مختار میں نقل کر کے برقرار رکھا اور در مختار کے چاروں محشی سید حلبی، سید طحطاوی، سید شامی اور سید ابو السعود نے بھی برقرار رکھا۔ اور علامہ شامی نے فرمایا: "یہ دونوں قولوں کے مابین ایک درمیانی قول ہے، اور اس میں یقینی طور پر ذمہ داری سے سبکدوشی ہے۔ اسی لئے شارح نے اسے برقرار رکھا۔ تو احتیاطاً اسی پر عمل ہونا چاہئے خصوصاً جبکہ امام ابن الہمام کا کلام امام زفر کے قول کی ترجیح کی جانب مائل نظر آتا ہے بلکہ یہ بھی معلوم ہو چکا کہ یہ تو ہمارے تینوں مشائخ سے ایک روایت ہے رضی اللہ تعالی عنہم۔ اس کی نظیر اس مہمان کا مسئلہ ہے جسے تہمت کا اندیشہ ہو۔ اس کے بارے میں فقہاء نے فرمایا ہے

کہ نماز پڑھ لے پھر اعادہ کرے "اھ وانما اطنبنا الکلام ھھنا لما رأینا بعض العلماء تعجب منه حین افتیت به في مجلس جمعنا وبالله التوفیق والوصول الی ذری التحقیق اس مقام پر ہم نے تفصیلی بحث اس لئے کی کیونکہ ہم نے دیکھا کہ جب میں نے ہماری ایک مجلس میں اس پر فتویٰ دیا تھا تو بعض علماء نے اس پر تعجب کا اظہار کیا تھا۔ اور اللہ تعالیٰ ہی کی توفیق سے کامیابی اور تحقیق کی بلندیوں تک رسائی ہے۔

--- حواشی --- 1 غنیۃ المستملی فصل فی التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۳ 2 ردالمحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/۱۸۰

Fatawa Razawiyya Volume 3

All praise is due to Allah, Lord of the worlds, and may Allah Almighty bless and grant peace to our master and patron Muhammad and his family and companions all. Amen. (The author says) I observed that when I gave a fatwa on this in a gathering, a scholar was greatly surprised. Success and access to high research come only from God. All praise is for Allah, the Lord of all worlds, and may Allah Almighty send blessings and peace upon our master and patron Muhammad and his entire family and companions. Amen. (T)

The supplementary treatise 'Al-Zafar li-Qawl Zafar' is complete. (89) There is a crowd at the well, the space is narrow, or there is only one bucket. People are taking turns drawing water to perform ablution, and a person's turn is so far off that the prayer time will expire. He should wait until near the end of the time; when he sees the time is about to end, he should perform tayammum and pray, then repeat it later. (90) Someone has promised to give a bucket or rope to draw water; wait and then pray after performing tayammum. These two issues have just been mentioned. I say: Now there is no need for repetition because the command for tayammum here is the doctrine of the school's founder (Imam Abu Hanifa) himself, may Allah be pleased with him. However, according to the doctrine of the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), repetition is better. It was in Durr al-Mukhtar:

It is mandatory to seek the bucket and the rope, and similarly waiting is mandatory if one said to him: [wait] until I draw water, even if the time expires. 1 Seeking a bucket and rope is necessary. Similarly, waiting is also mandatory if someone has told him 'I will draw water and give it to you,' even if the time expires while waiting.

Regarding this, it is in Radd al-Muhtar: Meaning it is mandatory to wait for the bucket when the said promise has been made... etc. However, this is the view of the two [companions], but according to him (Imam Abu Hanifa), it is not mandatory; rather, it is recommended (mustahabb) to wait until the end of the time. If he fears missing the time, he should perform tayammum and pray. Based on this, if his companion has a garment while he is naked and says 'wait until I pray and then I will give it [to you]'... Meaning it is mandatory for him to wait for the bucket when the mentioned promise has been made to him, etc. But this is the saying of the two companions; according to the Imam-e-A'zam (Imam Abu Hanifa), it is not mandatory, rather it is recommended to wait until the end of the time. If there is a fear of the time expiring,

he should perform tayammum and offer prayer. This same difference of opinion exists in that case also.

1 Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, published by Mujtabai, Delhi, 1/44.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

तमाम प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो संसार का पालनहार है, और अल्लाह तआला हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनके आल और असहाब सब पर दुरूद और सलाम भेजे। आमीन। (लेखक कहते हैं) मैंने देखा कि जब मैंने एक महफ़िल में इस पर फ़तवा दिया, तो एक विद्वान को बड़ा आश्चर्य हुआ। तौफ़ीक़ और उच्च शोध तक पहुंच केवल खुदा की ओर से होती है। सारी खूबियाँ अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहाँनों का रब है, और अल्लाह तआला दुरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाये हमारे आका व मौला मुहम्मद और उन की आल व अस्हाब सब पर। आमीन। (त)

अनुपूरक ग्रंथ 'अल-ज़फ़र ली-क़ौल ज़फ़र' समाप्त हुआ। (89) कुएं पर भीड़ है, जगह तंग है या डोल (बाल्टी) एक ही है, लोग बारी-बारी से पानी भरते हैं और वज़ू करते हैं, और किसी व्यक्ति की बारी इतनी दूर है कि नमाज़ का समय निकल जाएगा। उसे समय के अंत के करीब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए; जब वह देखे कि समय बीतने वाला है, तो वह तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले, फिर बाद में उसे दोहराए। (90) किसी ने पानी भरने के लिए डोल या रस्सी देने का वादा किया है; प्रतीक्षा करके तयम्मुम के साथ नमाज़ पढ़ ले। ये दोनों मसले अभी गुज़रे। मैं कहता हूँ: अब दोहराने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यहाँ तयम्मुम का आदेश स्वयं मज़हब के संस्थापक (इमाम अबू हनीफ़ा) का मत है, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो। हाँ, साहबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) के मज़हब के अनुसार दोहराना बेहतर है। 'दुर्रे मुख्तार' में था:

डोल और रस्सी मांगना अनिवार्य है, और इसी तरह प्रतीक्षा करना भी अनिवार्य है यदि किसी ने उससे कहा: [रुको] जब तक मैं पानी न निकाल लूँ, भले ही समय निकल जाए। १ डोल और रस्सी मांगना ज़रूरी है। इसी तरह इंतज़ार करना भी वाजिब है अगर किसी ने उससे कहा हो कि मैं पानी भर लूँ तो तुम्हें दूँगा, अगरचे इंतज़ार में वक़्त निकल जाए।

इस पर रद अल-मुह्तार में है: अर्थात डोल के लिए उसकी प्रतीक्षा करना अनिवार्य है जब उक्त वादा किया गया हो... आदि। लेकिन यह उन दोनों (साहबैन) का मत है, और उनके(इमाम अबू हनीफ़ा) निकट यह अनिवार्य नहीं है, बल्कि मुस्तहब (पसंदीदा) है कि समय के अंत तक प्रतीक्षा करे। यदि उसे समय निकल जाने का डर हो तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले। इसी पर आधारित, यदि उसके साथी के पास कपड़ा हो और वह नग्न हो और वह कहे 'प्रतीक्षा करो जब तक मैं नमाज़ पढ़ लूँ और फिर मैं इसे तुम्हें दे दूँगा'... यानी उसे डोल का इंतज़ार करना वाजिब है जब उससे मज़कूरा वादा

किया गया हो आदि, लेकिन यह साहबैन का क़ौल है, इमाम-ए-आज़म के नज़दीक वाजिब नहीं, बल्कि मुस्तहब है कि आख़िर वक़्त तक इंतज़ार कर ले, अगर वक़्त निकल जाने का अंदेशा हो तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले। यही इख़्तिलाफ़ उस सूरत में भी है।

1 अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/44 द्वारा प्रकाशित। पृष्ठ 756 में से 463

فتاوی رضویہ جلد سوم

والحمدللہ رب العلمین وصلی اللہ تعالٰی وسلم علٰی سیدنا ومولنا محمد وآلہ وصحبہ اجمعین آمین۔ کی ہے کہ میں نے دیکھا کہ جب ایک محفل میں اس پر میں نے فتوٰی دیا تو ایک عالم کو بڑا تعجب ہوا اور خدا ہی کی جانب سے توفیق، اور بلندیِ تحقیق تک رسائی ہوتی ہے اور ساری خوبیاں اللہ تعالٰی کے لئے جو سارے جہانوں کا رب ہے اور اللہ تعالٰی درود و سلام نازل فرمائے ہمارے آقا ومولٰی محمد اور ان کی آل واصحاب سب پر۔ آمین۔ (ت)

رسالہ ضمنیہ الظفر لقول ظفر تمام ہوا۔ (۸۹) کنویں پر ہجوم ہے جگہ تنگ ہے یا ڈول ایک ہی ہے لوگ نوبت بنوبت پانی بھرتے وضو کرتے ہیں اور یہ ڈور ہے کہ اس تک باری اُس وقت پہنچے گی جب نماز کا وقت جاتا رہے گا آخر وقت کے قریب تک انتظار کرے جب دیکھے کہ وقت نکل جائے گا تیمم کرکے پڑھ لے پھر اعادہ کرے۔ (۹۰) کسی نے پانی بھرنے کیلئے ڈول یا رسی دینے کا وعدہ کیا ہے انتظار کرکے تیمم سے پڑھ لے۔ یہ دونوں مسئلے ابھی گزرے۔ اقول: اور اب اعادہ کی بھی حاجت نہیں کہ یہاں حکم تیمم خود مذہب صاحب مذہب ہے رضی اللہ تعالٰی عنہ ہاں بہ لحاظ مذہب صاحبین اعادہ اولٰی ہے درمختار میں تھا:

یجب طلب الدلو والرشاء وکذا الانتظار لو قال لہ حتی استقي وان خرج الوقت ۱۔ ڈول اور رسی طلب کرنا ضروری ہے۔ اسی طرح انتظار کرنا بھی واجب ہے اگر کسی نے اس سے کہا ہو کہ میں پانی بھر لوں تو تمہیں دوں گا، اگرچہ انتظار میں وقت نکل جائے۔

اس پر ردالمحتار میں ہے: اي یجب انتظارہ للدلو اذا قال ۔۔۔ الخ لکن ھذا قولھما وعندہ لا یجب بل یستحب ان ینتظر الی آخر الوقت فان خاف فوت الوقت تیتم وصلی وعلی (۱) ھذا لوکان مع رفیقہ ثوب

وھو عریان فقال انتظر حتی اصلی وادفعه یعنی اسے ڈول کا انتظار کرنا واجب ہے جب اس سے مذکورہ وعدہ کیا ہو الخ لیکن یہ صاحبین کا قول ہے امامِ اعظم کے نزدیک واجب نہیں، بلکہ مستحب ہے کہ آخر وقت تک انتظار کرلے اگر وقت نکل جانے کا اندیشہ ہو تو تیمم کرکے نماز پڑھ لے یہی اختلاف اُس صورت میں بھی ہے

۱ الدرالمختار باب التیمم مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/ ۴۴ Page 463 of 756

Fatawa Razawiyya (Volume 3) [Arabic Text Section] To you, and they agreed (1) that if he says: "I have permitted my wealth for you to perform Hajj with it," Hajj is not obligatory upon him. And they agreed that regarding water, one should wait even if the time passes. The source of the disagreement is: Does power over things other than water become established by permission? According to him (Imam Abu Hanifa), no, and according to them (the disciples), yes. This is stated in Al-Fayd, Al-Fath, Al-Tatarkhaniyya, and others. (I say: meaning like Al-Khaniyya, Al-Khulasa, and others) and it is definitively stated in Al-Munya according to the Imam's view, and the apparent meaning of their speech is its preference. (I say: even if they had remained silent, it would still have preference because the Imam's word is the master of words, as we established in Ajla al-A'lam). In Al-Hilya, the difference for the Imam is that the original state of water is permissibility and prohibition is temporary. Thus, there is an incidental factor, so the obligation becomes attached to the power established by permissibility. This is not the case for other things, as ownership is not established except through possession, as in Hajj. Take note of what is in Ash-Shami. I say: Rather, (3) regarding water, it is more than that, for it necessitated waiting even if the time passes.

[Urdu Text Section] Volume 3 When a person is naked and his companion has a garment, and the companion says, "Wait, I will give you this garment after I perform my prayer." On this, there is a consensus among these Imams that if someone says, "I have made my wealth permissible for your Hajj," then Hajj is not obligatory upon him. And there is also a consensus that if there is a promise to provide water, one should wait even if the time (for prayer) expires. And the original cause of the disagreement is whether power is established over things other than water through permission or not? According to Imam-e-Azam (Imam Abu Hanifa), it is not, and according to the Sahibayn (his two main disciples), it is. This is how it is in Fayd, Fath, Tatarkhaniyya, etc. (I say: meaning like in Khaniyya, Khulasa, etc.). In Munyat al-Musalli, it is definitively stated according to the view of Imam-e-Azam. And from the apparent meaning of their speech, its preference is known. (I say: Even if these personalities had remained silent about the preference, it would still have preference. This is because the speech of the Imam is the 'Imam of speech', as we have researched in Ajla al-A'lam). And in Hilya, it is: "On the basis of Imam-e-Azam's school of thought, the reason for the difference is that in water, the original state is permissibility and prohibition is temporary. Therefore, the obligation is established by the power derived from permissibility. This is not the case with other things. So,

without ownership, the proof of obligation will not be established, just as in Hajj. Ah." One should remain alert to this. What is in Shami has ended. (T) I say: Rather, in the case of water, it is even more than that because in it, solely based on a promise...

1 Rad al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi, Egypt 1/184 Page 464 of 756

फतवा रज़विया (खंड 3) [अरबी पाठ अनुभाग] आपके पास, और उन्होंने सहमति व्यक्त की (1) कि यदि वह कहता है: "मैंने अपना धन आपके लिए हज करने की अनुमति दी है," तो उस पर हज अनिवार्य नहीं है। और उन्होंने सहमति व्यक्त की कि पानी के मामले में, प्रतीक्षा करनी चाहिए भले ही समय निकल जाए। मतभेद का मूल कारण यह है कि: क्या पानी के अलावा अन्य चीजों पर अनुमति द्वारा शक्ति स्थापित होती है? उनके(इमाम अबू हनीफा) के अनुसार नहीं, और उनके शिष्यों के अनुसार हाँ। ऐसा अल-फयज़, अल-फतह, अल-ततरखनिया और अन्य में कहा गया है। (मैं कहता हूँ: अर्थात अल-खानिया, अल-खुलासा और अन्य के समान) और अल-मुन्या में इमाम के दृष्टिकोण के अनुसार निश्चित रूप से कहा गया है, और उनके भाषण का स्पष्ट अर्थ इसकी प्राथमिकता है। (मैं कहता हूँ: भले ही वे चुप रहे होते, तब भी इसे प्राथमिकता प्राप्त होती क्योंकि इमाम का वचन वचनों का इमाम है, जैसा कि हमने अजला अल-आलम में स्थापित किया है)। अल-हिलया में, इमाम के लिए अंतर यह है कि पानी में मूल स्थिति अनुमति है और निषेध अस्थायी है। इस प्रकार, इसमें एक आकस्मिक कारक है, इसलिए दायित्व अनुमति द्वारा स्थापित शक्ति से जुड़ जाता है। अन्य चीजों के लिए ऐसा नहीं है, क्योंकि स्वामित्व कब्जे के बिना स्थापित नहीं होता है, जैसा कि हज में है। अश-शामी में जो है उस पर ध्यान दें। मैं कहता हूँ: बल्कि (3) पानी के मामले में यह उससे भी अधिक है क्योंकि इसमें प्रतीक्षा करना अनिवार्य कर दिया भले ही समय निकल जाए।

[उर्दू पाठ अनुभाग] खंड 3 जब यह निर्वस्त्र है और इसके साथी के पास एक कपड़ा है, और उसने कहा, "इंतजार करो, मैं नमाज अदा करके तुम्हें यह कपड़ा दूंगा।" और इस पर इन इमामों की सर्वसम्मति है कि जब किसी ने यह कहा कि तुम्हारे हज के लिए मैंने अपना माल अनुमति दे दिया है, तो उस पर हज वाजिब नहीं है। और इस पर भी सर्वसम्मति है कि यदि पानी देने का वादा किया गया हो, तो प्रतीक्षा करें भले ही समय निकल जाए। और मतभेद का मूल कारण यह है कि पानी के अलावा अन्य चीजों पर अनुमति से सामर्थ्य साबित होती है या नहीं? इमाम-ए-आज़म के निकट नहीं होती और साहिबैन के निकट हो जाती है। ऐसा ही फ़ैज़, फ़तह, तातरख़ानिया आदि में है। (मैं कहता हूँ: यानी जैसे खानिया, खुलासा आदि में है)। मुनियतुल मुसल्ली में इमाम-ए-आज़म के कथन पर निश्चित रूप से लिखा गया है। और उनके स्पष्ट कथन से उसी की प्राथमिकता ज्ञात होती है। (मैं कहता हूँ: यदि ये हस्तियां प्राथमिकता पर मौन रहतीं तो भी उसी को प्राथमिकता प्राप्त होती। इसलिए कि इमाम का कथन, कथनों का इमाम है जैसा कि अजला अल-आलम में हमने इसकी जांच की है)। और हिलया में है: "इमाम-ए-आज़म के मज़हब के आधार पर अंतर का कारण यह है कि पानी में मूल स्थिति

अनुमति है और निषेध अस्थायी होता है, तो उसमें अनुमति से साबित होने वाली सामर्थ्य से ही वाजिब होना स्थापित हो जाता है और इसके अलावा का यह हाल नहीं है। तो उसमें स्वामित्व के बिना वाजिब होने का प्रमाण नहीं होगा जैसे हज में।" इस पर सचेत रहना चाहिए। शामी में जो है वह समाप्त हुआ। (त) मैं कहता हूँ: बल्कि पानी में इससे भी अधिक है क्योंकि उसमें केवल वादे के आधार पर...

1 रद अल-मुहतार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र 1/184 पेज 756 का 464

فتاوی رضویہ (جلد سوم) [عربی متن] إليك واجمعوا (١) انه اذا قال ابحت لك مالی لتحج به انه لايجب عليه الحج واجمعوا انه في الماء ينتظر وان خرج الوقت ومنشؤ الخلاف ان القدرة (٢) على ماسوى الماء هل تثبت بالاباحة فعنده لا وعندهما نعم كذا في الفيض والفتح والتاترخانية و غيرها (قلت) اى كالخانية والخلاصة وغيرهما) وجزم في المنية بقول الامام وظاهر كلامهم ترجيحه (اقول: ولوسكتوا لكان له الترجيح لان كلام الامام امام الكلام كما حققناه في اجلى الاعلام) وفي الحلية والفرق للامام ان الاصل في الماء الاباحة و الحظر ففيه عارض فيتعلق الوجوب بالقدرة الثابتة بالاباحة ولا كذلك ما سواه فلا يثبت الابا لملك كما في الحج اهـ فتنبه اهـ ما في الشامي۔ اقول: بل (٣) في الماء فوق ذلك فانه اوجب فيه الانتظار وان خرج

[اردو متن] جلد سوم جب یہ برہنہ ہے اور اس کے رفیق کے پاس ایک کپڑا ہے اس نے کہا انتظار کرو میں نماز ادا کر کے تمہیں یہ کپڑا دوں گا۔ اور اس پر ان ائمہ کا اجماع ہے کہ جب کسی نے یہ کہا کہ تمہارے حج کیلئے میں نے اپنا مال مباح کر دیا تو اس پر حج واجب نہیں اور اس پر بھی اجماع ہے کہ پانی دینے کا وعدہ کیا ہو تو انتظار کرے اگرچہ وقت نکل جائے اور اصل منشاءِ اختلاف یہ ہے کہ پانی کے ماسوا چیزوں پر اباحت سے قدرت ثابت ہوتی ہے یا نہیں؟ امام اعظم کے نزدیک نہیں ہوتی اور صاحبین کے نزدیک ہو جاتی ہے۔ ایسا ہی فیض، فتح، تاترخانیہ وغیرہا (میں کہتا ہوں: یعنی جیسے خانیہ، خلاصہ وغیرہا) میں ہے منیۃ المصلی میں امام اعظم کے قول پر جزم کیا ہے۔ اور ان کے ظاہر کلام سے اسی کی ترجیح معلوم ہوتی ہے (اقول: اگر یہ حضرات ترجیح سے سکوت اختیار کرتے تو بھی اسی کو ترجیح حاصل ہوتی۔ اس لئے کہ کلام امام، امامِ کلام ہے جیسا کہ اجلی الاعلام میں ہم نے اس کی تحقیق کی ہے) اور حلیہ میں ہے: "امام اعظم کے مذہب کی بنیاد پر وجہ فرق یہ ہے کہ پانی میں اصل اباحت ہے اور ممانعت عارضی ہوتی ہے تو

اس میں اباحت سے ثابت ہونے والی قدرت سے ہی وجوب ہو جاتا ہے اور اس کے ماسوا کا یہ حال نہیں۔ تو اس میں بغیر ملک کے وجوب کا ثبوت نہ ہوگا جیسے حج میں اھ"۔ اس پر متنبہ رہنا چاہئے شامی میں جو ہے ختم ہوا۔ (ت) اقول: بلکہ پانی میں اس سے بھی زیادہ ہے اس لئے کہ اس میں محض وعدہ کی بناء پر

۱ رد المحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۴ صفحہ 464 از 756

Fatawa-e-Razvia Volume 3

Time by mere promise is not permission, and Allah Almighty knows best.

(91) Someone has promised to provide water; here too, when one sees the time passing, they should perform tayammum and pray. If water is found later, they should perform wudu and pray again.

Because in it, the practice is upon the saying of Imam Zufar contrary to the saying of the three Imams (may Allah Almighty be pleased with them), as was just known. (T)

I say: Apparently in this (1) case, if he brings water while he is praying, the tayammum will not be invalidated; he should complete the prayer, provided that if he performs wudu, he won't be able to pray on time.

Arabic Column: Because he was findable of water before this apparently as was mentioned from Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him). For him, tayammum became permissible only because there was no scope to use water within the time. And this reason has not changed, so the tayammum is not invalidated. Contrary to a case stated in Al-Durr, as he said: if he performed tayammum (2) for lack of water, then

Waiting is obligatory even if the time passes, and the promise is not permission. And Allah Almighty knows best. (T)

Because in it, there is walking according to the saying of Zufar, contrary to the saying of the three Imams (may Allah Almighty be pleased with them), as you knew earlier.

Urdu Column: Because apparently water was available to him even before this, as was mentioned from Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him). For him, tayammum became permissible only because there was no scope to use water within the time. And since there is still no change in this cause, the tayammum will not break. Yes, contrary to this, there is one case of tayammum breaking which Durr-ul-Mukhtar has stated in this way: "If one performed tayammum due to lack of water,

Time by mere promise is not permission, and Allah Almighty knows best.

fell ill with a sickness that permits tayammum (i.e., and he found water after it as explained by Sh), he does not pray with that tayammum because the difference (3) in the causes of concession prevents the calculation of the first concession, and the first becomes as if it never existed. Jami' al-Fusulayn, so let it be preserved 1 end. And in it is a discourse cited by Sh, and we have answered.

Waiting is obligatory even if the time passes, and the promise is not permission. And Allah Almighty knows best. (T)

and after that, he fell ill in such a way that tayammum becomes permissible (then water was found as Shami has mentioned), then he should not pray with the previous tayammum. This is because a change in the reasons for a concession prevents the first concession from being counted. And the first concession becomes null and void. Jami' al-Fusulayn. This should be kept in mind. End." (T) There is some discussion on this which Allama Shami has mentioned.

---

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Press Delhi 1/24 Page 465 of 756

फतावा-ए-रज़विया जिल्द 3

केवल वादे से समय की अनुमति नहीं होती और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(91) किसी ने पानी देने का वादा किया है, यहाँ भी जब समय जाता हुआ देखे, तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले। फिर यदि पानी मिल जाए, तो वुज़ू करके दोबारा पढ़े।

क्योंकि इसमें इमाम ज़फ़र के कथन पर अमल है जो तीन इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के कथन के विपरीत है, जैसा कि अभी पता चला। (त)

मैं कहता हूँ: स्पष्ट रूप से इस (1) स्थिति में, यदि वह नमाज़ पढ़ने के दौरान पानी ले आता है, तो तयम्मुम नहीं टूटेगा; वह नमाज़ पूरी करे, बशर्ते कि वुज़ू करने से नमाज़ वक़्त पर न मिल सके।

अरबी स्तंभ: क्योंकि ज़ाहिर है कि इससे पहले भी पानी उसे उपलब्ध था जैसा कि इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) से इसका वर्णन गुज़रा, और उसके लिए तयम्मुम केवल इसलिए जायज़ हुआ कि वक़्त में पानी इस्तेमाल करने की गुंजाइश न थी। और चूंकि इस कारण में अभी भी कोई बदलाव नहीं आया है, इसलिए तयम्मुम नहीं टूटेगा। इसके विपरीत तयम्मुम टूटने की एक स्थिति है जिसका 'दुर्रे मुख़्तार' में इस प्रकार उल्लेख किया गया है: यदि किसी ने पानी न

इंतज़ार वाजिब है चाहे वक़्त निकल जाए और वादा अनुमति नहीं है। वल्लाह तआला आलम। (त)

क्योंकि इसमें ज़फ़र के कथन के अनुसार चलना है, जो तीन इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के कथन के विपरीत है, जैसा कि आप पहले जान चुके हैं।

उर्दू स्तंभ: क्योंकि ज़ाहिर है कि इससे पहले भी पानी उसे उपलब्ध था जैसा कि इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) से इसका वर्णन गुज़रा, और उसके लिए तयम्मुम केवल इसलिए जायज़ हुआ कि वक़्त में पानी इस्तेमाल करने की गुंजाइश न थी। और चूंकि इस कारण में अभी भी कोई बदलाव नहीं आया है, इसलिए तयम्मुम नहीं टूटेगा। हाँ, इसके विपरीत तयम्मुम टूटने की एक स्थिति है जिसका 'दुर्रे मुख़्तार' में इस प्रकार उल्लेख किया गया है: "यदि पानी न मिलने के

केवल वादे से समय की अनुमति नहीं होती और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मिलने के कारण तयम्मुम किया (2) और फिर उसे ऐसी बीमारी हो गई जिससे तयम्मुम जायज़ हो जाता है (यानी उसके बाद पानी मिल गया जैसा कि 'श' ने स्पष्ट किया है), तो वह उस तयम्मुम से नमाज़ न पढ़े। क्योंकि छूट (रुख़सत) के कारणों में बदलाव (3) पहली छूट की गिनती में बाधक होता है और पहली छूट ऐसी हो जाती है जैसे कि वह थी ही नहीं। 'जामे-उल-फ़ुसूलैन', इसे याद रखना चाहिए। (अंत)। इसमें कुछ बहस है जिसका ज़िक्र 'श' ने किया है और हमने उसका उत्तर दे दिया है।

इंतज़ार वाजिब है चाहे वक़्त निकल जाए और वादा अनुमति नहीं है। वल्लाह तआला आलम। (त)

कारण तयम्मुम किया गया, उसके बाद उसे ऐसी बीमारी हो गई जिससे तयम्मुम जायज़ हो जाता है (फिर पानी मिल गया जैसा कि शामी ने बताया है), तो पिछले तयम्मुम से नमाज़ न पढ़े। क्योंकि छूट के कारणों में बदलाव पहली छूट की गिनती में बाधक होता है। और पहली छूट कालातीत (null and void) हो जाती है। 'जामे-उल-फ़ुसूलैन'। इसे ज़हननशीन रखना चाहिए। (अंत)।" (त) इस पर कुछ बहस है जिसका ज़िक्र अल्लामा शामी ने किया है।

---

1. अल-दुर्र अल-मुख़्तार, बाब-उत-तयम्मुम, मतबुआ मुज्तबाई दिल्ली 1/24 पृष्ठ 465 का 756

الوقت بمجرد الوعد غیر الاباحة واللہ تعالی اعلم۔

انتظار واجب کیا ہے اگرچہ وقت نکل جائے اور وعدہ اباحت نہیں واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

(۹۱) کسی نے پانی دینے کا وعدہ کیا ہے یہاں بھی جب وقت جاتا دیکھے تیمّم سے پڑھ لے پھر پانی مل جائے تو وضو سے دوبارہ پڑھے۔

لان فیه المشی علی قول زفر علی خلاف قول الائمة الثلثة رضی اللہ تعالی عنهم کما علمت آنفا۔

اس لئے کہ اس میں قول ائمہ ثلاثہ کے برخلاف امام زفر کے قول پر عمل ہے رضی اللہ تعالٰی عنہم جیسا کہ ابھی معلوم ہوا۔ (ت)

اقول: ظاہر اس (۱) صورت میں اگر وہ اس کے نماز پڑھتے میں پانی لے آیا تیمم نہ جائے گا نماز پوری کرے جبکہ بجائیکہ وضو کرنے سے نماز وقت پر نہ ملے گی۔

لانه کان واجد الماء قبل هذا ظاهرا کما مر عن محمد رحمه اللہ تعالی

اس لئے کہ ظاہر اس سے پہلے بھی پانی اسے دستیاب تھا جیسا کہ امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی سے اس کا بیان گزرا اور

الوقت بمجرد الوعد غير الاباحة والله تعالى اعلم۔

وانما ساغ له التيمم لضيق الوقت عن استعماله ولم يتبدل هذا السبب فلاينتقض التيمم بخلاف صورة افادها في الدر اذقال لوتيمم (۲) لعدم الماء ثم مرض مرضا يبيح التيمم (ای وقد وجد الماء بعده كما بينه ش) لم يصل بذلك التيمم لان اختلاف (۳) اسباب الرخصة يمنع الاحتساب بالرخصة الاولى وتصير الاولى كان لم تكن جامع الفصولين فليحفظ ۱ اھ وفيه كلام اورده ش وقد اجبنا

انتظار واجب کیا ہے اگرچہ وقت نکل جائے اور وعدہ اباحت نہیں واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

اس کیلئے تیمم صرف اس لئے جائز ہوا کہ وقت میں پانی استعمال کرنے کی گنجائش نہ تھی اور اس سبب میں اب بھی کوئی تبدیلی نہ آئی تو تیمم نہ ٹوٹے گا ہاں اس کے برخلاف تیمم ٹوٹنے کی ایک صورت ہے جس کا در مختار میں اس طرح افادہ کیا ہے: "اگر پانی نہ ملنے کی وجہ سے تیمم کیا ۔ اس کے بعد اسے ایسی بیماری ہو گئی جس سے تیمم جائز ہو جاتا ہے (پھر پانی مل گیا جیسا کہ شامی نے بیان کیا ہے) تو سابقہ تیمم سے نماز نہ پڑھے۔ اس لئے کہ اسباب رخصت میں تبدیلی پہلی رخصت کو شمار کرنے سے مانع ہوتی ہے۔ اور پہلی رخصت کالعدم ہو جاتی ہے جامع الفصولین اسے ذہن نشین رکھنا چاہئے اھ "۔ (ت) اس پر کچھ کلام ہے جو علامہ شامی نے ذکر کیا ہے

---

1 الدر المختار باب التیمم مطبوعہ مجتبائی دہلی ۱/۲۴ Page 465 of 756

Fatawa Razawiya, Volume 3

Regarding what we annotated on it, there is no harm in presenting it for the completion of benefit. He (may Allah the Exalted have mercy on him) said: "I say, however, an objection arises against it from what is in 'al-Bada’i'': If (1) a person who performed tayammum passes by water and cannot descend to it due to fear of an enemy or a predator, his tayammum is not invalidated. This was mentioned by Muhammad bin Muqatil al-Razi, and he said this is the demand of the analogy of our companions’ opinion because he does not conceptually possess the water, so it was annexed to the absence [of water]. The same is in 'al-Minya', as it is not hidden that fear of an enemy is a cause other than that which made tayammum permissible for him initially. For it is apparent in the assumption of the problem that he performed tayammum initially for the lack of water. Unless it is answered that the first cause remains here, and there is a discussion in it, so let it be reflected upon."

Then we also gave an answer to this in the marginalia of Shami; there is no harm in quoting it here for the completion of benefit. Allama Shami (may Allah the Exalted have mercy on him) says: "I say: But an objection arises based on this issue in 'al-Bada’i'': If a person who has performed tayammum passes by water where he cannot descend due to fear of an enemy or a predatory animal, his tayammum will not be broken. This was mentioned by Muhammad ibn Muqatil al-Razi, who stated that the demand of analogy according to our companions' school of thought is this because conceptually, the water is not available to him, so it is annexed to its absence. Something similar is in 'al-Minya'. The reason for the problem is that it is clear that the reason for which tayammum was originally permissible for him is different, and the fear of the enemy is another reason. For it is apparent in the given scenario that his initial tayammum was due to the lack of water. However, it can be said that the first reason still remains here, but there is a discussion regarding this. So it needs reflection." (T)

And he wrote the reason for the discussion in his marginalia: that when he first performed tayammum because of being far from water, he was literally lacking it, and fear of an enemy is a conceptual lack. So the literal [lack] has ceased and was followed by the conceptual [lack]. Thus, there is no difference between it and the case of illness when [water] is found after the literal lack. He wrote on it what is stated:

He stated the reason for the discussion in his marginalia: that when he first performed tayammum because of being far from water, it was a literal lack of water,

and in the case of fear of an enemy, it is a conceptual lack of water. So the literal lack has ended and been followed by a conceptual lack. Thus, in this case, there is no difference from the case of illness at the time of finding water after a literal lack. (T)

I wrote the following response to this discussion:

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt 1/174
2. Minya ala al-Raw, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi, Egypt 1/174

हमने इस पर जो टिप्पणी की है, लाभ की पूर्णता के लिए उसे प्रस्तुत करने में कोई हर्ज नहीं है। उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम फरमाए) फरमाया: "मैं कहता हूँ, लेकिन इस पर 'अल-बदाए' में जो है उससे समस्या उत्पन्न होती है: यदि (1) तयम्मुम करने वाला ऐसे पानी के पास से गुज़रे जहाँ वह दुश्मन या हिंसक जानवर के डर से नहीं उतर सकता, तो उसका तयम्मुम नहीं टूटेगा। मुहम्मद बिन मुक़ातिल रज़ी ने ऐसा ही ज़िक्र किया है और फरमाया है कि हमारे साथियों के मत के अनुसार तर्क का तक़ाज़ा यही है क्योंकि वैचारिक रूप से वह पानी का मालिक नहीं है, इसलिए इसे पानी के अभाव के साथ जोड़ दिया गया। ऐसा ही 'अल-मिन्या' में भी है, क्योंकि यह छिपा नहीं है कि दुश्मन का डर उस कारण के अलावा एक और कारण है जिसने शुरू में उसे तयम्मुम की अनुमति दी थी। क्योंकि मसले की कल्पित स्थिति में यह ज़ाहिर है कि उसने पहले पानी न मिलने के कारण तयम्मुम किया था। सिवाय इसके कि यह जवाब दिया जाए कि पहला कारण यहाँ अभी भी मौजूद है, और इसमें बहस की गुंजाइश है, अतः इस पर विचार किया जाना चाहिए।"

फिर हमने हाशिये शामी में इसका जवाब भी दिया है, लाभ की पूर्णता के लिए इसे यहाँ उद्धृत करने में कोई हर्ज नहीं। अल्लामा शामी (अल्लाह उन पर रहम फरमाए) फरमाते हैं: "मैं कहता हूँ: लेकिन इस पर 'बदाए' के इस मसले से आपत्ति होती है: अगर तयम्मुम करने वाला ऐसे पानी के पास से गुज़रा जहाँ वह किसी दुश्मन या दरिंदे के डर की वजह से नहीं उतर सकता तो उसका तयम्मुम नहीं टूटेगा। ऐसा ही मुहम्मद बिन मुक़ातिल रज़ी ने ज़िक्र किया है और फरमाया है कि हमारे साथियों के मज़हब पर क़यास का तक़ाज़ा यही है क्योंकि अर्थ के लिहाज़ से पानी उसे उपलब्ध नहीं है तो यह पानी के अभाव के समान है। इसी के समान 'मिन्या' में भी है। आपत्ति का कारण यह है कि ज़ाहिर है कि पहले जिस कारण से उसके लिए तयम्मुम जायज़ हुआ था वह कुछ और था और दुश्मन का डर एक दूसरा कारण है। क्योंकि ज़ाहिर यह है कि कल्पित स्थिति यह है कि पहले उसका तयम्मुम इसलिए था कि उसे पानी नहीं मिला। हाँ, यह कहा जा सकता है कि यहाँ पहला कारण अब भी बाकी है मगर इसमें बहस है। इसलिए विचार करने की ज़रूरत है।" (त)

और उन्होंने अपनी टिप्पणी में बहस का कारण लिखा कि जब उसने पहले पानी से दूर होने के कारण तयम्मुम किया तो वह वास्तव में पानी का अभाव था, और दुश्मन का डर अर्थपूर्ण अभाव है। तो वास्तविक अभाव खत्म हो गया और उसके बाद अर्थपूर्ण अभाव आ गया। तो इसमें और वास्तविक

अभाव के बाद पानी मिलने के समय बीमारी होने की स्थिति में कोई अंतर नहीं है। उन्होंने इस पर जो लिखा वह यह है:

बहस का कारण अपने हाशिये में यह बयान फरमाया कि जब उसने पहले पानी से दूर होने की वजह से तयम्मुम किया तो वास्तव में पानी की कमी थी और दुश्मन का डर होने की सूरत में अर्थ के लिहाज़ से पानी की कमी है। तो वास्तविक कमी खत्म हो गई और उसकी जगह अर्थपूर्ण कमी आ गई। तो इस सूरत में, और वास्तविक कमी के बाद पानी मिलने के वक्त बीमारी होने की सूरत में कोई फर्क नहीं है। (त)

इस बहस पर मैंने निम्नलिखित जवाब लिखा:

1. रद-अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/174
2. मिन्या अल-अर-रौ, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/174

पृष्ठ 466 का 756

عنه فیما علقنا علیه لابأس بایراده تتمیما للفائدة قال رحمه الله تعالی اقول لکن یشکل علیه مافی البدائع لو (۱) مر المتیمم علی ماء لا یستطیع النزول الیه لخوف عدو اوسبع لاینتقض تیممه کذا ذکره محمد بن مقاتل الرازی وقال هذا قیاس قول اصحابنا لانه غیر واجد للماء معنی فکان ملحقا بالعدم اهـ ومثله في المنیة اذ لا یخفی ان خوف العدو سبب اخر غیر الذی اباح له التیمم اولا فان الظاهر في فرض المسألة انه تیمم اولا لفقد الماء اللهم الا ان یجاب بان السبب الاول هنا باق وفیه بحث فلیتأمل اهـ

پھر ہم نے حاشیہ شامی میں اس کا جواب بھی دیا ہے تکمیل فائدہ کیلئے یہاں اسے نقل کرنے میں کوئی حرج نہیں۔ علامہ شامی رحمۃ اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں: "اقول: لیکن اس پر بدائع کے اس مسئلہ سے اعتراض ہوتا ہے: اگر تیمم کرنے والا ایسے پانی کے پاس سے گزرا جہاں وہ کسی دشمن یا درندہ کے خوف کی وجہ سے اتر نہیں سکتا تو اس کا تیمم نہ ٹوٹے گا۔ ایسا ہی محمد بن مقاتل رازی نے ذکر کیا ہے اور فرمایا ہے کہ ہمارے اصحاب کے مذہب پر قیاس کا تقاضا یہی ہے اس لئے کہ معنیٰ پانی اسے دستیاب نہیں تو یہ معلوم سے ملحق ہے۔ اسی کے مثل منیہ میں بھی ہے۔ وجہ اشکال یہ ہے کہ ظاہر ہے کہ پہلے جس سبب سے اس کیلئے تیمم روا ہوا تھا وہ اور ہے اور دشمن کا خوف ایک دوسرا سبب ہے۔ اس لئے کہ ظاہر یہ ہے کہ مفروضہ صورت مسئلہ یہ ہے کہ پہلے اس کا تیمم اس لئے تھا کہ اسے پانی نہ ملا ہاں یہ کہا جاسکتا ہے کہ یہاں پہلا سبب اب بھی باقی ہے مگر اس میں بحث ہے۔ اس لئے تامل کی ضرورت ہے اھ(ت)

وکتب وجه البحث فی منهیته انه اذا تیمم اولا لبعده عن الماء فهو فاقد له حقیقة وخوف العدو فقد معنی فالحقیقي قد زال واعقبه المعنوی فلا فرق بینه وبین المرض اذا وجد بعد الفقد الحقیقی اهـ و کتبت علیه مانصه

وجہ بحث اپنے حاشیہ میں یہ بیان فرمائی کہ جب اس نے پہلے پانی سے دُور ہونے کی وجہ سے تیمم کیا تو حقیقتاً پانی کا فقدان تھا اور دشمن کا خوف ہونے کی صورت میں معنیٰ پانی کا فقدان ہے۔ تو حقیقی فقدان ختم ہو گیا اور اس کی جگہ معنوی فقدان آگیا۔ تو اس صورت میں، اور فقدان حقیقی کے بعد پانی ملنے کے وقت مرض ہونے کی صورت میں کوئی فرق نہیں اھ (ت)

اس بحث پر میں نے درج ذیل جواب تحریر کیا:

1 ردالمحتار باب التیمم مصطفٰی البابی مصر ۱ / ۱۷۴ 2 منیة علی الرو باب التیمم مصطفٰی البابی مصر ۱ / ۱۷۴

Fatawa Razawiya, Volume 3

I say: May Allah Almighty have mercy on you and have mercy on us for your sake. Non-existence (Adam) is of three types: (1) A thing being non-existent in itself. (2) Being non-existent in a place. (3) Being non-existent with respect to the mukallaf (obligated person). Water is not lost in the first sense unless it disappears from the world, and this will not happen before the Day of Judgment. However, it can be non-existent from a place and with respect to the mukallaf. This is when water is not where the mukallaf is, along with hardship in reaching it. This is the meaning of legal (Shar'i) non-existence mentioned in the chapter of Tayammum. But if it is in his hand or there is no hardship for him in reaching it, then it is not considered non-existent for him. It is stated in Al-Hidayah: Regarding the quantity, 'one mile' is the chosen opinion, because entering a city would cause him hardship. And water is 'truly' non-existent. (T) It is stated in Al-Inayah: Its explanation is that the text (nass) mentions the water being non-existent, and here (i.e., at the place of the mukallaf) water is truly non-existent. But we...

Note: With this phrase, he pointed to the second type of non-existence, and with his words 'he will face hardship', he pointed to the third type of non-existence. He needed to prove the second type because the third type depends on it. 12 منه غفر له (T)

1. Al-Hidayah, Chapter on Tayammum, Al-Maktabah Al-Arabiyah, Karachi, 1/31

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

मैं कहता हूँ: अल्लाह सर्वशक्तिमान आप पर दया करे और आपके माध्यम से हम पर भी दया करे। अनुपलब्धता (अदम) के तीन प्रकार हैं: (१) किसी वस्तु का स्वयं में अनुपस्थित होना। (२) किसी स्थान विशेष में अनुपस्थित होना। (३) मुकल्लिफ़ (कर्तव्यबद्ध व्यक्ति) के संदर्भ में अनुपस्थित होना। जल पहले अर्थ में तब तक लुप्त नहीं होता जब तक कि वह दुनिया से गायब न हो जाए, और यह प्रलय के दिन से पहले नहीं होगा। हालाँकि, यह एक स्थान से और मुकल्लिफ़ के संदर्भ में अनुपस्थित हो सकता है। यह तब होता है जब जल वहाँ न हो जहाँ मुकल्लिफ़ है, साथ ही उस तक पहुँचने में कठिनाई हो। यही तयम्मुम के अध्याय में वर्णित शरीयत के अनुसार अनुपलब्धता का अर्थ है। लेकिन यदि जल उसके हाथ में हो या उस तक पहुँचने में उसके लिए कोई कठिनाई न हो, तो वह उसके लिए अनुपलब्ध नहीं माना जाता। अल-हिदाया में कहा गया है: मात्रा के संबंध में, 'एक मील' ही चुना हुआ मत है, क्योंकि शहर में प्रवेश करने से उसे कठिनाई होगी। और जल वास्तव में अनुपलब्ध है। (त) अल-इनाया में कहा गया है: इसका स्पष्टीकरण यह है कि मूल पाठ (नस) में जल की अनुपलब्धता का उल्लेख है, और यहाँ (अर्थात मुकल्लिफ़ के स्थान पर) जल वास्तव में अनुपलब्ध है। लेकिन हम...

टिप्पणी: इस वाक्यांश के साथ, उन्होंने अनुपलब्धता के दूसरे प्रकार की ओर संकेत किया, और अपने शब्दों 'उसे कठिनाई होगी' से उन्होंने अनुपलब्धता के तीसरे प्रकार की ओर संकेत किया। उन्हें दूसरे प्रकार को प्रमाणित करने की आवश्यकता इसलिए हुई क्योंकि तीसरा प्रकार उस पर निर्भर है। १२ मिन्हु गुफिरा लहु (त)

1. अल-हिदाया, तयम्मुम का अध्याय, अल-मकतबा अल-अरबिया, कराची, १/३१ पृष्ठ ४६७ / ७५६

جلد سوم فتاوٰی رضویہ اقول: رحمك الله تعالٰی ورحمنا بك الاعدام (۱) ثلثة عدم الشیئ فی نفسہ وعدمہ فی مکان وعدم فی حق المکلف والماء لا یفقد بالمعنی الاول الا اذا انعدم من الدنیا ولا یکون ذلک بل یوم القیمۃ وانما ینعدم (۲) عن مکان وفی حق المکلف و ذلک بان لا یکون حیث ھو مع لحوق الحرج فی الوصول الیہ وھذا ھو معنی عدمہ الشرعی المذکور فی باب التیمم اما اذا کان بیدہ اولا حرج علیہ فی الوصول الیہ فھو غیر معدوم فی حقہ قال فی الھدایۃ المیل ھو المختار فی المقدار لانہ یلحقہ الحرج بدخول المصر والماء معدوم عہ حقیقۃ ۱ اھ۔ قال فی العنایۃ تقریرہ ان المنصوص علیہ کون الماء معدوما وھھنا (ای فی مکان المکلف)

اقول: اللہ تعالٰی آپ پر رحم فرمائے اور آپ کے طفیل ہم پر بھی رحم فرمائے عدم کی تین قسمیں ہیں: (۱) کسی شئے کا فی نفسہ معدوم ہونا (۲) کسی جگہ معدوم ہونا (۳) مکلف کے حق میں معدوم ہونا پہلے معنی پر پانی کا فقدان اسی وقت ہوگا جب وہ دنیا سے معدوم ہو جائے اور یہ روزِ قیامت سے پہلے نہ ہوگا۔ پانی کسی جگہ میں اور مکلف کے حق میں معدوم ہوتا ہے۔ یہ اس طرح کہ مکلف جہاں پر ہے وہاں پانی نہ ہو ساتھ ہی پانی تک رسائی میں حرج لاحق ہوتا ہو پانی کا عدم شرعی جو باب تیمم میں ذکر ہوتا ہے اس کا یہی معنی ہے۔ لیکن جب پانی اس کے ہاتھ میں ہو یا پانی تک پہنچنے میں اس کیلئے کوئی حرج اور دشواری نہ ہو تو پانی اس کے حق میں معدوم نہیں۔ ہدایہ میں ہے: مقدار کے بارے میں "میل" ہی مختار ہے۔ اس لئے کہ شہر میں داخل ہونے سے اس کو حرج ہوگا۔ اور پانی حقیقۃً معدوم ہے۔ (ت) عنایہ میں فرمایا: اس کی تقریر یہ ہے کہ نص میں یہ وارد ہے کہ پانی معدوم ہو اور اس وقت مکلف جس جگہ ہے وہاں پانی حقیقۃً معدوم ہے۔ لیکن ہم

عہ فقد اشار بھذا الی العدم الثانی وبقولہ یلحقہ الحرج الی العدم الثالث وانما احتاج الی اثبات الثانی لان الثالث یتوقف علیہ ۱۲ منہ غفرلہ (م)

اس عبارت سے عدمِ ثانی کی طرف اشارہ کیا۔ اور "اسے حرج ہوگا" سے عدمِ ثالث کی طرف اشارہ کیا اور انہیں عدمِ ثانی ثابت کرنے کی ضرورت اس لئے ہوئی کہ عدمِ ثالث اس پر موقوف ہے ۱۲منہ غفرلہ، (ت)

۱۔ الہدایۃ باب التیمم المکتبۃ العربیہ کراچی ۱/۳۱ Page 467 of 756

Fatawa Razawiya, Volume 3

(Now) it is non-existent in reality, but we know with certainty that the absence of water while having the power over it does not make Tayammum permissible. Otherwise, it would have been permissible for one who resides on the seashore and lacks water in his house. Therefore, we made the occurrence of hardship the separating boundary between distance and proximity, because obedience is required according to capacity. Allah Almighty said: "And He has not placed upon you in the religion any hardship." [1-End]. There is no doubt that when an enemy, a thief, or a predatory animal is over the water, the essence of the meaning of absence remains, because the water is not in the location of the person (Mukallaf). So, it is effectively non-existent where he is, and there is hardship in reaching it. Thus, the two matters upon which the aforementioned legal non-existence (Shari'i 'Adam) revolves are realized. In this matter, there is no consideration whether it is far from sight, or within sight, or at a specific distance, or closer than that. The criterion is only that hardship is incurred in reaching the water. Rather, this itself is the dividing line here between proximity and distance, as you have just heard. Thus, legal non-existence was established, and the reason did not change even if the 'reason of the reason' changed, meaning the reason for the hardship in reaching it. An example of this is when there was an enemy by the water from whom he feared for his life, and he had not left when a thief arrived from whom he feared for his wealth and property, and...

---

1. Al-Inaya with Al-Fath, Chapter on Tayammum, published by Nooria Razviyah Sukkur 1/108

(अभी) यह वास्तव में मअ़दूम (अनुपस्थित) है, लेकिन हम यकीन के साथ जानते हैं कि पानी पर क़ुदरत होते हुए पानी का न होना तैयम्मुम को जायज़ नहीं करता। वर्ना समंदर के साहिल पर बसने वाले शख़्स के लिए, जिसके घर में पानी नहीं है, तैयम्मुम जायज़ होता। इसलिए हमने हरज (कठिनाई) लाहिक होने को दूरी और नज़दीकी के दरमियान हदे-फ़ासल (विभाजक रेखा) करार दिया। क्योंकि इबादत ताक़त के मुताबिक ही लाज़िम है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और उसने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं रखी।" [1-अत]। इसमें कोई शक नहीं कि जब पानी पर दुश्मन या चोर या दरिंदा हो तो फ़ुकदान (अभाव) का मानी ब-ऐनही (ज्यों का त्यों) बाकी है, इसलिए कि मुकल्लफ़ की जगह पर तो पानी मौजूद नहीं है, इसलिए जहाँ वह है, वहाँ पानी हकीकतन मअ़दूम है और पानी तक पहुँचने में उसके लिए हरज भी है। तो दोनों बातें जिन पर यहाँ ज़िक्र किया गया शारई अदम (धार्मिक अनुपस्थिति) का मदार है, वे पाई गईं। और इस मामले में इसका लिहाज़ नहीं है कि पानी निगाह से दूर हो, या देखने की जगह में हो, या मुअय्यन (निश्चित) दूरी पर हो या उससे करीब हो। मदार सिर्फ यह है कि पानी तक पहुँचने में हरज लाहिक होता हो। बल्कि यही कुर्ब-ओ-बुअद (निकटता और दूरी) के दरमियान यहाँ हदे-फ़ासल है जैसा कि अभी सुन चुके तो शारई अदम साबित हो गया। और सबब में तब्दीली नहीं आई अगरचे सबब के सबब यानी पानी तक रसाई में हरज के सबब में तब्दीली आ गई। इसकी मिसाल यह है कि पानी पर पहले कोई दुश्मन था जिससे उसे अपनी जान का खतरा था, वह उस जगह से हटा नहीं था कि कोई चोर आ गया जिससे उसे अपने माल के लिए खतरा है और...

---

1. अल-इनाया मअ अल-फ़तह, बाबुत-तैयम्मुम, मतबुआ नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/108

(الآن) معدوم حقیقة لکن نعلم بیقین ان عدمه مع القدرة علیه لیس بمجوز للتیمم والا لجاز لمن سکن بشاطئ البحر وعدم الماء من بیته فجعلنا الحد الفاصل بین البعد والقرب لحوق الحرج لان الطاعة بحسب الطاقة قال الله تعالی وَ مَا جَعَلَ عَلَیْکُمْ فِي الدِّیْنِ مِنْ حَرَجٍ ۱ اھ ولاشك ان الماء اذا کان علیه عدو اولص او سبع فالمعنی باق بعینه اذلیس الماء في مکان المکلف فهو معدوم حیث هو حقیقة وفی وصوله الیه حرج فتحقق الامران اللذان علیهما یدور العدم الشرعی المذکور هنا ولا (۱) نظر فیه الی کونه بعیداً عن النظر او بمرأی منه او بعیداً بعداً معیناً او اقرب منه وانما المناط لحوق الحرج في الوصول الیه بل هو الفاصل ههنا بین القرب والبعد کما سمعت آنفا فثبت العدم الشرعی ولم یتبدل السبب وان (۲) تبدل سبب السبب اعنی سبب الحرج في الوصول الیه کما اذا کان عنده عدو یخاف منه علی نفسه ولم یبرح حتی ورد نص یخاف منه علی ماله وذهب العدو

یقینی طور پر یہ جانتے ہیں کہ پانی پر قدرت ہوتے ہوئے پانی کا معدوم ہونا تیمم جائز نہیں کرتا۔ ورنہ سمندر کے ساحل پر بسنے والا شخص جس کے گھر میں پانی معدوم ہے اس کیلئے تیمم جائز ہوتا۔ اس لئے ہم نے حرج لاحق ہونے کو دُوری و نزدیکی کے درمیان حدِ فاصل قرار دیا۔ کیونکہ طاعت بلحاظ طاقت ہی لازم ہے۔ ارشاد باری تعالٰی ہے : "اور تمہارے اوپر دین میں کوئی تنگی نہ رکھی اھ اس میں شک نہیں کہ جب پانی پر دشمن یا چور یا درندہ ہو تو فقدان کا معنی بعینہ باقی ہے اس لئے کہ مکلف کی جگہ پر تو پانی موجود نہیں اس لئے جہاں وہ ہے وہاں پانی حقیقتہ معدوم ہے اور پانی تک پہنچنے میں اس کیلئے حرج بھی ہے تو دونوں باتیں جن پر یہاں ذکر شدہ عدم شرعی کا مدار ہے وہ پالی گئیں اور اس معاملہ میں اس کا لحاظ نہیں ہے کہ پانی نگاہ سے دُور ہو، یا دیکھنے کی جگہ میں ہو یا معین دوری پر ہو یا اس سے قریب تر ہو۔ مدار صرف یہ ہے کہ پانی

تک پہنچنے میں حرج لاحق ہوتا ہو۔ بلکہ یہی قرب و بُعد کے درمیان یہاں حدِ فاصل ہے جیسا کہ ابھی سن چکے تو عدم شرعی ثابت ہو گیا۔ اور سبب میں تبدیلی نہ آئی اگرچہ سبب کے سبب یعنی پانی تک رسائی میں حرج کے سبب میں تبدیلی آگئی۔ اس کی مثال یہ ہے کہ پانی پر پہلے کوئی دشمن تھا جس سے اسے اپنی جان کا خطرہ تھا وہ اس جگہ سے ہٹا نہیں کہ کوئی چور آگیا جس سے اس کو اپنے مال کیلئے خطرہ ہے اور

---

۱ العنایۃ مع الفتح باب التیمم مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۰۸

Fatawa Ridawiyya - Volume 3

[Arabic Text]: فلا يتوهم احداثه تبدل السبب بخلاف حدوث المرض مع وجود الماء عنده فإن الماء ليس معدوماً فيه شرعاً بالمعنى المذكور بل اما موجود في نفس مكانه كما اذا كان بيده او لا حرج عليه في الوصول اليه كما اذا كان في بيته انما الحرج في استعماله فقد تبدل السبب۔ It cannot be imagined that its occurrence changes the cause, unlike the occurrence of an illness while water is present with him. For water is not legally (Shari'ah-wise) absent in the aforementioned sense; rather, it is either present in its place, such as being in his hand, or there is no hardship for him in reaching it, such as it being in his house. Hardship only lies in using it, so here the cause has changed. (T)

[Arabic Text]: اما قول ابن مقاتل انه غير واجد للماء معنى فكان ملحقاً بالعدم فأقول: اراد به العدم الحسى دون الشرعى بالمعنى المذكور ولا شك ان الماء موجود ههنا بحضرته وان لم يكن في قبضته وهو واجد له حساً غير واجد له بمعنى القدرة عليه وعدم الحرج في وصوله اليه As for Ibn Muqatil's statement that "he is effectively (in meaning) not finding water and thus it is joined to non-existence," I say: He meant sensory non-existence (al-adam al-hissi) rather than legal non-existence in the aforementioned sense. There is no doubt that water is present here in his proximity, even if it is not in his grasp. He has found it sensorially but not found it in terms of having power over it and the absence of hardship in reaching it.

[Arabic Text]: عه اقول: ومن الدليل عليه قول البدائع اما العدم من حيث المعنى لا من حيث الصورة فهو ان يعجز من استعمال الماء مع قرب الماء منه نحوما اذا كان بينه وبين الماء عدو او لصوص او سبع او حية الخ فجعله موجوداً صورة والوجود الصورى هو الحسى۔ (م) I say: Evidence for this is the statement in Al-Bada'i': "As for non-existence in terms of meaning and not in terms of form, it is when one is unable to use water despite its proximity, such as when there is an enemy, thieves, a predator, or a snake between him and the water..." etc. In this statement, regarding the mentioned situation, they deemed water to be 'formally present'. Formal existence and sensory existence are one and the same. 12 Minhu Ghafar-lahu (T, M).

Footnote: 1. Bada'i' al-Sana'i', Chapter on the Conditions for the Pillar of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/74.

Page 469 of 756

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

[अरबी पाठ]: فلا يتوهم احداثه تبدل السبب بخلاف حدوث المرض مع وجود الماء عنده فإن الماء ليس معدوماً فيه شرعاً بالمعنى المذكور بل اما موجود في نفس مكانه كما اذا كان بيده او لا حرج عليه في الوصول اليه كما اذا كان في بيته انما الحرج في استعماله فقد تبدل السبب۔ यह कल्पना नहीं की जा सकती कि इसकी घटना कारण को बदल देती है, इसके विपरीत कि पानी मौजूद होने पर बीमारी हो जाए। क्योंकि पानी उल्लिखित अर्थ में शरीयत के अनुसार विलुप्त (ग़ैर-मौजूद) नहीं है; बल्कि वह या तो अपने स्थान पर मौजूद है, जैसे कि उसके हाथ में हो, या उस तक पहुँचने में कोई कठिनाई नहीं है, जैसे कि वह उसके घर में मौजूद हो। कठिनाई केवल इसके उपयोग में है, इसलिए यहाँ कारण बदल गया है। (त)

[अरबी पाठ]: اما قول ابن مقاتل انه غير واجد للماء معنى فكان ملحقاً بالعدم فأقول: اراد به العدم الحسى دون الشرعى بالمعنى المذكور ولا شك ان الماء موجود ههنا بحضرته وان لم يكن في قبضته وهو واجد له حساً غير واجد له بمعنى القدرة عليه وعدم الحرج في وصوله اليه। जहाँ तक इब्न मुक़ातिल के इस कथन का प्रश्न है कि "वह अर्थ के लिहाज़ से पानी पाने वाला नहीं है, अतः वह अभाव (ग़ैर-मौजूदगी) के समान है", तो मैं कहता हूँ: उनका अर्थ इंद्रियगत अभाव (अल-अदम अल-हिस्सी) था, न कि उल्लिखित अर्थ में शरीयती अभाव। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पानी यहाँ उसके पास मौजूद है, भले ही वह उसके अधिकार में न हो। वह इसे इंद्रियगत रूप से पाने वाला है, लेकिन इस अर्थ में पाने वाला नहीं है कि उसे उस पर शक्ति हो और उस तक पहुँचने में कोई कठिनाई न हो।

[अरबी पाठ]: عه اقول: ومن الدليل عليه قول البدائع اما العدم من حيث المعنى لا من حيث الصورة فهو ان يعجز من استعمال الماء مع قرب الماء منه نحوما اذا كان بينه وبين الماء عدو او لصوص او سبع او حية الخ فجعله موجوداً صورة والوجود الصورى هو الحسى۔ (م) मैं कहता हूँ: इसका एक प्रमाण बदाइ' का यह कथन है: "जहाँ तक अर्थ के लिहाज़ से अभाव का सवाल है, न कि रूप के लिहाज़ से, तो वह यह है कि पानी पास होने के बावजूद इसके उपयोग से लाचार हो। जैसे उसके और पानी के बीच कोई दुश्मन, चोर, हिंसक जानवर या साँप हो..." इत्यादि। इस कथन से उन्होंने उल्लिखित स्थिति में पानी को 'रूपतः मौजूद' (सूरतन मौजूद) माना है। रूपगत अस्तित्व और इंद्रियगत अस्तित्व दोनों एक ही हैं। 12 मिन्हु गुफ़रा-लहु (त, म)

पाद-टिप्पणी: 1. बदाइ' अस-सनाइ', तैयममुम के रुकन की शर्तों का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/74।

पृष्ठ 469/756

فلا یتوھم احداثه تبدل السبب بخلاف حدوث المرض مع وجود الماء عنده فإن الماء لیس معدوماً فیه شرعاً بالمعنی المذکور بل اما موجود في نفس مکانه کما اذا کان بیده او لا حرج علیه في الوصول الیه کما اذا کان في بیته انما الحرج في استعماله فقد تبدل السبب۔ دشمن چلا گیا اس صورت میں کسی کو یہ وہم نہیں ہو سکتا کہ سبب بدل گیا۔ بخلاف اُس صورت کے جس میں یہ ہے کہ پانی اس کے پاس موجود ہوتے ہوئے اسے مرض عارض ہوگیا یہاں پانی مذکورہ معنی میں شرعی طور پر معدوم نہیں بلکہ یا تو خود اسی جگہ پانی موجود ہے مثلاً خود اس کے ہاتھ میں ہے، یا پانی تک پہنچنے میں اس کیلئے کوئی دشواری و حرج نہیں مثلاً پانی اس کے گھر میں موجود ہے۔ حرج صرف اس کے استعمال میں ہے تو یہاں پر سبب بدل گیا۔ (ت)

اما قول ابن مقاتل انه غیر واجد للماء معنی فکان ملحقاً بالعدم فأقول: اراد به العدم الحسی دون الشرعی بالمعنی المذکور ولا شك ان الماء موجود ھھنا بحضرته وان لم یکن في قبضته وھو واجد له حساً غیر واجد له بمعنی القدرة علیه وعدم الحرج في وصوله الیه لیکن ابن مقاتل کا یہ قول کہ "معنی" اسے پانی دستیاب نہیں تو وہ معدوم سے ملحق ہے فاقول: اس سے ان کی مراد عدم حسّی ہے۔ عدم شرعی بمعنی مذکور مراد نہیں۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ یہاں تو پانی اس کے پاس موجود ہے اگرچہ اس کے قبضہ میں نہیں تو حسّی طور پر پانی اسے دستیاب ہے اور دستیاب نہیں ہے اس معنی میں کہ اس پر اسے قدرت ہو اور اس تک رسائی میں

عه اقول: ومن الدلیل علیه قول البدائع اما العدم من حیث المعنی لا من حیث الصورة فھو ان یعجز من استعمال الماء مع قرب الماء منه نحوما اذا کان بینه وبین الماء عدو او لصوص او سبع او حیة الخ فجعله موجوداً صورة والوجود الصوری ھو الحسی۔ (م) اقول: اس کی ایک دلیل بدائع کی یہ عبارت

ہے "لیکن عدم بلحاظ معنی، نہ بلحاظ صورت یہ ہے کہ پانی قریب ہوتے ہوئے اس کے استعمال سے عاجز ہو۔ جیسے اس کے اور پانی کے درمیان دشمن ہو یا چور ہوں یا درندہ یا سانپ ہو" الخ۔ اس عبارت سے مذکورہ حالت میں انہوں نے پانی کو صورۃً موجود قرار دیا اور وجودِ صوری اور وجودِ حسّی دونوں ایک ہی ہیں۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

حاشیہ: 1 بدائع الصنائع فصل فی شرائط رکن التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۴

Fatawa Razawiya, Volume Three

[Top Box] Arabic: فكان ملحقا بالعدم الحسى ومعدوما بالعدم الشرعى بالمعنى المذكور هكذا ينبغى ان تفهم كلمات العلماء الكرام والحمدلله ولى الانعام وعلى نبينا وآله الصلاة والسلام۔ Urdu: There is no harm. For that reason, it is considered physically non-existent and legally non-existent in the sense mentioned. This is how the words of the noble scholars should be understood. And all praise is for Allah, the Master of favor and grace. And blessings and peace be upon our Prophet and his family. (T)

(92) Water is kept in a room, it is very dark, there is fear in going there, and matches etc. are not available. If one waits for light, the time will pass (I say: like Isha prayer, or for example, morning time and there are thick dark clouds), then perform Tayammum, pray, and then repeat it. This has already been cited with reference to Al-Hilyah and Al-Bahr. (T)

[Middle Box] Arabic: اقول: ولم اذكر ماقالوه من كونه على سطح لان المراد به ان لايكون حيث الماء وكذا قولهم ليلا بل عمت مثل وقت الصبح لان المناط الخوف فى الظلمة وزدت الاعادة لماعلمت مرارا۔ Urdu: I say: These gentlemen mentioned "being on the roof". But I did not mention it with this restriction because by saying "being on the roof", they mean a place where water is not present. Similarly, they described this issue with the restriction of "night". I did not mention this word but generalized it by saying, for example, morning time, because the actual basis is that fear is felt within the darkness (whether this darkness is at any time), and I have emphasized the command to repeat for reasons already explained many times. (T)

(93) I say: Similarly, if it is a dark night or morning with thick, dark, encompassing clouds or a black windstorm, and its darkness has spread, even if it is at any time, and in all these cases the darkness is so intense that the path to the well is not visible, and one is unable to obtain light, and the time is passing while waiting, then perform Tayammum, pray, and repeat. Scholars have considered such darkness as an excuse for missing congregation.

[Bottom Box] Arabic: كما فى التبيين والهندية ويأتى عن الدر وهم انما قالوا ظلمة شديدة فقال ش Urdu: As it is in Tabyin al-Haqa'iq and Al-Hindiyyah. And it will be mentioned further with reference to Durr al-Mukhtar. And those gentlemen said "severe darkness".

---

1 Al-Durr al-Mukhtar, Book of Imamat, printed by Mujtabai Delhi, 1/82. Page 470 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द सोम (तीसरा भाग)

[ऊपर का बॉक्स] अरबी: فكان ملحقا بالعدم الحسى ومعدوما بالعدم الشرعى بالمعنى المذكور هكذا ينبغى ان تفهم كلمات العلماء الكرام والحمدلله ولى الانعام وعلى نبي وآله الصلاة والسلام। उर्दू: कोई हर्ज न हो। इसलिए वह अदम-ए-हस्सी (भौतिक अनुपस्थिति) से जुड़ा है और वर्णित अर्थ में अदम-ए-शरई (कानूनी अनुपस्थिति) के समान है। इसी तरह उलेमा-ए-किराम के शब्दों को समझना चाहिए। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो अनुग्रह और उपकार का स्वामी है। और हमारे नबी और उनकी आल (वंश) पर दरूद और सलाम। (त)

(92) पानी कोठरी में रखा है, अंधेरा बहुत है, जाने में डर लगता है और पास में माचिस आदि नहीं है और उजाले का इंतज़ार करने पर समय निकल जाएगा (मैं कहता हूँ: जैसे ईशा की नमाज़, या उदाहरण के लिए सुबह का समय और घने काले बादल हों), तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले और फिर उसे दोहराए। और इसका उल्लेख अल-हिलिया और अल-बह्र के संदर्भ में पहले ही हो चुका है। (त)

[बीच का बॉक्स] अरबी: اقول: ولم اذكر ماقالوه من كونه على سطح لان المراد به ان لايكون حيث الماء وكذا قولهم ليلا بل عمت مثل وقت الصبح لان المناط الخوف فى الظلمة وزدت الاعادة لماعلمت مرارا। उर्दू: मैं कहता हूँ: इन हज़रात ने "छत पर होने" का ज़िक्र किया था। मगर मैंने इस पाबंदी के साथ ज़िक्र नहीं किया क्योंकि छत पर होने की ताबीर (अभिव्यक्ति) से उनका तात्पर्य यह है कि वह ऐसी जगह न हो जहाँ पानी मौजूद हो। इसी तरह उन्होंने "रात" की पाबंदी के साथ यह मसला बयान किया था, मैंने यह शब्द ज़िक्र नहीं किया बल्कि मिसाल के तौर पर सुबह का समय कहकर इसे आम (सामान्य) कर दिया, क्योंकि असल आधार यह है कि अंधेरे के अंदर डर महसूस हो रहा हो (चाहे यह अंधेरा किसी भी समय हो) और मैंने दोहराने के हुक्म पर अधिक बल दिया है जिसकी वजह बार-बार बयान की जा चुकी है। (त)

(93) मैं कहता हूँ: इसी प्रकार यदि अंधेरी रात या सुबह में काले घने बादलों या काली धूल भरी आंधी के कारण इतना अंधेरा छा जाए, चाहे कोई भी समय हो, और इन सभी स्थितियों में अंधेरा इतना हो कि कुएं तक का रास्ता दिखाई न दे, और प्रकाश की व्यवस्था न हो सके और प्रतीक्षा में समय निकल रहा हो, तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले और फिर दोहराए। ऐसी काली घटाओं को उलेमा ने जमाअत छोड़ने का उचित कारण माना है।

[नीचे का बॉक्स] अरबी: كما فى التبيين والهندية ويأتى عن الدر وهم انما قالوا ظلمة شديدة فقال ش उर्दू: जैसा कि तब्यीनुल हक़ायक और हिंदिया में है। और दुर्रे मुख्तार के हवाले से आगे ज़िक्र आएगा। और उन हज़रात ने "सख्त तारीकी" (घोर अंधेरा) कहा है।

---

1 अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब उल-इमामत, मुजतबाई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1/82. पृष्ठ 470 / 756

[پہلا خانہ] عربی: فکان ملحقا بالعدم الحسی ومعدوما بالعدم الشرعی بالمعنی المذکور ھکذا ینبغی ان تفھم کلمات العلماء الکرام والحمدللہ ولی الانعام وعلی نبینا وآلہ الصلاۃ والسلام۔ اردو: کوئی حرج نہ ہو۔ اس لئے وہ عدم حسی سے ملحق ہے اور معدوم بہ عدم شرعی بمعنی مذکور ہے اسی طرح علمائے کرام کے کلمات کو سمجھنا چاہئے۔ اور ساری تعریف خدا کیلئے جو صاحب فضل واحسان ہے۔ اور ہمارے نبی اور ان کی آل پر درود و سلام۔ (ت)

(۹۲) پانی کوٹھری میں رکھا ہے اندھیرا سخت ہے جاتے ہوئے خوف ہے اور دیا سلائی وغیرہ پاس نہیں اور اجالے کا انتظار کرتا ہے تو وقت جاتا ہے (اقول یوں کہ نماز نماز عشاء ہے یا مثلا وقت صبح اور اندھیر ابر کثیف کا ہے) تو تیمم کرکے پڑھ لے اور پھر اعادہ کرے وقد تقدم نقلہ عن الحلیۃ والبحر (اس کی نقل حلیہ اور بحر کے حوالہ سے گزر چکی۔ت)

[دوسرا خانہ] عربی: اقول: ولم اذکر ماقالوہ من کونہ علی سطح لان المراد بہ ان لایکون حیث الماء وکذا قولھم لیلا بل عمت مثل وقت الصبح لان المناط الخوف فی الظلمۃ وزدت الاعادۃ لماعلمت مرارا۔ اردو: اقول: ان حضرات نے "چھت پر ہونے" کا ذکر کیا تھا۔ مگر میں نے اس قید کے ساتھ ذکر نہ کیا کیونکہ چھت پر ہونے کی تعبیر سے ان کی مراد یہ ہے کہ ایسی جگہ نہ ہو جہاں پانی موجود ہے اسی طرح انہوں نے "رات" کی قید کے ساتھ یہ مسئلہ بیان کیا تھا میں نے یہ لفظ ذکر نہ کیا بلکہ مثلا وقت صبح کہہ کر اسے عام کر دیا اس لئے کہ اصل مدار یہ ہے کہ تاریکی کے اندر اسے خوف محسوس ہو رہا ہو (خواہ یہ تاریکی کسی بھی وقت ہو) اور اعادہ کا حکم میں نے زیادہ کیا جس کی وجہ بارہا بیان ہو چکی۔ (ت)

(۹۳) اقول: یوں ہی اگر اندھیری رات یا صبح کو بدلی ایسی کالی شدید محیط یا سیاہ آندھی چل چکی اور اس کی تاریکی پھیلی ہے اگرچہ کوئی وقت ہو اور ان سب صورتوں میں ظلمت اتنی ہے کہ کنویں تک راہ نظر نہیں آتی اور یہ روشنی پر قادر نہیں اور انتظار میں وقت جاتا ہے تیمم کرکے پڑھ لے اور اعادہ کرے۔ ایسی سیاہی کو علماء نے جماعت میں عذر گنا ہے۔

[تیسرا خانہ] عربی: کما فی التبیین والھندیة ویأتی عن الدر وھم انما قالوا ظلمة شدیدة فقال ش اردو: جیسا کہ تبیین الحقائق اور ہندیہ میں ہے۔ اور درمختار کے حوالہ سے آگے ذکر آئیگا۔ اور ان حضرات نے "سخت تاریکی"

---

1 الدرالمختار باب الامامة مطبوعہ مجتبائی دہلی ۸۲/۱ صفحہ 470 از 756

Fatawa Ridawiyya Volume 3

'Az-Zahir' (It is apparent) that the meaning of it being that he cannot see his path to the mosque, so he becomes like a blind person. This was explained. Upon this, Allama Shami stated: "It is apparent that this refers to him being in such a state that the path to reach the mosque is not visible to him, due to which he is considered to be like a blind person." [End of quote]

I say: And it is apparent that the mere (1) occurrence of any slight hardship, if it were an excuse that drops an obligation, then the entirety of the Shariah's obligations would be dropped.

(T) I say: This point is clear because if the occurrence of absolutely any minor hardship were a valid excuse for cancellation, then all religious obligations would be completely dropped.

It is stated in 'al-Fath': If (2) he were able to stand but fears that due to it, recovery would be delayed, or if he finds water to be extremely [cold/harmful], it is permissible for him to leave it. But if only a certain type of hardship occurs, it is not permissible [End of quote]. Similar is mentioned in 'al-Kafi' and others. In 'al-Khaniyah': One who (3) cannot perform ablution (Wudu) except with hardship, Tayammum (dry ablution) is not permitted for him [End of quote]. Shami said: And the apparent view is that he is not burdened to light something like a lamp even if it were possible for him [End of quote].

In 'Fath al-Qadir' it states: "If he has the strength to stand but there is a fear of delay in getting well because of it, or if he feels severe pain, then it is permissible for him to abandon standing. And if only minor hardship occurs, abandonment is not permissible." [End of quote]. Similar is found in 'Kafi' and others. And in 'Khaniyah' it is stated: "A person who can perform Wudu, even if with hardship, Tayammum is not permissible for him." [End of quote]. Allama Shami stated: "It is apparent that he is not obligated to light a lamp etc., even if it were possible for him." [End of quote].

I say: It seems he took this from their statement regarding the purification of impurities: The remaining (4) trace, such as color and persistent smell, does not harm, so he is not burdened in removing it with hot water or soap and the like [End of quote]. 'Durr' - 'Har' (hot) means 'Musakhkhan' (heated). And 'the like' refers to things like 'Haradh' and 'Ushnan'. [End of quote].

I say: It seems they derived this issue from the statement of the jurists regarding the purification of impurities: "If some effect like color or smell remains which cannot be removed, then it is not harmful; therefore, he is not obligated to remove it."

Footnotes: 1. Dur al-Mukhtar, Chapter on Imamate, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/411. 2. Fath al-Qadir, Chapter on Prayer of the Sick, Ridawiyya, Sukkur, 1/475. 3. Fatawa Qazi Khan, Section on what permits Tayammum, printed at Nawal Kishore, Lucknow, 1/28. 4. Dur al-Mukhtar, Chapter on Imamate, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/411. 5. Ad-Durr al-Mukhtar with ash-Shami, Chapter on Impurities, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/242. 6. Radd al-Muhtar, Chapter on Impurities, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/242.

फतावा रजविया जिल्द तीन

'अज़-ज़ाहिर' (स्पष्ट है) कि इसका अर्थ यह है कि वह मस्जिद तक जाने का रास्ता नहीं देख पाता, इसलिए वह अंधे की तरह हो जाता है। इसकी व्याख्या की गई। इस पर अल्लामा शामी ने कहा: "ज़ाहिर यह है कि इससे तात्पर्य उसका ऐसी स्थिति में होना है कि उसे मस्जिद तक पहुँचने का रास्ता नज़र न आता हो, जिसके कारण वह अंधे के समान माना जाता है।"

मैं कहता हूँ: यह स्पष्ट है क्योंकि यदि केवल (1) किसी भी मामूली कठिनाई का होना ही दायित्व को समाप्त करने वाला बहाना होता, तो शरीयत के तमाम दायित्व पूरी तरह समाप्त हो जाते।

(त) मैं कहता हूँ: यह बात स्पष्ट है क्योंकि यदि बिल्कुल मामूली कठिनाई का होना दायित्व हटाने वाला बहाना होता, तो तमाम शरीयत के कर्तव्य पूरी तरह समाप्त हो जाते।

'अल-फ़तह' में कहा गया है: यदि (2) वह खड़े होने में समर्थ हो लेकिन इसके कारण बीमारी के ठीक होने में देरी का डर हो, या पानी बहुत [ठंडा/हानिकारक] महसूस होता हो, तो उसे छोड़ने की अनुमति है। लेकिन यदि केवल एक प्रकार की कठिनाई होती है, तो यह अनुमति नहीं है। इसी तरह 'अल-काफी' और अन्य ग्रंथों में भी है। 'अल-खनिया' में है: जो व्यक्ति (3) बिना कठिनाई के वुज़ू नहीं कर सकता, उसके लिए तयम्मुम की अनुमति नहीं है। शामी ने कहा: ज़ाहिर है कि वह चिराग आदि जलाने का पाबंद नहीं है, भले ही उसके लिए यह संभव हो।

'फ़तहुल क़दीर' में है: "यदि वह खड़े होने की शक्ति रखता हो लेकिन उसके कारण बीमारी के ठीक होने में देरी का अंदेशा हो या बहुत कष्ट महसूस होता हो, तो उसके लिए खड़े होने को छोड़ना जायज है। और यदि केवल थोड़ी सी कठिनाई होती हो, तो छोड़ना जायज नहीं है।" इसी तरह का उल्लेख 'काफी' आदि में भी है। और 'खनिया' में है: "जो व्यक्ति कठिनाई से ही सही, वुज़ू कर सकता है, उसके लिए तयम्मुम जायज नहीं है।" अल्लामा शामी ने फरमाया: "ज़ाहिर यह है कि वह चिराग आदि जलाने का पाबंद नहीं है, भले ही उसके लिए यह संभव हो।"

मैं कहता हूँ: ऐसा लगता है कि उन्होंने इसे नजासत (गंदगी) की शुद्धि के बारे में फकीहों के उस कथन से लिया है: रंग और स्थायी गंध जैसा (4) बचा हुआ प्रभाव नुकसानदेह नहीं है, इसलिए उसे हटाने के लिए गर्म पानी या साबुन आदि का उपयोग अनिवार्य नहीं है। 'दुर' - 'हार' का अर्थ गर्म (गरम किया हुआ) है। और 'इसके समान' से तात्पर्य सोडा ऐश और हर्ज़ जैसी चीज़ों से है।

मैं कहता हूँ: ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने यह मसला नजासतों की शुद्धि से संबंधित फकीहों के इस कथन से लिया है: "यदि रंग या गंध जैसा कुछ प्रभाव बाकी रह जाए जो दूर नहीं होता, तो यह नुकसानदेह नहीं है, इसलिए वह इसे दूर करने [का पाबंद नहीं] है।"

पादलेख (Footnotes): 1. दुर्रुल मुख्तार, बाबुल इमामत, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/411 2. फ़तहुल क़दीर, बाबु सलातिल मरीज़, रजविया, सुक्कुर, 1/475 3. फतावा काज़ी खान, फ़सल फिमा यजूज़ु लहुत तयम्मुम, नवल किशोर, लखनऊ, 1/28 4. दुर्रुल मुख्तार, बाबुल इमामत, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/411 5. अद-दुर्रुल मुख्तार मा'अश-शामी, बाबुल अनजास, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/242 6. रद-उल-मुहतार, बाबुल अनजास, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/242

पृष्ठ 471/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

الظاهر ان المراد كونه لايبصر طريقه الى المسجد فيكون كالأعمى اهـ سے تعبیر کی۔ جس پر علامہ شامی نے فرمایا: "ظاہر یہ ہے کہ اس سے مراد اس کی ایسی حالت میں ہونا ہے کہ مسجد تک پہنچنے کا راستہ اسے نظر نہ آتا ہو جس کی وجہ سے وہ نابینا کی طرح قرار پاتا ہو"۔ اھ

اقول: وهو ظاهر فان مجرد(۱) لحوق مشقة ما لو كان عذرا مسقطا لسقطت تكاليف الشريعة عن أخرها

(ت) اقول: یہ بات واضح ہے اس لئے کہ مطلقا ذرا سی مشقت کا لاحق ہونا اگر ساقط کرنے والا عذر ہوتا تو تمام تکالیف شرعیہ بالکل ہی ساقط ہو جائیں۔

قال فی الفتح لو(۲) قدر على القيام لكن تخاف بسببه ابطاء برء اوكان يجد الماء شديدا جاز له تركه فأن لحقه نوع مشقة لم يجز اهـ ومثله فى الكافي وغيره فى الخانية من(۳) لايقدر على الوضوء الابمشقة لايباح له التيمم اهـ قال ش والظاهر انه لايكلف الى ايقاد نحو سراج وان امكنه ذلك اهـ

فتح القدیر میں ہے: "اگر کھڑے ہونے پر قدرت رکھتا ہو لیکن اس کی وجہ سے دیر میں اچھے ہونے کا اندیشہ ہو یا سخت تکلیف محسوس کرتا ہو تو اس کیلئے قیام ترک کرنا جائز ہے۔ اور اگر تھوڑی سی مشقت لاحق ہوتی ہو تو ترک جائز نہیں"۔ اھ اسی کے مثل کافی وغیرہ میں بھی ہے۔ اور خانیہ میں ہے: "جو شخص مشقت ہی سے سہی، وضو کر سکتا ہے اس کیلئے تیمم جائز نہیں" اھ علامہ شامی نے فرمایا: "ظاہر یہ ہے کہ وہ چراغ وغیرہ جلانے کا مکلف نہیں اگرچہ یہ اس کیلئے ممکن ہو" اھ

اقول: وكأنه اخذه من قولهم فى تطهير الانجاس لايضر(۴) بقاء اثر كلون وريح لازم فلايكلف في ازالته الى ماء حار او صابون ونحوه اهـ در۔ حار ای مسخن۔ ونحوه كحرض واشنان اهش۔

اقول: ایسا معلوم ہوتا ہے کہ انہوں نے یہ مسئلہ نجاستوں کی تطہیر سے متعلق فقہاء کے اس قول سے اخذ کیا ہے: "اگر رنگ، بُو جیسا کچھ اثر باقی رہ جائے جو زائل نہیں ہوتا تو یہ مضر نہیں لہذا وہ اسے دُور کرنے [کا مکلف نہیں] "۔

۱ درالمختار باب الامامۃ مصطفی البابی مصر ۱/ ۴۱۱ ۲ فتح القدیر باب صلوۃ المریض رضویہ سکھر ۱/ ۴۷۵ ۳ فتاوی قاضی خاں فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲۸ ۴ درالمختار باب الامامۃ مصطفی البابی مصر ۱/ ۴۱۱ ۵ الدر المختار مع الشامی باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۴۲ ۶ رد المحتار باب الانجاس مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۴۲

Fatawa Razvia - Volume 3

And here are two issues: the issue of the congregation and the issue of Tayammum, which we are currently discussing. As for the first, I say: What is apparent to me is that the ruling should be based on ease. So, whoever has a lit lantern and is able to take it with him to the mosque, or if it was lit and he has now extinguished it, and it has oil and he has matches, then what hardship would he face in lighting it and going out with it? Yes, for one who does not have one, or has only one and there are dependents in the house—if he takes it, their work will become difficult, or the darkness of the night will terrify the children, or there is a lone woman who has no companion at the moment and becomes afraid in the dark—such a person will not be ordered to acquire a lantern now through purchase or asking. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Give glad tidings to those who walk to the mosques in the dark of complete light on the Day of Resurrection." (Narrated by Abu Dawood and At-Tirmidhi with a Sahih chain from Buraydah and Ibn Majah).

(The person) is not obligated to use hot water, soap, or anything similar. (End of Durr al-Mukhtar quote). "Hot water" means water that has been heated for this purpose. "Soap-like things" like Haraz and Ashnan (grasses used for cleaning like soap). (End of Shami quote). (T)

Here are two issues: one is about the congregation, the second is about Tayammum which is under discussion (a bit of explanation and detail of both can clarify the ruling). (1) The issue of the congregation: I say, in my view, the ruling should be based on what is easily available. If someone has a burning lamp or lantern and can take it to the mosque, or it was burning before and is extinguished now but has oil and matches, then what is the hardship in lighting it and taking it to the mosque? Yes, for someone who doesn't have a lamp, or has only one and there are children at home such that if he takes it, they face difficulty in chores, or the children get terrified by the night's darkness, or a woman is alone and gets scared in the darkness due to lack of a companion at that moment, such a person will not be ordered to buy or borrow a lamp in this situation. (T)

While there is also this saying of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that "Give glad tidings to those who walk frequently to the mosques in the darkness of receiving full light on the Day of Resurrection." This hadith was narrated by Abu Dawood and At-Tirmidhi.

1 Sunan Abi Dawood, Ibn Majah, in the chapter of the virtue of walking to prayer in the dark, printed Mujtabai, Delhi, Lahore 1/83. Page 472 of 756

फतावा रज़विया - खंड 3

और यहाँ दो मसले हैं: जमाअत का मसला और तयम्मुम का मसला जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं। जहाँ तक पहले का सवाल है, मैं कहता हूँ: मेरे लिए ज़ाहिर यह है कि हुक्म आसानी पर आधारित होना चाहिए। तो, जिसके पास जलती हुई लालटेन है और वह उसे लेकर मस्जिद जाने में सक्षम है, या वह जल रही थी और उसने उसे बुझा दिया है, और उसमें तेल है और उसके पास माचिस है, तो उसे जलाने और उसे लेकर बाहर निकलने में उसे क्या कठिनाई होगी? हाँ, जिसके पास वह नहीं है, या केवल एक है और घर में परिवार के सदस्य हैं—यदि वह उसे ले जाता है, तो उनके काम कठिन हो जाएँगे, या रात का अंधेरा बच्चों को डरा देगा, या कोई अकेली महिला है जिसके पास उस समय कोई साथी नहीं है और वह अंधेरे में डर जाती है—ऐसे व्यक्ति को अब खरीद कर या मांग कर लालटेन हासिल करने का हुक्म नहीं दिया जाएगा। पवित्र नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: "अंधेरे में मस्जिदों की ओर पैदल जाने वालों को कयामत के दिन पूर्ण प्रकाश की खुशखबरी दे दो।" (अबू दाऊद और तिरमिज़ी द्वारा बुरैदाह और इब्न माजह से एक सहीह सनद के साथ वर्णित)।

(व्यक्ति) गर्म पानी या साबुन या ऐसी ही किसी और चीज़ का इस्तेमाल करने का पाबंद नहीं। (दुर्रे मुख़्तार का उद्धरण समाप्त)। "गर्म पानी" यानी वह पानी जो (इस उद्देश्य से) गर्म किया गया हो। साबुन जैसी कोई और चीज़ जैसे 'हरज़' और 'अश्नान' (साबुन की तरह सफाई के लिए इस्तेमाल की जाने वाली घासें हैं)। (शामी का उद्धरण समाप्त)। (त)

यहाँ दो मसले हैं: एक जमाअत का मसला, दूसरा तयम्मुम का मसला जो विचाराधीन है (दोनों की थोड़ी व्याख्या और विवरण से हुक्म स्पष्ट हो सकता है)। (१) जमाअत का मसला: मैं कहता हूँ, मेरे नज़दीक ज़ाहिर यह है कि आसानी से उपलब्ध होने पर हुक्म की बुनियाद रखी जाए। जिसके पास जलता हुआ चिराग या लालटेन मौजूद है और वह उसे लेकर मस्जिद जा सकता है, या चिराग पहले जल रहा था, उस वक्त बुझा दिया है मगर उसमें तेल मौजूद है और उसके पास दियासलाई भी है तो उसे जलाने और लेकर मस्जिद जाने में कौन सी मशक्कत है? हाँ जिसके पास चिराग नहीं या है मगर एक ही है और घर में बाल बच्चे हैं कि अगर लेकर चला गया तो उनके कामों में दुश्वारी होती है या रात की तारीकी से बच्चे खौफ व दहशत में मुब्तला होते हैं, या अकेली औरत है जो फिलहाल कोई मूनिस न होने की वजह से तारीकी में खौफज़दा होती है तो ऐसे शख्स को इस हालत में कोई चिराग खरीद कर या मांग कर हासिल करने का हुक्म न दिया जाएगा। (त)

जबकि रसूल अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का यह फरमान भी है कि "तारीकियों में मस्जिदों तक कसरत से पैदल जाने वालों को रोज़-ए-क़यामत भरपूर रोशनी मिलने की बशारत दे दो"। यह हदीस अबू दाऊद ने रिवायत की और तिरमिज़ी ने।

---

1 सुनन अबू दाऊद, इब्न माजह, अंधेरे में नमाज़ के लिए जाने की फज़ीलत में, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, लाहौर 1/83। पृष्ठ 472 / 756

وھھنا مسألتان مسألة الجماعة ومسألة التیمم الذی نحن فیھا۔ اما الاولی فأقول: الظاھر(۱) فیھا عندی البناء علی التیسیر فمن(۲) عندہ فانوس متقد ویقدر علی الخروج بہ الی المسجد اوکان متقدا والآن اطفأہ وفیہ دھن وعندہ کبریت فأی مشقة تلحقہ فی ایقادہ والخروج بہ نعم من(۳) لیس عندہ اولہ واحد وفی البیت العیال ان خرج بہ تعسرت علیھم الاعمال اوھالت ظلمة اللیل الاطفال اومرأةً وحدھا مالھا مونس فی الحال فھذا لایؤمر بأن یحصل الأن فانوسا بشراء اوسؤال* وقد قال صلی اللہ تعالی علیہ وسلم بشرا (۴) المشائین فی الظلم الی المساجد بالنور التام یوم القیمة اخرجہ ابوداؤد والترمذی بسند صحیح عن بریدة وابن ماجة

کیلئے گرم پانی یا صابون یا ایسی ہی کوئی اور چیز استعمال کرنے کا مکلف نہیں۔ اہ در مختار "گرم پانی یعنی جو (اس مقصد سے) گرم کیا گیا ہو صابون جیسی کوئی اور چیز جیسے حرض اور اشنان (صابن کی طرح صفائی لانے کیلئے استعمال ہونے والی گھاسیں ہیں) اہ۔ شامی۔ (ت)

یہاں دو مسئلے ہیں: ایک مسئلہ جماعت، دوسرا مسئلہ تیمم جو زیر بحث ہے (دونوں کی قدرے توضیح و تفصیل کی جائے تو مسئلہ کا حکم واضح ہوسکتا ہے) (۱) مسئلہ جماعت۔ اقول اس میں میرے نزدیک ظاہر یہ ہے کہ آسانی سے میسر آنے پر حکم کی بناء رکھی جائے جس کے پاس جلتا ہوا چراغ یا لالٹین موجود ہے اور اسے لے کر مسجد جاسکتا ہے یا چراغ پہلے جل رہا تھا، اس وقت بجھا دیا ہے مگر اس میں تیل موجود ہے اور اس کے پاس دیا سلائی بھی ہے تو اسے جلانے اور لے کر مسجد جانے میں کون سی مشقت ہے؟ ہاں جس کے پاس چراغ نہیں یا ہے مگر ایک ہی ہے اور گھر میں بال بچے ہیں کہ اگر لے کر چلا گیا تو ان کے کاموں میں دشواری ہوتی ہے یا رات کی تاریکی سے بچے خوف و دہشت میں مبتلا ہوتے ہیں، یا اکیلی عورت ہے جو فی الحال

کوئی مونس نہ ہونے کی وجہ سے تاریکی میں خوف زدہ ہوتی ہے تو ایسے شخص کو اس حالت میں کوئی چراغ خرید کر یا مانگ کر حاصل کرنے کا حکم نہ دیا جائے گا۔ (ت)

جب کہ رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا یہ فرمان بھی ہے کہ "تاریکیوں میں مسجدوں تک کثرت سے پیادہ جانے والوں کو روز قیامت بھر پور روشنی ملنے کی بشارت دے دو" یہ حدیث ابوداؤد نے روایت کی۔ اور ترمذی

---

1 سنن ابی داؤد ماجہ، فی فضل المشی الی الصلوۃ فی الظلم مطبوعہ مجتبائی دہلی لاہور ۱/۸۳

Fatawa Rizvia, Volume 3

(Left Column) Al-Hakim narrated from Anas and Sahl bin Sa'd (may Allah be pleased with them). (1) A blind man came to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and said: "O Messenger of Allah, I have no guide to lead me to the mosque." He asked the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) for permission to pray in his house, and he granted it to him. When he turned to leave, he called him and said: "Do you hear the call to prayer?" He said: "Yes." He said: "Then respond." (1) Narrated by Muslim from Abu Huraira (may Allah be pleased with him). I say (Aqool): He first ruled with permission, which is the general ruling, then he guided him toward firm resolve (Azimat). According to Abu Dawood and Al-Nasa'i, from Abdullah bin Umm Maktum (may Allah be pleased with them), he said: "O Messenger of Allah, Medina is full of pests and beasts of prey; do you find any permission for me?" He said: "Do you hear 'Come to prayer, come to success'?" He said: "Yes." He said: "Then come." (2) I say: He (peace and blessings of Allah be upon him) did not answer him with a denial, but rather began with a question to guide him toward firm resolve. So, if (2) it was the intention of the Lawgiver...

(Right Column) ...narrated with a sound chain from Hazrat Buraidah, and by Ibn Majah and Hakim from Hazrat Anas and Hazrat Sahl bin Sa'd (may Allah be pleased with them). And a blind man came to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and submitted: "O Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)! I have no one to take me to the mosque." Then he requested the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) to grant him permission to offer prayers at home. The Holy Prophet granted him permission. When he was leaving, he called him back and asked: "Do you hear the sound of the Adhan (call to prayer)?" He submitted: "Yes." He said: "Then give your presence (attend)." This Hadith was narrated by Imam Muslim from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him). (T) I say: The Holy Prophet first gave him the order of permission, which is a general rule. Then he guided him toward firm resolve. From Hazrat Abdullah bin Umm Maktum (may Allah be pleased with them), there is a narration by Abu Dawood and Nasa'i that he submitted: "O Messenger of Allah! There are many poisonous animals and beasts of prey in Medina, so is there any permission for me?" He said: "Do you hear 'Hayya alas-Salah, Hayya alal-Falah' (Come to prayer, come to success)?" He submitted: "Yes." He said: "Then give your presence." (T) I say: The Holy Prophet did not give a negative answer to the request for permission, but

instead asked a question anew so that he could provide guidance and direction toward firm resolve. When...

(Footnotes) 1. Sahih Muslim, Chapter: Congregational Prayer and the mention of strictness regarding it, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/232. 2. Sunan Abi Dawood, Strictness in leaving the congregation, printed at Mujtabai, Lahore, 1/81.

फतावा रज़विया, जिल्द 3

(बायां कॉलम) अल-हाकिम ने अनस और सहल बिन साद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की। (1) एक अंधा व्यक्ति पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास आया और कहा: "हे अल्लाह के रसूल, मस्जिद तक ले जाने के लिए मेरे पास कोई मार्गदर्शक नहीं है।" उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से घर में नमाज पढ़ने की अनुमति मांगी, और उन्होंने उसे अनुमति दे दी। जब वह जाने के लिए मुड़ा, तो उन्होंने उसे बुलाया और कहा: "क्या तुम अज़ान की आवाज़ सुनते हो?" उसने कहा: "हाँ।" उन्होंने कहा: "तो फिर जवाब दो (मस्जिद आओ)।" (1) इसे मुस्लिम ने अबू हुरैरा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत किया है। मैं कहता हूँ (अकूल): उन्होंने पहले अनुमति का नियम दिया, जो कि सामान्य नियम है, फिर उन्हें दृढ संकल्प (अज़ीमत) की ओर निर्देशित किया। अबू दाऊद और निसाई के अनुसार, अब्दुल्लाह बिन उम्म मकतूम (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत है कि उन्होंने कहा: "हे अल्लाह के रसूल, मदीना में कीड़े-मकोड़े और दरिंदे बहुत हैं; क्या मेरे लिए कोई अनुमति है?" उन्होंने कहा: "क्या तुम 'हय्या अलस-सलाह, हय्या अलल-फ़लाह' सुनते हो?" उन्होंने कहा: "हाँ।" उन्होंने कहा: "तो फिर आओ (मस्जिद)।" (2) मैं कहता हूँ: उन्होंने (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन्हें नकारात्मक उत्तर नहीं दिया, बल्कि दृढ संकल्प की ओर निर्देशित करने के लिए एक प्रश्न से शुरुआत की। इसलिए, यदि (2) कानून देने वाले की मंशा थी...

(दायां कॉलम) ...हज़रत बुरैदाह से सही सनद के साथ, और इब्न माजा और हाकिम ने हज़रत अनस और हज़रत सहल बिन साद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की। और नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास एक अंधा व्यक्ति आया और अर्ज़ किया: "या रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! मुझे मस्जिद ले जाने वाला कोई नहीं है।" फिर उन्होंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से घर में नमाज़ पढ़ने की अनुमति माँगी। हुज़ूर ने उन्हें अनुमति दे दी। जब वे वापस जा रहे थे, तो उन्हें बुलाकर पूछा: "क्या तुम अज़ान की आवाज़ सुनते हो?" उन्होंने अर्ज़ किया: "हाँ।" फरमाया: "तो हाज़िरी दो (मस्जिद आओ)।" यह हदीस इमाम मुस्लिम ने हज़रत अबू हुरैरा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है। (त) मैं कहता हूँ: हुज़ूर ने पहले उन्हें अनुमति का हुक्म दिया जो कि एक सामान्य नियम है। फिर उन्हें अज़ीमत (दृढ संकल्प) की ओर मार्गदर्शन दिया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्म मकतूम (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से अबू दाऊद और निसाई की रिवायत है कि उन्होंने अर्ज़ किया: "या रसूल अल्लाह! मदीना में ज़हरीले जानवर और दरिंदे बहुत हैं, तो क्या मेरे लिए कोई अनुमति है?" फरमाया: "क्या तुम 'हय्या अलस-सलाह, हय्या अलल-फ़लाह'

(आओ नमाज़ की तरफ, आओ सफलता की तरफ) सुनते हो?" अर्ज़ की: "हाँ।" फरमाया: "तो फिर हाज़िरी दो।" (त) मैं कहता हूँ: हुज़ूर ने अनुमति के सवाल पर इनकार में जवाब नहीं दिया, बल्कि एक नया सवाल किया ताकि वे अज़ीमत की ओर उनका मार्गदर्शन कर सकें। जब...

(पाद-टिप्पणियाँ) 1. सही मुस्लिम, अध्याय: जमाअत की नमाज़ और उसमें सख्ती का ज़िक्र, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 1/232। 2. सुनन अबी दाऊद, जमाअत छोड़ने में सख्ती, मुजतबाई लाहौर द्वारा मुद्रित, 1/81।

पृष्ठ 473/756

(بایاں کالم) والحاکم عن انس وسھل بن سعد رضي اللہ تعالی عنھما۔ واتی (۱) النبي صلی اللہ تعالی علیہ وسلم رجل اعمی فقال یارسول اللہ لیس لی قائد یقودنی الی المسجد فسأل رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ان یرخص لہ فیصلی في بیتہ فرخص لہ فلما ولی دعاہ فقال ھل تسمع النداء بالصلاۃ قال نعم قال فاجب 1 رواہ مسلم عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ۔ اقول: حکم اولاً بالرخصۃ وھی الحکم العام ثم ارشدہ الی العزیمۃ ولابی داؤد والنسائی عن عبداللہ بن ام مکتوم رضی اللہ تعالی عنھما انہ قال یارسول اللہ ان المدینۃ کثیرۃ الھوام والسباع فھل تجدلی من رخصۃ قال ھل تسمع حی علی الصلاۃ حی علی الفلاح قال نعم قال فحیھلا 2۔ اقول: لم یجبہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم بالنفی بل بدأ بسؤال لیرشدہ الی العزیمۃ فاذا (۲) کانت نفس الشارع

(دایاں کالم) نے بسند صحیح حضرت بریدہ سے اور ابن ماجہ و حاکم نے حضرت انس اور حضرت سہل بن سعد رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت کی۔ اور نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے پاس ایک نابینا شخص حاضر ہوئے، عرض کیا: یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ! مجھے کوئی مسجد لے جانیوالا نہیں۔ پھر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے درخواست کی کہ انہیں گھر میں نماز ادا کر لینے کی رخصت مرحمت فرمادیں۔ حضور نے انہیں رخصت دے دی۔ جب وہ واپس چلے تو انہیں بلا کر فرمایا: کیا تم اذان کی آواز سنتے ہو؟ عرض کیا: ہاں: فرمایا: "تو حاضری دو"۔ یہ حدیث امام مسلم نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی۔ (ت) اقول: حضور نے پہلے انہیں رخصت کا حکم دیا جو حکم عام ہے۔ پھر انہیں عزیمت کی جانب ہدایت فرمائی۔ حضرت عبد اللہ بن ام مکتوم رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے ابو داؤد اور نسائی کی روایت ہے کہ انہوں نے عرض کیا: یا رسول اللہ ! مدینہ میں زہریلے جانور اور درندے بہت ہیں تو کیا

میرے لئے کوئی رخصت ہے؟ فرمایا: تم حی علی الصلوٰۃ، حی علی الفلاح (آؤ نماز کی طرف، آؤ فلاح کی طرف) سنتے ہو؟ عرض کی: ہاں۔ فرمایا: تب حاضری دو۔ (ت) اقول: حضور نے رخصت کے سوال پر نفی میں جواب دیا، بلکہ از سر نو ایک سوال کر دیا تاکہ عزیمت کی جانب انہیں ارشاد و رہنمائی فرما سکیں۔ جب

(حواشی) 1 صحیح مسلم فصل صلوۃ الجماعۃ و بیان التشدید فیہا قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۳۲ 2 سنن ابی داؤد التشدید فی ترک الجماعۃ مطبوعہ مجتبائی لاہور ۱/ ۸۱

Fatawa Rizviya, Volume 3

...[The heart of] the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him and his family) is so keen for the presence of the people in the congregation (jama'at) to this extent; how then can it be said that the congregation is waived due to the darkness of the night, even if lighting something like a lantern and going out with it is feasible without any hardship at all? As for the issue of impurity, we were only commanded to purify it with water, and that has been achieved. Whatever is difficult to remove is pardoned, and one is not burdened with the task of removing what is pardoned. (T)

(2) The issue of Tayammum (dry ablution). I say: The basis of the ruling here is on possibility (imkan), because we know that a minor hardship is not an excuse unless it becomes severe and reaches the level of critical difficulty (haraj) and harm. Therefore, they did not permit Tayammum for a person in a state of minor ritual impurity (hadath) simply because of the cold, as mentioned in Al-Khaniyah, Al-Khulasah, Al-Musaffa, Al-Fath al-Qadir, An-Nahr al-Faiq, and others(1). And they made it obligatory for a person in a state of major ritual impurity (junub) to enter a public bathhouse (hamam) for a fee or heat water if they are able to. It is stated in Al-Hindiyyah: "When a junub fears that if they perform ghusl (bath), the cold will kill them or make them ill, then Tayammum is permissible. However, if they do not have the fee to enter the hamam, there is a difference of opinion in this case; but if the fee is available to them, then by consensus (ijma'), Tayammum is not permissible for them. There is also a difference of opinion in the case when..."

---

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on what makes Tayammum permissible, printed by Naval Kishore, Lucknow, 1/28.
2. Fatawa Hindiyyah, First Section on Tayammum, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/28.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

...अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का पवित्र हृदय जमाअत में लोगों की उपस्थिति के लिए इस हद तक लालायित है, तो यह कैसे कहा जा सकता है कि रात के अंधेरे के कारण जमाअत माफ़ है, भले ही लालटेन आदि जलाना और उसे लेकर जाना बिना किसी परेशानी के आसानी से संभव हो? और नजासत (अपवित्रता) के मसले में हमें केवल यह आदेश था कि पानी से शुद्ध कर दें, और यह कार्य हो चुका है। जिस प्रभाव (असर) को दूर करना कठिन हो वह क्षम्य है, और जो क्षम्य है उसे दूर करने के लिए मनुष्य बाध्य नहीं है। (त)

(2) तयम्मुम का मसला। मैं कहता हूँ: इसमें हुक्म की बुनियाद संभावना (इमकान) पर है, क्योंकि हमें ज्ञात है कि मामूली कठिनाई तब तक बहाना (उज़्र) नहीं है जब तक कि वह गंभीर न हो जाए और परेशानी और नुकसान की सीमा तक न पहुँच जाए। इसीलिए मामूली अपवित्रता (हदस) वाले व्यक्ति के लिए केवल ठंड के कारण तयम्मुम जायज़ नहीं हुआ, जैसा कि खानिया, खुलासा, मुस़फ़्फ़ा, फ़तहुल क़दीर, अन-नहरुल फ़ाइक आदि (1) में वर्णित है। और उन्होंने नापाकी (जनाबत) की स्थिति वाले व्यक्ति के लिए शुल्क देकर हमाम (स्नानगृह) में नहाना या यदि सामर्थ्य हो तो पानी गर्म करना अनिवार्य किया है। हिन्दिया में है: "जब नापाक व्यक्ति को यह डर हो कि यदि वह ग़ुस्ल (स्नान) करेगा तो ठंड से मर जाएगा या बीमार पड़ जाएगा, तो तयम्मुम जायज़ है। और यदि उसके पास हमाम में जाने का शुल्क नहीं है तो इस स्थिति में मतभेद है, लेकिन यदि शुल्क उसके पास मौजूद है तो सर्वसम्मति (इज्मा) से उसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं है। इस स्थिति में भी मतभेद है जब..."

---

1. फ़तावा काज़ी खान, तयम्मुम जायज़ होने का अध्याय, मुद्रित नवल किशोर लखनऊ, 1/28।
2. फ़तावा हिन्दिया, तयम्मुम का पहला खंड, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/28।

पृष्ठ 474 का 756

حضرت شارع صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم کے قلبِ پاک جماعت میں لوگوں کی حاضری کا اس حد تک مشتاق ہے تو یہ حکم کیسے دیا جاسکتا ہے کہ رات کی تاریکی میں جماعت ساقط ہے اگرچہ چراغ وغیرہ جلانا اور لے کر جانا بآسانی اور بغیر کسی زحمت کے میسر ہو۔ اور مسئلہ نجاست میں ہمیں صرف یہ حکم تھا کہ پانی سے پاک کردیں یہ کام ہوگیا اور جس اثر کا دور ہونا دشوار ہو وہ معاف ہے اور جو معاف ہے اسے دور کرنے کا مکلف نہیں۔ (ت)

(۲) مسئلہ تیمّم۔ اقول: اس میں بنائے حکم امکان پر ہے اس لئے کہ معلوم ہے اس میں معمولی مشقت عذر نہیں جب تک شدید اور حرج و ضرر کی حد تک نہ پہنچ جائے۔ اسی لئے حدث والے کیلئے ٹھنڈک کی وجہ سے تیمم مباح نہ ہوا جیسا کہ خانیہ، خلاصہ، مصفی، فتح القدیر، النہر الفائق وغیرہا میں ہے۔ اور جنابت والے پر اجرت دے کر حمام میں نہانا یا اگر قدرت ہو تو پانی گرم کرنا واجب ہوا۔ ہندیہ میں ہے: "جنابت والے کو جب یہ خوف ہو کہ غسل کرے گا تو ٹھنڈک سے ہلاک ہو جائیگا یا بیمار پڑ جائے گا تو تیمم جائز ہے۔ اور حمام میں جا کر نہلانے کی اجرت اس کے پاس نہ ہو تو اس صورت میں اختلاف ہے اور اگر اجرت اس کے پاس ہو تو بالاجماع اس کے لئے تیمم جائز نہیں۔ اس صورت میں بھی اختلاف ہے جب..."

---

1 فتاوٰی قاضی خان فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱ / ۲۸ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل الاول من التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۸

Fatawa Razvia, Volume 3 If one is not able to heat water. If one has the ability, Tayammum (dry ablution) is not permissible. This is also stated in 'Siraj-ul-Wahhaj'. From the beginning, while describing the nature of the issue, what we have mentioned, its correctness becomes clear from the above details. (T) (94 to 96) I say: As before, if the equipment for lighting is available at a price and he has the value in excess of his needs, or the seller agrees to credit and there is no exorbitant increase over the standard price, then buying it is obligatory, otherwise he should perform Tayammum. (97) I say: Two more benefits are gained from issue number 92. One is that if a traveler stays in a forest and it is a dark night and there is fear in going to the well, he should perform Tayammum, because when permission for Tayammum is given at home, it is even more so in the forest. (98 to 102) I say second: In numbers 8 to 12, it was mentioned that there are predators (98), snakes (99), fire (100), robbers (101), or enemies (102) or a transgressor (103) or a creditor near the water. Even if these things are not known to be present there currently but there is a genuine fear, Tayammum is permitted, because there is fear from that very assumption while going into a room in the darkness of night, not from a confirmed known object. (103 to 111) In every case of an enemy, a transgressor, and a creditor, there will be the same three situations: either the person who carries it for a fee asks for too much, or he does not agree to credit, or he (the person needing water) cannot pay at all, then he should perform Tayammum. (112 to 115) I say: Similarly, if it is night in the forest and there is an infant in the lap and there is fear of a wolf in taking him to the water, and there is no one else to bring water or with whom the infant can be left, or if there is such a person but he demands high wages or he cannot pay, or the money is at another place and he does not agree to credit; in these cases too, one should perform Tayammum, whether it be a man or a woman. (116 & 117) Intense scorching sun (note: heat) is shining or there is severe shivering cold, frost is falling; because of these excuses, going to get water is indeed very difficult and causes unbearable hardship, and time is running out while waiting, so perform prayer with Tayammum and later repeat it with Wudu as will come later. (118 to 112 [sic, 119]) I say: Similarly, if a terrifying windstorm is blowing, especially at night, or refuge with Allah, there is an earthquake, or refuge with Allah, lightning is striking repeatedly, or hailstones are falling in abundance, or there is intense mud and darkness; all these are excuses even for the congregational prayer itself, let alone the Friday obligation. Similarly for Tayammum as well, and the command for repetition remains as before. It is in 'Durr-ul-Mukhtar', Chapter of Imamate: "Rain is not obligatory for the one between whom and it [the congregation] there is rain." | Congregation is not obligatory for a person

whose attendance [is hindered]. Note: 'The cold' will be mentioned in the number after it, and 'the heat' in 123 from several books. 12 from him, may Allah forgive him (M). The mention of coolness will come in the next number, and the mention of heat in number 123 from various books. 12 from him, may Allah forgive him (T).

फतावा रज़विया, जिल्द 3 यदि पानी गर्म करने पर समर्थ न हो। यदि सामर्थ्य हो तो तयम्मुम जायज़ नहीं। ऐसा ही सिराजुल वह्हाज में है। शुरू से मसअले की सूरत बयान करते हुए हमने जो ज़िक्र किया है, उसकी सेहत (सत्यता) उपरोक्त विवरण से साफ़ हो जाती है। (त) (94 से 96) अक़ौल (मैं कहता हूँ): पहले की तरह अगर रोशनी का सामान कीमत पर मिलता है और उसके पास ज़रूरत से ज़्यादा मूल्य मौजूद है या बेचने वाला उधार पर राज़ी है और कीमत-ए-मिस्ल (साधारण मूल्य) से बहुत ज़्यादा बढ़ोतरी नहीं है, तो उसे खरीदना वाजिब है, वरना तयम्मुम करे। (97) अक़ौल: मसअला नंबर 92 से दो फ़ायदे और हासिल हुए। एक यह कि अगर मुसाफ़िर जंगल में उतरा और अंधेरी रात है और कुएँ तक जाने में डर है, तो वह तयम्मुम करे, क्योंकि जब घर में तयम्मुम की इजाज़त दी गई तो जंगल में तो और भी ज़्यादा। (98 से 102) अक़ौल दोम: यह कि नंबर 8 से 12 में, पानी पर दरिंदे (98), साँप (99), आग (100), डाकू(101), या दुश्मन (102) या फ़ासिक़ (103) या क़र्ज़ख़्वाह का होना ज़िक्र हुआ। अगर इन चीज़ों का फ़िलहाल वहाँ होना मालूम नहीं मगर सही अंदेशा (डर) है, तब भी तयम्मुम की इजाज़त है, क्योंकि रात की अंधेरी में कोठरी में जाते हुए उसी गुमान से डर होता है, न कि किसी चीज़ के होने के पक्के सबूत से। (103 से 111) दुश्मन, फ़ासिक़ और क़र्ज़ख़्वाह की हर सूरत में वही तीन-तीन सूरतें होंगी कि मज़दूरी पर ला देने वाला ज़्यादा माँगता है या उधार पर राज़ी नहीं है या वह दे ही नहीं सकता, तो तयम्मुम करे। (112 से 115) अक़ौल: इसी तरह अगर रात को जंगल में है और गोद में बच्चा है और उसे पानी तक ले जाने में भेड़िए का डर है और कोई ऐसा नहीं जो पानी ला दे या जिसके पास बच्चा छोड़ा जा सके या है और ज़्यादा मज़दूरी का तलबगार है या यह दे नहीं सकता या माल दूसरी जगह है और वह उधार पर राज़ी नहीं; इन सूरतों में भी तयम्मुम करे, चाहे मर्द हो या औरत। (116 और 117) सख़्त तड़पाती (टिप्पणी: गर्मी) धूप पड़ रही है या सख़्त ठिठुरन है, ओला गिर रहा है; इन उज़्रों (बहानों/कारणों) की वजह से पानी लेने जाना वास्तव में सख़्त मुश्किल और असहनीय तकलीफ़ का कारण है और इंतज़ार में वक़्त गुज़र रहा है, तो तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ले और फिर वुज़ू से दोबारा पढ़ ले जैसा कि आगे आएगा। (118 से 112 [संभवतः119]) अक़ौल: इसी तरह अगर भयानक आँधी चल रही है विशेषकर रात में, या अल्लाह की पनाह भूकंप है, या अल्लाह की पनाह बिजली कड़क-कड़क कर गिर रही है या कसरत से ओले पड़ रहे हैं या कीचड़ और अंधेरा सख़्त है; यह सब जमाअत तो जमाअत, खुद जुमा के फ़र्ज़ में उज़्र हैं, तो इसी तरह तयम्मुम के लिए भी, और दोबारा पढ़ने का हुक्म पहले जैसा ही है। दुर्रे मुख्तार बाबुल इमामत में है: "उस व्यक्ति पर जमाअत वाजिब नहीं जिसके और उसके बीच बारिश रुकावट हो।" | उस व्यक्ति पर जमाअत वाजिब नहीं जिसकी हाज़िरी [बाधित हो]। टिप्पणी: 'सर्दी' का ज़िक्र इसके बाद वाले

नंबर में आएगा और 'गर्मी' का ज़िक्र 123 में कई किताबों से। 12 उनसे, अल्लाह उन्हें माफ़ करे (म)। ठंडक का ज़िक्र अगले नंबर में आएगा और गर्मी का ज़िक्र नंबर 123 में कई किताबों से आएगा। 12 उनसे, अल्लाह उन्हें माफ़ करे (त)।

पृष्ठ 475 / 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم پانی گرم کرنے پر قادر نہ ہو۔ اگر قدرت ہو تو تیمم جائز نہیں۔ ایسا ہی سراج وہاج میں ہے اھ ابتداءً صورت مسئلہ بیان کرتے ہوئے ہم نے جو ذکر کیا ہے اس کی صحت مذکورہ بالا تفصیلات سے روشن ہوجاتی ہے۔ (ت) (۹۴ تا ۹۶) اقول: بدستور اگر روشنی کا سامان بقیمت ملتا ہے اور اس کے پاس حاجت سے زائد قدر و قیمت موجود ہے یا بیچنے والا اُدھار پر راضی اور قیمت مثل پر زیادت فاحشہ نہیں خریدنا واجب ورنہ تیمم کرے۔ (۹۷) اقول: مسئلہ نمبر ۹۲ سے دو فائدے اور حاصل ہوئے ایک یہ کہ اگر مسافر جنگل میں اترا اور اندھیری رات ہے اور کنویں تک جانے میں خوف ہے تیمم کرے کہ جب گھر میں تیمم کی اجازت دی تو جنگل میں بدرجہ اولٰی۔ (۹۸ تا ۱۰۲) اقول دوم: یہ کہ نمبر ۸ تا ۱۲ میں کہ پانی پر درندے ۹۸، سانپ ۹۹، آگ ۱۰۰، یار ہرن ۱۰۱، یادشمن ۱۰۲ یا فاسق ۱۰۳ یا قرضخواہ کا ہونا مذکور ہوا اگر ان اشیاء کافی الحال وہاں ہونا معلوم نہیں مگر صحیح اندیشہ ہے جب بھی اجازت تیمم ہے کہ ظلمتِ شب میں کوٹھری میں جاتے ہوئے اُسی مظنہ سے خوف ہے نہ شے معلوم التحقق سے۔ (۱۰۳ تا ۱۱۱) دشمن و فاسق وقرضخواہ کی ہر صورت میں بدستور وہ تین تین صورتیں ہوں گی کہ اُجرت پر لادینے والا زیادہ مانگتا ہے یا اُدھار پر راضی نہیں یا یہ دے ہی نہیں سکتا تو تیمم کرے۔ (۱۱۲ تا ۱۱۵) اقول: یو نہی اگر رات کو جنگل میں ہے اور گود میں بچہ اور اُسے پانی تک لے جانے میں بھیڑیے کا اندیشہ اور کوئی ایسا نہیں کہ پانی لادے یا جس کے بچہ کو چھوڑ جائے یا ہے اور زیادہ اجرت کا طالب یا یہ دے نہیں سکتا یا مال اور جگہ ہے اور وہ ادھار پر راضی نہیں ان صورتوں میں بھی تیمم کرے مرد ہو خواہ عورت۔ (۱۱۶ و ۱۱۷) سخت تراتے عہ کی دھوپ پڑ رہی ہے یا شدّت کی ٹھٹھر ہے پالا گر رہا ہے ان عذروں کے سبب پانی لینے کو جانا واقعی سخت دشوار اور ناقابلِ برداشت تکلیف کا باعث ہے اور انتظار میں وقت جاتا ہے تیمم سے پڑھ کر وضو سے اعادہ کرلے

کما سیاتی۔ (۱۱۸ تا ۱۱۲) اقول: یو نہی اگر ہولناک آندھی چل رہی ہے خصوصاً رات میں یا معاذ اللہ زلزلہ ہے یا عیاذاً باللہ بجلی تڑپ تڑپ کر گر رہی ہے یا کثرت سے اولے پڑ رہے ہیں یا کیچڑ اندھن بشدت ہے کہ یہ سب جماعت تو جماعت خود فرضِ جمعہ میں عذر ہیں تو اسی طرح تیمم کیلئے بھی اور حکم اعادہ بدستور۔ در مختار باب الامامۃ میں ہے: لا تجب علی من حال بینه وبینها مطر | اس شخص پر جماعت واجب نہیں جس کی حاضری جماعت عہ البرد یذکر فی النمرة بعدها والحرفي ۱۲۳ عن عدة کتب ۱۲ منه غفر له (م) | برودت کا ذکر اس کے بعد والے نمبر میں آئے گا اور حرارت کا ذکر نمبر ۱۲۳ میں متعدد کتابوں سے آئے گا ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razviyya Volume 3 (123) Just as heavy rain is an excuse for missing Friday and congregational prayers, as previously mentioned from Al-Durr (as passed with reference to Durr-e-Mukhtar. -T), similarly in Jami al-Uloom, Mubtani, Mujtaba, Kifayah, Qunyah, Hilyah, Bahr, Hindiyyah, etc., it has been counted as an excuse for Tayammum.

كما قدمته فى ففى الحلية والبحر عن المبتغى بالغين المعجمة من كان فى كلة جاز تيممه لخوف البق او مطر او حر شديدا اه الخ۔

As I mentioned in "Al-Zafar li-Qawl Zafar" (p. 88), it is stated in Hilyah and Bahr with reference to 'Mubtani' (with the letter Ghain) that for someone in a 'Killah' (a small tent or mosquito net like enclosure to protect from mosquitoes etc.), Tayammum is permissible due to fear of fleas, rain, or intense heat, etc., if there is a fear of the time passing. (T)

قلت و رأيته فى بعض الكتب بزيادة او برد و كأنّ تركهم من باب الاكتفاء كما قال فى جامع الرموز عند قوله لبعده ميلا او مرض او برد تخصيص البرد من قبيل الاكتفاء فان الحر الشديد مبيح التيمم اه وعزا ہ للزاهدى۔

I say: I have seen this ruling in some books with the addition of "or cold". It's as if the scholars' omission of it was for the sake of brevity (sufficiency by mentioning some), as written in Jami al-Rumooz under the statement "due to being a mile away, illness, or cold". Mentioning cold specifically is for brevity, as intense heat also makes Tayammum permissible. This was mentioned with reference to Zahidi. (T)

I say: However, this seems very strange on the surface that the presence of water (rain) becomes a reason for Tayammum. In heavy rain, everything—ablution (Wudu) and ritual bath (Ghusl)—is possible, either from the rain itself, from a spout (Parnalah), or by taking water in a vessel.

And I say: And success is from Allah (T). One obvious scenario is that doing Wudu and having water fall on the head for a long time is harmful, for example, due to brain weakness, and there is no umbrella or cloth etc. to protect the head from water. Nor is there a spout from an eave (Chhajja) under which one can stand and perform Wudu, or the wind is blowing water streams in such a way that the eave doesn't provide cover. Nor is there a servant, slave, or boy to bring water, nor a vessel to put under a spout. Or there is no spout at all, and if kept in the rain, enough water for Wudu would only collect after the prayer time has passed. In short, there is no way for Wudu except standing in the rain to wash the limbs of Wudu, and keeping the

head under the rain for that long is harmful. Thus, here the very existence of rain prevents Wudu, otherwise neither Wudu nor the rain itself is harmful.

---

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-Tayammum, HM Saeed Company Karachi, 1/120 2 Jami al-Rumooz, Fasl fi al-Tayammum, Al-Maktaba al-Islamiyya, Iran, 1/66 Page 477 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3 (123) जिस प्रकार भारी वर्षा जुमे और जमात के लिए एक बहाना (मअज़ूरी) है, जैसा कि अल-दुर्र से पहले उल्लेख किया गया है (जैसा कि दुर्रे मुख्तार के हवाले से गुज़रा। -त), उसी प्रकार जामिअल उलूम, मुबतनी, मुजतबा, किफ़ाया, कुन्या, हिल्या, बह्र, हिन्दिया आदि में इसे तयम्मुम के लिए एक बहाना माना गया है।

जैसा कि मैंने "अज़-ज़फ़र ली-क़ौल ज़फ़र" (पृष्ठ 88) में उद्धृत किया है, हिल्या और बह्र में 'मुबतनी' (ग़ैन के साथ) के हवाले से है कि जो 'किल्ला' (मच्छरदानी की तरह मच्छरों आदि से बचाने वाले छोटे तम्बू) में हो, उसके लिए पिस्सू, वर्षा या तीव्र गर्मी के डर से तयम्मुम जायज़ है यदि समय बीत जाने का डर हो। (त)

كما قدمته فى ففى الحلية والبحر عن المبتغى بالغين المعجمة من كان فى كلة جاز تيممه لخوف البق او مطر او حر شديدا اھ الخ۔

मैं कहता हूँ: और मैंने यह मसला कुछ पुस्तकों में "या ठंड" की वृद्धि के साथ देखा है। मानो विद्वानों का इसे न लिखना कुछ के ज़िक्र पर पर्याप्त (इक्तिफ़ा) करने के तौर पर है, जैसा कि जामिअ अर-रुमूज़ में "एक मील की दूरी, बीमारी या ठंड के कारण" कथन के अंतर्गत लिखा है। विशेष रूप से ठंड का उल्लेख इक्तिफ़ा के क़बील से है क्योंकि तीव्र गर्मी से भी तयम्मुम जायज़ हो जाता है। और इसे ज़ाहिदी के हवाले से बयान किया गया है। (त)

قلت و رأيته فى بعض الكتب بزيادة او برد و كأنّ تركهم من باب الاكتفاء كما قال فى جامع الرموز عند قوله لبعده ميلا او مرض او برد تخصيص البرد من قبيل الاكتفاء فان الحر الشديد مبيح التيمم اھ وعزا ہ للزاهدى۔

मैं कहता हूँ: लेकिन यह प्रत्यक्षतः बहुत आश्चर्यजनक है कि पानी की उपस्थिति (वर्षा) तयम्मुम का कारण बने। भारी वर्षा में वुज़ू और ग़ुस्ल सब कुछ हो सकता है, स्वयं वर्षा से, या परनाली (पर्नाला) से, या किसी बर्तन में पानी लेकर।

और मैं कहता हूँ: और सफलता अल्लाह की ओर से है (त)। इसकी एक स्पष्ट सूरत यह है कि वुज़ू करना और सिर पर देर तक पानी गिरना हानिकारक है, उदाहरण के लिए मस्तिष्क की कमज़ोरी के कारण, और कोई छतरी या चादर आदि नहीं है जिससे सिर को पानी से बचाया जा सके। न ही छज्जे की कोई परनाली चल रही है कि छज्जे के नीचे खड़ा होकर उससे वुज़ू करे, या हवा से पानी की धारें उसी तरफ आ रही हैं कि छज्जा आड़ न बन सके। न ही कोई सेवक, दास या लड़का है जो पानी लाकर दे, न कोई बर्तन कि उसे किसी परनाली के नीचे रख दे। या परनाली ही नहीं है, और यदि

बारिश में रखे तो वुज़ू के योग्य पानी इतनी देर में जमा हो कि समय निकल जाए। संक्षेप में, वुज़ू की कोई सूरत नहीं है सिवाय इसके कि बारिश में खड़ा होकर वुज़ू के अंगों को धोए, और इतनी देर तक पानी सिर पर लेना उसे हानिकारक है। तो यहाँ बारिश का अस्तित्व ही वुज़ू से रोकने वाला हुआ, अन्यथा न वुज़ू हानिकारक था और न ही वर्षा।

---

1 अल-बह्र अर-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/120 2 जामिअ अर-रुमूज़, फ़स्ल फ़ि अत-तयम्मुम, अल-मकतबा अल-इस्लामिया, ईरान, 1/66 पृष्ठ 477 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم (۱۲۳) جس طرح شدت کا مینہ جمعہ و جماعت میں عذر ہے کما تقدم عن الدر (جیسا کہ دُرّ مختار کے حوالہ سے گزرا ت) یوں ہی جمع العلوم و مبتنی و مجتبٰی و کفایہ وقنیہ و حلیہ وبحر و ہندیہ وغیر ہا میں اسے تیمم کیلئے عذر گنا۔

جیسا کہ میں نے "الظفر لقول زفر" ۸۸ میں یہ نقل کیا ہے تو حلیہ اور بحر میں مبتنی بغین معجمہ کے حوالہ سے ہے جو کلہ (مچھر دانی کی طرح مچھر وغیرہ سے بچانے والے چھوٹے سے خیمہ) میں ہو اس کیلئے پسو یا بارش یا سخت گرمی کے اندیشہ سے تیمم جائز ہے اگر وقت نکلنے کا خوف ہو۔ (ت)

كما قدمته فی ففی الحلية والبحر عن المبتغی بالغين المعجمة من كان فی كلة جاز تيممه لخوف البق او مطر او حر شديدا اھ الخ۔

قلت اور یہ مسئلہ میں نے بعض کتب میں "او برد" (یا ٹھنڈک) کے اضافہ کے ساتھ دیکھا ہے گویا علماء کا اسے ذکر نہ کرنا چند کے ذکر پر اکتفاء کے طور پر ہے جیسا کہ جامع الرموز میں "لبعدہ میلا او مرض او برد" (ایک میل دوری یا بیماری یا سردی کی وجہ سے) کے تحت لکھا ہے خاص سردی کا ذکر اکتفاء کے قبیل سے ہے اس لئے کہ سخت گرمی سے بھی تیمم جائز ہو جاتا ہے اھ اور اسے زاہدی کے حوالہ سے بیان کیا ہے۔ (ت)

قلت و رأيته فی بعض الكتب بزيادة او برد و كأنّ تركهم من باب الاكتفاء كما قال فی جامع الرموز عند قوله لبعده ميلا او مرض او برد تخصيص البرد من قبيل الاكتفاء فان الحر الشديد مبيح التيمم اھ وعزا ہ للزاهدی۔

اقول: مگر یہ بظاہر بہت عجب ہے کہ پانی کا وجود تیمم کا موجب ہو شدت کے مینہ میں وضو و غسل سب کچھ ہو سکتا ہے خود مینہ سے یا پر نالے سے یا کسی برتن میں پانی لے کر۔

وانا اقول: وباللہ التوفیق (اور میں اللہ تعالیٰ کی توفیق سے کہتا ہوں۔ ت) اس کی ایک ظاہر صورت یہ ہے کہ وضو کرنا ہے اور سر پر دیر تک پانی گرنا مثلاً بوجہ ضعف دماغ مضر ہے اور چھتری یا چادر وغیرہ نہیں جس سے سر کو پانی سے بچا سکے نہ چھجے کا کوئی پر نالہ چل رہا ہے کہ چھجے کے نیچے کھڑا ہو کر اس سے وضو کرے یا ہوا سے پانی کی دھاریں اسی طرف آرہی ہیں کہ چھجا حاجب نہ ہو گا نہ خادم، غلام، لڑکا کوئی ایسا ہے کہ پانی لے کر اسے دے دے نہ کوئی برتن کہ اسے کسی پر نالے کے نیچے رکھ دے یا پر نالہ ہی نہیں اور مینہ میں رکھے تو پانی قابل وضو اتنی دیر میں جمع ہو کہ وقت نکل جائے غرض وضو کی کوئی صورت نہیں سوا اس کے کہ مینہ میں کھڑا ہو کر اعضائے وضو دھوئے اور اتنی دیر تک پانی سر پر لے اور یہ اسے مضر ہے تو یہاں مینہ کا وجود ہی وضو سے مانع ہوا اور نہ وضو مضر نہ تھا۔

---

1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۱۲۰ 2 جامع الرموز فصل فی التیمم المکتبۃ الاسلامیۃ ایران ۱ / ۶۶ Page 477 of 756

Fatawa Rizwia, Volume 3

(124) I say: The second subtle case is when performing ablution (wudu) or bathing (ghusl) is necessary and the water is not harmful at all, but other ways are blocked except for standing in the rain to perform wudu or ghusl. There is no private place to remove clothes for purification, for example, being on the roadside during a journey, and the clothes are thin such that getting wet would lead to exposing one's nakedness (satr), and there is no thick or colored lower garment (tahband) to tie. According to the absolute ruling of tayammum mentioned in number 54 of Halya and Ghuniyah, tayammum will be obligatory. If there isn't enough time left to wring out the wet clothes, dry them, and wear them before the prayer time ends, then even according to the second opinion, a clear excuse exists as exposing oneself during prayer would occur. Therefore, perform tayammum, and later repeat the prayer after purifying with water.

(125 to 130) I say: In both these cases, three additional scenarios will emerge as per the norm: the person providing water wants a fee, or a vessel or garment is available for rent and the person is poor, or they do not agree to credit, or they ask for significantly more than the customary fee (ujrat-e-misl).

(131 to 135) Water is continuously falling from a mountain but it is slight, not forming a stream, and it gets absorbed into the sand. The person does not have any cloth, nor can they buy one, to spread in the water's path to wring onto body parts or collect in a vessel for wudu. Either they lack the funds to buy one, or funds are elsewhere and the seller doesn't give credit, or they demand much more than the price, or cloth is available but wringing it thus would cause damage worth one dirham or more. In all five scenarios, perform tayammum.

(136) It was mentioned in those texts that if, due to fear of mosquitoes, one remains inside a mosquito net and the prayer time is passing, perform tayammum and pray, then repeat later. I say: It is far-fetched that mosquitoes or fleas would cause such distress as to justify skipping wudu or ghusl. Yes, the pain from a gadfly's sting is severe.

(137) I say: Similarly, if there is a beehive (wasp nest) near the water and waiting would cause the prayer time to lapse.

وهو داخل فى معنى مانصوا عليه من خوف سبع وحية وان لم يدخل فى لفظه وكذا صاحبه السابق۔	**The fear of wild beasts and snakes, which the jurists have specified, falls under its meaning even if it is not included in its wording. Similarly, the situation mentioned before this. (T)**

(138 to 141) I say: One who cannot reach the water, for example, a lame person, a cripple, one with an amputated foot, a paralyzed person, a sick person, a convalescent, or a very old person who cannot walk; or a blind person who has no sense of direction, or one with night blindness or someone unable to walk due to back pain, etc., if they do not have a servant, slave, son, or grandson who is duty-bound to serve them, nor someone who...

फतावा रिज़विया, खंड 3

(124) मैं कहता हूँ: दूसरी बारीक स्थिति यह है कि वूज़ू करना या नहाना है और पानी बिल्कुल हानिकारक नहीं है, लेकिन अन्य सभी रास्ते बंद हैं सिवाय इसके कि बारिश में खड़े होकर वूज़ू या ग़ुस्ल करे। शुद्धिकरण के लिए कपड़े उतारने के लिए कोई एकांत स्थान नहीं है, उदाहरण के लिए यात्रा में रास्ते पर है और कपड़े बारीक हैं कि पानी में भीगने से निर्वस्त्रता (सत्र भंग) होगी और बांधने के लिए कोई मोटा या रंगीन तहबंद नहीं है। तो 'हलिया' और 'ग़ुनिया' के उल्लेख संख्या 54 के अनुसार पूर्णतः तयम्मुम का हुक्म होगा। और यदि इतना समय नहीं बचा है कि उन गीले कपड़ों को निचोड़कर और सुखाकर पहनने तक समय बाकी रहे, तो दूसरे मत के अनुसार भी स्पष्ट बहाना मौजूद है कि अब नमाज़ में स्वयं निर्वस्त्रता होगी, इसलिए तयम्मुम करे और फिर पानी से शुद्धिकरण करके नमाज़ दोबारा पढ़े (आदा करे)।

(125 से 130) मैं कहता हूँ: इन दोनों स्थितियों में दस्तूर के अनुसार तीन-तीन और स्थितियाँ निकलेंगी कि पानी देने वाला मज़दूरी चाहता है या बर्तन या तहबंद किराए पर मिलता है और यह व्यक्ति निर्धन है, या वह उधार पर राजी नहीं है या 'उजरत-ए-मिस्ल' (प्रचलित मज़दूरी) से बहुत अधिक माँगता है।

(131 से 135) पहाड़ से लगातार पानी गिर रहा है लेकिन वह हल्का है, धारा नहीं बन रही और रेत में समा जाता है। उसके पास कोई ऐसा कपड़ा नहीं है और न ही मिलता है जिसे पानी के रास्ते में फैलाकर अंगों पर निचोड़कर या किसी बर्तन में इकट्ठा करके वूज़ू करे। या खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं, या पैसे दूसरी जगह हैं और वह उधार नहीं देता, या कीमत से बहुत अधिक माँगता है, या कपड़ा मौजूद है लेकिन उसे इस तरह भिगोने और निचोड़ने में एक दिरहम या उससे अधिक का नुकसान है। इन पाँचों स्थितियों में तयम्मुम करे।

(136) इन्हीं इबारतों में गुज़रा कि यदि मच्छरों के डर से मच्छरदानी के अंदर पर्दे छोड़े हुए है और समय निकल रहा है, तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले, यानी फिर आदा करे। मैं कहता हूँ: मच्छर या पिस्सू से ऐसी तकलीफ होना जिसके कारण वूज़ू और ग़ुस्ल छोड़ने की अनुमति हो, दूर की बात है। हाँ, डाँस (एक प्रकार की मक्खी) की पीड़ा गंभीर होती है।

(137) मैं कहता हूँ: इसी तरह अगर पानी के पास भिरड़ (ततैया) का छत्ता लगा है और इंतज़ार में समय निकल जाने का डर है।

وهو داخل فى معنى مانصوا عليه من خوف سبع وحية وان لم يدخل فى لفظه وكذا صاحبه السابق۔	**दरिंदों और साँपों का डर जिसका फ़ुक़हा ने स्पष्ट उल्लेख किया है, वह इसके अर्थ के अंतर्गत आता है भले ही वह इसके शब्दों में शामिल न हो। इसी तरह इससे पहले वाली स्थिति। (त)**

(138 से 141) मैं कहता हूँ: जो पानी तक न जा सकता हो, जैसे लंगड़ा या अपाहिज या जिसका पैर कटा हो या जिसे लकवा हो या बीमार या कमज़ोर या अत्यंत वृद्ध जो चल नहीं सकते; या अंधा जिसे अंदाज़ा नहीं है, या रात को नहीं दिखने वाला (रतौंधी) या कमर आदि के दर्द के कारण चलने में असमर्थ, यदि उसके पास नौकर, गुलाम, बेटा या पोता कोई ऐसा नहीं है जिस पर उसकी सेवा अनिवार्य हो, और न ही ऐसा कि उसके..

पृष्ठ 478/756

(۱۲۴) اقول: دوسری دقیق صورت یہ ہے کہ وضو کرنا یا نہانا ہے اور پانی اصلاً مضر نہیں مگر اور طریقے مسدود ہیں سوا اس کے کہ مینہ میں کھڑا ہو کر وضو یا غسل کرے اور کوئی خلوت کا مکان نہیں کہ کپڑے اتار کر طہارت کرے مثلاً سفر میں سرِراہ ہے اور کپڑے باریک ہیں کہ پانی میں بھیگ کر بے ستری ہوگی اور باندھنے کو کوئی دبیز رنگین تہبند نہیں تو استظہار حلیہ وغنیہ مذکور نمبر ۵۴ پر مطلقاً تیمم کا حکم ہوگا اور اگر وقت اتنا نہیں کہ ان بھیگے کپڑوں کو نچوڑ کر خشک کر کے پہننے تک باقی رہے تو دوسرے قول پر بھی صریح عذر موجود ہے کہ اب خود نماز میں بے ستری ہوگی لہٰذا تیمم کرے پھر پانی سے طہارت کر کے اعادہ۔

(۱۲۵ تا ۱۳۰) اقول: ان دونوں صورتوں میں حسبِ دستور تین تین صورتیں اور نکلیں گی کہ پانی لے دینے والا اجرت چاہتا ہے یا برتن یا تہبند کرایہ پر ملتا ہے اور یہ مفلس ہے یا وہ ادھار پر راضی نہیں یا اجرتِ مثل سے بہت زائد مانگتا ہے۔

(۱۳۱ تا ۱۳۵) پہاڑ سے لگاتار پانی جھڑ رہا ہے مگر خفیف نہ دھار بندھ کر اور ریت میں جذب ہوتا جاتا ہے اس کے پاس کوئی ایسا کپڑا نہیں نہ مول ملتا ہے جسے گذرگاہِ آب پر پھیلا کر اسے اعضاء پر نچوڑ کر یا کسی برتن میں جمع کر کے وضو کرے یا خریدنے کو دام نہیں یا دوسری جگہ ہیں اور وہ ادھار نہیں دیتا یا قیمت سے بہت زیادہ مانگتا ہے یا کپڑا موجود ہے مگر اسے یوں بھگونے نچوڑنے میں ایک درم یا زیادہ کا نقصان ہے پانچوں صورتوں میں تیمم کرے۔

(۱۳۶) انہی عبارات میں گذرا کہ اگر مچھروں کے خوف سے مسہری کے اندر پردے چھوڑے ہوئے ہے اور وقت جاتا ہے تیمم سے پڑھ لے یعنی پھر اعادہ کرے اقول: مچھر پستو سے ایسی اذیت جس کے باعث ترکِ وضو و غسل کی اجازت ہو بعید ہے ہاں ڈانس کی ایذا شدید ہے۔

(۱۳۷) اقول: یو نہی اگر پانی کے پاس مہال چھتری ہوئی ہے اور انتظار میں خوفِ فوتِ وقت ہے۔

وھو داخل فی معنی مانصوا علیه من خوف سبع وحیة وان لم یدخل فی لفظه وکذا صاحبه السابق۔

درندے اور سانپ کا خوف جس کی فقہاء نے تصریح کی ہے یہ اس کے معنی کے تحت داخل ہے اگرچہ اس کے لفظ میں داخل نہیں۔ اسی طرح اس سے پہلے والی صورت۔ (ت)

(۱۳۸ تا ۱۴۱) اقول: جو پانی تک نہ جاسکتا ہو مثلاً لنگھیا یا اپاہج یا پاؤں کٹا ہوا یا مفلوج یا مریض یا نقیہ یا نہایت بوڑھا کہ چل نہیں سکتے یا اندھا جسے اٹکل نہیں یارات کو شبکور یا کمر وغیرہ کے درد کے باعث چلنے سے معذور اس کے پاس اگر نو کر یا غلام یا بیٹا پوتا کوئی ایسا نہیں جس پر اس کی خدمت لازم ہو نہ ایسا کہ اس کے

Volume Three. Fatawa Razawiya. ...that a person who brings [water] for a fee or a laborer is not willing to carry it for free, but he is unable to pay the fee, or he is able to pay but the money is elsewhere and the laborer does not agree to credit, or he asks for much more than the customary fee; then he should perform Tayammum and there is no need to repeat. Scholars have mentioned these excused individuals in the context of Friday prayer and congregational prayer. "And I have restricted the blind person to one who cannot find their way, following what Allama Shami (may Allah have mercy on him) has established." For a blind person, I have placed this condition: "one who has no sense of direction," meaning he cannot find the way himself. This condition is in accordance with the research of Allama Shami (may Allah have mercy on him). (T) I say: "Naqih (a person with extreme weakness/convalescent) is mentioned, and he is different from a sick person. Also mentioned is the 'A'sha' (night-blind) and someone who has pain in the side or other parts, such that he cannot walk with it. Rather, he is included in their count of the 'Muq'ad' (crippled) according to one of its two interpretations: that he is the one who has no movement due to a disease in his body, as if the disease has seated him. And it is said that the 'Muq'ad' is one who has spasms in his limbs." [1] Shami, from Al-Maghrib. I say: I have added all of these: Naqih (convalescent, person with extreme weakness) – this is distinct from a sick person. A night-blind person or someone unable to walk due to back pain etc., rather, in view of one interpretation of 'Muq'ad' (crippled), he is also included in the scholars' count of 'Muq'ad'. That interpretation is that 'Muq'ad' is one who cannot move due to some physical ailment, as if the ailment has forced him to sit. And it is said that a crippled person is one whose limbs experience spasms (stiffness). Shami, referencing Al-Maghrib. (T) And if one can reach the water but cannot draw/fill it due to weakness, illness, or pain in the hands etc., then this is category 'A'. (142) If a person in ritual impurity (Junub) forgets his state and enters a mosque, and then remembers, or if an I'tikaf performer was sleeping in the mosque where it is permissible for him, or for a non-mutakif (2) although it is forbidden for him, and they felt the need for a bath, these people cannot walk or stay in the mosque, nor can ritual bathing take place in the mosque. Inevitably, this becomes a state of helplessness; they should perform Tayammum immediately, even if it is from the floor or wall of the mosque, and leave immediately if they can. If there is a genuine fear for life or property in going outside, they should remain seated with Tayammum. In the case of staying, Tayammum is definitely obligatory, and anything contrary to this is neither clear nor explained. (T) (Contrary to what has been said, it is neither clear in itself nor is there any statement or proof for it. T). Regarding leaving,

many great elders consider this Tayammum to be only recommended (Mustahab) and also consider it permissible to leave immediately without Tayammum, but the most cautious path (Ahwat) is Tayammum. [1] Radd al-Muhtar, Book of Imamate, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/410. Page 479 of 756

जिल्द सोम (भाग तीन)। फ़तावा रज़विया। ...कि बोझ उठाने वाला या मज़दूर मुफ्त में लाने को तैयार न हो, लेकिन वह मज़दूरी देने में असमर्थ हो, या सामर्थ्य तो हो मगर पैसा दूसरी जगह हो और मज़दूर उधार पर राज़ी न हो, या वह प्रचलित मज़दूरी (उजरत-ए-मिसल) से बहुत अधिक मांगता हो; ऐसी स्थिति में वह तयम्मुम करे और नमाज़ लौटाने की ज़रूरत नहीं। उलेमा ने इन मजबूरों का ज़िक्र जुमा और जमाअत के बयान में फ़रमाया है। "और मैंने अंधे के लिए यह शर्त लगाई है कि वह रास्ता न पा सके, अल्लामा शामी रहमतुल्लाह अलैहि की तहक़ीक़ के इत्तेबा (अनुसरण) में।" अंधे के लिए मैंने यह शर्त लगाई है "जिसे अंदाज़ा नहीं" यानी वह खुद रास्ता तय नहीं कर पाता। यह शर्त अल्लामा शामी रहमतुल्लाह अलैहि की तहक़ीक़ के इत्तेबा में है। (त) मैं कहता हूँ: "नक़ीह (अत्यधिक कमज़ोरी वाला) का उल्लेख आया है, और वह बीमार से अलग है। इसी तरह शबकोर (रतौंधी वाला) और वह व्यक्ति जिसे पसली या किसी और अंग में दर्द हो जिसके कारण वह चल न सके। बल्कि वह उनके (उलमा के) 'मुक़अद' (अपाहिज) के शुमार (गिनती) में दाखिल है, इसकी दो तफ़्सीरों (व्याख्याओं) में से एक के अनुसार: वह ऐसा व्यक्ति है जिसके शरीर में बीमारी की वजह से कोई हरकत न हो सके, मानो बीमारी ने उसे बैठा दिया हो। और कहा गया है कि 'मुक़अद' वह है जिसके अंगों में तशन्नुज (खिंचाव/ऐंठन) पाया जाए।" [1] शामी, 'अल-मग़रिब' के हवाले से। मैं कहता हूँ: मैंने इन सब का इज़ाफ़ा (वृद्धि) किया है: नक़ीह (नक़ाहत, अत्यधिक कमज़ोरी वाला) यह बीमार से अलग है। शबकोर (रतौंधी का मरीज़) या कमर वग़ैरह के दर्द के कारण चलने से मजबूर, बल्कि 'मुक़अद' (अपाहिज) की एक तफ़्सीर के पेश-ए-नज़र उलेमा की 'मुक़अद' की गिनती में यह भी शामिल है। वह तफ़्सीर यह है कि 'मुक़अद' वह है जिसमें शरीर की किसी बीमारी की वजह से हरकत न हो, मानो बीमारी ने उसे बैठा दिया हो। और कहा गया है कि अपाहिज वह है जिसके अंगों में तशन्नुज (खिंचाव) पाया जाता हो। शामी बहवाला 'मग़रिब'। (त) और अगर पानी तक जाना संभव हो मगर कमज़ोरी या बीमारी या हाथों में दर्द वग़ैरह के कारण पानी भर न सकता हो तो यह नंबर 'ए' है। (142) किसी जुनुब (नापाक व्यक्ति) को अपना नापाक होना याद न रहा और वह मस्जिद में चला गया, अब याद आया, या मोतकिफ़ (एतिकाफ़ करने वाला) मस्जिद में सो रहा था, उसके लिए तो जायज़ है, या ग़ैर-मोतकिफ़ (2) हालांकि उसके लिए मना है, और उन्हें नहाने की ज़रूरत पेश आई, तो ये लोग न मस्जिद में चल सकते हैं, न ठहर सकते हैं और न ही मस्जिद में ग़ुस्ल (स्नान) हो सकता है। लाचार होकर यह बेबसी की सूरत हुई, वे फ़ौरन तयम्मुम करें चाहे मस्जिद की ज़मीन या दीवार से ही क्यों न हो, और तुरंत बाहर चले जाएं अगर जा सकते हों। और अगर बाहर जाने में जान या माल का पक्का अंदेशा हो तो तयम्मुम के साथ बैठे रहें। बैठने की सूरत में तयम्मुम ज़रूर वाजिब है, और इसके

विपरीत जो कहा गया है वह न तो स्पष्ट है और न ही प्रमाणित। (इसके विपरीत जो कहा गया वह न खुद स्पष्ट है न उस पर कोई बयान और दलील है। त)। और निकलने की सूरत में बहुत से बुज़ुर्ग इस तयम्मुम को केवल मुस्तहब (पसंदीदा) मानते हैं और बिना तयम्मुम के तुरंत निकल जाना भी जायज़ समझते हैं, लेकिन ज़्यादा एहतियात (अहवत) तयम्मुम करने में है। [1] रद उल-मुह्तार, बाब उल-इमामत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/410. पृष्ठ 479/756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ کہنے سے لادے نہ اجرت پر لانے والا یا اجیر ہے مگر یہ اُجرت پر قادر نہیں یا قادر ہے مگر مال دوسری جگہ اور وہ اُدھار پر راضی نہیں یا اُجرتِ مثل سے بہت زیادہ مانگتا ہے تیمم کرے اور اعادہ نہیں علماء نے ان معذوروں کا ذکر جمعہ و جماعت میں فرمایا ہے۔ وقیدت الاعمی بمن لایھتدی تبعاً لما حقق العلامۃ الشامی رحمہ اللہ تعالیٰ۔ اندھے کیلئے میں نے یہ قید لگائی "جسے اَٹکل نہیں" یعنی خود راہ نہیں طے کر پاتا۔ یہ قید علامہ شامی رحمۃ اللہ تعالیٰ کی تحقیق کے اتباع میں ہے۔(ت) اقول: وردت النقیہ وھو غیر المریض والاعشی ومن بہ وجہہ خاصرۃ اوغیرھا لایستطیع معہ المشی بل ھو داخل فی عدھم المقعد علی احد تفسیریہ انہ الذی لاحراك بہ من داء فی جسدہ کان الداء اقعدہ وقیل المقعد المتشنج الاعضاء۔ [1] ش عن المغرب۔ اقول: میں نے ان سب کا اضافہ کیا: نقیہ (نقاہت، انتہائی کمزوری والا) یہ مریض سے الگ ہے۔ شبکور (رتوندی) یا کمر وغیرہ کے درد کے باعث چلنے سے معذور بلکہ مقعد (اپاہج) کی ایک تفسیر کے پیش نظر علماء کے شمار مقعد میں یہ بھی داخل ہے وہ تفسیر یہ ہے کہ مقعد وہ ہے جس میں جسم کی کسی بیماری کی وجہ سے حرکت نہ ہو گویا بیماری نے اسے بٹھا دیا ہے۔ اور کہا گیا کہ اپاہج وہ ہے جس کے اعضاء میں تشنج (کھچاؤ) پایا جاتا ہو۔ شامی بحوالہ مغرب (ت) اور اگر پانی تک جا تو ہو سکتا ہے مگر ضعف یا مرض یا ہاتھوں میں درد وغیرہ کے باعث بھر نہیں سکتا تو یہ نمبر اے ہے۔ (۱۴۲) جنب کو جنب ہونا یاد نہ رہا مسجد میں چلا گیا اب یاد آیا یا معتکف مسجد میں سوتا تھا کہ اُسے جائز ہے یا غیر معتکف (۲) اگرچہ اُسے منع ہے اور نہانے کی حاجت ہوئی یہ لوگ نہ مسجد میں چل سکتے ہیں نہ ٹھہر سکتے ہیں نہ مسجد میں غسل ہو سکتا ہے ناچار یہ صورت عجز ہوئی فوراً تیمم کریں اگرچہ مسجد کی زمین یا دیوار سے اور معاً باہر چلے جائیں اگر جا سکتے ہوں اور اگر باہر جانے میں بدن یا مال پر صحیح اندیشہ ہے تو تیمم کے ساتھ بیٹھے رہیں بیٹھنے کی صورت

میں تیمم ضرور واجب ہے و خلافہ غیر بین ولا مبین (اس کے برخلاف جو کہا گیا وہ نہ خود واضح ہے نہ اس پر کوئی بیان و دلیل۔ت) اور نکلنے کی صورت میں بہت اکابر اس تیمم کو صرف مستحب جانتے ہیں اور فوراً بلا تیمم نکل جانا بھی جائز جانتے ہیں اور احوط تیمم ہے۔ [1] رد المحتار باب الامامۃ مصطفی البابی مصر ۱/ ۴۱۰ Page 479 of 756

Fatawa Razawiya - Volume 3

I say: In the mind of this humble servant, there are some important details here:

Firstly: In performing this tayammum, there is an order for complete haste as far as the limit of possibility allows. Whichever method results in the fastest completion of tayammum, its performance is obligatory (wajib), and even the slightest delay is impermissible. Delay is only permitted for the duration necessary for him to perform tayammum. Delaying tayammum for even a single moment is not allowed, because during that time, staying in the mosque in a state of ritual impurity (janabat) without necessity would occur, and this is haram (forbidden). Therefore, for example, if a vessel containing earth is near his hand and the wall is a step away, it is obligatory for him to perform tayammum immediately from that vessel. If the wall is near and the vessel is far or non-existent, then if there is no flooring where he is sitting in the mosque, the relationship between the mosque ground and the wall will be considered. If it is adjacent to the wall such that he only needs to extend his hand, he has the choice to perform tayammum from the wall or the ground. And if he has to move even slightly towards the wall, he should perform tayammum specifically from the mosque ground and not go towards the wall. If there is flooring in the mosque, he should reach the wall or remove the flooring, whichever can be done faster.

Secondly: This tayammum was for exiting the mosque because, just as staying in the mosque in a state of ritual impurity is haram, similarly, in our view, walking in it is also haram. Now that he has performed tayammum, he should exit immediately. If there are several doors in the mosque, he should choose the closest door. During this exit, and even after going outside the mosque, he cannot recite any verse with this tayammum, because this tayammum, despite having the capability to use water, was solely for the purpose of exiting the mosque. However, if there is a genuine fear for life, property, or honor in going outside, he may stay in the mosque with this same tayammum, but he cannot perform prayer (salah) or recitation. For those, he must perform tayammum again with their respective intentions.

Thirdly: The command for tayammum to exit, whether obligatory or recommended, should apply when one is not at the very edge of the mosque such that he would exit in the very first step. For example, if he was sleeping adjacent to a door, a room, or the area in front of a room and had a nocturnal emission (ihtilam), or if he forgot his state of impurity and had only taken one step into the mosque. In these cases, he should immediately take one step and exit, as this exit will not be considered as

"passing through the mosque," whereas staying for tayammum would mean remaining in the mosque in a state of ritual impurity. This is what I have, and Allah Almighty knows best.

It is stated in Fatawa Imam Qazi Khan:

Arabic Text: كان الرجل في المسجد فغلبه النوم واحتلم تكلموا فيه قال بعضهم لا يباح له الخروج قبل التيمم وقال بعضهم يباح اهـ Urdu Translation from Page: "A man was in a mosque when sleep overcame him and he had a nocturnal emission. The scholars have discussed this. Some said it is not permissible for him to exit before tayammum, and some said [it is permissible]."

---

1. Fatawa Qazi Khan, section on what is permissible for tayammum, printed by Naval Kishore, Lucknow, 1/31.

फ़तावा रज़विया - जिल्द सोम

अक़ूल (मैं कहता हूँ): फ़क़ीर (मुसन्निफ़) के ज़हन में यहाँ कुछ अहम तफ़्सीलें हैं:

अव्वलन: इस तयम्मुम को करने में जहाँ तक इमकान (संभावना) की हद हो, कामिल जल्दी करने का हुक्म है। तो जो सूरत जल्द से जल्द तयम्मुम हो जाने की हो, उसे बजा लाना वाजिब है और ज़रा सी ताख़ीर (देरी) भी ना-जायज़ है क्योंकि ज़रूरत के तहत उसे उतनी ही देर रुकने की इजाज़त हुई है जिसमें वह तयम्मुम कर सके। एक लम्हा भी तयम्मुम करने में ताख़ीर रवा (जायज़) नहीं क्योंकि उतनी देर बिना ज़रूरत हालत-ए-जनाबत में मस्जिद में ठहरना होगा और यह हराम है। लिहाज़ा अगर उसके हाथ के पास मिसाल के तौर पर कोई मिट्टी का बर्तन रखा है और दीवार एक क़दम दूर है, तो वाजिब है कि उसी बर्तन से फ़ौरन तयम्मुम कर ले। और अगर दीवार क़रीब है और बर्तन दूर है या है ही नहीं, तो अगर मस्जिद में जहाँ वह बैठा है फ़र्श नहीं है तो ज़मीन-ए-मस्जिद और दीवार में निस्बत (तुलना) देखी जाएगी। अगर दीवार से मुत्तसिल (सटा हुआ) है कि सिर्फ़ हाथ बढ़ाना होगा तो इख़्तियार है कि दीवार से तयम्मुम करे या ज़मीन से। और अगर दीवार तक भी सरकना होगा तो ख़ास ज़मीन-ए-मस्जिद से तयम्मुम करे, दीवार तक न जाए। और अगर मस्जिद में फ़र्श है तो दीवार तक पहुँचना या उस फ़र्श का हटाना जो जल्द हो सके वह करे।

सानियन (दूसरे): यह तयम्मुम मस्जिद से निकल जाने के लिए था क्योंकि हालत-ए-जनाबत में जिस तरह मस्जिद में ठहरना हराम है, वैसे ही हमारे नज़दीक उसमें चलना भी हराम है। अब जब कि तयम्मुम कर चुका, फ़ौरन निकल जाए। और अगर मस्जिद में कई दरवाज़े हैं तो वह दरवाज़ा इख़्तियार करे जो सब से क़रीब हो। इस निकलने में ख़्वाह मस्जिद से बाहर जाकर इस तयम्मुम से किसी आयत की तिलावत नहीं कर सकता क्योंकि यह तयम्मुम, पानी पर क़ुदरत के बावजूद, महज़ मस्जिद से निकलने (ख़ुरूज) के लिए था। हाँ अगर बाहर जाने में जान या माल या आबरू का सही अंदेशा (ख़तरा) हो तो इसी तयम्मुम से मस्जिद में ठहरा रहे, मगर नमाज़ और तिलावत नहीं कर सकता, उनके लिए दोबारा उनकी नियत से तयम्मुम करना होगा।

सालिसन (तीसरे): निकलने के लिए तयम्मुम का हुक्म वुजूबन ख़्वाह इस्तिहबाबन उस सूरत में होना चाहिए जब कि ऐन किनारे मस्जिद पर न हो कि पहले ही क़दम में ख़ारिज (बाहर) हो जाएगा, जैसे दरवाज़े या हुजरे या ज़ीन-ए-पेश-ए-हुजरा के मुत्तसिल सोता था और एहतिलाम हुआ या जनाबत याद न रही और मस्जिद में एक ही क़दम रखा था। इन सूरतों में फ़ौरन एक क़दम रखकर बाहर हो जाए

कि इस ख़ुरूज में 'मुरूर फ़िल मस्जिद' (मस्जिद से गुज़रना) न होगा और जब तक तयम्मुम पूरा न हो हालत-ए-जनाबत में मस्जिद में ठहरना रहेगा। यह वह है जो मेरे नज़दीक है और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ान में है:

अरबी इबारत: كان الرجل في المسجد فغلبه النوم واحتلم تكلموا فيه قال بعضهم لا يباح له الخروج قبل التيمم وقال بعضهم يباح اهـ। उर्दू अनुवाद (सफ़हे से): आदमी मस्जिद में था कि उसे नींद आ गई और एहतिलाम हो गया, इस बारे में उलमा ने कलाम किया है। बाज़ ने कहा तयम्मुम से पहले उसके लिए निकलना जायज़ नहीं, और बाज़ ने कहा [जायज़ है]।

---

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, फ़स्ल फ़ीमा यजूज़ु लहुत तयम्मुम, मतबुआ नवल किशोर लखनऊ, 1/31.

सफ़हा 480 / 756

اقول: ذہن فقیر میں یہاں بعض اہم تفصیلیں ہیں:

اولاً: اس تیمم کے کرنے میں جہاں تک حد امکان ہو تعجیل تام کا حکم ہے تو جو صورت جلد سے جلد تیمم ہو جانے کی ہو اُس کا بجالانا واجب اور ادنیٰ تاخیر ناجائز کہ بضرورت اتنی ہی دیر اسے توقف کی اجازت ہوئی ہے جس میں تیمم کر سکے ایک لحظہ بھی تیمم کرنے میں تاخیر روانہیں کہ اتنی دیر بلا ضرورت بحال جنابت مسجد میں ٹھہرنا ہو گا اور یہ حرام ہے لہٰذا اگر اس کے ہاتھ کے پاس مثلاً کوئی مٹی کا برتن رکھا ہے اور دیوار قدم بھر دُور ہے تو واجب کہ اسی برتن سے فوراً تیمم کرلے اور اگر دیوار قریب اور برتن دُور ہے یا ہے ہی نہیں تو اگر مسجد میں جہاں یہ بیٹھا ہے فرش نہیں تو زمینِ مسجد و دیوار میں نسبت دیکھی جائے گی اگر دیوار سے متصل ہے کہ صرف ہاتھ بڑھانا ہوگا تو اختیار ہے دیوار سے تیمم کرے یا زمین سے اور اگر دیوار تک بھی سرکنا ہوگا تو خاص زمینِ مسجد سے تیمم کرے دیوار تک نہ جائے اور اگر مسجد میں فرش ہے تو دیوار تک پہنچنا یا اُس فرش کا ہٹانا جو جلد ہوسکے وہ کرے۔

ثانیاً: یہ تیمم مسجد سے نکل جانے کیلئے تھا کہ بحال جنابت جس طرح مسجد میں ٹھہرنا حرام ہے یوں ہی ہمارے نزدیک اُس میں چلنا بھی حرام ہے اب کہ تیمم کر چکا فوراً نکل جائے اور اگر مسجد میں چند دروازے ہیں تو وہ دروازہ اختیار کرے جو قریب تر ہو اس نکلنے میں خواہ مسجد سے باہر جا کر اس تیمم سے کسی آیت کی تلاوت نہیں کر سکتا کہ یہ تیمم باوصف قدرتِ آب محض خروج عن المسجد کے لئے تھا ہاں اگر باہر جانے میں جان یا مال یا آبرو کا صحیح اندیشہ ہو تو اسی تیمم سے مسجد میں ٹھہر رہے مگر نماز (۴) و تلاوت نہیں کر سکتا اُن کیلئے دوبارہ ان کی نیت سے تیمم کرنا ہوگا۔

ثالثاً: نکلنے کیلئے تیمم کا حکم وجوباً خواہ استحباباً اس صورت میں ہونا چاہئے جبکہ عینِ کنارہ مسجد پر نہ ہو کہ پہلے ہی قدم میں خارج ہو جائے گا جیسے دروازے یا حجرے یا زینِ پیشِ حجرہ کے متصل سوتا تھا اور احتلام ہوا یا جنابت (۵) یاد نہ رہی اور مسجد میں ایک ہی قدم رکھا تھا ان صورتوں میں فوراً ایک قدم رکھ کر باہر ہو جائے کہ اس خروج میں مرور فی المسجد نہ ہوگا اور جب تک تیمم پورا نہ ہو بحال جنابت مسجد میں ٹھہرنا رہے گا۔ ھذا ما عندی واللہ تعالیٰ اعلم۔

فتاویٰ امام قاضی خان میں ہے:

عربی عبارت: كان الرجل في المسجد فغلبه النوم واحتلم تكلموا فيه قال بعضهم لا يباح له الخروج قبل التيمم وقال بعضهم يباح اھ صفحہ پر اردو ترجمہ: آدمی مسجد میں تھا کہ اسے نیند آگئی اور احتلام ہو گیا اس کے بارے میں علماء نے کلام کیا ہے بعض نے کہا تیمم سے پہلے اس کیلئے نکلنا جائز نہیں۔ اور بعض نے کہا

---

1 فتاویٰ قاضیخان فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱ / ۳۱

Fatawa Razawiyya, Volume Three

(Arabic Column): In *Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar*, then in *Al-Shalbiyah*: "A person slept in the mosque and then became in a state of ritual impurity (janaba); it was said that it is not permissible for him to leave until he performs dry ablution (tayammum), and it was also said that it is permissible." [1] End. In the section on tayammum in *Al-Bahr*, citing *Al-Muhit* [footnote aa]: "If ritual impurity occurs in the mosque, it was said that it is not permissible for him to leave without tayammum, as a comparison to entering. It was also said that it is permissible because leaving cleanses the mosque from impurity, whereas entering would pollute it." [2] End. He referred its complete explanation to the chapter on menstruation and said there: "In *Munyat al-Musalli*: If a nocturnal emission occurs in the mosque, one should perform tayammum to leave if there is no fear. If there is fear, one should remain with tayammum, neither praying nor reciting." End. It was explicitly stated in *Al-Dhakhira* that this tayammum is recommended (mustahabb), but the apparent meaning of what we previously cited from *Al-Muhit* in the chapter of tayammum is that it is obligatory (wajib). Furthermore, it is apparent that 'fear' refers to the fear of harm to one's body or property, such as at night. [3] End of his words in full.

(Urdu Column): ...is permissible. End. In *Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar*, then in *Al-Shalbiyah*: "He slept in the mosque and then encountered ritual impurity; it was said that until he performs tayammum, it is not permissible for him to leave. And it was said that it is permissible." End. In the chapter of tayammum of *Al-Bahr al-Ra'iq*, with reference to *Al-Muhit*: "If someone encounters ritual impurity in the mosque, it was said that leaving without tayammum is not permissible for him, just as entering the mosque without tayammum is not permissible for an impure person. The second saying is that leaving without tayammum is also permissible because leaving purifies and cleanses the mosque from impurity, while entering would make it impure. Therefore, comparing the ruling for leaving to that of entering is incorrect. End. (T)" *Al-Bahr* gave a reference that its full explanation is in the chapter on menstruation. There it is written in *Munyat al-Musalli*: "If nocturnal emission occurs in the mosque, one should perform tayammum to leave if there is no fear. If there is a situation of fear, one should perform tayammum and remain seated, neither praying nor reciting from it." End. And in *Al-Dhakhira*, it is explicitly stated that this tayammum is recommended, and the apparent meaning of what we have already mentioned from *Al-Muhit* in the chapter of tayammum is that it is obligatory. Furthermore, it is

apparent that 'fear' refers to the fear of any harm reaching the body or property, for example, of the night.

(Footnote Divider): [aa] i.e., Al-Razawi as becomes apparent from referring to *Al-Hilya*, may he be forgiven. | i.e., *Muhit-e-Razawi* as becomes known by seeing *Al-Hilya*, 12 [date code], may he be forgiven. (T) (M)

(Citations): 1. *Hashiyat al-Shalbiyah* with *at-Tayammumayn*, Chapter on Menstruation, Bulaq, Egypt, 1/56. 2. *Al-Bahr al-Ra'iq*, Chapter on Tayammum, under the statement "Even if impure or menstruating", H.M. Saeed Company, Karachi, 1/72. 3. *Al-Bahr al-Ra'iq*, Chapter on Menstruation, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/196.

फतावा रज़विया, जिल्द 3

(अरबी कॉलम): अल-इख़्तियार शरह अल-मुख़्तार, फिर अल-शलबिया में है: "मस्जिद में सो गया फिर उसे जनाबत (अशुद्धि) लाहिक हुई, कहा गया जब तक तयम्मुम न करे उसके लिए निकलना जायज़ नहीं। और कहा गया कि जायज़ है।" [1] अंत। अल-बहर के बाब (अध्याय) तयम्मुम में मुहीत [फुटनोट अअ] के हवाले से है: "मस्जिद में जनाबत लाहिक हुई तो कहा गया कि बग़ैर तयम्मुम उसके लिए निकलना जायज़ नहीं, दाख़िल होने के नियम के आधार पर। और कहा गया कि जायज़ है क्योंकि निकलने में मस्जिद को नजासत (गंदगी) से पाक करना है जबकि दाख़िल होने में उसे नजासत से आलूदा (गंदा) करना होता है।" [2] अंत। उन्होंने इसका पूरा विवरण हैज़ (मासिक धर्म) के अध्याय पर छोड़ दिया और वहाँ कहा: "मुन्यत अल-मुसल्ली में है: अगर मस्जिद में एहतलाम (स्वप्नदोष) हो जाए, तो निकलने के लिए तयम्मुम करे अगर कोई डर न हो। और अगर डर हो, तो तयम्मुम के साथ बैठा रहे, न नमाज़ पढ़े न तिलावत करे।" अंत। अल-ज़ख़ीरा में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह तयम्मुम मुस्तहब (पसंदीदा) है, लेकिन तयम्मुम के अध्याय में मुहीत से हमने जो पहले उल्लेख किया है, उसका ज़ाहिर अर्थ यह है कि यह वाजिब (अनिवार्य) है। इसके अलावा, ज़ाहिर यह है कि 'डर' से तात्पर्य शरीर या संपत्ति को होने वाले किसी नुकसान का डर है, जैसे कि रात में। [3] उनके शब्दों का अंत।

(उर्दू कॉलम): ...जायज़ है अंत। अल-इख़्तियार शरह अल-मुख़्तार, फिर अल-शलबिया में है: "मस्जिद में सो गया फिर उसे जनाबत लाहिक हुई, कहा गया जब तक तयम्मुम न करे उसके लिए निकलना जायज़ नहीं। और कहा गया कि जायज़ है।" अंत। अल-बहर अल-राइक़ के बाब तयम्मुम में मुहीत के हवाले से है: "किसी को मस्जिद में जनाबत लाहिक हुई तो कहा गया कि बग़ैर तयम्मुम उसके लिए निकलना जायज़ नहीं जैसे जुनबी (अशुद्ध व्यक्ति) के लिए बग़ैर तयम्मुम मस्जिद में दाख़िल होना जायज़ नहीं। दूसरा क़ौल यह है कि निकलना बग़ैर तयम्मुम के भी जायज़ है क्योंकि निकलने में मस्जिद को नजासत से ख़ाली और मुनज़्ज़ह (पवित्र) करना होगा जबकि दाख़िल होने में उसे नजासत से आलूदा करना होगा। इसलिए खुरूज (निकलने) के हुक्म की दुख़ूल (दाख़िल होने) पर तुलना करना सही नहीं है। अंत (त)" बहर ने हवाला दिया कि इसका पूरा वर्णन बाब अल-हैज़ में है। वहाँ यह लिखा है मुन्यत अल-मुसल्ली में है: अगर मस्जिद में एहतलाम हुआ तो निकलने के लिए तयम्मुम करे अगर कोई ख़ौफ़ न हो, और ख़ौफ़ की स्थिति हो तो तयम्मुम करके बैठा रहे, इससे न नमाज़ पढ़े न तिलावत करे। अंत। और ज़ख़ीरा में तसरीह (स्पष्टता) है कि यह तयम्मुम मुस्तहब है,

और मुहीत के हवाले से बाब अल-तयम्मुम में हम जो ज़िक्र कर चुके हैं, उसका ज़ाहिर यह है कि वाजिब है। फिर ज़ाहिर यह है कि ख़ौफ़ से मुराद बदन या माल को कोई नुकसान पहुँचने का ख़ौफ़ है, उदाहरण के लिए रात का।

(फुटनोट विभाजक): [अअ] यानी अल-रज़वी जैसा कि अल-हिल्या के संदर्भ से प्रकट होता है, उन्हें क्षमा किया जाए। | यानी मुहीत-ए-रज़वी जैसा कि हिल्या देखने से पता चलता है, 12 [तिथि कोड], उन्हें क्षमा किया जाए। (त) (म)

(संदर्भ): 1. हाशिया शलबिया मअ अत-तयम्मुमईन, बाब अल-हैज़, बुलाक़ मिस्र 56/1. 2. अल-बहर अल-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, कलाम "व लौ जुनबन औ हइज़ान", एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/72. 3. अल-बहर अल-राइक़, बाब अल-हैज़, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/196.

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

(عربی کالم): وفی الاختیار شرح المختار ثم الشلبیۃ نام فی المسجد فاجنب قیل لایباح لہ الخروج حتی یتیمم وقیل یباح۱۸ اھ وفی تیَمم البحر عن المحیط عہ اصابتہ الجنابۃ فی المسجد قیل لایباح لہ الخروج من غیر تیمم اعتبارا بالدخول وقیل یباح لان فی الخروج تنزیہ المسجد عن النجاسۃ وفی الدخول تلویثہ بھا۲۸ اھ واحال تمامہ علی الحیض وقال ثمہ وفی منیۃ المصلی ان احتلم فی المسجد تیمم للخروج اذالم یخف وان خاف یجلس مع التیمم ولا یصلی ولا یقرأ اہ وصرح فی الذخیرۃ ان ھذا التیمم مستحب وظاھر ما قدمناہ فی التیمم عن المحیط انہ واجب ثم الظاھر ان المراد بالخوف الخوف من لحوق ضرر بہ بدنا او مالا کان یکون لیلا۳۸ اھ کلامہ وھو برمتہ

(اردو کالم): جائز ہے اھ اختیار شرح مختار پھر شلبیہ میں ہے: "مسجد میں سو گیا پھر اسے جنابت لاحق ہوئی، کہا گیا جب تک تیمم نہ کرے اس کیلئے نکلنا جائز نہیں۔ اور کہا گیا کہ جائز ہے " اھ البحر الرائق کے باب تیمم میں محیط کے حوالہ سے ہے: "کسی کو مسجد میں جنابت لاحق ہوئی تو کہا گیا کہ بغیر تیمم اس کیلئے نکلنا جائز نہیں جیسے جنبی کیلئے بغیر تیمم مسجد میں داخل ہونا جائز نہیں۔ دوسرا قول یہ ہے کہ نکلنا بغیر تیمم کے بھی جائز ہے اس لئے کہ نکلنے میں مسجد کو نجاست سے خالی اور منزہ کرنا ہو گا جب کہ داخل ہونے میں اسے نجاست سے آلودہ کرنا ہوگا اس لئے حکم خروج کا دخول پر قیاس درست نہیں اھ (ت) بحر نے حوالہ دیا کہ اس کا پورا بیان باب الحیض میں ہے۔ وہاں یہ لکھا ہے منیۃ المصلی میں ہے: اگر مسجد میں احتلام ہوا تو نکلنے کیلئے تیمم کرے اگر کوئی خوف نہ ہو، اور خوف کی صورت ہو تو تیمم کرکے بیٹھا رہے اس سے نہ نماز پڑھے نہ تلاوت کرے اھ اور ذخیرہ میں تصریح ہے کہ یہ تیمم مستحب ہے اور محیط کے

حوالہ سے باب التیمم میں ہم جو ذکر کر چکے ہیں اس کا ظاہر یہ ہے کہ واجب ہے۔ پھر ظاہر یہ ہے کہ خوف سے مراد بدن یا مال کو کوئی ضرر پہنچنے کا خوف ہے مثلاً رات کا

(حاشیہ لائن): عہ یعنی الرضوی کما یظھر بمراجعۃ الحلیۃ منہ غفرلہ | یعنی محیط رضوی جیسا کہ حلیہ دیکھنے سے پتا چلتا ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت) (م)

(حوالہ جات): 1 حاشیۃ شلبیۃ مع التیمین باب الحیض بولاق مصر ۱/۵۶ 2 البحر الرائق باب التیمم عند قولہ ولو جنباً او حائضاً ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۲ 3 البحر الرائق باب الحیض ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۹۶

Fatawa Rizwia - Volume 3

(Left Column - Arabic/Urdu Mixed Text): Taken from Al-Hilya except for the word 'Az-Zahir' (Apparent). For he presented the discourse of Al-Muhit and attributed similar to it to Al-Khaniya, then said: "And this is explicit (Sarih) that the disagreement is regarding permissibility (Ibaha)." 1 اھ. I say: And it is as you see, there is no doubt in it, so I do not know why he substituted 'As-Sarih' (Explicit) with 'Az-Zahir' (Apparent), even though his brother, the Investigator (Al-Mudaqqiq), followed him in An-Nahr, then Abu Al-Su'ud on Miskin, then 'Ta' on Ad-Durr. This—and he said in Al-Hilya under the aforementioned text: "This is the saying of some among the Mashaikh, and according to this sayer, Tayammum is recommended in both cases as stated explicitly in Adh-Dhakheerah اھ." Then he mentioned what is in Al-Muhit and Al-Khaniya and that it is explicit that the disagreement is regarding permissibility. He said: "Then what is apparent (Az-Zahir) is that it (i.e., permissibility) is more appropriate, as is not hidden from the contemplative one, if Allah wills. If you say: rather it is determined by what is in the Sahihayn from Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him) who said: 'The prayer was established and the rows were straightened, then the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) came out to us. When he stood at his place of prayer, he remembered that...'

(Right Column - Urdu Translation): ...be the time." اھ End of quote from Bahr. Except for the word "Zahir" (apparent), all of this discourse is taken from Hilya, because in it, he cited the text of Muhit and also gave the reference that the same is in Khaniya. Then he wrote: "This is explicit in this matter that the disagreement is regarding permissibility." اھ (T) I say: And in reality, there is no doubt about it as is evident from the texts. Then it is not known why the author of Bahr used the word 'Sarih' instead of the word 'Zahir', even though in this, his brother the investigator followed him in An-Nahr al-Faiq, then Abu as-Su'ud in the marginalia of Mulla Miskin, then Tahtawi in the marginalia of Durr al-Mukhtar. (T) In Hilya, under the mentioned text of the original: "This is the saying of some among the Mashaikh, and according to this sayer, Tayammum is recommended in both situations as it is explicitly stated in Dhakheera اھ." Then he mentioned the point of Muhit and Khaniya and that it is explicit in this matter that the disagreement is regarding permissibility. He wrote: "Then it appears that it (i.e., permissibility) itself is more appropriate as it will not be hidden from someone who reflects, God willing. If you say that permissibility and allowedness is determined, because it is narrated in Sahihayn from Hazrat Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him). He says: 'The call for prayer was given and

the rows were straightened, then the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) graced us with his presence. When he stood at the place of prayer...'

Page 482 of 756 1 Hilya

(बायाँ कॉलम - अरबी): 'अल-हिल्या' से लिया गया है सिवाय 'अज़-ज़ाहिर' (स्पष्ट) शब्द के। क्योंकि उन्होंने 'अल-मुहीत' के शब्दों का उल्लेख किया और 'अल-खानिया' के लिए भी इसी तरह का श्रेय दिया, फिर कहा: "और यह स्पष्ट (सरीह) है कि असहमति अनुमति (इबाह) के संबंध में है" १ هـ।। मैं कहता हूँ: और यह वैसा ही है जैसा आप देख रहे हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। मुझे नहीं पता कि उन्होंने 'अस-सरीह' को 'अज़-ज़ाहिर' से क्यों बदल दिया, भले ही उनके भाई, अन्वेषक (अल-मुदक़्क़िक) ने 'अन-नहर' में उनका अनुसरण किया, फिर अबू अस-सुऊद ने 'मिस्कीन' पर, फिर 'ता' ने 'अद-दुर्र' पर। यह—और उन्होंने 'अल-हिल्या' में उल्लिखित पाठ के तहत कहा: "यह कुछ मशाइख़ का विचार है, और इस विचार के अनुसार तयम्मुम दोनों मामलों में मुस्तहब (अनुशंसित) है जैसा कि 'अज़-ज़खीरा' में स्पष्ट रूप से कहा गया है هـ।।" फिर उन्होंने 'अल-मुहीत' और 'अल-खानिया' में जो है उसका उल्लेख किया और यह कि यह स्पष्ट है कि असहमति अनुमति के बारे में है। उन्होंने कहा: "फिर जो स्पष्ट (अज़-ज़ाहिर) है वह यह है कि वह (यानी अनुमति) अधिक उपयुक्त है, जैसा कि चिंतनशील व्यक्ति से छिपा नहीं है, इंशा अल्लाह ताआला। यदि आप कहें: बल्कि यह सहीहैन में अबू हुरैरा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से जो है उसके द्वारा निर्धारित है, जिन्होंने कहा: 'नमाज़ कायम की गई और सफ़ें सीधी की गईं, फिर अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और कृपा हो) हमारे पास आए। जब वह अपने नमाज़ के स्थान पर खड़े हुए, तो उन्हें याद आया कि...'

(दायाँ कॉलम - उर्दू): ...वक्त हो।" هـ। बह्र की इबारत समाप्त हुई। सिवाय शब्द 'ज़ाहिर' के, यह सारा कलाम हिल्या से लिया गया है क्योंकि इसमें मुहीत की इबारत नक़्ल की है और यह भी हवाला दिया है कि इसी के समान खानिया में है। फिर लिखा है कि "यह इस बारे में सरीह है कि इख़्तिलाफ़ जवाज़ (अनुमति) में है" هـ। (त)। मैं कहता हूँ: और वास्तविकता में इसमें कोई संदेह नहीं जैसा कि इबारतों से स्पष्ट है। फिर मालूम नहीं क्यों बह्र के लेखक ने शब्द सरीह की जगह शब्द ज़ाहिर इस्तेमाल किया हालांकि इसमें उनके भाई मुदक़्क़िक ने 'अन-नहर अल-फ़ाइक़' में, फिर अबू अस-सुऊद ने 'मुल्ला मिस्कीन' के हाशिए में, फिर तहतावी ने 'दुर्र-ए-मुख्तार' के हाशिए में उनका अनुसरण किया है। (त) हिल्या में मूल के उक्त इबारत के तहत है: "यह मशाइख में से कुछ का कहना है और इस कहने वाले के निकट तयम्मुम दोनों ही सूरतों में मुस्तहब है जैसा कि ज़खीरा में इसकी तस्दीक है هـ।"। फिर मुहीत और खानिया की बात बयान की है और यह कि इस बारे में सरीह है कि इख़्तिलाफ़ जवाज़ में

है। लिखा है: "फिर ज़ाहिर यह है कि वह (यानी इबाहत) ही ज़्यादा मुनासिब है जैसा कि ग़ौर करने वाले पर छिपा न होगा इंशा अल्लाह ताआला। अगर यह कहो कि जवाज़ और इबाहत ही मुतअय्यन (निर्धारित) है, क्योंकि सहीहैन में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है। वह फ़रमाते हैं: 'नमाज़ की इक़ामत हुई और सफ़ें बराबर की गईं, फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए जब जाए नमाज़ पर खड़े...'

(بایاں کالم): مأخوذ عن الحلیة الالفظ الظاهر فأنه اورد کلام المحیط وعزامثله للخانیة ثم قال وهذا صریح في ان الخلاف في الاباحة ۱ اهـ. اقول: وهو (۱) کما تری لا شبهة فیه فلا ادری لم بدل الصریح بالظاهر وان تبعه فیه اخوه المدقق في النهر ثم ابو السعود علی مسکین ثم ط علی الدر هذا۔ وقال في الحلیہ تحت قول المتن المذکور ہذا قول بعض المشائخ والتیمم عند ہذا القائل مستحب فی الفصلین کما صرح بہ فی الذخیرۃ اھ ثم ذکر ما فی المحیط والخانیۃ وانہ صریح فی ان الخلاف فی الاباحۃ قال ثم الظاہر انہا (ای الاباحۃ) الاشبہ کما ہو غیر خاف عن المتامل ان شاء اللہ تعالٰی فان قلت بل یتعین لما فی الصحیحین عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ قال اقیمت الصلاۃ وعدلت الصفوف فخرج الینا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فلما قام فی مصلاہ ذکر انہ

(دایاں کالم): وقت ہو " اھ بحر کی عبارت ختم ہوئی۔ سوائے لفظ "ظاہر" کے یہ سارا کلام حلیہ سے ماخوذ ہے اس لئے کہ اس میں محیط کی عبارت نقل کی ہے اور یہ بھی حوالہ دیا ہے کہ اسی کے مثل خانیہ میں ہے پھر لکھا ہے کہ "یہ اس بارے میں صریح ہے کہ اختلاف جواز میں ہے" اھ (ت) اقول: اور واقعہ اس میں کوئی شبہ نہیں جیسا کہ عبارتوں سے عیاں ہے۔ پھر نہ معلوم کیوں صاحب بحر نے لفظ صریح کی جگہ لفظ ظاہر استعمال کیا اگرچہ اس میں ان کے برادر مدقق نے النہر الفائق میں پھر ابو السعود نے حاشیہ ملا مسکین میں پھر طحطاوی نے حاشیہ درمختار میں ان کی پیروی کی ہے۔ (ت) حلیہ میں متن کی مذکورہ عبارت کے تحت ہے: "یہ مشائخ میں سے بعض کا قول ہے اور اس قائل کے نزدیک تیمم دونوں ہی صورتوں میں مستحب ہے جیسا کہ ذخیرہ میں اس کی تصریح ہے" اھ پھر محیط اور خانیہ کی بات بیان کی ہے اور یہ کہ اس بارے میں صریح ہے کہ اختلاف جواز میں ہے۔ لکھا ہے: "پھر ظاہر یہ ہے کہ وہ (یعنی اباحت) ہی زیادہ مناسب ہے

جیسا کہ غور کرنے والے پر مخفی نہ ہوگا ان شاء اللہ تعالیٰ۔ اگر یہ کہو کہ جواز واباحت ہی متعین ہے، اس لئے کہ صحیحین میں حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے۔ فرماتے ہیں: "نماز کی اقامت ہوئی اور صفیں برابر کی گئیں پھر رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تشریف لائے جب جائے نماز پر کھڑے

صفحہ ۴۸۲ از ۷۵۶ ۱ حلیہ

Fatawa Rizvia Volume 3

[Right Column - Urdu Commentary]: ...they became aware, then the Holy Prophet (PBUH) remembered that he was in a state of Janaba (ritual impurity). He said, "You people stay in your places." Then he went back, performed Ghusl (ritual bath), then came back while water was dripping from his head. Then he said the Takbir and we performed the prayer with the Holy Prophet. This is because it is apparent that the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, did not perform Tayammum (dry ablution) to exit the mosque; otherwise, Hazrat Abu Hurairah, may Allah be pleased with him, would have narrated it. And since he did not perform Tayammum for this action, the Holy Prophet's exiting without Tayammum was permissible and lawful, and this is what we also aim to prove. The answer to this is that for the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him, entering and staying in the mosque in the state of Janaba was specifically permissible for him. (End). This is a summary of the discourse of the researcher [Imam] Halabi, may Allah Almighty have mercy on him. (T)

I say: Subhan Allah (Glory be to Allah). How can staying in the mosque without Tayammum be permissible for one in a state of Janaba, while this is prohibited by consensus (ijma)? If a person in fear is unable to leave and perform Ghusl, then they have the option of performing Tayammum. Since Tayammum is a valid purification in the absence of water, permitting staying in the mosque in a state of Janaba while being capable of purification is something that contradicts Sharia principles and rules, even if it has been asserted in Fatawa Tatarkhaniya. Referring to it, it is stated in Al-Hindiyya: "If a person in a state of Janaba or a menstruating woman fears a predatory animal, a thief, or the cold, there is no harm in staying inside the mosque, and for the honor of the mosque..."

[Left Column - Arabic Original Source]: [He was] Junub (ritually impure), so he said to us, "Stay in your places." Then he went back and took a ritual bath (Ghusl), then came out to us with water dripping from his head. He then said the Takbir (Allahu Akbar) and we prayed with him. It is apparent that he, peace and blessings of Allah be upon him, did not perform Tayammum to leave the mosque; otherwise, Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) would have narrated it. Since he did not perform Tayammum for it, exiting from it without Tayammum was permissible, which is the point. I say: Indeed, it was permissible for him, peace and blessings of Allah be upon him, to enter and stay in the mosque while in a state of Janaba. (1) (End). This is the complete summary of his discourse, may Allah Almighty have mercy on him.

I say: Subhan (1) Allah, how can staying in the mosque without Tayammum be permissible for one in a state of Janaba, while it is prohibited by consensus? And if a fearful person is unable to exit and perform Ghusl, then he has the option of Tayammum. Tayammum is a valid purification in the case of inability to use water. Thus, permitting staying in the mosque in a state of Janaba despite having the ability to purify is something that contradicts Sharia rules, even if it was asserted in Al-Tatarkhaniya as well. Citing it, it is in Al-Hindiyya: If one in a state of Janaba or a menstruating woman fears a predator, a thief, or cold, there is no harm in staying in it, and it is better to perform Tayammum out of respect for the mosque (2). (End). Nay, and in...

Footnotes: 1. Hilya 2. Fatawa Hindiyya, Chapter Four: On the Rulings of Menstruation, etc., Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/38. Page 483 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[दाहिने कॉलम का पाठ - उर्दू व्याख्या]: ...हो गए तो हुज़ूर को याद आया कि वह जनाबत (अपवित्रता) की हालत में हैं, फ़रमाया: "तुम लोग अपनी जगह रहो।" फिर वापस तशरीफ़ ले गए, ग़ुस्ल फ़रमाया फिर तशरीफ़ लाए और सर से पानी टपक रहा था फिर तकबीर कही और हमने हुज़ूर के साथ नमाज़ अदा की।" इसलिए कि ज़ाहिर यह है कि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मस्जिद से निकलने के लिए तयम्मुम न फ़रमाया वरना हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इसे बयान करते। और जब इस काम के लिए तयम्मुम न फ़रमाया तो हुज़ूर का बिला तयम्मुम निकलना जायज़ व मुबाह (वैध) हुआ और हम भी यही साबित करना चाहते हैं। इसका जवाब यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए बहालते-जनाबत मस्जिद में दाख़िल होना और ठहरना मुबाह था।" इह (यहाँ समाप्त)। यह सब मुहक़्क़िक़ हलबी रहमतुल्लाह तआला के कलाम का सारांश है। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): सुब्हान अल्लाह। साहिबे-जनाबत के लिए बिला तयम्मुम मस्जिद में ठहरना क्योंकर जायज़ होगा जबकि यह बिल-इज्माअ (सर्वसम्मति से) हराम है। ख़ौफ़ वाला अगर निकलने और ग़ुस्ल करने से आजिज़ हो तो उसके लिए तयम्मुम की इजाज़त है। और पानी से आजिज़ होने के समय तयम्मुम तहारते-सहीहा (वैध शुद्धिकरण) है, तो तहारत पर क़ुदरत के बावजूद मस्जिद में बहालते-जनाबत ठहरने को जायज़ करार देना ऐसी बात है जिससे शरई उसूल व क़वाइद मेल नहीं खाते, अगरचे इस पर तातार ख़ानिया में भी ज़ोर दिया गया है। इसके हवाले से हिन्दिया में है: "जुनुबी या हयिज़ (मासिक धर्म वाली स्त्री) को जब किसी दरिंदा या चोर या ठंडक का ख़तरा हो तो मस्जिद के अंदर ठहरने में हर्ज नहीं, और ताज़ीमे-मस्जिद (मस्जिद के सम्मान) के लिए..."

[बाएं कॉलम का पाठ - अरबी मूल]: वे जुनुब (अपवित्र) थे, तो उन्होंने हमसे कहा, "अपनी जगह पर रहो।" फिर वे लौटे और स्नान किया, फिर हमारे पास आए और उनके सिर से पानी की बूंदें गिर रही थीं। उन्होंने तकबीर कही और हमने उनके साथ नमाज़ अदा की। ज़ाहिर है कि उन्होंने, अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो, मस्जिद से निकलने के लिए तयम्मुम नहीं किया; अन्यथा, अबू हुरैरा, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, इसे बयान करते। चूँकि उन्होंने इसके लिए तयम्मुम नहीं किया, इसलिए बिना तयम्मुम के बाहर निकलना जायज़ था, और यही वांछित है। मैंने कहा: वास्तव में, उनके लिए, अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो, जनाबत की स्थिति में मस्जिद में प्रवेश करना और ठहरना अनुमत था। (१) इह। यह उनके कलाम का पूर्ण सारांश है, अल्लाह उन पर रहम करे।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): सुब्हन (१) अल्लाह, जनाबत वाले व्यक्ति के लिए बिना तयम्मुम के मस्जिद में रुकना कैसे अनुमत हो सकता है जबकि यह सर्वसम्मति से वर्जित है? और यदि कोई भयभीत व्यक्ति बाहर निकलने और स्नान करने में असमर्थ है, तो उसके लिए तयम्मुम का मार्ग है। पानी की असमर्थता में तयम्मुम एक वैध शुद्धिकरण है। अत; शुद्धिकरण की क्षमता होने के बावजूद जनाबत की स्थिति में मस्जिद में ठहरने को जायज़ ठहराना शरई नियमों के विपरीत है, भले ही तातारख़ानिया में भी ऐसा कहा गया हो। हिन्दिया में इसके हवाले से है: यदि जुनुब या मासिक धर्म वाली महिला को किसी हिंसक पशु, चोर या ठंड का डर हो, तो मस्जिद में रुकने में कोई बुराई नहीं है, और मस्जिद के सम्मान के लिए तयम्मुम करना बेहतर है। (२) इह। बल्कि, और...

पाद-टिप्पणियाँ: 1. हलिया 2. फ़तावा हिन्दिया, फ़स्ल राबे' फ़ी अहकाम-उल-हयिज़, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/38. पृष्ठ संख्या 483 (कुल 756 में से)

[دائیں کالم کا متن:] ہوگئے تو حضور کو یاد آیا کہ وہ جنابت کی حالت میں ہیں، فرمایا: تم لوگ اپنی جگہ رہو۔ پھر واپس تشریف لے گئے، غسل فرمایا پھر تشریف لائے اور سر سے پانی ٹپک رہا تھا پھر تکبیر کہی اور ہم نے حضور کے ساتھ نماز ادا کی۔" اس لئے کہ ظاہر یہ ہے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے مسجد سے نکلنے کیلئے تیمم نہ فرمایا ورنہ حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالی عنہ اسے بیان کرتے۔ اور جب اس کام کیلئے تیمم نہ فرمایا تو حضور کا بلا تیمم نکلنا جائز و مباح ہوا اور ہم بھی یہی ثابت کرنا چاہتے ہیں۔ اس کا جواب یہ ہے کہ حضور صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کیلئے بحالتِ جنابت مسجد میں داخل ہونا اور ٹھہرنا مباح تھا۔" اھ یہ سب محقق حلبی رحمۃ اللہ تعالی کے کلام کی تلخیص ہے۔ (ت) اقول: سبحان اللہ۔ صاحبِ جنابت کیلئے بلا تیمم مسجد میں ٹھہرنا کیوں کر جائز ہوگا جبکہ یہ بالا جماع حرام ہے۔ خوف والا اگر نکلنے اور غسل کرنے سے عاجز ہو تو اس کیلئے تیمم کی اجازت ہے۔ اور پانی سے عجز کے وقت تیمم طہارتِ صحیحہ ہے تو طہارت پر قدرت کے باوجود مسجد میں بحالتِ جنابت ٹھہرنے کو جائز قرار دینا ایسی بات ہے جس سے شرعی اصول و قواعد ہم آہنگ نہیں اگرچہ اس پر تاتار خانیہ میں بھی جزم کیا ہے۔ اس کے حوالہ سے ہندیہ میں ہے: "جنبی یا حائض کو جب کسی درندہ یا چور یا ٹھنڈک کا خطرہ ہو تو مسجد کے اندر ٹھہرنے میں حرج نہیں، اور تعظیم مسجد کے

[بائیں کالم کا متن (عربی):] جنب فقال لنا مکانکم ثم رجع فاغتسل ثم خرج الینا ورأسه یقطر فکبر فصلینا معه فان الظاهر انه صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لم یتیمم لخروجه من المسجد والالحکاه ابا هریرة رضی اللہ تعالی عنه واذا لم یتیمم له کان الخروج منه بلاتیمم مباحا وهو المطلوب قلت انه صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کان مباحاله دخول المسجد والمکث فیه جنباً ۱ اھ هذا تمام کلامہ رحمہ اللہ تعالی

ملخصاً۔ اقول: سبحن (۱) الله کیف یباح للجنب المکث فی المسجد بلاتیمم وهو حرام اجماعاً والخائف ان عجز عن الخروج والاغتسال فهو بسبیل من التیمم والتیمم طهارة صحیحة عند العجز عن الماء فاباحة اللبث فی المسجد جنباً مع القدرة علی الطهارة مما تنبو عنه القواعد الشرعیة وان جزم به فی التاتار خانیة ایضا فعنها فی الهندیة اذا خاف الجنب او الحائض سبعا اولصاً اوبُردا فلاباس بالمقام فیه والاولی ان یتیمم تعظیماً للمسجد ۲ اهـ بل وفی

حواشی: 1 حلیہ 2 فتاوی ہندیہ الفصل الرابع فی احکام الحیض الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸

Fatawa Razawiya, Volume 3

[Arabic Column Text] *Al-Khaniyah* mentions under the causes of ritual bathing (*ghusl*), then in *Khazanat al-Muftin*, where both state: "If one has a nocturnal emission in the mosque, he should leave immediately. If it is nighttime and he fears leaving, it is recommended for him to perform *tayammum* [dry ablution]." (1) End quote. Yes, leaving quickly without *tayammum* has a valid basis, as pointed out in *Al-Muhit al-Radawi*. For this reason, many scholars have opted for the view that *tayammum* is mandatory (*wajib*) if one remains and recommended (*mustahab*) if one leaves. Even though the apparent meaning of the previous passage from *Khazanat al-Muftin* is that it is recommended to forgo it [tayammum] when leaving. In *Al-Durr [al-Mukhtar]*, under the rulings of a person in a state of major ritual impurity (*junub*): "If one has a nocturnal emission in it [the mosque], if he leaves quickly, *tayammum* is recommended, and if he remains due to fear, it is mandatory." (2) End quote. *Al-Shami* [referring to Ibn Abidin] said: "This was stated in *Al-Nahr [al-Faiq]* to reconcile between general statements implying obligation and those implying recommendation." (3) End quote. **I say [the author]:** (1) The explicit text of *Al-Khaniyah*, *Al-Muhit*, and *Al-Ikhtiyar* is that leaving is not permitted [without performing tayammum], so this is not a reconciliation (*tawfiq*) but rather a combination (*talfiq*). In the chapter of Menstruation (*Hayd*), under the statement "it prevents the lawfulness of entering the mosque," it was conveyed that entry is prohibited even for just passing through. Previously (2) in the chapter of *Ghusl*, it was restricted by the absence of necessity, such as when one's door opens into the mosque and it cannot be relocated, and there is no other dwelling available.

[Urdu Column Text] ...it is better and preferable to perform *tayammum* "End quote". Rather, in *Khaniyah* under the causes of *ghusl*, and then again in *Khazanat al-Muftin*, it is written: "Whoever has a nocturnal emission in the mosque must leave immediately. If it is night and there is danger in leaving, it is recommended to perform *tayammum*." End quote. (T) Yes, leaving quickly without *tayammum* has a reason, which has been hinted at in *Al-Muhit al-Radawi*. Therefore, several scholars have followed the view that in case of staying, *tayammum* is mandatory, and in case of leaving, it is recommended. Although the apparent meaning of the previous text from *Khazanat al-Muftin* is that forgoing *tayammum* is recommended when leaving. In *Durr-e-Mukhtar*, under the rulings for a person in a state of *janabah*: "If a nocturnal emission occurs in the mosque, if leaving quickly, *tayammum* is recommended; if staying due to some fear, it is mandatory." End quote. In *Shami* it is said: "This was

benefited from *Nahr al-Faiq* so that a reconciliation can be made between expressions from which absolute obligation is derived and those from which absolute recommendation is derived." (T) **I say [the author]:** The explicit words of *Khaniyah*, *Muhit*, and *Ikhtiyar* are that leaving is not permissible for him, so this was not a reconciliation but rather a combination. And Allama Shami, in the chapter on Menstruation under "It prevents the lawfulness of entering the mosque," wrote: "From these words it is understood that even if entry into the mosque is just for passing through, it is still forbidden. And in the explanation of *ghusl*, the prohibition of passing through was restricted to the state when the door [to the house]..."

---

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on what necessitates *ghusl*, printed by Naval Kishore, Lucknow, 1/22.
2. Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami, causes of *ghusl*, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/126.
3. Radd al-Muhtar, causes of *ghusl*, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/126. Page 484 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[अरबी खंड] अल-ख़ानिया में ग़ुस्ल (स्नान) के अनिवार्य कारणों के तहत, फिर ख़ज़ानत अल-मुफ़्तीन में भी यह कहा गया है: "जिस किसी को मस्जिद में स्वप्नदोष (एहतलाम) हो जाए, उसे तुरंत बाहर निकल जाना चाहिए। यदि रात का समय हो और बाहर निकलने में ख़तरा हो, तो उसके लिए तयम्मुम (मिट्टी से शुद्धि) कर लेना मुस्तहब (पसंदीदा) है।" (1) इति। हाँ, बिना तयम्मुम के तेज़ी से बाहर निकल जाने का एक आधार है जैसा कि अल-मुहित अल-रज़वी में संकेत दिया गया है। इसी कारण कई विद्वानों ने इस मत को अपनाया है कि ठहरने की स्थिति में तयम्मुम वाजिब (अनिवार्य) है और बाहर निकलने की स्थिति में मुस्तहब है। हालाँकि ख़ज़ानत अल-मुफ़्तीन के पिछले गद्यांश का ज़ाहिरी मतलब यह है कि निकलने की स्थिति में तयम्मुम छोड़ना मुस्तहब है। दुर्रे मुख़्तार में जुनुब (अशुद्ध व्यक्ति) के नियमों के तहत है: "यदि मस्जिद में स्वप्नदोष हो, और तेज़ी से निकलना हो तो तयम्मुम मुस्तहब है, और यदि किसी डर के कारण ठहरता है तो वाजिब है।" (2) इति। शामी में कहा गया है: "यह नहर अल-फ़ाएक में बताया गया है ताकि उन कथनों के बीच सामंजस्य बिठाया जा सके जिनसे पूर्ण रूप से वाजिबता सिद्ध होती है और जिनसे पूर्ण रूप से मुस्तहबी सिद्ध होती है।" (3) इति।
अक़ूल (लेखक का कथन): (1) ख़ानिया, मुहित और इख़्तियार के स्पष्ट शब्द यह हैं कि उसके लिए निकलना जायज़ नहीं है, तो यह सामंजस्य (तौफ़ीक़) नहीं बल्कि मिश्रण (तल्फ़ीक़) हुआ। और अल्लामा शामी ने माहवारी के अध्याय में "मस्जिद में प्रवेश की मनाही है" के तहत लिखा है: "इससे यह स्पष्ट होता है कि यदि मस्जिद में प्रवेश केवल गुज़रने के लिए भी हो तो वह भी वर्जित है। और ग़ुस्ल के विवरण में गुज़रने की मनाही को केवल उस स्थिति तक सीमित रखा गया है जब उसका द्वार मस्जिद की ओर हो और उसे हटाना संभव न हो और कोई दूसरा आवास उपलब्ध न हो।"

[उर्दू खंड] ...तयम्मुम कर लेना बेहतर और औला (श्रेष्ठ) है। "इति"। बल्कि ख़ानिया में ग़ुस्ल के वाजिबात के तहत फिर ख़ज़ानत अल-मुफ़्तीन में भी यह लिख दिया गया है कि: "जिसे मस्जिद में एहतलाम हुआ उसे फ़ौरन बाहर निकल जाना चाहिए। अगर रात का वक़्त हो और निकलने में ख़तरा हो तो तयम्मुम कर लेना मुस्तहब है।" इति। (त) हाँ, बग़ैर तयम्मुम के तेज़ी से निकल जाना तो एक वजह रखता है जिसकी तरफ़ मुहित रज़वी में इशारा किया गया है। इसी लिए अनेक हज़रात इसी क़ौल (मत) पर चले हैं कि ठहरने की सूरत में तयम्मुम वाजिब है और निकलने की सूरत में मुस्तहब है। अगरचे ख़ज़ानत अल-मुफ़्तीन की पिछली इबारत का ज़ाहिर यह है कि निकलने की सूरत में तर्क ए-तयम्मुम (तयम्मुम छोड़ना) मुस्तहब है। दुर्रे मुख़्तार में एहकाम-ए-जुनुब के तहत है: "मस्जिद में

एहतलाम हुआ अगर तेज़ी से निकलना हो तो तयम्मुम मुस्तहब है और अगर किसी ख़ौफ़ की वजह से ठहरता है तो वाजिब है।" इति। शामी में कहा कि: "नहर अल-फ़ाएक में यह बताया गया है ताकि जिन इबारतों से मुतलक़न (पूर्णत:) वजूब साबित होता है और जिनसे मुतलक़न इस्तेहबाब साबित होता है, दोनों में ततबीक़ (सामंजस्य) हो जाए।" (त) **अक़ूल (लेखक का कथन):** ख़ानिया, मुहित और इख़्तियार के सरीह (स्पष्ट) अल्फ़ाज़ यह हैं कि उसके लिए निकलना मुबाह (जायज़) नहीं, तो यह ततबीक़ न हुई बल्कि तल्फ़ीक़ हुई। और अल्लामा शामी ने बाबुल हैज़ (माहवारी के अध्याय) में "मस्जिद में प्रवेश की मनाही है" के तहत तहरीर फ़रमाया है: "इन अल्फ़ाज़ से यह साबित होता है कि अगर सिर्फ़ गुज़रने के तौर पर मस्जिद में दुख़ूल (प्रवेश) हो तो यह भी ममनू (वर्जित) है। और ग़ुस्ल के बयान में गुज़रने की मुमानअत (मनाही) सिर्फ़ उस हालत से मुक़य्यद (सीमित) की है जब मस्जिद का दरवाज़ा..."

---

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, ग़ुस्ल को वाजिब करने वाली चीज़ों का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/22।
2. अद-दुर्रुल मुख़्तार मअ शामी, ग़ुस्ल के मोजिबात, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/126।
3. रद अल-मुह्तार, ग़ुस्ल के मोजिबात, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/126। पेज 484/756

[عربی کالم] الخانية من موجبات الغسل ثم في خزانة المفتين حيث قالا من احتلم في المسجد ينبغي ان يخرج من ساعته فان كان في الليل وخاف الخروج يستحب له ان يتيمّم 1 اهـ نعم الخروج مسرعاً بلاتيمّم له وجه كما اشار اليه في المحيط الرضوی ولهذا مشی غير واحد على وجوب التيمم في المكث وندبه في الخروج وان كان ظاهر ما مر عن خزانة المفتين ندب تركه في الخروج ففی الدر من احكام الجنب لو احتلم فيه ان خرج مسرعاً تيمّم ندباً وان مكث لخوف فوجوباً 2 اهـ قال ش افاد ذلك في النهر توفيقاً بين اطلاق ما يفيد الوجوب وما يفيد الندب 3 اهـ اقول: صريح (۱) نص الخانية والمحيط والاختيار لا يباح له الخروج فهذا ليس بتوفيق بل تلفيق وقال فی باب الحيض تحت قوله يمنع حل الدخول مسجد افاد منع الدخول و لو للمرور وقدم (۲) في الغسل تقييده بعدم الضرورة بأن كان بابه الى المسجد ولا يمكنه تحويله ولا السكنى فی غيره

[اردو کالم] پیشِ نظر تیمم کر لینا بہتر اور اولیٰ ہے "اھ"۔ بلکہ خانیہ میں موجباتِ الغسل کے تحت پھر خزانۃ المفتیین میں بھی یہ لکھ دیا ہے کہ: "جسے مسجد میں احتلام ہوا اسے فوراً باہر نکل جانا چاہئے۔ اگر رات کا وقت ہو اور نکلنے میں خطرہ ہو تو تیمم کر لینا مستحب ہے" اھ (ت) ہاں بغیر تیمم کے تیزی سے نکل جانا تو ایک وجہ رکھتا ہے جس کی طرف محیطِ رضوی میں اشارہ کیا ہے۔ اسی لئے متعدد حضرات اسی قول پر چلے ہیں کہ ٹھہرنے کی صورت میں تیمم واجب ہے اور نکلنے کی صورت میں مستحب ہے۔ اگر چہ خزانۃ المفتیین کی گزشتہ عبارت کا ظاہر یہ ہے کہ نکلنے کی صورت میں ترکِ تیمم مستحب ہے۔ درمختار میں احکامِ جنب کے تحت ہے: "مسجد میں احتلام ہوا اگر تیزی سے نکلنا ہو تو تیمم مستحب ہے اور اگر کسی خوف کی وجہ سے ٹھہرتا ہے تو واجب ہے"۔ اھ شامی میں کہا کہ: "نہر فائق میں یہ افادہ فرمایا ہے تاکہ جن عبارتوں سے مطلقاً

وجوب مستفاد ہوتا ہے اور جن سے مطلقاً استحباب مستفاد ہوتا ہے دونوں میں تطبیق ہو جائے (ت)

اقول: خانیہ، محیط اور اختیار کے صریح الفاظ یہ ہیں کہ اس کے لئے نکلنا مباح نہیں، تو یہ تطبیق نہ ہوئی بلکہ تلفیق ہوئی۔ اور علامہ شامی نے باب الحیض میں "یَمْنَعُ حِلَّ دخول مسجد" (حیض دخولِ مسجد کے جواز سے مانع ہے) کے تحت تحریر فرمایا ہے: "ان الفاظ سے یہ مستفاد ہوتا ہے کہ اگر صرف گزرنے کے طور پر مسجد میں دخول ہو تو یہ بھی ممنوع ہے۔ اور غسل کے بیان میں گزرنے کی ممانعت صرف اس حالت سے مقید کی ہے جب مسجد

---

1 فتاوٰی قاضی خان فصل فیما یوجب الغسل مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۲۲/۱ 2 الدر المختار مع الشامی موجبات الغسل مصطفٰی البابی مصر ۱۲۶/۱ 3 رد المحتار موجبات الغسل مصطفٰی البابی مصر ۱۲۶/۱

Fatawa Razawiyya, Volume III

...there is no need to pass through. The situation of necessity is, for example, if one's door opens into the mosque and one cannot move the door to the other side nor reside in another house. There, we have written, taking from the quoted passage in Al-Inayah from Al-Mabsut (which is to come), that it is apparent that in such a case, performing Tayammum is mandatory (Wajib) for passing through the mosque. Similarly, if one stays in the mosque out of fear of leaving, then Tayammum will also be mandatory. This is contrary to the case where one has a nocturnal emission in the mosque and can leave quickly; for such a person, Tayammum is recommended (Mustahabb) because there is a clear difference between entering and leaving. [End (T)]

Sayyid Tahtawi wrote in the Hashiyah of Maraqi al-Falah: "If one becomes in a state of major ritual impurity (Janabah) in the mosque, one should perform Tayammum and leave immediately if unable to use water. Similarly, if one enters the mosque in a state of Janabah forgetfully and then remembers, the same ruling applies. And if one leaves quickly without Tayammum, it is permissible. But if one is unable to leave, one must perform Tayammum and stay in the mosque; staying without it is not permissible. However, with this Tayammum, one can neither pray nor recite, as mentioned in Al-Siraj." [End (T)]

1. Rad al-Muhtar, Chapter on Menstruation, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/214
2. Rad al-Muhtar, Chapter on Menstruation, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/213
3. Tahtawi on Maraqi al-Falah, Chapter on Menstruation and Postpartum, etc., Azhariyyah Press, Egypt, p. 83

Page 485 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द तीसरी

...वहाँ से गुज़रने की ज़रूरत न हो। ज़रूरत की सूरत यह है कि मिसाल के तौर पर उसका दरवाज़ा मस्जिद में खुलता है और वह दरवाज़ा दूसरी तरफ़ नहीं कर सकता और न ही किसी दूसरे घर में रह सकता है। वहाँ पर हमने इनाया में मबसूद के हवाले से ज़िक्र की गई इबारत (जो आगे आने वाली है) से अख़्ज़ करते हुए लिखा है कि ज़ाहिर यह है कि ऐसी सूरत में मस्जिद से गुज़रने के लिए तयम्मुम वाजिब है। इसी तरह अगर निकलने के ख़ौफ़ से मस्जिद ही में ठहरता है तो भी तयम्मुम वाजिब होगा। इसके बरअक्स उस सूरत के जब मस्जिद में उसे एहतलाम हुआ और वह तेज़ी से निकल सकता है, तो ऐसे शख़्स के लिए तयम्मुम मुस्तहब है क्योंकि दाख़िल होने और निकलने में नुमायाँ फ़र्क़ है। [इन्तहा (त)]

सैय्यद तहतावी ने हाशियह मराक़ी अल-फ़लाह में लिखा है: "अगर उसे मस्जिद में जनाबत लाहिक़ हुई तो तयम्मुम करे और फ़ौरन बाहर निकल जाए अगर पानी के इस्तेमाल पर क़ुदरत न हो। इसी तरह अगर जनाबत की हालत में भूल कर मस्जिद में चला गया फिर याद आया तो यही हुक्म है। और अगर बग़ैर तयम्मुम के तेज़ी से निकल जाए तो जायज़ है। और अगर निकलने पर क़ादिर न हो तो तयम्मुम कर के मस्जिद में ठहरे, इसके बग़ैर ठहरना जायज़ नहीं है। मगर इस तयम्मुम से न नमाज़ पढ़ सकता है और न ही तिलावत कर सकता है जैसा कि सिराज में है।" [इन्तहा (त)]

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-हैज़, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/214
2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-हैज़, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/213
3. तहतावी अला मराक़ी अल-फ़लाह, बाब अल-हैज़ वल-निफ़ास वग़ैरह, मतब'अ अज़हरिया, मिस्र, पृ. 83

पृष्ठ 756 में से 485

سے گزرنے کی ضرورت نہ ہو۔ ضرورت کی صورت یہ ہے کہ مثلاً اس کا دروازہ مسجد میں ہے اور نہ دروازہ دوسری طرف پھیر سکتا ہے نہ کسی دوسرے گھر میں رہ سکتا ہے۔ وہاں پر ہم نے عنایہ میں مبسوط کے حوالہ سے ذکر شدہ عبارت (جو آگے آنے والی ہے) سے اخذ کرتے ہوئے لکھا ہے کہ ظاہر یہ ہے کہ ایسی صورت میں مسجد سے گزرنے کے لئے تیمم واجب ہے۔ اسی طرح اگر نکلنے کے خوف سے مسجد ہی میں ٹھہرتا ہے تو بھی تیمم واجب ہوگا۔ بخلاف اس صورت کے جبکہ مسجد میں اسے احتلام ہوا اور تیزی سے نکل سکتا ہے کہ ایسے شخص کے لئے تیمم مستحب ہے اس لئے کہ داخل ہونے اور نکلنے میں نمایاں فرق ہے۔ اہ (ت)

سید طحطاوی نے حاشیہ مراقی الفلاح میں لکھا ہے: "اگر اسے مسجد میں جنابت لاحق ہوئی تو تیمم کرے اور فوراً باہر نکل جائے اگر پانی کے استعمال پر قدرت نہ ہو ایسے ہی اگر جنابت کی حالت میں بھول کر مسجد میں چلا گیا پھر یاد آیا تو یہی حکم ہے۔ اور اگر بغیر تیمم کے تیزی سے نکل جائے تو جائز ہے۔ اور اگر نکلنے پر قادر نہ ہو تو تیمم کر کے مسجد میں ٹھہرے اس کے بغیر ٹھہرنا جائز نہیں مگر اس تیمم سے نہ نماز پڑھ سکتا ہے نہ تلاوت کر سکتا ہے جیسا کہ سراج میں ہے۔" اہ (ت)

1 ردالمحتار باب الحیض مصطفی البابی مصر ۱ / ۲۱۴ 2 ردالمحتار باب الحیض مصطفی البابی مصر ۱ / ۲۱۳ 3 طحطاوی علی مراقی الفلاح باب الحیض والنفاس الخ مطبعہ ازہریۃ مصر ص ۸۳

Fatawa Razawiyya, Volume 3

I say: (1) The meaning of having the ability to use water is that there is water and a place prepared for bathing, or there is a vessel in which one can bathe in such a way that none of the used water falls in the mosque. Or, one has thick clothes that can hold water; so one bathes upon them and then throws the water outside the mosque. Praise be to Allah, I once had the opportunity to act upon this very scenario. I was in I'tikaf (seclusion) in my mosque during winter, and it was raining heavily. I wanted to perform Wudu (ablution), so I performed Wudu on my quilt in such a way that not a single drop fell in the mosque. Praise be to Allah. At that time, by the grace of Allah, this method came as an inspiration from my Lord. Then, years later, I saw guidance towards this in Al-Bahr Al-Ra'iq (The Clear Sea) quoting from "Al-Tajnis" by the eminent Imam, the author of Al-Hidayah (may Allah have mercy on him). He says: "If (2) someone experiences ritual impurity (hadath) during the Friday sermon (Khutbah), if he finds a way, he should leave and perform Wudu. If it is not possible to leave, he should stay seated and not step over people's necks. Then, if water is found inside the mosque, he should place his cloth in front of him so that the water falls onto it, and perform Wudu in such a way that the mosque does not become impure, using the water in a specific manner according to (determination/estimation). Then, after leaving the mosque, he should wash his cloth." The author of Al-Bahr said: "This is a very good approach." End of quote. (T)

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter: It is disliked to face the Qiblah with the private parts, HM Saeed Company, Karachi, 2/342. Page 486 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

मैं कहता हूँ: (1) पानी के इस्तेमाल पर कुदरत (क्षमता) होने का मतलब यह है कि वहां पानी हो और ग़ुस्ल (स्नान) के लिए बनी हुई कोई जगह हो। या उसके पास कोई ऐसा बर्तन हो जिसमें इस तरह ग़ुस्ल कर सके कि मस्जिद में उसका ग़साला (इस्तेमाल किया हुआ पानी) ज़रा भी न गिरने पाए। या उसके पास पानी रोक लेने वाले मोटे कपड़े हों तो उन पर ग़ुस्ल करे फिर पानी मस्जिद से बाहर फेंक दे। अल्लाह का शुक्र है, इसी सूरत पर एक बार मुझे अमल करने का मौक़ा मिला। मैं सर्दियों के मौसम में अपनी मस्जिद में एतेकाफ़ (एकांतवास) में था और तेज़ बारिश हो रही थी। मैंने वज़ू करना चाहा तो अपने लिहाफ़ (रज़ाई) पर इस तरह वज़ू किया कि मस्जिद में एक बूंद भी नहीं गिरी। अल्हम्दुलिल्लाह। उस समय अल्लाह के करम से यह तरीका दिल में इल्हाम (प्रेरणा) के तौर पर आया। फिर कई साल बाद मैंने 'अल-बहरुल राइक' में देखा कि इमाम अजल, साहब-ए-हिदाया (रहमतुल्लाह अलैह) की "तजनीस" के हवाले से इसकी हिदायत मौजूद है। वह फ़रमाते हैं: "अगर किसी को जुमा के दिन खुतबे के वक़्त हदस (अशुद्धि) लाहिक हो गई, तो अगर निकलने का रास्ता मिले तो निकल जाए और वज़ू करे। और अगर निकलना मुमकिन न हो तो उस वक़्त बैठा रहे, लोगों की गर्दनों को न फांदे। फिर अगर मस्जिद के अंदर पानी मिल जाए, तो अपने सामने अपना कपड़ा इस तरह रख ले कि पानी उसी पर गिरे और इस तरह वज़ू करे कि मस्जिद नापाक न हो और पानी एक खास अंदाज़ से 'अला तक़दीर' (अनुमानित तरीके से) इस्तेमाल करे। फिर मस्जिद से निकलने के बाद अपना वह कपड़ा धो ले।" साहब-ए-बहर ने फ़रमाया: "यह बहुत ही अच्छी सूरत है।" इत्तिहा (समाप्त) (त)

1. अल-बहरुल राइक, फ़स्ल: पेशाब-पाखाने के वक़्त क़िबला की तरफ़ मुँह करना मकरूह है, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/342. पेज 486 ऑफ़ 756

اقول: (۱) ومعنی القدرۃ علی استعمال الماء ان یکون ثمہ ماء وموضع اعد للاغتسال اوعندہ اناء یمکن ان یغتسل فیہ بحیث لا یقع شیئ من الغسالۃ فی المسجد او تکون لہ ثیاب صفیقۃ تمسک الماء فیغتسل علیھا ثم یرمی بہ خارج المسجد وھو واقعتی وللہ الحمد کنت معتکفاً فی مسجدی فی الشتاء واردت الوضوء وکان المطر شدیدا فتوضأت علی لحافی ولم تصب المسجد قطرۃ وللہ الحمد وکان ھذا بحمد اللہ تعالی الھاماً من ربی ثم بعد سنین رأیت الارشاد الیہ فی البحر عن تجنیس الامام الاجل صاحب الھدایۃ قال رحمہ اللہ تعالی لو (۲) سبقہ الحدث وقت الخطبۃ یوم الجمعۃ فأن وجد الطریق انصرف وتوضأ وان لم یمکنہ الخروج یجلس ولا یتخطی رقاب الناس فان وجد ماء في المسجد وضع ثوبہ بین یدیہ حتی یقع الماء علیہ ویتوضؤ بحیث لاینجس المسجد ویستعمل الماء علی التقدیر ثم بعد خروجہ من المسجد یغسل ثوبہ قال البحر وھذا حسن جداً اھـ

اقول: پانی کے استعمال پر قدرت ہونے کا مطلب یہ ہے کہ وہاں پانی اور غسل کیلئے بنی ہوئی کوئی جگہ ہو۔ یا اس کے پاس کوئی ایسا برتن ہو جس میں اس طرح غسل کر سکتا ہو کہ مسجد میں اس کا غسالہ ذرا بھی گرنے نہ پائے۔ یا اس کے پاس پانی روک لینے والے دبیز کپڑے ہوں تو ان پر غسل کرے پھر پانی مسجد سے باہر پھینک دے بحمداللہ اسی صورت پر ایک بار مجھے عمل کا اتفاق ہوا۔ موسم سرما میں اپنی مسجد میں معتکف تھا اور سخت بارش ہورہی تھی میں نے وضو کرنا چاہا تو اپنے لحاف پر اس طرح وضو کیا کہ مسجد میں ایک قطرہ بھی نہ پڑ سکا۔ وللہ الحمد۔ اس وقت یہ طریقہ بحمد اللہ خدا کی جانب سے بطور الہام دل میں آیا پھر کئی سال بعد میں نے البحر الرائق میں دیکھا کہ امام اجل صاحب ہدایہ رحمہ اللہ تعالیٰ کی "تجنیس" کے حوالہ سے اس کی ہدایت موجود ہے۔ وہ فرماتے ہیں: "اگر کسی کو جمعہ کے دن خطبہ کے وقت حدث لاحق ہوگیا تو

اگر نکلنے کا راستہ ملے نکل جائے اور وضو کرے۔ اور اگر نکلنا ممکن نہ ہو تو اس وقت بیٹھا رہے لوگوں کی گردنیں پھلانگ کر نہ جائے، پھر اگر مسجد کے اندر پانی مل جائے تو سامنے اپنا کپڑا اس طرح رکھ لے کہ پانی اسی پر پڑے اور اس طرح وضو کرے کہ مسجد نجس نہ ہو اور پانی ایک خاص انداز سے علی (التقدیر) استعمال کرے پھر مسجد سے نکلنے کے بعد اپنا وہ کپڑا دھولے۔" صاحب بحر نے فرمایا: "یہ بڑی اچھی صورت ہے"۔ اھ (ت)

1 البحر الرائق فصل کرہ استقبال القبلۃ بالفرج ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳۴۲/۲ Page 486 of 756

Fatawa Rizvia - Volume 3

I say (Aqul): The statement [in Al-Hidayah] "it does not become impure" and the command to wash the garment is based on the impurity of used water (*ma'-ul-musta'mal*). And their statement "ala al-taqdeer" (on estimation) means reducing [the water used] so that the water does not seep through the garment. If the garment contains a lot of cotton, as in my case, then one should perform a complete ablution (*yusbaghu al-wudu*) as I have done, and all praise is to Allah.

I say (Aqul): In the text of the author of *Al-Hidayah*, the mention of the masjid becoming impure and the command to wash the garment is based on the impurity of used water. And the meaning of his statement "ala al-taqdeer" (in a specific manner) is that one should use less water so that the water does not seep through the cloth and fall into the masjid. Yes, if the cloth is thick with cotton as was my case, then perform a complete ablution (*isbagh*) just as I did fully. All praise be to Allah.

(T) **In *Durr al-Mukhtar it is stated: "Performing ablution in the masjid is also among its prohibited acts, unless it is done in a vessel or in a place designated for ablution." [End quote]. At-Tahtawi states: "Performing it there is prohibitively disliked (Makruh Tahrimi) because it is necessary to protect the masjid from everything that pollutes it or goes against cleanliness, even if it is a pure thing." [End quote]. Rather, in the chapter of I'tikaf* in*** Al-Bahr***, it is quoted from*** Al-Bada'i'*: "If a person in seclusion (mu'takif) washes his head in the masjid, there is no harm as long as he does not let the used water pollute the masjid. If it would pollute the masjid, then it is forbidden because keeping the masjid clean and pure is obligatory. And if one performs ablution in a vessel inside the masjid, the same detailed ruling applies." [End quote]. Then the author of* Al-Bahr* said:

...in contrast to (2) one who is not in seclusion (*mu'takif*), for it is disliked for him to perform ablution in the masjid even if in a vessel, unless it be...

Footnotes: 1. *Al-Durr al-Mukhtar* with *At-Tahtawi*, "Disliked Acts of Ablution," published in Beirut, 1/76. 2. *At-Tahtawi 'ala al-Durr*, "Disliked Acts of Ablution," published in Beirut, 1/76. 3. *Al-Bahr al-Ra'iq*, "Chapter on I'tikaf," H.M. Saeed Company Karachi, 2/303.

मैं कहता हूँ (अक़ूल): [अल-हिदाया में] उनका यह कथन कि "वह नापाक नहीं होता" और कपड़ा धोने का आदेश, इस्तेमाल किए गए पानी (मा-ए-मुस्तअमल) की नापाकी पर आधारित है। और उनके कथन "अला अल-तक़दीर" (अनुमान के आधार पर) का अर्थ है [पानी की मात्रा] कम करना ताकि पानी कपड़े से रिसकर बाहर न निकले। यदि कपड़ा कपास से भरा हो, जैसा कि मेरे मामले में था, तो वूज़ू को पूरी तरह से पूर्ण करें (युसबग़ु अल-वूज़ू) जैसा कि मैंने किया, और अल्लाह का शुक्र है।

मैं कहता हूँ (अक़ूल): साहिबे हिदाया की इबारत में मस्जिद के नापाक होने की बात और कपड़े धोने का हुक्म मा-ए-मुस्तअमल की नापाकी की बुनियाद पर है। और उनके कौल "अला अल-तक़दीर" (एक विशेष अंदाज़ से) का मतलब यह है कि पानी कम इस्तेमाल करे ताकि पानी कपड़े से रिसकर मस्जिद में न गिरने पाए। हाँ, अगर कपड़ा ज़्यादा रुई वाला हो जैसा कि मेरा वाक़िआ था, तो वूज़ू में इसबाग़ (पूरी तरह वूज़ू करना) करें जैसे मैंने पूरे तौर से वूज़ू किया। अल्लाह की प्रशंसा हो।

(त) **दुर्रे मुख़्तार में है:** "मस्जिद में वूज़ू करना भी इसके ममनूआत (निषिद्ध कार्यों) में से है, मगर किसी बर्तन में या ऐसी जगह वूज़ू कर सकता है जो वूज़ू के लिए बनी हुई हो।" [समाप्त]। **तहतावी फ़रमाते हैं:** "मस्जिद में वूज़ू करना मकरूह तहरीमी है इसलिए कि मस्जिद को हर आलूदा करने वाली और ख़िलाफ़-ए-नफ़ाफ़त (स्वच्छता के विरुद्ध) चीज़ से बचाना ज़रूरी है अगरचे वह कोई पाक ही चीज़ हो।" [समाप्त]। बल्कि **'बहर' के बाब-ए-एतिकाफ़ में 'बदाए' से नक़ल किया गया है** कि: "अगर मोतकिफ़ (एतिकाफ़ करने वाला) मस्जिद में सर धोए तो हर्ज नहीं जब तक कि मा-ए-मुस्तअमल से मस्जिद आलूदा न होने दे, अगर मस्जिद आलूदा होने की सूरत हो तो ममनू (वर्जित) है क्योंकि मस्जिद को साफ़-सुथरा रखना वाजिब है और अगर मस्जिद के अंदर किसी बर्तन में वूज़ू करे तो उसमें भी यही तफ़सील (विवरण) है।" [समाप्त]। फिर साहिबे बहर ने कहा:

...बख़िलाफ़ (2) ग़ैर-मोतकिफ़ के, क्योंकि उसके लिए मस्जिद में वूज़ू करना मकरूह है भले ही बर्तन में हो, जब तक कि वह...

पादलेख: 1. अल-दुर्र अल-मुख़्तार माअ तहतावी, वूज़ू के मकरूहात, बेरूत मुद्रण, 1/76। 2. तहतावी अला अल-दुर्र, वूज़ू के मकरूहात, बेरूत मुद्रण, 1/76। 3. अल-बहर अल-राईक, बाब-ए-एतिकाफ़, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 2/303।

اقول: قولہ لاینجس والامر بغسل الثوب بناء علی نجاسة الماء المستعمل وقول علی التقدیر ای التقلیل کیلا ینفد الماء من الثوب فانکان الثوب کثیرا لقطن کواقعتی یسبغ الوضوء کما فعلت وللہ الحمد۔

اقول: صاحب ہدایہ کی عبارت میں مسجد کے نجس ہونے کی بات اور کپڑا دھونے کا حکم مائے مستعمل کی نجاست کی بنیاد پر ہے۔ اور ان کے قول "علی التقدیر" (ایک خاص انداز سے) کا مطلب یہ ہے کہ پانی کم استعمال کرے تاکہ پانی کپڑے سے نفوذ کر کے مسجد میں نہ گرنے پائے۔ ہاں اگر کپڑا زیادہ روئی والا ہو جیسا کہ میرا واقعہ تھا تو وضو میں اسباغ کرے جیسے میں نے پورے طور سے وضو کیا۔ وللہ الحمد۔

(ت) **دُرمختار میں ہے:** "مسجد میں وضو کرنا بھی اس کے ممنوعات سے ہے مگر کسی برتن میں یا ایسی جگہ وضو کر سکتا ہے جو وضو کیلئے بنی ہوئی ہو" اھ **طحطاوی فرماتے ہیں:** "مسجد میں وضو کرنا مکروہ تحریمی ہے اس لئے کہ مسجد کو ہر آلودہ کرنے والی اور خلاف نظافت چیز سے بچانا ضروری ہے اگرچہ وہ کوئی پاک ہی چیز ہو"۔ اھ بلکہ **بحر کے باب الاعتکاف میں بدائع سے نقل کیا ہے کہ:** "اگر معتکف مسجد میں سر دھوئے تو حرج نہیں جبکہ مائے مستعمل سے مسجد آلودہ نہ ہونے دے، اگر مسجد آلودہ ہونے کی صورت ہو تو ممنوع ہے کیونکہ مسجد کو صاف ستھرا رکھنا واجب ہے اور اگر مسجد کے اندر کسی برتن میں وضو کرے تو اس میں بھی یہی تفصیل ہے۔" اھ پھر صاحب بحر

ثم قال اعنی البحر بخلاف (۲) غیر المعتکف فأنه یکره له التوضوء في المسجد ولوفی اناء الا ان یکون

حواشی: 1 الدر المختار مع الطحطاوی مکروهات الوضوء مطبوعہ بیروت ۷۶/۱ 2 طحطاوی علی الدر مکروهات الوضوء مطبوعہ بیروت ۷۶/۱ 3 البحر الرائق باب الاعتکاف ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳۰۳/۲

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Left Column] ...a place designated for that where prayer is not offered.[1] I say: Towards this, his statement regarding the dislikes (Makruhat) of prayer points: It is disliked to perform ablution (Wudu) and rinse the mouth in the mosque unless there is a place designated for ablution where prayer is not offered.[2] Thus, he did not except anything but this. Similar is mentioned in Ghamz al-Uyun from the commentary of al-Jami' al-Saghir by al-Tumurtashi. However, in al-Bahr [al-Ra'iq], in the discussion of 'used water' (ma' musta'mal), it was previously cited from al-Khaniyyah that if one performs ablution in a vessel in the mosque, it is permissible according to them.[3] On this basis, he proceeded in al-Ashbah, saying: Rinsing the mouth and performing ablution in it is disliked unless there is a place prepared for that where prayer is not offered, or it is done in a vessel.[4] Al-Sayyid al-Hamawi relied on his statement regarding I'tikaf (spiritual retreat), saying: This ruling, although found in al-Khaniyyah, is not general as understood from its wording, but rather pertains to the person in I'tikaf only, on condition of not polluting the mosque. He said in al-Bada'i...[5] up to the end of what we previously cited from the I'tikaf [section] of al-Bahr. Al-Allama al-Ramli said in his marginalia: It appears that what is in the Fatawa...

[Right Column] ...has written: "This permission is not for a non-mu'takif (one not in retreat) because performing wudu in the mosque is disliked for him, even if in a vessel. However, if there is a place built for wudu within the mosque where prayer is not offered, then a non-mu'takif can also perform wudu there." (T) I say: His following statement in the explanation of the dislikes of prayer also points to this: "Performing wudu and rinsing the mouth in the mosque is disliked unless there is a place inside the mosque built for wudu where prayer is not offered." The point is that he only excepted this situation. Similarly, it is written in Ghamz al-Uyun with reference to Tumurtashi's commentary on Jami' al-Saghir. But the author of al-Bahr has already written in the discussion of used water with reference to Khaniyyah: "If one performs wudu in a vessel inside the mosque, it is permissible according to those scholars." He followed this same opinion in his book al-Ashbah. In it, it is written: "Rinsing the mouth and performing wudu in the mosque is disliked unless there is a place built for that purpose where prayer is not offered, or wudu is performed in a vessel." Al-Sayyid Hamawi relied on the opinion they expressed in the chapter on I'tikaf. He writes: "Although this ruling is in Khaniyyah, it is not general..."

[Footnotes] 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-I'tikaf, HM Saeed Company, Karachi, 2/303. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Fasl: When he finished explaining the dislikes, HM Saeed Company, Karachi, 2/34. 3. Al-Bahr al-Ra'iq, end of the discussion on used water, HM Saeed Company, Karachi, 1/96. 4. Al-Ashbah wa al-Naza'ir, Discussion on the rulings of the Mosque, HM Saeed Company, Karachi, 2/230. 5. Ghamz 'Uyun al-Basa'ir, Discussion on the rulings of the Mosque, HM Saeed Company, Karachi, 2/230.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[बायां कॉलम] ...एक जगह जो उसके लिए चुनी गई हो जहाँ नमाज़ नहीं पढ़ी जाती।[1] मैं कहता हूँ: उनकी यह बात नमाज़ के मकरूहात (अवांछनीय कार्यों) के बयान में इसी ओर इशारा करती है: मस्जिद में वज़ू करना और कुल्ली करना मकरूह है सिवाय उस जगह के जो वज़ू के लिए बनाई गई हो और जहाँ नमाज़ न पढ़ी जाती हो।[2] अतः उन्होंने इसके अलावा किसी को अपवाद नहीं माना। इसी तरह 'ग़म्ज़ अल-उयून' में तुमुरताशी की 'शर्ह अल-जामि' अल-सग़ीर' के हवाले से है। लेकिन 'अल-बहर' में इस्तिमालशुदा पानी की बहस में 'ख़ानिया' के हवाले से पहले लिखा जा चुका है कि अगर मस्जिद के अंदर किसी बर्तन में वज़ू किया जाए तो उनके नज़दीक यह जायज़ है।[3] इसी पर वह अपनी किताब 'अशबाह' में भी चले हैं और कहा है: मस्जिद में कुल्ली और वज़ू करना मकरूह है सिवाय इसके कि वहाँ कोई ऐसी जगह हो जो इसके लिए तैयार की गई हो जहाँ नमाज़ न पढ़ी जाती हो, या किसी बर्तन में वज़ू किया जाए।[4] सैय्यद हमवी ने एतिकाफ़ के बारे में उनके इस कथन पर भरोसा किया है और कहा है: यह हुक्म, हालांकि 'ख़ानिया' में है, लेकिन यह आम (सामान्य) नहीं है जैसा कि उनके शब्दों से समझा जा सकता है, बल्कि यह केवल मोतकिफ़ (एतिकाफ़ करने वाले) के लिए है, इस शर्त के साथ कि मस्जिद गंदी न हो। उन्होंने 'अल-बदाइ' में कहा है...[5] जैसा कि हम पहले 'अल-बहर' के एतिकाफ़ के हवाले से पेश कर चुके हैं। अल्लामा रमली ने अपने हाशिये (टिप्पणी) में कहा है: ज़ाहिर है कि फ़तावा में जो है वही राजेह (वरीयता योग्य) है...

[दायां कॉलम] ...ने लिखा है: "ग़ैर-मोतकिफ़ के लिए यह इजाज़त नहीं है क्योंकि उसके लिए मस्जिद में वज़ू करना मकरूह है, चाहे वह किसी बर्तन में ही क्यों न करे। लेकिन अगर मस्जिद में वज़ू के लिए कोई ऐसी जगह बनी हुई है जहाँ नमाज़ नहीं पढ़ी जाती, तो ग़ैर-मोतकिफ़ भी वहाँ वज़ू कर सकता है।" (त) मैं कहता हूँ: नमाज़ के मकरूहात के बयान में उनकी निम्नलिखित इबारत भी इसी ओर इशारा करती है: "मस्जिद में वज़ू करना और कुल्ली करना मकरूह है सिवाय इसके कि मस्जिद के अंदर कोई ऐसी जगह हो जो वज़ू के लिए बनी हो और वहाँ नमाज़ न पढ़ी जाती हो।" इशारा इस तरह है कि उन्होंने केवल इसी सूरत को अलग किया है। इसी तरह 'ग़म्ज़ अल-उयून' में तुमुरताशी की 'शर्ह जामि' सग़ीर' के हवाले से लिखा है। लेकिन साहिब-ए-बहर, 'ख़ानिया' के हवाले से इस्तिमालशुदा पानी की बहस में लिख चुके हैं कि: "अगर मस्जिद के अंदर किसी बर्तन में वज़ू किया तो उन हज़रात के नज़दीक जायज़ है।" इसी कौल (कथन) पर वह अपनी किताब 'अशबाह' में भी चले हैं। उसमें लिखा है: "मस्जिद में कुल्ली करना और वज़ू करना मकरूह है सिवाय इसके कि वहाँ

कोई ऐसी जगह हो जो इसी काम के लिए बनी हो जिसमें नमाज़ न पढ़ी जाती हो या किसी बर्तन में वज़ू हो।" बाब-उल-एतिकाफ़ में उनका जो कौल है, उसी पर सैय्यद हमवी ने भरोसा किया है। वह लिखते हैं: "यह हुक्म अगरचे 'ख़ानिया' में है मगर आम नहीं..."

[पादलेख] 1. अल-बहर अल-राइक़, बाब अल-एतिकाफ़, एच एम सईद कंपनी, कराची, 2/303. 2. अल-बहर अल-राइक़, फ़स्ल: जब वह मकरूहात के बयान से फ़ारिग़ हुए, एच एम सईद कंपनी, कराची, 2/34. 3. अल-बहर अल-राइक़, इस्तिमालशुदा पानी की बहस के अंत में, एच एम सईद कंपनी, कराची, 1/96. 4. अल-अशबाह व अल-नज़ाइर, मस्जिद के अहकाम का बयान, एच एम सईद कंपनी, कराची, 2/230. 5. ग़म्ज़ उयून अल-बसाइर, मस्जिद के अहकाम का बयान, एच एम सईद कंपनी, कराची, 2/230.

[بایاں کالم] موضعا اتخذ لذلك لا یصلی فیه[1] اھ اقول: والیه یشیر قوله فی مکروھات الصلاۃ یکره الوضوء والمضمضة فی المسجد الا ان یکون موضع فیه اتخذ للوضوء ولا یصلی فیه[2] اھ فلم یستثن الا ھذا۔ ومثله فی غمز العیون عن شرح الجامع الصغیر للتمرتاشی لکن البحر قدم فی بحث الماء المستعمل عن الخانیة ان توضأ فی اناء فی المسجد جاز عندھم[3] اھ وعلیه مشی فی اشباھه فقال تکره المضمضة والوضوء فیه الا ان یکون ثمه موضع اعد لذلك لایصلی فیه اوفی اناء[4] اھ واعتمد السید الحموی مقالته فی الاعتکاف فقال ھذا الحکم وان کان فی الخانیة لکن لیس علی العموم کما یفھم من کلامه بل في المعتکف فقط بشرط عدم تلویث المسجد قال فی البدائع[5] الی آخر ماقدمنا عن اعتکاف البحر۔ وقال العلامة الرملی فی حاشیته الظاھر ترجیح مافی فتاوی

[دایاں کالم] نے لکھا ہے: ”غیر معتکف کیلئے یہ اجازت نہیں اس لئے کہ اس کیلئے مسجد میں وضو کرنا مکروہ ہے، خواہ کسی برتن میں کرے لیکن اگر مسجد میں وضو کیلئے بھی بنی ہوئی کوئی ایسی جگہ ہے جہاں نماز نہیں پڑھی جاتی (تو غیر معتکف بھی وہاں وضو کرسکتا ہے) اھ (ت) اقول: اسی کی طرف مکروہات نماز کے بیان میں ان کی درج ذیل عبارت کا بھی اشارہ ہے: ”مسجد میں وضو کرنا اور کلی کرنا مکروہ ہے مگر یہ کہ اندرونِ مسجد کوئی ایسی جگہ ہو جو وضو کیلئے بنی ہو اور وہاں نماز نہ پڑھی جاتی ہے“۔ اھ اشارہ اس طرح ہے کہ صرف اسی صورت کا انہوں نے استثناء کیا۔ اسی کے مثل غمز العیون میں تمرتاشی کی شرح جامع صغیر کے حوالہ سے لکھا ہوا ہے۔ لیکن صاحبِ بحر خانیہ کے حوالہ سے مائے مستعمل کی بحث میں یہ لکھ چکے ہیں کہ: ”اگر مسجد کے اندر کسی برتن میں وضو کیا تو ان حضرات کے نزدیک جائز ہے۔“ اھ اسی قول پر وہ اپنی کتاب اشباہ میں بھی چلے ہیں۔ اس میں لکھا ہے: ”مسجد میں کلی کرنا اور

وضو کرنا مکروہ ہے مگر یہ کہ وہاں کوئی ایسی جگہ ہو جو اسی کام کیلئے بنی ہو جس میں نماز نہ پڑھی جاتی ہو یا کسی برتن میں وضو ہو" اھـ باب الاعتکاف میں ان کا جو قول ہے اسی پر سید حموی نے اعتماد کیا ہے۔ وہ لکھتے ہیں: "یہ حکم اگر چہ خانیہ میں ہے مگر عام نہیں

[حواشی] 1 البحر الرائق باب الاعتکاف ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳۰۳/۲ 2 البحر الرائق فصل لما فرغ من بیان الکراھة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳۴/۲ 3 البحر الرائق آخر بحث الماء المستعمل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۹۶/۱ 4 الاشباہ والنظائر القول فی احکام المسجد ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۳۰/۲ 5 غمز عیون البصائر القول فی احکام المسجد ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۳۰/۲

Fatawa Razawiyya Volume Three

[Right Column] As is understood from their speech. Rather, it is only for the one in i'tikaf (seclusion in the mosque), that too on the condition that the mosque does not become contaminated. It is in Bada'i (after which that entire text is recorded which we have already written with reference to I'tikaf in Bahr). And the author of Khayriyya, Allama Ramli, has written in his marginalia: "The preference of what is in Fatawa Qadi Khan is apparent. [End quote]" This statement has been quoted by Allama Shami in Minhat al-Khaliq. (T)

I say: Rather (instead of preference), reconciliation (of views) is better. If the vessel is such that there is a fear that all the used water will not fall into it, but rather some splashes will fall outside it, then performing ablution in such a vessel inside the mosque is disliked (Makruh). Perhaps this situation is found most often; hence, it was prohibited absolutely in the chapter on I'tikaf. If there is no risk of splashes going outside, it is not disliked. This is the intention of Al-Khaniya, and Allah Almighty knows best. Let it be noted that regarding the issue under discussion (Tayammum for a person in a state of major impurity leaving the mosque), Syed Tahtawi and Syed Abu al-Saud al-Azhari write: "The apparent meaning of the text in Al-Muhit indicates that this Tayammum is obligatory, while in Al-Siraj the detail is that if he exits quickly, it is permissible to omit Tayammum, and if he remains due to some fear, then omitting it is not permissible, and what is in Al-Muhit should also be interpreted in this way. [End quote]" From the statement of Tahtawi and Azhari, it is also known that the last sentence ("and what is in Al-Muhit should also be interpreted in this way") is the statement of Siraj al-Wahaj. (T)

I say: This is clearly open to question because...

[Left Column] Qadi Khan [1] [End quote] quoted in Al-Minha. I say: Rather (1) reconciliation is foremost. If the vessel is such that it is feared that all the wash-water will not fall into it, but some of it will splash outside, it is disliked (Makruh), and perhaps this is the prevalent case. Therefore, the prohibition was stated absolutely in the chapter on I'tikaf. But if that is secured against, it is not disliked. This is the intended meaning of Al-Khaniya. And Allah Almighty knows best. And Tahtawi said regarding the circular issue: he and Al-Sayyid Abu al-Saud al-Azhari (said) the apparent meaning of what is in Al-Muhit is the obligation of this Tayammum. And Al-Siraj detailed between exiting quickly, in which case omitting it is permissible, or remaining due to fear, in which case omitting it is not permissible. And what is in Al-

Muhit is interpreted upon this [2]. [End quote]. Their statement "[End quote]" indicates that the last sentence "and what is in Al-Muhit is interpreted upon this" is from the words of Al-Siraj al-Wahaj.

I say: (2) And in it is an apparent overlook, for...

[Footnotes] 1. Minhat al-Khaliq with Al-Bahr, Discussion on Used Water, H.M. Saeed Company Karachi 1/96 2. Tahtawi ala al-Durr, Chapter on Menstruation, printed by Dar al-Ma'rifah Beirut 1/129

फ़तावा रज़विया ज़िल्द सुम (तीसरा खण्ड)

[दायां कॉलम] जैसा कि उनके कलाम से समझ में आता है। बल्कि सिर्फ़ मोतकिफ़ (मस्जिद में एतिकाफ़ करने वाला) के लिए है, वह भी इस शर्त के साथ कि मस्जिद आलूदा (गंदी) न हो। बदाइअ में है (इसके बाद वह पूरी इबारत दर्ज की है जो एतिकाफ़-ए-बहर के हवाले से अभी हम लिख चुके हैं) और साहिब-ए-खैरिय्या अल्लामा रम्ली ने अपने हाशिये में लिखा है कि: "ज़ाहिर इसी की तरजीह है जो फ़तावा काज़ी ख़ान में है। (इति)"। यह इबारत अल्लामा शामी ने 'मिन्हतुल ख़ालिक़' में नक़ल की है। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): बल्कि (तरजीह के बजाय) तत्बीक़ (सामंजस्य) बेहतर है। अगर बर्तन ऐसा हो जिसमें यह अंदेशा हो कि सारा ग़साला (इस्तेमाल किया हुआ पानी) उसके अंदर नहीं गिरेगा बल्कि कुछ छींटे उससे बाहर भी जाएंगे, तो मस्जिद के अंदर ऐसे बर्तन में वुज़ू मकरूह है। शायद यही सूरत ज़्यादातर पाई जाती है, इसीलिए बाबुल एतिकाफ़ (एतिकाफ़ के अध्याय) में मुतलक़न (बिना शर्त) मना किया है। और अगर छींटे बाहर जाने का अंदेशा न हो तो मकरूह नहीं। यही ख़ानिया की मुराद है और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। यह बात ज़हननशीन रहे कि ज़ेर-ए-बहस मसला (मस्जिद से निकलने के लिए जुनुबी का तयम्मुम) में सैय्यद तहतावी और सैय्यद अबू अल-सऊद अज़हरी लिखते हैं कि: "इबारत-ए-मुहीत का ज़ाहिर बताता है कि यह तयम्मुम वाजिब है और सिराज में यह तफ़्सील है कि अगर तेज़ी से निकल जाए तो तयम्मुम छोड़ना जाइज़ है और अगर किसी ख़ौफ़ की वजह से ठहर रहा है तो तर्क जाइज़ नहीं, और मुहीत में जो है उसे भी इसी पर महमूल (व्याख्यायित) किया जाएगा। (इति)"। तहतावी और अज़हरी की इबारत से यह भी मालूम हुआ कि आख़िरी जुमला ("और मुहीत में जो है उसे भी इसी पर महमूल किया जाएगा") सिराज वहज का क़ौल है। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): यह खुले तौर पर महल्ल-ए-नज़र (विचारणीय) है क्योंकि...

[बायां कॉलम] काज़ी ख़ान [1] (इति) इसे मिन्हा में नक़ल किया गया। अक़ूल (मैं कहता हूँ): बल्कि (1) तत्बीक़ पहली (बेहतर) बात है। अगर बर्तन ऐसा हो कि अंदेशा हो कि सारा धोने वाला पानी उसमें नहीं गिरेगा बल्कि कुछ बाहर छिड़क जाएगा, तो यह मकरूह है और शायद यही अक्सर होता है। इसीलिए एतिकाफ़ के अध्याय में मुतलक़न मना किया गया। और अगर इससे सुरक्षा हो तो मकरूह नहीं। ख़ानिया की यही मुराद है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। और तहतावी ने चक्करदार

मसले के बारे में कहा: वह और अल-सैय्यद अबू अल-सऊद अल-अज़हरी (कहते हैं) कि जो मुहीत में है उसका ज़ाहिर इस तयम्मुम का वजूब है। और सिराज ने तेज़ी से निकलने, जिसमें तर्क जाइज़ है, और ख़ौफ़ की वजह से रुकने, जिसमें तर्क जाइज़ नहीं, के बीच तफ़्सील की है। और मुहीत में जो है उसे इसी पर महमूल किया जाता है [2]। (इति)। उनका कहना "इति" इशारा करता है कि आख़िरी जुमला "और मुहीत में जो है उसे इसी पर महमूल किया जाता है" सिराजुल वहज के कलाम से है।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): (2) और इसमें ज़ाहिरी नज़र (आपत्ति) है क्योंकि...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. मिन्हतुल ख़ालिक़ मअ अल-बहर, बहस अल-मा अल-मुस्तमल, एच. एम. सईद कंपनी कराची 1/96 2. तहतावी अलद-दुर्र, बाबुल हैज़, मतबुआ दारुल मारिफ़ा बेरूत 1/129

[دایاں کالم] جیسا کہ ان کے کلام سے سمجھ میں آتا ہے۔ بلکہ صرف معتکف کیلئے ہے وہ بھی اس شرط کے ساتھ کہ مسجد آلودہ نہ ہو۔ بدائع میں ہے (اس کے بعد وہ پوری عبارت درج کی ہے جو اعتکاف بحر کے حوالہ سے ابھی ہم لکھ چکے) اور صاحب خیر یہ علامہ رملی نے اپنے حاشیہ میں لکھا ہے کہ : "ظاہر اسی کی ترجیح ہے جو فتاوی قاضی خان میں ہے اھ"۔ یہ عبارت علامہ شامی نے منحۃ الخالق میں نقل کی ہے۔ (ت)

اقول: بلکہ (بجائے ترجیح کے) تطبیق بہتر ہے۔ اگر برتن ایسا ہو جس میں یہ اندیشہ ہو کہ سارا غسالہ اس کے اندر نہ پڑے گا بلکہ کچھ چھینٹے اس سے باہر بھی جائیں گے تو اندرونِ مسجد ایسے برتن میں وضو مکروہ ہے۔ شاید یہی صورت زیادہ تر پائی جاتی ہے اسی لئے باب الاعتکاف میں مطلقاً منع کیا ہے اور اگر چھینٹے باہر جانے کا اندیشہ نہ ہو تو مکروہ نہیں۔ یہی خانیہ کی مراد ہے واللہ تعالٰی اعلم، یہ ذہن نشین رہے زیر بحث مسئلہ (مسجد سے نکلنے کیلئے تیمم جنب) میں سید طحطاوی اور سید ابو السعود ازہری لکھتے ہیں کہ : "عبارت محیط کا ظاہر بتاتا ہے کہ یہ تیمم واجب ہے اور سراج میں یہ تفصیل ہے کہ اگر تیزی سے نکل جائے تو ترک تیمم جائز ہے اور کسی خوف کی وجہ سے ٹھہر رہا ہے تو ترک جائز نہیں اور اس پر وہ بھی محمول ہوگا جو محیط میں ہے اھ اھ " طحطاوی وازہری کی عبارت سے یہ بھی معلوم ہوا کہ آخری جملہ (اسی پر وہ بھی محمول ہوگا جو محیط میں ہے) سراج وہاج کا قول ہے۔ (ت)

اقول: یہ کھلے طور پر محل نظر ہے اس لئے کہ

[بایاں کالم] قاضیخان 1 اھ نقلہ فی المنحۃ۔ اقول: بل (۱) الاولی التوفیق فان کان الاناء بحیث یخشی ان لاتقع الغسالۃ کلھا فیہ بل یترشش بعض منھا خارجہ کسرہ ولعلہ الغالب فلذا اطلق المنع فی باب الاعتکاف وان امن ذلک لم یکرہ وھو مراد الخانیۃ واللہ تعالی ھذا وقال ط فی المسألۃ الدائرۃ ھو والسید ابو السعود الازھری ظاھر ما فی المحیط وجوب ھذا التیمم وفصل فی السراج بین ان یخرج سریعاً فیجوز ترکہ او یمکث فیہ للخوف فلایجوز ترکہ وعلیہ یحمل مافی المحیط 2 اھ اھ دل قولھما اھ علی ان الجملۃ الاخیرۃ علیہ یحمل مافی المحیط من کلام السراج الوھاج۔

اقول: (۲) وفیہ نظر ظاہر فان

[حواشی] 1 منحۃ الخالق مع البحر بحث الماء المستعمل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۹۶ 2 طحطاوی علی الدر باب الحیض مطبوعہ دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۱۲۹

The text of Al-Muhit explicitly mentions the case of exiting, not staying; this should be kept in mind. And now I say (Aqulu), and success is only from God: The distinction made by those who differentiate between entering and exiting the mosque in a state of ritual impurity (janabat) is supported by an issue regarding fasting. Jurists have clarified that if someone had intercourse forgetfully, or was having intercourse at night and dawn broke, if in the first case he withdraws as soon as he remembers, and in the second case as soon as dawn appears, then nothing is due from him, even if semen is discharged after withdrawal, because it is like a nocturnal emission (ihtilam). But if he did not withdraw immediately and stayed even for a short while, he must make up the fast, as mentioned in Durr-e-Mukhtar and general books. From this, it is known that insertion is intercourse and staying is also intercourse, but withdrawing and pulling back is not intercourse; rather, it is desisting from intercourse, otherwise, the fast would definitely be invalidated. (Similarly, a person in a state of janabat entering and staying in a mosque is prohibited and not permissible without tayammum, but leaving the mosque is not prohibited even without tayammum). (T) However, it can be said that the aforementioned case of desisting from intercourse is an exception from the noble verse: "It has been made lawful for you to go to your wives on the night of the fasts" [Quran 2:187]. Since the night lasts until the break of dawn, the permissibility of intimacy will extend until the break of dawn, which necessitates that staying and withdrawing occur after dawn. In this case, as long as the withdrawal after dawn is not complete, the meaning of being occupied with the private parts persists, yet it was not counted as intercourse because there is no other way to desist except this.

Unlike the person in the mosque, who has the option of performing tayammum. Reflect, for this is its place.

1. Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Chapter on what invalidates fasting, Mustafa al-Babi Egypt, 2/108.
2. Quran 2/187.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द सोम (तीसरी)

मुहीत की इबारत में ठहरने वाली सूरत का ज़िक्र नहीं है बल्कि केवल निकलने की सूरत का स्पष्ट बयान है, यह बात ज़हन में रहे। और अब मैं कहता हूँ (अक़ूलु) और तौफ़ीक़ ख़ुदा ही से है: जनाबत (अशुद्धि) के साथ मस्जिद में दाख़िल होने और निकलने की सूरतों में जो हज़रात फ़र्क़ करते हैं, उनकी ताईद रोज़े के एक मसले से होती है। फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने स्पष्ट किया है कि जिसने भूलकर जिमा (संभोग) किया या रात को जिमा कर रहा था कि फ़ज्र (भोर) तुलू हो गई, अगर पहली सूरत में याद आते ही और दूसरी सूरत में फ़ज्र नमूदार होते ही हट गया तो उसके ज़िम्मे कुछ नहीं, चाहे हटने के बाद मनी ख़ारिज हो क्योंकि यह एहतिलाम (स्वप्नदोष) की तरह होगा। और अगर फ़ौरन न हटा बल्कि ज़रा देर ही ठहरा रहा तो रोज़े की क़ज़ा करे, जैसा कि दुर्रे मुख़्तार और आम किताबों में ज़िक्र है। इससे मालूम हुआ कि दाख़िल करना जिमा है और ठहरना भी जिमा है, लेकिन निकालना और हटना जिमा करना नहीं बल्कि जिमा से बाज़ आना है, वर्ना रोज़ा ज़रूर फ़ासिद हो जाता। (इसी तरह जुनबी का मस्जिद में दाख़िल होना और ठहरना तो ममनू (वर्जित) है और बग़ैर तयम्मुम जायज़ नहीं, मगर मस्जिद से निकलना यह ममनू नहीं, बिला तयम्मुम भी जायज़ है)। (त) मगर यह कहा जा सकता है कि जिमा से रुकने वाली मज़कूरा सूरत आयत-ए-करीमा: "तुम्हारे लिए रोज़े की रात में अपनी औरतों से क़ुर्बत जायज़ की गई" [क़ुरान 2:187] से मुस्तस्ना (अपवाद) है। इसलिए कि रात तुलू-ए-फ़ज्र तक है तो क़ुर्बत का जवाज़ तुलू-ए-फ़ज्र तक दराज़ होगा जिसके लिए लाज़िम है कि रुकना और निकालना बाद-ए-फ़ज्र वाक़े हो, तो उस सूरत में जब तक कि बाद-ए-फ़ज्र हटना मुकम्मल नहीं होता शर्मगाह से मशगूलियत का मा'नी मुतहक़्क़क़ रहता है, फिर भी उसे जिमा न शुमार किया गया क्योंकि इसके अलावा हटने का कोई रास्ता नहीं।

बर-ख़िलाफ़ उस शख़्स के जो मस्जिद में हो, उसके लिए तयम्मुम का रास्ता है। ग़ौर करो क्योंकि यही उसका मक़ाम है।

1. अल-दुर्रुल मुख़्तार मअ-शामी, बाब मा युफ़सिदुस सौम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 2/108।
2. क़ुरान 2/187।

पेज 490 / 756

عبارت محیط میں ٹھہرنے والی صورت کا ذکر نہیں بلکہ صرف صورت خروج کا صریح بیان اس میں ہے یہ ذہن نشین رہے۔ اور اب میں کہتا ہوں (اقول) اور توفیق خدا ہی سے ہے۔ جنابت کے ساتھ مسجد میں داخل ہونے اور نکلنے کی صورتوں میں جو حضرات فرق کرتے ہیں ان کی تائید روزہ کے ایک مسئلہ سے ہوتی ہے۔ فقہاء نے تصریح فرمائی ہے کہ جس نے بھول کر جماع کیا یارات کو جماع کر رہا تھا کہ فجر طلوع ہو گئی اگر پہلی صورت میں یاد آتے ہی، اور دوسری صورت میں فجر نمودار ہوتے ہی ہٹ گیا تو اس کے ذمہ کچھ نہیں اگر ہٹنے کے بعد منی خارج ہو اس لئے کہ یہ احتلام کی طرح ہوگا اور اگر فوراً نہ ہٹا بلکہ ذرا دیر ہی ٹھہرا رہا تو روزہ کی قضا کرے جیسا کہ درمختار اور عامہ کتب میں مذکور ہے۔ اس سے معلوم ہوا کہ داخل کرنا جماع ہے اور ٹھہرنا بھی جماع ہے لیکن نکالنا اور ہٹنا جماع کرنا نہیں بلکہ جماع سے باز آنا ہے ورنہ روزہ ضرور فاسد ہوجاتا (اسی طرح جنب کا مسجد میں داخل ہونا اور ٹھہرنا تو ممنوع ہے اور بغیر تیمم جائز نہیں مگر مسجد سے نکلنا یہ ممنوع نہیں بلا تیمم بھی جائز ہے)۔ (ت) مگر یہ کہا جاسکتا ہے کہ جماع سے رُکنے والی مذکورہ صورت آیت کریمہ اُحِلَّ لَکُم لَیلَۃَ الصِّیَامِ الرَّفَثُ إِلَیٰ نِسَائِکُمْ (تمہارے لئے روزے کی رات میں اپنی عورتوں سے قربت جائز کی گئی) سے مستثنیٰ ہے۔ اس لئے کہ رات طلوع فجر تک ہے تو قربت کا جواز طلوع فجر تک دراز ہو گا جس کیلئے لازم ہے کہ رکنا اور نکالنا بعد فجر واقع ہو تو اس صورت میں جب تک کہ بعد فجر ہٹنا مکمل نہیں ہوتا شرمگاہ سے مشغولیت کا معنی متحقق رہتا ہے پھر بھی اسے جماع نہ شمار کیا گیا اس لئے

بخلاف من فی المسجد فله سبیل الی التیمم تأمل فانه موضعه۔

1 الدرالمختار مع الشامی باب مایفسد الصوم مصطفی البابی مصر ۲/۱۰۸ 2 القرآن ۲/۱۸۷

Fatawa Razawiyya, Volume Three

I say: Based on this, it is not far-fetched to say that the one in a state of major ritual impurity (junub) is prohibited from the mosque, both for staying and passing through. In exiting without Tayammum, he is a passer-by, and in staying for Tayammum, he is a dweller, because he does not become pure as long as Tayammum is not completed. If his staying is for the purification of the body, then his passing through is for the sanctity of the mosque. He is caught between two hardships, so let him choose the lighter of the two; and between two salvations, let him seek the faster of the two, by considering which is quicker: his Tayammum or his exit, and then choosing it. If they are equal, he is given a choice. However, it is not for someone like me to have an opinion in a legal ruling; rather, my duty is to follow what they [the jurists] have preferred and authenticated. Therefore, I say: In al-Khaniyah, al-Muhit, and al-Ikhtiyar, the opinion of obligation (wujub) is given precedence. The profound jurist (faqih al-nafs) only prioritizes what is most apparent and well-known, as he explicitly stated at the beginning of his fatwas. (T)

...that for him, in such a state, there is no other way to stay or refrain. But the junub who wants to leave the mosque, it is not necessary for him to leave while in a state of ritual impurity; rather, there is a way for him to leave after performing Tayammum. Reflect, for it is a point for reflection. (T)

I say: Upon this objection, if it is said, then it would not be far-fetched that for a junub, both staying in the mosque and passing through the mosque are prohibited. And if he leaves without Tayammum, the situation of passing through occurs, and if he stops to perform Tayammum, the situation of staying occurs, because as long as his Tayammum is not complete, he remains impure and a junub. Now see, if his staying is for the purification of the body, then his passing through is for the sanctity of the mosque. Thus, he is surrounded by two calamities (staying and passing through). Let him choose whichever is easier and lighter. And two salvations are before him (purification of body and sanctity of mosque). Whichever can be achieved sooner, let him obtain it. He should consider which can be faster: performing Tayammum or going outside. Whichever is quicker, let him choose it. And if both are equal, he can choose either. This is the decision that came to my mind, but it is not the place for a person like me to have a word in any ruling. My duty is only to follow what the noble jurists have preferred and what they have authenticated. (T) In light of this, I say (I say): In Khaniyah, Muhit, and Ikhtiyar, the opinion of the obligation of

Tayammum is placed first, and Imam Faqih al-Nafs prioritizes that which is more apparent and famous, as he himself did at the beginning of Fatawa Khaniyah.

फ़तावा रज़विया, खंड तीन

मैं कहता हूँ: इस आधार पर, यह कहना दूर की बात नहीं है कि जुनुब (महा-अशुद्धि की स्थिति वाला व्यक्ति) को मस्जिद में रुकने और वहाँ से गुज़रने, दोनों से मना किया गया है। तैयम्मुम के बिना बाहर निकलते समय वह गुज़रने वाला है, और तैयम्मुम के लिए रुकते समय वह रुकने वाला है, क्योंकि वह तब तक शुद्ध नहीं होता जब तक तैयम्मुम पूरा न हो जाए। यदि उसका रुकना शरीर की शुद्धि के लिए है, तो उसका गुज़रना मस्जिद की पवित्रता (तन्ज़ीह) के लिए है। वह दो कठिनाइयों के बीच फँसा है, इसलिए उसे हल्की वाली चुननी चाहिए। और दो मोक्षों के बीच, उसे तेज़ वाला अपनाना चाहिए, यह देखते हुए कि कौन सा तेज़ है: उसका तैयम्मुम या उसका बाहर निकलना, और फिर उसे चुन लेना चाहिए। यदि वे बराबर हैं, तो उसके पास विकल्प है। हालाँकि, मुझ जैसे व्यक्ति के लिए किसी कानूनी हुक्म में अपनी राय देना उचित नहीं है; बल्कि मेरा कर्तव्य उन्हीं का अनुसरण करना है जिन्हें उन्होंने (फ़कीहों ने) वरीयता दी है और प्रमाणित किया है। अतः मैं कहता हूँ: अल-खानिया, अल-मुहीत और अल-इख्तियार में, अनिवार्यता (वजुब) की राय को प्राथमिकता दी गई है। प्रबुद्ध न्यायविद (फ़कीह अल-नफ़्स) केवल उसी को प्राथमिकता देते हैं जो सबसे अधिक स्पष्ट और प्रसिद्ध है, जैसा कि उन्होंने स्वयं अपने फ़तवों की शुरुआत में स्पष्ट किया है। (त)

...कि उसके लिए ऐसी स्थिति में बैठने और बाज़ आने का और कोई रास्ता नहीं। लेकिन जो जुनुबी मस्जिद से निकलना चाहता है, उसके लिए जनाबत (अशुद्धि) के साथ ही निकलना ज़रूरी नहीं है, बल्कि उसके लिए एक सूरत यह है कि तैयम्मुम करके निकले। विचार करें, क्योंकि यह [चिंतन का] बिंदु है। (त)

मैं कहता हूँ: इस आपत्ति पर यदि यह कहा जाए, तो यह दूर की बात नहीं होगी कि जुनुब के लिए मस्जिद में ठहरना और मस्जिद से गुज़रना दोनों ही मना हैं। और अगर वह बिना तैयम्मुम के निकलता है तो गुज़रने की स्थिति पाई जाती है और तैयम्मुम करने के लिए रुकता है तो ठहरने की स्थिति पाई जाती है, क्योंकि जब तक उसका तैयम्मुम मुकम्मल नहीं होता, वह नापाक और जुनुब ही रहता है। अब देखिए, उसका यह ठहरना अगर बदन की शुद्धि के लिए है तो उसका गुज़रना मस्जिद की पवित्रता के लिए है। अतः वह दो मुसीबतों में घिरा है (ठहरना और गुज़रना)। जो आसान और हल्की हो उसे चुन ले। और दो निजातें उसके सामने हैं (बदन की शुद्धि और मस्जिद की पवित्रता)। जो जल्दी मिल सके उसी को हासिल कर ले। वह विचार करे कि कौन जल्दी हो सकता है: तैयम्मुम करना या बाहर निकलना। जो जल्दी हो उसे चुन ले। और अगर दोनों बराबर हों तो किसी को भी चुन

सकता है। यह वह फ़ैसला है जो मेरे ज़हन में आया, मगर मुझ जैसे शख़्स का यह मक़ाम नहीं कि किसी हुक्म में उसका कोई क़ौल (बात) हो। मेरे ज़िम्मे तो उसी का पालन है जिसे फ़ुक़्हा-ए-किराम ने तरजीह दी और जिसकी तस्हीह (पुष्टि) की। (त) इसके पेश-ए-नज़र मैं कहता हूँ (अकौल): खानिया, मुहीत और इख्तियार में तैयम्मुम की अनिवार्यता के कथन को पहले रखा गया है और इमाम फ़कीह अल-नफ़्स उसी को पहले रखते हैं जो अधिक स्पष्ट और मशहूर हो जैसा कि फ़तावा खानिया के शुरू में उन्होंने खुद ही...

पेज 491 / 756

اقول: لا یبعد علی هذا ان قیل ان الجنب ممنوع عن المسجد لبثاً واجتیازاً وهو في الخروج بلا تیمّم مجتاز وفی اللبث للتیمم ماکث لانه لا یطهر مالم یتم التیمم فان کان مکثه هذا لتطهیر الجسد فان اجتیازه هذا لتنزیه المسجد فهو بین بیلتین فلیختر اهونهما وبین نجاتین فلیرتد اعجلهما بأن ینظر ایهما اسرع تیممه او خروجه فیختاره وان استویا خیر ولکن لیس لمثلی ان یکون له قیل في حکم وانما علی اتباع مارجحوه وصححوه۔ فاذن اقول: قدم فی الخانیة والمحیط والاختیار القول بالوجوب وفقیه النفس لا یقدم الا الاظهر الاشهر کما صرح بنفسه في صدر فتاواه (ت)

کہ اس کیلئے ایسی حالت میں بیٹھنے اور باز آنے کی اور کوئی صورت نہیں لیکن جو جنبی مسجد سے نکلنا چاہتا ہے اس کیلئے جنابت کے ساتھ ہی نکلنا ضروری نہیں بلکہ اس کیلئے ایک صورت یہ ہے کہ تیمّم کر کے نکلے تامل فانہ موضع (یہاں تامل اور غور کرنے کا موقع ہے۔) (ت)

اقول: اس اعتراض پر اگر یہ کہا جائے تو بعید نہ ہوگا کہ جنب کیلئے مسجد میں ٹھہرنا اور مسجد سے گزرنا دونوں ہی منع ہے اور اگر وہ بلا تیمّم نکلتا ہے تو گزرنے کی صورت پائی جاتی ہے اور تیمّم کرنے کیلئے رُکتا ہے تو ٹھہرنے کی صورت پائی جاتی ہے، اس لئے کہ جب تک اس کا تیمّم مکمل نہیں ہوتا وہ ناپاک اور جنب ہی ہے۔ اب دیکھئے اس کا یہ ٹھہرنا اگر بدن کی تطہیر کیلئے ہے تو اس کا گزرنا مسجد کی تنزیہ کیلئے ہے تو وہ دو مصیبتوں میں گھرا ہے (ٹھہرنا اور گزرنا) جو آسان اور ہلکی ہو اسے اختیار کرے اور دو نجاتیں اس کے سامنے ہیں (تطہیر بدن اور تنزیہ مسجد) جو جلد مل سکے اسی کو حاصل کرلے وہ نظر کرے کہ کون جلد ہو سکتا ہے تیمّم کرنا یا باہر نکلنا جو جلدی ہوا سے اختیار کرے اور اگر دونوں برابر ہوں تو کسی کو بھی اختیار کر سکتا ہے یہ وہ فیصلہ ہے جو میرے ذہن میں آیا مگر مجھ جیسے شخص کا یہ مقام نہیں کہ کسی

حکم میں اس کا کوئی قول ہو۔ میرے ذمّہ تو اسی کا اتباع ہے جسے فقہائے کرام نے ترجیح دی اور جس کی تصحیح کی (ت) اس کے پیشِ نظر میں کہتا ہوں (اقول) خانیہ، محیط اور اختیار میں وجوبِ تیمّم کا قول مقدم رکھا ہے اور امام فقیہ النفس اسی کو مقدم کرتے ہیں جو اظہر و اشہر ہو جیسا کہ فتاوی خانیہ کے شروع میں خود ہی

Fatawa Razawiya, Volume 3

[Top Table] Left Column (Arabic): This is what has been specified, so this will be the relied-upon opinion, as stated by Tahtawi and Shami. Similarly, other scholars have also prioritized it, and prioritization is a proof of preference. Secondly, we are caught between a prohibition and a permission (between those who declare it impermissible and those who declare it permissible). Therefore, following the prohibition is more precautionary. Thirdly, those who say it is permissible do not forbid tayammum; rather, they consider it recommended. Those who say it is impermissible consider tayammum mandatory. Thus, performing tayammum is a matter of consensus (no one disagrees with its permissibility), while abandoning tayammum is a matter of disagreement (because according to those who deem tayammum mandatory, abandoning it is not permissible). Therefore, it is better and more appropriate to adopt the path of consensus. And Allah Subhanah wa Ta'ala knows best.

Right Column (Urdu): This has been clarified, so the relied-upon opinion will be the same as stated by Tahtawi and Shami. Similarly, other scholars have also put it first, and putting it first is a sign of preference. Secondly, the fact is that we are between prohibitor and permitter (those who declare it impermissible and those who declare it permissible). Therefore, in adopting the prohibitor's view lies greater precaution. Thirdly, those who say it is permissible also do not forbid tayammum; rather, they consider it recommended. And those who say it is impermissible declare tayammum to be mandatory. So the situation of performing tayammum is agreed upon (no one differs regarding its permissibility), and the situation of abandoning tayammum is disputed (because according to those who call tayammum mandatory, abandoning it is not permissible). So it is better and more appropriate to choose the situation which is agreed upon. And Allah Subhanah wa Ta'ala knows best. (T)

(124) There is a need for a bath (ghusl) and the water is inside the mosque, such as a pool in the middle of the mosque or a well where the path to it is through the mosque itself, and no water is found anywhere else, nor is there anyone to bring it from inside the mosque; he should perform tayammum and then go and bring the water. It is in Muhit-e-Razawi and then in Al-Bahr al-Ra'iq:

[Middle Table] Left Column (Arabic): A person in a state of ritual impurity (junub) who passes by a mosque containing water performs tayammum for entry, and it is not permissible for him except with tayammum.1

Right Column (Urdu): If someone in a state of ritual impurity has to pass through a mosque where there is water, he should perform tayammum for entering the mosque, and it is not permissible for him to enter without tayammum. End. (T)

In Mabsut then Inayah then Shami, it is stated:

[Lower Table] Left Column (Arabic): A traveler passes by a mosque containing a spring of water while he is in a state of ritual impurity, and he finds no other water; according to us, he performs tayammum for entry into the mosque.2

Right Column (Urdu): If a traveler in a state of ritual impurity passes by a mosque that has a spring of water and no other water is within his reach, according to us, he must perform tayammum to enter the mosque. (T)

Footnotes: 1 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, under the statement "even if in ritual impurity or menstruation," H.M. Saeed Company Karachi, 1/127. 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Menstruation, Mustafa al-Babi Egypt, 1/214.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[ऊपरी तालिका] बायाँ कॉलम (अरबी): इसकी स्पष्ट व्याख्या की गई है, तो विश्वसनीय कथन यही होगा जैसा कि तहतावी और शामी ने फ़रमाया। इसी तरह अन्य विद्वानों ने भी इसे प्राथमिकता दी है और प्राथमिकता प्राथमिकता का प्रमाण है। दूसरी बात यह है कि हम निषेध और अनुमति (अवैध घोषित करने वाले और वैध घोषित करने वाले) के बीच में हैं, तो निषेध को अपनाने में ही अधिक सावधानी है। तीसरी बात यह है कि जो वैध कहते हैं, वे भी तयम्मुम से मना नहीं करते, बल्कि इसे मुस्तहब (पसंदीदा) कहते हैं और जो अवैध कहते हैं, वे तयम्मुम को वाजिब (अनिवार्य) करार देते हैं। तो तयम्मुम करने की स्थिति 'मुत्तफ़क़ अलैह' (सर्वसम्मत) है (किसी को इसके वैध होने से मतभेद नहीं) और तयम्मुम छोड़ने की स्थिति 'मुख़्तलफ़ फ़ीह' (विवादास्पद) है (क्योंकि तयम्मुम को वाजिब कहने वालों के नज़दीक तयम्मुम छोड़ना जायज़ नहीं)। तो उसी सूरत को अपनाना बेहतर और श्रेष्ठ है जो सर्वसम्मत है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

दायाँ कॉलम (उर्दू): इसकी स्पष्ट व्याख्या कर दी गई है, तो विश्वसनीय कथन यही होगा जैसा कि तहतावी और शामी ने फ़रमाया। इसी प्रकार अन्य विद्वानों ने भी इसे प्राथमिकता दी है और प्राथमिकता वरीयता का प्रमाण है। दूसरी बात यह है कि हम निषेध और अनुमति (मना करने वाले और अनुमति देने वाले) के बीच हैं, तो मना करने वाले के पक्ष को चुनने में ही अधिक सावधानी है। तीसरी बात यह है कि जो अनुमति देते हैं, वे भी तयम्मुम से मना नहीं करते बल्कि उसे सराहनीय (मुस्तहब) मानते हैं, और जो मना करते हैं वे तयम्मुम को अनिवार्य (वाजिब) घोषित करते हैं। तो तयम्मुम करने की स्थिति सर्वसम्मत है (किसी को इसकी अनुमति से मतभेद नहीं) और तयम्मुम को छोड़ने की स्थिति विवादास्पद है (क्योंकि तयम्मुम को अनिवार्य मानने वालों के निकट उसे छोड़ना जायज़ नहीं है)। तो उसी विकल्प को चुनना बेहतर और श्रेष्ठ है जो सर्वसम्मत है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

(124) नहाने की ज़रूरत है और पानी मस्जिद के अंदर है, जैसे मस्जिद के बीच में हौज़ या वह कुआँ जिस तक पहुँचने का रास्ता मस्जिद ही से होकर है, और इसके अलावा कहीं पानी नहीं मिलता और न ही कोई मस्जिद से लाकर देने वाला है, तो तयम्मुम करके जाए और पानी ले आए। मुहीत-ए-रज़वी फिर अल-बहररर्राइक में है:

[मध्य तालिका] बायाँ कॉलम (अरबी): जुनूब (अनुष्ठानिक अशुद्धता की स्थिति में व्यक्ति) जो ऐसी मस्जिद से गुज़रता है जिसमें पानी है, वह प्रवेश के लिए तयम्मुम करेगा, और उसके लिए बिना तयम्मुम के प्रवेश करना वैध नहीं है।1

दायाँ कॉलम (उर्दू): किसी जनाबत (अशुद्धता) वाले को किसी ऐसी मस्जिद से गुज़रना है जिसमें पानी है तो मस्जिद में प्रवेश के लिए वह तयम्मुम करे और उसे बिना तयम्मुम प्रवेश करना जायज़ नहीं। समाप्त। (त)

मबसूत फिर इनाया फिर शामी में है:

[निचली तालिका] बायाँ कॉलम (अरबी): कोई मुसाफ़िर जनाबत की हालत में ऐसी मस्जिद के पास से गुज़रा जिसमें पानी का चश्मा है और दूसरा पानी उसकी पहुँच में नहीं, तो हमारे नज़दीक मस्जिद में प्रवेश के लिए उसे तयम्मुम करना है।2

दायाँ कॉलम (उर्दू): कोई मुसाफ़िर जनाबत की हालत में ऐसी मस्जिद के पास से गुज़रा जिसमें पानी का चश्मा है और दूसरा पानी उसकी पहुँच में नहीं, तो हमारे नज़दीक मस्जिद में प्रवेश के लिए उसे तयम्मुम करना है। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1 अल-बहरर्राइक, बाब-उत-तयम्मुम, 'वलो जुनबन औ हाइज़न' के तहत, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/127 2 रद-उल-मुहतार, बाब-उल-हैज़, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/214

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

[اوپری ٹیبل] بایاں کالم (عربی): فیکون ھو المعتمد کما قالہ ط وش وکذلك قدمہ الباقون التقدیم دلیل الترجیح ثم نحن بین حاضر ومبیح فالاخذ بالحاظر احوط ثم المبیح لا ینھی عن التیمم بل یستحبہ والحاظر یوجبہ ففعلہ متفق علیہ وترکہ مختلف فیہ فالاخذ بالمتفق علیہ اولی واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔

دایاں کالم (اردو): اس کی تصریح فرمائی ہے تو معتمد قول یہی ہوگا جیسا کہ طحطاوی و شامی نے فرمایا اسی طرح دیگر حضرات نے بھی اسے مقدم رکھا ہے اور تقدیم دلیل ترجیح ہے۔ دوسری بات یہ ہے کہ ہم حاظر و مبیح (ناجائز قرار دینے اور جائز قرار دینے والے) کے درمیان ہیں تو حاظر کو اختیار کرنے میں ہی زیادہ احتیاط ہے۔ تیسری بات یہ ہے کہ جو جائز کہتے ہیں وہ بھی تیمم سے منع نہیں کرتے بلکہ اسے مستحب کہتے ہیں اور جو ناجائز کہتے ہیں وہ تیمم کو واجب قرار دیتے ہیں تو تیمم کرنے کی صورت متفق علیہ ہے (کسی کو اس کے جواز سے اختلاف نہیں) اور ترکِ تیمم کی صورت مختلف فیہ ہے (کیونکہ تیمم کو واجب کہنے والوں کے نزدیک ترکِ تیمم جائز نہیں) تو اسی صورت کو اختیار کرنا بہتر اولٰی ہے جو متفق علیہ ہے۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم (ت)

(۱۲۴) نہانے کی حاجت ہے پانی مسجد کے اندر ہے جیسے وسطِ مسجد میں حوض یا وہ کنواں جس تک مسجد ہی میں ہو کر راہ ہے اور اس کے سوا پانی اور کہیں نہیں پاتا نہ کوئی مسجد میں سے لا دینے والا ہے تیمم کرکے جائے اور پانی لے آئے۔ محیطِ رضوی پھر البحر الرائق میں ہے:

[درمیانی ٹیبل] بایاں کالم (عربی): جنب مر علی مسجد فیہ ماء یتیمم للدخول ولایباح لہ الا بالتیمم1-

دایاں کالم (اردو): کسی جنابت والے کو کسی ایسی مسجد سے گزرنا ہے جس میں پانی ہے تو دخولِ مسجد کے لئے وہ تیمم کرے اور اسے بغیر تیمم داخل ہونا جائز نہیں اھ (ت)

مبسوط پھر عنایہ پھر شامی میں ہے:

[نچلی ٹیبل] بایاں کالم (عربی): مسافر مر بمسجد فیه عین ماء وهو جنب ولایجد غیره یتیمم لدخول المسجد عندنا2-

دایاں کالم (اردو): کوئی مسافر بحالت جنابت کسی ایسی مسجد کے پاس سے گزرا جس میں پانی کا چشمہ ہے اور دوسرا پانی اس کی دسترس میں نہیں تو ہمارے نزدیک دخولِ مسجد کیلئے اسے تیمم کرنا ہے۔ (ت)

حواشی: 1 البحر الرائق باب التیمم عند قوله ولو جنباً او حائضاً ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۷ 2 رد المحتار، باب الحیض، مصطفیٰ البابی مصر، ۱/ ۲۱۴

Volume Three Fatawa Razawiyya In Munyah it is stated:

[Table Header] Arabic Text: A person in a state of major ritual impurity (junub) who finds water in the mosque and has no one with him should perform dry ablution (tayammum) and enter. 1 It is stated in Al-Hilyah: provided that there is no other water within his reach that he is legally (shari'i) capable of using, 2 etc. I say: Indeed, both conditions have been combined, and both are definitely intended, even though they were omitted in Al-Muheet and only one of them was mentioned in Al-Mabsut and Al-Munyah.

Urdu Translation/Explanation: A person in a state of junub finds water only in the mosque and there is no one else with him, so he should perform tayammum and enter the mosque. It is stated in Hilyah: On the condition that no other such water is within his reach that he has the legal power to use etc. (T) I say: Both conditions are combined in Hilyah and both are definitely intended, even if both were not mentioned in Muheet. And in Mabsut and Munyah, only one each was sufficed with. (T)

(146 to 148) I say: As before, the same situations will apply here, that if the one who brings water asks for a standard wage and he can give it now, or the person is willing to give it on credit, tayammum is not permissible; otherwise, it is permissible.

[Section] Arabic: Then I saw, by the grace of Allah Almighty, some of these pointed out in Al-Hilyah with additional benefits from him. Refer to them under the aforementioned statement of Al-Munyah.

Urdu: Then I saw that, praise be to Allah Almighty, some of these have been indicated in Al-Hilyah along with some further insights. All these should be looked up in Al-Hilyah under the mentioned text of Al-Munyah. (T)

[Closing Section] Arabic: He (may Allah have mercy on him) said: Is it obligatory or recommended to ask someone for that? This is a point of reflection, and it can be derived from the issue of seeking water from a traveling companion when they have water.

Urdu: The author of Hilyah (may Allah have mercy on him) writes: Is asking this other person for water obligatory or recommended? This is a matter for consideration. Its derivation can be based on the issue of when a traveling companion has water.
(Continued on next page)

Footnotes: 1. Munyat al-Musalli, Chapter on Tayammum, Maktaba Qadiriyah, Jamia Nizamiyya Razawiyya, Lahore, p. 52. 2. Hilyah.

जिल्द सोम (भाग 3) फ़तावा रज़विया मुनया में है:

[तालिका शीर्षक] अरबी पाठ: जुन्ब वजद अल-मा' फ़िल-मस्जिद व लईसा मा'हु अहदुन तयम्मुम व दख़ला 1 क़ाला फ़िल-हिलया इज़ा काना ला यजीदु मा'अन ग़ैरहु यक़दिरु अला इस्तेमालिहि शरअन 2 अलख। अक़ूल: फ़क़द जमाआ बैना अश-शरतनै व हुमा मुरादानि क़तअन व इन अह्-मलहुमा फ़िल-मुहीत व अक़्तसरा फ़िल-मबसूत वल-मुनया अला वाहिद वाहिद।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या: कोई जुनूब है जिसके लिए मस्जिद ही में पानी उपलब्ध है और उसके साथ कोई दूसरा नहीं तो वह तयम्मुम करके मस्जिद में जाए। हिल्या में फ़रमाया: बशर्ते कि कोई दूसरा ऐसा पानी उसकी पहुँच में न हो जिसके इस्तेमाल पर शरीअतन उसे क़ुदरत हो आदि। (त) अक़ूल (मैं कहता हूँ): हिल्या में दोनों शर्तें जमा कर दी हैं और दोनों ही क़तअन मुराद हैं अगरचे मुहीत में दोनों ज़िक्र न कीं। और मबसूत व मुनया में सिर्फ़ एक एक पर इक़्तफ़ा (बस) किया। (त)

(146 से 148) अक़ूल: बदस्तूर यहाँ भी वही सूरतें होंगी कि अगर पानी ला देने वाला उजरते मिस्ल (साधारण मज़दूरी) माँगता है और यह अभी दे सकता है या वह उधार पर राज़ी है तो तयम्मुम जाइज़ नहीं वरना जाइज़,

[अनुभाग] अरबी: सुम्मा रायतु बिहम्दिल्लाहि तआला अशारा इला बाज़िहा फ़िल-हिलया मआ इफ़ादातिन अन्हु ज़ाएदतिन फ़राजिअहा तह्ता क़ौलि अल-मुनया अल-मज़कूर।

उर्दू: फिर मैंने देखा कि बहम्दुल्लाह तआला उनमें से बाज़ की तरफ़ हिल्या में मज़ीद कुछ इफ़ादात के साथ इशारा फ़रमाया है। मुनया की मज़कूरा इबारत के तहत यह सब हिल्या में देखा जाए। (त)

[समापन अनुभाग] अरबी: अन्हु क़ाला रहिमहुल्लाहु तआला हल यजीबु सुआलु ज़ालिका लि-अहदुन औ युस्तहब्बु, फ़ीहि तअम्मुलुन व युमकिनु अन युफ़र्रआ अला मसअलाह तलब अल-मा' रफ़ीक़िहि इज़ा काना मा'हु मा'अन।

उर्दू: साहब-ए-हिल्या रहमतुल्लाहि तआला रक़म तराज हैं: इस दूसरे शख़्स से पानी माँगना वाजिब है या मुसतहब है। यह मक़ामे तअम्मुल है। इसकी तफ़रीअ इस मसले पर की जा सकती है जब रफ़ीक़े सफ़र (यात्रा के साथी) के पास पानी हो। (बाक़ी अगले सफ़े पर)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. मुनयतुल मुसल्ली बाबुत तयम्मुम, मक्तबा क़ादरिया जामिआ निज़ामिया रज़विया, लाहौर पेज 52। 2. हिल्या।

جلد سوم فتاویٰ رضویہ منیہ میں ہے:

[جدول] عربی عبارت: جنب وجد الماء في المسجد وليس معه احد تيمّم ودخل 1 قال في الحلية اذا كان لايجد ماء غيره يقدر على استعماله شرعاً 2 الخ۔ اقول: فقد جمع بين الشرطين وهما مراد ان قطعاً وان اهملهما في المحيط واقتصر في المبسوط والمنية على واحد واحد۔

اردو ترجمہ و تشریح: کوئی جنب ہے جس کے لئے مسجد ہی میں پانی دستیاب ہے اور اس کے ساتھ کوئی دوسرا نہیں تو وہ تیمم کرکے مسجد میں جائے۔ حلیہ میں فرمایا: بشرطیکہ کوئی دوسرا ایسا پانی اس کی دسترس میں نہ ہو جس کے استعمال پر شرعاً اسے قدرت ہو الخ۔ (ت) اقول: حلیہ میں دونوں شرطیں جمع کردی ہیں اور دونوں ہی قطعاً مراد ہیں اگرچہ محیط میں دونوں ذکر نہ کیں۔ اور مبسوط ومنیہ میں صرف ایک ایک پر اکتفاء کیا۔ (ت)

(۱۴۶ تا ۱۴۸) اقول: بدستور یہاں بھی وہی صورتیں ہوں گی کہ اگر پانی لادینے والا اجرت مثل مانگتا ہے اور یہ ابھی دے سکتا ہے یا وہ ادھار پر راضی ہے تیمم جائز نہیں ورنہ جائز،

[حصہ] عربی: ثم رأيت بحمدالله تعالى اشار الى بعضها في الحلية مع افادات عنه زائدة فراجعها تحت قول المنية المذكور۔

اردو: پھر میں نے دیکھا کہ بحمد اللہ تعالیٰ ان میں سے بعض کی طرف حلیہ میں مزید کچھ افادات کے ساتھ اشارہ فرمایا ہے۔ منیہ کی مذکورہ عبارت کے تحت یہ سب حلیہ میں دیکھا جائے۔ (ت)

[اختتامی حصہ] عربی: عنه قال رحمه الله تعالى هل يجب سوال ذلك لاحد اويستحب، فيه تأمل ويمكن ان يفرع على مسئلة طلب الماء رفيقه اذا كان معه ماء

اردو: صاحب حلیہ رحمہ اللہ تعالیٰ رقم طراز ہیں: اس دوسرے شخص سے پانی مانگنا واجب ہے یا مستحب ہے۔ یہ مقام تامل ہے۔ اس کی تفریع اس مسئلہ پر کی جاسکتی ہے جب رفیق سفر کے پاس پانی ہو۔ (باقی بر صفحہ آئندہ)

حواشی: 1. منیہ المصلی باب التیمم مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ ، لاہور ص ۵۲ 2. حلیہ

Fatawa Rizvia, Volume 3

Warning: Here in 'Bahr' (the book Bahr-ur-Raiq), another scenario is mentioned from 'Muheet Radhwi' that if there is a pond smaller than ten-by-ten (dih-dard-dih), and there is water but no rope or vessel. (Remainder of the footnote from the previous page) Branching out from one of the opinions regarding this issue, it can be said that if there is a predominant thought (Zann-e-Ghalib) that the water will be given upon request, even if it is for a fair price (Ujrat-e-Misl), then it is obligatory (Wajib) to ask for it, otherwise it is not. According to another opinion, it is not obligatory according to Imam Azam (Abu Hanifa), but it is obligatory according to the 'Sahibayn' (Abu Yusuf and Muhammad). And according to yet another opinion, it is absolutely obligatory without any difference of opinion. In the case where it is obligatory, Tayammum for entering a mosque is not valid except after refusal (by the owner of the water).

I say: Regarding the issue of a traveling companion, four opinions have been listed: The first is what was mentioned here first. The second is that if it is in a place where water is not scarce, asking is obligatory, otherwise it is recommended. The remaining two are the other two mentioned. He omitted the second opinion here because it refers back to the first one, since the ruling will not differ based on the location, but rather the basis is whether there is a predominant thought of receiving the water or not.

I say: Rather, it is more correct (1) or proper that the second opinion be omitted there as well, because there too the basis is on the predominant thought regarding the difficulty or ease of availability... (Continued on the next page).

1. Hilya

फ़तावा रज़विया, खंड 3

चेतावनी: यहाँ 'बहर' में 'मुहीत रज़वी' से एक और स्थिति लिखी है कि वह दस-दर-दस से छोटा तालाब है और पानी है पर रस्सी और कोई बर्तन नहीं है। (पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष भाग) इस मसले से संबंधित कथनों में से एक कथन के आधार पर व्याख्या करते हुए कहा जा सकता है कि यदि प्रबल धारणा (ज़न-ए-ग़ालिब) हो कि माँगने पर वह पानी दे देगा, चाहे उचित मूल्य (उजरत-ए-मिस्ल) पर ही सही, तो माँगना अनिवार्य (वाजिब) है अन्यथा नहीं। और दूसरे कथन के अनुसार, इमाम आज़म के निकट यह अनिवार्य नहीं है और साहिबैन के निकट अनिवार्य है। और एक कथन के अनुसार यह बिना किसी मतभेद के पूर्णतः अनिवार्य है। और जिस स्थिति में यह अनिवार्य है, मस्जिद में प्रवेश के लिए तयम्मुम तब तक वैध नहीं है जब तक कि वह मना न कर दे, यानी दूसरा व्यक्ति उसे पानी देने से मना न कर दे।

मैं कहता हूँ: सफर के साथी के मसले में चार कथन गिनाए गए हैं: पहला वह जो यहाँ पहले उल्लेख किया गया। दूसरा यह कि यदि ऐसी जगह हो जहाँ पानी मिलना कठिन हो तो माँगना अनिवार्य है अन्यथा मुस्तहब (पसंदीदा) है। तीसरा और चौथा शेष वही दो कथन हैं जो यहाँ वर्णित हैं। यहाँ दूसरे कथन को छोड़ दिया गया क्योंकि वह पहले कथन की ओर ही लौटता है, क्योंकि स्थान बदलने से यहाँ नियम नहीं बदलेगा बल्कि इसका आधार इस पर है कि देने की प्रबल धारणा है या नहीं?

मैं कहता हूँ: बल्कि अधिक सही (1) या सही यह है कि वहाँ भी दूसरे कथन को छोड़ दिया जाए क्योंकि वहाँ भी आधार केवल प्रबल धारणा पर ही है कि उपलब्धता कठिन है या नहीं... (शेष अगले पृष्ठ पर)।

1. हिलया

पृष्ठ 494 में से 756

تنبیہ: یہاں بحر میں محیط رضوی سے ایک اور صورت لکھی کہ وہ دس دردہ سے کم حوض ہے اور پانی ڈورا اور کوئی برتن (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) اس مسئلہ سے متعلق اقوال میں سے ایک قول پر تفریع کرتے ہوئے کہا جاسکتا ہے کہ اگر ظن غالب ہو کہ طلب کرنے پر دے دے گا خواہ اُجرت مثل پر سہی، تو طلب کرنا واجب ہے ورنہ نہیں اور دوسرے قول پر یہ کہ امام اعظم کے نزدیک واجب نہیں اور صاحبین کے نزدیک واجب ہے اور ایک قول پر یہ مطلقاً بلا اختلاف واجب ہے اور جس صورت میں وجوب ہے دخول مسجد کیلئے تیمم جائز نہیں مگر اس کے بعد ہے کہ وہ دوسرا اسے پانی نہ دے اھ

اقول: رفیق سفر کے مسئلہ میں چار اقوال گنائے ہیں : اول وہ ہے جو یہاں پہلے ذکر کیا۔ دوم یہ کہ اگر ایسی جگہ ہو جہاں پانی ملنا دشوار ہے تو طلب واجب ہے ورنہ مستحب ہے۔ سوم و چہارم بقیہ وہ دونوں قول ہیں جو یہاں ذکر کیے اور یہاں قول دوم ترک کردیا اس لئے کہ وہ اول ہی کی طرف راجع ہے کیونکہ جگہ کے مختلف ہونے سے یہاں حکم مختلف نہ ہوگا بلکہ مدار اس پر ہے کہ دینے کا ظن غالب ہے یا نہیں؟

اقول: بلکہ صحیح تر، یا صحیح یہ ہے کہ وہاں بھی قول دوم ترک کردیا جائے اس لئے کہ وہاں بھی مدار ظن ہی پر ہے دستیابی دشوار ہونے نہ ہونے کے (باقی بر صفحہ آئندہ)

۱ حلیہ

Fatawa Rizvia, Volume 3

...if he bathes in it, the water also gets spoiled and he will not be clean either; so, out of necessity, he should perform Tayammum.

(Continued from previous page's footnote) ...the mention of the place is based on the fact that an expectation of either refusal or giving arises from it.

Then I say: One who has encompassed our discourse in the subsidiary matters (furoo') will know that we have followed the first opinion in various details, and that is the correct and reliable one. Rather, the research with the divine guidance of Allah Almighty according to me is that the crux of all opinions is towards it, as I explained in my treatise "Qawanin al-Ulama fi Mutayammim 'Alima ma'a Zaid Ma'a" (The Laws of Scholars concerning a person performing Tayammum who knows that Zaid has water). The difference is that the expectation of acceptance of the request here is more than the expectation of giving water for purification there. It is highly improbable that a person in a state of major ritual impurity (junub) stands at the boundary of a mosque and informs a Muslim of his need, saying, "Give me water," and he still refuses. In this regard, there is a point of consideration in following the derivations based on the remaining three opinions because the reason for the difference is present; rather, it is necessary to follow the third opinion, which is that by consensus, asking should be made mandatory absolutely. This is because refusal in such a situation is rare, and rarity is not taken into account in legal rulings. This is what the Sovereign All-Knower has taught me. All praise is for Allah, the Master of Favours. 12 - From him, may he be forgiven (T).

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

...यदि वह इसमें स्नान करता है, तो पानी भी खराब हो जाता है और वह भी शुद्ध नहीं होगा; इसलिए विवश होकर उसे तयम्मुम करना चाहिए।

(पिछले पृष्ठ के फुटनोट से निरंतर) ...स्थान का उल्लेख इस आधार पर है कि उससे न देने या देने की संभावना उत्पन्न होती है।

फिर मैं कहता हूँ: जिसकी दृष्टि उप-शाखाओं (फुरू) में हमारे शब्दों पर विस्तृत होगी, उसे पता चल जाएगा कि हमने कई विवरणों में पहले मत का पालन किया है, और वही सही और विश्वसनीय है। बल्कि, अल्लाह तआला के अनुग्रह से मेरे अनुसार शोध यह है कि सभी मतों का सारांश इसी की ओर है, जैसा कि मैंने अपने शोध पत्र "जैद के पास पानी होने का ज्ञान रखने वाले तयम्मुम करने वाले के बारे में विद्वानों के नियम" में स्पष्ट किया है। अंतर यह है कि यहाँ अनुरोध की स्वीकृति की संभावना वहाँ शुद्धिकरण के लिए पानी दिए जाने की संभावना से अधिक है। यह अत्यंत दूर की बात है कि कोई व्यक्ति बड़ी अशुद्धता (जुनुब) की स्थिति में मस्जिद की सीमा पर खड़ा हो और किसी मुसलमान को अपनी आवश्यकता बताते हुए कहे, "मुझे पानी दे दो," और फिर भी वह इनकार कर दे। इस दृष्टि से, शेष तीन मतों पर निष्कर्ष लागू करने में विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि अंतर का कारण मौजूद है; बल्कि, तीसरे मत का पालन करना आवश्यक है, और वह यह है कि सर्वसम्मति से पूर्ण रूप से पानी माँगना अनिवार्य किया जाए। ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसी स्थिति में इनकार दुर्लभ है, और कानूनी नियमों में दुर्लभता पर विचार नहीं किया जाता है। यह वह है जो सर्वज्ञ सम्राट ने मुझे सिखाया है। सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो उपकार करने वाला है। 12 - उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए (त)।

پاس نہیں اگر اس میں نہاتا ہے پانی بھی خراب ہوتا ہے اور یہ بھی طاہر نہ ہوگا ناچار تیمم کرے،

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) مقام کا ذکر اسی بنیاد پر ہے کہ اس سے نہ دینے اور دینے کا ظن قائم ہوتا ہے۔

ثم اقول: جس کی نظر جزئیات میں ہمارے کلام پر محیط ہوگی اسے معلوم ہوگا کہ متعدد جزئیات میں ہم قول اول پر چلے ہیں اور وہی صحیح ومعتمد ہے بلکہ توفیق الہی میرے نزدیک تحقیق یہ ہے کہ سارے اقوال کا مآل اسی کی جانب ہے جیسا کہ میں نے اپنے رسالہ "قوانین العلماء فی متیمم علم مع زید ماء" میں بیان کیا ہے۔ فرق یہ ہے کہ یہاں قبول سوال کا گمان وہاں آبِ طہارت دینے کے گمان سے زیادہ ہے۔ یہ بہت بعید بات ہے کہ کنارہ مسجد پر کوئی جنابت والا کھڑا ہو اور کسی مسلمان سے اپنی حاجت بتاتے ہوئے کہے کہ مجھے پانی دے دو پھر بھی وہ انکار کر دے۔ اس لحاظ سے بقیہ تین اقوال پر تفریع جاری ہونے میں نظر ہے اس لئے کہ وجہِ فرق موجود ہے بلکہ تیسرے قول پر چلنا لازم ہے اور وہ یہ ہے کہ بالاتفاق مطلقاً سوال واجب کیا جائے اس لئے کہ ایسے موقع پر منع نادر ہے اور احکام میں نادر کا لحاظ نہیں ہوتا۔ یہ وہ ہے جو بادشاہ علام کی جانب سے مجھے علم دیا گیا۔ اور ساری تعریف احسان فرمانے والے خدا ہی کیلئے ہے۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Ridawiyya Volume Three

Arabic	Urdu
This is its text: And if there were in it (meaning in the mosque, I say this is not a restriction as is not hidden) a small fountain and one cannot scoop water from it, then one should not perform Ghusl (ritual bath) in it but should perform Tayammum because bathing in it will spoil the water and one will not come out pure, so bathing would be useless. - End (T)	Its text is this: And if there is in it (meaning in the mosque, I say this is not a restriction as is not hidden) a small fountain and one cannot scoop water from it, then one should not perform Ghusl in it but should perform Tayammum because bathing in it will spoil the water and one will not come out pure, so bathing would be useless. - End (T)

I say: But this is based on an incorrect view. The correct and reliable view is that the Ghusl will be valid and the water will become 'Mustamal' (used).

Arabic	Urdu
Because water does not become 'Mustamal' before separating from the body. And this pertains to the 'Problem of the Well (Bir Jaht)'. It is written in 'Al-Bahr' that 'the chosen view in this matter is that the person remains pure and the water remains pure but not purifying'. - End (T)	Because water does not become 'Mustamal' before separating from the body. And this pertains to the 'Problem of the Well (Bir Jaht)'. It is written in 'Al-Bahr' that 'the chosen view in this matter is that the person remains pure and the water remains pure but not purifying'. - End (T)

So if that water is endowed (waqf) or the owner's permission is not there, bathing in it will be prohibited as it will spoil the water. This falls under numbers 51 and 53. And if the owner's permission is there, or if the water is his own property or naturally permissible, then bathing is mandatory and Tayammum is not allowed.

(174) There is water but it is restricted, the clear explanation of which is in our treatise 'Al-Noor wal-Nawraq'. One should perform Tayammum. From its sub-branches is the issue that scholars have mentioned for saving the holy Zamzam water. For taking it as a blessing or giving it as a gift to someone, I say: If a person has enough other water (either alone or mixed) for purification, and a need for Wudu or Ghusl arises without it and no other sufficient water is available, it will be obligatory to use the holy Zamzam water for purification. Now if one wishes to save it, one should mix an equal amount of rose water, Kewra, or Bed-Mushk into it

(Khulasa-e-Bazzaziya, Ghuniya, Tawshih, Al-Bahr) or enough saffron to color it (Khulasa-e-Huliya) or sugar so that it becomes a syrup (Radd al-Muhtar).

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-Tayammum, End of the statement 'And if in Janaba or Menstruation etc.', H.M. Saeed Company, Karachi, 1/712
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-Tayammum, Issue of the Well (Jaht) etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 1/98
3. Al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-Tayammum, Issue of the Well (Jaht) etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 1/124
4. Khulasa-e-Fatawa, Al-Ma' al-Maudu' fi al-Falwat etc., Printed Nawal Kishore Lucknow, 1/33
5. Radd al-Muhtar, Bab al-Tayammum, Mustafa Al-Babi, Egypt, 1/186

अरबी

इसका पाठ यह है: और यदि इसमें (यानी मस्जिद में, मैं कहता हूँ कि यह कोई शर्त नहीं है जैसा कि स्पष्ट है) एक छोटा हौज हो और उससे पानी निकालना संभव न हो, तो उसमें स्नान न करे बल्कि तयम्मुम करे, क्योंकि उसमें स्नान करने से पानी खराब हो जाएगा और वह पवित्र होकर भी नहीं निकलेगा, तो नहाना व्यर्थ ही होगा। - अंत (त)

उर्दू

इसका इबारत यह है: और अगर इसमें (यानी मस्जिद में, अक़ूल और यह क़ैद नहीं जैसा कि पोशीदा नहीं) कोई छोटा हौज़ हो और इस से पानी निकाल नहीं सकता तो इस में ग़ुस्ल न करे और तयम्मुम करे क्योंकि ग़ुस्ल करने से पानी फ़ासिद हो जाएगा और यह भी पाक हो कर न निकलेगा तो नहाना बे-सूद ही होगा। - अह (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): लेकिन यह ग़ैर-सही पर मबनी है, सही और मोतमिद यह है कि उस का ग़ुस्ल उतर जाएगा और पानी मुस्तअमल हो जाएगा।

अरबी

क्योंकि शरीर से अलग होने से पहले पानी मुस्तअमल नहीं होता। और यह 'मसाला-ए-बीर जहत' से मुताल्लिक़ है। बहर में लिखा है कि 'इस मसले में मज़हब-ए-मुख्तार यह है कि आदमी ताहिर है और पानी ताहिर ग़ैर-मुतहिर है'। - अंत (त)

उर्दू

इस लिए कि पानी बदन से जुदा होने से पहले मुस्तअमल नहीं होता। और यह 'मसला-ए-बीर जहत' से मुताल्लिक़ है। बहर में लिखा है कि 'इस मसले में मज़हब-ए-मुख्तार यह है कि आदमी ताहिर है और पानी ताहिर ग़ैर-मुतहिर'। - अह (त)

तो अगर वह पानी वक़्फ़ है या मालिक की इजाज़त नहीं इस में नहाना ममनूअ होगा कि पानी को ख़राब कर देगा, यह नंबर ५१ व ५३ में दाख़िल है और अगर मालिक की इजाज़त या पानी ख़ुद इस की मिल्क या क़ुदरती मुबाह है तो नहाना लाज़िम और तयम्मुम रवा नहीं।

(१७४) पानी है मगर मुक़य्यद जिस का रौशन बयान हमारे रिसाला 'अन्-नूर वन्-नौरक़' में है। तयम्मुम करे। इसी की फ़रुआ (शाखाओं) से है वह मसला कि उलमा ने आब-ए-ज़मज़म शरीफ़ बचाने के लिए इफ़ादा फ़रमाया, अपने तब्रुक या किसी को हदिया देने के लिए ज़मज़म लिए जाता है। अक़ूल: इतना कि तहारत को ख़ुद या दूसरे पानी से मिल कर काफ़ी हो, वुज़ू या ग़ुस्ल की ज़रूरत हुई बग़ैर इस के और काफ़ी पानी मौजूद नहीं, फ़र्ज़ होगा कि ज़मज़म शरीफ़ ही तहारत में ख़र्च करे।

अब अगर इसे बचाना चाहे उस में गुलाब, केवड़ा, बेद-मुश्क बराबर का मिला दे (ख़ुलासा बज़ज़िया, ग़ुनिया, तौशीह, बहर) या ज़ाफ़रान इतना कि उसे रंगने के क़ाबिल कर दे (ख़ुलासा हूलिया) या शकर कि शरबत हो जाए (रद अल-मुह्तार)।

1. अल-बहर अर-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, आख़िर-ए-क़ौल 'व-लौ जुनबन औ हाइज़न' आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची १/ ७१२
2. अल-बहर अर-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, मसला 'अल-बीर जहत' आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची १/ ९८
3. अल-बहर अर-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, मसला 'अल-बीर जहत' आदि, एच.एम. सईद कंपनी कराची १/ १२४
4. ख़ुलासा अल-फ़तावा, अल-मा' अल-मौज़ू' फ़ि अल-फ़लवात आदि, मतबुआ नवल किशोर लखनऊ १/ ३३
5. रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र १/ १८६

पृष्ठ ७५६ का ४९६

فتاوی رضویہ جلد سوم

عربی عبارت	اردو ترجمہ
هذا نصه وان كان فيه (اي في المسجد اقول وليس قيدا كما لا يخفى) عين صغيرة ولايستطيع الاغتراف منه لا يغتسل فيها ويتيمم لان الاغتسال فيه يفسده ولا يخرج طاهرا فلا يكون مقيدا اهـ	اس کی عبارت یہ ہے : اور اگر اس میں (یعنی مسجد میں اقول اور یہ قید نہیں جیسا کہ پوشیدہ نہیں) کوئی چھوٹا حوض ہو اور اس سے پانی نکال نہیں سکتا تو اس میں غسل نہ کرے اور تیمم کرے کیونکہ غسل کرنے سے پانی فاسد ہو جائے گا اور یہ بھی پاک ہو کر نہ نکلے گا تو نہانا بے سود ہی ہو گا"۔ اھ (ت)

اقول : مگر یہ غیر صحیح پر مبنی ہے صحیح و معتمد یہ ہے کہ اس کا غسل اتر جائے گا اور پانی مستعمل ہو جائے گا

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لعدم الاستعمال قبل الانفصال وهي مسألة البئر جحط وقد قال في البحر المذهب المختار في هذه المسألة ان الرجل طاهر والماء طاهر غير طهور اهـ	اس لئے کہ پانی بدن سے جدا ہونے سے پہلے مستعمل نہیں ہوتا۔ اور یہ "مسئلۃ البئر جحط" سے متعلق ہے بحر میں لکھا ہے کہ "اس مسئلہ میں مذہب مختار یہ ہے کہ آدمی طاہر ہے اور پانی طاہر غیر مطہر"۔ اھ (ت)

تو اگر وہ پانی وقف ہے یا مالک کی اجازت نہیں اس میں نہانا ممنوع ہو گا کہ پانی کو خراب کر دے گا یہ نمبر ۵۱ و ۵۳ میں داخل ہے اور اگر مالک کی اجازت یا پانی خود اس کی ملک یا قدرتی مباح ہے تو نہانا لازم اور تیمم روا نہیں۔

(۱۷۴) پانی ہے مگر مقید جس کا روشن بیان ہمارے رسالہ النور والنورق میں ہے تیمم کرے اسی کی فروع سے ہے وہ مسئلہ کہ علماء نے آبِ زمزم شریف بچانے کیلئے افادہ فرمایا اپنے تبرک یا کسی کو ہدیہ دینے کے لئے زمزم لیے جاتا ہے اقول: اتنا کہ طہارت کو خود یا دوسرے پانی سے مل کر کافی ہو وضو یا غسل کی ضرورت ہوئی بغیر اس کے اور کافی پانی موجود نہیں فرض ہوگا کہ زمزم شریف ہی طہارت میں خرچ کرے اب اگر اسے بچانا چاہیے اُس میں گلاب کیوڑا بید مشک برابر کا ملا دے خلاصہ بزازیہ غنیہ توشح بحر یا زعفران اتنا کہ اسے رنگنے کے قابل کر دے خلاصہ حلیہ یا شکر کہ شربت ہو جائے ردالمحتار۔

1 البحر الرائق باب التیمم آخر قول ولو جنبا او حائضا الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۱۲ 2 البحر الرائق باب التیمم مسئلہ البئر جحط الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۹۸ 3 البحر الرائق باب التیمم مسئلہ البئر جحط الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۴ 4 خلاصۃ الفتاوی الماء الموضوع فی الفلوات الخ مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۳ 5 ردالمحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۶

I say: However, the syrup will not last for many days and in the form of saffron also it will be difficult to drink, therefore rose water is better if available. The purpose is to make it such that it is no longer fit for ghusl and wudu, then he may perform tayammum.

(148) Its second legal strategy (heelah) is mentioned as follows: one should gift the Zamzam water to a companion and give it into their possession, then take it back from them as a trust (amanat) or let it remain with them, and then perform tayammum because the water is no longer in one's own ownership. When he reaches home or their paths separate, he can have it gifted back to his name or buy it back. In *Khulasah* it is stated:

Arabic Text	**Urdu Translation**
A man in the desert has Zamzam water with him and has sealed the head of the flask; tayammum is not permissible for him. The strategy is to gift it to another person and then have them entrust it back to him, or put rose water or saffron water into it until it becomes "restricted water" (muqayyad). (1)	There is a person in the jungle who has Zamzam water with him, the mouth of whose vessel is tightly closed; tayammum is not permissible for him. And the strategy is to give it to someone else as a gift (hibah), then take it back from him as a trust (amanat), or mix rose water or saffron in it so that it (does not remain absolute water but) becomes restricted water. (T)

In *Fath al-Qadir* it is stated:

Arabic Text	**Urdu Translation**
A pilgrim is tested with carrying Zamzam water for a gift (added in *al-Munyah*: or for seeking healing) and seals the head of the flask. As long as he does not fear thirst and the like, tayammum is not permissible for him. The author said: "The strategy in this is to gift it to someone else and then have them entrust it back to him." (2) End. It is added in *al-Hilyah*: "or leave it with the	When a pilgrim is faced with the situation of carrying Zamzam water for a gift (added in *Munyah*: "or for obtaining healing") and has sealed the vessel, then as long as there is no fear of thirst etc., tayammum is not permissible for him. The author said: "The strategy in this is to give it to someone else as a gift, then take it back from him as a trust to be kept with oneself." End. In *Hilyah* this addition was made: "or let it

Arabic Text	Urdu Translation
one to whom it was gifted." End. It is also written in *al-Hilyah* that: "This is [followed by] many..."	remain with the one to whom it was gifted." End. In *Hilyah* it is also written that: "This is..."

1. *Khulasat al-Fatawa*, Chapter on water placed in deserts etc., printed by Nawal Kishore, Lucknow, 1/33.
2. *Fath al-Qadir*, Sub-chapter of Tayammum, Maktaba Nooria Rizvia, Sukkur, 1/119.

फ़तावा रज़विया - जिल्द सोम (तीसरी)

मैं कहता हूँ: मगर शरबत ज़्यादा दिन नहीं ठहरेगा और ज़ाफ़रान की सूरत में भी पीना मुश्किल होगा, लिहाज़ा गुलाब ही बेहतर है अगर मौजूद हो। मक़सद यह है कि ऐसी सूरत बना दी जाए कि वह ग़ुस्ल और वुज़ू के लायक़ न रहे, अब वह तयम्मुम कर सकता है।

(148) इसका दूसरा हीला (उपाय) यह बताया गया है कि ज़मज़म किसी साथी को हिबा (दान) कर दे और उसके कब्ज़े में दे दे, फिर उससे अपने पास बतौर-ए-अमानत ले ले या उसी के पास रहने दे और तयम्मुम करे क्योंकि पानी उसकी मिलकियत (स्वामित्व) में नहीं रहा। जब वतन पहुँचे या उसका रास्ता अलग हो जाए, तो उससे अपने नाम पर हिबा करा ले या कुछ देकर ख़रीद ले। 'खुलासा' में है:

अरबी पाठ

जंगल में कोई व्यक्ति है जिसके पास आबे-ज़मज़म है और उसने बर्तन का मुँह अच्छी तरह बंद कर रखा है, उसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं। और हीला यह है कि दूसरे को बतौर-ए-हिबा दे दे फिर उससे बतौर-ए-अमानत ले ले, या उसमें गुलाब या ज़ाफ़रान मिला दे ताकि वह (आबे-मुतलक़ न रहे बल्कि) आबे-मुक़य्यद (सीमित जल) हो जाए। (1)

उर्दू अनुवाद

जंगल में कोई व्यक्ति है जिसके पास आबे-ज़मज़म है जिसके बर्तन का मुँह खूब बंद कर रखा है, इसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं। और हीला यह है कि दूसरे को बतौर-ए-हिबा दे दे फिर उससे बतौर-ए-अमानत ले ले, या इसमें गुलाब या ज़ाफ़रान मिला दे कि वह (आबे-मुतलक़ न रह जाए बल्कि) आबे-मुक़य्यद हो जाए। (त)

'फ़तह उल-क़दीर' में है:

अरबी पाठ

हाजी को जब इसमें आज़माइश होती है कि आबे-ज़मज़म तोहफे के लिए ले जा रहा है ('मुनिया' में इज़ाफ़ा किया: "या शिफ़ा हासिल करने के लिए") और बर्तन को सील कर दिया है, तो जब तक प्यास वगैरह का ख़तरा न हो, उसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं। मुसन्निफ़ (लेखक) ने फ़रमाया: "इसमें हीला यह है कि दूसरे को बतौर-ए-हिबा दे दे फिर उससे

उर्दू अनुवाद

हाजी को जब इसमें इब्तिला होता है कि आबे-ज़मज़म हदीया (उपहार) के लिए लिए हुए है (मुनिया में ज़्यादा किया: "या शिफ़ा हासिल करने के लिए") और बर्तन को मोहरबंद कर दिया है तो जब तक प्यास वगैरह का ख़तरा न हो इसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं। मुसन्निफ़ ने फ़रमाया: "इसमें हीला यह है कि दूसरे को

अरबी पाठ

बतौर-ए-अमानत अपने पास ले ले।" (2) समाप्त। 'हिलिया' में यह इज़ाफ़ा किया: "या उसी के पास रहने दे जिसे हिबा किया।" समाप्त। 'हिलिया' में यह भी लिखा है कि: "इसे..."

उर्दू अनुवाद

बतौर-ए-हिबा दे दे फिर उससे बतौर-ए-अमानत अपने पास ले ले।" इह। हिलिया में यह इज़ाफ़ा किया: "या उसी के पास रहने दे जिसे हिबा किया।" इह। हिलिया में यह भी लिखा है कि: "इसे..."

---

1. खुलासतुल फ़तावा, अल-मा-उल-मौज़ूअ फ़िल-फ़लवात अलख़, मतबूआ नवल किशोर, लखनऊ, 1/33.
2. फ़तह उल-क़दीर, बाबुत तयम्मुम, मकतबा नूरिया रज़विया, सक्खर, 1/119.

اقول: مگر شربت زیادہ دن نہ ٹھہرے گا اور صورتِ زعفران میں بھی پینا دشوار ہوگا لہٰذا گلاب ہی اولٰی ہے اگر حاضر ہو غرض وہ صورت کردے کہ قابلِ غسل و وضو نہ رہے اب تیمم کرے۔

(۱۴۸) اس کا دوسرا حیلہ یہ فرمایا ہے کہ زمزم کسی رفیق کو ہبہ کرکے اس کے قبضہ میں دے دے پھر اُس سے اپنے پاس بطورِ امانت لے لے یا اُسی کے پاس رہنے دے اور تیمم کرے کہ پانی اپنی ملک میں نہ رہا جب وطن پہنچے یا اُس کی راہ جدا ہو اُس سے اپنے نام مثلاً ہبہ کرالے یا کچھ دے کر خرید لے۔ خلاصہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
رجل في البادية معه ماء زمزم وقد رصص راس القمقمة لايجوزله التيمم والحيلة ان يهبها لغيره ثم يودعها منه اويجعل فيه ماء الورد او ماء الزعفران حتى يصير مقيدا۔ (۱)	جنگل میں کوئی شخص ہے جس کے پاس آبِ زمزم ہے جس کے برتن کا منہ خوب بند کر رکھا ہے، اس کیلئے تیمم جائز نہیں۔ اور حیلہ یہ ہے کہ دوسرے کو بطورِ ہبہ دے دے پھر اس سے بطورِ امانت لے لے، یا اس میں گلاب یا زعفران ملا دے کہ وہ (آبِ مطلق نہ رہ جائے بلکہ) آبِ مقید ہو جائے۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
يبتلى الحاج بحمل ماء زمزم للهدية (زاد في المنية اوللاستشفاء)	حاجی کو جب اس میں ابتلا ہوتا ہے کہ آبِ زمزم ہدیہ کیلئے لئے ہوئے ہے (منیہ میں زیادہ کیا: "یا شفاء حاصل کرنے

عربی عبارت	اردو ترجمہ
ویرصص رأس القمقمة فمالم یخف العطش ونحوہ لایجوزلہ التیمم قال المصنف والحیلة فیہ ان یھبہ من غیرہ ثم یستودعہ منہ (۲) اھـ زاد في الحلیة او ترکہ مع الموھوب۔	کیلئے") اور برتن کو مہر بند کردیا ہے تو جب تک پیاس وغیرہ کا خطرہ نہ ہو اس کیلئے تیمم جائز نہیں۔ مصنف نے فرمایا: "اس میں حیلہ یہ ہے کہ دوسرے کو بطورِ ہبہ دے دے پھر اس سے بطورِ امانت اپنے پاس لے لے۔" اھـ حلیہ میں یہ اضافہ کیا: "یا اُسی کے پاس رہنے دے جسے ہبہ کیا۔" اھـ حلیہ میں یہ بھی لکھا ہے کہ: "اسے بہت سے

---

۱ خلاصۃ الفتاوی الماء الموضوع فی الفلوات الخ مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/۳۳ ۲ فتح القدیر فرع من باب التیمم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۱۹

Fatawa Razawiyya Volume 3

(Arabic Text Column): He said therein: It is among the things reported by many of the later scholars without any criticism of this stratagem, such as the author of al-Hidayah in al-Tajnis and the author of al-Mubtagha with the dotted ghain (غ). 1 Finis. It was objected to in al-Khaniyah and from al-Muhit in al-Munyah, and al-Bazzazi followed them in al-Wajiz. Al-Halabi said in al-Ghunyah: This is exactly what fiqh is. 2 And these are the words of the Imam, the Jurist of the Soul, may Allah the Almighty have mercy on him, who said: This is not correct in my view, for if he sees water with someone else who is selling it at a standard price or with a minor overcharge (ghabn yasir), it is incumbent upon him to buy it, and it is not permissible for him to perform tayammum. So when he is able to revoke the gift, how can tayammum be permissible for him? 3 Finis. Because of this, another stratagem was given in al-Ghunyah and followed in al-Durr, which is that he should gift it in a way that the right of revocation is severed. 4 Finis. That is, by the gift being conditional on compensation (hibah bi-shart al-'awad). 5 Finis. The scholar Tahtawi objected to it, saying: Not restricting it is better (meaning leaving the restriction of the gift being with a right of revocation), because if he gifts it in this manner, its benefit will not return to him.

(Urdu Text Column): Many later scholars have mentioned this stratagem without any criticism, just as the author of Hidaya in Tajnees and the author of Mubtagha with 'Ghain Mu'ajjamah' have also described it. Finis. Objection was raised against it in Khaniyah and in Munyah with reference to Muheet, and Bazazi in Wajeez followed these scholars. Halabi said in Ghunyah: "This is true jurisprudence," and the words of Imam Faqih-un-Nafs (Allah have mercy on him) are: "This is not correct according to me, because if he finds water with someone who is selling it at the market price or with a slight excess, then it is mandatory for him to buy it and tayammum is not permissible. So when he can retract from the gift, how will tayammum be permissible for him?" Finis. For this reason, in Ghunyah and following it in Durr-e-Mukhtar, a second stratagem has been stated: that he should gift it in such a way that he cannot retract. Finis. That is, by making the gift conditional on an exchange. Finis Shami. Upon this, Allama Tahtawi raised the objection that "not to place the restriction of a gift with the possibility of retraction" is better, because when he gifts it in this manner, he will not be able to obtain its benefit. So it is better that he himself...

Footnotes: 1 Hulyah 2 Ghunyatul Mustamli, Chapter on Tayammum, published by Sohail Academy Lahore, p. 70 3 Fatawa Qazi Khan, Section on what is permissible for

Tayammum, published by Naval Kishore Lucknow, 1/26 4 Ghunyatul Mustamli, Chapter on Tayammum, Sohail Academy Lahore, p. 70 5 Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press Egypt, 1/186

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

(अरबी पाठ कॉलम): उन्होंने इसमें कहा है: यह उन चीज़ों में से है जिसे बाद के कई विद्वानों ने इस युक्ति (हिला) पर बिना किसी आलोचना के उद्धृत किया है, जैसे कि 'अल-हिदाया' के लेखक ने 'अत-तजनीस' में और 'अल-मुब्तग़ा' (ग़ैन मुअजमा के साथ) के लेखक ने। 1 समाप्त। 'अल-ख़ानिया' और 'अल-मुन्या' में 'अल-मुहीत' के संदर्भ में इस पर आपत्ति की गई है, और 'अल-वजीज़' में बज़ाज़ी ने उनका अनुसरण किया है। हलबी ने 'अल-ग़ुनिया' में कहा है: यही वास्तविक फ़िक़्ह है। 2 और ये शब्द इमाम फ़क़ीह-उन-नफ़्स, अल्लाह तआला उन पर दया करे, के हैं: मेरे नज़दीक यह सही नहीं है, क्योंकि यदि वह किसी अन्य के पास पानी देखता है जिसे वह सममूल्य पर या मामूली अधिकता (ग़ब्न-ए-यसीर) के साथ बेच रहा है, तो उस पर खरीदारी अनिवार्य है और तयम्मुम करना जायज़ नहीं है। तो जब वह उपहार (हिबा) वापस लेने में सक्षम है, तो उसके लिए तयम्मुम कैसे जायज़ हो सकता है? 3 समाप्त। इसी कारण 'अल-ग़ुनिया' में दूसरी युक्ति दी गई है और 'अद-दुर्र' में उसका अनुसरण किया गया है, कि वह इस प्रकार उपहार दे कि वापस लेने का अधिकार समाप्त हो जाए। 4 समाप्त। अर्थात उपहार प्रतिफल की शर्त पर हो। 5 समाप्त। अल्लामा तहतावी ने इस पर यह आपत्ति की है: 'बिना शर्त रखना बेहतर है' (अर्थात उपहार को वापसी की शर्त के साथ न जोड़ना), क्योंकि यदि वह इसे इस प्रकार उपहार देगा, तो इसका लाभ उसे वापस नहीं मिल पाएगा।

(उर्दू पाठ कॉलम): उत्तरकालीन विद्वानों (मुताअक़्ख़रीन) ने इस युक्ति पर बिना किसी आपत्ति के इसे उल्लेख किया है जैसे 'साहिब-ए-हिदाया' ने 'तजनीस' में और 'साहिब-ए-मुब्तग़ा' ने 'ग़ैन मुअजमा' के साथ भी इसे बयान किया है। समाप्त। 'ख़ानिया' और 'मुन्या' में 'मुहीत' के हवाले से इस पर आपत्ति की गई है और 'वजीज़' में बज़ाज़ी ने इन विद्वानों का अनुसरण किया है। हलबी ने 'ग़ुनिया' में कहा है: "यही समझदारी है, और इमाम फ़क़ीह-उन-नफ़्स (रहमतुल्लाह अलैहि) के शब्द ये हैं: 'यह मेरे नज़दीक सही नहीं है क्योंकि यदि वह किसी के पास पानी पाए जिसे वह बाज़ार भाव पर या मामूली बढ़त के साथ बेच रहा हो, तो उसे खरीदना अनिवार्य है और तयम्मुम जायज़ नहीं। तो जब वह उपहार वापस ले सकता है, तो उसके लिए तयम्मुम कैसे जायज़ होगा?'" समाप्त। इसीलिए 'ग़ुनिया' में और उसका अनुसरण करते हुए 'दुर्रे मुख़्तार' में दूसरी युक्ति यह बताई गई है कि इस प्रकार उपहार दे कि वापस न ले सके। समाप्त। यानी इस प्रकार कि उपहार बदले की शर्त पर हो। समाप्त शामी। इस पर अल्लामा तहतावी ने यह आपत्ति की है कि "उपहार में वापसी की शर्त न लगाना" बेहतर है

क्योंकि जब वह इसे इस प्रकार उपहार दे देगा, तो इसका लाभ उसे प्राप्त नहीं हो सकेगा। तो बेहतर यह है कि वह स्वयं ही...

पाद टिप्पणियाँ: 1 हुलिया 2 ग़ुनियातुल मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 70 3 फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, तयम्मुम के जायज़ होने का खंड, नवल किशोर लखनऊ, 1/26 4 ग़ुनियातुल मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी लाहौर, पृष्ठ 70 5 रद्दुल मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस मिस्र, 1/186

पृष्ठ 756 में से 498

فتاوی رضویہ جلد سوم

(عربی عبارت کا کالم): له اهـ وقال فيها انه مما توارده كثير من المتأخرين من غير قدح في هذه الحيلة كصاحب الهداية في التجنيس وصاحب المبتغى بالغين المعجمة ١ اهـ واعترضه في الخانية وعن المحيط في المنية وتبعهم البزازي في الوجيز وقال الحلبى فى الغنية هو الفقه بعينه ٢ وهذا لفظ الامام فقيه النفس قال رحمه الله تعالى هذا ليس بصحيح عندى فانه لو رأى مع غيره ماء يبيعه بمثل الثمن او بغبن يسير يلزمه الشراء ولا يجوز له ان يتيمم فاذا تمكن من الرجوع في الهبة كيف يجوز له التيمم ٣ اهـ وعن هذا جعل الحيلة الاخرى في الغنية وتبعه في الدر ان يهبه على وجه ينقطع به الرجوع ٤ اهـ اى بان تكون الهبة بشرط العوض ٥ اهـ - واعترضه العلامة ط قائلا عدم التقييد اولى (اى ترك تقييد الهبة بشرط الرجوع) لانه اذا كان يهبه على هذا الوجه لا تعود عليه فائدته

(اردو عبارت کا کالم): متأخرین نے اس حیلہ پر کوئی جرح کے بغیر ذکر کیا ہے جیسے صاحب ہدایہ نے تجنیس میں اور صاحب مبتغی بغین معجمہ نے بھی اسے بیان کیا ہے اہـ خانیہ میں اور منیہ میں محیط کے حوالہ سے اس پر اعتراض کیا ہے اور وجیز میں بزازی نے ان حضرات کی پیروی کی ہے۔ حلبی نے غنیہ میں فرمایا ہے : "یہی فقاہت ہے، اور امام فقیہ النفس رحمہ اللہ تعالیٰ کے الفاظ یہ ہیں: "یہ میرے نزدیک درست نہیں اس لئے کہ اگر وہ کسی کے پاس پانی پائے جسے وہ ثمن مثل پر یا معمولی زیادتی کے ساتھ اسے فروخت کر رہا ہے تو اس پر خریدنا لازم ہے اور تیمم جائز نہیں تو جب وہ ہبہ سے رجوع کر سکتا ہے تو تیمم اس کیلئے کیونکر جائز ہوگا ؟" اہـ اسی لئے غنیہ میں اور اس کی تبعیت کرتے ہوئے درمختار میں دوسرا حیلہ یہ بتایا ہے کہ اس طرح ہبہ کرے کہ رجوع نہ کر سکے اہـ یعنی اس طرح کہ ہبہ بشرط عوض ہو اہـ شامی۔ اس پر علامہ طحطاوی نے یہ اعتراض کیا ہے کہ "ہبہ بشرط رجوع کی قید نہ لگانا" اولیٰ ہے اس لئے کہ

جب اسے اس طور پر ہبہ کر دے گا تو اس کا فائدہ اسے حاصل نہ ہو سکے گا۔ تو بہتر یہ ہے کہ خود ہی

حواشی: 1 حلیہ 2 غنیة المستملی باب التیمم مطبوعہ سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۰ 3 فتاوی قاضی خان فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۲۶/۱ 4 غنیة المستملی باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۰ 5 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۸۶

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Arabic Column Transcription] So the first is that he uses it for himself (1) - i.e., when he gifts it in such a way that the ability to reclaim it is lost, it has left his possession and choice. So what is the purpose of the artifice? For the artifice was only so that he could benefit from it by gifting or seeking healing. [Imam Shami] answered that the intention is that he gifts it to someone he trusts will return it to him after that (2). I say: (1) Often in travel, one does not find someone trustworthy, and that is why they [the jurists] said to gift it to someone else and did not restrict it to a trustworthy person. And if (2) this was the intended meaning, it would have sufficed for him to sell it, then when they arrive or their paths separate, he buys it from him. Selling is more well-known; everyone knows it, unlike a gift with a condition of compensation which is a barzakh (intermediate stage) between the two: it is a gift initially and a sale finally. No one mentioned selling. As for the problem posed in 'Al-Khaniya', the researcher absolutely [Ibn al-Humam] answered in 'Al-Fath' that reclaiming is becoming an owner through a disliked cause, and Sharia desires the non-existence of this act. Therefore, it is permissible to consider water non-existent for him for that reason, even if he is actually capable of it, like the water of a jar (Al-Hubb), unlike selling (3).

[Urdu Column Transcription] ...benefit from it. "Ah" i.e., when he has gifted it in such a way that he cannot reclaim it, then it has left his possession and control. Then what is the ruse for? The ruse was only so that he could benefit from gifting it or obtaining healing through it. Allama Shami, in response to this objection, said: "The intention is that he gifts it to such a person whom he trusts will return it to him later." Ah. (T) I say: (1) In travel, it often happens that a trustworthy person is not found. That is why the jurists (Fuqaha) have spoken about gifting to another but did not impose the condition of being trustworthy. If this were the intention, it would have been enough to sell it, then when both reach their homeland or when their paths separate, he could buy it from him. And selling is a more famous thing that every person knows. Unlike a gift with a condition of compensation, which is a barrier (barzakh) between sale and gift, such that its beginning is a gift and its end is a sale, and no one mentioned selling. As for the objection of Khaniya, the absolute researcher in Fath-ul-Qadir gave this answer: "reclaiming is becoming an owner with a disliked cause and the absence of this act is Sharia-desired, so because of this, water can be declared non-existent in his right even though he is actually capable of it, like the water of a Sabil (public fountain), unlike sale." Ah. (T)

[Footnotes] 1. Tahtawi 'ala al-Durr, Chapter of Tayammum, published by Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/134. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/186. 3. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Maktabah Nooriyah Rizviyah, Sukkur, 1/119.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[अरबी कॉलम का अनुवाद] पहली बात यह है कि वह इसका उपयोग अपने लिए करे (1) - यानी जब उसने इसे इस तरह उपहार में दे दिया कि वापस लेने की संभावना समाप्त हो गई, तो यह उसके कब्जे और नियंत्रण से बाहर हो गया। तो फिर हीले (कानूनी तरकीब) का क्या मतलब? क्योंकि हीला तो केवल इसलिए था ताकि वह इसे उपहार में देने या इसके माध्यम से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने का फायदा उठा सके। [इमाम शामी] ने उत्तर दिया कि इसका अर्थ यह है कि वह इसे किसी ऐसे व्यक्ति को उपहार में दे जिस पर उसे भरोसा हो कि वह बाद में उसे वापस कर देगा (2)। मैं कहता हूँ: (1) अक्सर यात्रा के दौरान, कोई भरोसेमंद व्यक्ति नहीं मिलता है। इसीलिए न्यायविदों ने भरोसेमंद व्यक्ति की शर्त लगाए बिना इसे किसी और को उपहार में देने की बात कही। और यदि (2) यही मुराद होती, तो उसके लिए इसे बेचना ही पर्याप्त होता, फिर जब वे पहुँच जाते या उनके रास्ते अलग हो जाते, तो वह उसे उससे खरीद लेता। बेचना अधिक प्रसिद्ध है और हर कोई इसे जानता है, 'हिबा-ब-शर्त-ए-इवज़' (मुआवजे की शर्त पर उपहार) के विपरीत, जो उपहार और बिक्री के बीच एक 'बरज़ख' (मध्यवर्ती स्थिति) है; यह शुरू में उपहार है और अंत में बिक्री। किसी ने बेचने का ज़िक्र नहीं किया। जहाँ तक 'अल-ख़ानिया' में उठाए गए मसले का सवाल है, अन्वेषक [इब्न अल-हुमाम] ने 'अल-फ़तह' में पूर्ण रूप से उत्तर दिया है कि वापस लेना एक नापसंद कारण से मालिक बनना है, और शरीयत में इस कार्य का अस्तित्व न होना वांछित है। इसलिए, उस कारण से पानी को उसके लिए गैर-मौजूद माना जाना जायज़ है, भले ही वह वास्तव में उस पर सक्षम हो, जैसे मटके(अल-हुब्ब) का पानी, बिक्री के विपरीत (3)।

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] ...उससे लाभ उठाए। "अह" यानी जब उसने इस तरह हिबा (उपहार) कर दिया कि वह वापस नहीं ले सकता, तो वह उसके कब्जे और अधिकार से निकल गया। फिर हीला किस बात का? हीला तो इसीलिए था कि उसे उपहार देने या उससे शिफ़ा (स्वास्थ्य लाभ) प्राप्त करने का लाभ उठा सके। अल्लामा शामी ने इस आपत्ति के जवाब में फरमाया: "मुराद यह है कि ऐसे व्यक्ति को हिबा करे जिस पर भरोसा हो कि वह बाद में उसे वापस कर देगा।" अह। (त) मैं कहता हूँ: (1) सफर में अक्सर ऐसा होता है कि भरोसेमंद आदमी नहीं मिलता। इसीलिए फ़ुक़हा (न्यायविदों) ने दूसरे को हिबा करने की बात तो कही है लेकिन भरोसेमंद होने की शर्त नहीं लगाई। अगर यही मुराद होती तो यही काफी था कि उसे फरोख्त (बेच) दे, फिर जब दोनों वतन पहुँच जाएँ या जब दोनों का रास्ता अलग-अलग हो जाए तो यह उससे खरीद ले। और बैअ (बिक्री) तो ज्यादा मशहूर चीज़ है जिसे

हर शख्स जानता है। बरख़िलाफ़ हिबा-ब-शर्त-ए-इवज़ के जो बैअ और हिबा के दरमियान बरज़ख है कि इब्तिदा (शुरुआत) हिबा है और इन्तिहा (अंत) बैअ है और बैअ का किसी ने ज़िक्र न किया। रही ख़ानिया की आपत्ति तो फ़तहुल क़दीर में मुहक़्क़िक़ अलल इतलाक (पूर्ण अन्वेषक) ने इसका यह जवाब दिया है कि "रुजूअ (वापस लेना) करना एक मकरूह (नापसंद) सबब के साथ मालिक बनना है और इस फेल (कार्य) का अदम (अनुपस्थिति) शरअन मतलूब (वांछित) है, तो इसके बाइस (कारण) पानी उसके हक में मादूम (लुप्त) करार दिया जा सकता है अगरचे हकीक़तन उस पर कादिर (सक्षम) हो जैसे सबील का पानी, बरख़िलाफ़ बैअ के।" अह। (त)

[फुटनोट्स] 1. तहतावी अल-दुर्र, बाब-उल-तयम्मुम, मतबुआ दारुल मारिफ़त बेरूत, 1/134। 2. रद-उल-मुहतार, बाब-उल-तयम्मुम, मतबुआ मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/186। 3. फ़तहुल क़दीर, बाब-उJ-तयम्मुम, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/119।

पृष्ठ 499 का 756

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

[عربی کالم] فالاولی ان ینتفع به لنفسه ۱ اه ای اذا وهب بحیث سقط تمکن الرجوع خرج من یده واختیاره ففیم الحیلة لانها انما کانت لینتفع به اهداء واستشفاء واجاب ش بان المراد یهبه ممن یثق به بأنه یرده علیه بعد ذلك ۲ اهـ اقول: (۱) ربما لایجد في السفر من یثق به ولذا قالوا یهبه من غیره ولم یقیدوه بموثوق به ولوکان (۲) المراد هذا لکان یکفي ان یبیعه ثم اذا وصلا او تفرق طریقهما یشتری منه وقد کان البیع اشهر منها یعرفه کل احد بخلاف الهبة بشرط العوض التی هی برزخ بینهما هبة ابتداء وبیع انتهاء ولم یذکر البیع احد اما اشکال الخانیة فقد اجاب عنه المحقق علی الاطلاق فی الفتح بان الرجوع تملك بسبب مکروه وهو مطلوب العدم شرعا فیجوز ان یعتبر الماء معدوما فی حقه لذلك وان قدر علیه حقیقة کماء الحب بخلاف البیع ۳ اه

[اردو کالم] اس سے فائدہ اٹھائے "اھ یعنی جب اس طرح ہبہ کردیا کہ رجوع نہیں کرسکتا تو وہ اس کے قبضہ واختیار سے نکل گیا پھر حیلہ کس بات کا؟ حیلہ تو اسی لئے تھا کہ اسے ہدیہ کرنے یا اس سے شفاء حاصل کرنے کا فائدہ اٹھاسکے۔ علامہ شامی نے اس اعتراض کے جواب میں فرمایا : "مراد یہ ہے کہ ایسے شخص کو ہبہ کرے جس پر اعتماد ہو کہ وہ بعد میں اسے واپس کردے گا" اھ (ت) اقول: (۱) سفر میں ایسا بہت ہوتا ہے کہ قابل اعتماد آدمی نہیں ملتا۔ اسی لئے فقہاء نے دوسرے کو ہبہ کرنے کی بات تو کہی ہے مگر اس کے قابل اعتماد ہونے کی قید نہیں لگائی۔ اگر یہ مراد ہوتی تو یہی کافی تھا کہ اسے فروخت کردے پھر جب دونوں وطن پہنچ جائیں یا جب دونوں کا راستہ الگ الگ ہو تو یہ اس سے خرید لے۔ اور بیع تو زیادہ مشہور چیز ہے جسے ہر شخص جانتا ہے۔ بخلاف ہبہ بشرط عوض کے جو بیع وہبہ کے درمیان برزخ ہے کہ ابتداء ہبہ ہے اور انتہاء بیع ہے اور بیع کو کسی نے ذکر نہ کیا۔ رہا خانیہ کا اعتراض تو فتح القدیر میں محقق

علی الاطلاق نے اس کا یہ جواب دیا ہے کہ "رجوع کرنا ایک مکروہ سبب کے ساتھ مالک بننا ہے اور اس فعل کا عدم شرعاً مطلوب ہے تو اس کے باعث پانی اس کے حق میں معدوم قرار دیا جاسکتا ہے اگرچہ حقیقۃً اس پر قادر ہو جیسے سبیل کا پانی، بخلاف بیع کے " اھ (ت)

[حواشی] 1 طحطاوی علی الدر باب التیمم مطبوعہ دار المعرفتہ بیروت ۱/۱۳۴ 2 ردالمحتار باب التیمم مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/۱۸۶ 3 فتح القدیر باب التیمم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/۱۱۹

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

I say: That is, if one finds water placed for drinking in the desert, it is not permissible for him to perform ablution (wudu) with it, even if he physically and literally could; rather, he should perform dry ablution (tayammum) because he is legally (shari'a-wise) unable to use it. This is similar to the case of returning a gift (hiba). The situation of buying is different because he is legally capable of that as well. In summary, a legal prohibition is also a cause for inability to use water, much like other reasons for inability, and it is present in this case, making tayammum permissible. This was the explanation of the researcher, which was upheld in 'al-Bahr' and approved in 'al-Hilyah'. Al-Maqdisi commented on this, saying that returning a gift is only problematic if the gift contract was real; however, if it was done as a legal ruse (hila), then it is not prohibited, as the recipient would not be harmed by the return at all. Ponder on this. The view of Allama Shami on this matter is twofold. In 'Minhat al-Khaliq', he supported al-Maqdisi’s point by saying: "Moreover, it will soon be mentioned from 'al-Wafi' that if a travel companion has water and it is likely he will give it if asked, then tayammum is not permissible. If one believes he will not give it, then tayammum is performed. If there is doubt, one performs tayammum and prays; if he later asks and receives water, he repeats the prayer. And here, if he does not take back his gift, he must ask for water, due to the probability it will be given."

Footnote: 1. Minhat al-Khaliq with al-Bahr al-Ra'iq, chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi 1/124. Page 500 of 756

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

मैं कहता हूँ: अर्थात्, जब जंगल में पीने के लिए रखा हुआ पानी मिले, तो शारीरिक और शाब्दिक रूप से वास्तविक शक्ति होने के बावजूद, उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है; बल्कि वह तयम्मुम करेगा क्योंकि वह शरीअत के अनुसार उस पानी के उपयोग में असमर्थ है। उपहार (हिबा) वापस लेने का मामला भी इसी तरह है। खरीदारी का मामला इससे अलग है क्योंकि वह शरीअत के अनुसार इस पर सक्षम है। संक्षेप में, लाचारी के अन्य कारणों की तरह शरीयत की मनाही भी पानी के उपयोग में असमर्थता का एक कारण है, और वह यहाँ मौजूद है, इसलिए तयम्मुम जायज़ हुआ। यह शोधकर्ता का स्पष्टीकरण है, जिसे 'अल-बह्र' में बरकरार रखा गया और 'अल-हिलिया' में पसंद किया गया। अल-मक़दसी ने इस पर टिप्पणी की कि उपहार वापस लेना केवल तभी चिंता का विषय है जब उपहार का अनुबंध वास्तविक हो; लेकिन यदि यह केवल एक युक्ति (हीला) के रूप में किया गया हो, तो यह निषिद्ध नहीं है, क्योंकि उपहार प्राप्त करने वाले को वापसी से कोई नुक़सान नहीं होगा। इस पर विचार करें। इस बारे में अल्लामा शामी के दो विचार हैं। 'मिन्हतुल ख़ालिक़' में उन्होंने मक़दसी की आपत्ति का समर्थन करते हुए कहा: "इसके अलावा, 'अल-वाफ़ी' के हवाले से यह बात सामने आएगी कि यदि यात्रा के साथी के पास पानी हो और यह संभावना हो कि मांगने पर वह दे देगा, तो तयम्मुम जायज़ नहीं है। यदि यह धारणा हो कि वह नहीं देगा, तो तयम्मुम किया जाएगा। यदि संदेह हो, तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली जाए; और यदि बाद में मांगने पर पानी मिल जाए, तो नमाज़ दोहराई जाएगी। और यहाँ, यदि वह अपना उपहार वापस नहीं लेता है, तो उसे पानी मांगना चाहिए, क्योंकि उसे पानी मिलने की प्रबल संभावना है।"

पाद-टिप्पणी: 1. मिन्हतुल ख़ालिक़ साथ अल-बह्र अर-राईक, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 1/124। पृष्ठ 500 / 756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

(عربی کالم): اقول: ای اذا وجد في الفلاة ماء موضوعا للشرب لایجوز له التوضی منه بل یتیمم مع قدرته علی الماء حسا ولغة حقیقة لعجزه عنه شرعاً کذا هذا بخلاف الشراء فانه قادر علیه شرعاً ایضاً وبالجملة فالمنع الشرعي ایضاً من اسباب العجز عن استعمال الماء کسائر وجوه العجز وهو حاصل ههنا فساغ التیمم هذا تقریره وقد اقره في البحر واستحسنه في الحلیة وتعقبه المقدسي قائلا یمکن ان یقال انما یکون الرجوع محذوراً اذا کان عقد الهبة حقیقیاً اما اذا کان علی وجه الحیلة فلا اذ الموهوب له لایتأذی من الرجوع هنا اصلاً تأمل اهـ واختلف نظر العلامة ش فاید في المنحة تعقب المقدسي بقوله علا انه سیأتی عن الوافی انه اذا کان مع رفیقه ماء فظن انه ان سأله اعطاه لم یجز التیمم وان کان عنده انه لا یعطیه یتیمم وان شك في الاعطاء ویتیمم وصلی فسأله فاعطاه یعید وهنا ان لم یرجع بهبته یجب علیه ان یسأله لوجود الظن باعطائه

(اردو کالم): اقول: یعنی جب جنگل میں پینے کیلئے رکھا ہوا پانی پائے تو پانی پر حساً اور لغت میں حقیقۃً قدرت ہونے کے با وجود اس کیلئے اس سے وضو کرنا جائز نہیں بلکہ تیمم کرے گا اس کیلئے شرعاً وہ پانی سے عاجز ہے ایسے ہی ہبہ سے رجوع والا معاملہ ہے اور خریدنے کی صورت اس کے برخلاف ہے کیونکہ اس پر وہ شرعاً بھی قادر ہے۔ حاصل کلام یہ ہے کہ پانی سے عجز کی دوسری صورتوں کی طرح ممانعت شرعیہ بھی پانی کے استعمال سے عجز کا ایک سبب ہے اور وہ یہاں پر موجود ہے تو تیمم جائز ہوا یہ کلام محقق کی تقریر ہے اسے بحر میں برقرار رکھا اور حلیہ میں پسند کیا۔ اور مقدسی نے اس پر یہ اعتراض کیا کہ "کہا جاسکتا ہے کہ رجوع اس وقت ممنوع ہوتا ہے جب ہبہ کا معاملہ حقیقی طور پر منعقد ہو لیکن اگر حیلہ کے طور پر ہو تو ممنوع نہیں اس لئے کہ جسے ہبہ کیا گیا اسے رجوع سے یہاں کوئی اذیت نہ ہوگی، تامل اهـ یہاں

علامہ شامی کا کلام دو طرح کا ہے۔ منحۃ الخالق میں مقدسی کے اعتراض کی اس طرح تائید کی ہے: ”علاوہ اس کے کہ عنقریب وافی کے حوالہ سے یہ مسئلہ آرہا ہے کہ جب رفیق سفر کے پاس پانی ہو اور یہ گمان ہو کہ مانگنے پر دے دے گا تو تیمم جائز نہیں اور اگر اس کا یہ عندیہ ہو کہ نہیں دے گا تو“

حاشیہ: ۱ منحۃ الخالق مع البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۲۴ صفحہ 500 از 756

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Left Column - Arabic Text Translation] O Allah, except if they agree between themselves that if he asks for it after the gift, he will not give it to him to complete the legality (stratagem). Reflect (1). End. And it is supported in Radd al-Muhtar regarding the excellence of the legal stratagem (al-Hilya) by saying: Moreover, the revocation of a gift depends on the consent (of the recipient) or a court decree. However, it may be said that he only gifted it so that he could take it back, and the recipient would not refuse him if the donor requested it, and this prevents performing Tayammum. The answer is that he takes it back through a gift or purchase, not through revocation, so the disliked (makruh) act does not become necessary. And when the recipient knows of the stratagem, he refuses to give it for ablution (Wudu). Reflect (2). End.

I say: There is no reason (1) for objection, for the gift is truly definitive, issued by its people in its proper place. A legal stratagem (hilya) does not negate reality but rather necessitates it, for if it weren't for reality, the stratagem would be void. The fact that it leads (2) to another objective does not contradict the intention of the contract; rather, it strengthens it, since it is achieved through it. So how could it not be intended? Verily, the contract is established by offer and acceptance.

[Right Column - Urdu Text] ...perform Tayammum. And if he was in doubt about the giving and performed prayer after performing Tayammum, then asked for it and he gave it, then he should repeat the prayer. And here, even if he does not revoke his gift, it is obligatory for him to ask for water from him because there is a strong possibility of him giving it. Yes, except for the situation where both of them agree together that if he asks for it after the gift, he should not give it, so that the legal stratagem becomes complete. Reflect on this. End. And in Radd al-Muhtar, the approval of the legal stratagem is supported in these words: "Furthermore, revoking a gift depends on the consent of the recipient or the judge's decision. But it can be said that he gave the gift for this very reason, that he will take it back later, and the person to whom it was given will not refuse to give water at the time of the donor's demand. And this matter prevents Tayammum. The answer to this is that the giver will take it back through a gift or by purchasing it; he will not take it back by revoking the gift. Thus, a disliked (makruh) matter will not be necessary. And when the person to whom it was given knows about the stratagem, he will refuse to give it for Wudu. Reflect." End (T).

I say: There is no reason for Allama Maqdasi's objection because the gift is truly a gift which was issued from a qualified person in a valid context, and a legal stratagem does not terminate the reality but rather establishes and necessitates it, because if there were no proof of reality, then the stratagem itself would be void. And making it a means for achieving some other objective is not contrary to the intention of the contract but rather...

[Footnotes] 1. Minhat al-Khaliq with al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/431. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt 1/186.

फतावा रज़विया, खंड 3

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद] हे अल्लाह, सिवाय इसके कि वे आपस में सहमत हों कि यदि वह उपहार (हिबा) के बाद उसे माँगे, तो वह उसे नहीं देगा ताकि कानूनी युक्ति (हिलिया) पूरी हो जाए। विचार करें (1)। समाप्त। और रद्द अल-मुह्तार में कानूनी युक्ति (अल-हिलिया) की उत्कृष्टता के बारे में यह कहकर समर्थन किया गया है: इसके अलावा, उपहार को रद्द करना प्राप्तकर्ता की सहमति या अदालत के आदेश पर निर्भर करता है। हालांकि, यह कहा जा सकता है कि उसने इसे केवल वापस लेने के लिए उपहार में दिया था, और प्राप्तकर्ता दाता द्वारा अनुरोध किए जाने पर उसे मना नहीं करेगा, और यह तयम्मुम करने से रोकता है। उत्तर यह है कि वह इसे उपहार या खरीद के माध्यम से वापस लेता है, निरस्तीकरण के माध्यम से नहीं, इसलिए नापसंद (मक़रूह) कार्य आवश्यक नहीं होता है। और जब प्राप्तकर्ता को युक्ति के बारे में पता चलता है, तो वह वज़ू के लिए इसे देने से इनकार कर देता है। विचार करें (2)। समाप्त।

मैं कहता हूँ: आपत्ति का कोई कारण (1) नहीं है, क्योंकि उपहार निश्चित रूप से वास्तविक है, जो इसके पात्रों द्वारा इसके उचित स्थान पर जारी किया गया है। कानूनी युक्ति (हिलिया) वास्तविकता को नकारती नहीं है बल्कि उसे अनिवार्य बनाती है, क्योंकि यदि वास्तविकता नहीं होती, तो युक्ति ही अमान्य होती। तथ्य यह है कि यह किसी अन्य उद्देश्य की ओर ले जाता है (2) अनुबंध के इरादे के विपरीत नहीं है; बल्कि, यह इसे मजबूत करता है, क्योंकि यह इसके माध्यम से प्राप्त किया जाता है। तो यह कैसे अभिप्रेत नहीं हो सकता? वास्तव में, अनुबंध प्रस्ताव और स्वीकृति द्वारा स्थापित होता है।

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद] ...तयम्मुम कर ले। और यदि उसे देने के संबंध में संदेह था और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, फिर उससे माँगा और उसने दे दिया, तो वह नमाज़ दोहराए। और यहाँ, भले ही वह अपना उपहार वापस न ले, लेकिन उसके लिए यह अनिवार्य है कि वह उससे पानी माँगे क्योंकि देने की प्रबल संभावना मौजूद है। हाँ, सिवाय उस स्थिति के जहाँ दोनों आपस में यह समझौता कर लें कि यदि वह उपहार के बाद उससे माँगे, तो वह न दे, ताकि कानूनी युक्ति पूर्ण हो जाए। इस पर विचार करो। समाप्त। और रद्द अल-मुह्तार में कानूनी युक्ति की स्वीकृति का इन शब्दों में समर्थन किया गया है: "इसके अलावा, उपहार से वापसी प्राप्तकर्ता की सहमति या न्यायाधीश के निर्णय पर निर्भर है। लेकिन यह कहा जा सकता है कि उसने उपहार इसी कारण से किया है कि वह बाद में इसे वापस ले लेगा, और जिसे उपहार दिया गया है वह दाता की माँग के समय पानी देने से इनकार नहीं करेगा। और यह बात तयम्मुम से रोकने वाली है। इसका उत्तर यह है

कि देने वाला उपहार के माध्यम से या इसे खरीदकर वापस लेगा; वह उपहार रद्द करके इसे वापस नहीं लेगा। इस प्रकार, नापसंद (मक़रूह) बात आवश्यक नहीं होगी। और जब वह व्यक्ति जिसे उपहार दिया गया है, युक्ति के बारे में जानता है, तो वह वज़ू के लिए देने से इनकार कर देगा। विचार करो।" समाप्त (त)।

मैं कहता हूँ: अल्लामा मक़दसी की आपत्ति का कोई कारण नहीं है क्योंकि उपहार वास्तव में एक उपहार है जो एक योग्य व्यक्ति द्वारा वैध संदर्भ में जारी किया गया था, और कानूनी युक्ति वास्तविकता को समाप्त नहीं करती है बल्कि इसे स्थापित और अनिवार्य करती है, क्योंकि यदि वास्तविकता का कोई प्रमाण नहीं होता, तो युक्ति स्वयं अमान्य होती। और इसे किसी अन्य उद्देश्य की प्राप्ति का साधन बनाना अनुबंध के इरादे के विपरीत नहीं है बल्कि...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. मिन्हात अल-खालिक अल-बह्र अर-रइक के साथ, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/431। 2. रद्द अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र 1/186।

पृष्ठ 501 / 756

اللھم الا ان یتعاھدا علی انہ ان سألہ بعد الھبۃ لایعطیہ تتمیماً للحلیۃ تأمل 1 اھ وایدہ فی ردالمحتار استحسان الحلیۃ بقولہ علا ان الرجوع فی الھبۃ یتوقف علی الرضا او القضاء لکن قد یقال انہ ماوھبہ الا لیستردہ والموھوب منہ لا یمنعہ اذا طلبہ الواھب وذلك یمنع التیمم والجواب انہ یستردہ بھبۃ او شراء لا بالرجوع فلا یلزم المکروہ والموھوب منہ اذا علم بالحیلۃ یمتنع من دفعہ للوضوء تأمل 2 اھ

اقول: لا وجہ (۱) للتعقب فان الھبۃ حقیقیۃ قطعاً صدرت من اھلھا في محلھا والحیلۃ لا تنفي الحقیقۃ بل توجبھا اذ لولاھا لبطلت وکونہ یتوصل (۲) بہ الی مقصد آخر لا ینافی قصد العقد بل یؤکدہ اذبہ یتوصل فکیف لا یقصدہ وانما العقد بالایجاب

تیمم کرلے۔ اور اگر دینے سے متعلق اسے شک تھا اور تیمم کرکے نماز پڑھ لی پھر اس سے طلب کیا اور اس نے دے دیا تو اعادہ کرے۔ اور یہاں اگرچہ اپنے ہبہ سے رجوع نہ کرے لیکن اس پر یہ واجب ہے کہ پانی اس سے مانگے کیونکہ دینے کا ظن موجود ہے، ہاں مگر یہ صورت کہ دونوں باہم عہد کرلیں کہ اگر ہبہ کے بعد اس سے طلب کرے تو نہ دے تاکہ حیلہ مکمل ہو جائے، تامل کرو۔" اھ اور ردالمحتار میں حلیہ کے استحسان کی ان الفاظ میں تائید فرمائی ہے: "علاوہ ازیں ہبہ سے رجوع موہوب لہ کی رضامندی یا حاکم کے فیصلہ پر موقوف ہے۔ لیکن یہ کہا جا سکتا ہے کہ اس نے ہبہ اسی لئے کیا ہے پھر واپس لے گا اور جسے ہبہ کیا ہے وہ واہب کے مطالبہ کے وقت پانی دینے سے انکار نہ کریگا۔ اور یہ امر تیمم سے مانع ہے اس کا جواب یہ ہے کہ دینے والا ہبہ کے ذریعے یا خرید کر واپس لے گا ہبہ سے رجوع کرکے واپس نہ لے گا۔ تو امر مکروہ لازم نہ آئے گا۔ اور جسے دیا گیا ہے جب اسے حیلہ کا علم ہے تو وضو کیلئے دینے سے وہ انکار کر دے گا غور کرو"۔ اھ (ت)

اقول: علامہ مقدسی کے اعتراض کی کوئی وجہ نہیں اس لئے کہ ہبہ حقیقۃ ہبہ ہے جو اہل سے محل میں صادر ہوا، اور حیلہ حقیقت کو ختم نہیں کرتا بلکہ ثابت ولازم کرتا ہے اس لئے کہ اگر حقیقت کا ثبوت ہی نہ ہوتا تو حیلہ ہی باطل ہوتا۔ اور اسے کسی اور مقصد کے حصول کا ذریعہ بنانا قصد عقد کے منافی نہیں بلکہ

1 منحة الخالق مع البحر الرائق باب التيمم ايچ ايم سعيد كمپنى كراچى ۱/۴۳۱ 2 رد المحتار باب التيمم مطبع مصطفیٰ البابى مصر ۱/۱۸۶

Acceptance is not based on the hidden intentions within souls. Otherwise, the door to all legal stratagems (sharia hiyal) would be completely closed, whereas it remains open according to the Great Book (Quran) and authentic traditions (Hadiths), as I have clarified in 'Kifl al-Faqih al-Fahim'. When a contract is established, its rulings are also established. One of the rulings of a gift (hiba) contract is that revoking it is 'Makruh Tahrimi' (prohibitively disliked). So how could revocation not be forbidden? The prohibition of revocation is not based on the premise that it would cause distress to the recipient, such that if there were no distress, revocation would be permissible. Rather, even if there is no distress, revocation is not permissible. Note that there are two ways to revoke a gift: with the recipient's consent or through a judicial decree. In the case of consent, there is no distress, yet the prohibition applies in both scenarios. Instead, the prohibition of revocation is because, by the grace of Allah, we do not follow a 'bad example', as clearly stated in the noble Hadith (The one who takes back a gift is like a dog that returns to eat its own vomit). As for Allama Shami's additional comment ('alawa'), he himself provided the answer, and what he considered weak in 'Minhat al-Khaliq', he confirmed with certainty in 'Radd al-Muhtar'. (T)

(Note 3) Like someone who marries for a term of one month, one year, or two hundred years—it is void. But if one marries unconditionally without a specified time limit, even if they have the intention in their heart to divorce after a month, a day, or an hour, it is permissible, as mentioned in 'Durr-e-Mukhtar' etc. 12 May Allah forgive him (M/T).

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

स्वीकृति आत्माओं के भीतर छिपे इरादों पर आधारित नहीं होती है। अन्यथा, सभी कानूनी युक्तियों (शरिया हील) के दरवाजे पूरी तरह से बंद हो जाएंगे, जबकि यह महान पुस्तक (कुरान) और प्रामाणिक हदीसों के अनुसार खुले हैं, जैसा कि मैंने 'किफ़ल अल-फ़क़ीह अल-फ़हीम' में स्पष्ट किया है। जब एक अनुबंध स्थापित हो जाता है, तो उसके नियम भी स्थापित हो जाते हैं। और उपहार (हिबा) अनुबंध का एक नियम यह है कि इसे वापस लेना 'मकरूह तहरीमी' (सख्ती से नापसंद) है। तो निरसन वर्जित क्यों नहीं होगा? और निरसन पर प्रतिबंध इस आधार पर नहीं है कि इससे प्राप्तकर्ता को कष्ट होगा, कि यदि कष्ट न हो तो निरसन जायज़ हो जाए। बल्कि उसे कष्ट न भी हो तब भी निरसन जायज़ नहीं है। देख लीजिए कि निरसन के दो तरीके हैं: प्राप्तकर्ता की सहमति या न्यायाधीश का निर्णय। सहमति के मामले में उसे कोई कष्ट नहीं होता, फिर भी प्रतिबंध दोनों ही स्थितियों में है। बल्कि निरसन से मनाही इसलिए है क्योंकि अल्लाह के शुक्र से हमारे लिए 'बुरी मिसाल' नहीं है जैसा कि हदीस शरीफ़ में इसका साफ़ वर्णन है (उपहार वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी की हुई उल्टी फिर से खाता है)। रही अल्लामा शामी की अतिरिक्त बात ('अलावा'), तो इसका उत्तर उन्होंने स्वयं दे दिया है और 'मिन्हात अल-खालिक' में जिसे उन्होंने कमज़ोर समझा था, 'रद्द अल-मुह्तार' में उसी पर दृढ़ता व्यक्त की है। (त)

(नोट 3) जैसे यदि किसी ने एक महीने, एक साल या दो सौ साल के लिए निकाह किया तो वह बातिल (अमान्य) है। और यदि बिना समय की पाबंदी के निकाह किया और दिल में यह नियत है कि एक महीने, एक दिन या एक घंटे के बाद तलाक़ दे देगा तो वह जायज़ है जैसा कि दुर्रे मुख़्तार वग़ैरह में ज़िक्र है। १२ अल्लाह उन्हें क्षमा करे (म/त)।

पृष्ठ ७५६ का ५०२

والقبول عہ لا بالغایا ت المضمرة في النفوس والا لانسد باب الحیل الشرعیة عن آخرها مع انه مفتوح بالکتاب العزیز والا حادیث الصحاح کما بینته في کفل الفقیه واذا ثبت العقد ثبت بأحکامه ومن احکامه کراهة الرجوع تحریماً فکیف لا یکون محذوراً ولیس المنع (۱) منه لتأذی الموهوب له حتی لولم یتأذ جاز بل لا(۲) یجوز وان لم یتأذ الا تری ان له طریقین الرضا والقضاء ولا تأذی في الرضا بل منعه لانه لیس لنا بحمد اللہ تعالی مثل السوء کما افصح به الحدیث الشریف اما علاوة الشامي فقد تکفل بالجواب عنها وقد جزم في رد المحتار بما استضعفه في المنحة ۔

اس سے تو قصد اور مؤکد ہوتا ہے کیونکہ اسی کے ذریعے اسے دوسرا مقصد حاصل کرنا ہے تو عقد کا قصد کیوں کر نہ ہوگا؟ عقد تو ایجاب و قبول سے ہوتا ہے، دلوں میں پوشیدہ مقاصد کا اعتبار نہیں ورنہ تمام تر شرعی حیلوں کا دروازہ ہی بند ہو جائے جب کہ یہ کتاب عزیز اور احادیث صحاح کی رُو سے کھلا ہوا ہے جیسا کہ میں نے "کفل الفقیه الفاهم" میں اسے واضح کیا ہے۔ اور جب عقد کا ثبوت ہوگا تو اس کے احکام کا بھی ثبوت ہو گا۔ اور عقد ہبہ کا ایک حکم یہ بھی ہے کہ اس سے رجوع کرنا مکروہ تحریمی ہے تو رجوع ممنوع کیسے نہ ہوگا؟ اور رجوع سے ممانعت اس بنیاد پر نہیں کہ اس سے موہوب لہ کو اذیت ہوگی کہ اگر اسے اذیت نہ ہو تو رجوع جائز ہو جائے۔ بلکہ اسے اذیت نہ ہو جب بھی رجوع جائز نہیں۔ دیکھ لیجئے کہ رجوع کے دو طریقے ہیں موہوب لہ کی رضامندی یا حاکم کا فیصلہ، اور رضامندی کی صورت میں اسے کوئی اذیت نہیں (مگر ممانعت دونوں ہی صورتوں میں ہے) بلکہ رجوع سے ممانعت اس لئے ہے کہ بحمدہ تعالیٰ ہمارے لئے بری مثل نہیں جیسا کہ حدیث شریف میں اس کا صاف بیان ہے (ہبہ سے رجوع کرنے والا اس کتے کی طرح ہے جو اپنا قئے کیا ہوا کھانا پھر کھاتا ہے۔ مفہوماً ۱۲ م ۔ الف) رہا علامہ

شامی کا "علاوہ" تو اس کا جواب انہوں نے خود ہی دے دیا ہے اور منحۃ الخالق میں جسے انہوں نے ضعیف سمجھا تھا ردالمحتار میں اسی پر جزم فرمایا ہے۔ (ت)

عه كمن (۳) نكح الى شهر اوسنة او مائتى عام بطل وان نكح مطلقاً وفى نيته ان يطلقها بعد شهر اويوم اوساعة جاز كما في الدر وغيره ۱۲ منه غفر له (م)

جیسے اگر کسی نے ایک ماہ یا ایک سال یا دوسو ۲۰۰ سال کیلئے نکاح کیا تو باطل ہے اور اگر قید وقت کے بغیر نکاح کیا اور دل میں یہ نیت ہے کہ ایک ماہ یا ایک دن یا ایک ساعت کے بعد طلاق دے گا تو جائز ہے جیسا کہ درمختار وغیرہ میں مذکور ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Rizvia Volume 3

| (Arabic Text) If you say: What is its benefit except for the ability to revoke, while it is prohibited? I say: He does not revoke, but rather buys or seeks a gift, as stated by [Shami]. Its benefit is that the donee does not refuse to sell or gift it, knowing that if he does not, the donor has the right to revoke, so refusal is of no avail. This is contrary to when the right of revocation is cut off; then the donee refuses because he knows the donor cannot reclaim it. The correct view is with the generality of the Imams, God willing. And Allah Almighty knows best. | If it is objected that the benefit of this was only the power of future revocation, and since revocation is forbidden (then the benefit is lost), I say: He shall not revoke the gift but rather obtain it by purchasing it or being gifted it by the donee (mohub-lah), as Allama Shami has stated. And the benefit is that the donee will not be able to refuse selling or regifting it because he knows that if he does not do so, the donor (wahib) can revoke it, thus making refusal futile. This is in contrast to the case where the right of revocation has ceased; in that case, the donee might refuse because he knows the donor no longer has the power to take it back. Therefore, truth and correctness on this issue lie with the general consensus of the Imams (may Allah have mercy on them), if Allah Almighty wills. And Allah Almighty knows best. (T) |

(149) Water is in such a state that there is doubt about it being absolute (pure) or restricted (impure/mixed), like date infusion (Nabidh-e-Tamr) where it's not certain if the water has been overwhelmed by the fruit to become Nabidh or not. In this case, one should perform both wudu (ablution), in case it's still water, and tayammum (dry ablution), in case it's not. The three rulings narrated from our Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him) regarding Nabidh-e-Tamr - perform wudu with it, don't perform wudu but do tayammum, perform both wudu and tayammum - are based on these three conditions. Where the water is not yet overwhelmed, he ordered wudu; where it's overwhelmed, he ordered tayammum; where it's doubtful whether it's overwhelmed or not, he ordered combining both, as we mentioned in the margins of our treatise "al-Nur wal-Nawraq". (As we mentioned in the marginalia of our treatise "al-Nur wal-Nawraq". - T)

(150) Water leftover by a donkey is present, and nothing else; perform both wudu and tayammum with it. In these two cases, one has the choice whether to perform wudu first or tayammum, and it is better to perform wudu first. In both, wudu without intention (niyyat) will not be valid; like tayammum, intention is a condition for this wudu as well. Warning: This same rule applies to the leftover water of a mule if it

was born from a horse mating with a female donkey. In our country, common mules are those produced by a donkey mating with a mare; the leftover water of these mules is not doubtful but pure (tahir). Their ruling is like that of a horse because in animals, the lineage follows the mother. It is stated in Durr al-Mukhtar:

| (Leftover water of a domestic donkey and a mule) whose mother is a donkey. | "The leftover water of a domestic donkey and a mule whose mother is a donkey." |

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

| (अरबी पाठ) यदि आप कहें: वापसी की शक्ति के अलावा इसका क्या लाभ है, जबकि यह निषिद्ध है? मैं कहता हूँ: वह वापस नहीं लेता, बल्कि खरीदता है या उपहार मांगता है, जैसा कि [शामी] ने कहा है। इसका लाभ यह है कि उपहार लेने वाला इसे बेचने या उपहार देने से इनकार नहीं करता, यह जानते हुए कि यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो दानदाता के पास वापसी का अधिकार है, इसलिए इनकार का कोई लाभ नहीं है। यह उस समय के विपरीत है जब वापसी का अधिकार समाप्त हो जाता है; तब उपहार लेने वाला इनकार कर देता है क्योंकि वह जानता है कि दानदाता इसे वापस नहीं ले सकता। सही विचार सामान्य इमामों के पास है, इंशा अल्लाह। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | यदि यह आपत्ति की जाए कि इसका लाभ केवल भविष्य में वापसी की शक्ति थी और वापसी वर्जित है (तो लाभ लुप्त हो गया), तो मैं कहता हूँ: वह उपहार वापस नहीं लेगा, बल्कि वह इसे उपहार लेने वाले (मौहूब लहु) से खरीदकर या उससे पुन: उपहार में लेकर प्राप्त करेगा, जैसा कि अल्लामा शामी ने फरमाया है। और लाभ यह है कि उपहार लेने वाला इसे बेचने या वापस उपहार देने से इनकार नहीं कर पाएगा क्योंकि वह जानता है कि यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो दानदाता (वाहिब) इसे वापस ले सकता है, जिससे इनकार निरर्थक हो जाएगा। यह उस स्थिति के विपरीत है जिसमें वापसी का अधिकार समाप्त हो गया हो; उस स्थिति में, उपहार लेने वाला इनकार कर सकता है क्योंकि वह जानता है कि दानदाता के पास इसे वापस लेने की शक्ति नहीं रही। इसलिए, इस मसले में सत्य और सही बात सामान्य इमामों (अल्लाह उन पर रहम करे) के साथ है, यदि अल्लाह तआला चाहे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त) |

(149) पानी ऐसी स्थिति में है कि उसके मुतलक़ (शुद्ध) या मुक़य्यद (मिश्रित) होने में संदेह है, जैसे खजूर का पानी (नबीज़-ए-तम्र) आदि जिसमें यह निश्चित न हो कि पानी उस फल से दबकर नबीज़ बन गया है या अभी नहीं। उससे वुज़ू भी करे कि शायद पानी हो और तयम्मुम भी कि शायद न हो। हमारे इमाम-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से नबीज़-ए-तम्र में जो तीन हुक्म वर्णित हैं - उससे वुज़ू करे, वुज़ू न करे तयम्मुम ही करे, वुज़ू और तयम्मुम दोनों करे - वे इन तीन स्थितियों पर आधारित हैं। जहाँ पानी अभी तक दबा नहीं था, वहाँ आपने वुज़ू का हुक्म दिया; जहाँ वह दब गया, वहाँ तयम्मुम का हुक्म दिया; जहाँ दबने या न दबने में संदेह है, वहाँ दोनों को मिलाने का हुक्म दिया, जैसा कि हमने अपने रिसाले "अल-नूर वल-नौरक़" के हाशिये में ज़िक्र किया है। (जैसा कि हमने अपने रिसाले "अल-नूर वल-नौरक़" के हाशिये में ज़िक्र किया है। - त)

(150) गधे का जूठा पानी मौजूद है, और उसके अलावा कुछ नहीं; तो उससे वुज़ू भी करे और तयम्मुम भी। इन दोनों स्थितियों में विकल्प है चाहे वुज़ू पहले करे या तयम्मुम, और बेहतर यह है कि वुज़ू पहले करे और इन दोनों में बिना नीयत के वुज़ू जायज़ नहीं होगा, तयम्मुम की तरह इस वुज़ू में भी नीयत शर्त है। चेतावनी: यही हुक्म खच्चर के जूठे का है यदि वह घोड़ी पर गधा डालने से पैदा हुआ हो। हमारे देश में आम खच्चर वे हैं जो घोड़ी पर गधा डालने से पैदा होते हैं; इन खच्चरों का जूठा संदिग्ध नहीं बल्कि पाक (ताहिर) है। उनका हुक्म घोड़े की तरह है क्योंकि जानवरों में माँ का एतबार (विचार) होता है। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

| (घरेलू गधे और खच्चर का जूठा) जिसकी माँ गधी हो। | "घरेलू गधे और उस खच्चर का जूठा जिसकी माँ गधी हो।" |

पृष्ठ 503 का 756

| فان قلت: ما فائدته الا التمکن من الرجوع وھو عنه ممنوع اقول: لا یرجع بل یشتری او یستوھب کما قال ش وفائدته ان الموھوب له لا یمتنع من بیعه او ھبته علما منه بانه ان لم یفعل فله الرجوع فلا یفید الامتناع بخلاف ما اذا انقطع حق رجوعه یمتنع لعلمه ان الواھب لا یقدر علی استرداده فالصواب مع عامة الائمة ان شاء اللہ تعالی واللہ تعالی اعلم۔ | اگر یہ اعتراض ہو کہ اس کا فائدہ یہی تو تھا کہ آئندہ رجوع پر قدرت رہے گی اور رجوع ممنوع ہے (تو فائدہ مفقود ہے) اقول ہبہ سے رجوع نہیں کرے گا بلکہ موہوب لہ سے آپ زمزم خرید کر یا اس سے ہبہ کرا کے حاصل کرے گا جیسا کہ علامہ شامی نے فرمایا۔ اور فائدہ یہ ہے کہ موہوب لہ بیع یا ہبہ سے انکار نہ کر سکے گا کیونکہ اسے معلوم ہے کہ اگر وہ ایسا نہیں کرتا ہے تو واہب رجوع کر سکتا ہے تو انکار بے سود ہوگا۔ بخلاف اس صورت کے جس میں حق رجوع ختم ہو جائے اس صورت میں موہوب لہ انکار کردے گا کیونکہ اسے معلوم ہے کہ واہب کو واپس لینے کا اختیار نہ رہا۔ تو اس مسئلہ میں حق وصواب عامہ ائمہ رحمہم اللہ کے ساتھ ہے، ان شاء اللہ تعالٰی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔(ت) |

(۱۴۹) پانی ایسی حالت پر ہے کہ اس کے مطلق و مقید ہونے میں اشتباہ ہے جیسے نبیذ تمر وغیرہ جس میں تحقیق نہ ہو کہ پانی اُس میوے سے مغلوب ہو کر نبیذ ہو گیا یا ابھی نہیں اُس سے وضو بھی کرے کہ شاید پانی ہو اور تیمم بھی کہ شاید نہ ہو ہمارے امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ سے نبیذ تمر میں جو تین حکم مروی ہیں، اُس سے وضو کرے، وضو نہ کرے تیمم ہی کرے۔ وضو و تیمم دونوں کرے وہ انہیں تین حالتوں پر مبنی ہیں، جہاں پانی ہنوز مغلوب نہ ہوا وہاں اُس سے وضو کا حکم فرمایا جہاں مغلوب ہو گیا تیمم کا حکم دیا جہاں مغلوب ہونا نہ ہونا مشتبہ ہے دونوں کا

جمع کرنا ارشاد فرمایا کما ذ کرناہ علی ھامش رسالتنا النور والنورق (جیسا کہ ہم نے اپنے رسالہ "النور والنورق" کے حاشیہ میں ذکر کیا ہے۔ ت)

(۱۵۰) گدھے کا جھوٹا پانی موجود ہے، اور نہیں اُس سے وضو بھی کرے اور تیمم بھی۔ ان دونوں نمبروں میں اختیار ہے چاہے وضو پہلے کرے خواہ تیمم اور بہتر یہ ہے کہ وضو پہلے کرے اور ان دونوں میں وضو بلا نیت جائز نہ ہو گا تیمم کی طرح اس وضو میں بھی نیت شرط ہے۔ تنبیہ: یہی حکم خچر کے جھوٹے کا ہے اگر گدھی پر گھوڑا پڑنے سے پیدا ہوا ہو ہمارے ۲ ملک میں عام خچر وہ ہیں کہ گھوڑی پر گدھا ڈال کر لیے جاتے ہیں ان خچروں کا جھوٹا مشکوک نہیں طاہر ہے ان کا حکم گھوڑے کی مثل ہے کہ جانوروں ۳ میں اعتبار ماں کا ہے در مختار میں ہے:

| (سؤر حمار اھلی وبغل) امہ حمارۃ | "اہلی (گدھے کا جھوٹا اور خچر کا) جس کی ماں گدھی ہو۔" |

Fatawa Razvia - Volume 3

[Arabic Box Text]: If the mother is a mare or a cow, then it is pure (doubtful in its purifying nature) so that if it falls into a small amount of water, it is considered by parts (so one performs ablution with it) or washes (and performs Tayammum if water is lacking, and it is correct to prioritize whichever he wishes) in the more correct view, as stated by the Imam. He said after it: (And Tayammum is prioritized over date wine (Nabidh al-Tamr) according to the school of thought) which is corrected and fatwa is given upon it, because when a Mujtahid retracts an opinion, it is not permissible to take it[1] until it becomes Nabidh. The meaning of prioritizing is selection, i.e., he must choose Tayammum and not perform ablution with it as stated by Ash (Shami) and we explained it in the mentioned treatise.

[Urdu Box Text]: If the mother is a mare or a cow, then the leftover of such a mule is pure (there is doubt regarding its purifying nature) to the extent that if it falls into a small quantity of water, the parts will be considered (so ablution will be performed with it) or bathing will be performed (and Tayammum will also be performed if no other water is available. And) in the most correct school of thought, (between Tayammum and ablution, one may prioritize whichever they wish). However, after this in Ad-Durr al-Mukhtar, this phrase is present: "(And) based on the corrected and fatwa-issued position (prioritize Tayammum over date wine based on the school) because once a Mujtahid retracts a statement, it is not permissible to follow it." This ruling is for the case when water has become Nabidh, and here prioritizing means choice, i.e., one should mandatorily choose Tayammum and not perform ablution with Nabidh, as Allama Shami has stated this benefit and we have also mentioned it in our aforementioned treatise. (T)

In Radd al-Muhtar it is stated: [Arabic]: In An-Nahr from Al-Fath, there is disagreement regarding the intention when using the leftover water of a donkey, and the most cautious path is to make an intention. This means the most cautious view is to consider the intention mandatory, as we have previously stated in the discussion on intention, citing Al-Bahr from the commentaries of Al-Majma' and An-Nuqayah, attributed to Al-Kifayah, that intention is a condition for it and for date wine[2].

[Urdu]: In "An-Nahr al-Faiq," citing "Fath al-Qadir," it is written that there is disagreement regarding the intention in ablution with the leftover water of a donkey, and the most cautious way is to make an intention. This means the most cautious view is to accept the obligation of intention because we have stated in the discussion

on intention that intention is a condition for ablution with a donkey's leftover water and with date wine; we have cited this from Al-Bahr al-Ra'iq, and Al-Bahr cites the commentaries of Al-Majma' and Nuqayah, and in both of them, reference to Kifayah is given. (T)

(151) In ablution, if most of the limbs for ablution, or in bathing, most of the body has wounds or wet itchiness, then perform Tayammum; if it is less, then it is correct (to perform ablution/bath).

Footnotes: 1. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/165 to 167. 2. Radd al-Muhtar, Chapter on the Well, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/165.

फ़तावा रज़विया - जिल्द ३

[अरबी बॉक्स पाठ]: यदि माँ घोड़ी या गाय हो तो वह पाक है (जिसकी शुद्धिकरण प्रकृति में संदेह है), यहाँ तक कि यदि वह कम पानी में गिर जाए तो उसे अंगों द्वारा माना जाता है (तो उससे वज़ू किया जाता है) या नहाया जाता है (और पानी न होने पर तयम्मुम किया जाता है, और उनमें से जिसे चाहे पहले करना सही है) सबसे सही राय में, जैसा कि इमाम ने कहा। उन्होंने इसके बाद कहा: (और मज़हब के अनुसार नबीज़-ए-तमर पर तयम्मुम को प्राथमिकता दी जाती है) जो कि प्रमाणित और फ़तवा-शुदा है, क्योंकि जब एक मुजतहिद किसी राय से पीछे हट जाता है, तो उसे अपनाना जायज़ नहीं है[1] यहाँ तक कि वह नबीज़ बन जाए। प्राथमिकता देने का अर्थ चयन है, अर्थात वह अनिवार्य रूप से तयम्मुम को ही चुनेगा और उससे वज़ू नहीं करेगा जैसा कि शामी ने उल्लेख किया है और हमने इसे उल्लेखित शोध पत्र में स्पष्ट किया है।

[उर्दू बॉक्स पाठ]: अगर माँ घोड़ी या गाय हो तो ऐसे खच्चर का जूठा पाक है (इसके मुतह्हिर होने में शक है) यहाँ तक कि अगर आब-ए-क़लील में पड़ जाए तो अज्ज़ा का एतबार होगा (तो उससे वज़ू किया जाएगा) या ग़ुस्ल किया जाएगा (और तयम्मुम भी किया जाएगा अगर दूसरा पानी न हो। और) अस़ह मज़हब में, (तयम्मुम वज़ू में से जिसे चाहे मुक़द्दम करे)। लेकिन इसके बाद दुर्रे मुख्तार में यह इबारत है: "(और) तसहीह याफ़्ता मुफ़्ती बेह (मज़हब की बुनियाद पर तयम्मुम को नबीज़-ए-तमर पर मुक़द्दम करे) इसलिए कि मुजतहिद जब किसी क़ौल से रुजू कर ले तो उसे लेना जायज़ नहीं है।" यह हुक्म उस सूरत में है जब पानी नबीज़ बन गया हो और यहाँ तक़दीम का मा'नी इख़्तियार है यानी वाजिबी तौर पर तयम्मुम ही इख़्तियार करे और नबीज़ से वज़ू न करे जैसा कि अल्लामा शामी ने यह इफ़ादा फ़रमाया है और इसे हमने अपने मज़कूरा रिसाला में भी ज़िक्र किया है। (त)

रद्दुल मुहतार में है: [अरबी]: अन-नहर में अल-फ़तह से, गधे के जूठे पानी से नीयत के बारे में मतभेद है और एहतियात इसमें है कि नीयत करे। यानी एहतियात नीयत के वाजिब होने का क़ौल मानना है क्योंकि हम नीयत की बहस में अल-बहर से अल-मज्म और अल-नुक़ाया की शरह के हवाले से, अल-किफ़ाया की ओर मंरूब करते हुए बयान कर आए हैं कि नीयत इसमें और नबीज़-ए-तमर में शर्त है[2]।

[उर्दू]: "अन-नहरुल फ़ाइक़" में "फ़तहुल क़दीर" के हवाले से लिखा है कि गधे के जूठे से वज़ू में नीयत से मुतअल्लिक़ इख़्तिलाफ़ है और अहवत यह है कि नीयत करे। यानी अहवत वुजूबे नीयत

मानना है क्योंकि हम नीयत की बहस में यह बयान कर आए हैं कि गधे के जूठे से और नबीज़-ए-तमर से वज़ू में नीयत शर्त है इसे हमने अल-बहरुर रायिक़ से नक़ल किया है और बहर में शरह मज्म और नुक़ाया से नक़ल है और इन दोनों में किफ़ाया का हवाला दिया गया है। (त)

(१५१) वज़ू में अक्सर आ'ज़ाए वज़ू या ग़ुस्ल में अक्सर हिस्सा बदन में ज़ख़्म या तर ख़ारिश है तयम्मुम करे और कम में तो सही।

पाद-टिप्पणियाँ: १. अद-दुरुल मुख्तार फ़स्ल फिल बिअर मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र १/ १६५ से १६७ २. रद्दुल मुहतार फ़स्ल फिल बिअर मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र १/ १६५

पृष्ठ ५०४ / ७५६

فتاوی رضویہ - جلد سوم

[عربی متن]: فلو فرسا او بقرة فطاهر (مشكوك فی طهوريته) حتی لو وقع فی ماء قليل اعتبر بالاجزاء (فيتوضأ به) او يغتسل (ويتيمم ان فقد ماء وصح تقديم ايهما شاء) فی الاصح اهـ اماما قال بعده (ويقدم التيمم علی نبيذ التمر علی المذهب) المصحح المفتی به لان المجتهد اذا رجع عن قول لايجوز الاخذ به [1] اهـ ففيما صار نبيذا ومعنی التقديم الاختيار ای يختار التيمم حتما ولا يتوضوء به كما افاده ش وبيناه فی الرسالة المذكورة۔

[اردو متن]: اگر ماں گھوڑی یا گائے ہو تو ایسے خچر کا جھوٹا پاک ہے (اس کے مطہر ہونے میں شک ہے) یہاں تک کہ اگر آپِ قلیل میں پڑ جائے تو اجزاء کا اعتبار ہوگا (تو اس سے وضو کیا جائے گا) یا غسل کیا جائے گا (اور تیمم بھی کیا جائے گا اگر دوسرا پانی نہ ہو۔ اور) اصح مذہب میں ، (تیمم وضو میں سے جسے چاہے مقدم کرے) اھ لیکن اس کے بعد دُرِ مختار میں یہ عبارت ہے : "(اور) تصحیح یافتہ مفتی بہ (مذہب کی بنیاد پر تیمم کو نبیذِ تمر پر مقدم کرے) اس لئے کہ مجتہد جب کسی قول سے رجوع کرلے تو اسے لینا جائز نہیں اھ یہ حکم اس صورت میں ہے جب پانی نبیذ بن گیا ہو اور یہاں تقدیم کا معنی اختیار ہے یعنی واجبی طور پر تیمم ہی اختیار کرے اور نبیذ سے وضو نہ کرے جیسا کہ علامہ شامی نے یہ افادہ فرمایا ہے اور اسے ہم نے اپنے مذکورہ رسالہ میں بھی ذکر کیا ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: [عربی متن]: في النهر عن الفتح اختلف فی النية بسؤر الحمار والاحوط ان ينوی اهـ ای الاحوط القول بوجوبها فقد قدمنا فی بحث النية عن البحر عن شرح المجمع والنقاية معزيا الی الكفاية انها شرط فيه وفی نبيذ التمر [2]۔

[اردو متن]: "النہر الفائق" میں "فتح القدیر" کے حوالہ سے لکھا ہے کہ گدھے کے جھوٹے سے وضو میں نیت سے متعلق اختلاف ہے اور احوط یہ ہے کہ نیت کرے"۔ اھ یعنی احوط وجوبِ نیت ماننا ہے کیونکہ ہم نیت کی بحث میں یہ بیان کر آئے ہیں کہ گدھے کے جھوٹے سے اور نبیذِ تمر سے وضو میں نیت شرط ہے اسے ہم نے البحرالرائق سے نقل کیا ہے اور بحر میں شرح مجمع اور نقایہ سے نقل ہے اور ان دونوں میں کفایہ کا حوالہ دیا گیا ہے۔ (ت)

(۱۵۱) وضو میں اکثر اعضائے وضو یا غسل میں اکثر حصہ بدن میں زخم یا تر خارش ہے تیمم کرے اور کم میں تو صحیح۔

حواشی: 1 الدرالمختار فصل فی البئر مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۶۵ تا ۱۶۷ 2 ردالمحتار فصل فی البئر مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۶۵

Fatawa Razawiya Volume 3

...wash the healthy parts and wipe (masah) over the rest, but if washing the healthy parts cannot prevent water from reaching the injured parts, then tayammum is still required [1] as stated in al-Khaniyyah, al-Hilyah, and al-Bahr (as it is in al-Khaniyyah, al-Hilyah, and al-Bahr al-Raiq. -T). And if the healthy and injured parts are equal, there is a difference of opinion on what is correct. In al-Khaniyyah and al-Muhit, it is stated that the correct view is to wash the healthy parts and wipe the wounds. In al-Bahr and al-Tanwir, it says this is more cautious (ahwat). In al-Durr al-Mukhtar, it says this is most correct (asah). And in al-Khulasa, al-Tabyin, al-Fath, al-Fayd, al-Ikhtiyar, and Mawahib al-Rahman, the correct view is that one should perform tayammum.

Arabic Text

As stated in Radd al-Muhtar, he said: "I saw in al-Siraj the following text: In al-Uyun from Muhammad, if there are wounds on both hands such that they cannot be washed, and the same is on the face, then perform tayammum. If they are only on the hands, then wash and do not perform tayammum. This indicates that one performs tayammum if half of the limbs of wudu are injured." [2] End.

I say: This makes the weight of the second view heavier, and on this basis, Al-Shami refuted Al-Durr [al-Mukhtar] stating that the ruling to both wash and wipe in the case of equality between healthy and injured limbs is contrary to what is narrated from Imam Muhammad. If it is objected that perhaps the precise commentator (may Allah have mercy on him) looked at the fact that the discussion here is about washing, so if the limbs for which washing is harmful are more in

Urdu Translation/Explanation

As in Radd al-Muhtar, it states: "I saw this passage in al-Siraj: It is narrated from Imam Muhammad in al-Uyun: When there are wounds on both hands such that the hands cannot be washed, and there are similar wounds on the face, then perform tayammum. And if they are only on the hands, then wash and do not perform tayammum." From this, it is known that in the case where half of the limbs of wudu are injured, one should perform tayammum. (T)

I say: This makes the scale of the second view heavier and based on this, Al-Shami has refuted the Durr al-Mukhtar that giving a ruling of both washing and wiping in the case of equality of healthy and injured limbs is against what has been narrated from Imam Muhammad. If this objection is raised that perhaps the precise commentator (may Allah Almighty have mercy on him) may have noticed that the discourse here is about washing, so if the organs whose washing is

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
number than those for which washing is not harmful, then one should perform tayammum considering the majority. And there is no doubt that among the limbs of wudu that must be washed, the two hands and the face together are more than the rest...	harmful are more in number than those whose washing is not harmful, then he will perform tayammum considering the majority, and there is no doubt that among the organs of wudu that are to be washed, both hands and face together are more than the rest.

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on what is permissible for Tayammum, published Nawal Kishore Lucknow, 1/28.
2. Radd al-Muhtar, end of the Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press Egypt, 1/189.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

...स्वस्थ अंगों को धोएं और बाकी पर मसह (पोंछना) करें, लेकिन यदि स्वस्थ अंगों को धोने से पानी को घायल अंगों तक पहुँचने से नहीं रोका जा सकता है, तो अभी भी तयम्मुम आवश्यक है [1] जैसा कि अल-खानीय्याह, अल-हिल्याह और अल-बहर में है (जैसा कि अल-खानीय्याह, अल-हिल्याह और अल-बहर अल-राइक़ में है। -T)। और यदि स्वस्थ और घायल हिस्से बराबर हों, तो इसे सही मानने के बारे में मतभेद है। अल-खानीय्याह और अल-मुहीत में कहा गया है कि सही विचार यह है कि स्वस्थ हिस्सों को धोया जाए और घावों पर मसह किया जाए। अल-बहर और अल-तन्वीर में है कि यह अधिक एहतियाती (अहवत) है। अल-दुर अल-मुख्तार में है कि यही सबसे सही (अस़ह) है। और अल-खुलासा, अल-तबयीन, अल-फतह, अल-फैज, अल-इख्तियार और मवाहब अल-रहमान में सही विचार यह है कि व्यक्ति को तयम्मुम करना चाहिए।

अरबी पाठ

जैसा कि रद्दुल मुख्तार में है, वे कहते हैं: "मैंने अल-सिराज में यह पाठ देखा: अल-उयून में इमाम मुहम्मद से रिवायत है: जब दोनों हाथों पर ऐसे घाव हों कि हाथ धोए न जा सकें और चेहरे पर भी ऐसा ही हो, तो तयम्मुम करें। और यदि वे केवल हाथों पर हों, तो धोएं और तयम्मुम न करें। इससे पता चलता है कि वज़ू के आधे अंगों के घायल होने की स्थिति में व्यक्ति तयम्मुम करेगा।" [2] अंत।

मैं कहता हूँ: इससे दूसरे मत का पलड़ा भारी हो जाता है और इसी आधार पर अल्लामा शामी ने अल-दुर्र (अल-मुख्तार) का खंडन किया है कि स्वस्थ और घायल अंगों की समानता के मामले में धोने और मसह करने दोनों का आदेश देना इमाम मुहम्मद से जो रिवायत है उसके विरुद्ध

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

जैसा कि रद्दुल मुख्तार में है, लिखा है: "मैंने अल-सिराज में यह इबारत देखी: उयून में इमाम मुहम्मद से नकल है: जब दोनों हाथों पर ऐसे ज़ख्म हों कि हाथों को धो न सके और चेहरे में भी ऐसे ही हों तो तयम्मुम करे। और अगर सिर्फ हाथों में हों तो धोए और तयम्मुम न करे"। इससे मालूम होता है कि आधे वज़ू के अंगों के ज़ख्मी होने की सूरत में तयम्मुम करेगा। (त)

मैं कहता हूँ: इससे दूसरे कौल (मत) का पलड़ा भारी हो जाता है और इसी की बुनियाद पर अल्लामा शामी ने दर-ए-मुख्तार का रद्द किया है कि सही और ज़ख्मी अंगों के बराबर होने की सूरत में धोने और मसह दोनों ही का हुक्म देना उसके खिलाफ है जो इमाम मुहम्मद से मरवी (वर्णित) है। अगर यह ऐतराज़ (आपत्ति) हो कि शायद शारह-ए-

अरबी पाठ

है। यदि यह आपत्ति की जाए कि शायद सटीक टीकाकार (अल्लाह उन पर रहम करे) ने इस पर ध्यान दिया हो कि यहाँ चर्चा धोने के बारे में है, तो जिन अंगों को धोना हानिकारक है यदि वे गिनती में उन अंगों से अधिक हैं जिन्हें धोना हानिकारक नहीं है, तो बहुमत (अक्सर) को ध्यान में रखते हुए तयम्मुम करेगा। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि वज़ू के जिन अंगों को धोना आवश्यक है, उनमें दोनों हाथ और चेहरा मिलकर बाकी से अधिक हैं...

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

मुदक़्क़िक (टीकाकार) रहमतुल्लाह अलैह ने इस पर नज़र की हो कि यहाँ कलाम धोने से मुताल्लिक़ (संबंधित) है तो जिन अंगों को धोना मुज़िर (हानिकारक) है यह अगर गिनती में उन अंगों से ज़्यादा हों जिन्हें धोना मुज़िर नहीं है तो अक्सर का लिहाज़ करते हुए तयम्मुम करेगा और इसमें शक नहीं कि जितने आज़ा-ए-वज़ू (वज़ू के अंगों) को धोना है उनमें दोनों हाथ और चेहरा मिल कर बाकी से ज़्यादा हैं...

1. फ़तावा क़ाज़ी खान, तयम्मुम के बारे में अध्याय, नवल किशोर लखनऊ द्वारा प्रकाशित, 1/28।
2. रद्दुल मुख्तार, तयम्मुम अध्याय का अंत, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस मिस्र, 1/189।

पृष्ठ 505 / 756

کو دھوئے باقی کو مسح کرے مگر جب کہ صحیح دھونے سے زخمی تک پانی پہنچنے سے بچ نہ سکے تو اب بھی تیمم ہے ۱ کما فی الخانیۃ والحلیۃ والبحر (جیسا کہ خانیہ، حلیہ اور البحر الرائق میں ہے۔ت) اور اگر صحیح و مجروح دونوں حصے برابر ہوں تو اختلافِ تصحیح ہے خانیہ و محیط میں فرمایا صحیح یہ ہے کہ صحیح کو دھوئے جرح کو مسح کرے۔ بحر و تنویر میں ہے یہی احوط ہے در مختار میں ہے یہی اصح ہے اور خلاصہ و تبیین و فتح و فیض و اختیار و مواہب الرحمن میں ہے صحیح یہ کہ تیمم کرے۔

عربی متن

کما فی ردالمحتار قال و رأیت فی السراج مَانصه وفی العیون عن محمد اذا کان علی الیدین قروح لا یقدر علی غسلهما و بوجهه مثل ذلك تیمم وان کان فی یدیه خاصة غسل ولایتیمّم وهذا یدل علی انه یتیمم مع جراحة النصف ۲ اه

اقول: وبه تترجح کفة القول الثانی وبه رد الشامی علی الدر ان حکمه فی المساواة بالغسل والمسح خلاف المروی عن محمد فان قلت لعل الشارح المدقق

اردو ترجمہ / تشریح

جیسا کہ ردالمحتار میں ہے، فرماتے ہیں: "میں نے سراج میں یہ عبارت دیکھی: عیون میں امام محمد سے نقل ہے: جب دونوں ہاتھوں پر ایسے زخم ہوں کہ ہاتھوں کو دھو نہ سکتا ہو، اور چہرے میں بھی ایسے ہی ہوں تو تیمم کرے۔ اور اگر صرف ہاتھوں میں ہوں تو دھوئے اور تیمم نہ کرے"۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ نصف محلِ وضو زخمی ہونے کی صورت میں تیمم کرے گا۔ اہ (ت)

اقول: اس سے قولِ ثانی کا پلہ بھاری ہو جاتا ہے اور اسی کی بنیاد پر علامہ شامی نے در مختار کا رد کیا ہے کہ صحیح اور زخمی اعضاء برابر ہونے کی صورت میں دھونے اور مسح دونوں ہی کا حکم دینا اس کے خلاف ہے

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
رحمه الله تعالى نظر الى ان الكلام ههنا	جو امام محمد سے مروی ہے۔ اگر یہ اعتراض ہو کہ شاید
فی الغسل فان كان مايضره الغسل اكثر	شارحِ مدقق رحمہ اللہ تعالیٰ نے اس پر نظر کی ہو کہ یہاں
عددا مما لايضره تيمّم اعتبارا بالاكثر	کلام دھونے سے متعلق ہے تو جن اعضاء کو دھونا مضر
ولاشک ان الوجه واليدين اكثر المغسول	ہے یہ اگر گنتی میں ان اعضاء سے زیادہ ہوں جنہیں دھونا
من اعضاء الوضوء فلاما فی السراج من	مضر نہیں ہے تو اکثر کا لحاظ کرتے ہوئے تیمم کرے گا
الاستدلال به يتم ولا مانی ردالمحتار على	اور اس میں شک نہیں کہ جتنے اعضاءِ وضو کو دھونا
الشارح يرد۔	ہے ان میں دونوں ہاتھ اور چہرہ مل کر باقی سے زیادہ

1 فتاوی قاضی خان فصل فیما یجوز بہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/ ۲۸ 2 ردالمحتار آخر باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۹

Fatawa Ridawiyya Volume 3

I say: Therefore, his statement "if both are equal" is dropped because there is no half for three. And the addition of (1) the head to these limbs has been explicitly mentioned in al-Fath, al-Hilya, and al-Bahr, where it says this.

The limit of "majority" (kathrah) has been disputed among them. Some consider it based on the number of limbs, while others consider the majority within each individual limb itself. For example, if there are wounds on the head, face, and hands, but no wounds on the feet, he should perform tayammum, regardless of whether the majority of the wounded limbs are injured or healthy. Others said: if the majority of each individual limb among the mentioned limbs of wudu is injured, then that is the "majority" with which tayammum is permissible; otherwise, it is not. This is mentioned in Fath al-Qadir without preference. In al-Haqa'iq, it is stated: "The chosen view is that the majority is considered based on the number of limbs." (1) End. Similar to what is in al-Fath is in al-Hilya, except that its discussion leans towards considering the majority in the limbs of wudu also in terms of surface area, i.e., contrary to both statements.

(Explanation in Urdu): ...then the argument presented from the narration of Imam Muhammad in 'Siraj' is not complete, and the rebuttal made against the commentator in 'Radd al-Muhtar' is also not correct. (T)

I say: If this were the case, the commentator's writing "if both are equal" would be useless because (the limbs to be washed are three and) three has no half. The explicit mention of including the head with these limbs is present in Fath al-Qadir, Hilya, and al-Bahr al-Ra'iq. The words are: "There is a difference in the limit of majority. Some have considered the number of limbs, and some have considered the excess and majority within each limb itself. So if there is a wound on the head, face, and hands, and no wound on the feet, he will perform tayammum, whether the majority part of the wounded limbs is injured or healthy. And others said that if the majority part of each of the mentioned limbs of wudu is injured, then this is the 'much' (kathir) in the presence of which tayammum is permissible; if not, then tayammum is not permissible." It is mentioned like this in Fath al-Qadir without any preference. And in 'Haqa'iq' it is written: "The chosen view is that the majority is considered in terms of the number of limbs." End. Like Fath al-Qadir, it is also in Hilya, but further, as a matter of discussion, their inclination has been that the majority in the limbs of wudu will also be considered in terms of surface area and quantity. (Here were two

opinions: (1) consideration of majority in terms of count in the four limbs of wudu; (2) consideration of majority in terms of injured and non-injured parts of each limb of wudu).

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, under the statement "wa law aktharuhu majruhan", H.M. Saeed Company, Karachi, 1/263.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

मैं कहता हूँ: तो उनका यह कहना कि "यदि दोनों बराबर हों" निरस्त हो जाता है क्योंकि तीन का कोई आधा नहीं होता। और इन अंगों में (1) सिर को शामिल करने का स्पष्ट उल्लेख अल-फ़तह, अल-हिलिया और अल-बहर में मौजूद है जहाँ यह कहा गया है।

"बहुमत" (कसरत) की सीमा में उनके बीच मतभेद है। कुछ लोग अंगों की संख्या के आधार पर इसे मानते हैं, जबकि अन्य प्रत्येक व्यक्तिगत अंग के भीतर बहुमत पर विचार करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि सिर, चेहरे और हाथों पर घाव हैं, लेकिन पैरों पर कोई घाव नहीं है, तो वह तयम्मुम करेगा, चाहे घायल अंगों का अधिकांश हिस्सा घायल हो या स्वस्थ। दूसरों ने कहा: यदि वूज़ू के उल्लिखित अंगों में से प्रत्येक व्यक्तिगत अंग का अधिकांश हिस्सा घायल है, तो वह "बहुमत" है जिसके साथ तयम्मुम की अनुमति है; अन्यथा नहीं। यह फ़तह अल-क़दीर में बिना किसी वरीयता के उल्लेखित है। अल-हक़ाएक़ में कहा गया है: "पसंद किया गया विचार यह है कि अंगों की संख्या के आधार पर बहुमत माना जाता है।" (1) समाप्त। अल-फ़तह में जो है वैसा ही अल-हिलिया में भी है, सिवाय इसके कि इसकी चर्चा वूज़ू के अंगों में क्षेत्रफल के संदर्भ में भी बहुमत मानने की ओर झुकती है, यानी दोनों बयानों के विपरीत।

(उर्दू में स्पष्टीकरण): ...तो इमाम मुहम्मद के वर्णन से 'सिराज' में जो तर्क दिया गया है वह पूर्ण नहीं है, और 'रद्द अल-मुह्तार' में टीकाकार के विरुद्ध जो खंडन किया गया है वह भी सही नहीं है। (त)

मैं कहता हूँ: यदि ऐसा होता, तो टीकाकार का यह लिखना कि "यदि दोनों बराबर हों" व्यर्थ होता क्योंकि (धोए जाने वाले अंग तीन हैं और) तीन का आधा नहीं होता। इन अंगों के साथ सिर को शामिल करने का स्पष्ट उल्लेख फ़तह अल-क़दीर, हिलिया और अल-बहर अल-राइक़ में मौजूद है। शब्द ये हैं: "बहुमत की सीमा में मतभेद है। कुछ विद्वानों ने अंगों की संख्या पर विचार किया है, और कुछ ने प्रत्येक अंग के भीतर ही अधिकता और बहुमत पर विचार किया है। इसलिए यदि सिर, चेहरे और हाथों में घाव है और पैरों में घाव नहीं है, तो वह तयम्मुम करेगा, चाहे घायल अंगों का अधिकांश हिस्सा घायल हो या स्वस्थ। और अन्य लोगों ने कहा कि यदि वूज़ू के उल्लिखित अंगों में से प्रत्येक अंग का अधिकांश हिस्सा घायल है, तो यही वह 'अधिक' (कसीर) है जिसके होने पर तयम्मुम जायज़ है; यदि ऐसी स्थिति न हो तो तयम्मुम जायज़ नहीं।" फ़तह अल-क़दीर में इसी तरह बिना किसी वरीयता के उल्लेख है। और 'हक़ाएक़' में लिखा है कि: "पसंदीदा यह है कि अंगों की संख्या के लिहाज़ से

कसरत (बहुमत) का एतबार है।" अंत। फ़तह अल-क़दीर की तरह हिलिया में भी है, लेकिन इसमें और भी यह है कि बहस के तौर पर उनका रुझान इस ओर हुआ है कि क्षेत्रफल और मात्रा के लिहाज़ से भी वूज़ू के अंगों में कसरत का एतबार होगा। (यहाँ दो २ राय थीं (१) वूज़ू के चारों अंगों में गिनती के लिहाज़ से कसरत का एतबार (२) वूज़ू के हर अंग के ज़ख्मी और गैर-ज़ख्मी हिस्सों के लिहाज़ से कसरत का एतबार।)

1 अल-बहर अल-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, "वा लौ अक्सरुहु मजरूहान" के तहत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/263।

اقول: فاذن یضع قولہ وان استویا اذلا نصف لثلثۃ وضم (۱) الرأس الی ھذہ الاعضاء قد صرح بہ في الفتح والحلیۃ والبحر حیث قال ھذا واختلف في حد الکثرۃ منھم من اعتبر من حیث عدد الاعضاء ومنھم من اعتبر الکثرۃ في نفس کل عضو فلوکان برأسہ ووجھہ ویدیہ جراحۃ والرجل لاجراحۃ بھا یتیمم سواء کان الاکثر من اعضاء الجراحۃ جریحا اوصحیحا والآخرون قالوا ان کان الاکثر من کل عضو من اعضاء الوضوء المذکورۃ جریحا فھو الکثیر الذي یجوز معہ التیمم والا فلا کذا في فتح القدیر من غیر ترجیح وفی الحقائق المختار اعتبار الکثرۃ من حیث عدد الاعضاء ۱ اھ ومثل مافی الفتح فی الحلیۃ غیر انہ مال بحثاً الی اعتبار الکثرۃ فی اعضاء الوضوء ایضاً مساحۃ ای بخلاف کلا القولین۔

ہیں تو امام محمد کی روایت سے سراج میں جو استدلال کیا گیا ہے وہ تام نہیں اور اس سے ردالمحتار میں شارح پر جو رد کیا گیا ہے وہ بھی درست نہیں۔ (ت)

اقول : اگر یہ بات ہو تو شارح کا یہ لکھنا کہ "اگر دونوں برابر ہوں " بیکار ہوگا اس لئے کہ (دھوئے جانے والے اعضاء تین ہیں اور) تین کا نصف نہیں ۔ ۔ ان اعضاء کے ساتھ سر کے شامل ہونے کی تصریح فتح القدیر ، حلیہ اور البحر الرائق میں موجود ہے الفاظ یہ ہیں : "کثرت کی حد میں اختلاف ہے۔ بعض حضرات نے اعضاء کی تعداد کا اعتبار کیا ہے اور بعض حضرات نے خود ہر ہر عضو کے اندر زیادتی و کثرت کا اعتبار کیا ہے تو اگر اس کے سر ، چہرے اور ہاتھوں میں زخم ہے اور پیر میں زخم نہیں تو تیمم کرے گا خواہ زخم والے اعضاء کا اکثر حصہ زخمی ہو یا صحیح ہو اور دوسرے حضرات نے فرمایا کہ اگر وضو کے اعضائے مذکورہ میں سے ہر عضو کا اکثر حصہ زخمی ہو تو یہی وہ کثیر ہے جس کے ہوتے ہوئے تیمم جائز ہے اور اگر یہ صورت نہ ہو تو تیمم جائز نہیں۔" ۔ فتح القدیر میں اسی طرح بغیر کسی ترجیح کے مذکور ہے ، اور حقائق

میں یہ لکھا ہے کہ : "مختار یہ ہے کہ عدد اعضاء کے لحاظ سے کثرت کا اعتبار ہے"۔ اھ فتح القدیر کے مثل حلیہ میں بھی ہے مگر اس میں مزید یہ ہے کہ بطور بحث کے ان کا میلان اس جانب ہوا ہے کہ مساحت و مقدار کے لحاظ سے بھی اعضائے وضو میں کثرت کا اعتبار ہوگا (یہاں دو ۲ قول تھے (۱) چاروں اعضائے وضو میں گنتی کے لحاظ سے کثرت کا اعتبار (۲) ہر عضو وضو کے زخمی و غیر زخمی حصوں کے لحاظ سے کثرت کا اعتبار۔

1 البحر الرائق باب التیمم قولہ ولو اکثرہ مجروحاً ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۶۳

I say: And I used to see myself leaning towards it before I saw it, except that I had no choice, especially with the clarification of the chosen opinion in Al-Haqa'iq. And Allah Almighty knows best. And the third thought was that the count should also be considered, and in limbs, the quantity and area of the injured etc. parts should also be considered. 12m. a) So the inclination of their discussion is against both, towards a third side. (t) I say: Even before looking at the discussion in Hilya, my inclination was also appearing towards this side, but what choice do I have, especially when the clarification of the chosen opinion is present in Al-Haqa'iq. And Allah Almighty knows best. (t)

(152) Here, one issue is exempt from this rule of considering the majority of limbs, and that is if both palms are so injured that water falling on them will cause harm, or due to the wound, one cannot lift a lota (water vessel) etc., nor is water in such a vessel or pond etc. that one can perform wudhu by putting their face and feet in it, then they should perform Tayammum. It is in Durr-e-Mukhtar: "He shall perform Tayammum if there are wounds on both hands" (If there are wounds on both his hands, he should do Tayammum. - t)

I say: My inclination towards this was due to the improbability of considering the number [of wounds]. For instance, if someone has a small pimple on the edge of their forehead and another similar one on their elbow, they would perform Tayammum because the injury is in two limbs, which are half of the four. However, if both their hands from the wrists to above the elbows were injured, Tayammum would not be permissible for them because only one limb is injured. Thus, in one case, two pimples prevent wudhu, while in the other case, hundreds like them do not prevent it. 12-Minhu (From him), may he be forgiven. (t)

---

1 Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi, Egypt 1/189. Page 507 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द III

मैं कहता हूँ: और मैं इसे देखने से पहले ही इसकी ओर झुकता हुआ देख रहा था, सिवाय इसके कि मेरे पास कोई विकल्प नहीं था, विशेष रूप से 'अल-हक़ाएक़' में चुनी गई राय (अल-मुख्तार) के स्पष्टीकरण के साथ। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। और तीसरा विचार यह था कि गिनती पर भी विचार किया जाना चाहिए, और अंगों में घायल आदि हिस्सों की मात्रा और क्षेत्रफल पर भी विचार किया जाना चाहिए। १२ मी। क) तो उनकी चर्चा का झुकाव दोनों के विरुद्ध तीसरी ओर है। (त) मैं कहता हूँ: 'हिलिया' में चर्चा देखने से पहले ही मेरा झुकाव भी इसी तरफ दिखाई दे रहा था, लेकिन मेरा क्या अख्तियार है, विशेष रूप से जब 'हक़ाएक़' में मुख्तार का स्पष्टीकरण मौजूद है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

(१५२) यहाँ एक मसला अंगों के बहुमत के विचार के इस नियम से अपवाद है, और वह यह है कि यदि दोनों हथेलियाँ इतनी घायल हों कि उन पर पानी गिरना नुकसान पहुँचाएगा, या घाव के कारण लोटा आदि नहीं उठा सकता, और न ही पानी किसी ऐसे बर्तन या तालाब आदि में है कि उसमें अपना चेहरा और पैर डालकर वुज़ू कर सके तो वह तयम्मुम करे। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: "यदि दोनों हाथों में घाव हो तो वह तयम्मुम करे" (अगर उसके दोनों हाथों में घाव हो तो तयम्मुम करे। - त)

मैं कहता हूँ: इसके प्रति मेरा झुकाव संख्या पर विचार करने की असंभाव्यता के कारण था। उदाहरण के लिए, यदि किसी के माथे के किनारे पर एक छोटी सी फुंसी हो और वैसी ही दूसरी फुंसी कोहनी पर हो, तो वह तयम्मुम करेगा क्योंकि घाव दो अंगों में है जो चार का आधा हैं। और यदि उसके दोनों हाथ कलाई से कोहनियों के ऊपर तक घायल हों, तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ नहीं होगा क्योंकि घायल केवल एक अंग है। इस प्रकार, एक स्थिति में दो फुंसियाँ वुज़ू से रोक देती हैं, जबकि दूसरी स्थिति में सैकड़ों वैसी ही फुंसियाँ होकर भी नहीं रोकतीं। १२-मिन्हु (उनकी ओर से), उन्हें क्षमा किया जाए। (त)

---

१ अल-दुर्र अल-मुख्तार माअ अल-शामी, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र १/१८९। पृष्ठ ७५६ का ५०७

فتاوی رضویہ جلد سوم

اقول: عہ وقد کنت ارانی امیل الیه قبل ان اراه غیراني لم یکن لی الخیار لاسیما مع تصریح الحقائق بالمختار واللہ تعالٰی اعلم۔ اور تیسرا خیال ہوا کہ گنتی کا بھی اعتبار ہو اور اعضا میں زخمی وغیرہ زخمی حصوں کی مقدار اور مساحت کا بھی اعتبار ہو ۱۲ م۔ الف) تو ان کی بحث کا میلان دونوں کے برخلاف ایک تیسری جانب ہے۔ (ت) اقول: حلیہ کی بحث دیکھنے سے پہلے ہی میرا میلان بھی اسی جانب نظر آرہا تھا مگر مجھے کیا اختیار، خصوصاً جب کہ حقائق میں مختار کی تصریح موجود ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

(۱۵۲) یہاں ایک مسئلہ اس مسئلہ اعتبار اکثر اعضا سے مستثنیٰ ہے وہ یہ کہ دونوں ہتھیلیاں ایسی زخمی ہوں کہ ان پر پانی پڑنا ضرر دے گا یا بوجہ زخم لوٹا وغیرہ اُٹھ نہیں سکتا نہ پانی کسی ایسے برتن یا حوض وغیرہ میں ہے کہ اس میں اپنا منہ اور پاؤں ڈال کر وضو کرسکے تیمم کرے گا۔ در مختار میں ہے: یتیمم لو الجرح بیدیه (اگر اس کے دونوں ہاتھوں میں زخم ہو تو تیمم کرے۔ ت)

اقول: اس جانب میرا میلان گنتی اور عدد کے اعتبار کو بعید سمجھنے کی وجہ سے تھا وہ اس طرح کہ اگر کسی کی پیشانی کے کنارے پر ایک چھوٹی سی پھنسی ہو اور ایسی ہی دوسری پھنسی کہنی پر ہو تو وہ تیمم کرے کیونکہ زخم دو عضووں میں ہے جو چار کا نصف ہیں اور اگر اس کے دونوں ہاتھ گٹوں سے کہنیوں کے اوپر تک زخمی ہوں تو اس کیلئے تیمم جائز نہ ہو کیونکہ زخمی صرف ایک عضو ہے تو ایک صورت میں دو پھنسیاں تو وضو سے مانع ہو جاتی ہیں اور دوسری صورت میں ویسی ہی سینکڑوں ہو کر بھی مانع نہیں ہوتیں ۱۲ منہ غفرلہ۔ (ت)

Fatawa Ridawiyya Volume 3

In Rad al-Muhtar, it is stated:

Arabic	Urdu
That is, he is unable to submerge his face and both feet in water; if he were able to do so, he would perform it without tayammum (dry ablution), as is not hidden. Thus, this is not contrary to what we previously stated with reference to 'al-Uyun'. 1	That is, along with this, it should also be the case that he cannot put his face and both feet in water; if he can do this, he must leave tayammum and do exactly this, as is not hidden. So this is not contrary to what we previously stated from the reference of 'al-Uyun'. Ah (T)

In al-Bahr al-Raiq, it is stated:

Arabic	Urdu
So this indicates that their statement —if the majority is healthy, wash the healthy part—is applicable to the case when there is no wound on both hands, as is not hidden. 2 -	So from this, it is benefited that what the jurists (Fuqaha) have said, that if the majority is healthy, then wash the healthy part, is applicable to the case when there is no wound on both his hands. As is not hidden. (T)

(153 to 155) In Durr al-Mukhtar, this issue of wounds on both palms was kept general, that even if someone is available to perform ablution for him, tayammum is still permissible.

Arabic	Urdu
Where it says after the preceding text: 'And even if he finds someone to perform wudu for him, contrary to their [the Sahihayn's] opinion.' 3 -	Because after the previous text, their words are: 'Even if he finds someone to perform wudu for him' (this is according to the Imam), contrary to the two companions [Sahihayn]. (T)

But the reliable position is that in this condition tayammum is not allowed. In al-Bahr al-Raiq, it is stated:

Arabic	Urdu
In 'al-Qunya' and 'al-Mubtaghi', [it is stated]: 'If there are sores on his hands such that	In 'al-Quniyya' and 'al-Mubtaghee' it is: 'If there is such a wound on his hand

Arabic	Urdu
water harms them but not the rest of his body, he performs tayammum if he does not find someone to wash his face, and it is said he performs tayammum unconditionally.' 4 Ah, I say: and his saying 'his face' is from the chapter...	that water is harmful to it, but there are no wounds on the rest of the body, then he will also perform tayammum provided he does not find anyone to wash his face, and it was said he will perform tayammum absolutely.' Ah

1. Rad al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/189
2. Al-Bahr al-Raiq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/163
3. Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/189
4. Al-Bahr al-Raiq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/163

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

रद अल-मुह्तार में है:

अरबी	उर्दू
अर्थात्, वह अपना चेहरा और दोनों पाँव पानी में डालने में असमर्थ है; यदि वह ऐसा करने में सक्षम होता, तो वह तयम्मुम (सूखा स्नान) के बिना ही इसे करता, जैसा कि छिपा नहीं है। अतः, यह उस बात के विपरीत नहीं है जो हमने पहले 'अल-उयून' के हवाले से बयान की है। 1	अर्थात्, इसके साथ ही यह बात भी होनी चाहिए कि वह अपना चेहरा और दोनों पाँव पानी में न डाल सके यदि वह ऐसा कर सकता हो, तो उसे तयम्मुम छोड़कर यही करना होगा, जैसा कि छिपा नहीं है। अतः यह उस बात के विपरीत नहीं है जिसे हमने पहले 'अल-उयून' के हवाले से बयान किया है। अह (त)

अल-बहर अर-राइक़ में है:

अरबी	उर्दू
तो इससे यह पता चलता है कि उनका कथन —यदि अधिकतर हिस्सा स्वस्थ हो, तो स्वस्थ भाग को धोएं—उस स्थिति पर लागू होता है जब दोनों हाथों पर कोई ज़ख्म न हो, जैसा कि छिपा नहीं है। 2 -	तो इससे यह लाभ होता है कि फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने जो यह फ़रमाया है कि यदि अधिकतर हिस्सा स्वस्थ हो तो स्वस्थ को धोना चाहिए, यह उस स्थिति पर लागू होता है जब उसके दोनों हाथों पर ज़ख्म न हों। जैसा कि छिपा नहीं है। (त)

(153 से 155) इस दोनों हथेलियों के ज़ख्म के मसले को 'दुर्रे मुख्तार' में आम रखा गया है कि भले ही कोई वज़ू कराने वाला मिल जाए, फिर भी तयम्मुम की अनुमति है।

अरबी	उर्दू
जहाँ पूर्वोक्त के बाद कहा गया है: 'और यदि वह किसी को पा ले जो उसे वज़ू करा दे, उनके[साहिबैन के] विरुद्ध।' 3 -	क्योंकि पिछली इबारत के बाद उनके शब्द ये हैं: 'भले ही उसे कोई वज़ू कराने वाला मिल जाए' (यह इमाम साहब के अनुसार है), साहिबैन के विपरीत। (त)

लेकिन विश्वसनीय (मोतमिद) राय यह है कि इस स्थिति में तयम्मुम नहीं है। 'अल-बहर अर-राइक़' में है:

अरबी

'अल-कुन्या' और 'अल-मुब्तग़ी' में है: 'उसके हाथ पर ऐसा ज़ख्म हो कि पानी उसे नुकसान पहुँचाए, जबकि शरीर के बाकी हिस्सों में ज़ख्म न हो, तो वह भी तयम्मुम करेगा बशर्ते कि उसे चेहरा धोने वाला कोई न मिले, और कहा गया कि वह मुतलक़ (निरपेक्ष रूप से) तयम्मुम करेगा।' 4 अह। मैं कहता हूँ और उसका कथन 'उसका चेहरा' बाब से है...

उर्दू

'अल-कुन्या' और 'अल-मुब्तग़ी' में है: 'उसके हाथ पर ऐसा ज़ख्म हो कि पानी उसे नुकसान पहुँचाए, जबकि शरीर के बाकी हिस्सों में ज़ख्म न हो, तो वह भी तयम्मुम करेगा बशर्ते कि उसे चेहरा धोने वाला कोई न मिले, और कहा गया कि वह मुतलक़ रूप से तयम्मुम करेगा।' अह

1. रद अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/189
2. अल-बहर अर-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/163
3. अद-दुर्र अल-मुख्तार मा अल-शामी, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/189
4. अल-बहर अर-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/163

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

رد المحتار میں ہے:

عربی	اردو
ای ولم یمکنہ ادخال وجھہ و رجلیہ فی الماء فلو امکنہ فعل بلا تیمم کما لایخفی فلاینافی ما قدمناہ عن العیون 1	یعنی ساتھ ہی یہ بات بھی ہو کہ وہ چہرہ اور دونوں پاؤں پانی میں نہ ڈال سکتا ہو، اگر یہ کر سکتا ہو تو اسے تیمم چھوڑ کر یہی کرنا ہے جیسا کہ مخفی نہیں۔ تو یہ اس کے منافی نہیں جو عیون کے حوالہ سے ہم پہلے بیان کر آئے۔ اہ (ت)

البحر الرائق میں ہے:

عربی	اردو
فھذا یفیدان قولھم اذاکان الاکثر صحیحاً یغسل الصحیح محمول علی ما اذا لم یکن بالیدین جراحۃ کما لایخفی 2 -	تو اس سے اس بات کا افادہ ہوتا ہے کہ فقہاء نے یہ جو فرمایا ہے کہ اکثر صحیح ہو تو صحیح کو دھونا ہے یہ اس صورت پر محمول ہے جب اس کے دونوں ہاتھوں پر زخم نہ ہو۔ جیسا کہ مخفی نہیں۔ (ت)

(۱۵۳ تا ۱۵۵) اس مسئلہ جراحت ہر دو کف کو در مختار میں عام رکھا کہ اگرچہ کوئی وضو کرانے والا ملے جب بھی تیمم کی اجازت ہے۔

عربی	اردو
حیث قال بعد مامر وان وجد من یوضیہ خلافاً لھما - 3	کیونکہ گزشتہ عبارت کے بعد ان کے الفاظ یہ ہیں: اگرچہ اسے کوئی وضو کرانے والا مل جائے (یہ امام صاحب کے یہاں ہے)، بخلاف صاحبین کے۔ (ت)

مگر معتمد یہ ہے کہ اس حالت میں تیمم نہیں، البحر الرائق میں ہے:

عربی	اردو
فی القنیۃ والمبتغی بیدہ قروح یضرہ الماء دون سائر جسدہ یتیمم اذا لم یجد من یغسل وجھہ و قیل یتیمم مطلقاً 4 اھ اقول وقولہ وجھہ من باب	قنیہ اور مبتغی میں ہے: اس کے ہاتھ پر ایسا زخم ہو کہ پانی اسے ضرر رساں ہو، باقی جسم میں زخم نہ ہو تو وہ بھی تیمم کرے گا بشرطیکہ اسے کوئی چہرہ دھونے والا نہ ملے، اور کہا گیا کہ مطلقاً تیمم کرے گا اھ

1. رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۹
2. البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۶۳
3. الدر المختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۹
4. البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۶۳

Fatawa-e-Razawiyyah - Volume 3

[Arabic Box]: Al-Iktifaa' ay wa rijlayhi wa yamsahu ra'sahu. [Urdu Box]: I say: Mentioning only the face (if no one is found to wash the face) belongs to the category of sufficiency; it means that no such person is found who could wash the face and feet and wipe the head. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar: [Arabic Box]: Wa huwa al-muwafiqu limaa marra fi al-mareed al-aajizi min annahu law wajada man yu'eenuhu laa yatayammamu fi zaahir al-riwayati fa-tanabbah dhaalika 1- [Urdu Box]: And this is according to the ruling that passed concerning the helpless patient, that if he finds someone to help him, then according to the manifest narration (Zahir al-Riwayah), he cannot perform tayammum. One should remain alert to this. (T)

I say: Now here, those three situations will emerge as before: that the person who performs ablution asks for a higher fee, or this person is penniless, or the wealth is absent and they are not willing to give on credit.

Note: The Great Imam, Faqih Abu Ja'far Hinduani (may Allah Almighty have mercy on him) has stated a form of tayammum in the book 'Ghareeb al-Riwayah': If one can wash all limbs without difficulty in wudu, but due to some illness, wiping the head causes harm, then one should perform tayammum. Similarly, if in Ghusl (ritual bath) one can pour water over the entire body but cannot wash the head, let alone wipe it, then perform tayammum instead of Ghusl. However, the correct, reliable, famous, and supported view is that tayammum is not permitted in these two cases. Instead, in wudu, wash all three limbs, and in Ghusl, wash the entire body except the head, and tie a bandage on the head and wipe over it. If that too is harmful, then leave it entirely; it will be exempted to that extent. It is stated in Tanweer al-Absar at the end of the section on Tayammum:*

[Arabic Box]: Man bihi waj'u ra'sin laa yastatee'u ma'ahu mashahu yasqutu fardu mashihi 2- [Urdu Box]: One who has such a disease in the head due to which he cannot wipe the head, the obligation of wiping is dropped. (T)

It is stated in Durr-e-Mukhtar: [Arabic Box]: Laa yastatee'u mashahu muhdithan walaa ghaslahu junuban fa-fi al-Faydi 'an Ghareeb al-Riwayati [Urdu Box]: If one cannot wipe in the state of ritual impurity (hadath) and cannot wash the head in the state of major ritual impurity (janabat), then from Ghareeb al-Riwayah in [the book] al-Fayd, this is [stated]:

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/189.
2. Ad-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/190.

फ़तावा-ए-रज़विया - जिल्द सोम (तीसरा खंड)

[अरबी बॉक्स]: अल-इक्तिफ़ा अय व रिज्लैहि व यम्सहु रअसहू। [उर्दू बॉक्स]: अक़ूल: सिर्फ़ चेहरे का नाम लिया (चेहरा धोने वाला न मिले) पर इक्तिफ़ा (पर्याप्तता) के बाब से है, मुराद यह है कि ऐसा कोई शख़्स न मिले जो चेहरा और पैरों को धो दे और सर पर मसह कर दे। (त)

रद्दुल मुहतार में है: [अरबी बॉक्स]: वहुवल मुवाफ़िक़ु लिमा मर्रा फ़िल मरीज़िल आजिज़ि मिन अन्नहू लौ वजदा मन यु'ईनुहू ला यतयम्ममु फ़ी ज़ाहिरिर्रिवायति फ़-तनब्बह ज़ालिका 1- [उर्दू बॉक्स]: और यह उस हुक्म के मुताबिक़ है जो आजिज़ मरीज़ से मुतअल्लिक़ गुज़रा कि उसे अगर कोई मदद देने वाला मिले तो ज़ाहिर रिवायत में वह तयम्मुम नहीं कर सकता, तो इस पर मुतन्बहि (सचेत) रहना चाहिये। (त)

अक़ूल: तो अब यहाँ बदस्तूर वो तीनों सूरतें निकलेंगी कि वज़ू करा देने वाला उजरत ज़्यादा माँगता है या यह मुफ़लिस है या माल ग़ाइब और वो उधार पर राज़ी नहीं।

तन्बीह: इमाम अजल फ़क़ीह अबू जाफ़र हिन्दुवानी रहमतुल्लाह तआला ने किताब 'ग़रीबुल रिवायह' में एक सूरत तयम्मुम की यह इरशाद फ़रमाई है कि अगर वज़ू में सब आज़ा बेतकल्लुफ़ धो सकता है मगर किसी मर्ज़ के बाइस सर का मसह ज़रर (नुकसान) करता है तो तयम्मुम करे, यूँ ही अगर ग़ुस्ल में सारे बदन पर पानी बहा सकता हो मगर सर धोना दर-किनार मसह भी न कर सके तो ग़ुस्ल की जगह भी तयम्मुम करे। मगर सहीह व मोतमिद व मशहूर व मंसूर यह है कि इन दोनों सूरतों में तयम्मुम की इजाज़त नहीं बल्कि वज़ू में तीनों आज़ा और ग़ुस्ल में सर के सिवा सारा बदन धोए और सर पर कोई पट्टी बाँध कर उस पर मसह करे और उस से भी नुक़सान हो तो बिल्कुल छोड़ दे इस क़दर माफ़ रहेगा। तन्वीरुल अबसार आख़िर तयम्मुम में है:*

[अरबी बॉक्स]: मन बिही वजउ रअसिन ला यस्ततीउ मअहू मसहुहू यस्क़ुतु फ़र्ज़ु मसहिही 2- [उर्दू बॉक्स]: जिस के सर में कोई ऐसा मर्ज़ हो जिस के बाइस सर का मसह न कर सके तो मसह का फ़रीज़ा साक़ित (माफ़) हो जाता है। (त)

दुर्रे मुख़्तार में है: [अरबी बॉक्स]: ला यस्ततीउ मसहुहू मुह्दिसन वला ग़स्लहु जुनबन फ़फ़िल फ़ैज़ि अन ग़रीबिल रिवायति [उर्दू बॉक्स]: हालत-ए-हदस में मसह न कर सके और हालत-ए-जनाबत में सर न धो सके तो फ़ैज़ में 'ग़रीबुल रिवायत' से यह है:

1. रद्दुल मुहतार, बाबुत तयम्मुम, मतबआ मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/189।
2. अद-दुर्रुल मुख़्तार मअ अल-शामी, बाबुत तयम्मुम, मतबआ मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/190।

الاکتفاء ای ورجلیه ویمسح رأسه۔ | اقول: صرف چہرہ کا نام لیا (چہرہ دھونے والا نہ ملے) پر اکتفا کے باب سے ہے، مراد یہ ہے کہ ایسا کوئی شخص نہ ملے جو چہرہ اور پیروں کو دھو دے اور سر پر مسح کردے۔ (ت)

ردالمختار میں ہے: وھو الموافق لمامر في المریض العاجز من انه لو وجد من یعینه لایتیمم في ظاھر الروایة فتنبه ذلك 1- | اور یہ اس حکم کے مطابق ہے جو عاجز مریض سے متعلق گزرا کہ اسے اگر کوئی مدد دینے والا ملے تو ظاہر روایت میں وہ تیمم نہیں کرسکتا، تو اس پر متنبہ رہنا چاہئے۔ (ت)

اقول: تو اب یہاں بدستور وہ تینوں صورتیں نکلیں گی کہ وضو کرادینے والا اجرت زیادہ مانگتا ہے یا یہ مفلس ہے یا مال غائب اور وہ اُدھار پر راضی نہیں۔

تنبیہ: امام اجل فقیہ ابو جعفر ہندوانی رحمہ اللہ تعالٰی نے کتاب غریب الروایۃ میں ایک صورت تیمم کی یہ ارشاد فرمائی ہے کہ اگر وضو میں سب اعضا بے تکلف دھو سکتا ہے مگر کسی مرض کے باعث سر کا مسح ضرر کرتا ہے تو تیمم کرے یوں ہی اگر غسل میں سارے بدن پر پانی بہا سکتا ہو مگر سر دھونا در کنار مسح بھی نہ کرسکے تو غسل کی جگہ بھی تیمم کرے مگر صحیح و معتمد و مشہور و منصور یہ ہے کہ ان دونوں صورتوں میں تیمم کی اجازت نہیں بلکہ وضو میں تینوں اعضا اور غسل میں سر کے سوا سارا بدن دھوئے اور سر پر کوئی پٹی باندھ کر اُس پر مسح کرے اور اس سے بھی نقصان ہو تو بالکل چھوڑ دے اس قدر معاف رہے گا۔ تنویر الابصار آخر تیمم میں ہے:*

من به وجع رأس لا يستطيع معه مسحه يسقط فرض مسحه 2- | جس کا سر میں کوئی ایسا مرض ہو جس کے باعث سر کا مسح نہ کرسکے تو مسح کا فریضہ ساقط ہو جاتا ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے: لا يستطيع مسحه محدثا ولاغسله جنبا ففي الفيض عن غريب الرواية | حالتِ حدث میں مسح نہ کرسکے اور حالتِ جنابت میں سر نہ دھو سکے تو فیض میں غریب الروایۃ سے یہ ہے

---

1 ردالمختار باب التيمم مطبع مصطفى البابي مصر ١ / ١٨٩ 2 الدر المختار مع الشامي باب التيمم مطبع مصطفى البابي مصر ١ / ١٩٠

Volume 3 Fatawa Ridawiyya

[Arabic Section]: He should perform Tayammum. The commentator of Al-Hidayah has issued a fatwa that the obligation of wiping (Masah) is waived for him, even if it is over a bandage. There are two opinions regarding wiping over it. Similarly, washing it (during Ghusl) is also waived; in such a case, he should wipe over the head instead of washing it, even if it is over a bandage, provided it does not harm him. If it is also harmful, then both (washing and wiping) are completely waived, and he is legally considered as if he lacks that limb, just as the ruling for someone who actually lacks a limb (that washing and wiping are both waived for them). - 1

[Urdu Section]: That he should perform Tayammum, and the fatwa of the commentator of Al-Hidayah is that the obligation of wiping is waived for him. And if there is a bandage on the head, there are two opinions regarding its wiping. Similarly, washing the head (in Ghusl) is also waived; in such a case, he should wipe over the head instead of washing it, even if it is on a bandage, as long as it is not harmful. If this is also harmful, then (both washing and wiping) are completely waived, and legally he will be considered like someone who does not have that limb, as is the ruling for someone who actually lacks a limb (that both washing and wiping are waived for him). (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated:

[Arabic Section]: His statement "two opinions": It was mentioned in An-Nahr from Al-Bada'i what indicates the preference for obligation. He said: "This is what should be relied upon." Rather, it is said in Al-Bahr: "The correct view is obligation." - 2

[Urdu Section]: The phrase in Durr-e-Mukhtar "two opinions" has been cited in An-Nahr al-Faiq with reference to Al-Bada'i, from which the preference for the obligation of wiping is derived. And it is written that this should be relied upon. Furthermore, it is stated in Al-Bahr al-Ra'iq that the correct view is obligation. (T)

In Al-Bahr al-Ra'iq, it is stated:

[Arabic Section]: Al-Jallabi mentioned in his Kitab al-Salah that whoever has such pain in his head that he cannot perform wiping with it, the obligation of wiping is waived for him. 3 - This is an important issue; I chose to mention it due to its rarity and its absence in most books. Shaykh Siraj al-Din has given a fatwa based on it.

[Urdu Section]: Al-Jallabi has mentioned in his Kitab al-Salah that "one who has such an ailment in his head that he cannot wipe his head, then the obligation is waived for him." And this is an important issue. Due to its rarity and strangeness, and its not being mentioned in general books, I thought it better to explain it. And the researcher Kamal al-Din...

---

1. Al-Durr al-Mukhtar with Ash-Shami, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/190
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/191
3. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/164

खंड 3 फ़तावा रिज़विया

[अरबी अनुभाग]: उसे तयम्मुम करना चाहिए। अल-हिदाया के भाष्यकार ने फतवा दिया है कि पोंछने (मसह) का दायित्व उससे हट जाता है, भले ही वह पट्टी पर हो। इस पर मसह करने के बारे में दो मत हैं। इसी तरह, (गुस्ल के दौरान) इसे धोना भी हट जाता है; ऐसी स्थिति में, धोने के बजाय सिर पर मसह करना चाहिए, भले ही वह किसी पट्टी पर हो, बशर्ते कि इससे उसे नुकसान न हो। यदि यह भी हानिकारक हो, तो दोनों (धोना और मसह करना) पूरी तरह से समाप्त हो जाते हैं, और उसे कानूनी रूप से उस व्यक्ति की तरह माना जाता है जिसके पास वह अंग ही नहीं है, जैसा कि वास्तव में अंग न होने वाले के लिए नियम है (कि उसके लिए धोना और मसह करना दोनों समाप्त हो जाते हैं)। - 1

[उर्दू अनुभाग]: कि वह तयम्मुम करे और अल-हिदाया के भाष्यकार का फतवा यह है कि उससे मसह का दायित्व समाप्त हो जाता है। और अगर सिर पर पट्टी हो तो उसके मसह के बारे में दो राय हैं। इसी तरह (गुस्ल में) सिर का धोना भी समाप्त है; ऐसी स्थिति में धोने के बजाय सिर पर मसह करे, भले ही वह किसी पट्टी पर हो जबकि यह नुकसानदेह न हो। अगर यह भी नुकसानदेह हो तो (धोना और मसह दोनों) बिल्कुल ही समाप्त हैं, और कानूनी तौर पर उसे उस व्यक्ति की तरह समझा जाएगा जिसका यह अंग ही न हो, जैसा कि वास्तव में अंग न रखने वाले के बारे में हुक्म है (कि उससे धोना और मसह करना दोनों ही समाप्त हैं)। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है:

[अरबी अनुभाग]: उनका कथन "दो राय": अन-नहर में अल-बदई के हवाले से वह उल्लेख किया गया है जो अनिवार्यता (वजुब) की प्राथमिकता का सुझाव देता है। उन्होंने कहा: "इसी पर भरोसा किया जाना चाहिए।" बल्कि अल-बहर में कहा गया है: "सही विचार अनिवार्यता ही है।" - 2

[उर्दू अनुभाग]: दुर्रे मुख्तार के वाक्यांश "क़ौलान" (दो राय) को अन-नहर अल-फ़ाइक़ में अल-बदई के हवाले से ज़िक्र किया गया है जिससे मसह की अनिवार्यता की प्राथमिकता का पता चलता है और लिखा है कि इसी पर भरोसा होना चाहिए। बल्कि अल-बहर अर-राइक़ में यह है कि सही राय वजुब (अनिवार्यता) ही है। (त)

अल-बहर अर-राइक़ में है:

[अरबी अनुभाग]: अल-जलाबी ने अपनी किताब अस्-सलाह में ज़िक्र किया है कि जिसके सिर में ऐसा दर्द हो कि वह उसके साथ मसह न कर सके, तो उसके हक़ में मसह का फ़र्ज़ साक़ित (समाप्त) हो जाता है। 3 - यह एक महत्वपूर्ण मसला है; मैंने इसकी दुर्लभता और अधिकांश पुस्तकों में इसकी अनुपस्थिति के कारण इसका उल्लेख करना चुना है। शेख सिराजुद्दीन ने इस पर फतवा दिया है।

[उर्दू अनुभाग]: जलाबी ने अपनी किताब अस्-सलात में ज़िक्र किया है कि "जिसके सिर में ऐसी बीमारी हो जिसकी वजह से सिर का मसह न कर सके तो उसके हक़ में फ़र्ज़ साक़ित है"। और यह एक अहम मसला है जिसकी दुर्लभता और सामान्य पुस्तकों में इसका ज़िक्र न होने की वजह से मैंने इसे बयान कर देना बेहतर समझा और मुहक़्क़िक़ कमालुद्दीन...

---

1. अद-दुर्रुल मुख्तार मअ अश-शामी, बाब अत-तयम्मुम, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/190
2. रद्द अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/191
3. अल-बहर अर-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/164

पृष्ठ 510/756

جلد سوم فتاوی رضویہ

یتیمم وافتی قارئ الھدایۃ انہ یسقط عنہ فرض مسحہ ولو علی جبیرۃ ففي مسحھا قولان وکذا یسقط غسلہ فیمسحہ ولو علی جبیرۃ ان لم یضرہ والاسقط اصلاً وجعل عادماً لذلك العضو حکماً کما فی المعدوم حقیقۃ - 1 کہ تیمّم کرے اور قارئِ ہدایت کا فتوٰی یہ ہے کہ اس سے فرضِ مسح ساقط ہے۔ اور اگر سر پر پٹّی ہو تو اس کے مسح سے متعلق دو قول ہیں اسی طرح (غسل میں) سر کا دھونا بھی ساقط ہے ایسی صورت میں دھونے کی بجائے سر پر مسح کرے اگرچہ کسی پٹّی پر جب کہ یہ مضر نہ ہو، اگر یہ بھی مضر ہو تو (دھونا اور مسح دونوں) بالکل ہی ساقط ہے، اور حکماً وہ اس کی طرح قرار دیا جائے گا جس کا یہ عضو ہی نہ ہو، جیسا کہ حقیقتہً عضو نہ رکھنے والے سے متعلق حکم ہے (کہ اس سے دھونا اور مسح کرنا سبھی ساقط ہے)۔(ت)

ردالمحتار میں ہے:

قولہ قولان ذکر في النھر عن البدائع ما یفیدہ ترجیح الوجوب وقال وھو الذی ینبغی التعویل علیہ اھ بل قال فی البحر والصواب الوجوب - 2 دُرِّمختار کی عبارت قولان (دو قول ہیں) کو النہر الفائق میں بدائع کے حوالے سے ذکر کیا ہے جس سے وجوبِ مسح کی ترجیح مستفاد ہوتی ہے اور لکھا ہے کہ اسی پر اعتماد ہونا چاہئے اھ بلکہ البحر الرائق میں یہ ہے کہ صحیح وجوب ہی ہے۔(ت)

البحر الرائق میں ہے :

ذکر الجلابی فی کتاب الصلٰوۃ لہ ان من بہ وجع فی رأسہ لایستطیع معہ مسحہ یسقط فرض المسح فی حقّہ 3 - وھذہ مسألۃ مھمۃ اجبت ذکرھا لغرابتھا وعدم وجودھا فی غالب الکتب وقد افتی بھا الشیخ سراج الدین جلابی نے اپنی کتاب الصلوٰۃ میں ذکر کیا ہے کہ "جس کے سر میں ایسا مرض ہو جس

کی وجہ سے سر کا مسح نہ کرسکے تو اس کے حق میں فرضِ ساقط ہے "اھ اور یہ ایک اہم مسئلہ ہے جس کی ندرت اور غرابت اور عامہ کتب میں مذکور نہ ہونے کی وجہ سے میں نے اسے بیان کر دینا بہتر سمجھا اور محقق کمال الدین---

1 الدرالمختار مع الشامی، باب التیمم، مطبع مصطفی البابی مصر، ۱۹۰/۱ 2 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۹۱ 3 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۶۴/۱

Qari al-Hidaya, the teacher of al-Muhaqqiq Kamal al-Din ibn al-Humam, gave this very fatwa. Through this, the doubt that arose before knowing this report is also removed, which was that he should perform tayammum due to his inability to use water. After finding the report, it is necessary to refer back to it. Perhaps the reason for this is that such a person is legally deemed as not having that limb, so the obligation related to that limb will be dropped, just as the ruling is for someone who actually lacks that limb. This is contrary to the case when there is a wound on some of the limbs that are to be washed, where the ruling is to wash the healthy part and perform masah (wiping) over the wounded part, because performing masah on it is like washing the limb underneath it. And because tayammum is itself a form of masah, it cannot be a substitute for another masah; rather, it is a substitute for washing. Since in wudu only masah is done on the head, therefore there is no tayammum for the head. [End of quote] (T)

In Minhat al-Khaliq it is said: The statement of the author of al-Bahr 'that which was suspected' refers to a suspicion held by Allama Abd al-Barr ibn al-Shihna. He mentioned al-Jallabi's text in his commentary on al-Wahbaniyya and versified it like this: "The wiping of the head is dropped for the one on whose head there is a disease such that if he moistens it, he will be harmed."

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/164.

इब्न अल-हुमाम के उस्ताद शेख़ सिराजुद्दीन क़ारी हिदाया ने यही फ़तवा दिया है। इससे वह संदेह भी दूर हो जाता है जो इस रिपोर्ट की जानकारी होने से पहले पैदा हुआ था, कि उसे पानी का उपयोग करने में असमर्थ होने के कारण तयम्मुम करना चाहिए। रिपोर्ट मिलने के बाद उसी की ओर लौटना आवश्यक है। शायद इसका कारण यह है कि ऐसे व्यक्ति को कानूनी तौर पर वह अंग न रखने वाला माना जाए, तो उस अंग से संबंधित कार्य समाप्त हो जाएगा, जैसे कि वास्तव में अंग न रखने वाले के बारे में नियम है। यह उस स्थिति के विपरीत है जब धोने वाले अंगों में से किसी पर घाव हो, क्योंकि तब नियम यह है कि स्वस्थ हिस्से को धोया जाए और घाव पर मसह (गीले हाथों से पोंछना) किया जाए, क्योंकि उस पर मसह करना उसके नीचे वाले अंग को धोने के समान है। और चूंकि तयम्मुम स्वयं मसह है, इसलिए वह किसी मसह का विकल्प नहीं होगा बल्कि धोने का विकल्प होगा, और वज़ू में सिर पर मसह ही किया जाता है, इसलिए सिर का तयम्मुम नहीं है। [उद्धरण समाप्त] (त)

मिन्हातुल ख़ालिक़ में है: साहिबे बहर का कथन 'वह जो संदेह किया गया था' वह संदेह अल्लामा अब्दुल बर इब्न शिहऺ को हुआ था। उन्होंने जल्लाबी की इबारत अपनी शरह वहबानिया में ज़िक्र की और उसे इस तरह पद्यबद्ध किया: 'जिसके सिर में कोई ऐसी बीमारी हो कि सिर को गीला करने से नुकसान होता हो, तो ऐसे व्यक्ति के लिए सिर का मसह साक़ित (समाप्त) है।'

1. अल-बहरुल राइक़, अध्याय: तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी करा1/164 ,جی

قارئ الہدایۃ استاذ المحقق کمال الدین بن الہمام وبہ اندفع ما کان قد توھم قبل الوقوف علی ھذا النقل انہ یتیمم لعجزہ عن استعمال الماء ولیس بعد النقل الا الرجوع الیہ ولعل الوجہ فیہ ان یجعل عاد مالذلک العضو حکماً فتسقط وظیفتہ کما فی المعدوم حقیقۃ بخلاف ماذا کان ببعض الاعضاء المغسولۃ جراحۃ فانہ یغسل الصحیح ویمسح علی الجریح لان المسح علیہ کالغسل لما تحتہ ولان التیمم مسح فلا یکون بدلا عن مسح وانما ھو بدل عن غسل والرأس ممسوح ولھذا لم یکن التیمم فی الرأس اھ

ابن الہمام کے استاذ شیخ سراج الدین قاری ہدیہ نے یہی فتوٰی دیا ہے۔ اس سے وہ وہم بھی دفع ہو جاتا ہے جو اس نقل پر اطلاع سے پہلے کیا گیا تھا، کہ اس کیلئے حکم یہ ہوگا کہ پانی استعمال کرنے سے عاجز ہونے کی وجہ سے وہ تیمم کرے نقل مل جانے کے بعد اسی کی طرف رجوع لازم ہے شاید اس کی وجہ یہ ہے کہ ایسا شخص حکما وہ عضو نہ رکھنے والا قرار دیا جائے تو اس عضو سے متعلق عمل ساقط ہو جائیگا جیسے حقیقتا وہ عضو نہ رکھنے والے کے بارے میں حکم ہے اس صورت کے برخلاف جب کہ اس کے بعض دھوئے جانے والے اعضاء میں زخم ہو کہ اس کا حکم یہ ہے کہ صحیح کو دھوئے اور زخمی پر مسح کرے اس لئے کہ اس پر مسح کرنا اس کے نیچے والے عضو کو دھونے ہی کی طرح ہے۔ اور اس لئے کہ تیمم مسح ہے تو وہ کسی مسح کا بدل نہ ہوگا بلکہ دھونے کا بدل ہوگا اور (وضو میں) سر پر مسح ہی ہوتا ہے اس لئے سر کا تیمم نہیں۔ اھ (ت)

منحۃ الخالق میں ہے: قولہ ما کان قد توھم الذی توھم ذلك العلامة عبدالبر بن الشحنة فأنه ذكر عبارة الجلابی فی شرحہ علی الوھبانیۃ ونظمہا بقولہ: ویسقط مسح الرأس عمن برأسہ من الداء ماء ان بلہ یتضرر

صاحبِ بحر کا قول "وہ جو وہم کیا گیا تھا" یہ وہم علامہ عبدالبر ابن شحنہ کو ہوا تھا۔ انہوں نے جلابی کی عبارت اپنی شرح وہبانیہ میں ذکر کی اور اسے یوں نظم کیا: جس کے سر میں کوئی ایسا مرض ہو کہ سر کو تر کرنے سے ضرر ہوتا ہو تو ایسے شخص سے سر کا مسح ساقط ہے۔

1 البحر الرائق، باب التیمم، ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۱/ ۱۶۴

Fatawa Razawiyya Volume 3

Then he said: Before finding this report, it occurred to me that such a person should perform Tayammum because of their inability to use water. However, after finding the report, one must refer back to it. Perhaps the reason for this (the dropping of the requirement to wipe the head) is that such a person is legally considered as not having that limb. Therefore, the prescribed action (wiping) related to that limb is waived, just as is the case for someone who actually lacks that limb. And Allah Almighty knows best. (T)

His statement "after finding the report, one must refer back to it" gives the impression that the ruling on Tayammum is not reported, whereas it is indeed reported. In Al-Karki's book 'Al-Faydh', it is narrated from 'Ghareeb al-Riwayah' that: "A person who has a headache due to a cold, and wiping in Wudu or bathing in Janabah (ritual impurity) is harmful to them, should perform Tayammum. And if a woman is harmed by washing her head due to Janabah or menstruation, she should wipe her hair three times with different waters and wash the rest of her body." It is said in Al-Faydh: "This ruling is strange." Here ends the text from Munhat al-Khaliq. (T)

I say: By the praise of Allah Almighty, a meaning of the passage from 'Ghareeb al-Riwayah' became clear to me which removes the strangeness. That is because the strangeness only lies in the matter of Ghusl (bathing), that if washing the head is harmful...

---

1. Munhat al-Khaliq with Al-Bahr al-Raiq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/124.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

फिर उन्होंने कहा: इस नक़्ल (हवाले) की जानकारी होने से पहले मेरे मन में यह ख़्याल आता था कि ऐसा व्यक्ति तयम्मुम करेगा क्योंकि वह पानी के इस्तेमाल में असमर्थ है। लेकिन नक़्ल मिलने के बाद उसी की ओर लौटना ज़रूरी है। शायद इस (सिर का मसह साक़ित होने) का कारण यह है कि ऐसे व्यक्ति को कानूनी तौर पर वह अंग न रखने वाला मान लिया जाएगा, तो उस अंग से संबंधित निर्धारित क्रिया (मसह) समाप्त हो जाएगी, जैसे कि वास्तव में अंग न रखने वाले का हुक्म होता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

उनका यह कथन कि "नक़्ल मिलने के बाद उसी की ओर लौटना ज़रूरी है" यह भ्रम पैदा करता है कि तयम्मुम का हुक्म प्रमाणित नहीं है, जबकि वह भी प्रमाणित (नक़ली) है। कर्की की किताब 'अल-फ़ैज़' में 'ग़रीब-उर-रिवायत' से नक़्ल किया गया है कि: "जिसके सिर में नज़ले (ज़ुकाम) के कारण चक्कर आता हो और उसे वज़ू में मसह या जनाबत (अशुद्धता) में ग़ुस्ल (स्नान) नुक़सान पहुँचाता हो, तो वह तयम्मुम करे। और यदि महिला को जनाबत या मासिक धर्म में सिर धोने से नुक़सान हो, तो वह तीन बार अलग-अलग पानी से अपने बालों पर मसह करे और शरीर का शेष हिस्सा धो ले।" अल-फ़ैज़ में कहा गया है: "यह हुक्म अजीब है।" यहाँ मुनहत-उल-ख़ालिक़ के उद्धरण समाप्त होते हैं। (त)

मैं कहता हूँ: अल्लाह तआला की प्रशंसा से, 'ग़रीब-उर-रिवायत' के पाठ का एक अर्थ मुझ पर प्रकट हुआ जिससे आश्चर्य दूर हो जाता है। वह यह है कि आश्चर्य केवल ग़ुस्ल के मसले में है कि यदि सिर धोना नुक़सानदेह हो...

---

1. मुनहत-उल-ख़ालिक़ मा अल-बहर-उर-राइक़, अध्याय तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/124.

پھر انہوں نے فرمایا کہ اس نقل پر اطلاع سے پہلے میرے دل میں یہ خیال آتا تھا کہ ایسا شخص تیمم کریگا اس لئے کہ وہ پانی کے استعمال سے عاجز ہے۔ اور نقل مل جانے کے بعد اسی کی طرف رجوع لازم ہے۔ شاید اس (مسح سر ساقط ہونے) کی وجہ یہ ہے کہ ایسا شخص حکماً وہ عضو نہ رکھنے والا قرار دیا جائیگا تو اس عضو سے متعلق مقررہ عمل مسح ساقط ہوجائے گا جیسا کہ حقیقۃً عضو نہ رکھنے والے کا حکم ہوتا ہے واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

ان کا قول "نقل کے بعد اسی کی طرف رجوع لازم ہے" یہ وہم پیدا کرتا ہے کہ تیمم کا حکم غیر منقول ہے حالانکہ وہ بھی منقول ہے۔ کرکی کی کتاب "فیض" میں غریب الروایۃ سے نقل کیا ہے کہ "جس کے سر میں نزلہ کی وجہ سے چکر آتا ہو اور اسے وضو میں مسح یا جنابت میں غسل ضرر دیتا ہو تو وہ تیمم کرے، اور اگر عورت کو جنابت یا حیض میں سر دھونے سے ضرر ہو تو وہ تین بار مختلف پانیوں سے اپنے بالوں پر مسح کرلے اور باقی جسم دھوئے اھ"۔ فیض میں کہا: "یہ حکم عجیب ہے" اھ منحۃ الخالق کی عبارتیں ختم ہوئیں۔ (ت)

اقول: مجھ پر غریب الروایۃ کی عبارت کا ایک ایسا معنی منکشف ہوا، والحمد للہ تعالٰی، جس وجہ سے تعجب دُور ہو جاتا ہے وہ یہ ہے کہ تعجب غُسل کے مسئلہ میں ہے کہ سر دھونے سے ضرر...

---

1 منحۃ الخالق مع البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۲۴

Fatawa-e-Razvia Volume 3

And this is absolutely false, rather it is mandatory to return to wiping (Masah) because (1) wiping what is to be washed when washing it is difficult is like washing it, as previously mentioned from 'Al-Bahr', and its like is in 'Al-Bada'i'. Therefore, it is permissible (2) to combine it with washing, unlike wiping (3) the leather socks (Khuffain), for it is not permissible for him to wash one of his feet and wipe the other sock, even if (4) one of them has a splint or a bandage, he should wipe it and wash the other as they explicitly stated in 'Al-Tabyin' and others. And the issue of one whose majority of body is healthy is that he washes the healthy part and wipes the wounded part; this is well-known and clear, not needing explicit statement. So how was Tayammum ruled here? However, this (5) illusion was strengthened by the phrasing of 'Ad-Durr' in the transmission of the meaning. When I saw the phrase of 'Gharib al-Riwayah' quoted in 'Al-Faidh', which includes 'wiping harms him in Wudu or washing in Janaba, not wiping his head as a person in ritual impurity or washing it as a person in major impurity' as in 'Ad-Durr', a thought occurred to me, and praise be to Allah, that 'Al-Ghusl' here is with a Damma on the Ghayn, not a Fatha. So, the meaning is not washing the head, but rather the meaning (6) is that washing and pouring water on his body harms him, even if leaving the head, because of the vapors ascending to it...

How did Tayammum become permissible for him? This ruling is absolutely false. For him, resorting to wiping (Masah) of the head is mandatory, because when washing a body part that is supposed to be washed becomes difficult or impossible, wiping over it is just like washing it, as was just mentioned with reference to 'Al-Bahr'. Similarly, it is also in 'Al-Bada'i'. That is why it is permissible to combine this wiping with washing. In contrast, in the case of wiping over leather socks (Khuffain), it is not permissible to wash one foot and wipe over the sock of the other foot. (However, in the case of an excuse), if a wooden splint or cloth bandage is tied on one foot, he will wipe over it and wash the other foot. As the clarification for this exists in 'Al-Tabyin' and others. And for someone whose majority of the body is healthy, the issue is well-known, clear, and does not need explicit clarification: he will wash the healthy part of the body and wipe over the injured part. So, the surprise is how Tayammum was ruled here (instead of ruling to wipe the head and wash the rest of the body in Ghusl). This surprise arose from a misconception, and this misconception was strengthened by the fact that the text of 'Gharib al-Riwayah' was quoted conceptually in 'Durr-e-Mukhtar'. When I saw the text of 'Gharib al-Riwayah' quoted in 'Al-Faidh', I found this

in it: 'wiping harms him in Wudu or washing in Janaba'. It is not the phrase 'wiping his head'.

---

1 Tabyin al-Haqa'iq, Masah al-Khuffayn, Matba'ah Amiriyyah Bulaq Egypt 1/52. Page 513 of 756

फ़तवा-ए-रज़विया जिल्द 3

यह क़तई बातिल है बल्कि मसह की तरफ रुजू लाज़िम है क्योंकि (1) जिस आज़ा को धोना मुतअज्ज़िर हो उस पर मसह करना उसको धोने ही की तरह है जैसा कि अभी 'बहर' के हवाले से गुज़रा, और उसी की तरह 'बदाइ' में भी है। इसीलिए (2) मसह को ग़ुस्ल (धोने) के साथ जमा करना जाइज़ है, इसके बर-खिलाफ़ मोज़ों (3) के मसह में कि यह जाइज़ नहीं कि एक पाँव धो ले और दूसरे पाँव के मोज़े पर मसह कर ले। हालाँकि अगर (4) उनमें से एक पर लकड़ी या कपड़े की पट्टी बंधी हो तो उस पर मसह करेगा और दूसरे को धोएगा जैसा कि 'तबीय्यीन' वग़ैरा में इसकी सराहत मौजूद है। और जिसका अक्सर बदन सही हो उसका मसला मशहूर व सरीह है और तसरीह का मोहताज नहीं कि वह सही हिस्से को धोएगा और ज़ख़्मी पर मसह करेगा। तो यहाँ तयम्मुम का हुक्म कैसे दे दिया गया? लेकिन यह (5) वहम 'दुर्र' की इबारत में मानी की नक़ल से मज़बूत हुआ। जब मैंने 'फ़ैज़' में मन्क़ूल 'ग़रीबुर्रिवायह' की इबारत देखी और उसमें यह पाया कि: 'वुज़ू में मसह या जनाबत में ग़ुस्ल उसे नुक़सान पहुँचाता है, न कि सर का मसह हालते हदस में या उसका धोना हालते जनाबत में' जैसा कि 'दुर्र' में है, तो मेरे दिल में यह बात आई और अल्लाह का शुक्र है कि यहाँ 'ग़ुस्ल' ग़ैन पर ज़म्म (पेश) के साथ है, फ़तह (ज़बर) के साथ नहीं। लिहाज़ा इसका मतलब सर धोना नहीं है बल्कि इसका मफहूम (6) यह है कि बदन को धोना और पानी बहाना उसे नुक़सानदेह है अगरचे सर छोड़ दिया जाए क्योंकि इससे बुख़ारात ऊपर की तरफ चढ़ते हैं...

तो उसके लिए तयम्मुम कैसे जायज़ हो गया? यह हुक्म क़तई बातिल है। इस पर तो मसह-ए-सर की तरफ रुजू लाज़िम है, इसलिए कि जब किसी धोए जाने वाले उज़्व का धोना मुतअज्ज़िर और दुशवार हो जाए तो उस पर मसह कर लेना उसे धोने ही की तरह है जैसा कि अभी 'बहर' के हवाले से गुज़रा, इसी के मिस्ल 'बदाइ' में भी है, इसी लिए इस मसह को धोने के साथ जमा करना जायज़ है, इसके बर-खिलाफ़ मोज़ों के मसह में यह जायज़ नहीं कि एक पाँव धो ले और दूसरे पाँव के मोज़े पर मसह कर ले। (लेकिन बहालत-ए-उज़्र) मगर एक पाँव पर लकड़ी या कपड़े की पट्टी बंधी हो तो उस पर मसह करेगा और दूसरा पाँव धोएगा। जैसा कि इस पर 'तबीय्यीन' वग़ैरा की सराहत मौजूद है और जिसका अक्सर बदन सही हो उसका मसला मशहूर व सरीह और ग़ैर मोहताज-ए-तसरीह है कि वह सही हिस्सा-ए-बदन धोएगा और ज़ख़्मी हिस्सा पर मसह करेगा। तो हैरत यही है कि यहाँ (ग़ुस्ल में मसह-ए-सर और बाक़ी बदन को धोने का हुक्म देने के बजाए) तयम्मुम का हुक्म कैसे दे दिया है (यह ताज्जुब एक वहम से पैदा हुआ) और इस वहम को इससे तक़वियत पहुँची कि 'दुर्रे मुख़्तार' में

'ग़रीबुर्रिवायह' की इबारत मफ़हूमन नक़ल की। जब मैंने 'फ़ैज़' में नक़ल शुदा इबारत 'ग़रीबुर्रिवायह' देखी और उसमें यह मिला कि: "यजुर्रहु अल-मसहु फ़िल वुज़ूइ अविल ग़ुसलु फ़िल जनाबति" यह इबारत नहीं कि "मसह रअसिहि"।

---

1 तबीय्युल हक़ाइक़, मसह अल-खुफ़फ़ैन, मतबअ अमीरिया बुलाक़ मिस्र 1/52. पृष्ठ 756 का 513

وھذا باطل قطعاً بل یجب الرجوع الی المسح لان (۱) مسح مایغسل عند تعذر غسلہ کغسلہ کما تقدم آنفاً عن البحر و مثلہ فی البدائع ولذا جاز (۲) جمعہ مع الغسل بخلاف مسح (۳) الخفین فأنہ لایجوز لہ ان یغسل احدی رجلیہ ویمسح خف الاخری وان کانت (۴) علی احدھما جبیرۃ او عصابۃ مسحھا وغسل الاخری کما نصوا علیہ فی التبیین وغیرہ ومسألۃ من اکثر بدنہ صحیح انہ یغسل الصحیح ویمسح الجریح مشھور صریح غیر محتاج الی التصریح فکیف حکم ھھنا بالتیمم ولکن ھذا (۵) التوھم انما کانت اکدتہ عبارۃ الدر فی النقل بالمعنی فلما رأیت عبارۃ غریب الروایۃ المنقولۃ فی الفیض وفیھا یضرہ المسح فی الوضوء او الغسل فی الجنابۃ لامسح رأسہ محدثا وغسلہ جنبا کما فی الدر تحدس فی خاطری وللہ الحمد ان الغسل ھھنا بضم الغین لافتحھا فلیس المراد غسل الرأس بل المعنی (۶) ضرہ الغسل واسالۃ الماء علی بدنہ ولومع ترک الرأس لما تصعد بہ الابخرۃ الی

ہوتا ہے تو اس کیلئے تیمم کیسے جائز ہو گیا ؟ یہ حکم قطعاً باطل ہے۔ اس پر تو مسحِ سر کی طرف رجوع لازم ہے، اس لئے کہ جب کسی دھوئے جانے والے عضو کا دھونا متعذر اور دشوار ہو جائے تو اس پر مسح کر لینا اسے دھونے ہی کی طرح ہے جیسا کہ ابھی بحر کے حوالے سے گزرا، اسی کے مثل بدائع میں بھی ہے اسی لئے اس مسح کو دھونے کے ساتھ جمع کرنا جائز ہے، اس کے برخلاف موزوں کے مسح میں یہ جائز نہیں کہ ایک پاؤں دھو لے اور دوسرے پاؤں کے موزے پر مسح کرلے۔ (لیکن بحالتِ عذر) مگر ایک پاؤں پر لکڑی یا کپڑے کی پٹی بندھی ہو تو اس پر مسح کرے گا اور دوسرا پاؤں دھوئے گا۔ جیسا کہ اس پر تبیین وغیرہ کی صراحت موجود ہے اور جس کا اکثر بدن صحیح ہو اس کا مسئلہ مشہور و صریح اور غیر محتاجِ تصریح ہے کہ وہ صحیح حصہ بدن دھوئے گا اور زخمی حصہ پر مسح کریگا۔ تو حیرت یہی ہے کہ یہاں (غسل میں

مسح سر اور باقی بدن کو دھونے کا حکم دینے کی بجائے) تیمم کا حکم کیسے دے دیا ہے (یہ تعجب ایک وہم سے پیدا ہوا) اور اس وہم کو اس سے تقویت پہنچی کہ درِ مختار میں غریب الروایہ کی عبارت مفہوماً نقل کی۔ جب میں نے فیض میں نقل شدہ عبارت غریب الروایہ دیکھی اور اس میں یہ ملا کہ : "یضرہ المسح فی الوضوء او الغسل فی الجنابۃ" یہ عبارت نہیں کہ "مسح راسہ"

---

1 تبیین الحقائق مسح الخفین مطبعۃ امیریہ بولاق مصر ۱ / ۵۲ Page 513 of 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

[Left Column Text] ...the brain as known in medicine. And how (1) can the wording of 'Gharib al-Riwayah' be with a fatha on the 'Ghayn' [ghasala], while it is explicitly stated adjacent to it that if a woman is harmed by washing her head, she should wipe over it [masaḥat-hu]? So the meaning is only what I have established, and this is clear, without any obscurity, and all praise is for Allah.

As for the issue of Wudu [ablution], it is not strange; rather, it has a sound and close reason. So I say: It is known (2) that ritual impurity [hadath] is not divisible, so its removal is also not divisible. Thus, if one performs Ghusl [ritual bath] and even a single hair remains on which water did not flow, then his Ghusl is not valid, and he remains in a state of major ritual impurity [junub] as he was. Indeed, they [the scholars] have explicitly stated that legal impurity [najasat al-hukmiyah] (3) is more severe than physical impurity [najasat al-haqiqiyah], as an amount of a dirham or less than a quarter of the area is excused in physical impurity, but in legal impurity, not even the amount of a particle is excused at all. Therefore, whoever...

[Right Column Text] ...is in a state of minor ritual impurity [muhdith] and his washing [ghuslahu] is due to major ritual impurity [junuban], as it is in Durr al-Mukhtar. Upon seeing this text, by the grace of Allah Almighty, it occurred to my heart that the word 'Ghusl' here should be with a damma on the 'Ghayn' [meaning the act/result], not with a fatha [meaning the act of washing]. So the meaning of this text is not that 'wiping in Wudu and washing in Janabat causes harm', but rather the meaning is that 'performing Ghusl and pouring water over the body in Janabat causes harm', even if one leaves the head and pours water elsewhere. The harm would be because vapors rise towards the brain, as the science of medicine explains. And how could the text of 'Gharib al-Riwayah' be with a fatha on the 'Ghayn' (in the sense of washing) when right next to it is the clarification that if washing the head harms a woman, she should wipe over it? (In that case, how could the ruling be to leave everything else and only perform Tayammum instead of washing the head?) Thus, the meaning is exactly as I have explained, and it is perfectly clear and without doubt. And all praise is for Allah. (T)

Now, regarding the issue of Wudu, that too is not surprising; rather, it has an excellent and close reason. So I say: It is known that ritual impurity is not divisible, so similarly, the removal of ritual impurity will also not be divisible. If someone performs Ghusl and one hair is left upon which water has not been poured, his Ghusl is not

valid; he is still in a state of major ritual impurity. Scholars have clarified that legal impurity is stricter than physical impurity, because in physical impurity, up to the size of a dirham or a quarter is excused, while in legal impurity...

[Bottom Section Text] Note: I say, meaning in normal circumstances [fi al-sa'ati]. As for places of necessity [mawadi' al-darurah], then yes, such as a hair that has become knotted, fly droppings, and the substance of henna or ink, etc., among what we have detailed in 'al-Jaud al-Hulw'. 12, from him, may he be forgiven. (M)

I say: Meaning in normal circumstances, nothing is excused. However, in cases of necessity, some things are forgiven, such as a hair that has knotted itself, fly droppings, dried henna, ink, etc., the details of which we have provided in our treatise 'al-Jaud al-Hulw fi Arkan al-Wudu'. 12, from him, may he be forgiven. (T)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[बायाँ कॉलम] ...दिमाग जैसा कि चिकित्सा विज्ञान में ज्ञात है। और (1) 'ग़रीबुल रिवायह' की इबारत 'ग़ैन' पर फ़तहा के साथ [ग़सल] कैसे हो सकती है, जबकि इसके साथ ही यह स्पष्ट किया गया है कि यदि स्त्री को अपना सिर धोने से हानि पहुँचती हो, तो वह उस पर मसह (पोंछना) कर ले? इसलिए अर्थ वही है जो मैंने स्थापित किया है, और यह स्पष्ट है, इसमें कोई संशय नहीं है, और अल्लाह की स्तुति है।

जहाँ तक वज़ू के मसले का सवाल है, तो यह विचित्र नहीं है; बल्कि इसका एक ठोस और निकट का कारण है। अतः मैं कहता हूँ: यह ज्ञात है (2) कि 'हदस' (धार्मिक अशुद्धि) विभाज्य नहीं है, इसलिए इसका निवारण भी विभाज्य नहीं होगा। अतः यदि कोई ग़ुस्ल करे और एक बाल भी ऐसा रह जाए जिस पर पानी न बहा हो, तो उसका ग़ुस्ल नहीं होगा और वह पहले की तरह ही नापाक (जुनुब) रहेगा। वास्तव में, विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि 'नजासत-ए-हुकमिया' (3) 'नजासत-ए-हक़ीक़िया' से अधिक कठोर है, क्योंकि हक़ीक़िया में एक दिरहम की मात्रा या चौथाई भाग से कम माफ है, लेकिन हुकमिया में रत्ती भर भी माफी नहीं है। अतः जो कोई...

[दायाँ कॉलम] ...मुहद्दिस (अशुद्ध) है और उसका ग़ुस्ल जुनुब (बड़ी नापाकी) के कारण है, जैसा कि दुर्रे मुख़्तार में है। इस इबारत को देखते ही अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मेरे दिल में यह विचार आया कि यहाँ 'ग़ुस्ल' शब्द 'ग़ैन' पर ज़म्मा के साथ होगा, फ़तहा के साथ नहीं। तो इस इबारत का यह अर्थ नहीं है कि 'वज़ू में मसह करना और जनाबत में धोना हानि पहुँचाता है', बल्कि अर्थ यह है कि 'जनाबत में ग़ुस्ल करना और शरीर पर पानी बहाना हानि पहुँचाता है', भले ही सिर छोड़कर पानी बहाया जाए। हानि इसलिए होगी क्योंकि वाष्प दिमाग की ओर चढ़ते हैं, जैसा कि चिकित्सा शास्त्र बताता है। और 'ग़रीबुल रिवायह' की इबारत 'ग़ैन' के फ़तहा के साथ (धोने के अर्थ में) कैसे हो सकती है, जबकि इसके ठीक बाद यह स्पष्टीकरण मौजूद है कि यदि स्त्री को सिर धोने से हानि हो तो वह उस पर मसह करे? (फिर यहाँ सिर के बजाय सब कुछ छोड़कर सिर्फ तयम्मुम का हुक्म कैसे हो सकता है?) तो अर्थ वही है जो मैंने बयान किया और यह बिल्कुल साफ और स्पष्ट है। वल्लाह-उल-हम्द। (त)

अब रहा वज़ू का मसला, तो वह भी आश्चर्यजनक नहीं है बल्कि उसकी एक अच्छी और निकट की वजह है। तो मैं कहता हूँ: यह मालूम है कि 'हदस' विभाजित नहीं होता, तो इसी तरह 'हदस' का

निवारण भी विभाजित नहीं होगा। अगर कोई ग़ुस्ल करे और एक बाल छूट जाए जिस पर पानी न बहाया गया हो, तो उसका ग़ुस्ल नहीं हुआ, वह अब भी जुनुब है और विद्वानों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि नजासत-ए-हुकमिया नजासत-ए-हक़ीक़िया से ज़्यादा सख़्त है, क्योंकि हक़ीक़िया से तो दिरहम के बराबर या चौथाई से कम माफ़ है और हुकमिया में...

[नीचे का खंड] नोट: मैं कहता हूँ, यानी सामान्य परिस्थितियों में [फ़ी अस्साअति]। जहाँ तक आवश्यकता के स्थानों [मवाज़ि' अद-दरूरह] का प्रश्न है, तो हाँ, कुछ छूट है जैसे बाल जो खुद गाँठ बन गया हो, मक्खी की बीट, और मेहंदी या स्याही का जमाव आदि, जैसा कि हमने 'अल-जौद अल-हिलु' में विस्तार से बताया है। 12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (म)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): यानी सामान्य स्थिति में कुछ भी माफ़ नहीं है। हाँ, ज़रूरत की जगहों में कुछ छूट है जैसे बाल जो खुद गिरह खाकर रह गया हो और मक्खी की बीट, मेहंदी, रौशनाई वगैरह का जुर्म जिसकी तफ़सील हमने रिसाला 'अल-जौद अल-हिलु फ़ी अरकान अल-वज़ू' में की है। 12, उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (त)

पृष्ठ 514/756

[بایاں کالم] الدماغ كما علم في الطب وكيف (١) تكون عبارة غريب الرواية بفتح الغين مع انه المصرح متصلابها ان المرأة ان ضرها غسل رأسها مسحته فليس المعنى الاماقررت وهذا صاف لاغبار عليه ولله الحمد۔ اما مسألة الوضوء فغير عجيب بل له وجه وجيه قريب فاقول: معلوم (٢) ان الحدث لا يتجزى فكذا رفعه فلو اغتسل وبقيت شعرة لم يسل الماء عليها فلاغسل له وهو جنب كما كان وقد نصوا ان النجاسة الحكمية (٣) اشد من الحقيقية اذقد عفى من هذه قدر درهم اواقل من الربع ولا عفو عه في الحكمية قدر ذرة اصلاً - فمن

[دایاں کالم] محدثا وغسله جنبا " جیسا کہ در مختار میں ہے تو یہ عبارت دیکھتے ہی بحمد اللہ تعالیٰ میرے دل میں خیال ہوا کہ لفظ "غسل" یہاں غین کے ضمہ سے ہوگا، فتحہ سے نہ ہوگا۔ تو اس عبارت کا یہ معنی نہیں کہ "وضو میں مسح کرنا اور جنابت میں "دھونا" ضرر دیتا ہو" بلکہ معنی یہ ہے کہ جنابت میں غسل اور بدن پر پانی بہانا ضرر دیتا ہو اگرچہ سر کو چھوڑ کر پانی بہائے، ضرر اس لئے ہو کہ بخارات دماغ کی طرف چڑھتے ہوں جیسا کہ فن طب اسے بتاتا ہے۔ اور غریب الروایہ کی عبارت غین کے فتحہ کے ساتھ (دھونے کے معنی میں) کیوں کر ہوسکتی ہے جبکہ اس کے متصل ہی یہ تصریح موجود ہے کہ اگر عورت کو سر دھونے سے ضرر ہو تو اس پر مسح کرے (پھر یہاں بجائے سر کے سب کچھ چھوڑ کر صرف تیمم کا حکم کیسے ہو سکتا ہے) تو معنی وہی ہے جو میں نے بیان کیا اور یہ بالکل صاف بے غبار ہے۔ واللہ الحمد۔ (ت) اب رہا وضو کا مسئلہ، تو وہ بھی تعجب خیز نہیں بلکہ اس کی ایک عمدہ قریبی وجہ ہے فاقول: یہ معلوم ہے کہ حدث منقسم نہیں ہوتا تو اسی طرح ازالہ حدث بھی منقسم نہ ہوگا۔ اگر کوئی غسل کرے اور ایک بال چھوٹ جائے جس پر پانی نہ بہایا ہو تو اس کا غسل نہ ہوا وہ اب بھی جنب ہے اور علماء

نے تصریح فرمائی ہے کہ نجاست حکمیہ نجاست حقیقیہ سے زیادہ سخت ہے اس لئے کہ حقیقیہ سے تو بقدر درہم یا چوتھائی سے کم معاف ہے اور حکمیہ میں

[نچلا حصہ] عه اقول ای فی السعة اما مواضع الضرورة فنعم کشعر تعقد ونیم ذباب وجرم حناء ومداد الی غیر ذلك مما فصلنا في الجود الحلو ۱۲ منہ غفر له (م) اقول: یعنی بحالت وسعت کچھ معاف نہیں۔ ہاں ضرورت کی جگہوں میں کچھ عفو ہے جیسے بال جو خود گرہ کھا کر رہ گیا ہو اور مکھی کی بیٹ، مہندی، روشنائی وغیرہ کا جرم جس کی تفصیل ہم نے رسالہ "الجود الحلو فی ارکان الوضو" میں کی ہے ۱۲ منہ غفر له (ت)

Fatawa Razawiya - Volume Three

If one cannot wash the head during Ghusl (ritual bath), they should wipe over it (perform Masah). If that is also not possible, they should tie a bandage and perform Masah over it, and the process of purification will be complete. As you know, this Masah stands in place of washing. This is the ruling for a healthy person with a wound. However, when even this (Masah over the bandage) is not possible in Ghusl or Wudu (ablution), then the obligation related to the head is completely omitted. Consequently, this (washing of the remaining parts) would be partial purification, not complete purification. Since purification is not divisible, it will be said that purification was not achieved at all. In this way, when inability to use water for purification becomes apparent, turning to Tayammum (dry ablution) becomes mandatory.

As for the statement in 'Al-Bahr' that 'Tayammum is Masah, therefore it cannot be a substitute for Masah, and the head is subject to Masah', there is a discussion regarding this.

I say: Firstly, this does not apply to Ghusl because the head is washed in it. Secondly, such a statement from a scholar like him is surprising because the aforementioned narration does not command Tayammum as a substitute for Masah of the head; rather, it commands Tayammum as a substitute for Wudu and Ghusl when there is an inability to complete them. And without a doubt, Tayammum...

Footnote: And the answer is what we pointed out: that this is a case of necessity, and in circumstances of necessity, pardon is established even for ritual impurities.

Page 515 of 756

फ़तावा रज़विया - खंड तीन

एक ज़र्रे के बराबर भी माफ़ नहीं। तो जो शख़्स ग़ुस्ल में अपना सर धो नहीं सकता तो उस पर मसह कर लेगा। अगर यह भी न कर सके तो पट्टी बांध कर उस पर मसह करेगा और उस से ततहीर (शुद्धिकरण) का अमल मुकम्मल हो जाएगा। इसलिए कि मालूम हो चुका है कि यह मसह धोने के क़ायम मकाम (स्थानपन्न) है, सहीह ज़ख़्मी का मसला भी यही है। लेकिन जब ग़ुस्ल या वज़ू में यह भी (पट्टी पर मसह) न हो सके तो सर से मुताल्लिक़ अमल बिल्कुल ही मत़रूक (छूट गया) रह जाएगा जिस की वजह से यह (बाक़ी अंगों को धोने का) अमल जुज़्व-ए-तहारत (शुद्धि का हिस्सा) तो होगा, पूर्ण तहारत नहीं होगा। चूंकि तहारत मुनक़सिम (विभाज्य) नहीं होती, इसलिए कहा जाएगा कि सिरे से तहारत हासिल ही न हुई। इस तरह जब पानी से तहारत का अज्ज़ (अक्षमता) ज़ाहिर हो गया, तो तयम्मुम की तरफ रुजू लाज़िम हुआ।

लेकिन साहब-ए-बहर का यह क़ौल कि 'तयम्मुम मसह है इसलिए वह किसी मसह का बदल नहीं होगा और सर पर मसह ही होता है'—इस पर कलाम है।

फ़अक़ूलु (मैं कहता हूँ): अव्वलन, यह बात ग़ुस्ल में नहीं चल सकती क्योंकि इसमें सर धोया जाता है। सानियन, उन जैसे विद्वान के क़लम से ऐसी इबारत हैरत अंगेज़ है, क्योंकि रिवायत-ए-मज़कूरा में सर के मसह के बदले तयम्मुम का हुक्म नहीं है, बल्कि वज़ू और ग़ुस्ल की तकमील से अज्ज़ के वक़्त उन दोनों के बदले तयम्मुम का हुक्म है। और बिलाशुबा तयम्मुम...

फ़ुटनोट: और जवाब वह है जिसकी तरफ हमने इशारा किया कि यह ज़रूरत का मक़ाम है और ज़रूरत के मक़ाम पर माफ़ी नजासत-ए-हुक्मिया में भी साबित है।

पृष्ठ 515/756

لا یستطیع غسل رأسه فی الغسل یمسحه فإن لم یستطع فعصابۃ علیه وقد تم التطهیر لما علمت ان هذا المسح یقوم مقام غسله وهی مسألة الصحیح الجریح اما اذالم یقدر علیه اصلا فی الغسل والوضوء تبقی وظیفة الرأس متروکة رأسا فیکون هذا بعض طهارة لاطهارة وهو لایتجزی فینتفی اصلا فقد ظهر عہ عجزه عن طهارة الماء فوجب المصیر الی التیمم ۔ ایک ذرہ کے برابر بھی معاف نہیں۔ تو جو شخص غسل میں اپنا سر دھو نہیں سکتا تو اس پر مسح کرلے گا اگر یہ بھی نہ کر سکے تو پٹی باندھ کر اس پر مسح کرے گا اور اس سے تطہیر کا عمل مکمل ہو جائے گا اس لئے کہ معلوم ہو چکا ہے کہ یہ مسح دھونے کے قائم مقام ہے، صحیح زخمی کا مسئلہ بھی یہی ہے لیکن جب غسل یا وضو میں یہ بھی (پٹی پر مسح) نہ ہو سکے تو سر سے متعلق عمل بالکل ہی متروک رہ جائے گا جس کی وجہ سے یہ (بقیہ اعضاء کو دھونے کا) عمل جزو طہارت تو ہوگا طہارت نہ ہوگا حالانکہ یہ عمل منقسم نہیں ہوتا تو کہا جائے گا کہ سرے سے طہارت حاصل ہی نہ ہوئی اس طرح پانی والی طہارت سے اس کا عجز ظاہر ہو گیا تو تیمم کی طرف رجوع لازم ہوا۔ (ت)

اما قول البحر ان التیمم مسح فلا یکون بدلا عن مسح والراس ممسوح۔ لیکن صاحب بحر کا یہ قول کہ "تیمم مسح ہے اس لئے وہ کسی مسح کا بدل نہ ہوگا اور سر پر مسح ہی ہوتا ہے"۔ تو اس پر کلام ہے۔

فاقول اولاً : (۱) لا یتمشی فی الغسل فان الرأس فیه مغسول و ثانیاً : هو (۲) عجیب من مثله فانه لم تأمر الروایة بالتیمم بدلا عن مسح الرأس بل بدلا عن الوضوء والغسل عند العجز عن اکمالهما و لا شك ان التیمم فاقول: (پس میں کہتا ہوں) اولاً یہ بات غسل میں نہیں چل سکتی کیوں کہ اس میں سر دھویا جاتا ہے۔ ثانیاً: ان جیسے کے قلم سے ایسی عبارت حیرت خیز ہے اس لئے کہ روایت مذکورہ میں

مسح سر کے بدلے تیمم کا حکم نہیں بلکہ وضو و غسل کی تکمیل سے عجز کے وقت ان دونوں کے بدلے تیمم کا حکم ہے اور بلاشبہ تیمم

عہ والجواب ما اشرنا الیه ان هذا موضع ضرورة وفیه العفو ثابت في الحکمیة ایضا ۱۲ منه غفرله (م)

اور جواب وہ ہے جس کی طرف ہم نے اشارہ کیا کہ یہ ضرورت کی جگہ ہے اور مقام ضرورت میں معافی نجاست حکمیہ میں بھی ثابت ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Volume Three Fatawa Ridawiyya

(Arabic Text Analysis): ...is a substitute for them when wiping (masah) is also present in wudu. If the substitution were not valid on this basis, it would necessitate that Tayammum is not permissible for a person in a state of minor impurity. It became apparent that what is mentioned in 'Gharib al-Riwayah' is not obscure ('gharib'). Yes, the more famous view is what al-Jallabi mentioned, and the author of 'Al-Durr al-Mukhtar' has affirmed this in multiple places. The statement at the end of the chapter on Tayammum has already passed, and just before the mention of the Sunnahs at the end of the chapter on Wudu, this text appears: '(1) There are cracks in his limbs; if he is able, he should wash them; otherwise, he should wipe over them; if even that is not possible, he should leave it. And if it is on the hand and he has no power over water, he should perform Tayammum.' End. The issue of cracks on the hands has just been mentioned with its conditions. And at the end of the section on wiping over leather socks (khuffain), his statement is: 'The summary is that it is obligatory to wash the area of purification even if it is with flowing water. If this causes harm, then one should wipe (masah) over that limb. If that also causes harm, then one should wipe over the bandage. If even that causes harm, then it is completely waived.' End. I say: rather, (2) if wiping over the limb causes harm, then if washing the bandage is possible, wash it; if that causes harm, then wipe over the bandage. Then he said: '(His nail broke, so he put medicine on it, or he put medicine on the cracks of his feet, then he poured water over it).' (3)

(Urdu Text): These two are substitutes when wiping is also found in Wudu. If the substitution were not valid based on this reason, it would imply that Tayammum is not permissible for a person in a state of ritual impurity. It became clear that what is mentioned in Gharib al-Riwayah is not 'gharib'; rather, the more famous view is what al-Jallabi mentioned, and the author of Durr al-Mukhtar has affirmed this in several places. The passage from the end of Tayammum has passed, and just before the Sunnahs at the end of Wudu, this is the text: 'Cracks are in the limbs; if there is ability, wash, otherwise wipe; if even that is not possible, leave it; and if it is in the hand and there is no power over water, perform Tayammum.' End. The issue of hand cracks with conditions has passed earlier. And at the end of Masah al-Khuffain, their statement is: 'The summary is that it is necessary to wash the site of purity even if it is with running water; if it causes harm, wipe over that limb; if there is harm in that, wipe over the bandage; if there is harm in that too, it is completely dropped.' End. I say: rather, if wiping over the limb causes harm, pour water on the bandage and

wash it; if there is harm in that, wipe over the bandage. Then they write: 'The nail broke, medicine was put on it, or medicine was put on the fissures of the feet, then water over it...'

1. Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Chapter of Wudu, before Sunnahs, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/51.
2. Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, end of Masah al-Khuffain, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/205.
3. Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, end of Masah al-Khuffain, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/203.

जिल्द सोम फ़तावा रज़विया

(अरबी पाठ विश्लेषण): ...इन दोनों का विकल्प है जबकि वज़ू में मसह भी पाया जाता है। यदि इस आधार पर विकल्प सही न होता, तो यह अनिवार्य होता कि मुहदिस (अशुद्ध व्यक्ति) के लिए तयम्मुम जायज़ न हो। यह स्पष्ट हुआ कि 'ग़रीब-उर-रिवायत' में जो उल्लेख है वह 'ग़रीब' नहीं है। हाँ, अधिक प्रसिद्ध वही है जिसका ज़िक्र जल्लाबी ने किया और इसी पर 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में कई स्थानों पर ज़ोर दिया गया है। तयम्मुम के अंत में उसका वर्णन आ चुका है और वज़ू के अंत में सुन्नतों के वर्णन से थोड़ा पहले यह इबारत है: "(१) अंगों में दरारें हैं; यदि सामर्थ्य हो तो धोए वरना मसह करे; यदि यह भी न हो सके तो छोड़ दे। और यदि हाथ में हो और पानी पर सामर्थ्य न हो तो तयम्मुम करे।" समाप्त। हाथों की दरारों का मसला शर्तों के साथ पहले गुज़र चुका है। और मसह-ए-खुफ़्फ़ैन (मोज़ों पर मसह) के अंत में उनकी यह इबारत है: "निष्कर्ष यह है कि पाकी की जगह को धोना अनिवार्य है चाहे वह बहते पानी से हो; यदि इससे नुकसान होता हो तो उस अंग पर मसह करे; यदि उसमें भी नुकसान हो तो पट्टी पर मसह करे; यदि उससे भी नुकसान हो तो बिल्कुल छोड़ दे।" समाप्त। मैं कहता हूँ: बल्कि (२) यदि अंग पर मसह से नुकसान हो, तो यदि पट्टी धोना संभव हो तो उसे धोए; यदि उसमें नुकसान हो तो पट्टी पर मसह करे। फिर उन्होंने कहा: "(उसका नाखून टूट गया, तो उसने उस पर दवा लगाई, या अपने पैर की दरारों पर दवा रखी, फिर उस पर पानी बहाया)।" (३)

(उर्दू पाठ): इन दोनों का बदल है जब कि वज़ू में मसह भी पाया जाता है तो अगर इस सबब की बुनियाद पर बदलियत दुरुस्त न होती तो लाज़िम था कि मुहदिस के लिए तयम्मुम का जवाज़ ही न हो। ज़ाहिर यह हुआ कि ग़रीब-उर-रिवायत में जो मज़कूर है वह ग़रीब नहीं, हाँ ज़्यादा मशहूर वही है जो जल्लाबी ने ज़िक्र किया और इसी पर दुर्र-ए-मुख़्तार में मुतअद्दद जगह जज़्म किया उसकी आख़िर-ए-तयम्मुम की इबारत गुज़र चुकी और आख़िर-ए-वज़ू में सुन्नतों के बयान से ज़रा पहले यह इबारत है: "अअज़ा में फटन है तो अगर क़ुदरत हो धोए वरना मसह करे यह भी न हो सके तो छोड़ दे और अगर हाथ में हो और पानी पर क़ुदरत न हो तो तयम्मुम करे"। समाप्त। हाथ में फटन का मसला मअ़ क़ुयूद (शर्तों) के कुछ पहले गुज़र चुका। और मसह-ए-ख़ुफ़्फ़ैन के आख़िर में उनकी यह इबारत है: "हासिल यह है कि महल-ए-तहारत को धोना लाज़िम है अगरचे आब-ए-रवां से हो अगर इस से ज़रर होता हो तो इस उज़्व पर मसह करे अगर इस में ज़रर हो तो पट्टी पर मसह करे अगर इस से भी ज़रर हो तो बिल्कुल साक़ित है।" समाप्त। अक़ूल: बल्कि अगर उज़्व पर मसह से ज़रर हो

तो पट्टी पर पानी बहाए और धोए अगर इस में ज़रर हो तो पट्टी पर मसह करे। फिर लिखते हैं: "नाख़ुन टूट गया इस पर दवा डाली या पाऊं के शिगाफ़ों पर दवा रखी तो उस पर पानी..."

1. अल-दुर्र अल-मुख्तार मअ़ अल-शामी, बाब अल-वज़ू सुन्नतों से पहले, मतबअ मुस्तफा अल-बाबी मिस्र १/५१
2. अल-दुर्र अल-मुख्तार मअ़ अल-शामी, मसह अल-खुफ़्फ़ैन के अंत में, मतबअ मुस्तफा अल-बाबी मिस्र १/२०५
3. अल-दुर्र अल-मुख्तार मअ़ अल-शामी, मसह अल-खुफ़्फ़ैन के अंत में, मतबअ मुस्तफा अल-बाबी मिस्र १/२०३

पृष्ठ ५१६/७५६

بدل عنها مع تحقق المسح فی الوضوء فلو لم تصح البدلیۃ بهذا الوجہ وجب ان لایجوز التیمم للمحدث فظهر ان ما فی غریب الروایۃ غیر غریب نعم الاشهر ماذکرہ الجلابی وبہ جزم الدر فی غیر موضع ففی اخر التیمم ماتقدم وقال فی اخر الوضوء قبیل سننہ مانصہ فی اعضائہ (۱) شقاق غسلہ ان قدر والا مسحہ والا ترکہ ولوبیدہ ولایقدر علی الماء تیمم ۱ اھ مسألۃ شقاق الید تقدمت انفاً مع قیودها۔ وقال فی اخر مسح الخفین الحاصل لزوم غسل المحل ولوبماء جارفان ضرّ مَسَحَہ فان ضرّ مَسَحَهَا فان ضرّ سقط اصلاً ۲ اھ اقول: بل (۲) ان ضرّ مَسَحَہ فان ضرّ غَسَلَهَا فان ضرّ مَسَحَهَا ثم قال (انکسر ظفرہ فجعل علیہ دواء او وضعہ علی شقوق رجلہ اجری الماء علیہ) 3

ان دونوں کا بدل ہے جب کہ وضو میں مسح بھی پایا جاتا ہے تو اگر اس سبب کی بنیاد پر بدلیت درست نہ ہوتی تو لازم تھا کہ محدث کیلئے تیمم کا جواز ہی نہ ہو۔ ظاہر یہ ہوا کہ غریب الروایۃ میں جو مذکور ہے وہ غریب نہیں، ہاں زیادہ مشہور وہی ہے جو جلابی نے ذکر کیا اور اسی پر دُرِّ مختار میں متعدد جگہ جزم کیا اُس کی آخر تیمم کی عبارت گزر چکی اور آخر وضو میں سنتوں کے بیان سے ذرا پہلے یہ عبارت ہے : "اعضا میں پھٹن ہے تو اگر قدرت ہو دھوئے ورنہ مسح کرے یہ بھی نہ ہوسکے تو چھوڑ دے اور اگر ہاتھ میں ہو اور پانی پر قدرت نہ ہو تو تیمم کرے"۔ اھ ہاتھ میں پھٹن کا مسئلہ مع قیدوں کے کچھ پہلے گزر چکا۔ اور مسح خفین کے آخر میں ان کی یہ عبارت ہے: "حاصل یہ ہے کہ محلِ طہارت کو دھونا لازم ہے اگرچہ آب رواں سے ہو اگر اس سے ضرر ہوتا ہو تو اس عضو پر مسح کرے اگر اس میں ضرر ہو تو پٹی پر مسح کرے اگر اس سے بھی ضرر ہو تو بالکل ساقط ہے۔" اھ اقول: بلکہ اگر عضو پر مسح سے ضرر ہو تو پٹی پر پانی

بہائے اور دھوئے اگر اس میں ضرر ہو تو پٹی پر مسح کرے۔ پھر لکھتے ہیں: "ناخن ٹوٹ گیا اس پر دوا ڈالی یا پاؤں کے شگافوں پر دوا رکھی تو اس پر پانی..."

1 الدر المختار مع الشامی باب الوضوء قبل سننہ مطبع مصطفی البابی مصر ۵۱/۱ 2 الدر المختار مع الشامی آخر مسح الخفین مطبع مصطفی البابی مصر ۲۰۵/۱ 3 الدر المختار مع الشامی آخر مسح الخفین مطبع مصطفی البابی مصر ۲۰۳/۱

Fatawa Razviya, Volume 3

- (Let him) pour (water) if he is able, otherwise wipe, otherwise omit this too.
- In Tabyin al-Haqa'iq, Fath al-Qadir, al-Bahr al-Ra'iq, al-Hindiyya, and others it is stated: "If a nail is broken and medicine or gum is applied to it, or if it is put in the skin of a gallbladder or an ointment is applied, then if removing it is harmful, let him wipe over it. If wiping is also harmful, let him omit it." (Finish quote)

I say: Rather, let him wash it; if it is harmful to wash, then let him wipe it; if wiping is also harmful, let him omit it. The scholars have said: "If there are cracks in his limbs, then let him run water over them if he is able; otherwise, if possible, let him wipe over them; otherwise let him omit (the wiping) and wash the areas beneath them." (Finish quote)

I say: If what is meant by the issue of cracks is when medicine is applied on them, and the meaning of 'running water over them' is to pour water over the medicine that is on those cracks as it is in the text of al-Durr al-Mukhtar, then that is correct. Otherwise, the interpretation of the meaning will be that he wipes over those cracks if he is able, otherwise he pours water over the medicine or bandage applied on them if possible; otherwise he wipes if possible, otherwise he omits this too. Then, by the praise of Allah Almighty, I found an explicit text from our three Imams (may Allah Almighty be pleased with them) in Zahir al-Riwaya that it is permissible to omit the wiping as well when it is harmful; with this, the disagreement ends. Imam Malik al-Ulama said in al-Bada'i: "Muhammad has mentioned in the Book of Prayer..."

---

1. Tabyin al-Haqa'iq, Mas'h al-Khuffayn, Matba'a Amiriyya, Bulaq Egypt, 1/53.
2. Tabyin al-Haqa'iq, Mas'h al-Khuffayn, Matba'a Amiriyya, Bulaq Egypt, 1/53.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

- (पानी) बहाए अगर बहा सके वरना मसह करे वरना इसे भी छोड़ दे।
- तबीन अल-हक़ाएक़, फ़तह अल-क़दीर, अल-बहर अल-राइक़, अल-हिंदिया वग़ैरह में है: "अगर नाख़ून टूट जाए और उस पर दवा या गोंद लगाया जाए, या उसे पित्त की थैली की खाल में डाला जाए या मरहम लगाया जाए, तो अगर उसे निकालने में नुक़सान हो तो उस पर मसह करे और अगर मसह से भी नुक़सान हो तो छोड़ दे।" (समाप्त)

मैं कहता हूँ: बल्कि इसे धोए, अगर इसे धोने से नुक़सान हो तो मसह करे, अगर इससे भी नुक़सान हो तो छोड़ दे। विद्वानों ने फ़रमाया है: "अगर उसके अंगों में दरारें हों, तो अगर समर्थ हो तो उन पर पानी बहाए, वरना हो सके तो उन पर मसह करे, वरना छोड़ दे और उनके नीचे की जगहों को धो ले।" (समाप्त)

मैं कहता हूँ: दरारों के मसले से अगर यह मुराद है कि उन पर दवा लगा रखी हो, और उन पर पानी गुज़ारने का यह मतलब है कि उन दरारों पर जो दवा है उस पर पानी बहाए जैसा कि दुर्रे मुख्तार की इबारत में है, तो यह दुरुस्त है। वरना मअनी का अंदाज़ा यह होगा कि उन दरारों पर मसह करे अगर उसकी क़ुदरत हो, वरना जो दवा या पट्टी लगा रखी है उस पर पानी बहाए अगर हो सके, वरना मसह करे अगर मुमकिन हो वरना इसे भी छोड़ दे। फिर अल्लाह तआला की हम्द के साथ, मुझे अपने तीनों इमामों (अल्लाह उन सब से राज़ी हो) से ज़ाहिर अल-रिवायत की साफ़ इबारत मिल गई कि मसह भी छोड़ देना जायज़ है जब उसमें नुक़सान हो, इससे इख़्तिलाफ़ ख़त्म हो जाता है। इमाम मलिक अल-उलमा ने बदाइ' में फ़रमाया: "मुहम्मद ने किताब अल-सलात में ज़िक्र किया है..."

---

1. तबीन अल-हक़ाएक़, मसह अल-खुफ़ैन, मतबा अमीरिया, बुलाक़ मिस्र, 1/53.
2. तबीन अल-हक़ाएक़, मसह अल-खुफ़ैन, मतबा अमीरिया, बुलाक़ मिस्र, 1/53.

पृष्ठ 517/756

فتاوی رضویہ، جلد سوم

بہائے اگر بہا سکے ورنہ مسح کرے ورنہ یہ بھی ترک کردے۔ تبیین الحقائق، فتح القدیر، البحر الرائق، ہندیہ وغیرہ میں ہے: "اگر ناخن ٹوٹ گیا اس پر دوا یا گوند لگایا اس میں پتے کی جلد یا مرہم ڈال لیا تو اگر اسے نکالنے میں ضرر ہو تو اس پر مسح کرے اور اگر مسح سے بھی ضرر ہو تو چھوڑ دے" اھ

اقول: بلکہ اس کو دھوئے اگر اس سے نقصان ہو تو مسح کرے اگر اس سے بھی ضرر ہو تو چھوڑ دے۔ علماء نے فرمایا ہے: "اگر اس کے اعضاء میں شگاف ہوگئے ہوں تو اگر قدرت ہو ان پر پانی بہائے ورنہ ہوسکے تو ان پر مسح کرے ورنہ چھوڑ دے اور ان کے نیچے کی جگہیں دھولے"۔ اھ (ت)

اقول: شگافوں کے مسئلہ سے اگر یہ مراد ہے کہ ان پر دوا چھوڑ رکھی ہو، اور ان پر پانی گزارنے کا یہ معنی ہے کہ ان شگافوں پر جو دوا ہے اس پر پانی بہائے جیسا کہ درمختار کی عبارت میں ہے تو یہ درست ہے ورنہ تقدیر معنی یہ ہوگی کہ ان شگافوں پر مسح کرے اگر اس کی قدرت ہو ورنہ جو دوا یا پٹی لگا رکھی ہے اس پر پانی بہائے اگر ہوسکے، ورنہ مسح کرے اگر ممکن ہو ورنہ یہ بھی چھوڑ دے پھر بحمد اللہ تعالٰی مجھے اپنے ائمہ ثلثہ رضی اللہ تعالٰی عنہم سے ظاہر الروایہ کی صریح عبارت مل گئی کہ مسح بھی ترک کردینا جائز ہے جب اس میں ضرر ہو اس سے اختلاف ختم ہو جاتا ہے۔ امام ملک العلماء بدائع میں: "قد ذکر محمد فی کتاب الصلاۃ..."

---

1 تبیین الحقائق مسح الخفین مطبعۃ امیریہ بولاق مصر ۱/ ۵۳ 2 تبیین الحقائق مسح الخفین مطبعۃ امیریہ بولاق مصر ۱/ ۵۳

Fatawa Razawiyya - Volume 3

It is narrated from Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) that if one leaves wiping (masah) over the bandages and that wiping is harmful to him, it will be sufficient (i.e., valid). And Imams Abu Yusuf and Muhammad (may Allah have mercy on them) said: when that is not harmful, it is not permissible (to leave it). Thus, Imam Abu Hanifa's answer was given in one situation and their answer in another, so no disagreement was evident. There is no disagreement that when wiping over the bandages is harmful, the obligation of wiping is waived, because washing is waived due to a valid excuse, so wiping is more deserving of being waived. (1) Ah — And in 'Al-Hilya', in the chapter of Wudu and Ghusl, citing 'Al-Asl' (Al-Mabsut): "When one performs Ghusl from Janaba (major ritual impurity) and wipes with water over the bandages on their hand, or does not wipe because they fear for themselves if they were to wipe, it suffices them." It is stated in 'Al-Hilya': "This issue is mentioned in 'Al-Mabsut' absolutely without attributing it to anyone specifically." (2) Ah, meaning it implies that this is the opinion of all [the imams]. Thus, it is proven that the waiving of a part of a prescribed duty due to necessity is not a strange or unusual matter, and Allah Almighty knows best. (T)

(1) Badai' as-Sanai', section on conditions for the validity of Masah etc., H.M. Saeed Company, Karachi 1/13 (2) Hilya

फतावा रज़विया - खंड 3

इमाम अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि जब पट्टियों पर मसह छोड़ दिया जाए और यह मसह नुकसान पहुँचाता हो, तो यह उसके लिए काफी होगा (यानी जायज़ होगा)। और इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद (रहिमतुल्लाहु अलैहिमा) फरमाते हैं: जब मसह से कोई नुकसान न हो, तो उसे छोड़ना जायज़ नहीं है। अतः इमाम अबू हनीफा का हुक्म एक स्थिति में है और साहिबैन (दोनों शिष्यों) का हुक्म दूसरी स्थिति में। इसलिए कोई मतभेद स्पष्ट नहीं हुआ। इसमें कोई मतभेद नहीं है कि जब पट्टियों पर मसह करने से नुकसान होता हो, तो मसह का हुक्म गिर जाता है (माफ़ हो जाता है), क्योंकि मजबूरी (उज़्र) के कारण तो धोना भी माफ़ हो जाता है, तो मसह तो और भी बेहतर तरीके से माफ़ होगा। (1) - और 'हुलिया', वज़ू और ग़ुस्ल के अध्याय में 'अस्ल' (मब्सूत) के हवाले से है: "जब कोई जनाबत का ग़ुस्ल करे और अपने हाथ पर बँधी हुई पट्टियों पर पानी से मसह कर ले या मसह करने की सूरत में अपनी जान के ख़तरे की वजह से मसह भी न करे, तो जायज़ है।" 'हुलिया' में कहा गया है: "मब्सूत में यह मसला किसी के नाम के बिना सामान्य रूप से ज़िक्र किया गया है।" (2) यानी इस तरह यह बताया गया है कि यह सभी बुज़ुर्गों का कथन है। तो यह साबित हुआ कि ज़रूरत की वजह से किसी निर्धारित कार्य का हिस्सा गिर जाना कोई आश्चर्यजनक या अजीब बात नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

(1) बदाइ-उस-सनाइ, मसह की जवाज़ की शर्तों का बयान आदि, एच.एम. सईद कंपनी, कराची 1/13 (2) हुलिया

पेज 518/756

عن ابی حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ انہ اذا ترک المسح علی الجبائر وذلک یضرہ اجزأہ وقال ابو یوسف ومحمد رحمہما اللہ تعالٰی اذا کان ذلک لایضرہ لم یجز فخرج جواب حنیفۃ فی صورۃ وخرج جوابھما فی صورۃ اخری فلم یتبین الخلاف ولا خلاف فی انہ اذا کان المسح علی الجبائر یضرہ انہ یسقط عنہ المسح لان الغسل یسقط بالعذر فالمسح اولی 1 اھ۔ فرماتے ہیں: "امام محمد نے کتاب الصلوٰۃ میں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت ذکر فرمائی ہے کہ جب پٹیوں پر مسح ترک کر دے اور یہ مسح ضرر رساں رہا ہو تو یہ اس کے لئے کفایت کر جائے گا (جائز ہوگا) اور امام ابویوسف وامام محمد رحمتہ اللہ تعالٰی علیہما فرماتے ہیں: جب مسح سے ضرر نہ ہو تو (مسح چھوڑنا) جائز نہیں۔ تو امام ابوحنیفہ کا حکم الگ صورت میں ہے اور صاحبین کا حکم دوسری صورت میں۔ اس لئے کوئی اختلاف ظاہر نہ ہوا۔ اس میں کوئی اختلاف نہیں کہ جب پٹیوں پر مسح سے ضرر ہوتا ہو تو اس سے مسح ساقط ہے اس لئے کہ عذر کی وجہ سے تو دھونا بھی ساقط ہو جاتا ہے تو مسح بدرجہ اولٰی ساقط ہوگا"۔ اھ (ت)

وفی الحلیۃ فی باب الوضوء والغسل من الاصل اذا اغتسل من الجنابۃ ومسح بالماء علی الجبائر التی علی یدہ اولم یمسح لانہ یخاف علی نفسہ ان مسحہ یجزئہ قال فی الحلیۃ ذکرہ مطلقاً من غیران یضیفہ الی احد 2 اھ ای فافاد انہ قول الکل فثبت ان سقوط بعض الوظیفۃ لاجل الضرورۃ غیر غریب واللہ تعالٰی اعلم۔ اور حلیہ باب الوضوء والغسل میں اصل (مبسوط) کے حوالے سے ہے: "جب غسلِ جنابت کرے اور اپنے ہاتھ پر بندھی ہوئی پٹیوں پر پانی سے مسح کر لے یا بصورت مسح اپنی ذات پر خطرے کی وجہ سے مسح بھی نہ کرے تو جائز ہے"۔ حلیہ میں فرمایا ہے: "مبسوط میں یہ مسئلہ کسی کی طرف انتساب کے بغیر مطلقاً مذکور ہے" اھ یعنی اس طرح یہ افادہ فرمایا ہے کہ یہ

سبھی حضرات کا قول ہے تو ثابت ہوا کہ ضرورت کی وجہ سے مقررہ عمل کا جز ساقط ہو جانا کوئی حیرت انگیز اور غریب امر نہیں، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

1 بدائع الصنائع مطلب شرائط جواز المسح الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۳ 2 حلیہ صفحہ 518/756

Fatawa Ridawiyyah Volume 3

In short, it is proven that the school's stance is that in this situation, one should perform ghusl (bath) and wudu (ablution), and wiping (mash) is exempt; acting upon the narration of tayammum (dry ablution) is not permissible. Therefore, we have not included it in the count. Success is from Allah, and all praise is due to Allah.

(156) In number 88 from Durr al-Mukhtar, it was mentioned that if an eye surgery was performed and the doctor advised remaining lying flat, prayer should be offered with gestures. I say: If ghusl is required, then tayammum is obvious, and this is number 41. Similarly for wudu when there is no one to assist, or if an assistant demands an excessive fee, or the person cannot afford it, and this covers numbers 42 to 45. However, a subtle case arises here: an assistant to help with wudu is present, but the bed frame is impure while the bedding is pure; by performing wudu, the bedding beneath the person's limbs would become impure. In this case as well, one should perform tayammum. And Allah Almighty knows best.

(157) Water is present but insufficient for the required purification; perform tayammum. For example, if a bath is needed and there is only enough water for wudu, then perform only tayammum, because performing wudu—i.e., washing the limbs of wudu—will not count as ghusl, while tayammum will purify the entire body. Therefore, performing wudu with that water is wasting it. Here, 'sufficiency' refers to meeting the obligatory amount; for example, if there is enough water for one gargle, one rinse of the nose, and one wash over the entire body for ghusl, or enough for one wash of each part for wudu, then tayammum is not permissible. This is why we specified 'water sufficient for obligatory purification'.

Imam Malik al-Ulama states:

[Box 1] Arabic: When a person in a state of ritual impurity (junub) finds only enough water for wudu, then according to us, performing tayammum is sufficient for them. This is because the command is for ghusl that permits prayer, and water whose presence does not permit prayer is like non-existent water, similar to when water is available but impure. Another reason is that when ghusl does not yield the benefit of permitting prayer, engaging in it is foolishness, along with the waste of water, which is prohibited. (End of quote)

In Durr al-Mukhtar:

[Box 2] Arabic: What nullifies [tayammum] is the availability of water sufficient for purification, even if only once per part. (End of quote)

1. Badai' al-Sanai', Chapter on the conditions of the pillar of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/50
2. Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press Egypt 1/186 to 187.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

संक्षेप में, यह सिद्ध होता है कि पंथ का यही मत है कि इस स्थिति में ग़ुस्ल और वज़ू करे और मसह माफ़ है; उस रिवायत के अनुसार तैयममुम पर अमल करना जायज़ नहीं है। इसलिए हमने इसे गिनती में नहीं लिया। सफलता अल्लाह की ओर से है और सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है।

(156) नंबर 88 में 'दुर्र-ए-मुख्तार' से गुज़रा कि अगर आँख का ऑपरेशन कराया गया हो और डॉक्टर ने चित लेटे रहने को कहा हो, तो नमाज़ इशारों से पढ़े। मैं कहता हूँ: अगर ग़ुस्ल की ज़रूरत हो, तो तैयममुम ज़ाहिर है और यह नंबर 41 है। इसी तरह वज़ू में भी, जबकि कोई वज़ू कराने वाला न हो, या वह ज़्यादा मज़दूरी माँगे, या व्यक्ति वह देने में समर्थ न हो, और यह नंबर 42 से 45 है। मगर यहाँ एक सूक्ष्म सूरत यह निकलती है कि वज़ू कराने वाला तो मौजूद है, लेकिन पलंग नापाक (अशुद्ध) है और बिछौना पाक है; वज़ू करने से बिछौना, जो उसके अंगों के नीचे है, नापाक हो जाएगा। ऐसी स्थिति में भी तैयममुम करे। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(157) पानी है मगर आवश्यक शुद्धता के लिए पर्याप्त नहीं है, तो तैयममुम करे। उदाहरण के लिए, नहाना है और पानी केवल वज़ू के लायक है, तो केवल तैयममुम करे, क्योंकि वज़ू करने यानी वज़ू के अंगों को धोने से ग़ुस्ल नहीं उतरेगा और तैयममुम पूरे शरीर को शुद्ध कर देगा। अतः उस पानी से वज़ू करना उसे ज़ाया करना है। यहाँ पर्याप्त होने से तात्पर्य फ़र्ज़ की मात्रा के लिए पर्याप्त होना है। उदाहरण के लिए, इतना पानी है कि ग़ुस्ल में एक बार कुल्ली, एक बार नाक में पानी डालने और एक बार पूरे शरीर पर बहाने के लिए पर्याप्त है, या वज़ू में प्रत्येक अंग को एक-एक बार धोने के लिए पर्याप्त है, तो तैयममुम नहीं हो सकता। इसी कारण हमने 'फ़र्ज़ पाकी (शुद्धता) के लिए पर्याप्त पानी' कहा है।

इमाम मलिक-उल-उलमा फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 1] अरबी: जब जुनुब (अशुद्धि की अवस्था वाले व्यक्ति) को केवल इतना पानी मिले जिससे वह केवल वज़ू कर सके, तो हमारे निकट उसके लिए तैयममुम कर लेना पर्याप्त है। इसका कारण यह है कि उसे उस ग़ुस्ल का आदेश है जिससे नमाज़ हो जाए, और जिस पानी की मौजूदगी नमाज़ का अधिकार नहीं दिला सकती, वह न होने के समान है, जैसे कि पानी हो मगर नापाक हो। दूसरा कारण यह भी है कि जब ग़ुस्ल से नमाज़ की अनुमति का लाभ प्राप्त नहीं होता, तो उसमें व्यस्त होना मूर्खता है, साथ ही पानी की बर्बादी भी, जो हराम (वर्जित) है। (अंत)

'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

[बॉक्स 2] अरबी: तैयममुम को तोड़ने वाली चीज़ ऐसे पानी पर सामर्थ्य है जो शुद्धिकरण के लिए पर्याप्त हो, चाहे अंगों को एक-एक बार ही धोना पड़े। (अंत)

1. बदाए-उस-सनाए, तैयममुम के रुकन की शर्तों का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/50
2. अद-दुर्र-उल-मुख्तार मअ अश-शामी, तैयममुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस मिस्र 1/186 से 187।

पृष्ठ 519 / 756

غرض ثابت ہوا کہ مذہب یہی ہے کہ اس صورت میں غسل و وضو کرے اور مسح معاف ہے اُس روایت تیمم پر عمل جائز نہیں ولہذا ہم نے اسے شمار میں نہ لیا وباللہ التوفیق وللہ الحمد۔

(۱۵۶) نمبر ۸۸ میں دُر مختار سے گزرا کہ اگر آنکھ قدح کرائی اور طبیب نے چت لیٹے رہنے کو کہا ہے نماز اشاروں سے پڑھے اقول: تو اگر غسل کی حاجت ہو تیمم خود ظاہر ہے اور یہ نمبر ۴۱ ہے یوں ہی وضو میں جبکہ کوئی کرادینے والا نہ ہو یا وہ اُجرت زیادہ مانگے یا یہ قادر نہ ہو اور یہ نمبر ۴۲ تا ۴۵ ہے مگر ایک صورت دقیق یہاں اور نکلے گی کہ وضو کرانے والا موجود ہے لیکن پلنگ ناپاک اور بچھونا پاک ہے وضو کرنے سے بچھونا کہ اس کے اعضاء کے نیچے ہے ناپاک ہو جائے گا تو اب بھی تیمم کرے واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۱۵۷) پانی ہے مگر طہارت مطلوبہ کیلئے کافی نہیں تیمم کرے مثلاً نہانا ہے اور صرف وضو کے قابل پانی ہے تو فقط تیمم کرے کہ وضو کرنے یعنی اعضائے وضو دھونے سے غسل نہ اترے گا اور تیمم سارے بدن کو پاک کر دیگا تو وضو کرنا اس پانی کا ضائع کرنا ہے یہاں کفایت سے مراد قدر فرض کو کافی ہے مثلاً اتنا پانی ہے کہ غسل میں ایک بار کلی ایک بار ناک میں پانی ڈالنے ایک بار سارے بدن پر بہانے یا وضو میں ایک ایک بار کیلئے کافی ہے تیمم نہیں ہو سکتا اسی واسطے ہم نے فرض طہارت کیلئے کافی پانی کہا۔

امام ملک العلماء فرماتے ہیں:

الجنب اذا وجد من الماء قدر ما یتوضوء بہ لاغیر اجزأہ التیمم عندنا لان المأمور بہ الغسل المبیح للصلاۃ والذی لا یبیح وجودہ عدم کمالوکان الماء نجسا ولان الغسل اذا لم یفد الجواز کان الاشتغال بہ

سفھا مع (1) ان فیہ تضییع الماء وانہ حرام 1- جنب کو جب اتنا ہی پانی ملے جس سے صرف وضو کرسکتا ہو تو ہمارے نزدیک اس کیلئے تیمم کر لینا کافی ہے اس لئے کہ اسے حکم تو اس غسل کا ہے جس سے نماز ہو جائے اور جس پانی کا وجود نماز کا جواز نہیں لا سکتا وہ عدم کے درجہ میں ہے جیسے اس صورت میں جب کہ پانی ہو مگر نجس ہو، دوسری وجہ یہ بھی ہے کہ جب غسل سے جواز نماز کا فائدہ حاصل نہیں ہوتا تو اس میں مشغولیت بیوقوفی ہے ساتھ ہی پانی کی بربادی بھی جو حرام ہے۔ "۔ اھ (ت)

در مختار میں ہے:

ناقضہ قدرۃ ماء کاف لطھرہ ولو مرۃ مرۃ 2 تیمم توڑنے والی چیز ایسے پانی پر قدرت ہے جو طہارت کیلئے کفایت کر سکے اگرچہ ایک ایک بار۔ (ت)

1 بدائع الصنائع فصل فی شرائط رکن التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۵۰ 2 الدر المختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱ / ۱۸۶ تا ۱۸۷

Fatawa-e-Razwiya Volume 3

Therefore, if someone performed tayammum due to the unavailability of water, and then found enough water such that they could wash their face, hands, and one foot once each, and the water then ran out, their tayammum is not broken because this amount of water was not sufficient for a complete wudu. However, if they washed their limbs twice each, and the water ran out before the wudu was completed, but washing each limb only once would have been sufficient, then the tayammum is broken. It is stated in Khulasa, Bahr, and Shami:

[Arabic Quote]: "If he washed every limb twice or thrice such that water became insufficient for one foot, his tayammum is invalidated. This is the preferred view. Because if he had restricted himself to washing once, the water would have sufficed."

[Urdu Translation/Explanation]: "If he washed every limb two or three times with this water such that the water decreased for washing one foot, then his tayammum is broken. This is the preferred view. Because if he had limited himself to washing once, the water would have been sufficient. (T)"

(158) A person who is far from a settlement, whether a traveler or a non-traveler like a hunter, etc., has set up a tent at a distance of a mile or two from water, and someone else placed water in another part of his tent where he himself is not present, or he himself placed it there. Or, for example, he is riding a camel, even if he has gone a mile or two away from the city for some work, and the water-skin is hanging towards the camel's tail. Or he is driving the camel from behind and the water-skin is at the front, or he is walking ahead holding the nose-string, whether the water is towards the camel's neck or its tail. Similarly, if he is riding in a carriage and the water is in the seat area (machi), or he is driving the carriage and the water is in the carriage's basket (khatola). In short, the water is not in a place that is within his sight or whose presence would be unlikely to be forgotten according to habit. In all these cases, when the time for prayer arrives...

[Annotation 'ah']: The scholars have ruled that since water was sufficient for washing once, the tayammum is broken. I (the author) say as a condition: If washing once would be sufficient, then tayammum is broken. I say: The reason for this is that the scholars mentioned the scenario of washing twice and having one foot left over; in this case, certainly, if washed once, the water would have been sufficient and even leftover. I have kept this a general scenario for all cases where water runs out before wudu is complete. This will also include the scenario where washing even once would

not suffice; for example, if he washed the face and the right hand twice and no water remained, then this water would not have sufficed even for washing once, as washing one hand twice would have sufficed for both hands, but washing the face once would not suffice for both feet. Therefore, this qualification was necessary. 12 Minhu Ghaffara lahu. (T)

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/187.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3

इसलिए, यदि पानी न मिलने पर तयम्मुम किया गया था और अब पानी इतना मिला कि एक-एक बार चेहरा, हाथ और एक पैर धो लिया गया और पानी समाप्त हो गया, तो तयम्मुम नहीं टूटा क्योंकि यह पानी वज़ू के लिए पर्याप्त नहीं था। लेकिन यदि उसने अंगों को दो-दो बार धोया और वज़ू पूरा होने से पहले पानी समाप्त हो गया, जबकि एक-एक बार धोना पर्याप्त होता, तो तयम्मुम टूट गया। 'खुलासा', 'बहर' और 'शामी' में है:

[अरबी उद्धरण]: "لو غسل به کل عضو مرتین او ثلاثا فنقص عن احدی رجلیه انتقض تیممه هو المختار عه لانه لو اقتصر علی المرة کفاه" (यदि उसने प्रत्येक अंग को दो या तीन बार धोया जिससे एक पैर धोने के लिए पानी कम हो गया, तो उसका तयम्मुम टूट गया। यही चुनी हुई राय है। क्योंकि यदि वह केवल एक बार धोने तक ही सीमित रहता, तो पानी पर्याप्त होता।)

[उर्दू अनुवाद/स्पष्टीकरण]: "यदि इस पानी से प्रत्येक अंग को दो या तीन बार धोया कि एक पैर धोने के लिए पानी घट गया तो उसका तयम्मुम टूट गया। यही मुख्तार (मान्य मत) है। इसलिए कि अगर एक बार धोने पर इक्तिफ़ा (संतोष) करता तो पानी किफ़ायत कर जाता। (त)"

(158) जो आबादी से दूर है, चाहे वह यात्री हो या शिकारी आदि जैसा गैर-यात्री, उसने पानी से एक या दो मील की दूरी पर तंबू लगाया है और किसी और ने उसके तंबू के दूसरे हिस्से में पानी रखा है जहाँ वह स्वयं नहीं है, या उसने स्वयं ही रखा था। या उदाहरण के लिए, वह ऊँट पर सवार है, भले ही वह किसी काम से शहर से एक-दो मील दूर चला गया हो, और पानी की मशक पूँछ की ओर लटकी हुई है। या वह पीछे से ऊँट को हाँक रहा है और मशक आगे की ओर है, या वह नकेल पकड़कर आगे चल रहा है, अब चाहे पानी ऊँट की गर्दन की तरफ हो या पूँछ की तरफ। इसी तरह, यदि वह गाड़ी में सवार है और पानी माची में है, या गाड़ी हाँक रहा है और पानी गाड़ी के खटोले में है। संक्षेप में, पानी ऐसी जगह नहीं है कि उसकी नज़र में हो या जिसे भूलना आदत के ख़िलाफ़ हो। इन सभी स्थितियों में जब नमाज़ का समय...

[टिप्पणी 'अह']: विद्वानों ने नियम दिया है कि चूँकि पानी एक बार धोने के लिए पर्याप्त था, इसलिए तयम्मुम टूट गया। मैं (लेखक) एक शर्त के रूप में कहता हूँ: यदि एक-एक बार धोना पर्याप्त होता, तो तयम्मुम टूट गया। अक़ौल (मैं कहता हूँ): इसका कारण यह है कि विद्वानों ने दो-दो बार धोने और एक पैर बाकी रह जाने की स्थिति का उल्लेख किया है; इस स्थिति में निश्चित रूप से यदि एक बार धोया

जाता, तो पानी पर्याप्त होता बल्कि बच भी जाता। मैंने सभी स्थितियों के लिए इसे सामान्य रखा है जहाँ वज़ू पूरा होने से पहले पानी समाप्त हो जाता है। इसमें वह स्थिति भी शामिल होगी जहाँ एक बार धोना भी पर्याप्त न हो; उदाहरण के लिए, यदि उसने चेहरा और दायाँ हाथ दो बार धोया और पानी नहीं बचा, तो यह पानी एक बार धोने के लिए भी पर्याप्त नहीं होता क्योंकि एक हाथ को दो बार धोना दोनों हाथों के लिए पर्याप्त हो जाता, और चेहरे का एक बार धोना दोनों पैरों के लिए पर्याप्त न होता। इसलिए, इस स्पष्टीकरण की आवश्यकता थी। 12 मिन्हु गफ़र लहू। (त)

---

1. रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/187.

ولہٰذا اگر پانی نہ پانے پر تیمم کیا تھا اور اب پانی اتنا ملا کہ ایک ایک بار منہ ہاتھ اور ایک پاؤں دھولیا اور پانی ختم ہو گیا تیمم نہ ٹوٹا کہ یہ پانی وضو کو کافی نہ تھا اور اگر اس نے دو دو بار اعضاء دھوئے اور وضو پورا ہونے سے پہلے پانی ختم ہو گیا لیکن اگر ایک ایک بار دھونا تو کافی ہوتا تو تیمم ٹوٹ گیا۔ خلاصہ وبحر وشامی میں ہے:

[عربی اقتباس]: لو غسل به کل عضو مرتین او ثلاثا فنقص عن احدی رجلیه انتقض تیممه هو المختار عه لانه لو اقتصر علی المرة کفاه

[اردو ترجمہ/تشریح]: اگر اس پانی سے ہر عضو دو یا تین بار دھویا کہ ایک پاؤں دھونے کیلئے پانی گھٹ گیا تو اس کا تیمم ٹوٹ گیا۔ یہی مختار ہے۔ اس لئے کہ اگر ایک بار دھونے پر اکتفا کرتا تو پانی کفایت کرجاتا۔ (ت)

(۱۵۸) جو آبادی سے دُور ہے مسافر خواہ غیر مسافر مثل شکاری وغیرہ اُس نے پانی سے میل دو میل فاصلہ پر خیمہ لگایا اور پانی اُس کے خیمہ کے دوسرے حصے میں جس میں یہ خود نہیں کسی نے رکھوایا یا خود اسی نے رکھا تھا یا یہ مثلاً اونٹ پر سوار ہے اگرچہ کسی کام ہی کیلئے شہر سے میل دو میل دُور ہو گیا ہو اور پانی کی پکھال اپنی ہی لٹکائی ہوئی دُم کی طرف ہے یا یہ اونٹ کو پیچھے سے ہانک رہا ہے اور پکھال آگے کی جانب ہے یا نکیل پکڑے آگے چل رہا ہے اب چاہے پانی اونٹ کی گردن کی طرف ہو خواہ دُم کی جانب۔ یونہی اگر یہ گاڑی میں سوار ہے اور پانی ماچی میں ہے یا گاڑی ہانک رہا ہے اور پانی گاڑی کے کھٹولے میں ہے غرض پانی

ایسی جگہ نہیں کہ اس کے پیش نظر ہو یا جس کا بھولنا عادت سے بعید ہو ان سب صورتوں میں جب نماز کا وقت

عہ علماء نے حکم لگایا کہ ایک ایک بار کو پانی کافی تھا لہٰذا تیمم ٹوٹ گیا اور فقیر نے بطور شرط کہا کہ اگر ایک ایک بار دھونے کو کافی ہوتا تو تیمم ٹوٹ گیا اقول: اس کی وجہ یہ ہے کہ علماء نے دو دو بار دھونے اور ایک پاؤں باقی رہ جانے کی صورت ذکر فرمائی اس صورت میں یقیناً اگر ایک ایک بار دھوتا پانی کافی ہوتا بلکہ بچ رہتا، اور فقیر نے استیعاب صور کیلئے یہ مطلق صورت رکھی کہ وضو تمام ہونے سے پہلے ختم ہو گیا، اس میں وہ صورت بھی نکلے گی کہ ایک ایک بار دھونے کو بھی پانی کفایت نہ کرتا مثلاً دو بار منہ دھویا اور دو بار داہنا ہاتھ اور پانی نہ رہا تو یہ پانی ایک ایک بار میں بھی کفایت نہ کرتا کہ ایک ہاتھ کا تو دو بار دونوں ہاتھوں کو کافی ہو جاتا اور منہ کا ایک بار دونوں پاؤں کو کفایت نہ کرتا لہٰذا اس تقیید کی حاجت ہوئی ۱۲ منہ غفر لہ۔ (ت)

---

1 رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۷

Fatawa Razawiyya Volume 3

Whether he did not remember the water or thought that he was a mile or more away from water, performed Tayammum and prayed, the prayer is valid. This situation is also a mercy from the pure Shariah due to the inability to access water, to the extent that if he remembers immediately after the Salaam that water is kept here or that he himself had kept it, there is still no need to repeat the prayer. Yes, if he remembers during the prayer, it is necessary to break the intention, perform Wudu, and pray. Similarly, if the water is in front of him or in a place where a person normally does not forget it, for example, a water-skin on his back or water kept in front while riding or hung behind the camel while driving it from behind, then certainly such forgetfulness is not valid, and it is mandatory to perform Wudu and pray again. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

(He prayed) who is not in a populated area with Tayammum (and forgot the water in his baggage), and it is something that is normally forgotten (there is no repetition for him), even if (1) he thought the water was finished, he must repeat by consensus, as if he forgot it on his neck or his back or in front of him while riding or behind him while driving. 1-

A person who is not in a populated area, prayed with Tayammum and forgot water in his tent/luggage, and it is in such a place where a person normally forgets, then he does not have to repeat the prayer. And if he thought the water was finished, then by consensus, he must repeat the prayer, just as in the case where water is on his neck or back (in a hanging water-skin) or while riding, it is in its front part, or while driving, it is in the rear part of the ride and he forgets, then repetition is required. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar:

His saying "who is not in a populated area" means whether he is a traveler or a resident, [as cited by] Minah and Nuh Afandi from the commentary of Al-Jami' by Fakhr al-Islam. As for the one who is in a populated area, repetition is obligatory for him because water is usually present in populated areas, so it was necessary for him to seek it there. The same applies to a place near a populated area as we mentioned earlier. It is apparent that tents are like populated areas because the settlement of Bedouins...

His saying "who is not in a populated area" means whether he is a traveler or a resident, Minah and Nuh Afandi, citing the commentary of Al-Jami' by Fakhr al-Islam. But for the one who is in a populated area, repetition is obligatory because water is mostly present in populated areas, so it was mandatory for him to search for it there. Similarly, the ruling applies to a place near a populated area as we stated before. It is apparent that tents are also in the category of populated areas because their...

1. Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi Press, Egypt, Vol 1, pp. 182-183.

फतवा रज़विया जिल्द 3

चाहे उसे पानी याद न रहा या उसने सोचा कि मैं पानी से एक मील या उससे अधिक दूर हूँ, तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ ली, तो नमाज़ हो गई। यह स्थिति भी शरीयत-ए-मुतहरा की रहमत से पानी से लाचारी की रखी गई है, यहाँ तक कि अगर सलाम फेरते ही याद आया कि पानी तो यहाँ रखा हुआ है या मैंने खुद ही तो रखा था, तब भी नमाज़ दोहराने की ज़रूरत नहीं है। हाँ, अगर नमाज़ के दौरान याद आए तो लाज़िम है कि नियत तोड़ दे और वज़ू करके नमाज़ पढ़े। इसी तरह पानी अगर उसके सामने हो या ऐसी जगह हो जहाँ रखा हुआ आदमी आमतौर पर नहीं भूलता, मिसाल के तौर पर अपनी पीठ पर मश्क या सवारी की हालत में आगे रखा हुआ पानी या पीछे से हाँकने की सूरत में ऊँट के पीछे लटकाया हुआ पानी, तो यकीनन ऐसी भूल मान्य नहीं है, और वज़ू करके फिर से नमाज़ पढ़ना लाज़िम है। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

(उसने नमाज़ पढ़ी) जो आबादी में नहीं है तयम्मुम से (और अपने सामान में पानी भूल गया) और यह ऐसी चीज़ है जो आमतौर पर भूल जाती है (उस पर कोई दोहराव नहीं है), भले ही (1) उसने सोचा कि पानी खत्म हो गया है, तो सर्वसम्मति से दोहराना होगा जैसे कि वह उसे अपनी गर्दन या पीठ पर या अपने आगे सवार होते हुए या अपने पीछे हाँकते हुए भूल गया हो। 1- ऐसा व्यक्ति जो आबादी में नहीं है, उसने तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली और पानी अपने खेमे/सामान में भूल गया और यह ऐसी जगह है जहाँ आदमी आमतौर पर भूल जाता है, तो उस पर नमाज़ का दोहराव नहीं है। और अगर यह गुमान था कि पानी खत्म हो गया है तो सर्वसम्मति से नमाज़ का दोहराव है, जैसे इस सूरत में कि पानी उसकी गर्दन या पीठ पर (लटकती हुई मश्क में) हो या सवार होने की हालत में उसके आगे के हिस्से में हो या हाँकते वक्त सवारी के पिछले हिस्से में हो और भूल जाए तो दोहराव है। (त)

रद्द-अल-मुह्तार में है:

उनका कथन "जो आबादी में नहीं है" यानी चाहे वह मुसाफिर हो या मुकीम (निवासी), मिनाह और नूह अफ़ंदी ने 'शरह अल-जामी' अज़ फख्र अल-इस्लाम के हवाले से कहा। लेकिन जो आबादी में है, तो उस पर दोहराव वाजिब है क्योंकि आबादी में अक्सर पानी मौजूद रहता है, इसलिए उसे वहाँ तलाश कर लेना लाज़िम था। इसी तरह आबादी के करीब के स्थान का भी यही हुक्म है जैसा कि हमने पहले बयान किया। और ज़ाहिर यह है कि खेमे भी आबादी ही के दर्जे में हैं क्योंकि बद्दूओं का निवास...

उनका कथन "जो आबादी में नहीं है" यानी चाहे मुसाफिर हो या मुकीम, मिनाह और नूह अफ़ंदी ने फख्र अल-इस्लाम की शरह जामी के हवाले से कहा। लेकिन जो आबादी में है तो उस पर दोहराव वाजिब है क्योंकि आबादी में अक्सर पानी मौजूद रहता है तो उसे तलाश कर लेना लाज़िम था इसी तरह आबादी से करीब मुकाम का भी हुक्म है जैसा कि इसे हमने पहले बयान किया और ज़ाहिर यह है कि खेमे भी आबादी ही के दर्जे में हैं इसलिए कि उन...

1. अद-दुर्र अल-मुख्तार मा अल-शामी, बाब अत-तयम्मुम, मतबा मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/182 से 183।

آیا اسے پانی یاد نہ رہا یہ خیال کیا کہ میں پانی سے میل بھر یا زیادہ دُور ہوں تیمم کیا اور نماز پڑھ لی نماز ہوگئی۔ یہ صورت بھی شریعت مطہرہ کی رحمت نے پانی سے عجز کی رکھی ہے یہاں تک کہ اگر سلام پھیرتے ہی یاد آیا کہ پانی تو یہاں رکھا ہوا ہے یا میں نے خود ہی تو رکھا تھا جب بھی نماز پھیرنے کی حاجت نہیں، ہاں اگر نماز میں یاد آئے تو لازم ہے کہ نیت توڑ دے اور وضو کرکے نماز پڑھے یوں ہی پانی اگر اس کے پیشِ نظر یا ایسی جگہ ہے جہاں کار کھا ہوا آدمی عادۃً نہیں بھولتا مثلاً اپنی پیٹھ پر مشک یا سواری کی حالت میں آگے رکھا ہوا پانی یا پیچھے سے ہانکنے کی صورت میں اونٹ کے پیچھے لٹکایا ہوا پانی تو بیشک ایسی بھول معتبر نہیں نماز و وضو کرکے پھر پڑھنی لازم درمختار میں ہے:

(صلی) من لیس فی العمران بالتیمم (ونسی المآء فی رحلہ) وھو مما ینسی عادۃ (لا اعادۃ علیہ) ولو (۱) ظن فناء المآء اعاد اتفاقاً کما لو نسیہ فی عنقہ او ظھرہ او فی مقدمہ راکبا او مؤخرہ سائقا ۱۔

ایسا شخص جو آبادی میں نہیں اس نے تیمم سے نماز پڑھ لی اور پانی اپنے خیمہ میں بھول گیا اور یہ ایسی جگہ ہے کہ عادۃً آدمی بھول جاتا ہے تو اس پر نماز کا اعادہ نہیں اور اگر یہ گمان تھا کہ پانی ختم ہو گیا ہے تو بالاتفاق نماز کا اعادہ ہے جیسے اس صورت میں کہ پانی اس کی گردن یا پشت پر (سے لٹکی ہوئی مشک میں) ہو یا سوار ہونے کی حالت میں اس کے آگے حصے میں ہو یا ہانکتے وقت سواری کے پچھلے حصے میں ہو اور بھول جائے تو اعادہ ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

قوله من ليس فی العمران ای سواء كان مسافرا او مقيما منح ونوح افندی عن شرح الجامع لفخر الاسلام اما من فی العمران فتجب عليه الاعادة لان العمران يغلب فيه وجود الماء فكان عليه طلبه فيه وكذا فيما قرب منه كمقدمناه والظاهر ان الاخبية بمنزلة العمران لان اقامة الاعراب

ان کا قول "جو آبادی میں نہیں" یعنی خواہ مسافر ہو یا مقیم منح و نوح آفندی بحوالہ شرح جامع از فخر الاسلام۔ لیکن جو آبادی میں ہے تو اس پر اعادہ واجب ہے اس لئے کہ آبادی میں اکثر پانی موجود رہتا ہے تو اسے تلاش کرلینا لازم تھا اسی طرح آبادی سے قریب مقام کا بھی حکم ہے جیسا کہ اسے ہم نے پہلے بیان کیا اور ظاہر یہ ہے کہ خیمے بھی آبادی ہی کے درجہ میں ہیں اس لئے کہ ان

1 الدرالمختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱۸۲/۱ تا ۱۸۳

Fatawa Razawiyya - Volume 3

[Arabic Section Translation] In them [the tents], they do not stay without water, so water is mostly present there too. Based on this, there is an objection to their statement: "Whether he is a traveler or a resident." So, it should be reflected upon. [End quote] I say: Being near habitation is not (1) a condition for a resident, nor is it for one who goes out to collect wood or grass or to hunt and stays a mile away from the city; he is still a resident for whom Tayammum is permissible, as explicitly stated in Al-Khaniyya and others, and the statement has already passed. They did not mean by it someone urban in his city, or rural in his village, or a Kurd in his tent, so that an objection arises. Then [Allama Shami] (may Allah the Almighty have mercy on him) said: "Ar-Rahl" for a camel is like "As-Sarj" for a riding beast, and it is also called the dwelling and abode of a human. From this is "He forgot the water in his dwelling" [Maghrib]. However, their statement "if the water was in the rear part of the Rahl" indicates that the first meaning is intended [Bahr]. I say: It appears that what is meant is whatever water is usually placed in, because it is a singular noun in a possessive construction, so it includes every "Rahl", whether it is a dwelling or a camel's saddle. Restricting it to one of them is something for which there is no evidence [Nahr]. [End quote]

[Urdu Section Translation] ...in them, the Bedouins do not live without water, so in these tents too, water is mostly present. In view of this, there is an objection in this phrase of the jurists "whether he is a traveler or a resident," so one should reflect on this. End (t). I say: For being a resident, it is not a condition that one must be close to a settlement. One who goes out to cut wood, or take grass, or for hunting, and becomes a mile away from the city, he is still a resident and Tayammum is permissible for him, as a clear text is present in Al-Khaniyya etc. and the text has already passed. By "resident", someone specifically present in their own city (urban), or in their village (rural), or a Kurd in their tent is not meant, so that there would be an objection to it. Then Allama Shami (may Allah the Almighty have mercy on him) says: "Rahl" (howdah) is for a camel, just as "Sarj" (saddle) is for riding horses etc., and a person's house and abode is also called "Rahl". From this is "nasi al-ma'a fi rahlihi" (he forgot the water in his house - Maghrib). But their this phrase "if the water is in the rear part of the Rahl" tells that by "Rahl" the first meaning (camel's howdah) is intended - Bahr. And I say that by this is meant that in which water is usually kept, because it is a singular possessive, so it will be common for every

"Rahl", whether it is a house or a camel's saddle. And there is no evidence to specify it to any one. - Nahr. End (t).

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/183 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/183

फ़तावा रज़विया - जिल्द ३

[अरबी खंड का अनुवाद] उनमें [तंबुओं में] वे पानी के बिना नहीं रहते, इसलिए वहां भी पानी अक्सर मौजूद रहता है। इसके आधार पर उनके इस कथन पर आपत्ति है: "चाहे वह यात्री हो या निवासी।" इसलिए इस पर गौर किया जाना चाहिए। [उद्धरण समाप्त] मैं कहता हूँ: बस्ती के पास होना (१) निवासी के लिए शर्त नहीं है, और न ही वह जो लकड़ी काटने या घास इकट्ठा करने या शिकार करने के लिए बाहर जाता है और शहर से एक मील दूर रहता है; वह अभी भी एक निवासी है जिसके लिए तयम्मुम जायज है, जैसा कि अल-खानिया और अन्य में स्पष्ट रूप से कहा गया है, और यह बात पहले गुजर चुकी है। उनका मतलब इससे अपने शहर में मौजूद शहरी, या अपने गाँव में मौजूद ग्रामीण, या अपने तंबू में मौजूद कुर्द नहीं था, ताकि आपत्ति पैदा हो। फिर [अल्लामा शामी] (अल्लाह उन पर रहम करे) ने कहा: ऊंट के लिए "अर-राह्ल" वैसा ही है जैसा सवारी के जानवर के लिए "अस-सर्ज", और इसे मनुष्य का निवास और आश्रय भी कहा जाता है। इसी से है "वह अपने निवास में पानी भूल गया" [मग़रिब]। हालाँकि, उनका कथन "यदि पानी राह्ल के पिछले हिस्से में था" इंगित करता है कि पहला अर्थ अभिप्रेत है [बहर]। मैं कहता हूँ: ऐसा प्रतीत होता है कि इससे मुराद वह है जिसमें आमतौर पर पानी रखा जाता है, क्योंकि यह एक मुफ़रद मुज़ाफ़ (एकवचन संबंधवाचक) है, इसलिए इसमें हर "राह्ल" शामिल होगा, चाहे वह निवास हो या ऊंट का कजावा। उनमें से किसी एक के साथ इसे सीमित करने का कोई प्रमाण नहीं है [नहर]। [उद्धरण समाप्त]

[उर्दू खंड का अनुवाद] ...उनमें बद्दू बिना पानी के नहीं रहते, इसलिए इन तंबुओं में भी पानी अक्सर मौजूद रहता है। इसके मद्देनजर, फुक़हा (न्यायविदों) की इस इबारत (वाक्यांश) में कि "चाहे वह मुसाफिर (यात्री) हो या मुकीम (निवासी)" एक पेचीदगी (इश्काल) है, तो इसी में सोच-विचार (तामुल) करना चाहिए। अंत (त)। मैं कहता हूँ: मुकीम (निवासी) होने के लिए यह शर्त नहीं है कि आबादी के करीब ही हो। जो लकड़ी काटने, या घास लेने, या शिकार करने के लिए निकला, और शहर से एक मील दूर हो गया, वह मुकीम ही है और उसके लिए तयम्मुम जायज है जैसा कि खानिया आदि में इसकी स्पष्ट व्याख्या (तसरीह) मौजूद है और इबारत पहले गुज़र चुकी है। मुकीम से अपने खास शहर में मौजूद शहरी, या अपने गांव में मौजूद ग्रामीण, या अपने खेमे (तंबू) में मौजूद कुर्द मुराद (अभिप्राय) नहीं है कि इस पर एतराज (आपत्ति) हो। फिर अल्लामा शामी (अल्लाह उन पर रहम करे) फरमाते हैं: 'राह्ल' (कजावा) ऊंट के लिए होता है जैसे 'सर्ज' (जीन) सवारी के घोड़े आदि के लिए, और आदमी की मंजिल (घर) और ठिकाने को भी 'राह्ल' कहा जाता है। इसी से है "नसी अल-मा-अ फी रहलिही"

(अपनी मंजिल में पानी भूल गया - मग़रिब)। लेकिन उनकी यह इबारत "अगर पानी राह्ल के पिछले हिस्से में हो" बताती है कि राह्ल से मुराद पहला अर्थ (ऊंट का कजावा) है - बहर। और मैं कहता हूं कि इससे मुराद वह है जिसमें आमतौर पर पानी रखा जाता हो, क्योंकि यह मुफ़रद मुज़ाफ़ है, तो हर 'राह्ल' को आम होगा चाहे वह मंजिल हो या ऊंट का कजावा। और किसी एक के साथ खास करने पर कोई दलील (प्रमाण) नहीं। - नहर। अंत (त)।

[पादलेख] १. रद्द अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, १/१८३ २. रद्द अल-मुह्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, १/१८३

पृष्ठ ५२२ / ७५६

فتاوی رضویہ - جلد سوم

[عربی حصہ:] فیها لاتتأتی بدون الماء فوجوده غالب فیها ایضاً وعلیه فیشکل قولهم سواء کان مسافرا او مقیماً فلیتأمل اھ اقول: لیس (۱) من شرط المقیم القرب من العمران اولیس من خرج للاحتطاب اوالاحتشاش اوالاصطیاد و بعد عن المصر میلا فهو مقیم مباح له التیمم کمانص علیه في الخانیة وغیرها وقد تقدم ولم یریدوا به حضریاً في مصره اوقرویا في قریته اوکردیا في خبائه حتی یشکل علیه ثم قال رحمه الله تعالی الرحل للبعیر کالسرح للدابة ویقال لمنزل الانسان ومأواه رحل ایضاً ومنه نسی الماء في رحله مغرب. لکن قولهم لوکان الماء في مؤخرة الرحل یفید ان المراد الاول بحر، اقول الظاہر ان مراد ما یوضع فیه الماء عادة لانه مفرد مضاف فیعم کل رحل سواء کان منزلا اورحل بعیر وتخصیصه بأحدهما مما لابرهان علیه نهر اھـ

[اردو حصہ:] میں اعرابی بغیر پانی کے نہیں رہتے تو ان خیموں میں بھی پانی اکثر موجود ہی رہتا ہے۔ اس کے پیش نظر فقہاء کی اس عبارت میں "کہ خواہ مسافر ہو یا مقیم" اشکال ہے تو اسی میں تامل کرنا چاہئے اھ۔ (ت) اقول : مقیم ہونے کیلئے شرط نہیں کہ آبادی سے قریب ہی ہو جو لکڑی کاٹنے ، یا گھاس لینے ، یا شکار کرنے کیلئے نکلا، اور شہر سے ایک میل دور ہو گیا وہ مقیم ہی ہے اور اس کیلئے تیمم جائز ہے جیسا کہ اس پر خانیہ وغیرہ میں تصریح موجود ہے اور عبارت پہلے گزر چکی ۔ مقیم سے خاص اپنے شہر میں موجود شہری یا اپنے گاؤں میں موجود دیہی یا اپنے خیمہ میں موجود کرد "مراد نہیں کہ اس پر اشکال ہو۔ پھر علامہ شامی رحمہ اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں: رحل (کجاوہ) اونٹ کیلئے ہوتا ہے جیسے سرج (زین) سواری کے گھوڑے وغیرہ کیلئے اور آدمی کی منزل اور ٹھکانے کو بھی رحل کہا جاتا ہے اسی سے ہے "نسی الماء فی رحلہ" (اپنی منزل میں پانی بھول گیا۔ مغرب۔ لیکن ان کی یہ عبارت "اگر پانی رحل کے پچھلے

حصے میں ہو" بتاتی ہے کہ رحل سے مراد پہلا معنی (اونٹ کا کجاوہ) ہے ۔ بحر۔ اور میں کہتا ہوں کہ اس سے مراد وہ ہے جس میں عادۃً پانی رکھا جاتا ہو اس لئے کہ مفرد مضاف ہے تو ہر "رحل" کو عام ہو گا خواہ منزل ہو یا اونٹ کا کجاوہ۔ اور کسی ایک سے خاص کرنے پر کوئی دلیل نہیں۔ نہر ۔ اھ (ت)

[حواشی:] 1 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۳ 2 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۳

Fatawa Razawiyyah Volume 3

I say: Firstly (1) 'Al-Rahl' (2) is not a conceptual homonym (mushtarak ma'nawi) between the two [meanings] to encompass both, but it is a verbal homonym (mushtarak lafzi). That is why it was explained with two distinct definitions, not a single definition that includes both, as heard from 'Al-Maghrib'. It says in 'Al-Misbah al-Munir': 'Al-Rahl' is the saddle for a camel, and 'Rahl al-Shakhs' is his abode during residency (hadar).

And in 'Al-Qamus': 'Al-Rahl' is the camel's saddle like 'Al-Rahool', and your dwelling... etc. Separating it with 'like Al-Rahool' confirms it, for a person's dwelling is not called 'Rahool'. Similarly, in 'Al-Maghrib', the word 'aydan' (also) appears. Likewise, in 'Mukhtar al-Sihah': 'Al-Rahl' is a man's dwelling and the furniture he carries with him, and 'Al-Rahl' is also a camel's saddle (3).

In 'Al-Nihayah' regarding the hadith: 'I moved my rahl last night' where he mounted it from its back side, he metaphoricalized it by saying 'moving his rahl' either intending the house or the saddle which is mounted on the camel, i.e., the 'Kaur' (4). In 'Majma' al-Bihar', it's either quoted as 'al-rahl' meaning the house or 'al-rahl' meaning 'al-kaur', which is for the camel like a saddle is for a horse (5). Similarly in 'Al-Durr al-Nathir'.

I say: Firstly, the word "Rahl" is not a conceptual homonym between the two aforementioned meanings to be common to both; rather, it is a verbal homonym. This is why linguists have given two separate explanations for it. No single explanation has been provided that covers both. As heard with reference to 'Al-Maghrib', it says in 'Al-Misbah al-Munir': "Rahl: a place for riding on a camel - Rahl al-Shakhs: a man's dwelling place in residence."

In 'Al-Qamus', it is: "Rahl: a place for riding on a camel, like 'Rahool', and it also means 'maskan' (dwelling)". Adding "like Rahool" to the first meaning confirms that these two are distinct meanings of the word "Rahl", making it a verbal homonym, because a person's dwelling is not called "Rahool". Similarly, the use of the word 'aydan' (also) in 'Al-Maghrib' supports this. Likewise, 'Mukhtar al-Sihah' says: "Rahl: a man's dwelling, and the luggage/supplies he has with him; and 'Rahl' is also called a camel's saddle." In 'Al-Nihayah' it is stated: "Hadith: 'I moved my rahl last night'..."

Footnotes: 1 Al-Misbah al-Munir, entry 'al-Rahl', Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/238. 2 Al-Qamus al-Muhit, chapter 'Lam', section 'Ra', Mustafa al-Babi Press, Egypt, 3/394. 3

Mukhtar al-Sihah, chapter 'Ra', Mustafa al-Babi Press, Egypt, p. 258. 4 Al-Nihayah by Ibn Athir, entry 'Rahl', Islamia Library, Beirut, 2/209. 5 Majma' Bihar al-Anwar, chapter 'Ra' with 'Ha', printed by Nawal Kishore, Lucknow, 2/473.

फतावा रज़विया जिल्द 3

मैं कहता हूँ: पहले (1) शब्द "रहल" (2) इन दोनों उल्लेखित अर्थों के बीच वैचारिक रूप से सामान्य (मुश्तरक मानवी) नहीं है कि यह दोनों को व्यापक रूप से समाहित करे, बल्कि यह शाब्दिक रूप से सामान्य (मुश्तरक लफ्ज़ी) है। इसीलिए भाषाविदों ने इसके दो अलग-अलग स्पष्टीकरण दिए हैं, कोई एक ऐसा स्पष्टीकरण नहीं दिया है जो दोनों को शामिल करता हो। जैसा कि 'अल-मग़रिब' के संदर्भ से 'अल-मिसबाह अल-मुनीर' में सुना गया है: "रहल: ऊँट पर सवारी करने की जगह - रहल अल-शख़्स: किसी व्यक्ति का निवास स्थान।"

'अल-क़ामूस' में है: "रहल: ऊँट पर सवारी की जगह, जैसे 'राहूल', और इसका अर्थ 'मस्कन' (निवास) भी है।" पहले अर्थ के साथ "जैसे राहूल" जोड़ना इस बात की पुष्टि करता है कि "रहल" शब्द के ये दो अलग-अलग अर्थ हैं, जिनमें यह शाब्दिक रूप से सामान्य है, क्योंकि किसी व्यक्ति के निवास को "राहूल" नहीं कहा जाता है। इसी तरह 'अल-मग़रिब' में 'अइज़न' (भी) शब्द के प्रयोग से भी इस बात की पुष्टि होती है। इसी तरह 'मुख्तार अल-सिहाह' में है: "रहल: एक आदमी का निवास स्थान, और वह सामान जो उसके साथ है; और 'रहल' ऊँट के काठी (कजावे) को भी कहते हैं (3)।"

'अल-निहाया' में हदीस का उल्लेख है: "कल रात मैंने अपना रहल बदल दिया जहाँ वह अपनी पीठ की तरफ से उस पर सवार हुआ" (4)। मजमा अल-बिहार में इसे या तो 'अल-रहल' के रूप में उद्धृत किया गया है जिसका अर्थ घर है या 'अल-रहल' जिसका अर्थ 'अल-कौर' है, जो ऊँट के लिए वैसा ही है जैसे घोड़े के लिए काठी (5)। इसी तरह 'अल-दुर अल-नसीर' में है।

मैं कहता हूँ: पहले, शब्द "रहल" उपरोक्त दो अर्थों के बीच वैचारिक रूप से सामान्य नहीं है कि यह दोनों के लिए समान हो; बल्कि यह शाब्दिक रूप से सामान्य है। इसीलिए भाषाविदों ने इसकी दो अलग-अलग व्याख्याएँ की हैं। कोई एक ऐसी व्याख्या प्रदान नहीं की गई है जो दोनों को कवर करती हो। जैसा कि 'अल-मग़रिब' के संदर्भ में सुना गया है, 'अल-मिसबाह अल-मुनीर' में कहा गया है: "रहल: ऊँट पर सवारी करने का स्थान - रहल अल-शख़्स: निवास में एक आदमी का निवास स्थान।"

'अल-क़ामूस' में है: "रहल: ऊँट पर सवारी करने का स्थान, जैसे 'राहूल', और इसका अर्थ 'मस्कन' (निवास) भी है"। पहले अर्थ के साथ "राहूल जैसा" जोड़ना इस बात की पुष्टि करता है कि ये "रहल" शब्द के दो अलग-अलग अर्थ हैं, जिससे यह एक शाब्दिक समानार्थक बन जाता है, क्योंकि किसी व्यक्ति के निवास को "राहूल" नहीं कहा जाता है। इसी तरह, 'अल-मग़रिब' में 'अइज़न' (भी) शब्द का

उपयोग इसका समर्थन करता है। इसी तरह, 'मुख्तार अल-सिहाह' कहता है: "रहल: एक आदमी का निवास स्थान, और वह सामान/आपूर्ति जो उसके साथ है; और 'रहल' को ऊँट की काठी भी कहा जाता है।" 'अल-निहाया' में कहा गया है: "हदीस: 'कल रात मैंने अपना रहल स्थानांतरित कर दिया'..."

पाद टिप्पणियाँ: 1 अल-मिसबाह अल-मुनीर, शब्द 'अल-रहल', मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/238। 2 अल-क़ामूस अल-मुहीत, अध्याय 'लाम', अनुभाग 'रा', मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 3/394। 3 मुख्तार अल-सिहाह, अध्याय 'रा', मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, पृ. 258। 4 इब्न असीर द्वारा अल-निहाया, शब्द 'रहल', इस्लामिया लाइब्रेरी, बेरूत, 2/209। 5 मजमा बिहार अल-अनवार, अध्याय 'रा' के साथ 'हा', नवल किशोर द्वारा मुद्रित, लखनऊ, 2/473।

فتاوی رضویہ جلد سوم

اقول : اولاً (۱) لیس الرحل (۲) مشترکا معنویاً بینھما لیعم بل مشترك لفظی ولذا فسروہ بالتفسیرین لابتفسیر یشملھما کما سمعت من المغرب وقال فی المصباح المنیر الرحل مرکب للبعیر ورحل الشخص مأواہ فی الحضر ۱ھ وفی القاموس الرحل مرکب للبعیر کالراحول ومسکنك ۲ الخ وفصلہ بقولہ کالراحول یؤکدہ فان مسکن الانسان لایقال لہ راحول وکذلك فی قول المغرب لفظۃ ایضاً ومثلہ فی مختار الصحاح الرحل مسکن الرجل وما یستصحبہ من الاثاث والرحل ایضاً رحل البعیر ۳ اھ وفی النھایۃ حدیث حولت رحلی البارحۃ حیث رکبھا من جھۃ ظھرھا کنی عنہ بتحویل رحلہ اما ان یرید بہ المنزل واما ان یرید الرحل الذي ترکب علیہ الابل وھو الکور ۴ اھـ وفي مجمع البحار اما نقلا من الرحل بمعنی المنزل او من الرحل بمعنی الکور وھو للبعیر کالسرج للفرش ۵ ومثلہ فی الدر النثیر

اقول : اولا لفظ "رحل" مذکورہ دونوں معنوں میں مشترک معنوی نہیں کہ دونوں کو عام ہو بلکہ مشترک لفظی ہے اس لئے اہل لغت نے اس کی دونوں تفسیریں کی ہیں کوئی ایک ایسی تفسیر نہیں کی ہے جو دونوں کو شامل ہو۔ جیسا کہ مغرب کے حوالہ سے سنا المصباح المنیر میں ہے : "رحل: اونٹ پر سوار ہونے کی جگہ - رحل الشخص: حضر میں آدمی کا ٹھکانا اھ"۔ قاموس میں ہے: رحل: اونٹ پر سواری کی جگہ، جیسے راحول اور بمعنی مسکن بھی ہے"۔ پہلے معنی کے ساتھ "جیسے راحول" کا اضافہ اس بات کی تائید کرتا ہے کہ لفظ رحل کے الگ الگ یہ دونوں معنی ہیں جن میں یہ مشترک لفظی ہے) اس لئے کہ انسان کے مسکن کو "راحول" نہیں کہا جاتا۔ اور اسی طرح مغرب میں ایضاً (بھی) کے لفظ سے بھی تائید ہوتی ہے۔ اسی کے مثل مختار الصحاح میں ہے کہ : "رحل: آدمی کا مسکن، اور وہ ساز و سامان جو ساتھ لئے ہو اور رحل اونٹ کے کجاوے کو بھی کہتے ہیں"۔ اھـ نہایتہ میں ہے : "حدیث : حوّلت رحلی البارحۃ " گذشتہ رات میں اپنا رحل

1 المصباح المنير لفظ الرحل مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱ / ۲۳۸ 2 القاموس المحیط باب اللام فصل الراء مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۳۹۴/۳ 3 مختار الصحاح باب الراء مطبع مصطفیٰ البابی مصر ص ۲۵۸ 4 النهایة لابن اثیر لفظ رحل مکتبہ اسلامیہ بیروت ۲۰۹/۲ 5 مجمع بحار الانوار باب الراء مع الحاء مطبوعہ نولکشور لکهنو ۴۷۳/۲

Fatawa Ridawiyya - Volume 3

[Arabic Section]: By Imam Jalal al-Din al-Suyuti, and Imam al-Raghib restricted himself in his 'Mufradat' to the first interpretation, saying: 'Al-Rahl' is what is placed on a camel for riding, then it is used sometimes to mean the camel itself, and sometimes for what one sits on at a stopping place (dwelling). [End quote 1] Because in the Noble Book (Quran), it is only used with this meaning. Thus, he informed that it was independently coined for this meaning, and similarly for the second meaning. This is the speech of most linguistic authorities.

[Urdu Section]: ...when they rode on it from the back. This is a metaphor for changing the 'rahl'. It either means the destination (manzil) or the saddle (kajawah) on which camels are ridden. End. In 'Majma' al-Bihar' it says: Either 'rahl' is derived from the meaning of 'manzil', or it is derived from the meaning of 'kajawah', and this is for camels like a saddle is for horses. End. Similar to this is in Imam Jalal al-Din al-Suyuti's 'Al-Durr al-Manthur'. And Imam al-Raghib in 'Mufradat' mentioned only the first interpretation. He said: 'Rahl' is what is placed on a camel for riding, then sometimes the camel itself is called 'rahl', and sometimes that upon which one sits at a destination. End. He only mentioned the first meaning because this word appeared in the Holy Quran with this meaning. This implies that it was established independently for this meaning, so the second meaning will be similar, and this is the speech of general linguistic authorities. (T)

[Arabic Section]: Secondly: If (1) it is conceded, this is not the place for generalization and inclusion of all individuals; rather, the way is to rely on absolute application. Understand this. He (may Allah have mercy on him) said: His statement "and it is among those things normally forgotten" is a circumstantial clause (jumlah haliyah), and its exception is his statement "as if he forgot it around his neck, etc." His statement "no repetition upon him" means if he remembers after finishing his prayer. If he remembers during it, he breaks the prayer and repeats it by consensus (ijma'). [Siraj] And its absolute nature includes whether he remembers within the time or after it, as in 'Al-Hidayah' and others, contrary to what was imagined in 'Al-Munyah'. And if the one who placed the water in the saddle (rahl) was himself or someone else, with his knowledge, by his command, or without his command—contrary to Abu Yusuf. As for if it was someone else without his knowledge, there is no repetition by consensus (Hiliyah 2). End.

[Urdu Section]: Secondly: even if accepted, this is not a situation for generalization and covering all individuals, but rather it's appropriate to keep it absolute. Understand this. Allama Shami (may Allah have mercy on him) says: His statement "and it is among those things normally forgotten" is a circumstantial clause, and it excludes what is mentioned later under "as if he forgot it around his neck etc.". The statement "no repetition upon him" means when he remembers after finishing the prayer. If he remembers during the prayer, he shall break the prayer and repeat it by consensus. [Siraj]. And the remembrance after finishing prayer was mentioned absolutely so that it covers remembering anytime within or after the time, as in 'Hidayah' etc. Contrary to what was erroneously thought in 'Munyah'. And this also includes if the person putting water in the luggage was himself or someone else put it with his knowledge, by his command or without his command.

[Arabic Section]: I say: It is suggested (1) that in 'Al-Munyah' the ruling of repetition in one...

[Footnotes]: 1. Al-Mufradat by Imam al-Raghib al-Isfahani, [Letter] Ra with Ha, Nur Muhammad Kutub Khana Karachi, p. 190. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press Egypt 1/183.

फतावा रज़विया - खंड 3

[अरबी अनुभाग]: इमाम जलालुद्दीन सुयूती के अनुसार, और इमाम राग़िब ने अपने 'मुफ़रदात' में स्वयं को पहली व्याख्या तक सीमित रखा, और कहा: 'अल-रहल' वह है जिसे सवारी के लिए ऊँट पर रखा जाता है, फिर कभी-कभी इसका उपयोग स्वयं ऊँट के लिए किया जाता है, और कभी-कभी उस चीज़ के लिए जिस पर कोई पड़ाव (घर) में बैठता है। [अंत उद्धरण १] क्योंकि पवित्र पुस्तक (कुरान) में इसका उपयोग केवल इसी अर्थ के साथ किया गया है। इस प्रकार, उन्होंने सूचित किया कि इसे इस अर्थ के लिए स्वतंत्र रूप से गढ़ा गया था, और इसी तरह दूसरे अर्थ के लिए भी। यही अधिकांश भाषाई विद्वानों का कथन है।

[उर्दू अनुभाग]: ...जब वे पीछे की ओर से उस पर सवार हुए। यह 'रहल' बदलने का एक रूपक है। इसका अर्थ या तो गंतव्य (मंज़िल) है या कजावा जिस पर ऊँटों की सवारी की जाती है। 'मजमा अल-बिहार' में लिखा है: या तो 'रहल' 'मंज़िल' के अर्थ से निकला है, या यह 'कजावा' के अर्थ से निकला है, और यह ऊँटों के लिए वैसा ही है जैसे घोड़ों के लिए ज़ीन। इसी के समान इमाम जलालुद्दीन सुयूती की 'अल-दुर अल-मंसूर' में है। और इमाम राग़िब ने 'मुफ़रदात' में केवल पहली व्याख्या का उल्लेख किया है। उन्होंने कहा: 'रहल' वह है जो ऊँट पर सवारी के लिए रखा जाता है, फिर कभी-कभी ऊँट को ही 'रहल' कहा जाता है, और कभी-कभी उसे जिस पर गंतव्य पर बैठा जाता है। उन्होंने केवल पहले अर्थ का उल्लेख इसलिए किया क्योंकि कुरान शरीफ में यह शब्द इसी अर्थ में आया है। इससे यह स्पष्ट हुआ कि इसे इस अर्थ के लिए स्वतंत्र रूप से स्थापित किया गया था, इसलिए दूसरा अर्थ भी वैसा ही होगा, और सामान्य भाषा विशेषज्ञों का यही कहना है। (त)

[अरबी अनुभाग]: दूसरा: यदि (१) इसे स्वीकार कर लिया जाए, तो यह सामान्यीकरण और सभी व्यक्तियों को शामिल करने का स्थान नहीं है; बल्कि तरीका यह है कि निरपेक्ष अनुप्रयोग पर भरोसा किया जाए। इसे समझें। उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम करे) कहा: उनका कथन "और यह उन चीज़ों में से है जो सामान्यतः भूल जाती हैं" एक स्थितिजन्य उपवाक्य (जुमला हालिया) है, और इसका अपवाद उनका कथन है "जैसे कि वह इसे अपनी गर्दन के चारों ओर भूल गया, आदि।" उनका कथन "उस पर कोई दोहराव नहीं" का अर्थ है कि यदि वह अपनी नमाज़ पूरी करने के बाद याद करता है। यदि वह नमाज़ के दौरान याद करता है, तो वह नमाज़ तोड़ देता है और सर्वसम्मति (इज्मा) से उसे दोहराता है। [सिराज] और इसकी निरपेक्ष प्रकृति में शामिल है कि क्या वह समय के भीतर या उसके बाद याद करता है, जैसा कि 'अल-हिदाया' और अन्य में है, इसके विपरीत जो 'अल-मुन्या' में कल्पना

की गई थी। और यदि वह जिसने सामान (रहल) में पानी रखा था, वह स्वयं था या कोई और, उसकी जानकारी के साथ, उसके आदेश से, या उसके आदेश के बिना - इमाम अबू यूसुफ के विपरीत। जहाँ तक कि यदि वह उसकी जानकारी के बिना कोई और था, तो सर्वसम्मति (हिलिया २) से कोई दोहराव नहीं है।

[उर्दू अनुभाग]: दूसरा: यदि मान भी लिया जाए, तो यह सामान्यीकरण और सभी व्यक्तियों को शामिल करने की स्थिति नहीं है, बल्कि इसे निरपेक्ष रखना ही उचित है। समझें। अल्लामा शामी (अल्लाह उन पर रहम करे) कहते हैं: उनका कथन "और यह उन चीज़ों में से है जो सामान्यतः भूल जाती हैं" एक स्थितिजन्य उपवाक्य है, और यह उस चीज़ को बाहर करता है जिसका उल्लेख बाद में "जैसे कि वह इसे अपनी गर्दन आदि के चारों ओर भूल गया" के तहत किया गया है। कथन "उस पर कोई दोहराव नहीं" का अर्थ है जब नमाज़ पूरी करने के बाद याद आए। यदि नमाज़ के दौरान याद आए, तो वह नमाज़ तोड़ देगा और सर्वसम्मति से दोहराएगा। [सिराज]। और नमाज़ पूरी करने के बाद याद आने का उल्लेख निरपेक्ष रूप से किया गया था ताकि इसमें समय के भीतर या बाद में किसी भी समय याद आना शामिल हो, जैसा कि 'हिदाया' आदि में है। इसके विपरीत जो 'मुन्या' में गलत तरीके से सोचा गया था। और इसमें यह भी शामिल है कि क्या सामान में पानी रखने वाला व्यक्ति वह स्वयं था या किसी और ने उसकी जानकारी, उसके आदेश या उसके आदेश के बिना रखा था।

[अरबी अनुभाग]: मैं कहता हूँ: यह सुझाव दिया गया है (१) कि 'अल-मुन्या' में एक में दोहराव का नियम...

[पादलेख]: १. अल-मुफ़रदात, इमाम राग़िब इसफ़हानी द्वारा, [अक्षर] रा के साथ हा, नूर मोहम्मद कुतुब खाना कराची, पृष्ठ १९०। २. रद अल-मुहतार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस मिस्र १/१८३।

[Arabic Column]: للامام جلال السیوطی واقتصر الامام الراغب في مفرداته علی التفسیر الأول فقال الرحل ما یوضع علی البعیر للرکوب ثم یعبر به تارة عن البعیر وتارة عما یجلس علیه فی المنزل ١ اه لانه لیس في الکتاب العزیز الا بهذا المعنی فأفاد ایضاً انه موضوع له مستقلا فکذا الثانی وعلی هذا کلام عامة ائمة اللغة۔ وثانیاً: لو (١) سلم لیس هذا محل التعمیم واستغراق الافراد بل الوجه الاستناد الی الاطلاق فافهم قال رحمه الله تعالی قوله وهو مما ینسی عادة الجملة حالیة ومحترزه قوله کمالو نسیه في عنقه الخ قوله لا اعادة علیه ای اذا تذکر بعد ما فرغ من صلاته فلو تذکر فیها یقطع ویعید اجماعاً سراج، واطلق یشمل مالو تذکر في الوقت اوبعده کما في الهدایة وغیرها خلافاً لما توهمه في المنیة، ومالوکان الواضع للماء في الرحل هو اوغیره بعلمه بامره او بغیر امره خلافاً لابي یوسف اما لو کان غیره بلا علمه فلا اعادة اتفاقاً حلیة ٢ اه اقول: یوہم (١) ان فی المنیة حکم الاعادة فی احد

[Urdu Column]: تبدیل کردیا جب اس پر پشت کی طرف سے سوار ہوئے۔ اس سے رحل بدلنے کا کنایہ ہے یا تو اس سے منزل مراد ہو یا کجاوہ جس پر اونٹوں پر سوار ہوتے ہیں اھ مجمع البحار میں ہے: یا تو رحل بمعنی منزل منقول ہے یا رحل بمعنی کجاوہ سے منقول ہے اور یہ اونٹ کیلئے ہوتا ہے جیسے زین گھوڑے کیلئے اھ اس کے مثل امام جلال الدین سیوطی کی "الدر المنثور" میں ہے۔ اور امام راغب نے مفردات میں صرف پہلی تفسیر ذکر کی ہے۔ انہوں نے فرمایا ہے: "رحل وہ ہے جو اونٹ پر سواری کیلئے رکھا جاتا ہے پھر کبھی اونٹ کو بھی رحل کہتے ہیں اور کبھی اسے بھی جس پر منزل میں بیٹھتے ہیں" اھ انہوں نے صرف پہلا معنی اس لئے ذکر کیا ہے کہ قرآن کریم میں یہ لفظ اسی معنی میں آیا ہے اس سے یہ افادہ ہوا کہ اس معنی کیلئے مستقلاً اس کی وضع ہوئی ہے تو دوسرا معنی بھی ایسا ہی ہوگا، اور عامہ ائمہ لغت کا کلام یہی ہے۔ (ت)

ثانیاً: اگر مان بھی لیا جائے تو یہ تعمیم اور استغراق افراد کا موقع نہیں بلکہ مناسب یہ ہے کہ مطلق رکھا جائے فافہم۔ علامہ شامی رحمہ اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں: ان کا قول "وھو مما ینسی عادۃ" (اور یہ ایسی جگہ ہے جہاں عادۃً آدمی بھول جاتا ہے) جملہ حالیہ ہے اور اس میں اس سے احتراز ہے جو آگے کہا لو نسیه في عنقه الخ کے تحت بیان کیا قوله لا اعادة علیه (اس پر اعادہ نہیں) یعنی جب نماز سے فارغت کے بعد یاد آئے۔ اگر نماز ہی میں یاد آجائے تو بالاجماع نماز توڑ کر اعادہ کرے گا۔ سراج۔ اور نماز سے فراغت کے بعد یاد آنے کو مطلق ذکر کیا تا کہ وقت کے اندر یا وقت کے بعد کسی بھی وقت یاد آئے دونوں کے شامل رہے جیسا کہ ہدایہ وغیرہ میں ہے اُس کے برخلاف جو منیہ میں وہم کیا اور یہ اس کو بھی شامل ہو جب منزل میں پانی رکھنے والا وہ خود ہو یا دوسرے نے اس کے علم میں رکھا ہو اس کے حکم سے یا اس کے حکم کے بغیر۔

[Footnotes]: ۱ المفردات للامام الراغب الاصفہانی الراء مع الحاء نور محمد کتب خانہ کراچی ص ۱۹۰ ۲ ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۳

Fatawa Rizvia Volume 3

...the two chapters, and it is not so. It is only given in specifying the disagreement of Abu Yusuf regarding remembering within the time. Where he said: "If he had water with him in his travel gear/ride and forgot it, then performed Tayammum and prayed, then remembered within the time, he does not repeat according to Abu Hanifa and Muhammad (may Allah Almighty have mercy on them both). And if he remembered after the time, he does not repeat according to all of them together." 1 (He said, may Allah Almighty have mercy on him, regarding his words "around his neck"): i.e., his own neck, or "the front of it" i.e., the front of his ride/gear. This excludes what if he forgot it in the rear of it while riding, or in the front while leading, for it is subject to disagreement. Similarly, if he was a leader unconditionally. [Bahr] 2.

Contrary to Imam Abu Yusuf (may mercy be upon him). And if someone else placed it without his knowledge, then by consensus there is no repetition. [Hilya, etc.] (T) I say: From the above text, a misconception arises regarding Munyah, that it prescribes repetition in one case, whereas it is not so. The misconception from Munyah is that it restricts Imam Abu Yusuf's disagreement only to the case of remembering within the time (whereas his disagreement exists in this case as well as in the case where he himself placed the water or someone else placed it with his knowledge and he forgot it. 12 m/f). The text of Munyah is: "If he has water with him in the tent which he forgot, and performed Tayammum and prayed, then remembered within the time, then according to Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on them both), there is no repetition. And if he remembered after the time passed, then according to all three Imams, there is no repetition." Alama Shami (may Allah Almighty have mercy on him) says: The phrase "around his neck" means around his own neck, or "the front of it" means in the front part of the saddle/luggage. Through this word...

1 Munyatul Musalli, Chapter on Tayammum, Maktaba Qadiriyah Jamia Nizamia Razvia Lahore, p. 49. 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/183. Page 525 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

...दोनों अध्याय, और ऐसा नहीं है। यह केवल इमाम अबू युसुफ के मतभेद को निर्दिष्ट करने में है जो समय के भीतर याद आने की स्थिति में है। जहाँ उन्होंने कहा: "यदि उसके पास अपनी सवारी के सामान में पानी था और वह उसे भूल गया, फिर तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, फिर समय के भीतर याद आ गया, तो इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) के अनुसार उसे नमाज़ दोहराने की ज़रूरत नहीं है। और यदि समय बीतने के बाद याद आया, तो उन सभी के सामूहिक मत के अनुसार दोहराना नहीं है।" 1 (उन्होंने कहा, अल्लाह उन पर रहम करे, उनके शब्दों 'अपनी गर्दन में' के बारे में): यानी अपनी गर्दन में, या 'सवारी के अगले हिस्से में' यानी उसकी सवारी का अगला हिस्सा। इससे वह स्थिति बाहर हो जाती है अगर वह इसे सवारी करते समय पिछले हिस्से में भूल गया हो, या आगे चलते हुए अगले हिस्से में, क्योंकि यह मतभेद का विषय है। और इसी तरह अगर वह बिना किसी शर्त के नेतृत्व करने वाला हो। [बहर] 2।

इमाम अबू यूसुफ़ अलैहि रहमा के विपरीत। और अगर किसी दूसरे ने उसकी जानकारी के बिना रखा हो, तो सर्वसम्मति से उस पर दोबारा नमाज़ पढ़ना (आदा) नहीं है। [हिलिया आदि]। (त) मैं कहता हूँ: उपरोक्त इबारत (पाठ) से 'मुनिया' के संबंध में यह भ्रम पैदा होता है कि उसके भीतर एक स्थिति में नमाज़ दोहराने का हुक्म बयान किया गया है, जबकि ऐसा नहीं है। मुनिया का भ्रम यह है कि इसमें इमाम अबू यूसुफ़ के मतभेद को केवल समय के भीतर याद आने वाली स्थिति के साथ विशिष्ट कर दिया गया है (जबकि उनका मतभेद इस स्थिति में भी है और उस स्थिति में भी जब पानी खुद रखा हो या उसकी जानकारी में दूसरे ने रखा हो और वह भूल गया हो। 12 म अ)। मुनिया की इबारत यह है: "अगर उसके पास खेमे (तंबू) में पानी हो जिसे वह भूल गया और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, फिर उसे समय के भीतर याद आ गया तो इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन दोनों पर रहम करे) के नज़दीक दोहराना (आदा) नहीं है, और अगर समय गुज़रने के बाद याद आया तो तीनों इमामों के नज़दीक दोहराना नहीं है।" अल्लामा शामी (अल्लाह उन पर रहम करे) फ़रमाते हैं: उनके शब्द 'अपनी गर्दन में' का अर्थ है खुद अपनी गर्दन में (या अगले हिस्से में) यानी कजावे के अगले हिस्से में, इस शब्द के ज़रिए...

1 मुनियतुल मुसल्ली, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा कादरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. 49 2 रद-उल-मुहतार, तयम्मुम का अध्याय, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/183 पृष्ठ 525 / 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

الفصلین و لیس کذلک انما توہبھا فی تخصیص خلاف ابی یوسف بصورۃ التذکر فی الوقت حیث قال ان کان معہ ماء في رحلہ فنسیہ و تیمم وصلی ثم تذکر فی الوقت لم یعد عند ابی حنیفۃ و محمد رحمھما اللہ تعالی و ان تذکر بعد الوقت لم یعد فی قولھم 1 جمیعاً ، قال رحمہ اللہ تعالی قولہ (فی عنقہ) ای عنق نفسہ (او مقدمہ) ای مقدم رحلہ و احترزبہ عما لونسیہ فی مؤخرہ راکباً او مقدمہ سائقا فانہ علی الاختلاف و کذا اذا کان قائدا مطلقا بحر 2۔

بخلاف امام ابو یوسف علیہ الرحمہ کے _ اور اگر دوسرے نے اس کی لاعلمی میں رکھا ہو تو بالاتفاق اس پر اعادہ نہیں ۔ حلیہ اھـ ۔ (ت) اقول: عبارت بالا سے منیۃ کے متعلق وہم پیدا ہوتا ہے کہ اس کے اندر ایک صورت میں اعادہ کا حکم بیان کیا گیا ہے حالانکہ ایسا نہیں منیہ کا وہم یہ ہے کہ اس میں امام ابو یوسف کا اختلاف صرف اندرونِ وقت یاد آنے والی صورت سے خاص کردیا ہے (جب کہ ان کا اختلاف اِس صورت میں بھی ہے اور اُس صورت میں بھی ہے جب پانی خود رکھا ہو یا اس کے علم و اطلاع میں دوسرے نے رکھا ہو اور یہ بھول گیا ہو ۱۲ م الف) منیۃ کی عبارت یہ ہے: "اگر اس کے ساتھ خیمہ میں پانی ہو جسے یہ بھول گیا اور تیمم کرکے نماز پڑھ لی پھر اسے وقت کے اندر یاد آگیا تو امام ابوحنیفہ و امام محمد رحمہما اللہ تعالٰی علیہما کے نزدیک اعادہ نہیں اور اگر وقت گزرنے کے بعد یاد آیا تو تینوں حضرات ائمہ کے نزدیک اعادہ نہیں" اھـ علامہ شامی رحمہ اللہ تعالٰی فرماتے ہیں: قولہ "فی عنقہ" یعنی خود اپنی گردن میں (او مقدمہ) یعنی کجاوے کے اگلے حصہ میں اس لفظ کے ذریعہ اس

1 منیۃ المصلی فصل فی التیمم مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۴۹ 2 رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۳ صفحہ 525 از 756

Volume 3 Fatawa Rizvia

The intent is to avoid the situation when, while riding, one forgets the water kept behind the litter (camel saddle), or while driving the animal, forgets the water kept in front of the litter, because there is disagreement on this. Similarly, when one is leading the animal by its reins, there is disagreement in both cases (whether the water is in front of the litter or behind). Bahr. (T)

(159) A traveler stops near a well or a lake which is inside a canal thicket, or the well is covered, even if he pitched his tent right over it. In short, he neither knows there is water in the forest nor is the water visible, nor is there anyone knowledgeable whom he can ask. In such a state, if he has prayed after performing tayammum (dry ablution), this is also a case of inability. I say, even here he will not repeat the prayer, even if it becomes known immediately after the salaam (ending the prayer) that water was present there, because the excuse here is even clearer than the previous case. In that case, there was knowledge but it was lost due to forgetfulness, whereas here there was no knowledge from the beginning. In Munyah, it is stated:

"If he performed tayammum and prayed while water was near him and he did not know, it suffices him." Water is near him and he does not know; in such a case, if he has prayed after performing tayammum, it is valid. (T)

It is stated in Halyah: (Arabic Text): "The appearance of this and what we previously mentioned from the commentary on Jami’ al-Saghir by Qadi Khan and the Muheet of Imam Radi ad-Din is that this ruling is by consensus. This is also clarified in at-Tajnis where it is said: 'If one prays with tayammum while there is a well of water beside him that he did not know about, it is permissible according to their [the scholars'] consensus.' And the following text from Jami’ al-Fatawa is not contrary to this, as is clear: 'One pitched a tent over an unmarked well, performed tayammum and prayed, then found out about the well; it is better to repeat the prayer. End.' Then, in al-Muheet, this issue is restricted with the condition that there is no one with him whom he can ask about water, justifying it by saying that ignorance makes him incapable of using water just like distance..."

(Urdu Commentary): "This passage and what we mentioned earlier with reference to Imam Qadi Khan's commentary on Jami’ Saghir and Imam Radi ad-Din's Muheet, the literal meaning of both is that this ruling is by consensus. It is also explicitly stated in Tajnis, whose words are: 'There is a well of water at his side of which he has no knowledge, and he performed tayammum and prayed; then according to the

statements of all of them, it is permissible.' And the following passage of Jami' al-Fatawa is not contrary to it, as is clear: 'If someone pitched a tent over an unmarked well and prayed after performing tayammum, and then came to know about the well, it is better to repeat the prayer. End.' Then in Muheet, this issue is qualified with the condition that he does not have anyone present with him..."

1 Munyah al-Musalli, Chapter on Tayammum, Maktaba Qadriah, Jamia Nizamia Razvia, Lahore, p. 49. Page 526 of 756

इसका उद्देश्य उस स्थिति से बचना है जब सवारी करते समय कोई ऊँट के कजावे (पालकी) के पीछे रखे पानी को भूल जाए, या जानवर को हाँकते समय कजावे के आगे रखे पानी को भूल जाए, क्योंकि इस पर मतभेद है। इसी तरह जब जानवर की नकेल पकड़ कर आगे ले जाया जा रहा हो, तो इसमें पूरी तरह से (पानी कजावे के आगे रखा हो या पीछे दोनों स्थितियों में) मतभेद है। बहर। (त)

(159) यात्री कुएँ या झील के पास उतरे जो नहर की झाड़ियों के अंदर है या कुआँ ढका हुआ है, भले ही उसने उसी के ऊपर अपना खेमा (तंबू) ताना हो। संक्षेप में, न उसे जंगल में पानी होने का ज्ञान है, न पानी दिखाई दे रहा है, और न ही वहाँ कोई जानकार है जिससे वह पूछ सके। ऐसी स्थिति में यदि उसने तयम्मुम (मिट्टी से पवित्रता) करके नमाज़ पढ़ ली, तो यह भी विवशता की स्थिति है। मैं कहता हूँ, यहाँ भी वह नमाज़ नहीं दोहराएगा, भले ही सलाम के तुरंत बाद पता चल जाए कि वहाँ पानी था, क्योंकि यहाँ बहाना पिछली स्थिति से भी अधिक स्पष्ट है। उस स्थिति में ज्ञान तो था पर भूलने से जाता रहा, जबकि यहाँ तो शुरू से ही ज्ञान नहीं था। मुन्या में है:

"अगर उसने तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ी जबकि पानी उसके पास था और उसे पता नहीं था, तो यह उसके लिए पर्याप्त है।" पानी उसके पास है और उसे पता नहीं; ऐसी स्थिति में तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली तो जायज़ है। (त)

हलिया में है: (अरबी पाठ): "इसका प्रकट होना और जो हमने इमाम क़ाज़ी ख़ां की शरह 'जामे सगीर' और इमाम रज़ी उद्दीन की 'मुहीत' के हवाले से पहले उल्लेख किया है, दोनों से यही ज़ाहिर होता है कि यह हुक्म सर्वसम्मति से है। और 'तजनीस' में इसकी स्पष्टता भी है, उसके शब्द ये हैं: 'उसके बगल में पानी का कुआँ है जिसका उसे ज्ञान नहीं और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली तो उन सबके कथन पर जायज़ है।' और 'जामे उल फ़तावा' का निम्नलिखित वाक्य इसके विपरीत नहीं है जैसा कि स्पष्ट है: 'किसी बेनिशान कुएँ पर खेमा लगाया और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, फिर कुएँ का पता चला तो नमाज़ का दोहराना बेहतर है। इति।' फिर 'मुहीत' में इस मसले को इस शर्त के साथ सीमित किया गया है कि उसके पास कोई ऐसा न हो जिससे वह पानी के बारे में पूछ सके, यह दलील देते हुए कि अज्ञानता उसे पानी के उपयोग में असमर्थ बना देती है जैसे कि दूरी..."

(उर्दू व्याख्या): "यह इबारत और जो हमने इमाम क़ाज़ी ख़ां की शरह जामे सगीर और इमाम रज़ी उद्दीन की मुहीत के हवाले से पहले ज़िक्र की, दोनों का ज़ाहिर यही है कि यह हुक्म सर्वसम्मति से है।

और तजनीस में इसकी स्पष्टता भी है, उसके शब्द ये हैं: 'उसके बगल में पानी का कुआँ है जिसका उसे इल्म (ज्ञान) नहीं और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली तो उन सबके कौल (कथन) पर जायज़ है।' और जामे उल फ़तावा की निम्नलिखित इबारत इसके खिलाफ नहीं है जैसा कि वाज़ेह (स्पष्ट) है: 'किसी बेनिशान कुएँ पर खेमा लगाया और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, फिर कुएँ का इल्म हुआ तो नमाज़ का एआदा (दोहराना) बेहतर है। इति।' फिर मुहीत में इस मसले को इस शर्त के साथ मुकय्यद (सीमित) किया गया है कि उसके पास कोई ऐसा न हो..."

1 मुन्यतुल मुसल्ली, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा कादरिया, जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर, पृष्ठ 49 पृष्ठ 756 का 526

صورت سے احتراز مقصود ہے جب وہ سوار ہونے کی حالت میں کجاوے کے پیچھے رکھا ہوا پانی یا جانور ہانکنے کی حالت میں کجاوے کے آگے رکھا ہوا پانی بھول گیا ہو کیونکہ اس میں اختلاف ہے۔ اسی طرح جب جانور کی نکیل پکڑ کر آگے لیے جا رہا ہو تو اس میں مطلقاً (پانی کجاوے کے آگے رکھا ہو یا پیچھے دونوں ہی صورتوں میں) اختلاف ہے۔ بحر۔ (ت)

(۱۵۹) مسافرات کو کنویں یا جھیل کے پاس اترا چاہ وہ نہر جھاڑی کے اندر ہیں یا کنواں ڈھکا ہوا ہے اگر چہ خاص اسی پر اس نے خیمہ تانا ہو غرض نہ اُسے جنگل میں پانی ہونے کا علم ہے نہ پانی ظاہر نہ وہاں کوئی واقف کار جس سے پوچھ سکے اس حالت میں اُس نے تیمم سے نماز پڑھ لی تو یہ بھی صورتِ عجز ہے اقول یہاں بھی اعادہ نہ کرے گا اگر چہ سلام کے بعد ہی پانی وہاں ہونا معلوم ہو جائے کہ یہاں صورتِ سابقہ سے بھی عذر واضح تر ہے وہاں علم تھا نسیان سے جاتا رہا اور یہاں سرے سے علم نہیں۔ منیہ میں ہے :

اذا تیمم وصلی والماء قریب منہ وھو لایعلم اجزاہ پانی اس سے قریب ہے اور جانتا نہیں ایسی صورت میں تیمم کر کے نماز پڑھ لی تو جائز ہے۔ (ت)

حلیہ میں ہے: ظاھر ھذا وما قدمناہ عن شرح الجامع الصغیر لقاضي خان ومحیط الامام رضی الدین ان ھذا الحکم علی الوفاق وقد افصح بہ في التجنیس حیث قال صلی بالتیمم وفي جنبہ بئر ماء لم یعلم بھا جاز علی قولھم ومافي جامع الفتاوی ضرب الخیمۃ علی بئر مندرس وتیمم وصلی ثم علم فالاحسن اعادتھا انتھی لا یخالفہ وھو ظاھر ثم فی المحیط قیدہ بما اذالم یکن بحضرتہ من یسألہ عن الماء معللا بان الجھل یعجزہ عن استعمال الماء کالبعد ولم

یہ عبارت اور جو ہم نے امام قاضی خاں کی شرح جامع صغیر اور امام رضی الدین کی محیط کے حوالہ سے پہلے ذکر کی دونوں کا ظاہر یہی ہے کہ یہ حکم بالاتفاق ہے۔ اور تجنیس میں اس کی صراحت بھی ہے اس کے الفاظ یہ ہیں: "اس کی بغل میں پانی کا کنواں ہے جس کا اسے علم نہیں اور تیمم کر کے نماز پڑھ لی تو ان سب کے قول پر جائز ہے۔" اور جامع الفتاویٰ کی درج ذیل عبارت اس کے مخالف نہیں جیسا کہ واضح ہے: "کسی بے نشان کنویں پر خیمہ لگایا اور تیمم کر کے نماز پڑھ لی پھر کنویں کا علم ہوا تو نماز کا اعادہ بہتر ہے انتہیٰ"۔ پھر محیط میں اس مسئلہ کو اس شرط سے مقید کیا ہے کہ اس کے پاس کوئی ایسا

1 منیة المصلی فصل في التیمم مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۴۹ Page 526 of 756

Volume Three - Fatawa Rizvia

[Arabic Section]: ...regarding ignorance [of water presence], he said: If there was someone in his presence whom he could have asked, but he did not ask until he performed Tayammum and prayed, and then he asked and was informed of water nearby, his prayer is not valid. This is because he was capable of using water through inquiry. Since he did not ask, the negligence came from him, similar to one who arrives in a populated area and does not seek water; his Tayammum is not valid. (End). We will soon mention from 'Al-Badai' what conforms to this condition.

I say: The statement in 'Al-Muhit' "then he asked" is not a restriction; rather, the ruling is the same if he was informed beforehand, as is evident. Likewise, the statement "he informed him" is mentioned as a scenario; the ruling is the same if he found out by himself later. The criterion is his negligence in inquiring, which has occurred. Then it was mentioned in 'Al-Hilya' from 'Al-Mujtaba', the outward meaning of which is that Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) also differs in this matter, similar to the issue of forgetfulness. From 'Al-Khaniya', there is a similar outward meaning, with the added information that there are two reports from Abu Yusuf regarding both the issues of forgetfulness and ignorance. From 'Al-Mubtaghi', the outward meaning is contrary to the report here when it is on a riverbank, not a well, where it says: If he prayed while a well of water was beside him which he did not know of, his prayer is valid. But if it was on a riverbank, there are two reports from Abu Yusuf. (End).

Then this disagreement was explained.

[Urdu Section]: ...there should be no person whom he can ask about water. The reason given is that this ignorance causes an inability to use water, much like being far away from water, and there is no negligence or shortcoming in this ignorance. Further, it states: If there was someone with him whom he could have asked but did not, and performed Tayammum and prayed, then asked and was told there was water nearby, in such a case the prayer is not valid because he was capable of using water by inquiring. When he did not inquire, the negligence was on his part. This is just like someone who stays in a city and does not look for water; his Tayammum is not valid. (End). And soon we will mention the text from 'Al-Badai' which conforms to this condition in 'Al-Muhit'. (End). (The passages up to here are quoted from 'Al-Hilya'). (T) I say: What was stated in 'Al-Muhit' "then he asked him" is not a restriction; rather, even if he did not ask and the person informed him voluntarily, the ruling remains

the same, as is not hidden. Similarly, their statement "he gave news of water being nearby" is incidental because even if he did not give news but later he found out on his own, the ruling is still the same. This is because the invalidity of Tayammum is based on his negligence in inquiring, and this fact is established (meaning that despite a person being present to inform him, he did not inquire and performed Tayammum and prayed). Then in 'Al-Hilya', a statement is mentioned with reference to 'Al-Mujtaba', the outward meaning of which is that Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) also differs in this matter, just like the issue of forgetfulness. And the text of 'Al-Khaniya' also...

---

1. Hilya al-Mahalli
2. Hilya al-Mahalli

तीसरा खंड - फ़तावा रज़विया

[अरबी अनुभाग]: ...अज्ञानता के संबंध में [पानी की मौजूदगी के], उन्होंने कहा: यदि उनकी उपस्थिति में कोई ऐसा व्यक्ति था जिससे वह पूछ सकते थे, लेकिन उन्होंने तब तक नहीं पूछा जब तक कि उन्होंने तयम्मुम नहीं कर लिया और नमाज़ नहीं पढ़ ली, और फिर उन्होंने पूछा और उन्हें पास में पानी होने की सूचना दी गई, तो उनकी नमाज़ मान्य नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह पूछताछ के माध्यम से पानी का उपयोग करने में सक्षम थे। चूंकि उन्होंने नहीं पूछा, इसलिए लापरवाही उनकी ओर से हुई, जैसे कि वह व्यक्ति जो आबादी वाले क्षेत्र में आता है और पानी की तलाश नहीं करता है; उसका तयम्मुम मान्य नहीं है। (समाप्त)। हम जल्द ही 'अल-बदई' से उल्लेख करेंगे जो इस शर्त के अनुरूप है।

मैं कहता हूँ: 'अल-मुहीत' में दिया गया कथन "फिर उसने पूछा" कोई प्रतिबंध नहीं है; बल्कि, हुक्म वही है यदि उसे पहले ही सूचित कर दिया गया हो, जैसा कि स्पष्ट है। इसी तरह, कथन "उसने उसे सूचित किया" एक परिदृश्य के रूप में उल्लेखित है; हुक्म वही है यदि उसे बाद में खुद ही पता चल गया हो। मापदंड पूछताछ में उसकी लापरवाही है, जो घटित हो चुकी है। फिर 'अल-हिलिया' में 'अल-मुज्तबा' से उल्लेख किया गया है, जिसका ज़ाहिरी अर्थ यह है कि इमाम अबू यूसुफ़ (अल्लाह उन पर रहम करे) भी इस मामले में मतभेद रखते हैं, जैसे विस्मृति (भूलने) के मामले में। 'अल-खानिया' से भी ऐसा ही ज़ाहिरी अर्थ मिलता है, जिसमें यह जानकारी जोड़ी गई है कि विस्मृति और अज्ञानता दोनों ही मामलों में अबू यूसुफ़ से दो रिपोर्टें हैं। 'अल-मुब्तगी' से ज़ाहिरी अर्थ यहाँ दी गई रिपोर्ट के विपरीत है जब यह नदी के किनारे हो, कुएं के पास नहीं, जहाँ कहा गया है: यदि उसने नमाज़ पढ़ी जबकि उसके पास पानी का एक कुआं था जिसके बारे में उसे पता नहीं था, तो उसकी नमाज़ जायज़ है। लेकिन अगर यह नदी के किनारे हो, तो अबू यूसुफ़ से दो रिपोर्टें हैं। (समाप्त)।

फिर इस मतभेद की व्याख्या की गई।

[उर्दू अनुभाग]: ...ऐसा कोई व्यक्ति न हो जिससे वह पानी के बारे में पूछ सके। कारण यह बताया गया है कि यह अज्ञानता पानी का उपयोग करने में असमर्थता का कारण बनती है, जैसे पानी से दूर होना, और इस अज्ञानता में कोई लापरवाही या कमी नहीं है। आगे कहा गया है: यदि उसके पास कोई ऐसा व्यक्ति था जिससे वह पूछ सकता था लेकिन उसने नहीं पूछा, और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, फिर पूछा और उसे बताया गया कि पास में पानी था, तो ऐसी स्थिति में नमाज़ मान्य नहीं

होगी क्योंकि वह पूछताछ करके पानी का उपयोग करने में सक्षम था। जब उसने पूछताछ नहीं की, तो लापरवाही उसकी ओर से थी। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति शहर में रुके और पानी की तलाश न करे; उसका तयम्मुम मान्य नहीं है। (समाप्त)। और जल्द ही हम 'अल-बदई' के पाठ का उल्लेख करेंगे जो 'अल-मुहीत' में इस शर्त के अनुरूप है। (समाप्त)। (यहाँ तक के अंश 'अल-हिलिया' से उद्धृत हैं)। (त) मैं कहता हूँ: 'अल-मुहीत' में जो कहा गया है "फिर उसने उससे पूछा" वह कोई शर्त नहीं है; बल्कि, भले ही उसने न पूछा हो और उस व्यक्ति ने स्वेच्छा से उसे सूचित कर दिया हो, हुक्म वही रहता है, जैसा कि छिपा नहीं है। इसी प्रकार, उनका यह कथन "उसने पास में पानी होने की खबर दी" आकस्मिक है क्योंकि भले ही उसने खबर न दी हो लेकिन बाद में उसे खुद पता चल गया हो, तब भी हुक्म वही है। ऐसा इसलिए है क्योंकि तयम्मुम की अमान्यता पूछताछ करने में उसकी लापरवाही पर आधारित है, और यह तथ्य स्थापित है (यानी उसे सूचित करने के लिए एक व्यक्ति के मौजूद होने के बावजूद, उसने पूछताछ नहीं की और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली)। फिर 'अल-हिलिया' में 'अल-मुज्तबा' के संदर्भ में एक कथन का उल्लेख किया गया है, जिसका ज़ाहिरी अर्थ यह है कि विस्मृति के मसले की तरह इस मसले में भी इमाम अबू यूसुफ़ (अल्लाह उन पर रहम करे) का मतभेद है। और 'अल-खानिया' का पाठ भी...

---

1. हिलिया अल-महल्ली
2. हिलिया अल-महल्ली

کن مقتصرًا فی جهلة قال وان کان بحضرته من یسأله فلم یسأله حتی تیمم وصلی ثم سأله فاخبره بماء قریب لم تجز صلاته لانه قادر علی استعماله بواسطة السؤال فاذا لم یسأله جاء التقصیر من قبله کالذی نزل بالعمران ولم یطلب الماء لم یجز تیممه انتهی و سنذکر عن البدائع ما یوافقه فی هذا الشرط ۱اه

اقول: وقول المحیط ثم سأله غیر قید بل کذلك الحکم لو اخبره بدء کما لا یخفی و کذلك قوله اخبره خرج وفاقا فکذلك الحکم ان علم بعد بنفسه فان المناط تفریطه فی السؤال وقد حصل ثم ذکر فی الحلیة عن المجتبی ماظاهره ان ابا یوسف رحمه الله تعالی یخالف فی هذه ایضا کمسألة النسیان وعن الخانیة ماظاهره مثله مع افادة ان عن ابی یوسف فی کلتا مسئلة النسیان والجهل روایتین وعن المبتغی ماظاهره خلافه علی روایة ههنا اذا کان علی شاطئ النهر لا البئر حیث قال و لو صلی به و بجنبه بئر ماء لم یعلم بها جازت صلاته وان کان ذلك علی شاطئ النهر عن ابی یوسف فیه روایتان ۲اه

ثم وجّه هذا الخلف

شخص نہ ہو جس سے پانی کے متعلق دریافت کر سکے۔ وجہ یہ بتائی ہے کہ یہ لاعلمی پانی کے استعمال سے عجز کا باعث ہے جیسے پانی کی دوری اور اس لاعلمی میں اس کی کوئی تقصیر اور کوتاہی نہیں۔ آگے فرمایا ہے: اگر اس کے پاس کوئی ایسا شخص ہو جس سے یہ دریافت کر سکتا تھا مگر دریافت نہ کیا اور تیمم کر کے نماز پڑھ لی پھر پوچھا تو اس نے قریب ہی پانی ہونے کی خبر دی تو ایسی صورت میں نماز نہ ہوئی اس لئے کہ وہ دریافت کر کے پانی کے استعمال پر قادر تھا۔ جب دریافت نہ کیا تو کوتاہی اس کی جانب سے ہوئی۔ یہ ایسا ہی ہے جیسے کوئی آبادی میں اُترا اور پانی تلاش نہ کیا تو اس کا تیمم جائز نہیں اھ اور عنقریب ہم بدائع کی عبارت ذکر کریں

گے جو اس شرط میں محیط کے موافق ہے۔ اھ (یہاں تک کی عبارتیں حلیہ سے منقول ہیں) (ت)

اقول: محیط میں جو فرمایا ہے کہ 'پھر اس سے پوچھا' یہ قید نہیں بلکہ اگر اس نے نہ پوچھا اور اس نے ازخود بتا دیا تو بھی یہی حکم ہے جیسا کہ مخفی نہیں۔ اسی طرح ان کا یہ قول 'اس نے قریب میں پانی ہونے کی خبر دی' اتفاقی طور پر ہے اس لئے کہ اگر اس نے خبر نہ دی بلکہ بعد میں اس نے از خود جان لیا تو بھی یہی حکم ہے کیونکہ تیمم جائز نہ ہونے کا مدار اس پر ہے کہ اس نے دریافت کرنے میں کوتاہی کی اور یہ امر حاصل ہے (اس طرح کہ بتانے والے کے ہوتے ہوئے اس نے دریافت نہ کیا اور تیمم کر کے نماز پڑھ لی) پھر حلیہ میں مجتبی کے حوالے سے ایک کلام ذکر کیا ہے جس کا ظاہر یہ ہے کہ مسئلہ نسیان کی طرح اس مسئلہ میں بھی امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ کا اختلاف ہے۔ اور خانیہ کی عبارت بھی

---

1. حلیہ المحلی

2. حلیہ المحلی

Fatawa Rizvia - Volume Three

[Left Column] ...that whoever narrated agreement either chose the matching narration or was unaware of the conflicting narration, and vice versa. Then he said: And in 'al-Khulasa', if a tent was pitched over the head of a well whose opening was covered, and one was unaware of it, so he performed Tayammum and prayed, then learned about the water, I would command him to repeat it.[1] [End] Thus, it apparently indicates the opposite of what is in the book without reporting any disagreement.[2] [End] I say: It is possible (1) that he meant ordering it as a recommendation (nadb), so it would be similar to what is in 'Jami' al-Fatawa' and would not contradict the vast majority. Then I referred back to 'al-Khulasa' and found its full text there, and it is narrated from Abu Yusuf, may Allah Almighty have mercy on him.[3] [End] By omitting this, the perception of a contradiction between it and what is in the book arose, and perhaps it is missing from...

[Right Column] ...mentioned, whose apparent meaning is similar to it. Along with this, it is also beneficial to know that regarding both forgetfulness (nisyan) and lack of knowledge, there are two narrations from Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him). And referencing 'al-Muntaqa', it is mentioned, the appearance of which is that their disagreement here, based on one narration, is in the case when one is on a riverbank. In the case of being near a well, there is no disagreement. The text is: "If there is a water well near him of which he has no knowledge, and he prays after performing Tayammum, his prayer is valid. And if this happened on a riverbank, then there are two narrations from Imam Abu Yusuf in this regard." Then the explanation for this disagreement is given: that whoever narrated agreement either chose the matching narration or was unaware of the conflicting narration, and vice versa (i.e., the one narrating disagreement either chose the conflicting narration or was unaware of the matching one. 12 m alif). Then he said: It is in 'al-Khulasa': "If a tent was pitched over a well whose mouth was closed, and he did not know about it, and prayed after performing Tayammum, then came to know about the water, I would command him to repeat it." So, the author of 'al-Khulasa', without mentioning any disagreement, apparently provided benefit contrary to what is in the book. (The text of 'Hilyah' ends here). [End] (T) I say: It is possible their meaning is, "I will give him this command as a recommendation." In this way, this statement will also be like 'Jami' al-Fatawa' and will not contradict the vast majority. Then I saw 'al-Khulasa' and found the complete statement there, which is: "This is narrated from Imam Abu

Yusuf, may Allah Almighty have mercy on him." [End] By omitting this much, the suspicion arose that...

[Footnotes] [1] Hilyah, with reference to Khulasat al-Fatawa, Chapter Five on Tayammum, printed at Naval Kishore, Lucknow, 1/32. [2] Hilyah. [3] Khulasat al-Fatawa, Chapter Five on Tayammum, printed at Naval Kishore, Lucknow, 1/32.

फ़तावा रज़विया - जिल्द तीन

[बायाँ कॉलम] ...कि जिस किसी ने सहमति का वर्णन किया, उसने या तो सहमति वाली रिवायत को चुना या उसे विरोधी रिवायत की जानकारी नहीं थी, और इसके विपरीत। फिर उसने कहा: और 'अल-ख़ुलासा' में है कि यदि किसी कुएं के मुहाने पर तंबू लगाया गया हो जिसका मुहाना ढका हुआ था, और उसे इसकी जानकारी नहीं थी, इसलिए उसने तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ी, फिर उसे पानी का पता चला, तो मैं उसे (नमाज़) दोहराने का आदेश दूंगा।[1] [समाप्त] तो स्पष्ट रूप से यह किताब में मौजूद बात के विपरीत संकेत देता है बिना किसी मतभेद का उल्लेख किए।[2] [समाप्त] मैं कहता हूँ: यह संभव है (१) कि उनका तात्पर्य इसे अनुशंसा (नदब) के रूप में आदेश देना हो, तो यह 'जामि-उल-फ़तावा' में जो है उसके समान होगा और बहुसंख्यक (जम-ए-ग़फ़ीर) के विपरीत नहीं होगा। फिर मैंने 'अल-ख़ुलासा' को देखा और उसमें इसका पूरा विवरण पाया, और यह इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) से वर्णित है।[3] [समाप्त] इसे छोड़ने से यह आभास हुआ कि इसमें और किताब में मौजूद बात में विरोधाभास है, और शायद यह ... से छूट गया है।

[दायाँ कॉलम] ...जिक्र किया है जिसका ज़ाहिर इसी के समान है। साथ ही इससे यह लाभ भी होता है कि विस्मृति (निस्यान) और अनभिज्ञता दोनों ही मसलों में इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाहि अलैहि) से दो रिवायतें हैं। और 'मुंतक़ा' के हवाले से वह ज़िक्र किया है जिसका ज़ाहिर यह है कि यहाँ एक रिवायत के आधार पर उनका मतभेद उस स्थिति में है जब वह किसी नदी के किनारे हो। कुएं के पास होने की स्थिति में उनका कोई मतभेद नहीं है। इबारत यह है: "अगर उसके पास पानी का कुआं है जिसका उसे ज्ञान नहीं और तयम्मुम से नमाज़ पढ़ ली तो उसकी नमाज़ हो गई, और अगर नदी के किनारे ऐसा हुआ तो इस बारे में इमाम अबू यूसुफ़ से दो रिवायतें हैं।" फिर इस मतभेद की व्याख्या यह फ़रमाई कि जिस किसी ने सहमति की रिवायत की, उसने सहमति वाली रिवायत को चुना या उसे विरोधी रिवायत की जानकारी नहीं हुई, इसी तरह इसके विपरीत (यानी मतभेद की रिवायत करने वाले ने केवल विरोधी रिवायत को चुना या उसे सहमति वाली रिवायत की जानकारी नहीं हुई)। फिर फ़रमाया: 'ख़ुलासा' में है: "अगर किसी ऐसे कुएं के ऊपर तंबू लगाया जिसका मुहाना बंद है और उसे इसका पता न चला, तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली फिर उसे पानी का ज्ञान हुआ तो मैं उसे दोहराने का आदेश दूंगा।" तो 'ख़ुलासा' के लेखक ने मतभेद का उल्लेख किए बिना ज़ाहिर तौर पर इसके विपरीत बात कही है जो किताब में है। ('हिल्या' की इबारत यहाँ समाप्त हुई)। (त) मैं कहता हूँ: हो सकता है उनका अर्थ यह हो कि "मैं उसे मुस्तहब (अनुशंसित) के तौर पर यह आदेश दूंगा"। इस

तरह यह कथन भी 'जामि-उल-फ़तावा' के समान होगा और बहुसंख्यक के विपरीत नहीं होगा। फिर मैंने 'ख़ुलासा' को देखा तो उसमें पूरी बात मिली, वह यह कि "यह इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाहि अलैहि) से वर्णित है।" इतना छोड़ देने से यह संदेह पैदा हुआ कि...

[फुटनोट] [1] हिल्या, ख़ुलासतुल फ़तावा के हवाले से, अध्याय पांच तयम्मुम के बारे में, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ १/३२। [2] हिल्या। [3] ख़ुलासतुल फ़तावा, अध्याय पांच तयम्मुम के बारे में, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ १/३२।

पृष्ठ ५२८ / ७५६

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

[بایاں کالم] بأن من حکی الوفاق اختار الروایة الموافقة اولم یطلع علی الروایة المخالفة وبالعکس ثم قال وفی الخلاصة لوضرب الفسطاط علی رأس بئر قد غطی رأسها ولم یعلم بذلك فتیمم وصلی ثم علم بالماء امرته بالاعادة 1انتهی فافاد ظاهرا ضد ما فی الکتاب من غیر حکایة خلاف 2اھ اقول: یمکن (ا) ان یرید امرته ندبا فیکون مثل ما فی جامع الفتاوی ولا یخالف الجم الغفیر ثم راجعت الخلاصة فوجدت تمامه فیها وهو مروی عن ابی یوسف رحمه الله تعالی 3اھ فبترك هذا نشأظن المخالفة بینها وبین مافی الکتاب ولعله ساقط من

[دایاں کالم] ذکر کی ہے جس کا ظاہر اسی کے مثل ہے ساتھ ہی اس سے یہ افادہ بھی ہوتا ہے کہ نسیان اور لاعلمی دونوں ہی مسئلوں میں امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ سے دو روایتیں ہیں اور منتقٰی کے حوالہ سے وہ ذکر کیا ہے جس کا ظاہر یہ ہے کہ یہاں ایک روایت کی بنیاد پر ان کا اختلاف اس صورت میں ہے جب وہ کسی دریا کے کنارے ہو۔ کنویں کے پاس ہونے کی صورت میں ان کا اختلاف نہیں۔ عبارت یہ ہے: "اگر اس کے پاس پانی کا کنواں ہے جس کا اسے علم نہیں اور تیمم سے نماز پڑھ لی تو اس کی نماز ہوگئی، اور اگر دریا کے کنارے ایسا ہوا تو اس بارے میں امام ابو یوسف سے دو روایتیں ہیں اھ" پھر اس اختلاف کی توجیہ یہ فرمائی ہے کہ جس نے اتفاق کی حکایت کی ہے اس نے موافقت والی روایت اختیار کی یا مخالفت والی روایت پر اسے اطلاع نہ ہوئی اسی طرح بر عکس (یعنی حکایت اختلاف والے نے صرف روایت مخالفت اختیار کی یا روایت موافقت پر اسے اطلاع نہ ہوئی ۱۲ م الف) پھر فرمایا: خلاصہ میں ہے: "اگر کسی ایسے کنویں کے اوپر خیمہ لگایا جس کا منہ بند ہے اور اسے اس کا پتہ نہ چلا، تیمم کر کے نماز پڑھ لی پھر اسے پانی کا علم ہوا تو میں اسے اعادہ کا حکم دوں گا نتی تو صاحب خلاصہ نے

حکایت اختلاف کے بغیر بظاہر اس کے برخلاف افادہ فرمایا جو کتاب میں ہے۔ (حلیہ کی عبارت ختم ہوئی) اھ (ت) اقول: ہو سکتا ہے ان کی مراد یہ ہو کہ "استحباباً میں اسے یہ حکم دوں گا" اس طرح یہ کلام بھی جامع الفتاوی کے مثل ہو گا اور جم غفیر کے مخالف نہ ہو گا پھر میں نے "خلاصہ" کو دیکھا تو اس میں پوری بات ملی وہ یہ کہ "یہ امام ابویوسف رحمہ اللہ تعالیٰ سے مروی ہے" اھ اتنی چھوڑ دینے سے یہ گمان پیدا ہوا کہ

[حواشی] 1 حلیہ بحوالہ خلاصۃ الفتاوی الفصل الخامس فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۲ 2 حلیہ 3 خلاصۃ الفتاوی الفصل الخامس فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۲

Volume 3 | Fatawa-e-Razvia

[Table Row 1] Left (Arabic): In its copy, and indeed (1) the pen of the scholar, the researcher of [Al-]Bahr, slipped; he proceeded in [Al-]Bahr based on it, suggesting it is the consensus or the preferred opinion in the school of thought, but it is not so, as you have learned. He also said in Al-Hindiyya, citing Al-Muheet: "If one pitches a tent over the mouth of a well whose opening is covered and it has water in it while he does not know, or he was on the bank of a river while he does not know, so he performed Tayammum and prayed with it, it is permissible according to them [Imams Abu Hanifa and Muhammad], contrary to Abu Yusuf, may Allah have mercy on them all (1) end quote." Thus, the confusion is removed, and praise be to Allah, and from Him comes protection. Right (Urdu): There is a discrepancy between the summary and the book's explanation. It is possible that in the copy of the author of 'Hilya', this much text was missing. Because of this, the pen of the scholar and researcher of 'Bahr' slipped, and he followed this ruling in 'Al-Bahr al-Raiq' and explained it in a way that creates the illusion that this is the opinion of all or the preferred one in the school, whereas it is not so, as has just been made known. And it is also written in 'Hindiyya' with reference to 'Muheet': "When a tent was pitched on such a well whose mouth was closed and there is water in the well, and he does not know it, or he is on a riverbank and does not know it, and he prays after performing Tayammum, it is permissible according to the two sides (Imam Azam and Imam Muhammad), unlike Imam Abu Yusuf. May Allah have mercy on them. End." With this clarification, the ambiguity has been removed. And all virtues are for Allah alone, and protection is obtained from Him. (T)

[Section 160] (160) A father and son are traveling together; the water is jointly owned by both or solely owned by the son, and it is sufficient for only one person. If the father wants to perform purification with it, it is not permissible for the son to obstruct him because the father, in time of need, can become the owner of his children's property. Therefore, it is mandatory for the son to perform Tayammum. It is stated in the Fatawa of Imam Qazi Khan:

[Table Row 2] Left (Arabic): "If the water is between the father and the son, the father has more right to it because he has the right to own the son's property (2)." Right (Urdu): If water is shared between the father and the son, the father is more entitled because he has the right to become the owner of his son's wealth. (T)

[Middle Text] Similarly, it is mentioned in 'Khazanat-ul-Muftiyeen', 'Hindiyya', and 'Al-Ashbah' in the third discipline, the chapter on debts.

[Table Row 3] Left (Arabic): I say (Aqool): And it is not specific to the case of shared ownership; rather, even if all of it belongs to his son, the ruling is the same. Right (Urdu): I say: This ruling is not limited to the situation of shared ownership. Even if all the water belongs to the son, [the ruling is the same].

[Footnotes] 1. Fatawa Hindiyya, Chapter Three on Miscellaneous Issues, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/31. 2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on matters where Tayammum is permissible, printed by Nawal Kishore Lucknow, 1/72.

जिल्द तीन | फ़तवा रज़विया

[तालिका पंक्ति 1] बायाँ (अरबी): इसके नुस्खे में, और वास्तव में (1) अल्लामा मुहक़्क़िक़ 'बहर' की कलम फिसल गई; उन्होंने 'बहर' में इसी आधार पर अपनी बात जारी रखी, जिससे यह भ्रम होता है कि यह सब का मत है या मज़हब में पसंदीदा मत है, लेकिन ऐसा नहीं है जैसा कि आप जान चुके हैं। उन्होंने 'अल-हिंदिया' में 'अल-मुहीत' के हवाले से यह भी कहा है: "यदि किसी ने कुएं के मुहाने पर तंबू लगाया जिसका मुँह ढका हुआ है और उसमें पानी है जबकि वह नहीं जानता, या वह नदी के किनारे था जबकि वह नहीं जानता, तो उसने तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ी, तो यह उन दोनों (इमामों) के अनुसार जायज़ है, अबू यूसुफ के विपरीत, अल्लाह उन सब पर रहम करे (1) समाप्त।" इस प्रकार भ्रम दूर हो गया, और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, और उसी से सुरक्षा प्राप्त होती है। दायाँ (उर्दू): सारांश और पुस्तक के विवरण के बीच आपस में मतभेद है। हो सकता है कि साहिब-ए-हिलिया के नुस्खे में इतना इबारत (पाठ) गायब हो। इसी कारण अल्लामा मुहक़्क़िक़ 'बहर' की कलम फिसल गई और उन्होंने 'अल-बहर अल-राइक़' में उसी हुक्म को अपनाया और इस तरह बयान किया जिससे भ्रम होता है कि यह सब का मत है या यही मज़हब में मुख़्तार (चुना हुआ) है, जबकि ऐसा नहीं है जैसा कि अभी ज्ञात हुआ। और 'हिंदिया' में भी 'मुहीत' के हवाले से लिखा है: "जब ऐसे कुएं पर तंबू लगाया गया जिसका मुँह बंद है और कुएं में पानी है, और उसे पता नहीं है या वह दरिया के किनारे है और उसे पता नहीं है, तो तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, यह तरफ़ैन (इमाम-ए-आज़म और इमाम मुहम्मद) के नज़दीक जायज़ है। इमाम अबू यूसुफ के विपरीत। अल्लाह उन पर रहम करे। समाप्त।" इस तसरीह (स्पष्टीकरण) से इल्तिबास (भ्रम) दूर हो गया। और सारी खूबियां अल्लाह ही के लिए हैं और हिफ़ाज़त उसी से मिलती है। (त)

[धारा 160] (160) सफ़र में बाप और बेटे साथ हैं; पानी दोनों की साझी मिल्कियत (स्वामित्व) में है या केवल बेटे की मिल्कियत में है और वह केवल एक व्यक्ति के लिए पर्याप्त है। यदि पिता उससे पाकी हासिल करना चाहता है, तो बेटे के लिए यह जायज़ नहीं है कि वह उसे रोके, क्योंकि पिता ज़रूरत के समय संतान की संपत्ति का मालिक बन सकता है। इसलिए बेटे पर लाज़िम (अनिवार्य) है कि वह तयम्मुम करे। इमाम काज़ीखान के फ़तवे में है:

[तालिका पंक्ति 2] बायाँ (अरबी): "यदि पानी पिता और पुत्र के बीच है, तो पिता इसके अधिक हक़दार हैं क्योंकि उन्हें पुत्र की संपत्ति का स्वामित्व लेने का अधिकार है (2)।" दायाँ (उर्दू): अगर पानी

बाप और बेटे के दरमियान मुश्तरक (साझा) हो तो बाप ज़्यादा हक़दार है क्योंकि उसे बेटे के माल का मालिक बनने का हक़ हासिल है। (त)

[मध्य पाठ] इसी तरह 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन', 'हिंदिया' और 'अशबाह' फ़न-ए-सालिस क़ौल फ़िद-दीन में है।

[तालिका पंक्ति 3] बायाँ (अरबी): अक़ूल (मैं कहता हूँ): यह हुक्म केवल साझी मिल्कियत तक सीमित नहीं है; बल्कि, यदि सारा ही उसके बेटे की मिल्कियत हो, तब भी हुक्म यही है। दायाँ (उर्दू): अक़ूल: यह हुक्म मिल्कियत में शिरकत (साझेदारी) की सूरत से ही ख़ास नहीं। अगर सारा पानी बेटे की मिल्कियत हो तब भी।

[पाद टिप्पणियाँ] 1. फ़तवा हिंदिया, अल-फ़स्ल अल-सालिस फ़िल मुतफ़र्रक़ात, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/31 2. फ़तवा काज़ीखान, फ़स्ल फ़ीमा यजोज़ु लहू अल-तयम्मुम, मतबूआ नवल किशोर लखनऊ, 1/72

[پہلی سطر] بائیں (عربی): نسخته وقد (۱) زلت به قدم قلم العلامة المحقق البحر فمشی علیه فی البحر موهما انه قول الکل او المختار فی المذهب و لیس کذلك کما علمت وقد قال ایضاً فی الهندیة عن المحیط اذا ضرب خباء ه علی رأس بئر غطی رأسها وفیها ماء وهو لا یعلم او کان علی شط النهر وهو لا یعلم فتیمم وصلی به جاز عندهما خلافا لابی یوسف رحمهم الله تعالی (۱) اه فقد انکشف اللبس ولله الحمد و به تعالی العصمة۔ دائیں (اردو): خلاصہ اور کتاب کے بیان میں باہم اختلاف ہے۔ ہو سکتا ہے صاحب حلیہ کے نسخہ میں اتنی عبارت ساقط ہو۔ اسی کی وجہ سے علامہ محقق بحر کا پائے قلم لغزش میں پڑ گیا تو وہ البحر الرائق میں اسی حکم پر چلے گئے اور اس طرح بیان کیا جس سے وہم ہوتا ہے کہ یہ سب کا قول ہے یا یہی مذہب میں مختار ہے حالانکہ ایسا نہیں جیسا کہ ابھی معلوم ہوا۔ اور ہندیہ میں بھی محیط کے حوالہ سے لکھا ہے: "جب ایسے کنوئیں پر خیمہ لگایا جس کا منہ بند ہے اور کنوئیں میں پانی ہے۔ اور یہ جانتا نہیں یا وہ دریا کے کنارے ہے اور اسے پتہ نہیں تو تیمم کرکے نماز پڑھ لی، یہ طرفین (امام اعظم وامام محمد) کے نزدیک جائز ہے۔ بخلاف امام ابویوسف کے۔ رحمہم اللہ تعالیٰ اھ اس تصریح سے التباس دُور ہو گیا۔ اور ساری خوبیاں اللہ ہی کیلئے ہیں اور حفاظت اسی سے ملتی ہے۔ (ت)

[دفعہ ۱۶۰] (۱۶۰) سفر میں باپ بیٹے ہمراہ ہیں پانی دونوں کی ملک مشترک یا تنہا بیٹے کی ملک اور ایک ہی کیلئے کافی ہے اور باپ اس سے طہارت کرنا چاہتا ہے بیٹے کو جائز نہیں کہ اُس سے مزاحمت کرے کہ باپ وقت حاجت ملک اولاد کا مالک بن سکتا ہے لہذا بیٹے پر لازم کہ تیمم کرے فتاوی امام قاضیخان میں ہے :

[دوسری سطر] بائیں (عربی): لو کان الماء بین الاب والابن فالاب اولی به لان له حق تملك مال الابن (۲)۔ دائیں (اردو): اگر پانی باپ اور بیٹے کے درمیان مشترک ہو تو باپ زیادہ حقدار ہے کیوں کہ اسے مال فرزند کا مالک بننے کا حق حاصل ہے۔ (ت)

[درمیانی عبارت] اسی طرح اُس سے خزانتہ المفتین و ہندیہ واشباہ فن ثالث قول فی الدین میں ہے۔

[تیسری سطر] بائیں (عربی): اقول: ولا یختص بالشرکة بل لو کان کله ملك ولده فالحکم کذلك دائیں (اردو): اقول: یہ حکم ملک میں شرکت کی صورت سے ہی خاص نہیں۔ اگر سارا پانی بیٹے کی ملک ہو تو بھی

[حواشی] ۱۔ فتاوی ہندیہ الفصل الثالث فی المتفرقات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۱ ۲۔ فتاوی قاضیخان فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/۷۲

Fatawa Razawiya Volume 3

| (Arabic Text) If the father intends it with proof. I added "the father intends purification with it" because he has the option to leave it for his son and perform Tayammum himself. In that case, there is no inability for the son. Rather, even if it were the property of the son, as long as the father does not manifest his intention, the son's inability is not established. Even if he had performed Tayammum before, it would be invalidated. Then if the father takes it, he should repeat his Tayammum. | The ruling is when the father intends purification. I added the mention of the father's intention for purification because he also has the choice to leave the water for his son and perform Tayammum himself. In such a case, the son will not be considered unable. In fact, even if the water is the property of the son, the son's inability will not be established until the father expresses his intention for purification. This goes to the extent that if the son had performed Tayammum before obtaining the water, his Tayammum would be broken after possession. Now if the father takes that water, the son will have to perform Tayammum again. (T) |

(161) I say: If a father and son find permissible (Mubah) water in a forest that is sufficient for only one of them; if the father reached there first and took possession, then it is obvious that the son should perform Tayammum because it is now someone else's property, as permissible items become property through possession. This is case number 53. If the son reached first and took possession, then it is case number 155. If they reached together, and if the father had already said beforehand that "I will take the water," then it is not permissible for the son to resist; the father's power over the water alone will be established to the extent that if the son had previously performed Tayammum, it would not break, and if he hadn't, he should now perform Tayammum. If he hadn't said so beforehand, then both became capable. If they had performed Tayammum before, those are invalidated. Now if the father wants to take this water, the son should perform Tayammum again. This is all that has become clear to me through legal understanding (tafaqquh), and I hope it is correct, God willing. (This is all revealed to me as legal insight, and I hope it will be correct, God willing. - T)

Caution: It is mentioned in Khaniya, Khulasa, Ashbah, Durr-e-Mukhtar, etc., that if there are a person in a state of major ritual impurity (Junub), a menstruating woman (Ha'iz), a person in a state of minor ritual impurity (Muhdith), and a deceased person in a forest, and permissible water suitable for bathing is found sufficient for only one of them, then the Junub has priority; he should bathe, while the menstruating

woman and the person in minor impurity should perform Tayammum, and Tayammum should be performed for the deceased.

| (Arabic Text) And this is the organization of Al-Durr: The Junub has priority over a Ha'iz or Muhdith and a deceased person regarding permissible water. If it belongs to one of them, then he is more entitled. If it is shared, it should be given to the deceased. | And the text of Durr-e-Mukhtar is: "A Junub has priority over a menstruating woman (Ha'iz), a person in minor impurity (Muhdith), and a deceased person regarding permissible water. If the water is the property of one of them, then he is the most entitled to it. And if it is a shared ownership, then everyone should give their share to the deceased person. (T) |

1 Ad-Durr al-Mukhtar with Ash-Shami, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/186 Page 530 of 756

| (अरबी पाठ) यदि पिता प्रमाण के साथ इसका इरादा करता है। मैंने जोड़ा कि "पिता इसके द्वारा शुद्धिकरण का इरादा रखता है" क्योंकि उसके पास यह विकल्प है कि वह इसे अपने बेटे के लिए छोड़ दे और स्वयं तयम्मुम कर ले। उस स्थिति में, बेटे के लिए कोई विवशता नहीं है। बल्कि, भले ही वह बेटे की संपत्ति हो, जब तक पिता अपनी मंशा प्रकट नहीं करता, बेटे की विवशता सिद्ध नहीं होती। भले ही उसने पहले तयम्मुम किया हो, वह अमान्य हो जाएगा। फिर यदि पिता इसे ले लेता है, तो उसे अपना तयम्मुम दोहराना चाहिए। | नियम यह है कि जब पिता शुद्धि (पाकी) का इरादा कर ले। मैंने पिता के शुद्धि के इरादे को इसलिए जोड़ा है क्योंकि उसे यह भी विकल्प है कि वह पानी बेटे के लिए छोड़ दे और स्वयं तयम्मुम कर ले। ऐसी स्थिति में बेटा विवश (आजिज़) नहीं माना जाएगा। बल्कि, यदि पानी बेटे का है, तो जब तक पिता अपनी शुद्धि के इरादे को व्यक्त नहीं करता, बेटे की विवशता सिद्ध नहीं होगी। यहाँ तक कि यदि बेटे ने पानी मिलने से पहले तयम्मुम कर लिया था, तो स्वामित्व मिलने के बाद उसका तयम्मुम टूट जाएगा। अब यदि पिता वह पानी ले लेता है, तो बेटे को फिर से तयम्मुम करना होगा। (त) |

(१६१) मैं कहता हूँ: यदि पिता और पुत्र को जंगल में ऐसा पानी (मुबाह पानी) मिले जो केवल एक के लिए पर्याप्त हो; यदि पिता वहाँ पहले पहुँचा और उस पर कब्ज़ा कर लिया, तो यह स्पष्ट है कि पुत्र तयम्मुम करे क्योंकि अब वह दूसरे की संपत्ति है, क्योंकि मुबाह चीज़ों पर कब्ज़ा करने से वे संपत्ति बन जाती हैं। यह नियम संख्या ५३ हुई। और यदि पुत्र पहले पहुँचा और उसने कब्ज़ा कर लिया, तो वह नियम संख्या १५५ है। और यदि दोनों एक साथ पहुँचे, और यदि पिता ने पहले ही कह दिया था कि "मैं पानी लूँगा", तो पुत्र के लिए विरोध करना उचित नहीं है; पानी पर केवल पिता का अधिकार सिद्ध होगा, यहाँ तक कि यदि पुत्र ने पहले से तयम्मुम किया हुआ था, तो वह नहीं टूटेगा, और यदि नहीं किया था, तो अब वह तयम्मुम करे। और यदि पिता ने पहले ऐसा नहीं कहा था, तो दोनों समर्थ हो गए। यदि उन्होंने पहले से तयम्मुम किया हुआ था, तो वह समाप्त हो गया। अब यदि पिता इस पानी को लेना चाहता है, तो पुत्र को फिर से तयम्मुम करना चाहिए। यह सब मुझे कानूनी समझ (तफक्कुह) से स्पष्ट हुआ है, और मुझे आशा है कि यह सही होगा, इंशा अल्लाह। (यह सब कानूनी सूझ-बूझ के रूप में मुझ पर स्पष्ट हुआ और उम्मीद है कि इंशा अल्लाह सही होगा। - त)

चेतावनी: खानिया, खुलासा, अश्बाह, दुर्रे मुख्तार आदि में लिखा है कि यदि जंगल में एक जुनुब (बड़ी नापाकी वाला), एक हईज़ (मासिक धर्म वाली महिला), एक मुहदिस (छोटी नापाकी वाला) और एक

मृत व्यक्ति हों, और स्नान के योग्य मुबाह पानी मिले जो केवल एक के लिए पर्याप्त हो, तो जुनुब को प्राथमिकता दी जानी चाहिए; वह स्नान करे, और हईज़ तथा मुहदिस तयम्मुम करें, और मृत व्यक्ति को तयम्मुम कराया जाए।

| (अरबी पाठ) और यह अल-दुर्र की व्यवस्था है: मुबाह पानी के मामले में जुनुब को हईज़ या मुहदिस और मृत व्यक्ति पर प्राथमिकता प्राप्त है। यदि यह उनमें से किसी एक का है, तो वह अधिक हकदार है। यदि यह साझा है, तो इसे मृत को दिया जाना चाहिए। | और दुर्रे मुख्तार का पाठ यह है: "मुबाह पानी के मामले में जुनुब को हईज़, मुहदिस और मृत व्यक्ति पर प्राथमिकता प्राप्त है। और यदि पानी उनमें से किसी की संपत्ति है, तो वही उसका पात्र है। और यदि वह सबकी साझी संपत्ति है, तो चाहिए कि सब अपना हिस्सा मृत व्यक्ति को दे दें।" (त) |

१ अल-दुर्र अल-मुख्तार मा अश-शामी, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, १/१८६। पेज ७५६ का ५३०

| اذا اراده الاب بدلیل الدلیل وزدت ان یرید الاب التطهیر به لان له ان یترکه لابنه ویتیمم فح لا عجز بالولد بل لو کان ملک الابن فما لم یظهر الاب ارادته لایثبت عجز الابن حتی(۱) لو کان متیما قبله انقض فان اخذه الاب اعاد تیممہ۔ | حکم ہے جب کہ باپ طہارت کا قصد کرلے باپ کے قصد طہارت کا اضافہ میں نے اس لئے کیا کہ اسے یہ بھی اختیار ہے کہ پانی بیٹے کیلئے چھوڑ دے اور خود تیمم کرلے ایسی صورت میں بیٹا عاجز نہ ہوگا۔ بلکہ اگر پانی بیٹے کی ملک ہے تو جب تک باپ اپنے قصد طہارت کا اظہار نہ کرے بیٹے کا عجز ثابت نہ ہوگا یہاں تک کہ پانی ملنے سے پہلے بیٹا اگر تیمم سے تھا تو بعدِ ملک اس کا تیمم ٹوٹ گیا اب اگر وہ پانی لیتا ہے تو بیٹے کو دوبارہ تیمم کرنا ہوگا۔ (ت) |

(۱۶۱) اقول: باپ بیٹے کو جنگل میں مباح پانی ملا کہ ایک ہی کو کافی ہے اگر باپ وہاں پہلے پہنچ گیا اس کا قبضہ ہوگیا جب تو ظاہر ہے کہ بیٹا تیمم کرے کہ اب وہ ملک غیر ہے کہ مباح استیلاء سے ملک ہو جاتا ہے یہ نمبر ۵۳ ہوا۔ اور اگر بیٹا پہلے پہنچا قابض ہوا تو وہی نمبر ۱۵۵ ہے اور اگر دونوں ایک ساتھ پہنچے اگر باپ نے پہلے سے کہہ دیا تھا کہ پانی میں لوں گا تو بیٹے کو مزاحمت جائز نہیں پانی پر صرف باپ کی قدرت ثابت ہوگی یہاں تک کہ اگر پہلے سے بیٹے کا تیمم تھانہ ٹوٹے گا اور نہ تھا تو اب تیمم کرے گا اور اگر پہلے سے ایسا نہ کہا تھا تو دونوں قادر ہوگئے اگر پہلے سے تیمم کئے تھے جاتے رہے اب اگر باپ اس پانی کو لینا چاہے بیٹا دوبارہ تیمم کرے هذا کله ماظهر لی تفقهًا و ارجو ان یکون صوابا ان شاء الله تعالٰی (یہ سب بطور تفقہ میرے اوپر ظاہر ہوا اور امید ہے کہ ان شاء اللہ تعالٰی درست ہوگا ۔ت)

تنبیہ : خانیہ۱ و خلاصہ واشباہ و دُرمختار وغیرہما میں ہے کہ جنگل میں جنب وحائض و محدث و میت ہیں مباح پانی قابلِ غسل ملا کہ ایک ہی کو کافی ہے تو جنب اولیٰ ہے وہ نہائے اور حائض و محدث تیمم کریں اور میت کو تیمم کرایا جائے،

| وھذا نظم الدر الجنب اولی بمباح من حائض او محدث ومیت ولولاحدھم(۳) فھو اولی ولو مشترکا ینبغی صرفه للمیت۱۔ | اور دُرمختار کی عبارت یہ ہے: "جنب آبِ مباح میں حائض، محدث اور میت سے اولیٰ ہے اور اگر پانی ان میں کسی کی ملک ہو تو وہی مستحق ہے اور اگر ملک میں سب کی شرکت ہے تو چاہئے کہ سب اپنا حصہ میت کو دے دیں۔ (ت) |

1 الدرالمختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۶ Page 530 of 756

Fatawa Razvia, Volume 3

I say: This scenario is not one of inability to find water. To the extent that if three people had performed tayammum and then permissible water became available to all, then everyone's tayammum is invalidated. When a person in a state of major ritual impurity (Junub) bathes with it, the menstruating woman and the person with minor ritual impurity (Muhdith) should perform tayammum again.

[Arabic Box 1] If permissible water is found that suffices for one of them as a substitute, it invalidates the tayammum of all of them because each one of them has become capable [of performing ritual purification with water]. This is as stated in Khizanat al-Muftin from Al-Kubra. In Al-Khulasa, it says: "If five people who have performed tayammum find permissible water in a quantity sufficient for one of them to perform wudu, the tayammum of all of them is invalidated. If a man brings a jug of water and says 'let whoever among you wishes perform wudu with it,' the tayammum of all is invalidated even if the water only suffices for one. Similarly, if he says 'this water is for whoever wants it,' the same rule applies."

[Urdu Column 1] This is because if permissible water is found in an amount that would be sufficient for any one of them as a substitute, then everyone's tayammum is broken because each one of them became capable [of using it], as written in Khizanat al-Muftin with reference to Al-Kubra. In Al-Khulasa it is stated: "To five such people who are in a state of tayammum, if permissible water is found in such an amount that it is sufficient for any one of them, then everyone's tayammum is broken. And if someone brought his vessel of water and said, 'Whichever of you wants to, perform wudu,' then everyone's tayammum is broken even though the water could only suffice for one person. And if he said: 'This water is for whoever wants it,' then the rule is the same." - (t)

When a father wants to take it, the son is prohibited by Shari'ah, and a Shari'ah prohibition also counts as a cause of inability.

[Arabic Box 2] As previously mentioned from Al-Fath regarding water in public jars and gifted water. Similarly, water owned through a voidable/invalid contract (Milk-e-Fasid), if the partners give permission to one of them, his tayammum is not invalidated. It is said in Al-Bahr: "It is not hidden that although it is owned, its disposal is not permissible, so its existence is like its absence." And [the author of] An-Nahr disputed with him on this matter in a way that is surprising coming from someone like him.

[Urdu Column 2] As mentioned before regarding water for public use and gifted water with reference to Fath al-Qadir. Similarly, regarding water that has come into ownership through an invalid contract, when partners give permission to any one person, his tayammum will not be broken. In Al-Bahr al-Ra'iq it says: "Let it not remain hidden that although this is owned, disposal in it is not allowed, so its presence is like its absence." On this issue, the brother of the author of Al-Bahr, the author of An-Nahr, has differed and written something that is surprising coming from the pen of a personality like him. - (t)

1. Khizanat al-Muftin
2. Khulasa al-Fatawa, Five Performers of Tayammum, printed by Naval Kishore Lucknow, 1/37
3. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, HM Saeed Company Karachi, 1/152

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

अक़ूल (मैं कहता हूँ): यह स्थिति पानी की लाचारी (इज्ज़) की नहीं है, यहाँ तक कि अगर तीनों ने तयम्मुम किया हुआ था और अब जायज़ (मुबाह) पानी मिल गया, तो सबका तयम्मुम टूट गया। जब जुनुब (बड़ी नापाकी वाला) इससे नहा ले, तो हयज़ वाली औरत और मोहदिस (वज़ू की ज़रूरत वाला) फिर से तयम्मुम करें।

[अरबी इबारत - १] अगर ऐसा जायज़ पानी मिले जो उनमें से किसी एक के लिए बदल के तौर पर काफी हो, तो उन सबका तयम्मुम बातिल हो जाएगा क्योंकि उनमें से हर एक पानी इस्तेमाल करने में सक्षम (क़ादिर) हो गया है। जैसा कि 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' में 'कुबरा' के हवाले से है और 'ख़ुलासा' में है: 'तयम्मुम करने वाले पाँच आदमियों को अगर इतना जायज़ पानी मिल जाए जो उनमें से किसी एक के वज़ू के लिए काफी हो, तो सबका तयम्मुम टूट गया। और अगर कोई शख्स पानी का लोटा लाए और कहे कि तुम में से जो चाहे इससे वज़ू कर ले, तो सबका तयम्मुम टूट गया चाहे पानी सिर्फ एक शख्स के लिए काफी था। और अगर कहा: "यह पानी उसके लिए है जो चाहे", तो भी यही हुक्म है।"

[उर्दू व्याख्या - १] इसलिए कि अगर जायज़ पानी इस मात्रा में मिला कि बदल के तौर पर उनमें से हर एक के लिए काफी होगा तो सभी का तयम्मुम टूट गया क्योंकि उनमें हर एक सक्षम हो गया जैसा कि 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' में 'कुबरा' के हवाले से लिखा है। 'ख़ुलासा' में है: "ऐसे पाँच आदमियों को जो तयम्मुम से हैं, जायज़ पानी इस मात्रा में मिला कि उनमें किसी एक के लिए काफी होगा तो सब का तयम्मुम टूट गया। और अगर कोई अपने पानी का बर्तन लाया और कहा कि तुम में से जो चाहे वज़ू कर ले तो सब का तयम्मुम टूट गया हालाँकि पानी सिर्फ एक शख्स के लिए ही काफी हो सकता था। और अगर कहा: 'यह पानी उसके लिए है जो चाहे' तो भी यही हुक्म है।" - (त)

बाप जब उसे लेना चाहता है, बेटा शरई तौर पर मना हो गया और शरई मनाही भी लाचारी (इज्ज़) का कारण है।

[अरबी इबारत - २] जैसा कि 'फ़तह' के हवाले से घड़े के पानी और तोहफे में मिले पानी के बारे में पहले गुज़रा। इसी तरह वह पानी जो 'मिल्क-ए-फ़ासिद' (अवैध स्वामित्व) के तौर पर मिल्कियत में आया है, जब साझेदार उनमें से किसी एक को इजाज़त दे दें तो उसका तयम्मुम नहीं टूटेगा। 'बहर' में कहा गया है: 'यह छिपी बात नहीं है कि हालाँकि यह मिल्कियत में है मगर इसमें खर्च (तसर्रुफ़)

करना जायज़ नहीं है, इसलिए इसका होना न होने के बराबर है।' और 'नहर' के लेखक ने इस मामले में 'बहर' के लेखक से मतभेद किया है जो उनके जैसे व्यक्तित्व के लिए आश्चर्यजनक है।

[उर्दू व्याख्या - २] जैसा कि सबील के पानी और हिबा (दान) किए गए पानी के बयान में 'फ़तहुल क़दीर' के हवाले से गुज़रा, इसी तरह जो पानी मिल्क-ए-फ़ासिद के तौर पर मिल्कियत में आया है उससे संबंधित साझेदार जब किसी एक को इजाज़त दे दें तो उसका तयम्मुम न टूटेगा। 'अल-बहरुल राइक़' में है: 'मख़्फ़ी (छिपा) न रहे कि यह अगरचे मम्लूक (स्वामित्व में) है मगर इसमें तसर्रुफ़ रवा (इस्तेमाल करना जायज़) नहीं है तो इसका होना न होने की तरह है'। इस मसले पर 'बहर' के लेखक से उनके भाई 'नहर' के लेखक ने इख़्तिलाफ़ (असहमति) करते हुए ऐसी बात लिखी है जो उन जैसी शख़्सियत के क़लम से ताज्जुबनाक (हैरान करने वाली) है। - (त)

1. ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन
2. ख़ुलासतुल फ़तावा, पाँच तयम्मुम करने वाले, नवल किशोर लखनऊ द्वारा मुद्रित, 1/37
3. अल-बहरुल राइक़, बाबुल तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/152

पृष्ठ 531/756

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

اقول: یہ شکل پانی سے عجز کی نہیں یہاں تک کہ اگر تینوں متیم تھے اب یہ آب مباح ملا سب کا تیمم ٹوٹ گیا جب جنب اس سے نہائے حائض و محدث دوبارہ تیمم کریں۔

[عربی عبارت - ١] فان (٢) وجد ان مباح یکفي لاحدھم علی سبیل البدلیة ینقض تیممھم جمیعا لان کل واحد منھم صار قادرا ١ کما في خزانة المفتین عن الکبری وفی الخلاصة خمسة من المتیممین وجدوا من الماء المباح قدر ما یتوضوء به احدھم انتقض تیمم الکل و لو (٣) جاء رجل بکوز من ماء و قال لیتوضأ به ایکم شاء انتقض تیمم الکل وان کان الماء یکفي لاحدھم و لو قال ھذا الماء لمن یرید فکذلك ٢ اھ

[اردو وضاحت - ١] اس لئے کہ اگر آب مباح اس مقدار میں ملا کہ بطور بدلیت ان میں سے ہر ایک کیلئے کافی ہوگا تو سبھی کا تیمم ٹوٹ گیا اس لئے کہ ان میں ہر ایک قادر ہو گیا جیسا کہ خزانتہ المفتین میں بحوالہ کبرٰی لکھا ہوا ہے۔ خلاصہ میں ہے: "ایسے پانچ آدمیوں کو جو تیمم سے ہیں آب مباح اس مقدار میں ملا کہ ان میں کسی ایک کیلئے کافی ہوگا تو سب کا تیمم ٹوٹ گیا اور اگر کوئی اپنے پانی کا برتن لے آیا اور کہا تم میں سے جو چاہے وضو کرلے تو سب کا تیمم ٹوٹ گیا اگرچہ پانی صرف ایک شخص کیلئے کفایت کر سکتا تھا اور اگر کہا: "یہ پانی اس کیلئے ہے جو چاہے تو بھی یہی حکم ہے"۔ اھ (ت)

باپ جب اسے لینا چاہتا ہے بیٹا شرعاً ممنوع ہو گیا اور منع شرعی بھی موجبِ عجز ہے۔

[عربی عبارت - ۲] کما تقدم عن الفتح في ماء الحب و الماء الموهوب و کذا الماء (۵) المملوك ملکا فاسدا اذا اذن به الشرکاء لاحدهم لا ینتقض تیممه قال في البحر لا یخفی انه و ان کان مملوکا لا یحل التصرف فیه فکان وجوده کعدمه ۳ اھ و نازع فیه النهر بما هو من مثله عجیب۔

[اردو وضاحت - ۲] جیسا کہ سبیل کے پانی اور ہبہ شدہ پانی کے بیان میں فتح القدیر کے حوالہ سے گزرا اسی طرح جو پانی ملکِ فاسد کے طور پر ملکیت میں آیا ہے اس سے متعلق شرکاء جب کسی ایک کو اجازت دے دیں تو اس کا تیمم نہ ٹوٹے گا۔ البحرالرائق میں ہے: "مخفی نہ رہے کہ یہ اگرچہ مملوک ہے مگر اس میں تصرف روا نہیں تو اس کا ہونا نہ ہونے کی طرح ہے"۔ اھ اس مسئلہ پر صاحبِ بحر سے ان کے برادر صاحبِ نہر نے اختلاف کرتے ہوئے ایسی بات لکھی ہے جو ان جیسی شخصیت کے قلم سے تعجب خیز ہے۔ (ت)

۱ خزانۃ المفتین ۲ خلاصۃ الفتاوٰی خمسۃ من المتیممین مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/ ۳۷ ۳ البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۵۲

Fatawa Ridawiyya Volume 3

In contrast to a Junub (a person in a state of ritual impurity requiring a bath), since here their individual entitlement is not mandatory but only a matter of priority; over a person in minor ritual impurity (Muhdith) because major impurity (Janaba) is more severe; and over a menstruating woman simply for the sake of the excellence of the collective situation. She cannot lead prayers, while a Junub will be the Imam. Now, if the menstruating woman bathes and the Junub performs Tayammum (dry ablution), the leadership of one who washed would be behind someone who performed Tayammum. Although this is valid and permissible, the reverse is preferred. Therefore, it is appropriate for the Junub to bathe and for the menstruating woman to perform Tayammum. Regarding the deceased, the evidence for the bath of major ritual impurity (Ghusl al-Janaba) is from the Great Quran, whereas the bath of the deceased (Ghusl al-Mayyit) is established through Sunnah and Consensus (Ijma'). For such benefits, priority is given to the Junub, not that their entitlement renders others unable to obtain water. It is stated in 'Radd al-Muhtar': By consensus, a Junub has more right to permissible (Mubah) water. Cited from 'Tatarkhaniyya'.

[Arabic Box Left Column] **I say: This is strange; rather, the majority of scholars favor the priority of the deceased, even if the first view is more correct. In 'Al-Bahr', citing 'Al-Zahiriyya', it says: "Most scholars said the deceased has more right, and it was said the Junub has more right, which is more correct." Al-Tahtawi disputed this, stating that since shared water should be spent on the deceased—as previously mentioned from 'Al-Durr'—then permissible water has more right to be so. That is, if they are recommended (as an act of virtue) to give their own property for the deceased, then what they do not own is even more fitting. Shami replied that each of them should give their share to the deceased when each one's share is insufficient for them, and neither the Junub nor anyone else can take control of the whole because it is occupied by the deceased's portion. The fact that Janaba (ritual impurity) is more severe does not permit using the deceased's portion. Thus, the Junub is not more deserving, unlike when the water is permissible, for in that case, if it is possible to lift—**

[Urdu Box Right Column] **I say: This is a strange point; the majority of scholars say the deceased is more entitled, although the first view is more correct. It is mentioned in 'Al-Bahr al-Ra'iq' with reference to 'Zahiriyya': "The saying of most scholars is that the deceased is more entitled, and it was said that the Junub is better, and this is more correct." Sayyid Tahtawi disagreed with this and wrote:**

"When shared water should be used for the deceased (i.e., as mentioned with reference to 'Durr al-Mukhtar'), then permissible water will be his right by a greater degree." This means when it is commanded as an act of recommendation to give one's share of ownership to the deceased, then for that which is not their property, this command will be even more applicable. Allama Shami gave this reply: "Every individual should give their share to the deceased at a time when each person's situation is such that their own share is not sufficient for them, and neither the Junub nor anyone else can take the entire—

[Small Box Bottom] **—ritual impurity, he is more deserving. That is, shared water cannot be used exclusively by one of them because of the deceased's portion, for— —water for their own use, because it also includes the deceased's portion, and the fact of the state of ritual impurity being more severe does not allow it.**

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/186. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed and Company, 1/123. 3. Tahtawi on al-Durr, Chapter on Tayammum, published by Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/133. 4. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/186.

फतावा रज़विया खंड ३

इसके विपरीत 'जुनुब' (वह व्यक्ति जिसे ग़ुस्ल की ज़रूरत हो) के मामले में यहाँ उसका अकेला अधिकार अनिवार्य नहीं बल्कि केवल प्राथमिकता है; एक 'मुहदिथ' (अल्प अशुद्धि वाला) से इसलिए कि 'जनाबत' (बड़ी अशुद्धि) अधिक गंभीर है; और एक ऋतुमती महिला से केवल उत्कृष्टता के उद्देश्य से। वह इमामत नहीं कर सकती, जबकि जुनुब इमाम होगा। अब यदि ऋतुमती महिला स्नान करे और जुनुब तयम्मुम करे, तो ग़ुस्ल करने वाले का इक़्तिदा (अनुसरण) तयम्मुम करने वाले के पीछे होगा। हालाँकि यह सही और जायज़ है, लेकिन इसके विपरीत करना बेहतर है। इसलिए, यह उचित है कि जुनुब स्नान करे और ऋतुमती महिला तयम्मुम करे। और मृतक के मामले में इस प्रकार कि ग़ुस्ल-ए-जनाबत का प्रमाण महान कुरआन से है और ग़ुस्ल-ए-मय्यित का सुन्नत और इज्मा' (सहमति) से। ऐसे हितों के लिए जुनुब को प्राथमिकता दी गई है, न कि उसका अधिकार दूसरों को पानी से वंचित कर दे। 'रद्दुल मुह्तार' में है: जुनुब 'मुबाह' (अनुमेय) पानी का अधिक हकदार है, यह सर्वसम्मति (इज्मा') से है। ततारखानिया।

[अरबी बॉक्स बायाँ कॉलम] **मैं कहता हूँ: यह अजीब है; बल्कि अधिकांश विद्वान मृतक की प्राथमिकता के पक्ष में हैं, भले ही पहला विचार अधिक सही हो। 'अल-बहर' में 'ज़हीरिया' के हवाले से है: "अधिकांश विद्वानों ने कहा कि मृतक अधिक हकदार है, और कहा गया कि जुनुब अधिक हकदार है, और यही अधिक सही है।" त़हतावी ने इससे असहमति जताते हुए लिखा कि: "जब साझा पानी को मृतक के लिए उपयोग किया जाना चाहिए—जैसा कि 'अल-दुर्र' के संदर्भ में पहले बताया गया है—तो अनुमेय पानी उसका और भी अधिक हक होगा।" यानी जब अपनी मिल्कियत (स्वामित्व) का हिस्सा मृतक को देने का आदेश सिफारिश के तौर पर दिया गया है, तो जिसमें उनका स्वामित्व नहीं है, उसके लिए यह आदेश और भी अधिक लागू होगा। अल्लामा शामी ने इसका यह उत्तर दिया कि: "प्रत्येक को अपना हिस्सा मृतक को उस समय दे देना चाहिए जब हर एक की स्थिति ऐसी हो कि उसका अपना हिस्सा उसके लिए पर्याप्त न हो, और न तो जुनुब और न ही कोई और पूरे पानी पर—**

[उर्दू बॉक्स दायाँ कॉलम] **मैं कहता हूँ: यह एक अजीब बात है; अधिकांश विद्वान मृतक को अधिक हकदार कहते हैं, हालाँकि पहला मत ही अधिक सही है। 'अल-बहर अल-राइक़' में 'ज़हीरिया' के हवाले से है: "आम विद्वानों का मत है कि मृतक अधिक हकदार है, और कहा गया कि जुनुब श्रेष्ठ है, और यही अधिक सही है।" सैय्यद त़हतावी ने इससे मतभेद व्यक्त करते**

हुए लिखा है कि: "जब साझा पानी मृतक के लिए खर्च करना चाहिए (यानी जैसा कि 'दुर्रे मुख़्तार' के हवाले से गुज़रा) तो मुबाह (अनुमेय) पानी पर भी उसी का अधिकार होगा।" यानी जब मुस्तहब (सिफारिशी) तौर पर यह आदेश दिया गया है कि अपनी मिल्कियत का हिस्सा मृतक को दे दें, तो जिसमें उनका स्वामित्व नहीं है, उसके लिए यह आदेश प्राथमिकता के आधार पर होगा। अल्लामा शामी ने इसका यह उत्तर दिया है कि "हर एक को अपना हिस्सा मृतक को उस समय दे देना चाहिए जबकि हर एक की यह स्थिति हो कि उसका अपना हिस्सा उसके लिए पर्याप्त नहीं हो सकता और जुनुब व गैर-जुनुब कोई भी सारा—

[निचला छोटा बॉक्स] **—अशुद्धि दूर करने के लिए अधिक हकदार होगा। यानी साझा पानी पर कोई एक अधिकार नहीं जता सकता क्योंकि उसमें मृतक का हिस्सा भी शामिल है— —पानी अपने उपयोग में नहीं ला सकता क्योंकि उसमें मृतक का हिस्सा भी शामिल है और जनाबत की हदीस का अधिक सख्त होना इसकी अनुमति नहीं देता।**

[पाद-टिप्पणियाँ] १. रद्दुल मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, १/१८६। २. अल-बहर अल-राइक़, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद एंड कंपनी, १/१२३। ३. त़हतावी अला अल-दुर्र, तयम्मुम का अध्याय, दार अल-मआरिफा द्वारा प्रकाशित, बेरूत, १/१३३। ४. रद्दुल मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, १/१८६।

بخلاف جنب کہ جب یہاں اس کا تنہا استحقاق جبری نہیں صرف اولویت ہے، محدث سے اس لئے کہ جنابت اغلظ ہے اور حائض سے محض اس مصلحت افضلیت کے لئے وہ تو امامت کر نہیں سکتی، جنب امام ہوگا اب اگر حائض نہائے اور جنب تیمم کرے تو یہ غاسل کی اقتداء تیمم سے ہوگی اور یہ اگرچہ صحیح وجائز ہے مگر عکس افضل ہے، لہٰذا مناسب کہ جنب نہائے اور حائض تیمم کرے اور میت سے یوں کہ غسل جنابت کا ثبوت قرآن عظیم سے ہے اور غسل میت کا سنت و اجماع سے، ایسے بلکہ مصالح کیلئے جنب کو ترجیح دی ہے نہ یہ کہ اس کا استحقاق اوروں کو پانی سے عاجز کردے، فی ردالمحتار الجنب اولی بمباح ھذا بالاجمع تاترخانیہ اھ (ردالمحتار میں ہے: جنب آب مباح کا زیادہ حقدار ہے، یہ بالاجماع ہے۔ تاتارخانیہ اھت)

[بایاں کالم] **اقول: ھذا عجب بل جمھور المشایخ علی اولویۃ المیت وان کان الاصح الاول ففی البحر عن الظھیریۃ قال عامۃ المشایخ المیت اولی وقیل الجنب اولی وھو الاصح اھ ونازعہ ط بانہ حیث کان المشترک ینبغی صرفہ للمیت ای کما تقدم عن الدر فالمباح اولی اھ ای اذا امروا ندبا بصرف ملکھم للمیت فما لاملک لھم فیہ اولی واجاب ش بانہ ینبغی لکل منھم صرف نصیبہ للمیت حیث کان کل واحد لا یکفیہ نصیبہ ولا یمکن الجنب ولا غیرہ ان یستقل بالکل لانہ مشغول بحصۃ المیت وکون الجنابۃ اغلظ لا یبیح استعمال حصۃ المیت فلم یکن الجنب اولی بخلاف ما اذا کان الماء مباحا فانہ حیث امکن بہ رفع**

[داہنا کالم] **اقول: یہ عجیب بات ہے جمہور مشائخ میت کو زیادہ حقدار کہتے ہیں اگرچہ اصح اول ہے البحرالرائق میں ظہیریہ کے حوالے سے ہے: "عامہ مشائخ کا قول ہے کہ میت زیادہ حقدار ہے اور کہا گیا کہ جنب اولی ہے اور یہی اصح ہے"۔ اھ سید طحطاوی نے اس سے اختلاف کرتے**

ہوئے لکھا ہے کہ: "جب مشترک پانی میت کیلئے صرف کرنا چاہئے (یعنی جیسا کہ در مختار کے حوالہ سے گزرا) تو آب مباح بدرجہ اولی اسی کا حق ہوگا"۔ اھ یعنی بطور استحباب جب یہ حکم دیا گیا ہے کہ اپنی ملکیت کا حصہ میت کو دے دیں تو جس میں ان کی ملکیت نہیں اس کیلئے بدرجہ اولیٰ یہ حکم ہوگا علامہ شامی نے اس کا یہ جواب دیا ہے کہ "ہر ایک کو اپنا حصہ میت کو اس وقت دے دینا چاہئے جب کہ ہر ایک کی یہ حالت ہو کہ اس کا اپنا حصہ اس کیلئے کفایت نہیں کر سکتا اور جنب و غیر جنب کوئی بھی سارا

[نیچے والا خانہ] **الجنابة كان اولى اھ اى ان المشترك لا يمكن لا حدهم الاستقلال به لمكان حِصّة الميت فان پانی اپنے تصرف میں نہیں لاسکتا اس لئے کہ اس میں میت کا حصہ بھی شامل ہے اور حدیث جنابت کا زیادہ سخت ہونا اس کی اجازت**

[حواشی] 1 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۶ 2 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید اینڈ کمپنی ۱/ ۱۲۳ 3 طحطاوی علی الدر باب التیمم مطبوعہ دارالمعرفت بیروت ۱/ ۱۳۳ 4 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۶

Fatawa-e-Razawiyya Volume Three

[Left Column - Arabic] ...they allowed it, then his (the deceased's) washing became possible; otherwise, he is given tayammum and they perform tayammum. Thus, allowing it was better, unlike 'permitted water' (Al-Mubah), for everyone has the independence to use it. And since it is possible to remove ritual impurity with it, the junub person was more entitled. I say: It needs(1) completion, for the mere permissibility of everyone's independence in using it only negates what was mentioned as the motivator for prioritizing the use for the deceased. It does not negate the possibility of there being another motivator, let alone(2) proving the priority of the junub person. And I say: 'Permitted water' is only owned through seizing/possession (istila), and the deceased is not among those capable of it. Thus, he has no right to it, unlike the others. And the junub person is the most preferred among them for reasons to follow, so he was more entitled, and we shall mention them.

[Right Column - Urdu] ...does not allow a person in a state of major impurity (junub) to use the deceased's share of water. Therefore, the junub person is not more entitled. However, the case of 'permitted water' (Ma-e-Mubah) is different because when ritual impurity can be removed by it, then the junub person is indeed more entitled. i.e., none of them can use shared water entirely for themselves because the deceased's share is also in it. But if all of them give their share to the deceased, then the deceased's ritual bath (ghusl) will be completed; otherwise, the deceased will also be given tayammum (dry ablution), and all these people will also have to perform tayammum. So, giving it away becomes better (awla). The ruling for 'permitted water' is contrary to this because everyone can use it fully, and through it, the removal of ritual impurity is possible, so it was better for the junub person to use it. (T) I say: This answer still requires a supplement because merely from the fact that it is permissible for everyone to bring 'permitted water' into their full use, the only conclusion is that the reason for the deceased's priority mentioned earlier is not present here. But does this negate any other reason or motivator? (It's possible that the reason for its priority may not be there, but some other reason may exist. M.A.) Furthermore, the proof of the junub being more entitled than the deceased is still a far-off matter. (T) And I say: (Now I say for the completion of the answer) 'Permitted water' comes into ownership only through possession. And the deceased is not capable of this, so he has no right in it. The rest (junub, menstruating woman, one in minor impurity)...

फतावा रज़विया खंड तीन

[बायां कॉलम - अरबी] ...उन्होंने इसकी अनुमति दी, तो उसका (मृतक का) स्नान संभव हो गया; अन्यथा उसे तयम्मुम दिया जाता है और वे तयम्मुम करते हैं। अतः अनुमति देना बेहतर था, मुबाह पानी के विपरीत, क्योंकि हर किसी को इसे उपयोग करने की स्वतंत्रता है। और चूंकि इसके द्वारा जनाबत को दूर करना संभव है, इसलिए जुनुब व्यक्ति अधिक हकदार था। मैं कहता हूँ: इसे पूर्णता(1) की आवश्यकता है, क्योंकि हर किसी के इसे उपयोग करने की स्वतंत्रता की मात्र अनुमति केवल उस बात का खंडन करती है जिसे मृतक के लिए उपयोग को प्राथमिकता देने के प्रेरक के रूप में उल्लेख किया गया था। यह किसी अन्य प्रेरक के होने की संभावना का खंडन नहीं करता है, जुनुब व्यक्ति की प्राथमिकता साबित करने की बात तो दूर(2) की है। और मैं कहता हूँ: मुबाह पानी केवल कब्ज़ा करने (इस्तीला) से ही स्वामित्व में आता है, और मृतक इसके पात्रों में से नहीं है। अत; दूसरों के विपरीत, उसका इसमें कोई अधिकार नहीं है। और जुनुब व्यक्ति उनमें सबसे पसंदीदा है उन कारणों से जो आगे आएंगे, इसलिए वह अधिक हकदार था, और हम उनका उल्लेख करेंगे।

[दायां कॉलम - उर्दू] ...अनुमति नहीं देता कि जुनुब (महा-अशुद्ध व्यक्ति) मृतक का हिस्सा भी उपयोग करे, इसलिए जुनुब अधिक हकदार नहीं हुआ। लेकिन मुबाह पानी (सामान्य जल) का मामला इसके विपरीत है क्योंकि जब इससे जनाबत (अशुद्धि) दूर की जा सकती है, तो जुनुब ही अधिक हकदार है। अर्थात, साझा पानी को उनमें से कोई भी पूरी तरह से अपने उपयोग में नहीं ला सकता क्योंकि उसमें मृतक का हिस्सा भी मौजूद है। लेकिन यदि ये सभी अपना हिस्सा मृतक को दे दें, तो उसका ग़ुस्ल (स्नान) हो जाएगा; अन्यथा उसे भी तयम्मुम कराया जाएगा और ये सब भी तयम्मुम ही कर सकेंगे। तो दे देना बेहतर हुआ। मुबाह पानी का हुक्म इसके विपरीत है क्योंकि हर कोई उसे पूरी तरह से इस्तेमाल कर सकता है और उससे जनाबत का निवारण संभव है, इसलिए जुनुब का उपयोग करना बेहतर हुआ। (त) मैं कहता हूँ: अभी यह जवाब एक परिशिष्ट का मोहताज है क्योंकि महज़ इस बात से कि हर एक को मुबाह पानी पूरी तरह से अपने इस्तेमाल में लाना जायज़ है, सिर्फ यह नतीजा निकलता है कि मृतक के अधिक हकदार होने का जो कारण पहले बयान हुआ वह यहाँ नहीं है। मगर इतने से किसी दूसरे कारण और प्रेरक का निषेध होता है? (हो सकता है कि यहाँ उसकी प्राथमिकता का वह कारण तो न हो मगर कोई और कारण मौजूद हो। म.अ.) फिर जुनुब के मृतक से भी अधिक हकदार होने का प्रमाण तो अभी दूर की बात है। (त) और मैं कहता हूँ: (अब जवाब पूरा करने के लिए मैं कहता हूँ) मुबाह पानी कब्ज़ा करने से ही मिल्कियत (स्वामित्व) में आता है। और

मृतक इसका पात्र नहीं है, तो इसमें उसका हक भी नहीं। बाकी (जुनुब, हयाज़ वाली महिला, अशुद्ध व्यक्ति)...

पृष्ठ 533 / 756

[بایاں کالم - عربی] سمحوا به امکن غسله والایمم وتیمموا فکان السماح اولی بخلاف المباح فان لکل ان یستقل به وقد امکن به رفع الجنابة فکان الجنب اولی۔ اقول: یحتاج(۱) الی تتمیم فان مجرد جواز استقلال کل به انما نفی مأذکر من داعی اولویة الصرف للمیت وهو لا ینفی ان یکون له داع اخر فضلا(۲) عن ثبوت اولویة الجنب۔ وانا اقول: المباح انما یملك بالاستیلاء والمیت لیس من اهله فلاحق له فیه بخلاف الباقین والجنب ارجحهم لما یأتی فکان اولی وسنذکر۔

[دایاں کالم - اردو] نہیں دیتا کہ جنب میت کا حصہ بھی استعمال کرے اس لئے جنب اولیٰ نہ ہوا مگر آب مباح کی صورت اس کے بر خلاف ہے کیونکہ جب اس سے جنابت دور کی جا سکتی ہے تو جنب ہی اولیٰ ہے" اھ یعنی آب مشترک کو ان میں کوئی بھی پورے طور سے اپنے استعمال میں نہیں لا سکتا اس لئے کہ اس میں میت کا بھی حصہ موجود ہے لیکن اگر یہ سب اپنا حصہ میت کو دے دیں تو اس کا غسل ہو جائے گا ورنہ اسے بھی تیمم کرایا جائیگا اور یہ سب بھی تیمم ہی کر سکیں گے تو دے دینا اولیٰ ہوا آب مباح کا حکم اس کے بر خلاف ہے اس لئے کہ ہر ایک اسے پورے طور سے استعمال کر سکتا ہے اور اس سے رفع جنابت ممکن ہے تو جنب کا استعمال کرنا اولیٰ ہوا۔ (ت) اقول: ابھی یہ جواب ایک تتمہ کا محتاج ہے اس لئے کہ محض اس بات سے کہ ہر ایک کو آب مباح پورے طور سے اپنے استعمال میں لانا جائز ہے صرف یہ نتیجہ نکلتا ہے کہ استعمال میت کے اولیٰ ہونے کا جو سبب پہلے بیان ہوا وہ یہاں نہیں ہے مگر اتنے سے کسی دوسرے سبب اور داعی کی نفی ہوتی (ہو سکتا ہے کہ یہاں اُس کی اولویت کا وہ سبب تو نہ ہو مگر کوئی اور سبب موجود ہو۔ م الف) پھر جنب کے میت سے بھی اولیٰ ہونے کا ثبوت تو ابھی دُور کی

بات ہے۔ (ت) وانا اقول: (اب تکمیل جواب کیلئے میں کہتا ہوں) مباح قبضہ کرنے سے ہی ملک میں آتا ہے۔ اور میت اس کا اہل نہیں، تو اس میں اس کا حق بھی نہیں۔ باقی (جنب، حائض، محدث)

Fatawa Rizvia, Volume 3

(Arabic Text Column) Its completion, if Allah Almighty wills. As for the reasoning behind the more correct view, Sh. (Allama Shami) said: Major ritual impurity (janaba) is more severe than minor impurity (hadath), and a woman is not fit to be an imam (1). In 'Tahtawi', a person in major impurity is more worthy than a menstruating woman because it's possible for him to perform dry ablution (tayammum) with earth and for her to follow him. The following of one who performed tayammum behind one who is purified (performed ghusl) is better than the reverse, although the reverse is not possible here (2). I say: Rather (1) it is possible by the person in major impurity performing tayammum and her (the woman) performing ghusl, and the reverse is not conceivable in the sense of a woman's leadership. Sh. remained silent on the reason for prioritizing the person in major impurity over the deceased. The profound jurist said in Al-Khaniyah: because his washing is an obligation (fard) while washing the deceased is a Sunnah (3). It is stated in Al-Ashbah: his meaning is that its obligation is through the Sunnah, unlike the ghusl of the person in major impurity, which is mentioned in the Qur'an (4). Al-Hamawi followed this by saying that this interpretation is only conceivable if there were no opinion on the Sunnah status... (5). And he said before that:

(Urdu Text Column) ...the situation is contrary to it, and among them, the one in major impurity (junub) has preference, so he is more worthy. The explanation for the reason for preference is coming up, and we will also mention its completion, if Allah wills, shortly. Describing the reason for the more correct view, Allama Shami wrote: "Because major impurity is more severe than minor impurity, and a woman is not capable of leadership (imamate)." End. And in the marginalia of Sayyid Tahtawi, it says: "A junub is more worthy than a menstruating woman because he can perform tayammum and she can follow him. Someone who has done tayammum following someone who has performed ghusl is better than doing the opposite, and the opposite case cannot even occur here." End (T). I say: Rather, it can happen this way: the junub performs tayammum and the menstruating woman performs ghusl; then the following of the ghusl-performer behind the tayammum-performer will occur, and this case is possible and permissible. (12 M Alif) And there is no room for imagining the opposite in the sense of a woman's leadership (because whether the menstruating woman performs ghusl or tayammum, the junub cannot follow her regardless of whether he does tayammum or ghusl. There is no case where there is only a difference of 'better' and 'less better' in the leadership of a junub and a

menstruating woman. 12 M Alif). Keep this in mind. The reason for prioritizing a junub over the deceased...

(Footnotes) 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/186 2. Tahtawi ala al-Durr, Chapter of Tayammum, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/133 3. Fatawa Qazi Khan, Chapter on what is permissible for Tayammum, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/2 4. Al-Ashbah wa al-Nazair, Tadhneeb on what is at the gathering, etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 2/216 5. Ghamz Uyun al-Basair, Tadhneeb on what is at the gathering, etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 2/217

फतावा रज़विया, खंड 3

(अरबी पाठ स्तंभ) इसकी पूर्णता, यदि अल्लाह तआला ने चाहा। जहाँ तक सबसे सही मत के तर्क का प्रश्न है, शै. (अल्लामा शामी) ने कहा: बड़ी अशुद्धि (जनाबत), छोटी अशुद्धि (हदथ) से अधिक गंभीर है, और एक महिला इमाम (नेतृत्व) के योग्य नहीं है (1)। 'तह्तावी' में, बड़ी अशुद्धि वाले व्यक्ति को मासिक धर्म वाली महिला पर प्राथमिकता दी गई है क्योंकि उसके लिए मिट्टी से तयम्मुम (सूखा स्नान) करना और उसका उसके पीछे नमाज़ पढ़ना संभव है। तयम्मुम करने वाले का शुद्ध व्यक्ति (जिसने गुस्ल किया हो) के पीछे नमाज़ पढ़ना इसके विपरीत से बेहतर है, हालाँकि यहाँ विपरीत संभव नहीं है (2)। मैं कहता हूँ: बल्कि (1) यह इस प्रकार संभव है कि बड़ी अशुद्धि वाला व्यक्ति तयम्मुम करे और महिला गुस्ल करे, और महिला के नेतृत्व के अर्थ में विपरीत की कल्पना नहीं की जा सकती। शै. ने मृतक पर बड़ी अशुद्धि वाले व्यक्ति को प्राथमिकता देने के कारण पर मौन साधे रखा। अल-खानिया में गहन विधिवेत्ता ने कहा: क्योंकि उसका स्नान अनिवार्य (फ़र्ज़) है जबकि मृतक का स्नान सुन्नत है (3)। अल-अश्बाह में कहा गया है: उनका अर्थ यह है कि इसकी अनिवार्यता सुन्नत के माध्यम से है, बड़ी अशुद्धि वाले व्यक्ति के गुस्ल के विपरीत, जो कुरान में है (4)। अल-हमवी ने यह कहते हुए इसका अनुसरण किया कि यह व्याख्या केवल तभी बोधगम्य है जब सुन्नत की स्थिति पर कोई राय न हो... (5)। और उन्होंने इससे पहले कहा:

(उर्दू पाठ स्तंभ) ...स्थिति इसके विपरीत है और उनमें बड़ी अशुद्धि वाले (जुनुब) को वरीयता प्राप्त है, इसलिए वही अधिक योग्य है। वरीयता के कारण का विवरण आगे आ रहा है और हम अल्लाह ने चाहा तो इसकी पूर्णता का भी शीघ्र ही उल्लेख करेंगे। सबसे सही मत का कारण बताते हुए अल्लामा शामी ने लिखा: "क्योंकि बड़ी अशुद्धि, छोटी अशुद्धि से अधिक कठिन है और महिला इमाम बनने के योग्य नहीं है।" अंत। और सैय्यद तह्तावी के हाशिये में यह है कि: "जुनुब, मासिक धर्म वाली महिला से अधिक योग्य है क्योंकि वह तयम्मुम करके उसका अनुसरण कर सकती है। गुस्ल करने वाले का तयम्मुम करने वाले के पीछे नमाज़ पढ़ना इसके विपरीत करने से बेहतर है और विपरीत स्थिति यहाँ हो भी नहीं सकती।" अंत (त)। मैं कहता हूँ: बल्कि यह इस तरह हो सकता है: जुनुब तयम्मुम करे और मासिक धर्म वाली महिला गुस्ल करे, तो गुस्ल करने वाली का तयम्मुम करने वाले का अनुसरण करना पाया जाएगा और यह स्थिति संभव और जायज़ है। (12 म अलिफ़) और महिला के नेतृत्व के अर्थ में इसके विपरीत का भ्रम करने की कोई गुंजाइश नहीं है (क्योंकि चाहे मासिक धर्म वाली महिला गुस्ल करे या तयम्मुम, जुनुब किसी भी हाल में उसका अनुसरण नहीं कर सकता चाहे वह तयम्मुम

करे या गुस्ल। ऐसी कोई स्थिति नहीं है जिसमें जुनुब और मासिक धर्म वाली महिला के नेतृत्व में केवल 'बेहतर' और 'कम बेहतर' का अंतर हो। 12 म अलिफ़)। यह बात ध्यान में रहे। मृतक पर जुनुब को प्राथमिकता देने का कारण...

(पाद-टिप्पणियाँ) 1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/186 2. तह्तावी अला अल-दुर्र, बाब अल-तयम्मुम, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, 1/133 3. फतावा क़ाज़ी ख़ान, तयम्मुम के जायज़ होने के बारे में खंड, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/2 4. अल-अश्बाह व अल-नज़ैर, तज़नीब फ़ीमा इन्दल इज्तिमा आदि, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/216 5. ग़म्ज़ उयून अल-बसार, तज़नीब फ़ीमा इन्दल इज्तिमा आदि, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/217

(Arabic Column) تمامہ ان شاء اللہ تعالٰی اما وجہ القول الاصح فقال ش الجنابۃ اغلظ من الحدث والمرأۃ لا تصلح اماما (1) اھ وفی ط اولٰی من حائض لامکان تیممھا بالتراب واقتدائھا بہ واقتداء المتیمم بالمتطھر افضل من عکسہ مع عدم تأتیہ ھنا (2) اھ اقول: بل (۱) یتأتّٰی بان یتیمم الجنب وتغتسل ھی ولا یتوھم العکس بمعنٰی امامۃ المرأۃ ھذا وسکت ش وجہ تقدیم الجنب علی المیت وقال فقیہ النفس فی الخانیۃ لان غسلہ فریضۃ وغسل المیت سنۃ (3) اھ قال فی الاشباہ مرادہ ان وجوبہ بھا بخلاف غسل الجنب فانہ فی القرآن (4) اھ وتعقبہ السید الحموی بانہ انما یتوھم ھذا التأویل لولم یکن ھناک قول بالسنیۃ امامم وجودہ فلا (5) اھ وقال قبلہ قال

(Urdu Column) کا حال اس کے برخلاف ہے اور ان میں جنب کو ترجیح حاصل ہے تو وہی اولٰی ہے۔ وجہ ترجیح کا بیان آگے آرہا ہے اور اس کی تکمیل بھی ہم ان شاء اللہ ابھی ذکر کریں گے۔ قول اصح کی وجہ بتاتے ہوئے علامہ شامی نے یہ لکھا: "اس لئے کہ جنابت، حدث سے زیادہ سخت ہے اور عورت قابل امامت نہیں" اھ اور حاشیہ سید طحطاوی میں یہ ہے کہ : "جنب، حائض سے اولٰی ہے اس لئے کہ وہ تیمم کرکے اس کی اقتدا کرسکتی ہے۔ تیمم، غسل کرنے والے کی اقتدا کرے یہ برعکس کرنے سے افضل ہے اور برعکس صورت یہاں ہو بھی نہیں سکتی"۔ اھ (ت) اقول: بلکہ ہو سکتی ہے اس طرح کہ جنب تیمم کرے اور حائض غسل کرے تو غسل کرنے والی کا تیمم کرنے والے کی اقتدا کرنا پایا جائے گا اور یہ صورت ممکن و جائز ہے ۱۲م الف) اور امامت عورت کے معنی میں عکس کا وہم کرنے کی گنجائش نہیں (اس لئے کہ حائض غسل کرے یا تیمم جنب بہر حال اس کی اقتدا نہیں کرسکتا خواہ یہ تیمم کرے یا غسل۔ کوئی صورت ایسی نہیں جس

میں جنب وہ حائض کی امامت میں صرف افضل و غیر افضل کا فرق ہو ۱۲ م الف) یہ ذہن نشین رہے میت پر جنب کو مقدم کرنے کی وجہ

(Footnotes) 1 رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۸۶ 2 طحطاوی علی الدر باب التیمم مطبوعہ دار المعرفة بیروت ۱/ ۱۳۳ 3 فتاویٰ قاضی خان فصل فیما یجوز لہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲ 4 الاشباہ والنظائر تذنیب فیما عند الاجتماع الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۲۱۶ 5 غمز عیون البصائر تذنیب فیما عند الاجتماع الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/ ۲۱۷

(Right Column): What is it? Allama Shami maintained silence on this, and in Khaniya, Imam Faqih-un-Nafs wrote: "Because the ghusl (ritual bath) of a junub (one in a state of major ritual impurity) is obligatory (fard), and the ghusl of the deceased is sunnah." End quote (ah). Upon this, it was stated in Ashbah: "The meaning is that the obligatoriness of the ghusl of the deceased is proven through sunnah (tradition). In contrast, the obligatoriness of the ghusl of a junub is mentioned in the Quran." End quote. Sayyid Hamwi criticized this statement of Ashbah: "This interpretation would be complete and correct if there were no statement here regarding it (ghusl of the deceased) being masnoon (sunnah). But in the presence of such a statement, the mentioned interpretation is not complete." End quote. (It is possible that Imam Qadhikhan's words are based on the statement regarding the sunnah status of ghusl of the deceased. In such a case, interpreting his calling the ghusl of the deceased 'sunnah' as meaning that its obligatoriness is proven by sunnah would not be correct. 12 M.A.) The author of Ashbah wrote in Al-Bahr al-Raiq: "(In Fath al-Qadir) in view of the transmission of consensus on the obligatoriness of ghusl of the deceased, this citation by Mulla Miskin that 'it is said ghusl of the deceased is sunnah mu'akkadah' is questionable. Yes, however, it is possible that it is an unreliable statement, so it would not interfere with the establishment of consensus." End quote (T).

I say (Aqool): Such a statement is not worthy of consideration, nor is it appropriate for a personality like Imam Faqih-un-Nafs to base their words on such a statement.

(Left Column - Arabic Original): Al-Musannif (1) in Al-Bahr, and what was transmitted by (2) Miskin from his saying: "It is said ghusl of the deceased is sunnah mu'akkadah," there is observation (nazar) regarding it after the transmission of consensus, meaning in Fath al-Qadir. O Allah, unless it is an unreliable statement, then it does not detract from the establishment of consensus. [End quote 1].

I say (Aqool): The like of it (1) is not counted as a statement, nor is the like of the speech of Al-Khaniya carried upon it, and [Imam] Tahtawi said...

(Lower Right Section): Mentioned it just before the chapter of waters (Bab al-Miyah) under the text: "It is necessary (wajab) for the deceased and for one who accepts Islam while in a state of janabah (major impurity)" (ghusl is obligatory for the deceased and the one who accepts Islam in janabah). 12 from him, may God forgive him (T). Quhistani also narrated this in the chapter of funerals (Bab al-Jana'iz). His wording is: "Ghusl of the deceased is fard kifayah (communal obligation), and it is

said it is wajib (necessary), and one statement is that it is sunnah mu'akkadah." End quote. 12 from him, may God forgive him (T).

(Lower Left Section - Arabic Footnotes): (1) Mentioned it before the waters at the text saying "It is necessary for the deceased and one who accepts Islam in janabah". 12 from him, may God forgive him (M). (2) And Quhistani narrated it also in Al-Jana'iz, saying: "His ghusl is ordained as kifayah, and it is said it is wajib, and it is said it is sunan sunnah mu'akkadah." End quote. 12 from him, may God forgive him (M).

(Bottom Citation): 1 Ghamz 'Uyun al-Basa'ir, Tadhneeb regarding what precedes at a gathering, etc., H.M. Saeed Company, Karachi, 2/216. Page 535 of 756

(दायाँ कॉलम): क्या है? इस पर अल्लामा शामी ने चुप्पी साध ली और खानिया में इमाम फ़क़ीह-उन-नफ़्स ने यह लिखा: "क्योंकि जुनुब (महा-अशुद्धि की स्थिति में व्यक्ति) का ग़ुस्ल (स्नान) फ़र्ज़ है और मय्यत (मृतक) का ग़ुस्ल सुन्नत है।" (अंत)। इस पर अश्बाह में कहा गया: "तात्पर्य यह है कि मय्यत के ग़ुस्ल की फर्ज़ियत सुन्नत से प्रमाणित है। इसके विपरीत जुनुब के ग़ुस्ल की फर्ज़ियत क़ुरान में वर्णित है।" (अंत)। अश्बाह के इस कथन पर सैयद हमवी ने यह आलोचना की: "यह व्याख्या तब पूर्ण और सही होती जब यहाँ (मय्यत के ग़ुस्ल के) मसनून (सुन्नत) होने का कोई कथन न होता। लेकिन इस कथन के होते हुए उल्लेखित व्याख्या पूर्ण नहीं है।" (अंत)। (हो सकता है कि इमाम क़ाज़ीख़ान का कलाम मय्यत के ग़ुस्ल की मसनूनियत वाले कथन पर ही आधारित हो, ऐसी स्थिति में उनके मय्यत के ग़ुस्ल को सुन्नत कहने का यह अर्थ बताना कि उसका वुजूब (अनिवार्यता) सुन्नत से प्रमाणित है, सही न होगा। १२ म अ)। अश्बाह के लेखक ने अल-बहरर-राइक़ में लिखा है: "(फ़तह अल-क़दीर में) मय्यत के ग़ुस्ल की फर्ज़ियत पर इजमा (सहमति) के उल्लेख को देखते हुए मुल्ला मिस्कीन का यह उद्धरण कि 'कहा गया है मय्यत का ग़ुस्ल सुन्नत मुअक्कदा है' विचारणीय है। हाँ, मगर यह हो सकता है कि यह कोई गैर-विश्वसनीय कथन हो, तो वह इजमा की स्थापना में बाधा नहीं डालेगा।" (अंत - त)।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): तो ऐसा कथन गिनती के योग्य नहीं है और न ही इमाम फ़क़ीह-उन-नफ़्स जैसी हस्ती का कलाम ऐसे कथन पर आधारित हो सकता है।

(बायाँ कॉलम - अरबी): लेखक [१] ने अल-बहर में, और जो [२] मिस्कीन ने उनके इस कथन से उद्धृत किया: "कहा गया है मय्यत का ग़ुस्ल सुन्नत मुअक्कदा है," तो इजमा के उल्लेख के बाद इसमें विचार की गुंजाइश है, यानी फ़तह अल-क़दीर में। हे अल्लाह, सिवाय इसके कि यह एक गैर-विश्वसनीय कथन हो, तो यह इजमा की स्थापना में दोषपूर्ण नहीं होगा। (अंत - १)।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इसके जैसा (१) किसी कथन के रूप में नहीं गिना जाता और न ही अल-खानिया के कलाम जैसा इस पर लागू किया जाता है, और तहावी ने कहा...

(निचला दायाँ भाग): इसे 'बाब अल-मियाह' (पानी का अध्याय) से ठीक पहले पाठ की इस पंक्ति के तहत उल्लेख किया गया है: "मयत के लिए और जुनाबत (अशुद्धि) की स्थिति में इस्लाम लाने वाले के लिए ग़ुस्ल वाजिब है" (मय्यत के लिए और जुनाबत में इस्लाम लाने वाले के लिए ग़ुस्ल वाजिब है)। १२ उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे (त)। कुहिस्तानी ने भी 'बाब अल-जनाइज़' (जनाज़ों का अध्याय)

में इसका उल्लेख किया है। उनका पाठ यह है: मय्यत का ग़ुस्ल फ़र्ज़-ए-किफ़ाया है, और कहा गया है कि वाजिब है और एक कथन यह है कि सुन्नत मुअक्कदा है। (अंत)। १२ उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे (त)।

(निचला बायाँ भाग - अरबी पादलेख): [१] इसे पानी से पहले पाठ के इस कथन पर उल्लेख किया "मय्यत के लिए और जुनुब के रूप में इस्लाम लाने वाले के लिए वाजिब है"। १२ उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे (म)। [२] और कुहिस्तानी ने भी इसे अल-जनाइज़ में वर्णित किया, कहा: "उसका ग़ुस्ल किफ़ाया के रूप में फ़र्ज़ किया गया है और कहा गया है कि वाजिब है और कहा गया है कि सुन्नत मुअक्कदा है।" (अंत)। १२ उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे (म)।

(निचला पादलेख): १ ग़म्ज़ उयून अल-बसायर, तधनीब फीमा युक़द्दम इंद अल-इज्तेमा आदि, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, २/२१६। पेज ५३५/७५६

(دایاں کالم): کیا ہے؟ اس سے علامہ شامی نے سکوت اختیار کیا اور خانیہ میں امام فقیہ النفس نے یہ لکھا: "اس لئے کہ جنب کا غسل فرض ہے اور میت کا غسل سنت ہے"۔ اھ اس پر اشباہ میں فرمایا: "مراد یہ ہے کہ غسل میت کی فرضیت سنت سے ثابت ہے۔ اس کے برخلاف غسل جنب کی فرضیت قرآن میں مذکور ہے" اھ اشباہ کی اس عبارت پر سید حموی نے یہ تنقید کی: "یہ تاویل اس وقت کامل ودرست ہوتی جب یہاں (غسل میت کے) مسنون ہونے کا کوئی قول نہ ہوتا۔ لیکن یہ قول ہوتے ہوئے تاویل مذکور تمام نہیں" اھ (ہوسکتا ہے کہ امام قاضیخان کا کلام غسل میت کی مسنونیت والے قول پر ہی مبنی ہو، ایسی صورت میں ان کے غسل میت کو سنت کہنے کا یہ معنی بتانا کہ اس کا وجوب سنت سے ثابت ہے درست نہ ہوگا ۱۲ م الف) مصنف اشباہ نے البحر الرائق میں لکھا ہے: "(فتح القدیر میں) غسل میت کی فرضیت پر نقل اجماع کے پیش نظر ملا مسکین کی یہ نقل کی "کہا گیا غسل میت سنت مؤکدہ ہے" محل نظر ہے ہاں مگر یہ ہوسکتا ہے کہ کوئی غیر معتمد قول ہو تو وہ انعقادِ اجماع میں خلل انداز نہ ہوگا"۔ اھ (ت)

اقول: تو ایسا قول قابل شمار نہیں نہ ہی ایسے قول پر امام فقیہ النفس جیسی شخصیت کا

(بایاں کالم): المصنف عہ۱ فی البحر ومانقلہ عہ۲ مسکین من قولہ وقیل غسل المیت سنۃ مؤکدۃ ففیہ نظر بعد نقل الاجماع یعنی فی فتح القدیر اللھم الا ان یکون قولا غیر معتمد فلایقدح فی انعقاد الاجماع ۱ اھ

اقول: مثلہ (۱) لایعد قولا ولا یحمل علیہ مثل کلام الخانیۃ وقال ط

(نیچے دایاں حصہ): اسے باب المیاہ سے ذرا پہلے متن کی عبارت "وجب للمیت ومن اسلم جنباً" (میت کیلئے اور حالتِ جنابت میں اسلام لانے والے کیلئے غسل واجب ہے) کے تحت ذکر کیا ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت) قہستانی نے بھی باب الجنائز میں اس کی حکایت کی ہے اس کی عبارت یہ ہے: غسلِ میت فرضِ کفایہ ہے، اور کہا گیا کہ واجب ہے اور ایک قول یہ ہے کہ سنتِ مؤکدہ ہے اھ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

(نیچے بایاں حصہ - حاشیہ): عہ۱ ذکرہ قبیل المیاہ عند قول المتن وجب للمیت ومن اسلم جنبا ۱۲ منہ غفرلہ (م) عہ۲ وحکاہ القہستانی ایضاً فی الجنائز فقال یفرض غسلہ کفایة وقیل یجب وقیل یسن سنة مؤکدة اھ ۱۲ منہ غفرلہ (م)

(نیچے حوالہ): 1 غمز عیون البصائر تذنیب فیما یقدم عند الاجتماع الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲/۲۱۶ صفحہ 535 از 756

Perhaps its priority over the deceased is because he performs what he is obligated to do, such as prayer and recitation, so his need for it is greater than the deceased. Expressing it as 'more worthy' (awla) implies the permissibility of tayammum for the person in a state of major ritual impurity (junub). End quote (This speech can only be interpreted as such; this is the response to Hamwi's criticism of the statement in 'Al-Ashbah' - 12 m/a). Sayyid Al-Tahtawi said: "The reason why a person in a state of major ritual impurity (junub) is prioritized over a deceased person might be because if the junub performs ritual bathing (ghusl), he will offer prayer and recitation which are obligatory for him. Therefore, his need for ghusl is greater than the deceased's. By saying he is 'more worthy', it signifies that tayammum is permissible for a junub." End quote (T).

I say: Firstly, the basis for considering the ghusl of a junub as more worthy can be placed on the statement that an individual obligation (fard al-ayn) is stronger than a collective obligation (fard al-kifaya).

Secondly: On the basis that there is no preference (ithar) for others in acts of worship (qurubat). This is because the living (the junub, menstruating woman, or person in minor impurity) took possession of the permissible water, not the deceased. And the junub was preferred among the living for the reason mentioned (that ritual impurity 'janabat' is more severe than 'hadath', and if a menstruating woman performs ghusl she cannot lead the prayer; it is better for the imam to be one who has performed ghusl and the follower to have performed tayammum - 12 m/a). Now, for the junub to use that water for their own ghusl is more worthy than using it for the ghusl of the deceased. So understand (T).

(162) I say: In this case, the son does not even have to repeat the prayer because the prohibition is from the side of the Sharia (Islamic law). End quote (T). However, if that person took the water by force, there are two scenarios: one is that the water was his property and the oppressor usurped it and he cannot take it back from him, so he should pray with tayammum and then repeat it with wudu because the prohibition is from the side of the servants (mankind).

1. Tahtawi ala al-Durr, Chapter on Tayammum, published by Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/133.

शायद मैयत पर इसकी प्राथमिकता इस वजह से है क्योंकि वह नमाज़ और क़िरात जैसे अपने फ़राएज़ (कर्तव्यों) को अदा करता है जिसे करने का वह पाबंद (मुकल्लफ़) है। इसलिए उसे मैयत से ज़्यादा इसकी ज़रूरत है। उसे 'औला' (अधिक योग्य/बेहतर) कहने से यह बात साफ़ होती है कि जुनूब (नापाकी की स्थिति वाले) के लिए तयम्मुम जायज़ है। (इस कथन को इसी तरह समझा जा सकता है; यह 'अल-अश्बाह' की इबारत पर हमवी की आलोचना का उत्तर है - 12 म/अ)। सैय्यद ताहतावी ने फ़रमाया: "मैयत से जुनूब के बेहतर होने की वजह शायद यह हो कि जुनूब ग़ुस्ल कर लेगा तो उससे नमाज़ और क़िरात की अदायगी करेगा जिसका वह पाबंद है, तो उसे मैयत से ज़्यादा ग़ुस्ल की ज़रूरत है और उसे बेहतर कहने से यह फ़ायदा होता है कि जुनूब के लिए तयम्मुम जायज़ है।" - (त)

मैं कहता हूँ: अव्वल तो जुनूब के ग़ुस्ल को बेहतर क़रार देने की बुनियाद इस क़ौल पर हो सकती है कि फ़र्ज़-ए-ऐन, फ़र्ज़-ए-किफ़ाया से ज़्यादा मज़बूत है।

दूसरा: इस बात पर कि इबादत (क़ुरबत) के मामलात में 'ईसार' (दूसरे को प्राथमिकता देना) नहीं होता। यह इस तरह है कि मुबाह पानी पर जुनूब, ह़ाएज़ा और मुह़्दिस ने ही क़ब्ज़ा किया, मैयत ने नहीं। और जुनूब को ज़िंदा लोगों पर उस कारण से तरजीह मिली जिसका ज़िक्र हुआ (कि जनाबत, ह़दथ से ज़्यादा सख़्त है और ह़ाएज़ा ग़ुस्ल करे तो इमाम नहीं हो सकती, बेहतर यह है कि इमाम ग़ुस्ल वाला हो और मुक्तदी तयम्मुम वाला - 12 म/अ)। अब जुनूब का उस पानी को अपने ग़ुस्ल में इस्तेमाल करना मैयत के ग़ुस्ल में इस्तेमाल करने से बेहतर है। तो इसे समझो। - (त)

(162) मैं कहता हूँ: इस सूरत में बेटे पर नमाज़ को दोहराना भी लाज़िम नहीं क्योंकि मनाही शरीअत की तरफ़ से है। (त)। लेकिन अगर उस शख़्स ने पानी ज़बरदस्ती ले लिया तो दो सूरतें हैं: एक यह कि वह पानी उसकी मिल्कियत था और ज़ालिम ने छीन लिया और वह उससे छीन नहीं सकता, तो तयम्मुम से पढ़े फिर वज़ू से लौटाए क्योंकि रुकावट बंदों की तरफ़ से है।

1. ताहतावी अल-दुर्र, बाब अल-तयम्मुम, मतबुआ दारुल मारिफ़त, बेरुत, 1/133.

لعل اولویته علی المیت بسبب انه یؤدی ماکلف به من صلاۃ وقراءۃ فاحتیاجه الیه اکثر من المیت وتعبیرہ باولی یفید جواز التیمم للجنب اہ کلام محمول ہی کیا جاسکتا ہے (یہ اشباہ کی عبارت پر حموی کی تنقید کا جواب ہے ۱۲ م الف) سید طحطاوی نے فرمایا: "میت سے جنب کے اولی ہونے کی وجہ شاید یہ ہو کہ جنب غسل کرلے گا تو اس سے نماز و قرآت کی ادائیگی کرے گا جس کا وہ مکلف ہے تو اسے میت سے زیادہ غسل کی ضرورت ہے اور اسے اولی کہنے سے یہ افادہ ہوتا ہے کہ جنب کیلئے تیمم جائز ہے۔"۔ اھ (ت)

اقول: ویجوز بنائه اولاً علی القول بان فرض العین اقوی من فرض الکفایۃ۔ اقول:۔اولاً غسل جنب کو اولی قرار دینے کی بنا اس قول پر ہو سکتی ہے کہ فرضِ عین، فرضِ کفایہ سے زیادہ قوی ہے۔

وثانیاً: علی ان لا (۲) ایثار فی القرب وذلك لانهم استولوا دون المیت وترجح الجنب من بین الاحیاء لامر فصرفه لنفسه اولی من صرفه للمیت فافهم۔ ثانیاً: اس پر کہ قربتوں کے معاملہ میں ایثار نہیں۔ یہ اس طرح کہ آب مباح پر جنب، حائض اور محدث نے ہی قبضہ کیا میت نے نہیں۔ اور جنب کو زندوں پر اس سبب سے ترجیح ہوئی جو ذکر ہوا (کہ جنابت، حدث سے زیادہ سخت ہے اور حائض غسل کرے تو امام نہیں ہو سکتی افضل یہ ہے کہ امام غسل والا ہو اور مقتدی تیمم ۱۲ م الف) اب جنب کا اُس پانی کو اپنے غسل میں صرف کرنا غسل میت میں صرف کرنے سے اولی ہے فافهم (تو اسے سمجھو)۔ (ت)

(۱۶۲) اقول: اس صورت میں بیٹے پر نماز کا اعادہ بھی نہیں لان المنع من جهة الشرع (اس لئے کہ ممانعت شریعت کی جانب سے ہے۔ ت) لیکن اگر وہ شخص نے پانی زبردستی لے لیا تو دو

صورتیں ہیں: ایک یہ کہ وہ پانی اس کی ملک تھا اور ظالم نے غصب کر لیا اور یہ اس سے چھین نہیں سکتا تو تیمم سے پڑھے پھر وضو سے پھیرے لان المنع من جهة العباد (اس لئے کہ رکاوٹ بندوں کی

۱ طحطاوی علی الدر باب التیمم مطبوعہ دار المعرفۃ بیروت ۱/ ۱۳۳

Fatawa Rizvia, Volume 3

...is from this aspect. (t) Secondly, if the water was permissible (mubah) and after taking possession of it, another person snatched it, it becomes the same as the first case, that the water became his property after possession. If he wanted to take possession but the other person was stronger and took possession first, then there was no injustice on his part for taking possession of permissible water; he became the owner. Now this person is under rule number 53, that the water is the property of another, and without their permission, he should perform Tayammum and there is no need to repeat (the prayer).

(163) I say (Aqool): A traveler's drinking water is locked in a box. In paths where water is scarce, it is among the most precious items. If the key to the lock is lost, based on the rule mentioned in number 6, if breaking the lock causes a loss of one Dirham, he should perform Tayammum and not repeat; otherwise, break the lock and perform Wudu. Let it be researched and reviewed, and Allah Almighty knows best. (More clarification and review are needed in this. t)

(164) If a hermaphrodite (Khuntha Mushkil) passes away in a forest and was not such a young child for whom the ruling of covering private parts (Satr) does not apply, neither a man nor a woman can bathe them, so Tayammum must be performed. I say: Rather, if a girl of seven or eight years or a boy of ten or eleven years is there who can bathe them, then it is mandatory to instruct and have them bathe. Yes, if this is also not possible, then a Mahram (unmarriageable relative), whether man or woman, should perform Tayammum. If no Mahram is found, then a strange woman should wrap a cloth around her hands and perform Tayammum, and she does not need to close her eyes. If no woman is present, then a strange man should perform Tayammum with a cloth and also close his eyes so that his gaze does not fall on the hair of the head or any part of the wrist of the hermaphrodite. It is mentioned in Bada'i, Fatawa Imam Qazi Khan, Fath al-Qadir, Bahr al-Raiq, Siraj Wahaj, Durr al-Mukhtar, Hindiyyah, etc., that the age in which Satr (covering) of the deceased is not necessary is the age in which a child has not reached the limit of desire (hadd-e-shahwat). From this, it appears that a boy is less than twelve years and a girl is less than nine years. I say: On this estimation, nine years will be taken for a hermaphrodite due to the possibility of femininity (lahitmal unuthataha - because of the possibility that it is a girl. t). However, the chronicler of the school of thought, Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), in the book 'Al-Mabsut', which is

from the books of Zahir al-Riwayah, set this limit until the child speaks. It is in 'Al-Fath':

الصغير والصغيرة اذالم يبلغا حد الشهوة يغسلهما الرجال والنساء وقدره في الاصل بان يكون قبل ان يتكلم	When a young boy or girl does not reach the limit of desire, any man or woman can bathe them, and Imam Muhammad in 'Al-Mabsut' has stated its limit as the child not being able to talk yet. (t)

1. Fath al-Qadir, Section on Washing the Deceased, Nooriya Razavia Sukkur, 2/6.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 3

...दृष्टिकोण से है। (त) दूसरा यह कि पानी मुबाह (अनुमेय) था, उस पर कब्ज़ा करने के बाद अगर उसने छीन लिया तो यह वही पहली स्थिति हुई कि कब्ज़ा करने के बाद पानी उसकी मिल्कियत हो गया था। और अगर वह कब्ज़ा करना चाहता था लेकिन दूसरा व्यक्ति अधिक शक्तिशाली था और उसने पहले कब्ज़ा कर लिया, तो इसमें उसका कोई अन्याय नहीं हुआ क्योंकि उसने मुबाह पानी पर कब्ज़ा किया है और वही उसका मालिक हुआ। अब यह व्यक्ति नंबर 53 की श्रेणी में आता है कि पानी दूसरे की मिल्कियत है और उसकी अनुमति के बिना तैयम्मुम करे और (नमाज़) दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

(163) अक़ूल (मैं कहता हूँ): एक मुसाफिर का पीने का पानी संदूक में बंद है। जिन रास्तों में पानी की कमी हो, वहाँ वह सबसे कीमती चीज़ों में से एक है। अगर ताले की चाबी खो गई हो, तो नियम नंबर 6 के आधार पर, यदि ताला तोड़ने में एक दिरहम का नुकसान होता हो, तो तैयम्मुम करे और नमाज़ न दोहराए; अन्यथा ताला तोड़े और वज़ू करे। इस पर शोध और समीक्षा होनी चाहिए, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (इसमें और स्पष्टीकरण और समीक्षा की आवश्यकता है। त)

(164) यदि जंगल में किसी ऐसे खन्सा मुश्किल (उभयलिंगी) का निधन हो जाए जो इतना छोटा बच्चा न हो जिसके लिए सतर (पर्दे) का आदेश लागू न होता हो, तो न कोई पुरुष उसे नहला सकता है और न कोई महिला, विवश होकर तैयम्मुम कराया जाए। अक़ूल: बल्कि अगर वहाँ कोई सात-आठ साल की लड़की या दस-ग्यारह साल का लड़का हो जो नहला सके तो उसे समझाकर नहवाना अनिवार्य है। हाँ, अगर यह भी संभव न हो, तो कोई महरम तैयम्मुम कराए, चाहे पुरुष हो या महिला। यदि कोई महरम न मिले, तो एक पराई महिला अपने हाथों पर कपड़ा लपेटकर तैयम्मुम कराए और उसे आँखें बंद करने की आवश्यकता नहीं है। यदि कोई महिला भी न हो, तो एक पराया पुरुष कपड़े के साथ तैयम्मुम कराए और अपनी आँखें भी बंद रखे ताकि खन्सा के सिर के बालों या कलाई के किसी हिस्से पर नज़र न पड़े। बदाइ, फतावा इमाम काज़ी ख़ान, फ़तहुल क़दीर, बहरुर रैक़, सिराज वहाज, दुर्रे मुख्तार, हिंदिया आदि में है कि वह उम्र जिसमें मृत का सतर ज़रूरी नहीं है, वह उम्र है जिसमें बच्चा शहवत (कामुकता) की सीमा तक न पहुँचा हो। इससे यह स्पष्ट होता है कि लड़का बारह साल से कम और लड़की नौ साल से कम। अक़ूल: इस हिसाब से खन्सा के लिए नौ साल लिए जाएंगे, क्योंकि उसके स्त्री होने की संभावना है (ला-एहतिमाल उनूसतहा - इस संभावना के आधार पर कि वह लड़की हो सकती है। त)। लेकिन मज़हब के संकलनकर्ता इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) ने

किताब 'मबसूत' में, जो ज़ाहिरुल रिवायत की किताबों में से है, यह सीमा निर्धारित की है कि जब तक बच्चा बोल न सके। फ़तह में है:

الصغير والصغيرة اذالم يبلغا حد الشهوة يغسلهما الرجال والنساء وقدره في الاصل بان يكون قبل ان يتكلم	कम उम्र का लड़का और लड़की जब शहवत की सीमा तक न पहुँचें, तो उन्हें पुरुष या महिला कोई भी ग़ुस्ल (स्नान) दे सकता है, और इमाम मुहम्मद ने मबसूत में इसकी सीमा यह बताई है कि बच्चा अभी बात न करता हो। (त)

1. फ़तहुल क़दीर, मय्यत को ग़ुस्ल देने का अध्याय, नूरिया रिज़विया सुक्कुर, 2/6.

جہت سے ہے۔ ت) دوسرے یہ کہ پانی مباح تھا اس پر اگر اس کے قبضہ کر لینے کے بعد اس نے اس سے چھین لیا تو یہ وہی صورت اولی ہوئی کہ پانی بعد قبضہ اس کی ملک ہو گیا تھا اور اگر یہ قبضہ کرنا چاہتا تھا وہ زبردست ہے اس نے پہلے قبضہ کر لیا تو اس میں اس کا ظلم نہ ہوا کہ آب مباح پر قبضہ کیا ہے وہی مالک ہوا اور اب یہ شخص نمبر ۵۳ میں ہے کہ پانی دوسرے کی ملک اور اس کی اجازت نہیں تیمم کرے اور اعادہ کی حاجت نہیں۔

(۱۶۳) اقول: مسافر کے پانی کا پیا صندوق میں بند ہے کہ جن راستوں میں پانی کی قلت ہو وہاں وہ عزیز ترین اشیاء سے ہے قفل کی کنجی گم ہو گئی تو اس حکم کی بنا پر کہ نمبر ۶ میں گزرا اگر قفل توڑنے میں ایک درم کا نقصان ہوتا ہو تیمم کرے اور اعادہ نہیں ورنہ قفل توڑے اور وضو کرے فلیحرر و لیراجع واللہ تعالٰی اعلم (اس میں مزید وضاحت ومراجعت کی ضرورت ہے۔ ت)

(۱۶۴) جنگل میں خنثٰی مشکل کا انتقال ہوا جو اتنا صغیر السن بچہ نہ تھا جس کیلئے ستر کا حکم ہی نہ ہوا اسے نہ مرد نہلا سکتا ہے نہ عورت ناچار تیمم کرایا جائے اقول: بلکہ اگر وہاں کوئی سات آٹھ برس کی لڑکی یا دس گیارہ برس کا لڑکا ہو کہ نہلا سکے تو اسے بتا کر نہلوانا لازم ہاں یہ بھی نہ ہو تو اسے کوئی محرم تیمم کرائے مرد ہو خواہ عورت اور محرم نہ ملے تو اجنبی عورت اپنے ہاتھوں پر کپڑا لپیٹ کر تیمم کرائے اور اسے آنکھیں بند کرنے کی ضرورت نہیں اور کوئی عورت بھی نہ ہو تو اجنبی مرد کپڑے کے ساتھ تیمم کرائے اور اپنی آنکھیں بھی بند کرے کہ خنثٰی کے سر کے بالوں یا کلائی کے کسی حصہ پر نگاہ نہ پڑے۔ بدائع وفتاوی امام قاضی خان وفتح القدیر و بحرالرائق و سراج وہاج و در مختار وہندیہ وغیرہا میں ہے یہ عمر جس میں ستر میت ضروری نہیں وہ عمر ہے جس میں بچہ حد شہوت تک نہ پہنچا ہو۔ اس سے ظاہر یہ ہے کہ لڑکا

بارہ سال سے کم اور لڑکی نو برس سے کم۔ اقول: اس تقدیر پر خنثٰی کیلئے نو برس لیے جائیں گے لاحتمال انوثتھا (اس احتمال کی بنیاد پر کہ وہ لڑکی ہو۔ ت) مگر محرر المذہب امام محمد رحمۃ اللہ تعالٰی نے کتاب مبسوط میں کہ کتب ظاہر الروایت سے ہے یہ حد مقرر فرمائی کہ جب تک بچہ باتیں نہ کرے۔ فتح میں ہے:

الصغير والصغيرة اذالم يبلغا حد الشهوة يغسلهما الرجال والنساء وقدره في الاصل بان يكون قبل ان يتكلم

کمسن لڑکا اور لڑکی جب حد شہوت کو نہ پہنچے تو انہیں مرد، عورت کوئی بھی غسل دے سکتا ہے اور امام محمد نے مبسوط میں اس کی حد یہ بتائی ہے کہ بچہ ابھی بات نہ کرتا ہو۔ (ت)

1 فتح القدیر فصل فی غسل المیت نوریہ رضویہ سکھر ۲/۶

Fatawa Razviyah Volume 3

I say: Countless mercies of the Lord (Almighty) be upon Imam Muhammad; indeed, the age in which there is no need for covering private parts (satr) is this. And (1) undoubtedly, (2) regarding looking and touching, the rule for the living and the dead is the same.

[Table Content] Left (Arabic Text): Do you not see the statement in Al-Bada'i: "If a boy who is not of an age to incite desire dies, there is no harm if women wash him. Similarly, a girl who is not of an age to incite desire, if she dies, there is no harm if men wash her, because the rule of nakedness (awrah) is not established for small boys and girls." End. And how can the pure Shariah tolerate that a boy under twelve years and a girl under nine years walk naked in the markets? It is mentioned in Ad-Durr with reference to As-Siraj al-Wahhaj: "There is no nakedness (awrah) for a very young child. Then, as long as he does not reach the age of desire, only the front and back private parts are awrah. Then, until ten years of age, the severity in the matter of his covering (satr) becomes like that of an adult." End. The limit of desire is a limit that makes it necessary to look at his private parts; these things are mentioned because either he himself feels desire or desire falls upon oneself. It is said in Sh. under the statement "for a very small child, and similarly a small girl": H. said, and our Sheikh explained it as four years or less. I do not know to whom he attributed it. End. I say: It may be taken from what is in the Janai'z of Shurunbulaliyah etc., so he mentioned what we previously stated from...

Right (Urdu Text): Look at the text of Bada'i: "A boy who is not of an age to incite desire, if he dies, there is no harm in women giving him a bath (ghusl). Similarly, a girl who is not of an age to incite desire, if she dies, there is no harm in men giving her a bath, because the rule of covering private parts (satr) is not established for young boys and girls." End. And how can the pure Shariah tolerate that a boy under twelve years of age and a girl under nine years of age walk naked in the markets? In Durr al-Mukhtar, with reference to Siraj al-Wahhaj, it says: "There is no covering (satr) for a very young child. Then, until he reaches the age of desire, only the urinary and excretory areas are his satr. Then, up to the age of ten, the same strictness as for an adult will apply to his satr." End. So in my view, the truth is that what is mentioned in common books at this point (in the issue of bathing a young male child), its explanation is the same as that in Imam Muhammad's Al-Mabsut. And here, reaching the limit of desire means reaching a limit where seeing his private parts brings those

thoughts to mind; it does not mean that the boy himself becomes full of desire or desire is born in the girl's heart. Allama Shami has...

[Footnotes] 1 Bada'i al-Sana'i, Chapter regarding who washes etc., HM Saeed Company Press, Karachi, 1/306. 2 Ad-Durr al-Mukhtar with Al-Shami, Chapter on conditions of prayer, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/300. 3 Radd al-Muhtar, Chapter on conditions of prayer, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/300.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

मेरा कथन: मौला अज़्ज़वजल की अनगिनत रहमतें इमाम मोहम्मद पर हों; निस्संदेह वह आयु जिसमें सत्र (गुप्त अंगों को ढंकना) की आवश्यकता नहीं है, यही है। और (१) निस्संदेह (२) देखने और छूने के मामले में जीवित और मृत का हुक्म एक ही है।

[तालिका सामग्री] बायाँ (अरबी पाठ): क्या आप अल-बदाइ' का कथन नहीं देखते: "यदि वह बालक जो कामुकता की आयु का न हो, मर जाए, तो महिलाओं के लिए उसे स्नान (ग़ुस्ल) देने में कोई हर्ज नहीं है। इसी तरह वह बच्ची जो कामुकता की आयु की न हो, मर जाए, तो पुरुषों के लिए उसे स्नान देने में कोई हर्ज नहीं है, क्योंकि छोटे लड़कों और लड़कियों के हक में सत्र (औराह) का नियम लागू नहीं होता।" यह समाप्त हुआ। और शुद्ध शरीयत यह कैसे सहन कर सकती है कि बारह साल से कम उम्र का लड़का और नौ साल से कम उम्र की लड़की बाज़ारों में नग्न घूमें? अल-दुर्र में अल-सिराज अल-वहाज के हवाले से है: "बहुत छोटे बच्चे के लिए कोई सत्र नहीं है। फिर जब तक वह कामुकता की आयु तक न पहुँच जाए, तब तक उसके लिए केवल आगे और पीछे के गुप्त अंग सत्र हैं। फिर दस साल की आयु तक उसके सत्र के मामले में एक वयस्क की तरह सख्ती आ जाएगी।" यह समाप्त हुआ। कामुकता की सीमा वह सीमा है जो उसके गुप्त अंगों को देखने को आवश्यक बनाती है; उन बातों का उल्लेख इसलिए है क्योंकि या तो वह स्वयं कामुक है या कामुकता स्वयं पर हावी हो जाती है। श. में "बहुत छोटे बालक और इसी तरह छोटी बालिका" कथन के तहत कहा गया है: ह. ने कहा, और हमारे शेख ने इसकी व्याख्या चार वर्ष या उससे कम की है। मुझे नहीं पता कि उन्होंने इसे किसकी ओर जिम्मेदार ठहराया है। यह समाप्त हुआ। मैं कहता हूँ: यह शरुन्बुलियाह आदि की जनाइज़ में जो है उससे लिया जा सकता है, तो उन्होंने वह उल्लेख किया जो हमने पहले ... से बताया था।

दायां (उर्दू पाठ): देखिए बदाइ' की इबारत यह है: "बच्चा जो शहवत वाला न हो अगर मर जाए तो औरतों के उसे ग़ुस्ल देने में कोई हर्ज नहीं, इसी तरह बच्ची जो शहवत वाली न हो मर जाए तो मर्दों के उसे ग़ुस्ल देने में कोई हर्ज नहीं, क्योंकि कमसिन लड़के और लड़की के हक़ में सत्र का हुक्म साबित नहीं।" अह्। और शरीअत-ए-मुतह्हरा यह क्यों कर गवारा कर सकती है कि बारह साल से कम उम्र वाला लड़का और नौ साल से कम की लड़की बाज़ारों में बरहना (नग्न) चलते रहें? दुर्र-ए-मुख्तार में सिराज-ए-वहाज के हवाले से है: "बहुत कमसिन लड़के के लिए सत्र नहीं। फिर जब तक शहवत वाला न हो उसके लिए पेशाब पाखाने के मक़ाम सत्र हैं। फिर दस साल की उम्र तक उसके सत्र के

मामले में बालिग की तरह शिद्दत आ जाएगी।" अह्। तो मेरे नज़दीक हक़ यह है कि इस मकाम पर (कम उम्र मर्द बच्चे को ग़ुस्ल देने के मसले में) आम किताबों में जो मज़कूर है उसकी तफ़्सीर वही है जो इमाम मोहम्मद की मबसूत में है और यहाँ इसके हद्-ए-शहवत को पहुँचने का मानी यह है कि इस हद को पहुँच जाए कि उसका सत्र देखने से इन बातों की याद आए, यह मानी नहीं कि लड़का खुद शहवत वाला हो जाए या खुद लड़की के दिल में शहवत पैदा हो। अल्लामा शामी ने...

[पादलेख] 1 बदाइ' अल-सनाइ' फ़स्ल फ़ी बयान मन यग़सिल इल्ख़, मतबअ एच. एम. सईद कंपनी कराची 1/306 2 अद-दुर्र अल-मुख्तार माअ-शामी बाब शरुत-उस-सलात, मतबअ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/300 3 रद-उल-मुह्तार बाब शरुत-उस-सलात, मतबअ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/300

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

اقول : مولٰی عزوجل کے بے شمار رحمتیں امام محمد پر بیشک وہ عمر جس میں ستر کی حاجت نہیں یہی ہے اور (۱) بلاشبہ (۲) درباره نظر و مس زنده و مرده کا حکم ایک ہی ہے ۔

الاتری الی قول البدائع لومات الصبی لایشتھی لابأس ان تغسله النساء وکذلك الصبیة التي لاتشتھی اذاماتت لابأس ان یغسلھا الرجال لان حکم العورة غیر ثابت فی حق الصغیر والصغیرة اھ وکیف ترضی الشریعة المطھرة ان یمشی غلام دون اثنتی عشرة سنة وبنت دون تسع بشھر فی الاسواق عریانین وقد قال فی الدرعن السراج الوھاج لاعورة للصغیر جدا ثم مادام لم یشته فقبل ودبر ثم تغلظ الی عشر سنین کبالغ اه لوغه حد الشھوة حد یوجب فیه النظر الی عورته تذکر تلک الامور لان یشتھی ھو بنفسه او تقع علی نفسھا الشھوة وقال ش تحت قوله للصغیر جدا وکذا الصغیرة قال ح وفسره شیخنا بابن اربع فمادونھا ولم ادرلمن عزاه اه اقول قد یؤخذ مما فی الجنائز الشرنبلالیة الخ فذکر ما قدمنا عن

دیکھئے بدائع کی عبارت یہ ہے : "بچہ جو شہوت والا نہ ہو اگر مرجائے تو عورتوں کے اسے غسل دینے میں کوئی حرج نہیں اسی طرح بچی جو شہوت والی نہ ہو مرجائے تو مردوں کے اسے غسل دینے میں کوئی حرج نہیں اس لئے کہ کمسن لڑکے اور لڑکی کے حق میں ستر کا حکم ثابت نہیں "۔ اھ اور شریعت مطہرہ یہ کیوں کر گوارا کرسکتی ہے کہ بارہ سال سے کم عمر والا لڑکا اور نو سال سے کم کی لڑکی بازاروں میں برہنہ چلتے رہیں ؟ درمختار میں سراج وہاج کے حوالے سے ہے : "بہت کم سن لڑکے کیلئے ستر نہیں۔ پھر جب تک شہوت والا نہ ہو اس کیلئے پیشاب پاخانے کے مقام ستر نہیں۔ پھر دس سال کی عمر تک اس کے ستر کے معاملہ میں بالغ کی طرح شدت آ جائے گی" اھ تو میرے نزدیک حق یہ ہے کہ اس مقام پر (کم عمر مرد بچے کو غسل دینے کے مسئلہ میں) عام کتابوں میں جو مذکور ہے اس کی تفسیر وہی ہے جو امام محمد کی مبسوط میں

ہے اور یہاں اس کے حدِ شہوت کو پہنچنے کا معنی یہ ہے کہ اس حد کو پہنچ جائے کہ اس کا ستر دیکھنے سے ان باتوں کی یاد آئے ، یہ معنی نہیں کہ لڑکا خود شہوت والا ہو جائے یا خود لڑکی کے دل میں شہوت پیدا ہو۔ علامہ شامی نے

1 بدائع الصنائع فصل فی بیان من یغسل الخ مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۳۰۶ 2 الدر المختار مع الشامی باب شروط الصلوۃ مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۳۰۰ 3 رد المحتار باب شروط الصلوۃ مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۳۰۰

Bil-fath 'an al-Asl. Under the phrase in Durr-e-Mukhtar "for a very small child" (there is no satar/covering for a very young boy), it was stated: "The same ruling applies to a girl. Al-Halabi stated that our Sheikh gave the explanation that the age should be four years or less. It is not known on whose authority he stated this." Allama Shami says, "I say this is derived from what is in Shurunbulaliya in the chapter of Funerals," etc. After that, he mentioned the passage that we quoted from Fath al-Qadir with reference to Mabsoot. (T) I say: There is clear room for discussion in deriving the limitation of four years from the aforementioned passage, because generally, a child starts speaking much before four years. (T) I say: There is clear oversight in this derivation, for speech usually occurs much before four years.

However, regarding the child who is giving the bath, the consideration of that age is reasonable because a very young child cannot give a bath. (165) If the deceased is a woman or a mature girl who is not that young, and there is no woman present, then if a boy of ten or eleven years can give the bath, even if by being guided by someone else, or if a non-Muslim woman is found and can give the bath according to instructions, then they should be made to give the bath. Otherwise, a Mahram should perform Tayammum. I say: Or if the deceased was a slave girl, the husband or a stranger can perform Tayammum in the same way. If she was not a slave girl and there is no Mahram, then the husband, in the same way, with a cloth over his hands and eyes closed, should perform Tayammum. If there is no husband, then a stranger should do it, but with eyes closed. (166) If the deceased is a man or a sensible boy who is not that young, and there is no man present, then if there is the wife of the deceased whose marriage status still remains and she can touch (note) him, she should give the bath. If she is not there, then a girl of seven or eight years...

[Footnote - Arabic Column] (Note) In Al-Durr, he limited it to the condition of the continuation of marriage. I say: and it is not sufficient, for a woman in an invalid marriage, or one with whom intercourse was had by mistake, whether herself or her sister, there is no doubt about the continuation of their marriage. That is why they wash him if their iddah (waiting period) ends after his death but before he is washed, and it is not permissible for them as long as they are in that iddah. Therefore, I added the condition "it is permissible for her to touch him". 12 From the author, may Allah forgive him. (M)

[Footnote - Urdu Column] In Durr-e-Mukhtar, only the condition of the continuation of marriage was deemed sufficient. I say: and this is not enough because that wife with whom someone else contracted an invalid marriage, or with whom or her sister intercourse by mistake was committed (all three cases are mentioned with clarification a few lines ahead in the book - 12 Umm-ul-F), there is no doubt that their marriage status remains. For this reason, if after the husband's death their waiting period (iddah) ends before giving him a bath, then they can give him a bath, and as long as they remain in "that iddah", they cannot give him a bath. This is why I added the phrase "she can touch him". 12 from the author, may Allah forgive him. (T)

बिल-फ़तहु अन अल-अस्ल। दुर-ए-मुख़्तार की इबारत "अत्यंत छोटे बालक के लिए" (बहुत कम उम्र लड़के के लिए सतर नहीं है) के तहत फ़रमाया: "यही हुक्म लड़की का भी है। हलबी ने फ़रमाया कि हमारे शैख़ ने इसकी व्याख्या यह बताई है कि चार साल या उससे कम उम्र हो। यह मालूम नहीं कि उन्होंने किसके हवाले से फ़रमाया है।" अल्लामा शामी फ़रमाते हैं, "मैं कहता हूँ यह उससे लिया गया है जो शरनबुलालिया के जनाज़े के अध्याय में है" इत्यादि। उसके बाद उन्होंने वह इबारत ज़िक्र की है जो हमने फ़तह-उल-क़दीर से मब्सूत के हवाले से नक़ल की है। (त) मैं कहता हूँ: उक्त इबारत से चार साल की समय सीमा निर्धारित करने में स्पष्ट रूप से बहस की गुंजाइश है, क्योंकि सामान्यतः बच्चा चार साल से पहले ही बोलने लगता है। (त) मैं कहता हूँ: इस व्याख्या में स्पष्ट विचार की आवश्यकता है क्योंकि बोलना अक्सर चार साल से बहुत पहले होने लगता है।

हाँ, नहलाने वाले बच्चे की उस उम्र का विचार तर्कसंगत है कि बहुत छोटा बच्चा नहला नहीं सकता। (165) यदि मृतक स्त्री या परिपक्व लड़की हो जो इतनी छोटी न हो और वहाँ कोई स्त्री न हो, तो दस-ग्यारह वर्ष का लड़का यदि नहला सके चाहे दूसरे के बताने से, या कोई काफ़िरा स्त्री मिले और बताने के अनुसार नहला सके तो उससे नहलवाएँ वरना कोई महरम तयम्मुम कराए। मैं कहता हूँ, या यदि मृतक दासी थी तो पति या कोई अजनबी वैसे ही तयम्मुम करा दे, और यदि दासी नहीं थी और कोई महरम नहीं है, तो पति इसी तरह हाथों पर कपड़ा लपेटकर और आँखें बंद करके तयम्मुम कराए, और यदि पति भी न हो तो अजनबी, मगर आँखें बंद करके। (166) यदि मृतक पुरुष या समझदार लड़का है जो इतना छोटा नहीं है, और वहाँ कोई पुरुष नहीं है, तो यदि मृतक की पत्नी है जिसका निकाह बरकरार है और वह उसे छू(नोट) सकती हो, तो वह नहलाए। यदि वह न हो तो सात-आठ वर्ष की लड़की...

[पाद-टिप्पणी - अरबी कॉलम] (नोट) अल-दुर में उन्होंने केवल विवाह के बने रहने की शर्त तक सीमित रखा। मैं कहता हूँ: और यह पर्याप्त नहीं है, क्योंकि निकाह-ए-फासिद वाली पत्नी, या जिसके साथ या उसकी बहन के साथ शुबहा (भ्रम) में सहवास किया गया हो, उनके निकाह के बने रहने में कोई संदेह नहीं है। इसीलिए वे उसे नहलाती हैं यदि उनकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पति की मृत्यु के बाद लेकिन उसे नहलाने से पहले समाप्त हो जाए, और जब तक वे उस इद्दत में रहती हैं, उनके लिए यह जायज़ नहीं है। इसलिए मैंने जोड़ा "उसके लिए उसे छूना हलाल है"। 12 लेखक से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

[पाद-टिप्पणी - उर्दू कॉलम] दुर-ए-मुख़्तार में सिर्फ निकाह के बने रहने की शर्त पर बस किया गया। मैं कहता हूँ: और यह काफ़ी नहीं है क्योंकि वह पत्नी जिससे किसी दूसरे ने निकाह-ए-फासिद किया हो, या जिससे या उसकी बहन से वती-ब-शुबहा (भ्रम में सहवास) किया गया हो (तीनों स्थितियाँ किताब में कुछ पंक्तियाँ आगे विस्तार से वर्णित हैं - 12 उम्म-उल-एफ़), उनके निकाह के बने रहने में कोई संदेह नहीं है। इसीलिए यदि पति के मरने के बाद उसे ग़ुस्ल (स्नान) देने से पहले उनकी इद्दत ख़त्म हो गई, तो वे उसे ग़ुस्ल दे सकती हैं, और जब तक वे "उस इद्दत" में रहेंगी, उसे ग़ुस्ल नहीं दे सकतीं। इसीलिए मैंने "उसे छू सकती हो" का इज़ाफ़ा (वृद्धि) किया। 12 लेखक से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

पृष्ठ 539 / 756

بالفتح عن الاصل۔ در مختار کی عبارت "للصغیر جدا" (بہت کمسن لڑکے کیلئے ستر نہیں) کے تحت فرمایا: "یہی حکم لڑکی کا بھی ہے۔ حلبی نے فرمایا کہ ہمارے شیخ نے اس کی تفسیر یہ بتائی ہے کہ چار سال یا اس سے کم عمر ہو ۔ یہ معلوم نہیں کہ انہوں نے کس کے حوالے سے فرمایا"۔ اھ علامہ شامی فرماتے ہیں "میں کہتا ہوں یہ اس سے اخذ ہوتا ہے جو شرنبلالیہ کے باب الجنائز میں ہے " الخ۔ اس کے بعد وہ عبارت ذکر کی ہے جو ہم نے فتح القدیر سے بحوالہ مبسوط نقل کی۔ (ت) اقول: عبارت مذکورہ سے چار سال کی تحدید اخذ کرنے میں عیاں طور پر کلام کی گنجائش ہے اس لئے کہ عموماً بچہ چار سال سے پہلے ہی بولنے لگتا ہے۔ (ت) اقول: في الاخذ نظر ظاہر فان التکلم یحصل غالبا قبل اربع بکثیر۔

ہاں نہلانے والے بچے میں اُس عمر کا اعتبار موجہ ہے کہ نہایت کم عمر نہلا نہیں سکتا۔ (۱۶۵) اگر میت عورت یا مشتات لڑکی ہو جو اتنی صغیر السن نہیں اور وہاں کوئی عورت نہیں تو دس گیارہ برس کا لڑکا اگر نہلا سکے اگر چہ دوسرے کے بتانے سے یا کوئی کافرہ عورت ملے اور بتانے کے موافق نہلا سکے تو اس سے نہلوائیں ورنہ کوئی محرم تیمم کرائے۔ اقول یا اگر میت کنیز تھی شوہر یا کوئی اجنبی ویسے ہی تیمم کرادے اور کنیز نہ تھی اور کوئی محرم نہیں تو شوہر اسی طرح ہاتھوں پر کپڑا چڑھا کر بے آنکھیں بند کیے تیمم کرائے اور شوہر بھی نہ ہو تو اجنبی مگر آنکھیں بند کرے۔ (۱۶۶) اگر میت مرد یا ہوشیار لڑکا ہے کہ اتنا صغیر السن نہیں ہے اور وہاں کوئی مرد نہیں تو اگر میت کی زوجہ ہے کہ ہنوز حکم زوجیت میں باقی اور اسے مس عہ کر سکتی ہو وہ نہلائے وہ نہ ہو تو سات آٹھ برس کی

[حاشیہ - بائیں کالم] عه اقتصر في الدر على اشتراط بقاء الزوجية اقول ولا يكفي فان المنكوحة فاسدا او الموطوءة بشبهة هي او اختها لا شك في بقاء زوجيتهن ولذا يغسلنه ان انقضت عدتهن بعد موته قبل غسله ولا يجوز لهن ما دمن في تلك العدة فلذا زدت يحل لها مسه ١٢ منه غفر له (م)

[حاشیہ - دائیں کالم] در مختار میں صرف بقائے زوجیت کی شرط پر اکتفا کیا۔ اقول اور یہ کافی نہیں اس لئے کہ وہ زوجہ جس سے کسی دوسرے نے نکاح فاسد کیا ہو اور یا کہ اس سے یا اس کی بہن سے وطی شبہ کی گئی ہو (تینوں صورتیں کتاب میں چند سطور آگے وضاحت سے مذکور ہیں ١٢ ام الف) ان کی زوجیت باقی رہنے میں کوئی شک نہیں اسی لئے اگر شوہر کے مرنے کے بعد اسے غسل دینے سے پہلے ان کی عدت ختم ہو گئی تو یہ اسے غسل دے سکتی ہیں اور جب تک "اُس عدت" میں رہیں اُسے غسل نہیں دے سکتیں۔ اسی لئے میں نے "اُسے مس کر سکتی ہو" کا اضافہ کیا۔ ١٢منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razawiyya Volume 3

If a girl can perform the washing, even if taught, or if a non-Muslim woman is available and can perform the Ghusl according to the instructions, then they should be made to perform the wash. Otherwise, a woman who is a Mahram of the deceased or a legal bondwoman of someone should perform Tayammum with her hands as such. If she is free and a non-Mahram, she should perform it by wrapping a cloth, but there is no prohibition here against looking at the face and hands of the deceased. If the wife was given an irrevocable (Bain) divorce or three divorces, or if the wife kissed her husband's son with lust, or if any act occurred with her or him such that prohibition by affinity (Hurmat-e-Musaharat) was established with the husband, or if she breastfed her minor co-wife's daughter during the nursing age, or (God forbid) she became an apostate and then accepted Islam after death—whether these three things occurred during the husband's lifetime or after it, or during the husband's lifetime someone had sexual intercourse with her under misconception (Wat-e-Shubha) or someone had performed a void marriage (Nikah-e-Fasid) with her and then it was rejected and the woman returned to her husband, then the husband died while the woman was still in the waiting period (Iddat) of that misconception intercourse or void marriage, or if the husband had performed misconception intercourse with his sister-in-law and then died while she was still in her Iddat, or if a Magian (fire-worshipper), whether Hindu or Muslim, died while the wife is still Magian or polytheist—although in all these cases the wife is still in Iddat, I say: Similarly, if she has completed the Iddat, she absolutely cannot perform the wash. And the situation is such that if she were pregnant, the delivery occurred as soon as the husband died, and now she is no longer in Iddat; in all these states, the wife is like a stranger woman and cannot perform the Ghusl. Yes, if the husband gave a revocable (Raj'i) divorce and the woman was still in Iddat when he died, or after the husband, the Iddat of that void marriage or both cases of misconception intercourse expired, or the polytheist wife of a new Muslim has now become a Muslim, then in these cases, she can perform the Ghusl.

[Boxed Text:] Arabic: والملسائل مفصلة في البدائع والخانية والفتح والبحر والدر وغيرها وقد انتقيت من خلافيات احسنها۔ Urdu: These issues are mentioned in detail in Bada'i, Khaniyah, Fath al-Qadir, Al-Bahr al-Ra'iq, Durr al-Mukhtar, etc., and I have selected the best from the disputed issues. (T)

I say: The detail regarding the hermaphrodite (Khuntha) and the order of those who perform purification for it and for a woman, and the difference between a

bondwoman and a free woman—all these additions are from this humble person (Faqir), and their reason, by the grace of Allah, is clear and evident, that: (1) In all cases, Ghusl comes first as it is the original rule. However, in the case of a woman, having a non-Muslim woman wash her was mentioned, but not for a Khuntha, because even a woman cannot see it due to the possibility of it being male, contrary to the washing of a woman. (2) For a woman, a specific boy was mentioned, for whom being immature for a female is not necessary; if it were a mature woman, she would have performed the Ghusl herself. For a Khuntha, both boy and girl were mentioned, because a mature person at the age of desire cannot wash it, and before reaching this limit, a boy and a girl are equal. (3) In the Tayammum of a Khuntha, a Mahram was given priority, whether male or female, because in any case, they have to see the parts of the Khuntha required for Tayammum.

फतावा रज़विया जिल्द तीन

यदि लड़की स्नान (ग़ुस्ल) करा सके चाहे सिखाने से ही सही, या कोई गैर-मुस्लिम महिला मिले और बताए गए तरीके के अनुसार स्नान करा सके तो उनसे स्नान कराया जाए। अन्यथा, जो महिला मृतक की महरम हो या किसी की शरिया दासी (कनीज़) हो, वह अपने हाथों से इसी तरह तयम्मुम कराए। और यदि वह स्वतंत्र और गैर-महरम है, तो कपड़ा लपेटकर कराए, मगर यहाँ मृतक के चेहरे और हाथों पर नज़र डालने से मनाही नहीं है। यदि पत्नी को तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) या तीन तलाक दे दिए गए थे, या पत्नी ने पति के पुत्र को वासना के साथ चूम लिया था, चाहे उसके साथ कोई भी ऐसा कृत्य हुआ हो जिससे पति के साथ 'हुरमत-ए-मुसाहरत' (रिश्तेदारी के कारण विवाह निषेध) पैदा हो गई हो, या अपनी छोटी सौतन को, जो दूध पीने की उम्र में थी, दूध पिला दिया हो, या (ईश्वर न करे) वह धर्मत्यागी हो गई और फिर मृत्यु के बाद इस्लाम ले आई—ये तीनों बातें चाहे पति के जीवनकाल में हुई हों या उसके बाद, या पति के जीवित रहते किसी ने उसके साथ 'व़ती-ए-शुबा' (गलतफहमी में यौन संबंध) किया हो या किसी ने उससे 'निकाह-ए-फासिद' (अमान्य निकाह) किया था, अब वह रद्द हो गया और महिला पति को वापस मिल गई, फिर पति मर गया और महिला अभी उस व़ती-ए-शुबा या निकाह-ए-फासिद की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में है, या पति ने अपनी साली के साथ व़ती-ए-शुबा किया था और फिर मर गया जबकि वह अभी उसकी इद्दत में है, या कोई मजूसी (अग्नि-पूजक), चाहे हिंदू या मुस्लिम होकर मरा और पत्नी अभी भी मजूसी या मुशरिक (बहुदेववादी) है—यद्यपि इन सभी स्थितियों में पत्नी अभी इद्दत में है, मैं कहता हूँ: इसी प्रकार यदि वह इद्दत से निकल गई है, तो वह बिल्कुल भी स्नान नहीं करा सकती। और उसकी स्थिति यह है कि यदि वह गर्भवती थी, तो पति की मृत्यु होते ही प्रसव हो गया और अब वह इद्दत में नहीं रही; इन सभी स्थितियों में पत्नी एक अजनबी महिला के समान है और स्नान नहीं करा सकती। हाँ, यदि पति ने तलाक-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक) दिया था और महिला अभी इद्दत में थी कि वह मर गया, या पति के बाद उस निकाह-ए-फासिद या व़ती-ए-शुबा की दोनों स्थितियों की इद्दत बीत गई, या नव-मुस्लिम की मुशरिक पत्नी अब मुस्लिम हो गई है, तो इन स्थितियों में वह स्नान करा सकती है।

[बॉक्स में पाठ:] अरबी: والملسائل مفصلة في البدائع والخانية والفتح والبحر والدر وغيرها وقد انتقيت من خلافيات احسنها۔ उर्दू: ये मसले बदाइ, खानिया, फत्ह अल-कदीर, अल-बह्र अर-राइक, दुर्रे मुख्तार आदि में विस्तार से वर्णित हैं और मैंने विवादास्पद मसलों में से सबसे उत्तम का चयन किया है। (त)

मैं कहता हूँ: खुनसा (उभयलिंगी) के बारे में विवरण और उसके तथा महिला के पवित्रता कराने वालों का क्रम, और दासी तथा स्वतंत्र महिला में अंतर—ये सभी वृद्धियां इस तुच्छ (फकीर) की ओर से हैं और इसका कारण, अल्लाह की कृपा से, स्पष्ट और प्रकाशित है कि: (1) सबमें पहले स्नान (ग़ुस्ल) है क्योंकि वही मूल है। परंतु महिला के मामले में किसी काफ़िरा (गैर-मुस्लिम महिला) से स्नान कराना कहा गया, खुनसा के मामले में नहीं, क्योंकि महिला भी उसे नहीं देख सकती क्योंकि उसमें पुरुष होने की संभावना है, जो महिला के स्नान के विपरीत है। (2) महिला के मामले में विशेष रूप से लड़के का उल्लेख किया गया, जिसके लिए स्त्री का नाबालिग होना आवश्यक नहीं है; यदि वयस्क महिला होती तो वह स्वयं ही स्नान करा देती। और खुनसा के मामले में लड़का और लड़की दोनों कहे गए, क्योंकि कामेच्छा की सीमा पर पहुँचा हुआ वयस्क उसे स्नान नहीं करा सकता, और इस सीमा तक पहुँचने से पहले लड़का और लड़की एक समान हैं। (3) खुनसा के तयम्मुम में महरम को प्राथमिकता दी गई, चाहे वह पुरुष हो या महिला, क्योंकि हर हाल में उसे खुनसा के तयम्मुम वाले अंगों को देखना होगा।

पृष्ठ 540/756

لڑکی اگر نہلا سکے اگرچہ سکھانے سے یا کوئی کافر ملے اور بتانے کے مطابق غسل دے سکے تو ان سے نہلوایا جائے ورنہ جو عورت میت کی محرم یا کسی کی شرعی کنیز ہو وہ اپنے ہاتھوں سے یوں ہی تیمم کرائے اور آزاد و نامحرم ہے تو کپڑا لپیٹ کر مگر روو دست میت پر نگاہ سے یہاں ممانعت نہیں، زوجہ کو اگر طلاق بائن یا تین طلاقیں دے دی تھیں یا زوجہ نے پسر زوج کا بوسہ بشہوت لیا خواہ کوئی فعل اس سے یا اُس کے ساتھ ایسا واقع ہوا جس سے شوہر کے ساتھ حرمتِ مصاہرت پیدا ہو یا اپنی صغیرہ سوت کو کہ عمر رضاعت میں تھی دودھ پلا دیا یا معاذ اللہ مرتدہ ہو گئی پھر بعد موت اسلام لے آئی یہ تینوں باتیں خواہ حیات شوہر میں واقع ہوئی ہوں یا اُس کے بعد یا حیات زوج میں کسی نے اُس سے وطی شبہ کی یا کسی نے اُس سے نکاح فاسد کیا تھا اب وہ رد ہوا اور عورت شوہر کو ملی پھر شوہر مر گیا اور عورت ابھی اس وطی شبہ یا نکاح فاسد کی عدت میں ہے یا زوج نے سالی سے وطی شبہ کی تھی پھر مر گیا اور ہنوز وہ اُس کی عدت میں ہے یا مجوسی خواہ ہندو مسلمان ہو کر مرا اور عورت ہنوز مجوسیہ یا مشرکہ ہے اگرچہ ان سب صورتوں میں زوجہ ہنوز عدت میں ہو اقول : یوں ہی اگر عدت سے نکل گئی مطلقاً نہیں نہلا سکتی اور اُس کی صورت یہ ہے کہ حاملہ تھی موت شوہر ہوتے ہی وضع حمل ہو گیا اب عدت میں نہ رہی ان سب حالتوں میں زوجہ مثل اجنبیہ ہے غسل نہیں دے سکتی ہاں اگر شوہر نے طلاق رجعی دی اور عورت ابھی عدت میں تھی کہ مر گیا یا بعد شوہر اُس نکاح فاسد یا دونوں صورت وطی شبہ کی عدت گزر گئی یا نو مسلم کی زوجہ مشرکہ اب مسلمان ہو گئی تو ان صورتوں میں غسل دے سکتی ہے

[باکس کا متن:] والملسائل مفصلة في البدائع والخانية والفتح والبحر والدر وغیرھا وقد انتقیت من خلافیات احسنھا۔ یہ مسائل بدائع، خانیہ، فتح القدیر، البحر الرائق، در مختار و غیرہا میں تفصیل سے مذکور ہیں اور اختلافی مسائل میں سے احسن کا انتخاب کیا ہے (ت)

اقول: خنثی میں تفصیل اور اُس کے اور عورت کے طہارت کرانے والوں میں ترتیب اور عورت کنیز وحرہ میں فرق یہ سب زیاد ت فقیر سے ہے اور اُس کی وجہ بحمدہ تعالٰی ظاہر و منیر کہ: (۱) سب میں پہلے غسل ہے کہ وہی اصل ہے مگر عورت میں کسی کافرہ سے نہلوانا کہانہ خنثی میں کہ عورت بھی اسے نہیں دیکھ سکتی کہ احتمال ذکورت ہے بخلاف غسلِ زن۔ (۲) عورت میں خاص لڑکا کہا کہ اُس کیلئے اُنثی کی نابالغی کیا ضرور بالغہ عورت ہوتی تو غسل ہی دیتی اور خنثی میں لڑکا لڑکی دونوں کہے کہ بالغ حد شہوت اُسے غسل نہیں دے سکتا اور اس حد نہ پہنچنے کے بعد پسر و دختر یکساں۔ (۳) خنثی کے تیمم میں محرم کو مقدم رکھا مرد ہو یا عورت کہ بہر حال اُسے خنثی کے اعضائے تیمم دیکھنے

Fatawa Razawiyya Volume Three

...has the choice to touch both. After that, a non-mahram (strange) woman, who cannot touch due to the possibility of him being male, can still see. Then a non-mahram (strange) man, for whom neither touching nor seeing is possible due to the possibility of her being female.

(4) The Tayammum (dry ablution) of a female slave was separated, and here no order was kept between a Mahram (unmarriageable kin), husband, and a stranger because seeing and touching the limbs for Tayammum is permissible for all. It is stated in Durr al-Mukhtar (1):

(The rule for someone else's female slave) is like one's own Mahram woman, and whatever parts are permissible (2) to look at are also permissible to touch, except for a non-mahram woman. (1) Ash-Shami said: meaning other than a slave woman. And in al-Tatarkhaniyya (3) from Jami' al-Jawami': There is no harm if a slave woman touches a man, oils his hair, or massages his body as long as it is without lust, except for the area between the navel and the knees. (2)

The rule for someone else's slave woman is like that of one's own Mahram woman. And the parts of the body that are permissible to look at are also permissible to touch. However, while it is permissible to look at certain parts of a non-mahram woman's body (just the face), it is not permissible to touch them either. Allama Shami said: "Non-mahram woman" refers to one who is not a slave. And in Tatarkhaniyya, with reference to Jami' al-Jawami', it is written: "If a slave woman touches a man, puts oil in his hair, or massages his body, there is no harm as long as it is void of lust, but touching the part of the body between the navel and the knee is not permissible for her either." (T)

(5) In the Tayammum of a free woman, this order was taken: first a Mahram man, then the husband, then a stranger. The reason is that both seeing and touching are permissible for a Mahram, for a husband only seeing is permissible, and for a stranger, nothing. It is stated in Durr al-Mukhtar:

A husband is prohibited from washing her or touching her, but not from looking at her, according to the more correct view. (3)

It is forbidden for a husband to wash or touch his deceased wife, and based on the more correct view, it is forbidden to look at her. (T)

Yes, the detail regarding a slave woman and a free woman for the Tayammum of a man is in al-Bada'i:

If the woman performing Tayammum is a Mahram relative, she performs Tayammum without a cloth, otherwise by wrapping a cloth around her [hand].	**If the woman performing Tayammum is a Mahram, she will perform Tayammum without a cloth; otherwise, she will wrap a cloth around her hand and perform Tayammum.**

1. Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Chapter on Looking and Touching, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 5/259.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Looking and Touching, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 5/260.
3. Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Prayer of Funerals, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/633.

फतावा रज़विय्या जिल्द सोम (तीसरा भाग)

...दोनों को छूने का अख्तियार है। उसके बाद अजनबी औरत कि पुरुष होने की संभावना के कारण छू न सके देख तो सकेगी। फिर अजनबी मर्द कि स्त्री होने की संभावना के कारण न छूना मुमकिन है न देखना।

(४) कनीज़ (दासी) के तयम्मुम को अलग किया और यहाँ महरम, शौहर (पति) और अजनबी में कोई तरतीब नहीं रखी क्योंकि तयम्मुम के अंगों को देखना और छूना सबके लिए जायज़ है। दुर्र-ए-मुख्तार (१) में है:

(दूसरे की कनीज़ का हुक्म) अपनी महरम औरत की तरह है। और जिसके शरीर के जिस हिस्से को देखना जायज़ है (२) उसे छूना भी जायज़ है सिवाय अजनबी औरत के। (१) शामी ने फरमाया: यानी दासी के अलावा। और ततारखानिया (३) में जामिउल जवामिअ के हवाले से है: कनीज़ का मर्द को छूना, उसके सर में तेल डालना या बदन दबाना बुरा नहीं है जब तक कि यह शहवत (कामवासना) से खाली हो, सिवाय नाफ (नाभि) और घुटने के दरमियान के हिस्से के। (२)

दूसरे की कनीज़ का हुक्म अपनी महरम औरत की तरह है। और बदन के जिस हिस्से को देखना जायज़ है उसे छूना भी जायज़ है। मगर अजनबी औरत के जिस हिस्से (सिर्फ चेहरे की टिक्की) को देखना जायज़ है, उसे छूना जायज़ नहीं। अल्लामा शामी ने फरमाया: अजनबी औरत से मुराद वह है जो कनीज़ न हो। और ततारखानिया में जामिउल जवामिअ के हवाले से है: "अगर कनीज़ मर्द को छुए या उसके सर में तेल डाले या बदन दबाए तो इसमें कोई हर्ज नहीं जब तक कि शहवत से खाली हो, मगर नाफ और घुटने के बीच के बदन के हिस्से का छूना उसके लिए भी जायज़ नहीं।" (त)

(५) आज़ाद औरत (हुर्रह) के तयम्मुम में यह तरतीब ली कि पहले महरम मर्द, फिर शौहर, फिर अजनबी। और इसकी वही वजह है कि महरम को देखना और छूना दोनों जायज़ हैं, शौहर को सिर्फ देखना और अजनबी को कुछ नहीं। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

शौहर के लिए अपनी (मृत) पत्नी को नहलाना और छूना मना है, न कि उसे देखना, सबसे सही कौल (बात) के अनुसार। (३)

शौहर के लिए अपनी मरने वाली बीवी को गुस्ल देना और छूना मना है, और सबसे सही कौल की बुनियाद पर उसे देखना भी मना है। (त)

हाँ, मर्द के तयम्मुम में कनीज़ और आज़ाद औरत की तफसील (विवरण) 'बदाइअ' में है:

अगर तयम्मुम कराने वाली औरत ज़ात-ए-रहम महरम (नज़दीकी रिश्तेदार) हो, तो वह बिना कपड़े के तयम्मुम कराएगी, वरना अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर।	**तयम्मुम कराने वाली औरत महरम हो तो बिना कपड़े के तयम्मुम कराएगी वरना अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर तयम्मुम।**

1. अल-दुर्र-ए-मुख्तार मअ शामी, फसल फी-नज़रि वल-लमस, मतबअ मुस्तफा अल-बाबी मिस्र ५/२५९
2. रद-उल-मुहतार, फसल फी-नज़रि वल-लमस, मतबअ मुस्तफा अल-बाबी मिस्र ५/२६०
3. अल-दुर्र-ए-मुख्तार मअ शामी, सलातुल जनाइज़, मतबअ मुस्तफा अल-बाबी मिस्र १/६३३

पृष्ठ ५४१/७५६

چھونے دونوں کا اختیار ہے اس کے بعد اجنبی عورت کہ باحتمال ذکورت چھونہ سکے دیکھ تو سکے گی پھر اجنبی مرد کہ احتمال انوثت کے سبب نہ چھونا ممکن نہ دیکھنا۔

(۴) تیمم کنیز کو جدا کیا اور یہاں محرم شوہر، اجنبی میں ترتیب نہ رکھی کہ اس کے اعضائے تیمم کا دیکھنا چھونا سب کو روا، در مختار (۱) میں ہے:

(حکم امة غیرہ) کمحرمہ و ماحل (۲) نظرہ حل لسہ الا من اجنبیة ۱ قال ش ای غیر الامة و فی التاتارخانیة (۳) عن جامع الجوامع لاباس ان تمس الامة الرجل وان تدھنہ وتغمزہ مالم تشتھہ الا مابین السرة والرکبة ۲-

دوسرے کی کنیز کا حکم اپنی محرم عورت کی طرح ہے۔ اور جس حصہ بدن کو دیکھنا جائز ہے اس کو چھونا بھی جائز ہے مگر اجنبی عورت کے جس حصہ بدن (منہ کی صرف ٹکی) کو دیکھنا جائز ہے اسے بھی چھونا جائز نہیں۔ علامہ شامی نے فرمایا: اجنبی عورت سے مراد وہ ہے جو کنیز نہ ہو۔ اور تاتار خانیہ میں جامع الجوامع کے حوالے سے ہے: "اگر کنیز مرد کو چھوئے یا اس کے سر میں تیل ڈالے یا بدن دبائے تو اس میں حرج نہیں جب کہ شہوت سے خالی ہو مگر ناف اور گھٹنے کے مابین حصہ بدن کا چھونا اس کیلئے بھی جائز نہیں۔" (ت)

(۵) تیمم حرہ میں یہ ترتیب لی کہ پہلے محرم مرد پھر شوہر پھر اجنبی اور اس کی وہی وجہ کہ محرم کو دیکھنا چھونا دونوں روا اور شوہر کو صرف دیکھنا اور اجنبی کو کچھ نہیں، در مختار میں ہے:

یمنع زوجها من غسلها و مسها لا شوہر کیلئے اپنی مرنے والی زوجہ کو غسل دینا اور چھونا من النظر الیها علی الاصح ۳۔ منع ہے، اور قول اصح کی بنیاد پر اسے دیکھنا منع ہے۔ (ت)

ہاں تیمم مرد میں کنیز وحرہ کی تفصیل بدائع میں ہے:

المیممة اذا کانت ذات رحم محرم منه تیمم کرانے والی عورت محرم ہو تو بغیر کپڑے کے تیممه بغیر خرقة والابخرقة تلفها علی تیمم کرائے گی ورنہ اپنے ہاتھ پر کپڑا لپیٹ کر تیمم

1 الدرالمختار مع الشامی فصل فی النظر واللمس مطبع مصطفی البابی مصر ۲۵۹/۵ 2 ردالمختار فصل فی النظر واللمس مطبع مصطفی البابی مصر ۲۶۰/۵ 3 الدرالمختار مع الشامی صلوة الجنائز مطبع مصطفی البابی مصر ۶۳۳/۱

Fatawa Razawiya, Volume 3

(Arabic text): ...shrouding her, because (1) she was not permitted to touch him during his life, so similarly after his death. A female slave or someone else's female slave may perform Tayammum for him without a cloth, because (2) it is permissible for a slave girl to touch the parts involved in Tayammum. Contrary to the ruling for an 'Umm al-Walad' (a slave woman who has borne her master's child) of the deceased, for she becomes free upon the death of her master and is joined with free unrelated women. And Allah the Almighty knows best.

(Urdu Translation of Arabic): ...will perform [the shrouding] because when she could not touch him during his lifetime, she cannot touch him after his death either. His female slave or another person's female slave will perform Tayammum (dry ablution) without a cloth, because it is permissible for a slave girl to touch the parts involved in Tayammum. The case of the deceased's 'Umm al-Walad' is different, because she becomes free immediately upon the master's death and is included among unrelated free women. And Allah the Almighty knows best. (T)

(176 to 178) I say: Allah the Exalted and Sublime has established the washing, shrouding, and burial of a deceased Muslim as their right and made it obligatory upon living Muslims. Wherever there is a need for money for these, it shall be taken from the deceased's wealth, as these are among their essential needs. Therefore, this takes precedence even over the payment of debts, let alone the distribution of inheritance, just as essential clothing worn during life is not taken for debt. If the deceased left no wealth, then the person who was responsible for their maintenance during life shall provide it (and the shroud for a woman is absolutely upon the husband, even if she left an inheritance). If no such person exists, it shall be taken from the public treasury (Bayt al-Mal) of the Muslims. If there is no public treasury, as in these lands, then it is obligatory upon the Muslims who are informed about it. These issues regarding shrouding are explicitly detailed, and the same applies to washing and burial, in fact, they are even more important. Now, in these three categories, if a boy, a girl, or a non-Muslim woman—who are ordered to perform the washing—demand the customary wage, it must be given. If the deceased has no wealth, those present should provide it from their own means. Thus, as before, three scenarios will emerge in each category: if they demand much more than the customary wage, or if no one is capable of giving, or if their wealth is elsewhere and they do not agree to credit, then Tayammum should be performed. Allah the Exalted and Sublime knows best. All praise is due to Allah, these nearly one hundred and

seventy-five scenarios regarding the inability to use water are unique features of this treatise, which will not be found elsewhere, although whatever is present is the grace of the honorable scholars. Verse: O morning breeze! All this is brought by you. (O morning breeze! All this is brought by you. - T)

May the mercy of Allah be upon them all, and upon us through them forever. O Most Merciful of the merciful, Ameen, and all praise is due to Allah, Lord of the worlds, and the best. May Allah's mercy be upon all these personages and upon us too for their sake, forever. O You who are more merciful than all the merciful ones, accept this.

---

1. Bada'i' al-Sana'i', Chapter on explaining who performs washing, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/305. Page 542 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

(अरबी पाठ): ...उसे कफ़न पहनाएगी क्योंकि (1) जब वह उसके जीवन में उसे नहीं छू सकती थी, तो उसकी मृत्यु के बाद भी नहीं छू सकती। और उसकी दासी या किसी दूसरे की दासी बिना कपड़े के उसे तयम्मुम कराएगी क्योंकि (2) दासी के लिए तयम्मुम के अंगों को छूना जायज़ है। इसके विपरीत मृतक की 'उम्म-ए-वलद' (वह दासी जिससे स्वामी की संतान हो) का हुक्म है, क्योंकि वह स्वामी की मृत्यु पर आज़ाद हो जाती है और अजनबी आज़ाद औरतों में शामिल हो जाती है। अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

(उर्दू अनुवाद): ...उसे कफ़न पहनाएगी क्योंकि जब वह उसके जीवन में उसे नहीं छू सकती थी, तो उसकी मृत्यु के बाद भी नहीं छू सकती। और उसकी दासी या किसी दूसरे की दासी बिना कपड़े के उसे तयम्मुम कराएगी क्योंकि दासी के लिए तयम्मुम के अंगों को छूना जायज़ है। मृतक की उम्म-ए-वलद का हुक्म इसके विपरीत है क्योंकि वह स्वामी की मृत्यु पर आज़ाद होकर अजनबी आज़ाद महिलाओं में शामिल हो जाती है। अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

(176 से 178) मैं कहता हूँ: अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने एक मुसलमान मृतक के गुस्ल, कफ़न और दफ़न को उसका हक़ बनाया है और जीवित मुसलमानों पर फ़र्ज़ किया है। जहाँ कहीं इसके लिए धन की आवश्यकता हो, वह उसके धन से लिया जाएगा क्योंकि यह उसकी अनिवार्य आवश्यकताओं में से है। इसलिए, विरासत के बंटवारे की बात तो दूर, यह ऋण चुकाने पर भी प्राथमिकता रखता है, जैसे जीवन में पहने जाने वाले आवश्यक कपड़ों को ऋण के बदले नहीं लिया जाता। यदि उसने कोई धन नहीं छोड़ा, तो जीवन में जिस पर उसका निर्वाह (खर्च) अनिवार्य था, वह देगा (और पत्नी का कफ़न पूरी तरह पति पर है, भले ही उसने विरासत छोड़ी हो)। यदि वहां ऐसा कोई न हो, तो मुसलमानों के बैतुल माल से लिया जाए। यदि बैतुल माल न हो, जैसा कि इन शहरों में है, तो उन मुसलमानों पर अनिवार्य है जिन्हें इसकी सूचना हो। कफ़न के ये मामले क्रमवार स्पष्ट हैं, और गुस्ल और दफ़न भी इसी तरह हैं, बल्कि अधिक महत्वपूर्ण हैं। अब इन तीनों श्रेणियों में लड़का, लड़की या गैर-मुस्लिम महिला जिनसे नहलाने का हुक्म है, यदि वे उचित मजदूरी मांगें, तो उसे देना अनिवार्य है। यदि मृतक का धन न हो, तो उपस्थित लोग अपने पास से दें। तो यहाँ भी नियमानुसार प्रत्येक नंबर में तीन-तीन स्थितियाँ उत्पन्न होंगी: कि यदि वे उचित मजदूरी से बहुत अधिक मांगें, या कोई देने में सक्षम न हो, या उनका धन दूसरी जगह हो और वे उधार पर सहमत न हों, तो तयम्मुम कराएँ। अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। अल्हम्दुलिल्लाह, पानी के अभाव से संबंधित ये

लगभग पौने दो सौ स्थितियाँ इस शोध पत्र की विशेषताओं में से हैं जो इसके अलावा कहीं और नहीं मिलेंगी, हालांकि जो कुछ भी है वह विद्वानों का ही अनुग्रह है। शेर: ऐ बाद-ए-सबा! यह सब तेरा ही लाया हुआ है। (ऐ बाद-ए-सबा! यह सब तेरा ही लाया हुआ है। - त)

उन सभी पर अल्लाह की रहमत हो, और उनके वसीले से हम पर भी हमेशा के लिए। ऐ सबसे बड़े दयालु, आमीन और सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो संसारों का पालनहार है, और सबसे श्रेष्ठ। इन सभी महानुभावों पर और उनके माध्यम से हम पर भी हमेशा ईश्वर की कृपा बनी रहे। हे सभी दयालुओं से बढ़कर दया करने वाले, स्वीकार करें।

---

1. बदाए-उस-सनाए, गुस्ल कराने वालों के वर्णन का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/305. पृष्ठ 756 में से 542

كفها لانه (۱) لم يكن لها ان تمسه في حياته فكذا بعد وفاته والامة وامة الغير تيممه بغير خرقة لانه يباح للجارية مس موضع التيمم بخلاف (۲) ام ولدا لميت لانها تعتق وتلتحق بالحرائر الاجنبيات اهـ والله تعالٰی اعلم۔

کرائے گی اس لئے کہ یہ جب اس کی زندگی میں اسے نہیں چھو سکتی تھی تو اس کے مرنے کے بعد بھی نہیں چھو سکتی اور اس کی کنیز یا دوسرے کی کنیز بغیر کپڑے کے تیمم کرائے گی اس لئے کہ باندی کیلئے اعضاءِ تیمم کو مَس کرنا مباح ہے۔ مرنے والے کی ام ولد کا حکم اس کے بر خلاف ہے اس لئے کہ وہ مولٰی کے مرتے ہی آزاد ہو کر اجنبی آزاد عورتوں میں شامل ہو جاتی ہے۔ اہ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

(۱۷۶ تا ۱۷۸) اقول: مولٰی سبحانہ وتعالٰی نے مسلم میت کے غسل کفن دفن اُس کے حق بنائے اور زندہ مسلمانوں پر فرض فرمائے ان میں جہاں مال کی حاجت ہو اُس کے مال سے لیا جائے کہ یہ اس کی حاجاتِ ضروریہ سے ہے ولہذا ۳ تقسیمِ ترکہ درکنار ادائے دیون پر بھی مقدم ہے جس طرح ۴ زندگی میں پہننے کا ضروری کپڑا دین میں نہ لیا جائیگا اگر اس ۵ نے مال نہ چھوڑا تو زندگی میں جس پر اُس کا نفقہ واجب تھا وہ دے (اور عورت کا کفن مطلقاً شوہر پر ہے اگرچہ اس نے ترکہ چھوڑا ہو) اگر وہاں ۷ کوئی ایسا نہ ہو تو مسلمانوں کے بیت المال سے لیا جائے اگر بیت المال نہ ہو جیسے ان بلاد میں تو مسلمانوں پر واجب ہے جن جن کو اطلاع ہو۔ یہ مسائل کفن میں بالترتیب مصرح ہیں اور غسل و دفن اُس کے مثل بلکہ اہم اب ان تینوں نمبروں میں لڑکا یا لڑکی یا کافرہ جن جن سے نہلوانے کا حکم ہے اگر اُجرت مثل مانگیں دینی لازم میت کا مال نہ ہو تو موجودین اپنے پاس سے دیں تو یہاں بھی بدستور ہر نمبر میں تین تین صورتیں اور پیدا ہوں گی کہ

اگر وہ اُجرت مثل سے بہت زیادہ مانگے یا کوئی دینے کے قابل نہیں یا ان کا مال دوسری جگہ ہے اور وہ ادھار پر راضی نہیں تیمم کرائیں واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم الحمد للہ یہ پانی سے عجز کے پونے دوسو صورتیں اس رسالہ کے خواص سے ہیں کہ اس کے غیر میں نہ ملیں گی اگر چہ جو کچھ ہے علمائے کرام ہی کا فیض ہے ع اے بادِ صبا اینہمہ آوردہ تست (اے باد صبا! یہ سب تیرا ہی لایا ہوا ہے۔ ت)

رحمۃ اللہ علیہم اجمعین * وعلینا بھم ابد الآبدین یا ارحم الراحمین أمین والحمد للہ رب العلمین*

وافضل ان تمام حضرات پر اور ان کے طفیل ہم پر بھی ہمیشہ خدا کی رحمت ہو۔ اے سب رحم کرنے والوں سے بڑھ کر رحم فرمانے والے، قبول فرما۔

---

1 بدائع الصنائع فصل فی بیان من یغسل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۳۰۵ Page 542 of 756

Fatawa Razawiya, Volume 3

[Arabic Box Left]: Prayers and peace be upon the Master of the Messengers, and his family, his companions, his son, and all his group. [Urdu Translation Right]: And all praises are for Allah, Who is the Lord of all the worlds, and the best prayers and peace be upon the master of the messengers and upon his family and companions and his sons and his entire group. (T)

Second: It is sufficient for the purpose of purification (taharat). Third: The benefits of the obligations of purification can be known from points 17 and 15. Fourth: We did not restrict 'water' with the term 'absolute' (mutlaq) because simply saying it is sufficient for purification was enough for its intended meaning.

In contrast to the statement of al-Durr (al-Mukhtar): (One who is unable to use absolute water sufficient for his purification for a prayer that passes without a replacement performs tayammum.) He mentioned 'absolute' first, so saying 'sufficient' after it was not redundant. Yes, if he had omitted 'absolute' as I did, 'sufficient' would have been enough. But his phrase "for a prayer that passes without a replacement" excludes tayammum for sleep, or for returning a greeting, and the like, or for something that passes without a replacement, like the Funeral prayer and the Eid prayers, for which inability to use sufficient water is not a condition. Summarized from Shami. (T)

I say: Firstly, does the author's statement...

Note: This is the second part of that first section which appeared on page 411, line 21. (M)

1. Al-Durr al-Mukhtar with al-Shami, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/170.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/171.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[अरबी बॉक्स]: अल्लाह के लिए सभी प्रशंसाएं हैं, जो सभी लोकों का मालिक है, और सर्वश्रेष्ठ दुरूद व सलाम रसूलो के सरदार और उनके आल (वंशजों) व असहाब (साथियों) और उनके संतानों और उनके पूरे समूह पर हो। (त)

दूसरा: शुद्धिकरण (तहारत) के लिए पर्याप्त है। तीसरा: शुद्धिकरण के फ़र्ज़ के लाभ संख्या 17 और 15 में ज्ञात हो गए। चौथा: हमने पानी को 'मुतलक' (निरपेक्ष) शब्द से सीमित नहीं किया क्योंकि शुद्धिकरण के लिए पर्याप्त कहना ही इसकी उपयोगिता के लिए काफी था।

'दुर्रे मुख़्तार' के निम्नलिखित कथन के विपरीत: "वह व्यक्ति तयम्मुम करे जो ऐसे पानी का उपयोग करने में असमर्थ हो जो मुतलक हो, उसकी तहारत के लिए पर्याप्त हो, ऐसी नमाज़ के लिए जो छूट जाए तो उसका कोई विकल्प (बदल) हो (दूसरे शब्दों में, किसी विकल्प की ओर छूटने वाली नमाज़ के लिए आबे-मुतलक के उपयोग से असमर्थ व्यक्ति तयम्मुम करे)"। उन्होंने इस इबारत में 'मुतलक' शब्द का पहले उल्लेख किया, इसलिए उसके बाद 'काफी' कहना निरर्थक नहीं हुआ। हाँ, अगर वे 'मुतलक' शब्द छोड़ देते जैसा मैंने किया, तो 'काफी' कहना पर्याप्त होता। लेकिन उनकी इबारत "ऐसी नमाज़ के लिए जो किसी विकल्प की ओर छूट जाए" तो इसमें उस तयम्मुम से परहेज़ है जो सोने या सलाम का जवाब देने या इसी तरह के किसी काम के लिए हो, या ऐसी छूटने वाली चीज़ के लिए हो जिसका कोई विकल्प न हो जैसे नमाज़े जनाज़ा और ईदैन कि उसके लिए पानी के उपयोग से असमर्थता शर्त नहीं है। (शामी से संक्षेपित) (त)

अक़ुल (मैं कहता हूँ): पहली बात, क्या लेखक का कथन...

नोट: यह उस पहले का दूसरा भाग है जो पृष्ठ 411 पर गुज़रा। (M)

1. अल-दुरुल मुख़्तार माअश-शामी, बाबुत तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/170
2. रद-दुल मुहतार, बाबुत तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/171

पृष्ठ 756 का 543

[Arabic Box]: الصلوٰۃ والسلام علی سید المرسلین* و آلہ وصحبہ وابنہ وحزبہ اجمعین *

[Urdu Box]: اور ساری خوبیاں اللہ کیلئے جو سارے جہانوں کا مالک ہے اور بہتر درود و سلام ہو رسولوں کے سردار اور ان کی آل و اصحاب اور ان کے فرزند اور ان کے گروہ سب پر۔ (ت)

دوم: عہ طہارت کے لئے کافی۔ سوم: فرض طہارت ان قیدوں کے فائدے نمبر ۱۷، ۱۵ میں معلوم ہو لیے۔ چہارم: ہم نے پانی کو مطلق سے مقید نہ کیا کہ طہارت کیلئے کافی کہنا ہی اس کے افادے کو کافی تھا،

بخلاف عبارۃ الدر (من عجز عن استعمال الماء المطلق الکافي لطھارتہ لصلاۃ تفوت الی خلف (تیمم) ۱ اھ فانہ قدم ذکر المطلق فلم یلغ نعم لو ترکہ کما فعلت لکفی اما قولہ لصلاۃ تفوت الی خلف فاحترز بہ عن التیمم لنوم اورد سلام ونحوہ اولم فائت لاالی خلف کصلاۃ جنازۃ وعید فانہ لایشترط لہ العجز ۲ اھ ش۔) بر خلاف در مختار کی درج ذیل عبارت کے : "وہ تیمم کرے جو عاجز ہوا ایسا پانی استعمال کرنے سے جو مطلق ہو، اس کی طہارت کیلئے کافی ہو، ایسی نماز کیلئے جو فوت ہو جائے تو اس کا کوئی بدل ہو (بلفظ دیگر کسی بدل کی جانب فوت ہونے والی نماز کیلئے آبِ مطلق کافی کے استعمال سے عاجز شخص تیمم کرے) " اھ انہوں نے اس عبارت میں لفظ مطلق پہلے ذکر کیا تو اس کے بعد کافی کہنا لغو نہ ہوا ہاں اگر لفظ مطلق ترک کر دیتے جیسا میں نے کیا تو کافی ہوتا۔ لیکن ان کی عبارت "لصلاۃ تفوتُ الی خلف" (کسی بدل کی جانب فوت ہونے والی نماز کیلئے) تو اس میں اس تیمم سے احتراز ہے جو سونے یا سلام کا جواب دینے یا ایسے ہی کسی کام کیلئے ہو یا

ایسی فوت ہونے والی چیز کیلئے ہو جس کا کوئی بدل نہ ہو جیسے نماز جنازہ اور عیدین کہ اس کیلئے آبِ کافی سے عجز شرط نہیں۔ اھ شامی ملخصاً۔ (ت)

اقول: اولاً کیا مصنف کی عبارت عہ یہ اُس اول کا دوم ہے جو صفحہ ۴۱۱ پر گزرا ۲۱ (م)

۱ الدر المختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۷۰ ۲ رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۷۱

Fatawa-e-Razvia Volume 3

Is the author indicating that inability is a "condition" or not? If not, then why these exclusions? And if he is stating inability as a condition, its result will be completely contrary to the intended objective. This is because it would imply that the condition for tayammum is being "unable (due to lack of sufficient water) in a prayer that has a replacement." Thus, tayammum would not be permissible without inability. Moreover, in non-prayer acts (e.g., responding to greetings), there is no such inability, nor in prayers that have no replacement (like funeral and Eid prayers). Consequently, the result would be that tayammum is not permissible for responding to greetings or funeral prayers, etc. Whereas the purpose of making inability a condition was to convey that tayammum is permissible for responding to greetings and funeral prayers even without inability. (12 M. Alf) (T)

In summary, the benefit of these additions is that tayammum is specified by this particular inability. It is not the intent to restrict the condition of inability to this specificity. However, if it were said: "And this is in a prayer that passes away toward a replacement," it would have been effective in establishing the mentioned inability as a condition. (And it would not have been contrary to the purpose, because its result would be that the condition of inability due to lack of sufficient water applies to those prayers which have a replacement. Therefore, in acts like responding to greetings which are not prayers, and funeral prayers etc. which have no replacement, inability to use water is not a condition. In short, if it were 'This is in prayer etc.', then establishing inability as a condition and these words as restrictive clauses, which is their purpose, would have been achieved in their manner. 12 M. Alf) (T)

Secondly: Despite the availability of water, tayammum is only (permitted) for something that would be missed and has no replacement, such as responding to greetings and the funeral and Eid prayers, as previously mentioned. As for sleep or any other such act, it is not permissible while water is available. This has been researched by Allama Shami, disagreeing with what is in 'al-Bahr al-Ra'iq' and 'al-Durr al-Mukhtar'. And as we have previously stated, in something that is missed without a replacement, even the meaning (of sufficient water...

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द सोम (तीसरी)

क्या लेखक असमर्थता (अजज़) के"शर्त होने" का संकेत दे रहा है या नहीं? यदि नहीं, तो फिर ये आपत्तियाँ (एहतेराज़ात) कैसी? और यदि वह असमर्थता को शर्त बता रहा है, तो इसका परिणाम इच्छित उद्देश्य के बिल्कुल विपरीत निकलेगा, क्योंकि इससे यह निष्कर्ष निकलेगा कि तयम्मुम के लिए शर्त यह है कि "ऐसी नमाज़ में जिसका कोई विकल्प (बदल) हो, (पर्याप्त पानी के उपयोग से) असमर्थ हो"। तो बिना असमर्थता के तयम्मुम जायज़ ही नहीं होगा। और जो नमाज़ नहीं है (जैसे सलाम का जवाब देना) उसमें असमर्थता नहीं है और न ही ऐसी नमाज़ में जिसका कोई विकल्प नहीं (जैसे जनाज़ा और ईद की नमाज़)। तो निष्कर्ष यह निकला कि सलाम का जवाब देने और नमाज़-ए-जनाज़ा आदि के लिए तयम्मुम जायज़ नहीं है। जबकि असमर्थता को शर्त बनाने का उद्देश्य यह बताना था कि सलाम का जवाब देने और नमाज़-ए-जनाज़ा आदि के लिए बिना असमर्थता के भी तयम्मुम जायज़ है। (१२ म अलिफ़) (त)

निष्कर्ष यह है कि इन वृद्धियों का अर्थ यह है कि तयम्मुम को इस विशिष्ट असमर्थता के साथ विशेष किया जाए। असमर्थता की शर्त को इस विशेषता के साथ विशेष करना उद्देश्य नहीं है। हाँ, यदि वे यों कहते: "और यह उस नमाज़ में है जो किसी विकल्प की ओर छूट (फ़ौت) जाए" तो उक्त असमर्थता को शर्त घोषित करने का लाभ होता। (और यह उद्देश्य के विरुद्ध न होता क्योंकि इसका निष्कर्ष यह होता कि पर्याप्त पानी के उपयोग से असमर्थता की शर्त उस नमाज़ में है जिसका कोई विकल्प हो, अतः सलाम का जवाब देना आदि जो नमाज़ नहीं हैं और नमाज़-ए-जनाज़ा आदि जिनका कोई विकल्प नहीं है, उनमें पर्याप्त पानी से असमर्थता शर्त नहीं है। संक्षेप में, यदि 'हज़ा फ़ी सलातिन' आदि होता तो असमर्थता को शर्त और इन शब्दों को प्रतिबंधात्मक सीमा मानना, जो उनका उद्देश्य है, उनके अनुसार प्राप्त हो जाता। १२ म अलिफ़) (त)

द्वितीय: पानी उपलब्ध होने के बावजूद तयम्मुम केवल ऐसी चीज़ के लिए है जो छूट जाए और उसका कोई विकल्प न हो, जैसे सलाम का जवाब देना और जनाज़ा एवं ईद की नमाज़, जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है। जहाँ तक नींद या ऐसे किसी अन्य कार्य का प्रश्न है, पानी होते हुए तयम्मुम जायज़ नहीं है। जैसा कि 'अल-बहर अल-राइक' और 'दुर्र-ए-मुख्तार' के विरुद्ध अल्लामा शामी ने इसकी पुष्टि की है। और जैसा कि हम पहले वर्णन कर चुके हैं कि बिना विकल्प के छूटने वाली चीज़ में भी अर्थ (पर्याप्त पानी...

المصنّف علی اشتراط العجز ام لاعلی الثانی مآخذہ الاحترازات وعلی الاوّل یعود علی المقصود بالنقض فانّہ یفید انّ شرط التیّمّم العجز فی صلاۃ لھا خلف فلا یجوز بلا عجز ولا بعجز فی غیر صلاۃ ولا فی صلاۃ لا خلف لھا وبالجملۃ مفاد ھذہ الزیادات تخصیص التیّمّم بھذا العجز المخصوص لا تخصیص شرط العجز بھذا الخصوص نعم لو قال وھذا فی صلاۃ تفوت الی خلف لافاد ما اراد۔ عجز کے "شرط ہونے" کو بتا رہی ہے یا نہیں؟ اگر نہیں تو پھر یہ احترازات کیسے؟ اور اگر عجز کو شرط بتا رہی ہے تو اس کا نتیجہ مقصود کے بالکل برخلاف نکلے گا کیوں کہ اس سے یہ مستفاد ہو گا کہ تیمم کیلئے شرط یہ ہے کہ "ایسی نماز میں جس کا کوئی بدل ہو (آب کافی کے استعمال سے) عاجز ہو"۔ تو بغیر عجز کے تیمم جائز ہی نہ ہوگا۔ اور غیر نماز (مثلاً جواب سلام) میں عجز نہیں اور نہ ہی ایسی نماز میں جس کا کوئی بدل نہیں (جیسے جنازہ و عیدین تو حاصل یہ نکلا کہ جواب سلام اور نماز جنازہ وغیرہ کیلئے تیمم جائز نہیں۔ جبکہ عجز کو شرط بنانے کا مقصد یہ بتانا تھا کہ جواب سلام اور نماز جنازہ وغیرہ کیلئے بلا عجز بھی تیمم جائز ہے ۱۲ م الف) (ت)

الحاصل ان اضافوں کا مفاد یہ ہے کہ اس عجز مخصوص سے تیمم کو خاص کیا جائے۔ شرط عجز کو اس خصوصیت سے مختص کرنا مقصود نہیں۔ ہاں اگر یوں کہتے : "وھذا في صلاۃ تفوت الی خلف" (اور یہ اس نماز میں ہے جو کسی بدل کی جانب فوت ہو) تو عجز مذکور کو شرط قرار دینے کا افادہ ہوتا۔ (اور خلاف مقصود نہ ہوتا کیوں کہ اس کا حاصل یہ ہوتا کہ آب کافی کے استعمال سے عاجزی کی شرط اُس نماز میں ہے جس کا کوئی بدل ہو تو جواب سلام وغیرہ جو نماز نہیں اور نماز جنازہ وغیرہ جن کا کوئی بدل نہیں ان میں آب کافی سے عاجزی شرط نہیں۔ الحاصل

هذا فی صلاۃ الخ ہوتا تو عجز کو شرط اور ان الفاظ کو قید احترازی قرار دینا جو اُن کا مقصد ہے یہ ان کے طور پر حاصل ہو جاتا۔ ۱۲ م الف) (ت)

وثانیا : لا تیمّم (۱) مع (۲) وجدان الماء الّا لغائت لا الی خلف کردّ سلام والصلاتین کما تقدّم امّا النّوم ونحو ہ فلا کما حققّہ الشّامی مخالفاً لمّا فی البحر والدّر والعجز معنی متحقّق فیہ کما قدّمنا فلا حاجۃ الی الاحتراز۔ ثانیاً : پانی دستیاب ہونے کے باوجود تیمم صرف ایسی چیز کے لئے جو فوت ہو جائے تو اس کا کوئی بدل نہ ہو جیسے جواب سلام اور نماز جنازہ و عیدین ، جیسا کہ پہلے گزر چکا ہے سونے یا ایسے اور کسی کام کیلئے پانی ہوتے ہوئے تیمم جائز نہیں۔ جیسا کہ البحر الرائق اور در مختار کی مخالفت کرتے ہوئے علامہ شامی نے اس کی تحقیق کی ہے۔ اور جیسا کہ ہم پہلے بیان کر آئے ہیں بلا بدل فوت ہونے والی چیز میں بھی معنی (آب کافی

Volume Three Fatawa Rizvia

...from using [water]) incapacity is established and proven, so there is no need to avoid it. (T)

Fifthly, I say: (I say - T): There are three situations: (i) Knowledge of the absence of water (ii) Knowledge of the presence of water (iii) Absence of knowledge

Regarding the knowledge of absence, where it is known that water is a mile or more away, the incapacity is obvious. Incapacity in the case of knowledge of presence would be such that one is unable to reach it or use it due to physical, natural, or legal reasons, such as being imprisoned, ill, or if the water found is endowed (waqf) for drinking purposes only.

Regarding the absence of knowledge, it became clear from numbers 158 and 159 that the pure Shariah has also categorized this as incapacity, even if it is discovered after the prayer that water was present there. Since the Shariah has not based the ruling here on the actual presence or absence of water, but rather on the lack of knowledge of its presence, it is necessary that the location should not be a place where water is likely to be found. For instance, it is not an inhabited area or close to one, nor is the presence of water suspected there—such as lush greenery being visible, birds flying, or a trustworthy person saying that water is nearby. This is because a strong presumption (Ghalba-e-Zan) is also a form of knowledge, especially in jurisprudence where it is considered equivalent to certainty. Therefore, in the case of such a presumption, it is not considered an 'absence of knowledge.' Since incapacity depended on this lack of knowledge, incapacity was not established, Tayammum was not permissible, and the prayer performed with it was not valid, even if it later turns out that water was actually absent, as the actual existence or non-existence is disregarded here. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

[Table] Arabic: It is mandatory (fard) to search for water, even through one's messenger, to the extent that waiting does not harm oneself or one's companions, if one strongly presumes it is near (within less than a mile) based on a sign or the information of a reliable person. If one does not strongly presume it is near, it is not mandatory; rather, it is recommended (mustahabb) if there is hope, otherwise not. (Summarized) Urdu Translation: It is mandatory to search for water, even through one's messenger, to the extent that waiting does not harm oneself or one's companions. This ruling applies when there is a strong presumption of water being less than a mile away based on a sign or information from a reliable person. If there

is no strong presumption of water being nearby, searching is not mandatory but recommended (mustahabb) if there is some hope of finding it; otherwise, it is not even recommended. (Summarized) (T)

1 Durr-ul-Mukhtar with Shami, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/180 to 181.

जिल्द तीसरी फ़तावा रज़विया

...इस्तेमाल से) बेबसी (अज्ज़) प्रमाणित और सिद्ध है, तो इससे बचने की कोई आवश्यकता नहीं है। (त)

पाँचवाँ, मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ - त): तीन स्थितियाँ हैं: (i) पानी की अनुपस्थिति का ज्ञान (इल्म बादम-ए-आब) (ii) पानी की उपस्थिति का ज्ञान (इल्म बवजूद) (iii) ज्ञान का अभाव (अदम-ए-इल्म)

अनुपस्थिति के ज्ञान के बारे में, जहाँ यह ज्ञात हो कि पानी एक मील या उससे अधिक दूर है, वहाँ बेबसी स्पष्ट है। उपस्थिति के ज्ञान में बेबसी इस प्रकार होगी कि व्यक्ति गणना, प्रकृति या शरिया के अनुसार उस तक पहुँचने या उसे इस्तेमाल करने में सक्षम न हो, जैसे कि बंदी होना, बीमार होना, या मिलने वाला पानी केवल पीने के लिए वक़्फ़ (दान) किया गया हो।

जहाँ तक ज्ञान के अभाव का प्रश्न है, संख्या १५८ और १५९ से यह स्पष्ट हुआ कि पवित्र शरीयत ने इसे भी बेबसी में रखा है, भले ही नमाज़ के बाद यह पता चले कि पानी वहीं मौजूद था। जब शरीयत ने यहाँ पानी की वास्तविक मौजूदगी या गैर-मौजूदगी पर फ़ैसला नहीं रखा, बल्कि उसके ज्ञान न होने पर रखा है, तो यह आवश्यक है कि वह स्थान ऐसी जगह न हो जहाँ पानी मिलने की संभावना हो। जैसे कि वह आबादी न हो या आबादी के करीब न हो, और न ही वहाँ पानी होने का संदेह हो— उदाहरण के लिए हरियाली लहलहा रही हो, पक्षी उड़ रहे हों, या कोई विश्वसनीय व्यक्ति कह रहा हो कि यहाँ पास में पानी है। क्योंकि प्रबल धारणा (ग़लबा-ए-ज़न) भी ज्ञान के प्रकारों में से है, विशेष रूप से फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) में जहाँ इसे निश्चितता के समान माना जाता है। अतः ऐसी धारणा की स्थिति में 'ज्ञान का अभाव' नहीं रहा। और चूँकि बेबसी का आधार यही ज्ञान का अभाव था, इसलिए बेबसी सिद्ध नहीं हुई और तयम्मुम वैध नहीं हुआ, न ही उससे नमाज़ सही हुई, भले ही बाद में पानी की अनुपस्थिति ही सामने आए, क्योंकि वास्तविक अस्तित्व या अभाव यहाँ विचारणीय नहीं था। दुर्रे मुख्तार में है:

[तालिका] अरबी: पानी की तलाश करना फ़र्ज़ है, चाहे अपने संदेशवाहक के माध्यम से ही क्यों न हो, इस सीमा तक कि प्रतीक्षा से स्वयं उसे या उसके साथियों को कोई हानि न हो, यदि किसी संकेत या विश्वसनीय व्यक्ति की सूचना के आधार पर उसके निकट (एक मील से कम) होने का प्रबल अनुमान हो। यदि निकट होने का प्रबल अनुमान न हो, तो यह फ़र्ज़ नहीं है; बल्कि आशा होने पर मुस्तहब है, अन्यथा नहीं। (संक्षिप्त) उर्दू अनुवाद: पानी की तलाश करना फ़र्ज़ है, चाहे अपने संदेशवाहक के

माध्यम से ही क्यों न हो, इस सीमा तक कि प्रतीक्षा से स्वयं उसे या उसके साथियों को कोई हानि न हो। यह आदेश तब है जब किसी संकेत या किसी विश्वसनीय व्यक्ति के बताने से एक मील से कम दूरी पर पानी होने का प्रबल अनुमान हो। और यदि पास में पानी होने का प्रबल अनुमान न हो, तो तलाश वाजिब नहीं बल्कि मुस्तहब (पसंदीदा) है यदि मिलने की कुछ आशा हो, अन्यथा मुस्तहब भी नहीं। (संक्षिप्त) (त)

1 दुर्रे मुख्तार मआ शामी, बाब अत-तयम्मुम, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/180 से 181।

पृष्ठ 545 का 756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

کے استعمال سے) عجز متحقق اور ثابت ہے تو اس سے احتراز کی کوئی ضرورت ہی نہیں۔ (ت)

پنجم اقول: (میں کہتا ہوں ۔ ت): صورتیں تین ہیں: (i) علم بعدمِ آب (ii) علم بوجود (iii) عدم علم علم عدم کہ پانی میل بھر یا زائد دُور ہونا معلوم ہو اس میں تو عجز ظاہر ہے۔ اور علم وجود میں عجز یوں ہوگا کہ حساباً یا طبعاً یا شرعاً اُس تک وصول یا اُس کے استعمال پر قادر نہیں جیسے محبوس یا مریض یا وہ پانی پانے والا جو پینے کیلئے وقف ہے۔

رہا عدمِ علم نمبر ۱۵۸ و ۱۵۹ سے واضح ہوا کہ شرع مطہر نے اسے بھی عجز میں رکھا اگرچہ بعدِ نماز پانی وہیں موجود ہونا بھی معلوم ہوجائے اور جب شریعت نے یہاں وجود و عدمِ آب پر مدار نہ رکھا بلکہ اُس کے عدمِ علم پر تو واجب ہے کہ وہ جگہ مظنہ آب نہ ہو جیسے آبادی یا اُس کا قرب نہ اُسے وہاں وجودِ آب مظنون ہو مثلاً سبزہ لہلہا رہا ہے یا پرندے اڑ رہے ہیں یا ثقہ شخص کہہ رہا ہے کہ یہاں قرب میں پانی ہے کہ غلبہ ظن بھی انحائے علم سے ہے خصوصاً فقیہیات میں کہ ملحق بہ یقین ہے تو بحالِ ظن عدم علم نہ ہوا اور یہاں اسی پر مدار عجز تھا تو نہ عجز متحقق ہوا نہ تیمم روا ، نہ اُس سے نماز صحیح ، اگرچہ بعد کو عدمِ آب ہی ظاہر ہو کہ وجود و عدمِ واقعی یہاں ساقط النظر تھا۔ درمختار میں ہے:

[جدول] عربی: یجب ای یفترض طلبه ولو برسوله قدر مالایضر بنفسه ورفقته بالانتظار ان ظن ظنا قویا قربه دون میل بأمارة اواخبار عدل ولایغلب علی ظنه قربه لایجب بل یندب ان رجا والا لا 1اھ ملخصاً اردو ترجمہ: پانی تلاش کرنا فرض ہے اگرچہ اپنے قاصد ہی کے ذریعہ، اس حد تک کہ انتظار سے خود اسے یا اس کے ہم سفروں کو ضرر نہ ہو۔ یہ حکم اس صورت میں ہے جب کسی

علامت یا کسی عادل کے بتانے سے قریب میں ایک میل سے کم دوری پر پانی ہونے کا اسے قوی گمان ہو، اور اگر قریب میں پانی ہونے کا غالب گمان نہ ہو تو تلاش واجب نہیں بلکہ مستحب ہے اگر ملنے کی کچھ امید ہو ورنہ مستحب بھی نہیں، اھ ملخصاً۔ (ت)

1 الدرالمختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/۱۸۰ تا ۱۸۱

Fatawa Razawiyya Volume 3

In Radd al-Muhtar it is stated: [Arabic]: By a sign, i.e., an indicator like seeing greenery or birds, etc. (End) And in 'Hilyah', the word "wild animals" is also added. - (T) [Urdu]: By a sign, meaning by some indicator, for example, seeing greenery or birds, etc. (End) And in 'Hilyah', the word "wild animals" is also present. - (T)

In 'Hilyah' from 'Al-Muhit' it is stated: [Arabic]: One who stayed in a populated area and did not search for water, his Tayammum is not permissible. - (T) [Urdu]: One who stayed in a populated area and did not search for water, his Tayammum is not valid. - (T)

In 'Khulasa' it is stated: [Arabic]: If he performed Tayammum before searching for water and prayed in populated areas, it is not permissible; and in deserts, it is permissible. - (T) [Urdu]: If he performed Tayammum before searching for water in populated areas and prayed, then it is not permissible, but it is permissible in deserts. - (T)

In 'Hilyah' it is stated: [Arabic]: Because having certain or apparent knowledge of the proximity of water puts him in the position of having water present with him. Therefore, Tayammum is not permissible in any of these situations, just as it is not permissible when water is present with him. - (T) [Urdu]: Because having certain or apparent knowledge of water being nearby is equivalent to having water present with oneself. Thus, in any of these conditions, his Tayammum is not permissible, just as it is not permissible when water is actually present with him. - (T)

In 'Bahr al-Raiq' it is stated: [Arabic]: And if he performed Tayammum without searching, while searching was obligatory, and he prayed, then he searched for it and did not find it, repetition (of the prayer) is obligatory according to both of them. [Urdu]: If he performed Tayammum without searching for water, while searching was obligatory, and also prayed, then searched for water and did not find it, then even then according to Imam-e-Azam and Imam Muhammad,

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Al-Mustafa Al-Babi Press, Egypt, 1/18. 2. Hilyah. 3. Khulasa al-Fatawa, Fifth Chapter on Tayammum, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/31. 4. Hilyah.

फ़तवा रज़विया जिल्द 3

रद्द-उल-मुह्तार में है: [अरबी]: किसी संकेत द्वारा, यानी किसी चिह्न जैसे हरियाली या पक्षियों को देखने से, इत्यादि। और 'हिल्यह' में "जंगली जानवरों" का शब्द भी जोड़ा गया है। - (त) [उर्दू]: किसी संकेत द्वारा, यानी किसी चिह्न से, उदाहरण के लिए हरियाली या पक्षियों को देखने से। और 'हिल्यह' में "जंगली जानवरों" का शब्द भी मौजूद है। - (त)

'हिल्यह' में 'मुहीत' से है: [अरबी]: जो व्यक्ति आबादी वाले क्षेत्र में ठहरा और उसने पानी की तलाश नहीं की, उसका तयम्मुम जायज़ नहीं है। - (त) [उर्दू]: जो आबादी में उतरा और पानी तलाश नहीं किया, उसका तयम्मुम सही नहीं है। - (त)

'खुलासा' में है: [अरबी]: यदि उसने पानी की तलाश करने से पहले तयम्मुम किया और आबादी वाले क्षेत्रों में नमाज़ पढ़ ली, तो यह जायज़ नहीं है; और वीरान जंगलों में जायज़ है। - (त) [उर्दू]: यदि आबादी वाले क्षेत्रों में पानी तलाश करने से पहले तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली तो जायज़ नहीं है और बियाबानों (जंगलों) में जायज़ है। - (त)

'हिल्यह' में है: [अरबी]: क्योंकि पानी के निकट होने का निश्चित या ज़ाहिरी ज्ञान उसे उस स्थिति में ले आता है जैसे पानी उसके पास मौजूद हो। अतः इन स्थितियों में से किसी में भी तयम्मुम जायज़ नहीं है, जैसे खुद उसके पास पानी मौजूद होने की स्थिति में जायज़ नहीं होता। - (त) [उर्दू]: इसलिए कि निश्चित या ज़ाहिरी तौर पर करीब में पानी होने का ज्ञान, अपने पास पानी मौजूद होने के स्तर का है, तो इनमें से किसी भी स्थिति में उसका तयम्मुम जायज़ नहीं है, जैसे खुद उसके पास पानी मौजूद होने की सूरत में जायज़ नहीं होता। - (त)

'बह्र-उर-राइक़' में है: [अरबी]: और यदि उसने बिना तलाश किए तयम्मुम कर लिया जबकि तलाश करना वाजिब था, और नमाज़ पढ़ ली, फिर उसकी तलाश की और उसे नहीं पाया, तो दोनों के अनुसार (नमाज़ का) दोहराना वाजिब है। [उर्दू]: अगर पानी तलाश किए बिना तयम्मुम कर लिया, जबकि तलाश करना वाजिब था। और नमाज़ भी पढ़ ली। फिर पानी तलाश किया और पानी नहीं मिला तो भी इमाम-ए-आज़म और इमाम मुहम्मद के नज़दीक,

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद्द-उल-मुह्तार, बाब-अत-तयम्मुम, अल-मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/18. 2. हिल्यह। 3. खुलासा-उल-फतावा, तयम्मुम पर पांचवां अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/31. 4. हिल्यह।

رد المحتار میں ہے: بامارۃ ای علامۃ کرؤیۃ خضرۃ او طیر 1 اھ و زاد فی الحلیۃ الوحش ۔ (ت) | بامارۃ یعنی کسی علامت سے، مثلاً سبزہ یا پرند دیکھنے سے اھ اور حلیہ میں "وحشی جانوروں" کا لفظ بھی ہے۔ (ت)

حلیہ میں محیط سے ہے: الذی نزل بالعمران و لم یطلب الماء لم یجز تیممہ 2 ۔ (ت) | جو آبادی میں اترا اور پانی تلاش نہ کیا اس کا تیمم درست نہیں۔ (ت)

خلاصہ میں ہے: ان تیمم قبل طلب الماء وصلی فی العمرانات لا یجوز و فی الفلوات یجوز 3 ۔ (ت) | اگر آبادیوں میں پانی تلاش کرنے سے پہلے تیمم کرکے نماز پڑھ لی تو جائز نہیں اور بیابانوں میں جائز ہے۔ (ت)

حلیہ میں ہے: لان العلم بقرب الماء قطعاً او ظاھراً ینزلہ منزلۃ کون الماء موجوداً بحضرتہ فلا یجوز تیممہ فی شئ من ھذہ الاحوال کمالا یجوز مع وجودہ بحضرتہ 4 ۔ (ت) | اس لئے کہ قطعی یا ظاہری طور پر قریب میں پانی کے ہونے کا علم، اپنے پاس پانی موجود ہونے کے درجہ میں ہے تو ان میں سے کسی بھی حالت میں اس کا تیمم جائز نہیں جیسے خود اس کے پاس پانی موجود ہونے کی صورت میں جائز نہیں۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے : و لو تیمم من غیر طلب وکان الطلب واجبا وصلی ثم طلبہ فلم یجدہ و جبت علیہ الاعادۃ عندھما | اگر پانی تلاش کئے بغیر تیمم کرلیا، جبکہ تلاش کرنا واجب تھا۔ اور نماز بھی پڑھ لی۔ پھر پانی تلاش کیا پانی نہ ملا تو بھی امام اعظم وامام محمد کے نزدیک،

حواشی: ۱۔ رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱۸/۱ ۲۔ حلیہ ۳۔ خلاصۃ الفتاویٰ فصل خامس فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنئو ۳۱/۱ ۴۔ حلیہ

Fatawa Razawiyyah, Volume 3

[Section 1] (Arabic text): Contrary to Abu Yusuf, as stated in Al-Siraj Al-Wahhaj and in Al-Mustasfa. In the presentation of this issue (i.e., the obligation of searching if proximity of water is suspected) following the previous issue (i.e., the case of someone who forgets water in their luggage, performs Tayammum, and prays—it is not repeated according to the 'Tarfayn' [Abu Hanifa and Muhammad], unlike Abu Yusuf), there is a subtle point, for the difference in that issue is based on whether searching is stipulated as a condition or not. End (T).

(Urdu translation/explanation): In contrast to Imam Abu Yusuf. Repeating the prayer is obligatory according to him; this is stated in Al-Siraj Al-Wahhaj. It is also in Al-Mustasfa that there is a special point in mentioning the issue of the obligation to search for water when it is suspected to be nearby after the previous issue (the one where a person forgot they had water in their tent, performed Tayammum and prayed, and according to the 'Tarfayn'—unlike Imam Abu Yusuf—the prayer does not need to be repeated). This is because the basis of the disagreement in that issue is whether searching for water is a condition or not. End (T).

[Section 2] (Arabic text): I say: its meaning is not that the two (Abu Hanifa and Muhammad) do not say searching is a condition. Rather, it is agreed upon where water is suspected to be. The meaning is merely that according to Abu Yusuf, the luggage (rah'l) is a place where water is suspected, so searching is obligatory and Tayammum is prohibited without it. According to the other two, it is not, so searching is not obligatory, as elucidated by the Researcher (Muhaqqiq) in Al-Fath. (T).

(Urdu translation/explanation): I say: This does not mean that the 'Tarfayn' do not consider searching as a condition; rather, there is consensus on searching being a condition where water is expected to be found. Instead, the real point is that according to Imam Abu Yusuf, the tent is a presumptive place for water; therefore, searching is mandatory for him, and Tayammum is invalid without searching. For the 'Tarfayn', the tent is not a presumptive place for water, so searching is not mandatory. This is as the researcher stated in Fath al-Qadir. (T).

[Section 3] Also, in Al-Bahr it is stated: (Arabic text): Allah Almighty made the condition for the permissibility of Tayammum the non-existence of water without [mentioning] a search. So, whoever adds the condition of searching has added to the text. This is different in populated areas (Umranat), for even if non-existence is proven in reality, it is not proven apparently because populated areas...

(Urdu translation/explanation): Allah Almighty has declared the non-existence of water as the condition for the permissibility of Tayammum and has not set a condition for searching. Therefore, anyone who adds the condition of searching is adding to the text. However, this is not the case in settlements (abadiyon), because even if water is truly non-existent there, it is not established apparently. Therefore...

[Footer] 1 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/161. Page 547 of 756

फ़तावा रज़वियह, जिल्द 3

[अनुभाग 1] (अरबी पाठ): इमाम अबू यूसुफ़ के विरुद्ध, जैसा कि सिराज अल-वहाज और अल-मुस्तस्फ़ा में है। इस मसले (यानी पानी पास होने की संभावना पर उसकी खोज करना अनिवार्य है) को पिछले मसले (यानी वह व्यक्ति जिसने अपने सामान में पानी भूल गया और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, तो तरफ़ैन [इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद] के अनुसार प्रार्थना दोहराने की आवश्यकता नहीं है, जबकि इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार है) के बाद प्रस्तुत करने में एक सूक्ष्म बिंदु है, क्योंकि उस मसले में मतभेद का आधार इस बात पर है कि पानी की खोज करना शर्त है या नहीं। (त)

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या): इमाम अबू यूसुफ़ के विपरीत। उन पर (नमाज़ का) दोहराना फ़र्ज़ है, सिराज वहाज में इसी तरह है। मुस्तस्फ़ा में है कि पास में पानी होने का गुमान होने की स्थिति में तलाश लाज़िम होने का मसला, पिछले मसले (जिसे अपने खेमे में पानी होना याद न रहा और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली तो तरफ़ैन के नज़दीक, इमाम अबू यूसुफ़ के विपरीत, दोहराना नहीं है) के बाद ज़िक्र करने में एक विशेष नुक्ता है क्योंकि इस मसले में मतभेद की बुनियाद इस पर है कि पानी तलाश करना शर्त है या नहीं। (त)

[अनुभाग 2] (अरबी पाठ): मैं कहता हूँ: इसका अर्थ यह नहीं है कि वे दोनों खोज की शर्त को नहीं मानते, बल्कि जहाँ पानी होने का संदेह हो वहाँ खोज की शर्त होने पर सर्वसम्मति है। इसका अर्थ केवल यह है कि अबू यूसुफ़ के अनुसार सामान (राह'ल) पानी का संभावित स्थान है, अतः खोज अनिवार्य है और इसके बिना तयम्मुम वर्जित है। अन्य दो के अनुसार ऐसा नहीं है, इसलिए खोज अनिवार्य नहीं है, जैसा कि शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) ने अल-फ़तह में बताया है। (त)

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या): मैं कहता हूँ: इसका यह मतलब नहीं है कि तरफ़ैन तलाश करने को शर्त नहीं कहते, बल्कि जहाँ पानी मिलने की संभावना हो वहाँ तलाश के शर्त होने पर सहमति है। बल्कि असल बात यह है कि इमाम अबू यूसुफ़ के नज़दीक खेमा पानी होने के गुमान की जगह है, इसलिए उनके नज़दीक तलाश करना फ़र्ज़ है, तो तलाश के बिना तयम्मुम अवैध है। और तरफ़ैन के नज़दीक खेमा पानी का स्थान नहीं है इसलिए तलाश फ़र्ज़ नहीं। जैसा कि हज़रत मुहक़्क़िक़ ने फ़त्हुल क़दीर में बयान किया है। (त)

[अनुभाग 3] साथ ही अल-बहर में है: (अरबी पाठ): अल्लाह तआला ने तयम्मुम की अनुमति के लिए बिना खोज के पानी की अनुपस्थिति को शर्त बनाया है। अतः जो कोई खोज की शर्त जोड़ता है, उसने

पाठ (नस) पर वृद्धि की है। बस्तियों (उमरानात) में ऐसा नहीं है, क्योंकि भले ही वहां वास्तविकता में अनुपस्थिति सिद्ध हो, वह प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध नहीं होती क्योंकि बस्तियाँ...

(उर्दू अनुवाद/व्याख्या): अल्लाह तआला ने पानी की अनुपस्थिति (अदम-ए-वजूद) को जवाज़-ए-तयम्मुम की शर्त क़रार दिया है और तलाश की शर्त नहीं रखी है, तो तलाश की शर्त बढ़ाने वाला पाठ (नस) पर ज्यादती करने वाला है। मगर आबादियों में यह बात नहीं है, इसलिए कि वहाँ अगरचे वास्तव में अनुपस्थिति हो मगर यह ज़ाहिरी तौर पर साबित नहीं है, इसलिए...

[पाद लेख] 1 अल-बहर अर-राइक़, बाबूत्तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/161. पृष्ठ 547 / 756

خلافاً لابی یوسف کذا فی السراج الوھاج وفی المستصفی وفی ایراد ھذہ المسألۃ (ای مسألۃ وجوب الطلب ان ظن قربہ) عقیب المسألۃ المتقدمۃ (ای مسألۃ من نسی الماء فی رحلہ وتیمم وصلی لایعید عندھما خلافاً لابی یوسف) لطیفۃ فان الاختلاف فی تلك المسألۃ بناء علی اشتراط الطلب وعدمہ ۱ اھ بخلاف امام ابو یوسف کے۔ اس پر اعادہ فرض ہے سراج وہاج میں اسی طرح ہے مستصفی میں ہے کہ قریب میں پانی کا گمان ہونے کی صورت میں تلاش لازم ہونے کا مسئلہ سابقہ مسئلہ (جسے اپنے خیمہ میں پانی ہونا یاد نہ رہا اور تیمم کرکے نماز پڑھ لی تو طرفین کے نزدیک، بخلاف امام ابو یوسف کے، اعادہ نہیں) کے بعد ذکر کرنے میں ایک خاص نکتہ ہے اس لئے کہ اس مسئلہ میں اختلاف کی بنیاد اس پر ہے کہ پانی تلاش کرنا شرط ہے یا نہیں۔ "اھ (ت)

اقول: لیس معناہ انھما لایقولان باشتراط الطلب بل ھو مجمع علیہ فی مظنۃ الماء وانما المعنی ان الرحل مظنۃ الماء عند ابی یوسف فیجب الطلب فیمتنع بدونہ التیمم وعندھما لافلا کما افادہ المحقق فی الفتح۔ اقول: اس کا یہ مطلب نہیں کہ طرفین تلاش کرنے کو شرط نہیں کہتے بلکہ جہاں پانی ملنے کا گمان ہو وہاں تلاش کے شرط ہونے پر اتفاق ہے_ بلکہ اصل بات یہ ہے کہ امام ابو یوسف کے نزدیک خیمہ وجودِ آب کے گمان کی جگہ ہے اس لئے ان کے نزدیک تلاش کرنا فرض ہے تو تلاش کے بغیر تیمم ناجائز ہے اور طرفین کے نزدیک خیمہ مظنہ آب نہیں اس لئے تلاش فرض نہیں۔ جیسا کہ حضرت محقق نے فتح القدیر میں افادہ فرمایا ہے۔ (ت)

نیز بحر میں ہے : اللہ تعالٰی جعل شرط الجواز عدم الوجود من غیر طلب فمن زاد شرط الطلب فقد زاد علی النص بخلاف العمرانات لان العدم وان ثبت حقیقۃ لم یثبت ظاھر الان العمرانات اللہ تعالٰی نے پانی کے عدم وجود کو جوازِ تیمم کی شرط قرار دیا ہے اور تلاش کی شرط نہیں رکھی ہے تو تلاش

کی شرط زیادہ کرنے والا نص پر زیادتی کرنے والا ہے مگر آبادیوں میں یہ بات نہیں اس لئے کہ وہاں اگرچہ حقیقتہً عدم وجود ہو مگر یہ ظاہراً ثابت نہیں اس لئے

1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۶۱ Page 547 of 756

Fatawa-e-Razvia Volume 3

Arabic Text: A manifest proof of the existence of water is that the existence of a settlement is due to water. Thus, the absence of water is established from one perspective and not from another, and the condition for the permissibility of Tayammum (dry ablution) is absolute absence, which is not established in settlements except after searching. This is in contrast to when a strong suspicion of its proximity prevails, because a strong suspicion acts as certainty regarding the obligation of action.[1]- Urdu Translation: Habitation itself is a clear proof of the existence of water because a settlement is established only by water. Thus, the absence of water is established in one way and not in another, and for the permissibility of Tayammum, absolute absence is a condition, which cannot be established in settlements without searching. Similarly, in the case of a strong suspicion of the proximity of water, it is not the same because for the obligation of action, a strong suspicion acts as certainty. (T)

It is stated in Munyah: Arabic Text: Its condition is intention, and likewise searching for water if it is strongly suspected that there is water there or if it is in settlements.[2] Ah Urdu Translation: The condition for Tayammum is intention, and likewise, searching for water is also a condition if one has a strong suspicion that there will be water there or if it is in settlements. Ah (T)

Arabic Text: I say: From these texts, it has become clear that the ruling is the same whether one suspects water in a desert based on a sign, or is in a place of probable presence like settlements or their vicinity. Tayammum is not valid without searching, even if it later appears that water was absent. This is derived from the general statements in al-Muhit and al-Khulasah. It has been explicitly stated in al-Siraj that the obligation of searching covers both cases because searching in a probable place is a condition for its permissibility, as stated in al-Munyah and al-Mustasfa. And he clarified it [saying]: Urdu Translation: I say: From these same texts, it has also become clear that whether one is in a jungle and suspects water seeing a sign, or is in a place of probable presence of water like a settlement or near a settlement, in both cases, the ruling is identical: Tayammum is not correct without searching for water, even if it later appears that water did not exist there. This is inferred from the fact that 'al-Muhit' and 'al-Khulasah' termed Tayammum as absolutely impermissible without searching for water. In 'Siraj al-Wahhaj', this was stated explicitly because its text is "If one performs Tayammum without searching and there was..."

Footnotes: 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/161 2. Munyat al-Musalli, Section on Tayammum, Maktabah Qadriyah Jamia Nizamia Lahore, p. 74

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3

अरबी पाठ: पानी की मौजूदगी का यह एक स्पष्ट प्रमाण है क्योंकि बस्ती का अस्तित्व पानी के कारण ही होता है। अतः पानी का अभाव एक दृष्टि से सिद्ध है और दूसरी से नहीं, और तयम्मुम की अनुमति के लिए पूर्ण अभाव एक शर्त है, जो बिना खोज के बस्तियों में सिद्ध नहीं हो सकती। यह उस स्थिति के विपरीत है जब पानी की निकटता का प्रबल संदेह हो, क्योंकि कार्य की अनिवार्यता के मामले में प्रबल संदेह निश्चितता के रूप में कार्य करता है।[1]- उर्दू अनुवाद: बस्ती स्वयं पानी की मौजूदगी का स्पष्ट प्रमाण है क्योंकि बस्ती पानी से ही कायम होती है। अतः पानी का अभाव एक तरह से सिद्ध है और एक तरह से नहीं, और तयम्मुम की अनुमति के लिए पूर्ण अभाव एक शर्त है, जो बिना खोज के बस्तियों में सिद्ध नहीं हो सकेगी। इसी तरह, निकटता के प्रबल संदेह के मामले में भी यही बात है क्योंकि कार्य की अनिवार्यता के हक में प्रबल संदेह निश्चितता का काम करता है। (त)

मुन्या में है: अरबी पाठ: इसकी शर्त नियत है, और इसी तरह पानी की तलाश करना यदि प्रबल संदेह हो कि वहां पानी है या यदि वह बस्तियों में है।[2] अह उर्दू अनुवाद: तयम्मुम की शर्त नीयत है और इसी तरह पानी की तलाश करना भी शर्त है अगर उसे प्रबल संदेह हो कि वहां पानी होगा या वह बस्तियों में हो। अह (त)

अरबी पाठ: मैं कहता हूँ: इन ग्रंथों से यह स्पष्ट हो गया है कि नियम समान है चाहे कोई जंगल में किसी संकेत के आधार पर पानी का संदेह कर रहा हो, या पानी की संभावना वाली जगह जैसे बस्तियों या उनके निकट हो। बिना तलाश किए तयम्मुम मान्य नहीं है, भले ही बाद में यह स्पष्ट हो जाए कि पानी नहीं था। यह 'अल-मुहीत' और 'अल-खुलासा' के व्यापक कथनों से प्राप्त होता है। 'अल-सिराज' में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि तलाश करने की अनिवार्यता दोनों मामलों को कवर करती है क्योंकि संभावना वाली जगह में तलाश करना इसकी वैधता की शर्त है, जैसा कि 'मुन्या' और 'मुस्तसफ़ा' में स्पष्ट रूप से बताया गया है। और उन्होंने इसे स्पष्ट किया [कहते हुए]: उर्दू अनुवाद: मैं कहता हूँ: इन्हीं ग्रंथों से यह भी स्पष्ट हो गया है कि यदि कोई जंगल में कोई संकेत देखकर पानी का गुमान कर रहा हो, या आबादी और आबादी के पास जैसी पानी की संभावना वाली जगह में हो, तो दोनों स्थितियों में नियम एक जैसा है कि पानी की तलाश के बिना तयम्मुम सही नहीं है, भले ही बाद में यही स्पष्ट हो कि वहां पानी का अस्तित्व नहीं था। इसका लाभ इससे प्राप्त हुआ कि 'मुहीत' और 'खुलासा' ने पानी की तलाश के बिना तयम्मुम को बिल्कुल अवैध कहा है। 'सिराज-उल-वहाज' में इसे स्पष्ट रूप से बताया गया है क्योंकि इसके शब्द हैं "यदि उसने बिना खोज के तयम्मुम किया और..."

पादलेख: 1. अल-बहर अल-रायिक, तयम्मुम का अध्याय, एच. एम. सईद कंपनी कराची 1/161 2. मुनियत अल-मुसल्ली, तयम्मुम पर खंड, मकतबा कादरिया जामिया निजामिया लाहौर, पृष्ठ 74

पृष्ठ 756 का 548

دلیل ظاھر علی وجود الماء لان قیام العمارۃ بالماء فکان العدم ثابتا من وجہ دون وجہ وشرط الجواز العدم المطلق ولایثبت ذلك فی العمرانات الا بعد الطلب وبخلاف ما اذا غلب علی ظنہ قربہ لان غلبۃ الظن تعمل عمل الیقین فی حق وجوب العمل [1]- کہ آبادی خود ہی وجود آب کی کھلی ہوئی دلیل ہے کیونکہ آبادی پانی سے ہی قائم ہوتی ہے تو عدمِ آب ایک طرح سے ثابت ہے اور ایک طرح سے ثابت نہیں اور جوازِ تیمم کیلئے عدمِ مطلق شرط ہے جو بغیر تلاش کیے آبادیوں میں ثابت نہ ہوسکے گا۔ اسی طرح قریب میں پانی کے غلبہ ظن کی صورت میں بھی وہ بات نہیں کیوں کہ جو وجوبِ عمل کے حق میں غلبہ ظن یقین کا کام کرتا ہے۔ (ت)

منیہ میں ہے : شرطہ النیۃ وکذا طلب الماء ان غلب علی ظنہ ان ھناك ماء او کان في العمرانات [2] اھ تیمم کی شرط نیت ہے اور اسی طرح پانی کا تلاش کرنا بھی شرط ہے اگر اسے غالب گمان ہو کہ وہاں پانی ہوگا یا وہ آبادیوں میں ہو۔ اھ (ت)

اقول: وبھذہ النصوص ظھر ان الحکم سواء فیما اذا ظن في فلاۃ بأمارۃ او کان في مظنۃ کالعمرانات او قربھا انہ لا یصح تیممہ بدون الطلب وان ظھر بعد عدم الماء افادہ اطلاق المحیط والخلاصۃ وقد صرح بہ في السراج فان وجوب الطلب شامل للفصلین وذلك لان الطلب في المظنۃ شرط جوازہ کما نص علیہ في المنیۃ والمستصفی، وقد اوضحہ اقول: انہی نصوص سے یہ بھی ظاہر ہوگیا کہ کسی جنگل میں کوئی علامت دیکھ کر گمان کر رہا ہو یا آبادی وقرب آبادی جیسی گمانِ آب کی جگہ میں ہو دونوں صورتوں میں یہ حکم یکساں ہے کہ پانی تلاش کئے بغیر تیمم درست نہیں اگرچہ بعد میں یہی ظاہر ہو کہ وہاں پانی کا وجود نہیں اس کا افادہ اس سے ہوا کہ محیط اور خلاصہ نے بغیر تلاشِ آب، تیمم

کو مطلقاً ناجائز کہا اور سراج وہاج میں تو اس کو صراحتاً بیان کردیا کیونکہ اس کی عبارت "لوتیمم من غیر طلب وکان"

1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۶۱/۱ 2 منیۃ المصلی فصل فی التیمم مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ لاہور ص ۷۴

In Al-Bahr, the ultimate clarification is that when the condition is missing, the conditioned thing is also missing. Thus, the prayer becomes invalid, and the subsequent appearance of water's absence does not make the missing present, nor does it make the invalid valid. What was mentioned in Al-Hilyah after what we quoted from it is: "And this indicates that if it were in a populated area or near one, and he performed Tayammum and prayed before seeking [water] and did not investigate the situation, then it is not permissible. This is clear from Al-Khulasah where it says (it quoted what we presented before): 'However, in Al-Bada'i', likewise if it is near a populated area, it is obligatory for him to seek [water], such that if he performed Tayammum and prayed, and then water appeared, his prayer would not be valid because a populated area is normally and mostly not devoid of water, and what is apparent is joined with what is certain in rulings.' End. Perhaps it is a coincidental restriction based on the aforementioned reasoning, or a precaution against if he investigated the situation and did not find [water] in the populated area; then apparently his prayer would be valid due to the apparent cessation of its utility. And what is in Al-Khulasah is taken as being when the situation was not investigated as is apparent from it." End.

"Seeking [water] being obligatory" (if he performed Tayammum without searching when searching was mandatory) includes both cases in "obligatory search." And the ruling of the impermissibility of Tayammum is because wherever there is a presumption of the presence of water, searching for water first is a condition for the validity of Tayammum. As explicitly stated in Munyah and Mustasfa.

And in Al-Bahr al-Ra'iq, it is stated with extreme clarity: when the condition is missing, the conditioned is also missing (the condition—seeking water—was not met, so the conditioned—the validity of Tayammum—was not found either), so the prayer was also voided. The subsequent appearance of the absence of water there cannot make the missing (Tayammum) present, nor can it make the void (prayer) valid. After this introduction, now look at the following text of Hilyah which came after the text quoted above from Hilyah: "From this it is derived that if one is in a populated area or near a populated area and performed Tayammum and prayed without searching for water, and even later did not investigate the reality of the situation (investigating whether water was there or not), then it is not permissible. And this is also apparent from Khulasah because its words are these (after this the author of Hilyah quoted that passage of Khulasah which we have mentioned above). But in Bada'i' it is written

that 'similarly when it is near a populated area, then searching for water is also obligatory. To the extent that if one performed Tayammum and prayed, then the presence of water became apparent, then his prayer was not valid. Because normally and generally, a populated area is not devoid of water, and in the matter of rulings, the apparent is joined...'

1 Hilyah Page 549 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

'अल-बहर' में निहायत वजाहत है कि जब शर्त मफ़्क़ूद (गायब) हो, तो मश्रूत (शर्त पर निर्भर चीज़) भी मफ़्क़ूद होती है। लिहाज़ा नमाज़ बातिल हो गई, और पानी के न होने का बाद में ज़ाहिर होना मफ़्क़ूद को मौजूद नहीं बनाता और न ही बातिल को सहीह बनाता है। 'अल-हिलिया' में हमारे द्वारा उद्धृत किए गए कथन के बाद जो लिखा है, वह यह है: "और यह इस बात का फ़ायदा देता है कि अगर वह आबादी में हो या आबादी के करीब हो, और उसने पानी तलाश करने से पहले तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली और हालत की छानबीन नहीं की, तो यह जाइज़ नहीं है। यह 'अल-ख़ुलासा' से ज़ाहिर है जहाँ वह कहता है (उसने वह नक़ल किया जो हमने पहले पेश किया): 'लेकिन 'अल-बदाए' में है कि इसी तरह अगर वह आबादी के करीब हो तो उस पर तलाश करना वाजिब है, यहाँ तक कि अगर उसने तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ी और फिर पानी ज़ाहिर हुआ, तो उसकी नमाज़ जाइज़ नहीं हुई क्योंकि आबादी आमतौर पर और अक्सर पानी से खाली नहीं होती, और ज़ाहिर को एहकाम में यक़ीनी के साथ जोड़ा जाता है।' समाप्त। शायद यह ज़िक्र की गई दलील की वजह से एक इत्तेफ़ाक़ी क़ैद है, या उस सूरत से बचने के लिए है कि अगर उसने छानबीन की और आबादी में पानी नहीं पाया; तो ज़ाहिर है कि उसकी नमाज़ जाइज़ होगी क्योंकि उस ज़ाहिर का फ़ायदा ख़त्म हो गया। और 'अल-ख़ुलासा' में जो है, उसे उस सूरत पर महमूल किया जाएगा जब हालत की छानबीन न की गई हो जैसा कि उससे ज़ाहिर है।" समाप्त।

"तलाश करना वाजिब है" (अगर बिना तलाश किए तयम्मुम कर लिया जबकि तलाश करना वाजिब था) में "तलाश का वुजूब" दोनों ही सूरतों को शामिल करता है। और तयम्मुम के जाइज़ न होने का हुक्म इसलिए है कि जहाँ पानी के होने का गुमान हो, वहाँ पहले पानी तलाश कर लेना तयम्मुम जाइज़ होने की शर्त है। जैसा कि 'मुन्या' और 'मुस्तसफ़ा' में इसकी सराहत (स्पष्टता) है।

और 'अल-बहर-उर-राइक़' में तो इसे निहायत वजाहत से बयान किया गया है, तो जब शर्त मफ़्क़ूद हुई तो मश्रूत भी मफ़्क़ूद हुआ (शर्त—पानी की तलाश—पूरी नहीं हुई, तो मश्रूत—तयम्मुम का जवाज़—भी नहीं पाया गया), तो नमाज़ भी बातिल हुई और बाद में वहाँ पानी के न होने का ज़ाहिर होना मफ़्क़ूद (तयम्मुम) को मौजूद नहीं कर सकता और न ही बातिल (नमाज़) को सहीह करार दे सकता है। इस तमहीद (प्रस्तावना) के बाद अब 'हिलिया' की दर्ज ज़ैल इबारत देखिए जो 'हिलिया' के हवाले से ऊपर नक़ल की हुई इबारत के बाद आई है: "इससे यह मुस्तफ़ाद (नतीजा निकलता) होता है कि अगर आबादी में या आबादी के करीब है और पानी तलाश किए बिना तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली

और बाद में भी हक़ीक़त-ए-हाल (वहाँ पानी होने या न होने की तफ़्तीश) नहीं की, तो जाइज़ नहीं और 'ख़ुलासा' से भी यही ज़ाहिर होता है क्योंकि इसके अल्फ़ाज़ यह हैं (इसके बाद साहिब-ए-हिलिया ने 'ख़ुलासा' की वह इबारत नक़ल की है जो हम ऊपर दर्ज कर आए हैं) लेकिन 'बदाए' में यह लिखा हुआ है कि "और इसी तरह जब आबादी के करीब हो तो भी पानी तलाश करना वाजिब है। यहाँ तक कि अगर तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली फिर पानी होना ज़ाहिर हुआ तो उसकी नमाज़ जाइज़ न हुई। इसलिए कि ज़ाहिरन और उमूमन आबादी पानी से खाली नहीं होती और एहकाम के मामले में ज़ाहिर मुल्हक़..."

1 हिलिया पृष्ठ 549/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

فی البحر غایة الایضاح فاذا فقد الشرط فقد المشروط فبطلت الصلاة وظهور عدم الماء لا يجعل المفقود موجودا ولا الباطل صحيحا فما وقع فی الحلية بعد مانقلنا عنها من قوله وهذا يفيد انه لو كان في العمران او بقرب من العمران فتيمم وصلى قبل الطلب ولم يستكشف عن الحال انه لا يجوز وهو ظاهر الخلاصة حيث قال فيها (فنقل ما قدمناه قال) لكن فی البدائع وكذلك اذا كان بقرب من العمران يجب عليه الطلب حتى لو تيمم وصلى ثم ظهر الماء لم تجز صلاته لان العمران لا يخلو عن الماء ظاهرا وغالبا والظاهر يلحق بالمتيقن فی الاحكام انتهى۔ ولعله قيد اتفاقي بدليل التعليل المذكور او احتراز عما لواستكشف الحال فلم يجد بالعمران فان الظاهر جواز صلاته لظهور انتفاعه ذلك الظاهر ويحمل ما فی الخلاصة على ما اذا لم يستكشف الحال كما هو ظاهرها اھ

الطلب واجبا" (اگر بلا تلاش تیمم کر لیا جبکہ تلاش کرنا واجب تھا) میں "وجوب تلاش" دونوں ہی صورتوں کو شامل ہے۔ اور عدم جوازِ تیمم کا حکم اس لئے ہے کہ جہاں وجوبِ آب کا گمان ہو وہاں پہلے پانی تلاش کر لینا تیمم جائز ہونے کی شرط ہے۔ جیسا کہ منیة اور مستصفی میں اس کی صراحت ہے۔ اور البحر الرائق میں تو اسے انتہائی وضاحت سے بیان کیا ہے تو جب شرط مفقود ہوئی مشروط بھی مفقود ہوا (شرط_تلاشِ آب_نہ پائی گئی تو مشروط جوازِ تیمم بھی نہ پایا گیا) تو نماز بھی باطل ہوئی اور بعد میں وہاں پانی کا عدم وجود ظاہر ہونے سے مفقود (تیمم) موجود نہیں ہو سکتا اور نہ ہی باطل (نماز) صحیح قرار پا سکتا ہے۔ اس تمہید کے بعد اب حلیہ کی درج ذیل عبارت دیکھئے جو حلیہ کے حوالے سے اوپر نقل کی ہوئی عبارت کے بعد آئی ہے: "اس سے یہ مستفاد ہوتا ہے کہ اگر آبادی میں یا آبادی کے قریب ہے اور پانی تلاش کیے بغیر تیمم کرکے نماز پڑھ لی اور بعد میں بھی حقیقتِ حال (واہاں پانی ہونے نہ ہونے کی تفتیش نہ کی) تو جائز نہیں اور

خلاصہ سے بھی یہی ظاہر ہوتا ہے کیوں کہ اس کے الفاظ یہ ہیں (اس کے بعد صاحبِ حلیہ نے خلاصہ کی وہ عبارت نقل کی ہے جو ہم اوپر درج کر آئے ہیں) لیکن بدائع میں یہ لکھا ہوا ہے کہ "اور اسی طرح جب آبادی کے قریب ہو تو بھی پانی تلاش کرنا واجب ہے۔ یہاں تک کہ اگر تیمم کرکے نماز پڑھ لی پھر پانی ہونا ظاہر ہوا تو اس کی نماز جائز نہ ہوئی۔ اس لئے کہ ظاہراً اور عموماً آبادی پانی سے خالی نہیں ہوتی اور احکام کے معاملہ میں ظاہر ملحق

Fatawa Razawiya - Volume 3

[Right Column - Urdu] It is certain (the excerpt from Bada'i ends). Perhaps this (condition of water appearing afterwards for the invalidity of prayer) is a coincidental condition (otherwise, if it later appears that there was no water even before searching, the prayer performed with that tayammum is still void). Its proof is the reasoning mentioned by the author of Bada'i himself, or through this condition, it is intended to exclude the situation where, after prayer, the actual state was investigated and no water was found in the settlement. Because in this case, it is apparent that his prayer was valid, as what was apparent there (the presence of water, based on probability) was shown to be non-existent (absence of water). And what is stated in 'Al-Khulasa' will be interpreted for the case where the actual state was not investigated at all after prayer, as is evident from its literal wording. [End (T)]

I say: The first proposition made by the author of Hilya regarding the excerpt from Bada'i is the correct one. That is, the condition "then water appeared" (for the invalidity of prayer) is incidental, and the reasoning he mentioned is sufficient proof for it, as the author of Hilya himself said. However, Hilya's second proposition, i.e., suggesting that if one searches for water after prayer and does not find it, the prayer becomes valid, is a discussion that clashes with both tradition (naql) and reason ('aql). The rational proof is what this humble servant has explained: that the Sharia has based the matter here on the lack of knowledge of water and has not looked at its actual existence or non-existence. So, when there is a suspicion of water or it is in a place where water is likely to be, then the lack of knowledge ceases. Therefore, tayammum is not valid, whether the existence or non-existence of water becomes apparent later. See, for example, someone who forgot they had water in their tent or saddlebag, or someone who unknowingly pitched their tent over a well and performed tayammum and prayed, then remembered or it became clear that water was there; they must repeat the prayer.

[Left Column - Arabic] I say: His first proposition, meaning considering the phrase "then water appeared" in the text of Al-Bada'i as coincidental, is correct. The aforementioned reasoning is sufficient proof for it, as he said. And his other proposition, meaning his inference of the validity of his prayer if he searched afterwards and did not find any, is a discussion that contradicts both the transmitted (naql) and the rational ('aql). As for the rational part (1), it is what this poor servant has established: that the Lawgiver has made the matter here depend on his lack of knowledge of the water, and did not look at its existence or non-existence in reality.

So, if he thinks there is water or it is in a place where it is likely to be, then the lack of knowledge is negated, and thus tayammum is not valid, whether the water appears afterwards or not. Do you not see that if someone forgets water in his baggage or pitches a tent over a well without knowing it, then performs tayammum and prays, then remembers or it becomes apparent, he must repeat it? Just as the appearance of water did not make his valid tayammum invalid, similarly, the appearance of its non-existence does not make his invalid tayammum valid (2) and the transmitted...

फ़तावा रज़विया - खंड 3

[दायां कॉलम - उर्दू] यह निश्चित है (बदाइ' का उद्धरण समाप्त)। शायद यह (नमाज़ की अमान्यता के लिए बाद में पानी प्रकट होने की शर्त) एक संयोगवश शर्त है (वरना यदि बाद में प्रकट हो कि पानी नहीं था, तब भी खोज से पहले किए गए तयम्मुम से पढ़ी गई नमाज़ बाटिल ही है)। इसका प्रमाण वह तर्क है जो स्वयं बदाइ' के लेखक ने उल्लेख किया है, या इस शर्त के माध्यम से उस स्थिति से बचना उद्देश्य है जब नमाज़ के बाद वास्तविक स्थिति की जाँच की गई और बस्ती में पानी नहीं पाया गया। क्योंकि इस स्थिति में ज़ाहिर यह है कि उसकी नमाज़ हो गई, क्योंकि (प्रबल संभावना के आधार पर) वहां जो ज़ाहिर था (पानी का अस्तित्व), उसका न होना (पानी की अनुपस्थिति) स्पष्ट हो गया। और 'खुलासा' में जो वर्णन किया गया है, उसे उस स्थिति पर लागू किया जाएगा जब नमाज़ के बाद वास्तविक स्थिति की जाँच ही नहीं की गई, जैसा कि उसके स्पष्ट शब्दों से पता चलता है। [समाप्त (त)]

मैं कहता हूँ: 'हलिया' के लेखक ने बदाइ' के उद्धरण के संबंध में जो पहला प्रस्ताव रखा है, वही सही है। यानी "फिर पानी प्रकट हुआ" (नमाज़ की अमान्यता के लिए बाद में पानी प्रकट होने) की शर्त संयोगवश है, और उनके द्वारा दिया गया तर्क इसके लिए पर्याप्त प्रमाण है, जैसा कि हलिया के लेखक ने स्वयं कहा है। लेकिन हलिया का दूसरा प्रस्ताव, यानी यह ज़ाहिर करना कि जब नमाज़ के बाद पानी तलाशे और न पाए तो नमाज़ जायज़ हो जाएगी, यह एक ऐसी चर्चा है जो नक़्ल (परंपरा) और अक़्ल (तर्क) दोनों से टकराती है। तार्किक प्रमाण तो वह है जिसकी इस फ़क़ीर ने व्याख्या की है कि शरीअत ने यहाँ मामले का आधार पानी के अज्ञान पर रखा है और वास्तव में इसके होने या न होने पर नज़र नहीं की है। तो जब पानी का गुमान हो या गुमान की जगह हो, तो अज्ञान नहीं रहा, इसलिए तयम्मुम नहीं हुआ, चाहे बाद में पानी का अस्तित्व ज़ाहिर हो या न हो। देखिये जिसे अपने खेमे या पालकी में पानी होना याद न रहा, या जिसने अनजाने में किसी कुएँ पर खेमा लगाया और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, फिर उसे याद आया या वहां पानी होना ज़ाहिर हुआ, तो उस पर नमाज़ का दोहराना (आ'दा)...

[बायां कॉलम - अरबी] मैं कहता हूँ: उनका पहला प्रस्ताव, यानी 'अल-बदाइ'' के शब्दों में "फिर पानी प्रकट हुआ" को संयोगवश मानना, सही है। जैसा कि उन्होंने कहा, इसके लिए उल्लेखित तर्क ही पर्याप्त है। और उनका दूसरा प्रस्ताव, यानी उनकी यह समझ कि यदि बाद में तलाश की और पानी नहीं पाया तो उसकी नमाज़ जायज़ है, एक ऐसी चर्चा है जो नक़्ल (हवाला) और अक़्ल (तर्क) के

विपरीत है। जहाँ तक तार्किक (1) बात है, वह वही है जो इस फ़क़ीर ने स्थापित की है कि शरीअत ने यहाँ मामले को पानी के बारे में उसके अज्ञान पर आधारित किया है, और वास्तविकता में इसके अस्तित्व या अनस्तित्व पर विचार नहीं किया है। इसलिए, यदि उसे पानी का संदेह हो या वह ऐसी जगह हो जहाँ पानी होने की संभावना हो, तो अज्ञानता समाप्त हो जाती है, और इस प्रकार तयम्मुम सही नहीं होता, चाहे बाद में पानी प्रकट हो या न हो। क्या आप नहीं देखते कि यदि कोई अपने सामान में पानी भूल जाए या अनजाने में कुएँ के ऊपर तंबू लगा दे, फिर तयम्मुम करके नमाज़ पढ़े, और फिर याद आए या पानी प्रकट हो, तो उस पर नमाज़ दोहराना अनिवार्य है? जिस प्रकार पानी के प्रकट होने ने उसके सही तयम्मुम को गलत नहीं बनाया, उसी प्रकार पानी के न होने के प्रकट होने ने उसके गलत तयम्मुम को सही नहीं बनाया (2) और नक़ली (हवाला)...

[دائیں کالم کی عبارت] بہ یقین ہے (عبارت بدائع ختم) شاید یہ (نماز کے عدم جواز کیلئے بعد میں پانی ظاہر ہونے کی قید) قید اتفاقی ہے (ورنہ اگر بعد میں ظاہر ہو کہ پانی نہیں جب بھی قبل تلاش جو تیمّم کیا اس تیمّم سے پڑھی ہوئی نماز باطل ہی ہے) اس کی دلیل وہ تعلیل ہے جو صاحبِ بدائع نے خود ذکر کی یا اس قید کے ذریعہ اُس صورت سے احتراز مقصود ہے جب بعدِ نماز حقیقت حال کی تفتیش کی اور آبادی میں پانی نہ پایا۔ کیوں کہ اس صورت میں ظاہر یہ ہے کہ اس کی نماز ہو گئی اس لئے کہ (بلحاظِ غالب) وہاں جو ظاہر تھا (پانی کا وجود) اس کا نہ ہونا (عدم وجود آب) ظاہر ہو گیا اور خلاصہ میں جو بیان کیا گیا ہے وہ اُس صورت پر محمول ہوگا جب بعد نماز حقیقت حال کی تفتیش ہی نہ کی ہو جیسا کہ اس کی ظاہر عبارت سے پتہ چلتا ہے۔ اہ (ت)

اقول: عبارتِ بدائع سے متعلق صاحبِ حلیہ نے جو پہلی تجویز رکھی وہی صحیح ہے یعنی یہ کہ "ثم ظھر الماء" (عدم جوازِ نماز کیلئے بعد میں پانی ظاہر ہونے) کی قید اتفاقی ہے اور اس کی دلیل کیلئے ان کی ذکر کی ہوئی تعلیل ہی کافی ہے جیسا کہ صاحبِ حلیہ نے خود کہا لیکن حلیہ کی دوسری تجویز یعنی یہ اظہار کہ جب بعد نماز پانی تلاش کرے اور نہ پائے تو نماز جائز ہو جائے یہ ایسی بحث ہے جو نقل و عقل سے متصادم ہے۔ عقلی دلیل تو وہ ہے جس کی فقیر نے تقریر کی کہ شریعت نے یہاں مدارِ امر عدم علم آب پر رکھا ہے اور واقع میں اس کے وجود و عدم پر نظر نہیں کی ہے تو جب پانی کا گمان ہو یا گمان کی جگہ ہو تو عدمِ علم نہ رہا اس لئے تیمّم نہ ہوا خواہ بعد میں پانی کا وجود ظاہر ہو یا عدم ظاہر ہو۔ دیکھئے جسے اپنے خیمہ یا کجاوہ میں پانی ہونا یاد نہ رہا یا جس نے لاعلمی میں کسی کنوئیں پر خیمہ لگایا اور تیمّم کر کے نماز پڑھ لی پھر اسے یاد آیا، یا وہاں پانی ہونا ظاہر ہوا تو اس پر نماز کا اعادہ

[بائیں کالم کی عبارت] اقول: تجویزه الاول اعنی جعله قید ثم ظهر الماء في عبارة البدائع اتفاقیا هو الصواب و کفی دلیلا علیه التعلیل المذکور کما قال و تجویزه الآخر اعنی استظهاره جواز صلاته اذا طلب بعد فلم یجد بحث صادم المنقول والمعقول فالمعقول (1) ما قرر الفقیر ان الشرع ادار الامر ههنا علی عدم علمه بالماء ولم ینظر الی وجوده في نفس الامر او عدمه فاذا ظن الماء او کان في مظنته فقد انتفی عدم العلم فلم یصح التیمّم سواء ظهر بعد وجود الماء اوعدمه الاتری ان من نسی الماء في رحله او ضرب الخباء علی بئر وهو لا یعلم فتیمّم وصلی ثم ذکر وظهر لا اعادة علیه فکما ان ظهور الماء لم یجعل تیممه الصحیح غیر صحیح کذلك ظهور عدمه لا یجعل تیممه الفاسد غیر فاسد (2) والمنقول

Fatawa Razawiya, Volume 3

[Right Column] Otherwise, just as the appearance of water did not invalidate his correct dry ablution (tayammum), the appearance of the absence of water cannot validate his defective tayammum. The traditional evidence is the clarification from 'Siraj al-Wahhaj' which has already been mentioned, and similarly in 'al-Jawhara al-Nayyarah'. From this, it also becomes clear that the condition imposed by the author of 'al-Hilya' while explaining the derived meaning, that "the reality of the situation was not investigated after the prayer," is incorrect. Rather, the ruling is absolute (whether he searches afterward or not, and whether water is found afterward or not, the previous tayammum and prayer are not valid anyway - 12 M.A.). And to present this condition as the apparent meaning of the text of 'al-Khulasa' is unacceptable; instead, it explicitly maintains the mentioned ruling as absolute (from which the lack of permissibility is proven in any case - 12 M.A.) (T).

If the objection is raised that the gist of your discourse here is that if someone suspects ability to find water, then his tayammum will not be valid even if it later appears that he was unable; and if he suspects inability, then the tayammum is valid even if it later appears that he was capable. Thus, the basis of action is on his suspicion, not on what is revealed later. This is contrary to what the jurists have specified in the issue of finding water with someone else. For if he did not ask and performed tayammum and prayed, then asked; now if they give it, the prayer becomes void, even if his suspicion earlier was that they would not give it. And if they refuse, the prayer is valid, even if his suspicion earlier was that they would give water. So the basis of the ruling was on what is revealed later, not on what was suspected earlier. We have already documented the texts of this series and the ultimate research of the issue, with the help of Allah Almighty, in our treatise 'Qawanin al-Ulama fi Mutayammim 'ilm 'inda Zayd ma'' (1335 AH). (T)

[Left Column] What preceded from the clarification of 'al-Siraj' and its like in 'al-Jawhara al-Nayyarah', and by it (1) it became clear that its restriction in 'al-Istifada' by his saying "and he did not investigate" is incorrect; rather, the ruling is absolute. And his making (2) it the apparent meaning of 'al-Khulasa' is prohibited; rather, its explicit meaning is absolute.

If you say: The gist of what you have established here is that if he suspected ability to obtain water, his tayammum is not valid even if it appeared later that he was unable; and if he suspected inability, it is valid even if it appeared later that he was able. So

the basis is his suspicion, not what appears after it. This is contrary to what they stipulated in the issue of one (3) who found water with someone else; for if he did not ask him, performed tayammum, and prayed, then asked: if he gave it, his prayer became void, even if he suspected refusal before it; and if he refused, it was valid, even if he suspected giving before it. So the basis was what appears later, not what was suspected. We have mentioned its texts and reached the limit of its research in our treatise 'Qawanin al-Ulama' with the help of Allah Almighty.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[दायां कॉलम] नहीं तो जैसे पानी के प्रकट होने ने उसके सही तयम्मुम को अमान्य नहीं किया, उसी तरह पानी की अनुपस्थिति का प्रकट होना भी उसके दूषित तयम्मुम को सही नहीं कर सकेगा। और इसके लिए पारंपरिक प्रमाण 'सिराजुल वह्हाज' का स्पष्टीकरण है जो पहले बताया जा चुका है, और इसी तरह 'जौहरा नय्यरा' में भी है। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि मुस्तफ़ाद (व्युत्पन्न अर्थ) बताते हुए साहब-ए-हिलिया ने जो यह शर्त लगाई कि "नमाज़ के बाद वास्तविकता की जाँच नहीं की गई", वह सही नहीं है। बल्कि हुक्म (आदेश) मुतलक़ (निरपेक्ष) है (बाद में खोज करे या न करे, और फिर पानी मिले या न मिले, हर हाल में पिछला तयम्मुम और नमाज़ सही नहीं है - 12 म.अ.) और इस शर्त को 'खुलासतुल फ़तावा' की इबारत का ज़ाहिर बताना अस्वीकार्य है, बल्कि इसमें स्पष्ट रूप से उक्त हुक्म को मुतलक़ ही रखा गया है (जिससे हर स्थिति में अदम-ए-जवाज़ (अनुमति न होना) ही सिद्ध होता है - 12 म.अ.) (त)।

यदि यह आपत्ति हो कि यहाँ आपकी तक़रीर का सार यह है कि यदि उसे पानी पर सामर्थ्य का गुमान (संदेह) हो तो तयम्मुम सही नहीं होगा, चाहे बाद में पानी से असमर्थ होना ही प्रकट हो। और यदि पानी से असमर्थता का गुमान हो तो तयम्मुम सही है, चाहे बाद में पानी पर समर्थ होना ही प्रकट हो। तो कार्य का आधार उसके गुमान पर है, उस पर नहीं जो बाद में प्रकट हुआ। और किसी दूसरे के पास पानी होने के मसले में फ़ुक़्हा (धर्मशास्त्रियों) ने जो स्पष्टता की है, यह उसके विपरीत है। क्योंकि यदि उसने नहीं माँगा और तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ली, फिर माँगा; अब यदि वह दे दे तो नमाज़ बातिल (अमान्य) हो गई, चाहे पहले उसका गुमान यह रहा हो कि वह नहीं देगा। और यदि वह मना कर दे तो नमाज़ सही हो गई, चाहे पहले उसका गुमान यह रहा हो कि वह पानी दे देगा। तो हुक्म का आधार उस पर हुआ जो बाद में प्रकट हो, न कि उस पर जिसका पहले गुमान हुआ। इस सिलसिले के नसूस (ग्रंथ प्रमाण) और मसले की अंतिम शोध हम अल्लाह तआला की सहायता से अपने रिसाला "क़वानीनुल उलमा फ़ी मुतयम्मिम इल्म इंद ज़ैद मा" (1335 हिजरी) में लिख चुके हैं। (त)

[बायां कॉलम] 'सिराज' के स्पष्टीकरण और 'जौहरा नय्यरा' में उसके समान से जो पहले गुज़र चुका, और उसी से (1) यह स्पष्ट हुआ कि 'इस्तफ़ादा' में "और उसने जाँच नहीं की" कहकर उसे सीमित करना सही नहीं है; बल्कि हुक्म मुतलक़ है। और उसका (2) इसे 'खुलासा' का ज़ाहिर (स्पष्ट अर्थ) बताना वर्जित है; बल्कि उसका स्पष्ट अर्थ मुतलक़ होना है।

यदि आप कहें: यहाँ आपने जो स्थापित किया है उसका सार यह है कि यदि उसने पानी पर सामर्थ्य का गुमान किया, तो उसका तयम्मुम सही नहीं है, भले ही बाद में यह प्रकट हो कि वह असमर्थ था; और यदि उसने असमर्थता का गुमान किया, तो वह सही है, भले ही बाद में यह प्रकट हो कि वह समर्थ था। तो आधार उसका गुमान है, न कि वह जो उसके बाद प्रकट होता है। और यह उसके विपरीत है जो उन्होंने उस व्यक्ति (3) के मसले में स्पष्ट किया है जिसके पास किसी दूसरे के साथ पानी मौजूद हो; क्योंकि यदि उसने उससे नहीं माँगा, तयम्मुम किया और नमाज़ पढ़ी, फिर माँगा: यदि उसने दे दिया, तो उसकी नमाज़ बातिल हो गई, भले ही उसने पहले मना करने का गुमान किया हो; और यदि उसने इनकार कर दिया, तो वह सही थी, भले ही उसने पहले देने का गुमान किया हो। तो आधार वह था जो बाद में प्रकट होता है, न कि वह जिसका गुमान किया गया था। हमने अल्लाह तआला की सहायता से अपने रिसाला "क़वानीनुल उलमा" में इसके नसूस का उल्लेख किया है और इसके शोध की पराकाष्ठा तक पहुँच गए हैं।

पृष्ठ 756 का 551

[دایاں کالم] نہیں تو جیسے ظہورِ آب نے اس کے صحیح تیمم کو غیر صحیح نہ کیا اسی طرح ظہورِ عدمِ آب بھی اس کے فاسد تیمم کو غیر فاسد نہ کر سکے گا۔ اور نقلی دلیل سراج وہاج کی وہ تصریح ہے جو پہلے گزر چکی اور اسی کی مثل جوہرہ نیرہ میں بھی ہے۔ اسی سے یہ بھی ظاہر ہو گیا کہ مستفاد بتاتے ہوئے صاحب حلیہ نے جو یہ قید لگائی کہ "بعد نماز حقیقتِ حال کی تفتیش نہ کی" یہ صحیح نہیں۔ بلکہ حکم مطلق ہے (بعد میں تلاش کرے یا نہ کرے اور پھر پانی ملے یا نہ ملے بہر حال سابقہ تیمم و نماز درست نہیں ۱۲ م الف) اور اس قید کو عبارت خلاصہ کا ظاہر بتانا نا قابلِ تسلیم ہے بلکہ اس میں صراحتہً حکم مذکور کو مطلق ہی رکھا ہے (جس سے بہر صورت عدمِ جواز ہی ثابت ہوتا ہے ۱۲ م الف) (ت)

اگر یہ اعتراض ہو کہ یہاں آپ کی تقریر کا حاصل یہ ہے کہ اگر اسے پانی پر قدرت کا گمان ہو تو تیمم درست نہ ہو گا اگرچہ بعد میں پانی سے عاجز ہونا ہی ظاہر ہو۔ اور اگر پانی سے عجز کا گمان ہو تو تو تیمم درست ہے اگرچہ بعد میں پانی پر قادر ہونا ہی ظاہر ہو۔ تو بنائے کار اس کے گمان پر ہے اس پر نہیں جو بعد میں ظاہر ہوا اور دوسرے کے پاس پانی موجود پانے کے مسئلہ میں فقہاء نے جو صراحت کی ہے یہ اس کے برخلاف ہے۔ اس لئے کہ اگر اس نے نہ مانگا اور تیمم کر کے نماز پڑھ لی پھر طلب کیا اب اگر وہ دے دے تو نماز باطل ہو گئی اگرچہ پہلے اس کا گمان یہ رہا ہو کہ نہ دے گا اور اگر انکار کر دے تو نماز صحیح ہو گئی اگرچہ پہلے اس کا گمان یہ رہا ہو کہ پانی دے دے گا۔ تو بنائے حکم اس پر ہوئی جو بعد میں ظاہر ہو اس پر نہیں جو پہلے گمان ہوا اس سلسلہ کے نصوص اور مسئلہ کی انتہائی تحقیق بعون اللہ تعالٰی ہم اپنے رسالہ "قوانین العلما فی متیمم علم عند زید ماء" (۱۳۳۵ھ) میں رقم کر چکے ہیں۔ (ت)

[بایاں کالم] ماتقدم من تصریح السراج ومثلہ فی الجوھرة النیرة وبہ (۱) ظھر ان تقییدہ فی الاستفادة بقولہ ولم یستکشف غیر صحیح بل الحکم مطلق وجعلہ (۲) ایاہ ظاھر الخلاصة ممنوع بل صریحہا الاطلاق۔

فان قلت: حاصل ما قررت ھھنا ان لوظن القدرة علی الماء لایصح تیممہ وان ظھر بعد وانہ عاجز ولو ظن العجز صح وان ظھر بعد انہ قادر فالمبنی ظنہ لاما یظھر بعدہ وھو خلاف مانصوا علیہ فی مسألة من (۳) وجد مع غیرہ ماء فانہ ان لم یسألہ وتیمم وصلی ثم سأل فان اعطی بطلت صلاتہ وان کان یظن قبلہ المنع وان ابی صحت وان کان یظن قبلہ الاعطاء فکان المبنی مائ یظھر بعد لا ماظن وقد ذکرنا نصوصہ وبلغنا الغایة تحقیقہ فی رسالتنا قوانین العلماء بعون اللہ تعالیٰ۔

Fatawa Razawiyyah Volume 3

[Arabic Column] I say: There is no disagreement, for the basis there is the reality of inability, whereas here the basis of the ruling is the lack of knowledge, as you have known. Imam Sadr al-Shari'ah, then the researcher al-Halabi in al-Hilyah, said: 'If he completed the prayer in a case where he thought water would be given, then he asked, and if it was given, his prayer is void, and if refused, it is complete, because it became apparent that his assumption was wrong. This is unlike the issue of seeking the Qibla (1), because the Qibla (2) then is the direction of seeking (taharri) by default. Here, the ruling depends on the reality of ability and inability; the preponderance of thought (ghalabat al-zann) was placed in their stead for ease. So, if the opposite becomes apparent, it no longer stands in their stead.' End. I say: It can be explained that there the water is known to exist, and he is capable of obtaining knowledge of the reality of inability and ability by asking, so he is either given it or refused. Thus, it is not permissible (3) for him to act upon assumption (zann) when he is capable of acting upon knowledge. 'Indeed, assumption avails nothing against the truth' (2). As for here, the water's existence is unknown, and he has no way of obtaining knowledge of it without hardship, and hardship is avoided, and Tayammum was legislated...

[Urdu Column] I say: (The answer is that) there is no difference in that the basis of the ruling there is on the reality of inability, but here the basis of the ruling is on the lack of knowledge as explained. Imam Sadr al-Shari'ah and then researcher Halabi write in Hilyah: 'In that situation, if there is a thought of being given water, if he completes the prayer and then requests it, and if given, the prayer becomes void, and if refused, it remains valid, because it became evident that his thought was wrong. And the matter of Taharri-e-Qibla is opposite to this because when there is no one to tell, then at that time the direction of Taharri is originally the Qibla. And here the pivot of the ruling is on the reality of power and inability. Preponderance of thought is kept as a substitute for both for ease, so when something contrary to it (preponderance of thought) appears, then the preponderance of thought no longer remains a substitute for both.' End (T). I say: This can also be justified by saying that there (when someone else has water) the presence of water is known. And one can also obtain true knowledge of their own inability or power regarding that water by asking to see if they give it or not. In such a case where one can act on knowledge and certainty, acting on assumption is not permissible. 'Indeed, assumption avails nothing against the truth' (Assumption cannot take the place of reality).

[Footnotes] 1. Sharh al-Wiqayah, Chapter of Tayammum, Rashidiyah Library, Delhi, 1/103. 2. Al-Quran 10/36.

फतवा रज़विया खंड 3

[अरबी कॉलम] मैं कहता हूँ: कोई मतभेद नहीं है, क्योंकि वहां नियम का आधार अक्षमता की वास्तविकता पर है, जबकि यहाँ नियम का आधार ज्ञान की कमी पर है, जैसा कि आप जानते हैं। इमाम सद्र अल-शरिया, फिर अल-हिलयाह में शोधकर्ता अल-हलाबी ने कहा: 'यदि उसने ऐसी स्थिति में नमाज़ पूरी की जहाँ उसने सोचा था कि पानी दिया जाएगा, फिर उसने माँगा, और यदि दिया गया, तो उसकी नमाज़ शून्य हो गई, और यदि मना कर दिया गया, तो वह पूरी हो गई, क्योंकि यह स्पष्ट हो गया कि उसकी धारणा गलत थी। यह किबला की तलाश (तहर्री) (1) के मामले के विपरीत है, क्योंकि तब किबला (2) मूल रूप से तलाश की दिशा होती है। यहाँ, नियम क्षमता और अक्षमता की वास्तविकता पर निर्भर करता है; आसानी के लिए विचार की प्रधानता (ग़लबत-ए-ज़न्न) को उनके स्थान पर रखा गया था। इसलिए, यदि इसके विपरीत प्रकट होता है, तो यह अब उनके स्थान पर नहीं रहता।' समाप्त। मैं कहता हूँ: इसे इस प्रकार समझाया जा सकता है कि वहाँ पानी का अस्तित्व ज्ञात है, और वह पूछकर अक्षमता और क्षमता की वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम है, तो उसे या तो वह दिया जाता है या मना कर दिया जाता है। इस प्रकार, जब वह ज्ञान पर कार्य करने में सक्षम हो, तो उसके लिए धारणा (ज़न्न) पर कार्य करना अनुमेय (3) नहीं है। 'निश्चित रूप से, धारणा सत्य के विरुद्ध कुछ भी काम नहीं आती' (2)। जहाँ तक यहाँ का सवाल है, पानी का अस्तित्व अज्ञात है, और कठिनाई के बिना इसके बारे में ज्ञान प्राप्त करने का उसके पास कोई साधन नहीं है, और कठिनाई को टाला जाता है, और तयम्मुम निर्धारित किया गया था...

[उर्दू कॉलम] मैं कहता हूँ: (इसका उत्तर यह है कि) इसमें कोई अंतर नहीं है कि वहाँ नियम का आधार अक्षमता की वास्तविकता पर है, लेकिन यहाँ नियम का आधार ज्ञान की कमी पर है जैसा कि बताया गया है। इमाम सद्र अल-शरिया फिर हिलया में शोधकर्ता हलबी लिखते हैं: 'उस स्थिति में जब पानी दिए जाने का गुमान (संदेह) हो, अगर नमाज़ पूरी कर ली फिर माँगा तो अब अगर दे दे तो नमाज़ बातिल (अमान्य) हो गई और इनकार कर दे तो पूरी हो गई, इसलिए कि ज़ाहिर हो गया कि उसका गुमान ग़लत था। और तहर्री-ए-किबला का मसला इसके विपरीत है क्योंकि जब कोई बताने वाला न हो तो उस समय तहर्री की दिशा असल में किबला है और यहाँ हुक्म का दारोमदार क़ुदरत (शक्ति) और इज्ज़ (अक्षमता) की हक़ीक़त पर है। ग़लबा-ए-ज़न्न (धारणा की प्रधानता) को उन दोनों के क़ायम मक़ाम (विकल्प) आसानी के लिए रखा गया है तो जब उसके(ग़लबा-ए-ज़न्न) के खिलाफ ज़ाहिर हो जाए तो ग़लबा-ए-ज़न्न उन दोनों के क़ायम मक़ाम नहीं रह जाता' अह् (त)। मैं कहता हूँ:

इसकी यह तौजीह (व्याख्या) भी की जा सकती है कि वहाँ (जब कि दूसरे के पास पानी है) पानी का मौजूद होना मालूम है। और उस पानी से मुताल्लिक़ अपनी इज्ज़ ओ कुदरत की हक़ीक़त का इल्म (ज्ञान) भी हासिल कर सकता है इस तरह कि उससे माँग कर देख ले कि देता है या नहीं देता। ऐसी सूरत में जबकि वह इल्म ओ यक़ीन पर अमल कर सकता है ज़न्न पर अमल करना जायज़ नहीं। 'इन्नज़ ज़न्न ला युग्नी मिनल हक़्क़िक़ शैआ' (2) (गुमान हक़ीक़त की जगह कोई काम नहीं दे सकता)।

[फुटनोट] 1. शरह अल-विकाया, बाब अल-तयम्मुम, मकतबा रशीदिया दिल्ली 1/103 2. अल-कुरान 10/36

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[عربی کالم] اقول: لاخلاف فان المبنی ثم حقیقة العجزاما هنا فعدم علمه کما علمت قال الامام صدر الشریعة ثم المحقق الحلبي في الحلیة لواتم الصلاة فیما اذا ظن العطاء ثم سأل فان اعطی بطلت صلاته وان ابی تمت لانه ظهر ان ظنه کان خطأ بخلاف مسألة (۱) التحری لان القبلة (۲) حینئذ جهة التحری اصالة وهنا الحکم دائر علی حقیقة القدرة والعجز اقیم غلبة الظن مقامهما تیسیرا فاذا ظهر خلافه لم یبق قائما مقامهما اھ۔ اقول: و یمکن ان یوجه بأن الماء ثمه معلوم الوجود وهو قادر علی تحصیل العلم بحقیقة العجز والقدرة بأن یسأله فیعطی اویابی فلا یسوغ (۳) له العمل بالظن عند القدرة علی العمل بالعلم إِنَّ الظَّنَّ لَا یُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَیْئًا ۲ اما ههنا فالماء مجهول الوجود ولیس بیده تحصیل العلم به الابحرج والحرج مدفوع و ما شرع التیمم

[اردو کالم] اقول: (اس کا جواب یہ ہے) کہ اس میں اختلاف نہیں کہ وہاں بنائے حکم حقیقت عجز پر ہے لیکن یہاں بنائے حکم، عدم علم پر ہے جیسا کہ بیان ہوا۔ امام صدر الشریعہ پھر حلیہ میں محقق حلبی لکھتے ہیں: ”اُس صورت میں جب کہ پانی دینے کا گمان ہو اگر نماز پوری کر لی پھر طلب کیا تو اب اگر دے دے نماز باطل ہو گئی اور انکار کر دے تو پوری ہو گئی، اس لئے کہ ظاہر ہو گیا کہ اس کا گمان غلط تھا۔ اور تحری قبلہ کا مسئلہ اس کے برخلاف ہے کیوں کہ جب کوئی بتانے والا نہ ہو تو اس وقت سمت تحری اصالۃً قبلہ ہے اور یہاں مدار حکم حقیقتِ قدرت و عجز پر ہے غلبہ ظن کو ان دونوں کے قائم مقام آسانی کیلئے رکھا گیا ہے تو جب اس (غلبہ ظن) کے خلاف ظاہر ہو جائے تو غلبہ ظن ان دونوں کے قائم مقام نہیں رہ جاتا“ اھ (ت) اقول: اس کی یہ توجیہ بھی کی جاسکتی ہے کہ وہاں (جب کہ دوسرے کے پاس پانی ہے) پانی کا موجود ہونا معلوم ہے۔ اور اس پانی سے متعلق اپنے عجز و قدرت کی حقیقت کا علم بھی حاصل کر سکتا ہے اس طرح کہ اس

سے مانگ کر دیکھ لے کہ دیتا ہے یا نہیں دیتا۔ ایسی صورت میں جبکہ وہ علم و یقین پر عمل کر سکتا ہے ظن پر عمل کرنا جائز نہیں۔ اِنَّ الظَّنَّ لَا یُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَیْئًا ۲ (گمان حقیقت کی جگہ کوئی کام نہیں دے سکتا)

[حواشی] 1 شرح الوقایۃ باب التیمم مکتبہ رشیدیہ دہلی ۱/۱۰۳ 2 القرآن ۳۶/۱۰

Fatawa Razawiyya Volume 3

(Right Column): But here, the existence of water is unknown; obtaining knowledge and certainty about it without hardship and difficulty is not within one's power. And hardship is averted. The very legislation of tayammum was for the removal of hardship. In the absence of knowledge and certainty, in practical matters, predominant opinion (zann-e-ghalib) stands in place of certainty. By the grace of Allah Almighty, we have mentioned the completion of this discourse in the aforementioned treatise. (t) I say: By the praise of Allah Almighty, from our explanation, it has also become clear that the condition set for searching for water when there is a suspicion of its proximity—that tayammum is not permissible without searching—is also included and incorporated in the condition of 'incapacity' (ajz). This is because as long as there is a suspicion of water being nearby, the knowledge of water is not absent, thus incapacity is not established. Yes, except when one searches for water to such an extent that it does not cause harm to him or his companions and he becomes despaired of finding water. Because in this state, his suspicion, which stood in place of knowledge, becomes unsuccessful. With the end of suspicion, knowledge also becomes absent, then incapacity is established. When it is settled that the condition of searching for water is also included and incorporated in the condition of incapacity, then this statement of Radd al-Muhtar is not correct: "that al-Munyah added this condition and soon the author will mention it as follows: 'one arrow-shot distance...'"

(Left Column): ...except for its removal. Predominant opinion in practical matters stands in place of knowledge in its absence. We have already mentioned the completion of the discourse in the aforementioned treatise by the grace of Allah Almighty. I say: It has become clear, by the praise of Allah Almighty, through this explanation of ours, that the condition of seeking water when its proximity is suspected, so that his tayammum is not valid before the search, is included in the condition of incapacity (ajz). This is because as long as he suspects its proximity, his knowledge [of its existence] is not absent, so his incapacity is not established except when (1) he seeks it to an extent that does not harm him or his companions and despair of finding water occurs. Because then his suspicion, which had stood in place of knowledge, fails, thus knowledge is absent and incapacity is established. So, what occurred (2) in Radd al-Muhtar—that this condition was added by [the author of] al-Munyah and the author will mention it with his saying: 'and he seeks it for an arrow-shot distance if he suspects its proximity' etc.—is not correct. Rather, the author has

already mentioned it in his saying: 'whoever is incapable of using water' etc. Do you not see the statement of al-Bahr: 'capability without knowledge, for the one capable of an action is he who if he intended...'

(Footnotes): 1 Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt 1/170 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt 1/170

(दायां कॉलम): लेकिन यहाँ पानी का अस्तित्व अज्ञात है; कठिनाई और परेशानी के बिना इसका ज्ञान और यकीन हासिल करना उसके बस में नहीं। और कठिनाई दूर की जाती है। स्वयं तयम्मुम का विधान ही कठिनाई को दूर करने के लिए हुआ है। और ज्ञान एवं यकीन के अभाव की स्थिति में, व्यावहारिक मामलों में प्रबल धारणा (ज़न्न-ए-ग़ालिब) यकीन के स्थान पर होती है। अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से इस कलाम की पूर्णता हमने उपर्युक्त शोध पत्र (रिसाला) में वर्णित की है। (त) मैं कहता हूँ: अल्लाह तआला की प्रशंसा के साथ, हमारे इस स्पष्टीकरण से यह भी स्पष्ट हो गया कि पानी के समीप होने की संभावना के समय पानी खोजने की जो शर्त रखी गई है—कि बिना खोजे तयम्मुम जायज़ नहीं —यह शर्त भी 'अक्षमता' (अजज़) में सम्मिलित और अंतर्निहित है। इसका कारण यह है कि जब तक पानी पास में होने की संभावना है, पानी का ज्ञान समाप्त नहीं हुआ है, इसलिए अक्षमता सिद्ध नहीं होती। हाँ, जब तक वह इस हद तक पानी न खोज ले कि उसे और उसके साथियों को कोई हानि न हो और पानी मिलने से निराशा हो जाए। क्योंकि इस स्थिति में उसकी वह संभावना, जो ज्ञान के स्थान पर थी, विफल हो जाती है। संभावना के समाप्त होने से ज्ञान भी समाप्त हो जाता है, तब अक्षमता सिद्ध हो जाती है। जब यह बात तय हो गई कि अक्षमता की शर्त में पानी खोजने की शर्त भी सम्मिलित और अंतर्निहित है, तो रद अल-मुह्तार का यह कथन सही नहीं है कि "मुनिया ने इस शर्त को जोड़ा है और शीघ्र ही लेखक इसका वर्णन इस प्रकार करेंगे कि: 'एक ग़लवा' (तीर की मार के बराबर दूरी)..."

(बायां कॉलम): ...सिवाय इसके निवारण के। व्यावहारिक कार्यों में प्रबल अनुमान (ज़न्न-ए-ग़ालिब), ज्ञान के अभाव में ज्ञान के स्थान पर खड़ा होता है। और हमने अल्लाह तआला की तौफीक से उपर्युक्त रिसाले में कलाम का शेष भाग उल्लेख कर दिया है। मैं कहता हूँ: अल्लाह तआला की प्रशंसा के साथ हमारे इस विवरण से यह स्पष्ट हो गया कि पानी की खोज की शर्त, जब उसके समीप होने का गुमान हो, यहाँ तक कि खोज से पहले उसका तयम्मुम सही न हो, अक्षमता (अजज़) की शर्त में शामिल है। क्योंकि जब तक वह उसके समीप होने का गुमान रखता है, उसका ज्ञान समाप्त नहीं होता, तो उसकी अक्षमता सिद्ध नहीं होती, सिवाय इसके कि (1) वह उस सीमा तक खोज करे जिससे उसे या उसके साथियों को हानि न पहुँचे और पानी मिलने से निराशा हो जाए। क्योंकि उस समय उसका गुमान, जो ज्ञान के स्थान पर था, विफल हो जाता है, जिससे ज्ञान लुप्त हो जाता है और अक्षमता सिद्ध हो जाती है। अतः रद अल-मुह्तार में जो आया है (2) कि इस शर्त को 'अल-मुनिया' में

बढ़ाया गया है और लेखक शीघ्र ही इसे अपने इस कथन के साथ उल्लेख करेंगे कि: 'और वह उसे एक ग़लवा तक खोजे यदि उसे समीप होने का गुमान हो' आदि, वह सही नहीं है। बल्कि लेखक ने इसे अपने इस कथन में पहले ही उल्लेख कर दिया है: 'जो पानी के उपयोग से अक्षम हो' आदि। क्या आप 'अल-बहर' के इस कथन को नहीं देखते: 'ज्ञान के बिना सामर्थ्य, क्योंकि कार्य पर सक्षम वही है जो यदि चाहे...'

(पादलेख): 1 रद अल-मुह्तार, बाब अत-تتيمم, मतबा मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र 1/170 2 रद अल-मुह्तार, बाब अत-تتيمم, मतबा मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र 1/170

पृष्ठ 756 का 553

فتاوی رضویہ جلد سوم

(دایاں کالم): لیکن یہاں تو پانی کا وجود نامعلوم ہے، مشقت و حرج کے بغیر اس کا علم ویقین حاصل کرنا اس کے بس میں نہیں۔ اور حرج مدفوع ہے۔ خود تیمم کی مشروعیت ہی دفع حرج کیلئے ہوئی ہے۔ اور علم و یقین کے فقدان کی حالت میں باب عملیات میں ظنِ غالب یقین کے قائم مقام ہے بتوفیق اللہ تعالی اس کلام کا تکملہ ہم نے رسالہ مذکورہ میں ذکر کیا ہے۔ (ت) اقول: بحمدہ تعالی ہماری اس تقریر سے یہ بھی ظاہر ہوگیا کہ قریب میں پانی کا گمان ہونے کے وقت پانی تلاش کرنے کی جو شرط رکھی گئی ہے کہ بغیر تلاش کیے تیمم جائز نہیں یہ شرط بھی عجز میں مندرج اور داخل ہے اس لئے کہ جب تک قریب میں پانی ہونے کا گمان موجود ہے علمِ آب معدوم نہیں تو عجز ثابت نہیں ہاں مگر جب اس حد تک پانی تلاش کرلے کہ اسے اور اس کے ہم سفروں کو ضرر نہ ہو اور پانی ملنے سے مایوسی ہوجائے۔ اس لئے کہ اس حالت میں اس کا ظن جو علم کے قائم مقام تھا ناکام ہو جاتا ہے۔ ظن کے ختم ہو جانے سے علم بھی معدوم ہو جاتا ہے تو عجز ثابت ہو جاتا ہے، جب یہ بات طے ہوگئی کہ شرط عجز میں تلاش آب والی شرط بھی مندرج اور داخل) تو ردالمحتار کا یہ قول درست نہیں " کہ منیہ نے اس شرط کا اضافہ کیا ہے اور عنقریب مصنف اسے یوں ذکر فرمائیں گے کہ " ایک غلوہ

(بایاں کالم): الالدفعه والظن الغالب في العمليات يقوم مقام العلم عند فقدانه وقد ذكرنا تتمة الكلام في الرسالة المذكورة بتوفيق الله تعالىٰ۔ اقول: وقد ظهر بحمد الله تعالى بتقريرنا هذا ان شرط طلب الماء اذا ظن قربه حتى لا يصح تيممه قبل الطلب مندرج فى شرط العجز لانه مادام يظن قربه لم يعدم علمه فلا يثبت عجزه الا اذا (۱) طلب الى حد لا يضربه ولا برفقته ويقع الياس من وجدان الماء لانه حينئذ يخيب ظنه الذى كان قام مقام العلم فيعدم العلم فيثبت العجز فما وقع (۲) في ردالمحتار من ان هذا الشرط زاده

في المنية وسيذكره المصنف بقوله ويطلبه غلوة ان ظن قربه اه غير سديد بل قد ذكره المصنف فى قوله من عجز عن استعمال الماء الخ الا ترى الى قول البحر قدرة بدون العلم لان القادر على الفعل هو الذي لو اراد

(حواشى): 1 ردالمحتار باب التيمم مطبع مصطفى البابي مصر ١/ ١٧٠ 2 ردالمحتار باب التيمم مطبع مصطفى البابي مصر ١/ ١٧٠

(Arabic Text): تحصیلہ یتأتّی لہ ذلك اھ وما ذکرہ المصنف لیس لبیان شرط التیمم بل قدر الطلب ومایتعلق بہ من التفریعات کما اعاد متصلا بہ ذکر شرط النیة لاجل ھذا مع ذکرہ لھا فی نفس حد التیمم۔

(Urdu Translation/Explanation): "Search for water in an amount of (three hundred steps in every direction) if there is a thought of water being nearby." End of summarized quote. Rather, the author mentioned it under the heading "the one who is incapable of using water etc." (since lack of knowledge is also included in being incapable). Look at this passage from al-Bahr al-Ra'iq: "Existence of capability without knowledge is not possible because only that person is capable of a task who, if he wants to do it, can do it." End. (And if there is no knowledge of water, then the intention and action to use it is also not possible, so where is the capability? 12m Alif). And what the author said about searching up to one 'ghalwa' (a measure of distance) is not to state a condition of Tayammum but to show how far one should search, and the intention is also to explain related details, just as the author mentioned the condition of intention again immediately after it in view of the details, even though he had already mentioned it in the definition of Tayammum itself before this. (T)

Sixth: The specification of 'Muslim' is because a disbeliever (Kafir) is not eligible for Tayammum; his Tayammum is void. If a disbeliever performed Wudu (ablution) and then entered Islam, he can pray with that same Wudu as long as no event occurred to break it afterwards. However, if water was not available there and he became Muslim after performing Tayammum, he cannot pray with that Tayammum. He must perform Tayammum again for prayer. The reason is that for Wudu, it is sufficient for water to pass over the limbs of Wudu even if without intention; this happened in the Wudu of the disbeliever. But in Tayammum, intention (Niyyat) is a condition, and intention is for Allah Almighty, and the disbeliever does not know Him at all, so how will he make an intention for Him? 'Kufr' (disbelief) itself is defined as not knowing Allah Subhanhu.

Great Warning: This matter may seem far-fetched to an ignorant person, but its explanation is extremely beneficial. Therefore, the Jurist (Faqih) - may the Mighty Lord forgive him - described it in a few brief sentences through which it becomes clear that all disbelievers, even if they recite the Kalima and offer prayers, do not know Allah Almighty at all, and there is none among them who does not attribute bad

flaws and great stains to Him. It is necessary to be aware of this statement so that Muslims avoid them and, out of love and support for their Lord, hate and shun them. "Bab al-Aqa'id wal-Kalam" (1335 AH) is its historical name or "The False Gods of Misguidance" (1335 AH) is its historical title. This is an extremely brief but, if Allah wills, perfectly useful treatise. If any Sunni scholar from the treatises of the poor one [referring to himself]...

1 Al-Bahr al-Ra'iq, before his saying "And he searches for a ghalwa etc.", HM Saeed Company, Karachi, 1/160. Page 554 of 756

जिल्द सोम (तीसरा खंड) फ़तावा रज़विया

(अरबी पाठ): تحصیلہ یتأتّی لہ ذلك اھ وما ذکرہ المصنف لیس لبیان شرط التیمم بل قدر الطلب ومایتعلق بہ من التفریعات کما اعاد متصلا بہ ذکر شرط النیة لاجل ھذا مع ذکرہ لھا فی نفس حد التیمم۔

(उर्दू व्याख्या/अनुवाद): "(हर तरफ से तीन सौ कदम) की मात्रा में पानी तलाश करे अगर करीब में पानी होने का गुमान हो" अंत संक्षिप्त। बल्कि लेखक ने "जो पानी के इस्तेमाल से लाचार हो आदि" के तहत इसे ज़िक्र कर दिया (क्योंकि ज्ञान का न होना भी लाचारी में ही शामिल है) ये देखिए अल-बहर अल-रायिक की इबारत: "ज्ञान के बिना शक्ति का अस्तित्व नहीं है क्योंकि किसी काम पर सक्षम वही व्यक्ति होगा जो उसे करना चाहे तो कर सके। अंत। (और पानी का ज्ञान ही नहीं तो उसे काम में लाने का इरादा और अमल भी नहीं हो सकता फिर शक्ति कहाँ? १२म अलिफ़) और लेखक ने एक 'ग़लवा' तक तलाश करने की जो बात कही है यह तयम्मुम की शर्त के बयान के लिए नहीं बल्कि यह बताने के लिए है कि कितनी दूर तक तलाश करना है और इससे संबंधित विवरण बयान करना भी उद्देश्य है जैसे इसी के साथ लेखक ने विवरणों के कारण नीयत की शर्त को दोबारा ज़िक्र किया है हालांकि इससे पहले खुद तयम्मुम की परिभाषा में इसका ज़िक्र कर चुके हैं। (त)

छठा: 'मुसलमान' का विशेष विवरण इसलिए है कि काफ़िर तयम्मुम का पात्र नहीं है, उसका तयम्मुम बातिल (शून्य) है। अगर काफ़िर ने वुज़ू किया फिर इस्लाम लाया तो उसी वुज़ू से नमाज़ पढ़ सकता है बशर्ते कि उसके बाद कोई हदस (वुज़ू तोड़ने वाली चीज़) न हुई हो, लेकिन अगर वहाँ पानी न था और तयम्मुम करके मुसलमान हुआ तो उस तयम्मुम से नमाज़ नहीं पढ़ सकता, नमाज़ के लिए दोबारा तयम्मुम करना होगा। कारण यह कि वुज़ू के लिए पानी का वुज़ू के अंगों पर से गुज़र जाना काफी है चाहे बिना इरादे के हो, काफ़िर के वुज़ू में यह बात प्राप्त हो गई। लेकिन तयम्मुम में नीयत शर्त है और नीयत अल्लाह अज़्ज़वजल्ल के लिए है, और काफ़िर उसे जानता ही नहीं तो उसके लिए नीयत क्या करेगा? कुफ़्र कहते ही उसे हैं कि अल्लाह सुब्हानहू को न जाने।

महान चेतावनी (तन्बीह जलील): यह बात अज्ञानी की दृष्टि में कठिन है और इसका वर्णन अत्यंत लाभदायक है। इसलिए फ़क़ीह (विधिवेत्ता) - सर्वशक्तिमान प्रभु उन्हें क्षमा करें - ने इसे कुछ संक्षिप्त वाक्यों में वर्णित किया है जिनसे यह स्पष्ट हो जाए कि सभी काफ़िर, भले ही वे कलिमा पढ़ने वाले और नमाज़ अदा करने वाले हों, अल्लाह अज़्ज़वजल्ल को बिल्कुल नहीं जानते और उनमें कोई ऐसा

नहीं जो उसे बुरे-बुरे दोष और बड़े-बड़े धब्बे न लगाता हो। इस बयान पर अवगत होना ज़रूरी है ताकि मुसलमान उनसे बचें और अपने रब के प्रेम और समर्थन में उनसे नफरत और परहेज़ करें। "बाब अल-अक़ायिद वल-कलाम" (१३३५ हिजरी) इसका ऐतिहासिक नाम है या "गुमराही के झूठे खुदा" (१३३५ हिजरी) ऐतिहासिक शीर्षक है। यह एक अत्यंत संक्षिप्त लेकिन इंशाअल्लाह तआला पूर्णतः उपयोगी पुस्तिका है। यदि कोई सुन्नी विद्वान फ़कीर (स्वयं लेखक) के लेखों में से...

1 अल-बहर अल-रायिक, उनके कथन "और वह ग़लवा तलाश करता है आदि" से पहले, एच.एम. सईद कंपनी, कराची १/१६०। पेज ५५४ ऑफ ७५६

جلد سوم فتاوی رضویہ

تحصیلہ یتأتّی لہ ذلك اھ وما ذکرہ المصنف لیس لبیان شرط التیمم بل قدر الطلب ومایتعلق بہ من التفریعات کما اعاد متصلا بہ ذکر شرط النیة لاجل ھذا مع ذکرہ لھا فی نفس حد التیمم۔

(ہر طرف سے تین سو قدم) کی مقدار پانی تلاش کرے اگر قریب میں پانی ہونے کا گمان ہو" اھ ملخصا۔ بلکہ مصنف نے من عجز عن استعمال الماء الخ (جو پانی کے استعمال سے عاجز ہو الخ) کے تحت اسے ذکر کر دیا (کیوں کہ عدم علم بھی عجز ہی میں داخل ہے) یہ دیکھئے البحر الرائق کی عبارت: "علم کے بغیر قدرت کا وجود نہیں اس لئے کہ کسی کام پر قادر وہی شخص ہو گا جو اسے کرنا چاہے تو کر سکے"۔ اھ (اور پانی کا علم ہی نہیں تو اسے کام میں لانے کا ارادہ و عمل بھی نہیں ہو سکتا پھر قدرت کہاں؟ ۱۲م الف) اور مصنف نے ایک غلوہ تک تلاش کرنے کی جو بات کہی ہے یہ شرطِ تیمم کے بیان کیلئے نہیں بلکہ یہ بتانے کیلئے ہے کہ کتنی دور تک تلاش کرنا ہے اور اس سے متعلق تفریعات بیان کرنا بھی مقصود ہے جیسے اسی کے متصل مصنف نے تفریعات ہی کے پیشِ نظر شرطِ نیت کو دوبارہ ذکر کیا ہے حالانکہ اس سے پہلے خود تیمم کی تعریف میں اس کا ذکر کر چکے ہیں۔ (ت)

ششم : مسلمان کی تخصیص اس لئے کہ کافر تیمم کا اہل نہیں اس کا تیمم باطل ہے اگر کافر نے وضو کیا پھر اسلام لایا اسی سے نماز پڑھ سکتا ہے جبکہ اسکے بعد کوئی حدث نہ ہوا ہو، لیکن اگر وہاں 'پانی نہ تھا تیمم کر کے مسلمان ہوا تو اس تیمم سے نماز نہیں پڑھ سکتا نماز کیلئے دوبارہ تیمم کرنا ہو گا وجہ یہ کہ وضو کیلئے پانی کا اعضائے وضو پر گزر جانا کافی ہے اگرچہ بلا قصد ہو کافر کے وضو میں یہ بات حاصل ہو گئی لیکن تیمم میں نیت شرط ہے اور نیت اللہ عز و جل

کیلئے اور کافر اسے جانتا ہی نہیں اس کیلئے نیت کیا کرے گا کفر کہتے ہی اسے ہیں کہ اللہ سبحانہ کو نہ جانے۔

تنبیہ جلیل : یہ بات ناواقف کی نگاہ میں بعید ہے اور اس کا بیان نہایت مفید ہے لہذا فقیہ غفر لہ المولی القدیر نے اسے چند مختصر جملوں میں بیان کیا ہے جن سے روشن ہو کہ تمام کفار ۳ اگرچہ کلمہ گو نماز گزار ہوں اللہ عز و جل کو ہرگز نہیں جانتے اور ان میں کوئی ایسا نہیں جو اسے بُرے بُرے عیب ، بڑے بڑے دھبے نہ لگاتا ہو اس بیان پر اطلاع لازم ہے تاکہ مسلمان ان سے پرہیز کریں اور اپنے رب کی محبت و حمایت میں اُن سے نفرت و گریز کریں "باب العقائد والکلام" (۱۳۳۵ھ) اس کا تاریخی نام یا "گمراہی کے جھوٹے خدا" (۱۳۳۵ھ) تاریخی لقب یہ ایک نہایت مختصر مگر ان شاء اللہ تعالیٰ کمال مفید رسالہ ہے اگر کوئی سنی عالم رسائلِ فقیر سے

1 البحر الرائق قبیل قولہ ویطلب غلوۃ الخ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۶۰ Page 554 of 756

Fatawa Rizvia Volume 3 Stating its claims in detail and writing its explanation with suitable additions of benefits as the occasion arises, would provide sufficient material, by Allah's help, to refute all these sects. To avoid excessive length in the middle, I have separated it from here and attached it at the end of this treatise on Tayammum. And success is from Allah. Seventh: We did not include the condition of being an adult, as Tayammum of a minor is also valid. Eighth: The condition of being sane was mentioned because if an insane person or an unintelligent child imitates the actions of Tayammum, it is not valid, as intention is a condition for Tayammum. Ninth: Regarding the deceased, only Islam is a condition, whether adult or not, sane or not, Tayammum will be performed in every case when there is an inability to use water. Tenth: Impurity was restricted to 'Hukmiyah' (legal impurity) because the Tayammum of a living person only removes 'Hukmiyah' impurity. Removal of 'Haqiqiyah' (actual) impurity with soil is only in 'Istinja' (cleaning after relieving oneself). Eleventh: 'Hukmiyah' was generalized to 'Haqiqiyah' and 'Suriyah' (apparent) because the actual existence of 'Hukmiyah' impurity in a minor is a matter for consideration. Twelfth: Regarding the deceased, the distinction between 'Haqiqiyah' and 'Hukmiyah' is based on the disagreement of Imams whether death causes 'Haqiqiyah' or 'Hukmiyah' impurity to occur to the body. On the first premise, before washing, recitation of the Great Quran near it would be forbidden if the body is not covered from head to toe with a cloth, just as recitation is disliked where some impurity lies. On the second premise, there would be no harm in recitation, just as if someone reads the Quran and a person in a state of major ritual impurity (Junub) or a woman who has just finished her menses or postnatal bleeding sits near them. And it was mentioned above that in the research of this humble servant, the second opinion is more predominant, if Allah wills. Thirteenth: The word 'to remove' points towards the intention, meaning that Tayammum without intention is not valid. It also explained that the intention should be to remove 'Hukmiyah' impurity from one's own body or 'death-impurity' from the body of the deceased. In the same sense is the intention of 'Tatheer' (purification), even if it is recommended, and this leads to it; the objective being the intention to make some act of worship permissible through this action, like prayer, and for someone in a state of major impurity, reciting the Quran, or non-intended acts like touching the Holy Quran, or for someone in major impurity, entering a mosque. Yes, worship... Note: This points to the intention of 'Tatheer' for those acts of worship where ritual purity is not a condition, such as greeting with Salam, responding to Salam, the call to prayer (Adhan) and Iqamah, visiting graves, visiting the sick, etc. In the absence of water (5), Tayammum is also valid and

permissible for these. As will be mentioned later, it will be with the intention of performing purification for the sake of Allah's proximity. This becomes a recommended purification. 12 Minhu, Ghafarallahu Lahu (M) Page 555 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द तीसरी इसके दावों का बयान लेकर विस्तार से और समय-समय पर उपयुक्त लाभों के समावेश के साथ इसकी व्याख्या लिखे, तो अल्लाह की मदद से इन सभी संप्रदायों का खंडन करने के लिए पर्याप्त सामग्री होगी। बीच में अधिक विस्तार से बचने के लिए, मैंने इसे यहाँ से अलग कर दिया है और इसे तयम्मुम के इस शोध-पत्र के अंत में जोड़ दिया है। और सफलता अल्लाह की ओर से है। सातवाँ: हमने बालिग (वयस्क) होने की शर्त नहीं लगाई है, क्योंकि नाबालिग का तयम्मुम भी सही है। आठवाँ: अक्लमंद होने की शर्त का उल्लेख इसलिए किया गया कि यदि कोई पागल या नासमझ बच्चा तयम्मुम की नकल करे, तो वह मान्य नहीं है, क्योंकि तयम्मुम के लिए नीयत (इरादा) एक शर्त है। नौवाँ: मृतक के मामले में केवल इस्लाम शर्त है, चाहे वह बालिग हो या नहीं, अक्लमंद हो या नहीं, हर तरह से तयम्मुम कराया जाएगा जब पानी के इस्तेमाल में असमर्थता हो। दसवाँ: नजासत (अशुद्धता) को 'हुकमिया' (विधिक) तक सीमित किया गया क्योंकि जीवित व्यक्ति का तयम्मुम केवल 'हुकमिया' नजासत को ही दूर करता है, 'हक़ीक़िया' (वास्तविक) नजासत को मिट्टी से दूर करना केवल 'इस्तिंजा' में है। ग्यारहवाँ: 'हुकमिया' को 'हक़ीक़िया' और 'सूरिया' (दिखने वाली) तक व्यापक बनाया गया क्योंकि नाबालिग में 'हुकमिया' नजासत का वास्तव में होना विचारणीय है। बारहवाँ: मृतक के संबंध में 'हक़ीक़िया' और 'हुकमिया' का भेद इमामों के मतभेद पर आधारित है कि मृत्यु से शरीर पर 'हक़ीक़िया' नजासत आती है या 'हुकमिया'। पहली मान्यता के अनुसार, ग़ुस्ल (स्नान) से पहले उसके पास कुरान-ए-अज़ीम का पाठ वर्जित होगा यदि उसका शरीर सिर से पैर तक कपड़े से ढका न हो, ठीक वैसे ही जैसे जहाँ कोई गंदगी पड़ी हो वहाँ पाठ करना मकरूह (नापसंद) है। दूसरी मान्यता के अनुसार, पाठ करने में कोई हर्ज नहीं होगा, जैसे कोई कुरान पढ़ रहा हो और उसके पास कोई जुनूब (महा-अशुद्ध अवस्था वाला) या माहवारी या प्रसवोत्तर रक्तस्राव से निवृत्त स्त्री बैठी हो। और ऊपर उल्लेख किया गया है कि इस तुच्छ सेवक के शोध में दूसरा मत ही अधिक प्रबल है, यदि अल्लाह ने चाहा। तेरहवाँ: 'दूर करने के लिए' यह शब्द नीयत की ओर संकेत करता है कि बिना नीयत के तयम्मुम सही नहीं है। और इसने यह भी बताया कि नीयत अपने शरीर से 'हुकमिया' नजासत या मृतक के शरीर से 'मौत की नजासत' दूर करने की हो, और इसी अर्थ में 'ततहीर' (पवित्रता) की नीयत है, भले ही वह मुस्तहब (पसंदीदा) के तौर पर हो, और इसी की ओर ले जाती है; इस क्रिया से किसी इबादत (पूजा) को जायज़ करने की नीयत उद्देश्य हो, जैसे नमाज़, और जुनूब के लिए कुरान का पाठ, या ग़ैर-मक़सूदा (अप्रत्यक्ष) जैसे पवित्र कुरान को छूना, जुनूब के लिए मस्जिद में जाना। हाँ, इबादत... टिप्पणी: यह उन इबादतों के लिए 'ततहीर' की नीयत की ओर संकेत है जिनमें पवित्रता शर्त नहीं है, जैसे सलाम करना और सलाम का जवाब देना, अज़ान और इक़ामत, क़ब्रों की

ज़ियारत (दर्शन), बीमार की देखभाल आदि। पानी न होने की स्थिति में (5), उनके लिए भी तयम्मुम सही और जायज़ है। जैसा कि आगे आएगा, वह इसी नीयत से होगा कि अल्लाह की निकटता की प्राप्ति के लिए पवित्रता प्राप्त करूँ। यह मुस्तहब (पसंदीदा) ततहीर होगी। 12 मिन्हु, ग़फ़रल्लाहु लहू (म) पेज 555 ऑफ 756

فتاوی رضویہ جلد سوم اس کے دعاوی کا بیان لے کر تفصیل دے اور موقع بموقع مناسب فوائد کے اضافہ سے اس کی شرح لکھے تو ان تمام فرقوں کی دندان شکنی کا بعونہ تعالیٰ کافی مسالا ہے، بیچ میں طول فصل کے خیال سے اُسے یہاں سے جُدا کر کے اس رسالہ تیمم کے آخر میں ملحق کریں وباللہ التوفیق۔ ہفتم: ہم نے بالغ کی قید نہ لگائی کہ تیمم نابالغ کا بھی صحیح ہے۔ ہشتم: عاقل کی قید ذکر کی کہ مجنون یا نا سمجھ بچہ اگر تیمم کی نقل کرے وہ معتبر نہیں کہ تیمم کی شرط نیت ہے۔ نہم: میت میں صرف اسلام شرط کیا کہ بالغ ہو یا نہیں، عاقل ہو یا نہیں، ہر طرح تیمم کرایا جائے گا جبکہ پانی سے عجز ہو۔ دہم: نجاست کو حکمیہ سے مقید کیا کہ زندہ کا تیمم نجاست حکمیہ ہی کو دور کرتا ہے، حقیقیہ کا مٹی سے ازالہ صرف استنجا میں ہے۔ یاز دہم: حکمیہ کو حقیقیہ و صوریہ سے عام کیا کہ نابالغ میں نجاست حکمیہ کا حقیقۃً وجود محل نظر ہے۔ دواز دہم: در بارہ میت حقیقیہ و حکمیہ کی تشقیق بر بنائے اختلاف ائمہ ہے کہ موت سے بدن کو نجاست حقیقیہ عارض ہوتی ہے یا حکمیہ، بر تقدیرِ اوّل قبل غسل اس کے پاس قرآن عظیم کی تلاوت منع ہو گی جبکہ اس کا بدن سر سے پاؤں تک کپڑے سے چھپانہ ہو جیسے جہاں کوئی نجاست پڑی ہو تلاوت مکروہ ہے اور تقدیر ثانی پر تلاوت میں حرج نہ ہو گا جیسے کوئی قرآن مجید پڑھے اور اس کے پاس کوئی جنب یا حیض و نفاس سے نکلی ہوئی بے نہائی عورت بیٹھی ہو۔ اور اوپر گزرا کہ فقیر کی تحقیق میں قول دوم ہی زیادہ راجح ہے ان شاء اللہ تعالیٰ۔ سیز دہم: دُور کرنے کیلئے یہ لفظ جانب نیت مشیر ہوا کہ بے نیت تیمم صحیح نہیں اور اس نے یہ بھی بتایا کہ نیت اپنے بدن سے نجاست حکمیہ یا بدن میت سے نجاست موت دُور کرنے کی ہو اور اسی کے معنی میں ہے نیت تطہیر عہ اگرچہ استحباباً اور اسی کو مؤدی ہے، اس فعل سے کوئی عبادت مباح کرنے کی نیت مقصودہ ہو جیسے نماز اور جنب کیلئے قرات قرآن یا غیر مقصودہ جیسے مصحف شریف کا

چھونا، جنب کیلئے مسجد میں جانا۔ ہاں عبادت عہ: اشارہ ہے اُن عبادات کیلئے نیت تطہیر کی طرف جن میں طہارت شرط نہیں جیسے سلام و جواب سلام و اذان واقامت و زیارت قبور و عیادت مریض و غیرہ کہ پانی نہ ہونے (۵) کی حالت میں اُن کیلئے بھی تیمم صحیح و جائز ہے کما سیأتی وہ اسی نیت سے ہو گا کہ قربت الہی بحال طہارت کروں یہ تطہیر استحبابی ہوئی ۱۲ منہ غفر لہ (م)

Fatawa Razawiya - Volume 3

Tayammum performed to permit a non-primary (means-to-an-end) act cannot be used for prayer. Tayammum performed with the intention of removing ritual impurity and attaining purity allows for everything, including prayer. However, if at the time of Tayammum the intention was not this, but rather only the intention of performing a specific act of worship, then for prayer to be valid with that Tayammum, the condition is that the worship must be a primary (intended) worship and it must also be something that is not valid without ritual purity. Otherwise, if a person in a state of minor or major ritual impurity performs Tayammum to touch the Quran or to enter a mosque in the absence of water, the Tayammum will be valid, but prayer will not be permissible with it. This is because touching the Quran or entering a mosque is not in itself a primary worship, but rather a means to it. Similarly, if in the absence of water, a person without ablution performs Tayammum for oral recitation, or a person in a state of major impurity performs Tayammum for Divine remembrance (Dhikr) like the Kalima Tayyibah or Durood Sharif, the Tayammum is valid, but prayer is not permissible with it. Although these acts of worship are primary, they were permissible even without ritual purity. Thus, it is clear that these conditions do not apply to Tayammum itself but are conditions for the permissibility of prayer using it. Therefore, we have not included them in the definition.

[Boxed Text] I say: From this (5), it has become clear that the statement of Allama Shami under the phrase "to establish closeness" (for performing an act of worship) in Tanwir al-Absar - i.e., "meaning for such intended worship which is not valid without purity" - is not correct. This is because a rule that should remain general becomes restricted by their addition. (Translator)

In short, there are two conditions for prayer to be valid when performing Tayammum with the intention of worship. However, for Tayammum to be valid with that intention itself, neither of these two is a condition. It was mentioned in the previous issues that if water is inside a mosque and a person in a state of major impurity performs Tayammum to go and get it, or performs Tayammum despite the presence of water for fear of missing out on offering or responding to a greeting (Salam), then even though these are not primary acts of worship and are permissible without ritual purity, Tayammum is valid. Yes, for it to be valid in itself, it is conditional that in the absence of water, either there is the general intention of purification and removal of ritual impurity, or the intention of any worship whatsoever, whether primary or not, for which ritual purity is required.

--- Footnotes --- 1. Worship is of two types: 'Maqsooda' (Primary/Intended), which is a virtuous act in itself and not established merely as a means for another virtuous act; and 'Ghair Maqsooda' (Secondary), which is only a means. In each of these types, some are conditional upon ritual purity (meaning they are not valid without it), whether minor purity (Wudu) is a condition or only major purity (Ghusl); and some are unconditional. Thus, acts of worship are of four types (continued on the next page).

1: Rad al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/169

गैर-मकसूदा (गौण) कार्य को जायज़ करने के लिए जो तयम्मुम होगा, उससे नमाज़ नहीं पढ़ी जा सकती। जो तयम्मुम 'रफ़-ए-हदस' (अशुद्धि दूर करने) और पवित्रता प्राप्त करने की नीयत से किया जाए, उससे नमाज़ आदि सब कुछ जायज़ है। लेकिन अगर तयम्मुम के समय यह नीयत न हो, बल्कि सिर्फ़ इतना इरादा किया हो कि फ़लां इबादत अदा करने के लिए तयम्मुम करता हूँ, तो उस तयम्मुम से नमाज़ जायज़ होने के लिए यह शर्त है कि वह इबादत 'मकसूदा' (प्राथमिक) भी हो और बिना पवित्रता के जायज़ भी न होती हो। वरना अगर पानी न मिलने की स्थिति में अशुद्ध व्यक्ति ने (चाहे छोटी अशुद्धि हो या बड़ी) क़ुरआन छूने के लिए या जुनुब (बड़ी अशुद्धि वाला व्यक्ति) ने मस्जिद में जाने के लिए तयम्मुम किया, तो तयम्मुम सही हो जाएगा, लेकिन उससे नमाज़ जायज़ नहीं होगी। क्योंकि क़ुरआन छूना या मस्जिद में प्रवेश करना अपने आप में कोई इबादत-ए-मकसूदा नहीं है, बल्कि इबादत-ए-मकसूदा का ज़रिया (साधन) है। इसी तरह अगर पानी न मिलने की हालत में बिना वज़ू वाले ने ज़ुबानी तिलावत के लिए, या जुनुब ने अल्लाह के ज़िक्र जैसे कलमा तैयबा और दरूद शरीफ़ पढ़ने के लिए तयम्मुम किया, तो तयम्मुम सही है, पर उससे नमाज़ नाजायज़ है। क्योंकि ये इबादतें हालाँकि मकसूदा हैं, मगर इन्हें बिना पवित्रता के करना भी जायज़ था। तो ज़ाहिर हुआ कि ये शर्तें स्वयं तयम्मुम की नहीं हैं बल्कि उससे नमाज़ के जायज़ होने की हैं, इसलिए हमने परिभाषा में इन्हें शामिल नहीं किया।

[बॉक्स में लिखा पाठ] मैं कहता हूँ: इससे यह (५) स्पष्ट हो गया कि 'तन्वीर अल-अबसार' के वाक्यांश 'निकटता स्थापित करने के लिए' (इबादत करने के लिए) के तहत अल्लामा शामी का यह लिखना कि "अर्थात ऐसी इबादत-ए-मकसूदा के लिए जो बिना पवित्रता के सही न हो" सही नहीं है। क्योंकि वह नियम जिसे व्यापक (मुलतक) ही रहना चाहिए, उनके इस इज़ाफ़े(वृद्धि) से सीमित (मक़य्यद) हो जाता है। (अनुवादक)

कुल मिलाकर, इबादत की नीयत से तयम्मुम करने से नमाज़ जायज़ होने की तो ये दो शर्तें हैं, और स्वयं इस नीयत से तयम्मुम सही होने के लिए इन दोनों में से कोई भी शर्त नहीं है। ऊपर के मसलों में बताया गया कि मस्जिद के अंदर ही पानी है और जुनुब उसे लेने के लिए जाने हेतु तयम्मुम करे, या सलाम करने और सलाम का जवाब देने के छूट जाने के डर से पानी होते हुए भी तयम्मुम करे, जबकि वे इबादत-ए-मकसूदा नहीं हैं और बिना पवित्रता के जायज़ हैं। हाँ, स्वयं में जायज़ होने के लिए यह शर्त है कि पानी न होने की स्थिति में या तो वही सामान्य नीयत (पवित्रता और अशुद्धि दूर करने

की) हो, या फिर किसी भी इबादत की नीयत हो, चाहे वह मकसूदा हो या नहीं, जिसके लिए पवित्रता आवश्यक हो।

--- पाद-टिप्पणियाँ --- १. इबादत दो प्रकार की है: मकसूदा, जो स्वयं स्वतंत्र पुण्य कार्य हो और किसी अन्य पुण्य कार्य के लिए मात्र साधन के रूप में निर्धारित न हो; दूसरी गैर-मकसूदा, जो केवल साधन हो। इनमें से प्रत्येक प्रकार में कुछ पवित्रता के साथ शर्तबंद हैं कि बिना पवित्रता के जायज़ नहीं, चाहे छोटी पवित्रता (वज़ू) शर्त हो या केवल बड़ी (ग़ुस्ल); और कुछ बिना शर्त के हैं, तो इबादत चार प्रकार की हो गईं (अगले पृष्ठ पर शेष)।

1: रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, १/१६९

جلد سوم فتاویٰ رضویہ غیر مقصودہ مباح کرنے کیلئے جو تیمّم ہوگا اس سے نماز نہیں پڑھ سکتا، جو تیمّم رفعِ حدث و حصولِ طہارت کی نیت سے کیا جائے اُس سے تو نماز وغیرہ سب کچھ جائز ہے مگر تیمّم کے وقت یہ نیت نہ کی ہو بلکہ صرف اتنا قصد کیا ہو کہ فلاں عبادت ادا کرنے کو تیمّم کرتا ہوں تو اس تیمّم سے نماز جائز ہونے کیلئے یہ شرط ہے کہ وہ عبادت مقصودہ بھی ہو اور بغیر طہارت کے جائز بھی نہ ہوتی ہو ورنہ اگر پانی نہ پانے کی صورت میں محدثِ اکبر خواہ اصغر نے قرآنِ عظیم چھونے یا جنب نے مسجد میں جانے کیلئے تیمّم کیا تیمّم صحیح ہو جائے گا لیکن اُس سے نماز روانہ ہوگی کہ مسِ مصحف یادخولِ مسجد فی نفسہ کوئی عبادتِ مقصودہ نہیں بلکہ عبادتِ مقصودہ تلاوت و نماز ہیں اور یہ اُن کے وسیلے، یوں ہی اگر پانی نہ ملنے کی حالت میں بے وضو نے یاد پر تلاوت یا جنب نے اور اذکارِ الہی مثلِ کلمہ طیبہ اور درود شریف پڑھنے کیلئے تیمّم کیا تیمّم صحیح ہے اور اس سے نماز ناجائز کہ یہ عبادتیں اگرچہ مقصودہ ہیں مگر ان کو بے طہارت روا تھیں۔ تو ظاہر ہوا کہ یہ شرطیں نفسِ تیمّم کی نہیں بلکہ اُس سے جوازِ نماز کی ہیں لہذا ہم نے تعریف میں ان کو نہ لیا۔

[باکس کا متن] اقول: وبہ (۵) ظھر ان قول العلامۃ ش عند قول التنویر لاقامۃ قربۃ ای لاجل عبادۃ مقصودۃ لاتصح بدون الطھارۃ اھ غیر سدید فانھ فی مقام الاطلاق تقیید۱۔ اقول: (میں کہتا ہوں) اس سے ظاہر ہوگیا کہ تنویر الابصار کی عبارت "لاقامۃ قربۃ" (ادائے قربت کیلئے) کے تحت علامہ شامی کا یہ لکھنا کہ "یعنی ایسی عبادتِ مقصودہ کیلئے جو بغیر طہارت کے درست نہ ہو"۔ صحیح نہیں۔ اس لئے کہ وہ حکم جو مطلق ہی رہنا چاہئے ان کے اس اضافہ سے مقید ہوجاتا ہے۔ (ت)

بالجملہ بہ نیتِ عبادت تیمّم کرنے سے نماز جائز ہونے کی تو یہ دو شرطیں ہیں اور خود اس نیت سے تیمّم صحیح ہونے کیلئے ان دونوں میں سے کچھ شرط نہیں مسائلِ بالا میں گزرا کہ مسجد کے

اندر ہی پانی ہے جنب اُسے لینے کو جائے تیمّم کرے سلام وجوابِ سلام فوت ہونے کے خیال سے پانی ہوتے ہوئے تیمّم کرے، حالانکہ وہ عبادتِ مقصودہ نہیں اور یہ بے طہارت جائز۔ ہاں فی نفسہ جائز ہونے کو یہ مشروط ہے کہ پانی نہ ہونے کی صورت میں یا تو وہی نیتِ عامہ تطہیر و رفعِ حدث ہو یا مطلقاً کسی عبادت کی نیت خواہ مقصودہ ہو یا نہیں اس کیلئے طہارت

--- حواشی --- ۱ـہ عبادت دو قسم ہے مقصودہ کہ خود مستقل قربت ہو دوسری قربت کیلئے محض وسیلہ ہونے کو مقرر نہ ہوئی ہو، دوسری غیر مقصودہ کہ صرف وسیلہ ہے اور ان میں ہر قسم سے بعض مشروط بطہارت ہیں کہ بے طہارت جائز نہیں خواہ طہارت صغریٰ یعنی وضو بھی شرط ہو یا صرف کبریٰ یعنی غسل اور بعض غیر مشروط تو عباداتِ چار قسم ہوگئیں (باقی بر صفحہ آئندہ)

1 ردالمختار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۶۹

Fatawa Razawiya (Volume 3)

Whether it is a condition or not, like prayer (1) Prostration of Recitation, Prostration of Gratitude, recitation for a person in a state of major ritual impurity (Junub) or entering Islam (2), Salutation (Salam), replying to Salutation, recitation from memory for one without Wudu, or (3) touching the Holy Quran (Mushaf Sharif), entering the mosque while in a state of major ritual impurity (Junub) or giving the call to prayer (Adhan) (4), the second call to prayer (Iqamah), entering the mosque without Wudu; Tayammum is valid for all four types, although prayer will only be permissible with that Tayammum which was done with the intention of the first type. And in the state of having water (1) if it is specifically for a mandatory (Fard), necessary (Wajib), or emphasized Sunnah (Sunnat-e-Muakkadah) worship, such that if one performs purification with water, it would be missed and there is no substitute for it, such as Salam and its reply. And according to the verified and more cautious view, guarding the time in the five daily prayers and Friday prayer, as previously detailed with no room for further addition (as its research has already passed, on which there is no room for addition - T).

Except for these two cases, if Tayammum is done with any other intention, for example, a person without Wudu in the state of not having water, for sitting in the mosque for remembrance (Dhikr), or rather for sleeping in the mosque, which is not an act of worship at all, or if water is available, then Prostration of Recitation or...

(Footnote from previous page) (1) Intended acts that are conditional, such as prayer, funeral prayer, Prostration of Recitation, and Prostration of Gratitude, all of which are ends in themselves and complete purification is a condition for all of them; meaning neither major ritual impurity nor minor ritual impurity should be present. Also, recitation of the Holy Quran from memory is an end in itself, and for it, purification is only a condition from major ritual impurity; doing so without Wudu is permissible. (2) Intended acts that are not conditional, even if they are ends in themselves, purification is not absolutely necessary for them, whether small, like entering Islam, offering Salam, or replying to Salam; all are ends in themselves and purification is not a condition for them at all. Also, recitation of the Holy Quran from memory does not necessarily require purification of the minor type, i.e., being with Wudu. From here it is clear that recitation from memory for a person in major impurity falls under the first type, and for one without Wudu, it falls under the second type. (3) Non-intended acts that are conditional, meaning they are a means to another worship but are not

permissible without purification, whether only major purification is a condition or complete purification, such as touching the Holy Quran, for which being without Wudu is also prohibited, and entering the mosque, which is prohibited only in major ritual impurity and permissible in minor ritual impurity. (4) Non-intended acts that are not conditional, which are a means but purification is not a condition, such as Adhan and Iqamah, which are means to prayer, and are valid even from a person in major impurity, though his Iqamah is more disliked (Makruh). And entering the mosque, which is permissible without Wudu. From here it is clear that entering the mosque for a person in major impurity is in the third type, and from the perspective of a person with minor impurity, it is in the fourth type. In the state of lack of water, Tayammum is valid for all four types, and prayer will be possible only from that which was done with the general intention of purification and removal of ritual impurity, or with the specific intention of the first type. And Allah Almighty knows best. 12 Amna, may He forgive him (M).

फ़तावा रज़विया (खण्ड 3)

शर्त हो या न हो, जैसे नमाज़ (1) सजदा-ए-तिलावत, सजदा-ए-शुक्र, जुनुब (महा-अशुद्धि की स्थिति) के लिए तिलावत या इस्लाम (2), सलाम, सलाम का जवाब, बे-वज़ू व्यक्ति के लिए ज़ानی तिलावत, या (3) मुसहफ़ शरीफ़ को छूना, जुनुब का मस्जिद में जाना या अज़ान (4), इक़ामत, बे-वज़ू का मस्जिद में जाना; इन चारों प्रकारों के लिए तयम्मुम सही है, हालाँकि नमाज़ उनमें से केवल उसी तयम्मुम से जायज़ होगी जो पहले प्रकार की नीयत (इरादे) से किया गया हो। और पानी होने की स्थिति में (1) यदि वह विशेष रूप से उस फ़र्ज़, वाजिब या सुन्नत-ए-मुअक्कदा इबादत के लिए हो कि यदि पानी से पाकी हासिल करे तो वह समय निकल जाए और उसका कोई विकल्प न हो, जैसे सलाम और सलाम का जवाब। और तहक़ीक़ी (अनुसन्धानित) और ज़्यादा एहतियाती (सावधानीपूर्ण) राय के अनुसार पाँचों वक़्त की नमाज़ों और जुमे में वक़्त की हिफ़ाज़त करना, जैसा कि पहले सविस्तार गुज़र चुका है (जैसा कि इसकी तहक़ीक़ गुज़र चुकी है जिस पर इज़ाफ़े की कोई गुंजाइश नहीं। - त)।

इन दो सूरतों के अलावा अगर किसी दूसरी नीयत से तयम्मुम किया जाए, मसलन पानी न होने की स्थिति में बे-वज़ू ने मस्जिद में ज़िक्र के लिए बैठने बल्कि मस्जिद में सोने के लिए, जो कि सिरे से इबादत ही नहीं है, या पानी होते हुए सजदा-ए-तिलावत या...

(पिछले पृष्ठ का शेष हाशिय्या) (1) मक़सूदा मश्शरूता (वे उद्देश्यपूर्ण कार्य जो शर्त के अधीन हैं) जैसे नमाज़, नमाज़-ए-जनाज़ा, सजदा-ए-तिलावत और सजदा-ए-शुक्र कि ये सब मक़सूद-बज़्ज़ात (स्वयं में उद्देश्य) हैं और इन सब के लिए कामिल (पूर्ण) पाकी शर्त है यानी न हदस-ए-अकबर (बड़ी नापाकी) हो न हदस-ए-असग़र (छोटी नापाकी)। साथ ही याददाश्त से क़ुरआन मजीद की तिलावत कि वह मक़सूद-बज़्ज़ात है और इसके लिए सिर्फ़ हदस-ए-अकबर से पाकी शर्त है, बे-वज़ू होना जायज़ है। (2) मक़सूदा ग़ैर मश्शरूता (वे उद्देश्यपूर्ण कार्य जो शर्त के अधीन नहीं हैं) कि हों तो मक़सूद-बज़्ज़ात मगर उनके लिए पाकी ज़रूरी न हो, मुतलक़न चाहे छोटी हो, जैसे इस्लाम लाना, सलाम करना, सलाम का जवाब देना; ये सब मक़सूद-बज़्ज़ात हैं और इनके लिए असल में पाकी शर्त नहीं है। साथ ही याददाश्त से क़ुरआन मजीद की तिलावत कि इसके लिए पाकी-ए-सुग़रा यानी बा-वज़ू होना ज़रूरी नहीं। यहाँ से ज़ाहिर हुआ कि याददाश्त से तिलावत जुनुब के एतबार से पहले प्रकार में है और बे-वज़ू के एतबार से दूसरे प्रकार में। (3) ग़ैर मक़सूदा मश्शरूता (वे गैर-उद्देश्यपूर्ण कार्य जो शर्त के अधीन हैं) कि हों तो दूसरी इबादत का वसीला (साधन) मगर बिना पाकी के जायज़ न हों, चाहे

सिर्फ़ पाकी-ए-कुबरा (बड़ी पाकी) शर्त हो या कामिल (पूर्ण) पाकी, जैसे मुसहफ़ शरीफ़ को छूना कि बे-वज़ू भी हराम है और मस्जिद में जाना कि सिर्फ़ हदस-ए-अकबर में हराम और हदस-ए-असग़र में जायज़ है। (4) ग़ैर मक़सूदा ग़ैर मश्शरूता (वे गैर-उद्देश्यपूर्ण कार्य जो शर्त के अधीन नहीं हैं) कि वसीला हों और पाकी शर्त न हो जैसे अज़ान और इक़ामत कि नमाज़ के साधन हैं और जुनुब से भी सही हैं अगरचे उसकी इक़ामत ज़्यादा मकरूह (नापसंदीदा) है। और मस्जिद में जाना कि बे-वज़ू जायज़ है। यहाँ से ज़ाहिर हुआ कि मस्जिद में दाख़िल होना जुनुब के लिहाज़ से तीसरे प्रकार में है और मुहदिस (बिना वज़ू वाले) की नज़र से चौथे प्रकार में। पानी न होने की स्थिति में चारों प्रकारों के लिए तयम्मुम सही है और नमाज़ सिर्फ़ उसी से हो सकेगी जो उस आम नीयत-ए-ततहीर (पाकी की नीयत) और रफ़-ए-हदस (नापाकी दूर करने) से किया गया या विशेष पहले प्रकार की नीयत से। वल्लाह तआला आलम। 12 आमना ग़ुफ़र-लहू (म)।

شرط ہو یا نہیں جیسے نماز (۱) سجدہ تلاوت سجدہ شکر سجدہ جنب کو تلاوت یا اسلام (۲) ، سلام ، جواب سلام ، بے وضو کو یاد پر تلاوت یا (۳) مصحف شریف کا چھونا ، جنب کا مسجد میں جانا یا اذان (۴) ، اقامت، بے وضو کا مسجد میں جانا چاروں قسم کے لئے تیمم صحیح ہے اگر چہ نماز ان میں صرف اسی تیمم سے روا ہوگی جو قسم اول کی نیت سے کیا اور پانی (۱) ہونے کی حالت میں خاص اس عبادت فرض یا واجب یا سنت موکدہ کیلئے ہو کہ پانی سے طہارت کرے تو فوت ہو جائے اور اس کا کوئی بدل نہ ہو جیسے سلام وجواب سلام اور قول محقق واحوط پر نماز پنجگانہ وجمعہ میں محافظت وقت کما تقدم تحقیقیہ بمالا مزید علیہ (جیسا کہ اس کی تحقیق گزر چکی ہے جس پر اضافہ کی گنجائش نہیں۔ت)

ان دو صورتوں کے سوا اگر کسی دوسری نیت سے تیمم کیا مثلاً پانی نہ ہونے کی حالت میں بے وضو نے مسجد میں ذکر کیلئے بیٹھنے بلکہ مسجد میں سونے کیلئے کہ سرے سے عبادت ہی نہیں یا پانی ہوتے ہوئے سجدہ تلاوت یا

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) (۱) مقصودہ مشروطہ جیسے نماز و نماز جنازہ و سجدہ تلاوت و سجدہ شکر کہ سب مقصود بالذات ہیں اور سب کیلئے طہارت کاملہ شرط یعنی نہ حدث اکبر ہو نہ اصغر ۔ نیز یاد پر تلاوت قرآن مجید کہ مقصود بالذات ہے اور اس کیلئے صرف حدث اکبر سے طہارت شرط ہے بے وضو جائز ہے۔ (۲) مقصودہ غیر مشروطہ کہ ہو تو مقصود بالذات مگر اس کیلئے طہارت ضرور نہ ہو مطلقاً خواہ صغرٰی جیسے اسلام لانا سلام کرنا سلام کا جواب دینا سب مقصود بالذات ہیں اور ان کیلئے اصلاً طہارت شرط نہیں نیز یاد پر تلاوت قرآن مجید کہ اس کیلئے طہارت

صغریٰ یعنی با وضو ہونا ضرور نہیں۔ یہاں سے ظاہر ہوا کہ یاد پر تلاوت جنب کے اعتبار سے قسم اول میں ہے اور بے وضو کے اعتبار سے قسم دوم میں۔ (۳) غیر مقصودہ مشروطہ کہ ہو تو دوسری عبادت کا وسیلہ مگر بے طہارت جائز نہ ہو خواہ صرف طہارت کبریٰ شرط ہو یا کاملہ جیسے مصحف شریف کا چھونا کہ بے وضو بھی حرام ہے اور مسجد میں جانا کہ صرف حدث اکبر میں حرام اور حدث اصغر میں جائز ہے۔ (۴) غیر مقصودہ غیر مشروطہ کہ وسیلہ ہو اور طہارت شرط نہیں جیسے اذان واقامت کہ وسائل نماز ہیں اور جنب سے بھی صحیح اگرچہ اس کی اقامت زیادہ مکروہ ہے اور مسجد میں جانا کہ بے وضو جائز ہے۔ یہاں سے ظاہر ہوا کہ دخول مسجد جنب کے لحاظ سے قسم سوم میں ہے اور محدث کی نظر سے قسم چہارم میں۔ پانی نہ ہونے کی حالت میں چاروں قسموں کیلئے تیمم صحیح ہے اور نماز صرف اسی سے ہو سکے گی جو اس عام نیت تطہیر و رفع حدث سے کیا گیا یا خاص قسم اول کی نیت سے۔ واللہ تعالیٰ اعلم ۱۲ امنہ غفرلہ (م)

Performing tayammum for a prostration of gratitude (sajda shukr), touching the Mushaf, or for the five daily prayers or the Friday prayer while there is still time, or for a person in a state of ritual impurity (junub) to recite the Quran, would be futile, void, and impermissible because none of these would be missed without a substitute. Similarly, based on our research, performing tayammum for Tahajjud, Chasht, or the lunar eclipse prayer, even if their time is passing, as these are purely optional (nafl) and not emphasized sunnahs (sunnat-e-muakkada), then performing tayammum for visiting graves, visiting the sick, or for sleeping while water is available is even more futile.

[Table Header: Comparative Analysis] Arabic Column: As Allama Shami has researched, contrary to what occurred in al-Bahr and followed in al-Durr; and their reasoning uses something for which they have no evidence, as he explained. Although Halabi and Tahtawi followed them in it. May Allah the Almighty's mercy be upon them all, and upon us for their sake. Amen.

Urdu Column: As Allama Shami has researched, contrary to what is in al-Bahr al-Ra’iq and followed by al-Durr al-Mukhtar; and these two gentlemen used something as evidence for their stance in which there is no evidence for their stance, as Allama Shami explained. Although Halabi and Tahtawi also followed Bahr and Durr in this reasoning. May Allah the Almighty's mercy be upon all these gentlemen and upon us for their sake. Accept it. (T)

I say: From here it became clear that these things cannot be a contradiction to our definition, that someone might say 'Look, tayammum is valid for these and there is no inability to use water.' No, no, tayammum will only be valid where there is an inability to use water, even if it is in the sense that performing purification with water would cause a non-substitutable Shariah requirement to be missed; this is also a form of inability as previously mentioned. In 'Badai' of Malik al-Ulama (may his secret be sanctified), it is stated:

[Table Header: Ruling on Intention in Tayammum] Arabic Column: If one performed tayammum and intended absolute purification or intended the permissibility of prayer, then he may perform every action that is not permissible without purification. Likewise, if he performed tayammum for the prostration of recitation or the recitation of the Quran...

Urdu Column: If one performed tayammum with the intention of general purification or with the intention of attaining the permissibility of prayer, then with that tayammum, one can perform every action that is not permissible without purification. Similarly, if it was for the prostration of recitation or...

[Footer Note Section] Arabic Column: Note: i.e., from the denial of the generalization followed in al-Bahr and al-Durr, and restricting tayammum despite the presence of water to an emphasized requirement that is missed without a substitute. 12 [Ref] May Allah forgive him. (M)

Urdu Column: Meaning, by denying the stance of generalization adopted by the authors of al-Bahr and al-Durr al-Mukhtar, and by restricting tayammum in the presence of water to such an emphasized requirement which, if missed, has no substitute, it became clear. 12 [Ref] May Allah forgive him. (T)

फ़तावा रज़विया - जिल्द तीसरा

सजदा-ए-शुक्र, मुसहफ़ (क़ुरान) को छूने के लिए, या पाँचों वक़्त की नमाज़ों या जुमा की नमाज़ के लिए वक़्त की वुसअत के बावजूद, या जुनुब (नापाकी की हालत) में क़ुरान की तिलावत के लिए तयम्मुम करना लग़्व, बातिल और नाजायज़ होगा क्योंकि इनमें से कोई भी बे-बदल फ़ौत (छूट) नहीं होता था। इसी तरह हमारी तहक़ीक़ के मुताबिक़ तहज्जुद, चाश्त या चाँद ग्रहण की नमाज़ के लिए, अगरचे उनका वक़्त जा रहा हो, क्योंकि ये महज़ नफ़्ल हैं सुन्नत-ए-मुअक्कदा नहीं हैं, तो पानी की मौजूदगी में ज़ियारत-ए-क़ुबूर, बीमार की अयादत या सोने के लिए तयम्मुम करना बदरजा-ए-औला लग़्व है।

[तालिका: तुलनात्मक विश्लेषण] अरबी कॉलम: जैसा कि अल्लामा शामी ने इसकी तहक़ीक़ की है, उसके बरख़िलाफ़ जो 'बहर' में हुआ और 'दुर्र' में उसकी पैरवी की गई; और उनका इस्तदलाल ऐसी चीज़ से है जिसमें उनके लिए कोई दलील नहीं है जैसा कि उन्होंने बयान किया। हालाँकि हलबी और तहतावी ने भी इसमें उनकी पैरवी की है। अल्लाह तआला की रहमत उन सब पर हो और उनके तुफ़ैल हम पर भी। आमीन।

उर्दू कॉलम: जैसा कि अल्लामा शामी ने इसकी तहक़ीक़ की है, उसके बरख़िलाफ़ जो अल-बहरुल राइक़ में है और दुर्रे मुख़्तार ने भी इसकी पैरवी की है, और इन दोनों हज़रात ने अपने मौक़िफ़ के लिए ऐसी बात से इस्तदलाल (तर्क) किया जिसमें उनके मौक़िफ़ की कोई दलील नहीं, जैसा कि अल्लामा शामी ने बयान किया। अगरचे इस इस्तदलाल में हलबी और तहतावी ने भी बहर और दुर्र की पैरवी कर ली है, इन सभी हज़रात पर ख़ुदाए तआला की रहमत हो और उनके तुफ़ैल से हम पर भी। क़ुबूल फ़रमा। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): यहाँ से यह ज़ाहिर हुआ कि ये चीज़ें हमारी तारीफ़ पर नक़्ज़ (खंडन) नहीं हो सकतीं कि कोई कहे देखो इनके लिए तयम्मुम सही है और पानी से इज्ज़ (असमर्थता) नहीं। नहीं नहीं, तयम्मुम वहीं सही होगा जहाँ पानी से इज्ज़ है, अगरचे इसी तरह कि पानी से तहारत (पवित्रता) करने में मुतालबा-ए-शरइया बिला-बदल फ़ौत हुआ जाता है, यह भी सूरत-ए-इज्ज़ है जैसा कि गुज़र चुका। बदाए' मलिकुल उलेमा (क़ुद्दस सर्रहु) में है:

[तालिका: तयम्मुम में नियत का हुक्म] अरबी कॉलम: अगर उसने तयम्मुम किया और मुतलक़ तहारत की नियत की या नमाज़ की इजाज़त की नियत की, तो वह हर वह काम कर सकता है जो

तहारत के बिना जायज़ नहीं है। इसी तरह अगर उसने सजदा-ए-तिलावत या क़ुरान की तिलावत के लिए तयम्मुम किया...

उर्दू कॉलम: अगर तयम्मुम किया और मुतलक़ तहारत की नियत थी या नमाज़ का जवाज़ हासिल करने की नियत थी, तो उस तयम्मुम से हर उस अमल की अदायगी कर सकता है जो बग़ैर तहारत जायज़ नहीं। इसी तरह अगर सजदा-ए-तिलावत के लिए या...

[फ़ुटनोट अनुभाग] अरबी कॉलम: आ़: यानी उस तअमीम (सामान्यीकरण) के इंकार से जिस पर 'बहर' और 'दुर्र' में चला गया है, और पानी की मौजूदगी में तयम्मुम को ऐसे मुअक्कद मतलूब तक सीमित करने से जो बिना किसी विकल्प के फ़ौत हो जाए। १२ मिन्हु गुफ़र-लहू। (म)

उर्दू कॉलम: यानी तयम्मुम को आम रखने का जो मौक़िफ़ साहब-ए-बहर और दुर्रे मुख़्तार ने इख़्तियार किया है, उसका इंकार करने से और तयम्मुम को पानी मौजूद होने की हालत में ऐसे मुअक्कद मतलूब पर मुन्हसिर (निर्भर) करने से जो फ़ौत हो जाए तो उसका कोई बदल न हो, ज़ाहिर हुआ। १२ मिन्हु गुफ़र-लहू। (त)

पृष्ठ 558 का 756

سجدہ شکریہ مس مصحف یا باوجود وسعت وقت نماز پنجگانہ یا جمعہ یا جنب نے تلاوت قرآن کیلئے تیمم کیا لغو و باطل و ناجائز ہوگا کہ ان میں سے کوئی بے بدل فوت نہ ہوتا تھا، یونہی ہماری تحقیق پر تہجد یا چاشت یا چاند گہن کی نماز کیلئے اگرچہ ان کا وقت جاتا ہو کہ یہ نفل محض ہیں سنت مؤکدہ نہیں تو باوجود آب زیارت قبور یا عیادت مریض یا سونے کیلئے تیمم بدرجہ اولیٰ لغو ہے۔

[جدول: تقابلی تجزیہ] عربی کالم: كما حققه ش مخالفا وقع في البحر وتبعه في الدر واستدلاله بمالا دليل لهما فيه كما بينه هو وان تبعهما فيه ح وط رحمة الله تعالى عليهم اجمعين وعلينا بهم امين۔

اردو کالم: جیسا کہ علامہ شامی نے اس کی تحقیق کی ہے اس کے برخلاف جو البحر الرائق میں ہے اور درمختار نے بھی اس کی پیروی کی اور ان دونوں حضرات نے اپنے موقف کیلئے ایسی بات سے استدلال کیا جس میں ان کے موقف کی کوئی دلیل نہیں جیسا کہ علامہ شامی نے بیان کیا، اگرچہ اس استدلال میں حلبی وطحطاوی نے بھی بحر و در کی پیروی کر لی ہے ان سبھی حضرات پر خدائے تعالیٰ کی رحمت ہو اور ان کے طفیل ہم پر بھی۔ قبول فرما۔ (ت)

اقول: یہاں سے یہ ظاہر ہوا کہ یہ چیزیں ہماری تعریف پر نقض نہیں ہو سکتیں کہ کوئی کہے دیکھو ان کیلئے تیمم صحیح ہے اور پانی سے عجز نہیں۔ نہیں نہیں تیمم وہیں صحیح ہوگا جہاں پانی سے عجز ہے اگرچہ اسی طرح کہ پانی سے طہارت کرنے میں مطالبہ شرعیہ بلا بدل فوت ہوا جاتا ہے یہ بھی صورت عجز ہے کما تقدم (جیسا کہ گزر چکا۔ت) بدائع ملک العلماء قدس سرہ میں ہے:

[جدول: تیمم میں نیت کا حکم] عربی کالم: لوتیمم ونوی مطلق الطهارة اونوی استباحة الصلاة فله ان یفعل کل مالایجوز بدون الطهارة وکذالوتیمم لسجدة التلاوة اوالقراءة القران

اردو کالم: اگر تیمم کیا اور مطلق طہارت کی نیت تھی یا نماز کا جواز حاصل کرنے کی نیت تھی تو اس تیمم سے ہر اس عمل کی ادائیگی کر سکتا ہے جو بغیر طہارت جائز نہیں۔ اسی طرح اگر سجدہ تلاوت کیلئے یا...

[حاشیہ کا حصہ] عربی کالم: عہ ای من انکار التعمیم الذی مشی علیہ فی البحر والدر وحصر التیمم مع وجود الماء فی مطلوب مؤکد یفوت لا الی خلف ۱۲ منه غفرله (م)

اردو کالم: یعنی تیمم کو عام رکھنے کا جو موقف صاحب بحر و در مختار نے اختیار کیا ہے اس کا انکار کرنے سے اور تیمم کو پانی موجود ہونے کی حالت میں ایسے مؤکد مطلوب پر منحصر کرنے سے جو فوت ہو جائے تو اس کا کوئی بدل نہ ہو، ظاہر ہوا۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

“If he was in a state of ritual impurity (junub), it is permissible for him to pray all prayers with it (the Tayammum), because each of those is an intended act of worship. But if he performs Tayammum to enter the mosque or touch the Quran (Mushaf), it is not permissible for him to pray with it. It will serve as purification only for the specific act it was performed for, and not for anything else.” [1]

In *Radd al-Muhtar* it says: “In *Al-Bahr*, its condition is that one intends an intended act of worship... etc., or purification, or the permissibility of prayer, or the removal of minor impurity (hadath) or major impurity (janaba). Thus, according to the school of thought, the intention of just Tayammum is not sufficient. And the intention to differentiate between minor and major impurity is not a condition, unlike the opinion of Al-Jassas. The intention of Wudu (ablution) is also sufficient... etc.” [2]

In *Ad-Durr al-Mukhtar* it says: “A condition for Tayammum regarding the permissibility of prayer...” “Meaning, the condition of the prescribed intention in the Tayammum that makes prayer permissible. (m)”

Footnotes: 1. *Bada'i al-Sana'i*, Conditions of the Pillar of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/52. 2. *Radd al-Muhtar*, Chapter on Tayammum, Mustafa Al-Babi Press Egypt, 1/181.

"यदि वह अपवित्रता (जनाबत) की स्थिति में था, तो उसके लिए इससे (तयम्मुम से) सभी नमाज़ें पढ़ना जायज़ है, क्योंकि उनमें से प्रत्येक एक अभीष्ट इबादत (मक़सूदा) है। लेकिन यदि वह मस्जिद में प्रवेश करने या मुसहफ़ (कुरआन) को छूने के लिए तयम्मुम करता है, तो उसके लिए इससे नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है। यह उसी कार्य के लिए पवित्रता होगी जिसके लिए यह तयम्मुम किया गया है, और किसी अन्य कार्य के लिए पवित्रता नहीं बनेगी।" [1]

रद्द अल-मुह्तार में है: "अल-बहर में इसकी शर्त यह है कि अभीष्ट इबादत की नीयत हो... आदि। या पवित्रता की, या नमाज़ की अनुमति की, या ह़दथ (छोटी अपवित्रता) को दूर करने की, या जनाबत (बड़ी अपवित्रता) को दूर करने की नीयत हो। अतः मज़हब के आधार पर केवल तयम्मुम की नीयत पर्याप्त नहीं है। और ह़दथ और जनाबत के बीच भेद करने की नीयत शर्त नहीं है, जस्सास इसके विरुद्ध हैं, और वज़ू की नीयत भी पर्याप्त है... आदि।" [2]

दुर्रे मुख़्तार में है: "नमाज़ की अनुमति के अधिकार में तयम्मुम के लिए ऐसी शर्त..." "यानी नमाज़ को जायज़ करने वाले तयम्मुम में मशरूत (शर्तयुक्त) नीयत की शर्त। (म)"

पाद टिप्पणियाँ: 1. बदाए अस-सनाए, तयम्मुम के रुक्न की शर्तें, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/52। 2. रद्द अल-मुह्तार, बाब अत्-तयम्मुम, मतबा मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/181।

بأن كان جنبا جاز له ان يصلى به سائر الصلوات لان كل واحد من ذلك عبادة مقصودة فاما اذا تيمم لدخول المسجد اومس المصحف لايجوزله ان يصلى به ويقع طهور الماء اوقعه له لا غير۱۸1۔ تلاوت قرآن کیلئے تیمم کیا اس وجہ سے کہ حالتِ جنابت میں تھا تو وہ اس تیمم سے ساری نمازیں پڑھ سکتا ہے اس لئے کہ ان میں ہر ایک عمل عبادت مقصودہ ہے لیکن جب مسجد میں داخل ہونے یا مصحف چھونے کے لئے تیمم کرے تو اس تیمم سے نماز کی ادائیگی جائز نہیں جس عمل کے لئے یہ تیمم کیا ہے اس کیلئے تو وہ طہارت ہوگا مگر کسی اور عمل کیلئے طہارت نہ بن سکے گا۔ (ت)

ردالمختار میں ہے : في البحر شرطها عه ان ينوى عبادة مقصودة۔الخ او الطهارة اواستباحة الصلاة ورفع الحدث او الجنابة فلا تكفى نية التيمم على المذهب ولا تشترط نية التمييز بين الحدث والجنابة خلافا للجصاص اهـ وتكفي نية الوضوء۱۸2 الخ۔ البحر الرائق میں ہے اس کی شرط یہ ہے کہ عبادت مقصودہ کی نیت ہو الخ۔ یا طہارت یا جواز نماز یا رفع حدث یا رفع جنابت کی نیت ہو۔ تو بربنائے مذہب محض تیمم کی نیت کافی نہیں۔ اور حدث و جنابت کے درمیان تمیز و تفریق کی نیت شرط نہیں، جصاص اس کے خلاف ہیں اھ اور وضو کی نیت بھی کافی ہے الخ۔ (ت)

درِ مختار میں ہے : شرط للتيمم في حق جواز الصلاة جوازِ نماز کے حق میں تیمم کیلئے ایسی عه: اى شرط النية المشروطة في التيمم المبيح للصلاة ۱۲ منہ غفرلہ۔ (م) یعنی نماز کو جائز کرنے والے تیمم میں مشروط نیت کی شرط ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

حواشی: 1 بدائع الصنائع شرائط رکن التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۵۲ 2 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفٰی البابی مصر ۱/ ۱۸۱

Fatawa Rizvia, Volume 3

With the intention of a specific act of worship that is not permissible without [ritual purity]. | Making an intention for a specific act of worship is a condition, which is not valid without ritual purity.

Note: Following this in *Al-Durr [al-Mukhtar]*: Even if it is a funeral prayer or a prostration of recitation, but according to the most correct opinion, not the prostration of gratitude (Shukr) [1]. Al-Shami stated: This is based on the opinion of Imam al-A'zam [Abu Hanifa] that the prostration of gratitude is disliked (Makruh). However, the *Sahibayn* [Imams Abu Yusuf and Muhammad] hold the view that it is recommended (Mustahabb), and their opinion is the one upon which fatwa is given. Therefore, based on this opinion, Tayammum for it should be valid, and the prayer performed with it should also be valid. Halabi has explained this. Similarly, Tahtawi also upheld this, so these three masters (Sayyid Halabi, Sayyid Tahtawi, Sayyid Shami) are in agreement on this.

I say: The statement "should be [valid]" indicates that it is his own scholarly inquiry (bahth). I have seen it quoted in *Al-Hindiyyah* from *Al-Dhakhirah*, and in *Al-Bahr* from *Al-Tawshih*. The wording of the former two is: "If one performs Tayammum for the prostration of gratitude, according to the opinion of Abu Hanifa and Abu Yusuf, he cannot perform the obligatory (fard) prayer with that Tayammum. But according to Muhammad, he can perform it, based on the fact that the prostration is an act of closeness (qurbah) according to Muhammad, contrary to their view" [3]. And the wording of the latter two is: "If one performs Tayammum for the prostration of gratitude, he cannot perform the obligatory prayer with it, but according to Muhammad, he may perform it based on it being..." (continued on the next page).

1. *Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami*, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/181.
2. *Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami*, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/181.
3. *Fatawa Hindiyyah*, First Chapter on Tayammum, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/26.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

बि निय्यति इबादतिन मक़सूदातिन ला तहिल्लु बिदूना | इबादते मक़सूदा की नियत करना शर्त है जो बिग़ैर तहारत (जायज़ नहीं)

नोट: इसके बाद दुर्रे मुख़्तार में है: यह इबादत अगरचे नमाज़े जनाज़ा या सजदये तिलावत ही हो मगर असह् (सबसे सही) क़ौल की बुनियाद पर सजदये शुक्र नहीं। अल्लामा शामी ने कहा सजदये शुक्र की नफ़ी इमामे आज़म के इस क़ौल की बुनियाद पर है कि सजदये शुक्र मकरूह है लेकिन साहिबैन इसके मुस्तहब होने के क़ायल हैं और उनका क़ौल मुफ़्ता-बिही (जिस पर फ़तवा है) है तो इस क़ौल की बुनियाद पर इसके लिए तयम्मुम सही होना चाहिए और इससे नमाज़ भी सही होनी चाहिए। हलबी ने यह अफ़ादा फ़रमाया। इसी तरह तहतावी ने भी इसे बरक़रार रखा तो ये तीनों हज़रात (सैय्यद हलबी, सैय्यद तहतावी, सैय्यद शामी) इस पर मुत्तफ़िक़ ठहरे।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): हलबी की इबारत "सही होना चाहिए" यह बताती है कि यह ख़ुद उनकी बहस है और मैंने देखा कि इसे हिन्दिया में ज़ख़ीरा से और बहर में तौशीह से नक़ल किया गया है। हिन्दिया व ज़ख़ीरा के अल्फ़ाज़ ये हैं: "अगर सजदये शुक्र के लिए तयम्मुम किया तो इमाम अबू हनीफ़ा व इमाम अबू यूसुफ़ के क़ौल पर इस तयम्मुम से नमाज़े फ़र्ज़ की अदायगी नहीं कर सकता और इमाम मोहम्मद के नज़दीक उससे नमाज़े फ़र्ज़ पढ़ सकता है इस बुनियाद पर कि इमाम मोहम्मद के नज़दीक — बखिलाफ़े शैख़ैन — सजदये शुक्र क़ुर्बत (पुण्य कार्य) है।" और बहर व तौशीह के अल्फ़ाज़ ये हैं: "अगर सजदये शुक्र के लिए तयम्मुम किया तो उससे नमाज़े फ़र्ज़ (बाक़ी अगले सफ़हे पर)"

1. दुर्रे मुख़्तार मअ शामी, बाबुत्तयम्मुम, मतबआ मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/181
2. दुर्रे मुख़्तार मअ शामी, बाबुत्तयम्मुम, मतबूआ मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/181
3. फ़तावा हिन्दिया, अल-फ़स्लुल अव्वल मिनत्तयम्मुम, मतबूआ नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 1/26

सफ़्हा 560 / 756

فتاوی رضویہ جلد سوم به نية عبادة مقصودة لا تحل بدون | عبادة مقصودة کی نیت کرنا شرط ہے جو بغیر طہارت عه: بعده في الدر ولو صلاة جنازة اوسجدة تلاوة لا شكر في الاصح 1 اهـ- قال ش هذا بناء على قول الامام انها مكروهة اما على قولهما المفتى به انها مستحبة فينبغي صحته وصحة الصلاة به افاده ح 2 اهـ وكذا اقره ط فاجتمع عليه السادة الثلثه- اس کے بعد در مختار میں ہے : یہ عبادت اگرچہ نماز جنازہ یا سجدہ تلاوت ہی ہو مگر اصح قول کی بنیاد پر سجدہ شکر نہیں اهـ- علامہ شامی نے کہا سجدہ شکر کی نفی امام اعظم کے اس قول کی بنیاد پر ہے کہ سجدہ شکر مکروہ ہے لیکن صاحبین اس کے مستحب ہونے کے قائل ہیں اور ان کا قول مفتی بہ ہے تو اس قول کی بنیاد پر اس کیلئے تیمم صحیح ہونا چاہئے اور اس سے نماز بھی صحیح ہونی چاہئے۔ حلبی نے یہ افادہ فرمایا اهـ- اسی طرح طحطاوی نے بھی اسے برقرار رکھا تو یہ تینوں حضرات (سید حلبی، سید طحطاوی، سید شامی) اس پر متفق ٹھہرے۔ اقول: قوله ينبغي يدل انه بحث منه وقد رأيته منقولا في الهندية عن الذخيرة وفى البحر عن التوشيح ولفظ الاولين لوتيمم لسجدة الشكر على قول ابى حنيفة وابى يوسف لا يصلى المكتوبة بذلك التيمم وعند محمد يصلى بناء على ان السجدة قربة عند محمد خلافا لهما 3 اهـ- ولفظ الاخيرين لوتيمم لسجدة الشكر لا يصلى به المكتوبة وعند محمد يصليها بناء على انها اقول: حلبی کی عبارت "صحیح ہونا چاہئے" یہ بتاتی ہے کہ یہ خود ان کی بحث ہے اور میں نے دیکھا کہ اسے ہندیہ میں ذخیرہ سے اور بحر میں توشیح سے نقل کیا ہے۔ ہندیہ و ذخیرہ کے الفاظ یہ ہیں: "اگر سجدہ شکر کیلئے تیمم کیا تو امام ابو حنیفہ و امام ابو یوسف کے قول پر اس تیمم سے نماز فرض کی ادائیگی نہیں کر سکتا اور امام محمد کے نزدیک اس سے نماز فرض پڑھ سکتا ہے اس بنیاد پر کہ امام محمد کے نزدیک۔ بخلاف شیخین۔ سجدہ شکر قربت ہے اهـ- اور بحر و توشیح کے الفاظ یہ ہیں: "اگر سجدہ شکر کے لئے تیمم کیا تو اس سے نماز فرض (باقی بر صفحہ آئندہ) 1

الدر المختار مع الشامي باب التيمم مطبع مصطفى البابى مصر ١/ ١٨١ 2 الدر المختار مع الشامي باب التيمم مطبوعہ مصطفى البابى مصر ١/ ١٨١ 3 فتاوى ہنديہ الفصل الاول من التيمم مطبوعہ نورانى كتب خانہ پشاور ١/ ٢٦ Page 560 of 756

Fatawa Razawiyya | Volume Three Purity: Initiating and returning the greeting (Salam), and the validity of tayammum.

(Remainder of the footnote from the previous page): ...it is an act of proximity (worship) according to him (Imam Muhammad), and according to them (Abu Hanifa and Abu Yusuf), it is not an act of proximity. [1] I say: The word "obligatory prayer" is not a restriction (the ruling for voluntary prayers or other acts of worship will be the same), as is not hidden. Furthermore, in both accounts, there is a contradiction to what was mentioned regarding attributing the desirability (istihbab) of prostration of gratitude to the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad). However, a similar statement is found in 'Al-Ghunya' citing 'Al-Musaffi'. Thus, there are two narrations from Imam Abu Yusuf on this matter. I say: It is surprising how the commentator (the author of Durr al-Mukhtar) declares the negation of the prostration of gratitude as "more correct" (asah), while his own statement exists saying: "Prostration of gratitude is desirable, and the fatwa is issued according to this." There is no doubt that the fatwa on the desirability of the prostration of gratitude is also a fatwa on the permissibility of performing prayer with a tayammum performed for that prostration. It is stated in 'Al-Ghunya' from 'Al-Musaffi' that they (the two companions) said: "It is an act of proximity for which one is rewarded." This is indicated by the apparent wording, and the result of this disagreement appears in the matter of the nullification of purity.

Footnote: 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/150. Page 561 of 756

फतवा रज़विया | खंड तीन शुद्धता: सलाम करना और उसका जवाब देना, और तयम्मुम की वैधता।

(पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेष): ...उनके(इमाम मुहम्मद) अनुसार यह एक इबादत (क़ुरबत) है, और उन दोनों (इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू युसूफ) के अनुसार यह इबादत नहीं है। [1] मैं कहता हूँ: "फ़र्ज़ नमाज़" शब्द कोई पाबंदी नहीं है (नफ़्ल नमाज़ या अन्य इबादतों के लिए भी यही हुक्म होगा), जैसा कि गुप्त नहीं है। इसके अलावा, दोनों ही वृत्तांतों में उस बात के विपरीत है जो उन्होंने दोनों साथियों (इमाम अबू युसूफ और इमाम मुहम्मद) के लिए मुस्तहब (पसंदीदा) होने के संबंध में उल्लेख किया है। लेकिन 'अल-गुनिया' में 'अल-मुसफ्फ़ी' के हवाले से ऐसा ही लिखा है। अतः इमाम अबू युसूफ से इस बारे में दो रिवायतें (वर्णन) हैं। मैं कहता हूँ: यह आश्चर्य की बात है कि टीकाकार (दुर्र अल-मुख्तार के लेखक) ने शुक्र के सजदे के निषेध को "अधिक सही" (अस़ह) कैसे करार दिया, जबकि उनका अपना कथन मौजूद है कि: "शुक्र का सजदा मुस्तहब है और इसी पर फतवा दिया जाता है।" इसमें कोई संदेह नहीं है कि शुक्र के सजदे के मुस्तहब होने पर फतवा इस बात पर भी फतवा है कि उस सजदे के लिए किए गए तयम्मुम से नमाज़ पढ़ना जायज़ है। 'अल-गुनिया' में 'अल-मुसफ्फ़ी' के हवाले से है कि उन दोनों (साहबैन) ने कहा: "यह एक इबादत है जिस पर सवाब मिलता है।" इबारत का ज़ाहिरी अंदाज़ इसी की ओर इशारा करता है, और इस मतभेद का फल तहारत (शुद्धता) के टूटने के मामले में ज़ाहिर होता है।

फुटनोट: 1. अल-बहर अल-राईक़, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/150. पृष्ठ 561 / 756

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) قربة عنده وعند هما ليست بقربة اھ 1 جائز نہیں۔ اس قید سے سلام و جواب سلام (کی نیت سے) کی ادائیگی نہیں کر سکتا اور امام محمد کے نزدیک اس سے فرض نماز پڑھ سکتا ہے یہ اس بنیاد پر کہ سجدہ شکر امام محمد کے نزدیک قربت ہے اور شیخین کے نزدیک قربت نہیں اھ اقول: والمكتوبة غير قيد كما لا يخفى ثم فيهما خلاف ما ذكروا من نسبة الاستحباب الى الصاحبين لكن مثله في الغنية عن المصفى فاذن عن ابي يوسف روايتان۔ اقول: "نماز فرض" کا لفظ قید نہیں (نماز نفل یا دوسری عبادت کی ادائیگی کا بھی یہی حکم ہو گا) جیسا کہ مخفی نہیں پھر (غور طلب بات یہ ہے کہ) دونوں ہی عبارتوں میں اس کے برخلاف ہے جو علما نے ذکر کیا ہے کہ سجدہ شکر کا مستحب ہونا صاحبین کا قول ہے لیکن غنیہ میں بھی مصفی کے حوالہ سے اسی کے مثل لکھا ہوا ہے جب ایسا ہے تو اس مسئلہ میں امام ابو یوسف سے دو روایتیں ہیں۔ اقول: والعجب من الشارح كيف يجعل النفى اصح مع قوله سجدة الشكر مستحبة به يفتى اھ ولاشك ان الفتوى على هذا فتوى على جواز الصلاة بتيمم فعل لها قال الغنية عن المصفى قالا هو قربة يثاب عليه وعليه يدل ظاهر النظم وثمرة الاختلاف تظهر في انتقاض الطهارة۔ اقول: شارح (صاحب در مختار) پر تعجب ہے کہ سجدہ شکر کی نفی کو انہوں نے اصح کیسے قرار دیا جب کہ خود ان کی عبارت موجود ہے کہ "سجدہ شکر مستحب ہے اسی پر فتوٰی دیا جاتا ہے اھ ۔ اور اس میں شک نہیں کہ سجدہ شکر کے استحباب پر فتوٰی اس پر بھی فتوٰی ہے کہ اس کی ادائیگی کیلئے جو تیمم کیا گیا ہو اس سے نماز جائز ہے۔ غنیہ میں مصفی کے حوالہ سے ہے: "صاحبین نے فرمایا: سجدہ شکر قربت ہے جس پر ثواب (باقی بر صفحہ آئندہ)

حاشیہ: 1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۵۰ Page 561 of 756

Fatawa Razawiya - Volume 3

(The Tayammum performed) was excluded, and the Tayammum of one in a state of Janaba (major ritual impurity) with the intention of Wudu (minor ritual purity) is valid. This is what the fatwa is given on. (T) - 1

In Radd al-Muhtar it is stated: "His statement regarding the permissibility of prayer — but regarding the validity of Tayammum itself, the intention for the specific action for which Tayammum was intended is sufficient, whichever act of worship it may be; this is in the case when water is unavailable and when water is present..."

(Remainder of the footnote from the previous page) ...it will be. And from the outward order of the text, this same thing is known. And the fruit of the disagreement will be apparent in these two issues: (1) If one falls asleep during the prostration of gratitude (Sajda al-Shukr), will the ritual purity be broken or not? (2) If one performs Tayammum for the purpose of offering the prostration of gratitude, will the performance of prayer with that Tayammum be permissible or not? "Ah" — Meaning, in the first issue, Imam Muhammad's response would be that it will not be broken, and in the second, the response would be that the prayer will be permissible; and the Imam's (Abu Hanifa) response would be the opposite. I say: We have researched in our treatise "Nabbih al-Qawm anna al-Wudu' min ayyi Nawm" (1325 AH) that postures (Hay'at) are taken into account absolutely. Based on this, no disagreement will appear in the first issue (meaning, whether this prostration is an act of closeness/worship or not, sleeping in this posture does not break ritual purity, so there will be one answer according to both views). And Allah Almighty knows best. (T)

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/181

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

(किया गया तयम्मुम) बाहर हो गया और वुज़ू की नीयत से जनाबत (बड़ी नापाकी) वाले का तयम्मुम सही है। इसी पर फ़तवा दिया जाता है। (त) - 1

रद्द अल-मुह्तार में है: "नमाज़ की जायज़ होने के बारे में उनका कथन — लेकिन स्वयं तयम्मुम की शुद्धता के बारे में, उसी कार्य की नीयत पर्याप्त है जिसके लिए तयम्मुम का इरादा किया गया था, चाहे वह कोई भी इबादत हो; यह उस स्थिति में है जब पानी उपलब्ध न हो और पानी मौजूद..."

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग) ...होगा। और इबारत के ज़ाहिर से भी यही मालूम होता है। और मतभेद का फल इन दो मसलों में ज़ाहिर होगा: (१) यदि कोई शुक्र के सजदे में सो जाए, तो क्या तहारत (पवित्रता) टूटेगी या नहीं? (२) शुक्र के सजदे की अदायगी के लिए तयम्मुम करे, तो उस तयम्मुम से नमाज़ की अदायगी जायज़ होगी या नहीं? "अह" — यानी पहले मसले में इमाम मुहम्मद का जवाब यह होगा कि नहीं टूटेगी और दूसरे में यह जवाब होगा कि नमाज़ जायज़ होगी; और इमाम साहब (अबू हनीफ़ा) का जवाब इसके बरअक्स (विपरीत) होगा। मैं कहता हूँ: हमने अपने रिसाले "नब्बिह अल-क़ौम अन अल-वुज़ू मिन अय्यि नौम" (१३२५ हिजरी) में तहक़ीक़ (शोध) की है कि मुतलक़न (बिना शर्त) हय्यात (शारीरिक स्थितियों) का एतबार है। इसकी बुनियाद पर पहले मसले में कोई इख़्तिलाफ़ (भेद) ज़ाहिर न होगा (यानी यह सजदा क़ुर्बत हो या न हो, इस हय्यत पर सोने से तहारत नहीं टूटती, अतः दोनों ही क़ौल पर एक ही जवाब होगा)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

---

1 रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-तयम्मुम, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, १/१८१

ہونے والا تیمم) خارج ہو گیا اور وضو کی نیت سے جنابت والے کا تیمم صحیح ہے۔ اسی پر فتوٰی دیا جاتا ہے۔ (ت) - 1

رد المحتار میں ہے: قولہ فی حق جواز الصلاۃ اما فی حق صحتہ لنفسہ فتکفی نیۃ ما قصدہ لاجلہ ای عبادۃ کانت عند فقد الماء وعند وجودہ اس کا قول جوازِ نماز کے حق میں _ لیکن خود صحتِ تیمم کے حق میں تو اسی عمل کی نیت کافی ہے جس کے لئے تیمم کا قصد کیا خواہ وہ کوئی عبادت ہو یہ اُس صورت میں ہے جب پانی نہ ہو اور پانی موجود

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) اذا نام فی سجود الشکر وفیما اذا تیمم لسجدۃ الشکر ھل تجوز الصلاۃ بہ اھ ای فجواب محمد فی الاولی لافی الثانیۃ نعم وجواب الامام بالعکس۔ ہوگا۔ اور نظم کے ظاہر سے بھی یہی معلوم ہوتا ہے۔ اور ثمرہ اختلاف ان دو مسئلوں میں ظاہر ہوگا: (۱) سجدہ شکر میں سو جائے تو طہارت ٹوٹے گی یا نہیں؟ (۲) سجدہ شکر کی ادائیگی کیلئے تیمم کرے تو اس تیمم سے نماز کی ادائیگی جائز ہوگی یا نہیں؟ اہ " یعنی پہلے مسئلہ میں امام محمد کا جواب یہ ہوگا کہ نہیں ٹوٹے گی اور دوسرے میں یہ جواب ہوگا کہ نماز جائز ہوگی اور امام صاحب کا جواب برعکس ہوگا۔ اقول: ہم نے اپنے رسالہ "نبہ القوم ان الوضوء من ایّ نوم" (۱۳۲۵ھ) میں تحقیق کی کہ مطلقاً ہیئات کا اعتبار ہے اس کی بنیاد پر پہلے مسئلہ میں کوئی اختلاف ظاہر نہ ہوگا (یعنی یہ سجدہ قربت ہو یا نہ ہو اس ہیئت پر سونے سے طہارت نہیں ٹوٹتی تو دونوں ہی قول پر ایک جواب ہوگا ۱۲ م الف) واللہ تعالٰی اعلم ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

---

1 ردالمختار، باب التیمم، مطبع مصطفٰی الباب مصر، ۱/۱۸۱

Volume 3 Fatawa Razawiyya

(Arabic): It is valid for an act of worship that expires and has no replacement. | (Urdu): In the case [of performing Tayammum], the intention for an act of worship is a condition for the validity of Tayammum if that worship would be missed [without it] and there is no replacement for it. (T)

In Durr-ul-Mukhtar it is stated: (Arabic): They said: If one performs Tayammum to enter a mosque, or to recite the Quran, even if from a Mushaf, or to touch it, write it, teach it, visit graves, visit the sick, bury the deceased, call Adhan or Iqamah, accept Islam, give greetings (Salam) or respond to them, prayer is not permissible with it. This is according to Fatawa al-Ramli, and its apparent meaning is that it is permissible to perform those specific acts. | (Urdu): Scholars have stated: Entering the mosque, reciting the Quran even if from a Mushaf, touching the Quran, writing it, teaching it, visiting graves, visiting the sick, burying the dead, Adhan, Iqamah, Islam, greeting (Salam), responding to Salam—if Tayammum was performed for these matters, then performing prayer with it is not permissible. According to Fatawa al-Ramli, its apparent meaning is that performing these specific matters itself is permissible. (T)

In Radd-ul-Muhtar it is stated: (Arabic): Tayammum for these mentioned things, for which purification is not a condition, is valid in itself. It is permissible to do it when water is unavailable, otherwise not. Yes, what is feared to be missed without a replacement among these mentioned things is permissible even when water is available. | (Urdu): For these aforementioned acts for which purification is not a condition, Tayammum is correct in itself, which is permissible when water is not available, but not permissible when water is available. However, among these matters, that for which there is no replacement...

(Arabic): ...such as giving or returning Salam. I say: Burial could sometimes be part of this, meaning the commanded haste when delay is feared for the deceased, and visiting the sick could also be part of it when the situation is severe. 12 Minhu Ghafarahu (M) | (Urdu): ...such as Salam and responding to Salam. I say: Burial can also come into this at times, meaning the haste in burial which is commanded when there is a risk for the deceased in staying, and visiting the sick can also be included in this when the patient's condition is serious. 12 Minhu Ghafarahu (T)

1. Radd-ul-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Printing Press, Egypt, 1/181.

2. Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Printing Press, Egypt, 1/179.

जिल्द 3 फ़तावा रज़विया

(अरबी): यह उस इबादत के लिए सही है जो खत्म हो जाए और उसका कोई विकल्प न हो। | (उर्दू): तैयमुम की स्थिति में, तैयमुम की वैधता के लिए ऐसी इबादत की नीयत शर्त है जो छूट जाए [उसके बिना] और उसका कोई विकल्प न हो। (त)

दुर-ए-मुख्तार में है: (अरबी पाठ): उन्होंने कहा: यदि कोई मस्जिद में प्रवेश करने, या कुरान पढ़ने के लिए तैयमुम करता है, चाहे वह मुसहफ़ से हो, या उसे छूने, लिखने, सिखाने, कब्रों की ज़ियारत करने, बीमार की मिज़ाजपुर्सी करने, मृतक को दफनाने, अज़ान या इक़ामत देने, इस्लाम स्वीकार करने, सलाम करने या उसका जवाब देने के लिए, तो इससे नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है। यह फ़तावा अल-रमली के अनुसार है, और इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि उन विशिष्ट कार्यों को करना जायज़ है। | (उर्दू अनुवाद): उलेमा ने फरमाया है: मस्जिद में दाखिल होना, कुरान पढ़ना, चाहे मुसहफ से पढ़े, कुरान को छूना, लिखना, सिखाना, ज़ियारत-ए-कुबूर, अयादत-ए-मरीज़ (बीमार की देखभाल), दफ़्न-ए-मय्यत, अज़ान, इक़ामत, इस्लाम, सलाम, जवाब-ए-सलाम - अगर इन उमूर (मामलों) के लिए तैयमुम किया तो उससे नमाज़ की अदायगी जायज़ नहीं है। फ़तावा रम्ली के अनुसार इसका ज़ाहिर (स्पष्ट अर्थ) यह है कि खुद इन उमूर की अदायगी जायज़ है। (त)

रद-उल-मुख्तार में है: (अरबी पाठ): इन उल्लिखित चीज़ों के लिए तैयमुम, जिनके लिए पाकी शर्त नहीं है, अपने आप में सही है। पानी न होने पर इसे करना जायज़ है, अन्यथा नहीं। हाँ, इन उल्लिखित चीज़ों में से जिनके बिना किसी विकल्प के छूट जाने का डर हो, पानी की मौजूदगी में भी जायज़ हैं। | (उर्दू अनुवाद): ये मज़कूर (उल्लिखित) अफ़आल (काम) जिनमें पाकी की शर्त नहीं है, उनके लिए तैयमुम फ़ी नफ़्सा (अपने आप में) दुरुस्त है जो पानी न मिलने के वक़्त जायज़ है मगर पानी होते हुए जायज़ नहीं, हाँ इन उमूर में से वह जिसके बारे में किसी बदल (विकल्प) के..

(अरबी पाठ): ...जैसे सलाम देना और उसका जवाब देना। मैं कहता हूँ: दफ़न भी कभी इसमें आ सकता है, यानी हुक्म दी गई जल्दी जब मृतक के रुकने में ख़तरा हो, और बीमार की देखभाल भी इसमें शामिल हो सकती है जब बीमार की हालत गंभीर हो। 12 मिन्हु गुफ़रहु (म) | (उर्दू अनुवाद): ...जैसे सलाम और जवाब-ए-सलाम। अक़ूल (मैं कहता हूँ): इसमें दफ़न भी किसी वक़्त आ सकता है यानी तअजील-ए-दफ़्न (जल्द दफ़न) जिसका उस वक़्त हुक्म दिया गया है जब ठहरने की

सूरत में मय्यत के लिए ख़तरा हो और मरीज़ की अयादत भी इसमें शामिल हो सकती है जब बीमार का हाल संगीन हो। 12 मिन्हु गुफ़रहु (त)

1. रद उल मुहतार, बाब अत-तैयमुम, मुतबा मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/181
2. अल-दुर्र अल-मुख्तार म'अ अल-शामी, बाब अत-तैयमुम, मुतबा मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/179

पृष्ठ 563 का 756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

یصح بعبادۃ تفوت لا الی خلف[1]۔ | ہونے کی صورت میں صحتِ تیمم کیلئے ایسی عبادت کی نیت شرط ہے جو فوت ہوجائے تو اس کا کوئی بدل نہ ہو۔(ت)

درِ مختار میں ہے: قَالُوا لو تیمّم لدخول مسجد او قراءۃ و لومن مصحف او مسّہ کتابتہ تعلیمہ زیارۃ قبور عیادۃ مریض دفن میت اذان اقامۃ اسلام سلام ردہ لم تجز الصلوۃ بہ فتاوی الرملی وظاھرہ انہ یجوز فعل ذلك[2]۔ | علماء نے فرمایا ہے: مسجد میں داخل ہونا، قرآن پڑھنا، اگرچہ مصحف سے پڑھے، قرآن چھونا، لکھنا، سکھانا، زیارتِ قبور، عیادتِ مریض، دفنِ میت، اذان، اقامت، اسلام، سلام، جوابِ سلام اگر ان امور کے لئے تیمم کیا تو اس سے نماز کی ادائیگی جائز نہیں فتاویٰ رملی_اس کا ظاہر یہ ہے کہ خود ان امور کی ادائیگی جائز ہے۔(ت)

ردالمختار میں ہے: التیمّم لھذہ المذکورات التی لاتشترط لھا الطھارۃ صحیح في نفسہ یجوز فعلہ عند فقد الماء والا فلا نعم ما عہ یخاف فوتہ بلا بدل من ھذہ المذکورات یجوز مع وجود | یہ مذکورہ افعال جن میں طہارت کی شرط نہیں ہے ان کے لئے تیمم فی نفسہ درست ہے جو پانی نہ ملنے کے وقت جائز ہے مگر پانی ہوتے ہوئے جائز نہیں، ہاں ان امور میں سے وہ جس کے بارے میں کسی بدل کے

عہ کسلام و ردہ اقول: قد یکون منہ الدفن اعنی تعجیل المامور بہ اذا خیف علی المیت فی المکث وقد یکون منہ عیادۃ المریض اذا اشتد الامر علیہ ۱۲ منہ غفرلہ۔ (م) | جیسے سلام و جوابِ سلام _ اقول: اس میں دفن بھی کسی وقت آسکتا ہے یعنی تعجیلِ دفن جس کا اس وقت حکم دیا گیا ہے جب ٹھہرنے

کی صورت میں میت کے لئے خطرہ ہو اور مریض کی عیادت بھی اس میں شامل ہو سکتی ہے جب بیمار کا حال سنگین ہو۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۸۱ 2 الدر المختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۹

Fatawa Razawiyya, Volume 3

Summary regarding Water: Performing Tayammum (dry ablution) is permissible even if water is available, if there is a fear of missing [a prayer or act]. (T)

In Durr-ul-Mukhtar, from Munya and its commentary: "One's Tayammum for entering a mosque or touching the Quran while water is present is nothing; rather, it is invalid because these are not acts of worship for which one fears missing out." (Entering a mosque etc. is not an act of worship where there is a fear of it being missed permanently. (T))

In Radd-ul-Muhtar: "The reason given in Sharh al-Munya is what the commentator mentioned, and that Tayammum is only permissible and recognized in Sharia when water is physically or legally unavailable, and neither condition was met." (In Sharh al-Munya, the reason given is the same as mentioned by the commentator, that in Sharia, the permissibility and validity of Tayammum exist only when water is physically or legally absent, and both conditions...)

Commentary by the author (A'la Hazrat): "I say: The reason given was this. As for the absence of fear of missing [the act], he used it as evidence for his claim that neither of the two conditions was met. This is because water is physically present and the ability to use it exists. Water is only considered legally absent due to the fear of missing out on an act, and here there is no fear. Thus, it becomes clear that it is incorrect to treat these as two independent reasons in reality as well. (Author, may he be forgiven)."

Footnotes: 1. Ad-Durr al-Mukhtar with Ash-Shami, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi Printing Press, Egypt, 1/180. 2. Ad-Durr al-Mukhtar with Ash-Shami, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi Printing Press, Egypt, 1/179.

Page 564 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

जल के संबंध में संक्षेप: यदि [प्रार्थना आदि] छूट जाने का डर हो, तो पानी उपलब्ध होने पर भी तयम्मुम (शुष्क वज़ू) करना जायज़ है। (त)

दुर-ए-मुख़्तार में मुन्यः और उसकी व्याख्या से उद्धृत है: "पानी की उपलब्धता के दौरान मस्जिद में प्रवेश करने या क़ुरआन को छूने के लिए तयम्मुम करना कुछ भी नहीं है, बल्कि यह अमान्य है क्योंकि ये ऐसी इबादतें नहीं हैं जिनके छूट जाने का डर हो।" (मस्जिद में प्रवेश करना आदि ऐसी इबादत नहीं है जिसके हमेशा के लिए छूट जाने की आशंका हो। (त))

रद-उल-मुह्तार में है: "शरह अल-मुन्यः में इसका कारण वही बताया गया है जिसका उल्लेख व्याख्याकार ने किया है, और यह कि शरीयत में तयम्मुम की अनुमति और मान्यता तभी होती है जब पानी वास्तव में या कानूनी तौर पर उपलब्ध न हो, और यहाँ दोनों में से कोई भी स्थिति नहीं थी।" (शरह अल-मुन्यः में इसका कारण वही बताया गया है जो व्याख्याकार ने ज़िक्र किया, और यह कि शरीयत में तयम्मुम का जाइज़ होना और उसका एतबार उस समय है जब पानी हक़ीक़तन या हुक्मन मौजूद न हो, और यहाँ दोनों बातें...)

लेखक की टिप्पणी (आला हज़रत): "मैं कहता हूँ: शरह अल-मुन्यः में केवल यही एक कारण बताया गया है। और छूट जाने के डर के न होने का ज़िक्र उन्होंने अपने इस दावे के प्रमाण के रूप में किया है कि 'दोनों बातों में से एक भी नहीं पाई गई'। यह इसलिए है क्योंकि पानी वास्तव में मौजूद है और उसके उपयोग की शक्ति भी है। पानी केवल काम के छूट जाने के डर के समय ही कानूनी तौर पर अनुपस्थित माना जाता है, और यहाँ कोई डर नहीं है (तो कानूनी तौर पर भी अनुपस्थित नहीं है)। इससे यह भी स्पष्ट हो गया कि वास्तविकता में इन दोनों को दो स्वतंत्र कारण मानना सही नहीं है। (लेखक, अल्लाह उन्हें क्षमा करे)।"

पाद टिप्पणियाँ: 1. अद-दुर्र अल-मुख्तार म'अ अश-शामी, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रिंटिंग प्रेस, मिस्र, 1/180। 2. अद-दुर्र अल-मुख्तार म'अ अश-शामी, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रिंटिंग प्रेस, मिस्र, 1/179।

पृष्ठ 564 / 756

الماء ملخصاً: بغیر فوت ہونے کا اندیشہ ہو اس کے لئے پانی ہوتے ہوئے بھی تیمم جائز ہے۔ (ت)

دُرِ مختار میں منیہ و شرح منیہ سے ہے: تیممه لدخول مسجد ومس مصحف مع وجود الماء لیس بشیئ بل هو عدم لانه لیس بعبادة یخاف فوتها۲ ۔ (پانی ہوتے ہوئے مسجد میں داخل ہونے اور مصحف چھونے کے لیے تیمم کرنا کوئی چیز نہیں بلکہ یہ تیمم نہیں اس لئے کہ یہ (دخول مسجد وغیرہ) کوئی ایسی عبادت نہیں جس کے فوت ہونے کا اندیشہ ہو۔ (ت))

ردالمحتار میں ہے: علله فی شرح المنیة بما ذکره الشارح ع وبان التیمم انما یجوز ویعتبر فی الشرع عند عدم الماء حقیقة او حکما ولم یوجد۔ (شرح منیہ میں اس کی علت وہی بتائی ہوئی جو شارح نے ذکر کی اور یہ کہ شریعت میں تیمم کا جواز واعتبار اس وقت ہے جب پانی حقیقتاً یا حکماً معدوم ہو اور دونوں باتوں)

عه اقول: انما علل بهذا اما عدم خوف الفوت فعلل به دعواه انه لم یوجد واحد منهما وذلك لان الماء موجود حقیقة والقدرة علی استعماله حاصلة فانما یکون معدوما حکما لخوف الفوت وههنا لا خوف و به ظهر انه لایصح جعلهماتعلیلین مستقلین فی الواقع ایضا ۱۲منه غفر له (م)۔ (اقول: شرح منیہ میں صرف یہی ایک علت بتائی ہے۔ اور اندیشہ فوت نہ ہونے کا ذکر اپنے اس دعوٰی کی دلیل میں کیا ہے کہ "دونوں باتوں میں سے ایک بھی نہ پائی گئی۔" یہ اس لئے کہ پانی حقیقۃً موجود ہے اور اس کے استعمال کی قدرت بھی ہے۔ پانی فوت عمل کے اندیشہ ہی کے وقت حکماً معدوم قرار پاتا ہے اور یہاں خوف نہیں (تو حکماً بھی معدوم نہیں) اسی سے یہ بھی ظاہر ہوگیا کہ فی الواقع بھی ان دونوں کو دو مستقل تعلیلیں قرار دینا صحیح نہیں ۱۲ منہ غفرلہ (ت))

١: الدرالمختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ١/١٨٠ ٢: الدرالمختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ١/١٧٩

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Right Column - Urdu translation of the Arabic text] ...none of them was found, therefore tayammum is not permissible (End of Quote). From this, it is inferred that for an act where purification is not a condition, tayammum is not valid at all when water is available. Except when it is an act about which there is a fear that it will be missed and it has no substitute (then tayammum is permissible for it). Therefore, if a person without ablution performed tayammum for sleeping or for entering the mosque despite being capable of using water, it is futile. On the contrary, tayammum is permissible for replying to a greeting (Salam), because there is a danger of it being missed, as the command is to reply to a greeting immediately. That is why the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) did so. This is what should be relied upon (End of Quote). (T)

I say: In my view, using the text of 'Munyah' to argue against the permissibility of tayammum when water is present for acts where purification is not a condition...

[Left Column - Original Arabic Text] "...neither of them, so it is not permissible (End of Quote). It benefits that tayammum for what purification is not a condition for is not valid at all with the presence of water, except if it is something feared to be missed with no substitute. So if the one in a state of minor ritual impurity performs tayammum for sleep or for entering the mosque while capable of using water, it is futile, unlike his tayammum for returning a greeting for example, because its missing is feared since it is immediate, and for that reason the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did it. And this is what ought to be relied upon (End of Quote)."

I say: There is an observation in using 'Munyah' as evidence for prohibiting tayammum while water is present for things not conditioned by purification.

[Marginal Note - Arabic/Urdu] Note: He cited it in 'Ad-Durr' as a rebuttal to what is in 'Al-Bahr' regarding the permissibility of tayammum for everything for which purification is not a condition despite the presence of water. Indeed, the phrase of 'Munyah' includes entering the mosque for one in a state of minor impurity. 'H' responded as in 'Sh' and was followed by 'T' by specifying the entry to the one in a state of major ritual impurity (Junub), he said...

[Bottom Section - Urdu Explanation] ...has quoted the text of 'Munyah' through which the commentator wants to refute what the author of 'Bahr' wrote, that for every act in which purification is not a condition, tayammum is permissible even while having

water. The refutation through the statement of 'Munyah' is such that this statement (which mentions the absence of tayammum) also includes the entry of a person without ablution into the mosque. (Rest on the next page)

1. Radd al-Muhtar with Ash-Shami, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi Press, Egypt 1/179. Page 565 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

[दायां कॉलम - अरबी पाठ का उर्दू अनुवाद] ...उनमें से एक भी नहीं पाया गया, इसलिए तयम्मुम जायज़ नहीं है। (इति)। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जिस कार्य के लिए पवित्रता शर्त नहीं है, पानी उपलब्ध होने पर उसके लिए तयम्मुम का कोई मूल्य नहीं है। सिवाय इसके कि जब कोई ऐसा कार्य हो जिसके छूट जाने का डर हो और उसका कोई विकल्प न हो (तो उसके लिए तयम्मुम जायज़ है)। इसलिए, यदि किसी बिना वज़ू वाले व्यक्ति ने पानी पर शक्ति होने के बावजूद सोने के लिए या मस्जिद में प्रवेश करने के लिए तयम्मुम किया, तो वह व्यर्थ है। इसके विपरीत, सलाम का जवाब देने के लिए तयम्मुम जायज़ है क्योंकि इसके छूट जाने का खतरा है, क्योंकि सलाम का जवाब तुरंत देने का आदेश है। इसीलिए पवित्र नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने ऐसा किया। यही वह बात है जिस पर भरोसा किया जाना चाहिए। (इति) (त)

मैं कहता हूँ: मेरे विचार में, उन इबादतों के लिए जहाँ पवित्रता शर्त नहीं है, पानी की मौजूदगी में तयम्मुम के नाजायज़ होने पर 'मुनया' के कथन से तर्क करना...

[बायां कॉलम - मूल अरबी पाठ] "واحد منهما فلا يجوز اه فيفيد ان التيمم لمالا تشترط له الطهارة غير معتبر اصلا مع وجود الماء الا اذا كان مما يخاف فوته لا الى بدل فلو تيمم المحدث للنوم اولدخول المسجد مع قدرته على الماء فهو لغو بخلاف تيممه لرد السلام مثلا لانه يخاف فوته لانه على الفور ولذا فعله صلى الله تعالى عليه وسلم وهذا الذي ينبغى التعويل عليه اهـ" मैं कहता हूँ: उन कार्यों के लिए जहाँ पवित्रता शर्त नहीं है, पानी की मौजूदगी में तयम्मुम पर रोक लगाने के लिए 'मुनया' के उपयोग में विचारणीय बिंदु है।

[हाशिये की टिप्पणी - अरबी/उर्दू] टिप्पणी: इसे 'अद-दुर्र' में 'अल-बहर' में जो कुछ है उसके खंडन के रूप में उद्धृत किया गया है, जो पानी की मौजूदगी में उन सभी कार्यों के लिए तयम्मुम की अनुमति के बारे में है जिनके लिए पवित्रता शर्त नहीं है। वास्तव में, 'मुनया' की शब्दावली में मामूली अशुद्धि की स्थिति वाले व्यक्ति के लिए मस्जिद में प्रवेश करना शामिल है। 'ह' ने उत्तर दिया, जैसा कि 'श' में है और 'त' द्वारा अनुसरण किया गया, मस्जिद में प्रवेश को जुनुब (बड़ी अशुद्धि वाले व्यक्ति) तक सीमित करके, उन्होंने कहा...

[नीचे का हिस्सा - उर्दू स्पष्टीकरण] ...ने 'मुनया' के कथन को उद्धृत किया है जिसके माध्यम से टीकाकार 'बहर' के लेखक द्वारा लिखी गई बात का खंडन करना चाहते हैं कि हर वह कार्य जिसमें

पवित्रता शर्त नहीं है, पानी की मौजूदगी में भी उसके लिए तयम्मुम जायज़ है। 'मुनया' के कथन के माध्यम से खंडन इस प्रकार है कि यह कथन (जिसमें तयम्मुम न होने का उल्लेख है) बिना वज़ू वाले व्यक्ति के मस्जिद में प्रवेश को भी शामिल करता है। (बाकी अगले पृष्ठ पर)

1. रद अल-मुह्तार मअ अश-शामी, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र 1/179. पृष्ठ 756 का 565

[دائیں کالم] میں سے ایک بھی نہ پائی گئی اس لئے تیمّم جائز نہیں اھ اس سے یہ مستفاد ہوتا ہے کہ وہ عمل جس میں طہارت کی شرط نہیں ہے اس کیلئے پانی ہوتے ہوئے تیمّم کا کوئی اعتبار نہیں مگر جب ایسا عمل ہو جس کے بارے میں اندیشہ ہوگا کہ فوت ہوجائے گا اور اس کا کوئی بدل بھی نہیں (تو اس کے لئے تیمّم جائز ہے)۔ اس لئے اگر بے وضو شخص نے پانی پر قادر ہونے کے باوجود سونے کیلئے یا مسجد میں داخل ہونے کیلئے تیمّم کیا تو وہ لغو ہے۔ اس کے برخلاف جوابِ سلام کیلئے تیمّم جائز ہے کیونکہ اس کے فوت ہونے کا خطرہ ہے اس لئے کہ سلام کا جواب فورا دینے کا حکم ہے۔ اسی لئے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اسے کیا۔ یہ وہ بات ہے جس پر اعتماد ہونا چاہئے اھ (ت) **اقول:** جس عبادت میں طہارت شرط نہیں ہے اس کیلئے پانی ہوتے ہوئے تیمّم کے عدم جواز پر منیہ کی عبارت سے استدلال میرے نزدیک

[بائیں کالم] واحد منهما فلا يجوز اه فيفيد ان التيمم لمالا تشترط له الطهارة غير معتبر اصلا مع وجود الماء الا اذا كان مما يخاف فوته لا الى بدل فلو تيمم المحدث للنوم اولدخول المسجد مع قدرته على الماء فهو لغو بخلاف تيممه لرد السلام مثلا لانه يخاف فوته لانه على الفور ولذا فعله صلى الله تعالى عليه وسلم وهذا الذي ينبغى التعويل عليه اهـ اقول: في الاستدلال بالمنية على منع التيمم مع وجود الماء لغير المشروطة بالطهارة نظرعه عه اوردها في الدر ردا على ما في البحر من جواز التيمم لكل ما لا تشترط له الطهارة مع وجود الماء فان عبارة المنية شاملة لدخول المسجد لصاحب الحدث الاصغر واجاب ح كما في ش وتبعه ط بتخصيص الدخول بالجنب قال

[نیچے کا حصہ] منیہ کی عبارت میں نقل کی ہے جس سے شارح اس کی تردید کرنا چاہتے ہیں جو صاحبِ بحر نے لکھا ہے کہ ہر وہ عمل جس میں طہارت شرط نہیں ہے اس کیلئے پانی ہوتے ہوئے

بھی تیمّم جائز ہے۔ منیہ کی عبارت سے تردید اس طرح ہوتی ہے کہ یہ عبارت (جس میں تیمّم نہ ہونے کا ذکر ہے) بے وضو شخص کے مسجد میں داخل ہونے کو بھی شامل ہے (باقی بر صفحہ آئندہ)

---

1 ردالمحتار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۷۹ Page 565 of 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3

(Right Header): In my view, and likewise in the deduction of al-Bahr by al-Mubtaghi, and al-Durr by al-Bazzaziyya, regarding its permissibility as he explained it. (Left Header): It is a matter of consideration. Similarly, regarding its permissibility, the text of al-Mubtaghi in al-Bahr al-Ra'iq, and the text of al-Bazzaziyya in al-Durr al-Mukhtar.

(Remaining footnote from the previous page): Sh[ami] said: It is not hidden that this is against the obvious meaning, and that is why he reasoned in Sharh al-Munyah with what the commentator mentioned, etc. As it is in Shami. And Sayyid Tahtawi has also followed Halabi; he answered that this entry into the mosque specifically pertains to the junub (one in major ritual impurity). On this, Allama Shami said that this is against the obvious meaning, and therefore, in Sharh al-Munyah, the reason for this ruling is stated as what the commentator mentioned, etc. (T)

I say: The indication of the reasoning is accepted. As for (1) the obvious meaning, a speaker could say: No, rather what is apparent is that action which requires purification. Therefore, it is written in Hilya: "Likewise, if one performs tayammum for things other than these two, from matters that are not permitted except with purification while water is present and available, it is not permissible." He said: "It would have been better to avoid mentioning this due to its clarity and lack of disagreement on it." Understand this. From him, may He be forgiven. (M)

I say: The indication of the reasoning is accepted. As for the obvious meaning, a speaker could say: No, rather what is apparent is that action which requires purification. Therefore, it is written in Hilya: "And this is the ruling if, while water and capability exist, one performs tayammum for matters other than these two that are not permissible without purification. They said it was better not to address this because it is obvious, and there is no disagreement in it." Understand it. From him, may He be forgiven. (T)

Furthermore, Allama Sh[ami] tried to use it as evidence for the opposite, which is prohibition. He said: "The text of al-Bazzaziyya: If one performs tayammum in the absence of water for reciting the Quran from memory or from the Mushaf, or for touching it, or for entering or leaving the mosque, or for burial, or for visiting a grave, or for the Adhan or Iqama, it is not permissible to pray with it according to the general scholars."

Rather, Allama Shami wanted to deduce prohibition from this text, contrary to Durr al-Muhtar. He writes: "The text of Bazzaziyya is: If at the time of lack of water, one performed tayammum for reciting Quran from memory or from the Mushaf, or touching the Mushaf, or entering the mosque, or leaving, or burying, or visiting a grave, or Adhan or Iqama, then according to the general scholars, performing prayer with this tayammum (continued on next page)"

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/163.
2. Hilya. Page 566 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

(दाएँ: मेरे विचार में, और इसी प्रकार 'अल-बह्र' के'मुब्तगी' से अनुमान में, और 'अद-दुर्र' के 'बज़ाज़िया' से इसकी अनुमति पर जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है। (बाएँ: यह विचारणीय है। इसी तरह इसकी अनुमति पर 'मुब्तगी' का पाठ 'अल-बह्र अल-रैक' में, और 'बज़ाज़िया' का पाठ 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में।

(पिछले पृष्ठ का शेष फुटनोट): शामी ने कहा: यह स्पष्ट है कि यह प्रत्यक्ष अर्थ के विरुद्ध है और इसी कारण उन्होंने शर्ह अल-मुनियाह में उस कारण का उल्लेख किया है जिसे व्याख्याकार ने बताया है, आदि। जैसा कि शामी में है। और सैयद तहतावी ने भी हलाबी का अनुसरण किया है; उन्होंने जवाब दिया कि मस्जिद में यह प्रवेश विशेष रूप से 'जुनुब' (जिस पर गुस्ल अनिवार्य हो) से संबंधित है। इस पर अल्लामा शामी ने कहा कि यह प्रत्यक्ष अर्थ के विरुद्ध है, और इसीलिए शर्ह मुनियाह में इस नियम का कारण वही बताया गया है जिसका उल्लेख व्याख्याकार ने किया है, आदि। (त)

मैं कहता हूँ: तर्क का संकेत स्वीकार्य है। जहाँ तक (1) प्रत्यक्ष अर्थ की बात है, तो कोई कह सकता है कि नहीं, बल्कि स्पष्ट यह है कि वह कार्य अभिप्रेत है जिसे पवित्रता की आवश्यकता है। इसीलिए 'अल-हिलिया' में कहा गया है: "इसी प्रकार, यदि कोई इन दो कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यों के लिए तयम्मुम करता है जो जल की उपलब्धता और क्षमता के बावजूद बिना पवित्रता के अनुमत नहीं हैं, तो यह अनुमत नहीं है।" उन्होंने कहा: "इसकी स्पष्टता और इसमें मतभेद के अभाव के कारण इसका उल्लेख न करना ही बेहतर था।" इसे समझें। उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। (म)

मैं कहता हूँ: तर्क का संकेत तो स्वीकार्य है, जहाँ तक प्रत्यक्ष अर्थ की बात है तो कहने वाला यह कह सकता है कि नहीं, बल्कि ज़ाहिर यह है कि वह कार्य मुराद हो जिसके लिए पवित्रता की आवश्यकता है। इसीलिए 'हिलिया' में यह लिखा है "और यही नियम है यदि पानी और सामर्थ्य होते हुए इन दो कार्यों के अतिरिक्त ऐसे कार्यों के लिए तयम्मुम किया गया जो बिना पवित्रता के जायज़ नहीं। उन्होंने कहा कि इसका उल्लेख न करना ही बेहतर था क्योंकि यह स्पष्ट है, और इसमें कोई मतभेद भी नहीं है।" इसे समझो। उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे। (त)

अल्लामा शामी ने इस पाठ से इसके विपरीत, यानी निषेध पर प्रमाण देने का प्रयास किया। उन्होंने कहा: "बज़ाज़िया का पाठ यह है: यदि जल के अभाव में कंठस्थ या मुसहफ़ से कुरान पढ़ने, या उसे छूने, या मस्जिद में प्रवेश करने या बाहर निकलने, या दफ़नाने, या कब्र की ज़ियारत, या अज़ान या

इक़ामत के लिए तयम्मुम किया गया, तो आम विद्वानों के अनुसार इससे नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं है।"

बल्कि अल्लामा शामी ने इस पाठ से दुर्र-ए-मुख़्तार के विरुद्ध निषेध पर तर्क देना चाहा है। वे लिखते हैं: "बज़ाज़िया का पाठ यह है: यदि पानी न होने के समय, याद से या मुसहफ़ से कुरान पढ़ने, या मुसहफ़ छूने, या मस्जिद में प्रवेश करने, या निकलने, या दफ़नाने, या ज़ियारत-ए-कब्र, या अज़ान या इक़ामत के लिए तयम्मुम किया, तो आम विद्वानों के नज़दीक इस तयम्मुम से नमाज़ की अदायगी
(अगले पृष्ठ पर जारी)"

1. रद्दुल् मुहतार, बाब अल-तयम्मुम, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत 1/163
2. हिलिया पृष्ठ 756 का 566

(دائیں): عندی و کذا فی استدلال البحر بالمبتغی، والدر بالبزازیه عه علی جوازه کما بینه (بائیں): محل نظر ہے۔ اسی طرح اس کے جواز پر مبتغی کی عبارت سے البحر الرائق کے، اور بزازیہ کی عبارت سے در مختار

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) ش ولا یخفی انه خلاف المتبادر ولذا علله فی شرح المنیة بما ذکره الشارح الخ۔ جیسا کہ شامی میں ہے۔ اور سید طحطاوی نے بھی حلبی کا اتباع کیا ہے اس کا جواب یہ دیا ہے کہ یہ دخول مسجد خاص جنب (بے غسل) سے متعلق ہے اس پر علامہ شامی نے کہا کہ یہ متبادر مفہوم کے خلاف ہے اور اسی لئے شرح منیہ میں اس حکم کی علت وہ بتائی ہے جو شارح نے ذکر کی الخ۔ (ت)

اقول: دلالة التعلیل مسلم اما (ا) المتبادر فلقائل ان یقول لابل الظاهر ارادة مایحتاج الی الطهور ولذا قال فی الحلیة و کذا لوتیمم لغیر هذین الامرین من الامور التی لاتستباح الا بالطهارة مع وجود الماء والقدرة قال وقد کان الاولی ترک التعرض لهذا لظهوره وعدم الخلاف فیه عه اهـ فافهم ۱۲ منه غفرلہ (م)

اقول: تعلیل کی دلالت تو تسلیم ہے، رہی تبادر کی بات تو اس پر کہنے والا یہ کہہ سکتا ہے کہ نہیں، بلکہ ظاہر یہ ہے کہ وہ عمل مراد ہو جس کیلئے طہارت کی احتیاج ہے۔ اسی لئے حلیہ میں یہ لکھا ہے "اور یہی حکم ہے اگر پانی اور قدرت ہوتے ہوئے ان دو کاموں کے علاوہ ایسے امور کیلئے تیمم کیا جو بغیر طہارت جائز نہیں۔ انہوں نے کہا کہ اس سے تعرض نہ کرنا ہی بہتر تھا اس لئے کہ یہ ظاہر ہے، اور اس میں اختلاف بھی نہیں اھ اسے سمجھو۔ ۱۲منہ غفرلہ (ت)

عه بل حاول العلامة ش ان يستدل بها على خلافه وهو المنع فقال عبارة البزازية لوتيمم عند عدم الماء لقراءة قران عن ظهر قلب او من المصحف اولمسه اولدخول المسجد اوخروجه اولدفن اوزيارة قبر اوالاذان اوالاقامة لايجوزان يصلى به عند العامة

بلکہ علامہ شامی نے اس عبارت سے درمختار کے برخلاف منع پر استدلال کرنا چاہا ہے۔ وہ لکھتے ہیں: "بزازیہ کی عبارت یہ ہے: اگر پانی نہ ہونے کے وقت، یاد سے یا مصحف سے قرآن پڑھنے، یا مصحف چھونے، یا مسجد میں داخل ہونے، یا نکلنے، یا دفن کرنے، یا زیارت قبر، یا اذان یا اقامت کیلئے تیمم کیا تو عامہ علماء کے نزدیک اس تیمم سے نماز کی ادائیگی (باقی بر صفحہ آئندہ)

1 رد المحتار باب التيمم دار احياء التراث العربی بيروت ۱/۱۶۳ 2 حلیہ Page 566 of 756

Volume Three Fatawa-e-Razvia

Issue: And the requirement of the proof is prohibition. | There is also a discussion on its reasoning as mentioned by Allama Shami, and the requirement of the proof is that it should be prohibited.

(Continuation of footnote from previous page) "Even in the presence of water, there is no disagreement regarding the lack of permissibility (of such Tayammum)." This phrase "lack of permissibility," meaning the impermissibility of prayer with this Tayammum, is clear regarding its inherent invalidity in the presence of water in these instances. This is because among those instances mentioned is Tayammum for touching the Quranic manuscript (Mushaf), and there is absolutely no doubt that it is invalid in the presence of water. [End of Shami's statement]. I say: The benefit of the aforementioned consensus is only on the impermissibility of prayer with it, and this much is definitely achieved because how can prayer be permissible with a Tayammum performed while having the power to use water? However, the aforementioned discussion does not look into whether this Tayammum is itself permissible or impermissible. For instance, Tayammum for teaching the Quran is definitely permissible even in the presence of water, yet prayer is not allowed with it. Among the mentioned matters, for example, the impermissibility of Tayammum for touching the Mushaf in the presence of water does not necessitate that all cases are the same. This is because, in our view, mentioning (Zikr) along with... (continued on the next page).

1. Rad-ul-Muhtar, Chapter on Tayammum, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/163. Page 567 of 576

विषय: और प्रमाण की आवश्यकता निषेध है। | इसके तर्क पर भी चर्चा है जैसा कि अल्लामा शामी ने इसका वर्णन किया है और प्रमाण की आवश्यकता यह है कि यह वर्जित हो।

(पिछले पृष्ठ का शेष फुटनोट) "और यदि पानी की उपस्थिति में इन कार्यों के लिए तैयम्मुम किया जाए, तो इसकी अनुमति न होने (अदम-ए-जवाज़) में कोई मतभेद नहीं है।" तो यह वाक्यांश कि "अदम-ए-जवाज़ यानी इस तैयम्मुम से नमाज़ के जायज़ न होने में कोई मतभेद नहीं है।" इस बारे में यह स्पष्ट है कि पानी होते हुए इन स्थानों पर यह तैयम्मुम स्वयं भी सही नहीं है क्योंकि उन्हीं में वह तैयम्मुम भी वर्णित है जो मुसहफ़ (कुरान) को छूने के लिए हो और पानी होते हुए इसके गलत होने में निश्चित रूप से कोई संदेह नहीं है। [अल्लामा शामी का कथन समाप्त हुआ]। मैं कहता हूँ: उपर्युक्त कलाम-ए-बज़ारिया का निष्कर्ष केवल यह है कि इस तैयम्मुम से नमाज़ जायज़ नहीं है और इतनी बात निश्चित रूप से सिद्ध है क्योंकि पानी पर अधिकार होते हुए जो तैयम्मुम किया गया उससे नमाज़ कैसे जायज़ हो सकती है? लेकिन उपर्युक्त चर्चा में इस तैयम्मुम के स्वयं जायज़ या नाजायज़ होने पर कोई विचार नहीं किया गया है। देखिये, कुरान सिखाने के लिए पानी होते हुए तैयम्मुम निश्चित रूप से जायज़ है और इस तैयम्मुम से नमाज़ जायज़ नहीं है। उल्लेखित मामलों में से कुछ, उदाहरण के लिए मुसहफ़ को छूने के लिए पानी होते हुए तैयम्मुम का जायज़ न होना, यह आवश्यक नहीं करता कि सभी का मामला ऐसा ही हो। क्योंकि हमारे निकट ज़िक्र में संलग्न होना... (अगले पृष्ठ पर जारी)।

1. रद-उल-मुह्तार, तैयम्मुम का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/163। पृष्ठ 567 का 576

جلد سوم فتاوٰی رضویہ ش وقضیۃ الدلیل المنع۔ | کے استدلال پر بھی کلام ہے جیسا کہ علامہ شامی نے اسے بیان کیا ہے اور دلیل کا مقتضا یہ ہے کہ ممنوع ہو۔

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) ولو عند وجود الماء لاخلاف فی عدم الجواز اھ فقولہ لا خلاف فی عدم الجواز ای عدمہ جواز الصلاۃ بہ ظاہر فی عدم صحتہ فی نفسہ عند وجود الماء فی ہذہ المواضع لان من جملتھا التیمم لمس المصحف ولاشبہۃ فی انہ عند وجود الماء لایصح اصلا 1 اھ کلامہ ش۔ اقول: انما مفادہ الاجماع علی عدم جواز الصلاۃ بہ وھو حاصل قطعاً فان التیمم الذی فعل مع القدرۃ علی الماء کیف تسوغ بہ الصلاۃ ولا نظر فیہ الی کونہ جائزاً فی نفسہ اولا الاتری ان التیمم لتعلیمہ جائز قطعاً مع وجود الماء ولا تجوز بہ الصلاۃ وکون بعض ما ذکر لا یصح لہ التیمم کلمس المصحف لایقضی ان الکل کذلک فالقران فی الذکر لیس عندنا قرآنا فی الحکم

جائز نہیں اور اگر پانی ہوتے ہوئے ان امور کیلئے تیمم کیا تو عدمِ جواز میں کوئی اختلاف نہیں" اھ تو یہ عبارت کہ "عدمِ جواز یعنی اس تیمم سے نماز کے عدم جواز میں کوئی اختلاف نہیں"۔ اس بارے میں ظاہر ہے کہ پانی ہوتے ہوئے ان مقامات میں یہ تیمم خود بھی درست نہیں کیوں کہ ان ہی میں وہ تیمم بھی ذکر ہوا ہے جو مصحف چھونے کیلئے ہو اور پانی ہوتے ہوئے اس کے نادرست ہونے میں قطعاً کوئی شبہ نہیں اھ شامی کا کلام ختم ہوا۔ اقول: مذکورہ کلام بزازیہ کا مفاد صرف یہ ہے کہ اس تیمم سے نماز جائز نہیں اور اتنی بات قطعاً حاصل ہے اس لئے کہ پانی پر قدرت ہوتے ہوئے جو تیمم کیا گیا اس سے نماز کیونکر جائز ہو سکتی ہے لیکن کلام مذکور میں اس تیمم کے بجائے خود جائز یا ناجائز ہونے پر کوئی نظر نہیں دیکھئے تعلیم قرآن کیلئے پانی ہوتے ہوئے تیمم قطعاً جائز ہے اور اس تیمم سے نماز جائز نہیں مذکورہ امور میں سے بعض مثلاً مَسِ مصحف

کیلئے پانی ہوتے ہوئے تیمم کا عدم جواز اس کا مقتضی نہیں کہ سبھی کا حال ایسا ہی ہو۔ کیونکہ ہمارے نزدیک ذکر میں مقارنت (ساتھ ہونا) حکم (باقی اگلے صفحہ پر)

1. ردالمحتار باب التیمم داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۱۶۳ صفحہ 567 از 576

In the same [source], the aforementioned statement is about "and if prayer is not permissible with it," meaning "it will be a purification only for the action intended." | In the same, the aforementioned statement is about "even though prayer is not permissible with it," meaning this is only for that specific action.

(Remainder of the footnote from the previous page) In short, there is no explicit transmission from either side, and the requirement of the evidence is prohibition, for Allah, the Mighty and Sublime, says: "Then if you find no water" [Al-Ma'idah 5:6]. This person has found water, so observe that there is no room for him in tayammum, unlike one who loses a confirmed objective that has no substitute, for such a person is legally considered "one who finds no water," even if he finds water in reality and sense. Choosing a substitute while the original is available is supported neither by reason nor by transmission. If you say: the original and substitute are considered in obligations, and we only intended a voluntary act where there is no obligation, and we see that the Sharia has provided two purifiers, so we settled for the lesser of the two, which is earth, because the voluntary act is also lesser than the obligatory one. I say: Earth in its essence is a contaminant, not a purifier, as stated in al-Bada'i, al-Kafi, and others. It was only recognized as a purifier in Sharia for the time when you do not find water: "when you do not find water." In other times and situations, it remains in its original state [of being a contaminant]. And Allah Almighty knows best. 12 [From him, may he be forgiven].

उसी में पूर्वोक्त कथन "और अगर उससे नमाज़ जाइज़ नहीं" पर है, यानी यह केवल उस अमल के लिए है जिसे उसने नियत किया। | उसी में पूर्वोक्त कथन "हालांकि इससे नमाज़ जाइज़ नहीं" पर है, यानी यह केवल इसी अमल के लिए है।

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष) संक्षेप में यह कि दोनों पक्षों की ओर से कोई स्पष्ट उद्धरण नहीं है, और प्रमाण का तकाज़ा यह है कि मनाही हो, क्योंकि अल्लाह अज़वज्जल ने फ़रमाया है: "फ़लम तजिदू मा-अं" (और तुम पानी न पाओ)। और यह व्यक्ति पानी "पाने वाला" है, तो तयम्मुम में उसका कोई हिस्सा नहीं। इसके विपरीत वह व्यक्ति जिससे कोई ऐसा ताकीदी उद्देश्य छूट रहा हो जिसका कोई विकल्प न हो, क्योंकि वह व्यक्ति कानूनी तौर पर "पानी न पाने वाला" है, भले ही वह हकीकत और इन्द्रियों के अनुसार पानी पा रहा हो। और मूल (पानी) उपलब्ध होते हुए विकल्प को चुनना न तो बुद्धि संगत है और न ही इसका कोई उद्धरण है। अगर यह सवाल हो कि मूल और विकल्प केवल अनिवार्य कार्यों (वाजिब) में देखे जाते हैं, और हमने तो एक स्वैच्छिक कार्य (नफ़्ल) का इरादा किया है जहाँ अनिवार्यता नहीं है, और शरीयत ने हमें दो पवित्र करने वाली वस्तुएँ दी हैं (पानी और मिट्टी), तो हमने कमतर मिट्टी पर संतोष कर लिया क्योंकि नफ़्ल भी वाजिब से कमतर है। तो जवाब यह होगा कि मिट्टी अपने आप में पवित्र करने वाली नहीं बल्कि मैला करने वाली है, जैसा कि 'बदाइ' और 'काफ़ी' आदि में है। शरीयत में इसे पवित्र करने वाली वस्तु के रूप में केवल उस समय के लिए मान्यता दी गई है जब पानी न मिले "इज़ा लम तजिदू मा-अं"। तो अन्य समय और परिस्थितियों में यह अपनी असलियत पर ही रहेगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। 12 उनकी ओर से जिन्हें क्षमा किया गया।

اُسی میں قول مذکور دروان لم تجز الصلوٰۃ بہ پر ہے ای فیقع طھارۃ لما نواہ | اُسی میں قول مذکور در "اگرچہ اس سے نماز جائز نہیں" پر ہے یعنی یہ صرف اس عمل کے لئے

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) وبالجملۃ لا نقل صریحاً بایدی الطرفین وقضیۃ الدلیل المنع فان اللہ عزوجل یقول فَلَمْ تَجِدُوْا مَاءً وھذا واجد فلاحظ لہ فی التیمم بخلاف من یفوتہ مطلوب مؤکد لا الی بدل فانہ فاقد حکماً وان کان واجداً حقیقۃ وحسا واختیار البدل مع تیسر الاصل ممالا یساعدہ عقل ولانقل۔ فان قلت الاصل والبدل فی الوجوب ونحن انما اردنا تطوعاً حیث لا وجوب ورأینا الشرع اتی بطھورین فاجتزأنا بادونہما التراب لان التطوع دون الایجاب۔ اقول: التراب فی ذاتہ ملوث لامطھر کمافی البدائع والکافی وغیرھا وانما عرف مطّھراً شرعاً اذا لم تجدوا ماء فیبقی فیما عداہ علی اصلہ واللہ تعالی اعلم ۱۲ منہ غفرلہ(م) | میں مقارنت نہیں (یہ ہوسکتا ہے کہ ایک ساتھ چند چیزیں ذکر ہوں لیکن ان کے حکم میں باہم فرق ہو) مختصر یہ کہ کوئی صریح نقل طرفین کے ہاتھوں میں نہیں اور دلیل کا اقتضا یہ ہے کہ منع ہو، اس لئے کہ اللہ عزوجل نے فرمایا ہے : فَلَمْ تَجِدُوْا مَاءً (اور تم پانی نہ پاؤ)۔ اور یہ شخص "پانے والا" ہے، تو تیمم میں اس کا کوئی حصہ نہیں ۔ بخلاف اس شخص کے جس سے کوئی ایسا مؤکد مطلوب فوت ہورہا ہے جو بدل نہیں رکھتا کیونکہ حکماً یہ شخص پانی "نہ پانے والا" ہے اگرچہ حقیقۃً و حسّاً پانی والا ہے۔ اور اصل میسر ہوتے ہوئے بھی بدل اختیار کرنے کی نہ عقل ہم نوائی کرتی ہے نہ نقل۔ اگر یہ سوال ہو کہ اصل اور بدل وجوب میں ملحوظ ہیں اور ہم نے تو ایک نفل کا ارادہ کیا ہے جہاں وجوب نہیں اور شریعت نے ہمیں دونوں مطہر دیئے ہیں (پانی بھی، مٹی بھی) تو ہم نے کمتر مٹی پر اکتفا کرلیا کیونکہ نفل بھی واجب سے کمتر ہی ہے۔ تو جواب یہ ہوگا کہ مٹی اپنی ذات کے لحاظ سے مطہر نہیں بلکہ ملوث یعنی آلودہ کرنے والی ہے جیسا کہ

بدائع اور کافی وغیرہ میں ہے اور شریعت میں مطہر کی حیثیت سے اس کا تعارف صرف اس وقت کیلئے ہوا ہے جب پانی نہ ملے "اذا لم تجدوا ماء" تو دیگر اوقات وحالات میں یہ اپنی اصل پر باقی رہے گی واللہ تعالی اعلم ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Fatawa Razvia, Volume 3

Only as stated in 'Al-Hilyah', because Tayammum has two aspects: its validity in itself and the validity of prayer performed with it. The second aspect depends on the unavailability of water and the intention for an intended act of worship that is not valid without purification. However, the first aspect is achieved with the intention of any act of worship, whether it is an intended act that is not valid without purification, or a non-intended act that is not valid without purification or is valid even without it, or an intended act that is valid without purification. In all these cases, Tayammum is valid in itself, as clearly explained in 'Hilyah'. (T)

I say: That is, at the time of lack of water, as we have already presented its clarification, and for those who reflect, it is deduced from this text itself, and for those who observe, from what precedes and follows it. (T)

This is because they mentioned two conditions for the second aspect: (1) the absence of water and (2) the intention for an intended act of worship that requires purification. In the first aspect, instead of the second condition, absolute worship was mentioned, and silence was kept regarding the first condition, so it is also considered included. Why shouldn't it be, for if it were not so, this generalization would be exactly like the generalization in 'Al-Bahr' and 'Al-Durr al-Mukhtar', which they have explicitly rejected and repeatedly mentioned before and after. 12 May Allah forgive him. (T)

Footnote: 1 Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, published by Mustafa Al-Babi, Egypt, 1/178.

फ़तावा रिज़विया, खंड तीन

केवल जैसा कि 'अल-हिलिया' में है क्योंकि तयम्मुम के दो पहलू हैं: एक इसका अपने आप में सही होना और दूसरा इसके साथ नमाज़ का सही होना। दूसरा पहलू पानी की कमी और ऐसी इबादत की नियत पर निर्भर है जो बिना पवित्रता के मान्य नहीं है। लेकिन पहला पहलू किसी भी इबादत की नियत से प्राप्त हो जाता है, चाहे वह ऐसी इबादत हो जो बिना पवित्रता के जायज़ नहीं है, या ऐसी गैर-मक़सूदा इबादत हो जो बिना पवित्रता के जायज़ नहीं है या पवित्रता के बिना भी जायज़ है, या मक़सूदा इबादत हो और पवित्रता के बिना जायज़ हो। तो इन सभी स्थितियों में तयम्मुम अपने आप में सही है जैसा कि 'हिलिया' ने इसे स्पष्ट रूप से बयान किया है। (त)

मैं कहता हूँ: यानी पानी न होने के समय जैसा कि हम पहले इसकी स्पष्ट व्याख्या पेश कर चुके हैं और विचार करने वालों के लिए यहाँ स्वयं इस इबारत से भी यह निष्कर्ष निकलता है और देखने वालों के लिए पिछले और अगले संदर्भों से भी। (त)

यह इसलिए है क्योंकि उन्होंने दूसरे पहलू के लिए दो शर्तें बताई हैं: (1) पानी का न होना और (2) ऐसी मक़सूदा इबादत की नियत जिसमें पवित्रता की शर्त है। और पहले पहलू में दूसरी शर्त के बदले पूर्ण इबादत का ज़िक्र किया है और पहली शर्त पर चुप्पी साधी है, तो वह भी इसमें शामिल मानी जाएगी। क्यों न मानी जाए, क्योंकि अगर ऐसा न हो तो यह वही सामान्यीकरण होगा जैसा कि 'बह्र' और 'दुर्रे मुख़्तार' में है, जिसे उन्होंने साफ़ तौर पर नकार दिया है और पहले और बाद में बार-बार इसे दोहराया भी है। १२ अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

पाद-टिप्पणी: 1 रद अल-मुह्तार, तयम्मुम अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/178.

فتاوی رضویہ، جلد سوم

فقط كما في الحلية لان التيمم له جهتان صحته في ذاته وصحة الصلاة به فالثانية متوقفة على العجز عن الماء وعلى نية عبادة مقصودة لاتصح بدون طهارة واما الاولى فتحصل بنية اى عبادة كانت سواء كانت مقصودة لاتصح الا بالطهارة اوغير مقصودة كذلك او تحل بدونها او مقصودة وتحل بدون طهارة فالتيمم في كل هذه الصور صحيح في ذاته كما اوضح ١ اهـ طہارت بن سکے گا جس کی نیت کی گئی تھی جیسا کہ حلیہ میں ہے۔ اس لئے کہ تیمم کی دو جہتیں ہیں، ایک یہ کہ فی نفسہ درست ہو، دوسری یہ کہ اس سے نماز بھی درست ہو۔ دوسری جہت اس پر موقوف ہے کہ پانی سے عاجز ہو اور اس پر کہ ایسی عبادت مقصودہ کی نیت ہو جو بغیر طہارت جائز نہیں۔ لیکن پہلی جہت تو کسی بھی عبادت کی نیت سے حاصل ہو جاتی ہے خواہ ایسی عبادت مقصودہ ہو جو بغیر طہارت جائز نہیں یا ایسی عبادت غیر مقصودہ ہو جو بغیر طہارت جائز نہیں یا بغیر طہارت بھی جائز ہے یا عبادت مقصودہ ہو اور بغیر طہارت جائز ہو تو تیمم ان تمام صورتوں میں فی نفسہ درست ہے جیسا کہ حلیہ نے اسے واضح طور پر بیان کیا اہ (ت)

اقول: اي عند فقد الماء كما قدمنا تنصيصه به وهو ١٢ مستفادههنا من نفس الكلام لمن تدبر ومن سابقه ولاحقه لمن نظر۔ اقول : یعنی پانی نہ ہونے کے وقت جیسا کہ ہم پہلے اس کی صراحت پیش کر چکے ہیں اور تدبر کرنے والے کیلئے یہاں پر خود اس عبارت سے بھی یہ مستفاد ہے اور نظر والے کیلئے سابق لاحق سے بھی۔ (ت)

عه وذلك لانه ذكر للجهة الثانية شرطين فقد الماء ونية عبادة مقصودة مشروطة بالطهارة وفى الجهة الاولى بدل الشرط الثاني بمطلق العبادة وسكت عن الاول فهو ملحوظ فيها ايضا كيف ولولا هذا لكان هذا التعميم عين تعميم البحر والدر الذى قد انكره انكارا وكرره سابقا ولاحقا مرارا ١٢ منه غفر له (م) یہ

اس لئے کہ انہوں نے دوسری جہت کیلئے دو شرطیں ذکر کی ہیں: (۱) پانی کا نہ ہونا (۲) اور ایسی عبادت مقصودہ کی نیت جس میں طہارت کی شرط ہے۔ اور پہلی جہت میں شرط ثانی کے بدلے مطلق عبادت کو ذکر کیا ہے اور شرط اول سے سکوت اختیار کیا ہے تو وہ بھی اس میں ملحوظ ہے۔ ملحوظ کیوں نہ ہو جبکہ اگر ایسا نہ ہو تو یہ تعمیم بعینہ بحر ودر مختار کی تعمیم ہو جائے گی جس سے وہ صاف انکار کر چکے ہیں اور پہلے اور بعد میں بار بار اس کی تکرار بھی کی ہے اہ ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

حاشیہ: 1 رد المحتار باب التیمم مطبوعہ مصطفی البابي مصر ۱/ ۱۷۸

Fatawa Ridawiyya Volume 3

Then I say: It is evident that removing something occurs only after its cessation. Removal and continuation, or annihilation and permanence, cannot coexist. Therefore, the condition that Tayammum (dry ablution) be performed when menstruation, postnatal bleeding, and ritual impurity have ceased, as added by Allama Shurunbulali in 'Noorul Izah' (trans: as Allama Shurunbulali added in Noorul Izah), though quite obvious and hardly needing mention, has come up for us to clarify. And success is from Allah. In summary, great benefits arise from this phrasing:

(1) Requirement of intention. (2) Requirement of the cessation of anything contradictory. (3) Clarification of the intention.

I say: Tayammum is valid with ten types of intentions: Intention to remove minor or major impurity, or absolute impurity; intention for Wudu (ablution) or Ghusl (ritual bath) or absolute purification; intention for the permissibility of prayer; intention for an intended act of worship conditioned on purification; intention for another act of worship not specifically intended, or not conditioned, or both; intention for that emphatic requirement of Sharia which, if purification were sought with water, would be lost without a substitute. The tenth scenario is possible even when water is available, while the first nine are permissible only when one lacks the ability to use water. With the intention of the first eight, any prayer can be performed easily, even if intended for another act of worship. From the ninth, no prayer will be performed, and from the tenth, only that specific prayer for which it was performed will be valid, not any other, even if it is of the same 'missed without substitute' type. For example, a funeral prayer began; if one were to perform Wudu, all four Takbirs would be missed, so he performs it with Tayammum. Meanwhile, another funeral arrives; if he can perform Wudu for this second one, it is mandatory. If there was time for Wudu and he didn't do it, and now that window is gone, he must perform a second Tayammum for it as the first is void. However, if the two funeral prayers follow each other so closely that Wudu cannot be performed in between, he can pray with the first Tayammum. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

Arabic Original	Urdu Translation / Explanation
Lu ji’a bi-ukhra in amkanahu al-tawadh’u baynahuma thumma	If another funeral is brought, and between the two there was enough time in which it was possible to perform Wudu, but then that opportunity passed,

Arabic Original	Urdu Translation / Explanation
zala tumakkunu-hu a’ada al-tayammum wa illa la bihi yufta.	he should repeat the Tayammum; otherwise, not. This is the issued verdict. (T)

Our mentioned wording, by the grace of Allah, includes these ten intentions. The first three are the literal text itself, and likewise those following them.

1. Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/177.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

फिर मैं कहता हूँ: यह स्पष्ट है कि किसी चीज़ को दूर करना उसकी समाप्ति के बाद ही होगा। हटाना और जारी रहना, या अभाव और अस्तित्व एक साथ नहीं हो सकते। इसलिए यह शर्त कि तयम्मुम उस समय हो जब मासिक धर्म, प्रसवोत्तर रक्तस्राव और अशुद्धि समाप्त हो चुकी हो, जैसा कि अल्लामा शुरुनबुलाली ने 'नूरुल इज़ाह' में जोड़ा है (अनुवाद: जैसा कि अल्लामा शुरुनबुलाली ने नूरुल इज़ाह में जोड़ा है), हालांकि अपनी स्पष्टता के कारण उल्लेख के योग्य नहीं थी, फिर भी हमारे इसे स्पष्ट करने के लिए उल्लेख में आ गई। और सफलता अल्लाह की ओर से है। संक्षेप में, इस वाक्यांश से महान लाभ उत्पन्न होते हैं:

(१) नीयत (इरादे) की शर्त। (२) विरोधी चीज़ों की समाप्ति की शर्त। (३) नीयत का विवरण।

मैं कहता हूँ: तयम्मुम दस प्रकार की नीयतों से सही है: छोटी या बड़ी अशुद्धि दूर करने की नीयत, या पूर्ण अशुद्धि दूर करने की नीयत; वुज़ू या ग़ुस्ल या पूर्ण पवित्रता की नीयत; नमाज़ की अनुमति की नीयत; ऐसी इबादत की नीयत जो पवित्रता पर आधारित हो; ऐसी दूसरी इबादत की नीयत जो मूल उद्देश्य न हो या जिस पर पवित्रता अनिवार्य न हो या दोनों; शरीयत की उस ताकीदी मांग की नीयत जो अगर पानी से पवित्रता प्राप्त की जाए तो बिना किसी विकल्प के छूट जाए। दसवां मामला पानी उपलब्ध होने पर भी संभव है, जबकि पहले नौ केवल तभी मान्य हैं जब पानी का उपयोग करने की शक्ति न हो। पहली आठ नीयतों के साथ कोई भी नमाज़ आसानी से पढ़ी जा सकती है, भले ही वह किसी अन्य इबादत के उद्देश्य से की गई हो। नौवीं नीयत से कोई नमाज़ अदा नहीं होगी, और दसवीं से केवल वही विशिष्ट नमाज़ अदा होगी जिसकी ज़रूरत के लिए यह किया गया है, दूसरी नहीं, भले ही वह उसी प्रकार की हो जो बिना विकल्प के छूट जाए। उदाहरण के लिए, जनाज़े की नमाज़ खड़ी हुई; अगर वुज़ू किया जाए तो चारों तकबीरें समाप्त हो जाएंगी, इसलिए इसे तयम्मुम से पढ़ा। इतने में एक और जनाज़ा आ गया; यदि वह इस दूसरे के लिए वुज़ू कर सकता है तो वुज़ू अनिवार्य है। यदि वुज़ू का समय था और नहीं किया और अब समय नहीं रहा, तो इसके लिए दूसरा तयम्मुम करे, पहला समाप्त हो गया। हाँ, यदि दो जनाज़े की नमाज़ें एक के बाद एक इस तरह शुरू हुईं कि बीच में वुज़ू नहीं किया जा सकता था, तो वह उसी पहले तयम्मुम से पढ़ सकता है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी मूल	उर्दू अनुवाद / व्याख्या
लो जिआ बि-उखरा इन अमकनहु अत-तवज़ु बयनहुमा सुम्मा ज़ाला तुमक्कुनु-हु आ’अदा अत-तयम्मुम व इल्ला ला बिही युफ़्ता।	अगर दूसरा जनाज़ा लाया गया तो उन दोनों के माबैन अगर (इतना वक़्त मिला जिसमें) वुज़ू करने की गुंजाइश थी, फिर ख़त्म हो गई तो दोबारा तयम्मुम करे, वरना नहीं। इसी पर फ़तवा दिया जाता है। (त)

हमारा उल्लेखित शब्द, अल्लाह की कृपा से, इन दसों नीयतों को शामिल करता है। पहले तीन तो स्वयं मूल पाठ हैं, और वैसे ही उनके बाद वाले भी।

1. अल-दुरुल मुख्तार मअ अल-शामी, बाब अत-तयम्मुम, मतबा मुस्तफा अल-बाबी मिस्र १/१७७

فتاوی رضویہ جلد سوم

ثم اقول : ظاہر ہے کہ کسی شے کا دُور کرنا اُس کے انقطاع کے بعد ہی ہوگا ازالہ واستمرار یا اعدام وبقاء جمع نہیں ہوسکتے تو یہ شرط کہ تیمم اُس وقت ہو جب حیض ونفاس وحدث منقطع ہوچکے ہوں کما زادہ العلامۃ الشرنبلالی فی نور الایضاح (جیسا کہ علامہ شرنبلالی نے نور الایضاح میں اس کا اضافہ کیا ہے۔ ت) با آنکہ اپنی غایت وضوح سے چنداں قابلِ تعرض نہ تھی خود ہمارے اسے دُور کرنے کیلئے کہنے میں آگئی و باللہ التوفیق۔ بالجملہ اس لفظ سے فوائد جلیلہ پیدا ہوئے:

(۱) اشتراط نیت (۲) اشتراط انقطاع منافی (۳) بیان نیت

اقول : تیمم دس نیتوں سے صحیح ہے: نیت رفع حدث اصغر یا اکبر یا مطلق حدث نیت وضو یا غسل یا مطلق طہارت نیت استباحت نماز نیت عبادت مقصودہ مشروط بہ طہارت نیت عبادت دیگر غیر مقصودہ یا غیر مشروط یا غیر مقصودہ و غیر مشروط نیت اُس تاکیدی مطلوب شرع کی کہ اگر پانی سے طہارت کریں تو بلا بدل فوت ہوجائے۔ دسویں صورت پانی ہوتے ہوئے بھی ممکن ہے اور پہلی نو اُسی وقت روا ہیں کہ پانی پر قدرت نہ ہو۔ پہلی آٹھ کی نیت سے ہر نماز بھی بے تکلف ادا ہوسکتی ہے اگرچہ کسی اور عبادت کی غرض سے کیا ہو اور نویں سے کوئی نماز ادا نہ ہوگی اور دسویں سے خاص وہی نماز ادا ہوگی جس کی ضرورت سے کیا ہے نہ دوسری اگرچہ وہ بھی اسی قسم فائت بے بدل بلکہ اسی کی نوع سے ہو مثلاً نماز جنازہ قائم ہوئی وضو کرتے تو چاروں تکبیریں ہوچکیں گی اسے تیمم سے پڑھا اتنے میں اور جنازہ آگیا اگر وضو کرسکتا ہے اس دوسرے کیلئے وضو لازم ہے اگر وضو کا وقفہ تھا اور نہ کیا اب وضو کا وقفہ نہ رہا تو اس کیلئے

دوسرا تیمم کرے پہلا جاتا رہا۔ ہاں اگر ۲ دوسرے جنازے کی نماز ایسی بلافصل برپا ہوئی کہ بیچ میں وضو نہ کرسکتا تو اُسی پہلے تیمم سے پڑھ سکتا ہے در مختار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ و تشریح
لو جیئ باخری ان امکنہ التوضی بینھما ثم زال تمکنہ اعاد التیمم والا لا بہ یفتی 1	اگر دوسرا جنازہ لایا گیا تو ان دونوں کے مابین اگر (اتنا وقت ملا جس میں) وضو کرنے کی گنجائش تھی، پھر ختم ہوگئی تو دوبارہ تیمم کرے، ورنہ نہیں۔ اسی پر فتویٰ دیا جاتا ہے۔ اھ (ت)

ہمارا الفظ مذکورہ بحمدہ تعالیٰ ان دسوں نیتوں کو شامل ہے پہلی تین تو عین منطوق ہیں یو نہی اُن کے بعد کی

۱ الدرالمختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/۱۷۷

Fatawa Razawiyya Volume 3

Three, that are inseparable from them, and here the intention for permission to pray would mean that the obstacle existing in my limbs should be removed, as without its removal, the permissibility of prayer cannot exist; that is its specified method. As for the purpose of any other worship in conditional tayammum, it will certainly be a heart-felt intention that I become capable of performing that worship, and intention is the name of this heart-felt purpose. Thus, for it (prayer), the intention of permission and the intention of removal of impurity (hadath) is necessary, and in others, the intention of purification itself is evident, meaning this tayammum was performed only out of etiquette so as not to worship without purification.

(Arabic) And in Al-Bahr al-Ra'iq, a similar path has been taken; they write: Its (tayammum for prayer) condition is that the matter intended for should be such a worship that is intended and which is not valid without purification, or the intention for permission to pray, or the removal of impurity, or the removal of ritual impurity (janabat). And what is written in Al-Tajnis that "The intention required in tayammum is the intention of purification and this is correct"—then this statement is not contradictory to our aforementioned explanation, because within the intention of permission for prayer, the intention of purification will also be found. And in Al-Tajnis, it is sufficient to mention only the intention of purification because purification was legislated for prayer and it is a condition for its permissibility, so the intention for it is also the intention for the permission of prayer. [End quote]

And in Al-Bahr al-Ra'iq, a similar path has been taken; they write: Its (tayammum for prayer) condition is that the matter intended for should be such a worship that is intended and which is not valid without purification, or the intention for permission to pray, or the removal of impurity, or the removal of ritual impurity (janabat). And what is written in Al-Tajnis that "The intention required in tayammum is the intention of purification and this is correct"—then this statement is not contradictory to our aforementioned explanation, because within the intention of permission for prayer, the intention of purification will also be found. And in Al-Tajnis, it is sufficient to mention only the intention of purification because purification was legislated for prayer and it is a condition for its permissibility, so the intention for it is also the intention for the permission of prayer. [End quote (T)]

I say: (1) The beginning of the discourse implies that the original intention is for purification. And the intention for permission to pray was allowed because it includes what is intended. And its conclusion suggests the opposite, that the intention of purification indicates the original, so it is sufficient. And the words of the researcher in Al-Fath after quoting from Al-Tajnis and what he added...

I say: The beginning of Al-Bahr's discourse implies that the original is the intention of purification. And the intention for permission to pray is permissible because within it, the intention of purification is also found, which is the original goal. And the final part of their discourse, contrary to this, gives the judgment that since the intention of purification is the original...

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi 1/150 Page 571 of 756

तीन, कि जो उनसे अविभाज्य हैं, और यहाँ नमाज़ की अनुमति की नीयत का अर्थ यह होगा कि जो रुकावट मेरे अंगों में मौजूद है वह दूर हो जाए, क्योंकि उसके बिना नमाज़ की अनुमति संभव नहीं है; वही इसका निर्दिष्ट तरीका है। रही बात किसी अन्य इबादत के उद्देश्य से किए जाने वाले सशर्त तयम्मुम की, तो उसमें निश्चित रूप से यही दिल का इरादा होगा कि मैं उस इबादत को करने के योग्य हो जाऊँ और नीयत इसी दिल के इरादे का नाम है। अतः इसके लिए अनुमति की नीयत और अशुद्धि (हदस) दूर करने की नीयत आवश्यक है, और अन्य मामलों में शुद्धि का इरादा स्वयं स्पष्ट है कि यह तयम्मुम केवल शिष्टाचार के नाते किया गया है ताकि बिना शुद्धि के इबादत न करूँ।

(अरबी) और अल-बहर अल-राइक़ में भी कुछ इसी तरह का रास्ता अपनाया गया है, वे लिखते हैं: इसकी (नमाज़ के लिए तयम्मुम की) शर्त यह है कि जिस कार्य की नीयत की गई वह ऐसी इबादत हो जो बिना शुद्धि के मान्य नहीं है, या नमाज़ की अनुमति या अशुद्धि दूर करने या जनाबत दूर करने की नीयत हो। और जो अल-तजनीस में लिखा है कि "तयम्मुम में जिस नीयत की शर्त है वह शुद्धि (ततहीर) की नीयत है और यही सही है"—तो यह कथन हमारे उपर्युक्त विवरण के विरुद्ध नहीं है क्योंकि नमाज़ की अनुमति की नीयत के अंतर्गत शुद्धि की नीयत भी पाई जाएगी। और अल-तजनीस में केवल शुद्धि की नीयत पर इसलिए संतोष किया गया है क्योंकि शुद्धि नमाज़ के लिए निर्धारित की गई है और नमाज़ की अनुमति के लिए शुद्धि शर्त भी है, तो शुद्धि की नीयत नमाज़ की अनुमति की भी नीयत है। [समाप्त]

मैं कहता हूँ: (1) चर्चा की शुरुआत यह बताती है कि मूल नीयत शुद्धि की है। और नमाज़ की अनुमति की नीयत इसलिए मान्य है क्योंकि इसमें वह शामिल है जो उद्देश्य है। और इसका समापन इसके विपरीत निर्णय देता है कि शुद्धि की नीयत मूल को दर्शाती है इसलिए वह पर्याप्त है। और अल-फतह में शोधकर्ता के शब्द अल-तजनीस से उद्धरण देने के बाद और जो उन्होंने जोड़ा...

और अल-बहर अल-राइक़ में भी कुछ इसी तरह का रास्ता अपनाया गया है, वे लिखते हैं: इसकी (नमाज़ के लिए तयम्मुम की) शर्त यह है कि जिस कार्य की नीयत की गई वह ऐसी इबादत हो जो बिना शुद्धि के मान्य नहीं है, या नमाज़ की अनुमति या अशुद्धि दूर करने या जनाबत दूर करने की नीयत हो। और जो अल-तजनीस में लिखा है कि "तयम्मुम में जिस नीयत की शर्त है वह शुद्धि (ततहीर) की नीयत है और यही सही है"—तो यह कथन हमारे उपर्युक्त विवरण के विरुद्ध नहीं है क्योंकि नमाज़ की अनुमति की नीयत के अंतर्गत शुद्धि की नीयत भी पाई जाएगी। और अल-तजनीस में केवल शुद्धि की नीयत पर इसलिए संतोष किया गया है क्योंकि शुद्धि नमाज़ के लिए निर्धारित की गई है और नमाज़ की अनुमति के लिए शुद्धि शर्त भी है, तो शुद्धि की नीयत नमाज़ की अनुमति की भी नीयत है। [समाप्त (त)]

मैं कहता हूँ: बहर के प्रवचन की शुरुआत यह बताती है कि मूल नीयत शुद्धि की है। और नमाज़ की अनुमति की नीयत इसलिए जायज़ है क्योंकि इसके अंतर्गत वह शुद्धि की नीयत भी पाई जाती है जो मूल उद्देश्य है। और उनके प्रवचन का अंतिम हिस्सा इसके विपरीत यह निर्णय देता है कि चूँकि शुद्धि की नीयत मूल है...

1 अल-बहर अल-राइक़, बाब अल-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/150 पृष्ठ 756 का 571

تین کہ ان کی ملزوم ہیں اور یہاں نیت استباحتِ نماز کے یہی معنی ہوں گے کہ وہ مانعیت جو میرے اعضاء سے قائم ہے دُور ہو جائے کہ بے اُس کے اباحتِ نماز نہیں ہو سکتی وہی اس کا طریقہ معینہ ہے۔ رہا کسی اور عبادت کی غرض سے تیمم مشروط میں قطعاً یہی قصد قلبی ہوگا کہ اس عبادت کے ادا کرنے کے قابل ہو جاؤں اور نیت اسی قصد دلی کا نام ہے تو اسے نیت استباحت اور اسے نیت رفع حدث لازم اور غیر میں قصد طہارت خود ظاہر کہ یہ تیمم نہ کیا مگر ادبًا کہ عبادت بے طہارت نہ کروں۔

وقد سلك في البحر الرائق نحو من ذلك فقال شرطها ان يكون المنوى عبادة مقصودة لا تصح الا بالطهارة او استباحة الصلاة اورفع الحدث اوالجنابة وما وقع في التجنيس من ان النية المشروطة في التيمم هي نية التطهير وهو الصحيح فلا ينا فيه لتضمنها نية التطهير وانما اكتفى بنية التطهير لان الطهارة شرعت للصلاة وشرطت لاباحتها فكانت نيتها نية اباحة الصلاة اهـ

اور البحر الرائق میں بھی کچھ اسی طرح کی راہ اختیار کی ہے، لکھتے ہیں: اس کی (تیمم نماز کی) شرط یہ ہے کہ جس امر کی نیت کی گئی وہ ایسی عبادت مقصودہ ہو جو بغیر طہارت درست نہیں یا جوازِ نماز یا رفع حدث یا رفع جنابت کی نیت ہو۔ اور یہ جو تجنیس میں لکھا ہوا ہے کہ "تیمم میں جس نیت کی شرط ہے وہ نیتِ تطہیر ہے اور یہی صحیح ہے" تو یہ عبارت ہمارے مذکورہ بیان کے منافی نہیں اس لئے کہ جوازِ نماز کی نیت کے ضمن میں تطہیر کی نیت بھی پالی جائے گی اور تجنیس میں صرف نیتِ تطہیر پر اس لئے اکتفا فرمایا ہے کہ طہارت نماز کیلئے مشروع ہوئی ہے اور جوازِ نماز کیلئے طہارت کی شرط بھی ہے تو طہارت کی نیت جوازِ نماز کی بھی نیت ہے "اھ (ت)"

اقول: (۱) صدر کلام یقتضی ان الاصل نیة التطهیر وجازت نیة استباحة الصلاة لتضمنها ماهو المقصود وعجزه یقضی بالعکس ان نیة التطهیر تنبئ عن الاصل فاکتفی بها ولفظ المحقق في الفتح بعد نقل کلام عکس یہ فیصلہ دے رہا ہے کہ تطہیر کی نیت چونکہ اصل التجنیس وما زاد

اقول: بحر کے شروع کلام کا اقتضا یہ ہے کہ اصل، نیتِ تطہیر ہے۔ اور اباحتِ نماز کی نیت اس لئے جائز ہے کہ اس کے ضمن میں وہ نیتِ تطہیر بھی پالی جاتی ہے جو اصل مقصود ہے۔ اور ان کے کلام کا آخری حصہ اس کے بر

1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۵۰ Page 571 of 756

Fatawa Rizvia Volume Three

[Arabic Text Block]: ...other than it, from the intention of seeking permission for prayer, it is not incompatible with it when it includes the intention of purification [1]. 'Ah'. And in Al-Hilyah, the basis was established as the intention of prayer. So he said: The word 'Tayammum' indicates intent, and the rule (1) is that in Shar'i names, what they indicate of meanings is considered. Then absolute intent is not intended by consensus, and the context of the verse provides the command to intend for the earth (sa'id) to establish prayer when absolute water is absent. So the command is restricted by it, and thus the Shar'i commanded act, which is Tayammum, is not found without the intention of performing it for prayer or for what is placed in its position, which is an intended act of worship in itself that is not valid except with purification. Therefore, it is no wonder that Al-Quduri mentioned that the correct view of the school is that if one intends purification or seeking permission for prayer, it suffices them, because each of the two intentions stands in place of the intention of desiring prayer, since purification was legislated for it and conditioned for its permissibility. And similar to it is the lifting of ritual impurity and the lifting of major ritual impurity [2]. 'Ah'.

[Urdu Text Block]: (Intention for the permissibility of prayer) points towards it, so it was sufficed with it. The honorable researcher in Fath al-Qadir, after quoting the passages from Tajnis, wrote this: "The addition made by other scholars regarding the intention for the permissibility of prayer is not contrary to this passage, because the intention for permissibility will also include the intention for purification." 'Ah'. (i.e., when there is an intention for the permissibility of prayer, the intention for purification, which is the original, will also be found within it. 12 m-alif). And in Al-Hilyah, the intention for prayer is established as the basis. They write in it: "The word Tayammum means intent, and the rule is that Shar'i words which express certain meanings, only those are taken into account. Then absolute intent is not meant by consensus, and the context of the verse indicates that the command is to intend (to use) clean earth for performing prayer when absolute water is not available. So this matter will be restricted to it. Therefore, the Shar'i commanded act, i.e., Tayammum, will not be found unless there is an intention to put it into practice for prayer or for such a task that stands in place of prayer, i.e., for any intended worship which is certainly not permissible without purification. This is why Al-Quduri stated that 'the correct school [of thought] is that when one makes an intention for purification or the permissibility of prayer, it will be sufficient because each of the two intentions

stands in place of the intention of desiring prayer, since purification was legislated for that very purpose and purification is also a condition for its permissibility. The intention of removing ritual impurity and removing major ritual impurity is also similar to it.'" 'Ah'. (T)

[Footnotes]: 1 Fath al-Qadir, Chapter on Tayammum, Maktabah Nooria Razvia Sukkur, 1/114 2 Hilyah

फ़तावा रिज़विया - जिल्द तीसरा

[अरबी पाठ ब्लॉक]: ...इसके अलावा, प्रार्थना की अनुमति लेने की नीयत (इरादा) से, यह उसके साथ असंगत नहीं है जब इसमें शुद्धिकरण की नीयत शामिल हो [1]। 'अह'। और 'अल-हिलया' में, प्रार्थना की नीयत को आधार बनाया गया है। तो उन्होंने कहा: 'तयम्मुम' शब्द इरादे का संकेत देता है, और नियम (1) यह है कि शरीअत के नामों में, वे जिन अर्थों का संकेत देते हैं उन पर विचार किया जाता है। फिर सर्वसम्मति से पूर्ण इरादा अभिप्रेत नहीं है, और आयत का संदर्भ शुद्ध जल की अनुपस्थिति में नमाज़ कायम करने के लिए मिट्टी (सईद) का इरादा करने का आदेश देता है। तो आदेश इसके द्वारा प्रतिबंधित है, और इस प्रकार शरीअत द्वारा आदेशित कार्य, जो तयम्मुम है, प्रार्थना के लिए इसे करने की नीयत के बिना या जो इसके स्थान पर रखा गया है, उसके बिना नहीं पाया जाता है, जो अपने आप में एक अभिप्रेत इबादत है जो बिना शुद्धिकरण के मान्य नहीं है। इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अल-क़ुदूरी ने उल्लेख किया है कि मज़हब का सही विचार यह है कि यदि कोई शुद्धिकरण या प्रार्थना की अनुमति की नीयत करता है, तो यह उसके लिए पर्याप्त है, क्योंकि दोनों नियतों में से प्रत्येक प्रार्थना करने की इच्छा की नीयत के स्थान पर खड़ा होता है, क्योंकि शुद्धिकरण इसके लिए निर्धारित किया गया था और इसकी अनुमति के लिए शर्त रखी गई थी। और इसी के समान नजासत को दूर करना और जनाबत (बड़ी अशुद्धि) को दूर करना है [2]। 'अह'।

[उर्दू पाठ ब्लॉक]: (नमाज़ की अनुमति की नीयत) उसकी ओर संकेत करती है, इसलिए इस पर संतोष किया गया। आदरणीय शोधकर्ता ने 'फ़तह अल-क़दीर' में 'तजनीस' के उद्धरणों को उद्धृत करने के बाद यह लिखा है: "दूसरे विद्वानों ने नमाज़ की अनुमति की नीयत के बारे में जो जोड़ा है, वह इस उद्धरण के विपरीत नहीं है, क्योंकि अनुमति की नीयत में शुद्धिकरण की नीयत भी शामिल होगी।" 'अह'। (यानी, जब नमाज़ की अनुमति की नीयत होगी, तो उसके भीतर शुद्धिकरण की नीयत भी पाई जाएगी, जो मूल है। 12 म-अलिफ़)। और 'अल-हिलया' में नमाज़ की नीयत को आधार माना गया है। वे उसमें लिखते हैं: "तयम्मुम शब्द का अर्थ इरादा है, और नियम यह है कि शरीअत के शब्द जो अर्थ व्यक्त करते हैं, उन्हीं का विचार किया जाता है। फिर सर्वसम्मति से पूर्ण इरादा अभिप्रेत नहीं है, और आयत का संदर्भ बताता है कि शुद्ध जल की अनुपस्थिति में नमाज़ अदा करने के लिए पाक मिट्टी का इरादा करने का आदेश है। तो यह मामला उसी तक सीमित रहेगा। इसलिए, शरीअत का आदेशित कार्य, यानी तयम्मुम, तब तक नहीं पाया जाएगा जब तक कि इसे नमाज़ के लिए या ऐसे कार्य के लिए अभ्यास में लाने की नीयत न हो जो नमाज़ के स्थान पर खड़ा हो, यानी किसी भी ऐसी

इबादत के लिए जो बिना शुद्धिकरण के निश्चित रूप से जायज़ नहीं है। यही कारण है कि क़ुदूरी ने ज़िक्र फरमाया है कि 'सही मत यह है कि जब कोई शुद्धिकरण या नमाज़ की अनुमति की नीयत करता है, तो यह पर्याप्त होगा क्योंकि दोनों नियतों में से प्रत्येक नमाज़ की इच्छा की नीयत के स्थान पर खड़ा होता है, क्योंकि शुद्धिकरण उसी के लिए निर्धारित किया गया था और उसकी अनुमति के लिए शुद्धिकरण की शर्त भी है। नजासत को दूर करने और जनाबत को दूर करने की नीयत भी इसी के समान है।'" 'अह'। (त)

[पाद लेख]: 1 फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-तयम्मुम, मकतबा नूरिया रिज़विया सुक्कुर, 1/114 2 हिलया

पृष्ठ 572 का 756

[عربی عبارت]: غیرہ من نیة استباحة الصلاة لاینافیه اذا یتضمن نیة التطهیر 1 اھـ وجعل في الحلیة الاصل ارادة الصلاة فقال لفظ التیمم ینبئ عن القصد والاصل (1) ان یعتبر في الاسماء الشرعیة ما تنبئ عنه من المعانی ثم مطلق القصد غیر مراد بالاجماع وسوق الآیة یفید الامر بالقصد الی الصعید لاقامة الصلاة عند عدم الماء المطلق فیتقید الامر به فلایوجد المأمور الشرعي وهو التیمم بدون نیة فعله للصلاة اولما هو منزل منزلتها وهو عبادة مقصودة بنفسها لا تصح الابالطهاره فلا جرم ان ذکر القدوری ان الصحیح من المذهب انه اذانوی الطهارة او استباحة الصلاة اجزأه لان کلامن النیتین تقوم مقام نیة ارادة الصلاة لان الطهاره شرعت لها وشرطت لاباحتها ومثله رفع الحدث ورفع الجنابة 2 اھـ

[اردو عبارت]: (جواز نماز کی نیت) کا پتا دیتی ہے اس لئے اس پر اکتفا کیا۔ حضرت محقق نے فتح القدیر میں تجنیس کی عبارات نقل کرنے کے بعد یہ تحریر فرمایا ہے : "دوسرے حضرات نے جواز نماز کی نیت کا جو اضافہ کیا ہے وہ اس عبارت کے منافی نہیں اس لئے کہ جواز کی نیت، نیت تطہیر پر بھی مشتمل ہوگی" اھـ (یعنی جب جواز نماز کی نیت ہوگی تو اس کے ضمن میں نیت تطہیر جو اصل ہے یہ بھی پالی جائے گی ۱۲ م الف) اور حلیہ میں ارادہ نماز کو اصل قرار دیا ہے۔ اس میں لکھتے ہیں: "لفظ تیمم کا معنی قصد ہے اور قاعدہ یہ ہے کہ شرعی الفاظ جن معانی کا اظہار کرتے ہیں انہی کا اعتبار ہو پھر مطلق قصد بالاجماع مراد نہیں اور آیت کا سیاق یہ بتاتا ہے کہ آب مطلق نہ ہونے کے وقت نماز کی ادائیگی کے لئے قصد صعید کا حکم ہے۔ تو یہ امر اسی سے مقید رہے گا۔ اس لئے مامور شرعی یعنی تیمم بغیر اس کے نہ پایا جائے گا کہ نماز کے لئے اسے عمل میں لانے کی نیت ہو یا ایسے کام کے لئے جو نماز کے قائم مقام ہو یعنی کسی ایسی عبادت مقصودہ کیلئے جو بغیر طہارت جائز نہ ہو یقیناً اسی لئے قدوری نے ذکر فرمایا ہے کہ

"صحیح مذہب یہ ہے کہ جب طہارت یا جواز نماز کی نیت کرے تو کافی ہوگی اس لئے کہ دونوں نیتوں میں سے ہر ایک ارادہ نماز کی نیت کے قائم مقام ہے کیوں کہ طہارت اسی کیلئے مشروع ہوئی اور اس کے جواز کیلئے طہارت کی شرط بھی ہے رفع حدث اور رفع جنابت کی نیت بھی اسی کے مثل ہے"۔ اھ (ت)

[حواشی]: 1 فتح القدیر باب التیمم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۱۴ 2 حلیہ

Fatawa Razawiya, Volume 3

I say: Regarding his statement "the command is restricted by it, so there is no..." is a clear oversight, based on what we previously cited from Al-Bada'i that the ruling on tayammum is contrary to analogy. Indeed, it is stated in Al-Hilya itself at the beginning of the chapter: "Devotional worship came through wiping both [hands and face] on specific limbs..." etc. If the command were restricted to the intention of prayer, tayammum would not be permissible for anything else, such as entering a mosque, reciting the Quran while in a state of major ritual impurity (Janabah), or touching the Quran while in a state of minor ritual impurity (Hadath). This would contradict consensus (Ijma'). These acts do not share the same legal status as prayer in every aspect to be annexed to it by implication. Especially since the author of Al-Hilya has limited what replaces prayer to intended acts of worship that are not valid without purification. Rather, the correct view in my opinion is that Allah, Glorified and Exalted be He, sent down pure water from the sky to purify us with it, and commanded us to use it in wudu and ghusl, not specifically for performing prayer, but for everything in which purification is required, whether intended in itself initially or not. Then He said, "And if you find no water," meaning enough for your purification, "then perform tayammum" for your purification "with clean earth." So the origin is the intention of purification, as indicated by what is in Al-Fath, and everything revolves around it. That is why Imam Al-Burhan in Al-Tajnis restricted it to that. The purification intended here is nothing but the removal of ritual impurity (najasat hukmiyya), which is what I adopted in the definition. Praise be to Allah who inspired my heart and guided my pen to what is the verified matter according to the verified leading scholars.

Page 573 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड 3

मैं कहता हूँ: 'अल-हिल्या' के लेखक का यह कथन कि "तो यह मामला उसी से सीमित रहेगा आदि" स्पष्ट रूप से विचारणीय है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम 'बदई' के हवाले से पहले ही बता चुके हैं कि तयम्मुम का आदेश कयास (सादृश्य) के विरुद्ध आया है। स्वयं 'हिल्या' में भी अध्याय के आरंभ में लिखा है कि "इबादत के रूप में विशिष्ट अंगों पर उन दोनों के मसह (पोंछने) का आदेश कयास के विरुद्ध आया है।" अब यदि आने वाला यह आदेश केवल नमाज़ के इरादे से सीमित होता, तो नमाज़ के अलावा अन्य कार्यों के लिए तयम्मुम जायज़ ही नहीं होता, जैसे कि मस्जिद में प्रवेश करना, जनाबत की स्थिति में कुरान पढ़ना, या बिना वुज़ू के कुरान को छूना। और यह इज्मा (सर्वसम्मति) के विरुद्ध है। ये कार्य हर पहलू से नमाज़ के अर्थ में नहीं आते कि उन्हें संकेत के माध्यम से नमाज़ से जोड़ा जा सके। विशेष रूप से तब जब 'हिल्या' के लेखक नमाज़ के स्थान पर आने वाले कार्य को ऐसी इच्छित इबादत तक सीमित कर रहे हैं जो बिना पवित्रता के सही नहीं होती। बल्कि मेरे निकट सही यह है कि अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने हमारी शुद्धि के लिए आकाश से पवित्र जल उतारा। और हमें वुज़ू और गुस्ल में इसके उपयोग का आदेश दिया। केवल नमाज़ अदा करने के लिए नहीं, बल्कि हर उस कार्य के लिए जिसमें पवित्रता की आवश्यकता हो, चाहे वह स्वयं में उद्देश्य हो या न हो। फिर फरमाया: "और यदि तुम पानी न पाओ", अर्थात अपनी शुद्धि के लिए पर्याप्त पानी न पाओ, "तो (पाक मिट्टी से) तयम्मुम करो" अपनी शुद्धि के लिए, यानी यदि तुम्हें अपनी शुद्धि के लिए पर्याप्त पानी न मिले, तो स्वयं को शुद्ध करने के लिए...

756 में से पृष्ठ 573

اقول: صاحب حلیہ کا کلام "تو یہ امر اسی سے مقید رہے گا الخ"۔ عیاں طور پر محل نظر ہے۔ اس لئے کہ بدائع کے حوالہ سے ہم پہلے یہ بیان کر چکے ہیں کہ تیمم کا حکم خلافِ قیاس وارد ہے۔ خود حلیہ میں بھی شروع فصل میں لکھا ہے کہ " التعبد ورد بمسحهما على الاعضاء المخصوصة یعنی بر خلاف قیاس بطورِ عبادت اعضائے مخصوصہ پر ان دونوں کے مسح کا حکم وارد ہوا ہے " اب یہ وارد ہونے والا حکم اگر ارادہ نماز سے مقید ہوتا تو کسی غیر نماز جیسے مسجد میں داخل ہونا، جنابت والے کا قرآن پڑھنا، بے وضو شخص کا مصحف چھونا کسی کام کیلئے تیمم جائز ہی نہ ہوتا اور یہ اجماع کے خلاف ہے اور یہ افعال ہر جہت سے معنی نماز میں داخل نہیں ہیں کہ بطور دلالت انہیں نماز سے لاحق کر دیا جائے۔ خصوصاً جب کہ صاحب حلیہ نماز کے قائم مقام فعل کو ایسی عبادت مقصودہ میں منحصر قرار دے رہے ہیں جو بغیر طہارت صحیح نہیں ہوتی، بلکہ میرے نزدیک صحیح یہ ہے کہ اللہ سبحانہ وتعالیٰ نے ہماری تطہیر کیلئے آسمان سے پاک پانی اتارا۔ اور وضو و غسل میں اسے استعمال کرنے کا ہمیں حکم دیا۔ خاص ادائے نماز کیلئے نہیں بلکہ ہر اس کام کیلئے جس میں طہارت مطلوب ہو خواہ وہ بجائے خود مقصود ہو یا نہ ہو۔ پھر فرمایا: "فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً" ای کافیاً لطهرکم (فتیمموا لطهیرکم صعیدا طیبا) یعنی تم اپنی طہارت کیلئے کافی پانی نہ پاؤ اپنے کو پاک کرنے کیلئے

Fatawa Razvia, Volume III And praise be to Allah, the Guardian of blessings. Aim for pure earth. Thus, the essence is that very intention of purification (Tathir), as the learned researcher (Al-Muhaqqiq) stated in 'Fath al-Qadir'. And every action depends upon this intention. This is why Imam Burhanuddin Marghinani in 'Al-Tajnis' relied solely on this. And the purification intended here is the removal of the same 'Najasat-e-Hukmiyah' (legal impurity). I have included this in my definition. So, thanks be to Allah that He inspired this in my heart and guided my pen towards what is a settled matter among the investigative Imams. And all praises are for Allah, the Owner of favor and blessings. (T)

An objection may be raised: Where is the purification and removal of impurity in the last two (ninth and tenth) cases? For if one were to become pure and the impurity were removed, then everything would become permissible for him. I say (Aqool): Why not? There is purification and removal of impurity, but only in respect of that action for which the intention was made. If it were not so, how would prayer become permissible for him with this Tayammum, and how would entering the mosque while in a state of 'Janabat' (major ritual impurity) become permissible? And there is nothing surprising in the fact that this consideration might not apply to certain things. This is because this impurity is 'Najasat-e-Hukmiyah', the existence and negation of which depend on the consideration and lack of consideration by the Sharia. We see that even 'Najasat-e-Haqiqiyah' (physical impurity) is such that it is removed for one person and not for another, as mentioned previously at the beginning of the treatise, and it is mentioned here from 'Al-Badai' that...

(Footnote): Here, the discourse concerns matters for which purity is a condition. And from the upcoming phrase "Aqool etc.", the discourse concerns matters other than those. 12 Minhu Ghafar-lahu (T).

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द सोम (तीसरा) और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो नेमतों का स्वामी है। पवित्र मिट्टी का इरादा करो। अतः मूल वही ततहीर (पवित्रीकरण) की नीयत है जैसा कि मोहक़्क़िक़ (शोधकर्ता) ने 'फ़तह अल-क़दीर' में स्पष्ट किया है। और हर कार्य का आधार इसी नीयत पर है। इसीलिए इमाम बुरहानुद्दीन मरग़ीनानी ने 'तजनीस' में इसी पर संतोष किया। और यहाँ जो ततहीर अभीष्ट है, वह वही नजासत-ए-हुकमिया (कानूनी अशुद्धि) का निवारण है। इसी को मैंने अपनी परिभाषा में सम्मिलित किया है। तो अल्लाह का शुक्र है कि उसने मेरे हृदय में यही प्रेरणा दी और मेरी लेखनी को उसी पर चलाया जो शोधकर्ता इमामों के निकट एक प्रमाणित सत्य है। और समस्त प्रशंसा उपकार और वरदान के स्वामी अल्लाह के लिए ही है। (त)

यह आपत्ति की जा सकती है कि अंतिम दो (नौवीं और दसवीं) स्थितियों में ततहीर (पवित्रता) और अज़ाला-ए-नजासत (अशुद्धि का निवारण) कहाँ है? क्योंकि यदि वह पवित्र हो जाता और अशुद्धि दूर हो जाती, तो उसके लिए सब कुछ वैध हो जाता। मैं कहता हूँ (अक़ूल): क्यों नहीं। ततहीर और अज़ाला-ए-नजासत है, किन्तु केवल उसी कार्य के संबंध में जिसकी नीयत की गई। यदि ऐसा न होता, तो इस तयम्मुम से उसके लिए नमाज़ कैसे वैध हो जाती और जनाबत (अशुद्धता) की स्थिति में मस्जिद में प्रवेश कैसे वैध हो जाता? और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि कुछ वस्तुओं के संबंध में यह विचार न किया जाए। इसका कारण यह है कि यह अशुद्धि 'नजासत-ए-हुकमिया' ही है, जिसका अस्तित्व और समाप्ति शरीयत के विचार और अ-विचार पर निर्भर करती है। हम तो देखते हैं कि 'नजासत-ए-हक़ीक़िया' (वास्तविक अशुद्धि) का भी यही हाल है कि वह एक व्यक्ति के लिए समाप्त हो जाती है और दूसरे के लिए नहीं, जैसा कि शोध-पत्र के आरम्भ में वर्णित है और यहाँ 'अल-बदाए' से उद्धृत है कि...

(पाद-टिप्पणी): यहाँ उन विषयों पर चर्चा है जिनमें पवित्रता अनिवार्य शर्त है। और आगामी शब्द "अक़ूल अल-ख" से उन विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर चर्चा है। 12 मिन्हु ग़फ़र-लहू (त)।

فتاوی رضویہ جلد سوم والحمد للہ ولی الانعام۔ پاکیزہ روئے زمین کا قصد کرو۔ تو اصل وہی نیت تطہیر ہے جیسا کہ حضرت محقق نے فتح القدیر میں افادہ فرمایا۔ اور اسی نیت پر ہر ایک کام کا مدار ہے۔ اسی لئے امام برہان الدین مرغینانی نے تجنیس میں اسی پر اکتفا کیا۔ اور یہاں جو تطہیر مقصود ہے وہ وہی نجاست حکمیہ کا دُور کرنا ہے۔ اسی کو میں نے اپنی تعریف میں لیا ہے۔ تو خدا کا شکر ہے کہ میرے دل میں اسی کا القاء فرمایا اور میرے قلم پر وہی جاری کیا جو محققین ائمہ کرام کے نزدیک امر محقق ہے۔ اور ساری خوبیاں احسان وانعام کے مالک خدا ہی کیلئے ہیں۔ (ت)

بقی ان یقال این التطھیر وازالۃ النجاسۃ فی الصورتین الاخیرتین اذ لو طھر وزالت لجاز لہ کل شیئی۔ اقول: بل ولکن(۱) فی حق معنوی ولولا ذلک کیف عہ حلت لہ تلك الصلاۃ ودخول المسجد جنباً بذلک التیمم ولا غرو فی اعتبارھا زائلۃ فی حق بعض الاشیاء دون بعض فماھی الا حکمیۃ تثبت باعتبار الشرع وتنتفی بعدمہ ونری الحقیقۃ تزول فی حق انسان دون آخر ولاجل دون غیرہ کما تقدم فی صدر الرسالۃ وقدم ھھنا عن البدائع انہ

یہ اعتراض ہو سکتا ہے کہ آخری دو (نویں، دسویں) صورتوں میں تطہیر اور ازالہ نجاست کہاں؟ اس لئے کہ اگر وہ پاک ہو جاتا اور نجاست دُور ہو جاتی تو اس کیلئے سب کچھ جائز ہو جاتا۔ جواب (اقول): کیوں نہیں۔ تطہیر اور ازالہ نجاست ہے مگر اسی عمل کے حق میں جس کی نیت کی۔ اگر ایسا نہ ہوتا تو اس کیلئے اس تیمم سے نماز کیسے جائز ہو جاتی اور بحالت جنابت مسجد میں داخل ہونا کیسے جائز ہو جاتا اور اس میں کوئی تعجب کی بات نہیں کہ کچھ چیزوں کے حق میں یہ اعتبار نہ ہو۔ اس لئے کہ یہ نجاست، نجاست حکمیہ ہی تو ہے جس کا ثبوت وانتفاء شریعت کے اعتبار اور عدم اعتبار سے ہی ہوتا ہے ہم تو دیکھتے ہیں کہ نجاست حقیقیہ کا بھی یہ حال ہے کہ کسی انسان کے حق میں زائل ہو جاتی ہے اور

عه کلام فی المشروطات بالطهارة و من قوله اقول وقد تقدم کلام فی غیرها ۱۲ منه غفرله (م) یہاں سے ان امور کے بارے میں کلام ہے جن میں طہارت کی شرط ہے۔ اور آنے والے "اقول الخ" سے ان کے علاوہ امور سے متعلق کلام ہے ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

Volume 3 Fatawa Razawiyya

[Arabic Text]: The purification of water occurs for the one who used it, and no other [1]. The same is stated in Al-Hilyah. [Urdu Text]: Not for anyone else. Similarly, it is declared vanished for any matter, but not for anyone else, as passed at the beginning of the treatise. And here it is passed with reference to Bada'i' that this Tayammum will become purification only for the work for which it was brought into action, not for another. (End). Like this is in Hilyah. And in Shami it is: "It will become purification only for that action which was intended." (End - t)

[Arabic Text]: And in Sh (Shami): Purification occurs for what he intended for it only [2]. (End).

[Arabic Text]: I say (Aqool): And the saying of Prophet صلی اللہ تعالی علیہ وسلم has already passed when he performed Tayammum to return the greeting: "Nothing prevented me from returning the greeting to you except that I was not in a state of purity" [3]. So he guided that Tayammum for returning the greeting makes the Tayammum-performer pure in his right, even though the greeting does not require purity. So if it is considered purifying in what purity is not necessary for due to the legal absence of water, then in its actual absence it is even more so. So that which is not permissible except with purity is more deserving and worthier. And what the researcher (Al-Muhaqqiq) presented in Al-Fath of the possibility that his (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) being in a state with which Tayammum is valid, then he returns the greeting when he becomes pure [4]. (End). It was rejected in Al-Bahr by stating that the school of thought is that Tayammum for greeting is valid and that the mentioned authorization is contrary to the apparent meaning.

[Urdu Text]: I say: The blessed saying of the Messenger of Allah صلی اللہ تعالی علیہ وسلم has been stated that when he performed Tayammum for answering the greeting, he said: "Nothing prevented me from answering your greeting except that I was not in a state of purity." From this command, the guidance was obtained that Tayammum done for the purpose of answering a greeting makes the one performing Tayammum pure in the right of answering the greeting, although purity is not needed for the greeting. So when this Tayammum, in an action for which purity is not necessary, is considered purifying due to the legal absence of water, then in the case of actual absence, it will be purifying to a higher degree. And for that action which is not even permissible without purity, it will be proven as purifying in an even more

suitable and better way. The researcher (Al-Muhaqqiq) has expressed this possibility in Fath al-Qadir that...

[Footnotes]: 1. Badai' as-Sanai', Shara'it-e-Rukn-ut-Tayammum, HM Saeed Company Karachi, 1/52 2. Radd al-Muhtar, Bab-ut-Tayammum, Matba' Mustafa Al-Babi Egypt, 1/178 3. Sunan Abi Dawood, Bab-ut-Tayammum fil-Hazr, Printed Mujtabai Lahore, 1/47 4. Fath al-Qadir, Bab-ut-Tayammum, Maktabah Nooria Razawiyya Sukkur, 1/114

जिल्द 3 फ़तावा रज़विया

[अरबी पाठ]: पानी की पाकी (शुद्धता) उसी के लिए होती है जिसने उसे इस्तेमाल किया, और किसी के लिए नहीं [1]। अल-हिलिया में भी ऐसा ही है। [उर्दू पाठ]: किसी और के हक़ में नहीं। वैसे ही किसी काम के लिए खत्म मान ली जाती है, किसी और के लिए नहीं, जैसा कि रिसाले की शुरुआत में गुज़र चुका है। और यहाँ 'बदाइ' के हवाले से गुज़रा कि यह तयम्मुम उसी काम के लिए पाकी बनेगा जिसके लिए इसे अमल में लाया गया, किसी दूसरे के लिए नहीं। (समाप्त)। इसी की तरह 'हिलिया' में है। और 'शामी' में है: "सिर्फ उसी अमल के लिए पाकी बनेगा जिसकी नियत की गई है।" (समाप्त - त)

[अरबी पाठ]: और 'श' (शामी) में है: पाकी उसी के लिए होती है जिसकी उसने नियत की [2]। (समाप्त)।

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ (अक़ूल): और अल्लाह के रसूल صلی اللہ تعالی علیہ وسلم का यह फरमान पहले ही आ चुका है जब उन्होंने सलाम का जवाब देने के लिए तयम्मुम किया: "मुझे तुम्हारे सलाम का जवाब देने से किसी चीज़ ने नहीं रोका सिवाय इसके कि मैं पाकी की हालत में नहीं था" [3]। तो उन्होंने मार्गदर्शन किया कि सलाम के जवाब के लिए तयम्मुम करने वाले को उसके हक़ में पाक बना देता है, हालांकि सलाम के लिए पाकी की ज़रूरत नहीं होती। तो जब इसे उस चीज़ में पाक करने वाला माना गया जिसमें पानी की कानूनी कमी की वजह से पाकी ज़रूरी नहीं है, तो पानी की हक़ीक़ी कमी में तो यह और भी ज़्यादा पाक करने वाला होगा। तो वह चीज़ जो बिना पाकी के जाइज़ ही नहीं, वह और भी ज़्यादा हक़दार और बेहतर है। और मुहक़्क़िक ने 'अल-फतह' में जो यह संभावना ज़ाहिर की कि उनका (صلی اللہ تعالی علیہ وسلم) उस हाल में होना जिसके साथ तयम्मुम सही होता है, फिर वह सलाम का जवाब दें जब वह पाक हो जाएँ[4]। (समाप्त)। 'अल-बहर' में इसे यह कहकर रद्द कर दिया गया कि मज़हब यह है कि सलाम के लिए तयम्मुम सही है और ज़िक्र किया गया जवाज़ ज़ाहिर के खिलाफ है।

[उर्दू पाठ]: मैं कहता हूँ: अल्लाह के रसूल صلی اللہ تعالی علیہ وسلم का यह मुबारक इरशाद बयान हो चुका है कि जब सलाम के जवाब के लिए तयम्मुम किया तो फरमाया था: "मुझे तुम्हारे सलाम का जवाब देने से सिर्फ यह बात रोक रही थी कि मैं बा-तहारत (पवित्र) न था।" इस फरमान से यह हिदायत हासिल हुई कि सलाम के जवाब के मक़सद से होने वाला तयम्मुम, तयम्मुम करने वाले

को सलाम के जवाब के हक़ में पाक (ताहिर) बना देता है, हालाँकि सलाम के लिए पाकी की ज़रूरत नहीं। तो जब यह तयम्मुम उस अमल में जिसके लिए पाकी ज़रूरी नहीं, पानी की कानूनी अनुपलब्धता की वजह से पाक करने वाला (मुतह्हिर) माना गया है, तो हक़ीक़ी अनुपलब्धता की सूरत में तो यह यक़ीनन और बेहतर तौर पर पाक करने वाला होगा। और वह अमल जो बिना पाकी के जाइज़ ही नहीं होता, उसके लिए तो यह और भी ज़्यादा मुनासिब और बेहतर तरीके से पाक करने वाला साबित होगा। हज़रत मुहक़्क़िक ने 'फतह अल-क़दीर' में यह संभावना ज़ाहिर फरमाई है कि...

[पाद टिप्पणियाँ]: 1. बदाइ' अस-सनाइ', शराइत-ए-रुकन-उत-तयम्मुम, एचएम सईद कंपनी कराची, 1/52 2. रद्द अल-मुह्तार, बाब-उत-तयम्मुम, मतबा मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/178 3. सुनन अबी दाऊद, बाब-उत-तयम्मुम फिल-हज़र, मतबुआ मुज्तबाई लाहौर, 1/47 4. फतह अल-क़दीर, बाब-उत-तयम्मुम, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 1/114

पृष्ठ 575/756

جلد سوم فتاوی رضویہ

یقع طھور الماء اوقعه لاغیر ^{1} اھ ومثله فی الحلیة کسی کے حق میں نہیں۔ یونہی کسی امر کے لئے زائل قرار پاتی ہے کسی کے لئے نہیں۔ جیسا کہ شروع رسالہ میں گزر چکا۔ اور یہاں بدائع کے حوالہ سے گزرا کہ یہ تیمم اسی کام کیلئے طہارت بنے گا جس کیلئے اسے عمل میں لایا، دوسرے کیلئے نہیں۔ اھ اسی کے مثل حلیہ میں ہے۔ اور شامی میں ہے: "صرف اس عمل کیلئے طہارت بنے گا جس کی نیت کی ہے"۔ اھ (ت)

وفی ش یقع طھارة لما نواہ له فقط ^{2} اھ

اقول: وقد تقدم قوله صلی اللہ تعالی علیه وسلم حین تیمم لرد السلام لم یمنعنی ان ارد علیك السلام الا انی لم اکن علی طھر ^{3} فارشد ان التیمم لرد السلام یجعل التیمم طاھرا فی حقه مع ان السلام لا یحتاج الی الطھارة فاذا اعتبر مطھرًا فیما لیست الطھارة ضروریة له لعدم الماء حکما ففی عدمه حقیقة اولی فمالاحل له الا بالطھارة اجدر واحری وما ابد المحقق فی الفتح من احتمال کونه صلی اللہ تعالی علیه وسلم ما یصح معه التیمم ثم یرد السلام اذا صار طاھرا ^{4} اھ رده فی البحر بان المذھب ان التیمم للسلام صحیح وان التجویز المذکور خلاف الظاھر

اقول: (میں کہتا ہوں): رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا یہ ارشاد مبارک بیان ہو چکا ہے کہ جواب سلام کے لئے جب تیمم کیا تو فرمایا تھا: "لم یمنعنی ان اردّ علیك السلام الا انی لم اکن علی طھر" (مجھے تمہارے سلام کا جواب دینے سے صرف یہ بات مانع تھی کہ میں باطہارت نہ تھا) اس فرمان سے یہ ہدایت حاصل ہوئی کہ جواب سلام کی غرض سے ہونے والا تیمم، تیمم کرنے والے کو جواب سلام کے حق میں طاہر بنا دیتا ہے حالانکہ سلام کیلئے طہارت کی ضرورت نہیں

تو جب یہ تیمم اُس عمل میں جس کیلئے طہارت ضروری نہیں پانی کے عدم حکمی کی وجہ سے مطہر مانا گیا ہے تو عدم حقیقی کی صورت میں تو بدرجہ اولیٰ مطہر ہوگا اور وہ عمل جو بغیر طہارت جائز ہی نہیں ہوتا اس کیلئے تو اور زیادہ مناسب و بہتر طریقہ پر مطہر ثابت ہوگا۔ حضرت محقق نے فتح القدیر میں یہ احتمال ظاہر فرمایا ہے کہ

1 بدائع الصنائع شرائط رکن التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۵۲ 2 رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۸ 3 سنن ابی داؤد باب التیمم فی الحضر مطبوعہ مجتبائی لاہور ۱/ ۴۷ 4 فتح القدیر باب التیمم مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۱۴

Volume Three Fatawa Razvia

[Arabic Text:] As it is not hidden[1] Ah. I say: It follows from this that he (Peace and Blessings of Allah be upon him) was without water at the time of performing Tayammum (dry ablution)[2] as Imam Nawawi interpreted it in the commentary of Muslim. This is extremely unlikely, for the event took place in the noble city of Medina. The beginning of the Hadith states: A man passed through one of the streets and greeted him (Peace and Blessings of Allah be upon him). He did not respond until the man was about to disappear in the street, then he struck his hands on the wall[3]... [end of Hadith]. Rather, in the Sahihayn (Bukhari and Muslim), it is mentioned that the Messenger of Allah (Peace and Blessings of Allah be upon him) was coming from the direction of Bir Jamal when a man met him and greeted him. He did not respond until he reached a wall, wiped his face and hands [performed Tayammum], and then returned the greeting[4] Ah. Bir Jamal is a place in the noble city of Medina. Upon its resident and his family be the best prayers and peace.

[Urdu Text:] "It is possible that the Holy Prophet (Peace and Blessings of Allah be upon him) had intended something for which Tayammum is valid, and when he became pure, he responded to the greeting." However, in Al-Bahr al-Ra'iq, this possibility was rejected with these words: "The school of thought (Madhab) is that Tayammum for the greeting is valid and correct. And the mentioned possibility is against the apparent meaning, as is evident." (T) I say: Based on this possibility, it would also follow that at the time of Tayammum, water was not within the reach of the Holy Prophet (Peace and Blessings of Allah be upon him), as Imam Nawawi interpreted it in the commentary of Muslim. This is not just unlikely, but extremely unlikely because this event occurred in Medina Munawwarah. The initial words of the Hadith are: "A man passed through one of the streets who greeted the Holy Prophet (Peace and Blessings of Allah be upon him), but the Holy Prophet (Peace and Blessings of Allah be upon him) did not respond until he was almost out of sight from the street. Then the Master (Peace and Blessings of Allah be upon him) struck both hands on the wall..." - The Hadith. In fact, in the Sahihayn, it is clearly stated: "The Messenger of Allah (Peace and Blessings of Allah be upon him) was coming from the direction of Bir Jamal when he met a person who greeted him. The Messenger of Allah (Peace and Blessings of Allah be upon him) did not respond until he came to a wall, performed Tayammum on his face and hands, and then responded to the greeting." Bir Jamal itself is a place in Medina Munawwarah. Upon the master of Medina and his progeny be the best blessings and peace. (T)

Footnotes: 1 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/150 to 151. 2 Sharh Muslim by Nawawi with Muslim, Chapter on Tayammum, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/161. 3 Sunan Abi Dawud, Chapter on Tayammum in residence, printed by Mujtabai, Lahore, 1/7. 4 Sahih Muslim, Chapter on Tayammum, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/161.

[अरबी पाठ:] जैसा कि स्पष्ट है[1] अह। मैं कहता हूँ: इससे यह अनिवार्य होता है कि वह (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) तयम्मुम के समय पानी से वंचित थे[2] जैसा कि इमाम नववी ने मुस्लिम की व्याख्या में उल्लेख किया है। यह अत्यंत असंभावित है, क्योंकि यह घटना मदीना शरीफ की है। हदीस की शुरुआत इस प्रकार है: एक व्यक्ति गलियों में से एक गली से गुजरा और उसने उन्हें (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) सलाम किया। उन्होंने तब तक उत्तर नहीं दिया जब तक कि वह व्यक्ति गली में ओझल होने के करीब नहीं पहुँच गया, फिर उन्होंने अपने हाथ दीवार पर मारे[3]... [हदीस]। बल्कि सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) में यह स्पष्ट है कि "अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) बीर जमल की दिशा से आ रहे थे कि एक व्यक्ति से मुलाकात हुई, उसने सलाम किया। अल्लाह के रसूल (अल्लाह की उन पर कृपा और शांति हो) ने उत्तर नहीं दिया जब तक कि वह एक दीवार के पास नहीं आ गए और अपने चेहरे और हाथों पर तयम्मुम किया, फिर सलाम का जवाब दिया"[4] अह। और बीर जमल खुद मदीना शरीफ में एक स्थान है। मदीना के स्वामी और उनके वंश पर सर्वोत्तम दुरूद और सलाम हो।

[उर्दू पाठ:] "हो सकता है कि हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किसी ऐसी बात का इरादा किया हो जिसके लिए तयम्मुम करना जायज़ हो, फिर जब वह पवित्र हो गए तो सलाम का जवाब दिया।" लेकिन अल-बहरर राइक में इस संभावना को इन शब्दों में खारिज कर दिया गया है कि "मज़हब यह है कि सलाम के लिए तयम्मुम करना जायज़ और सही है। और उक्त संभावना ज़ाहिर के खिलाफ है जैसा कि स्पष्ट है।" (त) मैं कहता हूँ: इस संभावना के आधार पर यह भी आवश्यक होगा कि तयम्मुम की स्थिति में हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पहुँच में पानी नहीं था जैसा कि इमाम नववी ने मुस्लिम की व्याख्या में इसका अर्थ निकाला है, जबकि यह केवल दूर की बात नहीं बल्कि अत्यंत दूर की बात है क्योंकि यह घटना मदीना मुनव्वरा की है। हदीस के शुरुआती शब्द ये हैं: "गलियों में से एक गली में एक आदमी गुजरा जिसने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को सलाम किया तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जवाब नहीं दिया यहाँ तक कि जब वह गली से ओझल होने के करीब था तो सरकार (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दीवार पर दोनों हाथ मारे" - अल-हदीस। बल्कि सहीहैन में तो यह स्पष्टता है कि "रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बीर जमल की दिशा से तशरीफ़ ला रहे थे, एक व्यक्ति से मुलाकात हुई उसने सलाम किया, हुज़ूर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने जवाब नहीं दिया यहाँ तक कि एक

दीवार के पास आकर चेहरे और हाथों पर तयम्मुम किया फिर उसके सलाम का जवाब दिया"। बीर जमल खुद मदीना मुनव्वरा में एक स्थान है। मदीना के स्वामी और उनकी आल पर बेहतर दुरूद व सलाम। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1 अल-बहरर राइक, बाब-ए-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/150 से 151। 2 शरह मुस्लिम लिन-नववी मअ मुस्लिम, बाब-ए-तयम्मुम, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/161। 3 सुनन अबी दाऊद, बाब-ए-तयम्मुम फिल-हज़र, मुज्तबाई प्रेस, लाहौर, 1/7। 4 सहीह मुस्लिम, बाब-ए-तयम्मुम, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/161।

کما لا یخفی[1] اھ اقول: ویلزم علی ھذا انہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کان عادماً للماء حال التیمم[2] کما حملہ علیہ الامام النووي في شرح مسلم وھو في غایۃ البعد اشد البعد لان الواقعۃ کانت بالمدینۃ الکریمۃ فصدر الحدیث مر رجل في سکۃ من السکك فسلم علیہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فلم یرد علیہ حتی اذ اکاد الرجل ان یتواری في السکۃ ضرب بیدیہ علی الحائط[3] الحدیث بل في الصحیحین اقبل رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم من نحو بئر فلقیہ رجل فسلم علیہ فلم یرد علیہ حتی اقبل علی جدار فمسح وجھہ ویدیہ ثم ردّ علیہ السلام[4] اھ وبئر جمل موضع بالمدینۃ الکریمۃ علی صاحبھا وآلہ افضل صلاۃ وسلام۔

"ہو سکتا ہے حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے کسی ایسے امر کی نیت کی ہو جس کے ساتھ تیمم درست ہوتا ہے پھر جب طاہر ہوگئے تو سلام کا جواب دیا ہو "اھ لیکن البحر الرائق میں اس احتمال کو ان الفاظ میں رد کردیا ہے کہ "مذہب یہ ہے کہ سلام کے لئے تیمم درست اور صحیح ہے۔ اور احتمال مذکور خلافِ ظاہر ہے جیسا کہ عیاں ہے۔ اھ (ت) اقول: اس احتمال کی بنیاد پر یہ بھی لازم آئے گا کہ بحالتِ تیمم حضور اقدس صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی دسترس میں پانی نہ تھا جیسا کہ شرح مسلم میں اسی پر امام نووی نے محمول کیا ہے حالانکہ یہ بعید ہی نہیں انتہائی بعید ہے اس لئے کہ یہ واقعہ مدینہ منورہ کا ہے۔ ابتدائے حدیث کے الفاظ یہ ہیں: "گلیوں میں سے ایک گلی میں ایک آدمی گزرا جس نے حضور صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کو سلام کیا تو حضور صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے جواب نہ دیا یہاں تک کہ جب وہ گلی سے اوجھل ہونے کے قریب تھا تو سرکار صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے دیوار پر دونوں ہاتھ مارے "الحدیث۔ بلکہ صحیحین میں تو یہ صراحت ہے کہ "رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم بئر جمل کی سمت سے تشریف لا رہے تھے

ایک شخص سے ملاقات ہو گئی اس نے سلام کیا حضور رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نے جواب نہ دیا یہاں تک کہ ایک دیوار کے پاس آکر چہرے اور ہاتھوں پر تیمم کیا پھر اس کے سلام کا جواب دیا "اھ اور بئر جمل خود مدینہ منورہ میں ایک مقام ہے۔ صاحبِ مدینہ اور ان کی آل پر بہتر درود وسلام۔ (ت)

1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۵۰ تا ۱۵۱ 2 شرح مسلم للنووی مع المسلم باب التیمم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۶۱ 3 سنن ابی داؤد باب التیمم فی الحضر مطبوعہ مجتبائی لاہور ۱/۷ 4 صحیح لمسلم باب التیمم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۶۱

Fatawa Razviya Volume Three Fourteenth: The substance of the earth (Jins-e-Arz), understanding what is meant by the substance of the earth, which things are classified as such and which are not, is an important matter because the rulings on Tayammum (dry ablution) are based on it. So listen attentively, and success is through Allah, and through Him is the attainment to the heights of research. (So listen carefully. And guidance is from God alone; with His help, the peaks of research are reached. - Trans.)

फ़तावा रज़विया जिल्द 3 चौदहवाँ: जिन्स-ए-अ़र्ज़ (मिट्टी की श्रेणी), इसकी पहचान कि जिन्स-ए-अ़र्ज़ किसे कहते हैं और कौन-कौन सी चीज़ें जिन्स-ए-अ़र्ज़ से हैं और कौन सी नहीं, एक महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि तयम्मुम के मसाइल (नियम) इसी पर आधारित हैं। तो ध्यान से सुनें, और तौफ़ीक़ (सफलता) अल्लाह ही की ओर से है और उसी के द्वारा शोध की ऊंचाइयों तक पहुंचना संभव है। (तो ध्यान से सुनें, और तौफ़ीक़ ख़ुदा ही की तरफ़ से है, उसी की मदद से शोध की बुलंदियों तक रसाई है। - अनुवाद)

www.dawateislami.net आई. टी. मजलिस दावत-ए-इस्लामी पृष्ठ 577 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم چودہواں: جنسِ ارض، اس کی معرفت کہ جنسِ ارض کسے کہتے ہیں اور کیا کیا چیزیں جنسِ ارض سے ہیں اور کیا کیا نہیں، ایک اہم معاملہ ہے کیونکہ مسائلِ تیمم کا مدار اسی پر ہے۔ پس غور سے سنو، اور توفیق اللہ ہی کی طرف سے ہے اور اسی کے ذریعے تحقیق کی بلندیوں تک پہنچنا ممکن ہے۔ (پس توجہ سے سنو، اور توفیق اللہ تعالٰی کی طرف سے ہے، اور اسی کی مدد سے تحقیق کی چوٹیوں تک رسائی حاصل ہوتی ہے۔ ت)

Fatawa Rizvia Volume Three

Supplement Treatise Al-Matar al-Sa'id 'ala Nabt Jins al-Sa'id 1335 AH (A Fortunate Rain on the Vegetation of the Genus of the Earth)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His noble Messenger.

According to our master, the Imam of Imams, Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him), Tayammum (dry ablution) is permissible with everything that belongs to the 'genus of the earth' (Jins-e-Arz), provided it is not dominated by something of another genus. However, according to all our other Imams (may Allah be pleased with them), it is not permissible with anything else. Therefore, the definition and extent of 'genus of the earth' are required. There are four points in this regard:

First point: Definition.

I say: And with Allah is success, and through Him is reaching the depths of refinement and research. (I say, and success is from God alone, and with His help is the access to the depths of refinement and investigation.) In explaining the 'genus of earth', the noble scholars have mentioned five terms regarding the effects produced in bodies by fire: (1) Combustion (Ihtiraq) (2) Ashing (Tarammud) (3) Softening (Leen) (4) Melting (Zowban) (5) Impressionability/Malleability (Intiba')

First, the explanation of their meanings and their mutual relationships; then, a mention of the various forms in which they appear in the words of the scholars; then, the presentation of any objections to these statements; thereafter, with the help of God Almighty, we shall provide thorough refinement, clear research, clarification of objectives, refutation of objections, completion of definitions, and clear elucidation of benefits as required. And success is from Allah.

Page 579 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (खंड 3)

रिसाला ज़िमनिया अल-मतरुस सईद अला नब्ति जिन्सिल सईद १३३५ हि. (मिट्टी की प्रजाति की वनस्पतियों पर मंगलकारी वर्षा)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम। हम उनकी प्रशंसा करते हैं और उनके सम्मानित रसूल पर दरूद भेजते हैं।

हमारे आका, इमामों के इमाम, इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के अनुसार, हर उस चीज़ से तयम्मुम जायज़ है जो 'मिट्टी की प्रजाति' (जिन्स-ए-अर्श) से हो, बशर्ते कि वह किसी दूसरी प्रजाति से दबी न हो। जबकि हमारे अन्य सभी इमामों (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) के नज़दीक इसके अलावा किसी और चीज़ से जायज़ नहीं है। इसलिए 'मिट्टी की प्रजाति' की परिभाषा और विस्तार की आवश्यकता है। इसमें चार विषय हैं:

पहला विषय: परिभाषा (तहदीद)।

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से ही सफलता है और उसी के माध्यम से शोध और अन्वेषण की गहराइयों तक पहुँच संभव है। (मैं कहता हूँ और अल्लाह ही की तौफीक से है, और उसी की मदद से शोध और तहकीक की गहराइयों तक पहुँच है।) उलेमा-ए-किराम ने 'मिट्टी की प्रजाति' के वर्णन में उन प्रभावों के बारे में पाँच शब्द उल्लेख किए हैं जो शरीरों में आग से पैदा होते हैं: (१) जलना (एहतराक़) (२) राख होना (तरम्मुद) (३) कोमलता (लीन) (४) पिघलना (ज़ौबान) (५) ढलना (इन्तिबाअ)

सबसे पहले उनके अर्थों और उनके आपसी संबंधों का वर्णन, फिर उलेमा के शब्दों में जिन विभिन्न रूपों में वे आए हैं उनका उल्लेख, फिर उन कथनों पर जो आपत्तियाँ हैं उनका उल्लेख, फिर अल्लाह तआला की तौफीक से आवश्यकतानुसार गहन शोध, स्पष्ट अनुसंधान, उद्देश्यों का स्पष्टीकरण, आपत्तियों का निराकरण, परिभाषा की पूर्णता और लाभों का स्पष्टीकरण करेंगे। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है।

पृष्ठ 579/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

رسالہ ضمنیہ المطر السعید علی نبت جنس الصعید ۱۳۳۵ھ جنس صعید کی نبات پر بارانِ مسعود (ت)

بسم اللہ الرحمن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

سیدنا امام الائمہ امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے نزدیک ہر اس چیز سے کہ جنسِ ارض سے ہو تیمم روا ہے جبکہ غیرِ جنس سے مغلوب نہ ہو اور اس کے غیر سے ہمارے جمیع ائمہ رضی اللہ تعالٰی عنہم کے نزدیک روا نہیں لہٰذا جنسِ ارض کی تحدید و تمدید درکار۔ اس میں چار مقام ہیں:

مقامِ اول تحدید۔

اقول: وباللہ التوفیق و بہ الوصول الی اعماق التنقیح والتحقیق (میں کہتا ہوں اور توفیق خدا ہی کی جانب سے ہے، اور اسی کی مدد سے تنقیح و تحقیق کی گہرائیوں تک رسائی ہے۔ت) علمائے کرام نے بیانِ جنسِ ارض میں اُن آثار سے کہ اجسام میں نار سے پیدا ہوتے ہیں پانچ لفظ ذکر فرمائے ہیں: (۱) احتراق (۲) ترمد (۳) لین (۴) ذوبان (۵) انطباع

اولاً ان کے معانی اور ان کی باہم نسبتوں کا بیان، پھر کلماتِ علما میں جن مختلف صورتوں پر ان کا ورود ہوا اس کا ذکر پھر بیانات پر جو اشکال ہیں ان کا ایراد پھر بتوفیقہ تعالٰی بقدرِ ضرورت تنقیح بالغ و تحقیق بازغ و تبیینِ مقاصد و دفع ایرادات و تکمیلِ تحدید و ابانتِ افادات کریں وباللہ التوفیق۔

صفحہ 579 از 756

Fatawa-e-Razvia Volume Three

Explanation of the meanings of five words: Ihtiraq: Burning, etc., in food items it applies to a situation where a thing becomes corrupted or deviated from its intended purpose, either completely or partially, due to the effect of fire. Cooking food is not called 'Ihtiraq' but rather 'Tabkh' (cooking), 'Nuzj' (ripening), and 'Idrak' (perception/ maturity). In things other than these, sometimes the strong effect of fire alone is called 'Ihtiraq', even if the parts and purposes of the thing remain intact, such as scorched earth that has turned black due to the intensity of the fire's effect. In 'Durr-ul-Mukhtar', the issue of burnt earth is mentioned, stating that performing 'Tayammum' with it is permissible. Tahtawi and Shami said:

If its soil is burnt without any mixture until it turns black, it is permissible because it is the color of the soil that has changed, not its essence. When the soil of the earth has been burnt to such an extent, without any other additive, that it has turned black, then 'Tayammum' can be performed with it because only the color of the soil has changed, not its reality and essence. (T)

Furthermore, in such things, the state of becoming prepared for a purpose—which in food items is called 'cooking'—is also called 'Ihtiraq'. From the same category is the 'Ihtiraq' of stones and calcination (taklees), i.e., making lime from them.

Taram-mud: Becoming ash.

I say: There are four forms of 'Ihtiraq' (1): Intifa, Intifa, Intiqas which is of two types.

Intifa is when a thing burns and is completely annihilated, such as resin, sulfur, or sal ammoniac.

Intifa (drying) is when all parts remain intact after the action of fire. This is the 'Ihtiraq' of earth; if there was any external moisture that dried up, it was not a part of the earth itself.

Intiqas is when fire causes separation among the moist and dry components, and a portion of the body remains. In this case, if the moistures were very few and there was no difference in the volume of the body nor did it become much weaker than before, then it is the calcination (taklees) of stones, otherwise it is 'Taram-mud'. In this, if the fire went out before all the abundant moistures were destroyed, such that the ability to burn again remains due to the persistence of moisture, then it is 'Fahm', 'Ankasht', or coal; otherwise, it is 'Ramad', 'Khakastar', or ash. In this, the parts

usually disintegrate or will disintegrate upon touching, as the fire has completely broken the connection. We seek refuge in Allah Almighty from it (T). In common parlance, most people call this 'Ramad'.

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi Press, Egypt, 1/177

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

पाँच शब्दों के अर्थों का विवरण: एहतिराक़: जलना, इत्यादि, खाद्य पदार्थों में यह उस स्थिति पर लागू होता है जहाँ कोई चीज़ आग के प्रभाव से पूर्णतः या अंशतः खराब हो जाए या अपने उद्देश्य से हट जाए। खाना पकाने को 'एहतिराक़' नहीं कहेंगे बल्कि 'तब्ख़' (पकना), 'नुज़्ज' (परिपक्व होना) और 'इदराक' (तैयार होना) कहेंगे। इनके अलावा अन्य चीज़ों में कभी-कभी आग के मात्र प्रबल प्रभाव को 'एहतिराक़' कहते हैं, भले ही उस वस्तु के भाग और उद्देश्य बरकरार रहें, जैसे कि वह झुलसी हुई ज़मीन जो आग के प्रभाव की तीव्रता से काली हो गई हो। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में जली हुई ज़मीन का मसला वर्णित है कि उससे 'तयम्मुम' जायज़ है। तहतावी और शामी ने कहा:

इज़ा हरक़ा तुराबुहा मिन ग़ैरि मुख़ालितिन लहू हत्ता सारत सौदा-अ जाज़ लियनल मुतग़य्यिरा लौनुत तुराब ला ज़ातुहू। जब ज़मीन की मिट्टी किसी अन्य चीज़ के मिले बिना इस हद तक जला दी गई हो कि वह काली हो गई हो, तो उससे 'तयम्मुम' किया जा सकता है, क्योंकि इससे केवल मिट्टी के रंग में परिवर्तन आया है, वास्तविकता और सार (ज़ात) में कोई बदलाव नहीं हुआ है। (त)

बल्कि ऐसी चीज़ों में, किसी उद्देश्य के लिए तैयार हो जाने को—जिसे खाद्य पदार्थों में पक जाना कहते थे—'एहतिराक़' बोलते हैं। इसी श्रेणी से पत्थरों का 'एहतिराक़' और 'तक्लीस' यानी उनका चूना बनाना है।

तरमुद: राख हो जाना।

मैं कहता हूँ: 'एहतिराक़' (1) के चार रूप हैं: इंतिफ़ा, इंतिफ़ा, इंतिक़ास जो दो प्रकार का होगा।

इंतिफ़ा यह कि चीज़ जलकर बिल्कुल नष्ट हो जाए, जैसे कि राल, गंधक, नौसादर।

इंतिफ़ा (सूखना) यह कि आग की क्रिया के बाद उसके सभी भाग बरकरार रहें। यह ज़मीन का 'एहतिराक़' है; यदि वहाँ बाहर से पानी की कोई नमी थी जो सूख गई, तो वह ज़मीन का कोई हिस्सा नहीं थी।

इंतिक़ास यह कि आग उसके नम और शुष्क भागों में अलगाव पैदा कर दे और शरीर का कुछ हिस्सा शेष रहे। इस स्थिति में यदि नमी बहुत कम थी और आग की क्रिया से शरीर के आयतन (वॉल्यूम) में कोई अंतर नहीं आया और न ही वह पहले से बहुत कमज़ोर हुआ, तो यह पत्थरों का 'तक्लीस' (चूना बनाना) है, अन्यथा 'तरमुद'। इसमें यदि सारी अत्यधिक नमी नष्ट होने से पहले आग बुझ गई, जिससे

नमी के बाकी रहने के कारण दोबारा जलने की क्षमता बनी रही, तो वह 'फ़हम', 'अनकश्त' है, वरना 'रमाद' (राख), 'ख़ाकस्तर' है। इसमें अक्सर भाग बिखर जाते हैं या छूने से बिखर जाएँगे क्योंकि आग ने जुड़ाव को पूरी तरह तोड़ दिया है। हम अल्लाह तआला से इसकी पनाह माँगते हैं। (त) आम बोलचाल में अक्सर इसी को 'रमाद' कहते हैं।

---

1 रद्दुल मुह्तार, बाबुत तयम्मुम, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/177

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

بیانِ معانیِ الفاظِ خمسہ: احتراق: جلنا، امثال، مطعومات میں اس کا اطلاق اس صورت پر آتا ہے کہ شئے اثرِ نار سے کلاً یا بعضاً فاسد و خارج عن المقاصد ہو جائے کھانا پکنے کو احتراق نہ کہیں گے بلکہ طبخ و نضج و ادراک۔ ان کے غیر میں کبھی آگ سے مجرد تاثر قوی کو احتراق کہتے ہیں اگرچہ اس سے اجزاو مقاصد شئے برقرار رہیں جیسے زمین سوختہ کہ اثرِ نار سے بشدت ہو کر سیاہ ہو گئی در مختار میں ارضِ محترقہ کا مسئلہ ذکر فرمایا کہ اس سے تیمم جائز ہے۔

طحطاوی و شامی نے کہا:

اذا حرق ترابھا من غیر مخالط لہ حتی صارت سوداء جازلان المتغیر لون التراب لا ذاتہ۔ جب زمین کی مٹی کسی اور ملنے والی چیز کے بغیر اس حد تک جلادی گئی ہو کہ سیاہ بن گئی ہو تو اس سے تیمم ہوسکتا ہے اس لئے کہ اس سے محض مٹی کے رنگ میں تغیر آیا ہے حقیقت اور ذات میں تبدیلی نہیں (ت)

بلکہ ایسی اشیاء میں کبھی مقصود کے لئے مہیا ہو جانے کو جسے مطعومات میں پک جانا کہتے تھے احتراق بولتے ہیں اسی باب سے ہے احتراق احجار و تکلیس یعنی ان کا چونا بنانا۔

ترمّد: راکھ ہو جانا

اقول: احتراق (1) کی چار صورتیں ہیں: انتفاء، انطفاء، انتقاص کہ دو ۲ قسم ہو جائے گا۔

انتفایہ کہ شئے جل کر بالکل فنا ہو جائے جیسے رال، گندھک، نوشادر۔

انطفایہ کہ بعد عملِ نار اس کے سب اجزاء برقرار رہیں یہ احتراق ارض ہے اگر وہاں خارج سے پانی کی کوئی نم تھی کہ خشک ہو گئی تو وہ کوئی جزءِ زمین نہ تھی۔

انتقاص یہ کہ نار اس کے اجزاء رطبہ یابسہ میں تفریق کر دے اور جسم کا حصہ باقی رہے۔ اس صورت میں اگر رطوبات بہت قلیل تھیں عملِ نار سے حجم جسم میں فرق نہ آیا نہ پہلے سے بہت ضعیف ہو گیا تو یہ تکلیسِ احجار ہے ورنہ ترمّد۔ اس میں اگر رطوبات کثیرہ سب فنا ہونے سے پہلے آگ بجھ گئی کہ آئندہ بوجہ بقائے رطوبت دوبارہ جلنے کی صلاحیت رہی تو فحم، انکشت، کولا ہے ورنہ رماد، خاکستر، راکھ اس میں غالباً اجزاء بکھر جاتے ہیں یا چھونے سے بکھر جائیں گے کہ آگ بالکل تفریق اتصال کر چکی والعیاذ باللہ تعالیٰ منہا (اللہ تعالیٰ کی اس سے پناہ مانگتے ہیں۔ت) محاورہ عامہ میں اکثر اسی کو رماد کہتے ہیں۔

---

1 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۷۷

Fatawa Razawiyya Volume Three

Lin (Softness): To become soft. This includes ripening and cooking, as everything becomes soft from its raw state upon being cooked; rather, it also applies to calcination, for even lime becomes softer than its original stone.

I say: In this, the preservation of the body, wholly or partially [1], is a condition. Burning away and turning into nothingness is not called softening. Furthermore, it is also necessary that although the internal bond has definitely become somewhat loose, such that the previous grip and hardness no longer remain, yet [2] the body that was solid should remain in its solidified state, and not [3] turn into liquid and flow away. We do not call flowing away 'becoming soft'.

Zuban (Melting): To dissolve.

I say: This is a state where the bond of the existing components [4] is near dissolution. It hasn't opened completely so that the moist parts would leave the dry parts due to the effect of fire and evaporate, nor has that grip remained where the body's structure remains bound even if it becomes soft, as was the case in the calcination of stones. Therefore, these moist components desire separation and wish to evaporate as the heat of the fire demands it, and the bond has become very loose. However, the dry components do not let them go as cohesion still remains. In this struggle, fluidity occurred, but while maintaining connection, it remained on the ground, thus creating the form of flow (liquefaction).

Inthiba' (Impressionability): Although this word is Arabic, it is not found in the Arabic language, nor has it ever been narrated from them. Therefore, there is no trace of it in 'Qamus', 'Muheet', or even the supplements of 'Taj al-Arus'. Yes, the esteemed jurists (Fuqaha) have used it, the first trace of which leads to Imam Shams al-A'immah al-Sarakhsi (mercy of Allah be upon him). Sheikh al-Islam Ghazni has defined its meaning as: becoming fragmented and soft. In 'Tahtawi ala al-Durr al-Mukhtar' and 'Radd al-Muhtar' it is stated: "His words 'and not with a substance that is impressionable' refer to that which is cut."

[1]: This generalization is because the destruction of some parts, as in calcination (taklees) and reduction to ashes (tarmad), is not contrary to the remaining softness. (M) [2]: Meaning that amount which remains after burning, whether it's the whole or a part. 12 Minhu (M) [3]: After this, by the grace of Allah Almighty, we saw in 'Sharh al-Maqasid' that non-flowability is a condition for softness. Where it says: 'Softness is a

quality that necessitates accepting pressure towards the inside | His words are: Softness (Lin) is such a quality that necessitates accepting pressure inwards, and due to this quality, the object has a non-fluid consistency.' 12 Minhu, may he be forgiven (M/T) [4]: This is a caution regarding those parts that burnt and evaporated, as their bond certainly opened. 12 Minhu, may he be forgiven (M)

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

लीन: नरम पड़ना। इसमें पकना और गलना भी शामिल है क्योंकि हर चीज़ अपनी कच्ची हालत से पकने के बाद नरम हो जाती है, बल्कि 'तक्लीस' (चूना बनाना) भी शामिल है क्योंकि चूना भी अपने पत्थर से नरम हो जाता है।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इसमें पूरे या कुछ हिस्से [१] के वजूद का बना रहना शर्त है। भड़क कर ख़त्म हो जाना नरम होना नहीं है। साथ ही यह भी ज़रूरी है कि हालाँकि बंधन कुछ ढीला ज़रूर हो गया कि पहले जैसी पकड़ और सख़्ती न रही, लेकिन [२] वह जिस्म जो ठोस था, अपने जमाव पर रहे न कि [३] पानी बनकर बह जाए। बह जाने को नरम पड़ना नहीं कहेंगे।

ज़ोबान: पिघल जाना।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): यह वह सूरत है जिसमें मौजूद हिस्सों [४] का बंधन घुलने के करीब है। न तो पूरी तरह खुला है कि आग के असर से गीले हिस्से सूखे हिस्सों को छोड़ कर उड़ जाएं, और न ही वैसी पकड़ रही कि जिस्म की मुट्ठी बंधी रहे चाहे वह नरम ही क्यों न पड़ गई हो, जैसा कि पत्थरों की तक्लीस में होता था। इसलिए ये नम हिस्से अलग होकर उड़ना चाहते हैं क्योंकि आग की गर्मी यही चाहती है और बंधन बहुत कमज़ोर हो गया है, लेकिन सूखे हिस्से उन्हें नहीं छोड़ते क्योंकि अभी भी उनमें जुड़ाव बाकी है। इस कशमकश में रवानगी तो पैदा हुई लेकिन जुड़ाव बने रहने के कारण वह ज़मीन पर ही रहा, जिससे बहने (तरलता) की सूरत पैदा हुई।

इंतिबाअ: यह लफ्ज़ हालाँकि अरबी है लेकिन अरबी भाषा में नहीं है, न ही उनसे कभी सुना गया। इसलिए 'क़ामूस', 'मुहीत' यहाँ तक कि 'ताजुल उरूस' के सप्लीमेंट्स में भी इसका पता नहीं मिलता। हाँ, फुक़हा-ए-किराम (धर्मशास्त्रियों) ने इसका इस्तेमाल फ़रमाया है, जिसका सबसे पहला सुराग इमाम शम्सुल अइम्मा सरख़सी (रहमतुल्लाह अलैह) तक मिलता है। शेखुल इस्लाम ग़ज़नी ने इसके मानी बयान किए हैं: टुकड़े-टुकड़े और नरम होना। 'तहतावी अलल दुर्रुल मुख़्तार' और 'रद्दुल मुहतार' में है: "उनका कौल 'और उस चीज़ से नहीं जो इंतिबाअ वाली हो' से मुराद वह है जो कट जाए।"

[१]: यह सामान्यीकरण इसलिए है क्योंकि कुछ हिस्सों का ख़त्म हो जाना, जैसा कि तक्लीस और राख बनने में होता है, बाकी हिस्से की नरमी के खिलाफ नहीं है। (म) [२]: यानी उतना ही हिस्सा जो जलने के बाद बाकी रहे, चाहे पूरा हो या कुछ हिस्सा। १२ मिन्हु (म) [३]: इसके बाद, अल्लाह तआला के

फ़ज़्ल से हमने 'शरह मक़ासिद' में देखा कि 'लीन' (नरमी) के लिए न बहना एक शर्त है। जहाँ कहा गया है: 'लीन एक ऐसी कैफ़ियत है जो अंदर की तरफ दबाव स्वीकार करने की माँग करती है | उनके अल्फाज़ ये हैं: लीन (नरमी) ऐसी कैफ़ियत है जो अंदर की जानिब दबाव क़बूल कर लेने की मुक़्तज़ी होती है और इस कैफ़ियत की वजह से चीज़ का एक ग़ैर-सैयाल (जो बहे नहीं) क़वाम होता है।' १२ मिन्हु ग़फ़र लहू (म/त) [४]: यह उन हिस्सों से बचाव के लिए है जो जलकर उड़ गए, क्योंकि उनका बंधन यकीनन खुल गया था। १२ मिन्हु ग़फ़र लहू (म)

पेज ५८१ ऑफ़ ७५६

فتاوی رضویہ جلد سوم

لین: نرم پڑنا۔ یہ نضج و طبخ کو بھی شامل ہے کہ ہر شے پک کر اپنی حالت خامی سے نرم ہو جاتی ہے بلکہ تکلیس کو بھی کہ چونا بھی اپنے پتھر سے نرم ہوگا۔

اقول: اس میں کلاً یا بعضاً ع۱ بقائے جسم شرط ہے بھڑک ہو کر فنا ہو جانا نرم ہونا نہیں، نیز یہ بھی لازم کہ اگرچہ گرہ قدرے سست ضرور ہوئی کہ پہلی سی باہم گرفت و صلابت نہ رہی مگر ع۲ جسم کہ منجمد تھا اپنے انجماد پر رہے نہ یہ کہ ع۳ پانی ہو کر بہہ جائے، بہہ جانے کو نرم پڑنا نہ کہیں گے۔

ذوبان: پگھل جانا۔

اقول: یہ وہ صورت ہے کہ اجزائے ع٤ موجودہ کی گرہ قریب انحلال ہے نہ تو پوری کھل گئی کہ اثر نار سے ان میں کے رطبہ یابسہ کو چھوڑ کر اڑ جائیں نہ وہ گرفت رہی کہ جسم کی مٹھی اگرچہ نرم پڑ گئی ہو بندھی رہے جو صورت تکلیس احجار میں تھی لہٰذا یہ اجزائے رطبہ فراق چاہ کر اڑ نا چاہتے ہیں کہ آگ کی گرمی اسی کی مقتضی اور گرہ بہت سست ہو گئی لیکن اجزائے یابسہ انہیں نہیں چھوڑتے کہ ہنوز تماسک باقی ہے اس کشمکش میں روانی تو ہوئی مگر مع بقائے اتصال زمین ہی پر رہی اس نے صورت سیلان پیدا کی۔

انطباع: یہ لفظ اگرچہ عربی ہے مگر زبان عرب پر نہیں، نہ ان سے کبھی منقول ہوا ولذا قاموس، محیط حتی کہ تاج العروس کے مستدرکات تک اس کا پتا نہیں، ہاں فقہائے کرام نے اس کا استعمال فرمایا، جس کا پہلا سراغ امام شمس الائمہ سرخسی رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ تک چلتا ہے، شیخ الاسلام

غزنی نے اس کے معنی فرمائے، پارہ پارہ و نرم ہونا۔ طحطاوی علی الدر المختار و رد المحتار میں ہے: قوله ولا بمنطبع هو ما يقطع

ع۱: یہ تعمیم اس لئے کہ فنائے بعض اجزاء جس طرح تکلیس و ترمد میں ہے لین باقی کے منافی نہیں۔ (م) ع۲: یعنی وہی جس قدر بعد احتراق باقی ہے کل خواہ بعض ۱۲ منہ (م) ع۳: اس کے بعد بحمد اللہ تعالیٰ ہم نے شرح مقاصد میں دیکھا کے عدم سیلان کو لین میں شرط فرمایا۔ حیث قال الدين كيفية تقتضى قبول الغمز الى الباطن | ان کے الفاظ یہ ہیں: لین (نرمی) ایسی کیفیت ہے جو اندر کی جانب ویکون للشیئ بها قوام غیر سیال ۱۲منہ غفر له (م) | دباؤ قبول کر لینے کی مقتضی ہوتی ہے اور اس کیفیت کی وجہ سے شے کا ایک غیر سیال قوام ہوتا ہے۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت) ع٤: احتراز ہے ان اجزا سے کہ جل کر اڑ گئے کہ ان کی گرہ ضرور کھل گئی ۱۲ منہ غفرلہ (م)

Volume Three Fatawa Razawiyya "And it softens like iron" (Minah) (His statement "and is not malleable" - this is that which shatters into pieces but becomes soft like iron - Minah. T) I say: From this it is apparent that softening (leen) is included in the meaning of malleability (intiba') and is a part of it, but before them, Imam Mulla Khusrow (may Allah have mercy on him) interpreted malleability with softening itself, which makes it clear that both are one and the same thing. It is stated in 'Ghurar wa Durar': "(And it is not malleable) meaning it does not soften (i.e., it should not become soft. T)." Allama Ibn Amir al-Hajj al-Halabi mentioned the negation of malleability and softening in two places regarding the genus of the earth, and in the case of non-earthly genus, he only named softening. It is stated in 'Hilyah':

| قال مشايخنا جنس الارض مالايحترق بالنار | Our scholars stated: The genus of the earth is that which does not burn in fire | | فيصير رمادا ومالايلين ولاينطبع ويدخل فيها | to become ashes, and which does not soften and is not malleable. Ruby (Yaqut) | | لايلين ولاينطبع ولايحترق الياقوت وما احترق | is also included in these things which are neither soft, nor malleable, nor burn. | | 3 بالنار اولان بها فليس من جنس الارض- | And that which burns in fire or becomes soft through it is not from the genus of the earth. (T) |

This implies identity, partiality, and besides that, necessity, meaning softening is necessary for malleability. When it is said that what becomes soft in fire is not from the genus of the earth, it automatically becomes known that what is malleable is not from the genus of earth because, in all three cases, every malleable thing will surely have softening, and its negation of being of the genus of the earth has already been established. However, in the beginning of the discourse, softening is conjunctive to malleability. Similarly, in the commentary of 'Nuqayah' by Burjandi, from 'Zad al-Fuqaha', it says: "It softens and is malleable" (Becomes soft and malleable. T). This weakens the argument for identity, as in an explanatory conjunction, the conjoined term should be more famous and well-known, not the opposite. What was hidden in softening that it needed to be interpreted by malleability, the meaning of which is somewhat obscure? In many other books like 'Tuhfat al-Fuqaha', 'Bada'i' Malik al-Ulama', 'Kafi', 'Mustasfa', 'Jawharah Nayyirah', 'Ghaniyah', 'Bahr', 'Miskeen', 'Idah', and 'Hindiyyah', the opposite is found: "It is malleable and softens" (Malleable and becomes soft. T). Here, on the assumption of identity, the explanatory conjunction is formed without difficulty, whereas on the assumption of partiality and necessity, mentioning softening after malleability would be redundant. Note: Akhi Chalabi followed them as will come later (T). 12 minhu ghufralahu (m)

1- Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/168. 2- Durar al-Hukkam Sharh Ghurar al-Ahkam, Chapter on Tayammum, Dar al-Sa'ada Ahmad Kamil Press, 1/31. 3- Hilyah. 4- Sharh Nuqayah Burjandi, Section on Tayammum, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/74. 5- Fatawa Hindiyyah, First Section of Tayammum, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/26.

जिल्द तीसरा फ़तावा रज़विय्या "और यह लोहे की तरह नरम हो जाता है" (मिन्हा) (उनका कथन "और यह लचीला/प्रसार्य नहीं है" - यह वह है जो टुकड़े-टुकड़े हो जाए और नरम हो जाए जैसे लोहा - मिन्हा। त) मैं कहता हूँ: इससे यह ज़ाहिर होता है कि नरमी (लीन) लचीलेपन (इंतेबा) के अर्थ में शामिल है और उसका एक हिस्सा है, लेकिन उनसे पहले अल्लामा मुल्ला खुसरू (रह.) ने लचीलेपन की व्याख्या स्वयं नरमी से की है, जिससे स्पष्ट है कि दोनों एक ही चीज़ हैं। 'ग़ुरर व दुरर' में है: "(और वह लचीला नहीं है) यानी वह नरम नहीं होता (यानी नरम न हो। त)"। अल्लामा इब्न अमीर अल-हाज हलबी ने 'जिन्स-ए-अर्द' (मिट्टी की श्रेणी) में दो जगहों पर लचीलेपन और नरमी के अभाव का उल्लेख किया और गैर-मिट्टी की श्रेणी में केवल नरमी का नाम लिया। 'हिलिया' में है:

| قال مشايخنا جنس الارض مالايحترق بالنار | हमारे उस्तादों ने कहा: मिट्टी की श्रेणी वह है जो आग में जलकर | | فيصير رمادا ومالايلين ولاينطبع ويدخل فيها | राख न हो जाए, और जो नरम न हो और लचीली न हो। याक़ूत (माणिक) | | لايلين ولاينطبع ولايحترق الياقوت وما احترق | भी उन्हीं चीज़ों में शामिल है जो न नरम होती हैं, न लचीली और न जलती हैं। | | بالنار اولان بها فليس من جنس الارض 3- | और जो आग से जल जाए या उससे नरम हो जाए, वह मिट्टी की श्रेणी से नहीं है। (त) |

यह पहचान (ऐनीयत), अंशता (जज़ईयत) और इसके अलावा अनिवार्यता (लुज़ूम) का भी पात्र है, यानी नरमी लचीलेपन के लिए अनिवार्य है। जब यह कह दिया गया कि जो आग पर नरम हो जाए वह मिट्टी की श्रेणी नहीं है, तो इससे अपने आप ही पता चल गया कि जो लचीला है वह मिट्टी की श्रेणी नहीं है, क्योंकि तीनों स्थितियों में प्रत्येक लचीली चीज़ में नरमी ज़रूर होगी और उससे श्रेणी न होने का इंकार पहले ही किया जा चुका है। लेकिन बातचीत की शुरुआत में नरमी को लचीलेपन पर जोड़ा गया है। इसी तरह 'शराह नुक़ाया बुर्जंदी' में 'ज़ाद अल-फ़ुक़हा' से उद्धृत है: "वह नरम होता है और लचीला होता है" (नरम और लचीला हो। त)। यह पहचान (ऐनीयत) को कमज़ोर करता है क्योंकि व्याख्यात्मक संयोजन में जोड़ा गया शब्द अधिक प्रसिद्ध और ज्ञात होना चाहिए, इसके विपरीत नहीं। नरमी में ऐसी क्या गोपनीयता थी कि उसे लचीलेपन से समझाया गया जिसका अर्थ कुछ अस्पष्ट है? अन्य बहुत सी किताबों जैसे 'तुहफ़त अल-फ़ुक़हा', 'बदाए मलिक अल-उलेमा', 'काफी', 'मुस्तसफ़ा', 'जौहरा नय्यिरा', 'ग़निया', 'बहर', 'मिस्कीन', 'ईदाह' और 'हिन्दिया' में इसके विपरीत है: "वह लचीला है और नरम होता है" (लचीला और नरम हो। त)। यहाँ पहचान (ऐनीयत) के आधार पर व्याख्यात्मक संयोजन स्वाभाविक रूप से बनता है, जबकि अंशता और अनिवार्यता के आधार पर लचीलेपन के

बाद नरमी का उल्लेख व्यर्थ होगा। नोट: अख़ी चलबी ने उन्हीं का अनुसरण किया है जैसा कि आगे आएगा (त)। 12 मिन्हु गुफ़रलहू (म)

1- रद अल-मुहतार, तैयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/168. 2- दुरर अल-हुक्काम शराह ग़ुरर अल-अहकाम, तैयम्मुम का अध्याय, दार अस-सआदा अहमद कामिल प्रेस, 1/31. 3- हिलिया। 4- शराह नुक़ाया बुर्जंदी, तैयम्मुम का अनुभाग, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/74. 5- फ़तावा हिन्दिया, तैयम्मुम का पहला अनुभाग, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/26.

पृष्ठ 582 का 756

جلد سوم فتاوی رضویہ ویلین کالحدید منح (اس کا قول "ولامنطبع " یہ وہ ہے جو ٹکڑے ٹکڑے ہو اور نرم ہو جائے جیسے لوہا ، منحہ ت) اقول : اس سے تو یہ ظاہر کہ لین معنی انطباع میں داخل اور اس کا جز ہے لیکن ان سے پہلے علامہ مولی خسرو عہ نے انطباع کو خود لین سے تفسیر فرمایا جس سے روشن کہ دونوں ایک چیز ہیں، غرر ودرر میں ہے ، (وھو لاینطبع) ای لایلین (یعنی نرم نہ ہو۔ ت) علامہ ابن امیر الحاج حلبی نے جنس ارض میں نفی اطباع ولین دو جگہ لکھ کر غیر جنس میں فقط لین کا نام لیا۔ حلیہ میں ہے :

| قال مشایخنا جنس الارض مالایحترق بالنار | ہمارے مشائخ نے فرمایا جنس ارض وہ ہے جو آگ سے جل کر | | فیصیر رمادا ومالایلین ولاینطبع ویدخل فیہا | راکھ نہ ہو جائے اور جو نرم نہ ہو اور منبع نہ ہو۔ یاقوت بھی انہی | | لایلین ولاینطبع ولایحترق الیاقوت وما احترق | چیزوں میں داخل ہے جو نہ نرم ہوتی ہیں نہ منطبع ہوتی ہیں نہ | | بالنار اولان بھا فلیس من جنس الارض 3- | جلتی ہیں۔ اور جو آگ سے جل جائے یا اس سے نرم ہو جائے وہ جنس ارض سے نہیں۔ (ت) |

یہ اس عینیت و جزئیت اور ان کے علاوہ لزوم کو بھی محتمل یعنی لین لازم انطباع ہو کہ جب کہہ دیا کہ جو آگ پر نرم پڑے جنس ارض نہیں اس سے خود ہی معلوم ہوا کہ جو منطبع ہو جنس ارض نہیں کہ تینوں تقدیروں پر ہر منطبع میں لین ضرور ہو گا اور اس سے نفی جنسیت کر چکے مگر صدر کلام میں لین پر انطباع کا عطف ہے اور اسی طرح شرح نقایہ برجندی میں زاد الفقہاء سے ہے : یلین و ینطبع (نرم اور منطبع ہو۔ ت) یہ عینیت کی تضعیف کرتا ہے کہ عطف تفسیری میں معطوف زیادہ مشہور و معروف چاہئے نہ کہ یہ بالعکس لین میں کیا خفا تھی کہ اسے تفسیر کیا اور کا ہے سے انطباع سے جس کے معنی میں یہ کچھ خفا ہے۔ باقی کتب کثیرہ مثل تحفۃ الفقہاء وبدائع ملک العلماء وکافی و مستصفی و جوہرہ نیرہ وغنیہ و بحر و مسکین و ایضاح و ہندیہ میں اس کا

عکس ہے۔ ینطبع و یلین (منطبع اور نرم ہو۔ ت) یہاں بر تقدیر عینیت عطف تفسیری بے تکلف بنتا ہے اور بر تقدیر جزئیت ولزوم بعد انطباع ذکر لین لغو عه: انہیں کا اتباع اخی چلبی نے کیا کما سیأتی (جیسا آگے آئے گا۔ت) ۱۲منہ غفرلہ (م)

1- رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۶۸ 2- درر الحکام شرح غرر الاحکام باب التیمم مطبعة فی دار السعادة احمد کامل الکائنة ۱ / ۳۱ 3- حلیہ 4- شرح نقایة برجندی فصل فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱ / ۷۴ 5- فتاوی ھندیہ فصل اول من التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۶

Fatawa Razawiyya Volume 3

It remains. In the 'Inayah, it stands separate as 'wa yantabi'u awlayin'[1] [and it becomes imprintable first]. This is with a letter of contradiction [wa] to indicate whether it becomes flattened or soft. This cuts the root of explanatory conjunction. In short, the matter in these implications is confused.

I say: The research is that 'Inṭibā'' is derived from 'Tab'', which means work and craftsmanship. It states in al-Qāmūs and Tāj al-'Arūs:

الطبع ابتداء صنعة الشيئ (و) يقال طبع الطباع (السيف) او السنان صاغه (و) السكاك سكه (و) طبع (الدرهم) (الجرة من الطين عملها)[2]	**Tab' - The beginning of making a thing. It is said 'Tab'a al-Tabbā' al-Sayf aw al-Sinān' (the smith forged the sword or the spearhead) and 'al-Sakkāk al-Dirham' (the minter made the dirham). And 'Tab'a al-Jarrah min al-Ṭīn' (he made the pitcher from clay). (T)**

Thus, 'Inṭibā'' means the acceptance of craftsmanship, i.e., a thing becomes capable of craftsmanship such that it can be formed however one wants to form it, or cast into whatever mold one wants. This will not happen except after softening and pliability. Softness is neither its essence nor a part of it, but rather its cause, and it is necessary for forming. Like gold, silver, and iron becoming soft with fire and capable of all kinds of forming. In the case of casting, melting is its cause and necessity, like rolling gold and silver to make coins, ashrafis, or bricks. In al-Maghrib 8 it says:

قول شمس الائمة السرخسی مایذوب و ینطبع ای یقبل الطبع وهذا جائز قیاسا وان لم نسمعه[3]	**The statement of Shams al-A'immah al-Sarakhsi is: 'What melts and becomes imprintable', meaning what melts and accepts casting. This is permissible by analogy even if we haven't heard it. (T)**

I say: Upon investigation, the words of Shaykh al-Islam Tamartashi also apparently have this meaning: that actual fragmentation is not intended, but rather the capacity for it. This happens in two ways: one, that the thing is hard so it shatters upon impact like dross - this is 'inṭibā'' (to be broken into pieces. T); and this won't happen except in the state of softening, hence 'awlayin' (and it softens. T). He added that the capacity for craftsmanship indicates softening. And Allah is the Giver of Success (and Allah is the one who grants success. T). Perhaps this is the point.

[1] Al-Inayah with al-Fath, Chapter of Tayammum, Nuriyya Razawiyya, Sukkur, 1/112 [2] Taj al-Arus, Chapter of Ta from the section of 'Ayn, Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/438 [3] Al-Maghrib

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

रहता है। इनाया में यह सबसे अलग 'व यंतबि'उ औलयिन'[1] है। यह विरोध के अक्षर (व) के साथ है ताकि यह पता चले कि यह समतल होता है या नरम। यह व्याख्यात्मक संयोजन (अतफ़-ए-तफ़्सीरी) को काटता है। संक्षेप में, इन अर्थों में मामला उलझा हुआ है।

मैं कहता हूँ: शोध यह है कि 'इन्तिबा' 'तबा' से निकला है, जिसका अर्थ कार्य और शिल्प है। क़ामूस और ताज अल-अरूस में है:

(व) الطبع ابتداء صنعة الشيئ يقال طبع الطباع (السيف) او السنان صاغه (و) السكاك سكه (و) طبع (الدرهم) (الجرة من الطين عملها)[2]

तबा - किसी चीज़ के बनाने की शुरुआत। कहा जाता है 'तबा अत-तब्बा अल-सैफ़ अव अल-सिनान' (ढालने वाले ने तलवार या नेज़ा ढाला यानी बनाया) और 'अल-सक्काक अद-दिरहम' (सिक्का बनाने वाले ने दिरहम बनाया)। और 'तबा अल-जर्रत मिन अत-तीन' (मिट्टी से घड़ा बनाया)। (त)

तो 'इन्तिबा' का अर्थ शिल्प स्वीकार करना है, यानी किसी चीज़ का शिल्प के योग्य हो जाना ताकि उसे जिस तरह घड़ना चाहें घड़ा जा सके, जिस सांचे में ढालना चाहें ढल सके। और यह नरमी के बिना नहीं होगा। तो नरमी न तो इसका तत्व है और न ही हिस्सा, बल्कि इसका कारण है और घड़ने की स्थिति में यह आवश्यक है। जैसे सोना, चांदी, लोहा आग से नरम होकर हर तरह की गढ़ाई के योग्य हो जाना। ढालने की स्थिति में पिघलना इसका कारण और आवश्यकता है, जैसे सोने और चांदी को मोड़कर रुपया, अशरफ़ी या ईंट बनाना। मग़रिब 8 में है:

قول شمس الائمة السرخسى مايذوب و ينطبع اى يقبل الطبع وهذا جائز قياسا وان لم نسمعه[3]

शम्स अल-आइम्मा अल-सरख़सी का कथन है: 'जो पिघले और ढलाई स्वीकार करे'। यानी जो पिघले और शिल्प स्वीकार करे। कयास (तर्क) से यह जायज़ है चाहे हमने इसे न सुना हो। (त)

मैं कहता हूँ: जाँच करने पर शेख अल-इस्लाम तमरताशी के शब्दों का भी ज़ाहिरा तौर पर यही अर्थ है कि वास्तव में टुकड़ा-टुकड़ा हो जाना मुराद नहीं है बल्कि इसकी योग्यता मुराद है। और वह दो तरह से होती है: एक यह कि चीज़ सख़्त हो कि चोट लगने से बिखर जाए जैसे खंगर, यह 'इन्तिबा' है (टुकड़ा-टुकड़ा किया जाना। त)। और यह नरमी के बिना नहीं होगा, इसलिए 'औलयिन' (और नरम

पड़े। त) जोड़ा गया। उन्होंने फ़रमाया कि शिल्प की योग्यता नरमी के कारण है। और अल्लाह तौफ़ीक़ देने वाला है (और अल्लाह तौफ़ीक़ देने वाला है। त)। शायद यही बारीक़ बात है।

---

[1] अल-इनाया मअल फ़तह, बाब अत-तयम्मुम, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/112 [2] ताज अल-अरूस, फ़स्ल अत-ता मिन बाब अल-ऐन, इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 5/438 [3] अल-मग़रिब

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

رہتا ہے۔ عنایہ میں سب سے جدا "وینطبع اولین" ۱ __ بحرف تردید ہے کہ یہ منبطح ہو یا نرم پڑے، یہ عطف تفسیری کی رگ کاٹتا ہے۔ غرض ان مفادات میں امر مشوش ہے۔ واقول: تحقیق یہ ہے کہ انطباع طبع سے ماخوذ ہے طبع بمعنی عمل و صنعت ہے۔ قاموس و تاج العروس میں ہے:

(و) الطبع ابتداء صنعة الشیئ یقال طبع الطباع (السیف) او السنان صاغه (و) السکاك (الدرهم) سکه (و) طبع (الجرة من الطین عملها) ۲

طبع ۔ کسی چیز کے بنانے کی ابتداء ۔ کہا جاتا ہے طبع الطباع السیف او السنان (ڈھالنے والے نے تلوار یا نیزہ ڈھالا یعنی بنایا) اور السکاک الدرهم یعنی سکہ ساز نے درہم بنایا۔ اور طبع الجرة من الطین یعنی مٹی سے گھڑا بنایا۔ (ت)

توانطباع بمعنی قبول صنعت ہے یعنی شے کا قابل صنعت ہو جانا کہ وہ جس طرح گھڑنا چاہے گھڑ سکے جس سانچے میں ڈھالنا چاہے ڈھل سکے اور یہ نہ ہو گا مگر بعد لین ونرمی تو لین نہ اس کا عین ہے نہ جز بلکہ اس کی علت اور گھڑنے کی صورت میں اسے لازم ہے جیسے سونے چاندی لوہے کا آگ سے نرم ہو کر ہر قسم کی گھڑائی کے قابل ہو جانا اور ڈھالنے کی صورت میں ذوبان اس کی علت اور اسے لازم ہے، جیسے سونے چاندی کو چرخ دے کر روپیہ اشرفی اینٹ بنانا، مغرب ۸ میں ہے:

قول شمس الائمة السرخسی مایذوب و ینطبع ای یقبل الطبع وهذا جائز قیاسا وان لم نسمعه ۳۔

شمس الائمہ سرخسی کی عبارت ہے: ما یذوب و ینطبع یعنی جو پگھلے اور ڈھلائی قبول کرے۔ قیاساً یہ جائز ہے اگرچہ ہم نے اسے نہ سنا۔ (ت)

اقول: عند التحقیق کلام شیخ الاسلام تمر تاشی کا بھی یہی مفاد بہ ظاہر کہ بالفعل پارہ پارہ ہو جانا مراد نہیں بلکہ اس کی قابلیت، اور وہ دو طور پر ہوتی ہے، ایک یہ کہ چیز سخت ہو کہ ضرب سے بکھر جائے جیسے کھنگر یہ انطباع (پارہ پارہ کیا جائے۔ ت) اور یہ نہ ہو گا مگر بصورت لین ولذا اولین (اور نرم پڑے۔ ت) اضافہ فرمایا کہ قابلیت صنعت بوجہ لین پر دلالت کرے واللہ الموفق (اور اللہ توفیق دینے والا ہے۔ ت) شاید یہی نکتہ ہے

---

۱ العنایۃ مع الفتح باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۱۲ ۲ تاج العروس فصل الطاء من باب العین احیاء التراث العربی بیروت ۵/ ۴۳۸ ۳ المغرب

Fatawa Razawiya, Volume 3

That the compiler deviated from the statement of his followed work 'Durar', and Allah the Exalted knows best.

Warning: It is clear from our discourse that clay also becomes impressionable/ malleable. Just now it was cited from Al-Qamus: "He molded a jar from clay." But what is meant here is the capacity created by becoming soft through fire. That is why it is stated in 'Fath al-Qadir': "When burnt, it does not become malleable." In 'Maraqi al-Falah' it says: "It becomes malleable by burning." Most scholars who have left the term 'malleable' absolute mean 'malleable by fire', just as most have left 'softening and melting' absolute, and the intent is that it be by fire, otherwise clay also dissolves/melts in water.

Description of Attribution: The attribution in burning and turning to ash was mentioned above, that turning to ash is specific to it and is one of its four forms. As for the remaining three, I say: among them, softening and melting are distinct in the meanings we have explained. However, the discourse here is about their capability. That which is suitable for this is not from the genus of earth. Malleability is more general than both types of softening. Whatever is meltable will first become soft and then melt. Similarly, the ability to mold a hard thing comes only through softness. It is not necessary that what can be softened by fire can also flow, or be capable of being molded or cast, like limestone etc., calcined stones. There is a general-special relationship (amoom-wa-khusoos min wajh) between melting and malleability. Gold and silver are both meltable and malleable. Solidified ghee is meltable but not malleable. The consistency of sugar is malleable but not meltable; small sugar drops and toys of various large sizes and colorful forms/images are made; their consistency becomes capable of malleability only through heat, but they will not flow with fire, they will burn. Yes, things that endure fire and do not perish or turn to ash, like metals, will apparently have malleability and melting. This is true even for steel, although through certain measures as mentioned in 'Sharh al-Mawaqif' and 'Al-Maqasid'.

Note: If it is said that iron does not melt although it softens, we say that iron can also be melted as a whole through some device/method (Sharh al-Mawaqif). In things other than iron, melting is apparent; as for iron, it too can happen with a device/ method (Sharh al-Maqasid). May Allah forgive him.

1. Al-Qamus al-Muhit, Chapter of Ta, Section of Ain, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 3/60
2. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nuriya Razawiya, Sukkur, 1/112
3. Maraqi al-Falah with al-Tahtawi, Chapter of Tayammum, Azhariya Press, Egypt, p. 69
4. Sharh al-Mawaqif, Fourth Section, 7/137
5. Sharh al-Maqasid, First Discussion, 11/373

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

कि संकलनकर्ता ने अपने अनुसरण किए हुए कार्य 'दुरर' के कथन से विचलन किया, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

चेतावनी: हमारे प्रवचन से यह स्पष्ट हो गया कि मिट्टी भी संकुचित (छापने योग्य/मलयम) होती है। अभी 'क़ामूस' से उद्धृत किया गया: "उसने मिट्टी से घड़ा बनाया।" लेकिन यहाँ अभिप्राय वह क्षमता है जो आग से नरम होकर उत्पन्न होती है। इसीलिए 'फ़तह अल-क़दीर' में कहा गया: "जब जलाया जाए तो संकुचित नहीं होता।" 'मराक़ी अल-फ़लाह' में है: "जलाने से संकुचित होता है।" आम विद्वानों ने जहाँ 'मंतबे' (मलयम/छापने योग्य) को बिना शर्त छोड़ा है, वहाँ आग से संकुचित होना ही अभिप्राय है, जैसे कि अधिकांश ने 'नरम होने और पिघलने' को बिना शर्त रखा है और अभिप्राय यही है कि यह आग से हो, अन्यथा मिट्टी तो पानी में भी घुलती/पिघलती है।

संबंध का विवरण: जलाने और राख होने का संबंध ऊपर बीत चुका है कि राख होना उससे विशिष्ट है और उसकी चार स्थितियों में से एक स्थिति है। रही शेष तीन, तो मैं कहता हूँ: उनमें नरम होना और पिघलना उन अर्थों में जो हमने व्याख्या की है, स्वयं अलग हैं। लेकिन यहाँ चर्चा उनकी क्षमता की है। जो इसके योग्य हो वह पृथ्वी की श्रेणी से नहीं है। संकुचन की क्षमता नरम होने के दोनों प्रकारों से व्यापक है। जो पिघलने वाला होगा वह पहले नरम होकर ही पिघलेगा। इसी तरह कठोर चीज़ को ढालने की क्षमता नरमी से ही आती है। यह आवश्यक नहीं कि जो आग से नरम हो सके वह बह भी सके या ढालने या साँचे में उतारने के योग्य भी हो सके, जैसे चूने का पत्थर आदि, जलाए हुए पत्थर। पिघलने और संकुचन में 'अमूम-ओ-ख़ुसूस मिन वज्ह' (एक प्रकार का सामान्य-विशेष संबंध) है। सोना और चाँदी पिघलने वाले भी हैं और संकुचित होने वाले भी। जमा हुआ घी पिघलने वाला है लेकिन संकुचित होने वाला नहीं। चीनी की चाशनी संकुचित होने वाली है लेकिन पिघलने वाली नहीं; छोटे बताशे और विभिन्न पैमानों के बड़े और रंग-बिरंगे रूपों और चित्रों के खिलौने बनते हैं; आँच से ही उनका गाढ़ापन संकुचन के योग्य होता है, लेकिन वे आग से बहेंगे नहीं बल्कि जल जाएँगे। हाँ, जो चीज़ आग पर सहनशील हो, नष्ट न हो और राख न बने जैसे धातुएं, वहाँ प्रत्यक्ष रूप से संकुचन और पिघलना होगा, यहाँ तक कि फ़ौलाद में भी, यद्यपि कुछ उपायों के माध्यम से जैसा कि 'शरह अल-मवाक़िफ़' और 'अल-मक़ासिद' में है।

नोट: यदि यह कहा जाए कि लोहा पिघलता नहीं है यद्यपि वह नरम हो जाता है, तो हम कहते हैं कि लोहे को भी संक्षेप में किसी युक्ति से पिघलाया जा सकता है (शरह मवाक़िफ़)। लोहे के अलावा अन्य चीज़ों में तो पिघलना ज़ाहिर है, रहा लोहा तो उसमें भी युक्ति से हो सकता है (शरह अल-मक़ासिद)। अल्लाह उसे क्षमा करे।

---

1. अल-क़ामूस अल-मुहीत, फ़स्ल अल-ता, बाब अल-ऐन, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 3/60
2. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-तयम्मुम, नूरया रज़विया, सुक्कुर, 1/112
3. मराक़ी अल-फ़लाह मअ अल-तह्तावी, बाब अल-तयम्मुम, अज़हरिया प्रेस, मिस्र, पृ. 69
4. शरह अल-मवाक़िफ़, चौथा खंड, 7/137
5. शरह अल-मक़ासिद, पहली चर्चा, 11/373

पृष्ठ 584/756

کہ منق نے اپنے متبوع درر کے قول سے عدول فرمایا، واللہ تعالٰی اعلم۔

تنبیہ : ہماری تقریر سے واضح ہوا کہ مٹی بھی منطبع ہوتی ہے ابھی قاموس سے گزرا "طبع الجرۃ من الطین" (مٹی سے گھڑا بنایا) مگر یہاں مراد وہ ہے جس کی صلاحیت آگ سے نرم ہو کر پیدا ہوئی ہو ولذا فتح القدیر میں فرمایا: "اذا حُرق لا ینطبع" (جب جلایا جائے تو منطبع نہ ہو۔ ت) مراقی الفلاح میں ہے: "ینطبع بالاحراق" (جلانے سے منطبع ہو۔ ت) عامہ علمائے کہ یہاں منطبع مطلق چھوڑا ہے اس سے یہی منطبع بالنار مراد ہے جس طرح لین وذوبان کو بھی اکثر نے مطلق رکھا اور مراد یہی ہے کہ نار سے ہو ورنہ پانی میں مٹی بھی گلتی پگھلتی ہے۔

بیانِ نسب: احتراق و ترمڈ میں نسب اوپر گزری کہ ترمد اس سے خاص اور اسی کی چار صورتوں سے ایک صورت ہے۔ رہے باقی تین اقول: (میں کہتا ہوں ۔ ت) ان میں لین و ذوبان اُن معانی پر کہ ہم نے تقریر کئے خود متباید ہیں، مگر یہاں کلام اُن کی صلاحیت میں ہے کہ جو اس کے صالح ہو جنس ارض سے نہیں سب صلاحیت لین دونوں سے عام ہے جو ذائب ہوگا پہلے نرم ہی ہو کر ذائب ہوگا یونہی سخت چیز میں گھڑنے کی صلاحیت نرمی ہی سے آئے گی اور جو آگ سے نرم ہو سکے یہ ضرور نہیں کہ بہہ بھی سکے یا گھڑنے ڈھالنے کے بھی قابل ہوسکے جیسے چونے کا پتھر وغیرہ احجار مکلہ اور ذوبان و انطباع میں عموم و خصوص من وجہ ہے سونا چاندی ذائب بھی ہیں اور منطبع بھی، اور جما ہوا گھی ذائب ہے منطبع نہیں اور شکر کا قوام منطبع ہے ذائب نہیں چھوٹے بتا سے اور مختلف پیمانوں کے بڑے اور رنگ برنگ صورتوں تصویروں کے کھلونے بنتے ہیں آنچ سے ہی قوام ان انطباع کے قابل ہوتا ہے مگر آگ سے بہے گا نہیں جل جائے

گا۔ ہاں جو چیز آگ پر صابر ہو نہ فنا ہو نہ راکھ جیسے فلزات بظاہر وہاں انطباع و ذوبان پر ہوگی حتی کہ فولاد میں اگرچہ بتدابیر کما فی شرح المواقف والمقاصد

عہ: فان قیل الحدید لایذوب وان کان یلین قلنا یمکن اذابته بالحیلة اه شرح المواقف الذوبان في غیر الحدید ظاهرا مافی الحدید فیکون بالحیلة اه شرح المقاصد امنه غفرله(م)

اگر یہ کہا جائے کہ لوہا پگھلتا نہیں اگر چہ نرم ہو جاتا ہے، تو اس کا جواب یہ ہے کہ لوہا بھی فی الجملہ کسی تدبیر سے پگھلایا جاسکتا ہے اھ شرح مواقف۔ لوہے کے علاوہ میں تو پگھلنا ظاہر ہے، رہا لوہا تو اس میں بھی تدبیر سے ہو سکتا ہے اھ شرح المقاصد۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

---

1 القاموس المحیط فصل الطاء، باب العین مطبع مصطفی البابی مصر ۳/ ۶۰ 2 فتح القدیر ، باب التیمم ، نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۱۲ 3 مراقی الفلاح مع الطحطاوی باب التیمم مطبعة از ہر یة مصر ص ۶۹ 4 شرح المواقف القسم الرابع ۷ / ۱۳۷ 5 شرح المقاصد المبحث الاول ۱۱/ ۳۷۳

Volume Three Fatawa Rizwia (As mentioned in Sharh al-Mawaqif and Sharh al-Maqasid. - T) And it is possible that the Creator (Exalted and Majestic be He) made some things so firmly structured that they only soften with fire; fire might never be able to turn them into liquid. And Allah Almighty knows best. **Statement on the Diversity of Scholars' Sayings and Objections:** To identify the essence of earth (jins-e-arz) or its non-existence from its existence in the absence of the five aforementioned characteristics, the sayings of scholars have come in fourteen (11) ways: (1) Some considered only 'imprintability' (intiba), that whatever does not have this is from the essence of earth. In 'Sharh al-Nuqaya' by Allama al-Barjandi, it says: "Al-Jallabi mentioned that the essence of earth is every part that is not imprintable (does not melt/soften)." Jallabi mentioned that the essence of earth is every part that is not 'mantab' (softenable/meltable). (T) I say: This is obviously false (1), as it would apply to thousands of things like wood, cloth, and grains.

Arabic Quote

If you say: He excluded them with his words "every part of it" (kullu juz-in minhu), meaning from the earth, mentioning the masculine pronoun metaphorically or by referring to what was mentioned.

I say: Firstly, his statement "it does not soften/melt" becomes redundant, because no part of it [earth] melts/ softens by fire.

Secondly: The result would be that the essence of earth is every part of it, and this is like defining a thing by itself. The actual point is to know which thing is among its parts.

Urdu Commentary

If the objection is that by saying "every part of it" (meaning every part of the earth) he excluded all those things, and used the masculine pronoun 'minhu' instead of 'minha' as a looseness in speech or referring to the mentioned noun.

I say: Firstly: If this were so, then his statement "it does not soften/melt" would be useless because no part of earth is such that it is softened by fire.

The essence of earth is every part of the earth, and this is like defining a thing by the thing itself, whereas the aim here is to know which thing is a part of the earth. (T)

(2) Only 'tarmad' [non-combustibility into ash]: that whatever does not turn to ash after burning is from the essence of earth. It is in 'Nafi' Sharh Quduri': "The essence of earth is what, when burnt, does not become ash." (The essence of earth is that which does not turn to ash after burning. - T)

1 Sharh al-Nuqaya by al-Barjandi, Chapter on Tayammum, published by Naval Kishore Lucknow, 1/74. 2 Nafi' Sharh Quduri.

जिल्द तीन फ़तावा रज़विया (जैसा कि शरह मवाक़िफ़ और शरह मक़ासिद में है। -त) और मुमकिन है कि खालिक (अज्ज़वजल) ने कुछ चीज़ों को इतना मज़बूत बनाया हो कि वे आग से केवल नरम हो सकें आग उन्हें पानी बनाने पर कभी समर्थ न हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। **विद्वानों के विभिन्न कथनों और आपत्तियों का वर्णन:** उपर्युक्त पाँच गुणों के अभाव से 'जिन्स-ए-अर्श' (मिट्टी की प्रकृति) या उसके अस्तित्व से उसके अलावा की पहचान बताने में विद्वानों के कथन चौदह (११) प्रकार से आए हैं: (१) कुछ ने केवल 'इंतिबा' (प्रभाव या पिघलना) को आधार माना है कि जिसमें यह गुण नहीं है, वह मिट्टी की श्रेणी में है। 'शरह नुक़ाया' अल्लामा बरजंदी में है: "अल-जल्लाबी ने उल्लेख किया है कि मिट्टी की प्रकृति हर वह हिस्सा है जो नहीं पिघलता।" जल्लाबी ने उल्लेख किया कि मिट्टी की प्रकृति वह हर हिस्सा है जो 'मुंतबे' (पिघलने वाला) न हो। (त) मैं कहता हूँ: यह स्पष्ट रूप से गलत (१) है क्योंकि यह लकड़ी, कपड़े, अनाज जैसी हज़ारों चीज़ों पर भी लागू होता है।

अरबी उद्धरण

यदि आप कहें: उन्होंने अपने शब्द "उसका हर हिस्सा" (कुल जुज-इम मिन्हु), यानी मिट्टी से, कहकर इन सभी चीज़ों को बाहर कर दिया है, एक लाक्षणिक संदर्भ का उपयोग करते हुए या उल्लिखित का संदर्भ देते हुए।

मैं कहता हूँ: पहले तो, उनका यह कहना "वह पिघलता नहीं है" व्यर्थ हो जाता है, क्योंकि उसका (मिट्टी का) कोई हिस्सा ऐसा नहीं है जो आग से पिघल जाए।

दूसरे: इसका परिणाम यह होगा कि मिट्टी की प्रकृति उसका हर हिस्सा है, और यह किसी चीज़ को उसी से परिभाषित करने जैसा है। मुख्य बात तो यह जानना है कि कौन सी चीज़ उसके हिस्सों में से है।

उर्दू व्याख्या

यदि आपत्ति यह है कि "उसका हर हिस्सा" (अर्थात मिट्टी का हर हिस्सा) कहकर उन्होंने उन सभी चीज़ों को बाहर कर दिया है, और 'मिन्हा' के बजाय 'मिन्हु' पुल्लिंग सर्वनाम का उपयोग ढिलाई के तौर पर या उल्लेखित शब्द के आधार पर किया है।

मैं कहता हूँ: पहले: यदि ऐसा होता, तो उनका कथन "पिघलना नहीं" बेकार हो जाता क्योंकि मिट्टी का कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं है जो आग से पिघल जाए।

मिट्टी की प्रकृति, मिट्टी का हर हिस्सा है, और यह किसी चीज़ की परिभाषा स्वयं उसी चीज़ से करने जैसा है, जबकि यहाँ उद्देश्य यह जानना है कि कौन सी चीज़ मिट्टी का हिस्सा है। (त)

(२) केवल 'तरमद' [राख न बनना]: कि जो चीज़ जलकर राख न हो वह मिट्टी की प्रकृति है। 'नाफ़े शरह क़ुदूरी' में है: "मिट्टी की प्रकृति वह है जो जलने पर राख नहीं बनती।" (मिट्टी की प्रकृति वह है जो जलकर राख न हो। - त)

1 शरह अल-नुक़ाया अल-बरजंदी, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ द्वारा प्रकाशित, १/७४। 2 नाफ़े शरह क़ुदूरी।

पृष्ठ 585/756

جلد سوم فتاویٰ رضویہ (جیسا کہ شرح مواقف و شرح مقاصد میں ہے۔ ت) اور ممکن کہ خالق عزوجل نے بعض ایسی محکم الترکیب بنائی ہوں کہ آگ سے صرف نرم ہوسکیں ان کے پانی کردینے پر آگ کبھی قادر نہ ہو۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ بیان تنوع کلمات علماء واشکالات: اوصاف خمسہ مذکورہ کے عدم سے جنسِ ارض یا وجود سے اس کے غیر کی پہچان بتانے میں کلماتِ علماء چودہ ۱۱ وجوہ پر آئے: (۱) بعض نے صرف انطباع لیا کہ جس میں یہ نہیں وہ جنسِ ارض ہے۔ شرح نقایہ علامہ برجندی میں ہے: ذکر الجلابی ان جنس الارض کل جزء من لا ینطبع ۱۔ جلابی نے ذکر کیا ہے کہ جنسِ ارض ہر وہ جزء ہے جو منطبع نہ ہو۔ (ت) اقول: یہ ظاہر البطلان (۱) ہے کہ لکڑی کپڑے ناج ہزاروں چیزوں پر صادق۔

عربی متن	اردو شرح
فان قلت قد اخرجها بقوله کل جزء منه ای من الارض ذکر الکنایۃ تسامحا و باعتبار المذکور۔	اگر یہ اعتراض ہو کہ انہوں نے بکل جزء منہ ج (یعنی ہر جزء زمین) کہہ کر ان سب چیزوں کو خارج کر دیا ہے اور منہا کی بجائے منہ مذکر کی ضمیر تسامحاً یانہ مذکور کا اعتبار کر کے لائے ہیں۔
اقول: اولا ضاع قوله لا ینطبع فلیس جزء منها لینطبع بالنار۔	اقول: اولاً: یہ ہو تو ان کا قول "لا ینطبع" (منطبع نہ ہو) بے کار ہو جائے گا اس لئے کہ زمین کا کوئی جزء ایسا نہیں جو آگ سے مطبع ہو۔
وثانیا: یعود حاصله ان جنس الارض کل جزمنها وهذا کتعریف شیئی بنفسه	جنسِ زمین، زمین کا ہر جزء ہے اور یہ گویا کہ شیئ کی تعریف خود اسی شے سے کرنا ہے اس لئے کہ یہاں تو یہی جاننا مقصود ہے کہ کون سی شے زمین کا جزء ہے۔ (ت)

عربی متن **اردو شرح**

فانما الشان فی معرفة ان ای شیئی من

اجزائها۔

(۲) صرف ترمد کہ جو چیز جل کر راکھ نہ ہو جنسِ ارض ہے

نافع شرح قدوری میں ہے: جنس الارض ماذا احترق لایصیر مادا

۲ (جنسِ زمین وہ ہے جو جل کر راکھ نہ ہوت)

1 شرح النقایة للبر جندی فصل فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱ / ۷۴ 2 نافع شرح قدوری

Fatawa-e-Razviya - Volume 3

I say: This also applies to 'metals such as gold, silver, steel, and also items like oil, ghee, milk etc. If you say that the *kushta* (calcined ash) of gold and silver is their ash, I say firstly, this is a deviation from the meaning of ash as we have explained. Secondly, *kushta* of agate and ruby is also made, so would they also not be from the genus of earth, even though they certainly are, as will follow. (T)

(3) Malleability (Intiba') and turning into ash (Tarammud): That which becomes malleable or turns into ash is not from the genus of earth. It is stated in *Fath al-Qadir*:

[Left Box Text (Arabic)]: It was said: That which is such that when it is burnt with fire, it does not become malleable and does not turn into ash, then it is from the components of the earth. [End] 1

[Right Box Text (Urdu)]: It was said that something which, when burnt with fire, neither becomes malleable nor turns into ash, then it is a part of the earth. [End]

[Left Box Text (Arabic)]: I say: And he does not mean to weaken it, for he has affirmed it and derived rulings from it.

[Right Box Text (Urdu)]: I say: (By mentioning this meaning with 'it was said') the intention is not to point out its flaw or weakness, because they have maintained this saying and also made further derivations based on it. (T)

It is stated in *Jami' al-Mudmarat* then in *Jami' al-Rumuz*:

[Left Box Text (Arabic)]: The genus of earth is what does not burn and turn into ash or become malleable 2.

[Right Box Text (Urdu)]: The genus of earth is that which does not turn into ash or become malleable upon burning. (T)

In *Maraqi al-Falah* it is stated:

[Left Box Text (Arabic)]: The rule is that everything that turns into ash or becomes malleable by burning is not permissible for tayammum, and what is not so is permissible 3.

[Right Box Text (Urdu)]: The rule is that every thing that turns into ash or becomes malleable by burning, tayammum is not permissible with it, and if it is not so, it is permissible. (T)

In *Tanwir al-Absar* it is stated:

[Left Box Text (Arabic)]: With a purifier from the genus of earth; so it is not permissible with what is malleable, turns into ash, or minerals 4.

[Right Box Text (Urdu)]: (Tayammum will be performed) with any purifying substance from the genus of earth, so it is not permissible with substances that become malleable or turn into ash, or with minerals. (T)

---

1. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nooria Razviya Sukkur 1/112
2. Jami' al-Rumuz, Chapter of Tayammum, Matba' Karimiya Quran (Iran) 1/69
3. Maraqi al-Falah, Chapter of Tayammum, Matba' Azhariya Egypt 68
4. Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami, Chapter of Tayammum, Matba' Mustafa al-Babi Egypt 1/157 to 167

फ़तावा-ए-रज़विया - भाग 3

मैं कहता हूँ: यह 'धातुओं जैसे सोना, चाँदी, फ़ौलाद, और तेल, घी, दूध आदि' चीज़ों पर भी लागू होता है। यदि आप कहें कि सोने और चाँदी का 'कुश्ता' उनकी राख है, तो मैं कहता हूँ कि पहली बात तो यह राख के उस अर्थ से विचलन है जिसे हमने समझाया है। दूसरी बात यह कि अक़ीक़ और याक़ूत का भी कुश्ता होता है, तो क्या वे भी पृथ्वी के वंश (जिंस-ए-अर्ज़) से नहीं होंगे, हालाँकि वे निश्चित रूप से हैं, जैसा कि आगे आएगा। (त)

(3) आघातवर्धनीयता (इन्तिबा) और भस्मीकरण (तरम्मुद): वह जो आघातवर्धनीय हो जाए या राख बन जाए, वह पृथ्वी की श्रेणी में नहीं आता। 'फ़तह अल-क़दीर' में है:

[बायां बॉक्स टेक्स्ट (अरबी)]: कहा गया: जो ऐसा हो कि जब उसे आग में जलाया जाए, तो वह न तो फैले (आघातवर्धनीय हो) और न ही राख बने, तो वह पृथ्वी के अंगों में से है। [समाप्त] 1

[दायां बॉक्स टेक्स्ट (उर्दू)]: कहा गया कि जो ऐसा हो कि आग से जलाया जाए तो न फैले और न राख हो, तो वह ज़मीन का हिस्सा है। [समाप्त]

[बायां बॉक्स टेक्स्ट (अरबी)]: मैं कहता हूँ: और उसका उद्देश्य इसे कमज़ोर बताना नहीं है, क्योंकि उसने इसे स्वीकार किया है और इस पर आगे के नियम आधारित किए हैं।

[दायां बॉक्स टेक्स्ट (उर्दू)]: मैं कहता हूँ: ('क़ील' (कहा गया) से इस अर्थ का उल्लेख करके) इसकी खराबी और कमज़ोरी बताना उद्देश्य नहीं है क्योंकि उन्होंने इस कथन को बरकरार रखा है और इस पर आगे विस्तार भी किया है। (त)

'जामि-अल-मुज़मरात' और फिर 'जामि-अल-रुमूज़' में है:

[बायां बॉक्स टेक्स्ट (अरबी)]: पृथ्वी की श्रेणी वह है जो जलकर राख न बने या आघातवर्धनीय न हो 2।

[दायां बॉक्स टेक्स्ट (उर्दू)]: ज़मीन की जिंस (श्रेणी) वह है जो जलकर राख या फैलने वाली न हो। (त)

'मराक़ी अल-फ़लाह' में है:

[बायां बॉक्स टेक्स्ट (अरबी)]: नियम यह है कि हर वह चीज़ जो जलाने से राख हो जाए या फैल जाए, उससे तयम्मुम जायज़ नहीं है और जो ऐसी न हो वह जायज़ है 3।

[दायां बॉक्स टेक्स्ट (उर्दू)]: नियम यह है कि हर वह चीज़ जो जलाने से राख हो जाए या फैल जाए, उससे तयम्मुम जायज़ नहीं और ऐसी न हो तो जायज़ है। (त)

'तन्वीर अल-अबसार' में है:

[बायां बॉक्स टेक्स्ट (अरबी)]: पृथ्वी की श्रेणी की किसी पाक चीज़ से; तो फैलने वाली, राख होने वाली और खनिज चीज़ों से (तयम्मुम) जायज़ नहीं है 4।

[दायां बॉक्स टेक्स्ट (उर्दू)]: ज़मीन की जिंस की किसी पाक करने वाली चीज़ से (तयम्मुम होगा), तो फैलने वाली और राख होने वाली चीज़ और खनिजों से जायज़ नहीं। (त)

---

1. फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-तयम्मुम, नूरिया रज़विया सुक्कुर 1/112
2. जामि-अल-रुमूज़, बाब अल-तयम्मुम, मतबा करीमिया क़ुरान (ईरान) 1/69
3. मराक़ी अल-फ़लाह, बाब अल-तयम्मुम, मतबा अज़हरिया मिस्र 68
4. अल-दुर्र अल-मुख़्तार म'अ अल-शामी, बाब अल-तयम्मुम, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/157 से 167

पृष्ठ 586 का 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

اقول : یہ بھی ' فلزات مثلاً سونے ، چاندی ، فولاد ، نیز تیل ، گھی ، دودھ وغیرہ بالاٹھوں اشیاء پر صادق ۔ اگر کہئے سونے چاندی کا کشتہ اُن کی راکھ ہے اقول اولاً یہ راکھ کے معنی سے ذہول ہے جو ہم نے بیان کئے ثانیاً عقیق وياقوت کا بھی کشتہ ہوتا ہے تو وہ بھی جنس ارض نہ ہو ، حالاں کہ بے شک ہیں کما سیأتی (جیسا کہ آگے آرہا ہے ۔ت)

(۳) انطباع وترمد کہ جو منطبع یا خاکستر ہو جنس ارض سے نہیں ، فتح القدیر میں ہے :

قیل ما کان بحیث اذا حرق بالنار لا ینطبع ولا یترمد فھو من اجزاء الارض اھ 1 کہا گیا جو ایسا ہو کہ آگ سے جلایا جائے تو نہ منبع ہو نہ راکھ ہو تو وہ زمین کا جز ہے ۔ اہ

اقول : ولا یرید الترییف فقد اقرہ وفرع علیہ ۔ اقول : (قیل " کہا گیا " سے اس معنی کو ذکر کرکے) اس کی خرابی وکمزوری بتانا مقصود نہیں کیوں کہ انہوں نے اس قول کو برقرار رکھا ہے اور اس پر تفریع بھی کی ہے ۔ (ت)

جامع المضمرات پھر جامع الرموز میں ہے : جنس الارض مما لا یحترق فیصیر رمادا او ینطبع 2۔ جنس زمین وہ ہے جو جل کر راکھ یا منطبع نہ ہو ۔ (ت)

مراقی الفلاح میں ہے : الضابطۃ ان کل شیئ یصیر رمادا او ینطبع بالاحراق لا یجوز بہ التیمم ولا جاز 3۔ ضابطہ یہ ہے کہ ہر وہ چیز جو جلانے سے راکھ ہوجائے یا منطبع ہوجائے اس سے تیمم جائز نہیں اور ایسی نہ ہو تو جائز ہے ۔ (ت)

تنویر الابصار میں ہے : بمطھر من جنس الارض فلا یجوز بمنطبع ومترمد ومعاون 4۔ جنس زمین کی کسی پاک کرنے والی چیز سے (تیمم ہوگا) تو منطبع ہونے والی اور راکھ ہونے والی چیز اور معدنوں سے جائز نہیں ۔ (ت)

---

1 فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۱۲ 2 جامع الرموز باب التیمم مطبعہ کریمیہ قرآن (ایران) ۱/ ۶۹ 3 مراقی الفلاح باب التیمم مطبعہ ازہری مصر ۶۸ 4 الدر المختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۵۷ تا ۱۶۷

Fatawa Razawiyya, Volume Three

Aqool (I say): In the first three statements, 'burning' (ihraq) refers simply to the action of fire. In the last part, 'assistant' (ma'awin) refers to metals; otherwise, sulfur, arsenic, litharge, and blue vitriol are also 'assistants', and the permissibility of performing Tayammum with them is explicitly stated, as will be seen shortly, God willing. (4) Softening (layn) and turning to ash (taramud): That which softens with fire or becomes ash is not of the nature of 'earth' (jins-e-arz). It is stated in Al-Ghunyah: 'Everything that softens by fire or turns into ash...' (5) Imam Akmal ad-Din added 'malleability' (intiba') to this, i.e., 'or becomes malleable'. It is stated in Al-'Inayah:

It is said: 'Every thing that burns by fire and becomes ash, or is malleable, or softens, is not of the nature of earth.'

Aqool: When mere softening (layn) is sufficient, then adding 'malleability' (intiba') is redundant because malleability is inconceivable without softening. Therefore, its meaning is no more than that of the fourth statement. (6) Allama Ibn Amir al-Hajj al-Halabi, regarding the nature of 'earth', included ash-forming, softening, and malleability, meaning whatever lacks these is of the nature of earth. Regarding the 'other' (non-earth) side, he mentioned burning and softening, meaning whatever has any of these is of a different nature. The statement from his book 'Hilyah' has already been mentioned. Aqool: The excuse for limiting the second sentence—or even the first in one place—to mentioning 'burning' is clear: absolute burning is interpreted as specific turning-to-ash. But in the second part, the omission of 'malleability' confirms that mere softening is enough to exclude it from being 'earth'. So here too, mentioning 'malleability' like in Al-'Inayah is redundant, and the statement refers back to the fourth statement.

Note: 'And he said after it: like gold, silver, iron, etc., from what is malleable and softens by fire...' and this is exactly what we mentioned earlier from Al-Ghunyah while explaining the meaning of 'intiba' (malleability).

Footnotes: 1 Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 76 2 Al-'Inayah with Fath al-Qadir, Chapter on Tayammum, Nooria Razawiyya Sukkur 1/112 3 Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 76

Page 587 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द तीसरी

अक़ूल (मैं कहता हूँ): पहले तीन कथनों में जलाने (इहराक़) से केवल आग की क्रिया अभिप्रेत है और अंतिम भाग में 'सहायक' (मुआविन) से धातुएँ मुराद हैं, अन्यथा गंधक, हरताल, मुर्दार संग और तूतिया भी सहायक हैं और उनसे तयम्मुम की अनुमति स्पष्ट है, जैसा कि ईश्वर ने चाहा तो जल्द ही स्पष्ट किया जाएगा। (4) नरम होना (लैन) और राख होना (तरम्मुद): जो आग से नरम हो जाए या राख बन जाए, वह ज़मीन की श्रेणी (जिंस-ए-अर्ज़) में नहीं है। ग़ुनिया में है: 'हर वो चीज़ जो आग से नरम हो जाए या राख हो जाए...' (5) इमाम अकमल उद्दीन ने इसमें 'अनतिबा' (ढलने की क्षमता) का इज़ाफ़ा किया कि या वो ढलने वाली हो। 'इनाया' में है:

कहा गया: 'हर वो चीज़ जो आग से जलकर राख हो जाए या ढल जाए या नरम हो जाए, वो ज़मीन की श्रेणी से नहीं है।'

अक़ूल: जब केवल नरम होना ही पर्याप्त है, तो 'ढलने की क्षमता' (अनतिबा) जोड़ना व्यर्थ है क्योंकि बिना नरम हुए ढलना असंभव है। अतः इसका अर्थ चौथे कथन से अधिक नहीं है। (6) अल्लामा इब्न अमीर अल-हाज अल-हलबी ने ज़मीन की श्रेणी (जिंस) के पक्ष में राख होने, नरम होने और ढलने की क्षमता जैसे गुणों को रखा कि जिसमें ये न हों वह ज़मीन की श्रेणी से है। और गैर-ज़मीन के पक्ष में जलने और नरम होने को रखा कि जिसमें इनमें से कोई एक हो वह गैर-जिंस (ज़मीन के अलावा) है। उनकी पुस्तक 'हिलया' का उद्धरण पहले आ चुका है। अक़ूल: दूसरे वाक्य में, बल्कि एक स्थान पर पहले वाक्य के वर्णन में भी केवल जलने के ज़िक्र पर सीमित रहने का बहाना स्पष्ट है कि पूर्ण जलने को राख होने पर ही आधारित माना जाए। लेकिन दूसरे भाग में 'अनतिबा' का ज़िक्र छोड़ना यह निश्चित कर रहा है कि केवल नरम होना ही ज़मीन की श्रेणी से बाहर निकालने के लिए पर्याप्त है। तो यहाँ भी 'इनाया' की तरह 'अनतिबा' का ज़िक्र व्यर्थ है और यह कथन चौथे कथन की ओर ही लौटता है।

हाशिया: 'और इसके बाद फ़रमाया: जैसे सोना, चाँदी, लोहा आदि, जो आग से ढलते और नरम होते हैं...' और यह वही है जो हमने ग़ुनिया के हवाले से अनतिबा का अर्थ बताते हुए पहले ज़िक्र किया था।

पाद-टिप्पणियाँ: 1 ग़ुनियत अल-मुस्तमली, बाबूत्तयम्मुम, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 76 2 अल-इनाया मअ फ़त्हुल क़दीर, बाबूत्तयम्मुम, नूरया रज़विया सक्खर 1/112 3 ग़ुनियत अल-मुस्तमली, बाबूत्तयम्मुम, सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 76

اقول: پہلی تین عبارتوں میں احراق سے مجرد عملِ نار مراد ہے اور اخیر میں معاون سے فلزات ورنہ کبریت و زرنیخ و مردار سنگ و توتیا کے بھی معاون ہیں اور ان سے جواز تیمم مصرح کما سیأتی ان شاء اللہ تعالی (جیسا کہ ان شاء اللہ عنقریب آرہا ہے۔ت) (۴) لین وترمّد کہ جو آگ سے نرم پڑے یا راکھ ہو جنس ارض نہیں۔ غنیہ میں ہے: ھر ما یلین بالنا ر ا ویترمد (ہر وہ چیز جو آگ سے نرم ہو جائے یا راکھ ہو جائے۔ ت) (۵) امام اکمل الدین نے ان پر انطباع کا اضافہ فرمایا کہ یا منبطاع ہو، عنایہ میں ہے:

قیل کل ما یحترق بالنار فیصیر رمادا او ینطبع او یلین فلیس من جنس الارض (کہا گیا ہر وہ چیز جو آگ سے جل کر راکھ ہو جائے یا منطبع یا نرم ہو جائے، وہ جنس زمین سے نہیں۔ ت)

اقول: جب مجرد لین کافی تو اضافہ انطباع بے کار کہ انطباع بے لین نا متصور۔ لاجرم اس کا مفاد عبارت چہارم سے زائد نہیں۔ (۶) علامہ ابن امیر الحاج حلبی نے جانب جنس میں مثل عنایہ ترمّد و لین و انطباع لیے کہ جس میں یہ نہ ہوں وہ جنس ارض سے ہے اور جانب غیر میں احتراق ولین کہ جس میں ان سے کوئی ہو غیر جنس ہے۔ وقد تقدمت عبارت حلیتہ (ان کی کتاب " حلیہ " کی عبارت گزر چکی ہے۔ ت) اقول: جملہ ثانیہ بلکہ ایک جگہ اولی کے بیان میں بھی ذکر احتراق پر اقتصار کا یہ عذر واضح ہے کہ مطلق اسی مقید ترمّد پر محمول مگر ثانیہ میں ترک ذکر انطباع معین کر رہا ہے کہ مجرد لین بھی جنس ارض سے اخراج کو بس ہے تو یہاں بھی مثل عنایہ ذکر انطباع ضائع اور عبارت عبارت چہارم کی طرف راجع۔

عه: وقال بعده کالذهب والفضة والحدید وغیرها مما ینطبع ویلین بالنار اه (اس کے بعد فرمایا: جیسے سونا، چاندی، لوہا وغیرہ ایسی چیز جو آگ سے منبطع اور نرم ہو جائے۔۔۔) وذلك ما قدمنا عنها عند بیان معنی الانطباع ۱۲ منه غفر له (اور یہ وہی ہے جو ہم نے غنیہ کے حوالے سے انطباع کا معنی بیان کرتے ہوئے پہلے ذکر کیا ۱۲ منہ غفرلہ (ت))

فٹ نوٹس: 1 غنیة المستملی باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۶ 2 العنایة مع فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۱۱۲ 3 غنیة المستملی باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۶

Fatawa Razawiyya Volume 3

(7, 8) Many prominent scholars have taken these three characteristics, but they considered 'taraddud' (hesitation/uncertainty) as one branch, and linked 'leyn' (softness) and 'intiba' (malleability/impressionability) with a conjunctive 'and' (wa) as the second branch. Then some referred to it as 'taween' (softening) and 'intiba'. In Barjandi, it is mentioned from Zad al-Fuqaha:

| Ma yahtariqu bin-nari wa yaseeru ramadan wa layyin wa yantabi'u falaysa min jinsil-ardi wa ma'adahuma min jinsiha. | Everything that burns in fire and turns into ash, or becomes soft and malleable, does not belong to the genus of the earth; and besides these two [categories], they belong to the genus of the earth. (T) |

And most have said 'intiba' and 'leyn'. In Bada'i' of the Imam of the Scholars (Malik al-Ulama), it states:

| Kullu ma yahtariqu fayaseeru ramadan aw yantabi'u wa yaleenu falaysa min jinsil-ardi wa ma kana bikhilafi dhalika fahuwa min jinsiha. | Everything that burns and turns into ash or becomes malleable and soft is not from the genus of the earth; and whatever is contrary to that, it belongs to the genus of the earth. (T) |

Similarly, in [Fatawa] Hindiyya, it is retained with identical words. These very same words are in al-Bahr al-Ra'iq from Mustasfa of Imam Abu al-Barakat al-Nasafi, except that at its end it says: "wa ma 'ada dhalika fahuwa min jinsil-ardi" (and everything besides that belongs to the genus of the earth). The meaning is the same. (T) Likewise, in [the work of] 'Allama Wazir, it is mentioned from Tuhfat al-Fuqaha of the great Imam 'Ala al-Din al-Samarqandi:

| Li-qanoon al-fariq bayna jinsil-ardi wa ghayriha anna kulla ma yahtariqu fayaseeru ramadan aw yantabi'u wa yaleenu falaysa min jinsil-ardi. | The rule for distinguishing between the genus of the earth and other than it is that whatever burns and turns into ash or becomes malleable and soft does not belong to the genus of the earth. (T) |

In al-Jawharah al-Nayyirah, it states:

| Huwa ma idha tubi'a la yantabi'u wa la yaleenu wa idha uhriqa la yaseeru ramadan. | The genus of the earth is that which, when cast, does not take an impression and does not soften, and when burnt, does not turn into ash. (T) |

1. Sharh al-Niqayah by al-Barjandi, chapter on Tayammum, published by Naval Kishore Lucknow, 1/74.
2. Bada'i' al-Sana'i', chapter on what can be used for Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/53.
3. Al-Bahr al-Ra'iq, chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/71.
4. Radd al-Muhtar, chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt, 1/175.
5. Al-Jawharah al-Nayyirah, chapter on Tayammum, Maktabah Imdadiyya Multan, 1/25.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

(7, 8) कई बड़े विद्वानों ने ये तीन गुण अपनाए हैं, लेकिन 'तरद्दुद' (हिचकिचाहट) को एक शाखा माना और 'लेयन' (नरमी) और 'इंतिबा' (मल्लिबिलिटी/प्रभावशीलता) को 'वाव' (और) से जोड़कर दूसरी शाखा बनाया। फिर कुछ ने इसे 'तव्वीन' और 'इंतिबा' कहा। बरजंदी में ज़ाद अल-फ़ुक़हा से उद्धृत है:

| मा यहतरिकु बिन-नारी व यसीरु रमादन व लय्यिन व यंताबिउ फलैसा मिन जिन्सिल-अर्दी व माअदाहुमा मिन जिंसिहा। | हर वह चीज़ जो आग में जलकर राख हो जाए, या नरम और ढलने योग्य हो जाए, वह पृथ्वी की श्रेणी (जिंस-ए-ज़मीन) से नहीं है; और इन दोनों के अलावा जो हैं, वे पृथ्वी की श्रेणी से हैं। (त) |

और अधिकांश ने 'इंतिबा' और 'लेयन' कहा है। इमाम मलिक उल-उलेमा की 'बदाए' में है:

| कुल्लु मा यहतरिकु फ़यसीरु रमादन औ यंताबिउ व यलीनू फलैसा मिन जिन्सिल-अर्दी व मा काना बिख़िलाफ़ि ज़ालिका फ़हुवा मिन जिंसिहा। | हर वह चीज़ जो जलकर राख हो जाए या ढलने योग्य और नरम हो जाए, वह पृथ्वी की श्रेणी से नहीं है; और जो इसके विपरीत हो, वह पृथ्वी की श्रेणी से है। (त) |

इसी तरह 'हिन्दिया' में इन्हीं शब्दों के साथ इसे रखा गया है। यही शब्द 'अल-बहर अर-राइक़' में इमाम अबू अल-बरकात नसफ़ी की 'मुस्तस्फ़ा' से लिए गए हैं, सिवाय इसके कि अंत में "व मा अदा ज़ालिका फ़हुवा मिन जिन्सिल-अर्दी" (और इसके अलावा जो कुछ भी है वह पृथ्वी की श्रेणी से है) लिखा है। अर्थ वही है। (त) इसी प्रकार अल्लामा वज़ीर में 'तुहफ़त अल-फ़ुक़हा' (इमाम अलाउद्दीन समरकंदी) से उद्धृत है:

| ले-क़ानून अल-फ़ारिक़ बयना जिन्सिल-अर्दी व ग़ैरिहा अन्ना कुल्ला मा यहतरिकु फ़यसीरु रमादन औ यंताबिउ व यलीनू फलैसा मिन जिन्सिल-अर्दी। | पृथ्वी की श्रेणी और उसके अलावा अन्य के बीच अंतर करने का नियम यह है कि जो भी जलकर राख हो जाए या ढलने योग्य और नरम हो जाए, वह पृथ्वी की श्रेणी से नहीं है। (त) |

'जौहरा नय्यिरा' में है:

| हुवा मा इज़ा तुबिआ ला यंताविउ व ला यलीनू व इज़ा उहरिक़ा ला यसीरु रमादन। | पृथ्वी की श्रेणी वह है जिसे अगर ढाला जाए तो वह न ढले और न ही नरम हो, और जलाने पर राख न बने। (त) |

---

1. शरह अल-निकाया - बरजंदी, बाब-ए-तयम्मुम, नवल किशोर प्रेस लखनऊ, 1/74
2. बदाए अस-सनाए, बाब-ए-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/53
3. अल-बहर अर-राइक़, बाब-ए-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/71
4. रद अल-मुह्तार, बाब-ए-तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/175
5. अल-जौहरा अल-नय्यिरा, बाब-ए-तयम्मुम, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 1/25

(۷،۸) بہت اکابر نے لیے تو یہی اوصاف ثلثہ مگر تردد کو ایک شق کیا اور لین و انطباع کو واو عاطفہ سے ملا کر دوسری شق۔ پھر بعض نے تولین و انطباع کہا۔ برجندی میں زاد الفقہا سے ہے :

| مایحترق بالنار ویصیر رمادا ولین وینطبع فلیس من جنس الارض وماعدا ھما من جنسھا۔ | ہر وہ چیز جو آگ سے جل جائے اور راکھ ہو جائے یا نرم اور منطبع ہو جائے وہ جنس زمین سے نہیں اور ان دونوں کے ماسوا جنس زمین سے ہیں۔ (ت) |

اور اکثر نے انطباع ولین۔ بدائع امام ملک العلماء میں ہے :

| کل مایحترق فیصیر رمادا او ینطبع ویلین فلیس من جنس الارض وماکان بخلاف ذلک فھو من جنسھا۔ | ہر وہ چیز جو جل کر راکھ ہو جائے یا منطبع اور نرم ہو جائے وہ جنس زمین سے نہیں اور جو اس کے برخلاف ہو وہ جنس زمین سے ہے۔ (ت) |

یونہی ہندیہ میں بالفاظہ لے کر مقرر رکھا بعینہ یہی الفاظ البحر الرائق میں امام ابو البرکات نسفی کی مستصفٰی سے ہیں غیران فی آخرھا "وماعدا ذلک فھو من جنس الارض"۔ فرق یہ ہے کہ اس کے آخر میں "وماعدا ذلک فھو من جنس الارض" ہے۔ معنی وہی ہے۔ (ت) ایضاً علامہ وزیر میں تحفۃ الفقہا امام اجل علاء الدین سمرقندی سے ہے :

| لقانون الفارق بین جنس الارض وغیرھا ان کل مایحترق فیصیر رمادا او ینطبع ویلین فلیس من جنس الارض۔ | جنس زمین اور اس کے علاوہ میں فرق و امتیاز کا قاعدہ یہ ہے کہ جو بھی جل کر راکھ ہو جائے یا منطبع اور نرم ہو جائے تو وہ جنس زمین سے نہیں۔ (ت) |

جوہرہ نیرہ میں ہے :

| ھو ما اذا طبع لاینطبع ولایلین واذا احرق لایصیر رمادا۔ | جنس زمین وہ ہے کہ ڈھالا جائے تو نہ ڈھلے اور نہ نرم ہو اور جب جلایا جائے تو راکھ نہ ہو۔ (ت) |

---

1. شرح النقایۃ للبر جندی فصل التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/ ۷۴
2. بدائع الصنائع فصل ما یتیمم بہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۵۳
3. البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۱
4. رد المحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۵
5. الجوھرہ النیرہ باب التیمم مکتبہ امدادیہ ملتان ۱/ ۲۵

Volume Three Fatawa Razawiyyah

Statement: In 'Inatiba' and 'Leen', the letter 'waw' and in them and 'Tardud' the letter 'aw' particularly with this concordance makes it certain from the first glance that either 1. Leen and Inatiba' are one thing, or 2. in this desire the gathering of both is intended, meaning that which is ashes or in which there is the first Inatiba', both gathering are not of the genus of earth, and 3. a weak and distant possibility is also that 'waw' means 'aw' (or), but none of these is free from difficulty.

I say: First, it has clearly come to light as false that 'Leen' and 'Inatiba' are not unified; moreover, in the case of preceding 'Leen', this would be a reversed explanatory conjunction. In any case, these phrases will also return to the fourth side.

Second, regarding 'Leen', it remained futile because 'Inatiba' without 'Leen' is not conceivable; rather, in the case of preceding 'Inatiba', there would be an illusion of this falsehood that sometimes there is 'Inatiba' without 'Leen' too. Therefore, it was conditioned with the gathering of 'Leen', and after refinement, only so much was achieved that there be doubt, or 'Inatiba' and for the phrases, reference to the third phrase.

Third, mentioning 'Inatiba' remained redundant as mere 'Leen' is sufficient and that necessitates 'Inatiba'. This again returns to the fourth phrase.

(9) Allama Shikhi Zadah Rumi took 'Zubaan' (melting) instead of 'Leen' in these three, and the same one aspect of doubt and the second aspect of 'Zubaan' and 'Inatiba'.

Arabic Text	Urdu Translation / Explanation
He put Inatiba' before both of them. And in 'Kullu Shams' [by] Shams al-A'imma al-Sarakhsi [it says] "yadhubu wa yantabi'u" (it melts and is malleable) as previously cited from 'Al-Maghrib'. I say: They do not differ here.	He has placed 'Inatiba' before both of them, and in the speech of Shams al-A'imma al-Sarakhsi it is "yadhubu wa yantabi'u" (melts and becomes malleable), as has passed with reference to 'Al-Maghrib'. (T) I say: These two are different here because...
Arabic Text	**Urdu Translation / Explanation**
Like it is in 'Al-Khaniyyah' and in 'Khizanat al-Muftin' from 'Al-Zahiriyyah': Tayammum is not permissible with everything that	Similar to it is in 'Khaniyyah', and in 'Khizanat al-Muftin' with reference to 'Zahiriyyah' are these words that Tayammum is not permissible from every such thing that melts

Arabic Text	Urdu Translation / Explanation
melts and is malleable. End. From him, may He forgive him. (M)	and becomes malleable. 12 From him, may He forgive him. (T)

1 Al-Maghrib 2 Khizanat al-Muftin, chapter on Tayammum, manuscript 1/12 Page 589 of 756

खंड तीन फतावा रज़विया

कथन: 'इनतिबा' और 'लीन' में अक्षर 'वाव' और उनमें और 'तरदद' में अक्षर 'अव' विशेष रूप से इस सामंजस्य के साथ पहली नज़र में यह विश्वास दिलाता है कि या तो 1. लीन और इनतिबा' एक ही चीज़ हैं, या 2. इस इच्छा में दोनों का मिलन अभीष्ट है, अर्थात जो राख हो या जिसमें पहला इनतिबा' हो, दोनों का एकत्र होना पृथ्वी की जाति से नहीं है, और 3. एक कमज़ोर और दूर की संभावना यह भी है कि 'वाव' का अर्थ 'अव' (या) हो, लेकिन इनमें से कोई भी कठिनाई से मुक्त नहीं है।

मैं कहता हूँ: पहला, स्पष्ट रूप से गलत सिद्ध हुआ कि 'लीन' और 'इनतिबा' एक नहीं हैं; इसके अतिरिक्त, 'लीन' को पहले रखने की स्थिति में यह उल्टा व्याख्यात्मक संयोजन होगा। बहरहाल, अब ये वाक्यांश भी चौथे पक्ष की ओर लौटेंगे।

दूसरा, 'लीन' पर यह व्यर्थ रहा क्योंकि 'लीन' के बिना 'इनतिबा' की कल्पना नहीं की जा सकती; बल्कि 'इनतिबा' को पहले रखने की स्थिति में इस असत्य का भ्रम होगा कि कभी-कभी 'लीन' के बिना भी 'इनतिबा' होता है। इसलिए इसे 'लीन' के मिलन के साथ शर्तबद्ध किया गया, और शोध के बाद केवल इतना प्राप्त हुआ कि संदेह हो, या 'इनतिबा' और वाक्यांशों के लिए तीसरे वाक्यांश की ओर संदर्भ।

तीसरा, 'इनतिबा' का उल्लेख निरर्थक रहा क्योंकि केवल 'लीन' पर्याप्त है और वह 'इनतिबा' को अनिवार्य करता है। यह फिर से चौथे वाक्यांश की ओर लौट गया।

(9) अल्लामा शीखी ज़ादा रूमी ने इन तीनों में 'लीन' के स्थान पर 'ज़ुबान' (पिघलना) को लिया और वही एक पक्ष संदेह का और दूसरा पक्ष 'ज़ुबान' और 'इनतिबा' का।

अरबी पाठ

उन्होंने इन दोनों में से 'इनतिबा' को पहले रखा है। और 'कुल शम्स' में शम्सुल आइम्मा सरखसी के शब्दों में "यज़ूबु व यन्ताबि'उ" (पिघलता है और लचीला होता है) है, जैसा कि 'अल-मग़रिब' के संदर्भ से पहले गुज़र चुका है। मैं कहता हूँ: यहाँ ये दोनों अलग नहीं हैं।

उर्दू अनुवाद / व्याख्या

उन्होंने इन दोनों में से इनतिबा' को पहले रखा है और शम्सुल आइम्मा सरखसी के कलाम में "यज़ूबु व यन्ताबि'उ" (पिघले और ढलने योग्य हो) है, जैसा कि मग़रिब के हवाले से गुज़रा। (त) मैं कहता हूँ: ये दोनों यहाँ अलग हैं क्योंकि...

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद / व्याख्या
इसी तरह 'अल-खानिया' में है और 'खिज़ानातुल मुफ्तीन' में 'अल-ज़हीरिया' के हवाले से है: हर उस चीज़ से तयम्मुम जायज़ नहीं है जो पिघलती है और लचीली होती है। समाप्त। उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)	इसके जैसा खानिया में है, और खिज़ानातुल मुफ्तीन में ज़हीरिया के हवाले से ये शब्द हैं कि तयम्मुम हर उस चीज़ से जायज़ नहीं जो पिघले और ढलने योग्य हो। 12 उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (त)

1 अल-मग़रिब 2 खिज़ानातुल मुफ्तीन, तयम्मुम का अध्याय, हस्तलिखित प्रति 1/12 पृष्ठ 589 of 756

جلد سوم فتاوی رضویه

قول: انطباع ولین میں حرف واو اور ان میں اور ترید میں حرف او خصوصاً اس اطباق کے ساتھ بنگاہ اولین یقین دلاتا ہے کہ یا ۱ لین و انطباع شے واحد ہیں یا ۲ اس شوق میں دونوں کا اجتماع مقصود یعنی جو راکھ ہو یا جس میں انطباع اولین ہو دونوں جمع ہوں وہ جنس ارض نہیں اور ۳ ایک ضعیف و بعید احتمال یہ بھی ہے کہ واو بمعنی او ہو مگر ان میں کوئی خالی از اشکال نہیں۔

فاقول: اول صراحة باطل ہم روشن آئے کہ لین و انطباع متحد نہیں معہذا بحال تقدیم لین یہ عطف تفسیری معکوس ہوگا بہر حال اب یہ عبارات بھی جانب چہارم عود کریں گی۔

دوم پر لین لغور ہا کہ انطباع بے لین متصور نہیں بلکہ بحال تقدیم انطباع اس باطل کا ایہام ہو کہ کبھی انطباع بے لین بھی ہوتا ہے لہذا اجتماع لین سے مشروط کیا اور بعد فتقیح حاصل صرف اتنا ہوا کہ تردد ہو یا انطباع اور عبارات کے لیے عبارت سوم کی طرف ارجاع۔

سوم پر ذکر انطباع فضول رہا کہ مجرد لین کافی اور وہ انطباع کو لازم یہ پھر عبارت چہارم کی طرف عود کر گیا۔

(۹) علامہ شیخی زادہ رومی نے ان تین میں لین کی جگہ ذوبان لیا اور وہی ایک شق تردد اور دوسری شق ذوبان وانطباع۔

عربی متن **اردو ترجمہ / تشریح**

قدم منہما الانطباع وفی کل شمس عہ انہوں نے ان دونوں سے انطباع کو پہلے رکھا ہے اور شمس الائمة السرخسی یذوب و ینطبع ۱ الائمہ سرخسی کے کلام میں "یذوب و ینطبع" (پگھلے اور

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
كما مر عن المغرب۔ اقول : ولا يختلفان ههنا	منبع ہو) ہے، جیسا کہ مغرب کے حوالہ سے گزرا۔ (ت) اقول : یہ دونوں یہاں مختلف ہیں کیونکہ

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
عہ: ومثله فی الخانية وفي خزانة المفتين عن الظهيرية لا يجوز التيمم بكل ما يذوب وينطبع ۲ اه امنه غفر له (م)	اس کے مثل خانیہ میں ہے، اور خزانہ المفتین میں ظہیریہ کے حوالے سے یہ الفاظ ہیں کہ تیمم ہر اس چیز سے جائز نہیں جو پگھلے اور منبطع ہو ۱۲ امنہ غفرلہ (ت)

۱ المغرب ۲ خزانة المفتين فصل فی التيمم قلمی نسخه ۱/۱۲ Page 589 of 756

Fatawa Rizwia, Volume 3

For there is a general relationship between the two from one perspective. (T)

It is stated in Majma' al-Anhur: Everything that burns and becomes ash is not from the genus of earth, and likewise everything that is impressionable and melts. (T)

I say: Here also there are three possibilities as before, and all three face objections. First: If melting and impression are the same thing, then the result would be hesitation and melting. I say: But their union is false as you have known (as it became known. T). Second: If the combination of both is a condition, then the result is that what is not of the genus of earth is that which can become ash or is capable of both impression and melting. Third: Weak and best, meaning that which has hesitation or melting or impression is not of the genus of earth. I say: The texts on both of these will come later, if Allah wills, and the weakness and remoteness of the third is clear in that two rules were made for what is not from the genus of earth; in one, hesitation was kept, and in the other, impression and melting were joined with the word 'and' (wao), so it is apparent that these two rules are unified.

(10) Imam Fakhr al-Millat wa al-Din al-Zaylai stated exactly like the ninth, he only added another rule for non-genus, which is what the earth 'eats', meaning that over a period suitable for each different thing, it affects it and turns it into dust. It is in Tabyin al-Haqa'iq:

The distinction between them is that everything that burns with fire and becomes ash is not from the genus of earth, and similarly everything that becomes impressionable and melts by fire, and everything that the earth consumes is not from its genus. [End] The virtuous Akh-e-Chalapi quoted this text using the word 'it was said' (qeela) and maintained it, and wrote at its end that this is the gist of Zaylai's speech. [End] Thus, one who does not refer back to Tabyin might be misled that he...

1. Majma' al-Anhur, Chapter of Tayammum, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/38.
2. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Tayammum, Matba'ah Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/39.
3. Dhakhirat al-Uqba, Chapter of Tayammum, Matba' Islamiya, Lahore, 1/174.

Page 590 of 756.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 3

क्योंकि उन दोनों के बीच एक पहलू से आम संबंध है। (त)

मजमा' अल-अनहुर में है: हर वह चीज़ जो जल जाए और राख हो जाए वह ज़मीन की श्रेणी (जिंस) से नहीं है और इसी तरह हर वह चीज़ जो प्रभावित (मुंतबा) हो सके और पिघल जाए। (त)

मैं कहता हूँ: यहाँ भी पहले की तरह तीन संभावनाएं हैं और तीनों पर आपत्तियां हैं। पहला: यदि पिघलना और प्रभावित होना एक ही हो, तो परिणाम हिचकिचाहट और पिघलना होगा। मैं कहता हूँ: लेकिन उनका मिलन गलत है जैसा कि आप जान चुके हैं (जैसा कि ज्ञात हुआ। त)। दूसरा: यदि दोनों का संयोजन एक शर्त हो, तो परिणाम यह है कि जो ज़मीन की श्रेणी से नहीं है वह वह है जो राख बन सके या जो प्रभाव और पिघलाव दोनों के योग्य हो। तीसरा: कमज़ोर और बेहतर, यानी जिसमें हिचकिचाहट या पिघलना या प्रभाव हो, वह ज़मीन की श्रेणी से नहीं है। मैं कहता हूँ: इन दोनों पर प्रमाण (नसूस) आगे आएंगे, यदि अल्लाह ने चाहा, और तीसरे की कमज़ोरी और दूरी इस तरह स्पष्ट है कि गैर-ज़मीनी श्रेणी के लिए दो नियम बनाए गए, एक में हिचकिचाहट रखी गई, और दूसरे में प्रभाव और पिघलाव को 'वाओ' (और) शब्द से जोड़ा गया, तो यह स्पष्ट है कि ये दोनों नियम एक ही हैं।

(10) इमाम फ़ख़्र अल-मिल्लत वल-दीन ज़ैलई ने बिल्कुल नौवें की तरह फ़रमाया, केवल गैर-जिंस का एक और नियम बढ़ाया कि जिसे ज़मीन खा ले, यानी एक समय के बाद जो हर चीज़ के लिए अलग होता है, वह उसे प्रभावित करके मिट्टी कर दे। तब्यीन अल-हक़ाएक़ में है:

उनके बीच अंतर यह है कि हर वह चीज़ जो आग से जलकर राख हो जाए वह ज़मीन की श्रेणी से नहीं है, और इसी तरह हर वह चीज़ जो आग से प्रभावित हो और पिघल जाए, और हर वह चीज़ जिसे ज़मीन खा जाए वह उसकी श्रेणी से नहीं है। [समाप्त] गुणी अख़ी चलपी ने 'कहा गया' (क़ील) शब्द के साथ इस पाठ को उद्धृत किया और इसे बरकरार रखा, और इसके अंत में लिखा कि यह ज़ैलई के भाषण का सार है। [समाप्त] अतः, जो तब्यीन को नहीं देखता, वह इस भ्रम में पड़ सकता है कि वह...

1. मजमा' अल-अनहुर, बाब अत-तयम्मुम, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/38.
2. तब्यीन अल-हक़ाएक़, बाब अत-तयम्मुम, मतबआ अमीरिया, बुलाक़, मिस्र, 1/39.

3. ज़ख़ीरत अल-उक़्बा, बाब अत-तयम्मुम, मतबअ इस्लामिया, लाहौर, 1/174.

पृष्ठ 590/756।

لان بینھما عموما من وجہ۔ دونوں میں عموم من وجہ ہے۔ (ت)

مجمع الانہر میں ہے: کل شیئ یحترق و یصیر رمادا لیس من جنس الارض و کذلک کل شیئ ینطبع و یذوب۔ ہر وہ چیز جو جل جائے اور راکھ ہو جائے وہ جنس زمین سے نہیں اور ایسے ہی ہر وہ چیز جو منطبع ہو اور پگھلے۔ (ت)

اقول:۔ یہاں بھی بدستور تین احتمال اور تینوں پر اشکال۔ اول: ذوبان وانطباع ایک ہوں تو حاصل تردّد و ذوبان ہوگا۔ اقول: مگر اتحاد باطل کما علمت (جیسا کہ معلوم ہوا۔ ت) دوم: دونوں کا اجتماع شرط ہو تو حاصل یہ کہ غیر جنس ارض وہ ہے جو راکھ ہو سکے یا انطباع و ذوبان دونوں کی صالح ہو۔ سوم: ضعیف و اجید یعنی جس میں تردید یا ذوبان یا انطباع ہو جنس ارض نہیں۔ اقول: ان دونوں پر نصوص تو آگے آتے ہیں ان شاء اللہ تعالٰی اور ثالث کا ضعف و بعد یوں روشن کہ غیر جنس ارض کے لیے دو قانون بنائے ایک میں تردید رکھا، دوسرے میں انطباع و ذوبان کو بحرف واو جمع کیا تو متبادر یہی ہے کہ یہ دونوں قانون واحد میں ہیں۔

(۱۰) امام فخر الملۃ والدین زیلعی نے بالکل مثل نہم فرمایا، صرف غیر جنس کا ایک اور قانون بڑھایا کہ جسے زمین کھا لے یعنی ایک مدت پر کہ ہر شہ کہ مناسب مختلف ہوتی ہے اس میں اثر کرتے ہوئے خاک کر دے۔ تبیین الحقائق میں ہے:

الفاصل بینھما کل شیئ یحترق بالنار و یصیر رماداً لیس من جنس الارض و کذا کل شیئ ینطبع و یذوب بالنار و کل شیئ تاکلہ الارض لیس من جنسہا اہ دونوں کے درمیان فرق و امتیاز یوں ہوتا ہے کہ ہر وہ چیز جو آگ سے جل جائے اور راکھ ہو جائے وہ جنس زمین سے نہیں، ایسے ہی ہر وہ

چیز جو آگ سے منطبع ہو اور پگھل جائے اور ہر وہ چیز جسے زمین کھا جائے وہ جنس زمین سے نہیں اھـ ۔ واثرہ الفاضل اخی چلپی بلفظۃ قیل مقر او قال فی آخرہ ہذا زبدۃ کلام الزیلعی اہـ فقد(۱) یوہم من لم یراجع التبیین انہ یہ عبارت لفظ "قیل" سے فاضل اخی چلپی نقل کرکے برقرار رکھی اور اس کے آخر میں لکھا کہ یہ کلام زیلعی کا خلاصہ ہے اھـ اس سے تبیین زیلعی کی طرف مراجعت کرنے والے

۱۔ مجمع الانہر باب التیمم دار احیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۳۸ ۲۔ تبیین الحقائق باب التیمم مطبعۃ امیریۃ بولاق مصر ۱ / ۳۹ ۳۔ ذخیرۃ العقبی باب التیمم مطبع اسلامیہ لاہور ۱ / ۱۷۴

Fatawa Razawiyyah Volume Three

فيه بلفظة قيل وليس كذلك۔ — One might suspect that this discourse here too would be with the word 'Qil' [it is said], although it is not so. (T)

I say: This fresh rule is correct in itself, but it is not sufficient for recognizing a genus or non-genus, because its converse is not universal. It is not the case that whatever is not of the genus of earth is 'eaten' by the earth; the earth does not eat gold and silver either. In any case, it does not affect our topic; its results and the objections against them are exactly like the ninth point.

(11) The learned Chalapi followed the tenth point entirely but took 'softening' (layyin) instead of 'malleability' (intiba'), stating: 'and everything that softens and melts with it, etc.' (And everything that becomes soft by fire and melts, etc. - T) and considered this to be the essence of the discourse of 'Tabyeen' as mentioned before. (As passed. - T)

I say: This is never its essence. There is a great difference between softening (layyin) and malleability (intiba'), as stated previously. (As previously described. - T). This doubt occurred to him due to following 'Durar', even though both scholars are contemporary notables of the ninth century, but his book is eighteen years after 'Durar'. The composition of 'Durar' was completed in 883 AH, and 'Dhakhira-tul-Uqba' is in 901 AH, and in its conclusion, lines upon lines are taken from the conclusion of 'Durar'. Yes, the change from malleability to softening distinguished it from the discourse of 'Tabyeen' in such a way that while the former had three possibilities, this one has no room for the possibility of unification, as the difference between softening and melting is obvious.

As for the first combination, I say: Mentioning softening is redundant since it is a necessary consequence of melting, and the result would be the result of the first statement of the ninth point. Second, refutation. I say: Mentioning melting is redundant since mere softening is sufficient, and now the result would return towards the fourth statement.

(12) The great Imam Abu al-Barakat al-Nasafi took one branch as 'combustion' (ihtiraq) and the other as 'malleability and softening' in 'Kafi':

بطاهر من جنس الارض لابما ينطبع ويلين اويحترق 2۔ — ...with a pure substance from the genus of earth, not with that which is malleable, softens, or burns.

...with any pure thing of the genus of earth. Not with something that becomes malleable and soft or burns. (T)

I say: There are still three possibilities, and an objection to all three. Unification is inherently invalid, and based on it, the result of softening and combustion, and the combination—whether it be combustion or the combination of malleability and softening—softening is redundant in it, and the result is combustion or malleability, and upon refutation, malleability is useless and the result is like the first possibility.

---

1 Dhakhira-tul-Uqba, Chapter on Tayammum, Matba' Islamia Lahore, 1/174. 2 Al-Kafi.

فيه بلفظة قيل وليس كذلك۔ भ्रम हो सकता है कि यहाँ भी यह बात 'क़ील' (कहा गया है) शब्द के साथ होगी, जबकि ऐसा नहीं है। (त)

मैं कहता हूँ: यह नया नियम अपने आप में सही है लेकिन किसी चीज़ के सजातीय (genus) या विजातीय होने की पहचान के लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि इसका विलोम सार्वभौमिक नहीं है। ऐसा नहीं है कि जो पृथ्वी की प्रजाति का नहीं है उसे पृथ्वी खा जाती है; पृथ्वी सोने और चाँदी को भी नहीं खाती। बहरहाल, इसका हमारे विषय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता; इसके निष्कर्ष और उन पर आपत्तियाँ ठीक वैसी ही हैं जैसी नौवीं बात में थीं।

(11) विद्वान चलपी ने पूरी तरह से दसवीं बात का अनुसरण किया लेकिन 'मल्लेबिलिटी' (intiba') के बजाय 'नरम होने' (layyin) को लिया कि 'और हर वह चीज़ जो इससे नरम हो और पिघल जाए' आदि (और हर वह चीज़ जो आग से नरम हो जाए और पिघल जाए आदि। - त) और इसी को 'तब्यीन' के प्रवचन का सार माना जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। (जैसा कि बीत चुका है। - त)

मैं कहता हूँ: यह कतई इसका सार नहीं है। 'नरम होने' और 'मल्लेबिलिटी' में बहुत बड़ा अंतर है जैसा कि पहले बताया जा चुका है। (जैसा कि पहले वर्णन किया गया। - त)। उन्हें यह संदेह 'दुरर' के अनुसरण के कारण हुआ, यद्यपि दोनों विद्वान नौवीं शताब्दी की समकालीन हस्तियां हैं, लेकिन उनकी पुस्तक 'दुरर' के अठारह वर्ष बाद की है। 'दुरर' की रचना 883 हिजरी में पूरी हुई और 'ज़ख़ीरा-तुल-उक़बा' 901 हिजरी में है, और इसके निष्कर्ष में पंक्तियाँ की पंक्तियाँ 'दुरर' के निष्कर्ष से ली गई हैं। हाँ, मल्लेबिलिटी से नरम होने में परिवर्तन ने इसे 'तब्यीन' के प्रवचन से इस तरह अलग कर दिया कि जहाँ उसमें तीन संभावनाएँ थीं, इसमें एकीकरण की संभावना की कोई गुंजाइश नहीं है क्योंकि नरम होने और पिघलने में अंतर स्पष्ट है।

रही बात पहले संयोजन की, मैं कहता हूँ: नरम होने का उल्लेख व्यर्थ है क्योंकि यह पिघलने का एक आवश्यक परिणाम है, और निष्कर्ष नौवीं इबारत के पहले परिणाम जैसा होगा। दूसरा, खंडन। मैं कहता हूँ: पिघलने का उल्लेख व्यर्थ है क्योंकि केवल नरम होना ही पर्याप्त है, और अब इबारत का सार चौथी बात की ओर लौट जाएगा।

(12) महान इमाम अबू अल-बरकात अल-नसफ़ी ने एक शाखा 'दहन' (ihtiraq) को लिया और दूसरी 'मल्लेबिलिटी और नरम होने' को 'काफ़ी' में लिया है:

بطاهر من جنس الارض لابما ينطبع ويلين اويحترق 2۔	पृथ्वी की प्रजाति की किसी पवित्र वस्तु से, न कि उससे जो मल्लेबल हो, नरम हो जाए या जल जाए। पृथ्वी की प्रजाति की किसी पवित्र चीज़ से। ऐसी चीज़ से नहीं जो मल्लेबल और नरम हो जाए या जल जाए। (त)

मैं कहता हूँ: अभी भी तीन संभावनाएँ हैं और तीनों पर आपत्ति है। एकीकरण स्वतः अमान्य है, और उस पर नरम होने और दहन का परिणाम, और संयोजन—चाहे वह दहन हो या मल्लेबिलिटी और नरम होने का संयोजन हो—नरम होने का उल्लेख उसमें व्यर्थ है और परिणाम दहन या मल्लेबिलिटी है, और खंडन पर मल्लेबिलिटी बेकार है और परिणाम पहली संभावना जैसा है।

---

1 ज़ख़ीरा-तुल-उक़बा, तैयमम का अध्याय, मतबा इस्लामिया लाहौर, 1/174. 2 काफ़ी।

فیه بلفظة قیل ولیس کذلك۔ کو یہ وہم ہوتا ہے کہ اس میں بھی یہ کلام لفظ قیل کے ساتھ ہوگا حالانکہ ایسا نہیں۔(ت)

اقول: یہ قانون تازہ بجاے خود صحیح ہے مگر معرفت جنس وغیر جنس کو کافی نہیں کہ اس کا عکس کلی نہیں کہ جو غیر جنس ارض ہو اسے زمین کھالے، زمین سونے چاندی کو بھی نہیں کھاتی بہرحال اس ہمارے مبحث پر اثر نہیں اس کے حاصلات اور ان پر اشکالات بعینہما مانند نہم ہیں۔

(۱۱) فاضل چلپی نے بالکل دہم کا اتباع کیا مگر لین بجاے انطباع لیا کہ وکل شیئ یلین ویذوب بھا الخ اور ہر وہ چیز جو آگ سے نرم ہو اور پگھل جائے الخ۔ ت) اور اسی کو حاصل کلام تبیین ٹھہرایا کما مر (جیسا کہ گذرا۔ ت)

اقول: یہ ہرگز اس کا حاصل نہیں لین و انطباع میں فرق عظیم ہے کما تقدم (جیسا کہ پہلے بیان ہوا۔ ت) ان کو یہ شبہ اتباع درر سے لگا اگرچہ دونوں فاضل ہمعصر اعیان قرن تاسع سے ہیں مگر ان کی کتاب درر سے اٹھارہ برس بعد ہے تصنیف ۲ درر ۸۸۳ھ میں ختم ہوئی اور ذخیرۃ العقبی ۹۰۱ھ میں ہے اور اس کے خاتمہ میں سطریں کی سطریں خاتمہ درر سے ماخوذ ہیں۔ ہاں لین و انطباع کی تبدیلی نے اسے کلام تبیین سے یوں بھی جدا کر دیا کہ اس میں تین احتمال تھے، اس میں احتمال اتحاد کی گنجائش نہیں کہ لین و ذوبان میں فرق بدیہی ہے۔

رہے وہ اول جمع اقول: تو ذکر لین لغو کہ لازم ذوبان ہے اور حاصل حاصل اول عبارت نہم ہو گا دوم تردید۔ اقول: تو ذکر ذوبان لغو کہ مجرد لین کافی ہے اور اب حاصل عبارت چہارم کی طرف عود کرے گا۔

(۱۲) امام جلیل ابوالبرکات نسفی نے ایک شق احتراق لی اور دوسری انطباع و لین کافی میں ہے:

بطاھر من جنس الارض لابما ینطبع ویلین اویحترق 2۔

جنس زمین کی کسی پاک چیز سے۔ ایسی چیز سے نہیں جو منطبع اور نرم ہو جائے یا جل جائے۔

جنس زمین کی کسی پاک چیز سے۔ ایسی چیز سے نہیں جو منطبع اور نرم ہو جائے یا جل جائے۔ (ت)

اقول: بدستور تین احتمال ہیں اور تینوں پر اشکال۔ اتحاد خود باطل ہے اور اس پر حاصل لین و احتراق اور جمع یعنی احتراق ہو یا انطباع ولین کا اجتماع اس میں لین لغو اور حاصل احتراق یا انطباع اور تردید پر انطباع بے کار اور حاصل مثل احتمال اول۔

---

1 ذخیرۃ العقبی باب التیمم مطبع اسلامیہ لاہور ۱/ ۱۷۴ 2 کافی

Fatawa Rizvia Volume Three

(13) The scholar Mu'in Harawi attributed burning and malleability (intiba) to the 'genus' (essence) and added 'softness' with the conjunction 'wa' (and) for the 'non-genus'. In 'Sharh Kanz', it is stated:

Arabic	Urdu Translation
جنس الارض ما لایحترق ولاینطبع ومالیس من جنس الارض مایحترق اوینطبع و یلین-[1]	The genus of earth is that which does not burn nor become malleable, and what is not of the genus of earth is that which burns or becomes malleable and soft. (T)

I say (Aqool): This is explicitly contradictory to the reality of the matter. The implication of the first sentence is that mere softening is not contrary to being 'earthy', while the second sentence explicitly states it is contrary. Necessarily, here, the conjunction is explanatory (atf-e-tafsiri) which is inherently void, and the first possibility leans towards text 12.

(14) I say (Aqool): Despite these many differences, they all agreed on one point: that these characteristics are distinguishers between 'genus' and 'non-genus'. Allama Mulla Khusrow, in both the text (matn) and commentary (sharh) of 'Ghurar wa Durar', adopted a method where he did not consider them distinguishers at all, but rather considered them as constraints for the validity of Tayammum. That is, Tayammum is valid specifically with something of the 'genus of earth' that does not soften or turn to ash when burned. This is the gist of the text. In the commentary, it is said that whatever is not from the 'genus of earth' or possesses malleability or turns to ash, Tayammum with it is not permissible. Thus, the text and commentary clearly stated that 'genus of earth' itself is of two types: one that becomes soft or ash by fire, and the other that does not. The wording of the text is:

Arabic	Urdu Translation
على طاهر من جنس الارض وهو لاینطبع ولایترمد[2] بالاحتراق-	On a pure thing of the genus of earth, provided it does not become malleable nor turn to ash upon burning. (T)

In the commentary, it is stated:

Arabic	Urdu Translation
وذلك لان الصعید اسم لوجه الارض باجماع اهل اللغة	And this is because 'Sa'id', by the consensus of linguists, is the name of the earth's surface. So, this word will not

Arabic	Urdu Translation
فلايتناول ماليس من جنسها اوينطبع اويترمد[3]-	include something that is not of the earth's genus, or is malleable, or turns to ash. (T)

It is evident that this approach is distinct from all predecessor (Salaf) and successor (Khalaf) scholars and teachers.

| وحاول العلامۃ الشرنبلالی ردہ الی | Allama Shurunbulali attempted to turn it towards agreement... |

---

1. Sharh Kanz with Fath al-Mu'in, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/ 91
2. Durar al-Hukkam Sharh Ghurar al-Ahkam, Chapter on Tayammum, Printed in Kamiliyah Beirut, 1/ 31
3. Durar al-Hukkam Sharh Ghurar al-Ahkam, Chapter on Tayammum, Printed in Kamiliyah Beirut, 1/ 31

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

(13) फ़ाज़िल मुईन हरवी ने दहनशीलता और आघातवर्ध्यता (intiba) को 'जिन्स' (essence) की ओर लिया और गैर-जिन्स की ओर 'नर्मी' (wao conjunction के साथ) जोड़ा। शरह कंज़ में कहा गया है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
جنس الارض ما لایحترق ولاینطبع ومالیس من جنس الارض مایحترق اوینطبع و یلین[1]-	ज़मीन की जिन्स वह है जो न जले और न ही आकार बदले, और जो ज़मीन की जिन्स से नहीं है वह वह है जो जल जाए या आकार बदले और नरम हो जाए। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): यह हक़ीक़त पर स्पष्ट रूप से विरोधाभासी है। पहले वाक्य का अर्थ यह है कि मात्र नर्मी 'ज़मीनी' होने के विपरीत नहीं है, जबकि दूसरे की स्पष्टता है कि यह विपरीत है। अनिवार्य रूप से यहाँ व्याख्यात्मक संयोजन (अत्फ़-ए-तफ़्सीरी) है जो स्वयं में बातिल है और पहली संभावना इबारत 12 की ओर झुकती है।

(14) अक़ूल (मैं कहता हूँ): इतने मतभेदों के बावजूद वे सब एक बात पर सहमत थे कि ये गुण 'जिन्स' और 'गैर-जिन्स' के बीच भेद करने वाले हैं। अल्लामा मौला खुसरो ने 'ग़ुरर व दुरर' के मतन (मूल पाठ) और शरह (व्याख्या) दोनों में वह तरीका अपनाया कि उन्होंने इन्हें भेद करने वाला ही नहीं माना, बल्कि तैयममुम के जायज़ होने के लिए इन्हें 'जिन्स-ए-अर्श' (ज़मीन की जिन्स) की शर्त माना। यानी ज़मीन की जिन्स में विशेष रूप से उस चीज़ से तैयममुम जायज़ है जो आग से जलकर न नरम पड़े न राख हो। यह मतन का सार है। शरह में फ़रमाया कि जो चीज़ ज़मीन की जिन्स से नहीं है या जो फैलने या राख होने की विशेषता रखती है, उससे तैयममुम जायज़ नहीं है। तो मतन और शरह ने साफ़ बताया कि खुद ज़मीन की जिन्स दो प्रकार की होती है: एक वह जो आग से नरम या राख होती है और दूसरी नहीं। मतन की इबारत यह है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
علی طاھر من جنس الارض وھو لاینطبع ولایترمد[2] بالاحتراق-	ज़मीन की जिन्स की पाक चीज़ पर जब कि वह जलने से न आकार बदले और न राख हो। (त)

शरह में फ़रमाया:

अरबी	उर्दू अनुवाद
وذلك لان الصعيد اسم لوجه الارض باجماع اهل اللغة فلايتناول ماليس من جنسها اوينطبع اويترمد[3]-	और यह इसलिए कि 'सईद' भाषाविदों की सर्वसम्मति से पृथ्वी की सतह का नाम है। तो यह शब्द उस चीज़ को शामिल नहीं करेगा जो ज़मीन की जिन्स से नहीं है या आकार बदलने वाली या राख होने वाली है। (त)

ज़ाहिर है कि यह तरीका तमाम सलफ़ और ख़लफ़ मशायख और उलेमा से अलग है।

| وحاول العلامۃ الشرنبلالی ردہ الی | अल्लामा शरुनबुलाली ने इसे सहमति की ओर मोड़ने की कोशिश की... |

---

1. शरह कंज़ मअ फ़तह-उल-मुईन, बाब-उत-तैयममुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/ 91
2. दुरर-उल-हुक्काम शरह ग़ुरर-उल-अहकाम, बाब-उत-तैयममुम, मतबुआ कामिलिया बेरूत, 1/ 31
3. दुरर-उल-हुक्काम शरह ग़ुरर-उल-अहकाम, बाब-उत-तैयममुम, मतबुआ कामिलिया बेरूत, 1/ 31

فتاوی رضویہ جلد سوم

(۱۳) فاضل معین ہر وی نے جانب جنس احتراق وانطباع لیا اور جانب غیر میں لین بواو عاطفہ اضافہ کیا، شرح کنز میں کہا:

عربی	اردو ترجمہ
جنس الارض ما لایحترق ولاینطبع ومالیس من جنس الارض مایحترق اوینطبع و یلین[1]-	جنس زمین وہ ہے جو نہ جلے اور نہ منطبع ہو اور جو جنس زمین سے نہیں یہ وہ ہے جو جل جائے یا منطبع اور نرم ہو جائے۔(ت)

اقول: یہ حقیقت امر پر صریح متناقض ہے جملہ اولیٰ کا مفاد کہ مجرد لین منافی ارضیت نہیں اور ثانیہ کی تصریح کہ منافی ہے لاجرم یہاں عطف تفسیری متعین جو خود باطل اور احتمال اول عبارت ۱۲ کی طرف مائل۔

(۱۴) اقول: یہ سب باوصف اس قدر اختلافات کے ایک امر پر متفق تھے کہ یہ اوصاف جنس و غیر جنس میں فارق ہیں علامہ مولیٰ خسرو نے غرر ودرر متن و شرح دونوں میں وہ روش اختیار فرماء کہ انہیں فارق ہی نہ مانا بلکہ جواز تیمم کے لئے ان کو جنس ارض کی قید جانا یعنی جنس ارض میں خاص اس شے سے تیمم جائز ہے جو آگ سے جل کر نہ نرم پڑے نہ راکھ ہو یہ حاصل متن ہے شرح میں فرمایا جو چیز جنس ارض سے نہیں یا انطباع خواہ ترمد رکھتی ہے اس سے تیمم روا نہیں تو متن و شرح نے صاف بتایا کہ خود جنس ارض دونوں قسم کی ہوتی ہے ایک وہ کہ آگ سے نرم یا راکھ ہوتی ہے دوسری نہیں۔ متن کی عبارت یہ ہے :

عربی	اردو ترجمہ
علی طاھر من جنس الارض وھو لاینطبع ولایترمد[2] بالاحتراق-	جنس زمین کی پاک چیز پر جب کہ وہ جلنے سے نہ منطبع ہو اور نہ راکھ ہو۔(ت)

شرح میں فرمایا :

عربی	اردو ترجمہ
وذلك لان الصعید اسم لوجه الارض باجماع اھل اللغة فلایتناول مالیس من جنسھا اوینطبع اویترمد[3]-	اور یہ اس لئے کہ صعید باجماع اہل لغت روئے زمین کا نام ہے تو یہ لفظ اس چیز کو شامل نہ ہوگا جو جنس زمین سے نہیں یا منطبع یا راکھ ہونے والی ہے۔(ت)

پر ظاہر کہ یہ طریقہ تمام سلف و خلف مشائخ وعلماء سے جدا ہے۔

| وحاول العلامۃ الشرنبلالی ردہ الی | علامہ شرنبلالی نے اسے موافقت کی جانب پھیرنے |

---

1 شرح کنز مع فتح المعین باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۹۱ 2 دررالحکام شرح غرر الاحکام باب التیمم مطبوعہ کاملیہ بیروت ۱/ ۳۱ 3 دررالحکام شرح غرر الاحکام باب التیمم مطبوعہ کاملیہ بیروت ۱/ ۳۱

Fatawa-e-Razvia, Volume 3

[Table Header] (Right Column - Urdu Text): While attempting, he said, "The conjunction with the word 'او' (or) in the text of the commentary is a simplification (tasamuh). It should have been with 'واو' (and) because this is a conjunction of the specific upon the general. End (T). I say: What will be done with the text? It does not contain 'and it is what does not imprint etc.' Rather, in it, the category of 'earth' is restricted by a circumstantial clause (jumlah haliyah), and circumstances function as conditions. Furthermore, their statement that it is a conjunction of the specific, although true in itself as we will investigate, God willing, is contrary to the position of the aforementioned authors and the position of Imam Shurunbulali himself, as mentioned under the third statement from them. (T)"

(Left Column - Arabic Text): Accord, he said regarding the commentator's statement on the conjunction with 'or' (aw): It is a simplification; it should have been with 'and' (wa) because it is a conjunction of the specific. I say: What (1) will be done with the main text? For it did not say 'and it is what does not...', rather it restricted the genus of the earth with a circumstantial phrase, and circumstances are conditions. Then, his statement 'because it is a conjunction of the specific', even if it is true according to what we will establish, God willing, it is contrary to their path and his own path mentioned in the third statement.

[Main Body Text] Although this text remained separate from explaining the excellence in genus etc., it still yielded enough to show that softness (layyin) and turning into ash (tarmud) are impediments to Tayammum, thus joining the fourth statement in this regard. In summary, it became clear from our explanation that these fourteen statements—because there were three possibilities each in 7, 8, 9, 10, 12, and two in 11—became twenty-five statements, and their essence returns to nine views: (1) The basis for not being of the genus of earth is solely imprintability (in tiba'). (2) Only turning into ash (tarmud). (3) Turning into ash or imprintability. (4) Turning into ash or softness (marginal note). (5) Turning into ash or melting (dhubaan). (6) Turning into ash or the combination of melting and imprintability. (7) Turning into ash or melting or imprintability.

Marginal note (عه): In texts other than 'Durar', this will be taken as the rationale (manat), and in 'Durar', it's from one side as a general rule 12, may he be forgiven (M).

[Footnote] 1. Ghunyat Dhawi al-Ahkam with Durar al-Ahkam, Chapter of Tayammum, published by Kamiliyya, Beirut, 1/31.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[तालिका शीर्षक] (दायां स्तंभ - उर्दू पाठ): कोशिश करते हुए फरमाया, "व्याख्या (शरह) के इबारत में 'او' (या) शब्द से मिलाना सरलीकरण (तसामुह) है। यह 'واو' (और) से होना चाहिए था क्योंकि यह सामान्य पर विशिष्ट का संयोजन है। (अंत)। मैं कहता हूँ: मूल पाठ (मतन) का क्या किया जाएगा? उसमें यह नहीं है कि 'वह वह है जो अंकित (मुद्रित) न हो आदि'। बल्कि उसमें 'भूमि की श्रेणी' को एक परिस्थितिपरक वाक्य (जुमला हालिया) से सीमित किया गया है और परिस्थितियाँ शर्तों की तरह काम करती हैं। फिर उनका यह कहना कि यह विशिष्ट का संयोजन है, हालांकि अपने आप में सही है जैसा कि हम अल्लाह ने चाहा तो इसकी जांच करेंगे, लेकिन यह उपरोक्त लेखकों के रुख और स्वयं अल्लामा शुरुनबुलाली के रुख के खिलाफ है जो उनके हवाले से तीसरी इबारत के तहत बयान हुआ। (त)"

(बायां स्तंभ - अरबी पाठ): सहमति, उन्होंने भाष्यकार के'या' के साथ संयोजन के कथन पर कहा: यह एक सरलीकरण है; यह 'और' के साथ होना चाहिए था क्योंकि यह विशिष्ट का संयोजन है। मैं कहता हूँ: मूल पाठ का क्या (1) किया जाएगा? क्योंकि इसने 'और यह वह है जो नहीं...' नहीं कहा, बल्कि इसने पृथ्वी के वर्ग को एक परिस्थितिपरक वाक्यांश के साथ प्रतिबंधित कर दिया, और परिस्थितियाँ शर्तें हैं। फिर, उनका कथन 'क्योंकि यह विशिष्ट का संयोजन है', भले ही यह सच हो जैसा कि हम स्थापित करेंगे, यदि ईश्वर की इच्छा हो, तो यह उनके मार्ग और उनके स्वयं के मार्ग के विपरीत है जिसका उल्लेख तीसरे कथन में किया गया है।

[मुख्य पाठ] यह इबारत हालांकि श्रेणी आदि में श्रेष्ठता बताने से अलग रही, फिर भी इसने इतना तो दिया कि कोमलता (लय्यिन) और राख होना (तरमुद) तयम्मुम के लिए बाधक हैं, अतः इस मामले में यह चौथी इबारत के साथ शामिल हो गई। संक्षेप में, हमारे स्पष्टीकरण से यह स्पष्ट हुआ कि ये चौदह इबारतें—इस वजह से कि 7, 8, 9, 10, 12 में तीन-तीन संभावनाएं थीं और 11 में दो—पच्चीस इबारतें बनकर उनका सार नौ कथनों (विचारों) की ओर लौट गया: (1) भूमि की श्रेणी न होने का आधार केवल अंकित (मुद्रित) होना। (2) केवल राख होना (तरमुद)। (3) राख होना या अंकित होना। (4) राख होना या कोमलता (हाशिया)। (5) राख होना या पिघलना (ज़ोबान)। (6) राख होना या पिघलने और अंकित होने का मिश्रण। (7) राख होना या पिघलना या अंकित होना।

हाशिया (عه): 'दुरर' के अलावा अन्य ग्रंथों में इसे तर्क(मनात) के रूप में लिया जाएगा और 'दुरर' में एक तरफ से सामान्य नियम 12 के रूप में, उसे क्षमा किया जाए (म)।

[पाद लेख] 1 गुनियत ज़वी अल-अहकाम साथ में दुर्र अल-अहकाम, अध्याय तयम्मुम, कामिलिया बेरूत द्वारा प्रकाशित, 1/31।

पृष्ठ 593/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

[جدول] (دائیں کالم): کی کوشش کرتے ہوئے فرمایا ہے "شرح کی عبارت میں او (یا) کے لفظ سے عطف تسامح ہے۔ یہ عطف واو سے ہونا چاہئے کیوں کہ یہ عام پر خاص کا عطف ہے اھ (ت)۔

اقول: متن کو کیا کریں گے۔ اس میں یہ نہیں ہے کہ وھو مالا ینطبع الخ۔ (اور وہ (جنس زمین) وہ ہے جو منطبع نہ ہو الخ) بلکہ اس میں جنس زمین کو جملہ حالیہ سے مقید کیا ہے اور حال شرط کی حیثیت رکھتا ہے۔ پھر ان کا یہ کہنا کہ یہ خاص کا عطف ہے اگرچہ بجائے خود حق ہے جیسا کہ ہم ان شاء اللہ تعالیٰ اس کی تحقیق کریں گے لیکن یہ مصنفین بالا کے موقف اور خود علامہ شرنبلالی کے موقف کے خلاف ہے جو ان کے حوالہ سے عبارت سوم کے تحت بیان ہوا۔ (ت)"

(بائیں کالم): الوفاق فقال علی قول الشرح فی العطف باوتسامح کان ینبغی بالواو لانه عطف خاص اھ

اقول: وما (۱) ذا یفعل بالمتن فأنه لم یقل وھو مالابل قید جنس الارض بجملة حالیة والاحوال شروط ثم قوله لانه عطف خاص وان کان حقا علی مالحققناه ان شاء اللہ لکنه مخالف لسلکهم ومسلك نفسه المار عنه في العبارة الثالثة۔

[متن] یہ عبارت اگرچہ جنس وغیرہ میں فاضل بتانے سے جدا رہی پھر بھی اتنا حاصل دیا کہ لین و ترمد مانع تیمم ہیں تو اس جملہ میں وہ عبارت چہارم کی شریک ہوئی۔ بالجملہ ہمارے بیان سے واضح ہوا کہ یہ چودہ عبارتیں اس وجہ سے کہ ۷، ۸، ۹، ۱۰، ۱۲ میں تین تین احتمال تھے اور ۱۱ میں دو، پچیس عبارتات ہو کر ان کا حاصل نو قولوں کی طرف رجوع کر گیا۔ (۱) غیر جنس ارض ہونے کا مدار صرف انطباع (۲) فقط ترمد (۳) ترمد یا انطباع (۴) ترمد یا لین عہ (۵) ترمد یا ذوبان (۶) ترمد یا اجتماع ذوبان و انطباع (۷) ترمد یا ذوبان یا انطباع

عه: غیر درر میں یہ بروجہ مناط لیا جائے گا اور درر میں طرف ایک طرف سے کلیہ ۱۲منہ غفر لہ (م)

[حاشیہ] 1 غنیہ ذوی الاحکام مع درر الاحکام باب التیمم مطبوعہ کاملیہ بیروت ۱/ ۳۱

Fatawa-e-Razawiyya Volume Three (8) Burning or Softness (9) Burning or Moldability The specific objections regarding particular passages have been mentioned. Now, let us discuss the objections regarding the core subject, and with Allah's guidance [it is stated that] the criteria for something being non-earthly in the last seven views consist of two or three characteristics. Among these characteristics, which one exists? And the criteria for something being of the "genus of earth" (Jins-e-Arz) in every view is the absence of all those characteristics. That is, if even one of them is present, it is not of the genus of earth, and Tayammum with it is impermissible. If none are present, it is of the genus of earth, and Tayammum is permissible. Now, if something is found from the genus of earth that possesses any of the characteristics noted in a particular view, it would be a violation (naqz) of the comprehensiveness of that view's criteria for earthliness—meaning some things that should have been included in that criteria are excluded. Conversely, if something from non-earthly matter is proven to have none of the valid characteristics of a view, it would be a violation of the exclusivity of that view—meaning some things that were required to be excluded from that criteria remain included. Violations of the exclusivity of the first two views have already been discussed, and they are not even worth considering. The remaining ones will be mentioned here. And Allah grants success. In a collection of violations, the realization of one characteristic in any genus of earth is sufficient. Therefore, instead of discussing each view separately, summarizing the characteristics and discussing each characteristic will suffice, as any violation of that characteristic will apply to all views and passages where it appears. Violations regarding "Intiba" (impression/moldability): Firstly, sulfur (kabrit/gandhak). When melted by fire and poured into a mold, it certainly retains that shape upon cooling. Bowls, cups, and glasses are made of pure sulfur. A person in our city used to make them in large quantities; anyone in doubt can test it now. It certainly has the capacity to be molded into any desired shape, so it is undoubtedly "muntabi" (impressionable). And this impression happened through fire, which provided the capacity for shape acceptance, even though the shape persists after cooling—just like with small and large batashas (sugar candy), sugar toys, gold and silver bricks, etc. Thus, it would follow that sulfur is not of the genus of earth and Tayammum with it is unlawful, whereas in reliable books, its inclusion in the genus of earth and the permissibility of Tayammum with it is explicitly stated, as will follow (Kama saya'ti). Secondly: Arsenic (Zarnikh). This also undoubtedly flows with fire and becomes stony again upon cooling, so it is certainly capable of impression, which we have

experienced ourselves. The only thing is that it requires a stronger flame compared to sulfur.

[Table/Box Section] Right Side: In the book 'Ilal al-Ma'adin, this is the meaning of the following passage by Ibn Zakariya al-Razi, then by Ibn al-Baytar in 'al-Jami': Left Side: "And this is the meaning of the statement of Ibn Zakariya al-Razi in the book 'Ilal al-Ma'adin, and then Ibn al-Baytar."

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द तीसरा (खंड 3) (८) दहन या कोमलता (احتراق یالین) (९) दहन या सांचे में ढलना (احتراق یا انطباع) विशिष्ट अनुच्छेदों पर जो आपत्तियाँ थीं, वे वर्णित हो चुकी हैं। अब मूल विषय की आपत्तियों का उल्लेख करेंगे। अल्लाह की तौफीक से, अंतिम सात कथनों में 'पृथ्वी की जाति न होने' का आधार दो या तीन विशेषताओं पर आधारित है। इन विशेषताओं में से कौन सी विशेषता मौजूद है? और हर कथन के अनुसार 'पृथ्वी की जाति' होने का आधार उन सभी विशेषताओं का अभाव है। यानी यदि उनमें से एक भी विशेषता हो, तो वह पृथ्वी की जाति नहीं है और उससे तयम्मुम (सूखा स्नान) जायज़ नहीं है। और यदि मूलतः कोई विशेषता न हो, तो वह पृथ्वी की जाति है और तयम्मुम जायज़ है। अब यदि पृथ्वी की जाति से कोई ऐसी चीज़ मिले जिसमें किसी कथन के अनुसार निर्धारित विशेषताओं में से कोई विशेषता पाई जाए, तो वह उस कथन की 'व्यापकता' (جامعیت) पर दोष (نقض) होगा, यानी कुछ चीज़ें जिन्हें इस आधार में शामिल होना चाहिए था, वे इससे बाहर हो गईं। और यदि गैर-पृथ्वी जाति से कोई ऐसी चीज़ सिद्ध हो जिसमें किसी कथन की मान्य विशेषताओं में से मूलतः कोई भी न हो, तो वह उस कथन की 'विभाजकता' (مانعیت) पर दोष होगा, यानी कुछ चीज़ें जिनका इस आधार से बाहर होना आवश्यक था, वे इसमें शामिल रह गईं। पहले दो कथनों की विभाजकता पर दोष पहले ही गुज़र चुके हैं और वे विचारणीय भी नहीं हैं। बाकी का यहाँ उल्लेख करेंगे और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। दोषों के संग्रह में पृथ्वी की किसी जाति में एक विशेषता का पाया जाना ही पर्याप्त है। इसलिए हर कथन पर अलग-अलग बात करने के बजाय, विशेषताओं का सारांश बनाकर हर विशेषता पर चर्चा करना पर्याप्त होगा, क्योंकि वह विशेषता जितने भी कथनों और अनुच्छेदों में होगी, उसके दोष उन सब पर लागू होंगे। 'इनतिबा' (सांचे में ढलने) पर दोष: पहला, गंधक (कबरीद)। जब इसे आग से पिघलाकर किसी सांचे में डाल दिया जाता है, तो यह निश्चित रूप से ठंडा होकर उसी रूप में रहता है। शुद्ध गंधक के प्याले, कटोरियाँ और गिलास बनाए जाते हैं। हमारे शहर में एक सज्जन बड़ी संख्या में इन्हें बनाते थे; जिसे संदेह हो वह अभी आज़मा ले। तो इसमें निश्चित रूप से किसी भी इच्छित रूप में ढाले जाने की क्षमता है, तो निःसंदेह यह 'मुन्ताबेह' (सांचे में ढलने वाला) हुआ। और यह ढलना आग से ही हुआ जिसने रूप स्वीकार करने की क्षमता प्रदान की, भले ही रूप का बने रहना ठंडा होने के बाद हो—जैसे छोटे-बड़े बताशों, चीनी के खिलौनों, सोने-चांदी की ईंटों आदि में। तो आवश्यक होगा कि गंधक पृथ्वी की जाति से न हो और उससे तयम्मुम अवैध हो, जबकि प्रामाणिक पुस्तकों में इसका पृथ्वी की जाति से होना और उससे तयम्मुम का जायज़ होना स्पष्ट रूप से वर्णित है, जैसा कि आगे आएगा (कमा सयाती)। दूसरा: हरताल (ज़रनीख़)। यह भी निःसंदेह आग से पिघलता है और ठंडा होकर पुनः पत्थर

जैसा हो जाता है, तो यह निश्चित रूप से सांचे में ढलने योग्य है, जिसका हमने स्वयं अनुभव किया है। अधिकतम यह है कि गंधक की तुलना में इसे अधिक तेज़ आंच की आवश्यकता होती है।

[कोष्ठक अनुभाग] दायाँ पक्ष: 'इलाल अल-मादिन' में इब्न ज़करिया अल-राज़ी और फिर 'जामे' में इब्न अल-बैतार के निम्नलिखित अनुच्छेद का यही अर्थ है: बायाँ पक्ष: "और इब्न ज़करिया अल-राज़ी की पुस्तक 'इलाल अल-मादिन' और फिर इब्न अल-बैतार के कथन का यही अर्थ है।"

पृष्ठ ७५६ का ५९४

فتاوٰی رضویہ جلد سوم (۸) احتراق یالین (۹) احتراق یا انطباع خاص خاص عبارات پر جو ان کے متعلق اشکالات تھے مذکور ہوئے، اب اصل مبحث کے اشکال ذکر کریں وباللہ التوفیق غیر جنس ارض ہونے کا مناط سات قول اخیر میں کہ دو دو یا تین تین وصف پر مشتمل ہیں ان اوصاف میں سے کس وصف کا وجود ہے اور جنس ارض ہونے کا مناط ہر قول کے ان سب اوصاف کا انتفا ہے یعنی ان میں سے ایک بھی ہو تو جنس ارض نہیں اور اس سے تیمم نا جائز اور اصلاً کوئی نہ ہو تو جنس ارض ہے اور تیمم جائز۔ اب اگر جنس ارض سے کوئی شے ایسی پائی جائے جس میں کسی قول کے اوصاف ملحوظ سے کوئی وصف پایا جاتا ہو وہ اس قول کے مناط ارضیت کی جامعیت پر نقض ہوگا یعنی بعض اشیاء جن کو اس مناط کا شامل ہونا چاہئے تھا اس سے خارج ہو گئیں اور اگر غیر جنس سے کوئی چیز ایسی ثابت ہو جس میں ایک قول کے اوصافِ معتبرہ سے اصلاً کوئی نہیں وہ اس قول کی مانعیت پر نقض ہوگا یعنی بعض اشیاء جن کا اس مناط سے خارج ہونا درکار تھا اس میں داخل رہیں دو قول اول کی مانعیت پر نقض ہوگا یعنی بعض اشیاء جن کا اس مناط سے خارج ہونا درکار تھا اس میں داخل رہیں دو قول اول کی مانعیت پر نقوض وہیں گزرے اور وہ دونوں قابلِ لحاظ بھی نہیں باقی یہاں ذکر کریں واللہ الموفق نقوض جمع میں کسی جنس ارض میں ایک وصف کا تحقق کافی ہے لہٰذا ہر قول پر جدا کلام کرنے سے اوصاف کی تلخیص کر کے ہر وصف پر کلام کافی ہوگا کہ وہ وصف جتنے اقوال و عبارات میں ہو اس کے نقض سب پر وارد ہوں۔ انطباع پر نقوض اولاً کبریت کہ جب آگ سے ذائب کر کے کسی سانچے میں ڈال دیں یقیناً سرد ہو کر اسی صورت پر رہتی ہے، خالص گندھک کے پیالے کٹوریاں گلاس بنتے ہیں ہمارے شہر میں ایک صاحب بکثرت بناتے تھے جسے شبہ ہو وہ اب آزمالیکھے، تو اس میں یقیناً جس صورت پر چاہیں ڈھالے جانے کی صلاحیت ہے تو بلاشبہ منطبع ہوئی اور یہ انطباع آگ سے ہی ہوا کہ

قبولِ صورت پر اسی نے مہیا کیا اگرچہ بقائے صورت بعدِ برودت ہے جیسے چھوٹے بڑے بتاسوں، شکر کے کھلونوں، سونے چاندی کی اینٹوں وغیرہ میں، تو لازم کہ گندھک جنس ارض سے نہ ہو اور اس سے تیمم ناروا ہو حالانکہ کتبِ معتمدہ میں اس کا جنس ارض سے ہونا اور اس سے تیمم کا جواز مصرح ہے کما سیأتی (جیسا کہ آگے آرہا ہے۔ ت) ثانیاً: زرنیخ، یہ بھی بلاشبہ آگ سے بہتی اور سرد ہو کر پھر متحجر ہو جاتی ہے تو یقیناً قابل انطباع ہے جس کا خود ہم نے تجربہ کیا غایت یہ کہ بہ نسبت کبریت کے زیادہ قوی آنچ چاہتی ہے۔

[خانہ] دائیں طرف: کتاب علل المعادن میں ابن زکریا رازی پھر جامع میں ابن بیطار کی درج ذیل عبارت کا یہی معنی ہے: بائیں طرف: وھذا معنی قول ابن زکریا الرازي في کتاب علل المعدن ثم ابن البیطار۔

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

Arabic	Urdu
In 'al-Jami', the formation of arsenic (Zarnikh) is like the formation of sulfur (Kibrit). However, in arsenic, the cold, heavy, and moist vapors are more predominant, while in sulfur, the smoky vapors are more predominant. Therefore, arsenic does not burn like sulfur burns, and it remains heavier and more enduring on fire.[1]	"Arsenic is also formed in the same way as sulfur. The difference is that in arsenic, cold, heavy, and moist vapors are more prevalent, and in sulfur, smoky vapor is more prevalent. That is why arsenic does not burn in the same way that sulfur burns, and on fire, it proves to be heavier and remains longer than sulfur." (T)

Although its being from the category of earth and being suitable for Tayammum is evident through such a high level of consensus (Tawatur) that there is absolutely no room for doubt, as will be discussed later. (T) On *Tirmidhi*, the refutations are: Firstly, it is clearly stated in *Khizanat al-Fatawa*, *Hilyah*, *Jami' al-Rumuz*, and *Durr al-Mukhtar* that Tayammum with stone ash is permissible.

Arabic/Urdu Snippet	Urdu
Nazm al-Durar: It is not permissible with ashes, [except] stone [ashes], for it is permissible.[2]	The text of *Durr al-Mukhtar* is: "Tayammum is not permissible with a substance that turns into ash, but stone ash is an exception; it is permissible with it." (T)

It is now known that stone can also become ash, so how did it remain of the category of earth and how did Tayammum with it become permissible? Secondly: In Turkistan, there is a stone that burns in place of wood; Tayammum with its ash is permissible. It is stated in *Hilyah*:

Arabic	Urdu
In 'Khizanat al-Fatawa', it is said: The weak slave says if the ash is from wood, it is not permissible, and if it is from stone, it is permissible because it is from the earth. And I have seen in some cities of Turkistan that their firewood was stone.[3]	In *Khizanat al-Fatawa*, it is written: "The weak slave says if the ash is from wood, Tayammum is not permissible, and if it is from stone, it is permissible because it is from the category of earth, and I have seen in some cities of Turkistan that their fuel is stone." (T)

[1] Jami' Ibn Baitar [2] Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt 1/176 [3] Hilyah

Page 595 of 756 I.T. Majlis of Dawat-e-Islami

फ़तावा रज़विया, खंड 3

अरबी	उर्दू
'अल-जामि' में है कि हरताल (Zarnikh) का बनना गंधक (Kibrit) के बनने की तरह है। फ़र्क यह है कि हरताल में ठंडी, भारी और नम भाप अधिक होती है, जबकि गंधक में धुआँरहित भाप अधिक होती है। इसलिए हरताल उस तरह नहीं जलती जैसे गंधक जलती है, और आग पर वह गंधक से अधिक भारी और अधिक टिकाऊ साबित होती है।[1]	"हरताल (ज़रनीख़) भी उसी तरह बनती है जैसे गंधक (कबरीत)। फ़र्क यह है कि हरताल में ठंडी भारी, नम भाप अधिक होती है और गंधक में धुएँ वाली भाप अधिक होती है, इसी लिए हरताल उस तरह नहीं जलती जैसे गंधक जलती है और आग पर गंधक से ज़्यादा भारी साबित होती है और देर तक ठहरती है।" (त)

हालाँकि इसका ज़मीन की श्रेणी (जिन्स-ए-अर्ज़) से होना और तयम्मुम के लिए उपयुक्त होना इतनी उच्च श्रेणी की निरंतरता (तवातुर) से स्पष्ट है कि इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है जैसा कि आगे आएगा। (त) तिर्मिज़ी पर टिप्पणियाँ: पहली बात यह कि 'ख़ज़ाना-तुल-फ़तावा', 'हिलिया', 'जामे-उर-रुमूज़' और 'दुर्रे मुख्तार' में स्पष्ट किया गया है कि पत्थर की राख से तयम्मुम जायज़ है।

अरबी/उर्दू अंश	उर्दू
नज़्म-उद-दुरर: राख से (तयम्मुम) जायज़ नहीं है, मगर पत्थर की राख अपवाद है, अतः जायज़ है।[2]	दुर्रे मुख्तार की इबारत यह है: "राख बनने वाली चीज़ से तयम्मुम जायज़ नहीं है लेकिन पत्थर की राख अपवाद है, उससे जायज़ है।" (त)

मालूम हुआ कि पत्थर भी राख हो सकता है, तो वह ज़मीन की श्रेणी से कब बाहर हुआ और उससे तयम्मुम कैसे जायज़ हुआ। दूसरा: तुर्किस्तान में एक पत्थर होता है जो लकड़ी की जगह जलता है, उसकी राख से तयम्मुम जायज़ है। 'हिलिया' में है:

अरबी	उर्दू
'ख़ज़ाना-तुल-फ़तावा' में है: कमज़ोर बंदा कहता है कि यदि राख लकड़ी की हो तो जायज़ नहीं है और यदि पत्थर की हो तो जायज़ है क्योंकि वह ज़मीन से है। और मैंने	ख़ज़ाना-तुल-फ़तावा में है: "बंदा ज़ईफ़ कहता है कि राख अगर लकड़ी की हो तो तयम्मुम जायज़ नहीं और अगर पत्थर की हो तो जायज़ है क्योंकि वह जिन्स-ए-ज़मीन से है और मैंने तुर्किस्तान के कुछ

अरबी	उर्दू
तुर्किस्तान के कुछ शहरों में देखा कि उनका ईंधन पत्थर था।[3]	शहरों में देखा कि उनके यहाँ पत्थर ही का ईंधन होता है।" (त)

[1] जामे इब्न बैतार [2] अद-दुर्र अल-मुख़्तार म'अ अल-शामी, बाब अत-तयम्मुम, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र 1/176 [3] हिलिया

पृष्ठ 595/756 आई.टी. मज्लिस दावत-ए-इस्लामी

عربی	اردو
في الجامع تكوين الزرنيخ كتكوين الكبريت غير ان البخار البارد الثقيل الرطب فيه اكثر والبخار الدخاني فی الكبريت اكثر ولذلك صار لا يحترق كاحتراق الكبريت وصار اثقل واصبر على النار منه [1]۔	"زرنیخ بھی اسی طرح بنتی ہے جیسے کبریت۔ فرق یہ ہے کہ زرنیخ میں، سرد ثقیل، تر بخارات زیادہ ہوتے ہیں اور کبریت میں دخانی بخار زیادہ ہوتا ہے اسی لئے زرنیخ اس طرح نہیں جلتی جیسے کبریت جلتی ہے اور آگ پر کبریت سے زیادہ ثقیل ثابت ہوتی اور دیر تک ٹھہرتی ہے۔" (ت)

حالانکہ اس کا جنس ارض و صالح تیمّم ہونا تو اس اعلیٰ تواتر سے روشن جس میں اصلا محل ارتیاب نہیں کما سیاتی (جیسا کہ آگے آرہا ہے۔ت) ترمذی پر نقوص اقول اوّلاً خزانہ الفتاویٰ و حلیہ و جامع الرموز و در مختار میں تصریح ہے کہ پتھر کی راکھ سے تیمم جائز ہے۔

عربی/اردو اقتباس	اردو
ونظم الدر لايجوز بتمرد الارماد الحجر فيجوز [2]۔	در مختار کی عبارت یہ ہے : "راکھ بننے والی چیز سے تیمم جائز نہیں مگر پتھر کی راکھ مستثنیٰ ہے اس سے جائز ہے۔" (ت)

معلوم ہوا کہ پتھر بھی راکھ ہو سکتا ہے تو جنس ارض کب رہا اور اس سے تیمم کیونکر روا ہوا۔

ثانیاً: ترکستان میں ایک پتھر ہوتا ہے کہ لکڑی کی جگہ جلتا ہے اس کی راکھ سے تیمم روا ہے۔

حلیہ میں ہے :

عربی	اردو
في خزانة الفتاوی قال العبد الضعیف ان کان الرماد من الحطب لا یجوز و اکان من الحجر یجوز لانه من الارض وقد رایت فی بعض بلاد ترکستان کان حطبہم الحجر [3]۔	خزانۃ الفتاویٰ میں ہے : "بندہ ضعیف کہتا ہے راکھ اگر لکڑی کی ہو تو تیمم جائز نہیں اور اگر پتھر کی ہو تو جائز ہے کیونکہ وہ جنس زمین سے ہے اور میں نے ترکستان کے بعض شہروں میں دیکھا کہ ان کے یہاں پتھر ہی کا ایندھن ہوتا ہے۔" (ت)

1 جامع ابن بیطار 2 الدر المختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/۱۷۶ 3 حلیہ

Fatawa Rizvia, Volume 3

Similarly, it is mentioned in 'Khazana' as quoted in 'Quhistani', and from 'Quhistan' in 'Tahtawi ala Maraqi al-Falah'. Thirdly and Fourthly: Allama Barjandi raised two objections regarding lime (Nura) and litharge (Murdar-sang), stating that they turn into ash when burnt, even though they belong to the genus of earth. In 'Sharh al-Nuqaya', after quoting the text of 'Madatuz Zad al-Fuqaha', it says:

[Arabic Quote]: "This indicates that Tayammum with lime and litharge is not permissible because they burn in fire and become ash. Qazi Khan has explicitly stated that Tayammum with them is permissible, unless it is said that in common usage (Urf), their burnt forms are not called ash."[1]

[Urdu Explanation]: From this, it is understood that Tayammum with lime and litharge is impermissible because both turn into ash when burnt with fire, although Qazi Khan has explicitly stated that Tayammum with both of these is permissible. However, it can be said that in common usage, burnt lime and litharge are not remembered by the name of ash. (T)

Refutations on softening (Leen): I say: First, limestone and all stones that are calcined certainly decrease in hardness from their original state. They are calcined only so that a hard mass that cannot be ground becomes grindable. Secondly: Sulphur (Kibreet) and Thirdly: Arsenic (Zarnikh) definitely soften on fire, although it is written in books without disagreement that Tayammum with them is permissible, as will follow. (T) Refutations on melting (Zubaan): I say: These same sulphur and arsenic are refutations for this as well; their softening reaches the point of flowing as witnessed by observation... Allama Taftazani, in 'Maqasid' and 'Sharh al-Maqasid', divided minerals into five types. Second: Meltable and combustible, and said: "That is like sulphur and arsenic"[2]. (That is like sulphur and arsenic. T) Refutations on burning (Ahtiraq): I say: First and secondly, these same sulfur and arsenic burn in such a way that they give a flame. Thirdly: Pitch, in that its stone is formed only by burning. Fourthly: In Oman and Badakhshan, there is a stone called 'Hajar al-Fateela' (Asbestos); by pounding it, it becomes soft like cotton. By making a wick out of it and lighting it in a lamp, if oil is continuously added, one wick suffices for two or three months. It is mentioned in 'al-Makhzan' and mentioned in 'Taj al-Arus' in its supplement after 'Badhshun'.

[1] Sharh al-Nuqaya by al-Barjandi, Section on Tayammum, published by Nawal Kishore Lucknow, 1/74. [2] Sharh al-Maqasid, First Discussion on Minerals, Dar al-Ma'arif al-Numaniyya Lahore, 1/474.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

इसी तरह 'ख़ज़ाना' से 'क़ुहिस्तानी' में और 'क़ुहिस्तान' से 'तहतावी अला मराक़ी अल-फ़लाह' में उल्लेख है। तीसरा और चौथा: अल्लामा बरजंदी ने चूने (नूरा) और मुर्दार-संग के बारे में दो आपत्तियाँ उठाई हैं कि ये जलकर राख हो जाते हैं, जबकि ये मिट्टी की श्रेणी (जिंस-ए-अर्श) से हैं। 'शरह नुक़ाया' में 'मादतुल ज़ाद अल-फ़ुक़हा' की इबारत नक़ल करने के बाद है:

[अरबी उद्धरण]: "यह दर्शाता है कि चूने और मुर्दार-संग से तयम्मुम करना जायज़ नहीं है क्योंकि वे आग में जलकर राख हो जाते हैं। क़ाज़ी ख़ान ने स्पष्ट रूप से कहा है कि उनके साथ तयम्मुम जायज़ है, जब तक कि यह न कहा जाए कि आम बोलचाल (उर्फ़) में उनके जले हुए रूपों को राख नहीं कहा जाता है।"[1]

[उर्दू व्याख्या]: इससे पता चलता है कि चूने और मुर्दार-संग से तयम्मुम करना नाजायज़ है क्योंकि ये दोनों आग से जलकर राख हो जाते हैं, हालाँकि क़ाज़ी ख़ान ने स्पष्ट रूप से फ़रमाया है कि इन दोनों से तयम्मुम जायज़ है। मगर यह कहा जा सकता है कि उर्फ़(प्रचलन) में जले हुए चूने और मुर्दार-संग को राख के नाम से याद नहीं किया जाता। (त)

नरम होने (लीन) पर आपत्तियाँ: मैं कहता हूँ: पहला, चूना पत्थर और जितने पत्थर कल्स (calcine) किए जाते हैं, वे निश्चित रूप से अपनी मूल स्थिति की कठोरता में कम हो जाते हैं। वे कल्स किए ही इसलिए जाते हैं ताकि जो सख्त हिस्सा पिस नहीं सकता, वह पिसने के क़ाबिल हो जाए। दूसरा: गंधक (किबरीत) और तीसरा: हरताल (ज़रनीख़) आग पर निश्चित रूप से नरम होते हैं, हालाँकि किताबों में बिना किसी मतभेद के लिखा है कि इनसे तयम्मुम जायज़ है, जैसा कि आगे आ रहा है। (त) पिघलने (ज़ोबान) पर आपत्तियाँ: मैं कहता हूँ: यही गंधक और हरताल इस पर भी आपत्ति हैं; उनकी नरमी बहने (तरलता) तक पहुँच जाती है जैसा कि प्रत्यक्ष देखा गया है... अल्लामा तफ़्ताज़ानी ने 'मक़ासिद' और 'शरह मक़ासिद' में खनिजों की पाँच क़िस्में की हैं। दूसरी: पिघलने वाली और ज्वलनशील, और फ़रमाया: "वह गंधक और हरताल की तरह है"[2]। (वह गंधक और हरताल की तरह है। त) जलने (एहतराक़) पर आपत्तियाँ: मैं कहता हूँ: पहला और दूसरा, यही गंधक और हरताल इस तरह जलती हैं कि लौ (शोला) देती हैं। तीसरा: पिच कि उसका पत्थर जलाने ही से बनता है। चौथा: ओमान और बदख्शां में एक पत्थर 'हज्रुल फ़तीला' (एस्बेस्टस) है; इसे कूटने से यह रुई की तरह नरम हो जाता है।

इसकी बत्ती बनाकर चिराग़ में जलाते हैं, तेल डालते रहें तो एक बत्ती दो-तीन महीने तक चलती रहती है। इसका उल्लेख 'अल-मख़ज़न' में है और 'ताजुल अरूस' के परिशिष्ट में 'बाधशुन' के बाद है।

[1] शरह अल-नुक़ाया लि-बरजंदी, फ़स्ल फ़ी अल-तयम्मुम, मतबुआ नवल किशोर लखनऊ, 1/74 [2] शरह अल-मक़ासिद, अल-मबहसुल अव्वल अल-मादिनी, दारुल मआरिफ़ अल-नुमानिया लाहौर, 1/474

اسی طرح خزانہ سے قہستانی اور قہستان سے طحطاوی علی مراقی الفلاح میں ہے۔ ثالثاً ورابعاً: علامہ بر جندی نے نورہ و مردار سنگ سے دو نقض اور وارد کیے کہ یہ جل کر راکھ ہو جاتے ہیں حالانکہ جنس ارض سے ہیں۔ شرح نقایہ میں بعد نقل عبارت مادہ زاد الفقہا ہے:

هذا يدل على ان التيمم بالنورة و المرداسنج لايجوز فانهما يحترق بالنار ويصيران رماداً وقد صرح قاضى خان انه يجوز التيمم بهما الا ان يقال ان محترقهما لا يسمى رمادا في العرف [1]۔

اس سے پتا چلتا ہے کہ نورہ اور مرداسنگ سے تیمم ناجائز ہے کیونکہ یہ دونوں آگ سے جل کر راکھ ہو جاتے ہیں حالانکہ قاضی خاں نے تصریح فرمائی ہے کہ ان دونوں سے تیمم جائز ہے مگر یہ کہا جاسکتا ہے کہ عرف میں جلے ہوئے نورہ و مردار سنگ کو راکھ کے نام سے یاد نہیں کیا جاتا۔ (ت)

لین پر نقوض اقول اولاً چونے کا پتھر اور جتنے احجار کلس کیے جاتے ہیں یقیناً اپنی حالت اصلی سے صلابت میں کم ہو جاتے ہیں کلس کرتے ہی اس لئے ہیں کہ جو سخت جرم پس نہیں سکتا پسنے کے قابل ہو جائے۔ ثانیاً: کبریت (اور) ثالثاً زرنیخ ضرور آگ پر نرم ہوتی ہیں حالانکہ کتب میں بلا خلاف ان سے تیمم جائز لکھا ہے کما سیاتی (جیسا کہ آگے آرہا ہے۔ ت) ذوبان پر نقوض اقول: یہی کبریت اور زرنیخ دونوں اس پر بھی نقض ہیں ان کی نرمی بہ جانے پر منتہی ہوتی ہے جیسا کہ مشاہدہ شاہد۔۔۔ علا تفتازانی نے مقاصد و شرح مقاصد میں معدنیات کی پانچ قسمیں کیں۔ دوم ذائب مشتعل، اور فرمایا: ذلك لكبريت والزرنيخ [2]۔ (وہ کبریت اور زرنیخ کی طرح ہے۔ت) احتراق پر نقوض اقول اولاً وثانیاً یہی گندھک ، ہڑتال ایسی جلتی ہیں کہ شعلہ دیتی ہیں۔ ثالثاً: پچ کہ اس کا

پتھر جلانے ہی سے بنتی ہے۔ رابعاً: عمان و بدخشان میں ایک پتھر حجر الفتیلہ ہے کوٹنے سے روئی کی طرح نرم ہو جاتا ہے اس کی بتی بنا کر چراغ میں روشن کرتے ہیں تیل ڈالتے رہیں تو ایک بتی دو تین مہینے تک کفایت کرتی ہے ذکرہ فی المخزن و ذکرہ فی تاج العروس فی مستدر کہ بعد باذشن

1 شرح النقایہ للبر جندی، فصل فی التیمم، مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۷۴ 2 شرح المقاصد، المبحث الاول المعدنی، دار المعارف النعمانیہ لاہور، ۱/ ۴۷۴

Fatawa-e-Razvia, Volume 3

Its mine is in Badakhshan [1] - (It is mentioned in Makhzan and under the entry 'Baadsh' in Taj-ul-Uroos, it is stated as an addition that the mine of this stone is in Badakhshan. - Translator)

Fifthly: In Syria, there is a stone called 'Hajar-ul-Buheira'; putting it in fire makes it burn [2] - Mentioned in Makhzan and At-Tuhfa. (Translator)

Sixthly: 'Sang-e-Khirami' is a stone in the island of Sicily that ignites with fire and flames up more if water is sprinkled on it, but is extinguished by oil [3] - Both (Makhzan and Tuhfa) have mentioned this as well. (Translator)

Seventhly: Railway coal, which is a stone but burns like wood.

Eighthly: The issue of burnt earth is mentioned in reliable books such as Mukhtarat-ul-Nawazil, Qazikhan, Fath, Huliya, Bahr, Ghiyathiya, Jawahir-ul-Akhlati, Maraqi al-Falah, Durr-e-Mukhtar, Hindiyyah, etc., that Tayammum (dry ablution) is permissible with it, as will be mentioned later, Insha Allah (if God wills). (Translator)

Note: Regarding the invalidation through sulfur (Kibreet), Allama Sayyid Abu Al-Saud Al-Azhari took notice and stated in the explanation of Mulla Miskeen's text:

[Table Header/Content] Arabic Text: It is apparent that this is a general rule, not a universal one. Thus, no objection remains that there are things from the genus of earth which burn, like sulfur (Kibreet) [4] etc. Urdu Translation: It appears that the rule is for the majority, not universal. Therefore, there will be no objection that there are such things from the genus of earth which are burnt, like sulfur etc. (Translator)

Arabic Text: I say: (1) Rather, the objection to the apparent text remains valid, and the mentioned excuse is not useful because they are in the process of providing a comprehensive and exclusive definition of what is permissible for Tayammum and what is not. So, if something differs or fails to meet this rule... Urdu Translation: I say: An objection and doubt will surely arise regarding the apparent text, and the mentioned excuse will not be useful. This is because those gentlemen want to provide a comprehensive and exclusive definition of what is permissible for Tayammum and what is not. So, when something differs or fails to meet this rule...

[Footnotes] 1. Taj-ul-Uroos, Chapter: Al-Ba from Baab-ush-Sheen, Ihya-ut-Turath Al-Arabi, Beirut, 2/281. 2. Makhzan-ul-Adwiya, Chapter: Al-Ha with Al-Leem, printed by Naval Kishore, Kanpur, p. 231. 3. Makhzan-ul-Adwiya, Chapter: Al-Ha with Al-Leem,

printed by Naval Kishore, Kanpur, p. 231. 4. Fath-ul-Mu'in, Discussion on the genus of earth, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/91.

Page 597 of 756 I.T. Majlis of Dawatelslami

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 3

इसका खनन क्षेत्र बदख्शां [1] में है - (इसे मख़ज़न में उल्लेख किया गया है और ताज-उल-उरूस के अंदर 'बादश' के बाद अपनी वृद्धि के तहत बताया गया है कि इस पत्थर का खनन क्षेत्र बदख्शां में है। - अनुवादक)

पांचवां: सीरिया में एक पत्थर 'हजर-उल-बुहैरा' है, जिसे आग में डालने पर वह चिपक जाता है [2] - मख़ज़न और अत-तुहफ़ा में इसका उल्लेख है। (अनुवादक)

छठा: 'संग-ए-ख़िरामी' सिसिली द्वीप में एक पत्थर है जो आग से भड़कता है और पानी छिड़कने से और अधिक प्रज्वलित होता है, जबकि तेल से बुझ जाता है [3] - दोनों (मख़ज़न और तुहफ़ा) ने भी यही बताया है। (अनुवादक)

सातवां: रेल का कोयला जो पत्थर है पर लकड़ी की तरह जलता है।

आठवां: जली हुई मिट्टी का मसला स्वयं विश्वसनीय पुस्तकों जैसे मुख़्तारातुल नवाज़िल, क़ाज़ीख़ान, फ़तह, हुलिया, बहर, ग़ियासिया, जवाहिरुल अख़्लाती, मराक़िल फ़लाह, दुर्रे मुख़्तार, हिन्दिया आदि में उल्लेखित है कि इससे तयम्मुम जायज़ है, जैसा कि आगे इंशाअल्लाह तआला (यदि ईश्वर ने चाहा) बताया जाएगा। (अनुवादक)

चेतावनी: गंधक (किब्रीत) से खंडन पर अल्लामा सैय्यद अबू अल-सऊद अज़हरी ने ध्यान दिया और मुल्ला मिस्कीन की व्याख्या में फरमाया:

[सारणी सामग्री] अरबी पाठ: यह स्पष्ट है कि यह नियम बहुसंख्यक है, सार्वभौमिक नहीं। इसलिए यह आपत्ति नहीं होगी कि पृथ्वी की श्रेणी से ऐसी चीजें भी हैं जो जल जाती हैं जैसे गंधक (किब्रीत) [4] आदि। उर्दू अनुवाद: ज़ाहिर यह है कि हुक्म अकसरी (बहुमत वाला) है कुल्ली (पूर्ण) नहीं। इसलिए यह इश्काल (दुविधा) नहीं होगा कि जिन्से ज़मीन से ऐसी चीजें भी हैं जो जली जाती हैं जैसे किब्रीत (गंधक) आदि। (अनुवादक)

अरबी पाठ: मैं कहता हूँ: (1) बल्कि स्पष्ट इबारत पर आपत्ति और शंका तो अवश्य होगी और उल्लेखित बहाना काम नहीं आएगा क्योंकि वे उन चीज़ों की एक व्यापक और अनन्य परिभाषा देना चाहते हैं जिनसे तयम्मुम जायज़ है और जिनसे नहीं। तो जब कोई चीज़ इस नियम से भिन्न या विमुख होती है... उर्दू अनुवाद: अक़ूल (मैं कहता हूँ): ज़ाहिर इबारत पर एतराज़ व इश्काल तो ज़रूर वारिद

होगा और उज़्र-ए-मज़कूर कारआमद न होगा इसलिए कि जिस चीज़ से तयम्मुम जायज़ है और जिससे नाजायज़ है उसकी वो हज़रात एक जामे व माने (व्यापक और विशिष्ट) तारीफ करना चाहते हैं तो जब कोई चीज़ इस ज़ाबिते (नियम) से मुख़्तलिफ़ या...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. ताज-उल-उरूस, अध्याय: अल-बा, बाब-उश-शीन, इह्या-उत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/281. 2. मख़ज़न-उल-अद्विया, अध्याय: अल-हा साथ अल-लीम, नवल किशोर, कानपुर, पृष्ठ 231. 3. मख़ज़न-उल-अद्विया, अध्याय: अल-हा साथ अल-लीम, नवल किशोर, कानपुर, पृष्ठ 231. 4. फ़तह-उल-मुईन, पृथ्वी की श्रेणी पर चर्चा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/91.

معدنہ بدخشاں 1 - (اسے مخزن میں ذکر کیا ہے اور تاج العروس کے اندر "بادش" کے بعد اپنے اضافہ کے تحت بتایا ہے کہ اس پتھر کا معدن بدخشاں میں ہے۔ت)

خامسا: شام میں ایک پتھر حجر البُحیرہ ہے آگ میں ڈالنے سے لپٹ جاتا ہے 2- ذکرہ فی المخزن والتحفۃ (اسے مخزن اور تحفہ میں ذکر کیا۔ت) سادسا: سنگِ خرامی جزیرہ صِقِلّیہ میں ایک پتھر ہے کہ آگ سے بھڑکتا اور پانی کا چھینٹا دینے سے اور زیادہ مشتعل ہوتا ہے اور تیل سے بجھتا ہے 3 قالافیہما (مخزن و تحفہ میں ہی اسے بھی بتایا ہے۔ت) سابعا: ریل کا کوئلہ کہ پتھر ہے اور لکڑی سا جلتا ہے۔ثامنا: جلی ہوئی زمین کا مسئلہ خود کتبِ معتمدہ مثلِ مختارات النوازل و قاضیخان و فتح و حلیہ و بحر و غیاثیہ و جواہر الاخلاطی و مراقی الفلاح و درِ مختار و ہندیہ و غیر ہا میں مذکور کہ اس سے تیمم روا ہے کما سیأتی ان شاء اللہ تعالٰی (جیسا کہ اس کا بیان آگے آئے گا ان شاء اللہ تعالٰی۔ت)

تنبیہ: کبریت سے نقض پر علامہ سید ابو السعود ازہری کو تنبہ ہوا اور عبارت مارہ ملا مسکین کی شرح میں فرمایا:

[ٹیبل کا متن] الظاہر ان ھذا اغلبی لا کلی فلا یشکل بان البعض یحترق لا کبریت 4 اہ | ظاہر یہ ہے کہ حکم اکثری ہے کلی نہیں۔ اس لیے یہ اشکال نہ ہوگا کہ جنس زمین سے ایسی چیزیں بھی ہیں جو جلی جاتی ہیں جیسے کبریت اہ (ت) اقول: (۱) بل الایراد لامر د لہ عن ظاہر العبارۃ والعذر لا یجدی لانھم بصدد اعطاء معرف لما یجوز بہ التیمم و مالا فاذا کان شیئا یختلف ویتخلف | اقول: ظاہر عبارت پر اعتراض و اشکال تو ضرور وارد ہوگا اور عذرِ مذکور کارآمد نہ ہوگا اس لیے کہ جس

چیز سے تیمم جائز ہے اور جس سے ناجائز ہے اس کی وہ حضرات ایک جامع ومانع تعریف کرنا چاہتے ہیں تو جب کوئی چیز اس ضابطہ سے مختلف یا

[حواشی] 1 تاج العروس فصل الباء من باب الشین احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۲۸۱ 2 مخزن الادویہ فصل الحاء مع اللحیم مطبوعہ نولکشور کانپور ص ۲۳۱ 3 مخزن الادویہ فصل الحاء مع اللحیم مطبوعہ نولکشور کانپور ص ۲۳۱ 4 فتح المعین بحث جنس الارض ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۹۱

Fatawa Rizvia, Volume Three

[Left box: Confusion and error became necessary.] [Right box: If it is different and distinct from this, then instead of a definition, confusion and error will become necessary. (T)]

Arguments of Refutation (Nuqoosh-e-Man'): I say: In the previous refutations, the text of *Ghurar wa Durar* was also included, which meant that anything that has instability or softness cannot be used for Tayammum. However, it is explicitly mentioned in standard reliable works that Tayammum is permissible with orpiment (arsenic), sulfur, gypsum, stone ash, lime, litharge (lead monoxide), burnt earth, and stone in general, as will come later, Insha Allah, like stone and orpiment (which are from the genus of earth. -T). But the refutations of prohibition do not apply here because neither the explicit wording nor the implication forms a universal rule from the other side.

Now listen to the refutations: I say: There are many and abundant refutations to the prohibition; some are mentioned here: (1) Sanjhar (a mineral), (2) Mercury - these apply to all views that they neither burn with fire, nor melt, nor dissolve, nor soften, nor become ash. (3) Dew, (4) Frost, (5) Saffron flower, (6) Resin, (7) Camphor, (8) Vitriol - according to the first three views, as they do not become ash nor are they cooked by fire. (9) Mud in which water predominates, (10) Water, (11) Sweat, (12) Perfume, (13) Whey, (14) Milk, (15) Liquid ghee, (16) Oil, (17) Gas and other things that do not soften with fire nor become ash - nor are they among the seven previous views. (18) Solidified ghee, (19) Sugar syrup - according to the sixth view, as they do not become ash nor do they possess both melting and impressionability as previously mentioned in the description of ratios. (T) (20) Allama Birjandi himself refuted based on the seventh text regarding ash. He wrote in *Sharh Nuqayah*, quoting from *Zad al-Fuqaha*: "This indicates that Tayammum with ash itself is permissible, while it is mentioned in *Al-Khulasah* that there is a consensus among scholars that it is not permissible. However, it is written in *An-Nisab* that Abul Qasim says it is permissible, and Abu Nasr says it is not, and we adopt this view." [Urdu explanation]: This shows that Tayammum with ash itself is permissible, even though *Al-Khulasah* states there is consensus among scholars that Tayammum with ash is impermissible. But in *An-Nisab*, it is written that Abul Qasim says: it is permissible. And Abu Nasr says it is impermissible, and we follow the latter. (T)

I say: Rather, it is a refutation of all those views, because ash neither softens with fire, nor burns, nor becomes ash again.

---

1. *Durar al-Hukkam Sharh Ghurar al-Ahkam*, Chapter of Tayammum, Kamilia Press Beirut, 1/31.
2. *Sharh al-Nuqayah* by Birjandi, Section on Tayammum, Nawal Kishore Press Lucknow, 1/47.

फ़तावा रज़विया, खंड तीन

[बायां बॉक्स: भ्रम और त्रुटि अपरिहार्य हो गई।] [दायां बॉक्स: यदि यह इससे भिन्न और अलग है, तो परिभाषा के बजाय भ्रम और त्रुटि आवश्यक होगी। (त)]

निषेध का खंडन (नक़ूश-ए-मनअ): मैं कहता हूँ: पिछले खंडनों में 'ग़ुरर व दुरर' का पाठ भी शामिल था, जिसका अर्थ यह था कि जिसमें अस्थिरता या कोमलता हो, उससे तयम्मुम जायज़ नहीं है। हालाँकि, मानक विश्वसनीय कृत्यों में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि हरताल (زرنیخ), गंधक, जिप्सम, पत्थर की राख, चूना, मुर्दारसंग (खनिज), जली हुई मिट्टी और सामान्य रूप से पत्थर के साथ तयम्मुम जायज़ है, जैसा कि इंशा अल्लाह आगे आएगा, जैसे पत्थर और हरताल (जो ज़मीन की श्रेणी से हैं। -त)। लेकिन निषेध के खंडन यहाँ लागू नहीं होते क्योंकि दूसरी तरफ से न तो शब्द और न ही निहितार्थ एक सार्वभौमिक नियम बनाते हैं।

अब खंडन सुनें: मैं कहता हूँ: निषेध पर कई और प्रचुर खंडन हैं; यहाँ कुछ का उल्लेख है: (१) साझर, (२) पारा - ये सभी कथनों पर लागू होते हैं कि न वे आग से जलते हैं, न पिघलते हैं, न घुलते हैं, न नरम होते हैं और न ही राख होते हैं। (३) ओस, (४) पाला, (५) केसर का फूल, (६) राल, (७) कपूर, (८) तूतिया (ज़ाज) - पहले तीन कथनों के अनुसार, क्योंकि वे न तो राख बनते हैं और न ही आग से पकते हैं। (९) कीचड़ जिसमें पानी की प्रधानता हो, (१०) पानी, (११) पसीना, (१२) इत्र, (१३) मट्ठा, (१४) दूध, (१५) पिघला हुआ घी, (१६) तेल, (१७) गैस और अन्य चीजें जो न तो आग से नरम होती हैं और न ही राख बनती हैं - और न ही वे पिछली सात स्थितियों में से हैं। (१८) जमा हुआ घी, (१९) चीनी की चाशनी - छठे कथन के अनुसार, क्योंकि वे न तो राख बनते हैं और न ही उनमें पिघलने और ढलने दोनों का संयोग होता है जैसा कि पहले अनुपात के विवरण में बताया गया है। (त) (२०) अल्लामा बिरजंदी ने खुद राख के संबंध में सातवें पाठ पर खंडन किया। उन्होंने 'शरह नक़ाया' में 'ज़ाद अल-फ़ुक़हा' का पाठ उद्धृत करते हुए लिखा: "यह दर्शाता है कि स्वयं राख से तयम्मुम जायज़ है, जबकि 'अल-खुलासा' में उल्लेख है कि विद्वानों के बीच आम सहमति है कि यह जायज़ नहीं है। हालाँकि, 'अन-नसाब' में लिखा है कि अबुल क़ासिम कहते हैं कि यह जायज़ है, और अबू नस्र कहते हैं कि यह नहीं है, और हम इसी को अपनाते हैं।" [उर्दू स्पष्टीकरण]: इससे पता चलता है कि स्वयं राख से तयम्मुम जायज़ है, भले ही 'खुलासा' में है कि इस पर विद्वानों का इज्मा (आम सहमति) है कि राख से तयम्मुम नाजायज़ है। लेकिन 'नसाब' में लिखा है कि अबुल क़ासिम कहते हैं: जायज़ है। और अबू नस्र कहते हैं नाजायज़ है और हम इसी को लेते हैं। (त)

मैं कहता हूँ: बल्कि, यह उन सभी कथनों का खंडन है, क्योंकि राख न तो आग से नरम होती है, न जलती है और न ही दोबारा राख बनती है।

---

1. दुरर अल-हुक्काम शरह ग़ुरर अल-अहकाम, अध्याय तयम्मुम, मतबअ कामिलिया बेरुत, १/३१।
2. शरह अल-नक़ाया लिल-बिरजंदी, तयम्मुम पर खंड, मतबअ नवल किशोर लखनऊ, १/४७।

पृष्ठ ७५६ का ५९८

[بایاں باکس: لزم التخلیط والتغلیط] [دایاں باکس: اس سے جدا و مختلف ہوگی تو بجائے تعریف کے تخلیط و تغلیط لازم آئے گی۔ (ت)]

نقوض منع۔ اقول: اگلے نقوض میں عبارت غرر و درر بھی شریک تھی کہ اس کا بھی اتنا حاصل تھا کہ جس میں تردد یا لین ہو اس سے تیمم جائز نہیں، بلکہ اگرچہ جنس ارض سے ہو حالانکہ زرنیخ و کبریت و جص و رماد حجر و نورہ و مردار سنگ معدنی و ارض محترقہ و مطلق حجر سے جواز تیمم عامہ معتمدات میں مصرح ہے کما سیأتی ان شاء اللہ تعالٰی کالحجر والزرنیخ (جنس زمین سے جیسے پتھر اور زرنیخ۔ت) مگر نقوض منع اس پر وارد نہیں کہ دوسری جانب سے کلیہ نہ اس کا منطوق ہے نہ مفہوم۔

اب نقوض سنیے فاقول: منع پر نقض کثیر و وافر ہیں یہاں بعض ذکر ہیں: (۱) سانجھر (۲) پارا یہ سب اقوال پر وارد ہیں کہ نہ آگ سے جلیں نہ گلیں نہ پگھلیں نہ نرم پڑیں نہ راکھ ہوں (۳) اول (۴) پالا (۵) گُل کارف (۶) رال (۷) کافور (۸) زاج تین قول اول پر کہ نہ راکھ ہوں نہ آگ سے منطبج (۹) کیچڑ جس میں پانی غالب ہو (۱۰) پانی (۱۱) عرق (۱۲) عطر (۱۳) ماء الجبن (۱۴) دودھ (۱۵) بہتا گھی (۱۶) تیل (۱۷) گاز و غیرہا اشیا کہ نہ آگ سے نرم ہوں نہ راکھ ہوں نہ ان میں سات قول پیشین پر (۱۸) جما ہوا گھی (۱۹) شکر کا قوام۔ قول ششم پر کہ نہ راکھ ہوں نہ ان میں ذوبان و اطباع کا اجتماع کما تقدم فی بیان النسب (جیسا کہ نسبتوں کے بیان میں گزر چکا۔ت) (۲۰) علامہ برجندی نے عبارت ہفتم پر خود راکھ سے نقض کیا شرح نقایہ میں عبارت زاد الفقہاء نقل کر کے لکھا: ھذا یدل علی ان التیمم بنفس الرماد یجوز وقد ذکر في الخلاصة اجمعوا انه لا یجوز لکن ذکر في النصاب قال ابوالقاسم یجوز وابونصر لا وبه نأخذ۔ اس سے پتا چلتا ہے کہ خود راکھ سے تیمم جائز

ہے حالانکہ خلاصہ میں ہے کہ اس پر علماء کا اجماع ہے کہ راکھ سے تیمم ناجائز ہے۔ لیکن نصاب میں لکھا ہے کہ ابوالقاسم کہتے ہیں: جائز ہے۔ اور ابونصر کہتے ہیں ناجائز ہے اور ہم اسی کو لیتے ہیں۔ (ت)

اقول: بلکہ وہ سب اقوال پر نقض ہے کہ راکھ نہ آگ سے نرم پڑے نہ جلے نہ دوبارہ راکھ ہو۔

---

1 درر الحکام شرح غرر الاحکام باب التیمم مطبع کاملیہ بیروت ۱ / ۳۱ 2 شرح النقایۃ للبرجندی فصل فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱ / ۴۷

Fatawa Razawiyya Volume III

In summary, no statement or text is free from multiple objections.

Allah's help is sought to remove this difficulty and ambiguity, and may perfect blessings and peace be upon the master of mankind and jinn, and upon his progeny, companions, sons, and his group at every moment and every instant. Amen. O Allah, accept it. (T)

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

कुल मिलाकर कोई बात या कोई इबारत कई आपत्तियों से खाली नहीं है।

अल्लाह ही से इस मुश्किल और दुविधा को दूर करने के लिए मदद मांगी जाती है, और मुकम्मल दुरूद और सलाम हो इंसानों और जिन्नों के सरदार पर, और उनकी आल (वंशजों), सहाबा, बेटों और उनके गिरोह पर हर पल और हर क्षण। आमीन। ऐ अल्लाह! क़बूल फ़रमा। (त)

بالجملہ کوئی قول کوئی عبارت متعدد نقوض سے خالی نہیں۔

واللہ المستعان لکشف الران والصلوٰۃ والسلام الاتمان علی سید الانس والجان والہ وصحبہ و ابنہ وحزبہ فی کل حین وآن آمین۔ اور اللہ تعالٰی ہی سے اس دشواری والتباس کے ازالہ کے لیے مدد طلبی ہے اور کامل درود و سلام ہو انس و جن کے سردار اور ان کی آل، اصحاب فرزند اور ان کی جماعت پر ہر لمحہ ہر آن۔ الٰہی قبول فرما۔ (ت)

Fatawa Razvia, Volume 3

Second: Moderate, where after the destruction of many moist parts in the mass, the remaining dry parts are called 'ash' (ramaad), whether the body remains solid like charcoal or not, like wood ash. Of this type is scorpion ash, where a male scorpion is placed in an iron, copper, or clay vessel, sealed with dough, and kept overnight in an oven from which the fire has been completely removed after being heated, and the oven opening is closed so that the heat remains. It is emphasized that the oven should not be so hot that the scorpion turns to dust, as mentioned in 'Al-Qarabadeen al-Kabir' and 'Al-Makhzan' etc. (as it is in Qaradin Kabir and Makhzan etc. -T). In the morning, it is taken out, ground, and used for kidney and bladder stones, difficulty in urination, etc., and it is legally (sharia) permissible.

Third: Specially, ash is when a body with much moisture is burnt so much that all moisture is destroyed and the body becomes disintegrated or crumbles when touched, because moisture causes cohesion and holding together of parts, while dryness causes disintegration and dispersion, i.e., becoming fragments and scattered, like kneaded flour vs. dry flour. It is stated in 'Taj al-Uroos':

Arabic	**Urdu Translation**
Ash is the fine particles of charcoal from the heat of fire and what rises as dust from embers (ah). And in Al-Qamus: Charcoal is the extinguished ember (ah).	(Ash) particles of burnt charcoal and what flies off as dust from embers. (ah). And in Al-Qamus: Charcoal is extinguished ember (i.e., coal) (ah).
I say: Making ash as fine particles is correct, but adding it to charcoal is questionable, because crushed charcoal is not called ash. Rather, it is what we mentioned from the dry, disintegrated parts of a body after complete combustion.	(T) I say: In 'Taj al-Uroos', defining 'ash' as particles is correct, but its attribution to charcoal is subject to scrutiny because crushed charcoal is not called ash (ramaad). Ash is exactly what we described, i.e., those parts of a body that become dry and powdery after complete burning. (T)

In common usage, 'ash' is mostly applied to this final state because they usually mean wood ash by it, as previously cited from Ibn al-Baitar on the authority of Galen (as previously mentioned from Ibn Baitar. -T).

1. Makhzan al-Adwiya, Chapter R with M, published by Naval Kishore Kanpur, p. 111.
2. Taj al-Uroos, Chapter R from Section D, Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/35.
3. Al-Qamus al-Muheet, Section M, Chapter F, Mustafa al-Babi Press Egypt, 4/160.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

दूसरा: मध्यम श्रेणी का, जहाँ द्रव्यमान में कई नम हिस्सों के नष्ट होने के बाद बचे हुए सूखे हिस्से 'राख' (रमाद) कहलाते हैं, चाहे शरीर ठोस रहे जैसे कोयला, या नहीं जैसे लकड़ी की राख। इसी श्रेणी में बिच्छू की राख आती है, जहाँ एक नर बिच्छू को लोहे, तांबे या मिट्टी के बर्तन में रखकर, आटे से सील करके रात भर एक तंदूर में रखा जाता है, जिससे आग गर्म करने के बाद पूरी तरह निकाल ली गई हो और तंदूर का मुंह बंद कर दिया जाता है ताकि गर्मी बनी रहे। यह ताकीद की जाती है कि तंदूर इतना गर्म न हो कि बिच्छू धूल बन जाए, जैसा कि 'क़राबदीन अल-कबीर' और 'अल-मखज़न' आदि में उल्लेख है (जैसा कि क़रादीन कबीर और मखज़न वग़ैरह में है। -त)। सुबह इसे निकालकर पीस लिया जाता है और गुर्दे व मूत्राशय की पथरी, पेशाब की रुकावट आदि के लिए उपयोग किया जाता है, और यह शरिया के अनुसार जायज़ है।

तीसरा: विशेष रूप से राख तब होती है जब अत्यधिक नमी वाले शरीर को इतना जलाया जाता है कि सारी नमी खत्म हो जाए और शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँ या छूने पर बिखर जाएँ, क्योंकि नमी हिस्सों के जुड़ाव का कारण होती है, जबकि सूखापन विघटन और बिखराव का कारण बनता है, यानी टुकड़ों में बंटना और बिखरना, जैसे गुंथा हुआ आटा बनाम सूखा आटा। 'ताज अल-उरूस' में लिखा है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
राख आग की तपिश से कोयले के बारीक कण हैं और जो अंगारों से धूल बनकर उड़ते हैं (अह)। और 'अल-क़ामूस' में है: कोयला बुझा हुआ अंगारा है (अह)।	(राख) आग से जली हुई चीज़ के कोयले के रेज़े और अंगारों में से वह जो गुबार होकर रेज़ा-रेज़ा उड़े (अह)। और क़ामूस में है 'अल-फ़हम' - बुझा हुआ अंगारा (यानी कोयला) (अह)।
मैं कहता हूँ: राख को बारीक कणों के रूप में परिभाषित करना सही है, लेकिन कोयले के साथ इसका संबंध विचारणीय है, क्योंकि पीसे हुए कोयले को राख नहीं कहा जाता। बल्कि, यह वह है जिसका हमने उल्लेख किया - शरीर के वे	(त) मैं कहता हूँ: 'ताज अल-उरूस' में 'रमाद' को रेज़े बताना तो सही है लेकिन कोयले की तरफ इसकी निस्बत ज़ेरे-नज़र है क्योंकि पिसे हुए कोयले को राख (रमाद) नहीं कहा जाता। राख वही है जो हमने बताया यानी शरीर के वो अज्ज़ा

अरबी	उर्दू अनुवाद
सूखे, बिखरे हुए हिस्से जो पूर्ण दहन के बाद बचते हैं।	जो मुकम्मल तौर से जलाने के बाद खुश्क और रेज़ा-रेज़ा हो जाएँ। (त)

आम बोलचाल में 'रमाद' (राख) का प्रयोग ज़्यादातर इसी अंतिम स्थिति के लिए किया जाता है क्योंकि आम तौर पर इससे लकड़ी की राख मुराद ली जाती है, जैसा कि इब्न अल-बैतार के हवाले से गैलेन (जालिनोस) से पहले उद्धृत किया जा चुका है (जैसा कि इब्न बैतार से पहले गुज़र चुका। -त)।

1. मखज़न अल-अद्विया, अध्याय र के साथ म, नवल किशोर प्रेस कानपुर, पृ. 111।
2. ताज अल-उरूस, अध्याय र, किताब द से, इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/35।
3. अल-क़ामूस अल-मुहीत, किताब म, अध्याय फ़, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस मिस्र, 4/160।

पृष्ठ 600 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم دوسرا: متوسط کہ اجزائے رطبہ کثیرہ فی الجرم فنا ہونے کے بعد جو اجزائے یابسہ بچیں رماد ہیں عام ازیں کہ جسم بستہ رہے جیسے کوئلہ ، یا نہیں جیسے لکڑی کی راکھ اسی قبیل سے ہے رماد عقرب کہ عقرب نر کو لوہے یا تانبے یا مٹی کے برتن میں رکھ کر سر خمیر سے بند کر کے اس تنور میں شب بھر رکھتے ہیں جسے گرم کر کے آگ اس میں سے بالکل نکال لی ہو اور سر تنور بند کر دیتے ہیں کہ گرمی باقی رہے اور تاکید ہے کہ تنور بہت گرم نہ ہو کہ عقرب خاک نہ ہو جائے کما فی القرابادین الکبیر والمخزن وغیرہما (جیسا کہ قرادین کبیر اور مخزن وغیرہما میں ہے۔ ت) صبح نکال کر پیس کر سنگ گردہ و مثانہ و عسر البول وغیرہا کے لیے استعمال کرتے ہیں اور شرعاً جائز ہے۔ تیسرا: خاص تر خاکستر کہ جسم کثیر الرطوبات اتنا جلایا جائے کہ رطوبات سب فنا ہو جائیں اور جسم ریزہ ریزہ ہو یا ہاتھ لگائے ہو جائے کہ رطوبت باعثِ اتصال و تماسک ہے یعنی اجزا میں باہم گرفت ہونا اور یبوست باعثِ تفتت و تشتت یعنی ریزہ ریزہ و منتشر ہونا جیسے گندھا ہوا آٹا اور خشک۔ تاج العروس میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
الرماد دقاق الفحم من حراقة النار وما هبا من الجمر فطأر دقاقاً اه وفی القاموس الفحم الجمر الطافی اه	(رماد) آگ سے جلی ہوئی چیز کے کوئلے کے ریزے اور انگارے میں سے وہ جو غبار ہو کر ریزہ ریزہ اڑے۔ اھ اور قاموس میں ہے الفحم۔ بجھا ہوا انگار (یعنی کوئلہ) اھ
اقول: اصاب فی جعل الرماد دقاقاً وفی (۲) اضافتها الی الفحم نظر فالفحم المدقوق لا یسمی رماداً وانما	(ت) اقول: تاج العروس میں 'رماد' ریزوں کو بنانا تو درست ہے مگر کوئلہ کی طرف اس کی اضافت محلِ نظر ہے کیونکہ پسے ہوئے کوئلہ کو رماد (راکھ) نہیں کہا جاتا۔ رماد

عربی **اردو ترجمہ**

ہو ما ذکرنا من اجزاء الجسم الیابسۃ وہی ہے جو ہم نے بتایا یعنی جسم کے وہ اجزا جو مکمل طور

المتفتتۃ بعد الاحراق التام۔ سے جلانے کے بعد خشک اور ریزہ ریزہ ہو جائیں۔ (ت)

عرف عامہ میں رماد کا زیادہ اطلاق اسی صورت اخیرہ پر اس وجہ سے ہے کہ وہ غالبا اس سے لکڑی کی راکھ مراد لیتے ہیں کما تقدم عن ابن البیطار عن جالینوس (جیسا کہ ابن بیطار سے پہلے گزر چکا۔ ت)

1 مخزن الادویہ فصل الراء مع المیم مطبوعہ نولکشور کانپور ص ۱۱۱ 2 تاج العروس فصل الراء من باب الدال احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۵ 3 القاموس المحیط باب المیم فصل الفاء مطبع مصطفی البابی مصر ۴/ ۱۶۰

Volume Three Fatawa Razawiyya (Quoted from Galen - T) and it is indeed like that. Here, it refers to the middle meaning, which also includes the third form. (3) Softening (Lin), Melting (Zuban), and Impressionability (Intiba') all refer to the state produced by fire in a malleable (muntariq) body. A malleable body is one that does not break apart under the blow of a hammer (mitraqa) but gradually sinks in depth and expands in width and length, like gold, silver, copper, and the other seven bodies (metals). It is evident that they soften with fire, which is 'lin' (softening). They do not disintegrate under the hammer blow but accept whatever shape is intended; this is 'intiba' (impressionability). If more heat is applied, they melt; this is 'zuban' (melting). As for the fact that softening, melting, and impressionability also occur in other bodies, what then is the specialty of malleable bodies, and what is the argument for this specification? I say: The immediate answer is that these three are merely attributes opposed to hardness, solidity, and resistance. They have no effect on the essence of the body's parts. Unlike combustion (ihtiraq) in the sense of corruption of some parts—which is often the initial thought—it affects the components themselves. In 'taraddud' (recurrence/change), it is even more manifest. The noble scholars have stated two divisions: One involves combustion and 'taraddud' (change/corruption), which is where some parts themselves burn and are destroyed. The second involves softening, melting, and impressionability. These do not affect the essence of the parts; that is, all parts remain intact while the body becomes soft, accepts shaping, or flows. This only occurs in malleable bodies. In non-malleable bodies, when fire affects them enough to soften them, make them workable, or melt them, it will necessarily burn some of their moisture; not all parts will remain intact. This is contrary to malleable bodies, whose moisture does not decrease even when they are made to spin after melting. This is a simple, superficial answer. By the grace of Allah Almighty, if a refined research and subtle investigation is intended, which clarifies the meaning of not only these three but all five attributes, then, with the help of Allah Almighty, listen to a few points that, by the grace of the Exalted, have been bestowed upon this humble heart. First Point: I say, and from my Lord I seek help. For a thing to be impressionable (muntabi'), it is not enough for it to merely be capable of receiving a form. Otherwise, every wet thing, even water, would be impressionable, since ease of formation is an inherent quality of moisture. Rather, along with it, the preservation of form (hifz-e-surat) is also required. Reception requires moisture, and preservation requires the cohesion (tamasuk) of parts so that it stays in the form it was given. If both these origins are present in the thing itself, then it is naturally impressionable. If one is present and not the other, then its

impressionability will be attributed to whatever created it. For instance, in a thing with cohesive parts, hardness prevents it from accepting form; water makes it capable, like potter's clay, so it is 'muntabi' bil-ma' (impressionable by water). Or like iron heated by fire, so it is 'muntabi' bin-nar' (impressionable by fire), or a soft thing...

खंड तीन फतावा रज़विया (गैलेन के हवाले से वर्णित - टी) और वह वैसी ही होती है। यहाँ इसका अर्थ मध्यवर्ती है जो इस तीसरे रूप को भी शामिल करता है। (३) मृदुकरण (लीन), पिघलना (ज़ुबान), और मुद्रांकनशीलता (इंतिबा) सभी उस अवस्था को संदर्भित करते हैं जो आग से आघातवर्धनीय (मुंतरीक) शरीर में उत्पन्न होती है। आघातवर्धनीय शरीर वह है जो हथौड़े (मित्रका) की चोट से बिखरता नहीं है बल्कि धीरे-धीरे गहराई में दबता है और चौड़ाई तथा लंबाई में फैलता जाता है जैसे सोना, चांदी, तांबा और अन्य सात धातुएँ। यह स्पष्ट है कि वे आग से नरम हो जाते हैं, यह 'लीन' (मृदुकरण) हुआ। वे हथौड़े की चोट से विघटित नहीं होते बल्कि जैसा आकार देना हो उसे स्वीकार करते हैं; यह 'इंतिबा' (मुद्रांकनशीलता) हुआ। यदि अधिक ताप दिया जाए तो वे पिघल जाते हैं; यह 'ज़ुबान' (पिघलना) हुआ। रहा यह कि मृदुकरण, पिघलना और मुद्रांकनशीलता तो अन्य पिंडों में भी होती है, तो फिर आघातवर्धनीय शरीरों की क्या विशेषता है और इस विशिष्टता के लिए क्या प्रमाण है? मैं कहता हूँ: इसका तत्काल उत्तर तो यह है कि ये तीनों केवल कठोरता, जड़ता और प्रतिरोध के विपरीत गुण हैं। इनका शरीर के अंगों के सार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत, कुछ हिस्सों के दहन (एहतिराक) के अर्थ में भ्रष्टाचार - जो अक्सर पहला विचार होता है - यह घटकों को प्रभावित करता है। और 'तरद्दुद' (बदलाव) में तो यह और भी स्पष्ट है। विद्वानों ने दो विभाग बताए हैं: एक में दहन और बदलाव शामिल है, जहाँ कुछ अंग स्वयं जलकर नष्ट हो जाते हैं। दूसरे में मृदुकरण, पिघलना और मुद्रांकनशीलता। ये अंगों के सार को प्रभावित नहीं करते हैं, अर्थात सभी अंग बरकरार रहते हैं और शरीर नरम हो जाता है, आकार लेना स्वीकार करता है या बह जाता है। ऐसा केवल आघातवर्धनीय शरीरों में ही होता है। गैर-आघातवर्धनीय शरीरों में, जब आग उन पर इतना प्रभाव डालती है कि उन्हें नरम कर दे, उन्हें कार्य करने योग्य बना दे या उन्हें पिघला दे, तो वह अनिवार्य रूप से उनकी कुछ नमी को जला देगी; सभी अंग बरकरार नहीं रहेंगे। आघातवर्धनीय धातुओं के विपरीत, जिनकी नमी पिघलने के बाद घुमाने पर भी कम नहीं होती है। यह एक सरल, सतही उत्तर है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान की कृपा से, यदि एक परिष्कृत शोध और सूक्ष्म जांच का इरादा है, जो न केवल इन तीन बल्कि पांचों गुणों के अर्थ को स्पष्ट कर दे, तो अल्लाह सर्वशक्तिमान की सहायता से, उन कुछ बिंदुओं को सुनें जो सर्वशक्तिमान की कृपा से इस तुच्छ हृदय पर अवतरित हुए हैं। पहला बिंदु: मैं कहता हूँ, और अपने रब से मदद मांगता हूँ। किसी वस्तु के मुद्रांकनशील (मुंतबे) होने के लिए केवल उसका रूप ग्रहण करने में सक्षम होना पर्याप्त नहीं है। अन्यथा हर गीली वस्तु, यहाँ तक कि पानी भी मुद्रांकनशील होता, क्योंकि नमी का एक आवश्यक गुण रूप धारण करने में सुगमता है। बल्कि इसके साथ रूप का संरक्षण (हिफ़्ज़-ए-सूरत) भी आवश्यक है। ग्रहण करने के

लिए नमी चाहिए और संरक्षण के लिए अंगों का सामंजस्य (तमासुक), ताकि उसे जिस रूप में रखा जाए उसी में बना रहे। यदि ये दोनों मूल वस्तु में ही मौजूद हैं, तो वह स्वयं ही मुद्रांकनशील है। और यदि एक है और दूसरा नहीं, तो उसका मुद्रांकनशीलता उस चीज़ की ओर जिम्मेदार माना जाएगा जिसने उसे बनाया है। उदाहरण के लिए, एक ऐसी चीज़ में जिसके अंग आपस में जुड़े हुए हैं, कठोरता रूप ग्रहण करने में बाधक है; पानी ने इसे सक्षम बनाया जैसे कुम्हार की मिट्टी, तो वह 'मुंतबे बिल-मा' (पानी से मुद्रांकनशील) है। या आग से गर्म किया गया लोहा, तो वह 'मुंतबे बिन-नार' (आग से मुद्रांकनशील) है, या एक नरम वस्तु... पृष्ठ ६०१ / ७५६

جلد سوم فتاوٰی رضویہ بحوالہ جالینوس بیان ہوا۔ ت) اور وہ ایسی ہی ہوتی ہے یہاں اس سے مراد معنی اوسط ہے کہ اس شکل ثالث کو بھی شامل۔ (۳) لین، ذوبان، انطباع سب سے مراد وہ حالت ہے کہ آگ سے جسم منطرق میں پیدا ہوتی ہے منطرق وہ جسم کہ مطرقہ یعنی ہتھوڑے کی ضرب سے متفرق نہ ہو بلکہ بتدریج عمق میں دبتا اور عرض و طول میں پھیلتا جائے جیسے سونا، چاندی، تانبا وغیرہا اجسادِ سبعہ۔ ظاہر ہے کہ یہ آگ سے نرم ہوتے ہیں یہ لین ہوا اور ضربِ مطرقہ سے متعفت نہیں ہوتے بلکہ جیسی گھڑٹ منظور ہو قبول کرتے ہیں یہ انطباع ہوا اور زیادہ آنچ دی جائے تو پگھل جاتے ہیں یہ ذوبان ہوا۔ رہا یہ کہ لین و ذوبان و انطباع تو اور اجسام میں بھی ہوتے ہیں پھر خاص اجسادِ منطرقہ کی کیا خصوصیت اور اس تخصیص پر کیا حجت۔ اقول: اس کا فوری جواب تو یہ ہے کہ یہ تینوں محض اوصاف ہیں صلابت و جمود و امتناع کے مقابل ان سے ذاتِ اجزائے جسم پر کوئی اثر نہیں۔ بخلاف احتراق بمعنی فساد بعض کہ اکثر وہی متبادر کہ اس میں نفس اجزا پر اثر ہے اور تردّ میں تو اور اظہر۔ علمائے کرام نے دو شقیں فرمائی ہیں: ایک میں احتراق و تردّد کھا یہ وہ ہے جس میں خود بعض اجزا کا جل جانا فنا ہو جانا ہے۔ دوسری میں لین، ذوبان، انطباع۔ تو یہ وہ ہیں جن کا ذاتِ اجزا پر اثر نہیں یعنی تمام اجزا برقرار ہیں اور جسم نرم ہو جائے گھڑنا قبول کرے یا بہہ جائے یہ نہیں ہوتا مگر انہیں اجسادِ منطرقہ میں۔ غیر منطرق میں جب آگ اتنا اثر کرے کہ اسے نرم کر دے قابل عمل کردے گلا پگھلا دے تو ضرور اس کی بعض رطوبتیں جلائے گی سب اجزا برقرار نہ رہیں گے بخلاف منطرقات کہ ان کی رطوبتیں بہہ جانے پر چرخ کھانے سے بھی کم نہیں ہوتیں۔ سہل سا بالائی جواب تو یہ ہے اور بتوفیقہ تعالٰی تحقیق انیق و تدقیق دقیق منظور ہو جو نہ صرف ان اوصافِ ثلثہ بلکہ خمسہ میں ان معانی کا مراد ہونا واضح کر دے تو وہ بعونہ تعالٰی استماع چند نکات سے ہے جو بفضلہ عزوجل قلبِ فقیر پر فائض ہوئے۔ نکتہ

اولٰی:۔ اقول و بربی استعین (میں کہتا ہوں اور اپنے رب ہی سے مدد کا طالب ہوں۔ ت) منطبع ہونے کو شے کا صرف صالح قبول صورت ہونا کافی نہیں ورنہ ہر رطب حتی کہ پانی بھی منطبع ہو کہ سہولتِ تشکل لازمہ رطوبت ہے بلکہ اس کے ساتھ حفظِ صورت بھی درکار۔ قبول کو رطوبت چاہیئے اور حفظ کو اجزا کا تماسک، کہ جس صورت پر کر دیا جائے قائم رہے یہ دونوں منشا گر شے میں خود موجود ہیں جب تو وہ آپ ہی صالح انطباع ہے اور اگر ایک ہے دوسرا نہیں تو وہ دوسرا جس سے پیدا ہو اس کا انطباع اس کی طرف منسوب ہو گا کہ اس نے اسے منبع کیا مثلاً شیئی متماسک الاجزا میں صلابت مانعِ قبول صورت ہے، پانی نے اس قابل کیا جیسے چاک کی مٹی تو وہ منطبع بالماء ہے یا آگ سے جیسے تپایا ہوا لوہا تو منطبع بالنار یا نرم شے Page 601 of 756

Volume 3 Fatawa Razawiya Excessive moisture prevents the preservation of shape; if it becomes capable of preservation by mixing with clay or drying by fire, it is called solidified by clay or by fire. If neither of these is present, and both qualities arise from the simultaneous action of two things, its impression will be attributed to that collective whole. If they act sequentially, and the capacity for acceptance or preservation comes from one first and then the other from the action of the second, its impression will be attributed to the latter, because until the action of the first, that thing was not fit for impression; it became so through the action of the second. In Sharia, a parallel in purification is cloth, where the warp is not considered even if it is silk, as it was not yet cloth at that time; the weaver made it cloth, so he is considered. In short, the impression will be attributed to whatever completed the capacity for impression. So much so that, for example, if the power of acceptance was inherent in the thing and fire helped the power of preservation but did not make it fit for preservation, but this capacity arose after it from another thing, it would be considered solidified by that second thing, not by fire. From this, it is clear that for all things that fire melts into water so they can take shape in a mold, this impression will not be attributed to fire because as long as a thing is liquid, it is not capable of preserving its shape; this capability will come when it cools. Sulphur and arsenic and their likes are not solidified by fire; even sugar syrup, although its fluidity was inherent making it fit for accepting shape, and fire aided the capacity for preserving shape by creating viscosity which is the reason for the cohesion of parts, yet twenty-four hours were required for preservation, which it prevented because fire causes melting. When separated from fire and exposed to air, cooling provided the capacity for preservation, so this too was not impression by fire. Sugar toys and larger sugar drops (batasha) are made in molds; small and medium-thick drops are dropped on a sheet, but as long as they are not separated from fire and exposed to air, the capacity for preserving shape does not come.

Yes, for a thing to be called 'solidified by fire', it is not necessary that it always be solidified by it; rather, it is enough that inherently they are among things that can be solidified by fire, even if sometimes they are solidified by something else. Thus, gold and silver being imprinted in a mold by cooling (after being turned) does not exclude them from bodies solidified by fire.

Warning: Now, the relationship in capacity for melting and impression by fire depends on the proof of a substance being 'general from one aspect' (amoom min wajh) such that it softens by fire to become capable of taking shape and

simultaneously can inherently preserve every given shape, and no matter how much fire acts, it cannot melt it away. This thing is in concealment (unknown), and Allah Almighty knows best. When this is not present, it is evident that melting is absolutely more general than impression. And knowledge is with the Possessor of Majesty regarding the reality of every state. (And the knowledge of the reality of every state is only with the One of Greatness and Majesty. Trans)

Point Two 2: I say: The body being composed of moist and dry components...

खण्ड 3 फ़तावा रज़विया अत्यधिक नमी रूप के संरक्षण को रोकती है; यदि मिट्टी मिलाने या आग से सुखाने से यह संरक्षण के योग्य हो जाए, तो इसे मिट्टी द्वारा या अग्नि द्वारा ठोस होना कहा जाता है। और यदि दोनों नहीं हैं और दो चीजों के एक साथ कार्य करने से दोनों गुण उत्पन्न हो गए, तो उसकी छाप (इम्प्रेशन) उस समग्र समूह की ओर जिम्मेदार होगी। और यदि वे बारी-बारी से कार्य करें, पहले एक से स्वीकार्यता या संरक्षण की क्षमता आई और फिर दूसरी के कार्य से दूसरी, तो उसकी छाप बाद वाले की ओर मानी जाएगी क्योंकि पहली के कार्य तक वह वस्तु छाप के योग्य नहीं थी; दूसरी के कार्य से हुई। शरीयत में पवित्रता के मामले में इसका उदाहरण कपड़ा है, जिसमें ताने (warp) का विचार नहीं किया जाता चाहे वह रेशम का ही क्यों न हो, क्योंकि उस समय तक वह कपड़ा नहीं बना था; बुनने वाले ने उसे कपड़ा बनाया तो उसी का विचार किया जाएगा। संक्षेप में, छाप उसी की ओर जिम्मेदार होगी जिसने छाप की क्षमता को पूर्ण किया। यहाँ तक कि यदि उदाहरण के लिए स्वीकार करने की शक्ति वस्तु में स्वयं थी और संरक्षण की शक्ति पर आग ने सहायता दी लेकिन उसे पूरी तरह संरक्षण के योग्य नहीं बनाया, बल्कि यह क्षमता इसके बाद दूसरी चीज़ से पैदा हुई, तो वह उसी दूसरी चीज़ से जमी हुई मानी जाएगी, आग से नहीं। यहाँ से स्पष्ट हुआ कि जितनी चीजों को आग पिघलाकर पानी कर दे जिससे वे सांचे में रूप स्वीकार करें, उनकी यह छाप आग की ओर नहीं मानी जाएगी क्योंकि जो तरल है वह रूप के संरक्षण के योग्य नहीं होता; यह योग्यता ठंडे होने पर आएगी। गंधक (sulphur) और हरताल (arsenic) और उनके जैसे अग्नि द्वारा ठोस नहीं होते; बल्कि शक्कर की चाशनी भी, हालांकि उसमें तरलता स्वयं थी जिससे वह रूप स्वीकार करने के योग्य थी और आग ने रूप के संरक्षण की क्षमता में सहायता दी कि चिपचिपाहट पैदा की जो अंगों के जुड़ाव का कारण है, फिर भी संरक्षण के लिए चौबीस घंटे आवश्यक थे, जिसका उसने विरोध किया क्योंकि आग पिघलने का कारण है। आग से अलग होकर जब हवा लगी तो ठंडे होने ने संरक्षण की क्षमता दी, तो यह भी अग्नि द्वारा छाप नहीं हुई। शक्कर के खिलौने और बड़े बताशे तो सांचे में बनते हैं; छोटे और मध्यम घनत्व वाली बूंदें चादर पर गिराई जाती हैं, लेकिन जब तक आग से अलग होकर हवा नहीं लगती, रूप के संरक्षण की क्षमता नहीं आती।

हाँ, किसी वस्तु को 'अग्नि द्वारा ठोस' कहलाने के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह हमेशा उसी से जमी हो, बल्कि इतना पर्याप्त है कि वे स्वयं उनमें से हों जो अग्नि द्वारा ठोस हो सकते हैं, भले ही कभी किसी और चीज़ से ठोस हुए हों। तो सांचे में ढलने के बाद सोने और चांदी का ठंडा होकर जमना उन्हें 'अग्नि द्वारा ठोस होने वाले शरीरों' से बाहर नहीं करता।

चेतावनी: अब पिघलने की क्षमता और अग्नि द्वारा छाप में संबंध 'अमूम मिन वज्ह' (एक पक्ष से सामान्य) होने के ऐसे प्रमाण पर निर्भर है कि वह आग से नरम होकर आकार लेने योग्य हो जाए और साथ ही स्वयं हर दिए गए रूप को संरक्षित कर सके और आग चाहे कितना भी कार्य करे उसे पिघला न सके। यह चीज़ रहस्य में है और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। जब यह नहीं है, तो स्पष्ट है कि पिघलना छाप से पूर्णतः सामान्य है। और ज्ञान महिमा वाले के पास है हर स्थिति की वास्तविकता के बारे में। (और हर स्थिति की वास्तविकता का ज्ञान महानता और महिमा वाले को ही है। अनु)

दूसरा बिंदु 2: मैं कहता हूँ: शरीर के आर्द्र (moist) और शुष्क (dry) तत्वों से बने होने का...

جلد سوم فتاویٰ رضویہ میں فرطِ رطوبت مانعِ حفظِ صورت ہے مٹی کے ملانے یا آگ کے سکھانے سے قابلِ حفظ ہوئی تو منبع بالطین یا بالنار ہے اور اگر دونوں نہیں اور دو چیزوں کے مَعاً عمل سے دونوں قوتیں پیدا ہو گئیں تو اس کا انطباع اس مجموعہ کی طرف منسوب ہو گا اور اگر تعاقب ہوا پہلے ایک سے قبول خواہ حفظ کی صلاحیت آگئی پھر دوسری کے عمل سے دوسری تو اس کا انطباع متأخر کی طرف نسبت کیا جائے گا کہ پہلی کے عمل تک وہ شے صالح انطباع نہ ہوئی تھی دوسری کے عمل سے ہوئی شرعاً مطہر میں اس کی نظیر کپڑا ہے کہ تانے کا اعتبار نہیں اگرچہ ریشم کا ہو کہ اس وقت تک کپڑا نہ ہوا تھا بنانے اسے کپڑا کیا تو اسی کا اعتبار ہے بالجملہ انطباع اس کی طرف منسوب ہو گا جس نے صلاحیتِ انطباع کی تکمیل کی یہاں تک کہ اگر مثلاً قبول کی قوت شے میں آپ تھی اور قوتِ حفظ پر آگ نے مدد دی مگر اس نے صالح حفظ نہ کر دیا بلکہ یہ صلاحیت اس کے بعد دوسری شے سے پیدا ہوئی تو وہ اسی دوسری شے سے منبع ٹھہرے گی نہ آگ سے۔ یہاں سے ظاہر ہوا کہ جتنی چیزوں کو آگ پگھلا کر پانی کرے جس سے وہ سانچے میں قبول صورت کریں ان کا یہ انطباع جانبِ نار منسوب نہ ہو گا کہ جس سیال۔ حفظِ صورت کے کے قابل نہیں ہوتا یہ قابلیت سرد ہو کہ آئے گی و کبریت وزرنیخ اور ان کے امثال منبع بالنار نہیں بلکہ شکر کا قوام بھی کہ اگرچہ رقت اس میں آپ تھی جس سے صالح قبول صورت تھا اور نار نے صلاحیتِ حفظِ صورت پر مدد دی کہ لزوجت پیدا کی جو وجہ تماسک اجزا ہے مگر حفظ کے لیے چوبیس درکار تھے اس کی مانع رہی کہ کہ نار موجب ذوبان ہے نار سے جدا ہو کر جب ہوا لگی سرد ہونے نے صلاحیتِ حفظ دی تو یہ بھی انطباع بالنار نہ ہوا شکر کے کھلونے اور زیادہ بڑے بتاسے تو سانچے میں بنتے ہیں چھوٹے اور متوسط قوام کی بوندیں چادر پر گرا کر مگر جب تک آگ سے جدا ہو کر ہوا نہیں لگتی حفظِ صورت کی صلاحیت نہیں آتی۔

ہاں شے کے منبع بالنار کہلانے کو یہ ضرور نہیں کہ ہمیشہ اسی سے منبع ہو بلکہ صرف اتنا کافی کہ فی نفسہ ان میں ہو جو منبع بالنار ہو سکتے ہیں اگرچہ کبھی منبع بالغیر بھی ہو تو چرخ کھا کر سونے چاندی کا سانچے میں منبطع بالبرد ہونا انہیں اجساد منبطعہ بالنار سے خارج نہیں کرتا۔

تنبیہ : اب صلاحیت ذوبان وانطباع بالنار میں نسبت عموم من وجہ ایسے جرم کے ثبوت پر موقوف کہ آگ سے نرم ہو کر قابل شکل ہو اور ساتھ ہی فی نفسہ ہر دی ہوئی صورت کا حفظ کر سکے اور آگ کتنا ہی عمل کرے اسے بہانہ سکے یہ چیز خفا میں ہے واللہ تعالیٰ اعلم جب یہ نہ ہو ظاہر اذوبان انطباع سے عام مطلقاً ہے والعلم عند ذی الجلال بحقیقۃ کل حال (اور ہر حالت کی حقیقت کا علم بزرگی وجلال والے ہی کو ہے۔ ت)

نکتہ ثانیہ ۲: اقول: جسم کے اجزائے رطبہ و یابسہ سے مرکب ہو اس کا

Fatawa Razawiyya Volume Three Composition is of two types: weak, whose knot can be untied and whose moist and dry components become separated; and extremely firm, where fire, whose function is separation, is unable to untie their knot. There are three forms in the first type: (1) The dry components of the body are subtle, such that fire will also blow them away along with the moisture. In this case, the body will be destroyed, like resin, sulfur, sal ammoniac. Call it disappearance or exhaustion; this often happens in substances that catch fire and vanish. (2) In this, the moist components are very few compared to the earthy components, like stone, which is made of fine earthy components, and they are the vast majority. They are joined by viscidity (sticky moisture), and through the action of heat, dryness sets in. By repeated occurrences, due to viscidity, the components compact and form a hard body called stone (hajar). Since the composition is not extremely firm, fire, to the extent of its influence, will separate the moist components. Due to that compaction (since it was the cause), it will decrease, and some porousness will occur in the body, while the rest remains petrified. This is the case with the calcination of stones. (3) Moist components were also in abundance; fire, by destroying them, will annihilate a large part of the body. What remains is ash (ramad), and this type of burning is called 'tarmud' (turning into ash). It is clear that in these three forms, impression by fire (an-tiba' bi'n-nar) will not be possible. In the first, it is obvious as the body itself is destroyed. In the third, due to fragmentation and dispersal, the power to maintain form does not remain. In the second, there is no softness to accept a new form; due to hardness, limited action will not be accepted, and it will shatter under a strong blow. Yes, softness will occur in all these cases in that the knot softens and opens, and in some cases, melting (dhuban) will also occur, like sulfur first becomes soft, then flows, and then is destroyed. In the second type, there are two forms where two will melt and become three. (1) The knot is so extremely firm and strong that fire cannot even weaken it. Here, if moisture is dominant in the body, it will not even remain on the fire, as opposites do not combine; this is mercury (seemab). I say: The reason for its not remaining on fire is that the action of fire is sublimation (tas'eed), i.e., throwing moisture towards the sky. It performed its action on those moistures too, and the attachments could not be separated. Therefore, the entire body, according to the measure of the heat's action, flew away thus knotted and remained in its state. Unlike the first form of the first type, where even though the dry components also flew away along with the moisture due to their subtlety, the knot opened and dispersed, so the body became scattered dust (haba'un manthura). And if moisture is not dominant, the body will only become hot from the fire; there will be

no effect on the composition of the components, such as ruby, garnet, diamond, or talc, which is also called abrak.

फ़तावा रज़विया खंड तीन मिश्रण (इम्तिज़ाज) दो प्रकार के होते हैं: कमज़ोर, जिसकी गाँठ खुल जाए और गीले और सूखे हिस्से अलग हो जाएँ, और अत्यधिक मज़बूत कि आग, जिसका कार्य अलगाव है, उनकी गाँठ खोलने में समर्थ न हो। पहले प्रकार में तीन स्थितियाँ हैं: (1) शरीर के शुष्क अवयव सूक्ष्म होते हैं कि आग उन्हें नमी के साथ उड़ा देगी। इस स्थिति में शरीर नष्ट हो जाएगा जैसे राल, गंधक, नौसादर। इसे लोप या समाप्ति कहें; यह अक्सर उन पदार्थों में होता है जो आग पकड़कर उड़ जाते हैं। (2) इसमें मिट्टी के अवयवों की तुलना में नम अवयव बहुत कम होते हैं जैसे पत्थर, जो सूक्ष्म मिट्टी के अवयवों से बना होता है और उनका हिस्सा बहुत अधिक और प्रभावी होता है। चिपचिपी नमी (लुज़ूजत) से उनमें जुड़ाव हुआ और गर्मी के प्रभाव से शुष्कता आई। बार-बार ऐसा होने पर चिपचिपाहट के कारण अवयव सघन होकर एक कठोर शरीर बन गए जिसे पत्थर (हजर) कहा जाता है। चूंकि संरचना अत्यधिक मज़बूत नहीं है, इसलिए आग अपने प्रभाव की सीमा तक नम अवयवों को अलग कर देगी और उस सघनता के कारण (जो कारण था) वह कम हो जाएगा और शरीर में कुछ हद तक छिद्र (तखल्लुल) आ जाएंगे, जबकि शेष हिस्सा पथरीला ही रहेगा। यह पत्थरों के भस्म (कल्स) होने की स्थिति है। (3) नम अवयव भी प्रचुर मात्रा में थे; आग उन्हें नष्ट करके शरीर के एक बड़े हिस्से को मिटा देगी। जो बचेगा वह राख (रमाद) है और इस प्रकार जलने का नाम 'तरमुद' है। स्पष्ट है कि इन तीनों स्थितियों में आग के द्वारा कोई छाप या रूप ग्रहण करना (अनतिबा बिन-नार) संभव नहीं होगा। पहली स्थिति में तो यह प्रत्यक्ष है क्योंकि शरीर ही नष्ट हो गया। तीसरी स्थिति में विखंडन और बिखराव के कारण रूप बनाए रखने की शक्ति शेष नहीं रहती। दूसरी स्थिति में वह कोमलता नहीं है कि कोई रूप स्वीकार करे; कठोरता के कारण अल्प क्रिया स्वीकार नहीं की जाएगी और तेज़ प्रहार से वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। हाँ, इन सभी स्थितियों में कोमलता इस रूप में होगी कि गाँठ नरम होकर खुल जाती है, और कुछ स्थितियों में पिघलना (ज़ुबान) भी होगा, जैसे गंधक पहले नरम पड़ती है, फिर बहती है, फिर नष्ट हो जाती है। दूसरे प्रकार में दो स्थितियाँ हैं जिनमें पिघलकर दो के तीन हो जाएंगे। (1) गाँठ इतनी अधिक दृढ़ और मज़बूत हो कि आग उसे ढीला भी न कर सके। यहाँ यदि शरीर पर नमी प्रभावी हो, तो वह आग पर टिक ही नहीं पाएगा क्योंकि विरोधी तत्व एक साथ नहीं रहते; यह पारा (सीमआब) है। मैं कहता हूँ: इसके आग पर न टिकने का कारण यह है कि आग का कार्य ऊर्ध्वपातन (तस्ईद) है, यानी नमी को आकाश की ओर फेंकना। उसने उन नमियों पर भी अपना काम किया और जुड़ाव अलग नहीं हो सके, इसलिए पूरा शरीर ऊष्मा की क्रिया की मात्रा के अनुसार इसी तरह गाँठ बंधा हुआ उड़ गया और अपनी अवस्था में बना रहा। पहले प्रकार की पहली स्थिति के विपरीत, जहाँ यद्यपि सूक्ष्मता के कारण शुष्क अवयव भी नमी के साथ स्वयं उड़ गए,

लेकिन गाँठ खुल गई और बिखर गई, इसलिए शरीर बिखरी हुई धूल (हबा-ए-मन्शूर) हो गया। और यदि नमी प्रभावी नहीं है, तो शरीर आग से केवल गर्म होगा; अवयवों की संरचना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, जैसे माणिक (लाल), याकूत, हीरा या टाल्क जिसे अभ्रक भी कहते हैं।

पृष्ठ 756 का 603

فتاوی رضویہ جلد سوم امتزاج دو قسم ہے ، ضعیف جس کی گرہ کھل جائے اجزائے رطبہ و یابسہ سے جدا ہوجائیں ، اور شدید الاستحکام کہ آگ جس کا فعل تفریق ہے ان کی گرہ کھولنے پر قادر نہ ہو۔ قسم اوّل میں تین صورتیں ہیں : (۱) جسم کے اجزائے یابسہ لطیف ہیں کہ آگ انہیں بھی رطبہ کے ساتھ اڑا دے گی اس صورت میں تو جسم فنا ہوجائے گا جیسے رال ، گندھک، نوشادر، اسے انتفاء یا نفاد کہیے یہ بھک اڑ جانے والے مادوں میں اکثر ہوتا ہے۔ (۲) اس میں اجزائے رطبہ بہ نسبت اجزائے ارض بہت کم ہیں جیسے پتھر کہ اجزائے ارضیہ رقیقہ ہی سے بنتا ہے اور انہیں کا حصہ کثیر و غالب ہے، لزوج یعنی چپک دار رطوبتوں سے انہیں اتصال ہوا اور عمل حرارت سے یبوست آئی بار باریوں ہوکر لزوجت کے باعث اجزا میں کتاز آکر سخت جسم پیدا ہو جس کا نام حجر ہے از انجا کہ ترکیب شدید الاستحکام نہیں آگ تاحد تاثیر اجزائے رطبہ کو جدا کرے گی اور وہ اکتناز کہ بوجہ (موجب تھا کم ہوکر جسم میں قدرے تخلل آئے گا باقی متحجر بدستور رہے گا یہ صورت کلس احجار کی ہے۔ (۳) اجزائے رطبہ بھی بکثرت تھے آگ انہیں فنا کرکے ایک بڑا حصہ جسم کا معدوم کرے گی جو رہ گیا وہ رماد اور اس طرح جلنے کا نام ترمُّد ہے ، ظاہر ہے کہ ان تینوں صورتوں میں انطباع بالنار نہ ہوسکے گا اوّل میں تو بدیہی کہ جس فنا ہی ہو گیا اور سوم میں بوجہ تفتت و تشتت حفظ صورت کی قوت باقی نہیں دوم میں وہ لین نہیں کہ قبول صورت کرے بوجہ صلابت عمل قلیل قبول نہ کرے گا اور ضرب شدید سے متفتت ہوجائے گا ۔ ہاں لین ان سب صورتوں میں ہوگا کہ گرہ نرم ہی ہو کر کھلتی ہے اور بعض صورتوں میں ذوبان بھی ہوگا جیسے گندھک پہلے نرم پڑتی پھر بہتی پھر فنا ہوجاتی ہے۔ قسم دوم میں دو صورتیں ہیں جن میں پگھلی دو ہو کر تین ہو جائیں گی ۔ (۱) گرہ اس قدر شدید محکم ہو کہ آگ اسے سست بھی نہ کر سکے۔ یہاں اگر جسم پر رطوبت غالب ہو آگ پر قائم ہی نہ رہے گا کہ متنافیین جمع نہیں ہوتے ، یہ سیماب

ہے۔ اقول : اس کے قائم علی النار نہ ہونے کا سبب یہ ہے کہ آگ کا فعل تصعید ہے یعنی رطوبات کو جانبِ آسمان پھینکنا ان رطوبتوں پر بھی اس نے اپنا کام کیا اور پیوستیں جدا نہ ہوسکیں لہذا سارا جسم بقدرِ عملِ حرارت یو نہی گرہ بستہ اڑا اور اپنی حالت پر برقرار رہا بخلاف صورت اول قسم اول کہ وہاں بھی اگرچہ اجزائے یابسہ بوجہ لطافت ہمراہ رطبہ خود بھی اڑے مگر گرہ کشادہ منتشر لہذا جسم ہباء منثور ہو گیا ۔ اور اگر رطوبت غالب نہیں تو جسم آگ سے صرف گرم ہو گا ترکیب اجزا پر کچھ اثر نہ پڑے گا جیسے لعل یا قوت ہیرا یا طلق بھی جسے ابرک کہتے ہیں

Fatawa Rizvia Volume 3

Fire cannot untie its knot either, except through external means and strategies. It is obvious that in this case, softening (leen), melting (zuban), or turning to ash (turmud) will not be possible because as long as the knot remains, impression (intiba) cannot occur. It is also clear that it is inconceivable without softening. And in the state of dominance of moisture, i.e., overflow, although softening itself is present, that very dominance of moisture prevents the preservation of form. Therefore, its capability for impression would be such that the fire dries its moistures to the extent that a "base" (bees) capable of preserving form is created in it. This depends on the untying of that knot, and that is absent here. Name this state 'imtin'a' (impossibility), not in the sense that it did not accept the effect of fire at all, for sublimation (tasa'eed) or heating (sukhunat) did occur, but in the sense that it had no effect on the composition of its parts.

(2) Fire can loosen the knot, but the oiliness (dahniyat) in the body is so strong that it does not let it open, like gold and silver which can become water by fire, but their moisture and dryness cannot be separated. In them, the first effect of fire will be softening, so they become soft and are affected by the strike of a hammer (matraqa), and due to their intense oiliness, they will remain gathered together and will not be crushed or scattered. Consequently, being pressed into the depth, they will gradually spread in width and length. This is called 'intiraq' (malleability), which means being patient under the hammer. And only this one form (2) is of impression by fire. The matter for preserving form was present in their essence; hardness was preventing the acceptance of form. Fire, by softening it, made it capable of it, and the work of impression was completed. In them (3), the effect of fire will be extreme melting such that the knot becomes very loose and the moist parts want to fly away, but due to the impossibility of separation, the dry parts will not let them fly away. Therefore, a state of flowing (sayalan) will arise, as was mentioned in the explanation of melting. Rather, if the subtle and dense parts are near equilibrium, their equivalent force will not even allow this flowing motion to be straight; it will appear in a circular form. This is called 'dauran' or 'charkh khana' (rotating), as is well-known in gold and silver.

Third Point (4): I say: Softening and melting, which are in the second category, are the primary effects of fire, and impression and rotation are their consequences. And softening and melting, which are in the first category, are not primary effects but are consequential. The investigation of this is that the primary effect of fire is sublimation (tasa'eed), i.e., throwing the body upwards. In the first category, fire was capable of

this, whether it took the whole mass, which is depletion (nafaad), or a small amount of moisture, which is calcination (taklees), or a large amount, which is turning to ash (turmud). So these were the primary effects, even if softening and melting were produced in their process. In the second category, in the state of dominance of moisture, fire being capable of total sublimation is itself the primary effect; otherwise, if it could only achieve heating (taskheen), then the primary effect would be only to that extent because fire cannot do more than that. Both these cases have no relation to softening and melting. As for the last two forms of the second category, the effect of fire in them is this very softening and melting, as fire is capable only to this extent here; so these themselves are the primary effects, and impression and malleability are consequential to softening as they depend on it.

फतावा रिज़विया खंड 3

आग इसकी गांठ को भी नहीं खोल सकती, सिवाय बाहरी युक्तियों और उपायों के। यह स्पष्ट है कि इस स्थिति में कोमलता (लीन), पिघलना (ज़ुबान), या राख होना (तुरमुद) संभव नहीं होगा क्योंकि जब तक गांठ बनी रहेगी, छाप (इंतिबा) नहीं हो पाएगी। यह भी स्पष्ट है कि यह कोमलता के बिना अकल्पनीय है। और नमी के प्रभुत्व की स्थिति में, यानी जलप्रलय में, यद्यपि कोमलता स्वयं मौजूद है, लेकिन वही नमी का प्रभुत्व रूप के संरक्षण को रोकता है। इसलिए इसमें छाप की क्षमता ऐसी होगी कि आग उसकी नमी को इतना सुखा दे कि उसमें रूप को संरक्षित करने में सक्षम "आधार" (बिस) पैदा हो जाए। यह उसी गांठ के खुलने पर निर्भर है, और वह यहाँ अनुपस्थित है। इस स्थिति का नाम 'इम्तिना' (असंभवता) रखें, इस अर्थ में नहीं कि इसने आग के प्रभाव को बिल्कुल स्वीकार नहीं किया, क्योंकि ऊर्ध्वपातन (तसईद) या गर्म होना (सुखूनत) तो हुआ, बल्कि इस अर्थ में कि इसके अंगों की संरचना पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

(2) आग गांठ को ढीला कर सकती है, लेकिन शरीर में तैलीयता (दहनियत) इतनी प्रबल होती है कि वह उसे खुलने नहीं देती, जैसे सोना और चाँदी जो आग से पानी हो सकते हैं लेकिन उनकी नमी और शुष्कता अलग नहीं हो सकती। उनमें आग का पहला प्रभाव कोमलता होगा कि वे नरम होकर हथौड़े (मतरका) की मार से प्रभावित होंगे और अपनी तीव्र तैलीयता के कारण वे एक साथ इकट्ठे रहेंगे, चूर्णित या बिखरे हुए नहीं होंगे। परिणामतः गहराई में दबते हुए वे धीरे-धीरे चौड़ाई और लंबाई में फैलेंगे। इसी का नाम 'इंतिराक' (आघातवर्धनीयता) है, जिसका अर्थ है हथौड़े के नीचे धैर्यवान होना। और केवल यही एक रूप (2) आग द्वारा छाप का है। रूप को संरक्षित करने का पदार्थ स्वयं उनके अस्तित्व में था; कठोरता रूप की स्वीकृति को रोक रही थी। आग ने इसे नरम करके इसके योग्य बना दिया और छाप का कार्य पूरा हो गया। उनमें (3) आग का प्रभाव चरम पिघलना होगा कि गांठ बहुत ढीली हो जाए और नम हिस्से उड़ जाना चाहें, लेकिन अलगाव की असंभवता के कारण सूखे हिस्से उन्हें उड़ने नहीं देंगे। इसलिए प्रवाह (सयलान) की स्थिति उत्पन्न होगी जैसा कि पिघलने के विवरण में बताया गया है। बल्कि, यदि सूक्ष्म और सघन हिस्से संतुलन के करीब हैं, तो उनका बराबर बल इस प्रवाह गति को सीधा भी नहीं होने देगा; यह गोलाकार रूप में दिखाई देगा। इसी का नाम 'दौरान' या 'चर्ख खाना' (घूमना) है, जैसा कि सोने और चाँदी में प्रसिद्ध है।

तीसरा बिंदु (4): मैं कहता हूँ: कोमलता और पिघलना जो दूसरी श्रेणी में हैं, आग के प्राथमिक प्रभाव हैं, और छाप तथा घूमना उनके परिणाम हैं। और कोमलता तथा पिघलना जो पहली श्रेणी में हैं, वे

प्राथमिक प्रभाव नहीं हैं बल्कि परिणामी हैं। इसकी जाँच यह है कि आग का प्राथमिक प्रभाव ऊर्ध्वपातन (तसईद) है, यानी शरीर को ऊपर फेंकना। पहली श्रेणी में आग इस पर सक्षम थी, चाहे वह पूरे द्रव्यमान को ले गई जो कि रिक्तीकरण (नफ़ाद) है, या थोड़ी सी नमी को जो कि भस्मीकरण (तकलीस) है, या अधिक मात्रा को जो कि राख होना (तुरमुद) है। तो ये प्राथमिक प्रभाव थे, भले ही उनकी प्रक्रिया में कोमलता और पिघलना उत्पन्न हो गए हों। दूसरी श्रेणी में, नमी के प्रभुत्व की स्थिति में, आग का पूर्ण ऊर्ध्वपातन पर सक्षम होना ही प्राथमिक प्रभाव है; अन्यथा यदि वह केवल तस्कीन यानी गर्म ही कर सकी, तो प्राथमिक प्रभाव केवल उसी सीमा तक होगा क्योंकि आग उससे अधिक नहीं कर सकती। इन दोनों स्थितियों का कोमलता और पिघलने से कोई संबंध नहीं है। रही बात दूसरी श्रेणी के अंतिम दो रूपों की, उनमें आग का प्रभाव ही यही कोमलता और पिघलना है, क्योंकि आग यहाँ केवल इसी सीमा तक सक्षम है; तो ये स्वयं ही प्राथमिक प्रभाव हैं और छाप तथा आघातवर्धनीयता कोमलता के अनुगामी हैं क्योंकि वे उस पर निर्भर हैं।

पृष्ठ 604 का 756

آگ اس کی بھی گرہ نہیں کھول سکتی مگر حیل و تدابیر خارجیہ سے۔ ظاہر ہے کہ اس صورت میں لین، ذوبان، ترمد کچھ نہ ہوسکے گا کہ گرہ بدستور رہے گی تو انطباع نہ ہوسکے گا بھی ظاہر کہ وہ بے لین نامتصور اور صورت غلبہِ رطوبت یعنی سیلاب میں اگرچہ لین خود موجود مگر وہی غلبہِ رطوبت مانعِ حفظِ صورت تو اس میں قابلیت انطباع یوں ہوتی کہ آگ اس کی رطوبتیں اتنی خشک کردے کہ اس میں " بیس " قابلِ حفظِ صورت پیدا ہو جائے یہ اسی گرہ کھلنے پر موقوف اور وہ یہاں منتفی اس حالت کا نام امتناع رکھئے نہ بایں معنی کہ اثرِ نار اصلاً قبول نہ کیا کہ تصعید یا سخونت تو ہوئی بلکہ بایں معنی کہ ترکیبِ اجزا پر اس کا کوئی اثر نہ لیا۔

(۲) آگ گرہ سست کرسکے مگر جسم میں دہنیت اس درجہ قوی ہو کہ کھلنے نہ دے جیسے سونا چاندی کہ آگ سے پانی ہو سکتے ہیں مگر ان کی رطوبت و پیوست جدا نہیں ہو سکتی۔ ان میں نار کا اثر اول لین ہوگا کہ نرم پڑ کر مطرقہ یعنی ہتھوڑے کی ضرب سے متاثر بھی ہوں گے اور اپنی شدتِ دہنیت کے باعث مجتمع بھی رہیں گے متفتت و متفرق نہ ہو سکیں گے لاجرم عمق میں دبتے ہوئے عرض و طول میں بتدریج پھیلیں گے اسی کا نام انطراق ہے یعنی زیرِ مطرقہ صابر ہونا اور صرف ۲ یہی ایک صورت انطباع بالنار کی ہے، حفظِ صورت کا مادہ خود ان کی ذات میں تھا صلابت مانعِ قبول صورت تھی آگ نے نرم کرکے اس کے قابل کردیا اور کارِ انطباع تمام ہوگیا۔ ان ۳ پر نار کا اثر انتہائی ذوبان ہوگا کہ گرہ زیادہ سست ہو کر اجزائے رطبہ اڑنا چاہیں اور بوجہ امتناع تفرق اجزائے یابسہ انہیں اڑنے نہ دیں گے لہٰذا صورت سیلان پیدا ہوگی جیسا کہ بیانِ ذوبان میں گزرا بلکہ اگر اجزائے لطیفہ و کثیفہ قریب تعادل ہیں تو ان کی تکافی قوت اس حرکتِ سیلان کو

مستقیمہ بھی نہ ہونے دے گی بشکلِ مستدیرہ ظاہر ہوگی اسی کا نام دوران یا چرخ کھانا ہے جس طرح ذہبِ فضہ میں مشہور ہے۔

نکتہ ثالثہ ۴ اقول: لین و ذوبان کہ قسم دوم میں ہیں نار کے آثارِ اصلیہ ہیں اور انطباع و دوران ان کے توابع اور لین و ذوبان کہ قسم اول میں ہیں آثارِ اصلیہ نہیں بلکہ تابع ہیں۔ تحقیق اس کی یہ ہے کہ نار کا اثرِ اصلی تصعید ہے یعنی جسم کو اوپر پھینکنا۔ قسم اول میں آگ اس پر قادر ہوئی خواہ سارے جرم کو لے گئی کہ نفاد ہے یار رطوبتِ قلیلہ کو کہ تکلیس یا کثیرہ کو کہ ترمد تو یہ آثارِ اصلیہ ہوئے اگرچہ ان کے ضمن میں لین و ذوبان پیدا ہو جائیں۔ قسم دوم میں بحالِ غلبہِ رطوبت آگ تصعیدِ کلی پر قادر ہوئے یہ خود اثرِ اصلی ہے ورنہ صرف تسخین یعنی گرم کرسکی تو یہاں اسی قدر اثرِ اصلی ہوگا کہ آگ اس سے زیادہ نہیں کر سکتی ان دونوں صورتوں کو لین و ذوبان سے علاقہ نہیں۔ رہیں قسم دوم کی اخیر دو صورتیں ان میں آگ کا اثر ہی یہی لین و ذوبان ہیں کہ آگ یہاں اسی قدر پر قادر تو یہ خود ہی آثارِ اصلیہ ہیں اور انطباع و انطراق تابع لین کہ اس پر موقوف ہے

Fatawa Razawiyya - Volume 3

And during the process of derivative melting, which depends on it, this softening and melting are worthy of being counted among the original effects. Those in the first category are incidental and derivative, and because they are inherent to their respective forms, they will not produce any separate ruling in terms of capability. Their softening and melting represent the dissolution of a knot; whatever substance is capable of penetration (nafadh), calcification (takallus), or pulverization (taramad) will certainly also be capable of the softening or melting that occurs within it. And whatever substance is capable of softening, melting, and dissolution will certainly possess the capability for one of these three; thus, there is no reason or need to consider them independently. In his claim that softening and melting are counted among the effects of fire, this humble servant (the author) meant these very second-category softening and melting, which may be called 'congealing softening and melting' because they arise from the non-opening of a knot, not those of the first category which were 'dissolution softening and melting' arising from the opening of a knot. This has found confirmation in the words of the scholars, praise be to Allah. Just as these types and rulings were bestowed upon the heart of this humble servant by the grace of the Almighty, may His glory be exalted, after writing them I studied 'al-Maqasid' and 'al-Mawaqif' and their commentaries, and expanded my explanation by taking the mention of 'dawran' (circulation/cycle) from them. 'And excellence belongs to the predecessors.' (T). Referring back to them revealed that Qadi Adud, Allama Taftazani, and Allama Sayyid Sharif (may Allah have mercy on them), although they followed a path different from this humble servant in the rulings of the categories, they nonetheless stopped at the second category of softening and melting, and that was our purpose. The difference between the statements of those great figures and this humble servant is that this humble servant placed three rulings in the first category: penetration (nafadh), calcification (takallus), and pulverization (taramad). And in the second category, four: total sublimation (su'ud al-kull) meaning lack of stability, hardness (sukhunat), softening (layn), and melting (dhawban). They collectively kept only separation (tafriq) in the first category. In the second category, the authors of 'al-Mawaqif' and its commentary took the same four that this humble servant mentioned, but within total sublimation they placed penetration, which this humble servant mentioned in the first category, and they included 'dawran' within 'saylan' (flow) just as this humble servant did following them. The author of 'Sharh al-Maqasid' took five rulings in this category: four as they were in 'al-Mawaqif,' but he

kept softening and flow as two different types of rulings, and he treated them as two rulings of one category, and declared 'dawran' as a fifth ruling separate from 'saylan' i.e., melting.

Note: A witness to its re-melting is also what Al-Antaki said in 'Tadhkira' under the word 'Ma'dan' (mineral) in the classification of minerals: 'If the matter is preserved such that it melts, then the forgeable ones... etc.' Thus, in this statement, he placed melting under the chapter of preserving matter, which is the preservation of all parts, both moist and dry. 12 [From the author] May he be forgiven. (M) | It will be so when all dry and moist parts remain. 12 [From the author] May he be forgiven. (T)

---

1 Tadhkirah Uli al-Albab, letter Meem, Mustafa al-Babi Egypt 1/300

फतावा रज़विया - खण्ड 3

और 'दावरान' के दौरान पिघलना (ज़ोबान) जो उस पर निर्भर है, तो यही नरमी (लैन) और पिघलना मूल प्रभावों के साथ गिने जाने के योग्य हैं। और वे जो पहली श्रेणी में हैं, वे गौण और अनुवर्ती हैं, और अपनी अपनी स्थितियों के साथ जुड़े होने के कारण योग्यता में उनसे अलग कोई नियम पैदा नहीं करेंगे। उनकी नरमी और पिघलना गांठ का खुलना है; जो चीज़ 'नफाज़' (प्रवेश), 'तक्लुस' (कैलसीकरण) या 'तरमुद' (राख होना) के लिए उपयुक्त हो गई है, वह निश्चित रूप से उस नरमी या पिघलने के लिए भी उपयुक्त होगी जो उनके भीतर होती है। और जो चीज़ नरमी, पिघलने और घुलने के योग्य होगी, वह निश्चित रूप से इन तीनों में से किसी की योग्यता रखेगी, इसलिए उन्हें स्वतंत्र रूप से विचार करने का न तो कोई कारण है और न ही आवश्यकता। इस विनम्र सेवक (लेखक) ने अपने इस दावे में कि नरमी और पिघलने को अग्नि के प्रभावों में गिना जाएगा, इनसे यही दूसरी श्रेणी वाली नरमी और पिघलना मुराद लिया है, जिन्हें 'ताकुद' (जमने वाली) नरमी और पिघलना कहना चाहिए क्योंकि वे गांठ न खुलने के कारण पैदा हुए, न कि पहली श्रेणी वाले जो घुलने वाली नरमी और पिघलना थे जो गांठ खुलने से उत्पन्न हुए थे। विद्वानों के वचनों में इसकी पुष्टि मिली है, ईश्वर की स्तुति हो। जिस प्रकार ये प्रकार और नियम सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा से इस विनम्र सेवक के हृदय पर अवतरित हुए, उन्हें लिखने के बाद मैंने 'मक़ासिद' और 'मवाक़िफ़' और उनकी व्याख्याओं (शराह) का अध्ययन किया और अपने विवरण में 'दौरान' का उल्लेख उन्हीं से लेकर बढ़ाया। 'और श्रेष्ठता पूर्ववर्तियों के लिए है।' (त)। उनके संदर्भों से स्पष्ट हुआ कि क़ाज़ी अदद, अल्लामा तफ़ताज़ानी और अल्लामा सैय्यद शरीफ (ईश्वर उन पर कृपा करे), यद्यपि श्रेणियों के नियमों में वे इस सेवक के मार्ग से अलग चले, फिर भी वे दूसरी श्रेणी की नरमी और पिघलने पर ही रुके और यही हमारा उद्देश्य था। उन महानुभावों और इस सेवक के बयान में अंतर यह है कि इस सेवक ने पहली श्रेणी में तीन नियम रखे: नफाज़, तक्लुस, तरमुद। और दूसरी श्रेणी में चार: सऊद-ए-कुल (पूर्ण ऊर्ध्वपातन) जिसका अर्थ स्थिरता का अभाव है, और स़खुनत (कठोरता), लैन (नरमी) और ज़ोबान (पिघलना)। उन्होंने सर्वसम्मति से पहली श्रेणी में केवल 'तफ़रीक़' (पृथक्करण) रखा। और दूसरी श्रेणी में 'मवाक़िफ़' और 'शराह' ने वही चार लिए जो इस सेवक ने ज़िक्र किए, लेकिन सऊद-ए-कुल में 'नफाज़' को रखा जिसे इस सेवक ने पहली श्रेणी में उल्लेख किया था, और 'दौरान' को 'सैलान' (प्रवाह) में ही ले आए जैसे इस सेवक ने उनका अनुसरण करते हुए किया। 'शराह मक़ासिद' ने इस श्रेणी में पाँच नियम लिए: चार उसी तरह जो 'मवाक़िफ़' में थे, लेकिन उन्होंने 'लैन' और 'सैलान' को दो अलग प्रकार के नियमों में

रखा और उन्होंने दोनों को एक श्रेणी के दो नियम माना और 'दौरान' को 'सैलान' यानी 'ज़ोबान' से अलग पाँचवाँ नियम करार दिया।

नोट: इसके दोबारा पिघलने का प्रमाण वह भी है जो अंताकी ने 'तज़किरा' में 'मा'दन' (खनिज) शब्द के अंतर्गत खनिजों के विभाजन में कहा है: 'यदि पदार्थ को इस तरह सुरक्षित रखा जाए कि वह पिघल जाए, तो पीटने योग्य (मंतरक़ात) आदि...'। अतः इस इबारत में उन्होंने पिघलने को पदार्थ के संरक्षण के अध्याय से माना है, और पदार्थ का संरक्षण वह है जो सभी गीले और सूखे अंशों को शेष रखना है। 12 उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे (म) | यह तब होगा जब सभी सूखे और गीले हिस्से बाकी रहें। 12 उनकी ओर से, ईश्वर उन्हें क्षमा करे (त)

---

1 तज़किरात उलिल अल्बाब, अक्षर 'मीम', मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/300

اور دورانِ تابع ذوبان کہ اس پر متوقف ہے تو یہی لین و ذوبان آثارِ اصلیہ کے ساتھ شمار ہونے کے قابل اور وہ جو پہلی قسم میں ہیں ضمنی و تابع اور اپنی اپنی صورتوں کے لازم ملازم ہونے کے باعث صلاحیت میں ان سے جدا کوئی حکم نہ پیدا کریں گے ان کے لین و ذوبان انحلال گرہ ہیں جو شی نفاذ یا تکلس یا ترمد کی صالح ہو گئی ضرور اس لین یا ذوبان کی بھی صالح ہو گی جو ان کے ضمن میں ہوتا ہے اور جو شی لین و ذوبان و انحلال کی صالح ہو گی ضرور ان تین میں سے کسی کی صلاحیت رکھے گی تو انہیں مستقل لحاظ کرنے کی نہ کوئی وجہ نہ کہیں حاجت۔ فقیر نے اپنے اس دعوے کی کہ لین عہد و ذوبان آثارِ نار میں گنیں گے تو ان سے یہی لین و ذوبان قسم دوم مراد ہوں گے جن کو لین و ذوبان تعقد کہئے کہ گرہ نہ کھلنے میں پیدا ہوئے نہ قسم اول والے جو لین و ذوبان انحلال تھے کہ گرہ کھلنے میں حادث ہوئے کلامِ علماء میں تصدیق پائی وللہ الحمد، یہ اقسام و احکام جس طرح قلب فقیر پر فیضِ قدیر عز جلالہ سے فائز ہوئے لکھ کر مقاصد و مواقف اور ان کی شروح کا مطالعہ کیا اور اپنے بیان میں ذکرِ دوران انہیں سے لے کر بڑھایا والفضل للمتقدم (اور فضیلت اگلے کے لیے ہے۔ ت) ان کی مراجعت نے ظاہر کیا کہ قاضی عضد وعلامہ تفتازانی و علامہ سید شریف رحمہم اللہ تعالٰی اگرچہ احکام اقسام میں مسلک فقیر سے جدا چلے مگر لین و ذوبان قسم دوم ہی میں رکے اور یہی ہمیں مقصود تھا ان اکابر اور اس فقیر کے بیان میں فرق یہ ہے کہ فقیر نے قسم اول میں تین حکم رکھے : نفاذ، تکلس، ترمد۔ اور قسم دوم میں چار صعود کل بمعنی عدم قرار اور سخونت ولین و ذوبان انہوں نے بالاتفاق قسم اول میں صرف تفریق رکھی اور قسم دوم میں مواقف و شرح نے لیے یہی چار کہ فقیر نے ذکر کیے مگر صعود کل میں نفاذ رکھا جسے فقیر نے قسم اول میں ذکر کیا اور دوران کو سیلان ہی میں لائے جس طرح فقیر نے ان کے

اتباع سے کیا اور شرح مقاصد نے اس قسم میں پانچ حکم لیے چار اس طور پر کہ مواقف میں تھے مگر انہوں نے لین و سیلان کو دو مختلف قسموں کے احکام رکھا اور انہوں نے دونوں کو ایک قسم کے دو حکم لیا اور دوران کو سیلان یعنی ذوبان سے جدا پانچواں حکم قرار دیا۔

عہ: دوبارہ ذوبان اس کا شاہد وہ بھی ہے کہ انطاکی نے تذکرہ میں زیر لفظ معدن تقسیم معدنیات میں کہا: ان حفظت المادة بحیث یذوب فالمنطرقات 1 الخ فقد | اگر مادہ محفوظ رہے اس طرح کہ پگھل جائے تو منطرقات الخ اس جعل الذوبان من باب حفظ المادة وماھو الابقاء | عبارت میں پگھلنے کو حفظ مادہ کے باب سے قرار دیا اور یہ اس وقت الاجزاء جمیعاً رطبھا ویابسھا ۱۲ منہ غفرلہ۔ (م) | ہو گا جب سارے خشک و تر اجزاء باقی رہیں ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

---

1 تذکرة اولی الالباب حرف المیم مصطفی البابی مصر ۱ / ۳۰۰

Fatawa Rizvia Volume 3 In the explanation of 'Mawaqif' it is stated: (Heat has an ascending power within it), meaning a power that creates movement upwards because fire creates lightness and levity in its location, which necessitates going up. (So when it acts upon a body composed of parts differing in subtleness and density, the subtle parts of it are affected more quickly and hasten to ascend, starting with the most subtle, followed by the next most subtle, excluding the dense ones. This necessitates the separation of the differing parts. Then the parts ((2)), after their separation, are naturally gathered with what is of their kind, because their natures necessitate movement towards their natural places and joining with their universal principles (for homogeneity is the cause of joining), as is well-known among tongues. (This is when the union between the simple elements of that compound is not strong). But if the attachment is intense and the composition is strong, the fire will not separate them. If the subtle and dense parts are close in quantity (as in gold, heat grants it flow) and melting. Whenever the light part tries to ascend, the heavy part prevents it, so a mutual attraction occurs, resulting in a rotation. And if the subtle part is very dominant, it ascends.

Note: Qazi Baidawi also followed this in Tawali' al-Anwar, but he did not mention the fourth type, the 'Taliq' one, as absolute. 12 Minhu Ghafara Lahu (M). Page 606 of 756

फतावा रिज़विया खंड 3 'मवाकिफ़' की व्याख्या में उल्लेख है: (ऊष्मा में ऊपर चढ़ने वाली शक्ति होती है) यानी ऐसी शक्ति जो ऊपर की ओर गति उत्पन्न करती है क्योंकि आग अपने स्थान में हल्कापन और सुगमता पैदा करती है जो ऊपर जाने की आवश्यकता पैदा करती है। (तो जब यह किसी ऐसे पिंड पर कार्य करती है जो सूक्ष्मता और सघनता में भिन्न भागों से बना हो, तो उसके सूक्ष्म भाग अधिक शीघ्रता से प्रभावित होते हैं और ऊपर चढ़ने के लिए उतावले होते हैं, पहले सबसे सूक्ष्म, फिर उसके बाद वाला सूक्ष्म, सघन को छोड़कर। इससे भिन्न भागों का अलग होना अनिवार्य हो जाता है। फिर वे भाग ((2)), अपने अलगाव के बाद, स्वाभाविक रूप से अपनी तरह के भागों के साथ एकत्रित हो जाते हैं क्योंकि उनके स्वभाव अपने प्राकृतिक स्थानों की ओर गति करने और अपने सार्वभौमिक सिद्धांतों के साथ जुड़ने की आवश्यकता पैदा करते हैं (क्योंकि सजातीयता जुड़ने का कारण है), जैसा कि प्रसिद्ध है। (यह तब होता है जब उस यौगिक के सरल तत्वों के बीच मिलन तीव्र न हो)। लेकिन यदि जुड़ाव तीव्र हो और संरचना मजबूत हो, तो आग उन्हें अलग नहीं कर पाएगी। यदि सूक्ष्म और सघन भाग मात्रा में लगभग समान हों (जैसे सोने में, ऊष्मा उसे प्रवाह प्रदान करती है) और पिघलने की स्थिति होती है। जब भी हल्का भाग ऊपर चढ़ने का प्रयास करता है, भारी भाग उसे रोकता है, जिससे एक पारस्परिक खिंचाव उत्पन्न होता है, जिसके परिणामस्वरूप घूर्णन होता है। और यदि सूक्ष्म भाग बहुत अधिक प्रभावशाली हो, तो वह ऊपर चढ़ जाता है।

नोट: काजी बैज़ावी ने भी 'तवालि अल-अनवार' में इसी का पालन किया है, लेकिन उन्होंने चौथे प्रकार, 'तलीक' वाले का निरपेक्ष रूप से उल्लेख नहीं किया। 12 मिन्हु गफ़रा लहू (म)। पृष्ठ 606 / 756

فتاوی رضویہ جلد سوم مواقف عہ وشرح میں ہے: (الحرارة فيها قوة مصعدة) ای محركة الى فوق لانها تحدث فی محلها الخفة المقتضية لذلک (حرارت کے اندر صعود پیدا کرنے والی قوت پیدا ہوتی ہے) یعنی ایسی قوت جو اوپر کی جانب حرکت پیدا کرتی ہے اس لیے کہ آگ اپنے محل میں خفت و سبکساری پیدا کردیتی ہے جو اوپر جانے کی مقتضی ہوتی ہے (فاذا اثرت (۱) فی جسم مرکب من اجزاء مختلفة باللطافة والكثافة ينفعل اللطيف منه اسرع فيتبادر الى الصعود الالطف فالالطف دون الكثيف فيلزم منه تفريق المختلفات ثم الاجزاء ((۲)) بعد تفرقها تجمع بالطبع الى ما يجانسها لان طبائعها تقتضی الاحركة الى امكنتها الطبيعية ولانضمام الى اصولها الكلية (فان الجنسية علة الضم) كما اشتهر فی الالسنة (تو جب یہ کسی ایسے جسم میں اثر انداز ہو جو لطافت و کثافت میں اختلاف رکھنے والے اجزا سے مرکب ہو تو اس جسم کا لطیف جز زیادہ جلد اثر پذیر ہو کر صعود کی جانب بڑھے گا پہلے لطیف تو پھر جو لطیف تر ہو مگر کثیف میں یہ اثر پذیری نہ ہو گی جس کی وجہ سے ان مختلف اجزا کی تفریق اور جدائی لازم آئے گی۔ پھر یہ اجزا باہمی جدا کے بعد (طبعاً یکجا ہوں گے) لطیف اپنے ہم جنس کے ساتھ اس لیے کہ ان کی طبیعتیں ان کے مکان طبعی کی سمت حرکت اور ان کے اصول کلیہ سے انضمام اور ملاپ کی مقتضی ہوں گی (اس لیے کہ زبان زد ہے (هذا اذا لم يكن الالتئام بين بسائط ذلک المركب شديدا) اما اذا اشتد الالتحام وقوی التركيب فالنار لا تفرقها فان كانت الاجزاء اللطيفة والكثيفة متقاربه) فی الكمية (كما في الذهب افادته الحرارة سيلاناً) و ذوباناً (وكلما حاول الخفيف صعودا منعه الثقيل فحدث وتجاذب فيحدث دوران و ان غلب اللطيف جداً فيصعد (یہ اس وقت ہو سکے گا جب اس مرکب کے بسیط اجزا میں شدید اتصال و پیوستگی نہ ہو۔ اگر سخت اتصال ہو اور ترکیب مضبوط ہو تو آگ ان اجزا کو جدا نہ کر سکے گی۔ تو اگر لطیف و

کثیف اجزا مقدار میں قریب قریب ہوں جیسے سونے میں ہوتا ہے تو حرارت اس میں بہاؤ اور پگھلاؤ پیدا کردے گی

عہ: قاضی بیضاوی نے بھی طوالع الانوار میں اسی کا اتباع کیا مگر نوع (۳) چہارم طلق والی کو مطلق ذکر نہ کیا ۱۲ منہ غفر لہ (م) Page 606 of 756

Fatawa-e-Razviyya Volume 3

(Arabic side): "And the dense [component] is carried along due to its small quantity, like sal-ammoniac (Noshadar). For when heat affects it, it sublimes entirely. (Or) the subtle [component] does not prevail; rather, the dense one prevails, but is not extremely dominant. In this case, heat provides it with (softening, as in iron). If the dense one is extremely dominant, it is not affected by heat, so it neither melts nor softens (like talc/mica). For its softening, it requires stratagems employed by the masters of elixirs, by seeking assistance from what increases its combustion, such as sulfur and arsenic. Therefore, it is said: 'Whoever dissolves talc becomes independent of creation.'" - Summarized.

(Urdu side): "And whenever the light part seeks to ascend, the heavy part will prevent it, giving rise to attraction and mutual tension, which will manifest the quality of rotation (turning and becoming spherical). And if the subtle part is more dominant, ascent will occur, and it will take the dense part along with it due to its small quantity (as happens in sal-ammoniac), because when fire affects it, it entirely goes upward. (Or if the subtle is not dominant) but the dense is dominant though not excessively, then heat will create softness in it, as occurs in iron. And if the dense is extremely dominant, it will not be affected by heat at all, it will neither melt nor soften (like 'Talq', i.e., mica), so that to soften it, special measures must be taken which those making elixirs employ, using things that make it more flammable, like sulfur and arsenic. That's why it's said: 'Whoever unties the knot of Talq (mica) becomes independent of creation.' (T)"

In 'Sharh Maqasid': (Arabic): "The primary property of heat is the production [of lightness]." (Urdu): "The first characteristic of heat is that it [produces] lightness."

Note: Likewise, it is in 'Sharh Tajreed'. They followed the Allama word for word but added 'Noora' (lime) as an example alongside 'Talq' (mica). (Arabic snippet): "Where he said: 'And if it is extremely dominant, as in talc and lime, only heat is produced, and for its softening, assistance from other processes is needed, etc.'" (Urdu translation): "They said: 'And if it is very dominant, as in Talq and Noora (lime), then only heat can be produced, and other processes will be needed to bring softness to it, etc.' (T)"

I say: (1) This addition is incorrect. Softness definitely comes into 'Noora', as the purpose of 'Lakheen' (calcination) is this, as mentioned before. 12 (m) May he be forgiven.

1. Sharh al-Mawaqif, the first objective regarding heat, Al-Sa'adah Press, Egypt, 1/171 to 172. Page 607 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3

(अरबी पक्ष): "और सघन [घटक] अपनी कम मात्रा के कारण साथ चला जाता है, जैसे नौशादर। क्योंकि जब गर्मी इस पर असर करती है, तो यह पूरी तरह से ऊर्ध्वपातित (sublime) हो जाता है। (अथवा) सूक्ष्म [घटक] प्रबल नहीं होता; बल्कि सघन प्रबल होता है, लेकिन बहुत अधिक प्रभावी नहीं होता। इस स्थिति में गर्मी इसे (नरमी प्रदान करती है, जैसे लोहे में)। यदि सघन अत्यंत प्रभावी हो, तो वह गर्मी से प्रभावित नहीं होता, इसलिए न तो पिघलता है और न ही नरम होता है (जैसे तालक/अभ्रक)। इसे नरम करने के लिए उन युक्तियों की आवश्यकता होती है जिन्हें कीमियागर (elixir masters) अपनाते हैं, ऐसी चीज़ों की मदद लेकर जो इसके दहन को बढ़ा दें, जैसे गंधक (sulfur) और हड़ताल (arsenic)। इसीलिए कहा गया है: 'जिसने तालक को घोल लिया, वह सृष्टि से बेनयाज़ हो गया।'" - सारांश।

(उर्दू पक्ष): "और जब भी हल्का हिस्सा ऊपर चढ़ना चाहेगा, भारी हिस्सा उसे रोक देगा, जिससे आकर्षण और आपसी तनाव पैदा होगा, जिससे घूर्णन (घूमने और गोल होने) का गुण प्रकट होगा। और यदि सूक्ष्म हिस्सा अधिक प्रबल होगा, तो ऊपर चढ़ना पाया जाएगा और सघन हिस्से को भी उसकी कम मात्रा के कारण अपने साथ ले जाएगा (जैसा कि नौशादर में होता है), क्योंकि जब इसमें आग असर करती है, तो वह पूरी तरह से ऊपर चला जाता है। (या सूक्ष्म प्रबल नहीं होगा) बल्कि सघन प्रबल होगा लेकिन बहुत अधिक प्रबल नहीं होगा, तो गर्मी उसमें नरमी पैदा कर देगी जैसा कि लोहे में होता है। और यदि सघन बहुत अधिक प्रबल हो, तो गर्मी से प्रभावित ही नहीं होगा, न पिघलेगा न नरम होगा (जैसे 'तल्क' यानी अभ्रक), कि इसे नरम करने के लिए कुछ विशेष उपाय करने पड़ते हैं जो अक्सीर बनाने वाले अमल में लाते हैं, कि ऐसी चीज़ की मदद लेते हैं जो उसे अधिक प्रज्वलित कर दे जैसे गंधक और हरताल की मदद लेते हैं। इसीलिए कहा जाता है: जो तल्क (अभ्रक) की गांठ खोल ले, वह मखलूक (सृष्टि) से बेनयाज़ हो जाता है। (त)"

'शरह मकासिद' में है: (अरबी): "गर्मी की प्राथमिक विशेषता [हल्कापन] पैदा करना है।" (उर्दू): "गर्मी की पहली खासियत यह है कि वह खफ़्फ़त (हल्कापन) [पैदा करती है]।"

नोट: इसी तरह 'शरह तजरीद' में है। उन्होंने शब्द-दर-शब्द अल्लामा का अनुसरण किया लेकिन 'तल्क' के साथ एक उदाहरण 'नूरा' (चूना) और बढ़ाया। (अरबी अंश): "जहाँ उन्होंने कहा: 'और यदि यह बहुत अधिक प्रबल हो, जैसा कि तल्क और नूरा में है, तो केवल गर्मी उत्पन्न होगी और इसकी

कोमलता के लिए अन्य प्रक्रियाओं की सहायता की आवश्यकता होगी, आदि।'" (उर्दू): "उन्होंने कहा: 'और अगर बहुत प्रबल हो जैसे तल्क और नूरा में तो केवल गर्मी पैदा हो सकेगी और इसमें नरमी लाने के लिए दूसरे अमलों की ज़रूरत होगी आदि।' (त)"

मैं कहता हूँ: (1) यह इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) गलत है, नूरा में नरमी ज़रूर आ जाती है क्योंकि 'लखीन' (भस्म बनाना) का उद्देश्य ही यही है, जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है। 12 (म) ईश्वर उन्हें क्षमा करे।

---

1. शरह अल-मवाकिफ़, गर्मी से संबंधित पहला उद्देश्य, अल-सादा प्रेस, मिस्र, 1/171 से 172।

ویستصحب الکثیف لقلته کالنوشادر) فانه اذا اثرت فیه الحرارة صعد بالکلیة (اولا) یغلب اللطیف بل الکثیف لکن لایکون غالباً جداً (فتفیده) الحرارة (تلییناً کما في الحدید وان غلب الکثیف جداً لم یتأثر) بالحرارة فلایذوب ولایلین (کالطلق) فانه یحتاج في تلیینه الی حیل یتولاها اصحاب الاکسیر من الاستعانة بما یزیده اشتعالا کالکبریت والزرنیخ ولذلك قیل من حل الطلق استغنی عن الخلق - ملخصاً

اور جب بھی ہلکا جز صعود چاہے گا بھاری جز اسے روک دے گا جس سے تجاذب اور باہمی کشاکش پیدا ہوگی تو دوران (چرخ ہونے اور گول ہونے) کی صفت رونما ہوگی۔ اور اگر لطیف جز زیادہ غالب ہوگا تو صعود پایا جائے گا اور کثیف کو بھی اس کے قلیل ہونے کی وجہ سے اپنے ساتھ لے جائے گا جیسے نوشادر میں ہوتا) اس لیے کہ اس میں جب آگ اثر کرتی ہے تو پورا ہی اوپر چلا جاتا ہے (یا لطیف غالب نہ ہوگا) بلکہ کثیف غالب ہوگا لیکن بہت زیادہ غالب نہ ہوگا تو حرارت اس میں نرمی پیدا کر دے گی جیسا کہ لوہے میں ہوتا ہے۔ اور اگر کثیف بہت غالب ہو تو حرارت سے متاثر ہی نہ ہوگا نہ پگھلے گا نہ نرم ہوگا (جیسے طلق یعنی ابرک) کہ اسے نرم کرنے کے لیے کچھ خاص تدبیریں کرنی پڑتی ہیں جو اکسیر بنانے والے عمل میں لاتے ہیں کہ ایسی چیز کی مدد لیتے ہیں جو اسے زیادہ شعلہ زن کردے جیسے کبریت اور زرنیخ کی مدد لیتے ہیں۔ اسی لیے کہا جاتا ہے: جو طلق (ابرک) کی گرہ کھول لے وہ مخلوق سے بے نیاز ہوجاتا ہے۔ (ت)

شرح مقاصد عہ میں ہے: الخاصة الاولیة للحرارة احداث حرارت کی پہلی خاصیت یہ ہے کہ وہ خفت

عه: بعینہ اسی طرح شرح تجرید میں ہے انہوں نے حرف بحرف علامہ کا اتباع کیا مگر اطلق کے ساتھ ایک مثال نورہ اور بڑھائی۔ حیث قال وانکان غالباً جداً کما في الطلق و النورة انہوں نے کہا اور اگر بہت غالب جیسے طلق اور نورہ میں تو صرف حدث مجرد سخونة واحتیج في تلیینه الی الاستعانة گرمی پیدا ہو سکے گی اور اس میں نرمی لانے کے لیے دوسرے عملوں باعمال الخ کی ضرورت ہوگی الخ (ت)

اقول: (۱) یہ اضافہ غلط ہے نورہ میں ضرور لین آجاتا ہے کہ لکھیں کی غرض ہی یہ ہے کمامر ۱۲منہ غفرلہ (م)

---

1 شرح المواقف المقصد الاول فی الحرارة المطبعة السعادة مصر ۱/۱۷۱ تا ۱۷۲ Page 607 of 756

Fatawa Rizvia - Volume 3

[Arabic Text]: Lightness and the upward inclination, then based on the difference of the recipients, various effects such as gathering, separation, evaporation, etc., result from that. Its verification is that if the body affected by heat is simple, its quality will change first, then it will lead to a change in substance. If it is a compound, and the fusion of its simple parts is not intense—and it is not hidden that what is more subtle is more prone to ascent—then the separation of different parts becomes necessary, followed by the joining of each to its like according to nature, which is the meaning of gathering similar things. If it is intense, and if the subtle and the dense are close to moderation, a circular motion occurs from strong heat because whenever the subtle tends towards ascent, the dense pulls it towards descent. Otherwise, if the subtle is dominant, it ascends entirely like sal ammoniac. If the dense is dominant, and if it is not very dominant, liquefaction occurs as in lead, or softening as in iron. If it is extremely dominant as in talc, mere stillness occurs, and for its softening, one needs the help of other processes. 1—Summarized.

[Urdu Translation]: ...and it creates an upward inclination, then depending on the difference of bodies that accept the effect, various consequences such as collection, separation, evaporation, etc., follow. The research on this is that if the body affected by heat is simple, first its quality will change, then it will lead to a change in its essence. And if it is a compound, provided the mutual connection of its simple components is not intense—and it is also not hidden that the more subtle something is, the more it accepts ascent—then the separation and detachment of different parts will become necessary, and following that, based on the requirement of nature, each will merge with its like. This is the meaning of the collection of similar things and the unification of like forms. And if the connection is intense, and the subtle and dense are close to moderation, then strong heat will produce a circular motion (spinning and turning motion) because whenever the subtle tends toward rising, the dense will pull it toward the bottom. Otherwise, if the subtle is dominant, it will attain complete ascent and go up, like sal ammoniac. And if the dense is dominant, then if it is not extremely dominant, fluidity will be produced as happens in lead, or softness will be produced as occurs in iron. And if it is extremely dominant as in talc (mica), then only heat can be produced, and to bring softness to it, help from other processes will be needed. (T)

1. Sharh al-Maqasid, the First Topic etc. (Discussion on Sensible Qualities), Dar al-Ma'arif al-Uthmaniyya, Lahore 1/202. Page 608 of 756

फतावा रज्विया - भाग 3

[अरबी पाठ]: हल्कापन और ऊपर की ओर झुकाव, फिर प्राप्तकर्ताओं के अंतर के आधार पर विभिन्न प्रभाव जैसे एकत्रीकरण, पृथक्करण, वाष्पीकरण आदि इससे उत्पन्न होते हैं। इसकी वास्तविकता यह है कि ऊष्मा से प्रभावित होने वाला पिंड यदि सरल है, तो पहले उसके गुण में परिवर्तन होगा, फिर यह उसे पदार्थ के परिवर्तन तक ले जाएगा। और यदि यह एक यौगिक है, और इसके सरल भागों का जुड़ाव तीव्र नहीं है—और यह छिपा नहीं है कि जो जितना अधिक सूक्ष्म है, वह उतना ही अधिक ऊपर की ओर बढ़ने के लिए प्रवृत्त है—तो विभिन्न भागों का पृथक्करण और अलगाव आवश्यक हो जाएगा, और इसके बाद प्रकृति की आवश्यकता के अनुसार प्रत्येक का अपने समान के साथ जुड़ाव भी होगा। समान चीजों के एकत्रीकरण और स्वरूपों की एकता का यही अर्थ है। और यदि जुड़ाव तीव्र हो, तो यदि सूक्ष्म और सघन संयम के करीब हों, तो तेज गर्मी से वृत्ताकार गति उत्पन्न होगी, क्योंकि जब भी सूक्ष्म ऊपर चढ़ने की ओर झुकेगा, सघन उसे नीचे की ओर खींचेगा। अन्यथा, यदि सूक्ष्म प्रभावी हो, तो वह पूरी तरह से ऊपर की ओर बढ़ जाएगा जैसे नौसादर। और यदि सघन प्रभावी हो, और यदि बहुत अधिक प्रभावी न हो, तो बहाव उत्पन्न होगा जैसे सीसे में होता है या कोमलता उत्पन्न होगी जैसे लोहे में दिखाई देती है। और यदि बहुत अधिक प्रभावी हो जैसे अभ्रक में, तो केवल गर्मी उत्पन्न हो सकेगी और उसमें कोमलता लाने के लिए अन्य प्रक्रियाओं से सहायता लेने की आवश्यकता होगी। 1—संक्षिप्त।

[उर्दू अनुवाद]: ...और ऊपर ले जाने वाला मैदान पैदा करती है फिर असर क़ुबूल करने वाले अजसाम के इख़्तिलाफ के लिहाज़ से जमा, तफ़रीक़, तबखीर वग़ैरा मुख़्तलिफ़ आसार उस पर मुतरत्तब होते हैं। इसकी तहक़ीक़ यह है कि हरारत से मुतास्सिर होने वाला जिस्म अगर बसीत हो तो पहले इसकी कैफ़ियत में तग़य्युर होगा फिर यह इसे जोहर की तब्दीली तक पहुँचाएगा। और अगर मुरक्कब हो तो अगर इसके बसीत अज्ज़ा का बाहमी इत्तिसाल शदीद न हो। और यह भी मख़फ़ी नहीं कि जो जितना ज़्यादा लतीफ़ होता है उतना ही ज़्यादा वह सुऊद क़ुबूल करता है। तो मुख़्तलिफ़ अज्ज़ा की तफ़रीक़ और जुदाई लाज़िम आएगी और इसके पीछे हर एक का बिलिहाज़-ए-इक्तेज़ा-ए-तबीयत अपने हम-शक्ल के साथ इंजिमाम भी होगा। जमा मुतशाकेलात और हम-शक्लों की यकजाई का यही माना है। और अगर इत्तिसाल शदीद हो तो अगर लतीफ़-ओ-कसीफ़ क़रीब-ब-एतेदाल हों तो क़वी हरारत से हरकत-ए-दौरिया (गर्दिश-ओ-चर्ख़ वाली हरकत) पैदा होगी इसलिए कि जब भी लतीफ़ ऊपर चढ़ने की तरफ़ माइल होगा कसीफ़ इसे पस्ती की तरफ़ खींचेगा। वरना अगर ग़ालिब

लतीफ़ हो तो बिलकुल्लिया सुऊद पा जाएगा और ऊपर चला जाएगा जैसे नौसादर। और अगर ग़ालिब कसीफ़ हो तो अगर बहुत ग़ालिब न हो तो बहाव पैदा होगा जैसे रसास में होता है या नरमी पैदा होगी जैसे लोहे में रूनुमा होती है। और अगर बहुत ग़ालिब हो जैसे तलक़ (अबरक) में, तो महज़ गर्मी पैदा हो सकेगी और इसमें नरमी लाने के लिए दूसरे अमलों से मदद लेने की ज़रूरत होगी। (त)

---

1. शर्ह अल-मक़ासिद, अल-मबहत अल-अवल वग़ैरा (बहस-ए-कैफ़ियात-ए-महसूसा), दार अल-माआरिफ़ अल-उस्मानिया, लाहौर 1/202। पेज 608 ऑफ 756

فتاویٰ رضویہ - جلد سوم

[عربی متن]: الخفة والميل المصعد ثم يترتب على ذلك باختلاف القوابل آثار مختلفة من الجمع والتفريق والتبخير وغيرذلك وتحقيقه ان مايتأثر عن الحرارة ان كان بسيطا استحال اولافى الكيف ثم افضى به ذلك الى انقلاب الجوهر، وان كان مركبا فان لم يشتد التحام بسائطه ولاخفاء فى ان الا لطف اقبل للصعود لزم تفريق الاجزاء المختلفة وتبعه انضمام كل الى مايشاكله بمقتضى الطبيعة وهو معنى جمع المتشاكلات وان اشتد فان كان اللطيف والكثيف قريبين من الاعتدال حدثت من الحرارة القوية حركة دورية لانه كلما مال اللطيف الى التصعد جذبه الكثيف الى الانحدار والافان كان الغالب هو اللطيف يصعد بالكلية كالنوشادروان كان هو الكثيف فان لم يكن غالباً جداحدث تسييل كما فى الرصاص او تليين كما فى الحديد وان كان غالباً جد كما فى الطلق حدث مجرد سكونة واحتيج فى تليينه الى الاستعانة بأعمال أخر 1۔ ملخصاً

[اردو ترجمہ]: اور اوپر لے جانے والا میدان پیدا کرتی ہے پھر اثر قبول کرنے والے اجسام کے اختلاف کے لحاظ سے جمع، تفریق، تبخیر وغیرہ مختلف آثار اس پر مترتب ہوتے ہیں۔ اس کی تحقیق یہ ہے کہ حرارت سے متاثر ہونے والا جسم اگر بسیط ہو تو پہلے اس کی کیفیت میں تغیر ہوگا پھر یہ اسے جوہر کی تبدیلی تک پہنچائے گا۔ اور اگر مرکب ہو تو اگر اس کے بسیط اجزا کا باہمی اتصال شدید نہ ہو۔ اور یہ بھی مخفی نہیں کہ جو جتنا زیادہ لطیف ہوتا ہے اتنا ہی زیادہ وہ صعود قبول کرتا ہے۔ تو مختلف اجزا کی تفریق اور جدائی لازم آئے گی اور اس کے پیچھے ہر ایک کا بلحاظِ اقتضائے طبیعت اپنے ہم شکل کے ساتھ انضمام بھی ہوگا۔ جمع متشاکلات اور ہم شکلوں کی یکجائی کا یہی معنی ہے۔ اور اگر اتصال شدید ہو تو اگر لطیف و کثیف قریب بہ اعتدال ہوں تو قوی حرارت سے حرکت دوریہ (گردش و چرخ والی حرکت) پیدا ہوگی اس لیے کہ جب بھی

لطیف اوپر چڑھنے کی طرف مائل ہوگا کثیف اسے پستی کی طرف کھینچے گا۔ ورنہ اگر غالب لطیف ہو تو بالکلیہ صعود پا جائے گا اور اوپر چلا جائے گا جیسے نوشادر۔ اور اگر غالب کثیف ہو تو اگر بہت غالب نہ ہو تو بہاؤ پیدا ہوگا جیسے رصاص میں ہوتا ہے یا نرمی پیدا ہوگی جیسے لوہے میں رونما ہوتی ہے۔ اور اگر بہت غالب ہو جیسے طلق (ابرک) میں۔ تو محض گرمی پیدا ہو سکے گی اور اس میں نرمی لانے کے لیے دوسرے عملوں سے مدد لینے کی ضرورت ہوگی۔ (ت)

---

1 شرح المقاصد المبحث الاول الخ (بحث کیفیات محسوسہ) دار المعارف العثمانیہ لاہور ۱ / ۲۰۲

Fatawa Razvia Volume Three

Here, two differences occurred between both books. They categorized the second type, i.e., 'Shadeed-ul-Istihkam' (Extreme Solidity), into four kinds: (1) Moderate (Mo'tadil): In which subtle and dense parts are approximately equal. (2) Predominantly Subtle (Lateef bil-Ghalba): In which subtle parts are highly dominant. (3) Nearly Dense (Kaseef Mutaqarib): In which dense parts are dominant but not intensely. (4) Exceedingly Dense (Kaseef Mutafahish): In which dense parts are intensely dominant. Up to here they agree, but 'Mawaqif' set the ruling of 'Sailan' (fluidity) for the Moderate type and made 'Dawran' (circulation) subordinate to it, and for Nearly Dense, set the ruling only as 'Leen' (softness). 'Sharh-e-Maqasid' took only 'Dawran' for the Moderate type, and for Nearly Dense, used 'Sailan' in some places and 'Leen' in others.

I say: The truth is that it is not 'Dawran', but a state like 'Sailan' as stated in 'Mawaqif'. And 'Sailan' (1) is by no means specific to the first type; it is certainly present in the third as well, as 'Sharh-e-Maqasid' said. And if 'Leen' is taken in the sense of potential for softness, then it is general to both. If it is in the sense that only fire without artifice cannot act more upon it, then indeed it is specific to the third type as both did (2), rather even to some of its individuals as 'Sharh-e-Maqasid' said. And five (Note) differences became apparent to this humble one from these statements of the great scholars: (1) This humble one set three (3) rulings for the first type, i.e., 'Daeef-ul-Tarkeeb' (Weak Composition): Nafadh (Penetration), Takallus (Calcination), and Tarmid (Ashing). They took only one ruling: Tafreeq (Separation). This is no difference as the three rulings are forms of that same 'Tafreeq'. (2) This humble one placed 'Nafadh' in the first type, and indeed it is in it (4), as Sulphur (Kibreet) testifies, and the weak composition of Sulphur is evident from those very books. In 'Sharh-e-Mawaqif', from 'Mabahith-e-Mashriqiyyah' of Imam Razi, it is stated:

Mineral bodies are either strong in composition and...	**Mineral bodies are either strong in composition. And at that time**
...either malleable due to extreme moisture like mercury...	...either malleable. These are the seven bodies. Or they are not malleable...
...or due to extreme dryness like ruby and its likes. Or weak...	...due to extreme moisture like mercury or due to extreme dryness...
...in composition, then either they dissolve with moisture, which is...	...like ruby and its likes. Or they are weak in composition...

Mineral bodies are either strong in composition and…	Mineral bodies are either strong in composition. And at that time
…salt-like substance like vitriol.	…then either due to moisture…

Note: Five were enumerated; the first is not really a difference, so four remained. Among them, the fourth became two, thus making it five again. 12 [dated], May God forgive him. (M)

फ़तावा रज़विया खंड तीन

यहाँ दोनों किताबों के बीच दो मतभेद हुए। उन्होंने दूसरी श्रेणी, यानी 'शदीद-उल-इस्तेहकाम' (अत्यधिक सुदृढ़ता) को चार प्रकारों में बाँटा है: (1) मोतदिल (मध्यम): जिसमें सूक्ष्म और स्थूल भाग लगभग बराबर हों। (2) लतीफ़ बिल-ग़लबा (अत्यधिक सूक्ष्म): जिसमें सूक्ष्म भाग बहुत हावी हों। (3) कसीफ़ मुतकारिब (निकट स्थूल): जिसमें स्थूल भाग हावी हों लेकिन तीव्रता से नहीं। (4) कसीफ़ मुतफ़ाहिश (अत्यधिक स्थूल): जिसमें स्थूल भाग अत्यधिक हावी हों। यहाँ तक वे सहमत हैं, लेकिन 'मवाकिफ़' ने मध्यम के लिए 'सैलान' (प्रवाह) का नियम रखा और 'दौरान' (चक्रण) को उसी के अधीन किया, और निकट स्थूल के लिए केवल 'लीन' (कोमलता) का नियम रखा। 'शर्ह-ए-मकासिद' ने मध्यम के लिए केवल 'दौरान' लिया और निकट स्थूल के लिए कहीं 'सैलान' और कहीं 'लीन' का उपयोग किया।

मैं कहता हूँ: सही यह है कि वह 'दौरान' नहीं है बल्कि 'सैलान' जैसी एक स्थिति है जैसा कि 'मवाकिफ़' ने किया। और 'सैलान' (1) किसी भी तरह से केवल पहली श्रेणी के लिए विशेष नहीं है; यह निश्चित रूप से तीसरी में भी है जैसा कि 'शर्ह-ए-मकासिद' ने कहा। और यदि 'लीन' का अर्थ कोमलता की क्षमता लिया जाए तो यह दोनों के लिए सामान्य है, और यदि इस अर्थ में हो कि केवल आग बिना किसी युक्ति के उस पर अधिक प्रभाव न डाल सके, तो निस्संदेह यह केवल तीसरी श्रेणी के साथ विशेष है जैसा कि दोनों ने किया (2), बल्कि इसके कुछ अंशों के साथ जैसा कि 'शर्ह-ए-मकासिद' ने कहा। और पाँच (टिप्पणी) अंतर मुझ तुच्छ व्यक्ति को बड़े विद्वानों के इन बयानों से प्राप्त हुए: (1) मुझ तुच्छ ने पहली श्रेणी यानी 'ज़ईफ़-उल-तरकीब' (कमज़ोर संरचना) के लिए तीन (3) नियम रखे: नफ़ाज़ (प्रवेश), तकल्लुस (भस्मीकरण), और तरमीद (राख बनाना)। उन्होंने केवल एक नियम लिया: तफ़रीक (विभाजन)। यह कोई मतभेद नहीं है क्योंकि तीनों नियम उसी तफ़रीक के रूप हैं। (2) मुझ तुच्छ ने 'नफ़ाज़' को पहली श्रेणी में रखा और निश्चित रूप से यह इसमें (4) है, जैसा कि गंधक (किबरीत) गवाह है, और गंधक की संरचना का कमज़ोर होना उन्हीं किताबों से स्पष्ट है। 'शर्ह-ए-मवाकिफ़' में इमाम राजी की 'मबाहीथ-ए-मशरिक़िया' से उद्धृत है:

खनिज पिंड या तो संरचना में मजबूत होते हैं और...	**खनिज पिंड या तो संरचना में मजबूत होते हैं। और उस समय**
या तो वे तन्य होते हैं, या तो अत्यधिक नमी के कारण जैसे पारा...	या तो वे तन्य होते हैं। ये सात पिंड हैं। या वे तन्य नहीं होते।
या अत्यधिक शुष्कता के कारण जैसे याक़ूत और उसके समान। या कमज़ोर...	अत्यधिक नमी के कारण जैसे पारा या अत्यधिक शुष्कता...
संरचना वाले होते हैं, फिर या तो नमी के कारण वे घुल जाते हैं, जो कि...	के कारण जैसे याक़ूत और उसके समान। या संरचना में कमज़ोर...
नमक जैसे तत्व होते हैं जैसे तूतिया।	होते हैं फिर या तो नमी के कारण...

टिप्पणी: पाँच बताए गए हैं, उनमें से पहला वास्तव में मतभेद नहीं है, तो चार रह गए। उनमें से चौथा दो होकर फिर पाँच हो गया। 12 [दिनांक], ईश्वर उसे क्षमा करे। (म)

पृष्ठ 609 का 756

یہاں دو اختلاف باہم دونوں کتابوں میں ہوئے انہوں نے قسم دوم یعنی شدید الاستحکام کی چار نوعیں کیں: (۱) معتدل جس میں اجزائے لطیفہ و کثیفہ تقریباً برابر ہوں۔ (۲) لطیف بالغلبہ جس میں اجزائے لطیفہ بہت غالب ہوں۔ (۳) کثیف متقارب جس میں اجزائے کثیفہ غالب ہوں مگر نہ بشدت۔ (۴) کثیف متفاحش جس میں کثیفہ بشدت غالب ہوں یہاں تک متفق ہیں مگر موافقت نے معتدل کا حکم سیلان رکھا اور دوران کو اسی کا تابع کیا اور کثیف متقارب کا حکم صرف لین رکھا اور شرح مقاصد نے معتدل کا حکم فقط دوران لیا اور کثیف متقارب میں کہیں سیلان کہیں لین کیا۔

اقول: صحیح یہ ہے کہ دوران نہیں مگر ایک حالت سیلان جیسا کہ مواقف نے کیا اور سیلان ۱ نوع اول سے ہر گز خاص نہیں سوم میں بھی یقیناً ہے جیسا شرح مقاصد نے کہا اور لین اگر بمعنی صلاحیت نرمی لیا جائے تو دونوں کو عام اور اگر بایں معنی ہو کہ صرف نار بلا حیلہ اس سے زیادہ عمل نہ کرے تو بے شک صرف نوع سوم سے خاص جیسا دونوں نے کیا ۲ بلکہ اس کے بھی بعض افراد سے جیسا شرح مقاصد نے کہا اور پانچ عہ اختلاف بیان فقیر کو ان بیانات اکابر سے ہوئے: (۱) فقیر نے قسم اول یعنی ضعیف التر کیب میں تین ۳ حکم رکھے نفاذ، تکلس، ترمد۔ انہوں نے صرف ایک حکم لیا تفریق۔ یہ کوئی اختلاف نہیں کہ تینوں حکم اسی تفریق کی شکلیں ہیں۔ (۲) فقیر نے نفاذ قسم اول میں رکھا اور بیشک اس میں ۴ ہے جس پر کبریت شاہد اور کبریت کا ضعیف التر کیب ہونا خود انہیں کتب سے ظاہر۔ شرح مواقف میں مباحث مشرقیہ امام رازی سے ہے:

الاجسام المعدنیۃ اماقویۃ الترکیب وح معدنی اجسام یا تو قوی الترکیب ہوتے ہیں۔ اور اس وقت

اما ان یکون منطرق اما لغایۃ رطوبتہ کالزیبق

یا تو منطرق ہوتے ہیں۔ یہ اجسامِ سبعہ ہیں۔ یا منطرق نہیں

او لغایۃ یبوستہ کالیا قوت ونظائرہ۔ واما ضعیفۃ

ہوتے۔ غایت رطوبت کی وجہ سے جیسے پارہ یا غایت یبوست

الترکیب فاما ان تنحل بالرطوبۃ وھو الذی یکون ملحی الجوہر کالزاج

کی وجہ سے جیسے یاقوت اور اس کے نظائر۔ یا ضعیف الترکیب

ہوتے ہیں پھر یا تو رطوبت کی

عہ: پانچ سنائے ہیں ان میں پہلا حقیقتاً اختلاف نہیں چار رہے ان میں چوتھا دو ہو کر پھر پانچ ہو گئے ۱۲ منہ غفرلہ (م)

Fatawa Razawiyya, Volume 3

Arabic: **And ammonium chloride and alum are of those that do not dissolve, which are of an oily composition like sulfur and arsenic.**

Urdu: ...due to which they dissolve. These are those that have a salty essence like vitriol, ammonium chloride, and alum. Or they do not dissolve. These are those that have an oily (greasy) composition like sulfur and arsenic. (T)

In Sharh al-Maqasid, it is stated:

Arabic: **The melting, flammable body is that which contains oily moisture with dryness, whose temperament is not stable, and therefore fire has the power to separate its moist part from its dry part, and this is flammability, such as sulfur and arsenic.**

Urdu: A flammable melting body is one that has oily moisture along with dryness and whose temperament is not stable; that is why fire has the power to separate its moist part from its dry part, and this is flammability. Its example is sulfur and arsenic. (T)

They placed total sublimation in the second category, and that was inherently correct; it is the same as what I expressed as 'lack of stability on fire' and exemplified with mercury. However, these great scholars exemplified it with ammonium chloride, from which it is clear that they also include the form of penetration in it, as this is what happens in ammonium chloride.

I say: Firstly, it is contrary to the stability of composition because if the knot does not untie, the body will not achieve penetration.

Secondly: Ammonium chloride is by no means of a strong composition; then including it in this category is a clear error. Its weak composition was just mentioned from Sharh al-Mawaqif quoting Imam Razi. Experts of the art explicitly state that it is among the four minerals with incomplete forms, which are vitriols, salts, ammonium chlorides, and alums. In Tadhkirah Dawud under the entry for 'shab' (alum):

Arabic: **Researchers said regarding those generated things whose forms are not complete among minerals, they are four things: alums, salts, ammonium chlorides, and vitriols.**

Urdu: The saying of the researchers is that those generated things whose forms were not complete among minerals are four things: alum, salt, ammonium chloride, vitriol. (T)

Note: Isfahani gave an example of the word in Sharh Tawali' al-Anwar, which also points towards this penetration. 12 Minhu Ghafir-lahu (M).

1. Sharh al-Mawaqif, Section Two, regarding compounds without souls, Matba'at as-Sa'adah, Egypt, 7/173.
2. Sharh al-Maqasid, First Topic, Mineral, Dar al-Ma'arif an-Nu'maniyyah, Lahore, 1/372.
3. Tadhkirah Dawud al-Antaki (Letter Shin), under Alum, Mustafa al-Babi, Egypt, 1/209.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

अरबी: **और नौशादर और फिटकरी वे हैं जो नहीं घुलते, जो गंधक और हरताल की तरह तैलीय संरचना वाले होते हैं।**

उर्दू: ...वजह से घुल जाते हैं। ये वे हैं जो नमक वाला जोहर रखते हैं जैसे ज़ाज, नौशादर और फिटकरी। या घुलते नहीं। ये वे हैं जो दह्नी (तैलीय) तरकीब रखते हैं जैसे गंधक और हरताल। (त)

शर्ह-उल-मक़ासिद में है:

अरबी: **ज्वलनशील पिघलने वाला शरीर वह है जिसमें सूखेपन के साथ तैलीय नमी होती है, जिसका स्वभाव स्थिर नहीं होता है, और इसलिए आग में उसके नम हिस्से को सूखे हिस्से से अलग करने की शक्ति होती है, और यही ज्वलनशीलता है, जैसे गंधक और हरताल।**

उर्दू: शोला ज़न पिघलने वाला वह जिस्म होता है जिसमें यबूसत (सूखेपन) के साथ दह्नी रुतूबत (तैलीय नमी) हो, मुस्तहकम-उल-मिज़ाज न हो, इसीलिए आग उसके रतब (नम) को याबिस (सूखे) से जुदा करने की कुव्वत रखती है और यही इश्तिआल है। इसकी मिसाल गंधक और हरताल है। (त)

उन्होंने दूसरी श्रेणी में कुल ऊर्ध्वपातन को रखा और वह स्वभावतः सही था, और वह वही है जिसे फकीर के बयान में 'आग पर अस्थिरता' कहा गया और पारे से उदाहरण दिया गया। लेकिन इन बड़ों ने नौशादर से उदाहरण दिया, जिससे स्पष्ट है कि वे इसमें प्रवेश का रूप भी लेते हैं क्योंकि नौशादर में ऐसा ही होता है।

मैं कहता हूँ: पहला: संरचना की मजबूती के विपरीत, क्योंकि जब तक गांठ नहीं खुलेगी, शरीर प्रवेश नहीं पा सकेगा।

दूसरा: नौशादर बिल्कुल भी मजबूत संरचना वाला नहीं है; फिर इसे इस श्रेणी में गिनना एक स्पष्ट भूल है। इसकी कमजोर संरचना का उल्लेख अभी शर्ह-उल-मवाक़िफ़ से इमाम राज़ी के हवाले से गुज़रा। इस कला के विशेषज्ञ स्पष्ट करते हैं कि यह अधूरी सूरत वाली चार खनिजों में से है जो ज़ाजात, नमक, नौशादर और फिटकरी हैं। तज़किरा दाऊद में 'शब' (फिटकरी) के अंतर्गत है:

अरबी: शोधकर्ताओं ने उन उत्पन्न वस्तुओं के बारे में कहा जिनके रूप खनिजों में पूर्ण नहीं हुए, वे चार चीजें हैं: फिटकरी, नमक, नौशादर और ज़ाजात।

उर्दू: अहले तहक़ीक़ का कौल है कि वे मौलदात जिनकी सूरतें कामिल न हुईं, मादनियात में से चार चीजें हैं: शब, मिल्ह, नौशादर, ज़ाज। (त)

नोट: इस्फहानी ने शर्ह तवालि-उल-अनवार में शब्द की मिसाल दी, यह भी इसी नफ़ाज़ (प्रवेश) की तरफ गई। 12 मिन्हु गफ़िर लहू (म)।

1. शर्ह अल-मवाकिफ़, दूसरा भाग, रूह रहित यौगिकों के बारे में, मतबअत-अस-सआदह, मिस्र, 7/173.
2. शर्ह अल-मक़ासिद, पहला विषय, खनिज, दारुल मआरिफ अल-नोमानिया, लाहौर, 1/372.
3. तज़किरा दाऊद अल-अंताकी (अक्षर शीन), शब के तहत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/209.

पृष्ठ 610/756

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

عربی: ولنوشادر والشب اولاتنحل وھو الذی یکون دھنی الترکیب کالکبریت والزرنیخ ۔[1]

وجہ سے گھل جاتے ہیں۔ یہ وہ جو نمک والا جوہر رکھتے ہیں جیسے زاج، نوشادر اور

اردو: شب۔ یا گھلتے نہیں۔ یہ وہ ہیں جو دہنی (روغن والی) ترکیب رکھتے ہیں جیسے کبریت اور زرنیخ۔ (ت)

شرح مقاصد میں ہے:

عربی: الذائب المشتعل ھو الجسم الذی فیہ رطوبت دھنیۃ مع یبوسۃ غیر مستحکم المزاج ولذلك تقوی النار علی تفریق رطبہ عن یابسہ وھو الاشتعال وذلك کالکبریت والزرنیخ[2]۔

شعلہ زن پگھلنے والا وہ جسم ہوتا ہے جس میں یبوست کے ساتھ دہنی رطوبت ہو مستحکم

اردو: المزاج نہ ہو اسی لئے آگ اس کے رطب کو یابس سے جدا کرنے کی قوت رکھتی ہے اور یہی اشتعال ہے اس کی مثال کبریت اور زرنیخ ہے۔ (ت)

انہوں نے قسم دوم میں صعود بالکلیہ رکھا اور وہ فی نفسہ حق تھا وہ وہی ہے کہ بیان فقیر میں عدم قرار علی النار سے تعبیر اور سیماب سے ممثل ہوا مگر ان اکابر نے نوشادر سے ممثل کیا جس سے ظاہر کہ صورتِ نفاذ بھی اسی میں لیتے ہیں کہ نوشادر میں یہی واقع ہے۔

اقول: اولاً: استحکام ترکیب کے منافی کہ جب گرہ نہ کھلے گی جسم نفاذ نہ پائے گا۔

ثانیاً: نوشادر ہرگز قوی الترکیب نہیں پھر اسے اس قسم میں شمار فرمانا صریح سہو ہے اس کا ضعیف الترکیب ہونا ابھی شرح مواقف سے بحوالہ امام رازی گزرا۔ اہل فن تصریح کرتے ہیں کہ وہ

چار معدنیات غیر کامل الصورۃ سے ہے کہ زاجات واملاح و نوشادرات و شبوب ہیں۔ تذکرہ داؤد میں زیر شب ہے:

قال اهل التحقيق لمولدات التى لم تكمل صورها من المعدنيات اربعة اشياء شبوب واملاح عربى:
ونوشادرات وزاجات[3].

اہل تحقیق کا قول ہے کہ وہ مولدات جن کی صورتیں کامل نہ ہوئیں معدنیات میں سے چار اردو:
چیزیں ہیں: شب، ملح، نوشادر، زاج۔ (ت)

عه: اصفہانی نے شرح طوالع الانوار میں لفظ کی مثال دی یہ بھی اسی نفاذ کی طرف گئی ۱۲منہ غفرلہ۔ (م)

1 شرح مواقف الفصل الثانی فیما لا نفس لہ من المرکبات المطبعۃ السعادۃ مصر ۷/ ۱۷۳ 2 شرح المقاصد المبحث الاول المعدنی دارالمعارف النعمانیہ لاہور ۱/ ۳۷۲ 3 تذکرہ داؤد انطاکی (حرف الشین) شب کے تحت مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۰۹

جلد سوم (Volume 3)

فتاوىٰ رضويہ (Fatawa Razawiya)

(3) The humble one (the author) has divided this second category into three types: (i) Extremely firm, excessively moist; this is mercury, and among the four types, it belongs to the second type, predominately subtle. (ii) Excessively dry, such as ruby etc.; this belongs to the fourth type of those categories. (iii) Extremely firm and close-knit; these are their first and third types. It should have been like this because categories are according to their rulings. 'Mawaqif' specified it by moderate flow (saylan) and 'Lin Kathif' (dense softness) by being close-knit. 'Sharh-e-Maqasid' specified it by moderate rotation (dawran) and flow and dense softness by being close-knit. Therefore, they had to make two separate categories. The truth is that these are not specific limitations, hence the humble one made them into a single type. Yes, if it were proven that some things are only soft and do not flow, then two types for 'Lin' (softness) and 'Zuban' (melting) would have to be made, but that is not proven. (4) The humble one kept the ruling of the first as 'lack of stability on fire'; they called it 'ascent of all'. In the second, like them, 'stillness' was kept. In the third, 'softness', 'melting', and 'rotation' were combined. This became consistent with 'Maqasid' in that its two types were included in it, and different in that 'rotation' was considered a branch of 'flow' rather than an independent ruling. It became consistent with 'Mawaqif' in that 'rotation' and 'flow' were not assigned separate rulings, and different in that they only kept 'softness' in it. (5) Both books kept the attraction of light and heavy particles as the cause of 'rotation', and the humble one kept this same thing as the cause of 'flow' itself. After studying them, when 'rotation' was increased, its cause was supplemented with 'vibrational forces'. It is clear to a contemplative person (note 3) that this is most evident and bright. The rest of the rulings have already been explained above in accordance with the humble one's rulings, by the grace of Allah Almighty.

وللہ الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیہ* والصلاۃ	**And praise is for God alone, abundant, pure, blessed praise.**
والسلام علی المولی الکریم وآلہ وصحبہ و ذوبہ*	And peace and blessings be upon every generous master and his progeny, companions, and all his people. (T)

By the grace of Allah Almighty, it is clear from our explanation that 'impression by fire' and 'softness' and 'melting', which are counted among the effects of fire, occur only in 'munttaraqat' (malleable metals), not that they occur in others as well and we

have specified 'munttaraqat'. Fourth Point: (What among these effects is contrary to the nature of earth?) By the grace of Allah, the Mighty and Sublime, it has become clear from our explanation that in these bodies, with respect to the effects of fire, there are six states of the body: three in weak composition - penetration, calcination (nukuls), and evaporation (taru'ud). Three in strong composition - prevention (imtina'), softness, and melting. I say: Prevention among them is obvious as it is not contrary to earthly nature at all, rather it is its famous property. Similarly, calcination occurs in a body which has an abundance of earthly parts and very few moistures, and (4) consideration...

جلد سوم (खंड 3)

फतावी रज़विया

(3) फ़क़ीर (लेखक) ने इस दूसरी श्रेणी को तीन उप-श्रेणियों में विभाजित किया है: (i) अत्यंत सुदृढ़, अत्यधिक आर्द्र; यह पारा है, और इसकी चार श्रेणियों में से यह दूसरी श्रेणी है, जो प्रधान रूप से सूक्ष्म है। (ii) अत्यधिक शुष्क, जैसे नीलम आदि; यह उनकी श्रेणियों में से चौथी श्रेणी है। (iii) अत्यंत सुदृढ़ और सघन; ये उनकी पहली और तीसरी श्रेणी हैं। और ऐसा ही होना चाहिए था क्योंकि श्रेणियां उनके नियमों के अनुसार होती हैं। 'मवाकिफ़' ने इसे मध्यम प्रवाह (सैलान) से विशिष्ट माना और सघन कोमलता (लीन कसीफ़) को सघनता से। 'शरह-ए-मक़ासिद' ने इसे मध्यम घूर्णन (दौरान) से और प्रवाह तथा सघन कोमलता को सघनता से विशिष्ट माना। इसलिए उन्हें दो अलग-अलग श्रेणियां बनानी पड़ीं। सत्य यह है कि ये विशिष्ट सीमाएँ नहीं हैं, अतः फ़क़ीर ने इन्हें एक ही श्रेणी में रखा है। हाँ, यदि यह सिद्ध हो जाता कि कुछ वस्तुएं केवल कोमल होती हैं और बहती नहीं हैं, तो कोमलता (लीन) और पिघलने (ज़ूबान) के लिए दो श्रेणियां बनानी पड़तीं, लेकिन यह सिद्ध नहीं है। (4) फ़क़ीर ने पहली श्रेणी का नियम 'अग्नि पर अस्थिरता' रखा; उन्होंने इसे 'सर्व-उर्ध्वगमन' कहा। दूसरी में, उनकी तरह 'स्थिरता' रखी गई। तीसरी में, कोमलता, पिघलना और घूर्णन को समाहित किया गया। यह 'मक़ासिद' के साथ इस प्रकार संगत हुआ कि इसकी दोनों उप-श्रेणियां इसमें आ गईं, और इस प्रकार भिन्न हुआ कि घूर्णन को प्रवाह की ही एक शाखा माना गया न कि एक स्वतंत्र नियम। और 'मवाकिफ़' के साथ इस प्रकार संगत हुआ कि घूर्णन और प्रवाह के लिए अलग-अलग नियम निर्धारित नहीं किए गए, और इस प्रकार भिन्न हुआ कि उन्होंने इसमें केवल कोमलता रखी। (5) दोनों पुस्तकों ने हल्के और भारी कणों के आकर्षण को घूर्णन का कारण माना, और फ़क़ीर ने इसी को स्वयं प्रवाह का कारण माना था। उनके अध्ययन के बाद, जब घूर्णन को बढ़ाया गया, तो इसके कारण में 'कंपन शक्तियों' को जोड़ा गया। एक चिंतनशील व्यक्ति (नोट 3) के लिए यह स्पष्ट है कि यही सबसे अधिक उज्ज्वल और प्रकट है। और शेष नियम, अल्लाह तआला की कृपा से, फ़क़ीर के नियमों के अनुसार ऊपर वर्णित किए जा चुके हैं।

وللہ الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیہ* والصلاۃ	**और ईश्वर के लिए ही प्रशंसा है, बहुत, पवित्र और बरकत वाली प्रशंसा।**
والسلام علی المولی الکریم وآلہ وصحبہ و ذوبہ*	और हर कृपालु स्वामी और उनकी संतान, साथियों और उनके सभी लोगों पर दरूद और सलाम। (त)

अल्लाह तआला की कृपा से, हमारे इस वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि 'अग्नि द्वारा प्रभाव' और कोमलता तथा पिघलना, जो अग्नि के प्रभावों में गिने जाते हैं, स्वयं केवल आघातवर्धनीय धातुओं (मुन्तराकात) में होते हैं, ऐसा नहीं है कि वे दूसरों में भी हों और हमने केवल आघातवर्धनीय धातुओं को ही विशिष्ट माना हो। चौथा बिंदु: (इन प्रभावों में से कौन सा पृथ्वी की प्रकृति के विपरीत है?) अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला की कृपा से, हमारे वर्णन से यह स्पष्ट हो गया है कि इन शरीरों में, अग्नि के प्रभावों के संदर्भ में, शरीर की छह अवस्थाएँ हैं: तीन कमजोर संरचना में - प्रवेश, भस्मीकरण (नकुलस), और वाष्पीकरण (तरउद)। तीन मजबूत संरचना में - अवरोध (इम्तिना), कोमलता और पिघलना। मैं कहता हूँ: इनमें अवरोध तो स्पष्ट है कि यह पार्थिव प्रकृति के बिल्कुल भी विपरीत नहीं है, बल्कि यह इसका प्रसिद्ध गुण है। इसी तरह भस्मीकरण भी उस शरीर में होता है जिसमें पार्थिव अंश प्रचुर मात्रा में होते हैं और नमी बहुत कम होती है, और (4) विचार...

جلد سوم

فتاویٰ رضویہ

(۳) فقیر نے اس قسم دوم کی تین قسمیں کیں: (i) شدید الاستحکام متفاحش رطب یہ سیماب ہے اور ان کی انواع اربعہ سے نوع دوم لطیف بالغلبہ۔ (ii) متفاحش یابس جیسے یاقوت وغیرہ یہ ان کی انواع سے نوع چہارم ہے۔ (iii) شدید الاستحکام متقارب یہ ان کی نوع اول و سوم ہیں اور یونہی چاہئے تھا کہ اقسام بحسب احکام ہیں مواقف نے سیلان معتدل سے خاص جانا اور لین کثیف متقارب سے اور شرح مقاصد نے دوران معتدل سے خاص جانا اور سیلان ولین کثیف متقارب سے لہذا انہیں دو جدا قسمیں کرنی ہوئیں، اور حق یہ کہ یہ تخصیصات نہیں لہذا فقیر نے ان کو ایک ہی نوع کیا ہاں اگر ثابت ہو کہ بعض چیزیں صرف نرم ہوتی ہیں بہتی نہیں تو البتہ لین و ذوبان کے لیے دو نوعیں کرنی ہوں گی مگر وہ ثابت نہیں۔ (۴) فقیر نے اول کا حکم عدم قرار علی النار رکھا انہوں نے صعود کل کہا دوم کا ان کی طرح سکونت سوم میں لین و ذوبان و دوران جمع کیے، یہ مقاصد کے یوں موافق ہوا کہ اس کی وہ دونوں نوعیں اسی میں آگئیں اور یوں مخالف کہ دوران کو سیلان ہی کی فرح ٹھہرایا نہ کہ حکم مستقل، اور مواقف کے یوں موافق ہوا کہ دوران و سیلان جدا حکم نہ ٹھہرائے اور یوں مخالف کہ انہوں نے اس میں صرف لین رکھا۔ (۵) دونوں کتابوں نے اجزائے خفیفہ و ثقیلہ کے تجاذب کو علت دوران رکھا اور فقیر نے اسی کو نفس سیلان کی علت رکھا تھا اور ان کے مطالعہ کے بعد کہ دوران بڑھایا اس کی علت میں اس پر تکانی قوتیں کو اضافہ کیا متامل ۳ے پر روشن کہ یہی اظہر وازہر ہے اور باقی احکام میں صحت بحمد اللہ تعالیٰ احکام فقیر کی طرف اوپر بیان ہو چکی۔

وللہ الحمد حمدا کثیرا طیبا مبارکا فیہ* والصلاۃ

اور خدا ہی کے لیے حمد ہے کثیر پاکیزہ برکت والی حمد، اور

والسلام علی المولی الکریم وآلہ وصحبہ و ذوبہ*

درود و سلام ہر کرم والے آقا اور ان کی آل، اصحاب اور ان کے سارے لوگوں پر۔ (ت)

بحمدہ تعالیٰ ہمارے اس بیان سے ظاہر ہوا کہ انطباع بالنار اور لین و ذوبان کہ آثار نار میں شمار ہوتے ہیں خود ہی صرف منطر قات میں ہوتے ہیں نہ یہ کہ ہوئے اور میں بھی ہیں اور ہم نے منطر قات کی تخصیص کر لی۔ نکتہ رابعہ : (ان آثار میں کیا کیا طبیعت زمین کے مخالف ہے) بحمدہ عزوجل ہمارے بیان سے روشن ہوا کہ ان اجسام میں باعتبار آثار نار جسم کی چھ حالتیں ہیں، تین تضعیف الترکیب میں نفاذ، نکلس، ترئد۔ تین قوی الترکیب میں امتناع، لین وذوبان۔ اقول: ان میں امتناع تو ظاہر ہے کہ طبیعت ارضیہ کے کچھ منافی نہیں بلکہ اس کا مشہور خاصہ ہے یونہی نکلس بھی کہ اس جسم میں ہوتا ہے جس میں اجزائے ارضیہ بکثرت اور رطوبات بہت کم ہیں اور (۴) اعتبار

Fatawa-e-Razvia Volume Three

If the dominant part is of the earth genus, then that body is also from the earth genus. It is stated in *Khaniyah*, *Zahiriyah*, *Khazanat al-Muftin*, *Hulyah*, *Jami' al-Rumuz*, *Maraqi al-Falah*, *Durr al-Mukhtar*, and *Hindiyyah*:

(Arabic)

When soil is mixed with what is not of the earth's components, dominance is considered in it. — (End). And in *Nazm al-Durar*: If the dominance is for the soil, it is permissible; otherwise, no. (From *Khaniyah*). From this, the ruling for the case of equality is also known.

(Urdu)

When something that is not part of the earth genus is mixed with soil, dominance will be considered. — 12. And the text of *Durr al-Mukhtar* is: If the soil is dominant, tayammum is permissible; otherwise, it is not. And from this, the ruling for that case is also known in which both are equal. (T)

Similarly, 'extinction' (*nafad*) is not contradictory here because extinction or negation here does not mean that the thing becomes non-existent from the page of existence, but rather transformation (*istihala*), such as water turning into steam and flying away; it 'perished,' meaning it left the vessel empty, now nothing remains in it, or water no longer remained water but became vapors. It is known that transformation occurs in the four elements, whether directly, such as towards a neighbor where earth particles become water, water becomes air, air becomes fire, or vice versa; or through one intermediary, such as earth to air, water to fire, and vice-versa—the first through the mediation of water, the second through air; or through two intermediaries, such as earth to fire and vice versa through the mediation of water and air. Thus, there are twelve forms, as in the commentaries of *Al-Maqasid*, *Al-Mawaqif*, and *Al-Tajweed* by Al-Taftazani and Al-Sayyid Al-Sharif. (As it is in the commentary of *Maqasid* by Allama Taftazani, commentary of *Mawaqif* by Sayyid Sharif, and commentary of *Tajreed* by Qushji. T) For each element, there are three, in which earth is also included, rather earth particles also directly become fire.

(Arabic)

This is the implication of what is in *Al-Mawaqif* and others: 'Every [element] turns into the other; some of them [transform] without an intermediary, and that is every element that shares with another in [one] quality and differs from it

(Urdu)

This is the requirement of the following text of *Mawaqif* etc.: "Every element changes into another; the change of some is direct, and this is every element that is a partner with another element in one quality and is opposite to it in

(Arabic)	(Urdu)
in [another] quality.' (End, summarized). For earth with fire is like that.	another quality." (End). And the state of earth along with fire is the same. (T)

(Both are partners in dryness and differ from each other in heat and cold. 12 M-Alif)

---

1. *Fatawa Qazi Khan*, Section on what makes tayammum permissible, printed Nawal Kishore, Lucknow, 29/1
2. *Durr al-Mukhtar* with *Al-Shami*, Chapter on Tayammum, Mustafa Al-Babi Press, Egypt, 1/177
3. *Sharh al-Mawaqif*, The Eleventh Goal from the Third Section, Al-Sa'adah Press, Egypt, 7/56-155

फतावा-ए-रज़विया जिल्द सोम (तीसरा भाग)

यदि प्रभावी हिस्सा मिट्टी की जाति का है, तो वह जिस्म मिट्टी की जाति ही माना जाता है। खानिया, ज़हीरिया, खज़ानतुल मुफ़्तीन, हूलिया, जामेउर रुमुज़, मराक़िल फ़लाह, दुर्रे मुख्तार और हिन्दिया में लिखा है:

(अरबी)

जब मिट्टी में वह चीज़ मिल जाए जो मिट्टी के अंगों में से नहीं है, तो उसमें प्रबलता (ग़लबा) पर विचार किया जाएगा। — (इति)। और नज़्मुल दुरर में है: यदि प्रबलता मिट्टी की है, तो जायज़ है, अन्यथा नहीं। (खानिया से)। इसी से समानता की स्थिति का आदेश भी ज्ञात हो गया।

(उर्दू/हिंदी)

मिट्टी में जब ऐसी चीज़ मिल जाए जो जिंस-ए-अर्ज़ (मिट्टी की जाति) से न हो, तो उसमें ग़लबे (प्रबलता) का एतबार होगा। — 12. और दुर्रे मुख्तार की इबारत (पाठ) यह है: अगर ग़लबा मिट्टी का हो तो तयम्मुम जायज़ है वरना नहीं। और इसी से उस सूरत (स्थिति) का भी हुक्म मालूम हो गया जिसमें दोनों बराबर बराबर हों। (त)

इसी तरह 'नफ़ाद' (समाप्ति) भी यहाँ विरोधी नहीं है, क्योंकि नफ़ाद या इन्तिफ़ा का अर्थ यहाँ यह नहीं है कि चीज़ हस्ती (अस्तित्व) के पन्ने से मिट जाए, बल्कि इस्तिहाला (रूपांतरण) है, जैसे पानी भाप बनकर उड़ जाता है; वह 'फ़ना' हो गया यानी बर्तन खाली कर गया, अब उसमें कुछ न रहा या पानी पानी न रहा बल्कि वाष्प बन गया। और यह मालूम है कि इस्तिहाला चारों तत्वों (अनासिर) पर लागू होता है, चाहे बिना किसी माध्यम (बिला वास्ता) के हो जैसे पड़ोसी की ओर कि मिट्टी के कण पानी हो जाएं पानी हवा, हवा आग, या इसके विपरीत; या एक माध्यम के माध्यम से जैसे मिट्टी से हवा, पानी से आग और इसके विपरीत—पहला पानी के माध्यम से, दूसरा हवा के, या दो माध्यमों से जैसे मिट्टी से आग और इसके विपरीत पानी और हवा के माध्यम से। तो बारह रूप (सूरतें) हैं, जैसा कि अल्लामा तफ़्ताज़ानी और सैय्यद शरीफ़ द्वारा अल-मक़ासिद, अल-मवाक़िफ़ और अल-तजवीद की व्याख्याओं में है। (जैसा कि अल्लामा तफ़्ताज़ानी की शरह मक़ासिद, सैय्यद शरीफ़ की शरह मवाक़िफ़ और क़ुशजी की शरह तज्रीद में है। त) प्रत्येक तत्व के लिए तीन हैं जिनमें ज़मीन (अर्ज़) भी शामिल है, बल्कि मिट्टी के हिस्से बिना माध्यम के भी आग हो जाते हैं।

(अरबी)

यही मवाक़िफ़ आदि में दी गई बात का निष्कर्ष है: 'प्रत्येक तत्व दूसरे में बदल जाता है; उनमें से कुछ बिना माध्यम के होते हैं, और वह प्रत्येक तत्व है जो दूसरे के साथ [एक] गुण (कैफ़ियत) में साझा करता है और [दूसरी] गुण में उसके विपरीत होता है।' (इति, संक्षेप में)। अतः आग के साथ मिट्टी का भी यही हाल है।

(उर्दू/हिंदी)

यही मवाक़िफ़ वगैरह की इबारत ज़ैल (नीचे दी गई) का मक़्तज़ी (निष्कर्ष) है: "हर उनसुर (तत्व) दूसरे से बदल जाता है; कुछ की तब्दीली बिला-वास्ता (सीधे) होती है और यह हर वह उनसुर होता है जो एक कैफ़ियत (गुण) में दूसरे उनसुर का शरीक (साझीदार) हो और दूसरी कैफ़ियत में उसके मुख़ालिफ़ (विपरीत) हो।" (इति)। और आग के साथ-साथ अर्ज़ (मिट्टी) का हाल यही है। (त)

(शुष्कता/खुश्की में दोनों साझीदार हैं और गर्मी और ठंडक में आपस में भिन्न हैं। 12 म-अलिफ़)

---

1. फतावा क़ाज़ीखां, फ़स्ल फ़ीमा यजूसु बिहि-तयम्मुम, मुद्रित नवल किशोर, लखनऊ, 29/1
2. दुर्रुल मुख़्तार मअ-शामी, बाबुत तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/177
3. शरहुल मवाक़िफ़, अल-मक़सद अल-हादी अशर मिन अल-क़िस्म अल-सालिस, सआदत प्रेस, मिस्र, 7/56-155

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

غالب ہی کا ہے تو وہ جسم جنسِ ارض ہی سے ہے خانیہ و ظہیریہ و خزانیتہ المفتین و حلیہ و جامع الرموز و مراقی الفلاح و در مختار و ہندیہ میں ہے:

(عربی)

التراب اذا خالطہ مالیس من اجزاء الارض یعتبر فیہ الغلبۃ [1]-اھ ونظم الدر لو الغلبۃ لتراب جاز والا لا خانیۃ ومنہ علم حکم التساوی [2]-

(اردو)

مٹی میں جب ایسی چیز مل جائے جو جنسِ ارض سے نہ ہو تو اس میں غلبہ کا اعتبار ہوگا ۱۲- اور درمختار کی عبارت یہ ہے: اگر غلبہ مٹی کا ہو تو تیمم جائز ہے ورنہ نہیں۔ اور اسی سے اس صورت کا بھی حکم معلوم ہو گیا جس میں دونوں برابر برابر ہوں۔ (ت)

اسی طرح نفاد بھی منافی نہیں کہ یہاں نفاد یا انتفاء بایں معنی نہیں کہ شے صفحہ ہستی سے معدوم ہو جائے بلکہ استحالی جیسے پانی بھاپ ہو کر اڑ جاتا ہے فنا ہو گیا یعنی برتن خالی کر گیا اب اس میں کچھ نہ رہا یا پانی پانی نہ رہا بخارات ہو گیا اور ۱ معلوم ہے کہ استحالی چاروں عنصروں پر وارد ہوتا ہے خواہ بلاواسطہ جیسے مجاور کی طرف کہ اجزائے ارضیہ پانی ہو جائیں پانی ہوا ہوا آگ یا بالعکس یا ایک واسطہ سے جیسے ارضیہ ہوا، مائیہ آگ اور بالعکس پہلے میں پانی کی وساطت دوسرے میں ہوا کی یادو ۲ واسطہ سے جیسے ارضیہ آگ اور بالعکس بوساطتِ آب و ہوا تو صورتیں بارہ ۳ ہیں کما فی شروح المقاصد والمواقف والتجوید للتفتازانی والسید والشریف (جیسا کہ علامہ تفتازانی کی شرح مقاصد، سید شریف کی شرح مواقف اور قوشجی کی شرح تجرید میں ہےت) ہر عنصر کے لیے تین جن میں ارض بھی داخل بلکہ اجزائے ۲ ارضہ بلاواسطہ بھی آگ ہو جاتے ہیں

(عربی) **(اردو)**

وھو قضیۃ ما فی المواقف وغیرھا ینقلب کل الی الآخر بعضھا بلا واسطۃ وھو کل عنصر یشارك آخر في کیفیۃ ویخالفه في کیفیۃ ۳ اھ ملخصا فان الارض مع النار کذلك۔

یہی مواقف وغیرہ کی عبارت ذیل کا مقتضی ہے: "ہر عنصر دوسرے سے بدل جاتا ہے بعض کی تبدیلی بلاواسطہ ہوتی ہے اور یہ ہر وہ عنصر ہوتا ہے جو ایک کیفیت میں دوسرے عنصر کا شریک ہو اور دوسری کیفیت میں اس کے مخالف ہو۔" اھ اور نار کے ساتھ ساتھ ارض کا حال یہی ہے۔ ت)

(یبوست میں دونوں شریک ہیں اور حرارت وبرودت میں باہم مختلف ۱۲ م۔ الف)

---

1. فتاوٰی قاضیخان فصل فیما یجوز بہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۲۹/۱
2. درالمختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/۱۷۷
3. شرح المواقف المقصد الحادی عشر من القسم الثالث مطبعتہ السعادۃ مصر ۷/۵۶-۱۵۵

Fatawa-e-Razvia Volume Three

Ibn Sina, in 'Isharat', established proof of the dryness of fire by stating that "when it is extinguished and its heat leaves it, solid terrestrial bodies are formed from it which are cast down by thunderclouds." (Meaning: when it cools down and its heat is separated, it becomes solid earth-like bodies which the thunder-bearing clouds drop. - T)

And this is also observed. A few years ago, the falling of a thunderbolt was heard in Aligarh district - seeking refuge in Allah - which had a loud crack. When it cooled down, it was found to be iron. When fire directly becomes dust, why shouldn't dust directly become fire? Necessarily, Husain Maybudhi said:

[Boxed Text] Arabic: They clarified that strong fire transforms terrestrial parts into fire. Urdu: People have clarified that powerful fire converts earthly components into fire. (T)

Thus, there are eight direct transformations: Earth goes to coldness then fire; Fire goes to dryness then fire; Fire goes to junction then water; Water goes to moisture then earth; Earth goes to coldness then air; Air goes to heat then water; Water goes to moisture then fire; Fire goes to dryness then air goes to heat then earth. The philosophers believe in six out of five [meaning 5 out of 6? No, maybe reaching 5, they accept 6]. Not accepting the first and last two is arbitrary. So, this became the fourth state for earth, that it initially becomes fire. Yes, there are no abundant moisture parts in earth upon which 'taraddud' (instability/melting) depends, nor 'dahniyat-e-masika' (adhesive oiliness) upon which softening and melting depend. Thus, in the six, these three are contrary to 'ardiyat' (earthiness).

In other words, there are five signs of fire in them: either the whole body becomes ascending, which includes the first type of both categories; or some little part; or some large part; or not at all and it remains petrified such that it scatters from the strike of a hammer; or it is malleable such that it does not scatter from a strike but expands and spreads. The first is not contrary to earthiness, as earthly parts becoming fire will all ascend. Nor is the second, as containing some small amount does not exclude it from earthiness. Nor is the fourth, as this is the nature of earth. Yes, the third and fifth, being 'zinda' (living/real) malleability, are contrary to earth. Therefore, the noble scholars took these very qualities, whose proof negated the genus of earth and whose negation proved it. "So for Allah is their excellence, how subtle is their vision!" (T). And from here it became clear that 'taraddud' which is

contrary to earthiness is in the 'middle' sense, not the 'first' sense, so that they come out included even in the genus of earth. Similarly, 'ihtiraq' (combustion) which is contrary to earthiness is in this very sense of 'taraddud', otherwise, in the sense of heat, calcination, and depletion, it exists in the earth itself.

---

1. Sharh Isharat, Tanbih: The extreme volume in heat is fire by nature. Printed by Munshi Naval Kishore, Lucknow, p. 69.
2. Al-Maybudhi (Section on Elemental Basics): Transformation of elements. Matba' Anwar-e-Muhammadi, Lucknow, p. 224.

फ़तावा-ए-रज़विया भाग तीन

इब्न सिना ने 'इशारात' में आग की खुश्की पर यह प्रमाण दिया है कि "जब वह बुझ जाती है और उसकी गर्मी उससे अलग हो जाती है, तो उससे ठोस पार्थिव शरीर बनते हैं जिन्हें गरजते बादल गिराते हैं।" (अर्थात्: जब वह शांत हो जाती है और उसकी ऊष्मा विलग हो जाती है, तो वह ठोस मिट्टी जैसे पिंड बन जाते हैं जिन्हें बिजली गिराने वाले बादल नीचे फेंकते हैं। - टी)

और यह देखा गया है। कुछ साल पहले अलीगढ़ जिले में बिजली गिरने की आवाज़ सुनी गई - अल्लाह की पनाह - जिसमें बहुत ज़ोर की कड़क थी। ठंडा होने पर देखा गया तो वह लोहा था। जब आग सीधे धूल बन जाती है, तो धूल सीधे आग क्यों नहीं होगी? निश्चित रूप से हुसैन मेबुधी ने कहा:

[बक्से में लिखा पाठ] अरबी: उन्होंने स्पष्ट किया कि शक्तिशाली अग्नि पार्थिव अंशों को अग्नि में बदल देती है। उर्दू अनुवाद: लोगों ने स्पष्ट किया है कि शक्तिशाली आग ज़मीनी घटकों को आग में बदल देती है। (टी)

इस प्रकार बिना किसी माध्यम के आठ रूपांतरण हुए: पृथ्वी ठंडक की ओर जाकर आग, आग खुश्की की ओर जाकर आग, आग मिलाप की ओर जाकर पानी, पानी नमी की ओर जाकर पृथ्वी, पृथ्वी ठंडक की ओर जाकर हवा, हवा गर्मी की ओर जाकर पानी, पानी नमी की ओर जाकर आग, आग खुश्की की ओर जाकर हवा, हवा गर्मी की ओर जाकर पृथ्वी। दार्शनिक पाँच तक पहुँचकर छह मानते हैं। पहले और आखिरी दो को न मानना ज़िद है। तो यह पृथ्वी के लिए चौथी स्थिति हुई कि शुरुआत में आग बन जाए। हाँ, पृथ्वी में अत्यधिक नमी वाले हिस्से नहीं होते जिन पर 'तरद्दुद' (अस्थिरता/पिघलना) निर्भर हो, और न ही 'दहनीयत-ए-मासिका' (चिपचिपा तैलीयपन) जिस पर कोमलता और पिघलना निर्भर हो। अतः छह में ये तीन पृथ्वी तत्व के प्रतिकूल हुए।

दूसरे शब्दों में, उनमें आग के पाँच लक्षण हैं: या तो पूरा शरीर ऊपर चढ़ने वाला हो जाए, जिसमें दोनों प्रकारों की पहली स्थिति शामिल है; या कुछ थोड़ा सा; या कुछ बहुत सा; या बिल्कुल नहीं और वह पत्थर बना रहे कि हथौड़े की चोट से बिखर जाए; या लचीला हो कि चोट से न बिखरे बल्कि बढ़े और फैले। पहला पृथ्वी तत्व के विरुद्ध नहीं है क्योंकि पार्थिव हिस्से आग बनकर सब ऊपर चढ़ जाएंगे। न ही दूसरा, क्योंकि थोड़ा सा अंश शामिल होना पृथ्वी तत्व से बाहर नहीं करता। न ही चौथा, क्योंकि यह पृथ्वी का स्वभाव है। हाँ, तीसरा और पाँचवाँ जो वास्तविक लचीलापन हैं, वे पृथ्वी के प्रतिकूल हैं। इसीलिए विद्वानों ने इन्हीं गुणों को लिया, जिनके प्रमाण से पृथ्वी की जाति का अभाव हुआ और अभाव

से प्रमाण। "तो खुदा ही के लिए उनकी खूबी है, उनकी दृष्टि कैसी सूक्ष्म है!" (टी)। और यहीं से स्पष्ट हुआ कि 'तरद्दुद' जो पृथ्वी तत्व के प्रतिकूल है, वह 'मध्यम' अर्थ में है, न कि 'प्रथम' अर्थ में, ताकि वे पृथ्वी की जाति में भी शामिल निकलें। इसी प्रकार 'एहतेराक़' (दहन) जो पृथ्वी तत्व के विरुद्ध है, वह इसी 'तरद्दुद' के अर्थ में है, अन्यथा गर्मी, भस्मीकरण और क्षय के अर्थ में तो स्वयं पृथ्वी में मौजूद है।

---

1. शरह इशारात, तनबीह: ऊष्मा में अत्यधिक आयतन स्वाभाविक रूप से आग है। मुंशी नवल किशोर, लखनऊ, पृष्ठ 69 द्वारा मुद्रित।
2. अल-मेबुधी (तत्वों की बुनियादी बातें): तत्वों का रूपांतरण। मतबा अनवार-ए-मुहम्मदी, लखनऊ, पृष्ठ 224।

ابن سینا نے اشارات میں یبوستِ نار پر دلیل قائم کی کہ انھا اذا خمدت وفارقتھا سخونتھا تکون منھا اجسام صلبۃ ارضیۃ یقذفھا السحاب الصاعق 1 (وہ جب بجھ جائے اور اس سے اس کی گرمی جدا ہو جائے تو اس سے ٹھوس اجسام ارضیہ بن جاتے ہیں جنہیں سحاب صاعق گراتا ہے۔ت)

اور یہ مشاہدہ ہے چند سال ہوئے ضلع علی گڑھ میں ایک صاعقہ گرنا مسموع ہوا والعیاذ باللہ تعالٰی جس میں سخت کڑک تھی سرد ہونے پر دیکھا تو لوہا تھا جب آگ بلا واسطہ خاک ہو جاتی ہے خاک بلا واسطہ آگ کیوں نہ ہو گی لاجرم حسین میبذی نے کہا:

[کھانے کی تحریر] صرحوا ان النار القویۃ تحیل الاجزاء الارضیۃ ناراً 2 | لوگوں نے تصریح کی ہے کہ طاقتور آگ زمینی اجزاء کو آگ سے تبدیل کر دیتی ہے۔ (ت)

یوں بلا واسطہ آٹھ استحالی ہوئے زمین برودت جا کر آگ یبوست جا کر آگ پیوست جا کر پانی رطوبت جا کر زمین برودت جا کر ہوا ہوا حرارت جا کر پانی رطوبت جا کر آگ یبوست جا کر ہوا حرارت جا کر زمین۔ فلاسفہ 1 پہنچ کے چھ مانتے ہیں اول و آخر کے دو نہ ماننا تحکم ہے تو یہ ارض کے لئے چوتھی صورت ہوئی کہ ابتداء آگ ہو جائے ہاں نہ رطوباتِ کثیرہ جزوِ ارض ہوتی ہیں جن پر ترتد موقوف نہ دہنیتِ ماسکہ جس پر لین و ذوبان تو چھ 6 میں یہی تین منافی ارضیت ہوئے۔

وبعبارۃ اخری ان میں آثارِ نار پانچ ہیں کہ یا کل جسم صاعد ہو جائے گا جو ہر دو 2 قسم کی پہلی صورت کو شامل یا 3 بعض قلیل یا 4 بعض کثیر یا اصلاً نہیں اور متحجر رہے گا کہ ضربِ مطرقہ سے بکھر جائے یا 5 منطبع کہ اس کی ضرب سے متفرق نہ ہو اور بڑھے پھیلے اول منافی

ارضیت نہیں کہ اجزاء ارضیہ آگ ہو کر سب صاعد ہو جائیں گے نہ دوم کہ بعض قلیل پر اشتمال ارضیت سے خارج نہیں کرتا نہ چہارم کہ یہ خوشانِ ارض ہے۔ ہاں سوم و پنجم کہ زندہ انطباع ہیں منافی ارض ہیں، ولذا علمائے کرام نے یہی اوصاف لیے جن کے ثبوت سے جنس ارض کا انتفاء ہوا اور انتفاء سے ثبوت ہو فللہ درھم ماادق نظرھم (تو خدا ہی کے لیے ان کی خوبی ہے۔ ان کی نظر کیسی ہی دقیق ہے۔ ت) اور یہیں سے ظاہر ہوا کہ ترتد جو منافی ارضیت ہے یہی بمعنی اوسط ہے نہ بمعنی اول شامل نکلیں کہ جنس ارض میں بھی حاصل یو نہی احتراق کہ منافی ارضیت ہے یہی بمعنی ترتد ہے ورنہ بمعنی سخونت و تکلس و نفاد خود ارض میں موجود۔

---

1 شرح اشارات تنبیہ فالحجم البالغ فی الحرارۃ طبعہ ھو النار مطبوعہ منشی نولکشور لکھنؤ ص ۶۹

2 المیبذی (فصل بسائط العنصریہ) انقلاب العناصر مطبع انوار محمدی لکھنؤ ص ۲۲۴

Fatawa Razawiyya, Volume 3

"This is how the research should be, and praise be to Allah for the best guidance. And the most excellent blessings and most perfect peace be upon the Gentle Prophet, and upon his family and companions, who are the pillars of religion and the foundations of truth." (Translator's note: T)

Resolution of Difficulties and Conciliation of Statements: Raising objections and showing statements to be in agreement.

By the grace of Allah Almighty, from our explanations, the intended meanings of the five terms and their relationships have become clear: that Ihtiraq (burning) is precisely Tarannud (brittleness), and Tarannud in the sense of the intermediate state, and Layyin (softness), Inbitah (flattening/impression), and Zubaan (melting) all result in Inbitiraq (flexibility). The capacity for Layyin and Inbitah are inextricably linked in existence, and their derivatives are equal in truthfulness. The suitability for melting also apparently seems to be a necessary consequence of both, and their general applicability is an unknown possibility. Now, twelve statements—meaning with the exception of the two former ones, the first being a source of objection and the second being void—all result in the consideration of two attributes: Tarannud and Inbitiraq. All five attributes have returned to these two. By the grace of Allah Almighty, these benefits have become apparent:

(1) Interpreting Inbitah through Layyin, as done by Durrar, is correct and is an interpretation by equals.

(2) Its interpretation through Taqtee' (cutting) and Layyin, as done by Minkh, is not contrary to it; it only expresses the basic meaning of Inbitah, i.e., the capacity for being worked upon. And what an excellent thing he did! (T)

(3) Whether it is 'Yaleenu wa yanbitihu' or 'yanbitihu wa yaleenu', in each case, it is a collection of equals for clarity. In them, there is neither a false identity of denotation, nor any error-inducing ambiguity in the collection, nor any redundancy, nor interpretation by something more obscure.

(4) The equality of Inbitah and Zubaan is most apparent. Thus, as before, 'Yazoobu wa yanbitihu' or 'yanbitihu wa yazoobu' is the same thing. Surely, the combination like the collection of Layyin and Inbitah, if the general applicability of Inbitah is proven, then the collection of Zubaan and Inbitah or Zubaan and Layyin in the 9th, 10th, and 11th statements, as well as in the statements of Shams al-A'immah,

Zaheeriyyah, Khaaniyah, and Khizana al-Muftiyeen, would necessarily be misleadingly wrong, suggesting that the earth-like nature now depends on melting, whereas it is attained through mere Inbitah. Consequently, 'wa' (and) must be taken in the sense of 'au' (or), and the mention of melting would be redundant. The occurrence of this from these great scholars is a proof for the correctness of our conclusion that melting is also an inseparable concomitant of Inbitah.

(5) In the sixth statement, adding Inbitah on one hand and omitting it on the other results in the same thing; it was increased for emphasis and decreased for brevity.

फतावा रज़विया, जिल्द 3

"इसी प्रकार शोध होनी चाहिए और उत्तम तौफ़ीक़ (ईश्वरीय मार्गदर्शन) पर अल्लाह की ही प्रशंसा है। और श्रेष्ठतम दुरूद और पूर्णतम सलाम उस कोमल स्वभाव वाले नबी पर हो, और उनकी आल (वंशज) और असहाब (साथियों) पर, जो दीन के स्तंभ और सत्यता के आधार हैं।" (त)

समस्याओं का समाधान और कथनों का सामंजस्य: शंकाओं को दूर करना और कथनों को एकमत सिद्ध करना।

अल्लाह तआला की प्रशंसा के साथ, हमारे इन वर्णनों से पाँच शब्दों के अभीष्ट अर्थ और उनके संबंध स्पष्ट हो गए हैं कि इहतिराक़ (जलना) ही तरन्नुद (भुरभुरापन) है, और तरन्नुद मध्यवर्ती अर्थ में, और लयीन (कोमलता), इनबिताह (चिपटापन) और ज़ुबान (पिघलना) सबका परिणाम इनबितिराक़ (लचीलापन) है। लयीन और इनबिताह की क्षमता अस्तित्व में एक-दूसरे के लिए आवश्यक हैं और उनके व्युत्पन्न सत्यता में समान हैं। पिघलने की योग्यता भी स्पष्ट रूप से इन दोनों के लिए अनिवार्य प्रतीत होती है और उनका इससे पूर्णतः व्यापक होना भी एक अज्ञात संभावना है। अब बारह कथन—अर्थात पूर्व के दो को छोड़कर, जिनमें से पहला आपत्ति का विषय है और दूसरा निराधार है—सबका सारांश दो गुणों का विचार है: तरन्नुद और इनबितिराक़। पाँचों गुण इन्हीं दो की ओर लौटते हैं। और अल्लाह तआला की कृपा से ये लाभ प्रकट हुए हैं:

(1) 'इनबिताह' की व्याख्या 'लयीन' से करना, जैसा कि 'दुरर' ने किया है, सही है और यह समानार्थक शब्दों द्वारा व्याख्या है।

(2) 'तक़ती' और 'लयीन' से इसकी व्याख्या जो 'मंख' ने की है, वह इसके विरुद्ध नहीं है, बल्कि उसने केवल 'इनबिताह' के मूल अर्थ अर्थात् कार्य करने की क्षमता को उसमें व्यक्त कर दिया है। और क्या ही अच्छा कार्य किया! (त)

(3) 'यलीनु व यन्बितिहु' (नरम होता है और फैलता है) हो या 'यन्बितिहु व यलीनु', प्रत्येक में स्पष्टीकरण के लिए समानार्थक शब्दों का संचय है। उनमें न तो अर्थ की एकता असत्य है, न संचय में कोई भ्रामक अस्पष्टता है, न कोई निरर्थकता है और न ही अधिक अस्पष्ट शब्द से व्याख्या की गई है।

(4) 'इनबिताह' और 'ज़ुबान' की समानता अत्यंत स्पष्ट है। अतः पूर्ववत 'यज़ूबु व यन्बितिहु' या 'यन्बितिहु व यज़ूबु' एक ही बात है। निश्चित रूप से, 'लयीन' और 'इनबिताह' के संचय की तरह, यदि

'इनबिताह' की व्यापकता सिद्ध हो जाए, तो नौवें, दसवें और ग्यारहवें कथनों के साथ-साथ शम्सुल अइम्मा, ज़हीरिया, खानिया और खिज़ानतुल मुफ़्तीन के कथनों में 'जुबान' और 'इनबिताह' या 'जुबान' और 'लयीन' का संचय निश्चित रूप से भ्रामक रूप से गलत होगा, क्योंकि तब भूमि-तत्व का होना पिघलने पर निर्भर होगा, जबकि वह केवल 'इनबिताह' से प्राप्त हो जाता है। अनिवार्यतः'व' (और) को 'औ' (या) के अर्थ में लेना होगा और पिघलने का उल्लेख व्यर्थ हो जाएगा। इन महान विद्वानों द्वारा ऐसा किया जाना हमारे इस निष्कर्ष की सटीकता का प्रमाण है कि पिघलना भी 'इनबिताह' के लिए अनिवार्य है।

(5) छठे कथन में एक ओर 'इनबिताह' की वृद्धि और दूसरी ओर उसका त्याग एक ही परिणाम देता है; उसे स्पष्टता के लिए बढ़ाया गया और संक्षिप्तता के लिए कम किया गया।

पृष्ठ 614/756

كذالك ينبغى التحقيق * والله الحمد على حسن التوفيق * وافضل صلاة واكمل سلام على النبى الرفيق * واله وصحبه اساطين الدين واراكين التصديق * یوں ہی تحقیق ہونی چاہئے اور حسن توفیق پر حمد خدا ہی کی ہے اور بہتر درود، کامل تر سلام ہو نرمی والے نبی اور ان کی آل و اصحاب پر جو دین کے ستون اور تصدیق کے ارکان ہیں۔ (ت)

حل اشکالات وتطبیق عبارات: اشکالوں کا اٹھانا اور عبارتوں کا متفق کردکھانا۔

بحمدہ تعالٰی ہمارے ان بیانات سے الفاظ خمسہ کے معانی مقصودہ اور ان کی نسبتیں ظاہر ہوگئیں کہ احتراق ۱ عین ترند ۲ ہے اور ترند ۲ بمعنی اوسط اور ملین ۴ وانطباع ۵ وذوبان سب کا حاصل انطراق، صلاحیت ۶ ملین وانطباع متلازم فی الوجود ہیں اور ان کے مشتق متساوی فی الصدق اور صلوح ذوبان بھی ظاہراً ان دونوں کالازم وملزوم اور ان کا اس سے مطلقاً عموم بھی ایک احتمال غیر معلوم۔ اب بارہ ۱۲ عبارات اعنی باستثنائے دو ۲ پیشین اول مورد ایراد اور دوم باطل ہے سب کا حاصل دو ۲ وصفوں کا اعتبار ہوا ترند وانطراق پانچوں وصف انہیں دو ہی کی طرف راجع ہوگئے اور بفضلہ تعالٰی اتنے فائدے ظاہر ہوئے:

(۱) انطباع کی لین سے تفسیر کہ دررنے کی صحیح اور تفسیر بالمساوی ہے۔

(۲) تقطیع ولین سے اس کی تفسیر کہ منخ نے کی اس کے خلاف نہیں، صرف اصل مفہوم انطباع یعنی قابلیت عمل کا اس میں اظہار فرمادیا ونعم فعل (اور کیا ہی اچھا کیا۔ ت)

(۳) یلین و ینطبع خواہ ینطبع ویلین ہر ایک میں ایضاح کے لئے جمع متسادین ہے ان میں نہ اتحاد مصداق باطل نہ جمع میں ایہام غلط نہ کوئی لغویت نہ تفسیر بالاخفی۔

(۴) اظہر تساوی انطباع و ذوبان ہے تو بدستور یذوب وینطبع خواہ ینطبع ویذوب ایک ہی بات ہے اور اجتماع مثل جمع ولین وانطباع البتہ اگر عموم انطباع ثابت ہو تو عبارات نہم ودہم ویاز دہم نیز عبارات شمس الائمہ و ظہیرہ وخانیہ وخزانتہ المفتین میں جمع ذوبان وانطباع یاذوبان ولین ضرور موہم غلط ہوگا کہ اب جنسیت ارض وجود ذوبان پر موقوف رہے گی حالانکہ مجرد انطباع سے حاصل لاجرم واو بمعنی او لینا ہوگا اور ذکر ذوبان ضائع۔ ان اکابر سے اس کا صدور ہمارے اس استظہار کی صحت پر دلیل ہے کہ ذوبان بھی ملازم انطباع ہے۔

(۵) عبارت ششم میں ایک طرف اضافہ انطباع دوسری طرف ترک کا حاصل ایک ہی ایضا با بڑھایا اور ایجاز ا کم کیا۔

(6) Similarly, in the thirteenth text, include omission and mention. (7) In "Yan-tabi' wa Yaleen" (malleable and soft), the benefit of clarification is intended because the word 'intiba' (malleability) is rarely heard, and in 'yaleen' and 'yan-tabi', there is a removal of doubt, that one might perceive it in a general sense. (8) Similarly in the advancement and delay of melting and malleability. (9) The beauty in the eleventh text is that in the second type, both primary effects of fire were taken, although mentioning softness was sufficient. (10) In the third, fourth, and fourteenth, there is the benefit of conciseness, as only one of the three requirements was taken from malleability, because it was enough to indicate the intended meaning; for the rest, the path of clarification is through elaboration. (11) In the text of 'Inayah', contrary to 'kull' (all) or 'masahat' (area/measurement), there is either a redundant 'alif' from a scribe, or it is for emphasis in expression, meaning whether you say 'it becomes malleable' or 'it becomes soft', the result is one. (12) In 'Ghurar', after the word 'wa huwa' (and it is), the words 'ma bar huna' should be present, and in 'Durar', the first 'aw' (or) should be omitted so that it becomes an explanation of the genus, and this is the statement of non-genus. And Allah Almighty knows best. Rejection of the collective objection (13): If sulfur and 'zanbah' are not malleable, then how can they be impressionable? (14) Here 'Taramud' means middle, and 'Ramad Hajar' means the first; certainly the statement in 'Dur-ul-Mukhtar' is 'except stone ash' (t - on which Imam Tahtawi said: 'like gypsum' - as if it were plaster - t). Imam Shami said: 'like gypsum'.

Margin Note (I say): There is an objection to this that gypsum itself is a stone, not its ash. Its ash is lime (Kals). And this objection also applies to Imam Shami combining both. The answer is that lime is sometimes metaphorically called gypsum, as mentioned in 'Hulyah' with reference to 'Nisab'. Stone was cooked so much that it became gypsum (i.e., lime), then if tayammum (dry ablution) was performed with it, it is permissible, and the fatwa is on this. End. So in Shami, the word 'Kals' is an explanatory conjunction. 12 (He whose sins are forgiven). (M/T)

1. Dur-ul-Mukhtar, Chapter on Tayammum, 1/42
2. Al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, 1/128

جلد سوم (तीसरा खंड) فتاوی رضویہ (फ़तावा रज़विया)

(6) इसी तरह तेरहवीं इबारत में 'तर्क (छोड़ना) और 'ज़िक्र' (जिक्र करना) लें। (7) "यन्ताबि' व यलीन" (सांचे में ढलना और नरम होना) में "नफ़्उल ईज़ाह" (स्पष्टीकरण का लाभ) मुराद है कि लफ़्ज़ "इन्तिबाअ" (सांचे में ढलना) कम सुनने में आता है और "यलीन व यन्ताबि" में वहम को दूर करना है ताकि इसे आम अर्थ में न समझ लिया जाए। (8) इसी तरह पिघलने और सांचे में ढलने के आगे-पीछे होने में। (9) ग्यारहवीं इबारत में खूबी यह है कि दूसरी किस्म में आग के दोनों असल असर ले लिए गए, हालांकि केवल 'नरम होने' का ज़िक्र काफी था। (10) तीसरे, चौथे और चौदहवें में "नफ़्उल ईजाज़" (संक्षेप का लाभ) है कि "इन्तिराक" (कूटने से फैलना) की तीन ज़रूरतों में से सिर्फ एक को लिया गया क्योंकि मक़सूद (उद्देश्य) पर दलालत (संकेत) के लिए यही काफी था, बाकी का तरीका स्पष्टीकरण के लिए विस्तार देना है। (11) इबारत 'इनाया' में, 'कुल्ल' (सब) या 'मसाहत' (क्षेत्रफल) के विपरीत, या तो 'अलिफ़' लिखने वाले की गलती से बढ़ गया है या अभिव्यक्ति में ज़ोर देने के लिए है, यानी चाहे "यन्ताबि" कहें या "यलीन", नतीजा एक ही है। (12) 'ग़ुरर' में "व हुवा" (और वह) लफ़्ज़ के बाद "मा बर हुना" (जो यहाँ है) होना चाहिए और 'दुरर' में पहला "औ" (या) हटा देना चाहिए ताकि वह जिन्स (जाति) की व्याख्या बन जाए, और यह ग़ैर-जिन्स का बयान है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है)। नक़ूज़ जमा का दफ़अ (13) गंधक और 'ज़न्बह' सांचे में ढलने वाले नहीं हैं, तो उनमें "मुन्ताबि" (सांचे में ढलना) कैसे हो सकता है। (14) यहाँ "तरम्मुद" का अर्थ मध्य है और "रमाद हजर" (पत्थर की राख) का अर्थ प्रथम है; निश्चित रूप से 'दुर्रे मुख़्तार' का कथन है "मगर पत्थर की राख" (त - जिस पर अल्लामा तहतावी ने फ़रमाया: "जैसे गच" - त)। अल्लामा शामी ने फ़रमाया: "जैसे गच"।

हाशिया (मैं कहता हूँ): इस पर यह आपत्ति है कि 'गच' खुद पत्थर है न कि उसकी राख। राख तो 'कल्स' (चूना) है। और अल्लामा शामी के'गच' और 'चूना' दोनों को इकट्ठा करने पर भी यह आपत्ति होगी। और जवाब यह है कि 'कल्स' (चूने) को कभी-कभी मज़ाज़न (उपलंकारिक रूप से) 'गच' कह दिया जाता है, जैसा कि 'हुलिया' में 'निसाब' के हवाले से है। पत्थर को इतना पकाया गया कि वह 'गच' (यानी चूना) हो गया, फिर अगर उससे तयम्मुम किया गया तो जायज़ है और इसी पर फ़तवा है।

इह (समाप्त)। तो शामी में लफ़्ज़ 'कल्स' व्याख्यात्मक संयोजन (अत्फ़ तफ़्सीरी) है। 12 (वह जिसके गुनाह माफ़ किए गए)। (म/त)

1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल तयम्मुम, 1/ 42
2. अत-तहतावी अलद दुर्रिल मुख़्तार, 1/ 128

पृष्ठ 615 का 756

(۶) یوں ہی عبارت سیزدہم میں ترک وذکرلیں۔ (۷) ینطبع ویلین میں نفع الایضاح مراد ہے کہ لفظ انطباع قلیل السماع اور یلین و ینطبع میں ازاعت وہم ہے کہ توہم لیں بمعنی عام کا اندفاع۔ (۸) یوں ہی ذوبان وانطباع کی تقدیم و تاخیر میں۔ (۹) عبارت یازدہم میں خوبی یہ ہے کہ قسم دوم میں نار کے دونوں اثر اصلی لے لیے اگرچہ ذکر لین کافی تھا۔ (۱۰) سوم و چہارم و چہار دہم میں نفع الایجاز ہے کہ ملزومات ثلاثہ انطراق سے صرف ایک لیا کہ دلالت علی المقصود پر بس تھا باقیوں کا مسلک الایضاح کے لیے اطناب۔ (۱۱) عبارت عنایہ میں برخلاف کل او مساحت ہے یا الف زیادت ناسخ یا او تکبیر فی التعبیر کے لیے یعنی ینطبع کہو یا یلین حاصل ایک ہے۔ (۱۲) غرر میں بعد وھو لفظ ما بر ھنا چاہیے اور دُرر میں پہلا او گھٹنا کہ وہ جنس کی تفسیر ہو جائے اور یہ غیر جنس کا بیان واللہ تعالٰی اعلم۔ نقوض جمع کا دفع (۱۳) کبریت وزنبح منطرق نہیں تو منطبع کہاں۔ (۱۴) یہاں تَرَمُد بمعنی اوسط ہے اور رَماد حجر بمعنی اول لاجرم قول در مختار الا رماد حجر (مگر پتھر کی راکھ ت پر علامہ طحطاوی نے فرمایا: کالجص عہ (جیسے گچ ت)۔ علامہ شامی نے فرمایا: کالجص۔

عہ اقول: فیہ ان الجص ھو الحجر نفسہ لارماده | اقول : (میں کہتا ہوں) اس پر یہ اعتراض ہے کہ جص خود پتھر ہی وانما رماده الکلس و یرده ایضاً علی جمع الشامي | ہے پتھر کی راکھ نہیں راکھ تو کلس (چونا) ہے۔ مثال میں علامہ بینھما و الجواب انه قد یطلق الجص علی الکلس | شامی کے جص اور کلس دونوں جمع کرنے پر بھی یہ اعتراض ہوگا۔ اور تجوزا کما فی الحلیة عن النصاب الحجر طبخ حتی | جواب یہ ہے کہ کلس (چونا) کو کبھی مجازاً جص (گچ) کہہ دیا جاتا ہے صار جصاً لتیمم جاز وعلیہ الفتوی اہ فالکلس فی ش | جیسا کہ حلیہ میں نصاب کے حوالہ سے ہے۔ پتھر

اتنا پکایا گیا کہ جص عطف تفسیر ۱۲ منہ غفر لہ۔(م) | (یعنی چونا) ہو گیا پھر اس سے تیمم کیا تو جائز ہے اور اسی پر فتوی ہے اھ تو شامی میں لفظ کلس عطف تفسیری ہے۔ ۱۲منہ غفر لہ (ت)

۱ در مختار باب التیمم ۱/ ۴۲ ۲ الطحطاوی علی الدر المختار ۱/ ۱۲۸

Fatawa Razawiyya, Volume 3

...and calcined materials (like gypsum and lime). Likewise, Turkestan stone, lime, and Madani lead oxide. (15) Here, malleability is meant, which is neither in gypsum/calcined materials nor in sulfur and arsenic. (16) Similarly, in sulfur and arsenic, melting is dissolution, not the melting of solidification and malleability which is meant here. (17) In these and in gypsum, fuse stone, Bajirah stone, Khuzami stone, and coal and burnt earth, there is combustion, not ashification (taramud) which is meant here. Refuting the objections to the restriction. I say: By the grace of Allah, it is very easy. In every definition, the genus is considered. Due to its clarity and also the clarifications in this chapter, the scholars have left it implicit as is customary in their noble habits. Therefore, objections appear at first glance, but in reality, they are nothing. That genus is a heavy, solid body in essence, either without wateriness or with little wateriness. From this: (1) The exclusion of water, whey, milk, liquid ghee, oil, gas, and their likes is clear. (2) Similarly, sugar syrup, solidified ghee, mud in which water is dominant, primarily snow-like ice. (3) Similarly, it is clear that mercury's wateriness is predominant, though it is water that has not completely solidified. (4) Sambhar (salt) is made from water. (5) Similarly, for every kind of vitriol (zaj), it is mentioned in Anwar al-Asrar from Ibn Sina:

Vitriols are gems that accept dissolution, and they were liquid, then they solidified.	**Az-Zajaatu Jawahirun Taqbalu al-Halla wa Qad Kanat Sayyalatan Fa-in'aqadat - 2**

(6) If 'ikzaj' means alum, then it is also solidified wateriness. (7) Resin and camphor are both gums, and gum is tree moisture that solidifies. (8) Ash in the second and third meanings consists of the burnt parts of that body which contained many moist parts. So, by the grace of Allah Almighty, all are excluded from the genus. Thus, being excluded from the genus 'Arj', the most correct, clear, comprehensive, and exclusive definition of the genus 'Earth' is the fifteenth statement, the Razawi statement: "It is heavy, essentially solid, neither excessively watery nor malleable by fire. Non-ashification itself..."

Note: Fire is excluded by "heavy" because it seeks the periphery (ascends), otherwise the other qualities applied to it. Water is excluded by "essentially solid", and air is

excluded by both because it is neither seeking the center nor dry. The remaining benefits are clear from previous discussions. 12 (Author) may he be forgiven.

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/120.
2. Anwar al-Asrar.

फ़तावा रज़विया, खंड 3

...और निस्तापित पदार्थ (जैसे जिप्सम और चूना)। वैसे ही तुर्कस्तान पत्थर, चूना और मदनी सीसा ऑक्साइड। (15) यहाँ आघातवर्ध्यता (malleability) अभिप्रेत है, जो न तो जिप्सम/निस्तापित पदार्थों में है और न ही गंधक और हरताल में। (16) इसी तरह, गंधक और हरताल में पिघलना घुलना है, वह जमावट और आघातवर्ध्यता वाला पिघलना नहीं जो यहाँ अभिप्रेत है। (17) इनमें और जिप्सम, फ्यूज स्टोन, बजीरा पत्थर, खुज़ामी पत्थर, और रेल के कोयले और जली हुई मिट्टी में दहन होता है, भस्मीकरण (तरमुद) नहीं जो यहाँ अभिप्रेत है। प्रतिबंध के आपत्तियों का निवारण। मैं कहता हूँ: अल्लाह की कृपा से यह बहुत सरल है। हर परिभाषा में 'जीनस' (वर्ग) का ध्यान रखा जाता है। स्पष्टता और इस अध्याय के स्पष्टीकरणों के कारण, विद्वानों ने इसे अंतर्निहित रखा है जैसा कि उनकी महान आदतों में सामान्य है। इसलिए, पहली नज़र में आपत्तियाँ दिखाई देती हैं, लेकिन वास्तव में वे कुछ भी नहीं हैं। वह वर्ग मूल रूप से एक भारी, ठोस शरीर है, जो या तो जल रहित है या जिसमें बहुत कम जलीयता है। इससे: (1) पानी, मट्ठा, दूध, पिघला हुआ घी, तेल, गैस और उनके जैसे अन्य का बाहर होना स्पष्ट है। (2) इसी तरह, चीनी की चाशनी, जमा हुआ घी, वह कीचड़ जिसमें पानी की अधिकता हो, मुख्य रूप से ओले वाली बर्फ। (3) इसी तरह, पारे की जलीयता का प्रबल होना स्पष्ट है, यद्यपि वह पानी जैसा है जो पूरी तरह से जमा नहीं है। (4) सांभर (नमक) पानी से बनता है। (5) इसी तरह, अनवार अल-असरार में इब्न सीना से हर प्रकार के तूतिया (ज़ाज) के बारे में है:

तूतिया ऐसे रत्न हैं जो घुलने की क्षमता रखते हैं और पहले तरल थे फिर ठोस हो गए।

अज़-ज़ाजातु जवाहिदुन तक़बलु अल-हल्ला व क़द कानत सय्यालातन फ़इन'अक़दत - 2

(6) यदि 'इकज़ाज' का अर्थ फिटकरी है, तो वह भी जमी हुई जलीयता है। (7) राल और कपूर दोनों गोंद हैं और गोंद पेड़ की नमी है जो जम जाती है। (8) राख दूसरे और तीसरे अर्थ में उस शरीर के जले हुए हिस्से हैं जिसमें कई नमी वाले हिस्से थे। तो, अल्लाह तआला की कृपा से, सभी वर्ग से बाहर हैं। इसलिए, 'अज' वर्ग से बाहर, पृथ्वी वर्ग की सबसे सही, स्पष्ट, व्यापक और अनन्य परिभाषा पंद्रहवीं अभिव्यक्ति है, रज़वी अभिव्यक्ति: "वह भारी, मूल रूप से ठोस है, न तो बहुत अधिक जलीय है और न ही आग से आघातवर्ध्य है। स्वयं भस्मीकरण का न होना..."

नोट: "भारी" से आग बाहर हो गई क्योंकि वह परिधि की ओर भागती है (ऊपर उठती है), अन्यथा अन्य गुण उस पर लागू होते। "मूल रूप से ठोस" से पानी बाहर हो गया, और दोनों से हवा बाहर हो गई क्योंकि वह न तो केंद्र की ओर भागती है और न ही सूखी है। शेष लाभ पिछली चर्चाओं से स्पष्ट हैं। 12 (लेखक) उन्हें क्षमा किया जाए।

1. रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/120।
2. अनवार अल-असरार।

पृष्ठ 616 का 756

وکلس (۱ (جیسے گچ اور چونا۔ ت) یوں ہی حجر ترکستان و نورہ و مردار سنگ مدنی۔ (۱۵) یہاں مراد لین انطراق ہے اور وہ نہ جس و مکلس میں نہ کبریت وزرنیخ میں۔ (۱۶) یوں ہی کبریت وزرنیخ میں ذوبان انحلال ہے نہ ذوبان تعقد وانطراق کہ یہاں مراد۔ (۱۷) ان میں اور جس و حجر فتیلہ و سنگ بجیرہ و حجر خزامی اور ریل کے کوئلے اور ارضِ محترقہ میں احتراق ہو ترمّد نہیں جو یہاں مراد۔ نقوضِ منع کا دفع۔ اقول: بحمد اللہ وہ بہت سہل ہے ہر تعریف میں جنس ملحوظ ہوتی ہے علمائے کرام نے بوجہ وضوح و نیز تصریحاتِ باب یہاں اس کا ذکر مطوی فرمایا جیسا کہ اکثر ان کی عاداتِ کریمہ سے معہود، لہٰذا نظر میں نقوض نظر آتے ہیں اور حقیقتہً کچھ نہیں وہ جنس جسم ثقیل یابس الاصل بے مائیت یا قلیل المائیت ہے اس سے: (۱) پانی عرق ماء الجبن، شیر، بہتا گھی، تیل، گاز اور ان کے امثال کا خروج ظاہر۔ (۲) یو نہی شکر کا قوام جما ہوا گھی وہ کیچڑ جس پر پانی غالب ہے اولاً پالا کل کا برف۔ (۳) یو نہی پارے کا مغلوب المائیت ہونا ظاہر گو یادوہ پانی ہے کہ پورا جما بھی نہیں۔ (۴) سا نبھر پانی سے بنتی ہے۔ (۵) یوں ہی ہر قسم زاج انوار الاسرار میں ابنِ سینا سے ہے:

زاجات ایسے جواہر جو حل ہونے کی صلاحیت رکھتے ہیں الزاجات جواھر تقبل الحل وقد کانت پہلے سیال تھے پھر گرہ پکڑلی۔ (ت) سیالۃ فانعقدت - 2

(۶) اگزا ج بمعنی شب یعنی پھٹکری لو تو وہ بھی مائیت منعقدہ ہے۔ (۷) رال اور کافور دونوں گوند ہیں اور گوند درخت کی رطوبت کہ جم جاتی ہے۔ (۸) رماد معنی دوم و سوم پر اس جسم کے جلے ہوئے اجزا ہیں جو اجزائے کثیرہ رطبہ پر مشتمل تھا، تو بحمدہ تعالٰی سب جنس سے خارج لہٰذا جنس ارج سے خارج تو جنسِ ارض کی تعریف میں اصح و واضح و جامع و مانع عبار پانزدہم

عبارت رضویہ ہے وہ ثقیل عہ یابس الاصل کہ نہ کثیر المائیت ہو نہ آگ سے منطرق ۔ عدم ترمّد خود

عہ: ثقیل سے نار خارج ہوئی کہ طالب محیط ہے ورنہ باقی اوصاف اس پر صادق تھے یابس الاصل سے پانی خارج ہوا اور دونوں سے ہوا کہ نہ طالب مرکز ہے نہ خشک۔ باقی فوائد مباحثِ سابقہ سے ظاہر ہیں۔ ۱۲ منہ غفر لہ (م)

1 رد المحتار باب التیمم داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۱۲۰ 2 انوار الاسرار

Fatawa Razawiyya, Volume 3

In which it appeared, as you have known, that the most correct of definitions was Jallabi's definition, if instead of "every part of it," it was "this genus."

[Arabic Column]: Thus should the research be * And Allah, Glory be to Him, is the Giver of success * And may Allah the Exalted send blessings upon the Generous, Merciful, and Gracious Master * and upon his family and companions, the guides of the path * Amen.

[Urdu Column]: In the same way, research should be conducted, and Allah, Glorified and Exalted is He, is the Master of success, and may Almighty God send mercy upon the merciful, gracious, and gentle Master and his family and companions who are the guides of the path of truth. O Allah, accept it. (T)

Important Note: This is what was revealed by Divine Grace to the weak servant, which consolidated the words, organized the rulings, and nullified the contradictions. However, a strong doubt arises here; several great scholars wrote 'glass' as an example of something moldable (munta'bi). It is in Bada'i, then Hindiyya, then Tuhfa, and then Idhah:

[Arabic Column]: "That which burns like wood, or is moldable and softens like iron and glass." (1) [Urdu Column]: That which burns, like wood, or is moldable and becomes soft, like iron and glass. (T)

Similarly, it is in Sharh Miskin and in Kafi:

[Arabic Column]: "Not with that which is moldable and softens or burns, like the two currencies (gold and silver), lead, and glass, and such as wheat, salt, and ash." (2) [Urdu Column]: Not with that which is moldable and soft or burns like gold, silver, lead, and glass, and like wheat, salt, and ash. (T)

It is in Hilya:

[Arabic Column]: "What does not burn like wood, and does not soften or become moldable like glass." (3) [Urdu Column]: That which is not like wood that burns, and not like glass that softens and becomes moldable. (T)

In Durr al-Mukhtar it is:

[Arabic Column]: "Not with something moldable like silver and glass." (4) [Urdu Column]: Not with any moldable thing like silver and glass. (T)

Footnotes: 1. Bada'i al-Sanai', Section on things for Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/53. 2. Kafi 3. Hilya 4. Al-Durr al-Mukhtar with Al-Shami, Chapter on Tayammum, Mustafa Al-Babi Press, Egypt, 1/176.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

जिसमें यह आया जैसा कि मालूम हुआ तो सहीह तरीन तारीफ़ात में से तारीफ़-ए-जलाबी थी अगर 'कुल जुज़ मिन्हु' की जगह यह 'जिन्स' होती।

[अरबी कॉलम]: तहक़ीक़ ऐसी ही होनी चाहिए * और अल्लाह सुब्हानहू ही तौफ़ीक़ का मालिक है * और अल्लाह तआला रहमत नाज़िल फ़रमाए करीम, रहीम और रफ़ीक़ (नरमदिल) आक़ा पर * और उनकी आल ओ असहाब पर जो राह-ए-हक़ के हादी हैं * आमीन।

[उर्दू कॉलम]: इसी तरह तहक़ीक़ होनी चाहिए, और अल्लाह सुब्हानहू व तआला ही तौफ़ीक़ का मालिक है और ख़ुदा-ए-तआला रहमत नाज़िल फ़रमाए रहम ओ करम और नरमी वाले आक़ा और उनकी आल ओ असहाब पर जो राह-ए-हक़ के हादी हैं। इलाही क़बूल फ़रमा। (त)

तन्बीह-ए-नबीह : यह है वह जो ब-तौफ़ीक़-ए-लतीफ़ अब्द-ए-ज़ईफ़ पर ज़ाहिर हुआ जिसने कलिमात मुल्तम (एकत्र) कर दिए और अहकाम मुनतज़म और नुक़ूज़ मुनअदिम। मगर यहाँ एक शुबहा क़विया है मुतअद्दद अकाबिर ने मुनतबे' (साँचे में ढलने वाला) की मिसाल में ज़ुजाज (शीशा) लिखा, बदाइ' फिर हिंदिया और तोहफ़ा फिर ईज़ाह में है :

[अरबी कॉलम]: "जो जले जैसे लकड़ी, या मुनतबे' और नर्म हो जैसे लोहा और शीशा।" (1) [उर्दू कॉलम]: जो जले, जैसे लकड़ी, या मुनतबे' और नर्म हो, जैसे लोहा और शीशा- (त)

इसी के मानिंद शरह मिस्कीन में है, काफ़ी में है:

[अरबी कॉलम]: "उससे नहीं जो मुनतबे' और नर्म हो या जले जैसे नुक़दैन (सोना-चाँदी), सीसा और शीशा और जैसे गेहूँ, नमक और राख।" (2) [उर्दू कॉलम]: उससे नहीं जो मुनतबे' और नर्म हो या जले जैसे सोना, चाँदी, सीसा और शीशा और जैसे गेहूँ, नमक और राख। (त)

हिलया में है:

[अरबी कॉलम]: "जो लकड़ी की तरह जलने वाला न हो और शीशे की तरह नर्म होने वाला और मुनतबे' होने वाला न हो।" (3) [उर्दू कॉलम]: जो लकड़ी की तरह जलने वाला न हो और शीशे की तरह नर्म होने वाला और मुनतबे' होने वाला न हो। (त)

दुर्रे मुख़्तार में है:

[अरबी कॉलम]: "चाँदी और शीशे जैसी किसी मुनतबे' चीज़ से नहीं।" (4) [उर्दू कॉलम]: चाँदी और शीशे जैसी किसी मुनतबे' चीज़ से नहीं। (त)

पादलेख: 1. बदाइ' अस्सनइ' फ़स्ल मा तयम्मम बिहि एच एम सईद कंपनी कराची 1/ 53 2. काफ़ी 3. हिलया 4. अल दुर्रे मुख़्तार मा' अश्शामी बाब अत्तयम्मम मतबअ मुस्तफ़ा अलबाबी मिस्र 1/ 176

पृष्ठ 617 का 756

جلد سوم فتاوٰی رضویہ جس میں آگیا کما علمت (جیسا کہ معلوم ہوا ت) تو اصح تعریفات تعریفِ جلابی تھی اگر کل جزء منہ کی جگہ یہ جنس ہوتی۔

ھکذا ینبغي التحقیق * واللہ سبحنہ ولی التوفیق * وصلی اللہ تعالی علی السید الکریم الرحیم الرفیق * وآلہ وصحبہ ھداۃ الطریق * امین۔ | اسی طرح تحقیق ہونی چاہئے، اور اللہ سبحانہ و تعالٰی ہی توفیق کا مالک ہے اور خدائے تعالٰی رحمت نازل فرمائے رحم و کرم اور نرمی والے آقا اور ان کی آل و اصحاب پر جو راہِ حق کے ہادی ہیں۔ الٰہی قبول فرما۔(ت)

تنبیہِ نبیہ : یہ ہے وہ کہ بتوفیقِ لطیف عبدِ ضعیف پر ظاہر ہوا جس نے کلمات ملتم کردئے اور احکام منتظم اور نقوض منعدم۔ مگر یہاں ایک شبہ قویہ ہے متعدد اکابر نے منطبع کی مثال میں زجاج لکھا بدائع پھر ہندیہ اور تحفہ پھر ایضاح میں ہے :

ما یحترق کالحطب او ینطبع ویلین کالحدید والزجاج- 1 | جو جلے، جیسے لکڑی، یا منطبع اور نرم ہو، جیسے لوہا اور شیشہ-(ت)

اسی کے مانند شرح مسکین میں ہے، کافی میں ہے:

لا بما ینطبع ویلین او یحترق کالنقدین والرصاص والزجاج ونحو الحنطۃ والملح والرماد- 2 | اس سے نہیں جو منطبع اور نرم ہو یا جلے جیسے سونا، چاندی، سیسہ اور شیشہ اور جیسے گیہوں، نمک اور راکھ۔(ت)

حلیہ میں ہے:

ما لا یحترق کالحطب ولا یلین ولا ینطبع کالزجاج - 3 | جو لکڑی کی طرح جلنے والا نہ ہو اور شیشے کی طرح نرم ہونے والا اور منطبع ہونے والا نہ ہو۔(ت)

در مختار میں ہے:

لا بمنطبع کفضۃ وزجاج - 4 | چاندی اور شیشے جیسی کسی منطبع چیز سے نہیں۔(ت)

1 بدائع الصنائع فصل ما یتیم بہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۵۳ 2 کافی 3 حلیہ 4 الدر المختار مع الشامی باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۶ Page 617 of 756

And it is obvious that glass is not malleable; its molding (intiba') is such that it melts with fire, is cast into a mold, and remains in form upon cooling. So it is proven that according to them, this very softening (leen) and melting (dhuban) by fire, which prepares it for accepting form, is molding by fire (intiba' bin-nar), whether the persistence of form is by the object's own inherent quality, as in gold and silver in the form of mere softening, or by the disappearance of the effect of fire, as in them in the form of melting. And the texts would still be consistent, though with effort. By 'softening' (leen) specifically is meant that which makes it capable of molding, whether by itself or by increasing to melting, thus by melting. It is clear that whatever can be softened by fire will also be meltable. Therefore, the capacity for aforementioned softening and aforementioned melting are inseparable. This capacity is the objective of molding by fire, so whether it's called softening or melting or molding, the result is one, and the difference in phrasing is merely a difference in expression. Yes, only the phrasing of 'Inayah' remains subject to scrutiny, and it can be said that in it, 'softening' refers to mere softening for molding, following the rule of mentioning the specific after the general. The noble jurists (1) consider the use of the word 'or' (aw) permissible in this context. In 'Rad al-Muhtar' under the section on marriage, regarding the commentator's statement 'fasiqin aw mahdoodin' (sinners or those who have had the legal penalty applied):

[Arabic Box Text]: Mentioning the specific after the general occurs in the most eloquent of speech, although they have stated that when the specific is juxtaposed with the general, what is intended by the general is everything except the specific. However, in 'Al-Mughni', it is mentioned that 'wa' (and) and 'hatta' (even) are unique for conjunction of the specific onto the general, but the jurists allow 'thumma' (then) and 'aw' (or) as well, as in the Hadith: 'And he whose migration was for a worldly gain he might attain, or for a woman he might marry...'

[Urdu Translation in Box]: Mentioning the specific after the general is found in the most eloquent speech. Furthermore, experts have clarified that when a specific term is brought against a general one, it refers to everything besides that specific term in the general sense. But in 'Mughni' it is said that 'wa' (and) and 'hatta' (even) are unique for conjoining the specific to the general, but jurists show leniency in conjoining it via 'aw' (or). I say, and some personages have clarified the permissibility of this conjunction through 'thumma' and 'aw', as in the hadith 'Wa man kanat

hijratuhu...' etc.: 'And he whose migration is towards some worldly gain which he may attain or towards some woman whom he may marry.' (T)

I say first: By these efforts, the texts have become consistent, otherwise there was a clear contradiction present that the seven previous texts gave an example from glass by saying 'softening', whereas the molding of glass is not from softening but from melting, yet the rulings are wrong.

---

1 Rad al-Muhtar, Chapter of Marriage, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 2/297

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

और ज़ाहिर है कि काँच (ज़ज़ाज) मल्लेबल (मंतरीक़) नहीं है, उसका साँचे में ढलना (इन्तिबा) ऐसा ही है कि आग से पिघलता है और साँचे में ढलता है और ठंडा होकर अपनी सूरत पर कायम रहता है। तो साबित हुआ कि उनके नज़दीक यही आग से नरम होना (लीन) और पिघलना (ज़ोबान) जो सूरत ग्रहण करने के लिए तैयार करते हैं, 'आग से ढलना' (इन्तिबा बिल नार) हैं, चाहे सूरत का कायम रहना उस चीज़ की अपनी ज़ाती खूबी से हो जैसे सोने-चाँदी में सिर्फ़ नरमी की सूरत में, या आग का असर ज़ायल होने से जैसे उनमें पिघलने की सूरत में। और इबारतें अब भी सुसंगत हो जाएँगी, अगरचे कुछ मशक्कत से। नरमी से मुराद वो खास है जो उसे ढलने के काबिल कर दे, चाहे खुद बज़ात हो या पिघलने तक बढ़ कर यूँ ही पिघलने से। और ज़ाहिर है कि जो आग से इतना नरम हो सकेगा, वो पिघलने के काबिल भी होगा। तो मज़कूर नरमी और मज़कूर पिघलने की सलाहियत लाज़िम-ओ-मल्ज़ूम हुईं और ये सलाहियत 'आग से ढलने' का मक़सद है, तो चाहे उसे नरमी कहा जाए या पिघलना या ढलना, हासिल एक ही है और इबारतों का इख्तिलाफ़ सिर्फ़ बयान का इख्तिलाफ़ है। हाँ, सिर्फ़'इनाया' की इबारत अब भी गौर के काबिल रहेगी और कहा जा सकता है कि इसमें नरमी से मुराद ढलने के लिए सिर्फ़ नरमी है और आम के बाद खास का जिक्र (अतफ़-ए-खास अला अल-आम) है। और फ़ुक़हा (१) किराम इसमें 'या' (अव) के इस्तेमाल को जायज़ रखते हैं। 'रद्दुल मुहतार' बाब-उल-निकाह में शाहेर के कौल 'फ़ासिक़ीन या महदूदीन' (गुनाहगार या वो जिन पर हद जारी की गई हो) के तहत है:

[अरबी बॉक्स]: आम के बाद खास का ज़िक्र सबसे फ़सीह कलाम में वारिद है। हालांकि उन्होंने स्पष्ट किया है कि जब आम के मुकाबले में खास लाया जाए तो उस आम से खास के अलावा मुराद होते हैं। लेकिन 'मुग़नी' में यह है कि आम पर खास को जोड़ने के लिए 'वा' (और) और 'हत्ता' (यहाँ तक कि) मुनफ़रिद हैं लेकिन फ़ुक़हा 'सुम्मा' (फिर) और 'अव' (या) के ज़रिये भी इसे जोड़ने में नरमी बरतते हैं, जैसा कि हदीस में है: 'और जिसकी हिजरत दुनिया के लिए थी जिसे वह पा ले, या औरत के लिए जिससे वह निकाह कर ले...'

[उर्दू अनुवाद बॉक्स]: आम के बाद खास का ज़िक्र अफ़सह कलाम में वारिद है। इसके अलावा विशेषज्ञों ने यह वज़ाहत फ़रमाई है कि जब आम के मुक़ाबले में खास लाया जाए तो उस आम से खास के अलावा मुराद होते हैं। लेकिन 'मुग़नी' में यह है कि आम पर खास को मअतूफ़ करने के लिए 'वा' और 'हत्ता' मुनफ़रिद हैं लेकिन 'अव' के ज़रिये इसे मअतूफ़ करने में फ़ुक़हा तसामुह (नरमी)

बरतते हैं। मैं कहता हूँ, और बाज़ हज़रात ने 'सुम्मा' और 'अव' के ज़रिये इस अत्फ़ (जोड़) के जवाज़ की वज़ाहत की है जैसे हदीस 'वमन कानत हिजरतुहु...' वग़ैरह में है: 'और जिसकी हिजरत किसी दुनिया की तरफ़ हो जिसे वह हासिल करे या किसी औरत की तरफ़ जिससे वह निकाह करे।' (त)

मैं पहले कहता हूँ: इन कोशिशों से इबारतें तो सुसंगत हो गईं वरना साफ़ रद मौजूद था कि पिछली सातों इबारतों में नरमी (लीन) कहकर काँच से मिसाल दी गई है और काँच का ढलना नरमी से नहीं बल्कि पिघलने से है, लेकिन अहकाम गलत हैं।

---

१ रद्दुल मुहतार बाब-उल-निकाह मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र २/२९७

اور ظاہر ہے کہ زجاج منطرق نہیں اس کا انطباع یوں ہی ہے کہ آگ سے پگھلتا اور سانچے میں ڈھلتا اور ٹھنڈا ہو کر صورت پر قائم رہتا ہے تو ثابت ہوا کہ ان کے نزدیک یہی لین وذوبان بالنار کہ قبول صورت کے لئے مہیا کریں انطباع بالنار ہیں خواہ قیام صورت خود اس شے کے اپنے ذاتی وصف سے ہو جیسے سونے چاندی میں بصورت لین مجرد یا بروز وال اثر نار سے جیسے ان میں بصورت ذوبان۔ اور عبارتیں اب بھی ملتئم ہو جائیں گی اگر چہ بتکلف۔ لین سے خاص وہ مراد ہے کہ انطباع کے قابل کرے خواہ بذات خود یا ذوبان تک بڑھ کر یوں ہی ذوبان سے، اور ظاہر ہے کہ جو آگ سے ایسا نرم ہو سکے گا ایسا ذائب بھی ہو سکے گا تو صلاحیت لین مزبور وذوبان مذکور متلازم ہوئیں اور یہ صلاحیت انطباع بالنار سے مقصود تولین یا ذوبان یا انطباع جو کچھ کہا جائے حاصل ایک ہے او تخالف عبارات صرف تخالف تعبیر۔ ہاں فقط عبارت عنایہ اب بھی محل نظر رہے گی اور کہہ سکتے ہیں کہ اس میں لین سے لین مجرد بموجب انطباع مراد اور عطف خاص علی العام، اور فقہائے (۱) کرام اس میں حرف او جائز رکھتے ہیں ردالمختار صدر نکاح میں زیر قول شارح فاسقین او محدودین (فاسقین یا جن پر حد جاری کی گئی ہو۔ ت) ہے:

ذكر الاخص بعد الاعم واقع في افصح الكلام على انهم صرحوا انه اذا قوبل الخاص بالعام يراد به ماعدا الخاص لكن فى المغنى ان عطف الخاص على العام مما تفردت به الواو وحتى لكن الفقهاء يتسامحون بجوازه بثم و باو كما في حديث ومن كانت هجرته الى دنيا يصيبها او امرأة ينكحها ۱۔

اعم کے بعد اخص کا ذکر افصح کلام میں وارد ہے۔ علاوہ ازیں ارباب فن نے یہ صراحت فرمائی ہے کہ جب عام کے مقابل لہ میں خاص لایا جائے تو اس عام سے خاص کے ماسوا مراد ہوتے ہیں

لیکن مغنی میں یہ ہے کہ عام پر خاص کو معطوف کرنے کے لئے "واو اور حتی" منفرد ہیں لیکن "او" کے ذریعہ اسے معطوف کرنے میں فقہاء تسامح برتتے ہیں۔ میں کہتا ہوں۔ اور بعض حضرات نے "ثم اور او" کے ذریعہ اس عطف کے جواز کی صراحت ہے جیسے حدیث ومن کانت ھجرتہ الخ میں ہے: اور جس کی ہجرت کسی دنیا کی طرف ہو جسے حاصل کرے یا کسی عورت کی طرف جس سے نکاح کرے۔ (ت)

اقول اولاً: ان تکلفات سے عبارات تو ملتئم ہو گئیں ورنہ صریح رد موجود تھا کہ ساتوں عبارات پیشین میں لین کہہ کر زجاج سے مثال دی ہے اور انطباع زجاج لین سے نہیں بلکہ ذوبان سے ہے مگر احکام غلط

---

1 ردالمختار باب النکاح مطبع مصطفی البابی مصر ۲ / ۲۹۷

Volume III Fatawa Razawiyya

Sulfur and arsenic are certainly substances that melt with fire and in this sense are matured by fire, so it would follow that they are not from the genus of the earth and Tayammum with them is impermissible. However, the clarification that sulfur is from the genus of the earth and valid for Tayammum is present in reliable books like Tabyeen al-Haqa'iq, Fath al-Qadir, Bahr al-Ra'iq, Nahr al-Fa'iq, Maraqi al-Falah, Fatawa 'Alamgiriyya, Fathullah al-Mu'een, and Tahawi 'ala al-Durr al-Mukhtar etc. In fact, no one has even hinted at the contrary. As for arsenic, its classification [as being from the genus of the earth] is so well-established that it surpasses its peers. The compiler of the school, Imam Muhammad (may Allah be pleased with him), in his book al-Asl, which is from the Zahir al-Riwayah books, narrated this explicitly from the Imam of the school, Imam al-A'immah Imam al-A'zam (may Allah be pleased with him). Then Quduri, Hidayah, Multaqa, Kafi, Sadr al-Shari'ah, Tabyeen, Fath al-Qadir, Hulyah, Ghunyah, Durar, Miskeen, Birjandi, Bahr, Nahr, Maraqi al-Falah, Tahawi 'ala al-Durr, Jallabi, Nawazil, Imam Faqih Abul Layth, Muheet, Khaniyah, Khulasah, Khizanat al-Muftin, Munyah, Sirajiyyah, Hindiyyah etc. (texts, commentaries, and fatwas) have stated its permissibility without even mentioning any disagreement. Can such explicit, clear, reinforced, and well-established texts be rejected based on the understanding of some example? Far from it! All these texts are before me at this time. For the sake of blessing, I will content myself here with only the text of the Imam who recorded the school, and for sulfur, the texts of Fath Tabyeen and Tabyeen Fath. In al-Khulasah, it is mentioned:

Arabic Text	**Urdu Translation**
In al-Asl, it is stated: Abu Hanifah and Muhammad (may Allah be pleased with them) said: Tayammum is permissible with everything that is from the genus of the earth and its parts, such as soil, sand, lime, arsenic, gypsum, stone, clay-clod, antimony, kohl, red clay, yellow clay, ochre, a wall, litharge, and the like.	In al-Mabsut, it is stated: Imam Abu Hanifah and Imam Muhammad (may Allah be pleased with them) said: Tayammum is permissible with every such thing that is from the genus of earth and from the parts of earth, like soil, sand, lime, hartal (arsenic), gach (gypsum), stone, dheela (clay-clod), ithmid, surma (antimony), gul-e-surkh (red clay), gul-e-zard (yellow clay), geroo (ochre), wall, murdar-sang (litharge), etc. (T)

Imam Fakhr al-Zayla'i stated: | Arabic Text | Urdu Translation | | :--- | :--- | | One may perform Tayammum with a pure substance from the genus of the earth, such as

soil, stone, antimony, arsenic, lime, gypsum, sand, ochre, sulfur, ruby, chrysolite, emerald, spinel, turquoise, and coral. | One should perform Tayammum with any pure thing of the earth's genus, such as soil, stone, surma (antimony), hartal (arsenic), lime, gach (gypsum), sand, geroo (ochre), gandhak (sulfur), yaqoot (ruby), zabarjad (chrysolite), zumurrud (emerald), bakhsh (spinel), firoza (turquoise), marjan (coral). (T) |

1. Khulasat al-Fatawa, Chapter of substances with which Tayammum is permissible, published by Nawal Kishore, Lucknow, 1/35.
2. Tabyeen al-Haqa'iq, Chapter of Tayammum, published by Amiriyah Bulaq, Egypt, 1/38.

जिल्द III फ़तावा रज़विया

गंधक और हरताल निश्चित रूप से आग से पिघलने वाले पदार्थ हैं और इस अर्थ में आग से पकाए गए हैं, तो इस तरह यह आवश्यक है कि वे पृथ्वी की श्रेणी (जन्स अर्ज़) से न हों और उनसे तयम्मुम नाजायज़ हो। हालांकि गंधक के पृथ्वी की श्रेणी से होने और तयम्मुम के लिए वैध होने का स्पष्ट उल्लेख विश्वसनीय पुस्तकों जैसे तबीनुल हकाइक, फ़तहुल कदीर, बह्रुर रैक, नहरुल फइक, मराकुल फलाह, फ़तावा आलमगीरिया, फ़तहुल्लाह अल मुईन, तहतावी अलद दुर्रुल मुख़्तार आदि में है और मूल रूप से किसी ने भी इसमें विरोध का संकेत नहीं दिया है। और हरताल की निरंतरता (तवातुर) तो ऐसी महानता और शान के साथ है कि इसके समान किसी अन्य में नहीं है। स्वयं मज़हब के संकलनकर्ता इमाम मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने 'किताबुल असल' में, जो कि ज़ाहिरुर रिवायत पुस्तकों में से है, स्वयं मज़हब के इमाम, इमामुल अइम्मा इमाम आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इस पर स्पष्ट उल्लेख (नस्स) फ़रमाया। फिर क़ुदूरी, हिदाया, मुल्तका, काफी, सद्रुश शरीया, तबीन, फ़तहुल कदीर, हुलिया, गुनिया, दुरर, मिस्कीन, बिर्जिन्दी, बह्र, नहर, मराकुल फलाह, तहतावी अलद दुर्र, जल्लाबी, नवाज़िल, इमाम फ़कीह अबुल लैथ व मुहीत, ख़ानिया, खुलासा, ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन, मुनिया, सिराजिया, हिंदिया आदि ग्रंथों, व्याख्याओं और फ़तवाओं ने बिना किसी मतभेद के संकेत के इसकी अनुमति बताई। क्या ऐसे स्पष्ट, उज्ज्वल और निरंतर पुष्ट उल्लेखों को किसी उदाहरण के अर्थ से खारिज किया जा सकता है? कदापि नहीं! ये सभी उल्लेख इस समय मेरे सामने हैं। यहाँ बरकत के लिए केवल मज़हब संकलनकर्ता इमाम के उल्लेख और गंधى में फ़तह तबीन और तबीन फ़तह पर संतोष करता हूँ। 'खुलासा' में है:

अरबी पाठ

'असल' में है: अबू हनीफ़ा और मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने फ़रमाया: तयम्मुम हर उस चीज़ से जायज़ है जो पृथ्वी की श्रेणी से हो और उसके अंशों में से हो जैसे मिट्टी, रेत, चूना, हरताल, जिप्सम, पत्थर, ढेला, सुरमा, अंजन, लाल मिट्टी, पीली मिट्टी, गेरू, दीवार, मुर्दार-संग आदि।

उर्दू अनुवाद

'मबसूत' में है: इमाम अबू हनीफ़ा और इمام मुहम्मद (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) ने फ़रमाया: तयम्मुम हर उस चीज़ से जायज़ है जो ज़मीन की जिन्स (श्रेणी) और ज़मीन के टुकड़ों से हो जैसे मिट्टी, रेत, चूना, हरताल, गच, पत्थर, ढेला, इस्मिद, सुरमा, गुल-ए-सुर्ख़, गुल-ए-ज़र्द, गेरू, दीवार, मुर्दार-संग वगैरह। (त)

इमाम फ़क्र ज़ैलई ने फ़रमाया: | अरबी पाठ | उर्दू अनुवाद | | :--- | :--- | | ज़मीन की श्रेणी की किसी पाक चीज़ से तयम्मुम करे जैसे मिट्टी, पत्थर, सुरमा, हरताल, चूना, गच, रेत, गेरू, गंधक, याक़ूत, ज़बरजद, ज़ुमरुद, बलख़्श, फ़िरोज़ा और मरजान। | तयम्मुम करे जिन्स-ए-ज़मीन की किसी पाक चीज़ से जैसे मिट्टी, पत्थर, सुरमा, हरताल, चूना, गच, रेत, गेरू, गंधक, याक़ूत, ज़बरजद, ज़ुमरुद, बलख़्श, फ़िरोज़ा, मरजान। (त) |

1. ख़ुलासतुल फ़तावा, उन चीज़ों का अध्याय जिनसे तयम्मुम जायज़ है, नवल किशोर प्रेस लखनऊ, 1/35।
2. तबीनुल हकाइक, तयम्मुम का अध्याय, अमीरिया बुलाक प्रेस मिस्र, 1/38।

पृष्ठ 619/756

ہو گئے کبریت و زرنیخ یقینا ذائب بالنار اور بایں معنی منضج بالنار ہیں تو اس طور لازم کہ جنس ارض سے نہ ہوں اور ان سے تیمم ناجائز حالانکہ کبریت کے جنس ارض و صالح تیمم ہونے کی تصریح کتب معتمدہ مثل تبیین الحقائق، فتح القدیر، بحر الرائق، و نہر الفائق، و مراقی الفلاح، و فتاویٰ عالمگیریہ، و فتح اللہ المعین، و طحطاوی علی الدر المختار وغیرہا میں ہے اور اصلاً کسی نے اس میں اشارہ خلاف بھی نہ کیا اور زرنیخ کا تواتر تو اس عظمت و شان سے ہے کہ اس کے امثال سے کسی میں نہیں خود محرر مذہب امام محمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کتاب الاصل میں کہ کتب ظاہر الروایۃ سے ہے خود امام مذہب امام الائمہ امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اس پر نص فرمایا پھر قدوری، و ہدایہ، و ملتقٰی، و کافی، و صدر الشریعہ، و تبیین، و فتح القدیر، و حلیہ، و غنیہ، و درر، و مسکین، و بر جندی، و بحر، و نہر، و مراقی الفلاح، و طحطاوی علی الدر، و جلابی، و نوازل، امام فقیہ ابواللیث و محیط، و خانیہ، و خلاصہ، و خزانۃ المفتین، و منیہ، و سراجیہ، و ہندیہ وغیرہا متون و شروح و فتاویٰ نے بلا اشعارِ نام خلاف اس کا جواز بتایا، کیا ایسے صریح نصوصِ جلیلہ علیہ متظافرہ متواترہ اس قابل ہو سکتے ہیں کہ کسی مثال کے مفہوم سے ان کو رد کر دیا جائے حاشاہ یہ سب نصوص اس وقت میرے پیشِ نظر ہیں یہاں تبرکاً صرف نص امام محرر المذہب اور کبریت میں فتح تبیین و تبیین فتح پر قناعت کروں۔ خلاصہ میں ہے:

عربی متن **اردو ترجمہ**

فی الاصل قال ابوحنیفۃ و محمد رضی اللہ مبسوط میں ہے امام ابو حنیفہ و امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہما یجوز التیمم بجمیع ما کان من تعالیٰ عنہما نے فرمایا: تیمم ہر اس چیز سے جائز جنس الارض ومن اجزائھا نحو التراب والرمل ہے جو زمین کی جنس اور زمین کے اجزاء سے ہو

عربی متن	اردو ترجمہ
والنورة والزرنيخ والجص و الحجر والمدر والاثمد والكحل والطين الاحمر والاصفر والبغرة والحائط والمردار سنج ونحوه -1	جیسے مٹی، ریت، چونا، ہڑتال، گچ، پتھر، ڈھیلا، اثمد، سرمہ، گل سرخ، گل زرد، گیرو، دیوار، مردارسنگ وغیرہ۔ (ت)

امام فخر زیلعی نے فرمایا: | عربی متن | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | یتیمم بطاہر من جنس الارض کالتراب والحجر والکحل والزرنیخ والنورة والجص والرمل والمغرة والکبریت والیاقوت والزبرجد والزمرد والبلخش والفیروزج والمرجان -2 | تیمم کرے جنس زمین کی کسی پاک چیز سے جیسے مٹی، پتھر، سرمہ، ہڑتال، چونا، گچ، ریت، گیرو، گندھک، یاقوت، زبرجد، زمرد، بلخش، فیروزہ، مرجان۔ (ت) |

1 خلاصۃ الفتاوی جنس آخر فیما یجوز بہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱ / ۳۵ 2 تبیین الحقائق باب التیمم مطبوعہ امیر یہ بولاق مصر ۱ / ۳۸

Fatawa Razawiyya, Volume 3

The absolute researcher Imam said: "It includes stone, plaster, lime, kohl, arsenic, red ochre, sulfur, etc." (Arabic original included, Urdu translation: Stone, plaster, lime, antimony, orpiment, red ochre, sulfur, etc., are included.)

Secondly: Most interestingly, the inference drawn from the example of glass is contradicted by the example of glass itself. We did not mention this contradiction in 'Nuqoosh al-Intiba' because it was appropriate to keep it stored for this place. Eight books, from 'Tuhfa' and 'Bada'i' to 'Durr al-Mukhtar' and 'Hindiyyah,' have treated glass as absolute (general), encompassing both mineral and manufactured types, and its mineral form is definitely a stone. It is stated in 'Jami' Abdullah bin Ahmad Al-Andalusi al-Maliqi Ibn al-Baitar':

(Glass) Aristotle said: "Some of it is petrified (stony) and some of it is sandy. Glass comes in many colors. There is pure white, which cannot be distinguished from crystal, and it is the best type of glass. There are also red, yellow, green, azure, etc. It is a stone among stones, like an extremely simple-minded or foolish person among people, because it leans towards every dye it is dyed with and every color it is colored with."

In 'Anwar al-Asrar Ayat al-Bayyinat,' the Book of Minerals, it is stated: "As for the glass stone, there are many types in many mines. Some of it is stony and some of it is sandy."

In the same source, it says: "When the glass stone is affected by fire, then smoke emerges..."

---

1. *Fath al-Qadir, Chapter on Tayammum, Nooria Razawiyya Sukkur, 1/112*
2. *Jami' Ibn al-Baitar*
3. *Anwar al-Asrar*

फ़तावा रज़विया, जिल्द ३

इमाम मुहक्किक़ अल-इतलाक़ ने फ़रमाया: "पत्थर, गच, चूना, सुरमा, हरताल, गेरू, गंधक आदि शामिल हैं।" (अरबी मूल शामिल है, उर्दू अनुवाद: पत्थर, गच, चूना, सुरमा, हरताल, गेरू, गंधक आदि शामिल हैं।)

दूसरा: सबसे विचित्र बात यह है कि शीशे के उदाहरण का लाभ स्वयं शीशे के उदाहरण से ही खंडित (मन्क़ूज़) हो जाता है। हमने 'नुक़ूश अल-इंतिबा' में इस खंडन का उल्लेख नहीं किया क्योंकि उसे इसी स्थान के लिए सुरक्षित रखना उचित था। 'तुहफ़ा' और 'बदाई' से लेकर 'दुर्र अल-मुख़्तार' और 'हिन्दिया' तक आठों किताबों ने शीशे को मुतलक़ (सामान्य) रखा है, जिसमें खनिज और निर्मित दोनों शामिल हैं, और इसका खनिज रूप निश्चित रूप से एक पत्थर है। 'जामे अब्दुल्ला बिन अहमद अल-अंदलुसी अल-मालिकी इब्न अल-बैतार' में है:

(शीशा) अरस्तू ने कहा: "इसमें पत्थर जैसा भी होता है और इसमें रेत वाला भी होता है। शीशे के बहुत से रंग होते हैं, कोई बहुत सफ़ेदी वाला होता है जो बिल्लौर से अलग नहीं लगता और यह शीशे की सबसे अच्छी किस्म होती है। और लाल, पीला, हरा, आसमानी आदि भी होता है और यह पत्थरों में से एक पत्थर होता है जैसे इंसानों में अत्यंत भोला-भाला मूर्ख व्यक्ति होता है क्योंकि वह हर रंग की ओर झुक जाता है जिससे उसे रंगा जाए।"

'अनवार अल-असरार आयात अल-बय्यिनात', किताबुल मादन में है: "जहाँ तक शीशे के पत्थर का सवाल है, कई खदानों में इसके कई प्रकार हैं। कुछ पथरीले हैं और कुछ रेतीले हैं।"

इसी में है: "जब शीशे के पत्थर को आग की आँच लगती है, फिर धुआँ..."

---

1. फ़तहुल क़दीर, बाबुत तयम्मुम, नूरिया रज़विया सुक्कुर, १/११२
2. जामे इब्न अल-बैतार
3. अनवार अल-असरार

पृष्ठ ७५६ का ६२०

امام محقق علی الاطلاق نے فرمایا: دخل الحجر والجص والنورۃ والکحل والزرنیخ والمفرۃ والکبریت الخ۔ پتھر، گچ، چونا، سرمہ، ہرتال، گیرو، گندھک الخ، داخل ہے۔ (ت)

ثانیا: سب سے طرفہ یہ کہ مفاد مثال زجاج خود مثال زجاج سے منقوض یہ نقض ہم نے نقوض انطباع میں ذکر نہ کیا کہ اسی مقام کے لیے اس کا ذخیرہ رکھنا مناسب تھا تحفہ و بدائع سے در مختار و ہندیہ تک آٹھوں کتابوں نے زجاج مطلق رکھا ہے کہ معدنی و مصنوع دونوں کو شامل اور اس کا معدنی ضرور حجر ہے۔ جامع عبد اللہ بن احمد اندلسی مالقی ابن بیطار میں ہے:

(زجاج) قال ارسطاطا لیس منه متحجر ومنه رمال والزجاج الوان کثیرة فمنه الابیض الشدید البیاض الذی لاینکر من البلور وهو خیر اجناس الزجاج ومنه الاحمر والاصفر والاخضر والأسمانجوني وغیر ذلك وهو حجر من الاحجار کالمائق الاحمق من الناس لانه یمیل الی کل صبغ یصبغ به والی کل لون یلون به۔ (زجاج) ارسطو نے کہا اس میں متحجر بھی ہوتا ہے اور اس میں ریت والا بھی ہوتا ہے۔ اور زجاج کے بہت سے رنگ ہوتے ہیں، کوئی بہت سفیدی والا ہوتا ہے جو بلور سے بیگانہ نہیں معلوم ہوتا اور یہ زجاج کی سب سے بہتر جنس ہوتی ہے۔ اور سرخ، زرد، سبز، آسمانی وغیرہ بھی ہوتا ہے اور یہ پتھروں میں سے ایک پتھر ہوتا ہے جیسے انسانوں میں انتہائی بھولا بے وقوف شخص ہوتا ہے کیونکہ وہ ہر رنگ لون کی طرف جس سے اسے رنگا جائے مائل ہو جاتا ہے۔ (ت)

انوار الاسرار آیات البینات کتاب المعدن میں ہے: اما حجر الزجاج فانواع کثیرة فی معادن کثیرة فمنه متحجر ومنه مترمل۔ لیکن سنگِ زجاج تو بہت سے معدنوں میں اس کی بہت سی قسمیں ہیں اس میں پتھر والا بھی ہوتا ہے اور ریت والا بھی ہوتا ہے۔ (ت)

اسی میں ہے: حجر الزجاج اذا اصابته النار ثم خرج۔ سنگِ زجاج کو جب آگ کی آنچ لگے پھر دخان۔

---

1. فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱۱۲/۱
2. جامع ابن بیطار
3. انوار الاسرار

Fatawa Razvia Volume 3

...into the air without becoming thick, it breaks and does not remain useful.	**(...into the air) it breaks and does not remain useful without becoming thick. (T)**

1-

In Tuhfa-e-Tinkani: | Aristotle considered crystal to be of a mineral nature, and the stone mirror is among minerals and is other than crystal. 2- | Aristotle considered crystal as being from a mineral genus, and the stone mirror is from minerals and is besides crystal. (T) | | :--- | :--- |

In Makhzan: | (Glass) is of two types: mineral and manufactured. Its mine is in many places; that which is in Tabriz in the vicinity of Shiraz etc. is a dark-colored, fragmented stone etc.3 | Glass is of two types: mineral and manufactured. And its mine is in many places, such as Tabriz etc. in the vicinity of Shiraz. It is a dark-colored fragment of stone etc. (T) | | :--- | :--- |

And stone, according to the explicit and consistent mention in general books, is absolutely and without specification from the genus of the earth. The twenty-six celestial objects mentioned under arsenic, all of them and besides them, Wiqaya 27, Islah 28, and Nur al-Idah 29 (primary texts), Durr al-Mukhtar 30, Shilbi 31, and Mujtaba 32 (commentaries), Bazzaziya 33 (fatwas), and others are additional. Thus, tayammum with glass became permissible and it is from the genus of the earth, although the condition of 'intiba' (malleability) excludes it, given that by their own admission it is malleable, so the reconciliation is negated.

If it is said that the general application of glass by these scholars is restricted, i.e., it refers to manufactured glass which is made by mixing sand with something else not from the genus of the earth, the statements of research commentators bear witness to this. In Tabyin from Muhit it is:

If something else not from the genus of the earth is mixed with it, it is not permissible, like glass made from sand and something else that is not from the genus of the earth. 4-	**If there is an admixture in it of something that is not from the genus of the earth, then it is not permissible. Like that glass which is made from sand and something that is not from the genus of the earth. (T)**

1. Anwar al-Asrar
2. Tuhfat al-Mu'minin on the margin of Makhzan al-Adwiya, Fadl al-Zira' with al-Hajim, printed by Munshi Nawal Kishore, Kanpur, p. 316.
3. Makhzan al-Adwiya, Fadl al-Zira' with al-Hajim, printed by Munshi Nawal Kishore, Lucknow, p. 320.
4. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter on Tayammum, Amiriya Press, Bulaq, Egypt, 1/39.

फतावा रज़विया जिल्द 3

...हवा में बिना गाढ़ा हुए बाहर आ जाए तो टूट जाता है और काम का नहीं रहता।

...हवा में) बिना गाढ़ा हुए बाहर निकल आए तो टूट जाता है और लाभदायक नहीं रहता। (त)

1-

तोहफा-ए-तिंकानी में है: | अरस्तू ने बिल्लौर (क्रिस्टल) को खनिज श्रेणी का माना है और पत्थर का आईना खनिजों में से है और बिल्लौर के अलावा है। 2- | अरस्तू ने बिल्लौर को इसकी खनिज श्रेणी से समझा है और पत्थर का आईना खनिजों में से है और बिल्लौर के अलावा है। (त) | | :--- | :--- |

मखज़न में है: | (कांच) दो प्रकार का है: खनिज और निर्मित और इसकी खान अक्सर जगहों पर है, जो शिराज के आसपास तबरीज़ आदि में है, वह एक गहरा रंग का पत्थर है आदि। 3 | कांच की दो किस्में हैं: खनिज और कृत्रिम। और इसकी खान अक्सर जगह है जो शिराज के आसपास में से तबरीज़ वगैरह में होता है वह एक गहरे रंग का टुकड़ा-टुकड़ा पत्थर होता है आदि। (त) | | :--- | :--- |

और पत्थर, सामान्य पुस्तकों के स्पष्ट और निरंतर उल्लेख के अनुसार, बिना किसी विशेषता के पूर्णतः पृथ्वी की श्रेणी से है। हरताल के अंतर्गत वर्णित छब्बीस चाँद (महताबें), वे सब और उनके अलावा विकाया 27, इसलाह 28, और नूरुल ईदाह 29 (मूल ग्रंथ) और दुर्रे मुख्तार 30, शल्बी 31, और मुजतबा 32 (टीकाएँ, बज़ाज़िया 33 (फतावा) और अन्य अतिरिक्त हैं। तो कांच से तयम्मुम जायज़ हुआ और वह पृथ्वी की श्रेणी से है, हालांकि 'इनतिबा' (गर्मी से पिघलने/ढलने) की शर्त इसे बाहर कर रही है क्योंकि उनके अपने स्वीकारोक्ति के अनुसार वह ढलने योग्य है, तो यह विरोधाभास है।

यदि यह कहा जाए कि इन विद्वानों द्वारा कांच का सामान्य उपयोग सीमित है, अर्थात यह निर्मित कांच पर लागू होता है जो रेत और किसी अन्य चीज़ को मिलाकर बनाया जाता है जो पृथ्वी की श्रेणी से नहीं है, तो शोधकर्ताओं और टीकाकारों का बयान इस पर गवाह है। तबीन में मुहीत से है:

यदि इसमें कोई ऐसी चीज़ मिला दी जाए जो पृथ्वी की श्रेणी से नहीं है, तो यह जायज़ नहीं है, जैसे वह कांच जो रेत और किसी ऐसी चीज़ से बनाया गया हो जो पृथ्वी की श्रेणी से नहीं है। 4-

अगर इसमें किसी ऐसी चीज़ की आमीज़िश हो जो जिन्से अ़र्ज़ से नहीं तो जायज़ नहीं। जैसे वह शीशा जो रेत और किसी ऐसी चीज़ से बनाया गया हो जो जिन्से ज़मीन से नहीं। (त)

1. अनवारुल असरार
2. तोहफतुल मोमिनीन हाशिये पर मखज़नुल अदविया, फज़लुल ज़िरा मा अल-हजीम, मुद्रित मुंशी नवल किशोर, कानपुर, पृष्ठ 316.
3. मखज़नुल अदविया, फज़लुल ज़िरा मा अल-हजीम, मुद्रित मुंशी नवल किशोर, लखनऊ, पृष्ठ 320.
4. तबीनुल हकइक़, बाबू तयम्मुम, मतबा अमीरिया बुलाक, मिस्र, 1/39.

पृष्ठ 621 का 756

الی الہواء من غیر ان یتخن تکسر ولم ینقنع بہ 1 - ہوئے بغیر ہوا میں نکل آئے تو ٹوٹ جاتا ہے اور کارآمد نہیں رہتا۔ (ت)

تحفہ تنکانی میں ہے: | ارسطو بلور را از جنس معدنی اودانستہ و آئینہ سنگ از جملہ معدنی و غیر بلورست 2- | ارسطو نے بلور کو اس کی معدنی جنس سے سمجھا ہے اور پتھر کا آئینہ معدنیات میں سے اور بلور کے علاوہ ہے۔ (ت) | | :--- | :--- |

مخزن میں ہے: | (زجاج) دو نوع است معدنی و مصنوع و معدن آن اکثر جاست انچہ در تبریز توابع شیراز و غیر آنست سنگے ست تیرہ رنگ ریزہ الخ3- | زجاج کی دو قسمیں ہیں: معدنی اور مصنوعی۔ اور اس کا معدن اکثر جگہ ہے جو شیراز کے توابع میں سے تبریز وغیرہ میں ہوتا ہے وہ ایک تاریک رنگ کا ریزہ ریزہ پتھر ہوتا ہے الخ۔ (ت) | | :--- | :--- |

اور حجر بتصریح متواتر عامہ کتب میں علی الاطلاق بلا تخصیص جنس ارض سے ہے چھبیس مہتابیں کہ زرنیخ میں مذکور ہوئیں وہ سب اور ان کے علاوہ وقایہ ۲۷ و اصلاح ۲۸ و نورالایضاح ۲۹ متون و در مختار ۳۰ و شلبیہ ۳۱ و مجتبی ۳۲ شروح و بزازیہ ۳۳ فتاوٰی و غیر ہا زائد ہیں تو زجاج سے تیمم جائز ہوا اور وہ جنس ارض سے ہے حالانکہ اس معنی پر قید انطباع اسے خارج کر رہی ہے کہ وہ خود ان کے اقرار سے منطبع ہے تو جمع منقوض ہے۔

اگر کہیئے زجاج میں ان علماء کا اطلاق مقید یعنی زجاج مصنوع پر محمول ہے جو ریتی اور کسی اور چیز غیر جنس ارض سے ملا کر بنایا جاتا ہے محققین شراح کا بیان اس پر شاہد، تبیین میں محیط سے ہے:

ان خالطه شیئ آخر لیس من جنس الارض لا یجوز کالزجاج المتخذ من الرمل وشیئ آخر لیس من جنس الارض - 4

اگر اس میں کسی ایسی چیز کی آمیزش ہو جو جنس ارض سے نہیں تو جائز نہیں۔ جیسے وہ شیشہ جو ریت اور کسی ایسی چیز سے بنایا گیا ہو جو جنس زمین سے نہیں۔ (ت)

1. انوار الاسرار
2. تحفۃ المومنین علی حاشیہ مخزن الادویہ فضل الزراء مع الحجیم مطبوعہ منشی نولکشور کانپور ص ۳۱۶
3. مخزن الادویہ فضل الزراء مع الحجیم مطبوعہ منشی نولکشور لکھنؤ ص ۳۲۰
4. تبیین الحقائق باب التیمم مطبعہ امیریہ بولاق مصر ۳۹/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 3

In Fath al-Qadir, it is mentioned: [Arabic]: 'Trees and glass made from sand, etc., are excluded.' (1) [Urdu Translation]: Trees are excluded from it, as well as the glass which is made from sand and another substance. (T)

In Bahr al-Raiq, it is mentioned: [Arabic]: 'It is not permissible with trees nor with glass made from sand, etc.' (2) [Urdu Translation]: It is not permissible with trees, nor is it permissible with that glass which is made from sand and another substance. (T)

In Majma' al-Anhur, it is mentioned: [Arabic]: 'It is not permissible with glass made from sand and another thing.' (3) [Urdu Translation]: It is not permissible with that glass which is made from sand and some other substance. (T)

Similarly, it is found in Abu al-Sa'ud al-Azhari. On the text of Durr al-Mukhtar 'like silver and glass (T)', it is written in Radd al-Muhtar: 'i.e., that which is made from sand, etc.' (4) Bahr (i.e., that glass which is made by mixing sand and another substance. Bahr- T). So, what was called 'manbatij' (fusible/meltable) is not from the genus of earth, and what is from the genus of earth was not called 'manbatij'. I say: This is only if the mineral glass stone itself is not 'manbatij' in this sense, whereas it also certainly, like the manufactured one, melts and dissolves by fire, cools by air, and is cast in a mold. Furthermore, in 'Mufradah' of Har Jami', there is a text attributed to Aristotle connected to this:

[Arabic]: 'And it dissolves quickly with the heat of fire and returns very quickly to its stony state with cold air.' (5) [Urdu Translation]: And it dissolves rapidly with the heat of fire and returns very quickly to its stony state with cold air. (T)

Footnotes: 1. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nooria Rizvia, Sukkur, 1/112 2. Al-Bahr al-Raiq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/172 3. Majma' al-Anhur, Chapter of Tayammum, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/38 4. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Matba' Mustafa Al-Babi, Egypt, 1/176 5. Jami' Ibn al-Baitar

फ़तावा रज़विया, खंड 3

फ़त्ह अल-क़दीर में है: [अरबी]: 'पेड़ और रेत आदि से बना शीशा बाहर कर दिए गए हैं।' (1) [उर्दू अनुवाद]: पेड़ इससे बाहर हो गए और वह शीशा भी जो रेत और दूसरी चीज़ से बनाया गया। (त)

बह्र अल-राइक में है: [अरबी]: 'पेड़ों और रेत आदि से बने शीशे से (तयम्मुम) जायज़ नहीं है।' (2) [उर्दू अनुवाद]: पेड़ों से जायज़ नहीं है और उस शीशे से भी जायज़ नहीं जो रेत और दूसरी चीज़ से बनाया गया हो। (त)

मज्मअ अल-अन्हूर में है: [अरबी]: 'रेत और किसी दूसरी चीज़ से बने शीशे से जायज़ नहीं है।' (3) [उर्दू अनुवाद]: उस शीशे से जायज़ नहीं जो रेत और किसी दूसरी चीज़ से बना हो। (त)

इसी तरह अबू अल-सऊद अज़हरी में है। दुर्र अल-मुख्तार की इबारत 'जैसे चाँदी और शीशा (त)' पर रद अल-मुह्तार में लिखा है: 'यानी वह जो रेत आदि से बनाया गया हो।' (4) बह्र (यानी वह शीशा जो रेत और दूसरी चीज़ मिलाकर बनाया गया हो। बह्र- त)। तो जिसे 'मुनबतिज' (पिघलने वाला) कहा गया वह पृथ्वी की श्रेणी से नहीं है, और जो पृथ्वी की श्रेणी से है उसे 'मुनबतिज' नहीं कहा गया। मैं कहता हूँ: यह उस समय है जब स्वयं खनिज कांच का पत्थर इस अर्थ में 'मुनबतिज' न हो, हालाँकि वह भी निश्चित रूप से निर्मित (शीशे) की तरह आग से गलता और पिघलता है, हवा से ठंडा होता है और साँचे में ढलता है। फिर हर जामी की 'मुफ़रदा' में अरस्तू से जुड़ी हुई उपर्युक्त इबारत है:

[अरबी]: 'और वह आग की गर्मी के साथ तेज़ी से घुल जाता है और ठंडी हवा के साथ बहुत जल्द पथरीली स्थिति की ओर वापस आ जाता है।' (5) [उर्दू अनुवाद]: और वह आग की गर्मी के साथ तेज़ी से पिघल जाता है और ठंडी हवा के साथ बहुत जल्द पथरीली स्थिति की ओर लौट आता है। (त)

पादलेख: 1. फ़त्ह अल-क़दीर, तयम्मुम का अध्याय, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 1/112 2. अल-बह्र अल-राइक, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/172 3. मज्मअ अल-अन्हूर, तयम्मुम का अध्याय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 1/38 4. रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/176 5. जामी इब्न अल-बैतार

पृष्ठ 622 का 756

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

فتح القدیر میں ہے: [عربی]: خرجت الاشجار والزجاج المتخذ من الرمل وغیرہ 1۔ درخت اس سے خارج ہو گئے اور وہ شیشہ بھی جو ریت اور دوسری چیز سے بنایا گیا۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے: [عربی]: لا یجوز بالاشجار والزجاج المتخذ من الرمل وغیرہ 2۔ درختوں سے جائز نہیں اور اس شیشے سے بھی جائز نہیں جو ریت اور دوسری چیز سے بنایا گیا ہو۔ (ت)

مجمع الانہر میں ہے: [عربی]: لا یجوز بالزجاج المتخذ من الرمل وشیئ آخر 3۔ اس شیشے سے جائز نہیں جو ریت اور کسی دوسری چیز سے بنا ہو۔ (ت)

اسی طرح ابو السعود ازہری میں ہے۔ عبارت در مختار کفضۃ وزجاج (جیسے چاندی اور شیشہ۔ت) پر ردالمحتار میں لکھا: ای المتخذ من رمل وغیرہ 4 بحر (یعنی وہ شیشہ جو ریت اور دوسری چیز ملا کر بنایا گیا ہو۔ بحر۔ ت) تو جس منبطج کہا وہ جنس ارض سے نہیں اور جو جنس ارض سے ہے اسے منبطج نہ کہا۔ اقول: یہ اس وقت ہے کہ خود سنگِ شیشہ معدنی اس معنی پر منبطج نہ ہو حالانکہ وہ بھی یقیناً مثل مصنوع آگ سے گلتا، پگھلتا، ہوا سے ٹھنڈا ہوتا، سانچے میں ڈھلتا ہے، پھر مفرکہ ہر جامع میں ارسطو سے متصل عبارت مذکورہ ہے:

[عربی]: وھو سریع التحلل مع حر النار سریع الرجوع مع الھواء البارد الی تحجرہ 5۔ اور وہ آگ کی حرارت کے ساتھ تیزی سے تحلیل ہو جاتا ہے اور ٹھنڈی ہوا کے ساتھ بہت جلد سنگی حالت کی جانب عود کر آتا ہے۔ (ت)

حواشی: 1. فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱۱۲/۱ 2. البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۷۲/۱ 3. مجمع الانہر باب التیمم داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۸/۱ 4. ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفٰی البابی مصر، ۱۷۶/۱ 5. جامع ابن بیطار

Fatawa Razawiyya Volume Three

In 'Anwar-ul-Asrar', after the preceding phrase, it is mentioned:

“And it (the stone) proves to be the softest of all stones on fire and dries very quickly after melting.” (T)

Likewise, in it:

“It changes with the heat of the fire and solidifies very quickly with the coldness of the air.” (T)

Now this example has become extremely problematic as it is self-nullifying. So, what sense does it make to doubt this humble person's discourse? Rather, a severe doubt should be cast on the example itself. Even if it were not self-contradictory, it would be mandatory for it to dissolve in the face of those explicit general rulings of original texts, commentaries, and stated fatwas from the codifier of the school and the Great Imam (Imam-e-Azam), the master of the school. Especially when it is its own negation. Yes, the path forward is its interpretation if possible, even if it is remote, for even a remote interpretation is better than total dismissal.

I say: And with Allah is success (So I say, and success comes only from God's side. T). The formation of all minerals is from the union of sulfur and mercury. Sulfur is 'male' as it is hot, and mercury is 'female'. From the variation of their quantities, kinds, qualities, and states, different mineral things are produced, some of which our noble Imams consider to be of the nature of the earth, like ruby, emerald, chrysolite, and other gems, and some they do not, like gold, silver, iron, and other minerals, although the material of formation for all is the same. It is mentioned in 'Tadhkira Antaki':

(Mineral): Its material is mercury and sulfur. Both should be good and equal, like an elixir. Or if sulfur is more along with coloring power, as in gold; or its opposite (mercury) being more and without coloring power, as in silver. (Until he said) So if the material is preserved such that they melt, then they are 'Muntariqat' (malleable), otherwise 'Falazzat' (non-malleable), primarily like ruby, or secondarily like some emerald.

---

1. Anwar-ul-Asrar
2. Anwar-ul-Asrar Page 623 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरा

'अनवार-उल-असरार' में पिछली इबारत के बाद है:

“और वह आग पर सारे पत्थरों से ज़्यादा नर्म साबित होता है और पिघलाने के बाद बहुत जल्द ख़ुश्क भी होता है।” (त)

इसी में है:

“आग की हरारत (गर्मी) के साथ बदल जाता है और हवा की बरूदत (ठंडक) के साथ बहुत जल्द जम जाता है।” (त)

अब यह मिसाल निहायत पेचीदा हो गई है क्योंकि यह स्वयं को ही रद्द करने वाली है। तो इस पर फक़ीर (विनम्र लेखक) के बयान पर क्या शक करना? बल्कि ख़ुद इसी मिसाल पर शदीद शक किया जाना चाहिए। अगर यह स्वयं विरोधाभासी न भी होती, तो भी मज़हब के संकलनकर्ता और इमाम-ए-आज़म (मज़हब के स्वामी) के स्पष्ट सामान्य आदेशों, मूल पाठों, व्याख्याओं और उल्लिखित फ़तवों के सामने इसका कमज़ोर पड़ना अनिवार्य था। ख़ास तौर पर तब जब यह अपनी ही नफ़ी (नकार) कर रही है। हाँ, रास्ता इसकी तावील (व्याख्या) का है अगर मुमकिन हो, चाहे वह दूर की ही क्यों न हो, क्योंकि दूर की तावील भी महज़ ग़लती ठहराने से बेहतर है।

अक़ुलु: वबिल्लाहि-तौफ़ीक़ (तो मैं कहता हूँ और तौफ़ीक़ ख़ुदा ही की तरफ़ से मिलती है। त)। तमाम खनिजों की बनावट गंधक और पारे के मिलाप से है। गंधक नर है क्योंकि वह गर्म है और पारा मादा। इन्हीं की मात्राओं, क़िस्मों, गुणों और अवस्थाओं के अंतर से अलग-अलग खनिज वस्तुएं पैदा होती हैं, जिनमें से कुछ को हमारे इमामों ने ज़मीन की श्रेणी में रखा है जैसे याक़ूत, ज़ुमुर्द, ज़बरजद वग़ैरा रत्न, और कुछ को नहीं जैसे सोना, चांदी, लोहा और अन्य खनिज, हालांकि सबकी बनावट का मूल पदार्थ एक ही है। 'तज़किरा अंताकी' में है:

(खनिज): इसका मादा (पदार्थ) पारा और गंधक है। दोनों उम्दा और बराबर-बराबर हों, जैसे अक्सीर। या गंधक ज़्यादा हो साथ ही रंगने वाली ताक़त भी हो जैसे सोने में; या इसके विपरीत (पारा) ज़्यादा हो और रंगने वाली ताक़त न हो जैसे चांदी में। (यहाँ तक कि कहा) तो अगर मादा सुरक्षित हो इस तरह कि वे पिघल जाएँ तो वे 'मुनतरिक़ात' (घातवर्धनीय) हैं, अन्यथा 'फ़लज़्ज़ात' (अघातवर्धनीय), जैसे याक़ूत या द्वितीय जैसे कुछ ज़ुमुर्द।

1. अनवार-उल-असरार
2. अनवार-उल-असरार पृष्ठ 623 / 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

انوار الاسرار میں بعد عبارت سابقہ ہے :

وھو من الین الاحجار علی النار وسریع الجفاف بعد التزویب 1۔ اور وہ آگ پر سارے پتھروں سے زیادہ نرم ثابت ہوتا ہے اور پگھلانے کے بعد بہت جلد خشک بھی ہوتا ہے۔ (ت)

اسی میں ہے:

یستحیل مع حر النار ویجمد سریعاً مع برودۃ الھواء 2۔ آگ کی حرارت کے ساتھ بدل جاتا ہے اور ہوا کی برودت کے ساتھ بہت جلد جم جاتا ہے۔ (ت)

اب یہ مثال غایت اشکال میں ہو گئی کہ خود اپنے نفس کی مبطل ہے تو اس سے تقریر فقیر پر شبہ کیا معنی خود اسی پر شبہ شدید کیا جائے وہ اگر خود متناقض نہ ہوتی تو ان احکام مصرحہ عامہ متون وشروح وفتاوی منصوصہ خود محرر المذہب و امام اعظم صاحب مذہب کے مقابل مضمحل ہونی واجب تھی نہ کہ جب آپ ہی اپنا نقض ہے ہاں مسلک اس کی تاویل ہے اگر ممکن ہو اگرچہ بعید کہ تاویل بعید بھی تخطئہ محض سے خیر و بہتر ہے۔

فاقول: وباللہ التوفیق (تو میں کہتا ہوں اور توفیق خدا ہی کی جانب سے ملتی ہے۔ ت) جملہ معدنیات کا تکون گندھک اور پارے کے ازدواج سے ہے کبریت نر ہے کہ گرم ہے اور پارہ مادہ۔ انہیں کے اختلاف مقادیر واصناف و اوصاف واحوال سے مختلف معدنی چیزیں پیدا ہوتی ہیں جن میں سے بعض کو ہمارے ائمہ کرام جنس ارض سے رکھتے ہیں جیسے یاقوت، زمرد، زبرجد وغیرہا جواہر اور بعض کو نہیں جیسے ذہب و فضہ و حدید و غیرہا معادن حالانکہ مادہ تکون سب کا ایک ہے، تذکرہ انطاکی میں ہے:

(معدن) مادته الزئبق والبريت جيدين متساويين كالاكسير اوزاد الكبريت مع القوة الصابغة كما في الذهب او ضده مع عدمها كما في الفضة (الى ان قال) فان حفظت المادة بحيث يذوباً فالمنطرقات والافالفرلزات على وزان الأول كالياقوت او الثانى كبعض الزمرد

(معدن) اس کا مادہ پارہ اور گندھک ہے۔ دونوں عمدہ برابر برابر ہوں۔ جیسے اکسیر۔ یا کبریت زیادہ ہو ساتھ ہی رنگنے والی قوت بھی ہو جیسے سونا میں یا اس کی ضد (پارہ) زیادہ ہو اور رنگنے والی قوت بھی نہ ہو جیسے چاندی میں (یہاں تک کہ یہ کہا) تو اگر مادہ محفوظ ہو اس طرح کہ پگھل جائے تو منطر قات ورنہ فلزات بطور اول جیسے یاقوت یا ثانی کی طرح بعض زمرد۔

---

1. انوار الاسرار
2. انوار الاسرار صفحہ 623 من 756

Fatawa Rizvia, Volume 3

...to the end [Note: Or it does not preserve shapes and its rebelliousness is not established for dissolution, then it is alum and salts.] / Alternatively, like some emeralds to the end. Or if it doesn't preserve some forms or isn't proven contrary to dissolution, then it is alum and salts. (T)

It is mentioned in it: [Note]

(Ruby/Sapphire) It is the noblest of all types of solids and all seek it in creation, just like gold among malleable materials [but is hindered by an accident/incident]. Its origin is mercury, which is called 'water', and sulfur, which is called 'radiance' (summarized). / (Ruby/Sapphire) This is the best among the types of solids and it is the aim of all solids in creation, like gold in malleable metals. So, due to some accident, it is also hindered. Its origin is mercury which is also called water, and sulfur which is also called radiance. (T)

According to the famous, victorious, and reliable school of the majority, their standard is that very rule of [softening/melting] and [impression/malleability], and that's it. And some elders have taken it this way: whatever is from the earth's components, as long as it is in the earth, Tayammum with it is absolutely permissible, even gold and silver as long as they are in their mine, because until then they are of the genus of earth. When they are taken out from the earth, melted and purified from earthly parts, they become a different thing and Tayammum with them is not permissible. It is in 'Tabyeen al-Haqa'iq':

In the 'Sharh al-Jami' al-Saghir' of Qadi Khan: It is permissible with jugs and pitchers, and it is permissible with gold, silver, iron, copper, and the like as long as they are on the earth and nothing has been manufactured from them, and after casting it is not permissible. / In Qadi Khan's 'Sharh Jami' al-Saghir': Tayammum is permissible with cups and jars; and with gold, silver, iron, copper and other such metals, it is also permissible as long as they are on the earth and nothing has been made from them, and after casting, Tayammum with them is not permissible. (T)

It is in 'Sharh al-Wiqayah':

As for gold and silver, it is not permissible with them if they are cast, even if they are not cast and are mixed... / When gold and silver are cast, Tayammum with them is not permissible, and if they have not been melted but [mixed] with soil...

Note: [Note] He means matching all other categories. 12 Minhu Ghaffar Lahu (M) / Comparison with other categories is intended. 12 Minhu Ghaffar Lahu (T)

Footnotes: 1. Tadhkirah Dawud al-Antaki, under the letter 'Meem', word 'Ma'dan' (Mineral), Mustafa al-Babi Egypt, 1/300. 2. Tadhkirah Dawud al-Antaki, under the letter 'Ya', word 'Yaqut' (Ruby), Mustafa al-Babi Egypt, 1/340. 3. Tabyeen al-Haqa'iq, chapter on Tayammum, Amiriya Bulaq Printing Press Egypt, 1/39.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

...अंत तक [नोट: या यह रूपों को सुरक्षित नहीं रखता है और विघटन के लिए इसकी विद्रोहीता स्थापित नहीं है, तो यह फिटकरी और लवण है।] / वैकल्पिक रूप से, अंत तक कुछ पन्नों की तरह। या यदि यह कुछ रूपों को सुरक्षित नहीं रखता है या विघटन के विपरीत साबित नहीं होता है, तो यह फिटकरी और लवण है। (त)

इसमें उल्लेख है: [नोट]

(याकूत) यह सभी प्रकार के ठोस पदार्थों में सबसे श्रेष्ठ है और सृजन में सभी इसे खोजते हैं, जैसे लचीले पदार्थों में सोना [लेकिन एक आकस्मिक घटना से बाधित होता है]। इसका मूल पारा है, जिसे 'पानी' कहा जाता है, और गंधक, जिसे 'प्रकाश' कहा जाता है (संक्षिप्त)। / (याकूत) यह ठोस पदार्थों की किस्मों में सबसे उत्तम है और सृजन में सभी ठोस पदार्थों का लक्ष्य है, जैसे लचीली धातुओं में सोना। तो, किसी आकस्मिक कारण से, यह बाधित भी होता है। इसका मूल पारा है जिसे पानी भी कहा जाता है, और गंधक जिसे प्रकाश भी कहा जाता है। (त)

बहुमत के प्रसिद्ध, विजयी और विश्वसनीय संप्रदाय के अनुसार, उनका मानक पिघलने और छाप (लचीलापन) का वही नियम है, और बस। और कुछ बुजुर्गों ने इसे इस तरह से लिया है कि जो कुछ भी पृथ्वी के घटकों में से है, जब तक वह पृथ्वी में है, तब तक उससे तयम्मुम करना पूरी तरह से जायज़ है, यहाँ तक कि सोना और चाँदी भी जब तक वे अपनी खान में हैं, क्योंकि तब तक वे मिट्टी के ही प्रकार हैं। जब उन्हें पृथ्वी से निकाल कर पिघलाया जाता है और मिट्टी के अंशों से साफ किया जाता है, तो वे एक अलग चीज़ बन जाते हैं और उनसे तयम्मुम करना जायज़ नहीं है। 'तब्बीन अल-हकाइक' में है:

क़ाज़ी ख़ान के'शरह अल-जामी अस-सगीर' में: कलशों और घड़ों के साथ जायज़ है, और सोने, चाँदी, लोहे, तांबे और इसी तरह के पदार्थों के साथ जायज़ है जब तक कि वे ज़मीन पर हों और उनसे कुछ भी निर्मित न किया गया हो, और ढलाई के बाद यह जायज़ नहीं है। / क़ाज़ी ख़ान की 'शरह जामी सगीर' में है: कूज़ों और घड़ों से तयम्मुम जायज़ है; और सोने, चाँदी, लोहे, तांबे और ऐसी दूसरी धातुओं से भी जायज़ है जब तक कि ये ज़मीन पर हों और इनसे कोई चीज़ बनाई न गई हो, और ढालने के बाद उनसे तयम्मुम जायज़ नहीं। (त)

'शरह अल-विक़ायाह' में है:

जहाँ तक सोने और चाँदी की बात है, यदि उन्हें ढाला गया है तो उनके साथ जायज़ नहीं है, भले ही उन्हें ढाला न गया हो और वे मिश्रित हों... / सोना चाँदी जब ढले हुए हों तो उनसे तयम्मुम जायज़ नहीं और गलाये पिघलाये न गए हों बल्कि मिट्टी से...

नोट: [नोट] उसका मतलब अन्य सभी श्रेणियों से मेल खाना है। 12 मिन्हु गफ़र लहू (म) / अन्य श्रेणियों के साथ तुलना करना ही उद्देश्य है। 12 मिन्हु गफ़र लहू (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. तज़किरा दाऊद अल-अंताकी, अक्षर 'मीम' के तहत, शब्द 'मा'दान' (खनिज), मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/300। 2. तज़किरा दाऊद अल-अंताकी, अक्षर 'या' के तहत, शब्द 'याकूत' (माणिक), मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/340। 3. तब्बीन अल-हकाइक, तयम्मुम पर अध्याय, अमीरिया बुलाक प्रिंटिंग प्रेस मिस्र, 1/39।

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

الی آخرہ عہ اولم تحفظ صورا ولم تثبت معاصیۃ للتحلیل فالشبوب والاملاح [1]۔ بطور دوم جیسے بعض زمرد الیٰ آخرہ۔ یا کچھ صورتوں کو محفوظ نہ رکھے یا تحلیل کے مخالف نہ ثابت ہو تو شبوب و املاح۔ (ت)

اسی میں ہے: عہ

(یاقوت) ھو اشرف انواع الجامدات وکلھا تطلبہ فی التکوین کالذھب فی المنطرقات بیمنا ع العارض واصلہ الزئبق ویسمی الماء والکبریت ویسمی الشعاع [2] ملخصاً (یاقوت) یہ جامدات کی قسموں میں سب سے عمدہ ہے اور تکوین میں سارے جامدات کا مطلوب ہے جیسے منطرقات میں سونا۔ تو کسی عارض کی وجہ سے مانع بھی ہوتا ہے۔ اس کی اصل پارہ ہے جسے پانی بھی کہا جاتا ہے۔ اور کبریت جسے شعاع بھی کہا جاتا ہے۔ (ت)

مذہب مشہور و منصور و معتمد جمہور پر تو ان کی معیار وہی ضابطہ ترند و انطباع ہے و بس۔ اور بعض اکابر نے اسے یوں لیا کہ جو کچھ اجزائے ارض سے ہے جب تک زمین میں ہے اس سے مطلقاً تیمم روا ہے حتی کہ سونا چاندی جب تک اپنی کان میں ہو کہ اس وقت تک یہ جنس ارض سے ہے جب زمین سے نکال کر گلایا پگھلایا اجزائے ارضیہ سے صاف کیا اب غیر شے ہوئے اور اس سے تیمم ناروا۔ تبیین الحقائق میں ہے:

وفی شرح الجامع الصغیر لقاضی خاں یجوز بالکیزان والحباب ویجوز بالذھب والفضۃ والحدید والنحاس وماشبھھا مادامت علی الارض ولم یصنع منھا شیئ وبعد السبك لا یجوز [3]۔ قاضیخان کی شرح جامع صغیر میں ہے: کوزوں اور گھڑوں سے تیمم جائز ہے اور سونے، چاندی، لوہے، تانبے

اور ایسی دوسری دھاتوں سے بھی جائز ہے جب تک یہ زمین پر ہوں اور ان سے کوئی چیز بنائی نہ گئی ہو اور ڈھالنے کے بعد ان سے تیمم جائز نہیں۔ (ت)

شرح وقایہ میں ہے:

اما الذھب والفضۃ فلا یجوز بھما اذا کانا مسبوکین وان کانا غیر مسبوکین مختلطین سونا چاندی جب ڈھلے ہوئے ہوں تو ان سے تیمم جائز نہیں اور گلائے پگھلائے نہ گئے ہوں بلکہ مٹی سے

عہ: یرید موازاۃ سائر الاصناف۔ ۱۲ منہ غفرلہ (م) | دیگر اصناف کا مقابلہ ببلہ مقصود ہے۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 تذکرہ داؤدانطاکی حرف المیم لفظ معدن کے تحت مذکور ہے مصطفی البابی مصر ۱ / ۳۰۰ 2 تذکرہ داؤدانطاکی حرف الیاء لفظ یاقوت کے تحت مذکور ہے مصطفی البابی مصر ۱ / ۳۴۰ 3 تبیین الحقائق باب التیمم مطبع امیریہ بولاق مصر ۱ / ۳۹

Volume Three Fatawa Razvia

(It is) permissible with soil. - 1 It is permissible if it (the soil) is mixed (with it). (T) In Sharh al-Kanz by Allama Aini, then Sharh Sayyid Azhari, then Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah it is stated: "Before smelting, Tayammum is valid as long as they (gold and silver) are in the mine. The same applies to iron and copper because they are of the nature (genus) of the earth." (T)

Allama Tahtawi said: "As-Sayyid (Azhari) mentioned it, and the general statement of the author (of the original text), like others, implies an absolute prohibition because the rule exists." (T)

In Fatawa Zahiriya then Khazanah al-Muftiyeen, it is stated: "That which is not from the substance (essence) of the earth, or was from the substance of the earth but has been separated from its essence through melting or burning, then Tayammum with it is not permissible. Therefore, gold, silver, copper, iron, and similar things are permissible for Tayammum as long as they remain in the earth and nothing has been manufactured from them. Once something is made from them, Tayammum with them is not permissible unless there is dust on them." (T)

In summary, there are two types of softening and burning by fire: first, the ancient method where at the time of extraction from the mine, they depend on being separated from earthy components; according to them, this absolutely excludes it from being of the nature of earth, even if the softening does not cause impression and hammering, nor burning to the extent of becoming ashes. Second, the later method, where after being separated and purified from earthy components...

1 Sharh al-Wiqayah, what is permissible for Tayammum, published by Maktabah al-Rashidiyah Delhi, 1/98. 2 Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah, what is permissible for Tayammum, Matba' Azhariyah p. 69. 3 Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah, what is permissible for Tayammum, Matba' Azhariyah p. 69. 4 Khazanah al-Muftiyeen

मिट्टी के साथ जायज़ है। - 1 अगर वह (मिट्टी) मिली हुई हो तो जायज़ है। (त) 'शरह अल-कन्ज़' अल्लामा ऐनी, फिर 'शरह सैय्यद अज़हरी', फिर 'तहावी अला मराक़ी अल-फ़लाह' में है: "पिघलाने से पहले तयम्मुम सही है जब तक वे दोनों अपनी खान (खदान) में हों। लोहा और तांबा भी इसी नियम में आते हैं क्योंकि वे ज़मीन की जिन्स (प्रकार) से हैं।" (त)

अल्लामा तहावी ने फ़रमाया: "सैय्यद अज़हरी ने इसका ज़िक्र किया और दूसरे विद्वानों की तरह लेखक के सामान्य कथन से भी पूर्णतः निषेध का अर्थ निकलता है क्योंकि नियम मौजूद है।" (त)

'फ़तावा ज़हीरिया' और फिर 'ख़ज़ाना अल-मुफ़्तियीन' में है: "जो ज़मीन का पदार्थ (जौहर) न हो या ज़मीन ही का पदार्थ हो मगर वह पिघलाने या जलाने के ज़रिये अपने मूल पदार्थ से अलग हो गया हो, तो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं। अतः सोना, चांदी, तांबा, लोहा और ऐसी ही दूसरी चीज़ों से तयम्मुम तब तक जायज़ है जब तक वे ज़मीन में रहें और उनसे कोई चीज़ न बनाई गई हो। जब उनसे कोई चीज़ बना दी जाए, तो उनसे तयम्मुम जायज़ नहीं जब तक कि उन पर धूल (ग़ुबार) न हो।" (त)

निष्कर्ष यह निकला कि आग से पिघलाने और जलाने की दो स्थितियाँ हैं: एक प्राचीन, जिसमें खान से निकालते समय उन्हें ज़मीनी अंशों से अलग करने के लिए इसकी आवश्यकता होती है; उनके नज़दीक यह इसे पूर्णतः ज़मीन की श्रेणी से बाहर कर देता है, भले ही पिघलना नक्काशी या हथौड़े की चोट सहने योग्य न हो, और न ही जलना राख की सीमा तक पहुँचे। दूसरा आधुनिक तरीका, जिसमें ज़मीनी अंशों से अलग और साफ़ होने के बाद...

1 शरह अल-विक़ाया, जिससे तयम्मुम जायज़ है, मक़तबा अल-रशीदिया दिल्ली, 1/98। 2 तहावी अला मराक़ी अल-फ़लाह, जिससे तयम्मुम जायज़ है, मतबा अज़हरिया, पृ. 69। 3 तहावी अला मराक़ी अल-फ़लाह, जिससे तयम्मुम जायज़ है, मतबा अज़हरिया, पृ. 69। 4 ख़ज़ाना अल-मुफ़्तियीन

بالتراب یجوز - 1 ملے ہوئے ہوں تو جائز ہے۔ (ت) شرح الکنز علامہ عینی پھر شرح سید ازہری پھر طحطاوی علی مراقی الفلاح میں ہے: قبل السیک یصح التیمم ماداما فی المعدن | ڈھالنے سے پہلے تیمم درست ہے جب تک یہ دونوں اپنی کان وکذا الحدید والنحاس لانھما من جنس | میں ہوں۔ یہی حکم لوہے اور تانبے کا۔ اس لئے کہ یہ جنس الارض - 2 | زمین سے ہیں۔ (ت)

علامہ ط نے فرمایا: ذکرہ السید واطلاق المصنف کغیرہ یفید المنع | اسے سید ازہری نے ذکر کیا۔ اور دوسرے حضرات کی طرح مطلقاً لوجود الضابط - 3 | مصنف کے بھی مطلق بیان کرنے سے مطلقاً ممانعت مستفاد ہوتی ہے کیونکہ ضابطہ موجود ہے۔ (ت)

فتاوٰی ظہیریہ پھر خزانہ المفتیین میں ہے: مالیس من جوھر الارض اوکان من جوھر الارج | جو زمین کا جوہر نہ ہو یا زمین ہی کا جوہر ہو مگر وہ پگھلانے، جلانے الا انہ خلص عن جوھرہ بالاذابہ والاحراق فانہ | کے ذریعہ اپنے جوہر و اصل سے جدا ہو گیا ہو تو اس سے تیمم لایجو ز بہ التیمم فالذھب والفضۃ والنحاس | جائز نہیں۔ تو سونا، چاندی، تانبا، لوہا اور ایسی ہی دوسری چیزوں والحدید و ماشبہ ذلک یجوز بہ التیمم مادام فی | سے جب تک یہ زمین میں رہیں اور ان سے کچھ نہ الارض ولم یصنع منہ شیئ فاذا صنع منہ شیئ | بنایا گیا ہو، تیمم جائز ہے جب ان سے کوئی چیز بنادی جائے لم یجز بہ التیمم اذالم یکن علیہ غبار - 4 | تو اس سے تیمم جائز نہیں جبکہ اس پر غبار نہ ہو۔ (ت)

تو حاصل یہ ہوا کہ آگ سے لین واحترق دو ہیں ایک متقدم کہ معدنی معدن سے نکالتے وقت اجزائے ارضیہ سے اپنی جدائی میں ان کا محتاج ہو ان کے نزدیک یہ مطلقاً اسے جنس ارض سے

خارج کر دیتے ہیں اگرچہ نہ لین مورث انطباع و انطراق ہو نہ احتراق تا حد ترمذ دوسرا متاخر کہ اجزائے ارضیہ سے جدا وصاف ہونے کے

1 شرح الوقایہ ما یجوز بہ التیمم مطبوعہ المکتبہ الرشیدیہ دہلی 1 / 98 2 طحطاوی علی مراقی الفلاح مایجوز بہ التیمم مطبع ازہریہ ص 69 3 طحطاوی علی مراقی الفلاح مایجوز بہ التیمم مطبع ازہریہ ص 69 4 خزانہ المفتیین

Fatawa Razawiyya - Volume 3

After this, the condition of that item should be seen. If here, the combustion followed by becoming soft or pliable is capable of producing malleability, then it is not of the earth element, otherwise it is. An object that comes out of the mine in large pieces such that it does not require burning or melting for purification, the aforementioned rule of the criterion will apply to it. Tayammum (dry ablution) with sapphire (yaqoot) and crystal (billaur) will be permissible, but not with iron. And that which comes out in fragments such that it is purified by melting and burning, after its purification, it will be considered absolutely impermissible. Glass is of this category because it is found in the mine in fragments and is purified by melting over fire. Aristotle called one of its types 'stony' based on the fact that he considered crystal to be a type of glass. In his discourse, following the mentioned text, it is:

[Boxed Text] Arabic: والبلور جنس من الزجاج غير انه يصاب فى معدنه مجتمع الجسم ويصاب الزجاج مفترق الجسم فيجمع كما ذكرنا بحجر المغنيا ١ اهـ يشير الى قوله منه ما هو رمل فاذا اوقد عليه النار والقى معه حجر المغنيسا جمع جسمه۔ Urdu Translation: Crystal (Billaur) is a type of glass. The difference is that the body of crystal is found consolidated in the mine, and the body of glass is found fragmented. Then, as we mentioned, it is gathered by means of magnesia stone. End. This refers to the statement: Among it is that which is sand; when fire is lit upon it and magnesia stone is also added, its body becomes consolidated. (T)

Similarly, in 'Anwar-ul-Asrar' from 'Makhzan' it is 'Sang-e-Reza'[2] (It is fragmented stone. T). Therefore, these scholars considered pliability and...

Note 'A': I say: There are four types: (1) It needs neither burning nor softening for its purification, nor does it become malleable later, like sapphire. (2) It does not need it for purification and later (3) its opposite, which needs it for purification and does not become malleable later, like glass. (4) It needs it before and also becomes malleable after, like gold. _____ According to them, all except the first type are excluded from the earth element. In the second, solely based on the criterion; in the third, solely based on prior pliability; in the fourth, although both are combined, prior pliability [is the cause]. He has already excluded it from the earth element. There is no need for a criterion, hence we have kept the components of the criterion in the second type only, otherwise, it is not specific to it. This is according to their way. The reliable view is only with regard to the criterion. So, the first and third are both of the earth

element, while the second and fourth are not. And Allah Almighty knows best. 12 Amna Ghafar-la (M)

---

1. Jami Ibn Baitar
2. Makhzan-ul-Adwiya, Chapter Ra with Jeem, printed by Naval Kishore Lucknow, p. 320.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

इसके बाद उस चीज़ की स्थिति देखी जाए। यहाँ यदि जलने के बाद नरम या कोमल होना आघातवर्धनीयता (malleability) का पात्र बनाता है, तो वह पृथ्वी तत्व (मिट्टी की श्रेणी) से नहीं है, अन्यथा है। जो वस्तु खान से बड़े टुकड़ों में निकले कि उसे साफ़ करने के लिए जलाने या गलाने की आवश्यकता न हो, तो उसमें ऊपर बताया गया मापदण्ड का नियम लागू होगा। नीलम (याक़ूत) और स्फ़टिक (बिल्लौर) से तयम्मुम जायज़ होगा और लोहे से नहीं। और जो कण-कण होकर निकले कि जिसे गलाकर या जलाकर साफ़ किया जाए, उसे साफ़ होने के बाद पूर्णतः नाजायज़ मानेंगे। काँच इसी श्रेणी का है क्योंकि वह खान में कण-कण ही मिलता है और आग पर गलाकर साफ़ किया जाता है। अरस्तू ने इसकी एक किस्म को 'पत्थर जैसा' (मुतअज्जिर) कहा, वह इस आधार पर था कि वह बिल्लौर को भी काँच की एक किस्म मानता है। उनके कथन में उपर्युक्त इबारत के बाद यह है:

[Boxed Text] अरबी: والبلور جنس من الزجاج غير انه يصاب فى معدنه مجتمع الجسم ويصاب الزجاج مفترق الجسم فيجمع كما ذكرنا بحجر المغنيا ١ اهـ يشير الى قوله منه ما هو رمل جسمه۔ جمع المغنيسا حجر معه والقى النار عليه اوقد فاذا उर्दू अनुवाद: बिल्लौर काँच ही की एक किस्म है। फ़र्क यह है कि बिल्लौर का शरीर खान में संगठित मिलता है और काँच का शरीर बिखरा हुआ मिलता है। फिर जैसा कि हमने बताया मग्नीसिया पत्थर के माध्यम से इसे इकट्ठा किया जाता है। (अंत)। यह इस कथन की ओर संकेत है: इसमें से एक वह है जो रेत होता है, जब उस पर आग जलाई जाती है और उसके साथ मग्नीसिया पत्थर भी डाला जाता है तो उसका शरीर संगठित हो जाता है। (त)

इसी तरह 'अनवारुल असरार' में 'मखज़ान' से उद्धृत है कि वह 'संग-ए-रेज़ा'[2] है (यह टुकड़ा-टुकड़ा पत्थर होता है। त)। इसलिए इन विद्वानों ने कोमलता और...

नोट 'अ': मैं कहता हूँ: चार किस्में हुईं। (१) जो न अपनी शुद्धि में जलने और कोमल होने का मोहताज हो और न बाद में आघातवर्धनीय हो, जैसे नीलम। (२) जो शुद्धि में मोहताज न हो और बाद में (३) इसका विपरीत कि शुद्धि में मोहताज हो और बाद में आघातवर्धनीय न हो, जैसे काँच। (४) पहले भी मोहताज हो और बाद में भी आघातवर्धनीय हो, जैसे सोना। ____ उनके निकट पहली किस्म के अलावा सब पृथ्वी तत्व से बाहर हैं। दूसरी में केवल मापदण्ड के आधार पर, तीसरी में केवल पूर्व-कोमलता के आधार पर, चौथी में यद्यपि दोनों सम्मिलित हैं लेकिन पूर्व-कोमलता [कारण है]। वह इसे

पृथ्वी तत्व से बाहर कर चुका है। मापदण्ड की आवश्यकता नहीं, इसलिए हमने मापदण्ड के घटकों को केवल दूसरी किस्म में रखा है, अन्यथा वह उसके लिए विशिष्ट नहीं है। यह उनके तरीके के अनुसार है। विश्वसनीय राय केवल मापदण्ड के लिहाज़ से है। तो पहली और तीसरी दोनों पृथ्वी तत्व हैं, जबकि दूसरी और चौथी नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। १२ आमना ग़फ़र-लह (म)

---

1. जामे इब्न बैतार
2. मखज़नुल अदविया, अध्याय 'रा' साथ 'जीम', नवल किशोर लखनऊ द्वारा मुद्रित, पृ. ३२०।

بعد اس شے کی حالت دیکھی جائے یہاں اگر احتراق بعد ترند یا لین موجب انطراق کا صالح ہے تو جنس ارض سے نہیں ورنہ ہے۔ جو چیز بڑے قطعے کان سے نکلے کہ صاف کرنے میں جلانے، گلانے کی محتاج نہ ہو اس میں وہ عہ قاعدہ معیار جاری ہوگا یاقوت و بلور سے تیمم جائز ہوگا اور لوہے سے نہیں اور جو ریزہ ریزہ نکلے کہ گلا، جلا کر صاف کی جائے اس سے بعد صفا وہ مطلقاً ناجائز مانیں گے زجاج اسی قبیل سے ہے کہ وہ ریزہ ریزہ ہی معدن میں ملتا اور آگ پر گلا کر صاف کیا جاتا ہے۔ ارسطو نے جو اس کی ایک قسم کو متحجر کہا اس بنا پر تھا کہ وہ بلور کو بھی نوع زجاج مانتا ہے اس کے کلام میں عبارت متذکورہ کے بعد ہے:

[Boxed Text] عربی: والبلور جنس من الزجاج غیر انه یصاب فی معدنه مجتمع الجسم ویصاب الزجاج مفترق الجسم فیجمع کما ذکرنا بحجر المغنیا ۱ اھ یشیر الی قوله منه ما هو رمل فاذا اوقد علیه النار والقی معه حجر المغنیسا جمع جسمه۔ اردو ترجمہ: بلور زجاج ہی کی ایک قسم ہے فرق یہ ہے کہ بلور کا جسم معدن میں مجتمع ملتا ہے اور زجاج کا جسم متفرق ملتا ہے پھر جیسا کہ ہم نے بتایا سنگ مغنیسا کے ذریعہ جمع کیا جاتا ہے۔ اھ یہ اشارہ اس عبارت کی جانب ہے: اس میں سے ایک وہ ہے جو ریت ہوتا ہے جب اس پر آگ جلائی جاتی ہے اور اس کے ساتھ سنگ مغنیسا بھی ڈالا جاتا ہے تو اس کا جسم مجتمع ہو جاتا ہے۔ (ت)

اسی طرح انوار الاسرار میں ہے مخزن سے گزرا سنگت ریزہ ۲ (ریزہ ریزہ پتھر ہوتا ہے۔ ت)۔ ولہٰذا ان علما نے لین و

عہ: اقول قسمیں چار ہوئیں۔ (۱) نہ اپنے تصفیہ میں احتراق و تلمین کا محتاج ہو نہ بعد کو منطرق جیسے یاقوت۔ (۲) تصفیہ میں محتاج نہ ہو اور بعد کو (۳) اس کا عکس کہ تصفیہ میں محتاج ہو اور بعد کو نا منطرق جیسے شیشہ۔ (۴) پہلے بھی محتاج ہو اور بعد کو بھی منطرق جیسے سونا ــــ ان کے نزدیک سوا قسم اول کے سب جنس ارض سے خارج ہیں دوم میں صرف بر بنائے معیار، سوم میں صرف بر بنائے لین متقدم، چہارم میں اگرچہ دونوں جمع ہیں مگر لین متقدم۔ اسے جنس ارض سے خارج کر چکا۔ معیار کی حاجت نہیں لہٰذا ہم نے اجزائے معیار کو قسم دوم ہی میں رکھا، ورنہ وہ اس سے خاص نہیں۔ یہ ان کے طور پر ہے اور معتمد صرف لحاظ معیار، تواول و سوم دونوں جنس ارض ہیں اور دوم و چہارم نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ ۱۲ امنہ غفرلہ (م)

---

1 جامع ابن بیطار 2 مخزن الادویہ فصل الراء مع الجیم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ص ۳۲۰

He said two words for 'Intiba' (impression): 'Lin' (softness) for the earlier ones, and its example is glass; and 'Intiba' for the later ones, and its examples are iron, etc. Have you not seen that the great Imam Nasafi also mentioned 'Ramad' (ashes) in the examples of 'Ihtraq' (burning)? And that is certainly not a template for burning. Necessarily, for him, 'Ihtraq Mutaqaddim' (initial burning) is meant, which was obtained from burning. Similarly, for glass, 'Lin' (is meant), and a truthful witness to this is the discourse of Imam Tahir in 'Khulasa', where he counted glass among this 'Lin Mutaqaddim'. He states:

[Arabic Box] "If one performs Tayammum with gold, silver, brass, copper, lead, flour, glass, wheat, or barley, from that which is not of the essence of the earth, or is of its essence but was purified from its essence through melting or burning, Tayammum is not permissible by consensus. End. So his statement 'is not of the essence of the earth' refers to flour, wheat, and barley; and his statement 'or is of its essence, etc.' refers to the remaining items." (T)

[Translation Box] If one performs Tayammum with gold, silver, brass, copper, lead, flour, glass, wheat, or barley—any such thing that is not from the essence of the earth, or it is from the essence of earth but has been extracted from the earth's essence through melting or burning—then Tayammum with it is not permissible by consensus (End). Their phrase "not from the essence of the earth" relates to flour, wheat, and barley; and their saying "or is from the essence of earth but etc." relates to the rest of the things. (T)

In this way, these statements will be justified, and regarding the meaning of 'Intiba' that we have researched, no dust of doubt will remain, nor regarding arsenic and sulfur. All these statements have become unified. As for the many and abundant statements in which glass is not mentioned as an example, they are justified by this refined and elegant explanation which passed previously, according to which they proceed on the well-known and supported doctrine of the majority. However, the statement of 'Inayah' will be based on its original justification. With these two (2) justifications, all statements have become justified.

[Arabic Box] "The statements: (1) In 'Al-Durr', 'malleable like glass'—I found no cure for it. Attributing it alone to an oversight is easier than attributing oversight to all the great scholars. This is what I have; if someone else has something better than this, let him present it with deep consideration, for the objective is to follow the truth

wherever it may be. And Allah is the One whose help is sought and upon Him [is reliance]."

[Translation Box] But I could find no remedy for the phrase in 'Durr-e-Mukhtar', "malleable like glass". And attributing it alone to an oversight is easier than declaring all the elders to be in oversight. This is what came to my mind. If someone has something better than this, let them express it with an eye of deep thought, because the objective is to follow the truth, wherever the truth may be found and...

1 Khulasa-tul-Fatawa, Chapter: Other substances with which Tayammum is permissible, printed by Naval Kishore Lucknow, 1/36.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

इंतिबाअ (छाप) के लिए दो शब्द कहे: 'लीन' (कोमलता) पूर्ववर्तियों के लिए और इसकी मिसाल कांच है; और 'इंतिबाअ' बाद वालों के लिए और इसकी मिसाल लोहा आदि है। क्या आपने नहीं देखा कि महान इमाम नसफ़ी ने 'एहतराक़' (जलने) के उदाहरणों में 'रमाद' (राख) का भी उल्लेख किया है? और वह हरगिज़ जलने का साँचा नहीं है। लाज़िम है कि उनके लिए 'एहतराक़ मुतक़द्दिम' (प्रारंभिक दहन) अभिप्रेत है, जो जलने से प्राप्त हुआ। इसी तरह कांच के लिए 'लीन' है, और इस पर एक सच्चा गवाह इमाम ताहिर का 'ख़ुलासा' में कथन है, जहाँ उन्होंने कांच को इसी 'लीन मुतक़द्दिम' में गिना है। वे फ़रमाते हैं:

[अरबी बॉक्स] "यदि कोई सोने, चांदी, पीतल, तांबे, सीसे, आटे, कांच, गेहूं, या जौ से तयम्मुम करे, जो कि ज़मीन के तत्व से नहीं है, या उसके तत्व से है लेकिन पिघलाने या जलाने के माध्यम से उसके तत्व से अलग किया गया है, तो सर्वसम्मति से तयम्मुम जायज़ नहीं है। अंत। अतः उनका कथन 'ज़मीन के तत्व से नहीं है' आटे, गेहूं और जौ को संदर्भित करता है; और उनका कथन 'या उसके तत्व से है आदि' शेष वस्तुओं को संदर्भित करता है।" (त)

[अनुवाद बॉक्स] यदि सोना, चाँदी, पीतल, ताँबा, सीसा, आटा, शीशा, गेहूँ, जौ किसी ऐसी चीज़ से तयम्मुम किया जो ज़मीन के जौहर (तत्व) से नहीं है या ज़मीन ही के जौहर से है मगर पिघलाने या जलाने के ज़रिये ज़मीन के जौहर से निकली है, तो उससे तयम्मुम बिल-इत्तिफ़ाक़ (सर्वसम्मति से) जायज़ नहीं (अह)। उनकी इबारत "जोहर ज़मीन से नहीं" आटा, गेहूँ और जौ से मुताल्लिक़ है और उनका क़ौल "या ज़मीन के जौहर से है मगर आदि" बाक़ी चीज़ों से मुताल्लिक़ है। (त)

इस तरह इन इबारतों की तौजीह (व्याख्या) हो जाएगी और 'इंतिबाअ' के अर्थ पर जो हमने शोध किया है, उस पर कोई धूल नहीं आएगी, न ही हरताल और गंधक पर। ये सभी इबारतें एकरूप हो गईं। बाक़ी वे बहुत सी और प्रचुर इबारतें जिनमें कांच का उदाहरण नहीं है, वे इस उत्तम और शानदार तौजीह से पुष्ट हैं जो पहले गुज़री, जिससे वे जम्हूर (बहुमत) के प्रसिद्ध और समर्थित पंथ पर चलते हैं। अलबत्ता 'इनाया' की इबारत कि उसकी आधारशिला इसी तौजीह पर होगी। इन दो (2) तौजीहों से तमाम इबारतें स्पष्ट हो गईं।

[अरबी बॉक्स] "कथन: (1) 'अल-दुर्र' में 'कांच की तरह लचीला'—मुझे इसका कोई समाधान नहीं मिला। अकेले इसे चूक की ओर मंसूब करना सभी महान विद्वानों की ओर चूक मंसूब करने से

आसान है। यह वह है जो मेरे पास है; यदि किसी और के पास इससे बेहतर है, तो वह उसे गहरे विचार के साथ प्रकट करे, क्योंकि उद्देश्य सत्य का अनुसरण करना है जहाँ कहीं भी वह हो। और अल्लाह ही सहायक है और उसी पर [भरोसा है]।"

[अनुवाद बॉक्स] मगर 'दुर्र-ए-मुख़्तार' की इबारत "मन्ताबेअ कज़-ज़जाज" (कांच की तरह लचीला) का कोई इलाज मैं न पा सका। और तन्हा इसे सहव (चूक) की जानिब मंसूब करना सारे बुज़ुर्गों को सहव पर क़रार देने से आसान है। यह वह है जो मेरे ख़्याल में आया। अगर किसी के पास इससे बेहतर हो तो निगाह-ए-ग़ौर से उसका इज़हार करे क्योंकि मक़सूद हक़ का इत्तेबाअ (अनुसरण) है, हक़ जहाँ भी मिले और...

1 ख़ुलासा-तुल-फ़तावा, जिन्स आख़र मा यजूज़ु बिहि-तयम्मुम, मतबूआ नवल किशोर लखनऊ, 1/36.

पेज 627 का 756

انطباع دو لفظ کہے لین متقدم کے لئے اور اس کی مثال میں زجاج ہے اور انطباع متاخر کے لئے اس کی مثال میں حدید وغیرہ ہیں آخر نہ دیکھا کہ امام جلیل نسفی نے احتراق کی مثالوں میں رماد بھی ذکر فرمائی اور وہ ہر گز قالب احتراق نہیں لاجرم اس کے لئے احتراق متقدم مراد ہے کہ جلنے سے حاصل ہوئی، یوں ہی زجاج کے لئے لین اور اس پر شاہد عدل امام طاہر کا خلاصہ میں کلام ہے کہ زجاج کو اسی لین متقدم میں گنا، فرماتے ہیں :

[Arabic Box] لو تیمّم علی الذھب والفضۃ والشبہ او النحاس او الرصاص او الدقیق او الزجاج او الحنطۃ او الشعیر مما لیس من جوھر الارض اومن جوھرھا الا انہ خلص من جوھرھا بالا ذابۃ والاحراق لا یجوز التییم بالاتفاق اہ فقولہ لیس من جوھر الارض للدقیق والحنطۃ والشعیر وقولہ او من جوھر ھو الخ للبواقی۔

[Translation Box] اگر سونا، چاندی، پیتل، تانبا، سیسہ، آٹا، شیشہ، گیہوں، جو کسی ایسی چیز سے تیمّم کیا جو جوہر زمین سے نہیں یا زمین ہی کے جوہر سے ہے مگر پگھلانے یا جلانے کے ذریعہ زمین کے جوہر سے نکلی ہے تو اس سے تیمّم بالاتفاق جائز نہیں اھ ان کی عبارت "جو ہر زمین سے نہیں" آٹا، گیہوں اور جو سے متعلق ہے اور ان کا قول "یا زمین کے جوہر سے ہے مگر الخ" باقی چیزوں سے متعلق ہے۔ (ت)

یوں ان عبارات کی توجیہ ہو جائے گی اور معنی انطباع پر کہ ہم نے تحقیق کے غبار نہ آئے گانہ زرنیخ و کبریت یہ سب عبارات متحد ہو گئیں باقی کثیر و وافر عبارات جن میں مثال زجاج نہیں اس نفیس و وجیہ توجیہ سے موجہ ہیں جو سابق گزری جس سے وہ مذہب جمہور مشہور و منصور پر

ماشی ہیں مگر عبارت عنایہ کہ اس کا اؤاسی توجیہ لاحق پر بنے گا ان دو ۲ توجیہوں سے تمام عبارات موجہ ہو گئیں۔

[Arabic Box] الاقوال (۱) الدر منطبع کز جاج فلم اجدلہ طبا ونسبتہ وحدہ الی السھوا سھل من نسبة سائر الکبراء الیہ ھذا ما عندی فان کان عند غیری احسن من ھذا فلیبدہ بامعان فان المقصود اتباع الحق حیث کانا واللہ المستعان وعلیہ

[Translation Box] مگر درمختار کی عبارت "منطبع کز جاج" کا کوئی علاج میں نہ پاسکا۔ اور تنہا اسے سہو کی جانب منسوب کرنا سارے بزرگوں کو سہو پر قرار دینے سے آسان ہے۔ یہ وہ ہے جو میرے خیال میں آیا۔ اگر کسی کے پاس اس سے بہتر ہو تو بنگاہ غور اس کا اظہار کرے کیونکہ مقصود حق کا اتباع ہے حق جہاں بھی ملے اور

1 خلاصۃ الفتاویٰ جنس آخر ما یجوز بہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/ ۳۶

Fatawa Razawiyya, Volume 3

[Boxed Text] Arabic: Trust is only in Allah, and perfect and complete blessings and peace be upon the master of mankind and jinn, and upon his family and companions at every moment and every time. All praise is for Allah, the Lord of all the worlds. Urdu: Reliance is only on God and trust is in Him. Perfect and complete blessings and peace be upon the leader of men and jinn, and upon the Master's family and companions every moment and every second. And all good qualities are for God alone, the Master of the whole world. (T)

Second Section (Description of those 181 items from which Tayammum is permissible): The enumeration of those certain items from which Tayammum is permissible in the school of our Great Imam (RA) can be divided into two types: *Explicitly mentioned (Mansoosat)*: whose explanation is currently present in the books. *Additions*: which the humble servant (author) has added, and it was right to separate them so that the rational (Ma'qul) would not be mixed with the traditional (Manqul). (T) *Explicitly mentioned*: In quoting passages, there is long repetition, therefore suffice with counting the names in some books, but in cases of disagreement or hidden points, it is appropriate to increase the names. (1) Soil, which is the root of all roots, is the basis of Al-Muharrar al-Madhhab and general texts (i.e., the permissibility of Tayammum from soil is mentioned in Imam Muhammad's (RA) Mabsut and general texts of jurisprudence. T). Then if it is 'Nabt', meaning capable of growing plants, then there is a consensus (ijma) of the Ummah on the permissibility of Tayammum from it. *I say (Aqool)*: The recommended (mustahabb) thing is that as long as it is available, one should not perform Tayammum with anything else, because exiting from disagreement is recommended by consensus. (T) (2) According to us, salty soil (shor) in which nothing has the capacity to grow is also permissible. *Khulasa*, *Khizana* [note 2], *Bazaziya*. [Note 1] Arabic: He specified its mention because for Imam Muhammad there is a disagreement regarding everything that does not stick to the hand, and for Imam Abu Yusuf regarding everything other than soil. 12 Minhu Ghafaralahu (M) | Urdu: Their mention is only because Imam Muhammad has a disagreement about everything that is not sticky to the hand. And Imam Abu Yusuf has a disagreement regarding everything besides soil. 12 Amna Ghafaralahu (T) [Note 2] Arabic: What is meant by it is *Khizanat-ul-Muftiyeen* in these chapters wherever it is mentioned absolutely. 12 Minhu Ghafaralahu (M) | Urdu: In these chapters, wherever the reference to 'Khizana' appears, it refers to *Khizanat-ul-Muftiyeen*. 12 Amna Ghafaralahu (T)

फतावा रज़विया, जिल्द 3

[बॉक्स वाला टेक्स्ट] अरबी: भरोसा केवल अल्लाह पर है, और संपूर्ण और पूर्ण आशीर्वाद और शांति मानव और जिन्न के स्वामी पर, और उनके परिवार और साथियों पर हर पल और हर समय हो। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे जहानों का रब है। उर्दू: खुदा ही से मदद की दुआ है और उसी पर भरोसा है। ताम और कामिल दुरूद और सलाम इंसानों और जिन्नों के सरदार और सरकार की आल और असहाब पर हर लम्हा और हर आन। और सारी खूबियां सारे जहान के मालिक खुदा ही के लिए हैं। (त)

दूसरा मकाम (उन 181 चीजों का बयान जिनसे तयम्मुम जायज़ है): उन चंद चीज़ों का शुमार जिनसे हमारे इमाम-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़हब में तयम्मुम जायज़ है, उन्हें दो किस्मों में बांटें: मनसूसात: जिनकी तशरीह (व्याख्या) किताबों में इस वक्त पेश-ए-नज़र है। मज़ीदात: कि फ़कीर ने इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) कीं और उन्हें अलग करना मेरी ज़िम्मेदारी थी ताकि मअकूल (तर्कसंगत) का ज़िक्र मनकूल (पारंपरिक) की जगह न हो। (त) मनसूसात: इबारतों को नक़ल करने में तूल-तकरार (लंबा दोहराव) है, लिहाज़ा सिर्फ बाज़ किताबों के नामों के शुमार पर किफ़ायत (संतोष) करें, मगर जहाँ इख़्तिलाफ़ (असहमति) या पोशीदा (छिपे हुए) पहलू हों, वहाँ ज़्यादा नामों का ज़िक्र मुनासिब है। (1) मिट्टी, जो अस्लुल-अमूल (जड़ की जड़) है, अल-मुहर्रर अल-मज़हब और आम मतून (ग्रंथों) की बुनियाद है (यानी मिट्टी से तयम्मुम के जायज़ होने का ज़िक्र इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अलैहि की 'मबसूत' और फ़िक़्ह के आम मतून में मौजूद है। त)। फिर अगर वह 'नबत' यानी खेती के काबिल हो तो उससे तयम्मुम के जायज़ होने पर उम्मत का इजमा (सहमति) है। अकूल (मैं कहता हूँ): तो मुस्तहब (पसंदीदा) यह है कि जब तक यह मिले, किसी और चीज़ से तयम्मुम न करे, क्योंकि इख़्तिलाफ़ (मतभेद) से बाहर निकलना इजमा के मुताबिक मुस्तहब है। (त) (2) हमारे नज़दीक खारी मिट्टी (शोर) भी, जिसमें कुछ भी उगने की सलाहियत (क्षमता) न हो, जायज़ है। ख़ुलासा, ख़ज़ाना [नोट 2], बज़ज़िया। [नोट 1] अरबी: उसका विशेष उल्लेख इसलिए है क्योंकि इमाम मुहम्मद का हर उस चीज़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है जो हाथ से चिपकती न हो, और इमाम अबू यूसुफ़ का मिट्टी के अलावा बाकी तमाम चीज़ों में। 12 मिन्हु ग़फ़रलाहु (म) | उर्दू: सिर्फ उनका ज़िक्र इसलिए है कि इमाम मुहम्मद का हर उस चीज़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है जो हाथ से चिपकने वाली न हो। और इमाम अबू यूसुफ़ का मिट्टी के अलावा सारी चीज़ों में इख़्तिलाफ़ है। 12 अम्ना ग़फ़रलाहु (त) [नोट 2] अरबी: इन फ़स्लों में जहाँ भी इसे निरपेक्ष (मुतलक़) रूप में इस्तेमाल किया गया है, उससे मुराद ख़ज़ानतुल-

मुफ़्तयीन है। 12 मिन्हु ग़फ़रलाहु (म) | उर्दू: इन फ़स्लों में जहाँ भी 'ख़ज़ाना' का हवाला आए, उससे मुराद ख़ज़ानतुल-मुफ़्तयीन है। 12 अम्मा ग़फ़रलाहु (त)

पेज 628/756

[Boxed Text] التکلان * والصلوۃ والسلام الاتمان الاکملان علی سید الانس والجان وآلہ وصحبہ کل حین وان والحمد للہ رب العلمین* خدا ہی سے مدد طلبی ہے اور اسی پر توکل ہے اور تام وکامل درود وسلام انس وجن کے سردار اور سرکار کی آل واصحاب پر ہر لمحہ و ہر آن۔ اور ساری خوبیاں سارے جہان کے مالک خدا ہی کے لیے ہیں۔ (ت)

مقام دوم (ان ایک سو اکاسی ۱۸۱ چیزون کا بیان جن سے تیمم جائز ہے) ان بعض اشیاء کا شمار جن سے ہمارے ۱۸۲ امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے مذہب میں تیمم جائز ہے انہیں دو ۲ قسم کریں: منصوصات، جن کی تشریح کتابوں میں اس وقت پیش نظر ہے۔ مزیدات کہ فقیر نے اضافہ کیں وکان حقا علی افرازھا کیلا یساق المعقول مساق المنقول (انہیں الگ کرنا میری ذمہ داری جتنی تاکہ معقول کا ذکر منقول کی جگہ نہ ہو۔ ت) منصوصات: نقل عبارات میں طول تکرار ہے لہذا صرف شمار اسمائے بعض کتب پر قناعت کریں مگر خلافیات یا خفیات ۱۸۳ ان میں تکثیر اسماء مناسب۔ (۱) خاک کہ اصل الاصول ہے اصل المحرر المذھب ومتون عامۃ (یعنی خاک سے جواز تیمم محرر مذہب امام محمد رحمۃ اللہ علیہ کی مبسوط اور فقہ کے عام متون میں مذکورہ۔ت) پھر اگر نبت یعنی قابل نبات ہو تو اس سے جواز تیمم پر اجماعِ امت اقول: تو مستحب یہ ہے کہ اس کے ملتے اور کسی چیز سے تیمم نہ کرے فان الخروج عن الخلاف مستحب بالاجماع (کیونکہ سرحد خلاف سے نکل آنا بالاجماع مستحب ہے۔ ت) (۲) ہمارے نزدیک خاک شور بھی جس میں کوئی چیز اگنے کی صلاحیت نہ ہو خلاصۃ خزانہ عہ۱ بزازیۃ عہ۱: خصہ بالذکر لان لمحمد خلافا فی کل مالا یلتزق بالید ولابی یوسف فی جمیع غیر التراب ۱۲ منہ غفرلہ (م) | صرف ان کا ذکر اس لئے ہے کہ امام محمد کا ہر اس چیز کے بارے میں اختلاف ہے جو ہاتھ سے چپکنے والی نہ ہو۔ اور

امام ابو یوسف کا مٹی کے علاوہ ساری چیزوں میں اختلاف ہے۔ ۱۲ امنہ غفرلہ (ت) عہ۲: المراد بھا خزانۃ المفتین فی ھذہ الفصول حیث اطلق۔ ۱۲منہ غفرلہ (م) | ان فصلوں میں جہاں بھی خزانہ کا حوالہ آئے اس سے مراد خزانۃ المفتین ہے۔ ۱۲ امنہ غفرلہ (ت)

Fatawa-e-Razvia Volume Three Maraqi al-Falah. (3) Sand according to the original and general texts, contrary to the later saying of Imam Abu Yusuf. (Contrary to the second saying of Imam Abu Yusuf. - T) (4) A smooth stone as per 33 books (its description has passed with reference to 33 books. - T) even if it is clean and washed without dust, as in Khaniya, Khulasa, Maraqi, Durr, and Kaseer. (5) Finely ground or unground, as in Nawazil, Khaniya, Bazzaziya, Khizanat al-Muftin, Durr, Hindiya, etc. and it is restricted in Shalbiya from Al-Mujtaba with the term 'al-madquq' (ground). (Nawazil, Khaniya, Bazzaziya, Khizanat al-Muftin, Durr, Hindiya, etc. - and in Shalbiya with reference to Mujtaba, the restriction of "ground" is added to it. - T) I say: It is based on Imam Muhammad's saying regarding the necessity of something sticking to the hand, while the school of Imam-e-Azam (Abu Hanifa) is unconditional (i.e., sticking is not necessary). (T) (6) Dust of texts and general [circumstances]. I say: Provided it is not raised from impure soil, even if it became pure for prayer due to the disappearance of the effect of impurity; provided it did not fall on a wet impure thing, nor on a dry impure thing that subsequently became wet, even if it dried again. Some of this has already been mentioned. (Some of its description has passed. - T) (7) Dust fallen on a dry impure thing, provided moisture does not reach it. This has passed in previous lessons with reference to al-Hilya, al-Nihaya, and al-Hindiya, and similarly in al-Fath. (The description of this has passed in previous lessons with reference to Hilya, Nihaya, Hindiya, and similarly in Fath al-Qadir. - T) (8) On wet ground which has been sprinkled [with water], as will be mentioned later. (As it is coming up. - T) (9) The soil of a graveyard, as long as its impurity is not presumed. If one performs tayammum with the soil of a graveyard, if they strongly suspect its impurity, then tayammum is not permissible; otherwise, it is permissible as mentioned in Siraj. Hashiyat al-Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah. (T) (10) Dust cloud or whirlwind; two methods for tayammum from it have passed above in Khulasa and Bazzaziya. (11) Burnt earth, as will be mentioned later. (Its description has passed and will come again. - T) (12) Saline land from which salt is extracted, even if it is very slight, provided that salt is made from soil, as will be mentioned. 1 Tahtawi 'ala Maraqi al-Falah, Section: Things with which Tayammum is permissible, Azhariya Press, Egypt, p. 68. Page 629 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरी मराक़ी अल-फ़लाह। (३) रेती मूल और सामान्य ग्रंथों के अनुसार, इमाम अबू यूसुफ के बाद के कथन के विपरीत। (इमाम अबू यूसुफ के दूसरे कथन के विपरीत। - त) (४) पत्थर ३३ पुस्तकों के अनुसार (३३ पुस्तकों के हवाले से इसका वर्णन गुज़र चुका है। - त) चाहे वह साफ धुला हुआ और बिना धूल के हो, जैसा कि ख़ानिया, खुलासा, मराक़ी, दुर्र और कसीर में है। (५) बारीक पिसा हुआ या बिना पिसा हुआ, नवाज़िल, ख़ानिया, बज़ाज़िया, ख़िज़ानत अल-मुफ़्तीन, दुर्र, हिन्दिया आदि के अनुसार, और शल्बिया में मुजतबा के हवाले से इसे 'मदक़ूक़' (पिसा हुआ) के साथ प्रतिबंधित किया गया है। (नवाज़िल, ख़ानिया, बज़ाज़िया, ख़िज़ानत अल-मुफ़्तीन, दुर्र, हिन्दिया आदि - और मुजतबा के हवाले से शल्बिया में इसके साथ "पिसा हुआ" की शर्त लगाई गई है। - त) मैं कहता हूँ: यह इमाम मुहम्मद के उस कथन पर आधारित है कि हाथ से कुछ चिपकना ज़रूरी है, जबकि इमाम-ए-आज़म के मज़हब में यह शर्त नहीं है। (त) (६) ग्रंथों और आम परिस्थितियों की धूल। मैं कहता हूँ: बशर्ते कि वह नापाक मिट्टी से न उठी हो, भले ही वह नजासत का असर खत्म होने से नमाज़ के लिए पाक हो गई हो; न ही किसी गीली नापाक चीज़ पर गिरी हो, और न ही किसी सूखी नापाक चीज़ पर गिरकर उसे नमी पहुँची हो, चाहे वह नमी फिर सूख ही क्यों न जाए। इसका कुछ वर्णन पहले गुज़र चुका है। (इसमें से कुछ का वर्णन गुज़र चुका है। - त) (७) सूखी नापाक चीज़ पर गिरी हुई धूल, बशर्ते कि उस तक नमी न पहुँचे। पिछले पाठों में हिल्या, निहाया और हिन्दिया के हवाले से यह गुज़र चुका है, और इसी तरह फ़तह में भी। (पिछले पाठों में हिल्या, निहाया, हिन्दिया के हवाले से इसका वर्णन गुज़र चुका है, इसी तरह फ़तह अल-क़दीर में भी है। - त) (८) गीली ज़मीन जिस पर छिड़काव हुआ हो, जैसा कि आगे आएगा। (जैसा कि आ रहा है। - त) (९) क़ब्रिस्तान की ज़मीन, जब तक कि उसकी नजासत का प्रबल गुमान (संदेह) न हो। अगर क़ब्रिस्तान की मिट्टी से तयम्मुम किया जाए, और यह प्रबल गुमान हो कि यह मिट्टी नजासत वाली है, तो तयम्मुम जायज़ नहीं है, अन्यथा जायज़ है जैसा कि सिराज में है। तहतावी अल-मराक़ी अल-फ़लाह। (त) (१०) गर्द-ओ-गुबार या बवंडर; इससे तयम्मुम के दो तरीक़े ऊपर खुलासा और बज़ाज़िया के हवाले से गुज़र चुके हैं। (११) जली हुई ज़मीन, जैसा कि आगे आएगा। (इसका वर्णन गुज़र चुका है और आगे भी आएगा। - त) (१२) नमकीन ज़मीन जिससे नमक निकलता हो, चाहे वह बहुत कम ही क्यों न हो, बशर्ते कि वह नमक मिट्टी से बना हो, जैसा कि आगे आएगा। १ तहतावी अला मराक़ी अल-फ़लाह, अध्याय: जिनसे तयम्मुम जायज़ है, अज़हरिया प्रेस, मिस्र, पृ. ६८। पृष्ठ ६२९ / ७५६

فتاوٰی رضویہ جلد سوم مراقی الفلاح۔ (۳) ریتا اصل ومتون عامۃ خلافاً لابی یوسف فی قولہ الآخر (امام ابو یوسف کے قول دوم کے برخلاف۔ت) (۴) پتھر مروح ۳۳ کتابا (۳۳ کتابوں کے حوالہ سے اس کا بیان گزر چکا۔ت) اگرچہ صاف دھلا بے غبار ہو خانیہ، خلاصہ، مراقی، در وکثیر۔ (۵) باریک پسا ہوا باسلم نوازن خانیۃ بزازیۃ خزانۃ المفتین درھندیۃ وغیرہا و قیدہ فی الشلبیۃ عن المجتبی بالمّدقوق (نوازن، خانیہ، بزازیہ، خزانہ المفتین، در، ہندیہ وغیرہا ۔ اور مجتبی کے حوالہ سے شلبیہ میں اس کے ساتھ "پسے ہوئے" کی قید لگائی۔ت) اقول: مشی علی قول محمد من لزوم ان یلتزق بالید شییئ و مذہب الامام الاطلاق۔ | اقول: (میں کہتا ہوں) یہ امام محمد کے قول پر گئے ہیں کہ ہاتھ سے کچھ چپک جانا ضروری ہے اور امام اعظم کے مذہب میں یہ قید نہیں۔(ت) (۶) غبار متون و عامہ۔ اقول: جبکہ نہ ناپاک خاک سے اُٹھا ہو اگر چہ نجاست کا اثر زائل ہو جانے سے نماز کے لئے پاک ہوگئی ہو نہ کسی تر چیز ناپاک پر گرا ہو نہ ناپاک خشک چیز پر گرا اسے تری پہنچی ہو اگرچہ پھر وہ تری خشک بھی ہو جائے و قد تقدم بعضہ (اس میں سے کچھ کا بیان گزر چکا۔ت) (۷) ناپاک خشک چیز پر گرا ہوا غبار جبکہ اسے تری نہ پہنچے تقدم فی الدروس السالفۃ عن الحلیۃ و النھایۃ و الھندیۃ و مثلہ فی الفتح (گزشتہ اسباق میں حلیہ، نہایہ، ہندیہ کے حوالہ سے اس کا بیان گزرا، اسی کے مثل فتح القدیر میں بھی ہے۔ت) (۸) تر زمین پر جس پر چھڑکاؤ ہوا کمایاتی (جیسا کہ آرہا ہے۔ت) (۹) مقبرے کی زمین جبکہ اس کی نجاست مظنون نہ ہو، لویتیمم بتراب المقبرۃ ان غلب علی ظنہ نجاسۃ لا یجوز والا یجوز کما فی السراج ط علی المراقی۔ | اگر قبرستان کی مٹی سے تیمم کیا اگر اس کا غالب گمان ہو کہ یہ مٹی نجس ہے تو تیمم جائز نہیں، ورنہ جائز ہے جیسا کہ سراج میں ہے۔ طحطاوی علی المراقی الفلاح۔(ت) (۱۰) گرد باد بگولا، اس سے تیمم کے دو طریقے اوپر گزرے خلاصہ، بزازیہ۔ (۱۱) جلی ہوئی زمین قدمرو یاتی (اس کا بیان گزر چکا اور آگے بھی آئے گا۔ت) (۱۲) نمک زار زمین جس میں سے نمک نکلتا ہو اگرچہ خفیف تر بھی ہو جبکہ وہ نمک مٹی

سے بنا ہو و یأتی 1 طحطاوی علی مراقی الفلاح مایجوز به التیمم مطبعۃ ازہریۃ مصر ص ۶۸

Fatawa Ridawiyya - Volume Three

(And it will be mentioned further ahead. - T) (13) Yellow soil (is mentioned in) Asl, Nawazi, Khulasa, Khizanat al-Hindiyya. (14) Red soil (is mentioned) in Al-Bahr and Al-Khaniya. (15) Gairu (Red Ochre) is mentioned in Al-Bada'i, Tabyin, Fath, Bahr, Nahr (except for Bada'i, all these i.e., Asl, Khulasa, Khizana, Hindiyya, Khania, and additionally Tabyin, Fath, Bahr, Nahr. - T). I say: It is different from red soil.

| So he counted them separately. In Al-Khaniya, it | For the jurists counted Gairu and red soil | | is said: Tayammum with Gairu, kohl, and red clay | separately. In Khaniya, it was said: Tayammum | | is permissible. (1) - end. In Al-Khulasa: It is | with Gairu, kohl, and red clay is permissible | | permissible with red clay, yellow clay, and | - end. In Khulasa, it was said: Tayammum is | | Gairu. (2) - end. The same is in others besides | permissible with red clay, yellow clay, and | | these two. As for the statement in Al-Qamus | Gairu - end. The same is the case in others | | that "Gairu is red clay" (3), I say: He did not | besides these two. As for the phrase of Al- | | say 'the red clay' [with 'al']. And they (the | Qamus that "Gairu is a red soil", I say that | | linguists), when they use a definite noun [al- | it does not mean Gairu is the same as red | | ma'rifah], they mean an indefinite one | soil. The method of linguists is that when | | [nakirah], and when they use an indefinite noun,| they use a definite noun to explain the | | they mean a specific thing. | meaning, they intend an indefinite one, and | | | when they bring an indefinite noun, they | | | mean a specific thing. (T) |

---

(16) Black soil (and) (17) White soil in Bada'i Hindiyya. (18) Green soil in Nawazi, Khulasa, Tatar-Khaniya, Hindiyya. (19) Egyptian child (clay) [annotation by Tahtawi] with which they dye clothes in Egypt, as mentioned in Taj al-Arus.

Annot: Allama Tahtawi mentioned in the context of an issue that 'Tifl' (with fat'ha on 'Ta') belongs to the genus of earth. In Tazkira Dawood and Makhzan, 'Tifl' is interpreted as 'Tin Qimuliya' (Cimolian earth); also in Tazkira, 'Tin Qimuliya' is interpreted as 'Tifl' and both are interpreted as 'Talitali'. In Makhzan, it is said that 'Tin Qimuliya' is called 'Khari matti' in Hindi, and children spread it on writing boards for practice (in Hindi it is called 'Khariya matti', and children apply it to their practice boards. - T) (Continued on the next page).

1. Fatawa Qadhikhan, section on things with which Tayammum is permissible, published by Nawal Kishore, Lucknow, 1/29.

2. Khulasat al-Fatawa, section on things with which Tayammum is permissible, Maktaba Habibiya, Quetta, 1/35.
3. Al-Qamus al-Muhit, chapter of Meem, section of Ra, Matba Mustafa al-Babi, Egypt, 12/40.

फ़तावा रज़विया - जिल्द तीसरी

(और आगे भी आएगा। - त) (13) पीली मिट्टी (का ज़िक्र) असल, नवाज़ी, खुलासा, खज़ाना-ए-हिन्दीया में है। (14) सुर्ख मिट्टी ही अल-बहर और अल-खानिया में है। (15) गेरू ही अल-बदाई, तबीईन, फ़तह, बहर, नहर में है (बदाई के अलावा ये सभी यानी असल, खुलासा, खज़ाना, हिन्दीया, खानिया, और इसके अतिरिक्त तबीईन, फ़तह, बहर, नहर। - त)। मैं कहता हूँ: वह सुर्ख मिट्टी से अलग है।

| सो उसने उन दोनों को अलग-अलग गिना है। अल-खानिया | इसलिए कि फ़ुक़हा (न्यायविदों) ने गेरू और सुर्ख | | में कहा गया: गेरू, सुरमा और सुर्ख मिट्टी से | मिट्टी को अलग-अलग गिना है। खानिया में कहा गया: | | तयम्मुम जायज़ है। (1) - समाप्त। और खुलासा में | गेरू, सुरमा और सुर्ख मिट्टी से तयम्मुम जायज़ | | कहा गया: सुर्ख मिट्टी, पीली मिट्टी और गेरू से | है - समाप्त। और खुलासा में कहा गया: सुर्ख | | तयम्मुम जायज़ है। (2) - समाप्त। इसी तरह इन | मिट्टी, पीली मिट्टी और गेरू से तयम्मुम जायज़ | | दोनों के अलावा अन्य में भी है। रहा क़ामूस का यह | है - समाप्त। इसी के समान इन दोनों के अलावा | | कथन कि "गेरू एक सुर्ख मिट्टी है" (3), तो मैं | अन्य में भी है। रही क़ामूस की यह इबारत कि | | कहता हूँ: उसने 'अल' के साथ सुर्ख मिट्टी नहीं | "गेरू एक सुर्ख मिट्टी है", तो मैं यह कहता हूँ | | कहा। और उनका (भाषाविदों का) तरीका यह है कि जब वे | कि इसमें यह नहीं है कि गेरू ही सुर्ख मिट्टी है। | | 'मआरिफ़ा' (निश्चित संज्ञा) बोलते हैं, तो उनका | और अहले लुग़त (भाषाविदों) का तरीका यह है कि | | उद्देश्य 'नकीरा' (अनिश्चित) होता है, और जब | मानी बयान करने के लिए जब वे 'मआरिफ़ा' बोलते | | 'नकीरा' लाते हैं, तो किसी निश्चित चीज़ का | हैं, तो अनिश्चित अर्थ मुराद लेते हैं, और जब | | उद्देश्य रखते हैं। | 'नकीरा' लाते हैं तो किसी निश्चित चीज़ को मुराद | | | लेते हैं। (त) |

---

(16) काली मिट्टी (और) (17) सफ़ेद मिट्टी बदाई हिन्दीया में। (18) हरी मिट्टी नवाज़ी, खुलासा, ततार-खानीया, हिन्दीया में। (19) तिफ़्ल मिस्री [तहत़ावी का स्पष्टीकरण] जिससे मिस्र में कपड़े रंगते हैं, ताजुल उरूस।

स्पष्टीकरण: अल्लामा तहत़ावी ने एक मसले के संदर्भ में, जो आता है, बताया कि 'तिफ़्ल' (ता पर ज़बर के साथ) ज़मीन की ही एक नस्ल है। तज़किरा दाऊद और मख़ज़न में 'तिफ़्ल' को 'तीन क़ीमुलिया' (किमोलियन मिट्टी) बताया गया है; साथ ही तज़किरा में 'तीन क़ीमुलिया' को 'तिफ़्ल' और दोनों को 'तलीतली' से व्याख्यायित किया गया है। मख़ज़न में कहा गया है कि 'तीन क़ीमुलिया' को

हिन्दी में 'खारी मिट्टी' कहते हैं और बच्चे इसे लिखने वाली तख़्तियों पर अभ्यास के लिए मलते हैं (हिन्दी में इसे खड़िया मिट्टी कहते हैं और बच्चे इसे अभ्यास वाली तख़्तियों पर लगाते हैं। - त) (बाकी अगले पृष्ठ पर)।

1. फतावा क़ाज़ीख़ान, 'मा यजूज़ु बिही अल-तयम्मुम' भाग, नवल किशोर प्रेस लखनऊ, 1/29.
2. खुलासातुल फतावा, 'मा यजूज़ु बिही अल-तयम्मुम' भाग, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 1/35.
3. अल-क़ामूस अल-मुहीत, फ़स्ल अल-मीम, बाब अल-रई, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 12/40.

فتاوی رضویہ جلد سوم

(اور آگے بھی آئے گا۔ ت) (۱۳) پیلی مٹی اصل، نواز، خلاصہ، خزانہ ہندیۃ۔ (۱۴) سرخ مٹی ہی والبحر والخانیہ۔ (۱۵) گیرو ہی الالبدائع، تبیین، فتح، بحر، نہر (بدائع کے سوا یہ سبھی یعنی اصل، خلاصہ، خزانہ، ہندیہ، خانیہ، مزید برآں تبیین، فتح، بحر، نہر۔ (ت)) اقول: وہ سرخ مٹی کا غیر ہے۔

| فقد عدهما مفردين قال فی الخانية يجوز | اس لئے کہ فقہا نے گیرو اور سرخ مٹی کو الگ الگ | | التيمم بالمغرة والكحل والطين لاحمر -۱- | شمار کیا ہے۔ خانیہ میں فرمایا: گیرو، سرمہ اور | | اهـ وفي الخلاصة يجوز بالطين الاحمر | سرخ مٹی سے تیمم جائز ہے اھ اور خلاصہ میں | | والاصفر والمغرة -۲- اهـ ومثله فی غيرهما | فرمایا: سرخ مٹی، زرد مٹی اور گیرو سے تیمم | | اما قول القاموس المغرة طين احمر -۳- | جائز ہے اھ اسی کے مثل ان دونوں کے علاوہ میں | | فاقول: لم يقل الطين الاحمر وهم (۱) | بھی ہے۔ رہی قاموس کی یہ عبارت کہ "گیرو ایک | | اذا عرفوا نكروا واذا نكروا عرفوا۔ | سرخ مٹی ہے" تو میں یہ کہتا ہوں کہ اس میں یہ | | | نہیں ہے کہ گیرو، سرخ مٹی۔ اور اہل لغت کا | | | طریقہ یہ ہے کہ بیان معنی کے لئے جب وہ معرفہ | | | بولیں تو غیر معین مراد لیتے ہیں اور جب نکرہ | | | لائیں تو کسی معین چیز کو مراد لیتے ہیں۔ (ت) |

---

(۱۶) کالی مٹی (اور) (۱۷) سپید مٹی بدائع ہندیۃ۔ (۱۸) سبز مٹی نواز خلاصہ تتارخانیہ ہندیۃ۔ (۱۹) طفل مصری عہ طحطاویہ جس سے مصر میں کپڑے رنگتے ہیں تاج العروس۔

عہ: علامہ طحطاوی نے ایک مسئلہ کے ضمن میں کہ آتا ہے طفل بالفتح کو بتایا کہ جنس ارض سے ہے تذکرہ داؤد و مخزن میں طفل کو طین قیمولیا نیز تذکرہ میں طین قیمولیا کو طفل اور دونوں کو طلیطلی سے تفسیر کیا اور مخزن میں طین قیمولیا کو کہا ہندی کھری مٹی نامند واطفال بر تحتائے مشق میمالند (ہندی میں کھریا مٹی کہتے ہیں اور اسے بچے مشق کی تختیوں پر لگاتے ہیں۔ ت) (باقی اگلے صفحہ پر)

1 فتاوی قاضیخان ما یجوز بہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲۹ 2 خلاصتہ الفتاوی ما یجوز بہ التیمم مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۱/ ۳۵ 3 قاموس المحیط فصل المیم باب الرائی مطبع مصطفی البابی مصر ۱۲/ ۴۰

Fatawa Rizvia, Volume 3

(20) Dheela Asal, Nawazil, Khulasa, Khazanah Sunniyyah. (21) Gul-e-Armani, 22 Gul-e-Makhtoom, (Footnote) Aghniyah.

(Remaining footnote from the previous page) I say (Aqool): However, in the books of Dioscorides and Anwar al-Asrar, only two colors of 'Qimuliya' (Cimolian earth) are mentioned: white and violet. Ibn Hassan mentioned a black color and stated that it is of no use in medicine, as mentioned in Ibn al-Baitar. (As it is in Ibn al-Baitar. -Translator) And the color of 'Tifl' is stated as yellow in 'Taj al-Arus': "At-Tifl with fat-ha: This is the well-known yellow clay in Egypt, and clothes are dyed with it." (Tifl with fat-ha: This is the same clay well-known in Egypt, and clothes are dyed with it. -Translator) Ibn al-Baitar quoted from Ali ibn Muhammad a green color for 'Tifl': "Clay of Shiraz, its color is a saturated green, more intense than the green of Tifl." End. And Allah Almighty knows best. (Clay of Shiraz, its color is a deeper green than the green of Tifl. End. And Allah Almighty knows best. -Translator) Allama Tahtawi and the author of 'Taj al-Arus' were both Sayyids residing in Egypt near that era, so their intent would be what is in 'Sharh al-Qamus'. 12, from him, may He forgive him. (Translator)

Note: In the Western Sea (Mediterranean), there is an island called Lemnos. There is a temple there where a woman resides as its custodian. Outside the city, there is a mound whose soil is considered sacred. That woman brings its soil with great reverence, kneads it, makes tablets, and stamps them. Dioscorides and others claimed that goat's blood is mixed into it. Galen says, "I traveled two thousand miles from Antioch to this island for its investigation. In front of me, that woman took a cartload of soil from there and made tablets; there was no trace of blood. I asked the polite people and scholars who had been in the company of elders there: was blood mixed into it in some earlier times? Whoever heard this question of mine began to laugh at me." Ibn al-Baitar mentioned this. (Ibn al-Baitar mentioned it. -Translator)

I say (Aqool): *Wal-ajab (2) anna al-Antaki fi al-Tadhkira nasaba za'ma khalt al-dam ila Jalinoos wal-Tankabni fi al-Tuhfa ilaihi wa ila Daisquridus ma'a anna Jalinoos huwa al-ladhi 'ana hadha al-'ana al-shadeed hatta kashafa 'an butlanihi.* 12, from him, may He forgive him. (M)

I say (Aqool): (I say) and it is surprising that Al-Antaki in 'Al-Tadhkira' attributed the notion of mixing blood with this soil to Galen, and Al-Tankabni in 'Al-Tuhfa' attributed this notion to both Galen and Dioscorides, whereas Galen is the very person who

endured such great hardship to uncover the reality that this notion is baseless. 12, from him, may He forgive him. (Translator)

फ़तावा रज़विया, खंड 3

(20) ढीला असल, नवाज़िल, खुलासा, खज़ाना सुन्निया। (21) गुल-ए-अर्मनी, 22 गुल-ए-मख़्तूम, (पाद-टिप्पणी) अग़्निया।

(पिछले पृष्ठ से शेष पाद-टिप्पणी) मैं कहता हूँ (अक़ूल): लेकिन डिस्कोरिएड्स और अनवार अल-असरार की किताबों में 'क़िमुलीया' (सिमोलियन अर्थ) के केवल दो रंग सफेद और बैंगनी लिखे गए हैं, और इब्न हसन ने एक काला रंग लिखा और कहा कि वह इलाज में किसी काम नहीं आता, जैसा कि इब्न अल-बैतार में है। (जैसा कि इब्न अल-बैतार में है। -तर्जुमा) और 'ताजुल अरूस' में 'तिफ़्ल' का रंग पीला बताया गया है: "अत-तिफ़्ल फ़त-हा के साथ: यह मिस्र में प्रसिद्ध पीली मिट्टी है जिससे कपड़े रंगे जाते हैं।" (तिफ़्ल फ़त-हा के साथ: यही मिट्टी जो मिस्र में प्रसिद्ध है और इससे कपड़े रंगे जाते हैं। -तर्जुमा) इब्न अल-बैतार ने अली इब्न मुहम्मद से तिफ़्ल का हरा रंग उद्धृत किया कि "शिराज़ की मिट्टी का रंग तिफ़्ल के हरे रंग से अधिक गहरा हरा होता है।" इति। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (शिराज़ की मिट्टी, इसका रंग तिफ़्ल की हरियाली से अधिक गहरा हरा होता है। इति। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। -तर्जुमा) अल्लामा तहतावी और 'ताजुल अरूस' के लेखक दोनों उस काल के समीप मिस्र में रहने वाले सैय्यद थे, इसलिए उनका आशय वही होगा जो 'शर्ह अल-क़ामूस' में है। 12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (तर्जुमा)

नोट: पश्चिमी सागर (भूमध्य सागर) में लेमनोस नामक एक द्वीप है। वहाँ एक मंदिर है जिसकी परिचारिका एक महिला है। शहर के बाहर एक टीला है जिसकी मिट्टी पवित्र मानी जाती है। वह महिला बड़े सम्मान के साथ उसकी मिट्टी लाती है, उसे गूँधती है, टिकियाँ बनाती है और उन पर मुहर लगाती है। डिस्कोरिएड्स और अन्य लोगों ने दावा किया कि इसमें बकरी का खून मिलाया जाता है। गैलेन कहता है, "मैं इसकी जाँच के लिए अंतियोक से दो हज़ार मील की यात्रा करके उस द्वीप पर पहुँचा। मेरे सामने उस महिला ने वहाँ से एक गाड़ी मिट्टी ली और टिकियाँ बनाईं; खून का कोई नामोनिशान नहीं था। मैंने वहाँ के सभ्य लोगों और विद्वानों से पूछा जो बुजुर्गों की सोहबत में रहे थे: क्या पहले किसी ज़माने में इसमें खून मिलाया जाता था? जिसने भी मेरा यह सवाल सुना, वह मुझ पर हँसने लगा।" इब्न अल-बैतार ने इसका उल्लेख किया है। (इसे इब्न अल-बैतार ने ज़िक्र किया। -तर्जुमा)

मैं कहता हूँ (अक़ूल): वल-अजब *(2)* अन्ना अल-अंताकी फ़ी अल-तज़किरा नसबा ज़मा ख़ल्त अल-दम इला जलीनुस वल-तनकाबनी फ़ी अल-तुहफ़ा इलैही व इला दैसक़ुरिदुस मआ अन्ना जलीनुस हुवा

अल-लज़ी आना हाज़ा अल-आना अल-शदीद हत्ता कशफ़ा अन बुतलानिही। 12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

मैं कहता हूँ (अक़ूल): (मैं कहता हूँ) और आश्चर्य की बात है कि अंताकी ने 'तज़किरा' में इस मिट्टी में खून मिलाने के विचार को गैलेन से जोड़ दिया, और तनकाबनी ने 'तुहफ़ा' में इस विचार को गैलेन और डिस्कोरिएड्स दोनों से जोड़ दिया, जबकि गैलेन ही वह व्यक्ति है जिसने इतनी कड़ी मेहनत झेलकर इस विचार की वास्तविकता का खुलासा किया कि यह निराधार है। 12, उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (तर्जुमा)

(۲۰) ڈھیلا اصل نواز ل خلاصہ خزانہ سنیہ۔ (۲۱) گل ارمنی ۲۲ گل مختوم عہ اغنیہ۔

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) اقول: مگر کتاب دیسقوریدوس و انوارالاسرار میں قیمولیا کے صرف دو ۲ رنگ لکھے سفید و بنفشی، اور ابن حسان نے ایک سیاہ رنگ کی لکھی اور کہا وہ علاج میں کچھ کام نہیں آتی کما فی ابن البیطار (جیسا کہ ابن بیطار میں ہے۔ت) اور طفل کا رنگ تاج العروس میں زرد بتایا کہ الطفل بالفتح ھذا الطین الاصفر المعروف بمصر و تصبغ بہ الثیاب (طفل بالفتح : یہی مٹی جو مصر میں معروف ہے اور اس سے کپڑے رنگے جاتے ہیں۔ت) ابن بیطار نے علی بن محمد سے طفل کا سبز رنگ نقل کیا کہ طین شیراز لونہ مشبع الخضرۃ اکثر من خضرۃ الطفل اہ واللہ تعالٰی اعلم (طین شیراز، اس کا رنگ طفل کی سبزی سے زیادہ گہرا سبز ہوتا ہے اھ واللہ تعالٰی اعلم۔ت) علامہ طحطاوی و صاحب تاج العروس دونوں سادات ساکنان مصر قریب العصر ہیں تو ان کی مراد وہی ہو گی جو شرح قاموس میں ہے۔ ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

عہ: بحر مغرب میں ایک جزیرہ ملیون ہے وہاں ایک معبد ہے جس کی مجاور عورت ہوتی ہے بیرون شہر ایک ٹیلا ہے جس کی مٹی متبرک خیال کی جاتی ہے وہ عورت تعظیم کے ساتھ اس کی مٹی لاتی اور گوندھ کر ٹکیاں بنا کر ان پر مہر لگاتی ہے دیسقوریدوس وغیرہ نے زعم کیا کہ اس میں بکری کا خون ملتا ہے جالینوس کہتا ہے میں اس کی تحقیق کے لئے انطاکیہ سے دو ہزار میل سفر کر کے اس جزیرہ میں پہنچا میرے سامنے اس عورت نے وہاں سے ایک گاڑی مٹی لی اور ٹکیاں بنائیں خون کا کچھ لگاؤ نہ تھا میں نے وہاں کے مؤدب لوگوں علماء کی صحبت یافتوں سے پوچھا کیا پہلے کسی زمانے میں اس میں خون ملایا جاتا تھا؟ جس نے میرا یہ سوال سنا مجھ پر ہنسنے لگا۔ ذکرہ ابن البیطار (اسے ابن بطار نے ذکر کیا۔ت)

اقول: والعجب (۲) ان الانطاکی فی التذکرة نسب زعم خلط الدم الی جالینوس والتنکابنی فی التحفة الیه والی دیسقوریدوس مع ان جالینوس هو الذی عنی هذا العناء الشدید حتی کشف عن بطلانه ۱۲منه غفر له (م)

اقول : (میں کہتا ہوں) اور حیرت ہے کہ انطاکی نے تذکرہ میں اس مٹی سے خون ملانے کا خیال جالینوس کی طرف منسوب کیا اور تنکابنی نے تحفہ میں یہ خیال جالینوس اور دیسقوریدوس دونوں کی طرف منسوب کیا حالانکہ جالینوس ہی وہ شخص ہے جس نے اس قدر شدید مشقت جھیل کر اس خیال کے بے حقیقت ہونے کا انکشاف کیا۔ ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

Fatawa-e-Razvia (Volume 3) (23) Wall made of kneaded mud - Asl, Khulasah, Jauharah, Nawazul, Khazanah. (24) Wall made of mud clods - Muhit Khaniyah, Munyah. (25) Wall of unbaked bricks - Ghunyah. (26) Plastered with mud - Durr-e-Mukhtar. (27) Unbaked brick - Fath, Hilyah, Bahr, Shalbiya, Zahidi. (28) Mud (and) (29) Muddy water in which soil predominates and water is overwhelmed. Detail of this will come in the fourth place, if Allah Wills. (30) Burnt ashes - Mukhtarat-ul-Nawazul, Nisab-ul-Hilyah. (31) Earthen water pots (Anjuri), bowls, plates, etc., outdoor clay vessels which are not glazed - Fath, Shalbiya, Azhari, Durr-e-Mukhtar; nor of a color different from earth's nature - Khazanatul Fatawa, Hilyah, Bahr. (32) Those colored clay vessels which have the color of the earth itself, for example, ochre (geru) or Multani clay etc. [Table 1] Left (Arabic): It is permissible with vessels of clay that are not glazed, or if glazed with a pigment from the category of earth like fine clay or ochre. Right (Urdu): It is permissible to perform Tayammum with clay vessels that are not glazed. - Durr-e-Mukhtar. Or if glazed, then with something from the category of earth like fine clay or ochre. - Tahtawi. (T) (33) Cups and saucers made of green, sticky, smooth clay. [Table 2] Left (Arabic): Tayammum is permissible with Al-Ghazarah (Munyah), which is sticky, pure, green clay (Hilyah and Ghunyah from Qamus). And Al-Muzad is what is made from it like cups (Ghunyah). And in Al-Maghrib: Al-Ghazarah is a large bowl (Hilyah). Right (Urdu): Tayammum is permissible with "Ghazarah". - Munyah. Ghazarah is sticky, excellent, green clay - Hilyah and Ghunyah with reference to Qamus. It refers to the vessel made from this clay such as plates - Ghunyah. And in Maghrib it is written: Ghazarah: large bowl. - Hilyah. (T)

1. Al-Durr al-Mukhtar with al-Tahtawi, Chapter of Tayammum, Beirut edition, 1/128
2. Tahtawi 'ala al-Durr, Chapter of Tayammum, Beirut edition, 1/128
3. Munyat al-Musalli, Section on Tayammum, Maktabah Qadriyah Jamia Nizamia Razvia Lahore, p. 75
4. Ghunyat al-Mustamli, Section on Tayammum, Sohail Academy Lahore, p. 79
5. Ghunyat al-Mustamli, Section on Tayammum, Sohail Academy Lahore, p. 79
6. Hilyah Page 632 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया (खण्ड 3) (23) गूँधे हुए मिट्टी की दीवार - असल, खुलासा, जौहरा, नवाज़ुल, ख़ज़ाना। (24) मिट्टी के ढेलों की दीवार - मुहीत ख़ानिया, मुन्या। (25) कच्ची ईंट की दीवार - गुन्या। (26) मिट्टी से पुती हुई - दुर्रे मुख्तार। (27) कच्ची ईंट - फतह, हिलया, बहर, शल्बिया, ज़ाहिदी। (28) गारा (और) (29) कीचड़ जिसमें मिट्टी अधिक हो और पानी कम। इसका विवरण चौथे स्थान पर आएगा, इंशा अल्लाह। (30) जली हुई राख - मुख़्तारातुल नवाज़ुल, निसाबुल हिलया। (31) मिट्टी के अंजूरी मटके, प्याले, तश्तरियाँ आदि मिट्टी के बर्तन जिन पर रोगन (पॉलिश) न हो - फतह, शल्बिया, अज़हरी, दुर्रे मुख्तार; न ही वह पृथ्वी की प्रकृति से भिन्न रंग के हों - ख़ज़ानतुल फ़तावा, हिलया, बहर। (32) वे रंगीन मिट्टी के बर्तन जिन पर पृथ्वी की प्रकृति का ही रंग हो, जैसे गेरू या मुल्तानी मिट्टी आदि। [सारणी 1] बायां (अरबी): बिना रोगन वाले मिट्टी के बर्तनों से, या पृथ्वी की श्रेणी के रंग जैसे बारीक मिट्टी या गेरू से रंगे बर्तनों से तयम्मुम जायज़ है। दायां (उर्दू): मिट्टी के ऐसे बर्तनों से तयम्मुम जायज़ है जिन पर पॉलिश न की गई हो। - दुर्रे मुख्तार। या यदि पॉलिश हो, तो वह पृथ्वी की जाति की ही किसी चीज़ जैसे बारीक मिट्टी या गेरू के रंग से हो। - तहावी। (T) (33) हरी, चिपचिपी, चिकनी, साफ़ मिट्टी के प्याले और तश्तरियाँ। [सारणी 2] बायां (अरबी): ग़ज़ारा से तयम्मुम जायज़ है (मुन्या), जो चिपचिपी, उत्तम, हरी मिट्टी है (हिलया और गुन्या, क़ामूस के संदर्भ से)। और अल-मुज़ाद वह है जो इससे बनाया जाता है जैसे प्याले (गुन्या)। और मग़रिब में: ग़ज़ारा एक बड़ा प्याला है (हिलया)। दायां (उर्दू): "ग़ज़ारा" से तयम्मुम जायज़ है। - मुन्या। ग़ज़ारा चिपचिपी, उत्तम, हरी मिट्टी होती है - हिलया और गुन्या, क़ामूस के संदर्भ से। इससे तात्पर्य वह बर्तन है जो इस मिट्टी से बनता है जैसे तश्तरियाँ - गुन्या। और मग़रिब में लिखा है: ग़ज़ारा: बड़ा प्याला। - हिलया। (T)

1. अल-दुर्र अल-मुख्तार मा अल-तहावी, तयम्मुम का अध्याय, बेरुत संस्करण, 1/128
2. तहावी अला अल-दुर्र, तयम्मुम का अध्याय, बेरुत संस्करण, 1/128
3. मुनियत अल-मुसल्ली, तयम्मुम अनुभाग, मकतबा कादरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. 75
4. गुनियत अल-मुस्तमली, तयम्मुम अनुभाग, सोहेल अकादमी लाहौर, पृ. 79
5. गुनियत अल-मुस्तमली, तयम्मुम अनुभाग, सोहेल अकादमी लाहौर, पृ. 79
6. हिलया पृष्ठ 632 / 756

فتاوٰی رضویہ (جلد سوم) (۲۳) گوندے کی دیوار اصل خلاصۃ جوہرۃ نوازل خزانہ۔ (۲۴) ڈھیلوں کی دیوار محیط خانیۃ منیۃ۔ (۲۵) کچی اینٹ کی دیوار غنیۃ۔ (۲۶) مٹی سے لسی ہوئی درمختار۔ (۲۷) کچی اینٹ فتح حلیہ بحر شلبیہ زاہدی۔ (۲۸) گارا (اور) (۲۹) کیچڑ جس میں مٹی غالب ہو اور پانی مغلوب۔ اس کی تفصیل مقام چہارم میں آئے گی ان شاء اللہ تعالٰی (۳۰) جلی ہوئی خاک مختارات النوازل نصاب حلیہ۔ (۳۱) مٹی کے آنجوری مٹکے محیط خانیۃ منیۃ خزانہ کونڈے رکابیاں وغیر باہر ظرف گلی جس پر روغن نہ ہو فتح شلبیہ ازھری در مختار نہ غیر جنس کی رنگت خزانہ الفتاوی حلیہ بحرط (۳۲) وہ ظروف گلی رنگین جن پر جنس ارض ہی مثلاً گیرو یا ملتانی وغیرہ کی رنگت ہو) | یجوز بأوان من طین غیر مدھونۃ ۱ دراو مدھونۃ | مٹی کے ایسے برتنوں سے تیمم جائز ہے جن پر پالش نہ کی گئی | | بصبغ من جنس الارض کالطفل والمغرۃ ط ۲۔ | ہو۔ در مختار۔ یا پالش ہو تو جنس ارض ہی کی کسی چیز جیسے طفل اور گیرو کے رنگ سے ہو ۔ طحاوی ۔ (ت) | (۳۳) سبز چپکتی چکنی صاف مٹی کے پیالے ، تشتریاں ، | یجوز بالغضارۃ منیۃ ۳ وھو الطین اللازب الحر الاخضر ۴ حلیہ | "غضارہ" سے تیمم جائز ہے ، منیہ، غضارہ چپکتی ، عمدہ ، سبز مٹی | | وغنیۃ عن القاموس والمزاد ما یعمل منہ کالسکار ج ۵ غنیۃ و | ہوتی ہے ، حلیہ وغنیہ بحوالہ قاموس۔ اس سے مراد وہ برتن ہے جو | | في المغرب الغضارۃ القصۃ الکبیرۃ ۶ حلیہ۔ | اس مٹی سے بنتا ہے جیسے رکابیاں ، غنیہ۔ اور مغرب میں لکھا ہے | | | :غضارہ : بڑا پیالہ۔ حلیہ (ت) |

1 الدر المختار مع الطحطاوی باب التیمم مطبوعہ بیروت ۱/۱۲۸ 2 طحطاوی علی الدر باب التیمم مطبوعہ بیروت ۱/۱۲۸ 3 منیۃ المصلی، فصل فی التیمم، مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور

ص ۷۵ 4 غنیۃ المستملی فصل فی التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۹ 5 غنیۃ المستملی فصل فی التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۹ 6 حلیہ Page 632 of 756

Fatawa-e-Razvia Volume 3

Provided there is no coating of paint or any other non-earthly substance on them (Ghunyah), nor any coating or color from a different species of earth (Hilyah). *And he mentioned this before as an outward appearance (he mentioned it calling it "apparent").* **I say: This is the place for certainty (1).** (I say, although this is a point for certainty. - T)

(34) The side of a tinned clay vessel that is not tinned (Khaniyah, Khulasah, Ghunyah).

I say: And the statement of Al-Munyah was, "It is not permissible with a green clay pot tinned with lead, whether the inside of the pot or the outside is the same," end. This gave the impression of a general prohibition if its face was tinned, so Al-Ghunyah interpreted it as what is in Al-Khaniyah, meaning they are equal in prohibition if tinned and in permissibility if not. As for the statement of Al-Bazzaziyyah, "If its face is coated with dye, Tayammum is not permissible with it, and if it is not coated, it is permissible," end. So the pronoun refers to its face.

I say: The following statement from Al-Munyah: "Tayammum is not permissible with such a green clay cup that has a lead coating, the inner and outer sides of the cup are both the same," was creating a doubt that even when only the front side is tinned, there is a general prohibition. Therefore, in Al-Ghunyah, it was interpreted based on what is mentioned in Al-Khaniyah, i.e., both sides are equal in the prohibition of using a tinned one and in the permissibility of using a non-tinned one. However, this statement of Al-Bazzaziyyah: "When the front side is polished with color, Tayammum is not permissible with it, and if it is not polished, it is permissible" (End). So, in this, the reference "on it" relates to the front side. (T)

(35) It be a shard [of pottery] - Al-Sahih (this is correct - T) - Mukhtarat al-Nawazil, Hilyah. I say, whether it is intact or (36) crushed, and it was restricted in Al-Khazanah from Al-Nawazil and in Al-Jawharah from Al-Khujandi as "crushed" (In Al-Khazanah with reference to Al-Nawazil and in Al-Jawharah with reference to Al-Khujandi, the condition of being "crushed" was added. - T).

I say: And its example is like what passed regarding crushed stone. And the words of Al-Nawazil then Al-Khazanah are: "Tayammum is permissible with crushed brick, crushed shard, saline soil, and stone."

I say: And its example is that of crushed stone, which was mentioned earlier. And the words of Al-Nawazil and then Al-Khazanah are: "Tayammum is permissible with crushed brick, crushed shard, saline soil, and such a stone that has dust on it or such a stone..."

---

1. Munyat al-Musalli, Chapter on Tayammum, Maktaba Qadriyah Jamia Nizamia Razvia Lahore, p. 75.
2. Fatawa Bazzaziyyah with al-Hindiyyah, Book 5 on Tayammum, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/17.

फतावा-ए-रज़विया, जिल्द 3

बशर्ते कि उन पर रंग की कलई न हो (ग़ुनिया) और न ही किसी अन्य गैर-मिट्टी पदार्थ की कलई या रंग (हिल्या)। और उन्होंने इसे पहले स्पष्टता के तौर पर उल्लेख किया है (उन्होंने इसे "ज़ाहिर" कहते हुए उल्लेख किया है)। **मैं कहता हूँ: यह निश्चितता का स्थान है (1)।** (मैं कहता हूँ हालाँकि यह निश्चितता का अवसर है। - त)

(34) कलईदार मिट्टी के बर्तन का वह भाग जिस तरफ कलई नहीं है (खानिया, खुलासा, ग़ुनिया)।

मैं कहता हूँ: अल-मुनिया का कथन था, "सीसे से रंगे हरे मिट्टी के प्याले से तयम्मुम जायज़ नहीं है, प्याले का भीतरी और बाहरी हिस्सा बराबर है," समाप्त। इसने यह भ्रम पैदा किया कि यदि केवल उसका अग्र भाग रंगा हुआ हो तो भी सामान्य प्रतिबंध है, इसलिए अल-ग़ुनिया ने इसकी व्याख्या वह की जो अल-खानिया में वर्णित है, यानी रंगे हुए में प्रतिबंध और बिना रंगे हुए में अनुमति दोनों पक्षों के लिए बराबर हैं। जहाँ तक अल-बज़्ज़ाज़िया के कथन का प्रश्न है, "यदि उसका चेहरा रंग से पुता हुआ हो तो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं है, और यदि वह पुता हुआ न हो तो जायज़ है," समाप्त। तो सर्वनाम उसके चेहरे की ओर संकेत करता है।

मैं कहता हूँ: मुनिया का निम्नलिखित कथन "हरे मिट्टी के ऐसे प्याले से तयम्मुम जायज़ नहीं जिस पर रॉंग की कलई हो, प्याले का अंदरूनी और बाहरी रुख दोनों बराबर हैं" यह वहम पैदा कर रहा था कि जब सिर्फ सामने का रुख कलई किया हुआ हो तो भी मुतलकन (सामान्यतः) मनाही है, इसलिए ग़ुनिया में इसकी तावील (व्याख्या) उससे की जो खानिया में मज़कूर (वर्णित) है यानी कलई शुदा से मनाही में और गैर-कलई शुदा से जवाज़ (अनुमति) में दोनों रुख बराबर हैं। लेकिन बज़्ज़ाज़िया की यह इबारत: "जब सामने के रुख पर रंग से पॉलिश कर दी गई हो तो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं और अगर उस पर पॉलिश न की गई हो तो जायज़ है" (अह - समाप्त)। तो इसमें "उस पर" का इशारा सामने के रुख से मुताल्लिक़ (संबंधित) है। (त)

(35) ठीकरी हो - अस-सहीह (यही सही है - त) - मुख्तारत अल-नवाज़िल, हिल्या। मैं कहता हूँ चाहे वह साबत हो या (36) पिसी हुई, और इसे अल-ख़ज़ाना में अल-नवाज़िल से और अल-जौहरा में अल-ख़ुजन्दी से "पिसी हुई" के रूप में प्रतिबंधित किया गया है (ख़ज़ाना में नवाज़िल के हवाले से और जौहरा में ख़ुजन्दी के हवाले से इसके साथ "पिसी हुई" होने की क़ैद लगाई गई। - त)।

मैं कहता हूँ: और इसका उदाहरण पिसे हुए पत्थर के समान है जैसा कि गुज़र चुका है। और अल-नवाज़िल फिर अल-ख़ज़ाना के शब्द ये हैं: "पिसी हुई ईंट, पिसी हुई ठीकरी, शोरे वाली ज़मीन और पत्थर से तयम्मुम जायज़ है।"

मैं कहता हूँ: और इसकी मिसाल पिसे हुए पत्थर की है जिसका बयान गुज़रा। और नवाज़िल फिर ख़ज़ाना के अल्फ़ाज़ ये हैं: "तयम्मुम जायज़ है पिसी हुई ईंट, पिसी हुई ठीकरी, ज़मीन शोर और ऐसे पत्थर से जिस पर गुबार हो या ऐसे पत्थर से..."

---

1. मुन्यात अल-मुसल्ली, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा कादरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. 75।
2. फतावा बज़्ज़ाज़िया अल-हिंदिया के साथ, तयम्मुम पर पांचवां खंड, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/17।

فتاوی رضویہ جلد سوم

جبکہ ان پر رنگ کی قلعی نہ ہو غنیہ نہ کسی اور غیر جنس ارض کی قلعی یا رنگ حلیہ ۔ وقد ذکرہ قبل ھذا استظھارا (اس سے پہلے اسے "ظاہر" کہتے ہوئے ذکر کیا ہے۔ت) **اقول: وھو محل (۱) الجزم** (میں کہتا ہوں حالانکہ یہ جزم کا موقع ہے۔ت)

(۳۴) قلعی دار ظرف گلی کا وہ رخ جس طرف قلعی نہیں خانیہ خلاصہ غنیہ۔

اقول: وکانت عبارۃ المنیۃ لایجوز بغضارۃ مطلی بالأناك بطن الغضارۃ وظھرھا سواء ۱۱ھ قد توھم المنع مطلقا اذا طلی بہ وجھھا فاولھا فی الغنیۃ بما فی الخانیۃ ای سواء فی المنع بالمطلی والجواز بغیرہ اما عبارۃ البزازیۃ اذا طلی وجھھا بالصیغ لایجوز بہ التیمم وان لم یطل جاز ۱۲ھ فالکنایۃ لوجھھا۔

اقول: منیہ کی درج ذیل عبارت "سبز مٹی کے ایسے پیالے سے تیمم جائز نہیں جس پر رانگ کی قلعی ہو، پیالے کا اندرونی اور بیرونی رخ دونوں برابر ہیں" یہ وہم پیدا کر رہی تھی کہ جب صرف سامنے کا رخ قلعی کیا ہوا ہو تو بھی مطلقاً ممانعت ہے اس لئے غنیہ میں اس کی تاویل اس سے کی جو خانیہ میں مذکور ہے یعنی قلعی شدہ سے ممانعت میں اور غیر قلعی شدہ سے جواز میں دونوں رُخ برابر ہیں۔ لیکن بزازیہ کی یہ عبارت: "جب سامنے کے رُخ پر رنگ سے پالش کر دی گئی ہو تو اس سے تیمم جائز نہیں اور اگر اس پر پالش نہ کی گئی ہو تو جائز ہے" اھ تو اس میں "اس پر" کا اشارہ سامنے کے رُخ سے متعلق ہے۔(ت)

(۳۵) ٹھیکری ہو الصحیح (یہی صحیح ہے۔ت) مختارات النوازل حلیہ اقول سالم ہو یا (۳۶) پسی ہوئی وقیدہ فی الخزانۃ عن النوازل وفي الجوھرۃ عن الخجندی بالمدقوق (خزانہ میں بحوالہ نوازل اور جوہرہ میں بحوالہ خجندی اس کے ساتھ "پسی ہوئی" ہونے کی قید لگائی۔ت)

اقول: ومثلہ مثل مأمر من الحجر المدقوق ولفظ النوازل ثم الخزانۃ یجوز بالأجر المدقوق والخزف المدقوق والسبخۃ والحجر

اقول: اور اس کی مثال پسے ہوئے پتھر کی ہے جس کا بیان گزرا۔ اور نواز ل پھر خزانہ کے الفاظ یہ ہیں: "تیمم جائز ہے پسی ہوئی اینٹ، پسی ہوئی ٹھیکری، زمین شور اور ایسے پتھر سے جس پر غبار ہو یا ایسے پتھر سے

---

1 منیۃ المصلی فصل التیمم مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۷۵ 2 فتاوی بزازیہ مع الہندیۃ الخامس فی التیمم نورانی کتب خانہ پشاور - ۴ / ۱۷

[Arabic Text]: One which has dust on it or does not, such as it was washed, or it is smooth, crushed or not crushed etc. [Urdu Explanation]: On which there is no dust in such a way that it has been washed, or it is clear and smooth, whether it is crushed or not crushed. (T)

[Arabic Text]: I say: (1) This is a movement in a single line based on two different opinions. And what (2) difference is there between pottery and brick, such that the permissibility is restricted to them being crushed, and stone, for it is not so? If you say: Rather, the meaning is "even if it is crushed," I say: It only ascends to what contains obscurity or disagreement. For (3) the right of the 'wasliyah' (conjunctive 'law' meaning 'even if') is that the ruling in what precedes it is clearer than in what follows it. And I do (4) not say: That what precedes it is more worthy of the ruling than what follows it, as they have said, for it is not consistent. So if this saying was intended: "even if not crushed," because Muhammad's disagreement is regarding it.

[Urdu Explanation]: I say: This is moving on two different opinions in a single line. A condition of being crushed has been placed for the permissibility of Tayammum with bricks and potsherds, but this condition is not there for the permissibility with stone; so what, after all, is the reason for this difference? If you say the meaning is "even if it is crushed," then (I say) I will say that progression is made towards that meaning in which there is some obscurity or some disagreement. This is because the rule for a conjunctive word ('law' - even if) is that the ruling of what precedes it should be clearer than the ruling of what follows it. And I do not say that its 'preceding part' is more deserving of the ruling than its 'following part', as some gentlemen have said. This is because this rule cannot be applied everywhere. In short, if progression is intended, then it should be said "even if it is not crushed," because Imam Muhammad's disagreement is about that. (T)

(37) Raw brick and similar things (its mention will come further as well. T)

[Arabic Text]: I say: And its restriction to being crushed as has passed from 'al-Khizana' from 'al-Nawazil', and its like in 'al-Jawhara' from 'al-Khujandi', concerning what is in it. And it is said in 'al-Kafi': even if not crushed (2).

[Urdu Explanation]: I say: Restricting it to being crushed is as it is in 'Khizana' with reference to 'Nawazil', and similarly in 'Jawhara' with reference to 'Khujandi'. The

explanation of its defect has already passed, and the words of 'Kafi' are: "even if it is not crushed". (T)

(38) Rubble/Stone-fragment (39) Lump of dried mud (40) Concrete

1. Khizanat al-Muftin, Chapter on Tayammum, Manuscript 1/12
2. Al-Kafi

जिल्द सोम | फ़तावा रज़विया

[अरबी]: जिस पर धूल हो या न हो, जैसे कि वह धुला हुआ हो, या चिकना हो, पिसा हुआ हो या न पिसा हुआ हो। उर्दू: जिस पर धूल न हो इस तरह कि धुला हुआ हो, या साफ़ चिकना हो, पिसा हुआ हो या पिसा हुआ न हो। (त)

[अरबी]: मैं कहता हूँ: (१) यह एक ही पंक्ति में दो अलग-अलग मतों पर चलना है। और मिट्टी के बर्तन और ईंट के बीच क्या (२) अंतर है कि उनके साथ (तयम्मुम की) अनुमति को पीसने के साथ सीमित किया जाए और पत्थर के साथ ऐसा नहीं? यदि आप कहें: बल्कि अर्थ है "भले ही पिसा हुआ हो", तो मैं कहता हूँ: उन्नति उसी अर्थ की ओर होती है जिसमें कोई अस्पष्टता या मतभेद हो। क्योंकि (३) 'वस्लिया' (भले ही) का नियम यह है कि इससे पहले का हुक्म (आदेश) इसके बाद के हुक्म से अधिक स्पष्ट हो। और मैं (४) यह नहीं कहता: कि इससे पहले वाला हुक्म बाद वाले से अधिक योग्य हो, जैसा कि उन्होंने कहा है, क्योंकि यह निरंतर नहीं है। यदि यह कहा जाना अभीष्ट होता "भले ही पिसा हुआ न हो", क्योंकि इमाम मुहम्मद का मतभेद इसी में है।

(३७) कच्ची ईंट वयाती (आगे भी इसका ज़िक्र आएगा। त)

[अरबी]: मैं कहता हूँ: और इसका पिसा हुआ होने के साथ प्रतिबंधित होना जैसा कि 'ख़िज़ाना' में 'नवाज़िल' के हवाले से आया है, और इसी तरह 'जौहरा' में 'खुजंदी' के हवाले से है, जिसमें जो है सो है। और 'काफ़ी' में कहा गया है कि "भले ही पिसा हुआ न हो" (२)।

उर्दू: अक़ूल: पिसा हुआ होने पर इसे प्रतिबंधित करना जैसा कि 'ख़िज़ाना' में 'नवाज़िल' के हवाले से है और इसी के समान 'जौहरा' में 'खुजंदी' के हवाले से है। इसकी ख़ामी का बयान गुज़र चुका और 'काफ़ी' के शब्द ये हैं: "अगरचे पिसा हुआ न हो"। (त)

(३८) रोड़ा (३९) कतल (मिट्टी का ढेला) (४०) कंक्रीट

1. ख़िज़ानतुल मुफ़्तीन, फ़स्ल फ़ीत तयम्मुम, क़लमी नुस्ख़ा १/१२
2. काफ़ी

الذی علیہ غبار اولم یکن بأن کان مغسولا اوا ملس مدقوقاً اوغیر مدقوق اھ | جس پر غبار نہ ہو اس طرح کہ دھلا ہوا ہو، یا صاف چکنا ہو، پسا ہوا ہو یا پسا ہوا نہ ہو۔ (ت)

اقول: ھذا (۱) مشی في سطر واحد علی قولین مختلفین وای (۲) فرق بین الخزف والآجر فیقید الجواز بھما بالدق و بین الحجر فلافان قلت بل المعنی ولو مدقوقاً اقول انما یترقی الی مافیہ خفاء او خلف فان (۳) حق الوصلیۃ ان یکون الحکم فیما قبلھا اظھر منہ فیما بعدھا ولا (۴) اقول: ان یکون ماقبلھا احق بالحکم مما بعدھا کما قالوا فانہ غیر مطرد فلو ارید ھذا القیل ولو غیر مدقوق لان خلاف محمد فیہ۔ | اقول: یہ ایک ہی سطر میں دو مختلف قولوں پر چلنا ہے۔ اینٹ اور ٹھیکری سے جوازِ تیمم کے لئے پسی ہوئی ہونے کی قید لگائی ہے اور پتھر سے جواز کے لئے یہ قید نہیں تو آخر وجہ فرق کیا ہے؟ اگر کہئے کہ معنی یہ ہے کہ اگرچہ پسی ہوئی ہو تو (اقول) میں یہ کہوں گا کہ ترقی اس معنی کی جانب کی جاتی ہے جس میں کوئی پوشیدگی یا کوئی اختلاف ہو۔ اس لئے کہ کلمہ وصلیہ کا حکم یہ ہے کہ اس کے ماقبل کا حکم، مابعد کے حکم سے زیادہ ظاہر ہو اور میں یہ نہیں کہتا کہ اس کا ما قبل مابعد سے زیادہ مستحق حکم ہو۔ جیسا کہ بعض حضرات نے کہا۔ اس لئے کہ یہ قاعدہ ہر جگہ جاری نہیں ہو پاتا| الغرض اگر ترقی مقصود ہو تو کہا جاتا ہے کہ اگرچہ پسی ہوئی نہ ہو اس لئے کہ امام محمد کا اختلاف اسی میں ہے۔ (ت)

(۳۷) کچی اینٹ و یاتی (آگے بھی اس کا ذکر آئے گا۔ت)

اقول: وتقییدہ بالمدقوق کما مر عن الخزانۃ عن النوازل ومثلہ فی الجوھرۃ عن الخجندی مرما فیہ وقد قال فی الکافی ولو غیر مدقوق ۲۔ | اقول: پسی ہوئی ہونے اس کو مقید کرنا جیسا کہ خزانہ میں

بحوالہ نوازل اور اسی کے مثل جوہرہ میں بحوالہ خجندی ہے۔ اس کی خامی کا بیان گزر چکا اور کافی کے الفاظ یہ ہیں: ”اگرچہ پسی ہوئی نہ ہو“۔ (ت)

(۳۸) روڑا (۳۹) کتل (۴۰) کنکریٹ

۱ خزانۃ المفتین فصل فی التیمم قلمی نسخہ ۱ / ۱۲ ۲ کافی

Fatawa Razawiyya - Volume Three

(41) Bahri: It is permissible with fine pieces of baked brick. Mukhtarat al-Nawazil, Hilyah. (Dry ablution (Tayammum) is permissible with small pieces of baked brick. Mukhtarat al-Nawazil, Hilyah, etc. - T)

(42) Surkhi: Finely crushed baked brick. 'And it is what has just been passed from an-Nawazil and others' (This is the same whose description has just passed with reference to Nawazil etc. - T)

(43) Kankari (Pebbles): Stone fragments found on the ground, in Arabic 'Hasat'. Nawazil, Muhit, Khaniyah, Khazanah, Khujandi, Jawharah. Even if fine fragments are mixed in sand, 'it does not go out (of the category of earth surface), i.e., what rises on its surface from fine pebbles.' Hilyah. (Small pebbles found on top of the ground are not excluded from 'Sa'id' (the earth's surface). Hilyah - T)

(44) The tailor's stone (Batya) with which he beats the cloth to press the stitching. 'If Tayammum is performed with the tailor's stone, it is permissible according to both [Imams Abu Hanifah and Muhammad]. From Abu Yusuf, there are two narrations.' Khulasah. (If Tayammum is done with a tailor's stone, it is permissible according to Imam-e-Azam and Imam Muhammad, and there are two narrations from Imam Abu Yusuf. Khulasah - T)

I say (Aqool): This wording might give the impression that there is no difference of opinion from Imam Muhammad. However, the ruling of permissibility is a rare (Nadir) narration from him. The famous (Mashhur) narration, as mentioned in Hilyah and others, is that the adhesion of some part of it to the hand is a condition. In Wajiz al-Kardari, it is said that the tailor's stone is a stone.	**I say: From this text, the impression arises that there is no differing narration from Imam Muhammad in this matter, whereas the ruling of permissibility is a rare narration from Imam Muhammad. The famous narration, as in Hilyah etc., is that sticking of some of its parts to the hand is a condition. And it is stated in Wajiz al-Kardari.**
Note (Ayn-ha): That is because the restriction to it is due to following Imam Muhammad's view that it is necessary for something to stick to the hand, and this can only occur with what has been made like	That is because its restriction is due to following the statement of Imam Muhammad that it is necessary for something to stick to the hand, and this will only be possible in that which has

I say (Aqool): This wording might give the impression that there is no difference of opinion from Imam Muhammad. However, the ruling of permissibility is a rare (Nadir) narration from him. The famous (Mashhur) narration, as mentioned in Hilyah and others, is that the adhesion of some part of it to the hand is a condition. In Wajiz al-Kardari, it is said that the tailor's stone is a stone.

flour. 12 [From him], may Allah forgive him. (M)

I say: From this text, the impression arises that there is no differing narration from Imam Muhammad in this matter, whereas the ruling of permissibility is a rare narration from Imam Muhammad. The famous narration, as in Hilyah etc., is that sticking of some of its parts to the hand is a condition. And it is stated in Wajiz al-Kardari.

been ground like flour. 12 [From him], may Allah forgive him. (T)

1. Mukhtarat al-Nawazil
2. Hilyah
3. Khulasat al-Fatawa, Chapter on what is permissible for Tayammum, printed at Naval Kishore, Lucknow, 1/36.

फ़तावा रज़विया - भाग तीन

(41) बहरी: पकी हुई ईंट के महीन टुकड़ों के साथ जायज़ है। मुख़्तारातुल नवाज़िल, हिलिया। (पकी हुई ईंट के छोटे-छोटे टुकड़ों से तयम्मुम जायज़ है। मुख़्तारातुल नवाज़िल, हिलिया आदि - त)

(42) सुर्खी: बारीक पिसी हुई पकी ईंट। 'और यह वही है जिसका अभी नवाज़िल और अन्य के हवाले से ज़िक्र किया गया।' (यह वही है जिसका वर्णन अभी नवाज़िल आदि के संदर्भ में गुज़रा है। - त)

(43) कंकरी: पत्थर के टुकड़े जो ज़मीन पर होते हैं, अरबी में 'हसात'। नवाज़िल, मुहीत, खानिया, ख़ज़ाना, खुजंदी, जौहरा। भले ही महीन कण रेत में मिले हों, 'वह ज़मीन की सतह से बाहर नहीं निकलता, यानी वह जो बारीक कंकड़ियों के रूप में उसकी सतह पर आता है।' हिलिया। (ज़मीन के ऊपर जो छोटी-छोटी कंकड़ियाँ होती हैं, वे 'सईद' (ज़मीन की सतह) से बाहर नहीं हैं। हिलिया - त)

(44) दर्जी की बटिया जिससे वह कपड़ों को कूटकर सिलाई दबाता है। 'अगर दर्जी के पत्थर (सिंघ-ए-ख़य्यात) से तयम्मुम किया जाए, तो वह दोनों (इमाम आज़म और इमाम मुहम्मद) के निकट जायज़ है, और इमाम अबू यूसुफ़ से दो रिवायतें हैं।' खुलासा। (अगर दर्जी के पत्थर से तयम्मुम किया गया, तो इमाम आज़म और इमाम मुहम्मद के नज़दीक जायज़ है और इमाम अबू यूसुफ़ से दो रिवायतें हैं। खुलासा - त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इस इबारत से यह भ्रम हो सकता है कि इमाम मुहम्मद से कोई मतभेद नहीं है, हालाँकि जायज़ होने का क़ौल उनसे एक 'नादिर' (दुर्लभ) रिवायत है। मशहूर रिवायत, जैसा कि हिलिया आदि में है, यह है कि उसके किसी हिस्से का हाथ से चिपकना शर्त है। और 'वजीज़ अल-करदरी' में कहा गया है कि दर्जी का पत्थर एक पत्थर है।

अक़ूल: इस इबारत से यह वहम पैदा होता है कि इस मसले में इमाम मुहम्मद से कोई रिवायत इख़्तिलाफ़ (मतभेद) नहीं है, हालाँकि जवाज़ (अनुमति) का क़ौल इमाम मुहम्मद से एक नादिर रिवायत है और रिवायत-ए-मशहूरा, जैसा कि हिलिया वगैरह में है, यह है कि इसके किसी हिस्से का हाथ से चिपकना शर्त है। और वजीज़ करदरी में फ़रमाया है।

ऐन-हा (नोट): वह इसलिए कि इसकी पाबंदी इमाम मुहम्मद के इस क़ौल पर चलने की वजह से है कि हाथ में कुछ चिपक जाना ज़रूरी है,

वह इसलिए कि इसकी तक़यीद (पाबंदी) इमाम मुहम्मद के क़ौल पर चलने की वजह से है कि हाथ में कुछ चिपक जाना ज़रूरी है और यह उसी में हो

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इस इबारत से यह भ्रम हो सकता है कि इमाम मुहम्मद से कोई मतभेद नहीं है, हालाँकि जायज़ होने का क़ौल उनसे एक 'नादिर' (दुर्लभ) रिवायत है। मशहूर रिवायत, जैसा कि हिलिया आदि में है, यह है कि उसके किसी हिस्से का हाथ से चिपकना शर्त है। और 'वजीज़ अल-करदरी' में कहा गया है कि दर्जी का पत्थर एक पत्थर है।

और यह केवल उसी में संभव होगा जिसे आटे की तरह बना दिया गया हो। 12 [उनकी ओर से], अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

अक़ूल: इस इबारत से यह वहम पैदा होता है कि इस मसले में इमाम मुहम्मद से कोई रिवायत इख़्तिलाफ़ (मतभेद) नहीं है, हालाँकि जवाज़ (अनुमति) का क़ौल इमाम मुहम्मद से एक नादिर रिवायत है और रिवायत-ए-मशहूरा, जैसा कि हिलिया वगैरह में है, यह है कि इसके किसी हिस्से का हाथ से चिपकना शर्त है। और वजीज़ करदरी में फ़रमाया है।

सकेगा जिसे आटे की तरह पीस दिया गया हो। 12 [उनकी ओर से], अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

1. मुख़्तारातुल नवाज़िल
2. हिलिया
3. खुलासातुल फ़तावा, उन चीज़ों का बयान जिनसे तयम्मुम जायज़ है, नवल किशोर लखनऊ द्वारा मुद्रित, 1/36।

पृष्ठ 635 / 756

فتاوٰی رضویہ (جلد سوم)

(۴۱) بحری یجوز بدقاق الاجر ۱ مختارات النوازل حلیۃ۔ (پکی اینٹ کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑوں سے تیمم جائز ہے۔ مختارات النوازل، حلیہ وغیرہ ہ۔ ت)

(۴۲) سرخی۔ باریک کٹی ہوئی پکی اینٹ۔ وھو عہ مامّر آنفا عن النوازل وغیرھا (یہ وہی ہے جس کا بیان ابھی نوازال وغیرہ کے حوالہ سے گزرا۔ت)

(۴۳) کنکری۔ پتھر کے ریزے کہ زمین پر ہوتے ہیں، عربی حصاۃ۔ نوازال محیط خانیہ خزانہ خجندی جوہرہ اگرچہ باریک ریزے ریگ میں ملے ہوئے لم یخرج ای من الصعید ما یصعد علی وجھھا من دقاق الحصی ۲ حلیہ (زمین کے اوپر جو چھوٹی چھوٹی کنکریاں ہوتی ہیں وہ صعید سے خارج نہیں۔ حلیہ۔ت)

(۴۴) درزی کی بٹیا جس سے وہ کپڑے کو کوٹ کر سلائی دباتا ہے لوتیمم بفھر الخیاط عندھما یجوز وعن ابی یوسف روایتان ۳ خلاصۃ (اگر سنگِ خیاط سے تیمم کیا تو امام اعظم و امام محمد کے نزدیک جائز ہے اور امام ابویوسف سے دو روایتیں ہیں۔ خلاصہ۔ت)

اقول: یوھم ان لاخلف عن محمد مع ان الجواز ھی الروایۃ النادرۃ عنہ و المشھورۃ کما فی الحلیۃ وغیرھا شرط التصاق جزء منہ بالید وقال فی وجیز الکردری فھر الخیاط وھو حجر

اقول: اس عبارت سے یہ وہم پیدا ہوتا ہے کہ اس مسئلہ میں امام محمد سے کوئی روایت اختلاف نہیں، حالانکہ قول جواز یہ امام محمد سے ایک نادر روایت ہے اور روایت مشہورہ جیسا کہ حلیہ وغیرہا میں ہے۔ یہ ہے کہ اس کے کسی جز کا ہاتھ سے چپکنا شرط ہے۔ اور وجیز کردری میں فرمایا ہے

عہ: وذلك لان التقييد به للمشی علی قول محمد من لزوم التصاق شیئ بالید ولایتاتی الا فیما جعل کالدقیق۔ ۱۲منہ غفرلہ (م)

وہ اس لئے کہ اس کی تقیید امام محمد کے قول پر مشی کی وجہ سے ہے کہ ہاتھ میں کچھ چپک جانا ضروری ہے اور یہ اسی میں ہو سکے گا جسے آٹے کی طرح پیس دیا گیا ہو۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 مختارات النوازل 2 حلیہ 3 خلاصۃ الفتاوی ما یجوز بہ التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/۳۶

Fatawa Razawiyya - Volume 3

[Arabic]: Used to beat clothes, if it is not dyed, it is permissible according to both of them, based on the lack of condition for adhesion. (Footnote 1) [Urdu]: That "Sang-e-Khayat is a stone used for beating clothes; if it is not dyed, Tayammum is permissible according to both [Imams Abu Hanifa and Abu Yusuf] on the basis that adhesion is not a condition." (T)

[Arabic]: I say: The pronoun in 'according to both of them' refers to the two Shaykhs (may Allah be pleased with them both), as understood from what preceded, and the mentioned reasoning testifies to it. For he followed the narration of permissibility from Abu Yusuf and attributed the famous [narration] from Muhammad to him, contrary to what is in al-Khulasa. [Urdu]: I say: The 'two' (in the pronoun of 'both of them') refers to the Shaykhayn (Imams Abu Hanifa and Abu Yusuf), may Allah be pleased with them both, as understood from what preceded. The basis mentioned also testifies to this. He followed Imam Abu Yusuf's narration of permissibility, while the famous narration of Imam Muhammad is attributed to him, contrary to what is in al-Khulasa. (T)

(45) Gach (gypsum). The limestone which is burnt to make lime, as will come in 'Asl', 'Quduri', 'Hidaya', 'Multaqa', and many others. (As will soon come. Asl Quduri, Hidaya, Multaqa, and many. - T) (46) A plastered wall, from 'Durr al-Mukhtar'. (47) Kalsan (lime), from 'Radd al-Muhtar'. It is permissible and the fatwa is upon it, according to 'Nisab' and 'Hulya'. (It is permissible and the fatwa is upon it. Nisab, Hulya. - T) I say, it means that which is made by burning gypsum stone or marble or any other stone. (48) Stone ash. I say, meaning the lime that has been mentioned. (49) Or brick slag (khangar), provided what is other than it is harder than it. (50) Or any stone that is burnt and then ground. (51) Or a soft stone that is ground and then burnt. All these cases are stone ashes, and Tayammum is permissible with all of them. This issue has already passed with reference to 'al-Hulya', 'Khizanat al-Fatawa', 'Jami' al-Rumuz', 'al-Durr', 'al-Shami', 'al-Tahtawi' on 'al-Durr', and 'Maraqi al-Falah'. (And this issue has passed with reference to Hulya, Khizanat al-Fatawa, Jami' al-Rumuz, Durr al-Mukhtar, Shami, Tahtawi on al-Durr, and Maraqi al-Falah. - T)

1. Fatawa Bazzaziya on the margin of al-Hindiyya, Volume 5, Tayammum, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 2/17. Page 636 of 756

फतावा रज़विया - जिल्द 3

[अरबी]: कपड़े कूटने के काम आता है, यदि रंगा हुआ न हो तो दोनों के अनुसार जायज़ है, इस आधार पर कि चिपकना शर्त नहीं है। (पाद-टिप्पणी 1)

[अरबी]: मैं कहता हूँ: 'दोनों के अनुसार' में सर्वनाम शेखैन (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) के लिए है, जैसा कि पहले के संदर्भ से समझा जाता है और उल्लेखित आधार इसकी पुष्टि करता है। उन्होंने इमाम अबू यूसुफ की अनुमति की रिवायत का पालन किया है और इमाम मुहम्मद की प्रसिद्ध रिवायत उनकी ओर सम्बद्ध की है, जो 'खुलासा' में दिए गए के विपरीत है। उर्दू: मैं कहता हूँ: 'दोनों' (सर्वनाम) से तात्पर्य शेखैन (इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ) रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं, जैसा कि पहले से समझ में आता है। और जो आधार बताया गया है वह भी इसका गवाह है। उन्होंने इमाम अबू यूसुफ की अनुमति की रिवायत को अपनाया है, और इमाम मुहम्मद की प्रसिद्ध रिवायत उनकी ओर सम्बद्ध की है, इसके विपरीत जो 'खुलासा' में है। (त)

(45) गच (जिप्सम)। चूने का पत्थर जिसे जलाकर चूना बनाते हैं, जैसा कि 'असल', 'कुदूरी', 'हिदाया', 'मुल्तका' और कई अन्य ग्रन्थों में आएगा। (जैसा कि शीघ्र ही आएगा। असल कुदूरी, हिदाया, मुल्तका और बहुत से। - त) (46) गच की हुई दीवार, 'दुर्रे मुख्तार' से। (47) कल्सान (चूना), 'रद्दुल मुहतार' से। यह जायज़ है और इसी पर फतवा है, 'निशाब' और 'हुल्या' के अनुसार। (जायज़ है और इसी पर फतवा है। निशाब, हुल्या। - त) मैं कहता हूँ, इसका मतलब वह है जो गच पत्थर या संगमरमर या किसी पत्थर को जलाकर बनाया गया हो। (48) पत्थर की राख। मैं कहता हूँ यानी वह चूना जिसका ज़िक्र हो चुका। (49) या खंगर (ईंट का अधजला टुकड़ा), बशर्ते कि इसके अलावा जो है वह इससे अधिक सख्त हो। (50) या कोई पत्थर जिसे जलाकर पीस लिया जाए। (51) या नरम पत्थर जिसे पीसकर जलाया जाए। ये सभी स्थितियाँ पत्थर की राख हैं और इन सभी से तयम्मुम जायज़ है। यह मसला 'हुल्या', 'ख़ज़ानतुल फतावा', 'जामिउर रूमूज़', 'अद-दुर्र', 'शामी', 'तहतावी अलद-दुर्र' और 'मराक़ुल फ़लाह' के हवाले से पहले गुज़र चुका है। (और यह मसला हुल्या, ख़ज़ानतुल फतावा, जामिउर रूमूज़, दुर्रे मुख्तार, शामी, तहतावी अलद-दुर्र और मराक़ुल फ़लाह के हवाले से गुज़र चुका है। - त)

1. फतावा बज़ाज़िया, अल-हिंदिया के हाशिये पर, पांचवां खंड, तयम्मुम, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 2/17। पृष्ठ 636 / 756

یداس بہ الثیاب ان لم یصبغ یجوز عندھما بناء علی عدم اشتراط الالتصاق 1 اھـ کہ "سنگِ خیاط یہ ایک پتھر ہوتا ہے جس سے کپڑے کو پیٹا جاتا ہے اگر رنگا ہوا نہ ہو، اس سے دونوں حضرات کے نزدیک تیمم جائز ہے اس بنیاد پر کہ چپکنا شرط نہیں اھ (ت)"

اقول: والضمیر في عندھما للشیخین رضی اللہ تعالی عنھما کما یفھم من سباقہ ویشھد لہ البناء المذکور فقد مشی علی روایۃ الجواز عن ابي یوسف ونسب المشھورۃ عن محمد الیہ خلافا لما في الخلاصۃ۔

اقول: دونوں حضرات سے مراد (عندھما کی ضمیر میں) شیخین رضی اللہ تعالی عنہما ہیں جیسا کہ ما سبق سے سمجھ میں آتا ہے اور جو بنیاد ذکر کی ہے وہ بھی اس پر شاہد ہے وہ امام ابو یوسف کی روایت جواز پر چلے ہیں اور امام محمد کی روایت مشہورہ ان کی طرف منسوب کی ہے اس کے برخلاف جو خلاصہ میں ہے۔ (ت)

(۴۵) گچ۔ چونے کا پتھر جسے پھونک کر چونا بناتے ہیں کما سیأتی اصل، قدوری، ہدایہ، ملتقی، وکثیر (جیسا کہ عنقریب آئے گا۔ اصل قدوری، ہدایہ، ملتقی اور کثیر ۔ ت) (۴۶) گچ کی ہوئی دیوار، در مختار۔ (۴۷) کلسن چونا ر دالمحتار، جاز وعلیہ الفتوی نصاب حلیہ (جائز ہے اور اسی پر فتوی ہے۔ نصاب، حلیہ۔ ت) اقول یعنی وہ کہ سنگ گچ یا سنگِ مر مر کوئی پتھر پھونک کر بنا ہو۔ (۴۸)۔ پتھر کی راکھ اقول یعنی چونا کہ گزر گیا۔ (۴۹)۔ یا کھنگر کہ اس کا غیر اس سے سخت تر ہے۔ (۵۰) یا کوئی پتھر پھونک کر پیس لیا جائے۔ (۵۱) یا نرم پتھر پیس کر پھونکا جائے، یہ سب صورتیں پتھر کی راکھ ہیں اور سب سے تیمم جائز والمسألۃ مرت عن الحلیۃ وخزانۃ الفتاوی وجامع الرموز والدر وش وط علی الدر والمراقی (اور یہ مسئلہ حلیہ، خزانہ الفتاوی، جامع الرموز، در مختار، شامی، طحطاوی علی الدر اور مراقی الفلاح کے حوالہ سے گزر چکا۔ ت)

Fatawa Razawiyya - Volume 3

(52) Nora (depilatory powder) formula: a mixture of arsenic and lime. Source: Asl, Quduri, Hidaya, Multaqa, Kafi, Tabyin, Fath, Bahr, Nahr, Miskeen, Maraqi, Nawazil, Khaniya, Khulasa, Khazana, Sirajiyya, Munya, Hindiya. "Nora is a composite paste of mixed substances used to remove hair." (Nataij, Shalbiyya - T)

Aqool (I say): It is sometimes applied to lime itself as in At-Tadhkira and others. This is better for providing a new benefit. It was mentioned from Al-Birjandi that what he understood from Zad al-Fuqaha is that Tayammum (dry ablution) with Nora is not permissible because it turns into ash. I say: It (1) is from the ash of stone because it is ash, and you have already known the answer.

Aqool (I say): Nora is sometimes also called lime itself, as mentioned in At-Tadhkira etc. And this is more appropriate so that a new benefit is obtained from this word. It has passed with reference to Al-Birjandi that he understood from Zad al-Fuqaha that Tayammum with Nora is not permissible because it becomes ash. I say this is ash of stone anyway; it is not that it becomes ash, and the answer has already been given. (T)

(53) Yakut (ruby), Zumurrud (emerald), Zabarjad (peridot), Feroza (turquoise). Source: Tabyin, Fath, Huliya, Bahr, Nahr, Hindiya, Azhari. "Some people claim that Emerald and Peridot are one." (And some people believe that Emerald and Peridot are the same thing. - T)

Aqool (I say): This is refuted (2) by their counting each separately. In At-Tadhkira, under the mention of types of Emerald, it is said: It is said that there is a type called 'Sabuni' which tends towards whiteness, and Folos says it is from Peridot. Yes, in Al-Jami it is mentioned from Aristotle.

Aqool (I say): This idea is refuted by the fact that the jurists (Fuqaha) have counted each one separately. In At-Tadhkira, in the mention of types of Emerald, it is said: It is said that one of its types is called Sabuni, which is whitish, and Folos says it's from Peridot. Yes, in Al-Jami it is mentioned with reference to Aristotle.

---

1. Shalbiyya with At-Tabyin, Chapter of Tayammum, Amiriya Press, Bulaq Egypt, 1/38.
2. Sharh an-Nuqaya by Al-Birjandi, Chapter on Tayammum, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/71.

3. Tadhkira Dawud al-Antaki, mentioned under the letter 'Zay' for Zumurrud, Mustafa al-Babi Egypt, 1/180.

फ़तावा रज़विया - भाग 3

(52) नोरा (बाल हटाने का नुस्खा): हरताल और चूने का मिश्रण। स्रोत: असल, क़ुदूरी, हिदाया, मुल्तका, काफ़ी, तबीयन, फ़तह, बहर, नहर, मिस्कीन, मराक़ी, नवाज़िल, खानिया, खुलासा, खज़ाना, सिराजिया, मुनिया, हिंदीया। "नोरा विभिन्न मिश्रणों से बना एक लेप है जिससे बाल हटाए जाते हैं।" (नताइज, शलबिया - त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): कभी-कभी इसे स्वयं चूने पर भी लागू किया जाता है जैसा कि अत-तज़किरा और अन्य में है। यह नया लाभ प्रदान करने के लिए बेहतर है। अल-बिरजंदी से उद्धृत किया गया कि उन्होंने ज़ाद अल-फ़ुक़्हा से जो समझा वह यह है कि नोरा से तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) जायज़ नहीं है क्योंकि यह राख (रमाद) बन जाता है। मैं कहता हूँ: यह (1) पत्थर की राख से ही है क्योंकि यह राख है, और आप जवाब पहले ही जान चुके हैं।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): नोरा को कभी-कभी स्वयं चूना भी कहा जाता है जैसा कि तज़किरा आदि में है। और यह अधिक उपयुक्त है ताकि इस शब्द से एक नया लाभ प्राप्त हो। और बरजंदी के हवाले से गुज़रा कि उन्होंने ज़ाद अल-फ़ुक़्हा से यह समझा कि नोरा से तयम्मुम जायज़ नहीं है क्योंकि यह राख हो जाता है। मैं कहता हूँ कि यह पत्थर की राख ही है; ऐसा नहीं है कि यह राख बन जाता है, और जवाब पहले ही दिया जा चुका है। (त)

(53) याक़ूत, ज़ुमुर्रद (पन्ना), ज़बरजद, फ़िरोज़ा। स्रोत: तबीयन, फ़तह, हलिया, बहर, नहर, हिंदीया, अज़हरी। "कुछ लोगों का मानना है कि ज़ुमुर्रद और ज़बरजद एक ही हैं।" (और कुछ लोगों का विचार यह है कि ज़ुमुर्रद और ज़बरजद एक ही चीज़ है। - त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इस विचार का खंडन (2) इस बात से होता है कि फ़ुक़्हा ने प्रत्येक को अलग-अलग गिना है। अत-तज़किरा में ज़ुमुर्रद के प्रकारों के ज़िक्र में कहा गया है: कहा जाता है कि इसका एक प्रकार 'साबूनी' कहलाता है जो सफेदी की ओर झुका होता है, और फ़ोलस का कहना है कि यह ज़बरजद से है। हाँ, अल-जामे में अरस्तू के हवाले से है।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इस विचार का खंडन इस बात से होता है कि फ़ुक़्हा ने हर एक को अलग-अलग गिना है। तज़किरा में ज़ुमुर्रद के प्रकारों के ज़िक्र में कहा गया है: कहा गया है कि इसकी एक किस्म को साबूनी कहा जाता है जो सफेदी की ओर झुका होता है, और फ़ोलस का कहना है कि यह ज़बरजद ही से है। हाँ, जामे में अरस्तू के हवाले से है।

1. शलबिया मअ अत-तबीयन, तयम्मुम का अध्याय, अमीरिय्या प्रेस, बुलाक़ मिस्र, 1/38।
2. शरह अन-नुक़ाया अल-बिरजंदी द्वारा, तयम्मुम पर अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/71।
3. तज़किरा दाऊद अल-अंताकी, अक्षर 'ज़े' ज़ुमुर्रद के तहत उल्लिखित, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 1/180।

(۵۲) نورہ بال اڑانے کا نسخہ ہڑتال چونا ملا ہوا، اصل، قدوری، ہدایہ، ملتقی، کافی، تبیین، فتح، بحر، نہر، مسکین، مراقی، نوازِل، خانیہ، خلاصہ، خزانہ، سراجیہ، منیہ، ھندیہ، ط والنورۃ طلاء مرکب من اخلاط یزال بہ الشعر (نتائج شبیہ (نورہ چند خلطوں سے ملا ہوا ہے ایک طلا ہے جس سے بال اڑایا جاتا ہے۔ نتائج، شلبیہ۔ت)

اقول: وربما تطلق علی نفس الکلس کما في التذکرۃ وغیرھا وھذا اولی الجدۃ الافادۃ ومرعن البرجندی مافھمہ عن زاد الفقھاء ان التیمم بالنورۃ لا یجوز لانہ مما یترمد اقول: ھی (۱) من رماد حجر لانھا ترمد وقد علمت الجواب۔

اقول: نورہ کبھی خود کلس کو بھی کہا جاتا ہے جیسا کہ تذکرہ وغیرہ میں ہے۔ اور یہ زیادہ مناسب ہے تا کہ اس لفظ سے ایک جدید فائدہ حاصل ہو۔ اور بر جندی کے حوالہ سے گزرا کہ انہوں نے زاد الفقہاء سے یہ سمجھا کہ نورہ سے تیمم جائز نہیں اس لئے کہ یہ رماد ہو جاتا ہے اقول یہ پتھر کے رماد کا ہوا ہی ہے ایسا نہیں کہ یہ رماد بن جاتا ہے اور جواب پہلے بتا دیا جا چکا ہے۔ (ت)

(۵۳) یا قوت زمرد زبرجد فیروزہ۔ تبیین، فتح، حلیہ، بحر، نہر، ھندیہ، ازھری، ط زعم بعض النّاس ان الزمرد والزبرجد واحد (اور بعض لوگوں کا خیال یہ ہے کہ زمرداور زبرجد ایک ہی ہے۔ت)

اقول: ویردہ (۲) عدھم کلا علی حدۃ وقد قال في التذکرۃ عند ذکر انواع الزمرد قیل ان منہ نوعا یسمی الصابونی یضرب الی البیاض وفولس یقول انہ من الزبرجد اہ نعم فی الجامع عن ارسطو

اقول: اس خیال کی تردید اس سے ہوتی ہے کہ فقہاء نے ہر ایک کو الگ الگ شمار کیا ہے۔ تذکرہ میں انواع زمرد کے ذکر میں کہا ہے: کہا گیا ہے کہ اس کی ایک نوع کو صابونی کہا جاتا ہے جو

سپیدی مائل ہوتا ہے اور فولس کا کہنا ہے کہ یہ زبرجد ہی سے ہے اھ ہاں جامع میں ارسطو کے حوالہ سے ہے

---

1 شلبیہ مع التبیین باب التیمم مطبعہ امیر یہ بولاق مصر ۳۸/۱ 2 شرح النقایہ للبر جندی فصل فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنئو ۱ / ۷۱ 3 تذکرہ داؤد انطاکی حرف الزالہ زمرد کے تحت مذکور ہے۔ مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۸۰

Fatawa Ridawiyya Volume 3

[Arabic quote]: Emerald (Al-Zumurrud) and Peridot (Al-Zabardjad) are two stones to which two names apply, and they are one in genus. End of quote. (Urdu translation): That Emerald and Peridot are two stones that have two names and both are of the same genus. End of quote. And union.

[Note]: And on this is based what is in 'At-Tadhkirah' with the wording "And from the Teacher": that it and the emerald are the same. End of quote. It was narrated from him, i.e., from Aristotle, in 'Al-Tuhfah' and 'Al-Makhzan' that "their mine is one." (Urdu translation): And on this it will be interpreted what is in the Tadhkirah in these words: And it is reported from the Teacher that this and the emerald are both equal. End of quote. And it was quoted from him in 'Tuhfah' and 'Makhzan' ---- meaning from Aristotle ---- that "the mine of both is one."

I say: This does not indicate their union (being the same), for many a thing is formed in the mine of another thing. Don't you see that they are both born in a gold mine as Aristotle said? (Urdu translation) I say: This does not indicate that Peridot and Emerald are one, because many such things are formed in the mine of another thing. Look at these two themselves, they are born in a gold mine as Aristotle said.

As for what is in 'At-Tadhkirah' that "Hermes said: there is no difference between them except that Peridot is colored (or varying in color)". End of quote. This allows for interpretation or it is a weak opinion. (Urdu translation) As for what is in the Tadhkirah that "Hermes said: there is no difference between them except that Peridot is multicolored. End of quote." So there is room for interpretation in this phrase or it is a weak saying.

Now look at the statement of 'Al-Qamus': "Emerald: Peridot is its arabized form." End of quote. On this, it is said in 'Taj al-Urus': "Al-Tifashi noted in the Book of Stones that Al-Farra' said: Peridot is an arabization of Emerald. While it is not so, rather Peridot is another type of stone." And Ibn Sa'id (Continued on the next page). (Urdu translation) Now see the wording of Qamus that "Emerald: Peridot is its arabized form. End of quote." On this it is written in Taj al-Urus: Tifashi has recorded in Kitab al-Ahjar that Farra' said: Peridot is the arabization of Emerald. Although it is not so, rather Peridot is another type of stone. And Ibn Sa'id (continued on next page).

---

1. Jami' Ibn al-Bitar
2. Tadhkirah Uli al-Albab, under 'Zabardjad', Mustafa al-Babi, Egypt, 1/175

3. Tadhkirah Uli al-Albab, under 'Zabardjad', Mustafa al-Babi, Egypt, 1/175 Page 638 of 756

फतावा रज़विया, खंड 3

[अरबी उद्धरण]: पन्ना (ज़ुमुरुद) और पेरिडॉट (ज़बर्जद) दो पत्थर हैं जिनके ये दो नाम हैं और वे अपनी प्रजाति में एक ही हैं। (उद्धरण समाप्त)। (उर्दू अनुवाद): कि पन्ना और ज़बर्जद दो पत्थर हैं जिनके दो नाम हैं और उन दोनों की प्रजाति एक ही है। (उद्धरण समाप्त) और मिलन।

[नोट]: और इसी पर वह आधारित होगा जो 'अत-तज़किराह' में इन शब्दों के साथ है: "और शिक्षक (अरस्तू) से वर्णित है": कि वह और पन्ना दोनों बराबर हैं। (उद्धरण समाप्त)। और इसे 'अत-तुहफा' और 'अल-मख़ज़न' में उनसे ---- यानी अरस्तू से ---- यह उद्धृत किया गया है कि "इन दोनों की खान एक ही है"। (उर्दू अनुवाद): और इसी पर वह व्याख्या की जाएगी जो तज़किराह के अंदर इन शब्दों में है: और शिक्षक से वर्णित है कि यह और पन्ना दोनों बराबर हैं। (उद्धरण समाप्त)। और इसे 'तुहफा' और 'मख़ज़न' में उनसे ---- यानी अरस्तू से ---- यह उद्धृत किया गया है कि "इन दोनों की खान एक ही है"।

मैं कहता हूँ: यह बात ज़बर्जद और ज़ुमुरुद दोनों के एक होने का प्रमाण नहीं है, क्योंकि बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जो किसी दूसरी चीज़ की खान में बनती हैं। क्या आप नहीं देखते कि ये दोनों सोने की खान में पैदा होते हैं जैसा कि अरस्तू ने कहा? (उर्दू अनुवाद) मैं कहता हूँ: यह बात ज़बर्जद और ज़ुमुरुद दोनों के एक होने का प्रमाण नहीं है, क्योंकि बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जो किसी दूसरी चीज़ की खान में बनती हैं। इन दोनों को ही देख लीजिए कि ये सोने की खान में पैदा होते हैं जैसा कि अरस्तू ने कहा।

रहा वह जो 'तज़किराह' में है कि "हर्मिस ने कहा: इन दोनों में इसके अलावा कोई अंतर नहीं है कि ज़बर्जद रंगीन (या रंग बदलने वाला) होता है," (उद्धरण समाप्त)। तो इस वाक्य में व्याख्या की गुंजाइश है या यह एक कमज़ोर मत है। (उर्दू अनुवाद) रहा वह जो तज़किराह में है कि "हर्मिस ने कहा: इन दोनों में इसके अलावा कोई अंतर नहीं है कि ज़बर्जद रंग-बिरंगा होता है। (उद्धरण समाप्त)" तो इस इबारत (वाक्य) में व्याख्या की गुंजाइश है या यह एक कमज़ोर मत है।

अब 'क़ामूस' की इबारत देखिए कि "ज़ुमुरुद: ज़बर्जद इसका अरबी रूप (मुअर्रब) है।" (उद्धरण समाप्त)। इस पर 'ताजुल उरूस' में लिखा है: "तीफ़ाशी ने 'किताबुल अहजार' में लिखा है कि फर्रा ने कहा: ज़बर्जद, ज़ुमुरुद का अरबीकरण है। जबकि ऐसा नहीं है बल्कि ज़बर्जद पत्थर की एक दूसरी किस्म है।" और इब्न साइद (अगले पृष्ठ पर जारी)। (उर्दू अनुवाद) अब क़ामूस की इबारत देखिए कि "ज़ुमुरुद: ज़बर्जद इसका अरबी रूप है। (उद्धरण समाप्त)" इस पर ताजुल उरूस में लिखा है:

तीफ़ाशी ने 'किताबुल अहजार' में दर्ज किया है कि फर्रा ने कहा कि ज़बर्जद, ज़ुमुरुद का अरबी रूप है। जबकि ऐसा नहीं है बल्कि ज़बर्जद पत्थर की एक दूसरी किस्म है। और इब्न साइद (बाकी अगले पृष्ठ पर)।

---

1. जामिअ इब्न अल-बैतार
2. तज़किराह उली अल-अल्बाब, ज़बर्जद के तहत, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/175
3. तज़किराह उली अल-अल्बाब, ज़बर्जद के तहत, मुस्तफा अल-बाबी, मिस्र, 1/175 पृष्ठ 638 of 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

الزمرد والزبرجد حجران يقع عليهما اسمان | کہ زمرد اور زبرجد دو پتھر ہیں جن کے دو نام ہیں اور ان وهما في الجنس واحد اه واتحاد | دونوں کی جنس ایک ہے اھ اور اتحاد

عه: وعليه يحمل ما في التذكرة بلفظ وعن المعلم | اور اسی پر وہ محمول ہوگا جو تذکرہ کے اندر ان الفاظ میں ہے: اور معلم انه والزمرد سواء اه نقله عنه ای عن ارسطو في | سے منقول ہے کہ یہ اور زمرد دونوں برابر ہیں اھ اور اسے تحفہ التحفة والمخزن ان معدنها واحد- | اور مخزن میں اس سے ---- یعنی ارسطو سے ---- یہ نقل کیا ہے اقول: ولا يدل على اتحاد هما فرب شيئ يتكون في | کہ "ان دونوں کا معدن ایک ہے"۔ معدن شيئ اخر الاترى انهما يتولدان في معدن | اقول: یہ بات زبرجد و زمرد دونوں کے ایک ہونے پر دلالت نہیں الذهب كما قال ارسطوا ما ما في التذكرة قال ہرمس | کرتی، اس لئے کہ بہت ایسی چیزیں ہیں جو کسی دوسری چیز کے لافارق بينهما الاتلون الزبرجد اه فيحتمل | معدن میں بنتی ہیں۔ ان ہی دونوں کو دیکھ لیجئے کہ یہ سونے کے التأويل او هو قيل اما قول القاموس الزمرد الزبر | معدن میں پیدا ہوتے ہیں جیسا کہ ارسطو نے کہا۔ رہا وہ جو تذکرہ جد معرب اه فقد قال في التاج قال التيفاشي في كتاب | میں ہے کہ "ہرمس نے کہا: ان دونوں میں سوا اس کے کوئی فرق الاحجار قال الفراء ان الزبرجد تعريب الزمرد | نہیں کہ زبرجد متلون ہوتا ہے اھ" تو اس عبارت میں تاویل کی ولیس كذلك بل الزبرجد نوع اخر من الحجارة | گنجائش ہے یا یہ ایک ضعیف قول ہے۔ اب قاموس کی عبارت وقال ابن ساعد | دیکھئے کہ "زمرد: زبرجد اس کا معرب ہے اھ" اس پر تاج العروس میں لکھا ہے: تیفاشی نے کتاب الاحجار میں رقم کیا ہے کہ فراء نے کہا زبرجد، زمرد کی تعریب ہے۔ حالاں کہ ایسا نہیں بلکہ زبرجد پتھر کی ایک دوسری نوع ہے۔ اور ابن ساعد (باقی بر صفحہ آئندہ)

1 جامع ابن بیطار 2 تذکرۃ اولی الالباب زبرجد کے تحت مصطفی البابی مصر 1/ 175 3 تذکرۃ اولی الالباب زبرجد کے تحت مصطفی البابی مصر 1/ 175 Page 638 of 756

Fatawa Rizvia, Volume 3

Arabic Text	Translation / Explanation
Al-Jins la yamna' ikhtilaf, la yamna' ikhtilaf al-naw' wa al-sinf ka al-la'l wa al-yaqut al-rummani wa al-neelam wa al-basraq.	Genus does not preclude variation in type or category, much like the distinction between spinel (la'l), pomegranate ruby, sapphire, and basraq. (T)

(57) Balkhash: Tayammum can be performed with Balkhash stone. This is mentioned in the eight aforementioned books. (T) I say: This word is not found in dictionaries, not even in Al-Qamus al-Muhit. It was not rectified in Taj al-Arus, nor is it mentioned in Jami' Ibn al-Baytar, Tadhkirat al-Antaki, Tuhfat al-Mu'minin, or Makhzan al-Adwiya. It is surprising that even Al-Maghrib neglected it, despite it being a dictionary of Hanafi jurisprudence, and this word exists in Hanafi jurisprudence books. Later, I found it in Taj al-Arus under the entry for 'Badakhshan', where its mine was stated to be in Badakhshan.

Arabic Text	Translation / Explanation
Idh qala fil-Mustadrak ba'da Badhish: Badakhshan wa yuqalu: Badakhsh baldah fi a'la Tukharistan wal-ammah yusammunaha Balkhshan fi jibaaliha ma'adin al-balkhash wal-lazaward wa hajar al-fateelah[1].	It says in the 'Mustadrak' section, after the word 'Badhish': Badakhshan, also called Badakhsh. It is a town in upper Tukharistan. The common folk call it Balkhshan. In its mountains, there are mines for Balkhash stones, lapis lazuli (lazaward), and asbestos (hajar al-fateelah). (T)

(Remainder of previous page's footnote) Ansari says: It is said that its mine is near the emerald (zumurrud) mine. Our Shaykh said: This is explicit evidence of their distinctness. He said: Other groups distinguished between the two, noting that emerald is greener than chrysolite (zabarjad). [End]. And Allah knows His creation best; He creates what He wills and chooses. 12 [Author], may he be forgiven. (T)

[1] Taj al-Arus, Chapter on 'Ba', Section of 'Shin', Ihya al-Turath al-Arabi, Egypt, 4 / 281.

फ़तावा रिज़विया, खंड 3

अरबी पाठ	अनुवाद / स्पष्टीकरण
अल-जिन्स ला यमना' इख्तिलाफ़, ला यमना' इख्तिलाफ़ अन-नौ' व अस-सिन्फ़ कल-लअ्ल वल-याक़ूत अर-रुमानी वल-नीलम वल-बसराक़।	वर्ग (genus) प्रकार या श्रेणी में अंतर को नहीं रोकता, जैसे लाल (la'l), अनार-सा लाल याकूत (yaqut rummani), नीलम और बसराक़। (त)

(57) बलख्श: बलख्श से तयम्मुम किया जा सकता है। उपर्युक्त आठ किताबों में इसका उल्लेख है। (त) मैं कहता हूँ: शब्दकोशों में, यहाँ तक कि 'क़ामूस मुहीत' में भी इस शब्द का पता नहीं है। न ही 'ताजुल अरूस' ने इसे सुधारा, न ही 'जामे इब्ने बैतार', 'तज़किरा अंताकी', 'तुहफ़ा' और 'मख़ज़न' में इसका उल्लेख है। आश्चर्य है कि 'अल-मग़रिब' में भी इसकी उपेक्षा की गई जबकि वह हनफ़ी फ़िक़्ह का शब्दकोश है और यह शब्द हनफ़ी फ़िक़्ह की किताबों में मौजूद है। फिर मैंने 'ताजुल अरूस' में 'बदख्शां' शब्द के अंतर्गत देखा कि इसकी खान बदख्शां में बताई गई है।

अरबी पाठ	अनुवाद / स्पष्टीकरण
इज़ क़ाला फ़िल-मुस्तदरक बअ्दा बाज़िश: बदख्शां व युक़ालु: बदख्श बलदह फ़ी अअला तुखारिस्तान वल-आम्मह युसम्मुनाहा बलख्शान फ़ी जिबालिहा मआदिन अल-बलख्श वल-लाज़वर्द व हजर अल-फ़तीला १।	'मुस्तदरक' में 'बाज़िश' शब्द के बाद लिखा है: बदख्शां, और बदख्श भी कहा जाता है। यह तुखारिस्तान के ऊपरी हिस्से में एक शहर है और आम लोग इसे बलख्शान कहते हैं। इसके पहाड़ों में बलख्श, लाजवर्द और हजर-उल-फ़तीला की खानें हैं। (त)

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष भाग) अंसारी कहते हैं: कहा गया है कि इसकी खान पन्ने (ज़ुमरुद) की खान के करीब होती है। हमारे शेख ने फ़रमाया: यह इस बारे में स्पष्ट प्रमाण (नस) है कि दोनों अलग पत्थर हैं। उन्होंने कहा: अन्य समूहों ने दोनों में यह अंतर बताया है कि ज़ुमरुद, ज़बरजद से ज़्यादा हरा होता है। समाप्त। और अल्लाह ही अपनी मखलूक को खूब जानता है, जो चाहता है पैदा करता है और चुनता है। १२ मुअल्लिफ़, उनकी मग़फ़िरत हो। (त)

१ ताजुल अरूस, फ़स्ल अल-बा, बाब अश-शीन, इहया अत-तुरास अल-अरबी, मिस्र, ४ / २८१। पेज ६३९ ऑफ ७५६

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
الجنس لا یمنع اختلاف لا یمنع اختلاف النوع والصنف کاللعل والیاقوت الرمانی والنیلم والبسراق۔	اتحاد، نوع یا صنف میں اختلاف سے مانع نہیں جیسے لعل و یاقوت رمانی اور نیلم و بسراق۔ (ت)

(۵۷) بلخش یتیمم البلخش قالہ الثمانیۃ المذکرون (بلخش سے تیمم ہو سکتا ہے۔ مذکورہ آٹھوں کتابوں میں اسے بیان کیا گیا ہے۔ ت) اقول: کتب لغت حتی کہ قاموس محیط میں اس لفظ کا پتا نہیں، نہ تاج العروس نے اس سے استدراک کیا نہ جامع ابن بیطار و تذکرہ انطاکی و تحفہ و مخزن میں اس کا ذکر عجب کہ کتاب مغرب میں بھی اس سے غفلت کی حالانکہ وہ فقہ حنفی کا لغت ہے اور یہ لفظ کتب فقہ حنفیہ میں موجود پھر میں نے تاج العروس میں زیر لفظ بدخشان دیکھا کہ اس کی کان بدخشان میں بتائی،

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
اذ قال فی المستدرك بعد باذش بدخشان ویقال بدخس بلدہ فی اعلی طخارستان والعامۃ یسمونہا بلخشان فی جبالہا معادن البلخش واللازورد وحجر الفتیلۃ ۱۔	اس میں استدراک کے تحت لفظ باذش کے بعد یہ لکھا ہے: بدخشان، اور بدخس بھی کہا جاتا ہے۔ یہ طخارستان کے بالائی حصہ میں ایک شہر ہے اور عام لوگ اسے بلخشان کہتے ہیں اس کے پہاڑوں میں بلخش، لازورد اور حجر الفتیلہ کی کانیں ہیں۔ (ت)

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) انصاری کہتے ہیں: کہا گیا کہ اس کا معدن زمرد کے معدن کے قریب ہوتا ہے۔ ہمارے شیخ نے فرمایا: یہ اس بارے میں نص ہے کہ دونوں دو پتھر ہیں۔ انہوں نے کہا: کچھ دوسرے حضرات نے دونوں میں یہ فرق بتایا ہے کہ زمرد، زبرجد سے زیادہ سبز ہوتا ہے اھ اور اللہ ہی اپنی مخلوق کو خوب جانتا ہے جو چاہتا ہے تخلیق فرماتا ہے اور اختیار کرتا ہے۔ ۱۲ منہ غفر لہ (ت) الانصاری قیل معدنه قرب معدن الزمرد قال شیخنا وھذا نص فی المغایرة قال و فرق جماعة اخرون بان الزمرد اشد خضرة من الزبرجد اھ واللہ تعالیٰ اعلم بخلقه یخلق ما یشاء ویختار ۱۲ منه غفرله (م)

1 تاج العروس فصل الباء من باب الشین احیاء التراث العربی مصر ۴ / ۲۸۱ Page 639 of 756

Fatawa Razawiyya Volume 3

It is conjectured from this that they might be referring to 'La’l' (ruby), as the association of 'La’l' with Badakhshan is well-known. However, its mention was found in 'Anwar-ul-Asrar,' where it is written:

[Arabic Boxed Text]: Al-Balkhash is a stone found in the eastern regions within gold mines. Its color is that of a red ruby, and it is more transparent than a ruby. [Urdu Boxed Text]: Balkhash is a stone found in the gold mines of the eastern regions, which has the color of a red ruby and is more transparent than a ruby. (T)

In this, the points that it is red in color and more transparent than a ruby are true for 'La’l,' but its being produced in a gold mine seems to be contrary to that. And Allah Almighty knows best.

(58) 'Aqiq (Agate): (Mentioned in) eight books except At-Tabyin; Al-Khaniyah, Al-Khulasah, Al-Khizanah, Al-Ghunyah, Maraqi al-Falah. (T) (59) Marjan (Coral): As in general books, and its mention will follow. (T) (60) Surma (Antimony): Original source from Quduri, Al-Hidayah, Al-Multaqa, and general books. I say: Using it in powdered form without necessity is prohibited if it leaves a mark on the face, because it is considered a form of 'muthlah' (mutilation), as will be mentioned concerning clay. (T) (61) Ithmid: meaning Isfahani antimony, it is both black and red; it is praised in the Hadith. (Sources:) Al-Asl, An-Nawazil, Al-Khaniyah, Al-Khulasah, Al-Khizanah. (62) Kibrit (Sulfur): Mentioned from eight books. (T) (63) Zarnikh (Arsenic/Orpiment): Already mentioned with reference to twenty-six books. (T) Yellow is very common, and also (64) Red: Hulyah, Ghunyah. (65) White: Hulyah. (66) Black: Ghunyah. (67) Murdar Sang (Litharge): Mineral; and its mention will follow. (T) (68) Tutiya (Zinc oxide/Blue vitriol): An-Nawazil, Al-Khizanah. I say: Meaning mineral stone if found, not zinc which is like gold, silver, and copper.

1. Anwar-ul-Asrar Page 640 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि वे 'लाल' (रत्न) को कहते होंगे, क्योंकि बदख़्शां के साथ 'लाल' का संबंध प्रसिद्ध है। परन्तु 'अनवारुल असरार' में इसका उल्लेख मिला, जिसमें लिखा है:

[अरबी बॉक्स]: अल-बलख़्श पूर्वी क्षेत्रों में सोने की खानों में पाया जाने वाला एक पत्थर है। इसका रंग लाल याकूत (माणिक) जैसा होता है और यह याकूत से अधिक पारदर्शी होता है। [उर्दू बॉक्स]: बलख़्श पूर्वी क्षेत्रों में सोने की खानों में एक पत्थर होता है जो लाल याकूत के रंग का होता है और याकूत से अधिक पारदर्शी होता है। (त)

इसमें इतनी बात कि यह लाल रंग का है और याकूत से अधिक पारदर्शी है, 'लाल' पर खरी उतरती है, परन्तु सोने की खान में इसका पैदा होना ज़ाहिर तौर पर इसके विरुद्ध है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

(58) अक़ीक़: तबीयिन को छोड़कर आठों पुस्तकें ख़ानिया, ख़ुलासा, ख़ज़ाना, ग़निया, मराक़ी। (त) (59) मरजान (मूंगा): जैसा कि आम किताबों में है और आगे भी इसका उल्लेख आएगा। (त) (60) सुरमा: मूल स्रोत क़ुदूरी, हिदाया, मुल्तक़ा और आम किताबें। मैं कहता हूँ: बिना ज़रूरत पिसे हुए सुरमे का उपयोग मना है यदि यह चेहरे पर दाग़ छोड़े, क्योंकि यह 'मुस्ला' (अंग-भंग) में गिना जाता है जैसा कि मिट्टी के बारे में उल्लेख आएगा। (त) (61) इस्मद: यानी इसफ़हानी सुरमा, यह काला और लाल होता है; हदीस में इसकी प्रशंसा की गई है। (स्रोत:) असल, नवाज़िल, ख़ानिया, ख़ुलासा, ख़ज़ाना। (62) किबरीत (गंधक): आठ किताबों के हवाले से इसका उल्लेख हुआ। (त) (63) ज़रनीख़ (हरताल): छब्बीस किताबों के हवाले से गुज़र चुका है। (त) पीला तो बहुत आम है, साथ ही (64) लाल: हुलिया, ग़निया। (65) सफ़ेद: हुलिया। (66) काला: ग़निया। (67) मुरदार संग (लिथार्ज): खनिज; और आगे भी इसका उल्लेख आएगा। (त) (68) तूतिया: नवाज़िल, ख़ज़ाना। मैं कहता हूँ: यानी खनिज पत्थर यदि मिले, न कि जस्त जो सोने, चांदी और तांबे की तरह होता है।

1. अनवारुल असरार पृष्ठ 640/756

فتاوی رضویہ جلد سوم

اس سے مظنون ہوتا ہے کہ لعل کو کہتے ہوں کہ نسبت بدخشان سے لعل ہی مشہور ہے مگر انوارالاسرار میں اس کا تذکرہ نظر آیا اس میں لکھا:

[عربی عبارت]: البلخش حجر بناحیۃ المشرق فی معادن الذھب لونہ لون الیاقوت الاحمر وھو اشف من الیاقوت [اردو ترجمہ]: بلخش اطرافِ مشرق میں سونے کی کانوں میں ایک پتھر ہوتا ہے جو سرخ یاقوت کے رنگ کا اور یاقوت سے زیادہ شفاف ہوتا ہے۔ (ت)

اس میں اتنی بات کہ سرخ رنگ ہے اور یاقوت سے زیادہ شفاف لعل پر صادق ہے مگر سونے کی کان میں پیدا ہونا ظاہرًا اس کے خلاف ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

(۵۸) عقیق الثمانیۃ الا التبیین خانیۃ خلاصۃ خزانۃ غنیۃ مراقی (آٹھوں کتابیں سوائے تبیین کے، خانیہ، خلاصہ، خزانہ، غنیہ، مراقی۔ ت) (۵۹) مرجان یعنی مونگا علی مافی عامۃ الکتب و یأتی (جیسا کہ عام کتب میں ہے اور آگے بھی اس کا ذکر آئے گا۔ ت) (۶۰) سُرمہ اصل قدوری ہدایۃ ملتقی والعامۃ۔ اقول : مگر پسے ہوئے سے بے ضرورت منع ہے اگر چہرے پر دھبہ دے لانہ من المثلۃ کما یأتی فی الطین (اس لئے کہ یہ مثلہ میں شمار ہے جیسا کہ مٹی کے بارے میں آرہا ہے۔ ت) (۶۱) اثمد یعنی اصفہانی سرمہ سیاہ و سرخ ہوتا ہے، حدیث میں اس کی تعریف فرمائی۔ اصل، نوازل، خانیہ، خلاصہ، خزانہ۔ (۶۲) کبریت گندھک مرّ عن ثمانیۃ کتب (آٹھ کتابوں کے حوالہ سے ذکر ہوا۔ ت) (۶۳) زرنیخ ہرتال مرّ عن ستۃ و عشرین کتابا (چھبیس کتابوں کے حوالہ سے گزر چکا ہے۔ ت) زرد تو کثیر الوجود ہے نیز (۶۴) سرخ، حلیہ، غنیہ۔ (۶۵) سپید۔ حلیہ۔ (۶۶) سیاہ۔ غنیہ۔ (۶۷) مردار سنگ معدنی و یأتی (اور آگے بھی ذکر آئے گا۔ ت) (۶۸) تُوتیا۔ نوازل، خزانہ اقول: یعنی معدنی پتھر اگر ملے نہ جست کہ سونے چاندی تانبے کی طرح

Fatawa Razawiyya Volume 3

It is one of the seven bodies (metals), as will follow (as is coming. T). Although 'Tuhfa' and 'Makhzan' have unknowingly called it mineral vitriol (Tutiya-e-Ma'dani).

Note: In 'Farhang Khatima Makhzan' it is stated: "Ru-e-Tutiya is similar to and famous as Ruh-e-Tutiya because that vitriol is unmanufactured (natural) and mineral." | "Ru-e-Tutiya is called 'Jast' (zinc) and is famous by the name 'Ruh-e-Tutiya'. This is because it is unmanufactured and mineral vitriol. (T)"

In 'Tuhfa' there is this much more: "Contrary to all other types of vitriol which are not grown in mines." | "(Contrary to all other types of vitriol which are not the product of mines. (T)"

I say: This is not correct; rather, 'Sifr' (brass/bronze), which is a type of copper, is called 'Ru' in Persian. It is in 'Tuhfa': "Ru is the Persian name for 'Taliqoon'." (Ru is the Persian name for 'Taliqoon'. (T)) In the same it is stated: "Taliqoon in Persian is called 'Mis-e-Rast' and in Arabic 'Sifr'." | "Taliqoon is called 'Mis-e-Rast' in Persian and 'Sifr' in Arabic. (T)"

To distinguish it, 'Jast' (zinc) is called 'Ru-e-Tutiya' because manufactured vitriol is also made from zinc and 'Raang' (tin). It is in 'Makhzan': "Similarly, it has been heard that they make 'Ru-e-Tutiya' from 'Qala'i' (tin) and 'Shubba' (brass)." | "Similarly, it has been mentioned that it is also made from tin and brass, i.e., Ru-e-Tutiya. (T)"

In the same it is stated: "Shubba in Persian is Ru-e-Tutiya and in Hindi 'Jast'." | "Shubba is 'Ru-e-Tutiya' in Persian and 'Jast' in Hindi. (T)"

Zinc is an abundant thing, while mineral vitriol is non-existent or extremely rare. In 'Jami' Ibn Baitar' it is written: "Often, vitriol is needed but is not found." | "Many times vitriol is needed and it is not found. (T)"

Then how can it be mineral vitriol? (B) Then how can it be mineral vitriol? Rather, in 'Makhzan' it is not accepted as mineral vitriol at all, stating that what has been investigated is that it is not unmanufactured. (What has come through research is that it is not unmanufactured. (T)) 12 - May he be forgiven. (M)

फ़तावा रज़विया, खंड 3

यह सात पिंडों (धातुओं) में से एक है जैसा कि आगे आएगा। (जैसा कि आ रहा है। टी) यद्यपि 'तुहफ़ा' और 'मख़ज़न' में अनजाने में इसे खनिज तूतिया (तुतिया-ए-मादनी) कहा गया है।

नोट: 'फ़रहंग ख़ातिमा मख़ज़न' में है: "रू-ए-तूतिया शुबा अस्त व मशहूर बरूह तूतियास्त चे आं तूतिया-ए ग़ैर मसनूअ व मादनी स्त" | "रू-ए-तूतिया जस्त को कहते हैं और रूह-ए-तूतिया के नाम से मशहूर है। इसलिए कि यह ग़ैर मसनूअ (प्राकृतिक) और खनिज तूतिया है। (टी)"

'तुहफ़ा' में इतना और है: "बख़िलाफ़ साइर अक्साम तूतिया कि रूइदा मादन नेस्तंद।" | "(तूतिया के अन्य सभी प्रकारों के विपरीत जो खान की पैदावार नहीं हैं। (टी)"

मैं कहता हूँ (अकूल): यह सही नहीं है, बल्कि 'सिफ़र' को, जो तांबे की एक किस्म है, फ़ारसी में 'रू' कहते हैं। 'तुहफ़ा' में है: रू-ए इस्म फ़ारसी तालीक़ून स्त। (रू, तालीक़ून का फ़ारसी नाम है। (टी)) इसी में है: "तालीक़ून बफ़ारसी मिस-ए-रस्त गोयंद व सिफ़र अरबी।" | "तालीक़ून को फ़ारसी में मिस-ए-रस्त कहते हैं और अरबी में सिफ़र। (टी)"

इससे अलग करने के लिए जस्त को रू-ए-तूतिया कहते हैं क्योंकि मसनूअ (कृत्रिम) तूतिया जस्त और राँग (टिन) से भी बनता है। 'मख़ज़न' में है: "हम चुनीं अज़ क़लई व शुबा यानी रू-ए-तूतिया शनीदा शुद कि ब-अमल आवरंद।" | "इसी तरह सुना गया कि क़लई (टिन) और शुबा यानी रू-ए-तूतिया से भी बनाते हैं। (टी)"

इसी में है: "शुबा बफ़ारसी रू-ए-तूतिया व हिंदी जस्त।" | "शुबा फ़ारसी में रू-ए-तूतिया और हिंदी में जस्त है। (टी)"

जस्त एक बहुत मिलने वाली चीज़ है और खनिज तूतिया विलुप्त या दुर्लभ है। 'जामे इब्न बीतार' में है: "फ़ी कसीर मिनल अहायीन क़द यहताजु इलत तूतिया वला तूजदु।" | "अक्सर तूतिया की ज़रूरत पड़ती है और वह नहीं मिलता। (टी)" फिर वह खनिज तूतिया कैसे हो सकता है? (ब)

फिर वह खनिज तूतिया कैसे हो सकता है? बल्कि मख़ज़न में तो सिरे से खनिज तूतिया माना ही नहीं गया कि "अंचे ब-तहक़ीक़ पैवस्त आंस्त कि ग़ैर मसनूअ नमी बाशद" (जो कुछ तहक़ीक़ में आया वह यह है कि ग़ैर मसनूअ नहीं होता। (टी)) 12 मिन्हु गुफ़रलाहु (एम)

पेज 641/756

اجسادِ سبعہ میں کا ایک ہے کما یأتی (جیسا کہ آرہا ہے۔ت) اگرچہ عہ تحفہ ' ومخزن میں نا واقفانہ اسے معدنی توتیا کہا۔

عہ: فرہنگ خاتمہ مخزن میں ہے: رُوئے توتیا شبہ است و مشہور بروح توتیاست چہ آں توتیائے | روئے توتیا جست کو کہتے ہیں اور روح توتیا کے نام سے مشہور غیر مصنوع و معدنی ست چہ آں توتیائے غیر مصنوع و معدنی ست۔ | ہے۔ اس لئے کہ یہ غیر مصنوع اور معدنی توتیا ہے۔ت)

تحفہ میں اتنا اور ہے: بخلاف سائر اقسام توتیا کہ روئیدہ معدن نیستند۔ | (بخلاف اور ساری اقسام توتیا کے کہ وہ معدن کی پیداشدہ نہیں ۔ت)

اقول: یہ صحیح نہیں بلکہ صفر کو کہ تانبے کی ایک قسم ہے فارسی میں رُو کہتے ہیں۔ تحفہ میں ہے: رُوئے اسم فارسی طالیقون ست (رُو، طالیقون کا فارسی نام ہے۔ت) اسی میں ہے: طالیقون بفارسی مس رست گویند وصفر عربی۔ | طالیقون کو فارسی میں مس رست کہتے ہیں اور عربی میں صُفر ۔(ت)

اس سے امتیاز کے لئے جست کو روئے توتیا کہتے ہیں کہ توتیائے مصنوع جست اور رانگ سے بھی بنتا ہے۔ مخزن میں ہے: ہم چنیں از قلعی و شبہ یعنی روئے توتیا شنیدہ شد کہ بعمل آورند۔ | اسی طرح سنایا گیا کہ قلعی اور شبہ یعنی روئے توتیا سے بھی بناتے ہیں ۔ (ت)

اسی میں ہے: شبہ بفارسی روئے توتیا و ہندی جست۔ | شبہ، فارسی میں روئے توتیا اور ہندی میں جست۔ (ت) جست ایک کثیر الوجود چیز ہے اور توتیائے معدنی معدوم یا نادر الوجود ۔ جامع ابن

بیطار میں ہے: فی کثیر من الاحایین قد یحتاج الی التوتیا ولا | بسا اوقات توتیا کی ضرورت پڑتی ہے اور ملتی نہیں۔ (ت) توجد ۔ | پھر وہ توتیائے معدنی کیسے ہو سکتا ہے؟ب

پھر وہ توتیائے معدنی کیسے ہو سکتا ہے؟ بلکہ مخزن میں تو سرے معدنی توتیا مانا ہی نہیں کہ انچہ بتحقیق پیوست آنست کہ غیر مصنوع نمی باشد (جو کچھ تحقیق میں آیا وہ یہ ہے کہ غیر مصنوع نہیں ہوتا ۔ت) ۱۲ منہ غفرلہ (م)

Volume Three Fatawa Razawiyya (69) Mineral glass (70) Lahori salt, also known as Saindha and Milh Indrani. These will be mentioned again, God willing (both will be mentioned again, God willing. -T) (71) Salt that is made from soil.

[Box] I say (Aqool): The proof for it is the issue of saline land and the permissibility of Tayammum (dry ablution) with it when its salt is produced from soil, as will be explained later. This is because if Tayammum were not permissible with this salt while it lies on the surface of that land, then Tayammum would not be permissible from that land, just as Tayammum is not permissible from an earthenware vessel coated with tin or colored with a non-terrestrial substance. (T)

(72) Soil in which ash is mixed in a lesser quantity than the soil itself. (Mentioned in 'Jawhara', 'Fath', 'Bahr', and under 'Al-Nukat' with reference to eight other books. -T) (73) Similarly, if flour is mixed in and the soil is more (Jawhara). (74) Gold, cloth, humans, animals - any object covered with soil or dust such that running a hand over it leaves finger marks. (Fath, Bahr, Dur and many others). In 'At-Tabyin' it is mentioned: 'It is permissible to perform Tayammum with dust, whether the dust is on one's clothes or on the back of an animal' 1 (and in Tabyin it is stated that Tayammum is permissible with dust whether it is on clothes or on the back of some animal. -T)

Additions (One hundred and seven 107 things that the author added) (75) Khak-e-Shifa (Healing soil) (76) The wall of a mosque (77) The raw or paved floor of a mosque (78) Land on which dew has fallen. (79) Hard ground where rain fell and the water was absorbed. Both are similar in meaning to ground that has been sprinkled with water and remains damp, which will be discussed later. (T)

---

1 Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Tayammum, Matba'ah Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/39

जिल्द सोम (भाग तीन) फतावा रज़विया (69) खनिज कांच (Mineral glass) (70) लाहौरी नमक जिसे सेंधा और 'मिल्ह इंद्रानी' भी कहते हैं। इनका वर्णन इंशा अल्लाह (ईश्वर ने चाहा तो) फिर आएगा (दोनों का उल्लेख इंशा अल्लाह फिर आएगा। -त) (71) वह नमक जो मिट्टी से बना हो।

[बॉक्स] मैं कहता हूँ (अक़ूल): इसका प्रमाण खारी ज़मीन और उससे तयम्मुम (शुष्क वज़ू) के जायज़ होने का मसला है जब उसका नमक मिट्टी से पैदा हुआ हो, जैसा कि आगे आ रहा है। क्योंकि अगर इस नमक से तयम्मुम जायज़ न होता जबकि यह उस ज़मीन की सतह पर पड़ा होता है, तो उस ज़मीन से तयम्मुम जायज़ न होता, जैसे कि रांगे से कलई किए हुए और गैर-ज़मीनी चीज़ से रंगे हुए मिट्टी के बर्तन से तयम्मुम जायज़ नहीं। (त)

(72) मिट्टी जिसमें राख की मात्रा उससे कम मिली हो। (इसका उल्लेख 'जौहरा', 'फ़तह', 'बहर' और आठ अन्य किताबों के हवाले से 'अल-नुकात' के तहत हो चुका है। -त) (73) इसी तरह अगर मिट्टी में आटा मिल गया हो और मिट्टी अधिक हो (जौहरा)। (74) सोना, कपड़ा, इंसान, जानवर - कोई भी ऐसी चीज़ जिस पर मिट्टी या ऐसी धूल हो कि हाथ फेरने से उंगलियों के निशान बन जाएँ। (फ़तह, बहर, दुर्र और कई अन्य)। 'तबीन' में लिखा है: 'धूल से तयम्मुम जायज़ है, चाहे वह धूल कपड़ों पर हो या किसी जानवर की पीठ पर' 1 (और तबीन में है कि गुबार से तयम्मुम जायज़ है चाहे वह उसके कपड़े पर हो या किसी जानवर की पीठ पर हो। -त)

वृद्धियाँ (लेखक द्वारा जोड़ी गई एक सौ सात १०७ चीज़ें) (75) खाक-ए-शिफा (इलाज वाली मिट्टी) (76) मस्जिद की दीवार (77) मस्जिद का कच्चा या पक्का फर्श (78) वह ज़मीन जिस पर ओस पड़ी हो। (79) कठोर ज़मीन जिस पर बारिश हुई और पानी सोख लिया गया। ये दोनों उस ज़मीन के समान हैं जिस पर पानी छिड़का गया हो और नमी बाकी हो, जिसका ज़िक्र आगे आएगा। (त)

---

1 तबीन अल-हक़ाएक़, बाबुत तयम्मुम, मतबआ अमीरिय्या, बुलाक़, मिस्र, 1/39 पृष्ठ 642 का 756

جلد سوم فتاوی رضویہ (۶۹) معدنی شیشہ (۷۰) لاہوری نمک جسے سینہدھا اور ملح اندرانی کہتے ہیں ویأتیان ان شاء اللہ تعالیٰ (دونوں کا ذکر ان شاء اللہ تعالیٰ پھر آئے گا ۔ ت) (۷۱) وہ نمک کہ مٹی سے بنا ہو۔

[Box] اقول: دلت علیہ مسألۃ السبخۃ وجواز التیمم بھا اذا کان ملحھا من تراب کما سیأتی اذلولم یجز بہ وھو علی وجھھا لم یجز بھا کمطلی بآنک ومصبوغ بغیر الجنس۔ اقول: اس کی دلیل زمین شور اور اس سے جوازِ تیمم کا مسئلہ ہے جب کہ اس کا نمک مٹی سے پیدا ہوا ہو جیسا کہ آگے آرہا ہے۔ اس لئے کہ اگر اس نمک سے تیمم جائز نہ ہوتا جبکہ یہ اس زمین کی سطح پر پڑا رہتا ہے تو اس زمین سے تیمم جائز نہ ہو گا جیسے رانگ سے قلعی کئے ہوئے اور غیر جنس زمین سے رنگے ہوئے مٹی کے برتن سے تیمم جائز نہیں۔ (ت)

(۷۲) خاک جس میں اس سے کم راکھ ملی ہو۔ جوھرۃ فتح بحرو تقدم عن ثمانیۃ أخر في النکات (جوہرہ، فتح، بحر اور مزید آٹھ کتابوں کے حوالہ سے نکات کے تحت اس کا بیان گزر چکا۔ ت) (۷۳) یونہی اگر آٹا مل گیا اور خاک زائد ہے جوہرہ۔ (۷۴) سونا کپڑا آدمی جانور جس چیز پر مٹی یا ایسا غبار ہو کہ ہاتھ پھیرنے سے انگلیوں کا نشان بن جائے۔ فتح، بحر، در وکثیرہ فی التبیین یجوز بالنقع سواء کان الغبار علی ثوبہ او علی ظھر حیوان 1 (اور تبیین میں ہے کہ غبار سے تیمم جائز ہے چاہے وہ اس کے کپڑے پر ہو یا کسی جانور کی پشت پر ہو۔ ت)

مزیدات (ایک سو سات ۱۰۷ چیزیں کہ مصنف نے زائد کیں) (۷۵) خاک شفا (۷۶) مسجد کی دیوار (۷۷) مسجد کا کچا خواہ پکا فرش (۷۸) زمین جس پر شبنم پڑی ہے۔ (۷۹) سخت زمین جس پر مینہ برس کر پانی نگل گیا وھما فی معنی ما یأتی من ارض رش علیھا الماء وبقی نداہ (یہ دونوں اس

زمین کے معنی میں ہیں جس پر پانی کا چھڑکاؤ ہو اور تری باقی رہ گئی اس کا ذکر آگے آرہا ہے۔

ت)

---

1 تبیین الحقائق باب التیمم، مطبعہ امیریہ بولاق مصر ۱/۳۹ Page 642 of 756

Fatawa Ridawiyya Volume 3 (80) A pitcher filled with water and wet from the outside. (81) Kharya clay (chalk/pipeclay). (82) Multani clay (Fuller's earth), which is different from yellow clay whose sacks are sold for pennies; the difference between them is like that between ochre and red clay. (83) Gul-e-Sarshoye (hair-washing clay), yellowish-white with a slight fragrance, also called Gul-e-Shirazi and Teen-e-Farsi. (84) Gul-e-Khordani (edible clay), pure earthy clay, fragrant and tasty, called Teen-e-Khorasani. Some pregnant women and people of low temperament eat it. It is naturally harmful and forbidden (Haram) by Sharia, but tayammum (dry ablution) is permissible with it, provided medicines have not been mixed to overwhelm its nature; by "pure" we mean this. (85) Pindol (white clay used for whitewashing). (86) Phodi clay, which is the opposite of sticky clay; it lacks adhesion and crumbles easily. (87) In Kathiawar, "Sankar ki Mitti" which is like gold clay. (88) The inside of a cooking stove (hearth). (89) The inside of an oven (Tandoor). (90) Salitre (efflorescence) from a wall. (91) Wet sand on a riverbank. (92) Sand. Sand from a grain-parching furnace (Bhaar). (93) Mirage, which looks like water from a distance. (94) Quicksand, which flows like water. (95) The bottom of pots on which clean clay plaster has been applied, even if it has been exposed to fire. (96) Tree trunks on which termites have plastered mud; tayammum can be performed on it once dry. (97) Snake hole. (98) Pebbles/Kankar, which is clay that has become petrified. It comes from inside the earth like minerals. (99) Kharanja (brick pavement). (100) Paved roads when newly built, provided no impurity like droppings, dung, urine, etc., has fallen on them, or if it has, heavy rain has fallen and purified it, or it has been washed and purified. Page 643 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (खंड 3) (80) घड़ा जिसके अंदर पानी भरा हो और बाहर से गीला हो। (81) खड़िया मिट्टी। (82) मुल्तानी मिट्टी और वह पीली मिट्टी से अलग है जिसके बोरे कौड़ियों के दाम बिकते हैं; उनमें वही अंतर है जो गेरू और लाल मिट्टी में होता है। (83) गुल-ए-सरशोए (सिर धोने की मिट्टी) सफेदी की ओर झुकी हुई, हल्की खुशबू वाली होती है, इसे गुल-ए-शिराज़ी और तीन-ए-फ़ारसी भी कहा जाता है। (84) गुल-ए-खुर्दनी (खाने वाली मिट्टी) शुद्ध सोंधी मिट्टी, खुशबूदार और स्वादिष्ट, जिसे तीन-ए-खुरासानी कहते हैं। कुछ गर्भवती महिलाएं और कमज़ोर मिज़ाज वाले लोग इसे खाते हैं। यह प्राकृतिक रूप से हानिकारक और शरीअत में हराम है, लेकिन तैयममुम जायज़ है जब तक कि दवाएं मिलाकर इसे पूरी तरह बदल न दिया गया हो; शुद्ध से हमारा यही अभिप्राय है। (85) पिंडोल (पुताई वाली सफ़ेद मिट्टी)। (86) फोड़ी मिट्टी जो चिकनी मिट्टी के विपरीत होती है, इसमें चिपचिपाहट नहीं होती और जल्दी बिखर जाती है। (87) काठियावाड़ में संकर की मिट्टी जो सोने की मिट्टी कहलाती है। (88) चूल्हे की भट्टी। (89) तंदूर का पेट (अंदरूनी हिस्सा)। (90) दीवार की लोनी (शोरा)। (91) नदी किनारे की गीली रेत। (92) बालू। भाड़ (अनाज भूनने की भट्टी) की रेत। (93) सराब (मृगतृष्णा) जो दूर से पानी नज़र आता है। (94) रेग-ए-रवां (चलती रेत) जो पानी की तरह बहती है। (95) देगचियों (बर्तनों) का तला जिस पर पाक लेप चढ़ा हो, चाहे वह आंच खा चुका हो। (96) पेड़ों का तना जिस पर दीमक ने मिट्टी चढ़ा दी हो, सूखने पर उस पर तैयममुम किया जा सकता है। (97) सांप की बांबी। (98) कंकड़, यह ऐसी मिट्टी है जो पत्थर जैसी सख्त हो जाती है। यह खनिजों की तरह ज़मीन के अंदर से निकलता है। (99) खरंजा (ईंटों का रास्ता)। (100) पक्की सड़कें जब नई बनी हों, बशर्ते उन पर लीद, गोबर, पेशाब आदि गंदगी न पड़ी हो, या पड़ी हो और ज़ोर की बारिश ने उन्हें पाक कर दिया हो या उन्हें धोकर पाक कर लिया गया हो। पृष्ठ 643/756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم (۸۰) گھڑا جس کے اندر پانی بھرا اوپر سے بھیگا ہوا ۔ (۸۱) کھریامٹی (۸۲) ملتانی مٹی اور وہ پیلی مٹی کی غیر ہے جس کے بورے پیسے پیسے بکتے ہیں ان میں وہی فرق ہے جو گیرو اور سرخ مٹی میں۔ (۸۳) گل سر شوے سر دھونے کی مٹی سفید ی مائل، بز روی خوشبو ہوتی ہے گلِ شیرازی و طین فارسی کہلاتی ہے۔ (۸۴) گلِ خوردنی خالص سوندھی مٹی خوشبو خوش ذائقہ جسے طین خراسانی کہتے ہیں۔ بعض حاملہ عورتیں اور پست طبیعت لوگ اسے کھاتے ہیں۔ طبعاً مضر اور شرعاً حرام ہے مگر تیمم جائز جبکہ دوائیں ملا کر اسے مغلوب نہ کر دیا ہو خالص سے ہماری یہی مراد ہے۔ (۸۵) پنڈول (۸۶) پھوڑی مٹی کہ چکنی کے مقابل ہے لس نہیں رکھتی جلد بکھر جاتی ہے۔ (۸۷) کاٹھیاوار میں سنکر کی مٹی کہ سونے کی مٹی ہوتی ہے۔ (۸۸) چولہے کی بھٹ (۸۹) تنور کا پیٹ (۹۰) دیوار کی لونی (۹۱) ندی کنارے کا گیلا ریتا (۹۲) بالو۔ بھاڑ کا ریتا (۹۳) سراب کہ دُور سے پانی نظر آتا ہے۔ (۹۴) ریگ رواں کہ پانی کی طرح بہتا ہے۔ (۹۵) دیگچیوں کا تلا جس پر پاک لیوا چڑھا ہے اگر چہ آنچ کھا چکا۔ (۹۶) درختوں کا تنہ جس پر ابلے نے مٹی چڑھا دی خشک ہونے پر تیمم کیا جائے۔ (۹۷) سانپ کی بانی۔ (۹۸) کنکر، مٹی ہے کہ متحجر ہو جاتی ہے۔ معدنی چیزوں کی طرح زمین کے اندر سے نکلتا ہے۔ (۹۹) کھر نجا (۱۰۰) پکی سڑک جبکہ نئے بنے ہوں ان پر لید، گوبر، پیشاب وغیرہ نجاست نہ پڑی یا پڑی اور زور کا مینہ برسا کہ پاک کر گیا یا دھو کر پاک کر لیے گئے۔ صفحہ 643 از 756

Fatawa Rizvia Volume 3 (101) Reeh: a type of salty soil. (102) Bone china/stoneware vessels, provided they do not have a glaze of a different substance. (103) Sulphur vessels, bowls, etc. (104) Clay toys that do not have the coloring of a different substance. (105) Pellets for a slingshot, even if they contain a mixture of cotton etc., as long as clay is predominant. (106) Stone gravel, which is natural stone the size of a pulse. (107) Cement is a burnt stone. (108) Haronji (Red ochre), which is used for red coloring on walls. (109) Selkhari (Soapstone/Steatite): Its coating on the wall is white, shiny, and smooth, even if a little milk is added. However, that is a small amount, and the dominant part is considered, as previously explained. (t) (110) Gitti: the lime used for building work. (111) Black lime: this too is used in building work, and coal is subordinate. (112) Guttha: made by breaking raw bricks and mixing black lime and crushed stone (gitti). (113) Sandla: made by mixing crushed stone and brick dust. (114) Lime wash (whitening): the white substance used for whitening walls is a mineral stone; in Arabic, it is 'Isfidaj al-Jassasin'. (115) Walls of mud-straw plaster, because straw is very little and consumed. (t) (116) Similarly, any door, wall, or roof that is coated with sandla or cement. (118) Any door or wall that has a sand-coating. (119) Those having shades of almond[121], lac-red[122], red[123], green[124], yellow[125], pale green[126], sky-blue[127], catechu-brown[128], rust[129], khaki[130], dove-grey[131], onion-pink[131], or turquoise color. Even though red may contain cinnabar; green may contain manufactured vitriol, mango bark, or bakain leaves; yellow may sometimes contain tesu flowers besides Multani clay; pale green may contain the same vitriol bark besides green flowers; sky-blue may contain coal or manufactured lapis lazuli; catechu-brown may contain acacia bark; rust may contain green vitriol; khaki may contain coal; dove-grey may contain lapis lazuli and onion-pink may contain yellow pigment (piuri); and turquoise may contain vitriol etc. as foreign mixtures. However, in any case, the base is crushed stone (gitti), which is the majority and dominant part, and the mixture is only to provide color. (132) A permanent grave, because there is no suspicion of impurity.

फतावा रिज़विया जिल्द 3 (१०१) रीह: यह एक प्रकार की नमकीन मिट्टी है। (१०२) सज्जी चीनी के बर्तन, बशर्ते कि उन पर किसी बाहरी चीज़ का लेप न हो। (१०३) गंधक के बर्तन, प्याले आदि। (१०४) मिट्टी के खिलौने जिन पर किसी बाहरी वस्तु का रंग न हो। (१०५) गुलेल के गोले, भले ही उनमें रुई आदि का मिश्रण हो, यदि मिट्टी प्रधान हो। (१०६) पत्थर की बजरी, जो प्राकृतिक पत्थर है और दाल के आकार की होती है। (१०७) सीमेंट एक फूंका हुआ पत्थर है। (१०८) हरौंजी, जो दीवारों पर लाल रंग के लिए काम आती है। (१०९) सेलखड़ी: दीवारों पर इसकी सफेदी चमकदार और चिकनी कली जैसी होती है, भले ही थोड़ा दूध भी मिलाया गया हो। परंतु वह बहुत कम है और प्रधानता का ही विचार किया जाएगा, जैसा कि पहले बताया गया है। (ت) (११०) गिट्टी: जो निर्माण कार्य में उपयोग होने वाला चूना है। (१११) काला चूना: यह भी निर्माण कार्य में उपयोग होता है और इसमें कोयला कम मात्रा में होता है। (११२) गट्ठा: कच्ची ईंटें तोड़कर उसमें काला चूना और गिट्टी मिलाकर बनाया जाता है। (११३) संदला: गिट्टी और सुर्खी (ईंट का चूरा) को मिलाकर। (११४) कली की सफेदी: जिससे दीवारों पर सफेदी की जाती है, वह एक खनिज पत्थर है; अरबी में इसे 'इसफ़ैदाज अल-जस्सासीन' कहते हैं। (११५) मिट्टी-भूसे का प्लास्टर (कमगल), क्योंकि भूसा बहुत कम होता है और समाप्त हो जाता है। (ت) (११६) इसी तरह, कोई भी दरवाज़ा, दीवार या छत जिस पर संदला या सीमेंट का लेप किया गया हो। (११८) जिस द्वार या दीवार पर बालू का लेप हो। (११९) वे जिन पर बादामी[121], लाक्खी[122], लाल[123], हरा[124], पीला[125], धानी[126], आसमानी[127], कत्थई[128], ज़ंगारी[129], खाकी[130], फ़ाख़्तई[131], प्याजी[131], या फ़िरोज़ी रंग हो। भले ही लाल में शिंगरफ़; हरे में कृत्रिम तूतिया, आम की छाल या बकाइन के पत्ते; पीले में कभी मुल्तानी मिट्टी के बजाय टेसू के फूल; धानी में कभी हरे फूलों के बजाय वही तूतिया और छाल; आसमानी में कोयला या कृत्रिम लाज़वर्द; कत्थई में बबूल की छाल; ज़ंगारी में हरा तूतिया; खाकी में कोयला; फ़ाख़्तई में लाज़वर्द और प्याजी में प्योड़ी; और फ़िरोज़ी में तूतिया आदि बाहरी चीज़ों का मिश्रण हो। फिर भी, हर स्थिति में मूल आधार गिट्टी ही है, जो बहुमत और प्रधान हिस्सा है, और अन्य मिश्रण केवल रंग लाने के लिए किए जाते हैं। (१३२) पक्की कब्र, जहाँ अपवित्रता (नजासत) का कोई संदेह न हो।

पेज 644 of 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم (۱۰۱) ریہ کہ ایک قسم کی نمکین خاک ہے۔ (۱۰۲) سجی چینی کے برتن جبکہ ان پر غیر جنس کا روغن نہ ہو۔ (۱۰۳) گندھک کے برتن پیالے وغیرہ۔ (۱۰۴) مٹی کے کھلونے جن پر غیر جنس کی رنگت نہ ہو۔ (۱۰۵) غلیل کے غلے اگرچہ ان میں روئی وغیرہ کا خلط ہو جبکہ مٹی غالب ہو۔ (۱۰۶) پتھر کی بجری کہ قدرتی پتھر دال کے برابر ہے۔ (۱۰۷) سیمنٹ ایک پتھر ہے پھنکا ہوا۔ (۱۰۸) ہرونجی دیواروں پر سرخ رنگ میں کام آتی ہے۔ (۱۰۹) سیل کھڑی اس کی دیوار پر سفید چمکدار چکنی قلعی ہوتی ہے اگرچہ تھوڑا دودھ بھی ملاتے ہیں۔ مگر وہ قلیل ہے اور اعتبار غالب کا کما تقدم (جیسا کہ پہلے بیان ہوا۔ ت) (۱۱۰) گٹی کہ عمارت کے کام کا چونا ہے۔ (۱۱۱) کالا چونا یہ بھی کار عمارت میں آتا ہے اور کوئلہ مغلوب۔ (۱۱۲) گٹّھا، کچی اینٹ توڑ کر کالا چونا اور گٹی ملاتے ہیں۔ (۱۱۳) صندلہ گٹی اور سرخی ملا کر۔ (۱۱۴) قلعی کا سفیدہ جس سے دیوار پر سفیدی ہوتی ہے معدنی پتھر ہے عربی اسفیداج الجصاصین۔ (۱۱۵) کمگل کی دیوار لان التبن قلیل مستہلک (اس لئے کہ اس میں بھس تھوڑا اور فنا ہوتا ہے۔ ت) (۱۱۶) یونہی جس درو دیوار یا چھت پر صندلہ یا سیمنٹ کے لپا پھرا ہو۔ (۱۱۸) جس درو دیوار پر بالوتر ہو۔ (۱۱۹) جن پر بادامی۱۲۱، لاکھّی۱۲۲، سرخ۱۲۳، سبز۱۲۴، زرد۱۲۵، دھانی۱۲۶، آسمانی۱۲۷، کتھئی۱۲۸، زنگاری۱۲۹، خاکی۱۳۰، فاختی۱۳۱، پیازی۱۳۱، فیروزی رنگتیں ہوں کہ اگرچہ سرخ میں شنجرف، سبز میں مصنوع توتیا، آم کی چھال بکائن کے پتے، زرد میں کبھی ملتانی کے سوا ٹیسو کے پھول، دھانی میں کبھی سبز گل کے سوا وہی توتیا چھال، آسمانی میں کوئلہ، مصنوع لاجورد، کتھئی میں ببول کی چھال، زنگاری میں سبز توتیا، خاکی میں کوئلہ، فاختی میں لاجورد و پیازی میں پیوڑی، فیروزی میں توتیا وغیرہ اشیائے غیر کی آمیزش ہے

مگر بہر صورت اصل گٹی ہے اسی کا حصہ کثیر و غالب اور ان کا خلط اس میں رنگت لانے کے لئے ہوتا ہے۔ (۱۳۲) پکی قبر کہ وہاں ظن نجاست نہیں۔

Fatawa Razawiyya Volume Three (133) Marble (Sang-e-Marmar) (134) Stone of Moses (Sang-e-Musa) (135) White stone (Sang-e-Supeed) (136) Red stone (Sang-e-Surkh) (137) Chumkah, dark green (138) Star stone, reddish, very shiny, with distinct particles. (139) Selenite (Godanti), white with a bluish sheen; gemstones are also made from it. (140) Jew's stone (Hajar-ul-Yahood) and (141) Magnet/Magnetite, (142) Porphyry stone (Sang-e-Summaq) whose mortars are famous. (143) Whetstone (San), (144) Honing stone (Silli), (145) Corundum (Karand), (146) Kasoli stone, (147) Flint (Chakmaq), (148) Train coal which is a stone. (149) Slate, (150) That stone from Turkistan that burns like wood. (151) That stone of Sham Sharif (Syria) which clings when thrown into fire. (152) That stone of Sicily which ignites with hot water and extinguishes with oil. (153) Hajar-ul-Qandeel (Candle stone), from which wicks are made and burnt; the description of these four stones has been given above. (154) Crystal (Quartz/Bilaur) is a mineral stone, and what has passed regarding Aristotle's opinion that "it is among the types of mineral glass" is not contradictory to it (T - Translator's note). (155) Steatite (Sang-e-Jarahat) and those (156) Lapis Lazuli (Lajward), (157) Bezoar stone (Zahar Mohra), (158) Snake stone (Mohra Maar) that are mineral. (159) Sea Tutia (Daryai Tutia) which is a stone; Amin-ud-Daula wrote that sea tutia also exists and they are white, round stones resembling pebbles. Makhzan [1] (Amin-ud-Daula has written that sea tutia also exists; these are white, round stones resembling pebbles. Makhzan - T). (160) Almas, i.e., Diamond, (161) Ruby (La'l), (162) Sapphire (Neelam) (163) Topaz (Pukhraj) (164) Jasper/Jade (Yashab)

---

1 Makhzan-ul-Adwiya, Chapter T with Waw, printed by Naval Kishore, Kanpur, p. 190.

फ़तावा रज़विया खंड तीन (१३३) संग-ए-मरमर (संगमरमर) (१३४) संग-ए-मूसा (१३५) सफ़ेद पत्थर (१३६) लाल पत्थर (१३७) चुमकाह, गहरा हरा (१३८) संग-ए-सितारा, लालिमायुक्त, बहुत चमकदार, कण-कण साफ़ दिखने वाले। (१३९) गोडंती सफ़ेद नीलापन लिए हुए चमकदार, इसके नगीने भी बनते हैं। (१४०) हजर-उल-यहूद और (१४१) चुंबक, (१४२) संग-ए-सुम्माक़ जिसके खरल प्रसिद्ध हैं। (१४३) सान, (१४४) सिल्ली, (१४५) कुरुंद (कोरन्डम), (१४६) कसूली, (१४७) चकमक, (१४८) रेल का कोयला जो एक पत्थर है। (१४९) स्लेट, (१५०) तुर्किस्तान का वह पत्थर जो लकड़ी की तरह जलता है। (१५१) शाम शरीफ़ (सीरिया) का वह पत्थर जिसे आग में डालने पर वह चिपक जाता है। (१५२) सिसली (सिक़लिया) का वह पत्थर जो गर्म पानी से प्रज्वलित होता है और तेल से बुझता है। (१५३) हजर-उल-क़ंदील जिसकी बत्ती बनाकर जलाते हैं, इन चारों पत्थरों का वर्णन ऊपर हो चुका है। (१५४) बिल्लौर (क्रिस्टल) एक खनिज पत्थर है "वला युनाफ़िही मा मर्रा मिन ज़न्नी अरिस्तू अन्नहू मिन अनवाइज़ ज़ुजाजिल मदनी" (और अरस्तू का जो विचार वर्णित हुआ कि "वह खनिज कांच के प्रकारों में से है" इसके विपरीत नहीं है। त - अनुवादक की टिप्पणी)। (१५५) संग-ए-जराहत और वे (१५६) लाज़वर्द, (१५७) ज़हर मोहरा, (१५८) मोहरा मार जो खनिज हों। (१५९) दरियाई तूतिया जो पत्थर है; अमीन-उद-दौला ने लिखा है कि "तूतिया बहरी भी होता है और वे सफ़ेद गोल पत्थर कंकड़ के समान होते हैं", मख़ज़ान [१] (अमीन-उद-दौला ने लिखा है कि तूतिया बहरी भी होता है, ये सफ़ेद, गोल कंकड़ के समान पत्थर होते हैं। मख़ज़ान - त)। (१६०) अलमास यानी हीरा (१६१) लाल (याकूत) (१६२) नीलम (१६३) पुखराज (१६४) यशब

---

१ मख़ज़ान-उल-अदविया, बाब 'ता' साथ 'वाव', मुद्रित नवल किशोर कानपुर, पृ. १९०। पृष्ठ ६४५ / ७५६

فتاوٰی رضویہ جلد سوم (۱۳۳) سنگِ مرمر (۱۳۴) سنگِ موسیٰ (۱۳۵) سنگِ سپید (۱۳۶) سنگِ سرخ (۱۳۷) چمکاہ، گہرا سبز (۱۳۸) سنگِ ستارہ سرخی مائل بہت چمکدار ذرے ذرے نمایاں۔ (۱۳۹) گودنتی سپید نیلگوں جھلکدار، اس کے نگینے بھی بنتے ہیں۔ (۱۴۰) حجر الیہود و (۱۴۱) مقناطیس، (۱۴۲) سنگِ سماق جس کے کھرل مشہور ہیں۔ (۱۴۳) سان، (۱۴۴) سلی، (۱۴۵) کرنڈ، (۱۴۶) کسولی، (۱۴۷) چقماق، (۱۴۸) ریل کا کوئلہ کہ پتھر ہے۔ (۱۴۹) سلیٹ، (۱۵۰) ترکستان کا وہ پتھر کہ لکڑی سا جلتا ہے۔ (۱۵۱) شام شریف کا وہ پتھر کہ آگ میں ڈالنے سے لپٹ دیتا ہے۔ (۱۵۲) صقلیہ کا وہ پتھر کہ گرم پانی سے مشتعل ہوتا اور تیل سے بجھتا ہے۔ (۱۵۳) حجر القندیل جس کی بتی بنا کر جلاتے ہیں ان چاروں پتھروں کا بیان اوپر گزرا ہے۔ (۱۵۴) بلور معدنی پتھر ہے ولا ینافیہ ما مر من ظن ارسطو انہ من انواع الزجاج المعدنی (اور ارسطو کا خیال جو بیان ہوا کہ "وہ معدنی زجاج کے اقسام سے ہے" اس کے منافی نہیں ت) (۱۵۵) سنگِ جراحت اور وہ (۱۵۶) لاجورد، (۱۵۷) زہر مہرہ، (۱۵۸) مہرہ مار کہ معدنی ہوں۔ (۱۵۹) دریائی توتیا کہ پتھر ہے امین الدولہ نوشتہ کہ توتیا بحری نیز باشد و آں سنگہائے سفید مستدیر شبیہ بسنگریزہ است، مخزن (امین الدولہ نے لکھا ہے کہ توتیا بحری بھی ہوتا ہے، یہ سفید، گول سنگریزہ کے مشابہ پتھر ہوتے ہیں۔ مخزن۔ ت) (۱۶۰) الماس یعنی ہیرا (۱۶۱) لعل (۱۶۲) نیلم (۱۶۳) پکھراج (۱۶۴) یشب

---

1 مخزن الادویہ فصل التاء مع الواو مطبوعہ نولکشور کانپور ص ۱۹۰ Page 645 of 756

Fatawa Razawiyya, Volume 3 (165) Gau-sindak is made of shiny jewels, yellowish-reddish, included in Navratan (note 1). (166) Sang-e-Shajari, a reflection of a tree is visible in it. It is set in jewelry. (167) Sang-e-Sunahra resembles topaz but is lighter than it. This is also used in inlay work. (168) Busad (Coral), whether it is a stable stone or the root of coral. In any case, it is suitable for Tayammum. (169) Dabanch, meaning 'Duhna Farandi', which people call 'Dahan-e-Farang'. (170) Ain-ul-Har, meaning Lehsuniya (Cat's eye). (171) Jaz'a, meaning Muhra-e-Yamani (Yemeni onyx). (172) Dana-e-Sulaimani (Sulemani bead). (173) Green, (174) Earthy, (175) Golden Orpiment (Hartal). There are seven types of arsenic (Zarnikh); four types were mentioned in 'Hulya' and 'Ghunyah'. For completion (note 2), we added these, otherwise in this way...

Note 1: In it there are eight stones: Ruby, Emerald, Sapphire, Topaz, Cat's eye, Coral, Diamond, Gau-sindak, and the ninth is Pearl. 12-Minhu Ghafara Lahu (M) Note 2: Perhaps 'Hulya' and 'Ghunyah' left out the green variety of orpiment because it is rare. In 'Tazkira' it is written: (Arsenic) Five categories: yellow, which is the noblest; red, which follows it in nobility; white, which is called arsenic and lime and hair medicine, and this is the lowliest variety; green, the least found and least useful; and black, the most intense in sharpness and most sulfurous. End. Orpiment has five types: (1) Yellow. This is better than all other types. (2) Red. It is close to it in excellence. (3) White. It is also called Zarnikh, Noorah, and hair medicine, and this is the most common/worthless type. (4) Green. This is the rarest and least beneficial. (5) Black. This is most intense in heat and highest in sulfur content. End. (T) I say: What is said about the green one is the opposite of what is known, for the known rule is that what is precious in benefit is rare in existence. And Allah Almighty knows best. I say: What was told about the green variety is against the norm, because the norm is that the thing which is more beneficial is harder to find. And God Most High knows best. (T) The famous ones are these five types, and the earthy and golden ones were quoted by Ibn al-Baitar from 'Kitab al-Ahjar'. (M)

1 Tazkirat-ul-Uli al-Albab under the letter 'Zaa' for Zarnikh. Mustafa al-Babi, Egypt 1/177. Page 646 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3 (165) गौ-सिदक एक चमकदार रत्न है, पीलापन लिए हुए लाली वाला, नवरतन (नोट 1) में शामिल है। (166) संग-ए-शजरी, इसमें पेड़ की झलक दिखाई देती है। गहनों में जड़ा जाता है। (167) संग-ए-सुनहरा पुखराज जैसा है लेकिन उससे हल्का। यह भी जड़ाई के काम आता है। (168) बुसद (मूँगा), चाहे वह स्वतंत्र पत्थर हो या मूँगे की जड़। बहरहाल, तैयमुम के लिए उपयुक्त है। (169) दबंच यानी 'दुहना फरंदी' जिसे लोग 'दहन-ए-फरंग' कहते हैं। (170) ऐन-उल-हर यानी लहसुनिया। (171) जज़अ यानी मुहरा-ए-यमनी। (172) दाना-ए-सुलेमानी। (173) हरा, (174) खाकी, (175) सुनहरी हरताल। जरनीख़ सात प्रकार की होती है, चार प्रकार 'हुलया' और 'गुनया' में बताए गए थे। पूर्णता के लिए (नोट 2) हमने इन्हें बढ़ा दिया, वरना इस प्रकार...

नोट 1: इसमें आठ पत्थर हैं: याकूत (माणिक), पन्ना यानी ज़मुर्रद (पन्ना), नीलम, पुखराज, लहसुनिया, मूँगा, हीरा, गौ-सिदक और नौवां मोती। 12-मिन्हु ग़ुफ़िर लहू (M) नोट 2: शायद 'हुलया' और 'गुनया' ने हरताल की हरी किस्म इसलिए छोड़ दी क्योंकि वह दुर्लभ है। 'तज़किरा' में है: (जरनीख़) पांच श्रेणियाँ: पीला, जो सबसे श्रेष्ठ है; लाल, जो श्रेष्ठता में उसके बाद है; सफेद, जिसे जरनीख़, नूरा और बाल की दवा कहा जाता है, और यह सबसे निम्न श्रेणी है; हरा, सबसे कम पाया जाने वाला और उपयोगी; और काला, तीव्रता में सबसे प्रखर और सबसे अधिक गंधक वाला। समाप्त। हरताल की पांच किस्में हैं: (1) पीली। यह सभी किस्मों से बेहतर होती है। (2) लाल। उत्कृष्टता में यह इसी के करीब है। (3) सफेद। इसे जरनीख़, नूरा और बाल की दवा भी कहा जाता है और यह सबसे अधिक प्रचलित/तुच्छ किस्म है। (4) हरी। यह सबसे कम मिलने वाली और कम लाभ वाली है। (5) काली। यह तेज़ी में सबसे तीव्र और गंधक के मामले में सबसे अधिक होती है। समाप्त। (T) मैं कहता हूँ: हरे रंग के बारे में जो कहा गया है वह ज्ञात के विपरीत है, क्योंकि ज्ञात नियम यह है कि जो चीज़ लाभ में कीमती होती है, वह मिलने में दुर्लभ होती है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। मैं कहता हूँ: हरी किस्म के बारे में जो बताया गया वह परंपरा के विपरीत है, क्योंकि परंपरा यह है कि जो चीज़ अधिक लाभदायक होती है वह कम मिलती है। और ईश्वर सबसे बेहतर जानने वाला है। (T) प्रसिद्ध यही पांच किस्में हैं, और खाकी और सुनहरी इब्न अल-बैतार ने 'किताब अल-अहजार' से उद्धृत की हैं। (M)

1 तज़किरत-उल-उली अल-अल्बाब 'ज़ा' (जरनीख़) अक्षर के अंतर्गत। मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/177। पृष्ठ 646 का 756

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم (۱۶۵) گؤ سیدک چمکدار جواہر سے ہے زرد سرخی مائل نورتن عہ۱ میں داخل۔ (۱۶۶) سنگ شجری، درخت کی اس جھلک نظر آتی ہے۔ زیور میں جڑا جاتا ہے۔ (۱۶۷) سنگ سنہرا مشابہ پکھراج مگر اس سے ہلکا۔ یہ بھی جڑائی میں کام آتا ہے۔ (۱۶۸) بسد کہ مستقل پتھر ہے یا بیخ مرجان۔ بہر حال قابل تیمم ہے۔ (۱۶۹) دَبنچ یعنی دُہنہ فرندی جسے لوگ دہن فرنگ بولتے ہیں۔ (۱۷۰) عین الہر یعنی لہسنیا۔ (۱۷۱) جزع یعنی مہرہ یمانی۔ (۱۷۲) دانہ سلیمانی۔ (۱۷۳) سبز، (۱۷۴) خاکی، (۱۷۵) سنہری ہرتال۔ زرنیخ سات قسم ہوتی ہے چار قسمیں حلیہ وغنیہ سے گزریں تکمیل عہ۲ کے لئے ہم نے انہیں اضافہ کیا ورنہ اس طرح

عہ۱: اس میں آٹھ پتھر ہیں: یاقوت، پنیالیعنی زمرد، نیلم، پکھراج، لہسنیا، مونگا، ہیرا، گؤ سیندرک اور نواں موتی۔ ۱۲منہ غفرلہ (م) عہ۲: شاید حلیہ وغنیہ نے ہرتال کی سبز قسم اس لئے ترک فرمائی کہ کمیاب ہے۔ تذکرہ میں ہے: (زرنیخ) خمسة اصناف اصفر وھو اشرفھا واحمر یلیہ فی الشرف وابیض یسمی زرنیخ والنورة ودواء الشعر وھذا اوطی الانوع واخضر اقلہا وجودا ونفعاً واسود اشدہا حدة واکثرہا کبریتیة ۱اہـ ہرتال کی پانچ قسمیں ہیں: (۱) زرد۔ یہ ساری قسموں سے بہتر ہوتی ہے۔ (۲) سرخ۔ عمدگی میں اسی کے قریب ہوتی ہے۔ (۳) سفید۔ اسے زرنیخ، نورہ اور بال کی دوا بھی کہا جاتا ہے اور یہ سب سے زیادہ پامال قسم ہے۔ (۴) سبز۔ یہ سب سے کم یاب اور کم نفع ہے۔ (۵) سیاہ۔ یہ حدت میں سب سے شدید اور کبریت یت میں سب سے زیادہ ہوتی ہے اہـ (ت) اقول: وماقال فی الاخضر فہو عکس المعھود فان المعھود ان عزیز النفع عزیز الوجود واللہ تعالٰی اعلم۔ اقول: سبز قسم کے بارے میں جو بتایا یہ معہود کے برخلاف ہے اس لئے کہ معہود یہ ہے کہ جو چیز زیادہ نفع بخش ہوتی ہے وہ کم یاب ہوتی ہے اور خدائے برتر خوب جاننے والا ہے۔ (ت) مشہور یہی پانچ قسمیں ہیں اور خاکی اور سنہری ابن البیطا ر نے کتاب الاحجار سے نقل کیں۔ (م)

۱ تذکرہ اولی الالباب حرف الزاء زرنیخ کے تحت مذکور ہے۔ مصطفیٰ البابی مصر ۱ / ۱۷۷

Fatawa Razawiyya Volume 3

If the types are counted, they are numerous. For example, sulfur (kibrit) is also yellow, red, black, white, yellowish, greenish, etc., then there are many types of it. And the weaver's weight was mentioned.

(176) Tausul (177) Bat (178) Tajalli's weights (179) Weights for weighing, if they are made of stone. (180) Mortars (Kharal), why shouldn't they be counted?

I say: But here is a subtle point that has not passed through my sight in books, 'some stones by nature or in some direction produce teeth (projections) such that they are uneven, such that upon striking with the palm, the entire surface of the palm does not touch the stone's surface; in this case, often the palm is not touched, so tayammum (dry ablution) will not be valid. Therefore, in the margins where the passage mentions 'rubbing the hand on the earth's surface', bringing the hand back is a Sunnah. Here it will be obligatory that either all the palm or at least most of it touches the stone; this same ruling applies to uneven ground and gravel, etc., which must be kept in view.

Then I say: The ruling that, if Allah Almighty wills, will come ahead is that the face and both hands must be wiped with most of [the dust of] 'earth genus' (jins-e-arz). If that earth genus on which most of the palm touched is such that its surface is smooth, then it is correct to wipe the face with it, otherwise if it was wiped with the part that did not touch the earth genus, then tayammum will not be performed.

Then I say: That which passed is that for the back of the hand, only one strike on the earth genus is enough, it is not necessary to do it again, in this state when the entire palm touched the earth genus; otherwise, if most of it touched and wiping of the face and both hands was done with that same most part, then it is sufficient for wiping those parts. The remaining parts of the hand itself for which the encompassing (istiy'ab) was not done, tayammum did not happen, therefore in this case it is necessary to wipe them with the palms as well.

[Boxed Text] Arabic: And all of this, even if I have not seen it, is correct and clear, if Allah Almighty wills. So memorize it, you will be protected. And Allah Almighty knows best. Urdu Translation: All this, though it has not passed through my sight, if Allah Almighty wills, is correct and clear, so remember it, you will be safe, and Allah Almighty knows best. (T)

(181) Mica (Abrak) is also a stone according to the experts, so it is necessary that tayammum should be permissible from it too. It is in Anwar al-Asrar:

Note: This word is like this with 'Kaf' in Urdu. In the poor man's (faqir's) opinion, it is possible that the original is 'Abraq' with 'Qaf', derived from 'baraqat' (brilliance) meaning very shiny, just as in Persian 'Ablaq' is called 'Ablak'. 12 Aminah Ghafaralahu (M)

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 3

यदि प्रकारों की गणना की जाए तो वे असंख्य हैं। उदाहरण के लिए, गंधक (किबरीत) भी पीला, लाल, काला, सफेद, पीलापन लिए हुए, हरापन लिए हुए होता है, फिर इसकी अनेक किस्में होती हैं। और जुलाहे के वज़न का वर्णन किया गया।

(176) तौसुल (177) बाट (178) तजल्ली के बाट (179) तोलने के बाट यदि वे पत्थर के हों। (180) खरल क्यों न गिने जाएँ।

मैं कहता हूँ: लेकिन यहाँ एक सूक्ष्म बिंदु है जो पुस्तकों में मेरी दृष्टि से नहीं गुज़रा, 'कुछ पत्थर स्वभाव से या किसी दिशा में ऐसे दांत (उभार) पैदा करते हैं कि वे ऊबड़-खाबड़ होते हैं, इस तरह कि हथेली से प्रहार करने पर हथेली की पूरी सतह पत्थर की सतह को नहीं छूती; इस स्थिति में अक्सर हथेली नहीं छू पाती, इसलिए तयम्मुम (शुष्क वूज़ू) मान्य नहीं होगा। इसलिए हाशियों में जहाँ 'जमीन की सतह पर हाथ मलना' उल्लेखित है, हाथ को पीछे लाना सुन्नत है। यहाँ यह अनिवार्य होगा कि या तो पूरी हथेली या कम से कम उसका अधिकांश भाग पत्थर को छुए; यही नियम ऊबड़-खाबड़ ज़मीन और कंकड़ आदि पर लागू होता है जिसे ध्यान में रखा जाना चाहिए।

फिर मैं कहता हूँ: वह नियम जो, इंशा अल्लाह तआला, आगे आएगा वह यह है कि चेहरे और दोनों हाथों का 'ज़मीन की नस्ल' (जिन्स-ए-अर्श) के अधिकांश भाग से पोंछना (मसाह) आवश्यक है। यदि वह ज़मीन की नस्ल जिस पर अधिकांश हथेली लगी थी ऐसी है कि उसका चेहरा (सतह) चिकना है, तो उससे चेहरा पोंछना सही है, अन्यथा यदि उस हिस्से से पोंछा गया जिसने ज़मीन की नस्ल को नहीं छुआ था, तो तयम्मुम नहीं होगा।

फिर मैं कहता हूँ: वह जो गुज़रा कि हाथ की पीठ के लिए ज़मीन की नस्ल पर केवल एक प्रहार काफी है, उसे दोबारा करना ज़रूरी नहीं है, इस स्थिति में जब पूरी हथेली ज़मीन की नस्ल को छू गई; अन्यथा यदि अधिकांश हिस्सा छू गया और चेहरे व दोनों हाथों का मसाह उसी अधिकांश भाग से किया गया, तो उन अंगों के मसाह के लिए पर्याप्त है। खुद हाथ के जो बाकी हिस्से रह गए जिनका घेराव (इस्तियाब) नहीं हुआ, तयम्मुम नहीं हुआ, इसलिए इस स्थिति में उन्हें हथेलियों से भी पोंछना आवश्यक है।

[बॉक्स किया गया पाठ] अरबी: और यह सब, भले ही मैंने इसे न देखा हो, सही और स्पष्ट है, यदि अल्लाह तआला ने चाहा। तो इसे याद कर लो, तुम सुरक्षित रहोगे। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर

जानता है। उर्दू अनुवाद: यह सब अगरचे मेरी नज़र से न गुज़रा मगर इंशा अल्लाह तआला सही व वाज़ेह है तो इसे याद रखो महफ़ूज़ रहोगे और खुदाए तआला खूब जानने वाला है। (त)

(181) अभ्रक (अबरक) भी विशेषज्ञों के स्पष्टीकरण के अनुसार पत्थर है, तो निश्चित रूप से इससे भी तयम्मुम जायज़ होना चाहिए। अनवारुल असरार में है:

नोट: यह शब्द उर्दू में इसी तरह 'काफ़' से है। फ़क़ीर की राय में संभव है कि असल 'अबरक़' 'क़ाफ़' से हो, 'बराक़त' से निकला हुआ यानी अत्यंत चमकदार, जिस तरह फ़ारसी में 'अबलाक़' को 'अबलाक' कहते हैं। 12 आमिना ग़फ़रलाहू (म)

पेज 647 का 756

اقسام گنی جائیں تو شمار بہت ہو مثلاً کبریت بھی زرد، سرخ، سیاہ، سفید، زرد مائل، سبزی مائل بکھبدی، پھر نگی متعدد اقسام کی ہوتی ہے۔ اور درزی کی بیٹا شمار فرمائی۔

(۱۷۶) توسل (۱۷۷) بٹا (۱۷۸) تجلی کے باٹ (۱۷۹) تولنے کے باٹ کہ پتھر کے ہوں۔ (۱۸۰) کھرل کیوں نہ معدود ہوں۔

اقول: مگر یہاں ایک دقیقہ ہے جس کا ذکر کتب میں نظر سے نہ گزرا بعض پتھر پیدائشی یا ان میں دانت پیدا کرنے سے ایک سمت میں ایسے کھڈرے نا ہموار ہوتے ہیں کہ ان پر کف دست کی ضرب سے ہتھیلی کی پوری سطح پتھر سے مس نہ کرے گی اس صورت میں اگر اکثر کف کو مس نہ ہوا تیمم صحیح نہ ہوگا لہٰذا اقبال وادبار جن کا ذکر حواشی میں گزرا یعنی ہاتھ جنس ارض پر ملنا آگے لے جانا پیچھے لانا کہ سنت تھا یہاں فرض ہوگا کہ تمام کف یا کم از کم اکثر کو پتھر سے مس ہو جائے، یہی حکم کنکریاں ناہموار زمین وغیرہ میں ملحوظ رہنا لازم۔

ثم اقول: وہ حکم کہ ان شاء اللہ الکریم آگے آتا ہے کہ چہرہ و ہر دو دست کو اکثر کف سے مس کرنا ضرور ہے یہاں اگر جنس ارض پر خود اکثر کف ہی کا مس ہوا تو لازم ہوگا کہ یہ اکثر تمام و کمال یا اس کا اتنا حصہ جس پر اکثر صادق آئے چہرہ ہر دو دست سے مس کرے ورنہ اگر کف سے مس کیا اور وہ اس حصے سے مل کر اکثر کف ہے جس نے جنس ارض سے مس نہ کیا تھا تو تیمم نہ ہوگا۔

ثم اقول: وہ جو گزرا کہ کف دست کے لیے جنس ارض پر ضرب ہی بس ہے انہیں دوبارہ مس نہ کرے اس حالت میں ہے کہ پورے کف دست کا جنس ارض سے مس ہوگیا ہو ورنہ اگر اکثر کا مس

ہوا اور اسی اکثر سے چہرہ و ہر دو دست کو مس کیا تو یہ مس ان کے لیے کافی سہی خود کف دست کے جو بعض حصے باقی رہ گئے استیعاب نہ ہوا تیمم نہ ہوا لہٰذا اس صورت میں لازم ہے کہ ہتھیلیوں پر بھی ہاتھ پھیرے۔

وھذا کلہ وان لم ارہ صحیح واضح ان شاء اللہ تعالٰی | یہ سب اگرچہ میری نظر سے نہ گزرا مگر ان شاء اللہ تعالٰی صحیح فاحفظ تحفظ واللہ تعالٰی اعلم۔ | وواضح ہے تو اسے یاد رکھو محفوظ رہوگے اور خدائے تعالٰی خوب جانے والا ہے۔ (ت)

(۱۸۱) ابرک عہ بھی حسب تصریح اہل فن پتھر ہے تو ضرور کہ اس سے بھی تیمم جائز ہو۔ انوار الاسرار میں ہے:

عہ: یہ لفظ اردو میں یونہی کاف سے ہے فقیر کی رائے میں ممکن کہ اصل ابرق قاف سے ہو براقت سے ماخوذ یعنی نہایت چمکدار جس طرح فارسی میں ابلق کو ابلک کہتے ہیں۔ ۱۲ امنہ غفرلہ (م)

Fatawa Razawiyya Volume 3

Hajar al-Talq is a shining stone composed of layers, etc. (Talc is a shiny stone made up of several sheets. T). It is mentioned in Jami' ibn al-Baytar from Muhammad bin Abdun:

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
(Talq) Hajarun barraqun yatahallalu idha duqqa ila taqatin sigharin diqaqin.	Talc (Abrak) is a very shiny stone; when it is crushed, it disintegrates into small, thin layers. (T)

In the same source from Dioscorides:

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
Al-Talqu hajarun yakunu bi-Qubrusa shabihun bi'l-shabbi al-Yamani yatashazzā wa tatafassakhu shazayahu faskhan wa yulqā dhalika al-faskhu fi al-nari wa yaltahibu wa yakhruju wa huwa mutaqiddun illa annahu la yahtariqu.	Talc is a stone in Cyprus similar to Yemeni alum that splits into layers and its layers break into pieces. This piece is put into fire and it bursts into flames and emerges glowing, but it does not burn. (T)

In Tadhkira al-Antaki:

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
Huwa zi'baqun khalat-hu ajza'un ardiyyatun wa taghallaba 'alayhi al-yubsu fatabal-lada tabaqatin in'aqadat bi'l-bard.	It is mercury mixed with earthy parts, dominated by dryness, which solidified into layers due to cold. (T)

In Makhzan:

(Arabic/Persian Text)	(Urdu Translation)
Mahiyat-e-an jisme madani ast mutakawwin az zibaq-e-khalis wa kibrit-e-qalile ghalib bar an ardiyat wa yubs. Guftah-and du sifat me bashad yake safaihi waraq waraq mi gardad duwwam manand-e-sang-e-jass.	Its nature is a mineral body. It is formed from pure mercury and a little sulfur; earthiness and dryness dominate it. It is said that there are two types: one is foliated which becomes sheet after sheet, the second type is like gypsum stone. (T)

1. Anwar al-Asrar
2. Jami' Ibn al-Baytar

3. Jami' Ibn al-Baytar
4. Tadhkira Dawud al-Antaki, letter 'Ta', Mustafa al-Babi Egypt 1/233
5. Makhzan al-Adwiya, chapter 'Ta' with 'Lam', printed by Nawal Kishore Kanpur p. 409

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

हजर-ए-तलक़ (तलक़ का पत्थर) एक चमकने वाला पत्थर है जो कई परतों से मिलकर बना है, आदि। (अभ्रक का पत्थर एक चमकदार पत्थर होता है जो कई पत्रों से मिला होता है। त)। जामि' इब्न-ए-बैतार में मुहम्मद बिन अब्दून से वर्णित है:

(अरबी पाठ)	(उर्दू अनुवाद)
(तलक़) हजरुन बर्राकुन यतहल्लु इज़ा दुक़्क़ा इला ताक़ातिन सिग़ारिन दिक़ाक़िन।	तलक़ (अभ्रक) एक बहुत चमकदार पत्थर होता है जब इसे कूटा जाता है तो छोटी-छोटी बारीक परतों में तब्दील हो जाता है। (त)

इसी में डिस्कोराइड्स से है:

(अरबी पाठ)	(उर्दू अनुवाद)
अल-तलकु हजरुन यकूनु बि-कुब्रुसा शबीहुन बिल-शब्बि अल-यमनी यतशज़्ज़ा व ततफस्सखु शज़ायाहु फ़स्ख़न व युल्क़ा ज़ालिक अल-फ़स्ख़ु फ़ि अल-नारि व यल्तहिबु व यखरुजु व हुवा मुतक़िद्दुन इल्ला अन्नहु ला यह्तरिकु।	तलक़, साइप्रस में यमनी फिटकरी (यमनी शब) के समान एक पत्थर है जो परतों में फट जाता है और उसकी परतें टुकड़े-टुकड़े हो जाती हैं। उस टुकड़े को आग में डाला जाता है और वह भड़क उठता है और चमकते हुए बाहर निकलता है लेकिन वह जलता नहीं है। (त)

तज़किरा अंताकी में है:

(अरबी पाठ)	(उर्दू अनुवाद)
हुवा ज़िअ़बक़ुन ख़लत-हु अज़्ज़ाउन अर्ज़िय्यतुन व तग़ल्लबा अ़लैहि अल-युब्सु फ़तबल्-लदा तबक़ातिन इनअ़क़दत बिल-बर्द।	वह पारा है जिसमें ज़मीनी अज्ज़ा (अंश) मिल गए हैं और इस पर खुश्की ग़ालिब (प्रभावी) हो गई है, जिससे यह ऐसी परतों में जम गया है जो ठंडक के कारण बंध गई हैं। (त)

मखज़न में है:

(अरबी/फारसी पाठ)	(उर्दू अनुवाद)
माहियत-ए-आँ जिस्मे मदनी अस्त मुतकव्विन अज़ ज़ीबक़-ए-ख़ालिस व किबरीत-ए-क़लीले ग़ालिब बर आँ अर्ज़ियत व युब्स। गुफ़्ता-अंद दु सिफ़त मे बाशद यके सफ़ाइही वरक़ वरक़ मी गरदद दुव्वम मानिन्द-ए-संग-ए-जस्स।	इसकी असलियत एक खनिज पिंड है। यह शुद्ध पारे और थोड़े गंधक से बनता है, इस पर ज़मीनी तत्व और खुश्की ग़ालिब होती है। कहा गया है कि यह दो प्रकार का होता है, एक पत्रक (सफ़ाइही) जो परत-दर-परत हो जाता है, दूसरा प्रकार जिप्सम (गच) पत्थर की तरह होता है। (त)

1. अनवार अल-असरार
2. जामि' इब्न अल-बैतार
3. जामि' इब्न अल-बैतार
4. तज़किरा दाऊद अल-अंताकी, अक्षर 'ता', मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/233
5. मखज़न अल-अदविया, अध्याय 'ता' और 'लाम', नवल किशोर कानपुर द्वारा मुद्रित पृष्ठ 409

पृष्ठ 648 / 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

حجر الطلق حجر براق مؤلف من ورقات الخ (ابرک کا پتھر ایک چمکدار پتھر ہوتا ہے جو چند ورقوں سے ملا ہوا ہوتا ہے۔ ت) جامع ابن بیطار میں محمد بن عبدون سے ہے:

(عربی عبارت) **(اردو ترجمہ)**

(طلق) حجر براق یتحلل اذا دق طلق (ابرک) ایک بہت چمکدار پتھر ہوتا ہے جب اسے کوٹا جاتا الی طاقات صغار دقاق۔ ہے تو چھوٹی چھوٹی باریک تہوں میں تحلیل ہو جاتا ہے۔ (ت)

اسی میں دیسقوریدوس سے ہے:

(عربی عبارت) **(اردو ترجمہ)**

الطلق حجر یکون بقبرس شبیه بالشب الیمانی یتشظی وتتفسخ شظایاه فسخا و یلقی ذلك الفسخ فی النار ویلتهب و یخرج وهو متقد الا انه لا یحترق۔

طلق، قبرس میں شب یمانی کے مشابہ ایک پتھر ہوتا ہے جو تہوں میں چاک ہو جاتا ہے اور اس کی تہیں ٹکڑے ٹکڑے ہو جاتی ہیں اس ٹکڑے کو آگ میں ڈالا جاتا ہے اور بھڑک اٹھتا ہے اور روشن ہو کر نکلتا ہے مگر وہ جلتا نہیں۔ (ت)

تذکرہ انطاکی میں ہے:

(عربی عبارت) **(اردو ترجمہ)**

هو زئبق خالطه اجزاء ارضیة و تغلب علیه الیبس فتبلد طبقات انعقدت بالبرد۔

وہ پارہ ہے جس سے زمینی اجزاء مل گئے ہیں اور اس پر خشکی غالب کر کے ایسی تہوں میں جما دیا ہے جو ٹھنڈک کی وجہ سے بندھ گئی ہیں۔ (ت)

مخزن میں ہے:

(عربی/فارسی عبارت)	(اردو ترجمہ)
ماہیت آں جسمے معدنی است متکون از زیبق خالص و کبریت قلیلے غالب براں ارضیت و یبس۔ گفتہ اند دو صفت مے باشد یکے صفائحی ورق ورق میگردد دوم مانند سنگ جص۔	اس کی ماہیت ایک معدنی جسم ہے۔ خالص پارہ اور تھوڑی کبریت سے بنتا ہے اس پر ارضیت اور خشکی غالب ہوتی ہے۔ کہا گیا ہے کہ وہ دو قسم کا ہوتا ہے ایک صفائحی جو ورق ورق ہو جاتا ہے دوسری قسم گچ کے پتھر کی طرح ہوتی ہے۔ (ت)

1. انوار الاسرار
2. جامع ابن بیطار
3. جامع ابن بیطار
4. تذکرہ داؤد انطاکی حرف الطاء مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۲۳۳
5. مخزن الادویہ فصل الطاء مع اللام مطبوعہ نولکشور کانپور ص ۴۰۹

Fatawa Rizwia, Volume 3

In fact, gypsum stone is a type of it. It is stated in Al-Jami' from Zakariya Razi's book *Ilal al-Ma'adin*:

Arabic	Translation
Talc is of two types; one type is laminated, formed from gypsum stones and is found on the island of Cyprus.[1]	Talc has two types. One type is broad and wide, which is made from gypsum stones and is found on the island of Cyprus. (T)

In the same source, from Ghafiqi:

Arabic	Translation
This genus is 'Jibseen' (gypsum), and it is the Andalusian talc.[2]	The name of this type is 'Jibseen', and this is the Andalusian talc. (T)

In the same source, from Ishaq bin Imran:

Arabic	Translation
Jibseen is gypsum, and gypsum is Jibseen. It is a soft stone, very bright, white, red, or a mixture of both. It belongs to the rocky earthly bodies.[3]	Jibseen is gypsum itself, and gypsum is this Jibseen. It is a soft, very shiny stone, white, red, or a mixture of both, and it is among the rocky earthly bodies. (T)

In fact, Antaki said that gypsum is actually raw talc. It is mentioned in *Tadhkirah*:

Arabic	Translation
(Jibseen) is gypsum, and in reality, it is talc that has not ripened. It is said it was mercury over which earthly parts dominated, so it turned into stone.[4]	Jibseen is the same as gypsum, and it is in fact that talc which has not yet matured. It is also said that it is mercury which, when dominated by earthly components, became stone. (T)

Since the permissibility of Tayammum with gypsum is explicitly mentioned in general books of texts, commentaries, and fatwas, and the author of the school (Madhhab) himself has stated it, then its permissibility with talc is also necessary. And Allah Almighty knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is more complete and perfect.

Third Point: Those items with which, according to our Imams (may Allah be pleased with them), Tayammum is not valid. It is evident that apart from the countable items

that are of the nature of the earth, all things in the world are, by the consensus of our Imams, unfit for Tayammum. So counting them all is impossible, but we will mention them here as before, those upon which texts in books are currently under consideration. Regardless of whether there is any ambiguity in them or not—for example, scholars have explicitly stated that Tayammum with grass, wood, henna, and snow is invalid—on this, some common people might say why scholars listed such things, as everyone knows Tayammum cannot be done with them. This is their misunderstanding. Even if everyone knows, it is only because the scholars have informed them; otherwise, would they have known it on their own? Rather, the statement...

---

1. Jami' Ibn al-Bitar
2. Jami' Ibn al-Bitar
3. Jami' Ibn al-Bitar
4. Tadhkirah Da'ud al-Antaki, letter Jeem, Dar al-Kutub al-Ilmiyyah, Beirut 1/103

फ़तावा रज़विया, खंड 3

वास्तव में जिप्सम पत्थर इसी की एक किस्म है। ज़करिया राजी की पुस्तक 'इलल अल-मा'आदिन' से 'जामे' में है:

अरबी	अनुवाद
अभ्रक (टैल्क) की दो किस्में हैं; एक किस्म वह है जो परतदार होती है, जिप्सम के पत्थरों से बनती है और साइप्रस द्वीप में पाई जाती है।[1]	अभ्रक की दो किस्में हैं। एक किस्म वह है जो चौड़ी-चौड़ी होती है जो जिप्सम के पत्थरों से बनती है, और साइप्रस द्वीप में पैदा होती है। (त)

उसी में ग़ाफ़िक़ी से है:

अरबी	अनुवाद
यह प्रजाति 'जिबसीन' है और यही अंदलसी अभ्रक है।[2]	इसी किस्म का नाम जिबसीन है और यही अंदलसी अभ्रक है। (त)

उसी में इसहाक़ बिन इमरान से है:

अरबी	अनुवाद
जिबसीन ही जिप्सम है, और जिप्सम ही जिबसीन है। यह एक नरम, बहुत चमकदार, सफ़ेद, लाल और दोनों के मिश्रण वाला पत्थर है और यह पथरीले ज़मीनी शरीरों में से है।[3]	जिबसीन जिप्सम ही है और जिप्सम यही जिबसीन है और यह नरम, खूब चमकदार, सफ़ेद, सुर्ख और दोनों का मिश्रण रखने वाला एक पत्थर होता है और यह संगी ज़मीनी अजसाम (पथरीले ज़मीनी शरीरों) से है। (त)

बल्कि अंताकी ने कहा कि जिप्सम वास्तव में कच्चा अभ्रक है, 'तज़किरह' में है:

अरबी	अनुवाद
(जिबसीन) जिप्सम है और यह हकीकत में वह अभ्रक है जो पका नहीं है। कहा गया है कि यह पारा है जिस पर मिट्टी के हिस्सों का प्रभुत्व हो गया तो वह पत्थर बन गया।[4]	जिबसीन वही जिप्सम है और यह हकीकत में वह अभ्रक है जो अभी पका न हो और कहा गया यह पारा है जिस पर ज़मीनी अज़सा (मिट्टी के अंशों) का ग़लबा हुआ तो पत्थर बन गया। (त)

और जिप्सम से तयम्मुम की अनुमति आम किताबों, शरह और फ़तवों में स्पष्ट है और स्वयं मज़हब के लेखक ने इस पर स्पष्ट निर्देश दिया है, तो अभ्रक से भी अनुमति आवश्यक है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है और उसका ज्ञान, उसकी महिमा महान हो, सबसे पूर्ण और सबसे मज़बूत है।

तीसरा स्थान: वे कुछ चीज़ें जिनसे हमारे इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के नज़दीक तयम्मुम सही नहीं है। ज़ाहिर है कि गिनी-चुनी चीज़ें जो ज़मीन की श्रेणी में आती हैं, उनके अलावा दुनिया की तमाम चीज़ें हमारे इमामों की सर्वसम्मति (इजमा) से तयम्मुम के लिए अनुपयुक्त हैं। तो उनकी गणना करना असंभव है, लेकिन हम यहाँ पहले की तरह उनका ज़िक्र करेंगे जिन पर किताबों में स्पष्ट उल्लेख वर्तमान में विचाराधीन है। चाहे उनमें कोई अस्पष्टता हो या न हो—जैसे कि विद्वानों ने स्पष्ट कहा है कि घास, लकड़ी, मेहंदी, बर्फ़ से तयम्मुम बातिल (अमान्य) है—इस पर कुछ आम लोग कहेंगे कि विद्वानों ने ऐसी चीज़ें क्यों गिनीं, इनसे तयम्मुम न हो सकना तो हर व्यक्ति जानता है। यह उनकी ग़लतफ़हमी है। अगर हर व्यक्ति जानता भी है, तो इसलिए कि विद्वानों ने बता दिया है, वर्ना क्या वह अपने घर से जान लेता? बल्कि यह बात...

---

1 जामे इब्न अल-बैतार 2 जामे इब्न अल-बैतार 3 जामे इब्न अल-बैतार 4 तज़किरह दाऊद अल-अंताकी, हर्फ़ अल-जीम, दार अल-कुतुब अल-इलमिया, बेरूत 1/103

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

بلکہ سنگِ گچ اسی کی ایک قسم ہے۔ جامع میں زکریا رازی کی کتاب علل المعادن سے ہے:

عربی	ترجمہ
الطلق جنسان جنس یکون متصفحاً یتکون من حجارۃ الجص ویکون في جزیرۃ قبرس[1]۔	ابرق کی دو قسمیں ہیں ایک قسم وہ کہ چوڑی چوڑی ہوتی ہے جو گچ کے پتھروں سے بنتی ہے، اور جزیرہ قبرس میں پیدا ہوتا ہے۔ (ت)

اسی میں غافقی سے ہے:

عربی	ترجمہ
ھذا الجنس ھو الجبسین وھو الطلق الاندلسي[2]۔	اسی قسم کا نام جبسین ہے اور یہی اندلسی ابرق ہے۔ (ت)

اسی میں اسحق بن عمران سے ہے:

عربی	ترجمہ
الجبسین ھو الجص والجص ھو الجبسین وھو حجر رخو براق ابیض واحمر وممتزج بینھما وھو من الابدان الحجریۃ الارضیہ[3]۔	جبسین گچ ہی ہے اور گچ یہی جبسین ہے اور یہ نرم، خوب چمکدار، سفید، سرخ اور دونوں کی آمیزش رکھنے والا ایک پتھر ہوتا ہے اور یہ سنگی زمینی اجسام سے ہے۔ (ت)

بلکہ انطاکی نے کہا گچ حقیقۃً کچی ابرک ہے، تذکرہ میں ہے:

عربی	ترجمہ
(جبسین) هو الجص وهو في الحقيقة طلق لم ينضج وقيل انه زئبق غلبته الاجزاء الترابية فتحجر[4]۔	جبسین وہی گچ ہے اور یہ حقیقت میں وہ ابرک ہے جو ابھی پکی نہ ہو اور کہا گیا یہ پارہ ہے جس پر زمینی اجزا کا غلبہ ہوا تو پتھر بن گیا۔ (ت)

اور گچ سے جوازِ تیمم عامہ کتب متون وشروح وفتاوٰی میں منصوص اور خود محرر مذہب نے اس پر نص فرمایا تو ابرک سے بھی جواز لازم۔ واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

مقام سوم: وہ بعض اشیاء جن سے ہمارے ائمہ رضی اللہ تعالٰی عنہم کے نزدیک تیمم صحیح نہیں۔ ظاہر ہے کہ اشیاء معدودہ کہ جنسِ ارض ہیں ان کے سوا دنیا کی تمام چیزیں ہمارے ائمہ کے اجماع سے نا قابلِ تیمم ہیں تو ان کا شمار نامقدور مگر ہم یہاں بدستور ان کا ذکر کریں جن پر کتب میں نص اس وقت پیشِ نظر۔ عام ازیں کہ ان میں کوئی محل خفا ہو یا نہ ہو جیسے علما نے نص فرمایا ہے کہ گھاس لکڑی مہندی برف سے تیمم باطل ہے اس پر بعض عوام کہیں گے علما نے ایسی چیزیں کیوں گنائیں ان سے تیمم نہ ہو سکنا ہر شخص جانتا ہے یہ اُن کی غلط فہمی ہے ہر شخص اگر جانتا بھی ہے تو یوں ہی کہ علمائے کرام افادہ فرما گئے ورنہ کیا اپنے گھر سے جان لیتا قول بلکہ

---

1 جامع ابن بیطار 2 جامع ابن بیطار 3 جامع ابن بیطار 4 تذکرہ داؤد انطاکی، حرف الجیم، دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱/۱۰۳

These are now clear to you, otherwise, there is such obscurity in them that it was not clear to some Mujtahid Imams that they are impossible. In the Muqaddimah Ashmawiya and its commentary by Ahmad bin Turki al-Maliki, it is stated:

(The obligations of Tayammum are four) The fourth obligation is pure Sa'id. And this is everything that has risen on the surface of the earth. Meaning it is of the genus of the earth, such as snow, or pebbles, or minerals other than currency (gold and silver) and gems, unless nothing else is found besides them. (T)

In the marginalia of Yusuf Safati al-Maliki, it is stated:

His words "from snow" - meaning snow, similarly frozen water and ice. Likewise, one can perform Tayammum on salt, even if it is manufactured from reeds or Arak wood. The reliable opinion is that Tayammum is permissible on wood, crops, and grass under three conditions: (1) When no other substance is found. (2) And the time is short. (3) And it is not possible to uproot it. So, whoever is on a tree or a vessel and finds neither water nor soil, they shall perform Tayammum on the wood. This is the reliable opinion. (T)

Then write more details and in them, consider the context of obscurity, doubt, and fresh benefit. And success is from Allah.

Stated Texts: (1) Frozen water, like hail-snow even if it's slab after slab. [References: Tabyin, Fath, Bahr, Majma' al-Anhur, Hindiyah]. (2) Cloth (3) Felt. [Reference: Khaniyah]. (4) Trees. [References: Tuhfah, Bada'i, Idah, Hindiyah, Fath, Hilyah, Bahr]. (5) Grass. [References: The first four books (Tuhfah, Bada'i, Idah, Hindiyah) and Hilyah. (T)]. (6) Wood. [References: Bada'i, Hilyah, Hindiyah]. (7) Chaff. [Reference: Sirajiyah]. (8) Vegetation (9) Fruits. [Reference: Ghunyah].

1. Muqaddimah Ashmawiya Sharh Ahmad bin Kamal Turki al-Maliki
2. Hashiya Yusuf Safati

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

ये अब आपके लिए स्पष्ट हैं, अन्यथा उनमें ऐसी अस्पष्टता है कि कुछ मुज्तहिद इमामों पर उनका असंभव होना स्पष्ट नहीं हुआ। मुक़द्दिमा अश्माविया और उसकी शरह अहमद बिन तुर्की अल-मालिकी में है:

(तयम्मुम के फ़राइज़ चार हैं) चौथा फ़र्ज़, पाक सईद। और यह हर वह चीज़ है जो पृथ्वी की सतह पर चढ़ी हुई है। यानी पृथ्वी की श्रेणी से हो जैसे बर्फ या कंकड़ या नक़द (सोना-चांदी) और मोती के अलावा कोई धातु, सिवाय इसके कि इन दोनों के अलावा कुछ न मिले। (त)

हाशिया यूसुफ सफ़ती मालिकी में है:

उनके शब्द "मिन् सलज" - बर्फ़ इसके समान जमा हुआ पानी और ओला भी है। इसी तरह नमक पर भी तयम्मुम कर सकता है चाहे वह सरकंडों या अराक से बना हो। और विश्वसनीय यह है कि लकड़ी पर, खेती पर और घास पर तीन शर्तों के साथ तयम्मुम जायज़ है: (1) जब दूसरी चीज़ न मिले। (2) और समय कम हो। (3) और उसे उखाड़ना संभव न हो। तो जो व्यक्ति किसी पेड़ या सवारी पर हो और उसे न पानी मिले न मिट्टी, तो वह लकड़ी पर तयम्मुम कर लेगा। यही विश्वसनीय है। (त)

फिर और विवरण लिखें और उनमें संभवतः अस्पष्टता, संदेह और नए लाभ के अवसर का ध्यान रखें। और सफलता अल्लाह की ओर से है।

नियत किए गए ग्रंथ: (1) जमा हुआ पानी। जैसे ओले की बर्फ चाहे वह सिल्ली पर सिल्ली हो। [संदर्भ: तबीन, फ़तह, बहर, मज्मअ अल-अन्हुर, हिन्दिया]। (2) कपड़ा (3) नमदा। [संदर्भ: खानिया]। (4) पेड़। [संदर्भ: तोहफा, बदाए, ईज़ाह, हिन्दिया, फ़तह, हिल्या, बहर]। (5) घास। [संदर्भ: पहली चार किताबें (तोहफा, बदाए, ईज़ाह, हिन्दिया) और हिल्या। (त)]। (6) लकड़ी। [संदर्भ: बदाए, हिल्या, हिन्दिया]। (7) भूसा। [संदर्भ: सिराजिया]। (8) वनस्पतियाँ (9) फल। [संदर्भ: गुन्या]।

1. मुक़द्दिमा अश्माविया शरह अहमद बिन कमाल तुर्की अल-मालिकी
2. हाशिया यूसुफ सफ़ती

पृष्ठ 756 का 650

یہ اب تمہارے لیے ظاہر ہیں ورنہ ان میں وہ خفا ہے کہ بعض ائمہ مجتہدین پر ان کا نا قابل ہو نا ظاہر نہ ہوا مقدمہ عشماویہ اور اس کی شرح احمد بن ترکی المالکی میں ہے :

(فرائضہ اربعۃ) رابعھا (الصعید الطاھر وھو کل ماصعد علی وجہ الارض) ای من جنسھا من ثلج اوخضخاض اومعدن غیر نقد وجوھر الا ان لایجد غیرھما - | تیمم کے فرائض چار ہیں۔ چوتھا فرض، پاک صعید۔ اور یہ ہر وہ چیز ہے جو روئے زمین پر چڑھی ہوئی ہے۔ یعنی جنس زمین سے ہو جیسے برف یا خضخاض یا نقد (سونے چاندی) اور موتی کے علاوہ کوئی دھات مگر یہ کہ ان دونوں کے سوا کچھ نہ ملے۔ (ت)

حاشیہ یوسف سفطی مالکی میں ہے:

قولہ من ثلج ومثلہ الماء الجامد والجلید وکذا یتیمم علی الملح ولو کان مصنوعاً من حلفاء اومن اراك والمعتمد انہ یجوز التیمم علی الخشب وعلی الزرع وعلی الحشیش بشروط ثلثۃ اذا لم یجد غیر ذلك وضاق الوقت ولم یمکن قلعہ فمن کان علی شجرۃ او مرکب ولم یجد ماء ولا تراباً یتیمم علی الخشب ھذا ھو المعتمد - | ان کی عبارت "من ثلج"۔ برف، اس کے مثل جما ہوا پانی اور پالا بھی ہے۔ اسی طرح نمک پر بھی تیمم کر سکتا ہے اگرچہ حلفاء یا اراک سے بنا ہوا ہو اور معتمد یہ ہے کہ لکڑی پر، کھیتی پر اور گھاس پر تین شرطوں سے تیمم جائز ہے: (1) جب دوسری چیز نہ ملے۔ (2) اور وقت تنگ ہو۔ (3) اور اسے اکھاڑنا ممکن نہ ہو تو جو شخص کسی درخت یا سواری پر ہو اور اسے نہ پانی ملے نہ مٹی تو وہ لڑی پر تیمم کر لے گا۔ یہی معتمد ہے۔ (ت)

پھر مزیدات لکھیں اور ان میں غالباً محل خفا و شبہ و افادہ تازہ کا لحاظ رکھیں ۔ وباللہ التوفیق۔

منصوصات: (1) جما ہوا پانی۔ جیسے گُل کا برف اگرچہ سل کی سل ہو۔ تبیین، فتح، بحر، مجمع الانہر، ہندیہ۔ (2) کپڑا (3) نمدا۔ خانیہ۔ (4) درخت تحفہ بدائع ایضاح ہندیہ فتح حلیہ بحر۔ (5) گھاس اربعہ اول والحلیہ (پہلی چاروں کتابیں (تحفہ، بدائع، ایضاح، ہندیہ) اور حلیہ۔ ت) (6) لکڑی بدائع حلیہ ہندیہ (7) کھورا سراجیہ (8) نباتات (9) میوے غنیہ

1 مقدمہ عشماویہ شرح احمد بن کمال ترکی المالکی 2 حاشیہ یوسف سفطی

(10) Henna: Zahiriyya, Khizana, Khizanat-ul-Fatawa, Hilya. (11) Indigo: The first two (i.e., Zahiriyya and Khizana. T). (12) Wheat: Muheet, Jawahir-ul-Akhlati, Munya, Kafi, Khulasa, Zahiriyya, Khizana. (13) Barley: Al-Awwalan wal-Khulasa (the first three (Muheet, Jawahir-ul-Akhlati) and Khulasa. T). (14) Every type of grain: Al-Thalatha al-Awwal (the first three (Muheet, Jawahir-ul-Akhlati, Munya). T). (15) Flour: Al-Thalatha al-Akhira, Khizanat-ul-Fatawa, Hilya, Jawhara, Bahr (The last three (Khulasa, Zahiriyya, Khizana), Khizanat-ul-Fatawa, Hilya, Jawhara, Bahr. T). (16) Sattu: Khizanat-ul-Fatawa, Hilya, Zahiriyya, Khizana. (17) All types of food: Munya. (18) Gold. (19) Silver: And their description will come ahead as well. (T). (20) Iron: Khania, Zahiriyya, Khizana, Kafi, Munya, Tuhfa, Bada'i, Zad-ul-Fuqaha, Jallabi, Burjandi, Khizanat-ul-Fatawa, Jami-ur-Rumuz, Hilya, Idah, Hindiyya. (21) Tin (Rang). (22) Lead (Sisa): Al-Khamsa al-Awwal, Khulasa, Sarajiyya, Akhlati, Miskeen (The first five (Khania, Zahiriyya, Khizana, Kafi, Munya), Khulasa, Sarajiyya, Akhlati, Miskeen. T).

[Arabic Citation]: They mentioned 'Al-Rasas' (1). It is stated in 'Al-Anwar' that Al-Rasas is lead (Usrub). In 'Al-Tadhkira', it says lead is meant when this name is used absolutely, while tin (Al-Qala'i) is specifically called 'Al-Qasdir' [end of quote]. This is also the implication of Galen's words quoted under 'Rasas' in 'Al-Jami'. However, 'Al-Tuhfa' and 'Al-Makhzan' stated the opposite, saying that by absolute term tin is meant, and it is called white lead (Rasas Abyad) and in Persian, it is called Arzeez [end of quote]. Zad-ul-Makhzan adds that in Hindi it is called 'Ranga', and if it is restricted with 'black' (aswad), it means lead, which in Hindi (continued on the next page)...

[Urdu Explanation]: The jurists have mentioned "Rasas". It is written in 'Al-Anwar': Rasas is this 'Usrub' (lead). And in 'Al-Tadhkira' it is: so 'Usrub' only will be meant when this name is spoken, and with the name 'Qasdir', 'Qala'i' (tin) is specific [end of quote]. And this is also the implication of Galen's speech which is quoted in 'Jami' under "Rasas". And in 'Tuhfa' and 'Makhzan' it is told opposite to this. In both, it is written thus: by absolute (use) 'Qala'i' (tin) is meant, and they call it 'Rasas Abyad' (white lead) and in Persian they call it 'Arzeez' [end of quote]. In 'Makhzan' there is also this more: and in Hindi they call it 'Ranga' and if it is restricted with 'Aswad' (black), then (rest on the next page)...

---

1. Tadhkira Uli al-Albab, under the word 'Rasas', Mustafa al-Babi, Egypt, 1/167.

2. Tuhfat al-Mu'minin, on the margin of Makhzan al-Adwiya, under the word 'Rasas', Nawal Kishore Kanpur, p. 303.

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरी)

(१०) मेहंदी: ज़हीरिया, ख़ज़ाना, ख़ज़ानत-उल-फ़तावा, हुलिया। (११) वस्मा अल-अवलान (पहली दोनों किताबें यानी ज़हीरिया और ख़ज़ाना। त) (१२) गेहूं: मुहीत, जवाहर-उल-अख्लाती, मुनिया, काफ़ी, खुलासा, ज़हीरिया, ख़ज़ाना। (१३) जौ: अल-अवलान वल-खुलासा (पहली तीनों (मुहीत, जवाहर-उल-अख्लाती) और खुलासा। त) (१४) हर किस्म का अनाज: अल-सलासा अल-अव्वल (पहली तीनों (मुहीत, जवाहर-उल-अख्लाती, मुनिया)। त) (१५) आटा: अल-सलासा अल-अख़ीरा, ख़ज़ानत-उल-फ़तावा, हुलिया, जौहरा, बहर (आखरी तीनों (खुलासा, ज़हीरिया, ख़ज़ाना), ख़ज़ानत-उल-फ़तावा, हुलिया, जौहरा, बहर। त) (१६) सत्तू: ख़ज़ानत-उल-फ़तावा, हुलिया, ज़हीरिया, ख़ज़ाना। (१७) भोजन की तमाम किस्में: मुनिया। (१८) सोना। (१९) चांदी: और आगे भी इन दोनों का बयान आएगा। (त)। (२०) लोहा: खानिया, ज़हीरिया, ख़ज़ाना, काफ़ी, मुनिया, तोहफ़ा, बदाए, ज़ाद-उल-फ़ुक़हा, जल्लाबी, बुर्जंदी, ख़ज़ानत-उल-फ़तावा, जामे-उर-रुमूज़, हुलिया, ईज़ाह, हिन्दिया। (२१) रांग (Tin)। (२२) सीसा (Lead): अल-ख़मसा अल-अव्वल, खुलासा, सिराजिया, अख्लाती, मिस्कीन (पहली पांचों (खानिया, ज़हीरिया, ख़ज़ाना, काफ़ी, मुनिया), खुलासा, सिराजिया, अख्लाती, मिस्कीन। त)।

[अरबी पाठ]: उन्होंने 'अर-रसास' (१) का ज़िक्र किया है। 'अल-अनवार' में कहा गया है कि रसास ही उस्रुब (सीसा) है। 'अत-तज़किरा' में है कि जब यह नाम मुतलक़ (साधारण तौर पर) बोला जाए तो उस्रुब ही मुराद होगा, और 'कसदीर' नाम के साथ 'कलई' (रांग) विशिष्ट है [समाप्त]। और यही जालिनोस के कलाम का अर्थ है जो 'अल-जामे' में 'रसास' के अंतर्गत उद्धृत है। इसके विपरीत 'अत-तोहफ़ा' और 'अल-मख़ज़न' में कहा गया है कि मुतलक़ से मुराद कलई है और इसे 'रसास अब्यज़' (सफेद रसास) कहते हैं और फ़ारसी में 'अरज़ीज़' कहते हैं [समाप्त]। 'ज़ाद-उल-मख़ज़न' में यह भी है कि हिंदी में इसे 'रांगा' कहते हैं, और यदि 'अस्वद' (काला) के साथ बांधा जाए तो वह उस्रुब है जिसे हिंदी (आगे अगले पृष्ठ पर)...

[उर्दू पाठ अनुवाद]: फ़ुक़हा (धर्मशास्त्रियों) ने "रसास" का ज़िक्र किया है। अनवार में लिखा है: रसास यह उस्रुब है। और तज़किरा में है: तो उस्रुब ही मुराद होगा जब यह नाम बोला जाए और कसदी के नाम के साथ कलई मख़सूस (विशिष्ट) है अह। और यही जालिनोस के कलाम का भी अर्थ है जो जामे में "रसास" के तहत नक़ल किया गया है। और तोहफ़ा व मख़ज़न में इसके बरअक्स (विपरीत) बताया। दोनों में यूँ लिखा है: मुतलक़ से मुराद कलई है और इसे रसास अब्यज़ कहते हैं और फ़ारसी

में अरज़ीज़ कहते हैं अह। मख़ज़न में मज़ीद (अधिक) यह भी है: और हिंदी में रांगा कहते हैं और अस्वद से मुक़य्यद (सीमित) हो तो (बाकी अगले पृष्ठ पर)...

---

1. तज़किरा उली अल-अलबाब, रसास शब्द के अंतर्गत, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र १ / १६७
2. तोहफ़तुल मोमिनीन, मख़ज़न अल-अद्विया के हाशिये पर, रसास शब्द के अंतर्गत, नवल किशोर कानपुर, पृ. ३०३

पृष्ठ ७५६ का ६५१

فتاوی رضویہ جلد سوم

(۱۰) مہندی ظہیریہ خزانہ، خزانۃ الفتاوی حلیہ (۱۱) وسمہ الاولان (پہلی دونوں کتابیں یعنی ظہیریہ اور خزانہ۔ ت) (۱۲) گیہوں محیط جواہر اخلاطی منیہ کافی خلاصہ ظہیریہ خزانہ (۱۳) جو الاولان والخلاصۃ (پہلی تینوں (محیط، جواہر اخلاطی) اور خلاصہ۔ ت) (۱۴) ہر قسم کا غلہ الثلثۃ الاول (پہلی تینوں (محیط، جواہر اخلاطی، منیہ)۔ ت) (۱۵) آٹا الثالثۃ الاخیرۃ خزانۃ الفتاوی حلیہ جوھرہ بحر (آخری تینوں (خلاصہ، ظہیریہ، خزانہ) خزانۃ الفتاوی، حلیہ، جوہرہ، بحر، ت) (۱۶) ستو خزانۃ الفتاوی حلیہ ظہیریہ خزانہ (۱۷) جملہ اقسام طعام منیہ (۱۸) سونا (۱۹) چاندی ویأتیان (اور آگے بھی ان دونوں کا بیان آئے گا۔ ت) (۲۰) لوہا خانیہ ظہیریہ خزانہ کافی منیہ تحفہ بدائع زاد الفقہا جلابی برجندی خزانۃ الفتاوی جامع الرموز حلیہ ایضاح ہندیہ۔ (۲۱) رانگ (۲۲) سیسہ عہ الخمسۃ الاول خلاصہ سراجیہ اخلاطی مسکین (پہلی پانچوں (خانیہ، ظہیریہ، خزانہ، کافی، منیہ) خلاصہ، سراجیہ، اخلاطی، مسکین۔ ت)

عہ: ذکروا الرصاص (۱) وقال في الانوار الرصاص ھو الاسرب وفی التذکرۃ الاسرب ھو المراد اذا اطلق ھذا الاسم والقلعی یخص بأسم القصدیر 1 اھ وھو مدلول کلام جالینوس المنقول في رصاص من الجامع وعکس في التحفۃ والمخزن فقالا از مطلق اومراد قلعی ست ورصاص ابیض نامند وبفارسی ارزیز 2 اھ - زادالمخزن وبہندیرانگاواز مقید باسوداسرب کہ ہندی

فقہا نے "رصاص" ذکر کیا ہے۔ انوار میں لکھا ہے: رصاص یہ اسرب ہے۔ اور تذکرہ میں ہے: تو اسرب ہی مراد ہو گا جب یہ نام بولا جائے اور قصدی کے نام کے ساتھ قلعی مخصوص ہے اھ اور یہی جالینوس کے کلام کا بھی مدلول ہے جو جامع میں "رصاص" کے تحت منقول ہے۔ اور تحفہ و مخزن میں اس کے برعکس بتایا۔ دونوں میں یوں لکھا ہے: مطلق سے مراد قلعی ہے اور اسے

رصاص ابیض کہتے ہیں اور فارسی میں ارزیز کہتے ہیں اھ مخزن میں مزید یہ بھی ہے: اور ہندی میں رانگا کہتے ہیں اور اسود سے مقید ہو تو (بقیہ برصفحہ آئندہ)

---

1 تذکرۃ اولی الالباب تحت لفظ رصاص مصطفی البابی مصر ۱ / ۱۶۷ 2 تحفتہ المؤمنین علی ہامش مخزن الادویۃ تحت لفظ رصاص نولکشور کانپور ص ۳۰۳

Volume 3 Fatawa Razawiyya (23) Copper: Bada'i Khaniya, Zahiriya, Khulasa Khazana Ghaniyya, Hindiya, Hilya. (24) Sifr: Note 1 - A mineral yellowish copper like brass, which doesn't turn black from heat. "Al-Sab'at al-Awwal", "Tuhfat al-Izah", "Ma'adin Fath", "Bahr al-Tanwir" - these refer to the seven fusible bodies (solidified by fire) called 'ajsad al-sab'a' (seven bodies), 'muntariqat' (hammered ones), 'haft falzat' (seven minerals/metals), or seven metals. Among them are the six mentioned; Sifr is included in copper, and the seventh is a mineral resemblance called Kharchini or Ruh-e-Tutiya or Roy-e-Tutiya, which is Note 2 - (25) Zinc, (26) Pearls: Khaniya, Khulasa, Zahiriya, Khazana.

(Remainder of previous page's footnote) Sisa (Lead) is named... and Al-Ghafiqi included both (tin and lead) in the term 'Rasas'. He said, as in 'Al-Jami', it has two types: the black one is 'usrub' (lead) and 'ānuk'; the other is 'al-rasas al-qali' which is 'qasdir' (tin). Al-Qamus confirmed this, and Taj al-Urus affirmed it. Thus, we have applied the scholars' words to this. 12 (From him, may He forgive him). Note 1: In "Al-Tadhkira", 'Sifr' is Nuhas (copper). In "Al-Qamus", it is a type of copper. In "Taj al-Urus", it is said that 'Sifr' is the type of copper that is yellow. Our Shaykh preferred this due to the relevance of the name. What I have written is mentioned in "Al-Tuhfa" and "Al-Makhzan" under 'Taliqon'. I say: this is closer, and the wording of Al-Qamus does not contradict it. 12 (From him, may He forgive him). Note 2: In "Al-Makhzan", under 'Taliqon', the seven bodies are: gold, silver, copper (mus), iron, lead (surb), tin (qali).

Usrub is meant, which is called 'Sisa' (lead) in Hindi. And Al-Ghafiqi declared that the word 'Rasas' includes both (tin and lead). It is written that as in 'Jami', it has two kinds: black which is 'Usrub' and 'Anuk', and the second kind is 'Rasas Qali', which is 'Qasdir'. Al-Qamus decided on this and Taj al-Urus also maintained it. Therefore, we have interpreted the words of the scholars in this way. 12 (From him, may He forgive him). In "Tadhkira" it says: Sifr: Nuhas (copper). In "Qamus" it says: from copper (a type of copper). In "Taj al-Urus" it is written: and it is said Sifr is that kind of copper which is yellow. Our Shaykh gave preference to this because of the suitability of the name. And what I wrote is mentioned in "Al-Tuhfa" and "Al-Makhzan" under 'Taliqon'. I say, this is the closer interpretation and the text of Qamus is not contradictory to it. 12 (From him, may He forgive him). In 'Makhzan', it is under 'Taliqon'. The seven bodies are: gold, silver, copper, iron, lead, tin (remainder on next page).

1 Makhzan al-Adwiya, under 'Rasas', p. 309 2 Taj al-Urus 4/397 3 Tadhkirat Uli al-Albab 1/224 4 Al-Qamus 2/73 5 Taj al-Urus 3/337

खंड 3 फतवा रज़विया (23) ताँबा: बदाई खानिया, ज़हीरिया, ख़ुलासा खज़ाना ग़निया, हिंदीया, हिल्या। (24) सिफ़्र: नोट 1 - एक खनिज पीला ताँबा जो पीतल के समान है, जो आग से काला नहीं पड़ता। "अल-सबअत अल-अव्वल", "तुहफ़त अल-ईज़ाह", "मआदिन फ़तह", "बह्र अल-तन्वीर" - इनसे वही सात शरीर (धातुएँ) मुराद हैं जो आग से पिघलकर आकार लेते हैं, जिन्हें 'अजसादे सबआ' (सात शरीर) या 'मुनतरिक़ात', 'हफ़्त फलज़ात', या सात धातुएँ कहते हैं। उनमें से छह वही हैं जो गुज़रे; सिफ़्र ताँबे में ही शामिल है, और सातवाँ खनिज सदृश्य है जिसे खारचीनी या रूहे तूतिया या रूए तूतिया कहते हैं, यानी नोट 2 - (25) जस्ता, (26) मोती: खानिया, ख़ुलासा, ज़हीरिया, खज़ाना।

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष) सीसा नाम है... और अल-ग़ाफ़िक़ी ने 'रसास' शब्द में दोनों (राँगा और सीसा) को शामिल माना है। लिखा है जैसा कि "अल-जामि" में है, इसकी दो किस्में हैं: काला जिसे 'उसरुब' (सीसा) और 'आनुक' कहते हैं; दूसरी किस्म 'रसास क़लई' है जो 'क़स्दीर' (टीन) है। इसी पर "क़ामूस" ने निर्णय दिया और "ताजुल उरूस" में भी इसे बरकरार रखा गया। इसलिए हमने विद्वानों के शब्दों को इसी पर आधारित किया है। 12 (उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे)। नोट 1: "अल-तज़किरा" में 'सिफ़्र' का अर्थ ताँबा है। "क़ामूस" में इसे ताँबे की एक किस्म कहा गया है। "ताजुल उरूस" में है कि कहा गया कि सिफ़्र ताँबे की वह किस्म है जो पीली हो। हमारे शेख ने नाम की उपयुक्तता के कारण इसी को प्राथमिकता दी है। और मैंने जो लिखा है वह "तुहफ़ा" और "मख़ज़न" में 'तालीक़ून' के तहत वर्णित है। मैं कहता हूँ कि यही अधिक निकट है और क़ामूस का कथन इसके विरुद्ध नहीं है। 12 (उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे)। नोट 2: "मख़ज़न" में 'तालीक़ून' के अंतर्गत सात शरीर हैं: सोना, चाँदी, ताँबा (मिस), लोहा, सीसा (सुरुब), राँगा (क़लई)।

'उसरुब' का अर्थ वह है जिसे हिंदी में सीसा कहते हैं। और अल-ग़ाफ़िक़ी ने 'रसास' शब्द में दोनों (राँगा और सीसा) को शामिल माना। लिखा है जैसा कि 'जामि' में है इसकी दो किस्में हैं: काली जो 'उसरुब' और 'आनुक' है, और दूसरी किस्म 'रसास क़लई' है, जो 'क़स्दीर' (टीन) है। क़ामूस ने इस पर निर्णय दिया और ताजुल उरूस में भी इसे वैसे ही रखा गया। इसलिए हमने विद्वानों की बातों को इसी अर्थ में लिया है। 12 (उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे)। "तज़किरा" में है सिफ़्र: नहास (ताँबा)। "क़ामूस" में है: ताँबे से (ताँबे की एक प्रकार)। "ताजुल उरूस" में है: और कहा गया कि सिफ़्र ताँबे की वह किस्म है जो पीली हो। हमारे शेख ने नाम की संगति की वजह से इसे प्राथमिकता दी। और जो मैंने लिखा वह 'तुहफ़ा' और 'मख़ज़न' में 'तालीक़ून' के तहत वर्णित है। मैं कहता हूँ, यही अधिक तर्कसंगत है और क़ामूस की इबारत इसके विरुद्ध नहीं है। 12 (उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें

क्षमा करे)। मख़ज़न में तालीक़ून के तहत है। सातों शरीर सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, सीसा, राँगा, (शेष अगले पृष्ठ पर)।

1 मख़ज़न अल-अद्विया, 'रसास' के तहत, पृ. 309 2 ताजुल उरूस 4/397 3 तज़किरत उली अल-अल्बाब 1/224 4 अल-क़ामूस 2/73 5 ताजुल उरूस 3/337

جلد سوم فتاوٰی رضویہ (۲۳) تانبا بدائع خانیہ ظہیریہ خلاصہ خزانہ غنیہ ہندیہ حلیہ۔ (۲۴) صفر کہ عہ۱ معدنی زرد تانبا پیتل کے مشابہ ہے آنچ سے سیاہ نہیں پڑتا السبعۃ الاول تحفہ الایضاح معادن فتح بحر تنویر اس سے یہی سات جسم منطبع بالنار مراد ہیں جن کو اجساد (۱) سبعہ یا منطرقات ، ہفت فلزات ، سات دھات کہتے ہیں۔ ان میں چھ یہی کہ گزرے صفر تانبے ہی میں داخل ہے اور ساتواں شبہ معدنی جسے خار صینی اور روح توتیا یا روئے توتیا کہتے ہیں یعنی عہ۲ (۲۵) جست، (۲۶) موتی خانیہ خلاصہ ظہیریہ خزانہ

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) سیسا نامند۱ اه وجعله الغافقی شاملا لهما فقال كما في الجامع هو ضربان الاسود وهو الاسرب والأنك ولاخر الرصاص القلعي وهو القصدير۲ اه و بهذا جزم في القاموس واقره في التاج العروس فلذا حملنا عليه كلام العلماء ۱۲ منه غفرله (م) عہ۱: في التذكرة (صفر) النحاس۳ اه و في القاموس من النحاس٤ اه وفي التاج وقيل ماصفر منه ورجحه شيخنا لمناسبة التسمية٥ اه وماقلته مذكور في التحفة و المخزن في طاليقون- اقول وهو الاقرب وكلام القاموس لاينافيه ۱۲ منه غفر له (م) عہ۲: في المخزن تحت طاليقون اجساد سبعه طلا نقره مس آہن سرب قلعی (م)

اسرب مراد ہوتا ہے جسے ہندی میں سیسا کہتے ہیں اھ اور غافقی نے لفظ رصاص میں دونوں (رانگا اور سیسا) کو شامل قرار دیا۔ لکھا ہے جیسا کہ جامع میں ہے اس کی دو قسمیں ہیں: سیاہ یہ اسرب اور آنک (رانگ اور سیسا) ہے، دوسری قسم رصاص قلعی، یہ قصدیر ہے اھ اسی پر قاموس میں جزم کیا اور تاج العروس میں بھی اسے برقرار رکھا۔ اسی لیے ہم نے علما کے کلام کو اسی پر محمول کیا ۱۲ منہ غفرلہ (ت) منہ غفر لہ (ت) تذکرہ میں ہے صُفر: نحاس (تانبا) اھ قاموس میں ہے: من النحاس اھ (تانبے کی ایک قسم ہے)۔ تاج العروس میں ہے: اور کہا گیا صُفر تانبے کی وہ قسم ہے جو زرد ہو۔ اسی کو ہمارے شیخ نے مناسبتِ تسمیہ کے باعث ترجیح دی ہے

اھ اور میں نے جو لکھا وہ تحفہ اور مخزن میں طالیقون کے تحت مذکور ہے۔ اقول اور یہی اقرب ہے اور قاموس کی عبارت اس کے منافی نہیں۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت) مخزن میں طالیقون کے تحت ہے۔ ساتوں اجسام سونا، چاندی، تانبا، لوہا، سیسا، رانگ، (بقیہ بر صفحہ آیندہ)

1 مخزن الادویہ رصاص کے تحت ص ۳۰۹ 2 تاج العروس ۴/ ۳۹۷ 3 تذکرۃ اولی الالباب ۱/ ۲۲۴ 4 القاموس ۲/ ۷۳ 5 تاج العروس ۳/ ۳۳۷

Fatawa Rizwia Volume Three Fath al-Khazana, al-Fatawa Jami' al-Rumuz. Even if (27) they are ground from dust. Muheet al-Sarakhsi, Bada'i', Majma' al-Anhur, Durr, al-Khadimi al-Hindiyyah.

[Arabic Box] I say: What is in al-Shalbiya from al-Diraya: It is not permissible with ground pearls. This is not a restriction but a specification of the most obscure, because whatever is from the parts of the earth, Imam Muhammad allows it if it is ground.

[Urdu Box] I say: It is written in al-Shalbiya with reference to al-Diraya: It is not permissible with ground pearls (Tayammum is not valid with ground pearls). In this phrase, the word "ground" is not for restriction (by which it could be understood that if they were not ground then...).

(Continued from the previous page's footnote) Spirit of Tutia (Zinc oxide) and in its list, 'Roo-e-Tutia' is 'Shiba' and it is famous as 'Spirit of Tutia'. And under 'Shiba' it is written: In Persian it is 'Roo-e-Tutia' and in Hindi 'Jast' (Zinc). Water becomes cold in it and a vessel made of pure zinc is prone to breaking. And in 'Tuhfa' it is: Its specialty is that whenever you take a narrow-mouthed vessel of zinc and put water in it, and take a wide-mouthed vessel and put some saltpeter (potassium nitrate) in it, then place the water vessel in it and give it moderate movement, the water will become extremely cold; this method is common among the people of India. In 'al-Tadhkirah', 'Shibah' (with feminine 'ta') is used for this famous metal which is now known as Spirit of Tutia and it is also called 'Kharsini'. I say: The author of al-Tadhkirah mentioning it with 'ta-e-tanith' (feminine marker) is an error because in 'al-Qamus' under the chapter of 'Ha', it is recorded: 'Shabah' and 'Shubahan' (with harakat on 'shin' and 'ba'). It is yellow copper (brass) and it is also used with 'kasra'. 12 May God forgive him. (T)

Page 653 of 756

फ़तावा रिज़विया जिल्द सोम (भाग 3) फ़त्ह-ए-ख़ज़ाना, अल-फ़तावा जामेउर रुमुज़। अगरचे (27) ग़ुबार से पिसे हुए हों मुहीते सरख़सी बदाए मजमउल अनहुर दुर्र ख़ादिमी हिन्दिया।

[अरबी बॉक्स] मैं कहता हूँ: अल-शलबिया में अद्-दराया के हवाले से है: पिसे हुए मोतियों से जायज़ नहीं है। यह कोई शर्त नहीं है बल्कि सबसे अस्पष्ट चीज़ का स्पष्टीकरण है, क्योंकि जो कुछ पृथ्वी के हिस्सों में से है, इमाम मुहम्मद उसे पिसा हुआ होने पर जायज़ मानते हैं।

[उर्दू बॉक्स] अक़ूल: शलबिया में दराया के हवाले से लिखा है: ला-यजूज़ु बिल-लुलुइल मदक़ूक़ (पिसे हुए मोती से तयम्मुम जायज़ नहीं)। इस इबारत में "पिसे हुए" का शब्द तक़यीद (प्रतिबंध) के तौर पर नहीं है (जिससे यह समझा जाए कि अगर पिसे हुए न हों तो उससे...)।

(पिछले पृष्ठ के फ़ुटनोट का शेष भाग) रूह-ए-तूतिया और उसकी सूची में रू-ए-तूतिया 'शिबा' है और रूह-ए-तूतिया के नाम से प्रसिद्ध है। और 'शिबा' के अंतर्गत लिखा है: फारसी में रू-ए-तूतिया और हिंदी में जस्त (ज़स्ता)। पानी इसमें ठंडा हो जाता है और शुद्ध जस्त का बर्तन टूटने वाला होता है। और 'तोहफ़ा' में है: इसकी विशेषता यह है कि जब भी जस्त का एक संकीर्ण मुँह वाला बर्तन लेकर उसमें पानी रखें और एक चौड़े मुँह वाला बर्तन लेकर उसमें थोड़ा शोरा डालें, फिर पानी वाला बर्तन उसमें रखकर संतुलित गति दें, तो पानी अत्यंत ठंडा हो जाएगा; यह तरीका भारत के लोगों में प्रचलित है। 'अल-तज़किरा' में 'शिबा' (स्त्रीलिंग के साथ) उस प्रसिद्ध धातु को कहते हैं जो अब रूह-ए-तूतिया के नाम से प्रसिद्ध है और इसे 'खारसीनी' भी कहा जाता है। मैं कहता हूँ: तज़किरा के लेखक का इसे 'ता-ए-तानीस' के साथ बताना एक त्रुटि है क्योंकि 'क़ामूस' के'हा' अध्याय में यह दर्ज है: 'शबह' और 'शबहान' (शिन और बा पर ज़बर के साथ)। यह पीला तांबा (पीतल) है और इस पर 'कसरा' (ज़ेर) का भी प्रयोग होता है। 12 अल्लाह उसे क्षमा करे। (त)

पेज 653 ऑफ़ 756

فتاوی رضویہ جلد سوم فتح خزانہ، الفتاوی جامع الرموز۔ اگرچہ (۲۷) غبار سے پسے ہوئے ہوں محیط سرخسی بدائع مجمع الانہر در خادمی ھندیہ۔

[عربی باکس] اقول: ومانی الشلبیة عن الدرایة لایجوز باللؤلؤ المدقوق فلیس بتقیید بل تنصیص بالاخفی لان ماکان من اجزاء الارض یجیزہ محمد ان کان مدقوقا

[اردو باکس] اقول: شلبیہ میں درایہ کے حوالہ سے لکھا ہے : لا یجوز باللؤلؤ المدقوق (پسے ہوئے موتی سے تیمم جائز نہیں) اس عبارت میں "پسے ہوئے" کا لفظ تقیید کے طور پر نہیں (جس سے یہ سمجھا جائے کہ پسے ہوئے نہ ہو تو اس سے)

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) روح توتیاھ۔ اور اس کی فہرست میں روئے توتیا شبہ ہے اور روح توتیا سے مشہور ہے اھ۔ اور شبہ کے تحت لکھا ہے : فارسی میں روئے توتیا اور ہندی میں جست۔ پانی اس میں سرد ہو جاتا ہے اور خالص جست کا برتن ٹوٹنے والا ہوتا ہے اھ۔ اور تحفہ میں ہے : اس کی خاصیت یہ ہے کہ جست کا ایک برتن تنگ منہ والا لے کر اس میں پانی رکھیں اور ایک کشادہ منہ والا برتن لے کر اس میں تھوڑا شورہ ڈالیں پھر پانی والا برتن اس میں رکھ کر معتدل حرکت دیں پانی انتہائی سرد ہو جائے گا یہ طریقہ اہل ہند کے یہاں رائج ہے اھ۔ تذکرہ میں شبة بالتانیث اس مشہور دھات کو کہتے ہیں جواب روح توتیا سے مشہور ہے اور اسے خارصینی بھی کہا جاتا ہے اھ۔ اقول صاحب تذکرہ کا اسے تائے تانیث کے ساتھ بتانا خطا ہے اس لیے کہ قاموس کے باب الہاء میں یہ درج ہے : شبہ وشبہان۔ دونوں لفظ (ش وب پر) حرکت کے ساتھ۔ زرد تانبا اور اس پر کسرہ بھی استعمال ہوتا ہے اھ ۱۲منہ غفرلہ۔ (ت)

Fatawa Rizvia - Volume 3

[Arabic Box Text]: "And the two Alifs (at the beginning of the word) indicated that crushing it is of no use because of what he mentioned later, that it is generated from an animal and is not among the parts of the earth.[1]"

[Urdu Box Text]: "(Tayamum can be performed) rather this is for the specification and clarification of the obscure. This is because if a substance belonging to the genus of earth is ground, Imam Muhammad considers Tayammum with it to be permissible, otherwise not. Therefore (by adding the word 'ground' alongside pearl), he stated that even grinding a pearl cannot make it usable (for Tayammum). Because after this he stated, 'It is because it originates from an animal and is not among the components of the earth'. (T)"

(28) Coral (Marjan) [with fathah on meem, sukun on raa, and jeem] in Khadimi; meaning small pearls, for they too are called Marjan, Muqaddasi Sh. (29) Sambhar (30) Any salt that is formed from water, and it will be mentioned later. (31) Musk (32) Amber (33) Camphor - Zahiriyyah, Khazanah Hindiyyah, Khazanah al-Fatawa, Hilyah. (34) Saffron (35) Sukk, which is a type of fragrance - Al-Awwalan (the first two, Zahiriyyah and Khazanah - T). (36) Vitriol (Zaj) - except for Alum (Phitkari) [annotation], it is a different genus, Kasis is yellow and (37) Green Kasis and Black Kasis (38) are types of Kasis. (39) Litharge (Murdar Sang) manufactured - Akhiran and Jami' al-Rumuz (the last two: Khazanah al-Fatawa, Hilyah (T) and Jami' al-Rumuz). (40) Mercury (Para) Darayah Shalamabiyyah. (41) Manufactured glass which is made by mixing sand with another substance, as in Muheet, Tabyin, Fath, Bahr, Majma' al-Anhur Sh. - Taqqadam Kulluha (all of these have been mentioned before. T). (42) Ash, i.e., of wood etc., which is not from the genus of earth, the investigation of which has passed. (43) Salt marsh land whose salt is formed from water; and the three will be mentioned later if Allah the Almighty and Majestic wills (these three will also be mentioned later if Allah Almighty wills. T). (44) Salt marsh where the salt is from soil but it is submerged in water; mentioned by al-Isbijabi in his commentary.

Annotation: And whoever considered Alum (Phitkari) as Vitriol (Zaj), as written in Tuhfah and Makhzan contrary to their own statements, similarly Zakariya Razi's

speech in this regard is inconsistent; he made an error, the details of which are in Anwar al-Asrar. (M)

1. Hashiyah Shalamabiyyah with At-Tabyin, Chapter of Tayammum, Amiriya Press, Bulaq, Egypt, 1/39 Page 654 of 756

फ़तावा रज़विया - जिल्द सोम (तीसरा)

[अरबी बॉक्स पाठ]: "और दो अलिफ़ ने यह सूचित किया कि इसे पीसना लाभदायक नहीं है क्योंकि इसके बाद उन्होंने कहा कि यह जानवरों से उत्पन्न होता है और पृथ्वी का हिस्सा नहीं है।[1]"

[उर्दू बॉक्स पाठ]: "(तयम्मुम हो सकता है) बल्कि यह अस्पष्ट की विशिष्टता और व्याख्या के लिए है। इसलिए कि यदि पृथ्वी की श्रेणी की कोई वस्तु पिसी हुई हो तो इमाम मुहम्मद उससे तयम्मुम जायज़ कहते हैं अन्यथा नहीं। इसलिए (मोती के साथ 'पिसा हुआ' शब्द जोड़कर) यह स्पष्ट किया कि मोती को पीसना भी तयम्मुम के लिए उपयोगी नहीं बना सकता। क्योंकि इसके बाद फरमाया है कि इसलिए कि वह जानवर से पैदा होता है और पृथ्वी के घटकों में से नहीं है। (त)"

(28) मरजान (मूंगा) [मीम पर फ़तह, रा साकिन और जीम के साथ] खादिमी में; यानी छोटे मोती जिन्हें मरजान भी कहा जाता है, मुक़द्दसी श। (29) सांभर (30) हर वह नमक जो पानी से बना हो, आगे इसका विवरण आएगा। (31) मुश्क (कस्तूरी) (32) अंबर (33) कपूर - ज़हीरिया, खज़ाना हिंदिया, खज़ाना-उल-फ़तावा, हिलिया। (34) केसर (ज़ाफ़रान) (35) सुक्क जो एक प्रकार की सुगंध है - अल-अव्वलान (पहले दो, ज़हीरिया और खज़ाना - त)। (36) ज़ाज (कसीस) - फिटकरी [टिप्पणी] के अलावा यह एक अलग श्रेणी है, कसीस पीला होता है और (37) हीरा कसीस (हरा कसीस) और काला कसीस (38) इसी की किस्में हैं। (39) मुरदार संग (लिथार्ज) निर्मित - अख़ीरान और जामे-उर-रुमूज़ (अंतिम दो: खज़ाना-उल-फ़तावा, हिलिया (त) और जामे-उर-रुमूज़)। (40) पारा (पारद) दराया शलाबीया। (41) निर्मित कांच जो रेत में दूसरी वस्तु मिलाकर बनाया जाता है, जैसा कि मुहीत, तबीन, फ़तह, बहर, मजमा-उल-अनहुर श. में है। - तक़द्दम कुल्लुहा (इन सभी का उल्लेख पहले हो चुका है। त)। (42) राख, यानी लकड़ी आदि की जो पृथ्वी की श्रेणी से नहीं है, जिसकी जाँच पहले हो चुकी है। (43) नमक वाली भूमि जिसका नमक पानी से बना हो; और इन तीनों का उल्लेख आगे आएगा इंशा-अल्लाह (इन तीनों का ज़िक्र आगे भी आएगा अगर अल्लाह ने चाहा। त)। (44) नमक वाली भूमि जहाँ नमक मिट्टी से हो लेकिन वह पानी में डूबी हो; अल-इस्बीजाबी ने अपनी व्याख्या में इसका उल्लेख किया है।

टिप्पणी: और जिसने फिटकरी को ज़ाज समझा जैसा कि तोहफ़ा और मख़ज़न में उनके अपने बयानों के विपरीत लिखा गया है, वैसे ही ज़करिया राज़ी का कलाम इसमें असंगत है, उन्होंने गलती की जिसका विवरण अनवारुल असरार में है। (म)

1. हाशिया शलाबीया मअ अत-तबीन, बाब अत-तयम्मुम, मतबा अमीरिया, बोलाक़, मिस्र, 1/39

والالفافادان هذا لا یفیده الدق لما قال بعده لانہ یتولد من الحیوان ولیس من اجزاء الارض۔[1] | تیمم ہو سکتا ہے) بلکہ یہ اخفیٰ کی تخصیص و توضیح کے لئے ہے۔ اس لئے کہ جنس زمین کی چیز پسی ہوئی ہو تو امام محمد اس سے تیمم جائز کہتے ہیں ورنہ نہیں۔ اس لئے (موتی کے ساتھ "پسے ہوئے" کا لفظ بڑھا کر) یہ افادہ فرمایا کہ موتی کو پینا بھی کار آمد نہیں بنا سکتا۔ کیونکہ اس کے بعد فرمایا ہے اس لیے کہ وہ حیوان سے پیدا ہوتا ہے اور اجزائے زمین سے نہیں ہے۔ (ت)

(۲۸) مرجان فتح منخ در خادمی۔ یعنی چھوٹے موتی کہ ان کو بھی مرجان کہتے ہیں مقدسی ش۔ (۲۹) سانبھر (۳۰) ہر نمک کہ پانی سے بنا ہو و یاتی (آگے بھی بیان آئے گا۔) (۳۱) مشک (۳۲) عنبر (۳۳) کافور ظہیریہ خزانہ ہندیہ خزانہ الفتاوی حلیہ (۳۴) زعفران (۳۵) سُک کہ ایک قسم خوشبو ہے الاولان (پہلی دونوں۔ ظہیریہ ، خزانہ۔ت) (۳۶) زاج۔ کسیس (۱) پھٹکڑی عہ کے سوا اور جنس ہے کسیس کہ زرد ہے اور (۳۷) ہیرا کسیس سبز اور سیاہ ۳۸ کسیس کے اسی کے اقسام ہیں۔ (۳۹) مردار سنگ مصنوع اخیر ان و جامع الرموز (آخری دونوں۔ خزانہ الفتاوی ، حلیہ (ت) و جامع الرموز) (۴۰) پارا درایہ شلمبیہ۔ (۴۱) مصنوع شیشہ کہ ریتے میں دوسری چیز ملا کر بناتے ہیں جیسے بھی محیط تبیین فتح بحر مجمع الانہر ش۔ تقدم کلھا (ان سب کا ذکر پہلے آ چکا ہے۔ ت) (۴۲) راکھ یعنی لکڑی وغیرہ غیر جنس ارض کی جس کی تحقیق گزری۔ (۴۳) نمک زار زمین جس کا نمک پانی سے بنا ہو۔ و ستأتی الثلثۃ ان شاء عز وجل (ان تینوں کا ذکر آگے بھی آئے گا اگر خدائے عزیز و جلیل نے چاہا۔ت) (۴۴) نمک زار جس کا نمک مٹی سے ہو مگر اس کے پانی میں ڈوبی ہوئی ہے ذکر الاسبیجابی فی شرحہ

عہ: اور جس نے پھٹکڑی کو زاج سمجھا جیسا کہ تحفہ و مخزن میں خود اپنے بیانوں کے خلاف لکھا یوں ہی زکریا رازی کا کلام اس میں مضطرب ہے اس نے غلطی کی جس کی تفصیل انوار الاسرار میں ہے۔ (م)

1 حاشیہ شلمبیہ مع التبیین باب التیمم مطبعہ امیر یہ بولاق مصر ۱/ ۳۹ Page 654 of 756

Fatawa Razvia Volume 3

It is permissible to perform Tayammum (dry ablution) with saline soil (Sabkha) as stated in 'Munyah', based on the common occurrence that the soil does not get submerged by the moisture emerging from the ground. 'Ghunyah' (Asbijabi has mentioned in his commentary: Tayammum with saline soil is permissible - Munyah - on the basis that it is common for the soil not to be drowned by the wetness sprouting from the earth. 'Utbah - T).

(45) The side of clay vessels which is coated with tin etc., of a different substance. (46) That which has a color of a different substance. (47) Oily vessels, and they have been mentioned previously (All of these have already been mentioned. - T). (48) The clay shard in which medicines have been cooked, and this will be detailed soon, if Allah wills (Its explanation will come in detail ahead, if Allah Almighty wills. - T). (49) Soil in which ash and (50) in which flour is mixed equally or more. 'Jawharah Nayyirah'. (51) Mud where water is predominant. (52) Impure ground, although by drying, the effect of impurity is removed and it is considered pure for prayer. (53) Dust that arose from impure ground. (54) Dust that fell on a wet impure thing although it dried later. (55) Dust that fell on a dry impure thing and then moisture reached it. (56) A tailor's colored thread bundle. (57) Soil of a graveyard where impurity is suspected. And all of these have been mentioned previously in 'Al-Muqabalat' (The description of all these has passed in the 'Muqabalat' section. - T).

Additions: (58) Ground or a mountain on which grass (Doob) has grown. (59) That on which snow is frozen. (60) That whose snow is melting and flowing. (61) That on which rain is falling. (62) That on which rain fell and stopped but the water is still flowing. (63) A paved floor or wall on which moss has grown. (64) The wall of a kitchen which is covered with soot. (65) That ground which is covered with the soot of 'Kusum' (safflower). (66) A clay lamp on which soot has accumulated.

---

1. Munyat al-Musalli, Chapter on Tayammum, Maktabah Qadriyah Jamia Nizamiyah Razviyah Lahore, p. 56
2. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 87

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

'मुन्या' के अनुसार खारी मिट्टी (सब्खा) से तयम्मुम करना जायज़ है, इस आधार पर कि आमतौर पर ज़मीन से निकलने वाली नमी से मिट्टी डूब नहीं जाती। 'गुन्या' (अस्बिजाबी ने अपनी शरह में ज़िक्र किया है: नमकीन ज़मीन से तयम्मुम जायज़ है - मुन्या - इस बुनियाद पर कि अक्सर यही होता है कि ज़मीन से फूटने वाली तरी से मिट्टी डूब नहीं जाती। उत्बा - त)।

(45) मिट्टी के बर्तनों का वह रुख जिस पर रांगा वगैरह दूसरी चीज़ की कलई हो। (46) जिस पर दूसरी चीज़ का रंग हो। (47) चिकने (तेल वाले) बर्तन, और इनका ज़िक्र पहले हो चुका है (इन सबका ज़िक्र गुज़र चुका है। - त)। (48) वह ठीकरी जिसमें दवाएं डाल कर पकाई गई हों, और इंशाअल्लाह इसका तफसीली ज़िक्र आगे आएगा (इसका बयान इंशाअल्लाह तआला आगे विस्तार से आएगा। - त)। (49) मिट्टी जिसमें राख और (50) जिसमें आटा बराबर या ज़्यादा मात्रा में मिला हो। 'जौहरा नय्यिरा'। (51) कीचड़ जिसमें पानी ज़्यादा हो। (52) नापाक ज़मीन, हालांकि सूखने से नजासत का असर खत्म हो जाने पर नमाज़ के लिए पाक मानी गई हो। (53) धूल जो नापाक ज़मीन से उठी हो। (54) धूल जो तर नापाक चीज़ पर गिरी हालांकि बाद में सूख गई। (55) धूल जो खुश्क नापाक चीज़ पर गिरी और फिर उसे तरी पहुँची। (56) दर्ज़ी की रंगीन बटिया। (57) कब्रिस्तान की मिट्टी जहाँ नजासत का गुमान हो। और इन सबका ज़िक्र पहले 'अल-मुक़ाबलात' में गुज़र चुका है (इन सबका बयान मुक़ाबलात में गुज़र चुका है। - त)।

अतिरिक्त (मज़ीदात): (58) ज़मीन या पहाड़ जिस पर दूब (घास) उगी हो। (59) जिस पर बर्फ जमी हुई हो। (60) जिसकी बर्फ पिघल कर बह रही हो। (61) जिस पर बारिश हो रही हो। (62) जिस पर बारिश होकर रुक गई हो मगर पानी बह रहा हो। (63) पक्का फर्श या दीवार जिस पर काई जमी हो। (64) बावर्चीखाने (रसोई) की दीवार जिस पर कालिख लगी हो। (65) वह ज़मीन जिस पर कुसुम की कालिख लगी हो। (66) मिट्टी का चिराग़ जिस पर कालिख चढ़ी हो।

---

1. मुन्यातुल मुसल्ली, फ़स्ल फ़ीत तयम्मुम, मकतबा क़ादरिया जामिया निज़ामिया रज़विया लाहौर, पृ. 56
2. गुन्यातुल मुस्तमली, फ़स्ल फ़ीत तयम्मुम, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 87

पृष्ठ 655 का 756

یجوز التیمم بالسبخة منیة بناء علی الغالب وھو عدم الغرق بالنز غنیه (اسبیجابی نے اپنی شرح میں ذکر کیا ہے : نمک زار سے تیمم جائز ہے۔ منیہ۔ اس بنیاد پر کہ اکثر یہی ہوتا ہے کہ زمین سے پھوٹنے والی تری سے مٹی ڈوب نہیں جاتی۔ عتبہ۔ت)

(۴۵) ظروف گلی کا وہ رخ جس پر رانگ وغیرہ غیر جنس کی قلعی ہے۔ (۴۶) جس پر غیر جنس کی رنگت ہے۔ (۴۷) روغنی ظروف وقد تقدمت (ان سب کا ذکر گزر چکا ہے۔ت) (۴۸) وہ ٹھیکری جس میں دوائیں ڈال کر پکائی ہوں وسیأتی ان شاء اللہ مفصلاً (اس کا بیان ان شاء اللہ تعالٰی آگے تفصیل سے آئے گا۔ت) (۴۹) مٹی جس میں راکھ اور (۵۰) جس میں آٹا برابر یا زائد ملے ہوں جوہرہ تیرہ۔ (۵۱) کیچڑ جس پر پانی غالب ہو۔ (۵۲) ناپاک زمین اگرچہ خشک ہونے سے اثر نجاست زائل ہو کر نماز کے لیے پاک مانی گئی ہو۔ (۵۳) غبار کہ ناپاک زمین سے اٹھا۔ (۵۴) غبار کہ تر چیز ناپاک پر گرا اگرچہ پھر خشک ہو گیا۔ (۵۵) غبار کہ خشک چیز ناپاک پر گرا اور اس کو تری پہنچی۔ (۵۶) درزی کی بٹیا رنگین۔ (۵۷) قبرستان کی مٹی جہاں نجاست کا ظن ہو وقد تقدم کلھا فی المقابلات (ان سب کا بیان مقابلات میں گزر چکا ہے۔ت)

مزیدات: (۵۸) زمین یا پہاڑ جس پر دوب اُگی ہے۔ (۵۹) جس پر برف جما ہوا ہو۔ (۶۰) جس کا برف پگھل کر بہہ رہا ہے۔ (۶۱) جس پر مینہ برس رہا ہے۔ (۶۲) جس پر مینہ برس کر کھل گیا مگر پانی جاری ہے۔ (۶۳) پکا فرش یا دیوار جس پر کائی جمی ہے۔ (۶۴) باورچی خانہ کی دیوار کی لبھی بھری ہے۔ (۶۵) وہ زمین جس پر کسم کی لبھی بھری ہے۔ (۶۶) مٹی کا چراغ جس پر کالکھ چڑھی ہے۔

1. منیۃ المصلی فصل فی التیمم مکتبہ قادریہ جامعہ نظامیہ رضویہ لاہور ص ۵۶

2. غنیۃ المستملی فصل فی التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۷

Volume 3 Fatawa Razawiya (67) Gil-e-Hikmat, which is a compound formula, and the proportion of non-earthly material in it is greater. (68) Rampur-chini, which is spice on clay; yes, it is permissible on the side where the glaze/china has not been applied. (69) Tam-chini (enamel), which is tin and spice. (70) Real porcelain or (71) clay toys coated with a non-earthly oil/varnish. (72) Quicklime and (73) edible clay and (74) pellets for slingshots in which the amount of non-earthly material is not less. (75) Mercury bowl, (76) mercury ash (calx), (77) ash of gold, silver, tin, or any metal, (78) synthetic imitation i.e., brass. This is not a mineral; it is made by mixing copper and zinc. Considering it 'Sifr' is wrong. (79) Bronze. Haft-josh (alloy of seven metals). (80) Bharat (an alloy), (81) Nickel, (82) German silver, (83) Charcoal of wood or any non-earthly substance, (84) Saltpeter, (85) Sal ammoniac, (86) Borax, (87) Alum, (88) Zaj-e-Akhdar-e-Hindi i.e., Blue vitriol, (89) Armenian bole, (90) Amber, used for prayer beads; this is not a stone but a resin. Tadhkirah Ibn Sina.

[Box 1] Left (Arabic): Resin like Sandarac. Al-Ghafiqi says it is a liquid that drips from the leaves of the Doum palm. Both were cited by Ibn al-Baitar. It appears to be walnut resin or resin from some other tree. Anwar al-Asrar. Right (Urdu): It is a resin like Sandarac. Al-Ghafiqi says it is a secretion dripping from the leaves of Gokhru. Both were cited by Ibn al-Baitar. It appears to be walnut resin or resin from some other tree. Anwar al-Asrar. (T)

[Box 2] Left (Arabic): Note: Its preparation: (1) One part pure clay, powdered charcoal, cut hair, calcined salt, marshmallow (Althaea), iron dross, lime, eggshells, half a part of each, etc. from Al-Tadhkirah. He said: These components may be reduced, and their weights changed, but they do not exceed what we have mentioned. So let it be preserved. 12 Aminah, may He forgive him (M). Right (Urdu): Its formula is this: Pure clay, powdered coal, trimmed hair, salted lime, marshmallow, iron rust/dross, white lime, eggshells, half part of each, etc. From Al-Tadhkirah. It is written therein that these ingredients are sometimes reduced, and sometimes their weights are changed, but they are not more than what we have mentioned, so it should be kept safe. 12 Aminah, may He forgive him (T).

Page 656 of 756

जिल्द 3 फ़तावा रज़विया (67) गिल-ए-हिकमत, जो एक मिश्रित नुस्खा है और इसमें गैर-मिट्टी पदार्थ का हिस्सा अधिक है। (68) रामपुर-चीनी कि मिट्टी पर मसाला है, हाँ, जिस तरफ चीनी (चमक) न चढ़ी हो उस तरफ जायज़ है। (69) ताम-चीनी कि टिन और मसाला है। (70) वह सच्ची चीनी या (71) मिट्टी के खिलौने जिन पर गैर-मिट्टी का तेल/पॉलिश है। (72) चूना और (73) खाने वाली मिट्टी और (74) गुलेल की गोलियां जिनमें गैर-मिट्टी की मात्रा कम नहीं है। (75) पारे का कटोरा, (76) पारे का कुश्ता (भस्म), (77) सोने, चांदी, रांगे या किसी धातु का कुश्ता, (78) नकली वस्तु यानी पीतल। यह खनिज नहीं है, तांबा और जस्ता मिलाकर बनाते हैं, इसे 'सिफ़र' समझना गलत है। (79) कांसा। हफ़्त जोश सात धातुओं का मिश्रण। (80) भरत, (81) निकल, (82) जर्मन सिल्वर, (83) लकड़ी वगैरह किसी गैर-मिट्टी पदार्थ का कोयला, (84) शोरा, (85) नौसादर, (86) सुहागा, (87) फिटकरी, (88) ज़ाज-ए-अख़ज़र-ए-हिंदी यानी नीला थोथा, (89) बोरा अरमनी, (90) कहरबा जिसकी तस्बीह होती है, यह पत्थर नहीं गोंद है। तज़किरा इब्न सीना।

[बॉक्स 1] बायाँ (अरबी): संदरस की तरह गोंद। ग़ाफ़िकी कहते हैं कि यह डूम (ताड़) के पत्तों से टपकने वाला एक तरल है। इब्न अल-बैतार ने इन दोनों का उल्लेख किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अखरोट का गोंद है या किसी अन्य पेड़ का गोंद है। अनवार अल-असरार। दायाँ (उर्दू): सन्दुरस की तरह एक गोंद है। ग़ाफ़िकी के अनुसार यह गोखरू के पत्तों से टपकने वाला एक तरल है। इन दोनों को इब्न बैतार ने नक़ल किया। ज़ाहिर यह है कि वह अखरोट का गोंद है या इसके अलावा किसी और दरख्त का गोंद है। अनवार अल-असरार। (त)

[बॉक्स 2] बायाँ (अरबी): नोट: इसे बनाने की विधि: (1) शुद्ध मिट्टी, पिसा हुआ कोयला, कटे हुए बाल, निस्तारित नमक, ख़त्मी (मार्शमैलो), लोहे का मैल, चूना, अंडे का छिलका, प्रत्येक का आधा हिस्सा, इत्यादि। 'अत-तज़किरा' से। उन्होंने कहा: इन हिस्सों को कम किया जा सकता है, और उनके वजन बदले जा सकते हैं, लेकिन वे हमारे द्वारा बताए गए से अधिक नहीं होते हैं। अतः इसे सुरक्षित रखा जाए। 12 आमिना, अल्लाह उसे क्षमा करे (म)। दायाँ (उर्दू): इसका नुस्खा यह है: खालिस मिट्टी, पिसा हुआ कोयला, तराशा हुआ बाल, चूनादार नमक, ख़त्मी, लोहे का मेल, सफेद चूना, अंडे का छिलका, सब में से आधा हिस्सा इत्यादि। 'अज़-तज़किरा'। इसमें लिखा है कि ये घटक कभी कम भी कर दिए जाते हैं और कभी उनके वज़नों में तब्दीली भी कर दी जाती है, मगर जितने हमने ज़िक्र किए उनसे ज़्यादा नहीं होते तो इसे महफ़ूज़ रखना चाहिए। 12 आमिना, अल्लाह उसे क्षमा करे (त)।

पृष्ठ 656/756

جلد سوم فتاوٰی رضویہ (۶۷) گلِ حکمت کہ مرکب نسخہ ہے عہ اور غیر جنس ارض کا حصہ زیادہ ہے۔ (۶۸) رام پور چینی کہ مٹی پر مسالا ہے، ہاں جس طرف چینی نہ چڑھی ہو اس طرف روا ہے۔ (۶۹) تام چینی کہ ٹین اور مسالا ہے۔ (۷۰) وہ سچی چینی یا (۷۱) مٹی کے کھلونے جن پر غیر جنس کار و غن ہے۔ (۷۲) وہ نورہ اور (۷۳) گلِ خوردنی اور (۷۴) غلیل کے غلے جن میں غیر جنس مقدار میں کم نہیں۔ (۷۵) پارے کا کٹورا (۷۶) پارے کا کشتہ (۷۷) سونے، چاندی، رانگ کسی دھات کا کشتہ (۷۸) شبہ مصنوع یعنی پیتل۔ یہ معدنی نہیں تانبا اور جست ملا کر بناتے ہیں اسے صفر سمجھنا غلط ہے۔ (۷۹) کانسا۔ ہفت جوش ساتوں دھات کا مجموعہ۔ (۸۰) بھرت، (۸۱) نکل، (۸۲) جرمن سلور، (۸۳) لکڑی وغیرہ کسی غیر جنس ارض کا کوئلہ، (۸۴) شورہ، (۸۵) نوشادر، (۸۶) سہاگا، (۸۷) پھٹکڑی (۸۸) زاج اخضر ہندی یعنی نیلا تھوتھا (۸۹) بورہ ارمنی (۹۰) کہربا جس کی تسبیح ہوتی ہے یہ پتھر نہیں گوند ہے تذکرہ ابن سینا۔

[باکس 1] بائیں (عربی): صمغ کالسندروس الغافقی رطوبة تقطر من ورق الدوم نقلهما ابن البیطار الظاهر انه صمغ الجوز او صمغ شجرة غیره انوارالاسرار۔ دائیں (اردو): سندروس کی طرح ایک گوند ہے۔ غافقی گوکھل کے پتوں سے ٹپکنے والی ایک رطوبت ہے۔ ان دونوں کو ابن بیطار نے نقل کیا۔ ظاہر یہ ہے کہ وہ اخروٹ کا گوند ہے یا اس کے علاوہ کسی اور درخت کا گوند ہے۔ انوارالاسرار۔ (ت)

[باکس 2] بائیں (عربی): عہ: صنعته (۱) طین خالص جزء فحم مسحوق شعر مقصوص، ملح مکلس، خطمی، خبث الحدید، کلس، قشر البیض، من کل نصف جزء الخ من التذکرة قال وقد تنقص هذه الاجزاء وقد تغیر اوزانها ولا یزید علی ما ذکر نا فلیت حفظ به ۱۲ امنہ غفر لہ (م) دائیں (اردو): اس کا نسخہ یہ ہے: خالص مٹی، پسا ہوا کوئلہ، تراشا ہوا بال، چونا دار نمک، خطمی، لوہے کا میل،

سفید چونا، انڈے کا چھلکا، سب سے نصف حصہ الخ_ از تذکرہ_ اس میں لکھا ہے کہ یہ اجزاء کبھی کم بھی کر دئے جاتے ہیں اور کبھی ان کے وزنوں میں تبدیلی بھی کر دی جاتی ہے مگر جتنے ہم نے ذکر کیے ان سے زیادہ نہیں ہوتے تو اسے محفوظ رکھنا چاہیے۔ ۱۲ امنہ غفر لہ (ت)

Fatawa Razawiya Volume Three (91) Safeda Kashgari, which is white lead, meaning it is made from tin and zinc and is applied to sore eyes. (92) Kajal (collyrium) that is applied. (93) Tabashir is the moisture of bamboo that solidifies. (94) Sindoor (vermilion) is made from tin and white lead. (95) Cinnabar (Shanjraf) Misri (Egyptian), (96) Cinnabar Shami (Syrian), (97) Cinnabar Mahousan are all synthetic things; they are made from mercury and sulfur using different formulations. In every formulation, mercury is dominant. (98) Indian Cinnabar, in which both are said to be equal; in any case, it is not of the earth species. (99) Cinnabar Ramani, this is made from mercury and burnt copper; its two components are of different species. Their recipes are in Anwar al-Asrar, Jami ibn al-Baytar, Tazkirah, Tuhfa, Makhzan, etc., and like the mineral red sulfur, it is rare. (It has been mentioned in al-Tazkirah. - Editor) (100) As for Roman Cinnabar, in which mercury is twelve parts, sulfur eight, and orpiment five; although the earth species is dominant, through boiling together a strong mixture occurs, which is a matter of serious consideration. Its explanation will come in the fourth section and the mention of mixing, God willing. Therefore, it is also counted among the prohibited things. (And Allah Almighty knows His rulings best. - Editor) (101) Frankincense (Loban), (102) Agar, (103) Radish salt, (104) Sajji, which is the alkali of a grass. (105) Citric acid (Lemon ka sat), (106) Extracted essence of plants, (107) Salt extracted by burning. (108) Glass, (109) Shell (Seep), (110) Snail (Ghongha), (111) Conch (Sankh), (112) Cowrie (Khurmuhra), (113) Shell lime, and eating it is also prohibited. Lapis Lazuli (Lajward), Tutty (Tutiya), and Snake-stone (Mar Mohra) if they are synthetic, and they are mostly found synthetic. (117) Arsenic (Sankhiya), a famous poison; this too is not a stone. (It was counted in al-Tazkirah among those products whose forms remained incomplete. - Editor). Some said it is silver smoke. (It is stated in al-Makhzan etc. - Editor). (118) Those stones that form in the head or stomach of mountain goats, monkeys, or porcupines. (121) Sang Mahi, a stone in the head of the flatfish, which is a fish. (122) Gorohan, found in the body of a cow. (123) Mar Mohra, found in the head of a snake, which is called 'man' (gem). Page 657 of 756

फतावा रज़विया जिल्द सोम (खंड 3) (91) सफ़ेदा काशगरी, जो कलई का सफ़ेदा है, यानी रांगा और जस्ते से बनता है और दुखती आँखों में भरा जाता है। (92) काजल जो लगाया जाता है। (93) तबाशीर बाँस की नमी है जो जम जाती है। (94) सिंदूर रांगा और सफ़ेदे से बनता है। (95) शंजर्फ़ मिस्री, (96) शंजर्फ़ शामी, (97) शंजर्फ़ महोसान, ये सब कृत्रिम चीज़ें हैं; इन्हें पारे और गंधक से अलग-अलग संयोजनों से बनाया जाता है, हर संयोजन में पारा मुख्य होता है। (98) भारतीय शंजर्फ़, इसमें दोनों को समान बताया गया है; बहरहाल, यह पृथ्वी की श्रेणी (मिट्टी/खनिज) से नहीं है। (99) शंजर्फ़ रमानी, यह पारे और जले हुए तांबे से बनती है; इसके दोनों घटक अलग-अलग श्रेणियों के हैं। इनके नुस्खे अनवारुल असरार, जामे इब्ने बैतार, तज़किरा, तोहफ़ा, मख़ज़न आदि में हैं, और यह खनिज लाल गंधक की तरह दुर्लभ है। (तज़किरा में इसका वर्णन किया गया है। - संपादक) (100) रही रोमन शंजर्फ़, जिसमें पारा बारह भाग, गंधक आठ भाग और हरताल पाँच भाग है; यद्यपि इसमें पृथ्वी श्रेणी का अंश मुख्य है, लेकिन साथ में पकाए जाने से ऐसा गहरा मिश्रण बनता है जो विचारणीय है, जिसका विवरण चौथे भाग और मिश्रण के उल्लेख में आएगा, इंशा अल्लाह ताला। इसलिए इसे भी वर्जित वस्तुओं में गिना जाता है। (अल्लाह ताला अपने आदेशों को सबसे बेहतर जानता है। - संपादक) (101) लोबान, (102) अगर, (103) मूली का नमक, (104) सज्जी जो एक घास का क्षार है। (105) नींबू का सत्त, (106) वनस्पतियों से निकाला गया अर्क, (107) जलाकर निकाला गया नमक। (108) कांच, (109) सीप, (110) घोंघा, (111) शंख, (112) खुरमोहरा (कौड़ी), (113) सीप का चूना और इसका खाना भी हराम है। लाजवर्द, तूतिया और मार मोहरा यदि कृत्रिम हों, और अक्सर कृत्रिम ही मिलते हैं। (117) संख्या (आर्सेनिक) प्रसिद्ध ज़हर है; यह भी पत्थर नहीं है। (तज़किरा में इसे उन उत्पादों में गिना गया है जिनकी आकृति अधूरी रह गई है। - संपादक)। कुछ ने कहा कि यह चांदी का धुआँ है। (मख़ज़न आदि में इसका वर्णन है। - संपादक)। (118) वे पत्थर जो पहाड़ी बकरी, बंदर, साही के सिर या पेट में बनते हैं। (121) संग माही, चपटी मछली के सिर में पाया जाने वाला पत्थर। (122) गोरोचन जो गाय के शरीर में होता है। (123) मार मोहरा जो सांप के सिर में होता है जिसे 'मन' (मणि) कहते हैं। पेज 657 का 756

فتاوی رضویہ جلد سوم (۹۱) سفیدہ کا شگری کہ قلعی کاسپیدہ ہے یعنی رانگ اورجست سے بنتا اور دکھتی آنکھ میں بھرا جاتا ہے۔ (۹۲) کاجل کہ پاراجاتا ہے۔ (۹۳) طباشیر بانس کی رطوبت ہے کہ جم جاتی ہے۔ (۹۴) سیندور رانگ اور سفیدہ سے بنتا ہے۔ (۹۵) شنجرف مصری (۹۶) شنجرف شامی (۹۷) شنجرف مہوسان سب مصنوع چیزیں ہیں پارے اور گندھک سے مختلف ترکیبوں پر بناتے ہیں ہر ترکیب میں پارا غالب ہے۔ (۹۸) شنجرف ہندی اس میں دونوں مساوی بتائے جاتے ہیں بہر حال جنس ارض سے نہیں۔ (۹۹) شنجرف رمانی یہ سیماب ومس سوختہ سے بنتی ہے اس کے دونوں جزغیر جنس ہیں۔ ان کے نسخے انوار الاسرار و جامع ابن بیطار وتذکرہ و تحفہ و مخزن وغیرہا میں ہیں اور معدنی کبریت احمر کی طرح عنقا قالہ فی التذکرۃ (اسے تذکرہ میں بیان کیا گیا ہے۔ ت) (۱۰۰) رہی شنجرف رومی جس میں پارا بارہ اجز، گندھک آٹھ ہرتال پانچ ہے اس میں اگرچہ جنس ارض غالب ہے مگر باہم طبخ سے امتزاج شدید ہو کر سخت محل نظر ہے جس کا بیان مقام چہار وذکر خلط میں آتا ہے ان شاء اللہ تعالٰی لہٰذا اس کا بھی ممنوعات ہی میں شمار رکھا واللہ تعالٰی اعلم باحکامہ (اور اللہ تعالٰی اپنے احکام کو خوب جاننے والا ہے۔ ت) (۱۰۱) لوبان، (۱۰۲) اگر (۱۰۳) مولی کا نمک (۱۰۴) سجّی کہ ایک گھاس کا کھار ہے۔ (۱۰۵) لیموں کاست، (۱۰۶) نباتات کے اڑائے ہوئے جوہر (۱۰۷) جلا کر نکالے ہوئے نمک۔ (۱۰۸) کانچ (۱۰۹) سیپ (۱۱۰) گھونگھا (۱۱۱) سنکھ (۱۱۲) خرمہرہ (۱۱۳) سیپ کا چونا اور اس کا کھانا بھی حرام وہ لاجورد ۱۱۳ و توتیا ۱۱۵ و مہرہ ۱۱۶ مار کہ مصنوع ہوں اور اکثر مصنوع ہی ملتے ہیں۔ (۱۱۷) سنکھیا مشہور زہر یہ بھی پتھر نہیں عدہ فی التذکرۃ من المولدات التی لم تکمل صورہا (تذکرہ کے اندر اسے ان مولدات سے شمار کیا ہے جن کی صورتیں نا تمام رہ گئی ہیں۔ ت) بعض نے کہا چاندی کا دھواں ہے قالہ فی المخزن وغیرہ (اسے مخزن وغیرہ میں بیان کیا ہے۔ ت) (۱۱۸) وہ پتھر کہ پہاڑی بکری ۱۱۹، بند، ساہی ۱۲۰ کے سرو جوف میں بنتے ہیں۔ (۱۲۱) سنگ ماہی پتھر چپٹے کے سر

میں کہ ایک مچھلی ہے۔ (۱۲۲) گو روہن گائے کے بدن میں۔ (۱۲۳) مار مہرہ سانپ کے سر میں جسے من کہتے ہیں۔ صفحہ 657 از 756

Volume 3 (124) Moonstone (Sang-e-Qamar) settles on rocks in the western mountains; it's dark-colored, but when the full moon shines, it becomes bright white. Tayammum is not permissible on it, nor on the rock it has settled on (125). (126) Kidney stones, (127) Bladder stones—both form inside the human body. May Allah protect us. (128) Sang-e-Basri (zinc ore/calamine) is not a stone but the soot of lead. (129) Sang-e-Rasikh is burnt copper. (130) Sang-e-Sunbuniya; these are a type of seeds that are called stones because of their hardness. This is an account of three hundred and eleven items: 181 from which Tayammum is permissible, including 74 specified and 107 added by the humble author, and 130 from which it is not permissible, including 58 specified and 72 added. Such a comprehensive account will not be found elsewhere; forget the additions, even extracting this many specified items wouldn't be easy.

All praise is for Allah, first and last, and through Him is guidance, inwardly and outwardly. May the abundant blessings and peace of Allah be upon His Beloved, his progeny, and his companions. Amen

And all praises, first and last, are for God alone, and through Him guidance is granted inwardly and outwardly. May God Almighty's abundant and plentiful peace and blessings be upon His beloved, his family, and his companions. O Lord, accept it. (T)

Fourth Station: (Discussion on some controversial items) Mention of some ethics along with preferences and reconciliations to complete the benefits (so that the benefits are finalized. T) Moist earth (Ard-e-Nadiyya), i.e., wet land. Its permissibility is explicitly stated in Bada'i (1), Khaniya (2), Khulasa (3), Bazzaziya (4), Khazanat al-Muftin (5), Walwaljiya (6), Diraya (7), Shalabiya (8), Jawhara (9), Munya (10), and Hindiyya (11). And Ibn al-Shalabi mentioned it from al-Kaki, from al-Walwalji, from the Imam, may Allah be pleased with him (Ibn Shalabi reported it from Kaki, who reported it from Walwalji, who reported it from the Imam, may Allah be pleased with him. T).

I say: It was specifically mentioned for illustration when nothing sticks to the hand, as there is also disagreement from the third Imam, just like the second, may Allah be pleased with them all. This is mentioned in Burjandi's commentary on al-Niqaya.

I say: And specifically this was mentioned because the situation is assumed to be such that nothing sticks to the hand. In this case, like the second Imam (Abu Yusuf), the third Imam (Muhammad) will also have a difference of opinion, may Allah be pleased

with them all. And Burjandi has written in Sharh Niqaya that

खंड 3 (124) मूनस्टोन (संग-ए-क़मर) पश्चिमी पहाड़ों में चट्टानों पर इस कदर जम जाता है कि यह गहरे रंग का होता है, लेकिन जब चौदहवीं का चाँद चमकता है तो यह सफ़ेद चमकदार हो जाता है। इस पर भी तयम्मुम जायज़ नहीं है और (125) जिस चट्टान पर वह जमा हो उस पर भी नहीं। (126) गुर्दे की पथरी, (127) मूत्राशय की पथरी—ये दोनों आदमी के शरीर में बनते हैं। अल्लाह हमें बचाए। (128) संग-ए-बसरी कोई पत्थर नहीं बल्कि सीसे का धुआँ है। (129) संग-ए-रासिख़ जला हुआ ताँबा है। (130) संग-ए-सुनबुनिया; ये एक प्रकार के बीज हैं जो अपनी कठोरता के कारण पत्थर कहलाते हैं। यह तीन सौ ग्यारह चीज़ों का विवरण है: 181 जिनसे तयम्मुम जायज़ है, जिनमें 74 उल्लेखित और 107 फकीर (लेखक) की वृद्धियाँ हैं, और 130 जिनसे जायज़ नहीं है, जिनमें 58 उल्लेखित और 72 वृद्धियाँ हैं। ऐसा व्यापक विवरण इस लेखन के अलावा कहीं नहीं मिलेगा, वृद्धियों की तो बात ही छोड़िए, इतने उल्लेखित अंशों को निकालना भी आसान नहीं होगा।

अल्लाह की प्रशंसा है शुरू और अंत में, और उसी की सहायता से आंतरिक और बाहरी रूप में मार्गदर्शन है। अल्लाह का प्रचुर और अत्यधिक दुरूद और सलाम हो उसके प्रिय, उनके वंश और उनके साथियों पर। आमीन

और सारी प्रशंसाएं शुरू और अंत में खुदा ही के लिए हैं, और उसी से आंतरिक और बाहरी रूप से मार्गदर्शन प्राप्त होता है। खुदा तआला का प्रचुर दुरूद और सलाम हो उसके प्रिय, उनके परिवार और उनके साथियों पर। ऐ अल्लाह, स्वीकार कर। (T)

चौथा स्थान: (कुछ विवादित चीज़ों की चर्चा) कुछ नैतिकता का उल्लेख प्राथमिकताओं और सामंजस्य के साथ लाभों को पूरा करने के लिए (ताकि लाभ पूर्ण हो जाएँ। T) नम भूमि (अर्ज़-ए-नदिय्या) यानी गीली ज़मीन। 'बदाइ'१, 'खानिया'२, 'खुलासा'३, 'बज़ाज़िया'४, 'खज़ानतुल मुफ़्तीन'५, 'वलवालजिया'६, 'दराया'७, 'शलपिया'८, 'जौहरा'९, 'मुनिया'१०, 'हिन्दिया'११ में इसकी वैधता का स्पष्ट उल्लेख है। और इब्न-ए-शलपी ने इसे काकी से, उन्होंने वलवालजी से, उन्होंने इमाम रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है। (T)

मैं कहता हूँ: इसे विशेष रूप से इसलिए उल्लेख किया गया है ताकि उस स्थिति को दर्शाया जा सके जब हाथ में कुछ न चिपके, क्योंकि इसमें तीसरे इमाम का भी मतभेद है,

मैं कहता हूँ: और विशेष रूप से इसका उल्लेख इसलिए किया गया है क्योंकि स्थिति ऐसी मानी गई है कि हाथ में कुछ न चिपके। इस स्थिति में, दूसरे इमाम (अबू यूसुफ़) की तरह तीसरे इमाम (मुहम्मद)

ठीक वैसे ही जैसे दूसरे इमाम का, अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो। और बुर्जंदी ने शरह निक़ाया में यह लिखा है।

का भी मतभेद होगा, अल्लाह उन सभी से प्रसन्न हो। और बुर्जंदी ने शरह निक़ाया में यह लिख दिया है कि

पृष्ठ ७५६ का ६५८

جلد سوم (۱۲۴) سنگِ قمر جبالِ مغرب میں چٹانوں پر اس قدر جم جاتی ہے تیرہ رنگ جب چودھویں کا چاند چمکتا ہے تو سفید برّاق ہو جاتی ہے اس پر بھی تیمم جائز نہیں اور (۱۲۵) جس چٹان پر وہ جمی ہوئی ہو اس پر بھی نہیں۔ (۱۲۶) سنگِ گردہ (۱۲۷) سنگِ مثانہ یہ دونوں آدمی کے بدن میں بنتے ہیں۔ والعیاذ باللہ تعالٰی۔ (۱۲۸) سنگِ بصری (۱) پتھر نہیں بلکہ سیسہ کا دھواں ہے۔ (۱۲۹) سنگِ راسخ جلا ہوا تانبا۔ (۱۳۰) سنگِ سُنبونیہ، یہ ایک قسم کے بیچ ہیں سختی کے سبب سنگ کہلاتے ہیں۔ یہ تین سو گیارہ چیزوں کا بیان ہے ۱۸۱ سے تیمم جائز جن میں ۷۴ منصوص اور ۱۰۷ زیادات فقیر اور ۱۳۰ سے ناجائز جن میں ۵۸ منصوص اور ۷۲ زیادات فقیر ایسا جامع بیان اس تحریر کے غیر میں نہ ملے گا بلکہ زیادات در کنار اتنے منصوصات کا استخراج بھی سہل نہ ہو سکے گا۔

واللہ الحمد اولا و اخرا و بہ التوفیق باطنا و ظاہرا و صلی اللہ تعالٰی علی حبیبہ و اٰلہ و صحبہ متوافرا متکاثرا اٰمین

اور ساری خوبیاں اولاً و آخراً خدا ہی کے لیے ہیں اور اسی سے باطناً و ظاہراً توفیق ارزانی بھی ہے۔ خدائے تعالٰی کا کثیر و وافر درود و سلام ہو اس کے حبیب، ان کی آل اور ان کے اصحاب پر۔ الٰہی قبول فرما۔ (ت)

مقامِ چہارم: (بعض اختلافی چیزوں کی بحث) ذکرِ بعض اخلاقیات مع ترجیحات و توفیقات تتمیماً للافادات (تاکہ افادات کی تکمیل ہو جائے۔ ت) ارضِ ندیّہ یعنی تر زمین۔ بدائع۱، خانیہ۲، خلاصہ۳، بزازیہ۴، خزانتہ المفتین، ولوالجیہ۶، درایہ۷، شلبیہ۸، جوہرہ۹، منیہ۱۰، ہندیہ۱۱ میں اس سے جواز کی تصریح ہے و ذکرہ ابن الشلبی عن الکاکی عن الولوالجی عن الامام رضی اللہ تعالٰی عنہ (اسے ابن شلبی نے کاکی سے، انہوں نے ولوالجی سے، انہوں نے امام رضی اللہ تعالٰی عنہ سے بیان کیا ہے۔ ت)

اقول: وانما خصہ بالذکر لتصویرہ بما اذالم یتعلق بیدہ شیئ فیأتی فیہ خلاف الامام الثالث ایضاً کالثانی رضی اللہ تعالیٰ عنہم جمیعاً و وقع فی شرح النقایۃ للبر جندی

اقول: اور خاص طور سے اسی کو اس لیے ذکر کیا ہے کہ اس کی صورت یہ فرض کی ہے کہ اس کے ہاتھ میں کچھ نہ چپکے۔ اس صورت میں امام ثانی (ابویوسف) کی طرح امام ثالث (محمد) کا بھی اختلاف ہوگا رضی اللہ تعالیٰ عنہم جمیعاً۔ اور برجندی نے شرح نقایہ میں یہ لکھ دیا ہے کہ

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Arabic Text Section]: "It is permissible [to perform Tayammum] with moist earth that is not mud, according to me [Imam Abu Hanifa], while according to the two companions [Abu Yusuf and Muhammad], it is not permissible." (Ah). I say firstly (1): This saying is based on the weak opinion of the non-permissibility of Tayammum with mud, as will follow. Secondly: There is no reason (2) for Imam Muhammad's disagreement to be absolute. Malik al-Ulama stated in Al-Bada'i: "If one performs Tayammum with it [mud], it is sufficient according to Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad, because mud is part of the components of the earth, and the water in it is consumed [absorbed] within the soil (Annotation: and it sticks to the hand). So, if there is a fear of the prayer time passing, according to the two companions [Abu Hanifa and Muhammad], one should perform Tayammum with mud and pray. According to the analogy of Abu Yusuf's opinion, one should pray without Tayammum through gestures, then repeat the prayer when water or clean soil is available. This is like the ruling for a person imprisoned in a toilet (3) where neither water nor clean soil is found." (Ah). Yes, another narration is reported from him [Imam Muhammad]. It is stated in Al-Hilya, after quoting what was in Al-Bada'i: "What was mentioned from Muhammad regarding the permissibility of Tayammum with mud..."

[Urdu Explanation Section]: "Tayammum is permissible from moist land without mud. This is the ruling according to Imam Abu Hanifa, and according to the two companions [Abu Yusuf and Muhammad], it is impermissible." (Ah). (T) I say firstly: This statement is based on the weak opinion of the impermissibility of Tayammum with mud. Secondly: There is no reason for Imam Muhammad's disagreement to be absolute in this matter. Malik al-Ulama wrote in Al-Bada'i: "If one performs Tayammum with mud, it will be sufficient according to Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad because mud is from the parts of the earth. And the water in it is vanished into the soil, and it sticks to the hand. So, if there is fear of the time passing, then according to the two parties [Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad], one should perform Tayammum with mud and offer prayer. According to Imam Abu Yusuf's analogy, the ruling will be to offer prayer through gestures without Tayammum, then when one gains power over water or soil, repeat it. Just like the ruling for the person who is imprisoned in a toilet and finds neither water nor clean soil." (Ah). Yes, another narration has also come from Imam Muhammad. In Al-Hilya,

after quoting the text of Al-Bada'i, it is written: "The ruling of permissibility of Tayammum from mud which is quoted from Imam Muhammad, that from them..."

Annotation: i.e., mud sticking to the hand was added as a condition to complete the requirement according to the saying of Imam Muhammad (M). 12 from him, may he be forgiven. (T)

Footnotes: 1. Sharh al-Niqayah by Al-Birjandi, Chapter on Tayammum, Naval Kishore Press, Lahore, 1/7. 2. Bada'i al-Sana'i, Explanation of what is permissible for Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/54.

फतावा रज़विया, खंड 3

[अरबी पाठ अनुभाग]: "बिना कीचड़ वाली गीली ज़मीन से तयम्मुम जायज़ है। यह मेरे [इमाम अबू हनीफ़ा] के अनुसार है, जबकि दो साथियों [अबू यूसुफ़ और मुहम्मद] के अनुसार, यह जायज़ नहीं है।" (अह). मैं सबसे पहले कहता हूँ (1): यह कथन कीचड़ के साथ तयम्मुम की गैर-जायज़ता की कमज़ोर राय पर आधारित है, जैसा कि आगे आएगा। दूसरा: इमाम मुहम्मद की असहमति के पूर्ण होने का कोई कारण (2) नहीं है। मलिक अल-उलमा ने अल-बदाइ में कहा है: "यदि कोई इसके [कीचड़] के साथ तयम्मुम करता है, तो इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद के अनुसार यह पर्याप्त है, क्योंकि कीचड़ पृथ्वी के घटकों का हिस्सा है, और इसमें मौजूद पानी मिट्टी के भीतर विलीन (खपत) हो जाता है (टिप्पणी: और यह हाथ से चिपक जाता है)। इसलिए, यदि प्रार्थना का समय बीत जाने का डर हो, तो दोनों साथियों [अबू हनीफ़ा और मुहम्मद] के अनुसार, कीचड़ से तयम्मुम करना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए। अबू यूसुफ़ की राय के सादृश्य के अनुसार, बिना तयम्मुम के इशारों के माध्यम से प्रार्थना करनी चाहिए, फिर पानी या साफ मिट्टी उपलब्ध होने पर प्रार्थना दोहरानी चाहिए। यह उस व्यक्ति के लिए निर्णय की तरह है जो शौचालय (3) में कैद है जहाँ न तो पानी मिलता है और न ही साफ़ मिट्टी।" (अह)। हाँ, उनसे [इमाम मुहम्मद] एक और रिवायत दर्ज है। अल-हिल्या में, अल-बदाइ में जो था उसे उद्धृत करने के बाद कहा गया है: "मुहम्मद से कीचड़ के साथ तयम्मुम की अनुमेयता के बारे में जो उल्लेख किया गया था..."

[उर्दू स्पष्टीकरण अनुभाग]: "बिना कीचड़ वाली गीली ज़मीन से तयम्मुम जायज़ है। यह हुक्म इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक है, और साहिबैन के नज़दीक नाजायज़ है।" (अह)। (त) मैं सबसे पहले कहता हूँ: यह बात कीचड़ से तयम्मुम के नाजायज़ होने के कमज़ोर मत पर आधारित है। दूसरा: इस मसले में इमाम मुहम्मद का मतभेद पूर्णतः होने का कोई कारण नहीं है। मलिक अल-उलमा ने 'बदाइ' में लिखा है: "अगर कीचड़ से तयम्मुम कर लिया तो इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद के नज़दीक काफी होगा क्योंकि कीचड़ ज़मीन का ही हिस्सा है। और उसमें जो पानी है वह मिट्टी में विलीन हो चुका है और वह हाथ से चिपकती है। तो अगर समय निकलने का डर हो तो दोनों इमामों (अबू हनीफ़ा और मुहम्मद) के नज़दीक कीचड़ से तयम्मुम करके नमाज़ अदा कर ले और इमाम अबू यूसुफ़ के क़यास (तर्क) पर यह हुक्म होगा कि बिना तयम्मुम के इशारे से नमाज़ पढ़ ले, फिर जब पानी या मिट्टी मिल जाए तो नमाज़ दोबारा पढ़े। जैसा कि उस व्यक्ति का हुक्म है जिसे शौचालय में कैद कर दिया गया हो और उसे न पानी मिले न साफ़ मिट्टी।" (अह)। हाँ इमाम मुहम्मद से एक

और रिवायत भी आई है। 'हिलिया' में 'बदाइ' की इबारत नक़ल करने के बाद लिखा है: "कीचड़ से तयम्मुम के जायज़ होने का जो हुक्म इमाम मुहम्मद से नक़ल किया गया है वह उनसे..."

टिप्पणी: यानी कीचड़ का हाथ से चिपकना इमाम मुहम्मद के कौल (कथन) की शर्त को पूरा करने के लिए बढ़ाया गया है। 12 उनसे, क्षमा हो। (त)

पाद-लेख: 1. शरह अल-निक़ाया, अल-बिरजंदी, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लाहौर, 1/7. 2. बदाइ अल-स़नाइ, तयम्मुम के लिए जायज़ चीज़ों का वर्णन, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/54.

يجوز بالأرض الندية من غير طين وهذا عندي حنيفة وعند هما لا يجوز اهـ. اقول اولاً (۱) : بنی علی الضعیف من عدم الجواز بالطین ویأتی۔ وثانیًا : لا وجه (۲) بخلاف محمد مطلقاً فقد قال ملك العلماء في البدائع لو تيمم به اجزأه عند ابی حنیفة و محمد لان الطین من اجزاء الارض ومافیه من الماء مستهلك عہ وهو یلتزق بالید فان خاف ذهاب الوقت تیمم و صلی عندهما وعلی قیاس قول ابی یوسف یصلی بغیر تیمم بالایماء ثم یعید اذا قدر علی الماء اوالتراب کالمحبوس (۳) فی المخرج اذالم یجد ماء ولا تراب نظیفًا اهـ نعم عنه روایة اخری قال في الحلیة بعد نقل ما فی البدائع ما ذکره عن محمد من جواز التیمم بالطین

"بغیر کیچڑ والی تر زمین سے تیمم جائز ہے۔ یہ حکم امام ابوحنیفہ کے نزدیک ہے، اور صاحبین کے نزدیک ناجائز ہے "اھ (ت) اقول اولاً : یہ قول ضعیف۔ کیچڑ سے عدم جواز تیمم پر مبنی ہے۔ ثانیا : اس مسئلہ میں امام محمد کا اختلاف مطلقاً ہونے کی کوئی وجہ نہیں۔ ملک العلماء نے بدائع میں یہ تحریر فرمایا ہے : "اگر کیچڑ سے تیمم کر لیا تو امام ابو حنیفہ و امام محمد کے نزدیک کافی ہو گا اس لیے کہ کیچڑ اجزائے زمین میں سے ہے۔ اور اس میں جو پانی ہے مٹی میں فنا شدہ ہے اور وہ ہاتھ سے چپکتی ہے۔ تو اگر وقت نکلنے کا اندیشہ ہو طرفین کے نزدیک کیچڑ سے تیمم کر کے نماز ادا کرلے اور امام ابویوسف کے قیاس پر یہ حکم ہو گا کہ بغیر تیمم کے اشارہ سے نماز کی صورت ادا کرلے پھر جب پانی یا مٹی پر قدرت پائے تو اعادہ کر لے۔ جیسے اس شخص کا حکم ہے جو بیت الخلاء میں قید کر یا گیا ہو اور اسے نہ پانی دستیاب ہو نہ صاف مٹی "اھ ہاں امام محمد سے ایک اور روایت بھی آئی ہے۔ حلیہ میں بدائع کی عبارت نقل کرنے کے بعد لکھا ہے "کیچڑ سے جواز تیمم کا حکم جو امام محمد سے نقل کیا ہے وہ ان سے

عه: ای الطین اضافه تتمیما للشریطة علی قول محمد ۱۲ منه غفرله (م) یعنی کیچڑ ہاتھ سے چپکنے کی بات امام محمد کے قول پر شرط کی تکمیل کے لیے بڑھائی ہے۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

1 شرح النقایة للبر جندی فصل فی التیمم مطبع نولکشور بالہور ۱/۷ 2 بدائع الصنائع بیان ما یجوز بہ التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۵۴ Page 659 of 756

Fatawa Razawiyya - Volume 3

[Arabic Text Block]: It is one of the two narrations from him as is evident from the apparent text of al-Khulasa, and it has been clearly stated in al-Nihaya that one of the two narrations from [Imam] Muhammad is that Tayammum (dry ablution) with mud is not permissible. (End of quote). I say: The text of al-Khulasa from the actual text of Imam Muhammad himself in al-Mabsut is as follows: "It is in al-Asl: Abu Hanifa and Muhammad say that Tayammum is permissible with everything that is of the genus of the earth and its parts, such as soil, sand, lime (and he listed some things until he said) and Abu Yusuf said: It is not permissible except with soil. Then, according to us, there is no difference regarding a stone whether there is dust on it or not, whether it is washed or not washed, crushed or not crushed. And Muhammad said: If the stone is crushed or has dust on it, Tayammum is permissible, otherwise not. And if one performs Tayammum on earth on which water has been sprinkled and moisture remains on it, it is permissible. And if one is in pure mud, one should not perform Tayammum [directly], rather one should stain some of one's clothes or body with it and leave it until it dries, then perform Tayammum with it. Despite this, if one performs Tayammum with mud, it is subject to disagreement. Al-Karkhi said: Tayammum with mud is permissible. And if one performs Tayammum with a smooth or washed stone, it is permissible according to Abu Hanifa and according to Abu Yusuf..."

[Urdu Translation/Commentary]: It is a narrated report, as is evident from the apparent text of al-Khulasa, and in al-Nihaya, there is explicit mention that a report from Imam Muhammad has come stating that Tayammum with mud is not permissible. (End of quote). (T) I say: In al-Khulasa, this text is presented by citing Imam Muhammad's own book, al-Mabsut. "In al-Asl, it says: Abu Hanifa and Muhammad say that Tayammum is permissible with everything that is of the genus of the earth and its parts, like soil, sand, lime (and several other things were counted until he said), and Abu Yusuf says: It is not permissible from anything other than soil. Then, for us, there is no distinction in stone whether there is dust on it or not, whether it is washed or not, or crushed or not; and Imam Muhammad says: if the stone is crushed or has dust on it, Tayammum is permissible, otherwise not. And if one performed Tayammum from a land on which water was sprinkled and moisture still remains on it, then this Tayammum is permissible. And if one is in pure mud, 'do not perform Tayammum [directly]', rather stain some of your clothes or body with it and leave it until it dries, then perform Tayammum with it. Despite this, if Tayammum

was indeed performed with mud, there is a difference of opinion. Imam al-Karkhi says: Tayammum with mud is permissible. And if Tayammum was performed with a clean, smooth, or washed stone, then it is permissible according to Imam Abu Hanifa and according to Imam Abu Yusuf..."

---

1 Hilya

फतावा रज़विया - खंड 3

[अरबी पाठ ब्लॉक]: यह उनसे दो रिवायतों में से एक है जैसा कि 'खुलासा' की ज़ाहिरी इबारत से मालूम होता है, और 'निहाया' में तो इस बात की स्पष्टता मौजूद है कि इमाम मुहम्मद से एक रिवायत यह आई है कि कीचड़ से तयम्मुम जायज़ नहीं है। (इति)। मैं कहता हूँ: 'खुलासा' में ख़ुद इमाम मुहम्मद की किताब 'मबसूत' के हवाले से यह इबारत पेश की गई है। "असल में है: अबू हनीफा और मुहम्मद कहते हैं कि तयम्मुम हर उस चीज़ से जायज़ है जो ज़मीन की जिंस (प्रकृति) और उसके अंगों से हो जैसे मिट्टी, रेत, चूना (और भी कुछ चीज़ें गिनीं यहाँ तक कि कहा) और अबू यूसुफ़ कहते हैं: मिट्टी के अलावा किसी चीज़ से जायज़ नहीं। फिर हमारे नज़दीक पत्थर में इसमें कोई फ़र्क़ नहीं कि उस पर धूल है या नहीं, धोया हुआ है या नहीं, पिसा हुआ है या नहीं, और इमाम मुहम्मद कहते हैं: अगर पत्थर पिसा हुआ हो या उस पर धूल हो तो तयम्मुम जायज़ है वर्ना नहीं। और अगर किसी ऐसी ज़मीन से तयम्मुम किया जिस पर पानी छिड़का गया था और उस पर अभी नमी बाक़ी है तो यह तयम्मुम जायज़ है और अगर पाक कीचड़ में हो तो "तयम्मुम न करे" बल्कि अपने किसी कपड़े या जिस्म को उससे सराबोर करके सूखने तक छोड़ दे फिर उससे तयम्मुम करे। इसके बावजूद अगर कीचड़ से तयम्मुम कर ही लिया तो इसमें मतभेद है। और इमाम करख़ी फ़रमाते हैं: कीचड़ से तयम्मुम जायज़ है। और अगर साफ़, चिकने या धुले हुए पत्थर से तयम्मुम कर लिया तो इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक जायज़ है और इमाम अबू यूसुफ़ के[वाक्य अगली पृष्ठ पर जारी है]..."

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: यह एक रिवायत है, जैसा कि 'खुलासा' की ज़ाहिरी इबारत से पता चलता है, और 'निहाया' में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि इमाम मुहम्मद से एक रिवायत आई है कि कीचड़ से तयम्मुम जायज़ नहीं है। (इति)। (त) मैं कहता हूँ: 'खुलासा' में स्वयं इमाम मुहम्मद की पुस्तक 'मबसूत' के संदर्भ में यह पाठ प्रस्तुत किया गया है। "असल में है: अबू हनीफा और मुहम्मद कहते हैं कि तयम्मुम हर उस चीज़ से जायज़ है जो ज़मीन की प्रकृति और उसके अंगों से संबंधित है, जैसे मिट्टी, रेत, चूना (और यहाँ तक कि कुछ और चीज़ों का उल्लेख किया गया), और अबू यूसुफ़ कहते हैं: मिट्टी के अलावा किसी और चीज़ से जायज़ नहीं है। फिर हमारे अनुसार, पत्थर में कोई भेद नहीं है कि उस पर धूल है या नहीं, वह धुला हुआ है या नहीं, या पिसा हुआ है या नहीं; और इमाम मुहम्मद कहते हैं: यदि पत्थर पिसा हुआ है या उस पर धूल है, तो तयम्मुम जायज़ है, अन्यथा नहीं। और यदि किसी ऐसी भूमि से तयम्मुम किया गया जिस पर पानी छिड़का गया था और उस पर अभी भी नमी बाकी है, तो यह तयम्मुम जायज़ है। और यदि आप शुद्ध कीचड़ में हैं, तो 'तयम्मुम न करें', बल्कि अपने कपड़ों या

शरीर के कुछ हिस्सों पर इसे लगाएँ और सूखने तक छोड़ दें, फिर उससे तयम्मुम करें। इसके बावजूद, यदि कीचड़ से तयम्मुम किया गया, तो इसमें मतभेद है। इमाम अल-करखी कहते हैं: कीचड़ से तयम्मुम जायज़ है। और यदि तयम्मुम एक साफ, चिकने या धुले हुए पत्थर से किया गया था, तो यह इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ के अनुसार जायज़ है..."

---

1 हिलिया

पृष्ठ 660 का 756

[عربی عبارت]: احدی الروایتین عنه کما هو ظاهر الخلاصة وقد صرح في النهایة بأن في احد الروایتین عن محمد لایجوز التیمم بالطین ۱ اهـ اقول: عبارة الخلاصة عن نص الامام محمد نفسه في المبسوط هکذا و في الاصل قال ابوحنیفة ومحمد یجوز التیمم بجمیع ماکان من جنس الارض ومن اجزائها نحو التراب والرمل والنورة (وعد اشیاء الی ان قال) وقال ابویوسف لا یجوز الا بالتراب ثم عندنا لا فرق في الحجر علیه غبار اولم یکن مغسولا او غیر مغسول مدقوقا او غیر مدقوق وقال محمد ان کان الحجر مدقوقا او علیه غبار جاز التیمم والا فلا۔ وان تیمم بارض قدرش علیها الماء وبقی علیها ندوة جاز ولو کان في طین طاهر لایتیمم بل یلطخ بعض ثیابه او جسده ویترکه حتی یجف ثم یتیمم به ومع هذا الوتیمم بالطین فهو علی الخلاف وقال الکرخي یجوز التیمم بالطین ولو تیمم بالحجر الاملس او المغسول یجوز عند ابي حنیفة وعند ابي یوسف

[اردو ترجمہ و تشریح]: نقل شدہ ایک روایت ہے جیسا کہ خلاصہ کی ظاہر عبارت سے معلوم ہوتا ہے اور نہایہ میں تو اس بات کی صراحت موجود ہے کہ امام محمد سے ایک روایت یہ آئی ہے کہ کیچڑ سے تیمم جائز نہیں۔ اھـ (ت) اقول: خلاصہ میں خود امام محمد کی کتاب مبسوط کے حوالہ سے یہ عبارت پیش کی ہے۔ "اصل میں ہے: ابوحنیفہ و محمد کہتے ہیں تیمم ہر اس چیز سے جائز ہے جو زمین کی جنس اور اس کے اجزاء سے ہو جیسے مٹی، ریت، چونا (اور بھی کچھ چیزیں شمار کرائیں یہاں تک کہ فرمایا) اور ابویوسف کہتے ہیں: مٹی کے علاوہ کسی چیز سے جائز نہیں۔ پھر ہمارے نزدیک پتھر میں اس کی کوئی تفریق نہیں کہ اس پر گرد ہے یا نہیں، دھلا ہوا ہے یا نہیں پسا ہوا ہے یا نہیں، اور امام محمد کہتے ہیں: اگر پتھر پسا ہوا ہو یا اس پر گرد ہو تو تیمم جائز ہے ورنہ نہیں۔ اور اگر کسی ایسی زمین سے تیمم کیا جس پر پانی چھڑک گیا تھا اور اس پر ابھی

تری باقی ہے تو یہ تیمم جائز ہے اور اگر پاک کیچڑ میں ہو تو " تیمم نہ کرے " بلکہ اپنے کسی کپڑے یا جسم کو اس سے آلودہ کر کے خشک ہونے تک چھوڑ دے پھر اس سے تیمم کرے۔ اس کے باوجود اگر کیچڑ سے تیمم کر ہی لیا تو اس میں اختلاف ہے۔ اور امام کرخی فرماتے ہیں: کیچڑ سے تیمم جائز ہے۔ اور اگر صاف، چکنے یا دھلے ہوئے پتھر سے تیمم کر لیا تو امام ابو حنیفہ کے نزدیک جائز ہے اور امام ابو یوسف کے

---

1 حلیہ

Fatawa-e-Razviyya, Volume Three.

[Left Column]: It is not permissible. From Imam Muhammad, there are two narrations: in one narration, it is permissible if there is dust on it, and in another narration, it is permissible unconditionally. Performing Tayammum with baked bricks is permissible according to Imam Abu Hanifa, while from Imam Muhammad there are two narrations and the opinion of Imam Abu Yusuf is hesitant. For new pottery (khazaf), there is a difference of opinion unless some medicine was used in its making, in which case it is not permissible. If Tayammum is performed on land where water seeps up, the same difference of opinion mentioned regarding pottery applies. And on this difference is the matter of Tayammum with mud. (Finis). Thus, the text of Imam Muhammad in 'Zahir al-Riwayah' mentions the permissibility of Tayammum with everything belonging to the genus and components of the earth, and that he is with the Imam (Abu Hanifa) on this, and the difference is with Abu Yusuf. Then he pointed to the issue of crushed stone, stating that Imam Muhammad stipulates adherence to the hand. Then he referred Tayammum with mud back to the mentioned difference, and specified permissibility according to the two companions (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad) because it is definitely from the genus and components of the earth, and there is no doubt it adheres to the hand, so his statement...

[Right Column]: According to [him] it is not permissible, and from Imam Muhammad there are two narrations. One narration says if there is dust on it, it is permissible, and the other narration says it is permissible absolutely. Performing Tayammum with baked bricks is permissible according to Imam Abu Hanifa. From Imam Muhammad there are two narrations. The opinion of Imam Abu Yusuf is hesitant. There is also a difference of opinion regarding new earthenware (khazaf - baked clay vessels, etc.), but if any medicine has been used in it, then Tayammum is not permissible from it. If Tayammum is performed from such land where water moisture rises, then the same difference applies as mentioned regarding earthenware, and the same difference exists regarding Tayammum with mud. "Ah" (T). From this detail, it is known that in 'Al-Khulasa', the text from 'Zahir al-Riwayah' of Imam Muhammad is mentioned, stating that Tayammum is permissible with everything that belongs to the genus and parts of the earth, and that in this matter, Imam Muhammad is with the Great Imam (Abu Hanifa); the difference is with Imam Abu Yusuf. Then, explaining the issue of crushed stone, he pointed out that according to Imam Muhammad, it being stuck or adhering to the hand is a condition. Then, referring to the mentioned difference

regarding Tayammum with mud, he provided the clarification that it is permissible according to the two sides (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad) because it is certainly from the genus and parts of the earth, and there is also no doubt about its sticking or adhering to the hand. So their statement became just like that...

[Footer]: 1. Khulasa-tul-Fatawa, Chapter on substances with which Tayammum is permissible, published by Naval Kishore Lucknow, 1/35 to 36. Page 661 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड तीन।

[बायाँ स्तंभ]: जायज़ नहीं है और मोहम्मद से दो रिवायतें हैं: एक रिवायत में है कि अगर उस पर गुबार (धूल) हो तो जायज़ है और एक रिवायत में मुतलक़न जायज़ है। और पकी ईंट से इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक जायज़ है और मोहम्मद से दो रिवायतें हैं और अबू यूसुफ़ का कौल मुतरद्दिद है। और नए खज़फ़ (मिट्टी के बर्तन) पर मतभेद है सिवाय इसके कि उसमें दवाओं में से कुछ इस्तेमाल किया गया हो, तो उस समय जायज़ नहीं है। और अगर ऐसी ज़मीन पर तयम्मुम किया जहाँ से पानी रिसता हो तो वही मतभेद होगा जो हमने खज़फ़ में उल्लेख किया, और इसी मतभेद पर मिट्टी (कीचड़) से तयम्मुम है। (अह)। तो ज़ाहिर अल-रिवाया में मोहम्मद के पाठ का उल्लेख किया गया है कि हर उस चीज़ से तयम्मुम जायज़ है जो ज़मीन की जिन्स और उसके भागों में से हो, और वह इसमें इमाम के साथ हैं, और मतभेद अबू यूसुफ़ के लिए है। फिर कुटे हुए पत्थर के मसले की ओर इशारा किया कि मोहम्मद हाथ से चिपकने की शर्त लगाते हैं। फिर मिट्टी (कीचड़) के तयम्मुम को उल्लेखित मतभेद पर छोड़ दिया और तरफ़ैन (दोनों इमामों) के नज़दीक इसके जायज़ होने को स्पष्ट कर दिया क्योंकि यह निश्चित रूप से ज़मीन की जिन्स और उसके भागों में से है, और इसमें कोई संदेह नहीं कि यह हाथ से चिपकता है, तो उनका कलाम (कथन)...

[दायाँ स्तंभ]: नजदीक जायज़ नहीं और इमाम मोहम्मद से दो रिवायतें हैं। एक रिवायत में है कि अगर उस पर धूल हो तो जायज़ है और दूसरी रिवायत में है कि मुतलक़न (बिना शर्त) जायज़ है। और पक्की ईंट से इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक तयम्मुम जायज़ है। इमाम मोहम्मद से दो रिवायतें हैं। और इमाम अबू यूसुफ़ का कौल (कथन) मुतरद्दिद (दुविधापूर्ण) है। नए खज़फ़ (मिट्टी के पके हुए बर्तन आदि) में भी मतभेद है, लेकिन जब उसमें कोई दवा इस्तेमाल की गई हो, तो उस समय उससे तयम्मुम जायज़ नहीं। अगर किसी ऐसी ज़मीन से तयम्मुम किया जिसमें पानी की नमी उभरती है, तो उसमें भी वही मतभेद है जो खज़फ़ के संबंध में उल्लेख हुआ और कीचड़ से तयम्मुम में भी यही मतभेद है। "अह" (त) इस विवरण से पता चला कि 'खुलासा' में इमाम मोहम्मद की 'ज़ाहिर अल-रिवाया' की इबारत (पाठ) का उल्लेख किया गया है कि हर उस चीज़ से तयम्मुम जायज़ है जो ज़मीन की जिन्स (प्रकार) और उसके अंगों से हो, और यह कि इस मामले में इमाम मोहम्मद, इमाम-ए-आज़म के साथ हैं; मतभेद इमाम अबू यूसुफ़ का है। फिर पिसे हुए पत्थर के मसले का वर्णन करके इस बात की ओर इशारा किया कि इमाम मोहम्मद के नज़दीक हाथ से लगना, चिपकना शर्त है। फिर कीचड़ से तयम्मुम के बारे में उसी उल्लेखित मतभेद का हवाला देकर यह स्पष्टता प्रदान कर दी कि

तरफ़ैन (दोनों पक्षों - इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मोहम्मद) के नज़दीक जायज़ है क्योंकि यह निश्चित रूप से ज़मीन की जिन्स और उसके अंगों से है और हाथ से इसके चिपकने, लगने में भी कोई संदेह नहीं। तो उनकी बात बिल्कुल वैसे ही हुई...

[फुटर]: 1. खुलासा-तुल-फ़तावा, जिन्स आख़िर मा यजूसु बिहि अल-तयम्मुम, नवल किशोर लखनऊ द्वारा प्रकाशित, 1/35 से 36। पृष्ठ 756 में से 661

[بایاں کالم]: لایجوز وعن محمد روایتان في روایة یجوز ان کان علیه غبار وفی روایة یجوز مطلقا وبالآجر یجوز عند ابی حنیفہ وعن محمد روایتان وقول ابی یوسف متردد و الخزف الجدید علی الاختلاف الا اذا استعمل فیه شیئ من الادویة فحینئذ لایجوز ولو تیمم بارض نزت علی الاختلاف الذي ذکرنا في الخزف وعلی هذا الخلاف التیمم بالطین اهـ فقد ذکر نص محمد فی ظاہر الروایة جواز التیمم بکل ما کان من جنس الارض واجزائها وانہ مع الامام فیہ وان الخلاف لابی یوسف ثم اشار بمسألة الحجر المدقوق ان محمد ایشترط الالتزاق بالید ثم احال التیمم بالطین علی الخلاف المذکور فنص علی الجواز عند الطرفین لانه من جنس الارض واجزائها قطعا ولا شك انه یلتزق بالید فکان کلامه

[دایاں کالم]: نزدیک جائز نہیں اور امام محمد سے دو روایتیں ہیں۔ ایک روایت میں ہے کہ اگر اس پر غبار ہو تو جائز ہے اور دوسری روات میں ہے کہ مطلقاً جائز ہے۔ اور پکی اینٹ سے امام ابوحنیفہ کے نزدیک تیمم جائز ہے۔ امام محمد سے دو روایتیں ہیں۔ اور امام ابویوسف کا قول متردد ہے۔ نئے خزف (مٹی کے پکے ہوئے برتن وغیرہ) میں بھی اختلاف ہے مگر جب اس میں کوئی دوا استعمال کی گئی ہو تو اس وقت اس سے تیمم جائز نہیں۔ اگر کسی ایسی زمین سے تیمم کیا جس میں پانی کی تری ابلتی ہے تو اس میں بھی وہی اختلاف ہے جو خزف سے متعلق ذکر ہوا اور کیچڑ سے تیمم میں بھی یہی اختلاف ہے۔ "اہـ" (ت) اس تفصیل سے معلوم ہوا کہ خلاصہ میں امام محمد کی ظاہر الروایہ کی عبارت ذکر فرمائی ہے کہ ہر اس چیز سے تیمم جائز ہے جو زمین کی جنس اور اس کے اجزاء سے ہو اور یہ کہ اس مسئلہ میں امام محمد، امام اعظم کے ساتھ ہیں اختلاف امام ابویوسف کا ہے۔ پھر پسے ہوئے پتھر کا مسئلہ بیان کر کے اس بات کی طرف اشارہ فرمایا کہ امام محمد کے نزدیک ہاتھ سے لگنا، چپکنا شرط ہے۔ پھر کیچڑ سے تیمم کے بارے میں اسی ذکر شدہ

اختلاف کا حوالہ دے کر یہ صراحت فراہم کردی کہ طرفین کے نزدیک جائز ہے اس لیے کہ یہ یقیناً زمین کی جنس اور اس کے اجزاء سے ہے اور ہاتھ سے اس کے چپکنے، لگنے میں بھی کوئی شک نہیں۔ تو ان کا کلام ٹھیک ویسے ہی ہوا

[فٹر]: 1 خلاصہ الفتاویٰ جنس آخر ما یجوز به التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ 1 / 35 تا 36

Fatawa Rizwia Volume 3

As the statement of Malik al-Ulama is exactly the same. Then, he explained through the issues of washed stones and baked bricks that Imam Muhammad, in one of his narrations, agrees with Imam Azam that it is not a condition for something to stick to the hand. Then, he referred the issue of earthenware (khazaf) to the disagreement. It is apparent that this refers to the same disagreement mentioned regarding baked bricks, as he mentioned it immediately after it, and because they share the same reasoning: that nothing detaches from either of them to stick to the hand. From this, it is also inferred that regarding earthenware, there are two narrations from Imam Muhammad. In one narration, it is absolutely permissible, coinciding with the school of thought of Imam Azam. In the second narration, it is not permissible unless it is crushed or has dust on it, as mentioned regarding stone; and this is his famous narration. Then, he referred the issues of damp ground and mud to the disagreement mentioned regarding earthenware. From this, it is inferred that there are also two narrations from Imam Muhammad regarding these two. The phrase in 'Al-Hilyah', "as is apparent from Al-Khulasah", means this (which we have clarified by detailing the text of Al-Khulasah). (T)

I say: But what are these two narrations? One is absolute permissibility, and the other is permissibility conditional upon sticking. However, the fact that absolute non-permissibility from mud is narrated from Imam Muhammad, as mentioned by 'Al-Hilyah' citing 'An-Nihayah', is neither inferred from the apparent meaning of 'Al-Khulasah' nor does it even hint at it. Furthermore, it is a certain matter...

फतावा रज़विया जिल्द 3

जैसे मलिक अल-उलेमा का कथन बिलकुल वैसा ही है। फिर उन्होंने धुले हुए पत्थर और पकी हुई ईंट के मसलों से यह बताया कि इमाम मुहम्मद अपनी एक रिवायत में इमाम आज़म के साथ सहमत हैं कि हाथ पर कुछ चिपकना शर्त नहीं है। फिर उन्होंने मिट्टी के बर्तनों (खज़फ़) के मसले को मतभेद की ओर संदर्भित किया। ज़ाहिर है कि इससे मुराद वही मतभेद है जिसका ज़िक्र पकी ईंट के बारे में हुआ, क्योंकि उन्होंने इसे उसके तुरंत बाद ज़िक्र किया है, और इसलिए भी कि दोनों में यह कारण साझा है कि दोनों में से कोई भी ऐसी चीज़ अलग नहीं होती जो हाथ से चिपक जाए। इससे यह भी पता चलता है कि मिट्टी के बर्तनों के बारे में इमाम मुहम्मद से दो रिवायतें हैं। एक रिवायत में यह मुतलक़न (बिना शर्त) जायज़ है, जैसा कि इमाम आज़म का मत है। दूसरी रिवायत में यह तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि वह पिसा हुआ न हो या उस पर धूल न हो, जैसा कि पत्थर के बारे में बताया गया है; और यही उनकी मशहूर रिवायत है। फिर उन्होंने नमी वाली ज़मीन और कीचड़ के मसलों को उसी मतभेद की ओर संदर्भित किया जो मिट्टी के बर्तनों के बारे में ज़िक्र हुआ था। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि इन दोनों के बारे में भी इमाम मुहम्मद से दो रिवायतें हैं। 'अल-हिलया' की इबारत "जैसा कि खुलासा के ज़ाहिर से मालूम होता है" का मतलब यह हुआ (जिसे हमने खुलासा की इबारत का विवरण देकर स्पष्ट किया है)। (त)

मैं कहता हूँ: लेकिन ये दो रिवायतें क्या हैं? यही कि मुतलक़न जवाज़ है या चिपकने की शर्त के साथ जवाज़ है। लेकिन कीचड़ से मुतलक़न अदम-ए-जवाज़ (नाजायज़ होना) की इमाम मुहम्मद से कोई रिवायत होना, जैसा कि हिलया ने निहाया के हवाले से ज़िक्र किया, यह बात न तो खुलासा के ज़ाहिर से समझ आती है और न ही इसका उससे भ्रम होता है। फिर यह बात निश्चित है...

पृष्ठ 756 का 662

جیسے ملك العلماء کا کلام ہے۔ ثم افاد بمسألتی الحجر المغسول والأجران محمدا في روایة عنه یوافق الامام في عدم اشتراط التزاق شیئ بالید (پھر دھلے ہوئے پتھر اور پکی اینٹ کے مسئلوں سے یہ افادہ فرمایا کہ امام محمد اپنی ایک روایت میں امام اعظم کے موافق ہیں کہ ہاتھ سے کچھ چپکنا شرط نہیں۔) ثم احال مسألة الخزف علی الاختلاف والظاهران المراد به الاختلاف المذکور في الآجر لذکره عقیبه ولاشتراك العلة فیهما انه لا ینفصل منهما شیئ یلتزق بالید (پھر خزف کے مسئلہ میں بھی اختلاف کا حوالہ دیا اور ظاہر یہی ہے کہ اس سے مراد وہی اختلاف ہے جو پکی اینٹ کے بارے میں ذکر ہوا کیونکہ اسی کے بعد اسے ذکر کیا ہے اور اس لئے بھی کہ دونوں میں یہ علت مشترک ہے کہ دونوں ہی سے کوئی ایسی چیز الگ نہیں ہوتی جو ہاتھ سے چپک جائے۔) فافاد ان عن محمد في روایتین في روایة یجوز مطلقا وفاقا للامام الاعظم وفی اخری لا الا اذا کان مدقوقا او علیه غبار کما ذکر في الحجر وهی الروایة المشهورة عنه (اس سے یہ بھی مستفاد ہوا کہ خزف میں بھی امام محمد سے دو ۲ روایتیں ہیں ایک روایت میں مطلقاً جائز ہے جیسا کہ امام اعظم کا مذہب ہے اور دوسری روایت میں جائز نہیں مگر اسی وقت جب کہ خزف پسا ہوا ہو یا اس پر غبار ہو جیسا کہ پتھر سے متعلق ذکر کیا اور یہی ان کی مشہور روایت ہے۔) ثم انه احال مسألتی الارض النزة والطین علی الاختلاف المذکور في الخزف فقد یؤخذ منه ان عنه فیهما ایضا روایتین هذا معنی قول الحلیة کما هو ظاهر الخلاصة۔ (پھر انہوں نے تری والی زمین کے مسئلوں میں بھی اسی اختلاف کا حوالہ دیا جو خزف میں ذکر ہوا اس سے یہ اخذ ہوتا ہے کہ امام محمد سے ان دونوں کے بارے میں بھی دو ۲ روایتیں ہیں۔ حلیہ کی عبارت "کما هو ظاهر الخلاصة" (جیسا کہ خلاصہ کے ظاہر سے معلوم ہوتا ہے) کا یہ مطلب ہوا (جو عبارت خلاصہ کی تفصیل کر کے ہم نے واضح کیا)۔ (ت))

اقول: لكن الروايتين انما هما الجواز مطلقا والجواز بشرط الالتزاق (١) اما عدم الجواز بالطين مطلقا في رواية عن محمد كما ذكر عن النهاية فليس ظاهر الخلاصة ولا متوهما منها ثم لا (٢) شك (اقول: لیکن یہ دو روایتیں کیا ہیں؟ یہی کہ مطلقاً جواز ہے یا چپکنے کی شرط کے ساتھ جواز ہے مگر یہ کہ امام محمد سے کسی روایت میں کیچڑ سے مطلقاً عدم جواز منقول ہے جیسا کہ حلیہ نے نہایہ کے حوالہ سے ذکر کیا یہ بات نہ تو خلاصہ کے ظاہر سے مستفاد ہوتی ہے نہ ہی اس کا اس سے وہم ہوتا ہے۔ پھر یہ امر یقینی ہے)

صفحہ 756 کا 662

Indeed, some part of the clay must stick to the hand, as the King of Scholars (Malik al-Ulama) has stated. Thus, both narrations (regarding Tayammum with clay) agree on its permissibility. And there remains no ground for criticism on 'Bada'i' with reference to 'Khulasah', because the text of 'Khulasah' does not indicate any other narration. Similarly, there is no occasion for criticism with reference to 'Nihayah' either, because 'Nawadir' (rare narrations) are not worthy of attention in the presence of 'Zahir al-Riwayah' (manifest narrations). The author of 'al-Hilyah' could at most have said that "what the King of Scholars narrated from Imam Muhammad is Imam Muhammad's school of thought, and one narration contrary to it has also come as is in 'Nihayah'." When this matter became known and the throne of investigation settled upon the fact that the 'Zahir' narrations quoted from Imam Muhammad agree on the permissibility of Tayammum with clay, then for al-Birjandi to write that "it is impermissible according to the two companions (Sahibain)" is not appropriate (meaning, like Imam Abu Yusuf, to designate it as the school of Imam Muhammad as well is not correct. 12 m. f.). This should be kept in mind. Then it is written in 'al-Hilyah': "Tayammum is permissible from such land upon which water was sprinkled and moisture remained. It is the same in 'Fatawa Khaniyyah' etc. And in 'Khazanat al-Fatawa' it is: if Tayammum is performed with moist soil, then if it is closer to being dry it is permissible, and if it is closer to being wet it is impermissible. (End of quote)"

I say: Moisture itself is not a barrier to Tayammum, as it has become clear to the reader from the mutual agreement of reliable books on this matter. So how would the soil that is merely close to moisture be a barrier? Thus, it is necessary.

---

1. Sharh al-Niqayah by al-Birjandi, chapter on Tayammum, Nawal Kishore Press, Balsur 1/74

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

निश्चित रूप से मिट्टी का कुछ हिस्सा हाथ में ज़रूर चिपकता है, जैसा कि मलिक उल-उलेमा ने बताया है। तो (मिट्टी से तयम्मुम के) दोनों ही रिवायतें इसके जायज़ होने पर सहमत हैं। और 'खुलासा' के हवाले से 'बदाइ' पर आपत्ति की कोई गुंजाइश नहीं रही। क्योंकि 'खुलासा' की इबारत किसी और रिवायत का कोई पता नहीं देती। इसी तरह 'निहाया' के हवाले से भी आपत्ति का कोई अवसर नहीं है, क्योंकि 'ज़ाहिर रिवायत' के होते हुए 'नवादिर' (दुर्लभ रिवायतें) ध्यान देने योग्य नहीं हैं। 'ह़लिया' के लेखक अधिक से अधिक यह कह सकते थे कि "मलिक उल-उलेमा ने इमाम मुहम्मद से जो नक़्ल किया है वह इमाम मुहम्मद का मज़हब है और उनके विरुद्ध भी एक रिवायत आई है जैसा कि निहाया में है"। जब यह बात मालूम हो गई और शोध का आसन इस बात पर स्थिर हो गया कि इमाम मुहम्मद से नक़्ल की गई ज़ाहिर रिवायतें मिट्टी से तयम्मुम के जायज़ होने पर सहमत हैं, तो बिरजंदी का यह लिखना कि "साहिबैन (दोनों इमामों) के नज़दीک यह नाजायज़ है" उचित नहीं है (अर्थात इमाम अबू यूसुफ की तरह इसे इमाम मुहम्मद का भी मज़हब करार दे देना सही नहीं है। १२ म. फ़.)। यह बात ध्यान में रहे। फिर 'ह़लिया' में लिखा है: "ऐसी ज़मीन से तयम्मुम जायज़ है जिस पर पानी छिड़का गया था और नमी रह गई थी। फ़तावा खानिया वग़ैरह में भी ऐसा ही है। और खज़ानतुल फ़तावा में है कि: नम मिट्टी से तयम्मुम किया तो यदि वह सूखने के अधिक निकट है तो जायज़ है, और यदि वह गीलेपन के अधिक निकट है तो नाजायज़ है। (समाप्त)"

मैं कहता हूँ: नमी स्वयं तयम्मुम के लिए बाधक नहीं है, जैसा कि विश्वसनीय पुस्तकों की आपसी सहमति से पाठक पर स्पष्ट हो चुका है। तो जो मिट्टी नमी के करीब हो वह कैसे तयम्मुम के लिए बाधक होगी? अतः यह आवश्यक है।

---

1. शरह अल-निकाया अल-बिरजंदी, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, बलसुर 1/74

(عربی عبارت): ان الطين يلتزق منه شيئ باليد كما افاده ملك العلماء فتتفق الروايتان على الجواز ولا يبقى محل لاستدراكه على البدائع بالخلاصة لعدم دلالتها على رواية اخرى ولا (۱) بالنهاية اذ لا ملتفت الى النوادر مع الظواهر وانما كان قصاراه ان يقول ما ذكره عن محمد هو مذهبه ويروى عنه خلافه على ما في النهاية اذا عرفت هذا وقد استقر عرش التحقيق على ان الروايات الظاهرة عن محمد متفقة على جواز التيمم بالطين فقول (۲) البرجندي عندهما لا يجوز ليس كما ينبغي۔ هذا ثم قال في الحلية تيمم بارض قد رش عليها الماء وبقي لها ندوة جاز كذا في الفتاوى الخانية وغيرها وفى خزانة الفتاوى لو تيمم بالثرى ان كان الى الجفاف اقرب جاز وان كان الى البلل اقرب لا يجوز اھ اقول: نفس البلل لا يمنع التيمم كما علمت من تظافر المعتمدات عليه فكيف ما يقرب منه فيجب

(اردو ترجمہ): کہ کیچڑ سے ہاتھ میں کچھ ضرور چپکتا ہے جیسا کہ ملک العلماء نے افادہ فرمایا تو دونوں ہی روایتیں (کیچڑ سے تیمم کے) جواز پر متفق ہوئیں۔ اور خلاصہ کے حوالہ سے بدائع پر استدراک کی کوئی گنجائش نہ رہی۔ اس لیے کہ عبارت خلاصہ کی اور روایت کا کوئی پتا نہیں دیتی۔ اسی طرح نہایت کے حوالہ سے بھی استدراک کا موقع نہیں اس لیے کہ ظاہر روایت کے ہوتے ہوئے نوادر قابل التفات نہیں۔ صاحب حلیہ زیادہ سے زیادہ یہ کہہ سکتے تھے کہ "ملک العلماء نے امام محمد سے جو نقل کیا وہ امام محمد کا مذہب ہے اور ان سے اس کے خلاف بھی ایک روایت آئی ہے جیسا کہ نہایت میں ہے " جب یہ بات معلوم ہوگئی اور عرش تحقیق اس پر مستقر ہوا کہ امام محمد سے نقل شدہ ظاہر روایات کیچڑ سے جوازِ تیمم پر متفق ہیں تو برجندی کا یہ لکھنا کہ "صاحبین کے نزدیک ناجائز ہے" مناسب نہیں (یعنی امام ابو یوسف کی طرح اسے امام محمد کا بھی مذہب قرار دے دینا درست نہیں ۱۲ام الف) یہ ذہن نشین رہے۔ پھر حلیہ میں یہ لکھا

ہے: "ایسی زمین سے تیمم جائز ہے جس پر پانی چھڑکا گیا تھا اور نمی رہ گئی ہے۔ فتاوی خانیہ وغیرہ میں ایسا ہی ہے۔ اور خزانہ الفتاوی میں ہے کہ: نمناک مٹی سے تیمم کیا تو وہ اگر خشک ہونے سے زیادہ قریب ہو تو جائز ہے اور اگر تر ہونے سے زیادہ قریب ہو تو ناجائز ہے اھ(ت) اقول: خودتری تیمم سے مانع نہیں، جیسا کہ اس پر کتب معتمدہ کے باہمی اتفاق سے ناظر پر عیاں ہو چکا ہے تو جو مٹی تری سے قریب ہو وہ کیونکر تیمم سے مانع ہو گی ؟

---

1. شرح النقایۃ للبرجندی فصل فی التیمم مطبع نولکشور بالسور ۱ / ۷۴

The interpretation of 'permissibility' (jawaz) here is focused on 'lawfulness' (hillat). That is, if the mud is so wet that it stains the face, then its use is not lawful due to the risk of disfigurement (muthla), as will be mentioned later. (T)

Mud/Clay: References in 1. Bada'i, 2. Khulasa, 3. Bazzaziya, 4. Idah al-Kirmani, 5. Mi'raj al-Diraya, 6. Shalbiya, 7. Sirajia, 8. Al-Wajibiyya, 9. Mubtaghi, 10. Bahr, 11. Nahr, 12. Hindiyya explicitly mention the permissibility of tayammum with mud.

The texts of Bada'i and Khulasa have been cited; the same is found in Bazzaziya, and Hindiyya has quoted from Bada'i. The words of Ibn al-Shalbi, narrated from al-Kaki then al-Kirmani, are the same as mentioned in the original (Mabsut): that a person should apply mud to a cloth and perform tayammum from it after it dries when in a very muddy terrain. This is the opinion of Imam Muhammad. However, according to Imam Abu Hanifa, performing tayammum with wet mud is permissible as long as nothing from it sticks to the body. (T)

I say: It means even if nothing sticks to the body, as will soon appear in the statement of the great Imam al-Karkhi. Thus, it is an explicit clarification of a subtle point due to Imam Muhammad's disagreement, so as to indicate the obvious matter with greater priority—or 'permissibility' means 'lawfulness', so its connection with the non-sticking situation is to avoid disfigurement (muthla). In Sirajia, it says: "If one performs tayammum with mud, it is permissible."

Footnotes: 1. Hashiya al-Shalbiya with al-Tabyin, Chapter of Tayammum, printed by Amiriyya, Bulaq, Egypt, 1/39. 2. Fatawa Sirajia, Chapter of Tayammum, printed by Nawal Kishore, Lucknow, p. 7.

यहाँ 'जवाज़' (अनुमत) के अर्थ को 'हिल्लत' (वैधता) के अर्थ में लिया जाना चाहिए। यानी यदि मिट्टी नमी के इतने करीब हो कि वह चेहरे को दागदार कर दे, तो उसका उपयोग हलाल नहीं है क्योंकि इससे विरूपण (मुथला) होगा, जैसा कि आगे बताया जाएगा। (त)

टीन यानी कीचड़: 1. बदाए, 2. खुलासा, 3. बज़ाज़िया, 4. ईज़ाह किरमानी, 5. मेराजुद दराया, 6. शल्बिया, 7. सिराजिया, 8. अल-वाज़िबिया, 9. मुब्तगी, 10. बह्र, 11. नह्र, 12. हिन्दिया में कीचड़ से तयम्मुम की अनुमति का स्पष्ट उल्लेख है।

बदाए और खुलासा के उद्धरण दिए जा चुके हैं; बज़ाज़िया में भी खुलासा जैसा ही है, और हिन्दिया में बदाए से उद्धृत किया गया है। इब्न अल-शल्बी के शब्द, अल-काकी और फिर अल-किरमानी से उद्धृत करते हुए वही हैं जो मूल (मबसूत) में उल्लेखित हैं: कि एक व्यक्ति को कपड़े पर कीचड़ लगाना चाहिए और बहुत कीचड़ वाले क्षेत्र में होने पर उसके सूखने के बाद उससे तयम्मुम करना चाहिए। यह इमाम मुहम्मद का विचार है। हालांकि, इमाम अबू हनीफा के अनुसार, गीले कीचड़ से तयम्मुम करना तब जायज़ है जब उसका कुछ हिस्सा शरीर पर न चिपके। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इसका अर्थ यह है कि भले ही शरीर पर कुछ न चिपके, जैसा कि जल्द ही इमाम अल-करखी के कथन में आएगा। इस प्रकार, इमाम मुहम्मद की असहमति के कारण यह एक सूक्ष्म बिंदु का स्पष्टीकरण है ताकि स्पष्ट बात को उच्च प्राथमिकता के साथ दर्शाया जा सके—या 'जवाज़' का अर्थ 'हिल्लत' (वैधता) है, तो न चिपकने वाली स्थिति के साथ इसका संबंध 'मुथला' (चेहरा बिगाड़ने) से बचने के लिए होगा। सिराजिया में है: "यदि कीचड़ से तयम्मुम किया गया, तो वह जायज़ है।"

पाद-टिप्पणियाँ: 1. हाशिया अल-शल्बिया मअत तबयीन, बाब अल-तयम्मुम, मुद्रित अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 1/39। 2. फतावा सिराजिया, बाब अल-तयम्मुम, मुद्रित नवल किशोर, लखनऊ, पृष्ठ 7।

पृष्ठ 664/756

حمل الجواز فیه علی معنی الحل ای ان کان اقرب ال البلل بحیث یلطخ الوجه لایحل لما فیه من المثلة کما سیأتی۔ لہٰذا ضروری ہے کہ عبارت بالا میں لفظ جواز کو حلت کے معنی پر محمول کیا جائے۔ یعنی مٹی اگر تری سے زیادہ قریب ہو اس طرح کہ چہرے کو آلودہ کردے تو تیمم میں اس کا استعمال حلال نہیں کیوں کہ اس میں مثلہ (صورت بگاڑنا) لازم آئے گا۔ جیسا کہ اس کا بیان آرہا ہے۔ (ت)

طین یعنی کیچڑ: ۱۔ بدائع، ۲۔ خلاصہ، ۳۔ بزازیہ، ۴۔ ایضاح کرمانی، ۵۔ معراج الدرایہ، ۶۔ شلبیہ، ۷۔ سراجیہ، ۸۔ والواجبیہ، ۹۔ مبتغی، ۱۰۔ بحر، ۱۱۔ نہر، ۱۲۔ ہندیہ میں جواز تیمم کی تصریح ہے۔

وقدمت عبارات البدائع والخلاصة ومثل الخلاصة في البزازية وعن البدائع نقل في الهندية ولفظ ابن الشلبي عن الكاكي عن الكرمانی ماذکر فی الاصل انه یلطخ الثوب بالطین ویتیمم بعد الجفاف اذا کان فی طین ردغۃ ھو قولہ اما عند ابی حنیفہ یجوز التیمم بالطین الرطب اذالم یعلق منه شیئ ۱ اھ۔ بدائع اور خلاصہ کی عبارتیں گزر چکیں، خلاصہ ہی کے مثل بزازیہ میں بھی ہے اور بدائع سے ہندیہ میں نقل کیا ہے۔ اور ابن الشلبی کے الفاظ کاکی پھر کرمانی سے روایت کرتے ہوئے وہی ہیں جو اصل (مبسوط) میں ذکر ہوئے کہ آدمی کپڑے پر کیچڑ لگائے اور خشک ہو جانے کے بعد اس سے تیمم کرے جب سخت کیچڑ والی زمین میں ہو۔ یہ امام محمد کا قول ہے۔ لیکن امام ابو حنیفہ کے نزدیک تر کیچڑ سے تیمم جائز ہے جب اس میں سے کچھ بدن پر نہ چپکے اھ (ت)

اقول: ای وان لم یعلق منه شیئ کما سیأتی فی عبارۃ الامام الاجل الکرخی فیکون تصریحاً بالخفی لاجل خلاف محمد لیدل علی الظاھر بالاولی والجواز بمعنی الحل فیتلق بھا اذالم یعلق حذراً عن المثلة وفي

السراجیة لو تیمم بالطین یجوز اہ ۲ وزعم البرجندی ان فی اقول: مراد یہ ہے کہ اگرچہ اس میں سے کچھ بدن پر نہ چپکے جیسا کہ عنقریب امام اجل کرخی کی عبارت میں آرہا ہے تو یہ امام محمد کے خلاف کی وجہ سے خفی بات کی صراحت کر دیتا ہے تا کہ ظاہر بات پر بدرجہ اولیٰ دلالت ہو— یا جواز بمعنی حلت ہے تو نہ چپکنے والی صورت سے اس کا تعلق مثلہ سے بچنے کے لیے ہوگا۔

سراجیہ میں ہے: "اگر کیچڑ سے تیمم کیا تو جائز"

حواشی: 1 حاشیۃ الشلبیہ مع التبیین باب التیمم مطبوعہ امیریہ بولاق مصر ۱ / ۳۹ 2 فتاویٰ سراجیہ باب التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ص ۷

Fatawa-e-Razvia, Volume 3

[Box 1 - Left Arabic]: Al-Khulasa: It is not permissible to perform tayammum with mud; rather, one should smear some of it on one's clothes, etc.1- I say: We have already presented the text of Al-Khulasa, and it does not contain 'it is not permissible' (la yajooz), but rather 'one should not perform tayammum' (la yatayammam). And immediately after it, it is stated: 'Despite this, if one performs tayammum with mud, then it is subject to the disagreement, i.e., it is permissible according to the two sides (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad) contrary to Imam Abu Yusuf.' And it is said at the end of the text: 'And tayammum with mud is subject to this same disagreement.'2 So, it is strange to attribute the view of non-permissibility to it.

[Box 1 - Right Urdu]: ...it is [mentioned], etc. And Al-Jundi stated that in Al-Khulasa it is said: Tayammum with mud 'is not permissible,' instead he should apply it to some of his clothing, etc. (T) I say: We have already quoted the passage from Al-Khulasa. It does not contain 'not permissible' (na-jaiz) but rather 'one should not perform tayammum' (tayammum na kare). And immediately following this, it is also written that 'despite this, if one performs tayammum with mud, there is a difference of opinion,' meaning that contrary to Imam Abu Yusuf, it is permissible according to the two sides (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad). And in the concluding remarks, this is also written and on this very difference of opinion, tayammum with mud is based. So, to attribute the view of non-permissibility to Al-Khulasa is very strange. (T)

[Middle Text]: Likewise, in Khaniyya13 and Khulasa, this response is quoted from Imam Karkhi14 and in Khaniyya from Imam Shams al-A'imma15 Halwani, but Imam Khujandi is a proponent of its non-permissibility, as mentioned in Jawahara etc.:

[Box 2 - Left Arabic]: If he finds nothing but mud, he should smear it on the edge of his garment or something else until it dries, then perform tayammum with it. And if this is not possible for him, it says in Khujandi: He shall not pray as long as he does not find water.

[Box 2 - Right Urdu]: If nothing besides mud is found, then smear mud on the edge of one's clothes or something else so that it dries, then perform tayammum with it. And if this is not possible for him, it is said in Khujandi: Until water or dry soil [is found, one does not pray].

[Box 3 - Left Arabic]: Note: Our masters said this is the opinion of Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him), for according to him, tayammum is not

permissible except with soil and sand. However, according to Imam Abu Hanifa, tayammum with mud is permissible because it is from the components of the earth.3 (Abridged) From Minhat al-Khaliq on the authority of al-Ramli from al-Walwalijiyya. 12th year, may he be forgiven. (M)

[Box 3 - Right Urdu]: Our masters said this is the opinion of Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him), for according to him, tayammum is not permissible with anything except soil or sand. However, according to Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him), tayammum with mud is permissible because it is from the components of the earth. (Abridged) From Minhat al-Khaliq, from al-Ramli, from al-Walwalijiyya. 12th year, may he be forgiven. (T)

[Footnotes]: 1. Sharh al-Niqaya by al-Birjandi, Chapter on Tayammum, published by Naval Kishore, Lucknow, 1/74. 2. Khulasat al-Fatawa, Section on What is Permissible for Tayammum, published by Naval Kishore, Lucknow, 1/36. 3. Minhat al-Khaliq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/128.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 3

[बॉक्स 1 - बायाँ अरबी]: अल-खुलासा: कीचड़ से तयम्मुम करना जायज़ नहीं है, बल्कि व्यक्ति को अपने कपड़ों आदि पर कुछ हिस्सा लेप देना चाहिए।[1]- मैं कहता हूँ: हमने पहले ही अल-खुलासा का पाठ प्रस्तुत कर दिया है और उसमें 'जायज़ नहीं' (ला यजूज़) नहीं बल्कि 'तयम्मुम न करे' (ला यतयम्मम) लिखा है। और इसके ठीक बाद कहा गया है: 'इसके बावजूद, यदि वह कीचड़ से तयम्मुम करता है, तो यह मतभेद पर आधारित है, अर्थात इमाम अबू यूसुफ के विपरीत 'तरफ़ैन' (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद) के अनुसार यह जायज़ है।' और पाठ के अंत में कहा गया है: 'कीचड़ के साथ तयम्मुम इसी मतभेद पर आधारित है।'[2] इसलिए इसमें गैर-अनुमति का श्रेय देना अजीब है।

[बॉक्स 1 - दायाँ उर्दू]: ...है आदि। और अल-जुंदी ने कहा कि अल-खुलासा में है: कीचड़ से तयम्मुम "जायज़ नहीं" है, बल्कि उसे अपने किसी कपड़े पर लगा लेना चाहिए आदि। (त) मैं कहता हूँ: हम अल-खुलासा का उद्धरण पहले ही दे चुके हैं। इसमें 'नाज़ायज़' नहीं बल्कि 'तयम्मुम न करे' (तयम्मुम न करे) लिखा है। और इसके ठीक बाद यह भी लिखा है कि 'इसके बावजूद अगर कोई कीचड़ से तयम्मुम कर ले तो उसमें मतभेद है', यानी इमाम अबू यूसुफ के विपरीत 'तरफ़ैन' के नज़दीक यह जायज़ है। और पाठ के अंत में भी यही लिखा है और इसी मतभेद पर कीचड़ से तयम्मुम का मसला है। इसलिए, अल-खुलासा की ओर जायज़ न होने की बात जोड़ना बहुत अजीब है। (त)

[मध्य पाठ]: इसी तरह 'ख़ानिया'[13] और 'खुलासा' में इमाम करखी[14] और 'ख़ानिया' में इमाम शम्सुल अइम्मा[15] हलवानी से इसका जवाब नक़ल किया गया है, लेकिन इमाम खुजंदी अदम-ए-जवाज़ (गैर-जवाज़) के पक्षधर हैं, जैसा कि 'जवाहरा' आदि में उल्लेख है:

[बॉक्स 2 - बायाँ अरबी]: यदि उसे कीचड़ के अलावा कुछ न मिले, तो उसे अपने कपड़े के किनारे या किसी और चीज़ पर लेप लगा देना चाहिए जब तक कि वह सूख न जाए, फिर उससे तयम्मुम करें। और यदि उसके लिए यह संभव न हो, तो खुजंदी में कहा गया है: जब तक उसे पानी न मिले वह नमाज़ न पढ़े।

[बॉक्स 2 - दायाँ उर्दू]: अगर कीचड़ के अलावा कुछ न मिले, तो उसे अपने कपड़े के किनारे या किसी और चीज़ पर कीचड़ लगा लेना चाहिए ताकि वह सूख जाए, फिर उससे तयम्मुम करे। और अगर यह उसके लिए मुमकिन न हो, तो खुजंदी में कहा गया है: जब तक पानी या सूखी मिट्टी [न मिले, नमाज़ न पढ़े]।

[बॉक्स 3 - बायाँ अरबी]: नोट: हमारे मशायख ने फ़रमाया कि यह इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि) का क़ौल है, क्योंकि उनके अनुसार मिट्टी और रेत के अलावा किसी भी चीज़ से तयम्मुम जायज़ नहीं है। लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा के अनुसार कीचड़ से तयम्मुम जायज़ है क्योंकि यह ज़मीन के ही अंशों में से है।[3] मिन्हतुल ख़ालिक़ से, रमली के माध्यम से, वलवालिजिया से। अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (म)

[बॉक्स 3 - दायाँ उर्दू]: हमारे मशायख ने फ़रमाया कि यह इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाहि तआला अलैहि) का क़ौल है क्योंकि उनके नज़दीक मिट्टी या रेत के अलावा किसी चीज़ से तयम्मुम जायज़ नहीं है, लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाहि अलैहि) के नज़दीक तो कीचड़ से तयम्मुम जायज़ है क्योंकि वह ज़मीन के ही अज्ज़ा (अंशों) में से है। मिन्हतुल ख़ालिक़ से, रमली से, वलवालिजिया से। अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

[पादलेख]: 1. शरह अल-निकाया अल-बिरजंदी, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/74. 2. खुलासत अल-फ़तावा, जिससे तयम्मुम जायज़ है, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/36. 3. मिन्हतुल ख़ालिक़, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/128.

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

[Box 1 - Left Arabic]: الخلاصة لا یجوز التیمم بالطین بل یلطخ بعض ثیابه الخ۱۸1- اقول: قدمنا نص الخلاصة ولیس فیه لا یجوز بل لا یتیمم وقد قال متصلا به ومع هذا لویتیمم بالطین فهو علی الخلاف ای یجوز عند الطرفین خلافا لابی یوسف وقال فی اواخر الکلام وعلی هذا الخلاف التیمم بالطین۱۸2 فمن العجب نسبة عدم الجواز الیه-

[Box 1 - Right Urdu]: ہے اھ- اور جندی نے یہ کہہ دیا کہ خلاصہ میں ہے: کیچڑ سے تیمم "جائز نہیں" بلکہ اسے اپنے کسی کپڑے میں لگا لے گا الخ۔ (ت) اقول: خلاصہ کی عبارت ہم پیش کر آئے ہیں اس میں لایجو (ناجائز) نہیں بلکہ لایتیمم (تیمم نہ کرے) ہے۔ اور اس سے متصلاً ہی یہ بھی لکھا ہے کہ "اس کے باوجود اگر کیچڑ سے تیمم کر ہی لیا تو اس میں اختلاف ہے" یعنی برخلاف امام ابو یوسف کے طرفین کے نزدیک جائز ہے۔ اور اواخر کلام میں یہ بھی لکھا ہے اور اسی اختلاف پر کیچڑ سے تیمم بھی ہے۔ تو خلاصہ کی طرف عدم جواز کی بات منسوب کرنا بڑا عجیب ہے۔ (ت)

[Middle Text]: یوں ہی خانیہ۱۳۸ وخلاصہ میں امام کرخی۱۴۸ اور خانیہ میں امام شمس الائمہ۱۵۸ حلوانی سے اس کا جواب نقل کیا مگر امام خجندی عدم جواز کے قائل ہیں، جوہرہ وغیرہ میں ہے:

[Box 2 - Left Arabic]: لو لم یجد الا الطین یلطخ به طرف ثوبه اوغیره حتی یجف ثم یتیمم به وان لم یمکنه قال في ان لم یمکنه قال في الججندی ع۸ه لا یصلی مالم یجد الماء

[Box 2 - Right Urdu]: اگر کیچڑ کے علاوہ کچھ نہ ملے تو اسے اپنے کپڑے کے کنارے یا کسی اور چیز پر کیچڑ لگا لے تا کہ وہ خشک ہو جائے پھر اس سے تیمم کرے اور اگر یہ اس کے لیے ممکن نہ ہو تو خجندی میں کہا ہے: جب تک پانی یا خشک مٹی

[Box 3 - Left Arabic]: عه: مشايخنا قالوا هذا قول ابى يوسف رحمه الله تعالى فان عنده لا يجوز التيمم الا بالتراب والرمل اما عند ابى حنيفة فالتيمم بالطين جائز لانه من اجزاء الارض۸3 اه منحة الخالق عن الرملى عن الوالوجية-۱۲منہ غفر له (م)

[Box 3 - Right Urdu]: ہمارے مشایخ نے فرمایا یہ امام ابو یوسف رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ کا قول ہے کیونکہ ان کے نزدیک مٹی یا ریت کے علاوہ کسی چیز سے تیمم جائز نہیں لیکن امام ابو حنیفہ رحمتہ اللہ علیہ کے نزدیک تو کیچڑ سے تیمم جائز ہے اس لیے کہ وہ زمین ہی کے اجزا سے ہے اھ منحة الخالق از رملی از ولوالجییہ ۱۲منہ غفر لہ- (ت)

[Footnotes]: 1 شرح النقاية للبرجندى فصل في التيمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۷۴ 2 خلاصة الفتاویٰ مائیجوز به التيمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۶ 3 منحة الخالق باب التيمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۸

- (Arabic): Or dry soil, and in Al-Karkhi it is mentioned regarding wet mud, even if it does not stick to his hands. The correct view is that Tayammum with mud is permissible according to Abu Hanifa and Zufar. 1
- (Urdu): If [water] is not found, he should not pray. And in Al-Karkhi it is stated: Tayammum with wet mud is permissible even if it does not stick to the hands, and the correct view is that Tayammum with mud is permissible according to Imam Abu Hanifa and Imam Zufar. (T)

Rather, it is narrated from Al-Muhit that it is impermissible by consensus; it is in Al-Rahmaniyah:

- (Arabic): In Al-Muhit, Tayammum with mud is not permissible according to all because soil does not become mud unless it becomes overwhelmed by water. 2
- (Urdu): In Al-Muhit, it says: Tayammum with mud is impermissible according to everyone because soil only becomes mud when it is overwhelmed by water. (T)

And the research and reconciliation is what was stated in Al-Muhit al-Sarakhsi, Al-Muhit al-Radawi, Al-Hilyah 3, Bahr al-Ra'iq, Durr al-Mukhtar 5, Alamgiriyah 4, Fath-ul-Allah al-Mu'in, etc., that Tayammum is not permissible with mud in which water is dominant, and if soil is dominant, then it is permissible. It is in Al-Hilyah:

- (Arabic): Radi al-Din said in his Muhit: The correct view is that mud is of the genus of the earth unless it becomes overwhelmed by water, then it is not permissible. 3
- (Urdu): Radi al-Din stated in his Muhit: The correct view is that mud is of the same genus as earth, but when it is overwhelmed by water, it becomes impermissible. (T)

It is in Al-Hindiyyah:

- (Arabic): And if it becomes mud overwhelmed by water, Tayammum with it is not permissible. This is also stated in Muhit al-Sarakhsi. 4
- (Urdu): And if the mud is overwhelmed by water, Tayammum with it is not permissible. This is how it is in Muhit al-Sarakhsi. (T)

- (Arabic): [In Al-Ala'i and Al-Azhari]: And mud not overwhelmed by water. 5

- (Urdu): In Al-Ala'i and Al-Azhari it says: (And Tayammum is permissible) from such mud which is not overwhelmed by water. (T)

In Al-Bahr it says:

- (Arabic): According to Abu Hanifa, one performs Tayammum with mud, and that is the correct view.
- (Urdu): According to Imam Abu Hanifa, Tayammum with mud is permissible, and this is the correct view.

Footnotes: 1. Al-Jawhara al-Nayyira, Chapter on Tayammum, Maktaba Imdadiyya Multan, 1/25 2. Rahmaniyah 3. Hilyah 4. Fatawa al-Hindiyyah, First Section on Tayammum, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/7 5. Fath-ul-Allah al-Mu'in, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/91

- (अरबी): या सूखी मिट्टी, और अल-करखी में गीली मिट्टी के बारे में है, भले ही वह उसके हाथों पर न चिपके। सही मत यह है कि इमाम अबू हनीफ़ा और ज़ुफ़र के अनुसार मिट्टी से तयम्मुम करना जायज़ है। 1
- (उर्दू): अगर [पानी] न मिले तो नमाज़ न पढ़े। और करखी में है: गीली कीचड़ से तयम्मुम जायज़ है चाहे उसके हाथों में न चिपके और सही यह है कि इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम ज़ुफ़र के नज़दीक कीचड़ से तयम्मुम जायज़ है। (त)

बल्कि मुहीत से उद्धृत है कि यह सर्वसम्मति से नाजायज़ है, रहमानिया में है:

- (अरबी): अल-मुहीत में, सभी के अनुसार मिट्टी के साथ तयम्मुम जायज़ नहीं है क्योंकि मिट्टी तब तक कीचड़ नहीं बनती जब तक कि वह पानी से अभिभूत न हो जाए। 2
- (उर्दू): मुहीत में है: सब के नज़दीक कीचड़ से तयम्मुम नाजायज़ है इसलिए कि मिट्टी उसी वक़्त कीचड़ होती है जब पानी से मगलूब (अभिभूत) हो जाए। (त)

और शोध और सामंजस्य वह है जो मुहीत-उस-सरख़सी, मुहीत रज़वी, हिल्यह 3, बह्र-उर-राइक़, दुर-रे-मुख़्तार 5, आलमगीरिया 4, फ़तहुल्लाह अल-मुईन आदि में बताया गया है कि जिस कीचड़ में पानी प्रबल हो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं है और यदि मिट्टी प्रबल हो तो जायज़ है। हिल्यह में है:

- (अरबी): रज़ीउद्दीन ने अपनी मुहीत में कहा: सही मत यह है कि मिट्टी पृथ्वी के ही वंश की है जब तक कि वह पानी से अभिभूत न हो जाए, तब यह जायज़ नहीं है। 3
- (उर्दू): रज़ीउद्दीन ने अपनी मुहीत में फ़रमाया: सही यह है कि कीचड़ ज़मीन ही की जिन्स है मगर जब पानी से मगलूब हो जाए तो नाजायज़ है। (त)

हिन्दिया में है:

- (अरबी): और यदि वह पानी से अभिभूत कीचड़ बन जाए, तो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं है। मुहीत-उस-सरख़सी में ऐसा ही है। 4
- (उर्दू): और अगर कीचड़ पानी से मगलूब हो तो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं। ऐसा ही मुहीत सरख़सी में है। (त)

- (अरबी): [अलाई और अज़हरी में है]: और वह कीचड़ जो पानी से अभिभूत न हो। 5
- (उर्दू): अलाई व अज़हरी में है: (और तयम्मुम जायज़ है) ऐसी कीचड़ से जो पानी से मगलूब न हो। (त)

बह्र में है:

- (अरबी): अबू हनीफ़ा के अनुसार मिट्टी से तयम्मुम किया जाता है, और यही सही मत है।
- (उर्दू): इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक कीचड़ से तयम्मुम जायज़ है और यही सही है।

पादलेख (Footnotes): 1. अल-जौहरा अल-नय्यिरा, बाब-उत-तयम्मुम, मकतबा इमदादिया मुल्तान, 1/25 2. रहमानिया 3. हिल्यह 4. फ़तावा-ए-हिन्दिया, अल-फ़सल अल-अव्वल मिनत-तयम्मुम, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/7 5. फ़तहुल्लाह अल-मुईन, बाब-उत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/91

पृष्ठ 666 / 756

• او التراب الیابس وفی الکرخي بالطین الرطب وان لم یعلق بیدیه والصحیح جواز التیمم بالطین عند ابی حنیفة و زفر 1-

• نہ ملے نماز نہ پڑھے۔ اور کرخی میں ہے: تر کیچڑ سے تیمم جائز ہے اگرچہ اس کے ہاتھوں میں نہ چپکے اور صحیح یہ ہے کہ امام ابو حنیفہ اور امام زفر کے نزدیک کیچڑ سے تیمم جائز ہے۔ (ت)

بلکہ محیط سے منقول ہوا کہ بالاتفاق ناجائز ہے، رحمانیہ میں ہے:

• فی المحیط لا یجوز التیمم بالطین عند الکل لان التراب لا یصیر طینا مالم یصر مغلوبا بالماء 2-

• محیط میں ہے: سب کے نزدیک کیچڑ سے تیمم ناجائز ہے اس لیے کہ مٹی اسی وقت کیچڑ ہوتی ہے جب پانی سے مغلوب ہو جائے۔ (ت)

اور تحقیق و توفیق وہ ہے جو۔ محیط السرخسی، محیط رضوی، حلیہ 3، بحر الرائق، درمختار 5، عالمگیریہ 4، فتح اللہ المعین وغیرہا میں افادہ فرمائی کہ جس کیچڑ میں پانی غالب ہے اس سے تیمم جائز نہیں اور مٹی غالب ہے تو جائز۔ حلیہ میں ہے:

• قال رضی الدین فی محیطہ الصحیح ان الطین جنس الارض الا اذا صار مغلوبا بالماء فلا یجوز 3-

• رضی الدین نے اپنی محیط میں فرمایا: صحیح یہ ہے کہ کیچڑ زمین ہی کی جنس ہے مگر جب پانی سے مغلوب ہو جائے تو نا جائز ہے۔ (ت)

ہندیہ میں ہے:

- وان صار طین مغلوبا بالماء فلا یجوز به التیمم هکذا في محیط السرخسی 4-
- اور اگر کیچڑ پانی سے مغلوب ہو تو اس سے تیمم جائز نہیں۔ ایسا ہی محیط سرخسی میں ہے۔ (ت)
- وطین غیر مغلوب بماء 5- (اور (تیمم جائز ہے) ایسی کیچڑ سے جو پانی سے مغلوب نہ ہو۔ ت)

بحر میں ہے:

- عند ابی حنیفة یتیمم بالطین وهو الصحیح
- امام ابو حنیفہ کے نزدیک کیچڑ سے تیمم جائز ہے اور یہی صحیح ہے

حواشی: 1 الجوهرة النیرة باب التیمم مکتبہ امدادیہ ملتان ۱/۲۵ 2 رحمانیہ 3 حلیہ 4 فتاوی ہندیہ الفصل الاول من التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۷ 5 فتح الله المعین باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۹۱

Fatawa Ridawiyya, Volume Three

[Arabic Box]: Unless it [the mud] is overcome by water, then dry ablution (tayammum) with it is not permissible. This is stated in Al-Muhit. (T) [Urdu Box]: But when it is overcome by water, tayammum with it is not permissible. It is mentioned likewise in Al-Muhit. (T)

However, without necessity, performing tayammum with it is impermissible, i.e., disliked, forbidden, and a sin, because 'smearing the face with mud' is a form of disfigurement, and disfigurement (muthla) is forbidden. Even in Jihad, the Sahih Hadith prohibits disfiguring hostile disbelievers who were ordered to be killed; permission for their disfigurement was not given. Alas for those Muslims who, in mutual play, smear mud on each other's faces or, for fun, apply ink to someone's face while they are asleep; all of this is forbidden, and abstaining from it is obligatory. In Khulasa, Khaniya, Badai, etc., it is mentioned that tayammum with mud was forbidden and this method was suggested: that one should apply the mud on a part of their body or cloth or any other object, and when it dries, perform tayammum with it. This fine method was instructed by the editor of the school of thought, our master Imam Muhammad (may Allah Almighty have mercy on him) in the book Al-Asl. Its purpose is to avoid the ugliness of the appearance, not that tayammum with mud is intrinsically incorrect.

[Arabic Column - Bottom Left]: I say: (5) And through this, what is apparent in the words of Al-Idah becomes clear, where he made the guidance towards this act the specific saying of [Imam] Muhammad, contrasting it with his saying: 'But according to Abu Hanifa, it is permissible...' etc. Indeed, it is an excellent act sought according to the Imam [Abu Hanifa] as well, definitely. Imam Muhammad's guidance towards it is not to invalidate tayammum with mud. The closest interpretation for him is what I say: he means that making this act obligatory absolutely, whether something sticks to his hand or not, is the specific saying of Imam Muhammad, because if it sticks, it causes smearing and if...

[Urdu Column - Bottom Right]: I say: Through this, that flaw is also removed which is apparent in the statement of Imam Kirmani's Al-Idah, such that he made the guidance for this style the specific saying of Imam Muhammad and brought his own statement in contrast to it: "But according to Imam Abu Hanifa, tayammum with wet mud is permissible etc." And the truth is that this is a fine method which is undoubtedly desired according to Imam Azam (Alayhir Rahma) as well, and Imam

Muhammad's guidance towards this style is not because he considers tayammum with mud to be invalid. (T) The closest interpretation of the words of "Al-Idah" is what I say (I say): His intention is that declaring this method obligatory absolutely, whether something sticks to the hands or not, is the specific saying of Imam Muhammad, because if wet mud sticks to the hand, it will cause contamination and...

---

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/148.

फ़तावा रज़विया, जिल्द सोम (तीसरा खंड)

[अरबी बॉक्स]: सिवाय इसके कि जब [कीचड़] पानी से अभिभूत हो जाए, तो उससे तयम्मुम (शुष्क वज़ू) करना जायज़ नहीं है। ऐसा ही अल-मुहीत में है। (त) [उर्दू बॉक्स]: लेकिन जब कीचड़ से मगलूब (अभिभूत) हो तो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं। ऐसा ही मुहीत में है। (त)

अलबत्ता, बिना ज़रूरत के इससे तयम्मुम करना नाजायज़ यानी मकरूह, वर्जित और गुनाह है क्योंकि 'चेहरे को कीचड़ से सानना' रूप बिगाड़ना (मुथला) है और रूप बिगाड़ना हराम है। यहाँ तक कि जिहाद में भी सही हदीस में उन हर्बी काफिरों का मुथला करने से मना फ़रमाया गया जिनके कत्ल का हुक्म दिया गया था, उन्हें भी मुथला करने की इजाजत नहीं दी गई। अफ़सोस उन मुसलमानों पर जो परस्पर खेल-खेल में एक-दूसरे के चेहरे पर कीचड़ थोपते हैं या हंसी-मज़ाक में किसी के सोते समय उसके चेहरे पर स्याही लगाते हैं; यह सब हराम है और इससे परहेज़ करना फ़र्ज़ है। 'खुलासा', 'खानिया' और 'बदाइ' आदि में कीचड़ से तयम्मुम की मनाही फ़रमाई गई और इसकी यह तरकीब बताई कि अपने शरीर या कपड़े के हिस्से पर या किसी और चीज़ पर कीचड़ का लेप लगा ले, जब वह सूख जाए तो उससे तयम्मुम करे। यह शानदार तरकीब स्वयं मज़हब के संकलक सैय्यदना इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) ने किताब 'अल-असल' में इरशाद फ़रमाई है। इसका मक़सद सूरत को बदसूरत होने से बचाना है, न कि यह कि कीचड़ से तयम्मुम करना ही सही नहीं है।

[बायां अरबी कॉलम]: अक़ूल (मैं कहता हूँ): (५) और इसी से वह बात स्पष्ट हो गई जो 'अल-ईज़ाह' के प्रत्यक्ष कलाम में है, जहाँ उन्होंने इस क्रिया के मार्गदर्शन को विशेष रूप से इमाम मुहम्मद का कथन करार दिया, और इसके विपरीत यह कहा: "लेकिन इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक यह जायज़ है..." आदि। निश्चय ही यह एक उत्तम क्रिया है जो इमाम [अबू हनीफ़ा] के नज़दीक भी निश्चित रूप से वांछित है। और इमाम मुहम्मद का इस ओर मार्गदर्शन कीचड़ से तयम्मुम को बातिल (अमान्य) करने के लिए नहीं है। उनकी बात की सबसे करीबी तावील (व्याख्या) वह है जो मैं कहता हूँ: उनका आशय यह है कि इस क्रिया को पूर्णतः अनिवार्य (वाजिब) घोषित करना, चाहे हाथ में कुछ लगे या न लगे, केवल इमाम मुहम्मद का कथन है, क्योंकि यदि कीचड़ हाथ में चिपकता है तो गंदगी होगी और...

[दायां उर्दू कॉलम]: अक़ूल (मैं कहता हूँ): इसी से वह कमी भी दूर हो जाती है जो इमाम किरमानी की इबारत 'ईज़ाह' के ज़ाहिर में है, इस तरह कि उन्होंने इस शैली के मार्गदर्शन को इमाम मुहम्मद का विशेष कथन बना दिया और उसके मुक़ाबले में अपनी यह इबारत लाए कि "लेकिन इमाम अबू

हनीफ़ा के नज़दीक गीले कीचड़ से तयम्मुम जायज़ है आदि।" और सत्य यह है कि यह एक उत्तम तरीका है जो निस्संदेह इमाम आज़म (अलैहिर्रहमा) के नज़दीक भी वांछित है, और इस शैली की ओर इमाम मुहम्मद का मार्गदर्शन इसलिए नहीं है कि वे कीचड़ से तयम्मुम को बातिल करार देते हैं। (त) कलाम "ईज़ाह" की सबसे करीबी व्याख्या वह है जो मैं कहता हूँ (अक़ूल): उनका मतलब यह है कि इस तरकीब को पूर्णतः अनिवार्य (वाजिब) करार देना, चाहे हाथ में कुछ लगे या न लगे, विशेष रूप से इमाम मुहम्मद का कथन है, क्योंकि यदि कीचड़ हाथ में चिपकता है तो प्रदूषण होगा और...

---

1 अल-बहरर राइक, बाब-ए-तयम्मुम, एच. एम. सईद कंपनी, कराची, 1/148. पृष्ठ 667 / 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

[عربی باکس]: الا اذ اصار مغلوبا بالماء فلا یجوز التیمم به کذا في المحیط ۱ [اردو باکس]: لیکن جب کیچڑ سے مغلوب ہو تو اس سے تیمم جائز نہیں۔ ایسا ہی محیط میں ہے۔ (ت)

البتہ بلا ضرورت اس سے تیمم نا جائز یعنی مکروہ و ممنوع و گناہ ہے کہ 'منہ کیچڑ سے سانناصورت بگاڑنا ہے اور صورت بگاڑنا مثلہ اور مثلہ حرام ہے یہاں تک کہ ' جہاد میں جو حربی کافروں کو بھی مثلہ کرنا صحیح حدیث میں منع فرمایا جن کے قتل کا حکم فرمایا اس کے بھی مثلہ کی اجازت نہ دی۔ افسوس ۳ ان مسلمانوں پر کہ باہم کھیل میں ایک دوسرے کے منہ پر کیچڑ تھوپتے ہیں یا ہنسی سے کسی کے سوتے میں اس کے منہ پر سیاہی لگاتے ہیں یہ سب حرام ہے اور اس سے پر ہیز فرض، خلاصہ و خانیہ و بدائع و غیر ہا میں کہ کیچڑ سے تیمم کی ممانعت فرمائی اور اس کی یہ ترکیب بتائی کہ اپنے بدن یا کپڑے کے حصے خواہ کسی اور چیز پر کیچڑ کالیس کرلے جب وہ خشک ہو جائے اس سے تیمم کرے اور یہ نفیس ترکیب خود محرر المذہب سیدنا امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ نے کتاب الاصل میں ارشاد فرمائی اس کا منشا یہی تقبیح صورت سے بچانا ہے نہ یہ کہ کیچڑ سے تیمم درست ہی نہیں۔

[بایاں کالم - عربی]: اقول: (۵) و به ظهر ما في ظاہر کلام الایضاح حیث جعل الارشاد الی هذا الصنیع قول محمد خاصة قابله بقوله اما عند ابی حنیفة فیجوز الخ انه صنیع سنیع مطلوب عند الامام ایضا قطعا ولیس ارشاد محمد الیه لابطاله التیمم بالطین۔ واقرب تاویل له ما اقول یرید ان ایجاب هذا الصنیع مطلقاً سواء علق بیده شيء اولا قول محمد خاصة لانه ان علق لطخ و ان...

[دایاں کالم - اردو]: اقول: اسی سے وہ خامی بھی دور ہو جاتی ہے جو امام کرمانی کی عبارت ایضاح کے ظاہر میں ہے اس طرح کہ اس طرز کی رہنمائی کو انہوں نے خاص امام محمد کا قول بنادیا اور اس کے مقابلہ میں اپنی یہ عبارت لائے کہ "لیکن امام ابوحنیفہ کے نزدیک تر کیچڑ سے تیمم جائز ہے الخ۔ اور حق یہ ہے کہ یہ ایک عمدہ طریقہ ہے جو بلا شبہ امام اعظم علیہ الرحمۃ کے نزدیک بھی مطلوب ہے اور اس طرز کی جانب امام محمد کی رہنمائی اس لیے نہیں کہ وہ کیچڑ سے تیمم باطل قرار دیتے ہیں۔ (ت) کلام "ایضاح" کی قریب تر تاویل وہ ہے جو میں کہتا ہوں (اقول) ان کی مراد یہ ہے کہ اس ترکیب کو مطلقاً واجب قرار دینا، خواہ ہاتھ میں کچھ لگے یا نہ لگے، خاص امام محمد کا قول ہے، اس لیے کہ اگر کیچڑ ہاتھ میں چپکتی ہے تو آلودگی ہوگی اور...

---

1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۴۸ صفحہ 667 از 756

Fatawa Ridawiyya Volume Three

| (Arabic) If the mud does not stick, Tayammum is not valid according to Imam [Abu Yusuf]. So he does not make it obligatory when nothing sticks to his hand. | (Urdu) If it doesn't stick, then according to him, Tayammum itself is not correct. However, Imam-e-Azam does not say it is obligatory in the case of nothing sticking to the hand. (T) |

Therefore, it is stated explicitly that this method is applicable when there is still enough time for prayer. If one sees that by doing this, the time for prayer will pass before it dries, then it is necessary to perform Tayammum with the mud as it is and pray; do not let the time pass. I say: But now it will be necessary to rub both palms together well so that as much mud as possible is removed and whatever remains dries, because when striking the hands on dry dust and earth, shaking them off and cleaning them of the effect of soil is Sunnah, so here it should be mandatory. Also, it is stated explicitly that if someone did not do this and performed Tayammum with mud, he did wrong but the Tayammum is valid, as mentioned in 'Khulasa':

| (Arabic) Along with this, performing Tayammum with mud is subject to disagreement. (Ah) That is, it is correct according to the Imam (Abu Hanifa) and the Third (Imam Muhammad), contrary to the Second (Imam Abu Yusuf), may Allah be pleased with them all. | (Urdu) Despite this, if one performs Tayammum with mud, there is a difference of opinion in it. (Ah) That is, it is permissible according to Imam-e-Azam and Imam Muhammad; according to Imam Abu Yusuf it is contrary to this. May Allah be pleased with all these gentlemen. (T) |

In Wajeez Kardari it is mentioned:

| (Arabic) Not with mud, but he should smear his body with it, then when it dries, perform Tayammum. Along with this, if he performs Tayammum with it, his action falls under this disagreement. | (Urdu) Tayammum with mud is not permissible; instead, apply mud to any part of the body, and upon drying, perform Tayammum with it. Despite this, if one performs Tayammum with mud, the same disagreement applies. (T) |

In Al-Wajeeha, then Ramli on Al-Bahr, then Minhat al-Khaliq it is mentioned:

| (Arabic) According to Abu Hanifa, if he fears the time will pass, he should perform Tayammum with mud because performing Tayammum with mud is permissible according to him, for it is from the components of the earth. | (Urdu) According to

Imam Abu Hanifa, the ruling is that if there is a fear of the time running out, he should perform Tayammum with mud because according to him, Tayammum with mud is permissible as it is part of the earth's components. |

1. Khulasa al-Fatawa, regarding what is permissible for Tayammum, Nawal Kishore Press, Lucknow 1/36
2. Fatawa Bazzaziya on the margin of Al-Hindiyya, Fifth Chapter on Tayammum, Nurani Kutub Khana Press, Peshawar 1/17 Page 668 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (भाग 3)

| (अरबी) यदि मिट्टी नहीं चिपकती, तो इमाम [अबू यूसुफ] के अनुसार तयम्मुम वैध नहीं है। इसलिए जब हाथ में कुछ न चिपके तो वह इसे अनिवार्य नहीं करते। | (उर्दू) यदि मिट्टी नहीं चिपकती, तो उनके निकट तयम्मुम ही सही नहीं है। लेकिन इमाम-ए-आज़म हाथ में कुछ न लगने की सूरत में इसे वाजिब (अनिवार्य) नहीं कहते। (त) |

इसलिए स्पष्ट किया जाता है कि यह तरीका तब है जब अभी नमाज़ के समय में इतनी गुंजाइश हो, और अगर देखे कि ऐसा करने से सूखने तक नमाज़ का समय निकल जाएगा, तो ज़रूरी है कि इसी तरह कीचड़ से तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ ले, समय न जाने दे। मैं कहता हूँ: लेकिन अब यह ज़रूरी होगा कि दोनों हथेलियों को आपस में खूब रगड़े ताकि जहाँ तक संभव हो कीचड़ छूट जाए और जो हिस्सा बचे वह सूख जाए, क्योंकि जब सूखी धूल और ज़मीन पर हाथ मारकर झाड़ना और मिट्टी के असर से साफ़ कर देना सुन्नत है, तो यहाँ यह अनिवार्य होना चाहिए। साथ ही यह भी स्पष्ट है कि यदि किसी ने ऐसा नहीं किया और कीचड़ से तयम्मुम कर लिया, तो बुरा किया लेकिन तयम्मुम हो गया, जैसा कि 'खुलासा' में उल्लेखित है:

| (अरबी) इसके साथ, कीचड़ से तयम्मुम करना मतभेद के अधीन है। (अह) यानी इमाम (अबू हनीफ़ा) और तीसरे (इमाम मुहम्मद) के अनुसार यह सही है, दूसरे (इमाम अबू यूसुफ) के विपरीत, अल्लाह इन सभी से प्रसन्न हो। | (उर्दू) इसके बावजूद अगर कीचड़ से तयम्मुम कर लिया तो इसमें मतभेद है। (अह) यानी इमाम-ए-आज़म और इमाम मुहम्मद के नज़दीक यह जायज़ है, इमाम अबू यूसुफ के नज़दीक इसके विपरीत है। अल्लाह तआला इन सभी हज़रात से राज़ी हो। (त) |

वजीज़ करदरी में है:

| (अरबी) कीचड़ से नहीं, बल्कि वह अपने शरीर पर इसे मले, फिर जब वह सूख जाए तो तयम्मुम करे। इसके साथ, यदि वह इससे तयम्मुम करता है, तो उसका यह कार्य इस मतभेद के अंतर्गत आता है। | (उर्दू) कीचड़ से तयम्मुम जायज़ नहीं है बल्कि अपने शरीर के किसी एक हिस्से पर कीचड़ लगाए और सूखने पर उससे तयम्मुम कर ले, इसके बावजूद अगर कीचड़ से तयम्मुम कर लिया तो इसमें यही मतभेद है। (त) |

वल-वजीहा, फिर रमली अलल-बहर, फिर मिन्हातुल खालिक़ में है:

| (अरबी) अबू हनीफ़ा के अनुसार, यदि उसे समय निकल जाने का डर हो, तो वह कीचड़ से तयम्मुम करे क्योंकि उनके अनुसार कीचड़ से तयम्मुम जायज़ है, क्योंकि यह ज़मीन के घटकों में से है। | (उर्दू) इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक यह हुक्म है कि अगर समय निकलने का अंदेशा हो तो कीचड़ से तयम्मुम कर ले क्योंकि उनके नज़दीक कीचड़ से तयम्मुम जायज़ है इसलिए कि वह ज़मीन का हिस्सा है। |

1. खुलासा अल-फ़तावा फ़ीमा यजोज़ु बिहित-तयम्मुम, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/36
2. फ़तावा बज़ाज़िया अल-हाशिया अल-हिन्दिया, पांचवां अध्याय तयम्मुम पर, नूरानी कुतुब खाना प्रेस, पेशावर, 1/17 पृष्ठ 668/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

| جلم یعلق لم یصح التیمم عندہ امام الامام فلایوجبہ اذا لم یعلق بیدہ شیئ۔ | نہیں لگتی تو انکے نزدیک تیمم ہی درست نہیں۔ لیکن امام اعظم اسے ہاتھ میں کچھ نہ لگنے کی صورت میں واجب نہیں کہتے۔ (ت) |

ولہذا تصریح فرماتے ہیں کہ یہ ترکیب اس وقت ہے کہ ابھی نماز کے وقت میں اتنی وسعت ہو اور اگر دیکھے کہ ایسا کرے گا تو اس کے خشک ہونے تک نماز کا وقت جاتا رہے گا تو لازم ہے کہ یونہی کیچڑ سے تیمم کر کے نماز پڑھ لے وقت نہ جانے دے اقول: مگر اب لازم ہوگا کہ دونوں ہتھیلیاں باہم خوب ملے رگڑے کہ جہاں تک ممکن ہو کیچڑ چھوٹ جائے اور جو حصہ رہے خشکی پر آجائے کہ جب غبار و زمین خشک پر ہاتھ مار کر جھاڑنا اور اثر خاک سے صاف کر دینا سنت ہو تو یہاں وجوب چاہئے نیز تصریح فرماتے ہیں کہ اگر کسی نے ایسا نہ کیا اور کیچڑ سے تیمم کر لیا بر ا کیا مگر تیمم ہو گیا، خلاصہ سے گزرا:

| مع ھذا الوتیمم بالطین فھو علی الخلاف ۱ اھ ای صح عند الامام والثالث خلافاً للثانی رضی اللہ تعالٰی عنہم۔ | اس کے باوجود اگر کیچڑ سے تیمم کر لیا تو اس میں اختلاف ہے اھ یعنی امام اعظم و امام محمد کے نزدیک جائز ہے، امام ابو یوسف کے نزدیک اس کے برخلاف ہے اللہ تعالٰی ان سبھی حضرات سے راضی ہو۔ (ت) |

وجیز کردری میں ہے:

| لا بالطین بل یلطخ جسدہ بہ فاذا جف تیمم ومع ھذا الوتیمم بہ فعلہ ھذا الخلاف ۲۔ | کیچڑ سے تیمم جائز نہیں بلکہ اپنے جسم کے کسی ایک حصے پر کیچڑ لگائے خشک ہونے پر اس سے تیمم کر لے، اس کے باوجود اگر کیچڑ سے تیمم کر لیا تو اس میں یہی اختلاف ہے۔ (ت) |

ولوالوجیہ پھر رملی علی البحر پھر منحۃ الخالق میں ہے:

| عند ابی حنیفۃ ان خاف ذھاب الوقت تیمم بالطین لان التیمم بالطین عندہ جائز لانہ من اجزاء الارض | امام ابوحنیفہ کے نزدیک یہ حکم ہے کہ اگر وقت نکلنے کا اندیشہ ہو تو کیچڑ سے تیمم کر لے کیونکہ ان کے نزدیک کیچڑ سے تیمم جائز ہے اس لیے کہ وہ اجزائے زمین |

1 خلاصۃ الفتاوی فیما یجوز بہ التیمم مطبع نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۶ 2 فتاویٰ بزازیہ علی حاشیۃ الھندیہ الخامس فی التیمم مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۱۷ Page 668 of 756

Fatawa Ridawiyya - Volume 3

[Arabic Box 1]: However, one should not perform tayammum (dry ablution) before the fear of the time passing, so that his face does not become smeared, thus taking the form of mutilation (muthla). (1) [Urdu Box 1]: ...is from, but before the fear of the time expiring, one should not perform tayammum with it so that the face does not become smeared and fall under the meaning of mutilation. (T)

In Bada'i and Hindiyya, it is stated: [Arabic Box 3]: If one were in mud and mire and finds neither water nor dry soil, and there is no dust on his garment or saddle, he should smear his garment or some part of his body with mud. When it dries, he may perform tayammum with it. It is not appropriate to perform tayammum as long as he does not fear the time passing, because it involves smearing the face without necessity, thus becoming the meaning of mutilation. If he does perform tayammum with it, it is sufficient according to Abu Hanifa and Muhammad (may Allah be pleased with them both) until the end of the text we cited earlier. (2) [Urdu Box 3]: If one is in mud and swamp and neither water is available nor dry earth, nor is there dust on the clothes or saddle, then apply mud on your clothes or some part of the body. When it becomes dry, perform tayammum with it. And as long as there is no fear of the time expiring, tayammum should not be performed with it because it results in the face being smeared without necessity, which carries the meaning of mutilation (disfiguring the face). And if tayammum is performed with it, then according to Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad (may Allah the Exalted be pleased with them both), it will be sufficient. Until the end of the text that we have quoted before. (T)

In the Fatawa of Imam Qadi Khan, it is stated: [Arabic Box 5]: Shams al-A’immah al-Halwani (may Allah the Exalted have mercy on him) mentioned that it is not appropriate to perform tayammum with mud because it involves smearing the face, but if he does so, it is permissible. (3) [Urdu Box 5]: Shams al-A’immah Halwani (may Allah the Exalted have mercy on him) mentioned that tayammum should not be performed with mud because it causes contamination of the face, and if it is done, it is permissible. (T)

I say (Aqool): From these very statements, it has become evident that while there is still time, acting upon this arrangement is not merely recommended (mustahabb), but rather obligatory (wajib), because when it carries the meaning of mutilation, and mutilation is definitely forbidden (haram), then that which carries its meaning is at least prohibitively disliked (makruh tahrimi).

[Arabic Box 7]: And through this, the weakness of what occurred in al-Hulyah becomes apparent, since [Urdu Box 7]: Through this, its weakness becomes manifest.

---

1. Minhat al-Khaliq 'ala al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/128
2. Fatawa 'Alamgiri, Chapter of Tayammum, Matba' Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/27
3. Fatawa Qadi Khan, Regarding what tayammum is permissible with, Matba' Nawal Kishore Lucknow, 1/29

फ़तावा रज़विया - खंड 3

[अरबी बॉक्स 1]: हालांकि, समय बीतने के डर से पहले तयम्मुम नहीं किया जाना चाहिए, ताकि उसका चेहरा सन न जाए, जिससे यह अंग-भंग (मुथला) के समान हो जाए। (1) [उर्दू बॉक्स 1]: ...से है, लेकिन समय समाप्त होने के डर से पहले इससे तयम्मुम न करे ताकि चेहरा इससे सन न जाए और मुथला के अर्थ में न आ जाए। (त)

बदाई और हिंदिया में लिखा है: [अरबी बॉक्स 3]: यदि कोई कीचड़ और दलदल में हो और न पानी मिले न सूखी मिट्टी, और न ही उसके कपड़ों या जीन पर धूल हो, तो वह अपने कपड़ों या शरीर के किसी हिस्से पर कीचड़ लगा ले। जब वह सूख जाए, तो उससे तयम्मुम करे। जब तक समय बीतने का डर न हो, तब तक उससे तयम्मुम करना उचित नहीं है, क्योंकि इसमें बिना आवश्यकता के चेहरे को सनाना शामिल है, जो अंग-भंग के अर्थ में आता है। यदि वह इससे तयम्मुम कर लेता है, तो इमाम अबू हनीफा और इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) के अनुसार यह पर्याप्त होगा, उस इबारत के अंत तक जिसे हमने पहले उद्धृत किया था। (2) [उर्दू बॉक्स 3]: कीचड़ और दलदल में हो न पानी दस्तयाब है न मिट्टी, न कपड़े या ज़ीन पर ग़ुबार ही है तो अपने कपड़े या जिस्म के किसी हिस्से पर कीचड़ लगा ले, जब खुश्क हो जाए तो उससे तयम्मुम करे और जब तक वक़्त निकलने का अंदेशा न हो उस से तयम्मुम नहीं करना चाहिये क्योंकि उस में बिला ज़रूरत चेहरा आलूदा होकर मुथला (सूरत बिगाड़ने) के मानी में हो जाता है और अगर इस से तयम्मुम कर लिया तो इमाम अबू हनीफ़ा व इमाम मुहम्मद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के नज़दीक काफ़ी होगा। आख़िर इबारत तक जो हम पहले नक़्ल कर आए। (त)

इमाम क़ाज़ी ख़ान के फ़तावा में है: [अरबी बॉक्स 5]: शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी (अल्लाह तआला उन पर रहम करे) ने ज़िक्र किया है कि कीचड़ से तयम्मुम करना उचित नहीं है क्योंकि इसमें चेहरा सन जाता है, लेकिन अगर कोई ऐसा करता है तो वह जायज़ है। (3) [उर्दू बॉक्स 5]: शम्स अल-अइम्मा हलवानी रहमतुल्लाह तआला ने ज़िक्र फ़रमाया है कि कीचड़ से तयम्मुम नहीं करना चाहिये इस लिये कि इस में चेहरा की आलूदगी होती है और अगर कर ही लिया जाए तो जाइज़ है। (त)

अक़ूल (मैं कहता हूँ): इन्ही इबारतों से ज़ाहिर हुआ कि बहाल गुंजाइश वक़्त इस तरकीब पर अमल सिर्फ मुस्तहब नहीं बल्कि वाजिब है कि जब वह मानी मुथला में है और मुथला हराम-ए-क़तई तो जो उसके मानी में है ला-अक़ल्ल मकरूह-ए-तहरीमी।

[अरबी बॉक्स 7]: और इसी से अल-हूलिया में जो वाक़े हुआ उसकी कमज़ोरी ज़ाहिर हो जाती है क्योंकि [उर्दू बॉक्स 7]: इसी से उसका ज़ईफ़ होना अयाँ हो जाता है।

---

1. मिन्हात अल-ख़ालिक अल-बहर अर-रईक़, अध्याय तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/128
2. फ़तावा आलमगीरी, अध्याय तयम्मुम, मतबा नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/27
3. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, तयम्मुम किन चीज़ों से जायज़ है, मतबा नवल किशोर लखनऊ, 1/29

فتاوٰی رضویہ - جلد سوم

[عربی باکس 1]: الا انه لا یتیمم قبل خوف ذهاب الوقت کیلا یتلطخ بوجهه فیصیر بمعنی المثلة۔ (1)

[اردو باکس 1]: سے ہے لیکن وقت نکلنے کا اندیشہ سے پہلے اس سے تیمم نہ کرے تاکہ چہرہ اس سے آلودہ ہو کر مثلہ کے معنی میں نہ جائے۔ (ت)

بدائع و ہندیہ میں ہے: [عربی باکس 3]: لو کان في طین وردغة لا یجد ماء ولا صعیدا ولیس في ثوبه وسرجه غبار یلطخ ثوبه او بعض جسده بالطین فاذا جف تیمم به ولا ینبغي ان یتیمم مالم یخف ذهاب الوقت لان فیه تلطخ الوجه من غیر ضرورة فیصیر بمعنی المثلة وان یتیمم به اجزأه عند ابی حنیفة ومحمد رضی اللہ تعالی عنهما الی آخر ما قدمنا۔ (2) [اردو باکس 3]: کیچڑ اور دلدل میں ہو نہ پانی دستیاب ہے نہ مٹی ، نہ کپڑے یا زین پر غبار ہی ہے تو اپنے کپڑے یا جسم کے کسی حصے پر کیچڑ لگا لے، جب خشک ہو جائے تو اس سے تیمم کرے اور جب تک وقت نکلنے کا اندیشہ نہ ہو اس سے تیمم نہیں کرنا چاہئے کیونکہ اس میں بلا ضرورت چہرہ آلودہ ہو کر مثلہ (صورت بگاڑنے) کے معنی میں ہو جاتا ہے اور اگر اس سے تیمم کر لیا تو امام ابو حنیفہ و امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہما کے نزدیک کافی ہو گا۔ آخر عبارت تک جو ہم پہلے نقل کر آئے۔ (ت)

فتاوٰی امام قاضیخان میں ہے: [عربی باکس 5]: ذکر شمس الائمة الحلوانی رحمه اللہ تعالی انه لا ینبغی ان یتیمم بالطین لان فیه تلطیخ الوجه ولو فعل جاز۔ (3) [اردو باکس 5]: شمس الائمہ حلوانی رحمہ اللہ تعالٰی نے ذکر فرمایا ہے کہ کیچڑ سے تیمم نہیں کرنا چاہئے اس لیے کہ اس میں چہرہ کی آلودگی ہوتی ہے اور اگر کر ہی لیا جائے تو جائز ہے۔ (ت)

اقول: انہی عبارات سے ظاہر ہوا کہ بحال گنجائش وقت اس ترکیب پر عمل صرف مستحب نہیں بلکہ واجب ہے کہ جب وہ معنی مثلہ میں ہے اور مثلہ حرام قطعی تو جو اس کے معنی میں ہے لااقل مکروہ تحریمی۔

[عربی باکس 7]: و بہ ظھر ضعف ما وقع فی الحلیۃ حیث | [اردو باکس 7]: اسی سے اس کا ضعیف ہونا عیاں ہو جاتا ہے۔

---

1 منحۃ الخالق علی البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱ / ۱۲۸ 2 فتاوی عالمگیری باب التیمم مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۷ 3 فتاوی قاضیخان فیما یجوز بہ التیمم مطبع نولکشور لکھنؤ ۱ / ۲۹

Fatawa Rizvia - Volume 3

[Arabic Text - Left Column]: He said: Based on this, what has been mentioned is not mandatory for the traveler, rather it is recommended for him. The wording of Al-Bada'i (mentioning what we quoted from it) is as if it seeks evidence from its statement "it is not appropriate to perform Tayammum," and similarly the statement of Shams al-A'imma— I say: If there is a tendency in this (1) towards non-obligatoriness, then the statements of Al-Khaniya, Al-Khulasa, Al-Bazzaziya, Al-Wajiba, Al-Mubtaghi, and even Shams al-A'imma, based on the narration of Al-Munya, "he should not perform Tayammum with mud," are clear in obligatoriness. If they are equal, then recourse must be had to the evidence, and it dictates obligatoriness as you have learned. Indeed, it has been stated explicitly in Al-Munya and others with the word "it is not permissible," as you will hear. And Allama Khayr al-Din al-Ramli said, as in Al-Minha: Since it is in the sense of mutilation (muthla), it is mandatory to delay its action until that time so that he does not engage in what is in the sense of mutilation without necessity. End. I say: But this is countered by the fact that if it were mandatory, it would have been mandatory not to perform Tayammum with it until it dries, even if the time elapses.

[Urdu Text - Right Column]: What has been written in Hulyah is that: Based on this foundation, the aforementioned action is not mandatory for the traveler but is recommended, and the text of Bada'i is this (after which the text of Bada'i is mentioned which we have just quoted from it). It seems that they want to present evidence from the words of Bada'i 'La Yanbaghi an Yata-yammam' (one should not perform tayammum...), the words of Shams al-A'imma are also similar to this. (T) I say: If there is some inclination in these words towards non-obligatoriness, then the words of Khaniya, Khulasa, Al-Wajiba, Mubtaghi, and Shams al-A'imma based on Munya, 'La Yata-yammam bi al-Teen' (do not perform tayammum with mud) are clear regarding obligatoriness. If both sides are equal, then recourse to evidence will be necessary. And the evidence decides in favor of obligatoriness as has already been known. Inevitably, the word "impermissible" (Na-ja'iz) has explicitly appeared in Munya etc. as you will hear ahead. And Allama Khayr al-Din Ramli, as in Minhat al-Khaliq, said: "When this is in the sense of mutilation, then it is mandatory to delay this action until that time so that without necessity one does not commit such an act which is in the sense of mutilation". (T) I say: But against this, an objection arises that if this action were mandatory, then as long as it does not dry, they would have made non-tayammum mandatory even if the time passes.

[Footnotes]: 1 Munyat al-Musalli, Chapter of Tayammum, Aziziya Press, Kashmiri Bazaar, Lahore, p. 16. 2 Minhat al-Khaliq ala al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Press, Karachi 1/148.

फ़तावा रज़विया - खंड 3

[अरबी पाठ - बायां कॉलम]: उन्होंने कहा: इसके आधार पर, जो उल्लेख किया गया है वह यात्री के लिए अनिवार्य नहीं है, बल्कि उसके लिए मुस्तहब (पसंदीदा) है। अल-बदाई का शब्द (जिसका हमने उससे उद्धरण दिया है) ऐसा है मानो वह इसके कथन "तयम्मुम करना उचित नहीं है" से प्रमाण मांग रहा हो, और इसी तरह शम्स अल-आइम्मा का कथन— मैं कहता हूँ: यदि इसमें (1) गैर-अनिवार्यता की ओर झुकाव है, तो अल-खानिया, अल-खुलासा, अल-बज्जाज़िया, अल-वाजिबा, अल-मुब़तग़ी और यहाँ तक कि शम्स अल-आइम्मा के कथन, अल-मुन्या के वर्णन के आधार पर, "मिट्टी से तयम्मुम नहीं करना चाहिए," अनिवार्यता में स्पष्ट हैं। यदि वे बराबर हैं, तो प्रमाण की ओर लौटना अनिवार्य होगा, और यह अनिवार्यता का ही निर्णय करता है जैसा कि आप जान चुके हैं। वास्तव में, अल-मुन्या और अन्य में "अनुमेय नहीं है" शब्द के साथ स्पष्ट रूप से कहा गया है, जैसा कि आप आगे सुनेंगे। और अल्लामा खैरुल दीन अल-रमली ने कहा, जैसा कि अल-मिन्हा में है: चूंकि यह विकृत करने (मुथला) के अर्थ में है, इसलिए इसके कार्य में तब तक देरी करना अनिवार्य है जब तक कि बिना आवश्यकता के ऐसे कार्य में शामिल न हो जो विकृत करने के अर्थ में हो। अंत। मैं कहता हूँ: लेकिन इस पर यह आपत्ति है कि यदि यह अनिवार्य होता, तो तब तक तयम्मुम न करना अनिवार्य होता जब तक कि वह सूख न जाए, भले ही समय निकल जाए।

[उर्दू पाठ - दायां कॉलम]: हुलिया में जो लिखा गया है वह यह है कि: इस आधार पर यात्री के लिए उक्त कार्य अनिवार्य नहीं बल्कि मुस्तहब है, और बदाइ की इबारत यह है (इसके बाद बदाइ की वह इबारत ज़िक्र की गई जिसे अभी हमने उससे उद्धृत किया)। ऐसा लगता है कि वे बदाइ के शब्दों 'ला यनबग़ी अन यत-यम्मम' (तयम्मुम नहीं करना चाहिए...) से साक्ष्य पेश करना चाहते हैं, शम्स अल-आइम्मा के शब्द भी इसी के समान हैं। (त) मैं कहता हूँ: यदि इन शब्दों में गैर-अनिवार्यता की ओर कुछ झुकाव है, तो मुन्या के आधार पर खानिया, खुलासा, अल-वाजिबा, मुब़तग़ी और शम्स अल-आइम्मा के शब्द 'ला यत-यम्मम बिल-तीन' (कीचड़ से तयम्मुम न करे) अनिवार्यता के बारे में स्पष्ट हैं। यदि दोनों का पलड़ा बराबर हो तो दलील (प्रमाण) की ओर लौटना ज़रूरी होगा। और दलील अनिवार्यता का ही निर्णय करती है जैसा कि ज्ञात हो चुका है। अनिवार्य रूप से मुन्या आदि में शब्द "ना-जायज़" (अनुचित) स्पष्ट रूप से आया है जैसा कि आप आगे सुनेंगे। और अल्लामा खैरुल दीन रमली ने जैसा कि मिन्हातुल ख़ालिक़ में है, यह कहा: "जब यह मुथला (अंग-भंग) के अर्थ में है तो इस कार्य को उस समय तक टालना अनिवार्य है ताकि बिना आवश्यकता के ऐसे कार्य का अपराधी न हो

जो मुथला के अर्थ में है"। (त) मैं कहता हूँ: लेकिन इस पर यह आपत्ति आती है कि यदि यह कार्य अनिवार्य होता तो जब तक वह सूख न जाए, तब तक तयम्मुम न करना अनिवार्य करते भले ही समय बीत जाए।

[पाद-टिप्पणियां]: 1 मुनियतुल मुसल्ली, तयम्मुम का अध्याय, अज़ीज़िया प्रेस, कश्मीरी बाज़ार, लाहौर, पृष्ठ 16। 2 मिन्हातुल ख़ालिक़ अला अल-बहरर रायिक़, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी प्रेस, कराची 1/148।

فتاوی رضویہ - جلد سوم

[عربی عبارت - بایاں کالم]: قال وعلی هذا لا یلزم المسافر ماذکر بل یستحب له ذلك ولفظ البدائع (فذکر مانقلنا عنها) وکأنه یستشهد بقولها لاینبغي ان یتیمّم ومثله قول شمس الائمة - اقول: ان کان (۱) لهذا میل الی عدم الوجوب فقول الخانیة والخلاصة والبزازیة والواجبیة والمبتغی بل وشمس الائمة ایضا علی روایة المنیة لایتیمّم بالطین ظاهر فی الوجوب فان استویا وجب الرجوع الی الدلیل وهو قاض بالوجوب کما علمت لا جرم ان صرح فی المنیة وغیرها بلفظة لایجوز کما ستسمع وقال العلامة الخیر الرملی کما فی المنحة لما کان فی معنی المثلة وجب تأخیر فعله الی ذلك الوقت لئلا یباشر ماهو فی معنی المثلة لغیر ضرورة اهـ اقول: لکن یعکر علیه ان لو وجب الاوجب عدم التیّم به الابعد الجفاف وان خرج الوقت

[اردو عبارت - دایاں کالم]: جو حلیہ میں لکھ دیا ہے کہ: اس بنیاد پر عمل مذکور مسافر کے لیے لازم نہیں بلکہ مستحب ہے اور بدائع کی عبارت یہ ہے (اس کے بعد بدائع کی وہ عبارت ذکر کی جو ابھی ہم نے اس سے نقل کی) معلوم ہوتا ہے کہ وہ بدائع کے الفاظ لاینبغی ان یتیمّم (تیمم نہیں کرنا چاہئے-----) سے شہادت پیش کرنا چاہتے، شمس الائمہ کے الفاظ بھی اسی کے مثل ہیں۔ (ت) اقول: اگران الفاظ کاکچھ رجحان عدم وجوب کی طرف ہے توخانیہ، خلاصہ، والواجبیة، متبغی بت منیہ شمس الائمہ کے الفاظ لایتیمّم بالطین (کیچڑ سے تیمم نہ کرے) وجوب کے بارے میں واضح ہیں۔ اگر دونوں کا پلہ برابر ہو تو دلیل کی طرف رجوع ضروری ہوگا۔ اور دلیل وجوب ہی کا فیصلہ کرتی ہے جیسا کہ معلوم ہوچکا۔ لامحالہ منیہ وغیرہ میں لفظ "ناجائز" کی صراحت آئی ہے جیسا کہ آگے آپ سنیں گے۔ اور علامہ خیر الدین رملی نے جیسا کہ منحۃ الخالق میں ہے، یہ فرمایا: "جب یہ مثلہ کے معنی میں ہے تو یہ عمل اس وقت تک مؤخر کرنا واجب ہو تاکہ بلا ضرورت ایسے کام

کامرتکب نہ ہو جو مثلہ کے معنی میں ہے"۔ (ت) اقول: لیکن اس پر یہ اعتراض وارد ہوتا ہے کہ اگر یہ عمل واجب ہوتا تو جب تک خشک نہ ہو اس سے عدم تیمم واجب کرتے اگرچہ وقت نکل جائے

[حواشی]: 1 منیة المصلی باب التیمم مطبع عزیزیہ کشمیری بازار لاہور ص ۱۶ 2 منحۃالخالق علی البحرالرائق باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۴۸

Fatawa Ridawiyyah Volume 3

[Left Column Text] As is the saying of Imam Abu Yusuf, for Shariah prohibition also establishes inability to use water, as we have previously mentioned regarding Sabil water, the issue of gift (hibah), and the issue of water held in joint ownership through a corrupt title among several people. Thus, inability to use this soil should also be established.

I say: By the grace of the Giver (Allah), in response to the aforementioned objection, I say that protecting the time [of prayer] is an obligation (fard), and fulfilling an obligation is more important than avoiding a prohibitively disliked act (makruh tahrimi). Therefore, it should not be considered an inability to use soil, because it has no substitute. The case of water is contrary to this because its substitute and alternative, soil, exists. And Allah Almighty knows best what is correct and right.

In short, by the grace of Allah Almighty, it is clear. And this is the reason for the prohibition regarding mud that we have explained, and through this, harmony is found among the texts. And with Allah is success.

I say: But this is a slippery slope where the pens of several prominent scholars have slipped due to interpreting the word 'jawaz' (permissibility) in the sense of 'sehat' (validity) instead of 'hillat' (lawfulness). Most strange and unusual is what I quoted from al-Birjandi, where he attributed to 'Al-Khulasah' things that were never said there, without paying attention to what the author of 'Al-Khulasah' himself explicitly stated in the very same line and again several lines later. We also quoted from Imam al-Kirmani's 'Al-Idah'; if it is not interpreted in the way that the Opener (God) has bestowed upon this poor servant...

[Right Column Text] As is the saying of Imam Abu Yusuf, for Shariah prohibition also establishes inability to use water, as we have previously mentioned regarding Sabil water, the issue of gift (hibah), and the issue of water held in joint ownership through a corrupt title among several people. Thus, inability to use this soil should also be established. (T)

I say: By the grace of the Giver (Allah), in response to the aforementioned objection, I say that protecting the time [of prayer] is an obligation (fard), and fulfilling an obligation is more important than avoiding a prohibitively disliked act (makruh tahrimi). Therefore, it should not be considered an inability to use soil, because it has

no substitute. The case of water is contrary to this because its substitute and alternative, soil, exists. And Allah Almighty knows best what is correct and right. (T)

In short, by the grace of Allah Almighty, it is clear. And this is the reason for the prohibition regarding mud that we have explained, and through this, harmony is found among the texts. And with Allah is success.

I say: But this is a slippery slope where the pens of several prominent scholars have slipped due to interpreting the word 'jawaz' (permissibility) in the sense of 'sehat' (validity) instead of 'hillat' (lawfulness). (1) The most strange and unusual is what I quoted from al-Birjandi, where he attributed to 'Al-Khulasah' things that were never said there, without paying attention to what the author of 'Al-Khulasah' himself explicitly stated in the very same line and again several lines later. (2) We also quoted from Imam al-Kirmani's 'Al-Idah'; if it is not interpreted in the way that the Opener (God) has bestowed upon this poor servant...

फ़तावा रज़विया खंड 3

[बाएं कॉलम का पाठ] जैसा कि इमाम अबू यूसुफ का कहना है, क्योंकि शरीअत की मनाही से भी पानी के उपयोग में असमर्थता सिद्ध होती है, जैसा कि हमने पहले सबील के पानी, उपहार (हिबा) के मसले और कई लोगों के बीच भ्रष्ट स्वामित्व के माध्यम से साझा पानी के मसले में बताया है। तो इस मिट्टी के उपयोग से भी असमर्थता सिद्ध होनी चाहिए।

मैं कहता हूँ: वहाब (अल्लाह) की तौफीक से, उपर्युक्त आपत्ति के उत्तर में, मैं कहता हूँ कि समय की रक्षा करना फ़र्ज़ है और फ़र्ज़ को पूरा करना मकरूह तहरीमी को छोड़ने से अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए इसे मिट्टी के उपयोग में असमर्थता नहीं माना जाएगा, क्योंकि इसका कोई विकल्प नहीं है। पानी का मामला इसके विपरीत है क्योंकि उसका एक विकल्प और बदल मिट्टी मौजूद है। और अल्लाह तआला सही और दुरुस्त को अच्छी तरह जानने वाला है।

संक्षेप में, अल्लाह तआला की कृपा से यह स्पष्ट है। और कीचड़ के संबंध में निषेध का यही कारण है जिसे हमने स्पष्ट किया है, और इसी के माध्यम से ग्रंथों में सामंजस्य पाया जाता है। और सफलता अल्लाह की ओर से है।

मैं कहता हूँ: लेकिन यह एक फिसलन भरी जगह है जहाँ कई प्रमुख विद्वानों की कलम 'जवाज़' (अनुमति) शब्द को 'हिल्लत' (वैधता) के बजाय 'सेहत' (मान्यता) के अर्थ में लेने के कारण फिसल गई है। सबसे विचित्र और अनोखा वह है जो मैंने बिरजंदी से उद्धृत किया है कि उन्होंने 'अल-ख़ुलासा' की ओर वह सब कुछ जोड़ दिया जो वहां नहीं था, और इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि स्वयं 'अल-ख़ुलासा' के लेखक ने उसी पंक्ति में और फिर कुछ पंक्तियों के बाद स्पष्ट रूप से क्या कहा है। हमने इमाम किरमानी की 'अल-ईज़ाह' से भी उद्धृत किया है; यदि इसकी वह व्याख्या न की जाए जो फताह (परमेश्वर) ने इस फकीर पर...

[दाएं कॉलम का पाठ] जैसा कि इमाम अबू यूसुफ का कहना है, क्योंकि शरीअत की मनाही से भी पानी के उपयोग में असमर्थता सिद्ध होती है, जैसा कि हमने पहले सबील के पानी, उपहार (हिबा) के मसले और कई लोगों के बीच भ्रष्ट स्वामित्व के माध्यम से साझा पानी के मसले में बताया है। तो इस मिट्टी के उपयोग से भी असमर्थता सिद्ध होनी चाहिए। (त)

मैं कहता हूँ: वहाब (अल्लाह) की तौफीक से, उपर्युक्त आपत्ति के उत्तर में, मैं कहता हूँ कि समय की रक्षा करना फ़र्ज़ है और फ़र्ज़ को पूरा करना मकरूह तहरीमी को छोड़ने से अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए इसे मिट्टी के उपयोग में असमर्थता नहीं माना जाएगा, क्योंकि इसका कोई विकल्प नहीं है। पानी का मामला इसके विपरीत है क्योंकि उसका एक विकल्प और बदल मिट्टी मौजूद है। और अल्लाह तआला सही और दुरुस्त को अच्छी तरह जानने वाला है। (त)

संक्षेप में, अल्लाह तआला की कृपा से यह स्पष्ट है। और कीचड़ के संबंध में निषेध का यही कारण है जिसे हमने स्पष्ट किया है, और इसी के माध्यम से ग्रंथों में सामंजस्य पाया जाता है। और सफलता अल्लाह की ओर से है।

मैं कहता हूँ: लेकिन यह एक फिसलन भरी जगह है जहाँ कई प्रमुख विद्वानों की कलम 'जवाज़' (अनुमति) शब्द को 'हिल्लत' (वैधता) के बजाय 'सेहत' (मान्यता) के अर्थ में लेने के कारण फिसल गई है। (1) सबसे विचित्र और अनोखा वह है जो मैंने बिरजंदी से उद्धृत किया है कि उन्होंने 'अल-ख़ुलासा' की ओर वह सब कुछ जोड़ दिया जो वहां नहीं था, और इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि स्वयं 'अल-ख़ुलासा' के लेखक ने उसी पंक्ति में और फिर कुछ पंक्तियों के बाद स्पष्ट रूप से क्या कहा है। (2) हमने इमाम किरमानी की 'अल-ईज़ाह' से भी उद्धृत किया है; यदि इसकी वह व्याख्या न की जाए जो फताह (परमेश्वर) ने इस फकीर पर...

[بائیں کالم کا متن] کما ھو قول الامام ابي یوسف فأن المنع الشرعي ایضاً مثبت للعجز عن استعمال الماء کما قدمنا في مسألة الحباب ومسألة الھبه ومسألة المشترك بین ناس بملك فاسد فکذا ینبغی انی یثبت العجز عن استعمال ھذا التراب۔ واقول: فی الجواب بتوفیق الوھاب حفظ الوقت فریضة واتیان الفریضة اھم من ترك المکروہ تحریماً فلا یجعل عجزاً عن التراب جاذلاً بدل له بخلاف الماء فأن له خلفاً وھو التراب واللہ تعالی اعلم بالصواب۔ بالجملہ بحمداللہ تعالٰی واضح ہے اور کیچڑ سے منع کا یہی منشا کہ ہم نے تقریر کیا اور اسی سے عبارات میں توفیق وباللہ التوفیق۔ اقول: لکنھا مزلة زلت فیھا اقلام اعلام من قبل حمل الجواز علی معنی الصحة دون الحل فاغربھا ما قدمت عن البرجندی حیث عزا الی الخلاصة ماعز ولم یبال بما صرح به فی نفس السطر وبعد بعدة اسطر ومنھا ما قدمنا عن الایضاح ان لم یؤول بما فتح علی الفتاح ومنھا قال فی المنیة لا یجوز التیمم بالطین قال شمس الائمة الحلوانی رحمه اللہ تعالٰی لا یتییم

[دائیں کالم کا متن] جیسا کہ امام ابو یوسف کا قول ہے اس لیے کہ شرعی ممانعت سے بھی پانی کے استعمال سے عجز ثابت ہوتا ہے جیسا کہ ہم پہلے سبیل کے پانی، ہبہ کے مسئلہ اور چند آدمیوں کے درمیان ملک فاسد سے مشترک پانی کے مسئلہ میں بیان کر آئے ہیں تو اس مٹی کے استعمال سے بھی عجز ثابت ہونا چاہئے۔ (ت) اقول: خدائے وہاب کی توفیق سے اعتراض مذکور کہ جواب میں، میں کہتا ہوں کہ وقت کا تحفظ فرض ہے اور فرض کی بجا آوری مکروہ تحریمی کے ترک سے اہم ہے تو اسے مٹی سے عجز نہ قرار دیا جائے گا اس لیے کہ اس کا کوئی بدل نہیں، پانی کا معاملہ اس کے برخلاف ہے کیونکہ اس کا ایک نائب وبدل مٹی موجود ہے اور خدائے تعالٰی درست وصواب کو خوب جاننے والا ہے۔ (ت) بالجملہ بحمد اللہ تعالیٰ واضح ہے اور کیچڑ سے منع کا یہی

منشا کہ ہم نے تقریر کیا اور اسی سے عبارات میں توفیق وباللہ التوفیق۔ اقول: لیکن یہ ایک پھسلن ہے جہاں متعدد علمائے اعلام کے قلم لفظ جواز کو بجائے حلت کے معنی پر محمول کر لینے کی وجہ سے لغزش کھا چکے ہیں۔ (۱) سب سے زیادہ عجیب و غریب وہ ہے جو برجندی سے میں نے نقل کیا کہ انہوں نے خلاصہ کی طرف منسوب کر ڈالا وہ سب جو منسوب کیا، اور اس کا خیال نہ کیا جو صاحب خلاصہ نے خود اسی سطر میں اور پھر چند سطر بعد بھی صراحت فرمائی ہے۔

(۲) وہ بھی ہم نے امام کرمانی کی ایضاح سے نقل کیا، اگر اس کی وہ تاویل نہ کی جائے جو فقیر پر خدائے فتاح نے

Fatawa Razawiya, Volume 3

Text (Arabic original with Urdu commentary): ...disclosed. (3) In 'Munyah' it is stated: "Tayammum with mud is not permissible. Shams al-A'immah Halwani (may Allah have mercy on him) said: 'Do not perform tayammum with mud', and if one does, it is valid (ja'iz). This is in our copy of the text. There is also a commentary on this copy in 'Al-Ghunyah', and in another copy on which 'Al-Hilyah' is the commentary, it is written: 'Shams al-A'immah said: Tayammum with mud is not permissible' and if one does it, it is valid. In 'Al-Hilyah' it is written: 'Al-Karkhi is a proponent of its permissibility, and Shams al-A'immah al-Halwani also followed this, but he stated that tayammum should not be performed with it because it causes contamination of the face, and if one does it, it is valid.' Qadi Khan has quoted from him with these same words in his fatawa, not the words attributed to him by the author, as their literal sense entails a contradiction."

I say (Aqool): (1) Anyone who hears this will immediately think that 'not permissible' means 'not lawful' (haram) and 'permissible' means 'valid' (sahih), and this is the apparent and immediate understanding. However, the commentator (Al-Allamah) does not even accept the lack of lawfulness, as mentioned previously, so this clear meaning could not align for him. (4) In 'Al-Bahr' it is stated: "And Al-Walwaji in his fatawa, and the author of 'Al-Mubtaghi' also, restricted the permissibility with mud by..."

Footnotes: 1. Munyah al-Musalli, Chapter of Tayammum, Matba Aziziyah, Kashmiri Bazaar, Lahore, p. 16. 2. Ghunyah al-Mustamli, Chapter of Tayammum, Matba Sohail Academy, Lahore, p. 79. 3. Hilyah.

Page 672 of 756

फतावा रज़विया, खंड 3

इबारत: ...प्रकट किया। (3) 'मुन्या' में कहा गया है: "कीचड़ से तयम्मुम जायज़ नहीं है। शम्सुल अइम्मा हलवानी (रहमतुल्लाह अलैहि) ने फरमाया: 'कीचड़ से तयम्मुम न करे', और अगर कर लिया तो जायज़ है।" यह हमारे पाठ के नुस्खे में है। इसी नुस्खे पर 'अल-गुन्या' में भी शरह (व्याख्या) है और एक दूसरे नुस्खे में जिस पर 'अल-हिल्या' शरह है, उसमें यूँ लिखा है: "शम्सुल अइम्मा ने फरमाया: कीचड़ से तयम्मुम जायज़ नहीं है" और अगर कर लिया तो जायज़ है। 'हिल्या' में लिखा है: "इसके जवाज़ (अनुमति) के समर्थक करख़ी हैं और इसी पर शम्सुल अइम्मा हलवानी भी चले हैं, लेकिन उन्होंने फरमाया कि इससे तयम्मुम नहीं करना चाहिए क्योंकि इसमें चेहरे की गंदगी होती है और अगर कर लिया तो जायज़ है।" उन्हीं के इन शब्दों के साथ क़ाज़ी ख़ां ने अपने फतावा में नक़ल किया है, उन शब्दों में नहीं जो मुसन्निफ़ (लेखक) ने उनसे रिवायत किए हैं, क्योंकि उनका ज़ाहिरी अर्थ विरोधाभासी है।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): (1) जो भी यह सुनेगा, उसका ध्यान तुरंत इसी ओर जाएगा कि 'ला-यजूज़' (जायज़ नहीं) का अर्थ 'ला-यहुल्लु' (हलाल नहीं) है और 'यजूज़' (जायज़ है) का अर्थ 'यसिह्ह' (सही है) है, और यही ज़ाहिरी तौर पर समझ आता है। मगर शारह अल्लामा हलाल न होने को भी नहीं मानते जैसा कि पहले गुज़र चुका, इसलिए यह स्पष्ट अर्थ उनके लिए सही नहीं बैठ सकता। (4) 'बहर' में कहा गया है: "और वलवाजी ने अपने फतावा में, और साहिब-ए-मुब्तग़ी ने भी कीचड़ से जवाज़ (अनुमति) को इस शर्त के साथ..."

पाद टिप्पणियाँ: 1. मुन्या अल-मुसल्ली, बाब अत-तयम्मुम, मतबा अज़ीज़िया, कश्मीरी बाज़ार, लाहौर, पृष्ठ 16। 2. गुन्या अल-मुस्तमली, बाब अत-तयम्मुम, मतबा सोहैल अकादमी, लाहौर, पृष्ठ 79। 3. हिल्या।

पृष्ठ 672 / 756

منکشف فرمائی۔ (۳) منیہ میں کہا: "کیچڑ سے تیمم جائز نہیں۔ شمس الائمہ حلوانی رحمہ اللہ تعالٰی نے فرمایا: کیچڑ سے تیمم نہ کرے"، اور اگر کر لیا تو جائز ہے۔ اھ یہ ہمارے نسخہ متن میں ہے۔ اسی نسخہ پر شرح غنیہ بھی ہے اور ایک دوسرے نسخہ میں جس پر شرح حلیہ ہے یوں لکھا ہے "شمس الائمہ نے فرمایا: کیچڑ سے تیمم جائز نہیں" اور اگر کر لیا تو جائز ہے "اھ حلیہ میں لکھا: "اس سے جواز کے قائل کرخی ہیں اور اسی پر شمس الائمہ حلوانی بھی گئے ہیں مگر انہوں نے یہ فرمایا کہ اس سے تیمم نہیں کرنا چاہئے اس لیے کہ اس میں چہرہ کی آلودگی ہوتی ہے اور اگر کر لیا تو جائز ہے۔ ان سے ان ہی الفاظ کے ساتھ قاضی خان نے اپنے فتاوٰی میں نقل کیا ہے ان الفاظ میں نہیں جو ان سے مصنف نے حکایت کی اس لیے کہ اس کا ظاہر تو تناقض لئے ہوئے ہے۔ " اھ (ت) اقول: (۱) جو بھی یہ سنے گا اس کا ذہن اسی بات کی طرف جائے گا کہ لایجوز (جائز نہیں) لایحل (حلال نہیں) کے معنی میں ہے اور یجوز (جائز ہے) یصح (درست ہے) کے معنی میں ہے اور ظاہر یہی متبادر ہوتا ہے۔ مگر شارح علامہ عدم حلت بھی نہیں مانتے جیسا کہ گزر چکا اس لیے یہ واضح معنی ان کے لیے راست نہ آسکے۔ (۴) بحر میں فرمایا: "والواجی نے اپنے فتاوٰی میں، اور صاحب مبتغی نے بھی کیچڑ سے جواز

حواشی: 1 منیۃ المصلی باب التیمم مطبع عزیزیہ کشمیری بازار لاہور ص ۱۶ 2 غنیۃ المستملی باب التیمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۹ 3 حلیہ

Fatawa Razawiyyah - Volume 3

...fears the time [of prayer] will lapse. As for before that, it is not [allowed] so that his face is not smeared [with mud], becoming like disfigurement (muthla) without necessity. This is a good restriction that should be remembered. — End.

I say: Consider the reasoning (ta'līl): does it point to non-permissibility in the sense of lawfulness (ḥill) or in the sense of validity (ṣiḥḥa)? By the grace of Allah, the objection raised against the author of al-Baḥr by his brother, the meticulous researcher in al-Nahr, and by Allāma al-Ramlī in the marginalia of al-Baḥr—followed by the author of al-Minḥa—is refuted. All of them understood that the author of al-Baḥr was saying that al-Walwālajī restricted the validity of tayammum with mud to [emergencies]; thus, if one performed tayammum with it before the fear of the time passing, it would not be valid. Perhaps this meaning never occurred to the researcher of al-Baḥr, nor did he intend it, nor is there any word in his text that designates it or from which it can be inferred. (T)

True, in his text there is something whose apparent meaning gives the impression that he interpreted the command to smear the clothes with mud as being because tayammum with mud is not permissible before it dries, by contrasting it with the Imam's view of permissibility. The text is: "When one finds nothing but mud, he should smear it on his clothes, then when it dries, perform tayammum with it."

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/128

फतावा रज़विया - जिल्द 3

...इस बात से प्रतिबंधित किया है कि समय निकलने का डर हो। इससे पहले जायज़ नहीं ताकि चेहरा दूषित होकर बिना ज़रूरत 'मुतला' (चेहरा बिगाड़ने) के अर्थ में न हो जाए। और यह एक अच्छी शर्त है जिसे याद रखना चाहिए। - समाप्त।

अक़ुल (मैं कहता हूँ): तर्क(इलत) के बयान पर गौर कीजिए, क्या इससे इस बात की राह मिलती है कि जवाज़ (वैधता) के अभाव से मुराद हलाल होने का अभाव है या सही होने का? तो अल्हम्दुलिल्लाह वह आपत्ति दूर हो गई जिससे साहिब-ए-बहर पर उनके भाई मुहक़्क़िक़ ने 'नहर' में और अल्लामा रमली ने 'हाशिया बहर' में रद्द किया और अल्लामा शामी ने 'मिन्हातुल ख़ालिक़' में इन दोनों का अनुसरण किया। यह सब इन हज़रात ने यह समझते हुए किया कि साहिब-ए-बहर यह फरमा रहे हैं कि कीचड़ से तयम्मुम सही होने के लिए अल-वलवालजी ने यह शर्त लगाई है कि अगर समय निकलने (के डर) से पहले तयम्मुम कर लिया तो वह सही ही नहीं हुआ। और शायद यह अर्थ ऐसा है जो मुहक़्क़िक़-ए-बहर के ख्याल में भी न आया हो, न ही उन्होंने यह मुराद लिया, न ही उनकी इबारत में कोई ऐसा शब्द है जिससे इसका निर्धारण हो या जिससे यह प्राप्त हो। (त)

हाँ उनकी इबारत में एक बात ऐसी है जिसके ज़ाहिर से यह भ्रम होता है कि उन्होंने कपड़े पर कीचड़ लगाने के हुक्म को इस पर आधारित किया है कि सूखने से पहले कीचड़ से तयम्मुम जायज़ ही नहीं, इस तरह कि इसके मुक़ाबले में इमाम का जायज़ होने का क़ौल पेश किया है। इबारत इस प्रकार है: "जब कीचड़ के सिवा कुछ न मिले तो उसे कपड़े में [लगा ले, फिर जब सूख जाए तो उससे तयम्मुम करे]..."

1. अल-बहर अल-राइक़, बाब-ए-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/128

पृष्ठ 673/756

یخاف خروج الوقت اما قبله فلا کیلا یتلطخ وجهه فیصیر بمعنی المثلة من غیر ضرورة وهو قید حسن ینبغی حفظه اه کو اس بات سے مقید کیا ہے کہ وقت نکلنے کا اندیشہ ہو۔ اس سے قبل جائز نہیں تاکہ چہرہ آلودہ ہو کر بلا ضرورت مثلہ کے معنی میں نہ ہو جائے۔ اور یہ اچھی قید ہے جسے یاد رکھنا چاہئے۔

اقول: فانظر الی التعلیل هل یرشد الی عدم الجواز بمعنی الحل ام بمعنی الصحة فاندفع (۱) والله الحمد ما رد به علیه اخوه المدقق فی النهر والعلامة الرملي فی حاشیة البحر وتبعهماش في المنحة فاهمین انه یقول قید به الولوالجی صحة التیمم بالطین فلو تیمّم به قبل ذهاب الوقت لم یصح ولعل هذا شیئ لم یخطر ببال المحقق البهر ولا اراده ولا فی عبارته ما عینه او افاده اقول: بیان علت پر غور کیجئے کیا اس سے اس بات کی راہ ملتی ہے کہ جواز بمعنی حلت کا عدم مراد ہے یا بمعنی صحت کا؟ ۔ تو بحمد اللہ وہ اعتراض دفع ہو گیا جس سے صاحب بحر پر ان کے برادر مدقق نے نہر میں اور علامہ رملی نے حاشیہ بحر میں رد کیا اور علامہ شامی نے منحۃ الخالق میں ان دونوں حضرات کی پیروی کی۔ یہ سب ان حضرات نے یہ سمجھتے ہوئے کیا کہ صاحبِ بحر یہ فرما رہے ہیں کہ کیچڑ سے تیمم درست ہونے کے لئے والوالجی نے یہ قید لگائی ہے، تو اگر اس سے وقت نکلنے (کے اندیشہ) سے پہلے تیمم کر لیا تو وہ درست ہی نہ ہوا، اور شاید یہ معنی ایسا ہے جو محققِ بحر کے خیال میں بھی نہ آیا ہو، نہ ہی انہوں نے یہ مراد لیا، نہ ہی ان کی عبارت میں کوئی ایسا لفظ ہے جس سے اس کی تعیین ہو یا جس سے یہ مستفاد ہو۔ (ت)

نعم فی عبارته ما یوهم (۲) ظاهره انه حمل حکم تلطیخ الثوب علی عدم الجواز به قبل الجفاف حیث قابله بقول الامام بالجواز اذ قال اذ لم یجد الا الطین یلطخه بثوبه فاذا جف تیمّم به ہاں ان کی عبارت

میں ایک امر ایسا ہے جس کے ظاہر سے یہ وہم پیدا ہوتا ہے کہ انہوں نے کپڑے میں کیچڑ لگانے کا حکم اس پر محمول کیا ہے کہ سوکھنے سے پہلے کیچڑ سے تیمم جائز ہی نہیں اس طرح کہ اس کے مقابلہ میں امام کا قول جواز پیش کیا ہے۔ عبارت یوں ہے: "جب کیچڑ کے سوا کچھ نہ ملے تو اسے کپڑے میں [لگا لے، پھر جب سوکھ جائے تو اس سے تیمم کرے]..."

1 البحر الرائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۸

Fatawa Ridawiyya Volume Three

[Arabic Box Text]: It was said that according to Abu Hanifa, one may perform tayammum with mud, and this is correct because for him, what is obligatory is to place the hand on the earth, not to use a part of it. Mud is of the same genus as earth, unless water predominates in it; then tayammum is not permissible. This is how it is stated in al-Muhit. End Quote. He is not the first to have gone this way, and this is why... Furthermore, what was mentioned in explaining the Imam's view gives the impression that nothing from the mud sticks to the hand, or that this is the prevailing case, which is the opposite of the path taken in al-Bada'i. The correct view lies with Malik al-Ulama, and Allah the Almighty knows best.

[Urdu Box Text]: ...apply it, when it dries, perform tayammum with it. And it was said that according to Imam Abu Hanifa, one may perform tayammum with mud. And this is correct because according to him, what is obligatory is to place the hand on the earth; it is not obligatory to use any part of it, and mud is of the genus of earth itself. But when water predominates, tayammum from it is not permissible. This is how it is in al-Muhit. End Quote. And he is not the first person whose mind inadvertently wandered in this direction. Then, while explaining the reason for the Great Imam's statement, he mentioned something that gives the impression that nothing from the mud sticks to the hand, or that this is what mostly happens. This is contrary to the path taken by the author of al-Bada'i. The correct view is with Malik al-Ulama. And God the Supreme knows best. (T)

Earth and burnt soil. Statements regarding them appear in two ways: First, it is permissible without restriction, as in Mukhtarat al-Nawazil (1), Hulya (2), T (3) - this is the most correct view, Fath (4), Zahiriyya (5), Hindiyya (6), Mubtani (7), Hulya (8), the fatwa is based on this in Jawahir (9), al-Khalati Ghiyathiyya (10), Nisab (11), Hulya. Second: If the dust predominates over the ash, it is permissible, otherwise not - Khaniya (1), Bahr (2), Durr (3), Khadimi (4), Maraqi (5). Rather, he combined both and said: "It is permissible with burnt earth and burnt clay which did not have dung in it before, and burnt land if ash does not predominate over it." (6) (Rather, combining the two, they said: Tayammum is permissible with burnt earth and that burnt soil which previously had no dung, and with burnt land, if ash does not predominate over it. - T) I say: The research is that the issue in itself is absolute with a condition: that earth and dust cannot burn to become ash. Yes, there were crops or grass and other

things on the land, and they were burnt, and their ash mixed with the dust; then here that condition of predominance will be considered. It is in Tahtawi and Shami:

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/128.
2. Maraqi al-Falah, Chapter of Tayammum, Al-Azhari Press, Egypt, 68.

फ़तावा रिज़विया जिल्द सोम (तीसरा खंड)

[अरबी पाठ]: कहा गया है कि अबू हनीफा के अनुसार मिट्टी (कीचड़) से तयम्मुम किया जा सकता है और यही सही है क्योंकि उनके अनुसार अनिवार्य यह है कि हाथ ज़मीन पर रखा जाए, उसका कोई हिस्सा इस्तेमाल करना अनिवार्य नहीं है। कीचड़ ज़मीन की ही नस्ल (जिंस) से है, जब तक कि पानी हावी न हो जाए; तब तयम्मुम जायज़ नहीं है। अल-मुहीत में ऐसा ही है। वह पहले व्यक्ति नहीं हैं जिन्होंने यह रास्ता अपनाया, और इसीलिए... इसके अलावा, इमाम के कथन की व्याख्या में जो उल्लेख किया गया है, उससे यह आभास होता है कि कीचड़ से हाथ पर कुछ भी नहीं चिपकता, या यह कि यही अक्सर होता है, जो कि अल-बदाइ' में अपनाए गए रास्ते के विपरीत है। सही दृष्टिकोण मलिक अल-उलमा के साथ है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद]: ...लगा ले जब खुश्क हो जाए तो उससे तयम्मुम करे। और कहा गया कि इमाम अबू हनीफा के नज़दीक कीचड़ से तयम्मुम कर लेगा। और यही सही है क्योंकि उनके नज़दीक वाजिब यही है कि ज़मीन पर हाथ रखे, उसके किसी जुज़ (हिस्से) को इस्तेमाल करना वाजिब नहीं और कीचड़ जिंस-ए-ज़मीन ही से है। मगर जब पानी से मगलूब (दब जाना) हो तो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं। ऐसा ही मुहीत में है। "अह" और यह पहले शख़्स नहीं जिनका वहम ग़ैर-इरादी तौर पर इस तरफ़ चला गया फिर इमाम-ए-आज़म के क़ौल की इल्लत (वजह) बताते हुए उन्होंने ज़िक्र किया उससे यह वहम होता है कि कीचड़ से हाथ में कुछ लगता नहीं या इसमें अक्सर यही होता है। यह इस राह के बरअक्स (विपरीत) है जिस पर साहिब-ए-बदाइ' गामज़न हुए और सवाब मलिक अल-उलमा के साथ है। और खुदा-ए-बरतर ख़ूब जानता है। (त)

ज़मीन और सोखता ख़ाक (जली हुई मिट्टी)। इनमें इबारात दो तौर पर आई हैं, अव्वल: बिला क़ैद (बिना शर्त) जायज़ है, मुख़्तारातुल नवाज़िल (1), हिल्या (2), ता (3) - यही असह (सबसे सही) है फ़तह (4), ज़हीरिया (5), हिंदिया (6), मुब्तनी (7), हिल्या (8), इसी पर फ़तवा है जवाहर (9), अल-ख़लाती गियासिया (10), निसाब (11), हिल्या। दोयम (दूसरा): अगर राख पर ख़ाक (मिट्टी) ग़ालिब हो तो जायज़ है वरना नहीं - खानिया (1), बहर (2), दुर्र (3), खादिमी (4), मराक़ी (5)। बल्कि उन्होंने दोनों को जमा करके यूँ कहा: "जली हुई ज़मीन और उस जलाई हुई मिट्टी से तयम्मुम जायज़ है जिसमें पहले गोबर न था, और जली हुई ज़मीन से, अगर उस पर राख ग़ालिब न हो।" (त) (बल्कि उन्होंने दोनों को जमा करके यूँ कहा: जली हुई ज़मीन और उस जलाई हुई मिट्टी से तयम्मुम जायज़ है जिसमें पहले गोबर न था, और जली हुई ज़मीन से, अगर उस पर राख ग़ालिब न हो। - त) अक़ूल (मैं कहता

हूँ): तहक़ीक़ यह है कि मसला फ़ि नफ़्सिही मुतलक़ बिल-क़ैद है कि ज़मीन व ख़ाक जल कर राख नहीं हो सकतीं, हाँ ज़मीन पर खेती या घास वगैरह और अशिया (चीजें) थीं और वो जलाई गईं और उनकी राख ख़ाक से मिली तो यहाँ वो क़ैद-ए-ग़ल्बा मल्हूज़ होगी। तहतावी व शामी में है:

1. अल-बहरुल राइक़, बाबुत तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/128
2. मराक़ियुल फ़लाह, बाबुत तयम्मुम, मतबा अल-अज़हरी मिस्र 68

पेज 674/756

وقیل عند ابی حنیفۃ یتیمم بالطین و ھو الصحیح لان الواجب عندہ وضع الید علی الارض لا استعمال جزء منہ و الطین من جنس الارض الا اذا صار مغلوبا بالماء فلا یجوز التیمم کذا فی المحیط اھ و ھو لیس اول من ذھب ولھذا الی ھذا۔ ثم ما ذکر فی تعلیل قول الامام یوھم ان الطین لایعلق منہ شیئ بالید او ان ھذا ھو الغالب فیہ و ھو عکس ماسلکہ فی البدائع والصواب مع ملک العلماء و اللہ تعالٰی اعلم۔

لگالے جب خشک ہوجائے تو اس سے تیمم کرے اور کہا گیا کہ امام ابو حنیفہ کے نزدیک کیچڑ سے تیمم کرلے گا۔ اور یہی صحیح ہے کیونکہ ان کے نزدیک واجب یہی ہے کہ زمین پر ہاتھ رکھے اس کے کسی جز کو استعمال کرنا واجب نہیں اور کیچڑ جنس زمین ہی سے ہے۔ مگر جب پانی سے مغلوب ہو تو اس سے تیمم جائز نہیں۔ ایسا ہی محیط میں ہے "اھ اور یہ پہلے شخص نہیں جن کا وہم غیر ارادی طور پر اس طرف چلا گیا پھر امام اعظم کے قول کی علت بتاتے ہوئے انہوں نے ذکر کیا اس سے یہ وہم ہوتا ہے کہ کیچڑ سے ہاتھ میں کچھ لگتا نہیں یا اس میں اکثر یہی ہوتا ہے۔ یہ اس راہ کے برعکس ہے جس پر صاحب بدائع گامزن ہوئے اور صواب ملک العلماء کے ساتھ ہے۔ اور خدائے برتر خوب جانتا ہے۔ (ت)

زمین ۳ وخاک سوختہ۔ ان میں عبارات دو طور پر آئیں، اول بلا قید جائز ہے مختارات النوازل ۱ حلیہ ۲ ط ۳ یہی اصح ہے فتح ۴ ظہیریہ ۵ ہندیہ ۶ مبتنی ۷ حلیہ ۸ اسی پر فتوی ہے جواھر ۹ الخلاطی غیاثیہ ۱۰ نصاب ۱۱ حلیہ۔ دوم: اگر راکھ پر خاک غالب ہو جائز ہے ورنہ نہیں خانیہ ۱ بحر ۲ در ۳ خادمی ۴ مراقی ۵۔ بل جمع بینھما فقال یجوز بالارج المحترقۃ و الطین المحرق الذی لیس بہ سرقین قبلہ والارض المحترقۃ ان لم یغلب علیھا الرماد ۶ (بلکہ انہوں نے دونوں کو جمع کرکے یوں کہا: جلی ہوئی زمین اور اس جلائی ہوئی مٹی سے تیمم جائز ہے جس میں پہلے گوبر نہ تھا،

اور جلی ہوئی زمین سے، اگر اس پر راکھ غالب نہ ہوت) اقول: تحقیق یہ ہے کہ مسئلہ فی نفسہ مطلق بالقید ہے کہ زمین و خاک جل کر راکھ نہیں ہو سکتیں ہاں زمین پر کھیتی یا گھاس وغیرہ اور اشیاء تھیں اور وہ جلائی گئیں اور ان کی راکھ خاک سے ملی تو یہاں وہ قید غلبہ ملحوظ ہو گی۔

طحطاوی وشامی میں ہے:

1 البحر الرائق باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۸ 2 مراقی الفلاح باب التیمم مطبع الازہری مصر ۶۸

- i.e., the vegetation on it burned and the ash mixed with its soil, then in such a case, the dominant one is considered. 1 Meaning the grass and plants grown on the ground burned and the ash got mixed with the soil of the ground, in such a situation, what is dominant will be considered. (T)

In Tahtawi on Maraqi, regarding the repeated statement in Maraqi, it is stated: - It was better to be content with this rather than his previous statement "and with burnt earth", unless the previous one is interpreted to mean that the earth's soil was burnt without any mixture. 2 It was better to suffice with this instead of his previous phrase "and burnt earth". Unless the previous one is understood as the soil of the earth being burnt without mixing with anything else. (T)

In Bahr al-Ra'iq, it is stated: - In Qadi Khan, if the earth burns by fire, if it is mixed with ash, the dominant one is considered in it; if the dominance is for the soil, Tayammum is permissible with it, otherwise not. And in Fath al-Qadir, it is permissible according to the most correct opinion; he did not elaborate, but the apparent [view] is that there should be elaboration. 3 etc. It is in Qadi Khan: When the earth burns by fire, if it is mixed with ash, then what is dominant in it will be considered. If soil is dominant, then Tayammum with it is permissible, otherwise not. And in Fath al-Qadir, it is: "It is permissible according to the most correct school," they did not give detail, and it appears that there should be detail. (T)

- I say: He only declared the permissibility valid for burnt earth and there is no elaboration in it as you have known. Elaboration only comes from the aspect of a mixture, and there is no mention of it here. So when its mention came, he explicitly stated the consideration of dominance, quoting from Al-Khaniyah. This [is the case]. I say: They stated the permissibility specifically for burnt earth, certainly there is no detail in it as has been known. Detail comes from the aspect of mixing, and there is no mention of it here. When they come to mention it, they clarified the consideration of dominance quoting Al-Khaniyah. Let this be kept in mind. (T)
- Rad al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi Press, Egypt, 1/177.
- Maraqi al-Falah, Chapter of Tayammum, Azhariya Press, Egypt, p. 68.
- Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Press, Karachi, 1/128.

फतावा रज़विया, जिल्द 3

- यानी उस पर उगी वनस्पति जल गई और राख उसकी मिट्टी में मिल गई, तब ऐसी स्थिति में जो अधिक हो उसका विचार किया जाएगा। 1 यानी ज़मीन पर उगी हुई घास और पौधे जल गए और ज़मीन की मिट्टी से राख मिल गई, ऐसी सूरत में जो ग़ालिब (अधिक) है उसका एतबार (विचार) होगा। (त)

तहावी अला अल-मराक़ी में मराक़ी के दोहराए गए कथन पर है: - पिछली इबारत "और जली हुई ज़मीन" के बजाय इसी पर इक्तिफ़ा (संतोष) करना बेहतर था। मगर यह कि पिछले को इस पर महमूल करें (माना जाए) कि ज़मीन की मिट्टी किसी और चीज़ के मिश्रण के बिना जलाई गई। 2 अपनी पहली इबारत "और जली हुई ज़मीन" की बजाय इसी पर इक्तिफ़ा करना बेहतर था। मगर यह कि मा-सबक़ (पिछले) को इस पर महमूल करें कि ज़मीन की मिट्टी किसी और चीज़ की आमेज़िश (मिश्रण) के बग़ैर जलाई गई। (त)

बह्र अल-राइक़ में है: - क़ाज़ीख़ान में है, जब ज़मीन आग से जल जाए, अगर वह राख से मिश्रित हो तो उसमें ग़ालिब का विचार किया जाएगा; अगर ग़ालबा (प्रभुत्व) मिट्टी का है तो उससे तयम्मुम जायज़ है, अन्यथा नहीं। और फ़तह अल-क़दीर में है कि सबसे सही राय के अनुसार जायज़ है; उन्होंने विवरण नहीं दिया, और ज़ाहिर यह है कि विवरण होना चाहिए। 3 इत्यादि क़ाज़ीख़ान में है: जब ज़मीन आग से जल जाए तो अगर वह राख से मख़लूत (मिश्रित) हो तो उसमें एतबार उसका होगा जो ग़ालिब है। अगर मिट्टी ग़ालिब है तो उससे तयम्मुम जायज़ है वरना नहीं। और फ़तह अल-क़दीर में है: "मज़हब असह (सबसे सही मत) में जायज़ है" उन्होंने तफ़्सील (विवरण) न की और ज़ाहिर यह है कि तफ़्सील होनी चाहिए। (त)

- मैं कहता हूँ: उन्होंने जली हुई ज़मीन के लिए ही जवाज़ (अनुमति) को सही बताया है और इसमें कोई तफ़्सील नहीं है जैसा कि आप जान चुके हैं। तफ़्सील तो मख़ालित (मिश्रण) की ओर से आती है और यहाँ उसका कोई ज़िक्र नहीं है। तो जब उसका ज़िक्र आया, उन्होंने ख़ानिया से नक़ल करते हुए ग़ालबे के एतबार की स्पष्टता फरमाई। यह रहे। अक़ूल (मैं कहता हूँ): उन्होंने जली हुई ज़मीन ही से जवाज़ को सही बताया है, यक़ीनन इसमें कोई तफ़्सील नहीं जैसा कि मालूम हो चुका। तफ़्सील तो मख़ालित की जेहत (पहलू) से होती है और उसका यहाँ कोई ज़िक्र

ही नहीं। जब उसके ज़िक्र पर आए तो ब-नक़्ल-ए-ख़ानिया एतबार-ए-ग़ल्बा की सराहत (स्पष्टता) फ़रमाई। यह ज़हन नशीन रहे। (त)

- रद अल-मुहतार, बाब अल-तयम्मुम, मतबअ मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र 1/ 177
- मराक़ी अल-फ़लाह, बाब अल-तयम्मुम, मतबअ अल-अज़हरिया मिस्र पृ. 68
- अल-बह्र अल-राइक़, बाब अल-तयम्मुम, मतबअ एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/ 128

ای احترق ماعلیھا من النبات واختلط الرماد بترابھا فحینئذ یعتبر الغالب۔ 1 یعنی زمین پر اگے ہوئے گھاس پودے جل گئے اور زمین کی مٹی سے راکھ خلط ہوگئی، ایسی صورت میں جو غالب ہے اس کا اعتبار ہوگا۔ (ت)

طحطاوی علی المراقی میں قولِ مکرر مراقی پر ہے : الاولی الاکتفاء بھذہ عن قولہ سابقاً وبالارض المحترقۃ الان یحمل ماسبق علی ان الارض احرق ترابھا من غیر مخالط 2 اپنی پہلی عبارت "اور جلی ہوئی زمین" کی بجائے اسی پر اکتفا کرنا بہتر تھا۔ مگر یہ کہ ماسبق کو اس پر محمول کریں کہ زمین کی مٹی کسی اور چیز کی آمیزش کے بغیر جلائی گئی۔ (ت)

بحرالرائق میں ہے : فی قاضیخان اذا احترقت الارض بالنار ان اختلطت بالرماد یعتبر فیہ الغالب ان کانت الغلبہ للتراب جازبہ التیمم والا فلاوفی فتح القدیر یجوز فی الاصح لم یفصل والظاھر التفصیل 3 اھ قاضیخان میں ہے: جب زمین آگ سے جل جائے تو اگر وہ راکھ سے مخلوط ہو تو اس میں اعتبار اس کا ہوگا جو غالب ہے۔ اگر مٹی غالب ہے تو اس سے تیمم جائز ہے ورنہ نہیں۔ اور فتح القدیر میں ہے: "مذہب اصح میں جائز ہے" انہوں نے تفصیل نہ کی اور ظاہر یہ ہے کہ تفصیل ہونی چاہئے اھ (ت)

اقول: انما (1) صحح الجواز بارض محترقۃ ولاتفضیل فیھا کما علمت انما یجیئ التفصیل من قبل المخالط ولا ذکر لہ ھنا فاذا جاء علی ذکرہ صرح باعتبار الغلبۃ نقلا عن الخانیۃ ھذا۔ اقول: انہوں نے جلی ہوئی زمین ہی سے جواز کو صحیح بتایا ہے، یقیناً اس میں کوئی تفصیل نہیں جیسا کہ معلوم

ہوچکا۔ تفصیل تو مخالط کی جہت سے ہوتی ہے اور اس کا یہاں کوئی ذکر ہی نہیں۔ جب اس کے ذکر پر آئے تو بہ نقل خانیہ اعتبار غلبہ کی صراحت فرمائی۔ یہ ذہن نشین رہے۔ (ت)

1 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۷ 2 مراقی الفلاح باب التیمم مطبع الازہریۃ مصر ص ۶۸ 3 البحرالرائق باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۸

Fatawa Razawiyya, Volume III

[Right Column - Urdu Translation/Explanation]: And what Al-Shurunbulali mentioned about burnt clay, I say: My opinion regarding this is that an exception should be made from it in the case where there was a small amount of dung and it was burnt for a long time until the dung was consumed and the clay became pure. This is because burning is certainly also among the purifying methods, and the nature of fire is not like that of the sun and wind; rather, whatever it passes over, it leaves nothing behind. We ask God to grant us safety from it and from every evil. (T)

[Left Column - Original Arabic Text]: And what Al-Shurunbulali mentioned about burnt clay, I say (1): It appears to me that an exception should be made from it when the dung (Note 1) was little and burnt for a long time until the dung was gone (Note 2) and the clay was purified, for burning is also among the purifiers with certainty, and fire is not like the sun and wind (Note 3) as mentioned before, but rather it leaves nothing behind. We ask Allah Almighty to protect us from it and from every evil.

[Lower Section - Explanations and Footnotes]: Ramad (4) means ash. Common books like Khaniya, Zahiriya, Sirajiyya, Khazanat al-Muftiyyin, Muheet, Kafi, and Sadr al-Shariah. Note 1: [Arabic]: If it perishes, then it is so; and if it leaves ash, then the reliable [opinion] is its purity because of the transformation of the substance, and the assumption is that it is a small amount overcome by dust. 12, from him, may [Allah] forgive him (M). [Urdu]: If it is finished, then only clay remains. And if it remains as ash, then the reliable [opinion] is that it is pure because the dung changed into soil. It is assumed that the dung is less and overcome by soil. 12, from him, may [Allah] forgive him (T). Note 2: [Arabic]: Tanwir: Sprinkled with impure water (or a boy urinated in it. Haliya, etc. Sh). There is no harm in baking bread in it (Durr al-Mukhtar) after the impure moisture has been removed by fire (Khaniya, etc. Sh), like impure clay that was made into a jug after being placed on the fire (Tanwir). 12, from him, may [Allah] forgive him (M). [Urdu]: Impure water was sprinkled in an oven (or some child urinated in it. Haliya, etc. Sh). Then there is no harm in baking bread inside it. Durr al-Mukhtar. After the impure wetness has been ended by fire. Khaniya, etc. Sh. Just like that clay which became impure and was then used to prepare a jug by firing it. Tanwir. (T) Note 3: [Arabic]: He intends what preceded at the beginning of the treatise from Malik al-Ulama, that the burning of the sun and the blowing of the wind have an effect in reducing the impurity without its total eradication. 12, from him, may [Allah] forgive him (M). [Urdu]: This is intended to refer to what was mentioned at the beginning of the treatise on the authority of Malik al-Ulama, that impurity

decreases by the burning of the sun and the blowing of the wind, but it does not end completely. 12, from him, may [Allah] forgive him (T).

1 Radd al-Muhtar with al-Durr al-Mukhtar, Sharh Tanwir al-Absar, Book of Impurities, Dar Ihya al-Turath, Beirut, 1/210 Page 676 of 756

फ़तावा रज़विया, खंड III

[दायां स्तंभ - उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: और अल-शुरुनबुलाली ने जली हुई मिट्टी के बारे में जो उल्लेख किया है, उसके बारे में मैं कहता हूँ: इस संबंध में मेरा विचार यह है कि इस मामले में एक अपवाद होना चाहिए जब गोबर की मात्रा कम थी और उसे लंबे समय तक जलाया गया जब तक कि गोबर समाप्त नहीं हो गया और मिट्टी शुद्ध नहीं हो गई। ऐसा इसलिए है क्योंकि जलाना भी निश्चित रूप से शुद्धिकरण के तरीकों में से एक है, और आग की प्रकृति धूप और हवा की तरह नहीं है; बल्कि, यह जिस पर भी गुज़रती है, कुछ भी शेष नहीं छोड़ती। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें इससे और हर बुराई से सुरक्षा प्रदान करे। (त)

[बायां स्तंभ - मूल अरबी पाठ]: और अल-शुरुनबुलाली ने जली हुई मिट्टी के बारे में जो उल्लेख किया है, मैं कहता हूँ (1): मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें से एक अपवाद किया जाना चाहिए जब गोबर (नोट 1) कम था और लंबे समय तक जलाया गया जब तक कि गोबर खत्म नहीं हो गया (नोट 2) और मिट्टी शुद्ध हो गई, क्योंकि जलाना भी निश्चित रूप से शुद्ध करने वालों में से है, और आग धूप और हवा की तरह नहीं है (नोट 3) जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, बल्कि यह कुछ भी शेष नहीं छोड़ती। हम अल्लाह सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें इससे और हर बुराई से बचाए।

[निचला भाग - स्पष्टीकरण और पाद टिप्पणियाँ]: रमाद (4) का अर्थ है राख। खनिया, ज़हीरिया, सिराजिया, ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन, मुहीत, काफ़ी और सदरुश शरीअह जैसी सामान्य पुस्तकें। नोट 1: [अरबी]: यदि यह नष्ट हो जाता है, तो ऐसा ही है; और यदि यह राख छोड़ता है, तो विश्वसनीय [मत] इसकी शुद्धता है क्योंकि पदार्थ का परिवर्तन हो गया है, और धारणा यह है कि यह धूल से दबा हुआ एक छोटा सा हिस्सा है। 12, उनकी ओर से, [अल्लाह] उन्हें क्षमा करे (म)। [उर्दू]: यदि यह समाप्त हो गया, तो केवल मिट्टी बचती है। और यदि यह राख के रूप में रहता है, तो विश्वसनीय [मत] यह है कि यह शुद्ध है क्योंकि गोबर मिट्टी में बदल गया। यह माना जाता है कि गोबर कम है और मिट्टी से दबा हुआ है। 12, उनकी ओर से, [अल्लाह] उन्हें क्षमा करे (त)। नोट 2: [अरबी]: तनवीर: अशुद्ध पानी छिड़का गया (या किसी लड़के ने उसमें पेशाब किया। हलिया, आदि। श)। आग से अशुद्ध नमी दूर होने के बाद उसमें रोटी पकाने में कोई हर्ज नहीं है (दुर्र अल-मुख्तार) (खनिया, आदि। श), जैसे अशुद्ध मिट्टी जिसे आग पर रखने के बाद एक जग बनाया गया था (तनवीर)। 12, उनकी ओर से, [अल्लाह] उन्हें क्षमा करे (म)। [उर्दू]: किसी ओवन (तंदूर) में अशुद्ध पानी छिड़का गया (या किसी बच्चे ने उसमें पेशाब किया। हलिया, आदि। श)। तो उसके अंदर रोटी पकाने में कोई हर्ज नहीं है। दुर्र

अल-मुख्तार। आग से अशुद्ध नमी समाप्त होने के बाद। खनिया, आदि। श। बिल्कुल उसी मिट्टी की तरह जो अशुद्ध हो गई थी और फिर उसे आग पर पकाकर एक जग तैयार करने के लिए इस्तेमाल किया गया था। तनवीर। (त) नोट 3: [अरबी]: उनका अभिप्राय उस बात से है जो मलिक अल-उलमा की ओर से शोध प्रबंध (रिसाले) की शुरुआत में कही गई थी, कि सूरज की जलन और हवा के झोंकों का प्रभाव नजासत (अशुद्धता) को कम करने में होता है, लेकिन इसे पूरी तरह समाप्त करने में नहीं। 12, उनकी ओर से, [अल्लाह] उन्हें क्षमा करे (म)। [उर्दू]: यह मलिक अल-उलमा के हवाले से शोध प्रबंध की शुरुआत में कही गई बात की ओर संकेत करने के लिए है, कि धूप की जलन और हवा के उड़ने से अशुद्धता कम हो जाती है, लेकिन यह पूरी तरह से समाप्त नहीं होती है। 12, उनकी ओर से, [अल्लाह] उन्हें क्षमा करे (त)।

1 रद्दुल मुहतार मा अद-दुर्रुल मुख्तार, शरह तनवीरुल अबसार, अशुद्धता का अध्याय, दार इह्या अत-तुरास, बेरूत, 1/210 पृष्ठ 756 का 676

جلد سوم فتاوٰی رضویہ وما ذکر الشرنبلالی فی الطین المحرق فاقول (۱) | اور شرنبلالی نے جلائی گئی مٹی کے بارے میں جو ذکر کیا فاقول یتراءی لی ان یستثنی منہ ماذا کان السرجین ع۱ | اس سے متعلق میرا خیال یہ ہے کہ اس سے اس صورت قلیلا واحرق طویلا حتی ذھب ع۲ | کا استثنا ہونا چاہئے جب گوبر کم رہا ہو اور دیر تک جلایا گیا ہو یہاں السرقین وطھر الطین فان الاحراق | تک کہ گوبر ختم ہو گیا اور مٹی پاک ہوگئی۔ اس لیے کہ ایضا من المطھرات بالیقین ولیست النار | جلانا بھی یقینا پاک کرنے والی چیزوں میں ہے اور آگ کالشمس والریح ع۳ جفیما مربل لاتبقی | کا معاملہ دھوپ اور ہوا کی طرح نہیں بلکہ یہ جس پر گزرتی ہے ولاتذر نسأل اللہ تعالٰی ان یعافینا منھا ومن | کچھ بچاتی چھوڑتی نہیں۔ خدا ہی سے سوال ہے کہ ہمیں اس کل شر | سے اور ہر شر سے عافیت عطا فرمائے۔ (ت)

رماد ۴ یعنی خاکستر۔ عامہ کتب مثل خانیہ اظہیریہ و سراجیہ و خزانیتہ المفتیین و محیط و کافی و صدر الشریعۃ عہ ۱: ان فنی فذالک وان ابقی رمادا فالمعتمد طھارتہ | اگر ختم ہوگیا تب تو صرف مٹی رہی۔ اور اگر راکھ ہو کر رہ گیا تو معتمد یہ لانقلاب العین والفرض انہ قلیل مغلوب بالتراب ۱۲ منہ | ہے کہ وہ پاک ہے اس لیے کہ گوبر مٹی سے بدل گیا۔ فرض یہ کیا گیا ہے غفرلہ (م) | کہ گوبر کم اور مٹی سے مغلوب ہے۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت) عہ ۲: تنویر رش بماء نجس (او بال فیہ صبی حلیہ اھ | کسی تنور میں نجس پانی چھڑکا گیا (یا اس میں کسی بچے نے پیشاب ش) لاباس بالخبز فیہ درمختار بعد ذھاب البلۃ | کردیا۔ حلیہ اھ ش) تو اس کے اندر روٹی پکانے میں کوئی حرج النجسۃ بالنار خانیتہ اھ ش کطین نجس فجعل منہ | نہیں۔ درمختار۔ اس کے بعد کہ آگ سے ناپاک تری ختم ہو چکی کوز بعد جعلہ علی النار تنویر ۱ ۲ منہ غفرلہ (م) | ہو۔ خانیہ اھ ش۔ جیسے وہ مٹی جو ناپاک ہوگئی پھر اس سے آگ پر پکا کر کوزہ تیار کیا گیا۔ تنویر۔ (ت) عہ ۳: یرید ماتقدم فی

صدرالرسالة عن ملك العلماء | اس سے اس کی طرف اشارہ مقصود ہے جو شروع رسالہ میں ملک العلماء ان احراق الشمس ونسف الریاح اثرھا فی تقلیل | کے حوالہ سے گزرا کہ نجاست دھوپ کے جلانے اور ہوا کے اڑانے سے النجاسة دون استئصالھا ۱۲ منہ غفرلہ (م) | کم ہو جاتی ہے ختم نہیں ہو جاتی۔ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

۱ رد المحتار مع الدر المختار شرح تنویر الابصار باب الانجاس دار احیاء التراث بیروت ۱ / ۲۱۰

Fatawa Razawiya Volume 3 It is explicitly stated in Munyah, Dirayah, Shalbiya, Jawhara, Bahr, Hindiyyah, etc., that this is impermissible. In Hulyah, it is mentioned from the commentary on Jami' al-Saghir by Imam Qadikhan that this is the correct view. In Bada'i and Khulasa, it is stated that there is a consensus on this. However, in al-Burjandi, citing al-Nisab, it says: "Abu al-Qasim said: It is permissible. Abu Nasr said: It is not permissible. And we adopt this [latter] view." (i.e., In Burjandi, with reference to al-Nisab, it is written: "Abu al-Qasim said: It is permissible. And Abu Nasr said: It is not permissible. And we take this view.")

I say: Al-Nisab and Al-Khulasa are by the same Imam. Their wording regarding bricks is: "According to Imam Abu Hanifa, Tayammum with bricks is permissible. From Imam Muhammad, there are two reports. The statement of Imam Abu Yusuf is hesitant. They all agreed that if one performs Tayammum with ash, it is not permissible." Thus, the reference to the three Imams (may Allah be pleased with them) does not negate the disagreement among some scholars. As for what al-Burjandi deduced from Zad al-Fuqaha, we have already explained its flaw.

I say: Nisab and Khulasa are the compositions of the same Imam, and in Khulasa, their words are these: "Tayammum with baked bricks is permissible according to Imam Abu Hanifa, and two narrations have come from Imam Muhammad. And the statement of Imam Abu Yusuf is hesitant, and there is agreement among these personalities that if Tayammum is done with ashes, it is impermissible." In this passage, "these personalities" refers to the three Imams (may Allah be pleased with them), which does not negate the existence of differences among some scholars. And the deduction Burjandi made from Zad al-Fuqaha, we have already mentioned its flaw earlier.

And by this [ash], the ash of wood or similar things that are not from the nature of the earth is meant. The permissibility of ash from stone, and that lime is meant by it, has already been mentioned above. It is stated in Bada'i: "By consensus, because it is from the parts of wood." (By consensus—because it is part of wood.) It is in Fatawa Imam Qadikhan: "Because it is from the parts of trees, not from the parts of the earth." (Because it is a part of a tree, not a part of the earth.)

I say: Better than both of those is what is in his commentary on al-Jami’ al-Saghir: "It is not permissible [to perform Tayammum] with ashes according to the correct answer, because it is not from the parts of..."

I say: Better than both these statements is what is in the commentary on Jami’ al-Saghir: "The correct answer is that Tayammum with ashes is not permissible because it [ash] is not from the parts of the earth."

1 Sharh al-Niqayah by al-Burjandi, Chapter on Tayammum, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/74. 2 Khulasat al-Fatawa, Chapter on what Tayammum is permitted with, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/36. 3 Bada’i al-Sana’i, Chapter explaining what Tayammum is permitted with, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/54. 4 Qadikhan, Chapter on what Tayammum is permitted with, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/29.

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरा मुनया, दिराया, शल्बिया, जौहरा, बहर, हिन्दिया आदि में इसके नाजायज़ होने का स्पष्ट उल्लेख है। हुल्या में इमाम क़ाज़ीख़ाँ की 'शरह जामे सगीर' के हवाले से है कि यही सही है। बदाइअ और खुलासा में है कि इस पर इज्मा (आम सहमति) है। लेकिन बुर्जन्दी में 'नसाब' के हवाले से लिखा है: "अबू अल-क़ासिम ने कहा: यह जायज़ है। अबू नस्र ने कहा: यह जायज़ नहीं है। और हम इसी को लेते हैं।" (अर्थात बुर्जन्दी में नसाब के हवाले से लिखा है: "अबू अल-क़ासिम ने कहा: जायज़ है। और अबू नस्र ने कहा: नाजायज़ है। और हम इसी को अपनाते हैं।")

मैं कहता हूँ: 'नसाब' और 'खुलासा' एक ही इमाम की कृतियाँ हैं। ईंट के बारे में उनके शब्द ये हैं: "इमाम अबू हनीफ़ा के अनुसार पकी ईंट से तयम्मुम जायज़ है। इमाम मुहम्मद से दो रिवायतें हैं। इमाम अबू यूसुफ़ का कथन अनिश्चित है। वे सब इस पर सहमत हैं कि यदि राख से तयम्मुम किया जाए तो वह जायज़ नहीं है।" अतः तीनों इमामों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का उल्लेख कुछ उलेमाओं के मतभेद को नकारा नहीं जा सकता। बुर्जन्दी ने 'ज़ाद अल-फ़ुक़हा' से जो निष्कर्ष निकाला, उसकी कमी हम पहले ही बता चुके हैं।

मैं कहता हूँ: नसाब और खुलासा एक ही इमाम की रचनाएँ हैं, और खुलासा में उनके शब्द ये हैं: "पकी ईंट से इमाम अबू हनीफ़ा के नज़दीक तयम्मुम जायज़ है और इमाम मुहम्मद से दो रिवायतें आई हैं। और इमाम अबू यूसुफ़ का कथन अनिश्चित है और इन हज़रात का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि अगर राख से तयम्मुम किया तो नाजायज़ है।" इस इबारत में "इन हज़रात" से तीनों इमामों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की ओर इशारा है जिससे कुछ मशाईख़ के बीच इख्तिलाफ़ की नफ़ी नहीं होती। और बुर्जन्दी ने ज़ाद अल-फ़ुक़हा से जो इस्तिनबात किया उसकी ख़ामी हम पहले बयान कर चुके हैं।

और इससे मुराद लकड़ी या उसके समान उन चीज़ों की राख है जो ज़मीन की जिन्स (मिट्टी की प्रकृति) से नहीं हैं। पत्थर की राख से जवाज़ और यह कि इससे चूना मुराद है, ऊपर गुज़र चुका है। बदाइअ में है: "इज्मा के साथ, क्योंकि यह लकड़ी का हिस्सा है।" (इज्मा के साथ—क्योंकि यह लकड़ी के अंगों में से है।) फ़तावा इमाम क़ाज़ी ख़ाँ में है: "क्योंकि यह पेड़ का हिस्सा है, ज़मीन का हिस्सा नहीं।" (क्योंकि वह पेड़ का जुज़ है ज़मीन का जुज़ नहीं।)

मैं कहता हूँ: इन दोनों से बेहतर वह है जो 'शरह जामे सगीर' में है: "सही जवाब के अनुसार राख से तयम्मुम जायज़ नहीं है क्योंकि यह ज़मीन के अंगों में से नहीं है।"	**मैं कहता हूँ: इन दोनों इबारतों से बेहतर वह है जो उनकी 'शरह जामे सगीर' में है कि "सही जवाब यह है कि राख से तयम्मुम जायज़ नहीं इसलिए कि वह अजज़ा-ए-ज़मीन (ज़मीन के हिस्से)..."**

1 शरह अल-निकाया लेल-बुर्जन्दी, फ़स्ल फ़ी अल-तयम्मुम, मतबा नवल किशोर लखनऊ, 1/74 2 खुलासा अल-फ़तावा, फ़स्ल फ़ीमा यजोज़ो बेहे अल-तयम्मुम, मतबा नवल किशोर लखनऊ, 1/36 3 बदाइअ अल-सनाइअ, फ़स्ल फ़ी बयान मा यजोज़ो बेहे अल-तयम्मुम, मतबा एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/54 4 क़ाज़ीख़ाँ, फ़स्ल फ़ीमा यजोज़ो बेहे अल-तयम्मुम, मतबा नवल किशोर लखनऊ, 1/29

فتاوٰی رضویہ جلد سوم ومنیہ، ودرایہ، وشلبیہ، وجوہرہ، وبحر، وہندیہ، وغیرہا میں اس سے عدمِ جواز کی تصریح ہے حلیہ میں شرح جامعِ صغیر امام قاضیخان سے ہے یہی صحیح ہے بدائع و خلاصہ میں ہے اس پر اجماع ہے لکن فی البرجندی عن النصاب قال ابوالقاسم یجوز وابونصر لا وبہ ناخذ (لیکن برجندی میں نصاب کے حوالہ سے لکھا ہے : "ابوالقاسم نے فرمایا : جائز ہے ۔ اور ابو نصر نے فرمایا : نا جائز ہے ۔ اور ہم اس کو لیتے ہیں۔" اھ ت)

اقول: النصاب(۱) والخلاصة لامام واح ولفظہ فیھا بالأجر یجوز عند ابی حنیفة وعن محمد روایتان وقول ابی یوسف متردد واجمعوا انه لوتیمّم بالرماد لایجور اه فالکنایة للائمة الثلثة رضی الله تعالی عنھم فلا ینفی خلاف بعض المشایخ وما استنبط البرجندی عن زاد الفقھاء قد منامافیه ۔

اقول : نصاب اور خلاصہ ایک ہی امام کی تصنیف ہیں، اور خلاصہ میں ان کے الفاظ یہ ہیں: "پکی اینٹ سے امام ابوحنیفہ کے نزدیک تیمم جائز ہے اور امام محمد سے دو روایتیں آئی ہیں۔ اور امام ابو یوسف کا قول متردد ہے اور اس پر ان حضرات کا اتفاق ہے کہ اگر راکھ سے تیمم کیا تو ناجائز ہے " اھ ۔ اس عبارت میں "ان حضرات " سے تینوں ائمہ رضی اللہ تعالٰی عنہم کی طرف اشارہ ہے جس سے بعض مشائخ کے درمیان اختلاف کی نفی نہیں ہوتی۔ اور برجندی نے زاد الفقہاء سے جو استنباط کیا اس کی خامی ہم پہلے بیان کر چکے ہیں(ت)۔

اور اس سے مراد لکڑی یا اس کے مثل اور اشیا غیر جنس ارض کی راکھ ہے پتھر کی راکھ سے جواز اور یہ کہ اس سے چونا مراد اوپر گزرا، بدائع میں ہے: بالا جماع لانه من اجزاء الخشبة (بالا جماع_ اس لئے کہ وہ لکڑی کے اجزا سے ہے۔ ت) فتاوی امام قاضی خان میں ہے: لانه من اجزاء الشجر لا من اجزاء الارض اھ (اس لئے کہ وہ درخت کا جز ہے زمین کا جز نہیں۔ ت)

اقول: واحسن منهما ما فی شرحہ للجامع الصغیر لایجور بالرماد فی الصحیح من الجواب لانہ لیس من اجزاء

اقول : ان دونوں عبارتوں سے بہتر وہ ہے جو ان کی شرح جامع صغیر میں ہے کہ " صحیح جواب یہ ہے کہ راکھ سے تیمم جائز نہیں اس لئے کہ وہ اجزائے زمین

1 شرح النقایۃ للبزجندی فصل فی التیمم مطبع نولکشور لکھنو ۱/ ۷۴ 2 خلاصۃ الفتاوی فصل فیما یجوز بہ التیمم مطبع نولکشور لکھنو ۱/ ۳۶ 3 بدائع الصنائع فصل فی بیان مایجوز بہ التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۵۴ 4 قاضیخان فصل فیما یجوز بہ التیمم مطبع نولکشور لکھنو ۱/ ۲۹

Fatawa Razvia Volume Three

...not from the earth. "Ah" [End of quote], because this statement includes the ash of everything that is not of the genus of earth.

If it is objected that turning into ash means that the moist parts are finished and the dry parts remain, and it is known that the fiery parts also do not remain, so it is only the earthly parts [that remain]. Then why is Tayammum (dry ablution) not permissible with them?

I say (Aqool): It seems that Imam Saffar has considered this matter. The correct view is that simple elements (busait) do not remain in their original state in composite things (murakkabat). Just as the liquid that drips from a tree is not considered part of water to the extent that Wudu (ablution) with it is not permissible, similarly ash is not part of the earth, but rather parts of that thing after the transformation of essences (Inqilab-e-A'yan). Therefore, Tayammum with it is not permissible. This is also hinted at by what was mentioned earlier from Imam Malik al-Ulama and Faqeeh un-Nafs, may Allah the Almighty have mercy on them both. Rather, the parts of the same thing exist even after the transformation of essences, so Tayammum with it is not permissible. This is also pointed out by what was just mentioned from Imam Malik al-Ulama and...

"Baajirah" i.e., baked brick. General books such as Khaniyah (2), Khulasah (3), Khazanat al-Muftiyeen (4), Munyah (5), Sirajiyah (6), Kaafi (7), Nahar (8), etc., explicitly state its absolute permissibility. It is mentioned in Tabyin al-Haqa’iq (9) that this is the apparent narration (Zahir al-Riwayah). It is in Mukhtarat al-Nawazil (10), Hilyah (11), Fath (12), and Bahr (13), as cited in Hindiyah (14), this is correct. In Fathullah (15) al-Mu’een, it is stated this is most correct.

Note: Up to this point, there is no significant difference to consider when this is the Zahir al-Riwayah and the correct view.

Annotation: The contradictory narration is as follows: In Muhit al-Sheikh Razi-ud-Din, it is mentioned "It is not permissible" | In Muhit-e-Sheikh Razi-ud-Din, it is mentioned that according to one narration (Continued on the next page)

1. Sharh Jami’ al-Saghir by Qadi Khan. Page 678 of 756

फ़तावा रज़विया खंड तीन

...पृथ्वी से नहीं। "अह" (समाप्त), क्योंकि यह कथन हर उस चीज़ की राख को शामिल करता है जो पृथ्वी के वर्ग से नहीं है।

यदि यह आपत्ति हो कि राख होने का अर्थ यह है कि नम अंश समाप्त हो जाते हैं और शुष्क अंश रह जाते हैं, और यह ज्ञात है कि अग्नि तत्व भी शेष नहीं रहते, तो केवल पार्थिव अंश ही बचते हैं। फिर उनसे तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) क्यों जायज़ नहीं है?

मैं कहूँगा (अक़ूल): ऐसा प्रतीत होता है कि इमाम सफ़्फ़ार ने इसी बात पर विचार किया है। सही बात यह है कि मिश्रित वस्तुओं (मुरक्कबात) में सरल तत्व (बसैत) अपनी मूल अवस्था में नहीं रहते। जिस प्रकार पेड़ से टपकने वाला तरल पानी का अंश नहीं माना जाता यहाँ तक कि उससे वज़ू करना जायज़ नहीं है, उसी प्रकार राख भी पृथ्वी का अंश नहीं है, बल्कि 'इंक़िलाब-ए-अयान' (पदार्थों के परिवर्तन) के बाद उस चीज़ के अंश हैं। इसलिए उससे तयम्मुम जायज़ नहीं है। इसी ओर इमाम मलिक अल-उलमा और फ़क़ीह उन-नफ़्स (अल्लाह उन पर दया करे) का भी इशारा है। बल्कि उसी वस्तु के अंश पदार्थ परिवर्तन के बाद भी हैं, इसलिए उससे तयम्मुम जायज़ नहीं है। इसी ओर उस बात का भी इशारा है जो अभी इमाम मलिक अल-उलमा और...

'बाजिरह' यानी पकी हुई ईंट। सामान्य पुस्तकें जैसे खानिया (2), ख़ुलासा (3), ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन (4), मुनया (5), सिराजिया (6), काफ़ी (7), नहर (8) आदि में इसकी पूर्ण अनुमति (जवाज़) का स्पष्ट उल्लेख है। तब्यीनुल हक़ाएक़ (9) में है कि यही 'ज़ाहिर अर-रिवायत' (प्रसिद्ध रिवायत) है। मुख़्तारातुल नवाज़िल (10), हिलिया (11), फ़तह (12) और बहर (13) में जैसा कि हिंदिया (14) में वर्णित है, यही सही है। फ़तहउल्लाह (15) अल-मुईन में है कि यही सर्वाधिक सही है।

चेतावनी: यहाँ तक तो कोई भी उल्लेखनीय मतभेद नहीं है जब यही ज़ाहिर अर-रिवायत और यही सही है।

नोट: इसके विपरीत रिवायत इस प्रकार है: 'मुहीत अल-शेख़ रज़ीउद्दीन' में है "जायज़ नहीं है" | मुहीत-ए-शेख़ रज़ीउद्दीन में है कि एक रिवायत के अनुसार (शेष अगले पृष्ठ पर)

1. शरह जामे अज़-ज़ग़ीर लिल-क़ाज़ी ख़ान। पृष्ठ 678 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

الارض ۱ اھ لشمولہ رماد کل مالیس من جنس الارض- سے نہیں "اھ" اس لیے کہ یہ عبارت ہر اس چیز کی راکھ کو شامل ہے جو جنس زمین سے نہیں۔

فأن قلت ماالترمد (۱) الاذھاب الاجزاء الرطبة وبقاء الیابسة ومعلوم ان النارية لاتبقی فماھي الاجزاء ارضية فلم لا یجوز التیتم بھا۔ اگر یہ اعتراض ہو کہ راکھ ہونا یہی تو ہے کہ تر اجزاء ختم ہو جائیں اور خشک اجزاء رہ جائیں اور معلوم ہے کہ ناری اجزاء بھی باقی نہیں رہ جاتے تو صرف زمینی اجزاء ہے۔ پھر ان سے تیمم کیوں جائز نہیں؟

اقول: کانه الی ھذا نظر الامام الصفار والصوب ان البسائط لاتبقی علی حقائقھا في امثال المرکبات فکما ان مائية تقطر من الشجر لیست من اجزاء الماء حتی لم یجز التوضی بھا فکذلك الرماد لیست من اجزاء الارض بل اجزاء ذلك الشیئ بعد جانقلاب الاعیان فلم یجز التیتم به والیه یشیر مامر أنفا عن الامامین ملك العلماء وفقیه النفس رحمھم اللہ تعالی۔ میں کہوں گا (اقول) معلوم ہوتا ہے کہ اسی امر کی طرف امام صفار نے نظر فرمائی ہے اور صحیح یہ ہے کہ امثال مرکبات میں بسائط اپنی حقیقتوں پر باقی نہیں رہتے جیسے وہ مائیہ جو درخت سے ٹپکتی ہے پانی کے اجزاء سے نہیں یہاں تک کہ اس سے وضو جائز نہیں تو اسی طرح راکھ بھی زمین کے اجزاء سے نہیں، امام فقیہ النفس کے حوالہ سے گزرا، رحمھما اللہ تعالٰی۔ (ت) بلکہ اسی شے کے اجزا انقلاب اعیان کے بعد بھی ہیں تو اس سے تیمم جائز نہیں اسی کی طرف اس کا بھی اشارہ ہے جو ابھی امام ملک العلماء اور

باجرہ یعنی پکی اینٹ۔ عامہ کتب مثل خانیہ ۲ وخلاصہ ۳ و خزانہ ۴ المفتیین ومنیہ ۵ وسراجیہ ۶ وکافی ۷ و نہر ۸ وغیرہا میں اس سے مطلقاً جواز کی تصریح ہے تبیین ۹ الحقائق میں ہے یہی ظاہر

الروایۃ ہے، مختارات ۱۰ النوازل وحلیہ ۱۱ وفتح ۱۲ و بحر ۱۳ جو ہندیہ ۱۴ میں ہے، یہی صحیح ہے فتح اللہ ۱۵ المعین میں ہے یہی اصح ہے۔

تنبیہ: یہاں تک تو کوئی اختلاف عہ قابلِ لحاظ نہیں کہ جب یہی ظاہر الروایۃ اور یہی صحیح ہے

عہ: روایت خلاف یہ ہے: في محيط الشيخ رضي الدين لا يجوز | محیط شیخ رضی الدین میں ہے کہ ایک روایت کے مطابق (باقی اگلے صفحہ پر)

Fatawa-e-Razawiyya Volume 3

There remains no room for disagreement except in one form of mixture, which is when something of a different genus from the earth is mixed into it. The general Mashaikh (scholars) mentioned it in terms of 'Khazaf' (pottery shards), and Fath al-Qadir mentioned it in terms of baked bricks. I say: It is not the practice to mix anything else into bricks while baking. If there is a mixture, it would be of straw and twigs, and the issue of the predominance of a mixture would not apply because there isn't that much waste in brick clay. This is unlike 'Khazaf', such as edible clay plates where other edible things are mixed and baked. In any case, the specialty in this matter is neither of 'Khazaf' nor of 'Aajur' (baked brick), but rather the same rulings will arise for any soil in which a non-genus substance is mixed. Therefore, we will write on the issue of mixture independently, God willing.

Sabkha (6) i.e., salty land. There are four types of statements regarding this: (1) General permissibility: Khania, Anwazil, Khazana, Fath Sharh Mukhtasar al-Tahawi, Munya, Nahr, etc. (2) If it is submerged in salt water, it is not permissible. 'Ghunyah': and it has preceded, and it also says under the statement of 'Munya' that 'al-Sabkha is in the position of salt', the text of which is: 'If the moisture predominates it, Tayammum with it is not permissible, like aqueous salt; but if the soil predominates, it is permissible like mountain salt.' (End of quote from Ghunyah). Its discourse has passed. And under the phrase of 'Munya' that 'al-Sabkha is in the position of salt' (salty land is in the rank of salt), it is also written in 'Ghunyah': 'So if the moisture erupting in it has predominance, then Tayammum is not permissible with it, just as it is not permissible with water-based salt; and if the soil predominates, then it is permissible, just as it is permissible with mountain salt.' (End of quote).

| I say: He intended comparison in the essence of permissibility. | I say: His purpose is only permissibility and non-permissibility. |

(Remainder of the footnote from the previous page)

Tayammum with baked bricks is not permissible because due to baking, it has changed from its state and has become such that its like is not found in its genus by creation in the earth. According to Zahir al-Riwayah, it is permissible because it is

petrified clay, thus its ruling will be like an original stone. (End from Hulyah, may he be forgiven).

1. Ghunyatul Mustamli, Chapter on Tayammum, Matba Suhail Academy Lahore, p. 87

तो मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं रही, सिवाय मिश्रण के एक रूप के कि उसमें पृथ्वी की जाति से इतर कोई चीज़ मिली हो। आम मशायख ने इसे 'ख़ज़फ़' यानी ठिकरी के तौर पर ज़िक्र किया है, और 'फ़तह अल-क़दीर' ने पकी हुई ईंट के तौर पर। मैं कहता हूँ: ईंटों में पकाते समय कोई और चीज़ मिलाने का चलन नहीं है। यदि कोई मिश्रण होगा तो वह घास-फूस का होगा, और अब मिश्रण की प्रबलता का मामला इससे संबंधित नहीं होगा क्योंकि ईंट की मिट्टी में इतना कचरा नहीं होता। यह 'ख़ज़फ़' के विपरीत है, जैसे खाने योग्य मिट्टी की थालियाँ जिनमें अन्य खाने योग्य चीज़ें मिलाकर पकाई जाती हैं। बहरहाल, इस मामले में विशेषता न तो 'ख़ज़फ़' की है और न ही 'आजुर' (पकी ईंट) की, बल्कि जिस भी मिट्टी में बाहरी वस्तु का मिश्रण होगा, वही नियम लागू होंगे। इसलिए, हम मिश्रण के मुद्दे पर स्वतंत्र रूप से लिखेंगे, इंशा-अल्लाह तआला।

सब्ख़ा (6) अर्थात नमक की भूमि। इसके बारे में चार तरह की इबारतें हैं: (1) अनुमति की व्यापकता: खानिया, अन्वाज़िल, ख़ज़ाना, फ़तह शरह मुख़्तसर अत-तहावी, मुनिया, नहर आदि। (2) यदि वह नमक के पानी में डूबा हुआ हो, तो अनुमत नहीं है। 'गुनिया': और यह पहले आ चुका है, और इसने 'मुनिया' के इस कथन के तहत भी कहा है कि 'सब्ख़ा नमक के समान है', जिसका मूल पाठ है: 'यदि नमी उस पर प्रबल हो जाए, तो उससे तयम्मुम करना जायज़ नहीं है जैसे पानी वाले नमक के साथ; और यदि मिट्टी प्रबल हो, तो जायज़ है जैसे पहाड़ी नमक के साथ।' (गुनिया का उद्धरण समाप्त)। इसका वर्णन हो चुका है। और मुनिया के वाक्यांश 'सब्ख़ा नमक के दर्जे में है' के तहत गुनिया में यह भी लिखा है: 'तो अगर इसमें फूटने वाली तरी (नमी) को ग़लबा (प्रबलता) हो तो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं जैसे पानी वाले नमक से जायज़ नहीं, और अगर मिट्टी का ग़लबा हो तो जायज़ है जैसे पहाड़ी नमक से जायज़ है'। (त)

| अक़ूल (मैं कहता हूँ): उनका इरादा अनुमति की तुलना करना था। | अक़ूल (मैं कहता हूँ): उनका उद्देश्य केवल अनुमति और गैर-अनुमति है। |

(पिछले पृष्ठ की शेष पाद-टिप्पणी)

पकी ईंट से तयम्मुम जायज़ नहीं है। क्योंकि पकने की वजह से वह अपनी मूल स्थिति से बदल गई है और ऐसी स्थिति में हो गई है कि उसकी जाति के हिसाब से सृष्टि में पृथ्वी पर उसके जैसा कुछ नहीं पाया जाता। और ज़ाहिर अर-रिवायत के अनुसार, इससे तयम्मुम जायज़ है क्योंकि यह पत्थर बनी हुई मिट्टी है, इसलिए इसका हुक्म असली पत्थर की तरह होगा। (त)

1. गुनियातुल मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, मतबा सुहैल अकादमी लाहौर, पृ. 87

تو خلاف کی گنجائش نہ رہی مگر ایک صورت خلط کی ہے کہ اس میں غیر جنس ارض سے کوئی شے ملی ہو عامہ مشائخ نے اسے خزف یعنی ٹھیکری میں ذکر فرمایا، اور فتح القدیر نے خشت پختہ میں اقول: ہے یہ کہ اینٹ میں کوئی اور چیز ملا کر پکانے کا دستور نہیں اگر خلط ہوگا تو خس و خاشاک کا، اور اب مسئلہ غلبہ مخالط اس سے متعلق نہ ہوگا کہ اینٹ کی مٹی میں کوڑا اتنا نہیں ہوتا، بخلاف خزف جیسے گل خوردنی کے طباق کہ اور خوردنی چیزیں ملا کر پکائے جاتے ہیں بہر حال مسئلہ میں خصوصیت نہ خزف کی ہے نہ آجر کی بلکہ جس مٹی میں غیر کا خلط ہوگا وہی احکام پیدا ہوں گے لہٰذا ہم مسئلہ خلط کو مستقل لکھیں گے ان شاء اللہ تعالٰی۔

سبخہ ۶ یعنی زمین نمک زار۔ اس میں عبارت چار ۴ طور پر ہیں: (۱) اطلاق جواز خانیہ انوازل خزانہ فتح شرح مختصر الطحاوی منیہ ۲ نہر ط '۔ (۲) اگر آب نمک میں غرق ہو جائز نہیں غنیہ وقد تقدم وقال ایضا تحت قول المنیة السبخة بمنزلة الملح ما نصه فان غلب علیها النز لا یجوز التیمم بها کالملح المائی وان غلب التراب جاز کالملح الجبلی ۱ اھ (غنیہ۔ اس کا کلام گزر چکا۔ اور منیہ کی عبارت "السبخة بمنزلة الملح" (زمین نمک زار نمک کے درجہ میں ہے) کے تحت غنیہ میں یہ بھی تحریر ہے: "تو اگر اس میں پھوٹنے والی تری کو غلبہ ہو تو اس سے تیمم جائز نہیں جیسے پانی والے نمک سے جائز نہیں اور اگر مٹی کا غلبہ ہو تو جائز ہے جیسے پہاڑی نمک سے جائز ہے"۔ اھ(ت)

| اقول: اراد التشبیه في نفس الجواز | اقول: ان کا مقصد صرف جواز و عدم جواز |

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ)

پکی اینٹ سے تیمم جائز نہیں۔ کیونکہ پکانے کی وجہ سے اپنے حال سے بدل گئی ہے اور ایسے حال پر ہو گئی ہے کہ اس کی جنس سے تخلیق کے اعتبار سے اس کی مثل زمین میں نہیں پائی جاتی۔ اور ظاہر الروایۃ کے مطابق اس سے تیمم جائز ہے کیونکہ یہ کیچڑ والا پتھر ہے، لہٰذا اس کا حکم اصلی پتھر کی طرح ہوگا۔(ت)

1 غنیۃ المستملی، فصل فی التیمم، مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ، ص۸۷

Volume 3 / Fatawa Rizvia

[Arabic Section]: ...and its absence, otherwise mountain salt itself is of the nature of the earth because soil predominates in it, while water salt is from the components of water, not from a mixture of predominant water and soil. [Urdu Section]: ...is to give a comparison, otherwise mountain salt itself is from the nature of the earth; it is not that soil is predominant in it. And water salt is from the components of water; it is not that water is predominant and it is mixed with soil. (T)

Then I say (Then I state. T): This must be absolutely considered, and the absolute mention in books is based on the predominant conditions, as indicated in 'Al-Ghunya' (as indicated in Al-Ghunya. T). (3) That salt, if it is from soil, it is permissible [for Tayammum], and if it is made from water, it is impermissible. [References:] Al-Khulasa 2, Al-Bahr 3, Al-Hindiya 4, Al-Muheet al-Radawi 5, Khazanat al-Fatawa 6, Al-Hilya. (4) Clarification of Tayammum: even if the salt is from water, it is still permissible as long as water is not predominant. This is the discussion from 'Al-Hilya':

[Arabic Section]: Where it was said based on the opinion of Al-Isbijabi: Tayammum is permissible with salt-marsh. This statement, in its absolute sense, implies permissibility regardless of whether it is watery or solidified from the earth. This is more similar to the opinion of Abu Hanifa and Muhammad, because the utmost of wateriness is that it is marshy land and it is mud. It was explicitly stated in 'Al-Khulasa' that they both have differences. Similarly, others stated regarding mud, unless water is predominant, as we will mention. The impermissibility of the watery type can be understood based on this[1] etc.

[Urdu Section]: On Al-Isbijabi's statement "Tayammum from a salt-marsh is permissible", the author of 'Al-Hilya' writes: From the absolute sense of this statement, it is inferred that Tayammum from a salt-marsh is absolutely permissible, whether it is watery or formed from the earth. This is more appropriate to the saying of Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad, because at most, the watery kind is marshy land, and that is just mud. It is explicitly stated in 'Al-Khulasa' that there is a difference of opinion in both. Similarly, other scholars have given clarification regarding the earthy kind. Perhaps this is in the case where water is predominant, as we will mention soon, and the impermissibility of water salt will also be understood on this basis. etc. (T)

I say: Rather, the difference between water salt and earth salt is clear, and the final verdict is that if salt is spread on the surface of the earth, whether dry or slightly

damp, then if it is earth salt, it is permissible, and if it is water salt, it is impermissible. "For on the surface of the earth there is something other than its nature, like a greased or dyed vessel, not from the nature of the earth" (because on the surface of the earth...

[1] Hilya Page 680 of 756

जिल्द सोम / फतावा रज़विया

[अरबी खंड]: ...और इसकी अनुपस्थिति, अन्यथा पहाड़ी नमक स्वयं पृथ्वी की प्रकृति का है क्योंकि इसमें मिट्टी की प्रधानता है, जबकि जलीय नमक पानी के घटकों से है, न कि प्रधान पानी और मिट्टी के मिश्रण से। [उर्दू खंड]: ...यह तुलना देने के लिए है, अन्यथा पहाड़ी नमक तो स्वयं पृथ्वी की श्रेणी से है; ऐसा नहीं है कि इसमें मिट्टी प्रधान है। और जलीय नमक पानी के अंशों से है; ऐसा नहीं है कि पानी प्रधान है और मिट्टी से मिला हुआ है। (त)

फिर मैं कहता हूँ (फिर मैं कहता हूँ। त): यह अवश्य ही पूर्ण रूप से ध्यान में रखा जाना चाहिए, और किताबों में सामान्य उल्लेख प्रबल परिस्थितियों पर आधारित है, जैसा कि 'अल-ग़ुनिया' में संकेत दिया गया है (जैसा कि ग़ुनिया में इसकी ओर संकेत किया गया है। त)। (३) वह नमक यदि मिट्टी से है तो जायज़ है [तयममुम के लिए], और यदि पानी से बना है तो नाजायज़ है। [सन्दर्भ:] अल-ख़ुलासा २, अल-बहर ३, अल-हिन्दिया ४, अल-मुहीत अल-रज़वी ५, ख़ज़ानतुल फतावा ६, अल-हिलिया। (४) तयममुम का स्पष्टीकरण: भले ही नमक पानी से हो, तब भी जायज़ है जब तक पानी प्रधान न हो। यह 'अल-हिलिया' की चर्चा है:

[अरबी खंड]: जहाँ अल-इस्बीजाबी के कथन के आधार पर कहा गया: नमक की क्यारी (साल्ट-मार्श) से तयममुम जायज़ है। यह कथन, अपने पूर्ण अर्थ में, अनुमति का संकेत देता है चाहे वह जलीय हो या पृथ्वी से जमा हुआ हो। यह इमाम अबू हनीफ़ा और मुहम्मद के मत के अधिक समान है, क्योंकि जलीय होने का अधिकतम अर्थ यह है कि वह दलदली भूमि है और वह मिट्टी है। 'अल-ख़ुलासा' में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि दोनों में मतभेद है। इसी तरह दूसरों ने मिट्टी के बारे में उल्लेख किया है, जब तक कि पानी प्रधान न हो, जैसा कि हम उल्लेख करेंगे। जलीय प्रकार की अनुचितता को इसी आधार पर समझा जा सकता है[1] इत्यादि।

[उर्दू खंड]: इस्बीजाबी के कथन "नमक की क्यारी से तयममुम जायज़ है" पर 'हिलिया' के लेखक लिखते हैं: इस कथन की पूर्णता से यह निष्कर्ष निकलता है कि नमक की क्यारी से तयममुम पूर्णतः जायज़ है, चाहे वह जलीय हो या पृथ्वी से बना हो। यह इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद के कथन के अधिक अनुकूल है, क्योंकि जलीय किस्म अधिक से अधिक दलदली भूमि है, और वह मिट्टी ही है। और 'खुलासा' में स्पष्ट किया गया है कि दोनों ही में मतभेद है। इसी तरह अन्य विद्वानों ने मिट्टी वाले के बारे में स्पष्टीकरण दिया है। संभवतः यह उस स्थिति में है जब पानी की प्रधानता हो, जैसा कि

हम शीघ्र ही उल्लेख करेंगे, और जलीय नमक की अनुचितता को भी इसी पर आधारित माना जाएगा। इत्यादि (त)

मैं कहता हूँ: बल्कि जलीय और मिट्टी वाले नमक में अंतर स्पष्ट है, और अंतिम निर्णय यह है कि यदि पृथ्वी की सतह पर सूखा या हल्का नम नमक फैला है, तो यदि वह मिट्टी वाला नमक है तो जायज़ है, और यदि जलीय है तो नाजायज़ है। "क्योंकि पृथ्वी की सतह पर उसकी प्रकृति के अलावा कुछ और है, जैसे चिकना किया हुआ या रंगा हुआ बर्तन, जो पृथ्वी की प्रकृति से नहीं है" (क्योंकि पृथ्वी की सतह पर...

[1] हिलिया पृष्ठ ६८० / ७५६

[عربی حصہ]: وعدمه والافالملح الجبلی نفسه من جنس الارض لان التراب غالب فیه والملح المائی من اجزاء الماء لامن ماء غالب وتراب۔ [اردو حصہ]: میں تشبیہ دینا ہے ورنہ پہاڑی نمک تو خود جنس زمین سے ہے یہ نہیں کہ اس میں مٹی غالب ہے اور آبی نمک پانی کے اجزا سے ہے ایسا نہیں کہ آب غالب اور مٹی سے ملا ہوا ہے۔ (ت)

ثم اقول (پھر میں کہتا ہوں۔ ت) یہ ضرور مطلقاً ملحوظ ہے اور اطلاق کتب بربنائے غالب احوال کما اشار الیہ فی الغنیۃ (جیسا کہ غنیہ میں اس کی طرف اشارہ کیا ہے۔ ت) (۳) وہ نمک اگر مٹی سے ہے جائز ہے اور اگر پانی سے بنا ہے نا جائز ہے اخلاصہ ۲، بحر ۳ ہندیہ ۴ محیط رضوی ۵ خزانۃ الفتاوی ۶ حلیہ۔ (۴) تصریح تیمم اگرچہ نمک پانی سے ہو جب بھی جائز جب تک پانی غالب نہ ہو یہ حلیہ کی بحث ہے:

[عربی حصہ]: حیث قال علی قول الاسبیجابی یجوز التیّمّم بالسبخة هذا باطلاقه یفید الجوازبها سواء کانت مائیة اومنعقدة من الارض وهو بقول ابی حنیفة ومحمد اشبه لانه غایه المائیة انها ارض ذات نز وانها طین وقد صرح فی الخلاصة انهما علی الخلاف وکذا صرح غیره فی الطین اللهم اذا کان الماء غالبا کما سنذکره ویحل عدم الجواز بالمائیة علی هذا [1] اھ۔

[اردو حصہ]: اسیجابی کی عبارت "نمک زار سے تیمم جائز ہے "پر صاحب حلیہ یہ لکھتے ہیں: اس کلام کے اطلاق سے یہ مستفاد ہوتا ہے کہ نمک زار سے مطلقاً تیمم جائز ہے خواہ آبی ہو یا زمین سے بنا ہوا اور یہ امام ابوحنیفہ اور امام محمد کے قول کے زیادہ مناسب ہے اس لیے کہ آبی زیادہ سے زیادہ یہ کہ تری والی زمین ہے اور وہ مٹی ہی ہے۔ اور خلاصہ میں تصریح فرمائی ہے

کہ دونوں ہی میں اختلاف ہے۔ اسی طرح دوسرے حضرات نے۔ خاکی کے بارے میں صراحت کی ہے۔ شاید یہ اس صورت میں ہو جب پانی کا غلبہ ہو جیسا کہ ہم عنقریب ذکر کریں گے، اور آبی سے عدم جواز بھی اسی پر محمول ہوگا۔ اھ (ت)

اقول: بلکہ نمکِ آبی و ترابی میں فرق ظاہر ہے اور قولِ فیصل یہ ہے کہ روئے زمین پر اگر خشک یا خفیف نم کا نمک پھیلا ہے تو اگر نمک ترابی ہے جائز اور آبی ہے تو ناجائز ہے فان علی وجہ الارض غیر جنسھا کآنیۃ مدھونۃ اومصبوغۃ بغیر جنس الارض (اس لیے کہ روئے زمین پر

[1] حلیہ صفحہ 680 از 756

Fatawa Razawiya Volume 3

It is a substance other than earth, like vessels polished or colored with non-earthly substances. (T - This is the intent of the third opinion, and the first opinion is applied to its primary form.)

I say: And its application is because usually in saline soil, the salt is terrestrial (soil-based). If saltwater has spread, it is absolutely impermissible due to the dominance of water (because water is dominant. T), and this is the second opinion. And Allah Almighty knows best.

Salt: 1. If it is aquatic, it is impermissible. [Sources: Fath al-Munya, Khulasa, Jawhara, Muhit, Durar, Bazzaziya, Sirajiyya, Zahiriyya, Khizana]. There is consensus on this. [Sources: Tabyin, Bahr, Abdul Halim, Shurunbulali, Khadimi]. And if it is mineral/ mountain salt — I say: meaning it is made from earth elements, whether extracted from a mountain or saline land — there are two narrations. In Tabyin and on both sides, there are corrections. Bahr: Imam Shams al-Aimma al-Halwani said: The more correct view is that it is impermissible; he mentioned it in al-Mustaghni (T). Khulasa: Similarly, Imam Faqih al-Nafs said in the commentary of Jami' al-Saghir:

[Table Header: Arabic / Urdu Translation] [Arabic Text]: "Among the people are those who say it is permissible with mountain salt, but the more correct view is that it is not permissible." 1 Ah Haliya. [Urdu Text]: Some people are proponents of the view that mountain salt is permissible, but the more correct view is that it is not permissible. Ah Haliya. (T)

It has also been attributed to Imam Shams al-Aimma al-Sarakhsi that: "According to me, the correct view is its non-permissibility."

[Table Header: Arabic / Urdu Translation] [Arabic Text]: In Al-Munya (Indian print), if it is mountain salt, it is permissible. Shams al-Aimma al-Sarakhsi said: The correct view according to me is that it is not permissible. Thus he mentioned it in Al-Muhit 2 Ah. In Al-Ghunya (Constantinople print), the word 'al-Sarakhsi' is placed in the commentary 3. In Al-Haliya (M), Shams al-Aimma (Sh) said, and in some manuscripts with the addition of 'al-Sarakhsi', and this was quoted in Al-Khulasa from Al-Halwani, perhaps it was narrated from both of them 4 Ah. [Urdu Text]: In Al-Munya (printed in India), it says: "If it is mountain salt, it is permissible, and Shams al-Aimma al-Sarakhsi said: According to me, the correct view is that it is not permissible, as he mentioned in Al-Muhit" Ah. And in Al-Ghunya (printed in Constantinople), the word "Sarakhsi" is kept

in the commentary, and in Al-Haliya it is: "(Text) Shams al-Aimma said (Commentary), and in some manuscripts, it is with the addition of the word 'Sarakhsi'. And in Al-Khulasa, it is quoted from Al-Halwani, so perhaps it was narrated from both (Shams al-Aimma Sarakhsi and Halwani)." Ah (T)

Footnotes: 1. Sharh al-Jami' al-Saghir by Qadi Khan. 2. Munyat al-Musalli, Chapter of Tayammum, Azizya Press, Kashmiri Bazaar, Lahore, p. 16. 3. Ghunyat al-Mustamli, Chapter of Tayammum, Suhail Academy, Lahore, p. 78. 4. Al-Haliya.

फ़तावा रज़विया खंड 3

यह मिट्टी के अलावा अन्य पदार्थ है, जैसे मिट्टी के अलावा अन्य पदार्थों से पॉलिश किए गए या रंगे हुए बर्तन। (त - यही तीसरे मत का उद्देश्य है और पहले मत को उसके प्राथमिक रूप पर लागू किया जाता है।)

मैं कहता हूँ: और इसका अनुप्रयोग इसलिए है क्योंकि आमतौर पर खारी मिट्टी में नमक मिट्टी आधारित (पार्थिव) ही होता है। यदि नमक का पानी फैल गया है, तो पानी की प्रधानता के कारण यह पूर्णतः वर्जित है (क्योंकि पानी प्रधान है। त), और यही दूसरा मत है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

नमक: 1. यदि यह जलीय है, तो यह वर्जित है। [स्रोत: फतह अल-मुन्या, खुलासा, जौहरा, मुहीत, दुरर, बज़्ज़ाज़िया, सिराजिया, ज़हीरिया, खजाना]। इस पर सहमति है। [स्रोत: तबयीन, बहर, अब्दुल हलीम, शुरुनबुलाली, खादिमी]। और यदि यह खनिज/पहाड़ी नमक है - मैं कहता हूँ: यानी पृथ्वी के तत्वों से बना हो, चाहे पहाड़ों से निकाला गया हो या खारी ज़मीन से - तो दो कथन हैं। तबयीन और दोनों पक्षों के संशोधनों के अनुसार, बहर: इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-हलवानी ने कहा है: अधिक सही विचार यह है कि यह वर्जित है; उन्होंने इसका उल्लेख अल-मुस्तग़नी में किया है (त)। खुलासा: इसी तरह इमाम फक़ीह अल-नफ़्स ने जामे अल-सगीर की व्याख्या में कहा है:

[तालिका शीर्षक: अरबी / उर्दू अनुवाद] [अरबी पाठ]: "लोगों में से कुछ वे हैं जो कहते हैं कि पहाड़ी नमक के साथ यह जायज़ है, लेकिन अधिक सही यह है कि यह जायज़ नहीं है।" 1 अह हलिया। उर्दू पाठ: कुछ लोग इसके कायल हैं कि पहाड़ी नमक से जायज़ है और सही यह है कि यह जायज़ नहीं है। अह हलिया। (त)

इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-सरख़सी की ओर भी यह बात मनसूब हुई है कि: "मेरे निकट सही यह है कि यह जायज़ नहीं है।"

[तालिका शीर्षक: अरबी / उर्दू अनुवाद] [अरबी पाठ]: मुन्या (भारतीय मुद्रण) में है, यदि वह पहाड़ी हो तो जायज़ है। शम्स अल-अइम्मा अल-सरख़सी ने कहा: मेरे निकट सही यह है कि यह जायज़ नहीं है। ऐसा ही उन्होंने अल-मुहीत में उल्लेख किया है 2 अह। अल-ग़ुनिया (कुस्तुनतुनिया मुद्रण) में 'अल-सरख़सी' शब्द व्याख्या (शराह) में रखा गया है 3। अल-हलिया (म) में शम्स अल-अइम्मा (श) ने कहा,

और कुछ प्रतियों में 'अल-सरख़सी' के योग के साथ है, और अल-खुलासा में इसे अल-हलवानी से उद्धृत किया गया है, तो शायद यह उन दोनों से वर्णित हुआ है 4 अह।

पाद टिप्पणियाँ: 1. शराह अल-जामे अल-सगीर, क़ाज़ी खान द्वारा। 2. मुनियत अल-मुसल्ली, तयम्मुम का अध्याय, अज़ीज़िया प्रेस, कश्मीरी बाज़ार, लाहौर, पृष्ठ 16। 3. ग़ुनियत अल-मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी, लाहौर, पृष्ठ 78। 4. हलिया।

غیر جنس زمین ہے جیسے غیر جنس زمین سے پالش کیے ہوئے یا رنگے ہوئے برتن۔ت) یہی قول سوم کا منشا اور اسی کی صورت اولٰی پر قول اول محمول۔

اقول: اور اس کا اطلاق اس لیے کہ غالباً زمین شور میں نمک ترابی ہی ہوتا ہے اور اگر نمک کا پانی پھیلا ہے مطلقاً ناجائز لغلبۃ المائیۃ (کیونکہ پانی غالب ہے۔ت) اور یہی قول دوم ہے واللہ تعالٰی اعلم۔

نمک ۱۔ اگر آبی ہو ناجائز فتح منیہ ۲ خلاصہ ۳ جوہرہ ۴ محیط ۵ درر ۶ بزازیہ ۷ سراجیہ ۸ ظہیریہ ۹ خزانہ ۱۰ اس پر اتفاق ہے تبیین ۱۱ بحر ۱۲ عبدالحلیم ۱۳ اشرنبلالی ۱۴ خادمی ۱۵ اور اگر جبلی ہو اقول یعنی اجزائے ارض سے بنا ہو خواہ پہاڑ سے نکلے یا زمین شور سے دو روایتیں ہیں تبیین اور دونوں طرف تصحیحین بحر امام شمس الائمہ حلوانی نے فرمایا: اصح یہ کہ ناجائز ہے ذکرہ فی المستغنی (اسے مستغنی میں ذکر کیا ہے۔ت) خلاصہ۔اسی طرح امام فقیہ النفس نے شرح جامع صغیر میں فرمایا:

من الناس من قال یجوز بالملح الجبلي والاصح انه لا یجوز ۱ اه حلیه۔ کچھ لوگ اس کے قائل ہیں کہ پہاڑی نمک سے جائز ہے اور اصح یہ کہ ناجائز ہے۔ اھ حلیہ۔ (ت)

امام ۳ شمس الائمہ سرخسی کی طرف بھی منسوب ہوا کہ میرے نزدیک صحیح عدم جواز ہے۔

ففی المنیہ طبع الہند ان کان جبلیا یجوز وقال شمس الائمۃ السرخسی الصحیح عندی انه لایجوز کذا ذکرہ في المحیط ۲ اه وفي الغنیہ طبع قسطنطینیہ جعل لفظ السرخسی من الشرح ۳ وفي الحلیہ (م) قال شمس الائمه (ش) وفي بعض النسخ بزیادة السرخسی ونقل هذا فی الخلاصة عن الحلوانی فعله عنهما ۴

اھ۔ منیہ مطبوعہ ہند میں ہے: ”اگر پہاڑی ہو جائز ہے اور شمس الائمہ سرخسی نے فرمایا: میرے نزدیک صحیح یہ ہے کہ جائز نہیں، ایسا ہی انہوں نے محیط میں ذکر کیا“ اھ اور غنیہ مطبوعہ قسطنطنیہ میں لفظ ”سرخسی“ شرح میں رکھا ہے اور حلیہ میں ہے: ”(متن) شمس الائمہ نے فرمایا (شرح) اور بعض نسخوں لفظ ”سرخسی“ کے اضافہ کے ساتھ ہے اور خلاصہ میں اسے حلوانی سے نقل کیا ہے تو شاید یہ دونوں ہی (شمس الائمہ۔ سرخسی و حلوانی۔) سے مروی ہوا“ اھ (ت)

۱ شرح الجامع الصغیر للقاضی خان ۲ منیہ المصلی باب التیمم مطبع عزیزیہ کشمیری بازار لاہور ص ۱۶ ۳ غنیہ المستملی باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۷۸ ۴ حلیہ

Fatawa Razawiya, Volume 3

I say: It is written in Al-Sirajiyya: (I say) it is written in Sirajiyya: "Sheikh Imam Al-Sarakhsi and Husam al-Din said: 'If it is mountain [salt], it is permissible [for tayammum], and if it is water [salt], it is not permissible.'" Ends. So it appears that in this copy, 'Al-Sarakhsi' was mistakenly written instead of 'Al-Halwani', or there are two narrations from Al-Sarakhsi. And Allah the Almighty knows best. (T)

The reason for this statement is given that it melts. (Tabyeen).

And Al-Shalabi narrated it in 'Al-Diraya' from 'Qadikhan', meaning in his commentary on 'Al-Jami' al-Saghir' or another book, not in his Fatawa as might be wrongly inferred from his phrase "And in Qadikhan etc." And it is detailed in Al-Ghuniyah with these words: "It seems the reason is that when it transformed, it became associated with water [products] because its nature changed to that of water, to the extent that it melts in water, dissolves with cold, and hardens with heat, as is the case with water-based things; therefore, it is no longer considered a part of the earth." Ends. (T)

I say: (1) But this is contrary to what the words of the scholars agree upon regarding the definition of the genus of the earth. (T) It is apparent that 'Al-Kafi' has adopted this view: 'If he spoke generally, he said: Not like wheat and salt' (because they kept salt absolute and said: "not from things like wheat and salt"). Our Imam Azam (May Allah be pleased with him)...

1. Fatawa Sirajiyya, Chapter of Tayammum, published by Naval Kishore Lucknow, p. 7.
2. Ghunyat al-Mustamli, Chapter of Tayammum, Suhail Academy Lahore, p. 87.

Page 682 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

मैं कहता हूँ: अल-सिराजिया में कहा गया है: (मैं कहता हूँ) सिराजिया में लिखा है: "शेख इमाम अल-सरखसी और हुसाम अल-दीन ने कहा: 'यदि यह पहाड़ी [नमक] है, तो जायज़ है, और यदि यह जलीय [नमक] है, तो जायज़ नहीं है।'" समाप्त। तो ज़ाहिर यह है कि इस नुस्खे में हलवानी की जगह सरखसी सहवन (गलती से) आ गया है या यह कि सरखसी से दो रिवायतें हों। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

इस क़ौल की वजह यह बयान की गई कि वह पिघलता है। (तबीन)।

और इसे शल्बिया में 'दराया' से 'कादीख़ान' से यानी उनकी 'शर्हे जामे सगीर' या किसी और किताब से नक़्ल किया है। यह उनके फ़तावा में नहीं है जैसा कि उनकी इबारत "व फ़ी कादीख़ान अख़" से वहम होता है। और 'ग़ुनिया' में इसकी तफ़सील इन अल्फाज़ में की है: "गोया इसकी वजह यह होगी कि जब वह बदल गया तो आबी (जलीय) से ला हक़ हो गया क्योंकि उसकी तबियत, आबी की तबियत में तब्दील हो गई यहाँ तक कि वह भी पानी में पिघलता, सर्दी से घुलता और गर्मी से सख़्त होता है जैसे आबी का हाल है इसलिए वह ज़ुज़्वे ज़मीन होने से ख़ारिज हो गया।" समाप्त। (त)

मैं कहता हूँ: (1) लेकिन यह ख़िलाफ़ है उस चीज़ के जिस पर उलमा के कलिमात का इजमा (सहमति) है ज़मीन की जिन्स (प्रकार) की तस्दीक़ (परिभाषा) में। (त) ज़ाहिर यह है कि 'काफ़ी' में इसी क़ौल को इख़्तियार किया है: 'इज़ा तल्क़ा फ़क़ाल ला बि नह़विल ह़िनतति वल मिलह़' (इसलिए कि उन्होंने नमक को मुतलक़ (पूर्ण) रखते हुए यूँ कहा: "गेहूं और नमक जैसी चीज़ों से नहीं")। हमारे इमाम ए आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु...

1. फ़तावा सिराजिया, बाबुत तयम्मुम, मतबूआ नवल किशोर लखनऊ, पृ. 7
2. ग़ुनियतुल मुस्तमली, बाबुत तयम्मुम, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृ. 87

पेज 682 ऑफ 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

اقول: قال فی السراجیة قال الشیخ الامام السرخسی وحسام الدین اذکان جبلیاً یجوز وان مائیاً لا اھ فالظاھر ان السرخسی وقع فی تلك النسخة سھوا مکان الحلوانی او عن السرخسی روایتان واللہ تعالٰی اعلم۔ اقول: (میں کہتا ہوں) سراجیہ میں لکھا ہے: "شیخ امام سرخسی اور حسام الدین نے فرمایا: 'پہاڑی ہو تو جائز ہے اور اگر آبی ہو تو جائز نہیں۔' اھ تو ظاہر یہ ہے کہ اس نسخہ میں حلوانی کی جگہ سرخسی سہواً آگیا ہے یا یہ کہ سرخسی سے دو روایتیں ہوں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔(ت)

اس قول کی وجہ یہ بیان کی گئی کہ وہ پگھلتا ہے۔ تبیین۔

ونقله في الشلبية عن الدراية عن قاضيخان ای فی شرحه للجامع الصغیر او کتاب اخر لافی فتاواه کما قد یتوھم من قوله وفی قاضیخان الخ وفصله في الغنية بقوله کأن وجهه انه لما استحال التحق بالمائی لتبدل طبعه حتی انه یذوب في الماء وینحل بالبرد ویشتد بالحر کالمائی فخرج من کونه من اجزاء الارض اھ اور اسے شلبیہ میں درایہ سے اس میں قاضیخان سے یعنی ان کی شرح جامع صغیر یا کسی اور کتاب سے نقل کیا ہے- یہ ان کے فتاوٰی میں نہیں جیسا کہ ان کی عبارت "وفی قاضیخان الخ" سے وہم ہوتا ہے۔ اور غنیہ میں اس کی تفصیل ان الفاظ میں کی ہے: "گویا اس کی وجہ یہ ہو گی کہ جب وہ بدل گیا تو آبی سے لاحق ہو گیا کیونکہ اس کی طبیعت، آبی کی طبیعت میں تبدیل ہو گئی یہاں تک کہ وہ بھی پانی میں پگھلتا، سردی سے گھلتا، اور گرمی سے سخت ہوتا ہے جیسے آبی کا حال ہے اس لیے وہ جزو زمین ہونے سے خارج ہو گیا۔" اھ (ت)

اقول: (ا) لکن ھذا خلاف ما اجمع علیه کلماتھم في تحدید جنس الارض۔ اقول: (میں کہتا ہوں) لیکن جنس زمین کی تحدید میں جس بات پر کلمات علماء کا اجماع ہے یہ تفصیل اس کے برخلاف ہے۔

(ت) ظاہر یہ کافی اسی قول کا اختیار ہے اذا طلق فقال لابنحو الحنطۃ والملح (اس لیے کہ انہوں نے نمک کو مطلق رکھتے ہوئے یوں کہا: "گیہوں اور نمک جیسی چیزوں سے نہیں"-ت) ہمارے امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ

1 فتاوٰی سراجیہ باب التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ص ۷ 2 غنیۃ المستملی باب التیمم سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۷

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

...is permissible according to them. It is followed in Khulasa, Khujandi, and Fatawa. Similarly in Jauhara, Muheet, Rahmaniyya, and Muniya, as mentioned before (as passed). The majority of scholars are on this. In Bazaziya, it is the most correct view. The author of Khulasa-e-Wajiz al-Kardari chose this. Imam Sadr al-Din al-Shahid adopted this in Al-Waqi'at. In Ghiyathiyya, this is the saying of Imam Shams al-A'imma al-Sarkhasi, as mentioned from Al-Sirajiyya (as passed with reference to Sirajiyya). This is the chosen view in Shalbiyya from Zad al-Faqir by the absolute researcher (Shalbiyya with reference to Zad al-Faqir by the absolute researcher - T). This is the correct view in Khaniya, Khazana, and Maraqi. So, the correction of all of Qadi Khan was different, likewise, the transmission from Imam Sarkhasi was different. The conflict is resolved by the fact that the fatwa is on permissibility in Tajnis, Al-Imam Sahib al-Hidayah, Bahr, Nahr, Hindiyya, Azhari, and Tahtawi. So when this is the view of the Imam and the majority, and the fatwa is based on it, there remains no room for disagreement at all.

Zujaj, i.e., glass. The general books like Imam Samarqandi, Bada'i of Imam Kashani, Zahiriyya, Khulasa, Khazana, Sirajiyya, Kafi, Hilya, Idah, Durr al-Mukhtar, Miskin, and Hindiyya have stated absolute impermissibility. However, Muheet, Tabyin al-Haqa'iq, Fath al-Qadir, Bahr al-Ra'iq, Majma' al-Anhur, Azhari, and Shami have restricted the impermissibility to manufactured glass, which is made by mixing sand with another non-earthly substance like soda ash, etc.

I say: The research is that glass is definitely mineral as well, and minerals are certainly a type of stone and of the genus of the earth, as we have previously explained (as we have stated before - T). The application of the majority is based on the prevalent case, as common glass found is manufactured, while mineral glass is rare.

And Allama Tahtawi said a strange thing. He wrote in his annotations on Al-Durr: "And glass made from sand," and he said under the words of Al-Durr "and glass": "even if it is made from sand." He clarified this in his annotations on Maraqi al-Falah, saying: "Consideration is given to its being of the genus of the earth at the time of Tayammum; thus, Tayammum is not permissible on glass even if its origin is from sand." It seems he thought the 'waw' (and) in the phrase of Fath and Bahr "Al-Zujaj al-Mutakhadh..."

1 Tahtawi on Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Dar al-Ma'rifah Press, Beirut, 1/128. 2 Tahtawi on Al-Maraqi, Chapter of Tayammum, Al-Azhariya Press, Egypt, 68.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

...उनके नज़दीक जायज़ है। 'ख़ुलासा', 'खुजंदी' और 'फ़तावा' में इसी पर अमल किया गया है। इसी तरह 'जौहरा', 'मुहीत', 'रहमानिया' और 'मुनिया' में है, जैसा कि पहले गुज़र चुका (जैसा कि गुज़रा - त)। आम मशाईख इसी पर हैं। 'बज़ाज़िया' में यही सबसे सही है। 'ख़ुलासा-ए-वजीज़ अल-करदरी' के लेखक ने इसे अपनाया। इमाम सदर अल-दीन अल-शहीद ने 'अल-वाकिआत' में इसी को पसंद फ़रमाया। 'ग़ियाथिया' में यही इमाम शम्स अल-अइम्मा अल-सरख़सी का क़ौल है जैसा कि 'सिराजिया' के हवाले से गुज़र चुका (जैसा कि सिराजिया के हवाले से गुज़रा - त)। यही मुख्तार (पसंदीदा) है 'शलबिया' में, मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ की 'ज़ाद अल-फ़क़ीर' से (शलबिया में मुहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ की ज़ाद अल-फ़क़ीर के हवाले से - त)। यही सही है 'ख़ानिया', 'ख़ज़ाना' और 'मराक़ी' में। तो इमाम क़ाज़ी खाँ की तमाम तसहीह (सुधार) मुख़्तलिफ़ रही, इसी तरह इमाम सरख़सी से नक़्ल भी मुख़्तलिफ़ रही। और विवाद को खत्म करने वाली बात यह है कि फ़तवा जायज़ होने पर है जैसा कि 'तजनीस', 'इमाम साहिब अल-हिदाया', 'बह्र', 'नहर', 'हिंदिया', 'अज़हरी' और 'तहतावी' में है। तो जब यही इमाम और जुमहूर (बहुमत) का क़ौल है और फ़तवा इसी पर है, तो विरोध की कोई गुंजाइश नहीं रही।

ज़ुजाज यानी शीशा। आम किताबें जैसे इमाम समरक़ंदी, इमाम काशानी की 'बदाइ'', 'ज़हीरिया', 'ख़ुलासा', 'ख़ज़ाना', 'सिराजिया', 'काफ़ी', 'हिलिया', 'ईज़ाह', 'दुर्रे मुख्तार', 'मिस्कीन' और 'हिंदिया' में इससे मुतलक़न (पूर्णत:) अदम-ए-जवाज़ (नाजायज़ होना) लिखा है। मगर 'मुहीत', 'तबीन अल-हक़ा'इक़', 'फ़तह अल-क़दीर', 'बह्र अल-राइ'क़', 'मजमा अल-अनहुर', 'अज़हरी' और 'शामी' में अदम-ए-जवाज़ को 'मसनूअ' (निर्मित) से शर्त लगायी है, जो रेत में कोई दूसरी ग़ैर-जिंस-ए-अर्ज़ (मिट्टी के इलावा) चीज़ जैसे सज्जी वगैरह मिला कर बनाया जाता है।

अक़ूल (मैं कहता हूँ): यही तहक़ीक़ है कि शीशा यक़ीनन मादनी (खनिज) भी होता है और मादनी चीज़ें यक़ीनन पत्थर की क़िस्म और ज़मीन की जिंस से होती हैं जैसा कि हम पहले बयान कर चुके हैं (जैसा कि हमने पहले बयान किया - त)। अधिकतरों का इसे नाजायज़ कहना ग़ालिब हाल (सामान्य स्थिति) पर आधारित है, क्योंकि आम तौर पर यही मसनूअ शीशा मिलता है और मादनी शीशा बहुत कम मिलता है।

और अल्लामा तहतावी ने एक अजीब बात कही। उन्होंने 'दुर्रे मुख्तार' पर अपने हाशिये (टिप्पणी) में लिखा: "और वह शीशा जो रेत से बना हो।" और दुर्रे मुख्तार के शब्द "व ज़ुजाज" के नीचे लिखा "चाहे रेत से ही बना हो।" और इसे 'मराक़ी अल-फ़लाह' के हाशिये में स्पष्ट करते हुए यूँ कहा: "तयम्मुम के समय उसके ज़मीन की जिंस से होने का एतबार है, तो शीशे पर तयम्मुम नहीं हो सकता चाहे उसकी असल (बुनियाद) रेत से ही हो।" अल्लामा ऐसा मालूम होता है कि 'फ़तह अल-क़दीर' और 'बह्र अल-राइ'क़' की इबारत "अल-ज़ुजाज अल-मुत्तख़ज़" के वाव (और) को...

---

1 तहतावी अलल दुर्रिल मुख़्तार, बाबुल तयम्मुम, मतबा दार अल-मआरिफ़ बेरुत 1/128 2 तहतावी अलल मराक़ी, बाबुल तयम्मुम, मतबा अल-अज़हरिया मिस्र 68

کے نزدیک جائز ہے خلاصہ ۱ و خجندی ۲ و فتاوی ۳ میں اسی پر مشی کی جو ہرہ ۴ یوں ہی محیط ۵ میں رحمانیہ اسی طرح منیہ ۶ کما مر (جیسا کہ گزرا ت) عامہ مشائخ اسی پر ہیں۔ بزازیہ ۷ یہی اصح ہے خلاصہ وجیز کر دری اسی کو امام ۸ صدرالدین شہید نے واقعات میں اختیار فرمایا غیاثیہ ۹ یہی امام ۱۰ شمس الائمہ سرخسی کا قول ہے کما مر عن السراجیہ ۱۱ (جیسا کہ سراجیہ کے حوالہ سے گزرا ت) یہی مختار ہے شلبیہ ۱۲ عن زاد الفقیر للمحقق علی الاطلاق (شلبیہ بحوالہ زادالفقیر از محقق علی الاطلاق ت)۔ یہی صحیح ہے خانیہ ۱۳ خزانہ ۱۴ مراقی ۱۵ تو تمام قاضیخان کی تصحیح مختلف ہوئی، یونہی امام سرخسی سے نقل مختلف اور قاطع نزاع یہ ہے کہ فتوی جواز پر ہے تجنیس ۱۶ الامام صاحب الہدایہ بحر ۱۸ نہر ۱۹ ہندیہ ۲۰ ازہری ۲۱ ط ۲۲ تو جب یہی قول امام ہے اور یہی قول جمہور اور اسی پر فتوی تو خلاف کی اصلاً گنجائش نہ رہی۔

زجاج ۲۳ یعنی شیشہ۔ عامہ کتب مثلاً امام اسمر قندی و بدائع ۲۴ امام کاشانی و ظہیریہ ۲۵ و خلاصہ ۲۶ و خزانہ ۲۷ سراجیہ ۲۸ و کافی ۲۹ و حلیہ ۳۰ و ایضاح ۳۱ و در مختار ۳۲ و مسکین ۳۳ و ہندیہ ۳۴ میں اس سے مطلقاً عدم جواز لکھا مگر محیط و تبیین ۳۵ الحقائق و فتح القدیر و بحرالرائق ۳۶ و مجمع ۳۷ الانہر و از ہری ۳۸ و شامی ۳۹ میں عدم جواز کو مصنوع سے مقید فرمایا جوریتے میں دوسری کوئی چیز غیر جنس ارض مثلاً سبجی وغیرہ ملا کر بنایا جاتا ہے۔

اقول: یہی تحقیق ہے کہ زجاج ضرور معدنی بھی ہوتا ہے اور معدنی ضرور قسم حجر و جنس ارض سے ہے کما قدمنا بیانہ (جیسا کہ ہم نے اسے پہلے بیان کیا ت) اکثروں کا اطلاق بر بنائے غالب ہے کہ عام طور پر یہی مصنوع شیشہ ملتا ہے اور معدنی کمیاب۔

واغرب العلامۃ ط فقال فی حواشیہ علی الدر و الزجاج المتخذ من الرمل و قال تحت قول الدر وزجاج و لو اتخذ من رمل ۱ و اوضحه فی حواشیه علی مراقی الفلاح فقال یعتبر کونها من جنسها وقت التیمم فلا یجوز علی الزجاج و ان کان اصله من رمل ۲ھ و کانہ ظن الواو فی قول الفتح و البحر الزجاج

اور علامہ طحطاوی نے عجب بات کی۔ انہوں نے در مختار پر اپنے حواشی میں لکھا: "اور شیشہ جوریت سے بنا ہو۔" اور درمختار کے لفظ "وزجاج" کے تحت لکھا اگر چہ ریت سے بنا ہو۔ اور اسے مراقی الفلاح کے حواشی میں واضح کر کے یوں کہا: "تیمم کے وقت اس کے جنس زمین سے ہونے کا اعتبار ہے تو شیشہ پر تیمم نہیں ہوسکتا اگر چہ اس کی اصل ریت سے ہو" اھ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ فتح القدیر اور البحر الرائق کی عبارت "الزجاج المتخذ"

---

1 طحطاوی علی الدر المختار باب التیمم مطبع دار المعرفۃ بیروت ۱/۱۲۸ 2 طحطاوی علی المراقی باب التیمم مطبع الازہریہ مصر ۶۸

Fatawa Rizvia Volume 3

"Made from sand etc." (من الرمل وغیرہ) uses the word 'wao' (and) in the sense of 'and', not 'or' (au), though it was misunderstood as such. In fact, this 'wao' signifies collection/inclusion.

The wording in 'Al-Tabyin' quoting 'Al-Muhit' is: "If it is mixed with something else that is not of the nature of the earth, such as glass made from sand and something else that is not of the nature of the earth..." etc. Similar wording is found in 'Al-Majma' and 'Al-Azhari'. (T)

Litharge (Murdar Sang): Nawazil, Muhit, Khaniya, Khulasa, Khizana, Munyah, and Sirajia; rather even the author of the school (Imam Muhammad) himself stated its permissibility for Tayammum in his book 'Al-Asl'. However, prohibition is quoted from 'Khizanat-ul-Fatawa' in 'Hulyah' and 'Jami-ur-Rumuz'. The research conclusion is that natural mineral litharge is permissible, while manufactured litharge is not. Muhit-e-Sarakhsi, then Hindiyya states:

"And with mineral litharge, not that which is made from something else." Meaning, it is permissible with mineral litharge, not with that which is made from something else. (T)

In 'Hulyah' it is written: "The intent of those who permit is mineral [litharge], and the intent of those who prohibit is non-mineral. Al-Bada'i and Al-Tuhfa explicitly described the permissibility by characterizing it as mineral. Al-Tuhfa added: 'not what is made from something else'." The intention of those who allow it is the natural mineral form, and those who forbid it mean the non-mineral form. Bada'i and Tuhfa explained permissibility by specifying it as mineral, and Tuhfa further added: not if it's made from another substance. (T)

Coral (Marjan): Its permissibility is explicitly mentioned in general books such as Tabyin al-Haqa'iq, Mi'raj al-Diraya, Ghayat al-Bayan, Tawshih, 'Inaya, Muhit, Khizanat al-Fatawa, Bahr, Nahr, Hindiyya, etc. However, a prohibition occurs in 'Fath'. The authors of 'Durr al-Mukhtar' and 'Khadimi' followed this. Sheikh al-Islam Ghazi also leaned towards this view, and their investigative master (Shaikh al-Muhaqqiq) stated in 'Bahr' that it was an oversight; 'Nahr' said it was a slip of the pen, and the correct view is permissibility.

Footnotes: 1. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Tayammum, Al-Amiriyya Press Egypt, 39/1 2. Fatawa Hindiyya, Chapter on what is permissible for Tayammum, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/71 3. Hulyah

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

"रेत आदि से निर्मित" (من الرمل وغيره) में "वौ" (और) शब्द को "औ" (या) के अर्थ में समझा गया, जबकि ऐसा नहीं है। वास्तव में, यह "वौ" संग्रह/समावेश के अर्थ में है।

'तबीन' में 'मुहीत' का हवाला देते हुए शब्द ये हैं: "यदि इसमें कोई अन्य ऐसी चीज़ मिल जाए जो पृथ्वी की प्रकृति की नहीं है, जैसे रेत से बना कांच और कोई अन्य चीज़ जो पृथ्वी की प्रकृति की नहीं है..." आदि। इसी तरह के शब्द 'मजमा' और 'अज़हरी' में भी हैं। (त)

मुर्दार संग (Litharge): नवाज़िल, मुहीत, खानिया, खुलासा, ख़िज़ाना, मुन्याह और सिराजिया में इसके साथ तयम्मुम की अनुमति स्पष्ट रूप से दी गई है; यहाँ तक कि स्वयं मज़हब के लेखक (इमाम मोहम्मद) ने अपनी पुस्तक 'अल-अस्ल' में इसे स्पष्ट किया है। हालाँकि, 'ख़िज़ानत-उल-फ़तावा' से 'हिलया' और 'जामि-उर-रुमुज़' में निषेध का उल्लेख है। शोध का निष्कर्ष यह है कि प्राकृतिक खनिज मुर्दार संग से अनुमति है, जबकि कृत्रिम रूप से बनाए गए से नहीं। मुहीत-ए-सरखसी और फिर हिन्दिया में लिखा है:

"और खनिज मुर्दार संग के साथ, न कि जो किसी अन्य चीज़ से बना हो।" अर्थात् खनिज मुर्दार संग से (जायज़ है), किसी अन्य चीज़ से बने हुए से नहीं। (त)

'हिलया' में है: "अनुमति देने वालों का उद्देश्य खनिज है और निषेध करने वालों का उद्देश्य गैर-खनिज है। बदा'इ और तोहफ़ा ने खनिज होने की विशेषता बताकर अनुमति को स्पष्ट किया। तोहफ़ा ने यह भी जोड़ा: 'न कि जो किसी अन्य चीज़ से बना हो'।" अनुमति देने वालों का तात्पर्य खनिज रूप से है, और मना करने वालों का तात्पर्य गैर-खनिज रूप से है। बदा'इ और तोहफ़ा ने खनिज होने के आधार पर अनुमति बताई, और तोहफ़ा ने यह भी जोड़ा कि वह किसी और चीज़ से न बना हो। (त)

मूंगा (मरजान): तबीन अल-हक़ा'इक़, मेराज अल-दिराया, ग़ायत अल-बयान, तौशीह, इनाया, मुहीत, ख़िज़ानत अल-फ़तावा, बहर, नहर, हिन्दिया आदि जैसी आम किताबों में इसकी अनुमति स्पष्ट है। लेकिन 'फ़तह' में निषेध आया है। 'दुर्र-ए-मुख्तार' और 'खादिमी' ने उनका अनुसरण किया। शेख-उल-इस्लाम ग़ाज़ी ने भी इसी ओर रुझान दिखाया और उनके शेख मुहक़्क़िक़ ने 'बहर' में कहा कि वह एक भूल थी; 'नहर' ने कहा कि वह लेखनी की त्रुटि है और अनुमति ही सही है।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. तबीन अल-हक़ा'इक़, बाब अल-तयम्मुम, अल-अमीरिया प्रेस मिस्र, 39/1 2. फ़तावा हिन्दिया, तयम्मुम के बारे में अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/71 3. हिलया

فتاوی رضویہ جلد سوم

استخذ من الرمل وغیرہ بمعنی او ولیس کذلك بل ھي للجمع۔ من الرمل وغیرہ " (شیشہ جوریت اور اس کے علاوہ سے بنا ہو) میں لفظ "واو" کو او(یا) کے معنی میں سمجھا۔ حالانکہ ایسا نہیں ۔ یہ واو " جمع" کے معنی میں ہے

ولفظ التبیین عن المحیط خالطه شیئ اخر لیس من جنس الارض کالزجاج المتخذ من الرمل وشیئ اخر لیس من جنس الارض اھ ونحوہ في المجمع والازھری۔ محیط کا حوالہ دیتے ہوئے تبیین کے الفاظ یہ ہیں: اگر اس میں کوئی دوسری ایسی چیز مل گئی جو جنس زمین سے نہیں جیسے وہ شیشہ جوریت اور کسی ایسی چیز سے بنایا گیا ہو جو جنس زمین سے نہیں اھ اور اسی کے ہم معنی مجمع اور ازہری میں بھی ہے۔ (ت)

مردار سنگ۔ نواز ل ۱ و محیط ۲ و خانیہ ۳ و خلاصہ ۴ و خزانہ ۵ ومنیہ ۶ وسراجیہ ۷ بلکہ خود محرر المذہب نے کتاب ۸ الاصل میں اس سے جوازِ تیمم کی تصریح فرمائی اور خزانۃ الفتاوی سے حلیہ و جامع الرموز میں ممانعت منقول اور تحقیق یہ ہے کہ معدنی سے جائز اور مصنوع سے ناجائز۔ محیطِ سرخسی پھر ہندیہ میں ہے:

وبالمرداسنج المعدنی دون المتخذ من شیئ اخر ۹۔ اور معدنی مردارسنگ سے (جائز ہے) کسی اور چیز سے بنا ہوا اس سے نہیں ۔ (ت)

حلیہ میں ہے: مراد المجوز المعدنی والمانع مالیس بمعدنی وقد افصح البدائع والتحفة بالجواز موصوفا بکونہ معدنیا زاد التحفة دون المتخذ من شیئ اخر ۳۔ جائز بتانے والے کی مراد معدنی ہے اور ممنوع

کہنے والے کی مراد غیر معدنی ہے۔ بدائع اور تحفہ میں جواز کو معدنی ہونے سے موصوف کر کے بتایا اور تحفہ نے یہ بھی اضافہ کیا؛ اس سے نہیں کسی اور چیز سے بنا ہو۔ (ت)

مرجان ۱۰۔ تبیین الحقائق و معراج الدرایہ وغایۃ البیان وتوشیح ۴ و عنایہ ۵ و محیط ۶ و خزانۃ الفتاوی وبحر ۸ ونہر ۹ وہندیہ ۱۰ و غیرہا عامہ کتب میں اس سے جواز کی تصریح ہے مگر فتح میں ممانعت واقع ہوئی در مختار ۱ و خادمی ۲ نے ان کا اتباع کیا شیخ ۳ الاسلام غزی نے بھی اسی طرف میل فرمایا اور اُن کے شیخ محقق نے بحر میں فرمایا وہ سہو ہے نہر نے فرمایا سبق قلم ہے اور جواز ہے۔

۱ تبیین الحقائق باب التیمم مطبع الامیریہ مصر ۱/۳۹ ۲ فتاوی ہندیہ فصل فیما یجوز بہ التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۷۱ ۳ حلیہ

[Left Column - Arabic Original Text] As in al-Azhari, Sharh, and Aghrab(1). Abdul Haleem said, taking from al-Minah, or perhaps both concurred on it, for he says: I say, it is not an error, rather it appears that it was established with him that it condenses from water like pearls, so then the dispute would be verbal as is not hidden. I say: Rather it is real as is not hidden. And the fact that the basis is something which if they agreed upon they would agree on the ruling, does not lift the difference in meaning, but rather necessitates it upon difference in the basis. And the expression of al-Minah according to what is in Sharh, I say: It appears that it is not an error because he only forbade the permissibility of Tayammum with it due to what was established with him that it condenses from water like pearls. So if the matter is so, there is no dispute in the prohibition of permissibility. And the one who permits it only said so because it was established with him that it is from the sum of the parts of the earth. So if it were so, there is no talk in permissibility. And that which the speech of the experts on jewels points to is that it has two similarities: a similarity to plants and a similarity to minerals. And Ibn al-Jawzi expressed this most eloquently, saying: It is an intermediate between the worlds of plants and minerals; it resembles minerals in its petrifaction and resembles plants in being trees.

[Right Column - Urdu Original Text] As it is in Azhari and Shami, and Allama Abdul Haleem Rumi said a strange thing. Taking it from Minah al-Ghaffar or perhaps both gentlemen happened to agree, they write: "I say, this is not an error. Rather, it appears that according to them it was settled that it is made from water like pearls. So at that time the dispute will remain verbal. As is evident." (T) I say: Rather, the dispute will be real, as is clear. If the basis of the difference is such an affair that if agreed upon, the ruling would also be agreed upon, this does not end the semantic difference; rather, if the basis is different, then disagreement is mandatory. The text of Minah al-Ghaffar as it is in Shami is as follows: I say, it appears that it is not an error because they forbade the permissibility of Tayammum because it was settled with them that it is made from water like pearls. So if the reality of the matter is this, then there is no disagreement in the prohibition of permissibility, and the one who says it is permissible only said so because according to him it was settled that it is from the components of the earth. So if it were so, there would be no discussion in permissibility. It is known from the speech of jewel experts that there are two similarities found in it: one similarity is with plants and one similarity is with minerals. Ibn al-Jawzi...

[Footnote] 1. Khadimi for Abdul Haleem, Khadimi Chapter of Tayammum, Matba’ Dar al-Sa’adah Egypt 1/36. Page 685 of 756

[शीर्षक बाएँ] फ़तावा रज़विया [शीर्षक दाएँ] भाग 3

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ का अनुवाद] जैसा कि अज़हरी, शरह और अग़रिब (1) में है। अब्दुल हलीम ने कहा, 'अल-मिनाह' से लेते हुए, या शायद वे दोनों एक ही बात पर सहमत हुए, क्योंकि वह कहते हैं: मैं कहता हूँ, यह कोई चूक नहीं है, बल्कि ज़ाहिर यह है कि उनके पास यह बात स्थापित थी कि यह मोतियों की तरह पानी से जमता है, तो ऐसी स्थिति में विवाद केवल शाब्दिक होगा जैसा कि छिपा नहीं है। मैं कहता हूँ: बल्कि यह वास्तविक है जैसा कि स्पष्ट है। और आधार का ऐसा होना कि यदि वे उस पर सहमत होते तो हुक्म पर भी सहमत होते, अर्थ के मतभेद को समाप्त नहीं करता, बल्कि आधार के अलग होने पर मतभेद को आवश्यक बनाता है। और शरह के अनुसार 'अल-मिनाह' का पाठ: मैं कहता हूँ, यह ज़ाहिर है कि यह चूक नहीं है क्योंकि उन्होंने तयममुम की अनुमति से केवल इसलिए मना किया क्योंकि उनके पास यह स्थापित था कि यह मोतियों की तरह पानी से जमता है। तो अगर मामला ऐसा ही है, तो अनुमति की मनाही में कोई विवाद नहीं है। और जिसने इसे अनुमति दी, उसने केवल इसलिए कहा क्योंकि उसके पास यह स्थापित था कि यह ज़मीन के हिस्सों में से है। तो अगर ऐसा होता, तो अनुमति में कोई बहस नहीं होती। और जौहरियों की बातों से जो संकेत मिलता है वह यह है कि इसमें दो समानताएँ हैं: पौधों के साथ समानता और खनिजों के साथ समानता। और इब्न अल-जौज़ी ने इसे सबसे स्पष्ट रूप से कहा है: यह पौधों और खनिजों के संसार के बीच का है; यह अपने पत्थर जैसा होने के कारण खनिजों जैसा दिखता है और पेड़ होने के कारण पौधों जैसा दिखता है।

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद] जैसा कि अज़हरी और शामी में है, और अल्लामा अब्दुल हलीम रूमी ने एक अजीब बात कही। उन्होंने 'मिनाह अल-ग़फ़्फ़ार' से उद्धृत किया या शायद दोनों महानुभावों की बात मिल गई। वे लिखते हैं: "मैं कहता हूँ यह चूक नहीं है। बल्कि ज़ाहिर यह है कि उनके नज़दीक यही तय हुआ कि वह पानी से बनता है जैसे मोती। तो उस वक़्त विवाद शाब्दिक रह जाएगा। जैसा कि स्पष्ट है।" (त) मैं कहता हूँ: बल्कि विवाद वास्तविक होगा जैसा कि प्रकट है। यदि मतभेद का आधार ऐसी बात हो जिस पर सहमति होती तो हुक्म पर भी सहमति होती, तो इससे अर्थगत मतभेद समाप्त नहीं होता, बल्कि यदि आधार अलग है तो मतभेद आवश्यक है। 'मिनाह अल-ग़फ़्फ़ार' का पाठ जैसा कि शामी में है, इस प्रकार है: मैं कहता हूँ, ज़ाहिर यह है कि चूक नहीं है क्योंकि उन्होंने तयममुम की अनुमति से इसलिए मना किया क्योंकि उनके नज़दीक यह बात जमी हुई थी कि वह पानी से बनता है जैसे मोती। तो अगर हक़ीक़त यही हो तो मनाही में कोई मतभेद नहीं है,

और अनुमति देने वाले ने इसलिए कहा क्योंकि उसके नज़दीक यह तय था कि वह ज़मीन के हिस्सों में से है; तो अगर वैसा ही होता तो अनुमति में कोई चर्चा नहीं होती। जौहरियों की बातों से यह पता चलता है कि इसमें दो समानताएँ पाई जाती हैं: एक समानता पौधों से होती है और एक समानता खनिजों से होती है। इब्न अल-जौज़ी ने इसे...

[फुटनोट] 1. अब्दुल हलीम के लिए खादिमी, खादिमी तयममुम का अध्याय, मतबा दार अल-सआदा मिस्र 1/36। पृष्ठ 756 में से 685

[بایاں کالم - عربی متن] كما في الازهري وش و اغرب(۱) عبد الحليم فقال اخذاً عن المنح اولعلهما تواردا عليه فانه يقول اقول: انه ليس بسهو بل الظاهر انه قام عنده انه ينعقد من الماء كاللؤلؤ فحينئذ يكون النزاع لفظيا كما لا يخفى اهـ اقول: بل حقيقياً كما لا يخفى وكون المبنى ممالو اتفقوا عليه لا تفقوا على الحكم لا يرفع الاختلاف في المعنى بل يوجبه عند الاختلاف في المبنى وعبارة المنح على ما فى ش اقول الظاهر انه ليس بسهو لانه انما منع جواز التيمم به لما قام عنده من انه ينعقد من الماء كاللؤلؤ فان كان الامر كذلك فلاخلاف في منع الجواز والقائل بالجواز انما قال به لما قام عنده من انه من جملة اجزاء الارض فان كان كذلك فلا كلام في الجواز والذى دل عليه كلام اهل الخبره بالجواهر ان له شبهين شبهاً بالنبات وشبهاً بالمعادن وبه افصح ابن الجوزي فقال انه متوسط بين عالمى النبات والجماد فيشبه الجماد بتحجره ويشبه النبات بكونه اشجاراً

[دایاں کالم - اردو متن] جیسا کہ ازہری اور شامی میں ہے اور علامہ عبدالحلیم رومی نے عجب بات کی۔ انہوں نے منح الغفار سے اخذ کر کے کہا یا دونوں ہی حضرات کا توارد ہوا۔ لکھتے ہیں: ”میں کہتا ہوں یہ سہو نہیں۔ بلکہ ظاہر یہ ہے کہ ان کے نزدیک یہی ٹھہرا کہ وہ پانی سے بنتا ہے جیسے موتی۔ تو اس وقت نزاع لفظی رہ جائے گا۔ جیسا کہ عیاں ہے“ اھ (ت) اقول: بلکہ نزاع حقیقی ہوگا جیسا کہ آشکارا ہے۔ اگر بنائے اختلاف ایسا امر ہو کہ اس پر اتفاق ہوتا تو حکم پر بھی اتفاق ہوتا اس سے معنوی طور پر اختلاف ختم نہیں ہو جاتا بلکہ اگر مبنی مختلف ہے تو اختلاف لازم ہے۔ منح الغفار کی عبارت جیسا کہ شامی میں ہے اس طرح ہے: میں کہتا ہوں، ظاہر یہ ہے کہ سہو نہیں اس لئے کہ انہوں نے جواز تیمم سے اس لئے منع کیا کہ ان کے نزدیک یہی ٹھہرا کہ وہ پانی سے بنتا ہے جیسے موتی۔ تو اگر حقیقت امر یہی ہو تو منع جواز میں کوئی اختلاف نہیں اور

قائل جواز نے جائز اس لئے کہا کہ اس کے نزدیک یہی ٹھہرا کہ وہ اجزائے زمین سے ہے تو اگر وہ ایسا ہی ہو تو جواز میں کوئی کلام نہیں۔ جوہر شناسوں کے کلام سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ اس میں دو مشابہتیں پائی جاتی ہیں ایک مشابہت نبات سے ہوتی ہے اور ایک مشابت معدنیات سے ہوتی ہے۔ ابن الجوزی نے اسے

[حاشیہ] 1 خادمی للعبد الحلیم خادمی باب التیمم مطبع در سعادۃ مصر ۱ / ۳۶ Page 685 of 756

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Right Column - Urdu Text] Explained clearly. They write that this is intermediate between the plant kingdom and the mineral kingdom. In terms of its petrifaction and being solid like a stone, it resembles minerals; and in the fact that it grows in the depths of the sea with veins and sprouting upright green branches, it resembles plants. (End quote)

Allama Shami writes: I say its conclusion leans towards what is written in 'Fath al-Qadir' because its being a part of the earth is not established. However, its commentator, al-Ramli, leans towards what is in most books regarding its permissibility [for Tayammum]. Perhaps the reason is that being a tree in the depths of the sea is not contradictory to being a part of the earth, because the trees with which Tayammum is not permissible are those that turn into ash by fire, whereas coral (Moonga) is a stone like other stones that emerges in the sea in the form of trees. Therefore, most books have asserted its permissibility, so following that is determined. (End quote)

[Left Column - Arabic Text] Growing in the depths of the sea, having veins and green branches, ramifying and upright. (End quote) Sh [Shami] said: I say the summary of it is an inclination towards what he said in 'Al-Fath' due to the lack of verification of its being from the parts of the earth. His commentator, Al-Ramli, inclined towards what is in the general books regarding permissibility. The reason was that its being trees in the depth of the sea does not negate its being from the parts of the earth, because the trees upon which Tayammum is not permissible are those that turn into ashes by fire, while this is a stone like other stones that comes out in the sea in the form of trees. Therefore, they asserted permissibility in the general books, so turning towards it is determined.

I say (The author): The authors of 'Stones' have clarified its status as a stone and called it 'tree-like stone' (Hajar Shajari) rather than 'stone-like tree' (Shajar Hajari). In 'Jami' Ibn al-Bitar', it is stated from Aristotle:

[Table Section] | Arabic | Urdu | | :--- | :--- | | Al-Busd and al-Murjan are one stone, except that al-Murjan is the root and al-Busd is the branch that grows. Al-Murjan is porous and perforated, while al-Busd spreads as the branches of a tree spread and ramifies. | Busd and Murjan refer to the same stone. The difference is that Murjan is the root and Busd is the branch. It grows. And Murjan has porosity and holes, and Busd spreads like the branches of a tree and like branches. |

[Footnotes] 1 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/176. 2 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/176.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[दायां स्तंभ - उर्दू पाठ] इसे स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है। वे लिखते हैं कि यह वनस्पति जगत और खनिज जगत के बीच का मध्यवर्ती है। अपने पथराव और पत्थर की तरह ठोस होने में यह खनिजों के समान है; और इस बात में यह वनस्पतियों के समान है कि यह समुद्र की गहराई में नसों और फूटी हुई खड़ी हरी टहनियों के साथ उगने वाला पेड़ होता है। (इति)

अल्लामा शामी लिखते हैं: मैं कहता हूँ कि इसका निष्कर्ष उस ओर झुकता है जो 'फ़तह अल-क़दीर' में लिखा है, क्योंकि इसका पृथ्वी का हिस्सा होना सिद्ध नहीं हुआ। इसके व्याख्याकार रम्ली का झुकाव उस ओर है जो अधिकांश पुस्तकों में इसकी अनुमति (तयम्मुम के लिए) के बारे में लिखा है। शायद इसका कारण यह है कि समुद्र की गहराई में पेड़ होना पृथ्वी का हिस्सा होने के विरोधाभासी नहीं है, क्योंकि वे पेड़ जिनसे तयम्मुम जायज़ नहीं है, वे हैं जो आग से राख हो जाते हैं, जबकि मरजान (मूंगा) अन्य पत्थरों की तरह एक पत्थर है जो समुद्र में पेड़ों के रूप में निकलता है। इसलिए अधिकांश पुस्तकों ने इसकी अनुमति पर जोर दिया है, अतः उसी की ओर लौटना अनिवार्य है। (इति)

[बायां स्तंभ - अरबी पाठ] समुद्र की गहराई में उगने वाला, नसों और हरी टहनियों वाला, शाखायुक्त और खड़ा। (इति) शामी ने कहा: मैं कहता हूँ कि इसका सारांश 'अल-फ़तह' में कही गई बात की ओर झुकाव है क्योंकि इसके पृथ्वी का हिस्सा होने का सत्यापन नहीं हुआ है। इसके व्याख्याकार अल-रम्ली का झुकाव आम किताबों में दी गई अनुमति की ओर है। इसका कारण यह था कि समुद्र की गहराई में पेड़ होना इसके पृथ्वी का हिस्सा होने को नकारता नहीं है, क्योंकि वे पेड़ जिन पर तयम्मुम जायज़ नहीं है वे हैं जो आग से राख बन जाते हैं, जबकि यह अन्य पत्थरों की तरह एक पत्थर है जो समुद्र में पेड़ों के रूप में निकलता है। इसलिए, उन्होंने आम किताबों में अनुमति की बात कही है, अतः उसी को अपनाना अनिवार्य है।

मैं कहता हूँ (लेखक): पत्थरों के विशेषज्ञों ने इसके पत्थर होने को स्पष्ट किया है और इसे 'वृक्षवत पत्थर' (हजर शजरी) कहा है न कि 'पाषाणवत वृक्ष' (शजर हजरी)। जामे इब्न अल-बैतार में अरस्तू से वर्णित है:

[तालिका अनुभाग] | अरबी | उर्दू | | :--- | :--- | | अल-बुसद और अल-मरजान एक ही पत्थर हैं, सिवाय इसके कि अल-मरजान जड़ है और अल-बुसद शाखा है जो उगती है। अल-मरजान सरंध्र और छिद्रयुक्त होता है, जबकि अल-बुसद पेड़ की टहनियों की तरह फैलता और विभाजित होता है। |

बुसद और मरजान एक ही पत्थर को कहते हैं। फर्क यह है कि मरजान जड़ है और बुसद शाखा है। यह उगता है। और मरजान में सरंध्रता और सुराख होते हैं, और बुसद पेड़ की टहनियों की तरह फैलता है और टहनियों की तरह। |

[पाद टिप्पणियाँ] 1 रद अल-मुह्तार, बाब अल-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र 1/176. 2 रद अल-मुह्तार, बाब अल-तयम्मुम, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र 1/176.

पृष्ठ 686/756

صاف طور پر بیان کیا۔ وہ لکھتے ہیں کہ یہ عالم نبات و عالم جماد کے درمیان متوسط ہے۔ اپنے تحجر اور پتھر کی طرح ٹھوس ہونے میں جماد کے مشابہ ہے اور اس بات میں نبات کے مشابہ ہے کہ سمندر کی گہرائی میں اس کے رگوں اور پھوٹی ہوئی کھڑی ہری ہری ڈالیوں والے اگنے والے درخت ہوتے ہیں۔ اھ(ت) علامہ شامی لکھتے ہیں: میں کہتا ہوں اس کا حاصل اس جانب میلان ہے جو فتح القدیر میں لکھا ہے اس لیے کہ اس کا اجزائے زمین سے ہونا متحقق نہ ہوا اور اس کے محشی رملی کا میلان اس طرف ہے جو عامہ کتب میں جواز تحریر ہے۔ شاید اس کی وجہ یہ ہے کہ سمندر کی گہرائی میں درخت ہونا اجزائے زمین سے ہونے کے منافی نہیں اس لیے کہ جن درختوں سے تیمم جائز نہیں یہ وہ ہیں جو آگ سے راکھ ہو جاتے ہیں اور مرجان (مونگا) دوسرے پتھروں کی طرح ایک پتھر ہے جو سمندر میں درختوں کی طرح نکلتا ہے اسی لیے عامہ کتب میں جواز پر جزم کیا تو اس کی طرف رجوع متعین ہے۔ (ت)

نابتۃ فی قعر البحر ذوات عروق واغصان خضر متشعبۃ قائمۃ اھ قال ش اقول وحاصلہ المیل الی ماقالہ فی الفتح لعدم تحقق کونہ من اجزاء الارض ومال محشیہ الرملی الی مافی عامۃ الکتب من الجواز وکان وجہہ ان کونہ اشجارا فی قعر البحر لاینا فی کونہ من اجزاء الارض لان الاشجار التی لا یجوز التیمم علیھا ھی التی تترمد بالنار وھذا حجر کباقی الاحجار یخرج فی البحر علی صورۃ الاشجار فلہذا جزموا فی عامۃ الکتب بالجواز فیتعین المصیر الیہ۔

اقول: اصحاب احجار نے اس کے حجر ہونے کی تصریح کی اور اسے حجر شجری کہا نہ کہ شجر حجری، جامع ابن بیطار میں ارسطو سے ہے :

| البُسد والمرجان حجر واحد غیران المرجان اصل والبسد فرع ینبت والمرجان متخلخل مثقب والبسد ینبسط کما تنبسط اغصان الشجرة ویتفرع | بُسد اور مرجان ایک ہی پتھر کو کہتے ہیں۔ فرق یہ ہے کہ مرجان اصل ہے اور بُسد فرع۔ یہ اگتا ہے۔ اور مرجان میں تخلخل اور سوراخ ہوتا ہے اور بُسد درخت کی ڈالیوں کی طرح پھیلتا ہے اور ڈالیوں کی طرح |

1 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۷۶ 2 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۷۶

Fatawa-e-Razvia Volume III

Like branches[1]. It also sprouts branches. (T)

In Makhzan, it is written: Coral is a stony substance similar to the stem and branches of a tree[2]. Coral is a stony body that resembles the stem and branches of a tree. (T)

In Tohfa, it is written: Busad is the name of coral, and it is a stone with vegetative power that grows from the depths of the sea[3]. Busad is the name of coral, and it is a stone possessing vegetative power that grows from the depths of the sea. (T)

In Anwar-ul-Asrar, it is written: The coral stone grows in the sea[4]. Coral stone grows in the sea. (T)

And because of its resemblance to plants, Allama Ibn al-Jawzi categorized it as intermediate between the mineral and plant kingdoms, and this is supported by the saying quoted in Anwar-ul-Asrar:

It is said that it is the first of the plant-born and the last of the stone-born[5]. It is said that it is among the first plant-born and the last stone-born. (T)

This does not exclude it from stones and include it in trees, just as saying that the date palm is intermediate between the plant and animal kingdoms—since it has male and female, and the female is seen to incline towards the male, and it becomes fertile through pollination—does not exclude it from plants and include it in animals. Therefore, in Tazkira al-Antaki, writing this:

'Busad' with the letter 'Dal' (pointed) is coral or its root, and coral is the branch or vice-versa, and it combines plant-like and stone-like properties because it forms in the sea. 'Busad', with the letter 'Zaal' (with a dot). This is coral or its root, and coral is its branch or vice versa. It is between plant-hood and stone-hood because it is Africa and...

---

1 Jami' Ibn Baitar 2 Makhzan al-Adwiya, section of Meem with Ra, published by Munshi Naval Kishore Kanpur, p. 591 3 Tohfat al-Momineen, section of Ba with Seen, on the margin of Makhzan al-Adwiya, p. 142 4 Anwar-ul-Asrar 5 Anwar-ul-Asrar

फतावा रिज़विया, खंड 3

टहनियों की तरह[1]। इसमें टहनियाँ भी निकलती हैं। (त)

मख़ज़ान में है: मूँगा एक पथरीला पदार्थ है जो पेड़ के तने और शाखा के समान है[2]। मूँगा एक पथरीला शरीर है जो पेड़ के तने और शाखा के समान होता है। (त)

तोहफ़ा में है: बुसद मूँगे का नाम है और वह एक वानस्पतिक शक्ति रखने वाला पत्थर है जो समुद्र की गहराई से उगता है[3]। बुसद मूँगे का नाम है और वह एक वानस्पतिक शक्ति रखने वाला पत्थर है जो समुद्र की गहराई से उगता है। (त)

अनवार-उल-असरार में है: मूँगा पत्थर समुद्र में उगता है[4]। मूँगा पत्थर समुद्र में उगता है। (त)

और वनस्पति के साथ इसकी समानता के कारण अल्लामा इब्न अल-जौज़ी ने इसे खनिज जगत और वनस्पति जगत के बीच का कहा है, और इसी की ओर वह कथन संकेत करता है जिसे अनवार-उल-असरार में उद्धृत किया गया है:

कहा गया है कि वह वानस्पतिक मूल में प्रथम और पथरीले मूल में अंतिम है[5]। कहा गया कि वह प्रथम वानस्पतिक उत्पादों में से है और अंतिम पथरीले उत्पादों में से है। (त)

यह इसे पत्थर से बाहर और पेड़ में शामिल नहीं करता, जिस तरह खजूर के बारे में कहना कि वह वनस्पति जगत और प्राणी जगत के बीच में है—क्योंकि इसमें नर और मादा होते हैं, और मादा को नर की ओर झुकते देखा जाता है, और यह परागण से फल देता है—उसे वनस्पतियों से बाहर और प्राणियों में शामिल नहीं करता। इसलिए तज़किरा-ए-अंताकी में यह लिखकर:

'बुसद' बिंदु वाले 'दाल' के साथ मूँगा या उसका मूल है और मूँगा उसकी शाखा है या इसके विपरीत, और यह वानस्पतिक और पथरीले गुणों का संगम है क्योंकि यह समुद्र में बनता है। 'बुसद', बिंदु वाले 'ज़ाल' के साथ। यह मूँगा है या उसकी जड़ है, और मूँगा उसकी शाखा है या इसके विपरीत। यह वनस्पति और पत्थर के बीच की चीज़ है क्योंकि यह अफ्रीका और...

---

1 जामिअ इब्न बैतार 2 मख़ज़ानुल अदविया, फ़स्ल अल-मीम मा अल-रा, मुद्रित मुंशी नवल किशोर कानपुर, पृ. 591 3 तोहफ़तुल मोमिनीन, अल-बा मा अस-सीन, मख़ज़ानुल अदविया के हाशिये पर, पृ. 142 4 अनवार-उल-असरार 5 अनवार-उल-असरार

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

مثل الغصون[1] ۔ اس میں شاخیں بھی نکلتی ہیں۔ (ت)

مخزن میں ہے: مرجان جسے حجری شبیہ بساق و شاخ درخت ست[2]۔ مرجان ایک حجری جسم ہے جو درخت کی ساق و شاخ کے مشابہ ہوتا ہے۔ (ت)

تحفہ میں ہے: بُسد اسم مرجان ست و آں سنگے ست با قوت نباتیہ کہ از قعر دریا می روید[3]۔ بُسد مرجان کا نام ہے اور وہ ایک نباتی قوت رکھنے والا پتھر ہے جو دریا کی گہرائی سے اگتا ہے۔ (ت)

انوار الاسرار میں ہے: حجر المرجان ینبت في البحر[4]۔ سنگِ مرجان سمندر میں اگتا ہے۔ (ت)

اور نبات سے اس کی مشابہت اور اس کے سبب علامہ ابن الجوزی کا اسے عالمِ جماد و عالمِ نبات میں متوسط فرمانا اور اسی کو مؤدی ہے وہ قول کہ انوار الاسرار میں نقل کیا:

قیل ھو اول المتولدات النباتیۃ وآخر المتولدات الحجر[5]۔ کہا گیا وہ اول نباتی مولدات میں سے اور آخر حجری مولدات میں سے ہے۔ (ت)

اسے حجر سے خارج اور شجر میں داخل نہیں کرتا جس طرح کھجور کو کہنا کہ وہ عالمِ نبات و عالمِ حیوانات میں متوسط ہے نروماده ہوتی ہے اور ماده جانبِ نر میل کرتی ہوئی دیکھی جاتی ہے، تلقیح سے بارور ہوتی ہے اسے نبات سے خارج اور حیوانات میں داخل نہیں کرتا ولہٰذا تذکرہ انطاکی میں یہ لکھ کر:

بُسْدٌ بالمُعجمة هو المرجان اواصله والمرجان فرع والعکس وهو جامع بین النباتیة والحجریة لانه یتکون ببحر ۔ بُسَد۔ بذال معجمہ۔ یہ مرجان یا اس کی اصل ہے اور مرجان فرع ہے یا بر عکس۔ وہ نباتیت اور حجریت کے مابین ہے اس لیے کہ وہ افریقہ اور...

---

1 جامع ابن بیطار 2 مخزن الادویہ فصل المیم مع الراء مطبوعہ منشی نولکشور کانپور ص ۵۹۱ 3 تحفۃ المومنین الباء مع السین علی حاشیہ مخزن الادویہ ص ۱۴۲ 4 انوار الاسرار 5 انوار الاسرار

Fatawa Razawiyya, Volume 3

(Arabic Text): Ar-Rūm mimmā yalī Afrīqiyah wa Afranjah ḥaythu yajzuru wa yamuddu fatajdhubu ash-shamsu fī al-awwali az-zi’baqa wa al-kibrīta wa yazdawijāni bi al-ḥarārati wa yastaḥjiru fī ath-thānī bi al-baradi fa idhā ‘āda al-awwalu irtafa‘a mutafarrī’an li-tarajrujihi bi ar-ruṭūbati. (Urdu translation of above): It is produced in the Mediterranean Sea near Europe (Farang) where the ebb and flow occur. During the ebb (low tide), the sun pulls out mercury and sulfur, and they combine due to heat. During the flow (high tide), it turns into stone due to cold. Then, when the ebb returns, it rises branching out due to agitation and movement from moisture. (T)

At the end, it is written: (Arabic Text): Wa huwa asbaru al-aḥjāri ‘alá al-isti‘māl. (Urdu translation of above): And it is the most durable of all stones for use. (T)

Therefore, there is no doubt about the permissibility of Tayammum (dry ablution) with it. The refined explanation of the statement in 'Fath' is what Allama Muqaddasi stated, that their intended meaning by 'Marjan' (coral) is small pearls, as they are also called Marjan as per 'Al-Qamus'. (As it is in Al-Qamus. T) And Allah Almighty knows best. Gold and silver, meaning the seven minerals, have been mentioned in texts in seven ways: (1) General prohibition: This is in most common books. In Al-Tuhfa, Bada'i, Zahiriya, Khaniya, Khizanat al-Fatawa, Sirajiya, Khizana, Kafi, Idah, Zad al-Fuqaha, Jallabi, Burjandi, Munyah, Miskin, Hindiya, Muheet, Jawahir al-Akhlati, etc., gold (dhahab) is mentioned. In 14 books excluding Zad al-Fuqaha, Tuhfa, and Idah, silver (fiddah) is mentioned. In 13 others except Sirajiya, Miskin, Muheet, and Jawahir; also in Al-Hilya, iron (hadid) is mentioned. In Khaniya, Khulasa, Zahiriya, Sirajiya, Khizana, Kafi, Munyah, Miskin, and Jawahir al-Akhlati, lead (rassas) is mentioned. In Tuhfa, Bada'i, Zahiriya, Khaniya, Khulasa, Khizana, Idah, Ghunyah, and Hindiya, brass (sifr) is mentioned. Apart from Tuhfa and Idah, in the remaining seven and Al-Hilya, copper (nuḥās) is explicitly mentioned. (2) General permissibility without mentioning any restriction, as found in Jami' al-Rumuz: (Arabic Text): Lā bi al-ḥajarayni wa al-ḥadīdi kamā fī al-Khizānati wa ghayrihi. (Urdu translation): Not with the two stones (gold and silver) and iron, as in Khizana etc.

---

1. Mentioned in Tadhkira Dawud al-Antaki under the letter 'Ba', word 'Band', Mustafa al-Babi Egypt 1/75.
2. Mentioned in Tadhkira Dawud al-Antaki under the letter 'Ba', word 'Band', Mustafa al-Babi Egypt 1/75.

फ़तावा रज़विया, जिल्द ३

(अरबी पाठ): अर-रूम मिम्मा यली अफ़्रीक़िया व अफ़रंजह हैसु यजज़ुरु व यमुद्दु फ़तजज़ुबुल अश्-शम्सु फ़िल अव्वलि अज़-ज़ि'बक़ा वल किब्रीता व यज़दविजानी बिल-हरारति व यस्तहजिरु फ़िस-सानी बिल-बरदि फ़ इज़ा आदा अल-अव्वलु इर्तफ़आ मुतफ़र्रीअन लितरजरुजिही बिर-रूतूबति। (उर्दू अनुवाद): यह यूरोप (फ़रंग) के पास भूमध्य सागर (बहर-ए-रूम) में पैदा होता है जहाँ ज्वार-भाटा आता है। भाटे के दौरान, धूप पारा और गंधक को खींच लेती है और गर्मी के कारण वे दोनों मिल जाते हैं। ज्वार के समय, वे ठंडक के कारण पत्थर बन जाते हैं। फिर जब भाटा लौटता है, तो नमी से हलचल और गति के कारण वह शाखदार (टहनियों वाला) होकर ऊँचा हो जाता है। (त)

अंत में यही लिखा है कि: (अरबी पाठ): व हुवा असबरुल अहजारि अलल-इस्ति'माल। (उर्दू अनुवाद): और वह उपयोग में सभी पत्थरों से अधिक टिकाऊ है। (त)

इसलिए, इसके साथ तयम्मुम की अनुमति के बारे में कोई संदेह नहीं है। 'फ़ल्ह' के कथन का परिष्कृत स्पष्टीकरण वह है जो अल्लामा मुक़द्दसी ने दिया है कि 'मरजान' (मूंगा) से उनका तात्पर्य छोटे मोतियों से है क्योंकि उन्हें भी 'अल-क़ामूस' के अनुसार मरजान कहा जाता है। (जैसा कि क़ामूस में है। त) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। सोना और चाँदी, यानी सात खनिज जिनके बारे में लेखों में सात प्रकार से वर्णन आया है: (1) पूर्णतः निषेध: यही आम किताबों में है। अत्तहफ़ा, बदायूँ, ज़हीरिया, खानिया, खज़ानतुल फ़तावा, सिराजिया, खज़ाना, काफ़ी, ईज़ाह, ज़ादुल फ़ुक़हा, जल्लाबी, बुर्जंदी, मुनयाह, मिस्कीन, हिंदिया, मुहीत, जवाहिर अल-अख़लाती आदि में सोने का उल्लेख है। ज़ादुल फ़ुक़हा, तहफ़ा और ईज़ाह के अलावा शेष १४ में चाँदी का उल्लेख है। सिराजिया, मिस्कीन, मुहीत और जवाहिर के अलावा शेष १३ में भी; साथ ही हिल्या में लोहा, और खानिया, खुलासा, ज़हीरिया, सिराजिया, खज़ाना, काफ़ी, मुनयाह, मिस्कीन और जवाहिर अल-अख़लाती में रांगा (रस्सास) का उल्लेख है। तहफ़ा, बदायूँ, ज़हीरिया, खानिया, खुलासा, खज़ाना, ईज़ाह, गुनिया और हिंदिया में पीतल (सिफ़्र) का उल्लेख है। तहफ़ा और ईज़ाह के अलावा शेष सात और हिल्या में तांबे (नहास) के संबंध में स्पष्ट वर्णन है। (2) बिना किसी शर्त के पूर्णतः अनुमति, जैसा कि जामिउर रूमूज़ में है: (अरबी पाठ): ला बिल-हजरयनि वल-हदीदि कमा फ़िल-खज़ानति व ग़ैरिही। (उर्दू अनुवाद): सोने चाँदी और लोहे से नहीं जैसा कि खज़ाना आदि में।

1. तज़किरा दाऊद अंताकी, हर्फ़ुल बा, लफ़्ज़ 'बंद' के अंतर्गत वर्णित, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र १/७५।
2. तज़किरा दाऊद अंताकी, हर्फ़ुल बा, लफ़्ज़ 'बंद' के अंतर्गत वर्णित, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र १/७५।

पृष्ठ ६८८/७५६

الروم مما یلی افریقیة وافرنجة حیث یجزر وید فتجذب الشمس فی الاول الزئبق والکبریت ویزد وجان بالحرارة ویستحجر فی الثانی اللبرد فإذا عاد الاول ارتفع متفر عالترجرجه بالرطوبة۔ 1 فرنگ کے قریب بحر روم میں پیدا ہوتا ہے جہاں مدوجزر واقع ہوتا ہے تو دھوپ جز میں پارہ اور گندھک کھینچ لیتی ہے اور حرارت سے دونوں میں ملاپ ہو جاتا ہے اور مد میں وہ برودت کی وجہ سے پتھر بن جاتا ہے پھر جب جزر آتا ہے تو رطوبت سے اضطراب و حرکت کی وجہ سے شاخدار ہو کر بلند ہو جاتا ہے۔ (ت)

آخر میں یہی لکھا کہ: وھو اصبر الاحجار علی الاستعمال۔ 2 اور وہ استعمال میں سارے پتھروں سے زیادہ پائیدار ہے۔ (ت)

لا جرم اس سے جواز تیمم میں شک نہیں اور قولِ فتح کی نفیس توجیہ وہ کہ علامہ مقدسی نے ارشاد فرمائی کہ ان کی مراد مرجان سے چھوٹے موتی ہیں کہ انہیں بھی مرجان کہتے ہیں کما فی القاموس (جیسا کہ قاموس میں ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ ذہب وفضہ (سونا اور چاندی) یعنی معاون سبعہ کہ سات ۷ ہیں کہ ان کے بارے میں عبارتیں بھی سات طور پر آئی ہیں: (1) مطلقاً ممانعت یہی عامہ کتب میں ہے اتحفہ و بدائع و ظہیریہ و خانیہ و خزانة الفتاوٰی و سراجیہ و خزانہ و کافی و ایضاح و زاد الفقہاء و جلابی و بر جندی و منیہ و مسکین و ہندیہ و محیط و جواہر اخلاطی وغیرہا میں ذہب اور زاد الفقہاء و تحفہ و ایضاح کے سوا باقی ۱۴ میں فضہ اور سراجیہ و مسکین و محیط و جواہر کے سوا باقی ۱۳ نیز حلیہ میں حدید اور خانیہ و خلاصہ و ظہیریہ و سراجیہ و خزانة و کافی و منیہ و مسکین و جواہر اخلاطی میں رصاص اور اتحفہ و بدائع و ظہیریہ و خانیہ و خلاصہ و خزانہ و ایضاح و غنیہ و ہندیہ میں صفر اور ماورائے تحفہ و ایضاح باقی سات اور حلیہ میں

نحاس کی نسبت اس کی تصریح ہے۔ (2) بلا ذکر قید مطلقاً جواز جامع الرموز میں ہے: لا بالحجرین والحدید کما فی الخزانة وغیرہ سونے چاندی اور لوہے سے نہیں جیسا کہ خزانہ وغیرہ

---

1 تذکرہ داؤد انطاکی حرف الباء لفظ بند کے تحت مذکور ہے مصطفی البابی مصر ۱/ ۷۵ 2 تذکرہ داؤد انطاکی حرف الباء لفظ بند کے تحت مذکور ہے مصطفی البابی مصر ۱/ ۷۵

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Arabic Text Box]: However, in 'Al-Zahidi' and others, dry ablution (Tayammum) with three [specified materials], lead, and copper is permissible according to Abu Hanifa and Muhammad. [Urdu Text Box]: It is mentioned in 'Al-Zahidi' etc. that according to Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad, one can perform Tayammum with these three and also with lead and copper (seesa and tanba). (T)

I say: This narration is very strange and extremely far-fetched, and assuming its proof, it is applied to the third [category]. (3) As long as they are in their mine, Tayammum with them is permissible because at that time they are part of the 'genus of earth', as previously mentioned from 'Al-Tahtawi' on the authority of Al-Azhari on the authority of 'Al-Ayni' (as passed through the reference of Tahtawi, who quoted Azhari, who quoted Ayni. - T). Once they are smelted, burned, or melted, it is no longer permissible, as previously mentioned from 'Al-Zahiriyya', 'Al-Khulasa', 'Al-Khizana', 'Sharh Qadikhan', and 'Sadr al-Sharia' (as explained through references to Zahiriyya, Khulasa, Sharh Qadikhan, Tabyin and Sadr al-Sharia. - T). In 'Tahtawi ala al-Durr al-Mukhtar', after quoting the passage from 'Tabyin', he stated:

[Arabic Text Box]: This implies the permissibility of Tayammum on them in their original places, even if there is no dust on them. Then he mentioned the distinction between the genus of earth and other than it, and mentioned that what is impressionable and melts is not of its genus, which implies non-permissibility. I say: In their original places, they are mixed with soil and not distinct from it. So what has been assumed is contrary to reality. [Urdu Text Box]: It is inferred from this that as long as they remain in their original location, Tayammum on them is permissible even if there is no dust on them. Then the dividing line between the genus of earth and non-genus of earth was explained, and it was stated that whatever can be cast and melted is not from the genus of earth, and from this, non-permissibility is inferred. I say: When it is in its original location, it is mixed with soil and not separate from it. Thus, what has been assumed is contrary to reality. (T)

(4) It is permissible if mixed with soil, otherwise not. It is in 'Durar':

[Arabic Text Box]: On what is apparent from the genus of earth, such as gold and silver mixed with soil, or wheat and barley on which there is dust. [Urdu Text Box]: On

any pure thing from the genus of earth, such as gold and silver mixed with soil, or wheat and barley on which dust has settled. (T)

1. Jami al-Rumuz, Chapter of Tayammum, Gonbad Press Iran, 1/128
2. Tahtawi ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Gonbad Press Iran, 1/128
3. Durar wa Ghurar by Mulla Khusraw, Chapter of Tayammum, Dar al-Sa'ada Egypt, 1/31

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[अरबी पाठ बॉक्स]: लेकिन 'अल-ज़ाहीदी' और अन्य में है कि इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद के नज़दीक तीन [निर्दिष्ट चीजों], सीसे और तांबे के साथ तयम्मुम जायज़ है। [उर्दू पाठ बॉक्स]: ज़ाहीदी आदि में है कि इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद के अनुसार इन तीनों और सीसे और तांबे से तयम्मुम किया जा सकता है। (त)

मैं कहता हूँ: यह वर्णन बहुत अजीब और अत्यंत दूरगामी है, और यदि इसका प्रमाण सिद्ध भी हो जाए तो इसे तीसरे [वर्ग] पर लागू किया जाएगा। (3) जब तक वे अपनी खान में हैं, उनसे तयम्मुम जायज़ है क्योंकि उस समय वे 'जिन्स-ए-अर्द' (मिट्टी की श्रेणी) का हिस्सा हैं, जैसा कि पहले 'अल-तहतवी' के हवाले से अल-अज़हरी और उन्होंने 'अल-ऐनी' से उद्धृत किया है। जब उन्हें गलाया, जलाया या पिघलाया जाता है, तो अब यह जायज़ नहीं है, जैसा कि 'अल-ज़हीरिया', 'अल-खुलासा', 'अल-खिजाना', 'शर्ह काज़ीखान' और 'सदर अल-शरिया' से पहले उल्लेख किया गया है। 'तहतवी अला अल-दुर्र अल-मुख्तार' में 'तबीन' का अंश उद्धृत करने के बाद उन्होंने कहा:

[अरबी पाठ बॉक्स]: यह उनके मूल स्थानों में उन पर तयम्मुम की स्वीकार्यता का संकेत देता है, भले ही उन पर धूल न हो। फिर उन्होंने मिट्टी की श्रेणी और उसके अलावा अन्य के बीच अंतर का उल्लेख किया, और बताया कि जो ढाला और पिघलाया जा सकता है वह इसकी श्रेणी का नहीं है, जो गैर-स्वीकार्यता का संकेत देता है। मैं कहता हूँ: जब वे अपने मूल स्थानों पर होते हैं, तो वे मिट्टी के साथ मिश्रित होते हैं और उससे अलग नहीं होते। इसलिए जो माना गया है वह वास्तविकता के विपरीत है। [उर्दू पाठ बॉक्स]: इससे यह पता चलता है कि जब तक वे अपने मूल स्थान पर रहें, उन पर तयम्मुम जायज़ है चाहे उन पर गर्द न हो। फिर जिन्स-ए-ज़मीन और गैर-जिन्स-ए-ज़मीन में फर्क बताया और कहा कि जो ढले और पिघले वो जिन्स-ए-ज़मीन से नहीं और इससे जायज़ न होने की बात पता चलती है। मैं कहता हूँ कि जब ये अपनी जगह पर हों तो मिट्टी से मिले होते हैं, उससे अलग नहीं होते, तो जो मान लिया गया है वो हकीकत के खिलाफ है। (त)

(4) मिट्टी के साथ मिश्रित हो तो जायज़ है वरना नहीं, 'दुरर' में है:

[अरबी पाठ बॉक्स]: जो मिट्टी की श्रेणी में से ज़ाहिर है जैसे सोना और चांदी मिट्टी के साथ मिश्रित हों, या गेहूं और जौ जिन पर धूल हो। [उर्दू पाठ बॉक्स]: ज़मीन की किसी पाक चीज़ पर जैसे सोना और चांदी जो मिट्टी से मिले हों या गेहूं और जौ जिन पर गर्द पड़ी हुई हो। (त)

1. जामी अल-रुमूज़, बाब अल-तयम्मुम, गुंबद प्रेस ईरान, 1/128
2. तहतवी अला अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-तयम्मुम, गुंबद प्रेस ईरान, 1/128
3. दुरर ग़ुरर मुल्ला खुसरो, बाब अल-तयम्मुम, दारुस्सआदा मिस्र, 1/31

पृष्ठ 689 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

[عربی ٹیکسٹ باکس]: لكن في الزاهدي وغيره تيمم بالثلثه والرصاص والنحاس عند ابي حنيفة ومحمد1- [اردو ٹیکسٹ باکس]: میں ہے لیکن زاہدی وغیرہ میں ہے کہ امام ابو حنیفہ و امام محمد کے نزدیک ان تینوں سے اور رصاص و نحاس (سیسا و تانبا) سے تیمم کر سکتا ہے۔ (ت)

اقول: یہ نقل بہت غریب اور بشدت بعید اور بہ تقدیر ثبوت ثالث پر محمول۔ (۳) جب تک اپنی معدن میں ہیں ان سے تیمم جائز ہے کہ اس وقت وہ جنس ارض سے ہیں کما مر عن "الطحطاوی" عن الازھری عن "العینی (جیسا کہ طحطاوی کے حوالہ سے گزرا، انہوں نے ازہری سے نقل کیا انہوں نے عینی سے۔ت) جب گلائے جلائے پگھلائے جائیں اب جائز نہیں کما تقدم عن "الظہیریة" و "الخلاصة" و "الخزانہ" و "شرح قاضیخان" و "صدر الشریعة (جیسا کہ ظہیریہ، خلاصہ، شرح قاضیخان، تبیین اور صدر الشریعہ کے حوالہ سے بیان ہوا۔ت) طحطاوی علی الدر المختار میں تبیین کی عبارت مارہ نقل کر کے فرمایا:

[عربی ٹیکسٹ باکس]: هذا يفيد جواز التيمم عليها في محالها ولو من غير غبار عليها ثم ذكر الفاصل بين جنس الارض وغيره وذكر ان ما ينطبع ويذوب ليس من جنسها وهو يفيد عدم الجواز 2 اه اقول (۲) هي في محالها مختلطة بالتراب غير متميزة عنه فالفرض خلاف الواقع۔ [اردو ٹیکسٹ باکس]: اس سے مستفاد ہوتا ہے کہ جب تک اپنے محل میں رہیں ان پر تیمم جائز ہے اگرچہ ان پر غبار نہ ہو۔ پھر جنس زمین اور غیر جنس زمین میں حد فاصل بیان کی اور یہ بتایا کہ جو ڈھلے اور پگھلے وہ جنس زمین سے نہیں اور اس سے عدم جواز مستفاد ہوتا ہے اہ اقول یہ جب اپنے محل میں ہو تو مٹی سے مخلوط ہوتے ہیں اس سے الگ نہیں ہوتے تو جو فرض کیا ہے وہ خلاف واقع ہے۔ (ت)

(۴) مٹی سے مخلوط ہوں تو جائز ورنہ نہیں دررمیں ہے:

[عربی ٹیکسٹ باکس]: علی ظاهر من جنس الارض کذهب وفضة مختلطین بالتراب او حنطة وشعیر علیهما غبار 3- [اردو ٹیکسٹ باکس]: جنس زمین کی کسی پاک چیز پر جیسے سونا اور چاندی جو مٹی سے مخلوط ہوں یا گیہوں اور جو جن پر گرد پڑی ہوئی ہو۔ (ت)

1 جامع الرموز باب التیمم مطبع گنبد ایران ۱۲۸/۱ 2 طحطاوی علی الدر المختار باب التیمم مطبع گنبد ایران ۱۲۸/۱ 3 درر غرر للملا خسرو باب التیمم دارالسعاده مصرا /۳۱

Fatawa Rizvia Volume 3

(5) It is not permissible after melting, and before that if they are mixed with soil and soil is dominant, then it is permissible, otherwise not. 1. Muhit Sarakhsi p 2. In Bahr and Hindiya it says:

If tayammum is done with gold or silver, if it is melted it is not permissible. If it is not melted and is mixed with soil and soil is dominant, then it is permissible. (Ah) In Al-Bahr it is said: From this it is known that what is stated absolutely in Fath al-Qadir is based on this detail. (Ah) Similarly Abdul Haleem said. I say: Both (Muhit and Bahr) do not apply to the same situation, and there is no need to base the second statement on the first, as will be known soon if Allah Wills. (T)

(6) Whether melted or not, if they are mixed with soil and soil is dominant, then it is permissible, otherwise not. It is in Durr-e-Mukhtar:

If soil is mixed with another substance, such as gold or silver, even if they are melted, if the soil is dominant, tayammum is permissible, otherwise not. (Khania). From this, the rule for equality is also known. (Ah) Similarly, Al-Khadimi wrote. Tahtawi and Shami objected to this, stating that the scholars have explicitly said that tayammum with melted materials is not permissible. Tahtawi said: These two cannot be melted along with soil. (Ah) And Shami said: This matter can only be understood clearly if it is possible to melt them both with the soil that is dominant over them, and it appears that this is not possible. (Ah) I say: May Allah have mercy on both of you and on us through you, have you seen (2) when they are melted and cooled and their filings are mixed with soil...

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/128
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Mujtabai Press Delhi, 1/42
3. Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Dar al-Ma'rifat Beirut, 1/128
4. Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Egypt, 1/177

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

(5) गलाने के बाद जायज़ नहीं है और उससे पहले अगर वे मिट्टी से मिले हुए हों और मिट्टी ज़्यादा हो तो जायज़ है, वरना नहीं। 1. मुहीत सरख़सी पेज 2. बहर और हिन्दिया में है:

सोने-चांदी से तयम्मुम किया गया, अगर गला हुआ हो तो जायज़ नहीं है। अगर गला हुआ न हो और मिट्टी से मिला हुआ हो और मिट्टी ज़्यादा हो तो जायज़ है। बहर में कहा गया: इससे मालूम हुआ कि फ़तह अल-क़दीर में जो बिना किसी शर्त के बयान किया गया है, वह इसी विवरण पर आधारित है। इसी के समान अब्दुल हलीम ने कहा। मैं कहता हूँ: (मुहीत और बहर) दोनों का एक ही जगह पर ज़िक्र नहीं है और दूसरी इबारत को पहली पर आधारित करने की कोई ज़रूरत नहीं है जैसा कि इंशाअल्लाह जल्द ही मालूम होगा। (त)

(6) गलाए हुए हों या बिना गलाए, अगर मिट्टी से मिले हुए हों और मिट्टी ज़्यादा हो तो जायज़ है, वरना नहीं। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

अगर मिट्टी किसी दूसरी चीज़ जैसे सोने या चांदी के साथ मिल जाए, चाहे वे गले हुए ही क्यों न हों, तो अगर मिट्टी ज़्यादा है तो तयम्मुम जायज़ है वरना नहीं। (ख़ानिया)। इसी से बराबरी का हुक्म भी मालूम हो गया। इसी के समान ख़ादिमी ने लिखा। इस पर तहतावी और शामी ने यह एतराज़ किया कि उलमा ने साफ़ तौर पर कहा है कि गले हुए पदार्थ से तयम्मुम जायज़ नहीं है। तहतावी ने फ़रमाया: मिट्टी के साथ इन दोनों को गलाया ही नहीं जा सकता। और शामी ने फ़रमाया: यह बात तभी साफ़ तौर पर समझ में आ सकती है जब इन दोनों को उस मिट्टी के साथ गलाना मुमकिन हो जो उन पर ज़्यादा है, और ज़ाहिर है कि ऐसा मुमकिन नहीं है। मैं कहता हूँ: अल्लाह आप दोनों पर और हम पर आपके ज़रिए रहम फ़रमाए, क्या आपने देखा (2) जब उन्हें गलाया जाए और ठंडा किया जाए और उनका बुरादा मिट्टी में मिल जाए...

1. अल-बहर अल-राइक़, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 1/128
2. दुर्र-ए-मुख्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/42
3. तहतावी अल दुर अल मुख्तार, तयम्मुम का अध्याय, दार अल-मआरिफ़त बेरूत, 1/128
4. रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/177

पृष्ठ 690 का 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

(۵) گلانے کے بعد جائز نہیں اور اس سے پہلے اگر مٹی سے مخلوط ہوں اور مٹی غالب ہو تو جائز ورنہ نہیں۔ ۱ محیط سرخی ص ۲ بحر و ہندیہ میں ہے:

لو تیمم بالذھب والفضۃ ان مسبوکا لا یجوز وان لم یکن مسبوکا وکان مختلطا بالتراب والغلبۃ للتراب جاز اھ قال البحر فعلم بھذا ان ما اطلقہ فی فتح القدیر محمول علی ھذا التفصیل ۱ اھ ومثلہ عبدالحلیم اقول: (ا) لم یتواردا موضعا واحدا ولا حاجۃ الی الحمل کما ستعرف ان شاء اللہ تعالٰی۔ (ت)

سونے چاندی سے تیمم کیا اگر گلا ہوا ہو تو جائز نہیں۔ اگر گلا ہوا نہ ہو اور مٹی سے مخلوط ہو اور مٹی غالب ہو تو جائز ہے اھ بحر میں کہا: اس سے معلوم ہوا کہ فتح القدیر میں جو مطلقاً بیان کیا ہے وہ اسی تفصیل پر محمول ہے اھ اسی کے مثل عبدالحلیم نے فرمایا۔ اقول (محیط و بحر) دونوں کا توارد ایک محل پر نہیں اور دوسری عبارت کو پہلی پر محمول کرنے کی کوئی ضرورت نہیں جیسا کہ ان شاء اللہ تعالٰی عنقریب معلوم ہوگا۔ (ت)

(۶) گلائے ہوں یا بے گلائے اگر مٹی سے مخلوط ہوں اور مٹی غالب ہو تو جائز ورنہ نہیں۔ در مختار میں ہے:

لو اختلط تراب بغیرہ کذھب وفضۃ ولو مسبوکین فلو الغلبۃ لتراب جاز والالا خانیۃ ومنہ علم حکم التساوی ۲ اھ ومثلہ الخادمی واعترضہ ط و ش بتصریحھم ان المسبوک لا یجوز بہ التیمم قال ط ولم یتکلم علی ما اذا سبك احدھما مع التراب وھو غیر متأتی ۳ اھ وقال ش ھذا انما یظھر اذا کان یمکن سبکھما بترابھما الغالب علیھما والظاھر انہ غیر ممکن ۴ اھ اقول: رحمکھما اللہ ورحمنا بکما ارأیتما (۲) اذا سُبکا وبُردا واختلطت برادتھما بالتراب

اگر مٹی دوسری چیز مثلاً سونا چاندی سے مل جائے اگرچہ یہ گلائے ہوئے ہوں تو اگر مٹی غالب ہے تیمم جائز ہے ورنہ نہیں۔ خانیہ۔ اسی سے برابری کا حکم بھی معلوم ہو گیا اھ اسی کے مثل خادمی نے لکھا۔ اس پر طحطاوی اور شامی نے یہ اعتراض کیا کہ علما نے صراحت فرمائی ہے کہ گلے ہوئے سے تیمم جائز نہیں۔ طحطاوی نے فرمایا: مٹی کے ساتھ ان دونوں کو گلایا ہی نہیں جاسکتا اھ اور شامی نے فرمایا: یہ بات اسی وقت واضح ہو کر سمجھ میں آسکتی ہے جب ان دونوں کو اس مٹی کے ساتھ جو ان پر غالب ہے گلانا ممکن ہو اور ظاہر یہ ہے کہ ایسا ممکن نہیں اھ اقول آپ دونوں حضرات

1 البحر الرائق باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۸ 2 در مختار باب التیمم مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۴۲ 3 طحطاوی علی الدر المختار باب التیمم دار المعرفت بیروت ۱/ ۱۲۸ 4 ردالمحتار باب التیمم مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۷

Fatawa Razawiyyah Volume 3

Is dominance (of the mixture) not considered? - May God have mercy on him and, through his blessings, have mercy on us as well. Please say, if they are melted and their filings are mixed with soil, will the dominance (of the soil) not be considered? (T)

(7) In 'Majma' al-Anhur', the third and sixth opinions are combined: that as long as they (minerals) are in their mine or are mixed with and dominated by soil, it is permissible; otherwise, not. Where it says: 'It is not permissible with minerals unless they are in their place and mixed with dust, and the dust is dominant.' [1] He stated: 'Tayammum with minerals is not permissible unless they are in their place or mixed with soil and the soil is dominant (then it is permissible).' (T)

The absolute researcher (Muhaqqiq 'al al-Itlaq) in 'Fath al-Qadeer' explained the third opinion saying that as long as they are in the mine, they have soil on them. Tayammum is permissible due to that soil, not because of the minerals themselves. Where it says: 'Minerals are excluded unless they are in their places; then it is permissible because of the dust on them, not because of themselves.' [2] End. I say: And with this, the perceived contradiction between the two statements of 'Al-Tabyin' thought by Allama Tahtawi (marked 'Ta') is removed. He says: 'Minerals are excluded from this, but when they are in their place, Tayammum will be permissible, not from them themselves but because of the soil that is on them.' (T) I say: By this, the contradiction is also removed which Allama Tahtawi perceived between the two statements of Al-Tabyin. (T)

In 'Durr al-Mukhtar', another condition was added: that there should be enough soil so that a mark is left when the hand is wiped over it. Where it says: 'Not with minerals in their places, so it is permissible.' [Annotation] Minerals that are in their place, not with those minerals, so...

Annotation (عه): Tahtawi said: 'The statement "so it is permissible" has no basis for derivation (tafri').' [3] End. I say: (1) It is not a derivation but a justification (ta'leel) for the implied negation. Tahtawi objected to the phrase 'so it is permissible' in Durr al-Mukhtar, saying there is no reason for this derivation. End. I say: (I say) This is not a derivation but rather their... (to be continued on next page).

---

1. Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur, Chapter of Tayammum, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/38.
2. Fath al-Qadeer, Chapter of Tayammum, Matba Nooria Razawiya, Sukkur, 1/116.

3. Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 1/128.

फ़तावा रज़विया खंड 3

क्या प्रभुत्व (मिश्रण का) मान्य नहीं है? - ईश्वर उन पर दया करे और उनकी कृपा से हम पर भी दया करे। बताइए, यदि उन्हें पिघला दिया जाए और उनका बुरादा मिट्टी के साथ मिल जाए, तो क्या प्रभुत्व पर विचार नहीं किया जाएगा? (त)

(7) 'मजमा अल-अन्हुर' में तीसरे और छठे मत को सम्मिलित किया गया है कि जब तक वे (खनिज) अपनी खान में हों या मिट्टी के साथ मिश्रित और मिट्टी के प्रभुत्व में हों, तो यह जायज़ है; अन्यथा नहीं। जहाँ कहा गया है: 'खनिजों के साथ जायज़ नहीं है जब तक कि वे अपने स्थान पर न हों और धूल के साथ मिश्रित न हों, और धूल प्रबल हो।' [1] उन्होंने फ़रमाया: 'खनिजों से तयम्मुम जायज़ नहीं है जब तक कि वे अपने स्थान पर न हों या मिट्टी के साथ मिश्रित न हों और मिट्टी प्रबल हो (तो जायज़ है)।' (त)

मुहक़्क़िक अल अल-इतलाक़ ने 'फ़तह अल-क़दीर' में तीसरे मत की यह व्याख्या की है कि जब तक वे खान में होते हैं, उन पर मिट्टी होती है। उस मिट्टी के कारण तयम्मुम जायज़ है, न कि स्वयं उन खनिजों के कारण। जहाँ कहा गया है: 'खनिज इससे बाहर हैं सिवाय इसके कि वे अपने स्थानों पर हों; तब उन पर जमी धूल के कारण यह जायज़ है, स्वयं उनके कारण नहीं।' [2] समाप्त। मैं कहता हूँ: और इससे वह कथित विरोधाभास दूर हो गया जो अल्लामा तहतावी (चिह्न 'ता') ने 'अल-तबीन' के दो कथनों के बीच समझा था। वे कहते हैं: 'खनिज इससे बाहर हो गए लेकिन जब वे अपने स्थान पर हों तो तयम्मुम जायज़ होगा, स्वयं उनसे नहीं बल्कि उस मिट्टी के कारण जो उन पर चढ़ी हुई है।' (त) मैं कहता हूँ: इसी से वह विरोध भी दूर हो गया जिसे अल्लामा तहतावी ने तबीन की दो इबारतों के बीच माना था। (त)

'दुर्रे मुख़्तार' में एक और शर्त जोड़ी गई कि मिट्टी इतनी हो कि हाथ फेरने से निशान बन जाए, जहाँ कहा गया है: 'अपने स्थान पर स्थित खनिजों के साथ नहीं, तो यह जायज़ है।' [टीका] खनिज जो अपने स्थान पर हों, उन खनिजों से नहीं, तो...

टीका (عه): तहतावी ने कहा: 'कथन "तो जायज़ है" के लिए निष्कर्षण (तफ़री) का कोई आधार नहीं है।' [3] समाप्त। मैं कहता हूँ: (1) यह निष्कर्षण नहीं है बल्कि निहित निषेध का औचित्य (तअलील) है। तहतावी ने दुर्रे मुख़्तार की इबारत "तो जायज़ है" पर यह आपत्ति की कि निष्कर्षण का कोई

कारण नहीं है। समाप्त। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) यह निष्कर्षण नहीं है बल्कि उनकी... (शेष अगले पृष्ठ पर)।

---

1. मजमा अल-अन्हुर शरह मुल्तका अल-अबहुर, तयम्मुम का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/38।
2. फ़तह अल-क़दीर, तयम्मुम का अध्याय, मतबा नूरिआ रज़विया, सुक्कुर, 1/116।
3. तहतावी आला अल-दुर्र अल-मुख्तार, तयम्मुम का अध्याय, दार अल-मआरिफा, बेरूत, 1/128।

فھل لا تعتبر الغلبہ۔ پر خدا رحمت فرمائے اور آپ کی برکت سے ہم پر بھی رحم فرمائے۔ بتایئے اگر انہیں گلا دیا جائے اور ان کا برادہ مٹی سے مخلوط ہو جائے تو کیا غلبہ کا اعتبار نہ ہو گا۔ (ت)

(۷) مجمع الانہر میں سوم و ششم کو جمع کیا کہ جب تک اپنے معدن میں ہوں یا مٹی سے مخلوط و مغلوب ہوں تو جائز ہے ورنہ نہیں۔ حیث قال لا یجوز بالمعادن الا ان یکون فی محلھا ومختلطا بالتراب والتراب غالب ۱۔ انھوں نے یوں فرمایا: "معادن سے تیمم جائز نہیں مگر جب کہ یہ اپنے محل میں ہوں یا مٹی سے مخلوط ہوں اور مٹی غالب ہو" (تو جائز ہے)۔ (ت)

محقق علی الاطلاق نے فتح القدیر میں قول سوم کی یہ توجیہ فرمائی کہ وہ جب تک معدن میں ہیں ان پر مٹی ہوتی ہے۔ اس مٹی سے تیمم جائز ہے نہ کہ ان سے۔ حیث قال خرجت المعادن الا ان تکون فی محالھا فیجوز للتراب الذی علیھا لا بنفسھا ۲ اھ اقول: وبہ اندفع ما ظن العلامۃ ط من التنافی بین قولی التبیین۔ وہ فرماتے ہیں: معادن اس سے خارج ہو گئے مگر جب کہ وہ اپنے محل میں ہوں تو تیمم جائز ہو گا خود ان سے نہیں بلکہ اس مٹی کی وجہ سے جو ان پر چڑھی ہوئی ہے۔ (ت) اقول: اسی سے وہ منافات بھی دفع ہو گئی جو علامہ طحطاوی نے تبیین کی دونوں عبارتوں کے درمیان گمان کی۔ (ت)

در مختار نے اس میں ایک اور قید بڑھائی کہ مٹی اتنی ہو کہ ہاتھ پھیرے سے نشان بنے، حیث قال لا بمعادن فی محالھا فیجوز عہ معدنیات جو اپنے محل میں ہوں ان معدنیات سے نہیں، تو

عه: قال ط قولہ فیجوز لاوجہ للتفریع ۳ اھ اقول: (۱) لیس تفریعاً بل تعلیل للنفی المستفاد طحطاوی نے در مختار کی عبارت "فیجوز" (تو جائز ہے) پر یہ اعتراض کیا ہے کہ تفریع کی کوئی وجہ نہیں اھ اقول: (میں کہتا ہوں) یہ تفریع نہیں بلکہ ان کے (باقی بر صفحہ آئندہ)

---

1 مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر باب التیمم داراحیاء التراث العربی بیروت ۱ / ۳۸ 2 فتح القدیر باب التیمم مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۱۱۶ 3 طحطاوی علی الدر المختار باب التیمم دار المعرفة بیروت ۱ / ۱۲۸

Fatawa-e-Razvia, Volume 3

[Arabic]: ...due to the dust on it. Al-Isbijabi conditioned it on the trace of the dust being visible by passing one's hand over it; if it is not visible, it is not permissible. Likewise, for everything on which Tayammum (dry ablution) is not permitted, such as wheat and barley (bread). Let this be remembered. 1 [Urdu]: Tayammum is permissible because of this dust that has fallen on them. Al-Isbijabi added this condition: the dust should be enough so that the mark of dust appears by passing a hand over it, and if the mark doesn't appear, it's not permissible. Similarly, for every thing on which Tayammum is not permissible, like wheat and a pan, keep this in mind. (T)

In Hilya, the third and fourth points were restricted by the predominance of dust.

[Arabic]: Where he said: Then, what has occurred to some of them that these minerals, if they are molten, it is not permissible, and if they are not molten but mixed with soil, it is permissible. And for some of them: as long as they are in their mines in the earth and nothing has been manufactured from them, it is permissible, but if something has been manufactured from them, it is not permissible as there is no dust on them. So the apparent meaning is that their intent - as in 'Al-Muhit' by Imam Radi al-Din - is that if they are not molten and were mixed with soil and the soil is predominant, then it is permissible. End. For this... [Urdu]: Its text is like this: Then, what has appeared in the statements of some people is that if these minerals have been melted, then Tayammum is not permissible, and if they are mixed with soil without being melted, then it is permissible. And in the statements of some people, it has appeared that as long as they are inside the earth in their mines and nothing has been made from them, it is permissible; then when some manufacturing has been done from them, it is not permissible from it while there is no dust on it. So the apparent meaning is that their intent - as is in 'Al-Muhit' of Imam Radi al-Din - is this, that if they are not melted and are mixed with soil and the soil is predominant...

(Remaining footnote from the previous page) [Arabic]: From his saying "in their places" i.e., Tayammum with minerals is not permissible even if they are in their places, for Tayammum with them then is only permissible because of the dust on them, not because of them. 12 [source], may he be forgiven. (M) [Urdu]: The negation derived from the phrase "Fi Mahalliha" (which are in their original location) is its reasoning. That is, Tayammum with minerals is not permissible even if they are in their original place because at that time Tayammum on them is permissible due to

the dust lying on them, not due to the minerals themselves. 12 [source], may he be forgiven. (T)

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Mujtabai Press, Delhi 1/42 Page 692 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 3

[अरबी]: ...उस पर जमी धूल के कारण। अल-इस्बिजाबी ने इसे इस शर्त के साथ सीमित किया कि उस पर हाथ फेरने से धूल का निशान दिखाई दे; यदि वह दिखाई न दे, तो यह जायज़ नहीं है। इसी तरह उन सभी चीजों के लिए जिन पर तयम्मुम जायज़ नहीं है, जैसे गेहूँ और जौ। इसे याद रखा जाए। 1 [उर्दू]: तयम्मुम उस धूल के कारण जायज़ है जो उन पर पड़ी हुई है। इस्बिजाबी ने इसमें यह शर्त बढ़ाई कि धूल इतनी हो कि उस पर हाथ फेरने से धूल का निशान ज़ाहिर हो और अगर निशान ज़ाहिर न हो तो जायज़ नहीं। इसी तरह हर वह चीज़ जिस पर तयम्मुम जायज़ नहीं जैसे गेहूँ और तवा, इसे ज़हन नशीन रखना चाहिए। (त)

हलिया में तीसरे और चौथे को धूल की प्रधानता से प्रतिबंधित किया गया।

[अरबी]: जहाँ उन्होंने कहा: फिर, उनमें से कुछ के लिए जो हुआ है कि ये खनिज, यदि वे पिघले हुए हों, तो जायज़ नहीं है, और यदि वे पिघले हुए नहीं हैं बल्कि मिट्टी के साथ मिश्रित हैं, तो जायज़ है। और उनमें से कुछ के लिए: जब तक वे ज़मीन में अपनी खदानों में हैं और उनसे कुछ नहीं बनाया गया है, तो जायज़ है, लेकिन यदि उनसे कुछ बनाया गया है, तो जायज़ नहीं है क्योंकि उन पर धूल नहीं है। तो ज़ाहिर यह है कि उनका मक़सद - जैसा कि इमाम रज़ी उद्दीन की 'अल-मुहीत' में है - यह है कि यदि वे पिघले हुए न हों और मिट्टी के साथ मिश्रित हों और मिट्टी प्रबल हो, तो जायज़ है। इति। क्योंकि यह... [उर्दू]: इसकी इबारत इस तरह है: फिर यह जो बाज़ हज़रात की इबारतों में आया कि ये मादनियात (खनिज) अगर गलाए जा चुके हों तो तयम्मुम जायज़ नहीं और अगर बग़ैर गलाए हुए मिट्टी से मिले हुए हों तो जायज़ है। और बाज़ हज़रात की इबारतों में आया कि यह जब तक ज़मीन के अंदर अपनी कानों (खदानों) में हों, उनसे कुछ बनाया न गया हो तो जायज़ है, फिर जब उनसे कुछ सन्नत (निर्माण) हो गई तो उससे जायज़ नहीं जबकि उस पर ग़ुबार (धूल) न हो। तो ज़ाहिर यह है कि उनकी मुराद - जैसा कि इमाम रज़ी उद्दीन की मुहीत में है - यह है कि अगर गलाए हुए न हों और मिट्टी से मख़लूत (मिश्रित) हों और मिट्टी ग़ालिब (प्रबल) हो...

(पिछले पृष्ठ के हाशिये का शेष) [अरबी]: उनके कथन "अपने स्थानों में" से, यानी खनिजों के साथ तयम्मुम जायज़ नहीं है भले ही वे अपने स्थानों में हों, क्योंकि उनके साथ तयम्मुम तब केवल उन पर मौजूद मिट्टी के कारण जायज़ होता है, न कि उनके कारण। 12 [लेखक], उन्हें क्षमा किया जाए। (म) [उर्दू]: क़ौल "फ़ी महालहा" (जो अपने महल/स्थान में हों) से जो नफ़ी (निषेध) मुस्तफ़ाद (प्राप्त) होती

है यह उसकी दलील है। यानी तयम्मुम मादनियात से जायज़ नहीं अगरचे वह अपने महल में हों इसलिए कि उस वक़्त उनसे तयम्मुम उस मिट्टी की वजह से जायज़ होता है जो उन पर पड़ी होती है ख़ुद उनसे नहीं। 12 मिन्हु ग़ुफ़िरा लहु। (त)

---

1 दुर्रे मुख़्तार, बाब-उत-तयम्मुम, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/ 42 पेज 692 का 756

[عربی]: لتراب علیھا۔ وقیدہ الاسبیجابی بأن یستبین اثر التراب بمد ید ہ علیہ وان لم یستبن لم یجز وکذا کل ما لا یجوز التیمم علیہ کحنطہ وجوخة فلیحفظ 1- [اردو]: اس مٹی کی وجہ سے تیمم جائز ہے جو ان پر پڑی ہوئی ہے۔ اسبیجابی نے اس میں یہ قید بڑھائی کہ مٹی اتنی ہو کہ اس پر ہاتھ پھیرنے سے مٹی کا نشان ظاہر ہو اور اگر نشان نہ ظاہر ہو تو جائز نہیں۔ اسی طرح ہر وہ چیز جس پر تیمم جائز نہیں جیسے گیہوں اور توا سے ذہن نشین رکھنا چاہئے۔ (ت)

حلیہ میں سوم و چہارم کو غلبہ تراب سے مقید فرمایا۔

[عربی]: حیث قال ثم ماوقع لبعضھم من ان ھذہ المعادن ان کانت مسبوکہ لایجوز وان کانت غیر مسبوکہ مختلطة بالتراب یجوز ولبعضھم من انھا مادامت فی معادنھا فی الارض لم یصنع منھا شیئ جاز فاذا صنع منھا شیئ لا یجوز اذ لم یکن علیھا غبار فالظاھران مرادھم کما فی المحیط للامام رضی الدین و ان لم یکن مسبوکا وکان مختلطا بالتراب والغلبة للتراب جاز انتھی فان ھذا [اردو]: اس کی عبارت اس طرح ہے: پھر یہ جو بعض حضرات کی عبارات میں آیا کہ یہ معدنیات اگر گلائے جا چکے ہوں تو تیمم جائز نہیں اور اگر بغیر گلائے ہوئے مٹی سے ملے ہوئے ہوں تو جائز ہے۔ اور بعض حضرات کی عبارات میں آیا کہ یہ جب تک زمین کے اندر اپنی کانوں میں ہوں ان سے کچھ بنایا نہ گیا ہو تو جائز ہے پھر جب ان سے کچھ صنعت ہوگئی تو اس سے جائز نہیں جبکہ اس پر غبار نہ ہو۔ تو ظاہر یہ ہے کہ ان کی مراد ۔ جیسا کہ امام رضی الدین کی محیط میں ہے۔ یہ ہے کہ اگر گلائے ہوئے نہ ہوں اور مٹی سے مخلوط ہوں اور مٹی غالب

(بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) [عربی]: من قوله فی محالها ای لایجوز التیمم بمعادن ولو کانت فی محالها فان التیمم بها اذ ذاك انما یجوز لتراب علیها لابها ۱۲ منہ غفرلہ (م) [اردو]: قول "فی محالها" (جو اپنے محل میں ہوں) سے جو نفی مستفاد ہوتی ہے اس کی تعلیل ہے۔ یعنی تیمم معدنیات سے جائز نہیں اگرچہ وہ اپنے محل میں ہوں اس لیے کہ اس وقت ان سے تیمم اس مٹی کی وجہ سے جائز ہوتا ہے جو ان پر پڑی ہوتی ہے خود ان سے نہیں۔ ۱۲ منہ غفر لہ۔ (ت)

---

1 در مختار باب التیمم مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۴۲ Page 692 of 756

Volume 3 Fatawa Razawiya

[Arabic Text Block 1] The restriction is necessary as is apparent, just as they have explicitly stated in other matters. The author will mention this in the issue of ashes mixing with soil. Furthermore, it should not be hidden that, in reality, this is Tayammum (dry ablution) with soil, not with these minerals themselves. Based on this, it follows that it is permissible according to everyone. However, in 'Fatawa al-Walwaliji', it is stated that if it is mixed with soil, and soil is predominant, it is permissible according to Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad, but according to Imam Abu Yusuf, it is not permissible. (1 - End of excerpt from Al-Hilya).

[Urdu Translation of Block 1] It is permissible, end. Therefore, apparently this restriction is necessary as these gentlemen have explicitly stated regarding other things. And the author will soon describe the issue of ash mixing with soil. Then it should also not be hidden that in reality, this is Tayammum with soil and not from these minerals, so it will follow that this is permissible according to everyone. But in Fatawa Walwaliji it is mentioned that if it is mixed with soil and soil is predominant, then it is permissible according to Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad and not permissible according to Imam Abu Yusuf. The text of Al-Hilya ends here. (T)

[Arabic Text Block 2] I say: Abu Yusuf does not allow it except with pure soil. He did not even allow it with dust because of its mixture with air, nor with damp earth because of its mixture with a small amount of water. Therefore, how could he allow it with something mixed with gold and silver? Thus, correctness lies with the view in Walwaliji.

[Urdu Translation of Block 2] I say: Imam Abu Yusuf does not consider Tayammum permissible with anything other than pure soil. To the extent that he did not even allow Tayammum with dust because dust contains a mixture of air, and not even with wet ground because wet ground contains some mixture of water. Then how can he consider Tayammum permissible with that soil in which gold and silver are mixed? So, correctness and rightness are with Walwaliji. (T)

In 'Radd al-Muhtar', the statement of 'Durr al-Mukhtar' "so it is permissible because of the soil upon them" (i.e., it is allowed due to the soil lying on them - T) was restricted by this predominance of soil. The absolute statement of the third view is interpreted as being predominant; as long as minerals are in the earth, soil is usually predominant. Regarding the condition of "appearance of effect" added by Durr al-

Mukhtar, an objection was raised: what is its necessity in the case of soil predominance?

[Bottom Section] Where his words state: "so it is permissible" means "if the soil is predominant," as mentioned in Al-Hilya citing Al-Muhit. And perhaps whoever stated it absolutely... | Its words are as follows: "His statement: so it is permissible," i.e., it is permissible when the soil is predominant, as it is in Al-Hilya from the reference of Al-Muhit. And whoever has stated it absolutely, perhaps he...

1. Hilya al-Mahalla Sharh Munyat al-Musalli Page 693 of 756

खण्ड 3 फ़तावा रज़विया

[अरबी पाठ ब्लॉक 1] जैसा कि स्पष्ट है, यह प्रतिबन्ध आवश्यक है, जैसा कि उन्होंने अन्य विषयों में स्पष्ट रूप से कहा है। मिट्टी में राख के मिश्रण के मुद्दे पर लेखक इसका उल्लेख करेंगे। इसके अलावा, यह छिपा नहीं रहना चाहिए कि वास्तव में, यह मिट्टी के साथ तयम्मुम (सूखा वज़ू) है, न कि इन खनिजों के साथ। इसके आधार पर, यह निष्कर्ष निकलता है कि यह सभी के अनुसार जायज़ है। हालाँकि, 'फ़तावा अल-वलवालिजी' में कहा गया है कि यदि यह मिट्टी के साथ मिश्रित है, और मिट्टी प्रधान है, तो इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद के अनुसार जायज़ है, लेकिन इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार जायज़ नहीं है। (1 - अल-हिल्या का उद्धरण समाप्त)।

[ब्लॉक 1 का उर्दू अनुवाद] जायज़ है, समाप्त। इसलिए, स्पष्ट रूप से यह प्रतिबन्ध आवश्यक है जैसा कि इन सज्जनों ने अन्य चीजों के बारे में स्पष्ट किया है। और लेखक जल्द ही मिट्टी के साथ राख मिलने के मसले का वर्णन करेंगे। फिर यह भी गुप्त न रहे कि वास्तव में यह मिट्टी से तयम्मुम है न कि इन खनिजों से, तो यह निष्कर्ष निकलेगा कि यह सभी के अनुसार जायज़ है। लेकिन 'फ़तावा वलवालिजी' में है कि यदि मिट्टी के साथ मिश्रित है और मिट्टी प्रधान है, तो इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद के अनुसार जायज़ है और इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार जायज़ नहीं है। हिल्या का पाठ यहाँ समाप्त होता है। (त)

[अरबी पाठ ब्लॉक 2] मैं कहता हूँ: अबू यूसुफ़ शुद्ध मिट्टी के सिवा इसे जायज़ नहीं मानते। यहाँ तक कि उन्होंने धूल के साथ भी इसकी अनुमति नहीं दी क्योंकि इसमें हवा का मिश्रण होता है, और न ही नम भूमि के साथ क्योंकि इसमें थोड़ा पानी मिला होता है। तो, वह सोने और चाँदी मिश्रित मिट्टी के साथ इसे कैसे जायज़ मान सकते हैं? इस प्रकार, शुद्धता 'वलवालिजी' के विचार के साथ है।

[ब्लॉक 2 का उर्दू अनुवाद] मैं कहता हूँ: इमाम अबू यूसुफ़ शुद्ध मिट्टी के अलावा किसी और चीज़ से तयम्मुम जायज़ नहीं मानते। यहाँ तक कि उन्होंने धूल से भी तयम्मुम जायज़ नहीं कहा क्योंकि धूल में हवा का मिश्रण होता है, और न ही गीली ज़मीन से क्योंकि गीली ज़मीन में कुछ पानी का मिश्रण होता है। फिर वे उस मिट्टी से तयम्मुम कैसे जायज़ कह सकते हैं जिसमें सोना और चाँदी मिले हों? अतः, सत्यता और शुद्धता 'वलवालिजी' के साथ है। (त)

'रद्दुल मुहतार' में 'दुर्रे मुख़्तार' के कथन "तो उन पर पड़ी मिट्टी के कारण जायज़ है" (अर्थात उन पर पड़ी मिट्टी के कारण अनुमति है - त) को इसी मिट्टी की प्रधानता से सीमित किया गया है। तीसरे

कथन की निरपेक्षता को प्रधानता पर आधारित माना गया है; जब तक खनिज मिट्टी में होते हैं, आमतौर पर मिट्टी ही प्रधान होती है। 'दुर्रे मुख़्तार' द्वारा जो "प्रभाव के प्रकट होने" का प्रतिबन्ध जोड़ा गया था, उस पर आपत्ति की गई कि मिट्टी की प्रधानता की स्थिति में इसकी क्या आवश्यकता है?

[निचला अनुभाग] जहाँ उनके शब्द कहते हैं: "तो जायज़ है" का अर्थ है "यदि मिट्टी प्रधान हो," जैसा कि 'अल-हिल्या' में 'अल-मुहीत' के हवाले से है। और शायद जिसने इसे बिना शर्त कहा है, उसने... | इसके शब्द इस प्रकार हैं: "उनका कथन: तो जायज़ है," अर्थात् जब मिट्टी प्रधान हो तब जायज़ है, जैसा कि 'हिल्या' में 'मुहीत' के संदर्भ से है। और जिसने भी इसे निरपेक्ष रूप से कहा है, शायद उसने...

1. हिल्या अल-महल्ला शरह मुनियत अल-मुसल्ली पृष्ठ 693 / 756

[Left Column - Arabic] القید لابد منه فیما یظهر کما صرحوا به في غیره سیذکره المصنف في مسألة اختلاط الرماد بالتراب ثم لایخفی ان هذا في الحقیقة بالتراب لابعیان هذه المعادن فیتفرع علی هذا انه یجوز عند الکل لکن فی فتاوی الولوالجی فلوکان مخلوطا بالتراب ان کانت الغلبة للتراب یجوز عند ابی حنیفة ومحمد وعند ابي یوسف لا یجوز 1 اهـ ما فی الحلیة۔

[Right Column - Urdu] ہو تو جائز ہے، انتہی۔ اس لئے ظاہرًا یہ قید ضروری ہے جیسا کہ دوسری چیز کے بارے میں ان حضرات نے تصریح فرمائی ہے۔ اور مٹی سے راکھ مل جانے کے مسئلہ میں عنقریب اسے مصنف بھی بیان کریں گے۔ پھر یہ بھی مخفی نہ رہے کہ در حقیقت یہ مٹی سے تیمم ہے ان معدنیات سے نہیں تو اس پر یہ متفرع ہوگا کہ یہ تو سب کے نزدیک جائز ہے۔ لیکن فتاویٰ والوالجی میں ہے کہ مٹی سے مخلوط ہے اگر مٹی غالب ہے تو امام ابو حنیفہ و امام محمد کے نزدیک جائز ہے اور امام ابو یوسف کے نزدیک جائز نہیں۔ حلیہ کی عبارت ختم ہوئی۔ (ت)

[Left Column - Arabic] اقول: ابو یوسف لایجز الا بالتراب الخالص حتی لم یجز بالغبار لما زجة الهواء ولا بالارض الندیة لممازجة قلیل من الماء فکیف یجیز بما خالطه ذهب وفضة فالصواب مع الولوالجی۔

[Right Column - Urdu] اقول: امام ابو یوسف خالص مٹی کے سوا کسی چیز سے تیمم جائز نہیں کہتے۔ یہاں تک کہ انہوں نے غبار اور تر زمین سے بھی تیمم جائز نہ کہا اس لئے کہ غبار میں ہوا کی آمیزش ہوتی ہے اور تر زمین میں کچھ پانی کی آمیزش ہوتی ہے پھر وہ اس مٹی سے

تیمم کیسے جائز کہہ سکتے ہیں جس میں سونا چاندی ملے ہوئے ہوں تو صواب ودرستی والوالجی کے ساتھ ہے۔(ت)

[Full Width Section] ردالمحتار میں قول درمختار فیجوز لتراب علیھا (تواس مٹی کی وجہ سے جائز ہے جو ان پر پڑی ہوئی ہے۔ت) کو اسی غلبہ تراب سے مقید کیا اور قول سوم کے اطلاق کو غالب پر محمول کہ جب تک وہ معادن میں ہیں غالبا مٹی ہی غالب ہوتی ہے اور اب اس قید ظھور اثر پر کہ درمختار نے زائد کی تھی اعتراض فرمایا کہ بحال غلبہ تراب اس کی کیاحت ؟

[Bottom Section] حیث قال قولہ فیجوز ای اذا کانت الغلبہ للتراب | اس کے الفاظ اس طرح ہیں: قولہ فیجوز تو جائز ہے، یعنی کما فی الحلیۃ عن المحیط ولعل من اطلق | جب مٹی غالب ہو تو جائز ہے، جیسا کہ حلیہ میں محیط کے حوالہ سے ہے۔ اور جس نے اسے مطلقاً بیان کیا ہے شاید اس نے

Fatawa Rizvia - Volume 3

[Left Column - Arabic Context]: Based on the fact that as long as they (minerals) are in their origin, they are overwhelmed by earth, unlike when they are taken for smelting, because it is customary to remove the earth from them. His statement: "And al-Asbijabi restricted it thus," as mentioned in al-Nahr. Its apparent meaning is that the pronoun refers to performing Tayammum with minerals, but when they are overwhelmed by earth, there is no need for this restriction [1].

[Right Column - Urdu Translation]: This is based on the fact that as long as these minerals are in their place, they are overwhelmed by soil, and when they are taken for melting, this condition does not remain because the practice is that soil is removed from them at that time. His statement "wa qaiyyadahu al-Asbijabi" (Asbijabi has added the restriction of soil marks appearing after wiping hands). Similar is mentioned in Nahr. The apparent meaning of this statement is that the pronoun refers back to performing Tayammum with minerals, but when they are overwhelmed by soil, there is no need for this restriction. (T)

[Middle Section - Urdu]: I say: Apparently, it was in the mind of the commentator [Allama Sharih] following the book Nahr that gold and silver are found in their mines in large pieces covered with soil, and the statement of Fath [al-Qadir] points towards this: "So it is permissible because of the soil on them" (T). However, it is heard that they are found in small fragments in their mine; after extracting them and cleaning them from soil, they are made into sheets, bricks, etc.

[Bottom Section - Arabic/Urdu]: As mentioned by Ibn Sina and others. Ibn al-Baytar said regarding mercury: "Ibn Sina said: Some of it comes out pure from its mine, and some of it is extracted from its mineral stones by fire, like the extraction of gold and silver. Its mineral stones are like cinnabar. Dioscorides and Galen think it is manufactured like litharge because it is extracted by fire. Based on this, it would also follow that gold is also manufactured [2]."

As Ibn Sina and others have mentioned. Ibn al-Baytar wrote regarding mercury: "Ibn Sina said: Some of it is that which comes out clean from its mine, and some is that which is extracted from its mine stones by fire, just as gold and silver are extracted. Its mine stones are like cinnabar, and Dioscorides and Galen believe it is artificial like litharge because it is extracted through fire. On this basis, it would also follow that gold is also artificial." (T)

On this estimation, undoubtedly the dominance of soil is certain, and the restriction of the appearance of an effect is abandoned, and the statement of Allama Shami is supported [3]... and for decoration in its place.

[Footnotes]: 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/176. 2. Jami' Ibn al-Baytar.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 3

[बायाँ कॉलम - अरबी संदर्भ]: इस तथ्य के आधार पर कि जब तक वे (खनिज) अपने स्रोत में होते हैं, वे मिट्टी से दबे होते हैं, इसके विपरीत जब उन्हें गलाने के लिए ले जाया जाता है, क्योंकि उनसे मिट्टी निकालना प्रथा है। उनका कथन: "और अल-अस्बिजाबी ने इसे इस प्रकार सीमित किया," जैसा कि अल-नहर में उल्लेख किया गया है। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि सर्वनाम खनिजों के साथ तयम्मुम करने की ओर संकेत करता है, लेकिन जब वे मिट्टी से दबे हों, तो इस सीमा की आवश्यकता नहीं है [1]।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद]: यह इस आधार पर है कि जब तक ये खनिज अपने स्थान पर होते हैं, वे मिट्टी से अभिभूत होते हैं, और जब उन्हें गलाने के लिए ले जाया जाता है, तो यह स्थिति नहीं रहती क्योंकि अभ्यास यह है कि उस समय उनसे मिट्टी निकाल दी जाती है। उनका कथन "व कय्यदहु अल-अस्बिजाबी" (अस्बिजाबी ने हाथों को पोंछने के बाद मिट्टी के निशान दिखने का प्रतिबंध जोड़ा है)। नहर में भी ऐसा ही उल्लेख है। इस कथन का स्पष्ट अर्थ यह है कि सर्वनाम खनिजों के साथ तयम्मुम करने की ओर वापस जाता है, लेकिन जब वे मिट्टी से दबे होते हैं, तो इस प्रतिबंध की कोई आवश्यकता नहीं होती है। (त)

[मध्य खंड - उर्दू]: मैं कहता हूँ: स्पष्ट रूप से, यह पुस्तक 'नहर' का अनुसरण करते हुए व्याख्याकार [अल्लामा शारिह] के मन में था कि सोना और चांदी अपनी खानों में मिट्टी से ढके बड़े टुकड़ों में पाए जाते हैं, और फ़तह [अल-क़दीर] का कथन इसी ओर संकेत करता है: "तो उन पर मिट्टी के कारण यह जायज़ है" (त)। हालाँकि, यह सुना जाता है कि वे अपनी खान में छोटे टुकड़ों में पाए जाते हैं; उन्हें निकालने और मिट्टी से साफ करने के बाद, उनसे चादरें, ईंटें आदि बनाई जाती हैं।

[नीचे का खंड - अरबी/उर्दू]: जैसा कि इब्न सीना और अन्य लोगों ने उल्लेख किया है। इब्न अल-बैतार ने पारे के संबंध में कहा: "इब्न सीना ने कहा: इसका कुछ हिस्सा अपनी खान से शुद्ध निकलता है, और कुछ हिस्सा इसकी खनिज चट्टानों से आग द्वारा निकाला जाता है, जैसे सोना और चांदी का निष्कर्षण। इसकी खनिज चट्टानें सिंदूर जैसी हैं। डियोस्कोराइड्स और गैलेन का मानना है कि यह लिथार्ज की तरह कृत्रिम है क्योंकि इसे आग द्वारा निकाला जाता है। इस आधार पर, यह भी निष्कर्ष निकलेगा कि सोना भी कृत्रिम है [2]।"

जैसा कि इब्न सीना और अन्य लोगों ने उल्लेख किया है। इब्न अल-बैतार ने पारे के बारे में लिखा: "इब्न सीना ने कहा: कुछ वह है जो अपनी खान से साफ-सुथरा निकलता है, और कुछ वह है जो अपनी खान के पत्थरों से आग के माध्यम से निकाला जाता है, ठीक वैसे ही जैसे सोना और चांदी निकाला जाता है। इसके खान के पत्थर सिंदूर की तरह होते हैं, और डियोस्कोराइड्स और गैलेन का मानना है कि यह मुर्दासंग (लिथार्ज) की तरह कृत्रिम है क्योंकि इसे आग के माध्यम से निकाला जाता है। इस आधार पर, यह भी अनिवार्य होगा कि सोना भी कृत्रिम हो।" (त)

इस अनुमान पर, निस्संदेह मिट्टी की प्रधानता निश्चित है, और प्रभाव की उपस्थिति का प्रतिबंध त्याग दिया गया है, और अल्लामा शामी के कथन का समर्थन किया गया है [3]... और उसके स्थान पर सजावट के लिए।

[पाद लेख]: 1. रद अल-मुह्तार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/176। 2. जामी इब्न अल-बैतार।

جلد سوم فتاویٰ رضویہ بناء علی انھا مادام فی محالھا تکون مغلوبۃ بالتراب بخلاف مااذا اخذت للسبك لان العادۃ اخراج التراب منھا قولہ وقیدہ الاسبیجابی کذا فی النھر وظاھرہ ان الضمیر راجع الی التیّم بالمعادن لکن اذا کانت مغلوبۃ بالتراب لایحتاج الی ھذا القید۱۸1۔ اس بنیاد رکھی کہ جب تک یہ معادن اپنے محل میں ہوتے ہیں مٹی سے مغلوب ہوتے ہیں اور جب گلانے کے لیے لئے جاتے ہیں تو یہ حالت نہیں ہوتی اس لیے کہ عادت یہ ہے کہ اس وقت ان سے مٹی نکال لی جاتی ہے۔ قولہ وقیدہ الاسبیجابی (اسبیجابی نے ہاتھ پھیرنے سے مٹی کا نشان بننے کی قید بڑھائی ہے) ایسا ہی نہر میں ہے اس کلام کا ظاہر یہ ہے کہ معدنیات سے تیّم کی طرف ضمیر راجع ہے لیکن جب وہ مٹی سے مغلوب ہوں تو اس قید کی ضرورت نہیں۔(ت) اقول: ظاہر اذہن علامہ شارح میں یہ تبعیت نہریہ تھا کہ سونا چاندی اپنے معادن میں بڑے بڑے قطعے مٹی چڑھے ہوئے ملتے ہیں اور اسی طرف کلام فتح مشیر کہ فیجوز لتراب علیھا (تو اس مٹی کی وجہ سے جائز ہے جو ان پر پڑی ہوئی ہے۔ ت) اور مسموع یہ ہے کہ وہ اپنے معدن میں ریزہ ریزہ ہی ہوتے ہیں وہاں سے نکال کر مٹی سے صاف کرکے ان کے پتر اینٹ وغیرہ بناتے ہیں۔ کماذکرہ ابن سینا وغیرہ قال ابن البیطاء فی الزئبق ابن سینا منہ منقی من معدنہ ومنہ ماھو مستخرج من حجارۃ معدنہ بالنار کاستخراج الذھب والفضۃ وحجارۃ معدنہ کالزنجفر ویظن دیسقوریدوس وجالینوس انہ مصنوع کالمرتك لانہ مستخرج بالنار فیجب ان یکون الذھب ایضاً مصنوعاً۱۸2۔ جیسا کہ ابن سینا وغیرہ نے ذکر کیا ہے۔ ابن بیطار نے زیبق کے بارے میں لکھا ہے: "ابن سینا نے کہا: اس میں کوئی وہ ہوتا ہے جو اپنی کان سے صاف ستھرا نکلتا ہے اور کوئی وہ ہوتا ہے جو اپنی کان کے پتھروں سے آگ کے ذریعہ نکالا جاتا ہے جیسے سونا چاندی کو نکالا جاتا ہے، اور اس کی کان کے پتھر شنگرف کی طرح ہوتے ہیں اور دیسقوریدوس اور جالینوس کا خیال ہے کہ وہ مردارسنگ کی طرح مصنوعی ہوتا ہے کیونکہ آگ

کے ذریعہ نکالا جاتا ہے اس بنیاد پر تو یہ بھی لازم آئے گا کہ سونا بھی مصنوعی ہو۔" (ت) اس تقدیر پر بلا شبہ غلبہ تراب ضرور اور ظہور اثر کی قید مہجور اور قول علامہ شامی منصور۸3 وللحلیۃ فی محل 1 ردالمختار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/۱۷۶ 2 جامع ابن بیطار

Fatawa Rizvia Volume 3

Al-Jazmu Dhikru az-Zuhur (and in the case of being mixed with soil without being melted, to restrict it with the condition of soil dominance) rather than calling Huliya "evident", it should be mentioned with certainty (Jazm). (T - translator's note)

I say: Rather (1) even if there are large pieces and soil is caked on them, there is no need for this restriction nor the requirement of dominance. It is only necessary that the hand touches the soil, not these things. The condition of the appearance of an effect (mark) which Imam Ispijabi mentioned is in the case of dust on hard clay, so that if it is on something, and a hand is wiped over it but no mark is made, then undoubtedly Tayammum is permissible on it, just like on a stone. In short, these are the differences that have arisen in this issue.

And I say: And with Allah is all success (And I say, and success is only from Allah Almighty. T) The 3rd decisive statement is that gold, silver, and other seven metals are certainly not from the category of earth, and Tayammum is not possible on them, as stated in Al-Fath, Al-Huliya, Al-Bahr, Al-Durr, etc. (as it is in Fath al-Qadir, Huliya, Al-Bahr al-Ra'iq, and Durr al-Mukhtar etc. T). And this is what is in the common books: "There is no need for detail as claimed by Al-Bahr". And the claim Al-Bahr made (of interpreting the absolute statement of Fath al-Qadir as detailed) has no need for such detail. (T) The issue of mixing soil is not specific to them; it is general to everything from which Tayammum is impermissible. The detail is that if their particles are mixed in the soil, whether before melting as in a mine or after melting by making powder, in any case, the dominance of soil is necessary. If they are large pieces, sheets, or vessels or jewelry made from them, then if a layer of soil is caked on them, Tayammum is permissible. And if there is dust on them, it is necessary that by wiping the hand, marks of fingers are formed. This is the research worthy of acceptance, and the common statements are based on this. And with Allah is success.

Issue 2: Mixing. When something other than earth is mixed into the category of earth, is Tayammum permissible with it or not? Statements on this appear in four ways. (1) That the clear, familiar path and the well-known rule of the pure Sharia is that it depends on the dominance of earth. If the category of earth is dominant, it is permissible, otherwise not. In the fifth benefit, statements from Khaniya, Zahiriya, Khazana, Huliya, Jami' al-Rumuz, Maraqi al-Falah, Durr al-Mukhtar, and Hindiyya have passed. Similarly, it is in Munyah etc., meaning if the category of earth is subordinate or both are equal, it is impermissible in both cases.

[Table] Left Column: As preceded from Al-Durr, and Allama al-Azhari narrated from Nuh Effendi that: "If the dominance is of soil, it is permissible, and if of ash, it is not." He said, Right Column: As passed with reference to Durr al-Mukhtar, and Allama al-Azhari narrated from Nuh Effendi: "If the soil is dominant, then it is permissible, and if the ash is dominant, then it is not." And

फतावा रज़विया जिल्द 3

अल-जज़्म ज़िक्र अज़-ज़ुहूर (और बिना पिघलाए, मिट्टी के साथ मिश्रित होने की स्थिति में, मिट्टी की प्रधानता की शर्त से प्रतिबंधित करने के लिए) हुलिया को "ज़ाहिर" (स्पष्ट) कहने के बजाय इसे दृढ़ता (जज़्म) के रूप में उल्लेख करना चाहिए। (त - अनुवादक की टिप्पणी)

मैं कहता हूँ: बल्कि (१) यदि बड़े टुकड़े भी हों और उन पर मिट्टी चढ़ी हुई हो, तब भी इस शर्त की आवश्यकता नहीं है और न ही प्रधानता की ज़रूरत है। केवल इतना आवश्यक है कि हाथ मिट्टी को छुए, न कि इन चीज़ों को। प्रभाव (निशान) के प्रकट होने की शर्त जो इमाम इस्पीजाबी ने बताई है, वह धूल की स्थिति में है, कठोर मिट्टी पर, ताकि यदि वह किसी चीज़ पर हो और हाथ फेरने से निशान न बने, तो निस्संदेह उस पर तयम्मुम जायज़ है, जैसे पत्थर पर। संक्षेप में, ये वे मतभेद हैं जो इस मसले में आए हैं।

और मैं कहता हूँ: और अल्लाह की सहायता से (और मैं कहता हूँ, और सफलता अल्लाह तआला की ओर से ही है। त) तीसरा निर्णायक कथन यह है कि सोना, चाँदी और अन्य सात धातुएँ निश्चित रूप से पृथ्वी की श्रेणी (जिंस-ए-अर्श) से नहीं हैं और उन पर तयम्मुम नहीं हो सकता, जैसा कि फ़तह, हुलिया, बहर, और दुर्र आदि में है (जैसा कि फ़तह अल-क़दीर, हुलिया, अल-बहर अल-राइक और दुर्र अल-मुख्तार आदि में है। त)। और यही वह बात है जो आम किताबों में है: "विस्तार की कोई आवश्यकता नहीं है जैसा कि बहर ने दावा किया है"। और बहर ने (फ़तह अल-क़दीर के पूर्ण कथन को विस्तार पर आधारित मानने का) जो अनुमान लगाया, उस विस्तार की कोई आवश्यकता नहीं है। (त) मिट्टी मिलाने का मसला केवल उनके लिए विशिष्ट नहीं है, बल्कि हर उस चीज़ के लिए सामान्य है जिससे तयम्मुम नाजायज़ है। इसका विस्तार यह है कि यदि उनके कण मिट्टी में मिले हों, चाहे पिघलाने से पहले जैसे खान में, या पिघलाने के बाद बुरादा करके, हर हाल में मिट्टी की प्रधानता (ग़ल्बा) ज़रूरी है। यदि वे बड़े टुकड़े, चादरें या उनसे बने बर्तन या आभूषण हों, तो यदि उन पर मिट्टी की परत चढ़ी हो तो तयम्मुम जायज़ है। और यदि धूल पड़ी है, तो इतना ज़रूरी है कि हाथ फेरने से उंगलियों के निशान बन जाएँ। यही वह शोध है जो स्वीकार करने योग्य है, और आम कथन इसी पर आधारित हैं। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है।

मसला २: मिश्रण। पृथ्वी की श्रेणी में जब कोई अन्य चीज़ मिल जाए, तो क्या उससे तयम्मुम जायज़ है या नहीं? इस पर चार प्रकार के कथन आए हैं। (१) कि स्पष्ट और परिचित मार्ग और पवित्र शरीयत का

प्रसिद्ध नियम यह है कि इसका आधार पृथ्वी की प्रधानता पर है। यदि पृथ्वी की श्रेणी प्रधान है तो जायज़ है, अन्यथा नहीं। पाँचवें फ़ायदे में खानिया, ज़हीरिया, खज़ाना, हुलिया, जामे अल-रुमूज़, मराक़ी अल-फ़लाह, दुर्र अल-मुख्तार और हिंदिया से इसके उद्धरण गुज़रे हैं। इसी प्रकार मुनिया आदि में भी है, यानी यदि पृथ्वी की श्रेणी गौण (मग़लूब) हो या दोनों बराबर हों, तो दोनों स्थितियों में नाजायज़ है।

[तालिका] बायां कॉलम: जैसा कि दुर्र के हवाले से गुज़रा और अल्लामा अज़हरी ने नूह आफ़ंदी से यह उद्धृत किया: "यदि मिट्टी प्रधान है तो जायज़ है और यदि राख प्रधान है तो नहीं।" उन्होंने कहा, दायां कॉलम: जैसा कि दुर्र अल-मुख्तार के हवाले से गुज़रा और अल्लामा अज़हरी ने नूह आफ़ंदी से यह उद्धृत किया: "यदि मिट्टी प्रधान है तो जायज़ है और यदि राख प्रधान है तो नहीं।" और

الجزم ذکر الظھور (اور بغیر گلائے ہوئے، مٹی سے مخلوط ہونے کی صورت میں، مٹی کے غلبہ کی قید سے مقید کرنے کے لیے) حلیہ کو "ظاہر" کہنے کی بجائے اسے بطور جزم ذکر کرنا چاہئے۔ ت)

اقول: بلکہ (۱) اگر بڑے بڑے قطعے بھی ہوں اور ان پر مٹی چڑھی ہوئی ہو جب بھی اس قید کی حاجت نہیں نہ غلبہ کی ضرورت، صرف اتنا چاہئے کہ ہاتھ تراب سے مس کرنے نہ ان چیزوں سے ظہور اثر کی قید کہ امام اسپیجابی نے ذکر فرمائی صورت غبار میں ہے، سخت مٹی کی تاکہ اگر کسی چیز پر چڑھی ہو کہ ہاتھ پھیرے سے نشان نہ بنے تو بلاشبہ اس پر تیمّم جائز ہے، جیسے پتھر پر بالجمہ یہ اختلافات ہیں جو اس مسئلہ میں آئے۔

وانا اقول: وباللہ التوفیق (اور میں کہتا ہوں، اور توفیق اللہ تعالٰی ہی کی جانب سے ہے۔ت) قول ۳ فیصل یہ ہے کہ ذہب وفضہ وغیر ہما معادن سبعہ یقیناً جنس ارض سے نہیں اور ان پر تیمم نہیں ہوسکتا کما فی الفتح والحلیہ والبحر والدر وغیرہا (جیسا کہ فتح القدیر، حلیہ، البحر الرائق اور در مختار وغیرہا میں ہے۔ت) اور یہ ہے وہ کہ عامہ کتب میں ہے ولاحاجۃ الی التفصیل کما زعم البحر اور بحر نے (فتح القدیر کے مطلق کو تفصیل پر محمول ہونے کا) جو گمان کیا اس تفصیل کی کوئی ضرورت نہیں۔ت) خلط تراب کا مسئلہ کچھ ان کی خصوصیت نہیں رکھتا ہر اس چیز کو عام ہے جس سے تیمّم ناجائز ہو اور اس کی تفصیل یہ ہے کہ اگر ان کے ریزے مٹی میں مخلوط ہوں خواہ گلانے سے پہلے جیسے معدن میں یا گلانے کے بعد برادہ کر کے بہر حال غلبہ تراب ضرور ہے اگر ٹکڑے بڑے قطعے یا پتر یا ان کے بنے ہوئے برتن یا زیور ہوں تو اگر ان پر مٹی کا لبس

چڑھا ہے تیمّم جائز اور اگر غبار پڑا ہے تو اتنا ضرور ہے کہ ہاتھ پھیرے سے انگلیوں کا نشان بننے یہ ہے تحقیق حقیق بالقبول اور اسی پر عامہ اقوال محمول وباللہ التوفیق۔

مسئلہ ۲ خلط جنس ارض میں جب اس کا غیر مل جائے تو اس سے تیمّم جائز ہے یا نہیں، اس میں عبارات چار طور پر آئیں۔ (1) کہ جادہ واضحہ مالوفہ اور شرع مطہر کا قاعدہ معروفہ ہے کہ غلبہ ارض پر مدار ہے اگر جنس ارض غالب ہے جائز ورنہ نہیں فائدہ پنجم میں خانیہ و ظہیریہ و خزانہ و حلیہ و جامع الرموز و مراقی الفلاح و درمختار و ہندیہ سے اس کی عبارات گزریں اسی طرح منیہ وغیرہا میں ہے یعنی اگر جنس ارض مغلوب یا دونوں مساوی ہوں دونوں حال میں ناجائز۔

[جدول] بایاں کالم: کما تقدم عن الدر ونقل العلامة الازهری عن نوح افندی ان الغلبة للتراب یجوز وان للرماد لا قال دایاں کالم: جیسا کہ در مختار کے حوالہ سے گزرا اور علامہ ازہری نے نوح آفندی سے یہ نقل کیا: "اگر مٹی غالب ہے تو جائز ہے اور اگر راکھ غالب ہے تو نہیں۔ اور

Fatawa Ridawiyyah, Volume 3 From it, the ruling of equality is also known. [End] (T) I say: He followed the footprints of Al-Durr (Al-Mukhtar) but without making a distinction. For the structure of Al-Durr is: if the soil is predominant, it is permissible; otherwise, it is not. From this, the ruling of equality is also known. [End]. In Al-Durr, following Al-Bahr and citing Al-Muhit, this text also appears: "Tayamum is permissible with mud that is not overwhelmed by water." [End]. Upon this, Allama Tahtawi opined that the apparent meaning of his words is that equality falls under the same ruling as that which is not overwhelmed by water. But what follows in his statement, "The ruling belongs to the predominant," indicates that it is not permissible with equality. [End] (T). I say: They (the scholars) have stated that the phrase "none is more virtuous than him" also negates equality, because equality is extremely rare, whereas disparity is common. Thus, when "more virtuous than him" is negated, it is established that he is the most virtuous compared to others. The same applies here. Furthermore, it was more appropriate for Allama Tahtawi (may Allah Almighty have mercy on him) to say: "The apparent meaning of his words is that the equal is like the predominant," as its being non-overwhelmed is certain. Yes, I saw in Al-Jawharah: if something that is not of the category of earth is mixed with it and the mixture is more than the earth, it is not permissible.

Footnotes: 1. Fath al-Mu'in, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Press, Karachi, 1/91. 2. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Mujtabai Press, Delhi, 1/42. 3. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Mujtabai Press, Delhi, 1/42. 4. Tahtawi on Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Tayammum, Dar al-Ma'rifah Press, Beirut, 1/128. Page 696 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3 "इसी से बराबरी (मसावी) का हुक्म भी मालूम हो गया।" १ (अन्त्य) मैं कहता हूँ: उन्होंने 'दुर्रे मुख्तार' के पदचिन्हों का अनुसरण किया लेकिन भेद नहीं किया, क्योंकि 'दुर्रे मुख्तार' की इबारत इस प्रकार है: "यदि मिट्टी प्रबल है तो जायज़ है, अन्यथा नहीं। और इसी से बराबरी का हुक्म भी मालूम हो गया।" २। 'दुर्रे मुख्तार' में 'अल-बहर' के अनुसरण में और 'अल-मुहीत' के हवाले से यह इबारत भी आई है: "ऐसी मिट्टी से तयम्मुम जायज़ है जो पानी से दबी (मगलूब) न हो।" ३। इस पर अल्लामा तहतावी ने अनुमान लगाया कि उनके कलाम से स्पष्ट यह है कि बराबरी वाला उसी के हुक्म में है जो पानी से मगलूब न हो। लेकिन उनके कथन "हुक्म प्रबल का है" के अंतर्गत यह आता है कि बराबरी वाले से जायज़ नहीं है। ४ (अन्त्य)। मैं कहता हूँ: उलमा ने स्पष्ट किया है कि "उससे बेहतर कोई नहीं" कहने से बराबरी की भी मनाही हो जाती है, क्योंकि बराबरी अत्यंत दुर्लभ है, जबकि असमानता सामान्य है। इसलिए जब "उससे बेहतर" को नकारा गया, तो यह सिद्ध हो गया कि वह दूसरों की तुलना में सबसे बेहतर है। यहाँ भी ऐसा ही है। इसके अलावा, अल्लामा तहतावी (अल्लाह उन पर रहम करे) को यह कहना चाहिए था कि उनके कलाम से स्पष्ट है कि "बराबर प्रबल की तरह है," क्योंकि उसका गैर-मगलूब होना निश्चित है। हाँ, मैंने 'अल-जौहरा' में देखा कि यदि कोई चीज़ जो मिट्टी की प्रकृति की नहीं है, उसमें मिला दी जाए और वह मिश्रण मिट्टी से अधिक हो, तो यह जायज़ नहीं है।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. फ़तह अल-मुईन, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी प्रेस, कराची, 1/91. 2. अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/42. 3. दुर्रे मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/42. 4. तहतावी अला अल-दुर्र अल-मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, दार अल-मअरिफ़ा प्रेस, बेरूत, 1/128. पेज 696 ऑफ़ 756

فتاویٰ رضویہ، جلد سوم "اسی سے مساوی کا حکم بھی معلوم ہوگیا۔" ۱ھ (ت) اقول: انہوں نے درمختار کے نشانِ قدم کی پیروی کی مگر امتیاز نہ کر کے اس لیے کہ درمختار کی عبارت اس طرح ہے: "اگر مٹی غالب ہے تو جائز ہے ورنہ نہیں۔ اور اسی سے برابری کا حکم بھی معلوم ہو گیا" ۲ھ درمختار میں یہ تبعیت بحر، بحوالہ محیط یہ عبارت بھی آئی ہے: "مٹی جو پانی سے مغلوب نہ ہو اس سے تیمم جائز ہے" ۳ھ اس پر علامہ طحطاوی نے یہ خیال کیا کہ: "ان کے کلام سے ظاہر یہ ہے کہ مساوی اسی کے حکم میں ہے جو پانی سے مغلوب نہ ہو۔ اور ان کی عبارت 'والحکم للغالب' (حکم غالب کا ہے) کے تحت یہ آرہا ہے کہ مساوی سے جائز نہیں" ۴ھ (ت) اقول: علما نے اس کی صراحت فرمائی ہے کہ "لا افضل منہ" (اس سے کوئی افضل نہیں) سے مساوات کی بھی نفی ہو جاتی ہے اس لیے کہ وہ انتہائی نادر ہے، معہود یہی ہے کہ باہم کچھ تفاوت ضرور ہوتا ہے۔ تو جب "اس سے افضل" کی نفی ہوگئی تو یہ ثابت ہو گیا کہ وہ اپنے علاوہ سب سے افضل ہے، ایسا ہی یہاں ہے۔ پھر علامہ طحطاوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کو یوں کہنا تھا کہ: ان کے کلام سے ظاہر یہ ہے کہ "مساوی غالب ہی کی طرح ہے" اس لیے کہ اس کا غیر مغلوب ہونا یقینی ہے۔ ہاں، میں نے "جوہرہ" میں دیکھا کہ جب اس میں ایسی چیز مل جائے جو جنس زمین سے نہ ہو اور وہ آمیزہ مٹی سے زیادہ ہو تو جائز نہیں۔

حواشی: ۱۔ فتح المعین باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۹۱ ۲۔ الدر المختار باب التیمم مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۴۲ ۳۔ در مختار باب التیمم مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۴۲ ۴۔ طحطاوی علی الدر المختار باب التیمم مطبع دار المعرفۃ بیروت ۱/ ۱۲۸ صفحہ 696 از 756

Fatawa Razawiyya Volume 3 Regarding Tayammum 1 AH

The following passage was found in Jauhara: "When a substance not belonging to the category of earth is mixed with soil, and the added substance is more than the soil (it is predominant), then performing tayammum with it is not permissible." (End) (T) (From this passage, it occurs to the mind that if the added substance is equal in quantity, tayammum is permissible. 12 M. Alif)

I say: It is (1) if interpreted as I have mentioned; otherwise, it is refuted by the text of Khaniya and by the established principle: "When a prohibitor and a permitter gather, the prohibitor takes precedence." I say: If the same interpretation is applied to this as I have stated, then it is correct; otherwise, the passage in Khaniya stands as evidence against it. This is also a general rule: when a prohibiting and a permitting evidence coincide, preference is given to the prohibiting one. (T)

And apparently, the consideration of predominance here is based on the components themselves. This is unlike water, where the consideration of predominance was also based on nature and based on name, the details and research of which are in our treatise 'An-Nur wal-Nawraq'. It is stated in Hilya: "Then there is no doubt that predominance here is considered based on the components without any disagreement, unlike the case of mixing with water where there is disagreement." Then there is no doubt that here, without any disagreement, the consideration of predominance is by components, whereas in the case of mixing with water, it is not so because there is disagreement in that. (T)

(2) It is absolutely impermissible even if the earth species is predominant. It is stated in Fath-ul-Allah al-Mu'in: "The apparent meaning of Al-Zaylai's words necessitates the absolute non-permissibility of tayammum with what belongs to the earth species if something else not of the earth species is mixed with it, whether the earth species is predominant or not. His text in Al-Muhit says: 'If a pottery shard is made of pure clay, it is permissible, but if it is made of clay mixed with something else not of the earth species, it is not permissible, like glass made from sand and something else not of the earth species. End.'" The apparent requirement of Al-Zaylai's speech is that in this case, tayammum is absolutely not permissible with the earth species when something else not from the earth species is mixed with it, whether the earth species is predominant or not. His text is: In Al-Muhit it was said that when a pottery shard is made of pure clay, it is permissible, and if it is of clay mixed with another substance

not of the earth species, then it is not permissible. For example, glass that is made by mixing sand and something else that is not of the earth species. End. (T)

1 Al-Jauharat-un-Nayyarah, Chapter on Tayammum, Maktabah Imdadiyya Multan, 1/25 2 Hilya 3 Fath-ul-Allah al-Mu'in, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/91

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरा) ब-अत-तयम्मुम १ हि.

जौहरा में यह इबारत नज़र आई: "जब मिट्टी से ग़ैर-जिंस ज़मीन मिल जाए और मिलने वाली चीज़ उससे ज़्यादा हो (कान अक्सरा मिन्हु) तो उससे तयम्मुम जायज़ नहीं।" (अत) (इस इबारत से ख़्याल होता है कि मिलने वाली चीज़ अगर मसावी (बराबर) हो तो तयम्मुम जायज़ है। १२ म. अलिफ़)

अक़ूलु: वहुवा (१) अन अव्वल बिमा ज़करत व इल्ला फ़महजूज बिल-ख़ानिया व बिल-क़ाएदतिल-मुत-तहरिदा इज़ा इज्तमा-अल-हाज़िरु वल-मुबीहु फ़लिल-हाज़िरित-तरजीह। मैं कहता हूँ: अगर इसकी भी वही तावील कर ली जाए जो मैंने बयान की है तो ठीक, वरना इसके ख़िलाफ़ 'ख़ानिया' की इबारत हुज्जत है और यह आम क़ायदा भी कि जब मुहर्रिम (मना करने वाली) और मुबीह (जायज़ करने वाली) दलीलें जमा हों तो तरजीह मुहर्रिम को होगी। (अत)

और ज़ाहिरन यहाँ लिहाज़-ए-ग़ल्बा बा-एतबार-ए-अज्ज़ा ही है। ब-ख़िलाफ़-ए-आब (पानी) कि उसमें एतबार-ए-ग़ल्बा या बा-एतबार-ए-तब-अ व बा-एतबार-ए-इस्म भी था जिसकी तफ़सील व तहक़ीक़ हमारे रिसाला 'अन-नूर वल-नौरक़' में है। 'हिलिया' में है: "फिर इसमें कोई शक नहीं कि यहाँ बिना किसी इख़्तिलाफ़ के अज्ज़ा के लिहाज़ से ग़ल्बा का एतबार है, जबकि पानी से मख़ालितत (मिलने) में ऐसा नहीं क्योंकि उसमें इख़्तिलाफ़ है।" फिर इसमें कोई शक नहीं कि यहाँ बिना किसी इख़्तिलाफ़ के अज्ज़ा के लिहाज़ से ग़ल्बा का एतबार है जबकि पानी से मेल-मिलाप में ऐसा नहीं क्योंकि उसमें मतभेद है। (अत)

(२) मुतलक़न नाजायज़ अगरचे जिंस-ए-अर्ज़ ग़ालिब हो, 'फ़त्हुल्लाह अल-मुईन' में है: ज़ैलाई के कलाम का ज़ाहिर तक़ाज़ा यह है कि इस सूरत में जिंस-ए-ज़मीन से मुतलक़न तयम्मुम जायज़ नहीं, जबकि उससे कोई दूसरी ऐसी चीज़ मिल जाए जो जिंस-ए-ज़मीन से न हो, ख़्वाह जिंस-ए-ज़मीन ग़ालिब हो या न हो। उनकी इबारत यह है: 'मुहीत' में फ़रमाया जब ठिकरी खालिस मिट्टी की हो तो जायज़ है और अगर ऐसी मिट्टी की हो जिसमें कोई दूसरी ऐसी चीज़ मिली हुई हो जो जिंस-ए-ज़मीन से नहीं तो नाजायज़ है। जैसे वह शीशा जो रेत और कोई ऐसी चीज़ मिलाकर बनाया गया हो जो जिंस-ए-ज़मीन से नहीं। इति (समाप्त)। ज़ाहिर कलाम-ए-ज़ैलाई का तक़ाज़ा यह है कि इस सूरत में जिंस-ए-ज़मीन से मुतलक़न तयम्मुम जायज़ नहीं, जबकि उससे कोई दूसरी ऐसी चीज़ मिल जाए जो जिंस-ए-ज़मीन से न हो ख़्वाह जिंस-ए-ज़मीन ग़ालिब हो या न हो। उनकी इबारत यह है: मुहीत में फ़रमाया जब ठिकरी खालिस मिट्टी की हो तो जायज़ है और अगर ऐसी मिट्टी की हो जिसमें कोई दूसरी ऐसी

चीज़ मिली हुई हो जो जिंस-ए-ज़मीन से नहीं तो नाजायज़ है। जैसे वह शीशा जो रेत और कोई ऐसी चीज़ मिलाकर बनाया गया हो जो जिंस-ए-ज़मीन से नहीं। इति। (अत)

१ अल-जौहरतुन नय्यरा, बाब-अत-तयम्मुम, मकतबा इमदादिया मुल्तान, १/२५ २ हिलिया ३ फ़त्हुल्लाह अल-मुईन, बाब-अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची, १/९१

पेज ६९७ ऑफ़ ७५६

فتاوٰی رضویہ جلد سوم بہ التیمم ۱ھـ

جوہرہ میں یہ عبارت نظر آئی: "جب مٹی سے غیر جنس زمین مل جائے اور ملنے والی چیز اس سے زیادہ ہو (کان اکثر منہ) تو اس سے تیمم جائز نہیں۔" اھـ (ت) (اس عبارت سے خیال ہوتا ہے کہ ملنے والی چیز اگر مساوی ہو تو تیمم جائز ہے۔ ۱۲ م۔ الف)

اقول: وھو (۱) ان اول بمأ ذکرت و الا فمحجوج بالخانیة وبالقاعدة المطردة اذا اجتمع الحاظر والمبیح فللحاظر الترجیح۔ اقول: اگر اس کی بھی وہی تاویل کرلی جائے جو میں نے بیان کی ہے تو ٹھیک، ورنہ اس کے خلاف خانیہ کی عبارت حجت ہے اور یہ عام قاعدہ بھی، کہ جب محرّم و مبیح (ناجائز کرنے والی اور جائز کرنے والی دلیلیں) جمع ہوں تو ترجیح محرّم کو ہوگی۔ (ت)

اور ظاہرًا یہاں لحاظ غلبہ باعتبار اجزا ہی ہے۔ بخلاف آب کہ اس میں اعتبار غلبہ یا باعتبار طبع و باعتبار اسم بھی تھا جس کی تفصیل و تحقیق ہمارے رسالہ النور والنورق ہے۔ حلیہ میں ہے: ثم لاشك ان الغلبة هنا معتبرة بالأجزاء بلاخلاف بخلاف المخالطة لماء فان فيه خلافاً۔ پھر اس میں شک نہیں کہ یہاں بغیر کسی اختلاف کے اجزا کے لحاظ سے غلبہ کا اعتبار ہے جب کہ پانی سے مخالطت میں ایسا نہیں کیوں کہ اس میں اختلاف ہے۔ (ت)

(۲) مطلقًا ناجائز اگر چہ جنس ارض غالب ہو فتح اللہ المعین میں ہے: ظاهر كلام الزيلعي يقتضى عدم جواز التيمم بماهو من جنس الارض مطلقًا سواء كانت الغلبة لما هو من جنس الارض ام لا ونصه قال فی المحیط اذا كان الخزف من طين خالص يجوز وان كان من طين خالطه شيئ آخر ليس من جنس الارض لا يجوز كالزجاج المتخذ من الرمل وشيئ آخر ليس من جنس الارض انتهى۔ ظاہر کلام زیلعی کا تقاضا یہ ہے کہ اس صورت میں جنس زمین سے مطلقًا تیمم جائز نہیں، جبکہ اس سے کوئی

دوسری ایسی چیز مل جائے جو جنس زمین سے نہ ہو خواہ جنس زمین غالب ہو یا نہ ہو۔ ان کی عبارت یہ ہے: محیط میں فرمایا جب ٹھیکری خالص مٹی کی ہو تو جائز ہے اور اگر ایسی مٹی کی ہو جس میں کوئی دوسری ایسی چیز ملی ہوئی ہو جو جنس زمین سے نہیں تو نا جائز ہے۔ جیسے وہ شیشہ جو ریت اور کوئی ایسی چیز ملا کر بنایا گیا ہو جو جنس زمین سے نہیں۔ انتہی۔ (ت)

1 الجوھرۃ النیرۃ باب التیمم مکتبہ امدادیہ ملتان ۱/۲۵ 2 حلیہ 3 فتح اللہ المعین باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۹۱

Fatawa Rizvia Volume Three

I say: May Allah Almighty have mercy on Sayyid Azhari and bless us through him. This (prohibition of) Tayammum is neither intended by Imam Zaylai nor inferred from his speech, nor is there any sound reason for it; otherwise, it would also be impermissible with dust because it is mixed, and impermissible with moist earth because of the mixture of moisture, and impermissible even with predominant clay because of the mixing of water. In the same way, many contradictions would arise from the speech of Zaylai himself and the majority of Hanafi Imams. Rather, the discussion here is about manufactured earthenware and glass, where mixing occurs during baking. If inferred from the apparent words of Zaylai, it would be the fourth opinion that follows, not this second one which is completely baseless according to the Madhhab of the Imam (may Allah be pleased with him).

Arabic Text	**Urdu Translation**
فان قلت لم لا يحمل كلام السيد ايضاً على هذا اقول كلا فانه يستدرك به على مسألة الطين وهذا نصه يجوز بطين غير مغلوب بماء لكن ظاهر كلام الزيلعي الخ۔	If there is an objection that why shouldn't Sayyid Azhari's words also be interpreted in the same way? I say (Aqool) it can never be so, because he is making a correction on the issue of soil based on it. His text is: "Tayammum is permissible with such soil that is not overwhelmed by water, but the apparent meaning of Zaylai's words etc." (T)

(3) In the state of rawness, if there is a mixture, the same predominance (Ghalba) is considered as mentioned in the first opinion. And if they are mixed and then baked or burnt, then Tayammum is absolutely permissible because the non-earth elements will burn away, leaving only the pure earth substance. This is the research of the Absolute Researcher (Muhaqqiq 'ala al-Itlaq), and it was considered good in 'al-Hilyah' and affirmed in 'al-Bahr' (And in Hilyah it was declared excellent and in Bahr it was maintained - T). It is in 'Fath al-Qadir':

Arabic Text	**Urdu Translation**
من اجزاء الارض الآجر المشوي على الصحيح الا ان خلط به ما ليس من الارض كذا اطلق فيما رأيت مع ان المسطور في فتاوىٰ قاضيخان التراب اذا خالطه ما ليس من اجزاء الارض تعتبر فيه الغلبة وهذا يقتضي ان يفصل في	According to the correct opinion, baked brick is also from the parts of the earth, provided that something not of the earth's genus is mixed with it. As far as I have seen, the ruling in it is absolute, although it is written in Fatawa Qazikhan that when something not from the parts of earth is mixed in soil, then predominance is considered. Its requirement is that this detail should

Arabic Text	Urdu Translation
المخالط للبن بخلاف المشوي لاحتراق ما فيه مما ليس من اجزاء الارض۔	only be for what is mixed with raw brick (non-earth genus), not in baked brick, because the non-earth elements present in it get burnt away. (T)

1. Fath al-Mu'in, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Karachi, 1/91.
2. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Matba' Nooria Rizvia Sukkur, 1/112.

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

मैं कहता हूँ: अल्लाह अज़्ज़वजल सय्यद अज़हरी पर रहमत फरमाए और उनकी बरकत हम पर हो। यह तैयम्मुम न (१) इमाम ज़ैलई की मुराद है और न उनके कलाम से मुस्तफ़ाद (निकाला गया), और न इसके लिए कोई ठोस वजह है, वरना ग़ुबार से भी नाजायज़ हो जाता क्योंकि वह मख़लूत (मिश्रित) है, नम ज़मीन से भी नाजायज़ हो जाता क्योंकि इसमें तरी का मेल है, मिट्टी के ग़ालिब होने से भी नाजायज़ हो जाता क्योंकि यह पानी का मेल है। इसी तरह खुद ज़ैलई के कलाम और जम्हूर आइमा-ए-हनफिया के कलाम से इस पर बहुत से नक़ूज़ (विरोध) वारिद होंगे। बल्कि यहाँ बात ईंट और कांच की हो रही है जो बनाई जाती हैं, जहाँ पकाने के साथ मिलावट होती है। अगर ज़ैलई के ज़ाहिरी शब्दों से अर्थ लिया जाए तो चौथा क़ौल होगा जो आगे आएगा, न कि यह दूसरा, जो इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मज़हब पर बिलकुल बे-अस्ल (आधारहीन) है।

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद
فان قلت لم لا يحمل كلام السيد ايضاً على هذا اقول كلا فانه يستدرك به على مسألة الطين وهذا نصه يجوز بطين غير مغلوب بماء لكن ظاهر كلام الزيلعي الخ۔	अगर यह ऐतराज़ हो कि सय्यद अज़हरी के कलाम को भी क्यों न इसी पर महमूल किया जाए? अक़ूल (मैं कहूँगा) ऐसा हरगिज़ न हो पाएगा इसलिए कि वह इससे मिट्टी के मसले पर इस्तिदराक (सुधार) कर रहे हैं, उनकी इबारत यह है: "तैयम्मुम ऐसी मिट्टी से जायज़ है जो पानी से मग़लूब न हो लेकिन ज़ाहिर कलाम ज़ैलई इल्ख़"। (त)

(३) कच्ची हालत में जो आमेज़िश (मिश्रण) हो उसमें उसी ग़ालिब होने का एतबार है जो पहले क़ौल में गुज़रा। और अगर मिला कर पकाएं या जलाएं तो मुतलक़न तैयम्मुम जायज़ है क्योंकि ग़ैर-जिन्स (जो ज़मीन की प्रजाति से नहीं है) के अज़्ज़ा जल कर ख़ाली जिन्स-ए-अर्ज़ (शुद्ध ज़मीन का तत्व) रह जाएगी। यह तहक़ीक़ मुहिक़्क़-अलल-इतलाक की है और 'अल-हिलिया' में इसे बेहतर क़रार दिया गया और 'अल-बहर' में इसे बरक़रार रखा गया। 'फ़तह अल-क़दीर' में है:

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद
من اجزاء الارض الآجر المشوي على الصحيح الا ان خلط به ما ليس من الارض كذا اطلق فيما رأيت مع ان	क़ौल-ए-सहीह पर ज़मीन के ही अज़्ज़ा (हिस्सों) से बनी पकी हुई ईंट भी है, मगर यह कि उसमें वह चीज़ मिली हुई हो जो ज़मीन की जिन्स से नहीं है। मैंने जहाँ तक देखा

अरबी इबारत	उर्दू अनुवाद
المسطور في فتاوىٰ قاضيخان التراب اذا خالطه ما ليس من اجزاء الارض تعتبر فيه الغلبة وهذا يقتضي ان يفصل في المخالط للبن بخلاف المشوي لاحتراق ما فيه مما ليس من اجزاء الارض۔	इसमें हुक्म इसी तरह मुतलक़ है, हालाँकि फ़तावा क़ाज़ीख़ां में यह तहरीर है कि मिट्टी में जब कोई ऐसी चीज़ मिल जाए जो ज़मीन के अज्ज़ा में से न हो तो उसमें ग़ालिब होने का एतबार है और इसका तक़ाज़ा यह है कि कच्ची ईंट में मिलने वाली (ग़ैर-जिन्स ज़मीन) में ही यह तफ़सील की जाए, पकी हुई में नहीं क्योंकि उसमें जो ग़ैर-जिन्स के अज्ज़ा होते हैं वे जल जाते हैं। (त)

---

1. फ़तह अल-मुईन, बाब-अत-तैयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी कराची १/ ९१
2. फ़तह अल-क़दीर, बाब-अत-तैयम्मुम, मतबअ नूरया रज़विया सुक्खर १/ ११२

اقول: اللہ عزوجل سید ازہری پر رحمت فرمائے اور ان کی برکت سے ہم پر۔ یہ تیمم نہ (۱) امام زیلعی کی مراد نہ ان کے کلام سے مستفاد، نہ اس کے لیے وجہ سداد ورنہ غبار سے بھی ناجائز ہو کہ مخلوط ہے تر زمین سے بھی ناجائز کہ تری کا خلط ہے طین غالب سے بھی ناجائز ہو کہ پانی کا میل ہے اسی طرح بہت نقوض خود کلام زیلعی و جماہیر ائمہ حنفیہ سے اس پر وارد ہوں گے بلکہ یہاں کلام خزف وزجاج مصنوع میں ہے کہ دونوں میں طبخ کے ساتھ خلط ہوتا ہے تو اگر ظاہر زیلعی سے مستفاد ہوگا تو قول چہارم کہ آتا ہے نہ یہ دوم کہ مذہب صاحب مذہب رضی اللہ تعالٰی عنہ پر محض بے اصل ہے۔

عربی عبارت	**اردو ترجمہ**
فان قلت لم لا يحمل كلام السيد ايضاً على هذا اقول كلا فانه يستدرك به على مسألة الطين وهذا نصه يجوز بطين غير مغلوب بماء لكن ظاهر كلام الزيلعي الخ۔	اگر یہ اعتراض ہو کہ سید ازہری کے کلام کو بھی کیوں نہ اسی پر محمول کیا جائے۔ اقول (میں کہوں گا) ایسا ہرگز نہ ہو پائے گا اس لیے کہ وہ اس سے مٹی کے مسئلہ پر استدراک کر رہے ہیں ان کی عبارت یہ ہے: "تیمم ایسی مٹی سے جائز ہے جو پانی سے مغلوب نہ ہو لیکن ظاہر کلام زیلعی الخ"۔ (ت)

(۳) بحالت خامی جو خلط ہو اس میں اسی غلبہ کا اعتبار ہے جو قول اول میں گزرا اور ملا کر پکائیں جلائیں تو مطلقاً تیمم جائز ہے کہ غیر جنس کے اجزاء جل کر خالی جنس ارض رہ جائے گی یہ بحث محقق علی الاطلاق کی ہے واستحسنه في الحلية واقره في البحر (اور حلیہ میں اسے عمدہ قرار دیا اور بحر میں اسے برقرار رکھا ت) فتح القدیر میں ہے :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
من اجزاء الارض الآجر المشوي على الصحيح الا ان خلط به ما ليس من الارض كذا اطلق فيما رأيت مع ان المسطور في فتاوىٰ قاضيخان التراب اذا خالطه ما ليس من اجزاء الارض تعتبر فيه الغلبة وهذا يقتضي ان يفصل في المخالط للبن بخلاف المشوي لاحتراق ما فيه مما ليس من اجزاء الارض 2-	قول صحیح پر اجزائے زمین ہی سے پکی ہوئی اینٹ بھی ہے مگر یہ کہ اس سے وہ چیز ملی ہوئی ہو جو جنس زمین سے نہیں میں نے جہاں تک دیکھا اس میں حکم اسی طرح مطلق ہے حالانکہ فتاویٰ قاضیخان میں یہ تحریر ہے کہ مٹی میں جب کوئی ایسی چیز مل جائے جو اجزائے زمین سے نہ ہو تو اس میں غلبہ کا اعتبار ہے اور اس کا تقاضا یہ ہے کہ کچی اینٹ سے ملنے والی (غیر جنس زمین) میں ہی یہ تفصیل کی جائے، پکی میں نہیں کیونکہ اس میں جو غیر جنس کے اجزا ہوتے ہیں وہ جل جاتے ہیں۔ (ت)

---

1. فتح المعین باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۹۱
2. فتح القدیر باب التیمم مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۱۲

Fatawa Razawiyyah Volume 3

In 'Hulyah' it is stated:

Arabic Text: If tayammum is performed with a shard, if it was made of pure soil and no medicine was placed in it, it is permissible whether there was dust on it or not. But if some medicine was placed in it, if there is dust on it, it is permissible; and if there is no dust on it, it is not permissible. This is stated in 'Al-Khaniyah'. In 'Al-Khulasah', it is stated regarding the new shard that there is a difference of opinion. Meaning, according to Abu Hanifa, it is permissible. From Muhammad, there are two narrations, and the view of Abu Yusuf is hesitant. Then he said: unless some medicine is used in it, then it is not permissible at that time. End. This absolute prohibition is problematic compared to the upcoming ruling regarding the mixing of ash with soil when the soil is predominant, and according to what is written in 'Fatawa Al-Khaniyah' and 'Al-Zahiriyah' and others, that if soil is mixed with something that is not part of the earth, other than ash, the predominance is also considered. For this necessitates that this detail applies to what is mixed with raw bricks, not baked ones, because non-earthly components in them are burned away by fire, as our Shaykh, the Researcher (may Allah have mercy on him), pointed out, let alone stating non-permissibility without detail when something else is mixed with it.

Urdu Text: Matn (Text): If tayammum was performed with a shard, and if it was made of pure soil and no medicine was put into it, then it is permissible. Sharah (Explanation): Whether there is some dust on it or not. Then if some medicine was mixed in it, and if there is some dust on it, it is permissible. Matn: And if there is no dust on it. Sharah: Then it is not permissible. It is similar in Khaniyah. And in Khulasah it is like this: and there is a difference of opinion regarding a new shard, meaning it is permissible according to Imam Abu Hanifa, and there are two narrations from Imam Muhammad, and the statement of Imam Abu Yusuf is hesitant. Then he said: but when some medicine is used in it, then at that time it is not permissible (End). This absolute application of non-permissibility is problematic due to the ruling that is about to come regarding mixing soil with ash when the soil is predominant. And also from what is written in Fatawa Khaniyah and Zahiriyah etc. that when something is mixed with soil which is not part of the earth, other than ash, then in that too the predominance is considered. Because its requirement is that this detail should be applied to that thing which is mixed with raw brick, not in baked brick because in it the non-earthly parts are burnt by fire as our Shaykh, the Researcher (Rehmatullah

Alaihi), has cautioned. In the case of something else being mixed with it, stating non-permissibility without detail is far-fetched. (T)

---

1 Hulyah Page 699 of 756

फतावा रजविया जिल्द 3

'हुलिया' में है:

अरबी पाठ: यदि ठीकरी से तयम्मुम किया जाए, यदि वह शुद्ध मिट्टी से बनी हो और उसमें कोई दवा न डाली गई हो, तो वह जायज़ है, चाहे उस पर धूल हो या न हो। लेकिन यदि उसमें कोई दवा डाली गई हो, तो यदि उस पर धूल है, तो जायज़ है; और यदि उस पर धूल नहीं है, तो जायज़ नहीं है। ऐसा 'अल-खनिया' में उल्लेखित है। 'अल-खुलासा' में नई ठीकरी के बारे में मतभेद बताया गया है। अर्थात, अबू हनीफा के अनुसार यह जायज़ है। मुहम्मद से दो रिवायतें हैं, और अबू यूसुफ का मत संदिग्ध है। फिर उन्होंने कहा: जब तक कि उसमें कोई दवा इस्तेमाल न की जाए, तब उस समय यह जायज़ नहीं है। (समाप्त)। यह पूर्ण निषेध उस आगामी हुक्म के मुकाबले में समस्यापूर्ण है जो मिट्टी में राख मिलाने के बारे में है जब मिट्टी प्रधान हो, और 'फतावा अल-खनिया' और 'अल-ज़हीरिया' आदि में जो लिखा है उसके अनुसार, कि यदि मिट्टी में राख के अलावा ऐसी कोई चीज़ मिला दी जाए जो ज़मीन का हिस्सा नहीं है, तो उसमें भी प्रधानता का विचार किया जाता है। क्योंकि इसके लिए यह आवश्यक है कि यह विवरण कच्ची ईंटों के साथ मिश्रित चीज़ों पर लागू हो, पकी हुई ईंटों पर नहीं, क्योंकि उनमें गैर-मिट्टी के घटक आग से जल जाते हैं, जैसा कि हमारे शेख, शोधकर्ता (अल्लाह उन पर रहम करे) ने संकेत दिया है, किसी अन्य चीज़ के मिलने की स्थिति में बिना विवरण के अ-जायज़ होने का उल्लेख करना तो दूर की बात है।

उर्दू पाठ: मत्न (मूल पाठ): अगर ठीकरी से तयम्मुम किया, तो वह अगर खालिस मिट्टी से बनी हो और उसमें कोई दवा न डाली गई हो तो जायज़ है। शराह (व्याख्या): चाहे उस पर कुछ धूल हो या न हो। फिर अगर उसमें कोई दवा मिलाई गई हो और अगर उस पर कुछ धूल हो तो जायज़ है। मत्न: और अगर उस पर कोई धूल न हो। शराह: तो जायज़ नहीं। ऐसा ही खनिया में है। और खुलासा में यूँ है: और नई ठीकरी में मतभेद है यानी इमाम अबू हनीफा के नज़दीक जायज़ है और इमाम मुहम्मद से दो रिवायतें हैं और इमाम अबू यूसुफ का कौल मुतरद्दिद (संदिग्ध) है। फिर फरमाया: मगर जब उसमें कोई दवा इस्तेमाल हो तो उस वक्त जायज़ नहीं (अह)। इस अदम-ए-जवाज़ (अ-जायज़ होने) के इतलाक (व्यापक प्रयोग) में इशकाल (कठिनाई) उस हुक्म से होता है जो अनकरीब मिट्टी से राख के मखलूत (मिश्रित) होने के बारे में आ रहा है जबकि मिट्टी गालिब (प्रधान) हो। और उस से भी जो फतावा खनिया व ज़हीरिया वगैरहमा में मरकूम (लिखा हुआ) है कि जब मिट्टी में राख के अलावा कोई ऐसी चीज़ मखलूत हो जाए जो अजज़ा-ए-ज़मीन (ज़मीन का हिस्सा) से नहीं, तो उसमें भी गलबा

(प्रधानता) का एतबार है। क्योंकि इसका तकाज़ा यह है कि यह तफ़सील उस चीज़ में जारी हो जो कच्ची ईंट से मिली हुई हो, पकी ईंट में नहीं क्योंकि उसमें गैर अजज़ा-ए-ज़मीन आग से जल जाते हैं जैसा कि उस पर हमारे शेख मुहक़्क़िक़ (रहमतुल्लाह अलैहि) ने तन्बीह फरमाई है। उससे कोई और चीज़ मिलने की सूरत में बिला तफ़सील अदम-ए-जवाज़ का इतलाक तो दूर किनार है। (त)

---

1 हुलिया पृष्ठ 756 का 699

حلیہ میں ہے :

عربی متن: لو تیمم بخزف ان کان متخذا من التراب الخالص ولم یجعل فیه شیئ من الادویة جاز سواء کان علیه غبار اولم یکن فان جعل فیه شیئ من الادویة فان کان علیه غبار جاز و ان لم یکن علیه غبار ش لایجوز کذا فی الخانیة وفی الخلاصة والخزف الجدید علی الاختلاف یعنی عند ابي حنیفة یجوز وعن محمد روایتان و قول ابي یوسف متردد ثم قال الا اذا استعمل فیه شیئ من الادویة فحینئذ لا یجوز اھ ویشکل اطلاق ھذا بالحکم الآتی عن قریب فی اختلاط الرماد بالتراب اذ کان التراب غالبا وبما ھو المسطور فی الفتاوی الخانیة والظھیریة وغیرھما ان التراب اذا خالطه مما لیس من اجزاء الارض غیر الرماد انه ایضا تعتبر فیه الغلبة فان ھذا یقتضی جریان ھذا التفصیل فی المخالط للبن النیئ بخلاف المشوي لاحترق کما نبه علیه شیخنا المحقق رحمه اللہ تعالی فضلا عن اطلاق عدم الجواز اذا خالطه شیئ من ذلك من غیر تفصیل۔

اردو ترجمہ: متن: اگر ٹھیکری سے تیمم کیا تو وہ اگر خالص مٹی سے بنی ہو اور اس میں کوئی دوا نہ ڈالی گئی ہو تو جائز ہے۔ شرح: خواہ اس پر کچھ غبار ہو یا نہ ہو پھر اگر اس میں کوئی دوا ملائی گئی ہو واگر اس پر کچھ غبار ہو تو جائز ہے۔ متن: اور اگر اس پر کوئی غبار نہ ہو۔ شرح: تو جائز نہیں۔ ایسا ہی خانیہ میں ہے۔ اور خلاصہ میں یوں ہے: اور نئی ٹھیکری میں اختلاف ہے یعنی امام ابوحنیفہ کے نزدیک جائز ہے اور امام محمد سے دو روایتیں ہیں اور امام ابویوسف کا قول متردد ہے۔ پھر فرمایا: مگر جب اس میں کوئی دوا استعمال ہو تو اس وقت جائز نہیں اھ اس عدم جواز کے اطلاق میں اشکال اس حکم سے ہوتا ہے جو عنقریب مٹی سے راکھ کے مخلوط ہونے کے بارے میں آرہا ہے جب کہ مٹی غالب ہو۔ اور اس سے بھی جو فتاوٰی خانیہ و ظہیریہ

وغیرہما میں مرقوم ہے کہ جب مٹی میں راکھ کے علاوہ کوئی ایسی چیز مخلوط ہوجائے جو اجزائے زمین سے نہیں، تو اس میں بھی غلبہ کا اعتبار ہے۔ کیونکہ اس کا تقاضا یہ ہے کہ یہ تفصیل اس چیز میں جاری ہو جو کچی اینٹ سے ملی ہوئی ہو، پکی اینٹ میں نہیں کیونکہ اس میں غیر اجزائے زمین آگ سے جل جاتے ہیں جیسا کہ اس پر ہمارے شیخ محقق رحمۃ اللہ علیہ نے تنبیہ فرمائی ہے۔ اس سے کوئی اور چیز ملنے کی صورت میں بلا تفصیل عدم جواز کا اطلاق تو دور کنار ہے۔ (ت)

---

1 حلیہ صفحہ 699 از 756

Fatawa Razawiyya Volume 3

I say: The truth is that the basis [of the ruling] depends upon the destruction or survival of foreign (non-earth) components. Just as it is not necessary for other components to remain after cooking or burning, it is also not necessary for them to vanish. Rather, the assessment depends on those specific components and the intensity of burning. If all foreign components are burnt away, then permission (for use in Tayammum) is undoubtedly granted, and there is no room for disagreement according to the Imam's school. If they were dominant over the earth components and remained dominant after burning, then by consensus, it is not permitted. If they were dominated, or have now become dominated after a part of them vanished through burning, then there is a disagreement between the previously mentioned first opinion and the upcoming fourth opinion. The reason why the Muhaqqiq 'al-Itlaq' (the Absolute Investigator) found no room for detail in baked brick is because of what we previously alluded to: that brick clay usually contains a mixture of straw and chaff which vanish through burning. Therefore, the absolute application of this to pottery (Khazaf), as occurred in 'Hilyah', is not correct. And Allah Almighty knows best.

(4) In raw (unfired) clay, mixing follows the same detail of dominance. But when mixing and firing it, the prohibition of earth components is absolute, whether they are dominant or dominated. This is the apparent meaning of the aforementioned words from Al-Muhit, Zayla'i, and Tanwir, and it is derived from the text of 'Khulasa' which just passed from 'Hilyah'. This is also the import of Tajnis, Khaniyah, and Bazzaziyah. It is stated in Wajiz al-Kardari:

Arabic Text	**Urdu Translation**
Pottery is subject to disagreement unless some medicinal substance is put into it. [1]	There is a disagreement regarding pottery (Khazaf), except when some medicine has been added to it. (T)

It is stated in [Al-Bahr [ar-Ra'iq]]:

Arabic Text	**Urdu Translation**
And similarly for pure pottery, unless it is mixed with something that is not of the nature of the earth, or if there is a dye on it that is not of the nature of the	And similarly from pure pottery (shards). Except when it is mixed with something that is not from the earth, or it has been colored with a dye that is not from the

Arabic Text	Urdu Translation
earth. This is how it was stated absolutely in Al-Tajnis, Al-Muhit, and others, despite what is recorded in Qadi Khan until the end of what was cited from Al-Fath. [2]	nature of the earth. It has been stated absolutely in Tajnis and Muhit etc., even though it is written in Qadi Khan: after that until the end is what passed with reference to Fath al-Qadir. (T)

In [Fath [al-Qadir]] itself it is said: whatever books we have examined, all of them state the ruling of prohibition in case of mixing as absolute, as preceded (as passed before. T). However, one 'Jawhara' mentioned the condition of dominance in this issue of pottery, as preceded at the beginning of this issue (as passed in the beginning. T).

---

[1] Fatawa Bazzaziyah with Al-Alamgiri, Fifth [volume] on Tayammum, Nurani Kutub Khana Press, Peshawar, 4/174. [2] Al-Bahr ar-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Press, Karachi, 1/248.

फतावा रज़विया जिल्द 3

मैं कहता हूँ: सत्य यह है कि आधार गैर-जातीय (मिट्टी के अलावा) हिस्सों के नष्ट होने या बचने पर है। पकाने या जलाने में जिस तरह यह आवश्यक नहीं कि अन्य हिस्से शेष रहें, यह भी आवश्यक नहीं कि वे नष्ट हो जाएं। बल्कि, उन विशिष्ट हिस्सों और जलने की मात्रा पर दृष्टि होगी। यदि सभी गैर-जातीय हिस्से जल गए, तो बिना संदेह अनुमति (जवाज़) है, जिसमें इमाम के मत पर मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है। और यदि वे पृथ्वी के तत्वों पर हावी थे और जलने के बाद भी हावी रहे, तो सर्वसम्मति (इजा़मा) से अनुमति नहीं है। और यदि वे दबे हुए (मग़लूब) थे या अब जलने से एक हिस्सा नष्ट होकर दब गए, तो पिछले पहले मत और आने वाले चौथे मत के बीच मतभेद है। मुहक़्क़िक़ अल-इतलाक़ को पकी हुई ईंट में विवरण (तफ़सील) के निषेध की गुंजाइश इस कारण हुई जिसकी ओर हमने पहले संकेत किया था कि ईंट की मिट्टी में आम तौर पर तिनके और भूसा मिला होता है जो जलने से नष्ट हो जाते हैं। इसलिए, मिट्टी के बर्तनों (खज़फ़) में इसका निरपेक्ष (मुतलक़) अनुप्रयोग जैसा कि 'हिल्या' में हुआ, सही नहीं है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

(४) कच्ची मिट्टी में मिश्रण का विवरण उसी प्रधानता (ग़लबा) पर आधारित है। लेकिन मिलाकर पकाने में, प्रतिबंध निरपेक्ष है, चाहे पृथ्वी के तत्व हावी हों या दबे हुए। अल-मुहीत, ज़ैलई और तनवीर के उपर्युक्त शब्दों का यही स्पष्ट अर्थ है, और यही 'ख़ुलासा' के उस पाठ से प्राप्त होता है जो अभी 'हिल्या' के संदर्भ में गुज़रा। तजनीस, खानिया और बज़ाज़िया का निष्कर्ष भी यही है। वजीज़-ए-करदरी में है:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
मिट्टी के बर्तनों (खज़फ़) पर मतभेद है, जब तक कि उसमें कोई औषधि न डाली गई हो। [1]	खज़फ़ में मतभेद है, सिवाय इसके कि जब उसमें कोई दवा डाल दी गई हो। (त)

बह्र में है:

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद**
और इसी तरह शुद्ध मिट्टी के बर्तन, जब तक कि वह ऐसी चीज़ के साथ मिश्रित न हो जो पृथ्वी की प्रकृति की न हो, या उस पर ऐसा रंग हो जो पृथ्वी की प्रकृति का न हो। इसी तरह	और इसी तरह शुद्ध खज़फ़ (ठीकरी) से। मगर जब वह किसी ऐसी चीज़ से मिश्रित हो जो ज़मीन से नहीं है, या उस पर ज़मीन की प्रकृति के अलावा किसी चीज़ का रंग चढ़ाया गया हो। तजनीस और मुहीत

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
अल-तजनीस, अल-मुहीत और अन्य में निरपेक्ष रूप से कहा गया है, इसके बावजूद कि क़ाज़ी खान में अंत तक वह दर्ज है जो अल-फ़तह के हवाले से गुज़रा। [2]	आदि में इसे इसी तरह निरपेक्ष रूप में वर्णित किया गया है, बावजूद इसके कि क़ाज़ी खान में यह अंकित है: इसके बाद अंत तक वह है जो फ़तह अल-क़दीर के हवाले से गुज़रा। (त)

स्वयं फ़तह में कहा गया है कि हमने जितनी भी पुस्तकें देखीं, उन सभी में मिश्रण की स्थिति में निषेध (मना) का आदेश इसी तरह निरपेक्ष (मुतलक़) है, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। अलबत्ता, एक 'जौहरा' ने मिट्टी के बर्तन (खज़फ़) के इस मसले में प्रधानता (ग़लबा) की शर्त का उल्लेख किया है, जैसा कि इस मसले की शुरुआत में गुज़रा।

---

[1] फ़तावा बज़ाज़िया साथ में आलमगीरी, पाँचवां (भाग) तयम्मुम पर, नूरानी कुतुब ख़ाना प्रेस, पेशावर, ४/१७४। [2] अल-बहर अर-राइक़, तयम्मुम का अध्याय, एच. एम. सईद कंपनी प्रेस, कराची, १/२४८।

पृष्ठ ७०० का ७५६

اقول: حق یہ ہے کہ مدار فناء و بقائے اجزائے غیر جنس پر ہے، پکانے، جلانے، میں جس طرح یہ ضرور نہیں کہ اجزائے دگر باقی رہیں یہ بھی ضرور نہیں کہ فناء ہو جائیں، بلکہ نظر ان خصوص اجزا اور مقدار احراق پر ہوگی، اگر اجزائے غیر سب جل گئے تو بلاشبہ جواز ہے جس میں مذہب امام پر خلاف کی گنجائش نہیں اور اگر اجزائے ارض پر غالب تھے اور بعد احراق بھی غالب رہے تو بالا جماع عدم جواز ہے، اور اگر مغلوب تھے یا اب احراق سے ایک حصہ فناہو کر مغلوب ہو گئے تو قول اول گذشتہ اور قول چہارم آئندہ کا اختلاف ہے، محقق علی الاطلاق کو خشت پختہ میں نفی تفصیل کی گنجائش اس وجہ سے ہوئی جس کی طرف سابقاً ہم نے اشارہ کیا کہ اینٹ کی مٹی میں عادۃً خلط ہوتا ہے تو خس و خاشاک کا کہ وہ احراق سے فنا ہو جاتے ہیں تو خزف ۲ میں مطلقاً اس کا اجرا جیسا کہ حلیہ میں واقع ہوا صحیح نہیں واللہ تعالٰی اعلم۔

(۴) خام میں خلط اسی تفصیل غلبہ پر ہے اور ملا کر پکانے میں مطلقاً ممانعت اجزائے ارضیہ غالب ہوں خواہ مغلوب یہی ظاہر کلام مذکور المحیط و زیلعی و تنیہ اور یہی اس عبارتِ خلاصہ سے مستفاد جو ابھی حلیہ سے گزری اور یہی مفاد ۵ تجنیس و خانیہ و بزاز یہ ہے وجیزہ کر دری میں ہے:

| الخزف علی الخلاف الااذا جعل فیه شیئ من الادویة 1۔ | خزف میں اختلاف ہے مگر جب کہ اس میں کوئی دواہ ڈال دی گئی ہو۔ (ت) |

بحر میں ہے:

| وکذا بالخزف الخالص الااذاکان مخلوطاً بمالیس منجنس الارض اوکان علیه صبغ لیس من جنس الارض کذا اطلق في التجنیس والمحیط وغیرهما مع ان المسطور في قاضیخان الی آخر مامرر عن الفتح 2۔ | اور ایسے ہی خالص خزف (ٹھیکری) سے۔ مگر جب وہ کسی ایسی چیز سے مخلوط ہو جس زمین سے نہیں ،یا اس پر جنس زمین کے علاوہ کسی چیز کا رنگ چڑھایا گیا ہو تجنیس اور محیط وغیرہما میں ایسے ہی مطلق بیان کیا ہے باوجودیکہ قاضیخان میں یہ مرقوم ہے: اس کے بعد آخر تک وہ ہے جو فتح القدیر کے حوالہ سے گزرا۔ (ت) |

خود فتح میں فرمایا کہ ہم نے جتنی کتابیں ملاحظہ فرمائیں سب میں بحال خلط حکم منع یونہی مطلق ہے کما تقدم (جیسا کہ پہلے گزر چکا۔ ت) البتہ ایک جوہرہ نے اس مسئلہ خزف میں شرط غلبہ ذکر کی کما سبق فی صدر هذا المسألة (جیسا کہ اس مسئلہ کے شروع میں گزرا۔ ت)

---

1 فتاوی بزازیہ مع العالمگیری الخامس فی التیمم مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۱۷۴/۴ 2 البحر الرائق باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۲۴۸

Fatawa Razawiyya Volume Three

I say: But they did not mention any authority for it, and they stand alone in this, despite the testimony of Imam al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq. Rather, in [Al-]Ghiyathiyya, a consensus is reported on this:

[Arabic]: 1 حيث قال الخزف اذا استعمل فيه شيئ من الادوية حينئذ لايجوز بالتيمم به بالاجماع. [English]: As it is said: "When earthenware (khazaf) has had some medicine used in it, then at that time, performing Tayammum with it is not permissible by consensus." (T)

I say: [The authors of] Al-Fath, Al-Hilya, and Al-Bahr rely here on the Fatawa of Imam Qadi Khan, stating that the dominant factor is what matters. However, the expert jurist (faqih al-nafs) himself, in this same issue of earthenware, maintained an absolute prohibition when mixed, as he said:

[Arabic]: لو تيمم بالخزف ان كان عليه غبار جاز ان لم يكن عليه غبار فان كان متخذا من التراب الخالص ولم يجعل فيه شيئ من الادوية جاز و ان جعل فيه شيئ من الادوية ولم يكن علمه غبار لايجوز۔ [English]: If one performs Tayammum with earthenware, it is permissible if there is dust on it. If there is no dust on it, then the case is: if it was made from pure earth and no medicine was put into it, it is permissible. But if some medicine was put into it and there is no dust on it, it is not permissible. (T)

Where there was a general rule that:

[Arabic]: 2 التراب اذا خالطه ماليس من اجزاء الارض يعتبر فيه الغلبة. [English]: When earth is mixed with what is not from the elements of the earth, the dominance (preponderance) is taken into consideration. (T)

Then here the general rule is:

[Arabic]: 3 وان جعل فيه شيئ من الادوية لا يجوز. [English]: And if some medicine is put into it, it is not permissible. (T)

This [prohibition] could be interpreted as the state of dominance, specifically the state where it hasn't been cooked (fired).

[Arabic]: واستشهد له في الحلية بما في مختارات النوازل يجوز التيمم بالخزف هو الصحيح وبما في خزانة الفتاوى يجوز۔ [English]: In Al-Hilya, this was supported by two passages: (1) Mukhtarat al-Nawazil: "Tayammum with earthenware is permissible, which is the correct view." (2) Khizanat al-Fatawa: "(With) earthenware it is permissible."

Footnotes: 1. Fatawa Ghiyathiyya, Chapter of Tayammum, Maktaba Islamiyya, Quetta, p. 17. 2. Fatawa Qadi Khan, Section on what is permissible for Tayammum, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/29. 3. Fatawa Qadi Khan, Section on what is permissible for Tayammum, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/29.

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन

मैं कहता हूँ: परन्तु उन्होंने इसके लिए कोई प्रमाण उल्लेख नहीं किया और वे इमाम अल-मुहक्क़िक़ अला अल-इतलाक़ की गवाही के विरुद्ध इसमें अकेले हैं, बल्कि गयासिया में इसी पर आम सहमति (इज्मा) उद्धृत की गई है:

[अरबी]: حيث قال الخزف اذا استعمل فيه شيئ من الادوية حينئذ لايجوز بالتيمم به بالاجماع
1. [हिन्दी]: उनका कहना यह है कि "जब मिट्टी के बर्तन (खज़फ़) में किसी औषधि का प्रयोग किया गया हो, तो उस समय आम सहमति से उससे तयम्मुम करना जायज़ नहीं है।" (त)

मैं कहता हूँ: अल-फतह, अल-हिलिया और अल-बहर यहाँ इमाम क़ाज़ी ख़ान के फ़तवों पर भरोसा करते हैं कि प्रबलता (ग़ालिब) का ही विचार किया जाता है। लेकिन स्वयं विशेषज्ञ न्यायविद्(फ़क़ीह अल-नफ़्स) ने मिट्टी के बर्तनों के इसी मसले में मिश्रण की स्थिति में पूर्ण निषेध रखा है, जैसा कि उन्होंने फ़रमाया:

[अरबी]: ان كان عليه غبار جاز ان لم يكن عليه غبار فان كان متخذا من فخارلو تيمم بال تراب الخالص ولم يجعل فيه شيئ من الادوية جاز و ان جعل فيه شيئ من الادوية ولم يكن علمه غبار لايجوز۔ [हिन्दी]: यदि मिट्टी के बर्तन से तयम्मुम किया गया, तो यदि उस पर धूल है, तो जायज़ है। और यदि उस पर धूल नहीं है, तो यह स्थिति है कि यदि वह शुद्ध मिट्टी से बना हो और उसमें कोई औषधि न डाली गई हो, तो जायज़ है। और यदि उसमें कोई औषधि डाली गई हो और उस पर धूल न हो, तो वह जायज़ नहीं है। (त)

जहाँ वह सामान्य नियम था कि:

[अरबी]: 2 التراب اذا خالطه ماليس من اجزاء الارض يعتبر فيه الغلبة. [हिन्दी]: मिट्टी में जब ऐसी चीज़ मिला दी जाए जो मिट्टी का हिस्सा न हो, तो उसमें प्रबलता (ग़ालबा) का विचार किया जाता है। (त)

तो यहाँ यह सामान्य नियम है कि:

[अरबी]: 3 وان جعل فيه شيئ من الادوية لا يجوز. [हिन्दी]: और यदि उसमें कोई औषधि डाली गई हो, तो वह जायज़ नहीं है। (त)

यह स्थिति प्रबलता की अवस्था पर आधारित हो सकती है, जो बिना पकाए जाने की अवस्था है।

[अरबी]: واستشهد له في الحلية بما في مختارات النوازل يجوز التيمم بالخزف هو الصحيح وبما في خزانة الفتاوى يجوز۔ [हिन्दी]: हिलिया में इस पर इन दो उद्धरणों से समर्थन लिया गया है: (1) मुख़्तारात अन-नवाज़िल: "मिट्टी के बर्तन से तयम्मुम जायज़ है। यही सही है।" (2) ख़ज़ानतुल फ़तावा: "मिट्टी के बर्तन से (जायज़ है)"

पादलेख: 1. फतावा गयासिया, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा इस्लामिया क्वेटा, पृ. 17। 2. फतावा काजी खान, तयम्मुम के जायज़ होने का खंड, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ 1/29। 3. फतावा काजी खान, तयम्मुम के जायज़ होने का खंड, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ 1/29।

पृष्ठ 701/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

اقول: مگر انہوں نے کوئی سند ذکر نہ کی اور وہ بشادت امام محقق علی الاطلاق اس میں منفرد ہیں بلکہ غیاثیہ میں اسی پر اجماع نقل کیا :

حیث قال الخزف اذا استعمل فیه شیئ من الادویة حینئذ لایجوز بالتیمم به بالاجماع 1۔ | ان کا کلام یہ ہے کہ "خزف میں جب کوئی دوا استعمال کی جائے تو اس وقت اس سے تیمم بالاجماع جائز نہیں۔" (ت)

اقول: فتح و حلیہ و بحر یہاں فتاوٰی امام قاضیخان سے استناد فرماتے ہیں کہ اعتبار غالب کا ہے مگر خود امام فقیہ النفس نے اسی مسئلہ خزف میں بحال خلط منع مطلق رکھا کہ فرمایا :

لو تیمم بالخزف ان کان علیه غبار جاز ان لم یکن علیه غبار فان کان متخذا من التراب الخالص ولم یجعل فیه شیئ من الادویة جاز و ان جعل فیه شیئ من الادویة ولم یکن علمه غبار لایجوز۔ | اگر خزف سے تیمم کیا تو اگر اس پر غبار ہو، جائز ہے اور اگر اس پر غبار نہ ہو تو یہ صورت ہے کہ اگر وہ خالص مٹی کی بنی ہو اور اس میں کوئی دوا نہ پڑی ہو تو جائز ہے اور اگر اس میں کوئی دوا پڑی ہو اور اس پر کوئی غبار نہ ہو تو نا جائز ہے۔ (ت)

وہاں اگر وہ اطلاق تھا کہ :

التراب اذا خالطه مالیس من اجزاء الارض یعتبر فیه الغلبة 2۔ | مٹی میں جب غیر اجزائے زمین سے کچھ مخلوط ہو جائے تو اس میں غلبہ کا اعتبار ہے۔ (ت)

تو یہاں یہ اطلاق ہے کہ :

وان جعل فیه شیئ من الادویة لا یجوز 3۔ | اور اگر اس میں کوئی دوا پڑی ہو تو نا جائز ہے۔ (ت)

یہ اگر حالت غلبہ پر محمول ہو سکتا ہے وہ حالت غیر طبیخ پر،

واستشهد له في الحلية بما في مختارات النوازل يجوز التيمم بالخزف هو الصحيح وبما في خزانة الفتاوى يجوز۔ | حلیہ میں اس پر ان دو عبارتوں سے استشہاد کیا ہے (1) مختارات النوازل: "خزف سے تیمم جائز ہے۔ یہی صحیح ہے۔" (2) خزانتہ الفتاوی: "خزف سے (جائز ہے)"

حواشی: 1. فتاوی غیاثیہ باب التیمم مکتبہ اسلامیہ کوئٹہ ص ۱۷ 2. فتاوی قاضی خان فصل فیما یجوز به التیمم مطبع نولکشور لکھنؤ ۱ / ۲۹ 3. فتاوی قاضی خان فصل فیما یجوز به التیمم مطبع نولکشور لکھنؤ ۱ / ۲۹

Fatawa Rizwia Volume 3

...with earthenware (Khazaf) if it has a coating on it that is not of the earth's nature. [Arabic text] | Tayammum is permissible, except when there is a color on it that is not of the nature of the earth. (T) [Urdu text]

I say: Firstly, it is extremely far from witnessing what is desired, because it only states the ruling for the earthenware itself. [Arabic text] | I say: First, it is very far from witnessing what is desired because it only states the ruling for the earthenware itself. [Urdu text]

The ruling for the essence of earthenware is the same, but there is no mention of its contingencies in this passage. How then can the permissibility of mixed earthenware be derived from it? [Arabic text] | Thus, the ruling for the essence of earthenware is the same, but there is no mention of its contingencies in this passage. How then can the permissibility of mixed earthenware be derived from it? [Urdu text]

The second passage is also close to the first because earthenware is often painted, but mixing it with other things is rare. [Arabic text] | The second passage is also close to the first because earthenware is often painted, but mixing it with other things is rare. [Urdu text]

Mentioning the common and omitting the rare is not far-fetched. And as I saw, I wrote on the margin of 'Al-Hilya' here what follows: [Arabic text] | Mentioning the common and omitting the rare is not a far-fetched matter. Here, I saw the following passage written by me on the margin of 'Hilya': [Urdu text]

"The absolute statement of permissibility with earthenware and its restriction to when there is no opposing color does not contradict the absolute prohibition when it is baked with something opposing, for that is a rare exception not considered when giving the ruling for the essence of earthenware, unlike the paint which is frequent." [Arabic text] | "The absolute statement of permissibility with earthenware or its restriction to the condition that there is no opposing color does not contradict the fact that Tayammum is absolutely prohibited when it is baked with some opposing material, because this is a separate situation that happens very rarely and can be ignored in stating the ruling for the essence of earthenware; conversely, the situation involving paint is found in abundance. (My writing on the margin ends here). This should be kept in mind." [Urdu text]

And it was said in 'Al-Ghunya' explaining the absolute prohibition by mixing in baking: [Arabic text] | In 'Ghunya', while justifying the absolute prohibition in case of mixing and baking, it is written: [Urdu text]

"(And if Tayammum is performed with earthenware, if it was made from pure earth and no medicines such as charcoal, hair, etc., were put into it, which are put into the clay from which bullets [pellets] are made, then Tayammum with it is permissible, even if there is no dust on it). And if it was..." [Arabic text] | "(And if Tayammum was done with earthenware, then if it is made of pure earth and there is no medicine-like thing such as charcoal or hair etc. put in it which are put in the clay from which bullets are made, then Tayammum with it is permissible even if there is no dust on it). And if there was..." [Urdu text]

1. Hilya Page 702 of 756

फ़तवा रिज़विया खंड 3

...मिट्टी के बर्तनों (ख़ज़फ़) के साथ यदि उस पर ऐसा लेप हो जो पृथ्वी की प्रकृति का न हो। [अरबी पाठ] | तयम्मुम जायज़ है, सिवाय इसके कि जब उस पर कोई ऐसा रंग चढ़ा हो जो ज़मीन की जिन्स (प्रकृति) से न हो। (त) [उर्दू पाठ]

मैं कहता हूँ: पहली बात तो यह है कि यह उनकी वांछित गवाही से बहुत दूर है, क्योंकि इसमें केवल यही उल्लेख है कि स्वयं ख़ज़फ़ का क्या हुक्म है? [अरबी पाठ] | मैं कहता हूँ: पहली बात तो यह है कि यह उनके वांछित साक्ष्य से अत्यंत दूर है क्योंकि इसमें केवल यही वर्णन है कि स्वयं ख़ज़फ़ का क्या हुक्म है? [उर्दू पाठ]

ख़ज़फ़ के मूल का तो वही हुक्म है लेकिन इस इबारत में इसके आकस्मिक गुणों का कोई ज़िक्र नहीं है। फिर इससे मिश्रित ख़ज़फ़ के जायज़ होने का पता कैसे लगाया जा सकता है? [अरबी पाठ] | तो ख़ज़फ़ के मूल का तो वही हुक्म है मगर इस इबारत में इसके आकस्मिक गुणों का कोई ज़िक्र ही नहीं है, फिर इससे मिश्रित ख़ज़फ़ का जायज़ होना कैसे पता चल सकता है? [उर्दू पाठ]

दूसरी इबारत भी पहली के करीब ही है क्योंकि ख़ज़फ़ की रंगाई तो बहुत होती है लेकिन इसमें दूसरी चीज़ की मिलावट दुर्लभ है। [अरबी पाठ] | दूसरी इबारत भी पहली के करीब ही है इसलिए कि ख़ज़फ़ की रंगाई तो बहुत होती है मगर इसमें दूसरी चीज़ की मिलावट दुर्लभ है। [उर्दू पाठ]

अक्सर चीज़ों का ज़िक्र करना और दुर्लभ को छोड़ देना कोई अनहोनी बात नहीं है। यहाँ 'हिलिया' के हाशिये पर मैंने अपनी लिखी हुई निम्नलिखित इबारत देखी: [अरबी पाठ] | अक्सर को ज़िक्र में लाना और दुर्लभ को छोड़ देना कोई दूर की बात नहीं। यहाँ 'हिलिया' के हाशिये पर मुझे अपनी लिखी हुई निम्नलिखित इबारत नज़र आई: [उर्दू पाठ]

"ख़ज़फ़ से जवाज़ (अनुमति) को मुतलक़न (पूर्ण रूप से) बयान करना और जवाज़ को इस बात से पाबंद करना कि कोई मुख़ालिफ़ रंग न हो, यह इस बात के विपरीत नहीं है कि उससे तयम्मुम मुतलक़न मना हो जब उसे किसी मुख़ालिफ़ चीज़ के साथ पकाया गया हो, क्योंकि यह सूरत अलग है जो बहुत कम घटित होती है और ख़ज़फ़ के ज़ात का हुक्म बताने में नज़रअंदाज़ की जा सकती है, इसके विपरीत रंगाई वाली सूरत कसरत से पाई जाती है।" [अरबी पाठ] | "ख़ज़फ़ से जवाज़ को मुतलक़न बयान करना या जवाज़ को इस बात से पाबंद करना कि कोई मुख़ालिफ़ रंग न हो, यह इसके विपरीत नहीं है कि उससे तयम्मुम मुतलक़न मना हो जब उसे किसी मुख़ालिफ़ चीज़ के साथ

पकाया गया हो, क्योंकि यह सूरत अलग है जो बहुत कम घटित होती है और ख़ज़फ़ के ज़ात का हुक्म बताने में नज़रअंदाज़ की जा सकती है, इसके विपरीत रंगाई वाली सूरत कसरत से पाई जाती है। (हाशिये पर लिखी मेरी तहरीर ख़त्म हुई)। यह ज़हन नशीन रहे।" [उर्दू पाठ]

'ग़ुनिया' में पकाते समय मिलाने की सूरत में मुतलक़न मनाही की वजह बताते हुए यूँ लिखा है: [अरबी पाठ] | ग़ुनिया में मिलाकर पकाने की सूरत में मुतलक़न मनाही का तर्क देते हुए यूँ लिखा है: [उर्दू पाठ]

"(और अगर ख़ज़फ़ से तयम्मुम किया गया, तो अगर वह ख़ालिस मिट्टी से बनी हो और उसमें कोई दवा जैसी चीज़ जैसे कोयला, बाल आदि न डाली गई हो, जो उस मिट्टी में डाली जाती है जिससे गोलियां बनाई जाती हैं, तो उससे तयम्मुम जायज़ है, चाहे उस पर धूल न हो)। और अगर वह..." [अरबी पाठ] | "(और अगर ख़ज़फ़ से तयम्मुम किया गया, तो अगर वह ख़ालिस मिट्टी से बनी हो और उसमें कोई दवा जैसी चीज़ जैसे कोयला या बाल आदि न डाली गई हो जो उस मिट्टी में डाली जाती है जिससे गोलियां बनाई जाती हैं, तो उससे तयम्मुम जायज़ है चाहे उस पर गर्द-ओ-गुबार न हो)। और अगर उसमें..." [उर्दू पाठ]

1. हिलिया पृष्ठ 702/756

بالحزف اذا کان علیه صبغ لیس من جنس الارض ۱ھـ تیمم جائز ہے مگر جب اس پر کوئی ایسا رنگ چڑھا ہو جو جنسِ زمین سے نہیں اھـ (ت) اقول: اما (۲) الاول فابعد شیئ عن الشهادة له فانه اقول : اول تو ان کے مطلوب کی شہادت سے انتہائی بعید ہے اس لیے کہ اس میں صرف یہی بیان ہے کہ خود خزف کا کیا حکم ہے؟ انما ذکر حکم الخزف فی نفسه وهو کذلك ولم تو نفس خزف کا تو وہی حکم ہے مگر اس عبارت میں اس کے عوارض کا کوئی ذکر ہی نہیں پھر اس سے خزف مخلوط کا جواز کیسے دریافت یتعرض لشبیئ من العوارض من فکیف یدل علی ہوسکتا ہے؟ عبارت دوم بھی اول سے قریب ہی ہے اس لیے کہ خزف کی رنگائی تو بہت ہوتی ہے مگر اس میں دوسری چیز کی ملاوٹ الجواز بالمخلوط واما الثانی فقریب (۲) منه فان نادر ہے۔ اکثر کو ذکر میں لانا اور نادر کو ترک کردینا کوئی بعید امر نہیں۔ یہاں حلیہ کے حاشیہ پر مجھے اپنی لکھی ہوئی درجِ ذیل الخزف کثیرا ما یصبغ والخلط نادر وذکر الغالب عبارت نظر آئی: "خزف سے جواز کو مطلقاً بیان کرنا یا جواز کو اس بات سے مقید کرنا کہ کوئی مخالف رنگ نہ ہو، یہ اس کے منافی وترك النادر غیر بعید وقدر أیتنی کتبت علی هامش نہیں کہ اس سے تیمم مطلقاً منع ہو جب اسے کسی مخالف چیز کے ساتھ پکا دیا گیا ہو، اس لیے کہ یہ صورت الگ ہے جو بہت کم واقع الحلیة ههنا مانصه اطلاق الجواز بالخزف ہوتی ہے اور نفس خزف کا حکم بتانے میں نظر انداز کی جاسکتی ہے اس کے برخلاف رنگائی والی صورت بکثرت پائی جاتی ہے اھـ" (حاشیہ وتقییده بما اذا لم یکن صبغ مخالف لاینافی اطلاق پر لکھی ہوئی میری تحریر ختم ہوئی) یہ ذہن نشین رہے۔ المنع اذا کان طبخه مع شیئ مخالف فانه نادر خارج غنیہ میں ملا کر پکانے کی صورت میں مطلقاً ممانعت کی توجیہ کرتے ہوئے یوں لکھا ہے: "(اور اگر خزف سے تیمم کیا تو اگر وہ خالص مٹی لایلاحظ الیه

فی افادة حکم نفس الخزف بخلاف سے بنی ہو اور اس میں کوئی الصبغ فانه کثیر اهـ ما کتبت علیه هذا۔ وقال فی الغنیه موجها اطلاق المنع بخلط الطبخ (ولو تیمم بالخزف ان کان متخذا من التراب بالخالص ولم یجع ل فیه شیئ من الادویة) کالفحم دوا جیسی چیز جیسے کوئلہ وغیرہ نہ ڈالی گئی ہو) والشعر وغیرهما مما یجعل فی الطین الذی تتخذ اور بال وغیرہ جو اس مٹی میں ڈالے جاتے ہیں جس سے منه البنادق (جاز) التیمم به (وان لم یکن علیه گولیاں بنائی جاتی ہیں تو اس سے تیمم جائز ہے چاہے اس پر گرد و غبار) وان کان غبار نہ ہو اور اگر اس میں کوئی..."

۱ حلیہ صفحہ 702 از 756

Fatawa Rizwia, Volume 3

[Left Column - Arabic Content] If there is some medicine apparent in it, it is not permissible, unless there is dust on it as mentioned previously regarding plating with lead. It would have been appropriate for the predominance to be considered, but they did not consider it because by mixing medicine during the firing/cooking process, it ceases to be from the genus of earth in every respect. End. I say (Aqul) firstly: I found that I (1) had written on it what was mentioned previously regarding plating, which is his statement: (Tayammmum is not permissible with clay vessels plated with lead) because it falls upon something not of the genus of earth. End. This requires that the meaning of his statement 'if there is something of medicine apparent in it' means 'it is layered on top of it'. However, it is not like that because here there is a mixture. Interpreting that what is meant is the appearance of the effect and referring to what preceded from the perspective that it absolutely no longer remains of the genus of earth is extremely far from sound taste, as is not hidden from the skilled. Secondly: Appearance (2), whether intended...

[Right Column - Urdu Translation/Explanation] ...no medicine added) like coal, hair, and other things that are put into this clay from which gun bullets are made, then Tayammum from it is (permissible, even if there is no dust on it). And if there is some medicine on top of it, it is not permissible except in the case where there is dust on it. Its reason is the same as what has passed regarding the vessel plated with tin. Here, the predominance should have been considered, but it was not considered because, due to mixing the medicine with firing, it was completely excluded from being of the genus of earth." End. (T) I say (Aqul): Firstly, I saw that I had written that passage on it which has passed regarding plated vessels, meaning this statement of theirs: "(Tayammum is not permissible from this vessel which has been plated with tin) because this would be Tayammum on a non-earthly substance." End. This statement requires that the meaning of their sentence "if there is something of medicine apparent in it" should be that if some medicine is layered over it, although this is not the case because here there is a mixture and blend of medicine in the clay. Now, if it is said in the interpretation of "apparent" that the meaning is that the effect of the medicine has appeared and the reference to the preceding is given in the sense that this also absolutely did not remain of the genus of the earth, then this interpretation is very far from sound taste, as it is not hidden from the experts. (T) Secondly: Appearance is not a condition for prohibition, whether from it...

[Footnotes] 1. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Sohail Academy Press, Lahore, p. 97 2. Ghunyat al-Mustamli, Chapter on Tayammum, Sohail Academy Press, Lahore, p. 97

फ़तवा रिज़विया, खंड 3

[बायां कॉलम - अरबी सामग्री] यदि उसमें स्पष्ट रूप से कुछ दवा है, तो यह जायज़ नहीं है, सिवाय इसके कि उस पर धूल हो जैसा कि सीसा चढ़ाने के संबंध में पहले बताया गया है। यह उचित होता कि प्रधानता पर विचार किया जाता, लेकिन उन्होंने इस पर विचार नहीं किया क्योंकि पकाने की प्रक्रिया के दौरान दवा मिलाने से, यह हर पहलू से पृथ्वी की श्रेणी से बाहर हो जाता है। समाप्त। मैं कहता हूँ (अक़ुल) सर्वप्रथम: मैंने स्वयं को देखा (1) कि मैंने उस पर वही लिखा था जो लेपित वस्तुओं के बारे में पहले उल्लेख किया गया था, जो कि उनका यह कथन है: (सीसा चढ़ाई गई मिट्टी के बर्तनों से तयम्मुम जायज़ नहीं है) क्योंकि यह पृथ्वी की श्रेणी के अलावा किसी अन्य चीज़ पर पड़ता है। समाप्त। इसके लिए आवश्यक है कि उनके कथन 'यदि उसमें कुछ दवा स्पष्ट रूप से हो' का अर्थ 'उसके ऊपर परत के रूप में होना' हो। हालाँकि, ऐसा नहीं है क्योंकि यहाँ मिश्रण है। यह व्याख्या करना कि इसका अर्थ प्रभाव का प्रकट होना है और पूर्व का संदर्भ इस दृष्टिकोण से देना कि यह अब पूरी तरह से पृथ्वी की श्रेणी का नहीं रहा, सही समझ से बहुत दूर है, जैसा कि विद्वानों से छिपा नहीं है। द्वितीय: प्रकटीकरण (2), चाहे इरादा...

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद/व्याख्या] ...दवा न पड़ी हो) जैसे कोयला, बाल और अन्य चीजें जो इस मिट्टी में डाली जाती हैं जिससे बंदूक की गोलियां बनती हैं, तो उससे तयम्मुम (जायज़ है, चाहे उस पर धूल न हो)। और यदि उसमें ऊपर कोई दवा पड़ी हो तो जायज़ नहीं है सिवाय उस सूरत में जब उस पर धूल हो। इसका कारण वही है जो रांगे से कलई किए हुए बर्तन के बारे में गुज़र चुका। यहाँ प्रधानता का विचार होना चाहिए था लेकिन उसका विचार नहीं किया गया क्योंकि पकाने के साथ दवा मिलाने की वजह से वह पूरे तौर से ज़मीन की जिन्स (श्रेणी) होने से बाहर हो गई।" अंत। (त) मैं कहता हूँ (अक़ुल): सर्वप्रथम मैंने देखा कि उस पर मैंने वह इबारत लिखी है जो कलई किए हुए बर्तन के बारे में गुज़री यानी उनका यह कलाम : " (उस बर्तन से तयम्मुम जायज़ नहीं जिस पर रांगे की कलई की गई हो) इसलिए कि यह तयम्मुम गैर ज़मीन की जिन्स पर होगा।" अंत। यह कलाम इस बात की मांग करता है कि उनकी इबारत "अगर उसमें कुछ दवा स्पष्ट रूप से हो" का अर्थ यह हो कि अगर उसके ऊपर कोई दवा चढ़ी हुई हो, हालाँकि यह सूरत नहीं है क्योंकि यहाँ तो मिट्टी में दवा की मिलावट और मिश्रण होता है। अब अगर "स्पष्ट रूप से" की व्याख्या में यह कहा जाए कि मतलब यह है कि दवा का असर ज़ाहिर हुआ और पिछले का हवाला इस लिहाज़ से दिया है कि यह भी मुतलक़न ज़मीन की

जिन्स से न रही तो यह व्याख्या अक्ल-ए-सलीम (सही समझ) से बहुत दूर है जैसा कि माहिरों पर छुपा नहीं। (त) दूसरा: मनाही के लिए प्रकट होना शर्त नहीं है, चाहे उससे...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. ग़ुनियतुल मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी प्रेस, लाहौर, पृष्ठ 97 2. ग़ुनियतुल मुस्तमली, तयम्मुम का अध्याय, सुहैल अकादमी प्रेस, लाहौर, पृष्ठ 97

पृष्ठ 703 का 756

جلد سوم

فتاوی رضویه

فیہ شیئ من الادویۃ ظاھراً لایجوز الا ان یکون علیہ غبار لما تقدم فی الطلی بالأنک وکان ینبغی ان تعتبر الغلبۃ لکن لم یعتبروھا لانہ بخلط الدواء مع الطبخ خرج عن کونہ من جنس الارض من کل وجہ اھ اقول اولاً : رأیتنی (۱) کتبت علیہ الذی تقدم فی المطلی ھو قولہ (لایجو ز التیمم بالغضارۃ المطلی بالأنک) لوقوعہ علی غیر جنس الارض اھ فھذا یقتضی ان معنی قولہ ان کان فیہ شیئ من الادویۃ ظاھرا ای مستعلیاً فوقہ ولیس کذلک فان ھھنا مزجا والتأویل بأن المراد ظھور الاثر والاحالۃ علی ماتقدم من جھۃ انہ لم یبق من جنس الارض علی الاطلاق * شدید البعد عن المذاق *کما لایخفی علی الحذاق * وثانیاً: الظہور (۲) سواء ارید

دوانہ پڑی ہو) جیسے کوئلہ، بال اور دوسری چیزیں جو اس مٹی میں ڈالی جاتی ہیں جس سے بندوق کی گولیاں بنتی ہیں تو اس سے تیمم (جائز ہے، اگرچہ اس پر غبار نہ ہو) اور اگر اس میں اوپر کوئی دوا پڑی ہو تو جائز نہیں مگر اسی صورت میں جب اس پر غبار ہو۔ اس کی وجہ وہی ہے جو رانگ سے قلعی کیے ہوئے برتن کے بارے میں گزر چکی۔ یہاں غلبہ کا اعتبار ہونا چاہئے تھا لیکن اس کا اعتبار نہ کیا گیا اس لیے کہ پکانے کے ساتھ دوا ملانے کی وجہ سے وہ پورے طور سے جنس زمین ہونے سے خارج ہوگئی "۔ اھ (ت) اقول: اوّلاً میں نے دیکھا کہ اس پر میں نے وہ عبارت لکھی ہے جو قلعی کیے ہوئے برتن کے بارے میں گزری یعنی ان کا یہ کلام : " (اس برتن سے تیمم جائز نہیں جس پر رانگ کی قلعی کی گئی ہو) اس لیے کہ یہ تیمم غیر جنس زمین پر ہوگا۔" اھ یہ کلام اس کا مقتضی ہے کہ ان کی عبارت "ان کان فیہ شیئی من الادویۃ ظاھرا " کا معنی یہ ہو کہ اگر اس کے اوپر کوئی دوا چڑھی ہوئی ہو، حالانکہ یہ صورت نہیں اس لیے کہ یہاں

تو مٹی میں دوا کی آمیزش اور ملاوٹ ہوتی ہے اب اگر "ظاھرا" کی تاویل میں یہ کہا جائے کہ مطلب یہ ہے کہ دوا کا اثر ظاہر ہوا اور مسبق کا حوالہ اس لحاظ سے دیا ہے کہ یہ بھی مطلقاً جنس زمین سے نہ رہی تو یہ تاویل مذاق سلیم سے بہت بعید ہے جیسا کہ ماہرین پر مخفی نہیں۔(ت) ثانیاً: ظہور ممانعت کی شرط نہیں خواہ اس سے

---

1 غنیۃ المستملی باب التیمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۷ 2 غنیۃ المستملی باب التیمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۹۷

Fatawa Razawiyya Volume 3

(Arabic Text Column): ...in substance or trace, it is not a condition for prohibition. Don't you see that glass made from sand and alkali—which is what is mostly found in people's hands today—shows no substance or trace of alkali in it, yet the impermissibility of performing Tayammum with it is known and established. Thirdly: To condition it on "manifestation" in whatever manner is a restriction on their general statements. If this is undertaken, then why not restrict it with the condition of "dominance," which is known from the principles of Sharia and reason? If you say: It is to guard against a small amount that mixes unintentionally, from which a thing is rarely free according to custom, as taking it into account causes hardship, unlike medicine mixed intentionally, which is in a significant amount and must have a visible effect. I say: By this, it returns to the consideration of dominance, as it is the distinction between little and much, and there is no disciplined middle state between them. Don't you see the statement of Al-Hidayah regarding waters: "For us, a small mixing is of no consequence due to the impossibility of avoiding it, just like the particles of earth; thus, the dominant is considered, and dominance is by parts." (1) End.

(Urdu Translation Column): ...whether the substance is intended or the trace. See that glass is made from sand and alkali. And nowadays, this is what is mostly found with people. In it, there is neither the substance of alkali nor its trace, yet the impermissibility of Tayammum with it is known and settled. Thirdly: In whatever way the condition of manifestation is applied, it necessitates a restriction on the general statements of the scholars. If a restriction must be applied, then why not apply the condition of dominance, the effect of which is known from Sharia and intellectual rules. If it is said that by saying "manifestly," the intention is to avoid that small, trivial amount that gets mixed unintentionally, which a thing is rarely free from habitually, then there is difficulty in considering it. Contrary to this, a medicine that is mixed intentionally has a noteworthy quantity and its prominent effect is necessary. (T) I say: So its ultimate result is the consideration of dominance because the limit of distinction between a little and a lot is that; there is no discipline for the intermediate states. See the statement of the author of Al-Hidayah regarding water, he says: Our proof is that a minor mixture has no consideration because it is impossible to avoid it, like the particles of the earth, so the dominant will be considered and dominance is through parts. "End (T)

(Footnote): 1 Al-Hidayah, Chapter on water with which Wudu is permissible etc., Al-Maktaba al-Arabiya press, Karachi, 1/18 Page 704 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

(अरबी पाठ स्तंभ): ...मूल पदार्थ या चिह्न में, यह प्रतिबंध की शर्त नहीं है। क्या आप नहीं देखते कि रेत और क्षार (alkali) से बना कांच—जो आज कल लोगों के पास आमतौर पर पाया जाता है—उसमें क्षार का न तो मूल पदार्थ दिखता है और न ही चिह्न, फिर भी इसके साथ तयम्मुम की अनुचितता ज्ञात और स्थापित है। तीसरा: किसी भी प्रकार से "प्रकटीकरण" की शर्त लगाना उनके सामान्य कथनों पर एक प्रतिबंध है। यदि ऐसा किया जाता है, तो "प्रभुत्व" (dominance) की शर्त क्यों न लगाई जाए, जिसका प्रभाव शरीयत और तर्क के नियमों से ज्ञात है। यदि आप कहें: यह उस अल्प मात्रा से बचने के लिए है जो अनजाने में मिल जाती है, जिससे कोई वस्तु आदतन शायद ही मुक्त होती है, क्योंकि उसे ध्यान में रखने में कठिनाई होती है, इसके विपरीत जानबूझकर मिलाई गई दवा, जो एक महत्वपूर्ण मात्रा में होती है और उसका स्पष्ट प्रभाव होना आवश्यक है। मैं कहता हूँ: इससे बात प्रभुत्व के विचार पर ही लौट आती है, क्योंकि थोड़े और बहुत के बीच यही अंतर है, और उनके बीच की मध्यवर्ती स्थितियों का कोई निश्चित नियम नहीं है। जल के बारे में अल-हिदाया का कथन देखें: "हमारे लिए, मामूली मिश्रण का कोई विचार नहीं है क्योंकि इससे बचना असंभव है, जैसे मिट्टी के कणों के मामले में; इसलिए प्रभुत्व पर विचार किया जाएगा, और प्रभुत्व अंशों के माध्यम से होता है।" (1) समाप्त।

(उर्दू अनुवाद स्तंभ): ...चाहे मूल पदार्थ अभिप्रेत हो या चिह्न। देखिए कि कांच रेत और क्षार से बनता है। और इस समय लोगों के पास अधिकतर यही पाया जाता है। इसमें क्षार का न तो मूल पदार्थ होता है न चिह्न, लेकिन इससे तयम्मुम का जायज़ न होना मालूम और तयशुदा है। तीसरा: प्रकटीकरण की शर्त जिस तरह भी लगाई जाए, उससे उलेमा के सामान्य कथनों पर प्रतिबंध अनिवार्य आता है। अगर प्रतिबंध लगाना ही है तो प्रभुत्व की शर्त क्यों न लगाई जाए जिसका प्रभाव शरई और अक़्ली क़ायदों से होना मालूम है। अगर यह कहा जाए कि "ज़ाहिरन" (प्रकट रूप से) कहकर उस कम मामूली मात्रा से बचना मक़सूद है जो बिना इरादे के मिल जाती है जिससे कोई चीज़ आदतन कम ही खाली होती है, तो उसका एतबार करने में हर्ज है। इसके विपरीत ऐसी दवा जो क़स्दन (जानबूझकर) मिलाई जाए उसकी एक क़ाबिले लिहाज़ मिक़दार (मात्रा) होती है और उसका नुमायाँ (स्पष्ट) असर ज़रूरी है। (त) मैं कहता हूँ: तो इसका परिणाम प्रभुत्व का एतबार है क्योंकि कम और ज़्यादा के दरमियान हद-ए-इम्तियाज़ (भेद की रेखा) वही है, दरमियानी हालतों का तो कोई नियम ही नहीं। पानी से संबंधित साहिब-ए-हिदाया की इबारत देखिये, फ़रमाते हैं: हमारी दलील यह है कि मामूली आमिज़िश (मिश्रण)

का कोई एतबार नहीं इसलिए कि इससे बचना मुमकिन नहीं, जैसे अज्ज़ा-ए-ज़मीन (मिट्टी के कण) में, तो ग़ालिब (प्रभावी) का एतबार होगा और ग़लबा (प्रभुत्व) अज्ज़ा (अंशों) से होता है। समाप्त (त)

(पादलेख): 1 अल-हिदाया, पानी का अध्याय जिससे वज़ू जायज़ है आदि, अल-मकतबा अल-अरबिया प्रेस, कराची, 1/18 पृष्ठ 704 / 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

(عربی متن کا کالم): به عینًا او اثرًا لیس شرط المنع الا تری ان الزجاج المتخذ من الرمل والقلی وهو الموجود الان غالبًا في ایدی الناس لا یظهر فیه للقلی عین ولا اثر وعدم جواز التیمم به معلوم مقرر۔ وثالثًا: اشترط (1) الظهور بای وجه کان تقیید لاطلاقهم فان ارتکب هذا فلم لا یقید بشرط الغلبة المعلوم من قواعد الشرع والعقل۔ فان قلت هو احتراز عن نزر یسیر یختلط من غیر قصد قلما یخلو الشیئ عنه عادة في اعتباره حرج بخلاف دواء یخلط قصدًا فانه یکون علی مقدار صالح ولا بد له من اثر ظاهر۔ اقول: بهذا یرجع الی اعتباره الغلبة اذ هو الفصل بین القلیل والکثیر والاوسط مالهما من انضباط الا تری الی قول الهدایة فی المیاه لنا ان الخلط القلیل لا معتبر به لعدم امکان الاحتراز عنه کما في اجزاء الارض فیعتبر الغالب والغلبه بالاجزاء (1) اھـ

(اردو ترجمہ کا کالم): عین مراد ہو یا اثر۔ دیکھیے کہ شیشہ جوریت اور شخار سے بنتا ہے۔ اور اس وقت لوگوں کے پاس زیادہ تر یہی پایا جاتا ہے۔ اس میں شخار کا نہ عین ہوتا ہے نہ اثر، مگر اس سے تیمم کا عدم جواز معلوم اور طے شدہ ہے۔ ثالثاً: ظہور کی شرط جس طرح بھی لگائی جائے اس سے اطلاق علماء کی تقیید لازم آتی ہے اگر قید لگانی ہی ہے تو کیوں نہ شرط غلبہ کی قید لگائی جائے جس کا اثر شرعی عقلی قواعد سے ہونا معلوم ہے۔ اگر یہ کہا جائے کہ "ظاہراً" کہہ کر اس قلیل معمولی مقدار سے احتراز مقصود ہے جو بلا ارادہ مل جاتی ہے جس سے شے عادۃً کم ہی خالی ہوتی ہے تو اس کا اعتبار کرنے میں حرج ہے۔ اس کے بر خلاف ایسی دوا جو قصداً ملائی جائے اس کی ایک قابلِ لحاظ مقدار ہوتی ہے اور اس کا نمایاں اثر ضروری ہے۔ (ت) اقول: تو اس کا مآل، غلبہ کا اعتبار ہے کیونکہ قلیل و کثیر کے درمیان حدِ امتیاز وہی ہے، درمیانی حالتوں کا تو کوئی انضباط ہی نہیں۔ پانی سے متعلق صاحبِ ہدایہ کی عبارت دیکھئے ، فرماتے ہیں: ہماری دلیل

یہ ہے کہ معمولی آمیزش کا کوئی اعتبار نہیں اس لیے کہ اس سے بچنا ممکن نہیں، جیسے اجزائے زمین میں، تو غالب کا اعتبار ہوگا اور غلبہ اجزاء سے ہوتا ہے۔ "اھ (ت)

(حاشیہ): 1 الھدایۃ باب الماء الذی یجوز بہ الوضوء الخ مطبع المکتبۃ العربیہ کراچی ۱/۱۸ صفحہ 704 از 756

Fatawa Razawiyya Volume 3

Fourthly: What is the proof that cooking something with medicine absolutely excludes it from the category of earth? The effect of cooking is greater in water because it leads to intense mixing, as mentioned in 'Al-Kafi', 'Al-Tabyin', and others. This is because fire causes a substance to become porous, allowing water to penetrate it, and its fine particles dissolve and permeate the water. This is not the case with clay. Since cooking here has no additional effect, only the factor of mixing remains, and in the case of mixing, predominance is definitely considered, as previously mentioned. Success is only from Allah. (T)

Fifthly: What is the difference between two scenarios: one, where hair was cut or charcoal was crushed and both were mixed thoroughly with a dominant amount of clay, formed into balls, and dried in the sun; and the second, where these balls were made and then fired in fire? What did the fire add to these balls such that Tayammum became permissible in the first case but not in the second? What is the actual difference between the two? Rather, in the second case, the fire did not add anything but rather decreased it, because it burned away a portion of the additive mixed with the clay. This is my view, and the knowledge of the truth is with my Lord alone. (T)

In summary, the issue of mixing by cooking is like the issue of combining two sisters under ownership (milk al-yamin). One verse makes them lawful and another makes them unlawful. (One verse made them both permissible and the other prohibited. T) On one hand, the general statements of the Imams suggest that predominance in mixing is the criterion, indicating permissibility when the additive is dominated. On the other hand, there are similar general statements from the Imams that whatever medicine is cooked in is not suitable for Tayammum. One of these two general statements must surely be restricted. The second one was restricted only by the Allamah...

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

चौथा: दवा के साथ पकाये जाने से वह पूर्णतः पृथ्वी की श्रेणी से बाहर हो जाती है, इस पर क्या प्रमाण है? पकाने का प्रभाव पानी पर अधिक होता है क्योंकि इससे गहन सम्मिश्रण होता है, जैसा कि 'अल-काफी', 'अत-तबीन' आदि में है। इसका कारण यह है कि अग्नि से वस्तु में विखंडन (छिद्रयुक्तता) उत्पन्न हो जाती है, जिससे पानी उसमें प्रवेश कर जाता है और उसके सूक्ष्म कण पानी में घुल-मिल जाते हैं। मिट्टी का मामला ऐसा नहीं है। चूंकि यहाँ पकाने का कोई विशेष अतिरिक्त प्रभाव नहीं है, इसलिए केवल सम्मिश्रण का कारक ही शेष रह जाता है, और सम्मिश्रण की स्थिति में निश्चित रूप से प्रधानता (ग़ल्बा) का ही विचार किया जाता है, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। और सफलता ईश्वर की ओर से ही है। (त)

पाँचवाँ: इन दो स्थितियों में क्या अंतर है: एक यह कि बाल काटे गए या कोयला पीसा गया और दोनों को प्रचुर मिट्टी के साथ अच्छी तरह मिला दिया गया, उसकी गोलियाँ बनाई गईं और धूप में सुखा दी गईं; दूसरी स्थिति यह कि गोलियाँ बनाई गईं और फिर आग में जलाई गईं? आग ने उन गोलियों में ऐसा क्या जोड़ दिया कि पहली स्थिति में तो तयम्मुम जायज़ हुआ और दूसरी में नहीं? दोनों में आखिर अंतर क्या है? बल्कि दूसरी स्थिति में आग ने कुछ बढ़ाया नहीं बल्कि कम ही किया है क्योंकि मिट्टी में मिली चीज़ का एक हिस्सा जला दिया। यह मेरा विचार है और सत्य का ज्ञान मेरे रब के पास ही है। (त)

संक्षेप में, पकाने के साथ सम्मिश्रण का मसला वैसा ही है जैसे 'मिल्क-ए-यमीन' (स्वामित्व) के तहत दो बहनों को एकत्र करने का मसला। एक आयत उन्हें हलाल करती है और दूसरी हराम। (इन दोनों को एक आयत ने हलाल किया और दूसरी ने हराम किया। त) एक ओर इमामों के सामान्य कथन हैं कि सम्मिश्रण में प्रधानता का विचार किया जाता है, जो दबे हुए मिश्रण में अनुमति का संकेत देते हैं। दूसरी ओर इमामों के वैसे ही सामान्य कथन हैं कि जिसमें कुछ दवा पकाई जाए वह तयम्मुम के योग्य नहीं है। इन दोनों सामान्य कथनों में से एक को अवश्य ही प्रतिबंधित (मुक़य्यद) करना होगा। दूसरे को केवल अल्लामा...

ورابعاً: خروجه (۱) بالطبخ مع الدواء مطلقاً عن جنس الارض ای دلیل علیہ فانما کان الطبخ اکثر اثر افیه الماء لحصول شدة الامتزاج به کما في الکافی والتبیین وغیرهما لان بالنار یتخلخل الشیئ فینفذ فیه الماء وتنحل منه اجزاء لطیفة تسری في الماء ولا کذلك الطبن واذلیس ههنا للطبخ زیادة اثر فلم یبق الا المزج وهو معتبر فیه الغلبة قطعاً کما تقدم وبالله التوفیق۔ رابعاً: دوا کے ساتھ ملا کر پکانے سے وہ مطلقاً جنس زمین سے خارج ہوتی ہے اس پر کیا دلیل ہے؟ پکانے کا اثر پانی پر زیادہ ہوتا ہے کیونکہ اس سے خوب امتزاج ہو جاتا ہے جیسا کافی اور تبیین وغیرہما میں ہے اس لئے کہ آگ سے شئ میں تخلخل پیدا ہو جاتا ہے تو پانی اس میں نفوذ کر جاتا ہے اور اس کے لطیف اجزاء پانی میں سرایت کر جاتے ہیں۔ اور مٹی کا معاملہ ایسا نہیں اور جب یہاں پکانے کا کوئی خاص اثر نہیں تو بس امتزاج ہی رہ گیا اور امتزاج کی صورت میں قطعی طور پر غلبہ کا اعتبار ہے جیسا کہ گزر چکا اور توفیق خدا ہی سے ہے۔(ت)

وخامساً: ما(۲)الفرق بین ماذ فرض شعر ودق فحم ومزجا بطین غالب مزجاً بالغاً وصنعت منه بنادق و جففت بالشمس وبین ما اذا صنعت واحرفت فای شیئ زادتها النار حتی جازبها التیمم في الاولی دون الاخری بل لم تزدها النار الانقصاً لاحتراق حصة من المخالط فهذا ما عندی والعلم بالحق عند ربی۔ خامساً: دو صورتیں ہیں، ایک یہ کہ بال کاٹا گیا، کوئلہ پیسا گیا اور دونوں کو غالب مٹی سے خوب ملا دیا گیا اور اس سے گولیاں بنا کر دھوپ میں سکھا دی گئیں، دوسری صورت یہ کہ گولیاں بنا کر آگ میں جلائی گئیں تو آگ نے ان گولیوں میں کیا زیادہ کر دیا کہ پہلی صورت میں تو تیمم جائز ہوا اور دوسری میں جائز نہ ہوا، دونوں میں آخر فرق کیا ہے؟ بلکہ دوسری صورت میں آگ نے

کچھ بڑھایا نہیں بلکہ کم ہی کیا ہے اس لئے کہ مٹی سے ملنے والی چیز کا ایک حصہ جلا دیا، یہ میرے نزدیک ہے اور حق کا علم میرے رب ہی کے یہاں ہے۔(ت)

بالجملہ مسئلہ خلط بالطبخ مثل مسئلہ جمع بین الاختین بملك الیمین ہے احلتھما آیۃ وحرمتھما اخری (ان دونوں کو ایک آیت نے حلال کیا اور دوسری نے حرام کیا۔ ت) ادھر اطلاقات ائمہ کہ خلط میں غلبہ کا اعتبار ہے مخالط مغلوب میں حکم جواز بتا رہے ہیں، ادھر ویسے ہی اطلاقات ائمہ کہ جس میں کچھ دوائی پکائی جائے صالح تیمم نہیں مع جار ہے ہیں، دونوں اطلاقوں میں سے ایک ضرور مقید ہے۔ دوم کو صرف علامہ

Fatawa Ridawiyya Volume 3

Ibrahim Halabi wanted to keep it general, but the reason he gave is flawed for several reasons. If it is said that this is supported by the issue of glass made from sand etc., because the authors of 'Muheet' and 'Tabyin', and the Absolute Researcher (Mohaqqiq alal Itlaq) himself and their followers gave an absolute ruling of prohibition in it and did not specify the condition of sand being predominant.

I say (Aqool): Scholars gave the ruling based on facts, and the fact is that earth-based substances are not predominant in it. It is mentioned in 'Tuhfa':

مصنوع او راستگیرہ سفید و قلی ست کہ بالمناصفہ گدازند ۱۔	Manufactured white glass is made from pebbles and 'shakhkhar' (alkali) in such a way that both are taken in equal halves and melted. (T)

It is in 'Tadhkira Antaki':

والمصنوع منه من القلی جزء والرمل الابیض الخالص نصف جزء ویسبکان حدالامتزاج ۲۔	In artificial glass, there is one part alkali and half a part of pure white sand. Both are melted to the extent that they mix well with each other. (T)

And the first [view] was held as absolute by Imam the Absolute Researcher, the author of 'Jawhara', Researcher Halabi (author of 'Hilya'), and Researcher Zayn (author of 'Bahr'). That is the clear path and the rational and traditional rule; therefore, it should be the preferred [view], and caution is best. In short, the summary of the ruling regarding mixtures is: if it is without cooking (heating), then as long as the earth-based substance is predominant, Tayammum (dry ablution) is permissible. If it is mixed with cooking, then if the opposing ingredients were predominant or equal and remained so after cooking, then Tayammum is absolutely impermissible. If they were all destroyed by burning, then it is absolutely permissible. And if some minor [opposing] portions remained: if the mixing was unintentional and some small parts remained mixed by themselves, Tayammum is permissible. And if they were mixed intentionally, then the more apparent and preferred view is permissibility, but the better [course] is avoidance. By the grace of Allah Almighty, such thorough research and clear refinement of earth-based substances will not be found even a tenth of it anywhere else, by the grace of Allah Almighty, containing these magnificent discussions whose blessing the uncaused mercy had deposited for this very writing.

وللہ الحمد اولاً و اٰخراً و باطناً و ظاہراً وصلٰی اللہ تعالٰی وسلم و بارک کثیرا متواتراً و افرامتظافرا علی عالِمِ حکمہ و قاسم	And all praise is for God, first and last, outward and inward, and may there be abundant, continuous, profuse and dominant mercy and blessing of God Almighty upon the Knower of His wisdoms, the distributor of blessings.

1. Tuhfa Tankabani, 'Za' with 'Jeem', p. 316
2. Tadhkira Dawud Antaki, letter 'Za', Mustafa al-Babi Egypt, 1/175 Page 706 of 756

फतावा रज़विया जिल्द 3

इब्राहिम हलाबी ने इसे सामान्य (इत्लाक़) पर रखना चाहा और इसकी जो वजह बताई वह कई कारणों से दोषपूर्ण है। अगर कहा जाए कि इसकी पुष्टि रेत आदि से बने कांच के मसले से होती है, क्योंकि 'मुहीत' और 'तब्ईन' के लेखकों और स्वयं मुहाक़्क़िक़ अली अल-इत्लाक़ (पूर्ण शोधकर्ता) और उनके अनुयायियों ने इसमें पूर्णतः निषेध का आदेश दिया और रेत के प्रधान होने की कोई शर्त नहीं रखी।

मैं कहता हूँ (अक़ूल): विद्वानों ने वास्तविकता पर आदेश दिया और वास्तविकता यही है कि इसमें पृथ्वी की प्रकृति (मिट्टी आदि) प्रधान नहीं है। 'तुलफ़ा' में है:

مصنوع او راستگیرہ سفید و قلی ست کہ بالمناصفہ گدازند -१

निर्मित सफेद कांच कंकड़ और शंखार (क्षार) से इस प्रकार बनता है कि दोनों को आधा-आधा लेकर पिघलाते हैं। (त)

'तज़किरा अंतकी' में है:

والمصنوع منه من القلی جزء الابیض الخالص نصف جزء مالوالر ویسبکان حدالامتزاج -२

कृत्रिम कांच के अंदर शंखार का एक हिस्सा होता है और शुद्ध सफेद रेत का आधा हिस्सा। दोनों को इस हद तक पिघलाया जाता है कि वे एक-दूसरे में अच्छी तरह मिल जाएं। (त)

और पहले विचार को इमाम मुहाक़्क़िक़ अली अल-इत्लाक़, 'जौहरा' के लेखक, मुहाक़्क़िक़ हलाबी (हिलया के लेखक) और मुहाक़्क़िक़ ज़ैन (बहर के लेखक) ने सामान्य रखा और वही स्पष्ट मार्ग और तर्कसंगत व पारंपरिक नियम है; इसलिए वही वरीयता प्राप्त होना चाहिए और सावधानी सबसे अच्छी है। संक्षेप में, मिश्रण के संबंध में आदेश का सारांश यह है कि यदि बिना पकाए (गरम किए) है, तो जब तक पृथ्वी की प्रकृति प्रधान है, तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) जायज़ है। और यदि पकाने के साथ मिश्रण हो, तो यदि विपरीत सामग्री प्रधान या समान थी और पकाने के बाद भी वैसी ही रही, तो तयम्मुम पूर्णतः नाजायज़ है। और यदि जलने से सब नष्ट हो गए, तो पूर्णतः जायज़ है। और यदि कुछ पराजित (अल्प) अंश शेष रहे: यदि मिश्रण जानबूझकर नहीं था और कुछ कम हिस्से स्वयं मिल गए थे, तो तयम्मुम जायज़ है। और यदि जानबूझकर मिलाए गए थे, तो अधिक स्पष्ट और वरीयता प्राप्त विचार जायज़ होना है, लेकिन बचना ही बेहतर है। अल्लाह तआला की कृपा से, पृथ्वी की प्रकृति का ऐसा गहन शोध और स्पष्ट स्पष्टीकरण जिसका दसवां हिस्सा भी कहीं नहीं मिलेगा, अल्लाह तआला के

अनुग्रह से इन महान चर्चाओं से युक्त है जिसकी नेमत को अकारण दया ने इसी लेखन के लिए सुरक्षित रखा था।

وللہ الحمد اولاً و اٰخراً و باطناً و ظاہراً وصلٰی اللہ تعالٰی وسلم و بارک کثیرا متواتراً و افرامتظافرا علی عالِمِ حکمہ و قاسم	और ईश्वर ही के लिए सारी प्रशंसा है, आदि और अंत, प्रकट और गुप्त, और ईश्वर तआला की प्रचुर, निरंतर, भरपूर और प्रभावी दया और बरकत हो उसकी हिकमतों (बुद्धि) के ज्ञाता, नेमतों (उपहारों) के बांटने वाले पर।

---

1. तोहफ़ा तन्काबनी, 'ज़ा' के साथ 'जीम', पृ. 316
2. तज़किरा दाऊद अंताकी, अक्षर 'ज़ा', मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/175 पृष्ठ 706/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

ابراہیم حلبی نے اطلاق پر رکھنا چاہا اور اس کی جو وجہ فرمائی بوجوہ منخدوش ہے اگر کہیئے اس کی تائید مسئلہ زجاج متخذ من الرمل وغیرہ سے ہوتی ہے کہ محیط و تبیین اور خود محقق علی الاطلاق اور ان کے اتباع نے اس میں مطلقاً حکم منع دیا اور ریت کے غالب ہونے کی کوئی قید نہ فرمائی۔

اقول: علماء نے واقع پر حکم فرمایا اور واقع یہی ہے کہ جنس ارض اس میں غالب نہیں۔ تحفہ میں ہے:

مصنوع او راستگیرہ سفید و قلی ست کہ بالمناصفہ گدازند ۱۔ مصنوع شیشہ سفید سنگریزے اور شنخار سے بنتا ہے اس طرح کہ دونوں نصف نصف لے کر پگھلاتے ہیں۔ (ت)

تذکرہ انطاکی میں ہے:

والمصنوع منہ من القلی جزء والرمل الابیض الخالص نصف جزء ویسبکان حدالامتزاج ۲۔ مصنوعی شیشہ کے اندر شنخار کا ایک حصہ ہوتا ہے اور سفید خالص ریت کا نصف حصہ۔ دونوں کو اس حد تک گلایا جاتا ہے کہ ایک دوسرے سے خوب مل جائیں۔ (ت)

اور اول کو امام محقق الاطلاق و صاحب جوہرہ و محقق حلبی صاحب حلیہ و محقق زین صاحب بحر نے اطلاق پر رکھا اور وہی جادہ واضحہ و قاعدہ عقلیہ و نقلیہ ہے لہٰذا وہی مرجح ہونا چاہئے اور احتیاط احسن، غرض خلط میں خلاصہ حکم یہ نکلا کہ اگر بلاتبخ ہے تو جب تک جنس ارض غالب ہے تیمم جائز ہے۔ اور اگر طبخ کے ساتھ خلط ہو تو اگر اجزائے مخالف غالب یا مساوی تھے اور بعد طبخ بھی ایسے ہی رہے تو تیمم مطلقاً ناجائز اور اگر جلنے سے کل فنا ہو گئے مطلقاً جائز۔

اور اگر بعض مغلوب باقی رہے تو اگر خلط قصدی نہ تھا بعض اجزائے قلیلہ خود ملے رہ گئے تھے تیمم جائز۔ اور اگر قصداً ملائے گئے تھے تو اظہر و ارجح جواز اور اولیٰ احتراز یہ ہے بحمد اللہ تعالیٰ جنس ارض کی وہ تحقیق بالغ و تنقیح بازغ کہ اس کا دسواں حصہ کہیں نہ ملے گا بفضلہ تعالیٰ ان مباحث جلیلہ پر مشتمل جن کی نعمت کو رحمت بے سبب نے اسی تحریر کے لیے ودیعت رکھا تھا۔

وللہ الحمد اولاً و اٰخراً و باطناً و ظاہراً وصلّٰی اللہ تعالٰی وسلم و بارک کثیرا متواتراً و افرامتظافرا علی عالِمِ حکمہ و قاسم

اور خدا ہی کے لیے ساری حمد ہے اول و آخر، ظاہر و باطن اور خدائے تعالیٰ کی کثیر، متواترہ وافر و غالب رحمت و برکت ہو اس کی حکمتوں کے عالم، نعمتوں کے قاسم،

---

۱ تحفہ تنکابنی الزاء مع الجیم ص ۳۱۶ ۲ تذکرہ داؤد انطاکی حرف الزاء مصطفی البابی مصر ۱/

Fatawa Razawiyya, Volume 3

[Box 1 - Arabic]: Upon His favors, and the best of His creation, the lamp of the horizon, and upon his family, companions, children, and his group, forever and ever, in every moment and time as much as there is creation of God, and all praise is for Allah, the Lord of the worlds.

[Box 1 - Urdu Translation]: Among the creation the most superior, and the sun on the horizon, and upon his progeny, companions, sons, and his group forever and ever, as much as there is creation of God in every moment and every time, and all praise is only for God, the Lord of the worlds. (T)

(The supplementary treatise 'Al-Matar al-Sa'id' is concluded)

Fifteenth [Note]: The meaning of complete purity is that this type of earth has never been reached by impurity, or if it was, it has become pure. That is, absolutely no part of it remains [impure], such as being washed with water or burned with fire, so that all particles of impurity are removed or burned. If it dries by sun or air such that no trace of color or smell of the impurity remains, that thing becomes pure for prayer, but Tayammum (dry ablution) from it is not permissible because sun or air does not achieve total eradication of impurity. Some minor particles remain which are excused in prayer but not in Tayammum, as its investigation has passed at the beginning of the discourse with the success granted by the Sovereign King. (T)

Then I say: The meaning of 'never being reached by impurity' for this land or type of land is that it is not in one's knowledge, nor does knowledge come later.

[Box 2 - Arabic]: Because we are only held accountable for what whose impurity is not in our knowledge; we are not held accountable for knowing its lack of impurity, because there is no way for us to [know] that. Responsibility is only according to capacity.

[Box 2 - Urdu Translation]: Because we are only held accountable for those things whose impurity is not in our knowledge; we are not held accountable for those whose lack of impurity is known to us, because we have no way to know that. Accountability is only according to capacity. (T)

Yes, if one did not have knowledge of the impurity of that thing, nor was it in a place suspected of impurity where suspicion is equivalent to certainty, then Tayammum from the floor of a toilet will not be permissible, even if one does not know that

specific part on which one wants to perform Tayammum is impure. Similarly, if something's impurity was not in one's knowledge or suspicion, but later it was learned through the report of a reliable, just Muslim that this thing or place was impure, or a hidden person (whose character is unknown) or a transgressor gave news and one's heart was firm on their truthfulness, then that Tayammum was void. If one had prayed with it, they must repeat it. Yes, the report of a disbeliever is not considered, and if the word of an unjust person does not settle in the heart, then it is not necessary to heed it. And if to him... impurity...

Note: This is the fifteenth of that fourteenth which passed on page 775. (M)

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 3

[बॉक्स 1 - अरबी]: उनकी नेमतों पर, और उनकी मखलूक़ में सबसे अफ़ज़ल पर, उफ़ुक़ (क्षितिज) के चिराग़ पर, और उनकी आल, असहाब, फर्ज़ंद और उनकी जमाअत पर हमेशा-हमेशा, हर आन और हर वक़्त जितनी मखलूक़-ए-खुदा हो, और तमाम हम्द अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है।

[बॉक्स 1 - उर्दू अनुवाद]: मखलूक़ में सबसे अफ़ज़ल, और उफ़ुक़ पर सूरज, और उनकी आल, असहाब, पुत्रों और उनके समूह पर हमेशा-हमेशा के लिए, जितनी भी हर घड़ी और हर समय खुदा की मखलूक़ है, और सारी प्रशंसा अल्लाह, रब्बुल आलमीन के लिए है। (त)

(पूरक निबंध 'अल-मतरुस सईद' समाप्त हुआ)

पंद्रहवाँ [टिप्पणी]: पूर्ण पवित्रता (कामिल तहारत) का अर्थ यह है कि इस प्रकार की ज़मीन तक कभी नजासत (अशुद्धता) न पहुँची हो, या पहुँची हो तो पाक हो गई हो, यानी असल में उसका कोई हिस्सा [नापाक] न रहा हो, जैसे पानी से धुलने या आग से जलने से नजासत के तमाम अंश निकल जाएँ या जल जाएँ। यदि वह धूप या हवा से सूख जाए जबकि नजासत का कोई रंग या गंध का असर न रहे, तो वह चीज़ नमाज़ के लिए पाक हो जाती है, लेकिन उससे तयम्मुम जायज़ नहीं है क्योंकि धूप या हवा नजासत का पूरी तरह उन्मूलन नहीं करती। कुछ हल्के अंश बाकी रह जाते हैं जो नमाज़ में माफ़ हैं लेकिन तयम्मुम में माफ़ नहीं हैं, जैसा कि इसकी तहक़ीक़ कलाम की शुरुआत में मलिक-ए-अल्लाम की तौफ़ीक़ से गुज़र चुकी है। (त)

फिर मैं कहता हूँ: इस ज़मीन या ज़मीन की किस्म तक कभी नजासत न पहुँचने का अर्थ यह है कि वह उसके ज्ञान में न हो और न ही बाद में उसे पता चले।

[बॉक्स 2 - अरबी]: इसलिए कि हम उसी के मुकलफ़ हैं जिसकी नजासत हमारे इल्म में न हो; हम उसके मुकलफ़ नहीं जिसकी अदम-ए-नजासत हमें मालूम हो, क्योंकि हमारे पास इसके लिए कोई रास्ता नहीं है। ज़िम्मेदारी केवल सामर्थ्य के अनुसार है।

[बॉक्स 2 - उर्दू अनुवाद]: इसलिए कि हम उसी के उत्तरदायी (मुकलफ़) हैं जिसकी नजासत हमारे ज्ञान में न हो, उसके उत्तरदायी नहीं जिसकी पवित्रता हमें ज्ञात हो, क्योंकि हमारे पास उसे जानने का कोई तरीका नहीं है। ज़िम्मेदारी केवल सामर्थ्य के अनुसार होती है। (त)

हाँ, अगर उसे उस चीज़ की नजासत का इल्म नहीं था और न ही वह किसी नजासत की जगह (मज़न्ना) में थी जहाँ संदेह भी यक़ीन के समान होता है, तो शौचालय की ज़मीन से तयम्मुम जायज़ नहीं होगा, भले ही उसे उस विशेष हिस्से के बारे में न पता हो जिस पर वह तयम्मुम करना चाहता है कि वह नजिस (अपवित्र) है। इसी तरह जिस चीज़ की नजासत उसके इल्म और संदेह में नहीं थी, बाद में किसी भरोसेमंद नेक मुसलमान की खबर से पता चला कि यह चीज़ या जगह नजिस थी, या किसी ऐसे व्यक्ति जिसकी स्थिति अज्ञात हो या किसी गुनहगार ने खबर दी और उसका दिल उसकी सच्चाई पर जम गया, तो वह तयम्मुम बातिल था। अगर उसने उससे नमाज़ पढ़ी थी, तो उसे दोहराए। हाँ, काफिर की खबर का एतबार नहीं है, और अगर किसी अधर्मी की बात दिल पर न जमे तो उस पर ध्यान देना ज़रूरी नहीं है। और अगर उसे... नजासत...

नोट: यह उस चौदहवें का पंद्रहवाँ है जो पृष्ठ 775 पर गुज़रा। (म)

पृष्ठ 707 का 756

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

[باکس 1 - عربی]: نعمه وافضل خلقه وسراج افقه وآله وصحبه وابنه وحزبه ابد الابدین عدد خلق الله فی کل آن وحین* والحمد لله رب العلمین۔

[باکس 1 - اردو]: مخلوق میں افضل، اور آفتاب افق پر اور ان کی آل، اصحاب، فرزند اور ان کی جماعت پر ہمیشہ ہمیشہ، جس قدر ہر آن اور ہر وقت خلق خدا ہو، اور خدائے رب العالمین ہی کے لیے ساری حمد ہے۔ (ت)

(رسالہ ضمنیہ المطر السعید تمام ہوا)

پانزدہم عہ کامل طہارۃ کے یہ معنی کہ اس جنس ارض کو کبھی نجاست نہ پہنچی ہو یا پہنچی تو پاک ہو گئی ہو یعنی اصلا اس کا کوئی حصہ نہ رہا ہو جیسے پانی سے دھل کر یا آگ سے جل کر اجزائے نجاست سب نکل یا جل جائیں دھوپ یا ہوا سے خشک ہو کر جبکہ نجاست کا کوئی اثر رنگ و بو نہ رہے تو وہ شئی نماز کے لیے پاک ہو جاتی ہے مگر اس سے تیمم جائز نہیں ہوتا کہ دھوپ یا ہوا استیصال نجاست نہیں کرتی کچھ اجزائے خفیفہ باقی رہ جاتے ہیں جو نماز میں معاف ہیں اور تیمم میں معاف نہیں کما مر تحقیقه فی صدر الکلام بتوفیق الملك العلام (جیسا کہ اس کی تحقیق آغاز کلام میں، ملک علّام کی توفیق سے گزر چکی۔ت)

ثم اقول: اس زمین ۱ یا جنس زمین کو کبھی نجاست نہ پہنچنے کے یہ معنی کہ اس کے علم میں نہ ہو نہ بعد کو علم آئے۔

[باکس 2 - عربی]: لانا نما کلفنا بما لا نعلم نجاسته لابا نعلم عدم نجاسته اذ لا سبیل لنا الیه فانما التکلیف بحسب الواسع۔

[باکس 2 - اردو]: اس لیے کہ ہم اسی کے مکلف ہیں جن کی نجاست ہمارے علم میں نہ ہو، اس کے مکلف نہیں جس کی عدم نجاست ہمیں معلوم ہو، اس لیے کہ ہمارے پاس اس کی کوئی راہ نہیں۔ تکلیف بقدر وسعت ہی ہے۔ (ت)

ہاں اگر اسے اس شے کی نجاست کا علم نہ تھا نہ وہ کسی مظنہ ۲ نجاست میں تھی کہ یہاں ظن بھی ملتحق بہ یقین ہے، بیت الخلا کی زمین سے تیمم جائز نہ ہو گا اگرچہ اسے اس حصہ خاص کا جس پر تیمم کرنا چاہتا ہے نجس ہونا معلوم نہ ہو یوں جس چیز کی نجاست اس کے علم ۳ و ظن میں نہ تھی بعد کو کسی مسلمان ثقہ عادل کی خبر سے معلوم ہوا کہ یہ شے یا جگہ نجس تھی یا کسی مستور یا فاسق نے خبر دی اور اس کا دل اس کے صدق پر جما تو وہ تیمم باطل تھا اگر اس سے نماز پڑھی تھی اعادہ کرے ہاں کافر کی خبر کا اعتبار نہیں اور غیر عادل کی بات دل پر نہ جمے تو اس کا لحاظ بھی ضرور نہیں اور اگر اسے ۴ نجاست

عہ یہ اس چہار دہم کا پانزدہم ہے جو صفحہ ۷۷۵ پر گزرا۔ (م)

Fatawa Ridawiyya, Volume Three

...was not known, nor did it become known later, then the Tayammum (dry ablution) was valid and the prayer is permissible, even if in Divine Knowledge there was some impurity.

Sixteenth: To have someone else perform Tayammum on oneself with one's own intention as mentioned above involves three issues: (1) Just as performing Tayammum with one's own hands is permissible, it is also permissible to have someone else perform Tayammum on one's limbs under the following conditions.

I say: However, this will be disliked (Makruh) without necessity, just as seeking assistance from another in Wudu (ablution) is; in fact, more so, because some disagree on its very validity and correctness, as you will hear shortly. (Trans.)

(2) Second, that the person performs Tayammum by the instruction of the person needing it. "By instruction" means appointing him as one's agent (Wakil) or deputy regarding Tayammum, whether explicitly or implicitly. If no indication of deputation from him is found and the other person, on his own, strikes the ground with his hands and wipes them over his face and hands, then the Tayammum will not be valid.

(3) It is necessary that the person giving the command makes the intention (Niyyah) himself at the time the hands strike the ground. The intention of the one performing it is not sufficient. It is stated in Maraqi al-Falah:

Arabic	**Urdu Translation (Trans.)**
If the person performing Tayammum makes the intention and commands another, and that person performs Tayammum on him.	So if he made the intention for Tayammum and commanded another person, who then performed Tayammum on him.

It is mentioned in Al-Bahr al-Ra'iq:

Arabic	**Urdu Translation (Trans.)**
If he commands someone else to perform Tayammum on him, it is permissible provided the commander intends... until it says: because the person commanded is a tool, and his	If he had another person perform his Tayammum, it is permissible provided the person giving the command intends (to the point that it was said) because the commanded person is a means and his

Arabic	Urdu Translation (Trans.)
strike is the commander's strike, so the consideration is for the commander.	strike is the commander's strike, so the consideration is for the commander.

In the same source, from Mi'raj al-Dirayah:

Arabic	Urdu Translation (Trans.)
If he commands someone else to perform Tayammum on him and makes the intention himself, it is permissible. Ibn al-Qadi said it is not sufficient... and the intention must be by the commander, as is not hidden.	If he commanded another to perform Tayammum and made the intention himself, it is permissible. Ibn al-Qadi said it will not be sufficient, and the intention must be made by the commander, as is not hidden.

1. Maraqi al-Falah, Chapter on Tayammum, Maktaba Azhariyya, p. 69.
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Press, Karachi, 1/125.
3. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Tayammum, H.M. Saeed Company Press, Karachi, 1/125.

फ़तावा रज़विया, खंड तीन

...पता नहीं था, न ही बाद में पता चला, तो तयम्मुम सही हुआ और नमाज़ जायज़ है, चाहे ईश्वरीय ज्ञान में वहां कोई अपवित्रता (नजासत) हो।

सोलहवां: स्वयं या अपनी उक्त नीयत से दूसरे से इसमें तीन मसले हैं (१) यह कि जिस प्रकार अपने हाथों से तयम्मुम जायज़ है, वैसे ही यह भी जायज़ है कि आगामी शर्तों के साथ दूसरे से अपने अंगों पर तयम्मुम करा ले।

अक़ौल (मैं कहता हूँ): मगर यह बिना आवश्यकता के मकरूह (नापसंद) होगा, जिस प्रकार वुज़ू में दूसरे से सहायता लेना; बल्कि उससे भी अधिक क्योंकि इसके मूल औचित्य और शुद्धता में ही कुछ लोगों का मतभेद है, जैसा कि तुम शीघ्र ही सुनोगे। (अनु.)

(२) दूसरा, उसके आदेश से उसे तयम्मुम कराए। आदेश से तात्पर्य तयम्मुम के संबंध में उसे अपना वकील और प्रतिनिधि बनाना है, चाहे वह स्पष्ट रूप से हो या संकेत से। यदि उसकी ओर से प्रतिनिधि बनाने का कोई प्रमाण नहीं पाया गया और दूसरे व्यक्ति ने स्वयं भूमि पर हाथ मार कर उसके चेहरे और हाथों पर फेर दिए, तो तयम्मुम नहीं होगा।

(३) यह आवश्यक है कि यह आदेश देने वाला भूमि पर हाथ मारने के समय स्वयं नीयत करे, करने वाले की नीयत पर्याप्त नहीं है। 'मराक़ी अल-फ़लाह' में है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद (अनु.)**
यदि तयम्मुम करने वाले ने नीयत की और दूसरे को आदेश दिया तो उसने उसे तयम्मुम करा दिया।	तो अगर तयम्मुम की नीयत की और दूसरे को आदेश दिया कि उसने उसे तयम्मुम करा दिया।

'अल-बहर अल-राइक़' में उल्लेख है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद (अनु.)**
यदि उसने दूसरे को आदेश दिया कि वह उसे तयम्मुम कराए, तो यह जायज़ है बशर्ते कि आदेश देने वाला नीयत करे... (यहाँ तक कि कहा) क्योंकि जिसे आदेश दिया गया है वह एक साधन है और	अगर दूसरे से अपना तयम्मुम करवाया तो जायज़ है बशर्ते कि आदेश देने वाला नीयत करे (यहाँ तक कि फ़रमाया) इसलिए कि जिसे आदेश दिया गया वह ज़रिया है और उसका

अरबी	उर्दू अनुवाद (अनु.)
उसका प्रहार आदेश देने वाले का प्रहार है, इसलिए आदेश देने वाले का ही विचार किया जाता है।	प्रहार, आदेश देने वाले का प्रहार है तो एतबार आदेश देने वाले का ही है।

उसी में 'मेराजुद्दराया' से है:

अरबी	उर्दू अनुवाद (अनु.)
यदि उसने दूसरे को तयम्मुम कराने का आदेश दिया और स्वयं नीयत की तो जायज़ है और इब्न अल-क़ाज़ी ने कहा कि यह पर्याप्त नहीं होगा... और नीयत आदेश देने वाले को करनी होगी जैसा कि छुपा नहीं है।	अगर दूसरे को तयम्मुम कराने का आदेश दिया और खुद नीयत की तो जायज़ है और इब्न अल-क़ाज़ी ने कहा कि काफ़ी न होगा और नीयत आदेश देने वाले को करनी होगी जैसा कि छुपा नहीं है।

1. मराक़ी अल-फ़लाह, बाब अत-तयम्मुम, मकतबा अज़हरिया, पृ. ६९।
2. अल-बहर अल-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी प्रेस, कराची, १/१२५।
3. अल-बر अल-राइक़, बाब अत-तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी प्रेस, कराची, १/१२५।

पृष्ठ ७०८ / ७५६

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

معلوم نہیں نہ بعد کو معلوم ہوئی تو تیمم صحیح ہوا اور نماز جائز اگر چہ علم الٰہی میں وہاں کوئی نجاست ہو۔

شانز دہم: خود یا اپنی نیت مذکورہ سے دوسرے کو اس میں تین مسئلے ہیں (۱) یہ کہ جس طرح اپنے ہاتھوں آپ تیمم جائز ہے یوں ہی یہ بھی روا ہے کہ بشرائط آئندہ دوسرے سے اپنے اعضاء پر تیمم کرالے۔

اقول: مگر یہ بلا ضرورت مکروہ ہوگا جس طرح وضو میں دوسرے سے استعانت بلکہ اس سے زائد کہ اس کے نفس جواز وصحت ہی میں بعض کو خلاف ہے کما ستسمع (جیسا کہ عنقریب سنو گے۔ ت)

(۲) دوسرا اس کے حکم سے اسے تیمم کرائے حکم سے مراد اسے درباره تیمم اپنا وکیل ونائب کرنا ہے عام ازیں کہ صراحۃً ہو یا دلالۃً اگر کسی طرح اس کی جانب سے نائب بنانے پر دلالت نہ پائی گئی اور اس نے بطور خود ہاتھ زمین پر مار کر اس کے منہ اور ہاتھوں پر پھیر دیئے تو تیمم نہ ہوگا۔

(۳) ضرور ہے کہ یہ حکم دینے والا اس کی ضرب کے وقت خود نیت کرے اس کی نیت کافی نہیں۔ مراقی الفلاح میں ہے:

عبارت	ترجمہ (ت)
فان نوی المتیمم وامرہ بغیرہ فیممہ۔ 1	تو اگر تیمم کی نیت کی اور دوسرے کو حکم دیا کہ اس نے اسے تیمم کرادیا۔

بحر الرائق سے گزرا:

عبارت	ترجمہ (ت)
لوامر غیرہ بان ییممہ جاز بشرط ان ینوی الامر الی ان قال) لما ان المأمور الة وضربہ ضرب للآمر فالعبرة للآمر۔ 2	اگر دوسرے سے اپنا تیمم کروایا تو جائز ہے بشرطیکہ حکم دینے والا نیت کرے (یہاں تک کہ فرمایا) اس لیے کہ مامور ذریعہ ہے اور اس کی ضرب، آمر کی ضرب ہے تو اعتبار آمر کا ہے۔

اسی میں معراج الدرایہ سے ہے:

عبارت	ترجمہ (ت)
لوامر غیرہ ان ییممہ ونوی ھو جاز و قال ابن القاضی لایجزئہ 3 اہ والنّاوی ھو الامر کما لایخفی۔	اگر دوسرے کو تیمم کرانے کا حکم دیا اور خود نیت کی تو جائز ہے اور ابن القاضی نے کہا کہ کافی نہ ہوگا اھ اور نیت آمر کو کرنی ہوگی جیسا کہ مخفی نہیں۔

1 مراقی الفلاح باب التیمم مکتبہ ازہریہ ص ۶۹ 2 البحر الرائق باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۵ 3 البحر الرائق باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۵

Fatawa Rizvia Volume 3

I say: A detail crosses the mind of this humble person. It is already known that in the customary tayammum, intention at the time of striking [the earth] is a condition; intention after striking is not sufficient, unless enough dust capable of tayammum is already on the hands, as previously investigated in the mention of the school of Al-Sayyid Al-Imam Abu Shuja' (as the investigation of this has already passed in the explanation of the school of Sayyid Imam Abu Shuja'. - T).

Now here are four scenarios, where the last scenario will become two, making it five: First, Zaid said to Amr: "Make me perform tayammum," and he accepted. Second, Amr said to Zaid: "I will make you perform tayammum," or said, "I am making you perform tayammum." Zaid said, "Fine." In both these scenarios, it is apparent that the tayammum was by Zaid's command. Third, Amr said so and Zaid remained silent and made the intention at the time of his striking [the earth]. Apparently, in this scenario too, it should be permissible as he attributed the act of striking to Zaid by his explicit statement, and Zaid accepted it through his silence, as silence in such a situation is evidence of consent. Thus, in the first two scenarios, the command from Zaid was explicit, and in this one, it was implicit. In 'Ghamz al-Uyun', it is stated:

Agency, just as it is established by speech, is also established by silence. Therefore, it is stated in Al-Zahiriyya: If a cousin says to an adult female, "I want to marry you to myself," and she remains silent, and then he marries her, it is permissible. The author (may Allah have mercy on him) mentioned this in the 'Chapter of Guardians and Equals' in the 'Commentary of Al-Kanz'. 1.

Agency, just as it is established by speech, is also established by silence. This is why it is stated in Az-Zahiriyya: If a paternal cousin said to an adult woman, "I want to perform your marriage with myself," and she remained silent, then he married that adult woman, it is permissible. The author (may Allah have mercy on him) explained this in the 'Chapter of Guardians and Equals' in the 'Commentary of Kanz'. (T).

Fourth, neither Zaid nor Amr said anything. Amr, of his own accord, struck his hands on the earth, even if he had the intention in his heart that "I will make Zaid perform tayammum." Apparently, two possibilities arise from this. One is that due to the strike, enough dust capable of tayammum stuck to Amr's hands, and when he wanted to rub his hands on Zaid's limb, Zaid made the intention of purification,

regardless of whether he had made the intention at the time of Amr's striking or had made it secretly. In this scenario, permissibility is apparent because now this tayammum...

---

1 Ghamz al-Uyun Sharh al-Ashbah, Rule 12, 'Al-Faraj Afdal min al-Nafl', published by Idara-tul-Quran, Karachi, 1/188. Page 709 of 756

फ़तावा रिज़विया जिल्द 3

मैं कहता हूँ: इस फ़क़ीर के मन में एक विस्तार आता है। इतना तो पहले ही ज्ञात हो चुका है कि सामान्य तयम्मुम में, [धरती पर] प्रहार करते समय नीयत (इरादा) एक शर्त है; प्रहार के बाद नीयत पर्याप्त नहीं है, जब तक कि हाथों पर तयम्मुम के योग्य पर्याप्त मिट्टी न लगी हो, जैसा कि अल-सैय्यद अल-इमाम अबू शुजा के मज़हब के उल्लेख में पहले ही शोध किया जा चुका है (जैसा कि सैय्यद इमाम अबू शुजा के मज़हब के स्पष्टीकरण में इसकी तहक़ीक़ पहले गुज़र चुकी है। - त)।

अब यहाँ चार स्थितियाँ हैं, जहाँ अंतिम स्थिति दो होकर पाँच हो जाएँगी: पहली यह कि ज़ैद ने अम्र से कहा: "मुझे तयम्मुम करा दे", और उसने स्वीकार कर लिया। दूसरी यह कि अम्र ने ज़ैद से कहा: "मैं तुझे तयम्मुम करा दूँ", या कहा, "मैं तुझे तयम्मुम करा देता हूँ।" ज़ैद ने कहा, "ठीक है।" इन दोनों स्थितियों में तो ज़ाहिर है कि तयम्मुम ज़ैद के आदेश पर हुआ। तीसरी यह कि अम्र ने ऐसा कहा और ज़ैद खामोश रहा और उसके प्रहार के समय नीयत कर ली। ज़ाहिर है कि इस स्थिति में भी अनुमति होनी चाहिए क्योंकि उसने अपने स्पष्ट कथन से प्रहार के कार्य को ज़ैद की ओर सम्बोधित किया और ज़ैद ने अपनी खामोशी से इसे स्वीकार कर लिया, क्योंकि ऐसी जगह खामोशी रज़ामंदी का प्रमाण है। तो इन पहली दो स्थितियों में ज़ैद की ओर से आदेश स्पष्ट था और इसमें सांकेतिक। 'ग़मज़ुल उयून' में है:

वकालत (एजेंसी), जिस प्रकार बोलने से सिद्ध होती है, उसी प्रकार चुप रहने से भी सिद्ध होती है। इसीलिए अल-ज़हीरिय्या में कहा गया है: यदि चचेरे भाई ने एक बालिग (वयस्क) स्त्री से कहा, "मैं तुम्हारा निकाह अपने साथ करना चाहता हूँ," और वह चुप रही, फिर उसने उससे निकाह कर लिया, तो यह जायज़ है। लेखक (अल्लाह उन पर रहम करे) ने इसे 'शरह अल-कन्ज़' के 'अभिभावकों और बराबरी के अध्याय' में उल्लेख किया है। 1.

वकालत जैसे बोलने से सिद्ध होती है, खामोशी से भी सिद्ध होती है। इसीलिए ज़हीरिय्या में फ़रमाया: अगर चचेरे भाई ने बालिगा से कहा, "मैं चाहता हूँ कि तेरा निकाह अपनी ज़ात से कर दूँ", इस पर वह खामोश रही, फिर उसने उस बालिगा से निकाह कर लिया तो जायज़ है। इसे लेखक (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने 'शरह कन्ज़' में 'बाबुल औलिया वल अक्फ़ा' में बयान किया है। (त)।

चौथी यह कि न ज़ैद ने कुछ कहा न अम्र ने। अम्र ने स्वयं ही ज़मीन पर हाथ मारे, भले ही उसके दिल में यही इरादा हो कि "ज़ैद को तयम्मुम कराऊँगा"। ज़ाहिर है इसमें दो स्थितियाँ निकलेंगी। एक यह कि प्रहार से अम्र के हाथों पर तयम्मुम के योग्य पर्याप्त मिट्टी लग गई थी और जिस समय उसने हाथ उसके अंग पर फेरने चाहे, उसने (ज़ैद ने) पाकी (पवित्रता) की नीयत कर ली, चाहे उसने अम्र के प्रहार के समय नीयत न की हो या परोक्ष रूप से कर ली हो। इस स्थिति में जायज़ होना स्पष्ट है क्योंकि अब यह तयम्मुम...

---

1 ग़मज़ुल उयून शरह अल-अशबाह, नियम 12, 'अल-फ़रज अफ़ज़ल मिन अल-नफ़्ल', प्रकाशित इदारा-तुल-क़ुरआन कराची, 1/188. पेज 709 का 756

اقول: یہاں ذہن فقیر میں ایک تفصیل گزرتی ہے اتنا تو پہلے معلوم ہو لیا کہ تیمم معہود میں نیت وقت ضرب شرط ہے بعد ضرب کافی نہیں مگر اس حالت میں ہاتھوں پر کافی مٹی قابل تیمم لگی ہوئی ہو کما تقدم تحقیقہ فی ذکر مذہب السید الامام ابی شجاع (جیسا کہ مذہب سید امام ابی شجاع کے بیان میں اس کی تحقیق پہلے گزر چکی ہے۔ ت)

اب یہاں چار صورتیں ہیں کہ اخیر کی صورت دو ہو کر پانچ ہو جائیں گی: ایک یہ کہ زید نے عمرو سے کہا: مجھے تیمم کرا دے اس نے قبول کیا۔ دوسرے یہ کہ عمرو نے زید سے کہا: میں تجھے تیمم کرا دوں، یا کہا میں تجھے تیمم کرائے دیتا ہوں۔ زید نے کہا اچھا۔ ان دونوں صورتوں میں تو ظاہر کہ تیمم بامر زید ہوا۔ تیسرے یہ کہ عمرو نے کہا اور زید نے سکوت کیا اور اس کی ضرب کے وقت نیت کر لی ظاہرًا اس صورت میں بھی جواز چاہئے کہ اس نے اپنی تصریح قول سے فعل ضرب زید کی طرف مضاف کیا اور زید نے اپنے سکوت سے اسے قبول کہ ایسی جگہ سکوت دلیلِ رضا ہے تو ان پہلی دو صورتوں میں زید کی طرف سے حکم صراحۃً تھا اور اس میں دلالۃً غمز العیون میں ہے:

الوکالۃ کما تثبت بالقول تثبت بالسکوت ولذا قال فی الظھیریۃ لو قال(۲) ابن العم للکبیرۃ انی ارید ان ازوجک نفسی فسکتت فتزوجھا جا زذکرہ المصنف رحمۃ اللہ تعالیٰ فی باب الاولیاء والاکفاء فی شرح الکنز ۱۔

وکالت جیسے قول سے ثابت ہوتی ہے سکوت سے بھی ثابت ہوتی ہے۔ اسی لیے ظہیریہ میں فرمایا: اگر چچا زاد بھائی نے بالغہ سے کہا میں چاہتا ہوں کہ تیرا نکاح اپنی ذات سے کر دوں، اس پر وہ خاموش رہی پھر اس نے اس بالغہ سے نکاح کر لیا تو جائز ہے اسے مصنف رحمۃ اللہ تعالیٰ نے شرح کنز میں باب الاولیاء والاکفاء میں بیان کیا ہے۔ (ت)

چوتھے یہ نہ زید نے کچھ کہا نہ عمرو نے۔ عمرو نے بطورِ خود جنس ارض پر ہاتھ مارے اگر چہ اس کے دل میں یہی ارادہ ہو کہ زید کو تیمم کراؤں گا بظاہر اس میں دو صورتیں نکلیں گی ایک یہ کہ ضرب سے عمرو کے ہاتھوں پر کافی مٹی قابلِ تیمم لگ گئی تھی اور جس وقت اس نے ہاتھ اس کے عضو پر پھیرنے چاہے اس نے نیت تطہیر کر لی عام ازیں کہ ضرب عمرو کے وقت اس نے نیت نہ کی ہو یار بجما بالغیب کر لی ہو اس صورت میں جواز ظاہر ہے کہ اب یہ تیمم...

---

1 غمز العیون شرح الاشباہ القاعدۃ الثانیۃ عشر الفرج افضل من النفل مطبوعہ ادارۃ القرآن کراچی ۱/ ۱۸۸ صفحہ 709 از 756

Fatawa Rizvia Volume Three Tayammum is not the customary one, but rather with actual dust, and in this, the intention is required at the very moment of establishing contact between the dust and the body parts. Still, the need for deputation (tawkeel) remains so that the action is attributed to him; otherwise, if the wind brings dust and deposits it on the face and arms without wiping with hands, Tayammum will not occur. However, if one jumps into flying dust with the intention of Tayammum such that the dust reaches all the required areas, Tayammum is valid because his action became the cause of contact. For the investigation of this deputation (tawkeel) and representation (anabat), there must be offer and acceptance, similar to a 'sale by mutual delivery' (bay' al-ta'ati) from both sides, which is permissible according to the correct school of thought. For example, the price of bread (1) is known to be one paisa; Bakr came to Khalid's shop, placed four paisas before him, and took four breads. Neither Bakr nor Khalid said anything, yet the sale became valid and complete. Since this Tayammum was not the customary one, intention at the time of striking (the earth) was not a condition. Rather, even if Amr, at the time of striking, made an intention of purification for Zaid, it would be useless because the action of striking was not attributed to him (Zaid) explicitly or implicitly in any way. What is the meaning of intention for an action (not attributed to oneself)? From this, it becomes clear that in this scenario as well, Zaid's command was found implicitly when he wanted Amr to perform Tayammum on him with dust-covered hands, and he accepted it and intended purification; this became implicit representation. Secondly, if no soil was on Amr's hands, or if it was there and he dusted it off as is Sunnah, then clearly in this case, it should not be permissible because at that moment Amr's hands are empty. Thus, the Tayammum is the customary Tayammum, and in customary Tayammum, intention at the time of striking is necessary. This intention is inconceivable here because his striking was not attributed to Zaid. The action of one person cannot be attributed to another merely through a mental intention. For example, (2) if Amr buys something with Zaid's intention, Amr alone will be the owner; it cannot belong to Zaid merely by intention, as stated in Al-Durr etc.: "When a purchase is found to be effective upon the buyer, it is enforced" (as in Durr-e-Mukhtar etc., that when a purchase is found in a way that it is effective upon the buyer, it becomes enforced. - T). Contrary to this, if Zaid did not tell Amr, nor did Amr mention anything to Zaid, and Amr married Zaid's female slave on his own accord, and when Zaid heard of it, he approved it explicitly or implicitly, it becomes effective because this matter could not be attributed to Amr in any way; rather, the contract of disposal was one-sidedly attributed to Zaid. However, in the striking of the palms,

there is no such attribution. This is what has appeared * let it be reviewed and edited * and the knowledge of truth is with the Most High, the Greatest * (This is what is apparent. It should be reviewed and clarified, and the knowledge of truth lies with the Lord Most High. - T). In this final case, i.e., the fifth, even if Zaid had an intention, due to the complete absence of a command explicitly or implicitly, it would not be valid. And if Zaid explicitly said "Perform Tayammum for me" but made no intention or a useless intention like the intention for the act of Tayammum itself, even then it would not be valid. Thus, it is clear that both command and intention must coexist. And Allah Ta'ala knows best. Seventh: Or by that action itself, or by his own or his matters' palms etc. This refers to the division of Tayammum whose investigation has passed above: one is the customary Tayammum, i.e., striking the palms on the surface of the earth and wiping the face and hands; the second is non-customary, which is to perform any other such action which results in those body parts coming into contact with the surface of the earth without an intermediary.

फ़तावा रिज़विया खंड तीन तयम्मुम प्रथागत नहीं है बल्कि वास्तविक मिट्टी से है और इसमें मिट्टी और अंगों के संपर्क के समय ही नीयत (इरादा) होनी चाहिए, फिर भी प्रतिनिधित्व (तौकील) की आवश्यकता बनी रहती है ताकि कार्य उसकी ओर से माना जाए, अन्यथा यदि हवा चेहरा और बाजुओं पर धूल लाकर डाल दे बिना हाथ फेरे तो तयम्मुम नहीं होगा। और यदि कोई तयम्मुम की नीयत से उड़ती हुई धूल में घुस गया कि धूल सभी वांछित स्थानों तक पहुँच गई, तो तयम्मुम हो गया क्योंकि उसका कार्य संपर्क का कारण बना। इस प्रतिनिधित्व और अनुपालन (अनाबत) की जांच के लिए, दोनों पक्षों की ओर से 'लेन-देन द्वारा बिक्री' (बय-ए-तआती) की तरह प्रस्ताव और स्वीकृति होनी चाहिए, जो सही मत के अनुसार जायज़ है। उदाहरण के लिए, रोटी की दर (१) प्रसिद्ध है कि एक पैसा है; बक्र खालिद की दुकान पर आया, उसके सामने चार पैसे रखे और चार रोटियाँ ले गया। न बक्र ने कुछ कहा न खालिद ने, फिर भी बिक्री सही और पूर्ण हो गई। चूंकि यह तयम्मुम प्रथागत नहीं था, इसलिए प्रहार (जमीन पर हाथ मारने) के समय नीयत शर्त नहीं थी, बल्कि यदि प्रहार के समय अम्र ने ज़ैद के लिए शुद्धिकरण की नीयत की होती तो वह बेकार थी क्योंकि प्रहार का कार्य स्पष्ट या संकेत रूप से किसी भी तरह उसकी (ज़ैद की) ओर नहीं जोड़ा गया था। कार्य के लिए नीयत का क्या अर्थ है? और यहीं से स्पष्ट हुआ कि इस स्थिति में भी ज़ैद का आदेश सांकेतिक रूप से पाया गया जब उसने धूल भरे हाथों से उससे तयम्मुम कराना चाहा और उसने उसे स्वीकार किया और शुद्धिकरण की नीयत की; यह सांकेतिक प्रतिनिधित्व हुआ। दूसरा यह कि अम्र के हाथों पर मिट्टी नहीं लगी थी या लगी थी तो उसने उसे झाड़ दिया जैसा कि सुन्नत है, स्पष्ट है कि इस स्थिति में वैधता नहीं होनी चाहिए क्योंकि उस समय अम्र के हाथ खाली हैं। तो तयम्मुम प्रथागत तयम्मुम है और प्रथागत तयम्मुम में प्रहार के समय नीयत अनिवार्य है और यह नीयत यहाँ अकल्पनीय है क्योंकि उसका वह प्रहार ज़ैद की ओर नहीं जोड़ा गया था। केवल मन के इरादे से एक का कार्य दूसरे की ओर नहीं जोड़ा जा सकता, जैसे (२) यदि अम्र ज़ैद के इरादे से कोई चीज़ खरीदे, तो अम्र ही उसका मालिक होगा; केवल इरादे से वह ज़ैद की नहीं हो सकती जैसा कि 'अल-दुर्र' आदि में है: "जब खरीद खरीदार पर प्रभावी पाई जाए तो वह लागू हो जाती है" (जैसा कि दुर्र-ए-मुख्तार आदि में है कि खरीद जब खरीदार पर प्रभावी होने के तौर पर पाई जाए, तो वह प्रभावी हो गई। - ट)। इसके विपरीत, यदि न ज़ैद ने अम्र से कहा और न ही अम्र ने ज़ैद से कुछ चर्चा की और अम्र ने खुद ही ज़ैद की दासी का विवाह कर दिया और ज़ैद को खबर मिली तो उसने स्पष्ट या सांकेतिक रूप से उसे मान्य रखा तो वह प्रभावी हो गया, क्योंकि यह मामला अम्र की ओर से किसी भी तरह नहीं जोड़ा जा सकता था कि निपटान का अनुबंध एकतरफा ज़ैद की ओर था, और हथेलियों के प्रहार में ऐसा कोई जुड़ाव नहीं है। यह वह है जो स्पष्ट

हुआ है * इसकी समीक्षा और संपादन किया जाना चाहिए * और सत्य का ज्ञान परम उच्च और महान रब के पास है * (स्पष्ट रूप से यही है। इसकी समीक्षा और स्पष्टीकरण कर लिया जाए और सत्य का ज्ञान बुलंद और श्रेष्ठ रब के पास है। - ट) इस अंतिम स्थिति यानी पांचवें में, हालांकि ज़ैद की नीयत थी भी, लेकिन स्पष्ट या सांकेतिक रूप से किसी भी तरह आदेश न होने के कारण वैधता नहीं हुई। और यदि ज़ैद ने स्पष्ट रूप से कहा "मुझे तयम्मुम करा दे" और नीयत नहीं की या कोई बेकार नीयत की जैसे स्वयं तयम्मुम के कार्य की नीयत, तब भी वैधता नहीं होगी। तो स्पष्ट हुआ कि आदेश और नीयत दोनों का मिलन आवश्यक है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। सातवाँ: या स्वयं उस कार्य से या अपने अथवा अपने मामलों की हथेलियों आदि से। यह तयम्मुम के उस विभाजन की ओर इशारा है जिसकी जांच ऊपर गुजरी कि एक तयम्मुम प्रथागत है यानी हथेलियों को पृथ्वी की सतह पर मारकर चेहरे और हाथों पर फेरना, दूसरा गैर-प्रथागत कि कोई और ऐसा कार्य करना जिसके कारण बिना मध्यस्थ के उन अंगों का पृथ्वी की सतह से संपर्क हो जाए।

पेज 710 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم تیمم معہود نہیں بلکہ تراب حقیقی سے ہے اور اس میں تراب واعضا کو اتصال دیتے وقت ہی نیت چاہئے پھر بھی توکیل کی ضرورت باقی ہے کہ اس کی طرف سے فعل پایا جائے، ورنہ ہوا اگری چہرہ و ذراعین پر غبار لا کر ڈال دے بے ہاتھ پھیرے تیمم نہ ہوگا اور کود بہ نیت تیمم اڑتے غبار میں داخل ہوا کہ غبار تمام محل مطلوب کو پہنچ گیا تیمم ہوگیا کہ اس کا فعل سبب اتصال ہوا اس کی تحقیق کے لیے یہاں اس توکیل وانابت کا ایجاب و قبول بطور ربیع بالتعاطی من الجانبین ہوگا کہ مذہب صحیح میں جائز ہے مثلاً روٹی کا نرخ (۱) معروف ایک پیسہ ہے بکر خالد کی دکان پر آیا چار پیسے اس کے سامنے رکھ کر چار روٹیاں لے گیا نہ بکر نے کچھ کہا نہ خالد نے بیع صحیح و تام ہوگئی از انجا کہ یہ تیمم تیمم معہود نہ تھا وقتِ ضرب نیت شرط نہ ہوئی بلکہ اگر وقتِ ضرب عمر و زید اپنے لیے نیت تطہیر کرتا بیکار تھی کہ وہ فعل ضرب صراحۃً و دلالۃً کسی طرح اس کی طرف مضاف نہ تھا برائے فعل پر نیت کیا معنی اور یہیں سے ظاہر ہوا کہ اس صورت میں بھی زید کا حکم دلالۃً پایا گیا کہ جب اس نے تراب آلودہ ہاتھوں سے اسے تیمم کرانا چاہا اور اس نے قبول کیا اور نیت تطہیر کی یہ دلالۃً انابت ہوئی۔ دوسرے یہ کہ عمرو کے ہاتھوں پر مٹی نہ لگی یا لگی تھی اس نے جھاڑ دی جیسا کہ مسنون ہے ظاہر اس صورت میں جواز نہ چاہئے کہ اس وقت عمرو کے خالی ہاتھ ہیں تو تیمم تیمم معہود ہے اور تیمم معہود میں وقت ضرب نیت لازم اور یہ نیت یہاں نامتصور کہ اس کی وہ ضرب زید کی طرف مضاف نہ تھی نہ صرف دل کے ارادے سے ایک کا فعل دوسرے کی طرف مضاف ہو جیسے عمرو(۲) زید کے ارادہ سے کوئی چیز خریدے عمر وہی اس کا مالک ہوگا صرف ارادہ سے زید کی نہیں ٹھہر سکتی کما فی الدر وغیرہ ان الشراء متی وجد نفاذا علی المشتری نفذ (جیسا کہ درمختار وغیرہ میں ہے کہ خریداری جب خریدار پر نفاذ کے طور پر پائی جائے نافذ ہوگئی۔ ت)

بخلاف اس کے کہ نہ زید نے عمرو سے کہا نہ عمرو نے زید سے کچھ تذکرہ کیا اور بطور خود زید کا نساء بندہ سے کر دیا اور زید کو خبر پہنچی اس نے صراحۃً یا دلالۃً جائز رکھا نافذ ہوگیا کہ یہ امر عمرو کی طرف سے کسی طرح مضاف ہو سکتا ہی نہ تھا کہ عقد تصرف یکجانب زید مضاف تھا اور ضرب کف میں کوئی اضافت نہیں ھذا ماظھر * فلیراجع ولیحرر * والعلم بالحق عند العلی الاکبر * (ظاہر میں یہی ہے۔ اس کی مراجعت اور صفائی کر لی جائے اور حق کا علم رب بلند و برتر کے یہاں ہے۔ت) اس صورتِ اخیر ہ یعنی پنجم میں اگر چہ زید کی نیت تھی بھی حکم صراحۃً و دلالۃً کسی طرح نہ ہونے سے جواز نہ ہوا، اور اگر زید نے صراحۃً کہا مجھے تیمم کرا دے اور نیت نہ کی یا کوئی بیکار نیت مثل نیت نفس تیمم کی جب بھی جواز نہ ہوگا تو ظاہر ہوا کہ حکم ونیت دونوں کا اجتماع چاہئے واللہ تعالٰی اعلم۔ ہفتم: یا خود اس فعل سے یا اپنے خواہ اپنے امور کے وہ کف الخ یہ تیمم تیمم کی اس تقسیم کی طرف اشارہ ہے جس کی تحقیق اوپر گزری کہ ایک تیمم معہود ہے یعنی کفِ دست جنسِ ارض پر مار کر منہ اور ہاتھوں پر پھیرنا، دوسرا غیر معہود کہ اور کوئی فعل ایسا کرنا جس کے سبب بلاواسطہ ان اعضاء کو جنسِ ارض سے

Fatawa-e-Razvia, Volume 3

The forms and details of its connection have passed above with full elaboration.

Eighteenth: The contact of the majority of it with the face and hands. This is an indication towards a condition of the established (ma'hud) Tayammum, that the wiping (mash) of the face and both hands should be with the whole or the majority of the palms that touched the substance of the earth. If one wipes with only (1) one or two fingers, Tayammum will not be valid, similar to (2) the wiping of the head and the leather socks (khuffayn), for which the majority of the palm is also a condition. In fact, it is even more so than that; for if one repeatedly wets a finger and applies it to various spots on the head or socks until the total reaches the quantity of the majority, the wiping is considered done. However, in this case, if one repeatedly strikes one or two fingers and wipes them over different parts of the face or hands until the entire area is covered, the Tayammum will still not be valid. This is because "the majority of the hand" is legally specified, as this condition only applies to the established Tayammum. In non-established cases, there is no requirement for wiping with the palm at all.

Arabic Text

Allamah al-Shami was guided to this, but he mentioned it with hesitation and deliberation while correcting *al-Durr* and *al-Bahr*. The division of Tayammum that the subtle grace (al-Faydh al-Latif) revealed to this weak servant was not mentioned in any of these. It says in *al-Durr*: "Its condition is the wiping and that it should be with three or more fingers."

On this, he (may Allah have mercy on him) said: This phrase is the meaning of the statement in *al-Bahr*: "with the hand or most of it." Therefore, if one wipes with two fingers, it is not permissible, even if it is repeated until the entire area

Urdu Commentary/Translation

Allamah al-Shami found the way to this point, but he mentioned it with hesitation and deliberation, making a correction to *al-Durr al-Mukhtar* and *al-Bahr al-Ra'iq*. If the division of Tayammum, which was revealed to this weak servant through subtle grace, had come to Allamah al-Shami's mind, all this would not have been necessary. It is stated in *al-Durr al-Mukhtar*: "And its condition is the wiping and that the wiping should be with three or more fingers."

On this, Allamah al-Shami (may Allah have mercy on him) said: This very statement is the meaning of *Bahr*'s "with the hand or the majority of it" (*bil-yad aw bi-akthariha*). So, if one wipes with two fingers, it will not be valid, even if the entire area was

Arabic Text

is covered. This is contrary to the rule for wiping the head, for if one wipes it with one or two fingers, using new water each time until it covers a quarter of the head, it is valid. (Ends from *Imdad* and its *Bahr*).

I say: However, it is stated in *al-Tatarkhaniyya*: "If one rolls in the dust with the intention of Tayammum, and the dust touches his face and hands, it is sufficient for him because the objective has been achieved." (Ends). From this, it is known that the condition for using the majority of the fingers applies specifically when wiping with the hand. This should be reflected upon. (Ends).

Urdu Commentary/Translation

covered through repetition. The rule for wiping the head is different, because if one wipes with one or two fingers, taking fresh water each time, until the wiping equals a quarter of the head, it is valid. (Ends from *Imdad* and *Bahr*).

I say: But it is in *Tatarkhaniyya*: "If one rolls in the dust with the intention of Tayammum such that the dust reaches their face and hands, then this is sufficient because the objective has been achieved." From this, it is understood that the occasion for imposing the condition of the majority of fingers is when the wiping is done by hand. This should be pondered upon. (Ends).

1. *al-Durr al-Mukhtar* with *al-Shami*, Chapter on Tayammum, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/169.
2. *Radd al-Muhtar*, Chapter on Tayammum, published by Mustafa al-Babi, Egypt, 1/169.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 3

इसके जुड़ाव के रूप और विवरण ऊपर विस्तार से गुज़र चुके हैं।

अठारहवां: इसका अधिकांश हिस्सा चेहरे और हाथों से स्पर्श होना। यह स्थापित तैयमुम की एक शर्त की ओर इशारा है कि हथेलियाँ जिन्हें ज़मीन की चीज़ों से छुआ गया, उनके पूरे या अधिकांश हिस्से से चेहरे और दोनों हाथों का मसह (पोंछना) हो। यदि कोई केवल (1) एक या दो उंगलियों से मसह करेगा तो तैयमुम नहीं होगा, जैसे (2) सिर और मोज़ों (ख़ुफ़ैन) का मसह कि उनमें भी अधिकांश हथेली शर्त है। वास्तव में, उनमें इससे भी अधिक है कि यदि वहाँ कोई एक उंगली को बार-बार गीला करके सिर या मोज़ों के विभिन्न स्थानों पर लगाए यहाँ तक कि वह अधिकांश की मात्रा तक पहुँच जाए, तो मसह हो गया। लेकिन यहाँ यदि कोई एक या दो उंगलियों को बार-बार मिट्टी पर मार कर चेहरे या हाथ के विभिन्न अंगों पर फेरे यहाँ तक कि पूरा हिस्सा कवर हो जाए, तो तैयमुम नहीं होगा। क्योंकि "हाथ का अधिकांश" कानूनी रूप से स्वयं निर्धारित है, क्योंकि यह शर्त केवल स्थापित तैयमुम में ही है। गैर-स्थापित तैयमुम में हथेली से मसह करने की आवश्यकता ही नहीं है।

अरबी पाठ

अल्लामा शामी को इस दिशा में मार्गदर्शन मिला, लेकिन उन्होंने इसे हिचकिचाहट और विचार के साथ अल-दुर्र और अल-बहर पर सुधार करते हुए उल्लेख किया। तैयमुम का वह विभाजन जो इस कमज़ोर सेवक पर सूक्ष्म कृपा (अल-फ़ैज़ अल-लतीफ़) से प्रकट हुआ, इनमें से किसी में भी नहीं था। अल-दुर्र में है: "इसकी शर्त मसह है और यह कि यह तीन या अधिक उंगलियों से होना चाहिए।"

इस पर उन्होंने (अल्लाह उन पर रहम करे) कहा: यह वाक्यांश अल-बहर के इस कथन का अर्थ है: "हाथ से या उसके अधिकांश हिस्से से।" इसलिए, यदि किसी ने दो उंगलियों से मसह किया, तो यह

उर्दू व्याख्या/अनुवाद

अल्लामा शामी को इस ओर रास्ता मिला मगर उन्होंने इसे हिचकिचाहट और विचार के साथ दुर्र-ए-मुख़्तार और अल-बहर अल-रायिक पर सुधार करते हुए ज़िक्र किया। वह तैयमुम का विभाजन जो फ़ैज़-ए-लतीफ़ से बंदा-ए-ज़ईफ़ पर ज़ाहिर हुआ, अगर अल्लामा शामी के ख्याल में आ जाता तो यह सब कुछ न होता। दुर्र-ए-मुख़्तार में है: "और इसकी शर्त मसह और मसह का तीन या ज़्यादा उंगलियों से होना है।"

इस पर अल्लामा शामी रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: यही इबारत बहर के बिल-यद अव बि-अक्सरिहा (हाथ से या हाथ के अक्सर हिस्से से) का मानी है। तो अगर दो उंगलियों से मसह

अरबी पाठ	उर्दू व्याख्या/अनुवाद
जायज़ नहीं होगा, भले ही इसे पूरे हिस्से को कवर करने तक दोहराया गया हो। यह सिर के मसह के नियम के विपरीत है, क्योंकि यदि कोई एक या दो उंगलियों से मसह करता है, हर बार के लिए नया पानी लेता है यहाँ तक कि वह सिर के एक चौथाई के बराबर हो जाता है, तो यह सही है। (इमदाद और उसके बहर से समाप्त)।	किया, जायज़ न होगा अगरचे तकरार करके पूरा हिस्सा कवर कर लिया हो। मसह-ए-सर का हुक्म इसके बर-ख़िलाफ़ है क्योंकि अगर एक या दो उंगलियों से, हर बार के लिए नया पानी लेकर मसह किया यहाँ तक कि चौथाई सर के बराबर मसह हो गया तो सही है। (इमदाद व बहर से समाप्त)।
मैं कहता हूँ: लेकिन अल-तातारखानिया में है: "यदि कोई तैयमुम की नियत से धूल में लोट-पोट हो जाए जिससे धूल उसके चेहरे और हाथों पर लग जाए, तो यह उसके लिए पर्याप्त है क्योंकि उद्देश्य प्राप्त हो गया है।" (समाप्त)। इससे यह ज्ञात होता है कि अधिकांश उंगलियों की शर्त लगाने का अवसर तब होता है जब मसह हाथ से किया जाए। इस पर विचार किया जाना चाहिए। (समाप्त)।	मैं कहता हूँ: लेकिन तातारखानिया में है: "अगर तैयमुम की नियत से मिट्टी पर लोट-पोट किया जिससे उसके चेहरे और हाथों पर मिट्टी पहुँच गई तो यह काफ़ी है इसलिए कि मक़सूद हासिल हो गया।" इससे मालूम हुआ कि अक्सर उंगलियों की शर्त लगाने का मौक़ा उस वक़्त है जब हाथ से मसह हो। इसमें गौर करना चाहिए। (समाप्त)।

1. दुर्र-ए-मुख़्तार मअ अल-शामी, बाब-उत-तैयमुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/169।
2. रद्द-उल-मुहतार, बाब-उत-तैयमुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/169।

पृष्ठ 711 का 756

اتصال ہوا اس کی صورتیں اور تفصیلیں بسط کامل کے ساتھ اوپر گزریں۔

ہجدم: ان کے اکثر کا منہ اور ہاتھوں سے مس ہونا یہ تیمم معہود کی ایک شرط کی طرف اشارہ ہے کہ کف دست جو جنس ارض سے مس کیے گئے ان کے کل یا اکثر سے منہ اور دونوں ہاتھوں کا مسح ہوا اگر صرف (۱) ایک یا دو انگلیوں سے مسح کرے گا تیمم نہ ہوگا جیسے (۲) سر اور موزوں کا مسح کہ ان میں بھی اکثر کف شرط ہے بلکہ ان سے بھی زیادہ کہ اگر وہاں ایک انگلی بار بار تر کر کے سر یا موزوں کے مختلف مواضع پر لگائی کہ اکثر کی مقدار کو پہنچ گئی مسح ہو گیا اور یہاں اگر ایک یا دو انگلیوں کو بار بار ضرب کر کے چہرہ یا ہاتھ کے مختلف مواضع پر پھیر کہ استیعاب کر لیا تیمم نہ ہو گا کہ خود اکثر دست شرعاً معین ہے کہ یہ شرط تیمم معہود ہی میں ہے غیر معہود میں سرے سے مسح بالکف ہی کی ضرورت نہیں۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ / تبصرہ
وقد اهتدى له العلامة الشامي لكن ذكره متوقفاً متأملاً مستدركاً به على الدر والبحر والوسع (۳) له ما أظهر الفيض اللطيف على العبد الضعيف من تقسيم التيمم لم يكن شيئاً من هذه قال في الدر وشرطه المسح وكونه بثلاث اصابع فاكثر۔	علامہ شامی کو اس طرف راہ یابی ہوئی مگر انہوں نے اسے توقف و تامل کے ساتھ در مختار اور البحر الرائق پر استدراک کرتے ہوئے ذکر کیا۔ وہ تقسیم تیمم جو فیض لطیف سے بندہ ضعیف پر ظاہر ہوئی اگر علامہ شامی کے خیال میں آجاتی تو یہ سب کچھ نہ ہوتا۔ در مختار میں ہے: "اور اس کی شرط مسح اور مسح کا تین یا زیادہ انگلیوں سے ہونا ہے۔"

عربی عبارت	اردو ترجمہ / تبصرہ
فقال رحمه الله تعالى هو معنى قوله فى البحر باليد او باكثرها فلومسح باصبعين لا يجوز ولو كرر حتى استوعب بخلاف مسح الراس فأنه اذا مسحها باصبع او باصبعين بماء جديد لكل حتى صار قدر ربع الراس صح اهـ امداد وبحره	اس پر علامہ شامی رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: یہی عبارت بحر بالید او باکثرھا (ہاتھ سے یا ہاتھ کے اکثر حصہ سے) کا معنی ہے تو اگر دو انگلیوں سے مسح کیا، جائز نہ ہوگا اگرچہ تکرار کر کے استیعاب کر لیا ہو۔ مسح سر کا حکم اس کے بر خلاف ہے کیونکہ اگر ایک یا دو انگلیوں سے، ہر بار کے لیے نیا پانی لے کر مسح کیا یہاں تک کہ چوتھائی سر کے برابر مسح ہو گیا تو صحیح ہے اھ امداد و بحر۔
قلت لكن فى التاتارخانية ولو تمعك بالتراب بنية التيمم فاصاب التراب وجهه ويديه اجزأه لان المقصود قد حصل اهـ فعلم ان اشتراط اكثر الاصابع محله حيث مسح بيده تأمل اهـ	میں کہتا ہوں: لیکن تاتارخانیہ میں ہے: اگر تیمم کی نیت سے مٹی پر لوٹ پوٹ کیا جس سے اس کے چہرے اور ہاتھوں پر مٹی پہنچ گئی تو یہ کافی ہے اس لیے کہ مقصود حاصل ہو گیا اھ اس سے معلوم ہوا کہ اکثر انگلیوں کی شرط لگانے کا موقع اس وقت ہے جب ہاتھ سے مسح ہو۔ اس میں تامل کرنا چاہیے۔ اھ

1 در مختار مع الشامی باب التیمم مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۶۹ 2 رد المحتار باب التیمم مطبوعہ مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۶۹

Fatawa Razvia, Volume Three

I say further: Their setting a condition of using the hand or most of it in the well-known Tayammum (dry ablution), and the insufficiency of reaching the full area with just one or two fingers, is an explicit text for specifying the hand, and that the hand itself is intended, such that using anything else is not sufficient for coverage. Thus, for example, if one touches a piece of wood, cloth, or paper to the substance of the earth and wipes it over the face and forearms, I do not believe it is permissible except (2) if enough dust adheres to it to cover the area. In that case, it would be an unconventional Tayammum. This is because the pure Shariah only designated dust as a purifier in the absence of water. If actual dust is not present, then its legal substitute (hukmi) is necessary. Shariah-wise, "juridical dust" is only recognized as that hand which has touched actual ground (sa'id). Anyone claiming otherwise must provide proof. How can it be otherwise when the matter is an act of devotion (ta'abbudi) where analogy (qiyas) has no place? Based on this detail, the following passage from 'al-Hilyah' is incomprehensible to me: "The condition is merely touching the earth or its substance with the hands or with something else and passing it over the two limbs, whether something from it adheres to the toucher or not." No one else has written such a thing as far as I can recall at this moment. Yes, (4) it is permissible to touch the palms with a barrier attached to them, such as a cloth wrapped around them, as mentioned regarding the Tayammum of a deceased female.

1 Hilyah Page 712 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द तीसरी

मैं पुनः कहता हूँ: प्रथागत तैयम्मुम में हाथ या उसके अधिकांश भाग की शर्त लगाना, और एक या दो उंगलियों से तैयम्मुम का अपर्याप्त होना हाथ के निर्धारण पर स्पष्ट प्रमाण (नस्स) है, और इस पर भी कि हाथ ही अभीष्ट है जिसके बिना तैयम्मुम अपर्याप्त है। अतः यदि, उदाहरण के तौर पर, किसी लकड़ी, कपड़े या कागज को ज़मीन की किसी चीज़ से स्पर्श करके चेहरे और कलाइयों पर फेर लिया जाए, तो मेरे विचार में यह जायज़ नहीं होगा, सिवाय उस स्थिति के जब उन चीज़ों पर इतनी मिट्टी चिपक गई हो जिससे तैयम्मुम के अंगों का पूरा घेरा (इस्तिआब) हो जाए। तब यह एक गैर-प्रथागत तैयम्मुम होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि पवित्र शरीयत ने पानी न होने की स्थिति में मिट्टी को पवित्र करने वाला माना है। यदि वास्तविक मिट्टी न हो, तो 'हुक्मी' (कानूनी) मिट्टी होना आवश्यक है। शरीयत की दृष्टि से 'हुक्मी मिट्टी' के रूप में केवल वही हाथ ज्ञात और प्रसिद्ध है जिसे वास्तविक ज़मीन (सईद-ए-हक़ीक़ी) से स्पर्श किया गया हो। जो कोई इसके अलावा कुछ और दावा करता है, उसे प्रमाण देना होगा। और यह कैसे हो सकता है जबकि यह मामला इबादत (तअ़ब्बुदी) से संबंधित है जिसमें कयास (अनुमान) की कोई गुंजाइश नहीं है। इस विवरण के तहत 'हिल्यह' का निम्नलिखित कथन मेरी समझ से बाहर है: "शर्त केवल यह है कि हाथों से या किसी और चीज़ से ज़मीन या ज़मीन की किसी चीज़ को स्पर्श किया जाए और उसे दोनों अंगों पर फेरा जाए, चाहे स्पर्श करने वाली चीज़ पर कुछ चिपके या न चिपके।" किसी और ने भी ऐसी बात लिखी है, इस समय मुझे यह भी याद नहीं आ रहा है। हाँ, यह जायज़ है कि दोनों हथेलियों को किसी ऐसे माध्यम (हाइल) से स्पर्श किया जाए जो उनसे जुड़ा हो, जैसे उन पर लपेटा हुआ कपड़ा, जैसा कि मृतक महिला के तैयम्मुम के बारे में उल्लेख किया गया है।

१ हिल्यह पेज ७१२ / ७५६

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

ثم اقول: اشتراطهم اليد او اكثر فى التيمم المعهود وعدم اجزاء الاستيعاب باصبع او اصبعين نص فى تعيين(۱) اليد وانها مقصودة لا يكفى لاستيعاب بغيرها فلوا مس خشبة او ثوبا او قرطاسا مثلا بجنس الارض وامرها على الوجه والذراعين لا اراه يجوز الا (۲) ان يلتزق بها من التراب ما يستوعب المحل فيكون تيمم اغير معهود وذلك لان الشرع المطهر انما جعل التراب طهورا عند عدم الماء فان لم يكن التراب الحقيقى فلابد من الحكمى ولم يعرف التراب الحكمى شرعا اليدا مست بالصعيد الحقيقى ومن ادعى غير ذلك فعليه البيان كيف والامر تعبدى ما فيه للقياس يدان فما (۳) وقع فى الحلية من قوله الشرط مجرد اللمس على الارض او على جنس الارض باليدين او بغيرهما او امرار ذلك على العضوين سواء التزق بالماس شيئ من ذلك اولم يلتزق ۱ اه مما لست احصله ولا يحضرنى الآن من غيره نعم (۴) يجوز امساس الكفين بحائل تابع لهما كخرقة ملفوفة عليها كما مرفى تيميم الميت الانثى

ثم اقول: (میں پھر کہتا ہوں) تیمم معہود میں ہاتھ یا اس کے اکثر حصہ کی شرط لگانا، اور ایک یا دو انگلی سے استیعاب کا نا کافی ہونا ہاتھ کی تعیین پر نص ہے اور اس پر بھی کہ وہ مقصود ہے جس کے بغیر استیعاب ناکافی ہے۔ تو اگر مثلاً کسی لکڑی یا کپڑے یا کاغذ کو، جنسِ زمین سے مس کر کے چہرے اور کلائیوں پر گزار لیا تو میرے خیال میں یہ جائز نہ ہو گا مگر اسی صورت میں جب ان چیزوں پر اتنی مٹی چپک گئی ہو جس سے محل تیمم کا استیعاب ہو جائے تو یہ تیممِ غیر معہود ہو جائے گا، وہ اس لیے کہ شرع مطہر نے پانی نہ ہونے کے وقت مٹی کو مطہر قرار دیا ہے تو اگر حقیقی مٹی نہ ہو تو حکمی ہونا ضروری ہے۔ اور شرعاً ترابِ حکمی کی حیثیت سے معلوم و معروف صرف وہی ہاتھ ہے جسے صعیدِ حقیقی سے مس کیا گیا ہو۔ جو کسی اور کا بھی مدعی ہو اس کے ذمہ دلیل ہے اور یہ کیسے ہو سکتا ہے جب کہ معاملہ تعبدی ہے جس میں قیاس

کی دست رست نہیں۔ اس تفصیل کے تحت حلیہ کی درج ذیل عبارت میرے لیے ناقابل فہم ہے:

"شرط صرف یہ ہے کہ زمین یا جنسِ زمین پر ہاتھوں سے یا کسی اور چیز سے مس ہواور اسے دونوں عضووں پر گزارا جائے اس میں سے کچھ مس کرنے والے سے چپکے یا نہ چپکے اھ"۔

کسی اور نے بھی ایسی عبارت لکھی ہے اس وقت یہ بھی مجھے یاد نہیں آتا۔ ہاں یہ جائز ہے کہ دونوں ہتھیلیوں کو کسی ایسے حائل سے مس کیا جائے

۱ حلیہ صفحہ 712 از 756

Fatawa Razviyya Volume 3

...and the hermaphrodite, as well as the man when a free non-mahram woman performs tayammum for him. This is because touching the subordinate is equivalent to touching the principal, like touching the leather cover of the Holy Quran and its detached sheath. Similarly, if there is a hardened bandage on his palms that has dried, it is permissible to strike with them. If removing it would cause harm, then this striking would be considered a wiping of his palms as far as I know, and Allah knows best. If this is what is intended, then it is so, despite the ambiguity. Otherwise, it is problematic, and Allah knows best.

Nineteenth: With separate contacts. This is said because in standard tayammum, one contact of the palms with the earth is sufficient for wiping one limb. It is not permissible to wipe two limbs with one contact. For example, if one strikes with both palms and wipes the face, then it is not permissible to wipe any hand with either of those palms; a new strike is required for the hands. If one strikes with both palms and wipes the entire face with one palm and one hand with the other, it is permissible, but another strike is needed for the second hand. It is mentioned in 'Siraj-ul-Wahhaj', 'Jawhara-un-Nayyirah', and 'Hindiyyah':

'And if he wipes his face with one hand and one of his hands with the other, it suffices for the face and the first hand, and he repeats the strike for the other hand.' (t)

Annotation: In a version of Al-Jawhara, it is written 'and with the other his hands' (plural). I say: perhaps the word 'one of' was omitted by the scribe's pen, for that case is not possible. And even if it were possible, the ruling would be as mentioned. 12 (m)

1. Fatawa-e-Hindiyyah, Chapter of Tayammum, Nurani Kutub Khana Press, Peshawar, 1/26 Page 713 of 756

फतावा रज्विया जिल्द सोम (तीसरी)

...और उभयलिंगी (खुनसा), और इसी तरह वह पुरुष जब एक स्वतंत्र गैर-महरम महिला उसे तयम्मुम कराए। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो आश्रित है उसका स्पर्श मुख्य के स्पर्श के समान है, जैसे पवित्र कुरान की चमड़े की जिल्द और उसके अलग कवर का स्पर्श। इसी तरह, यदि उसकी हथेलियों पर कोई सख्त लेप चढ़ा हो और सूख गया हो, तो उनसे (मिट्टी पर) जरब (प्रहार) करना जायज है। यदि उसे हटाने से नुकसान होता हो, तो यह जरब मेरी जानकारी के अनुसार उसकी हथेलियों का मसह ही माना जाएगा, और अल्लाह बेहतर जानता है। यदि उनका यही आशय है तो ठीक है, हालांकि इसमें अत्यधिक अस्पष्टता है। और यदि यह आशय नहीं है, तो इसमें बड़ी समस्या है। और अल्लाह तआला खूब जानने वाला है।

उन्नीसवां: अलग-अलग संपर्क से। यह इसलिए कहा गया क्योंकि तयम्मुम में हथेलियों का जमीन के साथ एक बार का संपर्क एक ही अंग के मसह के लिए काफी होता है। एक संपर्क से दो अंगों का मसह करना जायज नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि एक बार दोनों हथेलियों से जरब करके चेहरा मसह कर लिया, तो अब उनमें से किसी भी हथेली से किसी हाथ का मसह करना जायज नहीं है; हाथों के लिए नए सिरे से जरब की आवश्यकता होगी। और अगर दोनों हथेलियों से जरब करके एक हथेली से पूरा चेहरा मसह किया और दूसरी से एक हाथ, तो यह जायज है, मगर दूसरे हाथ के लिए फिर नए जरब की जरूरत होगी। 'सिराज-उल-वहाज', 'जौहरा-उन-नय्यिराह' और 'हिन्दिया' में है:

'और यदि उसने अपने एक हाथ से चेहरे का मसह किया और दूसरे से एक हाथ का, तो चेहरे और पहले हाथ के लिए यह पर्याप्त होगा और दूसरे हाथ के लिए फिर से जरब लगाएगा।' (त)

नोट: 'जौहरा नय्यिराह' के नुस्खे में 'व-बिल-उखरा यदैही' (और दूसरे से अपने दोनों हाथों का) लिखा है। मैं कहता हूँ: शायद इसमें कातिब (लिपिक) की कलम से शब्द 'इहदा' (एक) छूट गया है, क्योंकि वह सूरत मुमकिन नहीं है। और अगर मुमकिन भी हो, तो हुक्म वही होगा जो बयान हुआ। 12 (त)

1. फतावा हिन्दिया, बाब-उत-तयम्मुम, मतबा नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/26 पेज 713 of 756

والخنثی وکذا الرجل اذایممته حرة اجنبیبة وذلك لان مس التابع مس المتبوع کمس (۱) جلد المصحف الشریف وغلافه الغیر المتجافی عنه وکذلک (۲) اذاکان علی کفیه ضماد متجسد وقد یبس جاز له الضرب بهما فان ضره ازالته کان الضرب هکذا مسحاً لکفیه فیما اعلم واللہ تعالٰی اعلم فان اراد هذا فذاك مع شدّة مافیه من الایهام والافهو مشکل واللہ تعالٰی اعلم۔

جو ان کے تابع ہو جیسے کوئی کپڑا جو ان پر لپیٹ لیا ہو، جیسا کہ عورت اور خنثی مرد کے تیمم میں بیان ہوا۔ یہی صورت اس وقت بھی ہوگی جب مرد کو آزاد اجنبیہ تیمم کرائے، وہ اس لیے کہ تابع کامس، متبوع ہی کامس ہے جیسے مصحف شریف کی جلد، اور اس کے ایسے غلاف کا مس جو اس سے الگ نہ ہو۔ اسی طرح جب ہتھیلیوں پر کوئی لیپ چڑھا ہوا ہو اور سوکھ گیا ہو تو ان ہتھیلیوں سے ضرب جائز ہے اگر اس لیپ کا چھڑانا ضرر دیتا ہو تو یہی ضرب جہاں تک مجھے علم ہے ہتھیلیوں کا بھی مسح قرار پائے گی۔ اور خدا خوب جاننے والا ہے۔ اگر صاحب حلیہ کی مراد یہی ہے تو ٹھیک ہے پھر بھی اس میں شدید ایہام ہے اور اگر یہ مراد نہیں تو اس میں بڑا اشکال ہے۔ اور اللہ تعالٰی خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

نوزدہم : جدا جدا اتصالوں سے ، یہ اس لیے کہا گیا کہ تیمم معہود میں کف کو ایک بار جو اتصال جنس ارض سے دیا گیا وہ ایک ہی عضو کے مسح کو کافی ہوتا ہے ایک اتصال سے وہ عضووں کا مسح جائز نہیں مثلاً ایک بار دونوں ہتھیلیوں سے ضرب کرکے چہرہ کا مسح کر لیا تو اب ان میں کسی ہتھیلی سے کسی ہاتھ کا مسح جائز نہیں ہاتھوں کے لیے ضرب جدید چاہیے گی اور اگر دونوں ہتھیلیوں ضرب کرکے ایک ہتھیلی سارے منہ پر پھیرے اور دوسری ایک ہاتھ پر تو یہ جائز

ہے مگر دوسرے ہاتھ کے لیے پھر ضرب جدید کی حاجت ہے۔ سراج وہاج وجوہرہ نیرہ و ہندیہ میں ہے:

ولو مسح باحدی یدیه وجهه وبالاخری احدی یدیه اجزأه في الوجه والید الاولی ویعید الضرب للید الاخری۔ اگر اپنے ایک ہاتھ سے چہرے کا مسح کیا اور دوسرے سے ایک ہاتھ کا، تو چہرے اور پہلے ہاتھ کے لیے یہ کافی ہوگا اور دوسرے ہاتھ کے لیے پھر ضرب لگائے گا۔ (ت)

عه : ووقع في نسخة الجوهرة وبالاخری یدیه اقول لعله سقط فیها من قلم الکاتب لفظة احدی فانه غیر ممکن ولو امکن لکان الحکم ماذکر ۱۲ منه (م) جوہرہ نیرہ کے نسخہ میں "وبالاخری یدیه" لکھا ہے (اور دوسرے سے اپنے دونوں ہاتھوں کا مسح کیا) اقول: شاید اس میں کاتب کے قلم سے لفظ "احدی" چھوٹ گیا ہے اس لیے کہ وہ صورت ممکن نہیں اور اگر ممکن بھی ہو تو حکم وہی ہوگا جو بیان ہوا۔ ۱۲منہ (ت)

1 فتاوی ہندیہ باب التیمم مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۶ Page 713 of 756

Fatawa Razawiyya - Volume Three

Therefore, if Tayammum (dry ablution) is performed for a deceased person, or if one person performs it for another living person, and they strike both palms once on a substance of the earth and wipe the face, then strike again and wipe one of the person's hands with both palms, then a third strike is needed for the second hand. This is a type of Tayammum that would not be valid with just two strikes. Thus, we did not limit it by number, but rather mentioned separate connections.

[Boxed Text - Arabic and Urdu Translation]: Arabic: This is the interpretation of what is in Jami' al-Rumuz from Al-'Uman: "If one performs Tayammum for another, they should strike thrice: for the face, the right hand, and the left hand." This was affirmed in Al-Durr [al-Mukhtar]. Al-Shami said: Al-'Uman is an obscure book. What is well-known in commonly used books is the general rule, which conforms to the noble Hadith: "Tayammum consists of two strikes." Unless the intention is that the patient's hand is wiped with both hands of the one performing it; in that case, there is undoubtedly a need for a third strike to wipe the other hand.

Urdu: This is also the interpretation of what is quoted in Jami' al-Rumuz from 'Uman: "If one performs Tayammum for another, they should strike thrice in total: for the face, the right hand, and the left hand." This was maintained in Durr-e-Mukhtar. Allamah Shami said: "'Uman" is an obscure book. What is famous in common books is that the command for two strikes is absolute. This is also in accordance with the noble Hadith "At-Tayammumu Darbataan" (Tayammum consists of two strikes). However, if the intention is that the patient's hand is wiped with both of the performer's hands, then in such a case, there will undoubtedly be a need for a third strike with which they will wipe the other hand."

Eighth: Over the face and elbows with each hand. We said "then" and then didn't say it because, like Wudu, sequence is not a condition in Tayammum as stated in Al-Bahr [al-Raiq]. Whether one wipes the face first, or the right hand first, or the left hand, or all parts at once—as mentioned regarding Tayammum via a dust storm etc. However, in the customary Tayammum, sequence is Sunnah, just as in Wudu, such that the face is wiped first with both palms, then the right hand is wiped with the left palm, then the left hand with the right palm.

Note: I did not find a mention of it in Kashf al-Zunun. 12minhu (m). No mention of it was found in Kashf al-Zunun. 12minhu (t)

1 Jami' al-Rumuz, Chapter of Tayammum, Islamiat Library, Gunbad Qamus, Iran, 1/28.
2 Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa Al-Babi Press, Egypt, 1/175.

फ़तावा रज़विया - जिल्द सोम (तीसरी)

इसलिए यदि किसी मृतक को तयम्मुम कराया जाए या किसी अन्य जीवित व्यक्ति को, और एक बार दोनों हथेलियाँ ज़मीन की किसी चीज़ पर मारकर चेहरे पर फेरी जाएँ फिर दोबारा मारकर दोनों हथेलियों से उसके एक हाथ का मसह किया जाए, तो दूसरे हाथ के लिए तीसरी बार मारने (ज़रब) की ज़रूरत होगी। यह वह तयम्मुम है जो दो बार मारने से जायज़ नहीं होगा। इसीलिए हमने इसे संख्या से सीमित नहीं किया बल्कि अलग-अलग जुड़ाव (इत्तेसाल) कहा।

[बॉक्स टेक्स्ट - अरबी और उर्दू अनुवाद]: अरबी: यही उसका भी अर्थ है जो 'जामेउर रमूज़' में 'ओमान' से उद्धृत है: 'अगर दूसरे को तयम्मुम कराया तो चेहरे, दाहिने हाथ और बाएँ हाथ के लिए कुल तीन बार हाथ ज़मीन पर मारेगा।' इसे 'दुर्रे मुख़्तार' में बरकरार रखा गया। अल्लामा शामी ने फ़रमाया: 'ओमान' एक कम प्रसिद्ध किताब है। प्रचलित किताबों में मशहूर यही है कि दो बार मारने का हुक्म बिना किसी शर्त के है। यही पवित्र हदीस 'अत-तयम्मुमु ज़रबतान' (तयम्मुम दो बार मारना है) के अनुसार भी है। लेकिन अगर यह मुराद हो कि मरीज़ के हाथ पर अपने दोनों हाथों से मसह किया, तो ऐसी सूरत में निस्संदेह उसे तीसरी बार मारने की ज़रूरत होगी जिससे वह उसके दूसरे हाथ का मसह करेगा।

उर्दू: यही उसका भी महमल है जो जामेउर रमूज़ में ओमान से मनक़ूल है: "अगर दूसरे को तयम्मुम कराया तो चेहरे, दाहिने हाथ और बाएँ हाथ के लिए कुल तीन ज़रबें लगाएगा। इसे दुर्रे मुख़्तार में बरक़रार रखा। अल्लामा शामी ने फ़रमाया: 'ओमान' कोई ग़ैर मारूफ़ किताब है। मुतदावल किताबों में मशहूर यही है कि दो ज़रबों का हुक्म मुतलक़न है। यही हदीस शरीफ़ 'अत-तयम्मुमु ज़रबतान' (तयम्मुम दो ज़रबें हैं) के मुताबिक़ भी है। लेकिन अगर यह मुराद हो कि मरीज़ के हाथ पर अपने दोनों हाथों से मसह किया तो ऐसी सूरत में बिला शुबहा उसे तीसरी ज़रब की ज़रूरत होगी जिससे उसके दूसरे हाथ का मसह करेगा।"

आठवाँ: मुँह और कोहनियों के ऊपर हर हाथ। हमने 'और' कहा फिर नहीं कहा इसलिए कि वज़ू की तरह तयम्मुम में भी तरतीब (क्रम) शर्त नहीं है, जैसा कि 'अल-बह्र रईक' में है। चाहे पहले चेहरे का मसह करे या पहले दाहिने हाथ या बाएँ हाथ का या सब अंगों का एक साथ, जैसे बवंडर वग़ैरह से तयम्मुम में गुज़रा। हाँ, तयम्मुम मअहूद (प्रचलित) में तरतीब सुन्नत है जिस तरह वज़ू में कि पहले दोनों हथेलियों से चेहरे का मसह हो फिर बाईं हथेली से सीधे हाथ का फिर सीधी से बाएँ का।

नोट: मुझे 'कश्फ़ुज़ ज़ुनून' में इसका कोई ज़िक्र नहीं मिला। 12मिन्हु (म)। कश्फ़ुज़ ज़ुनून में इसका कोई ज़िक्र न मिला। 12मिन्हु (त)

1 जामेउर रमूज़, बाबुत्तयम्मुम, मकतबा इस्लामिया गुम्बद क़ामूस ईरान, 1/28 2 रद अल-मुह्तार, बाबुत्तयम्मुम, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 1/175

पृष्ठ 714 का 756

ولہذا اگر میت کو تیمم کرایا یا دوسرے شخص نے کسی زندہ کو اور ایک بار دونوں ہتھیلیاں جنس ارض پر مار کر چہرہ پر پھیریں دوبارہ ضرب کرکے دونوں ہتھیلیوں سے اس کے ایک ہاتھ کو مسح کیا تو دوسرے ہاتھ کے لیے تیسری ضرب کی حاجت ہے یہ وہ تیمم ہے کہ دو ضربوں سے جائز نہ ہوگا ولہذا ہم نے عدد سے مقید نہ کیا بلکہ جدا جدا اتصال کہا۔

[باکس ٹیکسٹ]: عربی: وھذا ھو محمل ما في جامع الرموز عن العمان لویمم غیرہ یضرب ثلاثاً للوجہ والیمنی والیسری واقرہ في الدر اھـ قال ش العمان کتاب غریب والمشھور في الکتب المتداولۃ الاطلاق وھو الموافق للحدیث الشریف التیمم ضربتان الان یکون المراد اذ امسح ید المریض بکلتا یدیہ فحینئذ لا شبھۃ في انہ یحتاج الی ضربۃ ثالثۃ یمسح بھا یدہ الاخری اھـ

اردو ترجمہ: یہی اس کا بھی محمل ہے جو جامع الرموز میں عمان سے منقول : "اگر دوسرے کو تیمم کرایا تو چہرے، داہنے ہاتھ اور بائیں ہاتھ کے لیے کل تین ضربیں لگائے گا۔ اسے درمختار میں برقرار رکھا اھ علامہ شامی نے فرمایا : "عمان" کوئی غیر معروف کتاب ہے۔ متداول کتابوں میں مشہور یہی ہے کہ دو ضربوں کا حکم مطلقاً ہے۔ یہی حدیث شریف "التیمم ضربتان" (تیمم دو ضربیں ہیں) کے مطابق بھی ہے۔ لیکن اگر یہ مراد ہو کہ مریض کے ہاتھ پر اپنے دونوں ہاتھوں سے مسح کیا تو ایسی صورت میں بلا شبہ اسے تیسری ضرب کی ضرورت ہوگی جس سے اس کے دوسرے ہاتھ کا مسح کرے گا اھ"۔ (ت)

ہشتم: منہ اور کہنیوں کے اوپر ہر ہاتھ ہم نے اور کہا پھر نہ کہا اس لیے کہ وضو کی طرح تیمم میں بھی ترتیب شرط نہیں کما فی البحر (جیسا کہ البحرالرائق میں ہے۔ ت) چاہے پہلے منہ کا مسح

کرے یا پہلے داہنے ہاتھ یا بائیں ہاتھ کا یا سب اعضاء کا ایک ساتھ، جیسے بگولے وغیرہ سے تیمم میں گزرا ہاں تیمم معہود میں ترتیب سنّت ہے جس طرح وضو میں کہ پہلے دونوں ہتھیلیوں سے چہرے کا مسح ہو پھر بائیں ہتھیلی سے سیدھے ہاتھ کا پھر سیدھی سے بائیں کا۔

عہ: لم ار لہ ذکرا فی کشف الظنون ۱۲منہ (م) کشف الظنون میں اس کا کوئی ذکر نہ ملا۔ ۱۲منہ (ت)

1 جامع الرموز باب التیمم مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۱/ ۲۸ 2 ردالمختار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱/ ۱۷۵

Fatawa Rizvia, Volume 3 (1) The Sunnah method which was just mentioned. (2) With the first strike, wipe the face with both palms, and with the second strike, wipe first the left hand then the right hand. (3) With the first strike, wipe the face with the right palm, then wipe the right hand with the left, then after a second strike with the right palm, wipe the left hand. (4) Its reverse: first wipe the face with the left palm, then the left hand with the right, then after a second strike with the left, wipe the right hand. (5) With the first strike, wipe the right hand with the left palm, then the face with the right, then with a second strike of the right, wipe the left hand. (6 to 8) First wipe the right hand with the left palm, then the left hand with the right, then the face from the strike of either the right, left, or both palms. (9) In the first strike, wipe the left hand with the right palm, then the face with the left, then with the second strike of the left, wipe the right hand. (10 to 12) First wipe the left hand with the right palm, then the right hand with the left, then the face from the strike of either the right, left, or both palms. Tayammum will be valid according to all these methods, but only the first one is narrated from the Sunnah. Twenty-one: No part should remain untouched. This is the explanation of the condition of 'isti'ab' (full coverage), that on all parts of the face and hands whose washing is obligatory in Wudu, the reaching of the substance of the earth in non-customary (Tayammum) and reaching of hands in customary (Tayammum) is indeed obligatory. This is the correct view and this is the 'Zahir-ur-Riwayah' (apparent narrative) and upon this is the reliance. So, if even the tip of a single hair remains untouched by the hand or the substance of earth, Tayammum will not be valid. Therefore, it is necessary that rings, bands, bracelets, wristlets, bangles, and every ornament of the palm and wrist be removed or moved aside to perform Masah (wiping) or to let the earth's substance reach the skin, as mentioned in Al-Bahr, Al-Durr, etc., and other general travel books (as in Al-Bahr al-Ra'iq, Durr-e-Mukhtar and other common books. - T). I say: Here more care is necessary than in Wudu, especially in customary Tayammum because flowing water and flying dust are themselves reaching substances, but the hand will only reach where it is placed. Then I say: The places of hardship that we mentioned in Al-Jood Al-Hulo are also mandatory exceptions here. Page 715 of 756

फ़तावा रज़विया, जिल्द-३ (१) सुन्नत तरीक़ा जिसका अभी ज़िक्र हुआ। (२) पहली ज़रब (चोट) में दोनों हथेलियों से चेहरे का और दूसरी ज़रब में पहले बाएं हाथ फिर दाएं का (मसह करें)। (३) पहली ज़रब में दाहिनी हथेली से मुँह का मसह करे फिर बाएं से दाहिने हाथ का फिर दाहिनी हथेली से दूसरी ज़रब करके बाएं हाथ का। (४) इसका उल्टा कि पहले बाएं हथेली से मुँह का फिर दाहिनी से बाएं हाथ का फिर बाएं से दूसरी ज़रब करके दाहिने का। (५) पहली ज़रब में बाएं हथेली से दाहिने हाथ का फिर दाहिनी से मुँह का फिर दाहिनी की दूसरी ज़रब से बाएं हाथ का। (६ से ८) पहले बाएं हथेली से दाहिने हाथ का फिर दाहिनी से बाएं का फिर दाहिनी चाहे बाएं चाहे दोनों की ज़रब से मुँह का। (९) पहली ज़रब में दाहिनी हथेली से बाएं हाथ का फिर बाएं से मुँह का फिर बाएं की दूसरी ज़रब से दाहिने हाथ का। (१० से १२) पहले दाहिनी हथेली से बाएं हाथ फिर बाएं से दाहिने हाथ का फिर दाहिनी चाहे बाएं चाहे दोनों की ज़रब से मुँह का। तयम्मुम इन सब तरीक़ों पर सही होगा और सुन्नत से मंक़ूल (प्रमाणित) सिर्फ़ पहला (तरीक़ा) है। इक्कीसवाँ : कोई हिस्सा (बिना मसह के) न रहे यह शर्त-ए-इस्तियाब (पूर्ण कवरेज की शर्त) का बयान है कि जितने मुँह और जितने हाथों का धोना वज़ू में फ़र्ज़ है, उस तमाम हिस्से पर तयम्मुम-ए-ग़ैर मअहूद में जिंस-ए-अ़र्ज़ (मिट्टी वगैरह) और मअहूद में हाथ का पहुँचना फ़र्ज़ ही है, यही सही है और यही ज़ाहिर-उर-रिवायत है और इसी पर एतमाद (भरोसा) है। तो अगर एक बाल की नोक भी हाथ या जिंस-ए-अ़र्ज़ पहुँचने से बाक़ी रह गई तयम्मुम न होगा तो लाज़िम है कि अंगूठी, छल्ले, कंगन, पहुँचियां, चूड़ियां, हथेली और कलाई का हर गहना उतार लिया जाए या उसे हटा-हटा कर मसह या मिट्टी पहुंचाई जाए जैसा कि अल-बहर, अद-दुर्र वग़ैरह सामान्य यात्रा पुस्तकों में है (जैसा कि अल-बहरुर रायिक़, दुर्र-ए-मुख़्तार और उनके अलावा सामान्य पुस्तकों में है। - अनुवादक)। मैं कहता हूँ: तो यहाँ वज़ू से ज़्यादा एहतमाम (सावधानी) लाज़िम है, ख़ासकर तयम्मुम-ए-मअहूद में कि ढुलकता हुआ पानी और उड़ता हुआ ग़ुबार (धूल) ख़ुद भी पहुँचने वाली चीज़ है और हाथ तो जहाँ पहुँचाया जाए वहीं पहुँचेगा। फिर मैं कहता हूँ: तंगी (हर्ज) के मक़ामात जिनका हमने अल-जूद अल-हुलो में ज़िक्र किया है यहाँ भी वाजिब-उल-इस्तिस्ना (अपवाद के योग्य) हैं। पेज ७१५ ऑफ ७५६

فتاوی رضویہ، جلد سوم (۱) طریق مسنون کہ ابھی مذکور ہوا۔ (۲) پہلی ضرب میں دونوں ہتھیلیوں سے چہرہ کا اور دوسری ضرب میں پہلے بائیں ہاتھ پھر داہنے کا۔ (۳) پہلی ضرب میں دہنی ہتھیلی سے منہ کا مسح کرے پھر بائیں سے داہنے ہاتھ کا پھر دہنی ہتھیلی سے دوسری ضرب کرکے بائیں ہاتھ کا۔ (۴) اس کا عکس کہ پہلے بائیں ہتھیلی سے منہ کا پھر دہنی سے بائیں ہاتھ کا پھر بائیں سے دوسری ضرب کرکے دہنے کا۔ (۵) پہلی ضرب میں بائیں ہتھیلی سے دہنے ہاتھ کا پھر دہنی سے منہ کا پھر دہنی کی دوسری ضرب سے بائیں ہاتھ کا۔ (۶تا۸) اول بائیں ہتھیلی سے دہنے ہاتھ کا پھر دہنی سے بائیں کا پھر دہنی خواہ بائیں خواہ دونوں کی ضرب سے منہ کا۔ (۹) ضرب اول میں دہنی ہتھیلی سے بائیں ہاتھ کا پھر بائیں سے منہ کا پھر بائیں کی دوسری ضرب سے دہنے ہاتھ کا۔ (۱۰تا۱۲) پہلے دہنی ہتھیلی سے بائیں ہاتھ پھر بائیں سے دہنے ہاتھ کا پھر دہنی خواہ بائیں خواہ دونوں کی ضرب سے منہ کا۔ تیمم ان سب طریقوں پر صحیح ہوگا اور سنت سے منقول صرف اول۔

بست و یکم: کوئی حصہ ایسا نہ رہے یہ شرط استیعاب کا بیان ہے کہ جتنے منہ اور جتنے ہاتھوں کا دھونا وضو میں فرض ہے اس تمام حصہ پر تیمم غیر معہود میں جنس ارض اور معہود میں ہاتھ کا پہنچنا فرض ہی یہی صحیح ہے اور یہی ظاہر الروایۃ اور اسی پر اعتماد تو اگر ایک بال کی نوک بھی ہاتھ یا جنس ارض پہنچنے سے باقی رہ گئی تیمم نہ ہوگا تو لازم ہے کہ انگوٹھی چھلے کنگن پہنچیاں چوڑیاں کف دست اور کلائی کا ہر گہنا اتار لیا جائے یا اسے ہٹا ہٹا کر مسح یا ایصال جنس کیا جائے کما فی البحر والدر وغیرہما عامۃ الاسفار (جیسا کہ البحر الرائق، در مختار اور ان کے علاوہ عامہ کتب میں ہے۔ ت) اقول: تو یہاں وضو سے زیادہ اہتمام لازم خصوصاً تیمم معہود میں کہ ڈھلکتا ہوا پانی اڑتا ہوا غبار خود بھی رسائی کی چیز ہے اور ہاتھ تو جہاں پہنچایا جائے

وہیں پہنچے گا۔ ثم اقول: مواضع حرج کہ ہم نے الجود الحلو میں ذکر کیے یہاں بھی واجب الاستثنا ہیں۔ صفحہ ۷۱۵ از ۷۵۶

Fatawa Razawiya, Volume 3

'...He has not placed upon you in the religion any difficulty.' (T) The legislation of Tayammum was solely for the removal of hardship. So, that which is not a hardship in itself but maintaining it is a hardship, like antimony (kohl) in the eye etc., it is pardoned in case of unawareness but not after notification. And that which is a hardship in itself, like the eyeball etc., is pardoned absolutely.

Arabic Prayer	English Translation
May Allah Almighty pardon us absolutely with a general release regarding us and our sins.	May Allah Almighty bestow upon us absolute forgiveness, absolutely regarding us and our sins.
*And may Allah Almighty shower mercy, blessings, and peace upon the guide of our hearts,	And may Allah Almighty send mercy, blessings, and peace upon the guide of our hearts,
*the wiper of our defects, and the remover of our distresses, and upon his progeny, his companions, his sons, and his group, all of them, through him, for eternity of eternities,	the eraser of our flaws, the remover of our troubles, and upon his family, his companions, his sons, and his followers, all of them, through him forever and ever,
as much as the number of Allah's creation at every moment and time. And all praise is for Allah, the Lord of the worlds.*	as many as the number of Allah's creation at every moment and time. And all praise belongs to Allah, the Lord of the worlds. (T)

By the grace of Allah Almighty, up to here was the detailed commentary of "Ta'reef-e-Razvi" such that neither such a praise is found anywhere nor such a commentary obtained. And with its conclusion, the answer to the first question is finished, which, by the grace of Allah Almighty, consists of such magnificent, innovative, and high-level research for which no parallel is seen.

Arabic Verse/Text	English Translation
"That is from the favor of Allah upon us and upon the people, but most of the people are not grateful." 1	That is Allah's favor upon us and upon the people, but most people do not give thanks.
"My Lord, enable me to be grateful for Your favor which You have bestowed upon	O my Lord, give me the guidance to thank You for this favor which You have

Arabic Verse/Text	English Translation
me and upon my parents and to work righteousness of which You will approve and make righteous for me my offspring. Indeed, I have turned to You, and indeed, I am of the Muslims." 2	bestowed upon me and my parents, and that I may do such good deeds as please You, and grant me goodness in my progeny; surely I have turned to Your presence and I am from among the Muslims.
And Allah, Glorified and Exalted is He, knows best, and His knowledge, may His glory be exalted, is most complete and most firm.	And Allah the Holy and High knows best, and His knowledge is perfect and firm. May His glory remain supreme. (T)

1. Al-Quran 12 / 38
2. Al-Quran 46 / 15

फ़तवा-ए-रज़विया, खंड 3

'...उसने तुम्हारे ऊपर दीन (धर्म) में कोई तंगी नहीं रखी।' (त) तयम्मुम का विधान ही कठिनाई (हर्ज) को दूर करने के लिए हुआ है। तो जिसमें स्वयं कठिनाई नहीं है बल्कि उसकी रक्षा करने में कठिनाई है, जैसे आँखों में सुरमा आदि, वह अनजाने में माफ़ है, सूचना के बाद माफ़ नहीं। और जिसमें स्वयं कठिनाई है जैसे आँख की पुतली आदि, वह पूर्णतः माफ़ है।

अरबी प्रार्थना	**हिंदी अनुवाद**
अल्लाह तआला हमें हमारे और हमारे पापों के बारे में पूर्णतः क्षमा प्रदान करे।	अल्लाह तआला हमें पूर्णतः क्षमा से नवाजे, पूर्णतः हम में और हमारे गुनाहों में।
*और अल्लाह तआला हमारे दिलों के मार्गदर्शक,	और ख़ुदा तआला रहमत व बरकत और सलाम नाज़िल फरमाए हमारे दिलों के हादी (मार्गदर्शक),
*हमारे दोषों को मिटाने वाले और हमारी कठिनाइयों को दूर करने वाले आका पर और उनके वंश, उनके साथियों, उनकी संतान और उनके पूरे समूह पर, हमेशा-हमेशा के लिए,	हमारे दोषों को मिटाने वाले, हमारी मुश्किलात दूर करने वाले आका पर और उनकी आल, उनके असहाब (साथियों), उनके फर्ज़न्द (पुत्रों), उनके गिरोह सब पर, हमेशा हमेशा,
हर पल और हर समय अल्लाह की रचना की संख्या के बराबर। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का रब है।*	जिस कद्र हर आन और हर वक़्त खुदा की मख्लूक (सृष्टि) की तादाद हो और सारी तारीफ खुदाए रब्बल आलमीन के लिए है। (त)

अल्लाह तआला की कृपा से, यहाँ तक 'तारीफ़-ए-रज़वी' की विस्तृत व्याख्या (शर्ह) थी कि न ऐसी प्रशंसा कहीं मिलेगी और न ही ऐसी व्याख्या प्राप्त होगी। और इसके अंत के साथ ही पहले प्रश्न का उत्तर समाप्त हुआ, जो अल्लाह तआला के अनुग्रह से ऐसे महान, नवीन और उच्च शोधों पर आधारित है जिसकी कोई मिसाल नहीं दिखती।

अरबी आयत / पाठ	**हिंदी अनुवाद**
"यह हम पर और लोगों पर अल्लाह का अनुग्रह है, लेकिन अधिकांश लोग आभारी नहीं होते।" 1	वह है खुदा का फज़्ल हम पर और लोगों पर, लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।

अरबी आयत / पाठ	हिंदी अनुवाद
"हे मेरे रब! मुझे यह सामर्थ्य दे कि मैं तेरे उस उपकार का आभार मानूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर किया है, और यह कि मैं ऐसे नेक काम करूँ जिनसे तू प्रसन्न हो, और मेरी संतान को मेरे लिए नेक बना दे। निश्चय ही मैंने तेरी ओर रुख किया और मैं मुसलमानों में से हूँ।" 2	ऐ मेरे रब मुझे यह तौफीक दे कि मैं तेरे उस एहसान का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझ पर किया और मेरे माँ-बाप पर किया, और यह कि मैं ऐसे नेक अमल करूँ जिससे तू राज़ी हो और मेरे लिए मेरी नस्ल में नेकी दे, बेशक मैं तेरी बारगाह में रुजू लाया और मैं मुसलमानों से हूँ।
और अल्लाह पवित्र और महान सबसे अधिक जानता है और उसका ज्ञान, जिसकी महिमा बुलंद है, सबसे पूर्ण और सुदृढ़ है।	और खुदाए पाक व बरतर खूब जानता है और उसका इल्म कामिल (पूर्ण) व मोहकम (सुदृढ़) है। उसकी बुज़ुर्गी आला रहे। (त)

1. अल-क़ुरान 12 / 38
2. अल-क़ुरान 46 / 15

مَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ (تمہارے اوپر دین میں کوئی تنگی نہ رکھی۔ت) تیمم کی مشروعیت ہی دفع حرج کے لیے ہوئی تو جس میں خود حرج نہیں بلکہ اس کی نگہداشت میں حرج ہے جیسے کوئے میں سرمہ وغیرہ وہ بے خبری میں معاف ہے بعد اطلاع معاف نہیں اور جس میں خود حرج ہے جیسے آنکھ کے ڈھیلے وغیرہ وہ مطلقاً معاف ہے۔

عربی دعا	اردو ترجمہ
عفا اللہ تعالی عنا مطلقاً بالاطلاق فینا وفی ذنوبنا	اللہ تعالٰی ہمیں مطلقاً عفو سے نوازے مطلقاً ہم میں اور ہمارے گناہوں میں۔
*وصلی اللہ تعالی وبارك وسلم علی ھادی قلوبنا	اور خدائے تعالٰی رحمت وبرکت وسلام نازل فرمائے ہمارے دلوں کے ہادی،
وماحی عیوبنا وکاشف کروبنا وآلہ و صحبہ وابنہ وحزبہ اجمعین بہ ابد الابدین	ہمارے عیوب کے مٹانے والے، ہماری مشکلات کے دور کرنے والے آقا پر اور ان کی آل، ان کے اصحاب، ان کے فرزند، ان کے گروہ سب پر، ہمیشہ ہمیشہ،
عدد خلق اللہ فی کل آن وحین والحمد للہ رب العلمین	جس قدر ہر آن وہر وقت خلقِ خدا کی تعداد ہو اور ساری تعریف خدائے رب العلمین کے لیے ہے۔ (ت)

بحد اللہ تعالٰی یہاں تک تعریف رضوی کی شرح مبسوط تھی کہ نہ ایسی تعریف کہیں ملنے نہ کوئی ایسی شرح پائے اور اسی کے ختم سے سوال اول کا جواب ختم ہوا جو بفضلہ تعالٰی ایسی تحقیقات جلیلہ بدیعہ رفیعہ پر مشتمل ہے جن کی نظیر نظر نہ آئے۔

عربی آیات / متن	اردو ترجمہ
ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ 1	وہ ہے خدا کا فضل ہم پر اور لوگوں پر، لیکن اکثر لوگ شکر نہیں کرتے۔
رَبِّ اَوْزِعْنِيْ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ 2	اے میرے رب مجھے یہ توفیق دے کہ میں تیرے اس احسان کا شکر ادا کروں جو تو نے مجھ پر کیا اور میرے ماں باپ پر کیا، اور یہ کہ میں ایسے نیک عمل کروں جس سے تو راضی ہو اور میرے لیے میری نسل میں نیکی دے بیشک میں تیری بارگاہ میں رجوع لایا اور میں مسلمانوں سے ہوں،
واللہ سبحنہ و تعالی اعلم و علمہ جل مجدہ اتم واحکم۔	اور خدائے پاک وبرتر خوب جانتا ہے اور اس کا علم کامل ومحکم ہے۔ اس کا مجد برتر رہے۔ (ت)

1 القرآن ۱۲ / ۳۸ 2 القرآن ۴۶ / ۱۵

Volume Three

Fatawa Razawiya

Risala Zimniya

Al-Jadd al-Sadeed fi Nafi al-Isti'mal 'an al-Sa'eed (1335 AH) A very fine discourse on the non-usability of the earth species (T)

Question 113, Second: Just as water becomes 'musta'mal' (used) through purification such that it is no longer fit for performing wudu again, does soil also become 'musta'mal' through tayammum in the same way or not? Explain and you will be rewarded.

The Answer I say: And with Allah is the success. We have already stated above that 'turab', i.e., the species of earth, is of two types: real (haqiqi), whose mention passed in the treatise 'Al-Matar al-Sa'eed', and legal (hukmi), which refers to the hands that have touched the species of earth with the intention of purification. This 'turab hukmi' (legal soil) certainly becomes 'musta'mal' (used) by consensus. This is the reason why wiping (masah) on each organ with separate contact is a condition, as mentioned just now in the nineteenth benefit, and among its fruits are those methods of tayammum which the Masters (scholars) have considered commendable, in which they instructed to divide the parts of the palm over different parts of the forearm (dhira) so that each part touches a new part, so as to avoid the use of 'musta'mal' soil as much as possible, as mentioned previously in our seventh discussion on the sixth aspect of the definitions of tayammum (as it was mentioned under our seventh discussion on the sixth definition of the definitions of tayammum. T). Here, 'musta'mal turab' certainly refers to this 'turab hukmi' because these forms belong to the customary tayammum, and in customary tayammum, only 'turab hukmi' is required; there is no need for real soil at all. In fact, if it sticks, the command is to remove it or shake it off. If it doesn't come off in one go, then as many times as it takes to become clean. Then they have mentioned these methods for general benefit even if tayammum is performed on a clod of earth or stone. As for real soil, it never becomes 'musta'mal' at all. It is stated in Al-Jawhara al-Nayira:

"Tayammum does not make the soil 'musta'mal'[1] - Tayammum does not produce the quality of being 'used' in the soil. (T)"

In Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, it says: "Soil is not described as being 'musta'mal' (used)."

[1] Al-Jawhara al-Nayira, Chapter of Tayammum, Imdadiya Press Multan, 1/72

खण्ड तीन

फतावा रज़विया

रिसाला ज़िम्मिया

अल-जद अल-सदीद फ़ी नफ़ि अल-इस्तिमाल अन अल-सईद (1335 हिजरी) पृथ्वी प्रजाति (मिट्टी आदि) के प्रयुक्त (मुस्तमल) न होने के विषय में बहुत उत्तम विवरण (त)

प्रश्न 113, दूसरा: जिस प्रकार पवित्रता प्राप्त करने से जल 'मुस्तमल' (प्रयुक्त) हो जाता है कि वह दोबारा वुज़ू के योग्य नहीं रहता, क्या तैयममुम से मिट्टी भी इसी तरह 'मुस्तमल' हो जाती है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर मैं कहता हूँ: और सफलता अल्लाह की ओर से है। हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि 'तुराब' अर्थात पृथ्वी की प्रजाति दो प्रकार की है: वास्तविक (हक़ीकी), जिसका विवरण रिसाला 'अल-मतर अल-सईद' में आ चुका है, और कानूनी/मान्यात्मक (हुक्मी), कि वे हाथ हैं जिन्हें पवित्रता की नीयत से पृथ्वी की प्रजाति से छुआ गया हो। यह 'तुराब हुक्मी' निश्चित रूप से सर्वसम्मति (इज्मा) के अनुसार 'मुस्तमल' हो जाती है। यही कारण है कि प्रत्येक अंग पर अलग संपर्क के साथ मसह (पोंछना) शर्त है, जिसका विवरण अभी उन्नीसवें लाभ (इफादा) में गुजरा है और इसके परिणामों में से तैयममुम के वे तरीके हैं जिन्हें विद्वानों ने प्रशंसनीय माना है, जिनमें उन्होंने हथेली के हिस्सों को अग्रबाहु (ज़िरा) के विभिन्न हिस्सों पर विभाजित करने का निर्देश दिया ताकि प्रत्येक हिस्सा नए हिस्से से स्पर्श हो, ताकि जहाँ तक संभव हो प्रयुक्त मिट्टी (मुस्तमल तुराब) के उपयोग से बचा जा सके जैसा कि तैयममुम की परिभाषाओं के छठे पहलू पर हमारी सातवीं चर्चा में पहले उल्लेख किया गया है (जैसा कि तैयममुम की परिभाषाओं में से छठी परिभाषा पर हमारी सातवीं चर्चा के तहत गुजरा। त)। यहाँ निश्चित रूप से 'मुस्तमल तुराब' से तात्पर्य इसी 'तुराब हुक्मी' से है क्योंकि ये स्वरूप प्रथागत तैयममुम के हैं, और प्रथागत तैयममुम में केवल 'तुराब हुक्मी' की आवश्यकता होती है; वास्तविक मिट्टी की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है, बल्कि यदि वह लग जाए तो उसे हटाने या झाड़ देने का आदेश है। यदि एक बार में साफ न हो तो जितनी बार में साफ हो जाए। फिर उन्होंने सामान्य लाभ के लिए ये तरीके बताए हैं भले ही तैयममुम ढेले या पत्थर पर किया जाए। जहाँ तक वास्तविक मिट्टी (तुराब हक़ीकी) की बात है, वह बिल्कुल भी 'मुस्तमल' नहीं होती। 'अल-जौहरा अल-नय्यिरा' में है:

"तैयममुम मिट्टी को प्रयुक्त (मुस्तमल) नहीं बनाता[1] - तैयममुम मिट्टी में प्रयुक्त होने का गुण पैदा नहीं करता। (त)"

तहतावी अल-दुर्र अल-मुख्तार में है: "मिट्टी को प्रयुक्त (मुस्तमल) होने के साथ वर्णित नहीं किया जाता।"

---

[1] अल-जौहरा अल-नय्यिरा, तैयममुम का अध्याय, इम्दादिया प्रेस मुल्तान, 1/72

جلد سوم

فتاویٰ رضویہ

رسالہ ضمنیہ

الجدّ السديد في نفي الاستعمال عن الصعيد ۱۳۳۵ھ جنس زمین کے مستعمل نہ ہونے میں بہت عمدہ بیان (ت)

سوال ۱۱۳ دوم: جس طرح طہارت سے پانی مستعمل ہو جاتا ہے کہ دوبارہ وضو کے قابل نہیں رہتا تیمم سے مٹی بھی یوں ہی مستعمل ہو جاتی ہے یا نہیں بینوا توجروا۔

الجواب اقول: وباللہ التوفیق ہم اوپر بیان کر آئے کہ تراب یعنی جنس ارض دو قسم ہے حقیقی جس کا بیان رسالہ المطر السعید میں گزرا، اور حکمی کہ وہ ہاتھ ہیں کہ بہ نیت تطہیر جنس ارض سے مس کیے گئے یہ تراب حکمی ضرور بالاجماع مستعمل ہوتی ہے یہی وجہ ہے کہ ہر عضو پر جدا اتصال سے مسح شرط ہے جس کا بیان ابھی افادہ نوزدہم میں گزرا اور اسی کے ثمرات سے ہیں تیمم کی وہ ترکیبیں جو مشائخ نے مستحسن رکھیں جن میں ہتھیلی کے حصوں کو ذراع کے مختلف حصوں پر تقسیم فرمایا کہ ہر حصہ نئے حصہ سے مس ہوتا کہ حتی الامکان تراب مستعمل کے استعمال سے احتراز ہو کما تقدم ذکرہ في سابع ابحاثنا علی الوجہ السادس من وجوہ حد التیتم (جیسا کہ اسکا ذکر تعریف تیمم میں سے چھٹی تعریف پر ہماری ساتویں بحث کے تحت گزرا۔ ت) یہاں یقیناً تراب مستعمل سے یہی تراب حکمی مراد ہے کہ یہ صورتیں تیمم معہود کی ہیں اور تیمم معہود میں تراب حکمی ہی درکار تراب حقیقی کی اصلاً حاجت نہیں بلکہ لگی ہو تو اس کے چھڑا دینے جھاڑ دینے کا حکم ہے ایک دفعہ میں نہ چھوٹے تو جتنی بار میں صاف ہو جائے پھر انہوں نے یہ

ترکیبیں عام افادہ میں فرمائی ہیں اگرچہ تیمم ڈھیلے پتھر پر ہو۔ رہی تراب حقیقی وہ اصلاً مستعمل نہیں ہوتی۔ جوہرہ نیرہ میں ہے:

التیمم لا یکسب التراب الاستعمال 1 - تیمم مٹی میں مستعمل ہونے کی صفت نہیں پیدا کرتا۔ (ت)

طحطاوی علی الدر المختار میں ہے: التراب لا یوصف بالاستعمال (مٹی مستعمل ہونے سے موصوف نہیں ہوتی۔

---

1 الجوھرۃ النیرۃ باب التیمم مطبع امدادیہ ملتان ۱/۷۲

Volume 3 Fatawa Razawiyya

...does not occur. (T) I say: In the view of this humble servant, this is the correct investigation and many clear proofs support it, and success is from Allah.

The first proof consists of two explicit texts: one is that the place upon which one strikes his hands undoubtedly does not become 'used' (Must'amal), and calling this a consensus (Ijma) would not be far-fetched.

Lula anna 'abbar 'anhu fi Ghuniyat Dhawil Ahkam 'an al-Burhan bi al-Asah al-mushir ila quwwatin fil khilaf ma'a annahu fi ghayati al-gharabati riwayatan wa al-suquti dirayatan fima a'lam wa Allah Ta'ala a'lam.

If Ghuniyat Dhawil Ahkam had not expressed it, with reference to al-Burhan, using the word 'Asah' (most correct), which suggests some strength in the difference of opinion—despite the fact that as far as I know, this is extremely rare in tradition (riwayatan) and logically soundly refuted (dirayatan)—and the Almighty God knows best. (T)

Fatawa Imam Qazikhan: Idha tayammama (2) al-rajulu 'an mawdi'i tayammama 'anhu ghairuhu jaza-1. When a person performs Tayammum from a place from which someone else has performed Tayammum, it is permissible. (T)

Shalbiya 'ala al-Zaylai: Qala al-Zahidi lau tayammama jama'atun bi-hajarin wahidin aw labnatin wa ardin jaza ka baqiyyati al-wudu-2. Al-Zahidi said: If a group performed Tayammum with a single stone, or unbaked brick, or on the ground, it is permissible, just like leftover water for Wudu (meaning someone else can use it for Wudu again). (T)

Muheet-e-Sarkhasi wa Hindiyya: Lau tayammama ithnani min makanin wahidin jaza-3. If two people performed Tayammum from one place, it is permissible. (T)

Tatar Khaniyya wa Alamgiri: Idha tayammama miraran min mawdi'in wahidin jaza-4. If one performed Tayammum repeatedly from the same place, it is permissible. (T)

1. Fatawa Qazikhan, Chapter of Tayammum, Nawal Kishore Press, Lucknow, 1/30
2. Shalbiya 'ala Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Tayammum, Al-Amiriyya Press, Bulaq, Egypt, 1/38
3. Fatawa Alamgiri, Chapter of Tayammum, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/31
4. Al-Fatawa al-Tatar Khaniyya, Section on what is permissible for Tayammum, Idara al-Quran, Karachi, 1/242

जिल्द तीसरी फ़तावा रज़विया

...नहीं होती। (त) मैं कहता हूँ: इस फ़क़ीर के नज़दीक यही तहक़ीक़ (शोध) है और इस पर अनेक स्पष्ट प्रमाण स्थापित हैं और अल्लाह से ही तौफ़ीक़ है।

पहला प्रमाण यहाँ दो स्पष्ट पाठों (नसूस) पर आधारित है: एक तो वह जिस पर हाथ मारे, वह तो निःसंदेह मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) नहीं होती, जिस पर इज्मा (सर्वसम्मति) कहना कुछ अनुचित नहीं।

लौला अन्ना अब्बर अन्हु फी गुनियात ज़वी अल-अहकाम अन अल-बुरहान बिल-असहा अल-मुशीर इला कुव्वतिन फिल खिलाफ़ मआ अन्नहू फी ग़ायत अल-ग़राबति रिवायतन व अल-सुक़ूति दरायतन फ़ीमा अअ़लम वल्लाहु तआला अअ़लम।

यदि गुनियात ज़वी अल-अहकाम में अल-बुरहान के हवाले से इसकी व्याख्या शब्द 'असहा' (सबसे सही) से न की गई होती, जिससे मतभेद में कुछ मजबूती का संकेत मिलता है—हालांकि जहाँ तक मुझे ज्ञात है, यह रिवायत के अनुसार अत्यंत दुर्लभ है और तर्क(दरायतन) के आधार पर बिल्कुल निराधार है—और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानने वाला है। (त)

फ़तावा इमाम क़ाज़ीख़ान: इज़ा तयम-ममा (2) अर-रजुलु अन मौदिइ तयम-ममा अन्हु ग़ैरुहू जाज़ा-1। जब किसी व्यक्ति ने ऐसी जगह से तयम्मुम किया जहाँ से किसी और ने तयम्मुम किया था, तो यह जायज़ है। (त)

शल्बिया अल-ज़ैलई: क़ाला अल-ज़ाहिदी लौ तयम-ममा जमाअ़तुन बि-हजरिन वाहिदिन औ लबनतिन व अ़र्दिन जाज़ा क बक़िय्यति अल-वज़ू-2। ज़ाहिदी ने कहा: अगर एक समूह ने एक पत्थर या कच्ची ईंट या ज़मीन से तयम्मुम किया तो जायज़ है, जैसे वज़ू का बचा हुआ पानी (कि उससे फिर कोई दूसरा वज़ू कर सकता है)। (त)

मुहीत-ए-सरख़सी व हिन्दिया: लौ तयम-ममा इसनानि मिन मकानिन वाहिदिन जाज़ा-3। अगर दो लोगों ने एक ही जगह से तयम्मुम किया, तो जायज़ है। (त)

तातार्ख़ानिया व आलमगीरी: इज़ा तयम-ममा मिरारन मिन मौदिइन वाहिदिन जाज़ा-4। अगर एक ही जगह से बार-बार तयम्मुम किया, तो जायज़ है। (त)

1. फ़तावा क़ाज़ीख़ान, बाब-उत-तयम्मुम, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/30
2. शल्बिया अ़ला तबीन अल-हक़ाएक़, बाब-उत-तयम्मुम, मतबआ अल-अमीरिया, बुलाक़, मिस्र, 1/38
3. फ़तावा आलमगीरी, बाब-उत-तयम्मुम, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 1/31
4. अल-फ़तावा अल-तातार्ख़ानिया, नौ फ़ीमा यजूसु बिहि अत-तयम्मुम, इदारा अल-क़ुरान, कराची, 1/242

جلد سوم فتاوٰی رضویہ

نہیں ہوتی۔ت) اقول: فقیر کے نزدیک یہی تحقیق ہے اور اس پر متعدد روشن دلائل قائم و باللہ التوفیق۔

دلیل اول نصوص صریحہ یہاں مٹاں دو ہیں: ایک تو وہ جس پر ہاتھ مارے وہ تو بلاشبہ مستعمل نہیں ہوتی جس پر اجماع کہنا کچھ مستبعد نہیں۔

لولا ان عبر عنه في غنية ذوي الاحكام عن البرهان بالاصح المشير الى قوت في الخلاف مع انه في غاية الغرابة رواية والسقوط دراية فيما اعلم والله تعالٰی اعلم۔

اگر غنیہ ذوی الاحکام میں بحوالہ برہان اس کی تعبیر لفظ "اصح" سے نہ ہوتی کہ اس لفظ سے اختلاف میں کچھ قوت ہونے کا اشارہ ہوتا ہے باوجودیکہ جہاں تک مجھے علم ہے یہ خلاف روایت انتہائی غریب اور درایتاً بالکل ساقط ہے اور خدائے برتر خوب جاننے والا ہے۔ (ت)

فتاوٰی امام قاضیخان اذا تیمم (۲) الرجل عن موضع تیمم عنه غیره جاز-1۔ جب آدمی نے ایسی جگہ سے تیمم کیا جہاں سے کسی اور نے تیمم کیا تھا تو یہ جائز ہے۔ (ت)

شلبیہ علی الزیلعي: قال الزاہدی لوتیمم جماعة بحجر واحد او لبنة وارض جاز کبقیة الوضوء 2۔ زاہدی نے کہا: اگر ایک جماعت نے ایک پتھر یا کچی اینٹ یا زمین سے تیمم کیا تو جائز ہے جیسے بقیہ آب وضو (کہ اس سے پھر کوئی دوسرا وضو کر سکتا ہے)۔ (ت)

محیط سرخی و ہندیہ: لوتیمم اثنان من مکان واحد جاز 3۔ اگر دو نے ایک جگہ سے تیمم کیا، جائز ہے۔ (ت)

تاتارخانیہ وعالمگیری: اذا تیمم مراراً من موضع واحد جاز 4۔ اگر ایک ہی جگہ بارہا تیمم کیا تو جائز ہے۔ (ت)

1 فتاوٰی قاضیخان باب التیمم مطبع نولکشور لکھنؤ ۱/ ۳۰ 2 شلبیہ علی تبیین الحقائق باب التیمم مطبعۃ الامیریہ بولاق مصر ۱/ ۳۸ 3 فتاوٰی عالمگیری باب التیمم مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۱ 4 الفتاوی التاتارخانیہ نوع فیما یجوز بہ التیمم ادارۃ القرآن کراچی ۱/ ۲۴۲

Fatawa Rizvia, Volume 3

From Durr-e-Mukhtar: - It is permissible for a group to perform tayammum from the same spot. (T) - Arabic: 1 - جاز تيمّم جماعة من محل واحد

From Jauharatun Nayyirah: - If a person performs tayammum from a spot and then another person performs tayammum from that same spot, it is permissible. (T) - Arabic: 2 - لوتيمّم رجل من موضع تيمّم آخر بعده منه جاز

From Munyah and Hulyah: - When a person performs tayammum from a spot and then another person also performs tayammum from that same spot, it is permissible, as is found in several reliable books of the school of thought (Madhab). (T) - Arabic: اذا تيمّم الرجل من موضع فتيمّم آخر من ذلك الموضع ايضا جاز كما في غير ما كتاب من الكتب المعتبرة في المذهب.

In short, the matter is clear and the texts are abundant.

From Ghunyah: - Except that in 'Ghunyah', a doubt has been expressed that: "This is clear according to the view of those who do not consider the 'striking' (of hands on the earth) as part of the tayammum itself. But according to the view of those who consider it as part of it, there is a complication in this." (T) - Arabic: غيران الغنية ابدت فيه تشكيكا ان هذا على قول من لم يجعل الضربة من التيمّم ظاهر واما على قول من جعلها منه ففيه اشكال 4 اهـ.

Author's Note (Ala Hazrat): - I say: There is no difference based on both views, nor is there any complication in between. Firstly, as we have informed you in the seventh discussion mentioned, the correct view is that the intended striking purifies both palms. Thus, they will not be wiped afterward. So, the discharge of the obligation is established by the strike itself, even if... - Arabic: ولااشكال في اقول: لافرق على القولين اما (ا) اولا فلما اعلمناك في البحث السابع المذكور ان الضرب المنوي يطهر الكفين هو البين الصحيح فلا تمسحان بعد فثبت اسقاط الفرض بنفس الضرب و

Footnotes: 1. Durr-e-Mukhtar, Bab al-Tayammum, Mujtabai Press, Delhi, 1/45 2. Al-Jauharatun Nayyirah, Bab al-Tayammum, Maktaba Imdadia, 1/72 3. Munyatul Musalli, Bab al-Tayammum, Aziziyah Press, Kashmiri Bazar, Lahore, p. 16 4. Ghunyatul Mustamli, Bab al-Tayammum, Suhail Academy Press, Lahore, p. 80

Page 719 of 756

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 3

दुर्रे मुख्तार से: - एक ही जगह से एक जमात का तयम्मुम जायज़ है। (त) - अरबी: جاز تيمّم جماعة من محل واحد - 1

जौहरा नय्यिरा से: - अगर किसी जगह से एक आदमी ने तयम्मुम किया और उसके बाद दूसरे ने उसी जगह से तयम्मुम किया तो जायज़ है। (त) - अरबी: لوتيمّم رجل من موضع تيمّم آخر بعده منه جاز - 2

मुनया और हुलिया से: - जब आदमी ने एक जगह से तयम्मुम किया फिर दूसरे ने भी उसी जगह से तयम्मुम किया तो जायज़ है जैसा कि मज़हब की मोतबर (विश्वसनीय) किताबों में से कई किताबों में मौजूद है। (त) - अरबी: اذا تيمّم الرجل من موضع فتيمّم آخر من ذلك الموضع ايضا جاز كما في غير ما كتاب من الكتب المعتبرة في المذهب۔

संक्षेप में, मसला साफ़ है और इबारतें (ग्रंथ-पाठ) प्रचुर हैं।

ग़ुनया से: - सिवाय इसके कि 'ग़ुनया' में इस पर एक संदेह व्यक्त किया गया है कि "यह उन लोगों के कथन पर तो स्पष्ट है जिन्होंने प्रहार (ज़र्ब) को तयम्मुम का हिस्सा नहीं माना, लेकिन जिन्होंने प्रहार को तयम्मुम का हिस्सा माना है, उनके कथन के अनुसार इसमें पेचीदगी है।" (त) - अरबी: غيران الغنية ابدت فيه تشكيكا ان هذا على قول من لم يجعل الضربة من التيمّم ظاهر واما على قول من جعلها منه ففيه اشكال 4 اهـ.

लेखक का कथन (आला हज़रत): - मैं कहता हूँ: दोनों कथनों के आधार पर कोई अंतर नहीं है और न ही बीच में कोई पेचीदगी है। प्रथम: इसलिए कि हम उक्त सातवीं बहस में बता चुके हैं कि नीयत के साथ किया गया प्रहार दोनों हथेलियों को पाक (शुद्ध) कर देता है। यही सही है। फिर बाद में उन पर मसह (पोंछना) नहीं होगा, तो स्वयं प्रहार से ही फ़र्ज़ का उतरना साबित हो गया, भले ही... - अरबी: اما (ا) اولا فلما اعلمناك في البحث السابع ولااشكال في البين اقول: لافرق على القولين المذكور ان الضرب المنوي يطهر الكفين هو الصحيح فلا تمسحان بعد فثبت اسقاط الفرض بنفس الضرب و

पाद-टिप्पणियाँ (फुटनोट्स): 1. दुर्रे मुख्तार, बाब अत-तयम्मुम, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/45 2. अल-जौहरातुन नय्यिरा, बाब अत-तयम्मुम, मकतबा इमदादिया, 1/72 3. मुनय्यतुल मुसल्ली, बाब

अत-तयम्मुम, मतबा अज़ीज़िया, कश्मीरी बाज़ार, लाहौर, पृष्ठ 16 4. ग़ुन्यतुल मुस्तमली, बाब अत-तयम्मुम, मतबा सुहैल एकेडमी, लाहौर, पृष्ठ 80

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

در مختار: - ایک ہی جگہ سے ایک جماعت کا تیمم جائز ہے۔ (ت) - عربی: جاز تیمّم جماعة من محل واحد - 1

جوہرہ نیرہ: - اگر کسی جگہ سے ایک آدمی نے تیمم کیا اور اس کے بعد دوسرے نے اسی جگہ سے تیمم کیا تو جائز ہے۔ (ت) - عربی: لوتیمّم رجل من موضع تیمّم آخر بعدہ منہ جاز - 2

منیہ و حلیہ: - جب آدمی نے ایک جگہ سے تیمم کیا پھر دوسرے نے بھی اسی جگہ سے تیمم کیا تو جائز ہے جیسا کہ مذہب کی کتب معتبرہ سے متعدد کتابوں میں موجود ہے۔ (ت) - عربی: اذا تیمّم الرجل من موضع فتیمّم آخر من ذلك الموضع ایضا جاز کما في غیر ما کتاب من الکتب المعتبرة في المذهب۔

بالجملہ مسئلہ ظاہر ہے اور عبارات وافر۔

غیران الغنیہ: - بجز اس کے کہ غنیہ میں اس پر ایک تشکیک کا اظہار کیا ہے کہ "یہ ان لوگوں کے قول پر تو ظاہر ہے جنہوں نے ضرب کو تیمم سے نہ قرار دیا لیکن جنہوں نے ضرب کو تیمم سے قرار دیا ہے ان کے قول پر اس میں اشکال ہے اھ (ت)۔ - عربی: غیران الغنیة ابدت فیه تشکیکا ان هذا علی قول من لم یجعل الضربة من التیمّم ظاهر واما علی قول من جعلها منه ففیه اشکال 4 اھ۔

اقول (اعلیٰ حضرت): - اقول: دونوں قول کی بنیاد پر کوئی فرق نہیں نہ ہی کوئی اشکال ہے۔ اولاً: اس لیے کہ ہم مذکورہ ساتویں بحث میں بتا چکے کہ ضرب منوی سے دونوں ہتھیلیاں پاک ہو جاتی ہیں۔ یہی صحیح ہے۔ پھر بعد میں ان پر مسح نہ ہوگا تو نفسِ ضرب سے اسقاطِ فرض ثابت ہو گیا اگرچہ - عربی: اقول: لافرق علی القولین ولااشکال في البین اما (ا) اولا فلما اعلمناك في البحث السابع

المذكور ان الضرب المنوي يطهر الكفين هو الصحيح فلا تمسحان بعد فثبت اسقاط الفرض بنفس الضرب و

حواشی: 1. در مختار باب التیمم مطبع مجتبائی دہلی ۱/۴۵ 2. الجوهرة النيرة باب التيمم مكتبہ امدادیہ ۱/۷۲ 3. منية المصلى باب التيمم مطبع عزیزیہ کشمیری بازار لاہور ص ۱۶ 4. غنية المستملى باب التيمم مطبع سہیل اکیڈمی لاہور ص ۸۰

Fatawa Rizvia, Volume 3

[Left Column - Arabic] If ritual impurity (hadath) is not removed after non-existence, it is treated like the water with which a person in a state of ritual impurity washes some of his body parts. And there are no two differing opinions on this. So, if 'use' (musta'mal) is established by it, then an objection would arise for both opinions.

Secondly: because when a person in a state of ritual impurity (muhdith) puts his head into a vessel, the water does not become 'used' (musta'mal), as mentioned in 'Al-Khaniya'. The same applies to leather socks (khuff) and bandages (jabira), as mentioned in 'Al-Bahr'. The correct view is that this issue is agreed upon, as we explained at the end of 'At-Tars al-Mu'addal' and 'An-Namiqa al-Anqa'. Since Tayammum is nothing but wiping (masah), it does not result in 'use'. Thus, the objection is removed. And Allah Almighty knows best the true state of affairs.

[Right Column - Urdu Explanation] Ritual impurity was not yet removed because it is indivisible, as in the case when a person in ritual impurity washes some parts of his body with water. There are no two differing opinions on this, so if being 'used' (musta'mal) is established from it, then an objection would apply to both opinions.

Secondly: because when a person in ritual impurity puts his head in a vessel, the water does not become 'used' (musta'mal), as stated in 'Al-Khaniya'. The same rule applies to leather socks and bandages, as mentioned in 'Al-Bahr'. And the correct view is that this issue is agreed upon, as we have explained at the end of 'Al-Tars al-Mu'addal' and 'Al-Namiqa al-Anqa'. Since Tayammum is only wiping (masah), it will not make it 'used'. Thus, the problem is solved, and the Almighty God knows the reality best. (T)

[Main Body - Urdu] The second type is the dust that sticks to the hands in some cases. If it is shaken off, as is the Sunnah, then there is no reason for it to be considered 'used' (musta'mal), as the palms became clean by the act of striking. This dust stuck to the clean palms, so it cannot become 'used' either by touching them or by being separated from them. And if it is not shaken off and touches the face and both hands, even then it will not be 'used' because in the correct legal school, separation (infisal) is a condition for it to be 'used', as mentioned in 'Al-Tars al-Mu'addal' (as passed in 'Al-Tars al-Mu'addal'). If it were to be 'used', it would be upon separation from the face and arms. There is an explicit text in the books of the legal school that it will not be 'used' at that time either, to the extent that if the dust fallen from the faces and hands of those performing Tayammum is collected so that it

becomes enough for a strike, and someone else performs Tayammum with it, it is still permissible. This is mentioned in 'Al-Diraya', a commentary on 'Al-Hidayah' by Imam Qawam-ud-Din Kaki, then in 'Al-Shalbiyya' on 'Sharh al-Kanz' by Al-Zayla'i, and also in 'Al-Tabayyiniya' by Imam al-Ayni:

[Bottom Section - Left Column - Arabic] Performing Tayammum with 'used' (musta'mal) dust is permissible according to us, and in one opinion of Imam Shafi'i, but in his manifest doctrine (zahir al-madhhab), it is not permissible. 'Used' is that which falls off from the limb. End.

[Bottom Section - Right Column - Urdu] Tayammum with 'used' soil is permissible according to us, and this is also one opinion of Imam Shafi'i, but in his apparent school of thought, it is not permissible. Used soil is that which falls off from the limb. (T)

---

1. Shalbiya on Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Tayammum, Amiriya Press, Egypt, 1/38

फ़तावा रज़विया, खंड 3

[बायां कॉलम - अरबी] यदि अदम (अनुपस्थिति) के बाद हदथ (अशुद्धि) दूर नहीं हुई, तो यह उस पानी की तरह पर्याप्त है जिससे हदथ वाले व्यक्ति ने अपने शरीर के कुछ अंगों को धोया हो। और इस बारे में कोई दो अलग-अलग मत नहीं हैं। अत; यदि इससे 'इस्तेमाल' (मुस्तअमल होना) सिद्ध होता है, तो दोनों ही मतों पर आपत्ति उत्पन्न होगी।

दूसरा: इसलिए क्योंकि जब कोई अशुद्ध व्यक्ति (मुहदिथ) अपना सिर बर्तन में डालता है, तो पानी मुस्तअमल नहीं होता, जैसा कि 'अल-खनिया' में है। यही नियम मोज़े (खुफ़) और पट्टी (जबीरा) पर भी लागू होता है, जैसा कि 'अल-बहर' में उल्लेखित है। सही मत यह है कि यह मसला सर्वसम्मत है, जैसा कि हमने 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' और 'अन-नमी़क़ा अल-अनक़ा' के अंत में स्पष्ट किया है। चूंकि तयम्मुम केवल मसह (पोंछना) है, इसलिए यह 'इस्तेमाल' का लाभ नहीं देता। इस प्रकार आपत्ति दूर हो जाती है। और अल्लाह तआला वास्तविकता को सबसे बेहतर जानने वाला है।

[दायां कॉलम - उर्दू स्पष्टीकरण] अभी हदथ दूर नहीं हुआ क्योंकि वह अविभाज्य है, जैसे कि उस स्थिति में जब अशुद्ध व्यक्ति ने पानी से अपने कुछ अंग धोए हों। इस बारे में कोई दो अलग-अलग कथन नहीं हैं, तो यदि इससे मुस्तअमल होना साबित होता है, तो दोनों ही कथनों पर आपत्ति अनिवार्य होगी।

दूसरा: इसलिए कि अशुद्ध व्यक्ति जब अपना सिर बर्तन में डाल दे तो पानी मुस्तअमल नहीं होता जैसा कि खनिया में है। यही हुक्म मोज़े और पट्टी का भी है जैसा कि बहर में है... और सही यह है कि यह मसला मुत्तफ़क़ अलैह (सर्वसम्मत) है जैसा कि हमने 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' और 'अन-नमीक़ा अल-अनक़ा' के अंत में बयान किया है। और तयम्मुम मसह ही तो है, तो मुस्तअमल नहीं बनाएगा और इसी से आपत्ति दूर हो गई और खुदाए बरतर हक़ीक़त-ए-हाल को खूब जानने वाला है। (त)

[मुख्य भाग - उर्दू] दूसरी वह मिट्टी जो कुछ स्थितियों में हाथों को लगती है, यदि इसे झाड़ दिया गया जैसा कि सुन्नत है, तो इसके मुस्तअमल होने का कोई कारण नहीं है क्योंकि हथेलियां प्रहार (ज़रब) करने से ही पाक हो गईं। यह मिट्टी पाक हथेलियों को लगी तो उनसे मिलकर मुस्तअमल हो सकती है न कि उनसे अलग होकर। और यदि नहीं झाड़ी गई और चेहरे व दोनों हाथों को लगी तो उस समय भी मुस्तअमल नहीं होगी क्योंकि सही मज़हब (विचारधारा) में इस्तेमाल के लिए 'इनफ़िसाल' (अलग होना) शर्त है जैसा कि 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' में गुज़रा। तो यदि मुस्तअमल होती तो चेहरे और बाहों

से अलग होने पर होती। मज़हब की किताबों में स्पष्ट प्रमाण (नस्स-ए-सरीह) है कि वह उस समय भी मुस्तअमल नहीं होगी, यहाँ तक कि यदि तयम्मुम करने वालों के चेहरे और हाथों से झड़ी हुई मिट्टी जमा कर ली जाए कि वह ज़रब (प्रहार) के काबिल हो जाए और कोई उससे तयम्मुम करे तो भी जायज़ है। इमाम क़वाम-उद-दीन काकी की 'दिराया' (हिदाया की व्याख्या), फिर ज़ैलई की 'शरह अल-कन्ज़' पर 'शल्बिया' और इमाम ऐनी की 'तिब्यानिया' में भी यही है:

[नीचे का खंड - बायां कॉलम - अरबी] हमारे निकट मुस्तअमल मिट्टी से तयम्मुम करना जायज़ है और इमाम शाफ़ई का भी एक कथन यही है, परंतु उनके ज़ाहिर मज़हब में यह जायज़ नहीं है। मुस्तअमल वह है जो अंग से झड़ जाए। समाप्त।

[नीचे का खंड - दायां कॉलम - उर्दू] मुस्तअमल मिट्टी से तयम्मुम हमारे नज़दीक जायज़ है और इमाम शाफ़ई का भी एक क़ौल यही है और उनके ज़ाहिर मज़हब में जायज़ नहीं और मुस्तअमल वह मिट्टी है जो अज़ू (अंग) से झड़े। (त)

---

1. शल्बिया अली तिब्यीन अल-हक़ा'इक़, बाब अत-तयम्मुम, मतबआ अमीरिय्या मिस्र, 1/38

فتاوٰی رضویہ، جلد سوم

[بایاں کالم - عربی] ان لم یرتفع الحدث بعد العدم تجزیه کماء غسل به المحدث بعض اعضائه وهذا لا یتخالف فیه القولان فان ثبت به الاستعمال حصل علی کل منهما الاشکال۔

واما ثانیا: فلان (1) المحدث اذا ادخل (2) رأسه الاناء لا یصیر الماء مستعملا کما فی الخانیة وکذا (3) الخف والجبیرة کما في البحر والصحیح ان المسألة وفاقیة کما بینا فی الطرس المعدل والنمیقة الانقی من آخرهما وما التیمم الامسحا فلایفید الاستعمال وبه زال الاشکال واللہ تعالی اعلم بحقیقة الحال

[دایاں کالم - اردو تشریح] ابھی حدث مرتفع نہ ہوا اس لیے کہ وہ ناقابلِ تقسیم ہے جیسے اس صورت میں، جب محدث نے پانی سے اپنے بعض اعضاء دھوئے ہوں اور اس بارے میں کوئی دو مختلف قول نہیں تو اگر اس سے استعمال ثابت ہو تو دونوں ہی قول پر اشکال لازم آئے گا۔

ثانیاً: اس لیے کہ محدث جب اپنا سر برتن میں ڈال دے تو پانی مستعمل نہیں ہوتا جیسا کہ خانیہ میں ہے یہی حکم موزہ اور پٹی کا بھی ہے جیسا کہ بحر میں ہے--- اور صحیح یہ ہے کہ یہ مسئلہ متفق علیہ ہے جیسا کہ ہم نے الطرس المعدل اور النمیقۃ الانقیٰ کے آخر میں بیان کیا ہے۔ اور تیمم مسح ہی تو ہے تو مستعمل نہ بنائے گا اور اسی سے اشکال دور ہو گیا اور خدائے برتر حقیقتِ حال کو خوب جاننے والا ہے (ت)

[اردو متن] دوسری وہ مٹی کہ بعض صورتوں میں ہاتھوں کو لگتی ہے، یہ اگر جھاڑ دی گئی جیسا کہ مسنون ہے جب تو اس کے مستعمل ہونے کی کوئی وجہ نہیں کہ ہتھیلیاں نفسِ ضرب سے پاک ہو گئیں یہ مٹی پاک ہتھیلیوں کو لگی تو اُن سے مل کر مستعمل ہو سکتی ہے نہ ان سے چھوٹ کر، اور اگر نہ جھاڑی گئی اور چہرہ و ہر دو دست کو لگی تو اس وقت بھی مستعمل نہ ہوگی کہ مذہب

صحیح میں استعمال کے لئے انفصال شرط ہے کما فی الطرس المعدل (جیسا کہ الطرس المعدل میں گزرا ت) تو اگر مستعمل ہوتی تو چہرہ و ذراعین سے چھوٹ کر اور کتب مذہب میں نص صریح ہے کہ وہ اسوقت بھی مستعمل نہ ہوگی یہاں تک کہ اگر تیمم کرنے والوں کے چہرہ و دست سے جھڑی ہوئی مٹیاں جمع کر لی جائیں کہ قابلِ ضرب ہو جائیں اور کوئی ان سے تیمم کرے جب بھی جائز ہے۔ درایہ شرح ہدایہ امام قوام الدین کاکی پھر شلبیہ علی شرح الکنز للزیلعی نیز تبیانیہ امام عینی میں ہے:\n [نیچے کا حصہ - بایاں کالم - عربی] یجوز التیمم بالتراب المستعمل عندنا وفي قول للشافعی وفی ظاھر مذھبه لایجوز والمستعمل ما تناثر من العضو اھ

[نیچے کا حصہ - دایاں کالم - اردو] مستعمل مٹی سے تیمم ہمارے نزدیک جائز ہے اور امام شافعی کا بھی ایک قول یہی ہے اور ان کے ظاہر مذہب میں جائز نہیں اور مستعمل وہ مٹی ہے جو عضو سے جھڑے۔ (ت)

---

1 شلبیہ علی تبیین الحقائق باب التیمم مطبعہ امیریہ مصر 1 / 38

Fatawa Razawiyya - Volume 3

In the marginalia of Allama Syed Ahmad Misri on 'Al-Durr al-Mukhtar', it is stated:

[Arabic Box] "Dust is not characterized as being 'used' (musta'mal), even if it is what clings to the hands, such that if the dust clinging to the hands of several people performing tayammum were collected, it would be permissible to perform tayammum with it."

[Urdu Translation Box] "Dust is not described as being 'used', even if it is the same dust that is stuck to the hands, to the extent that if the dust stuck to the hands of several people performing tayammum were collected, performing tayammum with it would be permissible. (T)"

Thus, it is proven that the substance of the earth does not become 'used' in any way. The Great Imam, Shams al-A'imma al-Halwani (may Allah's mercy be upon him), clearly stated that in tayammum, when the face and hands are wiped, there is nothing that becomes 'used'. In 'Fath al-Qadir' it is written:

[Table Left - Arabic] "Shams al-A'imma's choice is that the prohibition of spreading one or two fingers is not because of the 'used' nature of the moisture, as evidenced by the fact that if one wipes with one or two fingers in tayammum, it is not permissible, despite there being nothing that becomes 'used', especially if the tayammum is performed on a hard, smooth stone. We have explained the reason for this specification at the end of our treatise 'At-Tars al-Mu'addal'."

[Table Right - Urdu] "And Shams al-A'imma has chosen this position that the prohibition of spreading one or two fingers is not because the moisture has been used, based on the reasoning that if one wipes with one or two fingers in tayammum, it is also not permissible, even though there is nothing here that becomes 'used', especially when tayammum is performed on a smooth solid stone. The reason for this specification we have mentioned at the end of our treatise 'At-Tars al-Mu'addal'. (T)"

Second Proof: Explicit texts from another perspective in 'Fath al-Qadir' state:

[Table Left - Arabic] "Does the rule of being 'used' apply to dust? It is mentioned in 'al-Khulasa' and others that if a person in a state of major ritual impurity (junub) or a menstruating woman (ha'id) performs tayammum from a place, and then another person places their hand on that same spot and performs tayammum, it is sufficient.

The 'used' dust is that which has been used on the face and forearms. And this benefits..."

[Table Right - Urdu] "Does the rule of being 'used' apply to dust as well? ... It is stated in 'al-Khulasa' etc. that 'if a person in a state of major ritual impurity or a menstruating woman performed tayammum from a place and then someone else placed their hand on that same spot and performed tayammum, it will be sufficient. The 'used' dust is that which was used on the face and forearms.' From this text, regarding dust becoming 'used'..."

[Footnotes] 1. Tahtawi on Al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Tayammum, Dar al-Ma'rifah Press, Beirut, 1/132 2. Fath al-Qadir, Wiping the Head, Nuriyah Razawiyya Press, Sukkur, 1/61 3. Fath al-Qadir, Chapter of Tayammum, Nuriyah Razawiyya Press, Sukkur, 1/20

फ़तावा रज़विया - खंड 3

अल्लामा सैयद अहमद मिस्री के'अल-दुर्रुल मुख्तार' के हाशिए (marginalia) में है:

[अरबी बॉक्स] "मिट्टी को 'इस्तेमाल शुदा' (मुस्तअमल) नहीं कहा जाता, चाहे वह वही मिट्टी हो जो हाथों पर लगी हो, यहाँ तक कि अगर कई तयम्मुम करने वालों के हाथों पर लगी मिट्टी को इकट्ठा कर लिया जाए, तो उससे तयम्मुम करना जायज़ है।"

[उर्दू अनुवाद बॉक्स] "मिट्टी मुस्तअमल होने से वर्णित नहीं होती, चाहे वही मिट्टी हो जो हाथों में लगी हुई है, यहाँ तक कि अगर कुछ तयम्मुम करने वालों के हाथों पर लगी हुई मिट्टी इकट्ठी हो जाए तो उस पर तयम्मुम जायज़ है। (त)"

अतः यह सिद्ध हुआ कि ज़मीन का अंश किसी भी तरह 'इस्तेमाल शुदा' नहीं होता। महान इमाम शम्सुल अइम्मा हलवानी (रहमतुल्लाह अलैह) ने स्पष्ट रूप से फ़रमाया है कि तयम्मुम में चेहरे और हाथों पर जो मसह किया जाता है, उसमें कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो 'इस्तेमाल शुदा' (मुस्तअमल) हो जाए। 'फ़तहुल क़दीर' में लिखा है:

[तालिका बायां - अरबी] "शम्सुल अइम्मा का यह मत है कि एक या दो उंगलियों को फैलाने की मनाही इसलिए नहीं है कि नमी का इस्तेमाल हो गया, इसका प्रमाण यह है कि यदि कोई तयम्मुम में एक या दो उंगलियों से मसह करे, तो वह जायज़ नहीं है, जबकि यहाँ ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो मुस्तअमल हो जाए, विशेष रूप से जब तयम्मुम किसी सख्त और चिकने पत्थर पर किया गया हो। हमने इस विशेषता का कारण अपने रिसाले 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' के अंत में बयान किया है।"

[तालिका दायां - उर्दू] "और शम्सुल अइम्मा ने यह मत चुना है कि एक-दो उंगलियों के फैलाने की मनाही इस वजह से नहीं कि नमी इस्तेमाल हो गई, इस दलील से कि अगर तयम्मुम में एक-दो उंगली से मसह करे तो भी ना-जायज़ है, जबकि यहाँ कोई ऐसी चीज़ नहीं जो मुस्तअमल हो जाए, ख़ासकर जब चिकने ठोस पत्थर पर तयम्मुम हुआ हो। इस विशेषता का कारण हमने अपने रिसाले 'अत-तर्स अल-मुअद्दल' के अंत में बयान किया है। (त)"

दूसरा प्रमाण: एक और पहलू से 'फ़तहुल क़दीर' के स्पष्ट पाठ में है:

[तालिका बायां - अरबी] "क्या मिट्टी पर भी 'इस्तेमाल शुदा' होने का हुक्म लागू होता है? 'अल-ख़ुलासा' आदि में है कि अगर किसी जुनब (अपवित्रता की स्थिति) या हाएज़ा (मासिक धर्म वाली

महिला) ने किसी स्थान से तयम्मुम किया, फिर किसी दूसरे ने उसी स्थान पर हाथ रखकर तयम्मुम किया, तो वह पर्याप्त होगा। मुस्तअमल वह मिट्टी है जो चेहरे और कलाइयों पर इस्तेमाल हुई। और यह लाभ पहुँचाता है..."

[तालिका दायां - उर्दू] "क्या मिट्टी पर भी मुस्तअमल होने का हुक्म लगता है? ... 'ख़ुलासा' वगैरह में है कि 'अगर जुनब या हाएज़ा ने किसी जगह से तयम्मुम किया फिर दूसरे ने उसी जगह हाथ रख कर तयम्मुम किया तो काफ़ी होगा और मुस्तअमल वह मिट्टी है जो चेहरे और कलाइयों में इस्तेमाल हुई।' इस इबारत से मिट्टी के मुस्तअमल होने का..."

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. तहतावी अलल दुर्रुल मुख्तार, बाबुत तयम्मुम, मतबा दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 1/132 2. फ़तहुल क़दीर, मसहुर रास, मतबा नूरिय्या रज़विय्या, सुक्कुर, 1/61 3. फ़तहुल क़दीर, बाबुत तयम्मुम, मतबा नूरिय्या रज़विय्या, सुक्कुर, 1/20

पेज 721/756

فتاوٰی رضویہ - جلد سوم

حاشیہ علامہ سید احمد مصری علی الدرالمختار میں ہے:

[عربی خانہ] التراب لایوصف بالاستعمال ولوالذی علق بیدیہ حتی لوتجمع ماعلق بایدی المتیممین یجوز علیہ التیمم

[اردو ترجمہ خانہ] مٹی مستعمل ہونے سے موصوف نہیں ہوتی اگرچہ وہی مٹی ہو جو ہاتھوں میں لگی ہوئی ہے، یہاں تک کہ اگر چند تیمم کرنے والوں کے ہاتھوں پر لگی ہوئی مٹی اکٹھی ہو جائے تو اس پر تیمم جائز ہے۔ (ت)

تو ثابت ہوا کہ جنسِ ارض کسی طرح مستعمل نہیں ہوتی۔ نص اجل امام اجل شمس الائمہ حلوانی رحمہ اللہ تعالٰی نے تصریح فرمائی کہ تیمم میں جو منہ اور ہاتھوں پر مسح کیا جاتا ہے یہاں کوئی چیز ایسی نہیں کہ مستعمل ہو جائے۔ 'فتح القدیر' میں ہے:

[جدول بائیں - عربی] واختیار شمس الائمۃ ان المنع فی مد الاصبع والاثنتین غیر معلل باستعمال البلۃ بدلیل انہ لومسح باصبع او اصبعین فی التیمم لا یجوز مع عدم شیئ یصیر مستعملا خصوصا اذا تیمم علی الحجر الصلد 2 اھ وقد ذکرنا وجہ ھذا الخصوص آخر رسالتنا الطرس المعدل۔

[جدول دائیں - اردو] اور شمس الائمہ نے یہ اختیار کیا ہے کہ ایک دو انگلیوں کے پھیلانے کی ممانعت اس وجہ سے نہیں کہ تری استعمال ہو گئی اس دلیل سے کہ اگر تیمم میں ایک دو انگلی سے مسح کرے تو بھی نا جائز ہے جبکہ یہاں کوئی ایسی چیز نہیں جو مستعمل ہو خصوصاً جب چکنے ٹھوس پتھر پر تیمم ہوا ہو۔ اس خصوص کی وجہ ہم نے اپنے رسالہ الطرس المعدل کے آخر میں بیان کی ہے۔ (ت)

دلیل دوم : نصوص صریحہ بوجہ آخر 'فتح القدیر' میں ہے :

[جدول بائیں - عربی] هل يأخذ التراب حكم الاستعمال فى الخلاصة وغيرهالوتيمم جنب او حائض من مكان فوضع اخر يده على ذلك المكان فتيمم اجزأه والمستعمل هو التراب الذى استعمل فى الوجه والذراعين 3 اهـ وهو يفيد

[جدول دائیں - اردو] کیا مٹی پر بھی مستعمل ہونے کا حکم لگتا ہے؟ ---- خلاصہ وغیرہ میں ہے کہ "اگر جنب یا حائض نے کسی جگہ سے تیمم کیا پھر دوسرے نے اسی جگہ ہاتھ رکھ کر تیمم کیا تو کافی ہوگا اور مستعمل وہ مٹی ہے جو چہرے اور کلائیوں میں استعمال ہوئی اهـ اس عبارت سے مٹی کے مستعمل ہونے کا

[حواشی] 1 طحطاوی علی الدرالمختار باب التیمم مطبع دارالمعرفۃ بیروت ۱/۱۳۲ 2 فتح القدیر مسح الراس مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۱/۶۱ 3 فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/۲۰

Fatawa-e-Razvia Volume 3

[Arabic]: The concept of its usage and it being such that one wipes the forearms with the same strike (on earth) with which one wiped the face, and not otherwise. [Urdu]: The concept is found, and its usage consists solely of this: that one wipes the wrists with the same strike with which one wiped the face. (T)

It is stated in 'Bahr al-Ra'iq': [Arabic]: In 'Al-Muhit' and 'Al-Bada'i', it is mentioned that if two people perform Tayammum from the same spot, it is permissible because that spot does not become 'used'. This is because Tayammum is performed by what adheres to the hands, not by what remains, similar to the water leftover in a vessel after the first person's wudu. This statement provides a concept of its being 'used' and limits it to a single scenario: that one wipes the forearms with the same strike with which one wiped the face, and not otherwise. [Urdu]: In 'Al-Muhit' and 'Al-Bada'i' it is written: If two people perform Tayammum from the same place, it is permissible because that place did not become 'used' since Tayammum is fulfilled by what adheres to the hand, not by what remains, like the water left in a vessel after the first person's wudu. This text provides the concept of it being 'used' and that it is restricted to a single form, which is solely that one performs the wiping of the wrists with the same strike with which one wiped the face, not with a second strike. (T)

It is stated in 'Tahtawi ala Maraqi al-Falah': [Arabic]: It was said in 'Al-Fath' that this provides a concept of its usage, and it is limited to one scenario: that one wipes the forearms with the same strike with which one wiped the face, not another. [Urdu]: It was stated in 'Fath al-Qadeer': This provides the concept of its being 'used' and that it is limited to a single form, which is that one performs the wiping of the wrists with the same strike with which one wiped the face, not with a second strike. (T)

Note: [Arabic] We have quoted his statement for two benefits: to demonstrate his discourse and to repel the objection of Allama Sh (Shaami) against it, as will follow. 12 from him, may He forgive him. (M) [Urdu] We have quoted his text for two benefits: (1) the expression of his discourse (2) and the refutation of the objection of Allama Shaami upon it. As will come shortly. 12 from him, may He forgive him. (T)

1. Fath al-Qadeer, Chapter of Tayammum, Nooria Razvia, Sukkur, 1/120.
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Press, Karachi, 1/71.

3. Tahtawi ala Maraqi al-Falah, Chapter of Tayammum, Al-Azhariya Press, Bulaq, Egypt, p. 69.

फ़तावा-ए-रजविया जिल्द 3

[अरबी]: इसके इस्तेमाल होने का विचार और यह कि वह इस तरह हो कि उसी हाथ मारने (मिट्टी पर) से कलाईयों का मसह करे जिससे चेहरे का मसह किया है, और किसी दूसरे से नहीं। [उर्दू]: इसका विचार मिलता है और यह कि इसका मुस्तअमल (इस्तेमाल किया हुआ) होना बस यही है कि जिस ज़रब (हाथ मारने) से चेहरे का मसह किया है उसी से कलाईयों का मसह करे। (त)

बहर-उर-राइक में है: [अरबी]: अल-मुहीत और अल-बदाई में है: अगर दो लोगों ने एक ही जगह से तयम्मुम किया तो जायज़ है क्योंकि वह जगह मुस्तअमल नहीं हुई, क्योंकि तयम्मुम तो उसी से अदा होता है जो हाथों में लग गया, उससे नहीं जो बच गया, जैसे वह पानी जो पहले व्यक्ति के वज़ू के बाद बर्तन में बच जाता है। यह इबारत इसके मुस्तअमल होने का तसव्वुर देती है और इसे एक ही सूरत पर महदूद करती है और वह यह है कि कलाईयों का मसह उसी ज़रब से करे जिससे चेहरे का मसह किया है, दूसरे से नहीं। [उर्दू]: मुहीत और बदाइ में है: अगर दो ने एक ही जगह से तयम्मुम किया तो जायज़ है इस लिए कि वह जगह मुस्तअमल न हुई क्योंकि तयम्मुम तो उसी से अदा हो जाता है जो कुछ हाथ में लग गया है उससे नहीं जो बच रहा, जैसे वह पानी जो पहले शख़्स के वज़ू के बाद बर्तन में बच गया हो। इस इबारत से इसके मुस्तअमल होने का तसव्वुर मिलता है और इसका कि वह एक ही सूरत में महदूद है और वह सिर्फ़ यही है कि कलाईयों का मसह उसी ज़रब से करे जिस से चेहरे का मसह किया है दूसरी ज़रब से नहीं। (त)

तहतवी अला मराक़ी अल-फ़लाह में है: [अरबी]: फ़तह-उल-क़दीर में फ़रमाया गया कि यह इसके इस्तेमाल का तसव्वुर प्रदान करता है और यह एक ही सूरत पर सीमित है कि वह कलाईयों का मसह उसी ज़रब से करे जिससे चेहरे का मसह किया है, न कि किसी और से। [उर्दू]: फ़तह-उल-क़दीर में फ़रमाया: इस से इस के मुस्तअमल होने का तसव्वुर मिलता है और यह कि वह एक ही सूरत में महदूद है वह यह कि कलाईयों का उसी ज़रब से मसह करे जिस से चेहरे का मसह किया है न कि दूसरी ज़रब से। (त)

नोट: [अरबी] हमने उनकी इबारत दो फ़ायदों के लिए नक़ल की: उनकी तक़रीर को ज़ाहिर करने और उन पर अल्लामा शामी के ऐतराज़ को दफ़ा करने के लिए, जैसा कि आगे आएगा। 12 मय ही फ़ॉरगिव हिम। (म) [उर्दू] हम ने इन की इबारत दो फ़ायदों के तहत नक़ल की: (१) उन की तक़रीर

का इज़हार (२) और इस पर अल्लामा शामी के एतराज़ का दफ़िया। जैसा कि अनक़रीब आ रहा है १२मुनहु ग़फ़रलाहू (त)

1. फ़तह-उल-क़दीर, बाब-उत-तयम्मुम, नूरिया रजविया, सुक्कुर, 1/120.
2. अल-बहर-उर-राइक, बाब-उत-तयम्मुम, मतबा एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/71.
3. तहतवी अला मराक़ी अल-फ़लाह, बाब-उत-तयम्मुम, मतबा अल-अज़हरिया, बोलाक़, मिस्र, पृ. 69.

पृष्ठ 722/756

تصور استعماله وکونه بان یمسح الذراعین بالضربة التی مسح بها وجهه لیس غیراھ | تصور ملتا ہے اور یہ کہ اس کا مستعمل ہونا بس یہی ہے کہ جس ضرب سے چہرے کا مسح کیا ہے اسی سے کلائیوں کا مسح کرے اھ (ت)

بحر الرائق میں ہے: فی المحیط والبدائع لوتیمم اثنان من مکان واحد جازلانه لم یصر مستعملا لان التیمم انما یتأدی بما التزق بیده لابیما فضل کالماء الفاضل فی الاناء بعد وضوء الاول اھ وھو یفید تصور استعماله وقصره علی صورة واحدة وھی ان یمسح الذراعین بالضربة التی مسح بها وجهه لیس غیر[2]. | محیط اور بدائع میں ہے: اگر دو نے ایک ہی جگہ سے تیمم کیا تو جائز ہے اس لئے کہ وہ جگہ مستعمل نہ ہوئی کیونکہ تیمم تو اسی سے ادا ہو جاتا ہے جو کچھ ہاتھ میں لگ گیا ہے اس سے نہیں جو بچ رہا، جیسے وہ پانی جو پہلے شخص کے وضو کے بعد برتن میں بچ گیا ہو اھ اس عبارت سے اس کے مستعمل ہونے کا تصور ملتا ہے اور اس کا کہ وہ ایک ہی صورت میں محدود ہے اور وہ صرف یہی ہے کہ کلائیوں کا مسح اسی ضرب سے کرے جس سے چہرے کا مسح کیا ہے دوسری ضرب سے نہیں۔ (ت)

طحطاوی علی مراقی الفلاح میں ہے: قال فی الفتح ھذا یفید تصور استعماله وھو مقصور علی صورة واحدة وھو ان یمسح الذراعین بالضربة التی مسح بها وجهه لاغیر[3]. | فتح القدیر میں فرمایا: اس سے اس کے مستعمل ہونے کا تصور ملتا ہے اور یہ کہ وہ ایک ہی صورت میں محدود ہے وہ یہ کہ کلائیوں کا اسی ضرب سے مسح کرے جس سے چہرے کا مسح کیا ہے نہ کہ دوسری ضرب سے۔ (ت)

عه نقلنا عبارته لفائدتین اظهار تقریره ودفع ایراد العلامة ش عنه کما سیأتی ۱۲منه غفر له (م) | ہم نے ان کی عبارت دو فائدوں کے تحت نقل کی: (۱) ان کی تقریر کا اظہار (۲) اور اس پر علامہ شامی کے اعتراض کا دفعیہ۔ جیسا کہ عنقریب آرہا ہے ۱۲منہ غفر لہ (ت)

1 فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۱۲۰ 2 البحرالرائق باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۷۱ 3 طحطاوی علی مراقی الفلاح باب التیمم مطبع الازہر یہ بولاق مصر ص ۶۹

Fatawa Rizvia, Volume 3

How clear a clarification it is that being 'used' (must'amal) is only for earth in a legal sense (turab-e-hukmi), such that it is not possible to wipe two limbs with one strike, and there is no other way for earth to become 'used'.

Third Proof: General texts of early and recent Imams, scholars, Hadith, original texts (mutoon), commentaries (shurooh), and Fatwas. I say: Before the book 'Al-Bahr', all Imams and scholars in all books of the school of thought (madhhab) imposed the condition of 'pure earth' (sa'id-e-tahir) for dry ablution (tayamum). This clearly and brightly proves that for tayamum, only the purity of the genus of the earth is required. Therefore, it follows that every pure earth is inherently a purifier (mutahhir). If it were not so, and if the genus of earth could also be 'pure but not a purifier' (tahir ghayr mutahhir) like water, it would have been mandatory to set the condition of being a 'purifier'. Simply sufficing with 'pure' would not have been correct. However, they are all in agreement on this, which explicitly shows that earth does not become 'used'. In authoritative texts of the madhhab such as Quduri, Tuhfat al-Fuqaha, Hidaya, Wiqaya, Niqaya, Mukhtar, Wafi, Kanz, Ghurar, Islah, Multaqa, and Nur al-Idah, this very word 'pure' (tahir) or 'purity' (taharat) is used, and the commentators have upheld it. In 'Al-Mukhtasar' it is: 'Perform tayamum with pure earth.'[1] (t) In Wiqaya, Niqaya, Wafi, Ghurar, and Islah: 'Upon everything pure from the genus of the earth.'[2] (On everything pure from the genus of the earth. t) In Kanz etc.: 'With pure from the genus of the earth.'[3] (With any pure thing from the genus of the earth. t) In Multaqa al-Abhur: 'Its condition is the purity of the earth.'[4] (Its condition is that the earth be pure. t) In Bada'i: 'And among them is that the earth should be pure.'[5] (And among them is that the earth be pure. t) In Hidaya: 'Because by 'tayyib' (pure/good) mentioned in the text (Nass), 'pure' (tahir) is intended.'[6] (Because by the word 'tayyib' appearing in the text, pure is meant. t) In Tabyin: 'Pure earth, meaning clean.'[7] (Pure earth. t). This is also mentioned in 'Inaya' and 'Al-Fath'.

1. Al-Quduri, Chapter of Tayamum, printed by Mujtabai, p. 11
2. Sharh Mukhtasar al-Wiqaya, Chapter of Tayamum, Matba al-Maktabat al-Rashidiyya Delhi, 98/1
3. Kanz ad-Daqa'iq, Chapter of Tayamum, H.M. Saeed Company Karachi, p. 17
4. Multaqa al-Abhur with Majma al-Anhur, Chapter of Tayamum, Matba Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 39/1
5. Bada'i al-Sana'i, Chapter of Tayamum, H.M. Saeed Company Karachi, 53/1

6. Al-Hidaya, Chapter of Tayamum, al-Maktabat al-Arabiyya Karachi, 36/1
7. Tabyin al-Haqa'iq, Chapter of Tayamum, al-Matba'at al-Amiriyya Bulaq Egypt, 38/1

फ़तावा रज़विया, खंड 3

कितना स्पष्टीकरण है कि 'मुस्तअमल' (इस्तेमालशुदा) होना केवल कानूनी मिट्टी (तुराब-ए-हुक्मी) के लिए है, कि एक बार हाथ मारने से दो अंगों का मसह नहीं हो सकता और इसके अलावा मिट्टी के मुस्तअमल होने की कोई और सूरत नहीं है।

तीसरा तर्क प्राचीन और आधुनिक इमामों, विद्वानों, हदीस, मूल ग्रंथों, व्याख्याओं और फतवों के सामान्य पाठ। मैं कहता हूँ: 'बहर' से पहले सभी इमामों और विद्वानों ने संप्रदाय (मज़हब) की तमाम किताबों में तयम्मुम के लिए 'सईदे ताहिर' (पाक मिट्टी) की शर्त लगाई है, जिससे यह स्पष्ट और सिद्ध होता है कि तयम्मुम के लिए मिट्टी की जाति (जिन्स-ए-अर्ज़) की केवल पवित्रता आवश्यक है। तो यह लाज़मी है कि हर पाक मिट्टी पूर्णतः पवित्र करने वाली (मुतहिर) है। यदि ऐसा न होता और मिट्टी की जाति भी पानी की तरह कभी 'पाक मगर पाक न करने वाली' (ताहिर-ए-ग़ैर मुतहिर) होती, तो यह अनिवार्य था कि वे 'मुतहिर' की शर्त लगाते। केवल 'ताहिर' पर संतोष करना सही न होता, लेकिन वे सभी इसी पर सहमत हैं, जो स्पष्ट रूप से बता रहा है कि मिट्टी मुस्तअमल नहीं होती। कुदूरी, तोहफ़तुल फ़ुकहा, हिदाया, विकाया, निक़ाया, मुख़्तार, वाफी, कंज़, ग़ुरर, इसलाह, मुल्तक़ा, नूरुल इज़ाह जैसे मज़हब के तमाम भरोसेमंद ग्रंथों में यही शब्द 'ताहिर' या 'तहारत' कहा गया है और व्याख्याकारों ने इसे ही बरकरार रखा है। मुख़्तसर में है: 'पाक मिट्टी से तयम्मुम करे।'[1] (त) विकाया, निक़ाया, वाफी, ग़ुरर और इसलाह में है: 'ज़मीन की जाति से हर पाक चीज़ पर।'[2] (ज़मीन की जाति से हर पाक चीज़ पर। त) कंज़ आदि में है: 'ज़मीन की जाति की किसी पाक चीज़ से।'[3] (ज़मीन की जाति की किसी पाक चीज़ से। त) मुल्तक़ा अल-अब्हुर में है: 'इसकी शर्त मिट्टी का पाक होना है।'[4] (इसकी शर्त यह है कि मिट्टी पाक हो। त) 'बदाइ' में है: 'और उनमें से यह है कि मिट्टी पाक हो।'[5] (और उनमें से यह है कि मिट्टी पाक हो। त) 'हिदाया' में है: 'क्योंकि नक़्ल (नस्स) में वर्णित 'तय्यिब' से अभिप्राय पाक है।'[6] (इसलिए कि नक़्ल में आए शब्द तय्यिब से मुराद पाक है। त) 'तबीन' में है: 'पाक मिट्टी यानी साफ़।'[7] (पाक मिट्टी। त) इसमें 'इनाया' और 'फ़त्ह' का भी उल्लेख है।

1. अल-कुदूरी, तयम्मुम का अध्याय, मुजतबाई प्रकाशन, पृष्ठ 11
2. शरह मुख़्तसर अल-विकाया, तयम्मुम का अध्याय, मतबा अल-मकतबतु रशीदिया दिल्ली, 98/1
3. कंज़ुद दक़ा’इक़, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृष्ठ 17

4. मुल्तक़ल अब्हुर मा मजमअल अन्हुर, तयम्मुम का अध्याय, मतबा अह्या-उत-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 39/1
5. बदाइ-उस-सनाइ, तयम्मुम का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 53/1
6. अल-हिदाया, तयम्मुम का अध्याय, अल-मकतबतुल अरबिया कराची, 36/1
7. तबीनुल हक़ा'इक़, तयम्मुम का अध्याय, अल-मतबअतुल अमीरिया बुलाक़ मिस्र, 38/1

पृष्ठ 723 का 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

کیسی صریح تصریح ہے کہ مستعمل ہونا صرف تراب حکمی کے لیے ہے کہ ایک ضرب سے دو عضو کا مسح نہیں ہوسکتا اور یہ کہ اس کے سوا کوئی صورت تراب کے مستعمل ہونے کی نہیں۔

دلیل سوم: نصوص عامہ ائمہ و علمائے قدیم و حدیث و متون و شروح و فتاوی اقول: بحر سے پہلے تمام ائمہ و علمائے جملہ کتب مذہب میں تیمم کے لیے صعید طاہر کی قید لگائی جس سے ثابت و روشن کہ تیمم کے لیے جنس ارض کی صرف طہارت درکار تو لازم کہ ہر صعید طاہر مطلقاً مطہر ہے کہ اگر ایسا نہ ہوتا اور جنس ارض بھی پانی کی طرح کبھی طاہر غیر مطہر بھی ہوتی تو واجب تھا کہ مطہر کی شرط لگاتے صرف طاہر پر اکتفا صحیح نہ ہوتا مگر وہ اسی پر اطباق فرمائے ہوئے ہیں تو صراحتہً بتارہے ہیں کہ مٹی مستعمل نہیں ہوتی ‘قدوری ‘تحفۃ الفقہاء ‘ہدایہ ‘وقایہ ‘نقایہ ‘مختار ‘وافی ‘کنز ‘غرر ‘اصلاح ‘ملتقی ‘نور الایضاح میں کہ سب متون معتمدہ مذہب ہیں یہی لفظ طاہر یا طہارت کہا اور شراح نے اسے مقرر رکھا۔ مختصر میں ہے: یتیمّم بصعید طاہر 1۔ (پاک صعید سے تیمم کرے۔ت) وقایہ و نقایہ و وافی و غرر و اصلاح میں ہے: علی کل طاہر من جنس الارض 2 (جنس زمین سے ہر پاک پر۔ت) کنز وغیرہ میں ہے: بطاہر من جنس الارض 3 (جنس زمین کے کسی پاک پر۔ت) ملتقی البحر میں ہے: شرطہ طہارۃ الصعید 4 (اس کی شرط یہ ہے کہ صعید پاک ہو۔ت) "بدائع میں ہے: ومنھا ان یکون التراب طاہراً 5 (اور ان میں سے یہ ہے کہ مٹی پاک ہو۔ت) "ہدایہ میں ہے: لان الطیب ارید بہ الطاہر فی النص 6 (اس لیے کہ نص میں وارد شدہ طیب سے مراد پاک ہے۔ت) "تبیین میں ہے: صعید اطیبا ای طاہراً 7 (طیب صعید پاک۔ت) اس میں نیز "عنایہ و "افتح و

1 القدوری باب التیمم مطبوعہ مجتبائی ص ۱۱ 2 شرح مختصر الوقایہ باب التیمم مطبع المکتبۃ الرشیدیہ دہلی ۹۸/۱ 3 کنز الدقائق باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۷ 4 ملتقی البحر مع مجمع الانہر باب التیمم مطبع احیاء التراث العربی بیروت ۳۹/۱ 5 بدائع الصنائع و الماثر الظ الرکن باب التیمم ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۵۳/۱ 6 الہدایہ باب التیمم المکتبۃ العربیہ کراچی ۳۶/۱ 7 تبیین الحقائق باب التیمم المطبعۃ الامیریہ بولاق مصر ۳۸/۱

In 'Ghunyah' it is stated: 'At-Tahir' (the pure) is intended by consensus. (The pure is intended by consensus. -t)

In 'Bada'i' it is stated: The meaning of 'taharah' (purity) has become the intended meaning by consensus, so much so that 'tayammum' with impure soil is not permissible. (The meaning of purity is intended by consensus to the extent that tayammum from impure ground is not valid. -t) In 'Majma' al-Anhur' it is stated: 'At-Tayyib' there is in the meaning of 'At-Tahir' (pure), as evidenced by the saying of Allah Almighty: 'but He intends to purify you' ('At-Tayyib' here is in the sense of pure, to which this command of the Creator, the Most High, points: "but He wants to purify you". -t). In 'Nihayah', 'Inayah', and general commentaries of 'Hidayah', it is stated: 'At-Tayammum al-Qasd ila al-Sa'id al-Tahir lil-Tathir' (Tayammum means intending towards pure soil for purification. -t). In 'Jawahir al-Akhlati' it is stated: A specific intent towards something pure from the genus of the earth. (A specific intent towards some pure thing of the species of the earth. -t). The statements of the absolute researcher, 'Bahr al-Ra'iq', and 'Ghunyah Dhawi al-Ahkam' were mentioned in the fourth definition: 'The truth is that it is the name for wiping the face and hands from the pure soil.' (The truth is that it is the name for wiping the face and hands with pure soil. -t)

Allama Ibn Kamal Pasha and 'Majma' al-Anhur's statement appeared in the fifth definition: 'It is a purity obtained by using pure soil.' (It is such a purity which is obtained by the use of pure soil. -t) In short, this statement has come down by consensus since ancient and modern times; first of all, the learned Ibn Wahban wrote the word 'mutahhir' (purifying) in his poetic work, where he said:

'And your excuse is a condition, two strikes and an intention, and Islam and wiping the purifying soil.'

He said it like this: And your excuse is a condition, and two strikes, intention, Islam, wiping, and the purifying soil. (t)

1. Tabyin al-Haqaiq, Chapter on Tayammum, Al-Matba'ah al-Amiriyyah, Bulaq, Egypt, 1/39
2. Bada'i al-Sana'i, regarding the explanation of what is used for tayammum, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/53

3. Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur, Chapter on Tayammum, Matba'ah Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/39
4. Al-Inayah with Fath al-Qadir, Chapter on Tayammum, Nuriyyah Rizviyyah, Sukkur, 1/106
5. Jawahir al-Akhlati (Manuscript copy), Section on Tayammum, 1/11
6. Ghunyah Dhawi al-Ahkam fi Bughyah Durar al-Hukkam, Chapter on Tayammum, Matba'ah Kamil al-Ka'ina fi Dar al-Sa'ada, Egypt, 1/28
7. Majma' al-Anhur, Chapter on Tayammum, Matba'ah Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/71
8. Poetic Work of Ibn Wahban

'ग़ुनिया' में है: 'अत-ताहिर' से मुराद बिल-इज्माअ (पाक, सर्वसम्मति से अभिप्रेत है। -त)

'बदाइ' में है: 'तहारत' (पवित्रता) का अर्थ सर्वसम्मति से अभिप्रेत हो गया है, यहाँ तक कि अपवित्र मिट्टी (नजस सईद) से तयम्मुम जायज़ नहीं है। (तहारत का अर्थ इज्माअ से अभिप्रेत है यहाँ तक कि नापाक मिट्टी से तयम्मुम जायज़ नहीं। -त) 'मज्मअ़ अल-अन्हुर' में है: वहाँ 'अत-तय्यिब' का अर्थ 'अत-ताहिर' (पाक) है, जैसा कि अल्लाह तआला के इस कथन से प्रमाणित होता है: 'परन्तु वह तुम्हें पवित्र करना चाहता है'। ('तय्यिब' यहाँ पाक के अर्थ में है, जिस पर अल्लाह तआला का यह इर्शाद दलालत कर रहा है: "और लेकिन वह चाहता है कि तुम्हें पाक कर दे"। -त) 'निहाया', 'इनाया' और 'हिदाया' की आम व्याख्याओं में है: तयम्मुम का अर्थ पवित्रता के लिए पाक मिट्टी का इरादा करना है। (तयम्मुम का अर्थ शुद्धिकरण के लिए पाक सईद का इरादा करना है। -त) 'जवाहिर अल-अख़लाती' में है: ज़मीन की जाति की किसी पाक चीज़ की ओर एक विशिष्ट इरादा। (ज़मीन की किस्म के किसी पाक हिस्से की ओर विशेष इरादा। -त) मुहक़्क़िक़ अलल इत़्लाक़, 'बहुर राइक़' और 'ग़ुनिया ज़वी अल-अहकाम' के कथन चौथी परिभाषा में गुज़रे कि: सत्य यह है कि यह पाक मिट्टी से चेहरे और हाथों के मसह (पोछने) का नाम है। (हक़ यह है कि वह पाक सईद से चेहरे और हाथों के मसह का नाम है। -त)

अल्लामा इब्न कमाल पाशा और 'मज्मअ़ अल-अन्हुर' का कथन पांचवीं परिभाषा में गुज़रा: यह वह पवित्रता है जो पाक मिट्टी के उपयोग से प्राप्त होती है। (वह ऐसी तहारत है जो पाक सईद के इस्तेमाल से हासिल हो। -त) संक्षेप में, यह कथन प्राचीन और आधुनिक समय से सर्वसम्मत चला आ रहा है, सबसे पहले विद्वान इब्न वहबान ने अपनी काव्य रचना में 'मुतह्हिर' (पवित्र करने वाला) शब्द लिखा जहाँ उन्होंने कहा:

'और तुम्हारा उज्र (बहाना/अक्षमता) एक शर्त है, दो प्रहार और एक नीयत, और इस्लाम और पवित्र करने वाली मिट्टी का मसह।'

उन्होंने इस तरह कहा: और तेरा उज्र शर्त है और दो ज़र्बें (प्रहार), नीयत, इस्लाम, मसह और पाक करने वाली सईद (मिट्टी)। (त)

1. तबीन अल-हक़ाएक़, बाब अत-तयम्मुम, अल-मत़्बा अल-अमीरिया बुलाक़ मिस्र 39/1

2. बदाइ अस्सनाइ, और जहाँ तक उस चीज़ के बयान का संबंध है जिससे तयम्मुम किया जाता है, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 53/1
3. मज्मअ़ अल-अन्हुर शरह मुल्तक़ा अल-अब्हुर, बाब अत-तयम्मुम, मत़बा दार इह़्या अत-तुरास अल-अरबी बैरूत 39/1
4. अल-इनाया मअ़ फ़त़्हुल क़दीर, बाब अत-तयम्मुम, नूरिया रज़विया सुक्कुर 106/1
5. जवाहिर अल-अख़लाती (हस्तलिखित प्रति), फ़स्ल फ़ीत-तयम्मुम, 11/1
6. ग़ुनिया ज़वी अल-अह़काम फ़ी बग़िया दुरर अल-हुक्काम, बाब अत-तयम्मुम, मत़्बा कामिल अल-काइना फ़ी दार अस्सआ़दा मिस्र 28/1
7. मज्मअ़ अल-अन्हुर, बाब अत-तयम्मुम, मत़बा दार इह़्या अत-तुरास अल-अरबी बैरूत 71/3
8. मन्ज़ूमा इब्न वहबान

’غنیہ‘ میں ہے: الطاھر مراد بالاجمال (پاک، بالاجماع مراد ہے۔ت)

بدائع میں ہے: معنی الطھارۃ صار مرادا بالاجمال حتی لا یجوز التیمم بالصعید النجس (معنی طہارت بالاجماع مراد ہے یہاں تک کہ نجس صعید سے تیمم جائز نہیں۔ت) مجمع الانہر میں ہے: الطیب ھناک بمعنی الطاھر بدلالۃ قولہ تعالٰی وَلٰکِن یُرِیدُ لِیُطَھِّرَکُمْ (طیب یہاں پاک کے معنی میں ہے جس پر یہ ارشاد باری تعالٰی دلالت کر رہا ہے: "اور لیکن وہ چاہتا ہے کہ تمہیں پاک کردے"۔ ت) نہایہ و عنایہ و عامہ شروح ہدایت میں ہے: التیمم القصد الی الصعید الطاھر للتطھیر (تیمم کا معنی تطہیر کے لیے پاک صعید کا قصد کرنا ہے۔ ت) جواہر اخلاطی میں ہے: قصد مخصوص الی طاھر من جنس الارض (جنس زمین کے کسی پاک کی جانب مخصوص قصد۔ ت) محقق علی الاطلاق و بحر الرائق و غنیہ ذوی الاحکام کی عبارتیں تعریف چہارم میں گزریں کہ الحق انہ اسم لمسح الوجہ والیدین عن الصعید الطاھر (حق یہ ہے کہ وہ پاک صعید سے چہرے اور ہاتھوں کے مسح کا نام ہے۔ت)

علامہ ابن کمال پاشا و مجمع الانہر کی عبارت تعریف پنجم میں گزری: ھو طھارۃ حاصلۃ باستعمال الصعید الطاھر (وہ ایسی طہارت ہے جو پاک صعید کے استعمال سے حاصل ہو۔ ت) بالجملہ یہ عبارت قدیمًا و حدیثاً مجمع علیہا چلی آئی سب میں پہلے فاضل ابن وہبان نے اپنے منظومہ میں لفظ مطہر لکھا حیث قال:

وعذرك شرط ضربتان ونية والاسلام والمسح الصعيد المطهر

انہوں نے یوں کہا: اور تیرا عذر شرط ہے اور دو ضربیں، نیت، اسلام، مسح اور پاک کرنے والی صعید۔ (ت)

1 تبیین الحقائق باب التیمم المطبعۃ الامیریۃ بولاق مصر ۳۹/۱ 2 بدائع الصنائع، واما بیان ما یتیمم بہ، ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۵۳/۱ 3 مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر باب التیمم مطبع دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۹/۱ 4 العنایۃ مع فتح القدیر باب التیمم نوریہ رضویہ سکھر ۱۰۶/۱ 5 جواہر اخلاطی (قلمی نسخہ) فصل فی التیمم، ۱۱/۱ 6 غنیۃ ذوی الاحکام فی بغیۃ درر الحکام باب التیمم مطبعہ کامل الکائنہ فی دار السعادہ مصر ۲۸/۱ 7 مجمع الانہر، باب التیمم، مطبع داراحیاء التراث العربی بیروت ۷۱/۳ 8 منظومہ ابن وہبان

Fatawa-e-Razvia, Volume 3

I say: In the genus of earth, 'Tahir' (pure) and 'Mutahhir' (purifying) are inseparable, and because 'Tahir' (pure) entered into the constitution of a non-liquid substance, it cannot be other than 'Mutahhir' (purifying). However, Allama Sahib al-Bahr has extracted this verification that being 'Tahir' is better than being 'Mutahhir', and criticized the text of Kanz, which is the same as the statement of all other Imams, the explanation of which was mentioned in Sadr al-Kitab[1]. More surprisingly, Bahr Muhaqqiq, following the Muhaqqiq-e-ala-itlaq (absolute researcher), clearly stated that Tayammum is the name for wiping limbs with pure earth as it was previously mentioned in 'Al-Wajh al-Rabi' (as evident from the definition in Volume 4), from which it is clear that the criticism of the group of Imams was just an outburst of the pen. Then again, his student Sheikh al-Islam Ghazzi in Tanveer, and the researcher Alai in Durr al-Mukhtar, and Azhari, Tahtawi, and Shami—these relatively recent scholars—followed him in this.

Arabic Text	**Urdu Translation**
Rather, an inclination towards such a meaning occurred to Allama Shurunbulali in the commentary of Al-Wahbaniyah, where he stated under the mentioned verse: 'This verse encompasses the conditions of Tayammum, and they are six. The sixth condition is pure earth (sa'id at-tahur), and it is that which no impurity has touched. When impurity touches the earth and its traces disappear, in the most correct of opinions, Tayammum from it is not permissible, though prayer upon it is valid.'[1]	Rather, the inclination towards such a meaning also occurred to Allama Shurunbulali in 'Sharh al-Wahbaniyah'. He stated under the mentioned verse: "This verse encompasses the conditions of Tayammum, and they are six. The sixth condition is pure earth (sa'id at-tahur), and it is that which no impurity has touched. When impurity touches the earth and its traces disappear, in the most correct of opinions, Tayammum from it is not permissible, though prayer upon it is valid." (T)

Then these gentlemen also did not state the reason for this, that it is an avoidance of 'used soil' (turab musta'mal), but rather an avoidance of that earth which was reached by impurity and became trace-less after drying. 'The texts of Al-Bahr and Al-Durr have already been mentioned, and the others only followed them' (The texts of Al-Bahr al-Raiq and Durr al-Mukhtar have passed, and the rest of the scholars have followed them. T). Researchers have established this avoidance from the word 'Tahir' itself. The speech of Imam Malik al-Ulama and its complete verification, and the fact

that this is the general school of thought of the commentators of Hidaya, and according to the admission of the author of Al-Bahr, this is the benefit of the speech of the majority of the elders, and the discussion in Al-Bahr on this is incomplete, and its answers in the intended place—all this was mentioned above[2] in Al-Idah Al-Islah:

[1] i.e., the book Hasan al-Tayammum 12. [2] i.e., in the beginning of the book Hasan al-Tayammum 12. [1] Sharh al-Wahbaniyah by Allama Shurunbulali.

फतावा-ए-रज़विया, जिल्द 3

अक़ौल: पृथ्वी की श्रेणी में 'ताहिर' (शुद्ध) और 'मुतहिर' (शुद्ध करने वाला) अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं, और चूंकि 'ताहिर' एक गैर-द्रव पदार्थ के गठन में शामिल हुआ, इसलिए यह 'मुतहिर' के अलावा और कुछ नहीं हो सकता। हालांकि, अल्लामा साहिब अल-बहर ने यह सूक्ष्म शोध निकाला कि 'ताहिर' की तुलना में 'मुतहिर' होना बेहतर है, और कन्ज़ के उस पाठ पर आपत्ति व्यक्त की जो सभी इमामों का सामूहिक कथन है, जिसका विवरण सदर अल-किताब[1] में दिया गया है। आश्चर्य की बात यह है कि बहर मुहक़्क़िक़ ने मुहक़्क़िक़-ए-अला-इतलाक़ का अनुसरण करते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि तयम्मुम शुद्ध मिट्टी (सईद ताहिर) से अंगों को पोंछने का नाम है जैसा कि 'अल-वजह अल-रबि' में पहले बताया गया है (जैसा कि जिल्द 4 की परिभाषा से स्पष्ट है), जिससे यह स्पष्ट होता है कि इमामों के समूह पर वह आपत्ति केवल कलम का एक जोश था। फिर उनके शिष्य शेखुल इस्लाम ग़ज़ी ने तनवीर में, और शोधकर्ता अल-अलाई ने दुर्र-ए-मुख़्तार में, और अज़हरी, तहतावी और शामी जैसे अपेक्षाकृत आधुनिक विद्वानों ने इस मामले में उनका अनुसरण किया।

अरबी पाठ

बल्कि अल्लामा शूरुनबुलाली ने अल-वहबानिया की व्याख्या में इस अर्थ की ओर झुकाव व्यक्त किया, जहाँ उन्होंने उल्लेखित छंद के नीचे कहा: 'यह छंद तयम्मुम की शर्तों को समाहित करता है, और वे छह हैं। छठी शर्त शुद्ध मिट्टी (सईद अत-तहूर) है, और वह वह है जिसे किसी अशुद्धता ने न छुआ हो। जब मिट्टी पर अशुद्धता लग जाए और उसका निशान मिट जाए, तो सबसे सही मत के अनुसार, उससे तयम्मुम करना जायज़ नहीं है, हालाँकि उस पर नमाज़ सही है।'[1]

उर्दू अनुवाद

बल्कि ऐसे ही अर्थ की तरफ शरह वहबानिया में अल्लामा शूरुनबुलाली का भी रुझान हो गया है। उन्होंने उल्लेखित शेर के तहत फ़रमाया है: "यह शेर तयम्मुम की शर्तों पर मुश्तमिल है और ये छह हैं। छठी शर्त सईद तहूर, और यह वह है जिसे कोई नजासत (अशुद्धता) न लगी हो, ज़मीन पर जब कोई नजासत लग जाए और उसका असर जाता रहे तो राजिह तरीन (सबसे सही) क़ौल में उससे तयम्मुम जायज़ नहीं और नमाज़ उस पर दुरुस्त है।" (त)

फिर इन हज़रात ने भी इसकी वजह यह नहीं बताई कि यह 'प्रयुक्त मिट्टी' (तुराब मुस्तअमल) से परहेज़ है, बल्कि उस ज़मीन से परहेज़ है जिस तक अशुद्धता पहुँची और सूख कर बेअसर हो गई। 'अल-बहर और अल-दुर्र के ग्रंथ पहले ही उल्लेखित हो चुके हैं, और बाक़ी लोगों ने केवल उनका अनुसरण किया है' (अल-बहर अल-राईक़ और दुर्र-ए-मुख़्तार के उद्धरण गुज़र चुके हैं, और बाक़ी

हज़रात ने उन्हीं की पैरवी की है। त)। शोधकर्ताओं ने इस परहेज़ को स्वयं 'ताहिर' शब्द से ही सिद्ध किया है। इमाम मलिक अल-उलेमा का कथन और उसकी पूर्ण पुष्टि, और यह कि यही हिदाया के व्याख्याकारों का सामान्य पंथ है, और अल-बहर के लेखक की स्वीकारोक्ति के अनुसार, यही अधिकांश बड़ों के कथन का लाभ है, और इस पर अल-बहर की चर्चा अधूरी है, और उसके उत्तर उचित स्थान पर—यह सब कुछ ऊपर[2] अल-ईज़ाह अल-इस्लाह में गुज़र चुका है:

[1] अर्थात किताब हसन अत-तयम्मुम 12। [2] अर्थात सदर किताब हसन अत-तयम्मुम में 12। [1] अल्लामा शूरुनबुलाली द्वारा शरह अल-वहबानिया।

اقول: جنس ارض میں طاہر و مطہر متلازم ہیں اور 'قافیہ طاہر بوجہ دخل تاسیس قوانی غیر موسسہ میں نہ آسکتا لہذا المطہر کہا، مگر علامہ صاحب بحر نے یہ تدقیق نکالی کہ طاہر سے مطہر اولٰی ہے اور عبارت کنز پر کہ وہی عبارت جملہ ائمہ ہے اعتراض فرمایا جس کا بیان صدر کتاب عہ۱ میں گزرا، طرفہ یہ کہ انہیں بحر محقق نے باتباع محقق علی الاطلاق تصریح فرمائی کہ تیمم صعید طاہر سے مسح عضوین کا نام ہے کما تقدم فی الوجہ الرابع (جیسا کہ تعریف چہارم میں گزرا ت) جس سے ظاہر کہ کنز و جملہ ائمہ پر وہ اعتراض محض ایک جوش قلم تھا پھر بھی ان کے تلمیذ شیخ الاسلام غزی نے تنویر اور مدقق علائی نے در مختار اور ازہری و طحطاوی و شامی ان قریب العہد متاخرین علما نے اس میں ان کا اتباع کیا۔

بل وقع الميل الى نحوه للعلامة الشرنبلالي في شرح الوهبانية اذقال تحت البيت المذكور اشتمل البيت على شرائط التيمم وهى ست السادسة الصعيد الطهور وهو الذى لم تصبه نجاسة والارض اذا اصابتها نجاسة وذهب اثرها لم يجز التيمم منها ارجح الاقوال وتصح الصلاة عليها.

بلکہ ایسے ہی معنی کی طرف شرح وہبانیہ میں علامہ شرنبلالی کا بھی میلان ہو گیا ہے۔ انہوں نے مذکورہ شعر کے تحت فرمایا ہے : "یہ شعر تیمم کی شرطوں پر مشتمل ہے اور یہ چھ ہیں۔ چھٹی شرط صعید طہور، اور یہ وہ ہے جسے کوئی نجاست نہ لگی ہو، زمین پر جب کوئی نجاست لگ جائے اور اس کا اثر جاتا رہے تو راجح ترین قول میں اس سے تیمم جائز نہیں اور نماز اس پر درست ہے۔ (ت)

پھر ان حضرات نے بھی اس کی وجہ یہ نہ بتائی کہ تراب مستعمل سے احتراز ہے بلکہ اس زمین سے احتراز جسے نجاست پہنچی اور خشک ہو کر بے اثر ہو گئی وقد تقدمت عبارة البحر والدر

والباقون انما تبعوھا (البحر الرائق اور در مختار کی عبارتیں گزر چکیں باقی حضرات نے انہی کی پیروی کی ہے۔ ت) محققین نے یہ احتراز از خود نفس لفظ طاہر سے ثابت فرمایا امام ملک العلماء کا کلام اور اس کی تحقیق تام اور یہ کہ یہی عامہ شراح ہدایہ کا مسلک عام اور یہی باقرار صاحب بحر جمہور اکابر کا مفاد کلام اور بحر کی اس میں بحث ناتمام اور اس کے جوابات موضع مرام یہ سب کچھ عہ ۲ اوپر گزرے الایضاح الاصلاح میں ہے :

عہ۱ یعنی کتاب حسن التیمم ۱۲۔ عہ۲ یعنی صدر کتاب حسن التیمم میں ۱۲۔

1 شرح الوهبانية للعلامة الشرنبلالي۔

Fatawa Razawiyya - Volume Three

Arabic Text	Urdu Translation
La yajuzu 'ala makanin fihi najasatun wa qad zala atharuha ma'a annahu tajuzu al-salatu fihi li-annahu la yakhlū min ajza'i al-najasati wa hiya wa in qallat tunafi wasfa al-tayyib. (1)	It is not permissible to perform Tayammum on a place where there was impurity and its trace has disappeared, even though prayer is permissible there; because that place will not be free from the components of impurity, and even if it is little, it contradicts the attribute of 'Tayyib' (pure/ wholesome). (T)

In Sharh Niqayah al-Barjandi, it is mentioned:

Arabic Text	Urdu Translation
Al-muradu bi al-tahiri al-kamilu li-takhruja ardun asabatha najasatun. (2)	What is meant by 'Tahir' (pure) is 'perfectly pure', so as to exclude land that was touched by impurity. (T)

In Nur al-Idah and Maraqi al-Falah, it is mentioned:

Arabic Text	Urdu Translation
(Bi-tahirin) tayyibun wa huwa al-ladhi lam tamass-hu najasatun walaw zalat bi-dhababi athariha. (3)	(By pure) meaning 'Tayyib' (wholesome/purest), and it is that which has not been touched by impurity, even if it [the impurity] was removed by the disappearance of its trace. (T)

Great Warning: I say: And with Allah is the success (I say with the guidance of Allah Almighty. T). These are manifest and clear proofs that we have stated, and within them, those doubts are resolved that arose in the explanation of two issues from the words of the commentators in the evidence.

First issue: The best method of Tayammum is to do it in such a way as to avoid used [dust] as much as possible, as mentioned in the first evidence that this mentions 'Hukmi' (legal) dust, and it certainly becomes used. Allama Shami in 'Minhat al-Khaliq' sought another interpretation for this, that 'usage' refers to formal/apparent usage.

Arabic Text	Urdu Translation
Wa lam yastaqim lahu li-annahum dharaku ba'dahu ma yu'ayyinu al-isti'mala al-haqiqi. Qala fi al-Bahri	This interpretation was not sound for him because those scholars mentioned after it what specifies 'real usage'. It is stated in 'Al-Bahr'

Arabic Text	Urdu Translation
ba'da dhikri sifati al-tayammum huwa al-ahwatu li-anna fihi ihtirazan 'an isti'mali al-musta'mali bi-al-qadri...	after mentioning the method of Tayammum: "It is more cautious because it involves avoiding the use of the 'musta'mal' (used) [dust] by measure..."

Footnotes: 1. Al-Idah wal-Islah 2. Sharh al-Niqayah lil-Barjandi, Section on Tayammum, printed at Naval Kishore, Lucknow, 1/72 3. Maraqi al-Falah, Chapter on Tayammum, Azhariya Press, Egypt, p. 68

फ़तावा रज़विया - खंड तीन

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
ला यजूज़ु अला मकाि़निन फ़ीहि नजाि़सतुल व क़द ज़ाला अतरुहा मआ अन्नहु तजूज़ु अस-सलातु फ़ीहि लि-अन्नहु ला यख्लू मिन अज्ज़ाई अन-नजाि़सति व हिया व इन क़ल्लत तुनाफ़ी वस्फ़त अत-तय्यब। (1)	ऐसी जगह तयम्मुम जाि़यज़ नहीं है जहाँ गंदगी (नजासत) थी और उसका असर मिट चुका है, हालाँकि वहाँ नमाज़ जाि़यज़ है; क्योंकि वह जगह गंदगी के अंशों से मुक्त नहीं होगी और गंदगी भले ही कम हो, लेकिन वह 'तय्यब' (पवित्रता) के गुण के विपरीत है। (त)

शरह निक़ाया बरजंदी में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
अल-मुरादु बित-ताहिरिल कामिलु लितखरुजा अर्दुन असाबतहा नजाि़सतुल। (2)	'ताहिर' (शुद्ध) से तात्पर्य 'पूर्ण शुद्ध' है, ताकि वह ज़मीन बाहर हो जाए जिसे गंदगी लगी हो। (त)

नूर-उल-ईज़ाि़ह और मराक़ी अल-फ़लाह में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
(बि-ताहिरिन) तय्यबुन व हुवल लज़ी लम तमस-हु नजाि़सतुल वलौ ज़ालत बि-ज़हबाबि अतरिहा। (3)	(ताहिर से तात्पर्य) तय्यब (पवित्र) है और वह वह है जिसे कोई गंदगी न छुई हो, भले ही वह गंदगी उसके निशान मिटने से दूर हो गई हो। (त)

महान चेतावनी: मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफ़ीक़ से (मैं अल्लाह तआला की तौफीक से कहता हूँ। त)। ये स्पष्ट और ज़ाहिर प्रमाण हैं जो हमने बयान किए हैं, जिनके अंतर्गत वे शंकाएं हल हो गईं जो दो मसलों के बयान में टीकाकारों के शब्दों से गुज़रती थीं।

पहला मसला: तयम्मुम का सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसे इस तरह किया जाए कि जहाँ तक संभव हो इस्तेमाल की गई (धूल) से बचा जाए, जिसका ज़िक्र पहले प्रमाण में गुज़रा कि यह हुक्मी मिट्टी का ज़िक्र है और वह निश्चित रूप से इस्तेमाल की गई (मुस्तअमल) हो जाती है। अल्लामा शामी ने 'मिन्हात अल-खाि़लिक़' में इसकी दूसरी व्याख्या चाही कि इस्तेमाल से तात्पर्य औपचारिक इस्तेमाल है।

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
वलम यस्तक़िम लहू लि-अन्नहुम ज़कनू बादहू मा युअय्यिनु अल-इस्तिअमाला अल-हक़ीक़ी। क़ाला फ़ील बहरी बाद ज़िक्री सिफ़ति अत-तयम्मुमि हुवल अहवतु लि-अन्ना फ़ीहि इहतिराज़ान अन इस्तिअमालि अल-मुस्तअमली बिल-क़द्रि...	यह व्याख्या उनके लिए सही नहीं बैठी क्योंकि उन हज़रात ने इसके बाद वह ज़िक्र किया है जिससे वास्तविक इस्तेमाल का निर्धारण हो जाता है। 'अल-बहर' में तयम्मुम का तरीका बताने के बाद लिखा है: "वही अधिक एहतियात वाला है क्योंकि इसमें मुस्तअमल के इस्तेमाल से परहेज़ है..."

पादलेख: 1. अल-ईज़ाह वल-इस्लाह 2. शरह अल-निक़ाया लिल-बरजंदी, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर प्रेस लखनऊ, 1/72 3. मराक़ी अल-फ़लाह, तयम्मुम का अध्याय, अज़हरिया प्रेस मिस्र, पृष्ठ 68

جلد سوم فتاویٰ رضویہ

| لا یجوز علی مکان فیه نجاسة وقد زال اثرها مع انه تجوز الصلاة فیه لانه لا یخلو من اجزاء النجاسة وهي وان قلت تنافی وصف الطیب 1- | ایسی جگہ تیمّم جائز نہیں جس میں نجاست رہی ہو اور اس کا اثر زائل ہو گیا ہو باوجودیکہ اس میں نماز جائز ہے۔ اس لیے کہ وہ جگہ نجاست کے اجزاء سے خالی نہ ہوگی اور نجاست اگرچہ کم ہو مگر طیب وپاکی کے منافی ہے۔ (ت) |

شرح نقایہ برجندی میں ہے:

| المراد بالطاهر الکامل لتخرج ارض اصابتها نجاسة 2- | طاہر سے مراد طاہر کامل ہے تاکہ وہ زمین خارج ہو جائے جسے نجاست لگی ہو۔ (ت) |

نور الایضاح ومراقی الفلاح میں ہے:

| (طاہر) طیب وهو الذی لم تمسه نجاسة ولو زالت بذهاب اثرها 3- | پاک و پاکیزہ سے اور یہ وہ ہے جس پر کوئی نجاست نہ لگی ہو اگرچہ ایسی نجاست جو اثر کے ختم ہونے سے زائل ہو گئی ہو۔ (ت) |

تنبیہ جلیل: اقول: وباللہ التوفیق (میں اللہ تعالیٰ کی توفیق سے کہتا ہوں۔ ت) یہ دلائل ظاہرہ باہرہ کہ ہم نے تقریر کئے انہیں کے ضمن میں وہ شبہات حل ہوگئے کہ دو مسئلوں کی تقریر دلیل میں کلمات معللین سے گزرتے۔

پہلا مسئلہ: تیمّم کی ترکیب احسن کہ یوں یوں کرے تاکہ حتی الامکان استعمال مستعمل سے بچے جس کا بیان دلیل اول میں گزرا کہ یہ تراب حکمی کا ذکر ہے وہ بیشک مستعمل ہوتی ہے۔ علامہ شامی نے منحۃ الخالق میں اس کی دوسری تاویل چاہی کہ استعمال سے مراد استعمال صوری ہے۔

| ولم یستقم له لانهم ذکروا بعده ما یعین الاستعمال الحقیقی قال فی البحر بعد ذکر صفة التیّم هو الاحوط لان فیه احترازا عن استعمال المستعمل بالقدر | یہ تاویل راست نہ آئی اس لیے کہ ان حضرات نے اس کے بعد وہ ذکر کیا ہے جس سے استعمال حقیقی کی تعیین ہو جاتی ہے۔ بحر میں تیمم کا طریقہ بتانے کے بعد لکھا ہے: "وہی احوط ہے اس لیے..." |

حواشی: 1- الایضاح والاصلاح 2- شرح النقایہ للبرجندی فصل فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/۷۲ 3- مراقی الفلاح باب التیمم مطبع الازہرة المصریه مصر ص ۶۸

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Arabic Section]: Possible, because the dust that is on the hand becomes 'used' (mustamal) by wiping, to the extent that if one strikes their hands once and wipes the face and arms with them, it is not permissible (1). Similar content is in Al-Hilyah, Majma' al-Anhur, and others, and it is entirely taken from Al-Bada'i. It is said in Al-Minhah: His statement 'it becomes used by wiping' is subject to scrutiny, because if it were used upon first placement, it would follow that it's insufficient for the rest of the limb, and if it's not used upon first placement like water, then what he mentioned does not follow. And it is indeed so. This is supported by what Al-Arif said in the commentary on Hadyat Ibn al-Imad from Jami' al-Fatawa: It is said he wipes with the entire palm and fingers because dust does not become used in its place like water. For this reason, some expressed this method by saying 'and it is better' (al-ahsan), referring to the permissibility of its contrary (2).

[Urdu Section]: In this, there is an avoidance of using 'used' (mustamal) dust as much as possible, because the dust that is on the hand becomes used by wiping, so much so that if someone strikes both hands once and performs wiping of the face and wrists with them, it is not permissible. Similar to this is in Al-Hilyah and Majma' al-Anhur etc., and this entire discourse is taken from Al-Bada'i. (T) In Minhat al-Khaliq, it is stated: His statement 'it becomes used by wiping' is a matter of reflection because if it becomes used just by placing it for the first time, then it would be necessary that it is not sufficient for the rest of the limb, and if it does not become used upon first placement like water, then what they mentioned will not be necessary. And it is like this. This is supported by what the author of Ma'rifat has narrated from Jami' al-Fatawa in the commentary on Hadya Ibn al-Imad, saying: it was said he will wipe with the entire palm and fingers because dust does not become used in its place, just like water. That is why some scholars have termed this method as 'better and superior' so that the permissibility of its contrary may be indicated. (T)

[Footnote Section]: I say: The permissibility of the contrary (1) is explicitly mentioned in Al-Dhakhirah, Al-Bazzaziyyah, Al-Hilyah, Al-Ghunyah etc., so there is no need to rely on a mere indication in this regard. 12 from him, may he be forgiven. (M) I say: The permissibility of the contrary case is explicitly present in Dhakhirah, Bazzaziyyah, Hilyah, Ghunyah etc., so there is no need to stick to an indication in this regard. 12 from him (T).

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Tayammum, HM Saeed Company Karachi, 1/126

2. Minhat al-Khaliq with Al-Bahr, HM Saeed Company Karachi, 1/126

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

[अरबी खंड]: संभव है, क्योंकि जो मिट्टी हाथ पर होती है वह मसह करने से 'उपयोग की हुई' (मुस्तमल) हो जाती है, यहाँ तक कि यदि कोई अपने हाथों को एक बार मारे और उनसे चेहरे और हाथों का मसह करे, तो यह जायज़ नहीं है (1)। इसी तरह की बात अल-हिल्या, मजमा अल-अन्हुर और अन्य में है, और यह पूरी तरह से अल-बदाई से ली गई है। अल-मिन्हा में कहा गया है: उनका कथन 'यह मसह द्वारा मुस्तमल हो जाता है' विचारणीय है, क्योंकि यदि यह पहली बार रखने पर ही मुस्तमल हो जाता, तो यह अंग के बाकी हिस्सों के लिए अपर्याप्त होता, और यदि यह पानी की तरह पहली बार रखने पर मुस्तमल नहीं होता, तो उन्होंने जो उल्लेख किया है वह आवश्यक नहीं होगा। और वास्तव में ऐसा ही है। इसकी पुष्टि उस बात से होती है जो अल-आरिफ ने जामि अल-फ़तावा से हद्या इब्न अल-इमाद की व्याख्या में कही है: कहा जाता है कि वह पूरी हथेली और उंगलियों से मसह करता है क्योंकि मिट्टी अपने स्थान पर पानी की तरह मुस्तमल नहीं होती है। इसी कारण से, कुछ लोगों ने इस पद्धति को 'बेहतर' (अल-अहसन) कहकर व्यक्त किया है, जो इसके विपरीत की अनुमति की ओर संकेत करता है (2)।

[उर्दू खंड]: इसमें यथासंभव 'मुस्तमल' मिट्टी के उपयोग से बचने की बात है, क्योंकि हाथ पर जो मिट्टी है वह मसह से मुस्तमल हो जाती है, यहाँ तक कि अगर कोई दोनों हाथों को एक बार मारे और उनसे चेहरे और कलाइयों का मसह कर ले, तो यह जायज़ नहीं है। इसी के समान हिल्या और मजमा अल-अन्हुर आदि में भी है, और यह पूरा प्रवचन बदई से लिया गया है। (त) मिन्नत अल-खालिक में कहा गया है: उनका यह कथन 'मसह से मुस्तमल हो जाती है' चिंतन का विषय है क्योंकि अगर पहली बार रखने मात्र से मुस्तमल हो जाए, तो यह अनिवार्य होगा कि यह बाकी अंग के लिए पर्याप्त न हो, और अगर यह पानी की तरह पहली बार रखने से मुस्तमल न हो, तो वह आवश्यक नहीं होगा जिसका उन्होंने उल्लेख किया है। और यह ऐसा ही है। इसकी पुष्टि उस बात से होती है जो मारिफत के लेखक ने हद्या इब्न अल-इमाद की व्याख्या में जामि अल-फ़तावा से उद्धृत करते हुए कहा है: कहा गया है कि वह पूरी हथेली और उंगलियों से मसह करेगा क्योंकि मिट्टी अपने स्थान पर पानी की तरह मुस्तमल नहीं होती। इसीलिए कुछ विद्वानों ने इस पद्धति को 'बेहतर और श्रेष्ठ' करार दिया है ताकि इसके विपरीत के जायज़ होने का संकेत मिल सके। (त)

[पाद-टिप्पणी अनुभाग]: मैं कहता हूँ: इसके विपरीत की अनुमति (1) अल-ज़खिरा, अल-बज्जाज़िया, अल-हिल्या, अल-गुनिया आदि में स्पष्ट रूप से वर्णित है, इसलिए इस संबंध में मात्र संकेत पर निर्भर

रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। 12 उनकी ओर से, उन्हें क्षमा किया जाए। (म) मैं कहता हूँ: विपरीत स्थिति के जायज़ होने की स्पष्टता ज़खिरा, बज्जाज़िया, हिल्या, गुनिया आदि में मौजूद है, इसलिए इस बारे में संकेत से चिपके रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। 12 उनकी ओर से (त)।

1. अल-बहर अल-राईक, तयम्मुम का अध्याय, एचएम सईद कंपनी कराची, 1/126
2. मिन्नत अल-खालिक साथ अल-बहर, एचएम सईद कंपनी कराची, 1/126

[عربی حصہ]: الممکن فان التراب الذی علی یدہ یصیر مستعملا بالمسح حتی لو ضرب یدیہ مرۃ ومسح بھما وجھہ وذراعیہ لایجوز 1اھ ومثلہ فی الحلیۃ ومجمع الانھر وغیرھما وھو برمتہ ماخوذ من البدائع۔ قال فی المنحۃ قولہ یصیر مستعملا بالمسح فیہ نظر لانہ ان استعمل باول الوضع یلزم ان لا یجزئ فی باقی العضو والاستعمل باول الوضع کالماء لایلزم ما ذکرہ وھو کذلك یؤیدہ ماقالہ العارف فی شرح ھدیۃ ابن العماد عن جامع الفتاوی وقیل یمسح بجمیع الکف و الاصابع لان التراب لا یصیر مستعملا فی محلہ کالماء اھ ولذا عبر بعضھم فی ھذہ الکیفیۃ بقولہ والاحسن اشارۃ عہ الی تجویز خلافہ 2 اھ۔

[اردو حصہ]: کہ اس میں بقدر ممکن مستعمل کے استعمال سے احتراز ہے اس لیے کہ ہاتھ پر جو مٹی ہے وہ مسح سے مستعمل ہو جاتی ہے یہاں تک کہ اگر اپنے دونوں ہاتھ ایک بار مار کر ان سے چہرے اور کلائیوں کا مسح کر لیا تو جائز نہیں "اھ اسی کے مثل حلیہ اور مجمع الانہر وغیرہا میں ہے اور یہ پورا کلام بدائع سے ماخوذ ہے۔(ت) منحۃ الخالق میں ہے ان کا کلام "مسح سے مستعمل ہو جاتی ہے" محلِ نظر ہے اس لیے کہ اگر پہلی بار رکھنے ہی سے مستعمل ہو تو لازم آئے گا کہ باقی عضو میں کافی نہ ہو اور اگر اول وضع سے مستعمل نہ ہو جیسے پانی تو وہ لازم نہ آئے گا جو انہوں نے ذکر کیا۔ اور یہ ایسا ہی ہے۔ اس کی تائید اس سے ہوتی ہے جو صاحب معرفت نے ہدیہ ابن العماد کی شرح میں جامع الفتاوی سے نقل کرتے ہوئے فرمایا ہے، کہا گیا پوری ہتھیلی اور انگلیوں سے مسح کرے گا اس لیے کہ مٹی اپنے محل میں مستعمل نہیں ہوتی جیسے پانی اھ اسی لیے بعض حضرات نے اس طریقہ کو "احسن و بہتر" سے تعبیر کیا ہے تاکہ اس کے خلاف کے جواز کی طرف اشارہ ہو۔ (ت)

[حاشیہ کا حصہ]: عه اقول: تجویز (1) الخلاف مصرح به فی الذخیرة والبزازیة والحلیة والغنیة وغیرها فلا حاجة الی التمسك فیه باشارة 12 منه غفر له (م) اقول: صورت خلاف کے جواز کی ذخیرہ، بزازیہ، حلیہ، غنیہ وغیرہا میں صراحت موجود ہے تو اس بارہ میں اشارہ سے تمسک کی کوئی ضرورت نہیں۔ ۱۲ منہ (ت)۔

1 البحر الرائق، باب التیمم، مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۲۶ 2 منحۃ الخالق مع البحر مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۲۶

Fatawa-e-Razawiya, Volume 3

I say: By the grace of Allah Almighty, this is what we have leaned towards and have already presented a thorough investigation into it, beyond which there is no room for addition. We have also shown that the caution intended by the prominent scholars is neither feasible nor within one's power. In fact, there is no place for its supposed "betterment" either, because if that soil becomes used (musta'mal), it will no longer suffice for use, and if it is not used, then the extra effort is not commendable as it is engaging in a useless matter. Allama Shami said: Unless it is said that what is meant is that it becomes used in form (suratan), not in reality (haqiqatan). End. (T)

I say: Rather, it is used both in form and in reality. Do you not see the definition of Tayammum in 'Al-Bada'i' and many other books, that it is "the use of soil on two specific limbs"? In 'At-Tabyin' and 'Al-Jawhara', it is "the use of a part of the earth". In 'At-Tanwir', it is "its use in a specific manner". In 'Al-Idah', it is "the purification obtained through the use of soil". Allama Shami himself has stated: "Use is that specific wiping (mash)", as all these points have been mentioned in the definitions. So there is no doubt that soil is used on both limbs just as water is used on the limbs. The discussion is only about whether the quality of purification (tahuriyyat) is stripped away by this use or not? You have heard the words of 'Ad-Diraya' and 'Al-Binaya' that "In our view, Tayammum with used soil is permissible".

1. Minhat al-Khaliq with al-Bahr, Chapter of Tayammum, H.M. Saeed Company Press, Karachi, 1/146.
2. Al-Binaya Sharh al-Hidaya, Chapter of Tayammum, Al-Imdadiya Press, Makkah al-Mukarramah, 1/324.

Page 728 of 756

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 3

मैं कहता हूँ: अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से यह वही है जिसकी ओर हमारा झुकाव रहा और जिसकी तहक़ीक़ हमने पहले ही उस सीमा तक कर दी है जिसके आगे कोई गुंजाइश नहीं। हमने यह भी बता दिया कि बड़े विद्वान जो एहतियात (सावधानी) चाहते हैं वह न तो संभव है और न ही वश में। बल्कि इस तरीके के"बेहतर" होने का भी कोई अवसर नहीं है, क्योंकि यदि वह मिट्टी 'मुस्तअमल' (उपयोग की हुई) हो गई तो वह आगे के लिए पर्याप्त नहीं होगी, और यदि मुस्तअमल नहीं हुई तो यह कष्ट उठाना अच्छी बात नहीं है क्योंकि यह एक निष्फल कार्य में व्यस्त रहना है। अल्लामा शामी ने फरमाया: मगर यह कहा जाए कि मतलब यह है कि वह 'सूरत' (दिखने में) मुस्तअमल है हक़ीक़त में नहीं। समाप्त। (त)

मैं कहता हूँ: बल्कि वह सूरत में भी मुस्तअमल है और हक़ीक़त में भी। क्या आप 'बदाए' और कई अन्य पुस्तकों में तयम्मुम की परिभाषा नहीं देखते कि वह "दो विशिष्ट अंगों पर मिट्टी का उपयोग है"? 'तबीन' और 'जौहरा' में है: "ज़मीन के किसी हिस्से का उपयोग"। 'तनवीर' में है: "इसका एक विशेष तरीके से उपयोग"। 'ईज़ाह' में है: "वह पवित्रता जो मिट्टी के उपयोग से प्राप्त हो"। स्वयं अल्लामा शामी फ़रमा चुके हैं: "उपयोग वही विशिष्ट 'मसह' (पोंछना) है"। जैसा कि ये सभी बातें परिभाषाओं में बीत चुकी हैं। तो इसमें कोई संदेह नहीं कि दोनों अंगों में मिट्टी का उपयोग होता है जैसे अंगों में पानी का उपयोग होता है। चर्चा केवल इस बारे में है कि क्या इस उपयोग से 'तहूरियत' (पवित्र करने की क्षमता) का गुण छिन जाता है या नहीं? आपने 'दराया' और 'बिनाया' के शब्द सुन लिए हैं कि "हमारे निकट मुस्तअमल मिट्टी से तयम्मुम जायज़ है"।

1. मिन्हात अल-ख़ालिक मअ अल-बहर, बाबुत तयम्मुम, एच.एम. सईद कंपनी प्रेस, कराची, 1/146.
2. अल-बिनाया शरह अल-हिदाया, बाबुत तयम्मुम, अल-इमदादिया प्रेस, मक्का मुकर्रमा, 1/324.

पृष्ठ 728 / 756

اقول: یہ بحمد اللہ تعالی وہی ہے جس طرف ہم مائل ہوئے اور جس کی تحقیق ہم نے پہلے اس حد تک کر دی ہے جس پر اضافہ کی گنجائش نہیں اور ہم نے یہ بھی بتا دیا کہ یہ حضرات اعلام جو احتراز چاہتے ہیں وہ میسر نہیں اور مقدور بھی نہیں بلکہ اس طریقہ کے احسن ہونے کا بھی کوئی موقع نہیں اس لیے کہ وہ مٹی اگر مستعمل ہو گئی تو آگے کفایت ہی نہ کرے گی اور مستعمل نہ ہوئی تو تکلف کوئی اچھی چیز نہیں کہ یہ بے فائدہ امر میں مشغول ہے۔ علامہ شامی نے فرمایا: مگر یہ کہا جائے کہ مراد یہ ہے کہ وہ صورۃً مستعمل ہے حقیقتًا نہیں اھـ (ت)

اقول: بلکہ وہ صورۃً بھی مستعمل ہے حقیقتًا بھی۔ بدائع اور دوسری بہت سی کتابوں میں تیمم کی تعریف پر نظر کیجئے "وہ دو مخصوص عضووں میں استعمالِ صعید کا نام ہے"۔ تبیین اور جوہرہ میں ہے: زمین کے کسی جز کا استعمال۔۔۔ تنویر میں ہے: اس کا ایک مخصوص طور پر استعمال۔۔۔ ایضاح میں ہے: وہ طہارت جو صعید کے استعمال سے حاصل ہو۔۔۔ خود علامہ شامی فرما چکے ہیں: "استعمال وہی مسحِ مخصوص ہے"۔ جیسا کہ یہ ساری باتیں تعریفات میں گزر چکی ہیں۔ تو اس میں شک نہیں کہ دونوں عضووں میں مٹی استعمال ہوتی ہے جیسے پانی اعضاء میں استعمال ہوتا ہے۔۔۔۔ کلام صرف اس میں ہے کہ کیا اس استعمال سے طہوریت کی صفت سلب ہوتی ہے یا نہیں؟ ۔۔۔ درایہ اور بنایہ کے الفاظ سن چکے کہ "ہمارے نزدیک مستعمل مٹی سے تیمم جائز ہے"۔

1. منحة الخالق مع البحر باب التیمم مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/۱۴۶
2. البنایة شرح الهدایة باب التیمم مطبع الامدادیة مکة المکرمة ۱/۳۲۴

Fatawa Rizwia Volume 3

[Arabic Text Block]: They named it 'used' (mustamal) and kept it as 'purifying' (tahoor). Yes, in the context of water, 'used' is a metaphor for that which has been stripped of its purifying property, because that is its ruling. If this is intended here, then the result would be that this soil becomes 'stripped of its purifying property' in appearance, not in reality. And this hardly leads to any substantial benefit.

[Urdu Commentary Block]: They called it 'used' and also maintained its 'purifying' status. Yes, for water, 'used' is a metaphor for that whose purifying property has been taken away because that is the ruling for used water... If this were the intention, the outcome would be that this soil is only seemingly stripped of purity, not in essence. And no benefit is seen in this. (T) Allama Shami states: "But the difference is clear between this and his statement that 'until even if he struck both his hands once and wiped his face and wrists with them, it is not permissible.' Reflect (Ta'ammul)." (T)

[Arabic Text Block]: He said: But the difference is clear between this and his statement "even if he struck both his hands once etc." Reflect (Ta'ammul). I say: (1) May Allah have mercy on you and may He have mercy on us through you. This occurred to you due to the lack of distinction between actual soil and juridical soil. Through juridical soil, the purifying property is actually stripped, and that is definitely what is intended here. So there is no need for interpretation and no contradiction arises. Furthermore, it does not benefit them because as long as the soil remains on one organ, it does not become 'used' by consensus. Otherwise, multiple strikes for each organ would be mandatory, and this is absolutely not the case without disagreement; rather, there is consensus on its detestability. In short, I do not know of any reason for this caution that would provide satisfaction to the heart.

[Urdu Commentary Block]: I say: May Allah have mercy on you and may He grant us mercy through your blessings. This happened to you because of not distinguishing between 'actual soil' and 'juridical soil'. Juridical soil actually loses its purifying property, and that is certainly what is intended here, so there is no need for any interpretation nor does any contradiction arise. Besides, it's not beneficial for them because as long as the soil stays on one limb, it doesn't become 'used' according to the consensus. Otherwise, multiple strikes for each limb would be necessary, which is definitely not the case without any disagreement; rather, there is consensus on its detestability. In summary, in my knowledge, there is no such reason for this precaution that provides satisfaction to the heart. (T)

[Arabic Text Block]: If it is said: A similar point would apply to what they deemed good regarding the method of wiping the head and the ears...

[Urdu Commentary Block]: If the objection is that a similar discussion would also apply to what they found preferable concerning the wiping of the head, both ears, and...

Footnote: 1 Minhat al-Khaliq with al-Bahr al-Ra'iq, H.M. Saeed Company Press Karachi, 1/126 Page 729 of 756

फ़तवा रिज़विया खंड 3

[अरबी पाठ]: उन्होंने इसे 'इस्तेमालशुदा' (मुस्तामल) कहा और इसे 'पवित्रकारी' (तहूर) भी रखा। हाँ, पानी के मामले में 'इस्तेमालशुदा' से वह मुराद होता है जिसकी पवित्रता छीन ली गई हो, क्योंकि यही उसका हुक्म है। अगर यहाँ यही मुराद हो, तो परिणाम यह होगा कि यह मिट्टी दिखावे के लिए 'पवित्रता से रहित' हो जाती है, हकीकत में नहीं। और इसका कोई सार्थक लाभ नज़र नहीं आता।

[उर्दू भाष्य]: उन्होंने इसे 'इस्तेमालशुदा' भी कहा और इसकी 'पवित्रता' को भी कायम रखा। हाँ, पानी के लिए 'इस्तेमालशुदा' का अर्थ रूपक के तौर पर वह है जिसकी पवित्र करने की शक्ति समाप्त हो गई हो क्योंकि इस्तेमालशुदा पानी का यही नियम है... अगर यही इरादा हो तो परिणाम यह होगा कि यह मिट्टी केवल दिखावे में पवित्रता रहित है, वास्तव में नहीं। और इसमें कोई लाभ नहीं दिखता। (त) अल्लामा शामी कहते हैं: "लेकिन इसमें और उनके इस कथन में अंतर स्पष्ट है कि 'यहाँ तक कि अगर उसने अपने दोनों हाथों को एक बार मारा और उनसे अपने चेहरे और कलाइयों का मसह किया, तो यह जायज़ नहीं है।' चिंतन करें (तअम्मुल)।" (त)

[अरबी पाठ]: उन्होंने कहा: लेकिन इसमें और उनके कथन "यहाँ तक कि अगर उन्होंने अपने दोनों हाथों को एक बार मारा आदि" के बीच का अंतर स्पष्ट है। विचार करें। मैं कहता हूँ: (1) अल्लाह आप पर दया करे और आपकी बरकत से हम पर भी दया करे। यह वास्तविक मिट्टी और कानूनी मिट्टी के बीच अंतर न करने के कारण आपको हुआ। कानूनी मिट्टी से पवित्रता वास्तव में छीन ली जाती है, और यहाँ निश्चित रूप से वही मुराद है। इसलिए किसी तावील (व्याख्या) की आवश्यकता नहीं है और न ही कोई विरोधाभास उत्पन्न होता है। इसके अलावा, यह उनके लिए लाभदायक नहीं है क्योंकि जब तक मिट्टी एक अंग पर रहती है, वह आम सहमति से 'इस्तेमालशुदा' नहीं होती। अन्यथा, प्रत्येक अंग के लिए कई बार हाथ मारना अनिवार्य होता, और बिना किसी मतभेद के ऐसा कतई नहीं है; बल्कि इसकी घृणा (कराहियत) पर आम सहमति है। संक्षेप में, मुझे इस सावधानी का कोई ऐसा कारण नहीं पता जिससे हृदय को संतुष्टि मिले।

[उर्दू भाष्य]: मैं कहता हूँ: अल्लाह आप पर दया करे और आपकी बरकत से हमें भी दया प्रदान करे। यह सब वास्तविक मिट्टी और कानूनी मिट्टी के बीच अंतर न करने के कारण आपके साथ हुआ। कानूनी मिट्टी वास्तव में अपनी पवित्र करने की शक्ति खो देती है, और निश्चित रूप से यहाँ वही मुराद है, इसलिए किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है और न ही कोई विरोधाभास उत्पन्न होता है। इसके

अलावा, यह उनके लिए फायदेमंद नहीं है क्योंकि जब तक मिट्टी एक अंग पर रहती है, तब तक आम सहमति के अनुसार वह 'इस्तेमालशुदा' नहीं बनती। अन्यथा, प्रत्येक अंग के लिए कई प्रहार आवश्यक होते, जो निश्चित रूप से बिना किसी असहमति के ऐसा नहीं है; बल्कि इसकी घृणा पर आम सहमति है। संक्षेप में, मेरे ज्ञान में, इस सावधानी का ऐसा कोई कारण नहीं है जिससे हृदय को संतोष प्राप्त हो। (त)

[अरबी पाठ]: यदि यह कहा जाए: तो उनके द्वारा सिर और कानों के मसह के विषय में जो बेहतर माना गया है, उस पर भी वैसी ही बात लागू होगी...

[उर्दू भाष्य]: यदि आपत्ति यह हो कि सिर और दोनों कानों के मसह के बारे में उन्होंने जो उचित माना है, उस पर भी इसी प्रकार की चर्चा लागू होगी और...

पाद-टिप्पणी: 1 मिन्हात अल-ख़ालिक अल-बह्र अर-रैक के साथ, एच.एम. सईद कंपनी प्रेस कराची, 1/126 पृष्ठ 729 का 756

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

[عربی عبارت]: سمیاہ مستعملا وابقیناہ طھورا نعم یراد في الماء بالمستعمل المسلوب الطھوریة کنایة لانه حکمه فان ارید ھٰھنا ھٰذا کان الحاصل ان ھٰذا التراب یصیر مسلوب الطھوریة صورة لا حقیقة وھذا الا یکاد یرجع الی طائل۔

[اردو ترجمہ و تشریح]: انہوں نے مستعمل بھی کہا اور اسے طہور بھی باقی رکھا۔ ہاں پانی میں مستعمل سے کنایۃً وہ مراد ہوتا ہے جس کی طہوریت سلب ہوچکی ہو اس لیے کہ مستعمل پانی کا یہی حکم ہے--- اگر یہ مراد ہو تو حاصل یہ ہوگا کہ یہ مٹی صورۃً مسلوب الطہوریت ہوتی ہے حقیقۃً نہیں۔ اور اس کا کوئی فائدہ نظر نہیں آتا۔ (ت) علامہ شامی فرماتے ہیں: "لیکن فرق ظاہر ہے اس میں اور ان کے اس قول میں کہ "یہاں تک کہ اگر اپنے دونوں ہاتھوں کو ایک بار مارا اور ان سے چہرے اور کلائیوں کا مسح کرلیا تو جائز نہیں۔" تأمل کرواہ (ت)

[عربی عبارت]: قال ولکن الفرق ظاھر بین ھذا وبین قوله حتی لو ضرب یدیه مرة الخ تأمل اھ۔ اقول: (۱) رحمکم اللہ ورحمنا بکم انما عرض لکم ھذا لعدم الفرق بین الترابین الحقیقی والحکمی الحکمی یصیر مسلوب الطھوریة حقیقة وھو المراد ھھنا قطعاً فلا تاویل ولا خلف غیر انہ لا یجدیھم لانہ مادام فی عضو واحد لا یصیر مستعملا بالاجماع والواجب لکل عضو ضربات وھو منتف بلانزاع بل (۲) علی کراھته اجماع وبالجملة لم اعلم لھذا الاحتیاط وجھاً یحصل به للقلب نشاط*

[اردو ترجمہ و تشریح]: اقول: اللہ آپ پر رحمت فرمائے اور آپ کی برکت سے ہم پر بھی رحمت فرمائے۔ یہ سب تراب حقیقی و تراب حکمی کے درمیان فرق نہ کرنے کی وجہ سے آپ کو درپیش ہوا۔ تراب حکمی سے طہوریت حقیقۃً سلب ہو جاتی ہے اور وہی یہاں قطعاً مراد ہے تو نہ کسی

تاویل کی ضرورت ہے نہ کوئی خلف لازم آرہا ہے۔ علاوہ اس کے کہ ان کے لیے سُو دمند نہیں کیونکہ مٹی جب تک ایک عضو میں رہے بالاجماع مستعمل نہیں ہوتی ورنہ ہر عضو کے لیے متعدد ضربیں واجب ہوں اور بلا اختلاف ایسا ہرگز نہیں بلکہ اس کی کراہت پر اجماع ہے۔ بالجملہ میرے علم میں اس احتیاط کی کوئی ایسی وجہ نہیں جس سے قلب کو نشاط حاصل ہو۔ (ت)

[عربی عبارت]: فانقلت یلزمھم مثل ذلك في ما استحسنوا في صفة مسح الرأس والاذنین

[اردو ترجمہ و تشریح]: اگر یہ اعتراض ہو کہ اسی طرح کا کلام اس پر بھی لازم آئے گا جو سر، دونوں کان، اور

حاشیہ: 1 منحۃ الخالق مع البحر الرائق، مطبع ایچ ایم سعید کمپنی کراچی، ۱/ ۱۲۶ Page 729 of 756

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

Regarding the method of wiping (mash) over the neck, scholars have deemed it excellent, as mentioned in Al-Khulasah, Al-'Inayah, Al-Munyah, and in Al-Hilyah from Al-Zahidi from Al-Bahr al-Muhit, and in Al-Nahr and other famous books. It is stated in Al-Hilyah that several later scholars have consensus on this method without any criticism. The words of Al-Khulasah are: "Performing complete wiping (isti'ab) of the head is Sunnah, and its method is to wet the palms and fingers of both hands, place the pads of three fingers from each palm on the front of the head, keeping the index fingers and thumbs separate, and also keeping the palms detached from the head. Then, pull the fingers towards the back of the head. Afterward, wipe the sides of the head with the palms, wipe the outer part of the ears with the pads of the thumbs, and the inner part of the ears with the pads of the index fingers, so that the wiping is done with moisture that has not become 'used' (musta'mal)." To this, Al-'Inayah, Al-Munyah, and Al-Nahr added: "And wipe the neck with the back of the hands." Besides Al-Khulasah and Al-Munyah, others also wrote: "Similarly, Hazrat Aisha (may Allah be pleased with her) narrated the wiping (mash) of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)." It is said in Al-Hilyah: "Allah Almighty knows best. Yes, the mentioned method includes wiping the outer part of the ears with the pads of the thumbs..."

Arabic Text Translation: And the neck, as mentioned in Al-Khulasah, Al-'Inayah, and Al-Munyah, and in Al-Hilyah from Al-Zahidi from Al-Bahr al-Muhit, and in Al-Nahr and other prominent works. It was stated in Al-Hilyah that more than one of the later scholars followed it without objection. This is the wording of Al-Khulasah: Covering the entire head (isti'ab) is Sunnah, and the method is to wet the palms and fingers of both hands, placing the pads of three fingers from each hand on the front of the head, setting aside the index fingers and thumbs, and keeping the palms away. Then, pull them to the back of the head, then wipe the sides with the palms, wipe the exterior of the ears with the inner part of the thumbs, and the interior of the ears with the inner part of the index fingers, so that the wiping is done with moisture that hasn't become used. The followers and Al-Nahr added: And he wipes his neck with the backs of his hands. Others besides Al-Khulasah and Al-Munyah added: Thus did Aisha (may Allah be pleased with her) narrate the wiping of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). It was said in Al-Hilyah: Allah Almighty knows best. Yes, what the described method includes, of wiping the outer part of his

ears with the inner part of his thumbs and the inner part of his ears with the inner part of his index fingers, is the Sunnah in wiping them as previously mentioned.

Footnotes: 1. Al-Hilyah 2. Khulasat al-Fatawa, Chapter Four on Mash, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/26 3. Al-'Inayah with Fath al-Qadir, Sunan al-Wudu, Nuriyah Razawiyya Press, Sukkur, 1/29

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 3

गर्दन पर मसह करने के तरीक़े के बारे में उलेमा ने इसे उत्तम (उम्दा) माना है जैसा कि इसका ज़िक्र खुलास; इनायः, मुन्यः और हिल्यः में ज़ाहिदी के हवाले से बहरे मुहीत और नह्र वग़ैरह किताबों में किया गया है। और हिल्यः में लिखा है कि इस तरीक़े पर बाद के उलेमा (मुतअख़्ख़िरीन) में से कई हज़रात का बिना किसी आलोचना के इत्तिफ़ाक़ (तवारुद) हुआ है। खुलासः के शब्द ये हैं: "पूरे सर का मसह (इस्तिआब) सुन्नत है और इसका तरीक़ा यह है कि अपनी हथेलियों और दोनों हाथों की उँगलियों को तर करे और हर हथेली की तीन उँगलियों का अंदरूनी हिस्सा (पेट), सर के अगले हिस्से पर रखे और शहादत की उँगलियों और अँगूठों को अलग रखे और हथेलियों को भी सर से दूर रखे और उँगलियों को सर के पिछले हिस्से तक खींच ले जाए। फिर दोनों तरफ़ का हथेलियों से मसह करे और कानों के बाहरी हिस्से का अँगूठों के अंदरूनी हिस्से से और कानों के अंदरूनी हिस्से का शहादत की उँगलियों के अंदरूनी हिस्से से मसह करे ताकि मसह उस नमी से हो जो अभी इस्तेमाल (मुस्तअमल) न हुई हो।"... इस पर इनायः, मुन्यः और नह्र ने यह इज़ाफ़ा किया: "और गर्दन का हाथों के ऊपरी हिस्से से मसह करे।" खुलासः और मुन्यः के अलावा अन्य किताबों में यह भी लिखा है: "इसी तरह हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का मसह बयान किया है।" हिल्यः में फ़रमाया: अल्लाह तआला इसे बेहतर जानने वाला है। हाँ, उपर्युक्त तरीक़ा जिस बात पर मुश्तमिल है यानी यह कि अपने कानों के ऊपरी हिस्से का अँगूठों...

अरबी पाठ का अनुवाद: और गर्दन, जैसा कि खुलास; इनायः और मुन्यः में इसका ज़िक्र है, और हिल्यः में ज़ाहिदी से बहरे मुहीत के हवाले से, और नह्र और अन्य प्रसिद्ध पुस्तकों में। हिल्यः में कहा गया है कि बाद के कई उलेमा ने बिना किसी आपत्ति के इसका पालन किया है। खुलासः के शब्द ये हैं: पूरे सर का मसह (इस्तिआब) सुन्नत है, और तरीक़ा यह है कि दोनों हाथों की हथेलियों और उँगलियों को गीला करे और प्रत्येक हथेली की तीन उँगलियों के पेट को सर के अगले हिस्से पर रखे, तर्जनी और अँगूठों को अलग रखे, और हथेलियों को दूर रखे। फिर उन्हें सर के पिछले हिस्से तक खींचे, फिर हथेलियों से दोनों बगलों का मसह करे, अँगूठों के अंदरूनी हिस्से से कानों के बाहरी हिस्से का मसह करे, और तर्जनी के अंदरूनी हिस्से से कानों के अंदरूनी हिस्से का मसह करे, ताकि मसह उस नमी से हो जो मुस्तअमल न हुई हो। इसके बाद आने वालों और नह्र ने जोड़ा: और वह अपने हाथों के पिछले हिस्से से अपनी गर्दन का मसह करे। खुलासः और मुन्यः के अलावा दूसरों ने जोड़ा: इसी तरह आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के

मसह को बयान किया। हिल्यः में कहा गया है: अल्लाह तआला बेहतर जानता है। हाँ, वर्णित तरीक़े में जो शामिल है, कि वह अपने कानों के बाहरी हिस्से को अपने अँगूठों के अंदरूनी हिस्से से और अपने कानों के अंदरूनी हिस्से को अपनी तर्जनी के अंदरूनी हिस्से से मसह करे, वही उनके मसह की सुन्नत है जैसा कि पहले बताया गया है।

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes): 1. हिल्यः 2. खुलासतुल फ़तावा, चौथा अध्याय मसह पर, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/26 3. अल-इनायः मअ फ़त्हुल क़दीर, सुननुल वुज़ू, नूरिया रिज़विया प्रेस, सुक्कुर, 1/29

فتاوی رضویہ جلد سوم

گردن پر مسح کے طریقہ میں علماء نے عمدہ قرار دیا ہے جیسا کہ اسے خلاصہ، عنایہ، منیہ میں اور حلیہ میں زاہدی سے وہ بحر محیط سے اور نہر وغیرہ کتابوں میں ذکر کیا ہے۔ اور حلیہ میں لکھا ہے اس طریقہ پر متاخرین میں سے متعدد حضرات کا بغیر کسی تنقید کے توارد ہوا ہے اھ خلاصہ کے الفاظ یہ ہیں: "سر کا استیعاب سنت ہے اور اس کا طریقہ یہ ہے کہ اپنی ہتھیلیاں اور دونوں ہاتھوں کی انگلیاں تر کرے اور ہر ہتھیلی کی تین انگلیوں کا پیٹ، سر کے اگلے حصہ پر رکھے اور شہادت کی انگلیوں اور انگوٹھوں کو الگ کیے رہے اور ہتھیلیوں کو بھی جدا رکھے اور انگلیوں کو سر کے پچھلے حصہ تک کھینچ لائے پھر دونوں کروٹوں کا ہتھیلیوں سے مسح کرے اور کانوں کے اوپری حصہ کا انگوٹھوں کے پیٹ سے اور کانوں کے اندرونی حصہ کا شہادت کی انگلیوں کے پیٹ سے مسح کرے تاکہ اس کا مسح ایسی تری سے ہو جو مستعمل نہ ہوئی"----- اس پر عنایہ، منیہ اور نہر نے یہ اضافہ کیا: "اور گردن کا ہاتھوں کے اوپری حصہ سے مسح کرے"۔ خلاصہ و منیہ کے علاوہ نے یہ بھی لکھا: "اسی طرح حضرت عائشہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا نے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا مسح بیان کیا" اھ------ حلیہ میں فرمایا: اللہ تعالیٰ اسے خوب جاننے والا ہے۔ ہاں مذکورہ طریقہ جس امر پر مشتمل ہے یعنی یہ کہ اپنے کانوں کے اوپری حصہ کا انگوٹھوں

والرقبة كما ذكره فى الخلاصة والعناية والمنية وفى الحلية عن الزاهدى عن البحر المحيط وفى النهر وغيرها من الاسفار الغروقال فى الحلية تواردها غير واحد من المتاخرين من غير تعقب ١اهـ وهذا لفظ الخلاصة استيعاب (١) الرأس سنة وكيفيته ان يبل كفيه واصابع يديه ويضع بطون ثلثة اصابع من كل كف على مقدم الرأس ويعزل السبابتين والابهامين ويجافى الكفين ويجرهما الى مؤخر الرأس ثم يمسح

الفودين بالكفين ويمسح ظاهر الاذنين بباطن الابهامين وباطن الاذنين بباطن السبابتين حتى يصير ماسحا ببلل لم يصر مستعملا ۱۲اهـ زاد التاليان والنهر ويمسح رقبته بظاهر اليدين وزاد غير الخلاصة والمنية هكذا روت عائشة رضى الله تعالى عنها مسح رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم ۱۳اهـ قال فى الحلية الله تعالى اعلم به نعم ما اشتملت عليه الكيفية المذكورة من انه يمسح ظاهر اذنيه بباطن ابهاميه وباطن اذنيه بباطن مسبحتيه هو السنة فى مسحهما كما تقدم

حاشيہ ۱: حليہ حاشيہ ۲: خلاصۃ الفتاوى الفصل الرابع فى المسح مطبع نولكشور لكهنو ۱ / ۲۶

حاشيہ ۳: العناية مع فتح القدير سنن الوضو مطبع نوريہ رضويہ سكهر ۱ / ۲۹

صفحہ 730 / 756

Fatawa Razawiya Volume 3

In the Hadith of Amr bin Shu'aib, also narrated by Ibn Majah with a sound chain from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) with the same meaning. I say: As if there is moisture that dissipates with movement, they intended to preserve it so as not to need new water. He (a) said in Al-Fath: As for what is narrated that he (peace and blessings of Allah be upon him) took new water for his ears, it must be interpreted as being due to the moisture running out before completing the wiping. When moisture runs out, it is necessary to take new water, just as if it runs out on part of a single limb. As for here, it is only a legal attribute granted by the striking of the hand for the purification of a single limb; so it does not fade as long as the hand is on one of the three limbs, i.e., the face and the two forearms. Then I saw Allama Sa'di Effendi saying regarding the statement in Al-Inaya, "until he becomes a wiper with moisture that has not become used," its text being: I say in reality, even if it has not become legally used in a single limb, it does not contradict what will follow after a few lines.

...from the palm, and the inner part of the ears with the pads of the index fingers; this is what is Sunnah in wiping both of them, as passed in the Hadith of Amr bin Shu'aib, and Ibn Majah also narrated it with a sound chain from Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both), from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) with the same meaning. (T) I say: (I say. T) Not at all. There is some moisture there which ends upon spreading, so the purpose there is to keep that moisture preserved so that there is no need for new water. In Fath al-Qadir, it states: "That which is narrated that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) took new water for the ears, it is necessary to interpret it as having happened because the moisture ran out before complete coverage. When moisture runs out, it is necessary to take new water, just as the ruling is if moisture runs out on any part of the same limb." But here, there is only a legal attribute which the strike (of water) gave to the hand for the purification of a limb; so as long as the hand remains on any of the three limbs—face and forearms—this attribute will also remain. Then I saw this writing of Allama Sa'di Effendi on the text of Inayah (so much so that its wiping is with such moisture that has not become used): I say that which has not become used, meaning it has not actually come into use.

1 Hilya 2 Fath al-Qadir, Sunan al-Wudu, Matba' Nuriya Razawiya, Sukkur 1/25 3 Hashiya Chalpi with Fath al-Qadir, Matba' Nuriya Razawiya, Sukkur 1/29

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम

अम्र बिन शुऐब की हदीस में, और इसे इब्न माजह ने भी इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से इसी के अर्थ में एक सही सनद के साथ रिवायत किया है। मैं कहता हूँ: जैसे कि वहाँ नमी होती है जो अलगाव के साथ समाप्त हो जाती है, उन्होंने इसके संरक्षण का इरादा किया ताकि नए पानी की आवश्यकता न हो। उन्होंने (अ) अल-फ़तह में कहा: जहाँ तक इसका प्रश्न है कि उन्होंने (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अपने कानों के लिए नया पानी लिया, तो इसे इस बात पर महमूल करना चाहिए कि यह पूर्ण पोंछने से पहले नमी समाप्त होने के कारण था। जब नमी समाप्त हो जाती है, तो नया पानी लेना अनिवार्य होता है जैसे कि यदि यह एक ही अंग के किसी हिस्से में समाप्त हो जाए। जहाँ तक यहाँ की बात है, यह केवल एक कानूनी गुण है जो हाथ के प्रहार द्वारा एक अंग की शुद्धि के लिए दिया गया है; इसलिए यह तब तक नहीं हटता जब तक हाथ तीन अंगों में से किसी एक पर रहता है, यानी चेहरा और दोनों हाथ। फिर मैंने अल्लामा सादी अफ़ंदी को अल-इनाया के इस कथन पर कहते हुए देखा, "यहाँ तक कि वह ऐसी नमी के साथ पोंछने वाला हो जाए जो उपयोग नहीं की गई है," जिसका पाठ है: मैं वास्तव में कहता हूँ, भले ही वह कानूनी रूप से एक अंग में उपयोग न हुई हो, यह कुछ पंक्तियों के बाद आने वाली बात के विपरीत नहीं है।

...हथेली से और कानों के भीतरी हिस्से को तर्जनी उंगलियों के पोरों से मसह करे; यही इन दोनों के मसह में मसनून है जैसा कि अम्र बिन शुऐब की हदीस में गुज़रा और इब्न माजह ने भी सही सनद के साथ हज़रत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से इसी अर्थ में रिवायत किया। (त) मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ। त) हरगिज़ नहीं। वहाँ कुछ नमी है जो फैलाने से ख़त्म हो जाती है तो वहाँ मक़सद यह है कि वह नमी सुरक्षित रहे ताकि नए पानी की ज़रूरत न हो। फ़तह अल-क़दीर में है: "यह जो रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कानों के लिए नया पानी लिया, तो उसे इस पर महमूल करना ज़रूरी है कि यह पूर्ण विस्तार से पहले नमी ख़त्म हो जाने के कारण हुआ। जब नमी ख़त्म हो जाए, तो नया पानी लेना ज़रूरी है जैसे कि एक ही अंग के किसी हिस्से में नमी ख़त्म हो जाए तो यही हुक्म है।" लेकिन यहाँ तो सिर्फ़ एक कानूनी गुण है जो प्रहार ने हाथ को एक अंग की पाकी के लिए दिया; तो जब तक हाथ तीनों अंगों—चेहरा और कलाइयां—में से किसी एक पर रहेगा, यह गुण भी रहेगा। फिर अल्लामा सादी अफ़ंदी की यह तहरीर मैंने इनाया की इबारत (यहाँ तक कि उसका मसह ऐसी नमी से हो जो

इस्तेमाल न हुई हो) पर देखी: मैं कहता हूँ जो इस्तेमाल नहीं हुई, यानी वास्तव में उपयोग में नहीं आई।

1 हिल्या 2 फ़तह अल-क़दीर, सुनन अल-वुज़ू, मत्तबा नूरियह रज़वियह, सुक्कुर 1/25 3 हाशिया चल्पी मअ फ़तह अल-क़दीर, मत्तबा नूरियह रज़वियह, सुक्कुर 1/29

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

فی حدیث عمرو بن شعیب واخرجہ ابن ماجۃ ایضاً بسند صحیح عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم بمعناہ اھـ اقول: کلافان ثمہ بلۃ تنفد بالمفارادوا استحقاظھا کیلا یحتاج الی ماء جدید قال (ا) فی الفتح اما ماروی انہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اخذ لاذنیہ ماء جدیدا فیجب حملہ علی انہ لفناء البلۃ قبل الاستیعاب واذا انعدمت البلۃ لم یکن بد من الاخذ کمالو انعدمت فی بعض عضو واحد اھـ اما ھھنا فلیس الاوصف حکمی اکسلبتہ الضربۃ الید لتطھیر عضو واحد فلایزول مادامت الید علی احدالاعضاء الثلثۃ اعنی الوجہ والذراعین ثم رأیت العلامۃ سعدی افندی قال علی قول العنایۃ حتی یصیر ماسحاً ببلل لم یصر مستعملا ما نصہ اقول حقیقۃ وان لم یصر مستعملا حکماً فی عضو واحد فلا یخالف ماسیأتی بعد اسطر اھـ

کے پیٹ سے اور کانوں کے اندرونی حصہ کا شہادت کی انگلیوں کے پیٹ سے مسح کرے یہی ان دونوں کے مسح میں مسنون ہے جیسا کہ عمرو بن شعیب کی حدیث میں گزرا اور ابن ماجہ نے بھی بسند صحیح اسے حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہما سے ، نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے اسی کے معنی میں روایت کیا اھـ (ت) اقول: (میں کہتا ہوں۔ت) ہر گز نہیں ۔ وہاں کچھ تری ہے جو پھیلانے سے ختم ہو جاتی ہے تو وہاں مقصد یہ ہے کہ وہ تری محفوظ رہے تاکہ نئے پانی کی ضرورت نہ ہو۔ فتح القدیر میں ہے: " یہ جو مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے کانوں کے لئے نیا پانی لیا تو اسے اس پر محمول کرنا ضروری ہے کہ استیعاب سے پہلے تری ختم ہو جانے کی وجہ سے ایسا ہوا۔ جب تری ختم ہو جائے تو نیا پانی لینا ضروری ہے جیسے ایک ہی عضو کے کسی حصے میں تری ختم ہو جائے تو یہی حکم ہے " اھ لیکن یہاں تو صرف ایک حکمی وصف ہے جو ایک عضو کی تطہیر کے لئے ضرب نے ہاتھ کو عطا کیا تو جب تک ہاتھ

تینوں اعضا --- چہرے اور کلائیوں میں سے کسی ایک پر رہے گا یہ وصف بھی رہے گا۔ پھر عنایہ کی عبارت (یہاں تک کہ اس کا مسح ایسی تری سے ہو جو مستعمل نہ ہوئی) پر علامہ سعدی افندی کی یہ تحریر میں نے دیکھی: میں کہتا ہوں جو مستعمل نہ ہوئی یعنی حقیقۃً استعمال نہ آئی۔

1 حلیہ 2 فتح القدیر سنن الوضوء مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۱/ ۲۵ 3 حاشیہ چلپی مع فتح القدیر مطبع نوریہ رضویہ سکھر ۲۹/۱

Fatawa Razawiyya - Volume 3

[Arabic Box - Top Left]: (Marginal note) i.e., what signifies that water does not become 'used' (must'amal) within a single limb. I say: This is exactly what I understood, praise be to Allah. This ends a long-standing dispute which Imam Allama Al-Zayla'i refuted. The absolute researcher (Al-Muhaqqiq al-ala al-itlaq) agreed with him, and Ibn Amir al-Hajj followed them, stating that there is no benefit [in delaying] because placing and rubbing are necessary. If the water becomes used upon the first placement, it will be the same for the second, so delaying it is of no use. 1 AH. Rather, the scholar of deep insight (Faqih al-Nafs) said: Covering the entire head (isti'ab) during wiping (masah) is a Sunnah. The method for this is to place fingers...

[Urdu Box - Top Right]: Even if it is not legally considered 'used' within one limb, this is not contrary to what follows in a few lines "AH". That is, that which signifies that water does not become used within a single limb. (T) I say: I understood exactly the same. Praise be to Allah. This brought an end to a long dispute which Imam Allama Zayla'i refuted, and the absolute researcher (Al-Muhaqqiq ala al-itlaq) agreed with him. Ibn Amir al-Hajj followed both these scholars, stating that there is no benefit in this method because both placing and spreading are necessary. So, if it becomes used just by placing it the first time, it will be the same the second time; hence delaying it is useless AH. Rather, Imam Faqih al-Nafs said: "Covering the entire head (isti'ab) in masah is Sunnah and its method is that he places both his..."

[Arabic Box - Bottom Left]: (Marginal note) And it is the saying of al-'Inaya: Hasan reported in 'al-Mujarrad' from Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) that if one wipes three times with one water, it is sunnah. If it is said that the moisture becomes used after the first time, then how is it sunnah to pass it a second and third time? The answer is that it takes the ruling of usage for the performance of another obligatory (fard) act, not for the performance of a sunnah, because it follows the fard. Do you not see that covering the whole head (isti'ab) is sunnah with one water? 2 AH. 12 from him, may he be forgiven (M).

[Urdu Box - Bottom Right]: The text of 'Inaya is: Hasan reported in 'al-Mujarrad' from Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) that when one wipes three times with the same water, it will be sunnah. If there is an objection that the moisture became used in the first time, then how would passing it a second or third time be sunnah? The answer given is that it holds the ruling of being used for performing

another fard, not for performing a sunnah. See that covering the entire head (isti'ab) is sunnah with just one water. AH 12 from him, may he be forgiven (T).

[Footnotes]: 1 Ghunyat al-Mustamli, Book of Purification, Sohail Academy Lahore, p. 24. 2 Al-'Inaya with Fath al-Qadir, Sunan al-Wudu, printed by Nooriya Razviya Sukkur 1/30.

फतावा रज़विया - खंड 3

[अरबी बॉक्स - ऊपर बाएँ: (हाशिये का नोट) यानी, जो यह दर्शाता है कि एक ही अंग के भीतर पानी 'इस्तेमालशुदा' (मुस्तअमल) नहीं होता है। मैं कहता हूँ: यह वही है जो मैंने समझा, अल्हम्दुलिल्लाह। इससे एक लंबा विवाद समाप्त हो गया जिसे इमाम अल्लामा ज़ैलई ने खारिज कर दिया था। अल-मुहक्किक अल-अलल-इतलाक (पूर्ण शोधकर्ता) उनके साथ सहमत हुए, और इब्न अमीर अल-हज ने उनका अनुसरण करते हुए कहा कि [देरी करने में] कोई लाभ नहीं है क्योंकि रखना और रगड़ना आवश्यक है। यदि पानी पहली बार रखने से ही इस्तेमालशुदा हो जाता है, तो दूसरी बार के लिए भी वैसा ही होगा, इसलिए इसमें देरी करना व्यर्थ है। १ हिजरी। बल्कि, फकीह अल-नफ़्स (गहरी अंतर्दृष्टि वाले विद्वान) ने कहा: मसह (सिर पोंछना) में पूरे सिर को कवर करना (इस्तियाब) सुन्नत है। इसका तरीका यह है कि उंगलियां रखी जाएं..

[उर्दू बॉक्स - ऊपर दाएँ: भले ही एक अंग में इसे कानूनी रूप से 'इस्तेमालशुदा' न माना जाए, यह उन कुछ पंक्तियों के विपरीत नहीं है जो बाद में "अह" के रूप में आ रही हैं। अर्थात, वह जिससे एक अंग में पानी के इस्तेमालशुदा न होने का संकेत मिलता है। (त) मैं कहता हूँ: ठीक यही मैंने भी समझा। अल्हम्दुलिल्लाह। इसने एक लंबे विवाद का अंत कर दिया जिसे इमाम अल्लामा ज़ैलई ने खारिज किया था, और मुहक्किक अलल इतलाक़ ने उनका समर्थन किया। इब्न अमीर अल-हज ने इन दोनों विद्वानों का अनुसरण करते हुए कहा कि इस पद्धति में कोई लाभ नहीं है क्योंकि रखना और फैलाना दोनों आवश्यक हैं। इसलिए, यदि यह पहली बार रखने से ही इस्तेमालशुदा हो जाता है, तो दूसरी बार भी वैसा ही होगा; अतः इसमें देरी करना बेकार है। बल्कि, इमाम फकीह अल-नफ़्स ने कहा: "मसह में इस्तियाब (पूरे सिर का मसह) सुन्नत है और उसका तरीका यह है कि वह अपने दोनों..."

[अरबी बॉक्स - नीचे बाएँ: (हाशिये का नोट) और यह अल-'इनाया का कहना है: हसन ने 'अल-मुजर्रद' में अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से रिवायत की है कि यदि कोई एक ही पानी से तीन बार मसह करता है, तो वह सुन्नत है। यदि यह कहा जाए कि पहली बार के बाद नमी इस्तेमालशुदा हो गई, तो दूसरी और तीसरी बार इसे फेरना सुन्नत कैसे है? उत्तर यह है कि यह किसी अन्य फ़र्ज़ (अनिवार्य) कार्य को पूरा करने के लिए इस्तेमालशुदा का हुक्म लेता है, सुन्नत को पूरा करने के लिए नहीं, क्योंकि यह फ़र्ज़ के अधीन है। क्या आप नहीं देखते कि एक ही पानी से इस्तियाब सुन्नत है? २ हिजरी। १२ उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (म)।

[उर्दू बॉक्स - नीचे दाएँ]: 'इनाया' की इबारत यह है: हसन ने 'मुजर्रद' में इमाम अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की है, कि जब एक ही पानी से तीन बार मसह करे तो वह मसनून (सुन्नत) ही होगा। अगर एतराज (आपत्ति) हो कि तरी (नमी) तो पहली बार में ही मुस्तअमल (इस्तेमालशुदा) हो गई, फिर दूसरी तीसरी बार उसे गुज़ारना (फेरना) कैसे मसनून होगा? तो इसका जवाब यह दिया गया है कि कोई दूसरा फ़र्ज़ अदा करने के लिए वह मुस्तअमल का हुक्म रखती है, सुन्नत की अदायगी के लिए नहीं। देखिये कि इस्तियाब एक ही पानी से मसनून है। १२ उनकी ओर से, अल्लाह उन्हें क्षमा करे (त)।

[पाद लेख]: 1 ग़ुनियातुल मुस्तमली, किताबुत तहारत, सुहैल एकेडमी लाहौर, पृष्ठ 24. 2 अल-इनाया मअ फतहुल कदीर, सुननुल वुज़ू, नूरिया रज़विया सुक्कुर द्वारा मुद्रित, 1/30.

فتاوی رضویہ - جلد سوم

[عربی باکس - اوپر بائیں]: ای عہ مما یفید عدم استعمال الماء في عضو واحد - اقول: هذا عین ما فهمته ولله الحمد وقد انقطع به نزاع طال فرده الامام العلامة الزیلعي ووافقه المحقق علی الاطلاق وتبعهما ابن امیر الحاج بانه لا یفید لانه لا بد من الواضع والمدفان کان مستعملا بالوضع الاول فکذا بالثاني فلا یفید تأخیره ۱ھ بل قال الامام فقیه النفس الاستیعاب في مسح الرأس سنة وصورة (۱) ذلك ان یضع اصابع

[اردو باکس - اوپر دائیں]: اگرچہ ایک عضو میں حکماً مستعمل نہ ہو تو یہ اس کے برخلاف نہیں جو چند سطر بعد آ رہا ہے "اھ"۔ یعنی وہ جس سے ایک عضو میں پانی کے مستعمل نہ ہونے کا افادہ ہوتا ہے۔ (ت) اقول: بعینہ یہی میں نے بھی سمجھا۔ وللہ الحمد ۔ اس سے ایک طویل نزاع کا خاتمہ ہو گیا جسے امام علامہ زیلعی نے رد کیا اور محقق علی الاطلاق نے ان کی موافقت کی اور ابن امیر الحاج نے ان دونوں حضرات کی پیروی فرمائی کہ اس طریقہ سے کوئی فائدہ نہیں اس لیے کہ رکھنا اور پھیلانا ضروری ہے تو اگر پہلی بار رکھنے سے ہی تری مستعمل ہو گئی تو دوسری بار سے بھی ایسا ہی ہو گا پھر اسے مؤخر کرنا بے فائدہ ہے اھ بلکہ امام فقیہ النفس نے فرمایا: "سر کے مسح میں استیعاب سنت ہے اور اس کا طریقہ یہ ہے کہ اپنے دونوں

[عربی باکس - نیچے بائیں]: عه وهو قول العنایة روی الحسن في المجرد عن ابي حنیفة رضی الله تعالی عنه انه اذا مسح ثلثاً بماء واحد کان مسنونا فان قیل قد صار البلل مستعملا بالمرة الاولی فکیف یسن امراره ثانیا وثالثا اجیب بانه یأخذ حکم الاستعمال لاقامة فرض اخر لا لاقامة السنة لانها تبع للفرض الاتری ان الاستیعاب یسن بماء واحد ۲ اھ ۱۲ منه غفر له (م)

[اردو باکس - نیچے دائیں]: عنایہ کی عبارت یہ ہے: حسن نے مجرد میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی ہے، کہ جب ایک ہی پانی سے تین بار مسح کرے تو مسنون ہی ہوگا اگر اعتراض ہو کہ تری تو پہلی بار میں مستعمل ہوگئی پھر دوسری تیسری بار اسے گزارنا کیسے مسنون ہوگا۔ تو اس کا جواب یہ دیا گیا ہے کہ کوئی دوسرا فرض ادا کرنے کے لیے وہ مستعمل کا حکم رکھتی ہے سنت کی ادائیگی کے لیے نہیں۔ دیکھئے کہ استیعاب ایک ہی پانی سے مسنون ہے اھ ۱۲ منہ غفرلہ (ت)

[حواشی]: 1 غنیۃ المستملی کتاب الطہارت سہیل اکیڈمی لاہور ص ۲۴ 2 العنایۃ مع فتح القدیر سنن الوضوء مطبوعہ نوریہ رضویہ سکھر ۱ / ۳۰

Fatawa Razawiyya, Volume 3

Arabic	Urdu
...placing his hands on the front of his head and his palms on the sides (temples), and pulling them both to the back of his neck; this is permissible. Some have pointed to another method to avoid using 'used water' (musta'mal), but that is not possible without hardship and difficulty. Therefore, the first method is permissible, and the water does not become 'used' due to the necessity of establishing the Sunnah. End. All this is based on taking 'usage' in a legal (hukmi) sense, whereas the real (haqiqi) meaning is intended. That is, for the person performing the wipe to have a fresh wetness that has not been exhausted by wiping nor diminished by usage. And the knowledge of the truth is with the Lord of Majesty.	...placing fingers of the hands on the front part of the head, and both palms on the sides, and pulling them both to the back of the neck, then it is permissible. And some personages have pointed towards another method so that there is protection from the use of 'used' water, but that is not possible without trouble and hardship, so the first method is also permissible, and the water will not become 'used' because of the need to fulfill the Sunnah. "End". This is because the basis of all this is that 'usage' has been taken in a legal sense, whereas the actual meaning is intended. That is, its wiping should be with such fresh moisture that was neither finished by wiping nor became less due to usage. And the knowledge of truth is with the Lord of Majesty. (T)

The second issue: Whether two strikes on the same spot, or performing Tayammum several times from one spot by one person or successively by a group, is all permissible. In its reasoning, it was stated that this soil is like the water remaining in a vessel after a person's Wudu, which is permissible for Wudu again, whether by himself or another; the part that came into the hand is what was used. This explanation was mentioned by Allama Burjandi and the eminent Abdul Halim Rumi as a concession, stating that soil does not become 'used'. Even if it were assumed so, it would be that which fell off after being applied to the limbs, not the soil on which the strike was made. In Sharh al-Niqayah it says:

Arabic	Urdu
(Upon every pure [surface]) is related to 'two strikes'. It should not be said that then the speech would indicate that both	(Upon every pure [surface]) this relates to "two strikes". This objection should not be raised that the speech would then indicate

Arabic	Urdu
strikes occur on the same place, even though soil becomes 'used' with the first strike. For we say, even if that were conceded, the 'used' soil is that which scatters from the face and hands, not that which was placed.	that both strikes are on the same spot, despite the fact that soil becomes 'used' with the first strike. This is because, in response, we will say that even if this is accepted, 'used' soil will be that which falls from the face and hands.

1. Fatawa Qazikhan, Chapter of Wudu and Ghusl, published by Nawal Kishore, Lucknow, 1/17. Page 733 of 756

फतावा रज़विया, खंड 3

अरबी

...हाथों को सिर के अगले भाग पर और हथेलियों को कनपटी पर रखना और दोनों को गर्दन के पीछे तक खींचना; यह जायज़ है। कुछ लोगों ने 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) पानी के उपयोग से बचने के लिए एक अन्य तरीके की ओर इशारा किया है, लेकिन वह बिना किसी कठिनाई और परेशानी के संभव नहीं है। इसलिए पहला तरीका जायज़ है, और सुन्नत को स्थापित करने की आवश्यकता के कारण पानी 'मुस्तअमल' नहीं होता है। समाप्त। यह सब 'उपयोग' को कानूनी (हुक्मी) अर्थ में लेने पर आधारित है, जबकि वास्तविक (हकीकी) अर्थ अभीष्ट है। अर्थात्, पोंछने वाले के पास ऐसी ताज़ा नमी हो जो पोंछने से समाप्त न हुई हो और न ही उपयोग से कम हुई हो। और सत्य का ज्ञान महानता के स्वामी के पास है।

उर्दू

...हाथों की उंगलियाँ सिर के अगले हिस्से पर और दोनों हथेलियाँ कनपटी पर रखें और दोनों को गर्दन के पिछले हिस्से तक खींच ले जाएँ तो यह जायज़ है। कुछ लोगों ने 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) पानी के उपयोग से बचने के लिए एक अन्य तरीके की ओर इशारा किया है, लेकिन वह बिना कठिनाई और मशक्कत के संभव नहीं है। इसलिए पहला तरीका भी जायज़ है और सुन्नत को पूरा करने की ज़रूरत के कारण पानी 'मुस्तअमल' नहीं होगा। इसका आधार यह है कि 'इस्तेमाल' को केवल कानूनी अर्थों में लिया गया है, जबकि वास्तविक अर्थ अभीष्ट है। यानी, मसह ऐसी ताज़ा नमी से हो जो न तो पोंछने से समाप्त हुई हो और न ही उपयोग से कम हुई हो। और सत्य का ज्ञान महानता के स्वामी (अल्लाह) के पास है। (त)

दूसरा मसला: एक ही स्थान पर दो प्रहार करना, या एक ही स्थान से एक व्यक्ति द्वारा कई बार या एक समूह द्वारा बारी-बारी से तयम्मुम करना, यह सब जायज़ है। इसके तर्क में कहा गया है कि यह मिट्टी वैसी ही है जैसे किसी व्यक्ति के वज़ू के बाद बर्तन में बचा हुआ पानी, जिससे दोबारा वज़ू करना जायज़ है, चाहे वह खुद करे या कोई और। जो मिट्टी हाथ में आई, वही प्रयुक्त हुई। यह विवरण अल्लामा बुर्जंदी और आलिम अब्दुल हलीम रूमी ने रियायत के तौर पर दिया है कि मिट्टी 'मुस्तअमल' नहीं होती। और यदि मान भी लिया जाए, तो वह मिट्टी 'मुस्तअमल' होगी जो अंगों से झड़ती है, न कि वह जिस पर प्रहार किया गया। शरह अल-निकायह में है:

अरबी

(हर पाक चीज़ पर) इसका संबंध "दो प्रहारों" से है। यह नहीं कहा जाना चाहिए कि तब वचन इस ओर संकेत करेगा कि दोनों प्रहार एक ही स्थान पर हों, जबकि मिट्टी पहले प्रहार से ही 'मुस्तअमल' हो जाती है। क्योंकि हम कहते हैं, यदि इसे मान भी लिया जाए, तो 'मुस्तअमल' मिट्टी वह है जो चेहरे और हाथों से झड़ती है, न कि वह जिसे रखा गया था।

उर्दू

(हर पाक चीज़ पर) इसका संबंध "दो प्रहारों" से है। यह आपत्ति नहीं उठाई जानी चाहिए कि तब तो बात इस ओर संकेत करेगी कि दोनों प्रहार एक ही स्थान पर हों, बावजूद इसके कि पहले प्रहार से मिट्टी 'मुस्तअमल' हो जाएगी। क्योंकि इसके उत्तर में हम यह कहेंगे कि यदि इसे मान भी लिया जाए, तो 'मुस्तअमल' मिट्टी वह होगी जो चेहरे और हाथों से झड़ेगी।

1. फतावा काज़ीखान, वज़ू और गुस्ल का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/17 द्वारा प्रकाशित। पृष्ठ 733 / 756

عربی

یدیه علی مقدم رأسه وکفیه علی فودیه ویمدهما الی قفاه فیجوز واشار بعضهم الی طریق اخر احترازا عن استعمال الماء المستعمل الا ان ذلك لا یمکن الا بکلفة ومشقة فیجوز الاول ولا یصیر الماء مستعملا ضرورة اقامة السنة اه فان (۱) کل ذلك مبناه علی اخذ الاستعمال بمعنی الحکمي وانما المراد الحقیقي ای لیصیر ماسحا ببلل طری لم یذهب بالمسح ولم یستقله الاستعمال واللہ والعلم بالحق عند ذی الجلال *

اردو

ہاتھوں کی انگلیاں سر کے اگلے حصہ پر ، اور دونوں ہتھیلیاں کروٹوں پر رکھے اور دونوں کو گدی تک کھینچ لے جائے تو جائز ہے اور بعض حضرات نے ایک اور طریقہ کی طرف اشارہ کیا ہے تاکہ مستعمل پانی کے استعمال سے بچاؤ ہو مگر وہ زحمت و مشقت کے بغیر ممکن نہیں تو پہلا طریقہ بھی جائز ہے اور ادائے سنت کی ضرورت کے باعث پانی مستعمل نہ ہوگا " اھ اس لیے کہ ان سب کی بنیاد اس پر ہے کہ استعمال کو حکمی کے معنی میں لے لیا ہے حالانکہ مراد حقیقی ہے۔ یعنی اس کا مسح ایسی تازہ تری سے ہو جو مسح سے نہ ختم ہوئی نہ استعمال سے کم ہوئی۔ اور حق کا علم رب ذوالجلال کے یہاں ہے۔ (ت)

دوسرا مسئلہ : کہ ایک ہی جگہ پر دونوں ضربیں ہونا یا ایک جگہ سے ایک شخص کا چند بار خواہ یکے بعد دیگرے ایک جماعت کا تیمم کرنا سب روا ہے اس کی تعلیل میں فرمایا کہ یہ مٹی تو ایسی ہے جیسے ایک شخص کے وضو کے بعد لوٹے میں بچا ہوا پانی کہ دوبارہ خواہ دوسرے کو اس سے وضو جائز ہے استعمال تو اس کا ہوا جو ہاتھ میں آئی۔ یہ تقریر علامہ بر جندی و فاضل

عبدالحلیم رومی نے بطور تنزل ذکر فرمائی کہ مٹی مستعمل نہیں ہوتی اور بالفرض ہو بھی تو وہ ہو گی جو اعضا کو لگ کر جھڑی نہ یہ جس پر ضرب کی، شرح نقایہ میں ہے:

عربی	اردو
(على كل طاهر) متعلق بضربتين لا يقال فح يدل الكلام على ان الضربتين تكونان على موضع واحد مع ان التراب يصير مستعملا بالضربة الاولى لانا نقول لو سلم ذلك فالتراب المستعمل هو الذي ينتثر من الوجه واليدين لا الذي وضع	(ہر پاک پر) اس کا تعلق "ضربتین" سے ہے۔ یہ اعتراض نہ کیا جائے کہ تب تو کلام اس پر دال ہوگا کہ دونوں ضربیں ایک ہی جگہ ہوں باوجودیکہ پہلی ضرب سے مٹی مستعمل ہو جائے گی۔ اس لیے کہ اس کے جواب میں ہم یہ کہیں گے کہ اگر اسے تسلیم بھی کر لیا جائے تو مستعمل مٹی وہ ہو گی جو چہرے اور ہاتھوں سے جھڑے۔

1 فتاوی قاضیخان باب الوضوء والغسل مطبوعہ نولکشور لکھنو ۱/۱۷ Page 733 of 756

Fatawa Razawiyya Volume Three

- The author of al-Khulasa has explicitly stated "الید علیه" (the hand is on it). [Footnote 1] | It is not that on which the hand was placed. The author of al-Khulasa has clarified this. (T)

Exactly the same is in Hashiyah Durar: - And its wording in the response is: I say, that the dust becoming 'mustamal' (used) is not accepted, and even if it were accepted, then the used dust etc. [Footnote 2] | The words in the answer are: I say, the dust becoming used is not accepted. And even if it is accepted, then used dust etc. (T)

It is evident that there is no place for doubt here. Indeed, the passages from al-Khulasa, al-Muhit, and al-Bada'i, which were cited in the second argument from al-Fath and al-Bahr, are without any expression of concession (tanzul). (1) The text of al-Khulasa itself was adopted in Jami' al-Rumuz, and instead of 'the strike of another person', it was portrayed as 'another strike' as follows: - If one strikes a pure surface for the face and then again for the hands, it is sufficient, because the 'mustamal' (used) is the dust used on the face and hands as in al-Khulasa. [Footnote 3] | If someone strikes a pure surface for the face and then strikes the same place again for the hands, it is sufficient because the used dust is that which was already used on the face and hands. As stated in Khulasa. (T)

Similar to this is stated in Bazzaziyya and Maraqi al-Falah. The former stated: - Tayammum at a place where someone else has performed tayammum is permissible because the used [dust] of the first person was not removed. [Footnote 4] | Tayammum is permissible from a place where someone else has already performed tayammum, because he did not pick up the dust used by the first person. (T)

And the latter stated: - Because it did not become 'mustamal' (used) since tayammum is performed with what was on the hand. [Footnote 5] | Because it did not become used, as tayammum was performed with what stuck to the hand. (T)

1. Sharh al-Niqaya by al-Birjandi, Section on Tayammum, published by Naval Kishore, Lucknow, 1/74.
2. Al-Durar 'ala al-Ghurar, Chapter on Tayammum, Matba' Dar Sa'ada, Egypt, p. 26.
3. Jami' al-Rumuz, Chapter on Tayammum, Maktabah Islamiyyah Gunbad Qamus, Iran, 1/69.
4. Fatawa Bazzaziyya with al-Hindiyya, Fifth Chapter on Tayammum, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 2/17.

5. Maraqi al-Falah, Chapter on Tayammum, Matba'a al-Azhariyya al-Misriyya, Egypt, p. 69.

फ़तावा रज़विया खंड तीन

- "الید علیه" (हाथ उस पर है) का साहिब-ए-खुलासा ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। [संदर्भ 1] | वह नहीं जिस पर हाथ रखा गया। साहिब-ए-खुलासा ने इसकी स्पष्ट व्याख्या की है। (त)

ठीक इसी प्रकार हाशिया दुरर में है: - और उत्तर में उनके शब्द ये हैं: मैं कहता हूँ, मिट्टी का मुस्तअमल (इस्तेमाल शुदा) होना स्वीकार्य नहीं है, और यदि इसे मान भी लिया जाए, तो मुस्तअमल मिट्टी आदि। [संदर्भ 2] | उत्तर में उनके शब्द ये हैं: मैं कहूँगा, मिट्टी का मुस्तअमल होना स्वीकार नहीं। और अगर स्वीकार कर भी लिया जाए तो मुस्तअमल मिट्टी आदि। (त)

यह स्पष्ट है कि यहाँ संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है। हाँ, खुलासा, मुहीत और बदाइ की इबारतें जो फ़तह और बहर से दूसरी दलील में गुज़रीं, वे बिना किसी रियायत (तन्ज़ुल) के हैं। (1) खुलासा की ही इबारत जामे-उर-रुमूज़ में ली गई और 'किसी अन्य व्यक्ति के प्रहार' की जगह 'दूसरे प्रहार' से इस प्रकार चित्रण किया गया कि: - यदि किसी पाक जगह पर चेहरे के लिए प्रहार किया और फिर उसी पर हाथों के लिए, तो यह काफ़ी है क्योंकि मुस्तअमल वह मिट्टी है जो चेहरे और हाथों पर इस्तेमाल की गई जैसा कि खुलासा में है। [संदर्भ 3] | अगर किसी पाक जगह पर चेहरे के लिए और फिर उसी पर हाथ के लिए प्रहार किया तो काफ़ी है क्योंकि मुस्तअमल वह मिट्टी है जो चेहरे और हाथ में इस्तेमाल हुई। जैसा कि खुलासा में है। (त)

इसी तरह बज़ाज़िया और मराक़ी-उल-फ़लाह में है। पहले ने फ़रमाया: - उस जगह से तयम्मुम करना जहाँ कोई और तयम्मुम कर चुका हो जायज़ है क्योंकि उसने पहले वाले की इस्तेमाल की हुई मिट्टी नहीं उठाई। [संदर्भ 4] | ऐसी जगह से तयम्मुम जायज़ है जहाँ से कोई और तयम्मुम कर चुका हो क्योंकि उसने पहले वाले की इस्तेमाल की हुई मिट्टी नहीं उठाई। (त)

और दूसरे ने (फ़रमाया): - क्योंकि वह मुस्तअमल नहीं हुई क्योंकि तयम्मुम उससे हुआ जो हाथ में लगा। [संदर्भ 5] | इसलिए कि वह मुस्तअमल नहीं हुई क्योंकि तयम्मुम उससे हुआ जो हाथ में लगी। (त)

1. शरह अल-निकाया बरजन्दी, तयम्मुम का अध्याय, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/74.
2. अल-दुरर अलल-ग़ुरर, तयम्मुम का अध्याय, मतबा दार सआदह, मिस्र, पृ. 26.
3. जामे-उर-रुमूज़, तयम्मुम का अध्याय, मकतबा इस्लामिया गुम्बद कामूस, ईरान, 1/69.

4. फ़तावा बज़ाज़िया मअ हिन्दिया, तयम्मुम पर पांचवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 2/17.
5. मराक़ी-उल-फ़लाह, तयम्मुम का अध्याय, मतबा अल-अज़हरिया अल-मिसरिया, मिस्र, पृ. 69.

पृष्ठ 734 का 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

الید علیه صرح به صاحب الخلاصة 1- | وہ نہیں جس پر ہاتھ رکھا گیا۔ صاحبِ خلاصہ نے اس کی تصریح فرمائی ہے۔ (ت)

بعینہ اسی طرح حاشیہ درر میں ہے: ولفظه في الجواب قلت کون التراب مستعملا غیر مسلم ولئن سلم فالتراب المستعمل الخ 2- | جواب میں ان کے الفاظ یہ ہیں: میں کہوں گا۔ مٹی کا مستعمل ہونا تسلیم نہیں۔ اور اگر تسلیم بھی کر لیا جائے تو مستعمل مٹی الخ۔ (ت)

ظاہر ہے کہ یہ کچھ محلِ اشتباہ نہیں ہاں خلاصہ و محیط و بدائع کی عبارتیں کہ فتح و بحر سے دلیل دوم میں گزریں بلا اظہار تنزل ہیں۔ (۱) خلاصہ ہی کی عبارت جامع الرموز میں لی اور بجاے ضرب شخص دیگر ضرب دیگر سے تصویر کی کہ: لوضرب علی طاهر للوجه ثم علیه للید اجزاه لان المستعمل هو التراب المستعمل في الوجه والید کما في الخلاصة 3- | اگر کسی طاہر پر چہرے کے لیے پھر اسی پر ہاتھ کے لیے ضرب لگائی تو کافی ہے اس لیے کہ مستعمل وہ مٹی ہے جو چہرے اور ہاتھ میں استعمال ہوئی۔ جیسا کہ خلاصہ میں ہے۔ (ت)

اسی کے مثل بزازیہ و مراقی الفلاح میں ہے اول نے فرمایا: التیمم بموضع تیمم به اخر یجوز لانه لم یرفع مستعمل الاول 4- | ایسی جگہ سے تیمم جائز ہے جہاں سے کوئی اور تیمم کر چکا ہو اس لیے کہ اس نے پہلے کی استعمال کی ہوئی مٹی نہ اٹھائی۔ (ت)

اور ثانی نے: لعدم صیرورته مستعملا لان التیمم بمافی الید 5- | اس لیے کہ وہ مستعمل نہ ہوئی اس لیے کہ تیمم اس سے ہوا جو ہاتھ میں لگی۔ (ت)

1 شرح النقاية للبرجندی ، فصل فی التیمم مطبوعہ نولکشور لکھنئو ۱/ ۷۴ 2 الدرر علی الغرر باب التیمم مطبع دارسعادتہ مصر ص ۲۶ 3 جامع الرموز باب التیمم مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۶۹/۱ 4 فتاوی بزازیہ مع الہندیہ الخامس فی التیمم نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۱۷ 5 مراقی الفلاح ، باب التیمم ، مطبعہ الازہریۃ المصر یہ مصر ص ۶۹

Fatawa Razawiyya, Volume 3

(2) And similar to Al-Muhit and Al-Bahr, it is stated in Al-Nahr from [Fatawa] Shami: [Arabic]: لم یصر مستعملاً اذ التیمم انما یتأدّی بما التزق بیدہ لا بما فضل عنہ ۔ [Translation]: It does not become 'used' (musta'mal) because Tayammum is only performed with what adheres to the hand, not with what remains of it. (T)

(3) And similar to Al-Bada'i, it is stated in Al-Hilya, and likewise in Al-Halabiya from Al-Walwaljiya: [Arabic]: التراب المستعمل ماالتزق بید المتیمّم الاول لاما بقی علی الارض ۔ [Translation]: Used soil is that which stuck to the hand of the first person performing tayammum, not that which remains on the ground. (T)

In the words of Al-Akhir: [Arabic]: جاز لان التراب لا یصیر مستعملاً لان المستعمل ماالتزق بیدیہ وھو کفضل [Translation]: It is permissible because the soil does not become 'used', for the 'used' is that which stuck to his hands and it is like a remainder.

[Annotation]: [Arabic]: عه تمامہ فیہ واذا کان علی حجر املس فیجوز بالاولی اه وکتبت علیه اقول : انما (ا) یزید الاملس بان لیس فیہ مایلترق بالید ولایوجب ذلك اولویته بالجواز فان المضروب علیه الید اذن سواء فی الحکم ارضاً کان اوحجراً و انفصال شیئ منها لامنہ لا یوجب تفاوتهما فی هذا وان تفاوتا فی ان شیئاً من اجزائها مستعمل وهو الملتزق بالید لامن اجزائه ۱۲ منہ غفر لہ (م) [Urdu]: The complete text in it is: "And when it is on a smooth stone, it is permissible by a greater degree." Upon this, I wrote: I say: In a smooth stone, this quality is increased that there is nothing in it that sticks to the hand. This does not necessitate its being permissible by a greater degree, because at the moment the hand is struck, the ruling for both is the same, whether it be earth or stone. The fact that something separates from the earth and nothing separates from the stone does not imply a difference in this ruling between the two, even though they differ in that something from the parts of the earth comes into use—and that is what stuck to the hand—while nothing from the parts of the stone comes into use. 12, from him, may he be forgiven. (T)

Footnotes: 1 Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/157. 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Tayammum, printed at Mustafa al-Babi, Egypt, 1/157. 3 Al-Hilya.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

(2) और मुहीत व बह्र की तरह शामी में नह्र से है कि: [अरबी]: لم یصر مستعملاً اذ التیمم انما أدّی بما التزق بیدہ لا بما فضل عنہ ۔ت [अनुवाद]: यह 'मुस्तअमल' (इस्तेमालशुदा) नहीं होता क्योंकि तयम्मुम केवल उसी से अदा होता है जो हाथ से चिपक जाए, उससे नहीं जो बच रहे। (त)

(3) और बदाए की तरह हिल्या और इसी तरह हलबिया में वलवालजिया से है कि: [अरबी]: التراب المستعمل ماالتزق بید المتیمّم الاول لاما بقی علی الارض ۔ [अनुवाद]: मुस्तअमल मिट्टी वह है जो पहले तयम्मुम करने वाले के हाथ में लगी हो वह नहीं जो ज़मीन पर बच रही। (त)

आख़िर के लफ़्ज़ में: [अरबी]: جاز لان التراب لا یصیر مستعملاً لان المستعمل ماالتزق بیدیہ وھو کفضل [अनुवाद]: जायज़ है इसलिए कि मिट्टी मुस्तअमल नहीं हुई क्योंकि मुस्तअमल तो वह है जो हाथों में लगी हो और यह इस...

[व्याख्या]: [अरबी]: عہ تمامہ فیہ واذا کان علی حجر املس فیجوز بالاولی اہ وکتبت علیہ ذلك اولویتہ بالجواز فان ؏اقول : انما (ا) یزید الاملس بان لیس فیہ مایلترق بالید ولایوج المضروب علیہ الید اذن سواء فی الحکم ارضاً کان اوحجراً و انفصال شیئ منھا لامنہ لا یوجب تفاوتھما فی ھذا وان تفاوتا فی ان شیئاً من اجزائھا مستعمل وھو الملتزق بالید لامن اجزائہ ۱۲ منہ غفر لہ (م) [उर्दू]: इसमें पूरी इबारत यह है: और जब चिकने पत्थर पर हो तो बदरजा औला (श्रेष्ठता के साथ) जायज़ है। इस पर मैंने यह लिखा: मैं कहता हूँ: चिकने पत्थर में यह बात बढ़ी हुई है कि इसमें ऐसी कोई चीज़ नहीं जो हाथ में चिपके। यह बात इसके बदरजा औला जवाज़ (अनुमति) की मूजिब (कारण) नहीं। इसलिए कि जिस पर हाथ मारा जाए उस वक़्त दोनों ही का हुक्म यकसां है, ज़मीन हो या पत्थर। ज़मीन से कुछ जुदा होना और पत्थर से कुछ जुदा न होना इस हुक्म में इन दोनों का तफ़ावत (अंतर) लाज़िम नहीं आता, अगरचे दोनों का इस अम्र में तफ़ावत है कि ज़मीन के अज्ज़ा (अंशों) से कुछ इस्तेमाल में आता है—और यह वह है जो हाथ से चिपक गया—और पत्थर के अज्ज़ा से कुछ इस्तेमाल में नहीं आता। 12, मिन्हु ग़फ़र लहु (त)

पाद-टिप्पणी: 1 रद-उल-मुहतार, बाब-अत-तयम्मुम, मतबा मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/157. 2 रद-उल-मुहतार, बाब-अत-तयम्मुम, मतबूआ मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/157. 3 हिल्या।

(۲) اور محیط و بحر کے مثل شامی میں نہر سے ہے کہ : لم یصر مستعملاً اذ التیمم انما یتأدّی بما التزق بیدہ لا بما فضل عنہ ۔ مستعمل نہ ہوئی اس لیے کہ تیمّم اس سے ادا ہوتا ہے جو ہاتھ میں لگی ہوئی ہو، اس سے نہیں جو بچی ہوئی ہے۔(ت)

(۳) اور بدائع کے مثل حلیہ اور اسی طرح حلبیہ میں ولو الجیہ سے ہے کہ : التراب المستعمل ماالتزق بید المتیمّم الاول لاما بقی علی الارض ۔ مستعمل مٹی وہ ہے جو پہلے تیمّم کرنے والے کے ہاتھ میں لگی ہو وہ نہیں جو زمین پر بچ رہی۔(ت)

اخیر کے لفظ میں : جاز لان التراب لا یصیر مستعملاً لان المستعمل ماالتزق بیدیہ وھو کفضل جائز ہے اس لیے کہ مٹی مستعمل نہیں ہوئی کیونکہ مستعمل تو وہ ہے جو ہاتھوں میں لگی ہو اور یہ اس

[حاشیہ]: عہ تمامہ فیہ واذا کان علی حجر املس فیجوز بالاولی اہ وکتبت علیہ اقول : انما (ا) یزید الاملس بان لیس فیہ مایلترق بالید ولایوجب ذلك اولویتہ بالجواز فان المضروب علیہ الید اذن سواء فی الحکم ارضاً کان اوحجراً و انفصال شیئ منھا لامنہ لا یوجب تفاوتھما فی ھذا وان تفاوتا فی ان شیئاً من اجزائھا مستعمل وھو الملتزق بالید لامن اجزائہ ۱۲ منہ غفر لہ (م) اس میں پوری عبارت یہ ہے : اور جب چکنے پتھر پر ہو تو بدرجہ اولٰی جائز ہے اہ اس پر میں نے یہ لکھا اقول : چکنے پتھر میں یہ بات بڑھی ہوئی ہے، کہ اس میں ایسی کوئی چیز نہیں جو ہاتھ میں چپکے۔ یہ بات اس کے بدرجہ اولٰی جواز کی موجب نہیں۔ اس لیے کہ جس پر ہاتھ مارا جائے اس وقت دونوں ہی کا حکم یکساں ہے زمین ہو یا پتھر۔ زمین سے کچھ جدا ہونا اور پتھر سے کچھ جدا نہ ہونا اس حکم میں ان دونوں کا تفاوت لازم نہیں آتا اگرچہ دونوں کا اس امر میں تفاوت ہے کہ زمین کے اجزا سے کچھ

استعمال میں آتا ہے اور یہ وہ ہے جو ہاتھ سے چپک گیا اور پتھر کے اجزا سے کچھ استعمال میں نہیں آتا۔ ۱۲ منہ غفر لہ (ت)

فٹ نوٹس: 1 ردالمحتار باب التیمم مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۵۷ 2 ردالمحتار باب التیمم مطبوعہ مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۵۷ 3 حلیہ

Fatawa Rizvia, Volume 3

What is in the vessel[1] | It is like the water that remains in the vessel. (T)

(4) Allama Ibrahim Halabi observed that the sticking of soil to the hands or the wiping of the face and hands cannot be a cause for it to become 'must'amal' (used), just as water is not considered 'must'amal' until it separates from the limb after use. Therefore, the condition of 'separation' is additional, as stated:

It is permissible because it did not become 'must'amal'. Indeed, what is 'must'amal' is that which separates from the limb after wiping, by analogy with water.[2] | It is permissible because the soil did not become 'must'amal'. What is 'must'amal' is what separates from the limb after wiping, drawing an analogy with water. (T)

This was quoted and established in Shami.

I say: This is what the two learned scholars Al-Birjandi and Ar-Rumi took as a concessionary view (tanzul). And this is what Imam Qawam-ud-Din Kaki and Imam Badr-ud-Din Ayni explicitly stated: that in the Hanafi school, Tayammum with it is permissible, contrary to the view of Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him). In short, the variety of these statements appeared thus:

The difference will not be hidden from one who reflects and looks deeply, if Allah wills. | And for one who reflects and looks with a discerning eye, the difference will not remain hidden, if Allah wills. (T)

As for clearing the doubt, praise be to Allah, the Imam-ul-Muhaqqiq (the absolute researcher) and Khatimat-ul-Muhaqqiqin (seal of researchers) Allama Zain bin Nujaym (may Allah have mercy on them both) has explained it in the best possible way. Quoting these very statements, he first said that from them it is understood that soil becoming 'must'amal' also has one scenario. This makes it clear that its becoming 'must'amal' is extremely obscure. Then he specified that scenario: that with the strike (on the ground) with which one wiped one limb, one cannot wipe another limb, and he clearly stated 'and nothing else'. 'Laysa ghair' (meaning, not with a second strike - T). So, this is the only single scenario, and there is absolutely no other form in which the ruling of 'must'amal' would apply to soil. Manifestly, this is the ruling of 'juridical soil' (turab hukmi), because real soil here is completely out of consideration, rather it is sunnah to remove it. Thus, it is proven that 'must'amal fil-wajh wal-yad' (soil used on the face and hands - T) or 'must'amal al-awwal' (the first used soil - T) or 'ma fil-yad' (what is in the hand - T), let alone being clearly potential

meanings of 'juridical soil', 'ma iltasaqa bi-yadihi' (what stuck to his hand - T) also refers to the same. That is, the quality of purification that the palms acquired from touching the ground with intention.

I say firstly: This very passage from [the books] Al-Muheet, Al-Bahr, An-Nahr, and others makes it clear that they restricted Tayammum to this...

---

[1] Hashiya Shalbiyah 'ala at-Tabyin, Chapter of Tayammum, Al-Amiriyah Press, Bulaq, Egypt, 1/39. [2] Radd al-Muhtar, Chapter of Tayammum, Mustafa al-Babi Press, Egypt, 1/186-186.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

बर्तन में जो है।[1] | यह उस पानी की तरह है जो बर्तन में बच जाता है। (त)

(4) अल्लामा इब्राहिम हलबी ने देखा कि हाथों में मिट्टी का लगना या चेहरे और हाथों पर मसह (पोंछना) करना उसे 'मुस्तअमल' (उपयोग की हुई) बनाने का कारण नहीं हो सकता, जैसे पानी तब तक 'मुस्तअमल' नहीं होता जब तक कि उपयोग के बाद अंग से अलग न हो जाए। इसलिए 'अलगाव' की अतिरिक्त शर्त यह है कि:

यह जायज़ है क्योंकि यह 'मुस्तअमल' नहीं हुई। वास्तव में 'मुस्तअमल' वह है जो मसह के बाद अंग से अलग हो जाए, पानी पर कयास (तुलना) करते हुए।[2] | यह जायज़ है क्योंकि मिट्टी 'मुस्तअमल' नहीं हुई। 'मुस्तअमल' तो वह है जो मसह के बाद अंग से जुदा हो जाए, यह पानी पर कयास करते हुए है। (त)

शामी में इसे उद्धृत करके मान्य रखा गया है।

मैं कहता हूँ: यही वह बात है जिसे विद्वान अल-बिरजंदी और अर-रूमी ने रियायत (तन्ज़ुल) के तौर पर लिया है, और यही वह बात है जिसे इमाम क़वाम-उद-दीन काकी और इमाम बद्र-उद-दीन ऐनी ने स्पष्ट रूप से फरमाया है कि हनफी मज़हब में इससे तयम्मुम जायज़ है, इमाम शाफ़ई (रज़ियल्लाहु अन्हु) इसके खिलाफ हैं। संक्षेप में, इन बयानों की विविधता इस प्रकार आई:

और यदि अल्लाह ने चाहा, तो गौर करने वाले पर अंतर छिपा नहीं रहेगा। | और तअम्मुल (चिन्तन) करने वाला यदि गौर की निगाह से देखे, तो उस पर अंतर छिपा नहीं रहेगा, अगर अल्लाह ने चाहा। (त)

रहा संदेह का समाधान, तो अल्लाह के फ़ज़्ल से इमाम-उल-मुहक़्क़िक़ और ख़ातिम-उल-मुहक़्क़िक़ीन अल्लामा ज़ैन बिन नुजैम (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने इसे बेहतरीन तरीक़े से बयान फरमा दिया है। इन्हीं इबारतों को उद्धृत करते हुए उन्होंने पहले फरमाया कि इनसे समझा जाता है कि मिट्टी का 'मुस्तअमल' होना भी एक सूरत (स्थिति) रखता है। इससे साफ़ है कि इसका 'मुस्तअमल' होना अत्यंत सूक्ष्म है। फिर उन्होंने उस सूरत का निर्धारण फरमाया कि जिस ज़रब (ज़मीन पर मारना) से एक अंग पर मसह किया, उससे दूसरे अंग पर नहीं कर सकता और साफ़ फरमा दिया 'ला ग़ैर'। 'लैसा ग़ैर' (न कि दूसरी ज़रब से - त)। बस यही एकमात्र सूरत है और वास्तव में ऐसी कोई और सूरत

नहीं जिसमें मिट्टी पर 'मुस्तअमल' होने का हुक्म लागू हो। स्पष्टतः यह उसी 'हुक्मी मिट्टी' (तुराब-ए-हुक्मी) का हुक्म है, क्योंकि यहाँ हक़ीक़ी मिट्टी तो पूरी तरह से नज़रअंदाज़ करने योग्य है, बल्कि उसे हटाना सुन्नत है। तो साबित हुआ कि 'मुस्तअमल फ़िल-वज्ह वल-यद' (चेहरे और हाथ में इस्तेमालशुदा मिट्टी - त) या 'मुस्तअमल-ए-अव्वल' (पहली इस्तेमालशुदा मिट्टी - त) या 'मा फ़िल-यद' (जो हाथ में है - त), ये सब तो 'हुक्मी मिट्टी' के साफ़ संभावित अर्थ हैं ही, 'मा इल-तसक़ा बि-यदिही' (जो उसके हाथ से चिपक जाए - त) से भी यही मुराद है। यानी वह पाकी (ततहीर) का गुण जो हथेलियों ने नियत के साथ ज़मीन को छूने से हासिल किया।

मैं पहले कहता हूँ: यह ख़ुद मुहीत, बहर और नह्र आदि की इबारतों से स्पष्ट है कि उन्होंने तयम्मुम को इसी तक सीमित फरमाया...

---

1. हाशिया शलबिया अलत-तबीन, बाबूत्तयम्मुम, अल-अमीरिया प्रेस, बोलाक़, मिस्र, 1/39.
2. रद अल-मुह्तार, बाबूत्तयम्मुम, मुस्तफ़ा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/186186.

पेज 736 का 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

مافی الاناء۱- | پانی کی طرح ہے جو برتن میں بچ رہا۔ (ت)

(۴) علامہ ابراہیم حلبی نے دیکھا کہ مٹی کا ہاتھوں میں لگنا یا چہرہ ودست پر مسح کیا جانا موجبِ استعمال نہیں ہوسکتا جیسے پانی کہ جب تک بعد استعمال عضو سے انفصال نہ ہو مستعمل نہ ہوگا لہٰذا قید انفصال زائد کی کہ:

جائز لانه لم یصیر مستعملاً انما المستعمل ما ینفصل عن العضو بعد المسح قیاساً علی الماء۲- | جائز ہے اس لیے کہ مٹی مستعمل نہ ہوئی۔ مستعمل تو وہ ہے جو مسح کے بعد عضو سے جدا ہو، یہ پانی پر قیاس کرتے ہوئے ہے۔ (ت)

شامی میں اسے نقل کرکے مقرر رکھا۔

اقول: یہی ہے وہ جسے فاضلین برجندی ورومی نے تنزل میں لیا اور یہی ہے وہ جسے امام قوام الدین کاکی و امام بدر الدین عینی نے صراحۃً فرمایا کہ مذہب حنفی میں اس سے تیمم جائز ہے امام شافعی رضی اللہ تعالٰی عنہ کو خلاف ہے بالجملہ ان عبارات کا تنوع یوں آیا:

والتأمل لا یخفی علیه الفرق اذا امعن النظر ان شاء اللہ تعالٰی۔ | اور تامل کرنے والا نگاہِ غور کرے تو اس پر فرق مخفی نہ رہے گا اگر اللہ نے چاہا۔ (ت)

رہا کشف شبہ وہ بحمد اللہ تعالٰی امام محقق علی الاطلاق و خاتمۃ المحققین علامہ زین بن نجیم رحمہما اللہ تعالٰی نے بروجہ احسن فرمادیا انہی عبارات کو نقل کرکے اولاً فرمایا ان سے سمجھا جاتا ہے کہ مٹی کا مستعمل ہونا بھی ایک صورت رکھتا ہے جس سے روشن کہ اس کا مستعمل ہونا غایت خفا میں ہے پھر اس صورت کی تعیین فرمائی کہ جس ضرب سے ایک عضو پر مسح کیا اس

سے دوسرے پر نہیں کرسکتا اور صاف فرمادیا لا غیر۔ لیس غیر (نہ کہ دوسری ضرب سے۔ت) بس صرف یہی ایک صورت ہے اور اصلاً کوئی شکل نہیں جس میں مٹی پر حکمِ استعمال طاری ہو یہ بداہۃً اسی تراب حکمی کا حکم ہے کہ حقیقی یہاں قطعاً ساقط النظر بلکہ مسنون الازالہ ہے تو ثابت ہوا کہ مستعمل فی الوجہ والید (چہرہ و ہاتھ میں استعمال شدہ مٹی۔ت) یا مستعمل الاول (پہلے کی استعمال شدہ مٹی۔ت) یا ما فی الید (ہاتھ میں استعمال شدہ۔ت) درکنار کہ ترابِ حکمی کے صاف محتمل ہیں ما التصق بیدہ (جو اس کے ہاتھ سے چپک جائے۔ت) سے بھی یہی مراد ہے یعنی وہ وصفِ تطہیر کہ کفین نے مساسِ ارض بالنیۃ سے حاصل کیا۔

اقول اولاً: یہ خود عبارت محیط و بحر و نہر و غیرہم سے روشن کہ انہوں نے حصر فرمایا کہ تیمم اسی سے

---

1 حاشیۃ شلبیۃ علی التبین باب التیمم المطبعۃ الامیریۃ بولاق مصر ۱/ ۳۹ 2 رد المحتار، باب التیمم مطبع مصطفیٰ البابی مصر ۱/ ۱۸۶۱۸۶

Fatawa Rizvia, Volume 3

(Continuing from the previous context)... is fulfilled by what sticks to the hands; this restriction cannot be correct except in the case of 'juridical dust' (turab-e-hukmi), where it is absolutely not necessary for actual dust to stick to the hands. Especially after stating that if it is on a smooth stone, it is permissible a fortiori (awla); this would be an explicit contradiction, as what particle of actual dust would stick to the hand there?

Thirdly: It is a clear matter that a thing does not become 'used' (mustamal) unless it is a 'purifier' (mutahhir). When it removes 'juridical impurity' (najast-e-hukmiya) from one thing, that impurity transfers from it and comes into the purifier; therefore, it is no longer capable of purifying again. For that which is a purifier, its existence at the time of purification is mandatory because a purifier is what yields purity, not something absent. In the customary tayammum (at the time of wiping the face and arms), the existence of 'actual dust' (turab-e-haqiqi) is not mandatory. Thus, it is proven that in customary tayammum, actual dust is not the purifier. When it is not the purifier, it cannot become 'used' (mustamal) either. This is the desired conclusion (wa huwa al-matloob). If you say that in non-customary tayammum, actual dust is indeed the purifier, then it should become 'used' there.

I say (Aqool): We said that it is necessary for everything that becomes 'used' to be a 'purifier', but it is not necessary for every purifier to become 'used'. These words of the scholars, which cause doubt, were regarding customary tayammum only. In that, we have demonstrated that actual dust is never intended. In short, for these words:

Firstly: The refined, correct, explicit, and preferred interpretation is that 'juridical dust' (turab-e-hukmi) is meant.

Secondly: It is possible that the discourse is based on a concessive assumption (tanzul), as clarified by the learned scholars Birjandi and Rumi.

Thirdly: It is possible that by 'usage', actual usage is meant, as Allama Sa'di Efendi explained in the initial passages; that is, the intent is to argue that the 'genus of earth' does not become used by the act of striking. That negative was expressed as a necessary consequence, for they state that juridical usage necessitates actual usage, asking how it can be 'used' when it is not actually used; actual usage is only for the dust that sticks to the hands.

Fourthly: At the very least, these passages are subject to multiple interpretations, and given the explicit texts (nasoos) we have mentioned, it is mandatory to interpret these according to those explicit texts.

Fifthly: These are arguments for a position that is not the transmitted madhhab (school of thought), and those explicit texts are for specific issues, especially such that in the Hanafi madhhab, dust does not take the ruling of being 'used'. In this, there is disagreement with Imam Shafi'i. Thus, by the grace of God, it has become as clear as the sun that the genus of earth does not become 'used' through tayammum at all—neither that which was struck nor that which was used for wiping the limbs.

Thus should be the research, and Allah the Exalted is the Giver of success.	**This research also clarifies that Allama Tahtawi is correct in his absolute negation of 'usage' for dust. Regarding this, Allama Shami wrote: "Used is that dust which separates from the limb after wiping, Sharh al-Munyah."**

फ़तावा रज़विया, जिल्द 3

(पिछले संदर्भ से जारी)... जो हाथ में लगता है, उससे पूरा होता है; यह प्रतिबंध सही नहीं हो सकता सिवाय 'विधिक धूल' (तुराब-ए-हुक्मी) के मामले में, जहाँ वास्तविक धूल का हाथ में लगना बिल्कुल आवश्यक नहीं है। विशेष रूप से यह कहने के बाद कि यदि वह चिकने पत्थर पर हो, तो वह और भी अधिक (औला) जायज़ है; यह एक स्पष्ट विरोधाभास होगा, क्योंकि वहाँ वास्तविक धूल का कौन सा कण हाथ में लगेगा?

तीसरा: यह एक स्पष्ट बात है कि कोई वस्तु 'प्रयुक्त' (मुस्तअमल) नहीं होगी जब तक कि वह 'शोधक' (मुताहिर) न हो। जब वह किसी दूसरी चीज़ से 'विधिक अशुद्धि' (नजासत-ए-हुक्मिया) को दूर करती है, तो वह अशुद्धि उससे स्थानांतरित होकर शोधक में आ जाती है; इसलिए, वह फिर से शुद्ध करने के योग्य नहीं रहती। जो शोधक है, शोधन के समय उसका अस्तित्व अनिवार्य है क्योंकि शोधक वह है जो पवित्रता प्रदान करता है, न कि वह जो अनुपस्थित हो। प्रथागत तयम्मुम (चेहरे और हाथों को पोंछते समय) में, 'वास्तविक धूल' (तुराब-ए-हकीकी) का अस्तित्व अनिवार्य नहीं है। अत; यह सिद्ध हुआ कि प्रथागत तयम्मुम में, वास्तविक धूल शोधक नहीं है। जब वह शोधक नहीं है, तो वह 'प्रयुक्त' भी नहीं हो सकती। यही अभीष्ट निष्कर्ष है (व हुव अल-मतलूब)। यदि आप कहें कि गैर-प्रथागत तयम्मुम में, वास्तविक धूल ही शोधक है, तो उसे वहाँ प्रयुक्त हो जाना चाहिए।

मैं कहता हूँ (अकूल): हमने यह कहा था कि हर उस चीज़ का शोधक होना आवश्यक है जो 'प्रयुक्त' हो जाती है, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि हर शोधक 'प्रयुक्त' हो जाए। विद्वानों के ये शब्द, जिनसे संदेह उत्पन्न होता है, केवल प्रथागत तयम्मुम के बारे में थे। इसमें हमने प्रमाणित कर दिया है कि वास्तविक धूल कभी भी अभिप्रेत नहीं है। संक्षेप में, इन शब्दों के लिए:

पहला: परिष्कृत, सही, स्पष्ट और पसंदीदा व्याख्या यही है कि विधिक धूल (तुराब-ए-हुक्मी) अभिप्रेत है।

दूसरा: यह संभव है कि प्रवचन रियायती धारणा (तन्जुल) पर आधारित हो, जैसा कि विद्वान बिरजंदी और रूमी ने स्पष्ट किया है।

तीसरा: यह संभव है कि 'प्रयोग' से वास्तविक प्रयोग अभिप्रेत हो, जैसा कि अल्लामा सादी एफेंदी ने शुरुआती अंशों में समझाया है; अर्थात्, मंशा यह तर्क देना है कि प्रहार करने से 'मिट्टी की श्रेणी' प्रयुक्त नहीं होती। वह निषेध एक आवश्यक परिणाम के रूप में व्यक्त किया गया था, क्योंकि वे

कहते हैं कि विधिक प्रयोग वास्तविक प्रयोग को अनिवार्य बनाता है, यह पूछते हुए कि यह 'प्रयुक्त' कैसे हो सकता है जब यह वास्तव में प्रयुक्त नहीं है; वास्तविक प्रयोग तो केवल उसी धूल का है जो हाथों में लगती है।

चौथा: कम से कम, ये अंश कई व्याख्याओं के अधीन हैं, और हमारे द्वारा उल्लेखित स्पष्ट ग्रंथों (नसूस) को देखते हुए, इन्हें उन स्पष्ट ग्रंथों के अनुसार व्याख्यायित करना अनिवार्य है।

पांचवां: ये उस स्थिति के तर्क हैं जो संचरित मज़हब (विचारधारा) नहीं है, और वे स्पष्ट ग्रंथ विशिष्ट मुद्दों के लिए हैं, विशेष रूप से ऐसे कि हनफ़ी मज़हब में मिट्टी 'प्रयुक्त' होने का नियम प्राप्त नहीं करती। इसमें इमाम शाफ़ई के साथ असहमति है। अत; ईश्वर की कृपा से, यह सूर्य के समान स्पष्ट हो गया है कि मिट्टी की श्रेणी तयम्मुम के माध्यम से बिल्कुल भी 'प्रयुक्त' नहीं होती—न तो वह जिस पर प्रहार किया गया और न ही वह जिससे अंगों को पोंछा गया।

इसी तरह शोध होना चाहिए और अल्लाह महान ही सफलता देने वाला है।

इस शोध से यह भी स्पष्ट हो गया कि अल्लामा तहतावी मिट्टी के लिए 'प्रयोग' के पूर्ण निषेध में सही हैं। इस पर अल्लामा शामी ने लिखा है कि "प्रयुक्त वह मिट्टी है जो पोंछने के बाद अंग से अलग हो जाती है, शरह अल-मुन्याह।"

ادا ہوتا ہے جو ہاتھ میں لگے یہ حصر صحیح نہیں ہو سکتا مگر تراب حکمی میں کہ حقیقی کا ہاتھ میں لگا ہونا قطعاً ضرور نہیں خصوصاً نہر اس کے بعد فرمانا کہ چکنے پتھر پر ہو تو بالاولٰی جائز صراحۃً تناقض ہو جائے گا کہ وہاں حقیقی کا کون سا ذرہ ہاتھ میں لگے گا۔

ثالثاً: ایک صاف بات ہے مستعمل نہ ہو گا مگر مطہر کہ جب یہ دوسرے سے رفع نجاست حکمیہ کرتا ہے وہ اس سے منتقل ہو کر اس میں آ جاتی ہے لہٰذا دوبارہ تطہیر کے قابل نہیں رہتا اور جو مطہر ہے وقت تطہیر اس کا وجود لازم کہ مطہر مفید طہارت ہے نہ کہ معد اور تیمم معہود میں وقت مسح وجہ و ذراعین تراب حقیقی کا وجود لازم نہیں، تو ثابت ہوا کہ تیمم معہود میں تراب حقیقی مطہر نہیں اور جب مطہر نہیں تو مستعمل بھی نہیں ہو سکتی وھو المطلوب (اور یہی مطلوب ہے۔ت) اگر کہئے تیمم غیر معہود میں تو تراب حقیقی ہی مطہر ہے، چاہئے وہاں مستعمل ہو جائے۔

اقول: ہم نے یہ کہا تھا کہ ہر مستعمل ہو جانے والے کا مطہر ہونا ضرور نہ یہ کہ ہر مطہر کا مستعمل ہونا لازم یہ کلمات علما جن سے شبہ گزرتا ہے تیمم معہود ہی میں تھے اس میں ہم نے مبرہن کر دیا کہ تراب حقیقی ہر گز مراد نہیں بالجملہ ان کلمات کا۔

اولاً: نفیس و صحیح و صریح و رجیح محمل تو یہی ہے کہ مراد تراب حکمی ہے۔

ثانیاً: ممکن کہ کلام تنزل پر مبنی ہو جس طرح فاضلین بر جندی و رومی نے واضح کیا۔

ثالثاً: ممکن کہ استعمال سے مراد استعمال حقیقی ہو جیسا علامہ سعدی افندی نے عبارات اولٰی میں افادہ فرمایا یعنی ضرب سے جنس ارض مستعمل نہ ہونے پر استدلال مقصود ہے وہ نفی لازم سے

ادا فرمایا گیا کہ استعمال حکمی کو استعمال حقیقی لازم تو فرماتے ہیں کہ یہ کیونکر مستعمل ہو حالانکہ حقیقتہً مستعمل نہیں حقیقتہً استعمال تو اسی مٹی کا ہے جو ہاتھوں میں لگی۔

رابعاً: کم از کم یہ عبارات مورد احتمالات ہیں اور وہ نصوص کہ ہم نے ذکر کیے، صریح تو انہیں پر تحویل لازم۔

خامساً: یہ دلیل کی تقریر میں ہیں جو مذہب منقول نہیں اور وہ نصوص خاص مسائل کے احکام میں خصوصاً وہ بھی اس طرح کہ مذہب حنفی میں مٹی حکم استعمال نہیں پاتی اس میں خلاف امام شافعی کو ہے تو بحمدہ تعالیٰ آفتاب کی طرح روشن ہوا کہ جنس ارض تیمم سے اصلاً مستعمل نہیں ہوتی نہ وہ جس پر ضرب کی نہ وہ کہ اعضا پر مسح کی گئی۔

اسی تحقیق سے یہ بھی عیاں ہو گیا کہ مٹی سے

هكذا ينبغى التحقيق والله سبحنه ولى التوفيق مطلقاً استعمال کی نفی میں علامہ طحطاوی درستی پر

(اسی طرح تحقیق ہونی چاہئے اور خدائے ہیں۔ اس پر علامہ شامی نے یہ لکھا ہے کہ "مستعمل

پاک ہی مالکِ توفیق ہے) وہ مٹی ہے جو مسح کے بعد عضو سے جدا ہو،

شرح منیہ)۔

وبه ظهران الصواب مع العلامة ط فى نفى

الاستعمال عن التراب على الاطلاق

والرد(۲) عليه من العلامة ش حيث قال انما

المستعمل ما ينفصل عن العضو بعد المسح

شرح المنية

Fatawa Rizvia, Volume 3

(Top Left Box - Arabic): And similar to it is what we previously mentioned from *An-Nahr*, and it is that which is mentioned in *Al-Hilyah*. So understand. [End of quote]. By this, he signaled, according to his habit—as he pointed out in his sermon—towards a refutation of As-Sayyid [At-Tahtawi]. [This refutation] is not correct; rather, it is necessary to refer what is in *Al-Hilyah*, *Al-Ghunyah*, and *An-Nahr* back to what accords with what the Sayyid mentioned, because it is what is explicitly stated in the Madhhab (school of law). And Allah, the Sublime and Exalted, knows best. And may Allah Exalted's blessings be upon our master and patron Muhammad, and his family, companions, sons, and party, and may He grant them peace and blessings. Amen. And all praise is due to Allah, the Lord of the worlds.

(Top Right Box - Urdu): The same meaning is what we previously mentioned from *An-Nahr*, and this is also mentioned in *Al-Hilyah*, so understand. You should understand "Ah" [end of quote]. With this discourse, as per his habit... as he warned in his sermon... he indicated towards a refutation of Sayyid Tahtawi. But this refutation is not correct; rather, it is necessary to interpret the passages of *Hilyah*, *Ghunyah*, and *Nahr* in a way that aligns with the statement of Sayyid Tahtawi because that is what is explicitly stated in the school of thought... and Allah the Pure and Exalted knows best. And may Allah Almighty send mercy upon our master and lord Muhammad and his family, companions, offspring and group, and blessings and peace too... and all praise is for God alone, the owner of all the worlds. (T)

(Middle Section): (The supplementary treatise *Al-Jadd us-Sadeed* ends here) "Third Question: Is *tayammum* (dry ablution) from the wall of a mosque permissible or not? Some pages titled 'Fatawa Rashidiya', meaning the answers of Rashid Ahmad Gangohi, have been published, whose index starts from the 'Book of Unbelief'. On page 76, in response to this question, it is written: 'Performing *tayammum* from the wall of a mosque is written as disliked (*makruh*) in some books of jurisprudence only.' Is this answer correct or incorrect, and in which book of jurisprudence is it written as disliked? Clarify and you shall be rewarded.

Answer: The aforementioned writing is far from correctness and lacking in legal insight; it is a baseless, blind statement. There is no basis for this in the Hanafi school. Neither is its dislike clear from any reliable book, nor is such an anonymous citation acceptable in any way. Nor is such a narrator worthy of attention, nor is there any evidence from Sharia for it. A statement without evidence is rejected and

debased. Rather, its invalidity is clear from reliable books. [Persian couplet: 'If the blind cannot see by day, cast a veil over him']. In *tayammum*, there are two strikes; in this explanation, we shall suffice with two strikes."

(Footer): 1 *Radd al-Muhtar*, Chapter on Tayammum, Mustafa Al-Babi Printing Press, Egypt, 1/186. Page 738 of 756

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 3

(ऊपर बाएं बॉक्स - अरबी): और इसी के समान वह है जो हमने पहले 'अन-नहर' से प्रस्तुत किया था, और यह वही है जो 'अल-हिलया' में वर्णित है। तो समझें। [उद्धरण समाप्त]। इसके द्वारा उन्होंने, अपनी आदत के अनुसार—जैसा कि उन्होंने अपने प्रवचन में संकेत दिया था—अस-सैय्यद [अत-तहतावी] के खंडन की ओर इशारा किया। [यह खंडन] सही नहीं है; बल्कि, 'अल-हिलया', 'अल-ग़ुनिया' और 'अन-नहर' में जो कुछ भी है, उसे उस चीज़ की ओर वापस लाना आवश्यक है जो सैय्यद ने उल्लेख किया है, क्योंकि यही मज़हब (विचारधारा) में स्पष्ट रूप से कहा गया है। और अल्लाह, जो शुद्ध और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है। और अल्लाह तआला का आशीर्वाद हमारे आका और मौला मुहम्मद और उनके परिवार, साथियों, बेटों और दल पर हो, और वह उन्हें शांति और आशीर्वाद प्रदान करे। आमीन। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो जहानों का रब है।

(ऊपर दाएं बॉक्स - उर्दू): इसी के समान अर्थ वह भी है जो हमने 'नहर' से पहले उल्लेख किया था और यही 'हिलया' में भी वर्णित है, तो समझें। 'अह' (उद्धरण अंत) का अर्थ समझना चाहिए। इस कलाम से अपनी आदत के अनुसार उन्होंने... जैसा कि अपने खुत्बे में आगाह किया है... सैय्यद तहतावी के रद्द की ओर इशारा किया है, मगर यह रद्द सही नहीं है बल्कि लाज़िम है कि हिलया, गुन्या और नहर की इबारतों की वह तावील की जाए जो बयान-ए-सैय्यद तहतावी के मुवाफ़िक़ हो, इसलिए कि मज़हब में वही मन्सूस है... और खुदा-ए-पाक-ओ-बरतर खूब जानता है। और अल्लाह तआला रहमत फरमाए हमारे आका-ओ-मौला मुहम्मद और उनकी आल, असहाब, फर्ज़ंद और गिरोह पर और बरकत-ओ-सलामती भी... और सारी खूबियां सारे जहानों के मालिक खुदा ही के लिए हैं। (त)

(मध्य अनुभाग): (पूरक शोध प्रबंध 'अल-जद्द उस-सदीद' यहाँ समाप्त होता है) "तीसरा प्रश्न: मस्जिद की दीवार से तयम्मुम (सूखा वज़ू) करना जायज़ है या नहीं? 'फ़तावा रशीदिया' के नाम से कुछ पन्ने छपे हैं, यानी रशीद अहमद गंगोही के उत्तर, जिनकी सूची 'किताबुल कुफ्र' से शुरू होती है। इसके पृष्ठ 76 पर, इस प्रश्न के उत्तर में लिखा है: 'मस्जिद की दीवार से तयम्मुम करने को फिकह की कुछ किताबों में केवल मकरूह (नापसंद) लिखा गया है।' क्या यह उत्तर सही है या गलत, और फिकह की किस किताब में इसे मकरूह लिखा गया है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: उक्त लेख सच्चाई और फिकही समझ से कोसों दूर है; यह पूरी तरह से निराधार और अंधी बात है। हनफी मज़हब में इसका कोई आधार नहीं है। न तो किसी विश्वसनीय पुस्तक से इसकी

कराहत (नापसंदगी) स्पष्ट है, और न ही ऐसा कोई अज्ञात विवरण किसी भी तरह स्वीकार्य है। न तो ऐसा वर्णनकर्ता ध्यान देने योग्य है, और न ही शरीयत से इसके लिए कोई प्रमाण है। बिना प्रमाण की बात ठुकराए जाने योग्य और तुच्छ है। बल्कि विश्वसनीय पुस्तकों से इसका अमान्य होना स्पष्ट है। [फ़ारसी शेर: 'अगर अंधा दिन के उजाले में न देख सके तो उस पर पर्दा डाल दो']। तयम्मुम में दो प्रहार (हाथ मारना) होते हैं; इस विवरण में हम केवल दो ही प्रहारों पर संतोष करेंगे।"

(पादलेख): 1 रद-उल-मुहतार, तयम्मुम का अध्याय, मुस्तफा अल-बाबी प्रेस, मिस्र, 1/186। पृष्ठ 738 का 756

فتاوٰی رضویہ ، جلد سوم

(اوپر بائیں خانہ - عربی): ونحوہ ماقدمناہ عن النھر وھو المذکور فی الحلیۃ فافھم ۱ اھ اشار بہ کعادتہ کما نبہ علیہ فی خطبتہ الی الرد علی السید ط غیر سدید بل یجب ارجاع مافی الحلیۃ والغنیۃ والنھر الی مایوافق ما ذکر السید لانہ المنصوص علیہ في المذھب واللہ سبحانہ وتعالی اعلم وصلی اللہ تعالی علی سیدنا و مولینا محمد والہ وصحبہ وابنہ وحزبہ وبارك وسلم أمین والحمد للہ رب العلمین۔

(اوپر دائیں خانہ - اردو): اسی کے ہم معنی وہ بھی ہے جو نہر سے ہم نے پہلے ذکر کیا اور یہی حلیہ میں بھی مذکور ہے ، فافہم ۔ تو سمجھنا چاہئے "اھ"۔ اس کلام سے حسب عادت انہوں نے---- جیسا کہ اپنے خطبہ میں تنبیہ کی ہے---- سید طحطاوی کے رد کی طرف اشارہ کیا ہے مگر یہ تردید صحیح نہیں بلکہ لازم ہے کہ حلیہ ، غنیہ اور نہر کی عبارتوں کی وہ تاویل کی جائے جو بیانِ سید طحطاوی کے موافق ہو اس لیے کہ مذہب میں وہی منصوص ہے---- اور خدائے پاک وبرتر خوب جانتا ہے۔ اور اللہ تعالٰی رحمت فرمائے ہمارے آقا ومولٰی محمد اور ان کی آل، اصحاب، فرزند اور گروہ پر اور برکت و سلامتی بھی---- اور ساری خوبیاں سارے جہانوں کے مالک خدا ہی کے لیے ہیں۔ (ت)

(درمیانی حصہ): (رسالہ ضمنیہ الجد السدید ختم ہوا) "سوال سوم: مسجد کی دیوار سے تیمم جائز ہے یا نہیں، کچھ ورق بنام فتاوی رشیدیہ یعنی جوابات رشید احمد گنگوہی چھپے ہیں جن کی فہرست کا شروع کتاب الکفر سے ہے اس کے صفحہ ۷۶ پر اس سوال کے جواب میں لکھا: تیمم دیوارِ مسجد سے کرنے کو بعض کتب فقہ میں مکروہ لکھا ہے فقط آیا یہ جواب صحیح ہے یا غلط ، اور کون سی کتابِ فقہ میں اسے مکروہ لکھا ہے بینوا توجروا۔

الجواب: تحریر مذکور صواب سے بیگانہ فقاہت سے برکرانہ محض بے بنیاد کورانہ ہے مذہب حنفی میں اس کی کچھ اصل نہیں نہ کسی کتاب معتمد سے اس کی کراہت مستبین نہ ایسی نقلِ مجہول کسی طرح قابلِ قبول نہ ایسا ناقل التفات کے قابل نہ اس پر شرع سے کوئی دلیل اور قول بے دلیل مردود و ذلیل بلکہ کتبِ معتمدہ سے اس کا بطلان روشن جن سے گرنہ بیند بہ بروزِ پردہ بر افگن تیمم میں دو ضربیں ہوتی ہیں اس بیان میں ہم دو ہی ضرب پر اکتفا کریں۔"

(فٹ نوٹ): 1 رد المحتار باب التیمم مطبع مصطفی البابی مصر ۱۸۶/۱ صفحہ 738 از 756

Fatawa Razvia Volume 3 First Blow: The aforementioned claim being groundless and without proof is evident because referencing 'some books' is not a valid authority. It is unknown what kind of book it is, whose book it is, what its text is, or what its meaning is. What the narrator understood or intended is unclear. Even the narrator himself lacks certainty or confidence in it, as a disclaimer of responsibility is inferred from the style of expression. Some books contain everything, both sound and unsound. If that book and its ruling were reliable in the narrator's view, he would have stated the ruling to the inquirer, just as in this very answer he stated regarding performing ablution inside the mosque that it is forbidden and sinful according to the Hanafis. Immediately adjacent are these words: he did not say here that it is disliked (makruh), but rather that it is written in some books as disliked. This much explanation of its groundlessness is sufficient. As for it being without proof, if a doubt could arise here, it would be for two reasons: First, analogy with water, which is pure ignorance and obsession. Firstly: We have already proven that the substance of the earth does not become 'used' (musta'mal) through Tayammum at all, unlike water. Used water, although pure according to the correct school of thought, is 'qadhar' (repulsive), meaning something that causes disgust, and it is obligatory to protect the mosque from such things, like saliva or nasal discharge. Secondly: If we mistakenly assume that soil becomes 'used' as soon as it touches the ground and hands during wiping, then nowadays the walls of most mosques are solid and plastered. Even if some are unplastered, they are polished or smoothly finished. Where is this loose soil in them? So why would Tayammum on their walls be disliked? Thirdly: Walls are generally constructed such that their particles do not come off when hands are placed on them. And the dust brought in by the wind from outside is not part of the mosque's structure. Therefore, in most cases, the soil that sticks to the hands will not belong to the mosque; otherwise, cleaning dust and grime from the mosque would be prohibited, as it would involve detaching and removing parts of the mosque. Fourthly: The noble scholars explicitly state that it is disliked to wipe feet smeared with mud on the soil spread across the mosque's floor, as this would involve wiping on the mosque's own ground itself; the spread dust would not be considered a barrier. However, if the dust has been swept and gathered in a corner of the mosque, there is no harm in wiping with it. It is stated in Fatawa Imam Qazikhan, Tajnis by the author of Hidaya, Muheet-e-Sarakhsi, Bahr-al-Raiq, Fatawa Hindiya, and many other reliable books:

Arabic Text

Wal-lafzu lil-Khaniyah: yukrahu mas-hur-rajuli min teenin wa radghatin bi-ustuwanatil-masjidi aw bi-ha-itihi wa in mas-ha bi-turabin fil-masjidi in kana dhalika-turabu majmu'an fi nahiyatin ghayra munbasitin la ba'sa bihi wa in kana munbasitan.

Urdu Translation

And the words of Khaniya are: "It is disliked to wipe feet soiled with soil and mud against a pillar or any wall of the mosque. If wiping with any soil inside the mosque, then if that soil is gathered in some corner and not spread out, there is no harm. And if it is spread on the floor, then it is disliked because..."

फ़तावा रज़विया जिल्द 3 पहला प्रहार: पूर्वोक्त दावा का निराधार और प्रमाणहीन होना तो स्पष्ट है क्योंकि 'कुछ पुस्तकों' का हवाला कोई प्रमाण नहीं है। पता नहीं वह कैसी पुस्तक है, किसकी पुस्तक है, उसका मूल पाठ क्या है और उसका अर्थ क्या है। वर्णनकर्ता ने क्या समझा और क्या चाहा, यह स्पष्ट नहीं है। स्वयं वर्णनकर्ता को भी इस पर कोई दृढ़ विश्वास या भरोसा नहीं है, जैसा कि अभिव्यक्ति की शैली से जिम्मेदारी से मुक्ति का संकेत मिलता है। कुछ पुस्तकों में सब कुछ होता है, सही भी और गलत भी। यदि वर्णनकर्ता की दृष्टि में वह पुस्तक और उसका वह आदेश विश्वसनीय होता, तो वह प्रश्नकर्ता को आदेश बताता, जिस प्रकार इसी उत्तर में उसने मस्जिद के भीतर वज़ू करने के बारे में बताया है कि हनफियों के अनुसार यह वर्जित और पाप है। इसी के ठीक बाद ये शब्द हैं: यहाँ यह नहीं कहा कि यह मकरूह (नापसंद) है, बल्कि यह कि कुछ पुस्तकों में मकरूह लिखा है। इसकी निराधारता का इतना बयान ही पर्याप्त है। रहा प्रमाणहीन होना, यदि यहाँ कोई शंका उत्पन्न हो सकती थी, तो वह दो कारणों से थी: पहला, पानी पर कयास (तुलना), जो कोरी अज्ञानता और वसवसा (भ्रम) है। पहला: हम सिद्ध कर चुके हैं कि तैयमुम से पृथ्वी का तत्व मूल रूप से 'मुस्तअमल' (प्रयुक्त) नहीं होता, पानी के विपरीत। प्रयुक्त जल, यद्यपि सही पंथ के अनुसार पवित्र है, लेकिन 'क़दर' (घृणास्पद) है, यानी ऐसी चीज़ जिससे घिन आए, और मस्जिद को ऐसी चीज़ों से बचाना अनिवार्य है जैसे थूक या नाक की नमी। दूसरा: यदि हम गलत ढंग से मान भी लें कि मिट्टी ज़मीन और हाथों पर मसह (पोंछने) के बाद अलग होते ही 'मुस्तअमल' हो जाती है, तो आज के समय में अधिकांश मस्जिदों की दीवारें पक्की और प्लास्टर वाली हैं। और यदि कोई कच्ची भी है, तो वह रगड़ कर चिकनी की हुई या साफ लिपी हुई है। उनमें यह धूल मिट्टी कहाँ, तो उनकी दीवारों पर तैयमुम करना मकरूह क्यों? तीसरा: दीवारें आम तौर पर ऐसी बनाई जाती हैं जिन पर हाथ रखने से उनके कण नहीं छूटते। और बाहर से आई हुई धूल जो हवा उड़ाकर लाई है, वह मस्जिद का हिस्सा नहीं है। अतः अधिकांश स्थितियों में जो मिट्टी हाथों में लगेगी, वह मस्जिद की नहीं होगी; अन्यथा मस्जिद से धूल-मिट्टी साफ करना वर्जित होता क्योंकि यह मस्जिद के अंगों को उससे अलग करना और दूर करना होता। चौथा: विद्वान स्पष्ट करते हैं कि मस्जिद की ज़मीन पर फैली हुई मिट्टी से कीचड़ भरे पैरों को पोंछना मकरूह है क्योंकि यह स्वयं मस्जिद की ज़मीन पर पोंछना माना जाएगा; फैली हुई धूल को आड़ नहीं माना जाएगा। और यदि धूल झाड़कर मस्जिद के किसी कोने में जमा कर दी गई है, तो उससे पोंछने में कोई हर्ज नहीं है। फ़तावा इमाम क़ाज़ीखान, तजनीस (हिदाया के लेखक द्वारा), मुहीत-ए-सरख़सी, बहर-उर-राइक़, फ़तावा हिंदिया और कई अन्य विश्वसनीय पुस्तकों में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
واللفظ للخانية يكره مسح الرجل من طين وردغة باسطوانة المسجد او بحائطه وان مسح بتراب في المسجد ان كان ذلك التراب مجموعا في ناحية غير منبسط لا بأس به وان كان منبسطاً	और खानिया के शब्द हैं: "मिट्टी और कीचड़ से सने पैरों को मस्जिद के खंभे या किसी दीवार से पोंछना मकरूह है। यदि मस्जिद के अंदर किसी मिट्टी से पोंछना हो, तो यदि वह मिट्टी किसी कोने में जमा कर दी गई है और फैली हुई नहीं है, तो कोई हर्ज नहीं। और यदि फर्श पर फैली हुई है, तो मकरूह है क्योंकि..."

فتاویٰ رضویہ جلد سوم ضرب اول : زعم مذکور کا بے اصل وبے دلیل ہونا یہ تو بدیہی کہ بعض کتب کوئی سند نہیں۔ نہیں معلوم کیسی کتاب کس کی کتاب اسکی کیا عبارت کیا مفاد۔ ناقل نے کیا سمجھا کیا مراد۔ خود ناقل کو بھی اس پر جزم نہ اعتماد۔ کہ طرز بیان سے تبرّی عہدہ مستفاد۔ بعض کتب میں رطب و یابس سب کچھ ہوتا ہے اگر ناقل کے نزدیک وہ کتاب اور اس کا وہ حکم لائق اعتماد ہوتا سائل کو حکم بتاتا جس طرح اسی جواب میں مسجد کے اندر وضو کو بتایا ہے کہ حنفیہ کے نزدیک منع اور گناہ ہے اس کے متصل ہی یہ الفاظ ہیں یہاں یہ نہ کہا کہ مکروہ ہے بلکہ یہ کہ بعض کتب میں مکروہ لکھا اس کی بے اصلی کا اتنا ہی بیان بس ہے۔ رہا بے دلیل ہونا ہونا گریہاں شبہ گزر سکتا تھا تو دو ہی وجہ سے : یکم پانی پر قیاس اور وہ محض جہل وسواس۔ اولاً : ہم ثابت کر آئے کہ تیمّم سے جنسِ ارض اصلاً مستعمل نہیں ہوتی بخلاف آب ، اور آب مستعمل اگر چہ مذہب صحیح میں طاہر ہے مگر قذر ہے یعنی گھن کی چیز اور مسجد کو ایسی اشیا سے بچانا واجب جیسے لعاب دہن و آب بینی۔ ثانیاً : اگر بفرضِ غلط تسلیم کریں کہ مٹی زمین اور ہاتھوں پر مسح ہو کر چھوٹے ہی مستعمل ہو جاتی ہے تو آج کل عامہ مساجد کی دیواریں پختہ وگچ کردہ ہیں اور اگر کوئی کچی بھی ہے تو کھرل کی ہوئی یا صاف لسی ہوئی ان میں یہ مٹی کہاں تو اُن کی دیواروں پر تیمم کیوں مکروہ ؟ ثالثاً : دیواریں عام طور پر ایسی بنائی جاتی ہیں جن پر ہاتھ رکھنے سے ان کے اجزا نہیں چھوٹتے اور باہر سے آیا ہوا غبار کہ ہوا نے لاکر ڈالا ہوا جزائے مسجد سے نہیں تو غالب صور میں جو مٹی ہاتھ کو لگے گی مسجد کی نہ ہوگی ورنہ مسجد سے گرد و غبار صاف کرنا منع ہو کہ اجزائے مسجد کا اس سے چھڑانا اور دور کرنا ہے۔ رابعاً : علمائے کرام تصریح فرماتے ہیں کہ زمینِ مسجد پر جو مٹی پھیلی ہوئی ہے کیچڑ کے سنے پاؤں اس سے پونچھنا مکروہ ہے کہ یہ زمینِ مسجد ہی سے پونچھنا ہو گا پھیلا ہوا غبار حائل نہ سمجھا جائے گا

اور اگر گرد جھاڑ کر مسجد کے کسی گوشے میں جمع کر دی ہے تو اس سے پونچھنے میں حرج نہیں۔ فتاویٰ امام قاضیخان و تجنیس امام صاحب ہدایہ و محیط سرخسی و بحر الرائق و فتاویٰ ہندیہ وغیرہا کتب کثیرہ و معتمدہ میں ہے:

عربی عبارت

واللفظ للخانية يكره مسح الرجل من طين وردغة باسطوانة المسجد او بحائطه وان مسح بتراب في المسجد ان كان ذلك التراب مجموعا في ناحية غير منبسط لا بأس به وان كان منبسطاً

اردو ترجمہ

اور الفاظ خانیہ کے ہیں: "مٹی اور کیچڑ سے آلودہ پاؤں کو مسجد کے ستون یا کسی دیوار سے پونچھنا مکروہ ہے۔ اگر مسجد کے اندر کسی مٹی سے پونچھنا تو اگر وہ مٹی کسی گوشے میں جمع کر دی گئی ہے پھیلی ہوئی نہیں تو کوئی حرج نہیں۔ اور اگر فرش پر پھیلی ہوئی ہے تو مکروہ ہے اس لئے

Fatawa Razawiyya Volume 3

[Arabic phrase]: because it is in the position of the floor of the mosque. — That it is at the level of the mosque's ground. (T)

When this collected dust, which is on the mosque ground itself (the original mosque), and its connection with the mosque has not yet been completely severed, wiping muddy feet with it—which is currently a consideration—is not disliked (makruh), then this dust which was on the mosque wall (which is a subsidiary part of the mosque and under the same ruling) and which has been completely detached from the mosque wall by sticking to the hands, how could rubbing it on the face and hands be disliked, especially since it does not even constitute 'use' at present?

Second: The wall of the mosque is an endowment (waqf), and an endowment can only be utilized for the purpose it was intended for. Using it for any other purpose is forbidden, especially in the case of a mosque, whose matters are even more restricted than general endowments. Tayammum (dry ablution) is a different use, as mosque walls are not constructed for this purpose. Perhaps in the mind of Gangohi, there exists the same false analogy with water, which he mentioned along with ablution in the mosque. It is not unlikely for such lowly minds and deficient intellects that even this doubt might arise, which is more corrupt than the first: that whatever action tayammum involves is performed on one's own face and hands; it merely involves touching or placing hands on the wall, and this would not be considered an action upon the wall itself. Otherwise, it would not only be disliked but forbidden. Not just the mosque wall, but any endowed wall, an orphan's wall, or a minor's wall—indeed, any private wall without the owner's permission—performing tayammum or even touching it with a hand or finger or leaning one's back against it would all be forbidden. No one would claim such a thing except an extreme ignoramus. Touching a wall involves no expense, whereas a lamp incurs the cost of oil and wicks. Yet, using the mosque lamp, lit for the mosque, for reading a letter, viewing a book, or teaching/learning a lesson is undoubtedly permissible. It is stated in Fatawa Khaniya and Fatawa Hindiyya:

If a person wants to study a book by the mosque's lamp: | If someone wants to study a book's lesson by the mosque's lamp: If the lamp of the mosque was placed in the mosque for prayer, it was said | If the mosque lamp is kept inside for prayer, there is no harm in it. And if it was placed in the mosque not for prayer, such that | it is said there is no harm in it. And if it is not kept for prayer inside, such that the people

finished their prayers and went to their homes and the lamp remained | people have finished their prayers and gone to their homes and the lamp remained in the mosque, they (the scholars) said there is no harm in studying with it until | in the mosque, the scholars have said that there is no harm in giving lessons a third of the night, but not beyond the third. | from it until one-third of the night, and beyond one-third [it is not permitted].

---

1 Fatawa Qazikhan, Section on the Mosque, Naval Kishore Press, Lucknow, 1/311

फ़तावा रज़विया खंड 3

[अरबी वाक्यांश]: क्योंकि वह मस्जिद की ज़मीन के दर्जे में है। — कि वह ज़मीन मस्जिद ही के दर्जे में है। (त)

जब यह एकत्रित धूल, जो स्वयं मस्जिद की ज़मीन पर है जो मूल मस्जिद है, और जिसका मस्जिद से संबंध अभी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है, उससे कीचड़ वाले पैरों को पोंछना—जो वर्तमान में एक विचार है—मकरूह (नापसंद) नहीं हुआ, तो यह धूल जो मस्जिद की दीवार पर थी जो मस्जिद की शाखा है और मस्जिद के हुक्म में है, और जो हाथों में लगकर दीवार से पूरी तरह अलग हो गई, उसे मुँह और हाथों पर फेरना—जबकि वह वर्तमान में 'उपयोग' का कारण भी नहीं है—तो मकरूह कैसे हो सकता है?

दूसरा: मस्जिद की दीवार वक़्फ़ है, और वक़्फ़ को केवल उसी उद्देश्य के लिए उपयोग में लाया जा सकता है जिसके लिए उसे वक़्फ़ किया गया है। उसे किसी अन्य कार्य में लाना वर्जित है, विशेष रूप से मस्जिद के मामले में, जिसका मामला सामान्य औक़ाफ़ की तुलना में अधिक प्रतिबंधित है। तयम्मुम (मिट्टी से वज़ू) एक अन्य कार्य है क्योंकि मस्जिद की दीवारें इस उद्देश्य के लिए नहीं बनाई जाती हैं। शायद गंगोही के विचार में वही पानी पर गलत सादृश्य (क़यास) होगा जिसे उन्होंने मस्जिद में वज़ू के साथ उल्लेख किया था। ऐसे नीच मस्तिष्क और अधूरी बुद्धियों से यह संदेह होना अस्वाभाविक नहीं है, जो पहले वाले से भी अधिक भ्रष्ट है: कि तयम्मुम जो कुछ भी प्रक्रिया है वह अपने चेहरे और हाथों पर है; दीवार से केवल छूने या हाथ लगाने का संबंध होगा, इसे दीवार पर कोई प्रक्रिया नहीं कहा जाएगा। अन्यथा, यह न केवल मकरूह होता, बल्कि हराम (वर्जित) होता। और न केवल मस्जिद की दीवार, बल्कि हर वक़्फ़ की दीवार, अनाथ की दीवार, या किसी नाबालिग की दीवार—यहाँ तक कि मालिक की अनुमति के बिना किसी भी निजी दीवार—से तयम्मुम करना, उस पर हाथ लगाना, उँगली से छूना या उससे पीठ टिकाना सब हराम होता। कोई भी ऐसा नहीं कहेगा सिवाय एक घोर अज्ञानी के। हाथ लगाने से दीवार का कुछ खर्च नहीं होता, जबकि चिराग में तेल और बत्ती का खर्च होता है। फिर भी मस्जिद के चिराग से, जो मस्जिद के लिए रोशन है, पत्र पढ़ना, किताब देखना या पाठ पढ़ना-पढ़ाना निस्संदेह जायज़ है। फ़तावा खानिया और फ़तावा हिंदिया में उल्लेख है:

यदि कोई व्यक्ति मस्जिद के चिराग से किताब पढ़ना चाहता है: | यदि कोई व्यक्ति मस्जिद के चिराग से किसी किताब का पाठ पढ़ना चाहे: यदि मस्जिद का चिराग नमाज़ के लिए मस्जिद में रखा गया था, तो कहा गया है | यदि मस्जिद का चिराग मस्जिद के अंदर नमाज़ के लिए रखा गया है, कि इसमें कोई हर्ज नहीं है। और यदि वह नमाज़ के लिए नहीं रखा गया था, जैसे कि | तो कहा गया कि इसमें कोई हर्ज नहीं है। और यदि उसे नमाज़ के लिए अंदर नहीं रखा गया है, जब लोग अपनी नमाज़ पूरी करके अपने घरों को चले गए और चिराग मस्जिद में | इस प्रकार कि लोग अपनी नमाज़ से फ़ारिग होकर घरों को चले गए और चिराग रह गया, तो (विद्वानों ने) कहा है कि रात की एक तिहाई तक इससे अध्ययन करने | मस्जिद में रह गया, तो उलेमा ने फ़रमाया है कि रात की एक तिहाई तक इससे सबक में कोई बुराई नहीं है, लेकिन एक तिहाई से अधिक में। | देने में कोई हर्ज नहीं है और एक तिहाई से ज़्यादा में।

---

1 फ़तावा क़ाज़ीखान, मस्जिद पर खंड, नवल किशोर प्रेस, लखनऊ, 1/311 पृष्ठ 740/756

مفروشایکرہ لانہ بمنزلۃ ارض المسجد - کہ وہ زمین مسجد ہی کے درجہ میں ہے۔ (ت)

جب یہ جمع کی ہوئی مٹی کہ خود زمین مسجد پر ہے جو اصل مسجد ہے جس کا تعلق مسجد سے ابھی بالکلیہ منقطع بھی نہ ہوا اس سے کیچڑ کے پاؤں پونچھنا کہ فی الحال تقدیر ہے مکروہ نہ ہوا تو یہ مٹی کہ دیوار مسجد پر تھی جو فرع مسجد اور حکم مسجد میں ہے اور ہاتھوں میں لگ کر دیوار مسجد سے بھی یکسر منقطع ہو گئی، منہ اور ہاتھوں پر پھیرنا کہ فی الحال موجب استعمال بھی نہیں کیونکر مکروہ ہو سکتا ہے۔

دوم: دیوار مسجد وقف ہے اور وقف اسی کام میں لایا جا سکتا ہے جس غرض کے لیے وقف کیا گیا۔ دوسرے کام میں لانا منع ہے خصوصاً مسجد کہ اس کا معاملہ عامہ اوقاف سے بھی تنگ تر ہے اور تیمم دوسرا کام ہے کہ دیوار مسجد اس غرض کے لیے نہیں بنائی جاتی۔ شاید گنگوہی خیال میں تو وہی پانی پر قیاس باطل ہوگا کہ مسجد میں وضو کے ساتھ اسے ذکر کیا اور ایسے اذہان سافلہ وعقول ناقصہ سے کچھ مستبعد نہیں کہ یہ شبہ بھی گزرے جو اوّل سے افسد ہے تیمم جو کچھ تصرف ہے اپنے چہرہ و دست پر ہے دیوار سے صرف چھونے ہاتھ لگانے کا تعلق ہوگا یہ دیوار میں کوئی تصرف نہ کہلائے گا ورنہ مکروہ نہیں، بلکہ حرام ہوتا اور نہ صرف دیوار مسجد بلکہ دیوار ہر وقف بلکہ دیوار یتیم بلکہ ہر نابالغ بلکہ بے اذن مالک ہر دیوار مملوک سے تیمم کرنا بلکہ اس پر ہاتھ لگانا یا انگلی سے چھونا یا دیوار مسجد سے پیٹھ لگانا سب حرام ہوتا اور اس کا قائل نہ ہو گا مگر سخت جاہل، ہاتھ لگانے سے دیوار کا کچھ خرچ نہیں ہوتا چراغ میں تیل بتی کا خرچ ہے

پھر بھی مسجد کے چراغ سے کہ مسجد کے لیے روشن ہے خط پڑھنا یا کتاب دیکھنا یا سبق پڑھنا پڑھانا بلاشبہ روا ہے، فتاویٰ خانیہ و فتاویٰ ہندیہ میں ہے:

ان اراد انسان ان یدرس کتاباً بسراج المسجد ان | اگر کوئی آدمی مسجد کے چراغ سے کسی کتاب کا سبق پڑھنا کان سراج المسجد موضوعاً فی المسجد للصلاۃ قیل | چاہے تو اگر مسجد کا چراغ مسجد کے اندر نماز کے لیے رکھا گیا ہے لاباس بہ و ان کان موضوعاً فی المسجد لالصلاۃ بان | تو کہا گیا کہ اس میں حرج نہیں اور اگر مسجد کے اندر نماز کے لیے فرغ القوم من صلاتھم وذھبوا الی بیوتھم وبقی | نہیں رکھا ہے اس طرح کہ لوگ اپنی نماز سے فارغ ہو کر السراج فی المسجد قالوا لاباس بان یدرس بہ الی | گھروں کو چلے گئے اور چراغ مسجد میں رہ گیا تو علما نے فرمایا ہے ثلث اللیل و فی مازاد علی الثلث | کہ تہائی رات تک اس سے درس دینے میں حرج نہیں اور تہائی سے زیادہ

---

1 فتاویٰ قاضیخان فصل فی المسجد مطبع نولکشور لکھنو ۱/ ۳۱۱ Page 740 of 756

Fatawa Razawiyya Volume Three

"La Yakuna Lahu Haqq at-Tadrees" - He shall not have the right to teach. (T)

Second Strike: Contradiction of Gangohi's assumption in reliable books.

Firstly: The very issue of wiping the feet, which provides clear evidence for the permissibility of performing Tayammum from the mosque wall for three reasons by the ruling of 'Dalalat al-Nass' (textual implication), as its discourse has already passed. (T)

Secondly: It was mentioned in number 142 that if a nocturnal emission occurs in the mosque and one wishes to leave, many elders have given permission to leave immediately without performing Tayammum, while performing Tayammum before leaving was only held as recommended (Mustahabb). This has been asserted and relied upon in 'Dhakheera', 'Huliya', 'Hindiya', 'Tatar Khaniya', 'Khaniya Mojibat al-Ghusl', 'Khazanat al-Muftin', 'Nahr al-Faiq', 'Siraj Wahaj', 'Durr al-Mukhtar', 'Radd al-Muhtar', 'Tahtawi ala Maraqi al-Falah', 'Abu al-Saud', and 'Tahtawi ala al-Durr al-Mukhtar'. It is clear that this Tayammum will likely not be from anything but the wall or the ground of the mosque. If Tayammum from these were disliked (Makruh), then permission would never be given even to avoid a permissible act, let alone be declared recommended. This recommendation by the scholars is a clear refutation of Gangohi's claim of its being disliked.

[Arabic Section with Translation] And for Allah is all praise, and Allah the Exalted knows best. And may Allah the Exalted send blessings, bounty, and peace upon the most generous beloved, the greatest intercessor, the guide of nations to the straight path, and upon his family and companions, the possessors of generosity and nobility. And all praise be to Allah, the Lord of all worlds, for what He has guided and taught. His knowledge, exalted be His status, is most perfect, and His command, glorified be His majesty, is most firm. (T)

(Note: The Chapter of Beliefs has been removed from here; it will be included in the volume on Beliefs).

---

1 Fatawa Qazi Khan, Chapter: A man making his house a mosque etc., printed by Naval Kishore Lucknow, 4/167.

फतावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरा भाग)

"ला यकन लहू हक़त-तदरीस" - उसे पढ़ाने का अधिकार नहीं होगा। (त)

दूसरा प्रहार: विश्वसनीय पुस्तकों में गंगोही की धारणा का विरोध।

पहला: पैरों को पोंछने का यही मसला, जो 'दलालत-अल-नस्स' (पाठ निहितार्थ) के आदेश से तीन कारणों से मस्जिद की दीवार से तयम्मुम की अनुमति पर स्पष्ट प्रमाण है, जैसा कि इसका विवरण पहले आ चुका है। (त)

दूसरा: नंबर 142 में उल्लेख किया गया कि यदि मस्जिद में एहतलाम (स्वप्नदोष) हो जाए और कोई बाहर निकलना चाहे, तो कई बड़े बुजुर्गों ने बिना तयम्मुम किए तुरंत बाहर निकलने की अनुमति दी है, और तयम्मुम करके निकलना केवल मुस्तहब (पसंदीदा) रखा गया है। 'ज़खीरा', 'हुलिया', 'हिन्दिया', 'तातार खानिया', 'खानिया मोजिबातुल गुस्ल', 'खज़ानतुल मुफ़्तीन', 'नहरुल फ़ायिक', 'सिराज वहाज', 'दुर्रे मुख्तार', 'रद्दुल मुहतार', 'तहतवी अला मराकिल फलाह', 'अबू अल-सऊद', और 'तहतवी अला अद-दुर्र अल-मुख्तार' में इसी पर दृढ़ निश्चय और भरोसा जताया गया है। यह स्पष्ट है कि यह तयम्मुम मस्जिद की दीवार या ज़मीन के अलावा और किसी चीज़ से नहीं होगा। यदि इनसे तयम्मुम करना मकरूह (नापसंद) होता, तो किसी जायज़ कार्य से बचने के लिए भी इसकी अनुमति कदापि न दी जाती, मुस्तहब घोषित करना तो दूर की बात है। विद्वानों द्वारा दिया गया यह मुस्तहब होना गंगोही की मकरूहियत का स्पष्ट खंडन है।

[अरबी खंड अनुवाद के साथ] और अल्लाह ही के लिए प्रशंसा है, और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला रहमत, बरकत और सलामती नाज़िल फरमाए सबसे करम वाले महबूब, सबसे बड़े शफीअ (सिफारिश करने वाले), राष्ट्रों को सीधे रास्ते की ओर ले जाने वाले हादी पर, और उनकी आलीशान और सखी (दानवीर) संतान और साथियों पर। और सारे जहाँ के मालिक अल्लाह के लिए प्रशंसा है उस पर जो उसने मार्गदर्शन और शिक्षा प्रदान की। उसकी शान अत्यंत उच्च है और उसका ज्ञान पूर्ण है, और उसकी महिमा अत्यंत गौरवमयी है और उसका आदेश अटल है। (त)

(नोट: बाबुल अकायद (आस्था का अध्याय) को यहाँ से निकाल दिया गया है, इसे अकायद वाली जिल्द में लाया जाएगा)।

---

1 फतावा काज़ी खान, अध्याय: एक व्यक्ति अपने घर को मस्जिद बनाता है आदि, नवल किशोर लखनऊ द्वारा मुद्रित, 4/167।

पृष्ठ 741/756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

لا یکون لہ حق التدریس - میں اسے حق تدریس نہ ہوگا۔ (ت)

ضرب دوم: کتب معتمدہ میں زعم گنگوہی کا خلاف۔

اولاً: یہی پاؤں پونچھنے کا مسئلہ کہ تین وجہ سے بحکم دلالۃ النص دیوار مسجد سے جواز تیمم پر دلیل صاف کما مر تقریرہ (جیسا کہ اس کی تقریر گزر چکی۔ ت)

ثانیاً: نمبر ۱۴۲ میں گزرا کہ مسجد میں احتلام واقع ہو اور نکلنا چاہے تو بہت اکابر نے بے تیمم کیے فوراً نکل جانے کی اجازت دی اور تیمم کرکے نکلنا صرف مستحب رکھا ذخیرہ و حلیہ و ہندیہ و تاتار خانیہ و خانیہ موجبات الغسل و خزانۃ المفتین و نہر الفائق و سراج و ہاج و در مختار و رد المحتار و الطحطاوی علی مراقی الفلاح و ابو السعود و الطحطاوی علی الدر المختار میں اسی پر جزم و اعتماد فرمایا ظاہر ہے کہ یہ تیمم غالباً نہ ہو گا مگر دیوار یا زمین مسجد سے اگر ان سے تیمم مکروہ ہوتا تو ایک امر جائز سے بچنے کے لیے ہر گز اس کی اجازت بھی نہ ہوتی نہ کہ مستحب قرار پاتا یہ استحباب علما کراہت گنگوہی کا صریح دافع ہے۔

ولله الحمد والله تعالی اعلم | اور خدا ہی کے لیے حمد ہے، اور خدائے برتر ہی خوب جانتا ہے وصلی الله تعالی وبارك وسلّم علی الحبیب الاکرم والشفیع الاعظم هادی الامم الی الطریق الامم وآله وصحبه ذوی الجود والکرم | اور اللہ تعالٰی رحمت و برکت و سلامتی نازل فرمائے کریم تر حبیب، عظیم تر شفیع، راہ راست کی طرف امتوں کے ہادی پر، اور جود و کرم والی ان کی آل و اصحاب پر، والحمدلله ربّ العلمین علی مأهدی وعلم وعلمه عز شانه اتم وحکمه جل مجده احکم | اور سارے

جہانوں کے مالک خدا ہی کے لیے حمد ہے اس پر جو اس نے ہدایت و تعلیم فرمائی اور اس شان غالب والے کا علم تام اور اس مجد بزرگی والے کا حکم محکم ہے۔ (ت)

(نوٹ: باب العقائد کو یہاں سے نکال لیا گیا ہے اسے عقائد والی جلد میں لایا جائے گا)

---

1 فتاوٰی قاضی خان باب الرجل یجعل دارہ مسجد ا الخ مطبوعہ نولکشور لکھنؤ ۴/ ۱۶۷

Fatawa Rizvia Volume 3

Sources and References

Name Author Year of Death (Hijri)

1. Al-Ajza fil-Hadith Abd al-Rahman bin Umar bin Muhammad al-Baghdadi known as al-Najas 416
2. Al-Ajnas fil-Furoo' Abu al-Abbas Ahmad bin Muhammad al-Natafi al-Hanafi 446
3. Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar Abdullah bin Mahmud (bin Mawdud) al-Hanafi 683
4. Al-Adab al-Mufrad lil-Bukhari Muhammad bin Ismail al-Bukhari 256
5. Irshad al-Sari Sharh al-Bukhari Shihab al-Din Ahmad bin Muhammad al-Qastalani 923
6. Irshad al-Aql al-Salim Abu Sa'ud Muhammad bin Muhammad al-Imadi 951
7. Al-Arkan al-Arba' Maulana Abdul Ali, Bahr al-Ulum 1225
8. Al-Ashbah wal-Naza'ir Sheikh Zayn al-Din bin Ibrahim bin Nujaym 970
9. Ashi'at al-Lam'at Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlawi 1052
10. Usul al-Bazdawi Ali bin Muhammad al-Bazdawi 482
11. Al-Islah lil-Wiqaya fil-Furoo' Ahmad bin Sulayman bin Kamal Pasha 940
12. Akam al-Marjan fi Ahkam al-Jann Qadi Badr al-Din Muhammad bin Abdullah al-Shibli 769
13. Anfa' al-Wasa'il Qadi Burhan al-Din Ibrahim bin Ali al-Tarsusi al-Hanafi 758
14. Imdad al-Fattah Hasan bin Ammar al-Shurunbulali 1069
15. Anwar al-Aimma al-Shafi'iyya Imam Yusuf al-Ardabili al-Shafi'i 799
16. Al-Idah lil-Wiqaya fil-Furoo' Ahmad bin Sulayman bin Kamal Pasha 940
17. Amali fil-Hadith Abdul Malik bin Muhammad bin Muhammad Bishran 432
18. Al-I'jaz fil-Hadith Ahmad bin Muhammad known as Ibn al-Sunni 364
19. Alqab al-Ruwat Ahmad bin Abd al-Rahman al-Shirazi 407

फ़तावा रज़विया खंड तीन

स्रोत और संदर्भ

नाम लेखक मृत्यु वर्ष हिजरी

1. अल-अज्ज़ा फिल-हदीस अब्दुर रहमान बिन उमर बिन मुहम्मद अल-बग़दादी अल-मारूफ बिल-नज्जास 416
2. अल-अजनास फिल-फ़ुरूह अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद अल-नातीफ़ी अल-हनफ़ी 446
3. अल-इख्तियार शरह अल-मुख्तार अब्दुल्ला बिन महमूद (बिन मौदूद) अल-हनफ़ी 683
4. अल-अदब अल-मुफ़रद लिल-बुखारी मुहम्मद बिन इस्माइल अल-बुखारी 256
5. इरशाद अस-सारी शरह अल-बुखारी शिहाब उद्दीन अहमद बिन मुहम्मद अल-क़स्तलानी 923
6. इरशाद अल-अक़्ल अस-सलीम अबू सऊद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-इमादी 951
7. अल-अरकान अल-अर्बा मौलाना अब्दुल अली, बहरुल उलूम 1225
8. अल-अशबाह वन-नज़ायर शेख ज़ैनुद्दीन बिन इब्राहीम बिन नुजैम 970
9. अशिअतुल लम्आत शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी 1052
10. उसूल अल-बज़दवी अली बिन मुहम्मद अल-बज़दवी 482
11. अल-इस्लाह लिल-विक़ाया फिल-फ़ुरूह अहमद बिन सुलेमान बिन कमाल पाशा 940
12. आकाम अल-मरजान फ़ी अहकाम अल-जान काज़ी बद्रुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-शिब्ली 769
13. अनफ़उल वसाईल काज़ी बुरहानुद्दीन इब्राहीम बिन अली अत-तरसूसी अल-हनफ़ी 758
14. इमदाद अल-फ़त्ताह हसन बिन अम्मार अल-शुरुनबुलाली 1069
15. अनवारुल अइम्माह अश-शाफ़ईया इमाम यूसुफ़ अल-अर्दबीली अश-शाफ़ई 799
16. अल-ईज़ाह लिल-विक़ाया फिल-फ़ुरूह अहमद बिन सुलेमान बिन कमाल पाशा 940
17. अमाली फ़िल-हदीस अब्दुल मलिक बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद बिशरान 432
18. अल-ईजाज़ फ़िल-हदीस अहमद बिन मुहम्मद अल-मारूफ बि-इब्न अस-सुन्नी 364
19. अलक़ाब अर-रुवात अहमद बिन अब्दुर रहमान अश्-शीराज़ी 407

पृष्ठ 743 का 756

فتاوىٰ رضويہ جلد سوم

مآخذ و مراجع

نام مصنف سن وفات ہجرى

١۔ الاجزاء فى الحديث عبدالرحمن بن عمر بن محمد البغدادى المعروف بالنجاس ۴١۶ ٢۔ الاجناس فى الفروع ابوالعباس احمد بن محمد الناطفى الحنفى ۴۴۶ ٣۔ الاختيار شرح المختار عبدالله بن محمود (بن مودود) الحنفى ۶٨٣ ۴۔ الادب المفرد للبخاري محمد بن اسمعيل البخارى ٢۵۶ ۵۔ ارشاد الساري شرح البخاري شہاب الدين احمد بن محمد القسطلانى ٩٢٣ ۶۔ ارشاد العقل السليم ابو سعود محمد بن محمد العمادى ٩۵١ ٧۔ الاركان الاربع مولانا عبدالعلى، بحر العلوم ١٢٢۵ ٨۔ الاشباہ والنظائر شيخ زين الدين بن ابراہيم بن نجيم ٩٧٠ ٩۔ اشعة اللمعات شيخ عبدالحق المحدث الدہلوى ١٠۵٢ ١٠۔ اصول البزدوى على بن محمد البزدوى ۴٨٢ ١١۔ الاصلاح للوقاية فى الفروع احمد بن سليمان بن كمال پاشا ٩۴٠ ١٢۔ آكام المرجان فى احكام الجان قاضى بدرالدين محمد بن عبدالله الشبلى ٧۶٩ ١٣۔ انفع الوسائل قاضى برہان الدين ابراہيم بن على الطرسوسى الحنفى ٧۵٨ ١۴۔ امداد الفتاح حسن بن عمار الشرنبلالى ١٠۶٩ ١۵۔ انوار الائمة الشافعيہ امام يوسف الارديبلى الشافعى ٧٩٩ ١۶۔ الايضاح للوقاية فى الفروع احمد بن سليمان بن كمال پاشا ٩۴٠ ١٧۔ امالى فى الحديث عبدالملک بن محمد بن محمد بشران ۴٣٢ ١٨۔ الايجاز فى الحديث احمد بن محمد المعروف بابن السنى ٣۶۴ ١٩۔ القاب الروات احمد بن عبدالرحمن الشيرازى ۴٠٧

Fatawa Razawiyya Volume Three

Section B 20_ Badā’i‘ al-Sanā’i‘ --- Ala al-Din Abi Bakr bin Mas‘ud al-Kasani --- 587 21_ Al-Hidayah (Bidayat al-Mubtadi) --- ‘Ali bin Abi Bakr al-Marghinani --- 593 22_ Al-Bahr al-Ra’iq --- Shaykh Zayn al-Din bin Ibrahim bin Nujaym --- 970 23_ Al-Burhan Sharh Mawahib al-Rahman --- Ibrahim bin Musa al-Tarabulsi --- 922 24_ Bustan al-Arifin --- Faqih Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi --- 373 25_ Al-Basit fi al-Furu‘ --- Hujjat al-Islam Muhammad bin Muhammad al-Ghazali --- 505 26_ Al-Binayah Sharh al-Hidayah --- Imam Badr al-Din Abu Muhammad al-‘Ayni --- 855

Section T 27_ Taj al-‘Arus --- Sayyid Muhammad Murtada al-Zabidi --- 1205 28_ Tarikh Ibn ‘Asakir --- ‘Ali bin al-Hasan al-Dimashqi bin ‘Asakir --- 571 29_ Tarikh al-Bukhari --- Muhammad bin Isma‘il al-Bukhari --- 256 30_ Al-Tajnis wal-Mazid --- Burhan al-Din ‘Ali bin Abi Bakr al-Marghinani --- 593 31_ Tahrir al-Usul --- Kamal al-Din Muhammad bin ‘Abd al-Wahid bin al-Humam --- 861 32_ Tuhfat al-Fuqaha’ --- Imam ‘Ala’ al-Din Muhammad bin Ahmad al-Samarqandi --- 530 33_ Tahqiq al-Husami --- ‘Abd al-‘Aziz bin Ahmad al-Bukhari --- 730 34_ Al-Tarjih wal-Tashih ‘ala al-Quduri --- ‘Allama Qasim bin Qutlubugha al-Hanafi --- 879 35_ Al-Ta‘rifat lil-Sayyid Sharif --- Sayyid Sharif ‘Ali bin Muhammad al-Jurjani --- 816 36_ Tafsir Ibn Jarir (Jami‘ al-Bayan) --- Muhammad bin Jarir al-Tabari --- 310 37_ Tafsir al-Baydawi --- ‘Abdullah bin ‘Umar al-Baydawi --- 691 38_ Tafsir al-Jalalayn --- ‘Allama Jalal al-Din al-Mahalli & Jalal al-Din al-Suyuti --- 911-8 39_ Tafsir al-Jamal --- Sulayman bin ‘Umar al-‘Ujayli, famously known as al-Jamal --- 1204 40_ Tafsir al-Qurtubi --- Abu ‘Abdullah Muhammad bin Ahmad al-Qurtubi --- 671 41_ Al-Tafsir al-Kabir --- Imam Fakhr al-Din al-Razi --- 606

Page 744 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द सोम (तीसरी)

ब 20_ बदाए अल-सनाए --- अलाउद्दीन अबी बक्र बिन मसूद अल-कासानी --- 587 21_ अल-हिदाया (हिदायतुल मुब्तदी) --- अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी --- 593 22_ अल-बहरुल राइक़ --- शेख़ ज़ैनुद्दीन बिन इब्राहीम बिन नुजैम --- 970 23_ अल-बुरहान शरह मवाहिबुर रहमान --- इब्राहीम बिन मूसा अल-तराबलुसी --- 922 24_ बुस्तानुल आरिफीन --- फ़कीह अबुल लैस नस्र बिन मुहम्मद अल-समरक़ंदी --- 373 25_ अल-बसीत फ़िल फ़ुरूह --- हुज्जतुल इस्लाम मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली --- 505 26_ अल-बिनाया शरह अल-हिदाया --- इमाम बद्रुद्दीन अबू मुहम्मद अल-ऐनी --- 855

त 27_ ताजुल उरूस --- सैयद मुहम्मद मुर्तज़ा अल-ज़ुबैदी --- 1205 28_ तारीख़ इब्ने असाकिर --- अली बिन अल-हसन अद-दमिश्क़ी इब्ने असाकिर --- 571 29_ तारीख़ अल-बुख़ारी --- मुहम्मद बिन इसमाईल अल-बुख़ारी --- 256 30_ अत-तजनीस वल-मज़ीद --- बुरहानुद्दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी --- 593 31_ तहरीरुल उसूल --- कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद बिन अल-हुमाम --- 861 32_ तुहफ़तुल फ़ुक़हा --- इमाम अलाउद्दीन मुहम्मद बिन अहमद अल-समरक़ंदी --- 530 33_ तहक़ीक़ुल हुसामी --- अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद अल-बुख़ारी --- 730 34_ अत-तरजीह वत-तसहीह अलल क़ुदूरी --- अल्लामा क़ासिम बिन क़ुतलुबग़ा अल-हनफ़ी --- 879 35_ अत-तारीफ़ात लिस-सैयद शरीफ़ --- सैयद शरीफ़ अली बिन मुहम्मद अल-जुरजानी --- 816 36_ तफ़्सीर इब्ने जरीर (जामेउल बयान) --- मुहम्मद बिन जरीर अत-तबरी --- 310 37_ तफ़्सीर अल-बैज़ावी --- अब्दुल्लाह बिन उमर अल-बैज़ावी --- 691 38_ तफ़्सीर अल-जलालैन --- अल्लामा जलालुद्दीन अल-महल्ली और जलालुद्दीन अस-सुयूती --- 911-8 39_ तफ़्सीर अल-जमल --- सुलेमान बिन उमर अल-उजैली मशहूर बज-जमल --- 1204 40_ तफ़्सीर अल-क़ुरतुबी --- अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अल-क़ुरतुबी --- 671 41_ अत-तफ़्सीरुल कबीर --- इमाम फ़ख़रुद्दीन अर-राज़ी --- 606

جلد سوم فتاوىٰ رضويہ

ب ٢٠_ بدائع الصنائع --- علاء الدين ابى بكر بن مسعود الكاسانى --- ٥٨٧ ٢١_ الهداية (بداية المبتدى) --- على بن ابى بكر المرغينانى --- ٥٩٣ ٢٢_ البحر الرائق --- شيخ زين الدين بن ابراہيم بابن نجيم --- ٩٧٠ ٢٣_ البرہان شرح مواہب الرحمان --- ابراہيم بن موسىٰ الطرابلسى --- ٩٢٢ ٢٤_ بستان العارفين --- فقيہ ابواللیث نصر بن محمد السمرقندى --- ٣٧٣ ٢٥_ البسيط فى الفروع --- حجۃ الاسلام محمد بن محمد الغزالى --- ٥٠٥ ٢٦_ البناية شرح الهداية --- امام بدر الدين ابومحمد العينى --- ٨٥٥

ت ٢٧_ تاج العروس --- سيد محمد مرتضىٰ الزبيدى --- ١٢٠٥ ٢٨_ تاريخ ابن عساكر --- على بن الحسن الدمشقى بابن عساكر --- ٥٧١ ٢٩_ تاريخ البخارى --- محمد بن اسمعيل البخارى --- ٢٥٦ ٣٠_ التجنيس والمزيد --- برہان الدين على بن ابى بكر المرغينانى --- ٥٩٣ ٣١_ تحرير الاصول --- كمال الدين محمد بن عبدالواحد بن الہمام --- ٨٦١ ٣٢_ تحفة الفقهاء --- امام علاء الدين محمد بن احمد السمرقندى --- ٥٣٠ ٣٣_ تحقيق الحسامي --- عبدالعزيز بن احمد البخارى --- ٧٣٠ ٣٤_ الترجيح والتصحيح على القدورى --- علامہ قاسم بن قطلوبغا الحنفى --- ٨٧٩ ٣٥_ التعريفات لسيد شريف --- سيد شريف على بن محمد الجرجانى --- ٨١٦ ٣٦_ تفسير ابن جرير (جامع البيان) --- محمد بن جرير الطبرى --- ٣١٠ ٣٧_ تفسير البيضاوى --- عبدالله بن عمر البيضاوى --- ٦٩١ ٣٨_ تفسير الجلالين --- علامہ جلال الدين المحلى وجلال الدين السيوطى --- ٩١١_٨ ٣٩_ تفسير الجمل --- سليمان بن عمر العجيلى الشہير بالجمل --- ١٢٠٤ ٤٠_ تفسير القرطبى --- ابو عبدالله محمد بن احمد القرطبى --- ٦٧١ ٤١_ التفسير الكبير --- امام فخر الدين الرازى --- ٦٠٦

Fatawa Razawiyya Volume Three

1. Al-Tafsir li-Nishapuri - Nizam al-Din al-Hasan bin Muhammad bin Husayn al-Nishapuri - 728
2. Taqrib al-Qarib - Abu Zakariyya Yahya bin Sharaf al-Nawawi - 911
3. Al-Tahrir wa al-Ta'bir - Muhammad bin Muhammad ibn Amir al-Hajj al-Halabi - 879
4. Al-Taysir lil-Munawi - Abd al-Ra'uf al-Munawi - 1031
5. Tabyin al-Haqa'iq - Fakhr al-Din 'Uthman bin 'Ali al-Zayla'i - 724
6. Taqrib al-Tahdhib - Shihab al-Din Ahmad bin 'Ali ibn Hajar al-'Asqalani - 852
7. Tanwir al-Miqyas - Abu Tahir Muhammad bin Ya'qub al-Fayruzabadi - 817
8. Tanwir al-Absar - Shams al-Din Muhammad bin 'Abd Allah bin Ahmad al-Timirtashi - 1004
9. Ta'zim al-Salat - Muhammad bin Nasr al-Marwazi - 294
10. Tarikh Baghdad - Abu Bakr Ahmad bin 'Ali al-Khatib al-Baghdadi - 463
11. Al-Tawshih fi Sharh al-Hidayah - Umar bin al-Haq al-Siraj al-Hindi - 773

[Section Jim]

1. Jami' al-Tirmidhi - Abu 'Isa Muhammad bin 'Isa al-Tirmidhi - 279
2. Jami' al-Rumuz - Shams al-Din Muhammad al-Khurasani - 962
3. Al-Jami' al-Sahih lil-Bukhari - Imam Muhammad bin Isma'il al-Bukhari - 256
4. Al-Jami' al-Saghir fi al-Fiqh - Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani - 189
5. Al-Jami' al-Sahih li-Muslim - Muslim bin Hajjaj al-Qushayri - 261
6. Jami' al-Fiqh (Jawami' al-Fiqh) - Abu Nasr Ahmad bin Muhammad al-'Attabi - 586
7. Jami' al-Fusulayn - Shaykh Badr al-Din Mahmud bin Isra'il ibn Qadi - 823
8. Al-Jami' al-Kabir - Abi al-Hasan 'Ubayd Allah bin Husayn al-Karkhi - 340
9. Jawahir al-Ikhlati - Burhan al-Din Ibrahim bin Abu Bakr al-Ikhlati - .
10. Al-Jawahir al-Zakiyyah - Ahmad bin Turki bin Ahmad al-Maliki - 989
11. Jawahir al-Fatawa - Rukn al-Din Abu Bakr bin Muhammad bin Abi al-Mafakhir - 565
12. Al-Jawharat al-Nayyirah - Abu Bakr bin 'Ali bin Muhammad al-Haddad al-Yamani - 800
13. Al-Jarh wa al-Ta'dil fi Rijal al-Hadith - Yahya bin Ma'in al-Baghdadi - 233
14. Al-Jami' al-Saghir fi al-Hadith - Allamah Jalal al-Din 'Abd al-Rahman bin Abi Bakr al-Suyuti - 911

फ़तावा रज़विया जिल्द तीसरा

1. अत-तफ़्सीर लिन-निशापुरी - निज़ाम उद-दीन अल-हसन बिन मुहम्मद बिन हुसैन अन-निशापुरी - 728
2. तक़रीब अल-क़रीब - अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अन-नवावी - 911
3. अत-तहरीर वत-तअबीर - मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अमीर अल-हाज्ज अल-हलबी - 879
4. अत-तयसीर लिल-मुनावी - अब्द अर-रऊफ़ अल-मुनावी - 1031
5. तबीन अल-हक़ा'इक़ - फ़ख़्र उद-दीन उस्मान बिन अली अज़-ज़ैला'ई - 724
6. तक़रीब अत-तहज़ीब - शिहाब उद-दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी - 852
7. तनवीर अल-मिक़यास - अबू ताहिर मुहम्मद बिन यअक़ूब अल-फ़ैरूज़ाबादी - 817
8. तनवीर अल-अमसार - शम्स उद-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अहमद अत-तिमिरताशी - 1004
9. तअज़ीम अस-सलात - मुहम्मद बिन नस्र अल-मरवाज़ी - 294
10. तारीख़ बग़दाद - अबू बक्र अहमद बिन अली अल-ख़तीब अल-बग़दादी - 463
11. अत-तौशीह फ़ी शरह अल-हिदाया - उमर बिन अल-हक़ अस-सिराज अल-हिन्दी - 773

[भाग जीम]

1. जामिए अतर-तिर्मिज़ी - अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा अतर-तिर्मिज़ी - 279
2. जामिए अर-रुमूज़ - शम्स उद-दीन मुहम्मद अल-ख़ुरासानी - 962
3. अल-जामिए अस-सहीह लिल-बुखारी - इमाम मुहम्मद बिन इसमाईल अल-बुखारी - 256
4. अल-जामिए अस-सगीर फ़िल-फ़िक़्ह - इमाम मुहम्मद बिन हसन अश्-शैबानी - 189
5. अल-जामिए अस-सहीह लि-मुस्लिम - मुस्लिम बिन हज्जाज अल-कुशायरी - 261
6. जामिए अल-फ़िक़्ह (जवामिए अल-फ़िक़्ह) - अबू नस्र अहमद बिन मुहम्मद अल-अत्ताबी - 586
7. जामिए अल-फ़ुसुलैन - शैख़ बद्र उद-दीन महमूद बिन इसरा'ईल इब्न क़ाज़ी - 823
8. अल-जामिए अल-कबीर - अबी अल-हसन उबैदुल्लाह बिन हुसैन अल-करख़ी - 340
9. जवाहर अल-इख्लाती - बुरहान उद-दीन इब्राहिम बिन अबू बक्र अल-इख्लाती - .
10. अल-जवाहिर अज़-ज़किया - अहमद बिन तुर्की बिन अहमद अल-मालिकी - 989
11. जवाहर अल-फ़तावा - रुकन उद-दीन अबू बक्र बिन मुहम्मद बिन अबी अल-मफ़ाख़िर - 565

12. अल-जौहरा अन-नय्यारा - अबू बक्र बिन अली बिन मुहम्मद अल-हद्दाद अल-यमनी - 800
13. अल-जरह वत-तअदील फ़ी रिजाल अल-हदीस - यहया बिन मईन अल-बग़दादी - 233
14. अल-जामिए अस-सगीर फ़िल-हदीस - अल्लामा जलाल उद-दीन अब्द अर-रहमान बिन अबी बक्र अस-सुयूती - 911

فتاویٰ رضویہ جلد سوم

۴۲۔ التفسیر لنیشاپوری - نظام الدین الحسن بن محمد بن حسین النیشاپوری - ۷۲۸ ۴۳۔ تقریب القریب - ابوزکریا یحییٰ بن شرف النووی - ۹۱۱ ۴۴۔ التحریر والتعبیر - محمد بن محمد ابن امیر الحاج الحلبی - ۸۷۹ ۴۵۔ التیسیر للمناوی - عبدالرؤف المناوی - ۱۰۳۱ ۴۶۔ تبیین الحقائق - فخر الدین عثمان بن علی الزیلعی - ۷۲۴ ۴۷۔ تقریب التھذیب - شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی - ۸۵۲ ۴۸۔ تنویر المقیاس - ابوطاہر محمد بن یعقوب الفیروزآبادی - ۸۱۷ ۴۹۔ تنویر الابصار - شمس الدین محمد بن عبداللہ بن احمد التمرتاشی - ۱۰۰۴ ۵۰۔ تعظیم الصلوٰۃ - محمد بن نصر المروزی - ۲۹۴ ۵۱۔ تاریخ بغداد - ابوبکر احمد بن علی الخطیب البغدادی - ۴۶۳ ۵۲۔ التوشیح فی شرح الھدایۃ - عمر بن الحق السراج الھندی - ۷۷۳

ج

۵۳۔ جامع الترمذی - ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی - ۲۷۹ ۵۴۔ جامع الرموز - شمس الدین محمد الخراسانی - ۹۶۲ ۵۵۔ الجامع الصحیح للبخاری - امام محمد بن اسمعیل البخاری - ۲۵۶ ۵۶۔ الجامع الصغیر فی الفقہ - امام محمد بن حسن الشیبانی - ۱۸۹ ۵۷۔ الجامع الصحیح لمسلم - مسلم بن حجاج القشیری - ۲۶۱ ۵۸۔ جامع الفقہ (جوامع الفقہ) - ابونصر احمد بن محمد العتابی - ۵۸۶ ۵۹۔ جامع الفصولین - شیخ بدرالدین محمود بن اسرائیل بابن قاضی - ۸۲۳ ۶۰۔ الجامع الکبیر - ابی الحسن عبید اللہ بن حسین الکرخی - ۳۴۰ ۶۱۔ جواہر الاخلاطی - برہان الدین ابراھیم بن ابوبکر الاخلاطی - . ۶۲۔ الجواہر الزکیۃ - احمد بن ترکی بن احمد المالکی - ۹۸۹ ۶۳۔ جواہر الفتاویٰ - رکن الدین ابوبکر بن محمد بن ابی المفاخر - ۵۶۵ ۶۴۔ الجوہرۃ النیرۃ - ابوبکر بن علی بن محمد الحداد الیمنی - ۸۰۰

۶۵۔ الجرح والتعدیل فی رجال الحدیث - یحییٰ بن معین البغدادی - ۲۳۳ ۶۶۔ الجامع الصغیر فی الحدیث - علامہ جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر السیوطی - ۹۱۱

Volume 3 Fatawa Rizvia

H (ح) - 67. Hashiya ala al-Durar | Muhammad bin Mustafa Abu Said al-Khadimi | 1176 - 68. Hashiya Ibn Shalabi ala al-Tabyin | Ahmad bin Muhammad al-Shalabi | 1021 - 69. Hashiya ala al-Durar | Abdul Halim bin Muhammad al-Rumi | 1013 - 70. Hashiya ala al-Durar li Mulla Khusrow | Qazi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusrow | 885 - 71. Hashiya ala al-Muqaddimah al-Ashmawiyyah | Allamah Safati | - - 72. Al-Hashiyah li Sa'di Efendi | Sa'dullah bin Isa al-Efendi | 945 - 73. Al-Hadiqah al-Nadiyyah Sharh Tariqah Muhammadiyyah | Abdul Ghani al-Nabulsi | 1143 - 74. Al-Hawi al-Qudsi | Qazi Jamal al-Din Ahmad bin Muhammad Nuh al-Qabisi al-Hanafi | 600 - 75. Hasr al-Masail fil Furu' | Imam Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi al-Hanafi | 372 - 76. Hilyat al-Awliya | Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah al-Asbahani | 430 - 77. Hilyat al-Mujalli | Muhammad bin Muhammad Ibn Amir al-Hajj | 879

KH (خ) - 78. Khizanat al-Riwayat | Qazi Jakan al-Hanafi | - - 79. Khizanat al-Fatawa | Tahir bin Ahmad Abdul Rashid al-Bukhari | 542 - 80. Khizanat al-Muftin | Husayn bin Muhammad al-Sam'ani al-Samiqani | After 740 - 81. Khulasat al-Dala'il | Husam al-Din Ali bin Ahmad al-Makki al-Razi | 598 - 82. Khulasat al-Fatawa | Tahir bin Ahmad Abdul Rashid al-Bukhari | 542 - 83. Khayrat al-Hissan | Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki | 973

D (د) - 84. Al-Dirayah fi Takhrij Ahadith al-Hidayah | Shihab al-Din Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani | 852 - 85. Al-Durar (Durar al-Hukkam) | Qazi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusrow | 885 - 86. Al-Durr al-Mukhtar | Ala al-Din al-Haskafi | 1088 - 87. Al-Durr al-Nathir | Allamah Jalal al-Din Abd al-Rahman al-Suyuti | 911

Page 746 of 756

जिल्द सोम (खंड 3) फ़तावा रिज़विया

ह (ح) - ६७. हाशिया अला अद-दुरर | मुहम्मद बिन मुस्तफ़ा अबू सईद अल-खादिमी | ११७६ - ६८. हाशिया इब्न शलबी अला अत-तब्बीन | अहमद बिन मुहम्मद अल-शलबी | १०२१ - ६९. हाशिया अला अद-दुरर | अब्दुल हलीम बिन मुहम्मद अर-रूमी | १०१३ - ७०. हाशिया अला अद-दुरर ली मुल्ला खुसरो | काज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरो | ८८५ - ७१. हाशिया अला अल-मुक़द्दमा अल-अशमाविया | अल्लामा सफ़ती | - - ७२. अल-हाशिया ली सादी अफ़ंदी | सादुल्लाह बिन ईसा अल-अफ़ंदी | ९४५ - ७३. अल-हद्दीक़ा अन-नदीया शरह तरीक़ा मुहम्मदिया | अब्दुल ग़नी अन-नाबुलसी | ११४३ - ७४. अल-हावी अल-कुदसी | काज़ी जमालुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद नूह अल-क़ाबिसी अल-हनफ़ी | ६०० - ७५. हस्र अल-मसाइल फ़िल फ़ुरू | इमाम अबुल लैस नस्र बिन मुहम्मद अस-समरकंदी अल-हनफ़ी | ३७२ - ७६. हिलियत अल-औलिया | अबू नईम अहमद बिन अब्दुल्लाह अल-असबहानी | ४३० - ७७. हिलियत अल-मुजल्ली | मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अमीर अल-हाज | ८७९

ख (خ) - ७८. खिज़ानत अर-रिवायात | काज़ी जकन अल-हनफ़ी | - - ७९. खिज़ानत अल-फ़तावा | ताहिर बिन अहमद अब्दुल रशीद अल-बुखारी | ५४२ - ८०. खिज़ानत अल-मुफ़्तीन | हुसैन बिन मुहम्मद अस-समानी अस-समीक़ानी | ७४० के बाद - ८१. खुलासात अद-दलाईल | हुसामुद्दीन अली बिन अहमद अल-मक्की अर-राज़ी | ५९८ - ८२. खुलासात अल-फ़तावा | ताहिर बिन अहमद अब्दुल रशीद अल-बुखारी | ५४२ - ८३. खैरत अल-हिसान | शिहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की | ९७३

द (د) - ८४. अद-दिराया फ़ी तख़रीज अहादीस अल-हिदाया | शिहाबुद्दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी | ८५२ - ८५. अद-दुरर (दुरर अल-हुक्काम) | काज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरो | ८८५ - ८६. अद-दुर्र अल-मुख्तार | अलाउद्दीन अल-हस्कफ़ी | १०८८ - ८७. अद-दुर्र अन-नज़ीर | अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर रहमान अस-सुयूती | ९११

पेज ७४६/७५६

جلد سوم فتاوٰی رضویہ

ح - ۶۷ حاشیہ علی الدرر | محمد بن مصطفٰی ابو سعید الخادمی | ۱۱۷۶ - ۶۸ حاشیہ ابن شلبی علی التبیین | احمد بن محمد الشلبی | ۱۰۲۱ - ۶۹ حاشیہ علی الدرر | عبدالحلیم بن محمد الرومی | ۱۰۱۳ - ۷۰ حاشیہ علی الدرر لملا خسرو | قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو | ۸۸۵ - ۷۱ حاشیہ علی المقدمة العشماوية | علامہ سفطی | - - ۷۲ الحاشية لسعدی آفندی | سعد الله بن عیسٰی الآفندی | ۹۴۵ - ۷۳ الحديقة الندية شرح طريقة محمدية | عبدالغنی النابلسی | ۱۱۴۳ - ۷۴ الحاوی القدسی | قاضی جمال الدین احمد بن محمد نوح القابسی الحنفی | ۶۰۰ - ۷۵ حصر المسائل فی الفروع | امام ابو الیث نصر بن محمد السمر قندی الحنفی | ۳۷۲ - ۷۶ حلیة الاولیاء | ابو نعیم احمد بن عبدالله الاصبانی | ۴۳۰ - ۷۷ حلیة المجلی | محمد بن محمد ابن امیر الحاج | ۸۷۹

خ - ۷۸ خزانة الروايات | قاضی جکن الحنفی | - - ۷۹ خزانة الفتاوی | طاہر بن احمد عبدالرشید البخاری | ۵۴۲ - ۸۰ خزانة المفتين | حسين بن محمد السمعانی السمیقانی | ۷۴۰ کے بعد - ۸۱ خلاصة الدلائل | حسام الدین علی بن احمد المکی الرازی | ۵۹۸ - ۸۲ خلاصة الفتاوی | طاہر بن احمد عبدالرشید البخاری | ۵۴۲ - ۸۳ خیرات الحسان | شہاب الدین احمد بن حجر المکی | ۹۷۳

د - ۸۴ الدراية فی تخريج احاديث الهداية | شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی | ۸۵۲ - ۸۵ الدرر (درر الحکام) | قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو | ۸۸۵ - ۸۶ الدر المختار | علاء الدین الحصفکی | ۱۰۸۸ - ۸۷ الدر النثير | علامہ جلال الدین عبد الرحمن السیوطی | ۹۱۱

صفحہ ۷۴۶ از ۷۵۶

Fatawa Rizvia, Volume 3

ذ (Zal) 88- Zakheeratul Uqba -> Yusuf bin Junaid al-Halabi (Chalapi) -> 905 89- Zakheeratul Fatawa -> Burhanuddin Mahmud bin Ahmad -> 616 90- Dhamm al-Ghibah -> Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Qurashi -> 281

ر (Ra) 91- Al-Rahmaniyyah 92- Radd al-Muhtar -> Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami -> 1252 93- Rahmat al-Ummah fi Ikhtilaf al-A'immah -> Abu Abdullah Muhammad bin Abdurrahman al-Dimashqi -> 781 94- Ragha'ib al-Qur'an -> Abu Marwan Abdul Malik bin Habib al-Sulami (al-Qurtubi) -> 239 95- Raf' al-Ghasha fi Waqt al-Asr wal-Isha -> Sheikh Zainuddin ibn Nujaym -> 970 96- Radd ala al-Jahmiyyah -> Uthman bin Said al-Darami -> 280

ز (Za) 97- Zad al-Fuqaha -> Sheikh al-Islam Muhammad bin Ahmad al-Asbijabi (Died late 6th Century) -> 861 98- Zad al-Faqir -> Kamaluddin Muhammad bin Abdul Wahid known as Ibn al-Humam 99- Zawahir al-Jawahir -> Muhammad bin Muhammad al-Tamartashi -> Approximately 1016 100- Ziyadat -> Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani -> 189

س (Sin) 101- Al-Siraj al-Wahhaj -> Abu Bakr bin Ali bin Muhammad al-Haddad al-Yamani -> 800 102- Al-Sunan li Ibn Majah -> Abu Abdullah Muhammad bin Yazid Ibn Majah -> 273 103- Al-Sunan li Ibn Mansur -> Saeed bin Mansur al-Khorasani -> 273 104- Al-Sunan li Abi Dawud -> Abu Dawud Sulayman bin Ash'ath -> 275 105- Al-Sunan li al-Nasa'i -> Abu Abdurrahman Ahmad bin Shu'ayb al-Nasa'i -> 303 106- Al-Sunan li al-Bayhaqi -> Abu Bakr Ahmad bin Husayn bin Ali al-Bayhaqi -> 458

Page 747 of 756

फतावा रज़विया, खंड 3

ذ (ज़ाल) 88- ज़ख़ीरतुल उकबा -> यूसुफ बिन जुनैद अल-हलबी (चलपी) -> 905 89- ज़ख़ीरतुल फ़तावा -> बुरहानुद्दीन महमूद बिन अहमद -> 616 90- धम्म अल-ग़ीबा -> अब्दुल्ला बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुन्या अल-कुरैशी -> 281

ر (रे) 91- अल-रहमानियाह 92- रद अल-मुह्तार -> मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शमी -> 1252 93- रहमत अल-उम्माह फी इख्तिलाफ अल-आइम्माह -> अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अल-दिमश्की -> 781 94- रगाइब अल-कुरान -> अबू मरवान अब्दुल मलिक बिन हबीब अल-सुलमी (अल-कुर्तुबी) -> 239 95- रफ़ अल-ग़शा फी वक़्त अल-अस्र वल-ईशा -> शेख ज़ैनुद्दीन इब्न नुजैम -> 970 96- रद अला अल-जहमियाह -> उस्मान बिन सईद अल-दारमी -> 280

ز (ज़े) 97- ज़ाद अल-फुक़हा -> शेख अल-इस्लाम मुहम्मद बिन अहमद अल-असबीजाबी (छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में मृत्यु) -> 861 98- ज़ाद अल-फक़ीर -> कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद, जिन्हें इब्न अल-हुमाम के नाम से जाना जाता है 99- ज़वाहिर अल-जवाहर -> मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-तमरताशी -> लगभग 1016 100- ज़ियादात -> इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शयबानी -> 189

س (सीन) 101- अल-सिराज अल-वहाज -> अबू बक्र बिन अली बिन मुहम्मद अल-हद्दाद अल-यमनी -> 800 102- अस-सुनन ली इब्न माजाह -> अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन यज़ीद इब्न माजाह -> 273 103- अस-सुनन ली इब्न मंसूर -> सईद बिन मंसूर अल-खुरासानी -> 273 104- अस-सुनन ली अबी दाऊद -> अबू दाऊद सुलेमान बिन अशअत -> 275 105- अस-सुनन ली अन-नसाई -> अबू अब्दुर्रहमान अहमद बिन शुऐब अल-नसाई -> 303 106- अस-सुनन ली अल-बैहकी -> अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बिन अली अल-बैहकी -> 458

पृष्ठ 747 / 756

ذ ۸۸- ذخیرة العقبیٰ -> یوسف بن جنید الحلبی (چلپی) -> ۹۰۵ ۸۹- ذخیرة الفتاویٰ -> برہان الدین محمود بن احمد -> ۶۱۶ ۹۰- ذم الغیبة -> عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا القرشی -> ۲۸۱

ر ۹۱- الرحمانیة ۹۲- ردالمحتار -> محمد امین ابن عابدین الشامی -> ۱۲۵۲ ۹۳- رحمة الامة فی اختلاف الائمة -> ابو عبداللہ محمد بن عبدالرحمن الدمشقی -> ۷۸۱ ۹۴- رغائب القرآن -> ابو مروان عبدالملک بن حبیب السلمی (القرطبی) -> ۲۳۹ ۹۵- رفع الغشاء فی وقت العصر والعشاء -> شیخ زین الدین ابن نجیم -> ۹۷۰ ۹۶- رد علی الجهمیة -> عثمان بن سعید الدارمی -> ۲۸۰

ز ۹۷- زاد الفقہاء -> شیخ الاسلام محمد بن احمد الاسبیجابی المتوفی اواخر القرن السادس -> ۸۶۱ ۹۸- زاد الفقیر -> کمال الدین محمد بن عبدالواحد المعروف بابن الہمام ۹۹- زواہر الجواہر -> محمد بن محمد التمرتاشی -> تقریباً ۱۰۱۶ ۱۰۰- زیادات -> امام محمد بن حسن الشیبانی -> ۱۸۹

س ۱۰۱- السراج الوہاج -> ابوبکر بن علی بن محمد الحداد الیمنی -> ۸۰۰ ۱۰۲- السنن لابن ماجة -> ابو عبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ -> ۲۷۳ ۱۰۳- السنن لابن منصور -> سعید بن منصور الخراسانی -> ۲۷۳ ۱۰۴- السنن لابی داؤد -> ابوداؤد سلیمان بن اشعث -> ۲۷۵ ۱۰۵- السنن للنسائی -> ابو عبدالرحمن احمد بن شعیب النسائی -> ۳۰۳ ۱۰۶- السنن للبیہقی -> ابوبکر احمد بن حسین بن علی البیہقی -> ۴۵۸

Fatawa Razawiyya Volume Three 107- Al-Sunan al-Daraqutni - Ali Umar al-Daraqutni - 385 108- Al-Sunan al-Darimi - Abdullah bin Abdul Rahman al-Darimi - 255 Sh (Alphabetical Order Section) 109- Al-Shafi - Shams al-A'immah Abdullah bin Mahmud al-Kardari 110- Sharh al-Arba'in li'l-Nawawi - Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki - 973 111- Sharh al-Arba'in li'l-Nawawi - Ibrahim ibn Atiyyah al-Maliki - 1106 112- Sharh al-Arba'in li'l-Nawawi - Allama Ahmad bin al-Hijazi - 978 113- Sharh al-Ashbah wa'l-Naza'ir - Ibrahim bin Husayn bin Ahmad bin Muhammad ibn al-Biri - 1099 114- Sharh al-Jami' al-Saghir - Imam Qadi Khan Husayn bin Mansur - 592 115- Sharh al-Durar - Shaykh Isma'il bin Abdul Ghani al-Nabulsi - 1062 116- Sharh Safar al-Sa'adah - Shaykh Abdul Haqq al-Muhaddith al-Dihlawi - 1052 117- Sharh al-Sunnah - Husayn bin Mansur al-Baghawi - 516 118- Sharh Shir'at al-Islam - Yaqub bin Sidi Ali Zadah - 931 119- Sharh Mukhtasar al-Tahawi li'l-Isbijabi - Abu Nasr Ahmad bin Mansur al-Hanafi al-Isbijabi - 480 120- Sharh al-Gharibayn 121- Sharh al-Muslim li'l-Nawawi - Shaykh Abu Zakariyya Yahya bin Sharaf al-Nawawi - 676 122- Sharh Ma'ani al-Athar - Abu Ja'far Ahmad bin Muhammad al-Tahawi - 321 123- Sharh al-Manzumah li-ibn Wahban - Abdul Barr bin Muhammad ibn Shihnah - 921 124- Sharh al-Manzumah fi Rasm al-Mufti - Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami - 1252 125- Sharh al-Munyat al-Saghir - Shaykh Muhammad Ibrahim al-Halabi - 956 126- Sharh Mawahib al-Ladunniyyah - Allama Muhammad bin Abdul Baqi al-Zurqani - 1122 127- Sharh Muwatta Imam Malik - Allama Muhammad bin Abdul Baqi al-Zurqani - 1122 128- Sharh al-Muhadhdhab li'l-Nawawi - Shaykh Abu Zakariyya Yahya bin Sharaf al-Nawawi - 676 129- Sharh al-Nuqayah - Maulana Abdul Ali al-Barjandi - 932 130- Sharh al-Wiqayah - Sadr al-Shari'ah Abdullah bin Mas'ud - 747 Page 748 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द तीन 107- अस-सुनन लि-दाराक़ुत्नी - अली उमर अल-दाराक़ुत्नी - 385 108- अस-सुनन लि-दारिमी - अब्दुल्ला बिन अब्दुल रहमान अद-दारिमी - 255 श (वर्णमाला अनुभाग) 109- अश्-शाफ़ी - शम्स अल-आइम्मा अब्दुल्ला बिन महमूद अल-करदरी 110- शरह अल-अरबईन लिल्-नवावी - शिहाब अल-दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की - 973 111- शरह अल-अरबईन लिल्-नवावी - इब्राहिम इब्न अतिया अल-मालिकी - 1106 112- शरह अल-अरबईन लिल्-नवावी - अल्लामा अहमद बिन अल-हिजाज़ी - 978 113- शरह अल-अश्बाह वल-नज़ीर - इब्राहिम बिन हुसैन बिन अहमद बिन मुहम्मद इब्न अल-बीरी - 1099 114- शरह अल-जामी अल-सगीर - इमाम क़ाज़ी खान हुसैन बिन मंसूर - 592 115- शरह अद-दुरर - शैख इस्माइल बिन अब्दुल गनी अल-नाबुलसी - 1062 116- शरह सफ़र अल-सआदह - शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी - 1052 117- शरह अस-सुन्नह - हुसैन बिन मंसूर अल-बग़वी - 516 118- शरह शिरअत अल-इस्लाम - याकूब बिन सीदी अली जादा - 931 119- शरह मुख्तसर अल-तहावी लिल्-इस्बीजाबी - अबू नस्र अहमद बिन मंसूर अल-हनफी अल-इस्बीजाबी - 480 120- शरह अल-गरीबैन 121- शरह अल-मुस्लिम लिल्-नवावी - शैख अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अन-नवावी - 676 122- शरह माआनी अल-आसार - अबू जाफ़र अहमद बिन मुहम्मद अत-तहावी - 321 123- शरह अल-मंज़ुमा लि-इब्न वहबान - अब्दुल बर्र बिन मुहम्मद इब्न शिहना - 921 124- शरह अल-मंज़ुमा फ़ी रस्म अल-मुफ़्ती - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शमी - 1252 125- शरह अल-मुनियत अल-सगीर - शैख मुहम्मद इब्राहिम अल-हलबी - 956 126- शरह मवाहिब अल-लदुन्निया - अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अज़-ज़ुरक़ानी - 1122 127- शरह मुवत्ता इमाम मालिक - अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अज़-ज़ुरक़ानी - 1122 128- शरह अल-मुहज़्ज़ब लिल्-नवावी - शैख अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ अन-नवावी - 676 129- शरह अन-नुक़ाया - मौलाना अब्दुल अली अल-बरजंदी - 932 130- शरह अल-विकाया - सदरुश्-शरिया अब्दुल्ला बिन मसूद - 747 पृष्ठ 748 / 756

فتاوی رضویہ جلد سوم ۱۰۷- السنن لدار قطنی علی عمر الدار قطنی ۳۸۵ ۱۰۸- السنن لدارمی عبداللہ بن عبدالرحمن الدارمی ۲۵۵ ش (حروف تہجی کے لحاظ سے کتابوں کی فہرست) ۱۰۹- الشافی شمس الائمہ عبداللہ بن محمود الکردری ۱۱۰- شرح الاربعین للنووی شہاب الدین احمد بن حجر المکی ۹۷۳ ۱۱۱- شرح الاربعین للنووی ابراھیم ابن عطیہ المالکی ۱۱۰۶ ۱۱۲- شرح الاربعین للنووی علامہ احمد بن الحجازی ۹۷۸ ۱۱۳- شرح الاشباہ والنظائر ابراھیم بن حسین بن احمد بن محمد ابن البیری ۱۰۹۹ ۱۱۴- شرح الجامع الصغیر امام قاضی خان حسین بن منصور ۵۹۲ ۱۱۵- شرح الدرر شیخ اسماعیل بن عبدالغنی النابلسی ۱۰۶۲ ۱۱۶- شرح سفر السعادۃ شیخ عبدالحق المحدث الدہلوی ۱۰۵۲ ۱۱۷- شرح السنۃ حسین بن منصور البغوی ۵۱۶ ۱۱۸- شرح شرعۃ الاسلام یعقوب بن سیدی علی زادہ ۹۳۱ ۱۱۹- شرح مختصر الطحاوی للاسبیجابی ابونصر احمد بن منصور الحنفی الاسبیجابی ۴۸۰ ۱۲۰- شرح الغریبین ۱۲۱- شرح المسلم للنووی شیخ ابوزکریا یحییٰ بن شرف النووی ۶۷۶ ۱۲۲- شرح معانی الآثار ابوجعفر احمد بن محمد الطحاوی ۳۲۱ ۱۲۳- شرح المنظومۃ لابن وھبان عبدالبر بن محمد ابن شحنۃ ۹۲۱ ۱۲۴- شرح المنظومۃ فی رسم المفتی محمد امین ابن عابدین الشامی ۱۲۵۲ ۱۲۵- شرح المنیۃ الصغیر شیخ محمد ابراھیم الحلبی ۹۵۶ ۱۲۶- شرح مواہب اللدنیۃ علامہ محمد بن عبدالباقی الزرقانی ۱۱۲۲ ۱۲۷- شرح موطا امام مالک علامہ محمد بن عبدالباقی الزرقانی ۱۱۲۲ ۱۲۸- شرح المھذب للنووی شیخ ابوزکریا یحییٰ بن شرف النووی ۶۷۶ ۱۲۹- شرح النقایۃ مولانا عبدالعلی البرجندی ۹۳۲ ۱۳۰- شرح الوقایۃ صدرالشریعہ عبداللہ بن مسعود ۷۴۷ صفحہ 748 از 756

Volume 3 Fatawa Rizwia 131- Sharh al-Hidayah - Muhammad ibn Muhammad ibn Muhammad ibn Shuhna - 890 132- Shir'at al-Islam - Imam al-Islam Muhammad ibn Abi Bakr - 573 133- Shu'ab al-Iman - Abu Bakr Ahmad ibn Husayn ibn Ali al-Bayhaqi - 458 134- Sharh al-Jami' al-Saghir - Ahmad ibn Mansur al-Hanafi al-Isbijabi - 480 135- Sharh al-Jami' al-Saghir - Umar ibn Abdul Aziz al-Hanafi - 536 S (ص) 136- Sahah al-Jawhari - Isma'il ibn Hammad al-Jawhari - 393 137- Sahih Ibn Hibban - Muhammad ibn Hibban - 352 138- Sahih Ibn Khuzaymah - Muhammad ibn Ishaq ibn Khuzaymah - 311 139- Al-Surah - Abu Fadl Muhammad ibn Umar ibn Khalid al-Qurashi - Approximately 690 T (ط) 140- Al-Tahtawi 'ala al-Durr - Sayyid Ahmad al-Tahtawi - 1302 141- Al-Tahtawi 'ala al-Maraqi - Sayyid Ahmad al-Tahtawi - 1302 142- Al-Tariqa al-Muhammadiyya - Muhammad ibn Pir Ali, known as Birgivi - 981 143- Tulbat al-Talaba - Najm al-Din Umar ibn Muhammad al-Nasafi - 537 'Ayn (ع) 144- 'Umdat al-Qari - Allama Badr al-Din Abi Muhammad Mahmud ibn Ahmad al-'Ayni - 855 145- Al-'Inaya - Akmal al-Din Muhammad ibn Muhammad al-Babarti - 786 146- 'Inayat al-Qadi - Shihab al-Din al-Khafaji - 1069 147- 'Uyun al-Masa'il - Abu al-Layth Nasr ibn Muhammad al-Samarqandi - 378 148- 'Uqud al-Durriyya - Muhammad Amin ibn 'Abidin al-Shami - 1252 149- 'Udda - Kamal al-Din Muhammad ibn Ahmad, known as Tashkubri - 1030 150-

खण्ड 3 फ़तावा रज़विया 131- शरह अल-हिदाया - मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न शुहना - 890 132- शिरअत अल-इस्लाम - इमाम अल-इस्लाम मुहम्मद बिन अबी बक्र - 573 133- शुआब अल-ईमान - अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बिन अली अल-बैहक़ी - 458 134- शरह अल-जामिअ अस-सगीर - अहमद बिन मंसूर अल-हनाफी अल-इसबीजाबी - 480 135- शरह अल-जामिअ अस-सगीर - उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अल-हनाफी - 536 स (ص) 136- सहाह अल-जौहरी - इस्माइल बिन हम्माद अल-जौहरी - 393 137- सहीह इब्न हिब्बान - मुहम्मद बिन हिब्बान - 352 138- सहीह इब्न खुज़ैमा - मुहम्मद बिन इस्हाक़ इब्न खुज़ैमा - 311 139- अस-सुराह - अबू फज़्ल मुहम्मद बिन उमर बिन खालिद अल-कुरैशी - लगभग 690 त (ط) 140- अत-तहतवी अला अद-दुर्र - सैय्यद अहमद अत-तहतवी - 1302 141- अत-तहतवी अला अल-मराक़ी - सैय्यद अहमद अत-तहतवी - 1302 142- अत-तरीक़ा अल-मुहम्मदिया - मुहम्मद बिन पीर अली अल-मारूफ बिरगिवी - 981 143- तुलबत अत-तुलबा - नज्म अद-दीन उमर बिन मुहम्मद अन-नसफी - 537 ऐन (ع) 144- उम्दत अल-क़ारी - अल्लामा बद्र अद-दीन अबी मुहम्मद महमूद बिन अहमद अल-ऐनी - 855 145- अल-इनाया - अकमल अद-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-बाबरती - 786 146- इनायत अल-क़ाज़ी - शिहाब अद-दीन अल-खफाजी - 1069 147- उयून अल-मसाइल - अबुल लैथ नसर बिन मुहम्मद अस-समरकंदी - 378 148- उक़ूद अद-दुर्रिया - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अश-शामी - 1252 149- उद्दा - कमाल अद-दीन मुहम्मद बिन अहमद अश-शहीर बताशकुबरी - 1030 150-

جلد سوم فتاوىٰ رضويہ ۱۳۱- شرح الهداية - محمد بن محمد بن محمد ابن شحنة - ۸۹۰ ۱۳۲- شرعة الاسلام - امام الاسلام محمد بن ابى بكر - ۵۷۳ ۱۳۳- شعب الايمان - ابو بكر احمد بن حسين بن على البيهقى - ۴۵۸ ۱۳۴- شرح الجامع الصغير - احمد بن منصور الحنفى الاسبيجابى - ۴۸۰ ۱۳۵- شرح الجامع الصغير - عمر بن عبدالعزيز الحنفى - ۵۳۶ ص ۱۳۶- صحاح الجوهرى - اسمعيل بن حماد الجوهرى - ۳۹۳ ۱۳۷- صحيح ابن حبان - محمد بن حبان - ۳۵۲ ۱۳۸- صحيح ابن خزيمہ - محمد بن اسحاق ابن خزيمہ - ۳۱۱ ۱۳۹- الصراح - ابو فضل محمد بن عمر بن خالد القرشى - تقريباً ۶۹۰ ط ۱۴۰- الطحطاوى على الدر - سيد احمد الطحطاوى - ۱۳۰۲ ۱۴۱- الطحطاوى على المراقى - سيد احمد الطحطاوى - ۱۳۰۲ ۱۴۲- الطريقة المحمدية - محمد بن پير على المعروف بيركلى - ۹۸۱ ۱۴۳- طلبة الطلبة - نجم الدين عمر بن محمد النسفى - ۵۳۷ ع ۱۴۴- عمدة القارى - علامہ بدر الدين ابى محمد محمود بن احمد العينى - ۸۵۵ ۱۴۵- العناية - اكمل الدين محمد بن محمد البابرتى - ۷۸۶ ۱۴۶- عناية القاضى - شهاب الدين الخفاجى - ۱۰۶۹ ۱۴۷- عيون المسائل - ابوالليث نصر بن محمد السمرقندى - ۳۷۸ ۱۴۸- عقود الدرية - محمد امين ابن عابدين الشامى - ۱۲۵۲ ۱۴۹- عدّة - كمال الدين محمد بن احمد الشهير بطاشكبرى - ۱۰۳۰ ۱۵۰-

Fatawa Razawiyya Volume Three

Ghayn (غ) 151- Ghayat al-Bayan: Sheikh Qawam al-Din Amir Katib ibn Amir al-Atqani — 758 152- Ghurar al-Ahkam: Qadi Muhammad ibn Faramuz Mulla Khusraw — 885 153- Gharib al-Hadith: Abu al-Hasan 'Ali ibn Mughirah al-Baghdadi known as Athram — 230 154- Ghamz 'Uyun al-Basa'ir: Ahmad ibn Muhammad al-Hamawi al-Hanafi — 1098 155- Ghunyat Dhu al-Ahkam: Hasan ibn 'Ammar ibn 'Ali al-Shurunbulali — 1069 156- Ghunyat al-Mustamli: Muhammad Ibrahim ibn Muhammad al-Halabi — 956

Fa (ف) 157- Fath al-Bari Sharh al-Bukhari: Shihab al-Din Ahmad ibn 'Ali ibn Hajar al-'Asqalani — 852 158- Fath al-Qadir: Kamal al-Din Muhammad ibn 'Abd al-Wahid ibn al-Humam — 861 159- Fatawa al-Nasafi: Imam Najm al-Din al-Nasafi — 537 160- Fatawa Bazzaziyyah: Muhammad ibn Muhammad ibn Shihab ibn Bazzaz — 827 161- Fatawa Hijjah: 162- Fatawa Khayriyyah: Allama Khayr al-Din ibn Ahmad ibn 'Ali al-Ramli — 1081 163- Fatawa Sirajiyyah: Siraj al-Din 'Ali ibn 'Uthman al-Ushi — 575 164- Fatawa 'Ata ibn Hamza: 'Ata ibn Hamza al-Sughdi 165- Fatawa Ghiyathiyyah: Dawud ibn Yusuf al-Khatib al-Hanafi 166- Fatawa Qadi Khan: Hasan ibn Mansur Qadi Khan — 592 167- Fatawa Hindiyyah: Jam'iat-e-Ulama Aurangzeb Alamgir 168- Fatawa Zahiriyyah: Zahir al-Din Abu Bakr Muhammad ibn Ahmad — 619 169- Fatawa Lulu' al-Wajih: 'Abd al-Rashid ibn Abi Hanifa al-Walwaliji — 520 170- Fatawa al-Kubra: Imam Sadr al-Shahid Husam al-Din 'Umar ibn 'Abd al-'Aziz — 536 171- Fiqh al-Akbar: Al-Imam al-A'zam Abu Hanifa Nu'man ibn Thabit al-Kufi — 150 172- Fath al-Mu'in: Sayyid Muhammad Abi al-Sa'ud al-Hanafi

फ़तावा रज़विया खण्ड तीन

ग़ैन (ع) 151- ग़ायत अल-बयान: शेख़ क़वाम अल-दीन अमीर कातिब इब्न अमीर अल-अतक़ानी — 758 152- ग़ुरर अल-अहकाम: क़ाज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरो — 885 153- ग़रीब अल-हदीस: अबू अल-हसन अली बिन मुग़ीरा अल-बग़दादी अल-मारूफ़ बा-अथरम — 230 154- ग़म्ज़ उयून अल-बसायर: अहमद बिन मुहम्मद अल-हमवी अल-हनफ़ी — 1098 155- ग़ुन्यत ज़ुल-अहकाम: हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलाली — 1069 156- ग़ुन्यत अल-मुस्तमली: मुहम्मद इब्राहीम बिन मुहम्मद अल-हलबी — 956

फ़े(ف) 157- फ़तह अल-बारी शरह अल-बुखारी: शहाब अल-दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी — 852 158- फ़तह अल-क़दीर: कमाल अल-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद इब्न अल-हुमाम — 861 159- फ़तावा अल-नस्फ़ी: इमाम नज्म अल-दीन अल-नस्फ़ी — 537 160- फ़तावा बज़ाज़िया: मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन शहाब इब्न बज़ाज़ — 827 161- फ़तावा हुज्जह: 162- फ़तावा खैरिया: अल्लामा खैर अल-दीन बिन अहमद बिन अली अल-रमली — 1081 163- फ़तावा सिराजिया: सिराज अल-दीन अली बिन उस्मान अल-ओशी — 575 164- फ़तावा अता बिन हमज़ा: अता बिन हमज़ा अल-सुग़दी 165- फ़तावा ग़ियासिया: दाऊद बिन यूसुफ़ अल-खतीब अल-हनफ़ी 166- फ़तावा क़ाज़ी ख़ान: हसन बिन मंसूर क़ाज़ी ख़ान — 592 167- फ़तावा हिन्दिया: जइत-ए-उलेमा औरंगज़ेब आलमगीर 168- फ़तावा ज़हीरिया: ज़हीर अल-दीन अबू बकर मुहम्मद बिन अहमद — 619 169- फ़तावा लुलुउ अल-वजीह: अब्दुल रशीद बिन अबी हनीफ़ा अल-वलवालिजी — 520 170- फ़तावा अल-कुबरा: इमाम सदर अल-शहीद हुसाम अल-दीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ — 536 171- फ़िक़ह अल-अकबर: अल-इमाम अल-आज़म अबू हनीफ़ा नुमान बिन साबित अल-कूफ़ी — 150 172- फ़तह अल-मुईन: सैयद मुहम्मद अबी अल-सऊद अल-हनफ़ी

पेज 750 / 756

فتاوٰی رضویہ جلد سوم

غ ۱۵۱- غایة البیان: شیخ قوام الدین امیر کاتب ابن امیر الاتقانی ـــ ۷۵۸ ۱۵۲- غرر الاحکام: قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو ـــ ۸۸۵ ۱۵۳- غریب الحدیث: ابوالحسن علی بن مغیرة البغدادی المعروف باثرم ـــ ۲۳۰ ۱۵۴- غمز عیون البصائر: احمد بن محمد الحموی الحنفی ـــ ۱۰۹۸ ۱۵۵- غنیة ذوالاحکام: حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی ـــ ۱۰۶۹ ۱۵۶- غنیة المستملی: محمد ابراہیم بن محمد الحلبی ـــ ۹۵۶

ف ۱۵۷- فتح الباری شرح البخاری: شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی ـــ ۸۵۲ ۱۵۸- فتح القدیر: کمال الدین محمد بن عبدالواحد بابن الہمام ـــ ۸۶۱ ۱۵۹- فتاوٰی النسفی: امام نجم الدین النسفی ـــ ۵۳۷ ۱۶۰- فتاوٰی بزازیہ: محمد بن محمد بن شہاب ابن بزاز ـــ ۸۲۷ ۱۶۱- فتاوٰی حجہ: ۱۶۲- فتاوٰی خیریہ: علامہ خیر الدین بن احمد بن علی الرملی ـــ ۱۰۸۱ ۱۶۳- فتاوٰی سراجیہ: سراج الدین علی بن عثمان الاوشی ـــ ۵۷۵ ۱۶۴- فتاوٰی عطاء بن حمزہ: عطاء بن حمزة السغدی ۱۶۵- فتاوٰی غیاثیہ: داؤد بن یوسف الخطیب الحنفی ۱۶۶- فتاوٰی قاضی خان: حسن بن منصور قاضی خان ـــ ۵۹۲ ۱۶۷- فتاوٰی ہندیہ: جمعیت علماء اورنگ زیب عالمگیر ۱۶۸- فتاوٰی ظہیریہ: ظہیر الدین ابوبکر محمد بن احمد ـــ ۶۱۹ ۱۶۹- فتاوٰی لولو الوجیہ: عبدالرشید بن ابی حنیفہ الولوالجی ـــ ۵۲۰ ۱۷۰- فتاوٰی الکبری: امام صدر الشہید حسام الدین عمر بن عبدالعزیز ـــ ۵۳۶ ۱۷۱- فقہ الاکبر: الامام الاعظم ابی حنیفہ نعمان بن ثابت الکوفی ـــ ۱۵۰ ۱۷۲- فتح المعین: سید محمد ابی السعود الحنفی

Volume Three | Fatawa-e-Razvia 173. Fath al-Mu'in Sharh Qurrat al-'Ayn | Zayn al-Din bin Ali bin Ahmad al-Shafi'i | 928 174. Al-Futuhat al-Makkiyya | Muhi al-Din Muhammad bin Ali ibn Arabi | 638 175. Fawatih al-Rahmut | Abdul Ali Muhammad bin Nizam al-Din al-Kindi | 1225 176. Al-Fawa'id | Tamam bin Muhammad bin Abdullah al-Bajli | 412 177. Fawa'id al-Mukhasasa | Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami | 1252 178. Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir | Abd al-Ra'uf al-Munawi | 1031 179. Fawa'id Samawiyah | Isma'il bin Abdullah, known as Samawiyah | 267 Q (Section Qaf) 180. Al-Qamus | Muhammad bin Yaqub al-Fayruzabadi | 817 181. Qurrat al-'Ayn | Allama Zayn al-Din bin Ali al-Malibari | 928 182. Al-Qunyah | Najm al-Din Mukhtar bin Muhammad al-Zahidi | 658 183. Al-Qur'an K (Section Kaf) 184. Al-Kafi fi al-Furu' | Hakim Shahid Muhammad bin Muhammad | 334 185. Al-Kamil li-Ibn Adi | Abu Ahmad Abdullah bin Adi | 365 186. Al-Kibrit al-Ahmar | Sayyid Abdul Wahhab al-Sha'rani | 973 187. Kitab al-Athar | Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani | 189 188. Kitab al-Athar | Imam Abu Yusuf Ya'qub bin Ibrahim al-Ansari | 182 189. Kitab al-Ilmam fi Adab Dukhul al-Hammam | Abu al-Has Muhammad bin Ali 190. Kitab al-Siwak | Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah | 430 191. Kitab al-Hadiyya li-Ibn Imad | Abd al-Rahman bin Muhammad Imad al-Din bin Muhammad al-Imadi | 1050 192. Kitab al-Tuhur | Li-Abi Ubayd 193. Kitab al-Ilal ala Abwab al-Fiqh | Abu Muhammad Abd al-Rahman ibn Abi Hatim Muhammad al-Razi | 327 194. Kitab al-Asl | Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani | 189 195. Kitab al-Waswasah | Abu Bakr bin Abi Dawud

जिल्द सोम | फतावा रिज़विया १७३. फतहुल मुईन शरह कुर्रतुल ऐन | ज़ैनुद्दीन बिन अली बिन अहमद अल-शाफ़ई | ९२८ १७४. अल-फ़ुतुहात अल-मक्किआ | मुहिउद्दीन मुहम्मद बिन अली इब्न अरबी | ६३८ १७५. फवातिहुर रहमूत | अब्दुल अली मुहम्मद बिन निज़ामुद्दीन अल-किंदी | १२२५ १७६. अल-फ़वाइद | तमाम बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-बजली | ४१२ १७७. फवाइदुल मुख़स्सास | मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी | १२५२ १७८. फ़ैज़ुल क़दीर शरह अल-जामे अल-सगीर | अब्दुर रऊफ़ अल-मुनावी | १०३१ १७९. फवाइदे समविया | इस्माइल बिन अब्दुल्लाह उर्फ समविया | २६७ क़ (सेक्शन क़ाफ़) १८०. अल-क़ामूस | मुहम्मद बिन याकूब अल-फ़ैरूज़ाबादी | ८१७ १८१. कुर्रतुल ऐन | अल्लामा ज़ैनुद्दीन बिन अली अल-मलीबारी | ९२८ १८२. अल-कुन्या | नजमुद्दीन मुख़्तार बिन मुहम्मद अल-ज़ाहीदी | ६५८ १८३. अल-क़ुरान क (सेक्शन काफ़) १८४. अल-काफ़ी फिल फ़ुरू | हाकिम शहीद मुहम्मद बिन मुहम्मद | ३३४ १८५. अल-कामिल लि-इब्न अदी | अबू अहमद अब्दुल्लाह बिन अदी | ३६५ १८६. अल-किब्रीत अल-अहमर | सैय्यद अब्दुल वहाब अल-शा'रानी | ९७३ १८७. किताबुल आसार | इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी | १८९ १८८. किताबुल आसार | इमाम अबू यूसुफ याकूब बिन इब्राहीम अल-अंसारी | १८२ १८९. किताबुल इल्माम फ़ी आदाब दुखूलिल हम्माम | अबुल हास मुहम्मद बिन अली १९०. किताबुस सिवाक | अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्लाह | ४३० १९१. किताबुल हदीया लि-इब्न इमाद | अब्दुर रहमान बिन मुहम्मद इमादुद्दीन बिन मुहम्मद अल-इमादी | १०५० १९२. किताबुल तुहूर | लि अबी उबैद १९३. किताबुल इलल अला अबवाबिल फ़िक़ह | अबू मुहम्मद अब्दुर रहमान इब्न अबी हातिम मुहम्मद अल-राज़ी | ३२७ १९४. किताबुल असल | इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी | १८९ १९५. किताबुल वसवसा | अबू बक्र बिन अबी दाऊद

पृष्ठ ७५१ (कुल ७५६ में से)

جلد سوم | فتاوٰی رضویہ ۱۷۳۔ فتح المعین شرح قرۃ العین | زین الدین بن علی بن احمد الشافعی | ۹۲۸ ۱۷۴۔ الفتوحات المکیۃ | محی الدین محمد بن علی ابن عربی | ۶۳۸ ۱۷۵۔ فواتح الرحموت | عبدالعلی محمد بن نظام الدین الکندی | ۱۲۲۵ ۱۷۶۔ الفوائد | تمام بن محمد بن عبداللہ البجلی | ۴۱۲ ۱۷۷۔ فوائد المخصصۃ | محمد امین ابن عابدین الشامی | ۱۲۵۲ ۱۷۸۔ فیض القدیر شرح الجامع الصغیر | عبدالرؤف المناوی | ۱۰۳۱ ۱۷۹۔ فوائد سمویۃ | اسمعیل بن عبداللہ الملقب بسموية | ۲۶۷ ق ۱۸۰۔ القاموس | محمد بن یعقوب الفیروز آبادی | ۸۱۷ ۱۸۱۔ قرۃ العین | علامہ زین الدین بن علی المليباری | ۹۲۸ ۱۸۲۔ القنیۃ | نجم الدین مختار بن محمد الزاہدی | ۶۵۸ ۱۸۳۔ القرآن ک ۱۸۴۔ الکافی فی الفروع | حاکم شہید محمد بن محمد | ۳۳۴ ۱۸۵۔ الکامل لابن عدی | ابواحمد عبداللہ بن عدی | ۳۶۵ ۱۸۶۔ الکبریت الاحمر | سید عبدالوہاب الشعرانی | ۹۷۳ ۱۸۷۔ کتاب الآثار | امام محمد بن حسن الشیبانی | ۱۸۹ ۱۸۸۔ کتاب الآثار | امام ابویوسف یعقوب بن ابراھیم الانصاری | ۱۸۲ ۱۸۹۔ کتاب الالمام فی آداب دخول الحمام | ابوالحاس محمد بن علی ۱۹۰۔ کتاب السواک | ابونعیم احمد بن عبداللہ | ۴۳۰ ۱۹۱۔ کتاب الھدیہ لابن عماد | عبدالرحمن بن محمد عماد الدین بن محمد العمادی | ۱۰۵۰ ۱۹۲۔ کتاب الطہور | لابی عبید ۱۹۳۔ کتاب العلل علی ابواب الفقہ | ابو محمد عبدالرحمن ابن ابی حاتم محمد الرازی | ۳۲۷ ۱۹۴۔ کتاب الاصل | امام محمد بن حسن الشیبانی | ۱۸۹ ۱۹۵۔ کتاب الوسوسہ | ابوبکر بن ابی داؤد

صفحہ 751 از 756

Fatawa Razawiyyah Volume 3

196- Kashf al-Asrar | Ala-ud-Din Abdul Aziz bin Ahmed al-Bukhari | 730 197- Kashf al-Ramz | Al-Ala al-Maqdisi | 198- Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar | Amin-ud-Din Abdul Wahab bin Wahban al-Dimashqi | 768 199- Kanz al-Ummal | Ala-ud-Din Ali al-Muttaqi bin Husam-ud-Din | 975 200- Al-Kifayah | Jalal-ud-Din bin Shams-ud-Din al-Khwarizmi (approx.) | 800 201- Kaff al-Rua'a | Shihab-ud-Din Ahmed bin Hajar al-Makki | 973 202- Kanz ad-Daqa'iq | Abdullah bin Ahmed bin Mahmood | 710 203- Al-Kuna lil-Hakim | Abu Abdullah al-Hakim | 405 204- Al-Kawakib ad-Durari | Shams-ud-Din Muhammad bin Yusuf al-Shafi'i al-Kirmani | 786 205- Kitab al-Jarh wa't-Ta'dil | Muhammad bin Hibban al-Tamimi | 352 206- Kitab al-Maghazi | Yahya bin Sa'id al-Qattan | 198 207- Kitab al-Samt | Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Qurashi | 281 208- Kitab al-Zuhd | Abdullah bin Mubarak | 180 209- Al-Kashshaf 'an Haqa'iq al-Tanzil | Jarullah Mahmood bin Umar al-Zamakhshari | 538

Lām (ل) 210- Luma'at al-Tanqih | Allama Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlavi | 1052 211- Luqat al-Marjan fi Akhbar al-Jann | Allama Jalal-ud-Din Abdur Rahman bin Muhammad al-Suyuti | 911

Mīm (م) 212- Mashariq al-Anwar | Al-Sheikh Abdul Latif bin Abdul Aziz ibn al-Malik | 801 213- Mabsoot Khwaharzada | Bakr Khwaharzada Muhammad bin Hasan al-Bukhari al-Hanafi | 483 214- Mabsoot al-Sarakhsi | Shams al-A'imma Muhammad bin Ahmed al-Sarakhsi | 483 215- Majra al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur | Nur-ud-Din Ali al-Baqani (approx.) | 995 216- Majma' Bihar al-Anwar | Muhammad Tahir al-Siddiqui | 981 217- Majmu' al-Nawazil | Ahmed bin Musa bin Isa | 550 218- Majma' al-Anhur | Al-Sheikh Abdullah bin Muhammad bin Sulaiman known as Damad Afandi | 1078

Page 752 of 756

फ़तावा रज़विया जिल्द 3

196- कश्फ़ अल-असरार | अला-उद-दीन अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद अल-बुखारी | 730 197- कश्फ़ अल-रम्ज़ | अल-अला अल-मक़दिसी | 198- कश्फ़ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़ार | अमीन-उद-दीन अब्दुल वहाब बिन वहबान अद-दमिश्की | 768 199- कन्ज़ अल-उम्माल | अला-उद-दीन अली अल-मुत्तकी बिन हुसाम-उद-दीन | 975 200- अल-किफ़ाया | जलाल-उद-दीन बिन शम्स-उद-दीन अल-ख्वारिज़मी (लगभग) | 800 201- कफ़ अल-रुआ'आ | शिहाब-उद-दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की | 973 202- कन्ज़ अद-दक़ाइक | अब्दुल्ला बिन अहमद बिन महमूद | 710 203- अल-कुना लिल-हाकिम | अबू अब्दुल्ला अल-हाकिम | 405 204- अल-कवाकिब अद-दुरारी | शम्स-उद-दीन मुहम्मद बिन यूसुफ अल-शाफ़ई अल-किरमानी | 786 205- किताब अल-जराह वत-तअदील | मुहम्मद बिन हिब्बान अल-तमीमी | 352 206- किताब अल-मग़ाज़ी | यहया बिन सईद अल-क़त्तान | 198 207- किताब अस-सम्त | अब्दुल्ला बिन मुहम्मद इब्न अबी अद-दुनिया अल-कुरशी | 281 208- किताब अज़-ज़ुहद | अब्दुल्ला बिन मुबारक | 180 209- अल-कश्शाफ़ अन हक़ाइक़ अत-तन्ज़ील | जारुल्लाह महमूद बिन उमर अल-ज़मख़शरी | 538

लाम (ل) 210- लमआत अत-तन्क़ीह | अल्लामा शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी | 1052 211- लुक़त अल-मरजान फ़ी अख़बार अल-जान | अल्लामा जलाल-उद-दीन अब्दुर रहमान बिन मुहम्मद अस-सुयूती | 911

मीम (م) 212- मशारिक़ अल-अनवार | अल-शेख अब्दुल लतीफ़ बिन अब्दुल अज़ीज़ इब्न अल-मलिक | 801 213- मबस्तूत ख्वाहरज़ादा | बक्र ख्वाहरज़ादा मुहम्मद बिन हसन अल-बुखारी अल-हनफ़ी | 483 214- मबसूत अस-सरख़सी | शम्स अल-आइम्मा मुहम्मद बिन अहमद अस-सरख़सी | 483 215- मजरा अल-अनहुर शरह मुल्तक़ा अल-अब्हुर | नूर-उद-दीन अली अल-बाक़ानी (लगभग) | 995 216- मजमा बिहार अल-अनवार | मुहम्मद ताहिर अल-सिद्दीकी | 981 217- मजमू अल-नवाज़िल | अहमद बिन मूसा बिन ईसा | 550 218- मजमा अल-अनहुर | अल-शेख अब्दुल्ला बिन मुहम्मद बिन सुलेमान जो दामाद अफ़ंदी के नाम से जाने जाते हैं | 1078

पेज 752 / 756

فتاوىٰ رضويہ جلد سوم

١٩٦- كشف الاسرار | علاء الدين عبدالعزيز بن احمد البخارى | ٧٣٠ ١٩٧- كشف الرمز | علاة المقدسى | ١٩٨- كشف الاستار عن زوائد البزار | امين الدين عبدالوہاب بن وہبان الدمشقى | ٧٦٨ ١٩٩- كنز العمال | علاء الدين على المتقى بن حسام الدين | ٩٧٥ ٢٠٠- الكفايۃ | جلال الدين بن شمس الدين الخوارزمى تقريباً | ٨٠٠ ٢٠١- كف الرعاع | شہاب الدين احمد بن حجر المكى | ٩٧٣ ٢٠٢- كنز الدقائق | عبد الله بن احمد بن محمود | ٧١٠ ٢٠٣- الكنى للحاكم | ابو عبد الله الحاكم | ٤٠٥ ٢٠٤- الكواكب الدرارى | شمس الدين محمد بن يوسف الشافعى الكرمانى | ٧٨٦ ٢٠٥- كتاب الجرح والتعديل | محمد بن حبان التميمى | ٣٥٢ ٢٠٦- كتاب المغازى | يحيى بن سعيد القطان | ١٩٨ ٢٠٧- كتاب الصمت | عبد الله بن محمد ابن ابى الدنيا القرشى | ٢٨١ ٢٠٨- كتاب الزہد | عبد الله بن مبارک | ١٨٠ ٢٠٩- الكشاف عن حقائق التنزيل | جار الله محمود بن عمر الزمخشرى | ٥٣٨

ل ٢١٠- لمعات التنقيح | علامہ شيخ عبد الحق المحدث الدہلوى | ١٠٥٢ ٢١١- لقط المرجان فى اخبار الجان | علامہ جلال الدين عبد الرحمن بن محمد السيوطى | ٩١١

م ٢١٢- مشارق الانوار | الشيخ عبد اللطيف بن عبدالعزيز ابن الملک | ٨٠١ ٢١٣- مبسوط خواہرزاده | بكر خواہر زاده محمد بن حسن البخارى الحنفى | ٤٨٣ ٢١٤- مبسوط السرخسى | شمس الائمۃ محمد بن احمد السرخسى | ٤٨٣ ٢١٥- مجرى الانہر شرح ملتقى الابحر | نور الدين على الباقانى تقريباً | ٩٩٥ ٢١٦- مجمع بحار الانوار | محمد طاہر الصديقى | ٩٨١ ٢١٧- مجموع النوازل | احمد بن موسىٰ بن عيسىٰ | ٥٥٠ ٢١٨- مجمع الانہر | الشيخ عبد الله بن محمد بن سليمان المعروف بداماد آفندى | ١٠٧٨

Fatawa Rizvia Volume Three

219- Al-Muhit al-Burhani - Imam Burhan al-Din Mahmud bin Taj al-Din - 616 220- Al-Muhit al-Radawi - Radi al-Din Muhammad bin Muhammad al-Sarakhsi - 171 221- Mukhtarat al-Nawazil - Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani - 593 222- Mukhtar al-Sihah - Muhammad bin Abi Bakr Abd al-Qadir al-Razi - 660 223- Al-Mukhtara fil-Hadith - Diya al-Din Muhammad bin Abd al-Wahid - 643 224- Al-Mukhtasar - Allama Jalal al-Din al-Suyuti - 911 225- Madkhal al-Shar' al-Sharif - Ibn al-Hajj Abi Abd Allah Muhammad bin Muhammad al-Abdari - 737 226- Maraqi al-Falah bi-Imdad al-Fattah Sharh Nur al-Idah - Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali - 1069 227- Mirqat Sharh Mishkat - Ali bin Sultan Mulla Ali Qari - 1012 228- Mirqat al-Su'ud - Allama Jalal al-Din al-Suyuti - 911 229- Mustakhlas al-Haqa'iq - Ibrahim bin Muhammad al-Hanafi 230- Al-Mustadrak lil-Hakim - Abu Abd Allah al-Hakim - 405 231- Al-Mustasfa - Hafiz al-Din Abd Allah bin Ahmad al-Nasafi - 710 232- Musallam al-Thubut - Muhibb Allah al-Bihari - 1119 233- Musnad Abi Dawud - Sulayman bin Dawud al-Tayalisi - 202 234- Musnad Abi Ya'la - Ahmad bin Ali al-Mawsili - 307 235- Musnad Ishaq ibn Rahwayh - Hafiz Ishaq ibn Rahwayh - 238 236- Musnad al-Imam Ahmad bin Hanbal - Imam Ahmad bin Muhammad bin Hanbal - 241 237- Musnad al-Bazzar - Abu Bakr Ahmad bin 'Amr bin Abd al-Khaliq al-Bazzar - 292 238- Musnad 'Abd bin Humayd - Abu Muhammad 'Abd bin Muhammad Humayd al-Kashi - 294 239- Musnad al-Firdaws - Shahrdar bin Shirawayh al-Daylami - 558 240- Misbah al-Munir - Ahmad bin Muhammad bin Ali - 770 241- Al-Musaffa - Hafiz al-Din Abd Allah bin Ahmad al-Nasafi - 710 242- Musannaf Ibn Abi Shaybah - Abu Bakr Abd Allah bin Muhammad Ahmad al-Nasafi - 235 243- Musannaf Abd al-Razzaq - Abu Bakr Abd al-Razzaq bin Hammam al-San'ani - 211 244- Misbah al-Duja - Imam Hasan bin Muhammad al-Saghani al-Hindi - 650

फ़तावा रज़विया तीसरा खंड

219- अल-मुहीत अल-बुरहानी - इमाम बुरहानुद्दीन महमूद बिन ताज उद्दीन - 616 220- अल-मुहीत अल-रज़वी - रज़ी उद्दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-सरखसी - 171 221- मुख्तारात अल-नवाज़िल - बुरहानुद्दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी - 593 222- मुख्तार अस-सिहह - मुहम्मद बिन अबी बक्र अब्दुल कादिर अल-राज़ी - 660 223- अल-मुख्तारा फिल-हदीस - ज़िया उद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद - 643 224- अल-मुख्तसर - अल्लामा जलाल उद्दीन अल-सुयूती - 911 225- मदखल अश-शर' अश-शरीफ़ - इब्न अल-हाज्ज अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-अब्दरी - 737 226- मराकी अल-फ़लाह बि-इमदाद अल-फ़त्ताह शरह नूर अल-इज़ाह - हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलाली - 1069 227- मिरकात शरह मिश्कात - अली बिन सुल्तान मुल्ला अली क़ारी - 1012 228- मिरकात अस-सुऊद - अल्लामा जलाल उद्दीन अल-सुयूती - 911 229- मुस्तख़लस अल-हक़ाएक - इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हनफ़ी 230- अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम - अबू अब्दुल्लाह अल-हाकिम - 405 231- अल-मुस्तस्फ़ा - हाफ़िज़ उद्दीन अब्दुल्लाह बिन अहमद अन-नसफ़ी - 710 232- मुसल्लम अत्तबूत - मुहिब्बुल्लाह अल-बिहारी - 1119 233- मुसनद अबी दाऊद - सुलेमान बिन दाऊद अल-तयालिसी - 202 234- मुसनद अबी याला - अहमद बिन अली अल-मौसिली - 307 235- मुसनद इसहाक़ इब्न राहवैय - हाफ़िज़ इसहाक़ इब्न राहवैय - 238 236- मुसनद अल-इमाम अहमद बिन हंबल - इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल - 241 237- मुसनद अल-बज़ार - अबू बक्र अहमद बिन अम्र बिन अब्दुल ख़ालिक़ अल-बज़ार - 292 238- मुसनद अब्द बिन हुमैद - अबू मुहम्मद अब्द बिन मुहम्मद हुमैद अल-कशी - 294 239- मुसनद अल-फिरदौस - शहरदार बिन शीरुवैह अल-दैलामी - 558 240- मिस्बाह अल-मुनीर - अहमद बिन मुहम्मद बिन अली - 770 241- अल-मुसफ़्फ़ा - हाफ़िज़ उद्दीन अब्दुल्लाह बिन अहमद अन-नसफ़ी - 710 242- मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा - अबू बक्र अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अहमद अन-नसफ़ी - 235 243- मुसन्नफ़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ - अबू बक्र अब्दुल रज़्ज़ाक़ बिन हम्माम अल-सनआनी - 211 244- मिस्बाह अद्दुजा - इमाम हसन बिन मुहम्मद अल-सग़ानी अल-हिन्दी - 650

पृष्ठ 753 का 756

فتاوىٰ رضويہ جلد سوم

219- المحيط البرہانى - امام برہان الدين محمود بن تاج الدين - 616 220- المحيط الرضوى - رضى الدين محمد بن محمد السرخسى - 171 221- مختارات النوازل - برہان الدين على بن ابى بكر المرغينانى - 593 222- مختار الصحاح - محمد بن ابى بكر عبد القادر الرازى - 660 223- المختارة فى الحديث - ضياء الدين محمد بن عبد الواحد - 643 224- المختصر - علامہ جلال الدين السيوطى - 911 225- مدخل الشرع الشريف - ابن الحاج ابى عبد الله محمد بن محمد العبدرى - 737 226- مراقى الفلاح بامداد الفتاح شرح نور الايضاح - حسن بن عمار بن على الشرنبلالى - 1069 227- مرقات شرح مشكوة - على بن سلطان ملا على قارى - 1012 228- مرقات الصعود - علامہ جلال الدين السيوطى - 911 229- مستخلص الحقائق - ابراہيم بن محمد الحنفى 230- المستدرک للحاكم - ابو عبد الله الحاكم - 405 231- المستصفى - حافظ الدين عبد الله بن احمد النسفى - 710 232- مسلم الثبوت - محب الله البہارى - 1119 233- مسند ابى داؤد - سليمان بن داؤد الطيالسى - 202 234- مسند ابى يعلى - احمد بن على الموصلى - 307 235- مسند اسحق ابن راہويہ - حافظ اسحق ابن راہويہ - 238 236- مسند الامام احمد بن حنبل - امام احمد بن محمد بن حنبل - 241 237- مسند البزار - ابو بكر احمد بن عمرو بن عبد الخالق البزار - 292 238- مسند عبد بن حميد - ابو محمد عبد بن محمد حميد الكشى - 294 239- مسند الفردوس - شہر دار بن شيرويہ الديلمى - 558 240- مصباح المنير - احمد بن محمد بن على - 770 241- المصفىٰ - حافظ الدين عبد الله بن احمد النسفى - 710 242- مصنف ابن ابى شيبة - ابو بكر عبد الله بن محمد احمد النسفى - 235 243- مصنف عبد الرزاق - ابو بكر عبد الرزاق بن ہمام الصنعانى - 211 244- مصباح الدجىٰ - امام حسن بن محمد الصغانى الہندى - 650

Fatawa Ridawiyya, Volume 3

1. Ma'rifat al-Sahaba - Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah al-Isbahani - 430
2. Al-Mu'jam al-Awsat - Sulayman bin Ahmad al-Tabarani - 360
3. Al-Mu'jam al-Saghir - Sulayman bin Ahmad al-Tabarani - 360
4. Al-Mu'jam al-Kabir - Sulayman bin Ahmad al-Tabarani - 360
5. Mi'raj al-Diraya - Qawam al-Din Muhammad bin Muhammad al-Bukhari - 729
6. Mishkat al-Masabih - Shaykh Wali al-Din al-Iraqi - 722
7. Al-Mughni fi al-Usul - Shaykh Umar bin Muhammad al-Khabbazi al-Hanafi - 691
8. Al-Maghrib - Abu al-Fath Nasir bin Abd al-Sayyid al-Mutarrizi - 610
9. Mukhtasar al-Quduri - Abu al-Husayn Ahmad bin Muhammad al-Quduri al-Hanafi - 428
10. Mafatih al-Jinan - Ya'qub bin Sidi Ali - 931
11. Al-Mufradat lil-Imam Raghib - Husayn bin Muhammad bin Mufaddal al-Isfahani - 502
12. Al-Muqaddimah al-Ashmawiyyah - Abu al-Abbas Abd al-Bari al-Ashmawi al-Maliki
13. Al-Multaqat (fi Fatawa Nasiri) - Nasir al-Din Muhammad bin Yusuf al-Husayni - 556
14. Majma' al-Zawa'id - Nur al-Din Ali bin Abi Bakr al-Haythami - 807
15. Manaqib al-Kardari - Muhammad bin Muhammad bin Shihab Ibn Bazzaz - 827
16. Al-Muntaqa (fi al-Hadith) - Abdullah bin Ali ibn Jarud - 307
17. Al-Muntaqa fi Furu' al-Hanifa - Al-Hakim al-Shahir Muhammad bin Muhammad bin Ahmad - 332
18. Minhat al-Khaliq - Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami - 1252
19. Minah al-Ghaffar - Muhammad bin Abdullah al-Tumurtashi - 1004
20. Multaqa al-Abhur - Imam Ibrahim bin Muhammad al-Halabi - 956
21. Minhaj - Shaykh Abu Zakariyya Yahya bin Sharaf al-Nawawi - 676
22. Majma' al-Bahrayn - Muzaffar al-Din Ahmad bin Ali bin Tha'lab al-Hanafi - 694
23. Al-Mubtaghi - Shaykh Isa bin Muhammad ibn Aynaj al-Hanafi
24. Al-Mabsut - Abd al-Aziz bin Ahmad al-Halwani - 456
25. Musnad fi al-Hadith - Al-Hafiz Abu al-Fath Nasr bin Ibrahim al-Harawi - 510

फतावा रज़विया, जिल्द 3

1. मारिफत अल-सहाबा - अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्ला अल-इसबहानी - 430
2. अल-मुअजम अल-औसत - सुलेमान बिन अहमद अल-तबरानी - 360
3. अल-मुअजम अल-सगीर - सुलेमान बिन अहमद अल-तबरानी - 360
4. अल-मुअजम अल-कबीर - सुलेमान बिन अहमद अल-तबरानी - 360
5. मेराज अद-दिराया - कवाम अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-बुखारी - 729
6. मिश्कात अल-मसाबीह - शेख वली अल-दीन अल-इराकी - 722
7. अल-मुगनी फी अल-उसूल - शेख उमर बिन मुहम्मद अल-खब्बाजी अल-हनफी - 691
8. अल-मगरिब - अबू अल-फत नासिर बिन अब्द अल-सय्यद अल-मुतर्रिज़ी - 610
9. मुख़्तसर अल-कुदूरी - अबू अल-हुसैन अहमद बिन मुहम्मद अल-कुदूरी अल-हनफी - 428
10. मफातिह अल-जिनान - याकूब बिन सीदी अली - 931
11. अल-मुफ़्रदात लिल-इमाम राकिब - हुसैन बिन मुहम्मद बिन मुफद्दल अल-इसफहानी - 502
12. अल-मुकद्दमा अल-अश्माविय्याह - अबू अल-अब्बास अब्द अल-बारी अल-अश्मावी अल-मालिकी
13. अल-मुल्तकत (फी फतावा नासिरी) - नासिर अल-दीन मुहम्मद बिन युसूफ अल-हुसैनी - 556
14. मजमा अल-ज़वाइद - नूर अल-दीन अली बिन अबी बक्र अल-हैथमी - 807
15. मनाकिब अल-कर्दरी - मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन शिहाब इब्न बज़्ज़ - 827
16. अल-मुन्तक़ा (फी अल-हदीस) - अब्दुल्ला बिन अली इब्न जरूद - 307
17. अल-मुन्तक़ा फी फुरु अल-हनीफा - अल-हाकिम अल-शाहिर मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अहमद - 332
18. मिन्हात अल-खालिक - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी - 1252
19. मिनाह अल-गफ्फार - मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-तुमुर्ताशी - 1004
20. मुल्तका अल-अभुर - इमाम इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हलबी - 956
21. मिन्हाज - शेख अबू ज़करिया याह्या बिन शर्फ अल-नववी - 676
22. मजमा अल-बहरैन - मुज़फ्फर अल-दीन अहमद बिन अली बिन थलब अल-हनफी - 694
23. अल-मुबत्तगी - शेख ईसा बिन मुहम्मद इब्न ऐनाज अल-हनफी
24. अल-मबस्त - अब्द अल-अज़ीज़ बिन अहमद अल-हलवानी - 456

25. मुस्नद फी अल-हदीस - अल-हाफ़िज़ अबू अल-फत नासिर बिन इब्राहिम अल-हरवी - 510

पृष्ठ 754 का 756

۲۴۵- معرفۃ الصحابۃ - ابو نعیم احمد بن عبد اللہ الاصبہانی - ۴۳۰ ۲۴۶- المعجم الاوسط - سلیمان بن احمد الطبرانی - ۳۶۰ ۲۴۷- المعجم الصغیر - سلیمان بن احمد الطبرانی - ۳۶۰ ۲۴۸- المعجم الکبیر - سلیمان بن احمد الطبرانی - ۳۶۰ ۲۴۹- معراج الدرایۃ - قوام الدین محمد بن محمد البخاری - ۷۲۹ ۲۵۰- مشکوۃ المصابیح - شیخ ولی الدین العراقی - ۷۲۲ ۲۵۱- المغنی فی الاصول - شیخ عمر بن محمد الخبازی الحنفی - ۶۹۱ ۲۵۲- المغرب - ابو الفتح ناصر بن عبد السید المطرزی - ۶۱۰ ۲۵۳- مختصر القدوری - ابو الحسین احمد بن محمد القدوری الحنفی - ۴۲۸ ۲۵۴- مفاتیح الجنان - یعقوب بن سیدی علی - ۹۳۱ ۲۵۵- المفردات للامام راغب - حسین بن محمد بن مفضل الاصفہانی - ۵۰۲ ۲۵۶- المقدمۃ العشماویۃ - ابو العباس عبدالباری العشماوی المالکی ۲۵۷- الملتقط (فی فتاوٰی ناصری) - ناصر الدین محمد بن یوسف الحسینی - ۵۵۶ ۲۵۸- مجمع الزوائد - نور الدین علی بن ابی بکر الہیثمی - ۸۰۷ ۲۵۹- مناقب الکردری - محمد بن محمد بن شہاب ابن بزاز - ۸۲۷ ۲۶۰- المنتقی (فی الحدیث) - عبد اللہ بن علی ابن جارود - ۳۰۷ ۲۶۱- المنتقی فی فروع الحنیفہ - الحاکم الشہیر محمد بن محمد بن احمد - ۳۳۲ ۲۶۲- منحۃ الخالق - محمد امین ابن عابدین الشامی - ۱۲۵۲ ۲۶۳- منح الغفار - محمد بن عبد اللہ التمرتاشی - ۱۰۰۴ ۲۶۴- ملتقی الابحر - امام ابراہیم بن محمد الحلبی - ۹۵۶ ۲۶۵- منہاج - شیخ ابوز کر یا یحیی بن شرف النووی - ۶۷۶ ۲۶۶- مجمع البحرین - مظفر الدین احمد بن علی بن ثعلب الحنفی - ۶۹۴ ۲۶۷- المبتغی - شیخ عیسی بن محمد ابن ایناج الحنفی ۲۶۸- المبسوط - عبد العزی بن احمد الحلوانی - ۴۵۶ ۲۶۹- مسند فی الحدیث - الحافظ ابوالفتح نصر بن ابراہیم الہروی - ۵۱۰

Fatawa Rizvia Volume 3

1. Al-Musnad al-Kabir (Yaqub bin Shaybah al-Sudusi) 262
2. Munyat al-Musalli (Sadid al-Din Muhammad bin Muhammad al-Kashghari) 705
3. Muwatta Imam Malik (Imam Malik bin Anas al-Madani) 179
4. Mawarid al-Zaman (Nur al-Din Ali bin Abi Bakr al-Haythami) 807
5. Mushkilat (Ahmad bin Muzaffar al-Razi) 642
6. Muhadhdhab (Abi Ishaq Ibn Muhammad al-Shafi'i) 476
7. Mizan al-Shari'ah al-Kubra (Abd al-Wahhab al-Sha'rani) 973
8. Mizan al-I'tidal (Muhammad bin Ahmad al-Dhahabi) 748
9. Al-Mustakhraj 'ala al-Sahih al-Bukhari (Ahmad bin Musa Ibn Mardawayh) 410
10. Makarim al-Akhlaq (Muhammad bin Ja'far al-Khara'iti) 327

N 280. Al-Nuqayah Mukhtasar al-Wiqayah (Abdullah bin Mas'ud) 745 281. Nasb al-Rayah (Abu Muhammad Abdullah bin Yusuf al-Hanafi al-Zayla'i) 762 282. Nur al-Idah (Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali) 1069 283. Al-Nihayah (Husam al-Din Husayn bin Ali al-Sighnaqi) 711 284. Al-Nihayah li-Ibn al-Athir (Majd al-Din Mubarak bin Muhammad al-Jazari Ibn al-Athir) 606 285. Al-Nahr al-Faiq (Umar bin Nujaym al-Misri) 1005 286. Nawadir fi al-Fiqh (Hisham bin Ubaydullah al-Mazini al-Hanafi) 201 287. Nur al-Ayn (Muhammad bin Ahmad al-Ma'ruf bin Shanji Zadah) 1031 288. Al-Nawazil fi al-Furu' (Abu al-Layth Nasr bin Muhammad bin Ibrahim al-Samarqandi) 376 289. Nawadir al-Usul fi Ma'rifat Akhbar al-Rasul (Abu Abdullah Muhammad bin Ali al-Hakim al-Tirmidhi) 255

Page 755 of 756

फ़तावा रज़विया खंड 3

1. अल-मुसनद अल-कबीर (य़ाक़ूब बिन शैबा अस-सुदुसी) 262
2. मुनियत अल-मुसल्ली (सदीद अद-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-काशघरी) 705
3. मुवत्ता इमाम मालिक (इमाम मालिक बिन अनस अल-मदनी) 179
4. मवारिद अज़-ज़मान (नूर अद-दीन अली बिन अबी बक्र अल-हैथमी) 807
5. मुश्किलात (अहमद बिन मुज़फ़्फ़र अर-राज़ी) 642
6. मुहज़्ज़ब (अबी इसहाक़ इब्न मुहम्मद अश-शाफ़ई) 476
7. मीज़ान अश-शरिया अल-कुबरा (अब्द अल-वहाब अश-शरानी) 973
8. मीज़ान अल-इ'तिदाल (मुहम्मद बिन अहमद अद-धहबी) 748
9. अल-मुस्तख़रज 'अला अल-सहीह अल-बुखारी (अहमद बिन मूसा इब्न मरदुवैह) 410
10. मकारिम अल-अख्लाक़ (मुहम्मद बिन जाफ़र अल-खरैती) 327

न 280. अल-नुक़ाया मुख्तसर अल-विक़ाया (अब्दुल्लाह बिन मसूद) 745 281. नसब अर-राया (अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ अल-हनफ़ी अज़-ज़ैलई) 762 282. नूर अल-इज़ाह (हसन बिन अम्मार बिन अली अश्-शुरुनबुललली) 1069 283. अल-निहाया (हुसाम अद-दीन हुसैन बिन अली अस-सिघनाक़ी) 711 284. अल-निहाया लि-इब्न अल-अथ़ीर (मज्द अद-दीन मुबारक बिन मुहम्मद अल-जज़री इब्न अल-अथ़ीर) 606 285. अल-नहर अल-फ़ाएक़ (उमर बिन नुजैम अल-मिसरी) 1005 286. नवाद़िर फ़ी अल-फ़िक़्ह (हिशाम बिन उबैदुल्लाह अल-माज़िनी अल-हनफ़ी) 201 287. नूर अल-ऐन (मुहम्मद बिन अहमद अल-म'रूफ़ बिन्शांजी ज़ादा) 1031 288. अल-नवाज़िल फ़ी अल-फ़ुरु' (अबू अल-लैथ नसर बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम अस-समरक़ंदी) 376 289. नवाद़िर अल-उसूल फ़ी म'रिफ़त अखबार अर-रसूल (अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अली अल-हकीम अत-तिरमिज़ी) 255

पृष्ठ 755 का 756

۲۷۰۔ المسند الکبیر (یعقوب بن شیبۃ السدوسی) ۲۶۲ ۲۷۱۔ منیۃ المصلی (سدید الدین محمد بن محمد الکاشغری) ۷۰۵ ۲۷۲۔ موطا امام مالک (امام مالک بن انس المدنی) ۱۷۹ ۲۷۳۔ موارد الظمآن (نور الدین علی بن ابی بکر الہیثمی) ۸۰۷ ۲۷۴۔ مشکلات (احمد بن مظفر الرازی) ۶۴۲ ۲۷۵۔ مہذب (ابی اسحق ابن محمد الشافعی) ۴۷۶ ۲۷۶۔ میزان الشریعۃ الکبری (عبد الوہاب الشعرانی) ۹۷۳ ۲۷۷۔ میزان الاعتدال (محمد بن احمد الذہبی) ۷۴۸ ۲۷۸۔ المستخرج علی الصحیح البخاری (احمد بن موسی ابن مردویہ) ۴۱۰ ۲۷۹۔ مکارم اخلاق (محمد بن جعفر الخرائطی) ۳۲۷

ن ۲۸۰۔ النقایۃ مختصر الوقایۃ (عبد اللہ بن مسعود) ۷۴۵ ۲۸۱۔ نصب الرایۃ (ابو محمد عبد اللہ بن یوسف الحنفی الزیلعی) ۷۶۲ ۲۸۲۔ نور الایضاح (حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی) ۱۰۶۹ ۲۸۳۔ النہایۃ (حسام الدین حسین بن علی السغناقی) ۷۱۱ ۲۸۴۔ النہایۃ لابن اثیر (مجد الدین مبارک بن محمد الجزری ابن اثیر) ۶۰۶ ۲۸۵۔ النہر الفائق (عمر بن نجیم المصری) ۱۰۰۵ ۲۸۶۔ نوادر فی الفقہ (ہشام بن عبید اللہ المازنی الحنفی) ۲۰۱ ۲۸۷۔ نور العین (محمد بن احمد المعروف بنشانجی زادہ) ۱۰۳۱ ۲۸۸۔ النوازل فی الفروع (ابو اللیث نصر بن محمد بن ابراہیم السمر قندی) ۳۷۶ ۲۸۹۔ نوادر الاصول فی معرفۃ اخبار الرسول (ابو عبد اللہ محمد بن علی الحکیم الترمذی) ۲۵۵

Fatawa Ridawiya Volume Three

و (Waw) 290_ Al-Wafi fi al-Furu' — Abdullah bin Ahmad al-Nasafi — 710 291_ Al-Wajiz fi al-Furu' — Abu Hamid Muhammad bin Muhammad al-Ghazali — 505 292_ Al-Wiqaya — Mahmud bin Sadr al-Shari'ah — 673 293_ Al-Wasit fi al-Furu' — Abi Hamid Muhammad bin Muhammad al-Ghazali — 505

ھ (Heh) 294_ Al-Hidayah fi Sharh al-Bidayah — Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani — 593

ی (Ya) 295_ Al-Yawaqit wa al-Jawahir — Sayyid 'Abd al-Wahhab al-Sha'rani — 973 296_ Yanabi' fi Ma'rifat al-Usul — Abi 'Abdullah Muhammad ibn Ramadan al-Rumi — 769

Page 756 of 756

फ़तावा रज़विया खंड तीन

व (و) 290_ अल-वाफ़ी फ़िल फ़ुरू — अब्दुल्लाह बिन अहमद अन-नसफ़ी — 710 291_ अल-वजीज़ फ़िल फ़ुरू — अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली — 505 292_ अल-विक़ाया — महमूद बिन सदरुश शरीया — 673 293_ अल-वसीत फ़िल फ़ुरू — अबी हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली — 505

ह (ھ) 294_ अल-हिदाया फ़ी शरहिल बिदाया — बुरहानुद्दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी — 593

य (ی) 295_ अल-यवाक़ीत वल जवाहिरात — सैय्यद अब्दुल वहाब अश-शारानी — 973 296_ यनाबी फ़ी मारिफ़तिल उसूल — अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्न रमज़ान अर-रूमी — 769

पेज 756 का 756

فتاوی رضویہ جلد سوم

و ۲۹۰۔ الوافی فی الفروع ـــ عبداللہ بن احمد النسفی ـــ ۷۱۰ ۲۹۱۔ الوجیز فی الفروع ـــ ابو حامد محمد بن محمد الغزالی ـــ ۵۰۵ ۲۹۲۔ الوقایۃ ـــ محمود بن صدر الشریعۃ ـــ ۶۷۳ ۲۹۳۔ الوسیط فی الفروع ـــ ابی حامد محمد بن محمد الغزالی ـــ ۵۰۵

ھ ۲۹۴۔ الہدایۃ فی شرح البدایۃ ـــ برہان الدین علی بن ابی بکر المرغینانی ـــ ۵۹۳

ی ۲۹۵۔ الیواقیت والجواہر ـــ سید عبدالوہاب الشعرانی ـــ ۹۷۳ ۲۹۶۔ ینابیع فی معرفۃ الاصول ـــ ابی عبداللہ محمد ابن رمضان الرومی ـــ ۷۶۹

صفحہ 756 از 756